بسم الله الرحمن الرحيم

# المعجم المفهرس لألفاظ القرآن الكريم

## باب الهمزة



| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَبًّا | وفاكهة وأبا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك عبس | ٨٠ |
| أَبَدًا | ولن يتمنوه أبدا بما قدمت أيديهم والله عليم بالظالمين | ٩٥ | م البقرة | ٢ |
| (٢٨) | خالدين فيها أبدا لهم فيها أزواج مطهرة ... ... ... | ٥٧ | م النساء | ٤ |
| | خالدين فيها أبدا وعد الله حقا ومن أصدق من الله قيلا | ١٢٢م | » | ٤ |
| | خالدين فيها أبدا وكان ذلك على الله يسيرا ... ... | ١٦٩م | » | ٤ |
| | إنا لن ندخلها أبدا ما داموا فيها... ... ... ... ... | ٢٤ | م المائدة | ٥ |
| | خالدين فيها أبدا رضى الله عنهم ورضوا عنه ... ... | ١١٩م | » | ٥ |
| | خالدين فيها أبدا إن الله عنده أجر عظيم ... ... ... | ٢٢ | م التوبة | ٩ |
| | فقل لن تخرجوا معى أبدا ولن تقاتلوا معى .. ... | ٨٣ | م » | ٩ |
| | ولا تصلّ على أحد منهم مات أبدا ولا تقم على قبره | ٨٤ | م » | ٩ |
| | خالدين فيها أبدا ذلك الفوز العظيم ... ... ... ... | ١٠٠م | » | ٩ |
| | لا تقم فيه أبدا لمسجد أسس على التقوى ... ... ... | ١٠٨م | » | ٩ |
| | ماكثين فيه أبدا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك الكهف | ١٨ |
| | يرجوكم أو يعيدوكم فى ملتهم ولن تفلحوا إذًا أبدا | ٢٠ | ك » | ١٨ |
| | قال ما أظن أن تبيد هذه أبدا ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك » | ١٨ |
| | وإن تدعهم إلى الهدى فلن يهتدوا إذًا أبدا ... ... | ٥٧ | ك » | ١٨ |
| | فاجلدوهم ثمانين جلدة ولا تقبلوا لهم شهادة أبدا | ٤ | م النور | ٢٤ |
| | يعظكم الله أن تعودوا لمثله أبدا ... ... ... ... ... | ١٧ | م » | ٢٤ |
| | ولولا فضل الله عليكم ورحمته ما زكى منكم من أحد أبدا | ٢١ | م » | ٢٤ |
| | ولا أن تنكحوا أزواجه من بعده أبدا ... ... ... | ٥٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | خالدين فيها أبدا لا يجدون وليا ولا نصيرا ... ... | ٦٥ | م » | ٣٣ |
| | بل ظننتم أن لن ينقلب الرسول والمؤمنون إلى أهليهم أبدا | ١٢ | م الفتح | ٤٨ |
| | لنخرجن معكم ولا نطيع فيكم أحدا أبدا ... ... ... | ١١ | م الحشر | ٥٩ |
| | وبدا بيننا وبينكم العداوة والبغضاء أبدا ... ... ... | ٤ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | ولا يتمنونه أبدا بما قدمت أيديهم ... ... ... ... | ٧ | م الجمعة | ٦٢ |
| أَبَدًا | خالدين فيها أبدا ذلك الفوز العظيم... ... ... ... | ٩ | م التغابن | ٦٤ |
| | خالدين فيها أبدا قد أحسن الله له رزقا ... ... ... | ١١ | م الطلاق | ٦٥ |
| | فإن له نار جهنم خالدين فيها أبدا... ... ... ... ... | ٢٣ | ك الجن | ٧٢ |
| | خالدين فيها أبدا رضى الله عنهم ورضوا عنه ... ... | ٨ | م البينة | ٩٨ |
| إِبْرَاهِيمَ | وإذ ابتلى إبراهيم ربه بكلمات فأتمهن... ... ... | ١٢٤م | البقرة | ٢ |
| (٦٩) | واتخذوا من مقام إبراهيم مصلى ... ... ... ... ... | ١٢٥م | » | ٢ |
| | وعهدنا إلى إبراهيم وإسماعيل أن طهرا بيتى للطائفين | ١٢٥م | » | ٢ |
| | وإذ قال إبراهيم رب اجعل هذا بلدا آمنا ... ... | ١٢٦م | » | ٢ |
| | وإذ يرفع إبراهيم القواعد من البيت وإسماعيل | ١٢٧م | » | ٢ |
| | ومن يرغب عن ملة إبراهيم إلا من سفه نفسه ... ... | ١٣٠م | » | ٢ |
| | ووصى بها إبراهيم بنيه ويعقوب يا بنىّ ... ... ... | ١٣٢م | » | ٢ |
| | قالوا نعبد إلهك وإله آبائك إبراهيم وإسماعيل وإسحق | ١٣٣م | » | ٢ |
| | قل بل ملة إبراهيم حنيفا وما كان من المشركين | ١٣٥م | » | ٢ |
| | قولوا آمنا بالله وما أنزل إلينا وما أنزل إلى إبراهيم | ١٣٦م | » | ٢ |
| | أم تقولون إن إبراهيم وإسماعيل وإسحق ويعقوب | ١٤٠م | » | ٢ |
| | ألم تر إلى الذى حاج إبراهيم فى ربه أن آتاه الله الملك | ٢٥٨م | » | ٢ |
| | إذ قال إبراهيم ربى الذى يحيى ويميت ... ... ... | ٢٥٨م | » | ٢ |
| | قال إبراهيم فإن الله يأتى بالشمس من المشرق فأت بها | ٢٥٨م | » | ٢ |
| | وإذ قال إبراهيم رب أرنى كيف تحيى الموتى ... ... | ٢٦٠م | » | ٢ |
| | إن الله اصطفى آدم ونوحا وآل إبراهيم وآل عمران | ٣٣ | م آل عمران | ٣ |
| | لم تحاجون فى إبراهيم ... ... ... ... ... ... ... | ٦٥ | م » | ٣ |
| | ما كان إبراهيم يهوديا ولا نصرانيا ولكن كان حنيفا | ٦٧ | م » | ٣ |
| | إن أولى الناس بإبراهيم للذين اتبعوه وهذا النبىّ | ٦٨ | م » | ٣ |
| | قل آمنا بالله وما أنزل علينا وما أنزل على إبراهيم | ٨٤ | م » | ٣ |
| | قل صدق الله فاتبعوا ملة إبراهيم حنيفا... ... ... | ٩٥ | م » | ٣ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| إِبْرَاهِيم | : فيه آيات بينات مقام إبراهيم ومن دخله كان آمنا | ٩٧ | م آل عمران | ٣ |
| | فقد آتينا آل إبراهيم الكتاب والحكمة وآتيناهم ملكا عظيما | ٥٤ | م النساء | ٤ |
| | واتبع ملة إبراهيم حنيفا ... ... ... ... ... ... | ١٢٥ | م « | ٤ |
| | واتخذ الله إبراهيم خليلا ... ... ... ... ... ... | ١٢٥ | م « | ٤ |
| | وأوحينا إلى إبراهيم وإسماعيل وإسحق ويعقوب | ١٦٣ | م « | ٤ |
| | وإذ قال إبراهيم لأبيه آزر أتتخذ أصناما آلهة | ٧٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | وكذلك نرى إبراهيم ملكوت السموات والأرض | ٧٥ | ك « | ٦ |
| | وتلك حجتنا آتيناها إبراهيم على قومه .. ... ... | ٨٣ | ك « | ٦ |
| | دينا قيما ملة إبراهيم حنيفا وما كان من المشركين | ١٦١ | ك « | ٦ |
| | ألم يأتهم نبأ الذين من قبلهم قوم نوح وعاد وثمود وقوم إبراهيم | ٧٠ | م التوبة | ٩ |
| | وما كان استغفار إبراهيم لأبيه إلا عن موعدة وعدها إياه | ١١٤ | م « | ٩ |
| | فلما تبين له أنه عدو لله تبرأ منه إن إبراهيم لأواه حليم | ١١٤ | م « | ٩ |
| | ولقد جاءت رسلنا إبراهيم بالبشرى قالوا سلاما | ٦٩ | ك هود | ١١ |
| | فلما ذهب عن إبراهيم الروع وجاءته البشرى... ... | ٧٤ | ك « | ١١ |
| | إن إبراهيم لحليم أواه منيب ... ... ... ... ... | ٧٥ | ك « | ١١ |
| | يا إبراهيم أعرض عن هذا إنه قد جاء أمر ربك | ٧٦ | ك « | ١١ |
| | كما أتمها على أبويك من قبل إبراهيم وإسحق... ... | ٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | واتبعت ملة آبائي إبراهيم وإسحق ويعقوب ... ... | ٣٨ | ك « | ١٢ |
| | وإذ قال إبراهيم رب اجعل هذا البلد آمنا ... ... | ٣٥ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | ونبئهم عن ضيف إبراهيم ... ... ... ... ... ... | ٥١ | ك الحجر | ١٥ |
| | إن إبراهيم كان أمة قانتا لله حنيفا ... ... ... ... | ١٢٠ | ك النحل | ١٦ |
| | ثم أوحينا إليك أن اتبع ملة إبراهيم حنيفا ... ... | ١٢٣ | ك « | ١٦ |
| | واذكر في الكتاب إبراهيم إنه كان صديقا نبيا... ... | ٤١ | ك مريم | ١٩ |
| | قال أراغب أنت عن آلهتي يا إبراهيم ... ... ... | ٤٦ | ك « | ١٩ |
| | ومن حملنا مع نوح ومن ذرية إبراهيم وإسرائيل | ٥٨ | م « | ١٩ |
| | ولقد آتينا إبراهيم رشده من قبل وكنا به عالمين | ٥١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | قالوا سمعنا فتى يذكرهم يقال له إبراهيم ... ... ... | ٦٠ | ك « | ٢١ |
| | قالوا ءأنت فعلت هذا بآلهتنا يا إبراهيم ... ... ... | ٦٢ | ك « | ٢١ |
| | قلنا يا نار كوني بردا وسلاما على إبراهيم ... ... ... | ٦٩ | ك « | ٢١ |
| | وإذ بوأنا لإبراهيم مكان البيت أن لا تشرك بي شيئا | ٢٦ | م الحج | ٢٢ |
| | وقوم إبراهيم وقوم لوط ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | م « | ٢٢ |
| | ملة أبيكم إبراهيم هو سماكم المسلمين من قبل... ... | ٧٨ | م « | ٢٢ |
| | واتل عليهم نبأ إبراهيم... ... ... ... ... ... | ٦٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وإبراهيم إذ قال لقومه اعبدوا الله واتقوه ... ... | ١٦ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ولما جاءت رسلنا إبراهيم بالبشرى قالوا... ... ... | ٣١ | ك « | ٢٩ |
| | وإذ أخذنا من النبيين ميثاقهم ومنك ومن نوح وإبراهيم | ٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وإن من شيعته لإبراهيم ... ... ... ... ... ... | ٨٣ | ك الصافات | ٣٧ |
| | وناديناه أن يا إبراهيم ... ... ... ... ... ... | ١٠٤ | ك الصافات | ٣٧ |
| | سلام على إبراهيم ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٩ | ك « | ٣٧ |
| | واذكر عبادنا إبراهيم وإسحق ويعقوب أولي الأيدي | ٤٥ | ك ص | ٣٨ |
| | وما وصينا به إبراهيم وموسى وعيسى أن أقيموا الدين | ١٣ | ك الشورى | ٤٢ |
| | وإذ قال إبراهيم لأبيه وقومه إنني براء مما تعبدون | ٢٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | هل أتاك حديث ضيف إبراهيم المكرمين ... ... | ٢٤ | ك الذاريات | ٥١ |
| | وإبراهيم الذي وفى ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك النجم | ٥٣ |
| | ولقد أرسلنا نوحا وإبراهيم وجعلنا في ذريتهما النبوة | ٢٦ | م الحديد | ٥٧ |
| | قد كانت لكم أسوة حسنة في إبراهيم والذين معه | ٤ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | إلا قول إبراهيم لأبيه لاستغفرن لك ... ... ... | ٤ | م « | ٦٠ |
| | صحف إبراهيم وموسى... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك الأعلى | ٨٧ |
| أَبَق | : إذ أبق إلى الفلك المشحون ... ... ... ... ... | ١٤٠ | ك الصافات | ٣٧ |
| الإِبِل | : ومن الإبل اثنين ومن البقر اثنين ... ... ... | ١٤٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | (٢) أفلا ينظرون إلى الإبل كيف خلقت ... ... ... | ١٧ | ك الغاشية | ٨٨ |
| أَبَابِيلَ | : وأرسل عليهم طيرا أبابيل ... ... ... ... ... | ٣ | ك الفيل | ١٠٥ |
| أَبَاً | : قالوا يا أيها العزيز إن له أبا شيخا كبيرا ... ... ... | ٧٨ | ك يوسف | ١٢ |
| أَبَا | : ما كان محمد أبا أحد من رجالكم ولكن رسول الله | ٤٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| أَبَاكُم | : قال كبيرهم ألم تعلموا أن أباكم قد أخذ عليكم موثقا من الله | ٨٠ | ك يوسف | ١٢ |
| أَبَانَا | : ونحن عصبة إن أبانا لفي ضلال مبين ... ... ... | ٨ | ك « | ١٢ |
| | (٧) قالوا يا أبانا مالك لا تأمنا على يوسف ... ... ... | ١١ | ك « | ١٢ |
| | قالوا يا أبانا إنا ذهبنا نستبق وتركنا يوسف... ... | ١٧ | ك « | ١٢ |
| | قالوا يا أبانا منع منا الكيل فأرسل معنا أخانا... ... | ٦٣ | ك « | ١٢ |
| | قالوا يا أبانا ما نبغي هذه بضاعتنا ردت إلينا... ... | ٦٥ | ك « | ١٢ |
| | فقولوا يا أبانا إن ابنك سرق وما شهدنا إلا بما علمنا | ٨١ | ك « | ١٢ |
| | قالوا يا أبانا استغفر لنا ذنوبنا إنا كنا خاطئين | ٩٧ | ك « | ١٢ |
| أَبَاهُ | : قالوا سنراود عنه أباه وإنا لفاعلون ... ... ... | ٦١ | ك « | ١٢ |
| أَبَاهُمْ | : وجاءوا أباهم عشاء يبكون ... ... ... ... ... | ١٦ | ك « | ١٢ |
| أَبَتِ | : إذ قال يوسف لأبيه يا أبت إني رأيت أحد عشر كوكبا | ٤ | ك « | ١٢ |
| | (٨) وقال يا أبت هذا تأويل رؤياي من قبل ... ... | ١٠٠ | ك « | ١٢ |
| | إذ قال لأبيه يا أبت لم تعبد ما لا يسمع ولا يبصر | ٤٢ | ك مريم | ١٩ |
| | يا أبت إني قد جاءني من العلم ما لم يأتك فاتبعني | ٤٣ | ك « | ١٩ |
| | يا أبت لا تعبد الشيطان إن الشيطان كان للرحمن عصيا | ٤٤ | ك « | ١٩ |
| | يا أبت إني أخاف أن يمسك عذاب من الرحمن | ٤٥ | ك « | ١٩ |
| | قالت إحداهما يا أبت استأجره... ... ... ... ... | ٢٦ | ك القصص | ٢٨ |
| | قال يا أبت افعل ما تؤمر ستجدني إن شاء الله من الصابرين | ١٠٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| أَبُوكِ | : يا أخت هرون ما كان أبوك امرأ سوء ... ... | ٢٨ | ك مريم | ١٩ |
| أَبُونَا | : قالا لا نسقي حتى يصدر الرعاء وأبونا شيخ كبير... ... | ٢٣ | ك القصص | ٢٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَبُوهُمْ | : ولما دخلوا من حيث أمرهم أبوهم ما كان يغنى عنهم | ٦٨ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | ولما فصلت العير قال أبوهم إنى لأجد ريح يوسف | ٩٤ | ك « | ١٢ |
| أَبُوهُمَا | : وكان تحته كنز لهما وكان أبوهما صالحا ... ... | ٨٢ | ك الكهف | ١٨ |
| أَبِي | : فلن أبرح الأرض حتى يأذن لى أبى أو يحكم الله لى | ٨٠ | ك يوسف | ١٢ |
| (٥) | اذهبوا بقميصى هذا فألقوه على وجه أبى... ... ... | ٩٣ | ك « | ١٢ |
| | واغفر لأبى إنه كان من الضالين... ... ... ... ... | ٨٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | قالت إن أبى يدعوك ليجزيك أجر ما سقيت لنا | ٢٥ | ك القصص | ٢٨ |
| | تبت يدا أبى لهب وتب... ... ... ... ... ... ... | ١ | ك المسد | ١١١ |
| أَبِيكُمْ | : اقتلوا يوسف أو اطرحوه أرضا يخل لكم وجه أبيكم | ٩ | ك يوسف | ١٢ |
| (٤) | ولما جهزهم بجهازهم قال ائتونى بأخ لكم من أبيكم | ٥٩ | ك « | ١٢ |
| | ارجعوا إلى أبيكم فقولوا يا أبانا إن ابنك سرق | ٨١ | ك « | ١٢ |
| | ملة أبيكم إبراهيم هو سماكم المسلمين من قبل ... ... | ٧٨ | م الحج | ٢٢ |
| أَبِينَا | : إذ قالوا ليوسف وأخوه أحب إلى أبينا منا ... ... | ٨ | ك يوسف | ١٢ |
| أَبِيهِ | : وإذ قال إبراهيم لأبيه آزر أتتخذ أصناما آلهة ... ... | ٧٤ | ك الأنعام | ٦ |
| (١٠) | وما كان استغفار إبراهيم لأبيه إلا عن موعدة ... ... | ١١٤ | م التوبة | ٩ |
| | إذ قال يوسف لأبيه يا أبت إنى رأيت ... ... ... | ٤ | ك يوسف | ١٢ |
| | إذ قال لأبيه يا أبت لم تعبد ما لا يسمع ولا يبصر | ٤٢ | ك مريم | ١٩ |
| | إذ قال لأبيه وقومه ما هذه التماثيل ... ... ... ... | ٥٢ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | إذ قال لأبيه وقومه ما تعبدون ... ... ... ... ... | ٧٠ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | إذ قال لأبيه وقومه ما ذا تعبدون ... ... ... ... | ٨٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| | وإذ قال إبراهيم لأبيه وقومه إننى براء مما تعبدون | ٢٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | إلا قول إبراهيم لأبيه لأستغفرن لك ... ... ... ... | ٤ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | وأمه وأبيه ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك عبس | ٨٠ |
| أَبِيهِمْ | : فلما رجعوا إلى أبيهم قالوا يا أبانا منع منا الكيل | ٦٣ | ك يوسف | ١٢ |
| أَبَوَاهُ | : فإن لم يكن له ولد وورثه أبواه فلأمه الثلث ... ... | ١١ | م النساء | ٤ |
| (٢) | وأما الغلام فكان أبواه مؤمنين فخشينا ... ... ... | ٨٠ | ك الكهف | ١٨ |
| أَبَوَيْكَ | : كما أتمها على أبويك من قبل إبراهيم وإسحق | ٦ | ك يوسف | ١٢ |
| أَبَوَيْكُمْ | : يا بنى آدم لا يفتننكم الشيطان كما أخرج أبويكم من الجنة | ٢٧ | ك الأعراف | ٧ |
| أَبَوَيْهِ | : ولأبويه لكل واحد منهما السدس مما ترك إن كان له ولد | ١١ | م النساء | ٤ |
| (٣) | فلما دخلوا على يوسف آوى إليه أبويه ... ... ... | ٩٩ | ك يوسف | ١٢ |
| | ورفع أبويه على العرش وخروا له سجدا... ... ... ... | ١٠٠ | ك « | ١٢ |
| آبَاءِ | : ولا يبدين زينتهن إلا لبعولتهن أو آبائهن أو آباء بعولتهن | ٣١ | م النور | ٢٤ |
| آبَاءَكُمْ | : فاذكروا الله كذكركم آباءكم أو أشد ذكرا ... ... | ٢٠٠ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | يأيها الذين آمنوا لا تتخذوا آباءكم وإخوانكم أولياء | ٢٣ | م التوبة | ٩ |
| | أولو جئتكم بأهدى مما وجدتم عليه آباءكم ... ... | ٢٤ | ك الزخرف | ٤٣ |
| آبَاءَنَا | : قالوا بل نتبع ما ألفينا عليه آباءنا ... ... ... ... | ١٧٠ | م البقرة | ٢ |
| (١٠) | قالوا حسبنا ما وجدنا عليه آباءنا ... ... ... ... | ١٠٤ | م المائدة | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| آبَاءَنَا | : وإذا فعلوا فاحشة قالوا وجدنا عليها آباءنا... ... | ٢٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | حتى عفوا وقالوا قد مس آباءنا الضراء والسراء... ... | ٩٥ | ك « | ٧ |
| | قالوا أجئتنا لتلفتنا عما وجدنا عليه آباءنا ... ... ... | ٧٨ | ك يونس | ١٠ |
| | قالوا وجدنا آباءنا لها عابدين ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | بل وجدنا آباءنا كذلك يفعلون ... ... ... ... ... | ٧٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | قالوا بل نتبع ما وجدنا عليه آباءنا ... ... ... ... | ٢١ | ك لقمان | ٣١ |
| | إنا وجدنا آباءنا على أمة وإنا على آثارهم مهتدون | ٢٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | إنا وجدنا آباءنا على أمة وإنا على آثارهم مقتدون | ٢٣ | ك « | ٤٣ |
| آبَاءَهُمْ | : بل متعنا هؤلاء وآباءهم حتى طال عليهم العمر | ٤٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٧) | أم جاءهم ما لم يأت آباءهم الأولين ... ... ... ... | ٦٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ولكن متعتهم وآباءهم حتى نسوا الذكر ... ... ... | ١٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | فإن لم تعلموا آباءهم فإخوانكم فى الدين ... ... ... | ٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | إنهم ألفوا آباءهم ضالين ... ... ... .. ... ... | ٦٩ | ك الصافات | ٣٧ |
| | بل متعت هؤلاء وآباءهم حتى جاءهم الحق ... ... ... | ٢٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | يوادون من حاد الله ورسوله ولو كانوا آباءهم... ... | ٢٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| آبَاؤُكُمْ | : آباؤكم وأبناؤكم لا تدرون أيهم أقرب لكم نفعا | ١١ | م النساء | ٤ |
| (١٠) | ولا تنكحوا ما نكح آباؤكم من النساء إلا ما قد سلف | ٢٢ | م « | ٤ |
| | وعلمتم ما لم تعلموا أنتم ولا آباؤكم ... ... ... ... | ٩١ | م الأنعام | ٦ |
| | أتجادلوننى فى أسماء سميتموها أنتم وآباؤكم... ... ... | ٧١ | ك الأعراف | ٧ |
| | قل إن كان آباؤكم وأبناؤكم وإخوانكم ... ... ... | ٢٤ | م التوبة | ٩ |
| | ما تعبدون من دونه إلا أسماء سميتموها أنتم وآباؤكم | ٤٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | لقد كنتم أنتم وآباؤكم فى ضلال مبين ... ... ... ... | ٥٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | أنتم وآباؤكم الأقدمون ... ... ... ... ... ... ... | ٧٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | ما هذا إلا رجل يريد أن يصدكم عما كان يعبد آباؤكم | ٤٣ | ك سبأ | ٣٤ |
| | إن هى إلا أسماء سميتموها أنتم وآباؤكم ... ... ... | ٢٣ | ك النجم | ٥٣ |
| آبَاؤُنَا | : سيقول الذين أشركوا لو شاء الله ما أشركنا ولا آباؤنا | ١٤٨ | ك الأنعام | ٦ |
| (١٢) | أجئتنا لنعبد الله وحده ونذر ما كان يعبد آباؤنا... ... | ٧٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | أو تقولوا إنما أشرك آباؤنا من قبل وكنا ذرية من بعدهم | ١٧٣ | ك « | ٧ |
| | أتنهانا أن نعبد ما يعبد آباؤنا ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك هود | ١١ |
| | أصلاتك تأمرك أن نترك ما يعبد آباؤنا ... ... ... | ٨٧ | ك « | ١١ |
| | تريدون أن تصدونا عما كان يعبد آباؤنا ... ... ... | ١٠ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | ما عبدنا من دونه من شىء نحن ولا آباؤنا... ... ... | ٣٥ | ك النحل | ١٦ |
| | لقد وعدنا نحن وآباؤنا هذا من قبل ... ... ... ... | ٨٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | أئذا كنا ترابا وآباؤنا أئنا لمخرجون ... ... ... ... | ٦٧ | ك النمل | ٢٧ |
| | لقد وعدنا هذا نحن وآباؤنا من قبل ... ... ... ... | ٦٨ | ك « | ٢٧ |
| | أو آباؤنا الأولون ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| | أو آباؤنا الأولون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٨ | ك الواقعة | ٥٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| آباؤهم: | أو لو كان آباؤهم لا يعقلون شيئا ولا يهتدون ... | ١٧٠ | م البقـرة | ٢ |
| (٤) | أو لو كان آباؤهم لا يعلمون شيئا ولا يهتدون ... ... | ١٠٤ | م المائدة | ٥ |
| | ما يعبدون إلا كما يعبد آباؤهم من قبل ... ... ... | ١٠٩ | ك هـود | ١١ |
| | لتنذر قوما ما أنذر آباؤهم فهم غافلون ... ... ... | ٦ | ك يس | ٣٦ |
| آبائك: | قالوا نعبـد إلهك وإله آبائك إبراهيم وإسماعيل | ١٣٣ | م البقـرة | ٢ |
| آبائكم: | ولا على أنفسكم أن تأكلوا من بيوتكم أو بيوت آبائكم | ٦١ | م النـور | ٢٤ |
| (٤) | قال ربكم ورب آبائكم الأولين ... ... ... ... | ٢٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | الله ربكم ورب آبائكم الأولين... ... ... ... ... | ١٢٦ | ك الصافات | ٣٧ |
| | لا إله إلا هو يحيي ويميت ربكم ورب آبائكم الأولين | ٨ | ك الدخان | ٤٤ |
| آبائنا: | ولو شاء الله لأنزل ملائكة ما سمعنا بهذا في آبائنا الأولين | ٢٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٤) | ما هذا إلا سحر مفترى وما سمعنا بهذا في آبائنا الأولين | ٣٦ | ك القصص | ٢٨ |
| | فأتوا بآبائنا إن كنتم صادقين ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك الدخان | ٤٤ |
| | ما كان حجتهم إلا أن قالوا ائتوا بآبائنا إن كنتم صادقين | ٢٥ | ك الجاثيـة | ٤٥ |
| آبائهم: | ومن آبائهم وذرياتهم وإخوانهم واجتبيناهم... ... | ٨٧ | ك الأنعام | ٦ |
| (٥) | جنات عدن يدخلونها ومن صلح من آبائهم ... ... | ٢٣ | م الرعـد | ١٣ |
| | ما لهم به من علم ولا لآبائهم كبرت كلمة تخرج من أفواههم | ٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | ادعوهم لآبائهم هو أقسط عنـد الله ... ... ... | ٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وأدخلهم جنات عدن التي وعدتهم ومن صلح من آبائهم | ٨ | ك غافـر | ٤٠ |
| آبائهن: | ولا يبدين زينتهن إلا لبعولتهن أو آبائهن... ... | ٣١ | م النـور | ٢٤ |
| (٢) | لا جناح عليهن في آبائهن ولا أبنائهن ... ... ... | ٥٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| آبائي: | واتبعت ملة آبائي إبراهيم وإسحق ويعقوب... ... | ٣٨ | ك يوسف | ١٢ |
| أبى: | فسجدوا إلا إبليس أبى واستكبر وكان من الكافرين | ٣٤ | م البقـرة | ٢ |
| (٧) | إلا إبليس أبى أن يكون مع الساجدين ... ... ... | ٣١ | ك الحجـر | ١٥ |
| | في هذا القرآن من كل مثل فأبى أكثر الناس إلا كفورا | ٨٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وجعل لهم أجلا لا ريب فيه فأبى الظالمون إلا كفورا | ٩٩ | ك « | ١٧ |
| | ولقد أريناه آياتنا كلها فكذب وأبى ... ... ... | ٥٦ | ك طـه | ٢٠ |
| | وإذ قلنا للملائكة اسجدوا لآدم فسجدوا إلا إبليس أبى | ١١٦ | ك « | ٢٠ |
| | ولقد صرفناه بينهم ليذكروا فأبى أكثر الناس إلا كفورا | ٥٠ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| أبوا: | حتى إذا أتيا أهل قرية استطعما أهلها فأبوا أن يضيفوهما | ٧٧ | ك الكهف | ١٨ |
| أبين: | إنا عرضنا الأمانة على السموات والأرض والجبال فأبين | ٧٢ | م الأحزاب | ٣٣ |
| تأبى: | يرضونكم بأفواههم وتأبى قلوبهم وأكثرهم فاسقون | ٨ | م التـوبة | ٩ |
| يأب: | ولا يأب كاتب أن يكتب كما علمه الله... ... ... | ٢٨٢ | م البقـرة | ٢ |
| (٢) | ولا يأب الشهداء إذا ما دعوا ... ... ... ... | ٢٨٢ | م « | ٢ |
| يأبى: | ويأبى الله إلا أن يتم نوره ولو كره الكافرون... ... | ٣٢ | م التـوبة | ٩ |
| أتى: | أتى أمر الله فلا تستعجلوه سبحانه وتعالى عما يشركون | ١ | ك النحـل | ١٦ |
| (٧) | قد مكر الذين من قبلهم فأتى الله بنيانهم من القواعد | ٢٦ | ك « | ١٦ |
| | فتولى فرعون فجمع كيده ثم أتى... ... ... ... | ٦٠ | ك طـه | ٢٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أتى: | إنما صنعوا كيد ساحر ولا يفلح الساحر حيث أتى | ٦٩ | ك طـه | ٢٠ |
| | إلا من أتى الله بقلب سليم ... ... ... ... ... | ٨٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | كذلك ما أتى الذين من قبلهم من رسول إلا قالوا ساحر | ٥٢ | ك الذاريات | ٥١ |
| | هل أتى على الإنسان حين من الدهر لم يكن شيئا مذكورا | ١ | م الإنسان | ٧٦ |
| أتاك: | وهل أتاك حديث موسى ... ... ... ... ... | ٩ | ك طـه | ٢٠ |
| (٦) | وهل أتاك نبأ الخصم إذ تسوروا المحراب... ... ... | ٢١ | ك ص | ٣٨ |
| | هـل أتاك حديث ضيف إبراهيم المكرمين ... ... | ٢٤ | ك الذاريات | ٥١ |
| | هل أتاك حديث موسى ... ... ... ... ... | ١٥ | ك النازعات | ٧٩ |
| | هل أتاك حديث الجنود فرعون وثمود ... ... ... | ١٧ | ك البروج | ٨٥ |
| | هل أتاك حديث الغاشية ... ... ... ... ... | ١ | ك الغاشية | ٨٨ |
| أتاكم: | قل أرأيتكم إن أتاكم عذاب الله أو أتتكم الساعة | ٤٠ | ك الأنعام | ٦ |
| (٣) | قل أرأيتكم إن أتاكم عذاب الله بغتـة أو جهرة | ٤٧ | ك « | ٦ |
| | قل أرأيتم إن أتاكم عذابه بياتا أو نهارا ... ... | ٥٠ | ك يونس | ١٠ |
| أتانا: | حتى أتانا اليقين... ... ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك المدثر | ٧٤ |
| أتاها: | أتاها أمرنا ليلا أو نهارا فجعلناها حصيدا... ... | ٢٤ | ك يونس | ١٠ |
| (٣) | فلما أتاها نودي يا موسى ... ... ... ... ... | ١١ | ك طـه | ٢٠ |
| | فلما أتاها نودي من شاطئ الواد الأيمن في البقعة المباركة | ٣٠ | ك القصص | ٢٨ |
| أتاهم: | فصبروا على ما كذبوا وأوذوا حتى أتاهم نصرنا... ... | ٣٤ | ك الأنعام | ٦ |
| (٨) | فخر عليهم السقف من فوقهم وأتاهم العذاب ... ... | ٢٦ | ك النحـل | ١٦ |
| | لتنذر قوما ما أتاهم من نذير من قبلك لعلهم يتذكرون | ٤٦ | ك القصص | ٢٨ |
| | لتنذر قوما ما أتاهم من نذير من قبلك لعلهم يهتدون | ٣ | ك السجدة | ٣٢ |
| | كذب الذين من قبلهم فأتاهم العذاب ... ... ... | ٢٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| | الذين يجادلون في آيات الله بغير سلطان أتاهم... ... | ٣٥ | ك غافـر | ٤٠ |
| | إن الذين يجادلون في آيات الله بغير سلطان أتاهم | ٥٦ | م « | ٤٠ |
| | فأتاهم الله من حيث لم يحتسبوا وقذف في قلوبهم الرعب | ٢ | م الحشر | ٥٩ |
| أتت: | فأتت به قومها تحمله قالوا يا مريم لقد جئت شيئا فريا | ٢٧ | ك مريم | ١٩ |
| (٢) | ما تذر من شيء أتت عليه إلا جعلته كالرميم ... ... | ٤٢ | ك الذاريات | ٥١ |
| أتتك: | قال كذلك أتتك آياتنا فنسيتها وكذلك اليوم تنسى | ١٢٦ | ك طـه | ٢٠ |
| أتتكم: | قل أرأيتكم إن أتاكم عذاب الله أو أتتكم الساعة | ٤٠ | ك الأنعام | ٦ |
| أتتهم: | أتتهم رسلهم بالبينات فما كان الله ليظلمهم ... ... | ٧٠ | م التـوبة | ٩ |
| أتوا: | لا تحسبن الذين يفرحون بما أتوا ويحبون أن يحمدوا | ١٨٨ | م آل عمران | ٣ |
| (٤) | فأتوا على قوم يعكفون على أصنام لهم قالوا يا موسى | ١٣٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولقد أتوا على القرية التي أمطرت مطر السوء... ... | ٤٠ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | حتى إذا أتوا على واد النمل قالت نملة يا أيها النمـل | ١٨ | ك النمـل | ٢٧ |
| أتوك: | ولا على الذين إذا ما أتوك لتحملهم قلت لا أجد | ٩٢ | م التوبة | ٩ |
| أتوه: | إلا من شاء الله وكل أتوه داخرين ... ... ... | ٨٧ | ك النمـل | ٢٧ |
| أتيا: | فانطلقا حتى إذا أتيا أهـل قرية استطعما أهلها | ٧٧ | ك الكهف | ١٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَتَيْتَ | ولئن أتيت الذين أوتوا الكتاب بكل آية ما تبعوا | ١٤٥ | م البقـرة | ٢ |
| أَتَيْنَ | فإن أتين بفاحشة فعليهن نصف ما على المحصنات | ٢٥ | م النسـاء | ٤ |
| أَتَيْنَا | وإن كان مثقال حبة من خردل أتينا بها ... ... | ٤٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٢) | فقال لها وللأرض ائتيا طوعا أو كرها قالتا أتينا | ١١ | ك فصلت | ٤١ |
| أَتَيْنَاكَ | وأتيناك بالحق وإنا لصادقون ... ... ... | ٦٤ | ك الحجر | ١٥ |
| أَتَيْنَاهُم | بل أتيناهم بذكرهم فهم عن ذكرهم معرضون | ٧١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٢) | بل أتيناهم بالحق وإنهم لكاذبون ... ... ... | ٩٠ | ك « | ٢٣ |
| آتِيك | قال عفريت من الجن أنا آتيك به ... ... ... | ٣٩ | ك النمل | ٢٧ |
| (٢) | قال الذى عنده علم من الكتاب أنا آتيك به ... ... | ٤٠ | ك « | ٢٧ |
| آتِيكُمْ | لعلى آتيكم منها بقبس أو أجد على النار هدى | ١٠ | ك طه | ٢٠ |
| (٤) | إذ قال موسى لأهله إنى آنست نارا سآتيكم منها بخبر | ٧ | ك النمل | ٢٧ |
| | أو آتيكم بشهاب قبس لعلكم تصطلون ... ... ... | ٧ | ك « | ٢٧ |
| | لعلى آتيكم منها بخبر أو جذوة من النار لعلكم تصطلون | ٢٩ | ك القصص | ٢٨ |
| لَآتِيَنَّهُم | ثم لآتينهم من بين أيديهم ومن خلفهم ... ... | ١٧ | ك الأعراف | ٧ |
| وَلْتَأْتِ | ولتأت طائفة أخرى لم يصلوا فليصلوا معك | ١٠٢ | م النسـاء | ٤ |
| تَأْتِنَا | وقالوا مهما تأتنا به من آية لتسحرنا بها... ... ... | ١٣٢ | ك الأعراف | ٧ |
| لَتَأْتُنَّنِي | قال لن أرسله معكم حتى تؤتون موثقا من الله لتأتننى | ٦٦ | ك يوسف | ١٢ |
| تَأْتِهِم | وإذا لم تأتهم بآية قالوا لولا اجتبيتها... ... ... | ٢٠٣ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | أو لم تأتهم بينة ما فى الصحف الأولى... ... ... | ١٣٣ | ك طه | ٢٠ |
| تَأْتُوا | وليس البر بأن تأتوا البيوت من ظهورها ... ... | ١٨٩ | م البقـرة | ٢ |
| تَأْتُونَ | أتأتون الفاحشة ما سبقكم بها من أحد من العالمين | ٨٠ | ك الأعراف | ٧ |
| (١٠) | إنكم لتأتون الرجال شهوة من دون النساء ... ... | ٨١ | ك « | ٧ |
| | هل هذا إلا بشر مثلكم أفتأتون السحر وأنتم تبصرون | ٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | أتأتون الذكران من العالمين ... ... ... ... ... | ١٦٥ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | ولوطا إذ قال لقومه أتأتون الفاحشة وأنتم تبصرون | ٥٤ | ك النمل | ٢٧ |
| | أئنكم لتأتون الرجال شهوة من دون النساء ... ... | ٥٥ | ك « | ٢٧ |
| | ولوطا إذ قال لقومه إنكم لتأتون الفاحشة ... ... | ٢٨ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | أئنكم لتأتون الرجال وتقطعون السبيل ... ... ... | ٢٩ | ك « | ٢٩ |
| | وتقطعون السبيل وتأتون فى ناديكم المنكر ... ... | ٢٩ | ك « | ٢٩ |
| | يوم ينفخ فى الصور فتأتون أفواجا ... ... ... ... | ١٨ | ك النبأ | ٧٨ |
| تَأْتُونَنَا | قالوا إنكم كنتم تأتوننا عن اليمين ... ... ... | ٢٨ | ك الصافات | ٣٧ |
| تَأْتُونِي | فإن لم تأتونى به فلا كيل لكم عندى ولا تقربون | ٦٠ | ك يوسف | ١٢ |
| تَأْتِي | يوم تأتى كل نفس تجادل عن نفسها ... ... ... | ١١١ | ك النحل | ١٦ |
| (٣) | أو تسقط السماء كما زعمت علينا كسفا أو تأتى بالله | ٩٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فارتقب يوم تأتى السماء بدخان مبين ... ... ... | ١٠ | ك الدخان | ٤٤ |
| تَأْتِيكُم | ثقلت فى السموات والأرض لا تأتيكم إلا بغتة | ١٨٧ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | | | | |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَأْتِيكُم | قالوا أو لم تك تأتيكم رسلكم بالبينات قالوا بلى | ٥٠ | ك غافر | ٤٠ |
| تَأْتِينَا | وقال الذين لا يعلمون لولا يكلمنا الله أو تأتينا آية | ١١٨ | م البقـرة | ٢ |
| (٤) | قالوا أوذينا من قبل أن تأتينا ومن بعد ما جئتنا | ١٢٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | لو ما تأتينا بالملائكة إن كنت من الصادقين | ٧ | ك الحجر | ١٥ |
| | وقال الذين كفروا لا تأتينا الساعة قل بلى وربى | ٣ | ك سبأ | ٣٤ |
| لَتَأْتِيَنَّكُم | قل بلى وربى لتأتينكم ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك « | ٣٤ |
| تَأْتِيهِم | وما تأتيهم من آية من آيات ربهم ... ... ... | ٤ | ك الأنعام | ٦ |
| (١٧) | أن تبتغى نفقا فى الأرض أو سلما فى السماء فتأتيهم بآية | ٣٥ | ك « | ٦ |
| | هل ينظرون إلا أن تأتيهم الملائكة أو يأتى ربك | ١٥٨ | ك « | ٦ |
| | إذ يعدون فى السبت إذ تأتيهم حيتانهم يوم سبتهم شرعا | ١٦٣ | م الأعراف | ٧ |
| | ويوم لا يسبتون لا تأتيهم كذلك نبلوهم ... ... | ١٦٣ | م « | ٧ |
| | أفأمنوا أن تأتيهم غاشية من عذاب الله ... ... | ١٠٧ | ك يوسف | ١٢ |
| | أو تأتيهم الساعة بغتة وهم لا يشعرون ... ... ... | ١٠٧ | ك « | ١٢ |
| | هل ينظرون إلا أن تأتيهم الملائكة ... ... ... | ٣٣ | ك النحل | ١٦ |
| | ويستغفروا ربهم إلا أن تأتيهم سنة الأولين... ... | ٥٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | بل تأتيهم بغتة فتبهتهم فلا يستطيعون ردها ... ... | ٤٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ولا يزال الذين كفروا فى مرية منه حتى تأتيهم الساعة | ٥٥ | الحج | ٢٢ |
| | وما تأتيهم من آية من آيات ربهم إلا كانوا عنها معرضين | ٤٦ | ك يس | ٣٦ |
| | ذلك بأنهم كانت تأتيهم رسلهم بالبينات... ... ... | ٢٢ | ك غافر | ٤٠ |
| | هل ينظرون إلا الساعة أن تأتيهم بغتة وهم لا يشعرون | ٦٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | فهل ينظرون إلا الساعة أن تأتيهم بغتة... ... ... | ١٨ | م محمد | ٤٧ |
| | ذلك بأنه كانت تأتيهم رسلهم بالبينات فقالوا... .. | ٦ | م التغابن | ٦٤ |
| | من أهل الكتاب والمشركين منفكين حتى تأتيهم البينة | ١ | م البينة | ٩٨ |
| نَأْتِ | ما ننسخ من آية أو ننسها نأت بخير منها أو مثلها | ١٠٦ | م البقـرة | ٢ |
| نَأْتِي | أو لم يروا أنا نأتى الأرض ننقصها من أطرافها | ٤١ | م الرعد | ١٣ |
| (٢) | أفلا يرون أنا نأتى الأرض ننقصها من أطرافها | ٤٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| نَأْتِيَكُم | وما كان لنا أن نأتيكم بسلطان إلا بإذن الله | ١١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| فَلَنَأْتِيَنَّكَ | فلنأتينك بسحر مثله فاجعل بيننا وبينك موعدا | ٥٨ | ك طه | ٢٠ |
| فَلَنَأْتِيَنَّهُم | فلنأتينهم بجنود لا قبل لهم بها ولنخرجنهم منها | ٣٧ | ك النمل | ٢٧ |
| يَأْتِ | أين ما تكونوا يأت بكم الله جميعا... ... ... ... | ١٤٨ | م البقـرة | ٢ |
| (١٤) | ومن يقلل يأت بما غل يوم القيامة ثم توفى كل نفس | ١٦١ | م آل عمران | ٣ |
| | إن يشأ يذهبكم أيها الناس ويأت بآخرين ... ... | ١٣٣ | م النساء | ٤ |
| | يوم يأت لا تكلم نفس إلا بإذنه فمنهم شقى وسعيد | ١٠٥ | ك هود | ١١ |
| | اذهبوا بقميصى هذا فألقوه على وجه أبى يأت بصيرا | ٩٣ | ك يوسف | ١٢ |
| | إن يشأ يذهبكم ويأت بخلق جديد ... ... ... ... | ١٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وهو كل على مولاه أينما يوجهه لا يأت بخير... ... | ٧٦ | ك النحل | ١٦ |
| | إنه من يأت ربه مجرما فإن له جهنم لا يموت فيها ولا يحيى | ٧٤ | ك طه | ٢٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يأتِ | أفلم يدبروا القول أم جاءهم مالم يأت آباءهم الأولين | ٦٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فتكن في صخرة أو في السموات أو في الأرض يأت بها الله | ١٦ | ك لقمان | ٣١ |
| | وإن يأت الأحزاب يودوا لو أنهم بادون في الأعراب | ٢٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | من يأت منكن بفاحشة مبينة يضاعف لها العذاب ضعفين | ٣٠ | م « | ٣٣ |
| | إن يشأ يذهبكم ويأت بخلق جديد ... ... ... ... | ١٦ | ك فاطر | ٣٥ |
| | أم لهم سلم يستمعون فيه فليأت مستمعهم بسلطان مبين | ٣٨ | ك الطور | ٥٢ |
| يأتك | يا أبت إني قد جاءني من العلم ما لم يأتك ... ... | ٤٣ | ك مريم | ١٩ |
| يأتكم | أم حسبتم أن تدخلوا الجنة ولما يأتكم مثل الذين | ٢١٤ | م البقرة | ٢ |
| (٧) | ألم يأتكم رسل منكم يقصون عليكم آياتي ... ... ... | ١٣٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | ألم يأتكم نبأ الذين من قبلكم قوم نوح وعاد وثمود | ٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | فليأتكم برزق منه وليتلطف ولا يشعرن بكم أحدا | ١٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | ألم يأتكم رسل منكم يتلون عليكم آيات ربكم ... ... | ٧١ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ألم يأتكم نبأ الذين كفروا من قبل ... ... ... | ٥ | م التغابن | ٦٤ |
| | كلما ألقي فيها فوج سألهم خزنتها ألم يأتكم نذير... ... | ٨ | ك الملك | ٦٧ |
| فليأتنا | بل هو شاعر فليأتنا بآية كما أرسل الأولون ... | ٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| يأته | ومن يأته مؤمنا قد عمل الصالحات فأولئك لهم الدرجات | ٧٥ | ك طه | ٢٠ |
| يأتهم | ويقولون سيغفر لنا وإن يأتهم عرض مثله يأخذوه | ١٦٩ | م الأعراف | ٧ |
| (٣) | ألم يأتهم نبأ الذين من قبلهم قوم نوح وعاد وثمود | ٧٠ | م التوبة | ٩ |
| | بل كذبوا بما لم يحيطوا بعلمه ولما يأتهم تأويله... ... | ٣٩ | ك يونس | ١٠ |
| يأتوا | ذلك أدنى أن يأتوا بالشهادة على وجهها ... ... | ١٠٨ | م المائدة | ٥ |
| (٧) | قل لئن اجتمعت الإنس والجن على أن يأتوا بمثل هذا | ٨٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| | والذين يرمون المحصنات ثم لم يأتوا بأربعة شهداء | ٤ | م النور | ٢٤ |
| | فإذ لم يأتوا بالشهداء فأولئك عند الله هم الكاذبون | ١٣ | م « | ٢٤ |
| | وإن يكن لهم الحق يأتوا إليه مذعنين ... ... ... | ٤٩ | م « | ٢٤ |
| | فليأتوا بحديث مثله إن كانوا صادقين ... ... ... | ٣٤ | ك الطور | ٥٢ |
| | أم لهم شركاء فليأتوا بشركائهم إن كانوا صادقين ... | ٤١ | ك القلم | ٦٨ |
| يأتوك | سماعون للكذب سماعون لقوم آخرين لم يأتوك | ٤١ | م المائدة | ٥ |
| (٤) | يأتوك بكل ساحر عليم ... ... ... ... ... ... | ١١٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | وأذن في الناس بالحج يأتوك رجالا وعلى كل ضامر | ٢٧ | م الحج | ٢٢ |
| | يأتوك بكل سحار عليم ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك الشعراء | ٢٦ |
| يأتوكم | وإن يأتوكم أسارى تفادوهم وهو محرم عليكم | ٨٥ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | بلى إن تصبروا وتتقوا ويأتوكم من فورهم هذا يمددكم | ١٢٥ | م آل عمران | ٣ |
| يأتون | ولا يأتون الصلاة إلا وهم كسالى... ... ... | ٥٤ | م التوبة | ٩ |
| (٤) | لا يأتون بمثله ولو كان بعضهم لبعض ظهيرا | ٨٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| | هؤلاء قومنا اتخذوا من دونه آلهة لولا يأتون عليهم بسلطان | ١٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | والقائلين لإخوانهم هلم إلينا ولا يأتون البأس إلا قليلا | ١٨ | م الأحزاب | ٣٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يأتونك | ولا يأتونك بمثل إلا جئناك بالحق وأحسن تفسيرا | ٣٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| يأتوننا | أسمع بهم وأبصر يوم يأتوننا... ... ... ... ... | ٣٨ | ك مريم | ١٩ |
| يأتوني | قال يا أيها الملأ أيكم يأتيني بعرشها قبل أن يأتوني | ٣٨ | ك النمل | ٢٧ |
| يأتي | فاعفوا واصفحوا حتى يأتي الله بأمره... ... ... | ١٠٩ | م البقرة | ٢ |
| (٢٢) | أنفقوا مما رزقناكم من قبل أن يأتي يوم لا بيع فيه | ٢٥٤ | م « | ٢ |
| | قال إبراهيم فإن الله يأتي بالشمس من المشرق... ... | ٢٥٨ | م « | ٢ |
| | فعسى الله أن يأتي بالفتح أو أمر من عنده ... ... | ٥٢ | م المائدة | ٥ |
| | فسوف يأتي الله بقوم يحبهم ويحبونه أذلة على المؤمنين | ٥٤ | م « | ٥ |
| | هل ينظرون إلا أن تأتيهم الملائكة أو يأتي ربك... ... | ١٥٨ | ك الأنعام | ٦ |
| | أو يأتي بعض آيات ربك... ... ... ... ... ... | ١٥٨ | ك « | ٦ |
| | يوم يأتي بعض آيات ربك لا ينفع نفسا إيمانها | ١٥٨ | ك « | ٦ |
| | يوم يأتي تأويله يقول الذين نسوه من قبل... ... | ٥٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | فتربصوا حتى يأتي الله بأمره والله لا يهدي القوم الفاسقين | ٢٤ | م التوبة | ٩ |
| | ثم يأتي من بعد ذلك سبع شداد يأكلن ما قدمتم لهن | ٤٨ | ك يوسف | ١٢ |
| | ثم يأتي من بعد ذلك عام فيه يغاث الناس وفيه يعصرون | ٤٩ | ك « | ١٢ |
| | أو تحل قريبا من دارهم حتى يأتي وعد الله... ... | ٣١ | م الرعد | ١٣ |
| | وما كان لرسول أن يأتي بآية إلا بإذن الله ... ... | ٣٨ | م « | ١٣ |
| | من قبل أن يأتي يوم لا بيع فيه ولا خلال... ... | ٣١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | هل ينظرون إلا أن تأتيهم الملائكة أو يأتي أمر ربك | ٣٣ | ك النحل | ١٦ |
| | فأقم وجهك للدين القيم من قبل أن يأتي يوم لا مرد له | ٤٣ | ك الروم | ٣٠ |
| | وما كان لرسول أن يأتي بآية إلا بإذن الله ... ... | ٧٨ | ك غافر | ٤٠ |
| | أفمن يلقى في النار خير أم من يأتي آمنا يوم القيامة | ٤٠ | ك فصلت | ٤١ |
| | استجيبوا لربكم من قبل أن يأتي يوم لا مرد له من الله | ٤٧ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ومبشرا برسول يأتي من بعدي اسمه أحمد ... ... | ٦ | م الصف | ٦١ |
| | وأنفقوا مما رزقناكم من قبل أن يأتي أحدكم الموت | ١٠ | م المنافقون | ٦٣ |
| يأتيانها | واللذان يأتيانها منكم فآذوهما ... ... ... ... | ١٦ | م النساء | ٤ |
| يأتيك | واعبد ربك حتى يأتيك اليقين ... ... ... | ٩٩ | ك الحجر | ١٥ |
| يأتيكم | وقال لهم نبيهم إن آية ملكه أن يأتيكم التابوت | ٢٤٨ | م البقرة | ٢ |
| (٨) | وختم على قلوبكم من إله غير الله يأتيكم به ... ... | ٤٦ | ك الأنعام | ٦ |
| | قال إنما يأتيكم به الله إن شاء وما أنتم بمعجزين | ٣٣ | ك هود | ١١ |
| | من إله غير الله يأتيكم بضياء أفلا تسمعون ... ... | ٧١ | ك القصص | ٢٨ |
| | من إله غير الله يأتيكم بليل تسكنون فيه أفلا تبصرون | ٧٢ | ك « | ٢٨ |
| | وأنيبوا إلى ربكم وأسلموا له من قبل أن يأتيكم العذاب | ٥٤ | م الزمر | ٣٩ |
| | واتبعوا أحسن ما أنزل إليكم من ربكم من قبل أن يأتيكم | ٥٥ | ك « | ٣٩ |
| | قل أرأيتم إن أصبح ماؤكم غورا فمن يأتيكم بماء معين | ٣٠ | ك الملك | ٦٧ |
| يأتيكما | قال لا يأتيكما طعام ترزقانه إلا نبأتكما بتأويله | ٣٧ | ك يوسف | ١٢ |
| يأتيكما | إلا نبأتكما بتأويله قبل أن يأتيكما ... ... ... | ٣٧ | ك « | ١٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَأْتِينَ : | واللاتى يأتين الفاحشة من نسائكم فاستشهدوا عليهن | ١٥ | م النساء | ٤ |
| (٥) | ولا تعضلوهن لتذهبوا ببعض ما آتيتموهن إلا أن يأتين | ١٩ | م « | ٤ |
| | يأتوك رجالا وعلى كل ضامر يأتين من كل فج عميق | ٢٧ | م الحج | ٢٢ |
| | ولا يأتين ببهتان يفترينه بين أيديهن وأرجلهن | ١٢ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | ولا يخرجن إلا أن يأتين بفاحشة مبينة ... ... | ١ | م الطلاق | ٦٥ |
| يَأْتِينَا : | إن الله عهد إلينا ألا نؤمن لرسول حتى يأتينا بقربان | ١٨٣ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | ونرثه ما يقول ويأتينا فردا ... ... ... ... ... | ٨٠ | ك مريم | ١٩ |
| | وقالوا لولا يأتينا بآية من ربه أو لم تأتهم بينة ... | ١٣٣ | ك طه | ٢٠ |
| يَأْتِينَكَ : | ثم اجعل على كل جبل منهن جزءا ثم ادعهن يأتينك | ٢٦٠ | م البقرة | ٢ |
| يَأْتِينَكُمْ : | فإما يأتينكم منى هدى فمن تبع هداى فلا خوف عليهم | ٣٨ | م « | ٢ |
| (٣) | يا بنى آدم إما يأتينكم رسل منكم يقصون عليكم آياتى | ٣٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | فإما يأتينكم منى هدى فمن اتبع هداى فلا يضل ولا يشقى | ١٢٣ | ك طه | ٢٠ |
| لَيَأْتِيَنَّهُمْ : | ولولا أجل مسمى لجاءهم العذاب وليأتينهم بغتة | ٥٣ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| لَيَأْتِيَنِّى : | أو لأذبحنه أو ليأتينى بسلطان مبين ... ... ... | ٢١ | ك النمل | ٢٧ |
| يَأْتِيَنِى : | عسى الله أن يأتينى بهم جميعا إنه هو العليم الحكيم | ٨٣ | ك يوسف | ١٢ |
| يَأْتِينِى : | قال يا أيها الملأ أيكم يأتينى بعرشها قبل أن يأتونى مسلمين | ٣٨ | ك النمل | ٢٧ |
| يَأْتِيهِ : | فسوف تعلمون من يأتيه عذاب يخزيه ويحل عليه عذاب | ٣٩ | ك هود | ١١ |
| (٥) | سوف تعلمون من يأتيه عذاب يخزيه ومن هو كاذب | ٩٣ | ك « | ١١ |
| | ويأتيه الموت من كل مكان وما هو بميت ... ... | ١٧ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | من يأتيه عذاب يخزيه ويحل عليه عذاب مقيم | ٤٠ | ك الزمر | ٣٩ |
| | لا يأتيه الباطل من بين يديه ولا من خلفه ... ... | ٤٢ | ك فصلت | ٤١ |
| يَأْتِيهَا : | قرية كانت آمنة مطمئنة يأتيها رزقها رغدا... ... | ١١٢ | ك النحل | ١٦ |
| يَأْتِيَهُمْ : | هل ينظرون إلا أن يأتيهم الله فى ظلل من الغمام | ٢١٠ | م البقرة | ٢ |
| (١٧) | فسوف يأتيهم أنباء ما كانوا به يستهزئون ... ... | ٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | أفأمن أهل القرى أن يأتيهم بأسنا بياتا وهم نائمون | ٩٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | أو أمن أهل القرى أن يأتيهم بأسنا ضحى وهم يلعبون | ٩٨ | ك « | ٧ |
| | ألا يوم يأتيهم ليس مصروفا عنهم وحاق بهم... ... | ٨ | ك هود | ١١ |
| | وأنذر الناس يوم يأتيهم العذاب فيقول الذين ظلموا | ٤٤ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وما يأتيهم من رسول إلا كانوا به يستهزئون | ١١ | ك الحجر | ١٥ |
| | أو يأتيهم العذاب من حيث لا يشعرون ... ... ... | ٤٥ | ك النحل | ١٦ |
| | إلا أن تأتيهم سنة الأولين أو يأتيهم العذاب قبلا | ٥٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | ما يأتيهم من ذكر من ربهم محدث إلا استمعوه | ٢ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | حتى تأتيهم الساعة بغتة أو يأتيهم عذاب يوم عقيم | ٥٥ | الحج | ٢٢ |
| | وما يأتيهم من ذكر من الرحمن محدث إلا كانوا عنه معرضين | ٥ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فقد كذبوا فسيأتيهم أنباء ما كانوا به يستهزئون | ٦ | ك « | ٢٦ |
| | فيأتيهم بغتة وهم لا يشعرون... ... ... ... ... | ٢٠٢ | ك « | ٢٦ |
| | ما يأتيهم من رسول إلا كانوا به يستهزئون ... ... | ٣٠ | ك يس | ٣٦ |
| يَأْتِيهِمْ : | وما يأتيهم من نبى إلا كانوا به يستهزئون... ... | ٧ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | أن أنذر قومك من قبل أن يأتيهم عذاب أليم | ١ | ك نوح | ٧١ |
| إِئْتِ : | فإن الله يأتى بالشمس من المشرق فأت بها من المغرب | ٢٥٨ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | قال إن كنت جئت بآية فأت بها إن كنت من الصادقين | ١٠٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | قال الذين لا يرجون لقاءنا ائت بقرآن غير هذا أو بدله | ١٥ | ك يونس | ١٠ |
| | وإذ نادى ربك موسى أن ائت القوم الظالمين | ١٠ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | قال فأت به إن كنت من الصادقين ... ... ... ... | ٣١ | ك « | ٢٦ |
| | ما أنت إلا بشر مثلنا فأت بآية إن كنت من الصادقين | ١٥٤ | ك « | ٢٦ |
| إِئْتِنَا : | حيران له أصحاب يدعونه إلى الهدى ائتنا... .... | ٧١ | ك الأنعام | ٦ |
| (٧) | فأتنا بما تعدنا إن كنت من الصادقين ... ... ... | ٧٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | وقالوا يا صالح ائتنا بما تعدنا إن كنت من المرسلين | ٧٧ | ك « | ٧ |
| | فأمطر علينا حجارة من السماء أو ائتنا بعذاب أليم... ... | ٣٢ | ك الأنفال | ٨ |
| | فأكثرت جدالنا فأتنا بما تعدنا إن كنت من الصادقين | ٣٢ | ك هود | ١١ |
| | فما كان جواب قومه إلا أن قالوا ائتنا بعذاب الله | ٢٩ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | لتأفكنا عن آلهتنا فأتنا بما تعدنا إن كنت من الصادقين | ٢٢ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| إِئْتُوا : | وإن كنتم فى ريب مما نزلنا على عبدنا فأتوا بسورة من مثله | ٢٣ | م البقرة | ٢ |
| (١٢) | ولكن البر من اتقى وأتوا البيوت من أبوابها... ... | ١٨٩ | م « | ٢ |
| | نساؤكم حرث لكم فأتوا حرثكم أنى شئتم ... ... ... | ٢٢٣ | م « | ٢ |
| | قل فأتوا بالتوراة فاتلوها إن كنتم صادقين ... ... | ٩٣ | م آل عمران | ٣ |
| | قل فأتوا بسورة مثله وادعوا من استطعتم من دون الله | ٣٨ | ك يونس | ١٠ |
| | قل فأتوا بعشر سور مثله مفتريات وادعوا من استطعتم | ١٣ | ك هود | ١١ |
| | فأجمعوا كيدكم ثم ائتوا صفا وقد أفلح اليوم من استعلى | ٦٤ | ك طه | ٢٠ |
| | قالوا فأتوا به على أعين الناس لعلهم يشهدون ... ... | ٦١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | قل فأتوا بكتاب من عند الله هو أهدى منهما أتبعه | ٤٩ | ك القصص | ٢٨ |
| | فأتوا بكتابكم إن كنتم صادقين ... ... ... ... ... | ١٥٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| | فأتوا بآبائنا إن كنتم صادقين ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك الدخان | ٤٤ |
| | ما كان حجتهم إلا أن قالوا ائتوا بآبائنا إن كنتم صادقين | ٢٥ | ك الجاثية | ٤٥ |
| إِئْتُونَا : | تريدون أن تصدونا عما كان يعبد آباؤنا فأتونا بسلطان | ١٠ | ك إبراهيم | ١٤ |
| إِئْتُونِى : | وقال فرعون ائتونى بكل ساحر عليم ... ... | ٧٩ | ك يونس | ١٠ |
| (٧) | وقال الملك ائتونى به فلما جاءه الرسول قال ارجع | ٥٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | وقال الملك ائتونى به أستخلصه لنفسى ... ... ... | ٥٤ | ك « | ١٢ |
| | ولما جهزهم بجهازهم قال ائتونى بأخ لكم من أبيكم | ٥٩ | ك « | ١٢ |
| | فألقوه على وجه أبى يأت بصيرا وأتونى بأهلكم أجمعين | ٩٣ | ك « | ١٢ |
| | ألا تعلوا علىّ وأتونى مسلمين ... ... ... ... ... | ٣١ | ك النمل | ٢٧ |
| | ائتونى بكتاب من قبل هذا أو أثارة من علم... ... | ٤ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| إِئْتُوهُنَّ : | فإذا تطهرن فأتوهن من حيث أمركم الله | ٢٢٢ | م البقرة | ٢ |
| إِئْتِيَا (٢) : | فأتيا فرعون فقولا إنا رسول رب العالمين ... ... | ١٦ | ك الشعراء | ٢٦ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| إِئْتِيَا | : فقال لها وللأرض ائتيا طوعا أو كرها ... ... ... | ك فصلت | ٤١ |
| إِئْتِيَاهُ | : فأتياه فقولا إنا رسولا ربك فأرسل معنا بني إسرائيل | ٤٧ ك طه | ٢٠ |
| أُتُوا | : قالوا هذا الذي رزقنا من قبل وأتوا به متشابها | ٢٥ م البقرة | ٢ |
| آتَى | : وآتى المال على حبه ذوي القربى واليتامى والمساكين | ١٧٧م « | ٢ |
| (٣) | وأقام الصلاة وآتى الزكاة والموفون بعهدهم إذا عاهدوا | ١٧٧م « | ٢ |
| | وأقام الصلاة وآتى الزكاة ولم يخش إلا الله ... ... | ١٨ م التوبة | ٩ |
| آتَاكَ | : وابتغ فيما آتاك الله الدار الآخرة ... ... ... ... | ٧٧ ك القصص | ٢٨ |
| آتَاكُمْ | : وجعلكم ملوكا وآتاكم ما لم يؤت أحدا من العالمين | ٢٠ م المائدة | ٥ |
| (٨) | ولو شاء الله لجعلكم أمة واحدة ولكن ليبلوكم في ما آتاكم | ٤٨ م « | ٥ |
| | ورفع بعضكم فوق بعض درجات ليبلوكم في ما آتاكم | ١٦٥ك الأنعام | ٦ |
| | وآتاكم من كل ما سألتموه وإن تعدوا نعمة الله لا تحصوها | ٣٤ ك إبراهيم | ١٤ |
| | وآتوهم من مال الله الذي آتاكم... ... ... ... ... | ٣٣ م النور | ٢٤ |
| | فما آتاني الله خير مما آتاكم بل أنتم بهديتكم تفرحون | ٣٦ ك النمل | ٢٧ |
| | لكيلا تأسوا على ما فاتكم ولا تفرحوا بما آتاكم ... | ٢٣ م الحديد | ٥٧ |
| | وما آتاكم الرسول فخذوه وما نهاكم عنه فانتهوا... ... | ٧ م الحشر | ٥٩ |
| آتَانَا | : ومنهم من عاهد الله لئن آتانا من فضله لنصدقن | ٧٥ م التوبة | ٩ |
| آتَانِي | : أرأيتم إن كنت على بينة من ربي وآتاني رحمة من عنده | ٢٨ ك هود | ١١ |
| (٤) | أرأيتم إن كنت على بينة من ربي وآتاني منه رحمة | ٦٣ ك « | ١١ |
| | قال إني عبد الله آتاني الكتاب وجعلني نبيا ... ... | ٣٠ ك مريم | ١٩ |
| | أتمدونن بمال فما آتاني الله خير مما آتاكم ... ... | ٣٦ ك النمل | ٢٧ |
| آتَاهُ | : وقتل داود جالوت وآتاه الله الملك والحكمة وعلمه | ٢٥١م البقرة | ٢ |
| (٣) | ألم تر إلى الذي حاج إبراهيم في ربه أن آتاه الله الملك | ٢٥٨م « | ٢ |
| | ومن قدر عليه رزقه فلينفق مما آتاه الله... ... ... | ٧ م الطلاق | ٦٥ |
| آتَاهَا | : لا يكلف الله نفسا إلا ما آتاها... ... .. ... | ٧ م « | ٦٥ |
| آتَاهُمْ | : فآتاهم الله ثواب الدنيا وحسن ثواب الآخرة | ١٤٨م آل عمران | ٣ |
| (١٠) | فرحين بما آتاهم الله من فضله ... ... ... ... | ١٧٠م « | ٣ |
| | ولا يحسبن الذين يبخلون بما آتاهم الله من فضله هو خيرا | ١٨٠م « | ٣ |
| | ويأمرون الناس بالبخل ويكتمون ما آتاهم الله من فضله | ٣٧ م النساء | ٤ |
| | أم يحسدون الناس على ما آتاهم الله من فضله | ٥٤ م « | ٤ |
| | ولو أنهم رضوا ما آتاهم الله ورسوله وقالوا حسبنا الله | ٥٩ م التوبة | ٩ |
| | فلما آتاهم من فضله بخلوا به وتولوا وهم معرضون | ٧٦ م « | ٩ |
| | والذين اهتدوا زادهم هدى وآتاهم تقواهم ... ... | ١٧ م محمد | ٤٧ |
| | آخذين ما آتاهم ربهم إنهم كانوا قبل ذلك محسنين | ١٦ ك الذاريات | ٥١ |
| | فاكهين بما آتاهم ربهم ووقاهم ربهم عذاب الجحيم | ١٨ ك الطور | ٥٢ |
| آتَاهُمَا | : فلما آتاهما صالحا ... .. ... ... ... ... | ١٩٠ك الأعراف | ٧ |
| | جعلا له شركاء فيما آتاهما ... ... ... .. ... ... | ١٩٠ك « | ٧ |
| آتَتْ | : كمثل جنة بربوة أصابها وابل فآتت أكلها ضعفين | ٢٦٥م البقرة | ٢ |
| (٣) | | | |
| آتَتْ | : وأعتدت لهن متكأ وآتت كل واحدة منهن سكينا | ٣١ ك يوسف | ١٢ |
| | كلتا الجنتين آتت أكلها ولم تظلم منه شيئا ... ... | ٣٣ ك الكهف | ١٨ |
| آتَوْا | : وأقاموا الصلاة وآتوا الزكاة لهم أجرهم عند ربهم | ٢٧٧م البقرة | ٢ |
| (٥) | فإن تابوا وأقاموا الصلاة وآتوا الزكاة فخلوا سبيلهم | ٥ م التوبة | ٩ |
| | فإن تابوا وأقاموا الصلاة وآتوا الزكاة فإخوانكم | ١١ م « | ٩ |
| | الذين إن مكناهم في الأرض أقاموا الصلاة وآتوا الزكاة | ٤١ م الحج | ٢٢ |
| | والذين يؤتون ما آتوا وقلوبهم وجلة ... ... ... | ٦٠ ك المؤمنون | ٢٣ |
| آتَوْهُ | : فلما آتوه موثقهم قال الله على ما نقول وكيل | ٦٦ ك يوسف | ١٢ |
| آتَوْهَا | : ولو دخلت عليهم من أقطارها ثم سئلوا الفتنة لآتوها | ١٤ م الأحزاب | ٣٣ |
| آتَيْتَ | : وقال موسى ربنا إنك آتيت فرعون وملأه زينة | ٨٨ ك يونس | ١٠ |
| (٢) | يا أيها النبي إنا أحللنا لك أزواجك اللاتي آتيت أجورهن | ٥٠ م الأحزاب | ٣٣ |
| آتَيْتُكَ | : فخذ ما آتيتك وكن من الشاكرين ... ... ... | ١٤٤ك الأعراف | ٧ |
| آتَيْتُكُمْ | : وإذ أخذ الله ميثاق النبيين لما آتيتكم من كتاب | ٨١ م آل عمران | ٣ |
| آتَيْتُمْ | : فلا جناح عليكم إذا سلمتم ما آتيتم بالمعروف... ... | ٢٣٣م البقرة | ٢ |
| (٥) | وإن أردتم استبدال زوج مكان زوج وآتيتم إحداهن | ٢٠ م النساء | ٤ |
| | لئن أقمتم الصلاة وآتيتم الزكاة وآمنتم برسلي ... ... | ١٢ م المائدة | ٥ |
| | وما آتيتم من ربا ليربو في أموال الناس فلا يربو عند الله | ٣٩ ك الروم | ٣٠ |
| | وما آتيتم من زكاة تريدون وجه الله فأولئك هم المضعفون | ٣٩ ك « | ٣٠ |
| آتَيْتُمُوهُنَّ | : ولا يحل لكم أن تأخذوا مما آتيتموهن شيئا | ٢٢٩م البقرة | ٢ |
| (٤) | ولا تعضلوهن لتذهبوا ببعض ما آتيتموهن ... ... | ١٩ م النساء | ٤ |
| | إذا آتيتموهن أجورهن محصنين غير مسافحين... ... | ٥ م المائدة | ٥ |
| | ولا جناح عليكم أن تنكحوهن إذا آتيتموهن أجورهن | ١٠ م الممتحنة | ٦٠ |
| آتَيْتَنَا | : فلما أثقلت دعوا الله ربهما لئن آتيتنا صالحا لنكونن | ١٨٩ك الأعراف | ٧ |
| آتَيْتَنِي | : رب قد آتيتني من الملك وعلمتني من تأويل الأحاديث | ١٠١ك يوسف | ١٢ |
| آتَيْتَهُنَّ | : ذلك أدنى أن تقر أعينهن ولا يحزن ويرضين بما آتيتهن | ٥١ م الأحزاب | ٣٣ |
| آتَيْنَا | : وإذ آتينا موسى الكتاب والفرقان لعلكم تهتدون | ٥٣ م البقرة | ٢ |
| (٢٨) | ولقد آتينا موسى الكتاب وقفينا من بعده بالرسل | ٨٧ م « | ٢ |
| | وآتينا عيسى بن مريم البينات وأيدناه بروح القدس | ٨٧ م « | ٢ |
| | وآتينا عيسى بن مريم البينات وأيدناه بروح القدس | ٢٥٣م « | ٢ |
| | فقد آتينا آل إبراهيم الكتاب والحكمة وآتيناهم ملكا | ٥٤ م النساء | ٤ |
| | فمنهم من آمن به ومنهم من صد عنه وكفى بجهنم سعيرا | ٥٥ م « | ٤ |
| | ضعفوا عن ذلك وآتينا موسى سلطانا مبينا ... ... | ١٥٣م « | ٤ |
| | ويونس وهرون وسليمان وآتينا داود زبورا... ... | ١٦٣م « | ٤ |
| | ثم آتينا موسى الكتاب تماما على الذي أحسن وتفصيلا | ١٥٤ك الأنعام | ٦ |
| | ولقد آتينا موسى الكتاب فاختلف فيه ... ... ... | ١١٠ك هود | ١١ |
| | وآتينا موسى الكتاب وجعلناه هدى لبني إسرائيل | ٢ ك الإسراء | ١٧ |
| | ولقد فضلنا بعض النبيين على بعض وآتينا داود زبورا | ٥٥ ك « | ١٧ |
| | وآتينا ثمود الناقة مبصرة فظلموا بها ... ... ... | ٥٩ ك « | ١٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| آتَيْنَا | : ولقد آتينا موسى تسع آيات بينات فاسأل بنى إسرائيل | ١٠١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ولقد آتينا موسى وهرون الفرقان وضياء وذكرا للتقين | ٤٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ولقد آتينا إبراهيم رشده من قبل وكنا به عالمين... ... | ٥١ | ك « | ٢١ |
| | ففهمناها سليمان وكلا آتينا حكما وعلما ... ... ... | ٧٩ | ك « | ٢١ |
| | ولقد آتينا موسى الكتاب لعلهم يهتدون... ... ... | ٤٩ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ولقد آتينا موسى الكتاب وجعلنا معه أخاه هرون وزيرا | ٣٥ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ولقد آتينا داود وسليمان علما وقالا الحمد لله... ... | ١٥ | ك النمل | ٢٧ |
| | ولقد آتينا موسى الكتاب من بعد ما أهلكنا القرون الأولى | ٤٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | ولقد آتينا لقمان الحكمة أن اشكر لله ... ... ... | ١٢ | ك لقمان | ٣١ |
| | ولو شئنا لآتينا كل نفس هداها ... ... ... ... | ١٣ | ك السجدة | ٣٢ |
| | ولقد آتينا موسى الكتاب فلا تكن فى مرية من لقائه | ٢٣ | ك « | ٣٢ |
| | ولقد آتينا داود منا فضلا يا جبال أوبى معه والطير | ١٠ | ك سبأ | ٣٤ |
| | ولقد آتينا موسى الهدى وأورثنا بنى إسرائيل الكتاب | ٥٣ | ك غافر | ٤٠ |
| | ولقد آتينا موسى الكتاب فاختلف فيه ... ... ... | ٤٥ | ك فصلت | ٤١ |
| | ولقد آتينا بنى إسرائيل الكتاب والحكم والنبوة | ١٦ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | فآتينا الذين آمنوا منهم أجرهم وكثير منهم فاسقون | ٢٧ | م الحديد | ٥٧ |
| آتَيْنَاكَ | : ولقد آتيناك سبعا من المثانى والقرآن العظيم | ٨٧ | م الحجر | ١٥ |
| (٢) | كذلك نقص عليك من أنباء ما قد سبق وقد آتيناك من لدنا | ٩٩ | ك طه | ٢٠ |
| آتَيْنَاكُمْ | : خذوا ما آتيناكم بقوة واذكروا ما فيه لعلكم تتقون | ٦٣ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | خذوا ما آتيناكم بقوة واسمعوا قالوا سمعنا وعصينا | ٩٣ | م « | ٢ |
| | خذوا ما آتيناكم بقوة واذكروا ما فيه لعلكم تتقون | ١٧١ | ك الأعراف | ٧ |
| آتَيْنَاهُ | : وآتيناه الإنجيل فيه هدى ونور ومصدقا لما بين يديه | ٤٦ | م المائدة | ٥ |
| (١٤) | واتل عليهم نبأ الذى آتيناه آياتنا فانسلخ منها | ١٧٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولما بلغ أشده آتيناه حكما وعلما وكذلك نجزى المحسنين | ٢٢ | ك يوسف | ١٢ |
| | وآتيناه فى الدنيا حسنة وإنه فى الآخرة لمن الصالحين | ١٢٢ | ك النحل | ١٦ |
| | فوجدا عبدا من عبادنا آتيناه رحمة من عندنا... ... | ٦٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | إنا مكنا له فى الأرض وآتيناه من كل شىء سببا | ٨٤ | م « | ١٨ |
| | يا يحيى خذ الكتاب بقوة وآتيناه الحكم صبيا... ... | ١٢ | ك مريم | ١٩ |
| | ولوطا آتيناه حكما وعلما ونجيناه من القرية... ... | ٧٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | فاستجبنا له فكشفنا ما به من ضر وآتيناه أهله | ٨٤ | ك « | ٢١ |
| | ولما بلغ أشده واستوى آتيناه حكما وعلما ... ... | ١٤ | ك القصص | ٢٨ |
| | وآتيناه من الكنوز ما إن مفاتحه لتنوء بالعصبة | ٧٦ | ك « | ٢٨ |
| | وجعلنا فى ذريته النبوة والكتاب وآتيناه أجره فى الدنيا | ٢٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وشددنا ملكه وآتيناه الحكمة وفصل الخطاب... ... | ٢٠ | ك ص | ٣٨ |
| | وآتيناه الإنجيل وجعلنا فى قلوب الذين اتبعوه رأفة ورحمة | ٢٧ | م الحديد | ٥٧ |
| آتَيْنَاهَا | : وتلك حجتنا آتيناها إبراهيم على قومه... ... ... | ٨٣ | ك الأنعام | ٦ |
| آتَيْنَاهُمُ | : الذين آتيناهم الكتاب يتلونه حق تلاوته... ... | ١٢١ | م البقرة | ٢ |
| (٢١) | الذين آتيناهم الكتاب يعرفونه كما يعرفون أبناءهم | ١٤٦ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| آتَيْنَاهُمْ | : سل بنى إسرائيل كم آتيناهم من آية بينة... ... | ٢١١ | م البقرة | ٢ |
| | فقد آتينا آل إبراهيم الكتاب والحكمة وآتيناهم ملكا عظيما | ٥٤ | م النساء | ٤ |
| | وإذا لآتيناهم من لدنا أجرا عظيما ... ... ... ... | ٦٧ | م « | ٤ |
| | الذين آتيناهم الكتاب يعرفونه كما يعرفون أبناءهم | ٢ | م الأنعام | ٦ |
| | أولئك الذين آتيناهم الكتاب والحكم والنبوة... ... | ٨٩ | ك « | ٦ |
| | والذين آتيناهم الكتاب يعلمون أنه منزل من ربك بالحق | ١١٤ | م « | ٦ |
| | والذين آتيناهم الكتاب يفرحون بما أنزل إليك | ٣٦ | م الرعد | ١٣ |
| | وآتيناهم آياتنا فكانوا عنها معرضين... ... ... ... | ٨١ | ك الحجر | ١٥ |
| | ليكفروا بما آتيناهم فتمتعوا فسوف تعلمون ... ... | ٥٥ | ك النحل | ١٦ |
| | الذين آتيناهم الكتاب من قبله هم به يؤمنون... ... | ٥٢ | م القصص | ٢٨ |
| | فالذين آتيناهم الكتاب يؤمنون به ومن هؤلاء من يؤمن به | ٤٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ليكفروا بما آتيناهم وليتمتعوا فسوف يعلمون... ... | ٦٦ | ك « | ٢٩ |
| | ليكفروا بما آتيناهم فتمتعوا فسوف تعلمون ... ... | ٣٤ | ك الروم | ٣٠ |
| | وما آتيناهم من كتب يدرسونها وما أرسلنا إليهم قبلك | ٤٤ | ك سبأ | ٣٤ |
| | وكذب الذين من قبلهم وما بلغوا معشار ما آتيناهم | ٤٥ | ك « | ٣٤ |
| | أم لهم شرك فى السموات أم آتيناهم كتابا فهم على بينة منه | ٤٠ | ك فاطر | ٣٥ |
| | أم آتيناهم كتابا من قبله فهم به مستمسكون ... ... | ٢١ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وآتيناهم من الآيات ما فيه بلاء مبين... ... ... | ٣٣ | ك الدخان | ٤٤ |
| | وآتيناهم بينات من الأمر فما اختلفوا إلا من بعد | ١٧ | ك الجاثية | ٤٥ |
| آتَيْنَاهُمَا | : وآتيناهما الكتاب المستبين ... ... ... ... | ١١٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| تُؤْتُوا | : ولا تؤتوا السفهاء أموالكم التى جعل الله لكم قياما | ٥ | م النساء | ٤ |
| تُؤْتُونَ | : قال لن أرسله معكم حتى تؤتون موثقا من الله | ٦٦ | ك يوسف | ١٢ |
| تُؤْتُونَهُنَّ | : فى يتامى النساء اللاتى لا تؤتونهن ما كتب لهن | ١٢٧ | م النساء | ٤ |
| تُؤْتُوهَا | : وإن تخفوها وتؤتوها الفقراء فهو خير لكم | ٢٧١ | م البقرة | ٢ |
| تُؤْتِى | : قل اللهم مالك الملك تؤتى الملك من تشاء وتنزع الملك | ٢٦ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | تؤتى أكلها كل حين بإذن ربها ويضرب الله الأمثال | ٢٥ | ك إبراهيم | ١٤ |
| نُؤْتِهِ | : ومن يرد ثواب الدنيا نؤته منها... ... ... ... | ١٤٥ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | ومن يرد ثواب الآخرة نؤته منها وسنجزى الشاكرين | ١٤٥ | م « | ٣ |
| | ومن كان يريد حرث الدنيا نؤته منها... ... ... ... | ٢٠ | ك الشورى | ٤٢ |
| نُؤْتِهَا | : ومن يقنت منكن لله ورسوله وتعمل صالحا نؤتها أجرها | ٣١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| نُؤْتِيهِ | : ومن يقاتل فى سبيل الله فيقتل أو يغلب فسوف نؤتيه | ٧٤ | م النساء | ٤ |
| (٢) | ومن يفعل ذلك ابتغاء مرضاة الله فسوف نؤتيه أجرا | ١١٤ | م « | ٤ |
| سَنُؤْتِيهِمْ | : والمؤمنون بالله واليوم الآخر أولئك سنؤتيهم أجرا | ١٦٢ | م « | ٤ |
| نُؤْتِ | : وإن تك حسنة يضاعفها ويؤت من لدنه أجرا عظيما | ٤٠ | م « | ٤ |
| (١) | وسوف يؤت الله المؤمنين أجرا عظيما ... ... ... | ١٤٦ | م النساء | ٤ |
| | ويجعلكم ملوكا وآتاكم ما لم يؤت أحدا من العالمين | ٢٠ | م المائدة | ٥ |
| | يمتعكم متاعا حسنا إلى أجل مسمى ويؤت كل ذى فضل | ٣ | ك هود | ١١ |
| يُؤْتِكُمْ | : إن يعلم الله فى قلوبكم خيرا يؤتكم خيرا مما أخذ منكم | ٧٠ | م الأنفال | ٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يُؤْتِكُمْ: | وإن تؤمنوا وتتقوا يؤتكم أجوركم ولا يسألكم أموالكم | ٣٦ | م محمد | ٤٧ |
| (٤) | فإن تطيعوا يؤتكم الله أجرا حسنا ... ... ... | ١٦ | م الفتح | ٤٨ |
| | اتقوا الله وآمنوا برسوله يؤتكم كفلين من رحمته | ٢٨ | م الحديد | ٥٧ |
| يُؤْتُوا: | ولا يأتل أولوا الفضل منكم والسعة أن يؤتوا أولى القربى | ٢٢ | م النور | ٢٤ |
| (٢) | حنفاء ويقيموا الصلاة ويؤتوا الزكاة وذلك دين القيمة | ٥ | م البينة | ٩٨ |
| يُؤْتُونَ: | أم لهم نصيب من الملك فإذا لا يؤتون الناس نقيرا | ٥٣ | م النساء | ٤ |
| (٨) | الذين يقيمون الصلاة ويؤتون الزكاة وهم راكعون | ٥٥ | م المائدة | ٥ |
| | فسأكتبها للذين يتقون ويؤتون الزكاة ... ... ... | ١٥٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | ويقيمون الصلاة ويؤتون الزكاة ويطيعون الله ورسوله | ٧١ | م التوبة | ٩ |
| | والذين يؤتون ما آتوا وقلوبهم وجلة ... ... ... | ٦٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | الذين يقيمون الصلاة ويؤتون الزكاة ... ... ... | ٣ | ك النمل | ٢٧ |
| | الذين يقيمون الصلاة ويؤتون الزكاة ... ... ... | ٤ | ك لقمان | ٣١ |
| | الذين لا يؤتون الزكاة وهم بالآخرة هم كافرون | ٧ | ك فصلت | ٤١ |
| يُؤْتِي: | والله يؤتي ملكه من يشاء والله واسع عليم... ... | ٢٤٧ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | يؤتي الحكمة من يشاء ... ... ... ... ... ... | ٢٦٩ | م « | ٢ |
| | الذي يؤتي ماله يتزكى ... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك الليل | ٩٢ |
| يُؤْتِيَن: | فعسى ربي أن يؤتين خيرا من جنتك ... ... ... | ٤٠ | ك الكهف | ١٨ |
| سَيُؤْتِينَا: | سيؤتينا الله من فضله ورسوله إنا إلى الله راغبون | ٥٩ | م التوبة | ٩ |
| يُؤْتِيه: | قل إن الفضل بيد الله يؤتيه من يشاء ... ... ... | ٧٣ | م آل عمران | ٣ |
| (٧) | ما كان لبشر أن يؤتيه الله الكتاب والحكم والنبوة | ٧٩ | م « | ٣ |
| | ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء والله واسع عليم | ٥٤ | م المائدة | ٥ |
| | ومن أوفى بما عاهد عليه الله فسيؤتيه أجرا عظيما | ١٠ | م الفتح | ٤٨ |
| | ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء والله ذو الفضل العظيم | ٢١ | م الحديد | ٥٧ |
| | وأن الفضل بيد الله يؤتيه من يشاء والله ذو الفضل العظيم | ٢٩ | م « | ٥٧ |
| | ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء والله ذو الفضل العظيم | ٤ | م الجمعة | ٦٢ |
| يُؤْتِيهِم: | أولئك سوف يؤتيهم أجورهم وكان الله غفورا رحيما | ١٥٢ | م النساء | ٤ |
| (٢) | ولا أقول للذين تزدري أعينكم لن يؤتيهم الله خيرا | ٣١ | ك هود | ١١ |
| آتِ: | وآت ذا القربى حقه والمسكين وابن السبيل... ... | ٢٦ | م الإسراء | ١٧ |
| (٢) | فآت ذا القربى حقه والمسكين وابن السبيل ... ... | ٣٨ | ك الروم | ٣٠ |
| آتِنا: | فمن الناس من يقول ربنا آتنا في الدنيا وماله | ٢٠٠ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | ومنهم من يقول ربنا آتنا في الدنيا حسنة وفي الآخرة حسنة | ٢٠١ | م « | ٢ |
| | ربنا وآتنا ما وعدتنا على رسلك ولا تخزنا يوم القيامة | ١٩٤ | م آل عمران | ٣ |
| | ربنا آتنا من لدنك رحمة وهيئ لنا من أمرنا رشدا | ١٠ | ك الكهف | ١٨ |
| | آتنا غداءنا لقد لقينا من سفرنا هذا نصبا ... ... | ٦٢ | ك « | ١٨ |
| آتِهِم: | ربنا هؤلاء أضلونا فآتهم عذابا ضعفا من النار... ... | ٣٨ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | ربنا آتهم ضعفين من العذاب والعنهم لعنا كبيرا | ٦٨ | م الأحزاب | ٣٣ |
| آتُوا: | وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة واركعوا مع الراكعين | ٤٣ | م البقرة | ٢ |
| (١٢) | | | | |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| آتُوا: | وقولوا للناس حسنا وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة | ٨٣ | م البقرة | ٢ |
| | وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة وما تقدموا لأنفسكم | ١١٠ | م « | ٢ |
| | وآتوا اليتامى أموالهم ولا تتبدلوا الخبيث بالطيب | ٢ | م النساء | ٤ |
| | وآتوا النساء صدقاتهن نحلة ... ... ... ... ... | ٤ | م « | ٤ |
| | كفوا أيديكم وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة... ... | ٧٧ | م « | ٤ |
| | كلوا من ثمره إذا أثمر وآتوا حقه يوم حصاده | ١٤١ | م الأنعام | ٦ |
| | فأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة واعتصموا بالله... ... | ٧٨ | م الحج | ٢٢ |
| | وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة وأطيعوا الرسول | ٥٦ | م النور | ٢٤ |
| | فأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة وأطيعوا الله ورسوله | ١٣ | م المجادلة | ٥٨ |
| | فآتوا الذين ذهبت أزواجهم مثل ما أنفقوا... ... | ١١ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة وأقرضوا الله قرضا حسنا | ٢٠ | م المزمل | ٧٣ |
| آتُونِي: | آتوني زبر الحديد حتى إذا ساوى بين الصدفين | ٩٦ | م الكهف | ١٨ |
| (٢) | حتى إذا جعله نارا قال آتوني أفرغ عليه قطرا... ... | ٩٦ | م « | ١٨ |
| آتُوهُمْ: | والذين عقدت أيمانكم فآتوهم نصيبهم... ... ... | ٣٣ | م النساء | ٤ |
| (٣) | وآتوهم من مال الله الذي آتاكم ... ... ... ... | ٣٣ | م النور | ٢٤ |
| | لا هن حل لهم ولا هم يحلون لهن وآتوهم ما أنفقوا | ١٠ | م الممتحنة | ٦٠ |
| آتُوهُنَّ: | فما استمتعتم به منهن فآتوهن أجورهن فريضة | ٢٤ | م النساء | ٤ |
| (٣) | فانكحوهن بإذن أهلهن وآتوهن أجورهن بالمعروف | ٢٥ | م « | ٤ |
| | فإن أرضعن لكم فآتوهن أجورهن... ... ... ... | ٦ | م الطلاق | ٦٥ |
| آتِينَ: | وأقمن الصلاة وآتين الزكاة وأطعن الله ورسوله | ٣٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| أُوتُوا: | نبذ فريق من الذين أوتوا الكتاب كتاب الله | ١٠١ | م البقرة | ٢ |
| (٣٢) | وإن الذين أوتوا الكتاب ليعلمون أنه الحق من ربهم | ١٤٤ | م « | ٢ |
| | ولئن أتيت الذين أوتوا الكتاب بكل آية ما تبعوا قبلتك | ١٤٥ | م « | ٢ |
| | وما اختلف الذين أوتوا الكتاب إلا من بعد ما جاءهم | ١٩ | م آل عمران | ٣ |
| | وقل للذين أوتوا الكتاب والأميين ءأسلمتم ... ... | ٢٠ | م « | ٣ |
| | ألم تر إلى الذين أوتوا نصيبا من الكتاب ... ... | ٢٣ | م « | ٣ |
| | إن تطيعوا فريقا من الذين أوتوا الكتاب يردوكم | ١٠٠ | م « | ٣ |
| | ولتسمعن من الذين أوتوا الكتاب من قبلكم... ... | ١٨٦ | م « | ٣ |
| | وإذ أخذ الله ميثاق الذين أوتوا الكتاب لتبيننه للناس | ١٨٧ | م « | ٣ |
| | ألم تر إلى الذين أوتوا نصيبا من الكتاب يشترون الضلالة | ٤٤ | م النساء | ٤ |
| | يأيها الذين أوتوا الكتاب آمنوا بما نزلنا ... ... | ٤٧ | م « | ٤ |
| | ألم تر إلى الذين أوتوا نصيبا من الكتاب يؤمنون بالجبت | ٥١ | م « | ٤ |
| | ولقد وصينا الذين أوتوا الكتاب من قبلكم وإياكم | ١٣١ | م « | ٤ |
| | وطعام الذين أوتوا الكتاب حل لكم ... ... ... | ٥ | م المائدة | ٥ |
| | والمحصنات من الذين أوتوا الكتاب من قبلكم | ٥ | م « | ٥ |
| | من الذين أوتوا الكتاب من قبلكم والكفار أولياء | ٥٧ | م « | ٥ |
| | حتى إذا فرحوا بما أوتوا أخذناهم بغتة فإذا هم مبلسون | ٤٤ | ك الأنعام | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أُوتُوا | : ولا يدينون دين الحق من الذين أوتوا الكتاب | ٢٩ | م التوبة | ٩ |
| | قال الذين أوتوا العلم إن الخزى اليوم والسوء على الكافرين | ٢٧ | ك النحل | ١٦ |
| | إن الذين أوتوا العلم من قبله إذا يتلى عليهم يخرون للأذقان | ١٠٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وليعلم الذين أوتوا العلم أنه الحق من ربك ... ... | ٥٤ | الحج | ٢٢ |
| | وقال الذين أوتوا العلم ويلكم ثواب الله خير لمن آمن | ٨٠ | ك القصص | ٢٨ |
| | بل هو آيات بينات فى صدور الذين أوتوا العلم | ٤٩ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وقال الذين أوتوا العلم والإيمان لقد لبثتم فى كتاب الله | ٥٦ | ك الروم | ٣٠ |
| | ويرى الذين أوتوا العلم الذى أنزل اليك من ربك هو الحق | ٦ | م سبأ | ٣٤ |
| | حتى إذا خرجوا من عندك قالوا للذين أوتوا العلم ماذا قال | ١٦ | م محمد | ٤٧ |
| | ولا يكونوا كالذين أوتوا الكتاب من قبل فطال عليهم الأمد | ١٦ | م الحديد | ٥٧ |
| | يرفع الله الذين آمنوا منكم والذين أوتوا العلم درجات | ١١ | م المجادلة | ٥٨ |
| | ولا يجدون فى صدورهم حاجة مما أوتوا... ... ... | ٩ | م الحشر | ٥٩ |
| | ليستيقن الذين أوتوا الكتاب ويزداد الذين آمنوا إيمانا | ٣١ | ك المدثر | ٧٤ |
| | ولا يرتاب الذين أوتوا الكتاب والمؤمنون ... ... | ٣١ | ك « | ٧٤ |
| | وما تفرق الذين أوتوا الكتاب إلا من بعد ما جاءتهم البينة | ٤ | م البينة | ٩٨ |
| أُوتُوهُ | : وما اختلف فيه إلا الذين أوتوه ... ... ... ... | ٢١٣ | م البقرة | ٢ |
| أُوتِيَ | : ويعقوب والأسباط وما أوتى موسى وعيسى... ... | ١٣٦ | م « | ٢ |
| (١٤) | وما أوتى النبيون من ربهم لا نفرق بين أحد منهم | ١٣٦ | م « | ٢ |
| | ومن يؤت الحكمة فقد أوتى خيرا كثيرا... ... ... | ٢٦٩ | م « | ٢ |
| | وما أوتى موسى وعيسى والنبيون من ربهم ... ... | ٨٤ | م آل عمران | ٣ |
| | قالوا لن نؤمن حتى نؤتى مثل ما أوتى رسل الله | ١٢٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | فمن أوتى كتابه بيمينه فأولئك يقرءون كتابهم ... ... | ٧١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فلما جاءهم الحق من عندنا قالوا لولا أوتى ... ... | ٤٨ | ك القصص | ٢٨ |
| | مثل ما أوتى موسى ... ... ... ... ... ... | ٤٨ | ك « | ٢٨ |
| | أو لم يكفروا بما أوتى موسى من قبل ... ... ... | ٤٨ | ك « | ٢٨ |
| | يا ليت لنا مثل ما أوتى قارون إنه لذو حظ عظيم | ٧٩ | ك « | ٢٨ |
| | فأما من أوتى كتابه بيمينه فيقول هاؤم اقرءوا كتابيه | ١٩ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | وأما من أوتى كتابه بشماله فيقول يا ليتنى لم أوت كتابيه | ٢٥ | ك « | ٦٩ |
| | فأما من أوتى كتابه بيمينه ... ... ... ... ... | ٧ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| | وأما من أوتى كتابه وراء ظهره ... ... ... ... | ١٠ | ك « | ٨٤ |
| أُوتِيتَ | : قال قد أوتيت سؤلك يا موسى... ... ... ... | ٣٦ | ك طه | ٢٠ |
| أُوتِيَتْ | : إنى وجدت امرأة تملكهم وأوتيت من كل شىء | ٢٣ | ك النمل | ٢٧ |
| أُوتِيتُمْ | : قل إن الهدى هدى الله أن يؤتى أحد مثل ما أوتيتم | ٧٣ | م آل عمران | ٣ |
| (٥) | يقولون إن أوتيتم هذا فخذوه وإن لم تؤتوه فاحذروا | ٤١ | م المائدة | ٥ |
| | قل الروح من أمر ربى وما أوتيتم من العلم إلا قليلا | ٨٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وما أوتيتم من شىء فمتاع الحياة الدنيا وزينتها... ... | ٦٠ | ك القصص | ٢٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أُوتِيتُمْ | : فما أوتيتم من شىء فمتاع الحياة الدنيا وما عند الله خير | ٣٦ | ك الشورى | ٤٢ |
| أُوتِيتُهُ | : قال إنما أوتيته على علم عندى ... ... ... ... | ٧٨ | ك القصص | ٢٨ |
| (٢) | ثم إذا خولناه نعمة منا قال إنما أوتيته على علم | ٤٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| أُوتِينَا | : وقال يا أيها الناس علمنا منطق الطير وأوتينا من كل شىء | ١٦ | ك النمل | ٢٧ |
| (٢) | وأوتينا العلم من قبلها وكنا مسلمين ... ... ... ... | ٤٢ | ك « | ٢٧ |
| أُوتَ | : وأما من أوتى كتابه بشماله فيقول يا ليتنى لم أوت كتابيه | ٢٥ | ك الحاقة | ٦٩ |
| لَأُوتَيَنَّ | : أفرأيت الذى كفر بآياتنا وقال لأوتين مالا | ٧٧ | ك مريم | ١٩ |
| تُؤْتَوْهُ | : إن أوتيتم هذا فخذوه وإن لم تؤتوه فاحذروا | ٤١ | م المائدة | ٥ |
| نُؤْتَى | : قالوا لن نؤمن حتى نؤتى مثل ما أوتى رسل الله | ١٢٤ | ك الأنعام | ٦ |
| يُؤْتَ | : ونحن أحق بالملك منه ولم يؤت سعة من المال | ٢٤٧ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | ومن يؤت الحكمة فقد أوتى خيرا كثيرا ... ... | ٢٦٩ | م « | ٢ |
| يُؤْتَى | : إن الهدى هدى الله أن يؤتى أحد مثل ما أوتيتم | ٧٣ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | بل يريد كل امرئ منهم أن يؤتى صحفا منشرة | ٥٢ | ك المدثر | ٧٤ |
| يُؤْتَوْنَ | : أولئك يؤتون أجرهم مرتين بما صبروا ... ... | ٥٤ | م القصص | ٢٨ |
| آتٍ | : إن ما توعدون لآت وما أنتم بمعجزين ... ... ... | ١٣٤ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | من كان يرجو لقاء الله فإن أجل الله لآت... ... | ٥ | م العنكبوت | ٢٩ |
| آتِي | : إن كل من فى السموات والأرض إلا آتى الرحمن | ٩٣ | ك مريم | ١٩ |
| آتِيَةٌ | : وإن الساعة لآتية فاصفح الصفح الجميل ... ... | ٨٥ | ك الحجر | ١٥ |
| (٤) | إن الساعة آتية أكاد أخفيها لتجزى كل نفس بما تسعى | ١٥ | ك طه | ٢٠ |
| | وأن الساعة آتية لا ريب فيها وأن الله يبعث من فى القبور | ٧ | م الحج | ٢٢ |
| | إن الساعة لآتية لا ريب فيها ولكن أكثر الناس لا يؤمنون | ٥٩ | ك غافر | ٤٠ |
| آتِيكُمْ | : وأن لا تعلوا على الله إنى آتيكم بسلطان مبين | ١٩ | ك الدخان | ٤٤ |
| آتِيهِ | : وكلهم آتيه يوم القيامة فردا ... ... ... ... | ٩٥ | ك مريم | ١٩ |
| آتِيهِمْ | : قد جاء أمر ربك وإنهم آتيهم عذاب غير مردود | ٧٦ | ك هود | ١١ |
| إِيتَاءِ | : إن الله يأمر بالعدل والإحسان وإيتاء ذى القربى | ٩٠ | ك النحل | ١٦ |
| (٣) | وأوحينا إليهم فعل الخيرات وإقام الصلاة وإيتاء الزكاة | ٧٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ولا بيع عن ذكر الله وإقام الصلاة وإيتاء الزكاة | ٣٧ | م النور | ٢٤ |
| مَأْتِيًّا | : وعد الرحمن عباده بالغيب إنه كان وعده مأتيا | ٦١ | ك مريم | ١٩ |
| الْمُؤْتُونَ | : والمقيمين الصلاة والمؤتون الزكاة والمؤمنون | ١٦٢ | م النساء | ٤ |
| أَثَاثًا | : ومن أصوافها وأوبارها وأشعارها أثاثا ومتاعا | ٨٠ | ك النحل | ١٦ |
| (٢) | وكم أهلكنا قبلهم من قرن هم أحسن أثاثا ورئيا | ٧٤ | ك مريم | ١٩ |
| يُؤْثَرُ | : فقال إن هذا إلا سحر يؤثر ... ... ... ... | ٢٤ | ك المدثر | ٧٤ |
| آثَرَ | : وآثر الحياة الدنيا ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك النازعات | ٧٩ |
| آثَرَكَ | : قالوا تالله لقد آثرك الله علينا وإن كنا لخاطئين | ٩١ | ك يوسف | ١٢ |
| تُؤْثِرُونَ | : بل تؤثرون الحياة الدنيا ... ... ... ... | ١٦ | ك الأعلى | ٨٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| نُؤْثِرَكَ | : قالوا لن نؤثرك على ماجاءنا من البينات والذى فطرنا | ٧٢ | ك طـه | ٢٠ |
| يُؤْثِرُونَ | : ويؤثرون على أنفسهم ولو كان بهم خصاصة | ٩ | م الحشـر | ٥٩ |
| أَثَرِ | : فقبضت قبضة من أثر الرسول فنبذتها ... ... ... | ٩٦ | ك طـه | ٢٠ |
| (٢) | سيماهم فى وجوههم من أثر السجود ... ... ... ... | ٢٩ | م الفتـح | ٤٨ |
| أَثَرِى | : قال هم أولاء على أثرى وعجلت إليك رب لترضى | ٨٤ | ك طـه | ٢٠ |
| آثَارِ | : فانظر إلى آثار رحمة الله كيف يحى الأرض بعد موتها | ٥٠ | ك الروم | ٣٠ |
| آثَارًا | : كانوا هم أشد منهم قوة وآثارا فى الأرض فأخذهم | ٢١ | ك غافـر | ٤٠ |
| (٢) | كانوا أكثر منهم وأشـد قوة وآثارا فى الأرض | ٨٢ | ك « | ٤٠ |
| آثَارِهِم | : وقفينا على آثارهم بعيسى بن مريم مصدقا لما بين يديه | ٤٦ | م المائدة | ٥ |
| (٧) | فلعلك باخع نفسك على آثارهم إن لم يؤمنوا بهذا | ٦ | ك الكهف | ١٨ |
| | إنا نحن نحى الموتى ونكتب ما قدموا وآثارهم | ١٢ | ك يس | ٣٦ |
| | فهم على آثارهم يهرعون ... ... ... ... ... | ٧٠ | ك الصافات | ٣٧ |
| | بل قالوا إنا وجدنا آباءنا على أمة وإنا على آثارهم مهتدون | ٢٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | إنا وجدنا آباءنا على أمة وإنا على آثارهم مقتدون | ٢٣ | ك « | ٤٣ |
| | ثم قفينا على آثارهم برسلنا وقفينا بعيسى ابن مريم | ٢٧ | م الحديد | ٥٧ |
| آثَارِهِمَا | : قال ذلك ما كنا نبغ فارتدا على آثارهما قصصا | ٦٤ | ك الكهف | ١٨ |
| أَثَارَةٍ | : ائتونى بكتاب من قبل هذا أو أثارة من علم ... ... | ٤ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| أُكُلٍ | : وبدلناهم بجنتيهم جنتين ذواتى أكل خمط وأثل | ١٦ | ك سبأ | ٣٤ |
| إِثْمٍ | : وتخرجون فريقا منكم من ديارهم تظاهرون عليهم بالإثم | ٨٥ | م البقـرة | ٢ |
| (٢١) | فمن اضطر غير باغ ولا عاد فلا إثم عليه ... ... ... | ١٧٣ | م « | ٢ |
| | فمن خاف من موص جنفا أو إثما فأصلح بينهم فلا إثم | ١٨٢ | م « | ٢ |
| | لتأكلوا فريقا من أموال الناس بالإثم وأنتم تعلمون | ١٨٨ | م « | ٢ |
| | فمن تعجل فى يومين فلا إثم عليه ... ... ... ... | ٢٠٣ | م « | ٢ |
| | ومن تأخر فلا إثم عليه لمن اتقى واتقوا الله ... ... | ٢٠٣ | م « | ٢ |
| | وإذا قيل له اتق الله أخذته العزة بالإثم فحسبه جهنم | ٢٠٦ | م « | ٢ |
| | قل فيهما إثم كبير ومنافع للناس وإثمهما أكبر من نفعهما | ٢١٩ | م « | ٢ |
| | وتعاونوا على البر والتقوى ولا تعاونوا على الإثم والعدوان | ٢ | م المائدة | ٥ |
| | فمن اضطر فى مخمصة غير متجانف لإثم فإن الله غفور رحيم | ٣ | م « | ٥ |
| | وترى كثيرا منهم يسارعون فى الإثم والعدوان ... ... | ٦٢ | م « | ٥ |
| | لولا ينهاهم الربانيون والأحبار عن قولهم الإثم | ٦٣ | م « | ٥ |
| | وذروا ظاهر الإثم وباطنه ... ... ... ... ... | ١٢٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | إن الذين يكسبون الإثم سيجزون بما كانوا يقترفون | ١٢٠ | ك « | ٦ |
| | قل إنما حرم ربى الفواحش ما ظهر منها وما بطن والإثم | ٣٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | لكل امرئ منهم ما اكتسب من الإثم ... ... ... | ١١ | م النـور | ٢٤ |
| | والذين يجتنبون كبائر الإثم والفواحش وإذا ما غضبوا | ٣٧ | ك الشورى | ٤٢ |
| | اجتنبوا كثيرا من الظن إن بعض الظن إثم ... ... | ١٢ | م الحجرات | ٤٩ |
| | الذين يجتنبون كبائر الإثم والفواحش إلا اللمم ... ... | ٣٢ | م النجـم | ٥٣ |
| إِثْمٍ | : ويتناجون بالإثم والعدوان ومعصية الرسول ... ... | ٨ | م المجادلة | ٥٨ |
| | يأيها الذين آمنوا إذا تناجيتم فلا تتناجوا بالإثم | ٩ | م « | ٥٨ |
| إِثْمًا | : فمن خاف من موص جنفا أو إثما فأصلح بينهم فلا إثم | ١٨٢ | م البقـرة | ٢ |
| (١٠) | إنما نملى لهم ليزدادوا إثما ولهم عذاب مهين ... ... | ١٧٨ | م آل عمران | ٣ |
| | فلا تأخذوا منه شيئا أتأخذونه بهتانا وإثما مبينا | ٢٠ | م النسـاء | ٤ |
| | ومن يشرك بالله فقد افترى إثما عظيما ... ... ... | ٤٨ | م « | ٤ |
| | انظر كيف يفترون على الله الكذب وكفى به إثما مبينا | ٥٠ | م « | ٤ |
| | ومن يكسب إثما فإنما يكسبه على نفسه ... ... ... | ١١١ | م « | ٤ |
| | ومن يكسب خطيئة أو إثما ثم يرم به بريئا ... ... | ١١٢ | م « | ٤ |
| | فقد احتمل بهتانا وإثما مبينا ... ... ... ... ... | ١١٢ | م « | ٤ |
| | فإن عثر على أنهما استحقا إثما فآخران يقومان مقامهما | ١٠٧ | م المائدة | ٥ |
| | بغير ما اكتسبوا فقد احتملوا بهتانا وإثما مبينا ... ... | ٥٨ | م الأحزاب | ٣٣ |
| إِثْمِكَ | : إنى أريد أن تبوء بإثمى وإثمك ... ... ... ... | ٢٩ | م المائدة | ٥ |
| إِثْمُهُ | : فمن بدله بعد ما سمعه فإنما إثمه على الذين يبدلونه | ١٨١ | م البقـرة | ٢ |
| إِثْمُهُمَا | : قل فيهما إثم كبير ومنافع للناس وإثمهما أكبر | ٢١٩ | م « | ٢ |
| إِثْمِى | : إنى أريد أن تبوء بإثمى وإثمك ... ... ... ... | ٢٩ | م المائدة | ٥ |
| آثِمٌ | : ولا تكتموا الشهادة ومن يكتمها فإنه آثم قلبه | ٢٨٣ | م البقـرة | ٢ |
| آثِمًا | : فاصبر لحكم ربك ولا تطع منهما آثما أو كفورا | ٢٤ | م الإنسان | ٧٦ |
| الآثِمِينَ | : ولا نكتم شهادة الله إنا إذًا لمن الآثمين ... ... | ١٠٦ | م المائدة | ٥ |
| أَثَامًا | : ولا يزنون ومن يفعل ذلك يلق أثاما ... ... ... | ٦٨ | م الفرقان | ٢٥ |
| أَثِيمٍ | : يمحق الله الربا ويربى الصدقات والله لا يحب كل كفار أثيم | ٢٧٦ | م البقـرة | ٢ |
| (٦) | تنزل على كل أفاك أثيم ... ... ... ... ... ... | ٢٢٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | طعام الأثيم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك الدخان | ٤٤ |
| | ويل لكل أفاك أثيم ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | مناع للخير معتد أثيم ... ... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك القلم | ٦٨ |
| | وما يكذب به إلا كل معتد أثيم ... ... ... ... ... | ١٢ | ك المطففين | ٨٣ |
| أَثِيمًا | : إن الله لا يحب من كان خوانا أثيما ... ... ... ... | ١٠٧ | م النسـاء | ٤ |
| تَأْثِيمٍ | : يتنازعون فيها كأسا لا لغو فيها ولا تأثيم ... ... | ٢٣ | ك الطـور | ٥٢ |
| تَأْثِيمًا | : لا يسمعون فيها لغوا ولا تأثيما ... ... ... ... | ٢٥ | ك الواقعة | ٥٦ |
| أُجَاجٌ | : مرج البحرين هذا عذب فرات وهذا ملح أجاج | ٥٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| (٢) | هذا عذب فرات سائغ شرابه وهذا ملح أجاج | ١٢ | ك فاطـر | ٣٥ |
| أُجَاجًا | : لو نشاء جعلناه أجاجا فلولا تشكرون ... ... ... | ٧٠ | ك الواقعة | ٥٦ |
| تَأْجُرَنِى | : على أن تأجرنى ثمانى حجج ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك القصص | ٢٨ |
| اسْتَأْجَرْتَ | : إن خير من استأجرت القوى الأمين ... ... | ٢٦ | ك « | ٢٨ |
| اسْتَأْجِرْهُ | : قالت إحداهما يا أبت استأجره ... ... ... | ٢٦ | ك « | ٢٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أجر: | وجنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها ونعم أجر | ١٣٦ | م آل عمران | ٣ |
| (٤٠) | وأن الله لا يضيع أجر المؤمنين... ... ... ... ... | ١٧١ | م » | ٣ |
| | للذين أحسنوا منهم واتقوا أجر عظيم ... ... ... | ١٧٢ | م » | ٣ |
| | وإن تؤمنوا وتتقوا فلكم أجر عظيم... ... ... ... | ١٧٩ | م » | ٣ |
| | الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم مغفرة وأجر عظيم | ٩ | م المائدة | ٥ |
| | إنا لا نضيع أجر المصلحين ... ... ... ... ... | ١٧٠ | م الأعراف | ٧ |
| | أنما أموالكم وأولادكم فتنة وأن الله عنده أجر عظيم | ٢٨ | م الأنفال | ٨ |
| | خالدين فيها أبدا إن الله عنده أجر عظيم ... ... | ٢٢ | م التوبة | ٩ |
| | إن الله لا يضيع أجر المحسنين ... ... ... ... | ١٢٠ | م » | ٩ |
| | فإن توليتم فما سألتكم من أجر ... ... ... ... | ٧٢ | ك يونس | ١٠ |
| | وعملوا الصالحات أولئك لهم مغفرة وأجر كبير... ... | ١١ | ك هود | ١١ |
| | واصبر فإن الله لا يضيع أجر المحسنين ... ... ... | ١١٥ | ك » | ١١ |
| | نصيب برحمتنا من نشاء ولا نضيع أجر المحسنين | ٥٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | ولأجر الآخرة خير للذين آمنوا وكانوا يتقون... ... | ٥٧ | ك » | ١٢ |
| | إنه من يتق ويصبر فإن الله لا يضيع أجر المحسنين | ٩٠ | ك » | ١٢ |
| | وما تسألهم عليه من أجر إن هو إلا ذكر للعالمين | ١٠٤ | ك » | ١٢ |
| | ولأجر الآخرة أكبر لو كانوا يعلمون... ... ... ... | ٤١ | ك النحل | ١٦ |
| | إنا لا نضيع أجر من أحسن عملا ... ... ... ... | ٣٠ | ك الكهف | ١٨ |
| | قل ما أسألكم عليه من أجر إلا من شاء أن يتخذ إلى ربه | ٥٧ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وما أسألكم عليه من أجر إن أجرى إلا على رب العالمين | ١٠٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وما أسألكم عليه من أجر إن أجرى إلا على رب العالمين | ١٢٧ | ك » | ٢٦ |
| | وما أسألكم عليه من أجر إن أجرى إلا على رب العالمين | ١٤٥ | ك » | ٢٦ |
| | وما أسألكم عليه من أجر إن أجرى إلا على رب العالمين | ١٦٤ | ك » | ٢٦ |
| | وما أسألكم عليه من أجر إن أجرى إلا على رب العالمين | ١٨٠ | ك » | ٢٦ |
| | قالت إن أبى يدعوك ليجزيك أجر ما سقيت لنا | ٢٥ | ك القصص | ٢٨ |
| | تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها نعم أجر العاملين | ٥٨ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | قل ما سألتكم من أجر فهو لكم إن أجرى إلا على الله | ٤٧ | ك سبأ | ٣٤ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم مغفرة وأجر كبير | ٧ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وخشى الرحمن بالغيب فبشره بمغفرة وأجر كريم | ١١ | ك يس | ٣٦ |
| | قل ما أسألكم عليه من أجر وما أنا من المتكلفين | ٨٦ | ك ص | ٣٨ |
| | تبوأ من الجنة حيث نشاء فنعم أجر العاملين ... ... | ٧٤ | ك الزمر | ٣٩ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم أجر غير ممنون | ٨ | ك فصلت | ٤١ |
| | امتحن الله قلوبهم للتقوى لهم مغفرة وأجر عظيم | ٣ | م الحجرات | ٤٩ |
| | فالذين آمنوا منكم وأنفقوا لهم أجر كبير ... ... ... | ٧ | م الحديد | ٥٧ |
| | يقرض الله قرضا حسنا فيضاعفه له وله أجر كريم | ١١ | م » | ٥٧ |
| | وأقرضوا الله قرضا حسنا يضاعف لهم ولهم أجر كريم | ١٨ | م » | ٥٧ |
| | إنما أموالكم وأولادكم فتنة والله عنده أجر عظيم | ١٥ | م التغابن | ٦٤ |
| | إن الذين يخشون ربهم بالغيب لهم مغفرة وأجر كبير | ١٢ | ك الملك | ٦٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أجر: | إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم أجر غير ممنون | ٢٥ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| | إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات فلهم أجر غير ممنون | ٦ | ك التين | ٩٥ |
| أجرا: | وإن تك حسنة يضاعفها ويؤت من لدنه أجرا عظيما | ٤٠ | م النساء | ٤ |
| (٢٧) | وإذا لآتيناهم من لدنا أجرا عظيما ... ... ... ... | ٦٧ | م » | ٤ |
| | ومن يقاتل فى سبيل الله فيقتل أو يغلب فسوف نؤتيه أجرا | ٧٤ | م » | ٤ |
| | وفضل الله المجاهدين على القاعدين أجرا عظيما ... .. | ٩٥ | م » | ٤ |
| | ومن يفعل ذلك ابتغاء مرضاة الله فسوف نؤتيه أجرا | ١١٤ | م » | ٤ |
| | وسوف يؤت الله المؤمنين أجرا عظيما ... ... ... | ١٤٦ | م » | ٤ |
| | والمؤمنون بالله واليوم الآخر أولئك سنؤتيهم أجرا عظيما | ١٦٢ | م » | ٤ |
| | قل لا أسألكم عليه أجرا إن هو إلا ذكرى للعالمين | ٩٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | وجاء السحرة فرعون قالوا إن لنا لأجرا ... ... ... | ١١٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | ياقوم لا أسألكم عليه أجرا ... ... ... ... ... | ٥١ | ك هود | ١١ |
| | ويبشر المؤمنين الذين يعملون الصالحات أن لهم أجرا كبيرا | ٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ويبشر المؤمنين الذين يعملون الصالحات أن لهم أجرا | ٢ | ك الكهف | ١٨ |
| | يريد أن ينقض فأقامه قال لو شئت لاتخذت عليه أجرا | ٧٧ | ك » | ١٨ |
| | فلما جاء السحرة قالوا لفرعون أئن لنا لأجرا... ... | ٤١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فإن الله أعد للمحسنات منكن أجرا عظيما... ... ... | ٢٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | والذاكرين الله كثيرا والذاكرات أعد الله لهم مغفرة وأجرا | ٣٥ | م » | ٣٣ |
| | تحيتهم يوم يلقونه سلام وأعد لهم أجرا كريما | ٤٤ | م » | ٣٣ |
| | اتبعوا من لا يسألكم أجرا وهم مهتدون ... ... | ٢١ | ك يس | ٣٦ |
| | قل لا أسألكم عليه أجرا إلا المودة فى القربى | ٢٣ | م الشورى | ٤٢ |
| | ومن أوفى بما عاهد عليه الله فسيؤتيه أجرا عظيما | ١٠ | م الفتح | ٤٨ |
| | فإن تطيعوا يؤتكم الله أجرا حسنا ... ... ... ... | ١٦ | م » | ٤٨ |
| | وعد الله الذين آمنوا وعملوا الصالحات منهم مغفرة وأجرا | ٢٩ | م » | ٤٨ |
| | أم تسألهم أجرا فهم من مغرم مثقلون ... ... ... | ٤٠ | ك الطور | ٥٢ |
| | ومن يتق الله يكفر عنه سيئاته ويعظم له أجرا.. ... | ٥ | م الطلاق | ٦٥ |
| | وإن لك لأجرا غير ممنون ... ... ... ... ... | ٣ | ك القلم | ٦٨ |
| | أم تسألهم أجرا فهم من مغرم مثقلون ... ... ... | ٤٦ | ك » | ٦٨ |
| | تجدوه عند الله هو خيرا وأعظم أجرا ... ... ... | ٢٠ | م المزمل | ٧٣ |
| أجره: | بلى من أسلم وجهه لله وهو محسن فله أجره عند ربه | ١١٢ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | ثم يدركه الموت فقد وقع أجره على الله ... ... ... | ١٠٠ | م النساء | ٤ |
| | وجعلنا فى ذريته النبوة والكتاب وآتيناه أجره فى الدنيا | ٢٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | فمن عفا وأصلح فأجره على الله إنه لا يحب الظالمين | ٤٠ | ك الشورى | ٤٢ |
| أجرها: | ونعمل صالحا نؤتها أجرها مرتين وأعتدنا لها رزقا | ٣١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| أجرهم: | وعمل صالحا فلهم أجرهم عند ربهم ولا خوف عليهم | ٦٢ | م البقرة | ٢ |
| (١٢) | ثم لا يتبعون ما أنفقوا منا ولا أذى لهم أجرهم عند ربهم | ٢٦٢ | م » | ٢ |
| | سرا وعلانية فلهم أجرهم عند ربهم ... ... ... ... | ٢٧٤ | م » | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَجْرُهُمْ : | وأقاموا الصلاة وآتوا الزكاة لهم أجرهم عند ربهم | ٢٧٧ | م البقـرة | ٢ |
| | أولئك لهم أجرهم عند ربهم إن الله سريع الحساب | ١٩٩ | م آل عمران | ٣ |
| | ولنجزين الذين صبروا أجرهم بأحسن ما كانوا يعملون | ٩٦ | ك النحـل | ١٦ |
| | ولنجزينهم أجرهم بأحسن ما كانوا يعملون ... ... | ٩٧ | ك « | ١٦ |
| | أولئك يؤتون أجرهم مرتين بما صبروا ... ... ... | ٥٤ | م القصص | ٢٨ |
| | إنما يوفى الصابرون أجرهم بغير حساب ... ... | ١٠ | ك الـزمر | ٣٩ |
| | ليكفر الله عنهم أسوأ الذى عملوا ويجزيهم أجرهم | ٣٥ | ك « | ٣٩ |
| | والشهداء عند ربهم لهم أجرهم ونورهم ... ... ... | ١٩ | م الحـديد | ٥٧ |
| | فآتينا الذين آمنوا منهم أجرهم وكثير منهم فاسقون | ٢٧ | م « | ٥٧ |
| أَجْرِيَ : | إن أجرى إلا على الله وأمرت أن أكون من المسلمين | ٧٢ | ك يونس | ١٠ |
| (٩) | إن أجرى إلا على الله وما أنا بطارد الذين آمنوا | ٢٩ | ك هـود | ١١ |
| | إن أجرى إلا على الذى فطرنى أفلا تعقلون ... ... | ٥١ | ك « | ١١ |
| | وما أسألكم عليه من أجر إن أجرى إلا على رب العالمين | ١٠٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وما أسألكم عليه من أجر إن أجرى إلا على رب العالمين | ١٢٧ | ك « | ٢٦ |
| | وما أسألكم عليه من أجر إن أجرى إلا على رب العالمين | ١٤٥ | ك « | ٢٦ |
| | وما أسألكم عليه من أجر إن أجرى إلا على رب العالمين | ١٦٤ | ك « | ٢٦ |
| | وما أسألكم عليه من أجر إن أجرى إلا على رب العالمين | ١٨٠ | ك « | ٢٦ |
| | إن أجرى إلا على الله وهو على كل شيء شهيد | ٤٧ | ك سبأ | ٣٤ |
| أُجُورَكُمْ : | كل نفس ذائقة الموت وإنما توفون أجوركم | ١٨٥ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | وإن تؤمنوا وتتقوا يؤتكم أجوركم ولا يسألكم أموالكم | ٣٦ | م محمد | ٤٧ |
| أُجُورَهُمْ : | وأما الذين آمنوا وعملوا الصالحات فيوفيهم أجورهم | ٥٧ | م آل عمران | ٣ |
| (٤) | ولم يفرقوا بين أحد منهم أولئك سوف يؤتيهم أجورهم | ١٥٢ | م النساء | ٤ |
| | فأما الذين آمنوا وعملوا الصالحات فيوفيهم أجورهم | ١٧٣ | م « | ٤ |
| | ليوفيهم أجورهم ويزيدهم من فضله إنه غفور شكور | ٣٠ | ك فاطر | ٣٥ |
| أُجُورَهُنَّ : | فما استمتعتم به منهن فآتوهن أجورهن فريضة | ٢٤ | م النساء | ٤ |
| (٦) | فانكحوهن بإذن أهلهن وآتوهن أجورهن بالمعروف | ٢٥ | م « | ٤ |
| | إذا آتيتموهن أجورهن محصنين غير مسافحين ... | ٥ | م المائدة | ٥ |
| | إنا أحللنا لك أزواجك اللاتى آتيت أجورهن... ... | ٥٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ولا جناح عليكم أن تنكحوهن إذا آتيتموهن أجورهن | ١٠ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | فإن أرضعن لكم فآتوهن أجورهن ... ... ... ... | ٦ | م الطلاق | ٦٥ |
| أُجِّلَتْ : | ربنا استمتع بعضنا ببعض وبلغنا أجلنا الذى أجلت لنا | ١٢٨ | ك الأنعام | ٦ |
| أُجِّلَتْ : | لأى يوم أجلت... ... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك المرسلات | ٧٧ |
| أَجَل : | إذا تداينتم بدين إلى أجل مسمى فاكتبوه ... ... | ٢٨٢ | م البقـرة | ٢ |
| (٣١) | وقالوا ربنا لم كتبت علينا القتال لولا أخرتنا إلى أجل | ٧٧ | م النساء | ٤ |
| | هو الذى خلقكم من طين ثم قضى أجلا وأجل مسمى | ٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | ثم يبعثكم فيه ليقضى أجل مسمى ثم إليه مرجعكم | ٦٠ | ك « | ٦ |
| | ولكل أمة أجل فإذا جاء أجلهم لا يستأخرون ساعة | ٣٤ | ك الأعراف | ٧ |
| أَجَل : | فلما كشفنا عنهم الرجز إلى أجل هم بالغوه إذا هم ينكثون | ١٣٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | لكل أمة أجل إذا جاء أجلهم فلا يستأخرون ساعة | ٤٩ | ك يونس | ١٠ |
| | ثم توبوا إليه يمتعكم متاعا حسنا إلى أجل مسمى | ٣ | ك هـود | ١١ |
| | وما نؤخره إلا لأجل معدود .. ... ... ... ... | ١٠٤ | ك « | ١١ |
| | وسخر الشمس والقمر كل يجرى لأجل مسمى ... ... | ٢ | م الرعـد | ١٣ |
| | وما كان لرسول أن يأتى بآية إلا بإذن الله لكل أجل كتاب | ٣٨ | م « | ١٣ |
| | يدعوكم ليغفر لكم من ذنوبكم ويؤخركم إلى أجل مسمى | ١٠ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | فيقول الذين ظلموا ربنا أخرنا إلى أجل قريب | ٤٤ | ك « | ١٤ |
| | ما ترك عليها من دابة ولكن يؤخرهم إلى أجل مسمى | ٦١ | ك النحـل | ١٦ |
| | ولولا كلمة سبقت من ربك لكان لزاما وأجل مسمى | ١٢٩ | ك طـه | ٢٠ |
| | ونقر فى الأرحام ما نشاء إلى أجل مسمى ... ... | ٥ | م الحـج | ٢٢ |
| | لكم فيها منافع إلى أجل مسمى ثم محلها إلى البيت العتيق | ٣٣ | م « | ٢٢ |
| | فلما قضى موسى الأجل وسار بأهله آنس من جانب الطور | ٢٩ | ك القصص | ٢٨ |
| | من كان يرجو لقاء الله فإن أجل الله لآت ... ... | ٥ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | ويستعجلونك بالعذاب ولولا أجل مسمى لجاءهم العذاب | ٥٣ | ك « | ٢٩ |
| | ما خلق الله السموات والأرض وما بينهما إلا بالحق وأجل | ٨ | ك الروم | ٣٠ |
| | وسخر الشمس والقمر كل يجرى إلى أجل مسمى... ... | ٢٩ | م لقمان | ٣١ |
| | وسخر الشمس والقمر كل يجرى لأجل مسمى... ... | ١٣ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | ما ترك على ظهرها من دابة ولكن يؤخرهم إلى أجل مسمى | ٤٥ | ك « | ٣٥ |
| | وسخر الشمس والقمر كل يجرى لأجل مسمى... ... | ٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| | فيمسك التى قضى عليها الموت ويرسل الأخرى إلى أجل | ٤٢ | ك « | ٣٩ |
| | ولولا كلمة سبقت من ربك إلى أجل مسمى لقضى بينهم | ١٤ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ما خلقنا السموات والأرض وما بينهما إلا بالحق وأجل | ٣ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | فيقول رب لولا أخرتنى إلى أجل قريب فأصدق... ... | ١٠ | م المنافقون | ٦٣ |
| | يغفر لكم من ذنوبكم ويؤخركم إلى أجل مسمى... ... | ٤ | ك نـوح | ٧١ |
| | إن أجل الله إذا جاء لا يؤخر لو كنتم تعلمون... ... | ٤ | ك « | ٧١ |
| أَجَلًا : | هو الذى خلقكم من طين ثم قضى أجلا... ... ... | ٢ | ك الأنعام | ٦ |
| (٣) | قادر على أن يخلق مثلهم وجعل لهم أجلا لا ريب فيه | ٩٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ومنكم من يتوفى من قبل ولتبلغوا أجلا مسمى ... ... | ٦٧ | ك غافـر | ٤٠ |
| أَجَلَنَا : | ربنا استمتع بعضنا ببعض وبلغنا أجلنا الذى أجلت لنا | ١٢٨ | ك الأنعام | ٦ |
| أَجَلَهُ : | ولا تعزموا عقدة النكاح حتى يبلغ الكتاب أجله... ... | ٢٣٥ | م البقـرة | ٢ |
| (٢) | ولا تسأموا أن تكتبوه صغيرا أو كبيرا إلى أجله... ... | ٢٨٢ | م « | ٢ |
| أَجَلَهَا : | ما تسبق من أمة أجلها وما يستأخرون ... ... | ٥ | ك الحجـر | ١٥ |
| (٣) | ما تسبق من أمة أجلها وما يستأخرون ... ... ... | ٤٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ولن يؤخر الله نفسا إذا جاء أجلها ... ... ... ... | ١١ | م المنافقون | ٦٣ |
| أَجَلُهُمْ : | فإذا جاء أجلهم لا يستأخرون ساعة ولا يستقدمون | ٣٤ | ك الأعراف | ٧ |
| (٦) | وما خلق الله من شيء وأن عسى أن يكون قد اقترب أجلهم | ١٨٥ | ك « | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَجَلُهُم | : للناس الشر استعجالهم بالخير لقضى إليهم أجلهم | ١١ | ك يونس | ١٠ |
| | إذا جاء أجلهم فلا يستأخرون ساعة ولا يستقدمون | ٤٩ | ك « | ١٠ |
| | فإذا جاء أجلهم لا يستأخرون ساعة ولا يستقدمون | ٦١ | ك النحل | ١٦ |
| | فإذا جاء أجلهم فإنّ الله كان بعباده بصيرا ... ... | ٤٥ | ك فاطر | ٣٥ |
| أَجَلَهُنَّ | : وإذا طلقتم النساء فبلغن أجلهن فأمسكوهن بمعروف | ٢٣١ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | وإذا طلقتم النساء فبلغن أجلهن فلا تعضلوهن | ٢٣٢ | م « | ٢ |
| | فإذا بلغن أجلهن فلا جناح عليكم فيما فعلن في أنفسهن | ٢٣٤ | م « | ٢ |
| | فإذا بلغن أجلهن فأمسكوهن بمعروف أو فارقوهن بمعروف | ٢ | م الطلاق | ٦٥ |
| | وأولات الأحمال أجلهن أن يضعن حملهن ... ... | ٤ | م « | ٦٥ |
| الأَجَلَيْنِ | : أيما الأجلين قضيت فلا عدوان عليّ | ٢٨ | ك القصص | ٢٨ |
| مُؤَجَّلًا | : وما كان لنفس أن تموت إلا بإذن الله كتابا مؤجلا | ١٤٥ | م آل عمران | ٣ |
| أَجْلِ | : من أجل ذلك كتبنا على بني إسرائيل ... ... ... | ٣٢ | م المائدة | ٥ |
| أَحَد | : وما يعلمان من أحد حتى يقولا إنما نحن فتنة فلا تكفر | ١٠٢ | م البقرة | ٢ |
| (٣٣) | وما هم بضارين به من أحد إلا بإذن الله ... ... | ١٠٢ | م « | ٢ |
| | لا نفرق بين أحد منهم ونحن له مسلمون ... ... | ١٣٦ | م « | ٢ |
| | كل آمن بالله وملائكته وكتبه ورسله لا نفرق بين أحد | ٢٨٥ | م « | ٢ |
| | قل إن الهدى هدى الله أن يؤتى أحد مثل ما أوتيتم | ٧٣ | م آل عمران | ٣ |
| | لا نفرق بين أحد منهم ونحن له مسلمون ... ... | ٨٤ | م « | ٣ |
| | إذ تصعدون ولا تلوون على أحد والرسول يدعوكم | ١٥٣ | م « | ٣ |
| | وإن كنتم مرضى أو على سفر أو جاء أحد منكم من الغائط | ٤٣ | م النساء | ٤ |
| | والذين آمنوا بالله ورسله ولم يفرقوا بين أحد منهم | ١٥٢ | م « | ٤ |
| | وإن كنتم مرضى أو على سفر أو جاء أحد منكم من الغائط | ٦ | م المائدة | ٥ |
| | أتأتون الفاحشة ما سبقكم بها من أحد من العالمين | ٨٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | وإن أحد من المشركين استجارك فأجره... ... ... | ٦ | م التوبة | ٩ |
| | ولا تصل على أحد منهم مات أبدا ولا تقم على قبره | ٨٤ | م « | ٩ |
| | وإذا ما أنزلت سورة نظر بعضهم إلى بعض هل يراكم من أحد | ١٢٧ | م « | ٩ |
| | فأسر بأهلك بقطع من الليل ولا يلتفت منكم أحد | ٨١ | ك هود | ١١ |
| | إني رأيت أحد عشر كوكبا والشمس والقمر ... ... | ٤ | ك يوسف | ١٢ |
| | ولا يلتفت منكم أحد وامضوا حيث تؤمرون ... ... | ٦٥ | ك الحجر | ١٥ |
| | وكم أهلكنا قبلهم من قرن هل تحس منهم من أحد | ٩٨ | ك مريم | ١٩ |
| | ولولا فضل الله عليكم ورحمته ما زكى منكم من أحد | ٢١ | م النور | ٢٤ |
| | إنكم لتأتون الفاحشة ما سبقكم بها من أحد من العالمين | ٢٨ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | يا نساء النبيّ لستن كأحد من النساء إن اتقيتن... ... | ٣٢ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ما كان محمد أبا أحد من رجالكم ولكن رسول الله | ٤٠ | م « | ٣٣ |
| | ولئن زالتا إن أمسكهما من أحد من بعده ... ... | ٤١ | ك فاطر | ٣٥ |
| | قال رب اغفر لي وهب لي ملكا لا ينبغي لأحد من بعدي | ٣٥ | ك ص | ٣٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَحَد | : فما منكم من أحد عنه حاجزين ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | قل إني لن يجيرني من الله أحد ولن أجد من دونه ملتحدا | ٢٢ | ك الجن | ٧٢ |
| | فيومئذ لا يعذب عذابه أحد ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك الفجر | ٨٩ |
| | ولا يوثق وثاقه أحد ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك « | ٨٩ |
| | أيحسب أن لن يقدر عليه أحد ... ... ... ... ... | ٥ | ك البلد | ٩٠ |
| | أيحسب أن لم يره أحد... ... ... ... ... ... | ٧ | ك « | ٩٠ |
| | وما لأحد عنده من نعمة تجزى... ... ... ... ... | ١٩ | ك الليل | ٩٢ |
| | قل هو الله أحد ... ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الإخلاص | ١١٢ |
| | ولم يكن له كفوا أحد... ... ... ... ... ... | ٤ | ك « | ١١٢ |
| أَحَدًا | : وآتاكم ما لم يؤت أحدا من العالمين ... ... ... | ٢٠ | م المائدة | ٥ |
| (٢٠) | فإني أعذبه عذابا لا أعذبه أحدا من العالمين... ... | ١١٥ | م « | ٥ |
| | ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم أحدا... ... | ٤ | م التوبة | ٩ |
| | وليتلطف ولا يشعرن بكم أحدا ... ... ... ... | ١٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | فلا تمار فيهم إلا مراء ظاهرا ولا تستفت فيهم منهم أحدا | ٢٢ | ك « | ١٨ |
| | ما لهم من دونه من وليّ ولا يشرك في حكمه أحدا | ٢٦ | ك « | ١٨ |
| | لكنا هو الله ربي ولا أشرك بربي أحدا... ... ... | ٣٨ | ك « | ١٨ |
| | ويقول يا ليتني لم أشرك بربي أحدا... ... ... | ٤٢ | ك « | ١٨ |
| | وترى الأرض بارزة وحشرناهم فلم نغادر منهم أحدا | ٤٧ | ك « | ١٨ |
| | ووجدوا ما عملوا حاضرا ولا يظلم ربك أحدا | ٤٩ | ك « | ١٨ |
| | فليعمل عملا صالحا ولا يشرك بعبادة ربه أحدا | ١١٠ | ك « | ١٨ |
| | فإما ترين من البشر أحدا فقولي إني نذرت للرحمن صوما | ٢٦ | ك مريم | ١٩ |
| | فإن لم تجدوا فيها أحدا فلا تدخلوها حتى يؤذن لكم | ٢٨ | م النور | ٢٤ |
| | ويخشونه ولا يخشون أحدا إلا الله ... ... ... | ٣٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | لئن أخرجتم لنخرجن معكم ولا نطيع فيكم أحدا أبدا | ١١ | م الحشر | ٥٩ |
| | يهدي إلى الرشد فآمنا به ولن نشرك بربنا أحدا | ٢ | ك الجن | ٧٢ |
| | وأنهم ظنوا كما ظننتم أن لن يبعث الله أحدا ... ... | ٧ | ك « | ٧٢ |
| | وأن المساجد لله فلا تدعوا مع الله أحدا ... ... | ١٨ | ك « | ٧٢ |
| | قل إنما أدعو ربي ولا أشرك به أحدا... ... ... | ٢٠ | ك « | ٧٢ |
| | عالم الغيب فلا يظهر على غيبه أحدا ... ... ... | ٢٦ | ك « | ٧٢ |
| أَحَدَكُم | : كتب عليكم إذا حضر أحدكم الموت إن ترك خيرا | ١٨٠ | م البقرة | ٢ |
| (٧) | أيود أحدكم أن تكون له جنة من نخيل وأعناب | ٢٦٦ | م « | ٢ |
| | يا أيها الذين آمنوا شهادة بينكم إذا حضر أحدكم الموت | ١٠٦ | م المائدة | ٥ |
| | حتى إذا جاء أحدكم الموت توفته رسلنا وهم لا يفرطون | ٦١ | ك الأنعام | ٦ |
| | فابعثوا أحدكم بورقكم هذه إلى المدينة فلينظر... ... | ١٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | أيحب أحدكم أن يأكل لحم أخيه ميتا فكرهتموه | ١٢ | م الحجرات | ٤٩ |
| | وأنفقوا مما رزقناكم من قبل أن يأتي أحدكم الموت | ١٠ | م المنافقون | ٦٣ |
| أَحَدُكُمَا | : يا صاحبي السجن أما أحدكما فيسقي ربه خمرا | ٤١ | ك يوسف | ١٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَحَدَنَا : | قالوا يأيها العزيز إن له أبا شيخا كبيرا فخذ أحدنا | ٧٨ | ك يوسف | ١٢ |
| أَحَدهم : | ومن الذين أشركوا يود أحدهم لو يعمر ألف سنة | ٩٦ | م البقرة | ٢ |
| (٧) | فلن يقبل من أحدهم ملء الأرض ذهبا ولو افتدى به | ٩١ | م آل عمران | ٣ |
| | حتى إذا حضر أحدهم الموت قال إنى تبت الآن | ١٨ | م النساء | ٤ |
| | وإذا بشر أحدهم بالأنثى ظل وجهه مسودا وهو كظيم | ٥٨ | ك النحل | ١٦ |
| | حتى إذا جاء أحدهم الموت قال رب ارجعون | ٩٩ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فشهادة أحدهم أربع شهادات بالله إنه لمن الصادقين | ٦ | م النور | ٢٤ |
| | وإذا بشر أحدهم بما ضرب للرحمن مثلا ظل وجهه مسودا | ١٧ | ك الزخرف | ٤٣ |
| أَحَدهما : | إذ قربا قربانا فتقبل من أحدهما ... ... ... | ٢٧ | م المائدة | ٥ |
| (٥) | ودخل معه السجن فتيان قال أحدهما إنى أرانى أعصر | ٣٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | وضرب الله مثلا رجلين أحدهما أبكم لا يقدر على شىء | ٧٦ | ك النحل | ١٦ |
| | إما يبلغن عندك الكبر أحدهما أو كلاهما فلا تقل لهما أف | ٢٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| | واضرب لهم مثلا رجلين جعلنا لأحدهما جنتين من أعناب | ٣٢ | ك الكهف | ١٨ |
| إِحْدَى : | وإذ يعدكم الله إحدى الطائفتين أنها لكم | ٧ | م الأنفال | ٨ |
| (٥) | قل هل تربصون بنا إلا إحدى الحسنيين ... ... | ٥٢ | م التوبة | ٩ |
| | قال إنى أريد أن أنكحك إحدى ابنتى هاتين على أن تأجرنى | ٢٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | لئن جاءهم نذير ليكونن أهدى من إحدى الأمم | ٤٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| | إنها لإحدى الكبر ... ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك المدثر | ٧٤ |
| إِحْدَاهما : | وامرأتان ممن ترضون من الشهداء أن تضل إحداهما | ٢٨٢ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | فتذكر إحداهما الأخرى ... ... ... ... ... | ٢٨٢ | م « | ٢ |
| | فجاءته إحداهما تمشى على استحياء ... ... ... | ٢٥ | ك القصص | ٢٨ |
| | قالت إحداهما يا أبت استأجره ... ... ... ... | ٢٦ | ك « | ٢٨ |
| | فإن بغت إحداهما على الأخرى فقاتلوا التى تبغى حتى تفىء | ٩ | م الحجرات | ٤٩ |
| إِحْدَاهُنَّ : | وآتيتم إحداهن قنطارا فلا تأخذوا منه شيئا | ٢٠ | م النساء | ٤ |
| أَخَذَ : | وإذ أخذ الله ميثاق النبيين لما آتيتكم من كتاب وحكمة | ٨١ | م آل عمران | ٣ |
| (١١) | وإذ أخذ الله ميثاق الذين أوتوا الكتاب ... ... | ١٨٧ | م « | ٣ |
| | ولقد أخذ الله ميثاق بنى إسرائيل ... ... ... | ١٢ | م المائدة | ٥ |
| | قل أرأيتم إن أخذ الله سمعكم وأبصاركم وختم على قلوبكم | ٤٦ | ك الأنعام | ٦ |
| | وألقى الألواح وأخذ برأس أخيه يجره إليه ... ... | ١٥٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولما سكت عن موسى الغضب أخذ الألواح ... ... | ١٥٤ | ك « | ٧ |
| | وإذ أخذ ربك من بنى آدم من ظهورهم ذريتهم | ١٧٢ | ك « | ٧ |
| | وأخذ الذين ظلموا الصيحة فأصبحوا فى ديارهم جاثمين | ٦٧ | ك هود | ١١ |
| | وكذلك أخذ ربك إذا أخذ القرى وهى ظالمة ... ... | ١٠٢ | ك « | ١١ |
| | قال كبيرهم ألم تعلموا أن أباكم قد أخذ عليكم موثقا من الله | ٨٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | والرسول يدعوكم لتؤمنوا بربكم وقد أخذ ميثاقكم | ٨ | م الحديد | ٥٧ |
| أَخَذَتِ : | حتى إذا أخذت الأرض زخرفها وازينت | ٢٤ | ك يونس | ١٠ |
| (٢) | وأخذت الذين ظلموا الصيحة فأصبحوا فى ديارهم جاثمين | ٩٤ | ك هود | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَخَذْتُ : | ثم أخذت الذين كفروا فكيف كان نكير | ٢٦ | ك فاطر | ٣٥ |
| أَخَذَتْكُمُ : | لن نؤمن لك حتى نرى الله جهرة فأخذتكم الصاعقة | ٥٥ | م البقرة | ٢ |
| أَخَذْتُمْ : | قال ءأقررتم وأخذتم على ذلكم إصرى قالوا أقررنا | ٨١ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | لولا كتاب من الله سبق لمسكم فيما أخذتم عذاب عظيم | ٦٨ | م الأنفال | ٨ |
| أَخَذَتْهُ : | وإذا قيل له اتق الله أخذته العزة بالإثم فحسبه جهنم | ٢٠٦ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | ومنهم من أخذته الصيحة ومنهم من خسفنا به الأرض | ٤٠ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| أَخَذْتُهَا : | وكأين من قرية أمليت لها وهى ظالمة ثم أخذتها | ٤٨ | م الحج | ٢٢ |
| أَخَذَتْهُمُ : | فقالوا أرنا الله جهرة فأخذتهم الصاعقة بظلمهم | ١٥٣ | م النساء | ٤ |
| (١٠) | فأخذتهم الرجفة فأصبحوا فى دارهم جاثمين ... ... | ٧٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | فأخذتهم الرجفة فأصبحوا فى دارهم جاثمين ... ... | ٩١ | ك « | ٧ |
| | فلما أخذتهم الرجفة قال رب لو شئت أهلكتهم من قبل | ١٥٥ | ك « | ٧ |
| | فأخذتهم الصيحة مشرقين ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك الحجر | ١٥ |
| | فأخذتهم الصيحة مصبحين ... ... ... ... ... ... | ٨٣ | ك « | ١٥ |
| | فأخذتهم الصيحة بالحق فجعلناهم غثاء فبعدا للقوم الظالمين | ٤١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فكذبوه فأخذتهم الرجفة فأصبحوا فى دارهم جاثمين | ٣٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | فأخذتهم صاعقة العذاب الهون بما كانوا يكسبون | ١٧ | ك فصلت | ٤١ |
| | فعتوا عن أمر ربهم فأخذتهم الصاعقة وهم ينظرون | ٤٤ | ك الذاريات | ٥١ |
| أَخَذْتُهُمْ : | فأمليت للذين كفروا ثم أخذتهم فكيف كان عقاب | ٣٢ | م الرعد | ١٣ |
| (٣) | فأمليت للكافرين ثم أخذتهم فكيف كان نكير ... ... | ٤٤ | م الحج | ٢٢ |
| | وجادلوا بالباطل ليدحضوا به الحق فأخذتهم ... ... | ٥ | ك غافر | ٤٠ |
| أَخَذْنَ : | وقد أفضى بعضكم إلى بعض وأخذن منكم ميثاقا غليظا | ٢١ | م النساء | ٤ |
| أَخَذْنَا : | وإذ أخذنا ميثاقكم ورفعنا فوقكم الطور ... ... | ٦٣ | م البقرة | ٢ |
| (١٦) | وإذ أخذنا ميثاق بنى إسرائيل لا تعبدون إلا الله | ٨٣ | م « | ٢ |
| | وإذ أخذنا ميثاقكم لا تسفكون دماءكم ... ... ... | ٨٤ | م « | ٢ |
| | وإذ أخذنا ميثاقكم ورفعنا فوقكم الطور ... ... ... | ٩٣ | م « | ٢ |
| | وقلنا لهم لا تعدوا فى السبت وأخذنا منهم ميثاقا غليظا | ١٥٤ | م النساء | ٤ |
| | ومن الذين قالوا إنا نصارى أخذنا ميثاقهم فنسوا حظا | ١٤ | م المائدة | ٥ |
| | لقد أخذنا ميثاق بنى إسرائيل وأرسلنا إليهم رسلا | ٧٠ | م « | ٥ |
| | وما أرسلنا فى قرية من نبى إلا أخذنا أهلها بالبأساء والضراء | ٩٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولقد أخذنا آل فرعون بالسنين ونقص من الثمرات | ١٣٠ | ك « | ٧ |
| | وأخذنا الذين ظلموا بعذاب بئيس بما كانوا يفسقون | ١٦٥ | م « | ٧ |
| | وإن تصبك مصيبة يقولوا قد أخذنا أمرنا من قبل | ٥٠ | م التوبة | ٩ |
| | حتى إذا أخذنا مترفيهم بالعذاب إذا هم يجأرون | ٦٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فكلا أخذنا بذنبه فمنهم من أرسلنا عليه حاصبا ... ... | ٤٠ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وإذ أخذنا من النبيين ميثاقهم ومنك ومن نوح | ٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وإبراهيم وموسى وعيسى بن مريم وأخذنا منهم ميثاقا غليظا | ٧ | م « | ٣٣ |
| | لأخذنا منه باليمين ... ... ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك الحاقة | ٦٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| فَأَخَذْنَاهُ: | فأخذناه وجنوده فنبذناهم فى اليم ... ... ... | ٤٠ | ك القصص | ٢٨ |
| (٣) | فأخذناه وجنوده فنبذناهم فى اليم وهو مليم ... ... | ٤٠ | ك الذاريات | ٥١ |
| | فعصى فرعون الرسول فأخذناه أخذا وبيلا ... ... | ١٦ | ك المزمل | ٧٣ |
| أَخَذْنَاهُمْ: | فأخذناهم بالبأساء والضراء لعلهم يتضرعون | ٤٢ | ك الأنعام | ٦ |
| (٧) | حتى إذا فرحوا بما أوتوا أخذناهم بغتة فإذا هم مبلسون | ٤٤ | ك « | ٦ |
| | قد مس آباءنا الضراء والسراء فأخذناهم بغتة وهم لا يشعرون | ٩٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولكن كذبوا فأخذناهم بما كانوا يكسبون ... ... | ٩٦ | ك « | ٧ |
| | ولقد أخذناهم بالعذاب فما استكانوا لربهم وما يتضرعون | ٧٦ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وما نريهم من آية إلا هى أكبر من أختها وأخذناهم بالعذاب | ٤٨ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | كذبوا بآياتنا كلها فأخذناهم أخذ عزيز مقتدر... ... | ٤٢ | ك القمر | ٥٤ |
| فَأَخَذَهُ: | فأخذه الله نكال الآخرة والأولى ... ... ... ... | ٢٥ | ك النازعات | ٧٩ |
| فَأَخَذَهُمْ: | كذبوا بآياتنا فأخذهم الله بذنوبهم والله شديد العقاب | ١١ | م آل عمران | ٣ |
| (٩) | كفروا بآيات الله فأخذهم الله بذنوبهم ... ... ... | ٥٢ | م الأنفال | ٨ |
| | ولقد جاءهم رسول منهم فكذبوه فأخذهم العذاب | ١١٣ | ك النحل | ١٦ |
| | فأخذهم العذاب إن فى ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين | ١٥٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فكذبوه فأخذهم عذاب يوم الظلة إنه كان عذاب يوم عظيم | ١٨٩ | ك « | ٢٦ |
| | فلبث فيهم ألف سنة إلا خمسين عاما فأخذهم الطوفان | ١٤ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | فأخذهم الله بذنوبهم وما كان لهم من الله من واق | ٢١ | ك غافر | ٤٠ |
| | ذلك بأنهم كانت تأتيهم رسلهم بالبينات فكفروا فأخذهم | ٢٢ | ك « | ٤٠ |
| | فعصوا رسول ربهم فأخذهم أخذة رابية ... ... ... | ١٠ | ك الحاقة | ٦٩ |
| تَأْخُذْ: | قال يا بن أم لا تأخذ بلحيتى ولا برأسى ... ... | ٩٤ | ك طه | ٢٠ |
| تَأْخُذُكُمْ: | ولا تأخذكم بهما رأفة فى دين الله إن كنتم تؤمنون بالله | ٢ | م النور | ٢٤ |
| تَأْخُذُهُ: | الله لا إله إلا هو الحى القيوم لا تأخذه سنة ولا نوم | ٢٥٥ | م البقرة | ٢ |
| تَأْخُذُهُمْ: | ما ينظرون إلا صيحة واحدة تأخذهم وهم يخصمون | ٤٩ | ك يس | ٣٦ |
| تَأْخُذُوا: | ولا يحل لكم أن تأخذوا مما آتيتموهن شيئا | ٢٢٩ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | وآتيتم إحداهن قنطارا فلا تأخذوا منه شيئا ... ... | ٢٠ | م النساء | ٤ |
| تَأْخُذُونَهُ: | فلا تأخذوا منه شيئا أتأخذونه بهتانا وإثما مبينا | ٢٠ | م « | ٤ |
| (٢) | وكيف تأخذونه وقد أفضى بعضكم إلى بعض... ... | ٢١ | م « | ٤ |
| تَأْخُذُونَهَا: | وعدكم الله مغانم كثيرة تأخذونها فعجل لكم هذه | ٢٠ | م الفتح | ٨ |
| لَتَأْخُذُوهَا: | سيقول المخلفون إذا انطلقتم إلى مغانم لتأخذوها | ١٥ | م « | ٤٨ |
| نَأْخُذَ: | قال معاذ الله أن نأخذ إلا من وجدنا متاعنا عنده | ٧٩ | ك يوسف | ١٢ |
| يَأْخُذُ: | هو يقبل التوبة عن عباده ويأخذ الصدقات | ١٠٤ | م التوبة | ٩ |
| (٣) | ما كان ليأخذ أخاه فى دين الملك إلا أن يشاء الله | ٧٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | وكان وراءهم ملك يأخذ كل سفينة غصبا ... ... | ٧٩ | ك الكهف | ١٨ |
| فَيَأْخُذَكُمْ: | ولا تمسوها بسوء فيأخذكم عذاب أليم ... ... | ٧٣ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | | | | |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| فَيَأْخُذَكُمْ: | ولا تمسوها بسوء فيأخذكم عذاب قريب | ٦٤ | ك هود | ١١ |
| | ولا تمسوها بسوء فيأخذكم عذاب يوم عظيم ... ... | ١٥٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| يَأْخُذْهُ: | فليلقه اليم بالساحل يأخذه عدو لى وعدو له | ٣٩ | ك طه | ٢٠ |
| يَأْخُذَهُمْ: | أو يأخذهم فى تقلبهم فما هم بمعجزين ... ... | ٤٦ | ك النحل | ١٦ |
| (٢) | أو يأخذهم على تخوف فإن ربكم لرءوف رحيم | ٤٧ | ك « | ١٦ |
| يَأْخُذُوا: | فلتقم طائفة منهم معك وليأخذوا أسلحتهم... ... | ١٠٢ | م النساء | ٤ |
| (٣) | فليصلوا معك وليأخذوا حذرهم وأسلحتهم ... ... | ١٠٢ | م « | ٤ |
| | فخذها بقوة وأمر قومك يأخذوا بأحسنها ... ... | ١٤٥ | ك الأعراف | ٧ |
| يَأْخُذُونَ: | يأخذون عرض هذا الأدنى ويقولون سيغفر لنا | ١٦٩ | م « | ٧ |
| يَأْخُذُونَهَا: | ومغانم كثيرة يأخذونها وكان الله عزيزا حكيما | ١٩ | م الفتح | ٤٨ |
| يَأْخُذُوهُ: | ويقولون سيغفر لنا وإن يأتهم عرض مثله يأخذوه | ١٦٩ | م الأعراف | ٧ |
| (٢) | وهمت كل أمة برسولهم ليأخذوه وجادلوا بالباطل | ٥ | ك غافر | ٤٠ |
| خُذْ: | قال فخذ أربعة من الطير فصرهن إليك ... ... ... | ٢٦٠ | م البقرة | ٢ |
| (٧) | إنى اصطفيتك على الناس برسالاتى وبكلامى فخذ ما آتيتك | ١٤٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | خذ العفو وأمر بالعرف وأعرض عن الجاهلين | ١٩٩ | ك « | ٧ |
| | خذ من أموالهم صدقة تطهرهم وتزكيهم بها ... ... | ١٠٣ | م التوبة | ٩ |
| | قالوا يأيها العزيز إن له أبا شيخا كبيرا فخذ أحدنا | ٧٨ | ك يوسف | ١٢ |
| | يا يحيى خذ الكتاب بقوة وآتيناه الحكم صبيا... ... | ١٢ | ك مريم | ١٩ |
| | وخذ بيدك ضغثا فاضرب به ولا تحنث ... ... ... | ٤٤ | ك ص | ٣٨ |
| خُذْهَا: | فخذها بقوة وأمر قومك يأخذوا بأحسنها... ... | ١٤٥ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | قال خذها ولا تخف سنعيدها سيرتها الأولى... ... | ٢١ | ك طه | ٢٠ |
| خُذُوا: | خذوا ما آتيناكم بقوة واذكروا ما فيه لعلكم تتقون | ٦٣ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | خذوا ما آتيناكم بقوة واسمعوا قالوا سمعنا وعصينا | ٩٣ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا خذوا حذركم فانفروا ثبات... ... | ٧١ | م النساء | ٤ |
| | وخذوا حذركم إن الله أعد للكافرين عذابا مهينا | ١٠٢ | م « | ٤ |
| | يا بنى آدم خذوا زينتكم عند كل مسجد وكلوا واشربوا | ٣١ | ك الأعراف | ٧ |
| | خذوا ما آتيناكم بقوة واذكروا ما فيه لعلكم تتقون | ١٧١ | ك « | ٧ |
| خُذُوهُ: | يقولون إن أوتيتم هذا فخذوه وإن لم تؤتوه فاحذروا | ٤١ | م المائدة | ٥ |
| (٤) | خذوه فاعتلوه إلى سواء الجحيم ... ... ... ... | ٤٧ | ك الدخان | ٤٤ |
| | وما آتاكم الرسول فخذوه وما نهاكم عنه فانتهوا... ... | ٧ | م الحشر | ٥٩ |
| | خذوه فغلوه ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك الحاقة | ٦٩ |
| خُذُوهُمْ: | فإن تولوا فخذوهم واقتلوهم حيث وجدتموهم | ٨٩ | م النساء | ٤ |
| (٣) | ويكفوا أيديهم فخذوهم واقتلوهم حيث ثقفتموهم | ٩١ | م « | ٤ |
| | وخذوهم واحصروهم واقعدوا لهم كل مرصد... ... | ٥ | م التوبة | ٩ |
| أُخِذَ: | إن يعلم الله فى قلوبكم خيرا يؤتكم خيرا مما أخذ منكم | ٧٠ | م الأنفال | ٨ |
| أُخِذُوا: | ملعونين أين ما ثقفوا أخذوا وقتلوا تقتيلا | ٦١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| (٢) | ولو ترى إذ فزعوا فلا فوت وأخذوا من مكان قريب | ٥١ | ك سبأ | ٣٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يُؤْخَذُ | : ولا يقبل منها شفاعة ولا يؤخذ منها عدل ولا هم ينصرون | ٤٨ | م البقـرة | ٢ |
| (٥) | وإن تعدل كل عدل لا يؤخذ منها ... ... ... ... | ٧٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | ألم يؤخذ عليهم ميثاق الكتاب ألا يقولوا على الله إلا الحق | ١٦٩ | م الأعراف | ٧ |
| | يعرف المجرمون بسيماهم فيؤخذ بالنواصي والأقدام | ٤١ | م الرحمن | ٥٥ |
| | فاليوم لا يؤخذ منكم فدية ولا من الذين كفروا... ... | ١٥ | م الحديد | ٥٧ |
| تُؤَاخِذْنَا | : ربنا لا تؤاخذنا إن نسينا أو أخطأنا ... ... | ٢٨٦ | م البقـرة | ٢ |
| تُؤَاخِذْنِي | : قال لا تؤاخذني بما نسيت ولا ترهقني من أمري | ٧٣ | ك الكهف | ١٨ |
| يُؤَاخِذُ | : ولو يؤاخذ الله الناس بظلمهم ما ترك عليها من دابة | ٦١ | ك النحل | ١٦ |
| (٢) | ولو يؤاخذ الله الناس بما كسبوا ما ترك على ظهرها | ٤٥ | ك فاطر | ٣٥ |
| يُؤَاخِذُكُمْ | : لا يؤاخذكم الله باللغو في أيمانكم... ... ... | ٢٢٥ | م البقـرة | ٢ |
| (٤) | ولكن يؤاخذكم بما كسبت قلوبكم والله غفور حليم | ٢٢٥ | م « | ٢ |
| | لا يؤاخذكم الله باللغو في أيمانكم ... ... ... ... | ٨٩ | م المائدة | ٥ |
| | ولكن يؤاخذكم بما عقدتم الأيمان ... ... ... ... | ٨٩ | م « | ٥ |
| يُؤَاخِذُهُمْ | : لو يؤاخذهم بما كسبوا لعجل لهم العذاب | ٥٨ | ك الكهف | ١٨ |
| اتَّخَذَ | : وقالوا اتخذ الله ولدا سبحانه ... ... ... ... ... | ١١٦ | م البقـرة | ٢ |
| (٢٠) | واتبع ملة إبراهيم حنيفا واتخذ الله إبراهيم خليلا | ١٢٥ | م النساء | ٤ |
| | واتخذ قوم موسى من بعده من حليهم عجلا جسدا | ١٤٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | قالوا اتخذ الله ولدا سبحانه هو الغني له ما في السموات | ٦٨ | ك يونس | ١٠ |
| | أفأصفاكم ربكم بالبنين واتخذ من الملائكة إناثا... ... | ٤٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وينذر الذين قالوا اتخذ الله ولدا ... ... ... ... | ٤ | ك الكهف | ١٨ |
| | فلما بلغا مجمع بينهما نسيا حوتهما فاتخذ سبيله في البحر | ٦١ | ك « | ١٨ |
| | وما أنسانيه إلا الشيطان أن أذكره واتخذ سبيله في البحر | ٦٣ | ك « | ١٨ |
| | أطلع الغيب أم اتخذ عند الرحمن عهدا ... ... ... | ٧٨ | ك مريم | ١٩ |
| | لا يملكون الشفاعة إلا من اتخذ عند الرحمن عهدا | ٨٧ | ك « | ١٩ |
| | وقالوا اتخذ الرحمن ولدا ... ... ... ... ... ... | ٨٨ | ك « | ١٩ |
| | وقالوا اتخذ الرحمن ولدا سبحانه بل عباد مكرمون | ٢٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ما اتخذ الله من ولد وما كان معه من إله إذاً لذهب | ٩١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | أرأيت من اتخذ إلهه هواه أفأنت تكون عليه وكيلا | ٤٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | أم اتخذ مما يخلق بنات وأصفاكم بالبنين ... ... | ١٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | أفرأيت من اتخذ إلهه هواه وأضله الله على علم... ... | ٢٣ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | وأنه تعالى جد ربنا ما اتخذ صاحبة ولا ولدا... ... | ٣ | ك الجن | ٧٢ |
| | إن هذه تذكرة فمن شاء اتخذ إلى ربه سبيلا... ... | ١٩ | ك المزمل | ٧٣ |
| | إن هذه تذكرة فمن شاء اتخذ إلى ربه سبيلا... ... | ٢٩ | م الإنسان | ٧٦ |
| | ذلك اليوم الحق فمن شاء اتخذ إلى ربه مآبا... ... | ٣٩ | ك النبأ | ٧٨ |
| اتَّخَذَتْ | : فاتخذت من دونهم حجابا فأرسلنا إليها روحنا | ١٧ | ك مريم | ١٩ |
| (٢) | كمثل العنكبوت اتخذت بيتا وإن أوهن البيوت لبيت | ٤١ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| اتَّخَذْتُ | : ويوم يعض الظالم على يديه يقول يا ليتني اتخذت | ٢٧ | ك الفرقان | ٢٥ |
| اتَّخَذْتَ | : يريد أن ينقض فأقامه قال لو شئت لاتخذت عليه أجرا | ٧٧ | ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | قال لئن اتخذت إلها غيري لأجعلنك من المسجونين | ٢٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| اتَّخَذْتُمُ | : وإذ واعدنا موسى أربعين ليلة ثم اتخذتم العجل | ٥١ | م البقـرة | ٢ |
| | قل أتخذتم عند الله عهدا فلن يخلف الله عهده | ٨٠ | م « | ٢ |
| | ولقد جاءكم موسى بالبينات ثم اتخذتم العجل من بعده | ٩٢ | م « | ٢ |
| | قل أفاتخذتم من دونه أولياء لا يملكون لأنفسهم نفعا | ١٦ | م الرعد | ١٣ |
| | إنما اتخذتم من دون الله أوثانا مودة بينكم في الحياة | ٢٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ذلكم بأنكم اتخذتم آيات الله هزوا وغرتكم الحياة | ٣٥ | ك الجاثية | ٤٥ |
| اتَّخَذْتُمُوهُ | : أرهطي أعز عليكم من الله واتخذتموه وراءكم | ٩٢ | ك هود | ١١ |
| فَاتَّخَذْتُمُوهُمْ | : فاتخذتموهم سخريا حتى أنسوكم ذكري | ١١٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| اتَّخَذْنَاهُ | : لو أردنا أن نتخذ لهوا لاتخذناه من لدنا... ... | ١٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| أَتَّخَذْنَاهُمْ | : أتخذناهم سخريا أم زاغت عنهم الأبصار | ٦٣ | ك ص | ٣٨ |
| اتَّخَذَهَا | : وإذا علم من آياتنا شيئا اتخذها هزوا ... ... | ٩ | ك الجاثية | ٤٥ |
| اتَّخَذُوا | : ثم اتخذوا العجل من بعد ما جاءتهم البينات | ١٥٣ | م النساء | ٤ |
| (٢٦) | لا تتخذوا الذين اتخذوا دينكم هزوا ولعبا... ... | ٥٧ | م المائدة | ٥ |
| | وذر الذين اتخذوا دينهم لعبا ولهوا وغرتهم الحياة | ٧٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | إنهم اتخذوا الشياطين أولياء من دون الله ... ... | ٣٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | الذين اتخذوا دينهم لهوا ولعبا وغرتهم الحياة الدنيا | ٥١ | ك « | ٧ |
| | إن الذين اتخذوا العجل سينالهم غضب من ربهم | ١٥٢ | ك « | ٧ |
| | اتخذوا أحبارهم ورهبانهم أربابا من دون الله | ٣١ | م التوبة | ٩ |
| | اتخذوا مسجدا ضرارا وكفرا وتفريقا بين المؤمنين | ١٠٧ | م « | ٩ |
| | هؤلاء قومنا اتخذوا من دونه آلهة ... ... ... ... | ١٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | ليدحضوا به الحق واتخذوا آياتي وما أنذروا هزوا | ٥٦ | ك « | ١٨ |
| | ذلك جزاؤهم جهنم بما كفروا واتخذوا آياتي ورسلي هزوا | ١٠٦ | ك « | ١٨ |
| | واتخذوا من دون الله آلهة ليكونوا لهم عزا ... ... | ٨١ | ك مريم | ١٩ |
| | أم اتخذوا آلهة من الأرض هم ينشرون ... ... ... | ٢١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | أم اتخذوا من دونه آلهة قل هاتوا برهانكم ... ... | ٢٤ | ك « | ٢١ |
| | واتخذوا من دونه آلهة لا يخلقون شيئا وهم يخلقون | ٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | إن قومي اتخذوا هذا القرآن مهجورا ... ... ... | ٣٠ | ك « | ٢٥ |
| | الذين اتخذوا من دون الله أولياء كمثل العنكبوت | ٤١ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | واتخذوا من دون الله آلهة لعلهم ينصرون ... ... | ٧٤ | ك يس | ٣٦ |
| | والذين اتخذوا من دونه أولياء ما نعبدهم إلا ليقربونا | ٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| | أم اتخذوا من دون الله شفعاء... ... ... ... ... | ٤٣ | ك « | ٣٩ |
| | والذين اتخذوا من دونه أولياء الله حفيظ عليهم | ٦ | ك الشورى | ٤٢ |
| | أم اتخذوا من دونه أولياء فالله هو الولي وهو يحيي | ٩ | ك « | ٤٢ |
| | ولا يغني عنهم ما كسبوا شيئا ولا ما اتخذوا من دون الله | ١٠ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | فلولا نصرهم الذين اتخذوا من دون الله قربانا آلهة | ٢٨ | ك الأحقاف | ٤٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| اتَّخَذُوا | : اتخذوا أيمانهم جنة فصدوا عن سبيل الله فلهم عذاب | ١٦ | م المجادلة | ٥٨ |
| | اتخذوا أيمانهم جنة فصدوا عن سبيل الله إنهم ساء | ٢ | م المنافقون | ٦٣ |
| اتَّخَذُوك | : لتفترى علينا غيره وإذًا لاتخذوك خليلا... ... | ٧٣ | م الإسراء | ١٧ |
| اتَّخَذُوه | : ولا يهدوهم سبيلا اتخذوه وكانوا ظالمين ... ... | ١٤٨ | ك الأعراف | ٧ |
| اتَّخَذُوها | : وإذا ناديتم إلى الصلاة اتخذوها هزوا ولعبا | ٥٨ | م المائدة | ٥ |
| اتَّخَذُوهم | : ما اتخذوهم أولياء ولكن كثيرا منهم فاسقون | ٨١ | م « | ٥ |
| أَتَّخِذُ | : قل أغير الله أتخذ وليا فاطر السموات والأرض | ١٤ | ك الأنعام | ٦ |
| (٣) | يا ويلتى ليتنى لم أتخذ فلانا خليلا ... ... ... ... | ٢٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | أتخذ من دونه آلهة إن يردن الرحمن بضر لا تغن عنى | ٢٣ | ك يس | ٣٦ |
| أَتَّخِذَنَّ | : لعنه الله وقال لأتخذن من عبادك نصيبا مفروضا | ١١٨ | م النساء | ٤ |
| تَتَّخِذُ | : وإذ قال إبراهيم لأبيه آزر أتتخذ أصناما آلهة... ... | ٧٤ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | إما أن تعذب وإما أن تتخذ فيهم حسنا... ... ... | ٨٦ | م الكهف | ١٨ |
| تَتَّخِذُنا | : قالوا أتتخذنا هزوا قال أعوذ بالله ... ... ... | ٦٧ | م البقرة | ٢ |
| تَتَّخِذُوا | : ولا تتخذوا آيات الله هزوا واذكروا نعمة الله | ٢٣١ | م « | ٢ |
| (١٣) | ولا يأمركم أن تتخذوا الملائكة والنبيين أربابا | ٨٠ | م آل عمران | ٣ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تتخذوا بطانة من دونكم... ... | ١١٨ | م « | ٣ |
| | فلا تتخذوا منهم أولياء حتى يهاجروا فى سبيل الله | ٨٩ | م النساء | ٤ |
| | واقتلوهم حيث وجدتموهم ولا تتخذوا منهم وليا | ٨٩ | م « | ٤ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تتخذوا الكافرين أولياء... ... | ١٤٤ | م « | ٤ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تتخذوا اليهود والنصارى أولياء | ٥١ | م المائدة | ٥ |
| | لا تتخذوا الذين اتخذوا دينكم هزوا ولعبا ... ... | ٥٧ | م « | ٥ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تتخذوا آباءكم وإخوانكم أولياء | ٢٣ | م التوبة | ٩ |
| | وقال الله لا تتخذوا إلهين اثنين إنما هو إله واحد | ٥١ | ك النحل | ١٦ |
| | ولا تتخذوا أيمانكم دخلا بينكم فتزل قدم بعد ثبوتها | ٩٤ | ك « | ١٦ |
| | وجعلناه هدى لبنى إسرائيل ألا تتخذوا من دونى وكيلا | ٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| | يأيها الذين آمنوا لاتتخذوا عدوى وعدوكم أولياء | ١ | م الممتحنة | ٦٠ |
| تَتَّخِذُون | : تتخذون من سهولها قصورا وتنحتون الجبال بيوتا | ٧٤ | ك الأعراف | ٧ |
| (٤) | ومن ثمرات النخيل والأعناب تتخذون منه سكرا ورزقا | ٦٧ | ك النحل | ١٦ |
| | تتخذون أيمانكم دخلا بينكم أن تكون أمة هى أربى من أمة | ٩٢ | ك « | ١٦ |
| | وتتخذون مصانع لعلكم تخلدون ... ... ... ... | ١٢٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| أَفَتَتَّخِذُونَهُ | : أفتتخذونه وذريته أولياء من دونى ... ... | ٥٠ | ك الكهف | ١٨ |
| تَتَّخِذَ | : لو أردنا أن نتخذ لهوا لاتخذناه من لدنا ... ... | ١٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٢) | قالوا سبحانك ما كان ينبغى لنا أن نتخذ من دونك | ١٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| لَتَتَّخِذَنَّ | : قال الذين غلبوا على أمرهم لنتخذن عليهم مسجدا | ٢١ | ك الكهف | ١٨ |
| تَتَّخِذُه | : أكرى مثواه عسى أن ينفعنا أو نتخذه ولدا... ... | ٢١ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | لاتقتلوه عسى أن ينفعنا أو نتخذه ولدا وهم لا يشعرون | ٩ | ك القصص | ٢٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَتَّخِذُ | : ومن الناس من يتخذ من دون الله أندادا يحبونهم كحب الله | ١٦٥ | م البقرة | ٢ |
| (١٤) | لا يتخذ المؤمنون الكافرين أولياء من دون المؤمنين | ٢٨ | م آل عمران | ٣ |
| | ولا يتخذ بعضنا بعضا أربابا من دون الله ... ... | ٦٤ | م « | ٣ |
| | وليعلم الله الذين آمنوا ويتخذ منكم شهداء ... ... | ١٤٠ | م « | ٣ |
| | ومن يتخذ الشيطان وليا من دون الله فقد خسر خسرانا | ١١٩ | م النساء | ٤ |
| | ومن الأعراب من يتخذ ما ينفق مغرما ويتربص بكم | ٩٨ | م التوبة | ٩ |
| | ويتخذ ما ينفق قربات عند الله وصلوات الرسول | ٩٩ | م « | ٩ |
| | وقل الحمد لله الذى لم يتخذ ولدا ولم يكن له شريك فى الملك | ١١١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ما كان لله أن يتخذ من ولد سبحانه... ... ... ... | ٣٥ | ك مريم | ١٩ |
| | وما ينبغى للرحمن أن يتخذ ولدا ... ... ... ... | ٩٢ | ك « | ١٩ |
| | الذى له ملك السموات والأرض ولم يتخذ ولدا | ٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | إلا من شاء أن يتخذ إلى ربه سبيلا... ... ... ... | ٥٧ | ك « | ٢٥ |
| | لو أراد الله أن يتخذ ولدا لاصطفى مما يخلق ما يشاء | ٤ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ورفعنا بعضهم فوق بعض درجات ليتخذ بعضهم بعضا | ٣٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| يَتَّخِذَها | : ليضل عن سبيل الله بغير علم ويتخذها هزوا | ٦ | ك لقمان | ٣١ |
| يَتَّخِذُوا | : ويريدون أن يتخذوا بين ذلك سبيلا... ... ... | ١٥٠ | م النساء | ٤ |
| (٣) | ولم يتخذوا من دون الله ولا رسوله ولا المؤمنين وليجة | ١٦ | م التوبة | ٩ |
| | أحسب الذين كفروا أن يتخذوا عبادى من دونى أولياء | ١٠٢ | ك الكهف | ١٨ |
| يَتَّخِذُون | : الذين يتخذون الكافرين أولياء من دون المؤمنين | ١٣٩ | م النساء | ٤ |
| يَتَّخِذُونَك | : وإذا رآك الذين كفروا إن يتخذونك إلا هزوا | ٣٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٢) | وإذا رأوك إن يتخذونك إلا هزوا... ... ... ... | ٤١ | ك الفرقان | ٢٥ |
| يَتَّخِذُوه | : وإن يروا سبيل الرشد لا يتخذوه سبيلا ... ... | ١٤٦ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | وإن يروا سبيل الغى يتخذوه سبيلا... ... ... ... | ١٤٦ | ك « | ٧ |
| فَاتَّخِذْه | : رب المشرق والمغرب لا إله إلا هو فاتخذه وكيلا | ٩ | ك المزمل | ٧٣ |
| اتَّخِذُوا | : واتخذوا من مقام إبراهيم مصلى ... ... ... | ١٢٥ | م البقرة | ٢ |
| اتَّخِذُونى | : أأنت قلت للناس اتخذونى وأمى إلهين... ... | ١١٦ | م المائدة | ٥ |
| اتَّخِذُوه | : إن الشيطان لكم عدو فاتخذوه عدوا ... ... | ٦ | ك فاطر | ٣٥ |
| اتَّخِذِى | : وأوحى ربك إلى النحل أن اتخذى من الجبال بيوتا | ٦٨ | ك النحل | ١٦ |
| أَخَذَ | : وكذلك أخذ ربك إذا أخذ القرى وهى ظالمة... ... | ١٠٢ | ك هود | ١١ |
| (٢) | كذبوا بآياتنا كلها فأخذناهم أخذ عزيز مقتدر | ٤٢ | ك القمر | ٥٤ |
| أَخْذًا | : فعصى فرعون الرسول فأخذناه أخذا وبيلا... ... | ١٦ | ك المزمل | ٧٣ |
| أَخْذَةً | : فعصوا رسول ربهم فأخذهم أخذة رابية ... ... | ١٠ | ك الحاقة | ٦٩ |
| أَخْذُه | : إذا أخذ القرى وهى ظالمة إن أخذه أليم شديد | ١٠٢ | ك هود | ١١ |
| أَخْذِهم | : وأخذهم الربا وقد نهوا عنه وأكلهم أموال الناس | ١٦١ | م النساء | ٤ |
| آخِذٌ | : ما من دابة إلا هو آخذ بناصيتها ... ... ... | ٥٦ | ك هود | ١١ |
| آخِذِين | : آخذين ما آتاهم ربهم إنهم كانوا قبل ذلك محسنين | ١٦ | ك الذاريات | ٥١ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| بآخذيه | ولستم بآخذيه إلا أن تغمضوا فيه ... ... ... ... | ٢ البقـرة | ٢٦٧م |
| بِاتِّخَاذِكُم | يا قوم إنكم ظلمتم أنفسكم باتخاذكم العجل | ٢ « | ٥٤ م |
| مُتَّخِذَ | وما كنت متخذ المضلين عضـدا... ... ... ... | ١٨ ك الكهف | ٥١ |
| مُتَّخِذَات | محصنات غير مسافحات ولا متخذات أخدان | ٤ م النسـاء | ٢٥ |
| مُتَّخِذِي | محصـنين غير مسـافحين ولا متخذى أخدان | ٥ م المـائدة | ٥ |
| أُخِّرَ | ينبأ الإنسان يومئذ بما قدم وأخر... ... ... ... | ٧٥ ك القيـامة | ١٣ |
| أُخِّرَتْ | وإذا القبور بعثرت . علمت نفس ما قدمت وأخرت | ٨٢ ك الانفطار | ٥ |
| أَخَّرْتَنَا | ربنا لم كتبت علينا القتال لولا أخرتنا إلى أجل قريب | ٤ م النسـاء | ٧٧ |
| أَخَّرْتَنِ | لئن أخرتن إلى يوم القيامة لاحتنكن ذريته إلا قليلا | ١٧ ك الإسراء | ٦٢ |
| أَخَّرْتَنِي | لولا أخرتنى إلى أجل قريب فأصدق وأكن من الصالحين | ٦٣ م المنافقون | ١٠ |
| أَخَّرْنَا | ولئن أخرنا عنهم العذاب إلى أمة معدودة ليقولن ما يحبسه | ١١ ك هـود | ٨ |
| نُؤَخِّرُهُ | وما نؤخره إلا لأجل معدود ... ... ... ... | ١١ « | ١٠٤ك |
| يُؤَخِّرَ | ولن يؤخر الله نفسا إذا جاء أجلها والله خبير بما تعملون | ٦٣ م المنافقون | ١١ |
| يُؤَخِّرْكُمْ | يدعوكم ليغفر لكم من ذنوبكم ويؤخركم إلى أجل مسمى | ١٤ ك إبراهـيم | ١٠ |
| (٢) | يغفـر لكم من ذنوبكم ويؤخركم إلى أجل مسـمى | ٧١ ك نـوح | ٤ |
| يُؤَخِّرُهُمْ | إنما يؤخرهم ليوم تشخص فيه الأبصار ... ... | ١٤ ك إبراهـيم | ٤٢ |
| (٣) | ما ترك عليها من دابة ولكن يؤخرهم إلى أجل مسمى | ١٦ ك النحـل | ٦١ |
| | ما ترك على ظهرها من دابة ولكن يؤخرهم إلى أجل مسمى | ٣٥ ك فاطـر | ٤٥ |
| أَخِّرْنَا | ربنا أخرنا إلى أجل قريب نجب دعوتك ونتبع الرسل | ١٤ ك إبراهـيم | ٤٤ |
| يُؤَخِّرُ | إن أجل الله إذا جاء لا يؤخر لو كنتم تعلمـون | ٧١ ك نـوح | ٤ |
| تَأَخَّرَ | فمن تعجل فى يومين فلا إثم عليه ومن تأخر فلا إثم عليه | ٢ البقـرة | ٢٠٣م |
| (٢) | ليغفر لك الله ما تقدم من ذنبك وما تأخر ويتم نعمته | ٤٨ م الفتـح | ٢ |
| يَتَأَخَّرَ | لمن شاء منكم أن يتقدم أو يتأخر ... ... ... ... | ٧٤ ك المـدثر | ٣٧ |
| تَسْتَأْخِرُونَ | قل لكم ميعاد يوم لا تستأخرون عنه ساعة | ٣٤ ك سـبأ | ٣٠ |
| يَسْتَأْخِرُونَ | فإذا جاء أجلهم لا يستأخرون ساعة ولا يستقدمون | ٧ ك الأعراف | ٣٤ |
| (٥) | إذا جاء أجلهم فلا يستأخرون ساعة ولا يستقدمون | ١٠ ك يونس | ٤٩ |
| | ما تسبق من أمة أجلها وما يستأخرون ... ... ... | ١٥ ك الحجـر | ٥ |
| | فإذا جاء أجلهم لا يستأخرون ساعة ولا يستقدمون | ١٦ ك النحـل | ٦١ |
| | ما تسبق من أمة أجلها وما يستأخرون ... ... ... | ٢٣ ك المؤمنون | ٤٣ |
| المستأخرين | ولقد علمنا المستقدمين منكم ولقد علمنا المستأخرين | ١٥ ك الحجـر | ٢٤ |
| آخَر | إذ قربا قربانا فتقبل من أحدهما ولم يتقبل من الآخر | ٥ م المـائدة | ٢٧ |
| (١٥) | خلطوا عملا صالحا وآخر سيئا ... ... ... ... | ٩ التـوبة | ١٠٢م |
| | وقال الآخر إنى أرانى أحمل فوق رأسى خبزا... ... | ١٢ ك يوسـف | ٣٦ |
| | وأما الآخر فيصلب فتأكل الطير من رأسه ... ... | ١٢ ك « | ٤١ |
| | الذين يجعلون مع الله إلها آخر فسوف يعلمون... ... | ١٥ ك الحجـر | ٩٦ |
| | لا تجعل مع الله إلها آخر فتقعد مذموما مخذولا... ... | ١٧ ك الإسراء | ٢٢ |
| | ولا تجعل مع الله إلها آخر فتلقى فى جهنم ملوما مدحورا | ١٧ ك « | ٣٩ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| آخَر | ثم أنشأناه خلقا آخر فتبارك الله أحسن الخالقين | ٢٣ ك المؤمنون | ١٤ |
| | ومن يدع مع الله إلها آخر لا برهان له به فإنما حسابه | ٢٣ ك « | ١١٧ |
| | والذين لا يدعون مع الله إلها آخر ولا يقتلون النفس | ٢٥ م الفرقان | ٦٨ |
| | فلا تدع مع الله إلها آخر فتكون من المعذبين... ... | ٢٦ ك الشـعراء | ٢١٣ |
| | ولا تدع مع الله إلها آخر لا إله إلا هو... ... ... | ٢٨ ك القصص | ٨٨ |
| | وآخر من شكله أزواج ... ... ... ... ... ... | ٣٨ ك ص | ٥٨ |
| | الذى جعل مع الله إلها آخر فألقياه فى العذاب الشديد | ٥٠ ك ق | ٢٦ |
| | ولا تجعلوا مع الله إلها آخر إنى لكم منه نذير مبين | ٥١ ك الذاريات | ٥١ |
| آخَرَانِ | اثنان ذوا عدل منكم أو آخران من غيركم ... ... | ٥ م المـائدة | ١٠٦م |
| (٢) | فإن عثر على أنهما استحقا إثما فآخران يقومان مقامهما | ٥ « | ١٠٧م |
| آخَرُونَ | وآخرون اعترفوا بذنوبهم خلطوا عملا صالحا | ٩ التـوبة | ١٠٢م |
| (٥) | وآخرون مرجون لأمر الله إما يعذبهم وإما يتوب عليهم | ٩ « | ١٠٦م |
| | إن هذا إلا إفك افتراه وأعانه عليه قوم آخرون | ٢٥ ك الفرقان | ٤ |
| | وآخرون يضربون فى الأرض يبتغون من فضل الله | ٧٣ م المـزمل | ٢٠ |
| | وآخرون يقاتلون فى سبيل الله فاقرءوا ما تيسر منه | ٧٣ « | ٢٠ م |
| آخَرِينَ | ستجدون آخرين يريدون أن يأمنوكم ويأمنوا قومهم | ٤ م النسـاء | ٩١ |
| (١٧) | إن يشأ يذهبكم أيها الناس ويأت بآخرين ... ... | ٤ « | ١٣٣م |
| | سماعون للكذب سماعون لقوم آخرين لم يأتوك | ٥ م المـائدة | ٤١ |
| | فأهلكناهم بذنوبهم وأنشأنا من بعدهم قرنا آخرين | ٦ ك الأنعام | ٦ |
| | كما أنشأكم من ذرية قوم آخرين... ... ... ... | ٦ ك « | ١٣٣ك |
| | ترهبون به عدو الله وعدوكم وآخرين من دونهم... ... | ٨ م الأنفال | ٦٠ |
| | وكم قصمنا من قرية كانت ظالمة وأنشأنا بعدها قوما آخرين | ٢١ ك الأنبياء | ١١ |
| | ثم أنشأنا من بعدهم قرنا آخرين... ... ... ... | ٢٣ ك المؤمنون | ٣١ |
| | ثم أنشأنا من بعدهم قرونا آخرين ... ... ... ... | ٢٣ ك « | ٤٢ |
| | وأزلفنا ثم الآخرين ... ... ... ... ... ... | ٢٦ ك الشـعراء | ٦٤ |
| | ثم أغرقنا الآخرين ... ... ... ... ... ... | ٢٦ ك « | ٦٦ |
| | ثم دمرنا الآخرين ... ... ... ... ... ... | ٢٦ ك « | ١٧٢ك |
| | ثم أغرقنا الآخرين ... ... ... ... ... ... | ٣٧ ك الصافات | ٨٢ |
| | ثم دمرنا الآخرين... ... ... ... ... ... | ٣٧ ك « | ١٣٦ك |
| | وآخرين مقرنين فى الأصفاد ... ... ... ... | ٣٨ ك ص | ٣٨ |
| | كذلك وأورثناها قوما آخرين ... ... ... ... | ٤٤ ك الدخان | ٢٨ |
| | وآخرين منهم لما يلحقوا بهم وهو العزيز الحكيم | ٦٢ م الجمعـة | ٣ |
| أُخْرَى | أن تضـل إحداهما فتذكر إحداهما الأخرى | ٢ البقـرة | ٢٨٢م |
| (٢٣) | فئة تقاتل فى سبيل الله وأخرى كافرة يرونهم مثليهم | ٣ م آل عمران | ١٣ |
| | ولتأت طائفة أخرى لم يصلوا فليصلوا معك ... ... | ٤ م النسـاء | ١٠٢م |
| | أئنكم لتشهدون أن مع الله آلهة أخرى ... ... ... | ٦ ك الأنعـام | ١٩ |
| | ولا تكسب كل نفس إلا عليها ولا تزر وازرة وزر أخرى | ٦ ك « | ١٦٤ك |
| | ومن ضل فإنما يضل عليها ولا تزر وازرة وزر أخرى | ١٧ ك الإسراء | ١٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أُخْرَى : | أم أمنتم أن يعيدكم فيه تارة أخرى فيرسل عليكم قاصفا | ٦٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| | أتوكأ عليها وأهش بها على غنمي ولي فيها مآرب أخرى | ١٨ | ك طـه | ٢٠ |
| | واضمم يدك إلى جناحك تخرج بيضاء من غير سوء آية أخرى | ٢٢ | ك « | ٢٠ |
| | ولقد منا عليك مرة أخرى ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك « | ٢٠ |
| | منها خلقناكم وفيها نعيدكم ومنها نخرجكم تارة أخرى | ٥٥ | ك « | ٢٠ |
| | ولا تزر وازرة وزر أخرى وإن تدع مثقلة إلى حملها | ١٨ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | ولا تزر وازرة وزر أخرى ثم إلى ربكم مرجعكم | ٧ | ك الـزمر | ٣٩ |
| | فيمسك التي قضى عليها الموت ويرسل الأخرى | ٤٢ | ك « | ٣٩ |
| | ثم نفخ فيه أخرى فإذا هم قيام ينظرون ... ... ... | ٦٨ | ك « | ٣٩ |
| | وأخرى لم تقدروا عليها قد أحاط الله بها ... ... | ٢١ | م الفتـح | ٤٨ |
| | فإن بغت إحداهما على الأخرى فقاتلوا التي تبغي حتى تفيء | ٩ | م الحجـرات | ٤٩ |
| | ولقد رآه نزلة أخرى ... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك النجـم | ٥٣ |
| | ومناة الثالثة الأخرى... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك « | ٥٣ |
| | ألا تزر وازرة وزر أخرى... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك « | ٥٣ |
| | وأن عليه النشأة الأخرى ... ... ... ..... ... | ٤٧ | ك « | ٥٣ |
| | وأخرى تحبونها نصر من الله وفتح قريب وبشر المؤمنين | ١٣ | م الصـف | ٦١ |
| | وإن تعاسرتم فسترضع له أخرى ... ... ... ... | ٦ | م الطـلاق | ٦٥ |
| أُخْرَاكُمْ : | والرسول يدعوكم في أخراكم فأثابكم غما بغم... ... | ١٥٣ | م آل عمران | ٣ |
| أُخْرَاهُمْ : | قالت أخراهم لأولاهم ربنا هؤلاء أضلونا ... ... | ٣٨ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | وقالت أولاهم لأخراهم فما كان لكم علينا من فضل | ٣٩ | ك « | ٧ |
| أُخَرَ : | فمن كان منكم مريضا أو على سفر فعدة من أيام أخر | ١٨٤ | م البقـرة | ٢ |
| (٥) | ومن كان مريضا أو على سفر فعدة من أيام أخر | ١٨٥ | م « | ٢ |
| | منه آيات محكمات هن أم الكتاب وأخر متشابهات | ٧ | م آل عمران | ٣ |
| | يأكلهن سبع عجاف وسبع سنبلات خضر وأخر يابسات | ٤٣ | ك يوسف | ١٢ |
| | يأكلهن سبع عجاف وسبع سنبلات خضر وأخر يابسات | ٤٦ | ك « | ١٢ |
| آخر : | ومن الناس من يقول آمنا بالله وباليوم الآخر وما هم | ٨ | م البقـرة | ٢ |
| (٢٨) | من آمن بالله واليوم الآخر وعمل صالحا فلهم أجرهم | ٦٢ | م « | ٢ |
| | وارزق أهله من الثمرات من آمن منهم بالله واليوم الآخر | ١٢٦ | م « | ٢ |
| | ولكن البر من آمن بالله واليوم الآخر والملائكة والكتاب | ١٧٧ | م « | ٢ |
| | ما خلق الله في أرحامهن إن كن يؤمن بالله واليوم الآخر | ٢٢٨ | م « | ٢ |
| | ذلك يوعظ به من كان منكم يؤمن بالله واليوم الآخر | ٢٣٢ | م « | ٢ |
| | كالذي ينفق ماله رئاء الناس ولا يؤمن بالله واليوم الآخر | ٢٦٤ | م « | ٢ |
| | يؤمنون بالله واليوم الآخر ويأمرون بالمعروف | ١١٤ | م آل عمران | ٣ |
| | رئاء الناس ولا يؤمنون بالله ولا باليوم الآخر | ٣٨ | م النسـاء | ٤ |
| | وماذا عليهم لو آمنوا بالله واليوم الآخر وأنفقوا مما رزقهم | ٣٩ | م « | ٤ |
| | إن كنتم تؤمنون بالله واليوم الآخر ذلك خير ... ... | ٥٩ | م « | ٤ |
| | ومن يكفر بالله وملائكته وكتبه ورسله واليوم الآخر | ١٣٦ | م « | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| آخر : | والمؤتون الزكاة والمؤمنون بالله واليوم الآخر... ... | ١٦٢ | م النسـاء | ٤ |
| | من آمن بالله واليوم الآخر وعمل صالحا فلا خوف عليهم | ٦٩ | م المـائدة | ٥ |
| | إنما يعمر مساجد الله من آمن بالله واليوم الآخر | ١٨ | م التـوبة | ٩ |
| | كن آمن بالله واليوم الآخر وجاهد في سبيل الله | ١٩ | م « | ٩ |
| | قاتلوا الذين لا يؤمنون بالله ولا باليوم الآخر | ٢٩ | م « | ٩ |
| | لا يستأذنك الذين يؤمنون بالله واليوم الآخر أن يجاهدوا | ٤٤ | م « | ٩ |
| | إنما يستأذنك الذين لا يؤمنون بالله واليوم الآخر | ٤٥ | م « | ٩ |
| | ومن الأعراب من يؤمن بالله واليوم الآخر ويتخذ ما ينفق | ٩٩ | م « | ٩ |
| | وآخر دعواهم أن الحمد لله رب العالمين ... ... ... | ١٠ | ك يونس | ١٠ |
| | رأفة في دين الله إن كنتم تؤمنون بالله واليوم الآخر | ٢ | م النـور | ٢٤ |
| | اعبدوا الله وارجوا اليوم الآخر ولا تعثوا في الأرض | ٣٦ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | في رسول الله أسوة حسنة لمن كان يرجو الله واليوم الآخر | ٢١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | هو الأول والآخر والظاهر والباطن وهو بكل شيء عليم | ٣ | م الحديد | ٥٧ |
| | لا تجد قوما يؤمنون بالله واليوم الآخر يوادون من حاد الله | ٢٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| | فيهم أسوة حسنة لمن كان يرجو الله واليوم الآخر | ٦ | م الممتحنـة | ٦٠ |
| | ذلكم يوعظ به من كان يؤمن بالله واليوم الآخر | ٢ | م الطـلاق | ٦٥ |
| آخِرِنَا : | أنزل علينا مائدة من السماء تكون لنا عيدا لأولنا وآخرنا | ١١٤ | م المائدة | ٥ |
| آخِرَهُ : | آمنوا بالذي أنزل على الذين آمنوا وجه النهار واكفروا آخره | ٧٢ | م آل عمران | ٣ |
| الآخِرِين : | واجعل لي لسان صدق في الآخرين ... ... | ٨٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| (١٠) | وتركنا عليه في الآخرين... ... ... ... ... ... | ٧٨ | ك الصافات | ٣٧ |
| | وتركنا عليه في الآخرين... ... ... ... ... ... | ١٠٨ | ك « | ٣٧ |
| | وتركنا عليهما في الآخرين ... ... ... ... ... | ١١٩ | ك « | ٣٧ |
| | وتركنا عليه في الآخرين ... ... ... ... ... ... | ١٢٩ | ك « | ٣٧ |
| | فجعلناهم سلفا ومثلا للآخرين ... ... ... ... | ٥٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وقليل من الآخرين... ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك الواقعـة | ٥٦ |
| | وثلة من الآخرين ... ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك « | ٥٦ |
| | قل إن الأولين والآخرين ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك « | ٥٦ |
| | ثم نتبعهم الآخرين... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك المرسلات | ٧٧ |
| الآخِرَة : | وما أنزل من قبلك وبالآخرة هم يوقنون... ... | ٤ | م البقـرة | ٢ |
| (١١٥) | أولئك الذين اشتروا الحياة الدنيا بالآخرة ... ... | ٨٦ | م « | ٢ |
| | قل إن كانت لكم الدار الآخرة عند الله خالصة... ... | ٩٤ | م « | ٢ |
| | ولقد علموا لمن اشتراه ماله في الآخرة من خلاق | ١٠٢ | م « | ٢ |
| | لهم في الدنيا خزي ولهم في الآخرة عذاب عظيم | ١١٤ | م « | ٢ |
| | ولقد اصطفيناه في الدنيا وإنه في الآخرة لمن الصالحين | ١٣٠ | م « | ٢ |
| | ربنا آتنا في الدنيا وماله في الآخرة من خلاق... ... | ٢٠٠ | م « | ٢ |
| | ربنا آتنا في الدنيا حسنة وفي الآخرة حسنة وقنا عذاب النار | ٢٠١ | م « | ٢ |
| | فأولئك حبطت أعمالهم في الدنيا والآخرة ... ... | ٢١٧ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الآخرة | يبين الله لكم الآيات لعلكم تتفكرون . في الدنيا والآخرة | ٢٢٠ | م البقـرة | ٢ |
| | أولئك الذين حبطت أعمالهم في الدنيا والآخرة... ... | ٢٢ | م آل عمران | ٣ |
| | اسمه المسيح عيسى بن مريم وجيها في الدنيا والآخرة | ٤٥ | م « | ٣ |
| | فأما الذين كفروا فأعذبهم عذابا شديدا في الدنيا والآخرة | ٥٦ | م « | ٣ |
| | أولئك لا خلاق لهم في الآخرة ولا يكلمهم الله | ٧٧ | م « | ٣ |
| | ومن يبتغ غير الإسلام دينا فلن يقبل منه وهو في الآخرة | ٨٥ | م « | ٣ |
| | ومن يرد ثواب الدنيا نؤته منها ومن يرد ثواب الآخرة نؤته | ١٤٥ | م « | ٣ |
| | فآتاهم الله ثواب الدنيا وحسن ثواب الآخرة | ١٤٨ | م « | ٣ |
| | منكم من يريد الدنيا ومنكم من يريد الآخرة ... ... | ١٥٢ | م « | ٣ |
| | يريد الله ألا يجعل لهم حظا في الآخرة ... ... ... | ١٧٦ | م « | ٣ |
| | فليقاتل في سبيل الله الذين يشرون الحياة الدنيا بالآخرة | ٧٤ | م النساء | ٤ |
| | قل متاع الدنيا قليل والآخرة خير لمن اتقى ... ... | ٧٧ | م « | ٤ |
| | من كان يريد ثواب الدنيا فعند الله ثواب الدنيا والآخرة | ١٣٤ | م « | ٤ |
| | ومن يكفر بالإيمان فقد حبط عمله وهو في الآخرة | ٥ | م المائدة | ٥ |
| | ذلك لهم خزي في الدنيا ولهم في الآخرة عذاب عظيم | ٣٣ | م « | ٥ |
| | لهم في الدنيا خزي ولهم في الآخرة عذاب عظيم... ... | ٤١ | م « | ٥ |
| | وللدار الآخرة خير للذين يتقون أفلا تعقلون ... ... | ٣٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | والذين يؤمنون بالآخرة يؤمنون به ... ... ... ... | ٩٢ | ك « | ٦ |
| | ولتصغى إليه أفئدة الذين لا يؤمنون بالآخرة ... ... | ١١٣ | ك « | ٦ |
| | ولا تتبع أهواء الذين كذبوا بآياتنا والذين لا يؤمنون بالآخرة | ١٥٠ | ك « | ٦ |
| | الذين يصدون عن سبيل الله ويبغونها عوجا وهم بالآخرة | ٤٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | والذين كذبوا بآياتنا ولقاء الآخرة حبطت أعمالهم | ١٤٧ | ك « | ٧ |
| | واكتب لنا في هذه الدنيا حسنة وفي الآخرة إنا هدنا إليك | ١٥٦ | ك « | ٧ |
| | والدار الآخرة خير للذين يتقون أفلا تعقلون ... ... | ١٦٩ | م « | ٧ |
| | تريدون عرض الدنيا والله يريد الآخرة ... ... | ٦٧ | م الأنفال | ٨ |
| | أرضيتم بالحياة الدنيا من الآخرة ... ... ... ... | ٣٨ | م التوبة | ٩ |
| | فما متاع الحياة الدنيا في الآخرة إلا قليل ... ... ... | ٣٨ | م « | ٩ |
| | أولئك حبطت أعمالهم في الدنيا والآخرة... ... ... | ٦٩ | م « | ٩ |
| | وإن يتولوا يعذبهم الله عذابا أليما في الدنيا والآخرة | ٧٤ | م « | ٩ |
| | لهم البشرى في الحياة الدنيا وفي الآخرة ... ... ... | ٦٤ | ك يونس | ١٠ |
| | أولئك الذين ليس لهم في الآخرة إلا النار ... ... | ١٦ | ك هـود | ١١ |
| | ويبغونها عوجا وهم بالآخرة هم كافرون ... ... ... | ١٩ | ك « | ١١ |
| | لا جرم أنهم في الآخرة هم الأخسرون ... ... ... | ٢٢ | ك « | ١١ |
| | إن في ذلك لآية لمن خاف عذاب الآخرة ... ... ... | ١٠٣ | ك « | ١١ |
| | إني تركت ملة قوم لا يؤمنون بالله وهم بالآخرة هم كافرون | ٣٧ | ك يوسف | ١٢ |
| | ولأجر الآخرة خير للذين آمنوا وكانوا يتقون ... ... | ٥٧ | ك « | ١٢ |
| | فاطر السموات والأرض أنت وليي في الدنيا والآخرة | ١٠١ | ك « | ١٢ |
| | وللدار الآخرة خير للذين اتقوا أفلا تعقلون ... ... | ١٠٩ | ك « | ١٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الآخرة | وفرحوا بالحياة الدنيا وما الحياة الدنيا في الآخرة إلا متاع | ٢٦ | م الرعـد | ١٣ |
| | لهم عذاب في الحياة الدنيا ولعذاب الآخرة أشق | ٣٤ | م « | ١٣ |
| | الذين يستحبون الحياة الدنيا على الآخرة ... ... ... | ٣ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | الذين آمنوا بالقول الثابت في الحياة الدنيا وفي الآخرة | ٢٧ | ك « | ١٤ |
| | فالذين لا يؤمنون بالآخرة قلوبهم منكرة وهم مستكبرون | ٢٢ | ك النحـل | ١٦ |
| | ولدار الآخرة خير ولنعم دار المتقين ... ... ... ... | ٣٠ | ك « | ١٦ |
| | لنبوئنهم في الدنيا حسنة ولأجر الآخرة أكبر... ... | ٤١ | ك « | ١٦ |
| | للذين لا يؤمنون بالآخرة مثل السوء ولله المثل الأعلى | ٦٠ | ك « | ١٦ |
| | ذلك بأنهم استحبوا الحياة الدنيا على الآخرة ... ... | ١٠٧ | ك « | ١٦ |
| | لا جرم أنهم في الآخرة هم الخاسرون ... ... ... | ١٠٩ | ك « | ١٦ |
| | وآتيناه في الدنيا حسنة وإنه في الآخرة لمن الصالحين | ١٢٢ | ك « | ١٦ |
| | فإذا جاء وعد الآخرة ليسوءوا وجوهكم وليدخلوا المسجد | ٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وأن الذين لا يؤمنون بالآخرة أعتدنا لهم عذابا أليما | ١٠ | ك « | ١٧ |
| | ومن أراد الآخرة وسعى لها سعيها وهو مؤمن ... ... | ١٩ | ك « | ١٧ |
| | وللآخرة أكبر درجات وأكبر تفضيلا... ... ... | ٢١ | ك « | ١٧ |
| | جعلنا بينك وبين الذين لا يؤمنون بالآخرة حجابا | ٤٥ | ك « | ١٧ |
| | ومن كان في هذه أعمى فهو في الآخرة أعمى... ... | ٧٢ | ك « | ١٧ |
| | فإذا جاء وعد الآخرة جئنا بكم لفيفا ... ... ... | ١٠٤ | ك « | ١٧ |
| | ولعذاب الآخرة أشد وأبقى... ... ... ... ... | ١٢٧ | ك طـه | ٢٠ |
| | وإن أصابته فتنة انقلب على وجهه خسر الدنيا والآخرة | ١١ | م الحـج | ٢٢ |
| | من كان يظن أن لن ينصره الله في الدنيا والآخرة | ١٥ | م « | ٢٢ |
| | وقال الملأ من قومه الذين كفروا وكذبوا بلقاء الآخرة | ٣٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وإن الذين لا يؤمنون بالآخرة عن الصراط لناكبون | ٧٤ | ك « | ٢٣ |
| | ولولا فضل الله عليكم ورحمته في الدنيا والآخرة | ١٤ | م النـور | ٢٤ |
| | لهم عذاب أليم في الدنيا والآخرة والله يعلم وأنتم لا تعلمون | ١٩ | م « | ٢٤ |
| | لعنوا في الدنيا والآخرة ولهم عذاب عظيم ... ... | ٢٣ | م « | ٢٤ |
| | الذين يقيمون الصلاة ويؤتون الزكاة وهم بالآخرة هم يوقنون | | ك النمـل | ٢٧ |
| | إن الذين لا يؤمنون بالآخرة زينا لهم أعمالهم | ٤ | ك « | ٢٧ |
| | الذين لهم سوء العذاب وهم في الآخرة هم الأخسرون | ٥ | ك « | ٢٧ |
| | بل ادّارك علمهم في الآخرة بل هم في شك منها | ٦٦ | ك « | ٢٧ |
| | له الحمد في الأولى والآخرة وله الحكم وإليه ترجعون | ٧٠ | ك القصص | ٢٨ |
| | وابتغ فيما آتاك الله الدار الآخرة ولا تنس نصيبك | ٧٧ | ك « | ٢٨ |
| | الدار الآخرة نجعلها للذين لا يريدون علوا في الأرض | ٨٣ | ك « | ٢٨ |
| | كيف بدأ الخلق ثم الله ينشئ النشأة الآخرة... ... | ٢٠ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وآتيناه أجره في الدنيا وإنه في الآخرة لمن الصالحين | ٢٧ | ك « | ٢٩ |
| | وإن الدار الآخرة لهي الحيوان لو كانوا يعلمون | ٦٤ | ك « | ٢٩ |
| | يعلمون ظاهرا من الحياة الدنيا وهم عن الآخرة هم غافلون | ٧ | ك الروم | ٣٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **الآخرة** | وكذبوا بآياتنا ولقاء الآخرة فأولئك فى العذاب | ١٦ | ك الروم | ٣٠ |
| | الذين يقيمون الصلاة ويؤتون الزكاة وهم بالآخرة | ٤ | ك لقمان | ٣١ |
| | وإن كنتن تردن الله ورسوله والدار الآخرة... ... | ٢٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | لعنهم الله فى الدنيا والآخرة وأعد لهم عذابا مهينا | ٥٧ | م « | ٣٣ |
| | له ما فى السموات وما فى الأرض وله الحمد فى الآخرة | ١ | ك سبأ | ٣٤ |
| | بل الذين لا يؤمنون بالآخرة فى العذاب والضلال البعيد | ٨ | ك « | ٣٤ |
| | إلا لنعلم من يؤمن بالآخرة ممن هو منها فى شك | ٢١ | ك « | ٣٤ |
| | ما سمعنا بهذا فى الملة الآخرة إن هذا إلا اختلاق | ٧ | ك ص | ٣٨ |
| | ساجدا وقائما يحذر الآخرة ويرجو رحمة ربه... ... | ٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| | فأذاقهم الله الخزى فى الحياة الدنيا ولعذاب الآخرة أكبر | ٢٦ | ك « | ٣٩ |
| | وإذا ذكر الله وحده اشمأزت قلوب الذين لا يؤمنون بالآخرة | ٤٥ | ك « | ٣٩ |
| | يا قوم إنما هذه الحياة الدنيا متاع وإن الآخرة هى دار القرار | ٣٩ | ك غافر | ٤٠ |
| | لا جرم أنما تدعوننى إليه ليس له دعوة فى الدنيا ولا فى الآخرة | ٤٣ | ك « | ٤٠ |
| | الذين لا يؤتون الزكاة وهم بالآخرة هم كافرون | ٧ | ك فصلت | ٤١ |
| | ولعذاب الآخرة أخزى وهم لا ينصرون ... ... ... | ١٦ | ك « | ٤١ |
| | نحن أولياؤكم فى الحياة الدنيا وفى الآخرة ... ... | ٣١ | ك « | ٤١ |
| | من كان يريد حرث الآخرة نزد له فى حرثه ... ... | ٢٠ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ومن كان يريد حرث الدنيا نؤته منها وما له فى الآخرة من نصيب | ٢٠ | ك « | ٤٢ |
| | وإن كل ذلك لما متاع الحياة الدنيا والآخرة عند ربك | ٣٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | فلله الآخرة والأولى... ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك النجم | ٥٣ |
| | إن الذين لا يؤمنون بالآخرة ليسمون الملائكة تسمية الأنثى | ٢٧ | ك « | ٥٣ |
| | وفى الآخرة عذاب شديد ومغفرة من الله ورضوان | ٢٠ | م الحديد | ٥٧ |
| | لعذبهم فى الدنيا ولهم فى الآخرة عذاب النار ... ... | ٣ | م الحشر | ٥٩ |
| | قد يئسوا من الآخرة كما يئس الكفار من أصحاب القبور | ١٣ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | كذلك العذاب ولعذاب الآخرة أكبر لو كانوا يعلمون | ٣٣ | م القلم | ٦٨ |
| | كلا بل لا يخافون الآخرة ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك المدثر | ٧٤ |
| | وتذرون الآخرة ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك القيامة | ٧٥ |
| | فأخذه الله نكال الآخرة والأولى ... ... ... ... | ٢٥ | ك النازعات | ٧٩ |
| | والآخرة خير وأبقى... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الأعلى | ٨٧ |
| | وإن لنا للآخرة والأولى ... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك الليل | ٩٢ |
| | وللآخرة خير لك من الأولى... ... ... ... ... ... | ٤ | ك الضحى | ٩٣ |
| **أخ** | وله أخ أو أخت فلكل واحد منهما السدس... ... | ١٢ | م النساء | ٤ |
| (٤) | وخالاتكم وبنات الأخ وبنات الأخت ... .. | ٢٣ | م « | ٤ |
| | ولما جهزهم بجهازهم قال ائتونى بأخ لكم من أبيكم | ٥٩ | ك يوسف | ١٢ |
| | قالوا إن يسرق فقد سرق أخ له من قبل... ... ... | ٧٧ | ك « | ١٢ |
| **أخا** | واذكر أخا عاد إذ أنذر قومه بالأحقاف ... ... | ٢١ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| **أخانا** | يا أبانا منع منا الكيل فأرسل معنا أخانا نكتل | ٦٣ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | ونمير أهلنا ونحفظ أخانا ونزداد كيل بعير ... ... | ٦٥ | ك « | ١٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **أخاه** | قالوا أرجه وأخاه وأرسل فى المدائن حاشرين | ١١١ | ك الأعراف | ٧ |
| (٧) | ولما دخلوا على يوسف آوى إليه أخاه... ... ... | ٦٩ | ك يوسف | ١٢ |
| | ما كان ليأخذ أخاه فى دين الملك إلا أن يشاء الله | ٧٦ | ك « | ١٢ |
| | ووهبنا له من رحمتنا أخاه هرون نبيا ... ... ... | ٥٣ | ك مريم | ١٩ |
| | ثم أرسلنا موسى وأخاه هرون بآياتنا وسلطان مبين | ٤٥ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ولقد آتينا موسى الكتاب وجعلنا معه أخاه هرون وزيرا | ٣٥ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | قالوا أرجه وأخاه وابعث فى المدائن حاشرين | ٣٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| **أخاهم** | وإلى عاد أخاهم هودا قال يا قوم اعبدوا الله | ٦٥ | ك الأعراف | ٧ |
| (٨) | وإلى ثمود أخاهم صالحا قال يا قوم اعبدوا الله | ٧٣ | ك « | ٧ |
| | وإلى مدين أخاهم شعيبا قال يا قوم اعبدوا الله | ٨٥ | ك « | ٧ |
| | وإلى عاد أخاهم هودا قال يا قوم اعبدوا الله... ... | ٥٠ | ك هود | ١١ |
| | وإلى ثمود أخاهم صالحا قال يا قوم اعبدوا الله | ٦١ | ك « | ١١ |
| | وإلى مدين أخاهم شعيبا قال يا قوم اعبدوا الله | ٨٤ | ك « | ١١ |
| | ولقد أرسلنا إلى ثمود أخاهم صالحا أن اعبدوا الله | ٤٥ | ك النمل | ٢٧ |
| | وإلى مدين أخاهم شعيبا فقال يا قوم اعبدوا الله | ٣٦ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| **أخوك** | قال إنى أنا أخوك فلا تبتئس بما كانوا يعملون | ٦٩ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | اذهب أنت وأخوك بآياتى ولا تنيا فى ذكرى... ... | ٤٢ | ك طه | ٢٠ |
| **أخوه** | إذ قالوا ليوسف وأخوه أحب إلى أبينا منا | ٨ | ك يوسف | ١٢ |
| **أخوهم** | إذ قال لهم أخوهم نوح ألا تتقون... ... ... | ١٠٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| (٤) | إذ قال لهم أخوهم هود ألا تتقون ... ... ... | ١٢٤ | ك « | ٢٦ |
| | إذ قال لهم أخوهم صالح ألا تتقون ... ... ... | ١٤٢ | ك « | ٢٦ |
| | إذ قال لهم أخوهم لوط ألا تتقون ... ... ... | ١٦١ | ك « | ٢٦ |
| **أخى** | قال رب إنى لا أملك إلا نفسى وأخى فافرق بيننا | ٢٥ | م المائدة | ٥ |
| (٧) | أعجزت أن أكون مثل هذا الغراب فأوارى سوأة أخى | ٣١ | م « | ٥ |
| | قال رب اغفر لى ولأخى وأدخلنا فى رحمتك... ... | ١٥١ | ك الأعراف | ٧ |
| | قال أنا يوسف وهذا أخى قد منّ الله علينا... ... | ٩٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | واجعل لى وزيرا من أهلى . هرون أخى ... ... | ٣٠ | ك طه | ٢٠ |
| | وأخى هرون هو أفصح منى لسانا فأرسله معى ردءا | ٣٤ | ك القصص | ٢٨ |
| | إن هذا أخى له تسع وتسعون نعجة ولى نعجة واحدة | ٢٣ | ك ص | ٣٨ |
| **أخيك** | قال سنشد عضدك بأخيك ونجعل لكما سلطانا | ٣٥ | ك القصص | ٢٨ |
| **أخيه** | فمن عفى له من أخيه شىء فاتباع بالمعروف... ... | ١٧٨ | م البقرة | ٢ |
| (١٥) | فطوعت له نفسه قتل أخيه فقتله فأصبح من الخاسرين | ٣٠ | م المائدة | ٥ |
| | يبحث فى الأرض ليريه كيف يوارى سوأة أخيه | ٣١ | م « | ٥ |
| | وقال موسى لأخيه هرون اخلفنى فى قومى وأصلح | ١٤٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | وألقى الألواح وأخذ برأس أخيه يجره إليه ... ... | ١٥٠ | ك « | ٧ |
| | وأوحينا إلى موسى وأخيه أن تبوءا لقومكما بمصر بيوتا | ٨٧ | ك يونس | ١٠ |
| | قال هل آمنكم عليه إلا كما أمنتكم على أخيه من قبل | ٦٤ | ك يوسف | ١٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَخِيه: فلما جهزهم بجهازهم جعل السقاية فى رحل أخيه | ... ... ... ... | ٧٠ | ك يوسف | ١٢ |
| فبدأ بأوعيتهم قبل وعاء أخيه | ... ... ... ... | ٧٦ | ك « | ١٢ |
| ثم استخرجها من وعاء أخيه | ... ... ... ... | ٧٦ | ك « | ١٢ |
| يا بنىّ اذهبوا فتحسسوا من يوسف وأخيه | ... ... | ٨٧ | ك « | ١٢ |
| قال هل علمتم ما فعلتم بيوسف وأخيه إذ أنتم جاهلون | | ٨٩ | ك « | ١٢ |
| أيحب أحدكم أن يأكل لحم أخيه ميتا فكرهتموه | | ١٢ | م الحجرات | ٤٩ |
| وصاحبته وأخيه | ... ... ... ... | ١٢ | ك المعارج | ٧٠ |
| يوم يفر المرء من أخيه | ... ... ... ... | ٣٤ | ك عبس | ٨٠ |
| أَخَوَيْكُم: إنما المؤمنون إخوة فأصلحوا بين أخويكم | | ١٠ | م الحجرات | ٤٩ |
| إِخْوَان: إن المبذرين كانوا إخوان الشياطين | ... ... | ٢٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٢) وعاد وفرعون وإخوان لوط | ... ... ... ... | ١٣ | ك ق | ٥٠ |
| إِخْوَانًا: فألف بين قلوبكم فأصبحتم بنعمته إخوانا | ... ... | ١٠٣ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) ونزعنا ما فى صدورهم من غل إخوانا على سرر متقابلين | | ٤٧ | ك الحجر | ١٥ |
| إِخْوَانِكُم: وإن تخالطوهم فإخوانكم والله يعلم المفسد من | | ٢٢٠ | م البقرة | ٢ |
| (٦) فإن تابوا وأقاموا الصلاة وآتوا الزكاة فإخوانكم | | ١١ | م التوبة | ٩ |
| لا تتخذوا آباءكم وإخوانكم أولياء إن استحبوا الكفر | | ٢٣ | م « | ٩ |
| قل إن كان آباؤكم وأبناؤكم وإخوانكم وأزواجكم | | ٢٤ | م « | ٩ |
| أو بيوت آبائكم أو بيوت أمهاتكم أو بيوت إخوانكم | | ٦١ | م النور | ٢٤ |
| فإن لم تعلموا آباءهم فإخوانكم فى الدين ومواليكم | | ٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| إِخْوَانِنَا: ربنا اغفر لنا ولإخواننا الذين سبقونا بالإيمان | | ١٠ | م الحشر | ٥٩ |
| إِخْوَانِهِم: لا تكونوا كالذين كفروا وقالوا لإخوانهم | | ١٥٦ | م آل عمران | ٣ |
| (٧) الذين قالوا لإخوانهم وقعدوا لو أطاعونا ما قتلوا | | ١٦٨ | م « | ٣ |
| ومن آبائهم وذرياتهم وإخوانهم واجتبيناهم | ... ... | ٨٧ | ك الأنعام | ٦ |
| وإخوانهم يمدونهم فى الغىّ ثم لا يقصرون | ... ... | ٢٠٢ | ك الأعراف | ٧ |
| قد يعلم الله المعوقين منكم والقائلين لإخوانهم هلم إلينا | | ١٨ | م الأحزاب | ٣٣ |
| ولو كانوا آباءهم أو أبناءهم أو إخوانهم أو عشيرتهم | | ٢٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| ألم تر إلى الذين نافقوا يقولون لإخوانهم الذين كفروا | | ١١ | م الحشر | ٥٩ |
| إِخْوَانِهِن: أو أبنائهن أو أبناء بعولتهن أو إخوانهن | | ٣١ | م النور | ٢٤ |
| (٤) أو بنى إخوانهن أو بنى أخواتهن أو نسائهن | ... ... | ٣١ | م « | ٢٤ |
| لا جناح عليهن فى آبائهن ولا أبنائهن ولا إخوانهن | | ٥٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| ولا أبناء إخوانهن ولا أبناء أخواتهن ولا نسائهن | | ٥٥ | م « | ٣٣ |
| إِخْوَة: فإن كان له إخوة فلأمه السدس من بعد وصية | | ١١ | م النساء | ٤ |
| (٤) وإن كانوا إخوة رجالا ونساء فللذكر مثل حظ الأنثيين | | ١٧٦ | م « | ٤ |
| وجاء إخوة يوسف فدخلوا عليه فعرفهم | ... ... ... | ٥٨ | ك يوسف | ١٢ |
| إنما المؤمنون إخوة فأصلحوا بين أخويكم | ... ... | ١٠ | م الحجرات | ٤٩ |
| إِخْوَتِك: لا تقصص رؤياك على إخوتك فيكيدوا لك كيدا | | ٥ | ك يوسف | ١٢ |
| إِخْوَتِه: لقد كان فى يوسف وإخوته آيات للسائلين | ... ... | ٧ | م « | ١٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| إِخْوَتِى: من بعد أن نزغ الشيطان بينى وبين إخوتى | ... ... | ١٠٠ | ك يوسف | ١٢ |
| أُخْت: وله أخ أو أخت فلكل واحد منهما السدس | ... ... | ١٢ | م النساء | ٤ |
| (٤) وبنات الأخ وبنات الأخت وأمهاتكم اللاتى أرضعنكم | | ٢٣ | م « | ٤ |
| إن امرؤ هلك ليس له ولد وله أخت فلها نصف ما ترك | | ١٧٦ | م « | ٤ |
| يا أخت هرون ما كان أبوك امرأ سوء وما كانت أمك | | ٢٨ | ك مريم | ١٩ |
| أُخْتُكَ: إذ تمشى أختك فتقول هل أدلكم على من يكفله | | ٤٠ | ك طه | ٢٠ |
| أُخْتِه: وقالت لأخته قصيه فبصرت به عن جنب | ... ... | ١١ | ك القصص | ٢٨ |
| أُخْتَهَا: كلما دخلت أمة لعنت أختها | ... ... ... ... | ٣٨ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) وما نريهم من آية إلا هى أكبر من أختها | ... ... | ٤٨ | ك الزخرف | ٤٣ |
| أُخْتَيْن: وأن تجمعوا بين الأختين إلا ما قد سلف | ... ... | ٢٣ | م النساء | ٤ |
| أَخَوَاتُكم: حرمت عليكم أمهاتكم وبناتكم وأخواتكم | ... ... | ٢٣ | م « | ٤ |
| (٣) وأمهاتكم اللاتى أرضعنكم وأخواتكم من الرضاعة | | ٢٣ | م « | ٤ |
| أو بيوت أخواتكم أو بيوت أعمامكم أو بيوت عماتكم | | ٦١ | م النور | ٢٤ |
| أَخَوَاتِهِن: أو بنى أخواتهن أو نسائهن أو ما ملكت أيمانهن | | ٣١ | م « | ٢٤ |
| (٢) ولا أبناء أخواتهن ولا نسائهن ولا ما ملكت أيمانهن | | ٥٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| إِدًّا: لقد جئتم شيئا إدا | ... ... ... ... | ٨٩ | ك مريم | ١٩ |
| آدَم: وعلم آدم الأسماء كلها ثم عرضهم على الملائكة | ... ... | ٣١ | م البقرة | ٢ |
| (٢٥) قال يا آدم أنبئهم بأسمائهم | ... ... ... ... | ٣٣ | م « | ٢ |
| وإذ قلنا للملائكة اسجدوا لآدم فسجدوا إلا إبليس | | ٣٤ | م « | ٢ |
| وقلنا يا آدم اسكن أنت وزوجك الجنة وكلا منها رغدا | | ٣٥ | م « | ٢ |
| فتلقى آدم من ربه كلمات فتاب عليه إنه هو التواب الرحيم | | ٣٧ | م « | ٢ |
| إن الله اصطفى آدم ونوحا وآل إبراهيم وآل عمران | | ٣٣ | م آل عمران | ٣ |
| إن مثل عيسى عند الله كمثل آدم خلقه من تراب | | ٥٩ | م « | ٣ |
| واتل عليهم نبأ ابنى آدم بالحق إذ قربا قربانا فتقبل | | ٢٧ | م المائدة | ٥ |
| ثم قلنا للملائكة اسجدوا لآدم فسجدوا إلا إبليس | | ١١ | ك الأعراف | ٧ |
| ويا آدم اسكن أنت وزوجك الجنة فكلا من حيث شئتما | | ١٩ | ك « | ٧ |
| يا بنى آدم قد أنزلنا عليكم لباسا يوارى سوءاتكم | | ٢٦ | ك « | ٧ |
| يا بنى آدم لا يفتننكم الشيطان كما أخرج أبويكم من الجنة | | ٢٧ | ك « | ٧ |
| يا بنى آدم خذوا زينتكم عند كل مسجد وكلوا واشربوا | | ٣١ | ك « | ٧ |
| يا بنى آدم إما يأتينكم رسل منكم يقصون عليكم آياتى | | ٣٥ | ك « | ٧ |
| وإذ أخذ ربك من بنى آدم من ظهورهم ذريتهم | | ١٧٢ | ك « | ٧ |
| وإذ قلنا للملائكة اسجدوا لآدم فسجدوا إلا إبليس | | ٦١ | ك الإسراء | ١٧ |
| ولقد كرمنا بنى آدم وحملناهم فى البر والبحر ورزقناهم | | ٧٠ | ك « | ١٧ |
| وإذ قلنا للملائكة اسجدوا لآدم فسجدوا إلا إبليس | | ٥٠ | ك الكهف | ١٨ |
| أولئك الذين أنعم الله عليهم من النبيين من ذرية آدم | | ٥٨ | م مريم | ١٩ |
| ولقد عهدنا إلى آدم من قبل فنسى ولم نجد له عزما | | ١١٥ | ك طه | ٢٠ |
| وإذ قلنا للملائكة اسجدوا لآدم فسجدوا إلا إبليس أبى | | ١١٦ | ك « | ٢٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| آدَم: | فقلنا يا آدم إن هذا عدو لك ولزوجك فلا يخرجنكما | ١١٧ | ك طـه | ٢٠ |
| | قال يا آدم هل أدلك على شجرة الخلد وملك لا يبلى | ١٢٠ | ك « | ٢٠ |
| | وعصى آدم ربه فغوى ... ... ... ... ... ... ... | ١٢١ | ك « | ٢٠ |
| | ألم أعهد اليكم يا بنى آدم أن لا تعبدوا الشيطان | ٦٠ | ك يس | ٣٦ |
| تُؤَدُّوا: | إن الله يأمركم أن تؤدوا الأمانات إلى أهلها | ٥٨ | م النساء | ٤ |
| فَلْيُؤَدِّ: | فإن أمن بعضكم بعضا فليؤد الذى اؤتمن أمانته | ٢٨٣ | م البقرة | ٢ |
| يُؤَدِّه: | ومن أهل الكتاب من إن تأمنه بقنطار يؤده إليك | ٧٥ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | ومنهم من إن تأمنه بدينار لا يؤده إليك ... ... ... | ٧٥ | م « | ٣ |
| أَدُّوا: | أن أدوا إلىّ عباد الله إنى لكم رسول أمين ... ... | ١٨ | ك الدخان | ٤٤ |
| أَدَاءٌ: | فمن عفى له من أخيه شىء فاتباع بالمعروف وأداء إليه | ١٧٨ | م البقرة | ٢ |
| أَذِنَ: | قل آلله أذن لكم أم على الله تفترون ... ... ... | ٥٩ | ك يونس | ١٠ |
| (٥) | يومئذ لا تنفع الشفاعة إلا من أذن له الرحمن... ... | ١٠٩ | ك طـه | ٢٠ |
| | فى بيوت أذن الله أن ترفع ويذكر فيها اسمه ... ... | ٣٦ | م النور | ٢٤ |
| | ولا تنفع الشفاعة عنده إلا لمن أذن له... ... ... | ٢٣ | ك سبأ | ٣٤ |
| | لا يتكلمون إلا من أذن له الرحمن وقال صوابا... ... | ٣٨ | ك النبأ | ٧٨ |
| أَذِنْتَ: | عفا الله عنك لم أذنت لهم حتى يتبين لك ... ... | ٤٣ | م التوبة | ٩ |
| أَذِنَتْ: | وأذنت لربها وحقت... ... ... ... ... ... ... | ٢ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| (٢) | وأذنت لربها وحقت ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك « | ٨٤ |
| آذَن: | قال فرعون آمنتم به قبل أن آذن لكم ... ... | ١٢٣ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | قال آمنتم له قبل أن آذن لكم إنه لكبيركم ... ... | ٧١ | ك طـه | ٢٠ |
| | قال آمنتم له قبل أن آذن لكم إنه لكبيركم ... ... | ٤٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| يَأْذَن: | فلن أبرح الأرض حتى يأذن لى أبى أو يحكم الله لى | ٨٠ | ك يوسف | ١٢ |
| (٣) | أم لهم شركاء شرعوا لهم من الدين مالم يأذن به الله | ٢١ | ك الشورى | ٤٢ |
| | إلا من بعد أن يأذن الله لمن يشاء ويرضى ... ... | ٢٦ | ك النجم | ٥٣ |
| ائْذَنْ: | ومنهم من يقول ائذن لى ولا تفتنى ... ... ... | ٤٩ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | فأذن لمن شئت منهم واستغفر لهم ... ... ... ... | ٦٢ | م النور | ٢٤ |
| فَأْذَنُوا: | فإن لم تفعلوا فأذنوا بحرب من الله ورسوله | ٢٧٩ | م البقرة | ٢ |
| أُذِنَ: | أذن للذين يقاتلون بأنهم ظلموا وإن الله على نصرهم | ٣٩ | م الحج | ٢٢ |
| يُؤْذَن: | وجاء المعذرون من الأعراب ليؤذن لهم ... ... | ٩٠ | م التوبة | ٩ |
| (٥) | ويوم نبعث من كل أمة شهيدا ثم لا يؤذن للذين | ٨٤ | ك النحل | ١٦ |
| | فإن لم تجدوا فيها أحدا فلا تدخلوها حتى يؤذن لكم | ٢٨ | م النور | ٢٤ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تدخلوا بيوت النبىّ إلا أن يؤذن | ٥٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ولا يؤذن لهم فيعتذرون ... ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك المرسلات | ٧٧ |
| أَذَّنَ: | قالوا نعم فأذن مؤذن بينهم أن لعنة الله على الظالمين | ٤٤ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | ثم أذن مؤذن أيتها العير إنكم لسارقون ... ... | ٧٠ | ك يوسف | ١٢ |
| أَذِّنْ: | وأذن فى الناس بالحج يأتوك رجالا وعلى كل ضامر | ٢٧ | م الحج | ٢٢ |
| تَأَذَّنَ: | وإذ تأذن ربك ليبعثن عليهم إلى يوم القيامة من | ١٦٧ | م الأعراف | ٧ |
| (٢) | | | | |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَأَذَّنَ: | وإذ تأذن ربكم لئن شكرتم لأزيدنكم... ... ... | ٧ | ك إبراهيم | ١٤ |
| آذَنَّاكَ: | ويوم يناديهم أين شركائى قالوا آذناك ... ... | ٤٧ | ك فصلت | ٤١ |
| آذَنْتُكُمْ: | فإن تولوا فقل آذنتكم على سواء ... ... ... | ١٠٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| اسْتَأْذَنَ: | فليستأذنوا كما استأذن الذين من قبلهم .. ... | ٥٩ | م النور | ٢٤ |
| اسْتَأْذَنَكَ: | استأذنك أولوا الطول منهم وقالوا ذرنا | ٨٦ | م التوبة | ٩ |
| اسْتَأْذَنُوكَ: | فاستأذنوك للخروج فقل لن تخرجوا معى أبدا | ٨٣ | م « | ٩ |
| (٢) | فإذا استأذنوك لبعض شأنهم فأذن لمن شئت منهم | ٦٢ | م النور | ٢٤ |
| يَسْتَأْذِنُ: | ويستأذن فريق منهم النبىّ يقولون إن بيوتنا عورة | ١٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| يَسْتَأْذِنُكَ: | لا يستأذنك الذين يؤمنون بالله واليوم الآخر | ٤٤ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | إنما يستأذنك الذين لا يؤمنون بالله واليوم الآخر | ٤٥ | م « | ٩ |
| لِيَسْتَأْذِنْكُم: | ليستأذنكم الذين ملكت أيمانكم... ... ... | ٥٨ | م النور | ٢٤ |
| فَلْيَسْتَأْذِنُوا: | وإذا بلغ الأطفال منكم الحلم فليستأذنوا | ٥٩ | م « | ٢٤ |
| يَسْتَأْذِنُونَكَ: | إنما السبيل على الذين يستأذنونك وهم أغنياء | ٩٣ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | إن الذين يستأذنونك أولئك الذين يؤمنون ... ... | ٦٢ | م النور | ٢٤ |
| يَسْتَأْذِنُوه: | على أمر جامع لم يذهبوا حتى يستأذنوه... ... | ٦٢ | م « | ٢٤ |
| أَذَانٌ: | وأذان من الله ورسوله إلى الناس يوم الحج الأكبر | ٣ | م التوبة | ٩ |
| إِذْن: | قل من كان عدوا لجبريل فإنه نزله على قلبك بإذن الله | ٩٧ | م البقرة | ٢ |
| (٢٥) | وما هم بضارين به من أحد إلا بإذن الله ... ... | ١٠٢ | م « | ٢ |
| | كم من فئة قليلة غلبت فئة كثيرة بإذن الله ... ... | ٢٤٩ | م « | ٢ |
| | فهزموهم بإذن الله وقتل داود جالوت... ... ... | ٢٥١ | م « | ٢ |
| | كهيئة الطير فأنفخ فيه فيكون طيرا بإذن الله... ... | ٤٩ | م آل عمران | ٣ |
| | وأبرئ الأكمه والأبرص وأحى الموتى بإذن الله | ٤٩ | م « | ٣ |
| | وما كان لنفس أن تموت إلا بإذن الله كتابا مؤجلا | ١٤٥ | م « | ٣ |
| | وما أصابكم يوم التقى الجمعان فبإذن الله... ... ... | ١٦٦ | م « | ٣ |
| | فانكحوهن بإذن أهلهن وآتوهن أجورهن بالمعروف | ٢٥ | م النساء | ٤ |
| | وما أرسلنا من رسول إلا ليطاع بإذن الله ... ... | ٦٤ | م « | ٤ |
| | والبلد الطيب يخرج نباته بإذن ربه ... ... ... ... | ٥٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | وإن يكن منكم ألف يغلبوا ألفين بإذن الله... ... | ٦٦ | م الأنفال | ٨ |
| | وما كان لنفس أن تؤمن إلا بإذن الله... ... ... | ١٠٠ | ك يونس | ١٠ |
| | وما كان لرسول أن يأتى بآية إلا بإذن الله لكل أجل كتاب | ٣٨ | م الرعد | ١٣ |
| | أنزلناه إليك لتخرج الناس من الظلمات إلى النور بإذن ربهم | ١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وما كان لنا أن نأتيكم بسلطان إلا بإذن الله... ... | ١١ | ك « | ١٤ |
| | خالدين فيها بإذن ربهم تحيتهم فيها سلام... ... | ٢٣ | ك « | ١٤ |
| | تؤتى أكلها كل حين بإذن ربها ... ... ... ... | ٢٥ | ك « | ١٤ |
| | ومن الجن من يعمل بين يديه بإذن ربه ... ... | ١٢ | ك سبأ | ٣٤ |
| | ومنهم مقتصد ومنهم سابق بالخيرات بإذن الله | ٣٢ | ك فاطر | ٣٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| إِذْنِ | وما كان لرسول أن يأتى بآية إلا بإذن الله... ... | ٧٨ | ك غافر | ٤٠ |
| | ليحزن الذين آمنوا وليس بضارهم شيئا إلا بإذن الله | ١٠ | م المجادلة | ٥٨ |
| | ماقطعتم من لينة أوتركتموها قائمة على أصولها فبإذن الله | ٥ | م الحشر | ٥٩ |
| | ما أصاب من مصيبة إلا بإذن الله ومن يؤمن بالله يهد قلبه | ١١ | م التغابن | ٦٤ |
| | تنزل الملائكة والروح فيها بإذن ربهم من كل أمر | ٤ | ك القدر | ٩٧ |
| إِذْنِهِ | فهدى الله الذين آمنوا لما اختلفوا فيه من الحق بإذنه | ٢١٣م | البقرة | ٢ |
| (١٠) | أولئك يدعون إلى النار والله يدعو إلى الجنة والمغفرة بإذنه | ٢٢١م | « | ٢ |
| | من ذا الذى يشفع عنده إلا بإذنه ... ... ... ... | ٢٥٥م | « | ٢ |
| | ولقد صدقكم الله وعده إذ تحسونهم بإذنه ... ... | ١٥٢م | آل عمران | ٣ |
| | ويخرجهم من الظلمات إلى النور بإذنه ويهديهم إلى صراط | ١٦ | م المائدة | ٥ |
| | ما من شفيع إلا من بعد إذنه ذلكم الله ربكم فاعبدوه | ٣ | ك يونس | ١٠ |
| | يوم يأت لا تكلم نفس إلا بإذنه فمنهم شقى وسعيد | ١٠٥ك | هود | ١١ |
| | ويمسك السماء أن تقع على الأرض إلا بإذنه... ... | ٦٥ | م الحج | ٢٢ |
| | وداعيا إلى الله بإذنه وسراجا منيرا... ... ... ... | ٤٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | أو يرسل رسولا فيوحى بإذنه ما يشاء إنه علىّ حكيم | ٥١ | ك الشورى | ٤٢ |
| بِإِذْنِى | وإذ تخلق من الطين كهيئة الطير بإذنى ... ... | ١١٠م | المائدة | ٥ |
| (٤) | فتنفخ فيها فتكون طيرا بإذنى ... ... ... ... | ١١٠م | « | ٥ |
| | وتبرئ الأكمه والأبرص بإذنى ... ... ... ... | ١١٠م | « | ٥ |
| | وإذ تخرج الموتى بإذنى ... ... ... ... ... | ١١٠م | « | ٥ |
| مُؤَذِّنٌ | قالوا نعم فأذن مؤذن بينهم أن لعنة الله على الظالمين | ٤٤ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | ثم أذن مؤذن أيتها العير إنكم لسارقون ... ... ... | ٧٠ | ك يوسف | ١٢ |
| أُذُنَ | أن النفس بالنفس والعين بالعين والأنف بالأنف والأذن | ٤٥ | م المائدة | ٥ |
| (٥) | والعين بالعين والأنف بالأنف والأذن بالأذن... ... | ٤٥ | م « | ٥ |
| | ومنهم الذين يؤذون النبىّ ويقولون هو أذن... ... | ٦١ | م التوبة | ٩ |
| | قل أذن خير لكم يؤمن بالله ويؤمن للمؤمنين ... ... | ٦١ | م « | ٩ |
| | لنجعلها لكم تذكرة وتعيها أذن واعية ... ... ... | ١٢ | ك الحاقة | ٦٩ |
| أُذُنَيْهِ | ولّى مستكبرا كأن لم يسمعها كأن فى أذنيه وقرا | ٧ | ك لقمان | ٣١ |
| آذَانَ | ولآمرنهم فليبتكن آذان الأنعام ... ... ... ... | ١١٩م | النساء | ٤ |
| (٤) | ولهم آذان لا يسمعون بها أولئك كالأنعام بل هم أضل | ١٧٩ك | الأعراف | ٧ |
| | أم لهم أعين يبصرون بها أم لهم آذان يسمعون بها | ١٩٥ك | « | ٧ |
| | فتكون لهم قلوب يعقلون بها أو آذان يسمعون بها | ٤٦ | م الحج | ٢٢ |
| آذَانِنَا | وقالوا قلوبنا فى أكنة مما تدعونا إليه وفى آذاننا وقر | ٥ | ك فصلت | ٤١ |
| آذَانِهِم | يجعلون أصابعهم فى آذانهم من الصواعق حذر الموت | ١٩ | م البقرة | ٢ |
| (٧) | وجعلنا على قلوبهم أكنة أن يفقهوه وفى آذانهم وقرا | ٢٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | وجعلنا على قلوبهم أكنة أن يفقهوه وفى آذانهم وقرا | ٤٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فضربنا على آذانهم فى الكهف سنين عددا ... ... | ١١ | ك الكهف | ١٨ |
| | إنا جعلنا على قلوبهم أكنة أن يفقهوه وفى آذانهم وقرا | ٥٧ | ك « | ١٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| آذَانِهِم | والذين لا يؤمنون فى آذانهم وقر وهو عليهم عمى | ٤٤ | ك فصلت | ٤١ |
| | جعلوا أصابعهم فى آذانهم واستغشوا ثيابهم ... ... | ٧ | ك نوح | ٧١ |
| آذَوْا | يأيها الذين آمنوا لا تكونوا كالذين آذوا موسى | ٦٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| آذَيْتُمُونَا | ولنصبرن على ما آذيتمونا وعلى الله فليتوكل المتوكلون | ١٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| تُؤْذُوا | وما كان لكم أن تؤذوا رسول الله ولا أن تنكحوا أزواجه | ٥٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| تُؤْذُونَنِى | يا قوم لم تؤذوننى وقد تعلمون أنى رسول الله إليكم | ٥ | م الصف | ٦١ |
| يُؤْذُونَ | ومنهم الذين يؤذون النبىّ ويقولون هو أذن | ٦١ | م التوبة | ٩ |
| (٤) | والذين يؤذون رسول الله لهم عذاب أليم ... ... | ٦١ | م « | ٩ |
| | إن الذين يؤذون الله ورسوله لعنهم الله فى الدنيا والآخرة | ٥٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | والذين يؤذون المؤمنين والمؤمنات بغير ما اكتسبوا | ٥٨ | م « | ٣٣ |
| يُؤْذِى | إن ذلكم كان يؤذى النبىّ فيستحيى منكم ... ... | ٥٣ | م « | ٣٣ |
| آذُوهُمَا | واللذان يأتيانها منكم فآذوهما ... ... ... ... | ١٦ | م النساء | ٤ |
| أُوذُوا | فالذين هاجروا وأخرجوا من ديارهم وأوذوا فى سبيل | ١٩٥م | آل عمران | ٣ |
| (٢) | ولقد كذبت رسل من قبلك فصبروا على ما كذبوا وأوذوا | ٣٤ | ك الأنعام | ٦ |
| أُوذِىَ | فإذا أوذى فى الله جعل فتنة الناس كعذاب الله | ١٠ | م العنكبوت | ٢٩ |
| أُوذِينَا | قالوا أوذينا من قبل أن تأتينا ومن بعد ما جئتنا | ١٢٩ك | الأعراف | ٧ |
| يُؤْذَيْنَ | ذلك أدنى أن يعرفن فلا يؤذين وكان الله غفورا رحيما | ٥٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| أَذًى | فمن كان منكم مريضا أو به أذى من رأسه ففدية | ١٩٦م | البقرة | ٢ |
| (٨) | ويسئلونك عن المحيض قل هو أذى فاعتزلوا النساء | ٢٢٢م | « | ٢ |
| | ثم لا يتبعون ما أنفقوا منا ولا أذى لهم أجرهم | ٢٦٢م | « | ٢ |
| | قول معروف ومغفرة خير من صدقة يتبعها أذى | ٢٦٣م | « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تبطلوا صدقاتكم بالمن والأذى | ٢٦٤م | « | ٢ |
| | لن يضروكم إلا أذى وإن يقاتلوكم يولوكم الأدبار | ١١١م | آل عمران | ٣ |
| | من قبلكم ومن الذين أشركوا أذى كثيرا... ... ... | ١٨٦م | « | ٣ |
| | ولا جناح عليكم إن كان بكم أذى من مطر أو كنتم مرضى | ١٠٢م | النساء | ٤ |
| أَذَاهُم | ولا تطع الكافرين والمنافقين ودع أذاهم... ... | ٤٨ | م الأحزاب | ٣٣ |
| الإِرْبَةِ | أو ما ملكت أيمانهن أو التابعين غير أولى الإربة | ٣١ | م النور | ٢٤ |
| مَآرِبُ | أتوكأ عليها وأهش بها على غنمى ولى فيها مآرب أخرى | ١٨ | ك طه | ٢٠ |
| الأَرْضُ | فادع لنا ربك يخرج لنا مما تنبت الأرض من بقلها | ٦١ | م البقرة | ٢ |
| (٣٤) | ولولا دفع الله الناس بعضهم ببعض لفسدت الأرض | ٢٥١م | « | ٢ |
| | وجنة عرضها السموات والأرض أعدت للمتقين | ١٣٣م | آل عمران | ٣ |
| | يود الذين كفروا وعصوا الرسول لو تسوى بهم الأرض | ٤٢ | م النساء | ٤ |
| | قالوا ألم تكن أرض الله واسعة فتهاجروا فيها... ... | ٩٧ | م « | ٤ |
| | وضاقت عليكم الأرض بما رحبت ثم وليتم مدبرين | ٢٥ | م التوبة | ٩ |
| | حتى إذا ضاقت عليهم الأرض بما رحبت ... ... | ١١٨م | « | ٩ |
| | حتى إذا أخذت الأرض زخرفها وازينت وظن أهلها | ٢٤ | ك يونس | ١٠ |
| | وقيل يا أرض ابلعى ماءك ويا سماء أقلعى وغيض الماء | ٤٤ | ك هود | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الأرْضُ : خالدين فيها ما دامت السموات والأرض إلا ما شاء | ١٠٧ | ك | هـود | ١١ |
| ففي الجنة خالدين فيها ما دامت السموات والأرض | ١٠٨ | ك | « | ١١ |
| ولو أن قرآنا سيرت به الجبال أو قطعت به الأرض | ٣١ | م | الرعـد | ١٣ |
| يوم تبدل الأرض غير الأرض والسموات ... ... | ٤٨ | ك | إبراهـيم | ١٤ |
| تسبح له السموات السبع والأرض ومن فيهن... ... | ٤٤ | ك | الإسراء | ١٧ |
| تكاد السموات يتفطرن منه وتنشق الأرض ... ... | ٩٠ | ك | مـريم | ١٩ |
| ألم تر أن الله أنزل من السماء ماء فتصبح الأرض مخضرة | ٦٣ | م | الحـج | ٢٢ |
| ولو اتبع الحق أهواءهم لفسدت السموات والأرض | ٧١ | ك | المؤمنون | ٢٣ |
| قل لمن الأرض ومن فيها إن كنتم تعلمون ... ... | ٨٤ | ك | « | ٢٣ |
| ومن آياته أن تقوم السماء والأرض بأمره ... ... | ٢٥ | ك | الروم | ٣٠ |
| وآية لهم الأرض الميتة أحييناها وأخرجنا منها حبا | ٣٣ | ك | يس | ٣٦ |
| سبحان الذي خلق الأزواج كلها مما تنبت الأرض | ٣٦ | ك | « | ٣٦ |
| للذين أحسنوا في هذه الدنيا حسنة وأرض الله واسعة | ١٠ | ك | الـزمر | ٣٩ |
| والأرض جميعا قبضته يوم القيامة والسموات مطويات | ٦٧ | ك | « | ٣٩ |
| وأشرقت الأرض بنور ربها ووضع الكتاب وجيء بالنبيين | ٦٩ | ك | « | ٣٩ |
| فما بكت عليهم السماء والأرض وما كانوا منظرين | ٢٩ | ك | الدخان | ٤٤ |
| قد علمنا ما تنقص الأرض منهم وعندنا كتاب حفيظ | ٤ | ك | ق | ٥٠ |
| يوم تشقق الأرض عنهم سراعا ذلك حشر علينا يسير | ٤٤ | ك | « | ٥ |
| إذا رجت الأرض رجا... ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك | الواقعـة | ٥٦ |
| وحملت الأرض والجبال فدكتا دكة واحدة ... ... | ١٤ | ك | الحـاقة | ٦٩ |
| يوم ترجف الأرض والجبال وكانت الجبال كثيبا مهيلا | ١٤ | ك | المـزمل | ٧٣ |
| وإذا الأرض مدت ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك | الانشقاق | ٨٤ |
| كلا إذا دكت الأرض دكا دكا ... ... ... ... ... | ٢١ | ك | الفجـر | ٨٩ |
| إذا زلزلت الأرض زلزالها ... ... ... ... ... ... | ١ | م | الزلزلـة | ٩٩ |
| وأخرجت الأرض أثقالها ... ... ... ... ... ... | ٢ | م | « | ٩٩ |
| الأرْضَ : الذي جعـل لكم الأرض فراشا والسماء بناء | ٢٢ | م | البقـرة | ٢ |
| (٨٦) قال إنه يقول إنها بقرة لا ذلول تثير الأرض... ... | ٧١ | م | « | ٢ |
| وما أنزل الله من السماء من ماء فأحيا به الأرض بعد موتها | ١٦٤ | م | « | ٢ |
| وسع كرسيه السموات والأرض ولا يئوده حفظهما | ٢٥٥ | م | « | ٢ |
| يا قوم ادخلوا الأرض المقدسة التي كتب الله لكم | ٢١ | م | المـائدة | ٥ |
| الحمد لله الذي خلق السموات والأرض وجعل الظلمات | ١ | ك | الأنعـام | ٦ |
| وهو الذي خلق السموات والأرض بالحـق ... ... | ٧٣ | ك | « | ٦ |
| إني وجهت وجهي للذي فطر السموات والأرض حنيفا | ٧٩ | ك | « | ٦ |
| إن ربكم الله الذي خلق السموات والأرض في ستة أيام | ٥٤ | ك | الأعراف | ٧ |
| أو لم يهد للذين يرثون الأرض من بعد أهلها... ... | ١٠٠ | ك | « | ٧ |
| قال موسى لقومه استعينوا بالله واصبروا إن الأرض | ١٢٨ | ك | « | ٧ |
| اثنا عشر شهرا في كتاب الله يوم خلق السموات والأرض | ٣٦ | م | التـوبة | ٩ |
| إن ربكم الله الذي خلق السموات والأرض في ستة أيام | ٣ | ك | يونس | ١٠ |
| الأرْضُ : وهو الذي خلق السموات والأرض في ستة أيام | ٧ | ك | هـود | ١١ |
| فلن أبرح الأرض حتى يأذن لي أبي أو يحكم الله لي | ٨٠ | ك | يوسـف | ١٢ |
| وهو الذي مد الأرض وجعل فيها رواسي وأنهارا | ٣ | م | الرعـد | ١٣ |
| أو لم يروا أنا نأتي الأرض ننقصها من أطرافها | ٤١ | م | « | ١٣ |
| ولنسكننكم الأرض من بعدهم ذلك لمن خاف مقامي | ١٤ | ك | إبراهـيم | ١٤ |
| ألم تر أن الله خلق السموات والأرض بالحق... ... | ١٩ | ك | « | ١٤ |
| الله الذي خلق السموات والأرض وأنزل من السماء ماء | ٣٢ | ك | « | ١٤ |
| والأرض مددناها وألقينا فيها رواسي وأنبتنا فيها من كل | ١٩ | ك | الحجـر | ١٥ |
| وما خلقنا السموات والأرض وما بينهما إلا بالحق | ٨٥ | ك | « | ١٥ |
| خلق السموات والأرض بالحق تعالى عما يشركون | ٣ | ك | النحـل | ١٦ |
| أفأمن الذين مكروا السيئات أن يخسف الله بهم الأرض | ٤٥ | ك | « | ١٦ |
| والله أنزل من السماء ماء فأحيا به الأرض بعد موتها | ٦٥ | ك | « | ١٦ |
| إنك لن تخرق الأرض ولن تبلغ الجبال طولا... ... | ٣٧ | ك | الإسـراء | ١٧ |
| أولم يروا أن الله الذي خلق السموات والأرض قادر | ٩٩ | ك | « | ١٧ |
| اسكنوا الأرض فإذا جاء وعد الآخرة جئنا بكم لفيفا | ١٠٤ | ك | « | ١٧ |
| ويوم نسير الجبال وترى الأرض بارزة... ... ... | ٤٧ | ك | الكهف | ١٨ |
| إنا نحن نرث الأرض ومن عليها وإلينا يرجعون | ٤٠ | ك | مـريم | ١٩ |
| تنزيلا ممن خلق الأرض والسموات العلى ... ... | ٤ | ك | طـه | ٢٠ |
| الذي جعل لكم الأرض مهدا وسلك لكم فيها سبلا | ٥٣ | ك | « | ٢٠ |
| وما خلقنا السماء والأرض وما بينهما لاعبين ... ... | ١٦ | ك | الأنبيـاء | ٢١ |
| أولم ير الذين كفروا أن السموات والأرض كانتا رتقا | ٣٠ | ك | « | ٢١ |
| أفلا يرون أنا نأتي الأرض ننقصها من أطرافها | ٤٤ | ك | « | ٢١ |
| ولقد كتبنا في الزبور من بعد الذكر أن الأرض يرثها | ١٠٥ | ك | « | ٢١ |
| وترى الأرض هامدة فإذا أنزلنا عليها الماء اهتزت وربت | ٥ | م | الحـج | ٢٢ |
| الذي خلق السموات والأرض وما بينهما في ستة أيام | ٥٩ | ك | الفـرقان | ٢٥ |
| أمن خلق السموات والأرض وأنزل لكم من السماء ماء | ٦٠ | ك | النمـل | ٢٧ |
| أمن جعل الأرض قرارا وجعل خلالها أنهارا... ... | ٦١ | ك | « | ٢٧ |
| فخسفنا به وبداره الأرض فما كان له من فئة ينصرونه | ٨١ | ك | القصص | ٢٨ |
| ومنهم من خسفنا به الأرض ومنهم من أغرقنا | ٤٠ | ك | العنكبوت | ٢٩ |
| خلق الله السموات والأرض بالحق إن في ذلك لآية للمؤمنين | ٤٤ | ك | « | ٢٩ |
| ولئن سألتهم من خلق السموات والأرض وسخر الشمس | ٦١ | ك | « | ٢٩ |
| ولئن سألتهم من نزل من السماء ماء فأحيا به الأرض من بعد | ٦٣ | ك | « | ٢٩ |
| ما خلق الله السموات والأرض وما بينهما إلا بالحق | ٨ | ك | الـروم | ٣٠ |
| كانوا أشد منهم قوة وأثاروا الأرض وعمروها ... | ٩ | ك | « | ٣٠ |
| يخرج الحي من الميت ويخرج الميت من الحي ويحيي الأرض | ١٩ | ك | « | ٣٠ |
| وينزل من السماء ماء فيحيي به الأرض بعد موتها | ٢٤ | ك | « | ٣٠ |
| فانظر إلى آثار رحمة الله كيف يحيي الأرض بعد موتها | ٥٠ | ك | « | ٣٠ |
| ولئن سألتهم من خلق السموات والأرض ليقولن الله | ٢٥ | ك | لقمـان | ٣١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الأرض: | الله الذى خلق السموات والأرض وما بينهما | ٤ | ك السجدة | ٣٢ |
| | إن نشأ نخسف بهم الأرض أو نسقط عليهم كسفا من السماء | ٩ | ك سبأ | ٣٤ |
| | فسقناه إلى بلد ميت فأحيينا به الأرض بعد موتها ... | ٩ | ك فاطر | ٣٥ |
| | إن الله يمسك السموات والأرض أن تزولا... ... | ٤١ | ك « | ٣٥ |
| | أوليس الذى خلق السموات والأرض بقادر على أن يخلق | ٨١ | ك يس | ٣٦ |
| | وما خلقنا السماء والأرض وما بينهما باطلا ... ... | ٢٧ | ك ص | ٣٨ |
| | خلق السموات والأرض بالحق يكور الليل على النهار | ٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ولئن سألتهم من خلق السموات والأرض ليقولن الله | ٣٨ | ك « | ٣٩ |
| | وأورثنا الأرض نتبوأ من الجنة حيث نشاء ... ... | ٧٤ | ك « | ٣٩ |
| | الله الذى جعل لكم الأرض قرارا والسماء بناء ... | ٦٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | قل أئنكم لتكفرون بالذى خلق الأرض فى يومين ... | ٩ | ك فصلت | ٤١ |
| | ومن آياته أنك ترى الأرض خاشعة... ... ... ... | ٣٩ | ك « | ٤١ |
| | ولئن سألتهم من خلق السموات والأرض ليقولن خلقهن | ٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | الذى جعل لكم الأرض مهدا وجعل لكم فيها سبلا | ١٠ | ك « | ٤٣ |
| | وما خلقنا السموات والأرض وما بينهما لاعبين ... | ٣٨ | ك الدخان | ٤٤ |
| | وما أنزل الله من السماء من رزق فأحيا به الأرض بعد موتها | ٥ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | وخلق الله السموات والأرض بالحق ولتجزى كل نفس | ٢٢ | ك « | ٤٥ |
| | ما خلقنا السموات والأرض وما بينهما إلا بالحق | ٣ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | أولم يروا أن الله الذى خلق السموات والأرض ولم يعى | ٣٣ | ك « | ٤٦ |
| | والأرض مددناها وألقينا فيها رواسى وأنبتنا فيها من كل زوج | ٧ | ك ق | ٥٠ |
| | ولقد خلقنا السموات والأرض وما بينهما فى ستة أيام | ٣٨ | م « | ٥٠ |
| | والأرض فرشناها فنعم الماهدون ... ... ... ... | ٤٨ | ك الذاريات | ٥١ |
| | أم خلقوا السموات والأرض بل لا يوقنون... ... | ٣٦ | ك الطور | ٥٢ |
| | وفجرنا الأرض عيونا فالتقى الماء على أمر قد قدر | ١٢ | ك القمر | ٥٤ |
| | والأرض وضعها للأنام ... ... ... ... ... | ١٠ | م الرحمن | ٥٥ |
| | هو الذى خلق السموات والأرض فى ستة أيام | ٤ | م الحديد | ٥٧ |
| | اعلموا أن الله يحى الأرض بعد موتها ... ... ... | ١٧ | م « | ٥٧ |
| | خلق السموات والأرض بالحق وصوركم فأحسن صوركم | ٣ | م التغابن | ٦٤ |
| | هو الذى جعل لكم الأرض ذلولا فامشوا فى مناكبها | ١٥ | ك الملك | ٦٧ |
| | أأمنتم من فى السماء أن يخسف بكم الأرض فإذا هى تمور | ١٦ | ك « | ٦٧ |
| | والله جعل لكم الأرض بساطا ... ... ... ... | ١٩ | ك نوح | ٧١ |
| | ألم نجعل الأرض كفاتا ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك المرسلات | ٧٧ |
| | ألم نجعل الأرض مهادا ... ... ... ... ... | ٦ | ك النبأ | ٧٨ |
| | والأرض بعد ذلك دحاها ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك النازعات | ٧٩ |
| | ثم شققنا الأرض شقا ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك عبس | ٨٠ |
| الأرض: | وإذا قيل لهم لا تفسدوا فى الأرض ... ... | ١١ | م البقرة | ٢ |
| (٣٣١) | ويقطعون ما أمر الله به أن يوصل ويفسدون فى الأرض | ٢٧ | م « | ٢ |
| | هو الذى خلق لكم ما فى الأرض جميعا ثم استوى إلى السماء | ٢٩ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الأرض: | وإذ قال ربك للملائكة إنى جاعل فى الأرض خليفة | ٣٠ | م البقرة | ٢ |
| | قال ألم أقل لكم إنى أعلم غيب السموات والأرض | ٣٣ | م « | ٢ |
| | ولكم فى الأرض مستقر ومتاع إلى حين... ... ... | ٣٦ | م « | ٢ |
| | كلوا واشربوا من رزق الله ولا تعثوا فى الارض | ٦٠ | م « | ٢ |
| | ألم تعلم أن الله له ملك السموات والأرض ... ... | ١٠٧ | م « | ٢ |
| | وقالوا اتخذ الله ولدا سبحانه بل له ما فى السموات والأرض | ١١٦ | م « | ٢ |
| | بديع السموات والأرض ... ... ... ... ... | ١١٧ | م « | ٢ |
| | إن فى خلق السموات والأرض واختلاف الليل | ١٦٤ | م « | ٢ |
| | وتصريف الرياح والسحاب المسخر بين السماء والأرض | ١٦٤ | م « | ٢ |
| | يأيها الناس كلوا مما فى الأرض حلالا طيبا ... ... | ١٦٨ | م « | ٢ |
| | وإذا تولى سعى فى الأرض ليفسد فيها ويهلك الحرث | ٢٠٥ | م « | ٢ |
| | لا تأخذه سنة ولا نوم له ما فى السموات وما فى الأرض | ٢٥٥ | م « | ٢ |
| | أنفقوا من طيبات ما كسبتم ومما أخرجنا لكم من الأرض | ٢٦٧ | م « | ٢ |
| | لا يستطيعون ضربا فى الأرض يحسبهم الجاهل أغنياء | ٢٧٣ | م « | ٢ |
| | لله ما فى السموات وما فى الأرض... ... ... ... | ٢٨٤ | م « | ٢ |
| | إن الله لا يخفى عليه شىء فى الأرض ولا فى السماء... ... | ٥ | م آل عمران | ٣ |
| | ويعلم ما فى السموات وما فى الأرض ... ... ... | ٢٩ | م « | ٣ |
| | أفغير دين الله يبغون وله أسلم من فى السموات والأرض | ٨٣ | م « | ٣ |
| | فلن يقبل من أحدهم ملء الأرض ذهبا ولو افتدى | ٩١ | م « | ٣ |
| | ولله ما فى السموات وما فى الأرض وإلى الله ترجع | ١٠٩ | م « | ٣ |
| | ولله ما فى السموات وما فى الأرض يغفر لمن يشاء | ١٢٩ | م « | ٣ |
| | قد خلت من قبلكم سنن فسيروا فى الأرض... ... | ١٣٧ | م « | ٣ |
| | وقالوا لإخوانهم إذا ضربوا فى الأرض ... ... | ١٥٦ | م « | ٣ |
| | ولله ميراث السموات والأرض والله بما تعملون خبير | ١٨٠ | م « | ٣ |
| | ولله ملك السموات والأرض والله على كل شىء قدير | ١٨٩ | م « | ٣ |
| | إن فى خلق السموات والأرض واختلاف الليل والنهار | ١٩٠ | م « | ٣ |
| | ويتفكرون فى خلق السموات والأرض ... ... ... | ١٩١ | م « | ٣ |
| | قالوا فيم كنتم قالوا كنا مستضعفين فى الأرض | ٩٧ | م النساء | ٤ |
| | ومن يهاجر فى سبيل الله يجد فى الأرض مراغما كثيرا | ١٠٠ | م « | ٤ |
| | وإذا ضربتم فى الأرض فليس عليكم جناح أن تقصروا | ١٠١ | م « | ٤ |
| | ولله ما فى السموات وما فى الأرض... ... ... ... | ١٢٦ | م « | ٤ |
| | ولله ما فى السموات وما فى الأرض ... ... ... | ١٣١ | م « | ٤ |
| | وإن تكفروا فإن لله ما فى السموات وما فى الأرض | ١٣١ | م « | ٤ |
| | ولله ما فى السموات وما فى الأرض وكفى بالله وكيلا | ١٣٢ | م « | ٤ |
| | وإن تكفروا فإن لله ما فى السموات والأرض | ١٧٠ | م « | ٤ |
| | له ما فى السموات وما فى الارض وكفى بالله وكيلا | ١٧١ | م « | ٤ |
| | إن أراد أن يهلك المسيح ابن مريم وأمه ومن فى الأرض | ١٧ | م المائدة | ٥ |
| | ولله ملك السموات والأرض وما بينهما يخلق ما يشاء | ١٧ | م « | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **الأرض** : ولله ملك السموات والأرض وما بينهما وإليه المصير | ١٨ م | المائدة | | ٥ |
| قال فإنها محرمة عليهم أربعين سنة يتيهون فى الأرض | ٢٦ م | « | | ٥ |
| فبعث الله غرابا يبحث فى الأرض ... ... ... ... | ٣١ م | « | | ٥ |
| من قتل نفسا بغير نفس أو فساد فى الأرض فكأنما قتل الناس | ٣٢ م | « | | ٥ |
| ثم إن كثيرا منهم بعد ذلك فى الأرض لمسرفون | ٣٢ م | « | | ٥ |
| ويسعون فى الأرض فسادا أن يقتلوا أو يصلبوا | ٣٣ م | « | | ٥ |
| أو تقطع أيديهم وأرجلهم من خلاف أو ينفوا من الأرض | ٣٣ م | « | | ٥ |
| إن الذين كفروا لو أن لهم ما فى الأرض جميعا ومثله معه | ٣٦ م | « | | ٥ |
| ألم تعلم أن الله له ملك السموات والأرض يعذب من يشاء | ٤٠ م | « | | ٥ |
| ويسعون فى الأرض فسادا والله لا يحب المفسدين | ٦٤ م | « | | ٥ |
| ذلك لتعلموا أن الله يعلم ما فى السموات وما فى الأرض | ٩٧ م | « | | ٥ |
| إن أنتم ضربتم فى الأرض فأصابتكم مصيبة الموت | ١٠٦م | « | | ٥ |
| لله ملك السموات والأرض وما فيهن وهو على كل شىء قدير | ١٢٠م | « | | ٥ |
| وهو الله فى السموات وفى الأرض يعلم سركم وجهركم | ٣ ك | الأنعام | | ٦ |
| ألم يروا كم أهلكنا من قبلهم من قرن مكناهم فى الأرض | ٦ ك | « | | ٦ |
| قل سيروا فى الأرض ثم انظروا كيف كان عاقبة المكذبين | ١١ ك | « | | ٦ |
| قل لمن ما فى السموات والأرض قل لله ... ... | ١٢ ك | « | | ٦ |
| قل أغير الله أتخذ وليا فاطر السموات والأرض | ١٤ ك | « | | ٦ |
| فإن استطعت أن تبتغى نفقا فى الأرض أو سلما فى السماء | ٣٥ ك | « | | ٦ |
| وما من دابة فى الأرض ولا طائر يطير بجناحيه إلا أمم | ٣٨ ك | « | | ٦ |
| ولا حبة فى ظلمات الأرض ولا رطب ولا يابس إلا فى كتاب | ٥٩ ك | « | | ٦ |
| كالذى استهوته الشياطين فى الأرض حيران له أصحاب | ٧١ ك | « | | ٦ |
| وكذلك نرى إبراهيم ملكوت السموات والأرض | ٧٥ ك | « | | ٦ |
| بديع السموات والأرض أنى يكون له ولد ... ... | ١٠١ك | « | | ٦ |
| وإن تطع أكثر من فى الأرض يضلوك عن سبيل الله | ١١٦ك | « | | ٦ |
| وهو الذى جعلكم خلائف الأرض ورفع بعضكم فوق بعض | ١٦٥ك | « | | ٦ |
| ولقد مكناكم فى الأرض وجعلنا لكم فيها معايش | ١٠ ك | الأعراف | | ٧ |
| قال اهبطوا بعضكم لبعض عدو ولكم فى الأرض مستقر | ٢٤ ك | « | | ٧ |
| ولا تفسدوا فى الأرض بعد إصلاحها وادعوه خوفا | ٥٦ ك | « | | ٧ |
| فذروها تأكل فى أرض الله ولا تمسوها بسوء... ... | ٧٣ ك | « | | ٧ |
| وبوأكم فى الأرض تتخذون من سهولها قصورا وتنحتون | ٧٤ ك | « | | ٧ |
| فاذكروا آلاء الله ولا تعثوا فى الأرض مفسدين | ٧٤ ك | « | | ٧ |
| ولا تبخسوا الناس أشياءهم ولا تفسدوا فى الأرض | ٨٥ ك | « | | ٧ |
| آمنوا واتقوا لفتحنا عليهم بركات من السماء والأرض | ٩٦ ك | « | | ٧ |
| أتذر موسى وقومه ليفسدوا فى الأرض ويذرك وآلهتك | ١٢٧ك | « | | ٧ |
| قال عسى ربكم أن يهلك عدوكم ويستخلفكم فى الأرض | ١٢٩ك | « | | ٧ |
| وأورثنا القوم الذين كانوا يستضعفون مشارق الأرض | ١٣٧ك | « | | ٧ |
| سأصرف عن آياتى الذين يتكبرون فى الأرض بغير الحق | ١٤٦ك | « | | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **الأرض** : الذى له ملك السموات والأرض لا إله إلا هو | ١٥٨ك | الأعراف | | ٧ |
| وقطعناهم فى الأرض أمما منهم الصالحون ومنهم دون ذلك | ١٦٨م | « | | ٧ |
| ولو شئنا لرفعناه بها ولكنه أخلد إلى الأرض واتبع هواه | ١٧٦ك | « | | ٧ |
| أولم ينظروا فى ملكوت السموات والأرض وما خلق الله | ١٨٥ك | « | | ٧ |
| ثقلت فى السموات والأرض لا تأتيكم إلا بغتة... ... | ١٨٧ك | « | | ٧ |
| واذكروا إذ أنتم قليل مستضعفون فى الأرض ... ... | ٢٦ م | الأنفال | | ٨ |
| لو أنفقت ما فى الأرض جميعا ما ألفت بين قلوبهم | ٦٣ م | « | | ٨ |
| ما كان لنبى أن يكون له أسرى حتى يثخن فى الأرض | ٦٧ م | « | | ٨ |
| إلا تفعلوه تكن فتنة فى الأرض وفساد كبير ... ... | ٧٣ م | « | | ٨ |
| فسيحوا فى الأرض أربعة أشهر ... ... ... ... | ٢ م | التوبة | | ٩ |
| مالكم إذا قيل لكم انفروا فى سبيل الله اثاقلتم إلى الأرض | ٣٨ م | « | | ٩ |
| وما لهم فى الأرض من ولى ولا نصير ... ... ... | ٧٤ م | « | | ٩ |
| إن الله له ملك السموات والأرض يحيى ويميت... .. | ١١٦م | « | | ٩ |
| وما خلق الله فى السموات والأرض لآيات لقوم يتقون | ٦ ك | يونس | | ١٠ |
| ثم جعلناكم خلائف فى الأرض من بعدهم ... ... | ١٤ ك | « | | ١٠ |
| قل أتنبئون الله بما لا يعلم فى السموات ولا فى الأرض | ١٨ ك | « | | ١٠ |
| فلما أنجاهم إذا هم يبغون فى الأرض بغير الحق | ٢٣ ك | « | | ١٠ |
| كماء أنزلناه من السماء فاختلط به نبات الأرض | ٢٤ ك | « | | ١٠ |
| قل من يرزقكم من السماء والأرض أمن يملك السمع والأبصار | ٣١ ك | « | | ١٠ |
| ولو أن لكل نفس ظلمت ما فى الأرض لافتدت به | ٥٤ ك | « | | ١٠ |
| ألا إن لله ما فى السموات والأرض ألا إن وعد الله حق | ٥٥ ك | « | | ١٠ |
| وما يعزب عن ربك من مثقال ذرة فى الأرض ولا فى السماء | ٦١ ك | « | | ١٠ |
| ألا إن لله من فى السموات ومن فى الأرض... ... | ٦٦ ك | « | | ١٠ |
| سبحانه هو الغنى له ما فى السموات وما فى الأرض | ٦٨ ك | « | | ١٠ |
| عما وجدنا عليه آباءنا وتكون لكما الكبرياء فى الأرض | ٧٨ ك | « | | ١٠ |
| وإن فرعون لعال فى الأرض وإنه لمن المسرفين | ٨٣ ك | « | | ١٠ |
| ولو شاء ربك لآمن من فى الأرض كلهم جميعا | ٩٩ ك | « | | ١٠ |
| قل انظروا ماذا فى السموات والأرض وما تغنى الآيات | ١٠١ك | « | | ١٠ |
| وما من دابة فى الأرض إلا على الله رزقها ويعلم مستقرها | ٦ ك | هود | | ١١ |
| أولئك لم يكونوا معجزين فى الأرض ... ... ... | ٢٠ ك | « | | ١١ |
| هو أنشأكم من الأرض واستعمركم فيها فاستغفروه | ٦١ ك | « | | ١١ |
| ويا قوم هذه ناقة الله لكم آية فذروها تأكل فى أرض الله | ٦٤ ك | « | | ١١ |
| ولا تبخسوا الناس أشياءهم ولا تعثوا فى الأرض مفسدين | ٨٥ ك | « | | ١١ |
| أولوا بقية ينهون عن الفساد فى الأرض إلا قليلا ممن أنجينا | ١١٦ك | « | | ١١ |
| ولله غيب السموات والأرض وإليه يرجع الأمر كله | ١٢٣ك | « | | ١١ |
| وكذلك مكنا ليوسف فى الأرض ... ... ... ... | ٢١ ك | يوسف | | ١٢ |
| قال اجعلنى على خزائن الأرض إنى حفيظ عليم... ... | ٥٥ ك | « | | ١٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الأرض | وكذلك مكنا ليوسف فى الأرض يتبوأ منها حيث يشاء | ٥٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | قالوا تالله لقد علمتم ما جئنا لنفسد فى الأرض وما كنا سارقين | ٧٣ | ك « | ١٢ |
| | فاطر السموات والأرض أنت ولي فى الدنيا والآخرة | ١٠١ | ك « | ١٢ |
| | وكأين من آية فى السموات والأرض يمرون عليها ... ... | ١٠٥ | ك « | ١٢ |
| | أفلم يسيروا فى الأرض فينظروا ... ... ... ... | ١٠٩ | ك « | ١٢ |
| | وفى الأرض قطع متجاورات وجنات من أعناب وزرع | ٤ | م الرعد | ١٣ |
| | ولله يسجد من فى السموات والأرض طوعا وكرها | ١٥ | م « | ١٣ |
| | قل من رب السموات والأرض قل الله... ... ... | ١٦ | م « | ١٣ |
| | وأما ما ينفع الناس فيمكث فى الأرض ... ... ... | ١٧ | م « | ١٣ |
| | والذين لم يستجيبوا له لو أن لهم ما فى الأرض جميعا | ١٨ | م « | ١٣ |
| | ويقطعون ما أمر الله به أن يوصل ويفسدون فى الأرض | ٢٥ | م « | ١٣ |
| | أم تنبئونه بما لا يعلم فى الأرض أم بظاهر من القول | ٣٣ | م « | ١٣ |
| | الذى له ما فى السموات وما فى الأرض وويل للكافرين | ٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وقال موسى إن تكفروا أنتم ومن فى الأرض جميعا | ٨ | ك « | ١٤ |
| | قالت رسلهم أفى الله شك فاطر السموات والأرض | ١٠ | ك « | ١٤ |
| | ومثل كلمة خبيثة كشجرة خبيثة اجتثت من فوق الأرض | ٢٦ | ك « | ١٤ |
| | وما يخفى على الله من شيء فى الأرض ولا فى السماء | ٣٨ | ك « | ١٤ |
| | يوم تبدل الأرض غير الأرض والسموات وبرزوا لله | ٤٨ | ك « | ١٤ |
| | قال رب بما أغويتنى لأزينن لهم فى الأرض ولأغوينهم | ٣٩ | ك الحجر | ١٥ |
| | وما ذرأ لكم فى الأرض مختلفا ألوانه إن فى ذلك لآية | ١٣ | ك النحل | ١٦ |
| | وألقى فى الأرض رواسى أن تميد بكم وأنهارا وسبلا | ١٥ | ك « | ١٦ |
| | فسيروا فى الأرض فانظروا كيف كان عاقبة المكذبين | ٣٦ | ك « | ١٦ |
| | ولله يسجد ما فى السموات وما فى الأرض من دابة | ٤٩ | ك « | ١٦ |
| | وله ما فى السموات والأرض وله الدين واصبا | ٥٢ | ك « | ١٦ |
| | ما لا يملك لهم رزقا من السموات والأرض شيئا | ٧٣ | ك « | ١٦ |
| | ولله غيب السموات والأرض وما أمر الساعة إلا كلمح | ٧٧ | ك « | ١٦ |
| | وقضينا إلى بنى إسرائيل فى الكتاب لتفسدن فى الأرض | ٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ولا تمش فى الأرض مرحا إنك لن تخرق الأرض | ٣٧ | ك « | ١٧ |
| | وربك أعلم بمن فى السموات والأرض ولقد فضلنا | ٥٥ | ك « | ١٧ |
| | وإن كادوا ليستفزونك من الأرض ليخرجوك منها | ٧٦ | م « | ١٧ |
| | وقالوا لن نؤمن لك حتى تفجر لنا من الأرض ينبوعا | ٩٠ | ك « | ١٧ |
| | قل لو كان فى الأرض ملائكة يمشون مطمئنين لنزلنا عليهم | ٩٥ | ك « | ١٧ |
| | قال لقد علمت ما أنزل هؤلاء إلا رب السموات والأرض | ١٠٢ | ك « | ١٧ |
| | فأراد أن يستفزهم من الأرض فأغرقناه ومن معه جميعا | ١٠٣ | ك « | ١٧ |
| | إنا جعلنا ما على الأرض زينة لها لنبلوهم أيهم أحسن عملا | ٧ | ك الكهف | ١٨ |
| | إذ قاموا فقالوا ربنا رب السموات والأرض... ... | ١٤ | ك « | ١٨ |
| | قل الله أعلم بما لبثوا له غيب السموات والأرض | ٢٦ | ك « | ١٨ |
| | كماء أنزلناه من السماء فاختلط به نبات الأرض فأصبح هشيما | ٤٥ | ك « | ١٨ |
| | ما أشهدتهم خلق السموات والأرض ولا خلق | ٥١ | ك الكهف | ١٨ |
| | إنا مكنا له فى الأرض وآتيناه من كل شيء سببا | ٨٤ | م « | ١٨ |
| | يا ذا القرنين إن يأجوج ومأجوج مفسدون فى الأرض | ٩٤ | م « | ١٨ |
| | رب السموات والأرض وما بينهما فاعبده واصطبر لعبادته | ٦٥ | ك مريم | ١٩ |
| | إن كل من فى السموات والأرض إلا آتى الرحمن عبدا | ٩٣ | ك « | ١٩ |
| | له ما فى السموات وما فى الأرض وما بينهما وما تحت الثرى | ٦ | ك طه | ٢٠ |
| | قال ربى يعلم القول فى السماء والأرض وهو السميع العليم | ٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وله من فى السموات والأرض ومن عنده لا يستكبرون | ١٩ | ك « | ٢١ |
| | أم اتخذوا آلهة من الأرض هم ينشرون... ... ... | ٢١ | ك « | ٢١ |
| | وجعلنا فى الأرض رواسى أن تميد بهم وجعلنا فيها فجاجا | ٣١ | ك « | ٢١ |
| | قال بل ربكم رب السموات والأرض الذى فطرهن | ٥٦ | ك « | ٢١ |
| | ونجيناه ولوطا إلى الأرض التى باركنا فيها للعالمين | ٧١ | ك « | ٢١ |
| | ولسليمان الريح عاصفة تجرى بأمره إلى الأرض التى باركنا | ٨١ | ك « | ٢١ |
| | ألم تر أن الله يسجد له من فى السموات ومن فى الأرض | ١٨ | م الحج | ٢٢ |
| | الذين إن مكناهم فى الأرض أقاموا الصلاة وآتوا الزكاة | ٤١ | م « | ٢٢ |
| | أفلم يسيروا فى الأرض فتكون لهم قلوب يعقلون بها | ٤٦ | م « | ٢٢ |
| | له ما فى السموات وما فى الأرض وإن الله لهو الغنى الحميد | ٦٤ | م « | ٢٢ |
| | ألم تر أن الله سخر لكم ما فى الأرض والفلك تجرى فى البحر | ٦٥ | م « | ٢٢ |
| | ويمسك السماء أن تقع على الأرض إلا بإذنه | ٦٥ | م « | ٢٢ |
| | ألم تعلم أن الله يعلم ما فى السماء والأرض ... ... | ٧٠ | م « | ٢٢ |
| | وأنزلنا من السماء ماء بقدر فأسكناه فى الأرض... ... | ١٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وهو الذى ذرأكم فى الأرض وإليه تحشرون... ... | ٧٩ | ك « | ٢٣ |
| | قال كم لبثتم فى الأرض عدد سنين ... ... ... ... | ١١٢ | ك « | ٢٣ |
| | الله نور السموات والأرض مثل نوره كمشكاة... ... | ٣٥ | م النور | ٢٤ |
| | ألم تر أن الله يسبح له من فى السموات والأرض | ٤١ | م « | ٢٤ |
| | ولله ملك السموات والأرض وإلى الله المصير | ٤٢ | م « | ٢٤ |
| | ليستخلفنهم فى الأرض كما استخلف الذين من قبلهم | ٥٥ | م « | ٢٤ |
| | لا تحسبن الذين كفروا معجزين فى الأرض ومأواهم النار | ٥٧ | م « | ٢٤ |
| | ألا إن لله ما فى السموات والأرض قد يعلم ما أنتم عليه | ٦٤ | م « | ٢٤ |
| | الذى له ملك السموات والأرض ولم يتخذ ولدا | ٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | قل أنزله الذى يعلم السر فى السموات والأرض | ٦ | ك « | ٢٥ |
| | وعباد الرحمن الذين يمشون على الأرض هونا... ... | ٦٣ | ك « | ٢٥ |
| | أولم يروا إلى الأرض كم أنبتنا فيها من كل زوج كريم | ٧ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | قال رب السموات والأرض وما بينهما إن كنتم موقنين | ٢٤ | ك « | ٢٦ |
| | الذين يفسدون فى الأرض ولا يصلحون ... ... | ١٥٢ | ك « | ٢٦ |
| | ولا تبخسوا الناس أشياءهم ولا تعثوا فى الأرض مفسدين | ١٨٣ | ك « | ٢٦ |
| | ألا يسجدوا لله الذى يخرج الخبء فى السموات والأرض | ٢٥ | ك النمل | ٢٧ |
| | وكان فى المدينة تسعة رهط يفسدون فى الأرض | ٤٨ | ك « | ٢٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **الأرض:** ويكشف السوء ويجعلكم خلفاء الأرض... ... | ٦٢ | ك | النمل | ٢٧ |
| أمن يبدأ الخلق ثم يعيده ومن يرزقكم من السماء والأرض | ٦٤ | ك | « | ٢٧ |
| قل لا يعلم من في السموات والأرض الغيب إلا الله | ٦٥ | ك | « | ٢٧ |
| قل سيروا في الأرض فانظروا كيف كان عاقبة المجرمين | ٦٩ | ك | « | ٢٧ |
| وما من غائبة في السماء والأرض إلا في كتاب مبين | ٧٥ | ك | « | ٢٧ |
| وإذا وقع القول عليهم أخرجنا لهم دابة من الأرض | ٨٢ | ك | « | ٢٧ |
| ويوم ينفخ في الصور ففزع من في السموات ومن في الأرض | ٨٧ | ك | « | ٢٧ |
| إن فرعون علا في الأرض وجعل أهلها شيعا... ... | ٤ | ك | القصص | ٢٨ |
| ونريد أن نمن على الذين استضعفوا في الأرض ونجعلهم أئمة | ٥ | ك | « | ٢٨ |
| ونمكن لهم في الأرض ونرى فرعون وهامان وجنودهما | ٦ | ك | « | ٢٨ |
| إن تريد إلا أن تكون جبارا في الأرض ... ... | ١٩ | ك | « | ٢٨ |
| واستكبر هو وجنوده في الأرض بغير الحق ... ... | ٣٩ | ك | « | ٢٨ |
| وأحسن كما أحسن الله إليك ولا تبغ الفساد في الأرض | ٧٧ | ك | « | ٢٨ |
| تلك الدار الآخرة نجعلها للذين لا يريدون علوا في الأرض | ٨٣ | ك | « | ٢٨ |
| قل سيروا في الأرض فانظروا كيف بدأ الخلق | ٢٠ | ك | العنكبوت | ٢٩ |
| وما أنتم بمعجزين في الأرض ولا في السماء ... ... | ٢٢ | ك | « | ٢٩ |
| اعبدوا الله وارجوا اليوم الآخر ولا تعثوا في الأرض | ٣٦ | ك | « | ٢٩ |
| ولقد جاءهم موسى بالبينات فاستكبروا في الأرض | ٣٩ | ك | « | ٢٩ |
| قل كفى بالله بيني وبينكم شهيدا يعلم ما في السموات والأرض | ٥٢ | ك | « | ٢٩ |
| غلبت الروم. في أدنى الأرض وهم من بعد غلبهم سيغلبون | ٣ | ك | الروم | ٣٠ |
| أولم يسيروا في الأرض فينظروا... ... ... ... ... | ٩ | ك | « | ٣٠ |
| وله الحمد في السموات والأرض وعشيا وحين تظهرون | ١٨ | ك | « | ٣٠ |
| ومن آياته خلق السموات والأرض واختلاف ألسنتكم | ٢٢ | ك | « | ٣٠ |
| ثم إذا دعاكم دعوة من الأرض ... ... ... ... | ٢٥ | ك | « | ٣٠ |
| وله من في السموات والأرض كل له قانتون... ... | ٢٦ | ك | « | ٣٠ |
| وله المثل الأعلى في السموات والأرض وهو العزيز الحكيم | ٢٧ | ك | « | ٣٠ |
| قل سيروا في الأرض فانظروا ... ... ... ... | ٤٢ | ك | « | ٣٠ |
| وألقى في الأرض رواسي أن تميد بكم ... ... ... | ١٠ | ك | لقمان | ٣١ |
| فتكن في صخرة أو في السموات أو في الأرض | ١٦ | ك | « | ٣١ |
| ولا تصعر خدك للناس ولا تمش في الأرض مرحا | ١٨ | ك | « | ٣١ |
| ألم تروا أن الله سخر لكم ما في السموات وما في الأرض | ٢٠ | ك | « | ٣١ |
| لله ما في السموات والأرض إن الله هو الغني الحميد | ٢٦ | ك | « | ٣١ |
| ولو أن ما في الأرض من شجرة أقلام والبحر يمده من بعده | ٢٧ | م | « | ٣١ |
| وما تدري نفس بأي أرض تموت ... ... ... ... | ٣٤ | ك | « | ٣١ |
| يدبر الأمر من السماء إلى الأرض ثم يعرج إليه | ٥ | ك | السجدة | ٣٢ |
| وقالوا أئذا ضللنا في الأرض أئنا لفي خلق جديد | ١٠ | ك | « | ٣٢ |
| أولم يروا أنا نسوق الماء إلى الأرض الجرز فنخرج به زرعا | ٢٧ | ك | « | ٣٢ |
| إنا عرضنا الأمانة على السموات والأرض والجبال | ٧٢ | م | الأحزاب | ٣٣ |
| **الأرض:** الحمد لله الذي له ما في السموات وما في الأرض | ١ | ك | سبأ | ٣٤ |
| يعلم ما يلج في الأرض وما يخرج منها وما ينزل من السماء | ٢ | ك | « | ٣٤ |
| لا يعزب عنه مثقال ذرة في السموات ولا في الأرض | ٣ | ك | « | ٣٤ |
| أفلم يروا إلى ما بين أيديهم وما خلفهم من السماء والأرض | ٩ | ك | « | ٣٤ |
| فلما قضينا عليه الموت ما دلهم على موته إلا دابة الأرض | ١٤ | ك | « | ٣٤ |
| لا يملكون مثقال ذرة في السموات ولا في الأرض | ٢٢ | ك | « | ٣٤ |
| قل من يرزقكم من السموات والأرض قل الله | ٢٤ | ك | « | ٣٤ |
| الحمد لله فاطر السموات والأرض جاعل الملائكة رسلا | ١ | ك | فاطر | ٣٥ |
| هل من خالق غير الله يرزقكم من السماء والأرض | ٣ | ك | « | ٣٥ |
| إن الله عالم غيب السموات والأرض إنه عليم بذات الصدور | ٣٨ | ك | « | ٣٥ |
| هو الذي جعلكم خلائف في الأرض فمن كفر فعليه كفره | ٣٩ | ك | « | ٣٥ |
| أروني ماذا خلقوا من الأرض أم لهم شرك في السموات | ٤٠ | ك | « | ٣٥ |
| استكبارا في الأرض ومكر السيئ ... ... ... ... | ٤٣ | ك | « | ٣٥ |
| أولم يسيروا في الأرض فينظروا... ... ... ... ... | ٤٤ | ك | « | ٣٥ |
| وما كان الله ليعجزه من شيء في السموات ولا في الأرض | ٤٤ | ك | « | ٣٥ |
| رب السموات والأرض وما بينهما ورب المشارق | ٥ | ك | الصافات | ٣٧ |
| أم لهم ملك السموات والأرض وما بينهما ... ... | ١٠ | ك | ص | ٣٨ |
| يا داود إنا جعلناك خليفة في الأرض فاحكم بين الناس | ٢٦ | ك | « | ٣٨ |
| الذين آمنوا وعملوا الصالحات كالمفسدين في الأرض | ٢٨ | ك | « | ٣٨ |
| رب السموات والأرض وما بينهما العزيز الغفار | ٦٦ | ك | « | ٣٨ |
| أنزل من السماء ماء فسلكه ينابيع في الأرض... ... | ٢١ | ك | الزمر | ٣٩ |
| له ملك السموات والأرض ثم إليه ترجعون ... ... | ٤٤ | ك | « | ٣٩ |
| قل اللهم فاطر السموات والأرض عالم الغيب والشهادة | ٤٦ | ك | « | ٣٩ |
| ولو أن للذين ظلموا ما في الأرض جميعا ومثله معه | ٤٧ | ك | « | ٣٩ |
| له مقاليد السموات والأرض ... ... ... ... ... | ٦٣ | ك | « | ٣٩ |
| ونفخ في الصور فصعق من في السموات ومن في الأرض | ٦٨ | ك | « | ٣٩ |
| أولم يسيروا في الأرض فينظروا ... ... ... ... | ٢١ | ك | غافر | ٤٠ |
| كانوا هم أشد منهم قوة وآثارا في الأرض... ... | ٢١ | ك | « | ٤٠ |
| إني أخاف أن يبدل دينكم أو أن يظهر في الأرض | ٢٦ | ك | « | ٤٠ |
| يا قوم لكم الملك اليوم ظاهرين في الأرض... ... | ٢٩ | ك | « | ٤٠ |
| لخلق السموات والأرض أكبر من خلق الناس... ... | ٥٧ | م | « | ٤٠ |
| ذلكم بما كنتم تفرحون في الأرض بغير الحق... ... | ٧٥ | ك | « | ٤٠ |
| أفلم يسيروا في الأرض فينظروا ... ... ... ... | ٨٢ | ك | « | ٤٠ |
| كانوا أكثر منهم وأشد قوة وآثارا في الأرض... ... | ٨٢ | ك | « | ٤٠ |
| فقال لها وللأرض ائتيا طوعا أو كرها ... ... ... | ١١ | ك | فصلت | ٤١ |
| فأما عاد فاستكبروا في الأرض بغير الحق... ... ... | ١٥ | ك | « | ٤١ |
| له ما في السموات وما في الأرض وهو العلي العظيم | ٤ | ك | الشورى | ٤٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الأرض: | يسبحون بحمد ربهم ويستغفرون لمن فى الأرض | ٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| | فاطر السموات والأرض جعل لكم من أنفسكم أزواجا | ١١ | ك « | ٤٢ |
| | له مقاليد السموات والأرض يبسط الرزق لمن يشاء | ١٢ | ك « | ٤٢ |
| | ولو بسط الله الرزق لعباده لبغوا فى الأرض... ... | ٢٧ | م « | ٤٢ |
| | ومن آياته خلق السموات والأرض وما بث فيهما | ٢٩ | ك « | ٤٢ |
| | وما أنتم بمعجزين فى الأرض ... ... ... ... | ٣١ | ك « | ٤٢ |
| | إنما السبيل على الذين يظلمون الناس ويبغون فى الأرض | ٤٢ | ك « | ٤٢ |
| | لله ملك السموات والأرض يخلق ما يشاء ... ... | ٤٩ | ك « | ٤٢ |
| | صراط الله الذى له ما فى السموات وما فى الأرض | ٥٣ | ك « | ٤٢ |
| | ولو نشاء لجعلنا منكم ملائكة فى الأرض يخلفون... ... | ٦٠ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | سبحان رب السموات والأرض رب العرش عما يصفون | ٨٢ | ك « | ٤٣ |
| | وهو الذى فى السماء إله وفى الأرض إله... ... ... | ٨٤ | ك « | ٤٣ |
| | وتبارك الذى له ملك السموات والأرض وما بينهما | ٨٥ | ك « | ٤٣ |
| | رب السموات والأرض وما بينهما إن كنتم موقنين | ٧ | ك الدخان | ٤٤ |
| | إن فى السموات والأرض لآيات للمؤمنين ... ... | ٣ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | وسخر لكم ما فى السموات وما فى الأرض جميعا منه | ١٣ | ك « | ٤٥ |
| | ولله ملك السموات والأرض ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك « | ٤٥ |
| | فلله الحمد رب السموات ورب الأرض رب العالمين | ٣٦ | ك « | ٤٥ |
| | وله الكبرياء فى السموات والأرض وهو العزيز الحكيم | ٣٧ | ك « | ٤٥ |
| | أرونى ماذا خلقوا من الأرض أم لهم شرك فى السموات | ٤ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | فاليوم تجزون عذاب الهون بما كنتم تستكبرون فى الأرض | ٢٠ | ك « | ٤٦ |
| | ومن لا يجب داعى الله فليس بمعجز فى الأرض | ٣٢ | ك « | ٤٦ |
| | أفلم يسيروا فى الأرض فينظروا... ... ... ... ... | ١٠ | م محمد | ٤٧ |
| | فهل عسيتم إن توليتم أن تفسدوا فى الأرض... ... | ٢٢ | م « | ٤٧ |
| | ولله جنود السموات والأرض وكان الله عليما حكيما | ٤ | م الفتح | ٤٨ |
| | ولله جنود السموات والأرض وكان الله عزيزا حكيما | ٧ | م « | ٤٨ |
| | ولله ملك السموات والأرض يغفر لمن يشاء... ... | ١٤ | م « | ٤٨ |
| | والله يعلم ما فى السموات وما فى الأرض... ... ... | ١٦ | م الحجرات | ٤٩ |
| | إن الله يعلم غيب السموات والأرض والله بصير بما تعملون | ١٨ | م « | ٤٩ |
| | وفى الأرض آيات للموقنين ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك الذاريات | ٥١ |
| | فورب السماء والأرض إنه لحق مثل ما أنكم تنطقون | ٢٣ | ك « | ٥١ |
| | ولله ما فى السموات وما فى الأرض ليجزى الذين أساءوا | ٣١ | ك النجم | ٥٣ |
| | هو أعلم بكم إذ أنشأكم من الأرض وإذ أنتم أجنة | ٣٢ | م « | ٥٣ |
| | يسئله من فى السموات والأرض كل يوم هو فى شأن | ٢٩ | م الرحمن | ٥٥ |
| | إن استطعتم أن تنفذوا من أقطار السموات والأرض | ٣٣ | م « | ٥٥ |
| | سبح لله ما فى السموات والأرض وهو العزيز الحكيم | ١ | م الحديد | ٥٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الأرض: | له ملك السموات والأرض يحيى ويميت... ... | ٢ | م الحديد | ٥٧ |
| | يعلم ما يلج فى الأرض وما يخرج منها وما ينزل من السماء | ٤ | م « | ٥٧ |
| | له ملك السموات والأرض وإلى الله ترجع الأمور | ٥ | م « | ٥٧ |
| | ولله ميراث السموات والأرض لا يستوى منكم من أنفق | ١٠ | م « | ٥٧ |
| | وجنة عرضها كعرض السماء والأرض ... ... ... | ٢١ | م « | ٥٧ |
| | ما أصاب من مصيبة فى الأرض ولا فى أنفسكم | ٢٢ | م « | ٥٧ |
| | ألم تر أن الله يعلم ما فى السموات وما فى الأرض | ٧ | م المجادلة | ٥٨ |
| | سبح لله ما فى السموات وما فى الأرض وهو العزيز الحكيم | ١ | م الحشر | ٥٩ |
| | يسبح له ما فى السموات والأرض وهو العزيز الحكيم | ٢٤ | م « | ٥٩ |
| | سبح لله ما فى السموات وما فى الأرض وهو العزيز الحكيم | ١ | م الصف | ٦١ |
| | يسبح لله ما فى السموات وما فى الأرض الملك القدوس | ١ | م الجمعة | ٦٢ |
| | فإذا قضيت الصلاة فانتشروا فى الأرض وابتغوا | ١٠ | م « | ٦٢ |
| | ولله خزائن السموات والأرض ولكن المنافقين لا يفقهون | ٧ | م المنافقون | ٦٣ |
| | يسبح لله ما فى السموات وما فى الأرض له الملك وله الحمد | ١ | م التغابن | ٦٤ |
| | يعلم ما فى السموات والأرض ويعلم ما تسرون وما تعلنون | ٤ | م « | ٦٤ |
| | الله الذى خلق سبع سموات ومن الأرض مثلهن | ١٢ | م الطلاق | ٦٥ |
| | قل هو الذى ذرأكم فى الأرض وإليه تحشرون | ٢٤ | ك الملك | ٦٧ |
| | ومن فى الأرض جميعا ثم ينجيه ... ... ... ... ... | ١٤ | ك المعارج | ٧٠ |
| | والله أنبتكم من الأرض نباتا... ... ... ... ... | ١٧ | ك نوح | ٧١ |
| | وقال نوح رب لا تذر على الأرض من الكافرين ديارا | ٢٦ | ك « | ٧١ |
| | أشر أريد بمن فى الأرض أم أراد بهم ربهم رشدا | ١٠ | ك الجن | ٧٢ |
| | وأنا ظننا أن لن نعجز الله فى الأرض ولن نعجزه هربا | ١٢ | ك « | ٧٢ |
| | علم أن سيكون منكم مرضى وآخرون يضربون فى الأرض | ٢٠ | م المزمل | ٧٣ |
| | رب السموات والأرض وما بينهما ... ... ... ... | ٣٧ | ك النبأ | ٧٨ |
| | الذى له ملك السموات والأرض والله على كل شىء شهيد | ٩ | ك البروج | ٨٥ |
| | والأرض ذات الصدع... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك الطارق | ٨٦ |
| | وإلى الأرض كيف سطحت ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك الغاشية | ٨٨ |
| | والأرض وما طحاها ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك الشمس | ٩١ |
| أرضا: | اقتلوا يوسف أو اطرحوه أرضا يخل لكم وجه أبيكم | ٩ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | وأورثكم أرضهم وديارهم وأموالهم وأرضا لم تطئوها | ٢٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| أرضكم: | يريد أن يخرجكم من أرضكم فماذا تأمرون | ١١٠ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | قالوا إن هذان لساحران يريدان أن يخرجاكم من أرضكم | ٦٣ | ك طه | ٢٠ |
| | يريد أن يخرجكم من أرضكم بسحره فماذا تأمرون | ٣٥ | ك الشعراء | ٢٦ |
| أرضنا: | لنخرجنكم من أرضنا أو لتعودن فى ملتنا ... ... | ١٣ | ك إبراهيم | ١٤ |
| (٣) | قال أجئتنا لتخرجنا من أرضنا بسحرك يا موسى | ٥٧ | ك طه | ٢٠ |
| | وقالوا إن نتبع الهدى معك نتخطف من أرضنا | ٥٧ | ك القصص | ٢٨ |
| أرضهم: | وأورثكم أرضهم وديارهم وأموالهم وأرضا لم تطئوها | ٢٧ | م الأحزاب | ٣٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَرْضِي: | يا عبادى الذين آمنوا إن أرضى واسعة فإياى فاعبدون | ٥٦ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| الأَرَائِكِ: | متكئين فيها على الأرائك نعم الثواب ... ... | ٣١ | ك الكهف | ١٨ |
| (٥) | هم وأزواجهم فى ظلال على الأرائك متكئون... ... | ٥٦ | ك يس | ٣٦ |
| | متكئين فيها على الأرائك لا يرون فيها شمسا ولا زمهريرا | ١٣ | م الإنسان | ٧٦ |
| | على الأرائك ينظرون . تعرف فى وجوههم نضرة النعيم | ٢٣ | ك المطففين | ٨٣ |
| | على الأرائك ينظرون . هل ثوب الكفار ما كانوا يفعلون | ٣٥ | ك « | ٨٣ |
| إِرَمَ: | ألم تر كيف فعل ربك بعاد . إرم ذات العماد | ٧ | ك الفجر | ٨٩ |
| آزَرَهُ: | كزرع أخرج شطأه فآزره فاستغلظ فاستوى.. ... | ٢٩ | م الفتح | ٤٨ |
| أَزْرِي: | اشدد به أزرى . وأشركه فى أمرى... ... ... | ٣١ | ك طه | ٢٠ |
| آزَرَ: | وإذ قال إبراهيم لأبيه آزر أتتخذ أصناما آلهة | ٧٤ | ك الأنعام | ٦ |
| تَؤُزُّهُمْ: | ألم تر أنا أرسلنا الشياطين على الكافرين تؤزهم أزا | ٨٣ | ك مريم | ١٩ |
| أَزًّا: | ألم تر أنا أرسلنا الشياطين على الكافرين تؤزهم أزا | ٨٣ | ك « | ١٩ |
| أَزِفَتِ: | أزفت الآزفة . ليس لها من دون الله كاشفة | ٥٧ | ك النجم | ٥٣ |
| الآزِفَةِ: | وأنذرهم يوم الآزفة إذ القلوب لدى الحناجر كاظمين | ١٨ | ك غافر | ٤٠ |
| (٢) | أزفت الآزفة . ليس لها من دون الله كاشفة | ٥٧ | ك النجم | ٥٣ |
| تَأْسِرُونَ: | وقذف فى قلوبهم الرعب فريقا تقتلون وتأسرون | ٢٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| أَسْرَهُمْ: | نحن خلقناهم وشددنا أسرهم ... ... ... ... | ٢٨ | م الإنسان | ٧٦ |
| أَسِيرًا: | ويطعمون الطعام على حبه مسكينا ويتيما وأسيرا | ٨ | م « | ٧٦ |
| أَسْرَى: | ما كان لنبى أن يكون له أسرى حتى يثخن فى الأرض | ٦٧ | م الأنفال | ٨ |
| (٢) | يأيها النبى قل لمن فى أيديكم من الأسرى... ... ... | ٧٠ | م « | ٨ |
| أُسَارَى: | وإن يأتوكم أسارى تفادوهم وهو محرم عليكم | ٨٥ | م البقرة | ٢ |
| إِسْرَائِيلَ: | يا بنى إسرائيل اذكروا نعمتى التى أنعمت عليكم | ٤٠ | م « | ٢ |
| (٤٣) | يا بنى إسرائيل اذكروا نعمتى التى أنعمت عليكم | ٤٧ | م « | ٢ |
| | وإذ أخذنا ميثاق بنى إسرائيل لا تعبدون إلا الله | ٨٣ | م « | ٢ |
| | يا بنى إسرائيل اذكروا نعمتى التى أنعمت عليكم | ١٢٢ | م « | ٢ |
| | سل بنى إسرائيل كم آتيناهم من آية بينة ... ... ... | ٢١١ | م « | ٢ |
| | ألم تر إلى الملأ من بنى إسرائيل من بعد موسى | ٢٤٦ | م « | ٢ |
| | ورسولا إلى بنى إسرائيل أنى قد جئتكم بآية من ربكم | ٤٩ | م آل عمران | ٣ |
| | كل الطعام كان حلا لبنى إسرائيل ... ... ... ... | ٩٣ | م « | ٣ |
| | إلا ما حرم إسرائيل على نفسه من قبل أن تنزل التوراة | ٩٣ | م « | ٣ |
| | ولقد أخذ الله ميثاق بنى إسرائيل وبعثنا منهم اثنى عشر نقيبا | ١٢ | م المائدة | ٥ |
| | من أجل ذلك كتبنا على بنى إسرائيل أنه من قتل نفسا | ٣٢ | م « | ٥ |
| | لقد أخذنا ميثاق بنى إسرائيل وأرسلنا إليهم رسلا | ٧٠ | م « | ٥ |
| | وقال المسيح يا بنى إسرائيل اعبدوا الله ربى وربكم | ٧٢ | م « | ٥ |
| | لعن الذين كفروا من بنى إسرائيل على لسان داود | ٧٨ | م « | ٥ |
| | وإذ كففت بنى إسرائيل عنك إذ جئتهم بالبينات | ١١٠ | م « | ٥ |
| | قد جئتكم ببينة من ربكم فأرسل معى بنى إسرائيل | ١٠٥ | ك الأعراف | ٧ |
| إِسْرَائِيلَ: | لنؤمنن لك ولنرسلن معك بنى إسرائيل... ... | ١٣٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | وتمت كلمة ربك الحسنى على بنى إسرائيل بما صبروا | ١٣٧ | ك « | ٧ |
| | وجاوزنا ببنى إسرائيل البحر فأتوا على قوم يعكفون | ١٣٨ | ك « | ٧ |
| | وجاوزنا ببنى إسرائيل البحر فأتبعهم فرعون وجنوده | ٩٠ | ك يونس | ١٠ |
| | قال آمنت أنه لا إله إلا الذى آمنت به بنو إسرائيل | ٩٠ | ك « | ١٠ |
| | ولقد بوأنا بنى إسرائيل مبوأ صدق ورزقناهم من الطيبات | ٩٣ | ك « | ١٠ |
| | وآتينا موسى الكتاب وجعلناه هدى لبنى إسرائيل | ٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وقضينا إلى بنى إسرائيل فى الكتاب لتفسدن فى الأرض | ٤ | ك « | ١٧ |
| | ولقد آتينا موسى تسع آيات بينات فاسأل بنى إسرائيل | ١٠١ | ك « | ١٧ |
| | وقلنا من بعده لبنى إسرائيل اسكنوا الأرض... ... | ١٠٤ | ك « | ١٧ |
| | ومن ذرية إبراهيم وإسرائيل وممن هدينا واجتبينا | ٥٨ | م مريم | ١٩ |
| | إنا رسولا ربك فأرسل معنا بنى إسرائيل ولا تعذبهم | ٤٧ | ك طه | ٢٠ |
| | يا بنى إسرائيل قد أنجيناكم من عدوكم ... ... ... | ٨٠ | ك « | ٢٠ |
| | إنى خشيت أن تقول فرقت بين بنى إسرائيل... ... | ٩٤ | ك « | ٢٠ |
| | إنا رسول رب العالمين . أن أرسل معنا بنى إسرائيل | ١٧ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وتلك نعمة تمنها علىّ أن عبدت بنى إسرائيل... ... | ٢٢ | ك « | ٢٦ |
| | كذلك وأورثناها بنى إسرائيل ... ... ... ... ... | ٥٩ | ك « | ٢٦ |
| | أو لم يكن لهم آية أن يعلمه علماء بنى إسرائيل... ... | ١٩٧ | م « | ٢٦ |
| | إن هذا القرآن يقص على بنى إسرائيل أكثر الذى هم فيه | ٧٦ | ك النمل | ٢٧ |
| | فلا تكن فى مرية من لقائه وجعلناه هدى لبنى إسرائيل | ٢٣ | ك السجدة | ٣٢ |
| | ولقد آتينا موسى الهدى وأورثنا بنى إسرائيل الكتاب | ٥٣ | ك غافر | ٤٠ |
| | إن هو إلا عبد أنعمنا عليه وجعلناه مثلا لبنى إسرائيل | ٥٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ولقد نجينا بنى إسرائيل من العذاب المهين ... ... | ٣٠ | ك الدخان | ٤٤ |
| | ولقد آتينا بنى إسرائيل الكتاب والحكم والنبوة | ١٦ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | وشهد شاهد من بنى إسرائيل على مثله فآمن واستكبرتم | ١٠ | م الأحقاف | ٤٦ |
| | يا بنى إسرائيل إنى رسول الله إليكم مصدقا لما بين يدىّ | ٦ | م الصف | ٦١ |
| | فآمنت طائفة من بنى إسرائيل وكفرت طائفة | ١٤ | م « | ٦١ |
| أَسَّسَ: | أفمن أسس بنيانه على تقوى من الله ورضوان خير | ١٠٩ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | أم من أسس بنيانه على شفا جرف هار ... ... | ١٠٩ | م « | ٩ |
| أُسِّسَ: | لمسجد أسس على التقوى من أول يوم أحق أن تقوم فيه | ١٠٨ | م « | ٩ |
| آسَفُونَا: | فلما آسفونا انتقمنا منهم فأغرقناهم أجمعين | ٥٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| أَسَفًا: | إن لم يؤمنوا بهذا الحديث أسفا ... ... ... ... | ٦ | ك الكهف | ١٨ |
| أَسِفًا: | ولما رجع موسى إلى قومه غضبان أسفا قال | ١٥٠ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | فرجع موسى إلى قومه غضبان أسفا ... ... ... | ٨٦ | ك طه | ٢٠ |
| أَسَفَى: | وتولى عنهم وقال يا أسفى على يوسف... ... ... | ٨٤ | ك يوسف | ١٢ |
| إِسْمَاعِيلَ: | وعهدنا إلى إبراهيم وإسماعيل أن طهرا بيتى | ١٢٥ | م البقرة | ٢ |
| (١٢) | وإذ يرفع إبراهيم القواعد من البيت وإسماعيل | ١٢٧ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| إِسْمَاعِيل: | قالوا نعبد إلهك وإله آبائك إبراهيم وإسماعيل | ١٣٣ م | البقـرة | ٢ |
| | وما أنزل إلى إبراهيم وإسماعيل وإسحق ويعقوب | ١٣٦ م | « | ٢ |
| | أم تقولون إن إبراهيم وإسماعيل وإسحق ويعقوب | ١٤٠ م | « | ٢ |
| | وما أنزل على إبراهيم وإسماعيل وإسحق ويعقوب | ٨٤ م | آل عمران | ٣ |
| | وأوحينا إلى إبراهيم وإسماعيل وإسحق ويعقـوب | ١٦٣ | النساء | ٤ |
| | وإسماعيل واليسع ويونس ولوطا وكلا فضلنا على العالمين | ٨٦ ك | الأنعام | ٦ |
| | الحمد لله الذى وهب لى على الكبر إسماعيل وإسحق | ٣٩ ك | إبراهيم | ١٤ |
| | واذكر فى الكتاب إسماعيـل إنه كان صادق الوعد | ٥٤ ك | مريم | ١٩ |
| | وإسماعيل وإدريس وذا الكفل كل من الصابرين | ٨٥ ك | الأنبياء | ٢١ |
| | واذكر إسماعيل واليسع وذا الكفل وكل من الأخيار | ٤٨ ك | ص | ٣٨ |
| آسِن: | مثل الجنة التى وعد المتقون فيها أنهار من ماء غير آسن | ١٥ م | محمد | ٤٧ |
| أُسْوَة: | لقد كان لكم فى رسول الله أسوة حسنة ... ... | ٢١ م | الأحزاب | ٣٣ |
| (٣) | قد كانت لكم أسـوة حسنة فى إبراهيم والذين معه | ٤ م | الممتحنة | ٦٠ |
| | لقد كان لكم فيهم أسـوة حسنة لمن كان يرجو الله | ٦ م | « | ٦٠ |
| آسَى: | فكيف آسى على قوم كافرين ... ... ... ... | ٩٣ ك | الأعراف | ٧ |
| تَأْسَ: | يتيهون فى الأرض فلا تأس على القوم الفاسـقين | ٢٦ م | المائدة | ٥ |
| (٢) | فلا تأس على القوم الكافرين ... ... ... ... | ٦٨ م | « | ٥ |
| تَأْسَوْا: | لكيلا تأسوا على ما فاتكم ولا تفرحوا بما آتاكم | ٢٣ م | الحديد | ٥٧ |
| أَشِر: | أؤلقى الذكر عليه من بيننا بل هو كذاب أشر... ... | ٢٥ ك | القمر | ٥٤ |
| (٢) | سيعلمون غدا من الكذاب الأشر ... ... ... | ٢٦ ك | « | ٥٤ |
| إِصْرًا: | ربنا ولا تحمل علينا إصرا كما حملته على الذين من قبلنا | ٢٨٦ م | البقـرة | ٢ |
| إِصْرِهِم: | ويضع عنهم إصرهم والأغلال التى كانت عليهم | ١٥٧ ك | الأعراف | ٧ |
| إِصْرِى: | قال أأقررتم وأخذتم على ذلكم إصرى ... ... | ٨١ م | آل عمران | ٣ |
| أَصْل: | إنها شجرة تخرج فى أصل الجحيم ... ... ... | ٦٤ ك | الصافات | ٣٧ |
| أَصْلُهَا: | كشجرة طيبة أصلها ثابت وفرعها فى السماء ... ... | ٢٤ ك | إبراهيم | ١٤ |
| أُصُولِهَا: | ما قطعتم من لينة أو تركتموها قائمة على أصولها | ٥ م | الحشر | ٥٩ |
| أَصِيلًا: | اكتتبها فهى تملى عليه بكرة وأصيلا ... ... ... | ٥ ك | الفرقان | ٢٥ |
| (٤) | وسبحوه بكرة وأصيلا ... ... ... ... ... | ٤٢ م | الأحزاب | ٣٣ |
| | وتسبحوه بكرة وأصيلا ... ... ... ... ... | ٩ م | الفتح | ٤٨ |
| | واذكر اسم ربك بكرة وأصيلا ... ... ... ... | ٢٥ م | الإنسان | ٧٦ |
| الآصَال: | ودون الجهر من القول بالغدو والآصال... ... | ٢٠٥ ك | الأعراف | ٧ |
| (٣) | طوعا وكرها وظلالهم بالغدو والآصال ... ... ... | ١٥ م | الرعد | ١٣ |
| | ويذكر فيها اسمه يسبح له فيها بالغدو والآصال... ... | ٣٦ م | النور | ٢٤ |
| أُفٍّ: | فلا تقل لهما أف ولا تنهرهما وقل لهما قولا كريما | ٢٣ ك | الإسراء | ١٧ |
| (٣) | أف لكم ولما تعبدون من دون الله أفلا تعقلون | ٦٧ ك | الأنبياء | ٢١ |
| | والذى قال لوالديه أف لكما أتعدانى أن أخرج | ١٧ ك | الأحقاف | ٤٦ |
| الأُفُق: | وهو بالأفق الأعلى ... ... ... ... ... | ٧ ك | النجم | ٥٣ |
| (٢) | | | | |
| الأفق: | ولقد رآه بالأفق المبين ... ... ... ... ... | ٢٣ ك | التكوير | ٨١ |
| الآفَاق: | سنريهم آياتنا فى الآفاق وفى أنفسهم ... ... ... | ٥٣ ك | فصلت | ٤١ |
| تَأْفِكَنَا: | قالوا أجئتنا لتأفكنا عن آلهتنا... ... ... ... | ٢٢ ك | الأحقاف | ٤٦ |
| يَأْفِكُون: | أن ألق عصاك فإذا هى تلقف ما يأفكون | ١١٧ ك | الأعراف | ٧ |
| (٢) | فألقى موسى عصاه فإذا هى تلقف ما يأفكون... ... | ٤٥ ك | الشعراء | ٢٦ |
| أُفِكَ: | يؤفك عنه من أفك ... ... ... ... ... ... | ٩ ك | الذاريات | ٥١ |
| تُؤْفَكُون: | ذلكم الله فأنى تؤفكون ... ... ... ... ... | ٩٥ ك | الأنعام | ٦ |
| (٤) | قل الله يبدؤ الخلق ثم يعيده فأنى تؤفكون ... ... | ٣٤ ك | يونس | ١٠ |
| | لا إله إلا هو فأنى تؤفكون ... ... ... ... | ٣ ك | فاطر | ٣٥ |
| | ذلكم الله ربكم خالق كل شىء لا إله إلا هو فأنى تؤفكون | ٦٢ ك | غافر | ٤٠ |
| يُؤْفَكُ: | كذلك يؤفك الذين كانوا بآيات الله يجحدون | ٦٣ ك | « | ٤٠ |
| (٢) | يؤفك عنه من أفك ... ... ... ... ... ... | ٩ ك | الذاريات | ٥١ |
| يُؤْفَكُون: | انظر كيف نبين لهم الآيات ثم انظر أنى يؤفكون | ٧٥ م | المائدة | ٥ |
| (٦) | يضاهئون قول الذين كفروا من قبل قاتلهم الله أنى يؤفكون | ٣٠ م | التوبة | ٩ |
| | وسخر الشمس والقمر ليقولن الله فأنى يؤفكون... ... | ٦١ ك | العنكبوت | ٢٩ |
| | يقسم المجرمون ما لبثوا غير ساعة كذلك كانوا يؤفكون | ٥٥ ك | الروم | ٣٠ |
| | ولئن سألتهم من خلقهم ليقولن الله فأنى يؤفكون | ٨٧ ك | الزخرف | ٤٣ |
| | هم العدو فاحذرهم قاتلهم الله أنى يؤفكون ... ... | ٤ م | المنافقون | ٦٣ |
| إِفْكٌ: | إن الذين جاءوا بالإفك عصبة منكم ... ... ... | ١١ م | النور | ٢٤ |
| (٥) | ظن المؤمنون والمؤمنات بأنفسهم خيرا وقالوا هذا إفك | ١٢ م | « | ٢٤ |
| | وقال الذين كفروا إن هذا إلا إفك افتراه ... ... | ٤ ك | الفرقان | ٢٥ |
| | وقالوا ما هذا إلا إفك مفترى ... ... ... ... | ٤٣ ك | سبأ | ٣٤ |
| | وإذ لم يهتدوا به فسيقولون هذا إفك قديم ... ... | ١١ ك | الأحقاف | ٤٦ |
| إِفْكًا: | إنما تعبدون من دون الله أوثانا وتخلقون إفكا | ١٧ ك | العنكبوت | ٢٩ |
| (٢) | أئفكا آلهة دون الله تريدون ... ... ... ... | ٨٦ ك | الصافات | ٣٧ |
| إِفْكِهِم: | ألا إنهم من إفكهم ليقولون ... ... ... ... | ١٥١ ك | « | ٣٧ |
| (٢) | بل ضلوا عنهم وذلك إفكهم وما كانوا يفترون | ٢٨ ك | الأحقاف | ٤٦ |
| أَفَّاكٍ: | تنزل على كل أفاك أثيم ... ... ... ... ... | ٢٢٢ ك | الشعراء | ٢٦ |
| (٢) | ويل لكل أفاك أثيم ... ... ... ... ... | ٧ ك | الجاثية | ٤٥ |
| المُؤْتَفِكَة: | والمؤتفكة أهوى... ... ... ... ... ... | ٥٣ ك | النجم | ٥٣ |
| المُؤْتَفِكَاتُ: | وقوم إبراهيم وأصحاب مدين والمؤتفكات | ٧٠ م | التوبة | ٩ |
| (٢) | وجاء فرعون ومن قبله والمؤتفكات بالخاطئة... ... | ٩ ك | الحاقة | ٦٩ |
| أَفَلَ: | قال هذا ربى فلما أفل قال لا أحب الآفلين ... ... | ٧٦ ك | الأنعام | ٦ |
| (٢) | فلما أفل قال لئن لم يهدنى ربى لأكونن من القـوم | ٧٧ ك | « | ٦ |
| أَفَلَتْ: | فلما أفلت قال يا قوم إنى برىء مما تشركون... ... | ٧٨ ك | « | ٦ |
| الآفِلِين: | قال هـذا ربى فلما أفل قال لا أحب الآفلين | ٧٦ ك | « | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَكَلَ | : والمتردية والنطيحة وما أكل السبع إلا ما ذكيتم | ٣ | م المائدة | ٥ |
| فَأَكَلَا | : فأكلا منها فبدت لهما سوءاتهما وطفقا يخصفان | ١٢١ | ك طه | ٢٠ |
| أَكَلَهُ | : قالوا لئن أكله الذئب ونحن عصبة إنا إذاً لخاسرون | ١٤ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | إنا ذهبنا نستبق وتركنا يوسف عند متاعنا فأكله الذئب | ١٧ | ك « | ١٢ |
| أَكَلُوا | : وما أنزل إليهم من ربهم لأكلوا من فوقهم | ٦٦ | م المائدة | ٥ |
| تَأْكُلُ | : فذروها تأكل في أرض الله ولا تمسوها بسوء | ٧٣ | ك الأعراف | ٧ |
| (٧) | ويا قوم هذه ناقة الله لكم آية فذروها تأكل في أرض الله | ٦٤ | ك هود | ١١ |
| | إني أراني أحمل فوق رأسي خبزا تأكل الطير منه | ٣٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | وأما الآخر فيصلب فتأكل الطير من رأسه | ٤١ | ك « | ١٢ |
| | فتخرج به زرعا تأكل منه أنعامهم وأنفسهم | ٢٧ | ك السجدة | ٣٢ |
| | ما دلهم على موته إلا دابة الأرض تأكل منسأته | ١٤ | ك سبأ | ٣٤ |
| | ويأكلون كما تأكل الأنعام والنار مثوى لهم | ١٢ | م محمد | ٤٧ |
| تَأْكُلَهُ | : حتى يأتينا بقربان تأكله النار | ١٨٣ | م آل عمران | ٣ |
| تَأْكُلُوا | : ولا تأكلوا أموالكم بينكم بالباطل وتدلوا بها إلى الحكام | ١٨٨ | م البقرة | ٢ |
| (١٠) | لتأكلوا فريقا من أموال الناس بالإثم وأنتم تعلمون | ١٨٨ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تأكلوا الربا أضعافا مضاعفة | ١٣٠ | م آل عمران | ٣ |
| | ولا تأكلوا أموالهم إلى أموالكم إنه كان حوبا كبيرا | ٢ | م النساء | ٤ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تأكلوا أموالكم بينكم بالباطل | ٢٩ | م « | ٤ |
| | وما لكم ألا تأكلوا مما ذكر اسم الله عليه وقد فصل لكم | ١١٩ | ك الأنعام | ٦ |
| | ولا تأكلوا مما لم يذكر اسم الله عليه وإنه لفسق | ١٢١ | ك « | ٦ |
| | وهو الذي سخر البحر لتأكلوا منه لحما طريا | ١٤ | ك النحل | ١٦ |
| | ولا على أنفسكم أن تأكلوا من بيوتكم أو بيوت آبائكم | ٦١ | م النور | ٢٤ |
| | ليس عليكم جناح أن تأكلوا جميعا أو أشتاتا | ٦١ | م « | ٢٤ |
| تَأْكُلُونَ | : وأنبئكم بما تأكلون وما تدخرون في بيوتكم | ٤٩ | م آل عمران | ٣ |
| (١٢) | فما حصدتم فذروه في سنبله إلا قليلا مما تأكلون | ٤٧ | ك يوسف | ١٢ |
| | والأنعام خلقها لكم فيها دفء ومنافع ومنها تأكلون | ٥ | م النحل | ١٦ |
| | لكم فيها فواكه كثيرة ومنها تأكلون | ١٩ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ولكم فيها منافع كثيرة ومنها تأكلون | ٢١ | ك « | ٢٣ |
| | يأكل مما تأكلون منه ويشرب مما تشربون | ٣٣ | ك « | ٢٣ |
| | ومن كل تأكلون لحما طريا وتستخرجون حلية تلبسونها | ١٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| | فراغ إلى آلهتهم فقال ألا تأكلون | ٩١ | ك الصافات | ٣٧ |
| | الله الذي جعل لكم الأنعام لتركبوا منها ومنها تأكلون | ٧٩ | ك غافر | ٤٠ |
| | لكم فيها فاكهة كثيرة منها تأكلون | ٧٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | فقربه إليهم قال ألا تأكلون | ٢٧ | ك الذاريات | ٥١ |
| | وتأكلون التراث أكلا لما | ١٩ | ك الفجر | ٨٩ |
| تَأْكُلُوهَا | : ولا تأكلوها إسرافا وبدارا أن يكبروا | ٦ | م النساء | ٤ |
| تَأْكُلَ | : قالوا نريد أن نأكل منها وتطمئن قلوبنا | ١١٣ | م المائدة | ٥ |
| يَأْكُلُ | : ومن كان فقيرا فليأكل بالمعروف | ٦ | م النساء | ٤ |
| (٦) | فاختلط به نبات الأرض مما يأكل الناس والأنعام | ٢٤ | ك يونس | ١٠ |
| | ما هذا إلا بشر مثلكم يأكل مما تأكلون منه | ٣٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وقالوا ما لهذا الرسول يأكل الطعام ويمشي في الأسواق | ٧ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | أو يلقى إليه كنز أو تكون له جنة يأكل منها | ٨ | ك « | ٢٥ |
| | أيحب أحدكم أن يأكل لحم أخيه ميتا فكرهتموه | ١٢ | م الحجرات | ٤٩ |
| يَأْكُلَانِ | : وأمه صديقة كانا يأكلان الطعام | ٧٥ | م المائدة | ٥ |
| يَأْكُلْنَ | : ثم يأتي من بعد ذلك سبع شداد يأكلن ما قدمتم لهن | ٤٨ | ك يوسف | ١٢ |
| يَأْكُلَهُ | : وأخاف أن يأكله الذئب وأنتم عنه غافلون | ١٣ | ك « | ١٢ |
| (٢) | لا يأكله إلا الخاطئون | ٢٧ | ك الحاقة | ٦٩ |
| يَأْكُلُهُنَّ | : إني أرى سبع بقرات سمان يأكلهن سبع عجاف | ٤٣ | ك يوسف | ٢ |
| (٢) | أفتنا في سبع بقرات سمان يأكلهن سبع عجاف | ٤٦ | ك « | ١٢ |
| يَأْكُلُوا | : ذرهم يأكلوا ويتمتعوا ويلههم الأمل | ٣ | ك الحجر | ١٥ |
| (٢) | ليأكلوا من ثمره وما عملته أيديهم أفلا يشكرون | ٣٥ | ك يس | ٣٦ |
| يَأْكُلُونَ | : أولئك ما يأكلون في بطونهم إلا النار | ١٧٤ | م البقرة | ٢ |
| (١٠) | الذين يأكلون الربا لا يقومون إلا كما يقوم الذي يتخبطه | ٢٧٥ | م « | ٢ |
| | إن الذين يأكلون أموال اليتامى ظلما | ١٠ | م النساء | ٤ |
| | إنما يأكلون في بطونهم نارا وسيصلون سعيرا | ١٠ | م « | ٤ |
| | إن كثيرا من الأحبار والرهبان ليأكلون أموال الناس | ٣٤ | م التوبة | ٩ |
| | وما جعلناهم جسدا لا يأكلون الطعام وما كانوا خالدين | ٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | إلا إنهم ليأكلون الطعام ويمشون في الأسواق | ٢٠ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | أحييناها وأخرجنا منها حبا فمنه يأكلون | ٣٣ | ك يس | ٣٦ |
| | وذللناها لهم فمنها ركوبهم ومنها يأكلون | ٧٢ | ك « | ٣٦ |
| | والذين كفروا يتمتعون ويأكلون كما تأكل الأنعام | ١٢ | م محمد | ٤٧ |
| كُلَا | : اسكن أنت وزوجك الجنة وكلا منها رغدا | ٣٥ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | ويا آدم اسكن أنت وزوجك الجنة فكلا من حيث شئتما | ١٩ | ك الأعراف | ٧ |
| كُلُوا | : وأنزلنا عليكم المن والسلوى كلوا من طيبات ما رزقناكم | ٥٧ | م البقرة | ٢ |
| (٣٧) | وإذ قلنا ادخلوا هذه القرية فكلوا منها حيث شئتم | ٥٨ | م « | ٢ |
| | كلوا واشربوا من رزق الله ولا تعثوا في الأرض | ٦٠ | م « | ٢ |
| | يأيها الناس كلوا مما في الأرض حلالا طيبا | ١٦٨ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا كلوا من طيبات ما رزقناكم | ١٧٢ | م « | ٢ |
| | وكلوا واشربوا حتى يتبين لكم الخيط الأبيض | ١٨٧ | م « | ٢ |
| | فكلوا مما أمسكن عليكم واذكروا اسم الله عليه | ٤ | م المائدة | ٥ |
| | وكلوا مما رزقكم الله حلالا طيبا | ٨٨ | م « | ٥ |
| | فكلوا مما ذكر اسم الله عليه إن كنتم بآياته مؤمنين | ١١٨ | ك الأنعام | ٦ |
| | كلوا من ثمره إذا أثمر وآتوا حقه يوم حصاده | ١٤١ | م « | ٦ |
| | كلوا مما رزقكم الله ولا تتبعوا خطوات الشيطان | ١٤٢ | ك « | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| كُلُوا : | خذوا زينتكم عند كل مسجد وكلوا واشربوا ولا تسرفوا | ٣١ ك الأعراف | ٧ |
| | كلوا من طيبات ما رزقناكم ... ... ... ... ... | ١٦٠ ك « | ٧ |
| | وإذ قيل لهم اسكنوا هذه القرية وكلوا منها ... ... | ١٦١ ك « | ٧ |
| | فكلوا مما غنمتم حلالا طيبا واتقوا الله ... ... ... | ٦٩ م الأنفال | ٨ |
| | فكلوا مما رزقكم الله حلالا طيبا ... ... ... ... | ١١٤ ك النحل | ١٦ |
| | كلوا وارعوا أنعامكم إن فى ذلك لآيات لأولى النهى | ٥٤ ك طه | ٢٠ |
| | كلوا من طيبات ما رزقناكم ولا تطغوا فيه ... ... | ٨١ ك « | ٢٠ |
| | فكلوا منها وأطعموا البائس الفقير ... ... ... ... | ٢٨ م الحج | ٢٢ |
| | فكلوا منها وأطعموا القانع والمعتر ... ... ... ... | ٣٦ م « | ٢٢ |
| | يأيها الرسل كلوا من الطيبات واعملوا صالحا | ٥١ ك المؤمنون | ٢٣ |
| | كلوا من رزق ربكم واشكروا له ... ... ... ... | ١٥ ك سبأ | ٣٤ |
| | كلوا واشربوا هنيئا بما كنتم تعملون ... ... ... | ١٩ ك الطور | ٥٢ |
| | هو الذى جعل لكم الأرض ذلولا فامشوا فى مناكبها وكلوا | ١٥ ك الملك | ٦٧ |
| | كلوا واشربوا هنيئا بما أسلفتم فى الأيام الخالية | ٢٤ ك الحاقة | ٦٩ |
| | كلوا واشربوا هنيئا بما كنتم تعملون ... ... ... | ٤٣ ك المرسلات | ٧٧ |
| | كلوا وتمتعوا قليلا إنكم مجرمون ... ... ... ... | ٤٦ ك « | ٧٧ |
| كُلُوهُ : | فإن طبن لكم عن شىء منه نفسا فكلوه هنيئا مريئا | ٤ م النساء | ٤ |
| كُلِى : | ثم كلى من كل الثمرات فاسلكى سبل ربك ذللا | ٦٩ ك النحل | ١٦ |
| (٢) | فكلى واشربى وقرى عينا ... ... ... ... ... ... | ٢٦ ك مريم | ١٩ |
| أَكْلًا : | وتأكلون التراث أكلا لما ... ... ... ... ... | ١٩ ك الفجر | ٨٩ |
| أَكْلِهِم : | وأخذهم الربا وقد نهوا عنه وأكلهم أموال الناس | ١٦١ م النساء | ٤ |
| (٣) | وترى كثيرا منهم يسارعون فى الإثم والعدوان وأكلهم | ٦٢ م المائدة | ٥ |
| | لولا ينهاهم الربانيون والأحبار عن قولهم الإثم وأكلهم | ٦٣ م « | ٥ |
| آكِلُونَ : | فإنهم لآكلون منها فمالئون منها البطون ... ... | ٦٦ ك الصافات | ٣٧ |
| (٢) | لآكلون من شجر من زقوم ... ... ... ... ... | ٥٢ ك الواقعة | ٥٦ |
| لِلْآكِلِينَ : | وشجرة تخرج من طور سيناء تنبت بالدهن وصبغ للآكلين | ٢٠ ك المؤمنون | ٢٣ |
| أَكَّالُونَ : | سماعون للكذب أكالون للسحت ... ... ... ... | ٤٢ م المائدة | ٥ |
| مَأْكُولٍ : | فجعلهم كعصف مأكول ... ... ... ... ... | ٥ ك الفيل | ١٠٥ |
| أُكُلٍ : | ونفضل بعضها على بعض فى الأكل ... ... ... | ٤ م الرعد | ١٣ |
| (٢) | وبدلناهم بجنتيهم جنتين ذواتى أكل خمط ... ... | ١٦ ك سبأ | ٣٤ |
| أُكُلُهُ : | والنخل والزرع مختلفا أكله والزيتون والرمان | ١٤١ م الأنعام | ٦ |
| أُكُلَهَا : | كمثل جنة بربوة أصابها وابل فآتت أكلها ضعفين | ٢٦٥ م البقرة | ٢ |
| (٤) | أكلها دائم وظلها تلك عقبى الذين اتقوا ... ... | ٣٥ م الرعد | ١٣ |
| | تؤتى أكلها كل حين بإذن ربها ... ... ... ... | ٢٥ ك إبراهيم | ١٤ |
| | كلتا الجنتين آتت أكلها ولم تظلم منه شيئا ... ... | ٣٣ ك الكهف | ١٨ |
| أَلَتْنَاهُمْ : | وأمددناهم بفاكهة ولحم مما يشتهون | ٢٢ ك الطور | ٥٢ |
| الٓر : | الر تلك آيات الكتاب الحكيم ... ... ... ... | ١ ك يونس | ١٠ |
| (٥) | | | |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| الٓر : | الر كتاب أحكمت آياته ثم فصلت من لدن حكيم خبير | ١ ك هود | ١١ |
| | الر تلك آيات الكتاب المبين ... ... ... ... ... | ١ م يوسف | ١٢ |
| | الر كتاب أنزلناه إليك لتخرج الناس من الظلمات إلى النور | ١ ك إبراهيم | ١٤ |
| | الر تلك آيات الكتاب وقرآن مبين ... ... ... ... | ١ ك الحجر | ١٥ |
| أَلَّفَ : | إذ كنتم أعداء فألف بين قلوبكم فأصبحتم بنعمته إخوانا | ١٠٣ م آل عمران | ٣ |
| (٣) | وألف بين قلوبهم لو أنفقت ما فى الأرض جميعا ما ألفت | ٦٣ م الأنفال | ٨ |
| | بين قلوبهم ولكن الله ألف بينهم ... ... ... ... | ٦٣ م « | ٨ |
| أَلَّفْتَ : | ما ألفت بين قلوبهم ولكن الله ألف بينهم | ٦٣ م « | ٨ |
| يُؤَلِّفُ : | ألم تر أن الله يزجى سحابا ثم يؤلف بينه ... ... | ٤٣ م النور | ٢٤ |
| الْمُؤَلَّفَةِ : | للفقراء والمساكين والعاملين عليها والمؤلفة قلوبهم | ٦٠ م التوبة | ٩ |
| إِيلَافِ : | لإيلاف قريش .. ... ... ... ... ... ... | ١ ك قريش | ١٠٦ |
| إِيلَافِهِمْ : | إيلافهم رحلة الشتاء والصيف... ... ... ... | ٢ ك « | ١٠٦ |
| أَلْفٌ : | ومن الذين أشركوا يود أحدهم لو يعمر ألف سنة | ٩٦ م البقرة | ٢ |
| (٩) | فاستجاب لكم أنى ممدكم بألف من الملائكة مردفين | ٩ م الأنفال | ٨ |
| | وإن يكن منكم ألف يغلبوا ألفين بإذن الله... ... | ٦٦ م « | ٨ |
| | وإن يوما عند ربك كألف سنة مما تعدون... ... | ٤٧ م الحج | ٢٢ |
| | فلبث فيهم ألف سنة إلا خمسين عاما ... ... ... | ١٤ ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ثم يعرج إليه فى يوم كان مقداره ألف سنة مما تعدون | ٥ ك السجدة | ٣٢ |
| | وأرسلناه إلى مائة ألف أو يزيدون... ... ... ... | ١٤٧ ك الصافات | ٣٧ |
| | تعرج الملائكة والروح إليه فى يوم كان مقداره خمسين ألف | ٤ ك المعارج | ٧٠ |
| | ليلة القدر خير من ألف شهر ... ... ... ... ... | ٣ ك القدر | ٩٧ |
| أَلْفًا : | وإن يكن منكم مائة يغلبوا ألفا من الذين كفروا | ٦٥ م الأنفال | ٨ |
| أَلْفَيْنِ : | وإن يكن منكم ألف يغلبوا ألفين بإذن الله... ... | ٦٦ م « | ٨ |
| آلَافٍ : | ألن يكفيكم أن يمدكم ربكم بثلاثة آلاف من الملائكة | ١٢٤ م آل عمران | ٣ |
| (٢) | يمددكم ربكم بخمسة آلاف من الملائكة مسومين | ١٢٥ م « | ٣ |
| أُلُوفٌ : | ألم تر إلى الذين خرجوا من ديارهم وهم ألوف | ٢٤٣ م البقرة | ٢ |
| إِلًّا : | كيف وإن يظهروا عليكم لا يرقبوا فيكم إلا ولا ذمة | ٨ م التوبة | ٩ |
| (٢) | لا يرقبون فى مؤمن إلا ولا ذمة وأولئك هم المعتدون | ١٠ م « | ٩ |
| اللَّائِى : | وما جعل أزواجكم اللائى تظاهرون منهن أمهاتكم | ٤ م الأحزاب | ٣٣ |
| (٤) | إن أمهاتهم إلا اللائى ولدنهم ... ... ... ... | ٢ م المجادلة | ٥٨ |
| | واللائى يئسن من المحيض من نسائكم إن ارتبتم | ٤ م الطلاق | ٦٥ |
| | فعدتهن ثلاثة أشهر واللائى لم يحضن... ... ... | ٤ م « | ٦٥ |
| اللَّاتِى : | واللاتى يأتين الفاحشة من نسائكم فاستشهدوا عليهن | ١٥ م النساء | ٤ |
| (١٠) | وأمهاتكم اللاتى أرضعنكم وأخواتكم من الرضاعة | ٢٣ م « | ٤ |
| | وأمهات نسائكم وربائبكم اللاتى فى حجوركم ... ... | ٢٣ م « | ٤ |
| | من نسائكم اللاتى دخلتم بهن ... ... ... ... ... | ٢٣ م « | ٤ |
| | واللاتى تخافون نشوزهن فعظوهن واهجروهن... ... | ٣٤ م « | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| اللَّاتِى: | فى يتامى النساء اللاتى لا تؤتونهن ما كتب لهن | ١٢٧ | م النساء | ٤ |
| | ارجع إلى ربك فاسأله مابال النسوة اللاتى قطعن أيديهن | ٥٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | والقواعد من النساء اللاتى لا يرجون نكاحا ... ... | ٦٠ | م النور | ٢٤ |
| | إنا أحللنا لك أزواجك اللاتى آتيت أجورهن | ٥٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وبنات خالك وبنات خالاتك اللاتى هاجرن معك | ٥٠ | م « | ٣٣ |
| اللَّذَانِ: | واللذان يأتيانها منكم فآذوهما ... ... ... ... | ١٦ | م النساء | ٤ |
| اللَّذَيْنِ: | ربنا أرنا اللذين أضلانا من الجن والإنس... ... | ٢٩ | ك فصلت | ٤١ |
| الٓمٓ: | الٓمٓ. ذلك الكتاب لاريب فيه هدى للمتقين | ١ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | الٓمٓ. الله لاإله إلا هو الحى القيوم ... ... ... | ١ | م آل عمران | ٣ |
| | الٓمٓ. أحسب الناس أن يتركوا أن يقولوا آمنا | ١ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | الٓمٓ. غلبت الروم ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الروم | ٣٠ |
| | الٓمٓ. تلك آيات الكتاب الحكيم ... ... ... ... | ١ | ك لقمان | ٣١ |
| | الٓمٓ. تنزيل الكتاب لا ريب فيه من رب العالمين | ١ | ك السجدة | ٣٢ |
| تَأْلَمُونَ: | ولا تهنوا فى ابتغاء القوم إن تكونوا تألمون | ١٠٤ | م النساء | ٤ |
| (٢) | فإنهم يألمون كما تألمون وترجون من الله ما لا يرجون | ١٠٤ | م « | ٤ |
| يَأْلَمُونَ: | إن تكونوا تألمون فإنهم يألمون كما تألمون... ... | ١٠٤ | م « | ٤ |
| أَلِيم: | ولهم عذاب أليم بما كانوا يكذبون ... ... ... | ١٠ | م البقرة | ٢ |
| (٥٨) | وقولوا انظرنا واسمعوا وللكافرين عذاب أليم | ١٠٤ | م « | ٢ |
| | ولا يكلمهم الله يوم القيامة ولا يزكيهم ولهم عذاب أليم | ١٧٤ | م « | ٢ |
| | فمن اعتدى بعد ذلك فله عذاب أليم... ... ... ... | ١٧٨ | م « | ٢ |
| | فبشرهم بعذاب أليم ... ... ... ... ... ... | ٢١ | م آل عمران | ٣ |
| | ولا ينظر إليهم يوم القيامة ولا يزكيهم ولهم عذاب أليم | ٧٧ | م « | ٣ |
| | أولئك لهم عذاب أليم وما لهم من ناصرين ... ... | ٩١ | م « | ٣ |
| | لن يضروا الله شيئا ولهم عذاب أليم... ... ... ... | ١٧٧ | م « | ٣ |
| | فلا تحسبنهم بمفازة من العذاب ولهم عذاب أليم | ١٨٨ | م « | ٣ |
| | ما تقبل منهم ولهم عذاب أليم ... ... ... ... ... | ٣٦ | م المائدة | ٥ |
| | ليمسن الذين كفروا منهم عذاب أليم... ... ... ... | ٧٣ | م « | ٥ |
| | فمن اعتدى بعد ذلك فله عذاب أليم... ... ... ... | ٩٤ | م « | ٥ |
| | لهم شراب من حميم وعذاب أليم بما كانوا يكفرون | ٧٠ | ك الانعام | ٦ |
| | ولا تمسوها بسوء فيأخذكم عذاب أليم ... ... ... | ٧٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | فأمطر علينا حجارة من السماء أو ائتنا بعذاب أليم | ٣٢ | ك الأنفال | ٨ |
| | وبشر الذين كفروا بعذاب أليم... ... ... ... ... | ٣ | م التوبة | ٩ |
| | ولا ينفقونها فى سبيل الله فبشرهم بعذاب أليم... ... | ٣٤ | م « | ٩ |
| | والذين يؤذون رسول الله لهم عذاب أليم ... ... | ٦١ | م « | ٩ |
| | سخر الله منهم ولهم عذاب أليم ... ... ... ... | ٧٩ | م « | ٩ |
| | سيصيب الذين كفروا منهم عذاب أليم ... ... ... | ٩٠ | م « | ٩ |
| | والذين كفروا لهم شراب من حميم وعذاب أليم... ... | ٤ | ك يونس | ١٠ |
| | واشدد على قلوبهم فلا يؤمنوا حتى يروا العذاب الأليم | ٨٨ | ك « | ١٠ |
| أَلِيم: | ولو جاءتهم كل آية حتى يروا العذاب الأليم... ... | ٩٧ | ك يونس | ١٠ |
| | أن لا تعبدوا إلا الله إنى أخاف عليكم عذاب يوم أليم | ٢٦ | ك هود | ١١ |
| | وأمم سنمتعهم ثم يمسهم منا عذاب أليم ... ... ... | ٤٨ | ك « | ١١ |
| | وكذلك أخذ ربك إذا أخذ القرى وهى ظالمة إن أخذه أليم | ١٠٢ | ك « | ١١ |
| | ماجزاء من أراد بأهلك سوءا إلا أن يسجن أو عذاب أليم | ٢٥ | ك يوسف | ١٢ |
| | إن الظالمين لهم عذاب أليم ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وأن عذابى هو العذاب الأليم ... ... ... ... ... | ٥٠ | ك الحجر | ١٥ |
| | فهو وليهم اليوم ولهم عذاب أليم ... ... ... ... | ٦٣ | ك النحل | ١٦ |
| | لا يؤمنون بآيات الله لايهديهم الله ولهم عذاب أليم | ١٠٤ | ك « | ١٦ |
| | متاع قليل ولهم عذاب أليم... ... ... ... ... ... | ١١٧ | ك « | ١٦ |
| | ومن يرد فيه بإلحاد بظلم نذقه من عذاب أليم... ... | ٢٥ | م الحج | ٢٢ |
| | يحبون أن تشيع الفاحشة فى الذين آمنوا لهم عذاب أليم | ١٩ | م النور | ٢٤ |
| | يخالفون عن أمره أن تصيبهم فتنة أو يصيبهم عذاب أليم | ٦٣ | م « | ٢٤ |
| | لا يؤمنون به حتى يروا العذاب الأليم ... ... ... | ٢٠١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | أولئك يئسوا من رحمتى وأولئك لهم عذاب أليم | ٢٣ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | كأن فى أذنيه وقرا فبشره بعذاب أليم ... ... ... | ٧ | ك لقمان | ٣١ |
| | سعوا فى آياتنا معاجزين أولئك لهم عذاب من رجز أليم | ٥ | ك سبأ | ٣٤ |
| | لئن لم تنتهوا لنرجمنكم وليمسنكم منا عذاب أليم... ... | ١٨ | ك يس | ٣٦ |
| | إنكم لذائقوا العذاب الأليم... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك الصافات | ٣٧ |
| | إن ربك لذو مغفرة وذو عقاب أليم... ... ... ... | ٤٣ | ك فصلت | ٤١ |
| | وإن الظالمين لهم عذاب أليم ... ... ... ... ... | ٢١ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ويبغون فى الأرض بغير الحق أولئك لهم عذاب أليم | ٤٢ | ك « | ٤٢ |
| | فويل للذين ظلموا من عذاب يوم أليم ... ... ... | ٦٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | يغشى الناس هذا عذاب أليم ... ... ... ... ... | ١١ | ك الدخان | ٤٤ |
| | ثم يصر مستكبرا كأن لم يسمعها فبشره بعذاب أليم | ٨ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | والذين كفروا بآيات ربهم لهم عذاب من رجز أليم | ١١ | ك « | ٤٥ |
| | بل هو ما استعجلتم به ريح فيها عذاب أليم ... ... | ٢٤ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | وآمنوا به يغفر لكم من ذنوبكم ويجركم من عذاب أليم | ٣١ | ك « | ٤٦ |
| | وتركنا فيها آية للذين يخافون العذاب الأليم ... ... | ٣٧ | ك الذاريات | ٥١ |
| | وتلك حدود الله وللكافرين عذاب أليم ... ... ... | ٤ | م المجادلة | ٥٨ |
| | ذاقوا وبال أمرهم ولهم عذاب أليم ... ... ... | ١٥ | م الحشر | ٥٩ |
| | هل أدلكم على تجارة تنجيكم من عذاب أليم ... ... | ١٠ | م الصف | ٦١ |
| | فذاقوا وبال أمرهم ولهم عذاب أليم ... ... ... | ٥ | م التغابن | ٦٤ |
| | أو رحمنا فمن يجير الكافرين من عذاب أليم ... ... | ٢٨ | ك الملك | ٦٧ |
| | أن أنذر قومك من قبل أن يأتيهم عذاب أليم ... ... | ١ | ك نوح | ٧١ |
| | فبشرهم بعذاب أليم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| أَلِيمًا: | أولئك أعتدنا لهم عذابا أليما... ... ... ... ... | ١٨ | م النساء | ٤ |
| (١٤) | بشر المنافقين بأن لهم عذابا أليما ... ... ... ... | ١٣٨ | م « | ٤ |

| اللفظة | الآيـة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أليمًا | وأعتدنا للكافرين منهم عذابا أليما ... ... ... ... | ١٦١ | م النساء | ٤ |
| | وأما الذين استنكفوا واستكبروا فيعذبهم عذابا أليما | ١٧٣ | م « | ٤ |
| | إلا تنفروا يعذبكم عذابا أليما ويستبدل قوما غيركم | ٣٩ | م التوبة | ٩ |
| | وإن يتولوا يعذبهم الله عذابا أليما فى الدنيا والآخرة | ٧٤ | م « | ٩ |
| | وأن الذين لا يؤمنون بالآخرة أعتدنا لهم عذابا أليما | ١٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وأعتدنا للظالمين عذابا أليما... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ليسأل الصادقين عن صدقهم وأعد للكافرين عذابا أليما | ٨ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وإن تتولوا كما توليتم من قبل يعذبكم عذابا أليما | ١٦ | م الفتح | ٤٨ |
| | ومن يتول يعذبه عذابا أليما ... ... ... ... ... | ١٧ | م « | ٤٨ |
| | لو تزيلوا لعذبنا الذين كفروا منهم عذابا أليما | ٢٥ | م « | ٤٨ |
| | إن لدينا أنكالا وجحيما وطعاما ذا غصة وعذابا أليما | ١٣ | ك المزمل | ٧٣ |
| | يدخل من يشاء فى رحمته والظالمين أعد لهم عذابا أليما | ٣١ | م الإنسان | ٧٦ |
| الـمر | : المر تلك آيات الكتاب والذى أنزل إليك من ربك | ١ | م الرعد | ١٣ |
| الـمص | : المص. كتاب أنزل إليك فلا يكن فى صدرك حرج منه | ١ | ك الأعراف | ٧ |
| إله | : قالوا نعبد إلهك وإله آبائك إبراهيم وإسماعيل وإسحق | ١٣٣ | م البقرة | ٢ |
| (٨٠) | وإلهكم إله واحد... ... ... ... ... ... ... | ١٦٣ | م « | ٢ |
| | لا إله إلا هو الرحمن الرحيم ... ... ... ... ... | ١٦٣ | م « | ٢ |
| | الله لا إله إلا هو الحى القيوم ... ... ... ... ... | ٢٥٥ | م « | ٢ |
| | الـم . الله لا إله إلا هو الحى القيوم... ... ... | ٢ | م آل عمران | ٣ |
| | لا إله إلا هو العزيز الحكيم ... ... ... ... ... | ٦ | م « | ٣ |
| | شهد الله أنه لا إله إلا هو والملائكة وأولوا العلم | ١٨ | م « | ٣ |
| | لا إله إلا هو العزيز الحكيم ... ... ... ... ... | ١٨ | م « | ٣ |
| | وما من إله إلا الله وإن الله لهو العزيز الحكيم | ٦٢ | م « | ٣ |
| | الله لا إله إلا هو ليجمعنكم إلى يوم القيامة لا ريب فيه | ٨٧ | م النساء | ٤ |
| | إنما الله إله واحد سبحانه أن يكون له ولد ... ... | ١٧١ | م « | ٤ |
| | لقد كفر الذين قالوا إن الله ثالث ثلاثة وما من إله إلا إله | ٧٣ | م المائدة | ٥ |
| | وما من إله إلا إله واحد ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | م « | ٥ |
| | قل إنما هو إله واحد وإننى برىء مما تشركون | ١٩ | ك الأنعام | ٦ |
| | وختم على قلوبكم من إله غير الله يأتيكم به ... ... | ٤٦ | ك « | ٦ |
| | ذلكم الله ربكم لا إله إلا هو خالق كل شىء فاعبدوه | ١٠٢ | ك « | ٦ |
| | اتبع ما أوحى إليك من ربك لا إله إلا هو... ... | ١٠٦ | ك « | ٦ |
| | فقال يا قوم اعبدوا الله ما لكم من إله غيره إنى أخاف عليكم | ٥٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | قال يا قوم اعبدوا الله ما لكم من إله غيره أفلا تتقون | ٦٥ | ك « | ٧ |
| | قال يا قوم اعبدوا الله ما لكم من إله غيره قد جاءتكم بينة | ٧٣ | ك « | ٧ |
| | قال يا قوم اعبدوا الله ما لكم من إله غيره قد جاءتكم بينة | ٨٥ | ك « | ٧ |
| | الذى له ملك السموات والأرض لا إله إلا هو يحيى ويميت | ١٥٨ | ك « | ٧ |
| | لا إله إلا هو سبحانه عما يشركون ... ... ... ... | ٣١ | م التوبة | ٩ |
| | فإن تولوا فقل حسبى الله لا إله إلا هو ... ... | ١٢٩ | ك « | ٩ |

| اللفظة | الآيـة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| إله | : آمنت أنه لا إله إلا الذى آمنت به بنو إسرائيل | ٩٠ | ك يونس | ١٠ |
| | فاعلموا أنما أنزل بعلم الله وأن لا إله إلا هو | ١٤ | ك هود | ١١ |
| | قال يا قوم اعبدوا الله ما لكم من إله غيره إن أنتم إلا مفترون | ٥٠ | ك « | ١١ |
| | قال يا قوم اعبدوا الله ما لكم من إله غيره هو أنشأكم | ٦١ | ك « | ١١ |
| | قال يا قوم اعبدوا الله ما لكم من إله غيره ولا تنقصوا | ٨٤ | ك « | ١١ |
| | قل هو ربى لا إله إلا هو عليه توكلت وإليه متاب | ٣٠ | م الرعد | ١٣ |
| | وليعلموا أنما هو إله واحد وليذكر أولوا الألباب | ٥٢ | م إبراهيم | ١٤ |
| | أن أنذروا أنه لا إله إلا أنا فاتقون ... ... ... | ٢ | ك النحل | ١٦ |
| | إلهكم إله واحد فالذين لا يؤمنون بالآخرة قلوبهم منكرة | ٢٢ | ك « | ١٦ |
| | وقال الله لا تتخذوا إلهين اثنين إنما هو إله واحد | ٥١ | ك « | ١٦ |
| | قل إنما أنا بشر مثلكم يوحى إلىّ أنما إلهكم إله واحد | ١١٠ | ك الكهف | ١٨ |
| | الله لا إله إلا هو له الأسماء الحسنى ... ... ... | ٨ | ك طه | ٢٠ |
| | إننى أنا الله لا إله إلا أنا فاعبدنى وأقم الصلاة لذكرى | ١٤ | ك « | ٢٠ |
| | فقالوا هذا إلهكم وإله موسى فنسى ... ... ... ... | ٨٨ | ك « | ٢٠ |
| | إنما إلهكم الله الذى لا إله إلا هو وسع كل شىء علما | ٩٨ | ك « | ٢٠ |
| | إلا نوحى إليه أنه لا إله إلا أنا فاعبدون ... ... | ٢٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ومن يقل منهم إنى إله من دونه فذلك نجزيه جهنم | ٢٩ | ك « | ٢١ |
| | فنادى فى الظلمات أن لا إله إلا أنت سبحانك | ٨٧ | ك « | ٢١ |
| | قل إنما يوحى إلىّ أنما إلهكم إله واحد ... ... ... | ١٠٨ | ك « | ٢١ |
| | فإلهكم إله واحد فله أسلموا وبشر المخبتين ... ... | ٣٤ | م الحج | ٢٢ |
| | فقال يا قوم اعبدوا الله ما لكم من إله غيره أفلا تتقون | ٢٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فأرسلنا فيهم رسولا منهم أن اعبدوا الله ما لكم من إله غيره | ٣٢ | ك « | ٢٣ |
| | ما اتخذ الله من ولد وما كان معه من إله ... ... | ٩١ | ك « | ٢٣ |
| | إذًا لذهب كل إله بما خلق ولعلا بعضهم على بعض | ٩١ | ك « | ٢٣ |
| | فتعالى الله الملك الحق لا إله إلا هو ... ... ... | ١١٦ | ك « | ٢٣ |
| | الله لا إله إلا هو رب العرش العظيم ... ... ... | ٢٦ | ك النمل | ٢٧ |
| | أإله مع الله بل هم قوم يعدلون ... ... ... ... | ٦٠ | ك « | ٢٧ |
| | أإله مع الله بل أكثرهم لا يعلمون ... ... ... | ٦١ | ك « | ٢٧ |
| | أإله مع الله قليلا ما تذكرون ... ... ... ... | ٦٢ | ك « | ٢٧ |
| | أإله مع الله تعالى الله عما يشركون ... ... ... | ٦٣ | ك « | ٢٧ |
| | أإله مع الله قل هاتوا برهانكم إن كنتم صادقين | ٦٤ | ك « | ٢٧ |
| | وقال فرعون يا أيها الملأ ما علمت لكم من إله غيرى | ٣٨ | ك القصص | ٢٨ |
| | فاجعل لى صرحا لعلى أطلع إلى إله موسى ... ... | ٣٨ | ك « | ٢٨ |
| | وهو الله لا إله إلا هو له الحمد فى الأولى والآخرة | ٧٠ | ك « | ٢٨ |
| | من إله غير الله يأتيكم بضياء أفلا تسمعون ... ... | ٧١ | ك « | ٢٨ |
| | من إله غير الله يأتيكم بليل تسكنون فيه أفلا تبصرون | ٧٢ | ك « | ٢٨ |
| | ولا تدع مع الله إلها آخر لا إله إلا هو ... ... | ٨٨ | ك « | ٢٨ |
| | هل من خالق غير الله يرزقكم من السماء والأرض لا إله إلا هو | ٣ | ك فاطر | ٣٥ |

| الآيـة | السورة | رقمها |
|---|---|---|
| **إله**: إنهم كانوا إذا قيل لهم لا إله إلا الله يستكبرون | ٣٥ ك الصافات | ٣٧ |
| قل إنما أنا منذر وما من إله إلا الله الواحد القهار | ٦٥ ك ص | ٣٨ |
| ذلكم الله ربكم له الملك لا إله إلا هو فأنى تصرفون | ٦ ك الزمر | ٣٩ |
| شديد العقاب ذى الطول لا إله إلا هو... ... ... | ٣ ك غافر | ٤٠ |
| أسباب السموات فأطلع إلى إله موسى وإنى لأظنه كاذبا | ٣٧ ك « | ٤٠ |
| ذلكم الله ربكم خالق كل شىء لا إله إلا هو فأنى تؤفكون | ٦٢ ك « | ٤٠ |
| هو الحى لا إله إلا هو فادعوه مخلصين له الدين | ٦٥ ك « | ٤٠ |
| قل إنما أنا بشر مثلكم يوحى إلىّ أنما إلهكم إله واحد | ٦ ك فصلت | ٤١ |
| وهو الذى فى السماء إله... ... ... ... ... ... ... | ٨٤ ك الزخرف | ٤٣ |
| وفى الأرض إله وهو الحكيم العليم ... ... ... ... | ٨٤ ك « | ٤٣ |
| لا إله إلا هو يحيى ويميت ربكم ورب آبائكم الأولين | ٨ ك الدخان | ٤٤ |
| فاعلم أنه لا إله إلا الله واستغفر لذنبك... ... ... | ١٩ م محمد | ٤٧ |
| أم لهم إله غير الله سبحان الله عما يشركون ... ... | ٤٣ ك الطور | ٥٢ |
| هو الله الذى لا إله إلا هو عالم الغيب والشهادة | ٢٢ م الحشر | ٥٩ |
| هو الله الذى لا إله إلا هو الملك القدوس السلام | ٢٣ م « | ٥٩ |
| الله لا إله إلا هو وعلى الله فليتوكل المؤمنون | ١٣ م التغابن | ٦٤ |
| رب المشرق والمغرب لا إله إلا هو فاتخذه وكيلا | ٩ ك المزمل | ٧٣ |
| قل أعوذ برب الناس . ملك الناس . إله الناس | ٣ ك الناس | ١١٤ |
| **إلهاً**: وإله آبائك إبراهيم وإسماعيل وإسحق إلها واحدا | ١٣٣م البقرة | ٢ |
| (١٦) قالوا يا موسى اجعل لنا إلها كما لهم آلهة ... ... | ١٣٨ك الأعراف | ٧ |
| قال أغير الله أبغيكم إلها وهو فضلكم على العالمين | ١٤٠ك « | ٧ |
| وما أمروا إلا ليعبدوا إلها واحدا لا إله إلا هو | ٣١ م التوبة | ٩ |
| الذين يجعلون مع الله إلها آخر فسوف يعلمون | ٩٦ ك الحجر | ١٥ |
| لا تجعل مع الله إلها آخر فتقعد مذموما مخذولا | ٢٢ ك الإسراء | ١٧ |
| ولا تجعل مع الله إلها آخر فتلقى فى جهنم ملوما مدحورا | ٣٩ ك « | ١٧ |
| ربنا رب السموات والأرض لن ندعو من دونه إلها | ١٤ ك الكهف | ١٨ |
| ومن يدع مع الله إلها آخر لا برهان له به فإنما حسابه | ١١٧ك المؤمنون | ٢٣ |
| والذين لا يدعون مع الله إلها آخر... ... ... ... | ٦٨ م الفرقان | ٢٥ |
| قال لئن اتخذت إلها غيرى لأجعلنك من المسجونين | ٢٩ ك الشعراء | ٢٦ |
| فلا تدع مع الله إلها آخر فتكون من المعذبين | ٢١٣ك « | ٢٦ |
| ولا تدع مع الله إلها آخر لا إله إلا هو ... ... | ٨٨ ك القصص | ٢٨ |
| أجعل الآلهة إلها واحدا إن هذا لشىء عجاب | ٥ ك ص | ٣٨ |
| الذى جعل مع الله إلها آخر فألقياه فى العذاب الشديد | ٢٦ ك ق | ٥٠ |
| ولا تجعلوا مع الله إلها آخر إنى لكم منه نذير مبين | ٥١ ك الذاريات | ٥١ |
| **إلهك**: قالوا نعبد إلهك وإله آبائك إبراهيم وإسماعيل | ١٣٣م البقرة | ٢ |
| (٢) وانظر إلى إلهك الذى ظلت عليه عاكفا... ... ... | ٩٧ ك طه | ٢٠ |
| **إلهكم**: وإلهكم إله واحد لا إله إلا هو الرحمن الرحيم | ١٦٣م البقرة | ٢ |
| (١٠) إلهكم إله واحد فالذين لا يؤمنون بالآخرة قلوبهم منكرة | ٢٢ ك النحل | ١٦ |

| اللفظة | الآيـة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| **إلهكم**: | قل إنما أنا بشر مثلكم يوحى إلىّ أنما إلهكم إله واحد | ١١٠ك الكهف | ١٨ |
| | فأخرج لهم عجلا جسدا له خوار فقالوا هذا إلهكم | ٨٨ ك طه | ٢٠ |
| | إنما إلهكم الله الذى لا إله إلا هو وسع كل شىء علما | ٩٨ ك « | ٢٠ |
| | قل إنما يوحى إلىّ أنما إلهكم إله واحد... ... | ١٠٨ك الأنبياء | ٢١ |
| | فإلهكم إله واحد فله أسلموا ... ... ... ... ... | ٣٤ م الحج | ٢٢ |
| | وإلهنا وإلهكم واحد ونحن له مسلمون ... ... ... | ٤٦ ك العنكبوت | ٢٩ |
| | إن إلهكم لواحد ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤ ك الصافات | ٣٧ |
| | قل إنما أنا بشر مثلكم يوحى إلىّ أنما إلهكم إله واحد | ٦ ك فصلت | ٤١ |
| **إلهنا**: | وإلهنا وإلهكم واحد ونحن له مسلمون... ... ... | ٤٦ ك العنكبوت | ٢٩ |
| **إلهه**: | أرأيت من اتخذ إلهه هواه أفأنت تكون عليه وكيلا | ٤٣ ك الفرقان | ٢٥ |
| (٢) | أفرأيت من اتخذ إلهه هواه وأضله الله على علم | ٢٣ ك الجاثية | ٤٥ |
| **إلهين**: | أأنت قلت للناس اتخذونى وأمى إلهين من دون الله | ١١٦م المائدة | ٥ |
| (٢) | وقال الله لا تتخذوا إلهين اثنين إنما هو إله واحد | ٥١ ك النحل | ١٦ |
| **آلهة**: | أئنكم لتشهدون أن مع الله آلهة أخرى... ... ... | ١٩ ك الأنعام | ٦ |
| (١٨) | وإذ قال إبراهيم لأبيه آزر أتتخذ أصناما آلهة | ٧٤ ك « | ٦ |
| | قالوا يا موسى اجعل لنا إلها كما لهم آلهة ... ... | ١٣٨ك الأعراف | ٧ |
| | قل لو كان معه آلهة كما يقولون إذا لابتغوا إلى ذى العرش | ٤٢ ك الإسراء | ١٧ |
| | هؤلاء قومنا اتخذوا من دونه آلهة ... ... ... ... | ١٥ ك الكهف | ١٨ |
| | واتخذوا من دون الله آلهة ليكونوا لهم عزا... ... | ٨١ ك مريم | ١٩ |
| | أم اتخذوا آلهة من الأرض هم ينشرون... ... ... | ٢١ ك الأنبياء | ٢١ |
| | لو كان فيهما آلهة إلا الله لفسدتا... ... ... ... | ٢٢ ك « | ٢١ |
| | أم اتخذوا من دونه آلهة قل هاتوا برهانكم... ... | ٢٤ ك « | ٢١ |
| | أم لهم آلهة تمنعهم من دوننا ... ... ... ... ... | ٤٣ ك « | ٢١ |
| | لو كان هؤلاء آلهة ما وردوها ... ... ... ... ... | ٩٩ ك « | ٢١ |
| | واتخذوا من دونه آلهة لا يخلقون شيئا وهم يخلقون | ٣ ك الفرقان | ٢٥ |
| | أأتخذ من دونه آلهة إن يردن الرحمن بضر لا تغن | ٢٣ ك يس | ٣٦ |
| | واتخذوا من دون الله آلهة لعلهم ينصرون ... ... | ٧٤ ك « | ٣٦ |
| | أئفكا آلهة دون الله تريدون ... ... ... ... ... | ٨٦ ك الصافات | ٣٧ |
| | أجعل الآلهة إلها واحدا إن هذا لشىء عجاب | ٥ ك ص | ٣٨ |
| | أجعلنا من دون الرحمن آلهة يعبدون ... ... ... | ٤٥ ك الزخرف | ٤٣ |
| | فلولا نصرهم الذين اتخذوا من دون الله قربانا آلهة | ٢٨ ك الأحقاف | ٤٦ |
| **آلهتك**: | أتذر موسى وقومه ليفسدوا فى الأرض ويذرك وآلهتك | ١٢٧ك الأعراف | ٧ |
| **آلهتكم**: | أهذا الذى يذكر آلهتكم وهم بذكر الرحمن هم كافرون | ٣٦ ك الأنبياء | ٢١ |
| (٤) | قالوا حرقوه وانصروا آلهتكم إن كنتم فاعلين ... ... | ٦٨ ك « | ٢١ |
| | وانطلق الملأ منهم أن امشوا واصبروا على آلهتكم | ٦ ك ص | ٣٨ |
| | وقالوا لا تذرن آلهتكم ولا تذرن ودا ولا سواعا | ٢٣ ك نوح | ٧١ |
| **آلهتنا**: | قالوا يا هود ما جئتنا ببينة وما نحن بتاركى آلهتنا | ٥٣ ك هود | ١١ |
| (٨) | إن نقول إلا اعتراك بعض آلهتنا بسوء ... ... ... | ٥٤ ك « | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| آلِهَتِنَا: | قالوا من فعل هذا بآلهتنا إنه لمن الظالمين ... ... | ٥٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | قالوا ءأنت فعلت هـذا بآلهتنا يا إبراهيم ... ... | ٦٢ | ك « | ٢١ |
| | إن كاد ليضلنا عن آلهتنا لولا أن صبرنا عليها... ... | ٤٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ويقولون أئنا لتاركوا آلهتنا لشاعر مجنون ... ... | ٣٦ | ك الصافات | ٣٧ |
| | وقالوا ءآلهتنا خير أم هو ما ضربوه لك إلا جدلا | ٥٨ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | قالوا أجئتنا لتأفكنا عن آلهتنا ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| آلِهَتُهُم: | فما أغنت عنهم آلهتهم التي يدعون من دون الله من شيء | ١٠١ | ك هـود | ١١ |
| (٢) | فراغ إلى آلهتهم فقال ألا تأكلون ... ... ... ... | ٩١ | ك الصافات | ٣٧ |
| آلِهَتِي: | قال أراغب أنت عن آلهتي يا إبراهيم... ... ... | ٤٦ | ك مـريم | ١٩ |
| اللهُ: | ختم الله على قلوبهم وعلى سمعهـم ... ... ... ... | ٧ | م البقـرة | ٢ |
| (٩٨٠) | في قلوبهم مرض فزادهم الله مرضا ... ... ... | ١٠ | م « | ٢ |
| | الله يستهزئ بهم ويمدهم في طغيانهم يعمهون... ... | ١٥ | م « | ٢ |
| | فلما أضاءت ما حوله ذهب الله بنورهم... ... ... | ١٧ | م « | ٢ |
| | والله محيط بالكافرين ... ... ... ... ... ... | ١٩ | م « | ٢ |
| | ولو شاء الله لذهب بسمعهم وأبصارهم ... ... ... | ٢٠ | م « | ٢ |
| | وأما الذين كفروا فيقولون ماذا أراد الله بهذا مثلا | ٢٦ | م « | ٢ |
| | ويقطعون ما أمر الله به أن يوصل ويفسدون في الأرض | ٢٧ | م « | ٢ |
| | إن البقر تشابه علينا وإنا إن شاء الله لمهتـدون | ٧٠ | م « | ٢ |
| | وإذ قتلتم نفسا فادارأتم فيها والله مخرج ما كنتم تكتمون | ٧٢ | م « | ٢ |
| | كذلك يحيي الله المـوتى ويريكم آياته ... ... ... | ٧٣ | م « | ٢ |
| | وما الله بغافل عما تعملون... ... ... ... ... ... | ٧٤ | م « | ٢ |
| | قالوا أتحدثونهم بما فتح الله عليكم ... ... ... ... | ٧٦ | م « | ٢ |
| | قل أتخذتم عنـد الله عهدا فلن يخلف الله عهـده | ٨٠ | م « | ٢ |
| | وما الله بغافل عما تعملون... ... ... ... ... ... | ٨٥ | م « | ٢ |
| | بل لعنهم الله بكفرهم فقليلا ما يؤمنون ... ... ... | ٨٨ | م « | ٢ |
| | بئسما اشتروا به أنفسهم أن يكفروا بما أنزل الله | ٩٠ | م « | ٢ |
| | بغيا أن ينزل الله من فضله على من يشاء من عباده | ٩٠ | م « | ٢ |
| | وإذا قيل لهم آمنوا بما أنزل الله قالوا ... ... ... | ٩١ | م « | ٢ |
| | ولن يتمنوه أبدا بما قدمت أيديهم والله عليم بالظالمين | ٩٥ | م « | ٢ |
| | وما هو بمزحزحه من العذاب أن يعمر والله بصير بما يعملون | ٩٦ | م « | ٢ |
| | والله يختص برحمته من يشاء ... ... ... ... ... | ١٠٥ | م « | ٢ |
| | والله ذو الفضل العظيم... ... ... ... ... ... ... | ١٠٥ | م « | ٢ |
| | فاعفوا واصفحوا حتى يأتي الله بأمره ... ... ... | ١٠٩ | م « | ٢ |
| | فالله يحكم بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيـه يختلفون | ١١٣ | م « | ٢ |
| | وقالوا اتخذ الله ولدا سبحانه ... ... ... ... ... | ١١٦ | م « | ٢ |
| | وقال الذين لا يعلمون لولا يكلمنا الله أو تأتينا آية | ١١٨ | م « | ٢ |
| | فسيكفيكهم الله وهو السميع العليم ... ... ... ... | ١٣٧ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| اللهُ: | قل ءأنتم أعلم أم الله ... ... ... ... ... ... | ١٤٠ | م البقـرة | ٢ |
| | وما الله بغافل عما تعملون ... ... ... ... ... ... | ١٤٠ | م « | ٢ |
| | وإن كانت لكبيرة إلا على الذين هدى الله ... ... | ١٤٣ | م « | ٢ |
| | وما كان الله ليضيع إيمانكم إن الله بالناس لرءوف رحيم | ١٤٣ | م « | ٢ |
| | وما الله بغافل عما يعملون... ... ... ... ... ... | ١٤٤ | م « | ٢ |
| | أينما تكونوا يأت بكم الله جميعا إن الله على كل شيء قدير | ١٤٨ | م « | ٢ |
| | وإنه للحـق من ربك وما الله بغافل عمـا تعملون | ١٤٩ | م « | ٢ |
| | أولئك يلعنهم الله ويلعنهم اللاعنون .. ... ... ... | ١٥٩ | م « | ٢ |
| | وما أنزل الله من السماء من ماء فأحيا به الأرض بعد موتها | ١٦٤ | م « | ٢ |
| | كذلك يريهم الله أعمالهم حسرات عليهم ... ... | ١٦٧ | م « | ٢ |
| | وإذا قيل لهم اتبعوا ما أنزل الله قالوا بل نتبع ما ألفينا | ١٧٠ | م « | ٢ |
| | إن الذين يكتمون ما أنزل الله من الكتاب ... ... | ١٧٤ | م « | ٢ |
| | ولا يكلمهم الله يوم القيامة ولا يزكيهم ... ... ... | ١٧٤ | م « | ٢ |
| | يريد الله بكم اليسر ولا يريد بكم العسر ... ... ... | ١٨٥ | م « | ٢ |
| | علم الله أنكم كنتم تختانون أنفسكم فتاب عليكم | ١٨٧ | م « | ٢ |
| | فالآن باشروهن وابتغوا ما كتب الله لكم ... ... | ١٨٧ | م « | ٢ |
| | كذلك يبين الله آياته للناس لعلهم يتقون ... ... | ١٨٧ | م « | ٢ |
| | وما تفعلوا من خير يعلمه الله ... ... ... ... ... | ١٩٧ | م « | ٢ |
| | أولئك لهم نصيب مما كسبوا والله سريع الحساب | ٢٠٢ | م « | ٢ |
| | ويهلك الحرث والنسل والله لا يحب الفساد... ... | ٢٠٥ | م « | ٢ |
| | ومن الناس من يشري نفسـه ابتغاء مرضاة الله | ٢٠٧ | م « | ٢ |
| | هل ينظرون إلا أن يأتيهم الله في ظلل من الغمام والملائكة | ٢١٠ | م « | ٢ |
| | والله يرزق من يشاء بغير حساب ... ... ... ... | ٢١٢ | م « | ٢ |
| | كان الناس أمة واحدة فبعث الله النبيين مبشرين ومنذرين | ٢١٣ | م « | ٢ |
| | فهدى الله الذين آمنوا لما اختلفوا فيه من الحق بإذنه | ٢١٣ | م « | ٢ |
| | والله يهدي من يشاء إلى صراط مستقيم... ... ... | ٢١٣ | م « | ٢ |
| | والله يعلم وأنتم لا تعلمون ... ... ... ... ... | ٢١٦ | م « | ٢ |
| | أولئك يرجون رحمة الله والله غفور رحيم ... ... | ٢١٨ | م « | ٢ |
| | كذلك يبين الله لكم الآيات لعلكم تتفكرون... ... | ٢١٩ | م « | ٢ |
| | وإن تخالطوهم فإخوانكم والله يعلم المفسد من المصلح | ٢٢٠ | م « | ٢ |
| | ولو شاء الله لأعنتكم إن الله عزيز حكيم ... ... | ٢٢٠ | م « | ٢ |
| | والله يدعو إلى الجنة والمغفرة بإذنه... ... ... ... | ٢٢١ | م « | ٢ |
| | فإذا تطهرن فأتوهن من حيث أمركم الله ... ... | ٢٢٢ | م « | ٢ |
| | أن تبروا وتتقوا وتصلحوا بين الناس والله سميع عليم | ٢٢٤ | م « | ٢ |
| | لا يؤاخذكم الله باللغو في أيمانكم ... ... ... ... | ٢٢٥ | م « | ٢ |
| | ولكن يؤاخذكم بما كسبت قلوبكم والله غفور حليم | ٢٢٥ | م « | ٢ |
| | ولا يحـل لهن أن يكتمن ما خلق الله في أرحامهن | ٢٢٨ | م « | ٢ |
| | وللرجال عليهن درجة والله عزيز حكيم ... ... ... | ٢٢٨ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | والله يعلم وأنتم لا تعلمون ... ... ... ... ... ... | ٢٣٢م | البقـرة | ٢ |
| | والله بمـا تعملون خبـير ... ... ... ... ... ... | ٢٣٤م | « | ٢ |
| | علم الله أنكم ستذكرونهن ولكن لا تواعدوهن سرا | ٢٣٥م | « | ٢ |
| | فلا جناح عليكم فيما فعلن فى أنفسهن من معروف والله عزيز | ٢٤٠م | « | ٢ |
| | كذلك يبين الله لكم آياته لعلكم تعقلون... ... ... | ٢٤٢م | « | ٢ |
| | فقال لهم الله موتوا ثم أحياهم ... ... ... ... ... | ٢٤٣م | « | ٢ |
| | والله يقبض ويبسـط وإليه ترجعون ... ... ... | ٢٤٥م | « | ٢ |
| | تولوا إلا قليلا منهم والله عليم بالظالمين ... ... ... | ٢٤٦م | « | ٢ |
| | والله يؤتى ملكه من يشاء ... ... ... ... ... ... | ٢٤٧م | « | ٢ |
| | والله واسع عليم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٤٧م | « | ٢ |
| | كم من فئة قليلة غلبت فئة كثيرة بإذن الله والله مع الصابرين | ٢٤٩م | « | ٢ |
| | وآتاه الله الملك والحكمة وعلمه مما يشاء ... ... | ٢٥١م | « | ٢ |
| | منهم من كلم الله ورفع بعضهم درجات ... ... ... | ٢٥٣م | « | ٢ |
| | ولو شاء الله ما اقتتل الذين من بعدهم ... ... ... | ٢٥٣م | « | ٢ |
| | ولو شاء الله ما اقتتلوا ولكن الله يفعـل ما يريد | ٢٥٣م | « | ٢ |
| | الله لا إله إلا هو الحىّ القيوم... ... ... ... ... | ٢٥٥م | « | ٢ |
| | فقد استمسك بالعروة الوثقى لا انفصام لها والله سميع عليم | ٢٥٦م | « | ٢ |
| | الله ولىّ الذين آمنوا يخرجهم من الظلمات إلى النور | ٢٥٧م | « | ٢ |
| | ألم تر إلى الذى حاج إبراهيم فى ربه أن آتاه الله الملك | ٢٥٨م | « | ٢ |
| | فبهت الذى كفر والله لا يهدى القوم الظالمين..... | ٢٥٨م | « | ٢ |
| | قال أنى يحيى هذه الله بعد موتها ... ... ... ... | ٢٥٩م | « | ٢ |
| | فأماته الله مائة عام ثم بعثـه ... ... ... ... ... | ٢٥٩م | « | ٢ |
| | والله يضاعف لمن يشـاء ... ... ... ... ... ... | ٢٦١م | « | ٢ |
| | والله واسع علـيم... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦١م | « | ٢ |
| | قول معروف ومغفرة خير من صدقة يتبعها أذى والله غنىّ | ٢٦٣م | « | ٢ |
| | لا يقدرون على شىء مما كسبوا والله لا يهدى القوم الكافرين | ٢٦٤م | « | ٢ |
| | فإن لم يصبها وابل فطل والله بما تعملون بصير ... | ٢٦٥م | « | ٢ |
| | كذلك يبين الله لكم الآيات لعلكم تتفكرون ... ... | ٢٦٦م | « | ٢ |
| | والله يعدكم مغفرة منـه وفضلا... ... ... ... ... | ٢٦٨م | « | ٢ |
| | والله واسـع علـيم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦٨م | « | ٢ |
| | ويكفر عنـكم من سيئاتكم والله بمـا تعملون خبير | ٢٧١م | « | ٢ |
| | وأحل الله البيـع وحرم الربا ... ... ... ... ... | ٢٧٥م | « | ٢ |
| | يمحـق الله الربا ويربى الصدقات ... ... ... ... | ٢٧٦م | « | ٢ |
| | والله لا يحب كل كفار أثيـم ... ... ... ... ... | ٢٧٦م | « | ٢ |
| | ولا يأب كاتب أن يكتب كما علمه الله... ... ... | ٢٨٢م | « | ٢ |
| | واتقوا الله ويعلمكم الله ... ... ... ... ... ... | ٢٨٢م | « | ٢ |
| | والله بكل شىء علـيم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨٢م | « | ٢ |
| | ومن يكتمها فإنه آثم قلبـه والله بمـا تعملون عليم | ٢٨٣م | « | ٢ |
| الله: | وإن تبدوا ما فى أنفسكم أو تخفوه يحاسبكم به الله | ٢٨٤م | البقـرة | ٢ |
| | فيغفر لمن يشاء ويعذب من يشاء والله على كل شىء قدير | ٢٨٤م | « | ٢ |
| | لا يكلف الله نفسا إلا وسعها لها ما كسبت ... ... | ٢٨٦م | « | ٢ |
| | الله لا إله إلا هو الحىّ القيوم... ... ... ... ... | ٢ م | آل عمران | ٣ |
| | إن الذين كفروا بآيات الله لهم عذاب شديد والله عزيز | ٤ م | « | ٣ |
| | وما يعلم تأويله إلا الله والراسخون فى العلم يقولون | ٧ م | « | ٣ |
| | كذبوا بآياتنا فأخذهم الله بذنوبهم ... ... ... ... | ١١ م | « | ٣ |
| | والله شـديد العقاب ... ... ... ... ... ... ... | ١١ م | « | ٣ |
| | والله يؤيد بنصره من يشاء... ... ... ... ... ... | ١٣ م | « | ٣ |
| | ذلك متاع الحياة الدنيا والله عنـده حسن المآب | ١٤ م | « | ٣ |
| | وأزواج مطهرة ورضوان من الله والله بصير بالعباد | ١٥ م | « | ٣ |
| | شهد الله أنه لا إله إلا هو والملائكة ... ... ... | ١٨ م | « | ٣ |
| | وإن تولوا فإنمـا عليك البلاغ والله بصـير بالعباد | ٢٠ م | « | ٣ |
| | ويحذركم الله نفسه وإلى الله المصير ... ... ... | ٢٨ م | « | ٣ |
| | قل إن تخفوا ما فى صدوركم أو تبدوه يعلمـه الله | ٢٩ م | « | ٣ |
| | ويعلم ما فى السموات وما فى الأرض والله على كل شىء | ٢٩ م | « | ٣ |
| | ويحذركم الله نفسه ... ... ... ... ... ... ... | ٣٠ م | « | ٣ |
| | والله رءوف بالعباد ... ... ... ... ... ... ... | ٣٠ م | « | ٣ |
| | قل إن كنتم تحبون الله فاتبعونى يحببكم الله ... ... | ٣١ م | « | ٣ |
| | ويغفر لكم ذنوبكم والله غفور رحيم ... ... ... | ٣١ م | « | ٣ |
| | ذرية بعضها من بعض والله سميع عليم ... ... ... | ٣٤ | « | ٣ |
| | قالت رب إنى وضعتها أنثى والله أعلم بمـا وضعت | ٣٦ م | « | ٣ |
| | قال كذلك الله يفعـل ما يشاء ... ... ... ... ... | ٤٠ م | « | ٣ |
| | قال كذلك الله يخلق ما يشاء ... ... ... ... ... | ٤٧ م | « | ٣ |
| | ومكروا ومكر الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٤ م | « | ٣ |
| | والله خير المـاكرين ... ... ... ... ... ... ... | ٥٤ م | « | ٣ |
| | إذ قال الله يا عيسى إنى متوفيـك ورافعـك إلىّ | ٥٥ م | « | ٣ |
| | والله لا يحب الظالمين ... ... ... ... ... ... ... | ٥٧ م | « | ٣ |
| | إن هذا لهو القصص الحق وما من إله إلا الله ... | ٦٢ م | « | ٣ |
| | فلم تحاجون فيما ليس لكم به علم والله يعلم وأنتم لا تعلمون | ٦٦ م | « | ٣ |
| | وهذا النبىّ والذين آمنوا والله ولىّ المؤمنين ... ... | ٦٨ م | « | ٣ |
| | قل إن الفضل بيد الله يؤتيه من يشاء والله واسع عليم | ٧٣ م | « | ٣ |
| | يختص برحمته من يشاء والله ذو الفضل العظيم ... ... | ٧٤ م | « | ٣ |
| | أولئك لا خلاق لهم فى الآخرة ولا يكلمهم الله ... ... | ٧٧ م | « | ٣ |
| | ما كان لبشر أن يؤتيـه الله الكتاب والحكم والنبوة | ٧٩ م | « | ٣ |
| | وإذ أخذ الله ميثاق النبيين لمـا آتيتكم من كتاب وحكمة | ٨١ م | « | ٣ |
| | كيف يهدى الله قوما كفروا بعـد إيمانهم ... ... | ٨٦ م | « | ٣ |
| | وجاءهم البينات والله لا يهدى القوم الظالمين ... ... | ٨٦ م | « | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | قل صدق الله فاتبعوا ملة إبراهيم ... ... ... ... | ٩٥ م | آل عمران | ٣ |
| | لم تكفرون بآيات الله والله شهيد على ما تعملون | ٩٨ م | » | ٣ |
| | وما الله بغافل عما تعملون... ... ... ... ... ... | ٩٩ م | » | ٣ |
| | كذلك يبين الله لكم آياته لعلكم تهتدون ... ... | ١٠٣م | » | ٣ |
| | وما الله يريد ظلما للعالمين ... ... ... ... ... | ١٠٨م | » | ٣ |
| | وما يفعلوا من خير فلن يكفروه والله عليم بالمتقين | ١١٥م | » | ٣ |
| | وما ظلمهم الله ولكن أنفسهم يظلمون ... ... ... | ١١٧م | » | ٣ |
| | تبوئ المؤمنين مقاعد للقتال والله سميع عليم ... ... | ١٢١م | » | ٣ |
| | إذ همت طائفتان منكم أن تفشلا والله وليهما | ١٢٢م | » | ٣ |
| | ولقد نصركم الله ببدر وأنتم أذلة ... ... ... ... | ١٢٣م | » | ٣ |
| | وما جعله الله إلا بشرى لكم ولتطمئن قلوبكم به | ١٢٦م | » | ٣ |
| | يغفر لمن يشاء ويعذب من يشاء والله غفور رحيم | ١٢٩م | » | ٣ |
| | والكاظمين الغيظ والعافين عن الناس والله يحب المحسنين | ١٣٤م | » | ٣ |
| | فاستغفروا لذنوبهم ومن يغفر الذنوب إلا الله | ١٣٥م | » | ٣ |
| | وليعلم الله الذين آمنوا ويتخذ منكم شهداء ... ... | ١٤٠م | » | ٣ |
| | ويتخذ منكم شهداء والله لا يحب الظالمين ... ... | ١٤٠م | » | ٣ |
| | وليمحص الله الذين آمنوا ويمحق الكافرين... ... | ١٤١م | » | ٣ |
| | أم حسبتم أن تدخلوا الجنة ولما يعلم الله الذين | ١٤٢م | » | ٣ |
| | وسيجزى الله الشاكرين ... ... ... ... ... ... | ١٤٤م | » | ٣ |
| | وما ضعفوا وما استكانوا والله يحب الصابرين | ١٤٦م | » | ٣ |
| | فآتاهم الله ثواب الدنيا وحسن ثواب الآخرة... ... | ١٤٨م | » | ٣ |
| | والله يحب المحسنين ... ... ... ... ... ... | ١٤٨م | » | ٣ |
| | بل الله مولاكم وهو خير الناصرين ... ... ... ... | ١٥٠م | » | ٣ |
| | ولقد صدقكم الله وعده إذ تحسونهم بإذنه ... ... | ١٥٢م | » | ٣ |
| | ولقد عفا عنكم والله ذو فضل على المؤمنين ... ... | ١٥٢م | » | ٣ |
| | والله خبير بما تعملون ... ... ... ... ... ... | ١٥٣م | » | ٣ |
| | وليبتلى الله ما فى صدوركم وليمحص ما فى قلوبكم | ١٥٤م | » | ٣ |
| | والله عليم بذات الصدور ... ... ... ... ... ... | ١٥٤م | » | ٣ |
| | ولقد عفا الله عنهم إن الله غفور حليم ... ... ... | ١٥٥م | » | ٣ |
| | ليجعل الله ذلك حسرة فى قلوبهم ... ... ... ... | ١٥٦م | » | ٣ |
| | والله يحيى ويميت ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٦م | » | ٣ |
| | والله بما تعملون بصير ... ... ... ... ... ... | ١٥٦م | » | ٣ |
| | إن ينصركم الله فلا غالب لكم ... ... ... ... ... | ١٦٠م | » | ٣ |
| | هم درجات عند الله والله بصير بما يعملون ... ... | ١٦٣م | » | ٣ |
| | لقد من الله على المؤمنين إذ بعث فيهم رسولا من أنفسهم | ١٦٤م | » | ٣ |
| | يقولون بأفواههم ما ليس فى قلوبهم والله أعلم | ١٦٧م | » | ٣ |
| | فرحين بما آتاهم الله من فضله ... ... ... ... | ١٧٠م | » | ٣ |
| | فزادهم إيمانا وقالوا حسبنا الله ونعم الوكيل... ... | ١٧٣م | » | ٣ |
| الله: | واتبعوا رضوان الله والله ذو فضل عظيم ... ... | ١٧٤م | آل عمران | ٣ |
| | يريد الله ألا يجعل لهم حظا فى الآخرة ... ... ... | ١٧٦م | » | ٣ |
| | ما كان الله ليذر المؤمنين على ما أنتم عليه ... ... | ١٧٩م | » | ٣ |
| | وما كان الله ليطلعكم على الغيب ... ... ... ... | ١٧٩م | » | ٣ |
| | ولا يحسبن الذين يبخلون بما آتاهم الله من فضله | ١٨٠م | » | ٣ |
| | ولله ميراث السموات والأرض والله بما تعملون خبير | ١٨٠م | » | ٣ |
| | لقد سمع الله قول الذين قالوا إن الله فقير ونحن أغنياء | ١٨١م | » | ٣ |
| | وإذ أخذ الله ميثاق الذين أوتوا الكتاب لتبيننه للناس | ١٨٧م | » | ٣ |
| | ولله ملك السموات والأرض والله على كل شىء قدير | ١٨٩م | » | ٣ |
| | ثوابا من عند الله والله عنده حسن الثواب... ... | ١٩٥م | » | ٣ |
| | ولا تؤتوا السفهاء أموالكم التى جعل الله لكم قياما | ٥ م | النساء | ٤ |
| | يوصيكم الله فى أولادكم للذكر مثل حظ الأنثيين | ١١ م | » | ٤ |
| | وصية من الله والله عليم حليم ... ... ... ... ... | ١٢ م | » | ٤ |
| | حتى يتوفاهن الموت أو يجعل الله لهن سبيلا... ... | ١٥ م | » | ٤ |
| | ثم يتوبون من قريب فأولئك يتوب الله عليهم | ١٧ م | » | ٤ |
| | وكان الله عليما حكيما... ... ... ... ... ... ... | ١٧ م | » | ٤ |
| | فعسى أن تكرهوا شيئا ويجعل الله فيه خيرا كثيرا | ١٩ م | » | ٤ |
| | والله أعلم بإيمانكم بعضكم من بعض ... ... ... ... | ٢٥ م | » | ٤ |
| | وأن تصبروا خير لكم والله غفور رحيم ... ... ... | ٢٥ م | » | ٤ |
| | يريد الله ليبين لكم ويهديكم سنن الذين من قبلكم | ٢٦ م | » | ٤ |
| | ويتوب عليكم والله عليم حكيم ... ... ... ... ... | ٢٦ م | » | ٤ |
| | والله يريد أن يتوب عليكم... ... ... ... ... ... | ٢٧ م | » | ٤ |
| | يريد الله أن يخفف عنكم وخلق الإنسان ضعيفا | ٢٨ م | » | ٤ |
| | ولا تتمنوا ما فضل الله به بعضكم على بعض ... ... | ٣٢ م | » | ٤ |
| | الرجال قوامون على النساء بما فضل الله بعضهم | ٣٤ م | » | ٤ |
| | فالصالحات قانتات حافظات للغيب بما حفظ الله | ٣٤ م | » | ٤ |
| | إن يريدا إصلاحا يوفق الله بينهما ... ... ... ... | ٣٥ م | » | ٤ |
| | ويأمرون الناس بالبخل ويكتمون ما آتاهم الله | ٣٧ م | » | ٤ |
| | وأنفقوا مما رزقهم الله... ... ... ... ... ... | ٣٩ م | » | ٤ |
| | وكان الله بهم عليما... ... ... ... ... ... ... | ٣٩ م | » | ٤ |
| | والله أعلم بأعدائكم وكفى بالله وليا وكفى بالله نصيرا | ٤٥ م | » | ٤ |
| | ولكن لعنهم الله بكفرهم فلا يؤمنون إلا قليلا ... ... | ٤٦ م | » | ٤ |
| | بل الله يزكى من يشاء ولا يظلمون فتيلا ... ... ... | ٤٩ م | » | ٤ |
| | أولئك الذين لعنهم الله... ... ... ... ... ... | ٥٢ م | » | ٤ |
| | ومن يلعن الله فلن تجد له نصيرا ... ... ... ... | ٥٢ م | » | ٤ |
| | أم يحسدون الناس على ما آتاهم الله من فضله... ... | ٥٤ م | » | ٤ |
| | وإذا قيل لهم تعالوا إلى ما أنزل الله وإلى الرسول | ٦١ م | » | ٤ |
| | أولئك الذين يعلم الله ما فى قلوبهم فأعرض عنهم | ٦٣ م | » | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | فأولئك مع الذين أنعم الله عليهم من النبيين والصديقين | ٦٩ م | النساء | ٤ |
| | قال قد أنعم الله علىّ إذ لم أكن معهم شهيدا... ... | ٧٢ م | « | ٤ |
| | والله يكتب ما يبيتون فأعرض عنهم وتوكل على الله | ٨١ م | « | ٤ |
| | عسى الله أن يكف بأس الذين كفروا ... ... ... | ٨٤ م | « | ٤ |
| | والله أشد بأسا وأشد تنكيلا ... ... ... ... ... | ٨٤ م | « | ٤ |
| | وكان الله على كل شىء مقيتا ... ... ... ... ... | ٨٥ م | « | ٤ |
| | الله لا إله إلا هو ليجمعنكم إلى يوم القيامة لا ريب فيه | ٨٧ م | « | ٤ |
| | فما لكم فى المنافقين فئتين والله أركسهم بما كسبوا | ٨٨ م | « | ٤ |
| | أتريدون أن تهدوا من أضل الله ... ... ... ... | ٨٨ م | « | ٤ |
| | ومن يضلل الله فلن تجد له سبيلا ... ... ... ... | ٨٨ م | « | ٤ |
| | ولو شاء الله لسلطهم عليكم فلقاتلوكم... ... ... ... | ٩٠ م | « | ٤ |
| | فما جعل الله لكم عليهم سبيلا... ... ... ... ... | ٩٠ م | « | ٤ |
| | توبة من الله وكان الله عليما حكيما ... ... ... ... | ٩٢ م | « | ٤ |
| | وغضب الله عليه ولعنه وأعد له عذابا عظيما ... ... | ٩٣ م | « | ٤ |
| | كذلك كنتم من قبل فمن الله عليكم فتبينوا ... ... | ٩٤ م | « | ٤ |
| | فضل الله المجاهدين بأموالهم وأنفسهم على القاعدين | ٩٥ م | « | ٤ |
| | وكلا وعد الله الحسنى ... ... ... ... ... ... | ٩٥ م | « | ٤ |
| | وفضل الله المجاهدين على القاعدين أجرا عظيما... ... | ٩٥ م | « | ٤ |
| | درجات منه ومغفرة ورحمة وكان الله غفورا رحيما | ٩٦ م | « | ٤ |
| | فأولئك عسى الله أن يعفو عنهم... ... ... ... ... | ٩٩ م | « | ٤ |
| | وكان الله عفوا غفورا... ... ... ... ... ... | ٩٩ م | « | ٤ |
| | فقد وقع أجره على الله وكان الله غفورا رحيما... ... | ١٠٠م | « | ٤ |
| | وترجون من الله ما لا يرجون وكان الله عليما حكيما | ١٠٤م | « | ٤ |
| | لتحكم بين الناس بما أراك الله ... ... ... ... | ١٠٥م | « | ٤ |
| | وكان الله بما يعملون محيطا... ... ... ... ... | ١٠٨م | « | ٤ |
| | ومن يكسب إثما فإنما يكسبه على نفسه وكان الله عليما حكيما | ١١١م | « | ٤ |
| | وأنزل الله عليك الكتاب والحكمة وعلمك ما لم تكن تعلم | ١١٣م | « | ٤ |
| | لعنه الله وقال لأتخذن من عبادك نصيبا مفروضا | ١١٨م | « | ٤ |
| | واتبع ملة إبراهيم حنيفا واتخذ الله إبراهيم خليلا | ١٢٥م | « | ٤ |
| | وكان الله بكل شىء محيطا ... ... ... ... ... | ١٢٦م | « | ٤ |
| | ويستفتونك فى النساء قل الله يفتيكم فيهن... ... ... | ١٢٧م | « | ٤ |
| | وإن يتفرقا يغن الله كلا من سعته... ... ... ... | ١٣٠م | « | ٤ |
| | وكان الله واسعا حكيما... ... ... ... ... ... | ١٣٠م | « | ٤ |
| | وكان الله غنيا حميدا ... ... ... ... ... ... | ١٣١م | « | ٤ |
| | إن يشأ يذهبكم أيها الناس ويأت بآخرين وكان الله على ذلك | ١٣٣م | « | ٤ |
| | فعند الله ثواب الدنيا والآخرة وكان الله سميعا بصيرا | ١٣٤م | « | ٤ |
| | إن يكن غنيا أو فقيرا فالله أولى بهما ... ... ... | ١٣٥م | « | ٤ |
| | لم يكن الله ليغفر لهم ولا ليهديهم سبيلا ... ... ... | ١٣٧م | « | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | فالله يحكم بينكم يوم القيامة ... ... ... ... ... | ١٤١م | النساء | ٤ |
| | ولن يجعل الله للكافرين على المؤمنين سبيلا... ... | ١٤١م | « | ٤ |
| | ومن يضلل الله فلن تجد له سبيلا ... ... ... ... | ١٤٣م | « | ٤ |
| | وسوف يؤتى الله المؤمنين أجرا عظيما ... ... ... | ١٤٦م | « | ٤ |
| | ما يفعل الله بعذابكم إن شكرتم وآمنتم ... ... ... | ١٤٧م | « | ٤ |
| | وكان الله شاكرا عليما ... ... ... ... ... ... | ١٤٧م | « | ٤ |
| | لا يحب الله الجهر بالسوء من القول إلا من ظلم | ١٤٨م | « | ٤ |
| | وكان الله سميعا عليما ... ... ... ... ... ... | ١٤٨م | « | ٤ |
| | أولئك سوف يؤتيهم أجورهم وكان الله غفورا رحيما | ١٥٢م | « | ٤ |
| | بل طبع الله عليها بكفرهم فلا يؤمنون إلا قليلا | ١٥٥م | « | ٤ |
| | بل رفعه الله إليه ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٨م | « | ٤ |
| | وكان الله عزيزا حكيما... ... ... ... ... ... | ١٥٨م | « | ٤ |
| | ورسلا لم نقصصهم عليك وكلم الله موسى تكليما | ١٦٤م | « | ٤ |
| | لئلا يكون للناس على الله حجة بعد الرسل وكان الله عزيزا | ١٦٥م | « | ٤ |
| | لكن الله يشهد بما أنزل إليك أنزله بعلمه ... ... | ١٦٦م | « | ٤ |
| | إن الذين كفروا وظلموا لم يكن الله ليغفر لهم ولا ليهديهم | ١٦٨م | « | ٤ |
| | فإن لله ما فى السموات والأرض وكان الله عليما حكيما | ١٧٠م | « | ٤ |
| | إنما الله إله واحد سبحانه أن يكون له ولد... ... | ١٧١م | « | ٤ |
| | يستفتونك قل الله يفتيكم فى الكلالة ... ... ... | ١٧٦م | « | ٤ |
| | يبين الله لكم أن تضلوا ... ... ... ... ... ... | ١٧٦م | « | ٤ |
| | والله بكل شىء عليم ... ... ... ... ... ... ... | ١٧٦م | « | ٤ |
| | مكلبين تعلمونهن مما علمكم الله ... ... ... ... ... | ٤ م | المائدة | ٥ |
| | ما يريد الله ليجعل عليكم من حرج ... ... ... ... | ٦ م | « | ٥ |
| | وعد الله الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم مغفرة | ٩ م | « | ٥ |
| | ولقد أخذ الله ميثاق بنى إسرائيل ... ... ... ... | ١٢ م | « | ٥ |
| | وبعثنا منهم اثنى عشر نقيبا وقال الله إنى معكم | ١٢ م | « | ٥ |
| | وسوف ينبئهم الله بما كانوا يصنعون ... ... ... | ١٤ م | « | ٥ |
| | يهدى به الله من اتبع رضوانه سبل السلام ... ... | ١٦ م | « | ٥ |
| | يخلق ما يشاء والله على كل شىء قدير ... ... ... | ١٧ م | « | ٥ |
| | فقد جاءكم بشير ونذير والله على كل شىء قدير... ... | ١٩ م | « | ٥ |
| | ادخلوا الأرض المقدسة التى كتب الله لكم ولا ترتدوا | ٢١ م | « | ٥ |
| | قال رجلان من الذين يخافون أنعم الله عليهما | ٢٣ م | « | ٥ |
| | قال لأقتلنك قال إنما يتقبل الله من المتقين | ٢٧ م | « | ٥ |
| | فبعث الله غرابا يبحث فى الأرض ليريه كيف يوارى | ٣١ م | « | ٥ |
| | فاقطعوا أيديهما جزاء بما كسبا نكالا من الله والله عزيز | ٣٨ م | « | ٥ |
| | يعذب من يشاء ويغفر لمن يشاء والله على كل شىء قدير | ٤٠ م | « | ٥ |
| | ومن يرد الله فتنته فلن تملك له من الله شيئا | ٤١ م | « | ٥ |
| | أولئك الذين لم يرد الله أن يطهر قلوبهم ... ... | ٤١ م | « | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | ومن لم يحكم بما أنزل الله فأولئك هم الكافرون | ٤٤ م | المائدة | ٥ |
| | ومن لم يحكم بما أنزل الله فأولئك هم الظالمون | ٤٥ م | » | ٥ |
| | وليحكم أهل الإنجيل بما أنزل الله فيه ... ... ... | ٤٧ م | » | ٥ |
| | ومن لم يحكم بما أنزل الله فأولئك هم الفاسقون | ٤٧ م | » | ٥ |
| | فاحكم بينهم بما أنزل الله ولا تتبع أهواءهم ... ... | ٤٨ م | » | ٥ |
| | ولو شاء الله لجعلكم أمة واحدة ولكن ليبلوكم فى ما آتاكم | ٤٨ م | » | ٥ |
| | وأن احكم بينهم بما أنزل الله ولا تتبع أهواءهم | ٤٩ م | » | ٥ |
| | واحذرهم أن يفتنوك عن بعض ما أنزل الله إليك | ٤٩ م | » | ٥ |
| | فإن تولوا فاعلم أنما يريد الله أن يصيبهم ببعض ذنوبهم | ٤٩ م | » | ٥ |
| | فعسى الله أن يأتى بالفتح أو أمر من عنده... ... | ٥٢ م | » | ٥ |
| | فسوف يأتى الله بقوم يحبهم ويحبونه أذلة على المؤمنين | ٥٤ م | » | ٥ |
| | ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء والله واسع عليم | ٥٤ م | » | ٥ |
| | إنما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا ... ... ... | ٥٥ م | » | ٥ |
| | من لعنه الله وغضب عليه وجعل منهم القردة والخنازير | ٦٠ م | » | ٥ |
| | والله أعلم بما كانوا يكتمون ... ... ... ... ... | ٦١ م | » | ٥ |
| | كلما أوقدوا نارا للحرب أطفأها الله ... ... ... | ٦٤ م | » | ٥ |
| | ويسعون فى الأرض فسادا والله لا يحب المفسدين | ٦٤ م | » | ٥ |
| | والله يعصمك من الناس إن الله لا يهدى القوم الكافرين | ٦٧ م | » | ٥ |
| | وحسبوا ألا تكون فتنة فعموا وصموا ثم تاب الله عليهم | ٧١ م | » | ٥ |
| | ثم عموا وصموا كثير منهم والله بصير بما يعملون | ٧١ م | » | ٥ |
| | إنه من يشرك بالله فقد حرم الله عليه الجنة ومأواه النار | ٧٢ م | » | ٥ |
| | أفلا يتوبون إلى الله ويستغفرونه والله غفور رحيم | ٧٤ م | » | ٥ |
| | مالا يملك لكم ضرا ولا نفعا والله هو السميع العليم | ٧٦ م | » | ٥ |
| | لبئس ما قدمت لهم أنفسهم أن سخط الله عليهم | ٨٠ م | » | ٥ |
| | فأثابهم الله بما قالوا جنات تجرى من تحتها الأنهار | ٨٥ م | » | ٥ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تحرموا طيبات ما أحل الله لكم | ٨٧ م | » | ٥ |
| | وكلوا مما رزقكم الله حلالا طيبا... ... ... ... | ٨٨ م | » | ٥ |
| | لا يؤاخذكم الله باللغو فى أيمانكم ولكن يؤاخذكم | ٨٩ م | » | ٥ |
| | كذلك يبين الله لكم آياته لعلكم تشكرون ... ... | ٨٩ م | » | ٥ |
| | ثم اتقوا وأحسنوا والله يحب المحسنين ... ... ... | ٩٣ م | » | ٥ |
| | يأيها الذين آمنوا ليبلونكم الله بشىء من الصيد | ٩٤ م | » | ٥ |
| | تناله أيديكم ورماحكم ليعلم الله من يخافه بالغيب | ٩٤ م | » | ٥ |
| | عفا الله عما سلف... ... ... ... ... ... ... | ٩٥ م | » | ٥ |
| | ومن عاد فينتقم الله منه ... ... ... ... ... | ٩٥ م | » | ٥ |
| | والله عزيز ذو انتقام ... ... ... ... ... ... | ٩٥ م | » | ٥ |
| | جعل الله الكعبة البيت الحرام قياما للناس ... ... | ٩٧ م | » | ٥ |
| | ما على الرسول إلا البلاغ والله يعلم ما تبدون وما تكتمون | ٩٩ م | » | ٥ |
| | وإن تسألوا عنها حين ينزل القرآن تبد لكم عفا الله عنها | ١٠١ م | » | ٥ |
| الله: | والله غفور حليم ... ... ... ... ... ... ... | ١٠١ م | المائدة | ٥ |
| | ما جعل الله من بحيرة ولا سائبة ولا وصيلة ولا حام | ١٠٣ م | » | ٥ |
| | وإذا قيل لهم تعالوا إلى ما أنزل الله وإلى الرسول | ١٠٤ م | » | ٥ |
| | واتقوا الله واسمعوا والله لا يهدى القوم الفاسقين | ١٠٨ م | » | ٥ |
| | يوم يجمع الله الرسل فيقول ماذا أجبتم ... ... ... | ١٠٩ م | » | ٥ |
| | إذ قال الله يا عيسى ابن مريم اذكر نعمتى عليك | ١١٠ م | » | ٥ |
| | قال الله إنى منزلها عليكم فمن يكفر بعد منكم فإنى أعذبه | ١١٥ م | » | ٥ |
| | وإذ قال الله يا عيسى ابن مريم أأنت قلت للناس | ١١٦ م | » | ٥ |
| | قال الله هذا يوم ينفع الصادقين صدقهم ... ... | ١١٩ م | » | ٥ |
| | رضى الله عنهم ورضوا عنه ذلك الفوز العظيم... ... | ١١٩ م | » | ٥ |
| | وهو الله فى السموات وفى الأرض يعلم سركم وجهركم | ٣ ك | الأنعام | ٦ |
| | وإن يمسسك الله بضر فلا كاشف له إلا هو... ... | ١٧ ك | » | ٦ |
| | قل أى شىء أكبر شهادة قل الله شهيد بينى وبينكم | ١٩ ك | » | ٦ |
| | ولو شاء الله لجمعهم على الهدى فلا تكونن من الجاهلين | ٣٥ ك | » | ٦ |
| | والموتى يبعثهم الله ثم إليه يرجعون ... ... ... ... | ٣٦ ك | » | ٦ |
| | من يشأ الله يضلله ومن يشأ يجعله على صراط مستقيم | ٣٩ ك | » | ٦ |
| | قل أرأيتم إن أخذ الله سمعكم وأبصاركم وختم على قلوبكم | ٤٦ ك | » | ٦ |
| | أهؤلاء منّ الله عليهم من بيننا ... ... ... ... ... | ٥٣ ك | » | ٦ |
| | أليس الله بأعلم بالشاكرين ... ... ... ... ... | ٥٣ ك | » | ٦ |
| | لقضى الأمر بينى وبينكم والله أعلم بالظالمين ... | ٥٨ ك | » | ٦ |
| | قل الله ينجيكم منها ومن كل كرب ثم أنتم تشركون | ٦٤ ك | » | ٦ |
| | ونرد على أعقابنا بعد إذ هدانا الله ... ... ... ... | ٧١ ك | » | ٦ |
| | أولئك الذين هدى الله فبهداهم اقتده ... ... ... | ٩٠ ك | » | ٦ |
| | وما قدروا الله حق قدره إذ قالوا ما أنزل الله على بشر من شىء | ٩١ م | » | ٦ |
| | قل الله ثم ذرهم فى خوضهم يلعبون... ... ... ... | ٩١ م | » | ٦ |
| | ومن قال سأنزل مثل ما أنزل الله ... ... ... ... | ٩٣ م | » | ٦ |
| | ومخرج الميت من الحى ذلكم الله فأنى تؤفكون | ٩٥ ك | » | ٦ |
| | ذلكم الله ربكم لا إله إلا هو خالق كل شىء فاعبدوه | ١٠٢ ك | » | ٦ |
| | ولو شاء الله ما أشركوا وما جعلناك عليهم حفيظا | ١٠٧ ك | » | ٦ |
| | ما كانوا ليؤمنوا إلا أن يشاء الله ولكن أكثرهم يجهلون | ١١١ ك | » | ٦ |
| | الله أعلم حيث يجعل رسالته سيصيب الذين أجرموا صغار | ١٢٤ ك | » | ٦ |
| | فمن يرد الله أن يهديه يشرح صدره للاسلام ... ... | ١٢٥ ك | » | ٦ |
| | كذلك يجعل الله الرجس على الذين لا يؤمنون | ١٢٥ ك | » | ٦ |
| | قال النار مثواكم خالدين فيها إلا ما شاء الله ... ... | ١٢٨ ك | » | ٦ |
| | ولو شاء الله ما فعلوه فذرهم وما يفترون ... ... | ١٣٧ ك | » | ٦ |
| | سفها بغير علم وحرموا ما رزقهم الله افتراء على الله | ١٤٠ ك | » | ٦ |
| | كلوا مما رزقكم الله ولا تتبعوا خطوات الشيطان | ١٤٢ ك | » | ٦ |
| | أم كنتم شهداء إذ وصاكم الله بهذا ... ... ... | ١٤٤ ك | » | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | سيقول الذين أشركوا لو شاء الله ما أشركنا ولا آباؤنا | ١٤٨ ك | الأنعام | ٦ |
| | ولا تقتلوا النفس التي حرم الله إلا بالحق ... ... | ١٥١ م | « | ٦ |
| | وإذا فعلوا فاحشة قالوا وجدنا عليها آباءنا والله أمرنا بها | ٢٨ ك | الأعراف | ٧ |
| | الحمد لله الذي هدانا لهذا وما كنا لنهتدي لولا أن هدانا الله | ٤٣ ك | « | ٧ |
| | أهؤلاء الذين أقسمتم لا ينالهم الله برحمة ... ... | ٤٩ ك | « | ٧ |
| | أن أفيضوا علينا من الماء أو مما رزقكم الله | ٥٠ ك | « | ٧ |
| | إن ربكم الله الذي خلق السموات والأرض... ... | ٥٤ ك | « | ٧ |
| | ألا له الخلق والأمر تبارك الله رب العالمين... ... | ٥٤ ك | « | ٧ |
| | سميتموها أنتم وآباؤكم ما نزل الله بها من سلطان | ٧١ ك | « | ٧ |
| | فاصبروا حتى يحكم الله بيننا وهو خير الحاكمين | ٨٧ ك | « | ٧ |
| | قد افترينا على الله كذبا إن عدنا في ملتكم بعد إذ نجانا الله | ٨٩ ك | « | ٧ |
| | وما يكون لنا أن نعود فيها إلا أن يشاء الله ربنا | ٨٩ ك | « | ٧ |
| | كذلك يطبع الله على قلوب الكافرين ... ... ... | ١٠١ ك | « | ٧ |
| | وإذ قالت أمة منهم لم تعظون قوما الله مهلكهم أو معذبهم | ١٦٤ م | « | ٧ |
| | من يهد الله فهو المهتدي ومن يضلل فأولئك هم الخاسرون | ١٧٨ ك | « | ٧ |
| | أو لم ينظروا في ملكوت السموات والأرض وما خلق الله | ١٨٥ ك | « | ٧ |
| | من يضلل الله فلا هادي له ويذرهم في طغيانهم يعمهون | ١٨٦ ك | « | ٧ |
| | قل لا أملك لنفسي نفعا ولا ضرا إلا ما شاء الله | ١٨٨ ك | « | ٧ |
| | جعلا له شركاء فيما آتاهما فتعالى الله عما يشركون | ١٩٠ ك | « | ٧ |
| | إن ولي الله الذي نزل الكتاب وهو يتولى الصالحين | ١٩٦ ك | « | ٧ |
| | إنما المؤمنون الذين إذا ذكر الله وجلت قلوبهم | ٢ م | الأنفال | ٨ |
| | وإذ يعدكم الله إحدى الطائفتين أنها لكم ... ... | ٧ م | « | ٨ |
| | ويريد الله أن يحق الحق بكلماته ويقطع دابر الكافرين | ٧ م | « | ٨ |
| | وما جعله الله إلا بشرى ولتطمئن به قلوبكم... ... | ١٠ م | « | ٨ |
| | ولو علم الله فيهم خيرا لأسمعهم ولو أسمعهم لتولوا | ٢٣ م | « | ٨ |
| | ويغفر لكم والله ذو الفضل العظيم ... ... ... ... | ٢٩ م | « | ٨ |
| | ليثبتوك أو يقتلوك أو يخرجوك ويمكرون ويمكر الله | ٣٠ ك | « | ٨ |
| | والله خير الماكرين ... ... ... ... ... ... | ٣٠ ك | « | ٨ |
| | وما كان الله ليعذبهم وأنت فيهم ... ... ... ... | ٣٣ ك | « | ٨ |
| | وما كان الله معذبهم وهم يستغفرون... ... ... ... | ٣٣ ك | « | ٨ |
| | وما لهم ألا يعذبهم الله وهم يصدون عن المسجد الحرام | ٣٤ ك | « | ٨ |
| | ليميز الله الخبيث من الطيب... ... ... ... ... | ٣٧ م | « | ٨ |
| | يوم الفرقان يوم التقى الجمعان والله على كل شيء قدير | ٤١ م | « | ٨ |
| | ليقضي الله أمرا كان مفعولا ليهلك من هلك عن بينة | ٤٢ م | « | ٨ |
| | إذ يريكهم الله في منامك قليلا... ... ... ... ... | ٤٣ م | « | ٨ |
| | ويقللكم في أعينهم ليقضي الله أمرا كان مفعولا | ٤٤ م | « | ٨ |
| | ويصدون عن سبيل الله والله بما يعملون محيط | ٤٧ م | « | ٨ |
| | إني أرى ما لا ترون إني أخاف الله والله شديد العقاب | ٤٨ م | « | ٨ |
| الله: | كفروا بآيات الله فأخذهم الله بذنوبهم... ... ... | ٥٢ م | الأنفال | ٨ |
| | وآخرين من دونهم لا تعلمونهم الله يعلمهم ... ... | ٦٠ م | « | ٨ |
| | وإن يريدوا أن يخدعوك فإن حسبك الله ... ... | ٦٢ م | « | ٨ |
| | يا أيها النبي حسبك الله ومن اتبعك من المؤمنين | ٦٤ م | « | ٨ |
| | الآن خفف الله عنكم وعلم أن فيكم ضعفا ... ... | ٦٦ م | « | ٨ |
| | وإن يكن منكم ألف يغلبوا ألفين بإذن الله والله مع | ٦٦ م | « | ٨ |
| | تريدون عرض الدنيا والله يريد الآخرة ... ... | ٦٧ م | « | ٨ |
| | والله عزيز حكيم ... ... ... ... ... ... ... | ٦٧ م | « | ٨ |
| | إن يعلم الله في قلوبكم خيرا يؤتكم خيرا مما أخذ منكم | ٧٠ م | « | ٨ |
| | ويغفر لكم والله غفور رحيم ... ... ... ... ... | ٧٠ م | « | ٨ |
| | فقد خانوا الله من قبل فأمكن منهم والله عليم حكيم | ٧١ م | « | ٨ |
| | بينكم وبينهم ميثاق والله بما تعملون بصير ... ... | ٧٢ م | « | ٨ |
| | أتخشونهم فالله أحق أن تخشوه إن كنتم مؤمنين | ١٣ م | التوبة | ٩ |
| | قاتلوهم يعذبهم الله بأيديكم ويخزهم... ... ... ... | ١٤ م | « | ٩ |
| | ويذهب غيظ قلوبهم ويتوب الله على من يشاء | ١٥ م | « | ٩ |
| | والله عليم حكيم ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ م | « | ٩ |
| | أم حسبتم أن تتركوا ولما يعلم الله الذين جاهدوا منكم | ١٦ م | « | ٩ |
| | والله خبير بما تعملون ... ... ... ... ... ... | ١٦ م | « | ٩ |
| | لا يستوون عند الله والله لا يهدي القوم الظالمين | ١٩ م | « | ٩ |
| | فتربصوا حتى يأتي الله بأمره ... ... ... ... ... | ٢٤ م | « | ٩ |
| | والله لا يهدي القوم الفاسقين ... ... ... ... ... | ٢٤ م | « | ٩ |
| | لقد نصركم الله في مواطن كثيرة ويوم حنين... ... | ٢٥ م | « | ٩ |
| | ثم أنزل الله سكينته على رسوله وعلى المؤمنين... ... | ٢٦ م | « | ٩ |
| | ثم يتوب الله من بعد ذلك على من يشاء ... ... | ٢٧ م | « | ٩ |
| | والله غفور رحيم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧ م | « | ٩ |
| | وإن خفتم عيلة فسوف يغنيكم الله من فضله إن شاء | ٢٨ م | « | ٩ |
| | ولا يحرمون ما حرم الله ورسوله ولا يدينون دين الحق | ٢٩ م | « | ٩ |
| | قاتلهم الله أنى يؤفكون ... ... ... ... ... ... | ٣٠ م | « | ٩ |
| | ويأبى الله إلا أن يتم نوره ولو كره الكافرون | ٣٢ م | « | ٩ |
| | يحلونه عاما ويحرمونه عاما ليواطئوا عدة ما حرم الله | ٣٧ م | « | ٩ |
| | فيحلوا ما حرم الله زين لهم سوء أعمالهم... ... ... | ٣٧ م | « | ٩ |
| | والله لا يهدي القوم الكافرين ... ... ... ... ... | ٣٧ م | « | ٩ |
| | ولا تضروه شيئا والله على كل شيء قدير... ... ... | ٣٩ م | « | ٩ |
| | إلا تنصروه فقد نصره الله إذ أخرجه الذين كفروا | ٤٠ م | « | ٩ |
| | فأنزل الله سكينته عليه وأيده بجنود لم تروها ... ... | ٤٠ م | « | ٩ |
| | وكلمة الله هي العليا والله عزيز حكيم ... ... ... | ٤٠ م | « | ٩ |
| | يهلكون أنفسهم والله يعلم إنهم لكاذبون ... ... | ٤٢ م | « | ٩ |
| | عفا الله عنك لم أذنت لهم حتى يتبين لك الذين صدقوا | ٤٣ م | « | ٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | أن يجاهـدوا بأموالهم وأنفسهم والله عليم بالمتقين | ٤٤ م | التـوبة | ٩ |
| | ولكن كره الله انبعاثهم فثبطهم وقيل اقعدوا مع القاعدين | ٤٦ م | « | ٩ |
| | يبغونكم الفتنة وفيكم سماعون لهم والله عليم بالظالمين | ٤٧ م | « | ٩ |
| | قل لن يصيبنا إلا ما كتب الله لنا هو مولانا | ٥١ م | « | ٩ |
| | ونحن نتربص بكم أن يصيبكم الله بعذاب من عنده | ٥٢ م | « | ٩ |
| | إنما يريد الله ليعذبهم بها فى الحياة الدنيا ... ... | ٥٥ م | « | ٩ |
| | ولو أنهم رضوا ما آتاهم الله ورسوله ... ... ... | ٥٩ م | « | ٩ |
| | وقالوا حسبنا الله ... ... ... ... ... ... ... | ٥٩ م | « | ٩ |
| | سيؤتينا الله من فضله ورسوله إنا إلى الله راغبون | ٥٩ م | « | ٩ |
| | فريضة من الله والله عليم حكيم ... ... ... ... | ٦٠ م | « | ٩ |
| | والله ورسـوله أحق أن يرضوه إن كانوا مؤمنين | ٦٢ م | « | ٩ |
| | وعد الله المنافقين والمنافقات والكفار نار جهـنم | ٦٨ م | « | ٩ |
| | هى حسبهم ولعنهم الله ولهم عذاب مقيم.. ... ... | ٦٨ م | « | ٩ |
| | فما كان الله ليظلمهم ولكن كانوا أنفسهم يظلمـون | ٧٠ م | « | ٩ |
| | أولئك سيرحمهم الله إن الله عزيز حكيم ... ... | ٧١ م | « | ٩ |
| | وعد الله المؤمنين والمؤمنات جنات تجرى من تحتها الأنهار | ٧٢ م | « | ٩ |
| | وما نقموا إلا أن أغناهم الله ورسوله من فضـله | ٧٤ م | « | ٩ |
| | وإن يتولوا يعذبهم الله عذابا أليما فى الدنيا والآخرة | ٧٤ م | « | ٩ |
| | عفا الله منهم ولهم عذاب أليم ... ... ... ... | ٧٩ م | « | ٩ |
| | إن تستغفر لهم سبعين مرة فلن يغفر الله لهم ... ... | ٨٠ م | « | ٩ |
| | والله لا يهدى القـوم الفاسقين... ... ... ... | ٨٠ م | « | ٩ |
| | فإن رجعك الله إلى طائفة منهم فاستأذنوك للخروج | ٨٣ م | « | ٩ |
| | إنما يريد الله أن يعذبهم بها فى الدنيا وتزهق أنفسهم | ٨٥ م | « | ٩ |
| | أعد الله لهم جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... | ٨٩ م | « | ٩ |
| | ما على المحسنين من سبيل والله غفور رحيم ... ... | ٩١ م | « | ٩ |
| | رضوا بأن يكونوا مع الخوالف وطبع الله على قلوبهم | ٩٣ م | « | ٩ |
| | قل لا تعتذروا لن نؤمن لكم قد نبأنا الله من أخباركم | ٩٤ م | « | ٩ |
| | وسيرى الله عملكم ورسوله ثم تردون إلى عالم الغيب والشهادة | ٩٤ م | « | ٩ |
| | وأجدر ألا يعـلموا حدود ما أنزل الله على رسوله | ٩٧ م | « | ٩ |
| | والله عليم حكيم ... ... ... ... ... ... ... | ٩٧ م | « | ٩ |
| | عليهم دائرة السوء والله سميع عليم ... ... ... ... | ٩٨ م | « | ٩ |
| | ألا إنها قربة لهم سيدخلهم الله فى رحمته ... ... | ٩٩ م | « | ٩ |
| | رضى الله عنهم ورضوا عنه وأعد لهم جنات... ... | ١٠٠م | « | ٩ |
| | خلطوا عملا صالحا وآخر سيئا عسى الله أن يتوب عليهم | ١٠٢م | « | ٩ |
| | إن صلاتك سكن لهم والله سميع عليم ... ... ... | ١٠٣م | « | ٩ |
| | وقل اعملوا فسيرى الله عملكم ورسوله والمؤمنون | ١٠٥م | « | ٩ |
| | إما يعـذبهم وإما يتـوب عليهـم والله عليم حكيم | ١٠٦م | « | ٩ |
| | وليحلفن إن أردنا إلا الحسنى والله يشهد إنهم لكاذبون | ١٠٧م | « | ٩ |
| الله: | فيه رجال يحبون أن يتطهروا والله يحب المطهرين | ١٠٨م | التـوبة | ٩ |
| | فانهـار به فى نار جهنم والله لا يهدى القوم الظالمين | ١٠٩م | « | ٩ |
| | إلا أن تقطع قلوبهم والله عليم حكيم ... ... ... | ١١٠م | « | ٩ |
| | وما كان الله ليضل قوما بعد إذ هداهم ... ... ... | ١١٥م | « | ٩ |
| | لقـد تاب الله على النـبى والمهـاجرين والأنصار | ١١٧م | « | ٩ |
| | ليجزيهم الله أحسن ما كانوا يعملون ... ... ... | ١٢١م | « | ٩ |
| | صرف الله قلوبهم بأنهم قوم لا يفقهون ... ... | ١٢٧م | « | ٩ |
| | فإن تولوا فقل حسبى الله لا إله إلا هو... ... ... | ١٢٩ك | « | ٩ |
| | إن ربكم الله الذى خلق السموات والأرض فى ستة أيام | ٣ ك | يونس | ١٠ |
| | ذلكم الله ربكم فاعبدوه أفلا تذكرون ... ... ... | ٣ ك | « | ١٠ |
| | ما خلق الله ذلك إلا بالحق ... ... ... ... ... | ٥ ك | « | ١٠ |
| | وما خلق الله فى السموات والأرض لآيات لقوم يتقون | ٦ ك | « | ١٠ |
| | ولو يعجل الله للناس الشر استعجالهم بالخير لقضى إليهم | ١١ ك | « | ١٠ |
| | قل لو شاء الله ما تلوته عليكم ولا أدراكم به... ... | ١٦ ك | « | ١٠ |
| | قـل الله أسرع مكرا إن رسلنا يكتبون ما تمكرون | ٢١ ك | « | ١٠ |
| | والله يدعو إلى دار السلام ويهدى من يشاء... ... | ٢٥ ك | « | ١٠ |
| | فسيقولون الله فقل أفلا تتقون... ... ... ... ... | ٣١ ك | « | ١٠ |
| | فذلكم الله ربكم الحق فماذا بعد الحق إلا الضـلال | ٣٢ ك | « | ١٠ |
| | قل الله يبدؤ الخلق ثم يعيده فأنى تؤفكون ... ... | ٣٤ ك | « | ١٠ |
| | قل هل من شركائكم من يهدى إلى الحق قـل الله | ٣٥ ك | « | ١٠ |
| | فإلينا مرجعهم ثم الله شهيد على ما يفعلون ... ... | ٤٦ ك | « | ١٠ |
| | قـل لا أملك لنفسى ضرا ولا نفعا إلا ما شاء الله | ٤٩ ك | « | ١٠ |
| | قل أرأيتم ما أنزل الله لكم من رزق فجعلتم منه حراما | ٥٩ ك | « | ١٠ |
| | قل آلله أذن لكم أم على الله تفترون ... ... ... | ٥٩ ك | « | ١٠ |
| | قالوا اتخـذ الله ولدا سبحانه هو الغنى... ... ... | ٦٨ ك | « | ١٠ |
| | ويحق الله الحق بكلماته ولو كره المجرمون ... ... | ٨٢ ك | « | ١٠ |
| | وإن يمسسك الله بضر فلا كاشف له إلا هو... ... | ١٠٧ك | « | ١٠ |
| | واتبع ما يوحى إليك واصبر حتى يحكم الله وهو خير الحاكمين | ١٠٩ك | « | ١٠ |
| | إنما أنت نذير والله على كل شىء وكيل ... ... ... | ١٢ م | هـود | ١١ |
| | ولا أقول للذين تزدرى أعينكم لن يؤتيهم الله خيرا | ٣١ ك | « | ١١ |
| | الله أعلم بما فى أنفسهم إنى إذا لمن الظالمين... ... | ٣١ ك | « | ١١ |
| | قال إنما يأتيكم به الله إن شاء وما أنتم بمعجزين | ٣٣ ك | « | ١١ |
| | ولا ينفعكم نصحى إن أردت أن أنصح لكم إن كان الله | ٣٤ ك | « | ١١ |
| | فصبر جميل والله المستعان على ما تصفون ... ... | ١٨ ك | يوسـف | ١٢ |
| | قال يا بشرى هذا غلام وأسروه بضاعة والله عليم بما يعملون | ١٩ ك | « | ١٢ |
| | والله غالب على أمره ولكن أكثر الناس لا يعلمون | ٢١ ك | « | ١٢ |
| | يا صاحبى السجن أأرباب متفرقون خير أم الله الواحد | ٣٩ ك | « | ١٢ |
| | إلا أسماء سميتموها أنتم وآباؤكم ما أنزل الله بها من سلطان | ٤٠ ك | « | ١٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | فالله خير حافظا وهـو أرحم الراحمين ... ... ... | ٦٤ | ك يوسف | ١٢ |
| | فلما آتوه موثقهم قال الله على ما نقول وكيل... ... | ٦٦ | ك » | ١٢ |
| | ما كان ليأخذ أخاه فى دين الملك إلا أن يشاء الله | ٧٦ | ك » | ١٢ |
| | قال أنتم شر مكانا والله أعلم بما تصفون... ... ... | ٧٧ | ك » | ١٢ |
| | فلن أبرح الأرض حتى يأذن لى أبى أو يحكم الله لى | ٨٠ | ك » | ١٢ |
| | فصبر جميل عسى الله أن يأتينى بهم جميعا ... ... | ٨٣ | ك » | ١٢ |
| | قال أنا يوسف وهذا أخى قد منّ الله علينا ... ... | ٩٠ | ك » | ١٢ |
| | قالوا تالله لقـد آثرك الله علينـا وإن كنا لخاطئين | ٩١ | ك » | ١٢ |
| | قال لا تثريب عليكم اليوم يغفر الله لكم... ... ... | ٩٢ | ك » | ١٢ |
| | وقال ادخلوا مصر إن شاء الله آمنين ... ... ... | ٩٩ | ك » | ١٢ |
| | الله الذى رفع السموات بغير عمـد ترونها ... ... | ٢ | م الرعـد | ١٣ |
| | الله يعلم ما تحمل كل أنثى وما تغيض الأرحام وما تزداد | ٨ | م » | ١٣ |
| | وإذا أراد الله بقوم سوءا فلا مردّ له ... ... ... | ١١ | م » | ١٣ |
| | قل من رب السموات والأرض قل الله... ... ... | ١٦ | م » | ١٣ |
| | قل الله خالق كل شىء وهو الواحد القهار ... ... | ١٦ | م » | ١٣ |
| | كذلك يضرب الله الحق والباطل فأما الزبد فيذهب جفاء | ١٧ | م » | ١٣ |
| | وأما ما ينفع الناس فيمكث فى الأرض كذلك يضرب الله | ١٧ | م » | ١٣ |
| | والذين يصلون ما أمر الله به أن يوصل ويخشون ربهم | ٢١ | م » | ١٣ |
| | ويقطعون ما أمر الله به أن يوصل ويفسدون فى الأرض | ٢٥ | م » | ١٣ |
| | الله يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ... ... ... ... | ٢٦ | م » | ١٣ |
| | أفلم ييأس الذين آمنوا أن لو يشاء الله لهدى الناس جميعا | ٣١ | م » | ١٣ |
| | ومن يضلل الله فما له من هاد ... ... ... ... ... | ٣٣ | م » | ١٣ |
| | يمحو الله ما يشاء ويثبت وعنده أم الكتاب ... ... | ٣٩ | م » | ١٣ |
| | والله يحكم لا معقب لحكمه وهو سريع الحساب | ٤١ | م » | ١٣ |
| | فيضل الله من يشاء ويهدى من يشاء وهو العزيز الحكيم | ٤ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | والذين من بعدهم لا يعلمهم إلا الله ... ... ... | ٩ | ك » | ١٤ |
| | قالوا لو هدانا الله لهديناكم... ... ... ... ... | ٢١ | ك » | ١٤ |
| | ألم تر كيف ضرب الله مثلا كلمة طيبة كشجرة طيبة | ٢٤ | ك » | ١٤ |
| | ويضرب الله الأمثال للناس لعلهم يتذكرون... ... | ٢٥ | ك » | ١٤ |
| | يثبت الله الذين آمنوا بالقول الثابت فى الحياة الدنيا | ٢٧ | ك » | ١٤ |
| | وفى الآخرة ويضل الله الظالمين... ... ... ... | ٢٧ | ك » | ١٤ |
| | ويفعل الله ما يشاء... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك » | ١٤ |
| | الله الذى خلق السموات والأرض وأنزل من السماء ماء | ٣٢ | ك » | ١٤ |
| | ليجزى الله كل نفس ما كسبت إن الله سريع الحساب | ٥١ | ك » | ١٤ |
| | والله يعلم ما تسرون وما تعلنون ... ... ... ... | ١٩ | ك النحـل | ١٦ |
| | قد مكر الذين من قبلهم فأتى الله بنيانهم من القواعد | ٢٦ | ك » | ١٦ |
| | لهم فيها ما يشاءون كذلك يجزى الله المتقين ... ... | ٣١ | ك » | ١٦ |
| | وما ظلمهم الله ولكن كانوا أنفسهم يظلمون... ... | ٣٣ | ك » | ١٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | لو شاء الله ما عبدنا من دونه من شىء نحن ولا آباؤنا | ٣٥ | ك النحـل | ١٦ |
| | فمنهم من هدى الله ومنهم من حقت عليه الضلالة | ٣٦ | ك » | ١٦ |
| | وأقسموا بالله جهد أيمانهم لا يبعث الله من يموت | ٣٨ | ك » | ١٦ |
| | أفأمن الذين مكروا السيئات أن يخسف الله بهم الأرض | ٤٥ | ك » | ١٦ |
| | أو لم يروا إلى ما خلق الله من شىء يتفيأ ظلاله | ٤٨ | ك » | ١٦ |
| | وقال الله لا تتخذوا إلهين اثنين إنما هو إله واحد | ٥١ | ك » | ١٦ |
| | ولو يؤاخذ الله الناس بظلمهم ما ترك عليها من دابة | ٦١ | ك » | ١٦ |
| | والله أنزل من السماء ماء فأحيا به الأرض بعد موتها | ٦٥ | ك » | ١٦ |
| | والله خلقكم ثم يتوفاكم ومنكم من يرد إلى أرذل العمر | ٧٠ | ك » | ١٦ |
| | والله فضل بعضكم على بعض فى الرزق ... ... ... | ٧١ | ك » | ١٦ |
| | والله جعل لكم من أنفسكم أزواجا ... ... ... ... | ٧٢ | ك » | ١٦ |
| | ضرب الله مثلا عبدا مملوكا لا يقدر على شىء... ... | ٧٥ | ك » | ١٦ |
| | وضرب الله مثلا رجلين أحدهما أبكم لا يقدر على شىء | ٧٦ | ك » | ١٦ |
| | والله أخرجكم من بطون أمهاتكم لا تعلمون شيئا | ٧٨ | ك » | ١٦ |
| | ألم يروا إلى الطير مسخرات فى جو السماء ما يمسكهن إلا الله | ٧٩ | ك » | ١٦ |
| | والله جعل لكم من بيوتكم سكنا ... ... ... ... | ٨٠ | ك » | ١٦ |
| | والله جعل لكم مما خلق ظلالا ... ... ... ... ... | ٨١ | ك » | ١٦ |
| | إنما يبلوكم الله به وليبين لكم يوم القيامة ... ... | ٩٢ | ك » | ١٦ |
| | ولو شاء الله لجعلكم أمة واحدة ولكن يضل من يشاء | ٩٣ | ك » | ١٦ |
| | والله أعلم بما ينزل قالوا إنما أنت مفتر ... ... | ١٠١ | ك » | ١٦ |
| | إن الذين لا يؤمنون بآيات الله لا يهديهم الله ولهم عذاب | ١٠٤ | ك » | ١٦ |
| | أولئك الذين طبع الله على قلوبهم وسمعهم وأبصارهم | ١٠٨ | ك » | ١٦ |
| | وضرب الله مثلا قرية كانت آمنة مطمئنة ... ... | ١١٢ | ك » | ١٦ |
| | فكفرت بأنعم الله فأذاقها الله لباس الجوع والخوف | ١١٢ | ك » | ١٦ |
| | فكلوا مما رزقكم الله حلالا طيبا ... ... ... ... | ١١٤ | ك » | ١٦ |
| | ولا تقتلوا النفس التى حرم الله إلا بالحق ... ... | ٣٣ | م الإسراء | ١٧ |
| | إلا أن قالوا أبعث الله بشرا رسولا... ... ... ... | ٩٤ | ك » | ١٧ |
| | ومن يهد الله فهو المهتد ومن يضلل فلن تجد لهم أولياء | ٩٧ | ك » | ١٧ |
| | وينذر الذين قالوا اتخذ الله ولدا ... ... ... ... | ٤ | ك الكهف | ١٨ |
| | من يهد الله فهو المهتد ومن يضلل فلن تجد له وليا مرشدا | ١٧ | ك » | ١٨ |
| | ولا تقولن لشىء إنى فاعل ذلك غدا . إلا أن يشاء الله | ٢٤ | ك » | ١٨ |
| | قل الله أعلم بما لبثوا له غيب السموات والأرض | ٢٦ | ك » | ١٨ |
| | لكنا هو الله ربى ولا أشرك بربى أحدا... ... ... | ٣٨ | ك » | ١٨ |
| | ولولا إذ دخلت جنتك قلت ما شاء الله لا قوة إلا بالله | ٣٩ | ك » | ١٨ |
| | وكان الله على كل شىء مقتدرا ... ... ... ... | ٤٥ | ك » | ١٨ |
| | قال ستجدنى إن شاء الله صابرا ولا أعصى لك أمرا | ٦٩ | ك » | ١٨ |
| | أولئك الذين أنعم الله عليهم من النبيين من ذرية آدم | ٥٨ | م مريم | ١٩ |
| | ويزيد الله الذين اهتدوا هدى... ... ... ... ... | ٧٦ | ك » | ١٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | الله لا إله إلا هو له الأسماء الحسنى ... ... ... | ٨ | ك طـه | ٢٠ |
| | إنني أنا الله لا إله إلا أنا فاعبدني وأقم الصلاة لذكرى | ١٤ | ك « | ٢٠ |
| | وما أكرهتنا عليه من السحر والله خير وأبقى... ... | ٧٣ | ك « | ٢٠ |
| | إنما إلهكم الله الذي لا إله إلا هو وسع كل شيء علما | ٩٨ | ك « | ٢٠ |
| | فتعالى الله الملك الحق ... ... ... ... ... ... | ١١٤ | ك « | ٢٠ |
| | لو كان فيهما آلهة إلا الله لفسدتا ... ... ... ... | ٢٢ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | من كان يظن أن لن ينصره الله في الدنيا والآخرة | ١٥ | م الحـج | ٢٢ |
| | وكثير حق عليه العذاب ومن يهن الله فما له من مكرم | ١٨ | م « | ٢٢ |
| | الذين إذا ذكر الله وجلت قلوبهم والصابرين على ما أصابهم | ٣٥ | م « | ٢٢ |
| | الذين أخرجوا من ديارهم بغير حق إلا أن يقولوا ربنا الله | ٤٠ | م « | ٢٢ |
| | ولينصرن الله من ينصره إن الله لقوي عزيز... ... | ٤٠ | م « | ٢٢ |
| | ويستعجلونك بالعذاب ولن يخلف الله وعده... ... | ٤٧ | م « | ٢٢ |
| | فينسخ الله ما يلقي الشيطان... ... ... ... ... | ٥٢ | « | ٢٢ |
| | ثم يحكم الله آياته ... ... ... ... ... ... ... | ٥٢ | « | ٢٢ |
| | والله عليم حكيم ... ... ... ... ... ... ... | ٥٢ | « | ٢٢ |
| | والذين هاجروا في سبيل الله ثم قتلوا أو ماتوا ليرزقنهم الله | ٥٨ | م « | ٢٢ |
| | ذلك ومن عاقب بمثل ما عوقب به ثم بغي عليه لينصرنه الله | ٦٠ | م « | ٢٢ |
| | وإن جادلوك فقل الله أعلم بما تعملون ... ... | ٦٨ | م « | ٢٢ |
| | الله يحكم بينكم يوم القيامة فيما كنتم فيه تختلفون | ٦٩ | م « | ٢٢ |
| | قل أفأنبئكم بشر من ذلكم النار وعدها الله الذين كفروا | ٧٢ | م « | ٢٢ |
| | الله يصطفي من الملائكة رسلا ومن الناس ... ... | ٧٥ | م « | ٢٢ |
| | ثم أنشأناه خلقا آخر فتبارك الله أحسن الخالقين | ١٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ولو شاء الله لأنزل ملائكة ما سمعنا بهذا في آبائنا الأولين | ٢٤ | ك « | ٢٣ |
| | ما اتخذ الله من ولد وما كان معه من إله ... ... | ٩١ | ك « | ٢٣ |
| | فتعالى الله الملك الحق لا إله إلا هو رب العرش الكريم | ١١٦ | ك « | ٢٣ |
| | يعظكم الله أن تعودوا لمثله أبدا إن كنتم مؤمنين | ١٧ | م النـور | ٢٤ |
| | ويبين الله لكم الآيات... ... ... ... ... ... | ١٨ | م « | ٢٤ |
| | والله عليم حكيم ... ... ... ... ... ... ... | ١٨ | م « | ٢٤ |
| | لهم عذاب أليم في الدنيا والآخرة والله يعلم وأنتم لا تعلمون | ١٩ | م « | ٢٤ |
| | ولكن الله يزكي من يشاء والله سميع عليم... ... ... | ٢١ | م « | ٢٤ |
| | وليعفوا وليصفحوا ألا تحبون أن يغفر الله لكم | ٢٢ | م « | ٢٤ |
| | والله غفور رحيم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | م « | ٢٤ |
| | يومئذ يوفيهم الله دينهم الحق ويعلمون أن الله هو الحق | ٢٥ | م « | ٢٤ |
| | هو أزكى لكم والله بما تعملون عليم... ... ... ... | ٢٨ | م « | ٢٤ |
| | والله يعلم ما تبدون وما تكتمون... ... ... ... | ٢٩ | م « | ٢٤ |
| | إن يكونوا فقراء يغنهم الله من فضله ... ... ... | ٣٢ | م « | ٢٤ |
| | والله واسع عليم... ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | م « | ٢٤ |
| | وليستعفف الذين لا يجدون نكاحا حتى يغنيهم الله من فضله | ٣٣ | م « | ٢٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | الله نور السموات والأرض مثل نوره كمشكاة فيها مصباح | ٣٥ | م النـور | ٢٤ |
| | نور على نور يهدي الله لنوره من يشاء ... ... ... | ٣٥ | م « | ٢٤ |
| | ويضرب الله الأمثال للناس ... ... ... ... ... | ٣٥ | م « | ٢٤ |
| | والله بكل شيء عليم ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | م « | ٢٤ |
| | في بيوت أذن الله أن ترفع ويذكر فيها اسمه | ٣٦ | م « | ٢٤ |
| | ليجزيهم الله أحسن ما عملوا ويزيدهم من فضله | ٣٨ | م « | ٢٤ |
| | والله يرزق من يشاء بغير حساب ... ... ... ... | ٣٨ | م « | ٢٤ |
| | ووجد الله عنده فوفاه حسابه والله سريع الحساب | ٣٩ | م « | ٢٤ |
| | ومن لم يجعل الله له نورا فما له من نور ... ... | ٤٠ | م « | ٢٤ |
| | كل قد علم صلاته وتسبيحه والله عليم بما يفعلون | ٤١ | م « | ٢٤ |
| | يقلب الله الليل والنهار إن في ذلك لعبرة لأولي الأبصار | ٤٤ | م « | ٢٤ |
| | والله خلق كل دابة من ماء... ... ... ... ... | ٤٥ | م « | ٢٤ |
| | يخلق الله ما يشاء إن الله على كل شيء قدير | ٤٥ | م « | ٢٤ |
| | والله يهدي من يشاء إلى صراط مستقيم... ... ... | ٤٦ | م « | ٢٤ |
| | أم يخافون أن يحيف الله عليهم ورسوله... ... ... | ٥٠ | م « | ٢٤ |
| | وعد الله الذين آمنوا منكم وعملوا الصالحات ليستخلفنهم | ٥٥ | م « | ٢٤ |
| | كذلك يبين الله لكم الآيات ... ... ... ... ... | ٥٨ | م « | ٢٤ |
| | والله عليم حكيم ... ... ... ... ... ... ... | ٥٨ | م « | ٢٤ |
| | كذلك يبين الله لكم آياته ... ... ... ... ... | ٥٩ | م « | ٢٤ |
| | والله عليم حكيم ... ... ... ... ... ... ... | ٥٩ | م « | ٢٤ |
| | وأن يستعففن خير لهن والله سميع عليم ... ... ... | ٦٠ | م « | ٢٤ |
| | كذلك يبين الله لكم الآيات لعلكم تعقلون ... ... | ٦١ | م « | ٢٤ |
| | قد يعلم الله الذين يتسللون منكم لواذا ... ... ... | ٦٣ | م « | ٢٤ |
| | ويوم يرجعون إليه فينبئهم بما عملوا والله بكل شيء عليم | ٦٤ | م « | ٢٤ |
| | وإذا رأوك إن يتخذونك إلا هزوا أهذا الذي بعث الله | ٤١ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ولا يقتلون النفس التي حرم الله إلا بالحق ولا يزنون | ٦٨ | م « | ٢٥ |
| | فأولئك يبدل الله سيئاتهم حسنات ... ... ... ... | ٧٠ | م « | ٢٥ |
| | وكان الله غفورا رحيما... ... ... ... ... ... | ٧٠ | م « | ٢٥ |
| | يا موسى إنه أنا الله العزيز الحكيم... ... ... ... | ٩ | ك النمل | ٢٧ |
| | الله لا إله إلا هو رب العرش العظيم... ... ... | ٢٦ | ك « | ٢٧ |
| | فما آتاني الله خير مما آتاكم بل أنتم بهديتكم تفرحون | ٣٦ | ك « | ٢٧ |
| | ءآلله خير أما يشركون ... ... ... ... ... ... | ٥٩ | ك « | ٢٧ |
| | ءإله مع الله تعالى الله عما يشركون ... ... ... | ٦٣ | ك « | ٢٧ |
| | قل لا يعلم من في السموات والأرض الغيب إلا الله | ٦٥ | ك « | ٢٧ |
| | ففزع من في السموات ومن في الأرض إلا من شاء الله | ٨٧ | ك « | ٢٧ |
| | سنجدني إن شاء الله من الصالحين ... ... ... ... | ٢٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | أيما الأجلين قضيت فلا عدوان علي والله على ما نقول وكيل | ٢٨ | ك « | ٢٨ |
| | أن يا موسى إني أنا الله رب العالمين ... ... ... | ٣٠ | ك « | ٢٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | وهو الله لا إله إلا هو له الحمد فى الأولى والآخرة | ٧٠ | ك القصص | ٢٨ |
| | قل أرأيتم إن جعل الله عليكم الليل سرمدا إلى يوم القيامة | ٧١ | ك « | ٢٨ |
| | قل أرأيتم إن جعل الله عليكم النهار سرمدا إلى يوم القيامة | ٧٢ | ك « | ٢٨ |
| | وابتغ فيما آتاك الله الدار الآخرة... ... ... ... ... | ٧٧ | ك « | ٢٨ |
| | ولا تنس نصيبك من الدنيا وأحسن كما أحسن الله إليك | ٧٧ | ك « | ٢٨ |
| | لولا أن منّ الله علينا لخسف بنا ... ... ... ... | ٨٢ | ك « | ٢٨ |
| | فليعلمن الله الذين صدقوا وليعلمن الكاذبين ... ... | ٣ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | أو ليس الله بأعلم بما فى صدور العالمين ... ... ... | ١٠ | م « | ٢٩ |
| | وليعلمن الله الذين آمنوا وليعلمن المنافقين ... ... | ١١ | م « | ٢٩ |
| | أو لم يروا كيف يبدئ الله الخلق ثم يعيده ... ... | ١٩ | ك « | ٢٩ |
| | ثم الله ينشئ النشأة الآخرة إن الله على كل شىء قدير | ٢٠ | ك « | ٢٩ |
| | إلا أن قالوا اقتلوه أو حرقوه فأنجاه الله من النار | ٢٤ | ك « | ٢٩ |
| | وما كان الله ليظلمهم ولكن كانوا أنفسهم يظلمون | ٤٠ | ك « | ٢٩ |
| | خلق الله السموات والأرض بالحق ... ... ... | ٤٤ | ك « | ٢٩ |
| | ولذكر الله أكبر والله يعلم ما تصنعون ... ... ... | ٤٥ | ك « | ٢٩ |
| | وكأين من دابة لا تحمل رزقها الله يرزقها وإياكم | ٦٠ | ك « | ٢٩ |
| | وسخر الشمس والقمر ليقولن الله... ... ... ... | ٦١ | ك « | ٢٩ |
| | الله يبسط الرزق لمن يشاء من عباده ويقدر له | ٦٢ | ك « | ٢٩ |
| | فأحيا به الأرض من بعد موتها ليقولن الله ... ... | ٦٣ | ك « | ٢٩ |
| | لا يخلف الله وعده ولكن أكثر الناس لا يعلمون | ٦ | ك الروم | ٣٠ |
| | ما خلق الله السموات والأرض وما بينهما إلا بالحق | ٨ | ك « | ٣٠ |
| | فما كان الله ليظلمهم ولكن كانوا أنفسهم يظلمون | ٩ | ك « | ٣٠ |
| | الله يبدأ الخلق ثم يعيده ثم إليه ترجعون ... ... | ١١ | ك « | ٣٠ |
| | فمن يهدى من أضل الله وما لهم من ناصرين ... ... | ٢٩ | ك « | ٣٠ |
| | الله الذى خلقكم ثم رزقكم ثم يميتكم ثم يحييكم | ٤٠ | ك « | ٣٠ |
| | الله الذى يرسل الرياح فتثير سحابا فيبسطه فى السماء | ٤٨ | ك « | ٣٠ |
| | الله الذى خلقكم من ضعف ثم جعل من بعد ضعف قوة | ٥٤ | ك « | ٣٠ |
| | كذلك يطبع الله على قلوب الذين لا يعلمون ... ... | ٥٩ | ك « | ٣٠ |
| | فتكن فى صخرة أو فى السموات أو فى الأرض يأت بها الله | ١٦ | ك لقمان | ٣١ |
| | وإذا قيل لهم اتبعوا ما أنزل الله قالوا بل نتبع | ٢١ | ك « | ٣١ |
| | ولئن سألتهم من خلق السموات والأرض ليقولن الله | ٢٥ | ك « | ٣١ |
| | الله الذى خلق السموات والأرض وما بينهما فى ستة أيام | ٤ | ك السجدة | ٣٢ |
| | ما جعل الله لرجل من قلبين فى جوفه ... ... ... | ٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | والله يقول الحق وهو يهدى السبيل ... ... ... ... | ٤ | م « | ٣٣ |
| | ولكن ما تعمدت قلوبكم وكان الله غفورا رحيما | ٥ | م « | ٣٣ |
| | وجنودا لم تروها وكان الله بما تعملون بصيرا | ٩ | م « | ٣٣ |
| | والذين فى قلوبهم مرض ما وعدنا الله ورسوله إلا غرورا | ١٢ | م « | ٣٣ |
| | قد يعلم الله المعوقين منكم والقائلين لإخوانهم هلم إلينا | ١٨ | م « | ٣٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | أولئك لم يؤمنوا فأحبط الله أعمالهم ... ... ... | ١٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ولما رأى المؤمنون الأحزاب قالوا هذا ما وعدنا الله | ٢٢ | م « | ٣٣ |
| | وصدق الله ورسوله وما زادهم إلا إيمانا وتسليما | ٢٢ | م « | ٣٣ |
| | ليجزى الله الصادقين بصدقهم ويعذب المنافقين | ٢٤ | م « | ٣٣ |
| | وردّ الله الذين كفروا بغيظهم لم ينالوا خيرا... ... | ٢٥ | م « | ٣٣ |
| | وكفى الله المؤمنين القتال ... ... ... ... ... | ٢٥ | م « | ٣٣ |
| | وكان الله قويا عزيزا... ... ... ... ... ... | ٢٥ | م « | ٣٣ |
| | وأرضا لم تطئوها وكان الله على كل شىء قديرا | ٢٧ | م « | ٣٣ |
| | إنما يريد الله ليذهب عنكم الرجس أهل البيت | ٣٣ | م « | ٣٣ |
| | أعد الله لهم مغفرة وأجرا عظيما ... ... ... ... | ٣٥ | م « | ٣٣ |
| | إذا قضى الله ورسوله أمرا أن يكون لهم الخيرة | ٣٦ | م « | ٣٣ |
| | وإذ تقول للذى أنعم الله عليه وأنعمت عليه أمسك | ٣٧ | م « | ٣٣ |
| | واتق الله وتخفى فى نفسك ما الله مبديه ... ... | ٣٧ | م « | ٣٣ |
| | وتخشى الناس والله أحق أن تخشاه... ... ... ... | ٣٧ | م « | ٣٣ |
| | ما كان على النبىّ من حرج فيما فرض الله له ... ... | ٣٨ | م « | ٣٣ |
| | ولكن رسول الله وخاتم النبيين وكان الله بكل شىء عليما | ٤٠ | م « | ٣٣ |
| | وما ملكت يمينك مما أفاء الله عليك... ... ... ... | ٥٠ | م « | ٣٣ |
| | لكيلا يكون عليك حرج وكان الله غفورا رحيما | ٥٠ | م « | ٣٣ |
| | ويرضين بما آتيتهن كلهن والله يعلم ما فى قلوبكم | ٥١ | م « | ٣٣ |
| | وكان الله عليما حليما... ... ... ... ... ... | ٥١ | م « | ٣٣ |
| | وكان الله على كل شىء رقيبا ... ... ... ... ... | ٥٢ | م « | ٣٣ |
| | إن ذلكم كان يؤذى النبىّ فيستحيى منكم والله لا يستحيى | ٥٣ | م « | ٣٣ |
| | إن الذين يؤذون الله ورسوله لعنهم الله فى الدنيا والآخرة | ٥٧ | م « | ٣٣ |
| | ذلك أدنى أن يعرفن فلا يؤذين وكان الله غفورا رحيما | ٥٩ | م « | ٣٣ |
| | لا تكونوا كالذين آذوا موسى فبرأه الله مما قالوا | ٦٩ | م « | ٣٣ |
| | ليعذب الله المنافقين والمنافقات والمشركين والمشركات | ٧٣ | م « | ٣٣ |
| | ويتوب الله على المؤمنين والمؤمنات ... ... ... | ٧٣ | م « | ٣٣ |
| | وكان الله غفورا رحيما... ... ... ... ... ... | ٧٣ | م « | ٣٣ |
| | قل من يرزقكم من السموات والأرض قل الله | ٢٤ | ك سبأ | ٣٤ |
| | قل أروونى الذين ألحقتم به شركاء كلا بل هو الله العزيز | ٢٧ | ك « | ٣٤ |
| | ما يفتح الله للناس من رحمة فلا ممسك لها ... ... | ٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| | والله الذى أرسل الرياح فتثير سحابا فسقناه إلى بلد ميت | ٩ | ك « | ٣٥ |
| | والله خلقكم من تراب ثم من نطفة ثم جعلكم أزواجا | ١١ | ك « | ٣٥ |
| | ذلكم الله ربكم له الملك ... ... ... ... ... | ١٣ | ك « | ٣٥ |
| | يأيها الناس أنتم الفقراء إلى الله والله هو الغنىّ الحميد | ١٥ | ك « | ٣٥ |
| | وما كان الله ليعجزه من شىء فى السموات ولا فى الأرض | ٤٤ | ك « | ٣٥ |
| | ولو يؤاخذ الله الناس بما كسبوا ما ترك على ظهرها | ٤٥ | ك « | ٣٥ |
| | وإذا قيل لهم أنفقوا مما رزقكم الله قال الذين كفروا | ٤٧ | ك يس | ٣٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | أنطعم من لو يشاء الله أطعمه ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك يس | ٣٦ |
| | إنهم كانوا إذا قيل لهم لا إله إلا الله يستكبرون | ٣٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| | والله خلقكم وما تعملون ... ... ... ... ... ... | ٩٦ | ك « | ٣٧ |
| | افعل ما تؤمر ستجدنى إن شاء الله من الصابرين | ١٠٢ | ك « | ٣٧ |
| | ألا إنهم من إفكهم ليقولون . ولد الله وإنهم لكاذبون | ١٥٢ | ك « | ٣٧ |
| | قل إنما أنا منذر وما من إله إلا الله الواحد القهار | ٦٥ | ك ص | ٣٨ |
| | لو أراد الله أن يتخذ ولدا لاصطفى مما يخلق ما يشاء | ٤ | ك الزمر | ٣٩ |
| | سبحانه هو الله الواحد القهار ... ... ... ... ... | ٤ | ك « | ٣٩ |
| | ذلكم الله ربكم له الملك لا إله إلا هو فأنى تصرفون | ٦ | ك « | ٣٩ |
| | ذلك يخوف الله به عباده يا عباد فاتقون ... ... | ١٦ | ك « | ٣٩ |
| | أولئك الذين هداهم الله وأولئك هم أولوا الألباب | ١٨ | ك « | ٣٩ |
| | وعد الله لا يخلف الله الميعاد ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك « | ٣٩ |
| | أفمن شرح الله صدره للإسلام فهو على نور من ربه | ٢٢ | ك « | ٣٩ |
| | الله نزل أحسن الحديث كتابا متشابها مثانى ... ... | ٢٣ | ك « | ٣٩ |
| | ذلك هدى الله يهدى به من يشاء ومن يضلل الله فما له | ٢٣ | ك « | ٣٩ |
| | فأذاقهم الله الخزى فى الحياة الدنيا... ... ... ... | ٢٦ | ك « | ٣٩ |
| | ضرب الله مثلا رجلا فيه شركاء متشاكسون ... ... | ٢٩ | ك « | ٣٩ |
| | ليكفر الله عنهم أسوأ الذى عملوا ويجزيهم أجرهم | ٣٥ | ك « | ٣٩ |
| | أليس الله بكاف عبده... ... ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك « | ٣٩ |
| | ويخوفونك بالذين من دونه ومن يضلل الله فما له من هاد | ٣٦ | ك « | ٣٩ |
| | ومن يهد الله فما له من مضل ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك « | ٣٩ |
| | أليس الله بعزيز ذى انتقام ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك « | ٣٩ |
| | ولئن سألتهم من خلق السموات والأرض ليقولن الله | ٣٨ | ك « | ٣٩ |
| | إن أرادنى الله بضر هل هن كاشفات ضره... ... | ٣٨ | ك « | ٣٩ |
| | قل حسبى الله عليه يتوكل المتوكلون... ... ... ... | ٣٨ | ك « | ٣٩ |
| | الله يتوفى الأنفس حين موتها والتى لم تمت فى منامها | ٤٢ | ك « | ٣٩ |
| | وإذا ذكر الله وحده اشمأزت قلوب الذين لا يؤمنون | ٤٥ | ك « | ٣٩ |
| | وينجى الله الذين اتقوا بمفازتهم لا يمسهم السوء | ٦١ | ك « | ٣٩ |
| | الله خالق كل شىء وهو على كل شىء وكيل ... ... | ٦٢ | ك « | ٣٩ |
| | فصعق من فى السموات ومن فى الأرض إلا من شاء الله | ٦٨ | ك « | ٣٩ |
| | ذلكم بأنه إذا دعى الله وحده كفرتم ... ... ... | ١٢ | ك غافر | ٤٠ |
| | والله يقضى بالحق والذين يدعون من دونه لا يقضون | ٢٠ | ك « | ٤٠ |
| | فأخذهم الله بذنوبهم وما كان لهم من الله من واق | ٢١ | ك « | ٤٠ |
| | فكفروا فأخذهم الله إنه قوى شديد العقاب... ... | ٢٢ | ك « | ٤٠ |
| | أتقتلون رجلا أن يقول ربى الله وقد جاءكم بالبينات | ٢٨ | ك « | ٤٠ |
| | وما الله يريد ظلما للعباد ... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك « | ٤٠ |
| | ما لكم من الله من عاصم ومن يضلل الله فما له من هاد | ٣٣ | ك « | ٤٠ |
| | حتى إذا هلك قلتم لن يبعث الله من بعده رسولا | ٣٤ | ك « | ٤٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | كذلك يضل الله من هو مسرف مرتاب ... ... ... | ٣٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | كذلك يطبع الله على كل قلب متكبر جبار ... ... | ٣٥ | ك « | ٤٠ |
| | فوقاه الله سيئات ما مكروا وحاق بآل فرعون سوء | ٤٥ | ك « | ٤٠ |
| | الله الذى جعل لكم الليل لتسكنوا فيه والنهار مبصرا | ٦١ | ك « | ٤٠ |
| | ذلكم الله ربكم خالق كل شىء لا إله إلا هو ... ... | ٦٢ | ك « | ٤٠ |
| | الله الذى جعل لكم الأرض قرارا والسماء بناء وصوركم | ٦٤ | ك « | ٤٠ |
| | فأحسن صوركم ورزقكم من الطيبات ذلكم الله ربكم | ٦٤ | ك « | ٤٠ |
| | فتبارك الله رب العالمين... ... ... ... ... ... | ٦٤ | ك « | ٤٠ |
| | بل لم نكن ندعو من قبل شيئا كذلك يضل الله الكافرين | ٧٤ | ك « | ٤٠ |
| | الله الذى جعل لكم الأنعام لتركبوا منها ومنها تأكلون | ٧٩ | ك « | ٤٠ |
| | قالوا أنطقنا الله الذى أنطق كل شىء ... ... ... | ٢١ | ك فصلت | ٤١ |
| | إن الذين قالوا ربنا الله ثم استقاموا تتنزل عليهم الملائكة | ٣٠ | ك « | ٤١ |
| | كذلك يوحى إليك وإلى الذين من قبلك الله العزيز الحكيم | ٣ | ك الشورى | ٤٢ |
| | والذين اتخذوا من دونه أولياء الله حفيظ عليهم | ٦ | ك « | ٤٢ |
| | ولو شاء الله لجعلهم أمة واحدة ولكن يدخل من يشاء | ٨ | ك « | ٤٢ |
| | أم اتخذوا من دونه أولياء فالله هو الولى ... ... | ٩ | ك « | ٤٢ |
| | ذلكم الله ربى عليه توكلت وإليه أنيب... ... ... | ١٠ | ك « | ٤٢ |
| | الله يجتبى إليه من يشاء ويهدى إليه من ينيب | ١٣ | ك « | ٤٢ |
| | وقل آمنت بما أنزل الله من كتاب وأمرت لأعدل بينكم | ١٥ | ك « | ٤٢ |
| | الله ربنا وربكم لنا أعمالنا ولكم أعمالكم ... ... | ١٥ | ك « | ٤٢ |
| | لا حجة بيننا وبينكم الله يجمع بيننا وإليه المصير | ١٥ | ك « | ٤٢ |
| | الله الذى أنزل الكتاب بالحق والميزان ... ... ... | ١٧ | ك « | ٤٢ |
| | الله لطيف بعباده يرزق من يشاء وهو القوى العزيز | ١٩ | ك « | ٤٢ |
| | أم لهم شركاء شرعوا لهم من الدين ما لم يأذن به الله | ٢١ | ك « | ٤٢ |
| | ذلك الذى يبشر الله عباده الذين آمنوا... ... ... | ٢٣ | م « | ٤٢ |
| | فإن يشأ الله يختم على قلبك... ... ... ... ... | ٢٤ | م « | ٤٢ |
| | ويمح الله الباطل ويحق الحق بكلماته ... ... ... | ٢٤ | م « | ٤٢ |
| | ولو بسط الله الرزق لعباده لبغوا فى الأرض | ٢٧ | م « | ٤٢ |
| | ومن يضلل الله فما له من ولى من بعده ... ... | ٤٤ | ك « | ٤٢ |
| | ومن يضلل الله فما له من سبيل ... ... ... ... | ٤٦ | ك « | ٤٢ |
| | وما كان لبشر أن يكلمه الله إلا وحيا أو من وراء حجاب | ٥١ | ك « | ٤٢ |
| | ولئن سألتهم من خلقهم ليقولن الله فأنى يؤفكون | ٨٧ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | إلا من رحم الله إنه هو العزيز الرحيم ... ... ... | ٤٢ | ك الدخان | ٤٤ |
| | واختلاف الليل والنهار وما أنزل الله من السماء من رزق | ٥ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | الله الذى سخر لكم البحر لتجرى الفلك فيه بأمره | ٢٢ | ك « | ٤٥ |
| | وإن الظالمين بعضهم أولياء بعض والله ولى المتقين | ١٩ | ك « | ٤٥ |
| | وخلق الله السموات والأرض بالحق ... ... ... | ٢٢ | ك « | ٤٥ |
| | أفرأيت من اتخذ إلهه هواه وأضله الله على علم | ٢٣ | ك « | ٤٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | قل الله يحييكم ثم يميتكم ثم يجمعكم إلى يوم القيامة | ٢٦ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | إن الذين قالوا ربنا الله ثم استقاموا فلا خوف عليهم | ١٣ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | كذلك يضرب الله للناس أمثالهم ... ... ... ... | ٣ | م محمد | ٤٧ |
| | ولو يشاء الله لانتصر منهم ولكن ليبلو بعضكم ببعض | ٤ | م » | ٤٧ |
| | ذلك بأنهم كرهوا ما أنزل الله فأحبط أعمالهم | ٩ | م » | ٤٧ |
| | دمر الله عليهم وللكافرين أمثالها ... .. ... ... | ١٠ | م » | ٤٧ |
| | أولئك الذين طبع الله على قلوبهم واتبعوا أهواءهم | ١٦ | م » | ٤٧ |
| | فاعلم أنه لا إله إلا الله واستغفر لذنبك... ... ... | ١٩ | م » | ٤٧ |
| | وللمؤمنين والمؤمنات والله يعلم متقلبكم ومثواكم | ١٩ | م » | ٤٧ |
| | أولئك الذين لعنهم الله فأصمهم وأعمى أبصارهم | ٢٣ | م » | ٤٧ |
| | ذلك بأنهم قالوا للذين كرهوا ما نزل الله سنطيعكم | ٢٦ | م » | ٤٧ |
| | في بعض الأمر والله يعلم إسرارهم ... ... ... ... | ٢٦ | م » | ٤٧ |
| | أم حسب الذين في قلوبهم مرض أن لن يخرج الله | ٢٩ | م » | ٤٧ |
| | ولتعرفنهم في لحن القول والله يعلم أعمالكم ... ... | ٣٠ | م » | ٤٧ |
| | ثم ماتوا وهم كفار فلن يغفر الله لهم ... ... ... | ٣٤ | م » | ٤٧ |
| | وأنتم الأعلون والله معكم ولن يتركم أعمالكم... ... | ٣٥ | م » | ٤٧ |
| | ومن يبخل فإنما يبخل عن نفسه والله الغني وأنتم الفقراء | ٣٨ | م » | ٤٧ |
| | ليغفر لك الله ما تقدم من ذنبك وما تأخر ... ... | ٢ | م الفتح | ٤٨ |
| | وينصرك الله نصرا عزيزا ... ... ... ... ... ... | ٣ | م » | ٤٨ |
| | ولله جنود السموات والأرض وكان الله عليما حكيما | ٤ | م » | ٤٨ |
| | وغضب الله عليهم ولعنهم وأعد لهم جهنم ... ... | ٦ | م » | ٤٨ |
| | ولله جنود السموات والأرض وكان الله عزيزا حكيما | ٧ | م » | ٤٨ |
| | بل كان الله بما تعملون خبيرا ... ... ... ... ... | ١١ | م » | ٤٨ |
| | يغفر لمن يشاء ويعذب من يشاء وكان الله غفورا | ١٤ | م » | ٤٨ |
| | قل لن تتبعونا كذلكم قال الله من قبل ... ... ... | ١٥ | م » | ٤٨ |
| | فإن تطيعوا يؤتكم الله أجرا حسنا ... ... ... ... | ١٦ | م » | ٤٨ |
| | لقد رضي الله عن المؤمنين إذ يبايعونك تحت الشجرة | ١٨ | م » | ٤٨ |
| | ومغانم كثيرة يأخذونها وكان الله عزيزا حكيما... ... | ١٩ | م » | ٤٨ |
| | وعدكم الله مغانم كثيرة تأخذونها فعجل لكم هذه | ٢٠ | م » | ٤٨ |
| | وأخرى لم تقدروا عليها قد أحاط الله بها ... ... | ٢١ | م » | ٤٨ |
| | وكان الله على كل شيء قديرا ... ... ... ... ... | ٢١ | م » | ٤٨ |
| | وكان الله بما تعملون بصيرا... ... ... ... ... ... | ٢٤ | م » | ٤٨ |
| | ليدخل الله في رحمته من يشاء ... ... ... ... ... | ٢٥ | م » | ٤٨ |
| | فأنزل الله سكينته على رسوله وعلى المؤمنين ... ... | ٢٦ | م » | ٤٨ |
| | وكانوا أحق بها وأهلها وكان الله بكل شيء عليما | ٢٦ | م » | ٤٨ |
| | لقد صدق الله رسوله الرؤيا بالحق... ... ... ... | ٢٧ | م » | ٤٨ |
| | لتدخلن المسجد الحرام إن شاء الله آمنين محلقين | ٢٧ | م » | ٤٨ |
| | وعد الله الذين آمنوا وعملوا الصالحات منهم مغفرة | ٢٩ | م » | ٤٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | أولئك الذين امتحن الله قلوبهم للتقوى... ... ... ... | ٣ | م الحجرات | ٤٩ |
| | حتى تخرج إليهم لكان خيرا لهم والله غفور رحيم | ٥ | م » | ٤٩ |
| | فضلا من الله ونعمة والله عليم حكيم... ... ... ... | ٨ | م » | ٤٩ |
| | قل أتعلمون الله بدينكم والله يعلم ما في السموات | ١٦ | م » | ٤٩ |
| | والله بكل شيء عليم ... ... ... ... ... ... ... | ١٦ | م » | ٤٩ |
| | بل الله يمن عليكم أن هداكم للإيمان إن كنتم صادقين | ١٧ | م » | ٤٩ |
| | إن الله يعلم غيب السموات والأرض والله بصير | ١٨ | م » | ٤٩ |
| | فمن الله علينا ووقانا عذاب السموم ... ... ... ... | ٢٧ | ك الطور | ٥٢ |
| | سميتموها أنتم وآباؤكم ما أنزل الله بها من سلطان | ٢٣ | ك النجم | ٥٣ |
| | إلا من بعد أن يأذن الله لمن يشاء ويرضى ... ... | ٢٦ | ك » | ٥٣ |
| | وهو معكم أينما كنتم والله بما تعملون بصير ... ... | ٤ | م الحديد | ٥٧ |
| | وكلا وعد الله الحسنى ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | م » | ٥٧ |
| | والله بما تعملون خبير ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | م » | ٥٧ |
| | ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء والله ذو الفضل العظيم | ٢١ | م » | ٥٧ |
| | والله لا يحب كل مختال فخور ... ... ... ... ... | ٢٣ | م » | ٥٧ |
| | وليعلم الله من ينصره ورسله بالغيب إن الله قوي عزيز | ٢٥ | م » | ٥٧ |
| | ويجعل لكم نورا تمشون به ويغفر لكم والله غفور رحيم | ٢٨ | م » | ٥٧ |
| | وأن الفضل بيد الله يؤتيه من يشاء والله ذو الفضل | ٢٩ | م » | ٥ |
| | قد سمع الله قول التي تجادلك في زوجها وتشتكي إلى الله | ١ | م المجادلة | ٥٨ |
| | والله يسمع تحاوركما إن الله سميع بصير ... ... ... | ١ | م » | ٥٨ |
| | ذلكم توعظون به والله بما تعملون خبير ... ... ... | ٣ | م » | ٥٨ |
| | يوم يبعثهم الله جميعا فينبئهم بما عملوا ... ... ... | ٦ | م » | ٥٨ |
| | أحصاه الله ونسوه ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | م » | ٥٨ |
| | والله على كل شيء شهيد ... ... ... ... ... ... | ٦ | م » | ٥٨ |
| | وإذا جاءوك حيوك بما لم يحيك به الله... ... ... | ٨ | م » | ٥٨ |
| | ويقولون في أنفسهم لولا يعذبنا الله بما نقول | ٨ | م » | ٥٨ |
| | إذا قيل لكم تفسحوا في المجالس فافسحوا يفسح الله | ١١ | م » | ٥٨ |
| | يرفع الله الذين آمنوا منكم والذين أوتوا العلم درجات | ١١ | م » | ٥٨ |
| | والله بما تعملون خبير ... ... ... ... ... ... | ١١ | م » | ٥٨ |
| | فإذ لم تفعلوا وتاب الله عليكم فأقيموا الصلاة... ... | ١٣ | م » | ٥٨ |
| | وأطيعوا الله ورسوله والله خبير بما تعملون ... ... | ١٣ | م » | ٥٨ |
| | ألم تر إلى الذين تولوا قوما غضب الله عليهم... ... | ١٤ | م » | ٥٨ |
| | أعد الله لهم عذابا شديدا إنهم ساء ما كانوا يعملون | ١٥ | م » | ٥٨ |
| | يوم يبعثهم الله جميعا فيحلفون له كما يحلفون لكم | ١٨ | م » | ٥٨ |
| | كتب الله لأغلبن أنا ورسلي إن الله قوي عزيز | ٢١ | م » | ٥٨ |
| | رضي الله عنهم ورضوا عنه أولئك حزب الله ... ... | ٢٢ | م » | ٥٨ |
| | فأتاهم الله من حيث لم يحتسبوا وقذف في قلوبهم | ٢ | م الحشر | ٥٩ |
| | ولولا أن كتب الله عليهم الجلاء لعذبهم في الدنيا | ٣ | م » | ٥٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | وما أفاء الله على رسوله منهم فما أوجفتم عليه | ٦ | م الحشر | ٥٩ |
| | ولكن الله يسلط رسله على من يشاء والله على كل شيء قدير | ٦ | م « | ٥٩ |
| | ما أفاء الله على رسوله من أهل القرى فلله وللرسول | ٧ | م « | ٥٩ |
| | وإن قوتلتم لننصرنكم والله يشهد إنهم لكاذبون | ١١ | م « | ٥٩ |
| | هو الله الذي لا إله إلا هو عالم الغيب والشهادة | ٢٢ | م « | ٥٩ |
| | هو الله الذي لا إله إلا هو الملك القدوس ... ... | ٢٣ | م « | ٥٩ |
| | هو الله الخالق البارئ المصور له الأسماء الحسنى | ٢٤ | م « | ٥٩ |
| | يوم القيامة يفصل بينكم والله بما تعملون بصير | ٣ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | عسى الله أن يجعل بينكم وبين الذين عاديتم منهم مودة | ٧ | م « | ٦٠ |
| | والله قدير ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | م « | ٦٠ |
| | والله غفور رحيم ... ... ... ... ... ... | ٧ | م « | ٦٠ |
| | لا ينهاكم الله عن الذين لم يقاتلوكم في الدين | ٨ | م « | ٦٠ |
| | إنما ينهاكم الله عن الذين قاتلوكم في الدين وأخرجوكم | ٩ | م « | ٦٠ |
| | إذا جاءكم المؤمنات مهاجرات فامتحنوهن الله أعلم | ١٠ | م « | ٦٠ |
| | ذلكم حكم الله يحكم بينكم والله عليم حكيم ... ... | ١٠ | م « | ٦٠ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تتولوا قوما غضب الله عليهم | ١٣ | م « | ٦٠ |
| | فلما زاغوا أزاغ الله قلوبهم ... ... ... ... | ٥ | م الصف | ٦١ |
| | والله لا يهدي القوم الفاسقين ... ... ... ... | ٥ | م « | ٦١ |
| | والله لا يهدي القوم الظالمين ... ... ... ... | ٧ | م « | ٦١ |
| | والله متم نوره ولو كره الكافرون ... ... ... ... | ٨ | م « | ٦١ |
| | ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء والله ذو الفضل العظيم | ٤ | م الجمعة | ٦٢ |
| | والله لا يهدي القوم الظالمين ... ... ... ... | ٥ | م « | ٦٢ |
| | ولا يتمنونه أبدا بما قدمت أيديهم والله عليم بالظالمين | ٧ | م « | ٦٢ |
| | قل ما عند الله خير من اللهو ومن التجارة والله خير الرازقين | ١١ | م « | ٦٢ |
| | قالوا نشهد إنك لرسول الله والله يعلم إنك لرسوله | ١ | م المنافقون | ٦٣ |
| | والله يشهد إن المنافقين لكاذبون ... ... ... | ١ | م « | ٦٣ |
| | هم العدو فاحذرهم قاتلهم الله أنى يؤفكون ... ... | ٤ | م « | ٦٣ |
| | سواء عليهم أستغفرت لهم أم لم تستغفر لهم لن يغفر الله لهم | ٦ | م « | ٦٣ |
| | ولن يؤخر الله نفسا إذا جاء أجلها ... ... ... ... | ١١ | م « | ٦٣ |
| | والله خبير بما تعملون ... ... ... ... ... ... | ١١ | م « | ٦٣ |
| | فمنكم كافر ومنكم مؤمن والله بما تعملون بصير ... ... | ٢ | م التغابن | ٦٤ |
| | ويعلم ما تسرون وما تعلنون والله عليم بذات الصدور | ٤ | م « | ٦٤ |
| | فقالوا أبشر يهدوننا فكفروا وتولوا واستغنى الله | ٦ | م « | ٦٤ |
| | والله غني حميد ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | م « | ٦٤ |
| | فآمنوا بالله ورسوله والنور الذي أنزلنا والله بما تعملون | ٨ | م « | ٦٤ |
| | ومن يؤمن بالله يهد قلبه والله بكل شيء عليم ... ... | ١١ | م « | ٦٤ |
| | الله لا إله إلا هو وعلى الله فليتوكل المؤمنون ... ... | ١٣ | م « | ٦٤ |
| | إنما أموالكم وأولادكم فتنة والله عنده أجر عظيم | ١٥ | م « | ٦٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | يضاعفه لكم ويغفر لكم والله شكور حليم ... ... | ١٧ | م التغابن | ٦٤ |
| | إن الله بالغ أمره قد جعل الله لكل شيء قدرا | ٣ | م الطلاق | ٦٥ |
| | ومن قدر عليه رزقه فلينفق مما آتاه الله ... ... ... | ٧ | م « | ٦٥ |
| | لا يكلف الله نفسا إلا ما آتاها ... ... ... ... | ٧ | م « | ٦٥ |
| | سيجعل الله بعد عسر يسرا ... ... ... ... ... | ٧ | م « | ٦٥ |
| | أعد الله لهم عذابا شديدا فاتقوا الله يا أولي الألباب | ١٠ | م « | ٦٥ |
| | الذين آمنوا قد أنزل الله إليكم ذكرا ... ... ... | ١٠ | م « | ٦٥ |
| | خالدين فيها أبدا قد أحسن الله له رزقا ... ... ... | ١١ | م « | ٦٥ |
| | الله الذي خلق سبع سموات ومن الأرض مثلهن | ١٢ | م « | ٦٥ |
| | يأيها النبي لم تحرم ما أحل الله لك ... ... ... ... | ١ | م التحريم | ٦٦ |
| | تبتغي مرضاة أزواجك والله غفور رحيم ... ... ... | ١ | م « | ٦٦ |
| | قد فرض الله لكم تحلة أيمانكم ... ... ... ... | ٢ | م « | ٦٦ |
| | والله مولاكم وهو العليم الحكيم ... ... ... ... | ٢ | م « | ٦٦ |
| | فلما نبأت به وأظهره الله عليه عرف بعضه وأعرض | ٣ | م « | ٦٦ |
| | يوم لا يخزي الله النبي والذين آمنوا معه ... ... | ٨ | م « | ٦٦ |
| | ضرب الله مثلا للذين كفروا امرأة نوح وامرأة لوط | ١٠ | م « | ٦٦ |
| | وضرب الله مثلا للذين آمنوا امرأة فرعون ... ... | ١١ | م « | ٦٦ |
| | قالوا بلى قد جاءنا نذير فكذبنا وقلنا ما نزل الله من شيء | ٩ | ك الملك | ٦٧ |
| | قل أرأيتم إن أهلكني الله ومن معي أو رحمنا ... ... | ٢٨ | ك « | ٦٧ |
| | ألم تروا كيف خلق الله سبع سموات طباقا ... ... | ١٥ | ك نوح | ٧١ |
| | والله أنبتكم من الأرض نباتا ... ... ... ... | ١٧ | ك « | ٧١ |
| | والله جعل لكم الأرض بساطا ... ... ... ... ... | ١٩ | ك « | ٧١ |
| | وأنهم ظنوا كما ظننتم أن لن يبعث الله أحدا ... ... | ٧ | ك الجن | ٧٢ |
| | وطائفة من الذين معك والله يقدر الليل والنهار | ٢٠ | م المزمل | ٧٣ |
| | ولقول الذين في قلوبهم مرض والكافرون ماذا أراد الله | ٣١ | ك المدثر | ٧٤ |
| | كذلك يضل الله من يشاء ويهدي من يشاء ... ... | ٣١ | ك « | ٧٤ |
| | وما يذكرون إلا أن يشاء الله هو أهل التقوى وأهل المغفرة | ٥٦ | ك « | ٧٤ |
| | فوقاهم الله شر ذلك اليوم ولقاهم نضرة وسرورا | ٢١ | م الإنسان | ٧٦ |
| | وما تشاءون إلا أن يشاء الله إن الله كان عليما حكيما | ٣٠ | م « | ٧٦ |
| | فأخذه الله نكال الآخرة والأولى ... ... ... ... | ٢٥ | ك النازعات | ٧٩ |
| | وما تشاءون إلا أن يشاء الله رب العالمين ... ... | ٢٩ | ك التكوير | ٨١ |
| | بل الذين كفروا يكذبون . والله أعلم بما يوعون | ٢٣ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| | الذي له ملك السموات والأرض والله على كل شيء شهيد | ٩ | ك البروج | ٨٥ |
| | بل الذين كفروا في تكذيب . والله من ورائهم محيط | ٢٠ | ك « | ٨٥ |
| | إلا ما شاء الله إنه يعلم الجهر وما يخفى ... ... ... | ٧ | ك الأعلى | ٨٧ |
| | إلا من تولى وكفر . فيعذبه الله العذاب الأكبر | ٢٤ | ك الغاشية | ٨٨ |
| | أليس الله بأحكم الحاكمين ... ... ... ... ... | ٨ | ك التين | ٩٥ |
| | رضي الله عنهم ورضوا عنه ذلك لمن خشي ربه | ٨ | م البينة | ٩٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | قل هو الله أحد ... ... ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الإخلاص | ١١٢ |
| | الله الصمـد ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢ | ك « | ١١٢ |
| الله: | يخادعون الله والذين آمنوا وما يخدعون إلا أنفسهم | ٩ | م البقـرة | ٢ |
| (٥٩٢) | لذهب بسمعهم وأبصارهم إن الله على كل شيء قدير | ٢٠ | م « | ٢ |
| | إن الله لا يستحيي أن يضرب مثلا ما بعوضة فما فوقها | ٢٦ | م « | ٢ |
| | وإذ قلتم يا موسى لن نؤمن لك حتى نرى الله جهرة | ٥٥ | م « | ٢ |
| | وإذ قال موسى لقومه إن الله يأمركم أن تذبحوا بقرة | ٦٧ | م « | ٢ |
| | أولا يعلمون أن الله يعلم ما يسرون وما يعلنون | ٧٧ | م « | ٢ |
| | وإذ أخذنا ميثاق بني إسرائيل لا تعبدون إلا الله | ٨٣ | م « | ٢ |
| | من كان عدوا لله وملائكته ورسله وجبريل وميكال فإن الله | ٩٨ | م « | ٢ |
| | ألم تعلم أن الله على كل شيء قدير ... ... ... ... | ١٠٦ | م « | ٢ |
| | ألم تعلم أن الله له ملك السموات والأرض... ... | ١٠٧ | م « | ٢ |
| | حتى يأتي الله بأمره إن الله على كل شيء قدير | ١٠٩ | م « | ٢ |
| | تجدوه عند الله إن الله بما تعملون بصير ... ... | ١١٠ | م « | ٢ |
| | فأينما تولوا فثم وجه الله إن الله واسع عليم ... ... | ١١٥ | م « | ٢ |
| | إن الله اصطفى لكم الدين فلا تموتن إلا وأنتم مسلمون | ١٣٢ | م « | ٢ |
| | وما كان الله ليضيع إيمانكم إن الله بالناس لرءوف رحيم | ١٤٣ | م « | ٢ |
| | أينما تكونوا يأت بكم الله جميعا إن الله على كل شيء قدير | ١٤٨ | م « | ٢ |
| | استعينوا بالصبر والصلاة إن الله مع الصابرين .. ... | ١٥٣ | م « | ٢ |
| | ومن تطوع خيرا فإن الله شاكر عليم ... ... ... | ١٥٨ | م « | ٢ |
| | أن القوة لله جميعا وأن الله شديد العذاب ... ... | ١٦٥ | م « | ٢ |
| | فمن اضطر غير باغ ولا عاد فلا إثم عليه إن الله غفور رحيم | ١٧٣ | م « | ٢ |
| | ذلك بأن الله نزل الكتاب بالحق ... ... ... ... | ١٧٦ | م « | ٢ |
| | فإنما إثمه على الذين يبدلونه إن الله سميع عليم... ... | ١٨١ | م « | ٢ |
| | فأصلح بينهم فلا إثم عليه إن الله غفور رحيم... ... | ١٨٢ | م « | ٢ |
| | ولتكبروا الله على ما هداكم ولعلكم تشكرون ... ... | ١٨٥ | م « | ٢ |
| | وأتوا البيوت من أبوابها واتقوا الله لعلكم تفلحون | ١٨٩ | م « | ٢ |
| | ولا تعتدوا إن الله لا يحب المعتدين ... ... ... | ١٩٠ | م « | ٢ |
| | فإن انتهوا فإن الله غفور رحيم... ... ... ... ... | ١٩٢ | م « | ٢ |
| | فاعتدوا عليه بمثل ما اعتدى عليكم واتقوا الله | ١٩٤ | م « | ٢ |
| | واعلموا أن الله مع المتقين... ... ... ... ... ... | ١٩٤ | م « | ٢ |
| | وأحسنوا إن الله يحب المحسنين ... ... ... ... | ١٩٥ | م « | ٢ |
| | ذلك لمن لم يكن أهله حاضري المسجد الحرام واتقوا الله | ١٩٦ | م « | ٢ |
| | واعلموا أن الله شديد العقاب... ... ... ... ... | ١٩٦ | م « | ٢ |
| | فإذا أفضتم من عرفات فاذكروا الله عند المشعر الحرام | ١٩٨ | م « | ٢ |
| | ثم أفيضوا من حيث أفاض الناس واستغفروا الله | ١٩٩ | م « | ٢ |
| | إن الله غفور رحيم ... ... ... ... ... ... ... | ١٩٩ | م « | ٢ |
| | فاذكروا الله كذكركم آباءكم أو أشد ذكرا ... ... | ٢٠٠ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | واذكروا الله في أيام معدودات ... ... ... ... | ٢٠٣ | م البقـرة | ٢ |
| | واتقوا الله واعلموا أنكم إليه تحشرون ... ... ... | ٢٠٣ | م « | ٢ |
| | ويشهد الله على ما في قلبه وهو ألد الخصام... ... | ٢٠٤ | م « | ٢ |
| | وإذا قيل له اتق الله أخذته العزة بالإثم ... ... | ٢٠٦ | م « | ٢ |
| | من بعد ما جاءتكم البينات فاعلموا أن الله عزيز حكيم | ٢٠٩ | م « | ٢ |
| | ومن يبدل نعمة الله من بعد ما جاءته فإن الله شديد العقاب | ٢١١ | م « | ٢ |
| | وما تفعلوا من خير فإن الله به عليم... ... ... ... | ٢١٥ | م « | ٢ |
| | ولو شاء الله لأعنتكم إن الله عزيز حكيم ... ... | ٢٢٠ | م « | ٢ |
| | إن الله يحب التوابين ويحب المتطهرين ... ... | ٢٢٢ | م « | ٢ |
| | واتقوا الله واعلموا أنكم ملاقوه وبشر المؤمنين | ٢٢٣ | م « | ٢ |
| | ولا تجعلوا الله عرضة لأيمانكم أن تبروا وتتقوا | ٢٢٤ | م « | ٢ |
| | فإن فاءوا فإن الله غفور رحيم ... ... ... ... | ٢٢٦ | م « | ٢ |
| | وإن عزموا الطلاق فإن الله سميع عليم ... ... ... | ٢٢٧ | م « | ٢ |
| | وما أنزل عليكم من الكتاب والحكمة يعظكم به واتقوا الله | ٢٣١ | م « | ٢ |
| | واعلموا أن الله بكل شيء عليم ... ... ... ... | ٢٣١ | م « | ٢ |
| | إذا سلمتم ما آتيتم بالمعروف واتقوا الله... ... ... | ٢٣٣ | م « | ٢ |
| | واعلموا أن الله بما تعملون بصير ... ... ... ... | ٢٣٣ | م « | ٢ |
| | واعلموا أن الله يعلم ما في أنفسكم فاحذروه ... ... | ٢٣٥ | م « | ٢ |
| | واعلموا أن الله غفور حليم ... ... ... ... ... | ٢٣٥ | م « | ٢ |
| | ولا تنسوا الفضل بينكم إن الله بما تعملون بصير | ٢٣٧ | م « | ٢ |
| | فإذا أمنتم فاذكروا الله كما علمكم ما لم تكونوا تعلمون | ٢٣٩ | م « | ٢ |
| | إن الله لذو فضل على الناس ولكن أكثر الناس لا يشكرون | ٢٤٣ | م « | ٢ |
| | وقاتلوا في سبيل الله واعلموا أن الله سميع عليم | ٢٤٤ | م « | ٢ |
| | من ذا الذي يقرض الله قرضا حسنا فيضاعفه له | ٢٤٥ | م « | ٢ |
| | وقال لهم نبيهم إن الله قد بعث لكم طالوت ملكا | ٢٤٧ | م « | ٢ |
| | قال إن الله اصطفاه عليكم وزاده بسطة في العلم والجسم | ٢٤٧ | م « | ٢ |
| | فلما فصل طالوت بالجنود قال إن الله مبتليكم بنهر | ٢٤٩ | م « | ٢ |
| | لفسدت الأرض ولكن الله ذو فضل على العالمين | ٢٥١ | م « | ٢ |
| | ولو شاء الله ما اقتتلوا ولكن الله يفعل ما يريد | ٢٥٣ | م « | ٢ |
| | قال إبراهيم فإن الله يأتي بالشمس من المشرق | ٢٥٨ | م « | ٢ |
| | فلما تبين له قال أعلم أن الله على كل شيء قدير | ٢٥٩ | م « | ٢ |
| | ثم ادعهن يأتينك سعيا واعلم أن الله عزيز حكيم ... | ٢٦٠ | م « | ٢ |
| | ولستم بآخذيه إلا أن تغمضوا فيه واعلموا أن الله غني حميد | ٢٦٧ | م « | ٢ |
| | وما أنفقتم من نفقة أو نذرتم من نذر فإن الله يعلمه | ٢٧٠ | م « | ٢ |
| | ليس عليك هداهم ولكن الله يهدي من يشاء | ٢٧٢ | م « | ٢ |
| | وما تنفقوا من خير فإن الله به عليم ... ... ... | ٢٧٣ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله وذروا ما بقي من الربا | ٢٧٨ | م « | ٢ |
| | فليكتب وليملل الذي عليه الحق وليتق الله ربه | ٢٨٢ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | واتقـوا الله ويعلمكم الله والله بكل شيء عليم | ٢٨٢م | البقـرة | ٢ |
| | فليؤد الذى اؤتمن أمانتـه وليتق الله ربه ... ... | ٢٨٣م | « | ٢ |
| | إن الله لا يخفى عليه شيء فى الأرض ولا فى السماء | ٥ م | آل عمران | ٣ |
| | إنك جامع الناس ليوم لاريب فيه إن الله لايخلف الميعاد | ٩ م | « | ٣ |
| | ومن يكفـر بآيات الله فإن الله سريع الحسـاب | ١٩ م | « | ٣ |
| | قل إن كنتم تحبون الله فاتبعونى يحببكم الله ... ... | ٣١ م | « | ٣ |
| | قل أطيعوا الله والرسول ... ... ... ... ... | ٣٢ م | « | ٣ |
| | فإن تولوا فإن الله لا يحب الكافرين ... ... ... | ٣٢ م | « | ٣ |
| | إن الله اصـطفى آدم ونوحا وآل إبراهيم ... ... | ٣٣ م | « | ٣ |
| | إن الله يرزق من يشاء بغـير حساب ... ... ... | ٣٧ م | « | ٣ |
| | أن الله يبشرك بيحيى مصدقا بكلمة من الله ... ... | ٣٩ م | « | ٣ |
| | إن الله اصطفاك وطهرك واصطفاك على نساء العالمين | ٤٢ م | « | ٣ |
| | إن الله يبشرك بكلمة منه اسمه المسيح عيسى بن مريم | ٤٥ م | « | ٣ |
| | وجئتكم بآية من ربكم فاتقوا الله وأطيعون ... ... | ٥٠ م | « | ٣ |
| | إن الله ربى وربكم فاعبدوه هـذا صراط مستقيم | ٥١ م | « | ٣ |
| | وما من إله إلا الله وإن الله لهـو العزيز الحكيم | ٦٢ م | « | ٣ |
| | فإن تولوا فإن الله عليم بالمفسدين ... ... ... ... | ٦٣ م | « | ٣ |
| | ألا نعبد إلا الله ولا نشرك به شـيئا ... ... ... | ٦٤ م | « | ٣ |
| | بلى من أوفى بعهـده واتقى فإن الله يحب المتقين | ٧٦ م | « | ٣ |
| | إلا الذين تابوا من بعد ذلك وأصلحوا فإن الله غفور رحيم | ٨٩ م | « | ٣ |
| | وما تنفقوا من شيء فإن الله به عليـم ... ... ... | ٩٢ م | « | ٣ |
| | ومن كفر فإن الله غنىّ عن العالمين ... ... ... ... | ٩٧ م | « | ٣ |
| | يأيهـا الذين آمنوا اتقـوا الله حق تقاته ... ... | ١٠٢م | « | ٣ |
| | قـل موتوا بغيظكم إن الله عليم بذات الصـدور | ١١٩م | « | ٣ |
| | لا يضركم كيـدهم شـيئا إن الله بمـا يعملون محيط | ١٢٠م | « | ٣ |
| | وأنتم أذلة فاتقوا الله لعلكم تشكرون ... ... ... | ١٢٣م | « | ٣ |
| | لاتأكلوا الربا أضعافا مضاعفة واتقوا الله لعلكم تفلحون | ١٣٠م | « | ٣ |
| | وأطيعوا الله والرسـول لعلكم ترحمون ... ... ... | ١٣٢م | « | ٣ |
| | أو ظلموا أنفسهم ذكروا الله فاسـتغفروا لذنوبهم | ١٣٥م | « | ٣ |
| | ومن ينقلب على عقبيـه فلن يضر الله شيئا ... ... | ١٤٤م | « | ٣ |
| | ولقد عفا الله عنهم إن الله غفور حليم ... ... ... | ١٥٥م | « | ٣ |
| | فإذا عزمت فتوكل على الله إن الله يحب المتوكلين | ١٥٩م | « | ٣ |
| | قل هو من عنـد أنفسكم إن الله على كل شيء قدير | ١٦٥م | « | ٣ |
| | وأن الله لا يضيع أجر المؤمنين ... ... ... ... | ١٧١م | « | ٣ |
| | إنهم لن يضروا الله شيئا ... ... ... ... ... | ١٧٦م | « | ٣ |
| | لن يضروا الله شيئا ولهم عذاب أليـم ... ... ... | ١٧٧م | « | ٣ |
| | ولكن الله يجتبى من رسله من يشاء ... ... ... ... | ١٧٩م | « | ٣ |
| | لقد سمع الله قول الذين قالوا إن الله فقير ونحن أغنياء | ١٨١م | « | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | ذلك بما قدمت أيديكم وأن الله ليس بظلام للعبيد | ١٨٢م | آل عمران | ٣ |
| | الذين قالوا إن الله عهـد إلينا ألا نؤمن لرسـول | ١٨٣م | « | ٣ |
| | الذين يذكرون الله قياما وقعـودا وعلى جنوبهم | ١٩١م | « | ٣ |
| | أولئك لهم أجرهم عند ربهم إن الله سريع الحساب | ١٩٩م | « | ٣ |
| | اصبروا وصابروا ورابطوا واتقوا الله لعلكم تفلحون | ٢٠٠م | « | ٣ |
| | واتقوا الله الذى تساءلون به والأرحام ... ... | ١ م | النساء | ٤ |
| | إن الله كان عليكم رقيبا ... ... ... ... ... ... | ١ م | « | ٤ |
| | خافوا عليهـم فليتقوا الله وليقولوا قولا سـديدا | ٩ م | « | ٤ |
| | فريضة من الله إن الله كان عليما حكيما ... ... ... | ١١ م | « | ٤ |
| | ومن يطع الله ورسوله يدخله جنات تجرى من تحتها الأنهار | ١٣ م | « | ٤ |
| | ومن يعص الله ورسوله ويتعد حدوده يدخله نارا | ١٤ م | « | ٤ |
| | فأعرضوا عنهما إن الله كان توابا رحيما... ... ... | ١٦ م | « | ٤ |
| | إلا ما قد سلف إن الله كان غفورا رحيما ... ... | ٢٣ م | « | ٤ |
| | فيما تراضيتم به من بعد الفريضة إن الله كان عليما حكيما | ٢٤ م | « | ٤ |
| | ولا تقتلوا أنفسـكم إن الله كان بكم رحيما ... ... | ٢٩ م | « | ٤ |
| | واسألوا الله من فضله ... ... ... ... ... ... | ٣٢ م | « | ٤ |
| | إن الله كان بكل شيء عليما... ... ... ... ... | ٣٢ م | « | ٤ |
| | فآتوهم نصيبهم إن الله كان على كل شيء شهيدا | ٣٣ م | « | ٤ |
| | فلا تبغوا عليهن سبيلا إن الله كان عليا كبيرا... ... | ٣٤ م | « | ٤ |
| | إن يريدا إصلاحا يوفق الله بينهما إن الله كان عليما خبيرا | ٣٥ م | « | ٤ |
| | واعبدوا الله ولا تشركوا به شيئا ... ... ... ... | ٣٦ م | « | ٤ |
| | إن الله لا يحب من كان مختالا فخورا ... ... ... | ٣٦ م | « | ٤ |
| | إن الله لا يظلم مثقال ذرة ... ... ... ... ... ... | ٤٠ م | « | ٤ |
| | لو تسوى بهـم الأرض ولا يكتمون الله حديثـا | ٤٢ م | « | ٤ |
| | فامسحوا بوجوهكم وأيديكم إن الله كان عفوا غفورا | ٤٣ م | « | ٤ |
| | إن الله لا يغفر أن يشرك به ويغفر مادون ذلك لمن يشاء | ٤٨ م | « | ٤ |
| | ليذوقوا العذاب إن الله كان عزيزا حكيما ... ... | ٥٦ م | « | ٤ |
| | إن الله يأمركم أن تؤدوا الأمانات إلى أهلها | ٥٨ م | « | ٤ |
| | إن الله نعما يعظكم به ... ... ... ... ... ... | ٥٨ م | « | ٤ |
| | إن الله كان سميعا بصيرا ... ... ... ... ... ... | ٥٨ م | « | ٤ |
| | يأيهـا الذين آمنوا أطيعوا الله وأطيعوا الرسـول | ٥٩ م | « | ٤ |
| | ولو أنهم إذ ظلموا أنفسهم جاءوك فاستغفروا الله | ٦٤ م | « | ٤ |
| | واستغفر لهم الرسول لوجدوا الله توابا رحيما... ... | ٦٤ م | « | ٤ |
| | ومن يطع الله والرسول فأولئك مع الذين أنعم الله عليهم | ٦٩ م | « | ٤ |
| | من يطع الرسول فقد أطاع الله... ... ... ... ... | ٨٠ م | « | ٤ |
| | إن الله كان على كل شيء حسيبا ... ... ... ... | ٨٦ م | « | ٤ |
| | فتبينوا ان الله كان بمـا تعملون خبيرا ... ... ... | ٩٤ م | « | ٤ |
| | وخذوا حذركم إن الله أعد للكافرين عذابا مهينـا | ١٠٢م | « | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | فاذكروا الله قياما وقعودا وعلى جنوبكم ... ... | ١٠٣ م | النساء | ٤ |
| | واستغفر الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٦ م | » | ٤ |
| | إن الله كان غفورا رحيما ... ... ... ... ... ... | ١٠٦ م | » | ٤ |
| | إن الله لا يحب من كان خوانا أثيما ... ... ... | ١٠٧ م | » | ٤ |
| | فمن يجادل الله عنهم يوم القيامة أم من يكون عليهم وكيلا | ١٠٩ م | » | ٤ |
| | ومن يعمل سوءا أو يظلم نفسه ثم يستغفر الله ... | ١١٠ م | » | ٤ |
| | يجد الله غفورا رحيما ... ... ... ... ... ... | ١١٠ م | » | ٤ |
| | إن الله لا يغفر أن يشرك به ويغفر ما دون ذلك لمن يشاء | ١١٦ م | » | ٤ |
| | وما تفعلوا من خير فإن الله كان به عليما ... ... ... | ١٢٧ م | » | ٤ |
| | وإن تحسنوا وتتقوا فإن الله كان بما تعملون خبيرا | ١٢٨ م | » | ٤ |
| | وإن تصلحوا وتتقوا فإن الله كان غفورا رحيما | ١٢٩ م | » | ٤ |
| | الذين أوتوا الكتاب من قبلكم وإياكم أن اتقوا الله | ١٣١ م | » | ٤ |
| | وإن تلووا أو تعرضوا فإن الله كان بما تعملون خبيرا | ١٣٥ م | » | ٤ |
| | إن الله جامع المنافقين والكافرين في جهنم جميعا | ١٤٠ م | » | ٤ |
| | إن المنافقين يخادعون الله وهو خادعهم ... ... | ١٤٢ م | » | ٤ |
| | يراءون الناس ولا يذكرون الله إلا قليلا ... ... | ١٤٢ م | » | ٤ |
| | أو تعفوا عن سوء فإن الله كان عفوا قديرا ... ... | ١٤٩ م | » | ٤ |
| | فقالوا أرنا الله جهرة فأخذتهم الصاعقة بظلمهم | ١٥٣ م | » | ٤ |
| | غير محلي الصيد وأنتم حرم إن الله يحكم ما يريد ... | ١ م | المائدة | ٥ |
| | ولا تعاونوا على الإثم والعدوان واتقوا الله ... ... | ٢ م | » | ٥ |
| | إن الله شديد العقاب ... ... ... ... ... ... | ٢ م | » | ٥ |
| | فمن اضطر في مخمصة غير متجانف لإثم فإن الله غفور رحيم | ٣ م | » | ٥ |
| | واذكروا اسم الله عليه واتقوا الله ... ... ... ... | ٤ م | » | ٥ |
| | إن الله سريع الحساب ... ... ... ... ... ... | ٤ م | » | ٥ |
| | إذ قلتم سمعنا وأطعنا واتقوا الله ... ... ... ... | ٧ م | » | ٥ |
| | إن الله عليم بذات الصدور ... ... ... ... ... | ٧ م | » | ٥ |
| | اعدلوا هو أقرب للتقوى واتقوا الله ... ... ... | ٨ م | » | ٥ |
| | إن الله خبير بما تعملون ... ... ... ... ... ... | ٨ م | » | ٥ |
| | واتقوا الله وعلى الله فليتوكل المؤمنون ... ... ... | ١١ م | » | ٥ |
| | وأقرضتم الله قرضا حسنا لأكفرن عنكم سيئاتكم | ١٢ م | » | ٥ |
| | فاعف عنهم واصفح إن الله يحب المحسنين ... ... | ١٣ م | » | ٥ |
| | لقد كفر الذين قالوا إن الله هو المسيح ابن مريم | ١٧ م | » | ٥ |
| | ما أنا بباسط يدي إليك لأقتلك إني أخاف الله رب العالمين | ٢٨ م | » | ٥ |
| | إنما جزاء الذين يحاربون الله ورسوله ... ... ... | ٣٣ م | » | ٥ |
| | من قبل أن تقدروا عليهم فاعلموا أن الله غفور رحيم | ٣٤ م | » | ٥ |
| | يا أيها الذين آمنوا اتقوا الله وابتغوا إليه الوسيلة | ٣٥ م | » | ٥ |
| | فمن تاب من بعد ظلمه وأصلح فإن الله يتوب عليه | ٣٩ م | » | ٥ |
| | إن الله غفور رحيم ... ... ... ... ... ... | ٣٩ م | » | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | ألم تعلم أن الله له ملك السموات والأرض ... ... | ٤٠ م | المائدة | ٥ |
| | وإن حكمت فاحكم بينهم بالقسط إن الله يحب المقسطين | ٤٢ م | » | ٥ |
| | ومن يتولهم منكم فإنه منهم إن الله لا يهدي القوم الظالمين | ٥١ م | » | ٥ |
| | ومن يتول الله ورسوله والذين آمنوا فإن حزب الله | ٥٦ م | » | ٥ |
| | واتقوا الله إن كنتم مؤمنين ... ... ... ... ... | ٥٧ م | » | ٥ |
| | والله يعصمك من الناس إن الله لا يهدي القوم الكافرين | ٦٧ م | » | ٥ |
| | لقد كفر الذين قالوا إن الله هو المسيح ابن مريم | ٧٢ م | » | ٥ |
| | وقال المسيح يا بني إسرائيل اعبدوا الله ربي وربكم | ٧٢ م | » | ٥ |
| | لقد كفر الذين قالوا إن الله ثالث ثلاثة ... ... | ٧٣ م | » | ٥ |
| | ولا تعتدوا إن الله لا يحب المعتدين ... ... ... | ٨٧ م | » | ٥ |
| | واتقوا الله الذي أنتم به مؤمنون ... ... ... ... | ٨٨ م | » | ٥ |
| | وأطيعوا الله وأطيعوا الرسول واحذروا ... ... ... | ٩٢ م | » | ٥ |
| | واتقوا الله الذي إليه تحشرون ... ... ... ... ... | ٩٦ م | » | ٥ |
| | ذلك لتعلموا أن الله يعلم ما في السموات وما في الأرض | ٩٧ م | » | ٥ |
| | وأن الله بكل شيء عليم ... ... ... ... ... ... | ٩٧ م | » | ٥ |
| | اعلموا أن الله شديد العقاب ... ... ... ... ... | ٩٨ م | » | ٥ |
| | وأن الله غفور رحيم ... ... ... ... ... ... ... | ٩٨ م | » | ٥ |
| | فاتقوا الله يا أولي الألباب لعلكم تفلحون ... ... | ١٠٠ م | » | ٥ |
| | واتقوا الله واسمعوا والله لا يهدي القوم الفاسقين | ١٠٨ م | » | ٥ |
| | قال اتقوا الله إن كنتم مؤمنين ... ... ... ... ... | ١١٢ م | » | ٥ |
| | ما قلت لهم إلا ما أمرتني به أن اعبدوا الله ربي وربكم | ١١٧ م | » | ٥ |
| | قل إن الله قادر على أن ينزل آية ... ... ... ... | ٣٧ ك | الأنعام | ٦ |
| | وما قدروا الله حق قدره إذ قالوا ما أنزل الله على بشر | ٩١ م | » | ٦ |
| | إن الله فالق الحب والنوى يخرج الحي من الميت | ٩٥ ك | » | ٦ |
| | ولا تسبوا الذين يدعون من دون الله فيسبوا الله عدوا | ١٠٨ ك | » | ٦ |
| | ليضل الناس بغير علم إن الله لا يهدي القوم الظالمين | ١٤٤ ك | » | ٦ |
| | قل هلم شهداءكم الذين يشهدون أن الله حرم هذا | ١٥٠ ك | » | ٦ |
| | قل إن الله لا يأمر بالفحشاء أتقولون على الله ما لا تعلمون | ٢٨ ك | الأعراف | ٧ |
| | قالوا إن الله حرمهما على الكافرين ... ... ... ... | ٥٠ ك | » | ٧ |
| | فقال يا قوم اعبدوا الله ما لكم من إله غيره ... ... | ٥٩ ك | » | ٧ |
| | يا قوم اعبدوا الله ما لكم من إله غيره أفلا تتقون | ٦٥ ك | » | ٧ |
| | قالوا أجئتنا لنعبد الله وحده ونذر ما كان يعبد آباؤنا | ٧٠ ك | » | ٧ |
| | اعبدوا الله ما لكم من إله غيره قد جاءتكم بينة من ربكم | ٧٣ ك | » | ٧ |
| | اعبدوا الله ما لكم من إله غيره قد جاءتكم بينة من ربكم | ٨٥ ك | » | ٧ |
| | دعوا الله ربهما لئن آتيتنا صالحا لنكونن من الشاكرين | ١٨٩ ك | » | ٧ |
| | يسئلونك عن الأنفال قل الأنفال لله والرسول فاتقوا الله | ١ م | الأنفال | ٨ |
| | وأصلحوا ذات بينكم وأطيعوا الله ورسوله إن كنتم مؤمنين | ١ م | » | ٨ |
| | وما النصر إلا من عند الله إن الله عزيز حكيم | ١٠ م | » | ٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله | ذلك بأنهم شاقوا الله ورسوله ... ... ... ... ... | ١٣ م | الأنفال | ٨ |
| | ومن يشاقق الله ورسوله ... ... ... ... ... ... | ١٣ م | » | ٨ |
| | فإن الله شديد العقاب ... ... ... ... ... ... | ١٣ م | » | ٨ |
| | فلم تقتلوهم ولكن الله قتلهم ... ... ... ... ... | ١٧ م | » | ٨ |
| | وما رميت إذ رميت ولكن الله رمى... ... ... ... | ١٧ م | » | ٨ |
| | وليبلى المؤمنين منه بلاء حسنا إن الله سميع عليم | ١٧ م | » | ٨ |
| | ذلكم وأن الله موهن كيد الكافرين... ... ... ... | ١٨ م | » | ٨ |
| | ولن تغنى عنكم فئتكم شيئا ولوكثرت وأن الله مع المؤمنين | ١٩ م | » | ٨ |
| | يأيها الذين آمنوا أطيعوا الله ورسوله ولا تولوا عنه | ٢٠ م | » | ٨ |
| | واعلموا أن الله يحول بين المرء وقلبه وأنه إليه تحشرون | ٢٤ م | » | ٨ |
| | واعلموا أن الله شديد العقاب ... ... ... ... ... | ٢٥ م | » | ٨ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تخونوا الله والرسول وتخونوا أماناتكم | ٢٧ م | » | ٨ |
| | واعلموا أنما أموالكم وأولادكم فتنة وأن الله عنده أجر عظيم | ٢٨ م | » | ٨ |
| | يأيها الذين آمنوا إن تتقوا الله يجعل لكم فرقانا | ٢٩ م | » | ٨ |
| | فإن انتهوا فإن الله بما يعملون بصير ... ... ... | ٣٩ م | » | ٨ |
| | وإن تولوا فاعلموا أن الله مولاكم نعم المولى ونعم النصير | ٤٠ م | » | ٨ |
| | ويحيى من حى عن بينة وإن الله لسميع عليم... ... | ٤٢ م | » | ٨ |
| | ولكن الله سلم إنه عليم بذات الصدور ... ... ... | ٤٣ م | » | ٨ |
| | فاثبتوا واذكروا الله كثيرا لعلكم تفلحون ... ... | ٤٥ م | » | ٨ |
| | وأطيعوا الله ورسوله ولا تنازعوا فتفشلوا ... ... | ٤٦ م | » | ٨ |
| | وتذهب ريحكم واصبروا إن الله مع الصابرين | ٤٦ م | » | ٨ |
| | إنى أرى ما لا ترون إنى أخاف الله والله شديد العقاب | ٤٨ م | » | ٨ |
| | ومن يتوكل على الله فإن الله عزيز حكيم ... ... | ٤٩ م | » | ٨ |
| | ذلك بما قدمت أيديكم وأن الله ليس بظلام للعبيد | ٥١ م | » | ٨ |
| | فأخذهم الله بذنوبهم إن الله قوى شديد العقاب | ٥٢ م | » | ٨ |
| | ذلك بأن الله لم يك مغيرا نعمة أنعمها على قوم | ٥٣ م | » | ٨ |
| | حتى يغيروا ما بأنفسهم وأن الله سميع عليم ... ... | ٥٣ م | » | ٨ |
| | فانبذ إليهم على سواء إن الله لا يحب الخائنين ... | ٥٨ م | » | ٨ |
| | ما ألفت بين قلوبهم ولكن الله ألف بينهم ... ... | ٦٣ م | » | ٨ |
| | فكلوا مما غنمتم حلالا طيبا واتقوا الله ... ... | ٦٩ م | » | ٨ |
| | إن الله غفور رحيم ... ... ... ... ... ... | ٦٩ م | » | ٨ |
| | وإن يريدوا خيانتك فقد خانوا الله من قبل ... | ٧١ م | » | ٨ |
| | بعضهم أولى ببعض فى كتاب الله إن الله بكل شىء عليم | ٧٥ م | » | ٨ |
| | واعلموا أنكم غير معجزى الله وأن الله مخزى الكافرين | ٢ م | التوبة | ٩ |
| | إلى الناس يوم الحج الأكبر أن الله برىء من المشركين | ٣ م | » | ٩ |
| | فأتموا إليهم عهدهم إلى مدتهم إن الله يحب المتقين | ٤ م | » | ٩ |
| | وآتوا الزكاة فخلوا سبيلهم إن الله غفور رحيم ... | ٥ م | » | ٩ |
| | فما استقاموا لكم فاستقيموا لهم إن الله يحب المتقين | ٧ م | » | ٩ |
| الله | وأقام الصلاة وآتى الزكاة ولم يخش إلا الله... ... | ١٨ م | التوبة | ٩ |
| | خالدين فيها أبدا إن الله عنده أجر عظيم ... ... ... | ٢٢ م | » | ٩ |
| | يغنيكم الله من فضله إن شاء إن الله عليم حكيم ... | ٢٨ م | » | ٩ |
| | كما يقاتلونكم كافة واعلموا أن الله مع المتقين | ٣٦ م | » | ٩ |
| | إذ هما فى الغار إذ يقول لصاحبه لا تحزن إن الله معنا | ٤٠ م | » | ٩ |
| | ألم يعلموا أنه من يحادد الله ورسوله فأن له نار جهنم | ٦٣ م | » | ٩ |
| | قل استهزئوا إن الله مخرج ما تحذرون ... ... ... | ٦٤ م | » | ٩ |
| | نسوا الله فنسيهم إن المنافقين هم الفاسقون ... ... | ٦٧ م | » | ٩ |
| | ويقيمون الصلاة ويؤتون الزكاة ويطيعون الله ورسوله | ٧١ م | » | ٩ |
| | أولئك سيرحمهم الله إن الله عزيز حكيم ... ... ... | ٧١ م | » | ٩ |
| | ومنهم من عاهد الله لئن آتانا من فضله لنصدقن ... | ٧٥ م | » | ٩ |
| | بما أخلفوا الله ما وعدوه وبما كانوا يكذبون ... | ٧٧ م | » | ٩ |
| | ألم يعلموا أن الله يعلم سرهم ونجواهم ... ... ... | ٧٨ م | » | ٩ |
| | وأن الله علام الغيوب ... ... ... ... ... ... | ٧٨ م | » | ٩ |
| | وقعد الذين كذبوا الله ورسوله ... ... ... ... ... | ٩٠ م | » | ٩ |
| | فإن ترضوا عنهم فإن الله لا يرضى عن القوم الفاسقين | ٩٦ م | » | ٩ |
| | سيدخلهم الله فى رحمته إن الله غفور رحيم ... ... | ٩٩ م | » | ٩ |
| | عسى الله أن يتوب عليهم إن الله غفور رحيم ... | ١٠٢ م | » | ٩ |
| | ألم يعلموا أن الله هو يقبل التوبة عن عباده ... | ١٠٤ م | » | ٩ |
| | ويأخذ الصدقات وأن الله هو التواب الرحيم ... | ١٠٤ م | » | ٩ |
| | وتفريقا بين المؤمنين وإرصادا لمن حارب الله ورسوله | ١٠٧ م | » | ٩ |
| | إن الله اشترى من المؤمنين أنفسهم وأموالهم ... | ١١١ م | » | ٩ |
| | حتى يبين لهم ما يتقون إن الله بكل شىء عليم | ١١٥ م | » | ٩ |
| | إن الله له ملك السموات والأرض يحيى ويميت | ١١٦ م | » | ٩ |
| | ثم تاب عليهم ليتوبوا إن الله هو التواب الرحيم | ١١٨ م | » | ٩ |
| | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله وكونوا مع الصادقين | ١١٩ م | » | ٩ |
| | إلا كتب لهم به عمل صالح إن الله لا يضيع أجر المحسنين | ١٢٠ م | » | ٩ |
| | وليجدوا فيكم غلظة واعلموا أن الله مع المتقين ... | ١٢٣ م | » | ٩ |
| | قل أتنبئون الله بما لا يعلم فى السموات ولا فى الأرض | ١٨ ك | يونس | ١٠ |
| | وظنوا أنهم أحيط بهم دعوا الله مخلصين له الدين | ٢٢ ك | » | ١٠ |
| | إن الظن لا يغنى من الحق شيئا إن الله عليم بما يفعلون | ٣٦ ك | » | ١٠ |
| | إن الله لا يظلم الناس شيئا ولكن الناس أنفسهم يظلمون | ٤٤ ك | » | ١٠ |
| | إن الله لذو فضل على الناس ولكن أكثرهم لا يشكرون | ٦٠ ك | » | ١٠ |
| | قال موسى ما جئتم به السحر إن الله سيبطله ... ... | ٨١ ك | » | ١٠ |
| | إن الله لا يصلح عمل المفسدين ... ... ... ... ... | ٨١ ك | » | ١٠ |
| | ولكن أعبد الله الذى يتوفاكم ... ... ... ... ... | ١٠٤ ك | » | ١٠ |
| | ألا تعبدوا إلا الله إننى لكم منه نذير وبشير ... ... | ٢ ك | هود | ١١ |
| | أن لا تعبدوا إلا الله إنى أخاف عليكم عذاب يوم أليم | ٢٦ ك | » | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | اعبـدوا الله ما لكم من إله غيره إن أنتم إلا مفترون | ٥٠ | ك هـود | ١١ |
| | قال إنى أشهد الله واشهدوا أنى برىء مما تشركون | ٥٤ | ك « | ١١ |
| | اعبدوا الله مالكم من إله غيره هو أنشأكم من الأرض | ٦١ | ك « | ١١ |
| | فاتقوا الله ولا تخزون فى ضيفى أليس منكم رجل رشيد | ٧٨ | ك « | ١١ |
| | اعبدوا الله ما لكم من إله غيره ولا تنقصوا المكيال | ٨٤ | ك « | ١١ |
| | واصبر فإن الله لا يضيع أجر المحسنين... ... ... | ١١٥ | ك « | ١١ |
| | ذلك ليعلم أنى لم أخنه بالغيب وأن الله لا يهدى كيد الخائنين | ٥٢ | ك يوسف | ١٢ |
| | فأوف لنا الكيل وتصدق علينا إن الله يجزى المتصدقين | ٨٨ | ك « | ١٢ |
| | إنه من يتق ويصبر فإن الله لا يضيع أجر المحسنين | ٩٠ | ك « | ١٢ |
| | إن الله لا يغير ما بقوم حتى يغيروا ما بأنفسهم | ١١ | م الرعد | ١٣ |
| | قل إن الله يضل من يشاء ويهدى إليه من أناب | ٢٧ | م « | ١٣ |
| | حتى يأتى وعد الله إن الله لا يخلف الميعاد... ... | ٣١ | م « | ١٣ |
| | قل إنما أمرت أن أعبد الله ولا أشرك به ... ... | ٣٦ | م « | ١٣ |
| | إن تكفروا أنتم ومن فى الأرض جميعا فإن الله لغنى حميد | ٨ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | إن نحن إلا بشر مثلكم ولكن الله يمن على من يشاء من عباده | ١١ | ك « | ١٤ |
| | ألم تر أن الله خلق السموات والأرض بالحق | ١٩ | ك « | ١٤ |
| | إن الله وعدكم وعد الحق ووعدتكم فأخلفتكم ... ... | ٢٢ | ك « | ١٤ |
| | ولا تحسبن الله غافلا عما يعمل الظالمون ... ... | ٤٢ | ك « | ١٤ |
| | فلا تحسبن الله مخلف وعده رسله ... ... ... ... | ٤٧ | ك « | ١٤ |
| | إن الله عزيز ذو انتقام ... ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك « | ١٤ |
| | ليجزى الله كل نفس ما كسبت إن الله سريع الحساب | ٥١ | ك « | ١٤ |
| | قال إن هؤلاء ضيفى فلا تفضحون. واتقوا الله ولا تخزون | ٦٩ | ك الحجر | ١٥ |
| | وإن تعدوا نعمة الله لا تحصوها إن الله لغفور رحيم | ١٨ | ك النحل | ١٦ |
| | لا جرم أن الله يعلم ما يسرون وما يعلنون ... ... | ٢٣ | ك « | ١٦ |
| | ما كنا نعمل من سوء بلى إن الله عليم بما كنتم تعملون | ٢٨ | ك « | ١٦ |
| | ولقد بعثنا فى كل أمة رسولا أن اعبدوا الله ... ... | ٣٦ | ك « | ١٦ |
| | إن تحرص على هداهم فإن الله لا يهدى من يضل | ٣٧ | ك « | ١٦ |
| | لكى لا يعلم بعد علم شيئا إن الله عليم قدير ... ... | ٧٠ | ك « | ١٦ |
| | فلا تضربوا لله الأمثال إن الله يعلم وأنتم لا تعلمون | ٧٤ | ك « | ١٦ |
| | وما أمر الساعة إلا كلمح البصر أو هو أقرب إن الله على كل | ٧٧ | ك « | ١٦ |
| | إن الله يأمر بالعدل والإحسان وإيتاء ذى القربى | ٩٠ | ك « | ١٦ |
| | وقد جعلتم الله عليكم كفيلا ... ... ... ... ... | ٩١ | ك « | ١٦ |
| | إن الله يعلم ما تفعلون ... ... ... ... ... ... | ٩١ | ك « | ١٦ |
| | وأن الله لا يهدى القوم الكافرين ... ... ... ... | ١٠٧ | ك « | ١٦ |
| | فمن اضطر غير باغ ولا عاد فإن الله غفور رحيم | ١١٥ | ك « | ١٦ |
| | إن الله مع الذين اتقوا والذين هم محسنون | ١٢٨ | م « | ١٦ |
| | أو لم يروا أن الله الذى خلق السموات والأرض قادر | ٩٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| | قل ادعوا الله أو ادعوا الرحمن ... ... ... ... | ١١٠ | ك « | ١٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | وإذ اعتزلتموهم وما يعبدون إلا الله فأووا إلى الكهف | ١٦ | ك الكهف | ١٨ |
| | وإن الله ربى وربكم فاعبدوه هذا صراط مستقيم | ٣٦ | ك مريم | ١٩ |
| | ذلك بأن الله هو الحق وأنه يحى الموتى ... ... | ٦ | م الحج | ٢٢ |
| | وأن الساعة آتية لا ريب فيها وأن الله يبعث من فى القبور | ٧ | م « | ٢٢ |
| | ذلك بما قدمت يداك وأن الله ليس بظلام للعبيد | ١٠ | م « | ٢٢ |
| | ومن الناس من يعبد الله على حرف... ... ... ... | ١١ | م « | ٢٢ |
| | إن الله يدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات | ١٤ | م « | ٢٢ |
| | تجرى من تحتها الأنهار إن الله يفعل ما يريد | ١٤ | م « | ٢٢ |
| | وكذلك أنزلناه آيات بينات وأن الله يهدى من يريد | ١٦ | م « | ٢٢ |
| | إن الله يفصل بينهم يوم القيامة ... ... ... ... | ١٧ | م « | ٢٢ |
| | إن الله على كل شىء شهيد ... ... ... ... ... ... | ١٧ | م « | ٢٢ |
| | ألم تر أن الله يسجد له من فى السموات ومن فى الأرض | ١٨ | م « | ٢٢ |
| | ومن يهن الله فما له من مكرم إن الله يفعل ما يشاء | ١٨ | م « | ٢٢ |
| | إن الله يدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات | ٢٣ | م « | ٢٢ |
| | لن ينال الله لحومها ولا دماؤها ولكن يناله التقوى منكم | ٣٧ | م « | ٢٢ |
| | كذلك سخرها لكم لتكبروا الله على ما هداكم ... ... | ٣٧ | م « | ٢٢ |
| | إن الله يدافع عن الذين آمنوا ... ... ... ... | ٣٨ | م « | ٢٢ |
| | إن الله لا يحب كل خوان كفور... ... ... ... | ٣٨ | م « | ٢٢ |
| | أذن للذين يقاتلون بأنهم ظلموا وإن الله على نصرهم لقدير | ٣٩ | م « | ٢٢ |
| | ولينصرن الله من ينصره إن الله لقوى عزيز | ٤٠ | م « | ٢٢ |
| | وإن الله لهاد الذين آمنوا إلى صراط مستقيم | ٥٤ | « | ٢٢ |
| | ليرزقنهم الله رزقا حسنا وإن الله لهو خير الرازقين | ٥٨ | م « | ٢٢ |
| | ليدخلنهم مدخلا يرضونه وإن الله لعليم حليم... ... | ٥٩ | م « | ٢٢ |
| | ثم بغى عليه لينصرنه الله إن الله لعفو غفور... ... | ٦٠ | م « | ٢٢ |
| | ذلك بأن الله يولج الليل فى النهار ... ... ... ... | ٦١ | م « | ٢٢ |
| | ويولج النهار فى الليل وأن الله سميع بصير ... ... | ٦١ | م « | ٢٢ |
| | ذلك بأن الله هو الحق ... ... ... ... ... ... | ٦٢ | م « | ٢٢ |
| | وأن ما يدعون من دونه هو الباطل وأن الله هو العلى الكبير | ٦٢ | م « | ٢٢ |
| | ألم تر أن الله أنزل من السماء ماء فتصبح الأرض مخضرة | ٦٣ | م « | ٢٢ |
| | إن الله لطيف خبير ... ... ... ... ... ... ... | ٦٣ | م « | ٢٢ |
| | له ما فى السموات وما فى الأرض وإن الله لهو الغنى الحميد | ٦٤ | م « | ٢٢ |
| | ألم تر أن الله سخر لكم ما فى الأرض والفلك تجرى | ٦٥ | م « | ٢٢ |
| | إن الله بالناس لرءوف رحيم ... ... ... ... ... | ٦٥ | م « | ٢٢ |
| | ألم تعلم أن الله يعلم ما فى السماء والأرض ... ... | ٧٠ | م « | ٢٢ |
| | ما قدروا الله حق قدره ... ... ... ... ... ... | ٧٤ | م « | ٢٢ |
| | إن الله لقوى عزيز ... ... ... ... ... ... ... | ٧٤ | م « | ٢٢ |
| | الله يصطفى من الملائكة رسلا ومن الناس إن الله سميع بصير | ٧٥ | م « | ٢٢ |
| | يا قوم اعبدوا الله ما لكم من إله غيره أفلا تتقون | ٢٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | يأيها الذين آمنوا اذكروا الله ذكرا كثيرا ... ... | ٤١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | إن تبدوا شيئا أو تخفوه فإن الله كان بكل شيء عليما | ٥٤ | م « | ٣٣ |
| | ولا نسائهن ولا ما ملكت أيمانهن واتقين الله | ٥٥ | م « | ٣٣ |
| | إن الله كان على كل شيء شهيدا... ... ... ... | ٥٥ | م « | ٣٣ |
| | إن الله وملائكته يصلون على النبي ... ... ... ... | ٥٦ | م « | ٣٣ |
| | إن الذين يؤذون الله ورسوله لعنهم الله في الدنيا والآخرة | ٥٧ | م « | ٣٣ |
| | إن الله لعن الكافرين وأعد لهم سعيرا ... ... ... | ٦٤ | م « | ٣٣ |
| | يقولون يا ليتنا أطعنا الله وأطعنا الرسولا ... ... | ٦٦ | م « | ٣٣ |
| | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله وقولوا قولا سديدا | ٧٠ | م « | ٣٣ |
| | ومن يطع الله ورسوله فقد فاز فوزا عظيما ... ... | ٧١ | م « | ٣٣ |
| | يزيد في الخلق مايشاء إن الله على كل شيء قدير | ١ | ك فاطر | ٣٥ |
| | فإن الله يضل من يشاء ويهدى من يشاء ... ... | ٨ | ك « | ٣٥ |
| | فلاتذهب نفسك عليهم حسرات إن الله عليم بما يصنعون | ٨ | ك « | ٣٥ |
| | إن الله يسمع من يشاء وما أنت بمسمع من في القبور | ٢٢ | ك « | ٣٥ |
| | ألم تر أن الله أنزل من السماء ماء فأخرجنا به ثمرات | ٢٧ | ك « | ٣٥ |
| | إنما يخشى الله من عباده العلماء ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٣٥ |
| | إن الله عزيز غفور... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٣٥ |
| | إن الله بعباده لخبير بصير ... ... ... ... ... | ٣١ | ك « | ٣٥ |
| | إن الله عالم غيب السموات والأرض... ... ... | ٣٨ | ك « | ٣٥ |
| | إن الله يمسك السموات والأرض أن تزولا | ٤١ | ك « | ٣٥ |
| | فإذا جاء أجلهم فإن الله كان بعباده بصيرا ... ... | ٤٥ | ك « | ٣٥ |
| | الله ربكم ورب آبائكم الأولين ... ... ... ... ... | ١٢٦ | ك الصافات | ٣٧ |
| | إنا أنزلنا إليك الكتاب بالحق فاعبد الله مخلصا له الدين | ٢ | ك الزمر | ٣٩ |
| | إن الله يحكم بينهم فيما هم فيه يختلفون ... ... ... | ٣ | ك « | ٣٩ |
| | إن الله لا يهدى من هو كاذب كفار ... ... ... | ٣ | ك « | ٣٩ |
| | إن تكفروا فإن الله غني عنكم ... ... ... ... | ٧ | ك « | ٣٩ |
| | قل إني أمرت أن أعبد الله مخلصا له الدين | ١١ | ك « | ٣٩ |
| | قل الله أعبد مخلصا له ديني ... ... ... ... ... | ١٤ | ك « | ٣٩ |
| | ألم تر أن الله أنزل من السماء ماء فسلكه ينابيع | ٢١ | ك « | ٣٩ |
| | أو لم يعلموا أن الله يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر | ٥٢ | م « | ٣٩ |
| | إن الله يغفر الذنوب جميعا إنه هو الغفور الرحيم | ٥٣ | م « | ٣٩ |
| | أو تقول لو أن الله هداني لكنت من المتقين | ٥٧ | ك « | ٣٩ |
| | بل الله فاعبد وكن من الشاكرين ... ... ... ... | ٦٦ | ك « | ٣٩ |
| | وما قدروا الله حق قدره والأرض جميعا قبضته | ٦٧ | ك « | ٣٩ |
| | فادعوا الله مخلصين له الدين ولو كره الكافرون | ١٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | لا ظلم اليوم إن الله سريع الحساب ... ... ... | ١٧ | ك « | ٤٠ |
| | لا يقضون بشيء إن الله هو السميع البصير ... ... | ٢٠ | ك « | ٤٠ |
| | إن الله لا يهدى من هو مسرف كذاب ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٤٠ |
| الله: | وأفوض أمري إلى الله إن الله بصير بالعباد ... ... | ٤٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | إنا كل فيها إن الله قد حكم بين العباد ... ... ... | ٤٨ | ك « | ٤٠ |
| | إن الله لذو فضل على الناس ... ... ... ... ... | ٦١ | ك « | ٤٠ |
| | الرسل من بين أيديهم ومن خلفهم ألا تعبدوا إلا الله | ١٤ | ك فصلت | ٤١ |
| | أو لم يروا أن الله الذي خلقهم هو أشد منهم قوة | ١٥ | ك « | ٤١ |
| | ولكن ظننتم أن الله لا يعلم كثيرا مما تعملون... ... | ٢٢ | ك « | ٤١ |
| | ويستغفرون لمن في الأرض ألا إن الله هو الغفور | ٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ومن يقترف حسنة نزد له فيها حسنا إن الله غفور شكور | ٢٣ | م « | ٤٢ |
| | ولأبين لكم بعض الذي تختلفون فيه فاتقوا الله | ٦٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | إن الله هو ربي وربكم فاعبدوه هذا صراط مستقيم | ٦٤ | ك « | ٤٣ |
| | فآمن واستكبرتم إن الله لا يهدى القوم الظالمين | ١٠ | م الأحقاف | ٤٦ |
| | وهما يستغيثان الله ويلك آمن إن وعد الله حق | ١٧ | ك « | ٤٦ |
| | ألا تعبدوا إلا الله إني أخاف عليكم عذاب يوم عظيم | ٢١ | ك « | ٤٦ |
| | أو لم يروا أن الله الذي خلق السموات والأرض ولم يعي | ٣٣ | ك « | ٤٦ |
| | يأيها الذين آمنوا إن تنصروا الله ينصركم ... ... | ٧ | م محمد | ٤٧ |
| | ذلك بأن الله مولى الذين آمنوا وأن الكافرين لا مولى لهم | ١١ | م « | ٤٧ |
| | إن الله يدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات | ١٢ | م « | ٤٧ |
| | فإذا عزم الأمر فلو صدقوا الله لكان خيرا لهم | ٢١ | م « | ٤٧ |
| | ذلك بأنهم اتبعوا ما أسخط الله وكرهوا رضوانه | ٢٨ | م « | ٤٧ |
| | وشاقوا الرسول من بعد ما تبين لهم الهدى لن يضروا الله | ٣٢ | م « | ٤٧ |
| | يأيها الذين آمنوا أطيعوا الله وأطيعوا الرسول | ٣٣ | م « | ٤٧ |
| | إن الذين يبايعونك إنما يبايعون الله ... .. ... | ١٠ | م الفتح | ٤٨ |
| | ومن أوفى بما عاهد عليه الله فسيؤتيه أجرا عظيما | ١٠ | م « | ٤٨ |
| | ومن يطع الله ورسوله يدخله جنات تجري من تحتها الأنهار | ١٧ | م « | ٤٨ |
| | لا تقدموا بين يدي الله ورسوله واتقوا الله... ... | ١ | م الحجرات | ٤٩ |
| | إن الله سميع عليم ... ... ... ... ... ... ... | ١ | م « | ٤٩ |
| | ولكن الله حبب إليكم الإيمان وزينه في قلوبكم | ٧ | م « | ٤٩ |
| | وأقسطوا إن الله يحب المقسطين ... ... ... ... | ٩ | م « | ٤٩ |
| | فأصلحوا بين أخويكم واتقوا الله لعلكم ترحمون | ١٠ | م « | ٤٩ |
| | أن يأكل لحم أخيه ميتا فكرهتموه واتقوا الله | ١٢ | م « | ٤٩ |
| | إن الله تواب رحيم ... ... ... ... ... ... ... | ١٢ | م « | ٤٩ |
| | إن أكرمكم عند الله أتقاكم إن الله عليم خبير | ١٣ | م « | ٤٩ |
| | وإن تطيعوا الله ورسوله لا يلتكم من أعمالكم شيئا | ١٤ | م « | ٤٩ |
| | إن الله غفور رحيم ... ... ... ... ... ... ... | ١٤ | م « | ٤٩ |
| | قل أتعلمون الله بدينكم والله يعلم ... ... ... ... | ١٦ | م « | ٤٩ |
| | إن الله يعلم غيب السموات والأرض ... ... ... | ١٨ | م « | ٤٩ |
| | إن الله هو الرزاق ذو القوة المتين... ... ... ... | ٥٨ | ك الذاريات | ٥١ |
| | ليخرجكم من الظلمات إلى النور وإن الله بكم لرءوف رحيم | ٩ | م الحديد | ٥٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | من ذا الذى يقرض الله قرضا حسنا فيضاعفه له | ١١ م | الحديد | ٥٧ |
| | اعلموا أن الله يحى الأرض بعد موتها ... ... ... | ١٧ م | » | ٥٧ |
| | وأقرضوا الله قرضا حسنا يضاعف لهم ولهم أجر كريم | ١٨ م | » | ٥٧ |
| | ومن يتول فإن الله هو الغنى الحميد ... ... ... ... | ٢٤ م | » | ٥٧ |
| | وليعلم الله من ينصره ورسله بالغيب إن الله قوى عزيز | ٢٥ م | » | ٥٧ |
| | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله وآمنوا برسوله... ... | ٢٨ م | » | ٥٧ |
| | والله يسمع تحاوركما إن الله سميع بصير ... ... | ١ م | المجادلة | ٥٨ |
| | وإنهم ليقولون منكرا من القول وزورا وإن الله لعفو | ٢ م | » | ٥٨ |
| | إن الذين يحادون الله ورسوله كبتوا ... ... ... | ٥ م | » | ٥٨ |
| | ألم تر أن الله يعلم ما فى السموات وما فى الأرض | ٧ م | » | ٥٨ |
| | ثم ينبئهم بما عملوا يوم القيامة إن الله بكل شىء عليم | ٧ م | » | ٥٨ |
| | واتقوا الله الذى إليه تحشرون ... ... ... ... ... | ٩ م | » | ٥٨ |
| | فإن لم تجدوا فإن الله غفور رحيم ... ... ... ... | ١٢ م | » | ٥٨ |
| | فأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة وأطيعوا الله ورسوله | ١٣ م | » | ٥٨ |
| | إن الذين يحادون الله ورسوله أولئك فى الأذلين | ٢٠ م | » | ٥٨ |
| | كتب الله لأغلبن أنا ورسلى إن الله قوى عزيز | ٢١ م | » | ٥٨ |
| | يوادون من حادّ الله ورسوله ولو كانوا آباءهم | ٢٢ م | » | ٥٨ |
| | ذلك بأنهم شاقوا الله ورسوله... ... ... ... ... | ٤ م | الحشر | ٥٩ |
| | ومن يشاق الله ... ... ... ... ... ... ... | ٤ م | » | ٥٩ |
| | فإن الله شديد العقاب... ... ... ... ... ... | ٤ م | » | ٥٩ |
| | ولكن الله يسلط رسله على من يشاء ... ... ... | ٦ م | » | ٥٩ |
| | وما نهاكم عنه فانتهوا واتقوا الله ... ... ... ... | ٧ م | » | ٥٩ |
| | إن الله شديد العقاب ... ... ... ... ... ... ... | ٧ م | » | ٥٩ |
| | يبتغون فضلا من الله ورضوانا وينصرون الله ورسوله | ٨ م | » | ٥٩ |
| | فلما كفر قال إنى برىء منك إنى أخاف الله رب العالمين | ١٦ م | » | ٥٩ |
| | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله ... ... ... ... ... | ١٨ م | » | ٥٩ |
| | ولتنظر نفس ما قدمت لغد واتقوا الله ... ... ... | ١٨ م | » | ٥٩ |
| | إن الله خبير بما تعملون ... ... ... ... ... ... | ١٨ م | » | ٥٩ |
| | ولا تكونوا كالذين نسوا الله فأنساهم أنفسهم | ١٩ م | » | ٥٩ |
| | أسوة حسنة لمن كان يرجوا الله واليوم الآخر... ... | ٦ م | الممتحنة | ٦٠ |
| | ومن يتول فإن الله هو الغنى الحميد ... ... ... ... | ٦ م | » | ٦٠ |
| | أن تبروهم وتقسطوا إليهم إن الله يحب المقسطين | ٨ م | » | ٦٠ |
| | واتقوا الله الذى أنتم به مؤمنون ... ... ... ... | ١١ م | » | ٦٠ |
| | ولا يعصينك فى معروف فبايعهن واستغفر لهن الله | ١٢ م | » | ٦٠ |
| | إن الله غفور رحيم ... ... ... ... ... ... ... | ١٢ م | » | ٦٠ |
| | إن الله يحب الذين يقاتلون فى سبيله صفا ... ... | ٤ م | الصف | ٦١ |
| | وابتغوا من فضل الله واذكروا الله كثيرا لعلكم تفلحون | ١٠ م | الجمعة | ٦٢ |
| | لن يغفر الله لهم إن الله لا يهدى القوم الفاسقين | ٦ م | المنافقون | ٦٣ |
| الله: | وأطيعوا الله وأطيعوا الرسول فإن توليتم ... ... | ١٢ م | التغابن | ٦٤ |
| | وإن تعفوا وتصفحوا وتغفروا فإن الله غفور رحيم | ١٤ م | » | ٦٤ |
| | فاتقوا الله ما استطعتم واسمعوا وأطيعوا... ... ... | ١٦ م | » | ٦٤ |
| | إن تقرضوا الله قرضا حسنا يضاعفه لكم ... ... | ١٧ م | » | ٦٤ |
| | فطلقوهن لعدتهن وأحصوا العدة واتقوا الله ربكم | ١ م | الطلاق | ٦٥ |
| | لا تدرى لعل الله يحدث بعد ذلك أمرا... ... ... | ١ م | » | ٦٥ |
| | ومن يتق الله يجعل له مخرجا ... ... ... ... ... | ٢ م | » | ٦٥ |
| | إن الله بالغ أمره قد جعل الله لكل شىء قدرا | ٣ م | » | ٦٥ |
| | ومن يتق الله يجعل له من أمره يسرا ... ... ... | ٤ م | » | ٦٥ |
| | ومن يتق الله يكفر عنه سيئاته ويعظم له أجرا... ... | ٥ م | » | ٦٥ |
| | فاتقوا الله يا أولى الألباب ... ... ... ... ... | ١٠ م | » | ٦٥ |
| | يتنزل الأمر بينهن لتعلموا أن الله على كل شىء قدير | ١٢ م | » | ٦٥ |
| | وأن الله قد أحاط بكل شىء علما ... ... ... ... | ١٢ م | » | ٦٥ |
| | وإن تظاهرا عليه فإن الله هو مولاه وجبريل | ٤ م | التحريم | ٦٦ |
| | لا يعصون الله ما أمرهم ويفعلون ما يؤمرون | ٦ م | » | ٦٦ |
| | أن اعبدوا الله واتقوه وأطيعون ... ... ... ... | ٣ ك | نوح | ٧١ |
| | وأنا ظننا أن لن نعجز الله فى الأرض ولن نعجزه | ١٢ ك | الجن | ٧٢ |
| | ومن يعص الله ورسوله فإن له نار جهنم خالدين فيها | ٢٣ ك | » | ٧٢ |
| | وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة وأقرضوا الله قرضا | ٢٠ م | المزمل | ٧٣ |
| | تجدوه عند الله هو خيرا وأعظم أجرا واستغفروا الله | ٢٠ م | » | ٧٣ |
| | إن الله غفور رحيم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ م | » | ٧٣ |
| | وما تشاءون إلا أن يشاء الله إن الله كان عليما حكيما | ٣٠ م | الإنسان | ٧٦ |
| | ألم يعلم بأن الله يرى ... ... ... ... ... ... | ١٤ ك | العلق | ٩٦ |
| | وما أمروا إلا ليعبدوا الله مخلصين له الدين... ... | ٥ م | البينة | ٩٨ |
| الله: | الحمد لله رب العالمين ... ... ... ... ... ... | ٢ ك | الفاتحة | ١ |
| (١١٢٥) | ومن الناس من يقول آمنا بالله وباليوم الآخر | ٨ م | البقرة | ٢ |
| | فلا تجعلوا لله أندادا وأنتم تعلمون ... ... ... ... | ٢٢ م | » | ٢ |
| | وادعوا شهداءكم من دون الله إن كنتم صادقين | ٢٣ م | » | ٢ |
| | الذين ينقضون عهد الله من بعد ميثاقه ... ... ... | ٢٧ م | » | ٢ |
| | كيف تكفرون بالله وكنتم أمواتا فأحياكم ... ... | ٢٨ م | » | ٢ |
| | كلوا واشربوا من رزق الله ولا تعثوا فى الأرض | ٦٠ م | » | ٢ |
| | وضربت عليهم الذلة والمسكنة وباءوا بغضب من الله | ٦١ م | » | ٢ |
| | ذلك بأنهم كانوا يكفرون بآيات الله ... ... ... | ٦١ م | » | ٢ |
| | من آمن بالله واليوم الآخر وعمل صالحا فلهم أجرهم | ٦٢ م | » | ٢ |
| | فلولا فضل الله عليكم ورحمته لكنتم من الخاسرين | ٦٤ م | » | ٢ |
| | قال أعوذ بالله أن أكون من الجاهلين ... ... ... | ٦٧ م | » | ٢ |
| | وإن منها لما يهبط من خشية الله ... ... ... ... | ٧٤ م | » | ٢ |
| | وقد كان فريق منهم يسمعون كلام الله ثم يحرفونه | ٧٥ م | » | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله | يكتبون الكتاب بأيديهم ثم يقولون هذا من عند الله | ٧٩ م | البقـرة | ٢ |
| | قل أتخذتم عند الله عهدا فلن يخلف الله عهده ... | ٨٠ م | » | ٢ |
| | أم تقولون على الله ما لا تعلمون ... ... ... ... ... | ٨٠ م | » | ٢ |
| | ولما جاءهم كتاب من عند الله مصدق لما معهم ... | ٨٩ م | » | ٢ |
| | فلما جاءهم ما عرفوا كفروا به فلعنة الله على الكافرين | ٨٩ م | » | ٢ |
| | قل فلم تقتلون أنبياء الله من قبل إن كنتم مؤمنين ... | ٩١ م | » | ٢ |
| | قل إن كانت لكم الدار الآخرة عند الله خالصة | ٩٤ م | » | ٢ |
| | فإنه نزله على قلبك بإذن الله مصدقا لما بين يديه | ٩٧ م | » | ٢ |
| | من كان عدوا لله وملائكته ورسله وجبريل ... ... | ٩٨ م | » | ٢ |
| | ولما جاءهم رسول من عند الله مصدق لما معهم | ١٠١ م | » | ٢ |
| | نبذ فريق من الذين أوتوا الكتاب كتاب الله ... ... | ١٠١ م | » | ٢ |
| | وما هم بضارين به من أحد إلا بإذن الله ... ... ... | ١٠٢ م | » | ٢ |
| | ولو أنهم آمنوا واتقوا لمثوبة من عند الله خير ... | ١٠٣ م | » | ٢ |
| | وما لكم من دون الله من ولى ولا نصير ... ... ... | ١٠٧ م | » | ٢ |
| | وما تقدموا لأنفسكم من خير تجدوه عند الله ... ... | ١١٠ م | » | ٢ |
| | بلى من أسلم وجهه لله وهو محسن فله أجره ... ... | ١١٢ م | » | ٢ |
| | ومن أظلم ممن منع مساجد الله أن يذكر فيها اسمه | ١١٤ م | » | ٢ |
| | ولله المشرق والمغرب ... ... ... ... ... ... | ١١٥ م | » | ٢ |
| | فأينما تولوا فثم وجه الله ... ... ... ... ... ... | ١١٥ م | » | ٢ |
| | قل إن هدى الله هو الهدى ولئن اتبعت أهواءهم ... | ١٢٠ م | » | ٢ |
| | بعد الذى جاءك من العلم مالك من الله من ولى ولا نصير | ١٢٠ م | » | ٢ |
| | وارزق أهله من الثمرات من آمن منهم بالله واليوم الآخر | ١٢٦ م | » | ٢ |
| | قولوا آمنا بالله وما أنزل إلينا وما أنزل إلى إبراهيم ... | ١٣٦ م | » | ٢ |
| | صبغة الله ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٣٨ م | » | ٢ |
| | ومن أحسن من الله صبغة ونحن له عابدون ... ... | ١٣٨ م | » | ٢ |
| | قل أتحاجوننا فى الله وهو ربنا وربكم ... ... ... | ١٣٩ م | » | ٢ |
| | ومن أظلم ممن كتم شهادة عنده من الله ... ... ... | ١٤٠ م | » | ٢ |
| | قل لله المشرق والمغرب يهدى من يشاء إلى صراط | ١٤٢ م | » | ٢ |
| | ولا تقولوا لمن يقتل فى سبيل الله أموات ... ... | ١٥٤ م | » | ٢ |
| | الذين إذا أصابتهم مصيبة قالوا إنا لله وإنا إليه راجعون | ١٥٦ م | » | ٢ |
| | إن الصفا والمروة من شعائر الله ... ... ... ... | ١٥٨ م | » | ٢ |
| | أولئك عليهم لعنة الله والملائكة والناس أجمعين | ١٦١ م | » | ٢ |
| | ومن الناس من يتخذ من دون الله أندادا ... ... ... | ١٦٥ م | » | ٢ |
| | يحبونهم كحب الله ... ... ... ... ... ... ... | ١٦٥ م | » | ٢ |
| | والذين آمنوا أشد حبا لله ... ... ... ... ... ... | ١٦٥ م | » | ٢ |
| | ولو يرى الذين ظلموا إذ يرون العذاب أن القوة لله | ١٦٥ م | » | ٢ |
| | وأن تقولوا على الله ما لا تعلمون... ... ... ... | ١٦٩ م | » | ٢ |
| | كلوا من طيبات ما رزقناكم واشكروا لله ... ... ... | ١٧٢ م | » | ٢ |
| الله | إنما حرم عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما أهل به لغير الله | ١٧٣ م | البقـرة | ٢ |
| | ولكن البر من آمن بالله واليوم الآخر والملائكة والكتاب | ١٧٧ م | » | ٢ |
| | تلك حدود الله فلا تقربوها ... ... ... ... ... | ١٨٧ م | » | ٢ |
| | وقاتلوا فى سبيل الله الذين يقاتلونكم ولا تعتدوا | ١٩٠ م | » | ٢ |
| | وقاتلوهم حتى لا تكون فتنة ويكون الدين لله ... ... | ١٩٣ م | » | ٢ |
| | وأنفقوا فى سبيل الله ولا تلقوا بأيديكم إلى التهلكة | ١٩٥ م | » | ٢ |
| | وأتموا الحج والعمرة لله ... ... ... ... ... ... | ١٩٦ م | » | ٢ |
| | ومن الناس من يشرى نفسه ابتغاء مرضاة الله | ٢٠٧ م | » | ٢ |
| | وقضى الأمر وإلى الله ترجع الأمور... ... ... ... | ٢١٠ م | » | ٢ |
| | ومن يبدل نعمة الله من بعد ما جاءته فإن الله شديد العقاب | ٢١١ م | » | ٢ |
| | حتى يقول الرسول والذين آمنوا معه متى نصر الله | ٢١٤ م | » | ٢ |
| | ألا إن نصر الله قريب ... ... ... ... ... ... | ٢١٤ م | » | ٢ |
| | قل قتال فيه كبير وصد عن سبيل الله وكفر به والمسجد الحرام | ٢١٧ م | » | ٢ |
| | وإخراج أهله منه أكبر عند الله... ... ... ... ... | ٢١٧ م | » | ٢ |
| | إن الذين آمنوا والذين هاجروا وجاهدوا فى سبيل الله | ٢١٨ م | » | ٢ |
| | أولئك يرجون رحمة الله والله غفور رحيم ... ... | ٢١٨ م | » | ٢ |
| | إن كن يؤمن بالله واليوم الآخر ... ... ... ... | ٢٢٨ م | » | ٢ |
| | إلا أن يخافا ألا يقيما حدود الله ... ... ... ... | ٢٢٩ م | » | ٢ |
| | فإن خفتم ألا يقيما حدود الله فلا جناح عليهما فيما افتدت به | ٢٢٩ م | » | ٢ |
| | تلك حدود الله فلا تعتدوها ... ... ... ... ... | ٢٢٩ م | » | ٢ |
| | ومن يتعد حدود الله فأولئك هم الظالمون ... ... | ٢٢٩ م | » | ٢ |
| | فلا جناح عليهما أن يتراجعا إن ظنا أن يقيما حدود الله | ٢٣٠ م | » | ٢ |
| | وتلك حدود الله يبينها لقوم يعلمون ... ... ... ... | ٢٣٠ م | » | ٢ |
| | ولا تتخذوا آيات الله هزوا ... ... ... ... ... | ٢٣١ م | » | ٢ |
| | واذكروا نعمة الله عليكم وما أنزل عليكم من الكتاب | ٢٣١ م | » | ٢ |
| | ذلك يوعظ به من كان منكم يؤمن بالله واليوم الآخر | ٢٣٢ م | » | ٢ |
| | حافظوا على الصلوات والصلاة الوسطى وقوموا لله قانتين | ٢٣٨ م | » | ٢ |
| | وقاتلوا فى سبيل الله واعلموا أن الله سميع عليم ... | ٢٤٤ م | » | ٢ |
| | إذ قالوا لنبى لهم ابعث لنا ملكا نقاتل فى سبيل الله | ٢٤٦ م | » | ٢ |
| | وما لنا ألا نقاتل فى سبيل الله وقد أخرجنا من ديارنا | ٢٤٦ م | » | ٢ |
| | قال الذين يظنون أنهم ملاقوا الله ... ... ... ... | ٢٤٩ م | » | ٢ |
| | كم من فئة قليلة غلبت فئة كثيرة بإذن الله ... ... | ٢٤٩ م | » | ٢ |
| | فهزموهم بإذن الله وقتل داود جالوت ... ... ... | ٢٥١ م | » | ٢ |
| | ولولا دفع الله الناس بعضهم ببعض لفسدت الأرض | ٢٥١ م | » | ٢ |
| | تلك آيات الله نتلوها عليك بالحق ... ... ... ... | ٢٥٢ م | » | ٢ |
| | فمن يكفر بالطاغوت ويؤمن بالله فقد استمسك بالعروة | ٢٥٦ م | » | ٢ |
| | مثل الذين ينفقون أموالهم فى سبيل الله ... ... ... | ٢٦١ م | » | ٢ |
| | الذين ينفقون أموالهم فى سبيل الله ثم لا يتبعون | ٢٦٢ م | » | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | كالذى ينفق ماله رئاء الناس ولا يؤمن بالله واليوم الآخر | ٢٦٤ م | البقـرة | ٢ |
| | ومثـل الذين ينفقون أموالهم ابتغاء مرضاة الله | ٢٦٥ م | « | ٢ |
| | وما تنفقون إلا ابتغاء وجه الله ... ... ... ... ... | ٢٧٢ م | « | ٢ |
| | للفقراء الذين أحصروا فى سبيل الله ... ... ... | ٢٧٣ م | « | ٢ |
| | فانتهى فله ما سلف وأمره إلى الله ... ... ... ... | ٢٧٥ م | « | ٢ |
| | فإن لم تفعلوا فأذنوا بحرب من الله ورسوله ... ... | ٢٧٩ م | « | ٢ |
| | واتقوا يوما ترجعون فيه إلى الله ... ... ... ... | ٢٨١ م | « | ٢ |
| | ذلكم أقسط عند الله وأقوم للشهادة ... ... ... ... | ٢٨٢ م | « | ٢ |
| | لله ما فى السموات وما فى الأرض ... ... ... ... | ٢٨٤ م | « | ٢ |
| | كل آمن بالله وملائكته وكتبه ورسله ... ... ... | ٢٨٥ م | « | ٢ |
| | إن الذين كفروا بآيات الله لهم عذاب شديد ... ... | ٤ م | آل عمران | ٣ |
| | لن تغنى عنهم أموالهم ولا أولادهم من الله شيئا | ١٠ م | « | ٣ |
| | فئة تقاتل فى سبيل الله وأخرى كافرة يرونهم مثليهم | ١٣ م | « | ٣ |
| | وأزواج مطهرة ورضوان من الله والله بصير بالعباد | ١٥ م | « | ٣ |
| | إن الدين عند الله الإسلام ... ... ... ... ... | ١٩ م | « | ٣ |
| | ومن يكفر بآيات الله فإن الله سريع الحساب | ١٩ م | « | ٣ |
| | فإن حاجوك فقل أسلمت وجهى لله ومن اتبعن | ٢٠ م | « | ٣ |
| | إن الذين يكفرون بآيات الله ويقتلون النبيين... ... | ٢١ م | « | ٣ |
| | يدعون إلى كتاب الله ليحكم بينهم ثم يتولى فريق منهم | ٢٣ م | « | ٣ |
| | ومن يفعل ذلك فليس من الله فى شىء ... ... ... | ٢٨ م | « | ٣ |
| | ويحذركم الله نفسه وإلى الله المصير ... ... ... ... | ٢٨ م | « | ٣ |
| | قال يامريم أنى لك هـذا قالت هو من عنـد الله | ٣٧ م | « | ٣ |
| | أن الله يبشرك بيحيى مصدقا بكلمة من الله وسـيدا | ٣٩ م | « | ٣ |
| | فأنفخ فيه فيكون طيرا بإذن الله... ... ... ... ... | ٤٩ م | « | ٣ |
| | وأبرئ الأكمه والأبرص وأحى الموتى بإذن الله | ٤٩ م | « | ٣ |
| | فلما أحس عيسى منهم الكفر قال من أنصارى إلى الله | ٥٢ م | « | ٣ |
| | قال الحواريون نحن أنصار الله ... ... ... ... ... | ٥٢ م | « | ٣ |
| | آمنا بالله واشهد بأنا مسلمون ... ... ... ... ... | ٥٢ م | « | ٣ |
| | إن مثل عيسى عند الله كمثل آدم... ... ... ... ... | ٥٩ م | « | ٣ |
| | ثم نبتهل فنجعل لعنة الله على الكاذبين ... ... ... | ٦١ م | « | ٣ |
| | ولا يتخـذ بعضنا بعضا أربابا من دون الله ... ... | ٦٤ م | « | ٣ |
| | يأهل الكتاب لم تكفرون بآيات الله وأنتم تشهدون | ٧٠ م | « | ٣ |
| | قل إن الهدى هدى الله أن يؤتى أحد مثل ما أوتيتم | ٧٣ م | « | ٣ |
| | قل إن الفضل بيد الله يؤتيه من يشاء ... ... ... | ٧٣ م | « | ٣ |
| | ويقولون على الله الكذب وهم يعلمون ... ... ... | ٧٥ م | « | ٣ |
| | إن الذين يشترون بعهـد الله وأيمانهم ثمنا قليلا | ٧٧ م | « | ٣ |
| | ويقولون هو من عند الله ... ... ... ... ... ... | ٧٨ م | « | ٣ |
| | وما هو من عند الله... ... ... ... ... ... ... | ٧٨ م | « | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | ويقولون على الله الكذب وهم يعلمون ... ... ... | ٧٨ م | آل عمران | ٣ |
| | ثم يقول للناس كونوا عبادا لى من دون الله ... ... | ٧٩ م | « | ٣ |
| | أفغير دين الله يبغون وله أسلم من فى السموات والأرض | ٨٣ م | « | ٣ |
| | قل آمنا بالله وما أنزل علينا وما أنزل على إبراهيم ... | ٨٤ م | « | ٣ |
| | أولئك جزاؤهم أن عليهم لعنة الله والملائكة ... ... | ٨٧ م | « | ٣ |
| | فمن افترى على الله الكذب من بعـد ذلك ... ... | ٩٤ م | « | ٣ |
| | ولله على النـاس حج البيت من استطاع إليه سـبيلا | ٩٧ م | « | ٣ |
| | قل يأهل الكتاب لم تكفرون بآيات الله ... ... ... | ٩٨ م | « | ٣ |
| | قل يأهل الكتاب لم تصدون عن سبيل الله ... ... | ٩٩ م | « | ٣ |
| | وكيف تكفرون وأنتم تتلى عليكم آيات الله ... ... | ١٠١ م | « | ٤ |
| | ومن يعتصم بالله فقد هـدى إلى صراط مسـتقيم | ١٠١ م | « | ٣ |
| | واعتصموا بحبل الله جميعا ولا تفرقوا ... ... ... | ١٠٣ م | « | ٣ |
| | واذكروا نعمة الله عليكم إذ كنتم أعداء فألف بين قلوبكم | ١٠٣ م | « | ٣ |
| | وأما الذين ابيضت وجوههم ففى رحمة الله ... ... | ١٠٧ م | « | ٣ |
| | تلك آيات الله نتلوها عليك بالحق ... ... ... ... | ١٠٨ م | « | ٣ |
| | ولله ما فى السـموات وما فى الأرض ... ... ... | ١٠٩ م | « | ٣ |
| | وإلى الله ترجع الأمور... ... ... ... ... ... ... | ١٠٩ م | « | ٣ |
| | تأمرون بالمعروف وتنهون عن المنكر وتؤمنون بالله | ١١٠ م | « | ٣ |
| | ضربت عليهم الذلة أين ما ثقفوا إلا بحبل من الله | ١١٢ م | « | ٣ |
| | وحبل من الناس وباءو بغضب من الله ... ... ... | ١١٢ م | « | ٣ |
| | ذلك بأنهم كانوا يكفرون بآيات الله ... ... ... | ١١٢ م | « | ٣ |
| | أمة قائمة يتلون آيات الله آناء الليل وهم يسجدون | ١١٣ م | « | ٣ |
| | يؤمنون بالله واليـوم الآخر ويأمرون بالمعـروف | ١١٤ م | « | ٣ |
| | لن تغنى عنهم أموالهم ولا أولادهم من الله شـيئا | ١١٦ م | « | ٣ |
| | وعلى الله فليتوكل المؤمنون ... ... ... ... ... | ١٢٢ م | « | ٣ |
| | وما النصر إلا من عند الله العزيز الحكيم ... ... ... | ١٢٦ م | « | ٣ |
| | ولله ما فى السموات وما فى الأرض ... ... ... ... | ١٢٩ م | « | ٣ |
| | وما كان لنفس أن تموت إلا بإذن الله كتابا مؤجلا | ١٤٥ م | « | ٣ |
| | فـا وهنوا لمـا أصابهم فى سبيل الله وما ضـعفوا | ١٤٦ م | « | ٣ |
| | سنلقى فى قلوب الذين كفروا الرعب بما أشركوا بالله | ١٥١ م | « | ٣ |
| | يظنون بالله غير الحق ظن الجاهلية ... ... ... ... | ١٥٤ م | « | ٣ |
| | قل إن الأمر كله لله ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٤ م | « | ٣ |
| | ولئن قتلتم فى سبيل الله أو متم ... ... ... ... | ١٥٧ م | « | ٣ |
| | لمغفرة من الله ورحمة خير مما يجمعون ... ... ... | ١٥٧ م | « | ٣ |
| | ولئن متم أو قتلتم لإلى الله تحشرون ... ... ... | ١٥٨ م | « | ٣ |
| | فبما رحمة من الله لنت لهم ... ... ... ... ... | ١٥٩ م | « | ٣ |
| | فإذا عزمت فتوكل على الله إن الله يحب المتوكلين | ١٥٩ م | « | ٣ |
| | وعلى الله فليتوكل المؤمنون ... ... ... ... ... | ١٦٠ م | « | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | أفمن اتبع رضوان الله ... ... ... ... ... ... | ١٦٢م | آل عمران | ٣ |
| | كمن باء بسخط من الله ومأواه جهنم... ... ... | ١٦٢م | » | ٣ |
| | هم درجات عند الله والله بصير بما يعملون ... ... | ١٦٣م | » | ٣ |
| | وما أصابكم يوم التقى الجمعان فبإذن الله... ... ... | ١٦٦م | » | ٣ |
| | وقيل لهم تعالوا قاتلوا فى سبيل الله أو ادفعوا | ١٦٧م | » | ٣ |
| | ولا تحسبن الذين قتلوا فى سبيل الله أمواتا ... ... | ١٦٩م | » | ٣ |
| | يستبشرون بنعمة من الله وفضل... ... ... ... ... | ١٧١م | » | ٣ |
| | الذين استجابوا لله والرسول من بعد ما أصابهم القرح | ١٧٢م | » | ٣ |
| | فانقلبوا بنعمة من الله وفضل لم يمسسهم سوء | ١٧٤م | » | ٣ |
| | واتبعوا رضوان الله والله ذو فضل عظيم ... ... | ١٧٤م | » | ٣ |
| | فآمنوا بالله ورسله وإن تؤمنوا وتتقوا فلكم أجر عظيم | ١٧٩م | » | ٣ |
| | ولله ميراث السموات والأرض... ... ... ... ... | ١٨٠م | » | ٣ |
| | ولله ملك السموات والأرض ... ... ... ... ... | ١٨٩م | » | ٣ |
| | ولأدخلنهم جنات تجرى من تحتها الأنهار ثوابا من عند الله | ١٩٥م | » | ٣ |
| | جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها نزلا من عند الله | ١٩٨م | » | ٣ |
| | وما عند الله خير للأبرار ... ... ... ... ... ... | ١٩٨م | » | ٣ |
| | وإن من أهل الكتاب لمن يؤمن بالله وما أنزل إليكم | ١٩٩م | » | ٣ |
| | وما أنزل إليهم خاشعين لله... ... ... ... ... ... | ١٩٩م | » | ٣ |
| | لا يشترون بآيات الله ثمنا قليلا ... ... ... ... | ١٩٩م | » | ٣ |
| | فإذا دفعتم إليهم أموالهم فأشهدوا عليهم وكفى بالله حسيبا | ٦ م | النساء | ٤ |
| | لا تدرون أيهم أقرب لكم نفعا فريضة من الله | ١١ م | » | ٤ |
| | من بعد وصية يوصى بها أو دين غير مضار وصية من الله | ١٢ م | » | ٤ |
| | تلك حدود الله ومن يطع الله ورسوله يدخله جنات | ١٣ م | » | ٤ |
| | إنما التوبة على الله للذين يعملون السوء بجهالة | ١٧ م | » | ٤ |
| | إلا ما ملكت أيمانكم كتاب الله عليكم ... ... ... | ٢٤ م | » | ٤ |
| | وكان ذلك على الله يسيرا ... ... ... ... ... ... | ٣٠ م | » | ٤ |
| | والذين ينفقون أموالهم رئاء الناس ولا يؤمنون بالله | ٣٨ م | » | ٤ |
| | وماذا عليهم لو آمنوا بالله واليوم الآخر... ... ... | ٣٩ م | » | ٤ |
| | والله أعلم بأعدائكم وكفى بالله وليا... ... ... ... | ٤٥ م | » | ٤ |
| | وكفى بالله نصيرا ... ... ... ... ... ... ... | ٤٥ م | » | ٤ |
| | كما لعنا أصحاب السبت وكان أمر الله مفعولا | ٤٧ م | » | ٤ |
| | ومن يشرك بالله فقد افترى إثما عظيما ... ... ... | ٤٨ م | » | ٤ |
| | انظر كيف يفترون على الله الكذب... ... ... ... | ٥٠ م | » | ٤ |
| | فإن تنازعتم فى شىء فردوه إلى الله والرسول... ... | ٥٩ م | » | ٤ |
| | إن كنتم تؤمنون بالله واليوم الآخر... ... ... ... | ٥٩ م | » | ٤ |
| | ثم جاءوك يحلفون بالله إن أردنا إلا إحسانا وتوفيقا | ٦٢ م | » | ٤ |
| | وما أرسلنا من رسول إلا ليطاع بإذن الله ... ... | ٦٤ م | » | ٤ |
| | ذلك الفضل من الله ... ... ... ... ... ... ... | ٧٠ م | » | ٤ |
| الله: | وكفى بالله عليما... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٠ م | النساء | ٤ |
| | ولئن أصابكم فضل من الله ليقولن ... ... ... ... | ٧٣ م | » | ٤ |
| | فليقاتل فى سبيل الله الذين يشرون الحياة الدنيا | ٧٤ م | » | ٤ |
| | ومن يقاتل فى سبيل الله فيقتل أو يغلب ... ... | ٧٤ م | » | ٤ |
| | وما لكم لا تقاتلون فى سبيل الله والمستضعفين من الرجال | ٧٥ م | » | ٤ |
| | الذين آمنوا يقاتلون فى سبيل الله ... ... ... ... | ٧٦ م | » | ٤ |
| | إذا فريق منهم يخشون الناس كخشية الله أو أشد | ٧٧ م | » | ٤ |
| | وإن تصبهم حسنة يقولوا هذه من عند الله... ... | ٧٨ م | » | ٤ |
| | قل كل من عند الله ... ... ... ... ... ... ... | ٧٨ م | » | ٤ |
| | ما أصابك من حسنة فمن الله ... ... ... ... ... | ٧٩ م | » | ٤ |
| | وأرسلناك للناس رسولا وكفى بالله شهيدا ... ... | ٧٩ م | » | ٤ |
| | فأعرض عنهم وتوكل على الله ... ... ... ... ... | ٨١ م | » | ٤ |
| | وكفى بالله وكيلا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨١ م | » | ٤ |
| | ولو كان من عند غير الله لوجدوا فيه اختلافا كثيرا | ٨٢ م | » | ٤ |
| | ولولا فضل الله عليكم ورحمته لاتبعتم الشيطان... ... | ٨٣ م | » | ٤ |
| | فقاتل فى سبيل الله لا تكلف إلا نفسك... ... | ٨٤ م | » | ٤ |
| | ومن أصدق من الله حديثا... ... ... ... ... ... | ٨٧ م | » | ٤ |
| | فلا تتخذوا منهم أولياء حتى يهاجروا فى سبيل الله | ٨٩ م | » | ٤ |
| | فمن لم يجد فصيام شهرين متتابعين توبة من الله | ٩٢ م | » | ٤ |
| | يأيها الذين آمنوا إذا ضربتم فى سبيل الله فتبينوا | ٩٤ م | » | ٤ |
| | تبتغون عرض الحياة الدنيا فعند الله مغانم كثيرة | ٩٤ م | » | ٤ |
| | والمجاهدون فى سبيل الله بأموالهم وأنفسهم ... ... | ٩٥ م | » | ٤ |
| | قالوا ألم تكن أرض الله واسعة فتهاجروا فيها | ٩٧ م | » | ٤ |
| | ومن يهاجر فى سبيل الله يجد فى الأرض مراغما كثيرا | ١٠٠م | » | ٤ |
| | ومن يخرج من بيته مهاجرا إلى الله ورسوله ... ... | ١٠٠م | » | ٤ |
| | ثم يدركه الموت فقد وقع أجره على الله ... ... ... | ١٠٠م | » | ٤ |
| | فإنهم يألمون كما تألمون وترجون من الله ما لا يرجون | ١٠٤م | » | ٤ |
| | يستخفون من الناس ولا يستخفون من الله ... ... | ١٠٨م | » | ٤ |
| | ولولا فضل الله عليك ورحمته لهمت طائفة منهم | ١١٣م | » | ٤ |
| | وكان فضل الله عليك عظيما... ... ... ... ... ... | ١١٣م | » | ٤ |
| | ومن يفعل ذلك ابتغاء مرضاة الله فسوف نؤتيه أجرا | ١١٤م | » | ٤ |
| | ومن يشرك بالله فقد ضل ضلالا بعيدا ... ... ... | ١١٦م | » | ٤ |
| | ولآمرنهم فليغيرن خلق الله... ... ... ... ... ... | ١١٩م | » | ٤ |
| | ومن يتخذ الشيطان وليا من دون الله فقد خسر | ١١٩م | » | ٤ |
| | وعد الله حقا ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٢٢م | » | ٤ |
| | ومن أصدق من الله قيلا ... ... ... ... ... ... | ١٢٢م | » | ٤ |
| | من يعمل سوءا يجز به ولا يجد له من دون الله وليا | ١٢٣م | » | ٤ |
| | ومن أحسن دينا ممن أسلم وجهه لله وهو محسن | ١٢٥م | » | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله | ولله ما في السموات وما في الأرض وكان الله بكل شيء محيطا | ١٢٦ م | النساء | ٤ |
| | ولله ما في السموات وما في الأرض ... ... ... | ١٣١ م | « | ٤ |
| | وإن تكفروا فإن لله ما في السموات وما في الأرض | ١٣١ م | « | ٤ |
| | ولله ما في السموات وما في الأرض ... ... ... | ١٣٢ م | « | ٤ |
| | وكفى بالله وكيلا ... ... ... ... ... ... ... | ١٣٢ م | « | ٤ |
| | من كان يريد ثواب الدنيا فعند الله ثواب الدنيا والآخرة | ١٣٤ م | « | ٤ |
| | يأيها الذين آمنوا كونوا قوامين بالقسط شهداء لله | ١٣٥ م | « | ٤ |
| | يأيها الذين آمنوا آمنوا بالله ورسوله والكتاب | ١٣٦ م | « | ٤ |
| | ومن يكفر بالله وملائكته وكتبه ورسله ... ... ... | ١٣٦ م | « | ٤ |
| | أيبتغون عندهم العزة فإن العزة لله جميعا ... ... | ١٣٩ م | « | ٤ |
| | إذا سمعتم آيات الله يكفر بها ويستهزأ بها فلا تقعدوا معهم | ١٤٠ م | « | ٤ |
| | فإن كان لكم فتح من الله قالوا ألم نكن معكم | ١٤١ م | « | ٤ |
| | أتريدون أن تجعلوا لله عليكم سلطانا مبينا ... ... | ١٤٤ م | « | ٤ |
| | إلا الذين تابوا وأصلحوا واعتصموا بالله ... ... | ١٤٦ م | « | ٤ |
| | وأخلصوا دينهم لله فأولئك مع المؤمنين ... ... | ١٤٦ م | « | ٤ |
| | إن الذين يكفرون بالله ورسله ... ... ... ... | ١٥٠ م | « | ٤ |
| | ويريدون أن يفرقوا بين الله ورسله ... ... ... | ١٥٠ م | « | ٤ |
| | والذين آمنوا بالله ورسله ولم يفرقوا بين أحد منهم | ١٥٢ م | « | ٤ |
| | فبما نقضهم ميثاقهم وكفرهم بآيات الله ... ... | ١٥٥ م | « | ٤ |
| | وقولهم إنا قتلنا المسيح عيسى ابن مريم رسول الله | ١٥٧ م | « | ٤ |
| | أحلت لهم وبصدهم عن سبيل الله كثيرا ... ... | ١٦٠ م | « | ٤ |
| | والمؤمنون بالله واليوم الآخر أولئك سنؤتيهم أجرا عظيما | ١٦٢ م | « | ٤ |
| | لئلا يكون للناس على الله حجة بعد الرسل ... ... | ١٦٥ م | « | ٤ |
| | أنزله بعلمه والملائكة يشهدون وكفى بالله شهيدا | ١٦٦ م | « | ٤ |
| | إن الذين كفروا وصدوا عن سبيل الله قد ضلوا ضلالا | ١٦٧ م | « | ٤ |
| | إلا طريق جهنم خالدين فيها أبدا وكان ذلك على الله يسيرا | ١٦٩ م | « | ٤ |
| | وإن تكفروا فإن لله ما في السموات والأرض | ١٧٠ م | « | ٤ |
| | لا تغلوا في دينكم ولا تقولوا على الله إلا الحق | ١٧١ م | « | ٤ |
| | إنما المسيح عيسى ابن مريم رسول الله وكلمته | ١٧١ م | « | ٤ |
| | ألقاها إلى مريم وروح منه فآمنوا بالله ورسله | ١٧١ م | « | ٤ |
| | له ما في السموات وما في الأرض وكفى بالله وكيلا | ١٧١ م | « | ٤ |
| | لن يستنكف المسيح أن يكون عبدا لله ... ... ... | ١٧٢ م | « | ٤ |
| | ولا يجدون لهم من دون الله وليا ولا نصيرا ... ... | ١٧٣ م | « | ٤ |
| | فأما الذين آمنوا بالله واعتصموا به فسيدخلهم في رحمة منه | ١٧٥ م | « | ٤ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تحلوا شعائر الله ... ... ... | ٢ م | المائدة | ٥ |
| | وما أهل لغير الله به ... ... ... ... ... ... | ٣ | « | ٥ |
| | فكلوا مما أمسكن عليكم واذكروا اسم الله عليه | ٤ م | « | ٥ |
| | واذكروا نعمة الله عليكم وميثاقه الذي واثقكم به | ٧ م | « | ٥ |
| الله | يأيها الذين آمنوا كونوا قوامين لله شهداء بالقسط | ٨ م | المائدة | ٥ |
| | يأيها الذين آمنوا اذكروا نعمة الله عليكم إذ هم قوم | ١١ م | « | ٥ |
| | واتقوا الله وعلى الله فليتوكل المؤمنون ... ... ... | ١١ م | « | ٥ |
| | قد جاءكم من الله نور وكتاب مبين ... ... ... ... | ١٥ م | « | ٥ |
| | قل فمن يملك من الله شيئا إن أراد أن يهلك المسيح بن مريم | ١٧ م | « | ٥ |
| | ولله ملك السموات والأرض وما بينهما يخلق ما يشاء | ١٧ م | « | ٥ |
| | وقالت اليهود والنصارى نحن أبناء الله وأحباؤه | ١٨ م | « | ٥ |
| | ولله ملك السموات والأرض وما بينهما وإليه المصير | ١٨ م | « | ٥ |
| | يا قوم اذكروا نعمة الله عليكم إذ جعل فيكم أنبياء | ٢٠ م | « | ٥ |
| | وعلى الله فتوكلوا إن كنتم مؤمنين ... ... ... ... | ٢٣ م | « | ٥ |
| | فاقطعوا أيديهما جزاء بما كسبا نكالا من الله | ٣٨ م | « | ٥ |
| | ومن يرد الله فتنته فلن تملك له من الله شيئا ... ... | ٤١ م | « | ٥ |
| | وكيف يحكمونك وعندهم التوراة فيها حكم الله | ٤٣ م | « | ٥ |
| | بما استحفظوا من كتاب الله وكانوا عليه شهداء | ٤٤ م | « | ٥ |
| | إلى الله مرجعكم جميعا فينبئكم بما كنتم فيه تختلفون | ٤٨ م | « | ٥ |
| | ومن أحسن من الله حكما لقوم يوقنون ... ... ... | ٥٠ م | « | ٥ |
| | أهؤلاء الذين أقسموا بالله جهد أيمانهم إنهم لمعكم | ٥٣ م | « | ٥ |
| | يجاهدون في سبيل الله ولا يخافون لومة لائم | ٥٤ م | « | ٥ |
| | ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء والله واسع عليم | ٥٤ م | « | ٥ |
| | ومن يتول الله ورسوله والذين آمنوا فإن حزب الله | ٥٦ م | « | ٥ |
| | هل تنقمون منا إلا أن آمنا بالله وما أنزل إلينا | ٥٩ م | « | ٥ |
| | قل هل أنبئكم بشر من ذلك مثوبة عند الله ... ... | ٦٠ م | « | ٥ |
| | وقالت اليهود يد الله مغلولة غلت أيديهم ... ... | ٦٤ م | « | ٥ |
| | من آمن بالله واليوم الآخر وعمل صالحا فلا خوف | ٦٩ م | « | ٥ |
| | إنه من يشرك بالله فقد حرم الله عليه الجنة... ... | ٧٢ م | « | ٥ |
| | أفلا يتوبون إلى الله ويستغفرونه والله غفور رحيم | ٧٤ م | « | ٥ |
| | قل أتعبدون من دون الله ما لا يملك لكم ضرا ولا نفعا | ٧٦ م | « | ٥ |
| | ولو كانوا يؤمنون بالله والنبي وما أنزل إليه ما اتخذوهم | ٨١ م | « | ٥ |
| | وما لنا لا نؤمن بالله وما جاءنا من الحق ونطمع | ٨٤ م | « | ٥ |
| | ويصدكم عن ذكر الله وعن الصلاة فهل أنتم منتهون | ٩١ م | « | ٥ |
| | ولكن الذين كفروا يفترون على الله الكذب | ١٠٣ م | « | ٥ |
| | إلى الله مرجعكم جميعا فينبئكم بما كنتم تعملون | ١٠٥ م | « | ٥ |
| | فيقسمان بالله إن ارتبتم لا نشتري به ثمنا ... ... | ١٠٦ م | « | ٥ |
| | ولا نكتم شهادة الله إنا إذا لمن الآثمين ... ... | ١٠٦ م | « | ٥ |
| | فيقسمان بالله لشهادتنا أحق من شهادتهما ... ... | ١٠٧ م | « | ٥ |
| | أأنت قلت للناس اتخذوني وأمي إلهين من دون الله | ١١٦ م | « | ٥ |
| | لله ملك السموات والأرض وما فيهن ... ... ... | ١٢٠ م | « | ٥ |
| | الحمد لله الذي خلق السموات والأرض وجعل الظلمات | ١ | الأنعام | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | قل لمن ما فى السموات والأرض قـل لله ... ... | ١٢ ك | الأنعام | ٦ |
| | قل أغير الله أتخـذ وليا فاطر السموات والأرض | ١٤ ك | « | ٦ |
| | أئنكم لتشهدون أن مع الله آلهة أخرى قل لا أشهد | ١٩ ك | « | ٦ |
| | ومن أظلم ممن افـترى على الله كذبا أو كذب بآياته | ٢١ ك | « | ٦ |
| | ثم لم تكن فتنتهم إلا أن قالوا والله ربنا ما كنا مشركين | ٢٣ م | « | ٦ |
| | قد خسر الذين كذبوا بلقاء الله ... ... ... ... ... | ٣١ ك | « | ٦ |
| | فإنهم لا يكذبونك ولكن الظالمين بآيات الله يجحدون | ٣٣ ك | « | ٦ |
| | حتى أتاهم نصرنا ولا مبـدل لكلمات الله ... ... | ٣٤ ك | « | ٦ |
| | قل أرأيتكم إن أتاكم عذاب الله أو أتتكم الساعة | ٤٠ ك | « | ٦ |
| | أغير الله تدعون إن كنتم صادقين ... ... ... ... | ٤٠ ك | « | ٦ |
| | فقطع دابر القوم الذين ظلموا والحمد لله رب العالمين | ٤٥ ك | « | ٦ |
| | وختم على قلوبكم من إله غير الله يأتيكم به ... ... | ٤٦ ك | « | ٦ |
| | قل أرأيتكم إن أتاكم عذاب الله بغتة أو جهرة | ٤٧ ك | « | ٦ |
| | قل لا أقول لكم عنـدى خزائن الله ولا أعلم الغيب | ٥٠ ك | « | ٦ |
| | قل إنى نهيت أن أعبد الذين تدعون من دون الله | ٥٦ ك | « | ٦ |
| | إن الحكم إلا لله يقص الحـق وهو خير الفاصلين | ٥٧ ك | « | ٦ |
| | ثم ردوا إلى الله مولاهم الحق ألا له الحكم ... ... | ٦٢ ك | « | ٦ |
| | ليس لهـا من دون الله ولى ولا شفيع ... ... ... | ٧٠ ك | « | ٦ |
| | قل أندعـوا من دون الله ما لا ينفعنـا ولا يضرنا | ٧١ ك | « | ٦ |
| | قل إن هدى الله هو الهدى وأمرنا لنسلم لرب العالمين | ٧١ ك | « | ٦ |
| | وحاجه قومـه قال أتحاجونى فى الله وقد هـدان | ٨٠ ك | « | ٦ |
| | ولا تخافون أنكم أشركتم بالله ما لم ينزل به عليكم سلطانا | ٨١ ك | « | ٦ |
| | ذلك هدى الله يهدى به من يشاء من عباده ... ... | ٨٨ ك | « | ٦ |
| | ومن أظلم ممن افترى على الله كذبا ... ... ... ... | ٩٣ م | « | ٦ |
| | اليوم تجزون عذاب الهون بما كنتم تقولون على الله | ٩٣ م | « | ٦ |
| | وجعلوا لله شركاء الجن وخلقهم وخرقوا له ... ... | ١٠٠ك | « | ٦ |
| | ولا تسبوا الذين يدعون من دون الله فيسبوا الله عدوا | ١٠٨ك | « | ٦ |
| | وأقسموا بالله جهد أيمانهم لئن جاءتهم آية ليؤمنن بها | ١٠٩ك | « | ٦ |
| | قل إنمـا الآيات عند الله ... ... ... ... ... ... | ١٠٩ك | « | ٦ |
| | أفغير الله أبتغى حكما وهو الذى أنزل إليكم الكتاب | ١١٤م | « | ٦ |
| | وإن تطع أكثر من فى الأرض يضلوك عن سبيل الله | ١١٦ك | « | ٦ |
| | فكلوا مما ذكر اسم الله عليه إن كنتم بآياته مؤمنين | ١١٨ك | « | ٦ |
| | وما لكم ألا تأكلوا مما ذكر اسم الله عليه ... ... | ١١٩ك | « | ٦ |
| | ولا تأكلوا مما لم يذكر اسم الله عليه وإنه لفسق | ١٢١ك | « | ٦ |
| | قالوا لن نؤمن حتى نؤتى مثل ما أوتى رسـل الله | ١٢٤ك | « | ٦ |
| | سيصيب الذين أجرموا صغار عند الله وعذاب شديد | ١٢٤ك | « | ٦ |
| | وجعلوا لله مما ذرأ من الحرث والأنعام نصيبا | ١٣٦ك | « | ٦ |
| | فقالوا هذا لله بزعمهم وهذا لشركائنا ... ... ... | ١٣٦ك | « | ٦ |
| الله: | فما كان لشركائهم فلا يصل إلى الله ... ... ... ... | ١٣٦ك | الأنعام | ٦ |
| | وما كان لله فهو يصل إلى شركائهم ... ... ... ... | ١٣٦ك | « | ٦ |
| | وأنعام لا يذكرون اسم الله عليها افتراء عليه ... ... | ١٣٨ك | « | ٦ |
| | وحرموا ما رزقهم الله افـتراء على الله ... ... ... | ١٤٠ك | « | ٦ |
| | فمن أظلم ممن افترى على الله كذبا ليضل الناس بغير علم | ١٤٤ك | « | ٦ |
| | أو لحم خنزير فإنه رجس أو فسقا أهل لغير الله به | ١٤٥ك | « | ٦ |
| | قل فلله الحجة البالغة فلو شاء لهداكم أجمعين ... ... | ١٤٩ك | « | ٦ |
| | وبعهد الله أوفوا ذلكم وصاكم به لعلكم تذكرون | ١٥٢م | « | ٦ |
| | فمن أظلم ممن كذب بآيات الله وصدف عنها ... ... | ١٥٧ك | « | ٦ |
| | إنما أمرهم إلى الله ثم ينبئهم بما كانوا يفعلون | ١٥٩ك | « | ٦ |
| | قل إن صلاتى ونسكى ومحياى ومماتى لله رب العالمين | ١٦٢ك | « | ٦ |
| | قل أغير الله أبغى ربا وهو رب كل شىء ... ... | ١٦٤ك | « | ٦ |
| | ولباس التقوى ذلك خير ذلك من آيات الله ... ... | ٢٦ ك | الأعراف | ٧ |
| | قل إن الله لا يأمر بالفحشاء أتقولون على الله ما لا تعلمون | ٢٨ ك | « | ٧ |
| | إنهم اتخذوا الشياطين أولياء من دون الله ... ... | ٣٠ ك | « | ٧ |
| | قل من حرم زينة الله التى أخرج لعباده والطيبات من الرزق | ٣٢ ك | « | ٧ |
| | وأن تشركوا بالله ما لم ينزل به سلطانا ... .. ... | ٣٣ ك | « | ٧ |
| | وأن تقولوا على الله ما لا تعلمون ... ... ... ... | ٣٣ ك | « | ٧ |
| | فمن أظلم ممن افـترى على الله كذبا أو كذب بآياته | ٣٧ ك | « | ٧ |
| | قالوا أين ما كنتم تدعون من دون الله... ... ... | ٣٧ ك | « | ٧ |
| | الحمد لله الذى هدانا لهذا وما كنا لنهتدى لولا أن هدانا الله | ٤٣ ك | « | ٧ |
| | فأذن مؤذن بينهم أن لعنة الله على الظالمين ... ... | ٤٤ ك | « | ٧ |
| | الذين يصدون عن سبيل الله ويبغونها عوجا | ٤٥ ك | « | ٧ |
| | إن رحمـة الله قريب من المحسنين ... ... ... ... | ٥٦ ك | « | ٧ |
| | أبلغكم رسالات ربى وأنصح لكم وأعلم من الله ما لا تعلمون | ٦٢ ك | « | ٧ |
| | فاذكروا آلاء الله لعلكم تفلحون ... ... ... ... | ٦٩ ك | « | ٧ |
| | هذه ناقة الله لكم آية ... ... ... ... ... ... ... | ٧٣ ك | « | ٧ |
| | فـذروها تأكل فى أرض الله ولا تمسـوها بسوء | ٧٣ ك | « | ٧ |
| | فاذكروا آلاء الله ولا تعثوا فى الأرض مفسـدين | ٧٤ ك | « | ٧ |
| | وتصدون عن سبيل الله من آمن به وتبغونها عوجا | ٨٦ ك | « | ٧ |
| | قد افترينا على الله كذبا إن عدنا فى ملتكم ... ... | ٨٩ ك | « | ٧ |
| | وسع ربنا كل شىء علما على الله توكلنا ... ... ... | ٨٩ ك | « | ٧ |
| | أفأمنوا مكر الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩٩ ك | « | ٧ |
| | فلا يأمن مكر الله إلا القوم الخاسرون ... ... ... | ٩٩ ك | « | ٧ |
| | حقيق على أن لا أقول على الله إلا الحق ... ... | ١٠٥ك | « | ٧ |
| | قال موسى لقومه استعينوا بالله واصبروا... ... ... | ١٢٨ك | « | ٧ |
| | إن الأرض لله يورثها من يشاء من عباده .. ... | ١٢٨ك | « | ٧ |
| | ألا إنمـا طائرهم عند الله ولكن أكثرهم لا يعلمون | ١٣١ك | « | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | قال أغير الله أبغيكم إلها وهو فضلكم على العالمين | ١٤٠ك | الأعراف | ٧ |
| | قل يأيها الناس إنى رسول الله إليكم جميعا ... ... | ١٥٨ك | « | ٧ |
| | فآمنوا بالله ورسوله النبى الأمى ... ... ... ... | ١٥٨ك | « | ٨ |
| | الذى يؤمن بالله وكلماته واتبعوه لعلكم تهتدون | ١٥٨ك | « | ٧ |
| | ألم يؤخذ عليهم ميثاق الكتاب أن لا يقولوا على الله إلا الحق | ٦٩م | « | ٧ |
| | ولله الأسماء الحسنى فادعوه بها ... ... ... ... | ١٨٠ك | « | ٧ |
| | قل إنما علمها عند الله ولكن أكثر الناس لا يعلمون | ١٨٧ك | « | ٧ |
| | إن الذين تدعون من دون الله عباد أمثالكم ... ... | ١٩٤ك | « | ٧ |
| | وإما ينزغنك من الشيطان نزغ فاستعذ بالله ... ... | ٢٠٠ك | « | ٧ |
| | يسئلونك عن الأنفال قل الأنفال لله والرسول | ١م | الأنفال | ٨ |
| | وما النصر إلا من عند الله إن الله عزيز حكيم | ١٠م | « | ٨ |
| | أو متحيزا إلى فئة فقد باء بغضب من الله ... ... | ١٦م | « | ٨ |
| | إن شر الدواب عند الله الصم البكم الذين لا يعقلون | ٢٢م | « | ٨ |
| | يأيها الذين آمنوا استجيبوا لله وللرسول إذا دعاكم | ٢٤م | « | ٨ |
| | إن الذين كفروا ينفقون أموالهم ليصدوا عن سبيل الله | ٣٦ك | « | ٨ |
| | وقاتلوهم حتى لا تكون فتنة ويكون الدين كله لله | ٣٩م | « | ٨ |
| | واعلموا أنما غنمتم من شىء فأن لله خمسه وللرسول | ٤١م | « | ٨ |
| | إن كنتم آمنتم بالله وما أنزلنا على عبدنا يوم الفرقان | ٤١م | « | ٨ |
| | ليقضى الله أمرا كان مفعولا وإلى الله ترجع الأمور | ٤٤م | « | ٨ |
| | خرجوا من ديارهم بطرا ورئاء الناس ويصدون عن سبيل الله | ٤٧م | « | ٨ |
| | ومن يتوكل على الله فإن الله عزيز حكيم ... ... | ٤٩م | « | ٨ |
| | كفروا بآيات الله فأخذهم الله بذنوبهم ... ... | ٥٢م | « | ٨ |
| | إن شر الدواب عند الله الذين كفروا فهم لا يؤمنون | ٥٥م | « | ٨ |
| | ترهبون به عدو الله وعدوكم وآخرين من دونهم | ٦٠م | « | ٨ |
| | وما تنفقوا من شىء فى سبيل الله يوف إليكم ... ... | ٦٠م | « | ٨ |
| | وإن جنحوا للسلم فاجنح لها وتوكل على الله | ٦١م | « | ٨ |
| | وإن يكن منكم ألف يغلبوا ألفين بإذن الله ... ... | ٦٦م | « | ٨ |
| | لولا كتاب من الله سبق لمسكم فيما أخذتم عذاب عظيم | ٦٨م | « | ٨ |
| | وجاهدوا بأموالهم وأنفسهم فى سبيل الله ... ... | ٧٢م | « | ٨ |
| | والذين آمنوا وهاجروا وجاهدوا فى سبيل الله | ٧٤م | « | ٨ |
| | وأولوا الأرحام بعضهم أولى ببعض فى كتاب الله | ٧٥م | « | ٨ |
| | براءة من الله ورسوله إلى الذين عاهدتم من المشركين | ١م | التوبة | ٩ |
| | واعلموا أنكم غير معجزى الله وأن الله مخزى الكافرين | ٢م | « | ٩ |
| | وأذان من الله ورسوله إلى الناس يوم الحج الأكبر | ٢م | « | ٩ |
| | وإن توليتم فاعلموا أنكم غير معجزى الله ... ... | ٣م | « | ٩ |
| | وإن أحد من المشركين استجارك فأجره حتى يسمع كلام الله | ٦م | « | ٩ |
| | كيف يكون للمشركين عهد عند الله وعند رسوله | ٧م | « | ٩ |
| | اشتروا بآيات الله ثمنا قليلا فصدوا عن سبيله | ٩م | « | ٩ |
| الله: | ولم يتخذوا من دون الله ولا رسوله ولا المؤمنين وليجة | ١٦م | التوبة | ٩ |
| | ما كان للمشركين أن يعمروا مساجد الله ... ... ... | ١٧م | « | ٩ |
| | إنما يعمر مساجد الله ... ... ... ... ... ... | ١٨م | « | ٩ |
| | من آمن بالله واليوم الآخر وأقام الصلاة ... ... | ١٨م | « | ٩ |
| | أجعلتم سقاية الحاج وعمارة المسجد الحرام كمن آمن بالله | ١٩م | « | ٩ |
| | واليوم الآخر وجاهد فى سبيل الله ... ... ... ... | ١٩م | « | ٩ |
| | لا يستوون عند الله والله لا يهدى القوم الظالمين | ١٩م | « | ٩ |
| | الذين آمنوا وهاجروا وجاهدوا فى سبيل الله | ٢٠م | « | ٩ |
| | بأموالهم وأنفسهم أعظم درجة عند الله ... ... ... | ٢٠م | « | ٩ |
| | ومساكن ترضونها أحب إليكم من الله ورسوله | ٢٤م | « | ٩ |
| | قاتلوا الذين لا يؤمنون بالله ولا باليوم الآخر | ٢٩م | « | ٩ |
| | وقالت اليهود عزير ابن الله ... ... ... ... ... | ٣٠م | « | ٩ |
| | وقالت النصارى المسيح ابن الله ... ... ... ... | ٣٠م | « | ٩ |
| | اتخذوا أحبارهم ورهبانهم أربابا من دون الله | ٣١م | « | ٩ |
| | يريدون أن يطفئوا نور الله بأفواههم ... ... ... | ٣٢م | « | ٩ |
| | ليأكلون أموال الناس بالباطل ويصدون عن سبيل الله | ٣٤م | « | ٩ |
| | ولا ينفقونها فى سبيل الله فبشرهم بعذاب أليم | ٣٤م | « | ٩ |
| | إن عدة الشهور عند الله اثنا عشر شهرا ... ... ... | ٣٦م | « | ٩ |
| | فى كتاب الله يوم خلق السموات والأرض ... ... | ٣٦م | « | ٩ |
| | إذا قيل لكم انفروا فى سبيل الله اثاقلتم إلى الأرض | ٣٨م | « | ٩ |
| | وجعل كلمة الذين كفروا السفلى وكلمة الله هى العليا | ٤٠م | « | ٩ |
| | وجاهدوا بأموالكم وأنفسكم فى سبيل الله ... ... | ٤١م | « | ٩ |
| | وسيحلفون بالله لو استطعنا لخرجنا معكم ... ... | ٤٢م | « | ٩ |
| | لا يستأذنك الذين يؤمنون بالله واليوم الآخر ... ... | ٤٤م | « | ٩ |
| | إنما يستأذنك الذين لا يؤمنون بالله واليوم الآخر | ٤٥م | « | ٩ |
| | حتى جاء الحق وظهر أمر الله وهم كارهون ... ... | ٤٨م | « | ٩ |
| | هو مولانا وعلى الله فليتوكل المؤمنون ... ... ... | ٥١م | « | ٩ |
| | وما منعهم أن تقبل منهم نفقاتهم إلا أنهم كفروا بالله | ٥٤م | « | ٩ |
| | ويحلفون بالله إنهم لمنكم وما هم منكم ... ... ... | ٥٦م | « | ٩ |
| | سيؤتينا الله من فضله ورسوله إنا إلى الله راغبون | ٥٩م | « | ٩ |
| | وفى الرقاب والغارمين وفى سبيل الله وابن السبيل | ٦٠م | « | ٩ |
| | فريضة من الله والله عليم حكيم ... ... ... ... | ٦٠م | « | ٩ |
| | قل أذن خير لكم يؤمن بالله ويؤمن للمؤمنين ... ... | ٦١م | « | ٩ |
| | والذين يؤذون رسول الله لهم عذاب أليم ... ... | ٦١م | « | ٩ |
| | يحلفون بالله لكم ليرضوكم ... ... ... ... ... | ٦٢م | « | ٩ |
| | قل أبالله وآياته ورسوله كنتم تستهزءون ... ... ... | ٦٥م | « | ٩ |
| | ورضوان من الله أكبر ذلك هو الفوز العظيم | ٧٢م | « | ٩ |
| | يحلفون بالله ما قالوا ولقد قالوا كلمة الكفر ... ... | ٧٤م | « | ٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله | ظن يغفر الله لهم ذلك بأنهم كفروا بالله ورسوله | ٨٠ م | التوبة | ٩ |
| | فرح المخلفون بمقعدهم خلاف رسول الله ... ... | ٨١ م | « | ٩ |
| | وكرهوا أن يجاهدوا بأموالهم وأنفسهم فى سبيل الله | ٨١ م | « | ٩ |
| | إنهم كفروا بالله ورسوله وماتوا وهم فاسقون | ٨٤ م | « | ٩ |
| | وإذا أنزلت سورة أن آمنوا بالله وجاهدوا مع رسوله | ٨٦ م | « | ٩ |
| | ولا على الذين لايجدون ماينفقون حرج إذا نصحوا لله | ٩١ م | « | ٩ |
| | سيحلفون بالله لكم إذا انقلبتم إليهم لتعرضوا عنهم | ٩٥ م | « | ٩ |
| | ومن الأعراب من يؤمن بالله واليوم الآخر ... ... | ٩٩ م | « | ٩ |
| | ويتخذ ما ينفق قربات عند الله وصلوات الرسول | ٩٩ م | « | ٩ |
| | وآخرون مرجون لأمر الله إما يعذبهم وإما يتوب عليهم | ١٠٦م | « | ٩ |
| | أفمن أسس بنيانه على تقوى من الله ورضوان خير | ١٠٩م | « | ٩ |
| | يقاتلون فى سبيل الله فيقتلون ويقتلون ... ... | ١١١م | « | ٩ |
| | ومن أوفى بعهده من الله فاستبشروا ببيعكم ... ... | ١١١م | « | ٩ |
| | والناهون عن المنكر والحافظون لحدود الله ... ... | ١١٢م | « | ٩ |
| | فلما تبين له أنه عدو لله تبرأ منه ... ... ... ... | ١١٤م | « | ٩ |
| | وما لكم من دون الله من ولى ولا نصير ... ... ... | ١١٦م | « | ٩ |
| | وضاقت عليهم أنفسهم وظنوا أن لا ملجأ من الله إلا إليه | ١١٨م | « | ٩ |
| | أن يتخلفوا عن رسول الله ولا يرغبوا بأنفسهم عن نفسه | ١٢٠م | « | ٩ |
| | ذلك بأنهم لا يصيبهم ظمأ ولا نصب ولا مخمصة فى سبيل الله | ١٢٠م | « | ٩ |
| | إليه مرجعكم جميعا وعد الله حقا... ... ... ... | ٤ ك | يونس | ١٠ |
| | وآخر دعواهم أن الحمد لله رب العالمين ... ... ... | ١٠ ك | « | ١٠ |
| | فمن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو كذب بآياته | ١٧ ك | « | ١٠ |
| | ويعبدون من دون الله ما لا يضرهم ولا ينفعهم | ١٨ ك | « | ١٠ |
| | ويقولون هؤلاء شفعاؤنا عند الله ... ... ... ... | ١٨ ك | « | ١٠ |
| | فقل إنما الغيب لله فانتظروا إنى معكم من المنتظرين | ٢٠ ك | « | ١٠ |
| | ما لهم من الله من عاصم ... ... ... ... ... ... | ٢٧ ك | « | ١٠ |
| | فكفى بالله شهيدا بيننا وبينكم إن كنا عن عبادتكم لغافلين | ٢٩ ك | « | ١٠ |
| | وردوا إلى الله مولاهم الحق وضل عنهم ما كانوا يفترون | ٣٠ ك | « | ١٠ |
| | وما كان هذا القرآن أن يفترى من دون الله... ... | ٣٧ ك | « | ١٠ |
| | وادعوا من استطعتم من دون الله إن كنتم صادقين | ٣٨ ك | « | ١٠ |
| | قد خسر الذين كذبوا بلقاء الله وما كانوا مهتدين | ٤٥ ك | « | ١٠ |
| | ألا إن لله ما فى السموات والأرض ... ... ... | ٥٥ ك | « | ١٠ |
| | ألا إن وعد الله حق ولكن أكثرهم لا يعلمون | ٥٥ ك | « | ١٠ |
| | قل بفضل الله وبرحمته فبذلك فليفرحوا... ... ... | ٥٨ ك | « | ١٠ |
| | قل آلله أذن لكم أم على الله تفترون ... ... ... | ٥٩ ك | « | ١٠ |
| | وما ظن الذين يفترون على الله الكذب يوم القيامة | ٦٠ ك | « | ١٠ |
| | ألا إن أولياء الله لا خوف عليهم ولا هم يحزنون | ٦٢ ك | « | ١٠ |
| | لا تبديل لكلمات الله ذلك هو الفوز العظيم ... ... | ٦٤ ك | « | ١٠ |
| الله | إن العزة لله جميعا هو السميع العليم ... ... ... ... | ٦٥ ك | يونس | ١٠ |
| | ألا إن لله من فى السموات ومن فى الأرض | ٦٦ ك | « | ١٠ |
| | وما يتبع الذين يدعون من دون الله شركاء... ... | ٦٦ ك | « | ١٠ |
| | إن عندكم من سلطان بهذا أتقولون على الله مالا تعلمون | ٦٨ ك | « | ١٠ |
| | قل إن الذين يفترون على الله الكذب لا يفلحون | ٦٩ ك | « | ١٠ |
| | إن كان كبر عليكم مقامى وتذكيرى بآيات الله | ٧١ ك | « | ١٠ |
| | فعلى الله توكلت فأجمعوا أمركم وشركاءكم ... ... | ٧١ ك | « | ١٠ |
| | إن أجرى إلا على الله وأمرت أن أكون من المسلمين | ٧٢ ك | « | ١٠ |
| | يا قوم إن كنتم آمنتم بالله فعليه توكلوا ... ... ... | ٨٤ ك | « | ١٠ |
| | فقالوا على الله توكلنا ربنا لا تجعلنا فتنة للقوم الظالمين | ٨٥ ك | « | ١٠ |
| | ولا تكونن من الذين كذبوا بآيات الله ... ... ... | ٩٥ م | « | ١٠ |
| | وما كان لنفس أن تؤمن إلا بإذن الله... ... ... | ١٠٠ك | « | ١٠ |
| | إن كنتم فى شك من دينى فلا أعبد الذين تعبدون من دون الله | ١٠٤ك | « | ١٠ |
| | ولا تدع من دون الله ما لا ينفعك ولا يضرك | ١٠٦ك | « | ١٠ |
| | إلى الله مرجعكم وهو على كل شىء قدير... ... ... | ٤ ك | هود | ١١ |
| | وما من دابة فى الأرض إلا على الله رزقها... ... | ٦ ك | « | ١١ |
| | وادعوا من استطعتم من دون الله إن كنتم صادقين | ١٣ ك | « | ١١ |
| | فاعلموا أنما أنزل بعلم الله وأن لا إله إلا هو | ١٤ ك | « | ١١ |
| | ومن أظلم ممن افترى على الله كذبا ... ... ... ... | ١٨ ك | « | ١١ |
| | ألا لعنة الله على الظالمين ... ... ... ... ... ... | ١٨ ك | « | ١١ |
| | الذين يصدون عن سبيل الله ويبغونها عوجا... ... | ١٩ ك | « | ١١ |
| | وما كان لهم من دون الله من أولياء ... ... ... | ٢٠ ك | « | ١١ |
| | ويا قوم لا أسألكم عليه مالا إن أجرى إلا على الله | ٢٩ ك | « | ١١ |
| | ويا قوم من ينصرنى من الله إن طردتهم ... ... | ٣٠ ك | « | ١١ |
| | ولا أقول لكم عندى خزائن الله ولا أعلم الغيب | ٣١ ك | « | ١١ |
| | وقال اركبوا فيها بسم الله مجراها ومرساها ... ... | ٤١ ك | « | ١١ |
| | قال لا عاصم اليوم من أمر الله إلا من رحم... ... | ٤٣ ك | « | ١١ |
| | إنى توكلت على الله ربى وربكم ... ... ... ... | ٥٦ ك | « | ١١ |
| | فمن ينصرنى من الله إن عصيته ... ... ... ... ... | ٦٣ ك | « | ١١ |
| | ويا قوم هذه ناقة الله لكم آية... ... ... ... ... | ٦٤ ك | « | ١١ |
| | فذروها تأكل فى أرض الله ولا تمسوها بسوء | ٦٤ ك | « | ١١ |
| | قالوا أتعجبين من أمر الله... ... ... ... ... ... | ٧٣ ك | « | ١١ |
| | رحمة الله وبركاته عليكم أهل البيت ... ... ... ... | ٧٣ ك | « | ١١ |
| | بقية الله خير لكم إن كنتم مؤمنين ... ... ... ... | ٨٦ ك | « | ١١ |
| | وما توفيقى إلا بالله عليه توكلت وإليه أنيب... ... | ٨٨ ك | « | ١١ |
| | أرهطى أعز عليكم من الله واتخذتموه وراءكم ظهريا | ٩٢ ك | « | ١١ |
| | فما أغنت عنهم آلهتهم التى يدعون من دون الله من شىء | ١٠١ك | « | ١١ |
| | وما لكم من دون الله من أولياء ثم لا تنصرون | ١١٣ك | « | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | ويجعلون لله ما يكرهون وتصف ألسنتهم الكذب | ٦٢ | ك النحل | ١٦ |
| | تالله لقد أرسلنا إلى أمم من قبلك فزين لهم الشيطان أعمالهم | ٦٣ | ك « | ١٦ |
| | فهم فيه سواء أفبنعمة الله يجحدون ... ... ... ... | ٧١ | ك « | ١٦ |
| | أفبالباطل يؤمنون وبنعمة الله هم يكفرون ... ... | ٧٢ | ك « | ١٦ |
| | ويعبدون من دون الله مالا يملك لهم رزقا ... ... | ٧٣ | ك « | ١٦ |
| | فلا تضربوا لله الأمثال إن الله يعلم وأنتم لا تعلمون | ٧٤ | ك « | ١٦ |
| | هل يستوون الحمد لله بل أكثرهم لا يعلمون... ... | ٧٥ | ك « | ١٦ |
| | ولله غيب السموات والارض ... ... ... ... ... | ٧٧ | ك « | ١٦ |
| | يعرفون نعمة الله ثم ينكرونها وأكثرهم الكافرون | ٨٣ | ك « | ١٦ |
| | وألقوا إلى الله يومئذ السلم وضل عنهم ما كانوا يفترون | ٨٧ | ك « | ١٦ |
| | الذين كفروا وصدوا عن سبيل الله زدناهم عذابا | ٨٨ | ك « | ١٦ |
| | وأوفوا بعهد الله إذا عاهدتم ... ... ... ... ... | ٩١ | ك « | ١٦ |
| | فتزل قدم بعد ثبوتها وتذوقوا السوء بما صددتم عن سبيل الله | ٩٤ | ك « | ١٦ |
| | ولا تشتروا بعهد الله ثمنا قليلا... ... ... ... ... | ٩٥ | ك « | ١٦ |
| | إنما عند الله هو خير لكم إن كنتم تعلمون ... ... | ٩٥ | ك « | ١٦ |
| | ما عندكم ينفد وما عند الله باق... ... ... ... ... | ٩٦ | ك « | ١٦ |
| | فإذا قرأت القرآن فاستعذ بالله من الشيطان الرجيم | ٩٨ | ك « | ١٦ |
| | إن الذين لا يؤمنون بآيات الله لا يهديهم الله | ١٠٤ | ك « | ١٦ |
| | إنما يفترى الكذب الذين لا يؤمنون بآيات الله | ١٠٥ | ك « | ١٦ |
| | من كفر بالله من بعد إيمانه إلا من أكره وقلبه مطمئن | ١٠٦ | ك « | ١٦ |
| | فعليهم غضب من الله ولهم عذاب عظيم ... ... ... | ١٠٦ | ك « | ١٦ |
| | فكفرت بأنعم الله فأذاقها الله لباس الجوع ... ... | ١١٢ | ك « | ١٦ |
| | واشكروا نعمة الله إن كنتم إياه تعبدون ... ... | ١١٤ | ك « | ١٦ |
| | والدم ولحم الخنزير وما أهل لغير الله به ... ... | ١١٥ | ك « | ١٦ |
| | هذا حلال وهذا حرام لتفتروا على الله الكذب | ١١٦ | ك « | ١٦ |
| | إن الذين يفترون على الله الكذب لا يفلحون | ١١٦ | ك « | ١٦ |
| | إن إبراهيم كان أمة قانتا لله حنيفا... ... ... ... | ١٢٠ | ك « | ١٦ |
| | واصبر وما صبرك إلا بالله ولا تحزن عليهم ... ... | ١٢٧ | م « | ١٦ |
| | لا تجعل مع الله إلها آخر فتقعد مذموما مخذولا | ٢٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ولا تجعل مع الله إلها آخر فتلقى فى جهنم ملوما | ٣٩ | ك « | ١٧ |
| | أو تأتى بالله والملائكة قبيلا ... ... ... ... ... | ٩٢ | ك « | ١٧ |
| | قل كفى بالله شهيدا بينى وبينكم... ... ... ... | ٩٦ | ك « | ١٧ |
| | وقل الحمد لله الذى لم يتخذ ولدا ولم يكن له شريك | ١١١ | ك « | ١٧ |
| | الحمد لله الذى أنزل على عبده الكتاب ... ... ... | ١ | ك الكهف | ١٨ |
| | فمن أظلم ممن افترى على الله كذبا ... ... ... ... | ١٥ | ك « | ١٨ |
| | ذلك من آيات الله من يهد الله فهو المهتد ... ... | ١٧ | ك « | ١٨ |
| | وكذلك أعثرنا عليهم ليعلموا أن وعد الله حق... ... | ٢١ | ك « | ١٨ |
| | ولولا إذ دخلت جنتك قلت ماشاء الله لاقوة إلا بالله | ٣٩ | ك « | ١٨ |
| | ولم تكن له فئة ينصرونه من دون الله وما كان منتصرا | ٤٣ | ك « | ١٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | هنالك الولاية لله الحق هو خير ثوابا وخير عقبا | ٤٤ | ك الكهف | ١٨ |
| | قال إنى عبد الله آتانى الكتاب وجعلنى نبيا... ... | ٣٠ | ك مريم | ١٩ |
| | ما كان لله أن يتخذ من ولد سبحانه... ... ... ... | ٣٥ | ك « | ١٩ |
| | وأعتزلكم وما تدعون من دون الله وأدعوا ربى | ٤٨ | ك « | ١٩ |
| | فلما اعتزلهم وما يعبدون من دون الله وهبنا له إسحق | ٤٩ | ك « | ١٩ |
| | واتخذوا من دون الله آلهة ليكونوا لهم عزا... ... | ٨١ | ك « | ١٩ |
| | قال لهم موسى ويلكم لا تفتروا على الله كذبا... ... | ٦١ | ك طه | ٢٠ |
| | فسبحان الله رب العرش عما يصفون ... ... ... ... | ٢٢ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وتالله لأكيدن أصنامكم بعد أن تولوا مدبرين | ٥٧ | ك « | ٢١ |
| | قال أتعبدون من دون الله مالا ينفعكم شيئا... ... | ٦٦ | ك « | ٢١ |
| | أف لكم ولما تعبدون من دون الله ... ... ... ... | ٦٧ | ك « | ٢١ |
| | إنكم وما تعبدون من دون الله حصب جهنم... ... | ٩٨ | ك « | ٢١ |
| | وماهم بسكارى ولكن عذاب الله شديد ... ... ... | ٢ | م الحج | ٢٢ |
| | ومن الناس من يجادل فى الله بغير علم ويتبع كل شيطان | ٣ | م « | ٢٢ |
| | ومن الناس من يجادل فى الله بغير علم ولا هدى | ٨ | م « | ٢٢ |
| | ثانى عطفه ليضل عن سبيل الله... ... ... ... ... | ٩ | م « | ٢٢ |
| | يدعوا من دون الله مالا يضره وما لا ينفعه... ... | ١٢ | م « | ٢٢ |
| | إن الذين كفروا ويصدون عن سبيل الله والمسجد الحرام | ٢٥ | م « | ٢٢ |
| | ليشهدوا منافع لهم ويذكروا اسم الله فى أيام معلومات | ٢٨ | م « | ٢٢ |
| | ذلك ومن يعظم حرمات الله فهو خير له عند ربه | ٣٠ | م « | ٢٢ |
| | حنفاء لله غير مشركين به ... ... ... ... ... ... | ٣١ | م « | ٢٢ |
| | ومن يشرك بالله فكأنما خر من السماء فتخطفه الطير | ٣١ | م « | ٢٢ |
| | ذلك ومن يعظم شعائر الله فإنها من تقوى القلوب | ٣٢ | م « | ٢٢ |
| | ليذكروا اسم الله على ما رزقهم من بهيمة الأنعام | ٣٤ | م « | ٢٢ |
| | والبدن جعلناها لكم من شعائر الله لكم فيها خير | ٣٦ | م « | ٢٢ |
| | فاذكروا اسم الله عليها صواف... ... ... ... ... | ٣٦ | م « | ٢٢ |
| | ولولا دفع الله الناس بعضهم ببعض لهدمت صوامع | ٤٠ | م « | ٢٢ |
| | وبيع وصلوات ومساجد يذكر فيها اسم الله كثيرا | ٤٠ | م « | ٢٢ |
| | وأمروا بالمعروف ونهوا عن المنكر ولله عاقبة الأمور | ٤١ | م « | ٢٢ |
| | الملك يومئذ لله يحكم بينهم ... ... ... ... ... | ٥٦ | م « | ٢٢ |
| | والذين هاجروا فى سبيل الله ثم قتلوا أو ماتوا ليرزقنهم الله | ٥٨ | م « | ٢٢ |
| | إن ذلك فى كتاب إن ذلك على الله يسير ... ... | ٧٠ | م « | ٢٢ |
| | ويعبدون من دون الله ما لم ينزل به سلطانا ... ... | ٧١ | م « | ٢٢ |
| | إن الذين تدعون من دون الله لن يخلقوا ذبابا ولو اجتمعوا | ٧٣ | م « | ٢٢ |
| | يعلم ما بين أيديهم وما خلفهم وإلى الله ترجع الأمور | ٧٦ | م « | ٢٢ |
| | وجاهدوا فى الله حق جهاده ... ... ... ... ... | ٧٨ | م « | ٢٢ |
| | فأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة واعتصموا بالله هو مولاكم | ٧٨ | م « | ٢٢ |
| | فإذا استويت أنت ومن معك على الفلك فقل الحمد لله | ٢٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله | إن هو إلا رجل افترى على الله كذبا وما نحن له بمؤمنين | ٣٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | سيقولون لله قل أفلا تذكرون ... ... ... ... ... | ٨٥ | ك « | ٢٣ |
| | سيقولون لله قل أفلا تتقون ... ... ... ... ... | ٨٧ | ك « | ٢٣ |
| | سيقولون لله قل فأنى تسحرون ... ... ... ... ... | ٨٩ | ك « | ٢٣ |
| | ولعلا بعضهم على بعض سبحان الله عما يصفون | ٩١ | ك « | ٢٣ |
| | ومن يدع مع الله إلها آخر لا برهان له به فإنما حسابه عند ربه | ١١٧ | ك « | ٢٣ |
| | ولا تأخذكم بهما رأفة فى دين الله ... ... ... ... | ٢ | م النور | ٢٤ |
| | إن كنتم تؤمنون بالله واليوم الآخر ... ... ... ... | ٢ | م « | ٢٤ |
| | فشهادة أحدهم أربع شهادات بالله إنه لمن الصادقين | ٦ | م « | ٢٤ |
| | والخامسة أن لعنة الله عليه إن كان من الكاذبين | ٧ | م « | ٢٤ |
| | ويدرأ عنها العذاب أن تشهد أربع شهادات بالله | ٨ | م « | ٢٤ |
| | والخامسة أن غضب الله عليها إن كان من الصادقين | ٩ | م « | ٢٤ |
| | ولولا فضل الله عليكم ورحمته وأن الله تواب حكيم | ١٠ | م « | ٢٤ |
| | فإذ لم يأتوا بالشهداء فأولئك عند الله هم الكاذبون | ١٣ | م « | ٢٤ |
| | ولولا فضل الله عليكم ورحمته فى الدنيا والآخرة لمسكم فى ما أفضتم فيه عذاب عظيم ... ... ... ... | ١٤ | م « | ٢٤ |
| | وتحسبونه هينا وهو عند الله عظيم ... ... ... ... | ١٥ | م « | ٢٤ |
| | ولولا فضل الله عليكم ورحمته وأن الله رءوف رحيم | ٢٠ | م « | ٢٤ |
| | ولولا فضل الله عليكم ورحمته ما زكى منكم من أحد أبدا | ٢١ | م « | ٢٤ |
| | أن يؤتوا أولى القربى والمساكين والمهاجرين فى سبيل الله | ٢٢ | م « | ٢٤ |
| | وتوبوا إلى الله جميعا أيه المؤمنون لعلكم تفلحون | ٣١ | م « | ٢٤ |
| | وآتوهم من مال الله الذى آتاكم ... ... ... ... | ٣٣ | م « | ٢٤ |
| | رجال لا تلهيهم تجارة ولا بيع عن ذكر الله وإقام الصلاة | ٣٧ | م « | ٢٤ |
| | ولله ملك السموات والأرض ... ... ... ... ... | ٤٢ | م « | ٢٤ |
| | وإلى الله المصير ... ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | م « | ٢٤ |
| | ويقولون آمنا بالله وبالرسول وأطعنا ... ... ... | ٤٧ | م « | ٢٤ |
| | وإذا دعوا إلى الله ورسوله ليحكم بينهم ... ... | ٤٨ | م « | ٢٤ |
| | إذا دعوا إلى الله ورسوله ليحكم بينهم أن يقولوا سمعنا | ٥١ | م « | ٢٤ |
| | وأقسموا بالله جهد أيمانهم لئن أمرتهم ليخرجن | ٥٣ | م « | ٢٤ |
| | فسلموا على أنفسكم تحية من عند الله مباركة طيبة | ٦١ | م « | ٢٤ |
| | إنما المؤمنون الذين آمنوا بالله ورسوله ... ... ... | ٦٢ | م « | ٢٤ |
| | إن الذين يستأذنونك أولئك الذين يؤمنون بالله ورسوله | ٦٢ | م « | ٢٤ |
| | ألا إن لله ما فى السموات والأرض ... ... ... | ٦٤ | م « | ٢٤ |
| | ويوم يحشرهم وما يعبدون من دون الله ... ... ... | ١٧ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ويعبدون من دون الله ما لا ينفعهم ولا يضرهم | ٥٥ | ك « | ٢٥ |
| | والذين لا يدعون مع الله إلها آخر ... ... ... ... | ٦٨ | م « | ٢٥ |
| | ومن تاب وعمل صالحا فإنه يتوب إلى الله متابا | ٧١ | ك « | ٢٥ |
| | من دون الله هل ينصرونكم أو ينتصرون... ... ... | ٩٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | تالله إن كنا لفى ضلال مبين ... ... ... ... ... | ٩٧ | ك « | ٢٦ |
| | فلا تدع مع الله إلها آخر فتكون من المعذبين | ٢١٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | أن بورك من فى النار ومن حولها وسبحان الله رب العالمين | ٨ | ك النمل | ٢٧ |
| | وقالا الحمد لله الذى فضلنا على كثير من عباده المؤمنين | ١٥ | ك « | ٢٧ |
| | وجدتها وقومها يسجدون للشمس من دون الله | ٢٤ | ك « | ٢٧ |
| | ألا يسجدوا لله الذى يخرج الخبء فى السموات والأرض | ٢٥ | ك « | ٢٧ |
| | إنه من سليمان وإنه بسم الله الرحمن الرحيم ... ... | ٣٠ | ك « | ٢٧ |
| | وصدها ما كانت تعبد من دون الله ... ... ... ... | ٤٣ | ك « | ٢٧ |
| | وأسلمت مع سليمان لله رب العالمين ... ... ... ... | ٤٤ | ك « | ٢٧ |
| | قال طائركم عند الله بل أنتم قوم تفتنون ... ... | ٤٧ | ك « | ٢٧ |
| | قالوا تقاسموا بالله لنبيتنه وأهله ... ... ... ... | ٤٩ | ك « | ٢٧ |
| | قل الحمد لله وسلام على عباده الذين اصطفى... ... | ٥٩ | ك « | ٢٧ |
| | ءإله مع الله بل هم قوم يعدلون ... ... ... ... | ٦٠ | ك « | ٢٧ |
| | ءإله مع الله بل أكثرهم لا يعلمون ... ... ... ... | ٦١ | ك « | ٢٧ |
| | ءإله مع الله قليلا ما تذكرون ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك « | ٢٧ |
| | ءإله مع الله تعالى الله عما يشركون ... ... ... ... | ٦٣ | ك « | ٢٧ |
| | ءإله مع الله قل هاتوا برهانكم إن كنتم صادقين | ٦٤ | ك « | ٢٧ |
| | فتوكل على الله إنك على الحق المبين ... ... ... | ٧٩ | ك « | ٢٧ |
| | صنع الله الذى أتقن كل شىء إنه خبير بما تفعلون | ٨٨ | ك « | ٢٧ |
| | وقل الحمد لله سيريكم آياته فتعرفونها... ... ... | ٩٣ | ك « | ٢٧ |
| | كى تقر عينها ولا تحزن ولتعلم أن وعد الله حق | ١٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | قل فأتوا بكتاب من عند الله هو أهدى منهما أتبعه | ٤٩ | ك « | ٢٨ |
| | ومن أضل ممن اتبع هواه بغير هدى من الله | ٥٠ | ك « | ٢٨ |
| | وما عند الله خير وأبقى أفلا تعقلون ... ... ... | ٦٠ | ك « | ٢٨ |
| | ما كان لهم الخيرة سبحان الله وتعالى عما يشركون | ٦٨ | ك « | ٢٨ |
| | من إله غير الله يأتيكم بضياء أفلا تسمعون ... ... | ٧١ | ك « | ٢٨ |
| | من إله غير الله يأتيكم بليل تسكنون فيه... ... ... | ٧٢ | ك « | ٢٨ |
| | فعلموا أن الحق لله وضل عنهم ما كانوا يفترون | ٧٥ | ك « | ٢٨ |
| | ويلكم ثواب الله خير لمن آمن وعمل صالحا... ... | ٨٠ | ك « | ٢٨ |
| | فما كان له من فئة ينصرونه من دون الله ... ... | ٨١ | ك « | ٢٨ |
| | ولا يصدنك عن آيات الله بعد إذ أنزلت إليك | ٨٧ | ك « | ٢٨ |
| | ولا تدع مع الله إلها آخر لا إله إلا هو ... ... ... | ٨٨ | ك « | ٢٨ |
| | من كان يرجو لقاء الله ... ... ... ... ... ... | ٥ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | فإن أجل الله لآت وهو السميع العليم ... ... ... | ٥ | م « | ٢٩ |
| | ومن الناس من يقول آمنا بالله ... ... ... ... ... | ١٠ | م « | ٢٩ |
| | فإذا أوذى فى الله ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | م « | ٢٩ |
| | جعل فتنة الناس كعذاب الله ... ... ... ... ... | ١٠ | م « | ٢٩ |
| | إنما تعبدون من دون الله أوثانا وتخلقون إفكا | ١٧ | ك « | ٢٩ |
| | إن الذين تعبدون من دون الله لا يملكون لكم رزقا | ١٧ | ك « | ٢٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | فابتغوا عند الله الرزق واعبدوه واشكروا له... ... | ١٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | إن ذلك على الله يسير ... ... ... ... ... | ١٩ | ك » | ٢٩ |
| | وما لكم من دون الله من ولىّ ولا نصير ... ... | ٢٢ | ك » | ٢٩ |
| | والذين كفروا بآيات الله ولقائه أولئك يئسوا من رحمتى | ٢٣ | ك » | ٢٩ |
| | وقال إنما اتخذتم من دون الله أوثانا مودة بينكم | ٢٥ | ك » | ٢٩ |
| | فما كان جواب قومه إلا أن قالوا ائتنا بعذاب الله | ٢٩ | ك » | ٢٩ |
| | مثل الذين اتخذوا من دون الله أولياء كمثل العنكبوت | ٤١ | ك » | ٢٩ |
| | إن الصلاة تنهى عن الفحشاء والمنكر ولذكر الله أكبر | ٤٥ | ك » | ٢٩ |
| | قل إنما الآيات عند الله وإنما أنا نذير مبين | ٥٠ | ك » | ٢٩ |
| | قل كفى بالله بينى وبينكم شهيدا ... ... ... ... | ٥٢ | ك » | ٢٩ |
| | والذين آمنوا بالباطل وكفروا بالله أولئك هم الخاسرون | ٥٢ | ك » | ٢٩ |
| | قل الحمد لله بل أكثرهم لا يعقلون ... ... ... | ٦٣ | ك » | ٢٩ |
| | أفبالباطل يؤمنون وبنعمة الله يكفرون ... ... | ٦٧ | ك » | ٢٩ |
| | ومن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو كذب بالحق لما جاءه | ٦٨ | ك » | ٢٩ |
| | فى بضع سنين لله الأمر من قبل ومن بعد ... ... | ٤ | ك الروم | ٣٠ |
| | بنصر الله ينصر من يشاء وهو العزيز الرحيم ... ... | ٥ | ك » | ٣٠ |
| | وعد الله لا يخلف الله وعده ولكن أكثر الناس لا يعلمون | ٦ | ك » | ٣٠ |
| | أن كذبوا بآيات الله وكانوا بها يستهزءون ... ... | ١٠ | ك » | ٣٠ |
| | فسبحان الله حين تمسون وحين تصبحون ... ... | ١٧ | م » | ٣٠ |
| | فطرة الله التى فطر الناس عليها ... ... ... ... | ٣٠ | ك » | ٣٠ |
| | لا تبديل لخلق الله ذلك الدين القيم ... ... ... | ٣٠ | ك » | ٣٠ |
| | ذلك خير للذين يريدون وجه الله وأولئك هم المفلحون | ٣٨ | ك » | ٣٠ |
| | وما آتيتم من ربا ليربو فى أموال الناس فلا يربو عند الله | ٣٩ | ك » | ٣٠ |
| | وما آتيتم من زكاة تريدون وجه الله فأولئك هم المضعفون | ٣٩ | ك » | ٣٠ |
| | من قبل أن يأتى يوم لا مرد له من الله يومئذ يصدعون | ٤٣ | ك » | ٣٠ |
| | فانظر إلى آثار رحمة الله كيف يحى الأرض بعد موتها | ٥٠ | ك » | ٣٠ |
| | لقد لبثتم فى كتاب الله إلى يوم البعث ... ... ... | ٥٦ | ك » | ٣٠ |
| | فاصبر إن وعد الله حق ولا يستخفنك الذين لا يوقنون | ٦٠ | ك » | ٣٠ |
| | ليضل عن سبيل الله بغير علم ويتخذها هزوا | ٦ | ك لقمان | ٣١ |
| | خالدين فيها وعد الله حقا وهو العزيز الحكيم | ٩ | ك » | ٣١ |
| | هذا خلق الله فأرونى ماذا خلق الذين من دونه | ١١ | ك » | ٣١ |
| | ولقد آتينا لقمان الحكمة أن اشكر لله ... ... ... | ١٢ | ك » | ٣١ |
| | يا بنىّ لا تشرك بالله إن الشرك لظلم عظيم ... ... | ١٣ | ك » | ٣١ |
| | ومن الناس من يجادل فى الله بغير علم ولا هدى | ٢٠ | ك » | ٣١ |
| | ومن يسلم وجهه إلى الله وهو محسن... ... ... ... | ٢٢ | ك » | ٣١ |
| | فقد استمسك بالعروة الوثقى وإلى الله عاقبة الأمور | ٢٢ | ك » | ٣١ |
| | قل الحمد لله بل أكثرهم لا يعلمون ... ... ... ... | ٢٥ | ك » | ٣١ |
| | لله ما فى السموات والأرض إن الله هو الغنىّ الحميد | ٢٦ | ك » | ٣١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | والبحر يمده من بعده سبعة أبحر ما نفدت كلمات الله | ٢٧ | م لقمان | ٣١ |
| | ألم تر أن الفلك تجرى فى البحر بنعمة الله ... ... | ٣١ | ك » | ٣١ |
| | إن وعد الله حق فلا تغرنكم الحياة الدنيا ... ... | ٣٣ | ك » | ٣١ |
| | ولا يغرنكم بالله الغرور ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك » | ٣١ |
| | وتوكل على الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وكفى بالله وكيلا ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | م » | ٣٣ |
| | ادعوهم لآبائهم هو أقسط عند الله ... ... ... | ٥ | م » | ٣٣ |
| | وأولوا الأرحام بعضهم أولى ببعض فى كتاب الله | ٦ | م » | ٣٣ |
| | يأيها الذين آمنوا اذكروا نعمة الله عليكم ... ... | ٩ | م » | ٣٣ |
| | وبلغت القلوب الحناجر وتظنون بالله الظنونا ... ... | ١٠ | م » | ٣٣ |
| | لا يولون الأدبار وكان عهد الله مسئولا ... ... | ١٥ | م » | ٣٣ |
| | قل من ذا الذى يعصمكم من الله إن أراد بكم سوءا | ١٧ | م » | ٣٣ |
| | ولا يجدون لهم من دون الله وليا ولا نصيرا | ١٧ | م » | ٣٣ |
| | فأحبط الله أعمالهم وكان ذلك على الله يسيرا | ١٩ | م » | ٣٣ |
| | لقد كان لكم فى رسول الله أسوة حسنة ... ... | ٢١ | م » | ٣٣ |
| | يضاعف لها العذاب ضعفين وكان ذلك على الله يسيرا | ٣٠ | م » | ٣٣ |
| | ومن يقنت منكن لله ورسوله وتعمل صالحا نؤتها أجرها | ٣١ | م » | ٣٣ |
| | واذكرن ما يتلى فى بيوتكن من آيات الله والحكمة | ٣٤ | م » | ٣٣ |
| | وكان أمر الله مفعولا ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | م » | ٣٣ |
| | سنة الله فى الذين خلوا من قبل ... ... ... ... | ٣٨ | م » | ٣٣ |
| | وكان أمر الله قدرا مقدورا ... ... ... ... ... | ٣٨ | م » | ٣٣ |
| | الذين يبلغون رسالات الله ويخشونه ... ... ... | ٣٩ | م » | ٣٣ |
| | ولا يخشون أحدا إلا الله وكفى بالله حسيبا | ٣٩ | م » | ٣٣ |
| | ما كان محمد أبا أحد من رجالكم ولكن رسول الله | ٤٠ | م » | ٣٣ |
| | وداعيا إلى الله بإذنه وسراجا منيرا ... ... ... | ٤٦ | م » | ٣٣ |
| | وبشر المؤمنين بأن لهم من الله فضلا كبيرا ... ... | ٤٧ | م » | ٣٣ |
| | ودع أذاهم وتوكل على الله ... ... ... ... ... | ٤٨ | م » | ٣٣ |
| | وكفى بالله وكيلا ... ... ... ... ... ... ... | ٤٨ | م » | ٣٣ |
| | وما كان لكم أن تؤذوا رسول الله ... ... ... ... | ٥٣ | م » | ٣٣ |
| | إن ذلكم كان عند الله عظيما ... ... ... ... ... | ٥٣ | م » | ٣٣ |
| | سنة الله فى الذين خلوا من قبل ... ... ... ... | ٦٢ | م » | ٣٣ |
| | ولن تجد لسنة الله تبديلا ... ... ... ... ... | ٦٢ | م » | ٣٣ |
| | يسئلك الناس عن الساعة قل إنما علمها عند الله | ٦٣ | م » | ٣٣ |
| | وكان عند الله وجيها ... ... ... ... ... ... | ٦٩ | م » | ٣٣ |
| | الحمد لله الذى له ما فى السموات وما فى الأرض | ١ | ك سبأ | ٣٤ |
| | أفترى على الله كذبا أم به جنة ... ... ... ... | ٨ | ك » | ٣٤ |
| | قل ادعوا الذين زعمتم من دون الله لا يملكون مثقال ذرة | ٢٢ | ك » | ٣٤ |
| | إذ تأمروننا أن نكفر بالله ونجعل له أندادا ... ... | ٣٣ | ك » | ٣٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | أن تقوموا لله مثنى وفرادى ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك سبأ | ٣٤ |
| | قل ما سألتكم من أجر فهو لكم إن أجرى إلا على الله | ٤٧ | ك « | ٣٤ |
| | الحمد لله فاطر السموات والأرض جاعل الملائكة رسلا | ١ | ك فاطر | ٣٥ |
| | يأيها الناس اذكروا نعمة الله عليكم ... ... ... | ٣ | ك « | ٣٥ |
| | هل من خالق غير الله يرزقكم من السماء والأرض | ٣ | ك « | ٣٥ |
| | فقد كذبت رسل من قبلك و إلى الله ترجع الأمور | ٤ | ك « | ٣٥ |
| | يأيها الناس إن وعد الله حق ... ... ... ... ... | ٥ | ك « | ٣٥ |
| | فلا تغرنكم الحياة الدنيا ولا يغرنكم بالله الغرور | ٥ | ك « | ٣٥ |
| | من كان يريد العزة فلله العزة جميعا ... ... ... ... | ١٠ | ك « | ٣٥ |
| | ولا ينقص من عمره إلا فى كتاب إن ذلك على الله يسير | ١١ | ك « | ٣٥ |
| | يأيها الناس أنتم الفقراء إلى الله والله هو الغنى الحميد | ١٥ | ك « | ٣٥ |
| | وما ذلك على الله بعزيز ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك « | ٣٥ |
| | ومن تزكى فإنما يتزكى لنفسه و إلى الله المصير... ... | ١٨ | ك « | ٣٥ |
| | إن الذين يتلون كتاب الله وأقاموا الصلاة ... ... | ٢٩ | ك « | ٣٥ |
| | ومنهم سابق بالخيرات بإذن الله ذلك هو الفضل الكبير | ٣٢ | ك « | ٣٥ |
| | وقالوا الحمد لله الذى أذهب عنا الحزن... ... ... | ٣٤ | ك « | ٣٥ |
| | قل أرأيتم شركاءكم الذين تدعون من دون الله | ٤٠ | ك « | ٣٥ |
| | وأقسموا بالله جهد أيمانهم لئن جاءهم نذير ليكونن أهدى | ٤٢ | ك « | ٣٥ |
| | فلن تجد لسنة الله تبديلا... ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك « | ٣٥ |
| | ولن تجد لسنة الله تحويلا ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك « | ٣٥ |
| | واتخذوا من دون الله آلهة لعلهم ينصرون ... ... | ٧٤ | ك يس | ٣٦ |
| | من دون الله فاهدوهم إلى صراط الجحيم... .. ... | ٢٣ | ك الصافات | ٣٧ |
| | إلا عباد الله المخلصين ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك « | ٣٧ |
| | قال تالله إن كدت لتردين ... ... ... ... ... ... | ٥٦ | ك « | ٣٧ |
| | إلا عباد الله المخلصين ... ... ... ... ... ... | ٧٤ | ك « | ٣٧ |
| | أئفكا آلهة دون الله تريدون ... ... ... ... ... | ٨٦ | ك « | ٣٧ |
| | إلا عباد الله المخلصين ... ... ... ... ... ... | ١٢٨ | ك « | ٣٧ |
| | سبحان الله عما يصفون ... ... ... ... ... ... | ١٥٩ | ك « | ٣٧ |
| | إلا عباد الله المخلصين ... ... ... ... ... ... | ١٦٠ | ك « | ٣٧ |
| | لكنا عباد الله المخلصين ... ... ... ... ... ... | ١٦٩ | ك « | ٣٧ |
| | والحمد لله رب العالمين ... ... ... ... ... ... | ١٨٢ | ك « | ٣٧ |
| | ولا تتبع الهوى فيضلك عن سبيل الله ... ... ... | ٢٦ | ك ص | ٣٨ |
| | إن الذين يضلون عن سبيل الله لهم عذاب شديد | ٢٦ | ك « | ٣٨ |
| | تنزيل الكتاب من الله العزيز الحكيم ... ... ... | ١ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ألا لله الدين الخالص ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك « | ٣٩ |
| | ما نعبدهم إلا ليقربونا إلى الله زلفى ... ... ... | ٣ | ك « | ٣٩ |
| | وجعل لله أندادا ليضل عن سبيله ... ... ... ... | ٨ | ك « | ٣٩ |
| | للذين أحسنوا فى هذه الدنيا حسنة وأرض الله واسعة | ١٠ | ك « | ٣٩ |
| | والذين اجتنبوا الطاغوت أن يعبدوها وأنابوا إلى الله لهم البشرى... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك « | ٣٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | وعد الله لا يخلف الله الميعاد ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك الزمر | ٣٩ |
| | فويل للقاسية قلوبهم من ذكر الله ... ... ... ... | ٢٢ | ك « | ٣٩ |
| | ثم تلين جلودهم وقلوبهم إلى ذكر الله ... ... ... | ٢٣ | ك « | ٣٩ |
| | ذلك هدى الله يهدى به من يشاء... ... ... ... | ٢٣ | ك « | ٣٩ |
| | هل يستويان مثلا الحمد لله بل أكثرهم لا يعلمون | ٢٩ | ك « | ٣٩ |
| | فمن أظلم ممن كذب على الله وكذب بالصدق إذ جاءه | ٣٢ | ك « | ٣٩ |
| | قل أفرأيتم ما تدعون من دون الله إن أرادنى الله بضر هل هن كاشفات ضره ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك « | ٣٩ |
| | أم اتخذوا من دون الله شفعاء... ... ... ... ... | ٤٣ | ك « | ٣٩ |
| | قل لله الشفاعة جميعا ... ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك « | ٣٩ |
| | وبدا لهم من الله ما لم يكونوا يحتسبون ... ... ... | ٤٧ | ك « | ٣٩ |
| | ياعبادى الذين أسرفوا على أنفسهم لا تقنطوا من رحمة الله | ٥٣ | م « | ٣٩ |
| | أن تقول نفس يا حسرتى على ما فرطت فى جنب الله | ٥٦ | ك « | ٣٩ |
| | ويوم القيامة ترى الذين كذبوا على الله وجوههم مسودة | ٦٠ | ك « | ٣٩ |
| | والذين كفروا بآيات الله أولئك هم الخاسرون | ٦٣ | ك « | ٣٩ |
| | قل أفغير الله تأمرونى أعبد أيها الجاهلون ... ... | ٦٤ | ك « | ٣٩ |
| | وقالوا الحمد لله الذى صدقنا وعده وأورثنا الأرض | ٧٤ | ك « | ٣٩ |
| | وقضى بينهم بالحق وقيل الحمد لله رب العالمين | ٧٥ | ك « | ٣٩ |
| | تنزيل الكتاب من الله العزيز العليم... ... ... ... | ٢ | ك غافر | ٤٠ |
| | ما يجادل فى آيات الله إلا الذين كفروا ... ... | ٤ | ك « | ٤٠ |
| | إن الذين كفروا ينادون لمقت الله أكبر من مقتكم أنفسكم | ١٠ | ك « | ٤٠ |
| | و إن يشرك به تؤمنوا فالحكم لله العلى الكبير ... ... | ١٢ | ك « | ٤٠ |
| | يوم هم بارزون لا يخفى على الله منهم شىء ... ... | ١٦ | ك « | ٤٠ |
| | لمن الملك اليوم لله الواحد القهار ... ... ... ... | ١٦ | ك « | ٤٠ |
| | فأخذهم الله بذنوبهم وما كان لهم من الله من واق | ٢١ | ك « | ٤٠ |
| | فمن ينصرنا من بأس الله إن جاءنا... ... ... ... | ٢٩ | ك « | ٤٠ |
| | يوم تولون مدبرين مالكم من الله من عاصم... ... | ٣٣ | ك « | ٤٠ |
| | الذين يجادلون فى آيات الله بغير سلطان أتاهم | ٣٥ | ك « | ٤٠ |
| | كبر مقتا عند الله وعند الذين آمنوا ... ... ... | ٣٥ | ك « | ٤٠ |
| | تدعوننى لأكفر بالله وأشرك به ما ليس لى به علم | ٤٢ | ك « | ٤٠ |
| | وأن مردنا إلى الله وأن المسرفين هم أصحاب النار | ٤٣ | ك « | ٤٠ |
| | وأفوض أمرى إلى الله إن الله بصير بالعباد | ٤٤ | ك « | ٤٠ |
| | فاصبر إن وعد الله حق واستغفر لذنبك ... ... | ٥٥ | ك « | ٤٠ |
| | إن الذين يجادلون فى آيات الله بغير سلطان أتاهم إن فى صدورهم إلا كبر ... ... ... ... ... | ٥٦ | م « | ٤٠ |
| | فاستعذ بالله إنه هو السميع البصير ... ... ... ... | ٥٦ | م « | ٤٠ |
| | كذلك يؤفك الذين كانوا بآيات الله يجحدون | ٦٣ | ك « | ٤٠ |
| | فادعوه مخلصين له الدين الحمد لله رب العالمين | ٦٥ | ك « | ٤٠ |
| | قل إنى نهيت أن أعبد الذين تدعون من دون الله | ٦٦ | ك « | ٤٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله : | ألم تر إلى الذين يجادلون فى آيات الله أنى يصرفون | ٦٩ | ك غافـر | ٤٠ |
| | من دون الله قالوا ضلوا عنا بل لم نكن ندعوا من قبل شيئا | ٧٤ | ك « | ٤٠ |
| | فاصبر إن وعد الله حق ... ... ... ... ... ... | ٧٧ | ك « | ٤٠ |
| | وما كان لرسول أن يأتى بآية إلا بإذن الله ... ... | ٧٨ | ك « | ٤٠ |
| | فإذا جاء أمر الله قضى بالحق وخسر هنالك المبطلون | ٧٨ | ك « | ٤٠ |
| | ويريكم آياته فأى آيات الله تنكرون ... ... ... | ٨١ | ك « | ٤٠ |
| | فلما رأوا بأسنا قالوا آمنا بالله وحده ... ... ... | ٨٤ | ك « | ٤٠ |
| | سنت الله التى قد خلت فى عباده ... ... ... ... | ٨٥ | ك « | ٤٠ |
| | ويوم يحشر أعداء الله إلى النار فهم يوزعون | ١٩ | ك فصلت | ٤١ |
| | ذلك جزاء أعداء الله النار ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٤١ |
| | ومن أحسن قولا ممن دعا إلى الله وعمل صالحا | ٣٣ | ك « | ٤١ |
| | وإما ينزغنك من الشيطان نزغ فاستعذ بالله ... ... | ٣٦ | ك « | ٤١ |
| | لاتسجدوا للشمس ولا للقمر واسجدوا لله الذى خلقهن | ٣٧ | ك « | ٤١ |
| | قل أرءيتم إن كان من عند الله ثم كفرتم به من أضل | | | |
| | ممن هو فى شقاق بعيد ... ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك « | ٤١ |
| | وما اختلفتم فيه من شىء فحكمه إلى الله ... ... | ١٠ | ك الشورى | ٤٢ |
| | والذين يحاجون فى الله من بعد ما استجيب له حجتهم | | | |
| | داحضة عند ربهم ... ... ... ... ... ... | ١٦ | ك « | ٤٢ |
| | أم يقولون افترى على الله كذبا ... ... ... ... | ٢٤ | م « | ٤٢ |
| | وما لكم من دون الله من ولىّ ولا نصير ... ... | ٣١ | ك « | ٤٢ |
| | وما عند الله خير وأبقى للذين آمنوا وعلى ربهم يتوكلون | ٣٦ | ك « | ٤٢ |
| | فمن عفا وأصلح فأجره على الله إنه لايحب الظالمين | ٤٠ | ك « | ٤٢ |
| | وما كان لهم من أولياء ينصرونهم من دون الله | ٤٦ | ك « | ٤٢ |
| | استجيبوا لربكم من قبل أن يأتى يوم لامرد له من الله | ٤٧ | ك « | ٤٢ |
| | لله ملك السموات والأرض يخلق ما يشاء ... ... | ٤٩ | ك « | ٤٢ |
| | صراط الله الذى له ما فى السموات وما فى الأرض | ٥٣ | ك « | ٤٢ |
| | ألا إلى الله تصير الأمور ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك « | ٤٢ |
| | أن أدوا إلىّ عباد الله إنى لكم رسول أمين | ١٨ | ك الدخان | ٤٤ |
| | وأن لا تعلوا على الله إنى آتيكم بسلطان مبين... ... | ١٩ | ك « | ٤٤ |
| | تنزيل الكتاب من الله العزيز الحكيم ... ... ... | ٢ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | تلك آيات الله نتلوها عليك بالحق ... ... ... .. | ٦ | ك « | ٤٥ |
| | فبأى حديث بعد الله وآياته يؤمنون ... ... ... | ٦ | ك « | ٤٥ |
| | يسمع آيات الله تتلى عليه ثم يصر مستكبرا ... ... | ٨ | ك « | ٤٥ |
| | ولا يغنى عنهم ما كسبوا شيئا ولا ما اتخذوا من دون | | | |
| | الله أولياء ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك « | ٤٥ |
| | قل للذين آمنوا يغفروا للذين لا يرجون أيام الله | ١٤ | م « | ٤٥ |
| | إنهم لن يغنوا عنك من الله شيئا ... ... ... ... | ١٩ | ك « | ٤٥ |
| | فمن يهديه من بعد الله أفلا تذكرون ... ... ... | ٢٣ | ك « | ٤٥ |
| | ولله ملك السموات والأرض ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك « | ٤٥ |
| الله : | وإذا قيل إن وعد الله حق والساعة لاريب فيها قلتم | | | |
| | ما ندرى ما الساعة... ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | ذلكم بأنكم اتخذتم آيات الله هزوا ... ... ... | ٣٥ | ك « | ٤٥ |
| | فلله الحمد رب السموات ورب الأرض رب العالمين | ٣٦ | ك « | ٤٥ |
| | تنزيل الكتاب من الله العزيز الحكيم ... ... ... | ٢ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | قل أرءيتم ماتدعون من دون الله أرونى ماذا خلقوا | ٤ | ك « | ٤٦ |
| | ومن أضل ممن يدعوا من دون الله من لايستجيب له | ٥ | ك « | ٤٦ |
| | قل إن افتريته فلا تملكون لى من الله شيئا ... ... | ٨ | ك « | ٤٦ |
| | قل أرءيتم إن كان من عند الله وكفرتم به ... ... | ١٠ | م « | ٤٦ |
| | وهما يستغيثان الله ويلك آمن إن وعد الله حق | ١٧ | ك « | ٤٦ |
| | قال إنما العلم عند الله وأبلغكم ما أرسلت به ... ... | ٢٣ | ك « | ٤٦ |
| | إذ كانوا يجحدون بآيات الله ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك « | ٤٦ |
| | فلولا نصرهم الذين اتخذوا من دون الله قربانا آلهة | ٢٨ | ك « | ٤٦ |
| | يا قومنا أجيبوا داعى الله وآمنوا به ... ... ... | ٣١ | ك « | ٤٦ |
| | ومن لا يجب داعى الله فليس بمعجز فى الأرض | ٣٢ | ك « | ٤٦ |
| | الذين كفروا وصدّوا عن سبيل الله أضل أعمالهم | ١ | م محمد | ٤٧ |
| | والذين قتلوا فى سبيل الله فلن يضل أعمالهم... ... | ٤ | م « | ٤٧ |
| | إن الذين كفروا وصدّوا عن سبيل الله وشاقوا الرسول | ٣٢ | م « | ٤٧ |
| | إن الذين كفروا وصدّوا عن سبيل الله ثم ماتوا | | | |
| | وهم كفار فلن يغفر الله لهم ... ... ... ... ... | ٣٤ | م « | ٤٧ |
| | ها أنتم هؤلاء تدعون لتنفقوا فى سبيل الله ... ... | ٣٨ | م « | ٤٧ |
| | ولله جنود السموات والأرض وكان الله عليما حكيما | ٤ | م الفتح | ٤٨ |
| | وكان ذلك عند الله فوزا عظيما ... ... ... ... ... | ٥ | م « | ٤٨ |
| | الظانين بالله ظن السوء عليهم دائرة السوء ... ... | ٦ | م « | ٤٨ |
| | ولله جنود السموات والأرض وكان الله عزيزا حكيما | ٧ | م « | ٤٨ |
| | لتؤمنوا بالله ورسوله وتعزروه وتوقروه ... ... ... | ٩ | م « | ٤٨ |
| | يد الله فوق أيديهم... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | م « | ٤٨ |
| | قل فمن يملك لكم من الله شيئا إن أراد بكم ضرا | ١١ | م « | ٤٨ |
| | ومن لم يؤمن بالله ورسوله فإنا أعتدنا للكافرين سعيرا | ١٣ | م « | ٤٨ |
| | ولله ملك السموات والأرض يغفر لمن يشاء ... ... | ١٤ | م « | ٤٨ |
| | يريدون أن يبدلوا كلام الله قل لن تتبعونا ... ... | ١٥ | م « | ٤٨ |
| | سنة الله التى قد خلت من قبل ... ... ... ... ... | ٢٣ | م « | ٤٨ |
| | ولن تجد لسنة الله تبديلا ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | م « | ٤٨ |
| | ليظهره على الدين كله وكفى بالله شهيدا ... ... ... | ٢٨ | م « | ٤٨ |
| | محمد رسول الله والذين معه أشداء على الكفار رحماء بينهم | ٢٩ | م « | ٤٨ |
| | تراهم ركعا سجدا يبتغون فضلا من الله ورضوانا | ٢٩ | م « | ٤٨ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تقدموا بين يدى الله ورسوله | ١ | م الحجرات | ٤٩ |
| | إن الذين يغضون أصواتهم عند رسول الله أولئك | | | |
| | الذين امتحن الله قلوبهم ... ... ... ... ... ... | ٣ | م « | ٤٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله | واعلموا أن فيكم رسول الله ... ... ... ... ... ... | ٧ م | الحجرات | ٤٩ |
| | فضلا من الله ونعمة والله عليم حكيم... ... ... ... | ٨ م | » | ٤٩ |
| | فقاتلوا التى تبغى حتى تفىء إلى أمر الله ... ... ... | ٩ م | » | ٤٩ |
| | إن أكرمكم عند الله أتقاكم إن الله عليم خبير | ١٣ م | » | ٤٩ |
| | إنما المؤمنون الذين آمنوا بالله ورسوله ... ... ... | ١٥ م | » | ٤٩ |
| | وجاهدوا بأموالهم وأنفسهم فى سبيل الله ... ... | ١٥ م | » | ٤٩ |
| | الذى جعل مع الله إلها آخر فألقياه فى العذاب الشديد | ٢٦ ك | ق | ٥٠ |
| | ففروا إلى الله إنى لكم منه نذير مبين ... ... ... ... | ٥٠ ك | الذاريات | ٥١ |
| | ولا تجعلوا مع الله إلها آخر إنى لكم منه نذير مبين | ٥١ ك | » | ٥١ |
| | أم لهم إله غير الله ... ... ... ... ... ... ... | ٤٣ ك | الطور | ٥٢ |
| | سبحان الله عما يشركون ... ... ... ... ... ... | ٤٣ ك | » | ٥٢ |
| | فلله الآخرة والأولى ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥ ك | النجم | ٥٣ |
| | ولله ما فى السموات وما فى الأرض ... ... ... ... | ٣١ ك | » | ٥٣ |
| | ليس لها من دون الله كاشفة ... ... ... ... ... | ٥٨ ك | » | ٥٣ |
| | فاسجدوا لله واعبدوا ... ... ... ... ... ... ... | ٦٢ ك | » | ٥٣ |
| | سبح لله ما فى السموات والأرض وهو العزيز الحكيم | ١ م | الحديد | ٥٧ |
| | له ملك السموات والأرض وإلى الله ترجع الأمور | ٥ م | » | ٥٧ |
| | آمنوا بالله ورسوله وأنفقوا مما جعلكم مستخلفين فيه | ٧ م | » | ٥٧ |
| | وما لكم لا تؤمنون بالله والرسول يدعوكم لتؤمنوا بربكم | ٨ م | » | ٥٧ |
| | وما لكم ألا تنفقوا فى سبيل الله ... ... ... ... | ١٠ م | » | ٥٧ |
| | ولله ميراث السموات والأرض ... ... ... ... ... | ١٠ م | » | ٥٧ |
| | وغرتكم الأمانى حتى جاء أمر الله ... ... ... ... | ١٤ م | » | ٥٧ |
| | وغركم بالله الغرور ... ... ... ... ... ... ... | ١٤ م | » | ٥٧ |
| | ألم يأن للذين آمنوا أن تخشع قلوبهم لذكر الله | ١٦ م | » | ٥٧ |
| | والذين آمنوا بالله ورسله أولئك هم الصديقون | ١٩ م | » | ٥٧ |
| | وفى الآخرة عذاب شديد ومغفرة من الله ورضوان | ٢٠ م | » | ٥٧ |
| | أعدت للذين آمنوا بالله ورسله ... ... ... ... ... | ٢١ م | » | ٥٧ |
| | ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء والله ذو الفضل العظيم | ٢١ م | » | ٥٧ |
| | إن ذلك على الله يسير ... ... ... ... ... ... | ٢٢ م | » | ٥٧ |
| | ما كتبناها عليهم إلا ابتغاء رضوان الله ... ... ... | ٢٧ م | » | ٥٧ |
| | لئلا يعلم أهل الكتاب ألا يقدرون على شىء من فضل الله | ٢٩ م | » | ٥٧ |
| | وأن الفضل بيد الله يؤتيه من يشاء والله ذو الفضل العظيم | ٢٩ م | » | ٥٧ |
| | قد سمع الله قول التى تجادلك فى زوجها وتشتكى إلى الله | ١ م | المجادلة | ٥٨ |
| | فمن لم يستطع فإطعام ستين مسكينا ذلك لتؤمنوا بالله ورسوله | ٤ م | » | ٥٨ |
| | وتلك حدود الله وللكافرين عذاب أليم ... ... ... | ٤ م | » | ٥٨ |
| | وليس بضارهم شيئا إلا بإذن الله ... ... ... ... | ١٠ م | » | ٥٨ |
| | وعلى الله فليتوكل المؤمنون ... ... ... ... ... | ١٠ م | » | ٥٨ |
| | اتخذوا أيمانهم جنة فصدوا عن سبيل الله ... ... | ١٦ م | » | ٥٨ |
| الله | لن تغنى عنهم أموالهم ولا أولادهم من الله شيئا | ١٧ م | المجادلة | ٥٨ |
| | استحوذ عليهم الشيطان فأنساهم ذكر الله ... ... | ١٩ م | » | ٥٨ |
| | لا تجد قوما يؤمنون بالله واليوم الآخر يوادون من حاد الله | ٢٢ م | » | ٥٨ |
| | رضى الله عنهم ورضوا عنه أولئك حزب الله... ... | ٢٢ م | » | ٥٨ |
| | ألا إن حزب الله هم المفلحون ... ... ... ... ... | ٢٢ م | » | ٥٨ |
| | سبح لله ما فى السموات وما فى الأرض وهو العزيز الحكيم | ١ م | الحشر | ٥٩ |
| | وظنوا أنهم مانعتهم حصونهم من الله ... ... ... | ٢ م | » | ٥٩ |
| | ما قطعتم من لينة أو تركتموها قائمة على أصولها فبإذن الله | ٥ م | » | ٥٩ |
| | ما أفاء الله على رسوله من أهل القرى فلله وللرسول | ٧ م | » | ٥٩ |
| | يبتغون فضلا من الله ورضوانا... ... ... ... | ٨ م | » | ٥٩ |
| | لأنتم أشد رهبة فى صدورهم من الله ... ... ... | ١٣ م | » | ٥٩ |
| | لرأيته خاشعا متصدعا من خشية الله ... ... ... | ٢١ م | » | ٥٩ |
| | العزيز الجبار المتكبر سبحان الله عما يشركون ... ... | ٢٣ م | » | ٥٩ |
| | يخرجون الرسول وإياكم أن تؤمنوا بالله ربكم | ١ م | الممتحنة | ٦٠ |
| | إنا برءاء منكم ومما تعبدون من دون الله ... ... | ٤ م | » | ٦٠ |
| | حتى تؤمنوا بالله وحده ... ... ... ... ... ... | ٤ م | » | ٦٠ |
| | لأستغفرن لك وما أملك لك من الله من شىء | ٤ م | » | ٦٠ |
| | ذلكم حكم الله يحكم بينكم والله عليم حكيم ... ... | ١٠ م | » | ٦٠ |
| | إذا جاءك المؤمنات يبايعنك على أن لا يشركن بالله | ١٢ م | » | ٦٠ |
| | سبح لله ما فى السموات وما فى الأرض... ... ... | ١ م | الصف | ٦١ |
| | كبر مقتا عند الله أن تقولوا ما لا تفعلون ... ... | ٣ م | » | ٦١ |
| | لم تؤذوننى وقد تعلمون أنى رسول الله إليكم... ... | ٥ م | » | ٦١ |
| | إنى رسول الله إليكم مصدقا لما بين يدىّ من التوراة | ٦ م | » | ٦١ |
| | ومن أظلم ممن افترى على الله الكذب ... ... ... | ٧ م | » | ٦١ |
| | يريدون ليطفئوا نور الله بأفواههم والله متم نوره | ٨ م | » | ٦١ |
| | تؤمنون بالله ورسوله ... ... ... ... ... ... | ١١ م | » | ٦١ |
| | وتجاهدون فى سبيل الله بأموالكم وأنفسكم ... ... | ١١ م | » | ٦١ |
| | نصر من الله وفتح قريب ... ... ... ... ... ... | ١٣ م | » | ٦١ |
| | يأيها الذين آمنوا كونوا أنصار الله ... ... ... ... | ١٤ م | » | ٦١ |
| | كما قال عيسى ابن مريم للحواريين من أنصارى إلى الله | ١٤ م | » | ٦١ |
| | قال الحواريون نحن أنصار الله... ... ... ... ... | ١٤ م | » | ٦١ |
| | يسبح لله ما فى السموات وما فى الأرض ... ... | ١ م | الجمعة | ٦٢ |
| | ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء والله ذو الفضل العظيم | ٤ م | » | ٦٢ |
| | بئس مثل القوم الذين كذبوا بآيات الله... ... ... | ٥ م | » | ٦٢ |
| | إن زعمتم أنكم أولياء لله من دون الناس فتمنوا الموت | ٦ م | » | ٦٢ |
| | إذا نودى للصلاة من يوم الجمعة فاسعوا إلى ذكر الله | ٩ م | » | ٦٢ |
| | فانتشروا فى الأرض وابتغوا من فضل الله ... ... | ١٠ م | » | ٦٢ |
| | قل ما عند الله خير من اللهو ومن التجارة ... ... | ١١ م | » | ٦٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | إذا جاءك المنافقون قالوا نشهد إنك لرسول الله | ١ | م المنافقون | ٦٣ |
| | اتخذوا أيمانهم جنة فصدوا عن سبيل الله ... ... | ٢ | م » | ٦٣ |
| | وإذا قيل لهم تعالوا يستغفر لكم رسول الله لووا رءوسهم | ٥ | م » | ٦٣ |
| | لا تنفقوا على من عند رسول الله حتى ينفضوا | ٧ | م » | ٦٣ |
| | ولله خزائن السموات والأرض ... ... ... ... ... | ٧ | م » | ٦٣ |
| | ولله العزة ولرسوله وللمؤمنين ولكن المنافقين لا يعلمون | ٨ | م » | ٦٣ |
| | لا تلهكم أموالكم ولا أولادكم عن ذكر الله ... ... | ٩ | م » | ٦٣ |
| | يسبح لله ما فى السموات وما فى الأرض له الملك | ١ | م التغابن | ٦٤ |
| | لتبعثن ثم لتنبؤن بما عملتم وذلك على الله يسير | ٧ | م » | ٦٤ |
| | فآمنوا بالله ورسوله والنور الذى أنزلنا... ... ... | ٨ | م » | ٦٤ |
| | ومن يؤمن بالله ويعمل صالحا يكفر عنه سيئاته | ٩ | م » | ٦٤ |
| | ما أصاب من مصيبة إلا بإذن الله ... ... ... ... | ١١ | م » | ٦٤ |
| | ومن يؤمن بالله يهد قلبه والله بكل شىء عليم... ... | ١١ | م » | ٦٤ |
| | الله لا إله إلا هو وعلى الله فليتوكل المؤمنون ... | ١٣ | م » | ٦٤ |
| | ولا يخرجن إلا أن يأتين بفاحشة مبينة وتلك حدود الله | ١ | م الطلاق | ٦٥ |
| | ومن يتعد حدود الله فقد ظلم نفسه . ..... ... | ١ | م » | ٦٥ |
| | وأشهدوا ذوى عدل منكم وأقيموا الشهادة لله | ٢ | م » | ٦٥ |
| | ذلكم يوعظ به من كان يؤمن بالله واليوم الآخر | ٢ | م » | ٦٥ |
| | ومن يتوكل على الله فهو حسبه إن الله بالغ أمره | ٣ | م » | ٦٥ |
| | ذلك أمر الله أنزله إليكم ... ... ... ... ... | ٥ | م » | ٦٥ |
| | رسولا يتلو عليكم آيات الله مبينات ... ... ... | ١١ | م » | ٦٥ |
| | ومن يؤمن بالله ويعمل صالحا يدخله جنات... ... | ١١ | م » | ٦٥ |
| | إن تتوبا إلى الله فقد صغت قلوبكما ... ... ... | ٤ | م التحريم | ٦٦ |
| | يأيها الذين آمنوا توبوا إلى الله توبة نصوحا... ... | ٨ | م » | ٦٦ |
| | فخانتاهما فلم يغنيا عنهما من الله شيئا .. ... ... | ١٠ | م » | ٦٦ |
| | قل إنما العلم عند الله وإنما أنا نذير مبين ... ... | ٢٦ | ك الملك | ٦٧ |
| | إنه كان لا يؤمن بالله العظيم ... ... ... ... | ٣٣ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | من الله ذى المعارج ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك المعارج | ٧٠ |
| | إن أجل الله إذا جاء لا يؤخر لو كنتم تعلمون | ٤ | ك نوح | ٧١ |
| | مالكم لا ترجون لله وقارا ... ... ... ... ... | ١٣ | ك » | ٧١ |
| | فلم يجدوا لهم من دون الله أنصارا ... ... ... ... | ٢٥ | ك » | ٧١ |
| | وأنه كان يقول سفيهنا على الله شططا ... ... ... | ٤ | ك الجن | ٧٢ |
| | وأنا ظننا أن لن تقول الإنس والجن على الله كذبا | ٥ | ك » | ٧٢ |
| | وأن المساجد لله ... ... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك » | ٧٢ |
| | فلا تدعوا مع الله أحدا ... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك » | ٧٢ |
| | وأنه لما قام عبد الله يدعوه كادوا يكونون عليه لبدا | ١٩ | ك » | ٧٢ |
| | قل إنى لن يجيرنى من الله أحد ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك » | ٧٢ |
| | إلا بلاغا من الله ورسالاته ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك » | ٧٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الله: | وآخرون يضربون فى الأرض يبتغون من فضل الله | ٢٠ | م المزمل | ٧٣ |
| | وآخرون يقاتلون فى سبيل الله فاقرءوا ما تيسر منه | ٢٠ | م » | ٧٣ |
| | وما تقدموا لأنفسكم من خير تجدوه عند الله... ... | ٢٠ | م » | ٧٣ |
| | عينا يشرب بها عباد الله يفجرونها تفجيرا ... ... | ٦ | م الإنسان | ٧٦ |
| | إنما نطعمكم لوجه الله لا نريد منكم جزاء ولا شكورا | ٩ | م » | ٧٦ |
| | يوم لا تملك نفس لنفس شيئا والأمر يومئذ لله | ١٩ | ك الانفطار | ٨٢ |
| | وما نقموا منهم إلا أن يؤمنوا بالله العزيز الحميد | ٨ | ك البروج | ٨٥ |
| | فقال لهم رسول الله ... ... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك الشمس | ٩١ |
| | ناقة الله وسقياها ... ... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك » | ٩١ |
| | رسول من الله يتلو صحفا مطهرة... ... ... ... ... | ٢ | م البينة | ٩٨ |
| | نار الله الموقدة ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك الهمزة | ١٠٤ |
| | إذا جاء نصر الله والفتح ... ... ... ... ... ... | ١ | م النصر | ١١٠ |
| | ورأيت الناس يدخلون فى دين الله أفواجا ... ... | ٢ | م » | ١١٠ |
| اللهم: | قل اللهم مالك الملك تؤتى الملك من تشاء... ... | ٢٦ | م آل عمران | ٣ |
| (٥) | قال عيسى ابن مريم اللهم ربنا أنزل علينا مائدة من السماء | ١١٤ | م المائدة | ٥ |
| | وإذ قالوا اللهم إن كان هذا هو الحق من عندك فأمطر علينا حجارة ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك الأنفال | ٨ |
| | دعواهم فيها سبحانك اللهم وتحيتهم فيها سلام... ... | ١٠ | ك يونس | ١٠ |
| | قل اللهم فاطر السموات والأرض عالم الغيب والشهادة | ٤٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| يألونكم: | لا تتخذوا بطانة من دونكم لا يألونكم خبالا | ١١٨ | م آل عمران | ٣ |
| يؤلون: | للذين يؤلون من نسائهم تربص أربعة أشهر | ٢٢٦ | م البقرة | ٢ |
| يأتل: | ولا يأتل أولوا الفضل منكم والسعة أن يؤتوا أولى القربى والمساكين ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | م النور | ٢٤ |
| آلاء: | فاذكروا آلاء الله لعلكم تفلحون ... ... ... ... | ٦٩ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣٤) | فاذكروا آلاء الله ولا تعثوا فى الأرض مفسدين | ٧٤ | ك » | ٧ |
| | فبأى آلاء ربك تمارى ... ... ... ... ... ... | ٥٥ | ك النجم | ٥٣ |
| | فبأى آلاء ربكما تكذبان ... ... ... ... ... ... | ١٣ | م الرحمن | ٥٥ |
| | * ١٦، ١٨، ٢١، ٢٣، ٢٥، ٢٨، ٣٠، ٣٢، ٣٤، ٣٦، ٣٨، ٤٠، ٤٢، ٤٥، ٤٧، ٤٩، ٥١، ٥٣، ٥٥، ٥٧، ٥٩، ٦١، ٦٣، ٦٥، ٦٧، ٦٩، ٧١، ٧٣، ٧٥، ٧٧ | | | |
| إلياس: | وزكريا ويحيى وعيسى وإلياس كل من الصالحين | ٨٥ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | وإن إلياس لمن المرسلين ... ... ... ... ... | ١٢٣ | ك الصافات | ٣٧ |
| إل ياسين: | سلام على إل ياسين... ... ... ... ... ... | ١٣٠ | ك » | ٣٧ |
| أمتا: | لا ترى فيها عوجا ولا أمتا ... ... ... ... ... | ١٠٧ | ك طه | ٢٠ |
| أمد: | فطال عليهم الأمد فقست قلوبهم ... ... ... ... | ١٦ | م الحديد | ٥٧ |
| أمدا: | وما عملت من سوء تود لو أن بينها وبينه أمدا بعيدا | ٣٠ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | ثم بعثناهم لنعلم أى الحزبين أحصى لما لبثوا أمدا | ١٢ | ك الكهف | ١٨ |
| | قل إن أدرى أقريب ما توعدون أم يجعل له ربى أمدا | ٢٥ | ك الجن | ٧٢ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| أَمَرَ | و يقطعون ما أمر الله به أن يوصل و يفسدون في الأرض | ٢ م البقرة | ٢٧ |
| (٧) | لا خير في كثير من نجواهم إلا من أمر بصدقة أو معروف | ٤ النساء | ١١٤ م |
| | قل أمر ربي بالقسط وأقيموا وجوهكم عند كل مسجد | ٧ ك الأعراف | ٢٩ |
| | إن الحكم إلا لله أمر ألا تعبدوا إلا إياه ... ... | ١٢ ك يوسف | ٤٠ |
| | والذين يصلون ما أمر الله به أن يوصل و يخشون ربهم | ١٣ م الرعد | ٢١ |
| | و يقطعون ما أمر الله به أن يوصل و يفسدون في الأرض | ١٣ « | ٢٥ م |
| | أو أمر بالتقوى ... ... ... ... ... ... ... | ٩٦ ك العلق | ١٢ |
| أَمَرْتُكَ | قال ما منعك ألا تسجد إذ أمرتك... ... ... | ٧ ك الأعراف | ١٢ |
| أَمَرْتَنِي | ما قلت لهم إلا ما أمرتني به أن اعبدوا الله ربي وربكم | ٥ المائدة | ١١٧ م |
| أَمَرَتْهُمْ | وأقسموا بالله جهد أيمانهم لئن أمرتهم ليخرجن | ٢٤ النور | ٥٣ م |
| أَمَرَكُمْ | فإذا تطهرن فأتوهن من حيث أمركم الله... ... | ٢ البقرة | ٢٢٢ م |
| أَمَرَنَا | و إذا فعلوا فاحشة قالوا وجدنا عليها آباءنا والله أمرنا بها | ٧ ك الأعراف | ٢٨ |
| أَمَرْنَا | و إذا أردنا أن نهلك قرية أمرنا مترفيها ففسقوا فيها | ١٧ ك الإسراء | ١٦ |
| أَمَرَهُ | كلا لما يقض ما أمره ... ... ... ... ... ... | ٨٠ ك عبس | ٢٣ |
| أَمَرَهُمْ | ولما دخلوا من حيث أمرهم أبوهم ما كان يغني عنهم | ١٢ ك يوسف | ٦٨ |
| (٢) | عليها ملائكة غلاظ شداد لا يعصون الله ما أمرهم | ٦٦ التحريم | ٦ م |
| أَمَرُوا | أقاموا الصلاة وآتوا الزكاة وأمروا بالمعروف | ٢٢ الحج | ٤١ م |
| لَآمُرَنَّهُمْ | ولآمرنهم فليبتكن آذان الأنعام ... ... ... | ٤ النساء | ١١٩ م |
| (٢) | ولآمرنهم فليغيرن خلق الله ... ... ... ... ... | ٤ « | ١١٩ م |
| آمُرُهُ | ولئن لم يفعل ما آمره ليسجنن وليكونا من الصاغرين | ١٢ ك يوسف | ٣٢ |
| تَأْمُرُكَ | قالوا يا شعيب أصلاتك تأمرك أن نترك ما يعبد آباؤنا | ١١ ك هود | ٨٧ |
| تَأْمُرُنَا | قالوا وما الرحمن أنسجد لما تأمرنا وزادهم نفورا | ٢٥ ك الفرقان | ٦٠ |
| تَأْمُرُهُمْ | أم تأمرهم أحلامهم بهذا أم هم قوم طاغون | ٥٢ ك الطور | ٣٢ |
| تَأْمُرُونَ | أتأمرون الناس بالبر وتنسون أنفسكم ... | ٢ البقرة | ٤٤ م |
| (٤) | تأمرون بالمعروف وتنهون عن المنكر وتؤمنون بالله | ٣ آل عمران | ١١٠ م |
| | يريد أن يخرجكم من أرضكم فماذا تأمرون... ... | ٧ ك الأعراف | ١١٠ |
| | يريد أن يخرجكم من أرضكم بسحره فماذا تأمرون | ٢٦ ك الشعراء | ٣٥ |
| تَأْمُرُونَنَا | إذ تأمروننا أن نكفر بالله ونجعل له أندادا | ٣٤ ك سبأ | ٣٣ |
| تَأْمُرُونِّي | قل أفغير الله تأمروني أعبد أيها الجاهلون | ٣٩ ك الزمر | ٦٤ |
| تَأْمُرِينَ | والأمر إليك فانظري ماذا تأمرين... ... ... | ٢٧ ك النمل | ٣٣ |
| يَأْمُرُ | إن الله لا يأمر بالفحشاء أتقولون على الله ما لا تعلمون | ٧ ك الأعراف | ٢٨ |
| (٥) | هل يستوي هو ومن يأمر بالعدل وهو على صراط مستقيم | ١٦ ك النحل | ٧٦ |
| | إن الله يأمر بالعدل والإحسان و إيتاء ذي القربى | ١٦ « | ٩٠ |
| | وكان يأمر أهله بالصلاة والزكاة وكان عند ربه مرضيا | ١٩ ك مريم | ٥٥ |
| يَأْمُرُ | ومن يتبع خطوات الشيطان فإنه يأمر بالفحشاء | ٢٤ النور | ٢١ م |
| يَأْمُرُكُمْ | و إذ قال موسى لقومه إن الله يأمركم أن تذبحوا بقرة | ٢ البقرة | ٦٧ م |
| (٧) | قل بئسما يأمركم به إيمانكم إن كنتم مؤمنين ... ... | ٢ « | ٩٣ م |
| | إنما يأمركم بالسوء والفحشاء ... ... ... ... ... | ٢ « | ١٦٩ م |
| | الشيطان يعدكم الفقر و يأمركم بالفحشاء ... ... ... | ٢ « | ٢٦٨ م |
| | ولا يأمركم أن تتخذوا الملائكة والنبيين أربابا | ٣ آل عمران | ٨٠ م |
| | أيأمركم بالكفر بعد إذ أنتم مسلمون... ... ... ... | ٣ « | ٨٠ م |
| | إن الله يأمركم أن تؤدوا الأمانات إلى أهلها | ٤ النساء | ٥٨ م |
| يَأْمُرُهُمْ | يأمرهم بالمعروف و ينهاهم عن المنكر... ... | ٧ ك الأعراف | ١٥٧ |
| يَأْمُرُونَ | و يقتلون الذين يأمرون بالقسط من الناس | ٣ آل عمران | ٢١ م |
| (٧) | ولتكن منكم أمة يدعون إلى الخير و يأمرون بالمعروف | ٣ « | ١٠٤ م |
| | يؤمنون بالله واليوم الآخر و يأمرون بالمعروف | ٣ « | ١١٤ م |
| | الذين يبخلون و يأمرون الناس بالبخل و يكتمون | | |
| | ما آتاهم الله من فضله ... ... ... ... ... ... | ٤ النساء | ٣٧ م |
| | يأمرون بالمنكر و ينهون عن المعروف و يقبضون أيديهم | ٩ التوبة | ٦٧ م |
| | يأمرون بالمعروف و ينهون عن المنكر و يقيمون الصلاة | ٩ « | ٧١ م |
| | الذين يبخلون و يأمرون الناس بالبخل ... ... ... | ٥٧ الحديد | ٢٤ م |
| وَأْمُرْ | فخذها بقوة وأمر قومك يأخذوا بأحسنها ... ... | ٧ ك الأعراف | ١٤٥ |
| (٤) | خذ العفو وأمر بالعرف وأعرض عن الجاهلين | ٧ « | ١٩٩ |
| | وأمر أهلك بالصلاة واصطبر عليها ... ... ... ... | ٢٠ طه | ١٣٢ |
| | يا بني أقم الصلاة وأمر بالمعروف وانه عن المنكر | ٣١ ك لقمان | ١٧ |
| أُمِرْتُ | قل إني أمرت أن أكون أول من أسلم ... ... | ٦ ك الأنعام | ١٤ |
| (١١) | لا شريك له وبذلك أمرت وأنا أول المسلمين | ٦ « | ١٦٣ |
| | إن أجري إلا على الله وأمرت أن أكون من المسلمين | ١٠ ك يونس | ٧٢ |
| | وأمرت أن أكون من المؤمنين ... ... ... ... | ١٠ « | ١٠٤ |
| | قل إنما أمرت أن أعبد الله ولا أشرك به ... ... | ١٣ الرعد | ٣٦ م |
| | إنما أمرت أن أعبد رب هذه البلدة الذي حرمها | ٢٧ ك النمل | ٩١ |
| | وله كل شيء وأمرت أن أكون من المسلمين ... ... | ٢٧ « | ٩١ |
| | قل إني أمرت أن أعبد الله مخلصا له الدين... ... | ٣٩ ك الزمر | ١١ |
| | وأمرت لأن أكون أول المسلمين ... ... ... ... | ٣٩ « | ١٢ |
| | وأمرت أن أسلم لرب العالمين ... ... ... ... ... | ٤٠ ك غافر | ٦٦ |
| | وأمرت لأعدل بينكم الله ربنا وربكم ... ... ... | ٤٢ ك الشورى | ١٥ |
| أُمِرْتَ | فاستقم كما أمرت ومن تاب معك ... ... ... ... | ١١ ك هود | ١١٢ |
| (٢) | واستقم كما أمرت ولا تتبع أهواءهم ... ... ... | ٤٢ ك الشورى | ١٥ |
| أُمِرْنَا | قل إن هدى الله هو الهدى وأمرنا لنسلم لرب العالمين | ٦ ك الأنعام | ٧١ |
| أُمِرُوا | وقد أمروا أن يكفروا به ... .. ... ... ... | ٤ النساء | ٦٠ م |
| (٣) | وما أمروا إلا ليعبدوا إلها واحدا لا إله إلا هو | ٩ التوبة | ٣١ م |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أُمِرُوا : | وما أمروا إلا ليعبدوا الله مخلصين له الدين حنفاء | ٥ | م البينة | ١٨ |
| تُؤْمَرُ : | فاصدع بما تؤمر وأعرض عن المشركين... ... | ٩٤ | ك الحجر | ١٥ |
| (٢) | قال يا أبت افعل ما تؤمر ستجدني إن شاء الله من الصابرين | ١٠٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| تُؤْمَرُونَ : | لا فارض ولا بكر عوان بين ذلك فافعلوا ما تؤمرون | ٦٨ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | ولا يلتفت منكم أحد وامضوا حيث تؤمرون | ٦٥ | ك الحجر | ١٥ |
| يُؤْمَرُونَ : | يخافون ربهم من فوقهم و يفعلون ما يؤمرون | ٥٠ | ك النحل | ١٦ |
| (٢) | لا يعصون الله ما أمرهم و يفعلون ما يؤمرون ... | ٦ | م التحريم | ٦٦ |
| يَأْتَمِرُونَ : | قال يا موسى إن الملأ يأتمرون بك ليقتلوك | ٢٠ | ك القصص | ٢٨ |
| وَأْتَمِرُوا : | وأتمروا بينكم بمعروف ... ... ... ... ... | ٦ | م الطلاق | ٦٥ |
| الْأَمْرُ ، وَأَمْرُ : | وقضى الأمر و إلى الله ترجع الأمور... | ٢١٠ | م البقرة | ٢ |
| (٧٢) | ليس لك من الأمر شيء أو يتوب عليهم أو يعذبهم | ١٢٨ | م آل عمران | ٣ |
| | حتى إذا فشلتم وتنازعتم في الأمر ... ... ... ... | ١٥٢ | م » | ٣ |
| | يقولون هل لنا من الأمر من شيء ... ... ... | ١٥٤ | م » | ٣ |
| | قل إن الأمر كله لله يخفون في أنفسهم ما لا يبدون لك | ١٥٤ | م » | ٣ |
| | يقولون لو كان لنا من الأمر شيء ما قتلنا ههنا | ١٥٤ | م » | ٣ |
| | فاعف عنهم واستغفر لهم وشاورهم في الأمر ... ... | ١٥٩ | م » | ٣ |
| | وكان أمر الله مفعولا ... ... ... ... ... ... | ٤٧ | م النساء | ٤ |
| | أطيعوا الله وأطيعوا الرسول وأولي الأمر منكم | ٥٩ | م » | ٤ |
| | و إذا جاءهم أمر من الأمن أو الخوف أذاعوا به | ٨٣ | م » | ٤ |
| | ولو ردوه إلى الرسول و إلى أولي الأمر منهم لعلمه | | | |
| | الذين يستنبطونه منهم ... ... ... ... ... ... | ٨٣ | م » | ٤ |
| | فعسى الله أن يأتي بالفتح أو أمر من عنده ... ... | ٥٢ | م المائدة | ٥ |
| | ولو أنزلنا ملكا لقضي الأمر ثم لا ينظرون ... ... | ٨ | ك الأنعام | ٦ |
| | قل لو أن عندي ما تستعجلون به لقضي الأمر بيني و بينكم | ٥٨ | ك » | ٦ |
| | ألا له الخلق والأمر تبارك الله رب العالمين ... ... | ٥٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | فعقروا الناقة وعتوا عن أمر ربهم ... ... ... ... | ٧٧ | ك » | ٧ |
| | بئسما خلفتموني من بعدي أعجلتم أمر ربكم ... ... | ١٥٠ | ك » | ٧ |
| | ولو أراكهم كثيرا لفشلتم ولتنازعتم في الأمر | ٤٣ | م الأنفال | ٨ |
| | حتى جاء الحق وظهر أمر الله وهم كارهون ... ... | ٤٨ | م التوبة | ٩ |
| | وآخرون مرجون لأمر الله إما يعذبهم و إما يتوب عليهم | ١٠٦ | م » | ٩ |
| | ثم استوى على العرش يدبر الأمر ... ... ... ... | ٣ | ك يونس | ١٠ |
| | ومن يدبر الأمر فسيقولون الله ... ... ... ... ... | ٣١ | ك » | ١٠ |
| | قال لا عاصم اليوم من أمر الله إلا من رحم | ٤٣ | ك هود | ١١ |
| | وفاض الماء وقضي الأمر واستوت على الجودي | ٤٤ | ك » | ١١ |
| | وعصوا رسله واتبعوا أمر كل جبار عنيد ... ... | ٥٩ | ك » | ١١ |
| | قالوا أتعجبين من أمر الله رحمة الله و بركاته عليكم ... | ٧٣ | ك » | ١١ |
| | إنه قد جاء أمر ربك و إنهم آتيهم عذاب غير مردود | ٧٦ | ك » | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الْأَمْرُ وَأَمْرُ : | إلى فرعون وملئه فاتبعوا أمر فرعون... | ٩٧ | ك هود | ١١ |
| | وما أمر فرعون برشيد ... ... ... ... ... ... | ٩٧ | ك » | ١١ |
| | لما جاء أمر ربك وما زادوهم غير تتبيب ... ... | ١٠١ | ك » | ١١ |
| | ولله غيب السموات والأرض و إليه يرجع الأمر كله | ١٢٣ | ك » | ١١ |
| | قضي الأمر الذي فيه تستفتيان ... ... ... ... | ٤١ | ك يوسف | ١٢ |
| | يدبر الأمر يفصل الآيات لعلكم بلقاء ربكم توقنون | ٢ | م الرعد | ١٣ |
| | له معقبات من بين يديه ومن خلفه يحفظونه من أمر الله | ١١ | م » | ١٣ |
| | بل لله الأمر جميعا... ... ... ... ... ... | ٣١ | م » | ١٣ |
| | وقال الشيطان لما قضي الأمر إن الله وعدكم وعد الحق | ٢٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وقضينا إليه ذلك الأمر أن دابر هؤلاء مقطوع مصبحين | ٦٦ | ك الحجر | ١٥ |
| | أتى أمر الله فلا تستعجلوه سبحانه وتعالى عما يشركون | ١ | ك النحل | ١٦ |
| | هل ينظرون إلا أن تأتيهم الملائكة أو يأتي أمر ربك | ٣٣ | ك » | ١٦ |
| | وما أمر الساعة إلا كلمح البصر أو هو أقرب ... ... | ٧٧ | ك » | ١٦ |
| | و يسئلونك عن الروح قل الروح من أمر ربي ... ... | ٨٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فسجدوا إلا إبليس كان من الجن ففسق عن أمر ربه | ٥٠ | ك الكهف | ١٨ |
| | وأنذرهم يوم الحسرة إذ قضي الأمر ... ... ... | ٣٩ | ك مريم | ١٩ |
| | وما نتنزل إلا بأمر ربك له ما بين أيدينا وما خلفنا | ٦٤ | ك » | ١٩ |
| | لكل أمة جعلنا منسكا هم ناسكوه فلا ينازعنك في الأمر | ٦٧ | م الحج | ٢٢ |
| | و إذا كانوا معه على أمر جامع لم يذهبوا حتى يستأذنوه | ٦٢ | م النور | ٢٤ |
| | ولا تطيعوا أمر المسرفين ... ... ... ... ... ... | ١٥١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | قالوا نحن أولوا قوة وأولوا بأس شديد والأمر إليك | ٣٣ | ك النمل | ٢٧ |
| | وما كنت بجانب الغربي إذ قضينا إلى موسى الأمر | ٤٤ | ك القصص | ٢٨ |
| | لله الأمر من قبل ومن بعد و يومئذ يفرح المؤمنون | ٤ | ك الروم | ٣٠ |
| | يدبر الأمر من السماء إلى الأرض ثم يعرج إليه... ... | ٥ | ك السجدة | ٣٢ |
| | إذا قضوا منهن وطرا وكان أمر الله مفعولا... ... | ٣٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وكان أمر الله قدرا مقدورا... ... ... ... ... | ٣٨ | م » | ٣٣ |
| | فإذا جاء أمر الله قضي بالحق وخسر هنالك المبطلون | ٧٨ | ك غافر | ٤٠ |
| | فيها يفرق كل أمر حكيم ... ... ... ... ... | ٤ | ك الدخان | ٤٤ |
| | وآتيناهم بينات من الأمر ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | ثم جعلناك على شريعة من الأمر فاتبعها... ... ... | ١٨ | ك » | ٤٥ |
| | تدمر كل شيء بأمر ربها فأصبحوا لا يرى إلا مساكنهم | ٢٥ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | فإذا عزم الأمر فلو صدقوا الله لكان خيرا لهم | ٢١ | م محمد | ٤٧ |
| | ستطيعكم في بعض الأمر والله يعلم إسرارهم ... ... | ٢٦ | م » | ٤٧ |
| | لو يطيعكم في كثير من الأمر لعنتم ... ... ... ... | ٧ | م الحجرات | ٤٩ |
| | فقاتلوا التي تبغي حتى تفيء إلى أمر الله ... ... | ٩ | م » | ٤٩ |
| | بل كذبوا بالحق لما جاءهم فهم في أمر مريج... ... | ٥ | ك ق | ٥٠ |
| | فعتوا عن أمر ربهم فأخذتهم الصاعقة وهم ينظرون | ٤٤ | ك الذاريات | ٥١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَمْر | : وكذبوا واتبعوا أهواءهم وكل أمر مستقر ... ... | ٣ | ك القمـر | ٥٤ |
| | وفجرنا الأرض عيونا فالتقى الماء على أمر قد قدر | ١٢ | ك « | ٥٤ |
| | وغرتكم الأمانى حتى جاء أمر الله وغركم بالله الغرور | ١٤ | م الحديد | ٥٧ |
| | ذلك أمر الله أنزله إليكم ومن يتق الله يكفر عنه سيئاته | ٥ | م الطلاق | ٦٥ |
| | وكأين من قرية عتت عن أمر ربها ورسله فحاسبناها | ٨ | م « | ٦٥ |
| | يتنزل الأمر بينهن لتعلموا أن الله على كل شىء قدير | ١٢ | م « | ٦٥ |
| | يوم لا تملك نفس لنفس شيئا والأمر يومئذ لله | ١٩ | ك الانفطار | ٨٢ |
| | تنزل الملائكة والروح فيها بإذن ربهم من كل أمر | ٤ | ك القدر | ٩٧ |
| أَمْرًا | : وإذا قضى أمرا فإنما يقول له كن فيكون... ... | ١١٧ | م البقرة | ٢ |
| (١٧) | إذا قضى أمرا فإنما يقول له كن فيكون ... ... | ٤٧ | م آل عمران | ٣ |
| | ولكن ليقضى الله أمرا كان مفعولا ... ... ... ... | ٤٢ | م الأنفال | ٨ |
| | ويقللكم فى أعينهم ليقضى الله أمرا كان مفعولا | ٤٤ | م « | ٨ |
| | قال بل سولت لكم أنفسكم أمرا فصبر جميل ... ... | ١٨ | ك يوسف | ١٢ |
| | قال بل سولت لكم أنفسكم أمرا فصبر جميل ... ... | ٨٣ | ك « | ١٢ |
| | قال ستجدنى إن شاء الله صابرا ولا أعصى لك أمرا | ٦٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | ولنجعله آية للناس ورحمة منا وكان أمرا مقضيا | ٢١ | ك مريم | ١٩ |
| | سبحانه إذا قضى أمرا فإنما يقول له كن فيكون | ٣٥ | ك « | ١٩ |
| | أفتونى فى أمرى ما كنت قاطعة أمرا حتى تشهدون | ٣٢ | ك النمل | ٢٧ |
| | إذا قضى الله ورسوله أمرا أن يكون لهم الخيرة من أمرهم | ٣٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | فإذا قضى أمرا فإنما يقول له كن فيكون ... ... | ٦٨ | ك غافر | ٤٠ |
| | أم أبرموا أمرا فإنا مبرمون... ... ... ... ... ... | ٧٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | أمرا من عندنا إنا كنا مرسلين ... ... ... ... ... | ٥ | ك الدخان | ٤٤ |
| | فالمقسمات أمرا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك الذاريات | ٥١ |
| | لا تدرى لعل الله يحدث بعد ذلك أمرا ... ... ... | ١ | م الطلاق | ٦٥ |
| | فالمدبرات أمرا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك النازعات | ٧٩ |
| أَمْرُكُمْ | : فعلى الله توكلت فأجمعوا أمركم وشركاءكم ... ... | ٧١ | ك يونس | ١٠ |
| (٣) | ثم لا يكن أمركم عليكم غمة ثم اقضوا إلىّ ولا تنظرون | ٧١ | ك « | ١٠ |
| | ينشر لكم ربكم من رحمته ويهيىء لكم من أمركم مرفقا | ١٦ | ك الكهف | ١٨ |
| أَمْرَنَا | : وربنا اغفر لنا ذنوبنا وإسرافنا فى أمرنا وثبت أقدامنا | ١٤٧ | م آل عمران | ٣ |
| (١٦) | وإن تصبك مصيبة يقولوا قد أخذنا أمرنا من قبل | ٥٠ | م التوبة | ٩ |
| | أتاها أمرنا ليلا أو نهارا فجعلناها حصيدا ... ... | ٢٤ | ك يونس | ١٠ |
| | حتى إذا جاء أمرنا وفار التنور قلنا احمل فيها ... ... | ٤٠ | ك هود | ١١ |
| | ولما جاء أمرنا نجينا هودا والذين آمنوا معه... ... | ٥٨ | ك « | ١١ |
| | فلما جاء أمرنا نجينا صالحا والذين آمنوا معه ... ... | ٦٦ | ك « | ١١ |
| | فلما جاء أمرنا جعلنا عاليها سافلها وأمطرنا عليها... ... | ٨٢ | ك « | ١١ |
| | ولما جاء أمرنا نجينا شعيبا والذين آمنوا معه... ... | ٩٤ | ك « | ١١ |
| | ربنا آتنا من لدنك رحمة وهيىء لنا من أمرنا رشدا | ١٠ | ك الكهف | ١٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَمْرَنَا | : فله جزاء الحسنى وسنقول له من أمرنا يسرا... ... | ٨٨ | م الكهف | ١٨ |
| | وجعلناهم أئمة يهدون بأمرنا وأوحينا إليهم ... ... | ٧٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | فإذا جاء أمرنا وفار التنور فاسلك فيها من كل زوجين | ٢٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وجعلنا منهم أئمة يهدون بأمرنا لما صبروا ... ... | ٢٤ | ك السجدة | ٣٢ |
| | ومن يزغ منهم عن أمرنا نذقه من عذاب السعير | ١٢ | ك سبإ | ٣٤ |
| | وكذلك أوحينا إليك روحا من أمرنا ... ... ... ... | ٥٢ | ك الشورى | ٤٢ |
| | وما أمرنا إلا واحدة كلمح بالبصر ... ... ... ... | ٥٠ | ك القمر | ٥٤ |
| أَمْرِهِ | : فاعفوا واصفحوا حتى يأتى الله بأمره... ... ... | ١٠٩ | م البقرة | ٢ |
| (٢٢) | فله ما سلف وأمره إلى الله... ... ... ... ... ... | ٢٧٥ | م « | ٢ |
| | أو عدل ذلك صياما ليذوق وبال أمره... ... ... ... | ٩٥ | م المائدة | ٥ |
| | والشمس والقمر والنجوم مسخرات بأمره ... ... | ٥٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | فتربصوا حتى يأتى الله بأمره والله لا يهدى القوم الفاسقين | ٢٤ | م التوبة | ٩ |
| | والله غالب على أمره ولكن أكثر الناس لا يعلمون | ٢١ | ك يوسف | ١٢ |
| | وسخر لكم الفلك لتجرى فى البحر بأمره ... ... ... | ٣٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | ينزل الملائكة بالروح من أمره على من يشاء من عباده | ٢ | ك النحل | ١٦ |
| | والنجوم مسخرات بأمره إن فى ذلك لآيات لقوم يعقلون | ١٢ | ك « | ١٦ |
| | واتبع هواه وكان أمره فرطا ... ... ... ... ... | ٢٨ | م الكهف | ١٨ |
| | لا يسبقونه بالقول وهم بأمره يعملون ... ... ... | ٢٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ولسليمان الريح عاصفة تجرى بأمره ... ... ... ... | ٨١ | ك « | ٢١ |
| | سخر لكم ما فى الأرض والفلك تجرى فى البحر بأمره | ٦٥ | م الحج | ٢٢ |
| | فليحذر الذين يخالفون عن أمره أن تصيبهم فتنة | ٦٣ | م النور | ٢٤ |
| | ومن آياته أن تقوم السماء والأرض بأمره ... ... | ٢٥ | ك الروم | ٣٠ |
| | ولتجرى الفلك بأمره ولتبتغوا من فضله ولعلكم تشكرون | ٤٦ | ك « | ٣٠ |
| | إنما أمره إذا أراد شيئا أن يقول له كن فيكون | ٨٢ | ك يس | ٣٦ |
| | فسخرنا له الريح تجرى بأمره رخاء حيث أصاب | ٣٦ | ك ص | ٣٨ |
| | ذو العرش يلقى الروح من أمره على من يشاء من عباده | ١٥ | ك غافر | ٤٠ |
| | الله الذى سخر لكم البحر لتجرى الفلك فيه بأمره | ١٢ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | ومن يتوكل على الله فهو حسبه إن الله بالغ أمره | ٣ | م الطلاق | ٦٥ |
| | ومن يتق الله يجعل له من أمره يسرا ... ... ... | ٤ | م « | ٦٥ |
| أَمْرِهَا | : وأوحى فى كل سماء أمرها ... ... ... ... ... | ١٢ | ك فصلت | ٤١ |
| (٣) | فذاقت وبال أمرها ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | م الطلاق | ٦٥ |
| | وكان عاقبة أمرها خسرا ... ... ... ... ... ... | ٩ | م « | ٦٥ |
| أَمْرِهِمْ | : إنما أمرهم إلى الله ثم ينبئهم بما كانوا يفعلون | ١٥٩ | ك الأنعام | ٦ |
| (١٢) | وأوحينا إليه لتنبئنهم بأمرهم هذا وهم لا يشعرون | ١٥ | ك يوسف | ١٢ |
| | وما كنت لديهم إذ أجمعوا أمرهم وهم يمكرون... ... | ١٠٢ | ك « | ١٢ |
| | إذ يتنازعون بينهم أمرهم فقالوا ابنوا عليهم بنيانا | ٢١ | ك الكهف | ١٨ |
| | قال الذين غلبوا على أمرهم لنتخذن عليهم مسجدا | ٢١ | ك « | ١٨ |
| | فتنازعوا أمرهم بينهم وأسروا النجوى ... ... ... | ٦٢ | ك طه | ٢٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَمْرَهُمْ | : وتقطعوا أمرهم بينهم كل إلينا راجعون ... | ٩٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | فتقطعوا أمرهم بينهم زبرا كل حزب بما لديهم فرحون | ٥٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | إذا قضى الله ورسوله أمرا أن يكون لهم الخيرة من أمرهم | ٣٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وأمرهم شورى بينهم ومما رزقناهم ينفقون... ... ... | ٣٨ | ك الشورى | ٤٢ |
| | كمثل الذين من قبلهم قريبا ذاقوا وبال أمرهم | ١٥ | م الحشر | ٥٩ |
| | فذاقوا وبال أمرهم ولهم عذاب أليم ... ... ... | ٥ | م التغابن | ٦٤ |
| أَمْرِي | : قال لا تؤاخذني بما نسيت ولا ترهقني من أمري | ٧٣ | ك الكهف | ١٨ |
| (٨) | وما فعلته عن أمري ذلك تأويل ما لم تسطع عليه صبرا | ٨٢ | ك « | ١٨ |
| | ويسر لي أمري ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك طه | ٢٠ |
| | وأشركه في أمري ... ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك « | ٢٠ |
| | وإن ربكم الرحمن فاتبعوني وأطيعوا أمري ... ... | ٩٠ | ك « | ٢٠ |
| | ألا تتبعن أفعصيت أمري ... ... ... ... ... | ٩٣ | ك « | ٢٠ |
| | قالت يأيها الملأ أفتوني في أمري ... ... ... ... | ٣٢ | ك النمل | ٢٧ |
| | وأفوض أمري إلى الله إن الله بصير بالعباد ... ... | ٤٤ | ك غافر | ٤٠ |
| الْأُمُورُ | : وقضى الأمر وإلى الله ترجع الأمور ... ... | ٢١٠ | م البقرة | ٢ |
| (١٣) | ولله ما في السموات وما في الأرض وإلى الله ترجع الأمور | ١٠٩ | م آل عمران | ٣ |
| | وإن تصبروا وتتقوا فإن ذلك من عزم الأمور | ١٨٦ | م « | ٣ |
| | ليقضي الله أمرا كان مفعولا وإلى الله ترجع الأمور | ٤٤ | م الأنفال | ٨ |
| | لقد ابتغوا الفتنة من قبل وقلبوا لك الأمور... ... | ٤٨ | م التوبة | ٩ |
| | وأمروا بالمعروف ونهوا عن المنكر ولله عاقبة الأمور | ٤١ | م الحج | ٢٢ |
| | يعلم ما بين أيديهم وما خلفهم وإلى الله ترجع الأمور | ٧٦ | م « | ٢٢ |
| | واصبر على ما أصابك إن ذلك من عزم الأمور | ١٧ | ك لقمان | ٣١ |
| | فقد استمسك بالعروة الوثقى وإلى الله عاقبة الأمور | ٢٢ | ك « | ٣١ |
| | فقد كذبت رسل من قبلك وإلى الله ترجع الأمور | ٤ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ولمن صبر وغفر إن ذلك لمن عزم الأمور... ... | ٤٣ | ك الشورى | ٤٢ |
| | له ما في السموات وما في الأرض ألا إلى الله تصير الأمور | ٥٣ | ك « | ٤٢ |
| | له ملك السموات والأرض وإلى الله ترجع الأمور | ٥ | م الحديد | ٥٧ |
| الْآمِرُونَ | : الآمرون بالمعروف والناهون عن المنكر | ١١٢ | م التوبة | ٩ |
| أَمَّارَةٌ | : وما أبرئ نفسي إن النفس لأمارة بالسوء ... ... | ٥٣ | ك يوسف | ١٢ |
| إِمْرًا | : قال أخرقتها لتغرق أهلها لقد جئت شيئا إمرا | ٧١ | ك الكهف | ١٨ |
| الْأَمْسِ | : فجعلناها حصيدا كأن لم تغن بالأمس ... ... | ٢٤ | ك يونس | ١٠ |
| (٤) | فإذا الذي استنصره بالأمس يستصرخه ... ... ... | ١٨ | ك القصص | ٢٨ |
| | قال يا موسى أتريد أن تقتلني كما قتلت نفسا بالأمس | ١٩ | ك « | ٢٨ |
| | وأصبح الذين تمنوا مكانه بالأمس يقولون ويكأن | | | |
| | الله يبسط الرزق لمن يشاء ... ... ... ... ... | ٨٢ | ك « | ٢٨ |
| الْأَمَلُ | : ذرهم يأكلوا ويتمتعوا ويلههم الأمل ... ... | ٣ | ك الحجر | ١٥ |
| أَمَلًا | : والباقيات الصالحات خير عند ربك ثوابا وخير أملا | ٤٦ | ك الكهف | ١٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| آمِّينَ | : ولا آمين البيت الحرام يبتغون فضلا من ربهم | ٢ | م المائدة | ٥ |
| أُمٌّ | : منه آيات محكمات هن أم الكتاب وأخر متشابهات | ٧ | م آل عمران | ٣ |
| (٩) | مصدق الذي بين يديه ولتنذر أم القرى ومن حولها | ٩٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | قال ابن أم إن القوم استضعفوني وكادوا يقتلونني | ١٥٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | يمحو الله ما يشاء ويثبت وعنده أم الكتاب... ... | ٣٩ | م الرعد | ١٣ |
| | قال يابنؤم لا تأخذ بلحيتي ولا برأسي ... ... ... | ٩٤ | ك طه | ٢٠ |
| | وأوحينا إلى أم موسى أن أرضعيه ... ... ... ... | ٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | وأصبح فؤاد أم موسى فارغا إن كادت لتبدي به | ١٠ | ك « | ٢٨ |
| | وكذلك أوحينا إليك قرآنا عربيا لتنذر أم القرى | ٧ | ك الشورى | ٤٢ |
| | وإنه في أم الكتاب لدينا لعلي حكيم ... ... ... | ٤ | ك الزخرف | ٤٣ |
| أُمُّكَ | : ما كان أبوك امرأ سوء وما كانت أمك بغيا | ٢٨ | ك مريم | ١٩ |
| (٣) | إذ أوحينا إلى أمك ما يوحى ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك طه | ٢٠ |
| | فرجعناك إلى أمك كي تقر عينها ولا تحزن ... ... | ٤٠ | ك « | ٢٠ |
| أُمُّهُ | : فإن لم يكن له ولد وورثه أبواه فلأمه الثلث | ١١ | م النساء | ٤ |
| (١٠) | فإن كان له إخوة فلأمه السدس من بعد وصية | ١١ | م « | ٤ |
| | أن يهلك المسيح ابن مريم وأمه ومن في الأرض جميعا | ١٧ | م المائدة | ٥ |
| | وأمه صديقة كانا يأكلان الطعام ... ... ... ... | ٧٥ | م « | ٥ |
| | وجعلنا ابن مريم وأمه آية وآويناهما إلى ربوة | ٥٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فرددناه إلى أمه كي تقر عينها ولا تحزن ... ... ... | ١٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | حملته أمه وهنا على وهن وفصاله في عامين ... ... | ١٤ | ك لقمان | ٣١ |
| | حملته أمه كرها ووضعته كرها ... ... ... ... ... | ١٥ | م الأحقاف | ٤٦ |
| | وأمه وأبيه ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك عبس | ٨٠ |
| | فأمه هاوية ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك القارعة | ١٠١ |
| أُمِّهَا | : وما كان ربك مهلك القرى حتى يبعث في أمها رسولا | ٥٩ | ك القصص | ٢٨ |
| أُمِّي | : أأنت قلت للناس اتخذوني وأمي إلهين من دون الله | ١١٦ | م المائدة | ٥ |
| أُمَّهَاتُ | : وأمهات نسائكم وربائبكم اللاتي في حجوركم | ٢٣ | م النساء | ٤ |
| أُمَّهَاتُكُمْ | : حرمت عليكم أمهاتكم وبناتكم وأخواتكم | ٢٣ | م « | ٤ |
| (٧) | وأمهاتكم اللاتي أرضعنكم وأخواتكم من الرضاعة | ٢٣ | م « | ٤ |
| | والله أخرجكم من بطون أمهاتكم لا تعلمون شيئا | ٧٨ | ك النحل | ١٦ |
| | أو بيوت أمهاتكم أو بيوت إخوانكم ... ... ... | ٦١ | م النور | ٢٤ |
| | وما جعل أزواجكم اللائي تظاهرون منهن أمهاتكم | ٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | يخلقكم في بطون أمهاتكم خلقا من بعد خلق ... ... | ٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وإذ أنتم أجنة في بطون أمهاتكم ... ... ... ... | ٣٢ | م النجم | ٥٣ |
| أُمَّهَاتُهُمْ | : النبي أولى بالمؤمنين من أنفسهم وأزواجه أمهاتهم | ٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| (٣) | الذين يظاهرون منكم من نسائهم ما هن أمهاتهم | ٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| | إن أمهاتهم إلا اللائي ولدنهم ... ... ... ... ... | ٢ | م « | ٥٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أُمَّة : | ربنا واجعلنا مسلمين لك ومن ذريتنا أمة مسلمة لك | ١٢٨ م | البقـرة | ٢ |
| (٤٩) | تلك أمة قـد خلت لها ما كسبت ولكم ما كسبتم | ١٣٤ م | « | ٢ |
| | تلك أمـة قد خلت لها ما كسبت ولكم ما كسبتم | ١٤١ م | « | ٢ |
| | وكذلك جعلناكم أمة وسطا لتكونوا شهداء ... ... | ١٤٣ م | « | ٢ |
| | كان الناس أمة واحدة فبعث الله النبيين ... ... | ٢١٣ م | « | ٢ |
| | ولتكن منكم أمة يدعون إلى الخير ويأمرون بالمعروف | ١٠٤ م | آل عمران | ٣ |
| | كنتم خير أمة أخرجت للنـاس تأمرون بالمعـروف | ١١٠ م | « | ٣ |
| | من أهـل الكتاب أمة قائمـة يتلون آيات الله ... | ١١٣ م | « | ٣ |
| | فكيف إذا جئنا من كل أمة بشهيد... ... ... ... | ٤١ م | النسـاء | ٤ |
| | ولو شاء الله لجعلكم أمـة واحدة ... ... ... ... | ٤٨ م | المـائدة | ٥ |
| | منهم أمة مقتصدة وكثير منهم ساء ما يعملون... ... | ٦٦ م | « | ٥ |
| | كذلك زينا لكل أمة عملهم ثم إلى ربهم مرجعهم | ١٠٨ ك | الأنعـام | ٦ |
| | ولكل أمة أجل فإذا جاء أجلهم لا يستأخرون ساعة | ٣٤ ك | الأعراف | ٧ |
| | كلما دخلت أمة لعنت أختها ... ... ... ... ... | ٣٨ ك | « | ٧ |
| | ومن قوم موسى أمة يهـدون بالحق وبه يعـدلون | ١٥٩ ك | « | ٧ |
| | وإذ قالت أمة منهـم لم تعظون قوما الله مهلكهم | ١٦٤ م | « | ٧ |
| | وممن خلقنا أمة يهدون بالحق وبه يعدلون ... ... | ١٨١ ك | « | ٧ |
| | وما كان الناس إلا أمة واحدة فاختلفـوا ... ... | ١٩ ك | يونس | ١٠ |
| | ولكل أمة رسـول فإذا جاء رسولهم قضى بينهـم | ٤٧ ك | « | ١٠ |
| | لكل أمة أجل إذا جاء أجلهم فلا يستأخرون ساعة | ٤٩ ك | « | ١٠ |
| | ولئن أخرنا عنهم العذاب إلى أمة معدودة ليقولن ما يحبسه | ٨ ك | هـود | ١١ |
| | ولو شاء ربك لجعل الناس أمة واحدة ... ... ... | ١١٨ ك | « | ١١ |
| | وقال الذى نجا منهما وادكر بعد أمة أنا أنبئكم بتأويله | ٤٥ ك | يوسـف | ١٢ |
| | كذلك أرسلناك فى أمة قد خلت من قبلهـا أمم ... | ٣٠ م | الرعـد | ١٣ |
| | ما تسبق من أمة أجلها وما يستأخرون ... ... ... | ٥ ك | الحجـر | ١٥ |
| | ولقد بعثنا فى كل أمة رسولا أن اعبدوا الله... ... | ٣٦ ك | النـحل | ١٦ |
| | ويوم نبعث من كل أمة شهيدا ثم لا يؤذن للذين كفروا | ٨٤ ك | « | ١٦ |
| | ويوم نبعث فى كل أمة شهيدا عليهـم من أنفسهم | ٨٩ ك | « | ١٦ |
| | تتخذون أيمانكم دخلا بينكم أن تكون أمة ... ... | ٩٢ ك | « | ١٦ |
| | هى أربى من أمة إنما يبلوكم الله به... ... ... ... | ٩٢ ك | « | ١٦ |
| | ولو شاء الله لجعلكم أمة واحدة ولكن يضل من يشاء | ٩٣ ك | « | ١٦ |
| | إن إبراهيم كان أمة قانتا لله حنيفا ولم يك من المشركين | ١٢٠ ك | « | ١٦ |
| | إن هذه أمتكم أمة واحدة وأنا ربكم فاعبدون ... ... | ٩٢ ك | الأنبيـاء | ٢١ |
| | ولكل أمة جعلنا منسكا ليذكروا اسم الله على ما رزقهم | ٣٤ م | الحـج | ٢٢ |
| | لكل أمة جعلنا منسكا هم ناسكوه ... ... ... ... | ٦٧ م | « | ٢٢ |
| | ما تسبق من أمة أجلها وما يستأخرون ... ... ... | ٤٣ ك | المؤمنون | ٢٣ |
| | كلما جاء أمة رسولها كذبوه فأتبعنا بعضهم بعضا | ٤٤ ك | « | ٢٣ |
| أُمَّة : | وإن هذه أمتكم أمـة واحدة وأنا ربكم فاتقون | ٥٢ ك | المؤمنون | ٢٣ |
| | ويوم نحشر من كل أمـة فوجا ممن يكذب بآياتنـا | ٨٣ ك | النمـل | ٢٧ |
| | ولما ورد ماء مدين وجد عليه أمة من الناس يسقون | ٢٣ ك | القصص | ٢٨ |
| | ونزعنا من كل أمة شهيدا فقلنا هاتوا برهانكم... ... | ٧٥ ك | « | ٢٨ |
| | وإن من أمة إلا خلا فيها نذير ... ... ... ... ... | ٢٤ ك | فاطـر | ٣٥ |
| | وهمت كل أمة برسـولهم ليأخذوه وجادلوا بالباطل | ٥ ك | غافـر | ٤٠ |
| | ولو شاء الله لجعلهم أمة واحدة ... ... ... ... ... | ٨ ك | الشورى | ٤٢ |
| | إنا وجدنا آباءنا على أمة وإنا على آثارهم مهتـدون | ٢٢ ك | الزخرف | ٤٣ |
| | إنا وجدنا آباءنا على أمة وإنا على آثارهم مقتدون | ٢٣ ك | « | ٤٣ |
| | ولولا أن يكون الناس أمـة واحدة لجعلنا لمن يكفر | | | |
| | بالرحمن لبيوتهم سقفا من فضة ... ... ... ... ... | ٣٣ ك | « | ٤٣ |
| | وترى كل أمة جاثية ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ ك | الجاثيـة | ٤٥ |
| | كل أمة تدعى إلى كتابها اليوم تجزون ما كنتم تعملون | ٢٨ ك | « | ٤٥ |
| أُمَّتُكُمْ : | إن هـذه أمتكم أمة واحدة وأنا ربكم فاعبدون | ٩٢ ك | الأنبيـاء | ٢١ |
| (٢) | وإن هذه أمتكم أمة واحدة وأنا ربكم فاتقون ... ... | ٥٢ ك | المؤمنون | ٢٣ |
| أُمَم : | وما من دابة فى الأرض ولا طائر يطير بجناحيه إلا أمم | ٣٨ ك | الأنعـام | ٦ |
| (١١) | ولقـد أرسلنا إلى أمم من قبلك فأخذناهم بالبأساء | ٤٢ ك | « | ٦ |
| | قال ادخلوا فى أمم قد خلت من قبلكم من الجن والإنس | ٣٨ ك | الأعراف | ٧ |
| | اهبط بسلام منـا وبركات عليك وعلى أمم ممن معك | ٤٨ ك | هـود | ١١ |
| | وأمم سنمتعهم ثم يمسهم منا عذاب أليم ... ... ... | ٤٨ ك | « | ١١ |
| | كذلك أرسلناك فى أمة قد خلت من قبلها أمم... ... | ٣٠ م | الرعـد | ١٣ |
| | تالله لقد أرسلنا إلى أمم من قبلك فزين لهم الشيطان أعمالهم | ٦٣ ك | النـحل | ١٦ |
| | وإن تكذبوا فقد كذب أمم من قبلكم... ... ... ... | ١٨ ك | العنكبوت | ٢٩ |
| | لئن جاءهم نذير ليكونن أهدى من إحدى الأمم | ٤٢ ك | فاطـر | ٣٥ |
| | وحق عليهم القول فى أمم قد خلت من قبلهم ... ... | ٢٥ ك | فصلت | ٤١ |
| | أولئك الذين حق عليهم القول فى أمم قد خلت من قبلهم | ١٨ ك | الأحقاف | ٤٦ |
| أُمَمًا : | وقطعناهم اثنتى عشرة أسباطا أمما ... ... ... ... | ١٦٠ ك | الأعراف | ٧ |
| (٢) | وقطعناهم فى الأرض أمما منهم الصالحون ومنهم دون ذلك | ١٦٨ م | « | ٧ |
| أَمَامَهُ : | بل يريد الإنسان ليفجر أمامه ... ... ... ... ... | ٥ ك | القيامة | ٧٥ |
| إِمَامٍ : | فانتقمنا منهم وإنهما لبإمام مبين... ... ... ... | ٧٩ ك | الحجـر | ١٥ |
| (٢) | وكل شىء أحصيناه فى إمام مبين ... ... ... ... | ١٢ ك | يس | ٣٦ |
| إِمَامًا : | قال إنى جاعلك للناس إماما قال ومن ذريتى... ... | ١٢٤ م | البقـرة | ٢ |
| (٤) | ويتلوه شاهد منه ومن قبله كتاب موسى إماما ورحمة | ١٧ م | هـود | ١١ |
| | من أزواجنا وذرياتنا قرة أعين واجعلنا للمتقين إماما | ٧٤ ك | الفرقان | ٢٥ |
| | ومن قبله كتاب موسى إماما ورحمة ... ... ... ... | ١٢ ك | الأحقاف | ٤٦ |
| إِمَامِهِمْ : | يوم ندعوا كل أناس بإمامهم ... ... ... ... ... | ٧١ ك | الإسراء | ١٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَئِمَّةً | : فقاتلوا أئمة الكفر إنهم لا أيمان لهم لعلهم ينتهون | ١٢ | م التوبة | ٩ |
| (٥) | وجعلناهم أئمة يهدون بأمرنا ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ونجعلهم أئمة ونجعلهم الوارثين ... ... ... ... ... | ٥ | ك القصص | ٢٨ |
| | وجعلناهم أئمة يدعون إلى النار ويوم القيامة لا ينصرون | ٤١ | ك « | ٢٨ |
| | وجعلنا منهم أئمة يهدون بأمرنا لما صبروا ... ... | ٢٤ | ك السجدة | ٣٢ |
| الأُمِّيَّ | : الذين يتبعون الرسول النبي الأمي ... ... ... ... | ١٥٧ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | فآمنوا بالله ورسوله النبي الأمي الذي يؤمن بالله | ١٥٨ | ك « | ٧ |
| أُمِّيُّونَ | : ومنهم أميون لا يعلمون الكتاب إلا أماني ... ... | ٧٨ | م البقرة | ٢ |
| الأُمِّيِّينَ | : وقل للذين أوتوا الكتاب والأميين أأسلمتم | ٢٠ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | ذلك بأنهم قالوا ليس علينا في الأميين سبيل ... ... | ٧٥ | م « | ٣ |
| | هو الذي بعث في الأميين رسولا منهم ... ... ... | ٢ | م الجمعة | ٦٢ |
| أَمِنَ | : فإن أمن بعضكم بعضا فليؤد الذي اؤتمن أمانته | ٢٨٣ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | أفأمن أهل القرى أن يأتيهم بأسنا بياتا وهم نائمون | ٩٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | أو أمن أهل القرى أن يأتيهم بأسنا ضحى وهم يلعبون | ٩٨ | ك « | ٧ |
| | أفأمن الذين مكروا السيئات أن يخسف الله بهم الأرض | ٤٥ | ك النحل | ١٦ |
| أَمِنْتُكُمْ | : قال هل آمنكم عليه إلا كما أمنتكم على أخيه من قبل | ٦٤ | ك يوسف | ١٢ |
| أَمِنْتُمْ | : فإذا أمنتم فمن تمتع بالعمرة إلى الحج فما استيسر من الهدي | ١٩٦ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | فإذا أمنتم فاذكروا الله كما علمكم ما لم تكونوا تعلمون | ٢٣٩ | م « | ٢ |
| | أفأمنتم أن يخسف بكم جانب البر أو يرسل عليكم حاصبا | ٦٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| | أم أمنتم أن يعيدكم فيه تارة أخرى فيرسل عليكم قاصفا | ٦٩ | ك « | ١٧ |
| | أأمنتم من في السماء أن يخسف بكم الأرض فإذا هي تمور | ١٦ | ك الملك | ٦٧ |
| | أم أمنتم من في السماء أن يرسل عليكم حاصبا ... ... | ١٧ | ك « | ٦٧ |
| أَمِنُوا | : أفأمنوا مكر الله فلا يأمن مكر الله إلا القوم الخاسرون | ٩٩ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | أفأمنوا أن تأتيهم غاشية من عذاب الله ... ... ... | ١٠٧ | ك يوسف | ١٢ |
| آمَنُكُمْ | : قال هل آمنكم عليه إلا كما أمنتكم على أخيه من قبل | ٦٤ | ك « | ١٢ |
| تَأْمَنَّا | : قالوا يا أبانا ما لك لا تأمنا على يوسف وإنا له لناصحون | ١١ | ك « | ١٢ |
| تَأْمَنْهُ | : ومن أهل الكتاب من إن تأمنه بقنطار يؤده إليك | ٧٥ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | ومنهم من إن تأمنه بدينار لا يؤده إليك ... ... ... | ٧٥ | م « | ٣ |
| يَأْمَنُ | : أفأمنوا مكر الله فلا يأمن مكر الله إلا القوم الخاسرون | ٩٩ | ك الأعراف | ٧ |
| يَأْمَنُوا | : ويأمنوا قومهم كلما ردوا إلى الفتنة أركسوا فيها | ٩١ | م النساء | ٤ |
| يَأْمَنُوكُمْ | : ستجدون آخرين يريدون أن يأمنوكم ... ... ... | ٩١ | م « | ٤ |
| آمَنَ | : وإذا قيل لهم آمنوا كما آمن الناس قالوا ... ... | ١٣ | م البقرة | ٢ |
| (٣٣) | أنؤمن كما آمن السفهاء ألا إنهم هم السفهاء ... ... | ١٣ | م « | ٢ |
| | من آمن بالله واليوم الآخر وعمل صالحا فلهم أجرهم | ٦٢ | م « | ٢ |
| | وارزق أهله من الثمرات من آمن منهم بالله ... ... | ١٢٦ | م « | ٢ |
| | ولكن البر من آمن بالله واليوم الآخر والملائكة | ١٧٧ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| آمَنَ | : ولكن اختلفوا فمنهم من آمن ومنهم من كفر ... | ٢٥٣ | م البقرة | ٢ |
| | آمن الرسول بما أنزل إليه من ربه والمؤمنون ... ... | ٢٨٥ | م « | ٢ |
| | كل آمن بالله وملائكته وكتبه ورسله ... ... ... | ٢٨٥ | م « | ٢ |
| | قل يا أهل الكتاب لم تصدون عن سبيل الله من آمن | ٩٩ | م آل عمران | ٣ |
| | ولو آمن أهل الكتاب لكان خيرا لهم ... ... ... | ١١٠ | م « | ٣ |
| | فمنهم من آمن به ومنهم من صد عنه وكفى بجهنم سعيرا | ٥٥ | م النساء | ٤ |
| | من آمن بالله واليوم الآخر وعمل صالحا فلا خوف عليهم | ٦٩ | م المائدة | ٥ |
| | فمن آمن وأصلح فلا خوف عليهم ولا هم يحزنون | ٤٨ | ك الأنعام | ٦ |
| | لمن آمن منهم أتعلمون أن صالحا مرسل من ربه | ٧٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | وتصدون عن سبيل الله من آمن به وتبغونها عوجا | ٨٦ | ك « | ٧ |
| | إنما يعمر مساجد الله من آمن بالله واليوم الآخر | ١٨ | م التوبة | ٩ |
| | أجعلتم سقاية الحاج وعمارة المسجد الحرام كمن آمن بالله | ١٩ | م « | ٩ |
| | فما آمن لموسى إلا ذرية من قومه على خوف من فرعون | ٨٣ | ك يونس | ١٠ |
| | ولو شاء ربك لآمن من في الأرض كلهم جميعا | ٩٩ | ك « | ١٠ |
| | وأوحي إلى نوح أنه لن يؤمن من قومك إلا من قد آمن | ٣٦ | ك هود | ١١ |
| | وأهلك إلا من سبق عليه القول ومن آمن ... ... | ٤٠ | ك « | ١١ |
| | وما آمن معه إلا قليل ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك « | ١١ |
| | وأما من آمن وعمل صالحا فله جزاء الحسنى ... ... | ٨٨ | م الكهف | ١٨ |
| | إلا من تاب وآمن وعمل صالحا فأولئك يدخلون الجنة | ٦٠ | ك مريم | ١٩ |
| | وإني لغفار لمن تاب وآمن وعمل صالحا ثم اهتدى | ٨٢ | ك طه | ٢٠ |
| | إلا من تاب وآمن وعمل عملا صالحا ... ... ... ... | ٧٠ | م الفرقان | ٢٥ |
| | فأما من تاب وآمن وعمل صالحا فعسى أن يكون من المفلحين | ٦٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | ويلكم ثواب الله خير لمن آمن وعمل صالحا ... ... | ٨٠ | ك « | ٢٨ |
| | فآمن له لوط وقال إني مهاجر إلى ربي ... ... ... | ٢٦ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | إلا من آمن وعمل صالحا فأولئك لهم جزاء الضعف | ٣٧ | ك سبإ | ٣٤ |
| | وقال الذي آمن يا قوم إني أخاف عليكم مثل يوم الأحزاب | ٣٠ | ك غافر | ٤٠ |
| | وقال الذي آمن يا قوم اتبعون أهدكم سبيل الرشاد | ٣٨ | ك « | ٤٠ |
| | وشهد شاهد من بني إسرائيل على مثله فآمن واستكبرتم | ١٠ | م الأحقاف | ٤٦ |
| آمَنَتْ | : لا ينفع نفسا إيمانها لم تكن آمنت من قبل ... ... | ١٥٨ | ك الأنعام | ٦ |
| (٥) | لا إله إلا الذي آمنت به بنو إسرائيل ... ... ... | ٩٠ | ك يونس | ١٠ |
| | فلولا كانت قرية آمنت فنفعها إيمانها إلا قوم يونس | ٩٨ | ك « | ١٠ |
| | ما آمنت قبلهم من قرية أهلكناها أفهم يؤمنون ... | ٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | فآمنت طائفة من بني إسرائيل وكفرت طائفة ... | ١٤ | م الصف | ٦١ |
| آمَنْتُ | : حتى إذا أدركه الغرق قال آمنت ... ... ... ... | ٩٠ | ك يونس | ١٠ |
| (٣) | إني آمنت بربكم فاسمعون ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك يس | ٣٦ |
| | وقل آمنت بما أنزل الله من كتاب وأمرت لأعدل بينكم | ١٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| آمَنْتُمْ | : فإن آمنوا بمثل ما آمنتم به فقد اهتدوا ... ... ... | ١٣٧ | م البقرة | ٢ |
| (١٠) | ما يفعل الله بعذابكم إن شكرتم وآمنتم ... ... ... | ١٤٧ | م النساء | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| آمنتم | : إن أقمتم الصلاة وآتيتم الزكاة وآمنتم برسلى ... ... | ١٢ | م المائدة | ٥ |
| | قال الذين استكبروا إنا بالذى آمنتم به كافرون... ... | ٧٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | قال فرعون آمنتم به قبل أن آذن لكم... ... ... ... | ١٢٣ | ك « | ٧ |
| | إن كنتم آمنتم بالله وما أنزلنا على عبدنا يوم الفرقان | ٤١ | م الأنفال | ٨ |
| | أثم إذا ما وقع آمنتم به آلآن وقد كنتم به تستعجلون | ٥١ | ك يونس | ١٠ |
| | إن كنتم آمنتم بالله فعليه توكلوا إن كنتم مسلمين | ٨٤ | ك « | ١٠ |
| | قال آمنتم له قبل أن آذن لكم إنه لكبيركم ... ... ... | ٧١ | ك طه | ٢٠ |
| | قال آمنتم له قبل أن آذن لكم إنه لكبيركم... ... ... | ٤٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| آمنا | : ومن الناس من يقول آمنا بالله وباليوم الآخر... ... | ٨ | م البقرة | ٢ |
| (٣٣) | وإذا لقوا الذين آمنوا قالوا آمنا ... ... ... ... | ١٤ | م « | ٢ |
| | وإذا لقوا الذين آمنوا قالوا آمنا ... ... ... ... | ٧٦ | م « | ٢ |
| | قولوا آمنا بالله وما أنزل إلينا وما أنزل إلى إبراهيم | ١٣٦ | م « | ٢ |
| | والراسخون فى العلم يقولون آمنا به كل من عند ربنا | ٧ | م آل عمران | ٣ |
| | الذين يقولون ربنا إننا آمنا فاغفر لنا ذنوبنا ... | ١٦ | م « | ٣ |
| | قال الحواريون نحن أنصار الله آمنا بالله ... ... | ٥٢ | م « | ٣ |
| | ربنا آمنا بما أنزلت واتبعنا الرسول ... ... ... | ٥٣ | م « | ٣ |
| | قل آمنا بالله وما أنزل علينا وما أنزل على إبراهيم | ٨٤ | م « | ٣ |
| | وإذا لقوكم قالوا آمنا وإذا خلوا عضوا عليكم الأنامل | ١١٩ | م « | ٣ |
| | ربنا إننا سمعنا مناديا ينادى للإيمان أن آمنوا بربكم | ١٩٣ | م « | ٣ |
| | الذين يسارعون فى الكفر من الذين قالوا آمنا بأفواههم | ٤١ | م المائدة | ٥ |
| | هل تنقمون منا إلا أن آمنا بالله وما أنزل إلينا | ٥٩ | م « | ٥ |
| | وإذا جاءوكم قالوا آمنا وقد دخلوا بالكفر ... ... | ٦١ | م « | ٥ |
| | يقولون ربنا آمنا فاكتبنا مع الشاهدين... ... ... | ٨٣ | م « | ٥ |
| | قالوا آمنا واشهد بأننا مسلمون ... ... ... ... | ١١١ | م « | ٥ |
| | قالوا آمنا برب العالمين ... ... ... ... ... ... | ١٢١ | ك الأعراف | ٧ |
| | وما تنقم منا إلا أن آمنا بآيات ربنا لما جاءتنا | ١٢٦ | ك « | ٧ |
| | فألقى السحرة سجدا قالوا آمنا برب هرون وموسى | ٧٠ | ك طه | ٢٠ |
| | إنا آمنا بربنا ليغفر لنا خطايانا ... ... ... ... | ٧٣ | ك « | ٢٠ |
| | يقولون ربنا آمنا فاغفر لنا وارحمنا وأنت خير الراحمين | ١٠٩ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ويقولون آمنا بالله وبالرسول وأطعنا ... ... ... | ٤٧ | م النور | ٢٤ |
| | قالوا آمنا برب العالمين... ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وإذا يتلى عليهم قالوا آمنا به إنه الحق من ربنا | ٥٣ | م القصص | ٢٨ |
| | أحسب الناس أن يتركوا أن يقولوا آمنا وهم لا يفتنون | ٢ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | ومن الناس من يقول آمنا بالله ... ... ... ... | ١٠ | م « | ٢٩ |
| | وقولوا آمنا بالذى أنزل إلينا وأنزل إليكم ... ... | ٤٦ | ك « | ٢٩ |
| | وقالوا آمنا به وأنى لهم التناوش من مكان بعيد | ٥٢ | ك سبأ | ٣٤ |
| | فلما رأوا بأسنا قالوا آمنا بالله وحده ... ... ... | ٨٤ | ك غافر | ٤٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| آمنا | : قالت الأعراب آمنا قل لم تؤمنوا ولكن قولوا أسلمنا | ١٤ | م الحجرات | ٤٩ |
| | قل هو الرحمن آمنا به وعليه توكلنا ... ... ... ... | ٢٩ | ك الملك | ٦٧ |
| | يهدى إلى الرشد فآمنا به ولن نشرك بربنا أحدا | ٢ | ك الجن | ٧٢ |
| | وأنا لما سمعنا الهدى آمنا به ... ... ... ... ... | ١٣ | ك « | ٧٢ |
| آمنهم | : الذى أطعمهم من جوع وآمنهم من خوف ... ... | ٤ | ك قريش | ١٠٦ |
| آمنوا | : يخادعون الله والذين آمنوا وما يخدعون إلا أنفسهم | ٩ | م البقرة | ٢ |
| (٢٥٨) | وإذا لقوا الذين آمنوا قالوا آمنا ... ... ... ... | ١٤ | م « | ٢ |
| | وبشر الذين آمنوا وعملوا الصالحات أن لهم جنات | ٢٥ | م « | ٢ |
| | فأما الذين آمنوا فيعلمون أنه الحق من ربهم ... ... | ٢٦ | م « | ٢ |
| | إن الذين آمنوا والذين هادوا والنصارى والصابئين | ٦٢ | م « | ٢ |
| | وإذا لقوا الذين آمنوا قالوا آمنا ... ... ... ... | ٧٦ | م « | ٢ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات أولئك أصحاب الجنة | ٨٢ | م « | ٢ |
| | ولو أنهم آمنوا واتقوا لمثوبة من عند الله خير..... | ١٠٣ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تقولوا راعنا وقولوا انظرنا | ١٠٤ | م « | ٢ |
| | فإن آمنوا بمثل ما آمنتم به فقد اهتدوا ... ... ... | ١٣٧ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا استعينوا بالصبر والصلاة ... ... | ١٥٣ | م « | ٢ |
| | يحبونهم كحب الله والذين آمنوا أشد حبا لله... ... | ١٦٥ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا كلوا من طيبات ما رزقناكم | ١٧٢ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا كتب عليكم القصاص فى القتلى | ١٧٨ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا كتب عليكم الصيام ... ... ... | ١٨٣ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا ادخلوا فى السلم كافة ... ... ... | ٢٠٨ | م « | ٢ |
| | زين للذين كفروا الحياة الدنيا ويسخرون من الذين آمنوا | ٢١٢ | م « | ٢ |
| | فهدى الله الذين آمنوا لما اختلفوا فيه من الحق | ٢١٣ | م « | ٢ |
| | حتى يقول الرسول والذين آمنوا معه متى نصر الله | ٢١٤ | م « | ٢ |
| | إن الذين آمنوا والذين هاجروا ... ... ... ... | ٢١٨ | م « | ٢ |
| | فلما جاوزه هو والذين آمنوا معه قالوا لا طاقة لنا | ٢٤٩ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا أنفقوا مما رزقناكم ... ... ... | ٢٥٤ | م « | ٢ |
| | الله ولى الذين آمنوا يخرجهم من الظلمات إلى النور | ٢٥٧ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تبطلوا صدقاتكم بالمن والأذى | ٢٦٤ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا أنفقوا من طيبات ما كسبتم... ... | ٢٦٧ | م « | ٢ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات وأقاموا الصلاة | ٢٧٧ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله وذروا ما بقى من الربا | ٢٧٨ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا إذا تداينتم بدين إلى أجل مسمى فاكتبوه | ٢٨٢ | م « | ٢ |
| | وأما الذين آمنوا وعملوا الصالحات فيوفيهم أجورهم | ٥٧ | م آل عمران | ٣ |
| | للذين اتبعوه وهذا النبى والذين آمنوا ... ... ... | ٦٨ | م « | ٣ |
| | آمنوا بالذى أنزل على الذين آمنوا وجه النهار ... ... | ٧٢ | م « | ٣ |
| | يأيها الذين آمنوا إن تطيعوا فريقا من الذين أوتوا الكتاب يردوكم بعد إيمانكم كافرين ... ... | ١٠٠ | م « | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| آمَنُوا : | والذين آمنوا من بعد وهاجروا وجاهدوا معكم | ٧٥ | م الأنفال | ٨ |
| | الذين آمنوا وهاجروا وجاهدوا فى سبيل الله... ... | ٢٠ | م التوبة | ٩ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تتخذوا آباءكم وإخوانكم أولياء إن استحبوا الكفر... ... ... ... ... ... | ٢٣ | م « | ٩ |
| | يأيها الذين آمنوا إنما المشركون نجس ... ... ... | ٢٨ | م « | ٩ |
| | يأيها الذين آمنوا إن كثيرا من الأحبار ... ... | ٣٤ | م « | ٩ |
| | أيها الذين آمنوا ما لكم إذا قيل لكم انفروا ... ... | ٣٨ | م « | ٩ |
| | يؤمن بالله ويؤمن للمؤمنين ورحمة للذين آمنوا منكم | ٦١ | م « | ٩ |
| | لكن الرسول والذين آمنوا معه جاهدوا بأموالهم | ٨٨ | م « | ٩ |
| | ما كان للنبيّ والذين آمنوا أن يستغفروا للمشركين | ١١٣ | م « | ٩ |
| | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله وكونوا مع الصادقين | ١١٩ | م « | ٩ |
| | يأيها الذين آمنوا قاتلوا الذين يلونكم من الكفار | ١٢٣ | م « | ٩ |
| | فأما الذين آمنوا فزادتهم إيمانا وهم يستبشرون | ١٢٤ | م « | ٩ |
| | وبشر الذين آمنوا أن لهم قدم صدق عند ربهم | ٢ | ك يونس | ١٠ |
| | ليجزى الذين آمنوا وعملوا الصالحات بالقسط... ... | ٤ | ك « | ١٠ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات يهديهم ربهم | ٩ | ك « | ١٠ |
| | الذين آمنوا وكانوا يتقون ... ... ... ... ... | ٦٣ | ك « | ١٠ |
| | إلا قوم يونس لما آمنوا كشفنا عنهم عذاب الخزى | ٩٨ | ك « | ١٠ |
| | ثم ننجى رسلنا والذين آمنوا ... ... ... ... ... | ١٠٣ | ك « | ١٠ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات وأخبتوا إلى ربهم | ٢٣ | ك هود | ١١ |
| | وما أنا بطارد الذين آمنوا إنهم ملاقوا ربهم... ... | ٢٩ | ك « | ١١ |
| | ولما جاء أمرنا نجينا هودا والذين آمنوا معه برحمة منا | ٥٨ | ك « | ١١ |
| | فلما جاء أمرنا نجينا صالحا والذين آمنوا معه برحمة منا | ٦٦ | ك « | ١١ |
| | ولما جاء أمرنا نجينا شعيبا والذين آمنوا معه برحمة منا | ٩٤ | ك « | ١١ |
| | ولأجر الآخرة خير للذين آمنوا وكانوا يتقون... ... | ٥٧ | ك يوسف | ١٢ |
| | الذين آمنوا وتطمئن قلوبهم بذكر الله ... ... ... | ٢٨ | م الرعد | ١٣ |
| | الذين آمنوا وعملوا الصالحات طوبى لهم وحسن مآب | ٢٩ | م « | ١٣ |
| | أفلم ييئس الذين آمنوا أن لو يشاء الله لهدى الناس | ٣١ | م « | ١٣ |
| | وأدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات تجرى | ٢٣ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | يثبت الله الذين آمنوا بالقول الثابت فى الحياة الدنيا | ٢٧ | ك « | ١٤ |
| | قل لعبادى الذين آمنوا يقيموا الصلاة ... ... | ٣١ | ك « | ١٤ |
| | إنه ليس له سلطان على الذين آمنوا ... ... ... | ٩٩ | ك النحل | ١٦ |
| | ليثبت الذين آمنوا وهدى وبشرى للمسلمين ... ... | ١٠٢ | ك « | ١٦ |
| | إنهم فتية آمنوا بربهم وزدناهم هدى ... ... ... | ١٣ | ك الكهف | ١٨ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات إنا لا نضيع أجر من أحسن عملا ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك « | ١٨ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات كانت لهم جنات | ١٠٧ | ك « | ١٨ |
| | قال الذين كفروا للذين آمنوا أى الفريقين خير مقاما | ٧٣ | ك مريم | ١٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| آمَنُوا : | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات سيجعل لهم الرحمن ودا | ٩٦ | ك مريم | ١٩ |
| | إن الله يدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات | ١٤ | م الحج | ٢٢ |
| | إن الذين آمنوا والذين هادوا والصابئين والنصارى | ١٧ | م « | ٢٢ |
| | إن الله يدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات | ٢٣ | م « | ٢٢ |
| | إن الله يدافع عن الذين آمنوا ... ... ... ... ... | ٣٨ | م « | ٢٢ |
| | فالذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم مغفرة ورزق كريم | ٥٠ | م « | ٢٢ |
| | وإن الله لهادى الذين آمنوا إلى صراط مستقيم | ٥٤ | « | ٢٢ |
| | فالذين آمنوا وعملوا الصالحات فى جنات النعيم... ... | ٥٦ | م « | ٢٢ |
| | يأيها الذين آمنوا اركعوا واسجدوا واعبدوا ربكم | ٧٧ | م « | ٢٢ |
| | إن الذين يحبون أن تشيع الفاحشة فى الذين آمنوا لهم عذاب أليم ... ... ... ... ... ... ... | ١٩ | م النور | ٢٤ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تتبعوا خطوات الشيطان... ... | ٢١ | م « | ٢٤ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تدخلوا بيوتا غير بيوتكم... ... | ٢٧ | م « | ٢٤ |
| | وعد الله الذين آمنوا منكم وعملوا الصالحات ليستخلفنهم | ٥٥ | م « | ٢٤ |
| | يأيها الذين آمنوا ليستأذنكم الذين ملكت أيمانكم | ٥٨ | م « | ٢٤ |
| | إنما المؤمنون الذين آمنوا بالله ورسوله ... ... ... | ٦٢ | م « | ٢٤ |
| | إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات وذكروا الله كثيرا | ٢٢٧ | م الشعراء | ٢٦ |
| | وأنجينا الذين آمنوا وكانوا يتقون ... ... ... ... | ٥٣ | ك النمل | ٢٧ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات لنكفرن عنهم سيئاتهم | ٧ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات لندخلنهم فى الصالحين | ٩ | م « | ٢٩ |
| | وليعلمن الله الذين آمنوا وليعلمن المنافقين ... ... | ١١ | م « | ٢٩ |
| | وقال الذين كفروا للذين آمنوا اتبعوا سبيلنا... ... | ١٢ | ك « | ٢٩ |
| | والذين آمنوا بالباطل وكفروا بالله أولئك هم الخاسرون | ٥٢ | ك « | ٢٩ |
| | ياعبادى الذين آمنوا إن أرضى واسعة فإياى فاعبدون | ٥٦ | ك « | ٢٩ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات لنبوئنهم من الجنة غرفا | ٥٨ | ك « | ٢٩ |
| | فأما الذين آمنوا وعملوا الصالحات فهم فى روضة | ١٥ | ك الروم | ٣٠ |
| | ليجزى الذين آمنوا وعملوا الصالحات من فضله | ٤٥ | ك « | ٣٠ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم جنات النعيم | ٨ | ك لقمان | ٣١ |
| | أما الذين آمنوا وعملوا الصالحات فلهم جنات المأوى | ١٩ | ك السجدة | ٣٢ |
| | يأيها الذين آمنوا اذكروا نعمة الله عليكم ... ... | ٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | يأيها الذين آمنوا اذكروا الله ذكرا كثيرا ... ... | ٤١ | م « | ٣٣ |
| | يأيها الذين آمنوا إذا نكحتم المؤمنات ثم طلقتموهن | ٤٩ | م « | ٣٣ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تدخلوا بيوت النبيّ... ... ... | ٥٣ | م « | ٣٣ |
| | يأيها الذين آمنوا صلوا عليه وسلموا تسليما ... ... | ٥٦ | م « | ٣٣ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تكونوا كالذين آذوا موسى | ٦٩ | م « | ٣٣ |
| | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله وقولوا قولا سديدا | ٧٠ | م « | ٣٣ |
| | ليجزى الذين آمنوا وعملوا الصالحات ... ... ... | ٤ | ك سبأ | ٣٤ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم مغفرة وأجر كبير | ٧ | ك فاطر | ٣٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| آمَنُوا: | قال الذين كفروا للذين آمنوا أنطعم من لو يشاء الله | | | |
| | أطعمه... ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك يس | ٣٦ |
| | فآمنوا فمتعناهم إلى حين ... ... ... ... ... ... | ١٤٨ | ك الصافات | ٣٧ |
| | إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات وقليل ماهم... ... | ٢٤ | ك ص | ٣٨ |
| | أم نجعل الذين آمنوا وعملوا الصالحات كالمفسدين | ٢٨ | ك « | ٣٨ |
| | قل يا عباد الذين آمنوا اتقوا ربكم... ... ... ... | ١٠ | ك الزمر | ٣٩ |
| | يسبحون بحمد ربهم ويؤمنون به ويستغفرون للذين آمنوا | ٧ | ك غافر | ٤٠ |
| | قالوا اقتلوا أبناء الذين آمنوا معه واستحيوا نساءهم | ٢٥ | ك « | ٤٠ |
| | كبر مقتا عند الله وعند الذين آمنوا ... ... ... | ٣٥ | ك « | ٤٠ |
| | إنا لننصر رسلنا والذين آمنوا في الحياة الدنيا... ... | ٥١ | ك « | ٤٠ |
| | وما يستوى الأعمى والبصير والذين آمنوا ... ... | ٥٨ | ك « | ٤٠ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم أجر غير ممنون | ٨ | ك فصلت | ٤١ |
| | ونجينا الذين آمنوا وكانوا يتقون ... ... ... ... | ١٨ | ك « | ٤١ |
| | أعجمى وعربى قل هو للذين آمنوا هدى وشفاء | ٤٤ | ك « | ٤١ |
| | والذين آمنوا مشفقون منها ويعلمون أنها الحق | ١٨ | ك الشورى | ٤٢ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات في روضات الجنات | ٢٢ | ك « | ٤٢ |
| | ذلك الذى يبشر الله عباده الذين آمنوا... ... ... | ٢٣ | م « | ٤٢ |
| | ويستجيب الذين آمنوا وعملوا الصالحات ... ... | ٢٦ | ك « | ٤٢ |
| | وما عند الله خير وأبقى للذين آمنوا وعلى ربهم يتوكلون | ٣٦ | ك « | ٤٢ |
| | وقال الذين آمنوا إن الخاسرين الذين خسروا أنفسهم | ٤٥ | ك « | ٤٢ |
| | الذين آمنوا بآياتنا وكانوا مسلمين ... ... ... ... | ٦٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | قل للذين آمنوا يغفروا للذين لا يرجون أيام الله | ١٤ | م الجاثية | ٤٥ |
| | أم حسب الذين اجترحوا السيئات أن نجعلهم كالذين آمنوا | ٢١ | ك « | ٤٥ |
| | فأما الذين آمنوا وعملوا الصالحات فيدخلهم ربهم في رحمته | ٣٠ | ك « | ٤٥ |
| | وقال الذين كفروا للذين آمنوا لو كان خيرا ما سبقونا إليه | ١١ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات ... ... ... ... ... | ٢ | م محمد | ٤٧ |
| | وآمنوا بما نزل على محمد وهو الحق من ربهم ... ... | ٢ | م « | ٤٧ |
| | وأن الذين آمنوا اتبعوا الحق من ربهم... ... ... | ٢ | م « | ٤٧ |
| | يأيها الذين آمنوا إن تنصروا الله ينصركم ... ... | ٧ | م « | ٤٧ |
| | ذلك بأن الله مولى الذين آمنوا ... ... ... ... | ١١ | م « | ٤٧ |
| | إن الله يدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات | ١٢ | م « | ٤٧ |
| | ويقول الذين آمنوا لولا نزلت سورة ... ... ... | ٢٠ | م « | ٤٧ |
| | يأيها الذين آمنوا أطيعوا الله وأطيعوا الرسول | ٣٣ | م « | ٤٧ |
| | وعد الله الذين آمنوا وعملوا الصالحات منهم مغفرة | ٢٩ | م الفتح | ٤٨ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تقدموا بين يدى الله ورسوله | ١ | م الحجرات | ٤٩ |
| | يأيها الذين آمنوا لا ترفعوا أصواتكم فوق صوت النبى | ٢ | م « | ٤٩ |
| | يأيها الذين آمنوا إن جاءكم فاسق بنبإ فتبينوا ... ... | ٦ | م « | ٤٩ |
| | يأيها الذين آمنوا لا يسخر قوم من قوم ... ... ... | ١١ | م « | ٤٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| آمَنُوا: | يأيها الذين آمنوا اجتنبوا كثيرا من الظن ... ... | ١٢ | م « | ٤٩ |
| | إنما المؤمنون الذين آمنوا بالله ورسوله... ... ... | ١٥ | م « | ٤٩ |
| | والذين آمنوا واتبعتهم ذريتهم بإيمان ... ... ... | ٢١ | ك الطور | ٥٢ |
| | فالذين آمنوا منكم وأنفقوا لهم أجر كبير ... ... ... | ٧ | م الحديد | ٥٧ |
| | يوم يقول المنافقون والمنافقات للذين آمنوا انظرونا | ١٣ | م « | ٥٧ |
| | ألم يأن للذين آمنوا أن تخشع قلوبهم لذكر الله | ١٦ | م « | ٥٧ |
| | والذين آمنوا بالله ورسله أولئك هم الصديقون... ... | ١٩ | م « | ٥٧ |
| | عرضها كعرض السماء والأرض أعدت للذين آمنوا بالله | ٢١ | م « | ٥٧ |
| | فآتينا الذين آمنوا منهم أجرهم وكثير منهم فاسقون | ٢٧ | م « | ٥٧ |
| | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله وآمنوا برسوله ... ... | ٢٨ | م « | ٥٧ |
| | يأيها الذين آمنوا إذا تناجيتم فلا تتناجوا بالإثم | ٩ | م المجادلة | ٥٨ |
| | إنما النجوى من الشيطان ليحزن الذين آمنوا... ... | ١٠ | م « | ٥٨ |
| | يأيها الذين آمنوا إذا قيل لكم تفسحوا في المجالس فافسحوا | ١١ | م « | ٥٨ |
| | يرفع الله الذين آمنوا منكم والذين أوتوا العلم درجات | ١١ | م « | ٥٨ |
| | يأيها الذين آمنوا إذا ناجيتم الرسول فقدموا... ... | ١٢ | م « | ٥٨ |
| | ولا تجعل في قلوبنا غلا للذين آمنوا ... ... ... | ١٠ | م الحشر | ٥٩ |
| | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله ولتنظر نفس ما قدمت لغد | ١٨ | م « | ٥٩ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تتخذوا عدوى وعدوكم أولياء | ١ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | يأيها الذين آمنوا إذا جاءكم المؤمنات مهاجرات فامتحنوهن | ١٠ | م « | ٦٠ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تتولوا قوما غضب الله عليهم | ١٣ | م « | ٦٠ |
| | يأيها الذين آمنوا لم تقولون ما لا تفعلون ... ... | ٢ | م الصف | ٦١ |
| | يأيها الذين آمنوا هل أدلكم على تجارة تنجيكم من عذاب أليم | ١٠ | م « | ٦١ |
| | يأيها الذين آمنوا كونوا أنصار الله كما قال عيسى ابن مريم | ١٤ | م « | ٦١ |
| | فأيدنا الذين آمنوا على عدوهم فأصبحوا ظاهرين | ١٤ | م « | ٦١ |
| | يأيها الذين آمنوا إذا نودى للصلاة من يوم الجمعة فاسعوا | ٩ | م الجمعة | ٦٢ |
| | ذلك بأنهم آمنوا ثم كفروا فطبع على قلوبهم فهم لا يفقهون | ٣ | م المنافقون | ٦٣ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تلهكم أموالكم ولا أولادكم عن ذكر الله | ٩ | م « | ٦٣ |
| | يأيها الذين آمنوا إن من أزواجكم وأولادكم عدوا لكم | ١٤ | م التغابن | ٦٤ |
| | فاتقوا الله يا أولى الألباب الذين آمنوا ... ... ... | ١٠ | م الطلاق | ٦٥ |
| | ليخرج الذين آمنوا وعملوا الصالحات من الظلمات إلى النور | ١١ | م « | ٦٥ |
| | يأيها الذين آمنوا قوا أنفسكم وأهليكم نارا وقودها الناس | ٦ | م التحريم | ٦٦ |
| | يأيها الذين آمنوا توبوا إلى الله توبة نصوحا | ٨ | م « | ٦٦ |
| | يوم لا يخزى الله النبى والذين آمنوا معه ... ... ... | ٨ | م « | ٦٦ |
| | وضرب الله مثلا للذين آمنوا امرأة فرعون ... ... | ١١ | م « | ٦٦ |
| | ليستيقن الذين أوتوا الكتاب ويزداد الذين آمنوا إيمانا | ٣١ | ك المدثر | ٧٤ |
| | إن الذين أجرموا كانوا من الذين آمنوا يضحكون | ٢٩ | ك المطففين | ٨٣ |
| | فاليوم الذين آمنوا من الكفار يضحكون ... ... | ٣٤ | ك « | ٨٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| آمَنُوا : | إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم أجر غير ممنون | ٢٥ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم جنات ... ... | ١١ | ك البروج | ٨٥ |
| | ثم كان من الذين آمنوا وتواصوا بالصبر وتواصوا بالمرحمة | ١٧ | ك البلد | ٩٠ |
| | إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات فلهم أجر غير ممنون | ٦ | ك التين | ٩٥ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات أولئك هم خير البرية | ٧ | م البينة | ٩٨ |
| | إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات وتواصوا بالحق | ٣ | ك العصر | ١٠٣ |
| نُؤْمِنَ : | قال أولم تؤمن قال بلى ولكن ليطمئن قلبي ... ... | ٢٦٠ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | من الذين قالوا آمنا بأفواههم ولم تؤمن قلوبهم | ٤١ | م المائدة | ٥ |
| | وما كان لنفس أن تؤمن إلا بإذن الله ... ... ... | ١٠٠ | ك يونس | ١٠ |
| لَتُؤْمِنُنَّ : | ثم جاءكم رسول مصدق لما معكم لتؤمنن به ولتنصرنه | ٨١ | م آل عمران | ٣ |
| تُؤْمِنُوا : | ولا تؤمنوا إلا لمن تبع دينكم ... ... ... ... | ٧٣ | م « | ٣ |
| (١٢) | وإن تؤمنوا وتتقوا فلكم أجر عظيم ... ... ... ... | ١٧٩ | م « | ٣ |
| | قل آمنوا به أو لا تؤمنوا ... ... ... ... ... | ١٠٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| | إذا دعى الله وحده كفرتم وإن يشرك به تؤمنوا | ١٢ | ك غافر | ٤٠ |
| | وإن لم تؤمنوا لي فاعتزلون ... ... ... ... ... | ٢١ | ك الدخان | ٤٤ |
| | وإن تؤمنوا وتتقوا يؤتكم أجوركم ولا يسألكم أموالكم | ٣٦ | م محمد | ٤٧ |
| | لتؤمنوا بالله ورسوله وتعزروه وتوقروه وتسبحوه ... | ٩ | م الفتح | ٤٨ |
| | قالت الأعراب آمنا قل لم تؤمنوا ولكن قولوا أسلمنا | ١٤ | م الحجرات | ٤٩ |
| | والرسول يدعوكم لتؤمنوا بربكم وقد أخذ ميثاقكم | ٨ | م الحديد | ٥٧ |
| | ذلك لتؤمنوا بالله ورسوله وتلك حدود الله ... ... | ٤ | م المجادلة | ٥٨ |
| | يخرجون الرسول وإياكم أن تؤمنوا بالله ربكم | ١ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | وبدا بيننا وبينكم العداوة والبغضاء أبدا حتى تؤمنوا بالله | ٤ | م « | ٦٠ |
| تُؤْمِنُونَ : | أفتؤمنون ببعض الكتاب وتكفرون ببعض | ٨٥ | م البقرة | ٢ |
| (٨) | تأمرون بالمعروف وتنهون عن المنكر وتؤمنون بالله | ١١٠ | م آل عمران | ٣ |
| | ها أنتم أولاء تحبونهم ولا يحبونكم وتؤمنون بالكتاب كله | ١١٩ | م « | ٣ |
| | فردوه إلى الله والرسول إن كنتم تؤمنون بالله واليوم الآخر | ٥٩ | م النساء | ٤ |
| | ولا تأخذكم بهما رأفة في دين الله إن كنتم تؤمنون بالله | ٢ | م النور | ٢٤ |
| | وما لكم لا تؤمنون بالله والرسول يدعوكم لتؤمنوا بربكم | ٨ | م الحديد | ٥٧ |
| | تؤمنون بالله ورسوله وتجاهدون في سبيل الله | ١١ | م الصف | ٦١ |
| | ربما يود الذين كفروا لو كانوا مسلمين ... ... ... | ٢ | م الحجر | ١٥ |
| | وما هو بقول شاعر قليلا ما تؤمنون ... ... ... | ٤١ | ك الحاقة | ٦٩ |
| نُؤْمِنَ : | قالوا أنؤمن كما آمن السفهاء ... ... ... ... | ١٣ | م البقرة | ٢ |
| (١٣) | وإذ قلتم يا موسى لن نؤمن لك حتى نرى الله جهرة | ٥٥ | م « | ٢ |
| | قالوا نؤمن بما أنزل علينا ويكفرون بما وراءه وهو الحق | ٩١ | م « | ٢ |
| | إن الله عهد إلينا ألا نؤمن لرسول حتى يأتينا بقربان | ١٨٣ | م آل عمران | ٣ |
| | ويقولون نؤمن ببعض ونكفر ببعض ... ... ... ... | ١٥٠ | م النساء | ٤ |
| | وما لنا لا نؤمن بالله وما جاءنا من الحق ... ... ... | ٨٤ | م المائدة | ٥ |
| | قالوا لن نؤمن حتى نؤتى مثل ما أوتي رسل الله | ١٢٤ | ك الأنعام | ٦ |
| نُؤْمِنَ : | قل لا تعتذروا لن نؤمن لكم قد نبأنا الله من أخباركم | ٩٤ | م التوبة | ٩ |
| | وقالوا لن نؤمن لك حتى تفجر لنا من الأرض ينبوعا | ٩٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ولن نؤمن لرقيك حتى تنزل علينا كتابا نقرؤه ... ... | ٩٣ | ك « | ١٧ |
| | فقالوا أنؤمن لبشرين مثلنا وقومهما لنا عابدون | ٤٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | قالوا أنؤمن لك واتبعك الأرذلون ... ... ... ... | ١١١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وقال الذين كفروا لن نؤمن بهذا القرآن ولا بالذي بين يديه | ٣١ | ك سبإ | ٣٤ |
| لَنُؤْمِنَنَّ : | لئن كشفت عنا الرجز لنؤمنن لك ... ... ... | ١٣٤ | ك الأعراف | ٧ |
| يُؤْمِنُ : | ذلك يوعظ به من كان منكم يؤمن بالله واليوم الآخر | ٢٣٢ | م البقرة | ٢ |
| (٢٨) | فمن يكفر بالطاغوت ويؤمن بالله فقد استمسك بالعروة | ٢٥٦ | م « | ٢ |
| | كالذي ينفق ماله رئاء الناس ولا يؤمن بالله واليوم الآخر | ٢٦٤ | م « | ٢ |
| | وإن من أهل الكتاب لمن يؤمن بالله وما أنزل إليكم | ١٩٩ | م آل عمران | ٣ |
| | فآمنوا بالله ورسوله النبي الأمي الذي يؤمن بالله وكلماته | ١٥٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | قل أذن خير لكم يؤمن بالله ... ... ... ... ... | ٦١ | م التوبة | ٩ |
| | ويؤمن للمؤمنين ورحمة للذين آمنوا منكم ... ... ... | ٦١ | م « | ٩ |
| | ومن الأعراب من يؤمن بالله واليوم الآخر ... ... | ٩٩ | م « | ٩ |
| | ومنهم من يؤمن به ... ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | م يونس | ١٠ |
| | ومنهم من لا يؤمن به وربك أعلم بالمفسدين ... ... | ٤٠ | م « | ١٠ |
| | وأوحي إلى نوح أنه لن يؤمن من قومك إلا من قد آمن | ٣٦ | ك هود | ١١ |
| | وما يؤمن أكثرهم بالله إلا وهم مشركون ... ... | ١٠٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | وقل الحق من ربكم فمن شاء فليؤمن ومن شاء فليكفر | ٢٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | فلا يصدنك عنها من لا يؤمن بها واتبع هواه فتردى | ١٦ | ك طه | ٢٠ |
| | وكذلك نجزي من أسرف ولم يؤمن بآيات ربه | ١٢٧ | ك « | ٢٠ |
| | إن تسمع إلا من يؤمن بآياتنا فهم مسلمون ... ... | ٨١ | ك النمل | ٢٧ |
| | ومن هؤلاء من يؤمن به وما يجحد بآياتنا إلا الكافرون | ٤٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | إن تسمع إلا من يؤمن بآياتنا فهم مسلمون ... ... | ٥٣ | ك الروم | ٣٠ |
| | إنما يؤمن بآياتنا الذين إذا ذكروا بها خروا سجدا | ١٥ | ك السجدة | ٣٢ |
| | إلا لنعلم من يؤمن بالآخرة ممن هو منها في شك | ٢١ | ك سبإ | ٣٤ |
| | إني عذت بربي وربكم من كل متكبر لا يؤمن بيوم الحساب | ٢٧ | ك غافر | ٤٠ |
| | ومن لم يؤمن بالله ورسوله فإنا أعتدنا للكافرين سعيرا | ١٣ | م الفتح | ٤٨ |
| | ومن يؤمن بالله ويعمل صالحا يكفر عنه سيئاته | ٩ | م التغابن | ٦٤ |
| | ومن يؤمن بالله يهد قلبه والله بكل شيء عليم ... ... | ١١ | م « | ٦٤ |
| | ذلكم يوعظ به من كان يؤمن بالله واليوم الآخر ... | ٢ | م الطلاق | ٦٥ |
| | ومن يؤمن بالله ويعمل صالحا يدخله جنات ... | ١١ | م « | ٦٥ |
| | إنه كان لا يؤمن بالله العظيم ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | فمن يؤمن بربه فلا يخاف بخسا ولا رهقا ... ... | ١٣ | ك الجن | ٧٢ |
| يُؤْمِنَ : | ولا تنكحوا المشركات حتى يؤمن ... ... ... ... | ٢٢١ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | إن كن يؤمن بالله واليوم الآخر ... ... ... ... | ٢٢٨ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| لَيُؤْمِنَنَّ | : وإن من أهل الكتاب إلا ليؤمنن به قبل موته | ١٥٩ | م النساء | ٤ |
| لَيُؤْمِنُنَّ | : وأقسموا بالله جهد أيمانهم لئن جاءتهم آية ليؤمنن بها | ١٠٩ | ك الأنعام | ٦ |
| يُؤْمِنُوا | : أفتطمعون أن يؤمنوا لكم ... ... ... ... ... | ٧٥ | م البقرة | ٢ |
| (١٨) | فليستجيبوا لى وليؤمنوا بى لعلهم يرشدون... ... ... | ١٨٦ | م « | ٢ |
| | ولا تنكحوا المشركين حتى يؤمنوا ... ... ... ... | ٢٢١ | م « | ٢ |
| | وإن يروا كل آية لا يؤمنوا بها حتى إذا جاؤك يجادلونك | ٢٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | ونقلب أفئدتهم وأبصارهم كما لم يؤمنوا به أول مرة | ١١٠ | ك « | ٦ |
| | ما كانوا ليؤمنوا إلا أن يشاء الله ... ... ... ... | ١١١ | ك « | ٦ |
| | وطائفة لم يؤمنوا فاصبروا حتى يحكم الله بيننا ... | ٨٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولقد جاءتهم رسلهم بالبينات فما كانوا ليؤمنوا بما كذبوا | ١٠١ | ك « | ٧ |
| | وإن يروا كل آية لا يؤمنوا بها ... ... ... ... ... | ١٤٦ | ك « | ٧ |
| | وجاءتهم رسلهم بالبينات وما كانوا ليؤمنوا ... ... | ١٣ | ك يونس | ١٠ |
| | فجاءوهم بالبينات فما كانوا ليؤمنوا بما كذبوا به من قبل | ٧٤ | ك « | ١٠ |
| | واشدد على قلوبهم فلا يؤمنوا حتى يروا العذاب الأليم | ٨٨ | ك « | ١٠ |
| | وما منع الناس أن يؤمنوا إذ جاءهم الهدى ... ... | ٩٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فلعلك باخع نفسك على آثارهم إن لم يؤمنوا بهذا الحديث أسفا ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك الكهف | ١٨ |
| | وما منع الناس أن يؤمنوا إذ جاءهم الهدى ... ... | ٥٥ | ك « | ١٨ |
| | وليعلم الذين أوتوا العلم أنه الحق من ربك فيؤمنوا به | ٥٤ | الحج | ٢٢ |
| | أولئك لم يؤمنوا فأحبط الله أعمالهم... ... ... ... | ١٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وما نقموا منهم إلا أن يؤمنوا بالله العزيز الحميد | ٨ | ك البروج | ٨٥ |
| يُؤْمِنُونَ | : الذين يؤمنون بالغيب ويقيمون الصلاة .. ... | ٣ | م البقرة | ٢ |
| (٨٧) | والذين يؤمنون بما أنزل إليك وما أنزل من قبلك | ٤ | م « | ٢ |
| | سواء عليهم ءأنذرتهم أم لم تنذرهم لا يؤمنون... ... | ٦ | م « | ٢ |
| | بل لعنهم الله بكفرهم فقليلا ما يؤمنون ... ... ... | ٨٨ | م « | ٢ |
| | نبذه فريق منهم بل أكثرهم لا يؤمنون... ... ... | ١٠٠ | م « | ٢ |
| | الذين آتيناهم الكتاب يتلونه حق تلاوته أولئك يؤمنون به | ١٢١ | م « | ٢ |
| | يؤمنون بالله واليوم الآخر ويأمرون بالمعروف... ... | ١١٤ | م آل عمران | ٣ |
| | والذين ينفقون أموالهم رئاء الناس ولا يؤمنون بالله | ٣٨ | م النساء | ٤ |
| | ولكن لعنهم الله بكفرهم فلا يؤمنون إلا قليلا | ٤٦ | م « | ٤ |
| | ألم تر إلى الذين أوتوا نصيبا من الكتاب يؤمنون بالجبت | ٥١ | م « | ٤ |
| | فلا وربك لا يؤمنون حتى يحكموك فيما شجر بينهم | ٦٥ | م « | ٤ |
| | بل طبع الله عليها بكفرهم فلا يؤمنون إلا قليلا | ١٥٥ | م « | ٤ |
| | لكن الراسخون فى العلم منهم والمؤمنون يؤمنون بما أنزل | ١٦٢ | م « | ٤ |
| | ولو كانوا يؤمنون بالله والنبى وما أنزل إليه ما اتخذوهم أولياء | ٨١ | م المائدة | ٥ |
| | الذين خسروا أنفسهم فهم لا يؤمنون ... ... ... | ١٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | الذين خسروا أنفسهم فهم لا يؤمنون ... ... ... | ٢٠ | م « | ٦ |
| | وإذا جاءك الذين يؤمنون بآياتنا فقل سلام عليكم | ٥٤ | ك « | ٦ |
| يُؤْمِنُونَ | : ولتنذر أم القرى ومن حولها والذين يؤمنون بالآخرة | ٩٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | يؤمنون به وهم على صلاتهم يحافظون ... ... ... | ٩٢ | ك « | ٦ |
| | إن فى ذلكم لآيات لقوم يؤمنون ... ... ... ... | ٩٩ | ك « | ٦ |
| | وما يشعركم أنها إذا جاءت لا يؤمنون ... ... ... | ١٠٩ | ك « | ٦ |
| | ولتصغى إليه أفئدة الذين لا يؤمنون بالآخرة ... ... | ١١٣ | ك « | ٦ |
| | كذلك يجعل الله الرجس على الذين لا يؤمنون | ١٢٥ | ك « | ٦ |
| | ولا تتبع أهواء الذين كذبوا بآياتنا والذين لا يؤمنون بالآخرة ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٠ | ك « | ٦ |
| | لعلهم بلقاء ربهم يؤمنون ... ... ... ... ... ... | ١٥٤ | ك « | ٦ |
| | إنا جعلنا الشياطين أولياء للذين لا يؤمنون ... ... | ٢٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | فصلناه على علم هدى ورحمة لقوم يؤمنون ... ... | ٥٢ | ك « | ٧ |
| | والذين هم بآياتنا يؤمنون ... ... ... ... ... ... | ١٥٦ | ك « | ٧ |
| | فبأى حديث بعده يؤمنون ... ... ... ... ... ... | ١٨٥ | ك « | ٧ |
| | إن أنا إلا نذير وبشير لقوم يؤمنون ... ... ... | ١٨٨ | ك « | ٧ |
| | هذا بصائر من ربكم وهدى ورحمة لقوم يؤمنون | ٢٠٣ | ك « | ٧ |
| | إن شر الدواب عند الله الذين كفروا فهم لا يؤمنون | ٥٥ | م الأنفال | ٨ |
| | قاتلوا الذين لا يؤمنون بالله ولا باليوم الآخر ... ... | ٢٩ | م التوبة | ٩ |
| | لا يستأذنك الذين يؤمنون بالله واليوم الآخر ... ... | ٤٤ | م « | ٩ |
| | إنما يستأذنك الذين لا يؤمنون بالله واليوم الآخر ... | ٤٥ | م « | ٩ |
| | كذلك حقت كلمة ربك على الذين فسقوا أنهم لا يؤمنون | ٣٣ | ك يونس | ١٠ |
| | إن الذين حقت عليهم كلمة ربك لا يؤمنون ... ... | ٩٦ | م « | ١٠ |
| | وما تغنى الآيات والنذر عن قوم لا يؤمنون ... ... | ١٠١ | ك « | ١٠ |
| | أولئك يؤمنون به ومن يكفر به من الأحزاب فالنار موعده | ١٧ | م هود | ١١ |
| | إنه الحق من ربك ولكن أكثر الناس لا يؤمنون | ١٧ | م « | ١١ |
| | وقل للذين لا يؤمنون اعملوا على مكانتكم إنا عاملون | ١٢١ | ك « | ١١ |
| | إنى تركت ملة قوم لا يؤمنون بالله وهم بالآخرة هم كافرون | ٣٧ | ك يوسف | ١٢ |
| | وتفصيل كل شىء وهدى ورحمة لقوم يؤمنون ... ... | ١١١ | ك « | ١٢ |
| | ولكن أكثر الناس لا يؤمنون ... ... ... ... ... | ١ | م الرعد | ١٣ |
| | لا يؤمنون به وقد خلت سنة الأولين ... ... ... ... | ١٣ | ك الحجر | ١٥ |
| | فالذين لا يؤمنون بالآخرة قلوبهم منكرة وهم مستكبرون | ٢٢ | ك النحل | ١٦ |
| | للذين لا يؤمنون بالآخرة مثل السوء ... ... ... ... | ٦٠ | ك « | ١٦ |
| | وهدى ورحمة لقوم يؤمنون ... ... ... ... ... | ٦٤ | ك « | ١٦ |
| | أفبالباطل يؤمنون وبنعمة الله هم يكفرون ... ... | ٧٢ | ك « | ١٦ |
| | إن فى ذلك لآيات لقوم يؤمنون ... ... ... ... | ٧٩ | ك « | ١٦ |
| | إن الذين لا يؤمنون بآيات الله لا يهديهم الله... ... | ١٠٤ | ك « | ١٦ |
| | إنما يفترى الكذب الذين لا يؤمنون بآيات الله ... | ١٠٥ | ك « | ١٦ |
| | وأن الذين لا يؤمنون بالآخرة أعتدنا لهم عذابا أليما | ١٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| | جعلنا بينك وبين الذين لا يؤمنون بالآخرة حجابا ... | ٤٥ | ك « | ١٧ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يُؤْمِنُونَ | : إذ قضى الأمر وهم فى غفلة وهم لا يؤمنون... ... | ك مريم | ٣٩ | ١٩ |
| | ما آمنت قبلهم من قرية أهلكناها أفهم يؤمنون ... | ك الأنبياء | ٦ | ٢١ |
| | وجعلنا من الماء كل شىء حىّ أفلا يؤمنون ... ... | ك « | ٣٠ | ٢١ |
| | وجعلناهم أحاديث فبعدًا لقوم لا يؤمنون... ... ... | ك المؤمنون | ٤٤ | ٢٣ |
| | والذين هم بآيات ربهم يؤمنون ... ... ... ... | ك « | ٥٨ | ٢٣ |
| | وإن الذين لا يؤمنون بالآخرة عن الصراط لناكبون | ك « | ٧٤ | ٢٣ |
| | إن الذين يستأذنونك أولئك الذين يؤمنون بالله ورسوله | م النور | ٦٢ | ٢٤ |
| | لا يؤمنون به حتى يروا العذاب الأليم ... ... ... | ك الشعراء | ٢٠١ | ٢٦ |
| | إن الذين لا يؤمنون بالآخرة زيّنا لهم أعمالهم ... ... | ك النمل | ٤ | ٢٧ |
| | إن فى ذلك لآيات لقوم يؤمنون... ... ... ... ... | ك « | ٨٦ | ٢٧ |
| | نتلوا عليك من نبإ موسى وفرعون بالحق لقوم يؤمنون | ك القصص | ٣ | ٢٨ |
| | الذين آتيناهم الكتاب من قبله هم به يؤمنون ... ... | م « | ٥٢ | ٢٨ |
| | فأنجاه الله من النار إن فى ذلك لآيات لقوم يؤمنون | ك العنكبوت | ٢٤ | ٢٩ |
| | فالذين آتيناهم الكتاب يؤمنون به ومن هؤلاء من يؤمن به | ك « | ٤٧ | ٢٩ |
| | إن فى ذلك لرحمة وذكرى لقوم يؤمنون ... ... ... | ك « | ٥١ | ٢٩ |
| | أفبالباطل يؤمنون وبنعمة الله يكفرون ... ... ... | ك « | ٦٧ | ٢٩ |
| | إن فى ذلك لآيات لقوم يؤمنون ... ... ... ... | ك الروم | ٣٧ | ٣٠ |
| | بل الذين لا يؤمنون بالآخرة فى العذاب والضلال البعيد | ك سبإ | ٨ | ٣٤ |
| | لقد حق القول على أكثرهم فهم لا يؤمنون ... ... | ك يس | ٧ | ٣٦ |
| | وسواء عليهم ءأنذرتهم أم لم تنذرهم لا يؤمنون ... ... | ك « | ١٠ | ٣٦ |
| | وإذا ذكر الله وحده اشمأزت قلوب الذين لا يؤمنون بالآخرة ... ... ... ... ... ... ... | ك الزمر | ٤٥ | ٣٩ |
| | إن فى ذلك لآيات لقوم يؤمنون ... ... ... ... | م « | ٥٢ | ٣٩ |
| | يسبحون بحمد ربهم ويؤمنون به ويستغفرون للذين آمنوا | ك غافر | ٧ | ٤٠ |
| | إن الساعة لآتية لا ريب فيها ولكن أكثر الناس لا يؤمنون | ك « | ٥٩ | ٤٠ |
| | والذين لا يؤمنون فى آذانهم وقر وهو عليهم عمى ... | ك فصلت | ٤٤ | ٤١ |
| | يستعجل بها الذين لا يؤمنون بها ... ... ... ... | ك الشورى | ١٨ | ٤٢ |
| | وقيله يارب إن هؤلاء قوم لا يؤمنون... ... ... ... | ك الزخرف | ٨٨ | ٤٣ |
| | فبأىّ حديث بعد الله وآياته يؤمنون ... ... ... ... | ك الجاثية | ٦ | ٤٥ |
| | أم يقولون تقوّله بل لا يؤمنون ... ... ... ... ... | ك الطور | ٣٣ | ٥٢ |
| | إن الذين لا يؤمنون بالآخرة ليسمون الملائكة تسمية الأنثى | ك النجم | ٢٧ | ٥٣ |
| | لا تجد قوما يؤمنون بالله واليوم الآخر يوادّون من حادّ الله | م المجادلة | ٢٢ | ٥٨ |
| | فبأىّ حديث بعده يؤمنون ... ... ... ... ... ... | ك المرسلات | ٥٠ | ٧٧ |
| | فما لهم لا يؤمنون ... ... ... ... ... ... ... | ك الانشقاق | ٢٠ | ٨٤ |
| آمِنْ | : وهما يستغيثان الله ويلك آمن إن وعد الله حق | ك الأحقاف | ١٧ | ٤٦ |
| آمَنُوا | : وإذا قيل لهم آمنوا كما آمن الناس قالوا أنؤمن كما آمن السفهاء ... ... ... ... ... ... ... | م البقرة | ١٣ | ٢ |
| (١٨) | وآمنوا بما أنزلت مصدقا لما معكم ... ... ... ... | م « | ٤١ | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| آمَنُوا | : وإذا قيل لهم آمنوا بما أنزل الله قالوا نؤمن بما أنزل علينا ... ... ... ... ... ... ... ... | م البقرة | ٩١ | ٩١ |
| | آمنوا بالذى أنزل على الذين آمنوا وجه النهار... ... | م آل عمران | ٧٢ | ٣ |
| | فآمنوا بالله ورسله وإن تؤمنوا وتتقوا فلكم أجر | م « | ١٧٩ | ٣ |
| | ربنا إننا سمعنا مناديا ينادى للإيمان أن آمنوا بربكم | م « | ١٩٣ | ٣ |
| | يأيها الذين أوتوا الكتاب آمنوا بما نزلنا ... ... | م النساء | ٤٧ | ٤ |
| | يأيها الذين آمنوا آمنوا بالله ورسوله ... ... ... | م « | ١٣٦ | ٤ |
| | قد جاءكم الرسول بالحق من ربكم فآمنوا خيرا لكم | م « | ١٧٠ | ٤ |
| | فآمنوا بالله ورسله ولا تقولوا ثلاثة... ... ... ... | م « | ١٧١ | ٤ |
| | وإذ أوحيت إلى الحواريين أن آمنوا بى وبرسولى | م المائدة | ١١١ | ٥ |
| | فآمنوا بالله ورسوله النبىّ الأمىّ الذى يؤمن بالله | ك الأعراف | ١٥٨ | ٧ |
| | وإذا أنزلت سورة أن آمنوا بالله وجاهدوا مع رسوله | م التوبة | ٨٦ | ٩ |
| | قل آمنوا به أو لا تؤمنوا ... ... ... ... ... ... | ك الإسراء | ١٠٧ | ١٧ |
| | يا قومنا أجيبوا داعى الله وآمنوا به ... ... ... ... | ك الأحقاف | ٣١ | ٤٦ |
| | آمنوا بالله ورسوله وأنفقوا مما جعلكم مستخلفين فيه | م الحديد | ٧ | ٥٧ |
| | اتقوا الله وآمنوا برسوله يؤتكم كفلين من رحمته | م « | ٢٨ | ٥٧ |
| | فآمنوا بالله ورسوله والنور الذى أنزلنا ... ... ... | م التغابن | ٨ | ٦٤ |
| أُؤْتُمِنَ | : فإن أمن بعضكم بعضا فليؤدّ الذى اؤتمن أمانته | م البقرة | ٢٨٣ | ٢ |
| آمِنًا | : وإذ قال إبراهيم رب اجعل هذا بلدا آمنا... ... | م « | ١٢٦ | ٢ |
| (٦) | فيه آيات بينات مقام إبراهيم ومن دخله كان آمنا | م آل عمران | ٩٧ | ٣ |
| | وإذ قال إبراهيم رب اجعل هذا البلد آمنا ... ... | ك إبراهيم | ٣٥ | ١٤ |
| | أو لم نمكن لهم حرما آمنا يجبى إليه ثمرات كل شىء | ك القصص | ٥٧ | ٢٨ |
| | أو لم يروا أنا جعلنا حرما آمنا ... ... ... ... ... | ك العنكبوت | ٦٧ | ٢٩ |
| | أفمن يلقى فى النار خير أم من يأتى آمنا يوم القيامة | ك فصلت | ٤٠ | ٤١ |
| آمِنَةً | : وضرب الله مثلا قرية كانت آمنة مطمئنة يأتيها رزقها | ك النحل | ١١٢ | ١٦ |
| آمِنُونَ | : وهم من فزع يومئذ آمنون ... ... ... ... ... | ك النمل | ٨٩ | ٢٧ |
| (٢) | فأولئك لهم جزاء الضعف بما عملوا وهم فى الغرفات آمنون | ك سبإ | ٣٧ | ٣٤ |
| آمِنِينَ | : وقال ادخلوا مصر إن شاء الله آمنين... ... ... | ك يوسف | ٩٩ | ١٢ |
| (٨) | ادخلوها بسلام آمنين ... ... ... ... ... ... ... | ك الحجر | ٤٦ | ١٥ |
| | وكانوا ينحتون من الجبال بيوتا آمنين ... ... ... | ك « | ٨٢ | ١٥ |
| | أتتركون فى ما ههنا آمنين ... ... ... ... ... ... | ك الشعراء | ١٤٦ | ٢٦ |
| | ياموسى أقبل ولا تخف إنك من الآمنين ... ... | ك القصص | ٣١ | ٢٨ |
| | سيروا فيها ليالى وأياما آمنين ... ... ... ... ... | ك سبإ | ١٨ | ٣٤ |
| | يدعون فيها بكل فاكهة آمنين ... ... ... ... ... | ك الدخان | ٥٥ | ٤٤ |
| | لتدخلنّ المسجد الحرام إن شاء الله آمنين محلقين | م الفتح | ٢٧ | ٤٨ |
| الأَمَانَةَ | : إنا عرضنا الأمانة على السموات والأرض والجبال | م الأحزاب | ٧٢ | ٣٣ |
| أَمَانَتَهُ | : فإن أمن بعضكم بعضا فليؤدّ الذى اؤتمن أمانته | م البقرة | ٢٨٣ | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **الأَمَانَات** | : إن الله يأمركم أن تؤدوا الأمانات إلى أهلها | ٥٨ | م النساء | ٤ |
| **أَمَانَاتِكُمْ** | : لاتخونوا الله والرسول وتخونوا أماناتكم... ... | ٢٧ | م الأنفال | ٨ |
| **أَمَانَاتِهِمْ** | : والذين هم لأماناتهم وعهدهم راعون ... ... | ٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٢) | والذين هم لأماناتهم وعهدهم راعون ... ... ... | ٣٢ | ك المعارج | ٧٠ |
| **الأَمْن** | : وإذا جاءهم أمر من الأمن أو الخوف أذاعوا به | ٨٣ | م النساء | ٤ |
| (٣) | فأى الفريقين أحق بالأمن إن كنتم تعلمون... ... | ٨١ | ك الأنعام | ٦ |
| | الذين آمنوا ولم يلبسوا إيمانهم بظلم أولئك لهم الأمن | ٨٢ | ك « | ٦ |
| **أَمْنًا** | : وإذ جعلنا البيت مثابة للناس وأمنا... ... ... | ١٢٥ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | وليبدلنهم من بعد خوفهم أمنا ... ... ... ... | ٥٥ | م النور | ٢٤ |
| **أَمَنَةً** | : ثم أنزل عليكم من بعد الغم أمنة نعاسا ... ... | ١٥٤ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | إذ يغشيكم النعاس أمنة منه... ... ... ... | ١١ | م الأنفال | ٨ |
| **أَمِين** | : أبلغكم رسالات ربى وأنا لكم ناصح أمين ... ... | ٦٨ | ك الأعراف | ٧ |
| (١٤) | فلما كلمه قال إنك اليوم لدينا مكين أمين... ... ... | ٥٤ | ك يوسف | ١٢ |
| | إنى لكم رسول أمين ... ... ... ... ... | ١٠٧ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | إنى لكم رسول أمين ... ... ... ... ... | ١٢٥ | ك « | ٢٦ |
| | إنى لكم رسول أمين ... ... ... ... ... | ١٤٣ | ك « | ٢٦ |
| | إنى لكم رسول أمين ... ... ... ... ... | ١٦٢ | ك « | ٢٦ |
| | إنى لكم رسول أمين ... ... ... ... ... | ١٧٨ | ك « | ٢٦ |
| | نزل به الروح الأمين ... ... ... ... ... | ١٩٣ | ك « | ٢٦ |
| | وإنى عليه لقوى أمين ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك النمل | ٢٧ |
| | إن خير من استأجرت القوى الأمين ... ... ... | ٢٦ | ك القصص | ٢٨ |
| | أن أدوا إلى عباد الله إنى لكم رسول أمين ... ... | ١٨ | ك الدخان | ٤٤ |
| | إن المتقين فى مقام أمين ... ... ... ... | ٥١ | ك « | ٤٤ |
| | مطاع ثم أمين ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك التكوير | ٨١ |
| | وهذا البلد الأمين ... ... ... ... ... | ٣ | ك التين | ٩٥ |
| **الإِيمَان** | : ومن يتبدل الكفر بالإيمان فقد ضل سواء السبيل | ١٠٨ | م البقرة | ٢ |
| (١٧) | هم للكفر يومئذ أقرب منهم للإيمان... ... ... | ١٦٧ | م آل عمران | ٣ |
| | إن الذين اشتروا الكفر بالإيمان لن يضروا الله شيئا | ١٧٧ | م « | ٣ |
| | ربنا إننا سمعنا مناديا ينادى للإيمان أن آمنوا بربكم | ١٩٣ | م « | ٣ |
| | ومن يكفر بالإيمان فقد حبط عمله ... ... ... | ٥ | م المائدة | ٥ |
| | إن استحبوا الكفر على الإيمان ... ... ... | ٢٣ | م التوبة | ٩ |
| | إلا من أكره وقلبه مطمئن بالإيمان ... ... ... | ١٠٦ | ك النحل | ١٦ |
| | وقال الذين أوتوا العلم والإيمان لقد لبثتم فى كتاب الله | ٥٦ | ك الروم | ٣٠ |
| | أكبر من مقتكم أنفسكم إذ تدعون إلى الإيمان فتكفرون | ١٠ | ك غافر | ٤٠ |
| | ما كنت تدرى ما الكتاب ولا الإيمان ولكن جعلناه نورا | ٥٢ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ولكن الله حبب إليكم الإيمان وزينه فى قلوبكم | ٧ | م الحجرات | ٤٩ |
| | بئس الاسم الفسوق بعد الإيمان ... ... ... | ١١ | م « | ٤٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **الإِيمَان** | : ولكن قولوا أسلمنا ولما يدخل الإيمان فى قلوبكم | ١٤ | م الحجرات | ٤٩ |
| | بل الله يمن عليكم أن هداكم للإيمان إن كنتم صادقين | ١٧ | م « | ٤٩ |
| | أولئك كتب فى قلوبهم الإيمان وأيدهم بروح منه | ٢٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| | والذين تبوؤا الدار والإيمان من قبلهم يحبون من هاجر | ٩ | م الحشر | ٥٩ |
| | ربنا اغفر لنا ولإخواننا الذين سبقونا بالإيمان | ١٠ | م « | ٥٩ |
| **إِيمَانٍ** | : والذين آمنوا واتبعتهم ذريتهم بإيمان ألحقنا بهم ذريتهم ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك الطور | ٥٢ |
| **إِيمَانًا** | : إن الناس قد جمعوا لكم فاخشوهم فزادهم إيمانا | ١٧٣ | م آل عمران | ٣ |
| (٧) | وإذا تليت عليهم آياته زادتهم إيمانا وعلى ربهم يتوكلون | ٢ | م الأنفال | ٨ |
| | فمنهم من يقول أيكم زادته هذه إيمانا... ... ... | ١٢٤ | م التوبة | ٩ |
| | فأما الذين آمنوا فزادتهم إيمانا وهم يستبشرون ... | ١٢٤ | م « | ٩ |
| | وصدق الله ورسوله وما زادهم إلا إيمانا وتسليما | ٢٢ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | هو الذى أنزل السكينة فى قلوب المؤمنين ليزدادوا إيمانا | ٤ | م الفتح | ٤٨ |
| | ويزداد الذين آمنوا إيمانا ولا يرتاب الذين أوتوا الكتاب | ٣١ | ك المدثر | ٧٤ |
| **إِيمَانِكُمْ** | : قل بئسما يأمركم به إيمانكم إن كنتم مؤمنين | ٩٣ | م البقرة | ٢ |
| (٧) | لو يردونكم من بعد إيمانكم كفارا ... ... ... | ١٠٩ | م « | ٢ |
| | وما كان الله ليضيع إيمانكم إن الله بالناس لرءوف رحيم | ١٤٣ | م « | ٢ |
| | يردوكم بعد إيمانكم كافرين ... ... ... ... | ١٠٠ | م آل عمران | ٣ |
| | أكفرتم بعد إيمانكم فذوقوا العذاب بما كنتم تكفرون | ١٠٦ | م « | ٣ |
| | والله أعلم بإيمانكم بعضكم من بعض ... ... ... | ٢٥ | م النساء | ٤ |
| | لا تعتذروا قد كفرتم بعد إيمانكم ... ... ... | ٦٦ | م التوبة | ٩ |
| **إِيمَانِهِ** | : من كفر بالله من بعد إيمانه إلا من أكره وقلبه مطمئن | ١٠٦ | ك النحل | ١٦ |
| (٢) | وقال رجل مؤمن من آل فرعون يكتم إيمانه ... ... | ٢٨ | ك غافر | ٤٠ |
| **إِيمَانُهَا** | : لا ينفع نفسا إيمانها لم تكن آمنت من قبل ... ... | ١٥٨ | ك الأنعام | ٦ |
| (٣) | أو كسبت فى إيمانها خيرا ... ... ... ... | ١٥٨ | ك « | ٦ |
| | فلولا كانت قرية آمنت فنفعها إيمانها إلا قوم يونس | ٩٨ | ك يونس | ١٠ |
| **إِيمَانِهِمْ** | : كيف يهدى الله قوما كفروا بعد إيمانهم ... ... | ٨٦ | م آل عمران | ٣ |
| (٧) | إن الذين كفروا بعد إيمانهم ثم ازدادوا كفرا | ٩٠ | م « | ٣ |
| | الذين آمنوا ولم يلبسوا إيمانهم بظلم أولئك لهم الأمن | ٨٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات يهديهم ربهم بإيمانهم | ٩ | ك يونس | ١٠ |
| | قل يوم الفتح لا ينفع الذين كفروا إيمانهم ... ... | ٢٩ | ك السجدة | ٣٢ |
| | فلم يك ينفعهم إيمانهم لما رأوا بأسنا ... ... ... | ٨٥ | ك غافر | ٤٠ |
| | أنزل السكينة فى قلوب المؤمنين ليزدادوا إيمانا مع إيمانهم | ٤ | م الفتح | ٤٨ |
| **بِإِيمَانِهِنَّ** | : فامتحنوهن الله أعلم بإيمانهن ... ... ... | ١٠ | م الممتحنة | ٦٠ |
| **مَأْمَنَهُ** | : فأجره حتى يسمع كلام الله ثم أبلغه مأمنه ... ... | ٦ | م التوبة | ٩ |
| **مَأْمُونٍ** | : إن عذاب ربهم غير مأمون ... ... ... ... | ٢٨ | ك المعارج | ٧٠ |
| **مُؤْمِنٍ** | : ولعبد مؤمن خير من مشرك ولو أعجبكم... ... ... | ٢٢١ | م البقرة | ٢ |
| (١٥) | وما كان لمؤمن أن يقتل مؤمنا إلا خطأ ... ... ... | ٩٢ | م النساء | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مُؤْمِن: | فإن كان من قوم عدوّ لكم وهو مؤمن فتحرير رقبة | ٩٢ | م النساء | ٤ |
| | ومن يعمل من الصالحات من ذكر أو أنثى وهو مؤمن فأولئك يدخلون الجنة ... ... ... ... ... | ١٢٤م | « | ٤ |
| | لا يرقبون فى مؤمن إلّا ولا ذمة ... ... ... ... ... | ١٠ | م التوبة | ٩ |
| | وما أنت بمؤمن لنا ولو كنا صادقين ... ... ... ... | ١٧ | ك يوسف | ١٢ |
| | من عمل صالحا من ذكر أو أنثى وهو مؤمن فلنحيينّه | ٩٧ | ك النحل | ١٦ |
| | وسعى لها سعيها وهو مؤمن فأولئك كان سعيهم مشكورا | ١٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ومن يعمل من الصالحات وهو مؤمن فلا يخاف ظلما | ١١٢ | ك طه | ٢٠ |
| | فمن يعمل من الصالحات وهو مؤمن فلا كفران لسعيه | ٩٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وما كان لمؤمن ولا مؤمنة إذا قضى الله ورسوله أمرا أن يكون لهم الخيرة ... ... ... ... ... ... | ٣٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وقال رجل مؤمن من آل فرعون يكتم إيمانه أتقتلون رجلا | ٢٨ | ك غافر | ٤٠ |
| | ومن عمل صالحا من ذكر أو أنثى وهو مؤمن فأولئك يدخلون الجنة ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك « | ٤٠ |
| | لا إله إلا هو الملك القدوس السلام المؤمن ... ... | ٢٣ | م الحشر | ٥٩ |
| | هو الذى خلقكم فمنكم كافر ومنكم مؤمن ... ... ... | ٢ | م التغابن | ٦٤ |
| مُؤْمِنًا: | وما كان لمؤمن أن يقتل مؤمنا إلا خطأ ... ... | ٩٢ | م النساء | ٤ |
| (٧) | ومن قتل مؤمنا خطأ فتحرير رقبة مؤمنة ... ... ... | ٩٢ | م « | ٤ |
| | ومن يقتل مؤمنا متعمدا فجزاؤه جهنم خالدا فيها | ٩٣ | م « | ٤ |
| | ولا تقولوا لمن ألقى إليكم السلام لست مؤمنا ... ... | ٩٤ | م « | ٤ |
| | ومن يأته مؤمنا قد عمل الصالحات فأولئك لهم الدرجات | ٧٥ | ك طه | ٢٠ |
| | أفمن كان مؤمنا كمن كان فاسقا لا يستوون... ... ... | ١٨ | م السجدة | ٣٢ |
| | رب اغفر لى ولوالدىّ ولمن دخل بيتى مؤمنا ... ... | ٢٨ | ك نوح | ٧١ |
| مُؤْمِنَيْنِ: | وأما الغلام فكان أبواه مؤمنين ... ... ... | ٨٠ | ك الكهف | ١٨ |
| مُؤْمِنُون: | آمن الرسول بما أنزل إليه من ربه والمؤمنون | ٢٨٥م | البقرة | ٢ |
| (٣٥) | لا يتخذ المؤمنون الكافرين أولياء من دون المؤمنين | ٢٨ | م آل عمران | ٣ |
| | منهم المؤمنون وأكثرهم الفاسقون ... ... ... ... | ١١٠م | « | ٣ |
| | والله وليّهما وعلى الله فليتوكل المؤمنون ... ... ... | ١٢٢م | « | ٣ |
| | وعلى الله فليتوكل المؤمنون ... ... ... ... ... | ١٦٠م | « | ٣ |
| | والمؤمنون يؤمنون بما أنزل إليك وما أنزل من قبلك | ١٦٢م | النساء | ٤ |
| | والمؤمنون بالله واليوم الآخر أولئك سنؤتيهم أجرا | ١٦٢م | « | ٤ |
| | واتقوا الله وعلى الله فليتوكل المؤمنون ... ... ... | ١١ | م المائدة | ٥ |
| | واتقوا الله الذى أنتم به مؤمنون ... ... ... ... | ٨٨ | م « | ٥ |
| | قالوا إنا بما أرسل به مؤمنون ... ... ... ... ... | ٧٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | إنما المؤمنون الذين إذا ذكر الله وجلت قلوبهم | ٢ | م الأنفال | ٨ |
| | أولئك هم المؤمنون حقا لهم درجات عند ربهم | ٤ | م « | ٨ |
| | والذين آووا ونصروا أولئك هم المؤمنون حقا | ٧٤ | م « | ٨ |
| | وعلى الله فليتوكل المؤمنون ... ... ... ... ... | ٥١ | م التوبة | ٩ |
| مُؤْمِنُون: | والمؤمنون والمؤمنات بعضهم أولياء بعض ... | ٧١ | م التوبة | ٩ |
| | وقل اعملوا فسيرى الله عملكم ورسوله والمؤمنون | ١٠٥م | « | ٩ |
| | وما كان المؤمنون لينفروا كافّة ... ... ... ... ... | ١٢٢م | « | ٩ |
| | وعلى الله فليتوكل المؤمنون ... ... ... ... ... | ١١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | قد أفلح المؤمنون * الذين هم فى صلاتهم خاشعون | ١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | لولا إذ سمعتموه ظن المؤمنون والمؤمنات بأنفسهم خيرا | ١٢ | م النور | ٢٤ |
| | وتوبوا إلى الله جميعا أيها المؤمنون لعلكم تفلحون | ٣١ | م « | ٢٤ |
| | إنما المؤمنون الذين آمنوا بالله ورسوله ... ... ... | ٦٢ | م « | ٢٤ |
| | لله الأمر من قبل ومن بعد ويومئذ يفرح المؤمنون | ٤ | ك الروم | ٣٠ |
| | هنالك ابتلى المؤمنون وزلزلوا زلزالا شديدا ... ... | ١١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ولما رأى المؤمنون الأحزاب قالوا هذا ما وعدنا الله | ٢٢ | م « | ٣٣ |
| | بل كانوا يعبدون الجن أكثرهم بهم مؤمنون... ... | ٤١ | ك سبإ | ٣٤ |
| | ربنا اكشف عنا العذاب إنا مؤمنون... ... ... | ١٢ | ك الدخان | ٤٤ |
| | بل ظننتم أن لن ينقلب الرسول والمؤمنون إلى أهليهم | ١٢ | م الفتح | ٤٨ |
| | ولولا رجال مؤمنون ونساء مؤمنات لم تعلموهم | ٢٥ | م « | ٤٨ |
| | إنما المؤمنون إخوة فأصلحوا بين أخويكم ... ... | ١٠ | م الحجرات | ٤٩ |
| | إنما المؤمنون الذين آمنوا بالله ورسوله... ... ... | ١٥ | م « | ٤٩ |
| | وعلى الله فليتوكل المؤمنون ... ... ... ... ... | ١٠ | م المجادلة | ٥٨ |
| | واتقوا الله الذى أنتم به مؤمنون ... ... ... ... | ١١ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | الله لا إله إلا هو وعلى الله فليتوكل المؤمنون ... ... | ١٣ | م التغابن | ٦٤ |
| | ولا يرتاب الذين أوتوا الكتاب والمؤمنون ... ... | ٣١ | ك المدثر | ٧٤ |
| مُؤْمِنِين: | آمنا بالله وباليوم الآخر وما هم بمؤمنين ... ... | ٨ | م البقرة | ٢ |
| (١٤٤) | قل فلم تقتلون أنبياء الله من قبل إن كنتم مؤمنين | ٩١ | م « | ٢ |
| | قل بئسما يأمركم به إيمانكم إن كنتم مؤمنين ... ... | ٩٣ | م « | ٢ |
| | مصدّقا لما بين يديه وهدى وبشرى للمؤمنين ... ... | ٩٧ | م « | ٢ |
| | واتقوا الله واعلموا أنكم ملاقوه وبشر المؤمنين | ٢٢٣م | « | ٢ |
| | إن فى ذلك لآية لكم إن كنتم مؤمنين ... ... ... | ٢٤٨م | « | ٢ |
| | اتقوا الله وذروا ما بقى من الربا إن كنتم مؤمنين | ٢٧٨م | « | ٢ |
| | لا يتخذ المؤمنون الكافرين أولياء من دون المؤمنين | ٢٨ | م آل عمران | ٣ |
| | إن فى ذلك لآية لكم إن كنتم مؤمنين ... ... ... | ٤٩ | م « | ٣ |
| | والله ولىّ المؤمنين ... ... ... ... ... ... ... | ٦٨ | م « | ٣ |
| | وإذ غدوت من أهلك تبوئ المؤمنين مقاعد للقتال | ١٢١م | « | ٣ |
| | إذ تقول للمؤمنين ألن يكفيكم أن يمدكم ربكم ... ... | ١٢٤م | « | ٣ |
| | ولا تهنوا ولا تحزنوا وأنتم الأعلون إن كنتم مؤمنين | ١٣٩م | « | ٣ |
| | ولقد عفا عنكم والله ذو فضل على المؤمنين ... ... | ١٥٢م | « | ٣ |
| | لقد منّ الله على المؤمنين إذ بعث فيهم رسولا | ١٦٤م | « | ٣ |
| | وما أصابكم يوم التقى الجمعان فبإذن الله وليعلم المؤمنين | ١٦٦م | « | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مُؤمنين : | وأن الله لا يضيع أجر المؤمنين... ... ... ... | ١٧١ | م آل عمران | ٣ |
| | فلا تخافوهم وخافون إن كنتم مؤمنين ... ... ... | ١٧٥ | م « | ٣ |
| | ما كان الله ليذر المؤمنين على ما أنتم عليه ... ... | ١٧٩ | م « | ٣ |
| | لا تكلف إلا نفسك وحرض المؤمنين... ... ... ... | ٨٤ | م النساء | ٤ |
| | لا يستوى القاعدون من المؤمنين غير أولى الضرر ... | ٩٥ | م « | ٤ |
| | إن الصلاة كانت على المؤمنين كتابا موقوتا ... ... | ١٠٣ | م « | ٤ |
| | ويتبع غير سبيل المؤمنين نوله ما تولى ونصله جهنم | ١١٥ | م « | ٤ |
| | الذين يتخذون الكافرين أولياء من دون المؤمنين | ١٣٩ | م « | ٤ |
| | قالوا ألم نستحوذ عليكم ونمنعكم من المؤمنين ... ... | ١٤١ | م « | ٤ |
| | ولن يجعل الله للكافرين على المؤمنين سبيلا ... ... | ١٤١ | م « | ٤ |
| | لا تتخذوا الكافرين أولياء من دون المؤمنين ... ... | ١٤٤ | م « | ٤ |
| | وأخلصوا دينهم لله فأولئك مع المؤمنين... ... ... | ١٤٦ | م « | ٤ |
| | وسوف يؤت الله المؤمنين أجرا عظيما ... ... ... | ١٤٦ | م « | ٤ |
| | وعلى الله فتوكلوا إن كنتم مؤمنين ... ... ... ... | ٢٣ | م المائدة | ٥ |
| | ثم يتولون من بعد ذلك وما أولئك بالمؤمنين ... ... | ٤٣ | م « | ٥ |
| | يحبهم ويحبونه أذلة على المؤمنين أعزة على الكافرين | ٥٤ | م « | ٥ |
| | واتقوا الله إن كنتم مؤمنين ... ... ... ... ... | ٥٧ | م « | ٥ |
| | قال اتقوا الله إن كنتم مؤمنين ... ... ... ... ... | ١١٢ | م « | ٥ |
| | يا ليتنا نرد ولا نكذب بآيات ربنا ونكون من المؤمنين | ٢٧ | ك الأنعام | ٦ |
| | فكلوا مما ذكر اسم الله عليه إن كنتم بآياته مؤمنين | ١١٨ | ك « | ٦ |
| | فلا يكن فى صدرك حرج منه لتنذر به وذكرى للمؤمنين | ٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | وقطعنا دابر الذين كذبوا بآياتنا وما كانوا مؤمنين ... | ٧٢ | ك « | ٧ |
| | ذلكم خير لكم إن كنتم مؤمنين ... ... ... ... ... | ٨٥ | ك « | ٧ |
| | وقالوا مهما تأتنا به من آية لتسحرنا بها فما نحن لك بمؤمنين | ١٣٢ | ك « | ٧ |
| | فلما أفاق قال سبحانك تبت إليك وأنا أول المؤمنين | ١٤٣ | ك « | ٧ |
| | وأطيعوا الله ورسوله إن كنتم مؤمنين ... ... ... | ١ | م الأنفال | ٨ |
| | وإن فريقا من المؤمنين لكارهون ... ... ... ... | ٥ | م « | ٨ |
| | وليبلى المؤمنين منه بلاء حسنا ... ... ... ... ... | ١٧ | م « | ٨ |
| | ولن تغنى عنكم فئتكم شيئا ولو كثرت وأن الله مع المؤمنين | ١٩ | م « | ٨ |
| | فإن حسبك الله هو الذى أيدك بنصره وبالمؤمنين | ٦٢ | م « | ٨ |
| | يأيها النبى حسبك الله ومن اتبعك من المؤمنين | ٦٤ | م « | ٨ |
| | يأيها النبى حرض المؤمنين على القتال ... ... ... | ٦٥ | م « | ٨ |
| | فالله أحق أن تخشوه إن كنتم مؤمنين ... ... ... | ١٣ | م التوبة | ٩ |
| | ويخزهم وينصركم عليهم ويشف صدور قوم مؤمنين | ١٤ | م « | ٩ |
| | ولم يتخذوا من دون الله ولا رسوله ولا المؤمنين وليجة | ١٦ | م « | ٩ |
| | ثم أنزل الله سكينته على رسوله وعلى المؤمنين ... ... | ٢٦ | م « | ٩ |
| | قل أذن خير لكم يؤمن بالله ويؤمن للمؤمنين ... ... | ٦١ | م « | ٩ |
| مؤمنين : | والله ورسوله أحق أن يرضوه إن كانوا مؤمنين | ٦٢ | م التوبة | ٩ |
| | وعد الله المؤمنين والمؤمنات جنات ... ... ... ... | ٧٢ | م « | ٩ |
| | الذين يلمزون المطوعين من المؤمنين فى الصدقات | ٧٩ | م « | ٩ |
| | والذين اتخذوا مسجدا ضرارا وكفرا وتفريقا بين المؤمنين | ١٠٧ | م « | ٩ |
| | إن الله اشترى من المؤمنين أنفسهم وأموالهم ... ... | ١١١ | م « | ٩ |
| | والحافظون لحدود الله وبشر المؤمنين ... ... ... | ١١٢ | م « | ٩ |
| | حريص عليكم بالمؤمنين رءوف رحيم ... ... ... ... | ١٢٨ | ك « | ٩ |
| | وشفاء لما فى الصدور وهدى ورحمة للمؤمنين ... ... | ٥٧ | ك يونس | ١٠ |
| | وتكون لكما الكبرياء فى الأرض وما نحن لكما بمؤمنين | ٧٨ | ك « | ١٠ |
| | واجعلوا بيوتكم قبلة وأقيموا الصلاة وبشر المؤمنين | ٨٧ | ك « | ١٠ |
| | أفأنت تكره الناس حتى يكونوا مؤمنين ... ... ... | ٩٩ | ك « | ١٠ |
| | كذلك حقا علينا ننج المؤمنين ... ... ... ... ... | ١٠٣ | ك « | ١٠ |
| | وأمرت أن أكون من المؤمنين... ... ... ... ... | ١٠٤ | ك « | ١٠ |
| | وما نحن بتاركى آلهتنا عن قولك وما نحن لك بمؤمنين | ٥٣ | ك هود | ١١ |
| | بقيت الله خير لكم إن كنتم مؤمنين... ... ... ... | ٨٦ | ك « | ١١ |
| | وجاءك فى هذه الحق وموعظة وذكرى للمؤمنين... ... | ١٢٠ | ك « | ١١ |
| | وما أكثر الناس ولو حرصت بمؤمنين ... ... ... ... | ١٠٣ | ك يوسف | ١٢ |
| | ربنا اغفر لى ولوالدى وللمؤمنين يوم يقوم الحساب | ٤١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | إن فى ذلك لآية للمؤمنين ... ... ... ... ... ... | ٧٧ | ك الحجر | ١٥ |
| | ولا تحزن عليهم واخفض جناحك للمؤمنين ... ... | ٨٨ | ك « | ١٥ |
| | إن هذا القرآن يهدى للتى هى أقوم ويبشر المؤمنين | ٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وننزل من القرآن ما هو شفاء ورحمة للمؤمنين ... ... | ٨٢ | ك « | ١٧ |
| | ويبشر المؤمنين الذين يعملون الصالحات أن لهم أجرا حسنا | ٢ | ك الكهف | ١٨ |
| | ونجيناه من الغم وكذلك ننجى المؤمنين ... ... ... | ٨٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | افترى على الله كذبا وما نحن له بمؤمنين ... ... ... | ٣٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وليشهد عذابهما طائفة من المؤمنين ... ... ... ... | ٢ | م النور | ٢٤ |
| | وحرم ذلك على المؤمنين ... ... ... ... ... ... | ٣ | م « | ٢٤ |
| | يعظكم الله أن تعودوا لمثله أبدا إن كنتم مؤمنين | ١٧ | م « | ٢٤ |
| | قل للمؤمنين يغضوا من أبصارهم ويحفظوا فروجهم | ٣٠ | م « | ٢٤ |
| | ثم يتولى فريق منهم من بعد ذلك وما أولئك بالمؤمنين | ٤٧ | م « | ٢٤ |
| | إنما كان قول المؤمنين إذا دعوا إلى الله ورسوله ليحكم بينهم أن يقولوا سمعنا ... ... ... ... ... | ٥١ | م « | ٢٤ |
| | لعلك باخع نفسك ألا يكونوا مؤمنين ... ... ... | ٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | إن فى ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين... ... ... | ٨ | ك « | ٢٦ |
| | أن يغفر لنا ربنا خطايانا أن كنا أول المؤمنين | ٥١ | ك « | ٢٦ |
| | إن فى ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين ... ... | ٦٧ | ك « | ٢٦ |
| | فلو أن لنا كرة فنكون من المؤمنين ... ... ... ... | ١٠٢ | ك « | ٢٦ |
| | إن فى ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين ... ... | ١٠٣ | ك « | ٢٦ |
| | وما أنا بطارد المؤمنين ... ... ... ... ... ... | ١١٤ | ك « | ٢٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مُؤْمِنِين : | فافتح بيني و بينهم فتحا ونجني ومن معي من المؤمنين | ١١٨ ك | الشعراء | ٢٦ |
| | إن في ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين ... ... | ١٢١ ك | « | ٢٦ |
| | إن في ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين ... ... | ١٣٩ ك | « | ٢٦ |
| | إن في ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين ... ... | ١٥٨ ك | « | ٢٦ |
| | إن في ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين ... ... | ١٧٤ ك | « | ٢٦ |
| | إن في ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين ... ... | ١٩٠ ك | « | ٢٦ |
| | فقرأه عليهم ما كانوا به مؤمنين... ... ... ... ... | ١٩٩ ك | « | ٢٦ |
| | واخفض جناحك لمن اتبعك من المؤمنين ... ... | ٢١٥ ك | « | ٢٦ |
| | هدى وبشرى للمؤمنين ... ... ... ... ... ... | ٢ ك | النمل | ٢٧ |
| | الحمد لله الذي فضلنا على كثير من عباده المؤمنين | ١٥ ك | « | ٢٧ |
| | وإنه لهدى ورحمة للمؤمنين ... ... ... ... ... | ٧٧ ك | « | ٢٧ |
| | لولا أن ربطنا على قلبها لتكون من المؤمنين ... ... | ١٠ ك | القصص | ٢٨ |
| | لولا أرسلت إلينا رسولا فنتبع آياتك ونكون من المؤمنين | ٤٧ ك | « | ٢٨ |
| | خلق الله السموات والأرض بالحق إن في ذلك لآية للمؤمنين | ٤٤ ك | العنكبوت | ٢٩ |
| | وكان حقا علينا نصر المؤمنين ... ... ... ... ... | ٤٧ ك | الروم | ٣٠ |
| | النبيّ أولى بالمؤمنين من أنفسهم وأزواجه أمهاتهم | ٦ م | الأحزاب | ٣٣ |
| | أولى ببعض في كتاب الله من المؤمنين والمهاجرين | ٦ م | « | ٣٣ |
| | من المؤمنين رجال صدقوا ما عاهدوا الله عليه... ... | ٢٣ م | « | ٣٣ |
| | وكفى الله المؤمنين القتال وكان الله قويا عزيزا | ٢٥ م | « | ٣٣ |
| | إن المسلمين والمسلمات والمؤمنين والمؤمنات... ... | ٣٥ م | « | ٣٣ |
| | لكي لا يكون على المؤمنين حرج في أزواج أدعيائهم | ٣٧ م | « | ٣٣ |
| | ليخرجكم من الظلمات إلى النور وكان بالمؤمنين رحيما | ٤٣ م | « | ٣٣ |
| | وبشر المؤمنين بأن لهم من الله فضلا كبيرا ... ... | ٤٧ م | « | ٣٣ |
| | إن أراد النبيّ أن يستنكحها خالصة لك من دون المؤمنين | ٥٠ م | « | ٣٣ |
| | والذين يؤذون المؤمنين والمؤمنات بغير ما اكتسبوا فقد احتملوا بهتانا ... ... ... ... ... ... | ٥٨ م | « | ٣٣ |
| | قل لأزواجك وبناتك ونساء المؤمنين يدنين عليهن | ٥٩ م | « | ٣٣ |
| | ويتوب الله على المؤمنين والمؤمنات ... ... ... ... | ٧٣ م | « | ٣٣ |
| | ولقد صدق عليهم إبليس ظنه فاتبعوه إلا فريقا من المؤمنين | ٢٠ ك | سبأ | ٣٤ |
| | لولا أنتم لكنا مؤمنين ... ... ... ... ... ... | ٣١ ك | « | ٣٤ |
| | قالوا بل لم تكونوا مؤمنين ... ... ... ... ... ... | ٢٩ ك | الصافات | ٣٧ |
| | إنه من عبادنا المؤمنين... ... ... ... ... ... | ٨١ ك | « | ٣٧ |
| | إنه من عبادنا المؤمنين ... ... ... ... ... ... | ١١١ ك | « | ٣٧ |
| | إنهما من عبادنا المؤمنين ... ... ... ... ... ... | ١٢٢ ك | « | ٣٧ |
| | إنه من عبادنا المؤمنين... ... ... ... ... ... | ١٣٢ ك | « | ٣٧ |
| | إن في السموات والأرض لآيات للمؤمنين ... ... | ٣ ك | الجاثية | ٤٥ |
| | واستغفر لذنبك وللمؤمنين والمؤمنات ... ... ... ... | ١٩ م | محمد | ٤٧ |
| | هو الذي أنزل السكينة في قلوب المؤمنين ... ... | ٤ م | الفتح | ٤٨ |
| مُؤْمِنِين : | ليدخل المؤمنين والمؤمنات جنات ... ... ... ... | ٥ م | الفتح | ٤٨ |
| | لقد رضي الله عن المؤمنين إذ يبايعونك تحت الشجرة | ١٨ م | « | ٤٨ |
| | ولتكون آية للمؤمنين ويهديكم صراطا مستقيما ... ... | ٢٠ م | « | ٤٨ |
| | فأنزل الله سكينته على رسوله وعلى المؤمنين ... ... | ٢٦ م | « | ٤٨ |
| | وإن طائفتان من المؤمنين اقتتلوا فأصلحوا بينهما | ٩ م | الحجرات | ٤٩ |
| | فأخرجنا من كان فيها من المؤمنين ... ... ... ... | ٣٥ ك | الذاريات | ٥١ |
| | وذكر فإن الذكرى تنفع المؤمنين ... ... ... ... | ٥٥ ك | « | ٥١ |
| | وقد أخذ ميثاقكم إن كنتم مؤمنين ... ... ... ... | ٨ م | الحديد | ٥٧ |
| | يوم ترى المؤمنين والمؤمنات يسعى نورهم بين أيديهم | ١٢ م | « | ٥٧ |
| | يخربون بيوتهم بأيديهم وأيدي المؤمنين... ... ... | ٢ م | الحشر | ٥٩ |
| | نصر من الله وفتح قريب وبشر المؤمنين... ... ... | ١٣ م | الصف | ٦١ |
| | ولله العزة ولرسوله وللمؤمنين... ... ... ... ... | ٨ م | المنافقون | ٦٣ |
| | فإن الله هو مولاه وجبريل وصالح المؤمنين... ... | ٤ م | التحريم | ٦٦ |
| | ولمن دخل بيتي مؤمنا وللمؤمنين والمؤمنات ... ... | ٢٨ ك | نوح | ٧١ |
| | وهم على ما يفعلون بالمؤمنين شهود ... ... ... ... | ٧ ك | البروج | ٨٥ |
| | إن الذين فتنوا المؤمنين والمؤمنات ثم لم يتوبوا فلهم عذاب جهنم ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ ك | « | ٨٥ |
| مؤمنة : | ولأمة مؤمنة خير من مشركة ولو أعجبتكم ... ... | ٢٢١ م | البقرة | ٢ |
| (٦) | ومن قتل مؤمنا خطأ فتحرير رقبة مؤمنة... ... ... | ٩٢ م | النساء | ٤ |
| | فإن كان من قوم عدو لكم وهو مؤمن فتحرير رقبة مؤمنة | ٩٢ م | « | ٤ |
| | فدية مسلمة إلى أهله وتحرير رقبة مؤمنة ... ... ... | ٩٢ م | « | ٤ |
| | وما كان لمؤمن ولا مؤمنة إذا قضى الله ورسوله أمرا أن يكون لهم الخيرة ... ... ... ... ... ... | ٣٦ م | الأحزاب | ٣٣ |
| | وامرأة مؤمنة إن وهبت نفسها للنبيّ ... ... ... ... | ٥٠ م | « | ٣٣ |
| مؤمنات : | ومن لم يستطع منكم طولا أن ينكح المحصنات المؤمنات | ٢٥ م | النساء | ٤ |
| (٢٢) | فمن ما ملكت أيمانكم من فتياتكم المؤمنات ... ... | ٢٥ م | « | ٤ |
| | والمحصنات من المؤمنات ... ... ... ... ... ... | ٥ م | المائدة | ٥ |
| | والمؤمنون والمؤمنات بعضهم أولياء بعض... ... ... | ٧١ م | التوبة | ٩ |
| | وعد الله المؤمنين والمؤمنات جنات ... ... ... ... | ٧٢ م | « | ٩ |
| | لولا إذ سمعتموه ظن المؤمنون والمؤمنات بأنفسهم خيرا | ١٢ م | النور | ٢٤ |
| | إن الذين يرمون المحصنات الغافلات المؤمنات لعنوا | ٢٣ م | « | ٢٤ |
| | وقل للمؤمنات يغضضن من أبصارهن ويحفظن فروجهن | ٣١ م | « | ٢٤ |
| | إن المسلمين والمسلمات والمؤمنين والمؤمنات ... ... | ٣٥ م | الأحزاب | ٣٣ |
| | إذا نكحتم المؤمنات ثم طلقتموهن من قبل أن تمسوهن فما لكم عليهن من عدة ... ... ... ... ... ... | ٤٩ م | « | ٣٣ |
| | والذين يؤذون المؤمنين والمؤمنات بغير ما اكتسبوا فقد احتملوا بهتانا ... ... ... ... ... ... | ٥٨ م | « | ٣٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **مؤمنات** : ويتوب الله على المؤمنين والمؤمنات ... ... ... | ٧٣ | م | الأحزاب | ٣٣ |
| واستغفر لذنبك وللمؤمنين والمؤمنات ... ... ... ... | ١٩ | م | محمد | ٤٧ |
| ليدخل المؤمنين والمؤمنات جنات تجرى من تحتها الأنهار | ٥ | م | الفتح | ٤٨ |
| ولولا رجال مؤمنون ونساء مؤمنات لم تعلموهم أن تطؤهم | ٢٥ | م | « | ٤٨ |
| يوم ترى المؤمنين والمؤمنات يسعى نورهم بين أيديهم | ١٢ | م | الحديد | ٥٧ |
| إذا جاءكم المؤمنات مهاجرات فامتحنوهن ... ... ... | ١٠ | م | الممتحنة | ٦٠ |
| فإن علمتموهن مؤمنات فلا ترجعوهن إلى الكفار | ١٠ | م | « | ٦٠ |
| إذا جاءك المؤمنات يبايعنك على أن لا يشركن بالله شيئا | ١٢ | م | « | ٦٠ |
| أن يبدله أزواجا خيرا منكن مسلمات مؤمنات قانتات | ٥ | م | التحريم | ٦٦ |
| ولمن دخل بيتى مؤمنا وللمؤمنين والمؤمنات ... ... | ٢٨ | ك | نوح | ٧١ |
| إن الذين فتنوا المؤمنين والمؤمنات ثم لم يتوبوا فلهم عذاب جهنم ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك | البروج | ٨٥ |
| **لأمة** : ولأمة مؤمنة خير من مشركة ولو أعجبتكم ... ... | ٢٢١ | م | البقرة | ٢ |
| **إمائكم** : وأنكحوا الأيامى منكم والصالحين من عبادكم وإمائكم | ٣٢ | م | النور | ٢٤ |
| **أنثى** : الحر بالحر والعبد بالعبد والأنثى ... ... ... ... | ١٧٨ | م | البقرة | ٢ |
| (١٨) بالأنثى فمن عفى له من أخيه شىء فاتباع بالمعروف | ١٧٨ | م | « | ٢ |
| فلما وضعتها قالت رب إنى وضعتها أنثى ... ... ... | ٣٦ | م | آل عمران | ٣ |
| وليس الذكر كالأنثى ... ... ... ... ... ... ... | ٣٦ | م | « | ٣ |
| أنى لا أضيع عمل عامل منكم من ذكر أو أنثى | ١٩٥ | م | « | ٣ |
| ومن يعمل من الصالحات من ذكر أو أنثى وهو مؤمن فأولئك يدخلون الجنة ... ... ... ... ... ... | ١٢٤ | م | النساء | ٤ |
| الله يعلم ما تحمل كل أنثى وما تغيض الأرحام وما تزداد | ٨ | م | الرعد | ١٣ |
| وإذا بشر أحدهم بالأنثى ظل وجهه مسودا وهو كظيم | ٥٨ | ك | النحل | ١٦ |
| من عمل صالحا من ذكر أو أنثى وهو مؤمن فلنحيينه | ٩٧ | ك | « | ١٦ |
| وما تحمل من أنثى ولا تضع إلا بعلمه ... ... ... | ١١ | ك | فاطر | ٣٥ |
| ومن عمل صالحا من ذكر أو أنثى وهو مؤمن فأولئك يدخلون الجنة ... ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك | غافر | ٤٠ |
| وما تحمل من أنثى ولا تضع إلا بعلمه ... ... ... ... | ٤٧ | ك | فصلت | ٤١ |
| يأيها الناس إنا خلقناكم من ذكر وأنثى وجعلناكم شعوبا | ١٣ | م | الحجرات | ٤٩ |
| ألكم الذكر وله الأنثى ... ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك | النجم | ٥٣ |
| إن الذين لا يؤمنون بالآخرة ليسمون الملائكة تسمية الأنثى | ٢٧ | ك | « | ٥٣ |
| وأنه خلق الزوجين الذكر والأنثى ... ... ... ... | ٤٥ | ك | « | ٥٣ |
| فجعل منه الزوجين الذكر والأنثى ... ... ... ... | ٣٩ | ك | القيامة | ٧٥ |
| وما خلق الذكر والأنثى ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك | الليل | ٩٢ |
| **الأنثيين** : يوصيكم الله فى أولادكم للذكر مثل حظ الأنثيين | ١١ | م | النساء | ٤ |
| (٦) وإن كانوا إخوة رجالا ونساء فللذكر مثل حظ الأنثيين | ١٧٦ | م | « | ٤ |
| قل آلذكرين حرم أم الأنثيين ... ... ... ... ... | ١٤٣ | ك | الأنعام | ٦ |
| أم ما اشتملت عليه أرحام الأنثيين نبئونى بعلم ... ... | ١٤٣ | ك | « | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **الأنثيين** : قل آلذكرين حرم أم الأنثيين... ... ... ... | ١٤٤ | ك | الأنعام | ٦ |
| أم ما اشتملت عليه أرحام الأنثيين ... ... ... ... | ١٤٤ | ك | « | ٦ |
| **إناثا** : إن يدعون من دونه إلا إناثا وإن يدعون إلا شيطانا | ١١٧ | م | النساء | ٤ |
| (٦) أفأصفاكم ربكم بالبنين واتخذ من الملائكة إناثا | ٤٠ | ك | الإسراء | ١٧ |
| أم خلقنا الملائكة إناثا وهم شاهدون ... ... ... | ١٥٠ | ك | الصافات | ٣٧ |
| يهب لمن يشاء إناثا ويهب لمن يشاء الذكور ... ... | ٤٩ | ك | الشورى | ٤٢ |
| أو يزوجهم ذكرانا وإناثا ويجعل من يشاء عقيما | ٥٠ | ك | « | ٤٢ |
| وجعلوا الملائكة الذين هم عباد الرحمن إناثا | ١٩ | ك | الزخرف | ٤٣ |
| **آنس** : وسار بأهله آنس من جانب الطور نارا... .. ... | ٢٩ | ك | القصص | ٢٨ |
| **آنست** : إنى آنست نارا لعلى آتيكم منها بقبس ... ... | ١٠ | ك | طه | ٢٠ |
| (٣) إنى آنست نارا سآتيكم منها بخبر ... ... ... ... | ٧ | ك | النمل | ٢٧ |
| قال لأهله امكثوا إنى آنست نارا لعلى آتيكم منها بخبر | ٢٩ | ك | القصص | ٢٨ |
| **آنستم** : فإن آنستم منهم رشدا فادفعوا إليهم أموالهم | ٦ | م | النساء | ٤ |
| **تستأنسوا** : لا تدخلوا بيوتا غير بيوتكم حتى تستأنسوا وتسلموا | ٢٧ | م | النور | ٢٤ |
| **إنس** : وكذلك جعلنا لكل نبى عدوا شياطين الإنس والجن | ١١٢ | ك | الأنعام | ٦ |
| (١٨) ويوم يحشرهم جميعا يا معشر الجن قد استكثرتم من الإنس | ١٢٨ | ك | « | ٦ |
| وقال أولياؤهم من الإنس ربنا استمتع بعضنا ببعض | ١٢٨ | ك | « | ٦ |
| يا معشر الجن والإنس ألم يأتكم رسل منكم... ... ... | ١٣٠ | ك | « | ٦ |
| قال ادخلوا فى أمم قد خلت من قبلكم من الجن والإنس | ٣٨ | ك | الأعراف | ٧ |
| ولقد ذرأنا لجهنم كثيرا من الجن والإنس ... ... | ١٧٩ | ك | « | ٧ |
| قل لئن اجتمعت الإنس والجن على أن يأتوا بمثل هذا القرآن لا يأتون بمثله ... ... ... ... ... | ٨٨ | ك | الإسراء | ١٧ |
| وحشر لسليمان جنوده من الجن والإنس والطير | ١٧ | ك | النمل | ٢٧ |
| فى أمم قد خلت من قبلهم من الجن والإنس... ... | ٢٥ | ك | فصلت | ٤١ |
| ربنا أرنا اللذين أضلانا من الجن والإنس ... ... | ٢٩ | ك | « | ٤١ |
| فى أمم قد خلت من قبلهم من الجن والإنس... ... | ١٨ | ك | الأحقاف | ٤٦ |
| وما خلقت الجن والإنس إلا ليعبدون ... ... ... | ٥٦ | ك | الذاريات | ٥١ |
| يا معشر الجن والإنس إن استطعتم أن تنفذوا | ٣٣ | م | الرحمن | ٥٥ |
| فيومئذ لا يسأل عن ذنبه إنس ولا جان... ... ... | ٣٩ | م | « | ٥٥ |
| فيهن قاصرات الطرف لم يطمثهن إنس قبلهم ولا جان | ٥٦ | م | « | ٥٥ |
| لم يطمثهن إنس قبلهم ولا جان ... ... ... ... | ٧٤ | م | « | ٥٥ |
| وأنا ظننا أن لن تقول الإنس والجن على الله كذبا | ٥ | ك | الجن | ٧٢ |
| وأنه كان رجال من الإنس يعوذون برجال من الجن | ٦ | ك | « | ٧٢ |
| **الإنسان** : يريد الله أن يخفف عنكم وخلق الإنسان ضعيفا | ٢٨ | م | النساء | ٤ |
| (٦٥) وإذا مس الإنسان الضر دعانا لجنبه أو قاعدا | ١٢ | ك | يونس | ١٠ |
| ولئن أذقنا الإنسان منا رحمة ثم نزعناها منه إنه ليؤس | ٩ | ك | هود | ١١ |
| إن الشيطان للإنسان عدو مبين ... ... ... ... | ٥ | ك | يوسف | ١٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **الإنسان** : إن الإنسان لظلوم كفار ... ... ... ... | ٣٤ | ك | إبراهيم | ١٤ |
| ولقد خلقنا الإنسان من صلصال من حمإ مسنون | ٢٦ | ك | الحجر | ١٥ |
| خلق الإنسان من نطفة فإذا هو خصيم مبين ... ... | ٤ | ك | النحل | ١٦ |
| ويدع الإنسان بالشر دعاءه بالخير ... ... ... ... | ١١ | ك | الإسراء | ١٧ |
| وكان الإنسان عجولا ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك | » | ١٧ |
| وكل إنسان ألزمناه طائره في عنقه ... ... ... ... | ١٣ | ك | » | ١٧ |
| إن الشيطان كان للإنسان عدوا مبينا ... ... ... | ٥٣ | ك | » | ١٧ |
| فلما نجاكم إلى البر أعرضتم وكان الإنسان كفورا | ٦٧ | ك | » | ١٧ |
| وإذا أنعمنا على الإنسان أعرض ونأى بجانبه | ٨٣ | ك | » | ١٧ |
| إذا لأمسكتم خشية الإنفاق وكان الإنسان قتورا | ١٠٠ | ك | » | ١٧ |
| وكان الإنسان أكثر شيء جدلا... ... ... ... ... | ٥٤ | ك | الكهف | ١٨ |
| ويقول الإنسان ءإذا ما متّ لسوف أخرج حيا | ٦٦ | ك | مريم | ١٩ |
| أولا يذكر الإنسان أنا خلقناه من قبل ولم يك شيئا | ٦٧ | ك | » | ١٩ |
| خلق الإنسان من عجل سأريكم آياتي فلا تستعجلون | ٣٧ | ك | الأنبياء | ٢١ |
| إن الإنسان لكفور... ... ... ... ... ... ... | ٦٦ | م | الحج | ٢٢ |
| ولقد خلقنا الإنسان من سلالة من طين ... ... ... | ١٢ | ك | المؤمنون | ٢٣ |
| وكان الشيطان للإنسان خذولا ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك | الفرقان | ٢٥ |
| ووصينا الإنسان بوالديه حسنا ... ... ... ... ... | ٨ | م | العنكبوت | ٢٩ |
| ووصينا الإنسان بوالديه حملته أمه وهنا على وهن | ١٤ | ك | لقمان | ٣١ |
| وبدأ خلق الإنسان من طين ... ... ... ... ... | ٧ | ك | السجدة | ٣٢ |
| وحملها الإنسان إنه كان ظلوما جهولا ... ... ... | ٧٢ | م | الأحزاب | ٣٣ |
| أولا يرى الإنسان أنا خلقناه من نطفة فإذا هو خصيم | ٧٧ | ك | يس | ٣٦ |
| وإذا مس الإنسان ضر دعا ربه منيبا إليه ... ... | ٨ | ك | الزمر | ٣٩ |
| فإذا مس الإنسان ضر دعانا ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك | » | ٣٩ |
| لا يسأم الإنسان من دعاء الخير ... ... ... ... | ٤٩ | ك | فصلت | ٤١ |
| وإذا أنعمنا على الإنسان أعرض ونأى بجانبه | ٥١ | ك | » | ٤١ |
| وإنا إذا أذقنا الإنسان منا رحمة فرح بها ... ... | ٤٨ | ك | الشورى | ٤٢ |
| وإن تصبهم سيئة بما قدمت أيديهم فإن الإنسان كفور | ٤٨ | ك | » | ٤٢ |
| إن الإنسان لكفور مبين ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك | الزخرف | ٤٣ |
| ووصينا الإنسان بوالديه إحسانا ... ... ... ... | ١٥ | م | الأحقاف | ٤٦ |
| ولقد خلقنا الإنسان ونعلم ما توسوس به نفسه | ١٦ | ك | ق | ٥٠ |
| أم للإنسان ما تمنى... ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك | النجم | ٥٣ |
| وأن ليس للإنسان إلا ما سعى ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك | » | ٥٣ |
| خلق الإنسان . علمه البيان ... ... ... ... ... | ٣ | م | الرحمن | ٥٥ |
| خلق الإنسان من صلصال كالفخار ... ... ... ... | ١٤ | م | » | ٥٥ |
| كمثل الشيطان إذ قال للإنسان اكفر ... ... ... | ١٦ | م | الحشر | ٥٩ |
| إن الإنسان خلق هلوعا ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك | المعارج | ٧٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **الإنسان** : أيحسب الإنسان أن لن نجمع عظامه ... ... | ٣ | ك | القيامة | ٧٥ |
| بل يريد الإنسان ليفجر أمامه ... ... ... ... ... | ٥ | ك | » | ٧٥ |
| يقول الإنسان يومئذ أين المفر... ... ... ... ... | ١٠ | ك | » | ٧٥ |
| ينبأ الإنسان يومئذ بما قدم وأخر ... ... ... ... | ١٣ | ك | » | ٧٥ |
| بل الإنسان على نفسه بصيرة ... ... ... ... ... | ١٤ | ك | » | ٧٥ |
| أيحسب الإنسان أن يترك سدى ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك | » | ٧٥ |
| هل أتى على الإنسان حين من الدهر لم يكن شيئا | ١ | م | الإنسان | ٧٦ |
| إنا خلقنا الإنسان من نطفة أمشاج نبتليه ... ... | ٢ | م | » | ٧٦ |
| يوم يتذكر الإنسان ما سعى ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك | النازعات | ٧٩ |
| قتل الإنسان ما أكفره ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك | عبس | ٨٠ |
| فلينظر الإنسان إلى طعامه ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك | » | ٨٠ |
| يأيها الإنسان ما غرك بربك الكريم ... ... ... | ٦ | ك | الانفطار | ٨٢ |
| يأيها الإنسان إنك كادح إلى ربك كدحا ... ... | ٦ | ك | الانشقاق | ٨٤ |
| فلينظر الإنسان مم خلق ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك | الطارق | ٨٦ |
| فأما الإنسان إذا ما ابتلاه ربه فأكرمه ونعمه فيقول ربي أكرمن ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك | الفجر | ٨٩ |
| يومئذ يتذكر الإنسان وأنى له الذكرى ... ... ... | ٢٣ | ك | » | ٨٩ |
| لقد خلقنا الإنسان في كبد ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك | البلد | ٩٠ |
| لقد خلقنا الإنسان في أحسن تقويم ... ... ... | ٤ | ك | التين | ٩٥ |
| خلق الإنسان من علق ... ... ... ... ... ... ... | ٢ | ك | العلق | ٩٦ |
| علم الإنسان ما لم يعلم ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك | » | ٩٦ |
| كلا إن الإنسان ليطغى ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك | » | ٩٦ |
| وقال الإنسان ما لها ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك | الزلزلة | ٩٩ |
| إن الإنسان لربه لكنود ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك | العاديات | ١٠٠ |
| إن الإنسان لفي خسر... ... ... ... ... ... ... | ٢ | ك | العصر | ١٠٣ |
| **أناس** : قد علم كل أناس مشربهم ... ... ... ... | ٦٠ | م | البقرة | ٢ |
| (٥) أخرجوهم من قريتكم إنهم أناس يتطهرون ... ... | ٨٢ | ك | الأعراف | ٧ |
| قد علم كل أناس مشربهم ... ... ... ... ... ... | ١٦٠ | ك | » | ٧ |
| يوم ندعو كل أناس بإمامهم ... ... ... ... ... | ٧١ | ك | الإسراء | ١٧ |
| أخرجوا آل لوط من قريتكم إنهم أناس يتطهرون | ٥٦ | ك | النمل | ٢٧ |
| **أناسي** : ونسقيه مما خلقنا أنعاما وأناسي كثيرا ... ... | ٤٩ | ك | الفرقان | ٢٥ |
| **إنسيا** : إني نذرت للرحمن صوما فلن أكلم اليوم إنسيا | ٢٦ | ك | مريم | ١٩ |
| **مستأنسين** : فإذا طعمتم فانتشروا ولا مستأنسين لحديث | ٥٣ | م | الأحزاب | ٣٣ |
| **أنف** : أن النفس بالنفس والعين بالعين والأنف... ... | ٤٥ | م | المائدة | ٥ |
| (٢) بالأنف والأذن بالأذن والسن بالسن ... ... ... | ٤٥ | م | » | ٥ |
| **آنفا** : قالوا للذين أوتوا العلم ماذا قال آنفا ... ... ... | ١٦ | م | محمد | ٤٧ |
| **للأنام** : والأرض وضعها للأنام... ... ... ... ... | ١٠ | م | الرحمن | ٥٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَنَّى : | نساؤكم حرث لكم فأتوا حرثكم أنى شئتم ... ... | ٢٢٣ | م البقـرة | ٢ |
| (٢٨) | قالوا أنى يكون له الملك علينا ونحن أحق بالملك منه | ٢٤٧ | م « | ٢ |
| | قال أنى يحيي هذه الله بعد موتها ... ... ... ... | ٢٥٩ | م « | ٢ |
| | قال يا مريم أنى لك هذا قالت هو من عند الله | ٣٧ | م آل عمران | ٣ |
| | قال ربّ أنى يكون لى غلام وقد بلغنى الكبر | ٤٠ | م « | ٣ |
| | قالت ربّ أنى يكون لى ولد ولم يمسسنى بشر... ... | ٤٧ | م « | ٣ |
| | أولمّا أصابتكم مصيبة قد أصبتم مثليها قلتم أنى هذا | ١٦٥ | م « | ٣ |
| | انظر كيف نبين لهم الآيات ثم انظر أنى يؤفكون | ٧٥ | م المائدة | ٥ |
| | ذلكم الله فأنى تؤفكون ... ... ... ... ... ... | ٩٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | أنى يكون له ولد ولم تكن له صاحبة وخلق كل شىء | ١٠١ | ك « | ٦ |
| | قاتلهم الله أنى يؤفكون ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | م التوبة | ٩ |
| | فماذا بعد الحق إلا الضلال فأنى تصرفون ... ... | ٣٢ | ك يونس | ١٠ |
| | قل الله يبدؤ الخلق ثم يعيده فأنى تؤفكون ... ... | ٣٤ | ك « | ١٠ |
| | قال ربّ أنى يكون لى غلام وكانت امرأتى عاقرا | ٨ | ك مريم | ١٩ |
| | قالت أنى يكون لى غلام ولم يمسسنى بشر ... ... | ٢٠ | ك « | ١٩ |
| | سيقولون لله قل فأنى تسحرون ... ... ... ... ... | ٨٩ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وسخر الشمس والقمر ليقولن الله فأنى يؤفكون | ٦١ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وقالوا آمنا به وأنى لهم التناوش من مكان بعيد | ٥٢ | ك سبإ | ٣٤ |
| | لا إله إلا هو فأنى تؤفكون ... ... ... ... ... | ٣ | ك فاطر | ٣٥ |
| | فاستبقوا الصراط فأنى يبصرون ... ... ... ... ... | ٦٦ | ك يس | ٣٦ |
| | ذلكم الله ربكم له الملك لا إله إلا هو فأنى تصرفون | ٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| | لا إله إلا هو فأنى تؤفكون ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك غافر | ٤٠ |
| | ألم تر إلى الذين يجادلون فى آيات الله أنى يصرفون | ٦٩ | ك « | ٤٠ |
| | ولئن سألتهم من خلقهم ليقولن الله فأنى يؤفكون | ٨٧ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | أنى لهم الذكرى وقد جاءهم رسول مبين ... ... | ١٣ | ك الدخان | ٤٤ |
| | فقد جاء أشراطها فأنى لهم إذا جاءتهم ذكراهم | ١٨ | م محمد | ٤٧ |
| | هم العدو فاحذرهم قاتلهم الله أنى يؤفكون ... ... | ٤ | م المنافقون | ٦٣ |
| | يومئذ يتذكر الإنسان وأنى له الذكرى ... ... ... | ٢٣ | ك الفجر | ٨٩ |
| يَأْنِ : | ألم يأن للذين آمنوا أن تخشع قلوبهم لذكر الله | ١٦ | م الحديد | ٥٧ |
| آنٍ : | يطوفون بينها وبين حميم آن ... ... ... ... ... | ٤٤ | م الرحمن | ٥٥ |
| آنِيَة : | ويطاف عليهم بآنية من فضة وأكواب كانت قواريرا | ١٥ | م الإنسان | ٧٦ |
| (٢) | تسقى من عين آنية ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك الغاشية | ٨٨ |
| آنَاء : | يتلون آيات الله آناء الليل وهم يسجدون ... ... | ١١٣ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | ومن آناء الليل فسبح وأطراف النهار لعلك ترضى | ١٣٠ | ك طه | ٢٠ |
| | أمن هو قانت آناء الليل ساجدا وقائما يحذر الآخرة | ٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| إِنَاهُ : | إلا أن يؤذن لكم إلى طعام غير ناظرين إناه | ٥٣ | م الأحزاب | ٣٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَهْل : | ما يود الذين كفروا من أهل الكتاب ... ... ... | ١٠٥ | م البقـرة | ٢ |
| (٥٤) | ود كثير من أهل الكتاب لو يردونكم ... ... ... | ١٠٩ | م « | ٢ |
| | قل يأهل الكتاب تعالوا إلى كلمة سواء بيننا وبينكم | ٦٤ | م آل عمران | ٣ |
| | يأهل الكتاب لم تحاجون فى إبراهيم ... ... ... | ٦٥ | م « | ٣ |
| | ودت طائفة من أهل الكتاب لو يضلونكم ... ... | ٦٩ | م « | ٣ |
| | يأهل الكتاب لم تكفرون بآيات الله ... ... ... | ٧٠ | م « | ٣ |
| | يأهل الكتاب لم تلبسون الحق بالباطل ... ... ... | ٧١ | م « | ٣ |
| | وقالت طائفة من أهل الكتاب آمنوا بالذى أنزل | ٧٢ | م « | ٣ |
| | ومن أهل الكتاب من إن تأمنه بقنطار يؤده إليك | ٧٥ | م « | ٣ |
| | قل يأهل الكتاب لم تكفرون بآيات الله... ... ... | ٩٨ | م « | ٣ |
| | قل يأهل الكتاب لم تصدون عن سبيل الله ... ... | ٩٩ | م « | ٣ |
| | ولو آمن أهل الكتاب لكان خيرا لهم ... ... ... | ١١٠ | م « | ٣ |
| | من أهل الكتاب أمة قائمة يتلون آيات الله ... ... | ١١٣ | م « | ٣ |
| | وإن من أهل الكتاب لمن يؤمن بالله ... ... ... | ١٩٩ | م « | ٣ |
| | ليس بأمانيكم ولا أمانىّ أهل الكتاب ... ... ... | ١٢٣ | م النساء | ٤ |
| | يسئلك أهل الكتاب أن تنزل عليهم كتابا من السماء | ١٥٣ | م « | ٤ |
| | وإن من أهل الكتاب إلا ليؤمنن به قبل موته | ١٥٩ | م « | ٤ |
| | يأهل الكتاب لا تغلوا فى دينكم ... ... ... ... | ١٧١ | م « | ٤ |
| | يأهل الكتاب قد جاءكم رسولنا يبين لكم كثيرا | ١٥ | م المائدة | ٥ |
| | يأهل الكتاب قد جاءكم رسولنا يبين لكم على فترة | ١٩ | م « | ٥ |
| | وليحكم أهل الإنجيل بما أنزل الله فيه ... ... ... | ٤٧ | م « | ٥ |
| | قل يأهل الكتاب هل تنقمون منا إلا أن آمنا بالله | ٥٩ | م « | ٥ |
| | ولو أن أهل الكتاب آمنوا واتقوا لكفرنا عنهم سيئاتهم | ٦٥ | م « | ٥ |
| | قل يأهل الكتاب لستم على شىء حتى تقيموا التوراة | ٦٨ | م « | ٥ |
| | قل يأهل الكتاب لا تغلوا فى دينكم غير الحق | ٧٧ | م « | ٥ |
| | ولو أن أهل القرى آمنوا واتقوا لفتحنا عليهم بركات | ٩٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | أفأمن أهل القرى أن يأتيهم بأسنا بياتا وهم نائمون | ٩٧ | ك « | ٧ |
| | أوأمن أهل القرى أن يأتيهم بأسنا ضحى وهم يلعبون | ٩٨ | ك « | ٧ |
| | ومن أهل المدينة مردوا على النفاق لا تعلمهم نحن نعلمهم | ١٠١ | م التوبة | ٩ |
| | ما كان لأهل المدينة ومن حولهم من الأعراب أن يتخلفوا | ١٢٠ | م « | ٩ |
| | رحمة الله وبركاته عليكم أهل البيت إنه حميد مجيد | ٧٣ | ك هود | ١١ |
| | وما أرسلنا من قبلك إلا رجالا نوحى إليهم من أهل القرى | ١٠٩ | ك يوسف | ١٢ |
| | وجاء أهل المدينة يستبشرون ... ... ... ... ... | ٦٧ | ك الحجر | ١٥ |
| | فاسألوا أهل الذكر إن كنتم لا تعلمون... ... ... | ٤٣ | ك النحل | ١٦ |
| | فانطلقا حتى إذا أتيا أهل قرية استطعما أهلها | ٧٧ | ك الكهف | ١٨ |
| | فلبثت سنين فى أهل مدين ثم جئت على قدر يا موسى | ٤٠ | ك طه | ٢٠ |
| | فاسألوا أهل الذكر إن كنتم لا تعلمون... ... ... | ٧ | ك الأنبياء | ٢١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَهْل: | فقالت هل أدلكم على أهل بيت يكفلونه لكم... ... | ١٢ | ك القصص | ٢٨ |
| | وما كنت ثاويا فى أهـل مدين تتلوا عليهم آياتنا | ٤٥ | ك « | ٢٨ |
| | قالوا إنا مهلكوا أهل هذه القرية ... ... ... ... | ٣١ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | إنا منزلون على أهـل هذه القـرية رجزا من السماء | ٣٤ | ك « | ٢٩ |
| | ولا تجادلوا أهـل الكتاب إلا بالتى هى أحسن | ٤٦ | ك « | ٢٩ |
| | يأهل يثرب لا مقام لكم فارجعوا ... ... ... ... | ١٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وأنزل الذين ظاهروهم من أهل الكتاب من صياصيهم | ٢٦ | م « | ٣٣ |
| | إنما يريد الله ليذهب عنكم الرجس أهل البيت و يطهركم | ٣٣ | م « | ٣٢ |
| | إن ذلك لحق تخاصم أهل النار... ... ... ... ... | ٦٤ | ك ص | ٣٨ |
| | لئلا يعلم أهل الكتاب ألا يقدرون على شىء من فضل الله | ٢٩ | م الحديد | ٥٧ |
| | هـو الذى أخرج الذين كفروا من أهـل الكتاب | ٢ | م الحشر | ٥٩ |
| | ما أفاء الله على رسوله من أهل القرى فلله وللرسول | ٧ | م « | ٥٩ |
| | يقولون لإخوانهم الذين كفروا من أهـل الكتاب | | | |
| | لئن أخرجتم لنخرجن معكم ... ... ... ... ... | ١١ | م « | ٥٩ |
| | وما يذكرون إلا أن يشاء الله هو أهل التقوى... ... | ٥٦ | ك المدثر | ٧٤ |
| | وأهل المغفرة ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٦ | ك « | ٧٤ |
| | لم يكن الذين كفروا من أهل الكتاب والمشركين منفكين | ١ | م البينة | ٩٨ |
| | إن الذين كفروا من أهل الكتاب والمشركين فى نار جهنم | ٦ | م « | ٩٨ |
| أَهْلَكَ: | و إذ غدوت من أهلك تبوئ المؤمنين مقاعد للقتال | ١٢١ | م آل عمران | ٣ |
| (٩) | احمل فيها من كلٍّ زوجين اثنين وأهلك ... ... ... | ٤٠ | ك هـود | ١١ |
| | قال يا نوح إنه ليس من أهلك إنه عمل غير صالح | ٤٦ | ك « | ١١ |
| | فأسر بأهلك بقطع من الليـل ولا يلتفت منكم أحد | ٨١ | ك « | ١١ |
| | قالت ما جزاء من أراد بأهلك سوءا إلا أن يسجن | ٢٥ | ك يوسف | ١٢ |
| | فأسر بأهلك بقطع من الليل واتبع أدبارهم ... ... | ٦٥ | ك الحجر | ١٥ |
| | وأمر أهلك بالصلاة واصطبر عليها ... ... ... ... | ١٣٢ | ك طه | ٢٠ |
| | فاسلك فيها من كلٍّ زوجين اثنين وأهلك... ... ... | ٢٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | إنا منجوك وأهلك إلا امرأتك كانت من الغابرين | ٣٣ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| أَهْلِكُم: | فألقوه على وجه أبى يأت بصيرا وأتونى بأهلكم | ٩٣ | ك يوسف | ١٢ |
| أَهْلَنَا: | ونمير أهلنا ونحفظ أخانا ونزداد كيل بعير ... ... | ٦٥ | ك « | ١٢ |
| (٣) | مسنا وأهلنا الضر وجئنا ببضاعة مزجاة... ... ... | ٨٨ | ك « | ١٢ |
| | قالوا إنا كنا قبل فى أهلنا مشفقين... ... ... ... | ٢٦ | ك الطور | ٥٢ |
| أَهْلَه: | ربّ اجعل هذا بلدا آمنا وارزق أهله من الثمرات | ١٢٦ | م البقرة | ٢ |
| (٢٧) | ذلك لمن لم يكن أهله حاضرى المسجد الحرام ... ... | ١٩٦ | م « | ٢ |
| | و إخراج أهله منه أكبر عند الله... ... ... ... ... | ٢١٧ | م « | ٢ |
| | و إن خفتم شقاق بينهما فابعثوا حكما من أهـله | ٣٥ | م النساء | ٤ |
| | فتحرير رقبة مؤمنة ودية مسلمة إلى أهله... ... ... | ٩٢ | م « | ٤ |
| | فدية مسلمة إلى أهله وتحرير رقبة ... ... ... ... | ٩٢ | م « | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَهْله: | فأنجيناه وأهله إلا امرأته كانت من الغابرين... ... | ٨٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | وكان يأمر أهله بالصلاة والزكاة وكان عند ربه مرضيا | ٥٥ | ك مريم | ١٩ |
| | فقال لأهله امكثوا إنى آنست نارا... ... ... ... | ١٠ | ك طه | ٢٠ |
| | فاستجبنا له فنجيناه وأهله من الكرب العظيم... ... | ٧٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | فكشفنا ما به من ضرّ وآتيناه أهـله ومثلهم معهم | ٨٤ | ك « | ٢١ |
| | فنجيناه وأهله أجمعين ... ... ... ... ... ... | ١٧٠ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | إذ قال موسى لأهله إنى آنست نارا سآتيكم منها بخبر | ٧ | ك النمل | ٢٧ |
| | قالوا تقاسموا بالله لنبيتنه وأهله ... ... ... ... | ٤٩ | ك « | ٢٧ |
| | ثم لنقولن لوليّه ما شهدنا مهلك أهله ... ... ... | ٤٩ | ك « | ٢٧ |
| | فأنجيناه وأهله إلا امرأته قدرناها من الغابرين ... | ٥٧ | ك « | ٢٧ |
| | فلما قضى موسى الأجل وسار بأهله آنس من جانب | | | |
| | الطور نارا... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك القصص | ٢٨ |
| | قال لأهله امكثوا إنى آنست نارا لعلى آتيكم منها بخبر | ٢٩ | ك « | ٢٨ |
| | لننجينه وأهله إلا امرأته كانت من الغابرين ... ... | ٣٢ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ولا يحيق المكر السيئ إلا بأهله ... ... ... ... | ٤٣ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ونجيناه وأهله من الكرب العظيم... ... ... ... ... | ٧٦ | ك الصافات | ٣٧ |
| | إذ نجيناه وأهله أجمعين... ... ... ... ... ... | ١٣٤ | ك « | ٣٧ |
| | ووهبنا له أهله ومثلهم معهم رحمة منا ... ... ... | ٤٣ | ك ص | ٣٨ |
| | فراغ إلى أهله فجاء بعجل سمين ... ... ... ... | ٢٦ | ك الذاريات | ٥١ |
| | ثم ذهب إلى أهله يتمطى ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك القيامة | ٧٥ |
| | و ينقلب إلى أهله مسرورا ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| | إنه كان فى أهله مسرورا ... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك « | ٨٤ |
| أَهْلِهَا: | فابعثوا حكما من أهله وحكما من أهلها ... ... ... | ٣٥ | م النساء | ٤ |
| (٢٠) | إن الله يأمركم أن تؤدوا الأمانات إلى أهلها ... ... | ٥٨ | م « | ٤ |
| | ربنا أخرجنا من هذه القرية الظالم أهلها ... ... ... | ٧٥ | م « | ٤ |
| | ذلك أن لم يكن ربك مهلك القرى بظلم وأهلها غافلون | ١٣١ | ك الأنعام | ٦ |
| | إلا أخذنا أهلها بالبأساء والضراء لعلهم يضرعون | ٩٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | أو لم يهد للذين يرثون الأرض من بعد أهلها ... ... | ١٠٠ | ك « | ٧ |
| | إن هذا لمكر مكرتموه فى المدينة لتخرجوا منها أهلها | ١٢٣ | ك « | ٧ |
| | وظن أهلها أنهم قادرون عليها أتاها أمرنا ليلا أو نهارا | ٢٤ | ك يونس | ١٠ |
| | وما كان ربك ليهلك القرى بظلم وأهلها مصلحون ... | ١١٧ | ك هـود | ١١ |
| | وشهد شاهد من أهلها ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | قال أخرقتها لتغرق أهلها... ... ... ... ... ... | ٧١ | ك الكهف | ١٨ |
| | حتى إذا أتيا أهل قرية استطعما أهلها ... ... ... | ٧٧ | ك « | ١٨ |
| | واذكر فى الكتاب مريم إذ انتبذت من أهلها مكانا شرقيا | ١٦ | ك مريم | ١٩ |
| | حتى تستأنسوا وتسلموا على أهلها ... ... ... ... | ٢٧ | م النور | ٢٤ |
| | وجعلوا أعزة أهلها أذلة ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك النمل | ٢٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَهْلَهَا: | إن فرعون علا فى الأرض وجعل أهلها شيعا ... | ٤ | ك القصص | ٢٨ |
| | ودخل المدينة على حين غفلة من أهلها ... ... ... | ١٥ | ك « | ٢٨ |
| | وما كنا مهلكى القرى إلا وأهلها ظالمون ... ... ... | ٥٩ | ك « | ٢٨ |
| | إنا مهلكوا أهل هـذه القرية إن أهلها كانوا ظالمين | ٣١ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وألزمهم كلمة التقوى وكانوا أحق بها وأهلها ... ... | ٢٦ | م الفتـح | ٤٨ |
| أَهْلِهِمْ: | لعلهم يعرفونها إذا انقلبوا إلى أهلهم لعلهم يرجعون | ٦٢ | ك يوسـف | ١٢ |
| (٣) | فلا يستطيعون توصية ولا إلى أهلهم يرجعون ... ... | ٥٠ | ك يس | ٣٦ |
| | وإذا انقلبوا إلى أهلهم انقلبوا فكهين ... ... ... | ٣١ | ك المطففين | ٨٣ |
| أَهْلِهِنَّ: | فانكحوهنّ بإذن أهلهنّ وآتوهن أجورهن... ... | ٢٥ | م النسـاء | ٤ |
| أَهْلُونَا: | شغلتنا أموالنا وأهلونا فاستغفر لنا ... ... ... | ١١ | م الفتـح | ٤٨ |
| أَهْلِي: | إن ابنى من أهلى وإن وعدك الحق وأنت أحكم الحاكمين | ٤٥ | ك هـود | ١١ |
| (٣) | واجعل لى وزيرا من أهلى ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك طـه | ٢٠ |
| | ربّ نجنى وأهلى مما يعملون... ... ... ... ... | ١٦٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| أَهْلِيكُمْ: | إطعام عشرة مساكين من أوسط ما تطعمون أهليكم | ٨٩ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | يأيها الذين آمنوا قوا أنفسكم وأهليكم نارا ... ... | ٦ | م التحـريم | ٦٦ |
| أَهْلِيهِمْ: | قل إن الخاسرين الذين خسروا أنفسهم وأهليهم | ١٥ | ك الـزمر | ٣٩ |
| (٣) | إن الخاسرين الذين خسروا أنفسهم وأهليهم يوم القيامة | ٤٥ | ك الشـورى | ٤٢ |
| | بل ظننتم أن لن ينقلب الرسول والمؤمنون إلى أهليهم | ١٢ | م الفتـح | ٤٨ |
| أَوِّبِي: | يا جبال أوبى معه والطير وألنا له الحديد ... ... | ١٠ | ك سـبإ | ٣٤ |
| إِيَابَهُمْ: | إن إلينا إيابهم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك الغاشـية | ٨٨ |
| أَوَّابٌ: | واذكر عبدنا داود ذا الأيد إنه أوّاب... ... ... | ١٧ | ك ص | ٣٨ |
| (٥) | والطير محشورة كلٌّ له أوّاب ... ... ... ... ... | ١٩ | ك « | ٣٨ |
| | ووهبنا لداود سليمان نعم العبد إنه أوّاب ... ... ... | ٣٠ | ك « | ٣٨ |
| | إنا وجدناه صابرا نعم العبد إنه أوّاب... ... ... ... | ٤٤ | ك « | ٣٨ |
| | هذا ما توعدون لكل أوّاب حفيظ ... ... ... ... | ٣٢ | ك ق | ٥٠ |
| لِلْأَوَّابِينَ: | إن تكونوا صالحين فإنه كان للأوّابين غفورا | ٢٥ | ك الإسـراء | ١٧ |
| مَآبِ: | ذلك متاع الحياة الدنيا والله عنـده حسن المآب | ١٤ | م آل عمران | ٣ |
| (٦) | الذين آمنوا وعملوا الصالحات طوبى لهم وحسن مآب | ٢٩ | م الرعـد | ١٣ |
| | فغفرنا له ذلك وإن له عندنا لزلفى وحسن مآب... ... | ٢٥ | ك ص | ٣٨ |
| | وإن له عندنا لزلفى وحسن مآب ... ... ... ... | ٤٠ | ك « | ٣٨ |
| | هذا ذكر وإن للمتقين لحسن مآب ... ... ... .. | ٤٩ | ك « | ٣٨ |
| | هذا وإن للطاغين لشر مآب ... ... ... ... ... | ٥٥ | ك « | ٣٨ |
| مَآبِ: | إليه أدعوا وإليه مآبِ ... ... ... ... ... ... | ٣٦ | م الرعـد | ١٣ |
| مَآبًا: | إن جهنم كانت مرصادا . للطاغين مآبا... ... ... | ٢٢ | ك النبـإ | ٧٨ |
| (٢) | ذلك اليوم الحق فمن شاء اتخذ إلى ربه مآبا... ... ... | ٣٩ | ك « | ٧٨ |
| يَؤُودُهُ: | ولا يؤوده حفظهما وهو العلىّ العظيم ... ... | ٢٥٥ | م البقـرة | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَأْوِيل: | وكذلك يجتبيك ربك ويعلمك من تأويل الأحاديث | ٦ | ك يوسـف | ١٢ |
| (٧) | مكنا ليوسف فى الأرض ولنعلمه من تأويل الأحاديث | ٢١ | ك « | ١٢ |
| | وما نحن بتأويل الأحلام بعالمين ... ... ... ... | ٤٤ | ك « | ١٢ |
| | وقال يا أبت هذا تأويل رؤياى من قبل ... ... | ١٠٠ | ك « | ١٢ |
| | رب قد آتيتنى من الملك وعلمتنى من تأويل الأحاديث | ١٠١ | ك « | ١٢ |
| | سأنبئك بتأويل مالم تستطع عليـه صبرا... ... ... | ٧٨ | ك الكهف | ١٨ |
| | ذلك تأويل مالم تسطع عليه صبرا ... ... ... ... | ٨٢ | ك « | ١٨ |
| تَأْوِيلًا: | ذلك خير وأحسن تأويلا ... ... ... ... ... | ٥٩ | م النسـاء | ٤ |
| (٢) | وزنوا بالقسطاس المستقيم ذلك خير وأحسن تأويلا | ٣٥ | ك الإسـراء | ١٧ |
| تَأْوِيله: | فيتبعون ما تشابه منه ابتغاء الفتنة وابتغاء تأويله | ٧ | م آل عمران | ٣ |
| (٨) | وما يعلم تأويله إلا الله ... ... ... ... ... | ٧ | م « | ٣ |
| | هـل ينظرون إلا تأويله ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | يوم يأتى تأويله يقول الذين نسوه من قبل... ... | ٥٣ | ك « | ٧ |
| | بل كذبوا بما لم يحيطوا بعلمـه ولما يأتهم تأويله | ٣٩ | ك يونس | ١٠ |
| | نبئنا بتأويله إنا نراك من المحسنين ... ... ... | ٣٦ | ك يوسـف | ١٢ |
| | قال لا يأتيكما طعام ترزقانه إلا نبأتكما بتأويله... ... | ٣٧ | ك « | ١٢ |
| | واذكر بعد أمة أنا أنبئكم بتأويله فأرسلون ... ... | ٤٥ | ك « | ١٢ |
| آل: | وإذ نجيناكم من آل فرعون يسومونكم سوء العذاب | ٤٩ | م البقـرة | ٢ |
| (٢٥) | فأنجيناكم وأغرقنا آل فرعون وأنتم تنظرون... ... | ٥٠ | م « | ٢ |
| | فيه سكينة من ربكم وبقية مما ترك آل موسى... ... | ٢٤٨ | م « | ٢ |
| | وآل هرون تحمله الملائكة... ... ... ... ... ... | ٢٤٨ | م « | ٢ |
| | كدأب آل فرعون والذين من قبلهـم ... ... ... | ١١ | م آل عمران | ٣ |
| | إن الله اصطفى آدم ونوحا وآل إبراهيم... ... ... | ٣٣ | م « | ٣ |
| | وآل عمران على العالمين ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | م « | ٣ |
| | فقـد آتينا آل إبراهيم الكتاب والحكمة... ... ... | ٥٤ | م النسـاء | ٤ |
| | ولقد أخذنا آل فرعون بالسنين ونقص من الثمرات | ١٣٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | وإذ أنجيناكم من آل فرعون يسومونكم سوء العذاب | ١٤١ | ك « | ٧ |
| | كدأب آل فرعون والذين من قبلهم كفروا بآيات الله | ٥٢ | م الأنفـال | ٨ |
| | كدأب آل فرعون والذين من قبلهم كذبوا بآيات ربهم | ٥٤ | م « | ٨ |
| | فأهلكناهم بذنوبهم وأغرقنا آل فرعون ... ... ... | ٥٤ | م « | ٨ |
| | ويتم نعمته عليك وعلى آل يعقوب ... ... ... ... | ٦ | ك يوسـف | ١٢ |
| | اذكروا نعمة الله عليكم إذ أنجاكم من آل فرعون | ٦ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | إلا آل لوط إنا لمنجوهم أجمعين... ... ... ... ... | ٥٩ | ك الحجـر | ١٥ |
| | فلما جاء آل لوط المرسلون ... ... ... ... ... | ٦١ | ك « | ١٥ |
| | يرثنى ويرث من آل يعقوب واجعله رب رضيا | ٦ | ك مريم | ١٩ |
| | أخرجوا آل لوط من قريتكم إنهم أناس يتطهرون | ٥٦ | ك النمـل | ٢٧ |
| | اعملوا آل داود شكرا وقليل من عبادى الشكور | ١٣ | ك سـبإ | ٣٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **آل:** | وقال رجل مؤمن من آل فرعون يكتم إيمانه... ... | ٢٨ | ك غافر | ٤٠ |
| | وحاق بآل فرعون سوء العذاب... ... ... ... ... | ٤٥ | ك « | ٤٠ |
| | ويوم تقوم الساعة أدخلوا آل فرعون أشد العذاب | ٤٦ | ك « | ٤٠ |
| | إنا أرسلنا عليهم حاصبا إلا آل لوط نجيناهم بسحر | ٣٤ | ك القمر | ٥٤ |
| | ولقد جاء آل فرعون النذر... ... ... ... ... ... | ٤١ | ك « | ٥٤ |
| **أوّل:** | ولا تكونوا أول كافر به ... ... ... ... ... ... | ٤١ | م البقرة | ٢ |
| (٢٣) | إن أول بيت وضع للناس للذى ببكة مباركا... ... | ٩٦ | م آل عمران | ٣ |
| | قل إنى أمرت أن أكون أول من أسلم... ... ... | ١٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | ولقد جئتمونا فرادى كما خلقناكم أول مرة ... ... | ٩٤ | ك « | ٦ |
| | ونقلب أفئدتهم وأبصارهم كما لم يؤمنوا به أول مرة | ١١٠ | ك « | ٦ |
| | لا شريك له وبذلك أمرت وأنا أول المسلمين | ١٦٣ | ك « | ٦ |
| | فلما أفاق قال سبحانك تبت إليك وأنا أول المؤمنين | ١٤٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | وهموا بإخراج الرسول وهم بدءوكم أول مرة ... ... | ١٣ | م التوبة | ٩ |
| | إنكم رضيتم بالقعود أول مرة فاقعدوا مع الخالفين | ٨٣ | م « | ٩ |
| | لمسجد أسس على التقوى من أول يوم أحق أن تقوم فيه | ١٠٨ | م « | ٩ |
| | وليدخلوا المسجد كما دخلوه أول مرة... ... ... | ٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فسيقولون من يعيدنا قل الذى فطركم أول مرة | ٥١ | ك « | ١٧ |
| | وعرضوا على ربك صفا لقد جئتمونا كما خلقناكم أول مرة | ٤٨ | ك الكهف | ١٨ |
| | قالوا يا موسى إما أن تلقى وإما أن نكون أول من ألقى | ٦٥ | ك طه | ٢٠ |
| | كما بدأنا أول خلق نعيده وعدا علينا إنا كنا فاعلين | ١٠٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | إنا نطمع أن يغفر لنا ربنا خطاياينا أن كنا أول المؤمنين | ٥١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | قل يحييها الذى أنشأها أول مرة ... ... ... ... | ٧٩ | ك يس | ٣٦ |
| | وأمرت لأن أكون أول المسلمين... ... ... ... | ١٢ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وهو خلقكم أول مرة وإليه ترجعون ... ... ... | ٢١ | ك فصلت | ٤١ |
| | قل إن كان للرحمن ولد فأنا أول العابدين ... ... | ٨١ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | أفعيينا بالخلق الأول بل هم فى لبس من خلق جديد | ١٥ | ك ق | ٥٠ |
| | هو الأول والآخر والظاهر والباطن وهو بكل شىء عليم | ٣ | م الحديد | ٥٧ |
| | أخرج الذين كفروا من أهل الكتاب من ديارهم لأول الحشر | ٢ | م الحشر | ٥٩ |
| **لأوّلنا:** | تكون لنا عيدا لأولنا وآخرنا ... ... ... ... | ١١٤ | م المائدة | ٥ |
| **الأوّلون:** | والسابقون الأولون من المهاجرين والأنصار | ١٠٠ | م التوبة | ٩ |
| (٦) | وما منعنا أن نرسل بالآيات إلا أن كذب بها الأولون | ٥٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| | بل هو شاعر فليأتنا بآية كما أرسل الأولون ... ... | ٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | بل قالوا مثل ما قال الأولون ... ... ... ... | ٨١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | أئنا لمبعوثون . أو آباؤنا الأولون ... ... | ١٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| | أئنا لمبعوثون . أو آباؤنا الأولون ... ... | ٤٨ | ك الواقعة | ٥٦ |
| **الأوّلين:** | يقول الذين كفروا إن هذا إلا أساطير الأولين | ٢٥ | ك الأنعام | ٦ |
| (٣٢) | لو نشاء لقلنا مثل هذا إن هذا إلا أساطير الأولين | ٣١ | ك الأنفال | ٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **الأوّلين:** | وإن يعودوا فقد مضت سنة الأولين ... ... | ٣٨ | م الأنفال | ٨ |
| | ولقد أرسلنا من قبلك فى شيع الأولين ... ... | ١٠ | ك الحجر | ١٥ |
| | لا يؤمنون به وقد خلت سنة الأولين ... ... ... | ١٣ | ك « | ١٥ |
| | وإذا قيل لهم ماذا أنزل ربكم قالوا أساطير الأولين | ٢٤ | ك النحل | ١٦ |
| | إلا أن تأتيهم سنة الأولين أو يأتيهم العذاب قبلا | ٥٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | ولو شاء الله لأنزل ملائكة ما سمعنا بهذا فى آبائنا الأولين | ٢٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | أم جاءهم ما لم يأت آباءهم الأولين ... ... ... | ٦٨ | ك « | ٢٣ |
| | إن هذا إلا أساطير الأولين ... ... ... ... ... | ٨٣ | ك « | ٢٣ |
| | وقالوا أساطير الأولين اكتتبها ... ... ... ... | ٥ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | قال ربكم ورب آبائكم الأولين ... ... ... ... | ٢٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | إن هذا إلا خلق الأولين ... ... ... ... ... | ١٣٧ | ك « | ٢٦ |
| | واتقوا الذى خلقكم والجبلة الأولين ... ... ... | ١٨٤ | ك « | ٢٦ |
| | وإنه لفى زبر الأولين ... ... ... ... ... ... | ١٩٦ | ك « | ٢٦ |
| | إن هذا إلا أساطير الأولين ... ... ... ... ... | ٦٨ | ك النمل | ٢٧ |
| | وما سمعنا بهذا فى آبائنا الأولين ... ... ... | ٣٦ | ك القصص | ٢٨ |
| | فهل ينظرون إلا سنة الأولين ... ... ... ... | ٤٣ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ولقد ضل قبلهم أكثر الأولين ... ... ... ... | ٧١ | ك الصافات | ٣٧ |
| | الله ربكم ورب آبائكم الأولين ... ... ... ... | ١٢٦ | ك « | ٣٧ |
| | لو أن عندنا ذكرا من الأولين ... ... ... ... | ١٦٨ | ك « | ٣٧ |
| | وكم أرسلنا من نبى فى الأولين ... ... ... ... | ٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | فأهلكنا أشد منهم بطشا ومضى مثل الأولين ... ... | ٨ | ك « | ٤٣ |
| | يحيى ويميت ربكم ورب آبائكم الأولين ... ... ... | ٨ | ك الدخان | ٤٤ |
| | فيقول ما هذا إلا أساطير الأولين ... ... ... | ١٧ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | ثلة من الأولين . وقليل من الآخرين ... ... ... | ١٣ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | ثلة من الأولين . وثلة من الآخرين ... ... ... | ٣٩ | ك « | ٥٦ |
| | قل إن الأولين والآخرين . لمجموعون إلى ميقات | ٤٩ | ك « | ٥٦ |
| | إذا تتلى عليه آياتنا قال أساطير الأولين... ... ... | ١٥ | ك القلم | ٦٨ |
| | ألم نهلك الأولين ... ... ... ... ... ... ... | ١٦ | ك المرسلات | ٧٧ |
| | هذا يوم الفصل جمعناكم والأولين ... ... ... | ٣٨ | ك « | ٧٧ |
| | إذا تتلى عليه آياتنا قال أساطير الأولين... ... ... | ١٣ | ك المطففين | ٨٣ |
| **الأولى:** | قال خذها ولا تخف سنعيدها سيرتها الأولى | ٢١ | ك طه | ٢٠ |
| (١٧) | قال فما بال القرون الأولى ... ... ... ... ... | ٥١ | ك « | ٢٠ |
| | أولم تأتهم بينة ما فى الصحف الأولى ... ... ... | ١٣٣ | ك « | ٢٠ |
| | ولقد آتينا موسى الكتاب من بعد ما أهلكنا القرون الأولى | ٤٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | لا إله إلا هو له الحمد فى الأولى والآخرة... ... ... | ٧٠ | ك « | ٢٨ |
| | وقرن فى بيوتكن ولا تبرجن تبرج الجاهلية الأولى | ٣٣ | ك الأحزاب | ٣٣ |
| | إلا موتتنا الأولى وما نحن بمعذبين ... ... ... | ٥٩ | ك الصافات | ٣٧ |

| الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|
| **الأولى**: إن هى إلا موتتنا الأولى وما نحن بمنشرين ... | ٥٣ ك الدخان | ٤٤ |
| لا يذوقون فيها الموت إلا الموتة الأولى ... ... ... | ٥٦ ك « | ٤٤ |
| فلله الآخرة والأولى ... ... ... ... ... ... | ٢٥ ك النجم | ٥٣ |
| وأنه أهلك عادا الأولى ... ... ... ... ... | ٥٠ ك « | ٥٣ |
| هذا نذير من النذر الأولى ... ... ... ... ... | ٥٦ ك « | ٥٣ |
| ولقد علمتم النشأة الأولى فلولا تذكرون... ... ... | ٦٢ ك الواقعة | ٥٦ |
| فأخذه الله نكال الآخرة والأولى ... ... ... ... | ٢٥ ك النازعات | ٧٩ |
| إن هذا لفى الصحف الأولى ... ... ... ... ... | ١٨ ك الأعلى | ٨٧ |
| وإن لنا للآخرة والأولى ... ... ... ... ... | ١٣ ك الليل | ٩٢ |
| وللآخرة خير لك من الأولى... ... ... ... ... | ٤ ك الضحى | ٩٣ |
| **أُولَاهُمْ**: قالت أخراهم لأولاهم ربنا هؤلاء أضلونا | ٣٨ ك الأعراف | ٧ |
| (٢) وقالت أولاهم لأخراهم فما كان لكم علينا من فضل | ٣٩ ك « | ٧ |
| **أُولَاهُمَا**: فإذا جاء وعد أولاهما بعثنا عليكم عبادا لنا | ٥ ك الإسراء | ١٧ |
| **أُولُوا**: فقد أوتى خيرا كثيرا وما يذكر إلا أولوا الألباب | ٢٦٩ م البقرة | ٢ |
| (١٧) آمنا به كل من عند ربنا وما يذكر إلا أولوا الألباب | ٧ م آل عمران | ٣ |
| لا إله إلا هو والملائكة وأولوا العلم قائما بالقسط | ١٨ م « | ٣ |
| وإذا حضر القسمة أولوا القربى واليتامى والمساكين فارزقوهم منه ... ... ... ... ... | ٨ م النساء | ٤ |
| وأولوا الأرحام بعضهم أولى ببعض فى كتاب الله | ٧٥ م الأنفال | ٨ |
| استأذنك أولوا الطول منهم وقالوا ذرنا نكن مع القاعدين | ٨٦ م التوبة | ٩ |
| فلولا كان من القرون من قبلكم أولوا بقية ينهون | ١١٦ ك هود | ١١ |
| إنما يتذكر أولوا الألباب ... ... ... ... ... | ١٩ م الرعد | ١٣ |
| وليعلموا أنما هو إله واحد وليذكر أولوا الألباب | ٥٢ ك إبراهيم | ١٤ |
| ولا يأتل أولوا الفضل منكم والسعة أن يؤتوا أولى القربى | ٢٢ م النور | ٢٤ |
| قالوا نحن أولوا قوة ... ... ... ... ... ... | ٣٣ ك النمل | ٢٧ |
| وأولوا بأس شديد والأمر إليك ... ... ... ... | ٣٣ ك « | ٢٧ |
| وأولوا الأرحام بعضهم أولى ببعض فى كتاب الله | ٦ م الأحزاب | ٣٣ |
| ليدبروا آياته وليتذكر أولوا الألباب... ... ... ... | ٢٩ ك ص | ٣٨ |
| إنما يتذكر أولوا الألباب ... ... ... ... ... | ٩ ك الزمر | ٣٩ |
| أولئك الذين هداهم الله وأولئك هم أولوا الألباب | ١٨ ك « | ٣٩ |
| فاصبر كما صبر أولوا العزم من الرسل... ... ... ... | ٣٥ م الأحقاف | ٤٦ |
| **أُولِى**: ولكم فى القصاص حياة يا أولى الألباب... ... | ١٧٩ م البقرة | ٢ |
| (٣٦) وتزودوا فإن خير الزاد التقوى واتقون يا أولى الألباب | ١٩٧ م « | ٢ |
| إن فى ذلك لعبرة لأولى الأبصار ... ... ... ... | ١٣ م آل عمران | ٣ |
| واختلاف الليل والنهار لآيات لأولى الألباب... ... | ١٩٠ م « | ٣ |
| أطيعوا الله وأطيعوا الرسول وأولى الأمر منكم | ٥٩ م النساء | ٤ |
| ولو ردوه إلى الرسول وإلى أولى الأمر منهم لعلمه الذين يستنبطونه منهم ... ... ... ... | ٨٣ م « | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| **أُولِى**: لا يستوى القاعدون من المؤمنين غير أولى الضرر | ٩٥ م النساء | | ٤ |
| فاتقوا الله يا أولى الألباب لعلكم تفلحون ... ... | ١٠٠ م المائدة | | ٥ |
| ولو كانوا أولى قربى من بعد ما تبين لهم أنهم أصحاب الجحيم | ١١٣ م التوبة | | ٩ |
| لقد كان فى قصصهم عبرة لأولى الألباب ... ... | ١١١ ك يوسف | | ١٢ |
| فإذا جاء وعد أولاهما بعثنا عليكم عبادا لنا أولى بأس | ٥ ك الإسراء | | ١٧ |
| كلوا وارعوا أنعامكم إن فى ذلك لآيات لأولى النهى | ٥٤ ك طه | | ٢٠ |
| يمشون فى مساكنهم إن فى ذلك لآيات لأولى النهى | ١٢٨ ك « | | ٢٠ |
| أن يؤتوا أولى القربى والمساكين والمهاجرين | ٢٢ م النور | | ٢٤ |
| أو التابعين غير أولى الإربة من الرجال ... ... ... | ٣١ م « | | ٢٤ |
| يقلب الله الليل والنهار إن فى ذلك لعبرة لأولى الأبصار | ٤٤ م « | | ٢٤ |
| وآتيناه من الكنوز ما إن مفاتحه لتنوء بالعصبة أولى القوة | ٧٦ ك القصص | | ٢٨ |
| جاعل الملائكة رسلا أولى أجنحة مثنى وثلاث ورباع | ١ ك فاطر | | ٣٥ |
| ومثلهم معهم رحمة منا وذكرى لأولى الألباب | ٤٣ ك ص | | ٣٨ |
| إبراهيم وإسحق ويعقوب أولى الأيدى والأبصار | ٤٥ ك « | | ٣٨ |
| إن فى ذلك لذكرى لأولى الألباب ... ... ... ... | ٢١ ك الزمر | | ٣٩ |
| هدى وذكرى لأولى الألباب ... ... ... ... ... | ٥٤ ك غافر | | ٤٠ |
| ستدعون إلى قوم أولى بأس شديد تقاتلونهم أو يسلمون | ١٦ م الفتح | | ٤٨ |
| فاعتبروا يا أولى الأبصار ... ... ... ... ... | ٢ م الحشر | | ٥٩ |
| فاتقوا الله يا أولى الألباب الذين آمنوا ... ... | ١٠ م الطلاق | | ٦٥ |
| وذرنى والمكذبين أولى النعمة ومهلهم قليلا ... ... | ١١ م المزمل | | ٧٣ |
| **أُولَات**: وأولات الأحمال أجلهن أن يضعن حملهن | ٤ م الطلاق | | ٦٥ |
| (٢) وإن كن أولات حمل فأنفقوا عليهن حتى يضعن حملهن | ٦ م « | | ٦٥ |
| **أُولَاءِ**: ها أنتم أولاء تحبونهم ولا يحبونكم وتؤمنون بالكتاب كله | ١٢٩ م آل عمران | | ٣ |
| (٢) قال هم أولاء على أثرى وعجلت إليك رب لترضى | ٨٤ ك طه | | ٢٠ |
| **هَؤُلَاءِ**: فقال أنبئونى بأسماء هؤلاء إن كنتم صادقين | ٣١ م البقرة | | ٢ |
| (٤٦) ثم أنتم هؤلاء تقتلون أنفسكم ... ... ... ... | ٨٥ م « | | ٢ |
| ها أنتم هؤلاء حاججتم فيما لكم به علم... ... ... ... | ٦٦ م آل عمران | | ٣ |
| وجئنا بك على هؤلاء شهيدا ... ... ... ... ... | ٤١ م النساء | | ٤ |
| هؤلاء أهدى من الذين آمنوا سبيلا ... ... ... ... | ٥١ م « | | ٤ |
| فما لهؤلاء القوم لا يكادون يفقهون حديثا ... ... | ٧٨ م « | | ٤ |
| ها أنتم هؤلاء جادلتم عنهم فى الحياة الدنيا ... ... | ١٠٩ م « | | ٤ |
| مذبذبين بين ذلك لا إلى هؤلاء ... ... ... ... | ٢٤٣ م « | | ٤ |
| ولا إلى هؤلاء ومن يضلل الله فلن تجد له سبيلا | ١٤٣ م « | | ٤ |
| أهؤلاء الذين أقسموا بالله جهد أيمانهم إنهم لمعكم | ٥٣ م المائدة | | ٥ |
| أهؤلاء من الله عليهم من بيننا ... ... ... ... | ٥٣ ك الأنعام | | ٦ |
| فإن يكفر بها هؤلاء فقد وكلنا بها قوما ليسوا بها بكافرين | ٨٩ ك « | | ٦ |
| ربنا هؤلاء أضلونا فآتهم عذابا ضعفا من النار | ٣٨ ك الأعراف | | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| هؤلاء: | أهؤلاء الذين أقسمتم لاينالهم الله برحمة ... ... | ٤٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | إن هؤلاء متبر ما هم فيه وباطل ما كانوا يعملون | ١٣٩ | ك « | ٧ |
| | ضر هؤلاء دينهم ... ... ... ... ... ... ... | ٤٩ | م الأنفال | ٨ |
| | ويقولون هؤلاء شفعاؤنا عند الله ... ... ... ... | ١٨ | ك يونس | ١٠ |
| | ويقول الأشهاد هؤلاء الذين كذبوا على ربهم | ١٨ | ك هود | ١١ |
| | قال يا قوم هؤلاء بناتى هن أطهر لكم ... ... ... | ٧٨ | ك « | ١١ |
| | فلا تك فى مرية مما يعبد هؤلاء ... ... ... ... | ١٠٩ | ك « | ١١ |
| | وقضينا إليه ذلك الأمر أن دابر هؤلاء مقطوع | ٦٦ | ك الحجر | ١٥ |
| | قال إن هؤلاء ضيفى فلا تفضحون ... ... ... ... | ٦٨ | ك « | ١٥ |
| | قال هؤلاء بناتى إن كنتم فاعلين ... ... ... ... | ٧١ | ك « | ١٥ |
| | ربنا هؤلاء شركاؤنا الذين كنا ندعوا من دونك... ... | ٨٦ | ك النحل | ١٦ |
| | وجئنا بك شهيدا على هؤلاء ... ... ... ... .. | ٨٩ | ك « | ١٦ |
| | كلا نمد هؤلاء ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وهؤلاء من عطاء ربك وما كان عطاء ربك محظورا | ٢٠ | ك « | ١٧ |
| | قال لقد علمت ما أنزل هؤلاء إلا رب السموات والأرض | ١٠٢ | ك « | ١٧ |
| | هؤلاء قومنا اتخذوا من دونه آلهة ... ... ... ... | ١٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | بل متعنا هؤلاء وآباءهم حتى طال عليهم العمر | ٤٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ثم نكسوا على رءوسهم لقد علمت ما هؤلاء ينطقون | ٦٥ | ك « | ٢١ |
| | لو كان هؤلاء آلهة ما وردوها ... ... ... ... ... | ٩٩ | ك « | ٢١ |
| | ءأنتم أضللتم عبادى هؤلاء أم هم ضلوا السبيل | ١٧ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | إن هؤلاء لشرذمة قليلون ... ... ... ... ... ... | ٥٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | ربنا هؤلاء الذين أغوينا أغويناهم كما غوينا... ... | ٦٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | ومن هؤلاء من يؤمن به وما يجحد بآياتنا إلا الكافرون | ٤٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ثم يقول للملائكة أهؤلاء إياكم كانوا يعبدون ... ... | ٤٠ | ك سبأ | ٣٤ |
| | وما ينظر هؤلاء إلا صيحة واحدة ما لها من فواق | ١٥ | ك ص | ٣٨ |
| | والذين ظلموا من هؤلاء سيصيبهم سيئات ما كسبوا | ٥١ | ك الزمر | ٣٩ |
| | بل متعت هؤلاء وآباءهم حتى جاءهم الحق ... ... | ٢٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وقيله يا رب إن هؤلاء قوم لا يؤمنون ... ... ... | ٨٨ | ك « | ٤٣ |
| | فدعا ربه أن هؤلاء قوم مجرمون ... ... ... ... | ٢٢ | ك الدخان | ٤٤ |
| | إن هؤلاء ليقولون . إن هى إلا موتتنا الأولى... ... | ٣٤ | ك « | ٤٤ |
| | ها أنتم هؤلاء تدعون لتنفقوا فى سبيل الله ... ... | ٣٨ | م محمد | ٤٧ |
| | إن هؤلاء يحبون العاجلة ويذرون وراءهم يوما ثقيلا | ٢٧ | ك الإنسان | ٧٦ |
| | وإذا رأوهم قالوا إن هؤلاء لضالون ... ... ... | ٣٢ | ك المطففين | ٨٣ |
| أولئك: | أولئك على هدى من ربهم ... ... ... ... ... | ٥ | م البقرة | ٢ |
| (٢٠٤) | وأولئك هم المفلحون ... ... ... ... ... ... | ٥ | م « | ٢ |
| | أولئك الذين اشتروا الضلالة بالهدى ... ... ... | ١٦ | م « | ٢ |
| | ويفسدون فى الأرض أولئك هم الخاسرون ... ... | ٢٧ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أولئك: | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا أولئك أصحاب النار | ٣٩ | م البقرة | ٢ |
| | وأحاطت به خطيئته فأولئك أصحاب النار ... ... | ٨١ | م « | ٢ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات أولئك أصحاب الجنة | ٨٢ | م « | ٢ |
| | أولئك الذين اشتروا الحياة الدنيا بالآخرة ... ... | ٨٦ | م « | ٢ |
| | أولئك ما كان لهم أن يدخلوها إلا خائفين ... ... | ١١٤ | م « | ٢ |
| | يتلونه حق تلاوته أولئك يؤمنون به... ... ... ... | ١٢١ | م « | ٢ |
| | ومن يكفر به فأولئك هم الخاسرون ... ... ... ... | ١٢١ | م « | ٢ |
| | أولئك عليهم صلوات من ربهم ورحمة ... ... ... | ١٥٧ | م « | ٢ |
| | وأولئك هم المهتدون ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٧ | م « | ٢ |
| | أولئك يلعنهم الله ويلعنهم اللاعنون... ... ... ... | ١٥٩ | م « | ٢ |
| | إلا الذين تابوا وأصلحوا وبينوا فأولئك أتوب عليهم | ١٦٠ | م « | ٢ |
| | أولئك عليهم لعنة الله والملائكة والناس أجمعين | ١٦١ | م « | ٢ |
| | أولئك ما يأكلون فى بطونهم إلا النار ... ... ... | ١٧٤ | م « | ٢ |
| | أولئك الذين اشتروا الضلالة بالهدى والعذاب بالمغفرة | ١٧٥ | م « | ٢ |
| | أولئك الذين صدقوا ... ... ... ... ... ... ... | ١٧٧ | م « | ٢ |
| | وأولئك هم المتقون ... ... ... ... ... ... ... | ١٧٧ | م « | ٢ |
| | أولئك لهم نصيب مما كسبوا والله سريع الحساب | ٢٠٢ | م « | ٢ |
| | فأولئك حبطت أعمالهم فى الدنيا والآخرة ... ... | ٢١٧ | م « | ٢ |
| | وأولئك أصحاب النار هم فيها خالدون ... ... ... | ٢١٧ | م « | ٢ |
| | وجاهدوا فى سبيل الله أولئك يرجون رحمة الله | ٢١٨ | م « | ٢ |
| | أولئك يدعون إلى النار والله يدعوا إلى الجنة... ... | ٢٢١ | م « | ٢ |
| | ومن يتعد حدود الله فأولئك هم الظالمون ... ... | ٢٢٩ | م « | ٢ |
| | أولئك أصحاب النار هم فيها خالدون... ... ... ... | ٢٥٧ | م « | ٢ |
| | ومن عاد فأولئك أصحاب النار هم فيها خالدون | ٢٧٥ | م « | ٢ |
| | وأولئك هم وقود النار ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | م آل عمران | ٣ |
| | أولئك الذين حبطت أعمالهم فى الدنيا والآخرة... ... | ٢٢ | م « | ٣ |
| | أولئك لا خلاق لهم فى الآخرة ولا يكلمهم الله | ٧٧ | م « | ٣ |
| | فمن تولى بعد ذلك فأولئك هم الفاسقون ... ... ... | ٨٢ | م « | ٣ |
| | أولئك جزاؤهم أن عليهم لعنة الله والملائكة ... ... | ٨٧ | م « | ٣ |
| | لن تقبل توبتهم وأولئك هم الضالون ... ... ... | ٩٠ | م « | ٣ |
| | أولئك لهم عذاب أليم وما لهم من ناصرين ... ... | ٩١ | م « | ٣ |
| | فمن افترى على الله الكذب من بعد ذلك فأولئك هم الظالمون | ٩٤ | م « | ٣ |
| | ويأمرون بالمعروف وينهون عن المنكر وأولئك هم المفلحون | ١٠٤ | م « | ٣ |
| | واختلفوا من بعد ما جاءهم البينات وأولئك لهم عذاب عظيم | ١٠٥ | م « | ٣ |
| | ويسارعون فى الخيرات وأولئك من الصالحين ... ... | ١١٤ | م « | ٣ |
| | وأولئك أصحاب النار هم فيها خالدون... ... ... ... | ١١٦ | م « | ٣ |
| | أولئك جزاؤهم مغفرة من ربهم وجنات ... ... ... | ١٣٦ | م « | ٣ |
| | أولئك لهم أجرهم عند ربهم إن الله سريع الحساب | ١٩٩ | م « | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أُولَئِكَ : فأولئك يتوب الله عليهم وكان الله عليما حكيما ... | ١٧ م | النساء | | ٤ |
| أولئك أعتدنا لهم عذابا أليما ... ... ... ... ... | ١٨ م | » | | ٤ |
| أولئك الذين لعنهم الله ... ... ... ... ... ... ... | ٥٢ م | » | | ٤ |
| أولئك الذين يعلم الله ما فى قلوبهم ... ... ... ... | ٦٣ م | » | | ٤ |
| فأولئك مع الذين أنعم الله عليهم من النبيين والصديقين | ٦٩ م | » | | ٤ |
| والشهداء والصالحين وحسن أولئك رفيقا ... ... ... | ٦٩ م | » | | ٤ |
| فأولئك مأواهم جهنم وساءت مصيرا ... ... ... ... | ٩٧ م | » | | ٤ |
| فأولئك عسى الله أن يعفو عنهم ... ... ... ... ... | ٩٩ م | » | | ٤ |
| أولئك مأواهم جهنم ولا يجدون عنها محيصا ... ... | ١٢١م | » | | ٤ |
| فأولئك يدخلون الجنة ولا يظلمون نقيرا ... ... ... | ١٢٤م | » | | ٤ |
| فأولئك مع المؤمنين وسوف يؤت الله المؤمنين أجرا عظيما | ١٤٦م | » | | ٤ |
| أولئك هم الكافرون حقا وأعتدنا للكافرين عذابا مهينا | ١٥١م | » | | ٤ |
| أولئك سوف يؤتيهم أجورهم وكان الله غفورا رحيما | ١٥٢م | » | | ٤ |
| والمؤمنون بالله واليوم الآخر أولئك سنؤتيهم أجرا عظيما | ١٦٢م | » | | ٤ |
| والذين كفروا وكذبوا بآياتنا أولئك أصحاب الجحيم | ١٠ م | المائدة | | ٥ |
| أولئك الذين لم يرد الله أن يطهر قلوبهم ... ... ... | ٤١ م | » | | ٥ |
| ثم يتولون من بعد ذلك وما أولئك بالمؤمنين ... ... | ٤٣ م | » | | ٥ |
| ومن لم يحكم بما أنزل الله فأولئك هم الكافرون ... | ٤٤ م | » | | ٥ |
| ومن لم يحكم بما أنزل الله فأولئك هم الظالمون... ... | ٤٥ م | » | | ٥ |
| ومن لم يحكم بما أنزل الله فأولئك هم الفاسقون | ٤٧ م | » | | ٥ |
| أولئك شر مكانا وأضل عن سواء السبيل ... ... | ٦٠ م | » | | ٥ |
| والذين كفروا وكذبوا بآياتنا أولئك أصحاب الجحيم | ٨٦ م | » | | ٥ |
| أولئك الذين أبسلوا بما كسبوا... ... ... ... ... | ٧٠ ك | الأنعام | | ٦ |
| أولئك لهم الأمن وهم مهتدون ... ... ... ... ... | ٨٢ ك | » | | ٦ |
| أولئك الذين آتيناهم الكتاب والحكم والنبوة ... ... | ٨٩ ك | » | | ٦ |
| أولئك الذين هدى الله فبهداهم اقتده ... ... ... | ٩٠ ك | » | | ٦ |
| فمن ثقلت موازينه فأولئك هم المفلحون... ... ... | ٨ ك | الأعراف | | ٧ |
| ومن خفت موازينه فأولئك الذين خسروا أنفسهم | ٩ ك | » | | ٧ |
| أولئك أصحاب النار هم فيها خالدون... ... ... ... | ٣٦ ك | » | | ٧ |
| أولئك ينالهم نصيبهم من الكتاب ... ... ... ... | ٣٧ ك | » | | ٧ |
| أولئك أصحاب الجنة هم فيها خالدون ... ... ... | ٤٢ ك | » | | ٧ |
| واتبعوا النور الذى أنزل معه أولئك هم المفلحون | ١٥٧ك | » | | ٧ |
| ومن يضلل فأولئك هم الخاسرون ... ... ... ... | ١٧٨ك | » | | ٧ |
| أولئك كالأنعام بل هم أضل ... ... ... ... ... | ١٧٩ك | » | | ٧ |
| أولئك هم الغافلون... ... ... ... ... ... ... ... | ١٧٩ك | » | | ٧ |
| أولئك هم المؤمنون حقا لهم درجات عند ربهم | ٤ م | الأنفال | | ٨ |
| فيجعله فى جهنم أولئك هم الخاسرون ... ... ... | ٣٧ م | » | | ٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أُولَئِكَ : والذين آووا ونصروا أولئك بعضهم أولياء بعض | ٧٢ م | الأنفال | | ٨ |
| والذين آووا ونصروا أولئك هم المؤمنون حقا ... ... | ٧٤ م | » | | ٨ |
| وهاجروا وجاهدوا معكم فأولئك منكم... ... ... ... | ٧٥ م | » | | ٨ |
| لا يرقبون فى مؤمن إلا ولا ذمة وأولئك هم المعتدون | ١٠ م | التوبة | | ٩ |
| أولئك حبطت أعمالهم وفى النار هم خالدون ... ... | ١٧ م | » | | ٩ |
| فعسى أولئك أن يكونوا من المهتدين ... ... ... ... | ١٨ م | » | | ٩ |
| أعظم درجة عند الله وأولئك هم الفائزون... ... ... | ٢٠ م | » | | ٩ |
| ومن يتولهم منكم فأولئك هم الظالمون ... ... ... | ٢٣ م | » | | ٩ |
| أولئك حبطت أعمالهم فى الدنيا والآخرة ... ... ... | ٦٩ م | » | | ٩ |
| وأولئك هم الخاسرون ... ... ... ... ... ... ... | ٦٩ م | » | | ٩ |
| أولئك سيرحمهم الله إن الله عزيز حكيم ... ... ... | ٧١ م | » | | ٩ |
| جاهدوا بأموالهم وأنفسهم وأولئك لهم الخيرات | ٨٨ م | » | | ٩ |
| وأولئك هم المفلحون ... ... ... ... ... ... ... | ٨٨ م | » | | ٩ |
| أولئك مأواهم النار بما كانوا يكسبون ... ... ... | ٨ ك | يونس | | ١٠ |
| أولئك أصحاب الجنة هم فيها خالدون ... ... ... ... | ٢٦ ك | » | | ١٠ |
| أولئك أصحاب النار هم فيها خالدون ... ... ... ... | ٢٧ ك | » | | ١٠ |
| أولئك لهم مغفرة وأجر كبير ... ... ... ... ... ... | ١١ ك | هود | | ١١ |
| أولئك الذين ليس لهم فى الآخرة إلا النار ... ... ... | ١٦ ك | » | | ١١ |
| ومن قبله كتاب موسى إماما ورحمة أولئك يؤمنون به | ١٧ م | » | | ١١ |
| أولئك يعرضون على ربهم ... ... ... ... ... ... | ١٨ ك | » | | ١١ |
| أولئك لم يكونوا معجزين فى الأرض ... ... ... ... | ٢٠ ك | » | | ١١ |
| أولئك الذين خسروا أنفسهم وضل عنهم ما كانوا يفترون | ٢١ ك | » | | ١١ |
| أولئك أصحاب الجنة هم فيها خالدون... ... ... ... | ٢٣ ك | » | | ١١ |
| أولئك الذين كفروا بربهم ... ... ... ... ... ... | ٥ م | الرعد | | ١٣ |
| وأولئك الأغلال فى أعناقهم... ... ... ... ... ... | ٥ م | » | | ١٣ |
| وأولئك أصحاب النار هم فيها خالدون ... ... ... | ٥ م | » | | ١٣ |
| أولئك لهم سوء الحساب ومأواهم جهنم وبئس المهاد | ١٨ م | » | | ١٣ |
| أولئك لهم عقبى الدار ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ م | » | | ١٣ |
| أولئك لهم اللعنة ولهم سوء الدار... ... ... ... ... | ٢٥ م | » | | ١٣ |
| أولئك فى ضلال بعيد ... ... ... ... ... ... ... | ٣ ك | إبراهيم | | ١٤ |
| وأولئك هم الكاذبون ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٥ك | النحل | | ١٦ |
| أولئك الذين طبع الله على قلوبهم وسمعهم وأبصارهم | ١٠٨ك | » | | ١٦ |
| وأولئك هم الغافلون... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٨ك | » | | ١٦ |
| فأولئك كان سعيهم مشكورا ... ... ... ... ... ... | ١٩ ك | الإسراء | | ١٧ |
| إن السمع والبصر والفؤاد كل أولئك كان عنه مسئولا | ٣٦ ك | » | | ١٧ |
| أولئك الذين يدعون يبتغون إلى ربهم الوسيلة... ... | ٥٧ م | » | | ١٧ |
| فأولئك يقرءون كتابهم ولا يظلمون فتيلا... ... ... | ٧١ ك | » | | ١٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أُولَئِكَ | أولئك لهم جنات عدن تجرى من تحتهم الأنهار | ٣١ | ك الكهف | ١٨ |
| | أولئك الذين كفروا بآيات ربهم ولقائه ... ... ... | ١٠٥ | ك « | ١٨ |
| | أولئك الذين أنعم الله عليهم من النبيين من ذرية آدم | ٥٨ | م مريم | ١٩ |
| | فأولئك يدخلون الجنة ولا يظلمون شيئا ... ... ... | ٦٠ | ك « | ١٩ |
| | فأولئك لهم الدرجات العلى ... ... ... ... ... ... | ٧٥ | ك طه | ٢٠ |
| | إن الذين سبقت لهم منا الحسنى أولئك عنها مبعدون | ١٠١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | والذين سعوا فى آياتنا معاجزين أولئك أصحاب الجحيم | ٥١ | م الحج | ٢٢ |
| | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا فأولئك لهم عذاب مهين | ٥٧ | م « | ٢٢ |
| | فمن ابتغى وراء ذلك فأولئك هم العادون ... ... ... | ٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | أولئك هم الوارثون . الذين يرثون الفردوس... ... | ١٠ | ك « | ٢٣ |
| | أولئك يسارعون فى الخيرات وهم لها سابقون | ٦١ | ك « | ٢٣ |
| | فمن ثقلت موازينه فأولئك هم المفلحون ... ... ... | ١٠٢ | ك « | ٢٣ |
| | ومن خفت موازينه فأولئك الذين خسروا أنفسهم | ١٠٣ | ك « | ٢٣ |
| | ولا تقبلوا لهم شهادة أبدا وأولئك هم الفاسقون | ٤ | م النور | ٢٤ |
| | فإذ لم يأتوا بالشهداء فأولئك عند الله هم الكاذبون | ١٣ | م « | ٢٤ |
| | أولئك مبرءون مما يقولون لهم مغفرة ورزق كريم | ٢٦ | م « | ٢٤ |
| | ثم يتولى فريق منهم من بعد ذلك وما أولئك بالمؤمنين | ٤٧ | م « | ٢٤ |
| | أن يحيف الله عليهم ورسوله بل أولئك هم الظالمون | ٥٠ | م « | ٢٤ |
| | أن يقولوا سمعنا وأطعنا وأولئك هم المفلحون | ٥١ | م « | ٢٤ |
| | ويخش الله ويتقه فأولئك هم الفائزون... ... ... | ٥٢ | م « | ٢٤ |
| | ومن كفر بعد ذلك فأولئك هم الفاسقون ... ... | ٥٥ | م « | ٢٤ |
| | إن الذين يستأذنونك أولئك الذين يؤمنون بالله | ٦٢ | م « | ٢٤ |
| | أولئك شر مكانا وأضل سبيلا... ... ... ... ... | ٣٤ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | فأولئك يبدل الله سيئاتهم حسنات... ... ... ... | ٧٠ | م « | ٢٥ |
| | أولئك يجزون الغرفة بما صبروا ... ... ... ... ... | ٧٥ | ك « | ٢٥ |
| | أولئك الذين لهم سوء العذاب وهم فى الآخرة هم الأخسرون | ٥ | ك النمل | ٢٧ |
| | أولئك يؤتون أجرهم مرتين بما صبروا... ... ... | ٥٤ | م القصص | ٢٨ |
| | أولئك يئسوا من رحمتى... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وأولئك لهم عذاب أليم... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك « | ٢٩ |
| | والذين آمنوا بالباطل وكفروا بالله أولئك هم الخاسرون | ٥٢ | ك « | ٢٩ |
| | فأولئك فى العذاب محضرون ... ... ... ... ... | ١٦ | ك الروم | ٣٠ |
| | ذلك خير للذين يريدون وجه الله وأولئك هم المفلحون | ٣٨ | ك « | ٣٠ |
| | تريدون وجه الله فأولئك هم المضعفون... ... ... | ٣٩ | ك « | ٣٠ |
| | أولئك على هدى من ربهم ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك لقمان | ٣١ |
| | وأولئك هم المفلحون ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك « | ٣١ |
| | ويتخذها هزوا أولئك لهم عذاب مهين ... ... ... | ٦ | ك « | ٣١ |
| | أولئك لم يؤمنوا فأحبط الله أعمالهم... ... ... ... | ١٩ | م الأحزاب | ٣٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أُولَئِكَ | أولئك لهم مغفرة ورزق كريم ... ... ... ... | ٤ | ك سبأ | ٣٤ |
| | أولئك لهم عذاب من رجز أليم ... ... ... ... ... | ٥ | ك « | ٣٤ |
| | فأولئك لهم جزاء الضعف بما عملوا وهم فى الغرفات آمنون | ٣٧ | ك « | ٣٤ |
| | أولئك فى العذاب محضرون ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك « | ٣٤ |
| | ومكر أولئك هو يبور ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك فاطر | ٣٥ |
| | أولئك لهم رزق معلوم ... ... ... ... ... ... ... | ٤١ | ك الصافات | ٣٧ |
| | وثمود وقوم لوط وأصحاب الأيكة أولئك الأحزاب | ١٣ | ك ص | ٣٨ |
| | أولئك الذين هداهم الله ... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وأولئك هم أولوا الألباب ... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك « | ٣٩ |
| | فويل للقاسية قلوبهم من ذكر الله أولئك فى ضلال مبين | ٢٢ | ك « | ٣٩ |
| | والذى جاء بالصدق وصدق به أولئك هم المتقون | ٣٣ | ك « | ٣٩ |
| | والذين كفروا بآيات الله أولئك هم الخاسرون | ٦٣ | ك « | ٣٩ |
| | فأولئك يدخلون الجنة يرزقون فيها بغير حساب | ٤٠ | ك غافر | ٤٠ |
| | أولئك ينادون من مكان بعيد .. ... ... ... ... | ٤٤ | ك فصلت | ٤١ |
| | ولمن انتصر بعد ظلمه فأولئك ما عليهم من سبيل | ٤١ | ك الشورى | ٤٢ |
| | أولئك لهم عذاب أليم ... ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك « | ٤٢ |
| | أولئك لهم عذاب مهين ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | أولئك أصحاب الجنة خالدين فيها جزاء بما كانوا يعملون | ١٤ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | أولئك الذين نتقبل عنهم أحسن ما عملوا ... ... | ١٦ | ك « | ٤٦ |
| | أولئك الذين حق عليهم القول فى أمم قد خلت | ١٨ | ك « | ٤٦ |
| | وليس له من دونه أولياء أولئك فى ضلال مبين | ٣٢ | ك « | ٤٦ |
| | أولئك الذين طبع الله على قلوبهم واتبعوا أهواءهم | ١٦ | م محمد | ٤٧ |
| | أولئك الذين لعنهم الله فأصمهم وأعمى أبصارهم | ٢٣ | م « | ٤٧ |
| | أولئك الذين امتحن الله قلوبهم للتقوى... ... ... | ٣ | م الحجرات | ٤٩ |
| | وكره إليكم الكفر والفسوق والعصيان أولئك هم الراشدون | ٧ | م « | ٤٩ |
| | ومن لم يتب فأولئك هم الظالمون ... ... ... ... | ١١ | م « | ٤٩ |
| | أولئك هم الصادقون ... .. ... ... ... ... ... | ١٥ | م « | ٤٩ |
| | والسابقون السابقون . أولئك المقربون... ... ... | ١١ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | أولئك أعظم درجة من الذين أنفقوا من بعد وقاتلوا | ١٠ | م الحديد | ٥٧ |
| | والذين آمنوا بالله ورسله أولئك هم الصديقون | ١٩ | م « | ٥٧ |
| | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا أولئك أصحاب الجحيم | ١٩ | م « | ٥٧ |
| | أولئك أصحاب النار هم فيها خالدون ... ... ... | ١٧ | م المجادلة | ٥٨ |
| | فأنساهم ذكر الله أولئك حزب الشيطان ... ... ... | ١٩ | م « | ٥٨ |
| | إن الذين يحادون الله ورسله أولئك فى الأذلين | ٢٠ | م « | ٥٨ |
| | أولئك كتب فى قلوبهم الإيمان وأيدهم بروح منه | ٢٢ | م « | ٥٨ |
| | أولئك حزب الله ألا إن حزب الله هم المفلحون | ٢٢ | م « | ٥٨ |
| | وينصرون الله ورسوله أولئك هم الصادقون ... ... | ٨ | م الحشر | ٥٩ |
| | ومن يوق شح نفسه فأولئك هم المفلحون... ... ... | ٩ | م « | ٥٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أُولَئِكَ: | نسوا الله فأنساهم أنفسهم أولئك هم الفاسقون | ١٩ | م الحشر | ٥٩ |
| | ومن يتولهم فأولئك هم الظالمون... ... ... ... ... | ٩ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | ومن يفعل ذلك فأولئك هم الخاسرون ... ... ... | ٩ | م المنافقون | ٦٣ |
| | أولئك أصحاب النار خالدين فيها... ... ... ... | ١٠ | م التغابن | ٦٤ |
| | ومن يوق شح نفسه فأولئك هم المفلحون ... ... ... | ١٦ | م « | ٦٤ |
| | فمن ابتغى وراء ذلك فأولئك هم العادون... ... ... | ٣١ | ك المعارج | ٧٠ |
| | أولئك فى جنات مكرمون ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك « | ٧٠ |
| | فمن أسلم فأولئك تحرّوا رشدا ... ... ... ... ... | ١٤ | ك الجن | ٧٢ |
| | أولئك هم الكفرة الفجرة ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك عبس | ٨٠ |
| | ألا يظن أولئك أنهم مبعوثون... ... ... ... ... | ٤ | ك المطففين | ٨٣ |
| | أولئك أصحاب الميمنة ... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك البلد | ٩٠ |
| | أولئك هم شرّ البرية ... ... ... ... ... ... | ٦ | م البينة | ٩٨ |
| | أولئك هم خير البرية ... ... ... ... ... ... | ٧ | م « | ٩٨ |
| أُولَئِكُمْ: | وأولئكم جعلنا لكم عليهم سلطانا مبينا... ... ... | ٩١ | م النساء | ٤ |
| (٢) | أكفاركم خير من أولئكم ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك القمر | ٥٤ |
| أَوَّاهٌ: | إن إبراهيم لأوّاه حليم ... ... ... ... ... | ١١٤م | التوبة | ٩ |
| (٢) | إن إبراهيم لحليم أوّاه منيب ... ... ... ... ... | ٧٥ | ك هود | ١١ |
| أَوَى: | إذ أوى الفتية إلى الكهف فقالوا ربنا آتنا من لدنك رحمة | ١٠ | ك الكهف | ١٨ |
| أَوَيْنَا: | قال أرأيت إذ أوينا إلى الصخرة فإنى نسيت الحوت | ٦٣ | ك « | ١٨ |
| آوِى: | قال سآوى إلى جبل يعصمنى من الماء ... ... | ٤٣ | ك هود | ١١ |
| (٢) | قال لو أن لى بكم قوّة أو آوى إلى ركن شديد | ٨٠ | ك « | ١١ |
| فَأْوُوا: | فأووا إلى الكهف ينشر لكم ربكم من رحمته | ١٦ | ك الكهف | ١٨ |
| آوَى: | ولما دخلوا على يوسف آوى إليه أخاه ... ... | ٦٩ | ك يوسف | ١٢ |
| (٣) | فلما دخلوا على يوسف آوى إليه أبويه ... ... | ٩٩ | ك « | ١٢ |
| | ألم يجدك يتيما فآوى ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك الضحى | ٩٣ |
| فَآوَاكُمْ: | فآواكم وأيدكم بنصره ورزقكم من الطيبات | ٢٦ | م الأنفال | ٨ |
| آوَوْا: | والذين آووا ونصروا أولئك بعضهم أولياء بعض | ٧٢ | م « | ٨ |
| (٢) | والذين آووا ونصروا أولئك هم المؤمنون حقا | ٧٤ | م « | ٨ |
| آوَيْنَاهُمَا: | وآويناهما إلى ربوة ذات قرار ومعين... ... | ٥٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| تُؤْوِى: | ترجى من تشاء منهن وتؤوى إليك من تشاء... ... | ٥١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| تُؤْوِيهِ: | وفصيلته التى تؤويه ... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك المعارج | ٧٠ |
| الْمَأْوَى: | فلهم جنات المأوى نزلا بما كانوا يعملون | ١٩ | م السجدة | ٣٢ |
| (٤) | عندها جنة المأوى... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك النجم | ٥٣ |
| | فإن الجحيم هى المأوى ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك النازعات | ٧٩ |
| | فإن الجنة هى المأوى ... ... ... ... ... ... | ٤١ | ك « | ٧٩ |
| مَأْوَاكُمُ: | ومأواكم النار وما لكم من ناصرين ... ... ... | ٢٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| (٣) | ومأواكم النار وما لكم من ناصرين ... ... ... | ٣٤ | ك الجاثية | ٤٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مَأْوَاكُمُ: | مأواكم النار هى مولاكم وبئس المصير ... ... | ١٥ | م الحديد | ٥٧ |
| مَأْوَاهُ: | كمن باء بسخط من الله ومأواه جهنم ... ... ... | ١٦٢م | آل عمران | ٣ |
| (٣) | فقد حرم الله عليه الجنة ومأواه النار ... ... ... | ٧٢ | م المائدة | ٥ |
| | فقد باء بغضب من الله ومأواه جهنم ... ... ... | ١٦ | م الأنفال | ٨ |
| مَأْوَاهُمُ: | ومأواهم النار وبئس مثوى الظالمين ... ... ... | ١٥١م | آل عمران | ٣ |
| (١٢) | متاع قليل ثم مأواهم جهنم وبئس المهاد ... ... | ١٩٧م | « | ٣ |
| | فأولئك مأواهم جهنم وساءت مصيرا ... ... ... | ٩٧ | م النساء | ٤ |
| | أولئك مأواهم جهنم ولا يجدون عنها محيصا ... ... | ٢١ | م « | ٤ |
| | ومأواهم جهنم وبئس المصير ... ... ... ... ... | ٧٣ | م التوبة | ٩ |
| | ومأواهم جهنم جزاء بما كانوا يكسبون ... ... ... | ٩٥ | م « | ٩ |
| | أولئك مأواهم النار بما كانوا يكسبون ... ... ... | ٨ | ك يونس | ١٠ |
| | أولئك لهم سوء الحساب ومأواهم جهنم ... ... ... | ١٨ | م الرعد | ١٣ |
| | مأواهم جهنم كلما خبت زدناهم سعيرا ... ... ... | ٩٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ومأواهم النار ولبئس المصير... ... ... ... ... | ٥٧ | م النور | ٢٤ |
| | وأما الذين فسقوا فمأواهم النار... ... ... ... | ٢٠ | م السجدة | ٣٢ |
| | واغلظ عليهم ومأواهم جهنم وبئس المصير ... ... | ٩ | م التحريم | ٦٦ |
| إِى: | ويستنبئونك أحق هو قل إى وربى إنه لحق ... ... | ٥٣ | ك يونس | ١٠ |
| آيَة: | ما ننسخ من آية أو ننسها نأت بخير منها أو مثلها | ١٠٦م | البقرة | ٢ |
| (٨٤) | وقال الذين لا يعلمون لولا يكلمنا الله أو تأتينا آية | ١١٨م | « | ٢ |
| | ولئن أتيت الذين أوتوا الكتاب بكل آية ما تبعوا قبلتك | ١٤٥م | « | ٢ |
| | سل بنى إسرائيل كم آتيناهم من آية بينة... ... ... | ٢١١م | « | ٢ |
| | وقال لهم نبيهم إن آية ملكه أن يأتيكم التابوت | ٢٤٨م | « | ٢ |
| | إن فى ذلك لآية لكم إن كنتم مؤمنين ... ... ... | ٢٤٨م | « | ٢ |
| | وانظر إلى حمارك ولنجعلك آية للناس ... ... ... | ٢٥٩م | « | ٢ |
| | قد كان لكم آية فى فئتين التقتا ... ... ... ... | ١٣ | م آل عمران | ٣ |
| | قال ربّ اجعل لى آية قال آيتك ألّا تكلم الناس... ... | ٤١ | م « | ٣ |
| | أنى قد جئتكم بآية من ربكم ... ... ... ... ... | ٤٩ | م « | ٣ |
| | إن فى ذلك لآية لكم إن كنتم مؤمنين ... ... ... | ٤٩ | م « | ٣ |
| | وجئتكم بآية من ربكم فاتقوا الله وأطيعون ... ... | ٥٠ | م « | ٣ |
| | تكون لنا عيدا لأولنا وآخرنا وآية منك ... ... ... | ١١٤م | المائدة | ٥ |
| | وما تأتيهم من آية من آيات ربهم إلا كانوا عنها معرضين | ٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | وإن يروا كل آية لا يؤمنوا بها... ... ... ... ... | ٢٥ | ك « | ٦ |
| | أن تبتغى نفقا فى الأرض أو سلما فى السماء فتأتيهم بآية | ٣٥ | ك « | ٦ |
| | وقالوا لولا نزّل عليه آية من ربه ... ... ... ... | ٣٧ | ك « | ٦ |
| | قل إن الله قادر على أن ينزل آية ولكن أكثرهم لا يعلمون | ٣٧ | ك « | ٦ |
| | وأقسموا بالله جهد أيمانهم لئن جاءتهم آية ليؤمنن بها | ١٠٩ | ك « | ٦ |
| | وإذا جاءتهم آية قالوا لن نؤمن حتى نؤتى مثل ما أوتى | ١٢٤ | ك « | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| آية : | هذه ناقة الله لكم آية فذروها تأكل فى أرض الله | ٧٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | قال إن كنت جئت بآية فأت بها إن كنت من الصادقين | ١٠٦ | ك « | ٧ |
| | وقالوا مهما تأتنا به من آية لتسحرنا بها فما نحن لك بمؤمنين | ١٣٢ | ك « | ٧ |
| | وإن يروا كل آية لا يؤمنوا بها ... ... ... ... | ١٤٦ | ك « | ٧ |
| | وإذا لم تأتهم بآية قالوا لولا اجتبيتها ... ... ... | ٢٠٣ | ك « | ٧ |
| | ويقولون لولا أنزل عليه آية من ربه ... ... ... | ٢٠ | ك يونس | ١٠ |
| | فاليوم ننجيك ببدنك لتكون لمن خلفك آية... ... ... | ٩٢ | ك « | ١٠ |
| | ولو جاءتهم كل آية حتى يروا العذاب الأليم ... ... | ٩٧ | ك « | ١٠ |
| | ويا قوم هذه ناقة الله لكم آية فذروها تأكل... ... | ٦٤ | ك هود | ١١ |
| | إن فى ذلك لآية لمن خاف عذاب الآخرة... ... ... | ١٠٣ | ك « | ١١ |
| | وكأين من آية فى السموات والأرض يمرون عليها | ١٠٥ | ك يوسف | ١٢ |
| | ويقول الذين كفروا لولا أنزل عليه آية من ربه | ٧ | م الرعد | ١٣ |
| | ويقول الذين كفروا لولا أنزل عليه آية من ربه | ٢٧ | م « | ١٣ |
| | وما كان لرسول أن يأتى بآية إلا بإذن الله ... ... | ٣٨ | م « | ١٣ |
| | إن فى ذلك لآية للمؤمنين ... ... ... ... ... | ٧٧ | ك الحجر | ١٥ |
| | إن فى ذلك لآية لقوم يتفكرون... ... ... ... ... | ١١ | ك النحل | ١٦ |
| | إن فى ذلك لآية لقوم يذكرون ... ... ... ... ... | ١٣ | ك « | ١٦ |
| | إن فى ذلك لآية لقوم يسمعون ... ... ... ... ... | ٦٥ | ك « | ١٦ |
| | إن فى ذلك لآية لقوم يعقلون ... ... ... ... ... | ٦٧ | ك « | ١٦ |
| | إن فى ذلك لآية لقوم يتفكرون ... ... ... ... ... | ٦٩ | ك « | ١٦ |
| | وإذا بدلنا آية ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠١ | ك « | ١٦ |
| | مكان آية والله أعلم بما ينزل قالوا إنما أنت مفتر | ١٠١ | ك « | ١٦ |
| | وجعلنا الليل والنهار آيتين فمحونا آية الليل ... ... | ١٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وجعلنا آية النهار مبصرة لتبتغوا فضلا من ربكم... ... | ١٢ | ك « | ١٧ |
| | قال رب اجعل لى آية قال آيتك ألا تكلم الناس | ١٠ | ك مريم | ١٩ |
| | ولنجعله آية للناس ورحمة منا وكان أمرا مقضيا | ٢١ | ك « | ١٩ |
| | تخرج بيضاء من غير سوء آية أخرى ... ... ... ... | ٢٢ | ك طه | ٢٠ |
| | قد جئناك بآية من ربك والسلام على من اتبع الهدى | ٤٧ | ك « | ٢٠ |
| | وقالوا لولا يأتينا بآية من ربه ... ... ... ... ... | ١٣٣ | ك « | ٢٠ |
| | بل هو شاعر فليأتنا بآية كما أرسل الأولون ... ... | ٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | فنفخنا فيها من روحنا وجعلناها وابنها آية للعالمين | ٩١ | ك « | ٢١ |
| | وجعلنا ابن مريم وأمه آية وآويناهما إلى ربوة... ... | ٥٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | لما كذبوا الرسل أغرقناهم وجعلناهم للناس آية | ٣٧ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | إن نشأ ننزل عليهم من السماء آية فظلت أعناقهم لها خاضعين | ٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | إن فى ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين ... ... | ٨ | ك « | ٢٦ |
| | إن فى ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين ... ... | ٦٧ | ك « | ٢٦ |
| | إن فى ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين ... ... | ١٠٣ | ك « | ٢٦ |
| | إن فى ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين ... ... | ١٢١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | أتبنون بكل ريع آية تعبثون ... ... ... ... ... | ١٢٨ | ك « | ٢٦ |
| | إن فى ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين ... ... | ١٣٩ | ك « | ٢٦ |
| | ما أنت إلا بشر مثلنا فأت بآية إن كنت من الصادقين | ١٥٤ | ك « | ٢٦ |
| | إن فى ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين ... ... | ١٥٨ | ك « | ٢٦ |
| | إن فى ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين ... ... | ١٧٤ | ك « | ٢٦ |
| | إن فى ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين ... ... | ١٩٠ | ك « | ٢٦ |
| | أو لم يكن لهم آية أن يعلمه علماء بنى إسرائيل ... ... | ١٩٧ | م « | ٢٦ |
| | إن فى ذلك لآية لقوم يعلمون ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك النمل | ٢٧ |
| | فأنجيناه وأصحاب السفينة وجعلناها آية للعالمين... ... | ١٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ولقد تركنا منها آية بينة لقوم يعقلون ... ... ... ... | ٣٥ | ك « | ٢٩ |
| | إن فى ذلك لآية للمؤمنين... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك « | ٢٩ |
| | ولئن جئتهم بآية ليقولن الذين كفروا إن أنتم إلا مبطلون | ٥٨ | ك الروم | ٣٠ |
| | إن فى ذلك لآية لكل عبد منيب... ... ... ... ... | ٩ | ك سبأ | ٣٤ |
| | لقد كان لسبأ فى مسكنهم آية ... ... ... ... ... | ١٥ | ك « | ٣٤ |
| | وآية لهم الأرض الميتة أحييناها وأخرجنا منها حبا | ٣٣ | ك يس | ٣٦ |
| | وآية لهم الليل نسلخ منه النهار فإذا هم مظلمون ... ... | ٣٧ | ك « | ٣٦ |
| | وآية لهم أنا حملنا ذريتهم فى الفلك المشحون ... ... | ٤١ | ك « | ٣٦ |
| | وما تأتيهم من آية من آيات ربهم إلا كانوا عنها معرضين | ٤٦ | ك « | ٣٦ |
| | وإذا رأوا آية يستسخرون ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك الصافات | ٣٧ |
| | وما كان لرسول أن يأتى بآية إلا بإذن الله ... ... | ٧٨ | ك غافر | ٤٠ |
| | وما نريهم من آية إلا هى أكبر من أختها ... ... | ٤٨ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ولتكون آية للمؤمنين ويهديكم صراطا مستقيما ... ... | ٢٠ | م الفتح | ٤٨ |
| | وتركنا فيها آية للذين يخافون العذاب الأليم ... ... | ٣٧ | ك الذاريات | ٥١ |
| | وإن يروا آية يعرضوا ويقولوا سحر مستمر ... ... | ٢ | ك القمر | ٥٤ |
| | ولقد تركناها آية فهل من مدكر... ... ... ... ... | ١٥ | ك « | ٥٤ |
| | فأراه الآية الكبرى ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك النازعات | ٧٩ |
| آيتك : | قال آيتك ألا تكلم الناس ثلاثة أيام إلا رمزا | ٤١ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | قال آيتك ألا تكلم الناس ثلاث ليال سويا ... ... | ١٠ | ك مريم | ١٩ |
| آيتين : | وجعلنا الليل والنهار آيتين فمحونا آية الليل... ... | ١٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| آيات : | ذلك بأنهم كانوا يكفرون بآيات الله ويقتلون النبيين | ٦١ | م البقرة | ٢ |
| (١٤٨) | ولقد أنزلنا إليك آيات بينات وما يكفر بها إلا الفاسقون | ٩٩ | م « | ٢ |
| | تشابهت قلوبهم قد بينا الآيات لقوم يوقنون | ١١٨ | م « | ٢ |
| | والسحاب المسخر بين السماء والأرض لآيات | | | |
| | لقوم يعقلون ... ... ... ... ... ... ... | ١٦٤ | م « | ٢ |
| | كذلك يبين الله لكم الآيات لعلكم تتفكرون ... ... | ٢١٩ | م « | ٢ |
| | ولا تتخذوا آيات الله هزوا واذكروا نعمة الله عليكم | ٢٣١ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| آيات : | تلك آيات الله نتلوها عليك بالحق ... ... ... | ٢٥٢ م | البقـرة | ٢ |
| | كذلك يبين الله لكم الآيات لعلكم تتفكرون ... ... | ٢٦٦ م | « | ٢ |
| | إن الذين كفروا بآيات الله لهم عذاب شـديد | ٤ م | آل عمران | ٣ |
| | هو الذى أنزل عليك الكتاب منـه آيات محكمات | ٧ م | « | ٣ |
| | ومن يكفر بآيات الله فإن الله سريع الحساب | ١٩ م | « | ٣ |
| | إن الذين يكفرون بآيات الله و يقتلون النبيين بغير حق | ٢١ م | « | ٣ |
| | ذلك نتلوه عليك من الآيات والذكر الحكيم ... ... | ٥٨ م | « | ٣ |
| | يأهل الكتاب لم تكفرون بآيات الله وأنتم تشهدون | ٧٠ م | « | ٣ |
| | فيـه آيات بينات مقام إبراهيم ومن دخله كان آمنا | ٩٧ م | « | ٣ |
| | قل يأهل الكتاب لم تكفرون بآيات الله والله شهيد | ٩٨ م | « | ٣ |
| | وكيف تكفرون وأنتم تتلى عليكم آيات الله ... ... | ١٠١ م | « | ٣ |
| | تلك آيات الله نتلوها عليك بالحق ... ... ... ... | ١٠٨ م | « | ٣ |
| | ذلك بأنهم كانوا يكفرون بآيات الله و يقتلون الأنبياء | ١١٢ م | « | ٣ |
| | أمة قائمة يتلون آيات الله آناء الليل وهم يسجدون | ١١٣ م | « | ٣ |
| | قد بينا لكم الآيات إن كنتم تعقلون ... ... ... ... | ١١٨ م | « | ٣ |
| | واختـلاف الليل والنهار لآيات لأولى الألبـاب | ١٩٠ م | « | ٣ |
| | خاشعين لله لا يشترون بآيات الله ثمنا قليلا ... ... | ١٩٩ م | « | ٣ |
| | إذا سمعتم آيات الله يكفر بها و يستهزأ بها فلا تقعدوا | ١٤٠ م | النسـاء | ٤ |
| | فبما نقضهم ميثاقهم وكفرهم بآيات الله وقتلهم الأنبياء | ١٥٥ م | « | ٤ |
| | انظر كيف نبين لهم الآيات ثم انظـر أنى يؤفكون | ٧٥ م | المائدة | ٥ |
| | وما تأتيهم من آية من آيات ربهم إلا كانوا عنها معرضين | ٤ ك | الأنعام | ٦ |
| | يا ليتنا نرد ولا نكذب بآيات ربنا ونكون من المؤمنين | ٢٧ ك | « | ٦ |
| | فإنهم لا يكذبونك ولكن الظالمين بآيات الله يجحدون | ٣٣ ك | « | ٦ |
| | انظر كيف نصرف الآيات ثم هم يصدفون ... ... | ٤٦ ك | « | ٦ |
| | وكذلك نفصـل الآيات ولتسـتبين سبيل المجرمين | ٥٥ ك | « | ٦ |
| | انظر كيف نصرف الآيات لعلهم يفقهون ... ... | ٦٥ ك | « | ٦ |
| | قد فصلنا الآيات لقوم يعلمون ... ... ... ... ... | ٩٧ ك | « | ٦ |
| | قد فصلنا الآيات لقوم يفقهون... ... ... ... ... | ٩٨ ك | « | ٦ |
| | إن فى ذلكم لآيات لقوم يؤمنون ... ... ... ... | ٩٩ ك | « | ٦ |
| | وكذلك نصرف الآيات وليقولوا درست ... ... | ١٠٥ ك | « | ٦ |
| | قل إنما الآيات عند الله ... ... ... ... ... ... | ١٠٩ ك | « | ٦ |
| | قد فصلنا الآيات لقوم يذكرون ... ... ... ... | ١٢٦ ك | « | ٦ |
| | فمن أظلم ممن كذب بآيات الله وصدف عنها ... ... | ١٥٧ ك | « | ٦ |
| | أو يأتى ربك أو يأتى بعض آيات ربك ... ... | ١٥٨ ك | « | ٦ |
| | يوم يأتى بعض آيات ربك لا ينفع نفسا إيمانها | ١٥٨ ك | « | ٦ |
| | ذلك من آيات الله لعلهم يذكرون ... ... ... ... | ٢٦ ك | الأعراف | ٧ |
| | كذلك نفصل الآيات لقوم يعلمون ... ... ... ... | ٣٢ ك | « | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| آيات : | كذلك نصرف الآيات لقوم يشكرون... ... ... | ٥٨ ك | الأعراف | ٧ |
| | وما تنقم منا إلا أن آمنا بآيات ربنا لما جاءتنا | ١٢٦ ك | « | ٧ |
| | والقمل والضفادع والدم آيات مفصلات ... ... | ١٣٣ ك | « | ٧ |
| | وكذلك نفصل الآيات ولعلهم يرجعون ... ... ... | ١٧٤ ك | | ٧ |
| | كفروا بآيات الله فأخذهم الله بذنوبهم ... ... | ٥٢ م | الأنفـال | ٨ |
| | كذبوا بآيات ربهم فأهلكناهم بذنوبهم ... ... ... | ٥٤ م | « | ٨ |
| | اشتروا بآيات الله ثمنا قليلا فصدوا عن سبيله... ... | ٩ م | التـوبة | ٩ |
| | فإخوانكم فى الدين ونفصل الآيات لقـوم يعلمون | ١١ م | « | ٩ |
| | الـر تلك آيات الكتاب الحكيم ... ... ... ... | ١ ك | يـونس | ١٠ |
| | ما خلق الله ذلك إلا بالحق يفصل الآيات لقوم يعلمون | ٥ ك | « | ١٠ |
| | وما خلق الله فى السموات والأرض لآيات لقوم يتقون | ٦ ك | « | ١٠ |
| | كذلك نفصل الآيات لقوم يتفكرون ... ... ... | ٢٤ ك | « | ١٠ |
| | إن فى ذلك لآيات لقوم يسمعون ... ... ... ... | ٦٧ ك | « | ١٠ |
| | إن كان كبر عليكم مقامى وتذكيرى بآيات الله | ٧١ ك | « | ١٠ |
| | ولا تكونن من الذين كذبوا بآيات الله فتكون من الخاسرين | ٩٥ م | « | ١٠ |
| | وما تغنى الآيات والنذر عن قوم لا يؤمنون ... ... | ١٠١ ك | « | ١٠ |
| | وتلك عاد جحدوا بآيات ربهم وعصوا رسله ... ... | ٥٩ ك | هـود | ١١ |
| | الـر تلك آيات الكتاب المبين ... ... ... ... ... | ١ م | يوسـف | ١٢ |
| | لقد كان فى يوسف و إخوته آيات للسائلين ... ... | ٧ م | « | ١٢ |
| | ثم بدا لهم من بعد ما رأوا الآيات ليسجننه حتى حين | ٣٥ ك | « | ١٢ |
| | الـمر تلك آيات الكتاب والذى أنزل إليك من ربك الحق | ١ م | الرعـد | ١٣ |
| | يفصـل الآيات لعلكم بلقاء ربكم توقنون ... ... | ٢ م | « | ١٣ |
| | إن فى ذلك لآيات لقوم يتفكرون ... ... ... ... | ٣ م | « | ١٣ |
| | إن فى ذلك لآيات لقوم يعقلون ... ... ... ... | ٤ م | « | ١٣ |
| | إن فى ذلك لآيات لكل صبار شكور ... ... ... | ٥ ك | إبراهـيم | ١٤ |
| | الـر تلك آيات الكتاب وقرآن مبين ... ... ... | ١ ك | الحجـر | ١٥ |
| | إن فى ذلك لآيات للمتوسمين ... ... ... ... ... | ٧٥ ك | « | ١٥ |
| | إن فى ذلك لآيات لقوم يعقلون ... ... ... ... | ١٢ ك | النحـل | ١٦ |
| | إن فى ذلك لآيات لقوم يؤمنون ... ... ... ... | ٧٩ ك | « | ١٦ |
| | إن الذين لا يؤمنـون بآيات الله لا يهـديهم الله | ١٠٤ ك | « | ١٦ |
| | إنما يفترى الكذب الذين لا يؤمنـون بآيات الله | ١٠٥ ك | « | ١٦ |
| | وما منعنا أن نرسل بالآيات إلا أن كذب بها الأولون | ٥٩ ك | الإسراء | ١٧ |
| | وما نرسل بالآيات إلا تخويفا ... ... ... ... | ٥٩ ك | « | ١٧ |
| | ولقد آتينا موسى تسع آيات بينات ... ... ... ... | ١٠١ ك | « | ١٧ |
| | ذلك من آيات الله من يهد الله فهو المهتد ... ... | ١٧ ك | الكهف | ١٨ |
| | ومن أظلم ممن ذكر بآيات ربه فأعرض عنها ... ... | ٥٧ ك | « | ١٨ |
| | أولئك الذين كفروا بآيات ربهم ولقائه ... ... ... | ١٠٥ ك | « | ١٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| آيات : | إذا تتلى عليهم آيات الرحمن خرّوا سجدا وبكيا | ٥٨ | م مريم | ١٩ |
| | كلوا وارعوا أنعامكم إن فى ذلك لآيات لأولى النهى | ٥٤ | ك طه | ٢٠ |
| | وكذلك نجزى من أسرف ولم يؤمن بآيات ربه | ١٢٧ | ك « | ٢٠ |
| | إن فى ذلك لآيات لأولى النهى ... ... ... ... | ١٢٨ | ك « | ٢٠ |
| | وكذلك أنزلناه آيات بينات وأن الله يهدى من يريد | ١٦ | م الحج | ٢٢ |
| | إن فى ذلك لآيات وإن كنا لمبتلين ... ... ... | ٣٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | والذين هم بآيات ربهم يؤمنون ... ... ... ... | ٥٨ | ك « | ٢٣ |
| | سورة أنزلناها وفرضناها وأنزلنا فيها آيات بينات | ١ | م النور | ٢٤ |
| | ويبين الله لكم الآيات والله عليم حكيم... ... ... | ١٨ | م « | ٢٤ |
| | ولقد أنزلنا إليكم آيات مبينات ... ... ... ... | ٣٤ | م « | ٢٤ |
| | لقد أنزلنا آيات مبينات والله يهدى من يشاء | ٤٦ | م « | ٢٤ |
| | كذلك يبين الله لكم الآيات والله عليم حكيم ... ... | ٥٨ | م « | ٢٤ |
| | كذلك يبين الله لكم الآيات لعلكم تعقلون ... ... | ٦١ | م « | ٢٤ |
| | والذين إذا ذكّروا بآيات ربهم لم يخروا عليها صما وعميانا | ٧٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | تلك آيات الكتاب المبين ... ... ... ... ... ... | ٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | طس تلك آيات القرآن وكتاب مبين ... ... ... | ١ | ك النمل | ٢٧ |
| | فى تسع آيات إلى فرعون وقومه ... ... ... ... | ١٢ | ك « | ٢٧ |
| | إن فى ذلك لآيات لقوم يؤمنون ... ... ... ... | ٨٦ | ك « | ٢٧ |
| | تلك آيات الكتاب المبين ... ... ... ... ... ... | ٢ | ك القصص | ٢٨ |
| | ولا يصدّنك عن آيات الله بعد إذ أنزلت إليك | ٨٧ | ك « | ٢٨ |
| | والذين كفروا بآيات الله ولقائه أولئك يئسوا من رحمتى | ٢٣ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | إن فى ذلك لآيات لقوم يؤمنون ... ... ... ... | ٢٤ | ك « | ٢٩ |
| | بل هو آيات بينات فى صدور الذين أوتوا العلم | ٤٩ | ك « | ٢٩ |
| | وقالوا لولا أنزل عليه آيات من ربه ... ... ... | ٥٠ | ك « | ٢٩ |
| | قل إنما الآيات عند الله وإنما أنا نذير مبين... ... | ٥٠ | ك « | ٢٩ |
| | الذين أساؤا السوأى أن كذبوا بآيات الله ... ... | ١٠ | ك الروم | ٣٠ |
| | إن فى ذلك لآيات لقوم يتفكرون ... ... ... ... | ٢١ | ك « | ٣٠ |
| | إن فى ذلك لآيات للعالمين ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك « | ٣٠ |
| | إن فى ذلك لآيات لقوم يسمعون ... ... ... ... | ٢٣ | ك « | ٣٠ |
| | إن فى ذلك لآيات لقوم يعقلون ... ... ... ... | ٢٤ | ك « | ٣٠ |
| | كذلك نفصل الآيات لقوم يعقلون... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٣٠ |
| | إن فى ذلك لآيات لقوم يؤمنون ... ... ... ... | ٣٧ | ك « | ٣٠ |
| | تلك آيات الكتاب الحكيم... ... ... ... ... ... | ٢ | ك لقمان | ٣١ |
| | إن فى ذلك لآيات لكل صبّار شكور ... ... ... | ٣١ | ك « | ٣١ |
| | ومن أظلم ممن ذكّر بآيات ربه ثم أعرض عنها | ٢٢ | ك السجدة | ٣٢ |
| | إن فى ذلك لآيات أفلا يسمعون ... ... ... ... | ٢٦ | ك « | ٣٢ |
| | واذكرن ما يتلى فى بيوتكن من آيات الله والحكمة | ٣٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| آيات : | إن فى ذلك لآيات لكل صبّار شكور ... ... ... | ١٩ | ك سبأ | ٣٤ |
| | وما تأتيهم من آية من آيات ربهم إلا كانوا عنها معرضين | ٤٦ | ك يس | ٣٦ |
| | إن فى ذلك لآيات لقوم يتفكرون ... ... ... ... | ٤٢ | ك الزمر | ٣٩ |
| | إن فى ذلك لآيات لقوم يؤمنون ... ... ... ... | ٥٢ | م « | ٣٩ |
| | والذين كفروا بآيات الله أولئك هم الخاسرون | ٦٣ | ك « | ٣٩ |
| | يتلون عليكم آيات ربكم وينذرونكم لقاء يومكم هذا | ٧١ | ك « | ٣٩ |
| | ما يجادل فى آيات الله إلا الذين كفروا ... ... | ٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | الذين يجادلون فى آيات الله بغير سلطان أتاهم... ... | ٣٥ | ك « | ٤٠ |
| | إن الذين يجادلون فى آيات الله بغير سلطان أتاهم | ٥٦ | م « | ٤٠ |
| | كذلك يؤفك الذين كانوا بآيات الله يجحدون | ٦٣ | ك « | ٤٠ |
| | ألم تر إلى الذين يجادلون فى آيات الله أنى يصرفون | ٦٩ | ك « | ٤٠ |
| | ويريكم آياته فأىّ آيات الله تنكرون ... ... ... | ٨١ | ك « | ٤٠ |
| | إن فى ذلك لآيات لكل صبّار شكور ... ... ... | ٣٣ | ك الشورى | ٤٢ |
| | وآتيناهم من الآيات ما فيه بلاء مبين ... ... ... | ٣٣ | ك الدخان | ٤٤ |
| | إن فى السموات والأرض لآيات للمؤمنين ... ... | ٣ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | وفى خلقكم وما يبث من دابة آيات لقوم يوقنون | ٤ | ك « | ٤٥ |
| | وتصريف الرياح آيات لقوم يعقلون ... ... ... | ٥ | ك « | ٤٥ |
| | تلك آيات الله نتلوها عليك بالحق ... ... ... | ٦ | ك « | ٤٥ |
| | يسمع آيات الله تتلى عليه ثم يصرّ مستكبرا ... ... | ٨ | ك « | ٤٥ |
| | والذين كفروا بآيات ربهم لهم عذاب من رجز أليم | ١١ | ك « | ٤٥ |
| | إن فى ذلك لآيات لقوم يتفكرون ... ... ... ... | ١٣ | ك « | ٤٥ |
| | ذلكم بأنكم اتخذتم آيات الله هزوا ... ... ... | ٣٥ | ك « | ٤٥ |
| | إذ كانوا يجحدون بآيات الله وحاق بهم ما كانوا به يستهزءون ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | وصرّفنا الآيات لعلهم يرجعون ... ... ... ... | ٢٧ | ك « | ٤٦ |
| | وفى الأرض آيات للموقنين ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك الذاريات | ٥١ |
| | لقد رأى من آيات ربه الكبرى ... ... ... ... | ١٨ | ك النجم | ٥٣ |
| | هو الذى ينزل على عبده آيات بينات ... ... ... | ٩ | م الحديد | ٥٧ |
| | قد بينا لكم الآيات لعلكم تعقلون ... ... ... | ١٧ | م « | ٥٧ |
| | وقد أنزلنا آيات بينات وللكافرين عذاب مهين | ٥ | م المجادلة | ٥٨ |
| | بئس مثل القوم الذين كذبوا بآيات الله... ... ... | ٥ | م الجمعة | ٦٢ |
| | رسولا يتلوا عليكم آيات الله مبينات ... ... ... | ١١ | م الطلاق | ٦٥ |
| آياتك : | ربنا وابعث فيهم رسولا منهم يتلوا عليهم آياتك | ١٢٩ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | لولا أرسلت إلينا رسولا فنتبع آياتك ... ... ... | ١٣٤ | ك طه | ٢٠ |
| | لولا أرسلت إلينا رسولا فنتبع آياتك ... ... ... | ٤٧ | ك القصص | ٢٨ |
| آياتنا : | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا أولئك أصحاب النار | ٣٩ | م البقرة | ٢ |
| (٩٢) | كما أرسلنا فيكم رسولا منكم يتلوا عليكم آياتنا | ١٥١ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| آياتنا: | كذبوا بآياتنا فأخذهم الله بذنوبهم ... ... ... | ١١ | م آل عمران | ٣ |
| | إن الذين كفروا بآياتنا سوف نصليهم نارا ... ... | ٥٦ | م النساء | ٤ |
| | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا أولئك أصحاب الجحيم | ١٠ | م المائدة | ٥ |
| | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا أولئك أصحاب الجحيم | ٨٦ | م « | ٥ |
| | والذين كذبوا بآياتنا صم وبكم فى الظلمات ... ... | ٣٩ | ك الأنعام | ٦ |
| | والذين كذبوا بآياتنا يمسهم العذاب بما كانوا يفسقون | ٤٩ | ك « | ٦ |
| | وإذا جاءك الذين يؤمنون بآياتنا فقل سلام عليكم | ٥٤ | ك « | ٦ |
| | وإذا رأيت الذين يخوضون فى آياتنا فأعرض عنهم | ٦٨ | ك « | ٦ |
| | ولا تتبع أهواء الذين كذبوا بآياتنا ... ... ... ... | ١٥٠ | ك « | ٦ |
| | سنجزى الذين يصدفون عن آياتنا سوء العذاب | ١٥٧ | ك « | ٦ |
| | خسروا أنفسهم بما كانوا بآياتنا يظلمون ... ... | ٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | والذين كذبوا بآياتنا واستكبروا عنها أولئك أصحاب النار | ٣٦ | ك « | ٧ |
| | إن الذين كذبوا بآياتنا واستكبروا عنها لا تفتح لهم أبواب السماء ... ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك « | ٧ |
| | كانوا لقاء يومهم هذا وما كانوا بآياتنا يجحدون | ٥١ | ك « | ٧ |
| | وأغرقنا الذين كذبوا بآياتنا إنهم كانوا قوما عمين | ٦٤ | ك « | ٧ |
| | وقطعنا دابر الذين كذبوا بآياتنا وما كانوا مؤمنين | ٧٢ | ك « | ٧ |
| | ثم بعثنا من بعدهم موسى بآياتنا إلى فرعون وملائه | ١٠٣ | ك « | ٧ |
| | بأنهم كذبوا بآياتنا وكانوا عنها غافلين ... ... ... | ١٣٦ | ك « | ٧ |
| | ذلك بأنهم كذبوا بآياتنا وكانوا عنها غافلين ... ... | ١٤٦ | ك « | ٧ |
| | والذين كذبوا بآياتنا ولقاء الآخرة حبطت أعمالهم | ١٤٧ | ك « | ٧ |
| | ويؤتون الزكاة والذين هم بآياتنا يؤمنون ... ... | ١٥٦ | ك « | ٧ |
| | واتل عليهم نبأ الذى آتيناه آياتنا فانسلخ منها | ١٧٥ | ك « | ٧ |
| | ذلك مثل القوم الذين كذبوا بآياتنا... ... ... ... | ١٧٦ | ك « | ٧ |
| | ساء مثلا القوم الذين كذبوا بآياتنا... ... ... ... | ١٧٧ | ك « | ٧ |
| | والذين كذبوا بآياتنا سنستدرجهم من حيث لا يعلمون | ١٨٢ | ك « | ٧ |
| | وإذا تتلى عليهم آياتنا قالوا قد سمعنا... ... ... | ٣١ | ك الأنفال | ٨ |
| | واطمأنوا بها والذين هم عن آياتنا غافلون ... ... | ٧ | ك يونس | ١٠ |
| | وإذا تتلى عليهم آياتنا بينات قال الذين لا يرجون | ١٥ | ك « | ١٠ |
| | إذا لهم مكر فى آياتنا قل الله أسرع مكرا ... ... | ٢١ | ك « | ١٠ |
| | وجعلناهم خلائف وأغرقنا الذين كذبوا بآياتنا | ٧٣ | ك « | ١٠ |
| | إلى فرعون وملائه بآياتنا فاستكبروا وكانوا قوما مجرمين | ٧٥ | ك « | ١٠ |
| | وإن كثيرا من الناس عن آياتنا لغافلون... ... ... | ٩٢ | ك « | ١٠ |
| | ولقد أرسلنا موسى بآياتنا وسلطان مبين ... ... ... | ٩٦ | ك هود | ١١ |
| | ولقد أرسلنا موسى بآياتنا أن أخرج قومك من الظلمات | ٥ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وآتيناهم آياتنا فكانوا عنها معرضين ... ... ... ... | ٨١ | ك الحجر | ١٥ |
| | إلى المسجد الأقصى الذى باركنا حوله لنريه من آياتنا | ١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ذلك جزاؤهم بأنهم كفروا بآياتنا ... ... ... ... | ٩٨ | ك « | ١٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| آياتنا: | أم حسبت أن أصحاب الكهف والرقيم كانوا من آياتنا عجبا... ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | وإذا تتلى عليهم آياتنا بينات قال الذين كفروا | ٧٣ | ك مريم | ١٩ |
| | أفرأيت الذى كفر بآياتنا وقال لأوتين مالا وولدا | ٧٧ | ك « | ١٩ |
| | لنريك من آياتنا الكبرى ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك طه | ٢٠ |
| | ولقد أريناه آياتنا كلها فكذب وأبى ... ... ... | ٥٦ | ك « | ٢٠ |
| | قال كذلك أتتك آياتنا فنسيتها وكذلك اليوم تنسى | ١٢٦ | ك « | ٢٠ |
| | ونصرناه من القوم الذين كذبوا بآياتنا ... ... ... | ٧٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | والذين سعوا فى آياتنا معاجزين أولئك أصحاب الجحيم | ٥١ | م الحج | ٢٢ |
| | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا فأولئك لهم عذاب مهين | ٥٧ | م « | ٢٢ |
| | وإذا تتلى عليهم آياتنا بينات تعرف فى وجوه الذين كفروا المنكر ... ... ... ... ... ... ... | ٧٢ | م « | ٢٢ |
| | يكادون يسطون بالذين يتلون عليهم آياتنا ... ... | ٧٢ | م « | ٢٢ |
| | ثم أرسلنا موسى وأخاه هرون بآياتنا وسلطان مبين | ٤٥ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فقلنا اذهبا إلى القوم الذين كذبوا بآياتنا... ... ... | ٣٦ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | قال كلا فاذهبا بآياتنا إنا معكم مستمعون ... ... | ١٥ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فلما جاءتهم آياتنا مبصرة قالوا هذا سحر مبين | ١٣ | ك النمل | ٢٧ |
| | إن تسمع إلا من يؤمن بآياتنا فهم مسلمون... ... | ٨١ | ك « | ٢٧ |
| | أن الناس كانوا بآياتنا لا يوقنون ... ... ... ... | ٨٢ | ك « | ٢٧ |
| | ويوم نحشر من كل أمة فوجا ممن يكذب بآياتنا | ٨٣ | ك « | ٢٧ |
| | فلا يصلون إليكما بآياتنا أنتما ومن اتبعكما الغالبون | ٣٥ | ك القصص | ٢٨ |
| | فلما جاءهم موسى بآياتنا بينات قالوا ما هذا ... ... | ٣٦ | ك « | ٢٨ |
| | وما كنت ثاويا فى أهل مدين تتلوا عليهم آياتنا | ٤٥ | ك « | ٢٨ |
| | حتى يبعث فى أمها رسولا يتلوا عليهم آياتنا... ... | ٥٩ | ك « | ٢٨ |
| | وما يجحد بآياتنا إلا الكافرون ... ... ... ... | ٤٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وما يجحد بآياتنا إلا الظالمون ... ... ... ... | ٤٩ | ك « | ٢٩ |
| | وأما الذين كفروا وكذبوا بآياتنا ولقاء الآخرة فأولئك | ١٦ | ك الروم | ٣٠ |
| | إن تسمع إلا من يؤمن بآياتنا فهم مسلمون ... ... | ٥٣ | ك « | ٣٠ |
| | وإذا تتلى عليه آياتنا ولى مستكبرا كأن لم يسمعها | ٧ | ك لقمان | ٣١ |
| | وما يجحد بآياتنا إلا كل ختار كفور ... ... ... | ٣٢ | ك « | ٣١ |
| | إنما يؤمن بآياتنا الذين إذا ذكروا بها خروا سجدا | ١٥ | ك السجدة | ٣٢ |
| | يهدون بأمرنا لما صبروا وكانوا بآياتنا يوقنون | ٢٤ | ك « | ٣٢ |
| | والذين سعوا فى آياتنا معاجزين أولئك لهم عذاب | ٥ | ك سبأ | ٣٤ |
| | والذين يسعون فى آياتنا معاجزين أولئك فى العذاب | ٣٨ | ك « | ٣٤ |
| | وإذا تتلى عليهم آياتنا بينات قالوا ما هذا إلا رجل | ٤٣ | ك « | ٣٤ |
| | ولقد أرسلنا موسى بآياتنا وسلطان مبين... ... ... | ٢٣ | ك غافر | ٤٠ |
| | هو أشد منهم قوة وكانوا بآياتنا يجحدون... ... | ١٥ | ك فصلت | ٤١ |
| | لهم فيها دار الخلد جزاء بما كانوا بآياتنا يجحدون | ٢٨ | ك « | ٤١ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| آياتنا: | إن الذين يلحدون فى آياتنا لا يخفون علينا ... ... | ك فصلت | ٤٠ ٤١ |
| | سنريهم آياتنا فى الآفاق وفى أنفسهم... ... ... | ك « | ٥٣ ٤١ |
| | ويعلم الذين يجادلون فى آياتنا مالهم من محيص | ك الشورى | ٣٥ ٤٢ |
| | ولقد أرسلنا موسى بآياتنا إلى فرعون وملئه ... ... | ك الزخرف | ٤٦ ٤٣ |
| | فلما جاءهم بآياتنا إذا هم منها يضحكون ... ... ... | ك « | ٤٧ ٤٣ |
| | الذين آمنوا بآياتنا وكانوا مسلمين ... ... ... ... | ك « | ٦٩ ٤٣ |
| | وإذا علم من آياتنا شيئا اتخذها هزوا ... ... ... | ك الجاثية | ٩ ٤٥ |
| | وإذا تتلى عليهم آياتنا بينات ما كان حجتهم إلا أن قالوا ائتوا بآبائنا ... ... ... ... ... | ك « | ٢٥ ٤٥ |
| | وإذا تتلى عليهم آياتنا بينات قال الذين كفروا للحق لما جاءهم هذا سحر مبين ... ... ... ... ... | ك الأحقاف | ٧ ٤٦ |
| | كذبوا بآياتنا كلها فأخذناهم أخذ عزيز مقتدر | ك القمر | ٤٢ ٥٤ |
| | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا أولئك أصحاب الجحيم | م الحديد | ١٩ ٥٧ |
| | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا أولئك أصحاب النار | م التغابن | ١٠ ٦٤ |
| | إذا تتلى عليه آياتنا قال أساطير الأولين... ... ... | ك القلم | ١٥ ٦٨ |
| | كلا إنه كان لآياتنا عنيدا ... ... ... ... ... ... | ك المدثر | ١٦ ٧٤ |
| | وكذبوا بآياتنا كذابا ... ... ... ... ... ... ... | ك النبأ | ٢٨ ٧٨ |
| | إذا تتلى عليه آياتنا قال أساطير الأولين ... ... ... | ك المطففين | ١٣ ٨٣ |
| | والذين كفروا بآياتنا هم أصحاب المشئمة... ... ... | ك البلد | ١٩ ٩٠ |
| آياته: | كذلك يحيى الله الموتى ويريكم آياته لعلكم تعقلون | م البقرة | ٧٣ ٢ |
| (٣٧) | كذلك يبين الله آياته للناس لعلهم يتقون ... ... | م « | ١٨٧ ٢ |
| | ويبين آياته للناس لعلهم يتذكرون ... ... ... ... | م « | ٢٢١ ٢ |
| | كذلك يبين الله لكم آياته لعلكم تعقلون ... ... ... | م « | ٢٤٢ ٢ |
| | كذلك يبين الله لكم آياته لعلكم تهتدون... ... ... | م آل عمران | ١٠٣ ٣ |
| | يتلوا عليهم آياته ويزكيهم ويعلمهم الكتاب والحكمة | م « | ١٦٤ ٣ |
| | كذلك يبين الله لكم آياته لعلكم تشكرون... ... ... | م المائدة | ٨٩ ٥ |
| | ومن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو كذب بآياته | ك الأنعام | ٢١ ٦ |
| | وإنتم عن آياته تستكبرون ... ... ... ... ... ... | م « | ٩٣ ٦ |
| | فكلوا مما ذكر اسم الله عليه إن كنتم بآياته مؤمنين | ك « | ١١٨ ٦ |
| | فمن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو كذب بآياته | ك الأعراف | ٣٧ ٧ |
| | وإذا تليت عليهم آياته زادتهم إيمانا وعلى ربهم يتوكلون | م الأنفال | ٢ ٨ |
| | قل أبالله وآياته ورسوله كنتم تستهزءون... ... ... | م التوبة | ٦٥ ٩ |
| | فمن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو كذب بآياته | ك يونس | ١٧ ١٠ |
| | الر كتاب أحكمت آياته ثم فصلت من لدن حكيم خبير | ك هود | ١ ١١ |
| | فينسخ الله ما يلقى الشيطان ثم يحكم الله آياته... ... | الحج | ٥٢ ٢٢ |
| | كذلك يبين الله لكم آياته والله عليم حكيم ... ... | م النور | ٥٩ ٢٤ |
| | وقل الحمد لله سيريكم آياته فتعرفونها... ... ... | ك النمل | ٩٣ ٢٧ |
| | ومن آياته أن خلقكم من تراب ثم إذا أنتم بشر تنتشرون | ك الروم | ٢٠ ٣٠ |
| | ومن آياته أن خلق لكم من أنفسكم أزواجا لتسكنوا إليها | ك « | ٢١ ٣٠ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| آياته: | ومن آياته خلق السموات والأرض واختلاف ألسنتكم | ك الروم | ٢٢ ٣٠ |
| | ومن آياته منامكم بالليل والنهار وابتغاؤكم من فضله | ك « | ٢٣ ٣٠ |
| | ومن آياته يريكم البرق خوفا وطمعا... ... ... ... | ك « | ٢٤ ٣٠ |
| | ومن آياته أن تقوم السماء والأرض بأمره... ... ... | ك « | ٢٥ ٣٠ |
| | ومن آياته أن يرسل الرياح مبشرات وليذيقكم من رحمته | ك « | ٤٦ ٣٠ |
| | ألم تر أن الفلك تجرى فى البحر بنعمة الله ليريكم من آياته | ك لقمان | ٣١ ٣١ |
| | كتاب أنزلناه إليك مبارك ليدبروا آياته ... ... ... | ك ص | ٢٩ ٣٨ |
| | هو الذى يريكم آياته وينزل لكم من السماء رزقا | ك غافر | ١٣ ٤٠ |
| | ويريكم آياته فأى آيات الله تنكرون ... ... ... | ك « | ٨١ ٤٠ |
| | كتاب فصلت آياته قرآنا عربيا لقوم يعلمون... ... | ك فصلت | ٣ ٤١ |
| | ومن آياته الليل والنهار والشمس والقمر... ... ... | ك « | ٣٧ ٤١ |
| | ومن آياته أنك ترى الأرض خاشعة ... ... ... | ك « | ٣٩ ٤١ |
| | ولو جعلناه قرآنا أعجميا لقالوا لولا فصلت آياته | ك « | ٤٤ ٤١ |
| | ومن آياته خلق السموات والأرض وما بث فيهما من دابة | ك الشورى | ٢٩ ٤٢ |
| | ومن آياته الجوار فى البحر كالأعلام... ... ... ... | ك « | ٣٢ ٤٢ |
| | فبأى حديث بعد الله وآياته يؤمنون... ... ... ... | ك الجاثية | ٦ ٤٥ |
| | يتلوا عليهم آياته ويزكيهم ويعلمهم الكتاب والحكمة | م الجمعة | ٢ ٦٢ |
| آياتها: | وجعلنا السماء سقفا محفوظا وهم عن آياتها معرضون | ك الأنبياء | ٣٢ ٢١ |
| آياتى: | ولا تشتروا بآياتى ثمنا قليلا وإياى فاتقون... ... | م البقرة | ٤١ ٢ |
| (١٤) | فلا تخشوا الناس واخشون ولا تشتروا بآياتى ثمنا قليلا | م المائدة | ٤٤ ٥ |
| | يقصون عليكم آياتى وينذرونكم لقاء يومكم هذا | ك الأنعام | ١٣٠ ٦ |
| | يقصون عليكم آياتى فمن اتقى وأصلح فلا خوف عليهم | ك الأعراف | ٣٥ ٧ |
| | سأصرف عن آياتى الذين يتكبرون فى الأرض بغير الحق | ك « | ١٤٦ ٧ |
| | واتخذوا آياتى وما أنذروا هزوا ... ... ... ... | ك الكهف | ٥٦ ١٨ |
| | ذلك جزاؤهم جهنم بما كفروا واتخذوا آياتى ورسلى هزوا | ك « | ١٠٦ ١٨ |
| | اذهب أنت وأخوك بآياتى ولا تنيا فى ذكرى... ... | ك طه | ٤٢ ٢٠ |
| | خلق الإنسان من عجل سأريكم آياتى فلا تستعجلون | ك الأنبياء | ٣٧ ٢١ |
| | قد كانت آياتى تتلى عليكم فكنتم على أعقابكم تنكصون | ك المؤمنون | ٦٦ ٢٣ |
| | ألم تكن آياتى تتلى عليكم فكنتم بها تكذبون ... ... | ك « | ١٠٥ ٢٣ |
| | حتى إذا جاؤا قال أكذبتم بآياتى ولم تحيطوا بها علما | ك النمل | ٨٤ ٢٧ |
| | بلى قد جاءتك آياتى فكذبت بها واستكبرت... ... | ك الزمر | ٥٩ ٣٩ |
| | أفلم تكن آياتى تتلى عليكم فاستكبرتم وكنتم قوما مجرمين | ك الجاثية | ٣١ ٤٥ |
| أيوب: | وأوحينا إلى إبراهيم وإسماعيل وإسحق ويعقوب | | |
| (٤) | والأسباط وعيسى وأيوب ... ... ... ... ... ... | م النساء | ١٦٣ ٤ |
| | ومن ذريته داود وسليمان وأيوب ..... ... ... | ك الأنعام | ٨٤ ٦ |
| | وأيوب إذ نادى ربه أنى مسنى الضر وأنت أرحم الراحمين | ك الأنبياء | ٨٣ ٢١ |
| | واذكر عبدنا أيوب إذ نادى ربه أنى مسنى الشيطان بنصب | ك ص | ٤١ ٣٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَيَّدْتُكَ | : إذ أيدتك بروح القدس تكلم الناس فى المهد وكهلا | ١١٠ | م المائدة | ٥ |
| أَيَّدَكَ | : هو الذى أيدك بنصره وبالمؤمنين... ... ... ... | ٦٢ | م الأنفال | ٨ |
| أَيَّدَكُمْ | : تخافون أن يتخطفكم الناس فآواكم وأيدكم بنصره | ٢٦ | م « | ٨ |
| أَيَّدْنَا | : فأيدنا الذين آمنوا على عدوهم فأصبحوا ظاهرين | ١٤ | م الصف | ٦١ |
| أَيَّدْنَاهُ | : وآتينا عيسى ابن مريم البينات وأيدناه بروح القدس | ٨٧ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | وآتينا عيسى ابن مريم البينات وأيدناه بروح القدس | ٢٥٣ | م « | ٢ |
| أَيَّدَهُ | : فأنزل الله سكينته عليه وأيده بجنود لم تروها... ... | ٤٠ | م التوبة | ٩ |
| أَيَّدَهُمْ | : أولئك كتب فى قلوبهم الإيمان وأيدهم بروح منه | ٢٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| يُؤَيِّدُ | : والله يؤيد بنصره من يشاء إن فى ذلك لعبرة لأولى الأبصار | ١٣ | م آل عمران | ٣ |
| الأَيْدِ | : واذكر عبدنا داود ذا الأيد إنه أواب ... ... | ١٧ | ك ص | ٣٨ |
| أَيْيَدٍ | : والسماء بنيناها بأيد وإنا لموسعون... ... ... ... | ٤٧ | ك الذاريات | ٥١ |
| الأَيْكَةِ | : وإن كان أصحاب الأيكة لظالمين ... ... ... | ٧٨ | ك الحجر | ١٥ |
| (٤) | كذب أصحاب الأيكة المرسلين... ... ... ... ... | ١٧٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وثمود وقوم لوط وأصحاب الأيكة أولئك الأحزاب | ١٣ | ك ص | ٣٨ |
| | وأصحاب الأيكة وقوم تبع كل كذب الرسل فحق وعيد | ١٤ | ك ق | ٥٠ |
| الأَيَامَى | : وأنكحوا الأيامى منكم والصالحين من عبادكم وإمائكم | ٣٢ | م النور | ٢٤ |
| الآنَ | : قالوا الآن جئت بالحق فذبحوها وما كادوا يفعلون | ٧١ | م البقرة | ٢ |
| (٨) | فالآن باشروهن وابتغوا ما كتب الله لكم ... ... | ١٨٧ | م « | ٢ |
| | حتى إذا حضر أحدهم الموت قال إنى تبت الآن | ١٨ | م النساء | ٤ |
| | الآن خفف الله عنكم وعلم أن فيكم ضعفا ... ... | ٦٦ | م الأنفال | ٨ |
| | آلآن وقد كنتم به تستعجلون ... ... ... ... ... | ٥١ | ك يونس | ١٠ |
| | آلآن وقد عصيت قبل وكنت من المفسدين... ... | ٩١ | ك « | ١٠ |
| | قالت امرأة العزيز الآن حصحص الحق أنا راودته عن نفسه | ٥١ | ك يوسف | ١٢ |
| | من يستمع الآن يجد له شهابا رصدا ... ... ... ... | ٩ | ك الجن | ٧٢ |
| أَيَّانَ | : يسئلونك عن الساعة أيان مرساها ... ... ... ... | ١٨٧ | ك الأعراف | ٧ |
| (٦) | أموات غير أحياء وما يشعرون أيان يبعثون... ... | ٢١ | ك النحل | ١٦ |
| | وما يشعرون أيان يبعثون ... ... ... ... ... ... | ٦٥ | ك النمل | ٢٧ |
| | يسئلون أيان يوم الدين ... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك الذاريات | ٥١ |
| | يسئل أيان يوم القيامة... ... ... ... ... ... | ٦ | ك القيامة | ٧٥ |
| | يسئلونك عن الساعة أيان مرساها ... ... ... ... | ٤٢ | ك النازعات | ٧٩ |
| أَيْنَ | : ثم نقول للذين أشركوا أين شركاؤكم الذين كنتم تزعمون | ٢٢ | ك الأنعام | ٦ |
| (٧) | أين شركائى الذين كنتم تشاقون فيهم ... ... ... | ٢٧ | ك النحل | ١٦ |
| | ويوم يناديهم فيقول أين شركائى الذين كنتم تزعمون | ٦٢ | ك القصص | ٢٨ |
| | ويوم يناديهم فيقول أين شركائى الذين كنتم تزعمون | ٧٤ | ك « | ٢٨ |
| | ويوم يناديهم أين شركائى قالوا آذناك ما منا من شهيد | ٤٧ | ك فصلت | ٤١ |
| | يقول الإنسان يومئذ أين المفر... ... ... ... ... | ١٠ | ك القيامة | ٧٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَيْنَ | : فأين تذهبون . إن هو إلا ذكر للعالمين ... ... ... | ٢٦ | ك التكوير | ٨١ |
| أَيْنَمَا | : ولله المشرق والمغرب فأينما تولوا فثم وجه الله | ١١٥ | م البقرة | ٢ |
| (١٢) | فاستبقوا الخيرات أين ما تكونوا يأت بكم الله جميعا | ١٤٨ | م « | ٢ |
| | ضربت عليهم الذلة أين ما ثقفوا إلا بحبل من الله | ١١٢ | م آل عمران | ٣ |
| | أينما تكونوا يدرككم الموت ولو كنتم فى بروج مشيدة | ٧٨ | م النساء | ٤ |
| | قالوا أين ما كنتم تدعون من دون الله قالوا ضلوا عنا | ٣٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | وهو كل على مولاه أينما يوجهه لا يأت بخير ... ... | ٧٦ | ك النحل | ١٦ |
| | وجعلنى مباركا أين ما كنت وأوصانى بالصلاة والزكاة | ٣١ | ك مريم | ١٩ |
| | وقيل لهم أين ما كنتم تعبدون ... ... ... ... ... | ٩٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | ملعونين أينما ثقفوا أخذوا وقتلوا تقتيلا .. ... ... | ٦١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ثم قيل لهم أين ما كنتم تشركون... ... ... ... ... | ٧٣ | ك غافر | ٤٠ |
| | وهو معكم أين ما كنتم والله بما تعملون بصير ... ... | ٤ | م الحديد | ٥٧ |
| | ولا أدنى من ذلك ولا أكثر إلا هو معهم أين ما كانوا | ٧ | م المجادلة | ٥٨ |
| أَيُّ | : قل أى شىء أكبر شهادة قل الله شهيد بينى وبينكم | ١٩ | ك الأنعام | ٦ |
| (٤٦) | فأى الفريقين أحق بالأمن إن كنتم تعلمون... ... | ٨١ | ك « | ٦ |
| | فبأى حديث بعده يؤمنون ... ... ... ... ... ... | ١٨٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | ثم بعثناهم لنعلم أى الحزبين أحصى لما لبثوا أمدا | ١٢ | ك الكهف | ١٨ |
| | قال الذين كفروا للذين آمنوا أى الفريقين خير مقاما | ٧٣ | ك مريم | ١٩ |
| | وسيعلم الذين ظلموا أى منقلب ينقلبون ... ... ... | ٢٢٧ | م الشعراء | ٢٦ |
| | وما تدرى نفس بأى أرض تموت إن الله عليم خبير | ٣٤ | ك لقمان | ٣١ |
| | ويريكم آياته فأى آيات الله تنكرون... ... ... ... | ٨١ | ك غافر | ٤٠ |
| | فبأى حديث بعد الله وآياته يؤمنون... ... ... ... | ٦ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | فبأى آلاء ربك تمارى ... ... ... ... ... ... ... | ٥٥ | ك النجم | ٥٣ |
| | والحب ذو العصف والريحان . فبأى آلاء ربكما تكذبان | ١٣ | م الرحمن | ٥٥ |
| | ١٦، ١٨، ٢١، ٢٣، ٢٥، ٢٨، ٣٠، ٣٢، ٣٤، ٣٦، | | | |
| | ٣٨، ٤٠، ٤٢، ٤٥، ٤٧، ٤٩، ٥١، ٥٣، ٥٥، ٥٧، | | | |
| | ٥٩، ٦١، ٦٣، ٦٥، ٦٧، ٦٩، ٧١، ٧٣، ٧٥، ٧٧ | | | |
| | وإذا الرسل أقتت . لأى يوم أجلت ... ... ... ... | ١٢ | ك المرسلات | ٧٧ |
| | فبأى حديث بعده يؤمنون ... ... ... ... ... ... | ٥٠ | ك « | ٧٧ |
| | قتل الإنسان ما أكفره . من أى شىء خلقه... ... | ١٨ | ك عبس | ٨٠ |
| | وإذا الموءودة سئلت . بأى ذنب قتلت ... ... ... | ٩ | ك التكوير | ٨١ |
| | فى أى صورة ما شاء ركبك ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك الانفطار | ٨٢ |
| أَيًّا | : أيا ما تدعوا فله الأسماء الحسنى ... ... ... ... | ١١٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| أَيَّتُهَا | : ثم أذن مؤذن أيتها العير إنكم لسارقون ... ... | ٧٠ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | يأيتها النفس المطمئنة . ارجعى إلى ربك ... ... | ٢٧ | ك الفجر | ٨٩ |
| أَيُّكُمْ | : فمنهم من يقول أيكم زادته هذه إيمانا ... ... | ١٢٤ | م التوبة | ٩ |
| (٤) | وكان عرشه على الماء ليبلوكم أيكم أحسن عملا | ٧ | ك هود | ١١ |
| | أيكم يأتينى بعرشها قبل أن يأتونى مسلمين ... ... | ٣٨ | ك النمل | ٢٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أيكم | : الذى خلق الموت والحياة ليبلوكم أيكم أحسن عملا | ٢ | ك الملك | ٦٧ |
| أيكم | : فستبصر ويبصرون . بأييكم المفتون ... ... | ٦ | ك القلم | ٦٨ |
| أيما | : أيما الأجلين قضيت فلا عدوان علىّ والله على ما نقول وكيل ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك القصص | ٢٨ |
| أينا | : ولتعلمن أينا أشد عذابا وأبقى ... ... ... ... | ٧١ | ك طه | ٢٠ |
| أيه | : وتوبوا إلى الله جميعا أيه المؤمنون لعلكم تفلحون | ٣١ | م النور | ٢٤ |
| (٣) | وقالوا يأيه الساحر ادع لنا ربك بما عهد عندك | ٤٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | سنفرغ لكم أيه الثقلان ... ... ... ... ... | ٣١ | م الرحمن | ٥٥ |
| أيها | : يأيها الناس اعبدوا ربكم الذى خلقكم والذين من قبلكم | ٢١ | م البقرة | ٢ |
| (١٥٠) | يأيها الذين آمنوا لا تقولوا راعنا وقولوا انظرنا | ١٠٤ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا استعينوا بالصبر والصلاة ... ... | ١٥٣ | م « | ٢ |
| | يأيها الناس كلوا مما فى الأرض حلالا طيبا ... | ١٦٨ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا كلوا من طيبات ما رزقناكم ... | ١٧٢ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا كتب عليكم القصاص فى القتلى ... | ١٧٨ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا كتب عليكم الصيام ... ... ... | ١٨٣ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا ادخلوا فى السلم كافة ... ... ... | ٢٠٨ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا أنفقوا مما رزقناكم ... ... ... | ٢٥٤ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تبطلوا صدقاتكم بالمن والأذى | ٢٦٤ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا أنفقوا من طيبات ما كسبتم ... | ٢٦٧ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله وذروا ما بقى من الربا | ٢٧٨ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا إذا تداينتم بدين إلى أجل مسمى فاكتبوه ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨٢ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا إن تطيعوا فريقا من الذين أوتوا الكتاب يردوكم بعد إيمانكم كافرين ... ... ... | ١٠٠ | م آل عمران | ٣ |
| | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله حق تقاته ... ... ... | ١٠٢ | م « | ٣ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تتخذوا بطانة من دونكم... ... | ١١٨ | م « | ٣ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تأكلوا الربا أضعافا مضاعفة | ١٣٠ | م « | ٣ |
| | يأيها الذين آمنوا إن تطيعوا الذين كفروا يردوكم على أعقابكم ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٩ | م « | ٣ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تكونوا كالذين كفروا ... ... | ١٥٦ | م « | ٣ |
| | يأيها الذين آمنوا اصبروا وصابروا ورابطوا... ... | ٢٠٠ | م « | ٣ |
| | يأيها الناس اتقوا ربكم الذى خلقكم من نفس واحدة | ١ | م النساء | ٤ |
| | يأيها الذين آمنوا لا يحل لكم أن ترثوا النساء كرها | ١٩ | م « | ٤ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تأكلوا أموالكم بينكم بالباطل | ٢٩ | م « | ٤ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تقربوا الصلاة وأنتم سكارى | ٤٣ | م « | ٤ |
| | يأيها الذين أوتوا الكتاب آمنوا بما نزلنا مصدقا لما معكم | ٤٧ | م « | ٤ |
| | يأيها الذين آمنوا أطيعوا الله وأطيعوا الرسول وأولى الأمر منكم ... ... ... ... ... ... | ٥٩ | م « | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أيها | : يأيها الذين آمنوا خذوا حذركم فانفروا ثبات أو انفروا جميعا ... ... ... ... ... ... | ٧١ | م النساء | ٤ |
| | يأيها الذين آمنوا إذا ضربتم فى سبيل الله فتبينوا | ٩٤ | م « | ٤ |
| | إن يشأ يذهبكم أيها الناس ويأت بآخرين ... ... | ١٣٣ | م « | ٤ |
| | يأيها الذين آمنوا كونوا قوامين بالقسط شهداء لله | ١٣٥ | م « | ٤ |
| | يأيها الذين آمنوا آمنوا بالله ورسوله ... ... ... | ١٣٦ | م « | ٤ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تتخذوا الكافرين أولياء من دون المؤمنين ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٤ | م « | ٤ |
| | يأيها الناس قد جاءكم الرسول بالحق من ربكم فآمنوا خيرا لكم ... ... ... ... ... ... | ١٧٠ | م « | ٤ |
| | يأيها الناس قد جاءكم برهان من ربكم وأنزلنا إليكم نورا مبينا | ١٧٤ | م « | ٤ |
| | يأيها الذين آمنوا أوفوا بالعقود ... ... ... ... | ١ | م المائدة | ٥ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تحلوا شعائر الله ولا الشهر الحرام | ٢ | م « | ٥ |
| | يأيها الذين آمنوا إذا قمتم إلى الصلاة فاغسلوا وجوهكم | ٦ | م « | ٥ |
| | يأيها الذين آمنوا كونوا قوامين لله شهداء بالقسط | ٨ | م « | ٥ |
| | يأيها الذين آمنوا اذكروا نعمة الله عليكم إذ هم قوم أن يبسطوا إليكم أيديهم فكف أيديهم عنكم | ١١ | م « | ٥ |
| | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله وابتغوا إليه الوسيلة | ٣٥ | م « | ٥ |
| | يأيها الرسول لا يحزنك الذين يسارعون فى الكفر | ٤١ | م « | ٥ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تتخذوا اليهود والنصارى أولياء | ٥١ | م « | ٥ |
| | يأيها الذين آمنوا من يرتد منكم عن دينه فسوف يأتى الله بقوم يحبهم ويحبونه ... ... ... ... | ٥٤ | م « | ٥ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تتخذوا الذين اتخذوا دينكم هزوا ولعبا من الذين أوتوا الكتاب من قبلكم والكفار أولياء | ٥٧ | م « | ٥ |
| | يأيها الرسول بلغ ما أنزل إليك من ربك ... ... | ٦٧ | م « | ٥ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تحرموا طيبات ما أحل الله لكم | ٨٧ | م « | ٥ |
| | يأيها الذين آمنوا إنما الخمر والميسر والأنصاب والأزلام رجس من عمل الشيطان فاجتنبوه | ٩٠ | م « | ٥ |
| | يأيها الذين آمنوا ليبلونكم الله بشىء من الصيد ... ... | ٩٤ | م « | ٥ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تقتلوا الصيد وأنتم حرم ... ... | ٩٥ | م « | ٥ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تسألوا عن أشياء إن تبد لكم تسؤكم | ١٠١ | م « | ٥ |
| | يأيها الذين آمنوا عليكم أنفسكم لا يضركم من ضل | ١٠٥ | م « | ٥ |
| | يأيها الذين آمنوا شهادة بينكم إذا حضر أحدكم الموت حين الوصية اثنان ذوا عدل منكم ... ... ... | ١٠٦ | م « | ٥ |
| | قل يأيها الناس إنى رسول الله إليكم جميعا ... ... | ١٥٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | يأيها الذين آمنوا إذا لقيتم الذين كفروا زحفا فلا تولوهم الأدبار ... ... ... ... ... ... | ١٥ | م الأنفال | ٨ |
| | يأيها الذين آمنوا أطيعوا الله ورسوله ولا تولوا عنه | ٢٠ | م « | ٨ |
| | يأيها الذين آمنوا استجيبوا لله وللرسول إذا دعاكم | ٢٤ | م « | ٨ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تخونوا الله والرسول ... ... | ٢٧ | م « | ٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أيها : | يأيها الذين آمنوا إن تتقوا الله يجعل لكم فرقانا | ٢٩ | م الأنفال | ٨ |
| | يأيها الذين آمنوا إذا لقيتم فئة فاثبتوا واذكروا الله كثيرا | ٤٥ | م » | ٨ |
| | يأيها النبيّ حسبك الله ومن اتبعك من المؤمنين | ٦٤ | م » | ٨ |
| | يأيها النبيّ حرّض المؤمنين على القتال ... ... ... | ٦٥ | م » | ٨ |
| | يأيها النبيّ قل لمن فى أيديكم من الأسرى إن يعلم الله فى قلوبكم خيرا يؤتكم خيرا مما أخذ منكم | ٧٠ | م » | ٨ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تتخذوا آباءكم وإخوانكم أولياء إن استحبوا الكفر على الإيمان... ... ... ... | ٢٣ | م التوبة | ٩ |
| | يأيها الذين آمنوا إنما المشركون نجس ... ... ... | ٢٨ | م » | ٩ |
| | يأيها الذين آمنوا إن كثيرا من الأحبار والرهبان ليأكلون أموال الناس بالباطل ... ... ... ... | ٣٤ | م » | ٩ |
| | يأيها الذين آمنوا مالكم إذا قيل لكم انفروا فى سبيل الله اثاقلتم إلى الأرض ... ... ... ... | ٣٨ | م » | ٩ |
| | يأيها النبيّ جاهد الكفار والمنافقين واغلظ عليهم | ٧٣ | م » | ٩ |
| | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله وكونوا مع الصادقين | ١١٩ | م » | ٩ |
| | يأيها الذين آمنوا قاتلوا الذين يلونكم من الكفار | ١٢٣ | م » | ٩ |
| | يأيها الناس إنما بغيكم على أنفسكم ... ... ... ... | ٢٣ | ك يونس | ١٠ |
| | يأيها الناس قد جاءتكم موعظة من ربكم وشفاء | ٥٧ | ك » | ١٠ |
| | قل يأيها الناس إن كنتم فى شك من دينى فلا أعبد الذين تعبدون من دون الله ... ... ... ... | ١٠٤ | ك » | ١٠ |
| | قل يأيها الناس قد جاءكم الحق من ربكم ... ... | ١٠٨ | ك » | ١٠ |
| | يأيها الملأ أفتونى فى رؤياى إن كنتم للرؤيا تعبرون | ٤٣ | ك يوسف | ١٢ |
| | يوسف أيها الصديق أفتنا فى سبع بقرات سمان | ٤٦ | ك » | ١٢ |
| | قالوا يأيها العزيز إن له أبا شيخا كبيرا فخذ أحدنا مكانه | ٧٨ | ك » | ١٢ |
| | فلما دخلوا عليه قالوا يأيها العزيز مسنا وأهلنا الضر | ٨٨ | ك » | ١٢ |
| | وقالوا يأيها الذى نزّل عليه الذكر إنك لمجنون... ... | ٦ | ك الحجر | ١٥ |
| | قال فما خطبكم أيها المرسلون ... ... ... ... | ٥٧ | ك » | ١٥ |
| | فلينظر أيها أزكى طعاما فليأتكم برزق منه ... ... | ١٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | يأيها الناس اتقوا ربكم إن زلزلة الساعة شىء عظيم | ١ | م الحج | ٢٢ |
| | يأيها الناس إن كنتم فى ريب من البعث فإنا خلقناكم | ٥ | م » | ٢٢ |
| | قل يأيها الناس إنما أنا لكم نذير مبين ... ... | ٤٩ | م » | ٢٢ |
| | يأيها الناس ضرب مثل فاستمعوا له ... ... ... | ٧٣ | م » | ٢٢ |
| | يأيها الذين آمنوا اركعوا واسجدوا واعبدوا ربكم | ٧٧ | م » | ٢٢ |
| | يأيها الرسل كلوا من الطيبات واعملوا صالحا ... ... | ٥١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تتبعوا خطوات الشيطان... ... | ٢١ | م النور | ٢٤ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تدخلوا بيوتا غير بيوتكم ... ... | ٢٧ | م » | ٢٤ |
| | يأيها الذين آمنوا ليستأذنكم الذين ملكت أيمانكم | ٥٨ | م » | ٢٤ |
| | يأيها الناس علمنا منطق الطير وأوتينا من كل شىء | ١٦ | ك النمل | ٢٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أيها : | يأيها النمل ادخلوا مساكنكم لا يحطمنكم سليمان وجنوده | ١٨ | ك النمل | ٢٧ |
| | قالت يأيها الملأ إنى ألقى إلىّ كتاب كريم... ... ... | ٢٩ | ك » | ٢٧ |
| | قالت يأيها الملأ أفتونى فى أمرى ... ... ... ... | ٣٢ | ك » | ٢٧ |
| | قال يأيها الملأ أيكم يأتينى بعرشها قبل أن يأتونى مسلمين | ٣٨ | ك » | ٢٧ |
| | وقال فرعون يأيها الملأ ما علمت لكم من إله غيرى | ٣٨ | ك القصص | ٢٨ |
| | يأيها الناس اتقوا ربكم واخشوا يوما لا يجزى والد عن ولده ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك لقمان | ٣١ |
| | يأيها النبيّ اتق الله ولا تطع الكافرين والمنافقين | ١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | يأيها الذين آمنوا اذكروا نعمة الله عليكم ... ... | ٩ | م » | ٣٣ |
| | يأيها النبيّ قل لأزواجك إن كنتنّ تردن الحياة الدنيا وزينتها فتعالين أمتعكن ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م » | ٣٣ |
| | يأيها الذين آمنوا اذكروا الله ذكرا كثيرا ... ... | ٤١ | م » | ٣٣ |
| | يأيها النبيّ إنا أرسلناك شاهدا ومبشرا ونذيرا... ... | ٤٥ | م » | ٣٣ |
| | يأيها الذين آمنوا إذا نكحتم المؤمنات ثم طلقتموهن من قبل أن تمسوهن فما لكم عليهن من عدة تعتدونها | ٤٩ | م » | ٣٣ |
| | يأيها النبيّ إنا أحللنا لك أزواجك اللاتى آتيت أجورهن | ٥٠ | م » | ٣٣ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تدخلوا بيوت النبيّ إلا أن يؤذن لكم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | م » | ٣٣ |
| | يأيها الذين آمنوا صلّوا عليه وسلموا تسليما ... ... | ٥٦ | م » | ٣٣ |
| | يأيها النبيّ قل لأزواجك وبناتك ونساء المؤمنين يدنين عليهن من جلابيبهن ... ... ... ... ... | ٥٩ | م » | ٣٣ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تكونوا كالذين آذوا موسى فبرأه الله مما قالوا ... ... ... ... ... ... | ٦٩ | م » | ٣٣ |
| | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله وقولوا قولا سديدا | ٧٠ | م » | ٣٣ |
| | يأيها الناس اذكروا نعمة الله عليكم ... ... ... ... | ٣ | ك فاطر | ٣٥ |
| | يأيها الناس إن وعد الله حق فلا تغرنكم الحياة الدنيا | ٥ | ك » | ٣٥ |
| | يأيها الناس أنتم الفقراء إلى الله والله هو الغنىّ الحميد | ١٥ | ك » | ٣٥ |
| | وامتازوا اليوم أيها المجرمون ... ... ... ... ... | ٥٩ | ك يس | ٣٦ |
| | قل أفغير الله تأمرونى أعبد أيها الجاهلون ... ... | ٦٤ | ك الزمر | ٣٩ |
| | يأيها الذين آمنوا إن تنصروا الله ينصركم ويثبت أقدامكم | ٧ | م محمد | ٤٧ |
| | يأيها الذين آمنوا أطيعوا الله وأطيعوا الرسول | ٣٣ | م » | ٤٧ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تقدموا بين يدى الله ورسوله | ١ | م الحجرات | ٤٩ |
| | يأيها الذين آمنوا لا ترفعوا أصواتكم فوق صوت النبيّ | ٢ | م » | ٤٩ |
| | يأيها الذين آمنوا إن جاءكم فاسق بنبإ فتبينوا... ... | ٦ | م » | ٤٩ |
| | يأيها الذين آمنوا لا يسخر قوم من قوم ... ... | ١١ | م » | ٤٩ |
| | يأيها الذين آمنوا اجتنبوا كثيرا من الظن ... ... | ١٢ | م » | ٤٩ |
| | يأيها الناس إنا خلقناكم من ذكر وأنثى وجعلناكم شعوبا | ١٣ | م » | ٤٩ |
| | قال فما خطبكم أيها المرسلون ... ... ... ... | ٣١ | ك الذاريات | ٥١ |
| | ثم إنكم أيها الضالون المكذبون . لآكلون من شجر من زقوم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥١ | ك الواقعة | ٥٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أيها : | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله وآمنوا برسوله يؤتكم كفلين من رحمته ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م الحديد | ٥٧ |
| | يأيها الذين آمنوا إذا تناجيتم فلا تتناجوا بالإثم والعدوان ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | م المجادلة | ٥٨ |
| | يأيها الذين آمنوا إذا قيل لكم تفسحوا فى المجالس فافسحوا ... ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | م « | ٥٨ |
| | يأيها الذين آمنوا إذا ناجيتم الرسول فقدموا بين يدى نجواكم صدقة ... ... ... ... ... ... | ١٢ | م « | ٥٨ |
| | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله ولتنظر نفس ماقدمت لغد | ١٨ | م الحشر | ٥٩ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تتخذوا عدوى وعدوكم أولياء | ١ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | يأيها الذين آمنوا إذا جاءكم المؤمنات مهاجرات فامتحنوهن | ١٠ | م « | ٦٠ |
| | يأيها النبى إذا جاءك المؤمنات يبايعنك على أن لا يشركن بالله شيئا ... ... ... ... ... ... | ١٢ | م « | ٦٠ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تتولوا قوما غضب الله عليهم | ١٣ | م « | ٦٠ |
| | يأيها الذين آمنوا لم تقولون ما لا تفعلون ... ... | ٢ | م الصف | ٦١ |
| | يأيها الذين آمنوا هل أدلكم على تجارة تنجيكم من عذاب أليم ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | م « | ٦١ |
| | يأيها الذين آمنوا كونوا أنصار الله كما قال عيسى ابن مريم ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٤ | م « | ٦١ |
| | قل يأيها الذين هادوا إن زعمتم أنكم أولياء لله من دون الناس فتمنوا الموت إن كنتم صادقين | ٦ | م الجمعة | ٦٢ |
| | يأيها الذين آمنوا إذا نودى للصلاة من يوم الجمعة فاسعوا إلى ذكر الله ... ... ... ... ... ... | ٩ | م « | ٦٢ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تلهكم أموالكم ولا أولادكم عن ذكر الله ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | م المنافقون | ٦٣ |
| | يأيها الذين آمنوا إن من أزواجكم وأولادكم عدوا لكم | ١٤ | م التغابن | ٦٤ |
| | يأيها النبى إذا طلقتم النساء فطلقوهن لعدتهن... ... | ١ | م الطلاق | ٦٥ |
| | يأيها النبى لم تحرم ما أحل الله لك تبتغى مرضاة أزواجك | ١ | م التحريم | ٦٦ |
| | يأيها الذين آمنوا قوا أنفسكم وأهليكم نارا وقودها الناس والحجارة ... ... ... ... ... ... | ٦ | م « | ٦٦ |
| | يأيها الذين كفروا لا تعتذروا اليوم إنما تجزون ما كنتم تعملون ... ... ... ... ... ... | ٧ | م « | ٦٦ |
| | يأيها الذين آمنوا توبوا إلى الله توبة نصوحا ... ... | ٨ | م « | ٦٦ |
| | يأيها النبى جاهد الكفار والمنافقين واغلظ عليهم | ٩ | م « | ٦٦ |
| | يأيها المزمل . قم الليل إلا قليلا ... ... ... ... | ١ | ك المزمل | ٧٣ |
| | يأيها المدثر . قم فأنذر... ... ... ... ... ... | ١ | ك المدثر | ٧٤ |
| أيهم : | وما كنت لديهم إذ يلقون أقلامهم أيهم يكفل مريم | ٤٤ | م آل عمران | ٣ |
| (٦) | آباؤكم وأبناؤكم لا تدرون أيهم أقرب لكم نفعا... ... | ١١ | م النساء | ٤ |
| | أولئك الذين يدعون يبتغون إلى ربهم الوسيلة أيهم أقرب | ٥٧ | م الإسراء | ١٧ |
| | إنا جعلنا ما على الأرض زينة لها لنبلوهم أيهم أحسن عملا | ٧ | ك الكهف | ١٨ |
| | ثم لننزعن من كل شيعة أيهم أشد على الرحمن عتيا | ٦٩ | ك مريم | ١٩ |
| | سلهم أيهم بذلك زعيم ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك القلم | ٦٨ |
| إياك : | إياك نعبد ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك الفاتحة | ١ |
| (٢) | وإياك نستعين ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك « | ١ |
| إياكم : | ولقد وصينا الذين أوتوا الكتاب من قبلكم وإياكم أن اتقوا الله ... ... ... ... ... ... ... | ١٣١ | م النساء | ٤ |
| (٦) | ولا تقتلوا أولادكم خشية إملاق نحن نرزقهم وإياكم | ٣١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وكأين من دابة لا تحمل رزقها الله يرزقها وإياكم | ٦٠ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وإنا أو إياكم لعلى هدى أو فى ضلال مبين... ... | ٢٤ | ك سبإ | ٣٤ |
| | ثم يقول للملائكة أهؤلاء إياكم كانوا يعبدون... ... | ٤٠ | ك « | ٣٤ |
| | يخرجون الرسول وإياكم أن تؤمنوا بالله ربكم | ١ | م الممتحنة | ٦٠ |
| إيانا : | فزيلنا بينهم وقال شركاؤهم ما كنتم إيانا تعبدون | ٢٨ | ك يونس | ١٠ |
| (٢) | تبرأنا إليك ما كانوا إيانا يعبدون ... ... ... ... | ٦٣ | ك القصص | ٢٨ |
| إياه : | واشكروا لله إن كنتم إياه تعبدون ... ... ... ... | ١٧٢ | م البقرة | ٢ |
| (٨) | بل إياه تدعون فيكشف ما تدعون إليه إن شاء | ٤١ | ك الأنعام | ٦ |
| | وما كان استغفار إبراهيم لأبيه إلا عن موعدة وعدها إياه ... ... ... ... ... ... ... | ١١٤ | م التوبة | ٩ |
| | إن الحكم إلا لله أمر ألا تعبدوا إلا إياه ... ... | ٤٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | واشكروا نعمة الله إن كنتم إياه تعبدون ... ... | ١١٤ | ك النحل | ١٦ |
| | وقضى ربك ألا تعبدوا إلا إياه وبالوالدين إحسانا | ٢٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وإذا مسكم الضر فى البحر ضل من تدعون إلا إياه | ٦٧ | ك « | ١٧ |
| | واسجدوا لله الذى خلقهن إن كنتم إياه تعبدون | ٣٧ | ك فصلت | ٤١ |
| إياهم : | ولا تقتلوا أولادكم من إملاق نحن نرزقكم وإياهم | ١٥١ | م الأنعام | ٦ |
| إياى : | وأوفوا بعهدى أوف بعهدكم وإياى فارهبون | ٤٠ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | ولا تشتروا بآياتى ثمنا قليلا وإياى فاتقون ... ... | ٤١ | م « | ٢ |
| | قال رب لو شئت أهلكتهم من قبل وإياى ... ... | ١٥٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | إنما هو إله واحد فإياى فارهبون ... ... ... ... | ٥١ | ك النحل | ١٦ |
| | يا عبادى الذين آمنوا إن أرضى واسعة فإياى فاعبدون | ٥٦ | ك العنكبوت | ٢٩ |

# باب الباء



| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بَابِلَ : | وما أنزل على الملكين ببابل هاروت وماروت | ١٠٢ م | البقـرة | ٢ |
| بِئْرٍ : | فهي خاوية على عروشها وبئر معطلة وقصر مشيد | ٤٥ م | الحـج | ٢٢ |
| تَبْتَئِسْ : | فلا تبتئس بما كانوا يفعلون ... ... ... ... | ٣٦ ك | هـود | ١١ |
| (٢) | قال إني أنا أخوك فلا تبتئس بما كانوا يعملون | ٦٩ ك | يوسف | ١٢ |
| بَأْسِ : | والصابرين في البأساء والضراء وحين البأس | ١٧٧ م | البقـرة | ٢ |
| (٩) | عسى الله أن يكف بأس الذين كفروا ... ... ... | ٨٤ م | النسـاء | ٤ |
| | ويذيق بعضكم بأس بعض ... ... ... ... ... | ٦٥ ك | الأنعـام | ٦ |
| | بعثنا عليكم عبادا لنا أولي بأس شديد ... ... ... | ٥ ك | الإسراء | ١٧ |
| | قالوا نحن أولوا قوة وأولوا بأس شديد... ... ... | ٣٣ ك | النمـل | ٢٧ |
| | ولا يأتون البأس إلا قليلا... ... ... ... ... | ١٨ م | الأحزاب | ٣٣ |
| | فمن ينصرنا من بأس الله إن جاءنا ... ... ... ... | ٢٩ ك | غافـر | ٤٠ |
| | ستدعون إلى قوم أولي بأس شديد تقاتلونهم أو يسلمون | ١٦ م | الفتـح | ٤٨ |
| | وأنزلنا الحديد فيه بأس شديد ومنافع للناس ... ... | ٢٥ م | الحـديد | ٥٧ |
| بَأْسًا : | والله أشد بأسا وأشد تنكيلا... ... ... ... ... | ٨٤ م | النسـاء | ٤ |
| (٢) | قيما لينذر بأسا شديدا من لدنه ويبشر المؤمنين | ٢ ك | الكهف | ١٨ |
| بَأْسَكُمْ : | وجعل لكم سرابيل تقيكم الحر وسرابيل تقيكم بأسكم | ٨١ ك | النحـل | ١٦ |
| (٢) | وعلمناه صنعة لبوس لكم لتحصنكم من بأسكم ... ... | ٨٠ ك | الأنبيـاء | ٢١ |
| بَأْسُنَا : | فلولا إذ جاءهم بأسنا تضرعوا ... ... ... ... | ٤٣ ك | الأنعـام | ٦ |
| (١٠) | كذلك كذب الذين من قبلهم حتى ذاقوا بأسنا | ١٤٨ ك | « | ٦ |
| | وكم من قرية أهلكناها فجاءها بأسنا بياتا أو هم قائلون | ٤ ك | الأعراف | ٧ |
| | فما كان دعواهم إذ جاءهم بأسنا إلا أن قالوا إنا كنا ظالمين | ٥ ك | « | ٧ |
| | أفأمن أهل القرى أن يأتيهم بأسنا بياتا وهم نائمون | ٩٧ ك | « | ٧ |
| | أو أمن أهل القرى أن يأتيهم بأسنا ضحى وهم يلعبون | ٩٨ ك | « | ٧ |
| | فننجي من نشاء ولا يرد بأسنا عن القوم المجرمين | ١١٠ ك | يوسف | ١٢ |
| | فلما أحسوا بأسنا إذا هم منها يركضون ... ... ... | ١٢ ك | الأنبيـاء | ٢١ |
| | فلما رأوا بأسنا قالوا آمنا بالله وحده ... ... ... | ٨٤ ك | غافـر | ٤٠ |
| | فلم يك ينفعهم إيمانهم لما رأوا بأسنا ... ... ... | ٨٥ ك | « | ٤٠ |
| بَأْسُهُ : | ولا يرد بأسه عن القوم المجرمين ... ... ... | ١٤٧ ك | الأنعـام | ٦ |
| بَأْسُهُمْ : | بأسهم بينهم شديد تحسبهم جميعا وقلوبهم شتى | ١٤ م | الحشـر | ٥٩ |
| الْبَأْسَاءِ : | والصابرين في البأساء والضراء وحين البأس | ١٧٧ م | البقـرة | ٢ |
| (٤) | ولما يأتكم مثل الذين خلوا من قبلكم مستهم البأساء والضراء | ٢١٤ م | « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الْبَأْسَاءِ : | ولقد أرسلنا إلى أمم من قبلك فأخذناهم بالبأساء والضراء | ٤٢ ك | الأنعـام | ٦ |
| | وما أرسلنا في قرية من نبي إلا أخذنا أهلها بالبأساء والضراء | ٩٤ ك | الأعراف | ٧ |
| الْبَائِسَ : | فكلوا منها وأطعموا البائس الفقير ... ... ... | ٢٨ م | الحـج | ٢٢ |
| بِبَئِيسٍ : | وأخذنا الذين ظلموا بعذاب بئيس بما كانوا يفسقون | ١٦٥ م | الأعراف | ٧ |
| بِئْسَ : | ولبئس ما شروا به أنفسهم لو كانوا يعلمون | ١٠٢ م | البقـرة | ٢ |
| (٣٧) | ثم أضطره إلى عذاب النار وبئس المصير... ... ... | ١٢٦ م | « | ٢ |
| | أخذته العزة بالإثم فحسبه جهنم ولبئس المهاد... ... | ٢٠٦ م | « | ٢ |
| | ستغلبون وتحشرون إلى جهنم وبئس المهاد ... ... | ١٢ م | آل عمران | ٣ |
| | ومأواهم النار وبئس مثوى الظالمين... ... ... ... | ١٥١ م | « | ٣ |
| | أفمن اتبع رضوان الله كمن باء بسخط من الله ومأواه جهنم وبئس المصير ... ... ... ... ... | ١٦٢ م | « | ٣ |
| | واشتروا به ثمنا قليلا فبئس ما يشترون ... ... ... | ١٨٧ م | « | ٣ |
| | متاع قليل ثم مأواهم جهنم وبئس المهاد ... ... | ١٩٧ م | « | ٣ |
| | لبئس ما كانوا يعملون .. ... ... ... ... ... | ٦٢ م | المائدة | ٥ |
| | لبئس ما كانوا يصنعون... ... ... ... ... ... | ٦٣ م | « | ٥ |
| | كانوا لا يتناهون عن منكر فعلوه لبئس ما كانوا يفعلون | ٧٩ م | « | ٥ |
| | لبئس ما قدمت لهم أنفسهم أن سخط الله عليهم | ٨٠ م | « | ٥ |
| | فقد باء بغضب من الله ومأواه جهنم وبئس المصير | ١٦ م | الأنفـال | ٨ |
| | واغلظ عليهم ومأواهم جهنم وبئس المصير ... ... | ٧٣ م | التـوبة | ٩ |
| | يقدم قومه يوم القيامة فأوردهم النار وبئس الورد المورود | ٩٨ ك | هـود | ١٢ |
| | وأتبعوا في هذه لعنة ويوم القيامة بئس الرفد المرفود | ٩٩ ك | « | ١١ |
| | أولئك لهم سوء الحساب ومأواهم جهنم وبئس المهاد | ١٨ م | الرعـد | ١٣ |
| | جهنم يصلونها وبئس القرار ... ... ... ... ... | ٢٩ م | إبراهيم | ١٤ |
| | فادخلوا أبواب جهنم خالدين فيها فلبئس مثوى المتكبرين | ٢٩ ك | النحـل | ١٦ |
| | بئس للشاربين الشراب وساءت مرتفقا... .. | ٢٩ ك | الكهف | ١٨ |
| | وهم لكم عدو بئس للظالمين بدلا ... ... ... ... | ٥٠ ك | « | ١٨ |
| | يدعوا لمن ضره أقرب من نفعه لبئس المولى ... ... | ١٣ م | الحـج | ٢٢ |
| | ولبئس العشير ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٣ م | « | ٢٢ |
| | النار وعدها الله الذين كفروا وبئس المصير ... ... | ٧٢ م | « | ٢٢ |
| | ومأواهم النار ولبئس المصير ... ... ... ... ... | ٥٧ م | النـور | ٢٤ |
| | جهنم يصلونها فبئس المهاد... ... ... ... . | ٥٦ ك | ص | ٣٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بِئْسَ : | قالوا بل أنتم لا مرحبا بكم أنتم قدمتموه لنا فبئس القرار | ٦٠ | ك ص | ٣٨ |
| | ادخلوا أبواب جهنم خالدين فيها فبئس مثوى المتكبرين | ٧٢ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ادخلوا أبواب جهنم خالدين فيها فبئس مثوى المتكبرين | ٧٦ | ك غافر | ٤٠ |
| | يا ليت بيني و بينك بعد المشرقين فبئس القرين | ٣٨ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ولا تنابزوا بالألقاب بئس الاسم الفسوق بعد الإيمان | ١١ | م الحجرات | ٤٩ |
| | مأوا لم النار هي مولاكم وبئس المصير ... ... | ١٥ | م الحديد | ٥٧ |
| | حسبهم جهنم يصلونها فبئس المصير ... ... ... | ٨ | م المجادلة | ٥٨ |
| | بئس مثل القوم الذين كذبوا بآيات الله ... ... | ٥ | م الجمعة | ٦٢ |
| | أولئك أصحاب النار خالدين فيها وبئس المصير | ١٠ | م التغابن | ٦٤ |
| | واغلظ عليهم ومأواهم جهنم وبئس المصير ... ... | ٩ | م التحريم | ٦٦ |
| | وللذين كفروا بربهم عذاب جهنم وبئس المصير | ٦ | ك الملك | ٦٧ |
| بِئْسَمَا : | بئسما اشتروا به أنفسهم أن يكفروا بما أنزل الله | ٩٠ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | قل بئسما يأمركم به إيمانكم إن كنتم مؤمنين ... ... | ٩٣ | م « | ٢ |
| | بئسما خلفتموني من بعدي أعجلتم أمر ربكم ... ... | ١٥٠ | ك الأعراف | ٧ |
| الْأَبْتَرُ : | إن شانئك هو الأبتر ... ... ... ... ... | ٣ | ك الكوثر | ١٠٨ |
| فَلَيُبَتِّكُنَّ : | ولآمرنهم فليبتكن آذان الأنعام ... ... ... | ١١٩ | م النساء | ٤ |
| تَبَتَّلْ : | واذكر اسم ربك وتبتل إليه تبتيلا .. ... ... | ٨ | ك المزمل | ٧٣ |
| تَبْتِيلًا : | واذكر اسم ربك وتبتل إليه تبتيلا ... ... ... | ٨ | ك « | ٧٣ |
| بَثَّ : | فأحيا به الأرض بعد موتها وبث فيها من كل دابة | ١٦٤ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | وخلق منها زوجها وبث منهما رجالا كثيرا ونساء | ١ | م النساء | ٤ |
| | وألقى في الأرض رواسي أن تميد بكم وبث فيها من كل دابة | ١٠ | ك لقمان | ٣١ |
| | ومن آياته خلق السموات والأرض وما بث فيهما من دابة | ٢٩ | ك الشورى | ٤٢ |
| يَبُثُّ : | وفي خلقكم وما يبث من دابة آيات لقوم يوقنون | ٤ | ك الجاثية | ٤٥ |
| بَثِّي : | قال إنما أشكوا بثي وحزني إلى الله ... ... ... | ٨٦ | ك يوسف | ١٢ |
| الْمَبْثُوثُ : | يوم يكون الناس كالفراش المبثوث ... ... | ٤ | ك القارعة | ١٠١ |
| مَبْثُوثَةٌ : | ونمارق مصفوفة . وزرابي مبثوثة ... ... | ١٦ | ك الغاشية | ٨٨ |
| مُنْبَثًّا : | وبست الجبال بسا . فكانت هباء منبثا ... ... | ٦ | ك الواقعة | ٥٦ |
| فَانْبَجَسَتْ : | أن اضرب بعصاك الحجر فانبجست منه اثنتا عشرة عينا | ١٦٠ | ك الأعراف | ٧ |
| يَبْحَثُ : | فبعث الله غرابا يبحث في الأرض ... ... ... | ٣١ | م المائدة | ٥ |
| بَحْر : | وإذ فرقنا بكم البحر فأنجيناكم وأغرقنا آل فرعون | ٥٠ | م البقرة | ٢ |
| (٣٣) | والفلك التي تجري في البحر بما ينفع الناس ... ... | ١٦٤ | م « | ٢ |
| | أحل لكم صيد البحر وطعامه متاعا لكم وللسيارة | ٩٦ | م المائدة | ٥ |
| | وعنده مفاتح الغيب لا يعلمها إلا هو ويعلم ما في البر والبحر | ٥٩ | ك الأنعام | ٦ |
| | قل من ينجيكم من ظلمات البر والبحر تدعونه تضرعا | ٦٣ | ك « | ٦ |
| | وهو الذي جعل لكم النجوم لتهتدوا بها في ظلمات البر والبحر | ٩٧ | ك « | ٦ |
| | وجاوزنا ببني إسرائيل البحر ... ... ... ... | ١٣٨ | ك الأعراف | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بَحْر : | واسألهم عن القرية التي كانت حاضرة البحر ... ... | ١٦٣ | م الأعراف | ٧ |
| | هو الذي يسيركم في البر والبحر... ... ... ... | ٢٢ | ك يونس | ١٠ |
| | وجاوزنا ببني إسرائيل البحر فأتبعهم فرعون وجنوده | ٩٠ | ك « | ١٠ |
| | وسخر لكم الفلك لتجري في البحر بأمره وسخر لكم الأنهار | ٣٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وهو الذي سخر البحر لتأكلوا منه لحما طريا ... ... | ١٤ | ك النحل | ١٦ |
| | ربكم الذي يزجي لكم الفلك في البحر لتبتغوا من فضله | ٦٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وإذا مسكم الضر في البحر ضل من تدعون إلا إياه | ٦٧ | ك « | ١٧ |
| | ولقد كرمنا بني آدم وحملناهم في البر والبحر ... ... | ٧٠ | ك « | ١٧ |
| | فلما جاوزا فاتخذ سبيله في البحر سربا ... ... ... | ٦١ | ك الكهف | ١٨ |
| | واتخذ سبيله في البحر عجبا ... ... ... ... ... | ٦٣ | ك « | ١٨ |
| | أما السفينة فكانت لمساكين يعملون في البحر | ٧٩ | ك « | ١٨ |
| | قل لو كان البحر مدادا لكلمات ربي ... ... ... | ١٠٩ | ك « | ١٨ |
| | لنفد البحر قبل أن تنفد كلمات ربي... ... ... ... | ١٠٩ | ك « | ١٨ |
| | فاضرب لهم طريقا في البحر يبسا ... ... ... ... | ٧٧ | ك طه | ٢٠ |
| | سخر لكم ما في الأرض والفلك تجري في البحر بأمره | ٦٥ | م الحج | ٢٢ |
| | أو كظلمات في بحر لجي يغشاه موج من فوقه موج | ٤٠ | م النور | ٢٤ |
| | فأوحينا إلى موسى أن اضرب بعصاك البحر... ... | ٦٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | أمن يهديكم في ظلمات البر والبحر ... ... ... | ٦٣ | ك النمل | ٢٧ |
| | ظهر الفساد في البر والبحر بما كسبت أيدي الناس | ٤١ | ك الروم | ٣٠ |
| | والبحر يمده من بعده سبعة أبحر ما نفدت كلمات الله | ٢٧ | م لقمان | ٣١ |
| | ألم تر أن الفلك تجري في البحر بنعمة الله... ... | ٣١ | ك « | ٣١ |
| | ومن آياته الجوار في البحر كالأعلام ... ... ... | ٣٢ | ك الشورى | ٤٢ |
| | واترك البحر رهوا إنهم جند مغرقون ... ... ... | ٢٤ | ك الدخان | ٤٤ |
| | الله الذي سخر لكم البحر لتجري الفلك فيه بأمره | ١٢ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | والبحر المسجور . إن عذاب ربك لواقع ... ... | ٦ | ك الطور | ٥٢ |
| | وله الجوار المنشآت في البحر كالأعلام ... ... ... | ٢٤ | م الرحمن | ٥٥ |
| الْبَحْرَانِ : | وما يستوي البحران هذا عذب فرات سائغ | | | |
| | شرابه وهذا ملح أجاج ... ... ... ... ... | ١٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| الْبَحْرَيْنِ : | لا أبرح حتى أبلغ مجمع البحرين أو أمضي حقبا | ٦٠ | ك الكهف | ١٨ |
| (٤) | وهو الذي مرج البحرين هذا عذب فرات وهذا | | | |
| | ملح أجاج ... ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وجعل لها رواسي وجعل بين البحرين حاجزا | ٦١ | ك النمل | ٢٧ |
| | مرج البحرين يلتقيان . بينهما برزخ لا يبغيان | ١٩ | م الرحمن | ٥٥ |
| الْبِحَارُ : | وإذا البحار سجرت... ... ... ... ... ... | ٦ | ك التكوير | ٨١ |
| (٢) | وإذا البحار فجرت ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك الانفطار | ٨٢ |
| أَبْحُرٍ : | والبحر يمده من بعده سبعة أبحر ما نفدت كلمات الله | ٢٧ | م لقمان | ٣١ |
| بَحِيرَةٍ : | ما جعل الله من بحيرة ولا سائبة ولا وصيلة ولا حام | ١٠٣ | م المائدة | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَبْخَسُوا | : ولا تبخسوا الناس أشياءهم ... ... ... ... ... | ٨٥ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | ولا تبخسوا الناس أشياءهم ولا تعثوا في الأرض مفسدين | ٨٥ | ك هـود | ١١ |
| | ولا تبخسوا الناس أشياءهم ولا تعثوا في الأرض مفسدين | ١٨٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| يَبْخَسْ | : وليملل الذي عليه الحق وليتق الله ربه ولا يبخس منه شيئا | ٢٨٢ | م البقـرة | ٢ |
| يُبْخَسُون | : نوف إليهم أعمالهم فيها وهم فيها لا يبخسون | ١٥ | ك هـود | ١١ |
| بَخْس | : وشروه بثمن بخس دراهم معدودة وكانوا فيه من الزاهدين | ٢٠ | ك يوسف | ١٢ |
| بَخْسًا | : فمن يؤمن بربه فلا يخاف بخسا ولا رهقا ... | ١٣ | ك الجن | ٧٢ |
| بَاخِعٌ | : فلعلك باخع نفسك على آثارهم... ... ... ... | ٦ | ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | لعلك باخع نفسك ألا يكونوا مؤمنين ... ... ... | ٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| بَخِل | : وأما من بخل واستغنى . وكذب بالحسنى . فسنيسره للعسرى ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك الليـل | ٩٢ |
| بَخِلُوا | : سيطوقون ما بخلوا به يوم القيامة ... ... ... | ١٨٠ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | فلما آتاهم من فضله بخلوا به وتولوا وهم معرضون | ٧٦ | م التـوبة | ٩ |
| تَبْخَلُوا | : إن يسئلكموها فيحفكم تبخلوا ويخرج أضغانكم | ٣٧ | م محمـد | ٤٧ |
| يَبْخَل | : تدعون لتنفقوا في سبيل الله فمنكم من يبخل... ... | ٣٨ | م » | ٤٧٠ |
| (٣) | ومن يبخل ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | م » | ٤٧ |
| | فإنما يبخل عن نفسه والله الغني وأنتم الفقراء... ... | ٣٨ | م » | ٤٧ |
| يَبْخَلُون | : ولا يحسبن الذين يبخلون بما آتاهم الله من فضله | | | |
| (٣) | هو خيرا لهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٨٠ | م آل عمران | ٣ |
| | الذين يبخلون ويأمرون الناس بالبخل ويكتمون ما آتاهم الله من فضله... ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | م النسـاء | ٤ |
| | الذين يبخلون ويأمرون الناس بالبخل ومن يتول فإن الله هو الغني الحميد ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | م الحـديد | ٥٧ |
| البُخْل | : ويأمرون الناس بالبخل ويكتمون ما آتاهم الله | | | |
| (٢) | من فضله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | م النسـاء | ٤ |
| | ويأمرون الناس بالبخل ومن يتول فإن الله هو الغني الحميد ... ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | م الحـديد | ٥٧ |
| بَدَأَ | : فبدأ بأوعيتهم قبل وعاء أخيه ثم استخرجها من وعاء أخيه | ٧٦ | ك يوسف | ١٢ |
| (٣) | قل سيروا في الأرض فانظروا كيف بدأ الخلق | ٢٠ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | الذي أحسن كل شيء خلقه وبدأ خلق الإنسان من طين | ٧ | ك السجدة | ٣٢ |
| بَدَأَكُم | : وادعوه مخلصين له الدين كما بدأكم تعودون | ٢٩ | ك الأعراف | ٧ |
| بَدَءُوكُم | : وهموا بإخراج الرسول وهم بدءوكم أول مرة | ١٣ | م التـوبة | ٩ |
| بَدَأْنَا | : كما بدأنا أول خلق نعيده وعدا علينا إنا كنا فاعلين | ١٠٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| يَبْدَؤُ | : إنه يبدؤ الخلق ثم يعيده ... ... ... ... ... | ٤ | ك يـونس | ١٠ |
| (٦) | قل هل من شركائكم من يبدؤ الخلق ثم يعيده | ٣٤ | ك » | ١٠ |
| | قل الله يبدؤ الخلق ثم يعيده فأنى تؤفكون | ٣٤ | ك » | ١٠ |
| يَبْدَؤُ | : أمن يبدؤ الخلق ثم يعيده ومن يرزقكم من السماء والأرض | ٦٤ | ك النمـل | ٢٧ |
| | الله يبدؤ الخلق ثم يعيده ثم إليه ترجعون ... ... | ١١ | ك الروم | ٣٠ |
| | وهو الذي يبدؤ الخلق ثم يعيده وهو أهون عليه | ٢٧ | ك » | ٣٠ |
| يُبْدِئُ | : أو لم يروا كيف يبدئ الله الخلق ثم يعيده... ... | ١٩ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| (٣) | قل جاء الحق وما يبدئ الباطل وما يعيد ... ... ... | ٤٩ | ك سبـأ | ٣٤ |
| | إنه هو يبدئ ويعيد . وهو الغفور الودود... ... | ١٣ | ك البروج | ٨٥ |
| بَدْر | : ولقد نصركم الله ببدر وأنتم أذلة ... ... ... ... | ١٢٣ | م آل عمران | ٣ |
| بِدَارًا | : ولا تأكلوها إسرافا وبدارا أن يكبروا ... ... | ٦ | م النسـاء | ٤ |
| ابْتَدَعُوهَا | : ورهبانية ابتدعوها ما كتبناها عليهم ... ... | ٢٧ | م الحـديد | ٥٧ |
| بِدْعًا | : قل ما كنت بدعا من الرسل وما أدري ما يفعل بي ولا بكم | ٩ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| بَدِيعُ | : بديع السموات والأرض ... ... ... ... ... | ١١٧ | م البقـرة | ٢ |
| (٢) | بديع السموات والأرض أنى يكون له ولد ... ... | ١٠١ | ك الأنعام | ٦ |
| بَدَّلَ | : فبدل الذين ظلموا قولا غير الذي قيل لهم | ٥٩ | م البقـرة | ٢ |
| (٣) | فبدل الذين ظلموا منهم قولا غير الذي قيل لهم | ١٦٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | إلا من ظلم ثم بدل حسنا بعد سوء فإني غفور رحيم | ١١ | ك النمـل | ٢٧ |
| بَدَّلْنَا | : ثم بدلنا مكان السيئة الحسنة حتى عفوا ... .. | ٩٥ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | وإذا بدلنا آية مكان آية والله أعلم بما ينزل قالوا إنما أنت مفتر ... ... ... ... ... ... | ١٠١ | ك النحـل | ١٦ |
| | وإذا شئنا بدلنا أمثالهم تبديلا ... ... ... ... ... | ٢٨ | م الإنسان | ٧٦ |
| بَدَّلْنَاهُم | : كلما نضجت جلودهم بدلناهم جلودا غيرها | ٥٦ | م النسـاء | ٤ |
| (٢) | وبدلناهم بجنتيهم جنتين ذواتي أكل خمط وأثل | ١٦ | ك سبـأ | ٣٤ |
| بَدَّلَه | : فمن بدله بعد ما سمعه فإنما إثمه على الذين يبدلونه | ١٨١ | م البقـرة | ٢ |
| بَدَّلُوا | : ألم تر إلى الذين بدلوا نعمة الله كفرا ... ... | ٢٨ | م إبراهيم | ١٤ |
| (٢) | فمنهم من قضى نحبه ومنهم من ينتظر وما بدلوا تبديلا | ٢٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| أُبَدِّلَه | : قل ما يكون لي أن أبدله من تلقاء نفسي... ... | ١٥ | ك يونس | ١٠ |
| نُبَدِّلَ | : على أن نبدل أمثالكم وننشئكم في ما لا تعلمون | ٦١ | ك الواقعة | ٥٦ |
| (٢) | على أن نبدل خيرا منهم وما نحن بمسبوقين ... ... | ٤١ | ك المعارج | ٧٠ |
| يُبَدِّل | : ومن يبدل نعمة الله من بعد ما جاءته فإن الله شديد العقاب | ٢١١ | م البقـرة | ٢ |
| (٣) | فأولئك يبدل الله سيئاتهم حسنات... ... ... ... | ٧٠ | م الفرقان | ٢٥ |
| | إني أخاف أن يبدل دينكم أو أن يظهر في الأرض الفساد | ٢٦ | ك غافـر | ٤٠ |
| لَيُبَدِّلَنَّهُم | : وليبدلنهم من بعد خوفهم أمنا ... ... ... | ٥٥ | م النـور | ٢٤ |
| يُبَدِّلُوا | : يريدون أن يبدلوا كلام الله... ... ... ... | ١٥ | م الفتـح | ٤٨ |
| يُبَدِّلُونَه | : فمن بدله بعد ما سمعه فإنما إثمه على الذين يبدلونه | ١٨١ | م البقـرة | ٢ |
| بَدِّلْهُ | : قال الذين لا يرجون لقاءنا ائت بقرآن غير هذا أو بدله | ١٥ | ك يونس | ١٠ |
| تُبَدَّل | : يوم تبدل الأرض غير الأرض والسموات وبرزوا لله | ٤٨ | ك إبراهيم | ١٤ |
| يُبَدَّل | : ما يبدل القول لدي وما أنا بظلام للعبيد | ٢٩ | ك قـ | ٥٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يُبْدِلَنَا | عسى ربنا أن يبدلنا خيرا منها إنا إلى ربنا راغبون | ٣٢ | م القلم | ٦٨ |
| يُبْدِلَهُ | عسى ربه إن طلقكن أن يبدله أزواجا خيرا منكن | ٥ | م التحريم | ٦٦ |
| يُبْدِلَهُمَا | فأردنا أن يبدلهما ربهما خيرا منه زكاة وأقرب رحما | ٨١ | ك الكهف | ١٨ |
| تَبَدَّلَ | لا يحل لك النساء من بعد ولا أن تبدل بهن من أزواج | ٥٢ | م الأحزاب | ٣٣ |
| تَتَبَدَّلُوا | وآتوا اليتامى أموالهم ولا تتبدلوا الخبيث بالطيب | ٢ | م النساء | ٤ |
| يَتَبَدَّلِ | ومن يتبدل الكفر بالإيمان فقد ضل سواء السبيل | ١٠٨ | م البقرة | ٢ |
| تَسْتَبْدِلُونَ | قال أتستبدلون الذي هو أدنى بالذي هو خير | ٦١ | م « | ٢ |
| يَسْتَبْدِلْ | إلا تنفروا يعذبكم عذابا أليما ويستبدل قوما غيركم | ٣٩ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | وإن تتولوا يستبدل قوما غيركم ثم لا يكونوا أمثالكم | ٣٨ | م محمد | ٤٧ |
| بَدَلًا | وهم لكم عدو بئس للظالمين بدلا ... ... ... ... | ٥٠ | ك الكهف | ١٨ |
| تَبْدِيلَ | لا تبديل لكلمات الله ذلك هو الفوز الـ | ٦٤ | ك يونس | ١٠ |
| (٢) | لا تبديل لخلق الله ذلك الدين القيم... ... ... ... | ٣٠ | ك الروم | ٣٠ |
| تَبْدِيلًا | فمنهم من قضى نحبه ومنهم من ينتظر وما بدلوا تبديلا | ٢٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| (٥) | سنة الله في الذين خلوا من قبل ولن تجد لسنة الله تبديلا | ٦٢ | م « | ٣٣ |
| | فلن تجد لسنة الله تبديلا ولن تجد لسنة الله تحويلا | ٤٣ | ك فاطر | ٣٥ |
| | سنة الله التي قد خلت من قبل ولن تجد لسنة الله تبديلا | ٢٣ | م الفتح | ٤٨ |
| | وإذا شئنا بدلنا أمثالهم تبديلا... ... ... ... | ٢٨ | م الإنسان | ٧٦ |
| مُبَدِّلَ | ولا مبدل لكلمات الله ولقد جاءك من نبإ المرسلين | ٣٤ | ك الأنعام | ٦ |
| (٣) | وتمت كلمة ربك صدقا وعدلا لا مبدل لكلماته | ١١٥ | ك « | ٦ |
| | لا مبدل لكلماته ولن تجد من دونه ملتحدا ... ... | ٢٧ | ك الكهف | ١٨ |
| اسْتِبْدَالَ | وإن أردتم استبدال زوج مكان زوج وآتيتم | | | |
| | إحداهن قنطارا فلا تأخذوا منه شيئا ... ... | ٢٠ | م النساء | ٤ |
| بِبَدَنِكَ | فاليوم ننجيك ببدنك لتكون لمن خلفك آية | ٩٢ | ك يونس | ١٠ |
| وَالْبُدْنَ | والبدن جعلناها لكم من شعائر الله لكم فيها خير | ٣٦ | م الحج | ٢٢ |
| بَدَا | بل بدا لهم ما كانوا يخفون من قبل ... ... ... ... | ٢٨ | ك الأنعام | ٦ |
| (٦) | ثم بدا لهم من بعد ما رأوا الآيات ليسجننه حتى حين | ٣٥ | ك يوسف | ١٢ |
| | وبدا لهم من الله ما لم يكونوا يحتسبون ... ... ... | ٤٧ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وبدا لهم سيئات ما كسبوا وحاق بهم ما كانوا به يستهزءون | ٤٨ | ك « | ٣٩ |
| | وبدا لهم سيئات ما عملوا وحاق بهم ما كانوا به يستهزءون | ٣٣ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | كفرنا بكم وبدا بيننا وبينكم العداوة والبغضاء أبدا | ٤ | م الممتحنة | ٦٠ |
| بَدَتِ | قد بدت البغضاء من أفواههم وما تخفي صدورهم أكبر | ١١٨ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | فلما ذاقا الشجرة بدت لهما سوآتهما... ... ... ... | ٢٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | فأكلا منها فبدت لهما سوآتهما ... ... ... ... | ١٢١ | ك طه | ٢٠ |
| تُبْدُوا | إن تبدوا الصدقات فنعما هي ... ... ... ... | ٢٧١ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | وإن تبدوا ما في أنفسكم أو تخفوه يحاسبكم به الله | ٢٨٤ | م « | ٢ |
| | إن تبدوا خيرا أو تخفوه أو تعفوا عن سوء فإن الله | | | |
| | كان عفوا قديرا ... ... ... ... ... ... | ١٤٩ | م النساء | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تُبْدُوا | إن تبدوا شيئا أو تخفوه فإن الله كان بكل شيء عليما | ٥٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| تُبْدُونَ | وأعلم ما تبدون وما كنتم تكتمون ... ... ... ... | ٣٣ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | ما على الرسول إلا البلاغ والله يعلم ما تبدون وما تكتمون | ٩٩ | م المائدة | ٥ |
| | والله يعلم ما تبدون وما تكتمون... ... ... ... | ٢٩ | م النور | ٢٤ |
| تُبْدُونَهَا | تجعلونه قراطيس تبدونها وتخفون كثيرا... ... ... | ٩١ | م الأنعام | ٦ |
| تُبْدُوهُ | قل إن تخفوا ما في صدوركم أو تبدوه يعلمه الله | ٢٩ | م آل عمران | ٣ |
| لَتُبْدِي | إن كادت لتبدي به لولا أن ربطنا على قلبها | ١٠ | ك القصص | ٢٨ |
| يُبْدِهَا | فأسرها يوسف في نفسه ولم يبدها لهم ... ... | ٧٧ | ك يوسف | ١٢ |
| يُبْدُونَ | يخفون في أنفسهم ما لا يبدون لك ... ... ... ... | ١٥٤ | م آل عمران | ٣ |
| لِيُبْدِيَ | فوسوس لهما الشيطان ليبدي لهما ما ووري عنهما | ٢٠ | ك الأعراف | ٧ |
| يُبْدِينَ | ويحفظن فروجهن ولا يبدين زينتهن إلا ما ظهر منها | ٣١ | م النور | ٢٤ |
| (٢) | ولا يبدين زينتهن إلا لبعولتهن أو آبائهن ... ... | ٣١ | م « | ٢٤ |
| تُبْدَ | يا أيها الذين آمنوا لا تسألوا عن أشياء إن تبد لكم تسؤكم | ١٠١ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | وإن تسألوا عنها حين ينزل القرآن تبد لكم عفا الله عنها | ١٠١ | م « | ٥ |
| الْبَدْوِ | وجاء بكم من البدو ... ... ... ... ... ... | ١٠٠ | ك يوسف | ١٢ |
| الْبَادِ | والمسجد الحرام الذي جعلناه للناس سواء | | | |
| | العاكف فيه والباد ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | م الحج | ٢٢ |
| بَادِيَ | وما نراك اتبعك إلا الذين هم أراذلنا بادي الرأي | ٢٧ | ك هود | ١١ |
| بَادُونَ | وإن يأت الأحزاب يودوا لو أنهم بادون في الأعراب | ٢٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| مُبْدِيهِ | وتخفي في نفسك ما الله مبديه ... ... ... ... | ٣٧ | م « | ٣٣ |
| تُبَذِّرْ | وآت ذا القربى حقه والمسكين وابن السبيل ولا تبذر | ٢٦ | م الإسراء | ١٧ |
| تَبْذِيرًا | ولا تبذر تبذيرا ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | م « | ١٧ |
| الْمُبَذِّرِينَ | إن المبذرين كانوا إخوان الشياطين ... ... | ٢٧ | ك « | ١٧ |
| نَبْرَأَهَا | ما أصاب من مصيبة في الأرض ولا في أنفسكم | | | |
| | إلا في كتاب من قبل أن نبرأها... ... ... ... | ٢٢ | م الحديد | ٥٧ |
| أُبْرِئُ | وأبرىء الأكمه والأبرص وأحيي الموتى بإذن الله | ٤٩ | م آل عمران | ٣ |
| تُبْرِئُ | وتبرىء الأكمه والأبرص بإذني ... ... ... ... | ١١٠ | م المائدة | ٥ |
| بَرَّأَهُ | لا تكونوا كالذين آذوا موسى فبرأه الله مما قالوا | ٦٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| أُبَرِّئُ | وما أبرئ نفسي... ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك يوسف | ١٢ |
| تَبَرَّأَ | إذ تبرأ الذين اتبعوا من الذين اتبعوا ورأوا العذاب | ١٦٦ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | فلما تبين له أنه عدو لله تبرأ منه إن إبراهيم لأواه حليم | ١١٤ | م التوبة | ٩ |
| تَبَرَّأْنَا | أغويناهم كما غوينا تبرأنا إليك ما كانوا إيانا يعبدون | ٦٣ | ك القصص | ٢٨ |
| تَبَرَّؤُا | وقال الذين اتبعوا لو أن لنا كرة فنتبرأ منهم كما تبرؤا منا | ١٦٧ | م البقرة | ٢ |
| نَتَبَرَّأَ | وقال الذين اتبعوا لو أن لنا كرة فنتبرأ منهم... ... | ١٦٧ | م « | ٢ |
| بَرِيءٌ | قل إنما هو إله واحد وإنني بريء مما تشركون | ١٩ | ك الأنعام | ٦ |
| (٩) | | | | |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بَرِيءٌ: | فلما أفلت قال ياقوم إنى برىء مما تشركون... ... | ٧٨ | ك الأنعام | ٦ |
| | إنى برىء منكم إنى أرى مالا ترون ... ... ... ... | ٤٨ | م الأنفال | ٨ |
| | أن الله برىء من المشركين ورسوله... ... ... ... | ٣ | م التوبة | ٩ |
| | أنتم بريئون مما أعمل وأنا برىء مما تعملون | ٤١ | ك يونس | ١٠ |
| | قل إن افتريته فعلىّ إجرامى وأنا برىء مما تجرمون | ٣٥ | ك هود | ١١ |
| | قال إنى أشهد الله وأشهدوا أنى برىء مما تشركون | ٥٤ | ك « | ١١ |
| | فإن عصوك فقل إنى برىء مما تعملون ... ... ... | ٢١٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | إنى برىء منك إنى أخاف الله رب العالمين... ... | ١٦ | م الحشر | ٥٩ |
| بَرِيئًا: | ومن يكسب خطيئة أو إثما ثم يرم به بريئا فقد احتمل بهتانا وإثما مبينا ... ... ... ... | ١١٢ | م النساء | ٤ |
| بَرِيئُونَ: | فقل لى عملى ولكم عملكم أنتم بريئون مما أعمل | ٤١ | ك يونس | ١٠ |
| بَرَاءٌ: | وإذ قال إبراهيم لأبيه وقومه إننى براء مما تعبدون | ٢٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| بُرَآءُ: | إنا برءاء منكم ومما تعبدون من دون الله | ٤ | م الممتحنة | ٦٠ |
| بَرَاءَةٌ: | براءة من الله ورسوله إلى الذين عاهدتم من المشركين | ١ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | أكفاركم خير من أولئكم أم لكم براءة فى الزبر | ٤٣ | ك القمر | ٥٤ |
| الْبَرِيَّةِ: | أولئك هم شر البرية ... ... ... ... ... ... | ٦ | م البينة | ٩٨ |
| (٢) | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات أولئك هم خير البرية | ٧ | م « | ٩٨ |
| الْبَارِئُ: | هو الله الخالق البارىء المصور له الأسماء الحسنى | ٢٤ | م الحشر | ٥٩ |
| بَارِئِكُمْ: | إنكم ظلمتم أنفسكم باتخاذكم العجل فتوبوا إلى بارئكم ... ... ... ... ... ... | ٥٤ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | فاقتلوا أنفسكم ذلكم خير لكم عند بارئكم... ... ... | ٥٤ | م « | ٢ |
| مُبَرَّءُونَ: | أولئك مبرءون مما يقولون لهم مغفرة ورزق كريم | ٢٦ | م النور | ٢٤ |
| تَبَرُّجَ: | وقرن فى بيوتكن ولا تبرجن تبرج الجاهلية الأولى | ٣٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| تَبَرُّجٍ: | ولا تبرجن تبرج الجاهلية الأولى ... ... ... ... | ٣٣ | م « | ٣٣ |
| مُتَبَرِّجَاتٍ: | فليس عليهن جناح أن يضعن ثيابهن غير متبرجات بزينة ... ... ... ... ... ... | ٦٠ | م النور | ٢٤ |
| بُرُوجٍ: | أينما تكونوا يدرككم الموت ولو كنتم فى بروج مشيدة | ٧٨ | م النساء | ٤ |
| (٢) | والسماء ذات البروج ... ... ... ... ... ... | ١ | ك البروج | ٨٥ |
| بُرُوجًا: | ولقد جعلنا فى السماء بروجا وزيناها للناظرين | ١٦ | ك الحجر | ١٥ |
| (٢) | تبارك الذى جعل فى السماء بروجا ... ... ... ... | ٦١ | ك الفرقان | ٢٥ |
| أَبْرَحَ: | فلن أبرح الأرض حتى يأذن لى أبى أو يحكم الله لى | ٨٠ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | لا أبرح حتى أبلغ مجمع البحرين أو أمضى حقبا | ٦٠ | ك الكهف | ١٨ |
| نَبْرَحَ: | قالوا لن نبرح عليه عاكفين حتى يرجع إلينا موسى | ٩١ | ك طه | ٢٠ |
| بَرْدًا: | قلنا يا نار كونى بردا وسلاما على إبراهيم ... ... | ٦٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٢) | لا يذوقون فيها بردا ولا شرابا ... ... ... ... | ٢٤ | ك النبأ | ٧٨ |
| بَرَدٍ: | وينزل من السماء من جبال فيها من برد ... ... ... | ٤٣ | م النور | ٢٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بَارِدٍ: | اركض برجلك هذا مغتسل بارد وشراب ... ... | ٤٢ | ك ص | ٣٨ |
| (٢) | وظل من يحموم . لا بارد ولا كريم... ... ... ... | ٤٤ | ك الواقعة | ٥٦ |
| تَبَرُّوا: | ولا تجعلوا الله عرضة لأيمانكم أن تبروا وتتقوا | ٢٢٤ | م البقرة | ٢ |
| تَبَرُّوهُمْ: | ولم يخرجوكم من دياركم أن تبروهم وتقسطوا إليهم | ٨ | م الممتحنة | ٦٠ |
| الْبَرُّ: | إنا كنا من قبل ندعوه إنه هو البر الرحيم ... ... | ٢٨ | ك الطور | ٥٢ |
| بَرًّا: | وبرا بوالديه ولم يكن جبارا عصيا ... ... ... ... | ١٤ | ك مريم | ١٩ |
| (٢) | وبرا بوالدتى ولم يجعلنى جبارا شقيا... ... ... ... | ٣٢ | ك « | ١٩ |
| الْأَبْرَارِ: | ربنا فاغفر لنا ذنوبنا وكفر عنا سيئاتنا وتوفنا مع الأبرار | ١٩٣ | م آل عمران | ٣ |
| (٦) | نزلا من عند الله وما عند الله خير للأبرار ... ... | ١٩٨ | ك « | ٣ |
| | إن الأبرار يشربون من كأس كان مزاجها كافورا | ٥ | م الإنسان | ٧٦ |
| | إن الأبرار لفى نعيم . وإن الفجار لفى جحيم... ... | ١٣ | ك الانفطار | ٨٢ |
| | كلا إن كتاب الأبرار لفى عليين ... ... ... ... | ١٨ | ك المطففين | ٨٣ |
| | إن الأبرار لفى نعيم . على الأرائك ينظرون... ... | ٢٢ | ك « | ٨٣ |
| الْبِرَّ: | أتأمرون الناس بالبر وتنسون أنفسكم وأنتم تتلون الكتاب | ٤٤ | م البقرة | ٢ |
| (٨) | ليس البر أن تولوا وجوهكم قبل المشرق والمغرب | ١٧٧ | م « | ٢ |
| | ولكن البر من آمن بالله واليوم الآخر والملائكة والكتاب | ١٧٧ | م « | ٢ |
| | وليس البر بأن تأتوا البيوت من ظهورها ... ... | ١٨٩ | م « | ٢ |
| | ولكن البر من اتقى وأتوا البيوت من أبوابها ... ... | ١٨٩ | م « | ٢ |
| | لن تنالوا البر حتى تنفقوا مما تحبون ... ... ... | ٩٢ | م آل عمران | ٣ |
| | وتعاونوا على البر والتقوى ولا تعاونوا على الإثم والعدوان | ٢ | م المائدة | ٥ |
| | وتناجوا بالبر والتقوى واتقوا الله الذى إليه تحشرون | ٩ | م المجادلة | ٥٨ |
| بَرَرَةٍ: | بأيدى سفرة . كرام بررة ... ... ... ... ... | ١٦ | ك عبس | ٨٠ |
| الْبَرِّ: | وحرم عليكم صيد البر ما دمتم حرما ... ... ... ... | ٩٦ | م المائدة | ٥ |
| (١٢) | ويعلم ما فى البر والبحر وما تسقط من ورقة إلا يعلمها | ٥٩ | ك الأنعام | ٦ |
| | قل من ينجيكم من ظلمات البر والبحر تدعونه تضرعا وخفية | ٦٣ | ك « | ٦ |
| | جعل لكم النجوم لتهتدوا بها فى ظلمات البر والبحر | ٩٧ | ك « | ٦ |
| | هو الذى يسيركم فى البر والبحر ... ... ... ... | ٢٢ | ك يونس | ١٠ |
| | فلما نجاكم إلى البر أعرضتم وكان الإنسان كفورا | ٦٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| | أفأمنتم أن يخسف بكم جانب البر أو يرسل عليكم حاصبا | ٦٨ | ك « | ١٧ |
| | ولقد كرمنا بنى آدم وحملناهم فى البر والبحر ... ... | ٧٠ | ك « | ١٧ |
| | أمن يهديكم فى ظلمات البر والبحر ومن يرسل الرياح بشرا | ٦٣ | ك النمل | ٢٧ |
| | دعوا الله مخلصين له الدين فلما نجاهم إلى البر إذا هم يشركون | ٦٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ظهر الفساد فى البر والبحر بما كسبت أيدى الناس | ٤١ | ك الروم | ٣٠ |
| | دعوا الله مخلصين له الدين فلما نجاهم إلى البر فمنهم مقتصد | ٣٢ | ك لقمان | ٣١ |
| بَرَزَ: | قل لو كنتم فى بيوتكم لبرز الذين كتب عليهم القتل | ١٥٤ | م آل عمران | ٣ |
| بَرَزُوا: | ولما برزوا لجالوت وجنوده قالوا ربنا أفرغ علينا صبرا | ٢٥٠ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | فإذا برزوا من عندك بيت طائفة منهم غير الذى تقول | ٨١ | م النساء | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بَرَزُوا | : وبرزوا لله جميعا فقال الضعفاء للذين استكبروا | | | |
| | إنا كنا لكم تبعا ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وبرزوا لله الواحد القهار ... ... ... ... ... | ٤٨ | ك « | ١٤ |
| بُرِّزَتْ | : وأزلفت الجنة للمتقين . وبرزت الجحيم للغاوين | ٩١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| (٢) | وبرزت الجحيم لمن يرى ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك النازعات | ٧٩ |
| بَارِزَةً | : وترى الأرض بارزة وحشرناهم فلم نغادر منهم أحدا | ٤٧ | ك الكهف | ١٨ |
| بَارِزُونَ | : يوم هم بارزون لا يخفى على الله منهم شيء | ١٦ | ك غافر | ٤٠ |
| بَرْزَخٌ | : ومن ورائهم برزخ إلى يوم يبعثون ... ... ... | ١٠٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٢) | مرج البحرين يلتقيان . بينهما برزخ لا يبغيان | ٢٠ | م الرحمن | ٥٥ |
| بَرْزَخًا | : وجعل بينهما برزخا وحجرا محجورا ... ... ... | ٥٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| الْأَبْرَصَ | : وأبرىء الأكمه والأبرص وأحيي الموتى بإذن الله | ٤٩ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | وتبرىء الأكمه والأبرص بإذني ... ... ... ... | ١١٠ | م المائدة | ٥ |
| بَرِقَ | : فإذا برق البصر . وخسف القمر . وجمع الشمس والقمر | ٧ | ك القيامة | ٧٥ |
| بَرْقٌ | : أو كصيب من السماء فيه ظلمات ورعد وبرق ... ... | ١٩ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | يكاد البرق يخطف أبصارهم كلما أضاء لهم مشوا فيه | ٢٠ | م « | ٢ |
| | هو الذي يريكم البرق خوفا وطمعا وينشىء السحاب الثقال | ١٢ | م الرعد | ١٣ |
| | ومن آياته يريكم البرق خوفا وطمعا وينزل من السماء ماء | ٢٤ | ك الروم | ٣٠ |
| بَرْقُهُ | : يكاد سنا برقه يذهب بالأبصار ... ... ... ... | ٤٣ | م النور | ٢٤ |
| أَبَارِيقَ | : يطوف عليهم ولدان مخلدون . بأكواب وأباريق | ١٨ | ك الواقعة | ٥٦ |
| إِسْتَبْرَقٍ | : ويلبسون ثيابا خضرا من سندس وإستبرق | ٣١ | ك الكهف | ١٨ |
| (٤) | يلبسون من سندس وإستبرق متقابلين ... ... ... | ٥٣ | ك الدخان | ٤٤ |
| | متكئين على فرش بطائنها من إستبرق وجنى الجنتين دان | ٥٤ | م الرحمن | ٥٥ |
| | عاليهم ثياب سندس خضر وإستبرق ... ... ... ... | ٢١ | م الإنسان | ٧٦ |
| بَارَكْتَ | : وجعل فيها رواسي من فوقها وبارك فيها ... ... | ١٠ | ك فصلت | ٤١ |
| بَارَكْنَا | : وأورثنا القوم الذين كانوا يستضعفون مشارق | | | |
| (٦) | الأرض ومغاربها التي باركنا فيها ... ... ... | ١٣٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | إلى المسجد الأقصى الذي باركنا حوله لنريه من آياتنا | ١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ونجيناه ولوطا إلى الأرض التي باركنا فيها للعالمين | ٧١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | تجري بأمره إلى الأرض التي باركنا فيها ... ... ... | ٨١ | ك « | ٢١ |
| | وجعلنا بينهم وبين القرى التي باركنا فيها قرى ظاهرة | ١٨ | ك سبأ | ٣٤ |
| | وباركنا عليه وعلى إسحق ومن ذريتهما محسن وظالم | | | |
| | لنفسه مبين ... ... ... ... ... ... | ١١٣ | ك الصافات | ٣٧ |
| بُورِكَ | : فلما جاءها نودي أن بورك من في النار ومن حولها | ٨ | ك النمل | ٢٧ |
| تَبَارَكَ | : ألا له الخلق والأمر تبارك الله رب العالمين | ٥٤ | ك الأعراف | ٧ |
| (٩) | ثم أنشأناه خلقا آخر فتبارك الله أحسن الخالقين | ١٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | تبارك الذي نزل الفرقان على عبده ليكون للعالمين نذيرا | ١ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | تبارك الذي إن شاء جعل لك خيرا من ذلك ... ... | ١٠ | ك « | ٢٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَبَارَكَ | : تبارك الذي جعل في السماء بروجا وجعل فيها | | | |
| | سراجا وقمرا منيرا ... ... ... ... ... ... | ٦١ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ذلكم الله ربكم فتبارك الله رب العالمين ... ... | ٦٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | وتبارك الذي له ملك السموات والأرض وما بينهما | ٨٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | تبارك اسم ربك ذي الجلال والإكرام ... ... ... | ٧٨ | م الرحمن | ٥٥ |
| | تبارك الذي بيده الملك وهو على كل شيء قدير | ١ | ك الملك | ٦٧ |
| بَرَكَاتٍ | : لفتحنا عليهم بركات من السماء والأرض ... ... | ٩٦ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | اهبط بسلام منا وبركات عليك وعلى أمم ممن معك | ٤٨ | ك هود | ١١ |
| بَرَكَاتُهُ | : رحمة الله وبركاته عليكم أهل البيت إنه حميد مجيد | ٧٣ | ك « | ١١ |
| مُبَارَكٌ | : وهذا كتاب أنزلناه مبارك مصدق الذي بين يديه | ٩٢ | ك الأنعام | ٦ |
| (٤) | وهذا كتاب أنزلناه مبارك فاتبعوه واتقوا لعلكم ترحمون | ١٥٥ | ك « | ٦ |
| | وهذا ذكر مبارك أنزلناه أفأنتم له منكرون ... ... | ٥٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | كتاب أنزلناه إليك مبارك ليدبروا آياته ... ... | ٢٩ | ك ص | ٣٨ |
| مُبَارَكًا | : إن أول بيت وضع للناس للذي ببكة مباركا | | | |
| (٤) | وهدى للعالمين ... ... ... ... ... ... | ٩٦ | م آل عمران | ٣ |
| | وجعلني مباركا أين ما كنت وأوصاني بالصلاة والزكاة | ٣١ | ك مريم | ١٩ |
| | وقل رب أنزلني منزلا مباركا وأنت خير المنزلين | ٢٩ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ونزلنا من السماء ماء مباركا فأنبتنا به جنات وحب الحصيد | ٩ | ك ق | ٥٠ |
| مُبَارَكَةٍ | : كأنها كوكب دري يوقد من شجرة مباركة زيتونة | ٣٥ | م النور | ٢٤ |
| (٤) | فسلموا على أنفسكم تحية من عند الله مباركة طيبة | ٦١ | م « | ٢٤ |
| | فلما أتاها نودي من شاطىء الواد الأيمن في البقعة | | | |
| | المباركة من الشجرة ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك القصص | ٢٨ |
| | إنا أنزلناه في ليلة مباركة إنا كنا منذرين ... ... | ٣ | ك الدخان | ٤٤ |
| أَبْرَمُوا | : أم أبرموا أمرا فإنا مبرمون ... ... ... ... | ٧٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| مُبْرِمُونَ | : أم أبرموا أمرا فإنا مبرمون ... ... ... ... | ٧٩ | ك « | ٤٣ |
| بُرْهَانٌ | : يأيها الناس قد جاءكم برهان من ربكم ... ... ... | ١٧٤ | م النساء | ٤ |
| (٣) | ولقد همت به وهم بها لولا أن رأى برهان ربه | ٢٤ | ك يوسف | ١٢ |
| | ومن يدع مع الله إلها آخر لا برهان له به فإنما | | | |
| | حسابه عند ربه ... ... ... ... ... ... | ١١٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| بُرْهَانَكُمْ | : تلك أمانيهم قل هاتوا برهانكم إن كنتم صادقين | ١١١ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | أم اتخذوا من دونه آلهة قل هاتوا برهانكم ... ... | ٢٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | إله مع الله قل هاتوا برهانكم إن كنتم صادقين | ٦٤ | ك النمل | ٢٧ |
| | ونزعنا من كل أمة شهيدا فقلنا هاتوا برهانكم | ٧٥ | ك القصص | ٢٨ |
| بُرْهَانَانِ | : فذانك برهانان من ربك إلى فرعون وملئه | ٣٢ | ك « | ٢٨ |
| بَازِغًا | : فلما رأى القمر بازغا قال هذا ربي ... ... ... | ٧٧ | ك الأنعام | ٦ |
| بَازِغَةً | : فلما رأى الشمس بازغة قال هذا ربي هذا أكبر | ٧٨ | ك « | ٦ |
| بَسَرَ | : ثم نظر . ثم عبس وبسر . ثم أدبر واستكبر | ٢٢ | ك المدثر | ٧٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بَاسِرَةٌ | : ووجوه يومئذ باسرة . تظن أن يفعل بها فاقرة | ٢٤ | ك القيامة | ٧٥ |
| بُسَّتِ | : إذا رجت الأرض رجا . وبست الجبال بسا | ٥ | ك الواقعة | ٥٦ |
| بَسًّا | : إذا رجت الأرض رجا . وبست الجبال بسا | ٥ | ك « | ٥٦ |
| بَسَطَ | : ولو بسط الله الرزق لعباده لبغوا فى الأرض | ٢٧ | م الشورى | ٤٢ |
| بَسَطْتَ | : لئن بسطت إلىّ يدك لتقتلنى ما أنا بباسط يدى إليك لأقتلك ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م المائدة | ٥ |
| تَبْسُطْهَا | : ولا تجعل يدك مغلولة إلى عنقك ولا تبسطها كل البسط ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| يَبْسُطُ | : والله يقبض ويبسط وإليه ترجعون ... ... | ٢٤٥ | م البقرة | ٢ |
| (١٠) | الله يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ... ... ... ... | ٢٦ | م الرعد | ١٣ |
| | إن ربك يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ... ... ... | ٣٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ويكأن الله يبسط الرزق لمن يشاء من عباده ويقدر | ٨٢ | ك القصص | ٢٨ |
| | الله يبسط الرزق لمن يشاء من عباده ويقدر له | ٦٢ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | أو لم يروا أن الله يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر | ٣٧ | ك الروم | ٣٠ |
| | قل إن ربى يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ... ... | ٣٦ | ك سبأ | ٣٤ |
| | قل إن ربى يبسط الرزق لمن يشاء من عباده ويقدر له | ٣٩ | ك « | ٣٤ |
| | أو لم يعلموا أن الله يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر | ٥٢ | م الزمر | ٣٩ |
| | يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر إنه بكل شىء عليم | ١٢ | ك الشورى | ٤٢ |
| يَبْسُطُهُ | : الله الذى يرسل الرياح فتثير سحابا فيبسطه فى السماء | ٤٨ | ك الروم | ٣٠ |
| يَبْسُطُوا | : إذ هم قوم أن يبسطوا إليكم أيديهم فكف أيديهم | ١١ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | إن يثقفوكم يكونوا لكم أعداء ويبسطوا إليكم أيديهم | ٢ | م الممتحنة | ٦٠ |
| بَاسِط | : لئن بسطت إلىّ يدك لتقتلنى ما أنا بباسط يدى إليك | ٢٨ | م المائدة | ٥ |
| (٣) | لا يستجيبون لهم بشىء إلا كباسط كفيه إلى الماء | ١٤ | م الرعد | ١٣ |
| | وكلبهم باسط ذراعيه بالوصيد ... ... ... ... ... | ١٨ | ك الكهف | ١٨ |
| بَاسِطُوا | : والملائكة باسطوا أيديهم أخرجوا أنفسكم | ٩٣ | م الأنعام | ٦ |
| الْبَسْطِ | : ولا تبسطها كل البسط فتقعد ملوما محسورا | ٢٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| بِسَاطًا | : والله جعل لكم الأرض بساطا ... ... ... ... | ١٩ | ك نوح | ٧١ |
| بَسْطَةً | : قال إن الله اصطفاه عليكم وزاده بسطة فى العلم والجسم | ٢٤٧ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | وزادكم فى الخلق بسطة ... ... ... ... ... ... | ٦٩ | ك الأعراف | ٧ |
| مَبْسُوطَتَانِ | : بل يداه مبسوطتان ينفق كيف يشاء ... ... | ٦٤ | م المائدة | ٥ |
| بَاسِقَاتٍ | : والنخل باسقات لها طلع نضيد .. ... ... ... | ١٠ | ك ق | ٥٠ |
| أُبْسِلُوا | : أولئك الذين أبسلوا بما كسبوا لهم شراب من حميم | ٧٠ | ك الأنعام | ٦ |
| تُبْسَلَ | : وذكر به أن تبسل نفس بما كسبت ... ... ... | ٧٠ | ك « | ٦ |
| تَبَسَّمَ | : فتبسم ضاحكا من قولها وقال رب أوزعنى أن أشكر نعمتك | ١٩ | ك النمل | ٢٧ |
| أَبَشَّرْتُمُونِى | : قال أبشرتمونى على أن مسنى الكبر فبم تبشرون | ٥٤ | ك الحجر | ١٥ |
| بَشَّرْنَاكَ | : قالوا بشرناك بالحق فلا تكن من القانطين ... ... | ٥٥ | ك « | ١٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بَشَّرْنَاهُ | : فبشرناه بغلام حليم ... ... ... ... ... ... ... | ١٠١ | ك الصافات | ٣٧ |
| (٢) | وبشرناه بإسحق نبيا من الصالحين ... ... ... ... | ١١٢ | ك « | ٣٧ |
| فَبَشَّرْنَاهَا | : وامرأته قائمة فضحكت فبشرناها بإسحق | ٧١ | ك هود | ١١ |
| بَشَّرُوهُ | : فأوجس منهم خيفة قالوا لا تخف وبشروه بغلام عليم | ٢٨ | ك الذاريات | ٥١ |
| لِيُبَشِّرَ | : فإنما يسرناه بلسانك لتبشر به المتقين وتنذر به قوما لدا | ٩٧ | ك مريم | ١٩ |
| تُبَشِّرُونَ | : قال أبشرتمونى على أن مسنى الكبر فبم تبشرون | ٥٤ | ك الحجر | ١٥ |
| نُبَشِّرُكَ | : قالوا لا توجل إنا نبشرك بغلام عليم ... ... | ٥٣ | ك « | ١٥ |
| (٢) | يا زكريا إنا نبشرك بغلام اسمه يحيى ... ... ... | ٧ | ك مريم | ١٩ |
| يُبَشِّرُ | : ويبشر المؤمنين الذين يعملون الصالحات ... ... | ٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٣) | ويبشر المؤمنين الذين يعملون الصالحات أن لهم أجرا حسنا | ٢ | ك الكهف | ١٨ |
| | ذلك الذى يبشر الله عباده الذين آمنوا وعملوا الصالحات | ٢٣ | م الشورى | ٤٢ |
| يُبَشِّرُكِ | : أن الله يبشرك بيحيى مصدقا بكلمة من الله وسيدا | ٣٩ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | إذ قالت الملائكة يا مريم إن الله يبشرك بكلمة منه | ٤٥ | م « | ٣ |
| يُبَشِّرُهُمْ | : يبشرهم ربهم برحمة منه ورضوان وجنات لهم فيها نعيم | ٢١ | م التوبة | ٩ |
| بَشِّرْ | : وبشر الذين آمنوا وعملوا الصالحات أن لهم جنات | ٢٥ | م البقرة | ٢ |
| (١٣) | ونقص من الأموال والأنفس والثمرات وبشر الصابرين | ١٥٥ | م « | ٢ |
| | واتقوا الله واعلموا أنكم ملاقوه وبشر المؤمنين | ٢٢٣ | م « | ٢ |
| | بشر المنافقين بأن لهم عذابا أليما ... ... ... ... | ١٣٨ | م النساء | ٤ |
| | وبشر الذين كفروا بعذاب أليم ... ... ... ... ... | ٣ | م التوبة | ٩ |
| | والناهون عن المنكر والحافظون لحدود الله وبشر المؤمنين | ١١٢ | م « | ٩ |
| | وبشر الذين آمنوا أن لهم قدم صدق عند ربهم | ٢ | ك يونس | ١٠ |
| | واجعلوا بيوتكم قبلة وأقيموا الصلاة وبشر المؤمنين | ٨٧ | ك « | ١٠ |
| | فإلهكم إله واحد فله أسلموا وبشر المخبتين ... ... | ٣٤ | م الحج | ٢٢ |
| | لتكبروا الله على ما هداكم وبشر المحسنين ... ... | ٣٧ | م « | ٢٢ |
| | وبشر المؤمنين بأن لهم من الله فضلا كبيرا ... ... | ٤٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وأنابوا إلى الله لهم البشرى فبشر عباد ... ... ... | ١٧ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وأخرى تحبونها نصر من الله وفتح قريب وبشر المؤمنين | ١٣ | م الصف | ٦١ |
| بُشْرَهُ | : كأن لم يسمعها كأن فى أذنيه وقرا فبشره بعذاب أليم | ٧ | ك لقمان | ٣١ |
| (٤) | وخشى الرحمن بالغيب فبشره بمغفرة وأجر كريم | ١١ | ك يس | ٣٦ |
| | ثم يصر مستكبرا كأن لم يسمعها فبشره بعذاب أليم | ٨ | ك الجاثية | ٤٥ |
| بِشْرِهِمْ | : ويقتلون الذين يأمرون بالقسط من الناس فبشرهم بعذاب أليم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢١ | م آل عمران | ٣ |
| | ولا ينفقونها فى سبيل الله فبشرهم بعذاب أليم | ٣٤ | م التوبة | ٩ |
| | والله أعلم بما يوعون . فبشرهم بعذاب أليم ... ... | ٢٤ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| بُشِّرَ | : وإذا بشر أحدهم بالأنثى ظل وجهه مسودا وهو كظيم | ٥٨ | ك النحل | ١٦ |
| (٣) | يتوارى من القوم من سوء ما بشر به ... ... ... | ٥٩ | ك « | ١٦ |
| | وإذا بشر أحدهم بما ضرب للرحمن مثلا ظل وجهه مسودا | ١٧ | ك الزخرف | ٤٣ |
| تُبَاشِرُوهُنَّ | : ولا تباشروهن وأنتم عاكفون فى المساجد | ١٨٧ | م البقرة | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بَاشِرُوهُنَّ: | فالآن باشروهن وابتغوا ما كتب الله لكم | ١٨٧ | م البقـرة | ٢ |
| أَبْشِرُوا: | ألا تخافوا ولا تحزنوا وأبشروا بالجنة التي كنتم توعدون | ٣٠ | ك فصلت | ٤١ |
| يَسْتَبْشِرُونَ: | ويستبشرون بالذين لم يلحقوا بهم من خلفهم | ١٧٠ | م آل عمران | ٣ |
| (٦) | يستبشرون بنعمة من الله وفضل ... ... ... ... ... | ١٧١ | م « | ٣ |
| | فأما الذين آمنوا فزادتهم إيمانا وهم يستبشرون | ١٢٤ | التـوبة | ٩ |
| | وجاء أهل المدينة يستبشرون ... ... ... ... ... | ٦٧ | ك الحجـر | ١٥ |
| | فإذا أصاب به من يشاء من عباده إذا هم يستبشرون | ٤٨ | ك الروم | ٣٠ |
| | وإذا ذكر الذين من دونه إذا هم يستبشرون ... ... | ٤٥ | ك الزمـر | ٣٩ |
| فَاسْتَبْشِرُوا: | ومن أوفى بعهده من الله فاستبشروا ببيعكم | ١١١ | م التـوبة | ٩ |
| بُشْرًا: | وهو الذي يرسل الرياح بشرا بين يدي رحمته | ٥٧ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | وهو الذي أرسل الرياح بشرا بين يدي رحمته | ٤٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ومن يرسل الرياح بشرا بين يدي رحمته أإله مع الله | ٦٣ | ك النمـل | ٢٧ |
| بُشْرَى: | مصدقا لما بين يديه وهدى وبشرى للمؤمنين | ٩٧ | م البقـرة | ٢ |
| (١٤) | وما جعله الله إلا بشرى لكم ولتطمئن قلوبكم به | ١٢٦ | م آل عمران | ٣ |
| | وما جعله الله إلا بشرى ولتطمئن به قلوبكم ... ... | ١٠ | م الأنفـال | ٨ |
| | لهم البشرى في الحياة الدنيا وفي الآخرة ... ... ... | ٦٤ | ك يونس | ١٠ |
| | ولقد جاءت رسلنا إبراهيم بالبشرى قالوا سلاما | ٦٩ | ك هـود | ١١ |
| | فلما ذهب عن إبراهيم الروع وجاءته البشرى يجادلنا في قوم لوط ... ... ... ... ... | ٧٤ | ك « | ١١ |
| | قال يا بشرى هذا غلام وأسروه بضاعة ... ... ... | ١٩ | ك يوسف | ١٢ |
| | تبيانا لكل شيء وهـدى ورحمـة وبشرى للمسلمين | ٨٩ | ك النحـل | ١٦ |
| | ليثبت الذين آمنوا وهدى وبشرى للمسلمين ... ... | ١٠٢ | ك « | ١٦ |
| | يوم يرون الملائكة لا بشرى يومئذ للمجرمين ... ... | ٢٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | هدى وبشرى للمؤمنين . الذين يقيمون الصلاة | ٢ | ك النمـل | ٢٧ |
| | ولما جاءت رسلنا إبراهيم بالبشرى قالوا إنا مهلكوا أهل هذه القرية ... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | والذين اجتنبوا الطاغوت أن يعبدوها وأنابوا إلى الله لهم البشرى ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الزمـر | ٣٩ |
| | لينذر الذين ظلموا وبشرى للمحسنين ... ... ... | ١٢ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| بُشْرَاكُمْ: | بشراكم اليوم جنات تجري من تحتها الأنهار | ١٢ | م الحـديد | ٥٧ |
| بَشِيرٍ: | أن تقولوا ما جاءنا من بشير ولا نذير ... ... | ١٩ | م المائدة | ٥ |
| (٥) | فقـد جاءكم بشير ونذير والله على كل شيء قـدير | ١٩ | م « | ٥ |
| | إن أنا إلا نذير وبشير لقوم يؤمنون ... ... ... | ١٨٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | ألا تعبدوا إلا الله إنني لكم منه نذير وبشير ... ... | ٢ | ك هـود | ١١ |
| | فلما أن جاء البشير ألقاه على وجهه فارتد بصيرا | ٩٦ | ك يوسف | ١٢ |
| بَشِيرًا: | إنا أرسلناك بالحق بشيرا ونذيرا ... ... ... ... | ١١٩ | م البقـرة | ٢ |
| (٤) | وما أرسلناك إلا كافة للناس بشيرا ونذيرا ... ... | ٢٨ | ك سـبأ | ٣٤ |
| | إنا أرسلناك بالحق بشيرا ونذيرا وإن من أمة إلا خلا فيها نذير | ٢٤ | ك فاطـر | ٣٥ |
| بَشِيرًا: | بشيرا ونذيرا فأعرض أكثرهم فهم لا يسمعون | ٤ | ك فصلت | ٤١ |
| مُبَشِّرًا: | وما أرسلناك إلا مبشرا ونذيرا ... ... ... ... | ١٠٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٥) | وما أرسلناك إلا مبشرا ونذيرا ... ... ... ... ... | ٥٦ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | يا أيها النبي إنا أرسلناك شاهدا ومبشرا ونذيرا | ٤٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | إنا أرسلناك شاهدا ومبشرا ونذيرا ... ... ... ... | ٨ | م الفتـح | ٤٨ |
| | ومبشرا برسول يأتي من بعدي اسمه أحمـد ... ... | ٦ | م الصف | ٦١ |
| مُبَشِّرِينَ: | فبعث الله النبيين مبشرين ومنـذرين ... ... | ٢١٣ | م البقـرة | ٢ |
| (٤) | رسلا مبشرين ومنذرين لئلا يكون للناس على الله حجة | ١٦٥ | م النساء | ٤ |
| | وما نرسل المرسلين إلا مبشرين ومنذرين ... ... | ٤٨ | ك الأنعـام | ٦ |
| | وما نرسل المرسلين إلا مبشرين ومنذرين ... ... | ٥٦ | ك الكهف | ١٨ |
| مُبَشِّرَاتٍ: | ومن آياته أن يرسل الرياح مبشرات | ٤٦ | ك الروم | ٣٠ |
| مُسْتَبْشِرَةٌ: | وجوه يومئذ مسفرة . ضاحكة مستبشرة | ٣٩ | ك عبس | ٨٠ |
| بَشَرٍ: | قالت رب أنى يكون لي ولد ولم يمسسني بشر ... ... | ٤٧ | م آل عمران | ٣ |
| (٢٦) | ما كان لبشر أن يؤتيه الله الكتاب والحكم والنبوة ثم يقول للناس كونوا عبادا لي من دون الله | ٧٩ | م « | ٣ |
| | بل أنتم بشر ممن خلق يغفر لمن يشاء ويعذب من يشاء | ١٨ | م المائدة | ٥ |
| | وما قدروا الله حق قدره إذ قالوا ما أنزل الله على بشر من شيء | ٩١ | م الأنعـام | ٦ |
| | قالوا إن أنتم إلا بشر مثلنا تريدون أن تصـدونا | ١٠ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | قالت لهم رسلهم إن نحن إلا بشر مثلكم ... ... ... | ١١ | ك « | ١٤ |
| | قال لم أكن لأسجد لبشر خلقته من صلصال من حمإ مسنون | ٣٣ | ك الحجـر | ١٥ |
| | ولقد نعلم أنهم يقولون إنما يعلمه بشر ... ... ... | ١٠٣ | ك النحل | ١٦ |
| | قل إنما أنا بشر مثلكم يوحى إليّ أنما إلهكم إله واحد | ١١٠ | ك الكهف | ١٨ |
| | قالت أنى يكون لي غلام ولم يمسسني بشر ولم أك بغيا | ٢٠ | ك مـريم | ١٩ |
| | فإما ترين من البشر أحدا فقولي إني نذرت للرحمن صوما | ٢٦ | ك « | ١٩ |
| | هل هذا إلا بشر مثلكم أفتأتون السحر وأنتم تبصرون | ٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وما جعلنا لبشر من قبلك الخلد أفإن مت فهم الخالدون | ٣٤ | ك « | ٢١ |
| | ما هذا إلا بشر مثلكم يريد أن يتفضل عليكم ... ... | ٢٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ما هـذا إلا بشر مثلكم يأكل مما تأكلون منـه | ٣٣ | ك « | ٢٣ |
| | ما أنت إلا بشر مثلنا فأت بآية إن كنت من الصادقين | ١٥٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وما أنت إلا بشر مثلنا وإن نظنك لمن الكاذبين | ١٨٦ | ك « | ٢٦ |
| | ومن آياته أن خلقكم من تراب ثم إذا أنتم بشر تنتشرون | ٢٠ | ك الـروم | ٣٠ |
| | قالوا ما أنتم إلا بشر مثلنا وما أنزل الرحمن من شيء | ١٥ | ك يس | ٣٦ |
| | قل إنما أنا بشر مثلكم يوحى إليّ أنما إلهكم إله واحد | ٦ | ك فصلت | ٤١ |
| | وما كان لبشر أن يكلمه الله إلا وحيا أو من وراء حجاب | ٥١ | ك الشورى | ٤٢ |
| | فقالوا أبشر يهدوننا فكفروا وتولوا واستغنى الله | ٦ | م التغابن | ٦٤ |
| | إن هذا إلا قول البشر ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك المـدثر | ٧٤ |
| | لا تبقي ولا تذر . لواحة للبشر . عليها تسعة عشر | ٢٩ | ك « | ٧٤ |
| | وما يعلم جنود ربك إلا هو وما هي إلا ذكرى للبشر | ٣١ | ك « | ٧٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بَشَر: | إنها لإحدى الكبر . نذيرا للبشر ... ... ... ... | ٣٦ | ك المدثر | ٧٤ |
| بَشَرًا: | فقال الملأ الذين كفروا من قومه ما نراك إلا بشرا مثلنا | ٢٧ | ك هود | ١١ |
| (١٠) | وقلن حاش لله ما هذا بشرا إن هذا إلا ملك كريم | ٣١ | ك يوسف | ١٢ |
| | وإذ قال ربك للملائكة إني خالق بشرا من صلصال من حمإ | ٢٨ | ك الحجر | ١٥ |
| | قل سبحان ربي هل كنت إلا بشرا رسولا ... ... | ٩٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وما منع الناس أن يؤمنوا إذ جاءهم الهدى إلا أن | | | |
| | قالوا أبعث الله بشرا رسولا ... ... ... ... | ٩٤ | ك » | ١٧ |
| | فأرسلنا إليها روحنا فتمثل لها بشرا سويا... ... | ١٧ | ك مريم | ١٩ |
| | ولئن أطعتم بشرا مثلكم إنكم إذا لخاسرون ... ... | ٣٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وهو الذي خلق من الماء بشرا فجعله نسبا وصهرا | ٥٤ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | إذ قال ربك للملائكة إني خالق بشرا من طين | ٧١ | ك ص | ٣٨ |
| | فقالوا أبشرا منا واحدا نتبعه إنا إذا لفي ضلال وسعر | ٢٤ | ك القمر | ٥٤ |
| بَشَرَيْنِ: | فقالوا أنؤمن لبشرين مثلنا وقومهما لنا عابدون | ٤٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| بَصُرْتُ: | قال بصرت بما لم يبصروا به ... ... ... ... | ٩٦ | ك طه | ٢٠ |
| فَبَصُرَتْ: | وقالت لأخته قصيه فبصرت به عن جنب | ١١ | ك القصص | ٢٨ |
| يَبْصُرُوا: | قال بصرت بما لم يبصروا به ... ... ... ... | ٩٦ | ك طه | ٢٠ |
| يُبْصَرُونَهُمْ: | يبصرونهم يود المجرم لو يفتدي من عذاب يومئذ | ١١ | ك المعارج | ٧٠ |
| أَبْصَرَ: | فمن أبصر فلنفسه ومن عمي فعليها ... ... ... | ١٠٤ | ك الأنعام | ٦ |
| أَبْصَرْنَا: | ربنا أبصرنا وسمعنا فارجعنا نعمل صالحا إنا موقنون | ١٢ | ك السجدة | ٣٢ |
| تُبْصِرُ: | فستبصر ويبصرون . بأيكم المفتون ... ... ... | ٥ | ك القلم | ٦٨ |
| تُبْصِرُونَ: | هل هذا إلا بشر مثلكم أفتأتون السحر وأنتم تبصرون | ٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٩) | ولوطا إذ قال لقومه أتأتون الفاحشة وأنتم تبصرون | ٥٤ | ك النمل | ٢٧ |
| | من إله غير الله يأتيكم بليل تسكنون فيه أفلا تبصرون | ٧٢ | ك القصص | ٢٨ |
| | وهذه الأنهار تجري من تحتي أفلا تبصرون ... ... | ٥١ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وفي أنفسكم أفلا تبصرون ... ... ... ... ... | ٢١ | ك الذاريات | ٥١ |
| | أفسحر هذا أم أنتم لا تبصرون ... ... ... ... | ١٥ | ك الطور | ٥٢ |
| | ونحن أقرب إليه منكم ولكن لا تبصرون ... ... | ٨٥ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | فلا أقسم بما تبصرون... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | وما لا تبصرون . إنه لقول رسول كريم ... ... ... | ٣٩ | ك » | ٦٩ |
| يُبْصِرُ: | لم تعبد ما لا يسمع ولا يبصر ولا يغني عنك شيئا | ٤٢ | ك مريم | ١٩ |
| يُبْصِرُونَ: | ذهب الله بنورهم وتركهم في ظلمات لا يبصرون | ١٧ | م البقرة | ٢ |
| (١٢) | لهم قلوب لا يفقهون بها ولهم أعين لا يبصرون بها | ١٧٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | أم لهم أيد يبطشون بها أم لهم أعين يبصرون بها | ١٩٥ | ك » | ٧ |
| | وتراهم ينظرون إليك وهم لا يبصرون ... ... ... | ١٩٨ | ك » | ٧ |
| | أفأنت تهدي العمي ولو كانوا لا يبصرون ... ... | ٤٣ | ك يونس | ١٠ |
| | ما كانوا يستطيعون السمع وما كانوا يبصرون | ٢٠ | ك هود | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يُبْصِرُونَ: | فنخرج به زرعا تأكل منه أنعامهم وأنفسهم | | | |
| | أفلا يبصرون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك السجدة | ٣٢ |
| | فأغشيناهم فهم لا يبصرون ... ... ... ... ... | ٩ | ك يس | ٣٦ |
| | ولو نشاء لطمسنا على أعينهم فاستبقوا الصراط فأنى يبصرون | ٦٦ | ك » | ٣٦ |
| | وأبصرهم فسوف يبصرون ... ... ... ... ... | ١٧٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| | وأبصر فسوف يبصرون ... ... ... ... ... ... | ١٧٩ | ك » | ٣٧ |
| | فستبصر ويبصرون . بأيكم المفتون... ... ... ... | ٥ | ك القلم | ٦٨ |
| أَبْصِرْ: | وأبصر فسوف يبصرون ... ... ... ... ... ... | ١٧٩ | ك الصافات | ٣٧ |
| أَبْصِرْهُمْ: | وأبصرهم فسوف يبصرون... ... ... ... ... | ١٧٥ | ك » | ٣٧ |
| أَبْصِرْ: | أبصر به وأسمع ما لهم من دونه من ولي ... ... | ٢٦ | ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | أسمع بهم وأبصر يوم يأتوننا ... ... ... ... | ٣٨ | ك مريم | ١٩ |
| بَصِير: | والله بصير بما يعملون ... ... ... ... ... | ٩٦ | م البقرة | ٢ |
| (٣٦) | إن الله بما تعملون بصير... ... ... ... ... | ١١٠ | م » | ٢ |
| | واتقوا الله واعلموا أن الله بما تعملون بصير | ٢٣٣ | م » | ٢ |
| | ولا تنسوا الفضل بينكم إن الله بما تعملون بصير | ٢٣٧ | م » | ٢ |
| | فإن لم يصبها وابل فطل والله بما تعملون بصير | ٢٦٥ | م » | ٢ |
| | وأزواج مطهرة ورضوان من الله والله بصير بالعباد | ١٥ | م آل عمران | ٣ |
| | وإن تولوا فإنما عليك البلاغ والله بصير بالعباد | ٢٠ | م » | ٣ |
| | والله يحيي ويميت والله بما تعملون بصير ... ... | ١٥٦ | م » | ٣ |
| | هم درجات عند الله والله بصير بما يعملون ... ... | ١٦٣ | م » | ٣ |
| | ثم عموا وصموا كثير منهم والله بصير بما يعملون | ٧١ | م المائدة | ٥ |
| | قل هل يستوي الأعمى والبصير أفلا تتفكرون | ٥٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | فإن انتهوا فإن الله بما يعملون بصير ... ... ... | ٣٩ | م الأنفال | ٨ |
| | إلا على قوم بينكم وبينهم ميثاق والله بما تعملون بصير | ٧٢ | م » | ٨ |
| | مثل الفريقين كالأعمى والأصم والبصير والسميع | ٢٤ | ك هود | ١١ |
| | ولا تطغوا إنه بما تعملون بصير ... ... ... ... | ١١٢ | ك » | ١١ |
| | قل هل يستوي الأعمى والبصير ... ... ... ... ... | ١٦ | م الرعد | ١٣ |
| | لنريه من آياتنا إنه هو السميع البصير ... ... ... | ١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ويولج النهار في الليل وأن الله سميع بصير ... ... | ٦١ | م الحج | ٢٢ |
| | الله يصطفي من الملائكة رسلا ومن الناس إن الله سميع بصير | ٧٥ | م » | ٢٢ |
| | ما خلقكم ولا بعثكم إلا كنفس واحدة إن الله سميع بصير | ٢٨ | م لقمان | ٣١ |
| | واعملوا صالحا إني بما تعملون بصير ... ... ... ... | ١١ | ك سبإ | ٣٤ |
| | وما يستوي الأعمى والبصير . ولا الظلمات ولا النور | ١٩ | ك فاطر | ٣٥ |
| | إن الله بعباده لخبير بصير ... ... ... ... ... | ٣١ | ك » | ٣٥ |
| | إن الله هو السميع البصير ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك غافر | ٤٠ |
| | وأفوض أمري إلى الله إن الله بصير بالعباد ... ... | ٤٤ | ك » | ٤٠ |
| | فاستعذ بالله إنه هو السميع البصير ... ... ... ... | ٥٦ | م » | ٤٠ |
| | وما يستوي الأعمى والبصير والذين آمنوا وعملوا الصالحات | ٥٨ | ك » | ٤٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بَصِير: | اعملوا ما شئتم إنه بما تعملون بصير ... ... ... | ٤٠ | ك فصلت | ٤١ |
| | ليس كمثله شيء وهو السميع البصير ... ... ... ... | ١١ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ولكن ينزل بقدر ما يشاء إنه بعباده خبير بصير... ... | ٢٧ | م « | ٤٢ |
| | إن الله يعلم غيب السموات والأرض والله بصير بما تعملون | ١٨ | م الحجرات | ٤٩ |
| | وهو معكم أينما كنتم والله بما تعملون بصير... ... ... | ٤ | م الحديد | ٥٧ |
| | والله يسمع تحاوركما إن الله سميع بصير ... ... ... | ١ | م المجادلة | ٥٨ |
| | يوم القيامة يفصل بينكم والله بما تعملون بصير... ... | ٣ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | فمنكم كافر ومنكم مؤمن والله بما تعملون بصير ... ... | ٢ | م التغابن | ٦٤ |
| | ما يمسكهن إلا الرحمن إنه بكل شيء بصير... ... ... | ١٩ | ك الملك | ٦٧ |
| بَصِيراً: | إن الله نعما يعظكم به إن الله كان سميعا بصيرا | ٥٨ | م النساء | ٤ |
| (١٥) | فعند الله ثواب الدنيا والآخرة وكان الله سميعا بصيرا | ١٣٤ | م « | ٤ |
| | اذهبوا بقميصي هذا فألقوه على وجه أبي يأت بصيرا | ٩٣ | ك يوسف | ١٢ |
| | فلما أن جاء البشير ألقاه على وجهه فارتد بصيرا | ٩٦ | ك « | ١٢ |
| | وكفى بربك بذنوب عباده خبيرا بصيرا ... ... ... | ١٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| | إنه كان بعباده خبيرا بصيرا ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك « | ١٧ |
| | قل كفى بالله شهيدا بيني وبينكم إنه كان بعباده خبيرا بصيرا | ٩٦ | ك « | ١٧ |
| | إنك كنت بنا بصيرا ... ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك طه | ٢٠ |
| | قال رب لم حشرتني أعمى وقد كنت بصيرا... ... ... | ١٢٥ | ك « | ٢٠ |
| | وجعلنا بعضكم لبعض فتنة أتصبرون وكان ربك بصيرا | ٢٠ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وكان الله بما تعملون بصيرا ... ... ... ... ... | ٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | فإذا جاء أجلهم فإن الله كان بعباده بصيرا ... ... | ٤٥ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وكان الله بما تعملون بصيرا ... ... ... ... ... | ٢٤ | م الفتح | ٤٨ |
| | إنا خلقنا الإنسان من نطفة أمشاج نبتليه فجعلناه سميعا بصيرا | ٢ | م الإنسان | ٧٦ |
| | بلى إن ربه كان به بصيرا ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| بَصِيرَة: | قل هذه سبيلي أدعوا إلى الله على بصيرة أنا ومن اتبعني | ١٠٨ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | بل الإنسان على نفسه بصيرة ... ... ... ... ... | ١٤ | ك القيامة | ٧٥ |
| بَصَائِر: | قد جاءكم بصائر من ربكم فمن أبصر فلنفسه ... ... | ١٠٤ | ك الأنعام | ٦ |
| (٥) | هذا بصائر من ربكم وهدى ورحمة لقوم يؤمنون | ٢٠٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | ما أنزل هؤلاء إلا رب السموات والأرض بصائر | ١٠٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| | بصائر للناس وهدى ورحمة لعلهم يتذكرون ... ... | ٤٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | هذا بصائر للناس وهدى ورحمة لقوم يوقنون ... ... | ٢٠ | ك الجاثية | ٤٥ |
| تَبْصِرَة: | تبصرة وذكرى لكل عبد منيب ... ... ... ... | ٨ | ك ق | ٥٠ |
| مُبْصِرًا: | هو الذي جعل لكم الليل لتسكنوا فيه والنهار مبصرا | ٦٧ | ك يونس | ١٠ |
| (٣) | ألم يروا أنا جعلنا الليل ليسكنوا فيه والنهار مبصرا | ٨٦ | ك النمل | ٢٧ |
| | الله الذي جعل لكم الليل لتسكنوا فيه والنهار مبصرا | ٦١ | ك غافر | ٤٠ |
| مُبْصِرُون: | إذا مسهم طائف من الشيطان تذكروا فإذا هم مبصرون ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠١ | ك الأعراف | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مُبْصِرَةً: | فمحونا آية الليل وجعلنا آية النهار مبصرة | ١٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٣) | وآتينا ثمود الناقة مبصرة فظلموا بها ... ... ... ... | ٥٩ | ك « | ١٧ |
| | جاءتهم آياتنا مبصرة قالوا هذا سحر مبين ... ... | ١٣ | ك النمل | ٢٧ |
| مُسْتَبْصِرِين: | فصدهم عن السبيل وكانوا مستبصرين | ٣٨ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| الْبَصَر: | وما أمر الساعة إلا كلمح البصر أو هو أقرب | ٧٧ | ك النحل | ١٦ |
| (٨) | إن السمع والبصر والفؤاد كل أولئك كان عنه مسئولا | ٣٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ما زاغ البصر وما طغى ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك النجم | ٥٣ |
| | وما أمرنا إلا واحدة كلمح بالبصر ... ... ... ... | ٥٠ | ك القمر | ٥٤ |
| | فارجع البصر هل ترى من فطور ... ... ... ... ... | ٣ | ك الملك | ٦٧ |
| | ثم ارجع البصر كرتين ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك « | ٦٧ |
| | ينقلب إليك البصر خاسئا وهو حسير... ... ... ... | ٤ | ك « | ٦٧ |
| | فإذا برق البصر. وخسف القمر. وجمع الشمس والقمر | ٧ | ك القيامة | ٧٥ |
| فَبَصَرُكَ: | فكشفنا عنك غطاءك فبصرك اليوم حديد... ... | ٢٢ | ك ق | ٥٠ |
| بَصَرِه: | وجعل على بصره غشاوة فمن يهديه من بعد الله | ٢٣ | ك الجاثية | ٤٥ |
| أَبْصَار: | إن في ذلك لعبرة لأولي الأبصار... ... ... ... | ١٣ | م آل عمران | ٣ |
| (١٨) | لا تدركه الأبصار ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٣ | ك الأنعام | ٦ |
| | وهو يدرك الأبصار وهو اللطيف الخبير ... ... ... | ١٠٣ | ك « | ٦ |
| | أمن يملك السمع والأبصار ومن يخرج الحي من الميت | ٣١ | ك يونس | ١٠ |
| | إنما يؤخرهم ليوم تشخص فيه الأبصار ... ... ... | ٤٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وجعل لكم السمع والأبصار والأفئدة لعلكم تشكرون | ٧٨ | ك النحل | ١٦ |
| | فإذا هي شاخصة أبصار الذين كفروا ... ... ... | ٩٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | فإنها لا تعمى الأبصار ولكن تعمى القلوب التي في الصدور | ٤٦ | م الحج | ٢٢ |
| | وهو الذي أنشأ لكم السمع والأبصار والأفئدة... ... | ٧٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | يخافون يوما تتقلب فيه القلوب والأبصار... ... | ٣٧ | م النور | ٢٤ |
| | يكاد سنا برقه يذهب بالأبصار ... ... ... ... ... | ٤٣ | م « | ٢٤ |
| | يقلب الله الليل والنهار إن في ذلك لعبرة لأولي الأبصار | ٤٤ | م « | ٢٤ |
| | وجعل لكم السمع والأبصار والأفئدة قليلا ما تشكرون | ٩ | ك السجدة | ٣٢ |
| | وإذ زاغت الأبصار وبلغت القلوب الحناجر... ... | ١٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | أولي الأيدي والأبصار... ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك ص | ٣٨ |
| | أتخذناهم سخريا أم زاغت عنهم الأبصار... ... ... | ٦٣ | ك « | ٣٨ |
| | فاعتبروا يا أولي الأبصار ... ... ... ... ... ... | ٢ | م الحشر | ٥٩ |
| | وجعل لكم السمع والأبصار والأفئدة قليلا ما تشكرون | ٢٣ | ك الملك | ٦٧ |
| أَبْصَارًا: | وجعلنا لهم سمعا وأبصارا وأفئدة ... ... ... ... | ٢٦ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| أَبْصَارَكُمْ: | قل أرأيتم إن أخذ الله سمعكم وأبصاركم | ٤٦ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | وما كنتم تستترون أن يشهد عليكم سمعكم ولا أبصاركم | ٢٢ | ك فصلت | ٤١ |
| أَبْصَارُنَا: | لقالوا إنما سكرت أبصارنا بل نحن قوم مسحورون | ١٥ | ك الحجر | ١٥ |
| أَبْصَارُهَا: | قلوب يومئذ واجفة . أبصارها خاشعة... ... | ٩ | ك النازعات | ٧٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَبْصَارِهِمْ | : وعلى أبصارهم غشاوة ولهم عذاب عظيم... ... | ٧ | م البقـرة | ٢ |
| (١٤) | يكاد البرق يخطف أبصارهم كلما أضاء لهم مشوا فيـه | ٢٠ | م « | ٢ |
| | ولو شاء الله لذهب بسمعهم وأبصارهم ... ... ... | ٢٠ | م « | ٢ |
| | ونقلب أفئدتهم وأبصارهم كما لم يؤمنوا به أول مرة | ١١٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | وإذا صرفت أبصارهم تلقاء أصحاب النار قالوا ربنا لا تجعلنا مع القوم الظالمين ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | أولئك الذين طبع الله على قلوبهم وسمعهم وأبصارهم | ١٠٨ | ك النحـل | ١٦ |
| | قل للمؤمنين يغضوا من أبصارهم ويحفظوا فروجهم | ٣٠ | م النـور | ٢٤ |
| | حتى إذا ما جاءوها شهد عليهم سمعهم وأبصارهم... ... | ٢٠ | ك فصـلت | ٤١ |
| | فما أغنى عنهم سمعهم ولا أبصارهم ولا أفئدتهم من شيء | ٢٦ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | أولئك الذين لعنهـم الله فأصمهم وأعمى أبصـارهم | ٢٣ | م محمـد | ٤٧ |
| | خشعا أبصارهم يخرجون من الأجداث كأنهم جراد منتشر | ٧ | ك القمـر | ٥٤ |
| | خاشـعة أبصارهم ترهقهم ذلة ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك القـلم | ٦٨ |
| | وإن يكاد الذين كفروا ليزلقونك بأبصارهم ... ... | ٥١ | ك « | ٦٨ |
| | خاشـعة أبصارهم ترهقهم ذلة ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك المعـارج | ٧٠ |
| أَبْصَارِهِنَّ | : وقل للمؤمنات يغضضن من أبصارهن ... ... | ٣١ | م النـور | ٢٤ |
| بَصَلِهَا | : يخرج لنا مما تنبت الأرض من بقلها وقثائها وفومها وعدسها وبصلها | ٦١ | م البقـرة | ٢ |
| بِضْعِ | : فأنساه الشيطان ذكر ربه فلبث في السجن بضع سنين | ٤٢ | ك يوسـف | ١٢ |
| (٢) | في بضع سنين لله الأمر من قبل ومن بعد ... ... | ٤ | ك الـروم | ٣٠ |
| بِضَاعَةٍ | : قال يا بشرى هذا غلام وأسروه بضاعة ... ... | ١٩ | ك يوسـف | ١٢ |
| (٢) | مسنا وأهلنا الضر وجئنا ببضاعة مزجاة ... ... ... | ٨٨ | ك « | ١٢ |
| بِضَاعَتُنَا | : هذه بضاعتنا ردت إلينا ونمير أهلنا ونحفظ أخانا | ٦٥ | ك « | ١٢ |
| بِضَاعَتَهُمْ | : وقال لفتيانه اجعلوا بضاعتهم في رحالهم... ... | ٦٢ | ك « | ١٢ |
| (٢) | ولما فتحـوا متاعهم وجدوا بضاعتهم ردت إليهـم | ٦٥ | ك « | ١٢ |
| لَيُبَطِّئَنَّ | : وإن منكم لمن ليبطئن ... ... ... ... ... | ٧٢ | م النسـاء | ٤ |
| بَطِرَتْ | : وكم أهلكنا من قرية بطرت معيشتها ... ... ... | ٥٨ | ك القصص | ٢٨ |
| بَطَرًا | : ولا تكونوا كالذين خرجوا من ديارهم بطرا ورئاء الناس | ٤٧ | م الأنفـال | ٨ |
| بَطَشْتُمْ | : وإذا بطشتم ... ... ... ... ... ... ... | ١٣٠ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| (٢) | بطشـتم جبارين ... ... ... ... ... ... ... | ١٣٠ | ك « | ٢٦ |
| نَبْطِشُ | : يوم نبطش البطشة الكبرى إنا منتقمون... ... | ١٦ | ك الدخان | ٤٤ |
| يَبْطِشَ | : فلما أن أراد أن يبطش بالذي هو عدو لهما قال يا موسى أتريد أن تقتلني ... ... ... ... ... | ١٩ | ك القصص | ٢٨ |
| يَبْطِشُونَ | : ألهم أرجل يمشون بها أم لهم أيد يبطشون بها | ١٩٥ | ك الأعراف | ٧ |
| بَطْشَ | : إن بطش ربك لشديد ... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك البروج | ٨٥ |
| بَطْشًا | : فأهلكنا أشـد منهم بطشا ومضى مثـل الأولين | ٨ | ك الزخرف | ٤٣ |
| (٢) | وكم أهلكنا قبلهم من قـرن هم أشـد منهم بطشـا | ٣٦ | ك قـ | ٥٠ |
| البَطْشَةَ | : يوم نبطش البطشة الكبرى إنا منتقمون... ... | ١٦ | ك الدخان | ٤٤ |
| بَطْشَتَنَا | : ولقد أنذرهم بطشتنا فتماروا بالنذر ... ... ... | ٣٦ | ك القمـر | ٥٤ |
| بَطَلَ | : فوقع الحق وبطـل ما كانوا يعملون ... ... ... | ١١٨ | ك الأعراف | ٧ |
| تُبْطِلُوا | : يأيها الذين آمنوا لا تبطلوا صدقاتكم بالمن والأذى | ٢٦٤ | م البقـرة | ٢ |
| (٦) | أطيعوا الله وأطيعوا الرسـول ولا تبطلوا أعمالكم | ٣٣ | م محمـد | ٤٧ |
| يُبْطِلَ | : ليحـق الحق ويبطـل الباطل ولو كره المجرمون | ٨ | م الأنفـال | ٨ |
| سَيُبْطِلُهُ | : قال موسى ما جئتم به السـحر إن الله سيبطله | ٨١ | ك يـونس | ١٠ |
| بَاطِلِ | : ولا تلبسوا الحق بالباطل وتكتموا الحق وأنتم تعلمون | ٤٢ | م البقـرة | ٢ |
| (٢٤) | ولا تأكلوا أموالكم بينكم بالبـاطل ... ... ... | ١٨٨ | م « | ٢ |
| | يأهل الكتاب لم تلبسون الحق بالباطل وتكتمون الحق | ٧١ | م آل عمران | ٣ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تأكلوا أموالكم بينكم بالباطل | ٢٩ | م النسـاء | ٤ |
| | وأكلهم أموال الناس بالباطل ... ... ... ... ... | ١٦١ | م « | ٤ |
| | إن هؤلاء متبر ما هم فيـه وباطل ما كانوا يعملون | ١٣٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | ليحق الحق ويبطل الباطل ولو كره المجرمون... ... | ٨ | م الأنفـال | ٨ |
| | إن كثيرا من الأحبـار والرهبان ليأكلون أمـوال الناس بالباطل... ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | م التـوبة | ٩ |
| | وحبـط ما صـنعوا فيها وباطـل ما كانوا يعملون | ١٦ | ك هـود | ١١ |
| | كذلك يضرب الله الحق والباطل ... ... . ... | ١٧ | م الرعـد | ١٣ |
| | أفبالباطل يؤمنون وبنعمة الله هم يكفرون ... ... | ٧٢ | ك النحـل | ١٦ |
| | وقل جاء الحق وزهق الباطل ... ... ... ... ... | ٨١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | إن الباطل كان زهوقا ... ... ... ... ... ... | ٨١ | ك « | ١٧ |
| | ويجادل الذين كفروا بالباطل ليدحضوا به الحـق | ٥٦ | ك الكهف | ١٨ |
| | بل نقذف بالحق على الباطل فيدمغه فإذا هو زاهق | ١٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ذلك بأن الله هو الحق وأن ما يدعون من دونه هو الباطل | ٦٢ | م الحـج | ٢٢ |
| | والذين آمنوا بالباطل وكفروا بالله أولئك هم الخاسرون | ٥٢ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | أفبالباطل يؤمنون وبنعمة الله يكفرون... ... ... | ٦٧ | ك « | ٢٩ |
| | ذلك بأن الله هو الحق وأن ما يدعون من دونه الباطل | ٣٠ | ك لقمان | ٣١ |
| | قل جاء الحق وما يبدئ الباطل وما يعيد ... ... | ٤٩ | ك سـبأ | ٣٤ |
| | وجادلوا بالباطل ليدحضـوا به الحـق فأخذتهم | ٥ | ك غافـر | ٤٠ |
| | لا يأتيه الباطل من بين يديه ولا من خلفه ... ... | ٤٢ | ك فصـلت | ٤١ |
| | ويمح الله الباطل ويحق الحق بكلماته ... ... ... | ٢٤ | م الشـورى | ٤٢ |
| | ذلك بأن الذين كفروا اتبعوا الباطل ... ... ... | ٣ | م محمـد | ٤٧ |
| بَاطِلًا | : ربنا ما خلقت هذا باطلا سبحانك فقنا عذاب النار | ١٩١ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | وما خلقنا السماء والأرض وما بينهما باطلا ... ... | ٢٧ | ك صـ | ٣٨ |
| المُبْطِلُونَ | : وكذا ذرية من بعدهم أفتهلكنا بما فعل المبطلون | ١٧٣ | ك الأعراف | ٧ |
| (٥) | ولا تخطه بيمينك إذا لارتاب المبطلون ... ... ... | ٤٨ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ولئن جئتهم بآية ليقولن الذين كفروا إن أنتم إلا مبطلون | ٥٨ | ك الـروم | ٣٠ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| المُبْطِلُونَ: | فإذا جاء أمر الله قضى بالحق وخسر هنالك المبطلون | ٧٨ ك غافر | ٤٠ |
| | ويوم تقوم الساعة يومئذ يخسر المبطلون ... ... | ٢٧ ك الجاثية | ٤٥ |
| بَطَنَ: | ولا تقربوا الفواحش ما ظهر منها وما بطن | ١٥١ م الأنعام | ٦ |
| (٢) | قل إنما حرم ربي الفواحش ما ظهر منها وما بطن | ٣٣ ك الأعراف | ٧ |
| الْبَاطِنُ: | هو الأول والآخر والظاهر والباطن ... ... ... | ٣ م الحديد | ٥٧ |
| بَاطِنَه: | وذروا ظاهر الإثم وباطنه ... ... ... ... ... | ١٢٠ ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | فضرب بينهم بسور له باب باطنه فيه الرحمة ... ... | ١٣ م الحديد | ٥٧ |
| بَاطِنَةً: | وأسبغ عليكم نعمه ظاهرة وباطنة ... ... ... | ٢٠ ك لقمان | ٣١ |
| بِطَانَةً: | يأيها الذين آمنوا لا تتخذوا بطانة من دونكم | ١١٨ م آل عمران | ٣ |
| بَطَائِنُهَا: | متكئين على فرش بطائنها من إستبرق... ... ... | ٥٤ م الرحمن | ٥٥ |
| بَطْنِ: | وهو الذي كف أيديهم عنكم وأيديكم عنهم ببطن مكة | ٢٤ م الفتح | ٤٨ |
| بَطْنِه: | فمنهم من يمشي على بطنه ومنهم من يمشي على رجلين | ٤٥ م النور | ٢٤ |
| (٢) | للبث في بطنه إلى يوم يبعثون... ... ... ... ... | ١٤٤ ك الصافات | ٣٧ |
| بَطْنِي: | إني نذرت لك ما في بطني محررا فتقبل مني ... ... | ٣٥ م آل عمران | ٣ |
| بُطُونِ: | وقالوا ما في بطون هذه الأنعام خالصة لذكورنا | ١٣٩ ك الأنعام | ٦ |
| (٧) | والله أخرجكم من بطون أمهاتكم لا تعلمون شيئا | ٧٨ ك النحل | ١٦ |
| | فإنهم لآكلون منها فمالئون منها البطون ... ... ... | ٦٦ ك الصافات | ٣٧ |
| | يخلقكم في بطون أمهاتكم خلقا من بعد خلق في ظلمات ثلاث | ٦ ك الزمر | ٣٩ |
| | إن شجرة الزقوم . طعام الأثيم . كالمهل يغلي في البطون | ٤٥ ك الدخان | ٤٤ |
| | إذ أنشأكم من الأرض وإذ أنتم أجنة في بطون أمهاتكم | ٣٢ م النجم | ٥٣ |
| | لآكلون من شجر من زقوم . فمالئون منها البطون | ٥٣ ك الواقعة | ٥٦ |
| بُطُونِه: | نسقيكم مما في بطونه من بين فرث ودم لبنا خالصا | ٦٦ ك النحل | ١٦ |
| بُطُونِهَا: | يخرج من بطونها شراب مختلف ألوانه فيه شفاء للناس | ٦٩ ك « | ١٦ |
| (٢) | نسقيكم مما في بطونها ولكم فيها منافع كثيرة ... ... | ٢١ ك المؤمنون | ٢٣ |
| بُطُونِهِم: | أولئك ما يأكلون في بطونهم إلا النار ... ... | ١٧٤ م البقرة | ٢ |
| (٣) | إنما يأكلون في بطونهم نارا وسيصلون سعيرا | ١٠ م النساء | ٤ |
| | يصهر به ما في بطونهم والجلود ... ... ... ... | ٢٠ م الحج | ٢٢ |
| بَعَثَ: | كان الناس أمة واحدة فبعث الله النبيين مبشرين ومنذرين | ٢١٣ م البقرة | ٢ |
| (٧) | وقال لهم نبيهم إن الله قد بعث لكم طالوت ملكا | ٢٤٧ م « | ٢ |
| | لقد من الله على المؤمنين إذ بعث فيهم رسولا من أنفسهم | ١٦٤ م آل عمران | ٣ |
| | فبعث الله غرابا يبحث في الأرض ... ... ... ... | ٣١ م المائدة | ٥ |
| | أبعث الله بشرا رسولا ... ... ... ... ... .. | ٩٤ ك الإسراء | ١٧ |
| | أهذا الذي بعث الله رسولا ... ... ... ... ... | ٤١ ك الفرقان | ٢٥ |
| | هو الذي بعث في الأميين رسولا منهم يتلوا عليهم آياته | ٢ م الجمعة | ٦٢ |
| بَعَثْنَا: | وبعثنا منهم اثني عشر نقيبا ... ... ... ... | ١٢ م المائدة | ٥ |
| (٧) | ثم بعثنا من بعدهم موسى بآياتنا إلى فرعون وملئه | ١٠٣ ك الأعراف | ٧ |
| | ثم بعثنا من بعده رسلا إلى قومهم فجاءوهم بالبينات | ٧٤ ك يونس | ١٠ |
| بَعَثْنَا: | ثم بعثنا من بعدهم موسى وهرون إلى فرعون وملئه | ٧٥ ك يونس | ١٠ |
| | ولقد بعثنا في كل أمة رسولا أن اعبدوا الله... ... | ٣٦ ك النحل | ١٦ |
| | فإذا جاء وعد أولاهما بعثنا عليكم عبادا لنا أولي بأس | ٥ ك الإسراء | ١٧ |
| | ولو شئنا لبعثنا في كل قرية نذيرا ... ... ... ... | ٥١ ك الفرقان | ٢٥ |
| بَعَثَنَا: | قالوا يا ويلنا من بعثنا من مرقدنا ... ... ... | ٥٢ ك يس | ٣٦ |
| بَعَثْنَاكُم: | ثم بعثناكم من بعد موتكم لعلكم تشكرون ... ... | ٥٦ م البقرة | ٢ |
| | بعثناهم لنعلم أي الحزبين أحصى لما لبثوا أمدا | ١٢ ك الكهف | ١٨ |
| | وكذلك بعثناهم ليتساءلوا بينهم ... ... ... ... | ١٩ ك « | ١٨ |
| بَعَثَه: | فأماته الله مائة عام ثم بعثه ... ... ... ... ... | ٢٥٩ م البقرة | ٢ |
| نَبْعَثُ: | ويوم نبعث من كل أمة شهيدا ... ... ... ... | ٨٤ ك النحل | ١٦ |
| (٣) | ويوم نبعث في كل أمة شهيدا عليهم من أنفسهم... ... | ٨٩ ك « | ١٦ |
| | وما كنا معذبين حتى نبعث رسولا ... ... ... ... | ١٥ ك الإسراء | ١٧ |
| يَبْعَثَ: | قل هو القادر على أن يبعث عليكم عذابا من فوقكم | ٦٥ ك الأنعام | ٦ |
| (٦) | وأقسموا بالله جهد أيمانهم لا يبعث الله من يموت | ٣٨ ك النحل | ١٦ |
| | وأن الساعة آتية لا ريب فيها وأن الله يبعث من في القبور | ٧ م الحج | ٢٢ |
| | وما كان ربك مهلك القرى حتى يبعث في أمها رسولا | ٥٩ ك القصص | ٢٨ |
| | حتى إذا هلك قلتم لن يبعث الله من بعده رسولا | ٣٤ ك غافر | ٤٠ |
| | وأنهم ظنوا كما ظننتم أن لن يبعث الله أحدا... ... | ٧ ك الجن | ٧٢ |
| يَبْعَثَكَ: | عسى أن يبعثك ربك مقاما محمودا ... ... ... | ٧٩ م الإسراء | ١٧ |
| يَبْعَثُكُم: | ويعلم ما جرحتم بالنهار ثم يبعثكم فيه ليقضى أجل مسمى | ٦٠ ك الأنعام | ٦ |
| لَيَبْعَثَنَّ: | وإذ تأذن ربك ليبعثن عليهم إلى يوم القيامة | | |
| | من يسومهم سوء العذاب ... ... ... ... ... | ١٦٧ م الأعراف | ٧ |
| يَبْعَثُهُم: | والموتى يبعثهم الله ثم إليه يرجعون ... ... ... | ٣٦ ك الأنعام | ٦ |
| (٣) | يوم يبعثهم الله جميعا فينبئهم بما عملوا ... ... ... | ٦ م المجادلة | ٥٨ |
| | يوم يبعثهم الله جميعا فيحلفون له كما يحلفون لكم | ١٨ م « | ٥٨ |
| أَبْعَثْ: | وربنا وابعث فيهم رسولا منهم يتلوا عليهم آياتك | ١٢٩ م البقرة | ٢ |
| (٣) | إذ قالوا لنبي لهم ابعث لنا ملكا نقاتل في سبيل الله | ٢٤٦ م « | ٢ |
| | قالوا أرجه وأخاه وابعث في المدائن حاشرين | ٣٦ ك الشعراء | ٢٦ |
| فَابْعَثُوا: | وإن خفتم شقاق بينهما فابعثوا حكما من أهله | | |
| (٢) | وحكما من أهلها ... ... ... ... ... ... | ٣٥ م النساء | ٤ |
| | فابعثوا أحدكم بورقكم هذه إلى المدينة ... ... ... | ١٩ ك الكهف | ١٨ |
| أُبْعَثُ: | والسلام علي يوم ولدت ويوم أموت ويوم أبعث حيا | ٣٣ ك مريم | ١٩ |
| لَتُبْعَثُنَّ: | قل بلى وربي لتبعثن ثم لتنبؤن بما عملتم... ... | ٧ م التغابن | ٦٤ |
| تُبْعَثُونَ: | ثم إنكم يوم القيامة تبعثون... ... ... ... ... | ١٦ ك المؤمنون | ٢٣ |
| يُبْعَثُ: | وسلام عليه يوم ولد ويوم يموت ويوم يبعث حيا | ١٥ ك مريم | ١٩ |
| يُبْعَثُوا: | زعم الذين كفروا أن لن يبعثوا ... ... ... ... | ٧ م التغابن | ٦٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يُبْعَثُونَ | : قال أنظرنى إلى يوم يبعثون ... ... ... ... | ١٤ | ك الأعراف | ٧ |
| (٨) | قال رب فأنظرنى إلى يوم يبعثون ... ... ... ... | ٣٦ | ك الحجر | ١٥ |
| | أموات غير أحياء وما يشعرون أيان يبعثون ... ... | ٢١ | ك النحل | ١٦ |
| | ومن ورائهم برزخ إلى يوم يبعثون ... ... ... ... | ١٠٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ولا تخزنى يوم يبعثون ... ... ... ... ... ... | ٨٧ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وما يشعرون أيان يبعثون ... ... ... ... ... ... | ٦٥ | ك النمل | ٢٧ |
| | للبث فى بطنه إلى يوم يبعثون ... ... ... ... ... | ١٤٤ | ك الصافات | ٣٧ |
| | قال رب فأنظرنى إلى يوم يبعثون ... ... ... ... | ٧٩ | ك ص | ٣٨ |
| انْبَعَثَ | : كذبت ثمود بطغواها . إذ انبعث أشقاها | ١٢ | ك الشمس | ٩١ |
| الْبَعْثِ | : إن كنتم فى ريب من البعث فإنا خلقناكم من تراب | ٥ | م الحج | ٢٢ |
| (٣) | لقد لبثتم فى كتاب الله إلى يوم البعث ... ... ... | ٥٦ | ك الروم | ٣٠ |
| | فهذا يوم البعث ولكنكم كنتم لا تعلمون ... ... ... | ٥٦ | ك « | ٣٠ |
| بَعْثُكُمْ | : ما خلقكم ولا بعثكم إلا كنفس واحدة ... ... | ٢٨ | م لقمان | ٣١ |
| انْبِعَاثَهُمْ | : ولكن كره الله انبعاثهم فثبطهم... ... ... ... | ٤٦ | م التوبة | ٩ |
| مَبْعُوثُونَ | : ولئن قلت إنكم مبعوثون من بعد الموت | | | |
| (٧) | ليقولن الذين كفروا إن هذا إلا سحر مبين | ٧ | ك هود | ١١ |
| | وقالوا أئذا كنا عظاما ورفاتا أئنا لمبعوثون خلقا جديدا | ٤٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وقالوا أئذا كنا عظاما ورفاتا أئنا لمبعوثون خلقا جديدا | ٩٨ | ك « | ١٧ |
| | قالوا أئذا متنا وكنا ترابا وعظاما أئنا لمبعوثون | ٨٢ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | أئذا متنا وكنا ترابا وعظاما أئنا لمبعوثون ... ... ... | ١٦ | ك الصافات | ٣٧ |
| | وكانوا يقولون أئذا متنا وكنا ترابا وعظاما أئنا لمبعوثون | ٤٧ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | ألا يظن أولئك أنهم مبعوثون . ليوم عظيم ... ... | ٤ | ك المطففين | ٨٣ |
| مَبْعُوثِينَ | : وقالوا إن هى إلا حياتنا الدنيا وما نحن بمبعوثين | ٢٩ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | إن هى إلا حياتنا الدنيا نموت ونحيا وما نحن بمبعوثين | ٣٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| بُعْثِرَ | : أفلا يعلم إذا بعثر ما فى القبور... ... ... ... ... | ٩ | ك العاديات | ١٠٠ |
| بُعْثِرَتْ | : وإذا القبور بعثرت . علمت نفس ما قدمت وأخرت | ٤ | ك الانفطار | ٨٢ |
| بَعُدَتْ | : ولكن بعدت عليهم الشقة ... ... ... ... ... | ٤٢ | م التوبة | ٩ |
| بَعِدَتْ | : ألا بعدا لمدين كما بعدت ثمود ... ... ... ... | ٩٥ | ك هود | ١١ |
| بَاعِدْ | : فقالوا ربنا باعد بين أسفارنا وظلموا أنفسهم... ... | ١٩ | ك سبأ | ٣٤ |
| بُعْدَ | : حتى إذا جاءنا قال يا ليت بينى وبينك بعد المشرقين | ٣٨ | ك الزخرف | ٤٣ |
| بُعْدًا | : واستوت على الجودى وقيل بعدا للقوم الظالمين | ٤٤ | ك هود | ١١ |
| (٦) | ألا إن عادا كفروا ربهم ألا بعدا لعاد قوم هود | ٦٠ | ك « | ١١ |
| | ألا إن ثمودا كفروا ربهم ألا بعدا لثمود ... ... | ٦٨ | ك « | ١١ |
| | كأن لم يغنوا فيها ألا بعدا لمدين كما بعدت ثمود | ٩٥ | ك « | ١١ |
| | فجعلناهم غثاء فبعدا للقوم الظالمين ... ... ... ... | ٤١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وجعلناهم أحاديث فبعدا لقوم لا يؤمنون ... ... | ٤٤ | ك « | ٢٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بَعِيدٍ | : وإن الذين اختلفوا فى الكتاب لفى شقاق بعيد | ١٧٦ | م البقرة | ٢ |
| (١٩) | مسومة عند ربك وما هى من الظالمين ببعيد... ... | ٨٣ | ك هود | ١١ |
| | وما قوم لوط منكم ببعيد ... ... ... ... ... ... | ٨٩ | ك « | ١١ |
| | أولئك فى ضلال بعيد ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | لا يقدرون مما كسبوا على شىء ذلك هو الضلال البعيد | ١٨ | ك « | ١٤ |
| | وإن أدرى أقريب أم بعيد ما توعدون... ... ... | ١٠٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ذلك هو الضلال البعيد... ... ... ... ... ... | ١٢ | م الحج | ٢٢ |
| | وإن الظالمين لفى شقاق بعيد ... ... ... ... ... | ٥٣ | « | ٢٢ |
| | إذا رأتهم من مكان بعيد سمعوا لها تغيظا وزفيرا | ١٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | فكث غير بعيد فقال أحطت بما لم تحط به ... ... | ٢٢ | ك النمل | ٢٧ |
| | بل الذين لا يؤمنون بالآخرة فى العذاب والضلال البعيد | ٨ | ك سبأ | ٣٤ |
| | وقالوا آمنا به وأنى لهم التناوش من مكان بعيد | ٥٢ | ك « | ٣٤ |
| | وقد كفروا به من قبل ويقذفون بالغيب من مكان بعيد | ٥٣ | ك « | ٣٤ |
| | أولئك ينادون من مكان بعيد ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك فصلت | ٤١ |
| | من أضل ممن هو فى شقاق بعيد... ... ... ... ... | ٥٢ | ك « | ٤١ |
| | ألا إن الذين يمارون فى الساعة لفى ضلال بعيد | ١٨ | ك الشورى | ٤٢ |
| | أئذا متنا وكنا ترابا ذلك رجع بعيد ... ... ... ... | ٣ | ك ق | ٥٠ |
| | قال قرينه ربنا ما أطغيته ولكن كان فى ضلال بعيد | ٢٧ | ك « | ٥٠ |
| | وأزلفت الجنة للمتقين غير بعيد ... ... ... ... .. | ٣١ | ك « | ٥٠ |
| بَعِيدًا | : وما عملت من سوء تود لو أن بينها وبينه أمدا بعيدا | ٣٠ | م آل عمران | ٣ |
| (٦) | ويريد الشيطان أن يضلهم ضلالا بعيدا... ... ... | ٦٠ | م النساء | ٤ |
| | ومن يشرك بالله فقد ضل ضلالا بعيدا ... ... ... | ١١٦ | م « | ٤ |
| | ومن يكفر بالله وملائكته وكتبه ورسله واليوم الآخر فقد ضل ضلالا بعيدا ... ... ... ... | ١٣٦ | م « | ٤ |
| | إن الذين كفروا وصدوا عن سبيل الله قد ضلوا ضلالا بعيدا | ١٦٧ | م « | ٤ |
| | إنهم يرونه بعيدا . ونراه قريبا ... ... ... ... | ٦ | ك المعارج | ٧٠ |
| مُبْعَدُونَ | : إن الذين سبقت لهم منا الحسنى أولئك عنها مبعدون | ١٠١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| بَعْدِ | : الذين ينقضون عهد الله من بعد ميثاقه ... ... ... | ٢٧ | م البقرة | ٢ |
| (١٤٨) | ثم عفونا عنكم من بعد ذلك لعلكم تشكرون ... ... | ٥٢ | م « | ٢ |
| | ثم بعثناكم من بعد موتكم لعلكم تشكرون... ... ... | ٥٦ | م « | ٢ |
| | ثم توليتم من بعد ذلك فلولا فضل الله عليكم ورحمته لكنتم من الخاسرين ... ... ... ... ... ... | ٦٤ | م « | ٢ |
| | ثم قست قلوبكم من بعد ذلك فهى كالحجارة ... ... | ٧٤ | م « | ٢ |
| | ثم يحرفونه من بعد ما عقلوه ... ... ... ... ... | ٧٥ | م « | ٢ |
| | ود كثير من أهل الكتاب لو يردونكم من بعد إيمانكم كفارا | ١٠٩ | م « | ٢ |
| | حسدا من عند أنفسهم من بعد ما تبين لهم الحق | ١٠٩ | م « | ٢ |
| | ولئن اتبعت أهواءهم بعد الذى جاءك من العلم مالك من الله من ولى ولا نصير ... ... ... | ١٢٠ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بَعْد | ولئن اتبعت أهواءهم من بعـد ما جاءك من العلم إنك إذا لمن الظالمين ... ... ... ... ... ... | ١٤٥ م | البقـرة | ٢ |
| | إن الذين يكتمون ما أنزلنا من البينات والهدى من بعد ما بيناه للناس فى الكتاب أولئك يلعنهم الله | ١٥٩ م | » | ٢ |
| | وما أنزل الله من السماء من ماء فأحيا به الأرض بعد موتها | ١٦٤ م | » | ٢ |
| | فمن اعتدى بعد ذلك فله عذاب أليم ... ... ... ... | ١٧٨ م | » | ٢ |
| | فمن بدله بعد ما سمعه فإنما إثمه على الذين يبدلونه | ١٨١ م | » | ٢ |
| | فإن زللتم من بعد ما جاءتكم البينات فاعلموا أن الله عزيز حكيم | ٢٠٩ م | » | ٢ |
| | ومن يبدل نعمة الله من بعد ما جاءته فإن الله شديد العقاب | ٢١١ م | » | ٢ |
| | وما اختلف فيه إلا الذين أوتوه من بعد ما جاءتهم البينات | ٢١٣ م | » | ٢ |
| | فإن طلقها فلا تحل له من بعد حتى تنكح زوجا غيره | ٢٣٠ م | » | ٢ |
| | ألم تر إلى الملإ من بنى إسرائيل من بعـد موسى | ٢٤٦ م | » | ٢ |
| | ولو شاء الله ما اقتتل الذين من بعـدهم من بعـد ما جاءتهم البينات ... ... ... ... ... ... | ٢٥٣ م | » | ٢ |
| | قال أنى يحيى هـذه الله بعد موتها ... ... ... .. | ٢٥٩ م | » | ٢ |
| | ربنا لا تزغ قلوبنا بعد إذ هديتنا ... ... ... ... | ٨ م | آل عمران | ٣ |
| | وما اختلف الذين أوتوا الكتاب إلا من بعد ما جاءهم العلم | ١٩ م | » | ٣ |
| | فمن حاجك فيـه من بعد ما جاءك من العلم فقـل تعالوا ندع أبناءنا وأبناءكم ... ... ... ... ... | ٦١ م | » | ٣ |
| | أيأمركم بالكفر بعد إذ أنتم مسلمون... ... ... ... | ٨٠ م | » | ٣ |
| | فمن تولى بعد ذلك فأولئك هم الفاسقون... ... ... | ٨٢ م | » | ٣ |
| | كيف يهدى الله قوما كفروا بعد إيمانهم ... ... | ٨٦ م | » | ٣ |
| | إلا الذين تابوا من بعد ذلك وأصلحوا فإن الله غفور رحيم | ٨٩ م | » | ٣ |
| | إن الذين كفروا بعـد إيمانهم ثم ازدادوا كفرا لن تقبل توبتهم ... ... ... ... ... ... | ٩٠ م | » | ٣ |
| | فمن افترى على الله الكذب من بعد ذلك فأولئك هم الظالمون | ٩٤ م | » | ٣ |
| | إن تطيعـوا فريقا من الذين أوتوا الكتاب يردوكم بعـد إيمانكم كافرين ... ... ... ... ... ... | ١٠٠ م | » | ٣ |
| | ولا تكونوا كالذين تفرقوا واختلفوا من بعد ما جاءهم البينات | ١٠٥ م | » | ٣ |
| | فأما الذين اسودت وجوههم أكفرتم بعد إيمانكم | ١٠٦ م | » | ٣ |
| | وتنازعتم فى الأمر وعصيتم من بعد ما أراكم ما تحبون | ١٥٢ م | » | ٣ |
| | ثم أنزل عليكم من بعد الغم أمنة نعاسا ... ... ... | ١٥٤ م | » | ٣ |
| | الذين استجابوا لله والرسول من بعد ما أصابهم القرح | ١٧٢ م | » | ٣ |
| | فلأمه السدس من بعـد وصية يوصى بهـا أو دين | ١١ م | النسـاء | ٤ |
| | فلكم الربع مما تركن من بعد وصية يوصين بها أو دين | ١٢ م | » | ٤ |
| | فلهن الثمن مما تركتم من بعد وصية توصون بها أو دين | ١٢ م | » | ٤ |
| | فهم شركاء فى الثلث من بعد وصية يوصى بها أو دين غير مضار | ١٢ م | » | ٤ |
| | ولا جناح عليكم فيما تراضيتم به من بعد الفريضة... ... | ٢٤ م | » | ٤ |
| | ومن يشاقق الرسول من بعد ما تبين له الهدى ويتبع غير سبيل المؤمنين نوله ما تولى ... ... ... ... | ١١٥ م | » | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بَعْد | ثم اتخذوا العجل من بعد ما جاءتهم البينات فعفونا عن ذلك | ١٥٣ م | النسـاء | ٤ |
| | لئلا يكون للناس على الله حجة بعد الرسل... ... ... | ١٦٥ م | » | ٤ |
| | فمن كفر بعد ذلك منكم فقد ضل سواء السبيل ... ... | ١٢ م | المائدة | ٥ |
| | ثم إن كثيرا منهم بعد ذلك فى الأرض لمسرفون | ٣٢ م | » | ٥ |
| | فمن تاب من بعـد ظلمه وأصلح فإن الله يتوب عليه | ٣٩ م | » | ٥ |
| | يحرفون الكلم من بعد مواضعه يقولون إن أوتيتم هذا فخذوه | ٤١ م | » | ٥ |
| | ثم يتولون من بعد ذلك وما أولئك بالمؤمنين ... ... | ٤٣ م | » | ٥ |
| | فمن اعتدى بعد ذلك فله عذاب أليم ... ... ... ... | ٩٤ م | » | ٥ |
| | تحبسونهما من بعد الصلاة فيقسمان بالله ... ... ... | ١٠٦ م | » | ٥ |
| | أو يخافوا أن ترد أيمان بعد أيمانهم ... ... ... ... | ١٠٨ م | » | ٥ |
| | فمن يكفر بعـد منكم فإنى أعذبه عذابا لا أعذبه أحدا | ١١٥ م | » | ٥ |
| | وإما ينسينك الشيطان فلا تقعد بعد الذكرى مع القوم الظالمين | ٦٨ ك | الأنعام | ٦ |
| | ونرد على أعقابنا بعد إذ هدانا الله ... ... ... ... | ٧١ ك | » | ٦ |
| | ولا تفسدوا فى الأرض بعـد إصلاحها ... ... ... | ٥٦ ك | الأعراف | ٧ |
| | واذكروا إذ جعلكم خلفاء من بعد قوم نوح ... ... | ٦٩ ك | » | ٧ |
| | واذكروا إذ جعلكم خلفاء من بعد عاد وبوأكم فى الأرض | ٧٤ ك | » | ٧ |
| | ولا تفسدوا فى الأرض بعد إصلاحها ذلكم خير لكم | ٨٥ ك | » | ٧ |
| | قد افترينا على الله كذبا إن عدنا فى ملتكم بعد إذ نجانا الله منها | ٨٩ ك | » | ٧ |
| | أو لم يهد للذين يرثون الأرض من بعد أهلها أن لو نشاء أصبناهم بذنوبهم ... ... ... ... ... ... | ١٠٠ ك | » | ٧ |
| | قالوا أوذينا من قبـل أن تأتينا ومن بعـد ما جئتنا | ١٢٩ ك | » | ٧ |
| | يجادلونك فى الحق بعد ما تبين كأنما يساقون إلى الموت | ٦ م | الأنفال | ٨ |
| | والذين آمنوا من بعد وهاجروا وجاهدوا معكم فأولئك منكم | ٧٥ م | » | ٨ |
| | وإن نكثوا أيمانهم من بعد عهدهم وطعنوا فى دينكم فقاتلوا أئمـة الكفر ... ... ... ... ... ... | ١٢ م | التوبة | ٩ |
| | ثم يتوب الله من بعد ذلك على من يشاء ... ... ... | ٢٧ م | » | ٩ |
| | إنما المشركون نجس فلا يقربوا المسجد الحرام بعد عامهم | ٢٨ م | » | ٩ |
| | لا تعتذروا قد كفرتم بعـد إيمانكم ... ... ... ... | ٦٦ م | » | ٩ |
| | ولقد قالوا كلمة الكفر وكفروا بعد إسلامهم ... ... | ٧٤ م | » | ٩ |
| | ولو كانوا أولى قربى من بعد ما تبين لهم أنهم أصحاب الجحيم | ١١٣ م | » | ٩ |
| | وما كان الله ليضل قوما بعد إذ هداهم حتى يبين لهم ما يتقون | ١١٥ م | » | ٩ |
| | من بعد ما كاد يزيغ قلوب فريق منهم ... ... ... | ١١٧ م | » | ٩ |
| | ما من شفيع إلا من بعد إذنه ذلكم الله ربكم فاعبدوه | ٣ ك | يونس | ١٠ |
| | وإذا أذقنا الناس رحمة من بعد ضراء مستهم إذا لهم مكر | ٢١ ك | » | ١٠ |
| | فذلكم الله ربكم الحق فماذا بعـد الحق إلا الضلال | ٣٢ ك | » | ١٠ |
| | ولئن قلت إنكم مبعوثون من بعد الموت ليقولن الذين كفروا إن هذا إلا سحر مبين ... ... ... ... | ٧ ك | هـود | ١١ |
| | ولئن أذقناه نعماء بعد ضراء مسته ليقولن ذهب السيئات عنى | ١٠ ك | » | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بَعْد : | ثم بدا لهم من بعد ما رأوا الآيات ليسجننه حتى حين | ٣٥ | ك يوسف | ١٢ |
| | وقال الذى نجا منهما وادّكر بعد أمة أنا أنبئكم بتأويله | ٤٥ | ك « | ١٢ |
| | ثم يأتى من بعد ذلك سبع شداد يأكلن ما قدمتم لهنّ | ٤٨ | ك « | ١٢ |
| | ثم يأتى من بعد ذلك عام فيه يغاث الناس وفيه يعصرون | ٤٩ | ك « | ١٢ |
| | وجاء بكم من البدو من بعد أن نزغ الشيطان بينى وبين إخوتى | ١٠٠ | ك « | ١٢ |
| | والذين ينقضون عهد الله من بعد ميثاقه ويقطعون ما أمر الله به أن يوصل ويفسدون فى الأرض أولئك لهم اللعنة ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | م الرعد | ١٣ |
| | ولئن اتبعت أهواءهم بعد ما جاءك من العلم مالك من الله من ولىّ ولا واق ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | م « | ١٣ |
| | والذين هاجروا فى الله من بعد ما ظلموا لنبوئنهم فى الدنيا | ٤١ | ك النحل | ١٦ |
| | والله أنزل من السماء ماء فأحيا به الأرض بعد موتها | ٦٥ | ك « | ١٦ |
| | ومنكم من يردّ إلى أرذل العمر لكى لا يعلم بعد علم شيئا | ٧٠ | ك « | ١٦ |
| | ولا تنقضوا الأيمان بعد توكيدها وقد جعلتم الله عليكم كفيلا | ٩١ | ك « | ١٦ |
| | ولا تكونوا كالتى نقضت غزلها من بعد قوة أنكاثا | ٩٢ | ك « | ١٦ |
| | فتزلّ قدم بعد ثبوتها وتذوقوا السوء بما صددتم عن سبيل الله | ٩٤ | ك « | ١٦ |
| | من كفر بالله من بعد إيمانه إلا من أكره وقلبه مطمئن | ١٠٦ | ك « | ٦ |
| | ثم إن ربك للذين هاجروا من بعد ما فتنوا ثم جاهدوا | ١١٠ | ك « | ١٦ |
| | ثم تابوا من بعد ذلك وأصلحوا إن ربك من بعدها لغفور رحيم | ١١٩ | ك « | ١٦ |
| | وكم أهلكنا من القرون من بعد نوح ... ... ... ... | ١٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وتالله لأكيدن أصنامكم بعد أن تولوا مدبرين ... ... | ٥٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ولقد كتبنا فى الزبور من بعد الذكر أن الأرض يرثها عبادى الصالحون ... ... ... ... ... ... | ١٠٥ | ك « | ٢١ |
| | ومنكم من يردّ إلى أرذل العمر لكيلا يعلم من بعد علم شيئا | ٥ | م الحج | ٢٢ |
| | ثم إنكم بعد ذلك لميتون ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | إلا الذين تابوا من بعد ذلك وأصلحوا فإن الله غفور رحيم | ٥ | م النور | ٢٤ |
| | ومن يكرههن فإن الله من بعد إكراههن غفور رحيم | ٣٣ | م « | ٢٤ |
| | ثم يتولى فريق منهم من بعد ذلك وما أولئك بالمؤمنين | ٤٧ | م « | ٢٤ |
| | وليبدلنهم من بعد خوفهم أمنا ... ... ... ... ... | ٥٥ | م « | ٢٤ |
| | ومن كفر بعد ذلك فأولئك هم الفاسقون ... ... | ٥٥ | م « | ٢٤ |
| | وحين تضعون ثيابكم من الظهيرة ومن بعد صلاة العشاء | ٥٨ | م « | ٢٠ |
| | لقد أضلنى عن الذكر بعد إذ جاءنى ... ... ... ... | ٢٩ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ثم أغرقنا بعد الباقين ... ... ... ... ... ... | ١٢٠ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات وذكروا الله كثيرا وانتصروا من بعد ما ظلموا... ... ... ... ... | ٢٢٧ | م « | ٢٦ |
| | إلا من ظلم ثم بدّل حسنا بعد سوء فإنى غفور رحيم | ١١ | ك النمل | ٢٧ |
| | ولقد آتينا موسى الكتاب من بعد ما أهلكنا القرون الأولى | ٤٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | ولا يصدّنك عن آيات الله بعد إذ أنزلت إليك... ... | ٨٧ | ك « | ٢٨ |
| | من نزل من السماء ماء فأحيا به الأرض من بعد موتها | ٦٣ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | فى أدنى الأرض وهم من بعد غلبهم سيغلبون ... ... | ٣ | ك الروم | ٣٠ |
| | فى بضع سنين لله الأمر من قبل ومن بعد ... ... | ٤ | ك « | ٣٠ |
| | ويخرج الميت من الحى ويحيى الأرض بعد موتها ... | ١٩ | ك « | ٣٠ |
| | وينزل من السماء ماء فيحيى به الأرض بعد موتها | ٢٤ | ك « | ٣٠ |
| | فانظر إلى آثار رحمة الله كيف يحيى الأرض بعد موتها | ٥٠ | ك « | ٣٠ |
| | الله الذى خلقكم من ضعف ثم جعل من بعد ضعف قوة | ٥٤ | ك « | ٣٠ |
| | ثم جعل من بعد قوة ضعفا وشيبة ... ... ... ... | ٥٤ | ك « | ٣٠ |
| | لا يحل لك النساء من بعد ولا أن تبدل بهن من أزواج | ٥٢ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | أنحن صددناكم عن الهدى بعد إذ جاءكم ... ... | ٣٢ | ك سبأ | ٣٤ |
| | فأحيينا به الأرض بعد موتها كذلك النشور ... ... | ٩ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ولتعلمن نبأه بعد حين ... ... ... ... ... ... | ٨٨ | ك ص | ٣٨ |
| | يخلقكم فى بطون أمهاتكم خلقا من بعد خلق فى ظلمات ثلاث | ٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ولئن أذقناه رحمة منا من بعد ضراء مسته ليقولن هذا لى | ٥٠ | ك فصلت | ٤١ |
| | وما تفرقوا إلا من بعد ما جاءهم العلم بغيا بينهم... ... | ١٤ | ك الشورى | ٤٢ |
| | والذين يحاجون فى الله من بعد ما استجيب له حجتهم داحضة | ١٦ | ك « | ٤٢ |
| | وهو الذى ينزل الغيث من بعد ما قنطوا وينشر رحمته | ٢٨ | ك « | ٤٢ |
| | ولمن انتصر بعد ظلمه فأولئك ما عليهم من سبيل | ٤١ | ك « | ٤٢ |
| | وما أنزل الله من السماء من رزق فأحيا به الأرض بعد موتها | ٥ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | فبأىّ حديث بعد الله وآياته يؤمنون ... ... ... | ٦ | ك « | ٤٥ |
| | فما اختلفوا إلا من بعد ما جاءهم العلم بغيا بينهم | ١٧ | ك « | ٤٥ |
| | وجعل على بصره غشاوة فمن يهديه من بعد الله | ٢٣ | ك « | ٤٥ |
| | قالوا يا قومنا إنا سمعنا كتابا أنزل من بعد موسى | ٣٠ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | فإما منًّا بعد وإما فداء حتى تضع الحرب أوزارها | ٤ | م محمد | ٤٧ |
| | إن الذين ارتدوا على أدبارهم من بعد ما تبين لهم الهدى الشيطان سوّل لهم ... ... ... ... | ٢٥ | م « | ٤٧ |
| | وصدّوا عن سبيل الله وشاقوا الرسول من بعد ما تبين لهم الهدى لن يضروا الله شيئا ... ... | ٣٢ | م « | ٤٧ |
| | وهو الذى كف أيديهم عنكم وأيديكم عنهم ببطن مكة من بعد أن أظفركم عليهم ... ... ... ... | ٢٤ | م الفتح | ٤٨ |
| | بئس الاسم الفسوق بعد الإيمان ... ... ... ... | ١١ | م الحجرات | ٤٩ |
| | وكم من ملك فى السموات لا تغنى شفاعتهم شيئا إلا من بعد أن يأذن الله لمن يشاء ... ... ... | ٢٦ | م النجم | ٥٣ |
| | أولئك أعظم درجة من الذين أنفقوا من بعد وقاتلوا | ١٠ | م الحديد | ٥٧ |
| | اعلموا أن الله يحيى الأرض بعد موتها ... ... ... | ١٧ | م « | ٥٧ |
| | لا تدرى لعل الله يحدث بعد ذلك أمرا ... ... | ١ | م الطلاق | ٦٥ |
| | سيجعل الله بعد عسر يسرا ... ... ... ... ... | ٧ | م « | ٦٥ |
| | فإن الله هو مولاه وجبريل وصالح المؤمنين والملائكة بعد ذلك ظهير ... ... ... ... ... ... | ٤ | م التحريم | ٦٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بَعْد: | عتل بعـد ذلك زنيم ... ... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك القـلم | ٦٨ |
| | والأرض بعد ذلك دحاها ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك النازعات | ٧٩ |
| | فـا يكذبك بعد بالدين... ... ... ... ... ... | ٧ | ك التين | ٩٥ |
| | وما تفرق الذين أوتوا الكتاب إلا من بعد ماجاءتهم البينة | ٤ | م البيّنـة | ٩٨ |
| بَعْدِكَ: | قال فإنا قد فتنا قومك من بعدك وأضلهم السامرى | ٨٥ | ك طـه | ٢٠ |
| بَعْدِكُمْ: | إن يشأ يذهبكم و يستخلف من بعدكم ما يشاء ... | ١٣٣ | ك الأنعام | ٦ |
| بَعْدِه: | و إذ واعدنا موسى أربعين ليلة ثم اتخذتم العجل من بعده | ٥١ | م البقـرة | ٢ |
| (٢١) | ولقد آتينا موسى الكتاب وقفينا من بعـده بالرسل | ٨٧ | م « | ٢ |
| | ولقد جاءكم موسى بالبينات ثم اتخذتم العجل من بعده | ٩٢ | م « | ٢ |
| | لم تحاجّون فى إبراهيم وما أنزلت التوراة والإنجيل إلا من بعده ... ... ... ... ... ... ... | ٦٥ | م آل عمران | ٣ |
| | و إن يخذلكم فمن ذا الذى ينصركم من بعده ... ... | ١٦٠ | م « | ٣ |
| | إنا أوحينا إليك كما أوحينا إلى نوح والنبيين من بعده | ١٦٣ | م النسـاء | ٤ |
| | أنه من عمل منكم سوءا بجهالة ثم تاب من بعـده وأصلح فأنه غفـور رحيم ... ... ... ... ... | ٥٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | واتخذ قوم موسى من بعده من حليهم عجلا جسدا له خوار | ١٤٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | وأن عسى أن يكون قد اقترب أجلهم فبأىّ حديث بعده يؤمنون ... ... ... ... ... ... ... | ١٨٥ | ك « | ٧ |
| | ثم بعثنا من بعده رسلا إلى قومهم فجاءوهم بالبينات | ٧٤ | ك يـونس | ١٠ |
| | يخل لكم وجه أبيكم وتكونوا من بعده قوما صالحين | ٩ | ك يوسـف | ١٢ |
| | وقلنا من بعده لبنى إسرائيل اسكنوا الأرض ... ... | ١٠٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ولئن أرسلنا ريحا فرأوه مصفرا لظلوا من بعده يكفرون | ٥١ | ك الـروم | ٣٠ |
| | ولو أنما فى الأرض من شجرة أقلام والبحر يمدّه من بعده سبعة أبحر ما نفدت كلمات الله ... ... | ٢٧ | م لقـمان | ٣١ |
| | وما كان لكم أن تؤذوا رسـول الله ولا أن تنكحوا أزواجه من بعده أبدا ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وما يمسك فلا مرسل له من بعده وهو العزيز الحكيم | ٢ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | ولئن زالتا إن أمسكهما من أحد من بعده ... ... | ٤١ | ك « | ٣٥ |
| | وما أنزلنا على قومه من بعـده من جنـد من السماء | ٢٨ | ك يس | ٣٦ |
| | حتى إذا هلك قلتم لن يبعث الله من بعـده رسولا | ٣٤ | ك غافـر | ٤٠ |
| | ومن يضلل الله فما له من ولىّ من بعده... ... ... | ٤٤ | ك الشـورى | ٤٢ |
| | فبأىّ حديث بعده يؤمنون ... ... ... ... ... ... | ٥٠ | ك المرسلات | ٧٧ |
| بَعْدِها: | والذين عملوا السيئات ثم تابوا من بعدها وآمنوا | ١٥٣ | ك الأعراف | ٧ |
| (٦) | إن ربك من بعدها لغفور رحيم ... ... ... ... ... | ١٥٣ | ك « | ٧ |
| | ثم جاهدوا وصبروا إن ربك من بعدها لغفور رحيم | ١١٠ | ك النحـل | ١٦ |
| | ثم تابوا من بعـد ذلك وأصـلحوا إن ربك من بعدها لغفور رحيم ... ... ... ... ... ... | ١١٩ | ك « | ١٦ |
| | قال إن سألتك عن شىء بعدها فلا تصاحبنى ... ... | ٧٦ | ك الكهف | ١٨ |
| | وكم قصمنا من قرية كانت ظالمة وأنشأنا بعدها قوما آخرين | ١١ | ك الأنبياء | ٢١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بَعْدِهِم: | ولو شاء الله ما اقتتـل الذين من بعدهم ... ... | ٢٥٣ | م البقـرة | ٢ |
| (١٧) | فأهلكناهم بذنوبهـم وأنشأنا من بعدهم قرنا آخرين | ٦ | ك الأنعـام | ٦ |
| | ثم بعثنا من بعـدهم موسى بآياتنا إلى فرعون وملئه | ١٠٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | فخلف من بعدهم خلف ورثوا الكتاب ... ... ... | ١٦٩ | م « | ٧ |
| | إنما أشرك آباؤنا من قبـل وكنا ذرّية من بعـدهم | ١٧٣ | ك « | ٧ |
| | ثم جعلناكم خلائف فى الأرض من بعـدهم لننظر كيف تعملون ... ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك يـونس | ١٠ |
| | ثم بعثنا من بعدهم موسى وهرون إلى فرعون وملئه | ٧٥ | ك « | ١٠ |
| | والذين من بعدهم لايعلمهم إلا الله ... ... ... ... | ٩ | ك إبراهـيم | ١٤ |
| | ولنسكنكم الأرض من بعدهم ذلك لمن خاف مقامى | ١٤ | ك « | ١٤ |
| | فخلف من بعدهم خلف أضاعوا الصلاة واتبعوا الشهوات | ٥٩ | ك مـريم | ١٩ |
| | ثم أنشأنا من بعدهم قرنا آخرين... ... ... ... ... | ٣١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ثم أنشأنا من بعدهم قرونا آخرين ... ... ... ... | ٤٢ | ك « | ٢٣ |
| | فتلك مساكنهم لم تسكن من بعدهم إلا قليلا ... ... | ٥٨ | ك القصص | ٢٨ |
| | كذبت قبلهم قوم نوح والأحزاب من بعدهم ... ... | ٥ | ك غافـر | ٤٠ |
| | مثل دأب قوم نوح وعاد وثمود والذين من بعدهم | ٣١ | ك « | ٤٠ |
| | و إن الذين أورثوا الكتاب من بعدهم لفى شك منه مريب | ١٤ | ك الشورى | ٤٢ |
| | والذين جاؤا من بعدهم يقولون ربنا اغفر لنا ولإخواننا | ١٠ | م الحشـر | ٥٩ |
| بَعْدِهِنّ: | ليس عليكم ولا عليهم جناح بعدهن ... ... ... | ٥٨ | م النـور | ٢٤ |
| بَعْدِى: | إذ قال لبنيه ماتعبدون من بعدى قالوا نعبد إلهك | ١٣٣ | م البقـرة | ٢ |
| (٤) | بئسما خلفتمونى من بعدى أعجلتم أمر ربكم ... ... | ١٥٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | قال رب اغفر لى وهب لى ملكا لاينبغى لأحد من بعدى | ٣٥ | ك ص | ٣٨ |
| | ومبشرا برسول يأتى من بعدى اسمه أحمد ... ... ... | ٦ | م الصـف | ٦١ |
| بَعِير: | ونمير أهلنا ونحفظ أخانا ونزداد كيل بعير ... ... | ٦٥ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | قالوا نفقـد صواع الملك ولمن جاء به حمل بعـير | ٧٢ | ك « | ١٢ |
| بَعْض: | وقلنا اهبطوا بعضكم لبعض عدوّ ولكم فى الأرض مستقر | ٣٦ | م البقـرة | ٢ |
| (٥٧) | و إذا خلا بعضهم إلى بعض قالوا أتحدثونهم بما فتح الله عليكم ... ... ... ... ... ... ... | ٧٦ | م « | ٢ |
| | وهو محرم عليكم إخراجهم أفتؤمنون ببعض الكتاب | ٨٥ | م « | ٢ |
| | وتكفرون ببعض فما جزاء من يفعل ذلك منكم إلا خزى | ٨٥ | م « | ٢ |
| | وما أنت بتابع قبلتهـم وما بعضهم بتابع قبلة بعض | ١٤٥ | م « | ٢ |
| | ولولا دفع الله الناس بعضهم ببعض لفسدت الأرض | ٢٥١ | م « | ٢ |
| | تلك الرسل فضلنا بعضهم على بعض منهم من كلم الله | ٢٥٣ | م « | ٢ |
| | قال كم لبثت قال لبثت يوما أو بعض يوم ... ... | ٢٥٩ | م « | ٢ |
| | ذرّية بعضها من بعض والله سميع عليم ... ... ... | ٣٤ | م آل عمران | ٣ |
| | ولأحلّ لكم بعض الذى حرم عليكم ... ... ... ... | ٥٠ | م « | ٣ |
| | إنما استزلّهم الشيطان ببعض ما كسبوا ... ... ... | ١٥٥ | م « | ٣ |
| | لاأضيع عمل عامل منكم من ذكر أو أنثى بعضكم من بعض | ١٩٥ | م « | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بَعْض: | ولا تعضلوهن لتذهبوا ببعض ما آتيتموهن... ... | ١٩ | م النساء | ٤ |
| | وكيف تأخذونه وقد أفضى بعضكم إلى بعض ... ... | ٢١ | م « | ٤ |
| | والله أعلم بإيمانكم بعضكم من بعض ... ... ... ... | ٢٥ | م « | ٤ |
| | ولا تتمنوا ما فضل الله به بعضكم على بعض ... ... | ٣٢ | م « | ٤ |
| | الرجال قوامون على النساء بما فضل الله بعضهم على بعض | ٣٤ | م « | ٤ |
| | ويقولون نؤمن ببعض ... ... ... ... ... ... | ١٥٠ | م « | ٤ |
| | ونكفر ببعض ويريدون أن يتخذوا بين ذلك سبيلا | ١٥٠ | م « | ٤ |
| | واحذرهم أن يفتنوك عن بعض ما أنزل الله إليك | ٤٩ | م المائدة | ٥ |
| | فإن تولوا فاعلم أنما يريد الله أن يصيبهم ببعض ذنوبهم | ٤٩ | م « | ٥ |
| | لا تتخذوا اليهود والنصارى أولياء بعضهم أولياء بعض | ٥١ | م « | ٥ |
| | وكذلك فتنا بعضهم ببعض ليقولوا أهؤلاء من الله عليهم | ٥٣ | ك الأنعام | ٦ |
| | أو يلبسكم شيعا ويذيق بعضكم بأس بعض ... ... | ٦٥ | ك « | ٦ |
| | يوحى بعضهم إلى بعض زخرف القول غرورا | ١١٢ | ك « | ٦ |
| | ربنا استمتع بعضنا ببعض وبلغنا أجلنا الذى أجلت لنا | ١٢٨ | ك « | ٦ |
| | وكذلك نولى بعض الظالمين بعضا بما كانوا يكسبون | ١٢٩ | ك « | ٦ |
| | أو يأتى ربك أو يأتى بعض آيات ربك ... ... ... | ١٥٨ | ك « | ٦ |
| | يوم يأتى بعض آيات ربك لا ينفع نفسا إيمانها | ١٥٨ | ك « | ٦ |
| | ورفع بعضكم فوق بعض درجات ليبلوكم فى ما آتاكم | ١٦٥ | ك « | ٦ |
| | قال اهبطوا بعضكم لبعض عدو ولكم فى الأرض مستقر | ٢٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | ويجعل الخبيث بعضه على بعض فيركمه جميعا ... ... | ٣٧ | م الأنفال | ٨ |
| | والذين آووا ونصروا أولئك بعضهم أولياء بعض | ٧٢ | م « | ٨ |
| | والذين كفروا بعضهم أولياء بعض ... ... ... ... | ٧٣ | م « | ٨ |
| | وأولوا الأرحام بعضهم أولى ببعض فى كتاب الله | ٧٥ | م « | ٨ |
| | المنافقون والمنافقات بعضهم من بعض ... ... ... | ٦٧ | م التوبة | ٩ |
| | والمؤمنون والمؤمنات بعضهم أولياء بعض ... ... | ٧١ | م « | ٩ |
| | وإذا ما أنزلت سورة نظر بعضهم إلى بعض هل يراكم من أحد | ١٢٧ | م « | ٩ |
| | وإما نرينك بعض الذى نعدهم أو نتوفينك فإلينا مرجعهم | ٤٦ | ك يونس | ١٠ |
| | فلعلك تارك بعض ما يوحى إليك وضائق به صدرك | ١٢ | م هود | ١١ |
| | إن نقول إلا اعتراك بعض آلهتنا بسوء ... ... ... | ٥٤ | ك « | ١١ |
| | وألقوه فى غيابة الجب يلتقطه بعض السيارة إن كنتم فاعلين | ١٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | يسقى بماء واحد ونفضل بعضها على بعض فى الأكل | ٤ | م الرعد | ١٣ |
| | وإن ما نرينك بعض الذى نعدهم أو نتوفينك | ٤٠ | م « | ١٣ |
| | والله فضل بعضكم على بعض فى الرزق ... ... ... | ٧١ | ك النحل | ١٦ |
| | انظر كيف فضلنا بعضهم على بعض وللآخرة أكبر درجات | ٢١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ولقد فضلنا بعض النبيين ... ... ... ... ... | ٥٥ | ك « | ١٧ |
| | على بعض وآتينا داود زبورا ... ... ... ... ... | ٥٥ | ك « | ١٧ |
| | لا يأتون بمثله ولو كان بعضهم لبعض ظهيرا ... ... | ٨٨ | ك « | ١٧ |
| بَعْض: | قال قائل منهم كم لبثتم قالوا لبثنا يوما أو بعض يوم | ١٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | وتركنا بعضهم يومئذ يموج فى بعض ... ... ... ... | ٩٩ | م « | ١٨ |
| | قال اهبطا منها جميعا بعضكم لبعض عدو... ... ... | ١٢٣ | ك طه | ٢٠ |
| | ولولا دفع الله الناس بعضهم ببعض لهدمت صوامع | ٤٠ | م الحج | ٢٢ |
| | إذا لذهب كل إله بما خلق ولعلا بعضهم على بعض | ٩١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | قالوا لبثنا يوما أو بعض يوم فاسأل العادين ... ... | ١١٣ | ك « | ٢٣ |
| | ظلمات بعضها فوق بعض إذا أخرج يده لم يكد يراها | ٤٠ | م النور | ٢٤ |
| | طوافون عليكم بعضكم على بعض... ... ... ... ... | ٥٨ | م « | ٢٤ |
| | فإذا استأذنوك لبعض شأنهم فأذن لمن شئت منهم | ٦٢ | م « | ٢٤ |
| | وجعلنا بعضكم لبعض فتنة أتصبرون وكان ربك بصيرا | ٢٠ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ولو نزلناه على بعض الأعجمين . فقرأه عليهم ما كانوا به مؤمنين ... ... ... ... ... ... ... | ١٩٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | قل عسى أن يكون ردف لكم بعض الذى تستعجلون | ٧٢ | ك النمل | ٢٧ |
| | ثم يوم القيامة يكفر بعضكم ببعض ويلعن بعضكم بعضا | ٢٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ظهر الفساد فى البر والبحر بما كسبت أيدى الناس ليذيقهم بعض الذى عملوا لعلهم يرجعون... ... | ٤١ | ك الروم | ٣٠ |
| | وأولوا الأرحام بعضهم أولى ببعض فى كتاب الله | ٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ولو ترى إذ الظالمون موقوفون عند ربهم يرجع بعضهم إلى بعض القول ... ... ... ... ... | ٣١ | ك سبإ | ٣٤ |
| | فاليوم لا يملك بعضكم لبعض نفعا ولا ضرا ... ... | ٤٢ | ك « | ٣٤ |
| | وأقبل بعضهم على بعض يتساءلون ... ... ... ... | ٢٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| | فأقبل بعضهم على بعض يتساءلون ... ... ... ... | ٥٠ | ك « | ٣٧ |
| | خصمان بغى بعضنا على بعض فاحكم بيننا بالحق | ٢٢ | ك ص | ٣٨ |
| | وإن كثيرا من الخلطاء ليبغى بعضهم على بعض | ٢٤ | ك « | ٣٨ |
| | وإن يك صادقا يصبكم بعض الذى يعدكم ... ... | ٢٨ | ك غافر | ٤٠ |
| | فإما نرينك بعض الذى نعدهم أو نتوفينك فإلينا يرجعون | ٧٧ | ك « | ٤٠ |
| | ورفعنا بعضهم فوق بعض درجات ليتخذ بعضهم بعضا سخريا | ٣٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | قد جئتكم بالحكمة ولأبين لكم بعض الذى تختلفون فيه | ٦٣ | ك « | ٤٣ |
| | الأخلاء يومئذ بعضهم لبعض عدو إلا المتقين... ... | ٦٧ | ك « | ٤٣ |
| | وإن الظالمين بعضهم أولياء بعض والله ولى المتقين | ١٩ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | ولكن ليبلو بعضكم ببعض ... ... ... ... ... | ٤ | م محمد | ٤٧ |
| | سنطيعكم فى بعض الأمر والله يعلم إسرارهم ... ... | ٢٦ | م « | ٤٧ |
| | ولا تجهروا له بالقول كجهر بعضكم لبعض أن تحبط أعمالكم | ٢ | م الحجرات | ٤٩ |
| | اجتنبوا كثيرا من الظن إن بعض الظن إثم ... ... | ١٢ | م « | ٤٩ |
| | وأقبل بعضهم على بعض يتساءلون . قالوا إنا كنا قبل فى أهلنا ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك الطور | ٥٢ |
| | وإذ أسر النبى إلى بعض أزواجه حديثا فلما نبأت به | ٣ | م التحريم | ٦٦ |
| | وأظهره الله عليه عرف بعضه وأعرض عن بعض | ٣ | م « | ٦٦ |
| | فأقبل بعضهم على بعض يتلاومون ... ... ... ... | ٣٠ | م القلم | ٦٨ |
| | ولو تقول علينا بعض الأقاويل . لأخذنا منه باليمين | ٤٤ | ك الحاقة | ٦٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بَعْضًا : | فإن أمن بعضكم بعضا فليؤدّ الذى اؤتمن أمانته | ٢٨٣ | م البقـرة | ٢ |
| (٩) | ولا يتخذ بعضنا بعضا أربابا من دون الله ... ... | ٦٤ | م آل عمران | ٣ |
| | وكذلك نولّى بعض الظالمين بعضا بما كانوا يكسبون | ١٢٩ | ك الأنعام | ٦ |
| | فأتبعنا بعضهم بعضا وجعلناهم أحاديث ... ... ... | ٤٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | لا تجعلوا دعاء الرسول بينكم كدعاء بعضكم بعضا | ٦٣ | م النـور | ٢٤ |
| | ثم يوم القيامة يكفر بعضكم ببعض و يلعن بعضكم بعضا | ٢٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | بل إن يعد الظالمون بعضهم بعضا إلا غرورا | ٤٠ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | ورفعنا بعضهم فوق بعض درجات ليتخذ بعضهم بعضا سخريا | ٣٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ولا تجسسوا ولا يغتب بعضكم بعضا ... ... ... ... | ١٢ | م الحجرات | ٤٩ |
| بَعْضُكُم : | وقلنا اهبطوا بعضكم لبعض عدوّ ولكم فى الأرض مستقر | ٣٦ | م البقـرة | ٢ |
| (٢٠) | فإن أمن بعضكم بعضا فليؤدّ الذى اؤتمن أمانته | ٢٨٣ | م « | ٢ |
| | لا أضيع عمل عامل منكم من ذكر أو أنثى بعضكم من بعض | ١٩٥ | م آل عمران | ٣ |
| | وكيف تأخذونه وقد أفضى بعضكم إلى بعض... ... | ٢١ | م النسـاء | ٤ |
| | والله أعلم بإيمانكم بعضكم من بعض ... ... ... | ٢٥ | م « | ٤ |
| | ولا تتمنوا ما فضل الله به بعضكم على بعض ... ... | ٣٢ | م « | ٤ |
| | أو يلبسكم شيعا و يذيق بعضكم بأس بعض ... ... | ٦٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | ورفع بعضكم فوق بعض درجات ليبلوكم فى ما آتاكم | ١٦٥ | ك « | ٦ |
| | قال اهبطوا بعضكم لبعض عدوّ ولكم فى الأرض مستقر | ٢٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | والله فضل بعضكم على بعض فى الرزق ... ... ... | ٧١ | ك النحـل | ١٦ |
| | قال اهبطا منها جميعا بعضكم لبعض عدوّ ... ... ... | ١٢٣ | ك طـه | ٢٠ |
| | طوّافون عليكم بعضكم على بعض كذلك يبين الله لكم الآيات | ٥٨ | م النـور | ٢٤ |
| | لا تجعلوا دعاء الرسول بينكم كدعاء بعضكم بعضا... ... | ٦٣ | م « | ٢٤ |
| | وجعلنا بعضكم لبعض فتنة أتصبرون... ... ... ... | ٢٠ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ثم يوم القيامة يكفر بعضكم ببعض ... ... ... ... | ٢٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | و يلعن بعضكم بعضا ومأواكم النار ... ... ... ... | ٢٥ | ك « | ٢٩ |
| | فاليوم لا يملك بعضكم لبعض نفعا ولا ضرا ... ... | ٤٢ | ك سـبإ | ٣٤ |
| | ولكن ليبلو بعضكم ببعض ... ... ... ... ... ... | ٤ | م محمـد | ٤٧ |
| | ولا تجهروا له بالقول كجهر بعضكم لبعض أن تحبط أعمالكم | ٢ | م الحجرات | ٤٩ |
| | ولا تجسسوا ولا يغتب بعضكم بعضا ... ... ... ... | ١٢ | م « | ٤٩ |
| بَعْضُنَا : | ولا يتخذ بعضنا بعضا أربابا من دون الله... ... | ٦٤ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | ربنا استمتع بعضنا ببعض و بلغنا أجلنا الذى أجلت لنا | ١٢٨ | ك الأنعام | ٦ |
| | خصمان بغى بعضنا على بعض فاحكم بيننا بالحق | ٢٢ | ك ص | ٣٨ |
| بَعْضَهُ : | و يجعل الخبيث بعضه على بعض فيركمه جميعا | ٣٧ | م الأنفال | ٨ |
| (٣) | يفرحون بما أنزل إليك ومن الأحزاب من ينكر بعضه | ٣٦ | م الرعـد | ١٣ |
| | فلما نبأت به وأظهره الله عليه عرف بعضه وأعرض عن بعض... ... ... ... ... ... ... | ٣ | م التحريم | ٦٦ |
| بَعْضَهَا : | فقلنا اضربوه ببعضها كذلك يحيى الله الموتى | ٧٣ | م البقـرة | ٢ |
| (٤) | ذرّية بعضها من بعض والله سميع عليم ... ... ... | ٣٤ | م آل عمران | ٣ |
| | يسقى بماء واحد ونفضل بعضها على بعض فى الأكل | ٤ | م الرعـد | ١٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بَعْضَهَا : | ظلمات بعضها فوق بعض إذا أخرج يده لم يكد يراها | ٤٠ | م النـور | ٢٤ |
| بَعْضُهُم : | و إذا خلا بعضهم إلى بعض قالوا أتحدثونهم بما فتح الله عليكم... ... ... ... ... ... | ٧٦ | م البقـرة | ٢ |
| (٣٣) | وما أنت بتابع قبلتهم وما بعضهم بتابع قبلة بعض | ١٤٥م | « | ٢ |
| | ولولا دفع الله الناس بعضهم ببعض لفسدت الأرض | ٢٥١م | « | ٢ |
| | تلك الرسل فضلنا بعضهم على بعض ... ... ... | ٢٥٣م | « | ٢ |
| | منهم من كلم الله و رفع بعضهم درجات... ... ... | ٢٥٣م | « | ٢ |
| | الرجال قوّامون على النساء بما فضل الله بعضهم على بعض | ٣٤ | م النسـاء | ٤ |
| | لا تتخذوا اليهود والنصارى أولياء بعضهم أولياء بعض | ٥١ | م المائدة | ٥ |
| | وكذلك فتنا بعضهم ببعض ليقولوا أهؤلاء منّ الله عليهم | ٥٣ | ك الأنعام | ٦ |
| | يوحى بعضهم إلى بعض زخرف القول غرورا... ... | ١١٢ | ك « | ٦ |
| | والذين آووا ونصروا أولئك بعضهم أولياء بعض | ٧٢ | م الأنفال | ٨ |
| | والذين كفروا بعضهم أولياء بعض ... ... ... ... | ٧٣ | م « | ٨ |
| | وأولوا الأرحام بعضهم أولى ببعض فى كتاب الله | ٧٥ | م « | ٨ |
| | المنافقون والمنافقات بعضهم من بعض ... ... ... | ٦٧ | م التـوبة | ٩ |
| | والمؤمنون والمؤمنات بعضهم أولياء بعض ... ... | ٧١ | م « | ٩ |
| | و إذا ما أنزلت سورة نظر بعضهم إلى بعض ... ... | ١٢٧م | « | ٩ |
| | انظر كيف فضلنا بعضهم على بعض وللآخرة أكبر درجات | ٢١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | لا يأتون بمثله ولو كان بعضهم لبعض ظهيرا ... ... | ٨٨ | ك « | ١٧ |
| | وتركنا بعضهم يومئذ يموج فى بعض ... ... ... ... | ٩٩ | م الكهف | ١٨ |
| | ولولا دفع الله الناس بعضهم ببعض لهدمت صوامع | ٤٠ | م الحـج | ٢٢ |
| | فأتبعنا بعضهم بعضا وجعلناهم أحاديث ... ... ... | ٤٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | إذًا لذهب كل إله بما خلق ولعلا بعضهم على بعض | ٩١ | ك « | ٢٣ |
| | وأولوا الأرحام بعضهم أولى ببعض فى كتاب الله | ٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ولو ترى إذ الظالمون موقوفون عند ربهم يرجع بعضهم إلى بعض القول ... ... ... ... ... | ٣١ | ك سـبإ | ٣٤ |
| | بل إن يعد الظالمون بعضهم بعضا إلا غرورا ... ... | ٤٠ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | وأقبل بعضهم على بعض يتساءلون . قالوا إنكم كنتم تأتوننا عن اليمين ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| | فأقبل بعضهم على بعض يتساءلون . قال قائل منهم إنى كان لى قرين ... ... ... ... ... ... ... | ٥٠ | ك « | ٣٧ |
| | و إن كثيرا من الخلطاء ليبغى بعضهم على بعض... ... | ٢٤ | ك ص | ٣٨ |
| | و رفعنا بعضهم فوق بعض درجات ... ... ... ... | ٣٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ليتخذ بعضهم بعضا سخريا ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك « | ٤٣ |
| | الأخلاء يومئذ بعضهم لبعض عدوّ إلا المتقين... ... | ٦٧ | ك « | ٤٣ |
| | و إن الظالمين بعضهم أولياء بعض والله ولىّ المتقين | ١٩ | ك الجاثيـة | ٤٥ |
| | وأقبل بعضهم على بعض يتساءلون . قالوا إنا كنا قبل فى أهلنا مشفقين ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك الطـور | ٥٢ |
| | فأقبل بعضهم على بعض يتلاومون ... ... ... ... | ٣٠ | م القـلم | ٦٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بَعُوضَةً | : إن الله لا يستحيى أن يضرب مثلا ما بعوضة فما فوقها | ٢٦ | م البقـرة | ٢ |
| بَعْلًا | : أتدعون بعلا وتذرون أحسن الخالقين ... ... | ١٢٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| بَعْلِهَا | : وإن امرأة خافت من بعلها نشوزا أو إعراضا فلا جناح عليهما أن يصلحا بينهما ... ... ... ... ... ... | ١٢٨ | م النسـاء | ٤ |
| بَعْلِي | : قالت يا ويلتى ءألد وأنا عجوز وهـذا بعلى شيخا | ٧٢ | ك هـود | ١١ |
| بُعُولَتُهُنَّ | : وبعولتهن أحق بردهن فى ذلك إن أرادوا إصلاحا | ٢٢٨ | م البقـرة | ٢ |
| (٤) | ولا يبدين زينتهن إلا لبعولتهن ... ... ... ... ... | ٣١ | م النـور | ٢٤ |
| | أو آبائهن أو آباء بعولتهن ... ... ... ... ... ... | ٣١ | م « | ٢٤ |
| | أو أبنائهن أو أبناء بعولتهن ... ... ... ... ... ... | ٣١ | م « | ٢٤ |
| بَغْتَةً | : حتى إذا جاءتهم الساعة بغتـة قالوا ياحسرتنا | | | |
| (١٣) | على ما فرطنا فيها ... ... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك الأنعـام | ٦ |
| | حتى إذا فرحوا بما أوتوا أخذناهم بغتة فإذاهم مبلسون | ٤٤ | ك « | ٦ |
| | قل أرأيتكم إن أتاكم عذاب الله بغتـة أو جهرة | | | |
| | هل يهلك إلا القوم الظالمون ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك « | ٦ |
| | فأخذناهم بغتـة وهم لا يشعرون ... ... ... ... ... | ٩٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | ثقلت فى السموات والأرض لا تأتيكم إلا بغتـة | ١٨٧ | ك « | ٧ |
| | أفأمنوا أن تأتيهم غاشية من عذاب الله أو تأتيهم | | | |
| | الساعة بغتـة ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٧ | ك يوسف | ١٢ |
| | بل تأتيهم بغتة فتبهتهم فلا يستطيعون ردها ... ... | ٤٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ولا يزال الذين كفروا فى مرية منـه حتى تأتيهم | | | |
| | الساعة بغتـة ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٥ | الحـج | ٢٢ |
| | فيأتيهم بغتـة وهم لا يشعرون ... ... ... ... ... | ٢٠٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وليأتينهم بغتـة وهم لا يشعرون... ... ... ... ... | ٥٣ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | من قبل أن يأتيكم العذاب بغتـة وأنتم لا تشعرون | ٥٥ | ك الـزمر | ٣٩ |
| | هل ينظرون إلا الساعة أن تأتيهم بغتة وهم لا يشعرون | ٦٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | فهل ينظرون إلا الساعة أن تأتيهم بغتـة ... ... | ١٨ | م محمـد | ٤٧ |
| الْبَغْضَاءُ | : قـد بدت البغضاء من أفواههم وما تخفى | | | |
| (٥) | صـدورهم أكبر ... ... ... ... ... ... ... | ١١٨ | م آل عمران | ٣ |
| | فأغرينا بينهـم العداوة والبغضـاء إلى يوم القيامة | ١٤ | م المائدة | ٥ |
| | وألقينا بينهـم العداوة والبغضـاء إلى يوم القيـامة | ٦٤ | م « | ٥ |
| | إنمـا يريد الشيطان أن يوقع بينكم العداوة والبغضاء | ٩١ | م « | ٥ |
| | وبدا بيننا وبينكم العـداوة والبغضاء أبدا ... ... | ٤ | م الممتحنة | ٦٠ |
| الْبِغَالَ | : والخيل والبغال والحمير لتركبوها وزينة ... ... | ٨ | ك النحـل | ١٦ |
| بَغَى | : إن قارون كان من قوم موسى فبغى عليهم ... ... | ٧٦ | ك القصص | ٢٨ |
| (٢) | قالوا لا تخف خصمان بغى بعضنا على بعض... ... | ٢٢ | ك ص | ٣٨ |
| بَغَتْ | : فإن بغت إحداهما على الأخرى فقاتلوا التى تبغى | ٩ | م الحجـرات | ٤٩ |
| بَغَوْا | : ولو بسـط الله الرزق لعبـاده لبغوا فى الأرض | ٢٧ | م الشورى | ٤٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَبْغِي | : قل أغير الله أبغى ربا وهو رب كل شىء ... ... | ١٦٤ | ك الأنعـام | ٦ |
| أَبْغِيكُمْ | : قال أغير الله أبغيكم إلهـا وهو فضلكم على العالمين | ١٤٠ | ك الأعراف | ٧ |
| تَبْغِ | : وأحسن كما أحسن الله إليك ولا تبغ الفساد فى الأرض | ٧٧ | ك القصص | ٢٨ |
| تَبْغُوا | : فإن أطعنكم فـلا تبغوا عليهن سبيلا ... ... ... | ٣٤ | م النسـاء | ٤ |
| تَبْغُونَهَا | : لم تصدون عن سبيل الله من آمن تبغونها عوجا | ٩٩ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | وتصدون عن سبيل الله من آمن به وتبغونها عوجا | ٨٦ | ك الأعراف | ٧ |
| تَبْغِي | : فإن بغت إحداهمـا على الأخرى فقاتلوا التى تبغى | ٩ | م الحجرات | ٤٩ |
| نَبْغِ | : قال ذلك ما كنا نبغ فارتدا على آثارهما قصصا ... ... | ٦٤ | ك الكهف | ١٨ |
| نَبْغِي | : قالوا يا أبانا ما نبغى هـذه بضاعتنا ردت إلينا | ٦٥ | ك يوسف | ١٢ |
| يَبْغُونَ | : أفغير دين الله يبغون وله أسلم من فى السموات | | | |
| (٥) | والأرض ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨٣ | م آل عمران | ٣ |
| | أفحكم الجاهليـة يبغون ومن أحسن من الله حكما | | | |
| | لقوم يوقنون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٠ | م المائدة | ٥ |
| | فلما أنجاهم إذا هم يبغون فى الأرض بغير الحـق | ٢٣ | ك يونس | ١٠ |
| | خالدين فيهـا لا يبغون عنها حولا ... ... ... ... | ١٠٨ | ك الكهف | ١٨ |
| | إنمـا السبيل على الذين يظلمون النـاس ويبغون | | | |
| | فى الأرض بغير الحق ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك الشورى | ٤٢ |
| يَبْغُونَكُمُ | : اوخرجوا فيكم مازادوكم إلا خبالا ولأوضعوا | | | |
| | خلالكم يبغونكم الفتنة... ... ... ... ... ... | ٤٧ | م التـوبة | ٩ |
| يَبْغُونَهَا | : الذين يصـدون عن سبيل الله ويبغونها عوجا | ٤٥ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | الذين يصدون عن سبيل الله ويبغونها عوجا... ... | ١٩ | ك هـود | ١١ |
| | ويصدون عن سبيل الله ويبغونهـا عوجا أولئـك | | | |
| | فى ضلال بعيـد ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك إبراهيم | ١٤ |
| يَبْغِي | : إن كثيرا من الخلطاء ليبغى بعضهـم على بعض | ٢٤ | ك ص | ٣٨ |
| يَبْغِيَانِ | : بينهما برزخ لا يبغيان ... ... ... ... ... | ٢٠ | م الرحمن | ٥٥ |
| يُبْغَى | : ذلك ومن عاقب بمثـل ما عوقب به ثم بغى عليـه | | | |
| | لينصرنه الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦٠ | م الحـج | ٢٢ |
| ابْتَغَى | : فمن ابتغى وراء ذلك فأولئك هم العادون... ... | ٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٢) | فمن ابتغى وراء ذلك فأولئك هم العادون ... ... | ٣١ | ك المعارج | ٧٠ |
| ابْتَغَوا | : لقـد ابتغوا الفتنة من قبـل وقلبوا لك الأمور | ٤٨ | م التـوبة | ٩ |
| (٢) | قل لو كان معه آلهـة كما يقولون إذًا لابتغوا إلى | | | |
| | ذى العرش سبيلا ... ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| ابْتَغَيْتَ | : ومن ابتغيت ممن عزلت فـلا جناح عليـك | ٥١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| أَبْتَغِي | : أفغـير الله أبتغى حكما وهـو الذى أنزل إليكم | | | |
| | الكتاب مفصـلا ... ... ... ... ... ... ... | ١١٤ | م الأنعـام | ٦ |
| تَبْتَغُوا | : ليس عليكم جناح أن تبتغوا فضلا من ربكم | ١٩٨ | م البقـرة | ٢ |
| (١٠) | وأحل لكم ما وراء ذلكم أن تبتغوا بأموالكم | | | |
| | محصنين غير مسافحين ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | م النسـاء | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَبْتَغُوا: | وترى الفلك مواخر فيه ولتبتغوا من فضله ولعلكم تشكرون | ١٤ | ك النحل | ١٦ |
| | وجعلنا آية النهار مبصرة لتبتغوا فضلا من ربكم | ١٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ربكم الذى يزجى لكم الفلك فى البحر لتبتغوا من فضله | ٦٦ | ك « | ١٧ |
| | ولا تكرهوا فتياتكم على البغاء إن أردن تحصنا لتبتغوا | | | |
| | عرض الحياة الدنيا ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | النور | ٢٤ |
| | ومن رحمته جعل لكم الليل والنهار لتسكنوا فيه | | | |
| | ولتبتغوا من فضله ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | ولتجرى الفلك بأمره ولتبتغوا من فضله ولعلكم تشكرون | ٤٦ | ك الروم | ٣٠ |
| | وترى الفلك فيه مواخر لتبتغوا من فضله ولعلكم تشكرون | ١٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| | لتجرى الفلك فيه بأمره ولتبتغوا من فضله ولعلكم تشكرون | ١٢ | ك الجاثية | ٤٥ |
| تَبْتَغُونَ: | ولا تقولوا لمن ألقى إليكم السلام لست مؤمنا | | | |
| | تبتغون عرض الحياة الدنيا ... ... ... ... | ٩٤ | م النساء | ٤ |
| تَبْتَغِيَ: | فإن استطعت أن تبتغى نفقا فى الأرض أو سلما | | | |
| (٢) | فى السماء فتأتيهم بآية... ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | يأيها النبى لم تحرم ما أحل الله لك تبتغى مرضاة أزواجك | ١ | م التحريم | ٦٦ |
| تَبْتَغِي: | وقالوا لنا أعمالنا ولكم أعمالكم سلام عليكم | | | |
| | لا نبتغى الجاهلين ... ... ... ... ... ... | ٥٥ | م القصص | ٢٨ |
| يَبْتَغِ: | ومن يبتغ غير الإسلام دينا فلن يقبل منه ... ... | ٨٥ | م آل عمران | ٣ |
| يَبْتَغُونَ: | أيبتغون عندهم العزة فإن العزة لله جميعا ... ... | ١٣٩ | م النساء | ٤ |
| (٧) | يبتغون فضلا من ربهم ورضوانا ... ... ... ... | ٢ | م المائدة | ٥ |
| | أولئك الذين يدعون يبتغون إلى ربهم الوسيلة | ٥٧ | م الإسراء | ١٧ |
| | والذين يبتغون الكتاب مما ملكت أيمانكم فكاتبوهم | ٣٣ | م النور | ٢٤ |
| | تراهم ركعا سجدا يبتغون فضلا من الله ورضوانا | ٢٩ | م الفتح | ٤٨ |
| | يبتغون فضلا من الله ورضوانا وينصرون الله ورسوله | ٨ | م الحشر | ٥٩ |
| | وآخرون يضربون فى الأرض يبتغون من فضل الله | ٢٠ | م المزمل | ٧٣ |
| أَبْتَغِ: | ولا تجهر بصلاتك ولا تخافت بها وابتغ بين ذلك سبيلا | ١١٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٢) | وابتغ فيما آتاك الله الدار الآخرة... ... ... ... | ٧٧ | ك القصص | ٢٨ |
| اِبْتَغُوا: | فالآن باشروهن وابتغوا ما كتب الله لكم... ... | ١٨٧ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله وابتغوا إليه الوسيلة | ٣٥ | م المائدة | ٥ |
| | فابتغوا عند الله الرزق واعبدوه واشكروا له ... ... | ١٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | فإذا قضيت الصلاة فانتشروا فى الأرض وابتغوا | | | |
| | من فضل الله ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | م الجمعة | ٦٢ |
| يَنْبَغِي: | وما ينبغى للرحمن أن يتخذ ولدا ... ... ... ... | ٩٢ | ك مريم | ١٩ |
| (٦) | قالوا سبحانك ما كان ينبغى لنا أن نتخذ من دونك من أولياء | ١٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وما ينبغى لهم وما يستطيعون ... ... ... ... | ٢١١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | لا الشمس ينبغى لها أن تدرك القمر ولا الليل سابق النهار | ٤٠ | ك يس | ٣٦ |
| | وما علمناه الشعر وما ينبغى له إن هو إلا ذكر وقرآن مبين | ٦٩ | ك « | ٣٦ |
| | قال رب اغفر لى وهب لى ملكا لا ينبغى لأحد من بعدى | ٣٥ | ك ص | ٣٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بَغْيٍ: | قل إنما حرم ربى الفواحش ما ظهر منها وما بطن | | | |
| (٣) | والإثم والبغى بغير الحق ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | وينهى عن الفحشاء والمنكر والبغى ... ... ... ... | ٩٠ | ك النحل | ١٦ |
| | والذين إذا أصابهم البغى هم ينتصرون ... ... ... | ٣٩ | ك الشورى | ٤٢ |
| بَغْيًا: | بئسما اشتروا به أنفسهم أن يكفروا بما أنزل الله بغيا | ٩٠ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | وما اختلف فيه إلا الذين أوتوه من بعد ما جاءتهم | | | |
| | البينات بغيا بينهم ... ... ... ... ... ... | ٢١٣م | « | ٢ |
| | وما اختلف الذين أوتوا الكتاب إلا من بعد ما جاءهم | | | |
| | العلم بغيا بينهم ... ... ... ... ... ... ... | ١٩ | م آل عمران | ٣ |
| | فأتبعهم فرعون وجنوده بغيا وعدوا ... ... ... ... | ٩٠ | ك يونس | ١٠ |
| | وما تفرقوا إلا من بعد ما جاءهم العلم بغيا بينهم | ١٤ | ك الشورى | ٤٢ |
| | فما اختلفوا إلا من بعد ما جاءهم العلم بغيا بينهم | ١٧ | ك الجاثية | ٤٥ |
| بَغْيِكُمْ: | يأيها الناس إنما بغيكم على أنفسكم ... ... ... ... | ٢٣ | ك يونس | ١٠ |
| بَغْيِهِمْ: | ذلك جزيناهم ببغيهم وإنا لصادقون ... ... ... | ١٤٦ | ك الأنعام | ٦ |
| بَاغٍ: | فمن اضطر غير باغ ولا عاد فلا إثم عليه ... ... ... | ١٧٣ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | فمن اضطر غير باغ ولا عاد فإن ربك غفور رحيم | ١٤٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | فمن اضطر غير باغ ولا عاد فإن الله غفور رحيم | ١١٥ | ك النحل | ١٦ |
| بَغِيًّا: | قالت أنى يكون لى غلام ولم يمسسنى بشر ولم أك بغيا | ٢٠ | ك مريم | ١٩ |
| (٢) | يا أخت هرون ما كان أبوك امرأ سوء وما كانت أمك بغيا | ٢٨ | ك « | ١٩ |
| الْبِغَاءِ: | ولا تكرهوا فتياتكم على البغاء إن أردن تحصنا | ٣٣ | م النور | ٢٤ |
| ابْتِغَاءَ: | ومن الناس من يشرى نفسه ابتغاء مرضاة الله | ٢٠٧م | البقرة | ٢ |
| (١٣) | ومثل الذين ينفقون أموالهم ابتغاء مرضاة الله | | | |
| | وتثبيتا من أنفسهم كمثل جنة بربوة ... ... ... | ٢٦٥م | « | ٢ |
| | وما تنفقون إلا ابتغاء وجه الله ... ... ... ... | ٢٧٢م | « | ٢ |
| | فأما الذين فى قلوبهم زيغ فيتبعون ما تشابه منه ابتغاء الفتنة | ٧ | م آل عمران | ٣ |
| | وابتغاء تأويله ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | م « | ٣ |
| | ولا تهنوا فى ابتغاء القوم ... ... ... ... ... | ١٠٤م | النساء | ٤ |
| | ومن يفعل ذلك ابتغاء مرضاة الله فسوف نؤتيه أجرا عظيما | ١١٤م | « | ٤ |
| | ومما يوقدون عليه فى النار ابتغاء حلية أو متاع زبد مثله | ١٧ | م الرعد | ١٣ |
| | والذين صبروا ابتغاء وجه ربهم وأقاموا الصلاة | | | |
| | وأنفقوا مما رزقناهم سرا وعلانية ويدرءون | | | |
| | بالحسنة السيئة أولئك لهم عقبى الدار ... ... | ٢٢ | م « | ١٣ |
| | وإما تعرضن عنهم ابتغاء رحمة من ربك ترجوها | | | |
| | فقل لهم قولا ميسورا ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ما كتبناها عليهم إلا ابتغاء رضوان الله فما رعوها | | | |
| | حق رعايتها ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | م الحديد | ٥٧ |
| | إن كنتم خرجتم جهادا فى سبيل وابتغاء مرضاتى | ١ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | وما لأحد عنده من نعمة تجزى . إلا ابتغاء وجه ربه الأعلى | ٢٠ | ك الليل | ٩٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **ابْتِغَاؤُكُم** : | ومن آياته منامكم بالليل والنهار وابتغاؤكم من فضله | ٢٣ | ك الروم | ٣٠ |
| **الْبَقَر** : | قالوا ادع لنا ربك يبين لنا ماهى إن البقر تشابه علينا | ٧٠ | م البقـرة | ٢ |
| (٣) | ومن الإبل اثنين ومن البقر اثنين ... ... ... ... | ١٤٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | ومن البقر والغنم حرمنا عليهم شحومهما إلا ما حملت ظهورهما | ١٤٦ | ك « | ٦ |
| **بَقَرَة** : | وإذ قال موسى لقومه إن الله يأمركم أن تذبحوا بقرة | ٦٧ | م البقـرة | ٢ |
| (٤) | قال إنه يقول إنها بقرة لا فارض ولا بكر عوان بين ذلك | ٦٨ | م « | ٢ |
| | قال إنه يقول إنها بقرة صفراء فاقع لونها تسر الناظرين | ٦٩ | م « | ٢ |
| | قال إنه يقول إنها بقرة لا ذلول تثير الأرض ولا تسقى الحرث | ٧١ | م « | ٢ |
| **بَقَرَات** : | وقال الملك إنى أرى سبع بقرات سمان | ٤٣ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | يوسف أيها الصديق أفتنا فى سبع بقرات سمان يأكلهن سبع | ٤٦ | ك « | ١٢ |
| **الْبُقْعَة** : | فلما أتاها نودى من شاطىء الواد الأيمن فى البقعة | ٣٠ | ك القصص | ٢٨ |
| **بَقْلِهَا** : | فادع لنا ربك يخرج لنا مما تنبت الأرض من بقلها | ٦١ | م البقـرة | ٢ |
| **بَقِىَ** : | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله وذروا ما بقى من الربا | ٢٧٨ | م « | ٢ |
| **يَبْقَى** : | ويبقى وجه ربك ذو الجلال والإكرام ... ... | ٢٧ | م الرحمن | ٥٥ |
| **أَبْقَى** : | وأنه أهلك عادًا الأولى . وثمود فما أبقى... ... | ٥١ | ك النجـم | ٥٣ |
| **تُبْقِى** : | وما أدراك ما سقر . لا تبقى ولا تذر ... ... | ٢٨ | ك المدثر | ٧٤ |
| **أَبْقَى** : | ولتعلمن أينا أشد عذابا وأبقى ... ... ... ... | ٧١ | ك طـه | ٢٠ |
| (٧) | والله خير وأبقى ... ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك « | ٢٠ |
| | ولعذاب الآخرة أشد وأبقى ... ... ... ... ... | ١٢٧ | ك « | ٢٠ |
| | ورزق ربك خير وأبقى ... ... ... ... ... ... | ١٣١ | م « | ٢٠ |
| | وما عند الله خير وأبقى ... ... ... ... ... ... | ٦٠ | ك القصص | ٢٨ |
| | وما عند الله خير وأبقى للذين آمنوا وعلى ربهم يتوكلون | ٣٦ | ك الشورى | ٤٢ |
| | والآخرة خير وأبقى ... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الأعلى | ٨٧ |
| **بَاقٍ** : | ما عندكم ينفد وما عند الله باق ... ... ... ... | ٩٦ | ك النحـل | ١٦ |
| **الْبَاقِينَ** : | ثم أغرقنا بعد الباقين... ... ... ... ... ... | ١٢٠ | ك الشعراء | ٢٦ |
| (٢) | وجعلنا ذريته هم الباقين ... ... ... ... ... | ٧٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| **بَاقِيَة** : | وجعلها كلمة باقية فى عقبه لعلهم يرجعون ... ... | ٢٨ | ك الزخرف | ٤٣ |
| (٢) | فهل ترى لهم من باقية... ... ... ... ... ... | ٨ | ك الحاقـة | ٦٩ |
| **الْبَاقِيَاتُ** : | والباقيات الصالحات خير عند ربك ثوابا | ٤٦ | ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | والباقيات الصالحات خير عند ربك ثوابا وخير مردًا | ٧٦ | ك مريم | ٩ |
| **بَقِيَّة** : | إن آية ملكه أن يأتيكم التابوت فيه سكينة من | | | |
| (٣) | ربكم وبقية مما ترك آل موسى... ... ... ... | ٢٤٨ | م البقـرة | ٢ |
| | بقية الله خير لكم إن كنتم مؤمنين ... ... ... ... | ٨٦ | ك هـود | ١١ |
| | فلولا كان من القرون من قبلكم أولوا بقية ينهون | | | |
| | عن الفساد فى الأرض إلا قليلا ممن أنجينا منهم | ١١٦ | ك « | ١١ |
| **بِكْرٌ** : | قال إنه يقول إنها بقرة لا فارض ولا بكر | | | |
| | عوان بين ذلك ... ... ... ... ... ... ... | ٦٨ | م البقـرة | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **أَبْكَارًا** : | إنا أنشأناهن إنشاء . فجعلناهن أبكارا ... ... | ٣٦ | ك الواقعـة | ٥٦ |
| (٢) | عسى ربه إن طلقكن أن يبدله أزواجا خيرا منكن | | | |
| | مسلمات مؤمنات قانتات تائبات عابدات | | | |
| | سائحات ثيبات وأبكارا... ... ... ... ... ... | ٥ | م التحريم | ٦٦ |
| **بُكْرَة** : | فأوحى إليهم أن سبحوا بكرة وعشيا ... ... ... | ١١ | ك مريم | ١٩ |
| (٧) | ولهم رزقهم فيها بكرة وعشيا ... ... ... ... | ٦٢ | ك « | ١٩ |
| | وقالوا أساطير الأولين اكتتبها فهى تملى عليه بكرة وأصيلا | ٥ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وسبحوه بكرة وأصيلا ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | لتؤمنوا بالله ورسوله وتعزروه وتوقروه وتسبحوه | | | |
| | بكرة وأصيلا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | م الفتح | ٤٨ |
| | ولقد صبحهم بكرة عذاب مستقر ... ... ... ... | ٣٨ | ك القمر | ٥٤ |
| | واذكر اسم ربك بكرة وأصيلا ... ... ... ... ... | ٢٥ | م الإنسان | ٧٦ |
| **الْإِبْكَار** : | واذكر ربك كثيرا وسبح بالعشىّ والإبكار | ٤١ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | وسبح بحمد ربك بالعشىّ والإبكار ... ... ... ... | ٥٥ | ك غافـر | ٤٠ |
| **بَكَّة** : | إن أول بيت وضع للناس للذى ببكة مباركا وهدى للعالمين | ٩٦ | م آل عمران | ٣ |
| **أَبْكَم** : | أحدهما أبكم لا يقدر على شىء وهو كَلٌّ على مولاه | ٧٦ | ك النحـل | ١٦ |
| **بُكْمٌ** : | صم بكم عمى فهم لا يرجعون ... ... ... ... ... | ١٨ | م البقـرة | ٢ |
| (٤) | صم بكم عمى فهم لا يعقلون... ... ... ... ... | ١٧١ | م « | ٢ |
| | والذين كذبوا بآياتنا صم وبكم فى الظلمات ... ... | ٣٩ | ك الأنعام | ٦ |
| | إن شر الدواب عند الله الصم البكم الذين لا يعقلون | ٢٢ | م الأنفال | ٨ |
| **بُكْمًا** : | ونحشرهم يوم القيامة على وجوههم عميا وبكما وصما | ٩٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| **بَكَتْ** : | فما بكت عليهم السماء والأرض وما كانوا منظرين | ٢٩ | ك الدخان | ٤٤ |
| **تَبْكُونَ** : | أفمن هذا الحديث تعجبون . وتضحكون ولا تبكون | ٦٠ | ك النجـم | ٥٣ |
| **لِيَبْكُوا** : | فليضحكوا قليلا وليبكوا كثيرا جزاء بما كانوا يكسبون | ٨٢ | م التـوبة | ٩ |
| **يَبْكُونَ** : | وجاؤا أباهم عشاء يبكون ... ... ... ... ... | ١٦ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | ويخرون للأذقان يبكون ويزيدهم خشوعا ... ... | ١٠٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| **أَبْكَى** : | وأنه هو أضحك وأبكى ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك النجـم | ٥٣ |
| **بُكِيًّا** : | إذا تتلى عليهم آيات الرحمن خروا سجدا وبكيا | ٥٨ | م مريم | ١٩ |
| **بَلَد** : | حتى إذا أقلت سحابا ثقالا سقناه لبلد ميت فأنزلنا به الماء | ٥٧ | ك الأعراف | ٧ |
| (٨) | والبلد الطيب يخرج نباته بإذن ربه... ... ... ... | ٥٨ | ك « | ٧ |
| | وإذ قال إبراهيم رب اجعل هذا البلد آمنا ... ... | ٣٥ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وتحمل أثقالكم إلى بلد لم تكونوا بالغيه إلا بشق الأنفس | ٧ | ك النحـل | ١٦ |
| | فسقناه إلى بلد ميت فأحيينا به الأرض بعد موتها | ٩ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | لا أقسم بهذا البلد ... ... ... ... ... ... ... | ١ | ك البـلد | ٩٠ |
| | وأنت حل بهذا البلد ... ... ... ... ... ... ... | ٢ | ك « | ٩٠ |
| | والتين والزيتون . وطور سينين . وهذا البلد الأمين | ٣ | ك التـين | ٩٥ |
| **بَلَدًا** : | وإذ قال إبراهيم رب اجعل هذا بلدا آمنا ... ... | ١٢٦ | م البقـرة | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **الْبِلَادِ** | : لا يغرنك تقلب الذين كفروا فى البلاد ... ... | ١٩٦ | م آل عمران | ٣ |
| (٥) | ما يجادل فى آيات الله إلا الذين كفروا فلا يغررك تقلبهم فى البلاد ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | فنقبوا فى البلاد هل من محيص ... ... ... ... | ٣٦ | ك قٓ | ٥٠ |
| | إرم ذات العماد . التى لم يخلق مثلها فى البلاد... ... | ٨ | ك الفجر | ٨٩ |
| | وثمود الذين جابوا الصخر بالواد . وفرعون ذى الأوتاد . الذين طغوا فى البلاد ... ... | ١١ | ك « | ٨٩ |
| **بَلْدَةً** | : لنحيىَ به بلدة ميتا ونسقيه مما خلقنا أنعاما وأناسىَّ كثيرا | ٤٩ | ك الفرقان | ٢٥ |
| (٥) | إنما أمرت أن أعبد رب هذه البلدة الذى حرمها | ٩١ | ك النمل | ٢٧ |
| | بلدة طيبة ورب غفور ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك سبإ | ٣٤ |
| | والذى نزل من السماء ماء بقدر فأنشرنا به بلدة ميتا | ١١ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وأحيينا به بلدة ميتا ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك قٓ | ٥٠ |
| **يُبْلَسُ** | : ويوم تقوم الساعة يبلس المجرمون ... ... ... | ١٢ | ك الروم | ٣٠ |
| **مُبْلَسُونَ** | : حتى إذا فرحوا بما أوتوا أخذناهم بغتة | | | |
| (٣) | فإذا هم مبلسون ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | حتى إذا فتحنا عليهم بابا ذا عذاب شديد إذا هم فيه مبلسون | ٧٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | لا يفتر عنهم وهم فيه مبلسون ... ... ... ... | ٧٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| **مُبْلِسِينَ** | : وإن كانوا من قبل أن ينزل عليهم من قبله لمبلسين | ٤٩ | ك الروم | ٣٠ |
| **إِبْلِيسَ** | : وإذ قلنا للملائكة اسجدوا لآدم فسجدوا | | | |
| (١١) | إلا إبليس أبى ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | م البقرة | ٢ |
| | ثم قلنا للملائكة اسجدوا لآدم فسجدوا إلا إبليس | ١١ | ك الأعراف | ٧ |
| | إلا إبليس أبى أن يكون مع الساجدين ... ... ... | ٣١ | ك الحجر | ١٥ |
| | قال يا إبليس مالك ألا تكون مع الساجدين | ٣٢ | ك « | ١٥ |
| | وإذ قلنا للملائكة اسجدوا لآدم فسجدوا إلا إبليس | ٦١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وإذ قلنا للملائكة اسجدوا لآدم فسجدوا إلا إبليس | ٥٠ | ك الكهف | ١٨ |
| | وإذ قلنا للملائكة اسجدوا لآدم فسجدوا إلا إبليس أبى | ١١٦ | ك طه | ٢٠ |
| | فكبكبوا فيها هم والغاوون . وجنود إبليس أجمعون | ٩٥ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | ولقد صدق عليهم إبليس ظنه فاتبعوه إلا فريقا من المؤمنين | ٢٠ | ك سبإ | ٣٤ |
| | إلا إبليس استكبر وكان من الكافرين ... ... ... | ٧٤ | ك صٓ | ٣٨ |
| | قال يا إبليس ما منعك أن تسجد لما خلقت بيدىَّ | ٧٥ | ك « | ٣٨ |
| **أَبْلَعِي** | : وقيل يا أرض ابلعى ماءك ويا سماء أقلعى ... ... | ٤٤ | ك هود | ١١ |
| **بَلَغَ** | : وأوحى إلىَّ هذا القرآن لأنذركم به ومن بلغ ... ... | ١٩ | ك الأنعام | ٦ |
| (١٠) | ولما بلغ أشده آتيناه حكما وعلما ... ... ... | ٢٢ | ك يوسف | ١٢ |
| | حتى إذا بلغ مغرب الشمس وجدها تغرب فى عين حمئة | ٨٦ | م الكهف | ١٨ |
| | حتى إذا بلغ مطلع الشمس وجدها تطلع على قوم | ٩٠ | م « | ١٨ |
| | حتى إذا بلغ بين السدين وجد من دونهما قوما | ٩٣ | م « | ١٨ |
| | وإذا بلغ الأطفال منكم الحلم فليستأذنوا ... ... ... | ٥٩ | م النور | ٢٤ |
| | ولما بلغ أشده واستوى آتيناه حكما وعلما ... ... | ١٤ | ك القصص | ٢٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **بَلَغَ** | : فلما بلغ معه السعى قال يا بنىَّ إنى أرى فى المنام أنى أذبحك | ١٠٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| | حتى إذا بلغ أشده ... ... ... ... ... ... | ١٥ | م الأحقاف | ٤٦ |
| | وبلغ أربعين سنة قال رب أوزعنى أن أشكر نعمتك | ١٥ | م « | ٤٦ |
| **بَلَغَا** | : فلما بلغا مجمع بينهما نسيا حوتهما... ... ... ... | ٦١ | ك الكهف | ١٨ |
| **بَلَغْتُ** | : وكانت امرأتى عاقرا وقد بلغت من الكبر عتيا | ٨ | ك مريم | ١٩ |
| **بَلَغْتَ** | : قد بلغت من لدنىِّ عذرا... ... ... ... ... | ٧٦ | ك الكهف | ١٨ |
| **بَلَغَتْ** | : وإذ زاغت الأبصار وبلغت القلوب الحناجر | ١٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| (٣) | فلولا إذا بلغت الحلقوم... ... ... ... ... | ٨٣ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | كلا إذا بلغت التراقى ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك القيامة | ٧٥ |
| **بَلَغْنَ** | : وإذا طلقتم النساء فبلغن أجلهن فأمسكوهن بمعروف | ٢٣١ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | وإذا طلقتم النساء فبلغن أجلهن فلا تعضلوهن ... ... | ٢٣٢ | م « | ٢ |
| | فإذا بلغن أجلهن فلا جناح عليكم فيما فعلن فى أنفسهن | ٢٣٤ | م « | ٢ |
| | فإذا بلغن أجلهن فأمسكوهن بمعروف أو فارقوهن بمعروف | ٢ | م الطلاق | ٦٥ |
| **بَلَغْنَا** | : ربنا استمتع بعضنا ببعض وبلغنا أجلنا الذى أجلت لنا | ١٢٨ | ك الأنعام | ٦ |
| **بَلَغَنِيَ** | : قال رب أنى يكون لى غلام وقد بلغنى الكبر وامرأتى عاقر | ٤٠ | م آل عمران | ٣ |
| **بَلَغُوا** | : حتى إذا بلغوا النكاح فإن آنستم منهم رشدا | | | |
| (٢) | فادفعوا إليهم أموالهم ... ... ... ... ... | ٦ | م النساء | ٤ |
| | وكذب الذين من قبلهم وما بلغوا معشار ما آتيناهم | ٤٥ | ك سبإ | ٣٤ |
| **أَبْلُغُ** | : لا أبرح حتى أبلغ مجمع البحرين أو أمضى حقبا | ٦٠ | ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | وقال فرعون يا هامان ابن لى صرحا لعلى أبلغ الأسباب | ٣٦ | ك غافر | ٤٠ |
| **تَبْلُغَ** | : إنك لن تخرق الأرض ولن تبلغ الجبال طولا | ٣٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| **لِتَبْلُغُوا** | : ثم نخرجكم طفلا ثم لتبلغوا أشدكم ... ... ... | ٥ | م الحج | ٢٢ |
| (٤) | ثم يخرجكم طفلا ثم لتبلغوا أشدكم ثم لتكونوا شيوخا | ٦٧ | ك غافر | ٤٠ |
| | ومنكم من يتوفى من قبل ولتبلغوا أجلا مسمى ولعلكم تعقلون | ٦٧ | ك « | ٤٠ |
| | ولكم فيها منافع ولتبلغوا عليها حاجة فى صدوركم | ٨٠ | ك « | ٤٠ |
| **يَبْلُغَ** | : ولا تحلقوا رؤوسكم حتى يبلغ الهدى محله ... ... | ١٩٦ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | ولا تعزموا عقدة النكاح حتى يبلغ الكتاب أجله | ٢٣٥ | م « | ٢ |
| | ولا تقربوا مال اليتيم إلا بالتى هى أحسن حتى يبلغ أشده | ١٥٢ | م الأنعام | ٦ |
| | إلا كباسط كفيه إلى الماء ليبلغ فاه وما هو ببالغه | ١٤ | م الرعد | ١٣ |
| | ولا تقربوا مال اليتيم إلا بالتى هى أحسن حتى يبلغ أشده | ٣٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| | هم الذين كفروا وصدوكم عن المسجد الحرام والهدى معكوفا أن يبلغ محله ... ... ... ... ... | ٢٥ | م الفتح | ٤٨ |
| **يَبْلُغَا** | : فأراد ربك أن يبلغا أشدهما ويستخرجا كنزهما | ٨٢ | ك الكهف | ١٨ |
| **يَبْلُغَنَّ** | : إما يبلغن عندك الكبر أحدهما أو كلاهما فلا تقل لهما أف | ٢٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| **يَبْلُغُوا** | : يستأذنكم الذين ملكت أيمانكم والذين لم يبلغوا الحلم منكم ثلاث مرات ... ... ... ... | ٥٨ | م النور | ٢٤ |
| **بَلَغْتَ** | : وإن لم تفعل فما بلغت رسالته... ... ... ... | ٦٧ | م المائدة | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أُبَلِّغُكُمْ | : أبلغكم رسالات ربى وأنصح لكم... ... ... ... | ٦٢ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | أبلغكم رسالات ربى وأنا لكم ناصح أمين... ... ... | ٦٨ | ك « | ٧ |
| | قال إنما العلم عند الله وأبلغكم ما أرسلت به... ... | ٢٣ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| يُبَلِّغُونَ | : الذين يبلغون رسالات الله ويخشونه... ... ... | ٣٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| بَلِّغْ | : يأيها الرسول بلغ ما أنزل إليك من ربك... ... ... | ٦٧ | م المائدة | ٥ |
| أَبْلَغْتُكُمْ | : فتولى عنهم وقال يا قوم لقد أبلغتكم رسالة ربى | ٧٩ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | فتولى عنهم وقال يا قوم لقد أبلغتكم رسالات ربى | ٩٣ | ك « | ٧ |
| | فإن تولوا فقد أبلغتكم ما أرسلت به إليكم ... ... | ٥٧ | ك هود | ١١ |
| أَبْلَغُوا | : ليعلم أن قد أبلغوا رسالات ربهم... ... ... ... | ٢٨ | ك الجن | ٧٢ |
| أَبْلِغْهُ | : فأجره حتى يسمع كلام الله ثم أبلغه مأمنه ... ... | ٦ | م التوبة | ٩ |
| بَالِغَ | : يحكم به ذوا عدل منكم هديا بالغ الكعبة ... ... | ٩٥ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | ومن يتوكل على الله فهو حسبه إن الله بالغ أمره | ٣ | م الطلاق | ٦٥ |
| بِبَالِغِهِ | : إلا كباسط كفيه إلى الماء ليبلغ فاه وما هو ببالغه | ١٤ | م الرعد | ١٣ |
| بَالِغُوهُ | : فلما كشفنا عنهم الرجز إلى أجل هم بالغوه إذا هم ينكثون | ١٣٥ | ك الأعراف | ٧ |
| بَالِغِيهِ | : وتحمل أثقالكم إلى بلد لم تكونوا بالغيه إلا بشق الأنفس | ٧ | ك النحل | ١٦ |
| (٢) | إن فى صدورهم إلا كبر ما هم ببالغيه ... ... ... | ٥٦ | م غافر | ٤٠ |
| بَالِغَةُ | : قل فلله الحجة البالغة فلو شاء لهداكم أجمعين... ... | ١٤٩ | ك الأنعام | ٦ |
| (٣) | حكمة بالغة فما تغن النذر ... ... ... ... ... | ٥ | ك القمر | ٥٤ |
| | أم لكم أيمان علينا بالغة إلى يوم القيامة ... ... | ٣٩ | ك القلم | ٦٨ |
| بَلِيغًا | : فأعرض عنهم وعظهم وقل لهم فى أنفسهم قولا بليغا | ٦٣ | م النساء | ٤ |
| بَلَاغٌ | : وإن تولوا فإنما عليك البلاغ ... ... ... ... | ٢٠ | م آل عمران | ٣ |
| (١٣) | فإن توليتم فاعلموا أنما على رسولنا البلاغ المبين... ... | ٩٢ | م المائدة | ٥ |
| | ما على الرسول إلا البلاغ ... ... ... ... ... | ٩٩ | م « | ٥ |
| | وإن ما نرينك بعض الذى نعدهم أو نتوفينك فإنما عليك البلاغ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | م الرعد | ١٣ |
| | هذا بلاغ للناس ولينذروا به ... ... ... ... | ٥٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | فهل على الرسل إلا البلاغ المبين ... ... ... ... | ٣٥ | ك النحل | ١٦ |
| | فإن تولوا فإنما عليك البلاغ المبين ... ... ... ... | ٨٢ | ك « | ١٦ |
| | وما على الرسول إلا البلاغ المبين ... ... ... ... | ٥٤ | م النور | ٢٤ |
| | وما على الرسول إلا البلاغ المبين ... ... ... ... | ١٨ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وما علينا إلا البلاغ المبين ... ... ... ... ... | ١٧ | ك يس | ٣٦ |
| | فإن أعرضوا فما أرسلناك عليهم حفيظا إن عليك إلا البلاغ ... ... ... ... ... ... | ٤٨ | ك الشورى | ٤٢ |
| | بلاغ فهل يهلك إلا القوم الفاسقون ... ... ... | ٣٥ | م الأحقاف | ٤٦ |
| | فإن توليتم فإنما على رسولنا البلاغ المبين ... ... | ١٢ | م التغابن | ٦٤ |
| بَلَاغًا | : إن فى هذا لبلاغا لقوم عابدين ... ... ... ... | ١٠٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٢) | إلا بلاغا من الله ورسالاته... ... ... ... ... | ٢٣ | ك الجن | ٧٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مَبْلَغَهُمْ | : ذلك مبلغهم من العلم ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك النجم | ٥٣ |
| بَلَوْنَا | : إنا بلوناهم كما بلونا أصحاب الجنة إذ أقسموا... ... | ١٧ | م القلم | ٦٨ |
| بَلَوْنَاهُمْ | : وبلوناهم بالحسنات والسيئات لعلهم يرجعون | ١٦٨ | م الأعراف | ٧ |
| (٢) | إنا بلوناهم كما بلونا أصحاب الجنة إذ أقسموا... ... | ١٧ | م القلم | ٦٨ |
| نَبْلُوا | : هنالك تبلوا كل نفس ما أسلفت ... ... ... ... | ٣٠ | ك يونس | ١٠ |
| نَبْلُوَا | : ولنبلونكم حتى نعلم المجاهدين منكم والصابرين ونبلوا أخباركم ... ... ... ... ... ... ... | ٣١ | م محمد | ٤٧ |
| نَبْلُوكُمْ | : ونبلوكم بالشر والخير فتنة وإلينا ترجعون ... ... | ٣٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| لَنَبْلُوَنَّكُمْ | : ولنبلونكم بشىء من الخوف والجوع ونقص | | | |
| (٢) | من الأموال والأنفس ... ... ... ... ... ... | ١٥٥ | م البقرة | ٢ |
| | ولنبلونكم حتى نعلم المجاهدين منكم والصابرين... ... | ٣١ | م محمد | ٤٧ |
| نَبْلُوَهُمْ | : كذلك نبلوهم بما كانوا يفسقون ... ... ... | ١٦٣ | م الأعراف | ٧ |
| لِنَبْلُوَهُمْ | : إنا جعلنا ما على الأرض زينة لها لنبلوهم أيهم أحسن عملا | ٧ | ك الكهف | ١٨ |
| لِيَبْلُوَا | : ولو يشاء الله لانتصر منهم ولكن ليبلوا بعضكم ببعض | ٤ | م محمد | ٤٧ |
| لِيَبْلُوَكُمْ | : ولو شاء الله لجعلكم أمة واحدة ولكن ليبلوكم فى ما آتاكم | ٤٨ | م المائدة | ٥ |
| (٤) | ورفع بعضكم فوق بعض درجات ليبلوكم فى ما آتاكم | ١٦٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | وكان عرشه على الماء ليبلوكم أيكم أحسن عملا | ٧ | ك هود | ١١ |
| | الذى خلق الموت والحياة ليبلوكم أيكم أحسن عملا | ٢ | ك الملك | ٦٧ |
| يَبْلُوكُمْ | : إنما يبلوكم الله به ... ... ... ... ... ... | ٩٢ | ك النحل | ١٦ |
| لَيَبْلُوَنَّكُمْ | : يأيها الذين آمنوا ليبلونكم الله بشىء من الصيد | ٩٤ | م المائدة | ٥ |
| لِيَبْلُوَنِى | : فلما رآه مستقرا عنده قال هذا من فضل ربى ليبلونى | ٤٠ | ك النمل | ٢٧ |
| تُبْلَى | : إنه على رجعه لقادر . يوم تبلى السرائر ... ... ... | ٩ | ك الطارق | ٨٦ |
| لَتُبْلَوُنَّ | : لتبلون فى أموالكم وأنفسكم ... ... ... ... | ١٨٦ | م آل عمران | ٣ |
| لِيُبْلِيَ | : وليبلى المؤمنين منه بلاء حسنا إن الله سميع عليم | ١٧ | م الأنفال | ٨ |
| ابْتَلَى | : وإذ ابتلى إبراهيم ربه بكلمات فأتمهن ... ... ... | ١٢٤ | م البقرة | ٢ |
| ابْتَلَاهُ | : فأما الإنسان إذا ما ابتلاه ربه فأكرمه ونعمه | | | |
| (٢) | فيقول ربى أكرمن... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك الفجر | ٨٩ |
| | وأما إذا ما ابتلاه فقدر عليه رزقه فيقول ربى أهانن | ١٦ | ك « | ٨٩ |
| نَبْتَلِيهِ | : إنا خلقنا الإنسان من نطفة أمشاج نبتليه ... ... | ٢ | م الإنسان | ٧٦ |
| لِيَبْتَلِيَ | : وليبتلى الله ما فى صدوركم وليمحص ما فى قلوبكم | ١٥٤ | م آل عمران | ٣ |
| لِيَبْتَلِيَكُمْ | : ثم صرفكم عنهم ليبتليكم... ... ... ... ... | ١٥٢ | م « | ٣ |
| ابْتَلُوا | : وابتلوا اليتامى ... ... ... ... ... ... | ٦ | م النساء | ٤ |
| ابْتُلِيَ | : هنالك ابتلى المؤمنون وزلزلوا زلزالا شديدا | ١١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| بَلَاءٌ | : وفى ذلكم بلاء من ربكم عظيم ... ... ... ... | ٤٩ | م البقرة | ٢ |

(٦)

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| بَلَاءٌ: | وفى ذلكم بلاء من ربكم عظيم ... ... ... ... ... | ١٤١ ك الأعراف | ٧ |
| | وليبلى المؤمنين منه بلاء حسنا ... ... ... ... ... | ١٧ م الأنفال | ٨ |
| | وفى ذلكم بلاء من ربكم عظيم ... ... ... ... ... | ٦ ك إبراهيم | ١٤ |
| | إن هذا لهو البلاء المبين ... ... ... ... ... | ١٠٦ ك الصافات | ٣٧ |
| | وآتيناهم من الآيات ما فيه بلاء مبين ... ... ... | ٣٣ ك الدخان | ٤٤ |
| مُبْتَلِيكُمْ: | فلما فصل طالوت بالجنود قال إن الله مبتليكم بنهر | ٢٤٩ م البقرة | ٢ |
| لَمُبْتَلِينَ: | إن فى ذلك لآيات وإن كنا لمبتلين ... ... ... | ٣٠ ك المؤمنون | ٢٣ |
| يَبْلَى: | هل أدلك على شجرة الخلد وملك لا يبلى ... ... | ١٢٠ ك طه | ٢٠ |
| بَلَى: | بلى من كسب سيئة وأحاطت به خطيئته فأولئك أصحاب النار | ٨١ م البقرة | ٢ |
| (٢٢) | بلى من أسلم وجهه لله وهو محسن فله أجره عند ربه | ١١٢ م « | ٢ |
| | قال بلى ولكن ليطمئن قلبى ... ... ... ... ... | ٢٦٠ م « | ٢ |
| | بلى من أوفى بعهده واتقى فإن الله يحب المتقين | ٧٦ م آل عمران | ٣ |
| | بلى إن تصبروا وتتقوا ويأتوكم من فورهم هذا | | |
| | يمددكم ربكم بخمسة آلاف من الملائكة ... ... | ١٢٥ م « | ٣ |
| | قال أليس هذا بالحق قالوا بلى وربنا ... ... ... | ٣٠ ك الأنعام | ٦ |
| | وأشهدهم على أنفسهم ألست بربكم قالوا بلى ... ... | ١٧٢ ك الأعراف | ٧ |
| | بلى إن الله عليم بما كنتم تعملون ... ... ... ... | ٢٨ ك النحل | ١٦ |
| | بلى وعدا عليه حقا ولكن أكثر الناس لا يعلمون | ٣٨ ك « | ١٦ |
| | وقال الذين كفروا لا تأتينا الساعة قل بلى وربى لتأتينكم | ٣ ك سبأ | ٣٤ |
| | بلى وهو الخلاق العليم ... ... ... ... ... ... | ٨١ ك يس | ٣٦ |
| | بلى قد جاءتك آياتى فكذبت بها ... ... ... ... ... | ٥٩ ك الزمر | ٣٩ |
| | قالوا بلى ولكن حقت كلمة العذاب على الكافرين | ٧١ ك « | ٣٩ |
| | قالوا أولم تك تأتيكم رسلكم بالبينات قالوا بلى | ٥٠ ك غافر | ٤٠ |
| | أم يحسبون أنا لا نسمع سرهم ونجواهم بلى ورسلنا | | |
| | لديهم يكتبون ... ... ... ... ... ... ... | ٨٠ ك الزخرف | ٤٣ |
| | بلى إنه على كل شىء قدير ... ... ... ... ... | ٣٣ ك الأحقاف | ٤٦ |
| | ويوم يعرض الذين كفروا على النار أليس هذا بالحق | | |
| | قالوا بلى وربنا ... ... ... ... ... ... | ٣٤ ك « | ٤٦ |
| | ينادونهم ألم نكن معكم قالوا بلى ولكنكم فتنتم أنفسكم | ١٤ م الحديد | ٥٧ |
| | قل بلى وربى لتبعثن ثم لتنبؤن بما عملتم ... ... | ٧ م التغابن | ٦٤ |
| | قالوا بلى قد جاءنا نذير فكذبنا وقلنا ما نزل الله من شىء | ٩ ك الملك | ٦٧ |
| | بلى قادرين على أن نسوى بنانه ... ... ... ... | ٤ ك القيامة | ٧٥ |
| | بلى إن ربه كان به بصيرا ... ... ... ... ... | ١٥ ك الانشقاق | ٨٤ |
| بَنَانٍ: | فاضربوا فوق الأعناق واضربوا منهم كل بنان | ١٢ م الأنفال | ٨ |
| بَنَانَهُ: | بلى قادرين على أن نسوى بنانه ... ... ... ... | ٤ ك القيامة | ٧٥ |
| بَنَاهَا: | ءأنتم أشد خلقا أم السماء بناها ... ... ... ... | ٢٧ ك النازعات | ٧٩ |
| (٢) | والسماء وما بناها ... ... ... ... ... ... | ٥ ك الشمس | ٩١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| بَنَوْا: | لا يزال بنيانهم الذى بنوا ريبة فى قلوبهم ... ... | ١١٠ م التوبة | ٩ |
| بَنَيْنَا: | وبنينا فوقكم سبعا شدادا ... ... ... ... ... | ١٢ ك النبأ | ٧٨ |
| بَنَيْنَاهَا: | أفلم ينظروا إلى السماء فوقهم كيف بنيناها ... ... | ٦ ك ق | ٥٠ |
| (٢) | والسماء بنيناها بأيد وإنا لموسعون ... ... ... ... | ٤٧ ك الذاريات | ٥١ |
| أَتَبْنُونَ: | أتبنون بكل ريع آية تعبثون ... ... ... ... | ١٢٨ ك الشعراء | ٢٦ |
| ابْنِ: | وقال فرعون يا هامان ابن لى صرحا لعلى أبلغ الأسباب | ٣٦ ك غافر | ٤٠ |
| (٢) | إذ قالت رب ابن لى عندك بيتا فى الجنة ... ... | ١١ م التحريم | ٦٦ |
| ابْنُوا: | قالوا ابنوا عليهم بنيانا ربهم أعلم بهم... ... ... | ٢١ ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | قالوا ابنوا له بنيانا فألقوه فى الجحيم ... ... ... | ٩٧ ك الصافات | ٣٧ |
| بِنَاءً: | الذى جعل لكم الأرض فراشا والسماء بناء ... ... | ٢٢ م البقرة | ٢ |
| (٣) | الله الذى جعل لكم الأرض قرارا والسماء بناء | ٦٤ ك غافر | ٤٠ |
| بَنَّاءٍ: | والشياطين كل بناء وغواص... ... ... ... ... | ٣٧ ك ص | ٣٨ |
| بُنْيَانٌ: | إن الله يحب الذين يقاتلون فى سبيله صفا كأنهم | | |
| | بنيان مرصوص ... ... ... ... ... ... | ٤ م الصف | ٦١ |
| بُنْيَانًا: | فقالوا ابنوا عليهم بنيانا ربهم أعلم بهم... ... ... | ٢١ ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | قالوا ابنوا له بنيانا فألقوه فى الجحيم... ... ... | ٩٧ ك الصافات | ٣٧ |
| بُنْيَانَهُ: | أفمن أسس بنيانه على تقوى من الله ورضوان خير | ١٠٩ م التوبة | ٩ |
| (٢) | أم من أسس بنيانه على شفا جرف هار... ... ... | ١٠٩ م « | ٩ |
| بُنْيَانُهُمْ: | لا يزال بنيانهم الذى بنوا ريبة فى قلوبهم | ١١٠ م التوبة | ٩ |
| (٢) | قد مكر الذين من قبلهم فأتى الله بنيانهم من القواعد | ٢٦ ك النحل | ١٦ |
| مَبْنِيَّةٌ: | لكن الذين اتقوا ربهم لهم غرف من فوقها غرف مبنية | ٢٠ ك الزمر | ٣٩ |
| ابْنِ: | وآتينا عيسى ابن مريم البينات وأيدناه بروح القدس | ٨٧ م البقرة | ٢ |
| (٣٥) | وآتى المال على حبه ذوى القربى واليتامى | | |
| | والمساكين وابن السبيل ... ... ... ... ... | ١٧٧ م « | ٢ |
| | قل ما أنفقتم من خير فللوالدين والأقربين واليتامى | | |
| | والمساكين وابن السبيل ... ... ... ... ... | ٢١٥ م « | ٢ |
| | وآتينا عيسى ابن مريم البينات وأيدناه بروح القدس | ٢٥٣ م « | ٢ |
| | إن الله يبشرك بكلمة منه اسمه المسيح عيسى ابن مريم | ٤٥ م آل عمران | ٣ |
| | والجار الجنب والصاحب بالجنب وابن السبيل | ٣٦ م النساء | ٤ |
| | وقولهم إنا قتلنا المسيح عيسى ابن مريم رسول الله | ١٥٧ م « | |
| | إنما المسيح عيسى ابن مريم رسول الله وكلمته... ... | ١٧١ م « | ٤ |
| | لقد كفر الذين قالوا إن الله هو المسيح ابن مريم | ١٧ م المائدة | ٥ |
| | قل فمن يملك من الله شيئا إن أراد أن يهلك المسيح ابن مريم | ١٧ م « | ٥ |
| | وقفينا على آثارهم بعيسى ابن مريم مصدقا لما بين يديه | ٤٦ م « | ٥ |
| | لقد كفر الذين قالوا إن الله هو المسيح ابن مريم | ٧٢ م « | ٥ |
| | ما المسيح ابن مريم إلا رسول قد خلت من قبله الرسل | ٧٥ م « | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **ابْن** : | لعن الذين كفروا من بنى إسرائيل على لسان داود | | | |
| | وعيسى ابن مريم ... ... ... ... ... ... ... | ٧٨ | م المائدة | ٥ |
| | إذقال الله ياعيسى ابن مريم اذكر نعمتى عليك وعلى والدتك | ١١٠م | « | ٥ |
| | إذ قال الحواريون ياعيسى ابن مريم هل يستطيع ربك | ١١٢م | « | ٥ |
| | قال عيسى ابن مريم اللهم ربنا أنزل علينا مائدة من السماء | ١١٤م | « | ٥ |
| | وإذ قال الله ياعيسى ابن مريم ءأنت قلت للناس | | | |
| | اتخذونى وأمى إلهين ... ... ... ... ... ... | ١١٦م | « | ٥ |
| | قال ابن أم إن القوم استضعفونى وكادوا يقتلوننى | ١٥٠ك | الأعراف | ٧ |
| | فأن لله خمسه وللرسول ولذى القربى واليتامى | | | |
| | والمساكين وابن السبيل ... ... ... ... ... | ٤١ | م الأنفال | ٨ |
| | وقالت اليهود عزير ابن الله... ... ... ... ... ... | ٣٠ | م التوبة | ٩ |
| | وقالت النصارى المسيح ابن الله ... ... ... ... | ٣٠ | م « | ٩ |
| | اتخذوا أحبارهم ورهبانهم أربابا من دون الله | | | |
| | والمسيح ابن مريم ... ... ... ... ... ... ... | ٣١ | م « | ٩ |
| | وفى الرقاب والغارمين وفى سبيل الله وابن السبيل | ٦٠ | م « | ٩ |
| | وآت ذا القربى حقه والمسكين وابن السبيل ... ... | ٢٦ | م الإسراء | ١٧ |
| | ذلك عيسى ابن مريم قول الحق الذى فيه يمترون | ٣٤ | ك مريم | ١٩ |
| | قال يبنؤم لاتأخذ بلحيتى ولا برأسى... ... ... ... | ٩٤ | ك طه | ٢٠ |
| | وجعلنا ابن مريم وأمه آية وآويناهما إلى ربوة | ٥٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فآت ذا القربى حقه والمسكين وابن السبيل ... ... | ٣٨ | ك الروم | ٣٠ |
| | وإذ أخذنا من النبيين ميثاقهم ومنك ومن نوح | | | |
| | وإبراهيم وموسى وعيسى ابن مريم ... ... ... | ٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ولما ضرب ابن مريم مثلا إذا قومك منه يصدون | ٥٧ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وقفينا بعيسى ابن مريم وآتيناه الإنجيل ... ... ... | ٢٧ | م الحديد | ٥٧ |
| | فلله وللرسول ولذى القربى واليتامى والمساكين | | | |
| | وابن السبيل ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | م الحشر | ٥٩ |
| | وإذقال عيسى ابن مريم يابنى إسرائيل إنى رسول الله إليكم | ٦ | م الصف | ٦١ |
| | كونوا أنصار الله كما قال عيسى ابن مريم للحواريين | ١٤ | م « | ٦١ |
| **ابْنَكَ** : | ارجعوا إلى أبيكم فقولوا يا أبانا إن ابنك سرق | ٨١ | ك يوسف | ١٢ |
| **ابْنَهُ** : | ونادى نوح ابنه وكان فى معزل يابنىّ اركب معنا | ٤٢ | ك هود | ١١ |
| (٢) | وإذ قال لقمان لابنه وهو يعظه يابنىّ لا تشرك بالله | ١٣ | ك لقمان | ٣١ |
| **ابْنَهَا** : | وجعلناها وابنها آية للعالمين... ... ... ... ... | ٩١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| **ابْنِي** : | فقال رب إن ابنى من أهلى وإن وعدك الحق | ٤٥ | ك هود | ١١ |
| **ابْنَيْ** : | واتل عليهم نبأ ابنى آدم بالحق إذ قربا قربانا | ٢٧ | م المائدة | ٥ |
| **بَنُوا** : | قال آمنت أنه لاإله إلا الذى آمنت به بنوا إسرائيل | ٩٠ | ك يونس | ١٠ |
| **بَنُونَ** : | المال والبنون زينة الحياة الدنيا ... ... ... ... | ٤٦ | ك الكهف | ١٨ |
| (٤) | يوم لا ينفع مال ولابنون ... ... ... ... ... ... | ٨٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| **بَنُونَ** : | فاستفتهم ألربك البنات ولهم البنون ... ... ... | ١٤٩ | ك الصافات | ٣٧ |
| | أم له البنات ولكم البنون ... ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك الطور | ٥٢ |
| **بَنِي** : | يابنى إسرائيل اذكروا نعمتى التى أنعمت عليكم | ٤٠ | م البقرة | ٢ |
| (٤٩) | يابنى إسرائيل اذكروا نعمتى التى أنعمت عليكم | ٤٧ | م « | ٢ |
| | وإذ أخذنا ميثاق بنى إسرائيل لاتعبدون إلا الله | ٨٣ | م « | ٢ |
| | يابنى إسرائيل اذكروا نعمتى التى أنعمت عليكم | ١٢٢م | « | ٢ |
| | سل بنى إسرائيل كم آتيناهم من آية بينة ... ... ... | ٢١١م | « | ٢ |
| | ألم تر إلى الملإ من بنى إسرائيل من بعد موسى | ٢٤٦م | « | ٢ |
| | ورسولا إلى بنى إسرائيل أنى قد جئتكم بآية من ربكم | ٤٩ | م آل عمران | ٣ |
| | كل الطعام كان حلا لبنى إسرائيل ... ... ... ... | ٩٣ | م « | ٣ |
| | ولقد أخذ الله ميثاق بنى إسرائيل وبعثنا منهم اثنى عشر نقيبا | ١٢ | م المائدة | ٥ |
| | من أجل ذلك كتبنا على بنى إسرائيل أنه من قتل | | | |
| | نفسا بغير نفس ... ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | م « | ٥ |
| | لقد أخذنا ميثاق بنى إسرائيل وأرسلنا إليهم رسلا | ٧٠ | م « | ٥ |
| | وقال المسيح يابنى إسرائيل اعبدوا الله ربى وربكم | ٧٢ | م « | ٥ |
| | لعن الذين كفروا من بنى إسرائيل على لسان داود | ٧٨ | م « | ٥ |
| | وإذ كففت بنى إسرائيل عنك إذ جئتهم بالبينات | ١١٠م | « | ٥ |
| | يابنى آدم قد أنزلنا عليكم لباسا يوارى سوآتكم وريشا | ٢٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | يابنى آدم لايفتننكم الشيطان كما أخرج أبويكم من الجنة | ٢٧ | ك « | ٧ |
| | يا بنى آدم خذوا زينتكم عند كل مسجد... ... ... | ٣١ | ك « | ٧ |
| | يابنى آدم إما يأتينكم رسل منكم يقصون عليكم آياتى | ٣٥ | ك « | ٧ |
| | قد جئتكم ببينة من ربكم فأرسل معى بنى إسرائيل | ١٠٥ك | « | ٧ |
| | لنؤمننّ لك ولنرسلنّ معك بنى إسرائيل ... ... ... | ١٣٤ك | « | ٧ |
| | وتمت كلمة ربك الحسنى على بنى إسرائيل بما صبروا | ١٣٧ك | « | ٧ |
| | وجاوزنا ببنى إسرائيل البحر ... ... ... ... ... | ١٣٨ك | « | ٧ |
| | وإذ أخذ ربك من بنى آدم من ظهورهم ذريتهم | ١٧٢ك | « | ٧ |
| | وجاوزنا ببنى إسرائيل البحر فأتبعهم فرعون وجنوده | ٩٠ | ك يونس | ١٠ |
| | ولقد بوأنا بنى إسرائيل مبوأ صدق ... ... ... ... | ٩٣ | ك « | ١٠ |
| | وآتينا موسى الكتاب وجعلناه هدى لبنى إسرائيل | ٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وقضينا إلى بنى إسرائيل فى الكتاب لتفسدنّ | | | |
| | فى الأرض مرتين... ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك « | ١٧ |
| | ولقد كرمنا بنى آدم وحملناهم فى البر والبحر... ... | ٧٠ | ك « | ١٧ |
| | ولقد آتينا موسى تسع آيات بينات فسئل بنى إسرائيل | ١٠١ك | « | ١٧ |
| | وقلنا من بعده لبنى إسرائيل اسكنوا الأرض | ١٠٤ك | « | ١٧ |
| | فأرسل معنا بنى إسرائيل ولا تعذبهم ... ... ... | ٤٧ | ك طه | ٢ |
| | يا بنى إسرائيل قد أنجيناكم من عدوكم ... ... ... | ٨٠ | ك « | ٢٠ |
| | إنى خشيت أن تقول فرقت بين بنى إسرائيل | ٩٤ | ك « | ٢٠ |
| | أو أبناء بعولتهنّ أو إخوانهنّ أو بنى إخوانهنّ | ٣١ | م النور | ٢٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بَنِي: | أو بنى أخواتهن أو نسائهن... ... ... ... ... ... | ٣١ | م النور | ٢٤ |
| | أن أرسل معنا بنى إسرائيل ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وتلك نعمة تمنها علىّ أن عبّدت بنى إسرائيل... ... | ٢٢ | ك « | ٢٦ |
| | كذلك وأورثناها بنى إسرائيل ... ... ... ... ... | ٥٩ | ك « | ٢٦ |
| | أو لم يكن لهم آية أن يعلمه علماء بنى إسرائيل | ١٩٧ | م « | ٢٦ |
| | إن هذا القرآن يقصّ على بنى إسرائيل أكثر الذى | | | |
| | هم فيه يختلفون ... ... ... ... ... ... ... | ٧٦ | ك النمل | ٢٧ |
| | فلا تكن فى مرية من لقائه وجعلناه هدى لبنى إسرائيل | ٢٣ | ك السجدة | ٣٢ |
| | ألم أعهد إليكم يا بنى آدم أن لا تعبدوا الشيطان | ٦٠ | ك يس | ٣٦ |
| | ولقد آتينا موسى الهدى وأورثنا بنى إسرائيل الكتاب | ٥٣ | ك غافر | ٤٠ |
| | إن هو إلا عبد أنعمنا عليه وجعلناه مثلا لبنى إسرائيل | ٥٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ولقد نجينا بنى إسرائيل من العذاب المهين ... ... | ٣٠ | ك الدخان | ٤٤ |
| | ولقد آتينا بنى إسرائيل الكتاب والحكم والنبوّة | ١٦ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | وشهد شاهد من بنى إسرائيل على مثله ... ... ... | ١٠ | م الأحقاف | ٤٦ |
| | يا بنى إسرائيل إنى رسول الله إليكم... ... ... ... | ٦ | م الصف | ٦١ |
| | فآمنت طائفة من بنى إسرائيل وكفرت طائفة | ١٤ | م « | ٦١ |
| بنِينَ: | زين للناس حب الشهوات من النساء والبنين | ١٤ | م آل عمران | ٣ |
| (١٢) | وجعلوا لله شركاء الجن وخلقهم وخرقوا له بنين | | | |
| | وبنات بغير علم ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | وجعل لكم من أزواجكم بنين وحفدة ... ... ... | ٧٢ | ك النحل | ١٦ |
| | وأمددناكم بأموال وبنين وجعلناكم أكثر نفيرا | ٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| | أفأصفاكم ربكم بالبنين واتخذ من الملائكة إناثا | ٤٠ | ك « | ١٧ |
| | أيحسبون أنما نمدهم به من مال وبنين . نسارع | | | |
| | لهم فى الخيرات ... ... ... ... ... ... ... | ٥٥ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | أمدّكم بأنعام وبنين ... ... ... ... ... ... | ١٣٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | أصطفى البنات على البنين ... ... ... ... ... | ١٥٣ | ك الصافات | ٣٧ |
| | أم اتخذ مما يخلق بنات وأصفاكم بالبنين ... ... | ١٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | أن كان ذا مال وبنين ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك القلم | ٦٨ |
| | ويمددكم بأموال وبنين ويجعل لكم جنات ... ... | ١٢ | ك نوح | ٧١ |
| | وجعلت له مالا ممدودا . وبنين شهودا ... ... | ١٣ | ك المدثر | ٧٤ |
| بَنِيهِ: | ووصّى بها إبراهيم بنيه ويعقوب... ... ... ... | ١٣٢ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | إذ قال لبنيه ما تعبدون من بعدى ... ... ... ... | ١٣٣ | م « | ٢ |
| | يودّ المجرم لو يفتدى من عذاب يومئذ ببنيه... ... | ١١ | ك المعارج | ٧٠ |
| | يوم يفرّ المرء من أخيه . وأمه وأبيه . وصاحبته وبنيه | ٣٦ | ك عبس | ٨٠ |
| بُنَيّ: | يا بنىّ إن الله اصطفى لكم الدين ... ... ... ... | ١٣٢ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | وقال يا بنىّ لا تدخلوا من باب واحد ... ... ... | ٦٧ | ك يوسف | ١٢ |
| | يا بنىّ اذهبوا فتحسسوا من يوسف وأخيه... ... | ٨٧ | ك « | ١٢ |
| | ربّ اجعل هذا البلد آمنا واجنبنى وبنىّ أن نعبد الأصنام | ٣٥ | ك إبراهيم | ١٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَبْنَاء: | وقالت اليهود والنصارى نحن أبناء الله وأحباؤه | ١٨ | م المائدة | ٥ |
| (٥) | أو أبنائهن أو أبناء بعولتهن أو أخوانهن ... ... | ٣١ | م النور | ٢٤ |
| | لا جناح عليهن فى آبائهن ولا أبنائهن ولا إخوانهن | | | |
| | ولا أبناء إخوانهن... ... ... ... ... ... ... | ٥٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ولا أبناء أخواتهن ولا نسائهن... ... ... ... ... | ٥٥ | م « | ٣٣ |
| | قالوا أقتلوا أبناء الذين آمنوا معه واستحيوا نساءهم | ٢٥ | ك غافر | ٤٠ |
| أَبْنَاءَكُمْ: | يسومونكم سوء العذاب يذبّحون أبناءكم ... ... | ٤٩ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | فقل تعالوا ندع أبناءنا وأبناءكم ونساءنا ونساءكم | ٦١ | م آل عمران | ٣ |
| | يقتّلون أبناءكم ويستحيون نساءكم ... ... ... ... | ١٤١ | ك الأعراف | ٧ |
| | يسومونكم سوء العذاب ويذبّحون أبناءكم ... ... | ٦ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وما جعل أدعياءكم أبناءكم ذلكم قولكم بأفواهكم | ٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| أَبْنَاءَنَا: | فقل تعالوا ندع أبناءنا وأبناءكم ونساءنا ونساءكم | ٦١ | م آل عمران | ٣ |
| أَبْنَاءَهُمْ: | الذين آتيناهم الكتاب يعرفونه كما يعرفون أبناءهم | ١٤٦ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | الذين آتيناهم الكتاب يعرفونه كما يعرفون أبناءهم | ٢٠ | م الأنعام | ٦ |
| | قال سنقتّل أبناءهم ونستحيى نساءهم وإنا فوقهم قاهرون | ١٢٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | يستضعف طائفة منهم يذبّح أبناءهم ويستحى نساءهم | ٤ | ك القصص | ٢٨ |
| | يوادّون من حادّ الله ورسوله ولو كانوا آباءهم أو أبناءهم | ٢٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| أَبْنَاؤُكُمْ: | آباؤكم وأبناؤكم لا تدرون أيهم أقرب لكم نفعا | ١١ | م النساء | ٤ |
| (٢) | قل إن كان آباؤكم وأبناؤكم وإخوانكم وأزواجكم | | | |
| | وعشيرتكم وأموال اقترفتموها وتجارة تخشون | | | |
| | كسادها ومساكن ترضونها أحبّ إليكم من الله | | | |
| | ورسوله وجهاد فى سبيله فتربصوا ... ... ... | ٢٤ | م التوبة | ٩ |
| أَبْنَائِكُمْ: | وحلائل أبنائكم الذين من أصلابكم ... ... ... | ٢٣ | م النساء | ٤ |
| أَبْنَائِنَا: | ومالنا ألا نقاتل فى سبيل الله وقد أخرجنا من | | | |
| | ديارنا وأبنائنا... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٤٦ | م البقرة | ٢ |
| أَبْنَائِهِنّ: | إلا لبعولتهن أو آبائهن أو آباء بعولتهن أو أبنائهن | ٣١ | م النور | ٢٤ |
| (٢) | لا جناح عليهن فى آبائهن ولا أبنائهن ولا إخوانهن | ٥٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| بُنَىّ: | يا بنىّ اركب معنا ولا تكن مع الكافرين ... ... | ٤٢ | ك هود | ١١ |
| (٦) | قال يا بنىّ لا تقصص رؤياك على إخوتك فيكيدوا لك كيدا | ٥ | ك يوسف | ١٢ |
| | وإذ قال لقمان لابنه وهو يعظه يا بنىّ لا تشرك بالله | ١٣ | ك لقمان | ٣١ |
| | يا بنىّ إنها إن تك مثقال حبة من خردل فتكن فى صخرة | | | |
| | أو فى السموات أو فى الأرض يأت بها الله | ١٦ | ك « | ٣١ |
| | يا بنىّ أقم الصلاة وأمر بالمعروف وانه عن المنكر | ١٧ | ك « | ٣١ |
| | يا بنىّ إنى أرى فى المنام أنى أذبحك فانظر ماذا ترى | ١٠٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| ابْنَتَ: | ومريم ابنت عمران التى أحصنت فرجها... ... | ١٢ | م التحريم | ٦٦ |
| ابْنَتَىّ: | قال إنى أريد أن أنكحك إحدى ابنتىّ هاتين | ٢٧ | ك القصص | ٢٨ |
| بَنَات: | وعماتكم وخالاتكم وبنات الأخ ... ... ... | ٢٣ | م النساء | ٤ |
| (١٢) | وبنات الأخت وأمهاتكم اللاتى أرضعنكم ... ... | ٢٣ | م « | ٤ |
| | وخرقوا له بنين وبنات بغير علم... ... ... ... | ١٠٠ | ك الأنعام | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| بَنَات | : ويجعلون لله البنات سبحانه ولهم ما يشتهون... ... | ٥٧ ك النحـل | ١٦ |
| | وما ملكت يمينك مما أفاء الله عليك وبنات عمك | ٥٠ م الأحزاب | ٣٣ |
| | وبنات عماتك ... ... ... ... ... ... ... | ٥٠ م « | ٣٣ |
| | وبنات خالك... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٠ م « | ٣٣ |
| | وبنات خالاتك اللاتى هاجرن معك ... ... ... | ٥٠ م « | ٣٣ |
| | فاستفتهم ألربك البنات ولهم البنون ... ... ... ... | ١٤٩ك الصافات | ٣٧ |
| | أصطفى البنات على البنين ... ... ... ... ... ... | ١٥٣ك « | ٣٧ |
| | أم اتخذ مما يخلق بنات وأصفاكم بالبنين ... ... | ١٦ ك الزخرف | ٤٣ |
| | أم له البنات ولكم البنون ... ... ... ... ... ... | ٣٩ ك الطـور | ٥٢ |
| بَنَاتِكَ | : قالوا لقد علمت مالنا فى بناتك من حق ... ... | ٧٩ ك هـود | ١١ |
| (٢) | يأيها النبىّ قل لأزواجك وبناتك ونساء المؤمنين يدنين عليهن من جلابيبهن ... ... ... ... ... | ٥٩ م الأحزاب | ٣٣ |
| بَنَاتُكُمْ | : حرمت عليكم أمهاتكم وبناتكم وأخواتكم وعماتكم | ٢٣ م النساء | ٤ |
| بَنَاتِى | : قال ياقوم هؤلاء بناتى هنّ أطهر لكم ... ... | ٧٨ ك هـود | ١١ |
| (٢) | قال هؤلاء بناتى إن كنتم فاعلين ... ... ... ... | ٧١ ك الحجـر | ١٥ |
| بَهْتَهُمْ | : بل تأتيهم بغتة فتبهتهم فلا يستطيعون ردّها | ٤٠ ك الأنبياء | ٢١ |
| بُهِتَ | : فإن الله يأتى بالشمس من المشرق فأت بها من المغرب فبهت الذى كفر ... ... ... ... ... | ٢٥٨م البقـرة | ٢ |
| بُهْتَان | : مايكون لنا أن نتكلم بهذا سبحانك هذا بهتان عظيم | ١٦ م النـور | ٢٤ |
| (٢) | ولا يأتين ببهتان يفترينه بين أيديهن وأرجلهن | ١٢ م الممتحنة | ٦٠ |
| بُهْتَانًا | : فلا تأخذوا منه شيئا أتأخذونه بهتانا وإثما مبينا | ٢٠ م النساء | ٤ |
| (٤) | فقد احتمل بهتانا وإثما مبينا ... ... ... ... | ١١٢م « | ٤ |
| | وبكفرهم وقولهم على مريم بهتانا عظيما ... ... ... | ١٥٦م « | ٤ |
| | والذين يؤذون المؤمنين والمؤمنات بغير ما اكتسبوا فقد احتملوا بهتانا ... ... ... ... ... ... | ٥٨ م الأحزاب | ٣٣ |
| بَهْجَة | : فأنبتنا به حدائق ذات بهجة ... ... ... ... | ٦٠ ك النمـل | ٢٧ |
| بَهِيج | : اهتزت وربت وأنبتت من كل زوج بهيج... ... | ٥ م الحـج | ٢٢ |
| (٢) | وألقينا فيها رواسى وأنبتنا فيها من كل زوج بهيج | ٧ ك قٓ | ٥٠ |
| نَبْتَهِلْ | : ثم نبتهل فنجعل لعنة الله على الكاذبين ... ... | ٦١ م آل عمران | ٣ |
| بَهِيمَة | : أحلت لكم بهيمة الأنعام ... ... ... ... ... | ١ م المائدة | ٥ |
| (٣) | ويذكروا اسم الله فى أيام معلومات على مارزقهم من بهيمة الأنعام ... ... ... ... ... ... | ٢٨ م الحـج | ٢٢ |
| | ولكل أمة جعلنا منسكا ليذكروا اسم الله على مارزقهم من بهيمة الأنعام... ... ... ... ... | ٣٤ م « | ٢٢ |
| بَاءَ | : أفمن اتبع رضوان الله كمن باء بسخط من الله | ١٦٢م آل عمران | ٣ |
| (٢) | إلا متحرفا لقتال أو متحيزا إلى فئة فقد باء بغضب من الله | ١٦ م الأنفال | ٨ |
| بَاءُو | : وضربت عليهم الذلة والمسكنة وباءو بغضب من الله | ٦١ م البقـرة | ٢ |
| (٣) | فباءو بغضب على غضب وللكافرين عذاب مهين | ٩٠ م « | ٢ |
| بَاءُو | : وباءو بغضب من الله وضربت عليهم المسكنة | ١١٢م آل عمران | ٣ |
| تَبُوأُ | : إنى أريد أن تبوأ بإثمى وإثمك فتكون من أصحاب النار | ٢٩ م المائدة | ٥ |
| بَوَّأَكُمْ | : وبوأكم فى الأرض تتخذون من سهولها قصورا | ٧٤ ك الأعراف | ٧ |
| بَوَّأْنَا | : ولقد بوأنا بنى إسرائيل مبوأ صدق ... ... ... | ٩٣ ك يونس | ١٠ |
| (٢) | وإذ بوأنا لإبراهيم مكان البيت أن لاتشرك بى شيئا | ٢٦ م الحـج | ٢٢ |
| تُبَوِّئُ | : وإذ غدوت من أهلك تبوّئ المؤمنين مقاعد للقتال | ١٢١م آل عمران | ٣ |
| لَنُبَوِّئَنَّهُمْ | : والذين هاجروا فى الله من بعد ما ظلموا | | |
| (٢) | لنبوّئنهم فى الدنيا حسنة ... ... ... ... ... | ٤١ ك النحـل | ١٦ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات لنبوّئنهم من الجنة غرفا | ٥٨ ك العنكبوت | ٢٩ |
| تَبَوَّءُو | : والذين تبوءو الدار والإيمان من قبلهم يحبون من هاجر إليهم... ... ... ... ... ... ... | ٩ م الحشـر | ٥٩ |
| نَتَبَوَّأُ | : وأورثنا الأرض نتبوأ من الجنة حيث نشاء | ٧٤ ك الزمر | ٣٩ |
| يَتَبَوَّأُ | : وكذلك مكنا ليوسف فى الأرض يتبوأ منها حيث يشاء | ٥٦ ك يوسف | ١٢ |
| تَبَوَّءَا | : وأوحينا إلى موسى وأخيه أن تبوءا لقومكما بمصر بيوتا | ٨٧ ك يونس | ١٠ |
| مُبَوَّأَ | : ولقد بوأنا بنى إسرائيل مبوأ صدق ... ... ... | ٩٣ ك « | ١٠ |
| بَاب | : وادخلوا الباب سجدا وقولوا حطة نغفر لكم خطاياكم | ٥٨ م البقـرة | ٢ |
| (١٠) | وقلنا لهم ادخلوا الباب سجّدا وقلنا لهم لا تعدوا فى السبت | ١٥٤م النساء | ٤ |
| | ادخلوا عليهم الباب فإذا دخلتموه فإنكم غالبون | ٢٣ م المائدة | ٥ |
| | وادخلوا الباب سجّدا نغفر لكم خطيآتكم ... ... ... | ١٦١ك الأعراف | ٧ |
| | واستبقا الباب وقدّت قميصه من دبر ... ... ... ... | ٢٥ ك يوسف | ١٢ |
| | وألفيا سيّدها لدى الباب ... ... ... ... ... ... | ٢٥ ك « | ١٢ |
| | وقال يا بنىّ لا تدخلوا من باب واحد ... ... ... | ٦٧ ك « | ١٢ |
| | والملائكة يدخلون عليهم من كل باب ... ... ... | ٢٣ م الرعـد | ١٣ |
| | لها سبعة أبواب لكل باب منهم جزء مقسوم ... ... | ٤٤ ك الحجـر | ١٥ |
| | فضرب بينهم بسور له باب باطنه فيه الرحمة ... ... | ١٣ م الحديد | ٥٧ |
| بَابًا | : ولو فتحنا عليهم بابا من السماء فظلوا فيه يعرجون | ١٤ ك الحجـر | ١٥ |
| (٢) | حتى إذا فتحنا عليهم بابا ذا عذاب شديد إذا هم فيه مبلسون ... ... ... ... ... ... ... | ٧٧ ك المؤمنون | ٢٣ |
| أَبْوَاب | : فلما نسوا ما ذكروا به فتحنا عليهم أبواب كل شىء | ٤٤ ك الأنعام | ٦ |
| (١٠) | إن الذين كذبوا بآياتنا واستكبروا عنها لا تفتح لهم أبواب السماء ... ... ... ... ... ... ... | ٤٠ ك الأعراف | ٧ |
| | وغلّقت الأبواب وقالت هيت لك ... ... ... ... | ٢٣ ك يوسف | ١٢ |
| | وقال يا بنىّ لا تدخلوا من باب واحد وادخلوا من أبواب متفرقة ... ... ... ... ... ... | ٦٧ ك « | ١٢ |
| | لها سبعة أبواب لكل باب منهم جزء مقسوم | ٤٤ ك الحجـر | ١٥ |
| | فادخلوا أبواب جهنم خالدين فيها ... ... ... ... | ٢٩ ك النحـل | ١٦ |
| | جنات عدن مفتحة لهم الأبواب ... ... ... ... | ٥٠ ك صٓ | ٣٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَبْوَاب | : قيل ادخلوا أبواب جهنم خالدين فيها ... ... | ٧٢ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ادخلوا أبواب جهنم خالدين فيها فبئس مثوى المتكبرين | ٧٦ | ك غافر | ٤٠ |
| | ففتحنا أبواب السماء بماء منهمر ... ... ... ... ... | ١١ | ك القمر | ٥٤ |
| أَبْوَابًا | : ولبيوتهم أبوابا وسررا عليها يتكئون ... ... ... | ٣٤ | ك الزخرف | ٤٣ |
| (٢) | وفتحت السماء فكانت أبوابا... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك النبأ | ٧٨ |
| أَبْوَابِهَا | : وأتوا البيوت من أبوابها واتقوا الله لعلكم تفلحون | ١٨٩ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | وسيق الذين كفروا إلى جهنم زمرا حتى إذا جاؤها | | | |
| | فتحت أبوابها... ... ... ... ... ... ... ... | ٧١ | ك الزمر | ٣٩ |
| | حتى إذا جاؤها وفتحت أبوابها وقال لهم خزنتها | | | |
| | سلام عليكم طبتم ... ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك « | ٣٩ |
| تَبُورَ | : وأنفقوا مما رزقناهم سرا وعلانية يرجون تجارة لن تبور | ٢٩ | ك فاطر | ٣٥ |
| يَبُورُ | : والذين يمكرون السيئات لهم عذاب شديد ومكر | | | |
| | أولئك هو يبور ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك « | ٣٥ |
| بُورًا | : ولكن متعتهم وآباءهم حتى نسوا الذكر وكانوا قوما بورا | ١٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| (٢) | وزين ذلك في قلوبكم وظننتم ظن السوء وكنتم قوما بورا | ١٢ | م الفتح | ٤٨ |
| الْبَوَارِ | : ألم تر إلى الذين بدلوا نعمة الله كفرا وأحلوا | | | |
| | قومهم دار البوار ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م إبراهيم | ١٤ |
| بَالُ | : ارجع إلى ربك فسئله ما بال النسوة اللاتي قطعن أيديهن | ٥٠ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | قال فما بال القرون الأولى ... ... ... ... ... | ٥١ | ك طه | ٢٠ |
| بَالَهُمْ | : كفر عنهم سيئاتهم وأصلح بالهم ... ... ... ... | ٢ | م محمد | ٤٧ |
| (٢) | سيهديهم ويصلح بالهم ... ... ... ... ... ... | ٥ | م « | ٤٧ |
| يَبِيتُونَ | : والذين يبيتون لربهم سجدا وقياما ... ... ... | ٦٤ | ك الفرقان | ٢٥ |
| بَيَّتَ | : فإذا برزوا من عندك بيت طائفة منهم غير الذي تقول | ٨١ | م النساء | ٤ |
| لَنُبَيِّتَنَّهُ | : قالوا تقاسموا بالله لنبيتنه وأهله ... ... ... | ٤٩ | ك النمل | ٢٧ |
| يُبَيِّتُونَ | : والله يكتب ما يبيتون فأعرض عنهم وتوكل على الله | ٨١ | م النساء | ٤ |
| (٢) | ولا يستخفون من الله وهو معهم إذ يبيتون ما لا يرضى | | | |
| | من القول ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٨ | م « | ٤ |
| بَيْت | : وإذ جعلنا البيت مثابة للناس وأمنا ... ... ... | ١٢٥ | م البقرة | ٢ |
| (١٩) | وإذ يرفع إبراهيم القواعد من البيت وإسماعيل | ١٢٧ | م « | ٢ |
| | فمن حج البيت أو اعتمر فلا جناح عليه أن يطوف بهما | ١٥٨ | م « | ٢ |
| | إن أول بيت وضع للناس للذي ببكة مباركا ... ... | ٩٦ | م آل عمران | ٣ |
| | ولله على الناس حج البيت من استطاع إليه سبيلا | ٩٧ | م « | ٣ |
| | ولا آمين البيت الحرام يبتغون فضلا من ربهم ورضوانا | ٢ | م المائدة | ٥ |
| | جعل الله الكعبة البيت الحرام قياما للناس ... ... | ٩٧ | م « | ٥ |
| | وما كان صلاتهم عند البيت إلا مكاء وتصدية | ٣٥ | ك الأنفال | ٨ |
| | رحمة الله وبركاته عليكم أهل البيت إنه حميد مجيد | ٧٣ | ك هود | ١١ |
| | أو يكون لك بيت من زخرف أو ترقى في السماء | ٩٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وإذ بوأنا لإبراهيم مكان البيت أن لا تشرك بي شيئا | ٢٦ | م الحج | ٢٢ |
| بَيْت | : ثم ليقضوا تفثهم وليوفوا نذورهم وليطوفوا بالبيت العتيق | ٢٩ | م الحج | ٢٢ |
| | لكم فيها منافع إلى أجل مسمى ثم محلها إلى البيت العتيق | ٣٣ | م « | ٢٢ |
| | فقالت هل أدلكم على أهل بيت يكفلونه لكم | ١٢ | ك القصص | ٢٨ |
| | وإن أوهن البيوت لبيت العنكبوت ... ... ... ... | ٤١ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | إنما يريد الله ليذهب عنكم الرجس أهل البيت | ٣٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | فما وجدنا فيها غير بيت من المسلمين ... ... ... | ٣٦ | ك الذاريات | ٥١ |
| | والطور. وكتاب مسطور. في رق منشور. والبيت المعمور | ٤ | ك الطور | ٥٢ |
| | فليعبدوا رب هذا البيت... ... ... ... ... ... | ٣ | ك قريش | ١٠٦ |
| بَيْتًا | : كمثل العنكبوت اتخذت بيتا ... ... ... ... ... | ٤١ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| (٢) | رب ابن لي عندك بيتا في الجنة ونجني من فرعون وعمله | ١١ | م التحريم | ٦٦ |
| بَيْتِكَ | : كما أخرجك ربك من بيتك بالحق ... ... ... ... | ٥ | م الأنفال | ٨ |
| (٢) | ربنا إني أسكنت من ذريتي بواد غير ذي زرع عند | | | |
| | بيتك المحرم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك إبراهيم | ١٤ |
| بَيْتِهِ | : ومن يخرج من بيته مهاجرا إلى الله ورسوله ثم | | | |
| | يدركه الموت فقد وقع أجره على الله ... ... | ١٠٠ | م النساء | ٤ |
| بَيْتِهَا | : وراودته التي هو في بيتها عن نفسه ... ... ... | ٢٣ | ك يوسف | ١٢ |
| بَيْتِي | : أن طهرا بيتي للطائفين والعاكفين والركع السجود | ١٢٥ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | وطهر بيتي للطائفين والقائمين والركع السجود ... ... | ٢٦ | م الحج | ٢٢ |
| | رب اغفر لي ولوالدي ولمن دخل بيتي مؤمنا | ٢٨ | ك نوح | ٧١ |
| بُيُوت | : وليس البر بأن تأتوا البيوت من ظهورها ... ... | ١٨٩ | م البقرة | ٢ |
| (١٤) | ولكن البر من اتقى وأتوا البيوت من أبوابها... ... | ١٨٩ | م « | ٢ |
| | فإن شهدوا فأمسكوهن في البيوت حتى يتوفاهن الموت | ١٥ | م النساء | ٤ |
| | في بيوت أذن الله أن ترفع ويذكر فيها اسمه | ٣٦ | م النور | ٢٤ |
| | ولا على أنفسكم أن تأكلوا من بيوتكم أو بيوت آبائكم | ٦١ | م « | ٢٤ |
| | أو بيوت أمهاتكم ... ... ... ... ... ... ... | ٦١ | م « | ٢٤ |
| | أو بيوت إخوانكم... ... ... ... ... ... ... | ٦١ | م « | ٢٤ |
| | أو بيوت أخواتكم ... ... ... ... ... ... ... | ٦١ | م « | ٢٤ |
| | أو بيوت أعمامكم ... ... ... ... ... ... ... | ٦١ | م « | ٢٤ |
| | أو بيوت عماتكم ... ... ... ... ... ... ... | ٦١ | م « | ٢٤ |
| | أو بيوت أخوالكم ... ... ... ... ... ... ... | ٦١ | م « | ٢٤ |
| | أو بيوت خالاتكم أو ما ملكتم مفاتحه ... ... ... | ٦١ | م « | ٢٤ |
| | وإن أوهن البيوت لبيت العنكبوت... ... ... ... | ٤١ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | يا أيها الذين آمنوا لا تدخلوا بيوت النبي إلا أن يؤذن لكم | ٥٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| بُيُوتًا | : تتخذون من سهولها قصورا وتنحتون الجبال بيوتا | ٧٤ | ك الأعراف | ٧ |
| (٩) | وأوحينا إلى موسى وأخيه أن تبوءا لقومكما بمصر بيوتا | ٨٧ | ك يونس | ١٠ |
| | وكانوا ينحتون من الجبال بيوتا آمنين ... ... ... | ٨٢ | ك الحجر | ١٥ |
| | وأوحى ربك إلى النحل أن اتخذي من الجبال بيوتا | ٦٨ | ك النحل | ١٦ |
| | وجعل لكم من جلود الأنعام بيوتا تستخفونها يوم ظعنكم | ٨٠ | ك « | ١٦ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| بُيُوتًا : | يأيها الذين آمنوا لا تدخلوا بيوتا غير بيوتكم حتى تستأنسوا | ٢٧ م النـور | ٢٤ |
| | ليس عليكم جناح أن تدخلوا بيوتا غير مسكونة فيها متاع لكم | ٢٩ م « | ٢٤ |
| | فإذا دخلتم بيوتا فسلموا على أنفسكم تحية من عند الله | ٦١ م « | ٢٤ |
| | وتنحتون من الجبال بيوتا فارهين ... ... ... ... | ١٤٩ ك الشعراء | ٢٦ |
| بُيُوتِكُمْ : | وأنبئكم بما تأكلون وما تدخرون فى بيوتكم ... | ٤٩ م آل عمران | ٣ |
| (٦) | قل لو كنتم فى بيوتكم لبرز الذين كتب عليهم القتل | | |
| | إلى مضاجعهم ... ... ... ... ... ... | ١٥٤ م « | ٣ |
| | واجعلوا بيوتكم قبلة وأقيموا الصلاة ... ... ... | ٨٧ ك يونس | ١٠ |
| | والله جعل لكم من بيوتكم سكنا ... ... ... ... | ٨٠ ك النحل | ١٦ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تدخلوا بيوتا غير بيوتكم حتى تستأنسوا | ٢٧ م النـور | ٢٤ |
| | ولا على أنفسكم أن تأكلوا من بيوتكم أو بيوت آبائكم | ٦١ م « | ٢٤ |
| بُيُوتِكُنَّ : | وقرن فى بيوتكن ولا تبرجن تبرج الجاهلية الأولى | ٣٣ م الأحزاب | ٣٣ |
| (٣) | واذكرن ما يتلى فى بيوتكن من آيات الله والحكمة | ٣٤ م « | ٣٣ |
| بُيُوتَنَا : | يقولون إن بيوتنا عورة وما هى بعورة ... ... | ١٣ م « | ٣٣ |
| بُيُوتُهُمْ : | فتلك بيوتهم خاوية بما ظلموا ... ... ... ... | ٥٢ ك النمل | ٢٧ |
| (٤) | لجعلنا لمن يكفر بالرحمن لبيوتهم سقفا من فضة | ٣٣ ك الزخرف | ٤٣ |
| | ولبيوتهم أبوابا وسررا عليها يتكئون ... ... ... | ٣٤ ك « | ٤٣ |
| | يخربون بيوتهم بأيديهم وأيدى المؤمنين... ... ... | ٢ م الحشر | ٥٩ |
| بُيُوتِهِنَّ : | لا تخرجوهن من بيوتهن ... ... ... ... ... | ١ م الطلاق | ٦٥ |
| بَيَاتًا : | وكم من قرية أهلكناها فجاءها بأسنا بياتا أو هم قائلون | ٤ ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | أفأمن أهل القرى أن يأتيهم بأسنا بياتا وهم نائمون | ٩٧ ك « | ٧ |
| | قل أرأيتم إن أتاكم عذابه بياتا أو نهارا ... ... | ٥٠ ك يونس | ١٠ |
| تَبِيدَ : | قال ما أظن أن تبيد هذه أبدا ... ... ... ... | ٣٥ ك الكهف | ١٨ |
| ابْيَضَّتْ : | وأما الذين ابيضت وجوههم ففى رحمة الله | ١٠٧ م آل عمران | ٣ |
| (٢) | وابيضت عيناه من الحزن فهو كظيم ... ... ... | ٨٤ ك يوسف | ١٢ |
| تَبْيَضُّ : | يوم تبيض وجوه وتسود وجوه ... ... ... ... | ١٠٦ م آل عمران | ٣ |
| الْأَبْيَضُ : | وكلوا واشربوا حتى يتبين لكم الخيط الأبيض | | |
| | من الخيط الأسود ... ... ... ... ... ... | ١٨٧ م البقرة | ٢ |
| بَيْضَاء : | ونزع يده فإذا هى بيضاء للناظرين ... ... ... | ١٠٨ ك الأعراف | ٧ |
| (٦) | واضمم يدك إلى جناحك تخرج بيضاء من غير سوء آية أخرى | ٢٢ ك طه | ٢٠ |
| | ونزع يده فإذا هى بيضاء للناظرين ... ... ... | ٣٣ ك الشعراء | ٢٦ |
| | وأدخل يدك فى جيبك تخرج بيضاء من غير سوء | ١٢ ك النمل | ٢٧ |
| | اسلك يدك فى جيبك تخرج بيضاء من غير سوء | ٣٢ ك القصص | ٢٨ |
| | يطاف عليهم بكأس من معين ، بيضاء لذة للشاربين | ٤٦ ك الصافات | ٣٧ |
| بِيضٌ : | ومن الجبال جدد بيض وحمر مختلف ألوانها | | |
| | وغرابيب سود ... ... ... ... ... ... | ٢٧ ك فاطر | ٣٥ |
| بَيْضٌ : | كأنهن بيض مكنون ... ... ... ... ... ... | ٤٩ ك الصافات | ٣٧ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| بَايَعْتُمْ : | فاستبشروا ببيعكم الذى بايعتم به ... ... ... ... | ١١١ م التوبة | ٩ |
| يُبَايِعْنَكَ : | إذا جاءك المؤمنات يبايعنك على أن لا يشركن | | |
| | بالله شيئا ولا يسرقن ... ... ... ... ... ... | ١٢ م الممتحنة | ٦٠ |
| يُبَايِعُونَ : | إن الذين يبايعونك إنما يبايعون الله ... ... | ١٠ م الفتح | ٤٨ |
| يُبَايِعُونَكَ : | إن الذين يبايعونك إنما يبايعون الله ... ... | ١٠ م « | ٤٨ |
| (٢) | لقد رضى الله عن المؤمنين إذ يبايعونك تحت الشجرة | ١٨ م « | ٤٨ |
| فَبَايِعْهُنَّ : | فبايعهن واستغفر لهن الله إن الله غفور رحيم | ١٢ م الممتحنة | ٦٠ |
| تَبَايَعْتُمْ : | وأشهدوا إذا تبايعتم ولا يضار كاتب ولا شهيد | ٢٨٢ م البقرة | ٢ |
| بَيْع : | من قبل أن يأتى يوم لا بيع فيه ولا خلة ولا شفاعة | ٢٥٤ م « | ٢ |
| (٦) | ذلك بأنهم قالوا إنما البيع مثل الربا ... ... ... | ٢٧٥ م « | ٢ |
| | وأحل الله البيع وحرم الربا... ... ... ... ... | ٢٧٥ م « | ٢ |
| | من قبل أن يأتى يوم لا بيع فيه ولا خلال ... ... | ٣١ ك إبراهيم | ١٤ |
| | رجال لا تلهيهم تجارة ولا بيع عن ذكر الله ... ... | ٣٧ م النور | ٢٤ |
| | إذا نودى للصلاة من يوم الجمعة فاسعوا إلى ذكر | | |
| | الله وذروا البيع ... ... ... ... ... ... | ٩ م الجمعة | ٦٢ |
| بِبَيْعِكُمْ : | فاستبشروا ببيعكم الذى بايعتم به ... ... ... ... | ١١١ م التوبة | ٩ |
| بِيَعٌ : | ولولا دفع الله الناس بعضهم ببعض لهدمت صوامع وبيع | ٤٠ م الحج | ٢٢ |
| بَيِّنَا : | قد بينا الآيات لقوم يوقنون ... ... ... ... | ١١٨ م البقرة | ٢ |
| (٣) | قد بينا لكم الآيات إن كنتم تعقلون ... ... ... | ١١٨ م آل عمران | ٣ |
| | قد بينا لكم الآيات لعلكم تعقلون ... ... ... ... | ١٧ م الحديد | ٥٧ |
| بَيَّنَّاهُ : | إن الذين يكتمون ما أنزلنا من البينات والهدى | | |
| | من بعد ما بيناه للناس فى الكتاب أولئك يلعنهم الله | ١٥٩ م البقرة | ٢ |
| بَيَّنُوا : | إلا الذين تابوا وأصلحوا وبينوا فأولئك أتوب عليهم | ١٦٠ م « | ٢ |
| لَأُبَيِّنَ : | قد جئتكم بالحكمة ولأبين لكم بعض الذى تختلفون فيه | ٦٣ ك الزخرف | ٤٣ |
| لِتُبَيِّنَ : | وأنزلنا إليك الذكر لتبين للناس ما نزل إليهم | ٤٤ ك النحل | ١٦ |
| (٢) | وما أنزلنا عليك الكتاب إلا لتبين لهم الذى اختلفوا فيه | ٦٤ ك « | ١٦ |
| لَتُبَيِّنُنَّهُ : | وإذ أخذ الله ميثاق الذين أوتوا الكتاب لتبيننه للناس | ١٨٧ م آل عمران | ٣ |
| نُبَيِّنَ : | انظر كيف نبين لهم الآيات ثم انظر أنى يؤفكون | ٧٥ م المائدة | ٥ |
| (٢) | ثم من مضغة مخلقة وغير مخلقة لنبين لكم... ... ... | ٥ م الحج | ٢٢ |
| لَنُبَيِّنَنَّهُ : | وليقولوا درست ولنبينه لقوم يعلمون ... ... ... | ١٠٥ ك الأنعام | ٦ |
| يُبَيِّنُ : | قالوا ادع لنا ربك يبين لنا ما هى ... ... ... | ٦٨ م البقرة | ٢ |
| (٢١) | قالوا ادع لنا ربك يبين لنا ما لونها ... ... ... | ٦٩ م « | ٢ |
| | قالوا ادع لنا ربك يبين لنا ما هى إن البقر تشابه علينا | ٧٠ م « | ٢ |
| | كذلك يبين الله آياته للناس لعلهم يتقون ... ... | ١٨٧ م « | ٢ |
| | كذلك يبين الله لكم الآيات لعلكم تتفكرون... ... | ٢١٩ م « | ٢ |
| | ويبين آياته للناس لعلهم يتذكرون ... ... ... ... | ٢٢١ م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يُبَيِّنُ: | كذلك يبيّن الله لكم آياته لعلكم تعقلون ... ... | ٢٤٢ | م البقـرة | ٢ |
| | كذلك يبيّن الله لكم الآيات لعلكم تتفكرون... ... | ٢٦٦ | م « | ٢ |
| | كذلك يبيّن الله لكم آياته لعلكم تهتدون... ... ... | ١٠٣ | م آل عمران | ٣ |
| | يريد الله ليبيّن لكم ويهديكم سنن الذين من قبلكم | ٢٦ | م النسـاء | ٤ |
| | يبيّن الله لكم أن تضلوا والله بكل شيء عليم... ... | ١٧٦ | م « | ٤ |
| | قد جاءكم رسولنا يبيّن لكم كثيرا مما كنتم تخفون من الكتاب | ١٥ | م المائدة | ٥ |
| | قـد جاءكم رسولنا يبـيّن لكم على فترة من الرسـل | ١٩ | م « | ٥ |
| | كذلك يبيّن الله لكم آياته لعلكم تشكرون ... ... | ٨٩ | م « | ٥ |
| | وما كان الله ليضلّ قوما بعد إذ هداهم حتى يبيّن لهم ما يتقون ... ... ... ... ... ... ... | ١١٥ | م التـوبة | ٩ |
| | وما أرسلنا من رسـول إلا بلسان قومه ليبـيّن لهم | ٤ | ك إبراهـيم | ١٤ |
| | ليبيّن لهم الذى يختلفون فيه ... ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك النحـل | ١٦ |
| | ويبيّن الله لكم الآيات والله عليم حكيم ... ... ... | ١٨ | م النـور | ٢٤ |
| | كذلك يبـيّن الله لكم الآيات والله عليم حكيم | ٥٨ | م « | ٢٤ |
| | كذلك يبيّن الله لكم آياته والله عليم حكيم ... ... | ٥٩ | م « | ٢٤ |
| | كذلك يبيّن الله لكم الآيات لعلكم تعقلون ... ... | ٦١ | م « | ٢٤ |
| لَيُبَيِّنَنَّ: | وليبـيّنن لكم يوم القيامة ما كنتم فيـه تختلفون | ٩٢ | ك النحـل | ١٦ |
| يُبَيِّنُهَا: | وتلك حدود الله يبيّنها لقوم يعلمون ... ... ... | ٢٣٠ | م البقـرة | ٢ |
| يُبِينُ: | أم أنا خير من هذا الذى هو مهين ولا يكاد يبين | ٥٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| تَبَيَّنَ: | حسدا من عند أنفسهم من بعد ما تبيّن لهم الحق | ١٠٩ | م البقـرة | ٢ |
| (١١) | لا إكراه فى الدين قد تبيّن الرشد من الغيّ ... ... | ٢٥٦ | م « | ٢ |
| | فلما تبيّن له قال أعلم أن الله على كل شيء قـدير | ٢٥٩ | م « | ٢ |
| | ومن يشاقق الرسـول من بعـد ما تبيّن له الهدى ويتبع غير سبيل المؤمنين نوله ما تولّى ... ... | ١١٥ | م النسـاء | ٤ |
| | يجادلونك فى الحق بعد ما تبيّن كأنما يساقون إلى الموت | ٦ | م الأنفـال | ٨ |
| | من بعد ما تبيّن لهم أنهم أصحاب الجحيم... ... ... | ١١٣ | م التـوبة | ٩ |
| | فلما تبيّن له أنه عدو لله تبرأ منه إن إبراهيم لأوّاه حليم | ١١٤ | م « | ٩ |
| | وتبـيّن لكم كيف فعلنا بهم وضربنا لكم الأمثـال | ٤٥ | ك إبراهـيم | ١٤ |
| | وعادا وثمودا وقد تبيّن لكم من مساكنهم ... ... | ٣٨ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | إن الذين ارتدّوا على أدبارهم من بعد ما تبيّن لهم الهدى الشيطان سول لهم ... ... ... ... ... | ٢٥ | م محمـد | ٤٧ |
| | وشاقّوا الرسول من بعـد ما تبيّن لهم الهـدى لن يضروا الله شيئا ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | م « | ٤٧ |
| تَبَيَّنَتْ: | فلما خرّ تبيّنت الجن أن لو كانوا يعلمون الغيب ما لبثوا فى العذاب المهين ... ... ... ... ... | ١٤ | ك سـبأ | ٣٤ |
| يَتَبَيَّنَ: | وكلوا واشربوا حتى يتبيّن لكم الخيـط الأبيض من الخيط الأسـود من الفجر ... ... ... ... | ١٨٧ | م البقـرة | ٢ |
| (٣) | عفا الله عنك لم أذنت لهم حتى يتبيّن لك الذين صدقوا | ٤٣ | م التـوبة | ٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَتَبَيَّنَ: | سنريهم آياتنا فى الآفاق وفى أنفسهم حتى يتبيّن لهم أنه الحق ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك فصـلت | ٤١ |
| تَبَيَّنُوا: | يأيها الذين آمنوا إذا ضربتم فى سبيل الله فتبيّنوا | ٩٤ | م النسـاء | ٤ |
| (٣) | كذلك كنتم من قبل فمنّ الله عليكم فتبيّنوا ... ... | ٩٤ | م « | ٤ |
| | يأيها الذين آمنوا إن جاءكم فاسق بنبإ فتبيّنوا... ... | ٦ | م الحجرات | ٤٩ |
| تَسْتَبِينَ: | وكذلك نفصل الآيات ولتستبين سبيل المجرمين | ٥٥ | ك الأنعـام | ٦ |
| بَيِّنٍ: | لولا يأتون عليهم بسلطان بيّن فمن أظلم ممن افترى على الله كذبا ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك الكهف | ١٨ |
| بَيِّنَة: | سل بنى إسرائيل كم آتيناهم من آية بيّنة... ... ... | ٢١١ | م البقـرة | ٢ |
| (١٩) | قل إنى على بيّنة من ربى وكذبتم به ... ... ... ... | ٥٧ | ك الأنعـام | ٦ |
| | فقد جاءكم بيّنة من ربكم وهدى ورحمة ... ... ... | ١٥٧ | ك « | ٦ |
| | قـد جاءتكم بيّنة من ربكم هـذه ناقة الله لكم آية | ٧٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | قـد جاءتكم بيّنـة من ربكم فأوفوا الكيل والميزان | ٨٥ | ك « | ٧ |
| | قد جئتكم ببيّنـة من ربكم فأرسل معى بنى إسرائيل | ١٠٥ | ك « | ٧ |
| | ليهلك من هلك عن بيّنة ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | م الأنفـال | ٨ |
| | ويحيى من حيّ عن بيّنـة وإن الله لسـميع عليم | ٤٢ | م « | ٨ |
| | أفمن كان على بيّنة من ربه ويتلوه شاهد منه... ... | ١٧ | م هـود | ١١ |
| | أرأيتم إن كنت على بيّنة من ربى وآتانى رحمة من عنده | ٢٨ | ك « | ١١ |
| | قالوا يا هود ما جئتنا ببيّنة وما نحن بتاركى آلهتنا عن قولك | ٥٣ | ك « | ١١ |
| | قال يا قوم أرأيتم إن كنت على بينة من ربى وآتانى منه رحمة | ٦٣ | ك « | ١١ |
| | أرأيتم إن كنت على بيّنة من ربى ورزقنى منه رزقا حسنا | ٨٨ | ك « | ١١ |
| | أو لم تأتهم بيّنة ما فى الصحف الأولى... ... ... | ١٣٣ | ك طـه | ٢٠ |
| | ولقد تركنا منها آية بيّنة لقوم يعقلون ... ... ... | ٣٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | أم آتيناهم كتابا فهم على بيّنة منه ... ... ... ... | ٤٠ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | أفمن كان على بيّنة من ربه كمن زيّن له سوء عمـله | ١٤ | م محمـد | ٤٧ |
| | لم يكن الذين كفروا من أهـل الكتاب والمشركين منفكين حتى تأتيهم البيّنة ... ... ... ... ... | ١ | م البينـة | ٩٨ |
| | وما تفرق الذين أوتوا الكتاب إلا من بعد ما جاءتهم البيّنة | ٤ | م « | ٩٨ |
| بَيِّنَات: | وآتينا عيسى ابن مريم البينات وأيدناه بروح القدس | ٨٧ | م البقـرة | ٢ |
| (٥٢) | ولقد جاءكم موسى بالبينات ثم اتخـذتم العجل من بعده وأنتم ظالمون... ... ... ... ... ... ... | ٩٢ | م « | ٢ |
| | ولقد أنزلنا إليك آيات بينات وما يكفر بها إلا الفاسقون | ٩٩ | م « | ٢ |
| | إن الذين يكتمون ما أنزلنا من البينات والهدى من بعد ما بيّناه للناس فى الكتاب أولئك يلعنهم الله | ١٥٩ | م « | ٢ |
| | أنزل فيه القرآن هدى للناس وبينات من الهدى والفرقان | ١٨٥ | م « | ٢ |
| | فإن زللتم من بعد ما جاءتكم البينات فاعلموا أن الله عزيز حكيم | ٢٠٩ | م « | ٢ |
| | وما اختلف فيه إلا الذين أوتوه من بعد ما جاءتهم البينات | ٢١٣ | م « | ٢ |
| | وآتينا عيسى ابن مريم البينات وأيدناه بروح القدس | ٢٥٣ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بَيِّنَات : | ولو شاء الله ما اقتتل الذين من بعدهم من بعـد ما جاءتهم البينات ... ... ... ... ... ... | ٢٥٣ م | البقـرة | ٢ |
| | وشهدوا أن الرسول حق وجاءهم البينات ... ... | ٨٦ م | آل عمران | ٣ |
| | فيه آيات بينات مقام إبراهيم ... ... ... ... ... | ٩٧ م | « | ٣ |
| | ولا تكونوا كالذين تفرقوا واختلفوا من بعـد ما جاءهم البينات ... ... ... ... ... ... | ١٠٥ م | « | ٣ |
| | قل قد جاءكم رسـل من قبلى بالبينات وبالذى قلتم | ١٨٣ م | « | ٣ |
| | فإن كذبوك فقد كذب رسل من قبلك جاؤا بالبينات | ١٨٤ م | « | ٣ |
| | ثم اتخذوا العجل من بعد ما جاءتهم البينات ... ... | ١٥٣ م | النسـاء | ٤ |
| | ولقد جاءتهم رسلنا بالبينات... ... ... ... ... | ٣٢ م | المائدة | ٥ |
| | وإذ كففت بنى إسرائيل عنك إذ جئتهم بالبينات | ١١٠ م | « | ٥ |
| | ولقـد جاءتهم رسلهم بالبينات فـا كانوا ليؤمنـوا | ١٠١ ك | الأعراف | ٧ |
| | أتتهم رسلهم بالبينات فـا كان الله ليظلمهم ... ... | ٧٠ م | التـوبة | ٩ |
| | وجاءتهم رسلهم بالبينات وما كانوا ليؤمنوا ... ... | ١٣ ك | يـونس | ١٠ |
| | وإذا تتلى عليهم آياتنا بينات قال الذين لا يرجون لقاءنا ائت بقرآن غير هـذا ... ... ... ... ... ... | ١٥ ك | « | ١٠ |
| | فجاءوهم بالبينات فما كانوا ليؤمنوا بما كذبوا به من قبل | ٧٤ ك | « | ١٠ |
| | جاءتهم رسلهم بالبينات فردوا أيديهم فى أفواههم | ٩ ك | إبراهـيم | ١٤ |
| | فاسألوا أهل الذكر إن كنتم لا تعلمون . بالبينات والزبر | ٤٤ ك | النحـل | ١٦ |
| | ولقد آتينا موسى تسع آيات بينات... ... ... ... | ١٠١ ك | الإسراء | ١٧ |
| | وإذا تتلى عليهم آياتنا بينات قال الذين كفروا للذين آمنوا أىّ الفريقين خير مقاما ... ... ... ... | ٧٣ ك | مريم | ١٩ |
| | قالوا لن نؤثرك على ما جاءنا من البينات والذى فطرنا | ٧٢ ك | طـه | ٢٠ |
| | وكذلك أنزلناه آيات بينات وأن الله يهدى من يريد | ١٦ م | الحـج | ٢٢ |
| | وإذا تتـلى عليهم آياتنـا بينات تعرف فى وجوه الذين كفروا المنكر... ... ... ... ... ... | ٧٢ م | « | ٢٢ |
| | سورة أنزلناها وفرضـناها وأنزلنا فيها آيات بينات | ١ م | النـور | ٢٤ |
| | فلما جاءهم موسى بآياتنا بينات قالوا ما هذا إلا سحر | ٣٦ ك | القصص | ٢٨ |
| | ولقـد جاءهم موسى بالبينات فاستكبروا فى الأرض | ٣٩ ك | العنكبوت | ٢٩ |
| | بل هو آيات بينات فى صدور الذين أوتوا العـلم | ٤٩ ك | « | ٢٩ |
| | وعمروها أكثر مما عمروها وجاءتهم رسلهم بالبينات | ٩ ك | الروم | ٣٠ |
| | فجاءوهم بالبينات فانتقمنا من الذين أجرموا ... ... | ٤٧ ك | « | ٣٠ |
| | وإذا تتلى عليهم آياتنا بينات قالوا ما هذا إلا رجل يريد أن يصدكم عما كان يعبد آباؤكم ... ... ... | ٤٣ ك | سـبأ | ٣٤ |
| | جاءتهم رسلهم بالبينات وبالزبر وبالكتاب المنير | ٢٥ ك | فاطـر | ٣٥ |
| | ذلك بأنهـم كانت تأتيهم رسلهم بالبينات فكفروا | ٢٢ ك | غافـر | ٤٠ |
| | أتقتـلون رجلا أن يقـول ربى الله وقـد جاءكم بالبينات من ربكم ... ... ... ... ... ... | ٢٨ ك | « | ٤٠ |
| | ولقد جاءكم يوسف من قبل بالبينات... ... ... ... | ٣٤ ك | « | ٤٠ |
| | قالوا أو لم تك تأتيكم رسلكم بالبينات ... ... | ٥٠ ك | غافـر | ٤٠ |
| | قل إنى نهيت أن أعبد الذين تدعون من دون الله لما جاءنى البينات من ربى ... ... ... ... ... | ٦٦ ك | « | ٤٠ |
| | فلما جاءتهم رسلهم بالبينات فرحوا بما عندهم من العلم | ٨٣ ك | « | ٤٠ |
| | ولما جاء عيسى بالبينات قال قـد جئتكم بالحكمـة | ٦٣ ك | الزخرف | ٤٣ |
| | وآتيناهم بينات من الأمر ... ... ... ... ... ... | ١٧ ك | الجاثيـة | ٤٥ |
| | وإذا تتلى عليهم آياتنا بينات ما كان حجتهم إلا أن قالوا ائتوا بآبائنا ... ... ... ... ... ... | ٢٥ ك | « | ٤٥ |
| | وإذا تتلى عليهـم آياتنا بينات. قال الذين كفروا للحق لما جاءهم هذا سحر مبين ... ... ... ... | ٧ ك | الأحقاف | ٤٦ |
| | هو الذى ينزل على عبده آيات بينات ... ... ... | ٩ م | الحـديد | ٥٧ |
| | لقد أرسلنا رسـلنا بالبينات وأنزلنا معهـم الكتاب | ٢٥ م | « | ٥٧ |
| | وقـد أنزلنا آيات بينات وللكافرين عذاب مهـين | ٥ م | المجادلة | ٥٨ |
| | فلما جاءهم بالبينات قالوا هذا سحر مبين ... ... | ٦ م | الصـف | ٦١ |
| | ذلك بأنه كانت تأتيهم رسلهم بالبينات ... ... ... | ٦ م | التغـابن | ٦٤ |
| مُبَيِّنَة : | إلا أن يأتين بفاحشة مبينة ... ... ... ... ... | ١٩ م | النسـاء | ٤ |
| (٣) | من يأت منكن بفاحشة مبينة يضاعف لها العذاب ضعفين | ٣٠ م | الأحزاب | ٣٣ |
| | ولا يخرجن إلا أن يأتين بفاحشة مبينة ... ... ... | ١ م | الطـلاق | ٦٥ |
| مُبَيِّنَات : | ولقد أنزلنا إليكم آيات مبينات... ... ... ... | ٣٤ م | النـور | ٢٤ |
| (٣) | لقـد أنزلنا آيات مبينات والله يهدى من يشاء إلى صراط مستقيم... ... ... ... ... ... ... | ٤٦ م | « | ٢٤ |
| | رسولا يتلوا عليكم آيات الله مبينات... ... ... ... | ١١ م | الطـلاق | ٦٥ |
| مبين : | ولا تتبعـوا خطوات الشيطان إنه لكم عدو مبين | ١٦٨ م | البقـرة | ٢ |
| (١٠٦) | ولا تتبعـوا خطوات الشـيطان إنه لكم عدو مبين | ٢٠٨ م | « | ٢ |
| | وإن كانوا من قبل لفى ضلال مبين ... ... ... | ١٦٤ م | آل عمران | ٣ |
| | قد جاءكم من الله نور وكتاب مبين ... ... ... ... | ١٥ م | المـائدة | ٥ |
| | فإن توليتم فاعلموا أنمـا على رسولنا البـلاغ المبين | ٩٢ م | « | ٥ |
| | فقال الذين كفروا منهـم إن هـذا إلا سحر مبين | ١١٠ م | « | ٥ |
| | لقال الذين كفروا إن هـذا إلا سحر مبين ... ... | ٧ ك | الأنعـام | ٦ |
| | من يصرف عنه يومئذ فقد رحمه وذلك الفوز المبين | ١٦ ك | « | ٦ |
| | ولا رطب ولا يابس إلا فى كتاب مبين... ... ... | ٥٩ ك | « | ٦ |
| | إنى أراك وقومك فى ضـلال مبين ... ... ... ... | ٧٤ ك | « | ٦ |
| | ولا تتبعـوا خطوات الشـيطان إنه لكم عدو مبين | ١٤٢ ك | « | ٦ |
| | وأقل لكما إن الشيطان لكما عدو مبين ... ... ... | ٢٢ ك | الأعراف | ٧ |
| | قال الملأ من قومه إنا لنراك فى ضلال مبين... ... | ٦٠ ك | « | ٧ |
| | فألقى عصاه فإذا هى ثعبان مبين... ... ... ... | ١٠٧ ك | « | ٧ |
| | أو لم يتفكروا ما بصاحبهم من جنة إن هو إلا نذير مبين | ١٨٤ ك | « | ٧ |
| | قال الكافرون إن هذا لساحر مبين ... ... ... ... | ٢ ك | يـونس | ١٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مُبين | ولا أصغر من ذلك ولا أكبر إلا فى كتاب مبين | ٦١ | ك يونس | ١٠ |
| | فلما جاءهم الحق من عندنا قالوا إن هذا لسحر مبين | ٧٦ | ك « | ١٠ |
| | ويعلم مستقرها ومستودعها كل فى كتاب مبين... ... | ٦ | ك هود | ١١ |
| | ليقولن الذين كفروا إن هذا إلا سحر مبين ... ... | ٧ | ك « | ١١ |
| | ولقد أرسلنا نوحا إلى قومه إنى لكم نذير مبين | ٢٥ | ك « | ١١ |
| | ولقد أرسلنا موسى بآياتنا وسلطان مبين... ... ... | ٩٦ | ك « | ١١ |
| | الر تلك آيات الكتاب المبين ... ... ... ... | ١ | م يوسف | ١٢ |
| | إن الشيطان للإنسان عدو مبين ... ... ... ... | ٥ | ك « | ١٢ |
| | ونحن عصبة إن أبانا لفى ضلال مبين ... ... ... | ٨ | ك « | ١٢ |
| | قد شغفها حبا إنا لنراها فى ضلال مبين... ... ... | ٣٠ | ك « | ١٢ |
| | تريدون أن تصدونا عما كان يعبد آباؤنا فأتونا بسلطان مبين | ١٠ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | الر تلك آيات الكتاب وقرآن مبين ... ... ... | ١ | ك الحجر | ١٥ |
| | إلا من استرق السمع فأتبعه شهاب مبين... ... ... | ١٨ | ك « | ١٥ |
| | فانتقمنا منهم وإنهما لبإمام مبين ... ... ... ... | ٧٩ | ك « | ١٥ |
| | وقل إنى أنا النذير المبين ... ... ... ... ... | ٨٩ | ك « | ١٥ |
| | خلق الإنسان من نطفة فإذا هو خصيم مبين | ٤ | ك النحل | ١٦ |
| | فهل على الرسل إلا البلاغ المبين ... ... ... ... | ٣٥ | ك « | ١٦ |
| | فإن تولوا فإنما عليك البلاغ المبين ... ... ... ... | ٨٢ | ك « | ١٦ |
| | لسان الذى يلحدون إليه أعجمى وهذا لسان عربى مبين | ١٠٣ | ك « | ١٦ |
| | لكن الظالمون اليوم فى ضلال مبين ... ... ... ... | ٣٨ | ك مريم | ١٩ |
| | قال لقد كنتم أنتم وآباؤكم فى ضلال مبين ... ... | ٥٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | خسر الدنيا والآخرة ذلك هو الخسران المبين | ١١ | م الحج | ٢٢ |
| | قل يأيها الناس إنما أنا لكم نذير مبين... ... ... | ٤٩ | م « | ٢٢ |
| | ثم أرسلنا موسى وأخاه هرون بآياتنا وسلطان مبين | ٤٥ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وقالوا هذا إفك مبين ... ... ... ... ... ... | ١٢ | م النور | ٢٤ |
| | ويعلمون أن الله هو الحق المبين ... ... ... ... | ٢٥ | م « | ٢٤ |
| | وإن تطيعوه تهتدوا وما على الرسول إلا البلاغ المبين | ٥٤ | م « | ٢٤ |
| | تلك آيات الكتاب المبين ... ... ... ... ... | ٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | قال أو لو جئتك بشىء مبين ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك « | ٢٦ |
| | فألقى عصاه فإذا هى ثعبان مبين ... ... ... ... | ٣٢ | ك « | ٢٦ |
| | تالله إن كنا لفى ضلال مبين ... ... ... ... ... | ٩٧ | ك « | ٢٦ |
| | إن أنا إلا نذير مبين ... ... ... ... ... ... | ١١٥ | ك « | ٢٦ |
| | بلسان عربى مبين ... ... ... ... ... ... ... | ١٩٥ | ك « | ٢٦ |
| | طس تلك آيات القرآن وكتاب مبين ... ... ... | ١ | ك النمل | ٢٧ |
| | فلما جاءتهم آياتنا مبصرة قالوا هذا سحر مبين | ١٣ | ك « | ٢٧ |
| | إن هذا لهو الفضل المبين ... ... ... ... ... | ١٦ | ك « | ٢٧ |
| | لأعذبنه عذابا شديدا أو لأذبحنه أو ليأتينى بسلطان مبين | ٢١ | ك « | ٢٧ |
| | وما من غائبة فى السماء والأرض إلا فى كتاب مبين | ٧٥ | ك النمل | ٢٧ |
| | فتوكل على الله إنك على الحق المبين ... ... ... | ٧٩ | ك « | ٢٧ |
| | تلك آيات الكتاب المبين ... ... ... ... ... | ٢ | ك القصص | ٢٨ |
| | قال هذا من عمل الشيطان إنه عدو مضل مبين... ... | ١٥ | ك « | ٢٨ |
| | قال له موسى إنك لغوى مبين ... ... ... ... ... | ١٨ | ك « | ٢٨ |
| | قل ربى أعلم من جاء بالهدى ومن هو فى ضلال مبين | ٨٥ | « | ٢٨ |
| | وما على الرسول إلا البلاغ المبين ... ... ... ... | ١٨ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | قل إنما الآيات عند الله وإنما أنا نذير مبين | ٥٠ | ك « | ٢٩ |
| | بل الظالمون فى ضلال مبين ... ... ... ... ... | ١١ | ك لقمان | ٣١ |
| | ولا أصغر من ذلك ولا أكبر إلا فى كتاب مبين | ٣ | ك سبأ | ٣٤ |
| | وإنا أو إياكم لعلى هدى أو فى ضلال مبين ... ... | ٢٤ | ك « | ٣٤ |
| | وقال الذين كفروا للحق لما جاءهم إن هذا إلا سحر مبين | ٤٣ | ك « | ٣٤ |
| | وكل شىء أحصيناه فى إمام مبين ... ... ... ... | ١٢ | ك يس | ٣٦ |
| | وما علينا إلا البلاغ المبين ... ... ... ... ... | ١٧ | ك « | ٣٦ |
| | إنى إذا لفى ضلال مبين ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك « | ٣٦ |
| | إن أنتم إلا فى ضلال مبين... ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك « | ٣٦ |
| | أن لا تعبدوا الشيطان إنه لكم عدو مبين ... ... ... | ٦٠ | ك « | ٣٦ |
| | إن هو إلا ذكر وقرآن مبين ... ... ... ... ... | ٦٩ | ك « | ٣٦ |
| | أو لم ير الإنسان أنا خلقناه من نطفة فإذا هو خصيم مبين ... ... ... ... ... ... ... | ٧٧ | ك « | ٣٦ |
| | وقالوا إن هذا إلا سحر مبين... ... ... ... ... | ١٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| | إن هذا لهو البلاء المبين ... ... ... ... ... ... | ١٠٦ | ك « | ٣٧ |
| | ومن ذريتهما محسن وظالم لنفسه مبين ... ... ... | ١١٣ | ك « | ٣٧ |
| | أم لكم سلطان مبين ... ... ... ... ... ... | ١٥٦ | ك « | ٣٧ |
| | إن يوحى إلى إلا أنما أنا نذير مبين ... ... ... | ٧٠ | ك ص | ٣٨ |
| | ألا ذلك هو الخسران المبين ... ... ... ... ... | ١٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| | فويل للقاسية قلوبهم من ذكر الله أولئك فى ضلال مبين | ٢٢ | ك « | ٣٩ |
| | ولقد أرسلنا موسى بآياتنا وسلطان مبين... ... ... | ٢٣ | ك غافر | ٤٠ |
| | والكتاب المبين . إنا جعلناه قرآنا عربيا لعلكم تعقلون | ٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | إن الإنسان لكفور مبين ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك « | ٤٣ |
| | أو من ينشأ فى الحلية وهو فى الخصام غير مبين | ١٨ | ك « | ٤٣ |
| | بل متعت هؤلاء وآباءهم حتى جاءهم الحق ورسول مبين | ٢٩ | ك « | ٤٣ |
| | أفأنت تسمع الصم أو تهدى العمى ومن كان فى ضلال مبين | ٤٠ | ك « | ٤٣ |
| | ولا يصدنكم الشيطان إنه لكم عدو مبين ... ... ... | ٦٢ | ك « | ٤٣ |
| | حم . والكتاب المبين . إنا أنزلناه فى ليلة مباركة | ٢ | ك الدخان | ٤٤ |
| | فارتقب يوم تأتى السماء بدخان مبين... ... ... | ١٠ | ك « | ٤٤ |
| | أنى لهم الذكرى وقد جاءهم رسول مبين ... ... ... | ١٣ | ك « | ٤٤ |
| | وأن لا تعلوا على الله إنى آتيكم بسلطان مبين ... ... | ١٩ | ك « | ٤٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مُبِين: | وآتيناهم من الآيات مافيه بلاء مبين... ... ... | ٣٣ | ك الدخان | ٤٤ |
| | فيدخلهم ربهم فى رحمته ذلك هو الفوز المبين | ٣٠ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | قال الذين كفروا للحق لما جاءهم هذا سحر مبين | ٧ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | إن أتبع إلا ما يوحى إلىّ وما أنا إلا نذير مبين | ٩ | ك « | ٤٦ |
| | أولئك فى ضلال مبين ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك « | ٤٦ |
| | وفى موسى إذ أرسلناه إلى فرعون بسلطان مبين | ٣٨ | ك الذاريات | ٥١ |
| | ففروا إلى الله إنى لكم منه نذير مبين ... ... ... | ٥٠ | ك « | ٥١ |
| | ولا تجعلوا مع الله إلها آخر إنى لكم منه نذير مبين | ٥١ | ك « | ٥١ |
| | فليأت مستمعهم بسلطان مبين ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك الطور | ٥٢ |
| | فلما جاءهم بالبينات قالوا هذا سحر مبين ... ... | ٦ | م الصف | ٦١ |
| | وإن كانوا من قبل لفى ضلال مبين ... ... ... ... | ٢ | م الجمعة | ٦٢ |
| | فإن توليتم فإنما على رسولنا البلاغ المبين ... ... | ١٢ | م التغابن | ٦٤ |
| | قل إنما العلم عند الله وإنما أنا نذير مبين... ... | ٢٦ | ك الملك | ٦٧ |
| | فستعلمون من هو فى ضلال مبين ... ... ... ... | ٢٩ | ك « | ٦٧ |
| | قال ياقوم إنى لكم نذير مبين ... ... ... ... ... | ٢ | ك نوح | ٧١ |
| | ولقد رآه بالأفق المبين ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك التكوير | ٨١ |
| مُبِينًا: | أتأخذونه بهتانا وإثما مبينا ... ... ... ... ... | ٢٠ | م النساء | ٤ |
| (١١٣) | انظر كيف يفترون على الله الكذب وكفى به إثما مبينا | ٥٠ | م « | ٤ |
| | وأولئكم جعلنا لكم عليهم سلطانا مبينا ... ... ... | ٩١ | م « | ٤ |
| | إن الكافرين كانوا لكم عدوا مبينا ... ... ... ... | ١٠١ | م « | ٤ |
| | فقد احتمل بهتانا وإثما مبينا ... ... ... ... ... | ١١٢ | م « | ٤ |
| | ومن يتخذ الشيطان وليا من دون الله فقد خسر خسرانا مبينا | ١١٩ | م « | ٤ |
| | أتريدون أن تجعلوا لله عليكم سلطانا مبينا ... ... | ١٤٤ | م « | ٤ |
| | وآتينا موسى سلطانا مبينا ... ... ... ... ... ... | ١٥٣ | م « | ٤ |
| | قد جاءكم برهان من ربكم وأنزلنا إليكم نورا مبينا... ... | ١٧٤ | م « | ٤ |
| | إن الشيطان كان للإنسان عدوا مبينا ... ... ... | ٥٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ومن يعص الله ورسوله فقد ضل ضلالا مبينا ... ... | ٣٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | فقد احتملوا بهتانا وإثما مبينا ... ... ... ... ... | ٥٨ | م « | ٣٣ |
| | إنا فتحنا لك فتحا مبينا ... ... ... ... ... ... | ١ | م الفتح | ٤٨ |
| المُسْتَبِينَ: | وآتيناهما الكتاب المستبين... ... ... ... ... | ١١٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| بَيَان: | هذا بيان للناس وهدى وموعظة للتقين ... ... | ١٣٨ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | خلق الإنسان . علمه البيان ... ... ... ... ... | ٤ | م الرحمن | ٥٥ |
| بَيَانَهُ: | ثم إن علينا بيانه... ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك القيامة | ٧٥ |
| تِبْيَانًا: | ونزلنا عليك الكتاب تبيانا لكل شىء ... ... ... | ٨٩ | ك النحل | ١٦ |
| بَيْنَ: | يجعلناها نكالا لما بين يديها وما خلفها وموعظة للتقين | ٦٦ | م البقرة | ٢ |
| (٨٨) | قال إنه يقول إنها بقرة لا فارض ولا بكر عوان بين ذلك | ٦٨ | م « | ٢ |
| | فإنه نزله على قلبك بإذن الله مصدقا لما بين يديه | ٩٧ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بَيْنَ: | فيتعلمون منهما ما يفرقون به بين المرء وزوجه | ١٠٢ | م البقرة | ٢ |
| | لا نفرق بين أحد منهم ونحن له مسلمون... ... ... | ١٣٦ | م « | ٢ |
| | وتصريف الرياح والسحاب المسخر بين السماء | | | |
| | والأرض لآيات لقوم يعقلون ... ... ... ... ... | ١٦٤ | م « | ٢ |
| | وأنزل معهم الكتاب بالحق ليحكم بين الناس فيما اختلفوا فيه | ٢١٣ | م « | ٢ |
| | ولا تجعلوا الله عرضة لأيمانكم أن تبروا وتتقوا | | | |
| | وتصلحوا بين الناس ... ... ... ... ... ... | ٢٢٤ | م « | ٢ |
| | يعلم ما بين أيديهم وما خلفهم ... ... ... ... ... | ٢٥٥ | م « | ٢ |
| | لا نفرق بين أحد من رسله ... ... ... ... ... ... | ٢٨٥ | م « | ٢ |
| | نزل عليك الكتاب بالحق مصدقا لما بين يديه... ... | ٣ | م آل عمران | ٣ |
| | ومصدقا لما بين يدىّ من التوراة ولأحل لكم بعض | | | |
| | الذى حرم عليكم ... ... ... ... ... ... ... | ٥٠ | م « | ٣ |
| | لا نفرق بين أحد منهم ونحن له مسلمون ... ... | ٨٤ | م « | ٣ |
| | فألف بين قلوبكم فأصبحتم بنعمته أخوانا ... ... | ١٠٣ | م « | ٣ |
| | وتلك الأيام نداولها بين الناس ... ... ... ... | ١٤٠ | م « | ٣ |
| | وأن تجمعوا بين الأختين إلا ما قد سلف ... ... | ٢٣ | م النساء | ٤ |
| | وإذا حكمتم بين الناس أن تحكموا بالعدل ... ... | ٥٨ | م « | ٤ |
| | إنا أنزلنا إليك الكتاب بالحق لتحكم بين الناس بما أراك الله | ١٠٥ | م « | ٤ |
| | إلا من أمر بصدقة أو معروف أو إصلاح بين الناس | ١١٤ | م « | ٤ |
| | ولن تستطيعوا أن تعدلوا بين النساء ولو حرصتم | ١٢٩ | م « | ٤ |
| | مذبذبين بين ذلك لا إلى هؤلاء ولا إلى هؤلاء | ١٤٣ | م « | ٤ |
| | ويريدون أن يفرقوا بين الله ورسله ... ... ... | ١٥٠ | م « | ٤ |
| | ويريدون أن يتخذوا بين ذلك سبيلا ... ... ... | ١٥٠ | م « | ٤ |
| | ولم يفرقوا بين أحد منهم أولئك سوف يؤتيهم أجورهم | ١٥٢ | م « | ٤ |
| | فافرق بيننا وبين القوم الفاسقين ... ... ... ... | ٢٥ | م المائدة | ٥ |
| | وقفينا على آثارهم بعيسى ابن مريم مصدقا لما بين | | | |
| | يديه من التوراة ... ... ... ... ... ... ... | ٤٦ | م « | ٥ |
| | ومصدقا لما بين يديه من التوراة وهدى وموعظة للتقين | ٤٦ | م « | ٥ |
| | وأنزلنا إليك الكتاب بالحق مصدقا لما بين يديه من الكتاب | ٤٨ | م « | ٥ |
| | وهذا كتاب أنزلناه مبارك مصدق الذى بين يديه | ٩٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | ثم لآتينهم من بين أيديهم ومن خلفهم ... ... ... | ١٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | وهو الذى يرسل الرياح بشرا بين يدى رحمته... ... | ٥٧ | ك « | ٧ |
| | ربنا افتح بيننا وبين قومنا بالحق ... ... ... ... | ٨٩ | ك « | ٧ |
| | واعلموا أن الله يحول بين المرء وقلبه وأنه إليه تحشرون | ٢٤ | م الأنفال | ٨ |
| | وألف بين قلوبهم ... ... ... ... ... ... ... | ٦٣ | م « | ٨ |
| | لو أنفقت ما فى الأرض جميعا ما ألفت بين قلوبهم | ٦٣ | م « | ٨ |
| | والذين اتخذوا مسجدا ضرارا وكفرا وتفريقا | | | |
| | بين المؤمنين ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٧ | م التوبة | ٩ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بين: | ولكن تصـديق الذى بين يديه وتفصـيل الكتاب | ٣٧ ك يونس | ١٠ | |
| | وجاءبكم من البدو من بعدأن نزغ الشيطان بينى و بين إخوتى | ١٠٠ ك يوسف | ١٢ | |
| | ما كان حديثا يفترى ولكن تصديق الذى بين يديه | ١١١ ك « | ١٢ | |
| | له معقّبات من بين يديه ومن خلفه يحفظونه من أمر الله | ١١ م الرعـد | ١٣ | |
| | نسقيكم ممـا فى بطونه من بين فرث ودم لبنا خالصا | ٦٦ ك النحـل | ١٦ | |
| | جعلنا بينك و بين الذين لا يؤمنون بالآخرة حجابا مستورا | ٤٥ ك الإسراء | ١٧ | |
| | ولا تجهر بصلاتك ولا تخافت بها وابتغ بين ذلك سبيلا | ١١٠ ك « | ١٧ | |
| | حتى إذا بلغ بين السّدين وجد من دونهـما قوما | | | |
| | لا يكادون يفقهون قولا ... ... ... ... ... | ٩٣ م الكهف | ١٨ | |
| | حتى إذا ساوى بين الصّدفين قال انفخوا ... ... | ٩٦ م « | ١٨ | |
| | وما نتنزّل إلا بأمر ربك له ما بين أيدينا ... ... | ٦٤ ك مريم | ١٩ | |
| | وما خلفنا وما بين ذلك وما كان ربك نسيّا... .. | ٦٤ ك « | ١٩ | |
| | إنى خشيت أن تقـول فرقت بين بنى إسرائيـل | ٩٤ ك طـه | ٢٠ | |
| | يعلم ما بين أيديهم وما خلفهم ولا يحيطون به علمـا | ١١٠ ك « | ٢٠ | |
| | يعلم ما بين أيديهم وما خلفهم ولا يشفعون إلا لمن ارتضى | ٢٨ ك الأنبياء | ٢١ | |
| | يعلم ما بين أيديهم وما خلفهم و إلى الله ترجع الأمور | ٧٦ م الحـج | ٢٢ | |
| | وعادا وثمودا وأصحاب الرسّ وقرونا بين ذلك كثيرا | ٣٨ ك الفـرقان | ٢٥ | |
| | وهو الذى أرسـل الرياح بشرا بين يدى رحمتـه | ٤٨ ك « | ٢٥ | |
| | والذين إذا أنفقـوا لم يسرفوا ولم يقـتروا وكان | | | |
| | بين ذلك قواما ... ... ... ... ... ... | ٦٧ ك « | ٢٥ | |
| | وجعل لها رواسى وجعل بين البحرين حاجزا... ... | ٦١ ك النمـل | ٢٧ | |
| | ومن يرسل الرياح بشرا بين يدى رحمته ... ... ... | ٦٣ ك « | ٢٧ | |
| | أفلم يروا إلى ما بين أيديهم وما خلفهم من السماء والأرض | ٩ ك سـبإ | ٣٤ | |
| | ومن الجن من يعمل بين يديه بإذن ربه ... ... | ١٢ ك « | ٣٤ | |
| | وجعلنا بينهم و بين القرى التى باركنا فيها قرى ظاهرة | ١٨ ك « | ٣٤ | |
| | فقالوا ربنا باعد بين أسفارنا ... ... ... ... ... | ١٩ ك « | ٣٤ | |
| | وقال الذين كفروا لن نؤمن بهذا القرآن ولا بالذى بين يديه | ٣١ ك « | ٣٤ | |
| | إن هو إلا نذير لكم بين يدى عذاب شديد ... ... | ٤٦ ك « | ٣٤ | |
| | وحيل بينهم و بين ما يشتهون كما فعل بأشياعهم من قبل | ٥٤ ك « | ٣٤ | |
| | والذى أوحينا إليـك من الكتاب هو الحق مصدّقا | | | |
| | لمـا بين يديه ... ... ... ... ... ... ... | ٣١ ك فاطـر | ٣٥ | |
| | وجعلنا من بين أيديهم سدّا ومن خلفهم سدّا... ... | ٩ ك يس | ٣٦ | |
| | و إذا قيل لهم اتقوا ما بين أيديكم وما خلفكم لعلكم ترحمون | ٤٥ م « | ٣٦ | |
| | وجعلوا بينه و بين الجنة نسبا ... ... ... ... ... | ١٥٨ ك الصافات | ٣٧ | |
| | يا داود إنا جعلناك خليفـة فى الأرض فاحكم بين | | | |
| | الناس بالحق ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦ ك ص | ٣٨ | |
| | أنت تحكم بين عبادك فيما كانوا فيه يختلفون ... ... | ٤٦ ك الزمـر | ٣٩ | |
| | قال الذين استكبروا إنّا كلّ فيها إن الله قد حكم بين العباد | ٤٨ ك غافـر | ٤٠ | |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بيّن: | إذ جاءتهم الرسل من بين أيديهم ومن خلفهم ... ... | ١٤ ك فصـلت | ٤١ | |
| | وقيضنا لهم قرناء فزينوا لهم ما بين أيديهم وما خلفهم | ٢٥ ك « | ٤١ | |
| | لا يأتيه الباطل من بين يديه ولا من خلفه تنزيل من حكيم | ٤٢ ك « | ٤١ | |
| | وقد خلت النذر من بين يديه ... ... ... ... ... | ٢١ ك الأحقاف | ٤٦ | |
| | إنا سمعنا كتابا أنزل من بعد موسى مصدّقا لمـا بين يديه | ٣٠ ك « | ٤٦ | |
| | يأيها الذين آمنوا لا تقدّموا بين يدى الله ورسوله | ١ م الحجرات | ٤٩ | |
| | إنما المؤمنون إخوة فأصلحوا بين أخويكم ... ... | ١٠ م « | ٤٩ | |
| | يطوفون بينها و بين حميم آن ... ... ... ... ... | ٤٤ م الرحمـن | ٥٥ | |
| | يوم ترى المؤمنين والمؤمنات يسعى نورهم بين أيديهم | ١٢ م الحـديد | ٥٧ | |
| | إذا ناجيتم الرسول فقدّموا بين يدى نجواكم صـدقة | ١٢ م المجادلة | ٥٨ | |
| | أأشفقتم أن تقـدّموا بين يدى نجـواكم صدقات | ١٣ م « | ٥٨ | |
| | كى لا يكون دُولة بين الأغنياء منكم ... ... ... | ٧ م الحشـر | ٥٩ | |
| | عسى الله أن يجعل بينكم و بين الذين عاديتم منهم مودّة | ٧ م الممتحنـة | ٦٠ | |
| | ولا يأتين ببهتان يفـترينه بين أيـديهن وأرجلهن | ١٢ م « | ٦٠ | |
| | إنى رسول الله إليكم مصدّقا لمـا بين يدىّ من التوراة | ٦ م الصـف | ٦١ | |
| | نورهم يسعى بين أيديهم و بأيمانهم ... ... ... ... | ٨ م التحريم | ٦٦ | |
| | إلا من ارتضى من رسول فإنه يسلك من بين يديه ومن خلفه | ٢٧ ك الجـن | ٧٢ | |
| | يخرج من بين الصلب والترائب ... ... ... ... ... | ٧ ك الطـارق | ٨٦ | |
| بينك: (٧) | جعلنا بينك و بين الذين لا يؤمنون بالآخرة حجابا مستورا | ٤٥ ك الإسراء | ١٧ | |
| | قال هذا فراق بينى و بينك... ... ... ... ... ... | ٧٨ ك الكهف | ١٨ | |
| | فاجعل بيننا و بينك موعدا لا نخلفـه نحن ولا أنت | ٥٨ ك طـه | ٢٠ | |
| | قال ذلك بينى و بينك ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ ك القصص | ٢٨ | |
| | ومن بيننا و بينك حجاب فاعمل إننا عاملون ... ... | ٥ ك فصـلت | ٤١ | |
| | فإذا الذى بينك و بينه عداوة كأنه ولىّ حميم... ... | ٣٤ ك « | ٤١ | |
| | يا ليت بينى و بينـك بعد المشرقين فبئس القـرين | ٣٨ ك الزخرف | ٤٣ | |
| بينكم: (٣٩) | ولا تأكلوا أموالكم بينكم بالباطل ... ... ... | ١٨٨ م البقـرة | ٢ | |
| | ولا تنسوا الفضل بينكم إن الله بمـا تعملون بصـير | ٢٣٧ م « | ٢ | |
| | وليكتب بينكم كاتب بالعدل ... ... ... ... ... | ٢٨٢ م « | ٢ | |
| | إلا أن تكون تجارة حاضرة تديرونها بينكم ... ... | ٢٨٢ م « | ٢ | |
| | ثم إلىّ مرجعكم فأحكم بينكم فيما كنتم فيـه تختلفون | ٥٥ م آل عمران | ٣ | |
| | قل يأهل الكتاب تعالوا إلى كلمة سواء بيننا و بينكم | ٦٤ م « | ٣ | |
| | يأيها الذين آمنوا لا تأكلوا أموالكم بينكم بالباطل | ٢٩ م النسـاء | ٤ | |
| | ليقولنّ كأن لم تكن بينكم وبينه مودّة ياليتنى كنت معهم | ٧٣ م « | ٤ | |
| | إلا الذين يصـلون إلى قوم بينكم و بينهـم ميثاق | ٩٠ م « | ٤ | |
| | و إن كان من قوم بينكم و بينهم ميثاق فدية مسلمة إلى أهله | ٩٢ م « | ٤ | |
| | فالله يحكم بينكم يوم القيامة ... ... ... ... ... | ١٤١ م « | ٤ | |
| | إنما يريد الشيطان أن يوقع بينكم العداوة والبغضاء فى الخمر | ٩١ م المائدة | ٥ | |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بَيْنِكُمْ | : شهادة بينكم إذا حضر أحدكم الموت حين الوصية اثنان | ١٠٦ | م المائدة | ٥ |
| | قل أيّ شيء أكبر شهادة قل الله شهيد بيني و بينكم | ١٩ | ك الأنعام | ٦ |
| | قل لو أن عندي ما تستعجلون به لقضي الأمر بيني و بينكم | ٥٨ | ك « | ٦ |
| | لقد تقطع بينكم وضل عنكم ما كنتم تزعمون ... ... | ٩٤ | ك « | ٦ |
| | فاتقوا الله وأصلحوا ذات بينكم ... ... ... ... | ١ | م الأنفال | ٨ |
| | إلا على قوم بينكم و بينهم ميثاق... ... ... ... ... | ٧٢ | م « | ٨ |
| | فكفى بالله شهيدا بيننا و بينكم إن كنا عن عبادتكم لغافلين | ٢٩ | ك يونس | ١٠ |
| | قل كفى بالله شهيدا بيني و بينكم ومن عنده علم الكتاب | ٤٣ | م الرعد | ١٣ |
| | تتخذون أيمانكم دخلا بينكم أن تكون أمة هي أربى من أمة | ٩٢ | ك النحل | ١٦ |
| | ولا تتخذوا أيمانكم دخلا بينكم فتزل قدم بعد ثبوتها | ٩٤ | ك « | ١٦ |
| | قل كفى بالله شهيدا بيني و بينكم إنه كان بعباده خبيرا بصيرا | ٩٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فأعينوني بقوة أجعل بينكم و بينهم ردما ... ... | ٩٥ | م الكهف | ١٨ |
| | الله يحكم بينكم يوم القيامة فيما كنتم فيه تختلفون | ٦٩ | م الحج | ٢٢ |
| | لا تجعلوا دعاء الرسول بينكم كدعاء بعضكم بعضا | ٦٣ | م النور | ٢٤ |
| | وقال إنما اتخذتم من دون الله أوثانا مودة بينكم | ٢٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | كفى بالله بيني و بينكم شهيدا يعلم ما في السموات والأرض | ٥٢ | ك « | ٢٩ |
| | وجعل بينكم مودة ورحمة ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك الروم | ٣٠ |
| | وأمرت لأعدل بينكم الله ربنا وربكم ... ... ... | ١٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| | لنا أعمالنا ولكم أعمالكم لا حجة بيننا و بينكم ... ... | ١٥ | ك « | ٤٢ |
| | كفى به شهيدا بيني و بينكم وهو الغفور الرحيم... ... | ٨ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | نحن قدرنا بينكم الموت وما نحن بمسبوقين ... ... | ٦٠ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | اعلموا أنما الحياة الدنيا لعب ولهو وزينة وتفاخر بينكم | ٢٠ | م الحديد | ٥٧ |
| | لن تنفعكم أرحامكم ولا أولادكم يوم القيامة يفصل بينكم | ٣ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | وبدا بيننا و بينكم العداوة والبغضاء أبدا ... ... | ٤ | م « | ٦٠ |
| | عسى الله أن يجعل بينكم و بين الذين عاديتم منهم مودة | ٧ | م « | ٦٠ |
| | ذلكم حكم الله يحكم بينكم والله عليم حكيم ... ... | ١٠ | م « | ٦٠ |
| | وأتمروا بينكم بمعروف ... ... ... ... ... ... | ٦ | م الطلاق | ٦٥ |
| بَيْنَنَا | : قل يأهل الكتاب تعالوا إلى كلمة سواء بيننا و بينكم | ٦٤ | م آل عمران | ٣ |
| (١٧) | فافرق بيننا و بين القوم الفاسقين ... ... ... ... | ٢٥ | م المائدة | ٥ |
| | أهؤلاء منّ الله عليهم من بيننا ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك الأنعام | ٦ |
| | فاصبروا حتى يحكم الله بيننا ... ... ... ... ... | ٨٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | ربنا افتح بيننا و بين قومنا بالحق . ... ... ... | ٨٩ | ك « | ٧ |
| | فكفى بالله شهيدا بيننا و بينكم إن كنا عن عبادتكم لغافلين | ٢٩ | ك يونس | ١٠ |
| | فهل نجعل لك خرجا على أن تجعل بيننا و بينهم سدا | ٩٤ | م الكهف | ١٨ |
| | فاجعل بيننا و بينك موعدا لا نخلفه نحن ولا أنت | ٥٨ | ك طه | ٢٠ |
| | قل يجمع بيننا ربنا ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك سبأ | ٣٤ |
| | ثم يفتح بيننا بالحق وهو الفتاح العليم ... ... ... | ٢٦ | ك « | ٣٤ |
| بَيْنَنَا | : أءنزل عليه الذكر من بيننا ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك ص | ٣٨ |
| | خصمان بغى بعضنا على بعض فاحكم بيننا بالحق | ٢٢ | ك « | ٣٨ |
| | ومن بيننا و بينك حجاب فاعمل إننا عاملون... ... | ٥ | ك فصلت | ٤١ |
| | لا حجة بيننا و بينكم ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| | الله يجمع بيننا و إليه المصير... ... ... ... ... | ١٥ | ك « | ٤٢ |
| | أءلقى الذكر عليه من بيننا بل هو كذاب أشر | ٢٥ | ك القمر | ٥٤ |
| | وبدا بيننا و بينكم العداوة والبغضاء أبدا... ... ... | ٤ | م الممتحنة | ٦٠ |
| بَيْنَهُ | : وما عملت من سوء تود لو أن بينها و بينه أمدا بعيدا | ٣٠ | م آل عمران | ٣ |
| (٥) | ليقولن كأن لم تكن بينكم و بينه مودة ياليتني كنت معهم | ٧٣ | م النساء | ٤ |
| | ألم تر أن الله يزجي سحابا ثم يؤلف بينه ... ... | ٤٣ | م النور | ٢٤ |
| | وجعلوا بينه و بين الجنة نسبا ... ... ... ... ... | ١٥٨ | ك الصافات | ٣٧ |
| | فإذا الذي بينك و بينه عداوة كأنه ولي حميم... ... | ٣٤ | ك فصلت | ٤١ |
| بَيْنَهَا | : وما عملت من سوء تود لو أن بينها و بينه أمدا بعيدا | ٣٠ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | يطوفون بينها و بين حميم آن ... ... ... ... | ٤٤ | م الرحمن | ٥٥ |
| بَيْنَهُمْ | : فالله يحكم بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون | ١١٣ | م البقرة | ٢ |
| (٦٤) | فمن خاف من موص جنفا أو إثما فأصلح بينهم | | | |
| | فلا إثم عليه ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٨٢ | م « | ٢ |
| | وما اختلف فيه إلا الذين أوتوه من بعد ما جاءتهم | | | |
| | البينات بغيا بينهم ... ... ... ... ... ... ... | ٢١٣ | م « | ٢ |
| | فلا تعضلوهن أن ينكحن أزواجهن إذا تراضوا | | | |
| | بينهم بالمعروف ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣٢ | م « | ٢ |
| | وما اختلف الذين أوتوا الكتاب إلا من بعد ما جاءهم | | | |
| | العلم بغيا بينهم... ... ... ... ... ... ... ... | ١٩ | م آل عمران | ٣ |
| | يدعون إلى كتاب الله ليحكم بينهم ... ... ... ... | ٢٣ | م « | ٣ |
| | فلا وربك لا يؤمنون حتى يحكموك فيما شجر بينهم | ٦٥ | م النساء | ٤ |
| | إلا الذين يصلون إلى قوم بينكم و بينهم ميثاق | ٩٠ | م « | ٤ |
| | وإن كان من قوم بينكم و بينهم ميثاق فدية مسلمة | | | |
| | إلى أهله ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩٢ | م « | ٤ |
| | فأغرينا بينهم العداوة والبغضاء إلى يوم القيامة | ١٤ | م المائدة | ٥ |
| | فإن جاءوك فاحكم بينهم أو أعرض عنهم... ... | ٤٢ | م « | ٥ |
| | وإن حكمت فاحكم بينهم بالقسط إن الله يحب | | | |
| | المقسطين ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | م « | ٥ |
| | فاحكم بينهم بما أنزل الله ولا تتبع أهواءهم... ... | ٤٨ | م « | ٥ |
| | وأن احكم بينهم بما أنزل الله ولا تتبع أهواءهم | ٤٩ | م « | ٥ |
| | وألقينا بينهم العداوة والبغضاء إلى يوم القيامة | ٦٤ | م « | ٥ |
| | فأذن مؤذن بينهم أن لعنة الله على الظالمين ... ... | ٤٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولكن الله ألف بينهم ... ... ... ... ... ... ... | ٦٣ | م الأنفال | ٨ |
| | فعليكم النصر إلا على قوم بينكم و بينهم ميثاق... ... | ٧٢ | م « | ٨ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بَيْنَهُمْ | : ولولا كلمة سبقت من ربك لقضى بينهم فيما فيه يختلفون | ١٩ | ك يونس | ١٠ |
| | فزيلنا بينهم وقال شركاؤهم ما كنتم إيانا تعبدون | ٢٨ | ك « | ١٠ |
| | ويوم يحشرهم كأن لم يلبثوا إلا ساعة من النهار | | | |
| | يتعارفون بينهم... ... ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك « | ١٠ |
| | فإذا جاء رسولهم قضى بينهم بالقسط وهم لا يظلمون | ٤٧ | ك « | ١٠ |
| | وقضى بينهم بالقسط وهم لا يظلمون... ... ... ... | ٥٤ | ك « | ١٠ |
| | إن ربك يقضى بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون | ٩٣ | ك « | ١٠ |
| | ولولا كلمة سبقت من ربك لقضى بينهم ... ... | ١١٠ | ك هود | ١١ |
| | وإن ربك ليحكم بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون | ١٢٤ | ك النحل | ١٦ |
| | وقل لعبادى يقولوا التى هى أحسن إن الشيطان ينزغ بينهم | ٥٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وكذلك بعثناهم ليتساءلوا بينهم ... ... ... ... ... | ١٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | وأن الساعة لاريب فيها إذ يتنازعون بينهم أمرهم | ٢١ | ك « | ١٨ |
| | فدعوهم فلم يستجيبوا لهم وجعلنا بينهم موبقا | ٥٢ | ك « | ١٨ |
| | فهل نجعل لك خرجا على أن تجعل بيننا وبينهم سدا | ٩٤ | م « | ١٨ |
| | فأعينونى بقوة أجعل بينكم وبينهم ردما... ... ... | ٩٥ | م « | ١٨ |
| | فاختلف الأحزاب من بينهم فويل للذين كفروا | | | |
| | من مشهد يوم عظيم ... ... .. ... ... ... | ٣٧ | ك مريم | ١٩ |
| | فتنازعوا أمرهم بينهم وأسروا النجوى ... ... ... | ٦٢ | ك طه | ٢٠ |
| | يتخافتون بينهم إن لبثتم إلا عشرا ... ... ... ... | ١٠٣ | ك « | ٢٠ |
| | وتقطعوا أمرهم بينهم كل إلينا راجعون... ... ... | ٩٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | إن الله يفصل بينهم يوم القيامة إن الله على كل شىء شهيد | ١٧ | م الحج | ٢٢ |
| | الملك يومئذ لله يحكم بينهم ... ... ... ... ... | ٥٦ | م « | ٢٢ |
| | فتقطعوا أمرهم بينهم زبرا كل حزب بما لديهم فرحون | ٥٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فإذا نفخ فى الصور فلا أنساب بينهم يومئذ ... ... | ١٠١ | ك « | ٢٣ |
| | وإذا دعوا إلى الله ورسوله ليحكم بينهم إذا فريق | | | |
| | منهم معرضون ... ... ... ... ... ... | ٤٨ | م النور | ٢٤ |
| | إنما كان قول المؤمنين إذا دعوا إلى الله ورسوله | | | |
| | ليحكم بينهم أن يقولوا سمعنا وأطعنا ... ... | ٥١ | م « | ٢٤ |
| | ولقد صرفناه بينهم ليذكروا فأبى أكثر الناس إلا كفورا | ٥٠ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | فافتح بينى وبينهم فتحا ونجنى ومن معى من المؤمنين | ١١٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | إن ربك يقضى بينهم بحكمه وهو العزيز العليم | ٧٨ | ك النمل | ٢٧ |
| | إن ربك هو يفصل بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون | ٢٥ | ك السجدة | ٣٢ |
| | وجعلنا بينهم وبين القرى التى باركنا فيها قرى ظاهرة | ١٨ | ك سبإ | ٣٤ |
| | وحيل بينهم وبين ما يشتهون كما فعل بأشياعهم من قبل | ٥٤ | ك « | ٣٤ |
| | إن الله يحكم بينهم فى ما هم فيه يختلفون ... ... | ٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وقضى بينهم بالحق وهم لا يظلمون ... ... ... ... | ٦٩ | ك « | ٣٩ |
| | وقضى بينهم بالحق وقيل الحمد لله رب العالمين | ٧٥ | ك « | ٣٩ |
| | ولولا كلمة سبقت من ربك لقضى بينهم... ... ... | ٤٥ | ك فصلت | ٤١ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بَيْنَهُمْ | : وما تفرقوا إلا من بعد ما جاءهم العلم بغيا بينهم | ١٤ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ولولا كلمة سبقت من ربك إلى أجل مسمى لقضى بينهم | ١٤ | ك « | ٤٢ |
| | ولولا كلمة الفصل لقضى بينهم وإن الظالمين لهم عذاب أليم | ٢١ | ك « | ٤٢ |
| | وأمرهم شورى بينهم ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك « | ٤٢ |
| | نحن قسمنا بينهم معيشتهم فى الحياة الدنيا ... ... | ٣٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | فاختلف الأحزاب من بينهم... ... ... ... ... | ٦٥ | ك « | ٤٣ |
| | فما اختلفوا إلا من بعد ما جاءهم العلم بغيا بينهم | ١٧ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | إن ربك يقضى بينهم يوم القيامة ... ... ... ... | ١٧ | ك « | ٤٥ |
| | والذين معه أشداء على الكفار رحماء بينهم ... ... | ٢٩ | م الفتح | ٤٨ |
| | وبينهم أن الماء قسمة بينهم كل شرب محتضر | ٢٨ | ك القمر | ٥٤ |
| | فضرب بينهم بسور له باب باطنه فيه الرحمة... ... | ١٣ | م الحديد | ٥٧ |
| | بأسهم بينهم شديد تحسبهم جميعا وقلوبهم شتى | ١٤ | م الحشر | ٥٩ |
| بَيْنِهِمَا | : وإن خفتم شقاق بينهما فابعثوا حكما من أهله | | | |
| (٣٢) | وحكما من أهلها ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | م النساء | ٤ |
| | إن يريدا إصلاحا يوفق الله بينهما... ... ... ... | ٣٥ | م « | ٤ |
| | فلا جناح عليهما أن يصلحا بينهما صلحا... ... ... | ١٢٨ | م « | ٤ |
| | ولله ملك السموات والأرض وما بينهما يخلق ما يشاء | ١٧ | م المائدة | ٥ |
| | ولله ملك السموات والأرض وما بينهما وإليه المصير | ١٨ | م « | ٥ |
| | وبينهما حجاب وعلى الأعراف رجال يعرفون كلا بسيماهم | ٤٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | وحال بينهما الموج فكان من المغرقين ... ... ... | ٤٣ | ك هود | ١١ |
| | وما خلقنا السموات والأرض وما بينهما إلا بالحق | ٨٥ | ك الحجر | ١٥ |
| | وحففناهما بنخل وجعلنا بينهما زرعا ... ... ... ... | ٣٢ | ك الكهف | ١٨ |
| | فلما بلغا مجمع بينهما نسيا حوتهما فاتخذ سبيله فى البحر سربا | ٦١ | ك « | ١٨ |
| | رب السموات والأرض وما بينهما فاعبده واصطبر لعبادته | ٦٥ | ك مريم | ١٩ |
| | له ما فى السموات وما فى الأرض وما بينهما وما تحت الثرى | ٦ | ك طه | ٢٠ |
| | وما خلقنا السماء والأرض وما بينهما لاعبين ... ... | ١٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وجعل بينهما برزخا وحجرا محجورا ... ... ... ... | ٥٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | الذى خلق السموات والأرض وما بينهما فى ستة أيام | ٥٩ | ك « | ٢٥ |
| | قال رب السموات والأرض وما بينهما إن كنتم موقنين | ٢٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | قال رب المشرق والمغرب وما بينهما إن كنتم تعقلون | ٢٨ | ك « | ٢٦ |
| | ما خلق الله السموات والأرض وما بينهما إلا بالحق | ٨ | ك الروم | ٣٠ |
| | الله الذى خلق السموات والأرض وما بينهما فى ستة أيام | ٤ | ك السجدة | ٣٢ |
| | رب السموات والأرض وما بينهما ورب المشارق | ٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| | أم لهم ملك السموات والأرض وما بينهما فليرتقوا | | | |
| | فى الأسباب ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك ص | ٣٨ |
| | وما خلقنا السماء والأرض وما بينهما باطلا ... ... | ٢٧ | ك « | ٣٨ |
| | رب السموات والأرض وما بينهما العزيز الغفار | ٦٦ | ك « | ٣٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بَيْنَهُمَا : | وتبارك الذى له ملك السموات والأرض وما بينهما | ٨٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | رب السموات والأرض وما بينهما إن كنتم موقنين | ٧ | ك الدخان | ٤٤ |
| | وما خلقنا السموات والأرض وما بينهما لاعبين | ٣٨ | ك « | ٤٤ |
| | ما خلقنا السموات والأرض وما بينهما إلا بالحق | ٣ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | وإن طائفتان من المؤمنين اقتتلوا فأصلحوا بينهما | ٩ | م الحجرات | ٤٩ |
| | فإن فاءت فأصلحوا بينهما بالعدل وأقسطوا ... ... | ٩ | م « | ٤٩ |
| | ولقد خلقنا السموات والأرض وما بينهما فى ستة أيام وما مسنا من لغوب ... ... ... ... ... | ٣٨ | م ق | ٥٠ |
| | بينهما برزخ لا يبغيان ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | م الرحمن | ٥٥ |
| | رب السموات والأرض وما بينهما الرحمن ... ... | ٣٧ | ك النبأ | ٧٨ |
| بَيْنَهُنَّ : | يتنزل الأمر بينهن لتعلموا أن الله على كل شىء قدير | ١٢ | م الطلاق | ٦٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بَيْنِي : | قل أى شىء أكبر شهادة قل الله شهيد بينى و بينكم | ١٩ | ك الأنعام | ٦ |
| (١١) | قل لو أن عندى ما تستعجلون به لقضى الأمر بينى و بينكم | ٥٨ | ك « | ٦ |
| | وجاء بكم من البدو من بعد أن نزغ الشيطان بينى و بين إخوتى | ١٠٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | قل كفى بالله شهيدا بينى و بينكم ومن عنده علم الكتاب | ٤٣ | م الرعد | ١٣ |
| | قل كفى بالله شهيدا بينى و بينكم إنه كان بعباده خبيرا بصيرا | ٩٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| | قال هذا فراق بينى و بينك ... ... ... ... ... ... | ٧٨ | ك الكهف | ١٨ |
| | فافتح بينى و بينهم فتحا ونجنى ومن معى من المؤمنين | ١١٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | قال ذلك بينى و بينك أيما الأجلين قضيت فلا عدوان على | ٢٨ | ك القصص | ٢٨ |
| | قل كفى بالله بينى و بينكم شهيدا يعلم ما فى السموات والأرض | ٥٢ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | حتى إذا جاءنا قال ياليت بينى و بينك بعد المشرقين فبئس القرين ... ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | كفى به شهيدا بينى و بينكم وهو الغفور الرحيم | ٨ | ك الأحقاف | ٤٦ |

# باب التاء

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| التَّابُوت : | إن آية ملكه أن يأتيكم التابوت فيه سكينة من ربكم | ٢٤٨ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | أن اقذفيه فى التابوت فاقذفيه فى اليم فليلقه اليم بالساحل | ٣٩ | ك طه | ٢٠ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| تَبَّ : | تبت يدا أبى لهب وتب ... ... ... ... ... ... | ١ | ك المسد | ١١١ |
| تَبَّتْ : | تبت يدا أبى لهب وتب ... ... ... ... ... ... | ١ | ك « | ١١١ |
| تَبَابٍ : | وما كيد فرعون إلا فى تباب ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك غافر | ٤٠ |
| تَتْبِيبٍ : | وما زادوهم غير تتبيب ... ... ... ... ... ... | ١٠١ | ك هود | ١١ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| تَبَّرْنَا : | وكلا ضربنا له الأمثال وكلا تبرنا تتبيرا ... ... ... | ٣٩ | ك الفرقان | ٢٥ |
| لِيُتَبِّرُوا : | وليتبروا ما علوا تتبيرا ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| تَتْبِيرًا : | وليتبروا ما علوا تتبيرا ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك « | ١٧ |
| (٢) | وكلا ضربنا له الأمثال وكلا تبرنا تتبيرا ... ... ... | ٣٩ | ك الفرقان | ٢٥ |
| مُتَبَّرٌ : | إن هؤلاء متبر ما هم فيه و باطل ما كانوا يعملون | ١٣٩ | ك الأعراف | ٧ |
| تَبَارًا : | رب اغفر لى ولوالدى ولمن دخل بيتى مؤمنا وللمؤمنين والمؤمنات ولا تزد الظالمين إلا تبارا | ٢٨ | ك نوح | ٧١ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| تَبِعَ : | فمن تبع هداى فلا خوف عليهم ولا هم يحزنون | ٣٨ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | ولا تؤمنوا إلا لمن تبع دينكم ... ... ... ... ... | ٧٣ | م آل عمران | ٣ |
| تَبِعَكَ : | لمن تبعك منهم لأملأن جهنم منكم أجمعين | ١٨ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | قال اذهب فمن تبعك منهم فإن جهنم جزاؤكم جزاء موفورا | ٦٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| تَبِعَكَ : | لأملأن جهنم منك وممن تبعك منهم أجمعين | ٨٥ | ك ص | ٣٨ |
| تَبِعَنِي : | فمن تبعنى فإنه منى ومن عصانى فإنك غفور رحيم | ٣٦ | ك إبراهيم | ١٤ |
| تَبِعُوا : | ولئن أتيت الذين أوتوا الكتاب بكل آية ما تبعوا قبلتك | ١٤٥ | م البقرة | ٢ |
| تَتْبَعُهَا : | يوم ترجف الراجفة . تتبعها الرادفة ... ... ... | ٧ | ك النازعات | ٧٩ |
| يَتْبَعُهَا : | قول معروف ومغفرة خير من صدقة يتبعها أذى | ٢٦٣ | م البقرة | ٢ |
| أَتْبَعَ : | وآتيناه من كل شىء سببا . فأتبع سببا ... ... ... | ٨٥ | م الكهف | ١٨ |
| (٣) | ثم أتبع سببا . حتى إذا بلغ مطلع الشمس ... ... | ٨٩ | م « | ١٨ |
| | ثم أتبع سببا . حتى إذا بلغ بين السدين ... ... | ٩٢ | م « | ١٨ |
| فَأَتْبَعْنَا : | فأتبعنا بعضهم بعضا وجعلناهم أحاديث ... ... | ٤٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| وَأَتْبَعْنَاهُمْ : | وأتبعناهم فى هذه الدنيا لعنة و يوم القيامة هم من المقبوحين ... ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك القصص | ٢٨ |
| فَأَتْبَعَهُ : | فانسلخ منها فأتبعه الشيطان فكان من الغاوين | ١٧٥ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | إلا من استرق السمع فأتبعه شهاب مبين ... ... | ١٨ | ك الحجر | ١٥ |
| | إلا من خطف الخطفة فأتبعه شهاب ثاقب ... ... | ١٠ | ك الصافات | ٣٧ |
| فَأَتْبَعَهُمْ : | فأتبعهم فرعون وجنوده بغيا وعدوا ... ... ... | ٩٠ | ك يونس | ١٠ |
| (٢) | فأتبعهم فرعون بجنوده فغشيهم من اليم ما غشيهم | ٧٨ | ك طه | ٢٠ |
| فَأَتْبَعُوهُمْ : | فأتبعوهم مشرقين ... ... ... ... ... ... ... | ٦٠ | ك الشعراء | ٢٦ |
| نُتْبِعْهُمْ : | ألم نهلك الأولين . ثم نتبعهم الآخرين ... ... | ١٧ | ك المرسلات | ٧٧ |
| يُتْبِعُونَ : | ثم لا يتبعون ما أنفقوا منا ولا أذى لهم أجرهم عند ربهم | ٢٦٢ | م البقرة | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| وأُتبِعوا | : وأتبعوا فى هـذه الدنيا لعنـة ويوم القيـامة | ٦٠ ك هـود | ١١ |
| (٢) | وأتبعوا فى هذه لعنة ويوم القيامة بئس الرفد المرفود | ٩٩ ك « | ١١ |
| اتَّبَعَ | : أفمن اتبع رضوان الله كمن باء بسخط من الله ومأواه جهنم | ١٦٢ م آل عمران | ٣ |
| (١٣) | ومن أحسن دينا ممن أسلم وجهه لله وهو محسن | | |
| | واتبع ملة إبراهيم حنيفا ... ... ... ... ... | ١٢٥ م النساء | ٤ |
| | يهدى به الله من اتبع رضوانه سبل السلام ... ... | ١٦ م المائدة | ٥ |
| | ولو شئنا لرفعناه بها ولكنه أخلد إلى الأرض واتبع هواه | ١٧٦ ك الأعراف | ٧ |
| | واتبع الذين ظلموا ما أترفوا فيه وكانوا مجرمين | ١١٦ ك هـود | ١١ |
| | ولا تطع من أغفلنا قلبه عن ذكرنا واتبع هواه | ٢٨ م الكهف | ١٨ |
| | فلا يصدنك عنها من لا يؤمن بها واتبع هواه فتردى | ١٦ ك طه | ٢٠ |
| | قد جئناك بآية من ربك والسلام على من اتبع الهدى | ٤٧ ك « | ٢٠ |
| | فإما يأتينكم منى هدى فمن اتبع هداى فلا يضل ولا يشقى | ١٢٣ ك « | ٢٠ |
| | ولو اتبع الحق أهواءهم لفسدت السموات | | |
| | والأرض ومن فيهن ... ... ... ... ... ... | ٧١ ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ومن أضل ممن اتبع هواه بغير هدى من الله | ٥٠ ك القصص | ٢٨ |
| | بل اتبع الذين ظلموا أهواءهم بغير علم ... ... ... | ٢٩ ك الروم | ٣٠ |
| | إنما تنذر من اتبع الذكر وخشى الرحمن بالغيب | ١١ ك يس | ٣٦ |
| اتَّبَعْتُ | : واتبعت ملة آبائى إبراهيم وإسحق ويعقوب | ٣٨ ك يوسف | ١٢ |
| اتَّبَعْتَ | : ولئن اتبعت أهواءهم بعد الذى جاءك من العلم | | |
| (٣) | مالك من الله من ولىّ ولا نصير ... ... ... ... | ١٢٠ م البقرة | ٢ |
| | ولئن اتبعت أهواءهم من بعد ما جاءك من العلم إنك | | |
| | إذا لمن الظالمين ... ... ... ... ... ... | ١٤٥ م « | ٢ |
| | ولئن اتبعت أهواءهم بعد ما جاءك من العلم مالك | | |
| | من الله من ولىّ ولا واق ... ... ... ... ... | ٣٧ م الرعد | ١٣ |
| اتَّبَعْتُمْ | : ولولا فضل الله عليكم ورحمته لاتبعتم الشيطان إلا قليلا | ٨٣ م النساء | ٤ |
| (٢) | لئن اتبعتم شعيبا إنكم إذا لخاسرون ... ... ... ... | ٩٠ ك الأعراف | ٧ |
| اتَّبَعَتْهُمْ | : والذين آمنوا واتبعتهم ذريتهم بإيمان ألحقنا | | |
| | بهم ذريتهم ... ... ... ... ... ... ... | ٢١ ك الطور | ٥٢ |
| اتَّبَعْتَنِى | : قال فإن اتبعتنى فلا تسألنى عن شىء حتى أحدث | | |
| | لك منه ذكرا ... ... ... ... ... ... ... | ٧٠ ك الكهف | ١٨ |
| اتَّبَعَكَ | : يأيها النبىّ حسبك الله ومن اتبعك من المؤمنين | ٦٤ م الأنفال | ٨ |
| (٥) | وما نراك اتبعك إلا الذين هم أراذلنا بادى الرأى | ٢٧ ك هـود | ١١ |
| | إن عبادى ليس لك عليهم سلطان إلا من اتبعك من الغاوين | ٤٢ ك الحجر | ١٥ |
| | قالوا أنؤمن لك واتبعك الأرذلون ... ... ... ... | ١١١ ك الشعراء | ٢٦ |
| | واخفض جناحك لمن اتبعك من المؤمنين ... ... | ٢١٥ ك « | ٢٦ |
| اتَّبَعَكُمَا | : بآياتنا أنتما ومن اتبعكما الغالبون ... ... ... | ٣٥ ك القصص | ٢٨ |
| اتَّبَعَنِ | : فإن حاجوك فقل أسلمت وجهى لله ومن اتبعن | ٢٠ م آل عمران | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| اتَّبَعْنَا | : ربنا آمنا بما أنزلت واتبعنا الرسول فاكتبنا مع الشاهدين | ٥٣ م آل عمران | ٣ |
| لَاتَّبَعْنَاكُمْ | : قالوا لو نعلم قتالا لاتبعناكم ... ... ... ... | ١٦٧ م « | ٣ |
| اتَّبَعَنِى | : قل هذه سبيلى أدعوا إلى الله على بصيرة أنا ومن اتبعنى | ١٠٨ ك يوسف | ١٢ |
| اتَّبَعُوا | : واتبعوا ما تتلوا الشياطين على ملك سليمان ... ... | ١٠٢ م البقرة | ٢ |
| (١٦) | اذ تبرأ الذين اتبعوا من الذين اتبعوا ورأوا العذاب | ١٦٦ م « | ٢ |
| | وقال الذين اتبعوا لو أن لنا كرة فنتبرأ منهم كما تبرؤا منا | ١٦٧ م « | ٢ |
| | واتبعوا رضوان الله والله ذو فضل عظيم ... ... | ١٧٤ م آل عمران | ٣ |
| | فالذين آمنوا به وعزروه ونصروه واتبعوا النور | | |
| | الذى أنزل معه أولئك هم المفلحون... ... ... | ١٥٧ ك الأعراف | ٧ |
| | وعصوا رسله واتبعوا أمر كل جبار عنيد... ... ... | ٥٩ ك هـود | ١١ |
| | إلى فرعون وملئه فاتبعوا أمر فرعون وما أمر فرعون برشيد | ٩٧ ك « | ١١ |
| | فخلف من بعدهم خلف أضاعوا الصلاة واتبعوا الشهوات | ٥٩ ك مريم | ١٩ |
| | فاغفر للذين تابوا واتبعوا سبيلك وقهم عذاب الجحيم | ٧ ك غافر | ٤٠ |
| | ذلك بأن الذين كفروا اتبعوا الباطل ... ... ... | ٣ م محمد | ٤٧ |
| | وأن الذين آمنوا اتبعوا الحق من ربهم ... ... | ٣ م « | ٤٧ |
| | أفمن كان على بيِّنة من ربه كمن زين له سوء عمله | | |
| | واتبعوا أهواءهم ... ... ... ... ... ... ... | ١٤ م « | ٤٧ |
| | أولئك الذين طبع الله على قلوبهم واتبعوا أهواءهم | ١٦ م « | ٤٧ |
| | ذلك بأنهم اتبعوا ما أسخط الله وكرهوا رضوانه | ٢٨ م « | ٤٧ |
| | وكذبوا واتبعوا أهواءهم وكل أمر مستقر ... ... | ٣ ك القمر | ٥٤ |
| | إنهم عصونى واتبعوا من لم يزده ماله وولده إلا خسارا | ٢١ ك نوح | ٧١ |
| اتَّبَعُوكَ | : وجاعل الذين اتبعوك فوق الذين كفروا | | |
| (٢) | إلى يوم القيامة ... ... ... ... ... ... ... | ٥٥ م آل عمران | ٣ |
| | لو كان عرضا قريبا وسفرا قاصدا لاتبعوك ... ... | ٤٢ م التوبة | ٩ |
| اتَّبَعُوهُ | : إن أولى الناس بإبراهيم للذين اتبعوه وهذا النبىّ | ٦٨ م آل عمران | ٣ |
| (٤) | لقد تاب الله على النبىّ والمهاجرين والأنصار الذين اتبعوه | ١١٧ م التوبة | ٩ |
| | ولقد صدق عليهم إبليس ظنه فاتبعوه إلا فريقا | | |
| | من المؤمنين ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ ك سبإ | ٣٤ |
| | وجعلنا فى قلوب الذين اتبعوه رأفة ورحمة ... ... | ٢٧ م الحديد | ٥٧ |
| اتَّبَعُوهُمْ | : والذين اتبعوهم بإحسان رضى الله عنهم ورضوا عنه | ١٠٠ م التوبة | ٩ |
| أَتَّبِعُ | : ولا أقول لكم إنى ملك إن أتبع إلا ما يوحى إلىّ | ٥٠ ك الأنعام | ٦ |
| (٥) | قل لا أتبع أهواءكم قد ضللت إذا وما أنا من المهتدين | ٥٦ ك « | ٦ |
| | قل إنما أتبع ما يوحى إلىّ من ربى ... ... ... | ٢٠٣ ك الأعراف | ٧ |
| | قل ما يكون لى أن أبدله من تلقاء نفسى إن أتبع | | |
| | إلا ما يوحى إلىّ ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ ك يونس | ١٠ |
| | إن أتبع إلا ما يوحى إلىّ وما أنا إلا نذير مبين | ٩ ك الأحقاف | ٤٦ |
| أَتَّبِعُكَ | : قال له موسى هل أتبعك على أن تعلمن مما علمت رشدا | ٦٦ ك الكهف | ١٨ |
| أَتَّبِعْهُ | : هو أهدى منهما أتبعه إن كنتم صادقين ... ... | ٤٩ ك القصص | ٢٨ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَتَّبِـعَ: | ولن ترضى عنك اليهود ولا النصارى حتى تتبع ملتهم | البقـرة | ٢ | ١٢٠م |
| (٨) | ولا تتبع أهواءهم عما جاءك من الحق ... ... ... | المائدة | ٥ | ٤٨ م |
| | ولا تتبع أهواءهم واحذرهم أن يفتنوك ... ... ... | « | ٥ | ٤٩ م |
| | ولا تتبع أهواء الذين كذبوا بآياتنا ... ... ... ... | الأنعام | ٦ | ١٥٠ك |
| | اخلفني في قومي وأصلح ولا تتبع سبيل المفسدين | الأعراف | ٧ | ١٤٢ك |
| | فاحكم بين الناس بالحق ولا تتبع الهوى ... ... | ص | ٣٨ | ٢٦ ك |
| | فلذلك فادع واستقم كما أمرت ولا تتبع أهواءهم | الشورى | ٤٢ | ١٥ ك |
| | فاتبعها ولا تتبع أهواء الذين لا يعلمون ... ... ... | الجاثية | ٤٥ | ١٨ ك |
| تَتَّبِعَانِّ: | فاستقيما ولا تتبعانّ سبيل الذين لا يعلمون... ... | يونس | ١٠ | ٨٩ ك |
| تَتَّبِعَنِ: | ما منعك إذ رأيتهم ضلوا . ألا تتبعن أفعصيت أمري | طه | ٢٠ | ٩٣ ك |
| تَتَّبِعُوا: | كلوا مما في الأرض حلالا طيبا ولا تتبعوا | | | |
| (٨) | خطوات الشيطان ... ... ... ... ... ... ... | البقـرة | ٢ | ١٦٨م |
| | ادخلوا في السِّلم كافّة ولا تتبعوا خطوات الشيطان | « | ٢ | ٢٠٨م |
| | فلا تتبعوا الهوى أن تعدلوا ... ... ... ... ... | النساء | ٤ | ١٣٥م |
| | ولا تتبعوا أهواء قوم قد ضلوا من قبل وأضلوا كثيرا | المائدة | ٥ | ٧٧ م |
| | كلوا مما رزقكم الله ولا تتبعوا خطوات الشيطان | الأنعام | ٦ | ١٤٢ك |
| | ولا تتبعوا السبل فتفرق بكم عن سبيله ... ... ... | « | ٦ | ١٥٣م |
| | اتبعوا ما أنزل إليكم من ربكم ولا تتبعوا من دونه أولياء | الأعراف | ٧ | ٣ ك |
| | يأيها الذين آمنوا لا تتبعوا خطوات الشيطان | النور | ٢٤ | ٢١ م |
| تَتَّبِعُونَ: | إن تتبعون إلا الظن وإن أنتم إلا تخرصون | الأنعام | ٦ | ١٤٨ك |
| (٣) | إذ يقول الظالمون إن تتبعون إلا رجلا مسحورا | الإسراء | ١٧ | ٤٧ ك |
| | وقال الظالمون إن تتبعون إلا رجلا مسحورا | الفرقان | ٢٥ | ٨ ك |
| تَتَّبِعُونَا: | قل لن تتبعونا كذلكم قال الله من قبل ... ... | الفتح | ٤٨ | ١٥ م |
| نَتَّبِـعُ: | وإذا قيل لهم اتبعوا ما أنزل الله قالوا بل نتبع | | | |
| (٧) | ما ألفينا عليه آباءنا... ... ... ... ... ... | البقـرة | ٢ | ١٧٠م |
| | ربنا أخرنا إلى أجل قريب نجب دعوتك ونتبع الرسل | إبراهيم | ١٤ | ٤٤ ك |
| | ربنا لولا أرسلت إلينا رسولا فنتبع آياتك ... ... | طه | ٢٠ | ١٣٤ك |
| | لعلنا نتبع السحرة إن كانوا هم الغالبين ... ... ... | الشعراء | ٢٦ | ٤٠ ك |
| | لولا أرسلت إلينا رسولا فنتبع آياتك ونكون من المؤمنين | القصص | ٢٨ | ٤٧ ك |
| | وقالوا إن نتبع الهدى معك نتخطف من أرضنا | « | ٢٨ | ٥٧ ك |
| | وإذا قيل لهم اتبعوا ما أنزل الله قالوا بل نتبع | | | |
| | ما وجدنا عليه آباءنا ... ... ... ... ... ... | لقمان | ٣١ | ٢١ ك |
| نَتَّبِعْكُمْ: | سيقول المخلفون إذا انطلقتم إلى مغانم لتأخذوها | | | |
| | ذرونا نتبعكم ... ... ... ... ... ... ... ... | الفتح | ٤٨ | ١٥ م |
| نَتَّبِعُهُ: | فقالوا أبشرا منا واحدا نتبعه إنا إذا لفي ضلال وسعر | القمر | ٥٤ | ٢٤ ك |
| يَتَّبِـعُ: | وما جعلنا القبلة التي كنت عليها إلا لنعلم من يتبع الرسول | البقـرة | ٢ | ١٤٣م |
| (٦) | ويتبع غير سبيل المؤمنين نوله ما تولى ونصله جهنم | النساء | ٤ | ١١٥م |
| | وما يتبع أكثرهم إلا ظنا ... ... ... ... ... ... | يونس | ١٠ | ٣٦ ك |
| | وما يتبع الذين يدعون من دون الله شركاء ... ... | « | ١٠ | ٦٦ ك |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَتَّبِـعُ: | ومن الناس من يجادل في الله بغير علم ويتبع كل شيطان مريد | الحج | ٢٢ | ٣ م |
| | ومن يتبع خطوات الشيطان فإنه يأمر بالفحشاء والمنكر | النور | ٢٤ | ٢١ م |
| يَتَّبِعُهُمُ: | والشعراء يتبعهم الغاوون ... ... ... ... ... | الشعراء | ٢٦ | ٢٢٤م |
| يَتَّبِعُوكُمْ: | وإن تدعوهم إلى الهدى لا يتبعوكم ... ... ... | الأعراف | ٧ | ١٩٣ك |
| يَتَّبِعُونَ: | فأما الذين في قلوبهم زيغ فيتبعون ما تشابه منه | آل عمران | ٣ | ٧ م |
| (١٠) | ويريد الذين يتبعون الشهوات أن تميلوا ميلا عظيما | النساء | ٤ | ٢٧ م |
| | إن يتبعون إلا الظن وإن هم إلا يخرصون ... ... | الأنعام | ٦ | ١١٦ك |
| | الذين يتبعون الرسول النبيّ الأميّ الذي يجدونه مكتوبا | الأعراف | ٧ | ١٥٧ك |
| | إن يتبعون إلا الظن وإن هم إلا يخرصون ... ... | يونس | ١٠ | ٦٦ ك |
| | يومئذ يتبعون الداعي لا عوج له ... ... ... ... | طه | ٢٠ | ١٠٨ك |
| | فإن لم يستجيبوا لك فاعلم أنما يتبعون أهواءهم | القصص | ٢٨ | ٥٠ ك |
| | الذين يستمعون القول فيتبعون أحسنه ... ... ... | الزمر | ٣٩ | ١٨ ك |
| | إن يتبعون إلا الظن وما تهوى الأنفس... ... ... | النجم | ٥٣ | ٢٣ ك |
| | إن يتبعون إلا الظن وإن الظن لا يغني من الحق شيئا | « | ٥٣ | ٢٨ ك |
| اتَّبِـعْ: | اتبع ما أوحي إليك من ربك ... ... ... ... | الأنعام | ٦ | ١٠٦ك |
| (٧) | واتبع ما يوحى إليك واصبر حتى يحكم الله وهو خير الحاكمين | يونس | ١٠ | ١٠٩ك |
| | فأسر بأهلك بقطع من الليل واتبع أدبارهم ... ... | الحجر | ١٥ | ٦٥ ك |
| | ثم أوحينا إليك أن اتبع ملة إبراهيم حنيفا ... ... | النحل | ١٦ | ١٢٣ك |
| | وصاحبهما في الدنيا معروفا واتبع سبيل من أناب إليّ | لقمان | ٣١ | ١٥ ك |
| | واتبع ما يوحى إليك من ربك إن الله كان بما تعملون خبيرا | الأحزاب | ٣٣ | ٢ م |
| | فإذا قرأناه فاتبع قرآنه ... ... ... ... ... ... | القيامة | ٧٥ | ١٨ ك |
| فَاتَّبِعْنِي: | يا أبت إني قد جاءني من العلم ما لم يأتك فاتبعني | مريم | ١٩ | ٤٣ ك |
| فَاتَّبِعْهَا: | ثم جعلناك على شريعة من الأمر فاتبعها... ... | الجاثية | ٤٥ | ١٨ ك |
| اتَّبِعُوا: | وإذا قيل لهم اتبعوا ما أنزل الله قالوا بل نتبع | | | |
| (٨) | ما ألفينا عليه آباءنا ... ... ... ... ... ... | البقـرة | ٢ | ١٧٠م |
| | قل صدق الله فاتبعوا ملة إبراهيم حنيفا... ... ... | آل عمران | ٣ | ٩٥ م |
| | اتبعوا ما أنزل إليكم من ربكم ولا تتبعوا من دونه أولياء | الأعراف | ٧ | ٣ ك |
| | وقال الذين كفروا للذين آمنوا اتبعوا سبيلنا... ... | العنكبوت | ٢٩ | ١٢ ك |
| | وإذا قيل لهم اتبعوا ما أنزل الله قالوا بل نتبع | | | |
| | ما وجدنا عليه آباءنا... ... ... ... ... ... | لقمان | ٣١ | ٢١ ك |
| | قال يا قوم اتبعوا المرسلين... ... ... ... ... | يس | ٣٦ | ٢٠ ك |
| | اتبعوا من لا يسألكم أجرا وهم مهتدون... ... ... | « | ٣٦ | ٢١ ك |
| | واتبعوا أحسن ما أنزل إليكم من ربكم ... ... ... | الزمر | ٣٩ | ٥٥ ك |
| اتَّبِعُونِ: | وقال الذي آمن يا قوم اتبعون أهدكم سبيل الرشاد | غافر | ٤٠ | ٣٨ ك |
| (٢) | وإنه لعلم للساعة فلا تمترنّ بها واتبعون ... ... ... | الزخرف | ٤٣ | ٦١ ك |
| اتَّبِعُونِي: | قل إن كنتم تحبون الله فاتبعوني يحببكم الله | آل عمران | ٣ | ٣١ م |
| (٢) | وإن ربكم الرحمن فاتبعوني وأطيعوا أمري ... ... | طه | ٢٠ | ٩٠ ك |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| اتَّبِعُوهُ: | وأن هذا صراطى مستقيما فاتبعوه ... ... ... | ١٥٣ | م الأنعام | ٦ |
| (٣) | وهذا كتاب أنزلناه مبارك فاتبعوه واتقوا لعلكم ترحمون | ١٥٥ | ك « | ٦ |
| | فآمنوا بالله ورسوله النبى الأمى الذى يؤمن بالله وكلماته واتبعوه ... ... ... ... ... ... | ١٥٨ | ك الأعراف | ٧ |
| اتُّبِعُوا: | إذ تبرأ الذين اتبعوا من الذين اتبعوا ... ... | ١٦٦ | م البقرة | ٢ |
| يُتَّبَعَ: | أفمن يهدى إلى الحق أحق أن يتبع ... ... ... | ٣٥ | ك يونس | ١٠ |
| بِتَابِعٍ: | وما أنت بتابع قبلتهم ... ... ... ... ... | ١٤٥ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | وما بعضهم بتابع قبلة بعض ... ... ... ... | ١٤٥ | م « | ٢ |
| التَّابِعِينَ: | أو التابعين غير أولى الإربة من الرجال... ... | ٣١ | م النور | ٢٤ |
| اتِّبَاعٌ: | فمن عفى له من أخيه شىء فاتباع بالمعروف... ... | ١٧٨ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | ما لهم به من علم إلا اتباع الظن وما قتلوه يقينا... ... | ١٥٧ | م النساء | ٤ |
| مُتَّبَعُونَ: | وأوحينا إلى موسى أن أسر بعبادى إنكم متبعون | ٥٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| (٢) | فأسر بعبادى ليلا إنكم متبعون ... ... ... ... | ٢٣ | ك الدخان | ٤٤ |
| مُتَتَابِعَيْنِ: | فمن لم يجد فصيام شهرين متتابعين توبة من الله | ٩٢ | م النساء | ٤ |
| (٢) | فمن لم يجد فصيام شهرين متتابعين من قبل أن يتماسا | ٤ | م المجادلة | ٥٨ |
| تَبَعًا: | إنا كنا لكم تبعا فهل أنتم مغنون عنا من عذاب الله من شىء | ٢١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| (٢) | إنا كنا لكم تبعا فهل أنتم مغنون عنا نصيبا من النار | ٤٧ | ك غافر | ٤٠ |
| تَبِيعًا: | فيغرقكم بما كفرتم ثم لا تجدوا لكم علينا به تبيعا | ٦٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| تُبَّعٍ: | أهم خير أم قوم تبع والذين من قبلهم ... ... ... | ٣٧ | ك الدخان | ٤٤ |
| (٢) | وأصحاب الأيكة وقوم تبع كل كذب الرسل فحق وعيد | ١٤ | ك ق | ٥٠ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تِجَارَةٌ: | إلا أن تكون تجارة حاضرة تديرونها بينكم... ... | ٢٨٢ | م البقرة | ٢ |
| (٨) | إلا أن تكون تجارة عن تراض منكم ... ... ... | ٢٩ | م النساء | ٤ |
| | وتجارة تخشون كسادها... ... ... ... ... ... | ٢٤ | م التوبة | ٩ |
| | رجال لا تلهيهم تجارة ولا بيع عن ذكر الله وإقام الصلاة | ٣٧ | م النور | ٢٤ |
| | يرجون تجارة لن تبور... ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك فاطر | ٣٥ |
| | يأيها الذين آمنوا هل أدلكم على تجارة تنجيكم من عذاب | ١٠ | م الصف | ٦١ |
| | وإذا رأوا تجارة أو لهوا انفضوا إليها وتركوك قائما | ١١ | م الجمعة | ٦٢ |
| | قل ما عند الله خير من اللهو ومن التجارة... ... ... | ١١ | م « | ٦٢ |
| تِجَارَتُهُمْ: | الذين اشتروا الضلالة بالهدى فما ربحت تجارتهم | ١٦ | م البقرة | ٢ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَحْتَ: | لأكلوا من فوقهم ومن تحت أرجلهم ... ... | ٦٦ | م المائدة | ٥ |
| (٧) | قل هو القادر على أن يبعث عليكم عذابا من فوقكم أو من تحت أرجلكم ... ... ... ... ... | ٦٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | له ما فى السموات وما فى الأرض وما بينهما وما تحت الثرى | ٦ | ك طه | ٢٠ |
| | يوم يغشاهم العذاب من فوقهم ومن تحت أرجلهم | ٥٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| تَحْتَ: | أرنا الذين أضلانا من الجن والإنس نجعلهما تحت أقدامنا ... ... ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك فصلت | ٤١ |
| | لقد رضى الله عن المؤمنين إذ يبايعونك تحت الشجرة | ١٨ | م الفتح | ٤٨ |
| | كانتا تحت عبدين من عبادنا صالحين فخانتاهما | ١٠ | م التحريم | ٦٦ |
| تَحْتَكِ: | فناداها من تحتها ألا تحزنى قد جعل ربك تحتك سريا | ٢٤ | ك مريم | ١٩ |
| تَحْتَهُ: | وأما الجدار فكان لغلامين يتيمين فى المدينة وكان تحته كنز لهما ... ... ... ... ... ... ... | ٨٢ | ك الكهف | ١٨ |
| تَحْتِهَا: | وبشر الذين آمنوا وعملوا الصالحات أن لهم | | | |
| (٣٦) | جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... ... | ٢٥ | م البقرة | ٢ |
| | أيود أحدكم أن تكون له جنة من نخيل وأعناب تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... ... ... | ٢٦٦ | م « | ٢ |
| | للذين اتقوا عند ربهم جنات تجرى من تحتها الأنهار | ١٥ | م آل عمران | ٣ |
| | أولئك جزاؤهم مغفرة من ربهم وجنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... | ١٣٦ | م « | ٣ |
| | ولأدخلنهم جنات تجرى من تحتها الأنهار ثوابا من عند الله | ١٩٥ | م « | ٣ |
| | لكن الذين اتقوا ربهم لهم جنات تجرى من تحتها الأنهار | ١٩٨ | م « | ٣ |
| | ومن يطع الله ورسوله يدخله جنات تجرى من تحتها الأنهار | ١٣ | م النساء | ٤ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات سندخلهم جنات تجرى من تحتها الأنهار... ... ... ... ... ... | ٥٧ | م « | ٤ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات سندخلهم جنات تجرى من تحتها الأنهار... ... ... ... ... ... | ١٢٢ | م « | ٤ |
| | ولأدخلنكم جنات تجرى من تحتها الأنهار... ... ... | ١٢ | م المائدة | ٥ |
| | فأثابهم الله بما قالوا جنات تجرى من تحتها الأنهار | ٨٥ | م « | ٥ |
| | لهم جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها أبدا | ١١٩ | م « | ٥ |
| | وعد الله المؤمنين والمؤمنات جنات تجرى من تحتها الأنهار | ٧٢ | م التوبة | ٩ |
| | أعد الله لهم جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها | ٨٩ | م « | ٩ |
| | وأعد لهم جنات تجرى تحتها الأنهار خالدين فيها أبدا | ١٠٠ | م « | ٩ |
| | مثل الجنة التى وعد المتقون تجرى من تحتها الأنهار | ٣٥ | م الرعد | ١٣ |
| | وأدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات تجرى من تحتها الأنهار... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | جنات عدن يدخلونها تجرى من تحتها الأنهار | ٣١ | ك النحل | ١٦ |
| | فناداها من تحتها ألا تحزنى... ... ... ... ... | ٢٤ | ك مريم | ١٩ |
| | جنات عدن تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها | ٧٦ | ك طه | ٢٠ |
| | إن الله يدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... ... | ١٤ | م الحج | ٢٢ |
| | إن الله يدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... ... | ٢٣ | م « | ٢٢ |
| | تبارك الذى إن شاء جعل لك خيرا من ذلك جنات تجرى من تحتها الأنهار... ... ... ... ... | ١٠ | ك الفرقان | ٢٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَحْتِهَا: | لنبوئنهم من الجنة غرفا تجرى من تحتها الأنهار | ٥٨ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | لهم غرف من فوقها غرف مبنية تجرى من تحتها الأنهار | ٢٠ | ك الزمر | ٣٩ |
| | إن الله يدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات تجرى من تحتها الأنهار... ... ... ... ... ... | ١٢ | م محمد | ٤٧ |
| | ليدخل المؤمنين والمؤمنات جنات تجرى من تحتها الأنهار | ٥ | م الفتح | ٤٨ |
| | ومن يطع الله ورسوله يدخله جنات تجرى من تحتها الأنهار | ١٧ | م « | ٤٨ |
| | بشراكم اليوم جنات تجرى من تحتها الأنهار... ... | ١٢ | م الحديد | ٥٧ |
| | ويدخلهم جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها | ٢٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| | يغفر لكم ذنوبكم ويدخلكم جنات تجرى من تحتها الأنهار | ١٢ | م الصف | ٦١ |
| | يكفر عنه سيئاته ويدخله جنات تجرى من تحتها الأنهار | ٩ | م التغابن | ٦٤ |
| | ومن يؤمن بالله ويعمل صالحا يدخله جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | م الطلاق | ٦٥ |
| | عسى ربكم أن يكفر عنكم سيئاتكم ويدخلكم جنات تجرى من تحتها الأنهار... ... ... ... ... ... | ٨ | م التحريم | ٦٦ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك البروج | ٨٥ |
| | جزاؤهم عند ربهم جنات عدن تجرى من تحتها الأنهار | ٨ | م البينة | ٩٨ |
| تَحْتِهِمُ: | وجعلنا الأنهار تجرى من تحتهم فأهلكناهم بذنوبهم | ٦ | ك الأنعام | ٦ |
| (٥) | ونزعنا ما فى صدورهم من غل تجرى من تحتهم الأنهار | ٤٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | تجرى من تحتهم الأنهار فى جنات النعيم... ... ... | ٩ | ك يونس | ١٠ |
| | أولئك لهم جنات عدن تجرى من تحتهم الأنهار | ٣١ | ك الكهف | ١٨ |
| | لهم من فوقهم ظلل من النار ومن تحتهم ظلل... ... | ١٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| تَحْتِي: | أليس لى ملك مصر وهذه الأنهار تجرى من تحتى | ٥١ | ك الزخرف | ٤٣ |
| تُرَابٍ: | فمثله كمثل صفوان عليه تراب فأصابه وابل... ... | ٢٦٤ | م البقرة | ٢ |
| (٨) | إن مثل عيسى عند الله كمثل آدم خلقه من تراب | ٥٩ | م آل عمران | ٣ |
| | أيمسكه على هون أم يدسه فى التراب ... ... ... | ٥٩ | ك النحل | ١٦ |
| | أكفرت بالذى خلقك من تراب ... ... ... ... | ٣٧ | ك الكهف | ١٨ |
| | يأيها الناس إن كنتم فى ريب من البعث فإنا خلقناكم من تراب... ... ... ... ... ... | ٥ | م الحج | ٢٢ |
| | ومن آياته أن خلقكم من تراب ثم إذا أنتم بشر تنتشرون | ٢٠ | ك الروم | ٣٠ |
| | والله خلقكم من تراب ثم من نطفة ثم جعلكم أزواجا | ١١ | ك فاطر | ٣٥ |
| | هو الذى خلقكم من تراب ثم من نطفة ثم من علقة | ٦٧ | ك غافر | ٤٠ |
| تُرَابًا: | وإن تعجب فعجب قولهم أءذا كنا ترابا أءنا لفى خلق جديد | ٥ | م الرعد | ١٣ |
| (٩) | أيعدكم أنكم إذا متم وكنتم ترابا وعظاما أنكم مخرجون | ٣٥ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | قالوا أءذا متنا وكنا ترابا وعظاما أءنا لمبعوثون | ٨٢ | ك « | ٢٣ |
| | وقال الذين كفروا أءذا كنا ترابا وآباؤنا أئنا لمخرجون | ٦٧ | ك النمل | ٢٧ |
| | أءذا متنا وكنا ترابا وعظاما أءنا لمبعوثون ... ... | ١٦ | ك الصافات | ٣٧ |
| تُرَابًا: | أءذا متنا وكنا ترابا وعظاما أءنا لمدينون... ... ... | ٥٣ | ك الصافات | ٣٧ |
| | أءذا متنا وكنا ترابا ذلك رجع بعيد ... ... ... ... | ٣ | ك ق | |
| | وكانوا يقولون أئذا متنا وكنا ترابا وعظاما أءنا لمبعوثون | ٤٧ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | ويقول الكافر ياليتنى كنت ترابا ... ... ... ... | ٤٠ | ك النبأ | ٧٨ |
| أَتْرَابٍ: | وعندهم قاصرات الطرف أتراب ... ... ... | ٥٢ | ك ص | ٣٨ |
| أَتْرَابًا: | فجعلناهن أبكارا . عربا أترابا... ... ... ... ... | ٣٧ | ك الواقعة | ٥٦ |
| (٢) | إن للتقين مفازا . حدائق وأعنابا . وكواعب أترابا | ٣٣ | ك النبأ | ٧٨ |
| التَّرَائِبِ: | خلق من ماء دافق . يخرج من بين الصلب والترائب | ٧ | ك الطارق | ٨٦ |
| مَتْرَبَةٍ: | أو إطعام فى يوم ذى مسغبة . يتيما ذا مقربة . أو مسكينا ذا متربة ... ... ... ... ... ... | ١٦ | ك البلد | ٩٠ |
| أَتْرَفْنَاهُمْ: | الذين كفروا وكذبوا بلقاء الآخرة وأترفناهم فى الحياة الدنيا ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| أُتْرِفْتُمْ: | لا تركضوا وارجعوا إلى ما أترفتم فيه ... ... ... | ١٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| أُتْرِفُوا: | واتبع الذين ظلموا ما أترفوا فيه وكانوا مجرمين | ١١٦ | ك هود | ١١ |
| مُتْرَفُوهَا: | وما أرسلنا فى قرية من نذير إلا قال مترفوها | | | |
| (٢) | إنا بما أرسلتم به كافرون ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك سبأ | ٣٤ |
| | إلا قال مترفوها إنا وجدنا آباءنا على أمة ... ... | ٢٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| مُتْرَفِينَ: | إنهم كانوا قبل ذلك مترفين ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك الواقعة | ٥٦ |
| مُتْرَفِيهَا: | وإذا أردنا أن نهلك قرية أمرنا مترفيها ففسقوا فيها | ١٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| مُتْرَفِيهِمْ: | حتى إذا أخذنا مترفيهم بالعذاب إذا هم يجأرون | ٦٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| تَرَكَ: | إذا حضر أحدكم الموت إن ترك خيرا الوصية للوالدين | ١٨٠ | م البقرة | ٢ |
| (١٢) | فيه سكينة من ربكم وبقية مما ترك آل موسى وآل هرون | ٢٤٨ | م « | ٢ |
| | للرجال نصيب مما ترك الوالدان والأقربون ... ... | ٧ | م النساء | ٤ |
| | وللنساء نصيب مما ترك الوالدان والأقربون ... ... | ٧ | م « | ٤ |
| | فإن كن نساء فوق اثنتين فلهن ثلثا ما ترك ... ... | ١١ | م « | ٤ |
| | ولأبويه لكل واحد منهما السدس مما ترك إن كان له ولد | ١١ | م « | ٤ |
| | ولكم نصف ما ترك أزواجكم إن لم يكن لهن ولد | ١٢ | م « | ٤ |
| | ولكل جعلنا موالى مما ترك الوالدان والأقربون | ٣٣ | م « | ٤ |
| | إن امرؤ هلك ليس له ولد وله أخت فلها نصف ما ترك | ١٧٦ | م « | ٤ |
| | فإن كانتا اثنتين فلهما الثلثان مما ترك ... ... ... | ١٧٦ | م « | ٤ |
| | ولو يؤاخذ الله الناس بظلمهم ما ترك عليها من دابة | ٦١ | ك النحل | ١٦ |
| | ولو يؤاخذ الله الناس بما كسبوا ما ترك على ظهرها من دابة | ٤٥ | ك فاطر | ٣٥ |
| تَرَكْتُ: | إنى تركت ملة قوم لا يؤمنون بالله وهم بالآخرة هم كافرون | ٣٧ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | لعلى أعمل صالحا فيما تركت ... ... ... ... ... | ١٠٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَرَكْتُمْ | ولهن الربع مما تركتم إن لم يكن لكم ولد ... ... ... | ١٢ | م النساء | ٤ |
| (٣) | فإن كان لكم ولد فلهن الثمن مما تركتم ... ... ... | ١٢ | م « | ٤ |
| | وتركتم ما خولناكم وراء ظهوركم ... ... ... ... | ٩٤ | ك الأنعام | ٦ |
| تَرَكْتُمُوهَا | ما قطعتم من لينة أو تركتموها قائمة على أصولها فبإذن الله ... ... ... ... ... | ٥ | م الحشر | ٥٩ |
| تَرَكْنَ | فإن كان لهن ولد فلكم الربع مما تركن ... ... ... | ١٢ | م النساء | ٤ |
| تَرَكْنَا | إنا ذهبنا نستبق وتركنا يوسف عند متاعنا فأكله الذئب | ١٧ | ك يوسف | ١٢ |
| (٨) | وتركنا بعضهم يومئذ يموج في بعض ... ... ... ... | ٩٩ | م الكهف | ١٨ |
| | ولقد تركنا منها آية بينة لقوم يعقلون ... ... ... | ٣٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وتركنا عليه في الآخرين . سلام على نوح في العالمين | ٧٨ | ك الصافات | ٣٧ |
| | وتركنا عليه في الآخرين . سلام على إبراهيم | ١٠٨ | ك « | ٣٧ |
| | وتركنا عليهما في الآخرين . سلام على موسى وهرون | ١١٩ | ك « | ٣٧ |
| | وتركنا عليه في الآخرين . سلام على إل ياسين | ١٢٩ | ك « | ٣٧ |
| | وتركنا فيها آية للذين يخافون العذاب الأليم ... ... | ٣٧ | ك الذاريات | ٥١ |
| تَرَكْنَاهَا | ولقد تركناها آية فهل من مدكر ... ... ... ... | ١٥ | ك القمر | ٥٤ |
| فَتَرَكَهُ | فمثله كمثل صفوان عليه تراب فأصابه وابل فتركه صلدا | ٢٦٤ | م البقرة | ٢ |
| وَتَرَكَهُمْ | ذهب الله بنورهم وتركهم في ظلمات لا يبصرون | ١٧ | م « | ٢ |
| تَرَكُوا | وليخش الذين لو تركوا من خلفهم ذرية ضعافا | ٩ | م النساء | ٤ |
| (٢) | كم تركوا من جنات وعيون ... ... ... ... | ٢٥ | ك الدخان | ٤٤ |
| وَتَرَكُوكَ | وإذا رأوا تجارة أو لهوا انفضوا إليها وتركوك قائما | ١١ | م الجمعة | ٦٢ |
| تَتْرُكْهُ | فمثله كمثل الكلب إن تحمل عليه يلهث أو تتركه يلهث | ١٧٦ | ك الأعراف | ٧ |
| نَتْرُكَ | قالوا يا شعيب أصلاتك تأمرك أن نترك ما يعبد آباؤنا | ٨٧ | ك هود | ١١ |
| وَاتْرُكِ | واترك البحر رهوا إنهم جند مغرقون ... ... ... | ٢٤ | ك الدخان | ٤٤ |
| تُتْرَكُوا | أم حسبتم أن تتركوا ولما يعلم الله الذين جاهدوا منكم | ١٦ | م التوبة | ٩ |
| أَتُتْرَكُونَ | أتتركون فيما ههنا آمنين ... ... ... ... | ١٤٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| يُتْرَكَ | أيحسب الإنسان أن يترك سدى ... ... ... ... | ٣٦ | ك القيامة | ٧٥ |
| يُتْرَكُوا | أحسب الناس أن يتركوا أن يقولوا آمنا وهم لا يفتنون | ٢ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| تَارِكٌ | فلعلك تارك بعض ما يوحى إليك وضائق به صدرك | ١٢ | م هود | ١١ |
| لَتَارِكُوا | ويقولون أئنا لتاركوا آلهتنا لشاعر مجنون | ٣٦ | ك الصافات | ٣٧ |
| بِتَارِكِي | ما جئتنا ببينة وما نحن بتاركي آلهتنا عن قولك | ٥٣ | ك هود | ١١ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تِسْعٌ | ولقد آتينا موسى تسع آيات بينات... ... ... ... | ١٠١ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٣) | وأدخل يدك في جيبك تخرج بيضاء من غير سوء في تسع آيات إلى فرعون وقومه... ... ... ... | ١٢ | ك النمل | ٢٧ |
| | إن هذا أخي له تسع وتسعون نعجة ولي نعجة واحدة | ٢٣ | ك ص | ٣٨ |
| تِسْعًا | ولبثوا في كهفهم ثلاث مائة سنين وازدادوا تسعا | ٢٥ | ك الكهف | ١٨ |
| تِسْعَةُ | وكان في المدينة تسعة رهط يفسدون في الأرض | ٤٨ | ك النمل | ٢٧ |
| (٢) | لواحة للبشر . عليها تسعة عشر ... ... ... ... | ٣٠ | ك المدثر | ٧٤ |
| تِسْعُونَ | إن هذا أخي له تسع وتسعون نعجة ولي نعجة واحدة | ٢٣ | ك ص | ٣٨ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| فَتَعْسًا | والذين كفروا فتعسا لهم وأضل أعمالهم ... ... | ٨ | م محمد | ٤٧ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَفَثَهُمْ | ثم ليقضوا تفثهم وليوفوا نذورهم وليطوفوا بالبيت العتيق | ٢٩ | م الحج | ٢٢ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَتْقَنَ | صنع الله الذي أتقن كل شيء إنه خبير بما تفعلون | ٨٨ | ك النمل | ٢٧ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تِلْكَ | تلك أمانيهم قل هاتوا برهانكم إن كنتم صادقين | ١١١ | م البقرة | ٢ |
| (٤١) | تلك أمة قد خلت لها ما كسبت ولكم ما كسبتم | ١٣٤ | م « | ٢ |
| | تلك أمة قد خلت لها ما كسبت ولكم ما كسبتم | ١٤١ | م « | ٢ |
| | ولا تباشروهن وأنتم عاكفون في المساجد تلك حدود الله | ١٨٧ | م « | ٢ |
| | تلك عشرة كاملة ... ... ... ... ... ... | ١٩٦ | م « | ٢ |
| | تلك حدود الله فلا تعتدوها ... ... ... ... | ٢٢٩ | م « | ٢ |
| | وتلك حدود الله يبينها لقوم يعلمون... ... ... ... | ٢٣٠ | م « | ٢ |
| | تلك آيات الله نتلوها عليك بالحق وإنك لمن المرسلين | ٢٥٢ | م « | ٢ |
| | تلك الرسل فضلنا بعضهم على بعض... ... ... ... | ٢٥٣ | م « | ٢ |
| | تلك آيات الله نتلوها عليك بالحق وما الله يريد ظلما للعالمين | ١٠٨ | م آل عمران | ٣ |
| | وتلك الأيام نداولها بين الناس... ... ... ... ... | ١٤٠ | م « | ٣ |
| | تلك حدود الله ومن يطع الله ورسوله يدخله جنات | ١٣ | م النساء | ٤ |
| | وتلك حجتنا آتيناها إبراهيم على قومه ... ... ... | ٨٣ | ك الأنعام | ٦ |
| | تلك القرى نقص عليك من أنبائها ... ... ... ... | ١٠١ | ك الأعراف | ٧ |
| | الر تلك آيات الكتاب الحكيم ... ... ... ... | ١ | ك يونس | ١٠ |
| | تلك من أنباء الغيب نوحيها إليك ... ... ... ... | ٤٩ | ك هود | ١١ |
| | وتلك عاد جحدوا بآيات ربهم وعصوا رسله ... ... | ٥٩ | ك « | ١١ |
| | الر تلك آيات الكتاب المبين ... ... ... ... | ١ | م يوسف | ١٢ |
| | المر تلك آيات الكتاب ... ... ... ... ... | ١ | م الرعد | ١٣ |
| | تلك عقبى الذين اتقوا وعقبى الكافرين النار... ... | ٣٥ | م « | ١٣ |
| | الر تلك آيات الكتاب وقرآن مبين ... ... ... | ١ | ك الحجر | ١٥ |
| | وتلك القرى أهلكناهم لما ظلموا وجعلنا لمهلكهم موعدا | ٥٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | تلك الجنة التي نورث من عبادنا من كان تقيا... ... | ٦٣ | ك مريم | ١٩ |
| | وما تلك بيمينك يا موسى ... ... ... ... ... | ١٧ | ك طه | ٢٠ |
| | فما زالت تلك دعواهم حتى جعلناهم حصيدا خامدين | ١٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | تلك آيات الكتاب المبين ... ... ... ... ... | ٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وتلك نعمة تمنها علي أن عبدت بني إسرائيل... ... | ٢٢ | ك « | ٢٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تِلْكَ | : طس تلك آيات القرآن وكتاب مبين ..... ... | ١ | ك النمل | ٢٧ |
| | فتلك بيوتهم خاوية بما ظلموا ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك « | ٢٧ |
| | تلك آيات الكتاب المبين ... ... ... ... ... ... | ٢ | ك القصص | ٢٨ |
| | فتلك مساكنهم لم تسكن من بعدهم إلا قليلا ... ... | ٥٨ | ك « | ٢٨ |
| | تلك الدار الآخرة نجعلها للذين لا يريدون علوا فى الأرض | ٨٣ | ك « | ٢٨ |
| | وتلك الأمثال نضربها للناس وما يعقلها إلا العالمون | ٤٣ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | تلك آيات الكتاب الحكيم ... ... ... ... ... ... | ٢ | ك لقمان | ٣١ |
| | وتلك الجنة التى أورثتموها بما كنتم تعملون ... ... | ٧٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | تلك آيات الله نتلوها عليك بالحق ... ... ... ... | ٦ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | تلك إذا قسمة ضيزى ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك النجم | ٥٣ |
| | وتلك حدود الله وللكافرين عذاب أليم... ... ... | ٤ | م المجادلة | ٥٨ |
| | وتلك الأمثال نضربها للناس لعلهم يتفكرون ... ... | ٢٢ | م الحشر | ٥٩ |
| | وتلك حدود الله ومن يتعد حدود الله فقد ظلم نفسه | ١ | م الطلاق | ٦٥ |
| | قالوا تلك إذا كرة خاسرة... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك النازعات | ٧٩ |
| تِلْكُمَا | : وناداهما ربهما ألم أنهكما عن تلكما الشجرة | ٢٢ | ك الأعراف | ٧ |
| تِلْكُمُ | : ونودوا أن تلكم الجنة أورثتموها بما كنتم تعملون | ٤٣ | ك « | ٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| وَتَلَّهُ | : فلما أسلما وتله للجبين ... ... ... ... ... ... | ١٠٣ | ك الصافات | ٣٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تَلَاهَا | : والشمس وضحاها . والقمر إذا تلاها ... ... | ٢ | ك الشمس | ٩١ |
| تَلَوْتُهُ | : قل لو شاء الله ما تلوته عليكم ولا أدراكم به | ١٦ | ك يونس | ١٠ |
| أَتْلُ | : قل تعالوا أتل ما حرم ربكم عليكم ... ... ... | ١٥١ | م الأنعام | ٦ |
| أَتْلُوا | : ويسئلونك عن ذى القرنين قل سأتلوا عليكم منه ذكرا | ٨٣ | م الكهف | ١٨ |
| (٢) | وأن أتلوا القرآن فمن اهتدى فإنما يهتدى لنفسه | ٩٢ | ك النمل | ٢٧ |
| نَتْلُوا | : واتبعوا ما تتلوا الشياطين على ملك سليمان... ... | ١٠٢ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | وما تكون فى شأن وما تتلوا منه من قرآن ولا تعملون | | | |
| | من عمل إلا كنا عليكم شهودا ... ... ... ... | ٦١ | ك يونس | ١٠ |
| | كذلك أرسلناك فى أمة قد خلت من قبلها أمم لتتلوا عليهم | ٣٠ | م الرعد | ١٣ |
| | وما كنت ثاويا فى أهل مدين تتلوا عليهم آياتنا | ٤٥ | ك القصص | ٢٨ |
| | وما كنت تتلوا من قبله من كتاب ولا تخطه بيمينك | ٤٨ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| نَتْلُونَ | : أتأمرون الناس بالبر وتنسون أنفسكم وأنتم | | | |
| | تتلون الكتاب ... ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | م البقرة | ٢ |
| نَتْلُوا | : نتلوا عليك من نبإ موسى وفرعون بالحق لقوم يؤمنون | ٣ | ك القصص | ٢٨ |
| نَتْلُوهُ | : ذلك نتلوه عليك من الآيات والذكر الحكيم | ٥٨ | م آل عمران | ٣ |
| نَتْلُوهَا | : تلك آيات الله نتلوها عليك بالحق وإنك لمن المرسلين | ٢٥٢ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | تلك آيات الله نتلوها عليك بالحق ... ... ... ... | ١٠٨ | م آل عمران | ٣ |
| | تلك آيات الله نتلوها عليك بالحق ... ... ... ... | ٦ | ك الجاثية | ٤٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَتْلُوا | : ربنا وابعث فيهم رسولا منهم يتلوا عليهم آياتك | ١٢٩ | م البقرة | ٢ |
| (٧) | كما أرسلنا فيكم رسولا منكم يتلوا عليكم آياتنا ... ... | ١٥١ | م « | ٢ |
| | إذ بعث فيهم رسولا من أنفسهم يتلوا عليهم آياته | ١٦٤ | م آل عمران | ٣ |
| | وما كان ربك مهلك القرى حتى يبعث فى أمها | | | |
| | رسولا يتلوا عليهم آياتنا ... ... ... ... ... | ٥٩ | ك القصص | ٢٨ |
| | هو الذى بعث فى الأميين رسولا منهم يتلوا عليهم آياته | ٢ | م الجمعة | ٦٢ |
| | رسولا يتلوا عليكم آيات الله مبينات ... ... ... | ١١ | م الطلاق | ٦٥ |
| | رسول من الله يتلوا صحفا مطهرة ... ... ... ... | ٢ | م البينة | ٩٨ |
| يَتْلُونَ | : وقالت النصارى ليست اليهود على شىء وهم يتلون | | | |
| (٥) | الكتاب ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ١١٣ | م البقرة | ٢ |
| | من أهل الكتاب أمة قائمة يتلون آيات الله ... ... | ١١٣ | م آل عمران | ٣ |
| | يكادون يسطون بالذين يتلون عليهم آياتنا ... ... | ٧٢ | م الحج | ٢٢ |
| | إن الذين يتلون كتاب الله وأقاموا الصلاة وأنفقوا | | | |
| | مما رزقناهم سرا وعلانية يرجون تجارة لن تبور | ٢٩ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ألم يأتكم رسل منكم يتلون عليكم آيات ربكم ... ... | ٧١ | ك الزمر | ٣٩ |
| يَتْلُونَهُ | : الذين آتيناهم الكتاب يتلونه حق تلاوته ... ... | ١٢١ | م البقرة | ٢ |
| يَتْلُوهُ | : أفمن كان على بينة من ربه ويتلوه شاهد منه | ١٧ | م هود | ١١ |
| اتْلُ | : واتل عليهم نبأ ابنى آدم بالحق ... ... ... ... | ٢٧ | م المائدة | ٥ |
| (٦) | واتل عليهم نبأ الذى آتيناه آياتنا فانسلخ منها ... ... | ١٧٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | واتل عليهم نبأ نوح ... ... ... ... ... ... ... | ٧١ | ك يونس | ١٠ |
| | واتل ما أوحى إليك من كتاب ربك ... ... ... ... | ٢٧ | ك الكهف | ١٨ |
| | واتل عليهم نبأ إبراهيم ... ... ... ... ... ... | ٦٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | اتل ما أوحى إليك من الكتاب وأقم الصلاة ... ... | ٤٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| فَاتْلُوهَا | : قل فأتوا بالتوراة فاتلوها إن كنتم صادقين | ٩٣ | م آل عمران | ٣ |
| تُلِيَتْ | : وإذا تليت عليهم آياته زادتهم إيمانا ... ... | ٢ | م الأنفال | ٨ |
| تُتْلَى | : وكيف تكفرون وأنتم تتلى عليكم آيات الله وفيكم رسوله | ١٠١ | م آل عمران | ٣ |
| (١٦) | وإذا تتلى عليهم آياتنا قالوا قد سمعنا لو نشاء لقلنا | | | |
| | مثل هذا ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك الأنفال | ٨ |
| | وإذا تتلى عليهم آياتنا بينات قال الذين لا يرجون | | | |
| | لقاءنا ائت بقرآن غير هذا ... ... ... ... ... | ١٥ | ك يونس | ١٠ |
| | إذا تتلى عليهم آيات الرحمن خروا سجدا وبكيا | ٥٨ | م مريم | ١٩ |
| | وإذا تتلى عليهم آياتنا بينات قال الذين كفروا للذين | | | |
| | آمنوا أى الفريقين خير مقاما ... ... ... ... | ٧٣ | ك « | ١٩ |
| | وإذا تتلى عليهم آياتنا بينات تعرف فى وجوه الذين | | | |
| | كفروا المنكر ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٢ | م الحج | ٢٢ |
| | قد كانت آياتى تتلى عليكم فكنتم على أعقابكم تنكصون | ٦٦ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ألم تكن آياتى تتلى عليكم فكنتم بها تكذبون ... ... | ١٠٥ | ك « | ٢٣ |
| | وإذا تتلى عليه آياتنا ولى مستكبرا كأن لم يسمعها | ٧ | ك لقمان | ٣١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تُتْلَى : | وإذا تتلى عليهم آياتنا بيّنات قالوا ماهذا إلا رجل يريد أن يصدّكم ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك سبإ | ٣٤ |
| | يسمع آيات الله تتلى عليه ثم يصرّ مستكبرا كأن لم يسمعها | ٨ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | وإذا تتلى عليهم آياتنا بيّنات ما كان حجتهم إلا أن قالوا ائتوا بآبائنا ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك « | ٤٥ |
| | أفلم تكن آياتي تتلى عليكم فاستكبرتم وكنتم قوما مجرمين | ٣١ | ك « | ٤٥ |
| | وإذا تتلى عليهم آياتنا بيّنات قال الذين كفروا للحق لما جاءهم هذا سحر مبين... ... .. ... ... ... | ٧ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | إذا تتلى عليه آياتنا قال أساطير الأولين ... ... ... | ١٥ | ك القلم | ٦٨ |
| | إذا تتلى عليه آياتنا قال أساطير الأولين ... ... ... | ١٣ | ك المطففين | ٨٣ |
| يُتْلَى : (٧) | قل الله يفتيكم فيهن وما يتلى عليكم في الكتاب في يتامى النساء... ... ... ... ... ... ... ... | ١٢٧ | م النساء | ٤ |
| | أحلّت لكم بهيمة الأنعام إلا ما يتلى عليكم ... ... | ١ | م المائدة | ٥ |
| | إن الذين أوتوا العلم من قبله إذا يتلى عليهم يخرّون للأذقان سجدا... ... ... ... ... ... ... | ١٠٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وأحلّت لكم الأنعام إلا ما يتلى عليكم ... ... ... | ٣٠ | م الحج | ٢٢ |
| | وإذا يتلى عليهم قالوا آمنا به إنه الحق من ربنا ... | ٥٣ | م القصص | ٢٨ |
| | أولم يكفهم أنا أنزلنا عليك الكتاب يتلى عليهم | ٥١ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | واذكرن ما يتلى في بيوتكن من آيات الله والحكمة | ٣٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| فَالتَّالِيَاتِ : | فالتاليات ذكرا . إن إلهكم لواحد ... ... | ٣ | ك الصافات | ٣٧ |
| تِلَاوَتِهِ : | الذين آتيناهم الكتاب يتلونه حق تلاوته... ... | ١٢١ | م البقرة | ٢ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَمَّ : | فتم ميقات ربه أربعين ليلة ... ... ... ... ... | ١٤٢ | ك الأعراف | ٧ |
| تَمَّتْ : | وتمت كلمة ربّك صدقا وعدلا ... ... ... ... | ١١٥ | ك الأنعام | ٦ |
| (٣) | وتمت كلمة ربّك الحسنى على بني إسرائيل بما صبروا | ١٣٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | وتمت كلمة ربّك لأملأن جهنم من الجنة والناس أجمعين | ١١٩ | ك هود | ١١ |
| أَتْمَمْتُ : | اليوم أكملت لكم دينكم وأتممت عليكم نعمتي | ٣ | م المائدة | ٥ |
| أَتْمَمْتَ : | فإن أتممت عشرا فمن عندك ... ... ... ... | ٢٧ | ك القصص | ٢٨ |
| أَتْمَمْنَاهَا : | وواعدنا موسى ثلاثين ليلة وأتممناها بعشر | ١٤٢ | ك الأعراف | ٧ |
| أَتَمَّهَا : | ويتم نعمته عليك وعلى آل يعقوب كما أتمها على أبويك من قبل ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك يوسف | ١٢ |
| فَأَتَمَّهُنَّ : | وإذ ابتلى إبراهيم ربّه بكلمات فأتمهنّ ... ... | ١٢٤ | م البقرة | ٢ |
| وَلِأُتِمَّ : | ولأتم نعمتي عليكم ولعلكم تهتدون ... ... ... | ١٥٠ | م « | ٢ |
| يُتِمَّ : (٦) | والوالدات يرضعن أولادهنّ حولين كاملين لمن أراد أن يتم الرضاعة ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣٣ | م « | ٢ |
| | ولكن يريد ليطهركم وليتم نعمته عليكم ولعلكم تشكرون | ٦ | م المائدة | ٥ |
| | ويأبى الله إلا أن يتم نوره ولو كره الكافرون..... | ٣٢ | م التوبة | ٩ |
| يُتِمُّ : | ويتم نعمته عليك وعلى آل يعقوب كما أتمها على أبويك من قبل ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | كذلك يتم نعمته عليكم لعلكم تسلمون ... ... ... | ٨١ | ك النحل | ١٦ |
| | ويتم نعمته عليك ويهديك صراطا مستقيما ... ... | ٢ | م الفتح | ٤٨ |
| أَتْمِمْ : | يقولون ربّنا أتمم لنا نورنا واغفر لنا إنك على كل شيء قدير | ٨ | م التحريم | ٦٦ |
| أَتِمُّوا : (٣) | ثم أتموا الصيام إلى الليل ... ... ... ... ... | ١٨٧ | م البقرة | ٢ |
| | وأتموا الحج والعمرة لله ... ... ... ... ... ... | ١٩٦ | م « | ٢ |
| | فأتموا إليهم عهدهم إلى مدتهم إن الله يحب المتقين | ٤ | م التوبة | ٩ |
| تَمَامًا : | ثم آتينا موسى الكتاب تماما على الذي أحسن وتفصيلا لكل شيء... ... ... ... ... ... ... | ١٥٤ | ك الأنعام | ٦ |
| مُتِمُّ : | يريدون ليطفئوا نور الله بأفواههم والله متم نوره ولو كره الكافرون ... ... ... ... ... ... ... | ٨ | م الصف | ٦١ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| التَّنُّورُ : (٢) | حتى إذا جاء أمرنا وفار التنور قلنا احمل فيها من كلٍّ زوجين اثنين ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك هود | ١١ |
| | فإذا جاء أمرنا وفار التنور فاسلك فيها من كلٍّ زوجين اثنين | ٢٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَابَ : (١٨) | فتلقى آدم من ربه كلمات فتاب عليه إنه هو التواب الرحيم | ٣٧ | م البقرة | ٢ |
| | ذلكم خير لكم عند بارئكم فتاب عليكم إنه هو التواب الرحيم | ٥٤ | م « | ٢ |
| | علم الله أنكم كنتم تختانون أنفسكم فتاب عليكم وعفا عنكم | ١٨٧ | م « | ٢ |
| | فمن تاب من بعد ظلمه وأصلح فإن الله يتوب عليه | ٣٩ | م المائدة | ٥ |
| | وحسبوا ألا تكون فتنة فعموا وصموا ثم تاب الله عليهم | ٧١ | م « | ٥ |
| | أنه من عمل منكم سوءا بجهالة ثم تاب من بعده وأصلح فأنه غفور رحيم ... ... ... ... ... | ٥٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | لقد تاب الله على النبيّ والمهاجرين والأنصار الذين اتبعوه في ساعة العسرة ... ... ... ... ... | ١١٧ | م التوبة | ٩ |
| | من بعد ما كاد يزيغ قلوب فريق منهم ثم تاب عليهم إنه بهم رءوف رحيم ... ... ... ... | ١١٧ | م « | ٩ |
| | ثم تاب عليهم ليتوبوا إن الله هو التوّاب الرحيم | ١١٨ | م « | ٩ |
| | فاستقم كما أمرت ومن تاب معك ولا تطغوا... ... | ١١٢ | ك هود | ١١ |
| | إلا من تاب وآمن وعمل صالحا فأولئك يدخلون الجنة ولا يظلمون شيئا ... ... ... ... ... | ٦٠ | ك مريم | ١٩ |
| | وإني لغفار لمن تاب وآمن وعمل صالحا ثم اهتدى | ٨٢ | ك طه | ٢٠ |
| | ثم اجتباه ربه فتاب عليه وهدى ... ... ... ... | ١٢٢ | ك « | ٢٠ |
| | إلا من تاب وآمن وعمل عملا صالحا فأولئك يبدّل الله سيئاتهم حسنات ... ... ... ... ... ... | ٧٠ | م الفرقان | ٢٥ |
| | ومن تاب وعمل صالحا فإنه يتوب إلى الله متابا | ٧١ | ك « | ٢٥ |
| | فأما من تاب وآمن وعمل صالحا فعسى أن يكون من المفلحين ... ... ... ... ... ... ... | ٦٧ | ك القصص | ٢٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَابَ | : فإذا لم تفعلوا وتاب الله عليكم فأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة | ١٣ | م المجادلة | ٥٨ |
| | علم أن لن تحصوه فتاب عليكم ... ... ... ... ... | ٢٠ | م المزمل | ٧٣ |
| تَابَا | : فإن تابا وأصلحا فأعرضوا عنهما إن الله كان توابا رحيما | ١٦ | م النساء | ٤ |
| تَابُوا | : إلا الذين تابوا وأصلحوا وبينوا فأولئك أتوب عليهم | ١٦٠م | البقرة | ٢ |
| (٨٠) | إلا الذين تابوا من بعد ذلك وأصلحوا فإن الله غفور رحيم | ٨٩ | م آل عمران | ٣ |
| | إلا الذين تابوا وأصلحوا واعتصموا بالله | | | |
| | وأخلصوا دينهم لله فأولئك مع المؤمنين ... ... | ١٤٦م | النساء | ٤ |
| | إلا الذين تابوا من قبل أن تقدروا عليهم فاعلموا | | | |
| | أن الله غفور رحيم... ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | م المائدة | ٥ |
| | والذين عملوا السيئات ثم تابوا من بعدها وآمنوا | | | |
| | إن ربك من بعدها لغفور رحيم ... ... ... ... | ١٥٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | فإن تابوا وأقاموا الصلاة وآتوا الزكاة فخلوا سبيلهم | ٥ | م التوبة | ٩ |
| | فإن تابوا وأقاموا الصلاة وآتوا الزكاة فإخوانكم في الدين | ١١ | م « | ٩ |
| | ثم إن ربك للذين عملوا السوء بجهالة ثم تابوا من | | | |
| | بعد ذلك وأصلحوا ... ... ... ... ... ... ... | ١١٩ | ك النحل | ١٦ |
| | إلا الذين تابوا من بعد ذلك وأصلحوا فإن الله غفور رحيم | ٥ | م النور | ٢٤ |
| | فاغفر للذين تابوا واتبعوا سبيلك وقهم عذاب الجحيم | ٧ | ك غافر | ٤٠ |
| تُبْتُ | : حتى إذا حضر أحدهم الموت قال إني تبت الآن | ١٨ | م النساء | ٤ |
| (٣) | فلما أفاق قال سبحانك تبت إليك وأنا أول المؤمنين | ١٤٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | إني تبت إليك وإني من المسلمين ... ... ... ... | ١٥ | م الأحقاف | ٤٦ |
| تُبْتُمْ | : وإن تبتم فلكم رءوس أموالكم لا تظلمون ولا تظلمون | ٢٧٩م | البقرة | ٢ |
| (٢) | فإن تبتم فهو خير لكم ... ... ... ... ... ... | ٣ | م التوبة | ٩ |
| أَتُوبُ | : إلا الذين تابوا وأصلحوا وبينوا فأولئك أتوب عليهم | ١٦٠م | البقرة | ٢ |
| تُتُوبَا | : إن تتوبا إلى الله فقد صغت قلوبكما ... ... ... | ٤ | م التحريم | ٦٦ |
| يَتُبْ | : ومن لم يتب فأولئك هم الظالمون ... ... ... ... | ١١ | م الحجرات | ٤٩ |
| يَتُوبَ | : ليس لك من الأمر شيء أو يتوب عليهم أو يعذبهم | ١٢٨م | آل عمران | ٣ |
| (١٢) | ثم يتوبون من قريب فأولئك يتوب الله عليهم | ١٧ | م النساء | ٤ |
| | يريد الله ليبين لكم ويهديكم سنن الذين من قبلكم | | | |
| | ويتوب عليكم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | م « | ٤ |
| | والله يريد أن يتوب عليكم... ... ... ... ... ... | ٢٧ | م « | ٤ |
| | فمن تاب من بعد ظلمه وأصلح فإن الله يتوب عليه | ٣٩ | م المائدة | ٥ |
| | ويذهب غيظ قلوبهم ويتوب الله على من يشاء | ١٥ | م التوبة | ٩ |
| | ثم يتوب الله من بعد ذلك على من يشاء ... ... | ٢٧ | م « | ٩ |
| | عسى الله أن يتوب عليهم إن الله غفور رحيم | ١٠٢م | « | ٩ |
| | وآخرون مرجون لأمر الله إما يعذبهم وإما يتوب عليهم | ١٠٦م | « | ٩ |
| | ومن تاب وعمل صالحا فإنه يتوب إلى الله متابا | ٧١ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ليجزي الله الصادقين بصدقهم ويعذب المنافقين | | | |
| | إن شاء أو يتوب عليهم ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | م الأحزاب | ٣٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَتُوبَ | : ويتوب الله على المؤمنين والمؤمنات ... ... | ٧٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| يَتُوبُوا | : فإن يتوبوا يك خيرا لهم ... ... ... ... ... | ٧٤ | م التوبة | ٩ |
| (٣) | ثم تاب عليهم ليتوبوا إن الله هو التواب الرحيم | ١١٨م | « | ٩ |
| | إن الذين فتنوا المؤمنين والمؤمنات ثم لم يتوبوا | | | |
| | فلهم عذاب جهنم ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك البروج | ٨٥ |
| يَتُوبُونَ | : إنما التوبة على الله للذين يعملون السوء بجهالة | | | |
| (٣) | ثم يتوبون من قريب ... ... ... ... ... ... | ١٧ | م النساء | ٤ |
| | أفلا يتوبون إلى الله ويستغفرونه والله غفور رحيم | ٧٤ | م المائدة | ٥ |
| | أولا يرون أنهم يفتنون في كل عام مرة أو مرتين | | | |
| | ثم لا يتوبون ولا هم يذكرون ... ... ... ... | ١٢٦م | التوبة | ٩ |
| تُبْ | : وأرنا مناسكنا وتب علينا إنك أنت التواب الرحيم | ١٢٨م | البقرة | ٢ |
| تُوبُوا | : فتوبوا إلى بارئكم فاقتلوا أنفسكم... ... ... | ٥٤ | م « | ٢ |
| (٧) | وأن استغفروا ربكم ثم توبوا إليه يمتعكم متاعا حسنا | ٣ | ك هود | ١١ |
| | ويا قوم استغفروا ربكم ثم توبوا إليه يرسل السماء | | | |
| | عليكم مدرارا ... ... ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك « | ١١ |
| | هو أنشأكم من الأرض واستعمركم فيها فاستغفروه | | | |
| | ثم توبوا إليه ... ... ... ... ... ... ... | ٦١ | ك « | ١١ |
| | واستغفروا ربكم ثم توبوا إليه إن ربي رحيم ودود | ٩٠ | ك « | ١١ |
| | وتوبوا إلى الله جميعا أيه المؤمنون لعلكم تفلحون | ٣١ | م النور | ٢٤ |
| | يا أيها الذين آمنوا توبوا إلى الله توبة نصوحا... | ٨ | م التحريم | ٦٦ |
| التَّوَّابُ | : غافر الذنب وقابل التوب شديد العقاب ذي الطول | ٣ | ك غافر | ٤٠ |
| تَوْبَةُ | : إنما التوبة على الله للذين يعملون السوء بجهالة | ١٧ | م النساء | ٤ |
| (٦) | وليست التوبة للذين يعملون السيئات ... ... ... | ١٨ | م « | ٤ |
| | فمن لم يجد فصيام شهرين متتابعين توبة من الله | ٩٢ | م « | ٤ |
| | ألم يعلموا أن الله هو يقبل التوبة عن عباده | | | |
| | ويأخذ الصدقات ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٤م | التوبة | ٩ |
| | وهو الذي يقبل التوبة عن عباده ويعفوا عن السيئات | ٢٥ | م الشورى | ٤٢ |
| | يا أيها الذين آمنوا توبوا إلى الله توبة نصوحا... | ٨ | م التحريم | ٦٦ |
| تَوْبَتُهُمْ | : إن الذين كفروا بعد إيمانهم ثم ازدادوا كفرا | | | |
| | لن تقبل توبتهم ... ... ... ... ... ... ... | ٩٠ | م آل عمران | ٣ |
| تَائِبَاتٍ | : عسى ربه إن طلقكن أن يبدله أزواجا خيرا | | | |
| | منكن مسلمات مؤمنات قانتات تائبات ... ... | ٥ | م التحريم | ٦٦ |
| التَّائِبُونَ | : التائبون العابدون الحامدون السائحون الراكعون | | | |
| | الساجدون... ... ... ... ... ... ... ... | ١١٢م | التوبة | ٩ |
| تَوَّابٌ | : فتلقى آدم من ربه كلمات فتاب عليه إنه هو التواب الرحيم | ٣٧ | م البقرة | ٢ |
| (٨) | ذلكم خير لكم عند بارئكم فتاب عليكم إنه هو التواب الرحيم | ٥٤ | م « | ٢ |
| | وأرنا مناسكنا وتب علينا إنك أنت التواب الرحيم | ١٢٨م | « | ٢ |
| | إلا الذين تابوا وأصلحوا وبينوا فأولئك أتوب | | | |
| | عليهم وأنا التواب الرحيم ... ... ... ... ... | ١٦٠م | « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَوَّابٌ: | ألم يعلموا أن الله هو يقبل التوبة عن عباده ويأخذ الصدقات وأن الله هو التواب الرحيم ... ... | ١٠٤ | م التوبة | ٩ |
| | ثم تاب عليهم ليتوبوا إن الله هو التواب الرحيم | ١١٨ | م « | ٩ |
| | ولولا فضل الله عليكم ورحمته وأن الله تواب حكيم | ١٠ | م النور | ٢٤ |
| | واتقوا الله إن الله تواب رحيم ... ... ... ... | ١٢ | م الحجرات | ٤٩ |
| تَوَّاباً: | فإن تابا وأصلحا فأعرضوا عنهما إن الله كان توابا رحيما | ١٦ | م النساء | ٤ |
| (٣) | واستغفر لهم الرسول لوجدوا الله توابا رحيما ... ... | ٦٤ | م « | ٤ |
| | فسبح بحمد ربك واستغفره إنه كان توابا ... ... | ٣ | م النصر | ١١٠ |
| التَّوَّابِينَ: | إن الله يحب التوابين ويحب المتطهرين... ... | ٢٢٢ | م البقرة | ٢ |
| مَتَابِ: | قل هو ربي لا إله إلا هو عليه توكلت وإليه متاب | ٣٠ | م الرعد | ١٣ |
| مَتَاباً: | ومن تاب وعمل صالحا فإنه يتوب إلى الله متابا | ٧١ | ك الفرقان | ٢٥ |

***

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَارَةً: | أم أمنتم أن يعيدكم فيه تارة أخرى فيرسل عليكم | | | |
| (٢) | قاصفا من الريح ... ... ... ... ... ... ... | ٦٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| | منها خلقناكم وفيها نعيدكم ومنها نخرجكم تارة أخرى | ٥٥ | ك طه | ٢٠ |

***

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| التَّوْرَاةَ: | وأنزل التوراة والإنجيل ... ... ... ... ... | ٣ | م آل عمران | ٣ |
| (١٨) | ويعلمه الكتاب والحكمة والتوراة والإنجيل ... ... | ٤٨ | م « | ٣ |
| | ومصدقا لما بين يدي من التوراة ولأحل لكم بعض الذي حرم عليكم ... ... ... ... ... ... | ٥٠ | م « | ٣ |
| | يا أهل الكتاب لم تحاجون في إبراهيم وما أنزلت التوراة والإنجيل إلا من بعده ... ... ... ... | ٦٥ | م « | ٣ |
| التَّوْرَاةَ: | إلا ما حرم إسرائيل على نفسه من قبل أن تنزل التوراة | ٩٣ | م آل عمران | ٣ |
| | قل فأتوا بالتوراة فاتلوها إن كنتم صادقين ... ... | ٩٣ | م « | ٣ |
| | وكيف يحكمونك وعندهم التوراة فيها حكم الله | ٤٣ | م المائدة | ٥ |
| | إنا أنزلنا التوراة فيها هدى ونور ... ... ... ... | ٤٤ | م « | ٥ |
| | وقفينا على آثارهم بعيسى ابن مريم مصدقا لما بين يديه من التوراة ... ... ... ... ... ... | ٤٦ | م « | ٥ |
| | وآتيناه الإنجيل فيه هدى ونور ومصدقا لما بين يديه من التوراة ... ... ... ... ... ... | ٤٦ | م « | ٥ |
| | ولو أنهم أقاموا التوراة والإنجيل وما أنزل إليهم من ربهم لأكلوا من فوقهم ومن تحت أرجلهم | ٦٦ | م « | ٥ |
| | قل يا أهل الكتاب لستم على شيء حتى تقيموا التوراة والإنجيل ... ... ... ... ... ... | ٦٨ | م « | ٥ |
| | وإذ علمتك الكتاب والحكمة والتوراة والإنجيل | ١١٠ | م « | ٥ |
| | الذي يجدونه مكتوبا عندهم في التوراة والإنجيل | ١٥٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | وعدا عليه حقا في التوراة والإنجيل والقرآن ... ... | ١١١ | م التوبة | ٩ |
| | ذلك مثلهم في التوراة ... ... ... ... ... ... | ٢٩ | م الفتح | ٤٨ |
| | إني رسول الله إليكم مصدقا لما بين يدي من التوراة | ٦ | م الصف | ٦١ |
| | مثل الذين حملوا التوراة ثم لم يحملوها كمثل الحمار يحمل أسفارا ... ... ... ... ... ... | ٥ | م الجمعة | ٦٢ |

***

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| التِّينِ: | والتين والزيتون . وطور سينين . وهذا البلد الأمين . لقد خلقنا الإنسان في أحسن تقويم ... ... | ١ | ك التين | ٩٥ |

***

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَتِيهُونَ: | يتيهون في الأرض فلا تأس على القوم الفاسقين | ٢٦ | م المائدة | ٥ |

# باب الثاء

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| فَاثْبُتُوا: | يا أيها الذين آمنوا إذا لقيتم فئة فاثبتوا ... ... | ٤٥ | م الأنفال | ٨ |
| ثَبَّتْنَاكَ: | ولولا أن ثبتناك لقد كدت تركن إليهم شيئا قليلا | ٧٤ | م الإسراء | ١٧ |
| نُثَبِّتُ: | وكلا نقص عليك من أنباء الرسل ما نثبت به فؤادك | ١٢٠ | ك هود | ١١ |
| (٢) | كذلك لنثبت به فؤادك ورتلناه ترتيلا ... ... ... | ٣٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| يُثَبِّتَ: | وليربط على قلوبكم ويثبت به الأقدام ... ... | ١١ | م الأنفال | ٨ |
| (٤) | يثبت الله الذين آمنوا بالقول الثابت في الحياة الدنيا وفي الآخرة ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | قل نزله روح القدس من ربك بالحق ليثبت الذين آمنوا | ١٠٢ | ك النحل | ١٦ |
| | يا أيها الذين آمنوا إن تنصروا الله ينصركم ويثبت أقدامكم | ٧ | م محمد | ٤٧ |
| ثَبِّتْ: | ربنا أفرغ علينا صبرا وثبت أقدامنا ... ... ... | ٢٥٠ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | ربنا اغفر لنا ذنوبنا وإسرافنا في أمرنا وثبت أقدامنا | ١٤٧ | م آل عمران | ٣ |
| فَثَبِّتُوا: | إذ يوحي ربك إلى الملائكة أني معكم فثبتوا الذين آمنوا | ١٢ | م الأنفال | ٨ |
| يُثْبِتُ: | يمحوا الله ما يشاء ويثبت وعنده أم الكتاب ... | ٣٩ | م الرعد | ١٣ |
| لِيُثْبِتُوكَ: | وإذ يمكر بك الذين كفروا ليثبتوك أو يقتلوك أو يخرجوك ... ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك الأنفال | ٨ |
| ثُبُوتِهَا: | ولا تتخذوا أيمانكم دخلا بينكم فتزل قدم بعد ثبوتها | ٩٤ | ك النحل | ١٦ |
| ثَابِتٌ: | كلمة طيبة كشجرة طيبة أصلها ثابت وفرعها في السماء | ٢٤ | ك إبراهيم | ١٤ |
| (٢) | يثبت الله الذين آمنوا بالقول الثابت في الحياة الدنيا وفي الآخرة ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك « | ١٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها الآية |
|---|---|---|---|
| تَثْبِيتًا | : ومثل الذين ينفقون أموالهم ابتغاء مرضاة الله | | |
| (٢) | وتثبيتا من أنفسهم كمثل جنة بربوة ... ... ... | ٢٦٥ م البقرة | ٢ |
| | ولو أنهم فعلوا ما يوعظون به لكان خيرا لهم وأشد تثبيتا | ٦٦ م النساء | ٤ |
| ✦✦ | | | |
| ثُبُورًا | : وإذا ألقوا منها مكانا ضيقا مقرنين دعوا هنالك ثبورا | ١٣ ك الفرقان | ٢٥ |
| (٤) | لا تدعوا اليوم ثبورا واحدا ... ... ... ... | ١٤ ك « | ٢٥ |
| | وادعوا ثبورا كثيرا ... ... ... ... ... | ١٤ ك « | ٢٥ |
| | فسوف يدعوا ثبورا ... ... ... ... ... | ١١ ك الانشقاق | ٨٤ |
| مَثْبُورًا | : وإني لأظنك يا فرعون مثبورا ... ... ... | ١٠٢ ك الإسراء | ١٧ |
| ✦✦ | | | |
| فَثَبَّطَهُمْ | : ولكن كره الله انبعاثهم فثبطهم ... ... ... | ٤٦ م التوبة | ٩ |
| ✦✦ | | | |
| ثُبَاتٍ | : يا أيها الذين آمنوا خذوا حذركم فانفروا ثبات | ٧١ م النساء | ٤ |
| ✦✦ | | | |
| ثَجَّاجًا | : وأنزلنا من المعصرات ماء ثجاجا ... ... ... | ١٤ ك النبأ | ٧٨ |
| ✦✦ | | | |
| أَثْخَنْتُمُوهُمْ | : حتى إذا أثخنتموهم فشدوا الوثاق ... ... | ٤ م محمد | ٤٧ |
| يُثْخِنَ | : ما كان لنبي أن يكون له أسرى حتى يثخن في الأرض | ٦٧ م الأنفال | ٨ |
| ✦✦ | | | |
| تَثْرِيبَ | : قال لا تثريب عليكم اليوم يغفر الله لكم... ... | ٩٢ ك يوسف | ١٢ |
| ✦✦ | | | |
| الثَّرَى | : له ما في السموات وما في الأرض وما بينهما | | |
| | وما تحت الثرى... ... ... ... ... ... | ٦ ك طه | ٢٠ |
| ✦✦ | | | |
| ثُعْبَانٌ | : فألقى عصاه فإذا هي ثعبان مبين ... ... ... | ١٠٧ ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | فألقى عصاه فإذا هي ثعبان مبين ... ... ... | ٣٢ ك الشعراء | ٢٦ |
| ✦✦ | | | |
| ثَاقِبٌ | : إلا من خطف الخطفة فأتبعه شهاب ثاقب ... | ١٠ ك الصافات | ٣٧ |
| (٢) | والسماء والطارق . وما أدراك ما الطارق . النجم الثاقب | ٣ ك الطارق | ٨٦ |
| ✦✦ | | | |
| ثَقِفْتُمُوهُمْ | : واقتلوهم حيث ثقفتموهم... ... ... ... | ١٩١ م البقرة | ٢ |
| (٢) | خذوهم واقتلوهم حيث ثقفتموهم ... ... ... | ٩١ م النساء | ٤ |
| تَثْقَفَنَّهُمْ | : فإما تثقفنهم في الحرب فشرد بهم من خلفهم | ٥٧ م الأنفال | ٨ |
| يَثْقَفُوكُمْ | : إن يثقفوكم يكونوا لكم أعداء... ... ... ... | ٢ م الممتحنة | ٦٠ |
| ثُقِفُوا | : ضربت عليهم الذلة أين ما ثقفوا إلا بحبل من الله | | |
| (٢) | وحبل من الناس ... ... ... ... ... ... | ١١٢ م آل عمران | ٣ |
| | ملعونين أينما ثقفوا أخذوا وقتلوا تقتيلا ... ... ... | ٦١ م الأحزاب | ٣٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها الآية |
|---|---|---|---|
| ✦✦ | | | |
| ثَقُلَتْ | : والوزن يومئذ الحق فمن ثقلت موازينه فأولئك | | |
| (٤) | هم المفلحون ... ... ... ... ... ... | ٨ ك الأعراف | ٧ |
| | ثقلت في السموات والأرض لا تأتيكم إلا بغتة ... | ١٨٧ ك « | ٧ |
| | فمن ثقلت موازينه فأولئك هم المفلحون... ... ... | ١٠٢ ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فأما من ثقلت موازينه . فهو في عيشة راضية... ... | ٦ ك القارعة | ١٠١ |
| أَثْقَلَتْ | : فلما أثقلت دعوا الله ربهما لئن آتيتنا صالحا | | |
| | لنكونن من الشاكرين ... ... ... ... ... | ١٨٩ ك الأعراف | ٧ |
| أَثَّاقَلْتُمْ | : ما لكم إذا قيل لكم انفروا في سبيل الله اثاقلتم إلى الأرض | ٣٨ م التوبة | ٩ |
| ثَقِيلًا | : إنا سنلقي عليك قولا ثقيلا ... ... ... ... | ٥ ك المزمل | ٧٣ |
| (٢) | إن هؤلاء يحبون العاجلة ويذرون وراءهم يوما ثقيلا | ٢٧ م الإنسان | ٧٦ |
| الثِّقَالَ | : هو الذي يريكم البرق خوفا وطمعا وينشئ السحاب الثقال | ١٢ م الرعد | ١٣ |
| ثِقَالًا | : حتى إذا أقلت سحابا ثقالا سقناه لبلد ميت... ... | ٥٧ ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | انفروا خفافا وثقالا وجاهدوا بأموالكم وأنفسكم | | |
| | في سبيل الله ... ... ... ... ... ... | ٤١ م التوبة | ٩ |
| مُثْقَلَةٌ | : وإن تدع مثقلة إلى حملها لا يحمل منه شيء ولو كان ذا قربى | ١٨ ك فاطر | ٣٥ |
| مُثْقَلُونَ | : أم تسئلهم أجرا فهم من مغرم مثقلون ... ... | ٤٠ ك الطور | ٥٢ |
| (٢) | أم تسئلهم أجرا فهم من مغرم مثقلون ... ... ... | ٤٦ ك القلم | ٦٨ |
| الثَّقَلَانِ | : سنفرغ لكم أيه الثقلان ... ... ... ... | ٣١ م الرحمن | ٥٥ |
| أَثْقَالًا | : وليحملن أثقالهم وأثقالا مع أثقالهم ... ... ... | ١٣ ك العنكبوت | ٢٩ |
| أَثْقَالَكُمْ | : وتحمل أثقالكم إلى بلد لم تكونوا بالغيه إلا بشق الأنفس | ٧ ك النحل | ١٦ |
| أَثْقَالَهَا | : وأخرجت الأرض أثقالها ... ... ... ... | ٢ م الزلزلة | ٩٩ |
| أَثْقَالِهِمْ | : وليحملن أثقالهم... ... ... ... ... ... | ١٣ ك العنكبوت | ٢٩ |
| (٢) | وأثقالا مع أثقالهم ... ... ... ... ... | ١٣ ك « | ٢٩ |
| مِثْقَالَ | : إن الله لا يظلم مثقال ذرة ... ... ... ... | ٤٠ م النساء | ٤ |
| (٨) | وما يعزب عن ربك من مثقال ذرة في الأرض ولا في السماء | ٦١ ك يونس | ١٠ |
| | وإن كان مثقال حبة من خردل أتينا بها وكفى بنا حاسبين | ٤٧ ك الأنبياء | ٢١ |
| | يا بني إنها إن تك مثقال حبة من خردل فتكن في صخرة | | |
| | أو في السموات أو في الأرض يأت بها الله | ١٦ ك لقمان | ٣١ |
| | لا يعزب عنه مثقال ذرة في السموات ولا في الأرض | ٣ ك سبأ | ٣٤ |
| | لا يملكون مثقال ذرة في السموات ولا في الأرض | ٢٢ ك « | ٣٤ |
| | فمن يعمل مثقال ذرة خيرا يره... ... ... ... | ٧ م الزلزلة | ٩٩ |
| | ومن يعمل مثقال ذرة شرا يره... ... ... ... | ٨ م « | ٩٩ |
| ✦✦ | | | |
| ثَلَاثَ | : ولبثوا في كهفهم ثلاث مائة سنين وازدادوا تسعا | ٢٥ ك الكهف | ١٨ |
| (٦) | قال آيتك ألا تكلم الناس ثلاث ليال سويا ... ... | ١٠ ك مريم | ١٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ثَلَاث | ليستأذنكم الذين ملكت أيمانكم والذين لم يبلغوا الحلم منكم ثلاث مرات ... ... ... ... ... | ٥٨ | م النور | ٢٤ |
| | ثلاث عورات لكم ليس عليكم ولا عليهم جناح بعدهن | ٥٨ | م « | ٢٤ |
| | يخلقكم في بطون أمهاتكم خلقا من بعد خلق في ظلمات ثلاث | ٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| | انطلقوا إلى ظلّ ذي ثلاث شعب ... ... ... ... | ٣٠ | ك المرسلات | ٧٧ |
| ثَلَاثُونَ | وحمله وفصاله ثلاثون شهرا ... ... ... ... ... | ١٥ | م الأحقاف | ٤٦ |
| ثَلَاثِينَ | وواعدنا موسى ثلاثين ليلة وأتممناها بعشر ... ... | ١٤٢ | ك الأعراف | ٧ |
| ثَلَاثَة | فمن لم يجد فصيام ثلاثة أيام في الحج وسبعة إذا رجعتم | ١٩٦ | م البقرة | ٢ |
| (١٣) | والمطلقات يتربصن بأنفسهن ثلاثة قروء ... ... ... | ٢٢٨ | م « | ٢ |
| | قال آيتك ألا تكلم الناس ثلاثة أيام إلا رمزا | ٤١ | م آل عمران | ٣ |
| | ألن يكفيكم أن يمدكم ربكم بثلاثة آلاف من الملائكة منزلين | ١٢٤ | م « | ٣ |
| | فآمنوا بالله ورسله ولا تقولوا ثلاثة انتهوا خيرا لكم | ١٧١ | م النساء | ٤ |
| | لقد كفر الذين قالوا إن الله ثالث ثلاثة ... ... | ٧٣ | م المائدة | ٥ |
| | فمن لم يجد فصيام ثلاثة أيام ذلك كفارة أيمانكم | ٨٩ | م « | ٥ |
| | وعلى الثلاثة الذين خلفوا ... ... ... ... ... | ١١٨ | م التوبة | ٩ |
| | فعقروها فقال تمتعوا في داركم ثلاثة أيام ... ... | ٦٥ | ك هود | ١١ |
| | سيقولون ثلاثة رابعهم كلبهم ..... ... ... ... | ٢٢ | ك الكهف | ١٨ |
| | وكنتم أزواجا ثلاثة ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | ما يكون من نجوى ثلاثة إلا هو رابعهم... ... ... | ٧ | م المجادلة | ٥٨ |
| | واللائي يئسن من المحيض من نسائكم إن ارتبتم فعدتهن ثلاثة أشهر... ... ... ... ... ... | ٤ | م الطلاق | ٦٥ |
| الثُّلُث | فإن لم يكن له ولد وورثه أبواه فلأمه الثلث... ... | ١١ | م النساء | ٤ |
| (٢) | فإن كانوا أكثر من ذلك فهم شركاء في الثلث... ... | ١٢ | م « | ٤ |
| ثُلُثَه | إن ربك يعلم أنك تقوم أدنى من ثلثي الليل ونصفه وثلثه | ٢٠ | م المزمل | ٧٣ |
| ثُلُثَا | فإن كن نساء فوق اثنتين فلهن ثلثا ما ترك ... ... | ١١ | م النساء | ٤ |
| الثُّلُثَان | فإن كانتا اثنتين فلهما الثلثان مما ترك ... ... | ١٧٦ | م « | ٤ |
| ثُلُثَي | إن ربك يعلم أنك تقوم أدنى من ثلثي الليل ونصفه وثلثه | ٢٠ | م المزمل | ٧٣ |
| ثَالِث | لقد كفر الذين قالوا إن الله ثالث ثلاثة ... ... | ٧٣ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | إذ أرسلنا إليهم اثنين فكذبوهما فعززنا بثالث ... ... | ١٤ | ك يس | ٣٦ |
| الثَّالِثَة | أفرأيتم اللات والعزى . ومناة الثالثة الأخرى | ٢٠ | ك النجم | ٥٣ |
| ثُلَاث | فانكحوا ما طاب لكم من النساء مثنى وثلاث ورباع | ٣ | م النساء | ٤ |
| (٢) | جاعل الملائكة رسلا أولي أجنحة مثنى وثلاث ورباع | ١ | ك فاطر | ٣٥ |
| ثُلَّة | ثلة من الأولين . وقليل من الآخرين ... ... ... | ١٣ | ك الواقعة | ٥٦ |
| (٣) | لأصحاب اليمين . ثلة من الأولين ... ... ... ... | ٣٩ | ك « | ٥٦ |
| | وثلة من الآخرين ... ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك « | ٥٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ثَمَّ | ولله المشرق والمغرب فأينما تولوا فثم وجه الله | ١١٥ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | وأزلفنا ثم الآخرين ... ... ... ... ... ... | ٦٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | إنه لقول رسول كريم . ذي قوة عند ذي العرش مكين . مطاع ثم أمين... ... ... ... ... | ٢١ | ك التكوير | ٨١ |
| ثَمُود | وإلى ثمود أخاهم صالحا قال يا قوم اعبدوا الله | ٧٣ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢٦) | ألم يأتهم نبأ الذين من قبلهم قوم نوح وعاد وثمود | ٧٠ | م التوبة | ٩ |
| | وإلى ثمود أخاهم صالحا قال يا قوم اعبدوا الله ما لكم من إله غيره ... ... ... ... ... ... | ٦١ | ك هود | ١١ |
| | كأن لم يغنوا فيها ألا إن ثمودا كفروا ربهم... ... | ٦٨ | ك « | ١١ |
| | ألا بعدا لثمود ... ... ... ... ... ... ... | ٦٨ | ك « | ١١ |
| | كأن لم يغنوا فيها ألا بعدا لمدين كما بعدت ثمود | ٩٥ | ك « | ١١ |
| | ألم يأتكم نبأ الذين من قبلكم قوم نوح وعاد وثمود | ٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وآتينا ثمود الناقة مبصرة فظلموا بها ... ... ... | ٥٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وإن يكذبوك فقد كذبت قبلهم قوم نوح وعاد وثمود | ٤٢ | م الحج | ٢٢ |
| | وعادا وثمودا وأصحاب الرس وقرونا بين ذلك كثيرا | ٣٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | كذبت ثمود المرسلين ... ... ... ... ... ... | ١٤١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | ولقد أرسلنا إلى ثمود أخاهم صالحا أن اعبدوا الله | ٤٥ | ك النمل | ٢٧ |
| | وعادا وثمودا وقد تبين لكم من مساكنهم ... ... | ٣٨ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وثمود وقوم لوط وأصحاب الأيكة أولئك الأحزاب | ١٣ | ك ص | ٣٨ |
| | مثل دأب قوم نوح وعاد وثمود والذين من بعدهم | ٣١ | ك غافر | ٤٠ |
| | فإن أعرضوا فقل أنذرتكم صاعقة مثل صاعقة عاد وثمود | ١٣ | ك فصلت | ٤١ |
| | وأما ثمود فهديناهم فاستحبوا العمى على الهدى | ١٧ | ك « | ٤١ |
| | كذبت قبلهم قوم نوح وأصحاب الرس وثمود... ... | ١٢ | ك ق | ٥٠ |
| | وفي ثمود إذ قيل لهم تمتعوا حتى حين ... ... ... | ٤٣ | ك الذاريات | ٥١ |
| | وأنه أهلك عادا الأولى . وثمودا فما أبقى... ... ... | ٥١ | ك النجم | ٥٣ |
| | كذبت ثمود بالنذر... ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك القمر | ٥٤ |
| | كذبت ثمود وعاد بالقارعة ... ... ... ... ... | ٤ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | فأما ثمود فأهلكوا بالطاغية... ... ... ... ... | ٥ | ك « | ٦٩ |
| | هل أتاك حديث الجنود . فرعون وثمود ... ... | ١٨ | ك البروج | ٨٥ |
| | وثمود الذين جابوا الصخر بالواد... ... ... ... | ٩ | ك الفجر | ٨٩ |
| | كذبت ثمود بطغواها ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك الشمس | ٩١ |
| أَثْمَرَ | انظروا إلى ثمره إذا أثمر وينعه... ... ... ... ... | ٩٩ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | كلوا من ثمره إذا أثمر وآتوا حقه يوم حصاده | ١٤١ | م « | ٦ |
| ثَمَر | وكان له ثمر ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك الكهف | ١٨ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ثَمَرِهِ: | أنظروا إلى ثمره إذا أثمر وينعه ... ... ... ... | ٩٩ | ك الأنعام | ٦ |
| (٤) | كلوا من ثمره إذا أثمر وآتوا حقه يوم حصاده | ١٤١م | « | ٦ |
| | وأحيط بثمره فأصبح يقلب كفيه على ما أنفق فيها | ٤٢ | ك الكهف | ١٨ |
| | ليأكلوا من ثمره وما عملته أيديهم أفلا يشكرون | ٣٥ | ك يس | ٣٦ |
| ثَمَرَةٍ: | كلما رزقوا منها من ثمرة رزقا قالوا هذا الذى رزقنا من قبل | ٢٥ | م البقرة | ٢ |
| ثَمَرَاتِ: | وأنزل من السماء ماء فأخرج به من الثمرات رزقا لكم | ٢٢ | م « | ٢ |
| (١٦) | رب اجعل هذا بلدا آمنا وارزق أهله من الثمرات | ١٢٦م | « | ٢ |
| | ولنبلونكم بشىء من الخوف والجوع ونقص من الأموال | | | |
| | والأنفس والثمرات ... ... ... ... ... | ١٥٥م | « | ٢ |
| | له فيها من كل الثمرات وأصابه الكبر وله ذرية ضعفاء | ٢٦٦م | « | ٢ |
| | فأنزلنا به الماء فأخرجنا به من كل الثمرات ... ... | ٥٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولقد أخذنا آل فرعون بالسنين ونقص من الثمرات | ١٣٠ك | « | ٧ |
| | ومن كل الثمرات جعل فيها زوجين اثنين... ... ... | ٣ | م الرعد | ١٣ |
| | وأنزل من السماء ماء فأخرج به من الثمرات رزقا لكم | ٣٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | فاجعل أفئدة من الناس تهوى إليهم وارزقهم من الثمرات | ٣٧ | ك « | ١٤ |
| | ينبت لكم به الزرع والزيتون والنخيل والأعناب | | | |
| | ومن كل الثمرات ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك النحل | ١٦ |
| | ومن ثمرات النخيل والأعناب تتخذون منه سكرا | | | |
| | ورزقا حسنا ... ... ... ... ... ... ... | ٦٧ | ك « | ١٦ |
| | ثم كلى من كل الثمرات فاسلكى سبل ربك ذللا | ٦٩ | ك « | ١٦ |
| | أو لم نمكن لهم حرما آمنا يجبى إليه ثمرات كل شىء | ٥٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | فأخرجنا به ثمرات مختلفا ألوانها ... ... ... ... | ٢٧ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وما تخرج من ثمرات من أكمامها وما تحمل من أنثى | | | |
| | ولا تضع إلا بعلمه... ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك فصلت | ٤١ |
| | ولهم فيها من كل الثمرات ومغفرة من ربهم ... ... | ١٥ | م محمد | ٤٧ |
| ✦✦✦ | | | | |
| ثَامِنُهُمْ: | ويقولون سبعة وثامنهم كلبهم ... ... ... ... | ٢٢ | ك الكهف | ١٨ |
| ثَمَانِيَ: | على أن تأجرنى ثمانى حجج... ... ... ... ... | ٢٧ | ك القصص | ٢٨ |
| ثَمَانِيَةَ: | ثمانية أزواج من الضأن اثنين ومن المعز اثنين | ١٤٣ك | الأنعام | ٦ |
| (٤) | وأنزل لكم من الأنعام ثمانية أزواج ... ... ... | ٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| | سخرها عليهم سبع ليال وثمانية أيام حسوما ... ... | ٧ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | ويحمل عرش ربك فوقهم يومئذ ثمانية ... ... | ١٧ | ك « | ٦٩ |
| ثَمَانِينَ: | فاجلدوهم ثمانين جلدة ولا تقبلوا لهم شهادة أبدا | ٤ | م النور | ٢٤ |
| الثُّمُنُ: | فإن كان لكم ولد فلهن الثمن مما تركتم ... ... | ١٢ | م النساء | ٤ |
| بِثَمَنٍ: | وشروه بثمن بخس دراهم معدودة وكانوا فيه من الزاهدين | ٢٠ | ك يوسف | ١٢ |
| ثَمَنًا: | ولا تشتروا بآياتى ثمنا قليلا وإياى فاتقون ... ... | ٤١ | م البقرة | ٢ |
| (١٠) | ثم يقولون هذا من عند الله ليشتروا به ثمنا قليلا | ٧٩ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ثَمَنًا: | ويشترون به ثمنا قليلا أولئك ما يأكلون فى بطونهم | | | |
| | إلا النار... ... ... ... ... ... ... ... | ١٧٤م | البقرة | ٢ |
| | إن الذين يشترون بعهد الله وأيمانهم ثمنا قليلا | | | |
| | أولئك لا خلاق لهم فى الآخرة ... ... ... ... | ٧٧ | م آل عمران | ٣ |
| | فنبذوه وراء ظهورهم واشتروا به ثمنا قليلا ... ... | ١٨٧م | « | ٣ |
| | لا يشترون بآيات الله ثمنا قليلا أولئك لهم أجرهم عند ربهم | ١٩٩م | « | ٣ |
| | ولا تشتروا بآياتى ثمنا قليلا... ... ... ... ... | ٤٤ | م المائدة | ٥ |
| | لا نشترى به ثمنا ولو كان ذا قربى ولا نكتم شهادة الله | ١٠٦م | « | ٥ |
| | اشتروا بآيات الله ثمنا قليلا فصدوا عن سبيله | ٩ | م التوبة | ٩ |
| | ولا تشتروا بعهد الله ثمنا قليلا ... ... ... ... | ٩٥ | ك النحل | ١٦ |
| ✦✦✦ | | | | |
| يَثْنُونَ: | ألا إنهم يثنون صدورهم ليستخفوا منه ... ... | ٥ | ك هود | ١١ |
| يَسْتَثْنُونَ: | إذ أقسموا ليصرمنها مصبحين . ولا يستثنون | ١٨ | م القلم | ٦٨ |
| ثَانِيَ: | إذ أخرجه الذين كفروا ثانى اثنين إذ هما فى الغار | ٤٠ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | ثانى عطفه ليضل عن سبيل الله ... ... ... ... | ٩ | م الحج | ٢٢ |
| اثْنَا: | إن عدة الشهور عند الله اثنا عشر شهرا فى كتاب الله | ٣٦ | م التوبة | ٩ |
| اثْنَانِ: | إذا حضر أحدكم الموت حين الوصية اثنان ذوا عدل منكم | ١٠٦م | المائدة | ٥ |
| اثْنَتَيْ: | وبعثنا منهم اثنى عشر نقيبا ... ... ... ... ... | ١٢ | م « | ٥ |
| اثْنَيْنِ: | ثمانية أزواج من الضأن اثنين... ... ... ... ... | ١٤٣ك | الأنعام | ٦ |
| (١٠) | ومن المعز اثنين ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٣ك | « | ٦ |
| | ومن الإبل اثنين ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٤ك | « | ٦ |
| | ومن البقر اثنين ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٤ك | « | ٦ |
| | إذ أخرجه الذين كفروا ثانى اثنين إذ هما فى الغار | ٤٠ | م التوبة | ٩ |
| | حتى إذا جاء أمرنا وفار التنور قلنا احمل فيها من | | | |
| | كل زوجين اثنين ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك هود | ١١ |
| | ومن كل الثمرات جعل فيها زوجين اثنين ... ... | ٣ | م الرعد | ١٣ |
| | وقال الله لا تتخذوا إلهين اثنين ... ... ... ... | ٥١ | ك النحل | ١٦ |
| | فإذا جاء أمرنا وفار التنور فاسلك فيها من كل زوجين اثنين | ٢٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | إذ أرسلنا إليهم اثنين فكذبوهما فعززنا بثالث... ... | ١٤ | ك يس | ٣٦ |
| اثْنَتَا: | فانفجرت منه اثنتا عشرة عينا ... ... ... ... | ٦٠ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | فانبجست منه اثنتا عشرة عينا ... ... ... ... | ١٦٠ك | الأعراف | ٧ |
| اثْنَتَيْ: | وقطعناهم اثنتى عشرة أسباطا أمما ... ... ... | ١٦٠ك | « | ٧ |
| اثْنَتَيْنِ: | فإن كن نساء فوق اثنتين فلهن ثلثا ما ترك ... ... | ١١ | م النساء | ٤ |
| (٤) | فإن كانتا اثنتين فلهما الثلثان مما ترك ... ... ... | ١٧٦م | « | ٤ |
| | قالوا ربنا أمتنا اثنتين ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك غافر | ٤٠ |
| | وأحييتنا اثنتين... ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك « | ٤٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مَثْنَى: | فانكحوا ماطاب لكم من النساء مثنى وثلاث ورباع | ٣ | م النساء | ٤ |
| (٣) | أن تقوموا لله مثنى وفرادى ثم تتفكروا ... ... ... | ٤٦ | ك سبأ | ٣٤ |
| | جاعل الملائكة رسلا أولى أجنحة مثنى وثلاث ورباع | ١ | ك فاطر | ٣٥ |
| مَثَانِي: | ولقد آتيناك سبعا من المثانى والقرآن العظيم | ٨٧ | م الحجر | ١٥ |
| (٢) | الله نزّل أحسن الحديث كتابا متشابها مثانى ... ... | ٢٣ | ك الزمر | ٣٩ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ثَوَّبَ: | هل ثوب الكفار ما كانوا يفعلون... ... ... ... | ٣٦ | ك المطففين | ٨٣ |
| فَأَثَابَكُمْ: | فأثابكم غما بغم لكيلا تحزنوا على مافاتكم ولا ما أصابكم | ١٥٣ | م آل عمران | ٣ |
| أَثَابَهُمْ: | فأثابهم الله بما قالوا جنات تجرى من تحتها الأنهار | ٨٥ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | فعلم ما فى قلوبهم فأنزل السكينة عليهم وأثابهم فتحا قريبا | ١٨ | م الفتح | ٤٨ |
| ثَوَابُ: | ومن يرد ثواب الدنيا نؤته منها ... ... ... ... | ١٤٥ | م آل عمران | ٣ |
| (٩) | ومن يرد ثواب الآخرة نؤته منها ... ... ... ... | ١٤٥ | م « | ٣ |
| | فآتاهم الله ثواب الدنيا ... ... ... ... ... | ١٤٨ | م « | ٣ |
| | وحسن ثواب الآخرة ... ... ... ... ... ... | ١٤٨ | م « | ٣ |
| | والله عنده حسن الثواب... ... ... ... ... ... | ١٩٥ | م « | ٣ |
| | من كان يريد ثواب الدنيا... ... ... ... ... ... | ١٣٤ | م النساء | ٤ |
| | فعند الله ثواب الدنيا والآخرة ... ... ... ... | ١٣٤ | م « | ٤ |
| | متكئين فيها على الأرائك نعم الثواب وحسنت مرتفقا | ٣١ | ك الكهف | ١٨ |
| | وويلكم ثواب الله خير لمن آمن وعمل صالحا ... ... | ٨٠ | ك القصص | ٢٨ |
| ثَوَابًا: | ولأدخلنهم جنات تجرى من تحتها الأنهار ثوابا من عند الله | ١٩٥ | م آل عمران | ٣ |
| (٤) | هنالك الولاية لله الحق هو خير ثوابا وخير عقبا | ٤٤ | ك الكهف | ١٨ |
| | والباقيات الصالحات خير عند ربك ثوابا وخير أملا | ٤٦ | ك « | ١٨ |
| | والباقيات الصالحات خير عند ربك ثوابا وخير مردا | ٧٦ | ك مريم | ١٩ |
| مَثَابَةً: | وإذ جعلنا البيت مثابة للناس وأمنا ... ... ... | ١٢٥ | م البقرة | ٢ |
| مَثُوبَةٌ: | ولو أنهم آمنوا واتقوا لمثوبة من عند الله خير | ١٠٣ | م « | ٢ |
| (٢) | قل هل أنبئكم بشر من ذلك مثوبة عند الله ... ... | ٦٠ | م المائدة | ٥ |
| ثِيَابٌ: | فالذين كفروا قطعت لهم ثياب من نار ... ... | ١٩ | م الحج | ٢٢ |
| (٢) | عاليهم ثياب سندس خضر وإستبرق ... ... ... | ٢١ | م الإنسان | ٧٦ |
| ثِيَابًا: | ويلبسون ثيابا خضرا من سندس وإستبرق ... | ٣١ | ك الكهف | ١٨ |
| ثِيَابَكَ: | وثيابك فطهر ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك المدثر | ٧٤ |
| ثِيَابَكُمْ: | من قبل صلاة الفجر وحين تضعون ثيابكم من الظهيرة | ٥٨ | م النور | ٢٤ |
| ثِيَابَهُمْ: | ألا حين يستغشون ثيابهم يعلم مايسرون وما يعلنون | ٥ | ك هود | ١١ |
| (٢) | جعلوا أصابعهم فى آذانهم واستغشوا ثيابهم ... ... | ٧ | ك نوح | ٧١ |
| ثِيَابَهُنَّ: | فليس عليهن جناح أن يضعن ثيابهن... ... ... | ٦٠ | م النور | ٢٤ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَثَارُوا: | كانوا أشد منهم قوة وأثاروا الأرض وعمروها | ٩ | ك الروم | ٣٠ |
| فَأَثَرْنَ: | فالمغيرات صبحا . فأثرن به نقعا ... ... ... ... | ٤ | ك العاديات | ١٠٠ |
| تُثِيرُ: | قال إنه يقول إنها بقرة لا ذلول تثير الأرض | | | |
| (٣) | ولا تسقى الحرث ... ... ... ... ... ... | ٧١ | م البقرة | ٢ |
| | الله الذى يرسل الرياح فتثير سحابا ... ... ... ... | ٤٨ | ك الروم | ٣٠ |
| | والله الذى أرسل الرياح فتثير سحابا فسقناه إلى بلد ميت | ٩ | ك فاطر | ٣٥ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ثَاوِيًا: | وما كنت ثاويا فى أهل مدين تتلوا عليهم آياتنا | | | |
| | ولكنا كنا مرسلين ... ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك القصص | ٢٨ |
| مَثْوَى: | ومأواهم النار وبئس مثوى الظالمين ... ... ... | ١٥١ | م آل عمران | ٣ |
| (٩) | فادخلوا أبواب جهنم خالدين فيها فلبئس مثوى المتكبرين | ٢٩ | ك النحل | ١٦ |
| | أليس فى جهنم مثوى للكافرين... ... ... ... | ٦٨ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | أليس فى جهنم مثوى للكافرين... ... ... ... | ٣٢ | ك الزمر | ٣٩ |
| | أليس فى جهنم مثوى للمتكبرين ... ... ... ... | ٦٠ | ك « | ٣٩ |
| | قيل ادخلوا أبواب جهنم خالدين فيها فبئس | | | |
| | مثوى المتكبرين ... ... ... ... ... ... | ٧٢ | ك « | ٣٩ |
| | ادخلوا أبواب جهنم خالدين فيها فبئس مثوى المتكبرين | ٧٦ | ك غافر | ٤٠ |
| | فإن يصبروا فالنار مثوى لهم ... ... ... ... | ٢٤ | ك فصلت | ٤١ |
| | يتمتعون ويأكلون كما تأكل الأنعام والنار مثوى لهم | ١٢ | م محمد | ٤٧ |
| مَثْوَاكُمْ: | قال النار مثواكم خالدين فيها إلا ما شاء الله | ١٢٨ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | والله يعلم متقلبكم ومثواكم ... ... ... ... | ١٩ | م محمد | ٤٧ |
| مَثْوَاهُ: | وقال الذى اشتراه من مصر لامرأته أكرمى مثواه | ٢١ | ك يوسف | ١٢ |
| مَثْوَايَ: | قال معاذ الله إنه ربى أحسن مثواى ... ... | ٢٣ | ك « | ١٢ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ثَيِّبَاتٍ: | تائبات عابدات سائحات ثيبات وأبكارا ... ... | ٥ | م التحريم | ٦٦ |

# باب الجيم

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| تَجَأَرُوا: | لا تجأروا اليوم إنكم منا لا تنصرون ... ... ... | ك المؤمنون | ٢٣ ٦٥ |
| تَجْأَرُونَ: | وما بكم من نعمة فمن الله ثم إذا مسكم الضر فإليه تجأرون | ك النحل | ١٦ ٥٣ |
| يَجْأَرُونَ: | حتى إذا أخذنا مترفيهم بالعذاب إذا هم يجأرون | ك المؤمنون | ٢٣ ٦٤ |
| ✦✦✦ | | | |
| الْجُبِّ: | قال قائل منهم لا تقتلوا يوسف وألقوه فى غيابة الجب | ك يوسف | ١٢ ١٠ |
| (٢) | فلما ذهبوا به وأجمعوا أن يجعلوه فى غيابة الجب | ك « | ١٢ ١٥ |
| ✦✦✦ | | | |
| الْجِبْتِ: | ألم تر إلى الذين أوتوا نصيبا من الكتاب يؤمنون بالجبت والطاغوت ... ... ... ... ... ... | م النساء | ٤ ٥١ |
| ✦✦✦ | | | |
| جَبَّارٍ: | وعصوا رسله واتبعوا أمر كل جبار عنيد ... ... | ك هود | ١١ ٥٩ |
| (٥) | واستفتحوا وخاب كل جبار عنيد ... ... ... ... | ك إبراهيم | ١٤ ١٥ |
| | كذلك يطبع الله على كل قلب متكبر جبار ... ... | ك غافر | ٤٠ ٣٥ |
| | نحن أعلم بما يقولون وما أنت عليهم بجبار ... ... | ك ق | ٥٠ ٤٥ |
| | الملك القدوس السلام المؤمن المهيمن العزيز الجبار المتكبر | م الحشر | ٥٩ ٢٣ |
| جَبَّارًا: | وبرًا بوالديه ولم يكن جبارًا عصيًا ... ... ... | ك مريم | ١٩ ١٤ |
| (٣) | وبرًا بوالدتى ولم يجعلنى جبارا شقيا... ... ... ... | ك « | ١٩ ٣٢ |
| | إن تريد إلا أن تكون جبارا فى الأرض ... ... | ك القصص | ٢٨ ١٩ |
| جَبَّارِينَ: | قالوا يا موسى إن فيها قوما جبارين ... ... | م المائدة | ٥ ٢٢ |
| (٢) | وإذا بطشتم بطشتم جبارين ... ... ... ... ... | ك الشعراء | ٢٦ ١٣٠ |
| ✦✦✦ | | | |
| جِبْرِيلَ: | قل من كان عدوًا لجبريل فإنه نزله على قلبك بإذن الله | م البقرة | ٢ ٩٧ |
| (٣) | من كان عدوًا لله وملائكته ورسله وجبريل وميكال فإن الله عدو للكافرين... ... ... ... ... ... | م « | ٢ ٩٨ |
| | وإن تظاهرا عليه فإن الله هو مولاه وجبريل وصالح المؤمنين... ... ... ... ... ... ... | م التحريم | ٦٦ ٤ |
| ✦✦✦ | | | |
| جَبَلٍ: | ثم اجعل على كل جبل منهن جزءا ... ... ... ... | م البقرة | ٢ ٢٦٠ |
| (٦) | ولكن انظر إلى الجبل فإن استقر مكانه فسوف ترانى | ك الأعراف | ٧ ١٤٣ |
| | فلما تجلى ربه للجبل جعله دكا وخر موسى صعقا | ك « | ٧ ١٤٣ |
| | وإذ نتقنا الجبل فوقهم كأنه ظلة ... ... ... ... | ك « | ٧ ١٧١ |
| | قال سآوى إلى جبل يعصمنى من الماء ... ... ... | ك هود | ١١ ٤٣ |
| | لو أنزلنا هذا القرآن على جبل لرأيته خاشعا متصدعا من خشية الله ... ... ... ... ... ... | م الحشر | ٥٩ ٢١ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| جِبَالٍ: | تتخذون من سهولها قصورا وتنحتون الجبال بيوتا | ك الأعراف | ٧ ٧٤ |
| (٣٣) | وهى تجرى بهم فى موج كالجبال ... ... ... ... | ك هود | ١١ ٤٢ |
| | ولو أن قرآنا سيرت به الجبال أو قطعت به الأرض أو كلم به الموتى ... ... ... ... ... ... | م الرعد | ١٣ ٣١ |
| | وإن كان مكرهم لتزول منه الجبال ... ... ... ... | ك إبراهيم | ١٤ ٤٦ |
| | وكانوا ينحتون من الجبال بيوتا آمنين ... ... ... | ك الحجر | ١٥ ٨٢ |
| | وأوحى ربك إلى النحل أن اتخذى من الجبال بيوتا | ك النحل | ١٦ ٦٨ |
| | والله جعل لكم مما خلق ظلالا وجعل لكم من الجبال أكنانا | ك « | ١٦ ٨١ |
| | إنك لن تخرق الأرض ولن تبلغ الجبال طولا | ك الإسراء | ١٧ ٣٧ |
| | ويوم نسير الجبال وترى الأرض بارزة وحشرناهم فلم نغادر منهم أحدا ... ... ... ... ... ... | ك الكهف | ١٨ ٤٧ |
| | تكاد السموات يتفطرن منه وتنشق الأرض وتخر الجبال هدا ... ... ... ... ... ... ... | ك مريم | ١٩ ٩٠ |
| | ويسئلونك عن الجبال فقل ينسفها ربى نسفا | ك طه | ٢٠ ١٠٥ |
| | وسخرنا مع داود الجبال يسبحن والطير ... ... ... | ك الأنبياء | ٢١ ٧٩ |
| | ألم تر أن الله يسجد له من فى السموات ومن فى الأرض والشمس والقمر والنجوم والجبال | م الحج | ٢٢ ١٨ |
| | وينزل من السماء من جبال فيها من برد ... ... ... | م النور | ٢٤ ٤٣ |
| | وتنحتون من الجبال بيوتا فارهين ... ... ... ... | ك الشعراء | ٢٦ ١٤٩ |
| | وترى الجبال تحسبها جامدة وهى تمر مر السحاب | ك النمل | ٢٧ ٨٨ |
| | إنا عرضنا الأمانة على السموات والأرض والجبال فأبين أن يحملنها ... ... ... ... ... ... | م الأحزاب | ٣٣ ٧٢ |
| | ولقد آتينا داود منا فضلا يا جبال أوبى معه والطير | ك سبأ | ٣٤ ١٠ |
| | ومن الجبال جدد بيض وحمر مختلف ألوانها ... ... | ك فاطر | ٣٥ ٢٧ |
| | إنا سخرنا الجبال معه يسبحن بالعشى والإشراق | ك ص | ٣٨ ١٨ |
| | يوم تمور السماء مورا . وتسير الجبال سيرا ... ... | ك الطور | ٥٢ ١٠ |
| | إذا رجت الأرض رجا . وبست الجبال بسا... ... | ك الواقعة | ٥٦ ٥ |
| | وحملت الأرض والجبال فدكتا دكة واحدة ... ... | ك الحاقة | ٦٩ ١٤ |
| | يوم تكون السماء كالمهل . وتكون الجبال كالعهن | ك المعارج | ٧٠ ٩ |
| | يوم ترجف الأرض والجبال ... ... ... ... ... | ك المزمل | ٧٣ ١٤ |
| | وكانت الجبال كثيبا مهيلا ... ... ... ... ... | ك « | ٧٣ ١٤ |
| | وإذا الجبال نسفت ... ... ... ... ... ... ... | ك المرسلات | ٧٧ ١٠ |
| | ألم نجعل الأرض مهادا . والجبال أوتادا ... ... | ك النبأ | ٧٨ ٧ |
| | وسيرت الجبال فكانت سرابا ... ... ... ... ... | ك « | ٧٨ ٢٠ |
| | والجبال أرساها . متاعا لكم ولأنعامكم ... ... ... | ك النازعات | ٧٩ ٣٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| جِبَالُ | : وإذا الجبال سيّرت ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك التكوير | ٨١ |
| | وإلى الجبال كيف نصبت ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك الغاشية | ٨٨ |
| | وتكون الجبال كالعهن المنفوش ... ... ... ... | ٥ | ك القارعة | ١٠١ |
| جِبِلًّا | : ولقد أضل منكم جبلًا كثيرا ... ... ... ... ... | ٦١ | ك يس | ٣٦ |
| الجِبِلَّةَ | : واتقوا الذى خلقكم والجبلّة الأولين ... ... ... | ١٨٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| لِلْجَبِينِ | : فلما أسلما وتلّه للجبين ... ... ... ... ... | ١٠٣ | ك الصافات | ٣٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| جِبَاهُهُمْ | : يوم يحمى عليها فى نار جهنم فتكوى بها جباههم | | | |
| | وجنوبهم وظهورهم ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | م التوبة | ٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| يُجْبَى | : أو لم نمكن لهم حرما آمنا يجبى إليه ثمرات كل شىء | ٥٧ | ك القصص | ٢٨ |
| اجْتَبَاكُمْ | : هو اجتباكم وما جعل عليكم فى الدين من حرج | ٧٨ | م الحج | ٢٢ |
| اجْتَبَاهُ | : شاكرا لأنعمه اجتباه وهداه إلى صراط مستقيم | ١٢١ | ك النحل | ١٦ |
| (٣) | ثم اجتباه ربّه فتاب عليه وهدى ... ... ... ... | ١٢٢ | ك طه | ٢٠ |
| | فاجتباه ربّه فجعله من الصالحين ... ... ... ... | ٥٠ | م القلم | ٦٨ |
| اجْتَبَيْتَهَا | : وإذا لم تأتهم بآية قالوا لولا اجتبيتها ... ... | ٢٠٣ | ك الأعراف | ٧ |
| اجْتَبَيْنَا | : ومن ذرية إبراهيم وإسرائيل وممن هدينا واجتبينا | ٥٨ | م مريم | ١٩ |
| اجْتَبَيْنَاهُمْ | : واجتبيناهم وهديناهم إلى صراط مستقيم | ٨٧ | ك الأنعام | ٦ |
| يَجْتَبِي | : ولكن الله يجتبى من رسله من يشاء ... ... ... | ١٧٩ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | الله يجتبى إليه من يشاء ويهدى إليه من ينيب | ١٣ | ك الشورى | ٤٢ |
| يَجْتَبِيكَ | : وكذلك يجتبيك ربك ويعلمك من تأويل الأحاديث | ٦ | ك يوسف | ١٢ |
| الجَوَابِ | : يعملون له ما يشاء من محاريب وتماثيل وجفان | | | |
| | كالجواب ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك سبأ | ٣٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| اجْتُثَّتْ | : ومثل كلمة خبيثة كشجرة خبيثة اجتثت من | | | |
| | فوق الأرض مالها من قرار ... ... ... ... | ٢٦ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| جَاثِمِينَ | : فأخذتهم الرجفة فأصبحوا فى دارهم جاثمين | ٧٨ | ك الأعراف | ٧ |
| (٥) | فأخذتهم الرجفة فأصبحوا فى دارهم جاثمين ... ... | ٩١ | ك « | ٧ |
| | وأخذ الذين ظلموا الصيحة فأصبحوا فى ديارهم جاثمين | ٦٧ | ك هود | ١١ |
| | وأخذت الذين ظلموا الصيحة فأصبحوا فى ديارهم جاثمين | ٩٤ | ك « | ١١ |
| | فكذبوه فأخذتهم الرجفة فأصبحوا فى دارهم جاثمين | ٣٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| جَاثِيَةً | : وترى كل أمة جاثية كل أمة تدعى إلى كتابها | ٢٨ | ك الجاثية | ٤٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| جِثِيًّا | : فوربّك لنحشرنهم والشياطين ثم لنحضرنهم حول | | | |
| (٢) | جهنم جثيا ... ... ... ... ... ... ... | ٦٨ | ك مريم | ١٩ |
| | ثم ننجى الذين اتقوا ونذر الظالمين فيها جثيا ... ... | ٧٢ | ك « | ١٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| جَحَدُوا | : وتلك عاد جحدوا بآيات ربّهم وعصوا رسله | ٥٩ | ك هود | ١١ |
| (٢) | وجحدوا بها واستيقنتها أنفسهم ظلما وعلوا ... ... | ١٤ | ك النمل | ٢٧ |
| يَجْحَدُ | : ومن هؤلاء من يؤمن به وما يجحد بآياتنا إلا الكافرون | ٤٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| (٣) | وما يجحد بآياتنا إلا الظالمون ... ... ... ... | ٤٩ | ك « | ٢٩ |
| | وما يجحد بآياتنا إلا كل ختّار كفور ... ... ... ... | ٣٢ | ك لقمان | ٣١ |
| يَجْحَدُونَ | : ولكن الظالمين بآيات الله يجحدون ... ... | ٣٣ | ك الأنعام | ٦ |
| (٧) | فاليوم ننساهم كما نسوا لقاء يومهم هذا وما كانوا | | | |
| | بآياتنا يجحدون ... ... ... ... ... ... | ٥١ | ك الأعراف | ٧ |
| | أفبنعمة الله يجحدون ... ... ... ... ... ... | ٧١ | ك النحل | ١٦ |
| | كذلك يؤفك الذين كانوا بآيات الله يجحدون | ٦٣ | ك غافر | ٤٠ |
| | وكانوا بآياتنا يجحدون ... ... ... ... ... | ١٥ | ك فصلت | ٤١ |
| | لهم فيها دار الخلد جزاء بما كانوا بآياتنا يجحدون | ٢٨ | ك « | ٤١ |
| | إذ كانوا يجحدون بآيات الله وحاق بهم ما كانوا به | | | |
| | يستهزئون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| جَحِيمَ | : ولا تسئل عن أصحاب الجحيم ... ... ... ... | ١١٩ | م البقرة | ٢ |
| (٢٥) | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا أولئك أصحاب الجحيم | ١٠ | م المائدة | ٥ |
| | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا أولئك أصحاب الجحيم | ٨٦ | م « | ٥ |
| | ولو كانوا أولى قربى من بعد ما تبين لهم أنهم أصحاب الجحيم | ١١٣ | م التوبة | ٩ |
| | والذين سعوا فى آياتنا معاجزين أولئك أصحاب الجحيم | ٥١ | م الحج | ٢٢ |
| | وبرّزت الجحيم للغاوين ... ... ... ... ... ... | ٩١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فاهدوهم إلى صراط الجحيم ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك الصافات | ٣٧ |
| | فاطلع فرآه فى سواء الجحيم ... ... ... ... ... | ٥٥ | ك « | ٣٧ |
| | إنها شجرة تخرج فى أصل الجحيم ... ... ... ... | ٦٤ | ك « | ٣٧ |
| | ثم إن مرجعهم لإلى الجحيم ... ... ... ... ... | ٦٨ | ك « | ٣٧ |
| | قالوا ابنوا له بنيانا فألقوه فى الجحيم ... ... ... | ٩٧ | ك « | ٣٧ |
| | ما أنتم عليه بفاتنين . إلا من هو صال الجحيم ... ... | ١٦٣ | ك « | ٣٧ |
| | فاغفر للذين تابوا واتبعوا سبيلك وقهم عذاب الجحيم | ٧ | ك غافر | ٤٠ |
| | خذوه فاعتلوه إلى سواء الجحيم ... ... ... ... | ٤٧ | ك الدخان | ٤٤ |
| | لا يذوقون فيها الموت إلا الموتة الأولى ووقاهم عذاب الجحيم | ٥٦ | ك « | ٤٤ |
| | فاكهين بما آتاهم ربّهم ووقاهم ربّهم عذاب الجحيم | ١٨ | ك الطور | ٥٢ |
| | فنزل من حميم . وتصلية جحيم ... ... ... ... | ٩٤ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا أولئك أصحاب الجحيم | ١٩ | م الحديد | ٥٧ |
| | خذوه فغلّوه . ثم الجحيم صلّوه ... ... ... ... | ٣١ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | وبرزت الجحيم لمن يرى ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك النازعات | ٧٩ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| جَحِيمٌ | فأما من طغى . وآثر الحياة الدنيا . فإن الجحيم هي المأوى | ك النازعات | ٧٩ |
| | وإذا الجحيم سعّرت ... ... ... ... ... ... | ك التكوير | ٨١ |
| | وإن الفجار لفي جحيم ... ... ... ... ... ... | ك الانفطار | ٨٢ |
| | ثم إنهم لصالوا الجحيم ... ... ... ... ... ... | ك المطففين | ٨٣ |
| | كلا لو تعلمون علم اليقين . لترون الجحيم ... ... | ك التكاثر | ١٠٢ |
| جَحِيمًا | إن لدينا أنكالا وجحيما ... ... ... ... ... ... | ك المزمل | ٧٣ |
| | ✦✦✦ | | |
| الأَجْدَاثِ | فإذا هم من الأجداث إلى ربهم ينسلون ... | ك يس | ٣٦ |
| (٣) | خشعا أبصارهم يخرجون من الأجداث كأنهم جراد منتشر | ك القمر | ٥٤ |
| | يوم يخرجون من الأجداث سراعا كأنهم إلى نصب يوفضون ... ... ... ... ... ... ... | ك المعارج | ٧٠ |
| | ✦✦✦ | | |
| جَدُّ | وأنه تعالى جد ربنا ما اتخذ صاحبة ولا ولدا | ك الجن | ٧٢ |
| جَدِيدٍ | وإن تعجب فعجب قولهم أءذا كنا ترابا أءنا لفي | | |
| (٦) | خلق جديد ... ... ... ... ... ... ... | م الرعد | ١٣ |
| | إن يشأ يذهبكم ويأت بخلق جديد ... ... ... | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وقالوا أءذا ضللنا في الأرض أءنا لفي خلق جديد | ك السجدة | ٣٢ |
| | وقال الذين كفروا هل ندلكم على رجل ينبئكم إذا مزقتم كل ممزق إنكم لفي خلق جديد ... ... | ك سبأ | ٣٤ |
| | إن يشأ يذهبكم ويأت بخلق جديد ... ... ... ... | ك فاطر | ٣٥ |
| | أفعيينا بالخلق الأول بل هم في لبس من خلق جديد | ك ق | ٥٠ |
| جَدِيدًا | وقالوا أءذا كنا عظاما ورفاتا أءنا لمبعوثون | | |
| (٢) | خلقا جديدا ... ... ... ... ... ... ... | ك الإسراء | ١٧ |
| | وقالوا أءذا كنا عظاما ورفاتا أءنا لمبعوثون خلقا جديدا | ك » | ١٧ |
| جُدَدٌ | ومن الجبال جدد بيض وحمر مختلف ألوانها | ك فاطر | ٣٥ |
| | ✦✦✦ | | |
| أَجْدَرُ | الأعراب أشد كفرا ونفاقا وأجدر ألا يعلموا حدود ما أنزل الله على رسوله ... ... ... ... | م التوبة | ٩ |
| الْجِدَارُ | وأما الجدار فكان لغلامين يتيمين في المدينة | ك الكهف | ١٨ |
| جِدَارًا | فوجدا فيها جدارا يريد أن ينقض فأقامه... ... | ك » | ١٨ |
| جُدُرٍ | لا يقاتلونكم جميعا إلا في قرى محصنة أو من وراء جدر | م الحشر | ٥٩ |
| | ✦✦✦ | | |
| جَادَلْتُمْ | هأنتم هؤلاء جادلتم عنهم في الحياة الدنيا ... ... | م النساء | ٤ |
| جَادَلْتَنَا | قالوا يا نوح قد جادلتنا فأكثرت جدالنا... ... | ك هود | ١١ |
| جَادَلُوا | وجادلوا بالباطل ليدحضوا به الحق فأخذتهم | ك غافر | ٤٠ |
| جَادَلُوكَ | وإن جادلوك فقل الله أعلم بما تعملون... ... | م الحج | ٢٢ |
| تُجَادِلُ | ولا تجادل عن الذين يختانون أنفسهم ... ... | م النساء | ٤ |
| (٢) | يوم تأتي كل نفس تجادل عن نفسها ... ... ... | ك النحل | ١٦ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| تُجَادِلُكَ | قد سمع الله قول التي تجادلك في زوجها... ... | م المجادلة | ٥٨ |
| تُجَادِلُوا | ولا تجادلوا أهل الكتاب إلا بالتي هي أحسن | ك العنكبوت | ٢٩ |
| أَتُجَادِلُونَنِي | أتجادلونني في أسماء سميتموها أنتم وآباؤكم | ك الأعراف | ٧ |
| يُجَادِلُ | فمن يجادل الله عنهم يوم القيامة أم من يكون عليهم وكيلا | م النساء | ٤ |
| (٦) | ويجادل الذين كفروا بالباطل ليدحضوا به الحق | ك الكهف | ١٨ |
| | ومن الناس من يجادل في الله بغير علم ويتبع كل شيطان مريد | م الحج | ٢٢ |
| | ومن الناس من يجادل في الله بغير علم ولا هدى ولا كتاب منير | م » | ٢٢ |
| | ومن الناس من يجادل في الله بغير علم ولا هدى ولا كتاب منير | ك لقمان | ٣١ |
| | ما يجادل في آيات الله إلا الذين كفروا ... ... | ك غافر | ٤٠ |
| يُجَادِلُنَا | فلما ذهب عن إبراهيم الروع وجاءته البشرى يجادلنا في قوم لوط ... ... ... ... ... ... | ك هود | ١١ |
| لَيُجَادِلُوكُمْ | وإن الشياطين ليوحون إلى أوليائهم ليجادلوكم | ك الأنعام | ٦ |
| يُجَادِلُونَ | ويرسل الصواعق فيصيب بها من يشاء وهم | | |
| (٥) | يجادلون في الله ... ... ... ... ... ... ... | م الرعد | ١٣ |
| | الذين يجادلون في آيات الله بغير سلطان أتاهم ... | ك غافر | ٤٠ |
| | إن الذين يجادلون في آيات الله بغير سلطان أتاهم إن في صدورهم إلا كبر ما هم ببالغيه ... ... | م » | ٤٠ |
| | ألم تر إلى الذين يجادلون في آيات الله أنى يصرفون | ك » | ٤٠ |
| | ويعلم الذين يجادلون في آياتنا ما لهم من محيص... | ك الشورى | ٤٢ |
| يُجَادِلُونَكَ | حتى إذا جاءوك يجادلونك يقول الذين كفروا | | |
| (٢) | إن هذا إلا أساطير الأولين ... ... ... ... ... | ك الأنعام | ٦ |
| | يجادلونك في الحق بعد ما تبين ... ... ... ... | م الأنفال | ٨ |
| جَادِلْهُمْ | وجادلهم بالتي هي أحسن ... ... ... ... ... | ك النحل | ١٦ |
| جَدَلًا | وكان الإنسان أكثر شيء جدلا ... ... ... ... | ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | وقالوا ءآلهتنا خير أم هو ما ضربوه لك إلا جدلا... | ك الزخرف | ٤٣ |
| جِدَالَ | فمن فرض فيهن الحج فلا رفث ولا فسوق ولا جدال في الحج | م البقرة | ٢ |
| جِدَالَنَا | قالوا يا نوح قد جادلتنا فأكثرت جدالنا ... ... | ك هود | ١١ |
| | ✦✦✦ | | |
| مَجْذُوذٍ | خالدين فيها ما دامت السموات والأرض إلا ما شاء ربك عطاء غير مجذوذ ... ... ... | ك » | ١١ |
| جُذَاذًا | فجعلهم جذاذا إلا كبيرا لهم لعلهم إليه يرجعون | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ✦✦✦ | | |
| جِذْعِ | فأجاءها المخاض إلى جذع النخلة قالت يا ليتني مت قبل هذا | ك مريم | ١٩ |
| (٢) | وهزي إليك بجذع النخلة تساقط عليك رطبا جنيا | ك » | ١٩ |
| جُذُوعِ | ولأصلبنكم في جذوع النخل... ... ... ... ... | ك طه | ٢٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| جَذْوَةٍ | : لعلى آتيكم منها بخبر أو جذوة من النار لعلكم تصطلون | ٢٩ | ك القصص | ٢٨ |
| جَرَحْتُمْ | : وهو الذى يتوفاكم بالليل ويعلم ما جرحتم بالنهار | ٦٠ | ك الأنعام | ٦ |
| أَجْتَرَحُوا | : أم حسب الذين اجترحوا السيئات أن نجعلهم كالذين آمنوا وعملوا الصالحات... ... ... ... | ٢١ | ك الجاثية | ٤٥ |
| الْجُرُوحَ | : والأذن بالأذن والسن بالسن والجروح قصاص | ٤٥ | م المائدة | ٥ |
| الْجَوَارِحِ | : قل أحل لكم الطيبات وما علمتم من الجوارح مكلبين | ٤ | م « | ٥ |
| جَرَادَ | : فأرسلنا عليهم الطوفان والجراد والقمل والضفادع والدم آيات مفصلات ... ... ... ... ... | ١٣٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | خشعا أبصارهم يخرجون من الأجداث كأنهم جراد منتشر | ٧ | ك القمر | ٥٤ |
| يَجُرُّهُ | : وألقى الألواح وأخذ برأس أخيه يجره إليه... ... | ١٥٠ | ك الأعراف | ٧ |
| الْجُرُزِ | : أولم يروا أنا نسوق الماء إلى الأرض الجرز فنخرج به زرعا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك السجدة | ٣٢ |
| جُرُزًا | : وإنا لجاعلون ما عليها صعيدا جرزا... ... ... ... | ٨ | ك الكهف | ١٨ |
| يَتَجَرَّعُهُ | : يتجرعه ولا يكاد يسيغه ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك إبراهيم | ١٤ |
| جُرُفٍ | : أم من أسس بنيانه على شفا جرف هار فانهار به فى نار جهنم | ١٠٩ | م التوبة | ٩ |
| يَجْرِمَنَّكُمْ | : ولا يجرمنكم شنئان قوم أن صدوكم عن المسجد الحرام أن تعتدوا... ... ... ... ... ... | ٢ | م المائدة | ٥ |
| | ولا يجرمنكم شنئان قوم على ألا تعدلوا ... ... ... | ٨ | م « | ٥ |
| | ويا قوم لا يجرمنكم شقاقى أن يصيبكم مثل ما أصاب قوم نوح ... ... ... ... ... ... | ٨٩ | ك هود | ١١ |
| أَجْرَمْنَا | : قل لا تسئلون عما أجرمنا ولا نسئل عما تعملون | ٢٥ | ك سبأ | ٣٤ |
| أَجْرَمُوا | : سيصيب الذين أجرموا صغار عند الله وعذاب شديد | ١٢٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | جاءوهم بالبينات فانتقمنا من الذين أجرموا ... ... | ٤٧ | ك الروم | ٣٠ |
| | إن الذين أجرموا كانوا من الذين آمنوا يضحكون | ٢٩ | ك المطففين | ٨٣ |
| مُجْرِمُونَ | : قل إن افتريته فعلىّ إجرامى وأنا برىء مما تجرمون | ٣٥ | ك هود | ١١ |
| إِجْرَامِى | : قل إن افتريته فعلىّ إجرامى وأنا برىء مما تجرمون | ٣٥ | ك « | ١١ |
| الْمُجْرِمُ | : يود المجرم لو يفتدى من عذاب يومئذ ببنيه | ١١ | ك المعارج | ٧٠ |
| مُجْرِمًا | : إنه من يأت ربه مجرما فإن له جهنم لا يموت فيها ولا يحيى ... ... ... ... ... ... ... | ٧٤ | ك طه | ٢٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مُجْرِمُونَ | : ليحق الحق ويبطل الباطل ولو كره المجرمون | ٨ | م الأنفال | ٨ |
| (١٥) | فمن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو كذب بآياته إنه لا يفلح المجرمون ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك يونس | ١٠ |
| | قل أرأيتم إن أتاكم عذابه بياتا أو نهارا ماذا يستعجل منه المجرمون ... ... ... ... ... ... | ٥٠ | ك « | ١٠ |
| | ويحق الله الحق بكلماته ولو كره المجرمون ... ... | ٨٢ | ك « | ١٠ |
| | ورأى المجرمون النار فظنوا أنهم مواقعوها ... ... | ٥٣ | ك الكهف | ١٨ |
| | وما أضلنا إلا المجرمون ... ... ... ... ... ... | ٩٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | ولا يسئل عن ذنوبهم المجرمون ... ... ... ... | ٧٨ | ك القصص | ٢٨ |
| | ويوم تقوم الساعة يبلس المجرمون ... ... ... ... | ١٢ | ك الروم | ٣٠ |
| | ويوم تقوم الساعة يقسم المجرمون ما لبثوا غير ساعة | ٥٥ | ك « | ٣٠ |
| | ولو ترى إذ المجرمون ناكسوا رءوسهم عند ربهم | ١٢ | ك السجدة | ٣٢ |
| | وامتازوا اليوم أيها المجرمون ... ... ... ... | ٥٩ | ك يس | ٣٦ |
| | فدعا ربه أن هؤلاء قوم مجرمون ... ... ... ... | ٢٢ | ك الدخان | ٤٤ |
| | يعرف المجرمون بسيماهم فيؤخذ بالنواصى والأقدام | ٤١ | م الرحمن | ٥٥ |
| | هذه جهنم التى يكذب بها المجرمون ... ... ... ... | ٤٣ | م « | ٥٥ |
| | كلوا وتمتعوا قليلا إنكم مجرمون... ... ... ... ... | ٤٦ | ك المرسلات | ٧٧ |
| مُجْرِمِينَ | : وكذلك نفصل الآيات ولتستبين سبيل المجرمين | ٥٥ | ك الأنعام | ٦ |
| (٣٤) | ولا يرد بأسه عن القوم المجرمين ... ... ... ... | ١٤٧ | ك « | ٦ |
| | وكذلك نجزى المجرمين ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | وأمطرنا عليهم مطرا فانظر كيف كان عاقبة المجرمين | ٨٤ | ك « | ٧ |
| | فاستكبروا وكانوا قوما مجرمين ... ... ... ... | ١٣٣ | ك « | ٧ |
| | إن نعف عن طائفة منكم نعذب طائفة بأنهم كانوا مجرمين | ٦٦ | م التوبة | ٩ |
| | وما كانوا ليؤمنوا كذلك نجزى القوم المجرمين... ... | ١٣ | ك يونس | ١٠ |
| | فاستكبروا وكانوا قوما مجرمين ... ... ... ... | ٧٥ | ك « | ١٠ |
| | يرسل السماء عليكم مدرارا ويزدكم قوة إلى قوتكم ولا تتولوا مجرمين ... ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك هود | ١١ |
| | واتبع الذين ظلموا ما أترفوا فيه وكانوا مجرمين | ١١٦ | ك « | ١١ |
| | ولا يرد بأسنا عن القوم المجرمين ... ... ... ... | ١١٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | وترى المجرمين يومئذ مقرنين فى الأصفاد ... ... | ٤٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | كذلك نسلكه فى قلوب المجرمين ... ... ... ... | ١٢ | ك الحجر | ١٥ |
| | قالوا إنا أرسلنا إلى قوم مجرمين ... ... ... ... | ٥٨ | ك « | ١٥ |
| | ووضع الكتاب فترى المجرمين مشفقين مما فيه... ... | ٤٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | ونسوق المجرمين إلى جهنم وردا ... ... ... ... | ٨٦ | ك مريم | ١٩ |
| | يوم ينفخ فى الصور ونحشر المجرمين يومئذ زرقا | ١٠٢ | ك طه | ٢٠ |
| | يوم يرون الملائكة لا بشرى يومئذ للمجرمين ... ... | ٢٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وكذلك جعلنا لكل نبى عدوا من المجرمين ... ... | ٣١ | ك « | ٢٥ |
| | كذلك سلكناه فى قلوب المجرمين ... ... ... ... | ٢٠٠ | ك الشعراء | ٢٦ |

| اللفظة | الآيـة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مُجْرِمِينَ: | قل سيروا فى الأرض فانظروا كيف كان عاقبة المجرمين | ٦٩ | ك النمل | ٢٧ |
| | قال ربّ بما أنعمت علىّ فلن أكون ظهيرا للمجرمين | ١٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | إنّا من المجرمين منتقمون ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك السجدة | ٣٢ |
| | أنحن صددناكم عن الهدى بعد إذ جاءكم بل كنتم مجرمين | ٣٢ | ك سبإ | ٣٤ |
| | إنا كذلك نفعل بالمجرمين ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك الصافات | ٣٧ |
| | إن المجرمين فى عذاب جهنم خالدون ... ... ... | ٧٤ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | أهلكناهم إنهم كانوا مجرمين ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك الدخان | ٤٤ |
| | أفلم تكن آياتى تتلى عليكم فاستكبرتم وكنتم قوما مجرمين | ٣١ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | فأصبحوا لا يرى إلا مساكنهم كذلك نجزى القوم المجرمين | ٢٥ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | قالوا إنا أرسلنا إلى قوم مجرمين ... ... ... ... | ٣٢ | ك الذاريات | ٥١ |
| | إن المجرمين فى ضلال وسعر ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك القمر | ٥٤ |
| | أفنجعل المسلمين كالمجرمين ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك القلم | ٦٨ |
| | إلا أصحاب اليمين . فى جنات يتساءلون . عن المجرمين | ٤١ | ك المدثر | ٧٤ |
| | كذلك نفعل بالمجرمين ... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك المرسلات | ٧٧ |
| مُجْرِمِيهَا: | وكذلك جعلنا فى كل قرية أكابر مجرميها ليمكروا فيها | ١٢٣ | ك الأنعام | ٦ |
| جَرَمَ: | لا جرم أنهم فى الآخرة هم الأخسرون... ... ... | ٢٢ | ك هود | ١١ |
| (٥) | لا جرم أن الله يعلم ما يسرون وما يعلنون ... ... | ٢٣ | ك النحل | ١٦ |
| | لا جرم أن لهم النار وأنهم مفرطون... ... ... ... | ٦٢ | ك « | ١٦ |
| | لا جرم أنهم فى الآخرة هم الخاسرون ... ... | ١٠٩ | ك « | ١٦ |
| | لا جرم أنما تدعوننى إليه ليس له دعوة فى الدنيا ولا فى الآخرة | ٤٣ | ك غافر | ٤٠ |

***

| اللفظة | الآيـة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| جَرَيْنَ: | حتى إذا كنتم فى الفلك وجرين بهم بريح طيبة وفرحوا بها جاءتها ريح عاصف ... ... ... ... | ٢٢ | ك يونس | ١٠ |
| تَجْرِى: | أن لهم جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... | ٢٥ | م البقرة | ٢ |
| (٥١) | والفلك التى تجرى فى البحر بما ينفع الناس... ... | ١٦٤ | م « | ٢ |
| | جنة من نخيل وأعناب تجرى من تحتها الأنهار | ٢٦٦ | م « | ٢ |
| | للذين اتقوا عند ربهم جنات تجرى من تحتها الأنهار | ١٥ | م آل عمران | ٣ |
| | وجنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها ... ... | ١٣٦ | م « | ٣ |
| | ولأدخلنهم جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... | ١٩٥ | م « | ٣ |
| | لهم جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها | ١٩٨ | م « | ٣ |
| | ومن يطع الله ورسوله يدخله جنات تجرى من تحتها الأنهار | ١٣ | م النساء | ٤ |
| | سندخلهم جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها أبدا | ٥٧ | م « | ٤ |
| | سندخلهم جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها أبدا | ١٢٢ | م « | ٤ |
| | ولأدخلنكم جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... | ١٢ | م المائدة | ٥ |
| | فأثابهم الله بما قالوا جنات تجرى من تحتها الأنهار | ٨٥ | م « | ٥ |
| | لهم جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها أبدا | ١١٩ | م « | ٥ |
| | وجعلنا الأنهار تجرى من تحتهم ... ... ... ... | ٦ | ك الأنعام | ٦ |
| | ونزعنا ما فى صدورهم من غل تجرى من تحتهم الأنهار | ٤٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | وعد الله المؤمنين والمؤمنات جنات تجرى من تحتها الأنهار | ٧٢ | م التوبة | ٩ |
| | أعد الله لهم جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... | ٨٩ | م « | ٩ |
| | وأعد لهم جنات تجرى تحتها الأنهار ... ... ... | ١٠٠ | م « | ٩ |
| | تجرى من تحتهم الأنهار فى جنات النعيم... ... ... | ٩ | ك يونس | ١٠ |
| | وهى تجرى بهم فى موج كالجبال ... ... ... ... | ٤٢ | ك هود | ١١ |
| | مثل الجنة التى وعد المتقون تجرى من تحتها الأنهار | ٣٥ | م الرعد | ١٣ |
| | وأدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وسخر لكم الفلك لتجرى فى البحر بأمره... ... ... | ٣٢ | ك « | ١٤ |
| | جنات عدن يدخلونها تجرى من تحتها الأنهار | ٣١ | ك النحل | ١٦ |
| | أولئك لهم جنات عدن تجرى من تحتهم الأنهار | ٣١ | ك الكهف | ١٨ |
| | جنات عدن تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها | ٧٦ | ك طه | ٢٠ |
| | ولسليمان الريح عاصفة تجرى بأمره ... ... ... ... | ٨١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | إن الله يدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات تجرى من تحتها الأنهار... ... ... ... ... | ١٤ | م الحج | ٢٢ |
| | إن الله يدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... ... | ٢٣ | م « | ٢٢ |
| | ألم تر أن الله سخر لكم ما فى الأرض والفلك تجرى فى البحر بأمره ... ... ... ... ... ... | ٦٥ | م « | ٢٢ |
| | إن شاء جعل لك خيرا من ذلك جنات تجرى من تحتها الأنهار | ١٠ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | لنبوئنهم من الجنة غرفا تجرى من تحتها الأنهار | ٥٨ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وليذيقكم من رحمته ولتجرى الفلك بأمره ... ... | ٤٦ | ك الروم | ٣٠ |
| | ألم تر أن الفلك تجرى فى البحر بنعمة الله ... ... | ٣١ | ك لقمان | ٣١ |
| | والشمس تجرى لمستقر لها... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك يس | ٣٦ |
| | فسخرنا له الريح تجرى بأمره رخاء حيث أصاب | ٣٦ | ك ص | ٣٨ |
| | لهم غرف من فوقها غرف مبنية تجرى من تحتها الأنهار | ٢٠ | ك الزمر | ٣٩ |
| | أليس لى ملك مصر وهذه الأنهار تجرى من تحتى | ٥١ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | الله الذى سخر لكم البحر لتجرى الفلك فيه بأمره | ١٢ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | إن الله يدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات تجرى من تحتها الأنهار... ... ... ... ... | ١٢ | م محمد | ٤٧ |
| | ليدخل المؤمنين والمؤمنات جنات تجرى من تحتها الأنهار | ٥ | م الفتح | ٤٨ |
| | ومن يطع الله ورسوله يدخله جنات تجرى من تحتها الأنهار | ١٧ | م « | ٤٨ |
| | وحملناه على ذات ألواح ودسر . تجرى بأعيننا | ١٤ | ك القمر | ٥٤ |
| | بشراكم اليوم جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها | ١٢ | م الحديد | ٥٧ |
| | ويدخلهم جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها | ٢٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| | يغفر لكم ذنوبكم ويدخلكم جنات تجرى من تحتها الأنهار | ١٢ | م الصف | ٦١ |
| | يكفر عنه سيئاته ويدخله جنات تجرى من تحتها الأنهار | ٩ | م التغابن | ٦٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَجْرِي | ومن يؤمن بالله ويعمل صالحا يدخله جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... | ١١ | م الطلاق | ٦٥ |
| | ويدخلكم جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... | ٨ | م التحريم | ٦٦ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك البروج | ٨٥ |
| | جزاؤهم عند ربهم جنات عدن تجرى من تحتها الأنهار | ٨ | م البينة | ٩٨ |
| تَجْرِيَانِ | فيهما عينان تجريان ... ... ... ... ... ... | ٥٠ | م الرحمن | ٥٥ |
| يَجْرِي | كل يجرى لأجل مسمى ... ... ... ... ... ... | ٢ | م الرعد | ١٣ |
| (٤) | وسخر الشمس والقمر كل يجرى إلى أجل مسمى | ٢٩ | ك لقمان | ٣١ |
| | وسخر الشمس والقمر كل يجرى لأجل مسمى ... ... | ١٣ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وسخر الشمس والقمر كل يجرى لأجل مسمى... ... | ٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| جَارِيَةٍ | إنا لما طغى الماء حملناكم فى الجارية... ... | ١١ | ك الحاقة | ٦٩ |
| (٢) | فيها عين جارية ... ... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك الغاشية | ٨٨ |
| فَالْجَارِيَاتِ | فالجاريات يسرا . فالمقسمات أمرا . إنما توعدون لصادق ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك الذاريات | ٥١ |
| الْجَوَارِ | ومن آياته الجوار فى البحر كالأعلام ... ... | ٣٢ | ك الشورى | ٤٢ |
| (٣) | وله الجوار المنشآت فى البحر كالأعلام ... ... ... | ٢٤ | م الرحمن | ٥٥ |
| | فلا أقسم بالخنس . الجوار الكنس ... ... ... | ١٦ | ك التكوير | ٨١ |
| مَجْرٰهَا | وقال اركبوا فيها باسم الله مجريها ومرساها | ٤١ | ك هود | ١١ |
| جُزْءٌ | لها سبعة أبواب لكل باب منهم جزء مقسوم | ٤٤ | ك الحجر | ١٥ |
| جُزْءًا | ثم اجعل على كل جبل منهن جزءا ثم ادعهن يأتينك سعيا | ٢٦٠ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | وجعلوا له من عباده جزءا إن الإنسان لكفور مبين | ١٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| جَزِعْنَا | سواء علينا أجزعنا أم صبرنا ما لنا من محيص | ٢١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| جَزُوعًا | إن الإنسان خلق هلوعا . إذا مسه الشر جزوعا | ٢٠ | ك المعارج | ٧٠ |
| جَزَاهُمْ | وجزاهم بما صبروا جنة وحريرا ... ... ... | ١٢ | م الإنسان | ٧٦ |
| جَزَيْتُهُمُ | إنى جزيتهم اليوم بما صبروا أنهم هم الفائزون | ١١١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| جَزَيْنَاهُمْ | ذلك جزيناهم ببغيهم وإنا لصادقون ... ... | ١٤٦ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | ذلك جزيناهم بما كفروا وهل نجازى إلا الكفور | ١٧ | ك سبأ | ٣٤ |
| تَجْزِي | واتقوا يوما لا تجزى نفس عن نفس شيئا ... ... | ٤٨ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | واتقوا يوما لا تجزى نفس عن نفس شيئا ولا يقبل منها عدل | ١٢٣ | م « | ٢ |
| تَجْزِي | ومن يرد ثواب الآخرة نؤته منها وسنجزى الشاكرين | ١٤٥ | م آل عمران | ٣ |
| (٢١) | وكذلك نجزى المحسنين... ... ... ... ... ... | ٨٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | سنجزى الذين يصدفون عن آياتنا سوء العذاب | ١٥٧ | ك « | ٦ |
| | ولا يدخلون الجنة حتى يلج الجمل فى سم الخياط وكذلك نجزى المجرمين ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك الأعراف | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| نَجْزِي | لهم من جهنم مهاد ومن فوقهم غواش وكذلك نجزى الظالمين ... ... ... ... ... ... | ٤١ | ك الأعراف | ٧ |
| | وكذلك نجزى المفترين ... ... ... ... ... ... | ١٥٢ | ك « | ٧ |
| | وما كانوا ليؤمنوا كذلك نجزى القوم المجرمين | ١٣ | ك يونس | ١٠ |
| | ولما بلغ أشده آتيناه حكما وعلما وكذلك نجزى المحسنين | ٢٢ | ك يوسف | ١٢ |
| | قالوا جزاؤه من وجد فى رحله فهو جزاؤه كذلك نجزى الظالمين | ٧٥ | ك « | ١٢ |
| | وكذلك نجزى من أسرف ولم يؤمن بآيات ربه | ١٢٧ | ك طه | ٢٠ |
| | فذلك نجزيه جهنم كذلك نجزى الظالمين ... ... ... | ٢٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ولما بلغ أشده واستوى آتيناه حكما وعلما وكذلك نجزى المحسنين ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك القصص | ٢٨ |
| | كذلك نجزى كل كفور ... ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك فاطر | ٣٥ |
| | سلام على نوح فى العالمين . إنا كذلك نجزى المحسنين | ٨٠ | ك الصافات | ٣٧ |
| | قد صدقت الرؤيا إنا كذلك نجزى المحسنين ... ... | ١٠٥ | ك « | ٣٧ |
| | سلام على إبراهيم . كذلك نجزى المحسنين ... ... | ١١٠ | ك « | ٣٧ |
| | سلام على موسى وهرون . إنا كذلك نجزى المحسنين | ١٢١ | ك « | ٣٧ |
| | سلام على إل ياسين . إنا كذلك نجزى المحسنين | ١٣١ | ك « | ٣٧ |
| | فأصبحوا لا يرى إلا مساكنهم كذلك نجزى القوم المجرمين | ٢٥ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | نعمة من عندنا كذلك نجزى من شكر ... ... ... | ٣٥ | ك القمر | ٥٤ |
| | كلوا واشربوا هنيئا بما كنتم تعملون . إنا كذلك نجزى المحسنين ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك المرسلات | ٧٧ |
| لَنَجْزِيَنَّ | ولنجزين الذين صبروا أجرهم بأحسن ما كانوا يعملون ... ... ... ... ... ... | ٩٦ | ك النحل | ١٦ |
| لَنَجْزِيَنَّهُمْ | ولنجزينهم أجرهم بأحسن ما كانوا يعملون | ٩٧ | ك « | ١٦ |
| (٣) | لنكفرن عنهم سيئاتهم ولنجزينهم أحسن الذى كانوا يعملون ... ... ... ... ... ... | ٧ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | ولنجزينهم أسوأ الذى كانوا يعملون ... ... ... | ٢٧ | ك فصلت | ٤١ |
| نَجْزِيهِ | ومن يقل منهم إنى إله من دونه فذلك نجزيه جهنم | ٢٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| يَجْزِي | وسيجزى الله الشاكرين ... ... ... ... ... | ١٤٤ | م آل عمران | ٣ |
| (١٢) | ليجزى الذين آمنوا وعملوا الصالحات بالقسط... ... | ٤ | ك يونس | ١٠ |
| | فأوف لنا الكيل وتصدق علينا إن الله يجزى المتصدقين | ٨٨ | ك يوسف | ١٢ |
| | ليجزى الله كل نفس ما كسبت إن الله سريع الحساب | ٥١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | لهم فيها ما يشاءون كذلك يجزى الله المتقين ... ... | ٣١ | ك النحل | ١٦ |
| | ليجزى الذين آمنوا وعملوا الصالحات من فضله | ٤٥ | ك الروم | ٣٠ |
| | واخشوا يوما لا يجزى والد عن ولده... ... ... | ٣٣ | ك لقمان | ٣١ |
| | ليجزى الله الصادقين بصدقهم ... ... ... ... | ٢٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ليجزى الذين آمنوا وعملوا الصالحات أولئك لهم مغفرة ورزق كريم ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك سبأ | ٣٤ |
| | ليجزى قوما بما كانوا يكسبون ... ... ... ... | ١٤ | م الجاثية | ٤٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَجْزِيَ | لجزى الذين أساءوا بما عملوا... ... ... ... | ٣١ | ك النجم | ٥٣ |
| | ويجزى الذين أحسنوا بالحسنى ... ... ... ... | ٣١ | ك « | ٥٣ |
| لِيَجْزِيَكَ | قالت إن أبى يدعوك ليجزيك أجر ماسقيت لنا | ٢٥ | ك القصص | ٢٨ |
| يَجْزِيهِمْ | سيجزيهم بما كانوا يفترون ... ... ... ... | ١٣٨ | ك الأنعام | ٦ |
| (٥) | سيجزيهم وصفهم إنه حكيم عليم ... ... ... ... | ١٣٩ | ك « | ٦ |
| | ليجزيهم الله أحسن ما كانوا يعملون ... ... ... | ١٢١ | م التوبة | ٩ |
| | ليجزيهم الله أحسن ما عملوا ويزيدهم من فضله | ٣٨ | م النور | ٢٤ |
| | ويجزيهم أجرهم بأحسن الذى كانوا يعملون... ... | ٣٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| تُجْزَى | إن الساعة آتية أكاد أخفيها لتجزى كل نفس بما تسعى | ١٥ | ك طه | ٢٠ |
| (٤) | اليوم تجزى كل نفس بما كسبت... ... ... ... | ١٧ | ك غافر | ٤٠ |
| | ولتجزى كل نفس بما كسبت وهم لا يظلمون | ٢٢ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | وما لأحد عنده من نعمة تجزى ... ... ... ... | ١٩ | ك الليل | ٩٢ |
| تُجْزَوْنَ | اليوم تجزون عذاب الهون ... ... ... ... | ٩٣ | م الأنعام | ٦ |
| (٩) | ذوقوا عذاب الخلد هل تجزون إلا بما كنتم تكسبون | ٥٢ | ك يونس | ١٠ |
| | هل تجزون إلا ما كنتم تعملون ... ... ... ... | ٩٠ | ك النمل | ٢٧ |
| | فاليوم لا تظلم نفس شيئا ولا تجزون إلا ما كنتم تعملون | ٥٤ | ك يس | ٣٦ |
| | وما تجزون إلا ما كنتم تعملون... ... ... ... | ٣٩ | ك الصافات | ٣٧ |
| | كل أمة تدعى إلى كتابها اليوم تجزون ما كنتم تعملون | ٢٨ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | فاليوم تجزون عذاب الهون بما كنتم تستكبرون ... | ٢٠ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | سواء عليكم إنما تجزون ما كنتم تعملون ... ... | ١٦ | ك الطور | ٥٢ |
| | لا تعتذروا اليوم إنما تجزون ما كنتم تعملون ... | ٧ | م التحريم | ٦٦ |
| يُجْزَ | من يعمل سوءا يجز به ولا يجد له من دون الله وليا ولا نصيرا | ١٢٣ | م النساء | ٤ |
| يُجْزَى | ومن جاء بالسيئة فلا يجزى إلا مثلها... ... ... | ١٦٠ | ك الأنعام | ٦ |
| (٣) | ومن جاء بالسيئة فلا يجزى الذين عملوا السيئات إلا ما كانوا يعملون ... ... ... ... ... ... | ٨٤ | ك القصص | ٢٨ |
| | من عمل سيئة فلا يجزى إلا مثلها ... ... ... ... | ٤٠ | ك غافر | ٤٠ |
| يُجْزَاهُ | ثم يجزاه الجزاء الأوفى ... ... ... ... ... | ٤١ | ك النجم | ٥٣ |
| يُجْزَوْنَ | إن الذين يكسبون الإثم سيجزون بما كانوا يقترفون | ١٢٠ | ك الأنعام | ٦ |
| (٥) | هل يجزون إلا ما كانوا يعملون... ... ... ... | ١٤٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | وذروا الذين يلحدون فى أسمائه سيجزون ما كانوا يعملون | ١٨٠ | ك « | ٧ |
| | أولئك يجزون الغرفة بما صبروا ويلقون فيها تحية وسلاما | ٧٥ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | هل يجزون إلا ما كانوا يعملون ... ... ... ... | ٣٣ | ك سبأ | ٣٤ |
| نُجَازِى | ذلك جزيناهم بما كفروا وهل نجازى إلا الكفور | ١٧ | ك « | ٣٤ |
| جَازٍ | ولا مولود هو جاز عن والده شيئا... ... ... ... | ٣٣ | ك لقمان | ٣١ |
| جَزَاءُ | فما جزاء من يفعل ذلك منكم إلا خزى فى الحياة الدنيا | ٨٥ | م البقرة | ٢ |
| (٣٢) | فإن قاتلوكم فاقتلوهم كذلك جزاء الكافرين ... ... | ١٩١ | م « | ٢ |
| | فتكون من أصحاب النار وذلك جزاء الظالمين... ... | ٢٩ | م المائدة | ٥ |
| جَزَاءُ | إنما جزاء الذين يحاربون الله ورسوله ويسعون فى الأرض فسادا أن يقتلوا ... ... ... ... | ٣٣ | م المائدة | ٥ |
| | والسارق والسارقة فاقطعوا أيديهما جزاء بما كسبا | ٣٨ | م « | ٥ |
| | وذلك جزاء المحسنين ... ... ... ... ... ... | ٨٥ | م « | ٥ |
| | ومن قتله منكم متعمدا فجزاء مثل ما قتل من النعم | ٩٥ | م « | ٥ |
| | وعذب الذين كفروا وذلك جزاء الكافرين ... ... | ٢٦ | م التوبة | ٩ |
| | فليضحكوا قليلا وليبكوا كثيرا جزاء بما كانوا يكسبون | ٨٢ | م « | ٩ |
| | إنهم رجس ومأواهم جهنم جزاء بما كانوا يكسبون | ٩٥ | م « | ٩ |
| | والذين كسبوا السيئات جزاء سيئة بمثلها ... ... ... | ٢٧ | ك يونس | ١٠ |
| | قالت ما جزاء من أراد بأهلك سوءا إلا أن يسجن | ٢٥ | ك يوسف | ١٢ |
| | قال أذهب فمن تبعك منهم فإن جهنم جزاؤكم جزاء موفورا | ٦٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وأما من آمن وعمل صالحا فله جزاء الحسنى ... ... | ٨٨ | م الكهف | ١٨ |
| | وذلك جزاء من تزكى ... ... ... ... ... ... | ٧٦ | ك طه | ٢٠ |
| | كانت لهم جزاء ومصيرا... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | فلا تعلم نفس ما أخفى لهم من قرة أعين جزاء بما كانوا يعملون ... ... ... ... ... ... | ١٧ | م السجدة | ٣٢ |
| | فأولئك لهم جزاء الضعف بما عملوا وهم فى الغرفات آمنون | ٣٧ | ك سبأ | ٣٤ |
| | لهم ما يشاءون عند ربهم ذلك جزاء المحسنين ... | ٣٤ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ذلك جزاء أعداء الله النار ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك فصلت | ٤١ |
| | لهم فيها دار الخلد جزاء بما كانوا بآياتنا يجحدون | ٢٨ | ك « | ٤١ |
| | وجزاء سيئة سيئة مثلها... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك الشورى | ٤٢ |
| | أولئك أصحاب الجنة خالدين فيها جزاء بما كانوا يعملون | ١٤ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | ثم يجزاه الجزاء الأوفى... ... ... ... ... ... | ٤١ | ك النجم | ٥٣ |
| | تجرى بأعيننا جزاء لمن كان كفر ... ... ... ... | ١٤ | ك القمر | ٥٤ |
| | هل جزاء الإحسان إلا الإحسان ... ... ... ... | ٦٠ | م الرحمن | ٥٥ |
| | جزاء بما كانوا يعملون... ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | وذلك جزاء الظالمين... ... ... ... ... ... | ١٧ | م الحشر | ٥٩ |
| | إنما نطعمكم لوجه الله لا نريد منكم جزاء ولا شكورا | ٩ | م الإنسان | ٧٦ |
| | إن هذا كان لكم جزاء وكان سعيكم مشكورا ... ... | ٢٢ | م « | ٧٦ |
| | جزاء وفاقا... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك النبأ | ٧٨ |
| | لا يسمعون فيها لغوا ولا كذابا. جزاء من ربك عطاء حسابا | ٣٦ | ك « | ٧٨ |
| جَزَاؤُكُمْ | قال أذهب فمن تبعك منهم فإن جهنم جزاؤكم | ٦٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| جَزَاؤُهُ | ومن يقتل مؤمنا متعمدا فجزاؤه جهنم خالدا فيها | ٩٣ | م النساء | ٤ |
| (٤) | قالوا فما جزاؤه إن كنتم كاذبين ... ... ... ... | ٧٤ | ك يوسف | ١٢ |
| | قالوا جزاؤه من وجد فى رحله ... ... ... ... | ٧٥ | ك « | ١٢ |
| | فهو جزاؤه كذلك نجزى الظالمين ... ... ... ... | ٧٥ | ك « | ١٢ |
| جَزَاؤُهُمْ | أولئك جزاؤهم أن عليهم لعنة الله والملائكة | ٨٧ | م آل عمران | ٣ |
| (٥) | أولئك جزاؤهم مغفرة من ربهم ... ... ... ... | ١٣٦ | م « | ٣ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| جَزَاؤُهُمْ | ذلك جزاؤهم بأنهم كفروا بآياتنا ... ... ... | ٩٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ذلك جزاؤهم جهنم بما كفروا واتخذوا آياتى ورسلى هزوا | ١٠٦ | ك الكهف | ١٨ |
| | جزاؤهم عند ربهم جنات عدن تجرى من تحتها الأنهار | ٨ | م البينة | ٩٨ |
| الجِزْيَةَ | حتى يعطوا الجزية عن يد وهم صاغرون | ٢٩ | م التوبة | ٩ |
| جَسَدًا | واتخذ قوم موسى من بعده من حليهم عجلا جسدا | ١٤٨ | ك الأعراف | ٧ |
| (٤) | فأخرج لهم عجلا جسدا له خوار ... ... ... ... | ٨٨ | ك طه | ٢٠ |
| | وما جعلناهم جسدا لا يأكلون الطعام وما كانوا خالدين | ٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ولقد فتنا سليمان وألقينا على كرسيه جسدا ثم أناب | ٣٤ | ك ص | ٣٨ |
| تَجَسَّسُوا | ولا تجسسوا ولا يغتب بعضكم بعضا ... ... | ١٢ | م الحجرات | ٤٩ |
| الجِسْمِ | قال إن الله اصطفاه عليكم وزاده بسطة فى العلم والجسم | ٢٤٧ | م البقرة | ٢ |
| أَجْسَامُهُمْ | وإذا رأيتهم تعجبك أجسامهم ... ... ... | ٤ | م المنافقون | ٦٣ |
| جَعَلَ | الذى جعل لكم الأرض فراشا والسماء بناء | ٢٢ | م البقرة | ٢ |
| (٧٧) | ولا تؤتوا السفهاء أموالكم التى جعل الله لكم قياما | ٥ | م النساء | ٤ |
| | فما جعل الله لكم عليهم سبيلا ... ... ... ... | ٩٠ | م » | ٤ |
| | اذكروا نعمة الله عليكم إذ جعل فيكم أنبياء ... ... | ٢٠ | م المائدة | ٥ |
| | من لعنه الله وغضب عليه وجعل منهم القردة والخنازير | ٦٠ | م » | ٥ |
| | جعل الله الكعبة البيت الحرام قياما للناس ... ... | ٩٧ | م » | ٥ |
| | ما جعل الله من بحيرة ولا سائبة ولا وصيلة ولا حام | ١٠٣ | م » | ٥ |
| | الحمد لله الذى خلق السموات والأرض وجعل الظلمات والنور ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الأنعام | ٦ |
| | فالق الإصباح وجعل الليل سكنا والشمس والقمر حسبانا | ٩٦ | ك » | ٦ |
| | وهو الذى جعل لكم النجوم لتهتدوا بها فى ظلمات البر والبحر | ٩٧ | ك » | ٦ |
| | هو الذى خلقكم من نفس واحدة وجعل منها زوجها | ١٨٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | وجعل كلمة الذين كفروا السفلى وكلمة الله هى العليا | ٤٠ | م التوبة | ٩ |
| | هو الذى جعل الشمس ضياء والقمر نورا وقدره منازل | ٥ | ك يونس | ١٠ |
| | هو الذى جعل لكم الليل لتسكنوا فيه والنهار مبصرا | ٦٧ | ك » | ١٠ |
| | ولو شاء ربك لجعل الناس أمة واحدة ولا يزالون مختلفين | ١١٨ | ك هود | ١١ |
| | فلما جهزهم بجهازهم جعل السقاية فى رحل أخيه | ٧٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | وهو الذى مد الأرض وجعل فيها رواسى وأنهارا | ٣ | م الرعد | ١٣ |
| | ومن كل الثمرات جعل فيها زوجين اثنين... ... ... | ٣ | م » | ١٣ |
| | والله جعل لكم من أنفسكم أزواجا ... ... ... | ٧٢ | ك النحل | ١٦ |
| | وجعل لكم من أزواجكم بنين وحفدة ورزقكم من الطيبات | ٧٢ | ك » | ١٦ |
| | وجعل لكم السمع والأبصار والأفئدة لعلكم تشكرون | ٧٨ | ك » | ١٦ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| جَعَلَ | والله جعل لكم من بيوتكم سكنا ... ... ... | ٨٠ | ك النحل | ١٦ |
| | وجعل لكم من جلود الأنعام بيوتا ... ... ... ... | ٨٠ | ك » | ١٦ |
| | والله جعل لكم مما خلق ظلالا ... ... ... ... | ٨١ | ك » | ١٦ |
| | وجعل لكم من الجبال أكنانا ... ... ... ... ... | ٨١ | ك » | ١٦ |
| | وجعل لكم سرابيل تقيكم الحر ... ... ... ... ... | ٨١ | ك » | ١٦ |
| | وجعل لهم أجلا لا ريب فيه ... ... ... ... ... | ٩٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فناداها من تحتها ألا تحزنى قد جعل ربك تحتك سريا | ٢٤ | ك مريم | ١٩ |
| | الذى جعل لكم الأرض مهدا وسلك لكم فيها سبلا | ٥٣ | ك طه | ٢٠ |
| | هو اجتباكم وما جعل عليكم فى الدين من حرج | ٧٨ | م الحج | ٢٢ |
| | تبارك الذى إن شاء جعل لك خيرا من ذلك | ١٠ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وهو الذى جعل لكم الليل لباسا والنوم سباتا... ... | ٤٧ | ك » | ٢٥ |
| | وجعل النهار نشورا ... ... ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك » | ٢٥ |
| | وجعل بينهما برزخا وحجرا محجورا ... ... ... ... | ٥٣ | ك » | ٢٥ |
| | تبارك الذى جعل فى السماء بروجا ... ... ... ... | ٦١ | ك » | ٢٥ |
| | وجعل فيها سراجا وقمرا منيرا ... ... ... ... ... | ٦١ | ك » | ٢٥ |
| | وهو الذى جعل الليل والنهار خلفة لمن أراد أن يذكر | ٦٢ | ك » | ٢٥ |
| | أمن جعل الأرض قرارا ... ... ... ... ... ... | ٦١ | ك النمل | ٢٧ |
| | وجعل خلالها أنهارا ... ... ... ... ... ... ... | ٦١ | ك » | ٢٧ |
| | وجعل لها رواسى ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦١ | ك » | ٢٧ |
| | وجعل بين البحرين حاجزا ... ... ... ... ... ... | ٦١ | ك » | ٢٧ |
| | إن فرعون علا فى الأرض وجعل أهلها شيعا... ... | ٤ | ك القصص | ٢٨ |
| | قل أرأيتم إن جعل الله عليكم الليل سرمدا إلى يوم القيامة من إله غير الله يأتيكم بضياء... ... ... | ٧١ | ك » | ٢٨ |
| | قل أرأيتم إن جعل الله عليكم النهار سرمدا إلى يوم القيامة من إله غير الله يأتيكم بليل تسكنون فيه | ٧٢ | ك » | ٢٨ |
| | ومن رحمته جعل لكم الليل والنهار لتسكنوا فيه ولتبتغوا من فضله ... ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك » | ٢٨ |
| | فإذا أوذى فى الله جعل فتنة الناس كعذاب الله | ١٠ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | وجعل بينكم مودة ورحمة ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك الروم | ٣٠ |
| | الله الذى خلقكم من ضعف ثم جعل من بعد ضعف قوة | ٥٤ | ك » | ٣٠ |
| | ثم جعل من بعد قوة ضعفا وشيبة ... ... ... ... | ٥٤ | ك » | ٣٠ |
| | ثم جعل نسله من سلالة من ماء مهين ... ... ... | ٨ | ك السجدة | ٣٢ |
| | وجعل لكم السمع والأبصار والأفئدة ... ... ... | ٩ | ك » | ٣٢ |
| | ما جعل الله لرجل من قلبين فى جوفه ... ... ... | ٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وما جعل أزواجكم اللائى تظاهرون منهن أمهاتكم | ٤ | م » | ٣٣ |
| | وما جعل أدعياءكم أبناءكم ... ... ... ... ... | ٤ | م » | ٣٣ |
| | الذى جعل لكم من الشجر الأخضر نارا فإذا أنتم منه توقدون | ٨٠ | ك يس | ٣٦ |
| | أجعل الآلهة إلها واحدا إن هذا لشىء عجاب... ... | ٥ | ك ص | ٣٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| جَعَلَ : | خلقكم من نفس واحدة ثم جعل منها زوجها | ٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| | نسى ما كان يدعوا إليه من قبل وجعل لله أندادا | ٨ | ك « | ٣٩ |
| | الله الذى جعل لكم الليل لتسكنوا فيه والنهار مبصرا | ٦١ | ك غافر | ٤٠ |
| | الله الذى جعل لكم الأرض قرارا والسماء بناء... ... | ٦٤ | ك « | ٤٠ |
| | الله الذى جعل لكم الأنعام لتركبوا منها ومنها تأكلون | ٧٩ | ك « | ٤٠ |
| | وجعل فيها رواسى من فوقها وبارك فيها ... ... | ١٠ | ك فصلت | ٤١ |
| | جعل لكم من أنفسكم أزواجا ومن الأنعام أزواجا | ١١ | ك الشورى | ٤٢ |
| | الذى جعل لكم الأرض مهدا ... ... ... ... ... | ١٠ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وجعل لكم فيها سبلا لعلكم تهتدون ... ... ... ... | ١٠ | ك « | ٤٣ |
| | وجعل لكم من الفلك والأنعام ما تركبون ... ... | ١٢ | ك « | ٤٣ |
| | وختم على سمعه وقلبه وجعل على بصره غشاوة... ... | ٢٣ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | إذ جعل الذين كفروا فى قلوبهم الحمية حمية الجاهلية | ٢٦ | م الفتح | ٤٨ |
| | فعلم ما لم تعلموا فجعل من دون ذلك فتحا قريبا | ٢٧ | م « | ٤٨ |
| | الذى جعل مع الله إلها آخر فألقياه فى العذاب الشديد | ٢٦ | ك ق | ٥٠ |
| | قد جعل الله لكل شىء قدرا ... ... ... ... ... | ٣ | م الطلاق | ٦٥ |
| | هو الذى جعل لكم الأرض ذلولا ... ... ... ... | ١٥ | ك الملك | ٦٧ |
| | هو الذى أنشأكم وجعل لكم السمع والأبصار والأفئدة | ٢٣ | ك « | ٦٧ |
| | وجعل القمر فيهن نورا... ... ... ... ... ... | ١٦ | ك نوح | ٧١ |
| | وجعل الشمس سراجا ... ... ... ... ... ... | ١٦ | ك « | ٧١ |
| | والله جعل لكم الأرض بساطا ... ... ... ... ... | ١٩ | ك « | ٧١ |
| | ثم كان علقة فخلق فسوى . فجعل منه الزوجين الذكر والأنثى | ٣٩ | ك القيامة | ٧٥ |
| جَعَلَا : | فلما آتاهما صالحا جعلا له شركاء فيما آتاهما ... | ١٩٠ | ك الأعراف | ٧ |
| جَعَلْتُ : | ذرنى ومن خلقت وحيدا . وجعلت له مالا ممدودا | ١٢ | ك المدثر | ٧٤ |
| جَعَلْتُمْ : (٣) | أجعلتم سقاية الحاج وعمارة المسجد الحرام كمن آمن بالله واليوم الآخر ... ... ... ... ... ... | ١٩ | م التوبة | ٩ |
| | قل أرأيتم ما أنزل الله لكم من رزق فجعلتم منه حراما وحلالا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٩ | ك يونس | ١٠ |
| | ولا تنقضوا الأيمان بعد توكيدها وقد جعلتم الله عليكم كفيلا | ٩١ | ك النحل | ١٦ |
| جَعَلْتَهُ : | ما تذر من شىء أتت عليه إلا جعلته كالرميم... ... | ٤٢ | ك الذاريات | ٥١ |
| جَعَلَكُمْ : | وجعلكم ملوكا وآتاكم ما لم يؤت أحدا من العالمين | ٢٠ | م المائدة | ٥ |
| (٩) | ولو شاء الله لجعلكم أمة واحدة ولكن ليبلوكم فى ما آتاكم | ٤٨ | م « | ٥ |
| | وهو الذى جعلكم خلائف الأرض ... ... ... ... | ١٦٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | واذكروا إذ جعلكم خلفاء من بعد قوم نوح ... ... | ٦٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | واذكروا إذ جعلكم خلفاء من بعد عاد وبوأكم فى الأرض | ٧٤ | ك « | ٧ |
| | ولو شاء الله لجعلكم أمة واحدة ... ... ... ... | ٩٣ | ك النحل | ١٦ |
| | والله خلقكم من تراب ثم من نطفة ثم جعلكم أزواجا | ١١ | ك فاطر | ٣٥ |
| | هو الذى جعلكم خلائف فى الأرض ... ... ... | ٣٩ | ك « | ٣٥ |
| جَعَلَكُمْ : | وأنفقوا مما جعلكم مستخلفين فيه ... ... | ٧ | م الحديد | ٥٧ |
| جَعَلْنَا : | وإذ جعلنا البيت مثابة للناس وأمنا ... ... ... | ١٢٥ | م البقرة | ٢ |
| (٧٠) | وما جعلنا القبلة التى كنت عليها إلا لنعلم من يتبع الرسول ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٣ | م « | ٢ |
| | ولكل جعلنا موالى مما ترك الوالدان والأقربون | ٣٣ | م النساء | ٤ |
| | وأولئكم جعلنا لكم عليهم سلطانا مبينا ... ... ... | ٩١ | م « | ٤ |
| | فبما نقضهم ميثاقهم لعناهم وجعلنا قلوبهم قاسية ... | ١٣ | م المائدة | ٥ |
| | لكل جعلنا منكم شرعة ومنهاجا ... ... ... ... | ٤٨ | م « | ٥ |
| | وجعلنا الأنهار تجرى من تحتهم ... ... ... ... ... | ٦ | ك الأنعام | ٦ |
| | وجعلنا على قلوبهم أكنة أن يفقهوه وفى آذانهم وقرا | ٢٥ | ك « | ٦ |
| | وكذلك جعلنا لكل نبى عدوا شياطين الإنس والجن | ١١٢ | ك « | ٦ |
| | وجعلنا له نورا يمشى به فى الناس ... ... ... ... | ١٢٢ | ك « | ٦ |
| | وكذلك جعلنا فى كل قرية أكابر مجرميها ليمكروا فيها | ١٢٣ | ك « | ٦ |
| | ولقد مكناكم فى الأرض وجعلنا لكم فيها معايش ... | ١٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | إنا جعلنا الشياطين أولياء للذين لا يؤمنون ... ... | ٢٧ | ك « | ٧ |
| | فلما جاء أمرنا جعلنا عاليها سافلها ... ... ... | ٨٢ | ك هود | ١١ |
| | ولقد أرسلنا رسلا من قبلك وجعلنا لهم أزواجا وذرية | ٣٨ | م الرعد | ١٣ |
| | ولقد جعلنا فى السماء بروجا وزيناها للناظرين ... ... | ١٦ | ك الحجر | ١٥ |
| | وجعلنا لكم فيها معايش ومن لستم له برازقين... ... | ٢٠ | ك « | ١٥ |
| | فجعلنا عاليها سافلها وأمطرنا عليهم حجارة من سجيل | ٧٤ | ك « | ١٥ |
| | وجعلنا جهنم للكافرين حصيرا ... ... ... ... ... | ٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وجعلنا الليل والنهار آيتين ... ... ... ... ... | ١٢ | ك « | ١٧ |
| | فمحونا آية الليل وجعلنا آية النهار مبصرة ... ... | ١٢ | ك « | ١٧ |
| | ثم جعلنا له جهنم يصلاها مذموما مدحورا ... ... | ١٨ | ك « | ١٧ |
| | ومن قتل مظلوما فقد جعلنا لوليه سلطانا ... ... ... | ٣٣ | م « | ١٧ |
| | وإذا قرأت القرآن جعلنا بينك وبين الذين لا يؤمنون بالآخرة حجابا مستورا ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك « | ١٧ |
| | وجعلنا على قلوبهم أكنة أن يفقهوه وفى آذانهم وقرا | ٤٦ | ك « | ١٧ |
| | وما جعلنا الرؤيا التى أريناك إلا فتنة للناس ... | ٦٠ | ك « | ١٧ |
| | إنا جعلنا ما على الأرض زينة لها لنبلوهم أيهم أحسن عملا | ٧ | ك الكهف | ١٨ |
| | واضرب لهم مثلا رجلين جعلنا لأحدهما جنتين من أعناب | ٣٢ | ك « | ١٨ |
| | وحففناهما بنخل وجعلنا بينهما زرعا ... ... ... | ٣٢ | ك « | ١٨ |
| | فدعوهم فلم يستجيبوا لهم وجعلنا بينهم موبقا ... ... | ٥٢ | ك « | ١٨ |
| | إنا جعلنا على قلوبهم أكنة أن يفقهوه وفى آذانهم وقرا | ٥٧ | ك « | ١٨ |
| | وتلك القرى أهلكناهم لما ظلموا وجعلنا لمهلكهم موعدا | ٥٩ | ك « | ١٨ |
| | وهبنا له إسحق ويعقوب وكلا جعلنا نبيا ... ... | ٤٩ | ك مريم | ١٩ |
| | ووهبنا لهم من رحمتنا وجعلنا لهم لسان صدق عليا | ٥٠ | ك « | ١٩ |
| | وجعلنا من الماء كل شىء حى ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك الأنبياء | ٢١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| جَعَلْنَا | وجعلنا فى الأرض رواسى أن تميد بهم ... ... | ٣١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وجعلنا فيها فجاجا سبلا لعلهم يهتدون ... ... ... | ٣١ | ك « | ٢١ |
| | وجعلنا السماء سقفا محفوظا... ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك « | ٢١ |
| | وما جعلنا لبشر من قبلك الخلد أفإن مت فهم الخالدون | ٣٤ | ك « | ٢١ |
| | ووهبنا له إسحق ويعقوب نافلة وكلا جعلنا صالحين | ٧٢ | ك « | ٢١ |
| | ولكل أمة جعلنا منسكا ليذكروا اسم الله على ما رزقهم | ٣٤ | م الحج | ٢٢ |
| | لكل أمة جعلنا منسكا هم ناسكوه ... ... ... ... | ٦٧ | م « | ٢٢ |
| | وجعلنا ابن مريم وأمه آية ... ... ... ... ... ... | ٥٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وجعلنا بعضكم لبعض فتنة أتصبرون ... ... ... ... | ٢٠ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وكذلك جعلنا لكل نبى عدوا من المجرمين ... ... | ٣١ | ك « | ٢٥ |
| | ولقد آتينا موسى الكتاب وجعلنا معه أخاه هرون وزيرا | ٣٥ | ك « | ٢٥ |
| | ثم جعلنا الشمس عليه دليلا... ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك « | ٢٥ |
| | ألم يروا أنا جعلنا الليل ليسكنوا فيه والنهار مبصرا | ٨٦ | ك النمل | ٢٧ |
| | وجعلنا فى ذريته النبوة والكتاب وآتيناه أجره فى الدنيا | ٢٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | أو لم يروا أنا جعلنا حرما آمنا ويتخطف الناس من حولهم | ٦٧ | ك « | ٢٩ |
| | وجعلنا منهم أئمة يهدون بأمرنا لما صبروا ... ... | ٢٤ | ك السجدة | ٣٢ |
| | وجعلنا بينهم وبين القرى التى باركنا فيها قرى ظاهرة | ١٨ | ك سبأ | ٣٤ |
| | وجعلنا الأغلال فى أعناق الذين كفروا... ... ... | ٣٣ | ك « | ٣٤ |
| | إنا جعلنا فى أعناقهم أغلالا فهى إلى الأذقان فهم مقمحون | ٨ | ك يس | ٣٦ |
| | وجعلنا من بين أيديهم سدا ومن خلفهم سدا ... ... | ٩ | ك « | ٣٦ |
| | وجعلنا فيها جنات من نخيل وأعناب وفجرنا فيها من العيون | ٣٤ | ك « | ٣٦ |
| | وجعلنا ذريته هم الباقين ... ... ... ... ... ... | ٧٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| | لجعلنا لمن يكفر بالرحمن لبيوتهم سقفا من فضة | ٣٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | أجعلنا من دون الرحمن آلهة يعبدون ... ... ... | ٤٥ | ك « | ٤٣ |
| | ولو نشاء لجعلنا منكم ملائكة فى الأرض يخلفون | ٦٠ | ك « | ٤٣ |
| | وجعلنا لهم سمعا وأبصارا وأفئدة ... ... ... ... | ٢٦ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | وجعلنا فى ذريتهما النبوة والكتاب ... ... ... ... | ٢٦ | م الحديد | ٥٧ |
| | وجعلنا فى قلوب الذين اتبعوه رأفة ورحمة ... ... | ٢٧ | م « | ٥٧ |
| | وما جعلنا أصحاب النار إلا ملائكة ... ... ... ... | ٣١ | ك المدثر | ٧٤ |
| | وما جعلنا عدتهم إلا فتنة للذين كفروا ... ... ... | ٣١ | ك « | ٧٤ |
| | وجعلنا فيها رواسى شامخات وأسقيناكم ماء فراتا | ٢٧ | ك المرسلات | ٧٧ |
| | وجعلنا نومكم سباتا ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك النبأ | ٧٨ |
| | وجعلنا الليل لباسا ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك « | ٧٨ |
| | وجعلنا النهار معاشا... ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك « | ٧٨ |
| | وجعلنا سراجا وهاجا ... ... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك « | ٧٨ |
| جَعَلْنَاكَ | ولو شاء الله ما أشركوا وما جعلناك عليهم حفيظا | ١٠٧ | ك الأنعام | ٦ |
| (٣) | يا داود إنا جعلناك خليفة فى الأرض ... ... ... | ٢٦ | ك ص | ٣٨ |
| | ثم جعلناك على شريعة من الأمر فاتبعها... ... ... | ١٨ | ك الجاثية | ٤٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| جَعَلْنَاكُمْ | وكذلك جعلناكم أمة وسطا لتكونوا شهداء على الناس | ١٤٣ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | ثم جعلناكم خلائف فى الأرض من بعدهم ... ... | ١٤ | ك يونس | ١٠ |
| | وأمددناكم بأموال وبنين وجعلناكم أكثر نفيرا ... | ٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| | إنا خلقناكم من ذكر وأنثى وجعلناكم شعوبا وقبائل لتعارفوا | ١٣ | م الحجرات | ٤٩ |
| جَعَلْنَاهُ | ولو جعلناه ملكا ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك الأنعام | ٦ |
| (١٥) | لجعلناه رجلا وللبسنا عليهم ما يلبسون ... ... ... | ٩ | ك « | ٦ |
| | وآتينا موسى الكتاب وجعلناه هدى لبنى إسرائيل | ٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| | والمسجد الحرام الذى جعلناه للناس سواء العاكف | | | |
| | فيه والباد ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | م الحج | ٢٢ |
| | ثم جعلناه نطفة فى قرار مكين ... ... ... ... | ١٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وقدمنا إلى ما عملوا من عمل فجعلناه هباء منثورا ... | ٢٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وجعلناه هدى لبنى إسرائيل ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك السجدة | ٣٢ |
| | ولو جعلناه قرآنا أعجميا لقالوا لولا فصلت آياته | ٤٤ | ك فصلت | ٤١ |
| | ولكن جعلناه نورا نهدى به من نشاء من عبادنا | ٥٢ | ك الشورى | ٤٢ |
| | إنا جعلناه قرآنا عربيا لعلكم تعقلون ... ... ... | ٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | إن هو إلا عبد أنعمنا عليه وجعلناه مثلا لبنى إسرائيل | ٥٩ | ك « | ٤٣ |
| | لو نشاء لجعلناه حطاما فظلتم تفكهون ... ... ... | ٦٥ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | لو نشاء جعلناه أجاجا فلولا تشكرون ... ... ... | ٧٠ | ك « | ٥٦ |
| | إنا خلقنا الإنسان من نطفة أمشاج نبتليه فجعلناه سميعا بصيرا | ٢ | م الإنسان | ٧٦ |
| | ألم نخلقكم من ماء مهين . فجعلناه فى قرار مكين | ٢١ | ك المرسلات | ٧٧ |
| جَعَلْنَاهَا | فجعلناها نكالا لما بين يديها وما خلفها وموعظة للمتقين | ٦٦ | م البقرة | ٢ |
| (٨) | فجعلناها حصيدا كأن لم تغن بالأمس ... ... ... | ٢٤ | ك يونس | ١٠ |
| | فنفخنا فيها من روحنا وجعلناها وابنها آية للعالمين | ٩١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | والبدن جعلناها لكم من شعائر الله لكم فيها خير | ٣٦ | م الحج | ٢٢ |
| | فأنجيناه وأصحاب السفينة وجعلناها آية للعالمين | ١٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | إنا جعلناها فتنة للظالمين ... ... ... ... ... | ٦٣ | ك الصافات | ٣٧ |
| | نحن جعلناها تذكرة ومتاعا للمقوين ... ... ... ... | ٧٣ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | ولقد زينا السماء الدنيا بمصابيح وجعلناها رجوما للشياطين | ٥ | ك الملك | ٦٧ |
| جَعَلْنَاهُمْ | فنجيناه ومن معه فى الفلك وجعلناهم خلائف | ٧٣ | ك يونس | ١٠ |
| (١٢) | وما جعلناهم جسدا لا يأكلون الطعام وما كانوا خالدين | ٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | فما زالت تلك دعواهم حتى جعلناهم حصيدا خامدين | ١٥ | ك « | ٢١ |
| | وأرادوا به كيدا فجعلناهم الأخسرين ... ... ... | ٧٠ | ك « | ٢١ |
| | وجعلناهم أئمة يهدون بأمرنا ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك « | ٢١ |
| | فأخذتهم الصيحة بالحق فجعلناهم غثاء... ... ... ... | ٤١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فأتبعنا بعضهم بعضا وجعلناهم أحاديث ... ... ... | ٤٤ | ك « | ٢٣ |
| | وقوم نوح لما كذبوا الرسل أغرقناهم وجعلناهم | | | |
| | للناس آية ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وجعلناهم أئمة يدعون إلى النار... ... ... ... ... | ٤١ | ك القصص | ٢٨ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| جَعَلْنَاهُمْ | : فجعلناهم أحاديث ومزقناهم كل ممزق ... ... | ك سبأ | ١٩ | ٣٤ |
| | فأرادوا به كيدا فجعلناهم الأسفلين ... ... ... ... | ك الصافات | ٩٨ | ٣٧ |
| | فجعلناهم سلفا ومثلا للآخرين ... ... ... ... ... | ك الزخرف | ٥٦ | ٤٣ |
| جَعَلْنَاهُنَّ | : إنا أنشأناهن إنشاء . فجعلناهن أبكارا ... ... | ك الواقعة | ٣٦ | ٥٦ |
| جَعَلَنِي | : قال إني عبد الله آتاني الكتاب وجعلني نبيا | ك مريم | ٣٠ | ١٩ |
| (٤) | وجعلني مباركا أين ما كنت... ... ... ... ... ... | ك « | ٣١ | ١٩ |
| | فوهب لي ربي حكما وجعلني من المرسلين ... ... | ك الشعراء | ٢١ | ٢٦ |
| | ياليت قومي يعلمون . بما غفر لي ربي وجعلني من المكرمين | ك يس | ٢٧ | ٣٦ |
| جَعَلَهُ | : وما جعله الله إلا بشرى لكم ولتطمئن قلوبكم به | م آل عمران | ١٢٦ | ٣ |
| (٩) | فلما تجلى ربه للجبل جعله دكا وخر موسى صعقا | ك الأعراف | ١٤٣ | ٧ |
| | وما جعله الله إلا بشرى ولتطمئن به قلوبكم ... ... | م الأنفال | ١٠ | ٨ |
| | حتى إذا جعله نارا قال آتوني أفرغ عليه قطرا | م الكهف | ٩٦ | ١٨ |
| | فإذا جاء وعد ربي جعله دكاء وكان وعد ربي حقا | م « | ٩٨ | ١٨ |
| | ألم تر إلى ربك كيف مد الظل ولو شاء لجعله ساكنا | ك الفرقان | ٤٥ | ٢٥ |
| | وهو الذي خلق من الماء بشرا فجعله نسبا وصهرا | ك « | ٥٤ | ٢٥ |
| | فاجتباه ربه فجعله من الصالحين ... ... ... ... | م القلم | ٥٠ | ٦٨ |
| | والذي أخرج المرعى . فجعله غثاء أحوى ... ... | ك الأعلى | ٥ | ٨٧ |
| جَعَلَهَا | : هذا تأويل رؤياي من قبل قد جعلها ربي حقا | ك يوسف | ١٠٠ | ١٢ |
| (٢) | وجعلها كلمة باقية في عقبه لعلهم يرجعون ... ... | ك الزخرف | ٢٨ | ٤٣ |
| جَعَلَهُمْ | : فجعلهم جذاذا إلا كبيرا لهم لعلهم إليه يرجعون | ك الأنبياء | ٥٨ | ٢١ |
| (٣) | ولو شاء الله لجعلهم أمة واحدة ... ... ... ... | ك الشورى | ٨ | ٤٢ |
| | فجعلهم كعصف مأكول... ... ... ... ... ... ... | ك الفيل | ٥ | ١٠٥ |
| جَعَلُوا | : وجعلوا لله شركاء الجن وخلقهم ... ... ... ... | ك الأنعام | ١٠٠ | ٦ |
| (١١) | وجعلوا لله مما ذرأ من الحرث والأنعام نصيبا | ك « | ١٣٦ | ٦ |
| | أم جعلوا لله شركاء خلقوا كخلقه فتشابه الخلق عليهم | م الرعد | ١٦ | ١٣ |
| | وجعلوا لله شركاء قل سموهم ... ... ... ... ... | م « | ٣٣ | ١٣ |
| | وجعلوا لله أندادا ليضلوا عن سبيله ... ... ... | ك إبراهيم | ٣٠ | ١٤ |
| | كما أنزلنا على المقتسمين . الذين جعلوا القرآن عضين | ك الحجر | ٩١ | ١٥ |
| | قالت إن الملوك إذا دخلوا قرية أفسدوها وجعلوا | | | |
| | أعزة أهلها أذلة ... ... ... ... ... ... ... | ك النمل | ٣٤ | ٢٧ |
| | وجعلوا بينه وبين الجنة نسبا... ... ... ... ... | ك الصافات | ١٥٨ | ٣٧ |
| | وجعلوا له من عباده جزءا ... ... ... ... ... ... | ك الزخرف | ١٥ | ٤٣ |
| | وجعلوا الملائكة الذين هم عباد الرحمن إناثا... ... | ك « | ١٩ | ٤٣ |
| | وإني كلما دعوتهم لتغفر لهم جعلوا أصابعهم في آذانهم | ك نوح | ٧ | ٧١ |
| أَجْعَلْ | : فأعينوني بقوة أجعل بينكم وبينهم ردما ... ... | م الكهف | ٩٥ | ١٨ |
| لَأَجْعَلَنَّكَ | : قال لئن اتخذت إلها غيري لأجعلنك من المسجونين | ك الشعراء | ٢٩ | ٢٦ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَجْعَلُ | : قالوا أتجعل فيها من يفسد فيها ويسفك الدماء | م البقرة | ٣٠ | ٢ |
| (٦) | لا تجعل مع الله إلها آخر فتقعد مذموما مخذولا | ك الإسراء | ٢٢ | ١٧ |
| | ولا تجعل يدك مغلولة إلى عنقك ولا تبسطها كل البسط | ك « | ٢٩ | ١٧ |
| | ولا تجعل مع الله إلها آخر فتلقى في جهنم ملوما مدحورا | ك « | ٣٩ | ١٧ |
| | فهل نجعل لك خرجا على أن تجعل بيننا وبينهم سدا | م الكهف | ٩٤ | ١٨ |
| | ولا تجعل في قلوبنا غلا للذين آمنوا... ... ... ... | م الحشر | ١٠ | ٥٩ |
| تَجْعَلْنَا | : قالوا ربنا لا تجعلنا مع القوم الظالمين... ... ... | ك الأعراف | ٤٧ | ٧ |
| (٣) | فقالوا على الله توكلنا ربنا لا تجعلنا فتنة للقوم الظالمين | ك يونس | ٨٥ | ١٠ |
| | ربنا لا تجعلنا فتنة للذين كفروا واغفر لنا ربنا | م الممتحنة | ٥ | ٦٠ |
| تَجْعَلْنِي | : فلا تشمت بي الأعداء ولا تجعلني مع القوم الظالمين | ك الأعراف | ١٥٠ | ٧ |
| (٢) | رب فلا تجعلني في القوم الظالمين... ... ... ... | ك المؤمنون | ٩٤ | ٢٣ |
| تَجْعَلُوا | : فلا تجعلوا لله أندادا وأنتم تعلمون ... ... ... | م البقرة | ٢٢ | ٢ |
| (٥) | ولا تجعلوا الله عرضة لأيمانكم أن تبروا ... ... | م « | ٢٢٤ | ٢ |
| | أتريدون أن تجعلوا لله عليكم سلطانا مبينا ... ... | م النساء | ١٤٤ | ٤ |
| | لا تجعلوا دعاء الرسول بينكم كدعاء بعضكم بعضا | م النور | ٦٣ | ٢٤ |
| | ولا تجعلوا مع الله إلها آخر إني لكم منه نذير مبين | ك الذاريات | ٥١ | ٥١ |
| تَجْعَلُونَ | : قل أئنكم لتكفرون بالذي خلق الأرض في يومين | | | |
| (٢) | وتجعلون له أندادا... ... ... ... ... ... ... | ك فصلت | ٩ | ٤١ |
| | وتجعلون رزقكم أنكم تكذبون ... ... ... ... ... | م الواقعة | ٨٢ | ٥٦ |
| تَجْعَلُونَهُ | : تجعلونه قراطيس تبدونها وتخفون كثيرا ... ... | م الأنعام | ٩١ | ٦ |
| تَجْعَلُ | : ثم نبتهل فنجعل لعنة الله على الكاذبين ... ... | م آل عمران | ٦١ | ٣ |
| (١٣) | بل زعمتم ألن نجعل لكم موعدا ... ... ... ... ... | ك الكهف | ٤٨ | ١٨ |
| | وجدها تطلع على قوم لم نجعل لهم من دونها سترا | م « | ٩٠ | ١٨ |
| | فهل نجعل لك خرجا على أن تجعل بيننا وبينهم سدا | م « | ٩٤ | ١٨ |
| | يازكريا إنا نبشرك بغلام اسمه يحيى لم نجعل له من قبل سميا | ك مريم | ٧ | ١٩ |
| | قال سنشد عضدك بأخيك ونجعل لكما سلطانا | ك القصص | ٣٥ | ٢٨ |
| | بل مكر الليل والنهار إذ تأمروننا أن نكفر بالله | | | |
| | ونجعل له أندادا ... ... ... ... ... ... ... | ك سبأ | ٣٣ | ٣٤ |
| | أم نجعل الذين آمنوا وعملوا الصالحات كالمفسدين | | | |
| | في الأرض ... ... ... ... ... ... ... ... | ك ص | ٢٨ | ٣٨ |
| | أم نجعل المتقين كالفجار ... ... ... ... ... ... | ك « | ٢٨ | ٣٨ |
| | أفنجعل المسلمين كالمجرمين ... ... ... ... ... ... | ك القلم | ٣٥ | ٦٨ |
| | ألم نجعل الأرض كفاتا ... ... ... ... ... ... | ك المرسلات | ٢٥ | ٧٧ |
| | ألم نجعل الأرض مهادا ... ... ... ... ... ... | ك النبأ | ٦ | ٧٨ |
| | ألم نجعل له عينين ... ... ... ... ... ... ... | ك البلد | ٨ | ٩٠ |
| وَلِنَجْعَلَكَ | : وانظر إلى حمارك ولنجعلك آية للناس ... ... | م البقرة | ٢٥٩ | ٢ |
| وَلِنَجْعَلَهُ | : ولنجعله آية للناس ورحمة منا وكان أمرا مقضيا | ك مريم | ٢١ | ١٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| نَجْعَلُهَا : | تلك الدار الآخرة نجعلها للذين لا يريدون علوا | | | |
| (٢) | في الأرض ولا فسادا ... ... ... ... ... ... | ٨٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | لنجعلها لكم تذكرة وتعيها أذن واعية ... ... ... | ١٢ | ك الحاقة | ٦٩ |
| نَجْعَلْهُمَا : | أرنا اللذين أضلانا من الجن والإنس نجعلهما | | | |
| | تحت أقدامنا ... ... ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك فصلت | ٤١ |
| نَجْعَلَهُمْ : | ونريد أن نمن على الذين استضعفوا في الأرض | | | |
| (٣) | ونجعلهم أئمة ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك القصص | ٢٨ |
| | ونجعلهم الوارثين ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك « | ٢٨ |
| | أم حسب الذين اجترحوا السيئات أن نجعلهم | | | |
| | كالذين آمنوا ... ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك الجاثية | ٤٥ |
| يَجْعَلَ : | ليجعل الله ذلك حسرة في قلوبهم ... ... ... | ١٥٦ | م آل عمران | ٣ |
| (٢٨) | يريد الله ألا يجعل لهم حظا في الآخرة ... ... ... | ١٧٦ | م « | ٣ |
| | فأمسكوهن في البيوت حتى يتوفاهن الموت أو يجعل | | | |
| | الله لهن سبيلا ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | م النساء | ٤ |
| | فعسى أن تكرهوا شيئا ويجعل الله فيه خيرا كثيرا | ١٩ | م « | ٤ |
| | ولن يجعل الله للكافرين على المؤمنين سبيلا ... ... | ١٤١ | م « | ٤ |
| | ما يريد الله ليجعل عليكم من حرج ... ... ... ... | ٦ | م المائدة | ٥ |
| | الله أعلم حيث يجعل رسالته... ... ... ... ... | ١٢٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | ومن يرد أن يضله يجعل صدره ضيقا حرجا ... ... | ١٢٥ | ك « | ٦ |
| | كذلك يجعل الله الرجس على الذين لا يؤمنون | ١٢٥ | ك « | ٦ |
| | إن تتقوا الله يجعل لكم فرقانا ويكفر عنكم سيئاتكم | ٢٩ | م الأنفال | ٨ |
| | ليميز الله الخبيث من الطيب ويجعل الخبيث بعضه على بعض | ٣٧ | م « | ٨ |
| | ويجعل الرجس على الذين لا يعقلون... ... ... ... | ١٠٠ | ك يونس | ١٠ |
| | الحمد لله الذي أنزل على عبده الكتاب ولم يجعل له عوجا | ١ | ك الكهف | ١٨ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات سيجعل لهم الرحمن ودا | ٩٦ | ك مريم | ١٩ |
| | ليجعل ما يلقي الشيطان فتنة للذين في قلوبهم مرض | ٥٣ | الحج | ٢٢ |
| | ومن لم يجعل الله له نورا فما له من نور ... ... | ٤٠ | م النور | ٢٤ |
| | تبارك الذي إن شاء جعل لك خيرا من ذلك جنات | | | |
| | تجري من تحتها الأنهار ويجعل لك قصورا | ١٠ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | أو يزوجهم ذكرانا وإناثا ويجعل من يشاء عقيما | ٥٠ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ويجعل لكم نورا تمشون به ويغفر لكم ... ... ... | ٢٨ | م الحديد | ٥٧ |
| | عسى الله أن يجعل بينكم وبين الذين عاديتم منهم مودة | ٧ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | ومن يتق الله يجعل له مخرجا ... ... ... ... | ٢ | م الطلاق | ٦٥ |
| | ومن يتق الله يجعل له من أمره يسرا ... ... ... | ٤ | م « | ٦٥ |
| | سيجعل الله بعد عسر يسرا ... ... ... ... ... | ٧ | م « | ٦٥ |
| | ويمددكم بأموال وبنين ويجعل لكم جنات ... ... | ١٢ | ك نوح | ٧١ |
| | ويجعل لكم أنهارا ... ... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك « | ٧١ |
| | قل إن أدري أقريب ما توعدون أم يجعل له ربي أمدا | ٢٥ | ك الجن | ٧٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَجْعَلُ : | فكيف تتقون إن كفرتم يوما يجعل الولدان شيبا | ١٧ | ك المزمل | ٧٣ |
| | ألم يجعل كيدهم في تضليل ... ... ... ... ... | ٢ | ك الفيل | ١٠٥ |
| وَيَجْعَلُكُمْ : | أمن يجيب المضطر إذا دعاه ويكشف | | | |
| | السوء ويجعلكم خلفاء الأرض ... ... ... ... | ٦٢ | ك النمل | ٢٧ |
| يَجْعَلْنِي : | وبرا بوالدتي ولم يجعلني جبارا شقيا ... ... | ٣٢ | ك مريم | ١٩ |
| يَجْعَلْهُ : | من يشأ الله يضلله ومن يشأ يجعله على صراط مستقيم | ٣٩ | ك الأنعام | ٦ |
| (٥) | ويجعل الخبيث بعضه على بعض فيركمه جميعا فيجعله في جهنم | ٣٧ | م الأنفال | ٨ |
| | ألم تر أن الله يزجي سحابا ثم يؤلف بينه ثم يجعله ركاما | ٤٣ | م النور | ٢٤ |
| | فيبسطه في السماء كيف يشاء ويجعله كسفا ... ... | ٤٨ | ك الروم | ٣٠ |
| | ثم يهيج فتراه مصفرا ثم يجعله حطاما ... ... ... | ٢١ | ك الزمر | ٣٩ |
| يَجْعَلُونَ : | يجعلون أصابعهم في آذانهم من الصواعق حذر الموت | ١٩ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | الذين يجعلون مع الله إلها آخر فسوف يعلمون | ٩٦ | ك الحجر | ١٥ |
| | ويجعلون لما لا يعلمون نصيبا مما رزقناهم ... ... | ٥٦ | ك النحل | ١٦ |
| | ويجعلون لله البنات سبحانه ولهم ما يشتهون... ... | ٥٧ | ك « | ١٦ |
| | ويجعلون لله ما يكرهون ... ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك « | ١٦ |
| يَجْعَلُوهُ : | فلما ذهبوا به وأجمعوا أن يجعلوه في غيابة الجب | ١٥ | ك يوسف | ١٢ |
| اجْعَلْ : | وإذ قال إبراهيم رب اجعل هذا بلدا آمنا ... | ١٢٦ | م البقرة | ٢ |
| (١٤) | فصرهن إليك ثم اجعل على كل جبل منهن جزءا | ٢٦٠ | م « | ٢ |
| | قال رب اجعل لي آية ... ... ... ... ... ... | ٤١ | م آل عمران | ٣ |
| | ربنا أخرجنا من هذه القرية الظالم أهلها واجعل لنا | | | |
| | من لدنك وليا ... ... ... ... ... ... ... | ٧٥ | م النساء | ٤ |
| | واجعل لنا من لدنك نصيرا ... ... ... ... ... | ٧٥ | م « | ٤ |
| | قالوا يا موسى اجعل لنا إلها كما لهم آلهة ... ... | ١٣٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | وإذ قال إبراهيم رب اجعل هذا البلد آمنا ... ... | ٣٥ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | فاجعل أفئدة من الناس تهوي إليهم وارزقهم من الثمرات | ٣٧ | ك « | ١٤ |
| | واجعل لي من لدنك سلطانا نصيرا ... ... ... ... | ٨٠ | م الإسراء | ١٧ |
| | قال رب اجعل لي آية ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك مريم | ١٩ |
| | واجعل لي وزيرا من أهلي . هرون أخي ... ... | ٢٩ | ك طه | ٢٠ |
| | فاجعل بيننا وبينك موعدا... ... ... ... ... | ٥٨ | ك « | ٢٠ |
| | واجعل لي لسان صدق في الآخرين... ... ... ... | ٨٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فاجعل لي صرحا لعلي أطلع إلى إله موسى ... ... | ٣٨ | ك القصص | ٢٨ |
| اجْعَلْنَا : | ربنا واجعلنا مسلمين لك ومن ذريتنا أمة مسلمة لك | ١٢٨ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | ربنا هب لنا من أزواجنا وذرياتنا قرة أعين واجعلنا | | | |
| | للمتقين إماما ... ... ... ... ... ... ... | ٧٤ | ك الفرقان | ٢٥ |
| اجْعَلْنِي : | قال اجعلني على خزائن الأرض إني حفيظ عليم | ٥٥ | ك يوسف | ١٢ |
| (٣) | رب اجعلني مقيم الصلاة ومن ذريتي ربنا وتقبل دعاء | ٤٠ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | واجعلني من ورثة جنة النعيم ... ... ... ... | ٨٥ | ك الشعراء | ٢٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **واجعله** : يرثنى ويرث من آل يعقوب واجعله رب رضيا | | ٦ | ك مريم | ١٩ |
| **اجعلوا** : واجعلوا بيوتكم قبلة وأقيموا الصلاة ... ... | | ٨٧ | ك يونس | ١٠ |
| (٢) وقال لفتيانه اجعلوا بضاعتهم فى رحالهم لعلهم يعرفونها | | ٦٢ | ك يوسف | ١٢ |
| **جعل** : إنما جعل السبت على الذين اختلفوا فيه | | ١٢٤ | ك النحل | ١٦ |
| **جاعل** : وإذ قال ربك للملائكة إنى جاعل فى الأرض خليفة | | ٣٠ | م البقرة | ٢ |
| (٣) وجاعل الذين اتبعوك فوق الذين كفروا إلى يوم القيامة | | ٥٥ | م آل عمران | ٣ |
| الحمد لله فاطر السموات والأرض جاعل الملائكة | | | | |
| رسلا أولى أجنحة ... ... ... ... ... ... ... | | ١ | ك فاطر | ٣٥ |
| **جاعلك** : قال إنى جاعلك للناس إماما ... ... ... ... | | ١٢٤ | م البقرة | ٢ |
| **لجاعلون** : وإنا لجاعلون ما عليها صعيدا جرزا ... ... ... | | ٨ | ك الكهف | ١٨ |
| **وجاعلوه** : إنا رادوه إليك وجاعلوه من المرسلين ... ... | | ٧ | ك القصص | ٢٨ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **جفاء** : فأما الزبد فيذهب جفاء ... ... ... ... ... ... | | ١٧ | م الرعد | ١٣ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **جفان** : يعملون له ما يشاء من محاريب وتماثيل وجفان كالجواب | | ١٣ | ك سبأ | ٣٤ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **تتجافى** : تتجافى جنوبهم عن المضاجع يدعون ربهم خوفا وطمعا | | ١٦ | ك السجدة | ٣٢ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **أجلب** : وأجلب عليهم بخيلك ورجلك ... ... ... ... | | ٦٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| **جلابيبهن** : يأيها النبى قل لأزواجك وبناتك ونساء | | | | |
| المؤمنين يدنين عليهن من جلابيبهن ... ... ... | | ٥٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **جالوت** : قالوا لا طاقة لنا اليوم بجالوت وجنوده... ... | | ٢٤٩ | م البقرة | ٢ |
| (٣) ولما برزوا لجالوت وجنوده قالوا ربنا أفرغ علينا صبرا | | ٢٥٠ | م » | ٢ |
| فهزموهم بإذن الله وقتل داود جالوت... ... ... | | ٢٥١ | م » | ٢ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **فاجلدوا** : الزانية والزانى فاجلدوا كل واحد منهما مائة جلدة | | ٢ | م النور | ٢٤ |
| **فاجلدوهم** : والذين يرمون المحصنات ثم لم يأتوا بأربعة | | | | |
| شهداء فاجلدوهم ثمانين جلدة ... ... ... ... | | ٤ | م » | ٢٤ |
| **جلدة** : الزانية والزانى فاجلدوا كل واحد منهما مائة جلدة | | ٢ | م » | ٢٤ |
| (٢) والذين يرمون المحصنات ثم لم يأتوا بأربعة شهداء | | | | |
| فاجلدوهم ثمانين جلدة ... ... ... ... ... ... | | ٤ | م » | ٢٤ |
| **جلود** : وجعل لكم من جلود الأنعام بيوتا تستخفونها | | ٨٠ | ك النحل | ١٦ |
| (٣) يصهر به ما فى بطونهم والجلود ... ... ... ... ... | | ٢٠ | م الحج | ٢٢ |
| تقشعر منه جلود الذين يخشون ربهم ... ... ... | | ٢٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| **جلودا** : كلما نضجت جلودهم بدلناهم جلودا غيرها | | ٥٦ | م النساء | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **جلودكم** : وما كنتم تستترون أن يشهد عليكم سمعكم ولا أبصاركم | | | | |
| ولا جلودكم ... ... ... ... ... ... ... ... | | ٢٢ | ك فصلت | ٤١ |
| **جلودهم** : كلما نضجت جلودهم بدلناهم جلودا غيرها | | ٥٦ | م النساء | ٤ |
| (٤) ثم تلين جلودهم وقلوبهم إلى ذكر الله ... ... ... | | ٢٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| حتى إذا ما جاءوها شهد عليهم سمعهم وأبصارهم وجلودهم | | ٢٠ | ك فصلت | ٤١ |
| وقالوا لجلودهم لم شهدتم علينا ... ... ... ... ... | | ٢١ | ك » | ٤١ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **المجالس** : إذا قيل لكم تفسحوا فى المجالس فافسحوا | | ١١ | م المجادلة | ٥٨ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **الجلال** : ويبقى وجه ربك ذو الجلال والإكرام ... ... | | ٢٧ | م الرحمن | ٥٥ |
| (٢) تبارك اسم ربك ذى الجلال والإكرام ... ... ... | | ٧٨ | م » | ٥٥ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **جلاها** : والشمس وضحاها . والقمر إذا تلاها . والنهار | | | | |
| إذا جلاها ... ... ... ... ... ... ... ... | | ٣ | ك الشمس | ٩١ |
| **يجليها** : قل إنما علمها عند ربى لا يجليها لوقتها إلا هو | | ١٨٧ | ك الأعراف | ٧ |
| **تجلى** : فلما تجلى ربه للجبل جعله دكا وخر موسى صعقا | | ١٤٣ | ك » | ٧ |
| (٢) والليل إذا يغشى . والنهار إذا تجلى ... ... ... | | ٢ | ك الليل | ٩٢ |
| **الجلاء** : ولولا أن كتب الله عليهم الجلاء لعذبهم فى الدنيا | | ٣ | م الحشر | ٥٩ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **يجدون** : لو يجدون ملجأ أو مغارات أو مدخلا لولوا إليه | | | | |
| وهم يجمحون ... ... ... ... ... ... ... ... | | ٥٧ | م التوبة | ٩ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **جامدة** : وترى الجبال تحسبها جامدة وهى تمر مر السحاب | | ٨٨ | ك النمل | ٢٧ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **جمع** : فتولى فرعون فجمع كيده ثم أتى ... ... ... ... | | ٦٠ | ك طه | ٢٠ |
| (٣) تدعوا من أدبر وتولى . وجمع فأوعى ... ... ... | | ١٨ | ك المعارج | ٧٠ |
| ويل لكل همزة لمزة . الذى جمع مالا وعدده | | ٢ | ك الهمزة | ١٠٤ |
| **جمعناكم** : هذا يوم الفصل جمعناكم والأولين... ... ... | | ٣٨ | ك المرسلات | ٧٧ |
| **جمعناهم** : فكيف إذا جمعناهم ليوم لا ريب فيه ... ... | | ٢٥ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) ونفخ فى الصور فجمعناهم جمعا ... ... ... ... ... | | ٩٩ | م الكهف | ١٨ |
| **جمعهم** : ولو شاء الله لجمعهم على الهدى فلا تكونن من الجاهلين | | ٣٥ | ك الأنعام | ٦ |
| **جمعوا** : الذين قال لهم الناس إن الناس قد جمعوا لكم فاخشوهم | | ١٧٣ | م آل عمران | ٣ |
| **تجمعوا** : وأن تجمعوا بين الأختين إلا ما قد سلف... ... | | ٢٣ | م النساء | ٤ |
| **نجمع** : أيحسب الإنسان ألن نجمع عظامه ... ... ... ... | | ٣ | ك القيامة | ٧٥ |
| **يجمع** : يوم يجمع الله الرسل فيقول ماذا أجبتم ... ... | | ١٠٩ | م المائدة | ٥ |
| (٣) قل يجمع بيننا ربنا ثم يفتح بيننا بالحق وهو الفتاح العليم | | ٢٦ | ك سبأ | ٣٤ |
| لا حجة بيننا وبينكم الله يجمع بيننا وإليه المصير... ... | | ١٥ | ك الشورى | ٤٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَجْمَعُكُمْ | : قل الله يحييكم ثم يميتكم ثم يجمعكم إلى يوم القيامة | ٢٦ | ك الجاثية | ٤٥ |
| (٢) | يوم يجمعكم ليوم الجمع ذلك يوم التغابن ... ... ... | ٩ | م التغابن | ٦٤ |
| لَيَجْمَعَنَّكُمْ | : الله لا إله إلا هـو ليجمعنكم إلى يوم القيامة | ٨٧ | م النساء | ٤ |
| (٢) | كتب على نفسه الرحمة ليجمعنكم إلى يوم القيامة | ١٢ | ك الأنعام | ٦ |
| يَجْمَعُونَ | : ولئن قتلتم في سبيل الله أو متم لمغفرة من الله ورحمة خير مما يجمعون ... ... ... ... ... ... | ١٥٧ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | قل بفضل الله وبرحمته فبذلك فليفرحوا هو خير مما يجمعون | ٥٨ | ك يونس | ١٠ |
| | ورحمة ربك خير مما يجمعون ... ... ... ... | ٣٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| جُمِعَ | : فجمع السحرة لميقات يوم معلوم ... ... ... ... | ٣٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| (٢) | فإذا برق البصر . وخسف القمر . وجمع الشمس والقمر . يقول الإنسان يومئذ أين المفر... ... ... | ٩ | ك القيامة | ٧٥ |
| أَجْمَعُوا | : فلما ذهبوا به وأجمعوا أن يجعلوه في غيابة الجب | ١٥ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | وما كنت لديهم إذ أجمعوا أمرهم وهم يمكرون | ١٠٢ | ك « | ١٢ |
| أَجْمِعُوا | : فأجمعوا أمركم وشركاءكم ثم لا يكن أمركم عليكم غمة | ٧١ | ك يونس | ١٠ |
| (٢) | فأجمعوا كيدكم ثم ائتوا صفا وقد أفلح اليوم من استعلى | ٦٤ | ك طه | ٢٠ |
| اجْتَمَعَتِ | : قل لئن اجتمعت الإنس والجن على أن يأتوا بمثل هذا القرآن لا يأتون بمثله ... ... ... | ٨٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| اجْتَمَعُوا | : إن الذين تدعون من دون الله لن يخلقوا ذبابا ولو اجتمعوا له ... ... ... ... ... | ٧٣ | م الحج | ٢٢ |
| الْجَمْعِ | : لتنذر أم القرى ومن حولها وتنذر يوم الجمع لا ريب فيه | ٧ | ك الشورى | ٤٢ |
| (٣) | سيهزم الجمع ويولون الدبر ... ... ... ... ... | ٤٥ | م القمر | ٥٤ |
| | يوم يجمعكم ليوم الجمع ذلك يوم التغابن... ... ... | ٩ | م التغابن | ٦٤ |
| جَمْعًا | : ونفخ في الصور فجمعناهم جمعا ... ... ... ... | ٩٩ | م الكهف | ١٨ |
| (٣) | أو لم يعلم أن الله قد أهلك من قبله من القرون من هو أشد منه قوة وأكثر جمعا ... ... ... ... | ٧٨ | ك القصص | ٢٨ |
| | فالمغيرات صبحا . فأثرن به نقعا . فوسطن به جمعا | ٥ | ك العاديات | ١٠٠ |
| جَمْعُكُمْ | : قالوا ما أغنى عنكم جمعكم وما كنتم تستكبرون | ٤٨ | ك الأعراف | ٧ |
| جَمْعَهُ | : إن علينا جمعه وقرآنه ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك القيامة | ٧٥ |
| جَمْعِهِمْ | : وهو على جمعهم إذا يشاء قدير ... ... ... ... | ٢٩ | ك الشورى | ٤٢ |
| الْجَمْعَانِ | : إن الذين تولوا منكم يوم التقى الجمعان إنما استزلهم الشيطان ببعض ما كسبوا ... ... ... | ١٥٥ | م آل عمران | ٣ |
| (٤) | وما أصابكم يوم التقى الجمعان فبإذن الله وليعلم المؤمنين | ١٦٦ | م « | ٣ |
| | وما أنزلنا على عبدنا يوم الفرقان يوم التقى الجمعان | ٤١ | م الأنفال | ٨ |
| | فلما تراءا الجمعان قال أصحاب موسى إنا لمدركون | ٦١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| جَامِعٍ | : ربنا إنك جامع الناس ليوم لا ريب فيه إن الله لا يخلف الميعاد ... ... ... ... ... ... | ٩ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | إن الله جامع المنافقين والكافرين في جهنم جميعا | ١٤٠ | م النساء | ٤ |
| | وإذا كانوا معه على أمر جامع لم يذهبوا حتى يستأذنوه | ٦٢ | م النور | ٢٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مَجْمَعَ | : وإذ قال موسى لفتاه لا أبرح حتى أبلغ مجمع البحرين | ٦٠ | ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | فلما بلغا مجمع بينهما نسيا حوتهما فاتخذ سبيله في البحر سربا | ٦١ | ك « | ١٨ |
| مَجْمُوعٌ | : ذلك يوم مجموع له الناس وذلك يوم مشهود | ١٠٣ | ك هود | ١١ |
| لَمَجْمُوعُونَ | : قل إن الأولين والآخرين . لمجموعون إلى ميقات يوم معلوم ... ... ... ... ... ... | ٥٠ | ك الواقعة | ٥٦ |
| مُجْتَمِعُونَ | : وقيل للناس هل أنتم مجتمعون ... ... ... | ٣٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| جَمِيعٌ | : وإنا لجميع حاذرون ... ... ... ... ... ... | ٥٦ | ك « | ٢٦ |
| (٤) | وإن كل لما جميع لدينا محضرون ... ... ... ... | ٣٢ | ك يس | ٣٦ |
| | إن كانت إلا صيحة واحدة فإذا هم جميع لدينا محضرون | ٥٣ | ك « | ٣٦ |
| | أم يقولون نحن جميع منتصر ... ... ... ... ... | ٤٤ | م القمر | ٥٤ |
| جَمِيعًا | : هو الذي خلق لكم ما في الأرض جميعا ثم استوى إلى السماء | ٢٩ | م البقرة | ٢ |
| (٤٩) | قلنا اهبطوا منها جميعا ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | م « | ٢ |
| | أين ما تكونوا يأت بكم الله جميعا إن الله على كل شيء قدير | ١٤٨ | م « | ٢ |
| | ولو يرى الذين ظلموا إذ يرون العذاب أن القوة لله جميعا | ١٦٥ | م « | ٢ |
| | واعتصموا بحبل الله جميعا ولا تفرقوا ... ... ... | ١٠٣ | م آل عمران | ٣ |
| | يا أيها الذين آمنوا خذوا حذركم فانفروا ثبات أو انفروا جميعا ... ... ... ... ... ... | ٧١ | م النساء | ٤ |
| | أيبتغون عندهم العزة فإن العزة لله جميعا ... ... ... | ١٣٩ | م « | ٤ |
| | إن الله جامع المنافقين والكافرين في جهنم جميعا | ١٤٠ | م « | ٤ |
| | ومن يستنكف عن عبادته ويستكبر فسيحشرهم إليه جميعا | ١٧٢ | م « | ٤ |
| | قل فمن يملك من الله شيئا إن أراد أن يهلك المسيح ابن مريم وأمه ومن في الأرض جميعا ... ... | ١٧ | م المائدة | ٥ |
| | من قتل نفسا بغير نفس أو فساد في الأرض فكأنما قتل الناس جميعا ... ... ... ... ... | ٣٢ | م « | ٥ |
| | ومن أحياها فكأنما أحيا الناس جميعا ... ... ... | ٣٢ | م « | ٥ |
| | لو أن لهم ما في الأرض جميعا ومثله معه ليفتدوا به من عذاب يوم القيامة ما تقبل منهم... ... ... | ٣٦ | م « | ٥ |
| | إلى الله مرجعكم جميعا فينبئكم بما كنتم فيه تختلفون | ٤٨ | م « | ٥ |
| | إلى الله مرجعكم جميعا فينبئكم بما كنتم تعملون... ... | ١٠٥ | م « | ٥ |
| | ويوم نحشرهم جميعا ثم نقول للذين أشركوا أين شركاؤكم | ٢٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | ويوم يحشرهم جميعا يا معشر الجن قد استكثرتم من الإنس | ١٢٨ | ك « | ٦ |
| | حتى إذا اداركوا فيها جميعا قالت أخراهم لأولاهم ربنا هؤلاء أضلونا... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | قل يا أيها الناس إني رسول الله إليكم جميعا ... ... | ١٥٨ | ك « | ٧ |
| | ويجعل الخبيث بعضه على بعض فيركمه جميعا فيجعله في جهنم | ٣٧ | م الأنفال | ٨ |
| | لو أنفقت ما في الأرض جميعا ما ألفت بين قلوبهم | ٦٣ | م « | ٨ |
| | إليه مرجعكم جميعا وعد الله حقا ... ... ... ... | ٤ | ك يونس | ١٠ |
| | ويوم نحشرهم جميعا ثم نقول للذين أشركوا مكانكم أنتم وشركاؤكم ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ١٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| جَمِيعًا : | ولا يحزنك قولهم إن العزة لله جميعا هو السميع العليم | ٦٥ | ك يونس | ١٠ |
| | ولو شاء ربك لآمن من فى الأرض كلهم جميعا | ٩٩ | ك « | ١٠ |
| | من دونه فكيدونى جميعا ثم لا تنظرون ... ... ... | ٥٥ | ك هـود | ١١ |
| | فصبر جميل عسى الله أن يأتينى بهم جميعا ... ... | ٨٣ | ك يوسف | ١٢ |
| | لو أن لهم ما فى الأرض جميعا ومثله معه لافتدوا به | ١٨ | م الرعد | ١٣ |
| | بل لله الأمر جميعا... ... ... ... ... ... ... | ٣١ | م « | ١٣ |
| | أفلم ييأس الذين آمنوا أن لو يشاء الله لهدى الناس جميعا | ٣١ | م « | ١٣ |
| | وقد مكر الذين من قبلهم فلله المكر جميعا... ... ... | ٤٢ | م « | ١٣ |
| | وقال موسى إن تكفروا أنتم ومن فى الأرض جميعا فإن الله لغنىّ حميد... ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وبرزوا لله جميعا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك « | ١٤ |
| | فأراد أن يستفزهم من الأرض فأغرقناه ومن معه جميعا | ١٠٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| | قال اهبطا منها جميعا بعضكم لبعض عدو ... ... | ١٢٣ | ك طه | ٢٠ |
| | وتوبوا إلى الله جميعا أيه المؤمنون لعلكم تفلحون ... | ٣١ | م النور | ٢٤ |
| | ليس عليكم جناح أن تأكلوا جميعا أو أشتاتا... ... | ٦١ | م « | ٢٤ |
| | ويوم يحشرهم جميعا ثم يقول للملائكة أهؤلاء إياكم كانوا يعبدون ... ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك سبأ | ٣٤ |
| | من كان يريد العزة فلله العزة جميعا ... ... ... ... | ١٠ | ك فاطر | ٣٥ |
| | قل لله الشفاعة جميعا له ملك السموات والأرض | ٤٤ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ولو أن للذين ظلموا ما فى الأرض جميعا ومثله معه لافتدوا به | ٤٧ | ك « | ٣٩ |
| | لا تقنطوا من رحمة الله إن الله يغفر الذنوب جميعا | ٥٣ | م « | ٣٩ |
| | والأرض جميعا قبضته يوم القيامة... ... ... ... .. | ٦٧ | ك « | ٣٩ |
| | وسخر لكم ما فى السموات وما فى الأرض جميعا منه | ١٣ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | يوم يبعثهم الله جميعا فينبئهم بما عملوا ... ... ... | ٦ | م المجادلة | ٥٨ |
| | يوم يبعثهم الله جميعا فيحلفون له كما يحلفون لكم | ١٨ | م « | ٥٨ |
| | لا يقاتلونكم جميعا إلا فى قرى محصنة أو من وراء جدر | ١٤ | م الحشر | ٥٩ |
| | بأسهم بينهم شديد تحسبهم جميعا وقلوبهم شتى ... | ١٤ | م « | ٥٩ |
| | ومن فى الأرض جميعا ثم ينجيه ... ... ... ... | ١٤ | ك المعارج | ٧٠ |
| أَجْمَعُونَ : | فسجد الملائكة كلهم أجمعون ... ... ... ... | ٣٠ | ك الحجر | ١٥ |
| (٣) | فكبكبوا فيها هم والغاوون . وجنود إبليس أجمعون | ٩٥ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فسجد الملائكة كلهم أجمعون ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك ص | ٣٨ |
| أَجْمَعِينَ : | أولئك عليهم لعنة الله والملائكة والناس أجمعين | ١٦١ | م البقرة | ٢ |
| (٢٣) | أولئك جزاؤهم أن عليهم لعنة الله والملائكة والناس أجمعين | ٨٧ | م آل عمران | ٣ |
| | قل فلله الحجة البالغة فلو شاء لهداكم أجمعين ... ... | ١٤٩ | ك الأنعام | ٦ |
| | لمن تبعك منهم لأملأن جهنم منكم أجمعين ... ... | ١٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | لأقطعن أيديكم وأرجلكم من خلاف ثم لأصلبنكم أجمعين | ١٢٤ | ك « | ٧ |
| | وتمت كلمة ربك لأملأن جهنم من الجنة والناس أجمعين | ١١٩ | ك هود | ١١ |
| | فألقوه على وجه أبى يأت بصيرا وأتونى بأهلكم أجمعين | ٩٣ | ك يوسف | ١٢ |
| أَجْمَعِينَ : | قال رب بما أغويتنى لأزينن لهم فى الأرض ولأغوينهم أجمعين ... ... ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك الحجر | ١٥ |
| | وإن جهنم لموعدهم أجمعين ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك « | ١٥ |
| | إلا آل لوط إنا لمنجوهم أجمعين ... ... ... ... | ٥٩ | ك « | ١٥ |
| | فوربك لنسئلنهم أجمعين... ... ... ... ... ... ... | ٩٢ | ك « | ١٥ |
| | وعلى الله قصد السبيل ومنها جائر ولو شاء لهداكم أجمعين | ٩ | ك النحل | ١٦ |
| | إنهم كانوا قوم سوء فأغرقناهم أجمعين ... ... ... | ٧٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | لأقطعن أيديكم وأرجلكم من خلاف ولأصلبنكم أجمعين | ٤٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وأنجينا موسى ومن معه أجمعين ... ... ... ... ... | ٦٥ | ك « | ٢٦ |
| | فنجيناه وأهله أجمعين ... ... ... ... ... ... ... | ١٧٠ | ك « | ٢٦ |
| | فانظر كيف كان عاقبة مكرهم أنا دمرناهم وقومهم أجمعين | ٥١ | ك النمل | ٢٧ |
| | ولكن حق القول منى لأملأن جهنم من الجنة والناس أجمعين | ١٣ | ك السجدة | ٣٢ |
| | وإن لوطا لمن المرسلين . إذ نجيناه وأهله أجمعين | ١٣٤ | ك الصافات | ٣٧ |
| | قال فبعزتك لأغوينهم أجمعين ... ... ... ... ... | ٨٢ | ك ص | ٣٨ |
| | لأملأن جهنم منك وممن تبعك منهم أجمعين... ... | ٨٥ | ك « | ٣٨ |
| | فلما آسفونا انتقمنا منهم فأغرقناهم أجمعين ... ... | ٥٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | إن يوم الفصل ميقاتهم أجمعين... ... ... ... ... | ٤٠ | ك الدخان | ٤٤ |
| الجُمُعَة : | يأيها الذين آمنوا إذا نودى للصلاة من يوم الجمعة فاسعوا إلى ذكر الله ... ... ... ... ... ... | ٩ | م الجمعة | ٦٢ |
| جَمَال : | ولكم فيها جمال حين تريحون وحين تسرحون ... | ٦ | ك النحل | ١٦ |
| جَمِيل : | قال بل سولت لكم أنفسكم أمرا فصبر جميل والله المستعان ... ... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك يوسف | ١٢ |
| (٣) | قال بل سولت لكم أنفسكم أمرا فصبر جميل عسى الله أن يأتينى بهم جميعا ... ... ... ... ... ... | ٨٣ | ك « | ١٢ |
| | وإن الساعة لآتية فاصفح الصفح الجميل ... ... ... | ٨٥ | ك الحجر | ١٥ |
| جَمِيلًا : | فتعالين أمتعكن وأسرحكن سراحا جميلا ... ... | ٢٨ | م الأحزاب | ٣٣ |
| (٤) | فتعوهن وسرحوهن سراحا جميلا ... ... ... ... | ٤٩ | م « | ٣٣ |
| | فاصبر صبرا جميلا ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك المعارج | ٧٠ |
| | واصبر على ما يقولون واهجرهم هجرا جميلا ... ... | ١٠ | م المزمل | ٧٣ |
| جِمَالَة : | إنها ترمى بشرر كالقصر . كأنه جمالة صفر... ... | ٣٣ | ك المرسلات | ٧٧ |
| الجَمَل : | ولا يدخلون الجنة حتى يلج الجمل فى سم الخياط | ٤٠ | ك الأعراف | ٧ |
| جُمْلَة : | وقال الذين كفروا لولا نزل عليه القرآن جملة واحدة | ٣٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| جَمًّا : | وتحبون المال حبا جما ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك الفجر | ٨٩ |
| اجْنُبْنِى : | رب اجعل هذا البلد آمنا واجنبنى وبنىّ أن نعبد الأصنام ... ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك إبراهيم | ١٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| سيُجَنَّبُهَا | : وسيجنبها الأتقى . الذى يؤتى ماله يتزكى ... | ١٧ | ك الليـل | ٩٢ |
| يَتَجَنَّبُهَا | : ويتجنبها الأشقى . الذى يصلى النار الكبرى ... | ١١ | ك الأعـلى | ٨٧ |
| اجْتَنِبُوا | : والذين اجتنبوا الطاغوت أن يعبدوها وأنابوا إلى الله لهم البشرى ... .. ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الزمر | ٣٩ |
| تَجْتَنِبُوا | : إن تجتنبوا كبائر ما تنهون عنه نكفر عنكم سيئاتكم | ٣١ | م النسـاء | ٤ |
| يَجْتَنِبُونَ | : والذين يجتنبون كبائر الإثم والفواحش وإذا ما غضبوا هم يغفرون ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك الشورى | ٤٢ |
| (٢) | الذين يجتنبون كبائر الإثم والفواحش إلا اللمم | ٣٢ | م النجـم | ٥٣ |
| اجْتَنِبُوا | : ولقد بعثنا فى كل أمة رسولا أن اعبدوا الله | | | |
| (٤) | واجتنبوا الطاغوت ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك النحـل | ١٦ |
| | فاجتنبوا الرجس من الأوثان ... ... ... ... ... | ٣٠ | م الحـج | ٢٢ |
| | واجتنبوا قول الزور ... ... ... ... ... ... . | ٣٠ | م » | ٢٢ |
| | يأيها الذين آمنـوا اجتنبوا كثيرا من الظن إن بعض الظن إثم ... . ... ... ... ... ... ... | ١٢ | م الحجرات | ٤٩ |
| فَاجْتَنِبُوهُ | : رجس من عمل الشيطان فاجتنبوه لعلكم تفلحون | ٩٠ | م المائدة | ٥ |
| جَنْبِ | : والجار الجنب والصاحب بالجنب وابن السبيل | ٣٦ | م النسـاء | ٤ |
| (٢) | أن تقول نفس يا حسرتى على ما فرطت فى جنب الله | ٥٦ | ك الـزمر | ٣٩ |
| لِجَنْبِهِ | : وإذا مس الإنسان الضر دعانا لجنبه أو قاعدا أو قائما | ١٢ | ك يونس | ١٠ |
| جُنُوبِكُمْ | : فإذا قضيتم الصلاة فاذكروا الله قياما وقعودا وعلى جنوبكم ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٣ | م النسـاء | ٤ |
| جُنُوبُهَا | : فإذا وجبت جنوبها فكلوا منها وأطعموا القانع والمعتر ... ... ... ... ... ... ... | ٣٦ | م الحـج | ٢٢ |
| جُنُوبِهِمْ | : الذين يذكرون الله قياما وقعودا وعلى جنوبهم | ١٩١ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | يوم يحمى عليها فى نار جهنم فتكوى بها جباههم وجنوبهم وظهورهم ... ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | م التـوبة | ٩ |
| | تتجافى جنوبهم عن المضاجع يدعون ربهم خوفا وطمعا | ١٦ | م السـجدة | ٣٢ |
| جُنُبٍ | : والجار الجنب والصاحب بالجنب وابن السبيل | ٣٦ | م النسـاء | ٤ |
| (٢) | وقالت لأخته قصيه فبصرت به عن جنب وهم لا يشعرون | ١١ | ك القصص | ٢٨ |
| جُنُبًا | : ولا جنبا إلا عابرى سبيل حتى تغتسلوا ... ... | ٤٣ | م النسـاء | ٤ |
| (٢) | وإن كنتم جنبا فاطهروا ... ... ... ... ... | ٦ | م المائدة | ٥ |
| جَانِبِ | : أفأمنتم أن يخسف بكم جانب البر أو يرسل عليكم حاصبا | ٦٨ | ك الإسـراء | ١٧ |
| (٧) | وناديناه من جانب الطور الأيمن وقربناه نجيا... ... | ٥٢ | ك مـريم | ١٩ |
| | قد أنجيناكم من عدوكم وواعدناكم جانب الطور الأيمن | ٨٠ | ك طـه | ٢٠ |
| | فلما قضى موسى الأجل وسار بأهله آنس من جانب الطور نارا... ... ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك القصص | ٢٨ |
| | وما كنت بجانب الغربى إذ قضينا إلى موسى الأمر | ٤٤ | ك » | ٢٨ |
| | وما كنت بجانب الطور إذ نادينا ولكن رحمة من ربك | ٤٦ | ك » | ٢٨ |
| | لا يسمعون إلى الملإ الأعلى ويقذفون من كل جانب | ٨ | ك الصافات | ٣٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بِجَانِبِهِ | : وإذا أنعمنا على الإنسان أعرض ونأى بجانبه | | | |
| (٢) | وإذا مسه الشر كان يئوسا... ... ... ... ... | ٨٣ | ك الإسـراء | ١٧ |
| | وإذا أنعمنا على الإنسان أعرض ونأى بجانبه وإذا مسه الشر فذو دعاء عريض ... ... ... | ٥١ | ك فصلت | ٤١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| جَنَحُوا | : وإن جنحوا للسلم فاجنح لها وتوكل على الله | ٦١ | م الأنفال | ٨ |
| فَاجْنَحْ | : وإن جنحوا للسلم فاجنح لها وتوكل على الله | ٦١ | م » | ٨ |
| جَنَاحَ | : واخفض لهما جناح الذل من الرحمة وقل رب ارحمهما كما ربيانى صغيرا ... ... . ... ... ... ... | ٢٤ | ك الإسـراء | ١٧ |
| جَنَاحَكَ | : ولا تحزن عليهم واخفض جناحك للمؤمنين | ٨٨ | ك الحجر | ١٥ |
| (٤) | واضمم يدك إلى جناحك تخرج بيضاء من غير سوء | ٢٢ | ك طـه | ٢٠ |
| | واخفض جناحك لمن اتبعك من المؤمنين ... ... | ٢١٥ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| | واضمم إليك جناحك من الرهب ... ... ... ... | ٣٢ | ك القصص | ٢٨ |
| بِجَنَاحَيْهِ | : وما من دابة فى الأرض ولا طائر يطير بجناحيه إلا أمم أمثالكم ... ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك الأنعـام | ٦ |
| أُجْنِحَةٍ | : الحمد لله فاطر السموات والأرض جاعل الملائكة رسلا أولى أجنحة... ... ... ... ... ... ... | ١ | ك فاطـر | ٣٥ |
| جُنَاحٌ | : فمن حج البيت أو اعتمر فلا جناح عليه | | | |
| (٢٥) | أن يطوف بهما ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٨ | م البقـرة | ٢ |
| | ليس عليكم جناح أن تبتغوا فضلا من ربكم ... ... | ١٩٨ | م » | ٢ |
| | فإن خفتم ألا يقيما حدود الله فلا جناح عليهما فيما افتدت به ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢٩ | م » | ٢ |
| | فإن طلقها فلا جناح عليهما أن يتراجعا إن ظنا أن يقيما حدود الله ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣٠ | م » | ٢ |
| | فإن أرادا فصالا عن تراض منهما وتشاور فلا جناح عليهما | ٢٣٣ | م » | ٢ |
| | وإن أردتم أن تسترضعوا أولادكم فلا جناح عليكم إذا سلمتم ما آتيتم بالمعروف ... ... ... ... | ٢٣٣ | م » | ٢ |
| | فإذا بلغن أجلهن فلا جناح عليكم فيما فعلن فى أنفسهن بالمعروف ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣٤ | م » | ٢ |
| | ولا جناح عليكم فيما عرضتم به من خطبة النساء | ٢٥ | م » | ٢ |
| | لا جناح عليكم إن طلقتم النساء ما لم تمسوهن ... ... | ٢٣٦ | م » | ٢ |
| | فإن خرجن فلا جناح عليكم فى ما فعلن فى أنفسهن من معروف ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٤٠ | م » | ٢ |
| | فليس عليكم جناح ألا تكتبوها ... ... ... ... ... | ٢٨٢ | م » | ٢ |
| | فإن لم تكونوا دخلتم بهن فلا جناح عليكم ... ... | ٢٣ | م النسـاء | ٤ |
| | ولا جناح عليكم فيما تراضيتم به من بعد الفريضة | ٢٤ | م » | ٤ |
| | فليس عليكم جناح أن تقصروا من الصلاة ... ... | ١٠١ | م » | ٤ |
| | ولا جناح عليكم إن كان بكم أذى من مطر أو كنتم مرضى أن تضعوا أسلحتكم... ... ... ... ... | ١٠٢ | م » | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| جُنَاح: | وإن امرأة خافت من بعلها نشوزا أو إعراضا | | | |
| | فلا جناح عليهما أن يصلحا بينهما صلحا ... ... | ١٢٨ | م النساء | ٤ |
| | ليس على الذين آمنوا وعملوا الصالحات جناح فيما طعموا | ٩٣ | م المائدة | ٥ |
| | ليس عليكم جناح أن تدخلوا بيوتا غير مسكونة | | | |
| | فيها متاع لكم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٩ | م النور | ٢٤ |
| | ليس عليكم ولا عليهم جناح بعدهن ... ... ... ... | ٥٨ | م « | ٢٤ |
| | فليس عليهن جناح أن يضعن ثيابهن غير متبرجات بزينة | ٦٠ | م « | ٢٤ |
| | ليس عليكم جناح أن تأكلوا جميعا أو أشتاتا ... ... | ٦١ | م « | ٢٤ |
| | وليس عليكم جناح فيما أخطأتم به ولكن ما تعمدت قلوبكم | ٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ومن ابتغيت ممن عزلت فلا جناح عليك ... ... | ٥١ | م « | ٣٣ |
| | لا جناح عليهن فى آبائهن ولا أبنائهن ولا إخوانهن | ٥٥ | م « | ٣٣ |
| | ولا جناح عليكم أن تنكحوهن إذا آتيتموهن أجورهن | ١٠ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | ✦✦✦ | | | |
| جُنْد: | وما أنزلنا على قومه من بعده من جند من السماء وما كنا منزلين | ٢٨ | ك يس | ٣٦ |
| (٥) | لا يستطيعون نصرهم وهم لهم جند محضرون ... ... | ٧٥ | ك « | ٣٦ |
| | جند ما هنالك مهزوم من الأحزاب ... ... ... | ١١ | ك ص | ٣٨ |
| | وأترك البحر رهوا إنهم جند مغرقون ... ... ... | ٢٤ | ك الدخان | ٤٤ |
| | أمن هذا الذى هو جند لكم ينصركم من دون الرحمن | ٢٠ | ك الملك | ٦٧ |
| جُنْدًا: | فسيعلمون من هو شر مكانا وأضعف جندا ... ... | ٧٥ | ك مريم | ١٩ |
| جُنْدَنَا: | وإن جندنا لهم الغالبون ... ... ... ... ... ... | ١٧٣ | ك الصافات | ٣٧ |
| جُنُود: | فلما فصل طالوت بالجنود قال إن الله مبتليكم بنهر | ٢٤٩ | م البقرة | ٢ |
| (٩) | فأنزل الله سكينته عليه وأيده بجنود لم تروها ... ... | ٤٠ | م التوبة | ٩ |
| | فكبكبوا فيها هم والغاوون . وجنود إبليس أجمعون | ٩٥ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | ارجع إليهم فلنأتينهم بجنود لا قبل لهم بها ... ... | ٣٧ | ك النمل | ٢٧ |
| | اذكروا نعمة الله عليكم إذ جاءتكم جنود فأرسلنا عليهم | | | |
| | ريحا وجنودا لم تروها ... ... ... ... ... ... | ٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ولله جنود السموات والأرض وكان الله عليما حكيما | ٤ | م الفتح | ٤٨ |
| | ولله جنود السموات والأرض وكان الله عزيزا حكيما | ٧ | م « | ٤٨ |
| | وما يعلم جنود ربك إلا هو ... ... ... ... ... | ٣١ | ك المدثر | ٧٤ |
| | هل أتاك حديث الجنود ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك البروج | ٨٥ |
| جُنُودًا: | وأنزل جنودا لم تروها وعذب الذين كفروا | ٢٦ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | إذ جاءتكم جنود فأرسلنا عليهم ريحا وجنودا لم تروها | ٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| جُنُوده: | قالوا لا طاقة لنا اليوم بجالوت وجنوده ... ... | ٢٤٩ | م البقرة | ٢ |
| (٩) | ولما برزوا لجالوت وجنوده قالوا ربنا أفرغ علينا صبرا | ٢٥٠ | م « | ٢ |
| | فأتبعهم فرعون وجنوده بغيا وعدوا ... ... ... ... | ٩٠ | ك يونس | ١٠ |
| | فأتبعهم فرعون بجنوده فغشيهم من اليم ما غشيهم | ٧٨ | ك طه | ٢٠ |
| | وحشر لسليمان جنوده من الجن والإنس والطير فهم يوزعون | ١٧ | ك النمل | ٢٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| جُنُوده: | ادخلوا مساكنكم لا يحطمنكم سليمان وجنوده | | | |
| | وهم لا يشعرون ... ... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك النمل | ٢٧ |
| | واستكبر هو وجنوده فى الأرض بغير الحق ... ... | ٣٩ | ك القصص | ٢٨ |
| | فأخذناه وجنوده فنبذناهم فى اليم ... ... ... ... | ٤٠ | ك « | ٢٨ |
| | فأخذناه وجنوده فنبذناهم فى اليم وهو مليم ... ... | ٤٠ | ك الذاريات | ٥١ |
| جُنُودَهُمَا: | ونرى فرعون وهامان وجنودهما منهم | | | |
| | ما كانوا يحذرون ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك القصص | ٢٨ |
| (٢) | إن فرعون وهامان وجنودهما كانوا خاطئين... ... | ٨ | ك « | ٢٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| جَنَفًا: | فمن خاف من موص جنفا أو إثما فأصلح بينهم فلا إثم عليه | ١٨٢ | م البقرة | ٢ |
| مُتَجَانِف: | فمن اضطر فى مخمصة غير متجانف لإثم فإن | | | |
| | الله غفور رحيم ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | م المائدة | ٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| جَنَّ: | فلما جن عليه الليل رأى كوكبا قال هذا ربى... ... | ٧٦ | ك الأنعام | ٦ |
| جَانّ: | والجانّ خلقناه من قبل من نار السموم ... ... | ٢٧ | ك الحجر | ١٥ |
| (٧) | فلما رآها تهتز كأنها جانّ ولى مدبرا ولم يعقب | ١٠ | ك النمل | ٢٧ |
| | فلما رآها تهتز كأنها جانّ ولى مدبرا ولم يعقب... ... | ٣١ | ك القصص | ٢٨ |
| | وخلق الجانّ من مارج من نار... ... ... ... ... | ١٥ | م الرحمن | ٥٥ |
| | فيومئذ لا يسئل عن ذنبه إنس ولا جانّ ... ... | ٣٩ | م « | ٥٥ |
| | فيهن قاصرات الطرف لم يطمثهن إنس قبلهم ولا جانّ | ٥٦ | م « | ٥٥ |
| | لم يطمثهن إنس قبلهم ولا جانّ ... ... ... ... | ٧٤ | م « | ٥٥ |
| الجنّ: | وجعلوا لله شركاء الجن وخلقهم وخرقوا له بنين | | | |
| (٢٢) | وبنات بغير علم ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | وكذلك جعلنا لكل نبى عدوا شياطين الإنس والجن | ١١٢ | ك « | ٦ |
| | ويوم يحشرهم جميعا يا معشر الجن قد استكثرتم من الإنس | ١٢٨ | ك « | ٦ |
| | يا معشر الجن والإنس ألم يأتكم رسل منكم يقصون | | | |
| | عليكم آياتى ... ... ... ... ... ... ... | ١٣٠ | ك « | ٦ |
| | قال ادخلوا فى أمم قد خلت من قبلكم من الجن | | | |
| | والإنس فى النار ... ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولقد ذرأنا لجهنم كثيرا من الجن والإنس ... ... | ١٧٩ | ك « | ٧ |
| | قل لئن اجتمعت الإنس والجن على أن يأتوا بمثل | | | |
| | هذا القرآن لا يأتون بمثله ... ... ... ... ... | ٨٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فسجدوا إلا إبليس كان من الجن ففسق عن أمر ربه | ٥٠ | ك الكهف | ١٨ |
| | وحشر لسليمان جنوده من الجن والإنس والطير فهم يوزعون | ١٧ | ك النمل | ٢٧ |
| | قال عفريت من الجن أنا آتيك به قبل أن تقوم من مقامك | ٣٩ | ك « | ٢٧ |
| | ومن الجن من يعمل بين يديه بإذن ربه ... ... | ١٢ | ك سبأ | ٣٤ |
| | فلما خرّ تبينت الجن أن لو كانوا يعلمون الغيب ما لبثوا | | | |
| | فى العذاب المهين ... ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك « | ٣٤ |
| | قالوا سبحانك أنت ولينا من دونهم بل كانوا يعبدون الجن | ٤١ | ك « | ٣٤ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| الجنّ: | وحق عليهم القول فى أمم قد خلت من قبلهم من الجن والإنس ... ... ... ... ... ... | ٢٥ ك فصلت | ٤١ |
| | أرنا اللذين أضلانا من الجن والإنس نجعلهما تحت أقدامنا | ٢٩ ك « | ٤١ |
| | أولئك الذين حق عليهم القول فى أمم قد خلت من قبلهم من الجن والإنس ... ... ... ... ... | ١٨ ك الأحقاف | ٤٦ |
| | وإذ صرفنا إليك نفرا من الجن يستمعون القرآن | ٢٩ ك « | ٤٦ |
| | وما خلقت الجن والإنس إلا ليعبدون ... ... ... | ٥٦ ك الذاريات | ٥١ |
| | يا معشر الجن والإنس إن استطعتم أن تنفذوا من أقطار السموات والأرض فانفذوا ... ... ... | ٣٣ م الرحمن | ٥٥ |
| | قل أوحى إلىّ أنه استمع نفر من الجن فقالوا إنا سمعنا قرآنا عجبا | ١ ك الجن | ٧٢ |
| | وأنا ظننا أن لن تقول الإنس والجن على الله كذبا | ٥ ك « | ٧٢ |
| | وأنه كان رجال من الإنس يعوذون برجال من الجن فزادوهم رهقا ... ... ... ... ... ... ... | ٦ ك « | ٧٢ |
| جِنّة: | أولم يتفكروا ما بصاحبهم من جنة إن هو إلا نذير مبين | ١٨٤ ك الأعراف | ٧ |
| (١٠) | وتمت كلمة ربك لأملأن جهنم من الجنة والناس أجمعين | ١١٩ ك هود | ١١ |
| | إن هو إلا رجل به جنة فتربصوا به حتى حين | ٢٥ ك المؤمنون | ٢٣ |
| | أم يقولون به جنة بل جاءهم بالحق وأكثرهم للحق كارهون | ٧٠ ك « | ٢٣ |
| | ولكن حق القول منى لأملأن جهنم من الجنة والناس أجمعين ... ... ... ... ... ... | ١٣ ك السجدة | ٣٢ |
| | أفترى على الله كذبا أم به جنة ... ... ... ... ... | ٨ ك سبإ | ٣٤ |
| | ما بصاحبكم من جنة إن هو إلا نذير لكم ... ... | ٤٦ ك « | ٣٤ |
| | وجعلوا بينه وبين الجنة نسبا ... ... ... ... ... | ١٥٨ ك الصافات | ٣٧ |
| | ولقد علمت الجنة إنهم لمحضرون ... ... ... ... | ١٥٨ ك « | ٣٧ |
| | الذى يوسوس فى صدور الناس . من الجنة والناس | ٦ ك الناس | ١١٤ |
| مَجْنُون: | وقالوا يأيها الذى نزل عليه الذكر إنك لمجنون | ٦ ك الحجر | ١٥ |
| (١١) | قال إن رسولكم الذى أرسل إليكم لمجنون ... ... | ٢٧ ك الشعراء | ٢٦ |
| | ويقولون أئنا لتاركو آلهتنا لشاعر مجنون ... ... ... | ٣٦ ك الصافات | ٣٧ |
| | ثم تولوا عنه وقالوا معلم مجنون... ... ... ... ... | ١٤ ك الدخان | ٤٤ |
| | فتولى بركنه وقال ساحر أو مجنون ... ... ... ... | ٣٩ ك الذاريات | ٥١ |
| | كذلك ما أتى الذين من قبلهم من رسول إلا قالوا ساحر أو مجنون ... ... ... ... ... ... | ٥٢ ك « | ٥١ |
| | فذكر فما أنت بنعمة ربك بكاهن ولا مجنون | ٢٩ ك الطور | ٥٢ |
| | كذبت قبلهم قوم نوح فكذبوا عبدنا وقالوا مجنون وازدجر | ٩ ك القمر | ٥٤ |
| | ما أنت بنعمة ربك بمجنون ... ... ... ... ... ... | ٢ ك القلم | ٦٨ |
| | ويقولون إنه لمجنون ... ... ... ... ... ... | ٥١ ك « | ٦٨ |
| | وما صاحبكم بمجنون ... ... ... ... ... ... | ٢٢ ك التكوير | ٨١ |
| جَنّة: | وقلنا يا آدم اسكن أنت وزوجك الجنة ... ... | ٣٥ م البقرة | ٢ |
| (٦٦) | والذين آمنوا وعملوا الصالحات أولئك أصحاب الجنة | ٨٢ م « | ٢ |
| | وقالوا لن يدخل الجنة إلا من كان هودا أو نصارى | ١١١ م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| جَنّة: | أم حسبتم أن تدخلوا الجنة ولما يأتكم مثل الذين خلوا من قبلكم ... ... ... ... ... ... | ٢١٤ م البقرة | ٢ |
| | والله يدعوا إلى الجنة والمغفرة بإذنه ... ... ... | ٢٢١ م « | ٢ |
| | كمثل جنة بربوة أصابها وابل فآتت أكلها ضعفين | ٢٦٥ م « | ٢ |
| | أيود أحدكم أن تكون له جنة من نخيل وأعناب | ٢٦٦ م « | ٢ |
| | وسارعوا إلى مغفرة من ربكم وجنة عرضها السموات والأرض ... ... ... ... ... ... | ١٣٣ م آل عمران | ٣ |
| | أم حسبتم أن تدخلوا الجنة ولما يعلم الله الذين جاهدوا منكم ويعلم الصابرين ... ... ... ... | ١٤٢ م « | ٣ |
| | فمن زحزح عن النار وأدخل الجنة فقد فاز ... ... | ١٨٥ م « | ٣ |
| | ومن يعمل من الصالحات من ذكر أو أنثى وهو مؤمن فأولئك يدخلون الجنة ... ... ... ... | ١٢٤ م النساء | ٤ |
| | إنه من يشرك بالله فقد حرم الله عليه الجنة ومأواه النار | ٧٢ م المائدة | ٥ |
| | ويا آدم اسكن أنت وزوجك الجنة فكلا من حيث شئتما | ١٩ ك الأعراف | ٧ |
| | وطفقا يخصفان عليهما من ورق الجنة ... ... ... | ٢٢ ك « | ٧ |
| | يا بنى آدم لا يفتننكم الشيطان كما أخرج أبويكم من الجنة | ٢٧ ك « | ٧ |
| | ولا يدخلون الجنة حتى يلج الجمل فى سم الخياط | ٤٠ ك « | ٧ |
| | أولئك أصحاب الجنة هم فيها خالدون ... ... ... | ٤٢ ك « | ٧ |
| | ونودوا أن تلكم الجنة أورثتموها بما كنتم تعملون | ٤٣ ك « | ٧ |
| | ونادى أصحاب الجنة أصحاب النار أن قد وجدنا ما وعدنا ربنا حقا... ... ... ... ... ... | ٤٤ ك « | ٧ |
| | ونادوا أصحاب الجنة أن سلام عليكم... ... ... | ٤٦ ك « | ٧ |
| | ادخلوا الجنة لا خوف عليكم ولا أنتم تحزنون | ٤٩ ك « | ٧ |
| | ونادى أصحاب النار أصحاب الجنة أن أفيضوا علينا من الماء | ٥٠ ك « | ٧ |
| | إن الله اشترى من المؤمنين أنفسهم وأموالهم بأن لهم الجنة | ١١١ م التوبة | ٩ |
| | أولئك أصحاب الجنة هم فيها خالدون ... ... ... | ٢٦ ك يونس | ١٠ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات وأخبتوا إلى ربهم أولئك أصحاب الجنة ... ... ... ... ... | ٢٣ ك هود | ١١ |
| | وأما الذين سعدوا ففى الجنة خالدين فيها ... ... | ١٠٨ ك « | ١١ |
| | مثل الجنة التى وعد المتقون تجرى من تحتها الأنهار | ٣٥ م الرعد | ١٣ |
| | سلام عليكم ادخلوا الجنة بما كنتم تعملون ... ... | ٣٢ ك النحل | ١٦ |
| | أو تكون لك جنة من نخيل وعنب ... ... ... | ٩١ ك الإسراء | ١٧ |
| | فأولئك يدخلون الجنة ولا يظلمون شيئا ... ... ... | ٦٠ ك مريم | ١٩ |
| | تلك الجنة التى نورث من عبادنا من كان تقيا | ٦٣ ك « | ١٩ |
| | إن هذا عدو لك ولزوجك فلا يخرجنكما من الجنة فتشقى | ١١٧ ك طه | ٢٠ |
| | وطفقا يخصفان عليهما من ورق الجنة ... ... ... | ١٢١ ك « | ٢٠ |
| | أو يلقى إليه كنز أو تكون له جنة يأكل منها | ٨ ك الفرقان | ٢٥ |
| | قل أذلك خير أم جنة الخلد التى وعد المتقون | ١٥ ك « | ٢٥ |
| | أصحاب الجنة يومئذ خير مستقرا وأحسن مقيلا | ٢٤ ك « | ٢٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| جَنَّة: وأجعلنى من ورثة جنـة النعيم ... ... ... ... ... | ٨٥ | ك | الشعراء | ٢٦ |
| وأزلفت الجنـة للتقين ... ... ... ... ... ... ... | ٩٠ | ك | « | ٢٦ |
| والذين آمنوا وعملوا الصالحات لنبوئنهم من الجنة غرفا | ٥٨ | ك | العنكبوت | ٢٩ |
| قيل ادخل الجنة قال ياليت قومى يعلمون . بما غفر لى ربى | ٢٦ | ك | يس | ٣٦ |
| إن أصحاب الجنة اليوم فى شغل فاكهون ... ... | ٥٥ | ك | « | ٣٦ |
| وسيق الذين اتقوا ربهم إلى الجنة زمرا ... ... | ٧٣ | ك | الزمر | ٣٩ |
| وأورثنا الأرض نتبوأ من الجنة حيث نشاء... ... | ٧٤ | ك | « | ٣٩ |
| ومن عمـل صالحا من ذكر أو أنثى وهـو مؤمن | | | | |
| فأولئك يدخلون الجنة ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك | غافر | ٤٠ |
| وأبشروا بالجنة التى كنتم توعدون ... ... ... ... | ٣٠ | ك | فصلت | ٤١ |
| فريق فى الجنـة وفريق فى السعير ... ... ... ... | ٧ | ك | الشورى | ٤٢ |
| ادخلوا الجنـة أنتم وأزواجكم تحبرون ... ... ... | ٧٠ | ك | الزخرف | ٤٣ |
| وتلك الجنة التى أورثتموها بما كنتم تعملون ... ... | ٧٢ | ك | « | ٤٣ |
| أولئك أصحاب الجنة خالدين فيها جزاء بما كانوا يعملون | ١٤ | ك | الأحقاف | ٤٦ |
| ونتجاوز عن سيئاتهم فى أصحاب الجنة ... ... ... | ١٦ | ك | « | ٤٦ |
| ويدخلهم الجنة عرفها لهم ... ... ... ... ... ... | ٦ | م | محمد | ٤٧ |
| مثل الجنة التى وعد المتقون فيها أنهار من ماء غير آسن | ١٥ | م | « | ٤٧ |
| وأزلفت الجنة للتقين غير بعيد ... ... ... ... ... | ٣١ | ك | ق | ٥٠ |
| ولقد رآه نزلة أخرى . عند سدرة المنتهى . عندها | | | | |
| جنة المأوى ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك | النجم | ٥٣ |
| فأما إن كان من المقربين . فروح وريحان وجنة نعيم | ٨٩ | ك | الواقعة | ٥٦ |
| سابقوا إلى مغفرة من ربكم وجنة عرضها كعرض | | | | |
| السماء والأرض... ... ... ... ... ... ... ... | ٢١ | م | الحديد | ٥٧ |
| لا يستوى أصحاب النار وأصحاب الجنة ... ... ... | ٢٠ | م | الحشر | ٥٩ |
| أصحاب الجنة هم الفائزون ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | م | « | ٥٩ |
| إذ قالت رب ابن لى عندك بيتا فى الجنة ... ... ... | ١١ | م | التحريم | ٦٦ |
| إنا بلوناهم كما بلونا أصحاب الجنة... ... ... ... | ١٧ | م | القلم | ٦٨ |
| فهو فى عيشة راضية . فى جنة عالية ... ... ... | ٢٢ | ك | الحاقة | ٦٩ |
| أيطمع كل امرئ منهم أن يدخل جنة نعيم ... ... | ٣٨ | ك | المعارج | ٧٠ |
| وجزاهم بما صبروا جنة وحريرا ... ... ... ... ... | ١٢ | م | الإنسان | ٧٦ |
| وأما من خاف مقام ربه ونهى النفس عن الهوى. | | | | |
| فإن الجنة هى المأوى ... ... ... ... ... ... | ٤١ | ك | النازعات | ٧٩ |
| وإذا الجنة أزلفت . علمت نفس ما أحضرت... ... | ١٣ | ك | التكوير | ٨١ |
| وجوه يومئذ ناعمة . لسعيها راضية . فى جنة عالية | ١٠ | ك | الغاشية | ٨٨ |
| جَنَّتَكَ: ولولا إذ دخلت جنتك قلت ماشاء الله لاقوة إلا بالله | ٣٩ | ك | الكهف | ١٨ |
| (٢) فعسى ربى أن يؤتين خيرا من جنتك ... ... ... | ٤٠ | ك | « | ١٨ |
| جَنَّتَهُ: ودخل جنته وهو ظالم لنفسه قال ماأظن أن تبيد هذه أبدا | ٣٥ | ك | « | ١٨ |
| جَنَّتِى: فادخلى فى عبادى . وادخلى جنتى ... ... ... | ٣٠ | ك | الفجر | ٨٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| جَنَّتَانِ: لقد كان لسبإ فى مسكنهم آية جنتان عن يمين وشمال | ١٥ | ك | سبإ | ٣٤ |
| (٣) ولمن خاف مقام ربه جنتان ... ... ... ... ... | ٤٦ | م | الرحمن | ٥٥ |
| ومن دونهما جنتان ... ... ... ... ... ... ... | ٦٢ | م | « | ٥٥ |
| جَنَّتَيْنِ: واضرب لهم مثلا رجلين جعلنا لأحدهما جنتين | | | | |
| (٤) من أعناب ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك | الكهف | ١٨ |
| كلتا الجنتين آتت أكلها ولم تظلم منه شيئا ... ... | ٣٣ | ك | « | ١٨ |
| وبدلناهم بجنتيهم جنتين ذواتى أكل خمط ... ... | ١٦ | ك | سبإ | ٣٤ |
| متكئين على فرش بطائنها من إستبرق وجنى الجنتين دان | ٥٤ | م | الرحمن | ٥٥ |
| بِجَنَّتَيْهِمْ: وبدلناهم بجنتيهم جنتين ذواتى أكل خمط | ١٦ | ك | سبإ | ٣٤ |
| جَنَّاتٍ: وبشر الذين آمنوا وعملوا الصالحات أن لهم | | | | |
| (٦٩) جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... ... | ٢٥ | م | البقرة | ٢ |
| للذين اتقوا عند ربهم جنات تجرى من تحتها الأنهار | ١٥ | م | آل عمران | ٣ |
| أولئك جزاؤهم مغفرة من ربهم وجنات تجرى من | | | | |
| تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٣٦م | « | | ٣ |
| ولأدخلنهم جنات تجرى من تحتها الأنهار ثوابا من عند الله | ١٩٥م | « | | ٣ |
| لكن الذين اتقوا ربهم لهم جنات تجرى من تحتها الأنهار | ١٩٨م | « | | ٣ |
| ومن يطع الله ورسوله يدخله جنات تجرى من تحتها الأنهار | ١٣ | م | النساء | ٤ |
| والذين آمنوا وعملوا الصالحات سندخلهم جنات | | | | |
| تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... | ٥٧ | م | « | ٤ |
| والذين آمنوا وعملوا الصالحات سندخلهم جنات | | | | |
| تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... | ١٢٢م | « | | ٤ |
| ولأدخلنكم جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... | ١٢ | م | المائدة | ٥ |
| لكفرنا عنهم سيئاتهم ولأدخلناهم جنات النعيم | ٦٥ | م | « | ٥ |
| فأثابهم الله بما قالوا جنات تجرى من تحتها الأنهار | ٨٥ | م | « | ٥ |
| لهم جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها أبدا | ١١٩م | « | | ٥ |
| ومن النخل من طلعها قنوان دانية وجنات من أعناب | ٩٩ | ك | الأنعام | ٦ |
| وهو الذى أنشأ جنات معروشات وغير معروشات | ١٤١م | « | | ٦ |
| يبشرهم ربهم برحمة منه ورضوان وجنات لهم فيها نعيم مقيم | ٢١ | م | التوبة | ٩ |
| وعد الله المؤمنين والمؤمنات جنات تجرى من تحتها الأنهار | ٧٢ | م | « | ٩ |
| خالدين فيها ومساكن طيبة فى جنات عدن ... ... | ٧٢ | م | « | ٩ |
| أعد الله لهم جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها | ٨٩ | م | « | ٩ |
| وأعد لهم جنات تجرى تحتها الأنهار خالدين فيها أبدا | ١٠٠م | « | | ٩ |
| تجرى من تحتهم الأنهار فى جنات النعيم ... ... | ٩ | ك | يونس | ١٠ |
| وفى الأرض قطع متجاورات وجنات من أعناب | ٤ | م | الرعد | ١٣ |
| جنات عدن يدخلونها ومن صلح من آبائهم وأزواجهم | | | | |
| وذرياتهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | م | « | ١٣ |
| وأدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات تجرى | | | | |
| من تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك | إبراهيم | ١٤ |

| اللفظة | الآية | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| جَنَّاتٍ: | إن المتقين فى جنات وعيون ... ... ... ... | ك الحجر | ٤٥ | ١٥ |
| | جنات عدن يدخلونها تجرى من تحتها الأنهار لهم فيها | | | |
| | ما يشاءون... ... ... ... ... ... ... ... | ك النحل | ٣١ | ١٦ |
| | أولئك لهم جنات عدن تجرى من تحتهم الأنهار ... | ك الكهف | ٣١ | ١٨ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات كانت لهم جنات | | | |
| | الفردوس نزلا ... ... ... ... ... ... ... ... | ك « | ١٠٧ | ١٨ |
| | جنات عدن التى وعد الرحمن عباده بالغيب ... ... | ك مريم | ٦١ | ١٩ |
| | جنات عدن تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها ... | ك طه | ٧٦ | ٢٠ |
| | إن الله يدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات | | | |
| | تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... | م الحج | ١٤ | ٢٢ |
| | إن الله يدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات | | | |
| | تجرى من تحتها الأنهار... ... ... ... ... ... | م « | ٢٣ | ٢٢ |
| | فالذين آمنوا وعملوا الصالحات فى جنات النعيم .. | م « | ٥٦ | ٢٢ |
| | فأنشأنا لكم به جنات من نخيل وأعناب ... ... | ك المؤمنون | ١٩ | ٢٣ |
| | تبارك الذى إن شاء جعل لك خيرا من ذلك جنات | | | |
| | تجرى من تحتها الأنهار... ... .. ... ... ... | ك الفرقان | ١٠ | ٢٥ |
| | فأخرجناهم من جنات وعيون ... ... ... ... ... | ك الشعراء | ٥٧ | ٢٦ |
| | أمدكم بأنعام وبنين . وجنات وعيون... ... ... | ك « | ١٣٤ | ٢٦ |
| | أتتركون فى ماههنا آمنين . فى جنات وعيون ... ... | ك « | ١٤٧ | ٢٦ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم جنات النعيم | ك لقمان | ٨ | ٣١ |
| | أما الذين آمنوا وعملوا الصالحات فلهم جنات المأوى | م السجدة | ١٩ | ٣٢ |
| | جنات عدن يدخلونها يحلون فيها من أساور من | | | |
| | ذهب ولؤلؤا ... ... ... ... ... ... ... ... | ك فاطر | ٣٣ | ٣٥ |
| | وجعلنا فيها جنات من نخيل وأعناب وفجرنا فيها من العيون | ك يس | ٣٤ | ٣٦ |
| | أولئك لهم رزق معلوم . فواكه وهم مكرمون . | | | |
| | فى جنات النعيم ... ... ... ... ... ... ... | ك الصافات | ٤٣ | ٣٧ |
| | وإن للمتقين لحسن مآب . جنات عدن مفتحة لهم الأبواب | ك ص | ٥٠ | ٣٨ |
| | ربنا وأدخلهم جنات عدن التى وعدتهم ... ... ... | ك غافر | ٨ | ٤٠ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات فى روضات الجنات | ك الشورى | ٢٢ | ٤٢ |
| | كم تركوا من جنات وعيون... ... ... ... ... ... | ك الدخان | ٢٥ | ٤٤ |
| | إن المتقين فى مقام أمين . فى جنات وعيون ... | ك « | ٥٢ | ٤٤ |
| | إن الله يدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات | | | |
| | تجرى من تحتها الأنهار... ... ... ... ... ... | م محمد | ١٢ | ٤٧ |
| | ليدخل المؤمنين والمؤمنات جنات تجرى من تحتها الأنهار | م الفتح | ٥ | ٤٨ |
| | ومن يطع الله ورسوله يدخله جنات تجرى من | | | |
| | تحتها الأنهار... ... ... ... ... ... ... ... | م « | ١٧ | ٤٨ |
| | ونزلنا من السماء ماء مباركا فأنبتنا به جنات وحب الحصيد | ك ق | ٩ | ٥٠ |
| | إن المتقين فى جنات وعيون ... ... ... ... ... | ك الذاريات | ١٥ | ٥١ |
| | إن المتقين فى جنات ونعيم ... ... ... ... ... | ك الطور | ١٧ | ٥٢ |

| اللفظة | الآية | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| جَنَّاتٍ: | إن المتقين فى جنات ونهر ... ... ... ... ... | ك القمر | ٥٤ | ٥٤ |
| | والسابقون السابقون . أولئك المقربون . فى جنات النعيم | ك الواقعة | ١٢ | ٥٦ |
| | بشراكم اليوم جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها | م الحديد | ١٢ | ٥٧ |
| | ويدخلهم جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها | م المجادلة | ٢٢ | ٥٨ |
| | يغفر لكم ذنوبكم ويدخلكم جنات تجرى من تحتها الأنهار | م الصف | ١٢ | ٦١ |
| | ومساكن طيبة فى جنات عدن ذلك الفوز العظيم... | م « | ١٢ | ٦١ |
| | ويدخله جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها أبدا | م التغابن | ٩ | ٦٤ |
| | ومن يؤمن بالله ويعمل صالحا يدخله جنات تجرى | | | |
| | من تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... ... | م الطلاق | ١١ | ٦٥ |
| | عسى ربكم أن يكفر عنكم سيئاتكم ويدخلكم جنات | | | |
| | تجرى من تحتها الأنهار... ... ... ... ... ... | م التحريم | ٨ | ٦٦ |
| | إن للمتقين عند ربهم جنات النعيم ... ... ... ... | ك القلم | ٣٤ | ٦٨ |
| | والذين هم على صلاتهم يحافظون . أولئك فى جنات | | | |
| | مكرمون ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ك المعارج | ٣٥ | ٧٠ |
| | ويمددكم بأموال وبنين ويجعل لكم جنات ويجعل | | | |
| | لكم أنهارا ... ... ... ... ... ... ... ... | ك نوح | ١٢ | ٧١ |
| | إلا أصحاب اليمين . فى جنات يتساءلون . عن المجرمين | ك المدثر | ٤٠ | ٧٤ |
| | لنخرج به حبا ونباتا . وجنات ألفافا ... ... ... | ك النبأ | ١٦ | ٧٨ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم جنات تجرى | | | |
| | من تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... ... | ك البروج | ١١ | ٨٥ |
| | جزاؤهم عند ربهم جنات عدن تجرى من تحتها الأنهار | م البينة | ٨ | ٩٨ |
| جُنَّةً: | اتخذوا أيمانهم جنة فصدوا عن سبيل الله فلهم | | | |
| (٢) | عذاب مهين ... ... ... ... ... ... ... ... | م المجادلة | ١٦ | ٥٨ |
| | اتخذوا أيمانهم جنة فصدوا عن سبيل الله إنهم | | | |
| | ساء ما كانوا يعملون ... ... ... ... ... ... | م المنافقون | ٢ | ٦٣ |
| أَجِنَّةٌ: | هو أعلم بكم إذ أنشأكم من الأرض وإذ أنتم أجنة | | | |
| | فى بطون أمهاتكم ... ... ... ... ... ... ... | م النجم | ٣٢ | ٥٣ |
| | ✦✦✦ | | | |
| وَجَنَى: | متكئين على فرش بطائنها من إستبرق وجنى الجنتين دان | م الرحمن | ٥٤ | ٥٥ |
| جَنِيًّا: | وهزى إليك بجذع النخلة تساقط عليك رطبا جنيا | ك مريم | ٢٥ | ١٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| جَاهَدَ: | أجعلتم سقاية الحاج وعمارة المسجد الحرام كمن | | | |
| (٢) | آمن بالله واليوم الآخر وجاهد فى سبيل الله ... | م التوبة | ١٩ | ٩ |
| | ومن جاهد فإنما يجاهد لنفسه إن الله لغنى عن العالمين | م العنكبوت | ٦ | ٢٩ |
| جَاهَدَاكَ: | وإن جاهداك لتشرك بى ما ليس لك به علم | | | |
| (٢) | فلا تطعهما ... ... ... ... ... ... ... ... | م « | ٨ | ٢٩ |
| | وإن جاهداك على أن تشرك بى ما ليس لك به علم | | | |
| | فلا تطعهما ... ... ... ... ... ... ... ... | ك لقمان | ١٥ | ٣١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| جَاهَدُوا: | والذين هاجروا وجاهدوا فى سبيل الله أولئك | | | |
| (١١) | يرجون رحمة الله ... ... ... ... ... ... ... | ٢١٨ | م البقـرة | ٢ |
| | أم حسبتم أن تدخلوا الجنة ولما يعلم الله الذين | | | |
| | جاهدوا منكم ويعلم الصابرين ... ... ... ... | ١٤٢ | م آل عمران | ٣ |
| | إن الذين آمنوا وهاجروا وجاهدوا بأموالهم | | | |
| | وأنفسهم فى سبيل الله والذين آووا ونصروا أولئك | | | |
| | بعضهم أولياء بعض ... ... ... ... ... ... | ٧٢ | م الأنفال | ٨ |
| | والذين آمنوا وهاجروا وجاهدوا فى سبيل الله والذين | | | |
| | آووا ونصروا أولئك هم المؤمنون حقا ... ... | ٧٤ | م « | ٨ |
| | والذين آمنوا من بعد وهاجروا وجاهدوا معكم فأولئك منكم | ٧٥ | م « | ٨ |
| | أم حسبتم أن تتركوا ولما يعلم الله الذين جاهدوا منكم | ١٦ | م التـوبة | ٩ |
| | الذين آمنوا وهاجروا وجاهدوا فى سبيل الله بأموالهم | | | |
| | وأنفسهم أعظم درجة عند الله ... ... ... ... | ٢٠ | م « | ٩ |
| | لكن الرسول والذين آمنوا معه جاهدوا بأموالهم وأنفسهم | ٨٨ | م « | ٩ |
| | ثم إن ربك للذين هاجروا من بعد ما فتنوا ثم جاهدوا | | | |
| | وصبروا إن ربك من بعدها لغفور رحيم ... ... | ١١٠ | ك النحـل | ١٦ |
| | والذين جاهدوا فينا لنهدينهم سبلنا ... ... ... ... | ٦٩ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | إنما المؤمنون الذين آمنوا بالله ورسوله ثم لم يرتابوا | | | |
| | وجاهدوا بأموالهم ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | م الحجرات | ٤٩ |
| تُجَاهِدُونَ: | تؤمنون بالله ورسوله وتجاهدون فى سبيل الله | ١١ | م الصف | ٦١ |
| يُجَاهِدُ: | ومن جاهد فإنما يجاهد لنفسه إن الله لغنى عن العالمين | ٦ | م العنكبوت | ٢٩ |
| يُجَاهِدُوا: | لا يستأذنك الذين يؤمنون بالله واليوم الآخر | | | |
| (٢) | أن يجاهدوا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | م التـوبة | ٩ |
| | فرح المخلفون بمقعدهم خلاف رسول الله وكرهوا | | | |
| | أن يجاهدوا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨١ | م « | ٩ |
| يُجَاهِدُونَ: | يجاهدون فى سبيل الله ولا يخافون لومة لائم | ٥٤ | م المائدة | ٥ |
| جَاهِدِ: | يأيها النبىّ جاهد الكفار والمنافقين وأغلظ عليهم | ٧٣ | م التـوبة | ٩ |
| (٢) | يأيها النبىّ جاهد الكفار والمنافقين وأغلظ عليهم ... | ٩ | م التحريم | ٦٦ |
| جَاهِدْهُم: | فلا تطع الكافرين وجاهدهم به جهادا كبيرا | ٥٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| جَاهِدُوا: | اتقوا الله وابتغوا إليه الوسيلة وجاهدوا فى سبيله | ٣٥ | م المائدة | ٥ |
| (٤) | انفروا خفافا وثقالا وجاهدوا بأموالكم وأنفسكم | | | |
| | فى سبيل الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤١ | م التـوبة | ٩ |
| | وإذا أنزلت سورة أن آمنوا بالله وجاهدوا مع رسوله | | | |
| | استأذنك أولوا الطول منهم ... ... ... ... ... | ٨٦ | م « | ٩ |
| | وجاهدوا فى الله حق جهاده ... ... ... ... ... | ٧٨ | م الحـج | ٢٢ |
| جَهْدَ: | ويقول الذين آمنوا أهؤلاء الذين أقسموا بالله | | | |
| (٥) | جهد أيمانهم إنهم لمعكم... ... ... ... ... ... | ٥٣ | م المائدة | ٥ |
| | وأقسموا بالله جهد أيمانهم لئن جاءتهم آية ليؤمنن بها | ١٠٩ | ك الأنعام | ٦ |
| | وأقسموا بالله جهد أيمانهم لا يبعث الله من يموت | ٣٨ | ك النحـل | ١٦ |
| جَهْدَ: | وأقسموا بالله جهد أيمانهم لئن أمرتهم ليخرجنّ | ٥٣ | م النـور | ٢٤ |
| | وأقسموا بالله جهد أيمانهم لئن جاءهم نذير ليكونن | | | |
| | أهدى من إحدى الأمم ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك فاطـر | ٣٥ |
| جُهْدَهُمْ: | والذين لا يجدون إلا جهدهم فيسخرون منهم | | | |
| | سخر الله منهم ... ... ... ... ... ... ... | ٧٩ | م التـوبة | ٩ |
| جِهَادٍ: | قل إن كان آباؤكم وأبناؤكم وإخوانكم وأزواجكم | | | |
| | وعشيرتكم وأموال اقترفتموها وتجارة تخشون | | | |
| | كسادها ومساكن ترضونها أحب إليكم من الله | | | |
| | ورسوله وجهاد فى سبيله فتربصوا ... ... | ٢٤ | م « | ٩ |
| جِهَادًا: | فلا تطع الكافرين وجاهدهم به جهادا كبيرا | ٥٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| (٢) | إن كنتم خرجتم جهادا فى سبيلى وابتغاء مرضاتى | ١ | م الممتحنة | ٦٠ |
| جِهَادِهِ: | وجاهدوا فى الله حق جهاده ... ... ... ... ... | ٧٨ | م الحـج | ٢٢ |
| الْمُجَاهِدُونَ: | لا يستوى القاعدون من المؤمنين غير أولى | | | |
| | الضرر والمجاهدون فى سبيل الله ... ... ... ... | ٩٥ | م النسـاء | ٤ |
| الْمُجَاهِدِينَ: | فضل الله المجاهدين بأموالهم وأنفسهم على | | | |
| (٣) | القاعدين درجة ... ... ... ... ... ... ... | ٩٥ | م « | ٤ |
| | وفضل الله المجاهدين على القاعدين أجرا عظيما | ٩٥ | م « | ٤ |
| | ولنبلونكم حتى نعلم المجاهدين منكم والصابرين ونبلوا أخباركم | ٣١ | م محمـد | ٤٧ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| جَهَرَ: | سواء منكم من أسر القول ومن جهر به ... ... | ١٠ | م الرعـد | ١٣ |
| تَجْهَرْ: | ولا تجهر بصلاتك ولا تخافت بها وابتغ بين ذلك سبيلا | ١١٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٢) | وإن تجهر بالقول فإنه يعلم السر وأخفى ... ... | ٧ | ك طـه | ٢٠ |
| تَجْهَرُوا: | ولا تجهروا له بالقول كجهر بعضكم لبعض ... ... | ٢ | م الحجرات | ٤٩ |
| أَجْهَرُوا: | وأسروا قولكم أو اجهروا به إنه عليم بذات الصدور | ١٣ | ك الملك | ٦٧ |
| جَهْرَ: | لا يحب الله الجهر بالسوء من القول إلا من ظلم | ١٤٨ | م النسـاء | ٧ |
| (٥) | واذكر ربك فى نفسك تضرعا وخيفة ودون الجهر | | | |
| | من القول ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | إنه يعلم الجهر من القول ويعلم ما تكتمون ... ... | ١١٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ولا تجهروا له بالقول كجهر بعضكم لبعض ... ... | ١ | م الحجرات | ٤٩ |
| | إلا ما شاء الله إنه يعلم الجهر وما يخفى ... ... ... | ٧ | ك الأعلى | ٨٧ |
| جَهْرًا: | ومن رزقناه منا رزقا حسنا فهو ينفق منه سرا وجهرا | ٧٥ | ك النحـل | ١٦ |
| جَهْرَكُمْ: | يعلم سركم وجهركم ويعلم ما تكسبون ... ... ... | ٣ | ك الأنعام | ٦ |
| جَهْرَةً: | وإذ قلتم يا موسى لن نؤمن لك حتى نرى الله جهرة | ٥٥ | م البقـرة | ٢ |
| (٣) | فقد سألوا موسى أكبر من ذلك فقالوا أرنا الله جهرة | ١٥٣ | م النسـاء | ٤ |
| | قل أرأيتكم إن أتاكم عذاب الله بغتة أو جهرة | | | |
| | هل يهلك إلا القوم الظالمون ... ... ... ... | ٤٧ | ك الأنعام | ٦ |
| جِهَارًا: | ثم إنى دعوتهم جهارا ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك نـوح | ٧١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| جَهَّزَهُمْ: | ولما جهزهم بجهازهم قال ائتونى بأخ لكم من أبيكم | ٥٩ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | فلما جهزهم بجهازهم جعل السقاية فى رحل أخيه | ٧٠ | ك « | ١٢ |
| بِجَهَازِهِمْ: | ولما جهزهم بجهازهم قال ائتونى بأخ لكم من أبيكم | ٥٩ | ك « | ١٢ |
| (٢) | فلما جهزهم بجهازهم جعل السقاية فى رحل أخيه | ٧٠ | ك « | ١٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تَجْهَلُونَ: | قالوا ياموسى اجعل لنا إلها كما لهم آلهة قال | | | |
| (٤) | إنكم قوم تجهلون ... ... ... ... ... ... ... | ١٣٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | إنهم ملاقوا ربهم ولكنى أراكم قوما تجهلون... ... | ٢٩ | ك هود | ١١ |
| | أئنكم لتأتون الرجال شهوة من دون النساء بل أنتم قوم تجهلون | ٥٥ | ك النمل | ٢٧ |
| | وأبلغكم ما أرسلت به ولكنى أراكم قوما تجهلون ... | ٢٣ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| يَجْهَلُونَ: | ماكانوا ليؤمنوا إلا أن شاء الله ولكن أكثرهم يجهلون | ١١١ | ك الأنعام | ٦ |
| الْجَاهِلُ: | يحسبهم الجاهل أغنياء من التعفف ... ... ... | ٢٧٣ | م البقرة | ٢ |
| جَاهِلُونَ: | قال هل علمتم مافعلتم بيوسف وأخيه إذ أنتم جاهلون | ٨٩ | ك يوسف | ١٢ |
| (٣) | وإذا خاطبهم الجاهلون قالوا سلاما... ... ... ... | ٦٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | قل أفغير الله تأمرونى أعبد أيها الجاهلون ... ... | ٦٤ | ك الزمر | ٣٩ |
| الْجَاهِلِينَ: | قالوا أتتخذنا هزوا قال أعوذ بالله أن أكون | | | |
| (٦) | من الجاهلين ... ... ... ... ... ... ... | ٦٧ | م البقرة | ٢ |
| | ولو شاء الله لجمعهم على الهدى فلا تكونن من الجاهلين | ٣٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | خذ العفو وأمر بالعرف وأعرض عن الجاهلين | ١٩٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | إنى أعظك أن تكون من الجاهلين ... ... ... ... | ٤٦ | ك هود | ١١ |
| | وإلا تصرف عنى كيدهن أصب إليهن وأكن من الجاهلين | ٣٣ | ك يوسف | ١٢ |
| | لنا أعمالنا ولكم أعمالكم سلام عليكم لا نبتغى الجاهلين | ٥٥ | م القصص | ٢٨ |
| جَهُولًا: | وحملها الإنسان إنه كان ظلوما جهولا . . ... | ٧٢ | م الأحزاب | ٣٣ |
| بِجَهَالَةٍ: | إنما التوبة على الله للذين يعملون السوء بجهالة | ١٧ | م النساء | ٤ |
| (٤) | أنه من عمل منكم سوءا بجهالة ثم تاب من بعده | | | |
| | وأصلح فأنه غفور رحيم... ... ... ... ... ... | ٥٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | ثم إن ربك للذين عملوا السوء بجهالة ثم تابوا من | | | |
| | بعد ذلك وأصلحوا ... ... ... ... ... ... | ١١٩ | ك النحل | ١٦ |
| | فتبينوا أن تصيبوا قوما بجهالة فتصبحوا على مافعلتم نادمين | ٦ | م الحجرات | ٤٩ |
| الْجَاهِلِيَّةِ: | يظنون بالله غير الحق ظن الجاهلية... ... ... | ١٥٤ | م آل عمران | ٣ |
| (٤) | أفحكم الجاهلية يبغون ومن أحسن من الله حكما لقوم يوقنون | ٥٠ | م المائدة | ٥ |
| | وقرن فى بيوتكن ولا تبرجن تبرج الجاهلية الأولى | ٣٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | إذ جعل الذين كفروا فى قلوبهم الحمية حمية الجاهلية | ٢٦ | م الفتح | ٤٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| جَهَنَّمَ: | وإذا قيل له اتق الله أخذته العزة بالإثم فحسبه جهنم | ٢٠٦ | م البقرة | ٢ |
| (٧٧) | قل للذين كفروا ستغلبون وتحشرون إلى جهنم ... | ١٢ | م آل عمران | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| جَهَنَّمَ: | أفمن اتبع رضوان الله كمن باء بسخط من الله ومأواه جهنم | ١٦٢ | م آل عمران | ٣ |
| | متاع قليل ثم مأواهم جهنم وبئس المهاد... ... ... | ١٩٧ | م « | ٣ |
| | فمنهم من آمن به ومنهم من صد عنه وكفى بجهنم سعيرا | ٥٥ | م النساء | ٤ |
| | ومن يقتل مؤمنا متعمدا فجزاؤه جهنم خالدا فيها | ٩٣ | م « | ٤ |
| | فأولئك مأواهم جهنم وساءت مصيرا ... ... ... | ٩٧ | م « | ٤ |
| | ويتبع غير سبيل المؤمنين نوله ما تولى ونصله جهنم | ١١٥ | م « | ٤ |
| | أولئك مأواهم جهنم ولا يجدون عنها محيصا ... ... | ١٢١ | م « | ٤ |
| | إن الله جامع المنافقين والكافرين فى جهنم جميعا | ١٤٠ | م « | ٤ |
| | إلا طريق جهنم خالدين فيها أبدا وكان ذلك على الله يسيرا | ١٦٩ | م « | ٤ |
| | لمن تبعك منهم لأملأن جهنم منكم أجمعين ... ... | ١٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | لهم من جهنم مهاد ومن فوقهم غواش ... ... ... | ٤١ | ك « | ٧ |
| | ولقد ذرأنا لجهنم كثيرا من الجن والإنس ... ... | ١٧٩ | ك « | ٧ |
| | فقد باء بغضب من الله ومأواه جهنم وبئس المصير | ١٦ | م الأنفال | ٨ |
| | والذين كفروا إلى جهنم يحشرون ... ... ... ... | ٣٦ | ك « | ٨ |
| | ويجعل الخبيث بعضه على بعض فيركمه جميعا فيجعله فى جهنم | ٣٧ | م « | ٨ |
| | يوم يحمى عليها فى نار جهنم فتكوى بها جباههم | | | |
| | وجنوبهم وظهورهم ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | م التوبة | ٩ |
| | ألا فى الفتنة سقطوا وإن جهنم لمحيطة بالكافرين | ٤٩ | م « | ٩ |
| | ألم يعلموا أنه من يحادد الله ورسوله فأن له نار جهنم خالدا فيها | ٦٣ | م « | ٩ |
| | وعد الله المنافقين والمنافقات والكفار نار جهنم خالدين فيها | ٦٨ | م « | ٩ |
| | جاهد الكفار والمنافقين واغلظ عليهم ومأواهم جهنم | ٧٣ | م « | ٩ |
| | قل نار جهنم أشد حرا لو كانوا يفقهون... ... ... | ٨١ | م « | ٩ |
| | فأعرضوا عنهم إنهم رجس ومأواهم جهنم ... ... | ٩٥ | م « | ٩ |
| | أم من أسس بنيانه على شفا جرف هار فانهار به فى نار جهنم | ١٠٩ | م « | ٩ |
| | وتمت كلمة ربك لأملأن جهنم من الجنة والناس أجمعين | ١١٩ | ك هود | ١١ |
| | أولئك لهم سوء الحساب ومأواهم جهنم وبئس المهاد | ١٨ | م الرعد | ١٣ |
| | من ورائه جهنم ويسقى من ماء صديد ... ... ... | ١٦ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | جهنم يصلونها وبئس القرار... ... ... ... ... | ٢٩ | م « | ١٤ |
| | وإن جهنم لموعدهم أجمعين ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك الحجر | ١٥ |
| | فادخلوا أبواب جهنم خالدين فيها فلبئس مثوى المتكبرين | ٢٩ | ك النحل | ١٦ |
| | وإن عدتم عدنا وجعلنا جهنم للكافرين حصيرا | ٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ثم جعلنا له جهنم يصلاها مذموما مدحورا ... ... | ١٨ | ك « | ١٧ |
| | ولا تجعل مع الله إلها آخر فتلقى فى جهنم ملوما مدحورا | ٣٩ | ك « | ١٧ |
| | قال اذهب فمن تبعك منهم فإن جهنم جزاؤكم جزاء موفورا | ٦٣ | ك « | ١٧ |
| | مأواهم جهنم كلما خبت زدناهم سعيرا ... ... ... | ٩٧ | ك « | ١٧ |
| | وعرضنا جهنم يومئذ للكافرين عرضا ... ... ... | ١٠٠ | م الكهف | ١٨ |
| | إنا أعتدنا جهنم للكافرين نزلا ... ... ... ... | ١٠٢ | ك « | ١٨ |
| | ذلك جزاؤهم جهنم بما كفروا واتخذوا آياتى ورسلى هزوا | ١٠٦ | ك « | ١٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| جَهَنَّمَ | فوربك لنحشرنهم والشياطين ثم لنحضرنهم حول جهنم جثيا | ٦٨ | ك مريم | ١٩ |
| | ونسوق المجرمين إلى جهنم وردا ... ... ... ... ... | ٨٦ | ك « | ١٩ |
| | إنه من يأت ربه مجرما فإن له جهنم لا يموت فيها ولا يحيى | ٧٤ | ك طه | ٢٠ |
| | ومن يقل منهم إنى إله من دونه فذلك نجزيه جهنم | ٢٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | إنكم وما تعبدون من دون الله حصب جهنم أنتم لها واردون | ٩٨ | ك « | ٢١ |
| | ومن خفت موازينه فأولئك الذين خسروا أنفسهم | | | |
| | فى جهنم خالدون ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | الذين يحشرون على وجوههم إلى جهنم أولئك شر مكانا | ٣٤ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | والذين يقولون ربنا اصرف عنا عذاب جهنم إن | | | |
| | عذابها كان غراما ... ... ... ... ... ... ... | ٦٥ | ك « | ٢٥ |
| | يستعجلونك بالعذاب وإن جهنم لمحيطة بالكافرين | ٥٤ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | أليس فى جهنم مثوى للكافرين ... ... ... ... ... | ٦٨ | ك « | ٢٩ |
| | ولكن حق القول منى لأملأن جهنم من الجنة والناس أجمعين | ١٣ | ك السجدة | ٣٢ |
| | والذين كفروا لهم نار جهنم لا يقضى عليهم فيموتوا | ٣٦ | ك فاطر | ٣٥ |
| | هذه جهنم التى كنتم توعدون ... ... ... ... ... | ٦٣ | ك يس | ٣٦ |
| | وإن للطاغين لشر مآب . جهنم يصلونها فبئس المهاد | ٥٦ | ك ص | ٣٨ |
| | لأملأن جهنم منك وممن تبعك منهم أجمعين ... ... | ٨٥ | ك « | ٣٨ |
| | أليس فى جهنم مثوى للكافرين ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك الزمر | ٣٩ |
| | أليس فى جهنم مثوى للمتكبرين ... ... ... ... ... | ٦٠ | ك « | ٣٩ |
| | وسيق الذين كفروا إلى جهنم زمرا ... ... ... ... | ٧١ | ك « | ٣٩ |
| | قيل ادخلوا أبواب جهنم خالدين فيها فبئس مثوى المتكبرين | ٧٢ | ك « | ٣٩ |
| | وقال الذين فى النار لخزنة جهنم ادعوا ربكم يخفف | | | |
| | عنا يوما من العذاب ... ... ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك غافر | ٤٠ |
| | إن الذين يستكبرون عن عبادتى سيدخلون جهنم داخرين | ٦٠ | ك « | ٤٠ |
| | ادخلوا أبواب جهنم خالدين فيها فبئس مثوى المتكبرين | ٧٦ | ك « | ٤٠ |
| | إن المجرمين فى عذاب جهنم خالدون ... ... ... | ٧٤ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | من ورائهم جهنم ولا يغنى عنهم ما كسبوا شيئا ... ... | ١٠ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | وغضب الله عليهم ولعنهم وأعد لهم جهنم وساءت مصيرا | ٦ | م الفتح | ٤٨ |
| | ألقيا فى جهنم كل كفار عنيد ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك ق | ٥٠ |
| | يوم نقول لجهنم هل امتلأت وتقول هل من مزيد | ٣٠ | ك « | ٥٠ |
| | يوم يدعون إلى نار جهنم دعا ... ... ... ... ... | ١٣ | ك الطور | ٥٢ |
| | هذه جهنم التى يكذب بها المجرمون ... ... ... ... | ٤٣ | م الرحمن | ٥٥ |
| | حسبهم جهنم يصلونها فبئس المصير ... ... ... ... | ٨ | م المجادلة | ٥٨ |
| | واغلظ عليهم ومأواهم جهنم وبئس المصير ... ... | ٩ | م التحريم | ٦٦ |
| | وللذين كفروا بربهم عذاب جهنم وبئس المصير | ٦ | ك الملك | ٦٧ |
| | وأما القاسطون فكانوا لجهنم حطبا ... ... ... ... | ١٥ | ك الجن | ٧٢ |
| | ومن يعص الله ورسوله فإن له نار جهنم خالدين فيها أبدا | ٢٣ | ك « | ٧٢ |
| | إن جهنم كانت مرصادا ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك النبأ | ٧٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| جَهَنَّمَ | إن الذين فتنوا المؤمنين والمؤمنات ثم لم يتوبوا | | | |
| | فلهم عذاب جهنم ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك البروج | ٨٥ |
| | وجىء يومئذ بجهنم يومئذ يتذكر الإنسان وأنى له الذكرى | ٢٣ | ك الفجر | ٨٩ |
| | إن الذين كفروا من أهل الكتاب والمشركين فى نار | | | |
| | جهنم خالدين فيها ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | م البينة | ٩٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| جَابُوا | وثمود الذين جابوا الصخر بالواد ... ... ... ... | ٩ | ك الفجر | ٨٩ |
| أَجَبْتُمْ | ويوم يناديهم فيقول ماذا أجبتم المرسلين ... ... | ٦٥ | ك القصص | ٢٨ |
| أُجِيبُ | وإذا سألك عبادى عنى فإنى قريب أجيب دعوة | | | |
| | الداع إذا دعان ... ... ... ... ... ... ... | ١٨٦ | م البقرة | ٢ |
| نُجِبْ | ربنا أخرنا إلى أجل قريب نجب دعوتك ونتبع الرسل | ٤٤ | ك إبراهيم | ١٤ |
| يُجِبْ | ومن لا يجب داعى الله فليس بمعجز فى الأرض | ٣٢ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| يُجِيبُ | أمن يجيب المضطر إذا دعاه ويكشف السوء | | | |
| | ويجعلكم خلفاء الأرض ... ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك النمل | ٢٧ |
| أَجِيبُوا | يا قومنا أجيبوا داعى الله وآمنوا به يغفر لكم | | | |
| | من ذنوبكم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| أُجِبْتُمْ | يوم يجمع الله الرسل فيقول ماذا أجبتم ... ... | ١٠٩ | م المائدة | ٥ |
| أُجِيبَتْ | قال قد أجيبت دعوتكما فاستقيما ... ... ... | ٨٩ | ك يونس | ١٠ |
| اسْتَجَابَ | فاستجاب لهم ربهم أنى لا أضيع عمل عامل | | | |
| (٣) | منكم من ذكر أو أنثى ... ... ... ... ... ... | ١٩٥ | م آل عمران | ٣ |
| | إذ تستغيثون ربكم فاستجاب لكم أنى ممدكم بألف | | | |
| | من الملائكة ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | م الأنفال | ٨ |
| | فاستجاب له ربه فصرف عنه كيدهن إنه هو السميع العليم | ٣٤ | ك يوسف | ١٢ |
| اسْتَجَابُوا | الذين استجابوا لله والرسول من بعد | | | |
| (٤) | ما أصابهم القرح ... ... ... ... ... ... ... | ١٧٢ | م آل عمران | ٣ |
| | الذين استجابوا لربهم الحسنى ... ... ... ... ... | ١٨ | م الرعد | ١٣ |
| | إن تدعوهم لا يسمعوا دعاءكم ولو سمعوا ما استجابوا لكم | ١٤ | ك فاطر | ٣٥ |
| | والذين استجابوا لربهم وأقاموا الصلاة وأمرهم | | | |
| | شورى بينهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك الشورى | ٤٢ |
| فَاسْتَجَبْتُمْ | وما كان لى عليكم من سلطان إلا أن دعوتكم | | | |
| | فاستجبتم لى ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| فَاسْتَجَبْنَا | ونوحا إذ نادى من قبل فاستجبنا له فنجيناه وأهله | ٧٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٤) | فاستجبنا له فكشفنا ما به من ضر وآتيناه أهله | ٨٤ | ك « | ٢١ |
| | فاستجبنا له ونجيناه من الغم وكذلك ننجى المؤمنين | ٨٨ | ك « | ٢١ |
| | فاستجبنا له ووهبنا له يحيى وأصلحنا له زوجه ... ... | ٩٠ | ك « | ٢١ |
| أَسْتَجِبْ | وقال ربكم ادعونى أستجب لكم ... ... ... | ٦٠ | ك غافر | ٤٠ |
| تَسْتَجِيبُونَ | يوم يدعوكم فتستجيبون بحمده وتظنون | | | |
| | إن لبثتم إلا قليلا ... ... ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك الإسراء | ١٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| يَستَجِيبُ | : إنما يستجيب الذين يسمعون ... ... ... | ٣٦ ك الأنعام | ٦ |
| (٣) | ويستجيب الذين آمنوا وعملوا الصالحات ويزيدهم من فضله ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦ ك الشورى | ٤٢ |
| | ومن أضل ممن يدعوا من دون الله من لا يستجيب له إلى يوم القيامة... ... ... ... ... ... ... | ٥ ك الأحقاف | ٤٦ |
| يَستَجِيبُوا | : فليستجيبوا لى وليؤمنوا بى لعلهم يرشدون | ١٨٦ م البقرة | ٢ |
| (٧) | فادعوهم فليستجيبوا لكم إن كنتم صادقين ... ... | ١٩٤ ك الأعراف | ٧ |
| | فإلم يستجيبوا لكم فاعلموا أنما أنزل بعلم الله وأن لا إله إلا هو ... ... ... ... ... ... | ١٤ ك هود | ١١ |
| | والذين لم يستجيبوا له لو أن لهم ما فى الأرض جميعا ومثله معه لافتدوا به ... ... ... ... ... ... | ١٨ م الرعد | ١٣ |
| | فدعوهم فلم يستجيبوا لهم وجعلنا بينهم موبقا ... ... | ٥٢ ك الكهف | ١٨ |
| | فإن لم يستجيبوا لك فاعلم أنما يتبعون أهواءهم | ٥٠ ك القصص | ٢٨ |
| | وقيل ادعوا شركاءكم فدعوهم فلم يستجيبوا لهم ورأوا العذاب ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦٤ ك « | ٢٨ |
| يَستَجِيبُونَ | : والذين يدعون من دونه لا يستجيبون لهم بشىء | ١٤ م الرعد | ١٣ |
| اسْتَجِيبُوا | : يأيها الذين آمنوا استجيبوا لله وللرسول | | |
| (٢) | إذا دعاكم لما يحييكم ... ... ... ... ... | ٢٤ م الأنفال | ٨ |
| | استجيبوا لربكم من قبل أن يأتى يوم لا مرد له من الله | ٤٧ ك الشورى | ٤٢ |
| اسْتُجِيبَ | : والذين يحاجون فى الله من بعد ما استجيب له حجتهم داحضة ... ... ... ... ... ... ... | ١٦ ك « | ٤٢ |
| جَوَابَ | : وما كان جواب قومه إلا أن قالوا أخرجوهم | | |
| (٤) | من قريتكم ... ... ... ... ... ... ... | ٨٢ ك الأعراف | ٧ |
| | فما كان جواب قومه إلا أن قالوا أخرجوا آل لوط من قريتكم ... ... ... ... ... ... ... | ٥٦ ك النمل | ٢٧ |
| | فما كان جواب قومه إلا أن قالوا اقتلوه أو حرقوه فأنجاه الله من النار ... ... ... ... ... | ٢٤ ك العنكبوت | ٢٩ |
| | فما كان جواب قومه إلا أن قالوا ائتنا بعذاب الله إن كنت من الصادقين ... ... ... ... ... | ٢٩ ك « | ٢٩ |
| مُجِيبٌ | : فاستغفروه ثم توبوا إليه إن ربى قريب مجيب | ٦١ ك هود | ١١ |
| الْمُجِيبُونَ | : ولقد نادانا نوح فلنعم المجيبون ... ... ... | ٧٥ ك الصافات | ٣٧ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| الْجُودِىِّ | : وغيض الماء وقضى الأمر واستوت على الجودى ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٤ ك هود | ١١ |
| الْجِيَادُ | : إذ عرض عليه بالعشى الصافنات الجياد ... ... | ٣١ ك ص | ٣٨ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| يُجَاوِرُونَكَ | : لنغرينك بهم ثم لا يجاورونك فيها إلا قليلا | ٦٠ م الأحزاب | ٣٣ |
| وَيُجِرْكُم | : يغفر لكم من ذنوبكم ويجركم من عذاب أليم | ٣١ ك الأحقاف | ٤٦ |
| يُجِيرُ | : قل من بيده ملكوت كل شىء وهو يجير ولا يجار | | |
| (٢) | عليه إن كنتم تعلمون ... ... ... ... ... ... | ٨٨ ك المؤمنون | ٢٣ |
| | قل أرأيتم إن أهلكنى الله ومن معى أو رحمنا فمن يجير الكافرين من عذاب أليم ... ... ... ... ... | ٢٨ ك الملك | ٦٧ |
| يُجِيرُنِى | : قل إنى لن يجيرنى من الله أحد ولن أجد من دونه ملتحدا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ ك الجن | ٧٢ |
| فَأَجِرْهُ | : وإن أحد من المشركين استجارك فأجره حتى يسمع كلام الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦ ك التوبة | ٩ |
| يُجَارُ | : قل من بيده ملكوت كل شىء وهو يجير ولا يجار عليه إن كنتم تعلمون ... ... ... ... ... ... ... | ٨٨ ك المؤمنون | ٢٣ |
| اسْتَجَارَكَ | : وإن أحد من المشركين استجارك فأجره حتى يسمع كلام الله ... ... ... ... ... ... ... | ٦ ك التوبة | ٩ |
| جَار | : وبالوالدين إحسانا وبذى القربى واليتامى والمساكين | | |
| (٣) | والجار ذى القربى ... ... ... ... ... ... | ٣٦ م النساء | ٤ |
| | والجار الجنب والصاحب بالجنب وابن السبيل ... ... | ٣٦ م « | ٤ |
| | وقال لا غالب لكم اليوم من الناس وإنى جار لكم | ٤٨ م الأنفال | ٨ |
| جَائِرٌ | : وعلى الله قصد السبيل ومنها جائر ولو شاء لهداكم أجمعين | ٩ ك النحل | ١٦ |
| مُتَجَاوِرَاتٌ | : وفى الأرض قطع متجاورات وجنات من أعناب وزرع ... ... ... ... ... ... ... | ٤ م الرعد | ١٣ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| جَاوَزَا | : فلما جاوزا قال لفتاه آتنا غداءنا لقد لقينا من سفرنا هذا نصبا... ... ... ... ... ... | ٦٢ ك الكهف | ١٨ |
| جَاوَزْنَا | : وجاوزنا ببنى إسرائيل البحر فأتوا على قوم | | |
| (٢) | يعكفون على أصنام لهم ... ... ... ... ... | ١٣٨ ك الأعراف | ٧ |
| | وجاوزنا ببنى إسرائيل البحر فأتبعهم فرعون وجنوده بغيا وعدوا ... ... ... ... ... ... ... | ٩٠ ك يونس | ١٠ |
| جَاوَزَهُ | : فلما جاوزه هو والذين آمنوا معه قالوا لا طاقة لنا اليوم بجالوت ... ... ... ... ... | ٢٤٩ م البقرة | ٢ |
| تَتَجَاوَزُ | : أولئك الذين نتقبل عنهم أحسن ما عملوا ونتجاوز عن سيئاتهم... ... ... ... ... ... | ١٦ ك الأحقاف | ٤٦ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| فَجَاسُوا | : بعثنا عليكم عبادا لنا أولى بأس شديد فجاسوا خلال الديار ... ... ... ... ... ... ... | ٥ ك الإسراء | ١٧ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| تَجُوعَ | : إن لك ألا تجوع فيها ولا تعرى ... ... ... | ١١٨ ك طه | ٢٠ |
| جُوعٍ | : ولنبلونكم بشىء من الخوف والجوع ونقص | | |
| (٤) | من الاموال والأنفس والثمرات ... ... ... | ١٥٥ م البقرة | ٢ |
| | فأذاقها الله لباس الجوع والخوف بما كانوا يصنعون | ١١٢ ك النحل | ١٦ |
| | ليس لهم طعام إلا من ضريع . لا يسمن ولا يغنى من جوع | ٧ ك الغاشية | ٨٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| جُوع : | فليعبدوا رب هذا البيت الذى أطعمهم من جوع وآمنهم من خوف ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك قريش | ١٠٦ |
| جَوْفِهِ : | ما جعل الله لرجل من قلبين فى جوفه ... ... | ٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| جَوّ : | ألم يروا إلى الطير مسخرات فى جو السماء ما يمسكهن إلا الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٩ | ك النحل | ١٦ |
| جَاءَ : | أو جاء أحد منكم من الغائط أو لامستم النساء فلم تجدوا ماء فتيمموا ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | م النساء | ٤ |
| (٦٨) | أو جاء أحد منكم من الغائط أو لامستم النساء فلم تجدوا ماء فتيمموا... ... ... ... ... ... | ٦ | م المائدة | ٥ |
| | حتى إذا جاء أحدكم الموت توفته رسلنا وهم لا يفرطون | ٦١ | ك الأنعام | ٦ |
| | قل من أنزل الكتاب الذى جاء به موسى نورا وهدى للناس | ٩١ | م « | ٦ |
| | من جاء بالحسنة فله عشر أمثالها ... ... ... ... | ١٦٠ | ك « | ٦ |
| | ومن جاء بالسيئة فلا يجزى إلا مثلها وهم لا يظلمون | ١٦٠ | ك « | ٦ |
| | فإذا جاء أجلهم لا يستأخرون ساعة ولا يستقدمون | ٣٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | وجاء السحرة فرعون قالوا إن لنا لأجرا إن كنا نحن الغالبين | ١١٣ | ك « | ٧ |
| | ولما جاء موسى لميقاتنا وكلمه ربه قال رب أرنى أنظر إليك | ١٤٣ | ك « | ٧ |
| | لقد ابتغوا الفتنة من قبل وقلبوا لك الأمور حتى جاء الحق | ٤٨ | م التوبة | ٩ |
| | وجاء المعذرون من الأعراب ليؤذن لهم وقعد الذين كذبوا الله ورسوله ... ... ... ... ... ... | ٩٠ | م « | ٩ |
| | فإذا جاء رسولهم قضى بينهم بالقسط وهم لا يظلمون | ٤٧ | ك يونس | ١٠ |
| | لكل أمة أجل إذا جاء أجلهم فلا يستأخرون ساعة ولا يستقدمون ... ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك « | ١٠ |
| | فلما جاء السحرة قال لهم موسى ألقوا ما أنتم ملقون | ٨٠ | ك « | ١٠ |
| | لولا أنزل عليه كنز أو جاء معه ملك ... ... ... | ١٢ | م هود | ١١ |
| | حتى إذا جاء أمرنا وفار التنور قلنا احمل فيها من كل زوجين اثنين ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك « | ١١ |
| | ولما جاء أمرنا نجينا هودا والذين آمنوا معه برحمة منا | ٥٨ | ك « | ١١ |
| | فلما جاء أمرنا نجينا صالحا والذين آمنوا معه برحمة منا | ٦٦ | ك « | ١١ |
| | فما لبث أن جاء بعجل حنيذ ... ... ... ... ... | ٦٩ | ك « | ١١ |
| | يا إبراهيم أعرض عن هذا إنه قد جاء أمر ربك | ٧٦ | ك « | ١١ |
| | فلما جاء أمرنا جعلنا عاليها سافلها وأمطرنا عليها حجارة | ٨٢ | ك « | ١١ |
| | ولما جاء أمرنا نجينا شعيبا والذين آمنوا معه برحمة منا | ٩٤ | ك « | ١١ |
| | فما أغنت عنهم آلهتهم التى يدعون من دون الله من شىء لما جاء أمر ربك ... ... ... ... ... | ١٠١ | ك « | ١١ |
| | وجاء إخوة يوسف فدخلوا عليه فعرفهم وهم له منكرون | ٥٨ | ك يوسف | ١٢ |
| | قالوا نفقد صواع الملك ولمن جاء به حمل بعير وأنا به زعيم | ٧٢ | ك « | ١٢ |
| جَاءَ : | فلما أن جاء البشير ألقاه على وجهه فارتد بصيرا | ٩٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | وقد أحسن بى إذ أخرجنى من السجن وجاء بكم من البدو | ١٠٠ | ك « | ١٢ |
| | فلما جاء آل لوط المرسلون . قال إنكم قوم منكرون | ٦١ | ك الحجر | ١٥ |
| | وجاء أهل المدينة يستبشرون ... ... ... ... | ٦٧ | ك « | ١٥ |
| | فإذا جاء أجلهم لا يستأخرون ساعة ولا يستقدمون | ٦١ | ك النحل | ١٦ |
| | فإذا جاء وعد أولاهما بعثنا عليكم عبادا لنا أولى بأس شديد | ٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فإذا جاء وعد الآخرة ليسوءوا وجوهكم وليدخلوا المسجد | ٧ | ك « | ٦٧ |
| | وقل جاء الحق وزهق الباطل إن الباطل كان زهوقا | ٨١ | ك « | ١٧ |
| | فإذا جاء وعد الآخرة جئنا بكم لفيفا... ... ... ... | ١٠٤ | ك « | ١٧ |
| | فإذا جاء وعد ربى جعله دكاء وكان وعد ربى حقا | ٩٨ | م الكهف | ١٨ |
| | فإذا جاء أمرنا وفار التنور فاسلك فيها من كل زوجين اثنين | ٢٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | كل ما جاء أمة رسولها كذبوه فأتبعنا بعضهم بعضا | ٤٤ | ك « | ٢٣ |
| | حتى إذا جاء أحدهم الموت قال رب ارجعون | ٩٩ | ك « | ٢٣ |
| | فلما جاء السحرة قالوا لفرعون أئن لنا لأجرا إن كنا نحن الغالبين .. ... ... ... ... ... | ٤١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فلما جاء سليمان قال أتمدونن بمال... ... ... ... | ٣٦ | ك النمل | ٢٧ |
| | من جاء بالحسنة فله خير منها وهم من فزع يومئذ آمنون | ٨٩ | ك « | ٢٧ |
| | ومن جاء بالسيئة فكبت وجوههم فى النار ... ... | ٩٠ | ك « | ٢٧ |
| | وجاء رجل من أقصى المدينة يسعى ... ... ... ... | ٢٠ | ك القصص | ٢٨ |
| | وقال موسى ربى أعلم بمن جاء بالهدى من عنده ومن تكون له عاقبة الدار ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك « | ٢٨ |
| | من جاء بالحسنة فله خير منها ... ... ... ... ... | ٨٤ | ك « | ٢٨ |
| | ومن جاء بالسيئة فلا يجزى الذين عملوا السيئات إلا ما كانوا يعملون ... ... ... ... ... ... | ٨٤ | ك « | ٢٨ |
| | قل ربى أعلم من جاء بالهدى ومن هو فى ضلال مبين | ٨٥ | م « | ٢٨ |
| | ولئن جاء نصر من ربك ليقولن إنا كنا معكم... ... | ١٠ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | فإذا جاء الخوف رأيتهم ينظرون إليك تدور أعينهم | ١٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | قل جاء الحق وما يبدئ الباطل وما يعيد ... ... | ٤٩ | ك سبأ | ٣٤ |
| | فإذا جاء أجلهم فإن الله كان بعباده بصيرا ... ... | ٤٥ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وجاء من أقصى المدينة رجل يسعى قال ياقوم اتبعوا المرسلين ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك يس | ٣٦ |
| | بل جاء بالحق وصدق المرسلين ... ... ... ... | ٣٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| | وإن من شيعته لإبراهيم . إذ جاء ربه بقلب سليم | ٨٤ | ك « | ٣٧ |
| | والذى جاء بالصدق وصدق به أولئك هم المتقون | ٣٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| | فإذا جاء أمر الله قضى بالحق وخسر هنالك المبطلون | ٧٨ | ك غافر | ٤٠ |
| | فلولا ألقى عليه أسورة من ذهب أو جاء معه الملائكة مقترنين | ٥٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ولما جاء عيسى بالبينات قال قد جئتكم بالحكمة | ٦٣ | ك « | ٤٣ |
| | فهل ينظرون إلا الساعة أن تأتيهم بغتة فقد جاء أشراطها | ١٨ | م محمد | ٤٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| جَاءَ | من خشى الرحمن بالغيب وجاء بقلب منيب ... ... | ٣٣ | ك قـ | ٥٠ |
| | فراغ إلى أهله فجاء بعجل سمين ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك الذاريات | ٥١ |
| | ولقد جاء آل فرعون النذر ... ... ... ... ... | ٤١ | ك القمـر | ٥٤ |
| | وغرتكم الأمانى حتى جاء أمر الله وغركم بالله الغرور | ١٤ | م الحـديد | ٥٧ |
| | ولن يؤخر الله نفسا إذا جاء أجلها والله خبير بما تعملون | ١١ | م المنافقون | ٦٣ |
| | وجاء فرعون ومن قبله والمؤتفكات بالخاطئة... ... | ٩ | ك الحـاقة | ٦٩ |
| | إن أجل الله إذا جاء لا يؤخر لو كنتم تعلمون... ... | ٤ | ك نـوح | ٧١ |
| | وجاء ربك والملك صفا صفا ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك الفجـر | ٨٩ |
| | إذا جاء نصر الله والفتح ... ... ... ... ... | ١ | م النصـر | ١١٠ |
| جَاءَتْ | وما يشعركم أنها إذا جاءت لا يؤمنون ... ... | ١٠٩ | ك الأنعـام | ٦ |
| (١٣) | لقد جاءت رسل ربنا بالحق ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | يقول الذين نسوه من قبل قد جاءت رسل ربنا بالحق | ٥٣ | ك « | ٧ |
| | ولقد جاءت رسلنا إبراهيم بالبشرى قالوا سلاما ... | ٦٩ | ك هـود | ١١ |
| | ولما جاءت رسلنا لوطا سيء بهم وضاق بهم ذرعا... | ٧٧ | ك « | ١١ |
| | وجاءت سيارة فأرسلوا واردهم فأدلى دلوه ... ... | ١٩ | ك يوسـف | ١٢ |
| | فلما جاءت قيل أهكذا عرشك قالت كأنه هو... ... | ٤٢ | ك النمـل | ٢٧ |
| | ولما جاءت رسلنا إبراهيم بالبشرى قالوا إنا مهلكوا أهل هذه القرية ... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ولما أن جاءت رسلنا لوطا سيء بهم وضاق بهم ذرعا | ٣٣ | ك « | ٢٩ |
| | وجاءت سكرة الموت بالحق ذلك ما كنت منه تحيد | ١٩ | ك قـ | ٥٠ |
| | وجاءت كل نفس معها سائق وشهيد ... ... ... | ٢١ | ك « | ٥٠ |
| | فإذا جاءت الطامة الكبرى . يوم يتذكر الإنسان ما سعى | ٣٤ | ك النازعات | ٧٩ |
| | فإذا جاءت الصاخة . يوم يفر المرء من أخيه . وأمه وأبيه | ٣٣ | ك عبس | ٨٠ |
| جَاءَتْكَ | بلى قد جاءتك آياتى فكذبت بها واستكبرت وكنت من الكافرين ... ... ... ... ... ... | ٥٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| جَاءَتْكُمُ | فإن زللتم من بعد ما جاءتكم البينات فاعلموا أن الله عزيز حكيم ... ... ... ... ... ... | ٢٠٩ | م البقـرة | ٢ |
| (٥) | قد جاءتكم بينة من ربكم هـذه ناقة الله لكم آية | ٧٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | قد جاءتكم بينة من ربكم فأوفوا الكيل والميزان | ٨٥ | ك « | ٧ |
| | يأيها الناس قد جاءتكم موعظة من ربكم وشفاء لما فى الصدور... ... ... ... ... ... ... | ٥٧ | ك يونس | ١٠ |
| | اذكروا نعمة الله عليكم إذ جاءتكم جنود فأرسلنا عليهم ريحا وجنودا لم تروها ... ... ... ... ... | ٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| جَاءَتْنَا | وما تنقم منا إلا أن آمنا بآيات ربنا لما جاءتنا | ١٢٦ | ك الأعراف | ٧ |
| جَاءَتْهُ | ومن يبدل نعمة الله من بعد ما جاءته فإن الله شديد العقاب ... ... ... ... ... ... ... | ٢١١ | م البقـرة | ٢ |
| (٣) | فلما ذهب عن إبراهيم الروع وجاءته البشرى يجادلنا فى قوم لوط ... ... ... ... ... ... ... | ٧٤ | ك هـود | ١١ |
| | فجاءته إحداهما تمشى على استحياء قالت إن أبى يدعوك | ٢٥ | ك القصص | ٢٨ |
| جَاءَتْهَا | جاءتها ريح عاصف وجاءهم الموج من كل مكان | ٢٢ | ك يـونس | ١٠ |
| جَاءَتْهُمْ | وما اختلف فيه إلا الذين أوتوه من بعد ما جاءتهم البينات بغيا بينهم ... ... ... ... | ٢١٣ | م البقـرة | ٢ |
| (٢٠) | ولو شاء الله ما اقتتل الذين من بعـدهم من بعـد ما جاءتهم البينات ولكن اختلفوا ... ... ... | ٢٥٣ | م « | ٢ |
| | ثم اتخذوا العجل من بعد ما جاءتهم البينات فعفونا عن ذلك ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٣ | م النسـاء | ٤ |
| | ولقد جاءتهم رسلنا بالبينات ثم إن كثيرا منهم بعد ذلك فى الأرض لمسرفون ... ... ... ... ... | ٣٢ | م المائدة | ٥ |
| | حتى إذا جاءتهم الساعة بغتة قالوا يا حسرتنا على ما فرطنا فيها ... ... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك الأنعـام | ٦ |
| | وأقسموا بالله جهد أيمانهم لئن جاءتهم آية ليؤمنن بها | ١٠٩ | ك « | ٦ |
| | وإذا جاءتهم آية قالوا لن نؤمن حتى نؤتى مثل ما أوتى رسل الله ... ... ... ... ... ... | ١٢٤ | ك « | ٦ |
| | حتى إذا جاءتهم رسلنا يتوفونهم قالوا أين ما كنتم تدعون من دون الله ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولقد جاءتهم رسلهم بالبينات فما كانوا ليؤمنوا بما كذبوا من قبـل ... ... ... ... ... ... | ١٠١ | ك « | ٧ |
| | فإذا جاءتهم الحسنة قالوا لنا هذه ... ... ... ... | ١٣١ | ك « | ٧ |
| | وجاءتهم رسلهم بالبينات وما كانوا ليؤمنوا ... ... | ١٣ | ك يونس | ١٠ |
| | ولو جاءتهم كل آية حتى يروا العذاب الأليم .. ... | ٩٧ | ك « | ٠ |
| | جاءتهم رسلهم بالبينات فردوا أيديهم فى أفواههم | ٩ | ك إبراهـيم | ١٤ |
| | فلما جاءتهم آياتنا مبصرة قالوا هذا سحر مبين... .. | ١٣ | ك النمـل | ٢٧ |
| | وعمروها أكثر مما عمروها وجاءتهم رسلهم بالبينات | ٩ | ك الروم | ٣٠ |
| | جاءتهم رسلهم بالبينات وبالزبر وبالكتاب المنير | ٢٥ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | فلما جاءتهم رسلهم بالبينات فرحوا بما عندهم من العلم | ٨٣ | ك غافـر | ٤٠ |
| | إذ جاءتهم الرسل من بين أيديهم ومن خلفهم ألا تعبدوا إلا الله... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك فصلت | ٤١ |
| | فأنى لهم إذا جاءتهم ذكراهم ... ... ... ... | ١٨ | م محمـد | ٤٧ |
| | وما تفرق الذين أوتوا الكتاب إلا من بعد ما جاءتهم البينة | ٤ | م البينـة | ٩٨ |
| جَاءَكَ | ولئن اتبعت أهواءهم بعد الذى جاءك من العلم ما لك من الله من ولى ولا نصير... ... ... | ١٢٠ | م البقـرة | ٢ |
| (١٢) | ولئن اتبعت أهواءهم من بعد ما جاءك من العلم إنك إذا لمن الظالمين ... ... ... ... ... ... | ١٤٥ | م « | ٢ |
| | فمن حاجك فيه من بعـد ما جاءك من العلم فقل تعالوا ندع أبناءنا ... ... ... ... ... ... | ٦١ | م آل عمران | ٣ |
| | ولا تتبع أهواءهم عما جاءك من الحق ... ... ... | ٤٨ | م المائدة | ٥ |
| | ولا مبدل لكلمات الله ولقد جاءك من نبإ المرسلين | ٣٤ | ك الأنعـام | ٦ |
| | وإذا جاءك الذين يؤمنون بآياتنا فقل سـلام عليكم | ٥٤ | ك « | ٦ |
| | لقد جاءك الحق من ربك فلا تكونن من الممترين | ٩٤ | م يونس | ١٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| جَاءَكَ | : وجاءك فى هذه الحق وموعظة وذكرى للمؤمنين ... | ١٢٠ك هـود | ١١ |
| | ولئن اتبعت أهواءهم بعد ما جاءك من العلم ما لك | | |
| | من الله من ولىّ ولا واق ... ... ... ... ... | ٣٧ م الرعـد | ١٣ |
| | يأيها النبى إذا جاءك المؤمنات يبايعنك على أن لا يشركن | | |
| | بالله شيئا ولا يسرقن ولا يزنين ولا يقتلن أولادهن | | |
| | ولا يأتين ببهتان يفترينه بين أيديهن وأرجلهنّ | | |
| | ولا يعصينك فى معروف فبايعهن واستغفر لهنّ الله | ١٢ م الممتحنـة | ٦٠ |
| | إذا جاءك المنافقون قالوا نشهد إنك لرسول الله والله | | |
| | يعلم إنك لرسوله ... ... ... ... ... ... | ١ م المنافقون | ٦٣ |
| | وأما من جاءك يسعى . وهو يخشى . فأنت عنه تلهى | ٨ ك عبس | ٨٠ |
| جَاءَكُمْ | : أفكلما جاءكم رسول بما لا تهوى أنفسكم استكبرتم | ٨٧ م البقـرة | ٢ |
| (٢٦) | ولقد جاءكم موسى بالبينات ثم اتخذتم العجل من بعده | | |
| | وأنتم ظالمون ... ... ... ... ... ... | ٩٢ م « | ٢ |
| | ثم جاءكم رسول مصدق لما معكم لتؤمنن به ولتنصرنه | ٨١ م آل عمران | ٣ |
| | قل قـد جاءكم رسل من قبلى بالبينات وبالذى قلتم | | |
| | فلم قتلتموهم إن كنتم صادقين ... ... ... ... | ١٨٣م « | ٣ |
| | يأيها الناس قد جاءكم الرسول بالحق من ربكم فآمنوا خيرا لكم | ١٧٠م النسـاء | ٤ |
| | يأيها الناس قد جاءكم برهان من ربكم وأنزلنا إليكم نورا مبينا | ١٧٤م « | ٤ |
| | يأهل الكتاب قد جاءكم رسولنا يبين لكم كثيرا مما كنتم تخفون | ١٥ م المائدة | ٥ |
| | قد جاءكم من الله نور وكتاب مبين ... ... ... ... | ١٥ م « | ٥ |
| | يأهل الكتاب قد جاءكم رسولنا يبين لكم على فترة من الرسل | ١٩ م « | ٥ |
| | أن تقولوا ما جاءنا من بشير ولا نذير فقد جاءكم بشير ونذير | ١٩ م « | ٥ |
| | قد جاءكم بصائر من ربكم فمن أبصر فلنفسه ... ... | ١٠٤ك الأنعام | ٦ |
| | فقد جاءكم بينة من ربكم وهدى ورحمة ... ... ... | ١٥٧ك « | ٦ |
| | أو عجبتم أن جاءكم ذكر من ربكم على رجل منكم لينذركم | | |
| | ولتتقوا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦٣ ك الأعراف | ٧ |
| | أو عجبتم أن جاءكم ذكر من ربكم على رجل منكم لينذركم | ٦٩ ك « | ٧ |
| | إن تستفتحوا فقد جاءكم الفتح وإن تنتهوا فهو خير لكم | ١٩ م الأنفال | ٨ |
| | لقـد جاءكم رسول من أنفسكم عزيز عليه ما عنتم | ١٢٨ك التوبة | ٩ |
| | قال موسى أتقولون للحق لما جاءكم أسحر هـذا | | |
| | ولا يفلح الساحرون ... ... ... ... ... ... | ٧٧ ك يونس | ١٠ |
| | قل يأيها الناس قد جاءكم الحق من ربكم... ... ... | ١٠٨ك « | ١٠ |
| | أنحن صددناكم عن الهدى بعـد إذ جاءكم ... ... | ٣٢ ك سبأ | ٣٤ |
| | أولم نعمركم ما يتذكر فيه من تذكر وجاءكم النذير | ٣٧ ك فاطر | ٣٥ |
| | أتقتلون رجلا أن يقول ربى الله وقد جاءكم بالبينات من ربكم | ٢٨ ك غافر | ٤٠ |
| | ولقـد جاءكم يوسف من قبل بالبينات ... ... ... | ٣٤ ك « | ٤٠ |
| | فما زلتم فى شك مما جاءكم به ... ... ... ... | ٣٤ ك « | ٤٠ |
| | يأيها الذين آمنوا إن جاءكم فاسق بنبإ فتبينوا... ... | ٦ م الحجـرات | ٤٩ |
| | وقـد كفروا بما جاءكم من الحق ... ... ... ... | ١ م الممتحنـة | ٦٠ |
| جَاءَكُمُ | : يأيها الذين آمنوا إذا جاءكم المؤمنات مهاجرات | | |
| | فامتحنوهن ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ م الممتحنـة | ٦٠ |
| جَاءَنَا | : يبين لكم على فترة من الرسل أن تقولوا ما جاءنا | | |
| (٦) | من بشير ولا نذير ... ... ... ... ... ... | ١٩ م المائدة | ٥ |
| | وما لنا لا نؤمن بالله وما جاءنا من الحق ونطمع | | |
| | أن يدخلنا ربنا مع القوم الصالحين... ... ... | ٨٤ م « | ٥ |
| | قالوا لن نؤثرك على ما جاءنا من البينات والذى فطرنا | ٧٢ ك طـه | ٢٠ |
| | فمن ينصرنا من بأس الله إن جاءنا ... ... ... ... | ٢٩ ك غافـر | ٤٠ |
| | حتى إذا جاءنا قال ياليت بينى وبينك بعـد المشرقين | ٣٨ ك الزخرف | ٤٣ |
| | قالوا بلى قد جاءنا نذير فكذبنا وقلنا ما نزل الله من شىء | ٩ ك الملك | ٦٧ |
| جَاءَنِى | : يأبت إنى قـد جاءنى من العلم ما لم يأتك فاتبعنى | ٤٣ ك مـريم | ١٩ |
| (٣) | لقد أضلنى عن الذكر بعد إذ جاءنى ... ... ... | ٢٩ ك الفـرقان | ٢٥ |
| | قل إنى نهيت أن أعبد الذين تدعون من دون الله | | |
| | لما جاءنى البينات... ... ... ... ... ... | ٦٦ ك غافـر | ٤٠ |
| جَاءَهُ | : فمن جاءه موعظة من ربه فانتهى فله ما سلف وأمره إلى الله | ٢٧٥م البقـرة | ٢ |
| (٨) | وجاءه قومه يهرعون إليه ومن قبل كانوا يعملون السيئات | ٧٨ ك هـود | ١١ |
| | فلما جاءه الرسول قال ارجع إلى ربك فاسئله ما بال النسوة | ٥٠ ك يوسـف | ١٢ |
| | حتى إذا جاءه لم يجده شيئا ووجد الله عنده فوفاه حسابه | ٣٩ م النـور | ٢٤ |
| | فلما جاءه وقص عليه القصص قال لا تخف... ... | ٢٥ ك القصص | ٢٨ |
| | ومن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو كذب بالحق لما جاءه | ٦٨ ك العنكبوت | ٢٩ |
| | فمن أظلم ممن كذب على الله وكذب بالصدق إذ جاءه | ٣٢ ك الزمر | ٣٩ |
| | عبس وتولى . أن جاءه الأعمى... ... ... ... ... | ٢ ك عبس | ٨٠ |
| جَاءَهَا | : وكم من قرية أهلكناها فجاءها بأسنا بياتا أو هم قائلون | ٤ ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | فلما جاءها نودى أن بورك من فى النار ومن حولها | ٨ ك النمـل | ٢٧ |
| | واضرب لهم مثلا أصحاب القرية إذ جاءها المرسلون | ١٣ ك يس | ٣٦ |
| جَاءَهُمْ | : ولما جاءهم كتاب من عند الله مصدق لما معهم | ٨٩ م البقـرة | ٢ |
| (٤٥) | فلما جاءهم ما عرفوا كفروا به ... ... ... ... | ٨٩ م « | ٢ |
| | ولما جاءهم رسول من عنـد الله مصدق لما معهم | | |
| | نبـذ فريق من الذين أوتوا الكتاب كتاب الله | ١٠١م « | ٢ |
| | وما اختلف الذين أوتوا الكتاب إلا من بعد ما جاءهم | | |
| | العلم بغيا بينهم ... ... ... ... ... ... ... | ١٩ م آل عمران | ٣ |
| | وشهدوا أن الرسول حق وجاءهم البينات... ... ... | ٨٦ م « | ٣ |
| | ولا تكونوا كالذين تفرقوا واختلفوا من بعد ما جاءهم | | |
| | البينات ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٥م « | ٣ |
| | وإذا جاءهم أمر من الأمن أو الخوف أذاعوا به | ٨٣ م النسـاء | ٤ |
| | كلما جاءهم رسول بما لا تهوى أنفسهم فريقا كذبوا | | |
| | وفريقا يقتلون ... ... ... ... ... ... ... | ٧٠ م المائدة | ٥ |
| | فقد كذبوا بالحق لما جاءهم... ... ... ... ... | ٥ ك الأنعام | ٦ |
| | فلولا إذ جاءهم بأسنا تضرعوا ولكن قست قلوبهم | ٤٣ ك « | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| جَاءَهُمْ: | فما كان دعواهم إذ جاءهم بأسنا إلا أن قالوا إنا كنا ظالمين | ٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | وجاءهم الموج من كل مكان وظنوا أنهم أحيط بهم دعوا الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك يونس | ١٠ |
| | فلما جاءهم الحق من عندنا قالوا إن هذا لسحر مبين | ٧٦ | ك « | ١٠ |
| | ورزقناهم من الطيبات فما اختلفوا حتى جاءهم العلم | ٩٣ | ك « | ١٠ |
| | حتى إذا استيأس الرسل وظنوا أنهم قد كذبوا جاءهم نصرنا | ١١٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | ولقد جاءهم رسول منهم فكذبوه فأخذهم العذاب | ١١٣ | ك النحل | ١٦ |
| | وما منع الناس أن يؤمنوا إذ جاءهم الهدى إلا أن قالوا أبعث الله بشرا رسولا ... ... ... ... ... ... | ٩٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فسئل بنى إسرائيل إذ جاءهم... ... ... ... ... ... | ١٠١ | ك « | ١٧ |
| | وما منع الناس أن يؤمنوا إذ جاءهم الهدى ويستغفروا ربهم إلا أن تأتيهم سنة الأولين ... ... ... | ٥٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | أفلم يدبروا القول أم جاءهم ما لم يأت آباءهم الأولين | ٦٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | أم يقولون به جنة بل جاءهم بالحق وأكثرهم للحق كارهون | ٧٠ | ك « | ٢٣ |
| | ثم جاءهم ما كانوا يوعدون ... ... ... ... ... ... | ٢٠٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فلما جاءهم موسى بآياتنا بينات قالوا ما هذا إلا سحر مفترى | ٣٦ | ك القصص | ٢٨ |
| | فلما جاءهم الحق من عندنا قالوا لولا أوتى مثل ما أوتى موسى | ٤٨ | ك « | ٢٨ |
| | ولقد جاءهم موسى بالبينات فاستكبروا فى الأرض | ٣٩ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ويستعجلونك بالعذاب ولولا أجل مسمى لجاءهم العذاب | ٥٣ | ك « | ٢٩ |
| | وقال الذين كفروا للحق لما جاءهم إن هذا إلا سحر مبين | ٤٣ | ك سبإ | ٣٤ |
| | لئن جاءهم نذير ليكونن أهدى من إحدى الأمم ... | ٤٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| | فلما جاءهم نذير ما زادهم إلا نفورا ... ... ... ... | ٤٢ | ك « | ٣٥ |
| | وعجبوا أن جاءهم منذر منهم ... ... ... ... ... | ٤ | ك ص | ٣٨ |
| | فلما جاءهم بالحق من عندنا قالوا اقتلوا أبناء الذين آمنوا معه واستحيوا نساءهم ... ... ... ... | ٢٥ | ك غافر | ٤٠ |
| | إن الذين كفروا بالذكر لما جاءهم وإنه لكتاب عزيز | ٤١ | ك فصلت | ٤١ |
| | وما تفرقوا إلا من بعد ما جاءهم العلم بغيا بينهم | ١٤ | ك الشورى | ٤٢ |
| | بل متعت هؤلاء وآباءهم حتى جاءهم الحق ورسول مبين | ٢٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ولما جاءهم الحق قالوا هذا سحر وإنا به كافرون | ٣٠ | ك « | ٤٣ |
| | فلما جاءهم بآياتنا إذا هم منها يضحكون ... ... | ٤٧ | ك « | ٤٣ |
| | أنى لهم الذكرى وقد جاءهم رسول مبين ... ... | ١٣ | ك الدخان | ٤٤ |
| | ولقد فتنا قبلهم قوم فرعون وجاءهم رسول كريم... | ١٧ | ك « | ٤٤ |
| | فما اختلفوا إلا من بعد ما جاءهم العلم بغيا بينهم | ١٧ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | قال الذين كفروا للحق لما جاءهم هذا سحر مبين | ٧ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | بل عجبوا أن جاءهم منذر منهم... ... ... ... ... | ٢ | ك ق | ٥٠ |
| | بل كذبوا بالحق لما جاءهم فهم فى أمر مريج ... | ٥ | ك « | ٥٠ |
| | ولقد جاءهم من ربهم الهدى ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك النجم | ٥٣ |
| | ولقد جاءهم من الأنباء ما فيه مزدجر ... ... ... | ٤ | ك القمر | ٥٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| جَاءَهُمْ: | فلما جاءهم بالبينات قالوا هذا سحر مبين ... ... | ٦ | م الصف | ٦١ |
| جَاءُو: | فإن كذبوك فقد كذب رسل من قبلك جاءو بالبينات | ١٨٤ | م آل عمران | ٣ |
| (٩) | سحروا أعين الناس واسترهبوهم وجاءو بسحر عظيم | ١١٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | وجاءو أباهم عشاء يبكون ... ... ... ... ... ... | ١٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | وجاءو على قميصه بدم كذب... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك « | ١٢ |
| | إن الذين جاءو بالإفك عصبة منكم ... ... ... ... | ١١ | م النور | ٢٤ |
| | لولا جاءو عليه بأربعة شهداء ... ... ... ... ... | ١٣ | م « | ٢٤ |
| | فقد جاءو ظلما وزورا ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | حتى إذا جاءو قال أكذبتم بآياتى ولم تحيطوا بها علما | ٨٤ | ك النمل | ٢٧ |
| | والذين جاءو من بعدهم يقولون ربنا اغفرلنا ولإخواننا | ١٠ | م الحشر | ٥٩ |
| جَاءُوكَ: | ثم جاءوك يحلفون بالله إن أردنا إلا إحسانا وتوفيقا | ٦٢ | م النساء | ٤ |
| (٥) | ولو أنهم إذ ظلموا أنفسهم جاءوك فاستغفروا الله واستغفر لهم الرسول ... ... ... ... ... ... | ٦٤ | م « | ٤ |
| | وإن جاءوك فاحكم بينهم أو أعرض عنهم ... ... | ٤٢ | م المائدة | ٥ |
| | حتى إذا جاءوك يجادلونك يقول الذين كفروا إن هذا إلا أساطير الأولين ... ... ... ... | ٢٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | وإذا جاءوك حيوك بما لم يحيك به الله ... ... | ٨ | م المجادلة | ٥٨ |
| جَاءُوكُمْ: | أو جاءوكم حصرت صدورهم أن يقاتلوكم... ... | ٩٠ | م النساء | ٤ |
| (٣) | وإذا جاءوكم قالوا آمنا وقد دخلوا بالكفر وهم قد خرجوا به... ... ... ... ... ... ... ... | ٦١ | م المائدة | ٥ |
| | إذ جاءوكم من فوقكم ومن أسفل منكم ... ... ... | ١٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| جَاءُوهَا: | حتى إذا جاءوها فتحت أبوابها ... ... ... ... | ٧١ | ك الزمر | ٣٩ |
| (٣) | حتى إذا جاءوها وفتحت أبوابها ... ... ... ... | ٧٣ | ك « | ٣٩ |
| | حتى إذا ما جاءوها شهد عليهم سمعهم وأبصارهم | ٢٠ | ك فصلت | ٤١ |
| فَجَاءُوهُمْ: | ثم بعثنا من بعده رسلا إلى قومهم فجاءوهم بالبينات | ٧٤ | ك يونس | ١٠ |
| (٢) | ولقد أرسلنا من قبلك رسلا إلى قومهم فجاءوهم بالبينات | ٤٧ | ك الروم | ٣٠ |
| جِئْتَ: | قالوا الآن جئت بالحق فذبحوها وما كادوا يفعلون | ٧١ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | قال إن كنت جئت بآية فأت بها إن كنت من الصادقين | ١٠٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | قال أخرقتها لتغرق أهلها لقد جئت شيئا إمرا | ٧١ | ك الكهف | ١٨ |
| | قال أقتلت نفسا زكية بغير نفس لقد جئت شيئا نكرا | ٧٤ | ك « | ١٨ |
| | قالوا يا مريم لقد جئت شيئا فريا ... ... ... ... | ٢٧ | ك مريم | ١٩ |
| | فلبثت سنين فى أهل مدين ثم جئت على قدر يا موسى | ٤٠ | ك طه | ٢٠ |
| جِئْتُكَ: | قال أو لو جئتك بشىء مبين... ... ... ... ... | ٣٠ | ك الشعراء | ٢٦ |
| (٢) | أحطت بما لم تحط به وجئتك من سبإ بنبإ يقين... | ٢٢ | ك النمل | ٢٧ |
| جِئْتُكُمْ: | ورسولا إلى بنى إسرائيل أنى قد جئتكم بآية من ربكم | ٤٩ | م آل عمران | ٣ |
| (٥) | وجئتكم بآية من ربكم فاتقوا الله وأطيعون ... ... | ٥٠ | م « | ٣ |
| | قد جئتكم ببينة من ربكم فأرسل معى بنى إسرائيل | ١٠٥ | ك الأعراف | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| مَحَبَّةً | وألقيت عليك محبة منى ولتصنع على عينى ... ... | ك طـه | ٣٩ ٢٠ |
| حَبّ | إن الله فالق الحب والنوى ... ... ... ... ... | ك الأنعام | ٩٥ ٦ |
| (٣) | ونزلنا من السماء ماء مباركا فأنبتنا به جنات وحب الحصيد | ك قـ | ٩ ٥٠ |
| | فيها فاكهة والنخل ذات الأكمام . والحب | | |
| | ذو العصف والريحان ... ... ... ... ... ... | م الرحمن | ١٢ ٥٥ |
| حَبًّا | فأخرجنا منه خضرا نخرج منه حبا متراكبا ... ... | ك الأنعام | ٩٩ ٦ |
| (٤) | وءاية لهم الأرض الميتة أحييناها وأخرجنا منها | ك يس | ٣٣ ٣٦ |
| | وأنزلنا من المعصرات ماء ثجاجا . لنخرج به حبا ونباتا | ك النبأ | ١٥ ٧٨ |
| | ثم شققنا الأرض شقا . فأنبتنا فيها حبا... ... ... | ك عبس | ٢٧ ٨٠ |
| حَبَّةٍ | مثل الذين ينفقون أموالهم فى سبيل الله كمثل حبة | م البقرة | ٢٦١ ٢ |
| (٥) | أنبتت سبع سنابل فى كل سنبلة مائة حبة ... ... | م » | ٢٦١ ٢ |
| | ولا حبة فى ظلمات الأرض ولا رطب ولا يابس | | |
| | إلا فى كتاب مبين ... ... ... ... ... ... ... | ك الأنعام | ٥٩ ٦ |
| | وإن كان مثقال حبة من خردل أتينا بها وكفى بنا حاسبين | ك الأنبياء | ٤٧ ٢١ |
| | إنها إن تك مثقال حبة من خردل فتكن فى صخرة | | |
| | أو فى السموات أو فى الأرض يأت بها الله | ك لقمان | ١٦ ٣١ |
| تُحْبَرُونَ | ادخلوا الجنة أنتم وأزواجكم تحبرون ... ... | ك الزخرف | ٧٠ ٤٣ |
| يُحْبَرُونَ | فأما الذين ءامنوا وعملوا الصالحات فهم | | |
| | فى روضة يحبرون ... ... ... ... ... ... ... | ك الروم | ١٥ ٣٠ |
| الأَحْبَارُ | يحكم بها النبيون الذين أسلموا للذين هادوا | | |
| (٣) | والربانيون والأحبار ... ... ... ... ... ... | م المائدة | ٤٤ ٥ |
| | لولا ينهاهم الربانيون والأحبار عن قولهم الإثم | | |
| | وأكلهم السحت ... ... ... ... ... ... ... | م » | ٦٣ ٥ |
| | إن كثيرا من الأحبار والرهبان ليأكلون أموال | | |
| | الناس بالباطل... ... ... ... ... ... ... ... | م التوبة | ٣٤ ٩ |
| أَحْبَارَهُمْ | اتخذوا أحبارهم ورهبانهم أربابا من دون الله | م » | ٣١ ٩ |
| تَحْبِسُونَهُمَا | تحبسونهما من بعد الصلاة فيقسمان بالله إن ارتبتم | م المائدة | ١٠٦ ٥ |
| يَحْبِسُهُ | ولئن أخرنا عنهم العذاب إلى أمة معدودة ليقولن | | |
| | ما يحبسه ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ك هود | ٨ ١١ |
| حَبِطَ | ومن يكفر بالإيمان فقد حبط عمله ... ... ... | م المائدة | ٥ ٥ |
| (٣) | ولو أشركوا لحبط عنهم ما كانوا يعملون .. ... ... | ك الأنعام | ٨٨ ٦ |
| | وحبط ما صنعوا فيها وباطل ما كانوا يعملون ... ... | ك هود | ١٦ ١١ |
| حَبِطَتْ | فأولئك حبطت أعمالهم فى الدنيا والآخرة | م البقرة | ٢١٧ ٢ |
| (٧) | أولئك الذين حبطت أعمالهم فى الدنيا والآخرة | م آل عمران | ٢٢ ٣ |
| | حبطت أعمالهم فأصبحوا خاسرين ... ... ... ... | م المائدة | ٥٣ ٥ |
| | والذين كذبوا بآياتنا ولقاء الآخرة حبطت أعمالهم ... | ك الأعراف | ١٤٧ ٧ |
| حَبِطَتْ | أولئك حبطت أعمالهم وفى النار هم خالدون | م التوبة | ١٧ ٩ |
| | أولئك حبطت أعمالهم فى الدنيا والآخرة ... ... ... | م » | ٦٩ ٩ |
| | أولئك الذين كفروا بآيات ربهم ولقائه فحبطت أعمالهم | ك الكهف | ١٠٥ ١٨ |
| تَحْبَطَ | ولا تجهروا له بالقول كجهر بعضكم لبعض أن | | |
| | تحبط أعمالكم ... ... ... ... ... ... ... ... | م الحجرات | ٢ ٤٩ |
| لَيَحْبَطَنَّ | لئن أشركت ليحبطن عملك ولتكونن من الخاسرين | ك الزمر | ٦٥ ٣٩ |
| فَأَحْبَطَ | أولئك لم يؤمنوا فأحبط الله أعمالهم ... ... | م الأحزاب | ١٩ ٣٣ |
| (٣) | ذلك بأنهم كرهوا ما أنزل الله فأحبط أعمالهم... ... | م محمد | ٩ ٤٧ |
| | وكرهوا رضوانه فأحبط أعمالهم ... ... ... ... ... | م » | ٢٨ ٤٧ |
| سَيُحْبِطُ | إن يضروا الله شيئا وسيحبط أعمالهم ... ... | م » | ٣٢ ٤٧ |
| | ✦✦✦ | | |
| الْحُبُكِ | والسماء ذات الحبك . إنكم لفى قول مختلف | ك الذاريات | ٧ ٥١ |
| | ✦✦✦ | | |
| حَبْلٍ | واعتصموا بحبل الله جميعا ولا تفرقوا... ... ... | م آل عمران | ١٠٣ ٣ |
| (٥) | ضربت عليهم الذلة أين ما ثقفوا إلا بحبل من الله | م » | ١١٢ ٣ |
| | وحبل من الناس وباءو بغضب من الله... ... ... | م » | ١١٢ ٣ |
| | ونحن أقرب إليه من حبل الوريد ... ... ... ... | ك قـ | ١٦ ٥٠ |
| | وامرأته حمالة الحطب . فى جيدها حبل من مسد | ك المسد | ٥ ١١١ |
| حِبَالُهُمْ | فإذا حبالهم وعصيهم يخيل إليه من سحرهم أنها تسعى | ك طـه | ٦٦ ٢٠ |
| (٢) | فألقوا حبالهم وعصيهم ... ... ... ... ... ... | ك الشعراء | ٤٤ ٢٦ |
| | ✦✦✦ | | |
| حَتْمًا | وإن منكم إلا واردها كان على ربك حتما مقضيا | م مريم | ٧١ ١٩ |
| | ✦✦✦ | | |
| حَثِيثًا | ثم استوى على العرش يغشى الليل النهار يطلبه حثيثا | ك الأعراف | ٥٤ ٧ |
| | ✦✦✦ | | |
| حِجَابٌ | وبينهما حجاب وعلى الأعراف رجال يعرفون كلا بسيماهم | ك » | ٤٦ ٧ |
| (٥) | وإذا سألتموهن متاعا فسئلوهن من وراء حجاب | م الأحزاب | ٥٣ ٣٣ |
| | فقال إنى أحببت حب الخير عن ذكر ربى حتى | | |
| | توارت بالحجاب ... ... ... ... ... ... ... | ك ص | ٣٢ ٣٨ |
| | ومن بيننا وبينك حجاب فاعمل إننا عاملون ... ... | ك فصلت | ٥ ٤١ |
| | وما كان لبشر أن يكلمه الله إلا وحيا أو من وراء حجاب | ك الشورى | ٥١ ٤٢ |
| حِجَابًا | جعلنا بينك وبين الذين لا يؤمنون بالآخرة حجابا مستورا | ك الإسراء | ٤٥ ١٧ |
| (٢) | فاتخذت من دونهم حجابا فأرسلنا إليها روحنا ... ... | ك مريم | ١٧ ١٩ |
| لَمَحْجُوبُونَ | كلا إنهم عن ربهم يومئذ لمحجوبون | ك المطففين | ١٥ ٨٣ |
| | ✦✦✦ | | |
| حَجَّ | فمن حج البيت أو اعتمر فلا جناح عليه أن يطوف بهما | م البقرة | ١٥٨ ٢ |
| حَاجَّ | ألم تر إلى الذى حاج إبراهيم فى ربه ... ... ... | م » | ٢٥٨ ٢ |
| حَاجَجْتُمْ | هأنتم هؤلاء حاججتم فيما لكم به علم ... ... ... | م آل عمران | ٦٦ ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| حَاجَّكَ | : فمن حاجّك فيه من بعد ما جاءك من العلم فقل | | | |
| | تعالوا ندع أبناءنا وأبناءكم ... ... ... ... ... | ٦١ | م آل عمران | ٣ |
| حَاجَّهُ | : وحاجّه قومه قال أتحاجّونى فى الله وقد هدان | ٨٠ | ك الأنعام | ٦ |
| حَاجُّوكَ | : فإن حاجّوك فقل أسلمت وجهى لله ومن اتّبعن | ٢٠ | م آل عمران | ٣ |
| تُحَاجُّونَ | : لم تحاجّون فى إبراهيم وما أنزلت التوراة | | | |
| (٢) | والإنجيل إلا من بعده ... ... ... ... ... ... | ٦٥ | م | ٣ |
| | فلم تحاجّون فيما ليس لكم به علم ... ... ... ... ... | ٦٦ | م | ٣ |
| أَتُحَاجُّونَنَا | : قل أتحاجّوننا فى الله وهو ربنا وربكم | ١٣٩ | م البقرة | ٢ |
| أَتُحَاجُّونِّى | : وحاجّه قومه قال أتحاجّونى فى الله وقد هدان | ٨٠ | ك الأنعام | ٦ |
| يُحَاجُّوكُم | : أتحدثونهم بما فتح الله عليكم ليحاجّوكم به عند ربكم | ٧٦ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | أن يؤتى أحد مثل ما أوتيتم أو يحاجّوكم عند ربكم | ٧٣ | م آل عمران | ٣ |
| يُحَاجُّونَ | : والذين يحاجّون فى الله من بعد ما استجيب | | | |
| | له حجتهم داحضة ... ... ... ... ... ... | ١٦ | ك الشورى | ٤٢ |
| يَتَحَاجُّونَ | : وإذ يتحاجّون فى النار فيقول الضعفاء للذين | | | |
| | استكبروا إنا كنا لكم تبعا ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك غافر | ٤٠ |
| الْحَجّ | : يسئلونك عن الأهلة قل هى مواقيت للناس والحج | ١٨٩ | م البقرة | ٢ |
| (٩) | وأتموا الحج والعمرة لله ... ... ... ... ... | ١٩٦ | م » | ٢ |
| | فإذا أمنتم فمن تمتع بالعمرة إلى الحج فما استيسر من الهدى | ١٩٦ | م » | ٢ |
| | فمن لم يجد فصيام ثلاثة أيام فى الحج وسبعة إذا رجعتم | ١٩٦ | م » | ٢ |
| | الحج أشهر معلومات ... ... ... ... ... ... | ١٩٧ | م » | ٢ |
| | فمن فرض فيهن الحج فلا رفث ... ... ... ... ... | ١٩٧ | م » | ٢ |
| | ولا فسوق ولا جدال فى الحج ... ... ... ... ... | ١٩٧ | م » | ٢ |
| | وأذان من الله ورسوله إلى الناس يوم الحج الأكبر | ٣ | م التوبة | ٩ |
| | وأذّن فى الناس بالحج يأتوك رجالا وعلى كل ضامر | ٢٧ | م الحج | ٢٢ |
| حِجُّ | : ولله على الناس حج البيت من استطاع إليه سبيلا | ٩٧ | م آل عمران | ٣ |
| الْحَاجِّ | : أجعلتم سقاية الحاجّ وعمارة المسجد الحرام كمن | | | |
| | آمن بالله... ... ... ... ... ... ... ... | ١٩ | م التوبة | ٩ |
| حِجَجٍ | : على أن تأجرنى ثمانى حجج ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك القصص | ٢٨ |
| حُجَّةٌ | : فولّوا وجوهكم شطره لئلا يكون للناس عليكم حجة | ١٥٠ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | لئلا يكون للناس على الله حجة بعد الرسل ... ... | ١٦٥ | م النساء | ٤ |
| | قل فلله الحجة البالغة فلو شاء لهداكم أجمعين ... ... | ١٤٩ | ك الأنعام | ٦ |
| | لنا أعمالنا ولكم أعمالكم لا حجة بيننا وبينكم ... ... | ١٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| حُجَّتُنَا | : وتلك حجتنا آتيناها إبراهيم على قومه ... ... ... | ٨٣ | ك الأنعام | ٦ |
| حُجَّتُهُمْ | : والذين يحاجّون فى الله من بعد ما استجيب له | | | |
| (٢) | حجتهم داحضة... ... ... ... ... ... ... | ١٦ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ما كان حجتهم إلا أن قالوا ائتوا بآبائنا ... ... .. | ٢٥ | ك الجاثية | ٤٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| حِجْر | : وقالوا هذه أنعام وحرث حجر لا يطعمها إلا من نشاء | ١٣٨ | ك الأنعام | ٦ |
| (٣) | ولقد كذب أصحاب الحجر المرسلين ... ... ... ... | ٨٠ | ك الحجر | ١٥ |
| | هل فى ذلك قسم لذى حجر ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك الفجر | ٨٩ |
| حِجْرًا | : لا بشرى يومئذ للمجرمين ويقولون حجرا محجورا | ٢٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| (٢) | وجعل بينهما برزخا وحجرا محجورا ... ... ... ... | ٥٣ | ك » | ٢٥ |
| مَحْجُورًا | : لا بشرى يومئذ للمجرمين ويقولون حجرا محجورا | ٢٢ | ك » | ٢٥ |
| (٢) | وجعل بينهما برزخا وحجرا محجورا ... ... ... ... | ٥٣ | ك » | ٢٥ |
| حُجُورِكُمْ | : وربائبكم اللاتى فى حجوركم من نسائكم اللاتى دخلتم بهن | ٢٣ | م النساء | ٤ |
| الْحُجُرَاتِ | : إن الذين ينادونك من وراء الحجرات | | | |
| | أكثرهم لا يعقلون ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | م الحجرات | ٤٩ |
| الْحَجَرَ | : وإذ استسقى موسى لقومه فقلنا اضرب بعصاك الحجر | ٦٠ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | وأوحينا إلى موسى إذ استسقاه قومه أن اضرب | | | |
| | بعصاك الحجر ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٦٠ | ك الأعراف | ٧ |
| حِجَارَة | : فاتقوا النار التى وقودها الناس والحجارة ... ... | ٢٤ | م البقرة | ٢ |
| (١٠) | ثم قست قلوبكم من بعد ذلك فهى كالحجارة أو أشد قسوة | ٧٤ | م » | ٢ |
| | وإن من الحجارة لما يتفجر منه الأنهار ... ... ... | ٧٤ | م » | ٢ |
| | إن كان هذا هو الحق من عندك فأمطر علينا حجارة من السماء | ٣٢ | ك الأنفال | ٨ |
| | جعلنا عاليها سافلها وأمطرنا عليها حجارة من سجيل | ٨٢ | ك هود | ١١ |
| | فجعلنا عاليها سافلها وأمطرنا عليهم حجارة من سجيل | ٧٤ | ك الحجر | ١٥ |
| | قل كونوا حجارة أو حديدا ... ... ... ... ... ... | ٥٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| | قالوا إنا أرسلنا إلى قوم مجرمين . لنرسل عليهم حجارة من طين | ٣٣ | ك الذاريات | ٥١ |
| | قوا أنفسكم وأهليكم نارا وقودها الناس والحجارة | ٦ | م التحريم | ٦٦ |
| | وأرسل عليهم طيرا أبابيل . ترميهم بحجارة من سجيل | ٤ | ك الفيل | ١٠٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| حَاجِزًا | : وجعل خلالها أنهارا وجعل لها رواسى وجعل | | | |
| | بين البحرين حاجزا ... ... ... ... ... ... ... | ٦١ | ك النمل | ٢٧ |
| حَاجِزِينَ | : فما منكم من أحد عنه حاجزين ... ... ... | ٤٧ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| حَدَب | : حتى إذا فتحت يأجوج ومأجوج وهم من كل | | | |
| | حدب ينسلون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تُحَدِّثُ | : يومئذ تحدث أخبارها . بأن ربك أوحى لها | ٤ | م الزلزلة | ٩٩ |
| أَتُحَدِّثُونَهُمْ | : أتحدثونهم بما فتح الله عليكم ليحاجّوكم | | | |
| | به عند ربكم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٦ | م البقرة | ٢ |
| فَحَدِّثْ | : وأما بنعمة ربك فحدث ... ... ... ... ... | ١١ | ك الضحى | ٩٣ |
| أُحْدِثَ | : فلا تسئلنى عن شىء حتى أحدث لك منه ذكرا | ٧٠ | ك الكهف | ١٨ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| يُحْدِثُ: | وصرفنا فيه من الوعيد لعلهم يتقون أو يحدث لهم ذكرا | ك طـه | ١١٣ ٢٠ |
| (٢) | لا تدرى لعل الله يحدث بعد ذلك أمرا ... ... | م الطـلاق | ١ ٦٥ |
| مُحْدَث: | ما يأتيهم من ذكر من ربهم محدث إلا استمعوه | | |
| (٢) | وهم يلعبون ... ... ... ... ... ... ... | ك الأنبياء | ٢ ٢١ |
| | وما يأتيهم من ذكر من الرحمن محدث إلا كانوا عنه معرضين | ك الشـعراء | ٥ ٢٦ |
| حَدِيث: | فلا تقعدوا معهم حتى يخوضوا فى حديث غيره | م النسـاء | ١٤٠ ٤ |
| (١٨) | فأعرض عنهم حتى يخوضوا فى حديث غيره ... ... | ك الأنعـام | ٦٨ ٦ |
| | فبأى حديث بعده يؤمنون ... ... ... ... ... ... | ك الأعراف | ١٨٥ ٧ |
| | فلعلك باخع نفسـك على آثارهم إن لم يؤمنوا بهذا | | |
| | الحديث أسفا ... ... ... ... ... ... ... ... | ك الكهف | ٦ ١٨ |
| | وهل أتاك حديث موسى . إذ رأى نارا فقال لأهله امكثوا | ك طـه | ٩ ٢٠ |
| | ومن الناس من يشترى لهو الحديث ليضل عن سبيل | | |
| | الله بغير علم ... ... ... ... ... ... ... ... | ك لقـمان | ٦ ٣١ |
| | فإذا طعمتم فانتشروا ولا مستأنسين لحديث ... ... | م الأحزاب | ٥٣ ٣٣ |
| | الله نزّل أحسن الحديث كتابا متشابها مثانى ... ... | ك الزمر | ٢٣ ٣٩ |
| | فبأى حديث بعد الله وآياته يؤمنون ... ... ... | ك الجاثيـة | ٦ ٤٥ |
| | هل أتاك حديث ضيف إبراهيم المكرمين ... ... | ك الذاريات | ٢٤ ٥١ |
| | فليأتوا بحديث مثله إن كانوا صادقين ... ... ... | ك الطـور | ٣٤ ٥٢ |
| | أفمن هذا الحديث تعجبون . وتضحكون ولا تبكون | ك النـجم | ٥٩ ٥٣ |
| | أفبهذا الحديث أنتم مدهنون . وتجعلون رزقكم أنكم تكذبون | م الواقعـة | ٨١ ٥٦ |
| | فذرنى ومن يكذب بهذا الحديث ... ... ... ... | ك القـلم | ٤٤ ٦٨ |
| | فبأى حديث بعده يؤمنون ... ... ... ... ... ... | ك المرسلات | ٥٠ ٧٧ |
| | هل أتاك حديث موسى . إذ ناداه ربه بالواد المقدس طوى | ك النازعات | ١٥ ٧٩ |
| | هل أتاك حديث الجنود . فرعون وثمود ... ... | ك البـروج | ١٧ ٨٥ |
| | هل أتاك حديث الغاشية . وجوه يومئذ خاشـعة | ك الغاشـية | ١ ٨٨ |
| حَدِيثًا: | يومئذ يود الذين كفروا وعصوا الرسول لو تسوى | | |
| (٥) | بهم الأرض ولا يكتمون الله حديثا ... ... | م النسـاء | ٤٢ ٤ |
| | فمال هؤلاء القوم لا يكادون يفقهون حديثا ... ... | م « | ٧٨ ٤ |
| | ومن أصدق من الله حديثا ... ... ... ... ... ... | م « | ٨٧ ٤ |
| | ما كان حديثا يفترى ولكن تصديق الذى بين يديه | ك يوسـف | ١١١ ١٢ |
| | وإذ أسرّ النبىّ إلى بعض أزواجه حديثا ... ... | م التحريم | ٣ ٦٦ |
| أَحَادِيث: | وكذلك يجتبيك ربك ويعلمك من تأويل الأحاديث | ك يوسـف | ٦ ١٢ |
| (٥) | وكذلك مكنا ليوسف فى الأرض ولنعلمه من تأويل | | |
| | الأحاديث... ... ... ... ... ... ... ... ... | ك « | ٢١ ١٢ |
| | رب قد آتيتنى من الملك وعلمتنى من تأويل الأحاديث | ك « | ١٠١ ١٢ |
| | فآتينا بعضهم بعضا وجعلناهم أحاديث ... ... ... | ك المؤمنون | ٤٤ ٢٣ |
| | فجعلناهم أحاديث ومزقناهم كل ممزق ... ... ... | ك سـبأ | ١٩ ٣٤ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| حَادّ: | لا تجد قوما يؤمنون بالله واليوم الآخر يوادون من | | |
| | حادّ الله ورسوله ... ... ... ... ... ... ... | م المجادلة | ٢٢ ٥٨ |
| يُحَادِد: | ألم يعلموا أنه من يحادد الله ورسوله فأن له نار | | |
| | جهنم خالدا فيها ... ... ... ... ... ... ... | م التـوبة | ٦٣ ٩ |
| يُحَادُّونَ: | إن الذين يحادون الله ورسوله كبتوا كما كبت | | |
| (٢) | الذين من قبلهم ... ... ... ... ... ... ... | م المجادلة | ٥ ٥٨ |
| | إن الذين يحادون الله ورسوله أولئـك فى الأذلين | م « | ٢٠ ٥٨ |
| حُدُود: | تلك حدود الله فلا تقربوها ... ... ... ... | م البقـرة | ١٨٧ ٢ |
| (١٣) | إلا أن يخافا ألا يقيما حدود الله ... ... ... ... | م « | ٢٢٩ ٢ |
| | فإن خفتم ألا يقيما حدود الله فلا جناح عليهما فيما افتدت به | م « | ٢٢٩ ٢ |
| | تلك حدود الله فلا تعتدوها ... ... ... ... ... | م « | ٢٢٩ ٢ |
| | ومن يتعدّ حدود الله فأولئك هم الظالمون ... ... | م « | ٢٢٩ ٢ |
| | فلا جناح عليهما أن يتراجعا إن ظنا أن يقيما حدود الله | م « | ٢٣٠ ٢ |
| | وتلك حدود الله يبينها لقوم يعلمون ... ... ... ... | م « | ٢٣٠ ٢ |
| | تلك حدود الله ومن يطع الله ورسوله يدخله جنات | م النسـاء | ١٣ ٤ |
| | الأعراب أشد كفرا ونفاقا وأجدر ألا يعلموا | | |
| | حدود ما أنزل الله على رسوله ... ... ... ... | م التـوبة | ٩٧ ٩ |
| | والناهون عن المنكر والحافظون لحدود الله وبشر المؤمنين | م « | ١١٢ ٩ |
| | ذلك لتؤمنوا بالله ورسوله وتلك حدود الله... ... | م المجادلة | ٤ ٥٨ |
| | لا تخرجوهن من بيوتهن ولا يخرجن إلا أن يأتين | | |
| | بفاحشة مبينة وتلك حدود الله ... ... ... ... | م الطـلاق | ١ ٦٥ |
| | ومن يتعد حدود الله فقد ظلم نفسه ... ... ... | م « | ١ ٦٥ |
| حُدُودَهُ: | ومن يعص الله ورسوله ويتعدّ حدوده يدخله | | |
| | نارا خالدا فيها... ... ... ... ... ... ... ... | م النسـاء | ١٤ ٤ |
| حِدَاد: | فإذا ذهب الخوف سلقوكم بألسنة حداد أشحة على الخير | م الأحزاب | ١٩ ٣٣ |
| حديد: | آتونى زبر الحديد ... ... ... ... ... ... ... | م الكهف | ٩٦ ١٨ |
| (٥) | ولهم مقامع من حديد ... ... ... ... ... ... | م الحـج | ٢١ ٢٢ |
| | يا جبال أوبى معه والطير وألنّا له الحديد ... ... | ك سـبأ | ١٠ ٣٤ |
| | فكشفنا عنك غطاءك فبصرك اليوم حديد ... ... | ك قـ | ٢٢ ٥٠ |
| | وأنزلنا الحديد فيه بأس شديد ومنافع للناس ... .. | م الحـديد | ٢٥ ٥٧ |
| حَدِيدًا: | قل كونوا حجارة أو حديدا ... ... ... ... ... | ك الإسراء | ٥٠ ١٧ |
| حَدَائِق: | فأنبتنا به حدائق ذات بهجة ... ... ... .. | ك النمـل | ٦ ٢٧ |
| (٣) | إن للمتقين مفازا . حدائق وأعنابا ... ... ... ... | ك النبـأ | ٣٢ ٧٨ |
| | فأنبتنا فيها حبا . وعنبا وقضبا . وزيتونا ونخلا . | | |
| | وحدائق غلبا ... ... ... ... ... ... ... ... | ك عبس | ٣٠ ٨٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| تَحْذَرُونَ | : قل استهزئوا إن الله مخرج ما تحذرون | ٦٤ | م التوبة | ٩ |
| يَحْذَرُ | : يحذر المنافقون أن تنزل عليهم سورة تنبئهم بما في قلوبهم | ٦٤ | م « | ٩ |
| (٣) | فليحذر الذين يخالفون عن أمره أن تصيبهم فتنة | ٦٣ | م النور | ٢٤ |
| | أمن هو قانت آناء الليل ساجدا وقائما يحذر الآخرة | ٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| يَحْذَرُونَ | : ولينذروا قومهم إذا رجعوا إليهم لعلهم يحذرون | ١٢٢ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | ونرى فرعون وهامان وجنودهما منهم ما كانوا يحذرون | ٦ | ك القصص | ٢٨ |
| أَحْذَرْهُمْ | : واحذرهم أن يفتنوك عن بعض ما أنزل الله إليك | ٤٩ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | يحسبون كل صيحة عليهم هم العدو فاحذرهم ... ... | ٤ | م المنافقون | ٦٣ |
| أَحْذَرُوا | : يقولون إن أوتيتم هذا فخذوه وإن لم تؤتوه فاحذروا | ٤١ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | وأطيعوا الله وأطيعوا الرسول واحذروا ... ... | ٩٢ | م « | ٥ |
| أَحْذَرُوهُ | : واعلموا أن الله يعلم ما في أنفسكم فاحذروه | ٢٣٥ | م البقرة | ٢ |
| أَحْذَرُوهُمْ | : إن من أزواجكم وأولادكم عدوا لكم فاحذروهم | ١٤ | م التغابن | ٦٤ |
| يُحَذِّرُكُمُ | : ويحذركم الله نفسه وإلى الله المصير ... ... ... | ٢٨ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | ويحذركم الله نفسه والله رءوف بالعباد ... ... ... | ٣٠ | م « | ٣ |
| حَذَرَ | : يجعلون أصابعهم في آذانهم من الصواعق حذر الموت | ١٩ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | ألم تر إلى الذين خرجوا من ديارهم وهم ألوف حذر الموت | ٢٤٣ | م « | ٢ |
| حِذْرَكُمْ | : يا أيها الذين آمنوا خذوا حذركم ... ... ... | ٧١ | م النساء | ٤ |
| (٢) | وخذوا حذركم إن الله أعد للكافرين عذابا مهينا | ١٠٢ | م « | ٤ |
| حِذْرَهُمْ | : فليأخذوا معك وليأخذوا حذرهم وأسلحتهم | ١٠٢ | م « | ٤ |
| حَاذِرُونَ | : وإنا لجميع حاذرون ... ... ... ... ... ... | ٥٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| مَحْذُورًا | : إن عذاب ربك كان محذورا ... ... ... ... | ٥٧ | م الإسراء | ١٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| حَارَبَ | : والذين اتخذوا مسجدا ضرارا وكفرا وتفريقا بين المؤمنين وإرصادا لمن حارب الله ورسوله | ١٠٧ | م التوبة | ٩ |
| يُحَارِبُونَ | : إنما جزاء الذين يحاربون الله ورسوله ويسعون في الأرض فسادا أن يقتلوا ... ... | ٣٣ | م المائدة | ٥ |
| حَرْبٍ | : فإن لم تفعلوا فأذنوا بحرب من الله ورسوله | ٢٧٩ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | كلما أوقدوا نارا للحرب أطفأها الله ... ... ... | ٦٤ | م المائدة | ٥ |
| | فإما تثقفنهم في الحرب فشرد بهم من خلفهم لعلهم يذكرون | ٥٧ | م الأنفال | ٨ |
| | فإما منا بعد وإما فداء حتى تضع الحرب أوزارها | ٤ | م محمد | ٤٧ |
| الْمِحْرَابَ | : كلما دخل عليها زكريا المحراب وجد عندها رزقا | ٣٧ | م آل عمران | ٣ |
| (٤) | فنادته الملائكة وهو قائم يصلي في المحراب ... ... | ٣٩ | م « | ٣ |
| | فخرج على قومه من المحراب فأوحى إليهم أن سبحوا بكرة وعشيا ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك مريم | ١٩ |
| | وهل أتاك نبأ الخصم إذ تسوروا المحراب ... ... | ٢١ | ك ص | ٣٨ |
| مَحَارِيبَ | : يعملون له ما يشاء من محاريب وتماثيل وجفان كالجواب ... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك سبأ | ٣٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| تَحْرُثُونَ | : أفرأيتم ما تحرثون . . أأنتم تزرعونه أم نحن الزارعون | ٦٣ | ك الواقعة | ٥٦ |
| حَرْثٌ | : قال إنه يقول إنها بقرة لا ذلول تثير الأرض | | | |
| (١٠) | ولا تسقي الحرث ... ... ... ... ... ... | ٧١ | م البقرة | ٢ |
| | وإذا تولى سعى في الأرض ليفسد فيها ويهلك الحرث والنسل... ... ... ... ... ... | ٢٠٥ | م « | ٢ |
| | نساؤكم حرث لكم فأتوا حرثكم أنى شئتم ... ... ... | ٢٢٣ | م « | ٢ |
| | والقناطير المقنطرة من الذهب والفضة والخيل المسومة والأنعام والحرث ... ... ... ... | ١٤ | م آل عمران | ٣ |
| | كمثل ريح فيها صر أصابت حرث قوم ظلموا أنفسهم فأهلكته | ١١٧ | م « | ٣ |
| | وجعلوا لله مما ذرأ من الحرث والأنعام نصيبا | ١٣٦ | ك الأنعام | ٦ |
| | وقالوا هذه أنعام وحرث حجر لا يطعمها إلا من نشاء بزعمهم | ١٣٨ | ك « | ٦ |
| | وداود وسليمان إذ يحكمان في الحرث إذ نفشت فيه غنم القوم | ٧٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | من كان يريد حرث الآخرة نزد له في حرثه ... ... | ٢٠ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ومن كان يريد حرث الدنيا نؤته منها وما له في الآخرة من نصيب... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك « | ٤٢ |
| حَرْثَكُمْ | : نساؤكم حرث لكم فأتوا حرثكم أنى شئتم ... ... | ٢٢٣ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | أن اغدوا على حرثكم إن كنتم صارمين ... ... ... | ٢٢ | م القلم | ٦٨ |
| حَرْثِهِ | : من كان يريد حرث الآخرة نزد له في حرثه ... ... | ٢٠ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| حَرَجٍ | : ما يريد الله ليجعل عليكم من حرج ولكن يريد ليطهركم | ٦ | م المائدة | ٥ |
| (١٣) | كتاب أنزل إليك فلا يكن في صدرك حرج منه | ٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولا على الذين لا يجدون ما ينفقون حرج إذا نصحوا لله ورسوله ... ... ... ... ... ... | ٩١ | م التوبة | ٩ |
| | هو اجتباكم وما جعل عليكم في الدين من حرج | ٧٨ | م الحج | ٢٢ |
| | ليس على الأعمى حرج ... ... ... ... ... ... | ٦١ | م النور | ٢٤ |
| | ولا على الأعرج حرج ... ... ... ... ... ... | ٦١ | م « | ٢٤ |
| | ولا على المريض حرج ولا على أنفسكم أن تأكلوا من بيوتكم | ٦١ | م « | ٢٤ |
| | لكي لا يكون على المؤمنين حرج في أزواج أدعيائهم إذا قضوا منهن وطرا ... ... ... ... ... | ٣٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ما كان على النبي من حرج فيما فرض الله له ... ... | ٣٨ | م « | ٣٣ |
| | قد علمنا ما فرضنا عليهم في أزواجهم وما ملكت أيمانهم لكيلا يكون عليك حرج ... ... ... | ٥٠ | م « | ٣٣ |
| | ليس على الأعمى حرج ... ... ... ... ... ... | ١٧ | م الفتح | ٤٨ |
| | ولا على الأعرج حرج ... ... ... ... ... ... | ١٧ | م « | ٤٨ |
| | ولا على المريض حرج ومن يطع الله ورسوله يدخله جنات | ١٧ | م « | ٤٨ |
| حَرَجًا | : ثم لا يجدوا في أنفسهم حرجا مما قضيت ويسلموا تسليما | ٦٥ | م النساء | ٤ |
| (٢) | ومن يرد أن يضله يجعل صدره ضيقا حرجا كأنما يصعد في السماء ... ... ... ... ... ... | ١٢٥ | ك الأنعام | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| حَرْدٍ | وغدوا على حرد قادرين ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | م القلم | ٦٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تَحْرِيرُ | ومن قتل مؤمنا خطأ فتحرير رقبة مؤمنة ... ... | ٩٢ | م النساء | ٤ |
| (٥) | فإن كان من قوم عدوّ لكم وهو مؤمن فتحرير رقبة مؤمنة | ٩٢ | م « | ٤ |
| | وإن كان من قوم بينكم وبينهم ميثاق فدية مسلمة | | | |
| | إلى أهله وتحرير رقبة مؤمنة ... ... ... ... | ٩٢ | م « | ٤ |
| | فكفارته إطعام عشرة مساكين من أوسط ما تطعمون | | | |
| | أهليكم أو كسوتهم أو تحرير رقبة ... ... ... | ٨٩ | م المائدة | ٥ |
| | والذين يظاهرون من نسائهم ثم يعودون لما قالوا | | | |
| | فتحرير رقبة ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | م المجادلة | ٥٨ |
| مُحَرَّرًا | إذ قالت امرأة عمران ربّ إني نذرت لك ما في بطني محررا | ٣٥ | م آل عمران | ٣ |
| الْحُرُّ | كتب عليكم القصاص في القتلى الحر ... ... ... | ١٧٨ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | بالحر والعبد بالعبد والأنثى بالأنثى ... ... ... ... | ١٧٨ | م « | ٢ |
| الْحَرّ | وقالوا لا تنفروا في الحر ... ... ... ... ... ... | ٨١ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | وجعل لكم سرابيل تقيكم الحر وسرابيل تقيكم بأسكم | ٨١ | ك النحل | ١٦ |
| حَرًّا | قل نار جهنم أشدّ حرا لو كانوا يفقهون ... ... | ٨١ | م التوبة | ٩ |
| الْحَرُورُ | وما يستوى الأعمى والبصير ، ولا الظلمات | | | |
| | ولا النور ، ولا الظل ولا الحرور ... ... ... | ٢١ | ك فاطر | ٣٥ |
| حَرِيرٌ | يحلّون فيها من أساور من ذهب ولؤلؤا ولباسهم فيها حرير | ٢٣ | م الحج | ٢٢ |
| (٢) | يحلّون فيها من أساور من ذهب ولؤلؤا ولباسهم فيها حرير | ٣٣ | ك فاطر | ٣٥ |
| حَرِيرًا | وجزاهم بما صبروا جنة وحريرا ... ... ... ... | ١٢ | م الإنسان | ٧٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| حَرَسًا | وأنا لمسنا السماء فوجدناها ملئت حرسا شديدا وشهبا | ٨ | ك الجن | ٧٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| حَرَصْتَ | وما أكثر الناس ولو حرصت بمؤمنين ... ... | ١٠٣ | ك يوسف | ١٢ |
| حَرَصْتُمْ | ولن تستطيعوا أن تعدلوا بين النساء ولو حرصتم | ١٢٩ | م النساء | ٤ |
| تَحْرِصْ | إن تحرص على هداهم فإن الله لا يهدى من يضل | ٣٧ | ك النحل | ١٦ |
| حَرِيص | لقد جاءكم رسول من أنفسكم عزيز عليه ما عنتم | | | |
| | حريص عليكم ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٢٨ | ك التوبة | ٩ |
| أَحْرَص | ولتجدنهم أحرص الناس على حياة ... ... ... | ٩٦ | م البقرة | ٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| حَرِّضِ | فقاتل في سبيل الله لا تكلف إلا نفسك وحرض | | | |
| (٢) | المؤمنين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨٤ | م النساء | ٤ |
| | يأيها النبيّ حرض المؤمنين على القتال ... ... ... | ٦٥ | م الأنفال | ٨ |
| حَرَضًا | قالوا تالله تفتؤا تذكر يوسف حتى تكون حرضا | | | |
| | أو تكون من الهالكين ... ... ... ... ... ... | ٨٥ | ك يوسف | ١٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| يُحَرِّفُونَ | من الذين هادوا يحرفون الكلم عن مواضعه | ٤٦ | م النساء | ٤ |
| (٣) | يحرفون الكلم عن مواضعه ونسوا حظا مما ذكروا به | ١٣ | م المائدة | ٥ |
| | يحرفون الكلم من بعد مواضعه يقولون إن أوتيتم هذا فخذوه | ٤١ | م « | ٥ |
| يُحَرِّفُونَهُ | وقد كان فريق منهم يسمعون كلام الله ثم | | | |
| | يحرفونه من بعد ما عقلوه ... ... ... ... ... | ٧٥ | م البقرة | ٢ |
| مُتَحَرِّفًا | ومن يولهم يومئذ دبره إلا متحرفا لقتال | | | |
| | أو متحيزا إلى فئة فقد باء بغضب من الله | ١٦ | م الأنفال | ٨ |
| حَرْفٍ | ومن الناس من يعبد الله على حرف فإن أصابه | | | |
| | خير اطمأن به ... ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | م الحج | ٢٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| لَنُحَرِّقَنَّهُ | لنحرقنّه ثم لننسفنّه في اليمّ نسفا ... ... ... | ٩٧ | ك طه | ٢٠ |
| حَرِّقُوهُ | قالوا حرقوه وانصروا آلهتكم إن كنتم فاعلين | ٦٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٢) | فما كان جواب قومه إلا أن قالوا اقتلوه أو حرقوه | ٢٤ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| احْتَرَقَتْ | فأصابها إعصار فيه نار فاحترقت ... ... ... | ٢٦٦ | م البقرة | ٢ |
| الْحَرِيقِ | سنكتب ما قالوا وقتلهم الأنبياء بغير حق ونقول | | | |
| (٥) | ذوقوا عذاب الحريق ... ... ... ... ... ... | ١٨١ | م آل عمران | ٣ |
| | يضربون وجوههم وأدبارهم وذوقوا عذاب الحريق | ٥٠ | م الأنفال | ٨ |
| | له في الدنيا خزى ونذيقه يوم القيامة عذاب الحريق | ٩ | م الحج | ٢٢ |
| | كلما أرادوا أن يخرجوا منها من غم أعيدوا فيها | | | |
| | وذوقوا عذاب الحريق ... ... ... ... ... | ٢٢ | م « | ٢٢ |
| | إن الذين فتنوا المؤمنين والمؤمنات ثم لم يتوبوا | | | |
| | فلهم عذاب جهنم ولهم عذاب الحريق ... ... | ١٠ | ك البروج | ٨٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تُحَرِّكْ | لا تحرك به لسانك لتعجل به ، إن علينا جمعه وقرءانه | ١٦ | ك القيامة | ٧٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| حَرَّمَ | إنما حرم عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما أهل به لغير الله | ١٧٣ | م البقرة | ٢ |
| (١٨) | وأحل الله البيع وحرم الربا ... ... ... ... ... | ٢٧٥ | م « | ٢ |
| | كل الطعام كان حلا لبني إسرائيل إلا ما حرم | | | |
| | إسرائيل على نفسه ... ... ... ... ... ... ... | ٩٣ | م آل عمران | ٣ |
| | إنه من يشرك بالله فقد حرم الله عليه الجنة ومأواه النار | ٧٢ | م المائدة | ٥ |
| | وقد فصل لكم ما حرّم عليكم إلا ما اضطررتم إليه | ١١٩ | ك الأنعام | ٦ |
| | قل ءآلذّكرين حرّم أم الأنثيين ... ... ... ... | ١٤٣ | ك « | ٦ |
| | قل ءآلذّكرين حرّم أم الأنثيين ... ... ... ... | ١٤٤ | ك « | ٦ |
| | قل هلمّ شهداءكم الذين يشهدون أن الله حرّم هذا | ١٥٠ | ك « | ٦ |
| | قل تعالوا أتل ما حرم ربكم عليكم ... ... ... ... | ١٥١ | م « | ٦ |
| | ولا تقتلوا النفس التي حرّم الله إلا بالحق ... ... | ١٥١ | م « | ٦ |
| | قل من حرم زينة الله التي أخرج لعباده والطيبات من الرزق | ٣٢ | ك الأعراف | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| حَرَّمَ: | قل إنما حرم ربي الفواحش ما ظهر منها وما بطن | ٣٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولا يحرمون ماحرم الله ورسوله ولا يدينون دين الحق | ٢٩ | م التوبة | ٩ |
| | يحلونه عاما ويحرمونه عاما ليواطئوا عدة ما حرم الله | ٣٧ | م « | ٩ |
| | فيحلوا ما حرم الله ... ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | م « | ٩ |
| | إنما حرم عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما أهل لغير الله به | ١١٥ | ك النحل | ١٦ |
| | ولا تقتلوا النفس التي حرم الله إلا بالحق ... ... | ٣٣ | م الإسراء | ١٧ |
| | والذين لا يدعون مع الله إلها آخر ولا يقتلون النفس التي حرم الله إلا بالحق ... ... ... ... | ٦٨ | م الفرقان | ٢٥ |
| حَرَّمْنَا: | فبظلم من الذين هادوا حرمنا عليهم طيبات أحلت لهم | ١٦٠ | م النساء | ٤ |
| (٧) | وعلى الذين هادوا حرمنا كل ذي ظفر ... ... ... | ١٤٦ | ك الأنعام | ٦ |
| | ومن البقر والغنم حرمنا عليهم شحومهما ... ... ... | ١٤٦ | ك « | ٦ |
| | لو شاء الله ما أشركنا ولا آباؤنا ولا حرمنا من شيء | ١٤٨ | ك « | ٦ |
| | لو شاء الله ما عبدنا من دونه من شيء نحن ولا آباؤنا ولا حرمنا من دونه من شيء ... ... | ٣٥ | ك النحل | ١٦ |
| | وعلى الذين هادوا حرمنا ما قصصنا عليك من قبل | ١١٨ | ك « | ١٦ |
| | وحرمنا عليه المراضع من قبل ... ... ... ... ... | ١٢ | ك القصص | ٢٨ |
| حَرَّمَهَا: | إنما أمرت أن أعبد رب هذه البلدة الذي حرمها وله كل شيء... ... ... ... ... ... ... | ٩١ | ك النمل | ٢٧ |
| حَرَّمَهُمَا: | قالوا إن الله حرمهما على الكافرين ... ... | ٥٠ | ك الأعراف | ٧ |
| حَرَّمُوا: | وحرموا ما رزقهم الله افتراء على الله ... ... ... | ١٤٠ | ك الأنعام | ٦ |
| تُحَرِّمُ: | يأيها النبي لم تحرم ما أحل الله لك ... ... ... | ١ | م التحريم | ٦٦ |
| تُحَرِّمُوا: | يأيها الذين آمنوا لا تحرموا طيبات ما أحل الله لكم | ٨٧ | م المائدة | ٥ |
| يُحَرِّمُ: | ويحل لهم الطيبات ويحرم عليهم الخبائث ... ... | ١٥٧ | ك الأعراف | ٧ |
| يُحَرِّمُونَ: | ولا يحرمون ماحرم الله ورسوله ولا يدينون دين الحق | ٢٩ | م التوبة | ٩ |
| يُحَرِّمُونَهُ: | يحلونه عاما ويحرمونه عاما ليواطئوا عدة ماحرم الله | ٣٧ | م « | ٩ |
| حُرِّمَ: | ولأحل لكم بعض الذي حرم عليكم ... ... ... | ٥٠ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | وحرم عليكم صيد البر ما دمتم حرما .. ... ... ... | ٩٦ | م المائدة | ٥ |
| | وحرم ذلك على المؤمنين .. ... ... ... ... ... | ٣ | م النور | ٢٤ |
| حُرِّمَتْ: | حرمت عليكم أمهاتكم وبناتكم وأخواتكم ... ... | ٢٣ | م النساء | ٤ |
| (٣) | حرمت عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما أهل لغير الله به | ٣ | م المائدة | ٥ |
| | وأنعام حرمت ظهورها وأنعام لا يذكرون اسم الله عليها | ١٣٨ | ك الأنعام | ٦ |
| حَرَمًا: | أو لم نمكن لهم حرما آمنا يجبى إليه ثمرات كل شيء | ٥٧ | ك القصص | ٢٨ |
| (٢) | أو لم يروا أنا جعلنا حرما آمنا ويتخطف الناس من حولهم | ٦٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| حُرُمٌ: | أحلت لكم بهيمة الأنعام إلا ما يتلى عليكم غير محلي الصيد وأنتم حرم ... ... ... ... ... ... | ١ | م المائدة | ٥ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تقتلوا الصيد وأنتم حرم | ٩٥ | م « | ٥ |
| | فإذا انسلخ الأشهر الحرم فاقتلوا المشركين حيث وجدتموهم | ٥ | م التوبة | ٩ |
| حُرُمٌ: | منها أربعة حرم ذلك الدين القيم ... ... ... ... | ٣٦ | م التوبة | ٩ |
| حُرُمًا: | وحرم عليكم صيد البر ما دمتم حرما ... ... ... ... | ٩٦ | م المائدة | ٥ |
| حَرَامٌ: | فول وجهك شطر المسجد الحرام ... ... ... ... | ١٤٤ | م البقرة | ٢ |
| (٢٥) | ومن حيث خرجت فول وجهك شطر المسجد الحرام | ١٤٩ | م « | ٢ |
| | ومن حيث خرجت فول وجهك شطر المسجد الحرام | ١٥٠ | م « | ٢ |
| | ولا تقاتلوهم عند المسجد الحرام حتى يقاتلوكم فيه | ١٩١ | م « | ٢ |
| | الشهر الحرام .. ... ... ... ... ... ... ... | ١٩٤ | م « | ٢ |
| | بالشهر الحرام والحرمات قصاص... .. ... ... ... | ١٩٤ | م « | ٢ |
| | ذلك لمن لم يكن أهله حاضري المسجد الحرام ... | ١٩٦ | م « | ٢ |
| | فإذا أفضتم من عرفات فاذكروا الله عند المشعر الحرام | ١٩٨ | م « | ٢ |
| | يسئلونك عن الشهر الحرام قتال فيه قل قتال فيه كبير | ٢١٧ | م « | ٢ |
| | وصد عن سبيل الله وكفر به والمسجد الحرام وإخراج أهله منه أكبر عند الله ... ... ... ... ... | ٢١٧ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تحلوا شعائر الله ولا الشهر الحرام | ٢ | م المائدة | ٥ |
| | ولا آمين البيت الحرام يبتغون فضلا من ربهم ورضوانا | ٢ | م « | ٥ |
| | ولا يجرمنكم شنآن قوم أن صدوكم عن المسجد الحرام أن تعتدوا ... ... ... ... ... ... | ٢ | م « | ٥ |
| | جعل الله الكعبة البيت الحرام قياما للناس ... ... | ٩٧ | م « | ٥ |
| | والشهر الحرام والهدي والقلائد... ... ... ... ... | ٩٧ | م « | ٥ |
| | وما لهم ألا يعذبهم الله وهم يصدون عن المسجد الحرام وما كانوا أولياءه ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك الأنفال | ٨ |
| | إلا الذين عاهدتم عند المسجد الحرام فما استقاموا لكم فاستقيموا لهم ... ... ... ... ... ... | ٧ | م التوبة | ٩ |
| | أجعلتم سقاية الحاج وعمارة المسجد الحرام كمن آمن بالله | ١٩ | م « | ٩ |
| | إنما المشركون نجس فلا يقربوا المسجد الحرام بعد عامهم هذا ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م « | ٩ |
| | ولا تقولوا لما تصف ألسنتكم الكذب هذا حلال وهذا حرام ... ... ... ... ... ... ... | ١١٦ | ك النحل | ١٦ |
| | سبحان الذي أسرى بعبده ليلا من المسجد الحرام إلى المسجد الأقصى ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وحرام على قرية أهلكناها أنهم لا يرجعون ... ... | ٩٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | إن الذين كفروا ويصدون عن سبيل الله والمسجد الحرام | ٢٥ | م الحج | ٢٢ |
| | هم الذين كفروا وصدوكم عن المسجد الحرام... ... | ٢٥ | م الفتح | ٤٨ |
| | لتدخلن المسجد الحرام إن شاء الله آمنين ... ... | ٢٧ | م « | ٤٨ |
| حَرَامًا: | قل أرأيتم ما أنزل الله لكم من رزق فجعلتم منه حراما وحلالا قل آلله أذن لكم ... ... ... | ٥٩ | ك يونس | ١٠ |
| حُرُمَاتٌ: | الشهر الحرام بالشهر الحرام والحرمات قصاص | ١٩٤ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | ذلك ومن يعظم حرمات الله فهو خير له عند ربه | ٣٠ | م الحج | ٢٢ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| المَحْرُوم | وفى أموالهم حق للسائل والمحروم ... ... ... | الذاريات | ١٩ ك ٥١ |
| (٢) | والذين فى أموالهم حق معلوم . للسائل والمحروم | المعارج | ٢٥ ك ٧٠ |
| مَحْرُومُونَ | إنا لمغرمون . بل نحن محرومون ... ... ... | الواقعة | ٦٧ ك ٥٦ |
| (٢) | فلما رأوها قالوا إنا لضالون . بل نحن محرومون | القلم | ٢٧ م ٦٨ |
| مُحَرَّم | وإن يأتوكم أسارى تفادوهم وهو محرم عليكم إخراجهم | البقرة | ٨٥ م ٢ |
| (٣) | وقالوا ما فى بطون هذه الأنعام خالصة لذكورنا | | |
| | ومحرم على أزواجنا ... ... ... ... ... ... | الأنعام | ١٣٩ ك ٦ |
| | ربنا إنى أسكنت من ذريتى بواد غير ذى زرع عند | | |
| | بيتك المحرم ... ... ... ... ... ... ... | إبراهيم | ٣٧ ك ١٤ |
| مُحَرَّماً | قل لا أجد فى ما أوحى إلىّ محرما على طاعم يطعمه | الأنعام | ١٤٥ ك ٦ |
| مُحَرَّمَةٌ | قال فإنها محرمة عليهم أربعين سنة يتيهون فى الأرض | المائدة | ٢٦ م ٥ |

✦✦✦

| | | | |
|---|---|---|---|
| تَحَرَّوْا | فمن أسلم فأولئك تحروا رشدا ... ... ... ... | الجن | ١٤ ك ٧٢ |

✦✦✦

| | | | |
|---|---|---|---|
| حزب | ومن يتول الله ورسوله والذين ءامنوا فإن حزب | | |
| (٧) | الله هم الغالبون ... ... ... ... ... ... | المائدة | ٥٦ م ٥ |
| | فتقطعوا أمرهم بينهم زبرا كل حزب بما لديهم فرحون | المؤمنون | ٥٣ ك ٢٣ |
| | كل حزب بما لديهم فرحون ... ... ... ... | الروم | ٣٢ ك ٣٠ |
| | استحوذ عليهم الشيطان فأنساهم ذكر الله أولئك | | |
| | حزب الشيطان ... ... ... ... ... ... | المجادلة | ١٩ م ٥٨ |
| | ألا إن حزب الشيطان هم الخاسرون... ... ... | » | ١٩ م ٥٨ |
| | رضى الله عنهم ورضوا عنه أولئك حزب الله... ... | » | ٢٢ م ٥٨ |
| | ألا إن حزب الله هم المفلحون... ... ... ... | » | ٢٢ م ٥٨ |
| حِزْبَهُ | إنما يدعوا حزبه ليكونوا من أصحاب السعير... ... | فاطر | ٦ ك ٣٥ |
| الحِزْبَيْنِ | ثم بعثناهم لنعلم أى الحزبين أحصى لما لبثوا أمدا | الكهف | ١٢ ك ١٨ |
| الأَحْزَاب | ومن يكفر به من الأحزاب فالنار موعده | هود | ١٧ م ١١ |
| (١١) | ومن الأحزاب من ينكر بعضه ... ... ... ... | الرعد | ٣٦ م ١٣ |
| | فاختلف الأحزاب من بينهم... ... ... ... | مريم | ٣٧ ك ١٩ |
| | يحسبون الأحزاب لم يذهبوا ... ... ... ... | الأحزاب | ٢٠ م ٣٣ |
| | وإن يأت الأحزاب يودوا لو أنهم بادون فى الأعراب | » | ٢٠ م ٣٣ |
| | ولما رأى المؤمنون الأحزاب قالوا هذا ما وعدنا | | |
| | الله ورسوله ... ... ... ... ... ... | » | ٢٢ م ٣٣ |
| | جند ما هنالك مهزوم من الأحزاب ... ... ... | ص | ١١ ك ٣٨ |
| | وثمود وقوم لوط وأصحاب الأيكة أولئك الأحزاب | » | ١٣ ك ٣٨ |
| | كذبت قبلهم قوم نوح والأحزاب من بعدهم ... ... | غافر | ٥ ك ٤٠ |
| | وقال الذى ءامن يا قوم إنى أخاف عليكم مثل يوم الأحزاب | » | ٣٠ ك ٤٠ |
| | فاختلف الأحزاب من بينهم فويل للذين ظلموا من | | |
| | عذاب يوم أليم ... ... ... ... ... ... | الزخرف | ٦٥ ك ٤٣ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|

✦✦✦

| | | | |
|---|---|---|---|
| تَحْزَنْ | إذ يقول لصاحبه لا تحزن إن الله معنا ... ... | التوبة | ٤٠ م ٩ |
| (٧) | لا تمدن عينيك إلى ما متعنا به أزواجا منهم ولا تحزن عليهم | الحجر | ٨٨ ك ١٥ |
| | ولا تحزن عليهم ولا تك فى ضيق مما يمكرون | النمل | ١٢٧ م ١٦ |
| | فرجعناك إلى أمك كى تقر عينها ولا تحزن ... ... | طه | ٤٠ ك ٢٠ |
| | ولا تحزن عليهم ولا تكن فى ضيق مما يمكرون | النمل | ٧٠ ك ٢٧ |
| | فرددناه إلى أمه كى تقر عينها ولا تحزن ... ... ... | القصص | ١٣ ك ٢٨ |
| | وقالوا لا تخف ولا تحزن إنا منجوك وأهلك إلا امرأتك | العنكبوت | ٣٣ ك ٢٩ |
| تَحْزَنُوا | ولا تهنوا ولا تحزنوا وأنتم الأعلون إن كنتم مؤمنين | آل عمران | ١٣٩ م ٣ |
| (٣) | فأثابكم غما بغم لكيلا تحزنوا على ما فاتكم ولا ما أصابكم | » | ١٥٣ م ٣ |
| | تتنزل عليهم الملائكة ألا تخافوا ولا تحزنوا وأبشروا بالجنة | فصلت | ٣٠ ك ٤١ |
| تَحْزَنُونَ | ادخلوا الجنة لا خوف عليكم ولا أنتم تحزنون | الأعراف | ٤٩ ك ٧ |
| (٢) | يا عباد لا خوف عليكم اليوم ولا أنتم تحزنون | الزخرف | ٦٨ ك ٤٣ |
| تَحْزَنِى | فناداها من تحتها ألا تحزنى قد جعل ربك تحتك سريا | مريم | ٢٤ ك ١٩ |
| (٢) | فإذا خفت عليه فألقيه فى اليم ولا تخافى ولا تحزنى | القصص | ٧ ك ٢٨ |
| لِيَحْزُنَ | إنما النجوى من الشيطان ليحزن الذين ءامنوا | المجادلة | ١٠ م ٥٨ |
| يَحْزُنْكَ | ولا يحزنك الذين يسارعون فى الكفر ... ... | آل عمران | ١٧٦ م ٣ |
| (٦) | يأيها الرسول لا يحزنك الذين يسارعون فى الكفر | المائدة | ٤١ م ٥ |
| | قد نعلم إنه ليحزنك الذى يقولون فإنهم لا يكذبونك | الأنعام | ٣٣ ك ٦ |
| | ولا يحزنك قولهم إن العزة لله جميعا هو السميع العليم | يونس | ٦٥ ك ١٠ |
| | ومن كفر فلا يحزنك كفره إلينا مرجعهم فننبئهم بما عملوا | لقمان | ٢٣ ك ٣١ |
| | فلا يحزنك قولهم إنا نعلم ما يسرون وما يعلنون | يس | ٧٦ ك ٣٦ |
| يَحْزَنَّ | ذلك أدنى أن تقر أعينهن ولا يحزن ويرضين بما ءاتيتهن | الأحزاب | ٥١ م ٣٣ |
| لَيَحْزُنُنِى | قال إنى ليحزننى أن تذهبوا به ... ... ... | يوسف | ١٣ ك ١٢ |
| يَحْزُنُهُمُ | لا يحزنهم الفزع الأكبر وتتلقاهم الملائكة | الأنبياء | ١٠٣ ك ٢١ |
| يَحْزَنُونَ | فمن تبع هداى فلا خوف عليهم ولا هم يحزنون | البقرة | ٣٨ م ٢ |
| (١٣) | فلهم أجرهم عند ربهم ولا خوف عليهم ولا هم يحزنون | » | ٦٢ م ٢ |
| | فله أجره عند ربه ولا خوف عليهم ولا هم يحزنون | » | ١١٢ م ٢ |
| | لهم أجرهم عند ربهم ولا خوف عليهم ولا هم يحزنون | » | ٢٦٢ م ٢ |
| | فلهم أجرهم عند ربهم ولا خوف عليهم ولا هم يحزنون | » | ٢٧٤ م ٢ |
| | لهم أجرهم عند ربهم ولا خوف عليهم ولا هم يحزنون | » | ٢٧٧ م ٢ |
| | ألا خوف عليهم ولا هم يحزنون ... ... ... | آل عمران | ١٧٠ م ٣ |
| | من ءامن بالله واليوم الآخر وعمل صالحا فلا خوف | | |
| | عليهم ولا هم يحزنون ... ... ... ... ... | المائدة | ٦٩ م ٥ |
| | فمن ءامن وأصلح فلا خوف عليهم ولا هم يحزنون | الأنعام | ٤٨ ك ٦ |
| | فمن اتقى وأصلح فلا خوف عليهم ولا هم يحزنون | الأعراف | ٣٥ ك ٧ |
| | ألا إن أولياء الله لا خوف عليهم ولا هم يحزنون | يونس | ٦٢ ك ١٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَحْزُنُونَ | : ويخلص الله الذين اتقوا بمفازتهم لا يمسهم السوء ولا هم يحزنون ... ... ... ... ... ... | ٦١ | ك الزمر | ٣٩ |
| | إن الذين قالوا ربنا الله ثم استقاموا فلا خوف عليهم ولا هم يحزنون ... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| الْحُزْنِ | : وابيضت عيناه من الحزن فهو كظيم ... ... ... | ٨٤ | ك يوسف | ١٢ |
| حُزْنِي | : قال إنما أشكو بثي وحزني إلى الله ... ... ... | ٨٦ | ك « | ١٢ |
| الْحَزَنَ | : وقالوا الحمد لله الذي أذهب عنا الحزن ... ... | ٣٤ | ك فاطر | ٣٥ |
| حَزَنًا | : تولوا وأعينهم تفيض من الدمع حزنا ألا يجدوا ما ينفقون | ٩٢ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | فالتقطه آل فرعون ليكون لهم عدوا وحزنا ... ... | ٨ | ك القصص | ٢٨ |
| حَسِبَ | : أفحسب الذين كفروا أن يتخذوا عبادي من دوني أولياء | ١٠٢ | ك الكهف | ١٨ |
| (٥) | أحسب الناس أن يتركوا أن يقولوا آمنا وهم لا يفتنون | ٢ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | أم حسب الذين يعملون السيئات أن يسبقونا | ٤ | م « | ٢٩ |
| | أم حسب الذين اجترحوا السيئات أن نجعلهم كالذين آمنوا وعملوا الصالحات سواء ... ... | ٢١ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | أم حسب الذين في قلوبهم مرض أن لن يخرج الله أضغانهم | ٢٩ | م محمد | ٤٧ |
| حَسِبْتَ | : أم حسبت أن أصحاب الكهف والرقيم كانوا من آياتنا عجبا ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك الكهف | ١٨ |
| حَسِبْتُمْ | : أم حسبتم أن تدخلوا الجنة ولما يأتكم مثل | | | |
| (٤) | الذين خلوا من قبلكم ... ... ... ... ... | ٢١٤ | م البقرة | ٢ |
| | أم حسبتم أن تدخلوا الجنة ولما يعلم الله الذين جاهدوا منكم | ١٤٢ | م آل عمران | ٣ |
| | أم حسبتم أن تتركوا ولما يعلم الله الذين جاهدوا منكم | ١٦ | م التوبة | ٩ |
| | أفحسبتم أنما خلقناكم عبثا وأنكم إلينا لا ترجعون | ١١٥ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| حَسِبَتْهُ | : فلما رأته حسبته لجة وكشفت عن ساقيها ... ... | ٤٤ | ك النمل | ٢٧ |
| حَسِبْتَهُمْ | : ويطوف عليهم ولدان مخلدون إذا رأيتهم حسبتهم لؤلؤا منثورا ... ... ... ... ... | ١٩ | م الإنسان | ٧٦ |
| حَسِبُوا | : وحسبوا ألا تكون فتنة فعموا وصموا ثم تاب الله عليهم | ٧١ | م المائدة | ٥ |
| تَحْسَبُ | : أم تحسب أن أكثرهم يسمعون أو يعقلون | ٤٤ | ك الفرقان | ٢٥ |
| تَحْسَبَنَّ | : ولا تحسبن الذين قتلوا في سبيل الله أمواتا | ١٦٩ | م آل عمران | ٣ |
| (٥) | لا تحسبن الذين يفرحون بما أتوا ويحبون أن يحمدوا بما لم يفعلوا فلا تحسبنهم بمفازة من العذاب | ١٨٨ | م « | ٣ |
| | ولا تحسبن الله غافلا عما يعمل الظالمون ... ... | ٤٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | فلا تحسبن الله مخلف وعده رسله إن الله عزيز ذو انتقام | ٤٧ | ك « | ١٤ |
| | لا تحسبن الذين كفروا معجزين في الأرض ... ... | ٥٧ | م النور | ٢٤ |
| تَحْسَبَنَّهُمْ | : فلا تحسبنهم بمفازة من العذاب ... ... ... | ١٨٨ | م آل عمران | ٣ |
| تَحْسَبُهَا | : وترى الجبال تحسبها جامدة وهي تمر مر السحاب | ٨٨ | ك النمل | ٢٧ |
| تَحْسَبُهُمْ | : وتحسبهم أيقاظا وهم رقود ونقلبهم ذات اليمين | | | |
| (٢) | وذات الشمال ... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك الكهف | ١٨ |
| تَحْسَبُهُمْ | : بأسهم بينهم شديد تحسبهم جميعا وقلوبهم شتى | ١٤ | م الحشر | ٥٩ |
| تَحْسَبُونَهُ | : وتحسبونه هينا وهو عند الله عظيم ... ... | ١٥ | م النور | ٢٤ |
| تَحْسَبُوهُ | : وإن منهم لفريقا يلوون ألسنتهم بالكتاب لتحسبوه | | | |
| (٢) | من الكتاب ... ... ... ... ... ... | ٧٨ | م آل عمران | ٣ |
| | إن الذين جاءوا بالإفك عصبة منكم لا تحسبوه شرا لكم | ١١ | م النور | ٢٤ |
| يَحْسَبُ | : أيحسب الإنسان ألن نجمع عظامه .. ... ... | ٣ | ك القيامة | ٧٥ |
| (٥) | أيحسب الإنسان أن يترك سدى ... ... ... ... | ٣٦ | ك « | ٧٥ |
| | أيحسب أن لن يقدر عليه أحد ... ... ... ... | ٥ | ك البلد | ٩٠ |
| | أيحسب أن لم يره أحد ... ... ... ... ... | ٧ | ك « | ٩٠ |
| | يحسب أن ماله أخلده ... ... ... ... ... | ٣ | ك الهمزة | ١٠٤ |
| يَحْسَبَنَّ | : ولا يحسبن الذين كفروا أنما نملي لهم خير لأنفسهم | ١٧٨ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | ولا يحسبن الذين يبخلون بما آتاهم الله من فضله هو خيرا لهم | ١٨٠ | م « | ٣ |
| | ولا يحسبن الذين كفروا سبقوا إنهم لا يعجزون | ٥٩ | م الأنفال | ٨ |
| يَحْسَبُهُ | : والذين كفروا أعمالهم كسراب بقيعة يحسبه الظمآن ماء | ٣٩ | م النور | ٢٤ |
| يَحْسَبُهُمُ | : يحسبهم الجاهل أغنياء من التعفف ... ... ... | ٢٧٣ | م البقرة | ٢ |
| يَحْسَبُونَ | : إنهم اتخذوا الشياطين أولياء من دون الله | | | |
| (٨) | ويحسبون أنهم مهتدون ... ... ... ... | ٣٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | وهم يحسبون أنهم يحسنون صنعا ... ... ... | ١٠٤ | ك الكهف | ١٨ |
| | أيحسبون أنما نمدهم به من مال وبنين . نسارع لهم في الخيرات ... ... ... ... ... ... | ٥٥ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | يحسبون الأحزاب لم يذهبوا ... ... ... ... | ٢٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وإنهم ليصدونهم عن السبيل ويحسبون أنهم مهتدون | ٣٧ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | أم يحسبون أنا لا نسمع سرهم ونجواهم ... ... ... | ٨٠ | ك « | ٤٣ |
| | فيحلفون له كما يحلفون لكم ويحسبون أنهم على شيء | ١٨ | م المجادلة | ٥٨ |
| | يحسبون كل صيحة عليهم هم العدو فاحذرهم ... ... | ٤ | م المنافقون | ٦٣ |
| فَحَاسَبْنَاهَا | : وكأين من قرية عتت عن أمر ربها ورسله فحاسبناها حسابا شديدا ... ... ... ... | ٨ | م الطلاق | ٦٥ |
| يُحَاسِبْكُمْ | : وإن تبدوا ما في أنفسكم أو تخفوه يحاسبكم به الله | ٢٨٤ | م البقرة | ٢ |
| يُحَاسَبُ | : فسوف يحاسب حسابا يسيرا ... ... ... ... | ٨ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| يَحْتَسِبُ | : ومن يتق الله يجعل له مخرجا . ويرزقه من حيث لا يحتسب ... ... ... ... ... ... | ٣ | م الطلاق | ٦٥ |
| يَحْتَسِبُوا | : فأتاهم الله من حيث لم يحتسبوا ... ... ... | ٢ | م الحشر | ٥٩ |
| يَحْتَسِبُونَ | : وبدا لهم من الله ما لم يكونوا يحتسبون ... ... | ٤٧ | ك الزمر | ٣٩ |
| حَسْبُكَ | : وإن يريدوا أن يخدعوك فإن حسبك الله | ٦٢ | م الأنفال | ٨ |
| (٢) | يا أيها النبي حسبك الله ومن اتبعك من المؤمنين | ٦٤ | م « | ٨ |
| حَسْبُنَا | : فزادهم إيمانا وقالوا حسبنا الله ونعم الوكيل | ١٧٣ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | قالوا حسبنا ما وجدنا عليه آباءنا ... ... ... | ١٠٤ | م المائدة | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| حَسْبُنَا | : وقالوا حسبنا الله سيؤتينا الله من فضله ورسوله | ٥٩ م التوبة | ٩ |
| حَسْبُهُ | : وإذا قيل له اتق الله أخذته العزة بالإثم فحسبه جهنم | ٢٠٦ م البقرة | ٢ |
| (٢) | ومن يتوكل على الله فهو حسبه ... ... ... ... ... | ٣ م الطلاق | ٦٥ |
| حَسْبُهُمْ | : وعد الله المنافقين والمنافقات والكفار نار جهنم | | |
| (٢) | خالدين فيها هي حسبهم ... ... ... ... ... | ٦٨ م التوبة | ٩ |
| | حسبهم جهنم يصلونها فبئس المصير ... ... ... ... | ٨ م المجادلة | ٥٨ |
| حَسْبِيَ | : فإن تولوا فقل حسبي الله لا إله إلا هو عليه توكلت | ١٢٩ ك التوبة | ٩ |
| (٢) | قل حسبي الله عليه يتوكل المتوكلون ... ... ... | ٣٨ ك الزمر | ٣٩ |
| حَاسِبِينَ | : ألا له الحكم وهو أسرع الحاسبين ... ... ... | ٦٢ ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | وإن كان مثقال حبة من خردل أتينا بها وكفى بنا حاسبين | ٤٧ ك الأنبياء | ٢١ |
| حِسَاب | : أولئك لهم نصيب مما كسبوا والله سريع الحساب | ٢٠٢ م البقرة | ٢ |
| (٢٥) | والله يرزق من يشاء بغير حساب ... ... ... ... | ٢١٢ م « | ٢ |
| | ومن يكفر بآيات الله فإن الله سريع الحساب | ١٩ م آل عمران | ٣ |
| | ويرزق من تشاء بغير حساب ... ... ... ... ... | ٢٧ م « | ٣ |
| | إن الله يرزق من يشاء بغير حساب... ... ... ... | ٣٧ م « | ٣ |
| | أولئك لهم أجرهم عند ربهم إن الله سريع الحساب | ١٩٩ م « | ٣ |
| | واذكروا اسم الله عليه واتقوا الله إن الله سريع الحساب | ٤ م المائدة | ٥ |
| | وقدره منازل لتعلموا عدد السنين والحساب ... ... | ٥ ك يونس | ١٠ |
| | أولئك لهم سوء الحساب ومأواهم جهنم وبئس المهاد | ١٨ م الرعد | ١٣ |
| | ويخشون ربهم ويخافون سوء الحساب ... ... ... | ٢١ م « | ١٣ |
| | فإنما عليك البلاغ وعلينا الحساب ... ... ... ... | ٤٠ م « | ١٣ |
| | والله يحكم لا معقب لحكمه وهو سريع الحساب | ٤١ م « | ١٣ |
| | ربنا اغفر لي ولوالدي وللمؤمنين يوم يقوم الحساب | ٤١ ك إبراهيم | ١٤ |
| | ليجزي الله كل نفس ما كسبت إن الله سريع الحساب | ٥١ ك « | ١٤ |
| | لتبتغوا فضلا من ربكم ولتعلموا عدد السنين والحساب | ١٢ ك الإسراء | ١٧ |
| | ويزيدهم من فضله والله يرزق من يشاء بغير حساب | ٣٨ م النور | ٢٤ |
| | ووجد الله عنده فوفاه حسابه والله سريع الحساب | ٣٩ م « | ٢٤ |
| | وقالوا ربنا عجل لنا قطنا قبل يوم الحساب... ... | ١٦ ك ص | ٣٨ |
| | إن الذين يضلون عن سبيل الله لهم عذاب شديد | | |
| | بما نسوا يوم الحساب ... ... ... ... ... ... | ٢٦ ك « | ٣٨ |
| | هذا عطاؤنا فامنن أو أمسك بغير حساب ... ... | ٣٩ ك « | ٣٨ |
| | هذا ما توعدون ليوم الحساب ... ... ... ... ... | ٥٣ ك « | ٣٨ |
| | إنما يوفى الصابرون أجرهم بغير حساب ... ... ... | ١٠ ك الزمر | ٣٩ |
| | لا ظلم اليوم إن الله سريع الحساب... ... ... ... | ١٧ ك غافر | ٤٠ |
| | وقال موسى إني عذت بربي وربكم من كل متكبر | | |
| | لا يؤمن بيوم الحساب ... ... ... ... ... ... | ٢٧ ك « | ٤٠ |
| | فأولئك يدخلون الجنة يرزقون فيها بغير حساب | ٤٠ ك « | ٤٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| حِسَابًا | : فحاسبناها حسابا شديدا وعذبناها عذابا نكرا | ٨ م الطلاق | ٦٥ |
| (٤) | إنهم كانوا لا يرجون حسابا ... ... ... ... ... | ٢٧ ك النبأ | ٧٨ |
| | جزاء من ربك عطاء حسابا ... ... ... ... ... ... | ٣٦ ك « | ٧٨ |
| | فأما من أوتي كتابه بيمينه . فسوف يحاسب حسابا يسيرا | ٨ ك الانشقاق | ٨٤ |
| حِسَابِكَ | : ما عليك من حسابهم من شيء وما من حسابك | | |
| | عليهم من شيء... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٢ ك الأنعام | ٦ |
| حِسَابُهُ | : ومن يدع مع الله إلها آخر لا برهان له به | | |
| (٢) | فإنما حسابه عند ربه ... ... ... ... ... ... | ١١٧ ك المؤمنون | ٢٣ |
| | حتى إذا جاءه لم يجده شيئا ووجد الله عنده فوفاه حسابه | ٣٩ م النور | ٢٤ |
| حِسَابِهِمْ | : ما عليك من حسابهم من شيء... ... ... ... | ٥٢ ك الأنعام | ٦ |
| (٥) | وما على الذين يتقون من حسابهم من شيء ... ... | ٦٩ ك « | ٦ |
| | أقترب للناس حسابهم وهم في غفلة معرضون ... ... | ١ ك الأنبياء | ٢١ |
| | إن حسابهم إلا على ربي لو تشعرون ... ... ... | ١١٣ ك الشعراء | ٢٦ |
| | إن إلينا إيابهم . ثم إن علينا حسابهم ... ... ... | ٢٦ ك الغاشية | ٨٨ |
| حِسَابِيَهْ | : إني ظننت أني ملاق حسابيه ... ... ... ... | ٢٠ ك الحاقة | ٦٩ |
| (٢) | فيقول يا ليتني لم أوت كتابيه . ولم أدر ما حسابيه | ٢٦ ك « | ٦٩ |
| حَسِيبًا | : وكفى بالله حسيبا ... ... ... ... ... ... ... | ٦ م النساء | ٤ |
| (٤) | إن الله كان على كل شيء حسيبا ... ... ... ... | ٨٦ م « | ٤ |
| | اقرأ كتابك كفى بنفسك اليوم عليك حسيبا ... ... | ١٤ ك الإسراء | ١٧ |
| | ولا يخشون أحدا إلا الله وكفى بالله حسيبا ... ... | ٣٩ م الأحزاب | ٣٣ |
| حُسْبَانٍ | : الشمس والقمر بحسبان ... ... ... ... ... | ٥ م الرحمن | ٥٥ |
| حُسْبَانًا | : فالق الإصباح وجعل الليل سكنا والشمس | | |
| (٢) | والقمر حسبانا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩٦ ك الأنعام | ٦ |
| | فعسى ربي أن يؤتين خيرا من جنتك ويرسل عليها | | |
| | حسبانا من السماء ... ... ... ... ... ... ... | ٤٠ ك الكهف | ١٨ |
| | ✦✦✦ | | |
| حَسَدَ | : ومن شر حاسد إذا حسد ... ... ... ... ... | ٥ ك الفلق | ١١٣ |
| تَحْسُدُونَنَا | : فسيقولون بل تحسدوننا ... ... ... ... ... | ١٥ ك الفتح | ٤٨ |
| يَحْسُدُونَ | : أم يحسدون الناس على ما آتاهم الله من فضله | ٥٤ م النساء | ٤ |
| حَسَدًا | : لو يردونكم من بعد إيمانكم كفارا حسدا من | | |
| | عند أنفسهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٩ م البقرة | ٢ |
| حَاسِدٍ | : ومن شر حاسد إذا حسد ... ... ... ... ... | ٥ ك الفلق | ١١٣ |
| | ✦✦✦ | | |
| يَسْتَحْسِرُونَ | : ومن عنده لا يستكبرون عن عبادته | | |
| | ولا يستحسرون ... ... ... ... ... ... ... | ١٩ ك الأنبياء | ٢١ |
| حَسْرَةً | : لو كانوا عندنا ما ماتوا وما قتلوا ليجعل الله ذلك | | |
| (٥) | حسرة في قلوبهم ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٦ م آل عمران | ٣ |
| | فسينفقونها ثم تكون عليهم حسرة ثم يغلبون ... ... | ٣٦ ك الأنفال | ٨ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| حَسْرَةً: | وأنذرهم يوم الحسرة إذ قضى الأمر ... ... ... | مريم | ٣٩ ك ١٩ |
| | ياحسرة على العباد ما يأتيهم من رسول إلا كانوا به يستهزئون | يس | ٣٠ ك ٣٦ |
| | وإنا لنعلم أن منكم مكذبين . وإنه لحسرة على الكافرين | الحاقة | ٥٠ ك ٦٩ |
| حَسَرَاتٍ: | كذلك يريهم الله أعمالهم حسرات عليهم | البقرة | ١٦٧ م ٢ |
| (٢) | فلا تذهب نفسك عليهم حسرات ... ... ... ... | فاطر | ٨ ك ٣٥ |
| حَسْرَتَى: | أن تقول نفس ياحسرتى على مافرطت فى جنب الله | الزمر | ٥٦ ك ٣٩ |
| حَسْرَتَنَا: | حتى إذا جاءتهم الساعة بغتة قالوا يا حسرتنا على ما فرطنا فيها ... ... ... ... ... ... | الأنعام | ٣١ ك ٦ |
| حَسِيرٌ: | ثم ارجع البصر كرتين ينقلب إليك البصر خاسئا وهو حسير | الملك | ٤ ك ٦٧ |
| مَحْسُورًا: | ولا تبسطها كل البسط فتقعد ملوما محسورا ... | الإسراء | ٢٩ ك ١٧ |
| تَحُسُّونَهُمْ: | ولقد صدقكم الله وعده إذ تحسونهم بإذنه | آل عمران | ١٥٢ م ٣ |
| أَحَسَّ: | فلما أحس عيسى منهم الكفر قال من أنصارى إلى الله | » | ٥٢ م ٣ |
| أَحَسُّوا: | فلما أحسوا بأسنا إذا هم منها يركضون ... ... | الأنبياء | ١٢ ك ٢١ |
| تُحِسُّ: | هل تحس منهم من أحد أو تسمع لهم ركزا ... ... | مريم | ٩٨ ك ١٩ |
| فَتَحَسَّسُوا: | يا بنىّ اذهبوا فتحسسوا من يوسف وأخيه | يوسف | ٨٧ ك ١٢ |
| حَسِيسَهَا: | لا يسمعون حسيسها وهم فى ما اشتهت أنفسهم خالدون ... ... ... ... ... ... ... | الأنبياء | ١٠٢ ك ٢١ |
| حُسُومًا: | سخرها عليهم سبع ليال وثمانية أيام حسوما ... | الحاقة | ٧ ك ٦٩ |
| حَسُنَ: | وحسن أولئك رفيقا... ... ... ... ... ... | النساء | ٦٩ م ٤ |
| حَسُنَتْ: | متكئين فيها على الأرائك نعم الثواب وحسنت مرتفقا | الكهف | ٣١ ك ١٨ |
| (٢) | خالدين فيها حسنت مستقرا ومقاما ... ... ... ... | الفرقان | ٧٦ ك ٢٥ |
| أَحْسَنَ: | ثم آتينا موسى الكتاب تماما على الذى أحسن | الأنعام | ١٥٤ ك ٦ |
| (٩) | قال معاذ الله إنه ربى أحسن مثواى إنه لا يفلح الظالمون | يوسف | ٢٣ ك ١٢ |
| | وقد أحسن بى إذ أخرجنى من السجن وجاء بكم من البدو | » | ١٠٠ ك ١٢ |
| | إنا لا نضيع أجر من أحسن عملا ... ... ... ... | الكهف | ٣٠ ك ١٨ |
| | ولا تنس نصيبك من الدنيا وأحسن كما أحسن الله إليك | القصص | ٧٧ ك ٢٨ |
| | الذى أحسن كل شىء خلقه وبدأ خلق الإنسان من طين | السجدة | ٧ ك ٣٢ |
| | وصوركم فأحسن صوركم ورزقكم من الطيبات | غافر | ٦٤ ك ٤٠ |
| | وصوركم فأحسن صوركم وإليه المصير ... ... ... | التغابن | ٣ م ٦٤ |
| | قد أحسن الله له رزقا ... ... ... ... ... ... | الطلاق | ١١ م ٦٥ |
| أَحْسَنْتُمْ: | إن أحسنتم ... ... ... ... ... ... ... | الإسراء | ٧ ك ١٧ |
| (٢) | أحسنتم لأنفسكم وإن أسأتم فلها ... ... ... ... | » | ٧ ك ١٧ |
| أَحْسَنُوا: | للذين أحسنوا منهم واتقوا أجر عظيم ... ... | آل عمران | ١٧٢ م ٣ |
| (٦) | ثم اتقوا وأحسنوا والله يحب المحسنين ... ... ... | المائدة | ٩٣ م ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| أَحْسَنُوا: | للذين أحسنوا الحسنى وزيادة ... ... ... ... | يونس | ٢٦ ك ١٠ |
| | للذين أحسنوا فى هذه الدنيا حسنة ولدار الآخرة خير | النحل | ٣٠ ك ١٦ |
| | للذين أحسنوا فى هذه الدنيا حسنة وأرض الله واسعة | الزمر | ١٠ ك ٣٩ |
| | ويجزى الذين أحسنوا بالحسنى ... ... ... ... ... | النجم | ٣١ ك ٥٣ |
| تُحْسِنُوا: | وإن تحسنوا وتتقوا فإن الله كان بما تعملون خبيرا | النساء | ١٢٨ م ٤ |
| يُحْسِنُونَ: | وهم يحسبون أنهم يحسنون صنعا ... ... ... ... | الكهف | ١٠٤ ك ١٨ |
| أَحْسِنْ: | وأحسن كما أحسن الله إليك ... ... ... ... ... | القصص | ٧٧ ك ٢٨ |
| أَحْسِنُوا: | وأحسنوا إن الله يحب المحسنين ... ... ... ... | البقرة | ١٩٥ م ٢ |
| حُسْن: | ذلك متاع الحياة الدنيا والله عنده حسن المآب | آل عمران | ١٤ م ٣ |
| (٧) | فآتاهم الله ثواب الدنيا وحسن ثواب الآخرة... ... | » | ١٤٨ م ٣ |
| | والله عنده حسن الثواب ... ... ... ... ... ... | » | ١٩٥ م ٣ |
| | الذين آمنوا وعملوا الصالحات طوبى لهم وحسن مآب | الرعد | ٢٩ م ١٣ |
| | فغفرنا له ذلك وإن له عندنا لزلفى وحسن مآب | ص | ٢٥ ك ٣٨ |
| | وإن له عندنا لزلفى وحسن مآب ... ... ... ... | » | ٤٠ ك ٣٨ |
| | هذا ذكر وإن للمتقين لحسن مآب ... ... ... ... | » | ٤٩ ك ٣٨ |
| حُسْنًا: | وقولوا للناس حسنا وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة | البقرة | ٨٣ م ٢ |
| (٥) | قلنا ياذا القرنين إما أن تعذب وإما أن تتخذ فيهم حسنا | الكهف | ٨٦ م ١٨ |
| | إلا من ظلم ثم بدل حسنا بعد سوء فإنى غفور رحيم | النمل | ١١ ك ٢٧ |
| | ووصينا الإنسان بوالديه حسنا ... ... ... ... | العنكبوت | ٨ م ٢٩ |
| | ومن يقترف حسنة نزد له فيها حسنا ... ... ... | الشورى | ٢٣ م ٤٢ |
| حُسْنُهُنَّ: | لا يحل لك النساء من بعد ولا أن تبدل بهن من أزواج ولو أعجبك حسنهن ... ... ... ... | الأحزاب | ٥٢ م ٣٣ |
| حَسَنٍ: | فتقبلها ربها بقبول حسن وأنبتها نباتا حسنا | آل عمران | ٣٧ م ٣ |
| حَسَنًا: | من ذا الذى يقرض الله قرضا حسنا فيضاعفه له | البقرة | ٢٤٥ م ٢ |
| (١٨) | فتقبلها ربها بقبول حسن وأنبتها نباتا حسنا... ... | آل عمران | ٣٧ م ٣ |
| | وأقرضتم الله قرضا حسنا لأكفرن عنكم سيئاتكم | المائدة | ١٢ م ٥ |
| | وليبلى المؤمنين منه بلاء حسنا إن الله سميع عليم | الأنفال | ١٧ م ٨ |
| | وأن استغفروا ربكم ثم توبوا إليه يمتعكم متاعا حسنا | هود | ٣ ك ١١ |
| | قال ياقوم أرأيتم إن كنت على بينة من ربى ورزقنى منه رزقا حسنا... ... ... ... ... ... ... | » | ٨٨ ك ١١ |
| | تتخذون منه سكرا ورزقا حسنا ... ... ... ... | النحل | ٦٧ ك ١٦ |
| | ومن رزقناه منا رزقا حسنا فهو ينفق منه سرا وجهرا | » | ٧٥ ك ١٦ |
| | ويبشر المؤمنين الذين يعملون الصالحات أن لهم أجرا حسنا | الكهف | ٢ ك ١٨ |
| | قال ياقوم ألم يعدكم ربكم وعدا حسنا ... ... ... | طه | ٨٦ ك ٢٠ |
| | والذين هاجروا فى سبيل الله ثم قتلوا أو ماتوا ليرزقنهم الله رزقا حسنا ... ... ... ... ... | الحج | ٥٨ م ٢٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| حَسَنًا: | أفمن وعدناه وعدا حسنا فهو لاقيه كمن متعناه متاع الحياة الدنيا ... ... ... ... ... ... ... | ٦١ | ك القصص | ٢٨ |
| | أفمن زين له سوء عمله فرآه حسنا فإن الله يضل من يشاء | ٨ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | فإن تطيعوا يؤتكم الله أجرا حسنا ... ... ... ... | ١٦ | م الفتـح | ٤٨ |
| | من ذا الذى يقرض الله قرضا حسنا فيضاعفه له وله أجر كريم | ١١ | م الحـديد | ٥٧ |
| | إن المصدقين والمصدقات وأقرضوا الله قرضا حسنا يضاعف لهم ... ... ... ... ... ... ... | ١٨ | م « | ٥٧ |
| | إن تقرضوا الله قرضا حسنا يضاعفه لكم ويغفر لكم | ١٧ | م التغـابن | ٦٤ |
| | وأقيموا الصلاة وءاتوا الزكاة وأقرضوا الله قرضا حسنا | ٢٠ | م المـزمل | ٧٣ |
| حَسَنَةً: | ومنهم من يقـول ربنا ءاتنا فى الدنيا حسـنة | ٢٠١ | م البقـرة | ٢ |
| (٢٨) | وفى الآخرة حسنة وقنا عذاب النار ... ... ... ... | ٢٠١ | م « | ٢ |
| | إن تمسسكم حسنة تسؤهم وإن تصبكم سيئة يفرحوا بها | ١٢٠ | م آل عمران | ٣ |
| | إن الله لا يظلم مثقال ذرة وإن تك حسنة يضاعفها | ٤٠ | م النسـاء | ٤ |
| | وإن تصبهم حسنة يقولوا هذه من عند الله ... ... | ٧٨ | م « | ٤ |
| | ما أصابك من حسنة فمن الله وما أصابك من سيئة فمن نفسك | ٧٩ | م « | ٤ |
| | من يشفع شفاعة حسنة يكن له نصيب منها ... ... | ٨٥ | م « | ٤ |
| | من جاء بالحسنة فله عشر أمثالها ... ... ... ... | ١٦٠ | ك الأنعـام | ٦ |
| | ثم بدلنا مكان السيئة الحسنة حتى عفوا ... ... ... | ٩٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | فإذا جاءتهم الحسنة قالوا لنا هذه ... ... ... ... | ١٣١ | ك « | ٧ |
| | واكتب لنا فى هذه الدنيا حسنة وفى الآخرة إنا هدنا إليك | ١٥٦ | ك « | ٧ |
| | إن تصبك حسنة تسؤهم ... ... ... ... ... ... | ٥٠ | م التـوبة | ٩ |
| | ويستعجلونك بالسيئة قبل الحسنة ... ... ... ... | ٦ | م الرعـد | ١٣ |
| | ويدرءون بالحسنة السيئة أولئك لهم عقبى الدار ... | ٢٢ | م « | ١٣ |
| | للذين أحسنوا فى هذه الدنيا حسنة ولدار الآخرة خير | ٣٠ | ك النحـل | ١٦ |
| | والذين هاجروا فى الله من بعد ما ظلموا لنبوئنهم فى الدنيا حسنة ... ... ... ... ... ... | ٤١ | ك « | ١٦ |
| | وءاتيناه فى الدنيا حسنة وإنه فى الآخرة لمن الصالحين | ١٢٢ | ك « | ١٦ |
| | أدع إلى سبيل ربك بالحكمة والموعظة الحسنة | ١٢٥ | ك « | ١٦ |
| | قال يا قوم لم تستعجلون بالسيئة قبل الحسنة ... ... | ٤٦ | ك النمـل | ٢٧ |
| | من جاء بالحسنة فله خير منها وهم من فزع يومئذ ءامنون | ٨٩ | ك « | ٢٧ |
| | أولئك يؤتون أجرهم مرتين بما صبروا ويدرءون بالحسنة السيئة ... ... ... ... ... ... ... | ٥٤ | م القصص | ٢٨ |
| | من جاء بالحسنة فله خير منها ... ... ... ... ... | ٨٤ | ك « | ٢٨ |
| | لقد كان لكم فى رسول الله أسوة حسنة ... ... | ٢١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | للذين أحسنوا فى هذه الدنيا حسنة وأرض الله واسعة | ١٠ | ك الزمـر | ٣٩ |
| | ولا تستوى الحسنة ولا السيئة ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك فصلت | ٤١ |
| | ومن يقترف حسنة نزد له فيها حسنا إن الله غفور شكور | ٢٣ | م الشـورى | ٤٢ |
| | قد كانت لكم أسوة حسنة فى إبراهيم والذين معه | ٤ | م الممتحنـة | ٦٠ |
| حَسَنَةً: | لقد كان لكم فيهم أسوة حسنة لمن كان يرجوا الله واليوم الآخر ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | م الممتحنـة | ٦٠ |
| حَسَنَاتٍ: | وبلوناهم بالحسنات والسيئات لعلهم يرجعون | ١٦٨ | م الأعراف | ٧ |
| (٣) | إن الحسنات يذهبن السيئات ... ... ... ... ... | ١١٤ | م هـود | ١١ |
| | فأولئك يبدل الله سيئاتهم حسنات ... ... ... ... | ٧٠ | م الفرقان | ٢٥ |
| الْحُسْنَى: | وكلا وعد الله الحسنى ... ... ... ... ... ... | ٩٥ | م النسـاء | ٤ |
| (١٧) | وتمت كلمة ربك الحسنى على بنى إسرائيل بما صبروا | ١٣٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولله الأسماء الحسنى فادعوه بها ... ... ... ... ... | ١٨٠ | ك « | ٧ |
| | وليحلفن إن أردنا إلا الحسنى والله يشهد إنهم لكاذبون | ١٠٧ | م التـوبة | ٩ |
| | للذين أحسنوا الحسنى وزيادة ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك يـونس | ١٠ |
| | للذين استجابوا لربهم الحسنى ... ... ... ... ... | ١٨ | م الرعـد | ١٣ |
| | وتصف ألسنتهم الكذب أن لهم الحسنى ... ... ... | ٦٢ | ك النحـل | ١٦ |
| | أيا ما تدعوا فله الأسماء الحسنى ... ... ... ... | ١١٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وأما من ءامن وعمل صالحا فله جزاء الحسنى ... ... | ٨٨ | م الكهف | ١٨ |
| | الله لا إله إلا هو له الأسماء الحسنى ... ... ... | ٨ | ك طـه | ٢٠ |
| | إن الذين سبقت لهم منا الحسنى أولئك عنها مبعدون | ١٠١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ولئن رجعت إلى ربى إن لى عنده للحسنى ... ... | ٥٠ | ك فصلت | ٤١ |
| | ويجزى الذين أحسنوا بالحسنى ... ... ... ... ... | ٣١ | ك النجـم | ٥٣ |
| | وكلا وعد الله الحسنى والله بما تعملون خبير | ١٠ | م الحـديد | ٥٧ |
| | هو الله الخالق البارئ المصور له الأسماء الحسنى | ٢٤ | م الحشـر | ٥٩ |
| | فأما من أعطى واتقى . وصدق بالحسنى . فسنيسره لليسرى | ٦ | ك الليـل | ٩٢ |
| | وأما من بخل واستغنى . وكذب بالحسنى . فسنيسره للعسرى | ٩ | ك « | ٩٢ |
| الْحُسْنَيَيْنِ: | قل هـل تربصون بنا إلا إحدى الحسنيين | ٥٢ | م التـوبة | ٩ |
| حِسَانٌ: | فيهن خيرات حسان ... ... ... ... ... ... | ٧٠ | م الرحمـن | ٥٥ |
| (٢) | متكئين على رفرف خضر وعبقرى حسان ... ... | ٧٦ | م « | ٥٥ |
| أَحْسَنُ: | صبغة الله ومن أحسن من الله صبغة ونحن له عابدون | ١٣٨ | م البقـرة | ٢ |
| (٣٤) | ذلك خير وأحسن تأويلا ... ... ... ... ... ... | ٥٩ | م النسـاء | ٤ |
| | وإذا حييتم بتحية فحيوا بأحسن منها أو ردوها | ٨٦ | م « | ٤ |
| | ومن أحسن دينا ممن أسلم وجهه لله وهو محسن | ١٢٥ | م « | ٤ |
| | ومن أحسن من الله حكما لقوم يوقنون... ... ... | ٥٠ | م المائدة | ٥ |
| | ولا تقربوا مال اليتيم إلا بالتى هى أحسن حتى يبلغ أشده | ١٥٢ | م الأنعـام | ٦ |
| | ليجزيهم الله أحسن ما كانوا يعملون ... ... ... | ١٢١ | م التـوبة | ٩ |
| | ليبلوكم أيكم أحسن عملا ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك هـود | ١١ |
| | نحن نقص عليك أحسن القصص بما أوحينا إليك هذا القرءان ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | م يوسـف | ١٢ |
| | ولنجزين الذين صبروا أجرهم بأحسن ما كانوا يعملون | ٩٦ | ك النحـل | ١٦ |
| | ولنجزينهم أجرهم بأحسن ما كانوا يعملون ... ... | ٩٧ | ك « | ١٦ |
| | وجادلهم بالتى هى أحسن ... ... ... ... ... ... | ١٢٥ | ك « | ١٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَحْسَنُ: | ولا تقربوا مال اليتيم إلا بالتى هى أحسن حتى | | | |
| | يبلغ أشده ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وزنوا بالقسطاس المستقيم ذلك خير وأحسن تأويلا | ٣٥ | ك « | ١٧ |
| | وقل لعبادى يقولوا التى هى أحسن ... ... ... ... | ٥٣ | ك « | ١٧ |
| | إنا جعلنا ما على الأرض زينة لها لنبلوهم أيهم أحسن عملا | ٧ | ك الكهف | ١٨ |
| | أى الفريقين خير مقاما وأحسن نديا ... ... ... | ٧٣ | ك مريم | ١٩ |
| | وكم أهلكنا قبلهم من قرن هم أحسن أثاثا ورئيا | ٧٤ | ك « | ١٩ |
| | ثم أنشأناه خلقا آخر فتبارك الله أحسن الخالقين | ١٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ادفع بالتى هى أحسن السيئة نحن أعلم بما يصفون | ٩٦ | ك « | ٢٣ |
| | ليجزيهم الله أحسن ما عملوا ويزيدهم من فضله | ٣٨ | م النور | ٢٤ |
| | أصحاب الجنة يومئذ خير مستقرا وأحسن مقيلا | ٢٤ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ولا يأتونك بمثل إلا جئناك بالحق وأحسن تفسيرا | ٣٣ | ك « | ٢٥ |
| | ولنجزينهم أحسن الذى كانوا يعملون ... ... ... | ٧ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | ولا تجادلوا أهل الكتاب إلا بالتى هى أحسن | ٤٦ | ك « | ٢٩ |
| | أتدعون بعلا وتذرون أحسن الخالقين ... ... ... | ١٢٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| | الله نزل أحسن الحديث كتابا متشابها مثانى ... ... | ٢٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ويجزيهم أجرهم بأحسن الذى كانوا يعملون... ... | ٣٥ | ك « | ٣٩ |
| | واتبعوا أحسن ما أنزل إليكم من ربكم ... ... ... | ٥٥ | ك « | ٣٩ |
| | ومن أحسن قولا ممن دعا إلى الله وعمل صالحا | ٣٣ | ك فصلت | ٤١ |
| | ادفع بالتى هى أحسن ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك « | ٤١ |
| | أولئك الذين نتقبل عنهم أحسن ما عملوا ... ... | ١٦ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | الذى خلق الموت والحياة ليبلوكم أيكم أحسن عملا | ٢ | ك الملك | ٦٧ |
| | لقد خلقنا الإنسان فى أحسن تقويم ... ... ... | ٤ | ك التين | ٩٥ |
| أَحْسَنَهُ: | الذين يستمعون القول فيتبعون أحسنه ... ... | ١٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| بِأَحْسَنِهَا: | فخذها بقوة وأمر قومك يأخذوا بأحسنها | ١٤٥ | ك الأعراف | ٧ |
| إِحْسَانٍ: | فمن عفى له من أخيه شىء فاتباع بالمعروف | | | |
| (٦) | وأداء إليه بإحسان ... ... ... ... ... ... | ١٧٨ | م البقرة | ٢ |
| | الطلاق مرتان فإمساك بمعروف أو تسريح بإحسان | ٢٢٩ | م « | ٢ |
| | والذين اتبعوهم بإحسان رضى الله عنهم ورضوا عنه | ١٠٠ | م التوبة | ٩ |
| | إن الله يأمر بالعدل والإحسان وإيتاء ذى القربى | ٩٠ | ك النحل | ١٦ |
| | هل جزاء الإحسان... ... ... ... ... ... ... | ٦٠ | م الرحمن | ٥٥ |
| | إلا الإحسان ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦٠ | م « | ٥٥ |
| إِحْسَانًا: | لا تعبدون إلا الله وبالوالدين إحسانا ... ... | ٨٣ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | واعبدوا الله ولا تشركوا به شيئا وبالوالدين إحسانا | ٣٦ | م النساء | ٤ |
| | ثم جاءوك يحلفون بالله إن أردنا إلا إحسانا وتوفيقا | ٦٢ | م « | ٤ |
| | ألا تشركوا به شيئا وبالوالدين إحسانا ... ... ... | ١٥١ | م الأنعام | ٦ |
| | وقضى ربك ألا تعبدوا إلا إياه وبالوالدين إحسانا | ٢٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| إِحْسَانًا: | ووصينا الإنسان بوالديه إحسانا ... ... ... | ١٥ | م الأحقاف | ٤٦ |
| مُحْسِن: | بلى من أسلم وجهه لله وهو محسن فله أجره عند ربه | ١١٢ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | ومن أحسن دينا ممن أسلم وجهه لله وهو محسن | ١٢٥ | م النساء | ٤ |
| | ومن يسلم وجهه إلى الله وهو محسن فقد استمسك | | | |
| | بالعروة الوثقى ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك لقمان | ٣١ |
| | ومن ذريتهما محسن وظالم لنفسه مبين ... ... ... | ١١٣ | ك الصافات | ٣٧ |
| مُحْسِنُونَ: | إن الله مع الذين اتقوا والذين هم محسنون | ١٢٨ | م النحل | ١٦ |
| مُحْسِنِين: | وقولوا حطة نغفر لكم خطاياكم وسنزيد المحسنين | ٥٨ | م البقرة | ٢ |
| (٣٣) | وأحسنوا إن الله يحب المحسنين ... ... ... ... | ١٩٥ | م « | ٢ |
| | وعلى المقتر قدره متاعا بالمعروف حقا على المحسنين | ٢٣٦ | م « | ٢ |
| | والكاظمين الغيظ والعافين عن الناس والله يحب المحسنين | ١٣٤ | م آل عمران | ٣ |
| | فآتاهم الله ثواب الدنيا وحسن ثواب الآخرة والله | | | |
| | يحب المحسنين ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٨ | م « | ٣ |
| | فاعف عنهم واصفح إن الله يحب المحسنين ... ... | ١٣ | م المائدة | ٥ |
| | خالدين فيها وذلك جزاء المحسنين ... ... ... ... | ٨٥ | م « | ٥ |
| | ثم اتقوا وأحسنوا والله يحب المحسنين ... ... ... | ٩٣ | م « | ٥ |
| | ومن ذريته داود وسليمان وأيوب ويوسف وموسى | | | |
| | وهرون وكذلك نجزى المحسنين... ... ... ... | ٨٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | إن رحمت الله قريب من المحسنين ... ... ... ... | ٥٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | وادخلوا الباب سجدا نغفر لكم خطيئاتكم سنزيد المحسنين | ١٦١ | ك « | ٧ |
| | ما على المحسنين من سبيل والله غفور رحيم... ... | ٩١ | م التوبة | ٩ |
| | إن الله لا يضيع أجر المحسنين ... ... ... ... ... | ١٢٠ | م « | ٩ |
| | واصبر فإن الله لا يضيع أجر المحسنين ... ... ... | ١١٥ | ك هود | ١١ |
| | ولما بلغ أشده آتيناه حكما وعلما وكذلك نجزى المحسنين | ٢٢ | ك يوسف | ١٢ |
| | نبئنا بتأويله إنا نراك من المحسنين ... ... ... ... | ٣٦ | ك « | ١٢ |
| | نصيب برحمتنا من نشاء ولا نضيع أجر المحسنين | ٥٦ | ك « | ١٢ |
| | إن له أبا شيخا كبيرا فخذ أحدنا مكانه إنا نراك من المحسنين | ٧٨ | ك « | ١٢ |
| | إنه من يتق ويصبر فإن الله لا يضيع أجر المحسنين | ٩٠ | ك « | ١٢ |
| | كذلك سخرها لكم لتكبروا الله على ما هداكم وبشر المحسنين | ٣٧ | م الحج | ٢٢ |
| | ولما بلغ أشده واستوى آتيناه حكما وعلما وكذلك | | | |
| | نجزى المحسنين ... ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك القصص | ٢٨ |
| | والذين جاهدوا فينا لنهدينهم سبلنا وإن الله لمع المحسنين | ٦٩ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | تلك آيات الكتاب الحكيم . هدى ورحمة للمحسنين | ٣ | ك لقمان | ٣١ |
| | سلام على نوح فى العالمين . إنا كذلك نجزى المحسنين | ٨٠ | ك الصافات | ٣٧ |
| | قد صدقت الرؤيا إنا كذلك نجزى المحسنين ... ... | ١٠٥ | ك « | ٣٧ |
| | سلام على إبراهيم . كذلك نجزى المحسنين ... ... | ١١٠ | ك « | ٣٧ |
| | سلام على موسى وهرون . إنا كذلك نجزى المحسنين | ١٢١ | ك « | ٣٧ |
| | سلام على إل ياسين . إنا كذلك نجزى المحسنين | ١٣١ | ك « | ٣٧ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| مُحْسِنِين: | لهم ما يشاءون عند ربهم ذلك جزاء المحسنين | ك الزمر | ٣٤ |
| | أو تقول حين ترى العذاب لو أن لى كرة فأكون من المحسنين | ك « | ٥٨ |
| | لينذر الذين ظلموا وبشرى للمحسنين ... ... ... ... | ك الأحقاف | ١٢ ٤٦ |
| | ءاخذين ما ءاتاهم ربهم إنهم كانوا قبل ذلك محسنين | ك الذاريات | ١٦ ٥١ |
| | كلوا واشربوا هنيئا بما كنتم تعملون . إنا كذلك نجزى المحسنين ... ... ... ... ... ... | ك المرسلات | ٤٤ ٧٧ |
| لِلْمُحْسِنَاتِ: | فإن الله أعد للمحسنات منكن أجرا عظيما | م الأحزاب | ٢٩ ٣٣ |
| | ✦✦✦ | | |
| فَحَشَرَ: | فحشر فنادى . فقال أنا ربكم الأعلى... ... ... | ك النازعات | ٢٣ ٧٩ |
| حَشَرْتَنِي: | قال رب لم حشرتنى أعمى وقد كنت بصيرا | ك طه | ١٢٥ ٢٠ |
| حَشَرْنَا: | وحشرنا عليهم كل شىء قبلا ما كانوا ليؤمنوا إلا أن يشاء الله ... ... ... ... ... ... | ك الأنعام | ١١١ ٦ |
| حَشَرْنَاهُمْ: | وترى الأرض بارزة وحشرناهم فلم نغادر منهم أحدا | ك الكهف | ٤٧ ١٨ |
| نَحْشُرُ: | يوم نحشر المتقين إلى الرحمن وفدا... ... ... ... | ك مريم | ٨٥ ١٩ |
| (٣) | يوم ينفخ فى الصور ونحشر المجرمين يومئذ زرقا | ك طه | ١٠٢ ٢٠ |
| | ويوم نحشر من كل أمة فوجا ممن يكذب بآياتنا | ك النمل | ٨٣ ٢٧ |
| لَنَحْشُرَنَّهُمْ: | فوربك لنحشرنهم والشياطين ... ... ... | ك مريم | ٦٨ ١٩ |
| نَحْشُرُهُ: | ونحشره يوم القيامة أعمى ... ... ... ... ... | ك طه | ١٢٤ ٢٠ |
| نَحْشُرُهُمْ: | ويوم نحشرهم جميعا ثم نقول للذين أشركوا أين شركاؤكم ... ... ... ... ... ... ... | ك الأنعام | ٢٢ ٦ |
| (٣) | ويوم نحشرهم جميعا ثم نقول للذين أشركوا مكانكم | ك يونس | ٢٨ ١٠ |
| | ونحشرهم يوم القيامة على وجوههم عميا وبكما وصما | ك الإسراء | ٩٧ ١٧ |
| يَحْشُرُهُمْ: | ومن يستنكف عن عبادته ويستكبر فسيحشرهم إليه جميعا ... ... ... ... ... ... ... | م النساء | ١٧٢ ٤ |
| (٦) | ويوم يحشرهم جميعا يامعشر الجن قد استكثرتم من الإنس | ك الأنعام | ١٢٨ ٦ |
| | ويوم يحشرهم كأن لم يلبثوا إلا ساعة من النهار | ك يونس | ٤٥ ١٠ |
| | وإن ربك هو يحشرهم إنه حكيم عليم ... ... ... | ك الحجر | ٢٥ ١٥ |
| | ويوم يحشرهم وما يعبدون من دون الله ... ... | ك الفرقان | ١٧ ٢٥ |
| | ويوم يحشرهم جميعا ثم يقول للملائكة أهؤلاء إياكم كانوا يعبدون ... ... ... ... ... ... | ك سبإ | ٤٠ ٣٤ |
| اُحْشُرُوا: | احشروا الذين ظلموا وأزواجهم وما كانوا يعبدون ... ... ... ... ... ... ... | ك الصافات | ٢٢ ٣٧ |
| حُشِرَ: | وحشر لسليمان جنوده من الجن والإنس والطير | ك النمل | ١٧ ٢٧ |
| (٢) | وإذا حشر الناس كانوا لهم أعداء وكانوا بعبادتهم كافرين | الأحقاف | ٦ ٤٦ |
| حُشِرَتْ: | وإذا الوحوش حشرت ... ... ... ... ... | ك التكوير | ٥ ٨١ |
| تُحْشَرُونَ: | واتقوا الله واعلموا أنكم إليه تحشرون ... ... | م البقرة | ٢٠٣ ٢ |
| (٩) | قل للذين كفروا ستغلبون وتحشرون إلى جهنم | م آل عمران | ١٢ ٣ |
| | ولئن متم أو قتلتم لإلى الله تحشرون ... ... ... ... | م « | ١٥٨ ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| تُحْشَرُونَ: | واتقوا الله الذى إليه تحشرون ... ... ... | م المائدة | ٩٦ ٥ |
| | وأن أقيموا الصلاة واتقوه وهو الذى إليه تحشرون | ك الأنعام | ٧٢ ٦ |
| | واعلموا أن الله يحول بين المرء وقلبه وأنه إليه تحشرون | م الأنفال | ٢٠ ٨ |
| | وهو الذى ذرأكم فى الأرض وإليه تحشرون... ... | ك المؤمنون | ٧٩ ٢٣ |
| | وتناجوا بالبر والتقوى واتقوا الله الذى إليه تحشرون | م المجادلة | ٩ ٥٨ |
| | قل هو الذى ذرأكم فى الأرض وإليه تحشرون | ك الملك | ٢٤ ٦٧ |
| يُحْشَرَ: | قال موعدكم يوم الزينة وأن يحشر الناس ضحى | ك طه | ٥٩ ٢٠ |
| (٢) | ويوم يحشر أعداء الله إلى النار فهم يوزعون | ك فصلت | ١٩ ٤١ |
| يُحْشَرُوا: | وأنذر به الذين يخافون أن يحشروا إلى ربهم | ك الأنعام | ٥١ ٦ |
| يُحْشَرُونَ: | ما فرطنا فى الكتاب من شىء ثم إلى ربهم يحشرون | ك « | ٣٨ ٦ |
| (٣) | والذين كفروا إلى جهنم يحشرون ... ... ... ... | ك الأنفال | ٣٦ ٨ |
| | الذين يحشرون على وجوههم إلى جهنم أولئك شر مكانا | ك الفرقان | ٣٤ ٢٥ |
| حَشْرٌ: | يوم تشقق الأرض عنهم سراعا ذلك حشر علينا يسير | ك ق | ٤٤ ٥٠ |
| (٢) | هو الذى أخرج الذين كفروا من أهل الكتاب من ديارهم لأول الحشر ... ... ... ... ... ... | م الحشر | ٢ ٥٩ |
| حَاشِرِينَ: | قالوا أرجه وأخاه وأرسل فى المدائن حاشرين | ك الأعراف | ١١١ ٧ |
| (٣) | قالوا أرجه وأخاه وابعث فى المدائن حاشرين | ك الشعراء | ٣٦ ٢٦ |
| | فأرسل فرعون فى المدائن حاشرين ... ... ... ... | ك « | ٥٣ ٢٦ |
| مَحْشُورَةً: | والطير محشورة كل له أواب ... ... ... ... | ك ص | ١٩ ٣٨ |
| | ✦✦✦ | | |
| حَصَبُ: | إنكم وما تعبدون من دون الله حصب جهنم | ك الأنبياء | ٩٨ ٢١ |
| حَاصِباً: | أفأمنتم أن يخسف بكم جانب البر أو يرسل عليكم حاصبا | ك الإسراء | ٦٨ ١٧ |
| (٤) | فمنهم من أرسلنا عليه حاصبا ومنهم من أخذته الصيحة | ك العنكبوت | ٤٠ ٢٩ |
| | إنا أرسلنا عليهم حاصبا إلا آل لوط نجيناهم بسحر | ك القمر | ٣٤ ٥٤ |
| | أم أمنتم من فى السماء أن يرسل عليكم حاصبا ... ... | ك الملك | ١٧ ٦٧ |
| | ✦✦✦ | | |
| حَصْحَصَ: | قالت امرأة العزيز الآن حصحص الحق | ك يوسف | ٥١ ١٢ |
| | ✦✦✦ | | |
| حَصَدْتُمْ: | فما حصدتم فذروه فى سنبله ... ... ... ... | ك يوسف | ٤٧ ١٢ |
| حَصَادِهِ: | كلوا من ثمره إذا أثمر وءاتوا حقه يوم حصاده | م الأنعام | ١٤١ ٦ |
| حَصِيد: | ذلك من أنباء القرى نقصه عليك منها قائم وحصيد | ك هود | ١٠٠ ١١ |
| (٢) | ونزلنا من السماء ماء مباركا فأنبتنا به جنات وحب الحصيد | ك ق | ٩ ٥٠ |
| حَصِيدًا: | أتاها أمرنا ليلا أو نهارا فجعلناها حصيدا | ك يونس | ٢٤ ١٠ |
| (٢) | فما زالت تلك دعواهم حتى جعلناهم حصيدا خامدين | ك الأنبياء | ١٥ ٢١ |
| | ✦✦✦ | | |
| حَصِرَتْ: | أو جاءوكم حصرت صدورهم أن يقاتلوكم أو يقاتلوا قومهم ... ... ... ... ... ... | م النساء | ٩٠ ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَحْصَرُوهُمْ | : وخذوهم وأحصروهم وأقعدوا لهم كل مرصد | ٥ | م التوبة | ٩ |
| أُحْصِرْتُمْ | : فإن أحصرتم فما استيسر من الهدى ... ... | ١٩٦ | م البقرة | ٢ |
| أُحْصِرُوا | : للفقراء الذين أحصروا فى سبيل الله ... ... | ٢٧٣ | م « | ٢ |
| حَصُورًا | : أن الله يبشرك بيحيى مصدقا بكلمة من الله وسيدًا وحصورا ... ... ... ... ... ... ... | ٣٩ | م آل عمران | ٣ |
| حَصِيرًا | : وجعلنا جهنم للكافرين حصيرا ... ... ... | ٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| حُصِّلَ | : أفلا يعلم إذا بعثر ما فى القبور . وحصل ما فى الصدور . إن ربهم بهم يومئذ لخبير | ١٠ | ك العاديات | ١٠٠ |
| أَحْصَنَتْ | : والتى أحصنت فرجها فنفخنا فيها من روحنا | ٩١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٢) | ومريم ابنت عمران التى أحصنت فرجها ... ... | ١٢ | م التحريم | ٦٦ |
| لِتُحْصِنَكُمْ | : وعلمناه صنعة لبوس لكم لتحصنكم من بأسكم | ٨٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| تُحْصِنُونَ | : يأكلن ما قدمتم لهن إلا قليلا مما تحصنون | ٤٨ | ك يوسف | ١٢ |
| أُحْصِنَّ | : فإذا أحصن فإن أتين بفاحشة فعليهن نصف ما على المحصنات من العذاب ... ... ... | ٢٥ | م النساء | ٤ |
| مُحْصِنِينَ | : وأحل لكم ما وراء ذلكم أن تبتغوا بأموالكم | | | |
| (٢) | محصنين غير مسافحين ... ... ... ... | ٢٤ | م « | ٤ |
| | إذا ءاتيتموهن أجورهن محصنين غير مسافحين... ... | ٥ | م المائدة | ٥ |
| مُحْصَنَاتٍ | : والمحصنات من النساء إلا ما ملكت أيمانكم | ٢٤ | م النساء | ٤ |
| (٨) | ومن لم يستطع منكم طولا أن ينكح المحصنات المؤمنات فمن ما ملكت أيمانكم ... ... ... ... ... | ٢٥ | م « | ٤ |
| | وءاتوهن أجورهن بالمعروف محصنات غير مسافحات | ٢٥ | م « | ٤ |
| | فإن أتين بفاحشة فعليهن نصف ما على المحصنات من العذاب ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | م « | ٤ |
| | وطعامكم حل لهم والمحصنات من المؤمنات ... ... | ٥ | م المائدة | ٥ |
| | والمحصنات من الذين أوتوا الكتاب من قبلكم إذا ءاتيتموهن أجورهن ... ... ... ... ... | ٥ | م « | ٥ |
| | والذين يرمون المحصنات ثم لم يأتوا بأربعة شهداء فاجلدوهم | ٤ | م النور | ٢٤ |
| | إن الذين يرمون المحصنات الغافلات المؤمنات لعنوا | ٢٣ | م « | ٢٤ |
| تَحَصُّنًا | : ولا تكرهوا فتياتكم على البغاء إن أردن تحصنا | ٣٣ | م « | ٢٤ |
| حُصُونُهُمْ | : وظنوا أنهم مانعتهم حصونهم من الله | ٢ | م الحشر | ٥٩ |
| مُحَصَّنَةٍ | : لا يقاتلونكم جميعا إلا فى قرى محصنة أو من وراء جدر | ١٤ | م « | ٥٩ |
| أَحْصَى | : وأحاط بما لديهم وأحصى كل شىء عددا | ٢٨ | ك الجن | ٧٢ |
| أَحْصَاهُ | : أحصاه الله ونسوه ... ... ... ... | ٦ | م المجادلة | ٥٨ |
| أَحْصَاهَا | : لا يغادر صغيرة ولا كبيرة إلا أحصاها... ... | ٤٩ | ك الكهف | ١٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَحْصَاهُمْ | : لقد أحصاهم وعدهم عدا ... ... ... ... | ٩٤ | ك مريم | ١٩ |
| أَحْصَيْنَاهُ | : وكل شىء أحصيناه فى إمام مبين ... ... ... | ١٢ | ك يس | ٣٦ |
| (٢) | وكل شىء أحصيناه كتابا ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك النبأ | ٧٨ |
| تُحْصُوهُ | : علم أن لن تحصوه فتاب عليكم فاقرءوا ما تيسر من القرءان | ٢٠ | م المزمل | ٧٣ |
| تُحْصُوهَا | : وإن تعدوا نعمة الله لا تحصوها ... ... ... | ٣٤ | ك إبراهيم | ١٤ |
| (٢) | وإن تعدوا نعمة الله لا تحصوها إن الله لغفور رحيم | ١٨ | ك النحل | ١٦ |
| وَأَحْصُوا | : فطلقوهن لعدتهن وأحصوا العدة... ... ... | ١ | م الطلاق | ٦٥ |
| أَحْصَى | : ثم بعثناهم لنعلم أى الحزبين أحصى لما لبثوا أمدا | ١٢ | ك الكهف | ١٨ |
| حَضَرَ | : أم كنتم شهداء إذ حضر يعقوب الموت... ... | ١٣٣ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | كتب عليكم إذا حضر أحدكم الموت إن ترك خيرا الوصية للوالدين والأقربين ... ... ... ... | ١٨٠ | م « | ٢ |
| | وإذا حضر القسمة أولوا القربى واليتامى والمساكين فارزقوهم منه ... ... ... ... ... ... | ٨ | م النساء | ٤ |
| | حتى إذا حضر أحدهم الموت قال إنى تبت الآن | ١٨ | م « | ٤ |
| | شهادة بينكم إذا حضر أحدكم الموت حين الوصية اثنان ذوا عدل منكم ... ... ... ... ... | ١٠٦ | م المائدة | ٥ |
| حَضَرُوهُ | : فلما حضروه قالوا أنصتوا ... ... ... | ٢٩ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| يَحْضُرُونِ | : وأعوذ بك رب أن يحضرون ... ... ... | ٩٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| أَحْضَرَتْ | : وإذا الجنة أزلفت . علمت نفس ما أحضرت | ١٤ | ك التكوير | ٨١ |
| لَنُحْضِرَنَّهُمْ | : ثم لنحضرنهم حول جهنم جثيا ... ... ... | ٦٨ | ك مريم | ١٩ |
| أُحْضِرَتِ | : والصلح خير وأحضرت الأنفس الشح ... ... | ١٢٨ | م النساء | ٤ |
| حَاضِرًا | : ووجدوا ما عملوا حاضرا ولا يظلم ربك أحدا | ٤٩ | ك الكهف | ١٨ |
| حَاضِرِى | : ذلك لمن لم يكن أهله حاضرى المسجد الحرام | ١٩٦ | م البقرة | ٢ |
| حَاضِرَةً | : إلا أن تكون تجارة حاضرة تديرونها بينكم | ٢٨٢ | م « | ٢ |
| (٢) | وسئلهم عن القرية التى كانت حاضرة البحر ... ... | ١٦٣ | م الأعراف | ٧ |
| مُحْضَرًا | : يوم تجد كل نفس ما عملت من خير محضرا | ٣٠ | م آل عمران | ٣ |
| مُحْضَرُونَ | : وأما الذين كفروا وكذبوا بآياتنا ولقاء الآخرة | | | |
| (٧) | فأولئك فى العذاب محضرون ... ... ... | ١٦ | ك الروم | ٣٠ |
| | والذين يسعون فى ءاياتنا معاجزين أولئك فى العذاب محضرون ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك سبأ | ٣٤ |
| | وإن كل لما جميع لدينا محضرون ... ... ... | ٣٢ | ك يس | ٣٦ |
| | إن كانت إلا صيحة واحدة فإذا هم جميع لدينا محضرون | ٥٣ | ك « | ٣٦ |
| | لا يستطيعون نصرهم وهم لهم جند محضرون ... ... | ٧٥ | ك « | ٣٦ |
| | فكذبوه فإنهم لمحضرون ... ... ... ... ... | ١٢٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| | ولقد علمت الجنة إنهم لمحضرون ... ... ... ... | ١٥٨ | ك « | ٣٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مُحْضَرِينَ | : ثم هو يوم القيامة من المحضرين ... ... ... | ٦١ | ك القصص | ٢٨ |
| (٢) | ولولا نعمة ربي لكنت من المحضرين ... ... ... | ٥٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| مُحْتَضَرٌ | : ونبئهم أن الماء قسمة بينهم كل شرب محتضر | ٢٨ | ك القمر | ٥٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| يَحُضُّ | : إنه كان لا يؤمن بالله العظيم . ولا يحض على طعام المسكين ... ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك الحاقة | ٦٩ |
| (٢) | فذلك الذي يدع اليتيم . ولا يحض على طعام المسكين | ٣ | ك الماعون | ١٠٧ |
| تَحَاضُّونَ | : كلا بل لا تكرمون اليتيم . ولا تحاضون على طعام المسكين ... ... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك الفجر | ٨٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| الْحَطَبِ | : وامرأته حمالة الحطب . في جيدها حبل من مسد | ٤ | ك المسد | ١١١ |
| حَطَبًا | : وأما القاسطون فكانوا لجهنم حطبا ... ... ... | ١٥ | ك الجن | ٧٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| حِطَّةٌ | : وادخلوا الباب سجدا وقولوا حطة نغفر لكم خطاياكم | ٥٨ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | وقولوا حطة وادخلوا الباب سجدا نغفر لكم خطيئاتكم | ١٦١ | ك الأعراف | ٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| يَحْطِمَنَّكُمْ | : ادخلوا مساكنكم لا يحطمنكم سليمان وجنوده | ١٨ | ك النمل | ٢٧ |
| حُطَامًا | : ثم يهيج فتراه مصفرا ثم يجعله حطاما... ... ... | ٢١ | ك الزمر | ٣٩ |
| (٣) | لو نشاء لجعلناه حطاما فظلتم تفكهون... ... ... ... | ٦٥ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | ثم يهيج فتراه مصفرا ثم يكون حطاما ... ... ... | ٢٠ | م الحديد | ٥٧ |
| الْحُطَمَةِ | : كلا لينبذن في الحطمة... ... ... ... ... ... | ٤ | ك الهمزة | ١٠٤ |
| (٢) | وما أدراك ما الحطمة ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك « | ١٠٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| مَحْظُورًا | : وما كان عطاء ربك محظورا ... ... ... ... | ٢٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| الْمُحْتَظِرِ | : إنا أرسلنا عليهم صيحة واحدة فكانوا كهشيم المحتظر | ٣١ | ك القمر | ٥٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| حَظِّ | : يوصيكم الله في أولادكم للذكر مثل حظ الأنثيين | ١١ | م النساء | ٤ |
| (٤) | وإن كانوا إخوة رجالا ونساء فللذكر مثل حظ الأنثيين | ١٧٦ | م « | ٤ |
| | ياليت لنا مثل ما أوتي قارون إنه لذو حظ عظيم | ٧٩ | ك القصص | ٢٨ |
| | وما يلقاها إلا الذين صبروا وما يلقاها إلا ذو حظ عظيم | ٣٥ | ك فصلت | ٤١ |
| حَظًّا | : يريد الله ألا يجعل لهم حظا في الآخرة ولهم عذاب عظيم | ١٧٦ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | يحرفون الكلم عن مواضعه ونسوا حظا مما ذكروا به | ١٣ | م المائدة | ٥ |
| | أخذنا ميثاقهم فنسوا حظا مما ذكروا به ... ... | ١٤ | م « | ٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| حَفَدَةً | : وجعل لكم من أزواجكم بنين وحفدة ... ... ... | ٧٢ | ك النحل | ١٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| حُفْرَةٍ | : وكنتم على شفا حفرة من النار فأنقذكم منها ... ... | ١٠٣ | م آل عمران | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الْحَافِرَةِ | : يقولون أئنا لمردودون في الحافرة ... ... ... | ١٠ | ك النازعات | ٧٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| حَفِظَ | : فالصالحات قانتات حافظات للغيب بما حفظ الله | ٣٤ | م النساء | ٤ |
| حَفِظْنَاهَا | : وحفظناها من كل شيطان رجيم ... ... ... | ١٧ | ك الحجر | ١٥ |
| نَحْفَظُ | : ونمير أهلنا ونحفظ أخانا ونزداد كيل بعير... ... | ٦٥ | ك يوسف | ١٢ |
| يَحْفَظْنَ | : وقل للمؤمنات يغضضن من أبصارهن ويحفظن فروجهن ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣١ | م النور | ٢٤ |
| يَحْفَظُوا | : قل للمؤمنين يغضوا من أبصارهم ويحفظوا فروجهم | ٣٠ | م « | ٢٤ |
| يَحْفَظُونَهُ | : له معقبات من بين يديه ومن خلفه يحفظونه من أمر الله ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | م الرعد | ١٣ |
| احْفَظُوا | : ذلك كفارة أيمانكم إذا حلفتم واحفظوا أيمانكم | ٨٩ | م المائدة | ٥ |
| يُحَافِظُونَ | : وهم على صلاتهم يحافظون ... ... ... ... | ٩٢ | ك الأنعام | ٦ |
| (٣) | والذين هم على صلواتهم يحافظون ... ... ... ... | ٩ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | والذين هم على صلاتهم يحافظون ... ... ... ... | ٣٤ | ك المعارج | ٧٠ |
| حَافِظُوا | : حافظوا على الصلوات والصلاة الوسطى ... ... | ٢٣٨ | م البقرة | ٢ |
| اسْتُحْفِظُوا | : بما استحفظوا من كتاب الله وكانوا عليه شهداء | ٤٤ | م المائدة | ٥ |
| حِفْظًا | : وحفظا من كل شيطان مارد ... ... ... ... ... | ٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| (٢) | وزينا السماء الدنيا بمصابيح وحفظا ... ... ... ... | ١٢ | ك فصلت | ٤١ |
| حِفْظُهُمَا | : وسع كرسيه السموات والأرض ولا يؤده حفظهما | ٢٥٥ | م البقرة | ٢ |
| حَافِظٌ | : إن كل نفس لما عليها حافظ ... ... ... ... ... | ٤ | ك الطارق | ٨٦ |
| حَافِظًا | : فالله خير حافظا وهو أرحم الراحمين ... ... ... | ٦٤ | ك يوسف | ١٢ |
| حَافِظَاتٌ | : فالصالحات قانتات حافظات للغيب بما حفظ الله | ٣٤ | م النساء | ٤ |
| (٢) | والحافظين فروجهم والحافظات والذاكرين الله كثيرا والذاكرات أعد الله لهم مغفرة وأجرا عظيما | ٣٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| حَافِظُونَ | : والناهون عن المنكر والحافظون لحدود الله | ١١٢ | م التوبة | ٩ |
| (٦) | أرسله معنا غدا يرتع ويلعب وإنا له لحافظون... ... | ١٢ | ك يوسف | ١٢ |
| | منع منا الكيل فأرسل معنا أخانا نكتل وإنا له لحافظون | ٦٣ | ك « | ١٢ |
| | إنا نحن نزلنا الذكر وإنا له لحافظون... ... ... ... | ٩ | ك الحجر | ١٥ |
| | والذين هم لفروجهم حافظون ... ... ... ... ... | ٥ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | والذين هم لفروجهم حافظون ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك المعارج | ٧٠ |
| حَافِظِينَ | : وما شهدنا إلا بما علمنا وما كنا للغيب حافظين | ٨١ | ك يوسف | ١٢ |
| (٥) | ويعملون عملا دون ذلك وكنا لهم حافظين ... ... | ٨٢ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | والحافظين فروجهم والحافظات والذاكرين الله كثيرا والذاكرات أعد الله لهم مغفرة وأجرا عظيما | ٣٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وإن عليكم لحافظين . كراما كاتبين ... ... ... ... | ١٠ | ك الانفطار | ٨٢ |
| | وما أرسلوا عليهم حافظين ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك المطففين | ٨٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| حَفَظَةً: | وهو القاهر فوق عباده ويرسل عليكم حفظة | ٦١ | ك الأنعام | ٦ |
| حَفِيظٌ: | فمن أبصر فلنفسه ومن عمى فعليها وما أنا عليكم بحفيظ | ١٠٤ | ك « | ٦ |
| (٨) | إن ربى على كل شىء حفيظ ... ... ... ... ... | ٥٧ | ك هـود | ١١ |
| | بقيت الله خير لكم إن كنتم مؤمنين وما أنا عليكم بحفيظ | ٨٦ | ك « | ١١ |
| | قال آجعلنى على خزائن الأرض إنى حفيظ عليم | ٥٥ | ك يوسف | ١٢ |
| | وربك على كل شىء حفيظ ... ... ... ... ... | ٢١ | ك سبأ | ٣٤ |
| | والذين آتخذوا من دونه أولياء الله حفيظ عليهم | ٦ | ك الشورى | ٤٢ |
| | قد علمنا ما تنقص الأرض منهم وعندنا كتاب حفيظ | ٤ | ك قٓ | ٥٠ |
| | هذا ما توعدون لكل أواب حفيظ ... ... ... ... | ٣٢ | ك « | ٥٠ |
| حَفِيظًا: | ومن تولى فما أرسلناك عليهم حفيظا ... ... ... | ٨٠ | م النساء | ٤ |
| (٣) | ولو شاء الله ما أشركوا وما جعلناك عليهم حفيظا | ١٠٧ | ك الأنعام | ٦ |
| | فإن أعرضوا فما أرسلناك عليهم حفيظا ... ... ... | ٤٨ | ك الشورى | ٤٢ |
| مَحْفُوظٌ: | بل هو قرآن مجيد . فى لوح محفوظ ... ... | ٢٢ | ك البروج | ٨٥ |
| مَحْفُوظًا: | وجعلنا السماء سقفا محفوظا وهم عن آياتها معرضون | ٣٢ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| حَفَفْنَاهُمَا: | جعلنا لأحدهما جنتين من أعناب وحففناهما بنخل | ٣٢ | ك الكهف | ١٨ |
| حَافِّينَ: | وترى الملائكة حافين من حول العرش ... ... | ٧٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| فَيُحْفِكُمْ: | إن يسئلكوها فيحفكم تبخلوا ويخرج أضغانكم | ٣٧ | م محمد | ٤٧ |
| حَفِيٌّ: | يسئلونك كأنك حفى عنها قل إنما علمها عند الله | ١٨٧ | ك الأعراف | ٧ |
| حَفِيًّا: | قال سلام عليك سأستغفر لك ربى إنه كان بى حفيا | ٤٧ | ك مريم | ١٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| حُقُبًا: | لا أبرح حتى أبلغ مجمع البحرين أو أمضى حقبا | ٦٠ | ك الكهف | ١٨ |
| أَحْقَابًا: | للطاغين مآبا . لابثين فيها أحقابا ... ... ... | ٢٣ | ك النبأ | ٧٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| بِالْأَحْقَافِ: | وآذكر أخا عاد إذ أنذر قومه بالأحقاف | ٢١ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| حَقَّ: | فريقا هدى وفريقا حق عليهم الضلالة ... ... ... | ٣٠ | ك الأعراف | ٧ |
| (١٢) | أمرنا مترفيها ففسقوا فيها فحق عليها القول فدمرناها تدميرا | ١٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وكثير حق عليه العذاب ... ... ... ... ... ... | ١٨ | م الحج | ٢٢ |
| | قال الذين حق عليهم القول ربنا هؤلاء الذين أغوينا | ٦٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | ولكن حق القول منى لأملأن جهنم ... ... ... | ١٣ | ك السجدة | ٣٢ |
| | لقد حق القول على أكثرهم فهم لا يؤمنون ... ... | ٧ | ك يسٓ | ٣٦ |
| | فحق علينا قول ربنا إنا لذائقون ... ... ... ... | ٣١ | ك الصافات | ٣٧ |
| | إن كل إلا كذب الرسل فحق عقاب ... ... ... ... | ١٤ | ك صٓ | ٣٨ |
| | أفمن حق عليه كلمة العذاب أفأنت تنقذ من فى النار | ١٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وحق عليهم القول فى أمم قد خلت من قبلهم ... ... | ٢٥ | ك فصلت | ٤١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| حَقَّ: | أولئك الذين حق عليهم القول فى أمم قد خلت من قبلهم | ١٨ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | كل كذب الرسل فحق وعيد ... ... ... ... ... | ١٤ | ك قٓ | ٥٠ |
| حَقَّتْ: | كذلك حقت كلمة ربك على الذين فسقوا | ٣٣ | ك يونس | ١٠ |
| (٥) | إن الذين حقت عليهم كلمة ربك لا يؤمنون ... ... | ٩٦ | م « | ١٠ |
| | فمنهم من هدى الله ومنهم من حقت عليه الضلالة | ٣٦ | ك النحل | ١٦ |
| | قالوا بلى ولكن حقت كلمة العذاب على الكافرين | ٧١ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وكذلك حقت كلمة ربك على الذين كفروا ... ... | ٦ | ك غافر | ٤٠ |
| يَحِقَّ: | لينذر من كان حيا ويحق القول على الكافرين | ٧٠ | ك يسٓ | ٣٦ |
| حُقَّتْ: | إذا السماء آنشقت . وأذنت لربها وحقت | ٢ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| (٢) | وألقت ما فيها وتخلت . وأذنت لربها وحقت | ٥ | ك « | ٨٤ |
| يُحِقُّ: | ويريد الله أن يحق الحق بكلماته ويقطع دابر الكافرين | ٧ | م الأنفال | ٨ |
| (٤) | ليحق الحق ويبطل الباطل ولو كره المجرمون ... ... | ٨ | م « | ٨ |
| | ويحق الله الحق بكلماته ولو كره المجرمون ... ... | ٨٢ | ك يونس | ١٠ |
| | ويمح الله الباطل ويحق الحق بكلماته إنه عليم بذات الصدور | ٢٤ | م الشورى | ٤٢ |
| اسْتَحَقَّ: | فآخران يقومان مقامهما من الذين آستحق | | | |
| | عليهم الأوليان ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٧ | م المائدة | ٥ |
| اسْتَحَقَّا: | فإن عثر على أنهما آستحقا إثما فآخران يقومان | | | |
| | مقامهما ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٧ | م « | ٥ |
| الْحَقَّ: | فأما الذين آمنوا فيعلمون أنه الحق من ربهم | ٢٦ | م البقرة | ٢ |
| (٢٢٧) | ولا تلبسوا الحق بالباطل ... ... ... ... ... | ٤٢ | م « | ٢ |
| | وتكتموا الحق وأنتم تعلمون ... ... ... ... ... | ٤٢ | م « | ٢ |
| | ويقتلون النبيين بغير الحق ... ... ... ... ... | ٦١ | م « | ٢ |
| | قالوا الآن جئت بالحق فذبحوها وما كادوا يفعلون | ٧١ | م « | ٢ |
| | ويكفرون بما وراءه وهو الحق مصدقا لما معهم | ٩١ | م « | ٢ |
| | حسدا من عند أنفسهم من بعد ما تبين لهم الحق | ١٠٩ | م « | ٢ |
| | إنا أرسلناك بالحق بشيرا ونذيرا ... ... ... ... | ١١٩ | م « | ٢ |
| | الذين آتيناهم الكتاب يتلونه حق تلاوته أولئك يؤمنون به | ١٢١ | م « | ٢ |
| | وإن الذين أوتوا الكتاب ليعلمون أنه الحق من ربهم | ١٤٤ | م « | ٢ |
| | وإن فريقا منهم ليكتمون الحق وهم يعلمون ... ... | ١٤٦ | م « | ٢ |
| | الحق من ربك فلا تكونن من الممترين ... ... ... | ١٤٧ | م « | ٢ |
| | وإنه لحق من ربك وما الله بغافل عما تعملون | ١٤٩ | م « | ٢ |
| | ذلك بأن الله نزل الكتاب بالحق ... ... ... ... | ١٧٦ | م « | ٢ |
| | وأنزل معهم الكتاب بالحق ليحكم بين الناس فيما آختلفوا فيه | ٢١٣ | م « | ٢ |
| | فهدى الله الذين آمنوا لما آختلفوا فيه من الحق بإذنه | ٢١٣ | م « | ٢ |
| | تلك آيات الله نتلوها عليك بالحق وإنك لمن المرسلين | ٢٥٢ | م « | ٢ |
| | فليكتب وليملل الذى عليه الحق وليتق الله ربه | ٢٨٢ | م « | ٢ |
| | فإن كان الذى عليه الحق سفيها أو ضعيفا أو لا يستطيع | | | |
| | أن يمل هو فليملل وليه بالعدل ... ... ... ... | ٢٨٢ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الحَقُّ: | نزل عليك الكتاب بالحق مصدقا لما بين يديه | ٣ | م آل عمران | ٣ |
| | و يقتلون النبيين بغير حق و يقتلون الذين يأمرون | | | |
| | بالقسط من الناس فبشرهم بعذاب أليم ... ... | ٢١ | م » | ٣ |
| | الحق من ربك فلا تكن من الممترين ... ... ... | ٦٠ | م » | ٣ |
| | إن هذا لهو القصص الحق... ... ... ... ... ... | ٦٢ | م » | ٣ |
| | يأهل الكتاب لم تلبسون الحق بالباطل ... ... ... | ٧١ | م » | ٣ |
| | وتكتمون الحق وأنتم تعلمون ... ... ... ... ... | ٧١ | م » | ٣ |
| | كيف يهدى الله قوما كفروا بعد إيمانهم وشهدوا | | | |
| | أن الرسول حق ... ... ... ... ... ... ... | ٨٦ | م » | ٣ |
| | يأيها الذين ءامنوا آتقوا الله حق تقاته... ... ... | ١٠٢ | م » | ٣ |
| | تلك ءايات الله نتلوها عليك بالحق ... ... ... ... | ١٠٨ | م » | ٣ |
| | ذلك بأنهم كانوا يكفرون بآيات الله و يقتلون | | | |
| | الأنبياء بغير حق ... ... ... ... ... ... ... | ١١٢ | م » | ٣ |
| | وطائفة قد أهمتهم أنفسهم يظنون بالله غير الحق | ١٥٤ | م » | ٣ |
| | سنكتب ما قالوا وقتلهم الأنبياء بغير حق ... ... | ١٨١ | م » | ٣ |
| | إنا أنزلنا إليك الكتاب بالحق لتحكم بين الناس بما أراك الله | ١٠٥ | م النساء | ٤ |
| | فبما نقضهم ميثاقهم وكفرهم بآيات الله وقتلهم | | | |
| | الأنبياء بغير حق ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٥ | م » | ٤ |
| | يأيها الناس قد جاءكم الرسول بالحق من ربكم | ١٧٠ | م » | ٤ |
| | يأهل الكتاب لا تغلوا فى دينكم ولا تقولوا على الله إلا الحق | ١٧١ | م » | ٤ |
| | وآتل عليهم نبأ آبنى ءادم بالحق... ... ... ... ... | ٢٧ | م المائدة | ٥ |
| | وأنزلنا إليك الكتاب بالحق مصدقا لما بين يديه من الكتاب | ٤٨ | م » | ٥ |
| | ولا تتبع أهواءهم عما جاءك من الحق ... ... ... | ٤٨ | م » | ٥ |
| | قل يأهل الكتاب لا تغلوا فى دينكم غير الحق | ٧٧ | م » | ٥ |
| | ترى أعينهم تفيض من الدمع مما عرفوا من الحق | ٨٣ | م » | ٥ |
| | ومالنا لا نؤمن بالله وما جاءنا من الحق ... ... | ٨٤ | م » | ٥ |
| | قال سبحانك ما يكون لى أن أقول ماليس لى بحق | ١١٦ | م » | ٥ |
| | فقد كذبوا بالحق لما جاءهم ... ... ... ... ... | ٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | ولو ترى إذ وقفوا على ربهم قال أليس هذا بالحق | ٣٠ | ك » | ٦ |
| | إن الحكم إلا لله يقص الحق وهو خير الفاصلين | ٥٧ | ك » | ٦ |
| | ثم ردوا إلى الله مولاهم الحق ألا له الحكم ... ... | ٦٢ | ك » | ٦ |
| | وكذب به قومك وهو الحق قل لست عليكم بوكيل | ٦٦ | ك » | ٦ |
| | وهو الذى خلق السموات والأرض بالحق ... ... | ٧٣ | ك » | ٦ |
| | و يوم يقول كن فيكون قوله الحق ... ... ... ... | ٧٣ | ك » | ٦ |
| | وما قدروا الله حق قدره ... ... ... ... ... ... | ٩١ | م » | ٦ |
| | اليوم تجزون عذاب الهون بما كنتم تقولون على الله غير الحق | ٩٣ | م » | ٦ |
| | والذين ءاتيناهم الكتاب يعلمون أنه منزل من ربك بالحق | ١١٤ | م » | ١ |
| | ولا تقتلوا النفس التى حرم الله إلا بالحق ... ... | ١٥١ | م » | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الحَقُّ: | والوزن يومئذ الحق ... ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | قل إنما حرم ربى الفواحش ما ظهر منها وما بطن | | | |
| | والإثم والبغى بغير الحق ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك » | ٧ |
| | لقد جاءت رسل ربنا بالحق ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك » | ٧ |
| | يقول الذين نسوه من قبل قد جاءت رسل ربنا بالحق | ٥٣ | ك » | ٧ |
| | ربنا آفتح بيننا و بين قومنا بالحق وأنت خير الفاتحين | ٨٩ | ك » | ٧ |
| | حقيق على أن لا أقول على الله إلا الحق ... ... | ١٠٥ | ك » | ٧ |
| | فوقع الحق وبطل ما كانوا يعملون ... ... ... ... | ١١٨ | ك » | ٧ |
| | سأصرف عن ءاياتى الذين يتكبرون فى الأرض بغير الحق | ١٤٦ | ك » | ٧ |
| | ومن قوم موسى أمة يهدون بالحق و به يعدلون | ١٥٩ | ك » | ٧ |
| | ألم يؤخذ عليهم ميثاق الكتاب أن لا يقولوا على | | | |
| | الله إلا الحق ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٦٩ | م » | ٧ |
| | وممن خلقنا أمة يهدون بالحق و به يعدلون ... ... | ١٨١ | ك » | ٧ |
| | كما أخرجك ربك من بيتك بالحق ... ... ... ... | ٥ | م الأنفال | ٨ |
| | يجادلونك فى الحق بعد ما تبين كأنما يساقون إلى الموت | ٦ | م » | ٨ |
| | و يريد الله أن يحق الحق بكلماته و يقطع دابر الكافرين | ٧ | م » | ٨ |
| | ليحق الحق و يبطل الباطل ولو كره المجرمون ... ... | ٨ | م » | ٨ |
| | و إذ قالوا اللهم إن كان هذا هو الحق من عندك | | | |
| | فأمطر علينا حجارة من السماء ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك » | ٨ |
| | ولا يدينون دين الحق من الذين أوتوا الكتاب | ٢٩ | م التوبة | ٩ |
| | هو الذى أرسل رسوله بالهدى ودين الحق ... ... | ٣٣ | م » | ٩ |
| | لقد آبتغوا الفتنة من قبل وقلبوا لك الأمور حتى جاء الحق | ٤٨ | م » | ٩ |
| | ما خلق الله ذلك إلا بالحق يفصل الآيات لقوم يعلمون | ٥ | ك يونس | ١٠ |
| | فلما أنجاهم إذا هم يبغون فى الأرض بغير الحق | ٢٣ | ك » | ١٠ |
| | وردوا إلى الله مولاهم الحق وضل عنهم ما كانوا يفترون | ٣٠ | ك » | ١٠ |
| | فذلكم الله ربكم الحق ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك » | ١٠ |
| | فماذا بعد الحق إلا الضلال فأنى تصرفون ... ... | ٣٢ | ك » | ١٠ |
| | قل هل من شركائكم من يهدى إلى الحق ... ... | ٣٥ | ك » | ١٠ |
| | قل الله يهدى للحق... ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك » | ١٠ |
| | أفمن يهدى إلى الحق أحق أن يتبع أمن لا يهدى إلا أن يهدى | ٣٥ | ك » | ١٠ |
| | إن الظن لا يغنى من الحق شيئا إن الله عليم بما يفعلون | ٣٦ | ك » | ١٠ |
| | و يستنبئونك أحق هو ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك » | ١٠ |
| | قل إى و ربى إنه لحق وما أنتم بمعجزين ... ... | ٥٣ | ك » | ١٠ |
| | ألا إن وعد الله حق ولكن أكثرهم لا يعلمون | ٥٥ | ك » | ١٠ |
| | فلما جاءهم الحق من عندنا قالوا إن هذا لسحر مبين | ٧٦ | ك » | ١٠ |
| | قال موسى أتقولون للحق لما جاءكم أسحر هذا | ٧٧ | ك » | ١٠ |
| | و يحق الله الحق بكلماته ولو كره المجرمون ... ... | ٨٢ | ك » | ١٠ |
| | لقد جاءك الحق من ربك فلا تكونن من الممترين | ٩٤ | م » | ١٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الحَقّ: | قل يأيها الناس قد جاءكم الحق من ربكم ... ... | ١٠٨ | ك يونس | ١٠ |
| | فلا تك فى مرية منه إنه الحق من ربك ... ... | ١٧ | م هود | ١١ |
| | رب إن آبنى من أهلى وإن وعدك الحق ... ... | ٤٥ | ك « | ١١ |
| | قالوا لقد علمت ما لنا فى بناتك من حق... ... | ٧٩ | ك « | ١١ |
| | وجاءك فى هذه الحق وموعظة وذكرى للمؤمنين | ١٢٠ | ك « | ١١ |
| | قالت آمرأة العزيز الآن حصحص الحق ... ... | ٥١ | ك يوسف | ١٢ |
| | والذى أنزل إليك من ربك الحق ... ... ... ... | ١ | م الرعد | ١٣ |
| | له دعوة الحق ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٤ | م « | ١٣ |
| | كذلك يضرب الله الحق والباطل ... ... ... ... | ١٧ | م « | ١٣ |
| | أفمن يعلم أنما أنزل إليك من ربك الحق كمن هو أعمى | ١٩ | م « | ١٣ |
| | ألم تر أن الله خلق السموات والأرض بالحق | ١٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وقال الشيطان لما قضى الأمر إن الله وعدكم وعد الحق | ٢٢ | ك « | ١٤ |
| | ما ننزل الملائكة إلا بالحق وما كانوا إذا منظرين | ٨ | ك الحجر | ١٥ |
| | قالوا بشرناك بالحق فلا تكن من القانطين ... ... | ٥٥ | ك « | ١٥ |
| | وأتيناك بالحق وإنا لصادقون ... ... ... ... ... | ٦٤ | ك « | ١٥ |
| | وما خلقنا السموات والأرض وما بينهما إلا بالحق | ٨٥ | ك « | ١٥ |
| | خلق السموات والأرض بالحق تعالى عما يشركون | ٣ | ك النحل | ١٦ |
| | قل نزله روح القدس من ربك بالحق ليثبت الذين ءامنوا | ١٠٢ | ك « | ١٦ |
| | ولا تقتلوا النفس التى حرم الله إلا بالحق ... ... ... | ٣٣ | م الإسراء | ١٧ |
| | وقل جاء الحق وزهق الباطل إن الباطل كان زهوقا | ٨١ | ك « | ١٧ |
| | وبالحق أنزلناه ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٥ | ك « | ١٧ |
| | وبالحق نزل وما أرسلناك إلا مبشرا ونذيرا ... ... | ١٠٥ | ك « | ١٧ |
| | نحن نقص عليك نبأهم بالحق ... ... ... ... ... | ١٣ | ك الكهف | ١٨ |
| | وكذلك أعثرنا عليهم ليعلموا أن وعد الله حق... ... | ٢١ | ك « | ١٨ |
| | وقل الحق من ربكم فمن شاء فليؤمن ومن شاء فليكفر | ٢٩ | ك « | ١٨ |
| | هنالك الولاية لله الحق هو خير ثوابا وخير عقبا | ٤٤ | ك « | ١٨ |
| | ويجادل الذين كفروا بالباطل ليدحضوا به الحق | ٥٦ | ك « | ١٨ |
| | ذلك عيسى آبن مريم قول الحق الذى فيه يمترون | ٣٤ | ك مريم | ١٩ |
| | فتعالى الله الملك الحق ... ... ... ... ... ... | ١١٤ | ك طه | ٢٠ |
| | بل نقذف بالحق على الباطل فيدمغه فإذا هو زاهق | ١٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | بل أكثرهم لا يعلمون الحق فهم معرضون ... ... | ٢٤ | ك « | ٢١ |
| | قالوا أجئتنا بالحق أم أنت من اللاعبين ... ... | ٥٥ | ك « | ٢١ |
| | وآقترب الوعد الحق فإذا هى شاخصة أبصار الذين كفروا | ٩٧ | ك « | ٢١ |
| | قال رب أحكم بالحق وربنا الرحمن المستعان على ما تصفون | ١١٢ | ك « | ٢١ |
| | ذلك بأن الله هو الحق وأنه يحيى الموتى... ... ... | ٦ | م الحج | ٢٢ |
| | الذين أخرجوا من ديارهم بغير حق إلا أن يقولوا ربنا الله | ٤٠ | م « | ٢٢ |
| | وليعلم الذين أوتوا العلم أنه الحق من ربك فيؤمنوا به | ٥٤ | م « | ٢٢ |
| | ذلك بأن الله هو الحق وأن ما يدعون من دونه هو الباطل | ٦٢ | م الحج | ٢٢ |
| | ما قدروا الله حق قدره إن الله لقوى عزيز | ٧٤ | م « | ٢٢ |
| | وجاهدوا فى الله حق جهاده ... ... ... ... ... | ٧٨ | م « | ٢٢ |
| | فأخذتهم الصيحة بالحق فجعلناهم غثاء ... ... ... | ٤١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ولا نكلف نفسا إلا وسعها ولدينا كتاب ينطق بالحق | ٦٢ | ك « | ٢٣ |
| | أم يقولون به جنة بل جاءهم بالحق... ... ... ... | ٧٠ | ك « | ٢٣ |
| | وأكثرهم للحق كارهون ... ... ... ... ... ... | ٧٠ | ك « | ٢٣ |
| | ولو آتبع الحق أهواءهم لفسدت السموات والأرض ومن فيهن ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧١ | ك « | ٢٣ |
| | بل أتيناهم بالحق وإنهم لكاذبون ... ... ... ... | ٩٠ | ك « | ٢٣ |
| | فتعالى الله الملك الحق لا إله إلا هو رب العرش الكريم | ١١٦ | ك « | ٢٣ |
| | يومئذ يوفيهم الله دينهم الحق ... ... ... ... ... | ٢٥ | م النور | ٢٤ |
| | ويعلمون أن الله هو الحق المبين ... ... ... ... | ٢٥ | م « | ٢٤ |
| | وإن يكن لهم الحق يأتوا إليه مذعنين ... ... ... | ٤٩ | م « | ٢٤ |
| | الملك يومئذ الحق للرحمن وكان يوما على الكافرين عسيرا | ٢٦ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ولا يأتونك بمثل إلا جئناك بالحق وأحسن تفسيرا | ٣٣ | ك « | ٢٥ |
| | ولا يقتلون النفس التى حرم الله إلا بالحق ... ... | ٦٨ | م « | ٢٥ |
| | فتوكل على الله إنك على الحق المبين ... ... ... | ٧٩ | ك النمل | ٢٧ |
| | نتلوا عليك من نبإ موسى وفرعون بالحق لقوم يؤمنون | ٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | ولكن أكثرهم لا يعلمون | ١٣ | ك « | ٢٨ |
| | وآستكبر هو وجنوده فى الأرض بغير الحق ... ... | ٣٩ | ك « | ٢٨ |
| | فلما جاءهم الحق من عندنا قالوا لولا أوتى مثل ما أوتى موسى | ٤٨ | ك « | ٢٨ |
| | وإذا يتلى عليهم قالوا ءامنا به إنه الحق من ربنا | ٥٣ | م « | ٢٨ |
| | فعلموا أن الحق لله وضل عنهم ما كانوا يفترون | ٧٥ | ك « | ٢٨ |
| | خلق الله السموات والأرض بالحق إن فى ذلك لآية للمؤمنين | ٤٤ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ومن أظلم ممن آفترى على الله كذبا أو كذب بالحق لما جاءه | ٦٨ | ك « | ٢٩ |
| | ما خلق الله السموات والأرض وما بينهما إلا بالحق | ٨ | ك الروم | ٣٠ |
| | فاصبر إن وعد الله حق ولا يستخفنك الذين لا يوقنون | ٦٠ | ك « | ٣٠ |
| | ذلك بأن الله هو الحق وأن ما يدعون من دونه الباطل | ٣٠ | ك لقمان | ٣١ |
| | إن وعد الله حق فلا تغرنكم الحياة الدنيا ... ... | ٣٣ | ك « | ٣١ |
| | بل هو الحق من ربك لتنذر قوما ما أتاهم من نذير من قبلك | ٣ | ك السجدة | ٣٢ |
| | والله يقول الحق وهو يهدى السبيل... ... ... ... | ٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | والله لا يستحيى من الحق ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | م « | ٣٣ |
| | ويرى الذين أوتوا العلم الذى أنزل إليك من ربك هو الحق | ٦ | م سبأ | ٣٤ |
| | حتى إذا فزع عن قلوبهم قالوا ماذا قال ربكم قالوا الحق | ٢٣ | ك « | ٣٤ |
| | قل يجمع بيننا ربنا ثم يفتح بيننا بالحق وهو الفتاح العليم | ٢٦ | ك « | ٣٤ |
| | وقال الذين كفروا للحق لما جاءهم إن هذا إلا سحر مبين | ٤٣ | ك « | ٣٤ |
| | قل إن ربى يقذف بالحق علام الغيوب ... ... ... | ٤٨ | ك « | ٣٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الحَقُّ | قل جاء الحق وما يبدئ الباطل وما يعيد... ... ... | ٤٩ | ك سبأ | ٣٤ |
| | يأيها الناس إن وعد الله حق فلا تغرنكم الحياة الدنيا | ٥ | ك فاطر | ٣٥ |
| | إنا أرسلناك بالحق بشيرا ونذيرا ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك « | ٣٥ |
| | والذى أوحينا إليك من الكتاب هو الحق ... ... | ٣١ | ك « | ٣٥ |
| | بل جاء بالحق وصدق المرسلين ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| | خصمان بغى بعضنا على بعض فاحكم بيننا بالحق | ٢٢ | ك ص | ٣٨ |
| | يا داود إنا جعلناك خليفة فى الأرض فاحكم بين | | | |
| | الناس بالحق ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك « | ٣٨ |
| | إن ذلك لحق تخاصم أهل النار... ... ... ... ... | ٦٤ | ك « | ٣٨ |
| | قال فالحق... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨٤ | ك « | ٣٨ |
| | والحق أقول . لأملأن جهنم منك وممن تبعك منهم أجمعين | ٨٤ | ك « | ٣٨ |
| | إنا أنزلنا إليك الكتاب بالحق فاعبد الله مخلصا له الدين | ٢ | ك الزمر | ٣٩ |
| | خلق السموات والأرض بالحق ... ... ... ... | ٥ | ك « | ٣٩ |
| | إنا أنزلنا عليك الكتاب للناس بالحق ... ... ... ... | ٤١ | ك « | ٣٩ |
| | وما قدروا الله حق قدره والأرض جميعا قبضته | | | |
| | يوم القيامة ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦٧ | ك « | ٣٩ |
| | وقضى بينهم بالحق وهم لا يظلمون ... ... ... ... | ٦٩ | ك « | ٣٩ |
| | وقضى بينهم بالحق وقيل الحمد لله رب العالمين | ٧٥ | ك « | ٣٩ |
| | وجادلوا بالباطل ليدحضوا به الحق فأخذتهم | ٥ | ك غافر | ٤٠ |
| | والله يقضى بالحق والذين يدعون من دونه لا يقضون بشىء | ٢٠ | ك « | ٤٠ |
| | فلما جاءهم بالحق من عندنا قالوا اقتلوا أبناء الذين | | | |
| | آمنوا معه... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك « | ٤٠ |
| | فاصبر إن وعد الله حق واستغفر لذنبك ... ... ... | ٥٥ | ك « | ٤٠ |
| | ذلكم بما كنتم تفرحون فى الأرض بغير الحق ... | ٧٥ | ك « | ٤٠ |
| | فاصبر إن وعد الله حق فإما نرينك بعض الذى | | | |
| | نعدهم أو نتوفينك فإلينا يرجعون ... ... ... | ٧٧ | ك « | ٤٠ |
| | فإذا جاء أمر الله قضى بالحق وخسر هنالك المبطلون | ٧٨ | ك « | ٤٠ |
| | فأما عاد فاستكبروا فى الأرض بغير الحق ... ... | ١٥ | ك فصلت | ٤١ |
| | سنريهم آياتنا فى الآفاق وفى أنفسهم حتى يتبين لهم أنه الحق | ٥٣ | ك « | ٤١ |
| | الله الذى أنزل الكتاب بالحق والميزان .. ... ... | ١٧ | ك الشورى | ٤٢ |
| | والذين آمنوا مشفقون منها ويعلمون أنها الحق | ١٨ | ك « | ٤٢ |
| | ويمح الله الباطل ويحق الحق بكلماته ... ... ... | ٢٤ | م « | ٤٢ |
| | إنما السبيل على الذين يظلمون الناس ويبغون | | | |
| | فى الأرض بغير الحق ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك « | ٤٢ |
| | بل متعت هؤلاء وآباءهم حتى جاءهم الحق ورسول مبين | ٢٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ولما جاءهم الحق قالوا هذا سحر وإنا به كافرون | ٣٠ | ك « | ٤٣ |
| | لقد جئناكم بالحق ... ... ... ... ... ... ... | ٧٨ | ك « | ٤٣ |
| | ولكن أكثركم للحق كارهون... ... ... ... ... | ٧٨ | ك « | ٤٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الحَقُّ | ولا يملك الذين يدعون من دونه الشفاعة إلا من | | | |
| | شهد بالحق وهم يعلمون ... ... ... ... ... | ٨٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ما خلقناهما إلا بالحق ولكن أكثرهم لا يعلمون | ٣٩ | ك الدخان | ٤٤ |
| | تلك آيات الله نتلوها عليك بالحق... ... ... ... | ٦ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | وخلق الله السموات والأرض بالحق ... ... ... | ٢٢ | ك « | ٤٥ |
| | هذا كتابنا ينطق عليكم بالحق... ... ... ... ... | ٢٩ | ك « | ٤٥ |
| | وإذا قيل إن وعد الله حق والساعة لا ريب فيها | | | |
| | قلتم ما ندرى ما الساعة ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك « | ٤٥ |
| | ما خلقنا السموات والأرض وما بينهما إلا بالحق | ٣ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | قال الذين كفروا للحق لما جاءهم هذا سحر مبين | ٧ | ك « | ٤٦ |
| | وهما يستغيثان الله ويلك آمن إن وعد الله حق | ١٧ | ك « | ٤٦ |
| | فاليوم تجزون عذاب الهون بما كنتم تستكبرون | | | |
| | فى الأرض بغير الحق ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك « | ٤٦ |
| | إنا سمعنا كتابا أنزل من بعد موسى مصدقا لما بين | | | |
| | يديه يهدى إلى الحق ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك « | ٤٦ |
| | ويوم يعرض الذين كفروا على النار أليس هذا بالحق | ٣٤ | ك « | |
| | وآمنوا بما نزل على محمد وهو الحق من ربهم كفر عنهم سيئاتهم | ٢ | م محمد | ٤٧ |
| | وأن الذين آمنوا آتبعوا الحق من ربهم ... ... ... | ٣ | م « | ٤٧ |
| | لقد صدق الله رسوله الرؤيا بالحق ... ... ... ... | ٢٧ | م الفتح | ٤٨ |
| | هو الذى أرسل رسوله بالهدى ودين الحق ... ... | ٢٨ | م « | ٤٨ |
| | بل كذبوا بالحق لما جاءهم فهم فى أمر مريج | ٥ | ك ق | ٥٠ |
| | وجاءت سكرة الموت بالحق ذلك ما كنت منه تحيد | ١٩ | ك « | ٥٠ |
| | يوم يسمعون الصيحة بالحق ذلك يوم الخروج | ٤٢ | ك « | ٥٠ |
| | وفى أموالهم حق للسائل والمحروم ... ... ... ... | ١٩ | ك الذاريات | ٥١ |
| | فورب السماء والأرض إنه لحق مثل ما أنكم تنطقون | ٢٣ | ك « | ٥١ |
| | وإن الظن لا يغنى من الحق شيئا ... ... ... ... | ٢٨ | ك النجم | ٥٣ |
| | إن هذا لهو حق اليقين . فسبح باسم ربك العظيم | ٩٥ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | ألم يأن للذين آمنوا أن تخشع قلوبهم لذكر الله | | | |
| | وما نزل من الحق ... ... ... ... ... ... ... | ١٦ | م الحديد | ٥٧ |
| | ما كتبناها عليهم إلا ابتغاء رضوان الله فما رعوها | | | |
| | حق رعايتها ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | م « | ٥٧ |
| | تلقون إليهم بالمودة وقد كفروا بما جاءكم من الحق | ١ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | هو الذى أرسل رسوله بالهدى ودين الحق ... ... | ٩ | م الصف | ٦١ |
| | خلق السموات والأرض بالحق وصوركم فأحسن صوركم | ٣ | م التغابن | ٦٤ |
| | وإنه لحق اليقين . فسبح باسم ربك العظيم ... ... | ٥١ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | والذين فى أموالهم حق معلوم . للسائل والمحروم | ٢٤ | ك المعارج | ٧٠ |
| | ذلك اليوم الحق فمن شاء اتخذ إلى ربه مآبا ... ... | ٣٩ | ك النبأ | ٧٨ |
| | إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات وتواصوا بالحق | | | |
| | وتواصوا بالصبر. ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك العصر | ١٠٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| حقًّا | : إن ترك خيرا الوصية للوالدين والأقربين بالمعروف | | | |
| (١٧) | حقا على المتقين ... ... ... ... ... ... | ١٨٠ | م البقـرة | ٢ |
| | وعلى المقتر قدره متاعا بالمعروف حقا على المحسنين | ٢٣٦ | م « | ٢ |
| | وللمطلقات متاع بالمعروف حقا على المتقين ... ... | ٢٤١ | م « | ٢ |
| | وعد الله حقا ومن أصدق من الله قيلا ... ... | ١٢٢ | م النسـاء | ٤ |
| | أولئك هم الكافرون حقا وأعتدنا للكافرين عذابا مهينا | ١٥١ | م « | ٤ |
| | أن قد وجدنا ما وعدنا ربنا حقا ... ... ... ... | ٤٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | فهل وجدتم ما وعد ربكم حقا قالوا نعم ... ... | ٤٤ | ك « | ٧ |
| | أولئك هم المؤمنون حقا لهم درجات عند ربهم | ٤ | م الأنفال | ٨ |
| | والذين ءاووا ونصروا أولئك هم المؤمنون حقا | ٧٤ | م « | ٨ |
| | وعدا عليه حقا فى التوراة والإنجيل والقرءان... ... | ١١١ | م التوبة | ٩ |
| | إليه مرجعكم جميعا وعد الله حقا إنه يبدؤا الخلق ثم يعيده | ٤ | ك يونس | ١٠ |
| | ثم ننجى رسلنا والذين ءامنوا كذلك حقا علينا ننج المؤمنين | ١٠٣ | ك « | ١٠ |
| | وقال يأبت هذا تأويل رؤياى من قبل قد جعلها ربى حقا | ١٠٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | بلى وعدا عليه حقا ولكن أكثر الناس لا يعلمون | ٣٨ | ك النحل | ١٦ |
| | فإذا جاء وعد ربى جعله دكاء وكان وعد ربى حقا | ٩٨ | م الكهف | ١٨ |
| | فانتقمنا من الذين أجرموا وكان حقا علينا نصر المؤمنين | ٤٧ | ك الروم | ٣٠ |
| | خالدين فيها وعد الله حقا وهو العزيز الحكيم... | ٩ | ك لقمان | ٣١ |
| حَقَّهُ | : كلوا من ثمره إذا أثمر وءاتوا حقه يوم حصاده | ١٤١ | م الأنعام | ٦ |
| (٣) | وءات ذا القربى حقه والمسكين وابن السبيل ولا تبذر تبذيرا | ٢٦ | م الإسراء | ١٧ |
| | فآت ذا القربى حقه والمسكين وابن السبيل ذلك | | | |
| | خير للذين يريدون وجه الله ... ... ... ... | ٣٨ | ك الروم | ٣٠ |
| أَحَقُّ | : وبعولتهن أحق بردهن فى ذلك إن أرادوا إصلاحا | ٢٢٨ | م البقـرة | ٢ |
| (١٠) | قالوا أنى يكون له الملك علينا ونحن أحق بالملك منه | ٢٤٧ | م « | ٢ |
| | فيقسمان بالله لشهادتنا أحق من شهادتهما ... ... | ١٠٧ | م المائدة | ٥ |
| | فأى الفريقين أحق بالأمن إن كنتم تعلمون... ... | ٨١ | ك الأنعام | ٦ |
| | أتخشونهم فالله أحق أن تخشوه إن كنتم مؤمنين | ١٣ | م التوبة | ٩ |
| | والله ورسوله أحق أن يرضوه إن كانوا مؤمنين... | ٦٢ | م « | ٩ |
| | لمسجد أسس على التقوى من أول يوم أحق أن تقوم فيه | ١٠٨ | م « | ٩ |
| | أفمن يهدى إلى الحق أحق أن يتبع أمن لا يهدى | | | |
| | إلا أن يهدى ... ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك يونس | ١٠ |
| | وتخشى الناس والله أحق أن تخشاه ... ... ... ... | ٣٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وألزمهم كلمة التقوى وكانوا أحق بها وأهلها ... | ٢٦ | م الفتح | ٤٨ |
| حَقِيقٌ | : حقيق على أن لا أقول على الله إلا الحق ... ... | ١٠٥ | ك الأعراف | ٧ |
| الْحَاقَّةُ | : الحاقة ... ... ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الحاقة | ٦٩ |
| (٣) | ما الحاقة... ... ... ... ... ... ... ... | ٢ | ك « | ٦٩ |
| | وما أدراك ما الحاقة ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك « | ٦٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| حَكَمَ | : قال الذين استكبروا إنا كل فيها إن الله قد حكم بين العباد | ٤٨ | ك غافـر | ٤٠ |
| حَكَمْتَ | : وإن حكمت فاحكم بينهم بالقسط ... ... ... | ٤٢ | م المائدة | ٥ |
| حَكَمْتُمْ | : إن الله يأمركم أن تؤدوا الأمانات إلى أهلها | | | |
| | وإذا حكمتم بين الناس أن تحكموا بالعدل... ... | ٥٨ | م النسـاء | ٤ |
| فَاحْكُمْ | : ثم إلىّ مرجعكم فأحكم بينكم فيما كنتم فيه تختلفون | ٥٥ | م آل عمران | ٣ |
| تَحْكُمَ | : إنا أنزلنا إليك الكتاب بالحق لتحكم بين الناس بما | | | |
| (٢) | أراك الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٥ | م النسـاء | ٤ |
| | أنت تحكم بين عبادك فى ما كانوا فيه يختلفون ... ... | ٤٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| تَحْكُمُوا | : وإذا حكمتم بين الناس أن تحكموا بالعدل | ٥٨ | م النسـاء | ٤ |
| تَحْكُمُونَ | : أمن لا يهدى إلا أن يهدى فما لكم كيف تحكمون | ٣٥ | ك يونس | ١٠ |
| (٤) | أصطفى البنات على البنين . ما لكم كيف تحكمون | ١٥٤ | ك الصافات | ٣٧ |
| | أفنجعل المسلمين كالمجرمين . ما لكم كيف تحكمون | ٣٦ | ك القلم | ٦٨ |
| | أم لكم أيمان علينا بالغة إلى يوم القيامة إن لكم لما تحكمون | ٣٩ | ك « | ٦٨ |
| يَحْكُمُ | : فالله يحكم بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون | ١١٣ | م البقـرة | ٢ |
| (٢٢) | وأنزل معهم الكتاب بالحق ليحكم بين الناس فيما اختلفوا فيه | ٢١٣ | م « | ٢ |
| | يدعون إلى كتاب الله ليحكم بينهم ثم يتولى فريق منهم | ٢٣ | م آل عمران | ٣ |
| | فالله يحكم بينكم يوم القيامة ... ... ... ... ... | ١٤١ | م النسـاء | ٤ |
| | إن الله يحكم ما يريد ... ... ... ... ... ... | ١ | م المائدة | ٥ |
| | يحكم بها النبيون الذين أسلموا للذين هادوا ... ... | ٤٤ | م « | ٥ |
| | ومن لم يحكم بما أنزل الله فأولئك هم الكافرون | ٤٤ | م « | ٥ |
| | ومن لم يحكم بما أنزل الله فأولئك هم الظالمون | ٤٥ | م « | ٥ |
| | وليحكم أهل الإنجيل بما أنزل الله فيه ... ... ... | ٤٧ | م « | ٥ |
| | ومن لم يحكم بما أنزل الله فأولئك هم الفاسقون | ٤٧ | م « | ٥ |
| | الجزاء مثل ما قتل من النعم يحكم به ذوا عدل منكم | ٩٥ | م « | ٥ |
| | فاصبروا حتى يحكم الله بيننا وهو خير الحاكمين | ٨٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | واتبع ما يوحى إليك واصبر حتى يحكم الله ... ... | ١٠٩ | ك يونس | ١٠ |
| | فلن أبرح الأرض حتى يأذن لى أبى أو يحكم الله لى | ٨٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | والله يحكم لا معقب لحكمه وهو سريع الحساب | ٤١ | م الرعد | ١٣ |
| | وإن ربك ليحكم بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون | ١٢٤ | ك النحل | ١٦ |
| | الملك يومئذ لله يحكم بينهم ... ... ... ... ... | ٥٦ | م الحج | ٢٢ |
| | الله يحكم بينكم يوم القيامة فيما كنتم فيه تختلفون | ٦٩ | م « | ٢٢ |
| | وإذا دعوا إلى الله ورسوله ليحكم بينهم إذا فريق | | | |
| | منهم معرضون ... ... ... ... ... ... ... | ٤٨ | م النور | ٢٤ |
| | إنما كان قول المؤمنين إذا دعوا إلى الله ورسوله | | | |
| | ليحكم بينهم أن يقولوا سمعنا وأطعنا... ... ... | ٥١ | م « | ٢٤ |
| | إن الله يحكم بينهم فى ما هم فيه يختلفون ... ... | ٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ذلكم حكم الله يحكم بينكم والله عليم حكيم ... ... | ١٠ | م الممتحنة | ٦٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَحْكُمَانِ: | وداود وسليمان إذ يحكمان فى الحرث ... ... | ٧٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| يَحْكُمُونَ: | وما كان لله فهو يصل إلى شركائهم ساء ما يحكمون | ١٣٦ | ك الأنعام | ٦ |
| (٤) | أيمسكه على هون أم يدسه فى التراب ألا ساء ما يحكمون | ٥٩ | ك النحل | ١٦ |
| | أم حسب الذين يعملون السيئات أن يسبقونا ساء ما يحكمون... ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | سواء محياهم ومماتهم ساء ما يحكمون ... ... ... | ٢١ | ك الجاثية | ٤٥ |
| أَحْكُمْ: | فإن جاءوك فاحكم بينهم أو أعرض عنهم ... ... | ٤٢ | م المائدة | ٥ |
| (٧) | وإن حكمت فاحكم بينهم بالقسط إن الله يحب المقسطين | ٤٢ | م » | ٥ |
| | فاحكم بينهم بما أنزل الله ... ... ... .. ... ... | ٤٨ | م » | ٥ |
| | وأن احكم بينهم بما أنزل الله ولا تتبع أهواءهم | ٤٩ | م » | ٥ |
| | قال رب احكم بالحق وربنا الرحمن المستعان على ما تصفون | ١١٢ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | خصمان بغى بعضنا على بعض فاحكم بيننا بالحق | ٢٢ | ك ص | ٣٨ |
| | فاحكم بين الناس بالحق ولا تتبع الهوى ... ... ... | ٢٦ | ك » | ٣٨ |
| يُحَكِّمُوكَ: | فلا وربك لا يؤمنون حتى يحكموك فيما شجر بينهم | ٦٥ | م النساء | ٤ |
| يُحَكِّمُونَكَ: | وكيف يحكمونك وعندهم التوراة فيها حكم الله | ٤٣ | م المائدة | ٥ |
| يُحْكِمُ: | فينسخ الله ما يلقى الشيطان ثم يحكم الله آياته | ٥٢ | م الحج | ٢٢ |
| أُحْكِمَتْ: | الر كتاب أحكمت آياته ثم فصلت من لدن حكيم خبير ... ... ... ... ... ... ... ... | ١ | ك هود | ١١ |
| يَتَحَاكَمُوا: | يريدون أن يتحاكموا إلى الطاغوت وقد أمروا أن يكفروا به ... ... ... ... ... ... | ٦٠ | م النساء | ٤ |
| حُكْم: | ما كان لبشر أن يؤتيه الله الكتاب والحكم والنبوة | | | |
| (١٧) | ثم يقول للناس كونوا عبادا لى ... ... ... ... ... | ٧٩ | م آل عمران | ٣ |
| | وكيف يحكمونك وعندهم التوراة فيها حكم الله | ٤٣ | م المائدة | ٥ |
| | أفحكم الجاهلية يبغون ... ... ... ... ... ... ... | ٥٠ | م » | ٥ |
| | إن الحكم إلا لله يقص الحق وهو خير الفاصلين | ٥٧ | ك الأنعام | ٦ |
| | ألا له الحكم وهو أسرع الحاسبين ... ... ... ... | ٦٢ | ك » | ٦ |
| | أولئك الذين آتيناهم الكتاب والحكم والنبوة | ٨٩ | ك » | ٦ |
| | إن الحكم إلا لله أمر ألا تعبدوا إلا إياه ... ... | ٤٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | إن الحكم إلا لله عليه توكلت وعليه فليتوكل المتوكلون | ٦٧ | ك » | ١٢ |
| | يا يحيى خذ الكتاب بقوة وآتيناه الحكم صبيا | ١٢ | ك مريم | ١٩ |
| | له الحمد فى الأولى والآخرة وله الحكم وإليه ترجعون | ٧٠ | ك القصص | ٢٨ |
| | كل شىء هالك إلا وجهه له الحكم وإليه ترجعون | ٨٨ | ك » | ٢٨ |
| | وإن يشرك به تؤمنوا فالحكم لله العلى الكبير | ١٢ | ك غافر | ٤٠ |
| | ولقد آتينا بنى إسرائيل الكتاب والحكم والنبوة | ١٦ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | واصبر لحكم ربك فإنك بأعيننا وسبح بحمد ربك حين تقوم | ٤٨ | ك الطور | ٥٢ |
| | ذلكم حكم الله يحكم بينكم والله عليم حكيم ... ... | ١٠ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | فاصبر لحكم ربك ولا تكن كصاحب الحوت ... ... | ٤٨ | م القلم | ٦٨ |
| حُكْم: | فاصبر لحكم ربك ولا تطع منهم آثما أو كفورا | ٢٤ | م الإنسان | ٧٦ |
| حُكْمًا: | ومن أحسن من الله حكما لقوم يوقنون ... ... | ٥٠ | م المائدة | ٥ |
| (٨) | ولما بلغ أشده آتيناه حكما وعلما وكذلك نجزى المحسنين | ٢٢ | ك يوسف | ١٢ |
| | وكذلك أنزلناه حكما عربيا .. ... ... ... ... ... | ٣٧ | م الرعد | ١٣ |
| | ولوطا آتيناه حكما وعلما ... ... ... ... ... ... | ٧٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ففهمناها سليمان وكلا آتينا حكما وعلما ... ... ... | ٧٩ | ك » | ٢١ |
| | ففررت منكم لما خفتكم فوهب لى ربى حكما ... ... | ٢١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | رب هب لى حكما وألحقنى بالصالحين ... ... ... | ٨٣ | ك » | ٢٦ |
| | ولما بلغ أشده واستوى آتيناه حكما وعلما ... ... | ١٤ | ك القصص | ٢٨ |
| حُكْمِهِ: | والله يحكم لا معقب لحكمه وهو سريع الحساب | ٤١ | م الرعد | ١٣ |
| (٤) | ما لهم من دونه من ولى ولا يشرك فى حكمه أحدا | ٢٦ | ك الكهف | ١٨ |
| | إن ربك يقضى بينهم بحكمه وهو العزيز العليم | ٧٨ | ك النمل | ٢٧ |
| | وما اختلفتم فيه من شىء فحكمه إلى الله ... ... ... | ١٠ | ك الشورى | ٤٢ |
| لِحُكْمِهِم: | إذ نفشت فيه غنم القوم وكنا لحكمهم شاهدين | ٧٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| حَكَمًا: | وإن خفتم شقاق بينهما فابعثوا حكما من أهله | ٣٥ | م النساء | ٤ |
| (٣) | وحكما من أهلها إن يريدا إصلاحا يوفق الله بينهما | ٣٥ | م » | ٤ |
| | أفغير الله أبتغى حكما وهو الذى أنزل إليكم الكتاب مفصلا | ١١٤ | م الأنعام | ٦ |
| الْحَاكِمِينَ: | فاصبروا حتى يحكم الله بيننا وهو خير الحاكمين | ٨٧ | ك الأعراف | ٧ |
| (٥) | واتبع ما يوحى إليك واصبر حتى يحكم الله وهو خير الحاكمين | ١٠٩ | ك يونس | ١٠ |
| | رب إن ابنى من أهلى وإن وعدك الحق وأنت أحكم الحاكمين | ٤٥ | ك هود | ١١ |
| | فلن أبرح الأرض حتى يأذن لى أبى أو يحكم الله لى وهو خير الحاكمين ... ... ... ... ... ... | ٨٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | فما يكذبك بعد بالدين . أليس الله بأحكم الحاكمين | ٨ | ك التين | ٩٥ |
| الْحُكَّامِ: | ولا تأكلوا أموالكم بينكم بالباطل وتدلوا بها إلى الحكام | ١٨٨ | م البقرة | ٢ |
| حِكْمَةً: | يتلوا عليهم آياتك ويعلمهم الكتاب والحكمة ويزكيهم | ١٢٩ | م » | ٢ |
| (٢٠) | يتلوا عليكم آياتنا ويزكيكم ويعلمكم الكتاب والحكمة | ١٥١ | م » | ٢ |
| | واذكروا نعمة الله عليكم وما أنزل عليكم من الكتاب والحكمة | ٢٣١ | م » | ٢ |
| | وقتل داود جالوت وآتاه الله الملك والحكمة وعلمه مما يشاء | ٢٥١ | م » | ٢ |
| | يؤتى الحكمة من يشاء ... ... ... ... ... ... | ٢٦٩ | م » | ٢ |
| | ومن يؤت الحكمة فقد أوتى خيرا كثيرا ... ... ... | ٢٦٩ | م » | ٢ |
| | ويعلمه الكتاب والحكمة والتوراة والإنجيل ... ... | ٤٨ | م آل عمران | ٣ |
| | لما آتيتكم من كتاب وحكمة ثم جاءكم رسول مصدق لما معكم لتؤمنن به ولتنصرنه ... ... ... ... | ٨١ | م » | ٣ |
| | يتلوا عليهم آياته ويزكيهم ويعلمهم الكتاب والحكمة | ١٦٤ | م » | ٣ |
| | فقد آتينا آل إبراهيم الكتاب والحكمة وآتيناهم ملكا عظيما | ٥٤ | م النساء | ٤ |
| | وأنزل الله عليك الكتاب والحكمة وعلمك ما لم تكن تعلم | ١١٣ | م » | ٤ |
| | وإذ علمتك الكتاب والحكمة والتوراة والإنجيل | ١١٠ | م المائدة | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| حِكْمَةٌ: | ادع إلى سبيل ربك بالحكمة والموعظة الحسنة | ١٢٥ | ك النحل | ١٦ |
| | ذلك مما أوحى إليك ربك من الحكمة ... ... ... | ٣٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ولقد آتينا لقمان الحكمة أن اشكر لله ... ... ... | ١٢ | ك لقمان | ٣١ |
| | واذكرن ما يتلى فى بيوتكن من آيات الله والحكمة | ٣٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وشددنا ملكه وآتيناه الحكمة وفصل الخطاب... ... | ٢٠ | ك ص | ٣٨ |
| | قال قد جئتكم بالحكمة ولأبين لكم بعض الذى تختلفون فيه | ٦٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | حكمة بالغة فما تغن النذر ... ... ... ... ... | ٥ | ك القمر | ٥٤ |
| | يتلوا عليهم آياته ويزكيهم ويعلمهم الكتاب والحكمة | ٢ | م الجمعة | ٦٢ |
| حَكِيمٌ: | قالوا سبحانك لا علم لنا إلا ما علمتنا إنك أنت العليم الحكيم | ٣٢ | م البقرة | ٢ |
| (٨١) | ويعلمهم الكتاب والحكمة ويزكيهم إنك أنت العزيز الحكيم | ١٢٩م | « | ٢ |
| | فإن زللتم من بعد ما جاءتكم البينات فاعلموا أن الله | | | |
| | عزيز حكيم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠٩م | « | ٢ |
| | ولو شاء الله لأعنتكم إن الله عزيز حكيم ... ... | ٢٢٠م | « | ٢ |
| | وللرجال عليهن درجة والله عزيز حكيم ... ... ... | ٢٢٨م | « | ٢ |
| | فلا جناح عليكم فى ما فعلن فى أنفسهن من معروف | | | |
| | والله عزيز حكيم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٤٠م | « | ٢ |
| | ثم ادعهن يأتينك سعيا واعلم أن الله عزيز حكيم | ٢٦٠م | « | ٢ |
| | هو الذى يصوركم فى الأرحام كيف يشاء لا إله | | | |
| | إلا هو العزيز الحكيم ... ... ... ... ... ... | ٦ | م آل عمران | ٣ |
| | وأولوا العلم قائما بالقسط لا إله إلا هو العزيز الحكيم | ١٨ | م « | ٣ |
| | ذلك نتلوه عليك من الآيات والذكر الحكيم... ... | ٥٨ | م « | ٣ |
| | وما من إله إلا الله وإن الله لهو العزيز الحكيم | ٦٢ | م « | ٣ |
| | وما النصر إلا من عند الله العزيز الحكيم ... ... | ١٢٦م | « | ٣ |
| | ويهديكم سنن الذين من قبلكم ويتوب عليكم والله عليم حكيم | ٢٦ | م النساء | ٤ |
| | فاقطعوا أيديهما جزاء بما كسبا نكالا من الله والله | | | |
| | عزيز حكيم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | م المائدة | ٥ |
| | وإن تغفر لهم فإنك أنت العزيز الحكيم... ... ... | ١١٨م | « | ٥ |
| | وهو القاهر فوق عباده وهو الحكيم الخبير ... ... | ١٨ | ك الأنعام | ٦ |
| | عالم الغيب والشهادة وهو الحكيم الخبير ... ... ... | ٧٣ | ك « | ٦ |
| | نرفع درجات من نشاء إن ربك حكيم عليم ... ... | ٨٣ | ك « | ٦ |
| | خالدين فيها إلا ما شاء الله إن ربك حكيم عليم | ١٢٨ك | « | ٦ |
| | سيجزيهم وصفهم إنه حكيم عليم ... ... ... ... | ١٣٩ك | « | ٦ |
| | وما النصر إلا من عند الله إن الله عزيز حكيم | ١٠ | م الأنفال | ٨ |
| | ومن يتوكل على الله فإن الله عزيز حكيم ... ... | ٤٩ | م « | ٨ |
| | ولكن الله ألف بينهم إنه عزيز حكيم ... ... ... | ٦٣ | م « | ٨ |
| | تريدون عرض الدنيا والله يريد الآخرة والله عزيز حكيم | ٦٧ | م « | ٨ |
| | وإن يريدوا خيانتك فقد خانوا الله من قبل | | | |
| | فأمكن منهم والله عليم حكيم ... ... ... ... | ٧١ | م « | ٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| حَكِيمٌ: | ويتوب الله على من يشاء والله عليم حكيم... ... | ١٥ | م التوبة | ٩ |
| | وإن خفتم عيلة فسوف يغنيكم الله من فضله إن | | | |
| | شاء إن الله عليم حكيم ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م « | ٩ |
| | وكلمة الله هى العليا والله عزيز حكيم ... ... ... | ٤٠ | م « | ٩ |
| | فريضة من الله والله عليم حكيم ... ... ... ... | ٦٠ | م « | ٩ |
| | أولئك سيرحمهم الله إن الله عزيز حكيم ... ... ... | ٧١ | م « | ٩ |
| | وأجدر ألا يعلموا حدود ما أنزل الله على رسوله | | | |
| | والله عليم حكيم ... ... ... ... ... ... ... | ٩٧ | م « | ٩ |
| | إما يعذبهم وإما يتوب عليهم والله عليم حكيم | ١٠٦م | « | ٩ |
| | لا يزال بنيانهم الذى بنوا ريبة فى قلوبهم إلا أن | | | |
| | تقطع قلوبهم والله عليم حكيم ... ... ... ... | ١١٠م | « | ٩ |
| | الر تلك آيات الكتاب الحكيم ... ... ... ... | ١ | ك يونس | ١٠ |
| | الر كتاب أحكمت آياته ثم فصلت من لدن حكيم خبير | ١ | ك هود | ١١ |
| | كما أتمها على أبويك من قبل إبراهيم وإسحق إن | | | |
| | ربك عليم حكيم ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | عسى الله أن يأتينى بهم جميعا إنه هو العليم الحكيم | ٨٣ | ك « | ١٢ |
| | إن ربى لطيف لما يشاء إنه هو العليم الحكيم | ١٠٠ك | « | ١٢ |
| | فيضل الله من يشاء ويهدى من يشاء وهو العزيز الحكيم | ٤ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وإن ربك هو يحشرهم إنه حكيم عليم ... ... ... | ٢٥ | ك الحجر | ١٥ |
| | ولله المثل الأعلى وهو العزيز الحكيم ... ... ... | ٦٠ | ك النحل | ١٦ |
| | فينسخ الله ما يلقى الشيطان ثم يحكم الله آياته والله عليم حكيم | ٥٢ | م الحج | ٢٢ |
| | ولولا فضل الله عليكم ورحمته وأن الله توّاب حكيم | ١٠ | م النور | ٢٤ |
| | ويبين الله لكم الآيات والله عليم حكيم... ... ... | ١٨ | م « | ٢٤ |
| | كذلك يبيّن الله لكم الآيات والله عليم حكيم... ... | ٥٨ | م « | ٢٤ |
| | كذلك يبيّن الله لكم آياته والله عليم حكيم... ... | ٥٩ | م « | ٢٤ |
| | وإنك لتلقى القرآن من لدن حكيم عليم ... ... ... | ٦ | ك النمل | ٢٧ |
| | يا موسى إنه أنا الله العزيز الحكيم ... ... ... ... | ٩ | ك « | ٢٧ |
| | وقال إنى مهاجر إلى ربى إنه هو العزيز الحكيم | ٢٦ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | إن الله يعلم ما يدعون من دونه من شىء وهو العزيز الحكيم | ٤٢ | ك « | ٢٩ |
| | وله المثل الأعلى فى السموات والأرض وهو العزيز الحكيم | ٢٧ | ك الروم | ٣٠ |
| | الم . تلك آيات الكتاب الحكيم ... ... ... ... | ٢ | ك لقمان | ٣١ |
| | خالدين فيها وعد الله حقا وهو العزيز الحكيم | ٩ | ك « | ٣١ |
| | ما نفدت كلمات الله إن الله عزيز حكيم ... ... | ٢٧ | م « | ٣١ |
| | وله الحمد فى الآخرة وهو الحكيم الخبير ... ... ... | ١ | ك سبأ | ٣٤ |
| | بل هو الله العزيز الحكيم ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك « | ٣٤ |
| | وما يمسك فلا مرسل له من بعده وهو العزيز الحكيم | ٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| | يس . والقرآن الحكيم . إنك لمن المرسلين... ... | ٢ | ك يس | ٣٦ |
| | تنزيل الكتاب من الله العزيز الحكيم ... ... ... | ١ | ك الزمر | ٣٩ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| حَكِيمٌ | : إنك أنت العـزيز الحكيم ... ... ... ... ... | ٨ | ك غافـر | ٤٠ |
| | تنزيل من حكيم حميد ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك فصـلت | ٤١ |
| | كذلك يوحى إليك و إلى الذين من قبلك الله العزيز الحكيم | ٣ | ك الشورى | ٤٢ |
| | أو يرسل رسولا فيوحى بإذنه ما يشاء إنه علىّ حكيم | ٥١ | ك « | ٤٢ |
| | و إنه فى أم الكتاب لدينا لعلىّ حكيم ... ... ... | ٤ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وهو الذى فى السماء إله وفى الأرض إله وهو الحكيم العليم | ٨٤ | ك « | ٤٣ |
| | فيها يفرق كل أمر حكيم ... ... ... ... ... | ٤ | ك الدخان | ٤٤ |
| | تنزيل الكتاب من الله العزيز الحكيم ... ... ... | ٢ | ك الجاثيـة | ٤٥ |
| | وله الكبرياء فى السموات والأرض وهو العزيز الحكيم | ٣٧ | ك « | ٤٥ |
| | تنزيل الكتاب من الله العـزيز الحكيم ... ... ... | ٢ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | فضـلا من الله ونعمة والله عليم حكيم ... ... ... | ٨ | م الحجرات | ٤٩ |
| | قالوا كذلك قال ربك إنه هو الحكيم العليم ... ... | ٣٠ | ك الذاريات | ٥١ |
| | سبح لله ما فى السموات والأرض وهو العزيز الحكيم | ١ | م الحـديد | ٥٧ |
| | سبح لله ما فى السموات وما فى الأرض وهو العزيز الحكيم | ١ | م الحشـر | ٥٩ |
| | يسبح له ما فى السموات والأرض وهو العزيز الحكيم | ٢٤ | م « | ٥٩ |
| | واغفر لنا ربنا إنك أنت العزيز الحكيم... ... ... | ٥ | م الممتحنـة | ٦٠ |
| | ذلكم حكم الله يحكم بينكم والله عليم حكيم... ... | ١٠ | م « | ٦٠ |
| | سبح لله ما فى السموات وما فى الأرض وهو العزيز الحكيم | ١ | م الصـف | ٦١ |
| | يسبح لله ما فى السموات وما فى الأرض الملك القدوس العزيز الحكيم ... ... ... ... ... | ١ | م الجمعـة | ٦٢ |
| | وءاخرين منهم لما يلحقوا بهم وهو العزيز الحكيم | ٣ | م « | ٦٢ |
| | عالم الغيب والشهادة العزيز الحكيم ... ... ... | ١٨ | م التغـابن | ٦٤ |
| | قد فرض الله لكم تحلة أيمانكم والله مولاكم وهو العليم الحكيم | ٢ | م التحـريم | ٦٦ |
| حَكِيمًا | : فريضـة من الله إن الله كان عليما حكيما ... ... | ١١ | م النسـاء | ٤ |
| | (١٦) فأولئـك يتوب الله عليهـم وكان الله عليما حكيما | ١٧ | م « | ٤ |
| | ولا جناح عليكم فيما تراضيتم به من بعد الفريضة إن الله كان عليما حكيما ... ... ... ... ... | ٢٤ | م « | ٤ |
| | كلما نضجت جلودهم بدلناهم جلودا غيرها ليذوقوا العذاب إن الله كان عزيزا حكيما ... ... ... | ٥٦ | م « | ٤ |
| | فمن لم يجـد فصيام شهرين متتابعين توبة من الله وكان الله عليما حكيما ... ... ... ... ... | ٩٢ | م « | ٤ |
| | وترجون من الله ما لا يرجون وكان الله عليما حكيما | ١٠٤ | م « | ٤ |
| | ومن يكسب إثما فإنما يكسبه على نفسه وكان الله عليما حكيما | ١١١ | م « | ٤ |
| | و إن يتفرقا يغن الله كلا من سعته وكان الله واسعا حكيما | ١٣٠ | م « | ٤ |
| | بل رفعه الله إليه وكان الله عزيزا حكيما ... ... ... | ١٥٨ | م « | ٤ |
| | رسلا مبشرين ومنذرين لئلا يكون للناس على الله حجة بعد الرسل وكان الله عزيزا حكيما ... ... | ١٦٥ | م « | ٤ |
| | و إن تكفروا فإن لله ما فى السموات والأرض وكان الله عليما حكيما ... ... ... ... ... | ١٧٠ | م « | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| حَكِيمًا | : يأيها النبىّ اتق الله ولا تطع الكافرين والمنافقين إن الله كان عليما حكيما ... ... ... ... ... | ١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ولله جنود السموات والأرض وكان الله عليما حكيما | ٤ | م الفتـح | ٤٨ |
| | ولله جنود السموات والأرض وكان الله عزيزا حكيما | ٧ | م « | ٤٨ |
| | ومغانم كثيرة يأخذونها وكان الله عزيزا حكيما | ١٩ | م « | ٤٨ |
| | وما تشاءون إلا أن يشاء الله إن الله كان عليما حكيما | ٣٠ | م الإنسـان | ٧٦ |
| أَحْكَمُ | : و إن وعدك الحق وأنت أحكم الحاكمين ... ... | ٤٥ | ك هـود | ١١ |
| | (٢) أليس الله بأحكم الحاكمين ... ... ... ... ... | ٨ | ك التين | ٩٥ |
| مُحْكَمَةٌ | : فإذا أنزلت سورة محكمة وذكر فيها القتال رأيت الذين فى قلوبهم مرض ينظرون إليك ... ... | ٢٠ | م محمـد | ٤٧ |
| مُحْكَمَاتٌ | : هو الذى أنزل عليك الكتاب منه ءايات محكمات هن أم الكتاب ... ... ... ... ... | ٧ | م آل عمران | ٣ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| حَلَفْتُمْ | : فمن لم يجد فصيام ثلاثة أيام ذلك كفارة أيمانكم إذا حلفتم | ٨٩ | م المائدة | ٥ |
| لَيَحْلِفُنَّ | : وليحلفن إن أردنا إلا الحسنى ... ... ... ... | ١٠٧ | م التـوبة | ٩ |
| يَحْلِفُونَ | : ثم جاءوك يحلفون بالله إن أردنا إلا إحسانا وتوفيقا | ٦٢ | م النسـاء | ٤ |
| | (١٠) ويحلفون بالله لو استطعنا لخرجنا معكم... ... ... | ٤٢ | م التـوبة | ٩ |
| | و يحلفون بالله إنهم لمنكم وما هم منكم ولكنهم قوم يفرقون | ٥٦ | م « | ٩ |
| | يحلفون بالله لكم ليرضوكم والله ورسوله أحق أن يرضوه | ٦٢ | م « | ٩ |
| | يحلفون بالله ما قالوا ولقد قالوا كلمة الكفر... ... | ٧٤ | م « | ٩ |
| | سيحلفون بالله لكم إذا انقلبتم إليهم لتعرضوا عنهم | ٩٥ | م « | ٩ |
| | يحلفون لكم لترضوا عنهم ... ... ... ... ... | ٩٦ | م « | ٩ |
| | ما هم منكم ولا منهم و يحلفون على الكذب وهم يعلمون | ١٤ | م المجادلة | ٥٨ |
| | يوم يبعثهم الله جميعا فيحلفون له ... ... ... | ١٨ | م « | ٥٨ |
| | كما يحلفون لكم و يحسبون أنهم على شىء ... ... | ١٨ | م « | ٥٨ |
| حَلَّافٍ | : ولا تطع كل حلاف مهين ... ... ... ... ... | ١٠ | ك القـلم | ٦٨ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَحْلِقُوا | : ولا تحلقوا رءوسكم حتى يبلغ الهدى محله ... ... | ١٩٦ | م البقـرة | ٢ |
| مُحَلِّقِينَ | : لتدخلن المسجد الحرام إن شاء الله ءامنين محلقين رءوسكم ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | م الفتـح | ٤٨ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الْحُلْقُومَ | : فلولا إذا بلغت الحلقوم . وأنتم حينئذ تنظرون | ٨٣ | ك الواقعـة | ٥٦ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| حَلَلْتُمْ | : و إذا حللتم فاصطادوا ... ... ... ... ... | ٢ | م المائدة | ٥ |
| تَحُلُّ | : تصيبهم بما صنعوا قارعة أو تحل قريبا من دارهم | ٣١ | م الرعـد | ١٣ |
| تَحِلُّ | : فإن طلقها فلا تحل له من بعد حتى تنكح زوجا غيره | ٢٣٠ | م البقـرة | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| يَحِلُّ | : ولا يحل لهنّ إن يكتمن ما خلق الله فى أرحامهنّ | ٢ البقـرة | ٢٢٨ |
| (٨) | ولا يحـل لكم أن تأخذوا مما آتيتـموهن شيئا | « | ٢٢٩ |
| | يأيها الذين آمنوا لايحل لكم أن ترثوا النساء كرها | ٤ النسـاء | ١٩ |
| | فسوف تعلمون من يأتيه عذاب يخزيه ويحل عليه | | |
| | عذاب مقيم ... ... ... ... ... ... ... | ١١ هـود | ٣٩ |
| | كلوا من طيبات ما رزقناكم ولا تطغوا فيـه فيحل | | |
| | عليكم غضبي ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ طـه | ٨١ |
| | أم أردتم أن يحل عليكم غضب من ربكم فأخلفتم موعدى | ٢٠ « | ٨٦ |
| | لا يحل لك النساء من بعد ولا أن تبدل بهنّ من أزواج | ٣٣ الأحزاب | ٥٢ |
| | فسوف تعلمون . من يأتيـه عذاب يخزيه ويحل | | |
| | عليه عذاب مقيم ... ... ... ... ... ... | ٣٩ الزمر | ٤٠ |
| يَحْلِلْ | : ومن يحلل عليه غضبي فقد هوى ... ... ... ... | ٢٠ طـه | ٨١ |
| يَحِلُّونَ | : لا هنّ حل لهم ولا هم يحلون لهنّ ... ... ... | ٦٠ الممتحنـة | ١٠ |
| أَحْلُلْ | : وأحلل عقدة من لسانى ... ... ... ... ... | ٢٠ طـه | ٢٧ |
| أَحَلَّ | : وأحل الله البيع وحرم الربا ... ... ... ... | ٢ البقـرة | ٢٧٥ |
| (٣) | يأيها الذين آمنوا لا تحرموا طيبات ما أحل الله لكم | ٥ المائدة | ٨٧ |
| | يأيها النبيّ لم تحرّم ما أحل الله لك ... ... ... | ٦٦ التحـريم | ١ |
| أَحْلَلْنَا | : يأيها النبيّ إنا أحللنا لك أزواجك اللاتى آتيت أجورهنّ | ٣٣ الأحزاب | ٥٠ |
| أَحَلَّنَا | : الذى أحلنا دار المقامة من فضله لا يمسنا فيها نصب | ٣٥ فاطـر | ٣٥ |
| أَحَلُّوا | : ألم تر إلى الذين بدلوا نعمة الله كفرا وأحلوا | | |
| | قومهم دار البوار ... ... ... ... ... ... | ١٤ إبراهيم | ٢٨ |
| لِأُحِلَّ | : ولأحل لكم بعض الذى حرم عليكم ... ... ... | ٣ آل عمران | ٥٠ |
| تُحِلُّوا | : يأيها الذين آمنوا لاتحلوا شعائر الله ولا الشهر الحرام | ٥ المائدة | ٢ |
| يُحِلُّ | : ويحل لهم الطيبات ويحرم عليهم الخبائث ... ... | ٧ الأعراف | ١٥٧ |
| يُحِلُّونَهُ | : ليواطئوا عدة ما حرم الله فيحلوا ماحرم الله... ... | ٩ التوبة | ٣٧ |
| يُحِلُّونَهُ | : يضل به الذين كفروا يحلونه عاما ويحرمونه عاما | ٩ « | ٣٧ |
| أُحِلَّ | : أحل لكم ليلة الصيام الرفث إلى نسائكم ... ... | ٢ البقـرة | ١٨٧ |
| (٦) | وأحل لكم ما وراء ذلكم أن تبتغوا بأموالكم محصنين | | |
| | غير مسافحين ... ... ... ... ... ... ... | ٤ النسـاء | ٢٤ |
| | يسئلونك ماذا أحل لهم ... ... ... ... ... | ٥ المائدة | ٤ |
| | قـل أحل لكم الطيبات وما علمتم من الجـوارح | ٥ « | ٤ |
| | اليوم أحل لكم الطيبات وطعام الذين أوتوا الكتاب حل لكم | ٥ « | ٥ |
| | أحل لكم صـيد البحر وطعامه متاعا لكم وللسـيارة | ٥ « | ٩٦ |
| أُحِلَّتْ | : فبظلم من الذين هادوا حرمنا عليهم طيبات أحلت لهم | ٤ النسـاء | ١٦٠ |
| (٣) | أحلت لكم بهيمة الأنعام ... ... ... ... ... | ٥ المائدة | ١ |
| | وأحلت لكم الأنعام إلا ما يتـلى عليكم ... ... ... | ٢٢ الحـج | ٣٠ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| حِلٌّ | : وطعام الذين أوتوا الكتاب حل لكم ... ... ... | ٥ المائدة | ٥ |
| (٤) | وطعامكم حل لهم ... ... ... ... ... ... ... | ٥ « | ٥ |
| | لا هنّ حل لهم ولا هم يحلون لهنّ ... ... ... ... | ٦٠ الممتحنـة | ١٠ |
| | لا أقسم بهذا البلد . وأنت حل بهذا البلد ... ... | ٩٠ البـلد | ٢ |
| حِلًّا | : كل الطعام كان حلا لبنى إسرائيل إلا ما حرم إسرائيل على نفسه | ٣ آل عمران | ٩٣ |
| حَلَالٌ | : ولا تقولوا لما تصف ألسنتكم الكذب هذا حلال | | |
| | وهـذا حرام ... ... ... ... ... ... ... | ١٦ النحـل | ١١٦ |
| حَلَالًا | : يأيها النـاس كلوا مما فى الأرض حـلالا طيبا | ٢ البقـرة | ١٦٨ |
| (٥) | وكلوا مما رزقكم الله حلالا طيبا ... ... ... ... | ٥ المائدة | ٨٨ |
| | فكلوا مما غنمتم حلالا طيبا واتقوا الله ... ... ... | ٨ الأنفـال | ٦٩ |
| | قل أرأيتم ما أنزل الله لكم من رزق فجعلتم منـه | | |
| | حراما وحلالا قل آلله أذن لكم... ... ... ... | ١٠ يـونس | ٥٩ |
| | فكلوا مما رزقكم الله حلالا طيبا واشكروا نعمة الله | ١٦ النحـل | ١١٤ |
| حَلَائِلُ | : وحلائل أبنائكم الذين من أصلابكم ... ... ... | ٤ النسـاء | ٢٣ |
| تَحِلَّةَ | : قـد فرض الله لكم تحـلة أيمانكم والله مولاكم | ٦٦ التحـريم | ٢ |
| مَحِلَّهُ | : ولا تحلقوا رءوسكم حتى يبلغ الهدى محله ... ... | ٢ البقـرة | ١٩٦ |
| (٢) | هم الذين كفروا وصدوكم عن المسجد الحرام والهدى | | |
| | معكوفا أن يبلغ محله ... ... ... ... ... ... | ٤٨ الفتـح | ٢٥ |
| مَحِلُّهَا | : لكم فيها منافع إلى أجل مسمى ثم محلها إلى البيت العتيق | ٢٢ الحـج | ٣٣ |
| مُحِلِّي | : أحلت لكم بهيمة الأنعام إلا ما يتـلى عليكم غير | | |
| | محلى الصيد وأنتم حرم .. ... ... ... ... ... | ٥ المائدة | ١ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| الْحُلُمَ | : ليستأذنكم الذين ملكت أيمانكم والذين لم يبلغوا | | |
| (٢) | الحلم منكم ثلاث مرات ... ... ... ... ... | ٢٤ النـور | ٥٨ |
| | وإذا بلغ الأطفال منكم الحلم فليستأذنوا كما استأذن | | |
| | الذين من قبلهـم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٤ « | ٥٩ |
| أَحْلَامٍ | : قالوا أضغاث أحلام ... ... ... ... ... ... | ١٢ يوسـف | ٤٤ |
| (٣) | وما نحن بتأويل الأحلام بعالمين ... ... ... ... | ١٢ « | ٤٤ |
| | بل قالوا أضـغاث أحلام بل افتراه بل هو شاعر | ٢١ الأنبيـاء | ٥ |
| أَحْلَامُهُمْ | : أم تأمرهم أحلامهم بهذا أم هم قوم طاغون | ٥٢ الطـور | ٣٢ |
| حَلِيمٌ | : ولكن يؤاخذكم بما كسبت قلوبكم والله غفور حليم | ٢ البقـرة | ٢٢٥ |
| (١٢) | واعلموا أن الله غفـور حليم ... ... ... ... | ٢ « | ٢٣٥ |
| | قول معروف ومغفرة خير من صـدقة يتبعها أذى | | |
| | والله غنى حليم ... ... ... ... ... ... ... | ٢ « | ٢٦٣ |
| | ولقد عفا الله عنهم إن الله غفور حليم ... ... ... | ٣ آل عمران | ١٥٥ |
| | وصية من الله والله عليم حليم ... ... ... ... | ٤ النسـاء | ١٢ |
| | عفا الله عنها والله غفور حليم ... ... ... ... | ٥ المائدة | ١٠١ |
| | فلما تبين له أنه عدو لله تبرأ منه إن إبراهيم لأواه حليم | ٩ التوبة | ١١٤ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| حَلِيمٌ | : إن إبراهيم لحليم أواه منيب ... ... ... ... | ك هـود | ٧٥ | ١١ |
| | إنك لأنت الحليم الرشيد ... ... ... ... ... | ك « | ٨٧ | ١١ |
| | ليدخلنهم مدخلا يرضونه وإن الله لعليم حليم ... ... | م الحـج | ٥٩ | ٢٢ |
| | فبشرناه بغلام حليم... ... ... ... ... ... | ك الصافات | ١٠١ | ٣٧ |
| | والله شكور حليم ... ... ... ... ... ... | م التغـابن | ١٧ | ٦٤ |
| حَلِيماً | : ولكن لا تفقهون تسبيحهم إنه كان حليما غفـورا | ك الإسراء | ٤٤ | ١٧ |
| (٣) | والله يعلم ما فى قلوبكم وكان الله عليما حليما ... ... | م الأحزاب | ٥١ | ٣٣ |
| | ولئن زالتا إن أمسكهما من أحد من بعده إنه كان حليما غفورا | ك فاطـر | ٤١ | ٣٥ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| حُلُوا | : وحلوا أساور من فضة وسقاهم ربهم شرابا طهورا | م الإنسـان | ٢١ | ٧٦ |
| يُحَلَّوْنَ | : يحلون فيها من أساور من ذهب ويلبسون ثيابا خضرا | ك الكهف | ٣١ | ١٨ |
| (٣) | يحلون فيها من أساور من ذهب ولؤلؤا ولباسهم فيها حرير | م الحـج | ٢٣ | ٢٢ |
| | جنات عدن يدخلونها يحـلون فيهـا من أساور من ذهب ولؤلؤا ... ... ... ... ... ... | ك فاطـر | ٣٣ | ٣٥ |
| حِلْيَةً | : ومما يوقدون عليه فى النار ابتغاء حلية أو متاع زبد مثله | م الرعـد | ١٧ | ١٣ |
| (٤) | لتأكلوا منه لحما طريا وتستخرجوا منه حلية تلبسونها | ك النحـل | ١٤ | ١٦ |
| | ومن كل تأكلون لحما طريا وتستخرجون حلية تلبسونها | ك فاطـر | ١٢ | ٣٥ |
| | أو من ينشأ فى الحلية وهو فى الخصام غير مبـين | ك الزخرف | ١٨ | ٤٣ |
| حُلِيِّهِمْ | : واتخذ قوم موسى من بعده من حليهم عجلا جسدا له خوار | ك الأعراف | ١٤٨ | ٧ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| حمٓ | : حمٓ . تنزيل الكتاب من الله العزيز العليم ... ... | ك غافـر | ١ | ٤٠ |
| (٧) | حمٓ . تنزيل من الرحمن الرحيم... ... ... ... ... | ك فصـلت | ١ | ٤١ |
| | حمٓ . عسٓقٓ ... ... ... ... ... ... ... | ك الشورى | ١ | ٤٢ |
| | حمٓ . والكتاب المبـين . إنا جعلناه قرآنا عربيا | ك الزخرف | ١ | ٤٣ |
| | حمٓ . والكتاب المبين . إنا أنزلناه فى ليلة مباركة | ك الدخان | ١ | ٤٤ |
| | حمٓ . تنزيل الكتاب من الله العزيز الحكيم ... ... | ك الجاثيـة | ١ | ٤٥ |
| | حمٓ . تنزيل الكتاب من الله العزيز الحكيم ... ... | ك الأحقاف | ١ | ٤٦ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| حَمَإٍ | : ولقد خلقنا الإنسان من صلصال من حمإ مسنون | ك الحجـر | ٢٦ | ١٥ |
| (٣) | إنى خالق بشرا من صلصال من حمإ مسنون ... ... | ك « | ٢٨ | ١٥ |
| | قال لم أكن لأسجد لبشر خلقته من صلصال من حمإ مسنون | ك « | ٣٣ | ١٥ |
| حَمِئَةٍ | : حتى إذا بلغ مغرب الشمس وجدها تغرب فى عين حمئة | م الكهـف | ٨٦ | ١٨ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| يُحْمَدُوا | : ويحبون أن يحمدوا بما لم يفعلوا فلا تحسبنهم بمفازة من العذاب... ... ... ... ... ... | م آل عمران | ١٨٨ | ٣ |
| الْحَمْدُ | : الحمد لله رب العالمين... ... ... ... ... ... | ك الفاتحـة | ٢ | ١ |
| (٣٨) | الحمـد لله الذى خلق السموات والأرض ... ... | ك الأنعـام | ١ | ٦ |
| | فقطع دابر القوم الذين ظلموا والحمد لله رب العالمين | ك « | ٤٥ | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الْحَمْدُ | : وقالوا الحمد لله الذى هدانا لهذا ... ... ... ... | ك الأعراف | ٤٣ | ٧ |
| | وآخر دعواهم أن الحمد لله رب العالمين ... ... ... | ك يـونس | ١٠ | ١٠ |
| | الحمد لله الذى وهب لى على الكبر إسماعيل وإسحق | ك إبراهيم | ٣٩ | ١٤ |
| | فسبح بحمـد ربك وكن من الساجدين ... ... ... | ك الحجـر | ٩٨ | ١٥ |
| | هل يستوون الحمد لله بل أكثرهم لا يعلمون... ... | ك النحـل | ٧٥ | ١٦ |
| | وقل الحمد لله الذى لم يتخذ ولدا ولم يكن له شريك فى الملك | ك الإسراء | ١١١ | ١٧ |
| | الحمد لله الذى أنزل على عبده الكتاب ولم يجعل له عوجا | ك الكهـف | ١ | ١٨ |
| | وسبح بحمد ربك قبل طلوع الشمس وقبل غروبها | م طـه | ١٣٠ | ٢٠ |
| | فقل الحمد لله الذى نجانا من القوم الظالمين ... ... | ك المؤمنون | ٢٨ | ٢٣ |
| | وقالا الحمد لله الذى فضلنا على كثير من عباده المؤمنين | ك النمـل | ١٥ | ٢٧ |
| | قل الحمـد لله وسـلام على عباده الذين اصطفى | ك « | ٥٩ | ٢٧ |
| | وقل الحمد لله سيريكم آياته فتعرفونها ... ... ... | ك « | ٩٣ | ٢٧ |
| | له الحمد فى الأولى والآخرة وله الحكم وإليه ترجعون | ك القصص | ٧٠ | ٢٨ |
| | قل الحمد لله بل أكثرهم لا يعقلون ... ... ... ... | ك العنكبوت | ٦٣ | ٢٩ |
| | وله الحمد فى السموات والأرض وعشيا وحين تظهرون | ك الروم | ١٨ | ٣٠ |
| | قل الحمد لله بل أكثرهم لا يعلمون ... ... ... ... | ك لقمان | ٢٥ | ٣١ |
| | خروا سجـدا وسبحوا بحمـد ربهم وهم لا يستكبرون | ك السـجدة | ١٥ | ٣٢ |
| | الحمـد لله الذى له ما فى السموات وما فى الأرض | ك سـبإ | ١ | ٣٤ |
| | وله الحمـد فى الآخرة وهو الحكيم الخبير ... ... | ك « | ١ | ٣٤ |
| | الحمد لله فاطر السموات والأرض جاعل الملائكة رسلا | ك فاطر | ١ | ٣٥ |
| | وقالوا الحمد لله الذى أذهب عنا الحزن... ... ... | ك « | ٣٤ | ٣٥ |
| | وسلام على المرسلين . والحمد لله رب العالمين ... ... | ك الصافات | ١٨٢ | ٣٧ |
| | هل يستويان مثلا الحمـد لله بل أكثرهم لا يعلمون | ك الزمر | ٢٩ | ٣٩ |
| | وقالوا الحمد لله الذى صدقنا وعده وأورثنا الأرض | ك « | ٧٤ | ٣٩ |
| | وترى الملائكة حافين من حول العرش يسبحون بحمد ربهم | ك « | ٧٥ | ٣٩ |
| | وقضى بينهم بالحـق وقيل الحمـد لله رب العـالمين | ك « | ٧٥ | ٣٩ |
| | الذين يحملون العرش ومن حوله يسبحون بحمد ربهم | ك غافـر | ٧ | ٤٠ |
| | وسبح بحمد ربك بالعشى والإبكار ... ... ... ... | ك « | ٥٥ | ٤٠ |
| | فادعوه مخلصـين له الدين الحمـد لله رب العـالمين | ك « | ٦٥ | ٤٠ |
| | تكاد السـموات يتفطرن من فوقهن والملائكة يسبحون بحمـد ربهم ... ... ... ... ... | ك الشـورى | ٥ | ٤٢ |
| | فلله الحمد رب السموات ورب الأرض رب العالمين | ك الجاثيـة | ٣٦ | ٤٥ |
| | وسـبح بحمد ربك قبل طلوع الشمس وقبل الغروب | ك قٓ | ٣٩ | ٥٠ |
| | وسبح بحمـد ربك حين تقوم ... ... ... ... ... | ك الطـور | ٤٨ | ٥٢ |
| | له الملك وله الحمـد وهو على كل شىء قدير ... ... | م التغـابن | ١ | ٦٤ |
| | فسبح بحمـد ربك واستغفره إنه كان توابا ... ... | م النصـر | ٣ | ١١٠ |
| بِحَمْدِكَ | : أتجعل فيها من يفسد فيها ويسفك الدماء ونحن نسبح بحمـدك ... ... ... ... ... ... | م البقـرة | ٣٠ | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يُحَمِّدُه | : ويسبح الرعد بحمده والملائكة من خيفته ... ... | ١٣ | م الرعد | ١٣ |
| (٤) | وإن من شيء إلا يسبح بحمده ولكن لا تفقهون تسبيحهم | ٤٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| | يوم يدعوكم فتستجيبون بحمده وتظنون إن لبثتم إلا قليلا | ٥٢ | ك « | ١٧ |
| | وتوكل على الحي الذي لا يموت وسبح بحمده ... ... | ٥٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| الحَامِدُونَ | : التائبون العابدون الحامدون السائحون | | | |
| | الراكعون الساجدون الآمرون بالمعروف والناهون | | | |
| | عن المنكر والحافظون لحدود الله وبشر المؤمنين | ١١٢ | م التوبة | ٩ |
| تَهَجَّدْ بِهِ | : ومن الليل فتهجد به نافلة لك عسى أن يبعثك | | | |
| | ربك مقاما محمودا ... ... ... ... ... ... | ٧٩ | م الإسراء | ١٧ |
| حَمِيدٌ | : ولستم بآخذيه إلا أن تغمضوا فيه واعلموا أن الله غني حميد | ٢٦٧ | م البقرة | ٢ |
| (١٦) | رحمة الله وبركاته عليكم أهل البيت إنه حميد مجيد | ٧٣ | ك هود | ١١ |
| | لتخرج الناس من الظلمات إلى النور بإذن ربهم | | | |
| | إلى صراط العزيز الحميد... ... ... ... ... ... | ١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وقال موسى إن تكفروا أنتم ومن في الأرض جميعا | | | |
| | فإن الله لغني حميد ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك « | ١٤ |
| | وهدوا إلى الطيب من القول وهدوا إلى صراط الحميد | ٢٤ | م الحج | ٢٢ |
| | له ما في السموات وما في الأرض وإن الله لهو الغني الحميد | ٦٤ | م « | ٢٢ |
| | ومن يشكر فإنما يشكر لنفسه ومن كفر فإن الله غني حميد | ١٢ | ك لقمان | ٣١ |
| | لله ما في السموات والأرض إن الله هو الغني الحميد | ٢٦ | ك « | ٣١ |
| | ويهدي إلى صراط العزيز الحميد ... ... ... ... | ٦ | م سبأ | ٣٤ |
| | يأيها الناس أنتم الفقراء إلى الله والله هو الغني الحميد | ١٥ | ك فاطر | ٣٥ |
| | لا يأتيه الباطل من بين يديه ولا من خلفه تنزيل | | | |
| | من حكيم حميد... ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك فصلت | ٤١ |
| | وهو الذي ينزل الغيث من بعد ما قنطوا وينشر | | | |
| | رحمته وهو الولي الحميد ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ومن يتول فإن الله هو الغني الحميد ... ... ... | ٢٤ | م الحديد | ٥٧ |
| | ومن يتول فإن الله هو الغني الحميد ... ... ... | ٦ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | فكفروا وتولوا واستغنى الله والله غني حميد ... ... | ٦ | م التغابن | ٦٤ |
| | وما نقموا منهم إلا أن يؤمنوا بالله العزيز الحميد | ٨ | ك البروج | ٨٥ |
| حَمِيدًا | : فإن لله ما في السموات وما في الأرض وكان | | | |
| | الله غنيا حميدا... ... ... ... ... ... ... | ١٣١ | م النساء | ٤ |
| أَحْمَدُ | : ومبشرا برسول يأتي من بعدي اسمه أحمد ... ... | ٦ | م الصف | ٦١ |
| مُحَمَّدٌ | : وما محمد إلا رسول قد خلت من قبله الرسل... ... | ١٤٤ | م آل عمران | ٣ |
| (٤) | ما كان محمد أبا أحد من رجالكم ولكن رسول الله | ٤٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وآمنوا بما نزل على محمد وهو الحق من ربهم ... | ٢ | م محمد | ٤٧ |
| | محمد رسول الله والذين معه أشداء على الكفار رحماء بينهم | ٢٩ | م الفتح | ٤٨ |

◆◆◆

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الحِمَارِ | : مثل الذين حملوا التوراة ثم لم يحملوها كمثل الحمار | | | |
| | يحمل أسفارا ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | م الجمعة | ٦٢ |
| حِمَارُكَ | : وانظر إلى حمارك ولنجعلك آية للناس ... ... | ٢٥٩ | م البقرة | ٢ |
| حُمُرٌ | : كأنهم حمر مستنفرة ، فرت من قسورة ... ... ... | ٥٠ | ك المدثر | ٧٤ |
| الحَمِيرَ | : والخيل والبغال والحمير لتركبوها وزينة... ... ... | ٨ | ك النحل | ١٦ |
| (٢) | واغضض من صوتك إن أنكر الأصوات لصوت الحمير | ١٩ | ك لقمان | ٣١ |
| حُمْرٌ | : ومن الجبال جدد بيض وحمر مختلف ألوانها وغرابيب سود | ٢٧ | ك فاطر | ٣٥ |

◆◆◆

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| حَمَلَ | : وعنت الوجوه للحي القيوم وقد خاب من حمل ظلما | ١١١ | ك طه | ٢٠ |
| حَمَلَتْ | : ومن البقر والغنم حرمنا عليهم شحومهما إلا | | | |
| (٢) | ما حملت ظهورهما ... ... ... ... ... ... | ١٤٦ | ك الأنعام | ٦ |
| | فلما تغشاها حملت حملا خفيفا فمرت به ... ... ... | ١٨٩ | ك الأعراف | ٧ |
| حَمَلْتَهُ | : ربنا ولا تحمل علينا إصرا كما حملته على الذين من قبلنا | ٢٨٦ | م البقرة | ٢ |
| حَمَلَتْهُ | : فحملته فانتبذت به مكانا قصيا ... ... ... ... | ٢٢ | ك مريم | ١٩ |
| (٣) | ووصينا الإنسان بوالديه حملته أمه وهنا على وهن | ١٤ | ك لقمان | ٣١ |
| | حملته أمه كرها ووضعته كرها وحمله وفصاله ثلاثون شهرا | ١٥ | م الأحقاف | ٤٦ |
| حَمَلْنَا | : ذرية من حملنا مع نوح إنه كان عبدا شكورا | ٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٣) | ومن حملنا مع نوح ومن ذرية إبراهيم وإسرائيل | ٥٨ | م مريم | ١٩ |
| | وآية لهم أنا حملنا ذريتهم في الفلك المشحون ... ... | ٤١ | ك يس | ٣٦ |
| حَمَلْنَاكُمْ | : إنا لما طغا الماء حملناكم في الجارية ... ... | ١١ | ك الحاقة | ٦٩ |
| حَمَلْنَاهُ | : وحملناه على ذات ألواح ودسر ... ... ... ... | ١٣ | ك القمر | ٥٤ |
| حَمَلْنَاهُمْ | : ولقد كرمنا بني آدم وحملناهم في البر والبحر | ٧٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| حَمَلَهَا | : فأبين أن يحملنها وأشفقن منها وحملها الإنسان | ٧٢ | م الأحزاب | ٣٣ |
| أَحْمِلُ | : وقال الآخر إني أراني أحمل فوق رأسي خبزا | ٣٦ | ك يوسف | ١٢ |
| أَحْمِلُكُمْ | : ولا على الذين إذا ما أتوك لتحملهم قلت لا أجد | | | |
| | ما أحملكم عليه... ... ... ... ... ... ... | ٩٢ | م التوبة | ٩ |
| تَحْمِلْ | : ربنا ولا تحمل علينا إصرا كما حملته على الذين من قبلنا | ٢٨٦ | م البقرة | ٢ |
| (٧) | فمثله كمثل الكلب إن تحمل عليه يلهث أو تتركه يلهث | ١٧٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | الله يعلم ما تحمل كل أنثى وما تغيض الأرحام وما تزداد | ٨ | م الرعد | ١٣ |
| | وتحمل أثقالكم إلى بلد لم تكونوا بالغيه إلا بشق الأنفس | ٧ | ك النحل | ١٦ |
| | وكأين من دابة لا تحمل رزقها الله يرزقها وإياكم | ٦٠ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ثم جعلكم أزواجا وما تحمل من أنثى ولا تضع إلا بعلمه | ١١ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وما تخرج من ثمرات من أكمامها وما تحمل من أنثى | | | |
| | ولا تضع إلا بعلمه ... ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك فصلت | ٤١ |
| تَحْمِلُهُ | : وبقية مما ترك آل موسى وآل هرون تحمله الملائكة | ٢٤٨ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | فأتت به قومها تحمله قالوا يا مريم لقد جئت شيئا فريا | ٢٧ | ك مريم | ١٩ |
| لِتَحْمِلَهُمْ | : ولا على الذين إذا ما أتوك لتحملهم قلت | | | |
| | لا أجد ما أحملكم عليه... ... ... ... ... ... | ٩٢ | م التوبة | ٩ |
| وَلْنَحْمِلْ | : اتبعوا سبيلنا ولنحمل خطاياكم ... ... ... | ١٢ | ك العنكبوت | ٢٩ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| يَحْمِلُ | : من أعرض عنه فإنه يحمل يوم القيامة وزرا | ١٠٠ ك طه | ٢٠ |
| (٣) | مثل الذين حُمِّلوا التوراة ثم لم يحملوها كمثل الحمار يحمل أسفارا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥ م الجمعة | ٦٢ |
| | ويحمل عرش ربك فوقهم يومئذ ثمانية... ... ... | ١٧ ك الحاقة | ٦٩ |
| وَلَيَحْمِلُنَّ | : وليحملن أثقالهم وأثقالا مع أثقالهم ... ... | ١٣ ك العنكبوت | ٢٩ |
| يَحْمِلْنَهَا | : إنا عرضنا الأمانة على السموات والأرض والجبال فأبين أن يحملنها... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٢ م الأحزاب | ٣٣ |
| لِيَحْمِلُوا | : ليحملوا أوزارهم كاملة يوم القيامة... ... ... | ٢٥ ك النحل | ١٦ |
| يَحْمِلُونَ | : وهم يحملون أوزارهم على ظهورهم ألا ساء ما يزرون | ٣١ ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | الذين يحملون العرش ومن حوله يسبحون بحمد ربهم | ٧ ك غافر | ٤٠ |
| يَحْمِلُوهَا | : مثل الذين حملوا التوراة ثم لم يحملوها كمثل الحمار يحمل أسفارا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥ م الجمعة | ٦٢ |
| أَحْمِلْ | : قلنا احمل فيها من كلٍّ زوجين اثنين وأهلك ... | ٤٠ ك هود | ١١ |
| حُمِلَتْ | : وحملت الأرض والجبال فدكتا دكة واحدة | ١٤ ك الحاقة | ٦٩ |
| تُحْمَلُونَ | : وعليها وعلى الفلك تحملون ... ... ... ... | ٢٢ ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٢) | ولتبلغوا عليها حاجة فى صدوركم وعليها وعلى الفلك تحملون | ٨٠ ك غافر | ٤٠ |
| يُحْمَلْ | : وإن تدع مثقلة إلى حملها لا يحمل منه شىء ولو كان ذا قربى | ١٨ ك فاطر | ٣٥ |
| تُحَمِّلْنَا | : ربنا ولا تحملنا ما لا طاقة لنا به ... ... ... | ٢٨٦ م البقرة | ٢ |
| حُمِّلَ | : فإن تولوا فإنما عليه ما حمل ... ... ... ... | ٥٤ م النور | ٢٤ |
| حُمِّلْتُمْ | : وعليكم ما حملتم وإن تطيعوه تهتدوا ... ... ... | ٥٤ م » | ٢٤ |
| حُمِّلْنَا | : ولكنا حملنا أوزارا من زينة القوم فقذفناها | ٨٧ ك طه | ٢٠ |
| حُمِّلُوا | : مثل الذين حملوا التوراة ثم لم يحملوها كمثل الحمار يحمل أسفارا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥ م الجمعة | ٦٢ |
| احْتَمَلَ | : ومن يكسب خطيئة أو إثما ثم يرم به بريئا فقد احتمل بهتانا وإثما مبينا ... ... ... ... ... | ١١٢ م النساء | ٤ |
| (٢) | فسالت أودية بقدرها فاحتمل السيل زبدا رابيا | ١٧ م الرعد | ١٣ |
| احْتَمَلُوا | : والذين يؤذون المؤمنين والمؤمنات بغير ما اكتسبوا فقد احتملوا بهتانا وإثما مبينا | ٥٨ م الأحزاب | ٣٣ |
| حَمْلٍ | : تذهل كل مرضعة عما أرضعت وتضع كل ذات حمل حملها | ٢ م الحج | ٢٢ |
| (٢) | وإن كن أولات حمل فأنفقوا عليهن حتى يضعن حملهن | ٦ » الطلاق | ٦٥ |
| حَمْلًا | : فلما تغشاها حملت حملا خفيفا فمرت به ... ... | ١٨٩ ك الأعراف | ٧ |
| حَمْلُهُ | : وحمله وفصاله ثلاثون شهرا ... ... ... ... | ١٥ م الأحقاف | ٤٦ |
| حَمْلَهَا | : تذهل كل مرضعة عما أرضعت وتضع كل ذات حمل حملها | ٢ م الحج | ٢٢ |
| حَمْلَهُنَّ | : وأولات الأحمال أجلهن أن يضعن حملهن... ... | ٤ م الطلاق | ٦٥ |
| (٢) | وإن كن أولات حمل فأنفقوا عليهن حتى يضعن حملهن | ٦ م » | ٦٥ |
| الْأَحْمَالِ | : وأولات الأحمال أجلهن أن يضعن حملهن | ٤ م » | ٦٥ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| حِمْلُ | : قالوا نفقد صواع الملك ولمن جاء به حمل بعير وأنا به زعيم | ٧٢ ك يوسف | ١٢ |
| حِمْلًا | : خالدين فيه وساء لهم يوم القيامة حملا ... ... ... | ١٠١ ك طه | ٢٠ |
| حِمْلِهَا | : وإن تدع مثقلة إلى حملها لا يحمل منه شىء ولو كان ذا قربى | ١٨ ك فاطر | ٣٥ |
| بِحَامِلِينَ | : وما هم بحاملين من خطاياهم من شىء ... ... | ١٢ ك العنكبوت | ٢٩ |
| فَالْحَامِلَاتِ | : والذاريات ذروا . فالحاملات وقرا | ٢ ك الذاريات | ٥١ |
| حَمَّالَةَ | : وامرأته حمالة الحطب . فى جيدها حبل من مسد | ٤ ك المسد | ١١١ |
| حَمُولَةً | : ومن الأنعام حمولة وفرشا كلوا مما رزقكم الله | ١٤٢ ك الأنعام | ٦ |
| ✦✦✦ | | | |
| حَمِيمٍ | : لهم شراب من حميم وعذاب أليم بما كانوا يكفرون | ٧٠ ك الأنعام | ٦ |
| (١٧) | والذين كفروا لهم شراب من حميم وعذاب أليم بما كانوا يكفرون ... ... ... ... ... ... ... | ٤ ك يونس | ١٠ |
| | قطعت لهم ثياب من نار يصب من فوق رءوسهم الحميم | ١٩ م الحج | ٢٢ |
| | فما لنا من شافعين . ولا صديق حميم... ... ... ... | ١٠١ ك الشعراء | ٢٦ |
| | ثم إن لهم عليها لشوبا من حميم ... ... ... ... | ٦٧ ك الصافات | ٣٧ |
| | هذا فليذوقوه حميم وغساق ... ... ... ... ... | ٥٧ ك ص | ٣٨ |
| | ما للظالمين من حميم ولا شفيع يطاع ... ... ... | ١٨ ك غافر | ٤٠ |
| | فى الحميم ثم فى النار يسجرون ... ... ... ... | ٧٢ ك » | ٤٠ |
| | فإذا الذى بينك وبينه عداوة كأنه ولى حميم... ... | ٣٤ ك فصلت | ٤١ |
| | كالمهل يغلى فى البطون . كغلى الحميم ... ... ... | ٤٦ ك الدخان | ٤٤ |
| | ثم صبوا فوق رأسه من عذاب الحميم ... ... ... | ٤٨ ك » | ٤٤ |
| | يطوفون بينها وبين حميم آن... ... ... ... ... | ٤٤ م الرحمن | ٥٥ |
| | وأصحاب الشمال ما أصحاب الشمال . فى سموم وحميم | ٤٢ ك الواقعة | ٥٦ |
| | فشاربون عليه من الحميم ... ... ... ... ... | ٥٤ ك » | ٥٦ |
| | وأما إن كان من المكذبين الضالين . فنزل من حميم | ٩٣ ك » | ٥٦ |
| | فليس له اليوم ههنا حميم ... ... ... ... ... | ٣٥ ك الحاقة | ٦٩ |
| | ولا يسأل حميم حميما... ... ... ... ... ... | ١٠ ك المعارج | ٧٠ |
| حَمِيمًا | : كمن هو خالد فى النار وسقوا ماء حميما فقطع أمعاءهم | ١٥ م محمد | ٤٧ |
| (٣) | ولا يسأل حميم حميما ... ... ... ... ... ... | ١٠ ك المعارج | ٧٠ |
| | لا يذوقون فيها بردا ولا شرابا . إلا حميما وغساقا | ٢٥ ك النبأ | ٧٨ |
| يَحْمُومٍ | : وأصحاب الشمال ما أصحاب الشمال . فى سموم وحميم . وظل من يحموم ... ... ... ... | ٤٣ ك الواقعة | ٥٦ |
| ✦✦✦ | | | |
| يُحْمَى | : يوم يحمى عليها فى نار جهنم فتكوى بها جباههم | ٣٥ م التوبة | ٩ |
| حَامٍ | : ما جعل الله من بحيرة ولا سائبة ولا وصيلة ولا حام | ١٠٣ م المائدة | ٥ |
| حَامِيَةٌ | : تصلى نارا حامية ... ... ... ... ... ... | ٤ ك الغاشية | ٨٨ |
| (٢) | وما أدراك ما هيه . نار حامية ... ... ... ... | ١١ ك القارعة | ١٠١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الْحَمِيَّةَ | : إذ جعل الذين كفروا فى قلوبهم الحمية ... ... | ٢٦ | م الفتح | ٤٨ |
| (٢) | حمية الجاهلية فأنزل الله سكينته على رسوله ... ... | ٢٦ | م « | ٤٨ |
| تَحْنَثْ | : وخذ بيدك ضغثا فاضرب به ولا تحنث ... ... | ٤٤ | ك ص | ٣٨ |
| الْحِنْثِ | : وكانوا يصرون على الحنث العظيم ... ... ... | ٤٦ | ك الواقعة | ٥٦ |
| الْحَنَاجِرَ | : وإذ زاغت الأبصار وبلغت القلوب الحناجر | ١٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| (٢) | وأنذرهم يوم الآزفة إذ القلوب لدى الحناجر كاظمين | ١٨ | ك غافر | ٤٠ |
| حَنِيذٍ | : قال سلام فما لبث أن جاء بعجل حنيذ ... ... | ٦٩ | ك هود | ١١ |
| حَنِيفًا | : قل بل ملة إبراهيم حنيفا ... ... ... ... | ١٣٥ | م البقرة | ٢ |
| (١٠) | ما كان إبراهيم يهوديا ولا نصرانيا ولكن كان حنيفا مسلما | ٦٧ | م آل عمران | ٣ |
| | قل صدق الله فاتبعوا ملة إبراهيم حنيفا ... ... | ٩٥ | م « | ٣ |
| | ومن أحسن دينا ممن أسلم وجهه لله وهو محسن | | | |
| | واتبع ملة إبراهيم حنيفا ... ... ... ... ... | ١٢٥ | م النساء | ٤ |
| | إنى وجهت وجهى للذى فطر السموات والأرض حنيفا | ٧٩ | ك الأنعام | ٦ |
| | قل إننى هدانى ربى إلى صراط مستقيم دينا قيما ملة | | | |
| | إبراهيم حنيفا ... ... ... ... ... ... | ١٦١ | ك « | ٦ |
| | وأن أقم وجهك للدين حنيفا ولا تكونن من المشركين | ١٠٥ | ك يونس | ١٠ |
| | إن إبراهيم كان أمة قانتا لله حنيفا ولم يك من المشركين | ١٢٠ | ك النحل | ١٦ |
| | ثم أوحينا إليك أن اتبع ملة إبراهيم حنيفا ... ... | ١٢٣ | ك « | ١٦ |
| | فأقم وجهك للدين حنيفا فطرة الله التى فطر الناس عليها | ٣٠ | ك الروم | ٣٠ |
| حُنَفَاءَ | : حنفاء لله غير مشركين به ... ... ... ... | ٣١ | م الحج | ٢٢ |
| (٢) | وما أمروا إلا ليعبدوا الله مخلصين له الدين حنفاء | ٥ | م البينة | ٩٨ |
| لَأَحْتَنِكَنَّ | : لئن أخرتن إلى يوم القيامة لأحتنكن ذريته إلا قليلا | ٦٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| حَنَانًا | : وحنانا من لدنا وزكاة وكان تقيا ... ... ... | ١٣ | ك مريم | ١٩ |
| حُنَيْنٍ | : لقد نصركم الله فى مواطن كثيرة ويوم حنين | ٢٥ | م التوبة | ٩ |
| حُوبًا | : ولا تأكلوا أموالهم إلى أموالكم إنه كان حوبا كبيرا | ٢ | م النساء | ٤ |
| الْحُوتُ | : فإنى نسيت الحوت وما أنسانيه إلا الشيطان أن أذكره | ٦٣ | ك الكهف | ١٨ |
| (٣) | فالتقمه الحوت وهو مليم ... ... ... ... ... | ١٤٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| | فاصبر لحكم ربك ولا تكن كصاحب الحوت إذ | | | |
| | نادى وهو مكظوم ... ... ... ... ... ... | ٤٨ | م القلم | ٦٨ |
| حُوتَهُمَا | : فلما بلغا مجمع بينهما نسيا حوتهما ... ... ... | ٦١ | ك الكهف | ١٨ |
| حِيتَانُهُمْ | : إذ تأتيهم حيتانهم يوم سبتهم شرعا ... ... ... | ١٦٣ | م الأعراف | ٧ |
| حَاجَةً | : إلا حاجة فى نفس يعقوب قضاها ... ... ... | ٦٨ | ك يوسف | ١٢ |
| (٣) | ولكم فيها منافع ولتبلغوا عليها حاجة فى صدوركم | ٨٠ | ك غافر | ٤٠ |
| | ولا يجدون فى صدورهم حاجة مما أوتوا ... ... ... | ٩ | م الحشر | ٥٩ |
| اسْتَحْوَذَ | : استحوذ عليهم الشيطان فأنساهم ذكر الله | ١٩ | م المجادلة | ٥٨ |
| نَسْتَحْوِذْ | : قالوا ألم نستحوذ عليكم ونمنعكم من المؤمنين | ١٤١ | م النساء | ٤ |
| يَحُورَ | : إنه ظن أن لن يحور. بلى إن ربه كان به بصيرا | ١٤ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| يُحَاوِرُهُ | : فقال لصاحبه وهو يحاوره أنا أكثر منك مالا | | | |
| (٢) | وأعز نفرا ... ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك الكهف | ١٨ |
| | قال له صاحبه وهو يحاوره أكفرت بالذى خلقك من تراب | ٣٧ | ك « | ١٨ |
| تُحَاوِرُكَ | : وتشتكى إلى الله والله يسمع تحاوركما ... ... ... | ١ | م المجادلة | ٥٨ |
| حُورٌ | : كذلك وزوجناهم بحور عين ... ... ... ... | ٥٤ | ك الدخان | ٤٤ |
| (٤) | متكئين على سرر مصفوفة وزوجناهم بحور عين | ٢٠ | ك الطور | ٥٢ |
| | حور مقصورات فى الخيام ... ... ... ... ... | ٧٢ | م الرحمن | ٥٥ |
| | وحور عين. كأمثال اللؤلؤ المكنون ... ... ... | ٢٢ | ك الواقعة | ٥٦ |
| الْحَوَارِيُّونَ | : قال الحواريون نحن أنصار الله آمنا بالله | ٥٢ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | إذ قال الحواريون يا عيسى ابن مريم هل يستطيع | | | |
| | ربك أن ينزل علينا مائدة من السماء ... ... | ١١٢ | م المائدة | ٥ |
| | قال الحواريون نحن أنصار الله ... ... ... | ١٤ | م الصف | ٦١ |
| الْحَوَارِيِّينَ | : وإذ أوحيت إلى الحواريين أن آمنوا بى | | | |
| (٢) | وبرسولى قالوا آمنا ... ... ... ... ... | ١١١ | م المائدة | ٥ |
| | كما قال عيسى ابن مريم للحواريين من أنصارى إلى الله | ١٤ | م الصف | ٦١ |
| مُتَحَيِّزًا | : ومن يولهم يومئذ دبره إلا متحرفا لقتال | | | |
| | أو متحيزا إلى فئة فقد باء بغضب من الله | ١٦ | م الأنفال | ٨ |
| حَاشَ | : فلما رأينه أكبرنه وقطعن أيديهن وقلن حاش لله | ٣١ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | قلن حاش لله ما علمنا عليه من سوء ... ... ... | ٥١ | ك « | ١٢ |
| أَحَاطَ | : وإذ قلنا لك إن ربك أحاط بالناس ... ... ... | ٦٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٥) | إنا أعتدنا للظالمين نارا أحاط بهم سرادقها ... ... | ٢٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | وأخرى لم تقدروا عليها قد أحاط الله بها ... ... | ٢١ | م الفتح | ٤٨ |
| | وأن الله قد أحاط بكل شىء علما ... ... ... ... | ١٢ | م الطلاق | ٦٥ |
| | ليعلم أن قد أبلغوا رسالات ربهم وأحاط بما لديهم | ٢٨ | ك الجن | ٧٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَحَاطَتْ: | بلى من كسب سيئة وأحاطت به خطيئته فأولئك أصحاب النار ... ... ... ... ... | ٨١ | م البقـرة | ٢ |
| أَحَطتُ: | أحطت بما لم تحط به وجئتك من سبإ بنبإ يقين | ٢٢ | ك النمـل | ٢٧ |
| أَحَطْنَا: | كذلك وقد أحطنا بما لديه خبرا ... ... ... | ٩١ | م الكهف | ١٨ |
| تُحِطْ: | وكيف تصبر على ما لم تحط به خبرا ... ... ... | ٦٨ | ك « | ١٨ |
| (٢) | أحطت بما لم تحط به وجئتك من سبإ بنبإ يقين | ٢٢ | ك النمـل | ٢٧ |
| تُحِيطُوا: | أكذبتم بآياتي ولم تحيطوا بها علما أماذا كنتم تعملون | ٨٤ | ك « | ٢٧ |
| يُحِيطُوا: | بل كذبوا بما لم يحيطوا بعلمه ولما يأتهم تأويله | ٣٩ | ك يـونس | ١٠ |
| يُحِيطُونَ: | ولا يحيطون بشيء من علمه إلا بما شاء... ... | ٢٥٥ | م البقـرة | ٢ |
| (٢) | يعلم ما بين أيديهم وما خلفهـم ولا يحيطون به علما | ١١٠ | ك طـه | ٢٠ |
| أُحِيطَ: | وظنوا أنهم أحيط بهم دعوا الله مخلصين له الدين | ٢٢ | ك يـونس | ١٠ |
| (٢) | وأحيط بثمره فأصبح يقلب كفيه على ما أنفق فيها | ٤٢ | ك الكهف | ١٨ |
| يُحَاطَ: | لتأتني به إلا أن يحاط بكم ... ... ... ... | ٦٦ | ك يوسـف | ١٢ |
| مُحِيطٌ: | والله محيط بالكافرين ... ... ... ... ... | ١٩ | م البقـرة | ٢ |
| (٧) | إن الله بما يعملون محيط ... ... ... ... ... | ١٢٠ | م آل عمران | ٣ |
| | ويصـدون عن سبيل الله والله بما يعملون محيط | ٤٧ | م الأنفال | ٨ |
| | إني أراكم بخير وإني أخاف عليكم عذاب يوم محيط | ٨٤ | ك هـود | ١١ |
| | إن ربي بما تعملون محيط... ... ... ... ... | ٩٢ | ك « | ١١ |
| | ألا إنهم في مرية من لقاء ربهم ألا إنه بكل شيء محيط | ٥٤ | ك فصـلت | ٤١ |
| | بل الذين كفروا في تكذيب . والله من ورائهم محيط | ٢٠ | ك البروج | ٨٥ |
| مُحِيطًا: | وكان الله بما يعملون محيطا ... ... ... ... | ١٠٨ | م النسـاء | ٤ |
| (٢) | وكان الله بكل شيء محيطا ... ... ... ... ... | ١٢٦ | م « | ٤ |
| مُحِيطَةٌ: | ألا في الفتنة سقطوا وإن جهنم لمحيطة بالكافرين | ٤٩ | م التـوبة | ٩ |
| (٢) | يستعجلونك بالعذاب وإن جهنم لمحيطة بالكافرين | ٥٤ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| حَالَ: | وحال بينهما الموج فكان من المغرقين... ... ... | ٤٣ | ك هـود | ١١ |
| يَحُولُ: | واعلموا أن الله يحول بين المرء وقلبه وأنه إليه تحشرون | ٢٤ | م الأنفـال | ٨ |
| حِيلَ: | وحيل بينهم وبين ما يشتهون كما فعل بأشياعهم من قبل | ٥٤ | ك سـبإ | ٣٤ |
| حَوْلَ: | والذين يتوفون منكم ويذرون أزواجا وصية | | | |
| (٣) | لأزواجهم متاعا إلى الحول غير إخراج ... ... | ٢٤٠ | م البقـرة | ٢ |
| | فوربك لنحشرنهم والشياطين ثم لنحضرنهم حول جهنم جثيا | ٦٨ | ك مريم | ١٩ |
| | وترى الملائكة حافين من حول العرش يسبحون بحمد ربهم | ٧٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| حَوْلِكَ: | ولو كنت فظا غليظ القلب لانفضوا من حولك | ١٥٩ | م آل عمران | ٣ |
| حَوْلَكُمْ: | وممن حولكم من الأعراب منافقون ومن أهل المدينة | ١٠١ | م التـوبة | ٩ |
| (٢) | ولقد أهلكنا ما حولكم من القرى ... ... ... ... | ٢٧ | ك الأحقاف | ٤٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| حَوْلَهُ: | فلما أضاءت ما حوله ذهب الله بنورهم ... ... | ١٧ | م البقـرة | ٢ |
| (٥) | إلى المسجد الأقصى الذي باركنا حوله لنريه من آياتنا | ١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | قال لمن حوله ألا تستمعون ... ... ... ... | ٢٥ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | قال للملإ حوله إن هذا لساحر عليم ... ... ... | ٣٤ | ك « | ٢٦ |
| | الذين يحملون العرش ومن حوله يسبحون بحمد ربهم | ٧ | ك غافـر | ٤٠ |
| حَوْلَهَا: | ولتنذر أم القرى ومن حولها ... ... ... ... | ٩٢ | ك الأنعـام | ٦ |
| (٣) | فلما جاءها نودي أن بورك من في النار ومن حولها | ٨ | ك النمـل | ٢٧ |
| | لتنذر أم القرى ومن حولها وتنذر يوم الجمع لا ريب فيه | ٧ | ك الشورى | ٤٢ |
| حَوْلَهُمْ: | ما كان لأهل المدينة ومن حولهم من الأعراب | | | |
| (٢) | أن يتخلفوا عن رسول الله ... ... ... ... ... | ١٢٠ | م التـوبة | ٩ |
| | أولم يروا أنا جعلنا حرما آمنا ويتخطف الناس من حولهم | ٦٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| حَوْلَيْنِ: | والوالدات يرضعن أولادهن حولين كاملين | ٢٣٣ | م البقـرة | ٢ |
| حِوَلًا: | خالدين فيها لا يبغون عنها حولا ... ... ... ... | ١٠٨ | ك الكهف | ١٨ |
| حِيلَةً: | لا يستطيعون حيلة ولا يهتدون سبيلا ... ... ... | ٩٨ | م النسـاء | ٤ |
| تَحْوِيلًا: | فلا يملكون كشف الضر عنكم ولا تحويلا | ٥٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٣) | سنة من قد أرسلنا قبلك من رسلنا ولا تجد لسنتنا تحويلا | ٧٧ | م « | ١٧ |
| | فلن تجد لسنة الله تبديلا ولن تجد لسنة الله تحويلا | ٤٣ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| الْحَوَايَا: | إلا ما حملت ظهورهما أو الحوايا أو ما اختلط بعظم | ١٤٦ | ك الأنعـام | ٦ |
| أَحْوَى: | والذي أخرج المرعى . فجعله غثاء أحوى ... ... | ٥ | ك الأعلى | ٨٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| حَيْثُ: | اسكن أنت وزوجك الجنة وكلا منها رغدا حيث شئتما | ٣٥ | م البقـرة | ٢ |
| (٣١) | وإذ قلنا ادخلوا هذه القرية فكلوا منها حيث شئتم رغدا | ٥٨ | م « | ٢ |
| | وحيث ما كنتم فولوا وجوهكم شطره ... ... ... | ١٤٤ | م « | ٢ |
| | ومن حيث خرجت فول وجهك شطر المسجد الحرام | ١٤٩ | م « | ٢ |
| | ومن حيث خرجت فول وجهك شطر المسجد الحرام | ١٥٠ | م « | ٢ |
| | وحيث ما كنتم فولوا وجوهكم شطره ... ... ... | ١٥٠ | م « | ٢ |
| | واقتلوهم حيث ثقفتموهم ... ... ... ... ... | ١٩١ | م « | ٢ |
| | وأخرجوهم من حيث أخرجوكم ... ... ... ... | ١٩١ | م « | ٢ |
| | ثم أفيضوا من حيث أفاض الناس واستغفروا الله | ١٩٩ | م « | ٢ |
| | فإذا تطهرن فأتوهن من حيث أمركم الله ... ... ... | ٢٢٢ | م « | ٢ |
| | فإن تولوا فخذوهم واقتلوهم حيث وجدتموهم ... ... | ٨٩ | م النسـاء | ٤ |
| | فخذوهم واقتلوهم حيث ثقفتموهم... ... ... ... | ٩١ | م « | ٤ |
| | الله أعلم حيث يجعل رسالته ... ... ... ... | ١٢٤ | ك الأنعـام | ٦ |
| | فكلا من حيث شئتما ولا تقربا هذه الشجرة ... ... | ١٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | إنه يراكم هو وقبيله من حيث لا ترونهم ... ... | ٢٧ | ك « | ٧ |
| | وإذ قيل لهم اسكنوا هذه القرية وكلوا منها حيث شئتم | ١٦١ | ك « | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| حَيْثُ | : والذين كذبوا بآياتنا سنستدرجهم من حيث لا يعلمون | ١٨٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | فإذا انسلخ الأشهر الحرم فاقتلوا المشركين حيث وجدتموهم | ٥ | م التوبة | ٩ |
| | وكذلك مكنا ليوسف فى الأرض يتبوأ منها حيث يشاء | ٥٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | ولما دخلوا من حيث أمرهم أبوهم ما كان يغنى عنهم | | | |
| | من الله من شىء ... ... ... ... ... ... ... | ٦٨ | ك « | ١٢ |
| | ولا يلتفت منكم أحد وامضوا حيث تؤمرون ... ... | ٦٥ | ك الحجر | ١٥ |
| | وأتاهم العذاب من حيث لا يشعرون ... ... ... | ٢٦ | ك النحل | ١٦ |
| | أو يأتيهم العذاب من حيث لا يشعرون ... ... ... | ٤٥ | ك « | ١٦ |
| | إنما صنعوا كيد ساحر ولا يفلح الساحر حيث أتى | ٦٩ | ك طه | ٢٠ |
| | فسخرنا له الريح تجرى بأمره رخاء حيث أصاب | ٣٦ | ك ص | ٣٨ |
| | كذب الذين من قبلهم فأتاهم العذاب من حيث لا يشعرون | ٢٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وأورثنا الأرض نتبوأ من الجنة حيث نشاء ... ... | ٧٤ | ك « | ٣٩ |
| | فأتاهم الله من حيث لم يحتسبوا وقذف فى قلوبهم الرعب | ٢ | م الحشر | ٥٩ |
| | ومن يتق الله يجعل له مخرجا . ويرزقه من حيث لا يحتسب | ٣ | م الطلاق | ٦٥ |
| | أسكنوهن من حيث سكنتم من وجدكم ولا تضاروهن | ٦ | م « | ٦٥ |
| | سنستدرجهم من حيث لا يعلمون... ... ... ... ... | ٤٤ | ك القلم | ٦٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تَحِيدُ | : وجاءت سكرة الموت بالحق ذلك ما كنت منه تحيد | ١٩ | ك ق | ٥٠ |
| | ✦✦✦ | | | |
| حَيْرَانَ | : كالذى استهوته الشياطين فى الأرض حيران... ... | ٧١ | ك الأنعام | ٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| مَحِيصٍ | : سواء علينا أجزعنا أم صبرنا مالنا من محيص | ٢١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| (٤) | وضل عنهم ما كانوا يدعون من قبل وظنوا ما لهم من محيص | ٤٨ | ك فصلت | ٤١ |
| | ويعلم الذين يجادلون فى آياتنا ما لهم من محيص | ٣٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| | هم أشد منهم بطشا فنقبوا فى البلاد هل من محيص | ٣٦ | ك ق | ٥٠ |
| مَحِيصًا | : أولئك مأواهم جهنم ولا يجدون عنها محيصا... ... | ١٢١ | م النساء | ٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| يَحِضْنَ | : واللائى يئسن من المحيض من نسائكم إن ارتبتم | | | |
| | فعدتهن ثلاثة أشهر واللائى لم يحضن... ... ... | ٤ | م الطلاق | ٦٥ |
| الْمَحِيضِ | : ويسئلونك عن المحيض... ... ... ... ... ... | ٢٢٢ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | قل هو أذى فاعتزلوا النساء فى المحيض ... ... ... | ٢٢٢ | م « | ٢ |
| | واللائى يئسن من المحيض من نسائكم إن ارتبتم | | | |
| | فعدتهن ثلاثة أشهر... ... ... ... ... ... ... | ٤ | م الطلاق | ٦٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| يَحِيفَ | : أم يخافون أن يحيف الله عليهم ورسوله ... ... | ٥٠ | م النور | ٢٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| حَاقَ | : لحاق بالذين سخروا منهم ما كانوا به يستهزئون ... | ١٠ | ك الأنعام | ٦ |
| (٩) | ألا يوم يأتيهم ليس مصروفا عنهم وحاق بهم ما كانوا | | | |
| | به يستهزئون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك هود | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| حَاقَ | : فأصابهم سيئات ما عملوا وحاق بهم ما كانوا به يستهزئون | ٣٤ | ك النحل | ١٦ |
| | ولقد استهزئ برسل من قبلك فحاق بالذين سخروا منهم | | | |
| | ما كانوا به يستهزئون ... ... ... ... ... ... | ٤١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وبدا لهم سيئات ما كسبوا وحاق بهم ما كانوا به يستهزئون | ٤٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| | فوقاه الله سيئات ما مكروا وحاق بآل فرعون سوء العذاب | ٤٥ | ك غافر | ٤٠ |
| | فرحوا بما عندهم من العلم وحاق بهم ما كانوا به يستهزئون | ٨٣ | ك « | ٤٠ |
| | وبدا لهم سيئات ما عملوا وحاق بهم ما كانوا به يستهزئون | ٣٣ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | إذ كانوا يجحدون بآيات الله وحاق بهم ما كانوا | | | |
| | به يستهزئون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| يَحِيقُ | : ولا يحيق المكر السيئ إلا بأهله ... ... ... ... | ٤٣ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| حِينٍ | : ولكم فى الأرض مستقر ومتاع إلى حين... ... ... | ٣٦ | م البقرة | ٢ |
| (٣٤) | والصابرين فى البأساء والضراء وحين البأس ... ... | ١٧٧ | م « | ٢ |
| | وإن تسئلوا عنها حين ينزل القرآن تبد لكم عفا الله عنها | ١٠١ | م المائدة | ٥ |
| | شهادة بينكم إذا حضر أحدكم الموت حين الوصية | | | |
| | اثنان ذوا عدل منكم ... ... ... ... ... ... | ١٠٦ | م « | ٥ |
| | ولكم فى الأرض مستقر ومتاع إلى حين ... ... ... | ٢٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | كشفنا عنهم عذاب الخزى فى الحياة الدنيا ومتعناهم إلى حين | ٩٨ | ك يونس | ١٠ |
| | ألا حين يستغشون ثيابهم يعلم ما يسرون وما يعلنون | ٥ | ك هود | ١١ |
| | ثم بدا لهم من بعد ما رأوا الآيات ليسجننه حتى حين | ٣٥ | ك يوسف | ١٢ |
| | تؤتى أكلها كل حين بإذن ربها... ... ... ... ... | ٢٥ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | ولكم فيها جمال حين تريحون ... ... ... ... ... | ٦ | ك النحل | ١٦ |
| | وحين تسرحون .. ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك « | ١٦ |
| | ومن أصوافها وأوبارها وأشعارها أثاثا ومتاعا إلى حين | ٨٠ | ك « | ١٦ |
| | لو يعلم الذين كفروا حين لا يكفون عن وجوههم النار | ٣٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وإن أدرى لعله فتنة لكم ومتاع إلى حين ... ... | ١١١ | ك « | ٢١ |
| | إن هو إلا رجل به جنة فتربصوا به حتى حين | ٢٥ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فذرهم فى غمرتهم حتى حين ... ... ... ... ... | ٥٤ | ك « | ٢٣ |
| | من قبل صلاة الفجر وحين تضعون ثيابكم من الظهيرة | ٥٨ | م النور | ٢٤ |
| | وسوف يعلمون حين يرون العذاب من أضل سبيلا | ٤٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وتوكل على العزيز الرحيم . الذى يراك حين تقوم | ٢١٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | ودخل المدينة على حين غفلة من أهلها ... ... ... | ١٥ | ك القصص | ٢٨ |
| | فسبحان الله حين تمسون ... ... ... ... ... ... | ١٧ | م الروم | ٣٠ |
| | وحين تصبحون ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | م « | ٣٠ |
| | وله الحمد فى السموات والأرض وعشيا وحين تظهرون | ١٨ | ك « | ٣٠ |
| | إلا رحمة منا ومتاعا إلى حين... ... ... ... ... | ٤٤ | ك يس | ٣٦ |
| | فآمنوا فمتعناهم إلى حين... ... ... ... ... ... | ١٤٨ | ك الصافات | ٣٧ |
| | فتول عنهم حتى حين . وأبصرهم فسوف يبصرون | ١٧٤ | ك « | ٣٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| حِينٍ: | وتول عنهم حتى حين . وأبصر فسوف يبصرون | ١٧٨ | ك الصافات | ٣٧ |
| | كم أهلكنا من قبلهم من قرن فنادوا ولات حين مناص | ٣ | ك ص | ٣٨ |
| | ولتعلمن نبأه بعد حين ... ... ... ... ... ... ... | ٨٨ | ك « | ٣٨ |
| | الله يتوفى الأنفس حين موتها والتي لم تمت في منامها | ٤٢ | ك الزمر | ٣٩ |
| | أو تقول حين ترى العذاب لو أن لي كرة فأكون من المحسنين | ٥٨ | ك « | ٣٩ |
| | وفي ثمود إذ قيل لهم تمتعوا حتى حين ... ... ... ... | ٤٣ | ك الذاريات | ٥١ |
| | واصبر لحكم ربك فإنك بأعيننا وسبح بحمد ربك حين تقوم | ٤٨ | ك الطور | ٥٢ |
| | هل أتى على الإنسان حين من الدهر لم يكن شيئا مذكورا | ١ | م الإنسان | ٧٦ |
| حِينَئِذٍ: | فلولا إذا بلغت الحلقوم . وأنتم حينئذ تنظرون | ٨٤ | ك الواقعة | ٥٦ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| حَيَّ: | ليهلك من هلك عن بينة ويحيى من حي عن بينة | ٤٢ | م الأنفال | ٨ |
| تَحْيَوْنَ: | قال فيها تحيون وفيها تموتون ومنها تخرجون | ٢٥ | ك الأعراف | ٧ |
| نَحْيَا: | إن هي إلا حياتنا الدنيا نموت ونحيا وما نحن بمبعوثين | ٣٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٢) | وقالوا ما هي إلا حياتنا الدنيا نموت ونحيا ... ... | ٢٤ | ك الجاثية | ٤٥ |
| يَحْيَى: | ليهلك من هلك عن بينة ويحيى من حي عن بينة | ٤٢ | م الأنفال | ٨ |
| (٣) | إنه من يأت ربه مجرما فإن له جهنم لا يموت فيها ولا يحيى | ٧٤ | ك طه | ٢٠ |
| | الذي يصلى النار الكبرى . ثم لا يموت فيها ولا يحيى | ١٣ | ك الأعلى | ٨٧ |
| حَيُّوكَ: | وإذا جاءوك حيوك بما لم يحيك به الله ... ... | ٨ | م المجادلة | ٥٨ |
| يُحَيُّكَ: | وإذا جاءوك حيوك بما لم يحيك به الله ... ... | ٨ | م « | ٥٨ |
| فَحَيُّوا: | وإذا حييتم بتحية فحيوا بأحسن منها أو ردوها | ٨٦ | م النساء | ٤ |
| حُيِّيتُمْ: | وإذا حييتم بتحية فحيوا بأحسن منها أو ردوها | ٨٦ | م « | ٤ |
| أَحْيَا: | وما أنزل الله من السماء من ماء فأحيا به الأرض بعد موتها | ١٦٤ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | ومن أحياها فكأنما أحيا الناس جميعا ... ... ... | ٣٢ | م المائدة | ٥ |
| | والله أنزل من السماء ماء فأحيا به الأرض بعد موتها | ٦٥ | ك النحل | ١٦ |
| | ولئن سألتهم من نزل من السماء ماء فأحيا به الأرض | | | |
| | من بعد موتها ليقولن الله ... ... ... ... ... | ٦٣ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وما أنزل الله من السماء من رزق فأحيا به الأرض بعد موتها | ٥ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | وأنه هو أضحك وأبكى . وأنه هو أمات وأحيا | ٤٤ | ك النجم | ٥٣ |
| أَحْيَاكُمْ: | كيف تكفرون بالله وكنتم أمواتا فأحياكم | ٢٨ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | وهو الذي أحياكم ثم يميتكم ثم يحييكم ... ... ... | ٦٦ | م الحج | ٢٢ |
| أَحْيَاهَا: | ومن أحياها فكأنما أحيا الناس جميعا ... ... | ٣٢ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | إن الذي أحياها لمحيي الموتى إنه على كل شيء قدير | ٣٩ | ك فصلت | ٤١ |
| أَحْيَاهُمْ: | فقال لهم الله موتوا ثم أحياهم ... ... ... ... | ٢٤٣ | م البقرة | ٢ |
| أَحْيَيْتَنَا: | قالوا ربنا أمتنا اثنتين وأحييتنا اثنتين فاعترفنا بذنوبنا | ١١ | ك غافر | ٤٠ |
| أَحْيَيْنَا: | فسقناه إلى بلد ميت فأحيينا به الأرض بعد موتها | ٩ | ك فاطر | ٣٥ |
| (٢) | رزقا للعباد وأحيينا به بلدة ميتا كذلك الخروج | ١١ | ك ق | ٥٠ |
| أَحْيَيْنَاهُ: | أو من كان ميتا فأحييناه وجعلنا له نورا يمشي | | | |
| | به في الناس كمن مثله في الظلمات ليس بخارج منها | ١٢٢ | ك الأنعام | ٦ |
| أَحْيَيْنَاهَا: | وآية لهم الأرض الميتة أحييناها وأخرجنا منها حبا | ٣٣ | ك يس | ٣٦ |
| أُحْيِي: | إذ قال إبراهيم ربي الذي يحيي ويميت قال أنا أحيي وأميت | ٢٥٨ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | وأبرئ الأكمه والأبرص وأحيي الموتى بإذن الله | ٤٩ | م آل عمران | ٣ |
| تُحْيِي: | وإذ قال إبراهيم رب أرني كيف تحيي الموتى... ... | ٢٦٠ | م البقرة | ٢ |
| نُحْيِي: | وإنا لنحن نحيي ونميت ونحن الوارثون ... ... | ٢٣ | ك الحجر | ١٥ |
| (٤) | لنحيي به بلدة ميتا ونسقيه مما خلقنا أنعاما وأناسي كثيرا | ٤٩ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | إنا نحن نحيي الموتى ونكتب ما قدموا وآثارهم | ١٢ | ك يس | ٣٦ |
| | إنا نحن نحيي ونميت وإلينا المصير ... ... ... ... | ٤٣ | ك ق | ٥٠ |
| لَنُحْيِيَنَّهُ: | من عمل صالحا من ذكر أو أنثى وهو مؤمن | | | |
| | فلنحيينه حياة طيبة... ... ... ... ... ... ... | ٩٧ | ك النحل | ١٦ |
| يُحْيِي: | كذلك يحيي الله الموتى ويريكم آياته لعلكم تعقلون | ٧٣ | م البقرة | ٢ |
| (٢٠) | إذ قال إبراهيم ربي الذي يحيي ويميت ... ... ... | ٢٥٨ | م « | ٢ |
| | قال أنى يحيي هذه الله بعد موتها ... ... ... ... | ٢٥٩ | م « | ٢ |
| | والله يحيي ويميت والله بما تعملون بصير ... ... | ١٥٦ | م آل عمران | ٣ |
| | لا إله إلا هو يحيي ويميت فآمنوا بالله ورسوله | ١٥٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | إن الله له ملك السموات والأرض يحيي ويميت | ١١٦ | م التوبة | ٩ |
| | هو يحيي ويميت وإليه ترجعون ... ... ... ... | ٥٦ | ك يونس | ١٠ |
| | ذلك بأن الله هو الحق وأنه يحيي الموتى ... ... | ٦ | م الحج | ٢٢ |
| | وهو الذي يحيي ويميت وله اختلاف الليل والنهار | ٨٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ويخرج الميت من الحي ويحيي الأرض بعد موتها | ١٩ | ك الروم | ٣٠ |
| | وينزل من السماء ماء فيحيي به الأرض بعد موتها | ٢٤ | ك « | ٣٠ |
| | فانظر إلى آثار رحمة الله كيف يحيي الأرض بعد موتها | ٥٠ | ك « | ٣٠ |
| | وضرب لنا مثلا ونسي خلقه قال من يحيي العظام وهي رميم | ٧٨ | ك يس | ٣٦ |
| | هو الذي يحيي ويميت فإذا قضى أمرا فإنما يقول | | | |
| | له كن فيكون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦٨ | ك غافر | ٤٠ |
| | فالله هو الولي وهو يحيي الموتى وهو على كل شيء قدير | ٩ | ك الشورى | ٤٢ |
| | لا إله إلا هو يحيي ويميت ربكم ورب آبائكم الأولين | ٨ | ك الدخان | ٤٤ |
| | أو لم يروا أن الله الذي خلق السموات والأرض | | | |
| | ولم يعي بخلقهن بقادر على أن يحيي الموتى... ... | ٣٣ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | له ملك السموات والأرض يحيي ويميت ... ... | ٢ | م الحديد | ٥٧ |
| | اعلموا أن الله يحيي الأرض بعد موتها ... ... ... | ١٧ | م « | ٥٧ |
| | أليس ذلك بقادر على أن يحيي الموتى ... ... ... | ٤٠ | ك القيامة | ٧٥ |
| يُحْيِيكُمْ: | ثم يميتكم ثم يحييكم ثم إليه ترجعون ... ... ... | ٢٨ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | استجيبوا لله وللرسول إذا دعاكم لما يحييكم ... ... | ٢٤ | م الأنفال | ٨ |
| | وهو الذي أحياكم ثم يميتكم ثم يحييكم إن الإنسان لكفور | ٦٦ | م الحج | ٢٢ |
| | الله الذي خلقكم ثم رزقكم ثم يميتكم ثم يحييكم | ٤٠ | ك الروم | ٣٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يُحْيِيكُمْ | : قل الله يحييكم ثم يميتكم ثم يجمعكم إلى يوم القيامة لاريب فيه | ٢٦ | ك الجاثيـة | ٤٥ |
| يُحْيِينِ | : والذى يميتنى ثم يحيين ... ... ... ... ... ... | ٨١ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| يُحْيِيهَا | : قل يحييها الذى أنشأها أول مرة وهو بكل خلق عليم | ٧٩ | ك يـس | ٣٦ |
| نَسْتَحْيِي | : قال سنقتل أبناءهم ونستحيى نساءهم .. ... | ١٢٧ | ك الأعراف | ٧ |
| يَسْتَحْيُونَ | : يذبحون أبناءكم ويستحيون نساءكم ... ... | ٤٩ | م البقـرة | ٢ |
| (٣) | يسومونكم سوء العذاب يقتلون أبناءكم و يستحيون نساءكم | ١٤١ | ك الأعراف | ٧ |
| | يسومونكم سوء العذاب و يذبحون أبناءكم ويستحيون نساءكم | ٦ | ك إبراهيم | ١٤ |
| يَسْتَحْيِي | : إن الله لا يستحيى أن يضرب مثلا ما بعوضة فما فوقها | ٢٦ | م البقـرة | ٢ |
| (٤) | يذبح أبناءهم و يستحيى نساءهم إنه كان من المفسدين | ٤ | ك القصص | ٢٨ |
| | إن ذلكم كان يؤذى النبى فيستحيى منكم ... ... ... | ٥٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | والله لا يستحيى من الحق ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | م « | ٣٣ |
| اسْتَحْيُوا | : قالوا اقتلوا أبناء الذين آمنوا معه واستحيوا نساءهم | ٢٥ | ك غافـر | ٤٠ |
| حَيٌّ | : الله لا إله إلا هو الحى القيوم لا تأخذه سنة ولا نوم | ٢٥٥ | م البقـرة | ٢ |
| (١٤) | الـم . الله لا إله إلا هو الحى القيوم ... ... ... | ٢ | م آل عمران | ٣ |
| | تولج الليل فى النهار وتولج النهار فى الليـل وتخرج | | | |
| | الحى من الميت ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | م « | ٣ |
| | وتخرج الميت من الحى وترزق من تشاء بغير حساب | ٢٧ | م « | ٣ |
| | إن الله فالق الحب والنوى يخرج الحى من الميت | ٩٥ | ك الأنعـام | ٦ |
| | ومخـرج الميت من الحى ذلكم الله فأنى تؤفكون | ٩٥ | ك « | ٦ |
| | أمن يملك السمع والأبصار ومن يخرج الحى من الميت | ٣١ | ك يـونس | ١٠ |
| | ويخرج الميت من الحى ومن يدبر الأمر ... ... | ٣١ | ك « | ١٠ |
| | وعنت الوجوه للحى القيوم وقد خاب من حمل ظلما | ١١١ | ك طـه | ٢٠ |
| | وجعلنا من الماء كل شىء حى ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وتوكل على الحى الذى لا يموت وسبح بحمده... ... | ٥٨ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| | يخرج الحى من الميت ... ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك الروم | ٣٠ |
| | ويخرج الميت من الحى ويحيى الأرض بعد موتها | ١٩ | ك « | ٣٠ |
| | هو الحى لا إله إلا هو فادعوه مخلصين له الدين | ٦٥ | ك غافـر | ٤٠ |
| حَيًّا | : وسلام عليه يوم ولد و يوم يموت و يوم يبعث حيا | ١٥ | ك مريم | ١٩ |
| (٥) | وأوصانى بالصلاة والزكاة مادمت حيا ... ... ... | ٣١ | ك « | ١٩ |
| | والسلام علىّ يوم ولدت و يوم أموت و يوم أبعث حيا | ٣٣ | ك « | ١٩ |
| | ويقول الإنسان أءذا مامت لسوف أخرج حيا | ٦٦ | ك « | ١٩ |
| | لينذر من كان حيا ويحق القول على الكافرين... ... | ٧٠ | ك يـس | ٣٦ |
| أَحْيَاءٌ | : ولا تقولوا لمن يقتل فى سبيل الله أموات بل أحياء | | | |
| (٥) | ولكن لا تشعرون ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٤ | م البقـرة | ٢ |
| | ولا تحسبن الذين قتلوا فى سبيل الله أمواتا بل أحياء | | | |
| | عند ربهم يرزقون... ... ... ... ... ... ... | ١٦٩ | م آل عمران | ٣ |
| | أموات غير أحياء وما يشعرون أيان يبعثون... ... | ٢١ | ك النحـل | ١٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَحْيَاءٌ | : وما يستوى الأحياء ولا الأموات ... ... ... | ٢٢ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | ألم نجعل الأرض كفاتا . أحياء وأمواتا ... ... | ٢٦ | ك المرسلات | ٧٧ |
| حَيَاةٌ | : فما جزاء من يفعل ذلك منكم إلا خزى فى الحياة الدنيا | ٨٥ | م البقـرة | ٢ |
| (٧١) | أولئك الذين اشتروا الحياة الدنيا بالآخرة ... ... | ٨٦ | م « | ٢ |
| | ولتجدنهم أحرص الناس على حياة ومن الذين أشركوا | ٩٦ | م « | ٢ |
| | ولكم فى القصاص حياة يا أولى الألباب لعلكم تتقون | ١٧٩ | م « | ٢ |
| | ومن الناس من يعجبك قوله فى الحياة الدنيا | | | |
| | ويشهد الله على ما فى قلبه ... ... ... ... ... | ٢٠٤ | م « | ٢ |
| | زين للذين كفروا الحياة الدنيا ويسخرون من الذين آمنوا | ٢١٢ | م « | ٢ |
| | ذلك متاع الحياة الدنيا والله عنده حسن المآب | ١٤ | م آل عمران | ٣ |
| | مثل ما ينفقون فى هذه الحياة الدنيا كمثل ريح فيها صر | ١١٧ | م « | ٣ |
| | وما الحياة الدنيا إلا متاع الغرور ... ... ... ... | ١٨٥ | م « | ٣ |
| | فليقاتل فى سبيل الله الذين يشرون الحياة الدنيا بالآخرة | ٧٤ | م النسـاء | ٤ |
| | تبتغون عرض الحياة الدنيا فعند الله مغانم كثيرة | ٩٤ | م « | ٤ |
| | هأنتم هؤلاء جادلتم عنهم فى الحياة الدنيا ... ... | ١٠٩ | م « | ٤ |
| | وما الحياة الدنيا إلا لعب ولهو ... ... ... ... | ٣٢ | ك الأنعـام | ٦ |
| | وذر الذين اتخذوا دينهم لعبا ولهوا وغرتهم الحياة الدنيا | ٧٠ | ك « | ٦ |
| | قالوا شهدنا على أنفسنا وغرتهم الحياة الدنيا | ١٣٠ | ك « | ٦ |
| | قل هى للذين آمنوا فى الحياة الدنيا خالصة يوم القيامة | ٣٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | الذين اتخذوا دينهم لهوا ولعبا وغرتهم الحياة الدنيا | ٥١ | ك « | ٧ |
| | إن الذين اتخذوا العجل سينالهم غضب من ربهم | | | |
| | وذلة فى الحياة الدنيا ... ... ... ... ... ... | ١٥٢ | ك « | ٧ |
| | أرضيتم بالحياة الدنيا من الآخرة ... ... ... ... | ٣٨ | م التـوبة | ٩ |
| | فما متاع الحياة الدنيا فى الآخرة إلا قليل ... ... | ٣٨ | م « | ٩ |
| | إنما يريد الله ليعذبهم بها فى الحياة الدنيا وتزهق أنفسهم | ٥٥ | م « | ٩ |
| | إن الذين لا يرجون لقاءنا ورضوا بالحياة الدنيا | | | |
| | واطمأنوا بها ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك يـونس | ١٠ |
| | يأيها الناس إنما بغيكم على أنفسكم متاع الحياة الدنيا | ٢٣ | ك « | ١٠ |
| | إنما مثل الحياة الدنيا كماء أنزلناه من السماء فاختلط | | | |
| | به نبات الأرض ... ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك « | ١٠ |
| | لهم البشرى فى الحياة الدنيا وفى الآخرة ... ... ... | ٦٤ | ك « | ١٠ |
| | إنك آتيت فرعون وملأه زينة وأموالا فى الحياة الدنيا | ٨٨ | ك « | ١٠ |
| | كشفنا عنهم عذاب الخزى فى الحياة الدنيا | ٩٨ | ك « | ١٠ |
| | من كان يريد الحياة الدنيا وزينتها نوف إليهم أعمالهم فيها | ١٥ | ك هـود | ١١ |
| | وفرحوا بالحياة الدنيا ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | م الرعـد | ١٣ |
| | وما الحياة الدنيا فى الآخرة إلا متاع ... ... ... | ٢٦ | م « | ١٣ |
| | لهم عذاب فى الحياة الدنيا ولعذاب الآخرة أشق | ٣٤ | م « | ١٣ |
| | الذين يستحبون الحياة الدنيا على الآخرة ... ... | ٣ | ك إبراهيم | ١٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| حَيَاةٌ | : يثبت الله الذين آمنوا بالقول الثابت فى الحياة الدنيا وفى الآخرة ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | من عمل صالحا من ذكر أو أنثى وهو مؤمن فلنحيينه حياة طيبة | ٩٧ | ك النحل | ١٦ |
| | ذلك بأنهم استحبوا الحياة الدنيا على الآخرة ... ... | ١٠٧ | ك « | ١٦ |
| | إذاً لأذقناك ضعف الحياة وضعف الممات ... ... | ٧٥ | م الإسراء | ١٧ |
| | ولا تمد عيناك عنهم تريد زينة الحياة الدنيا... ... | ٢٨ | م الكهف | ١٨ |
| | واضرب لهم مثل الحياة الدنيا كماء أنزلناه من السماء | ٤٥ | ك « | ١٨ |
| | المال والبنون زينة الحياة الدنيا ... ... ... ... | ٤٦ | ك « | ١٨ |
| | الذين ضل سعيهم فى الحياة الدنيا ... ... ... ... | ١٠٤ | ك « | ١٨ |
| | فاقض ما أنت قاض إنما تقضى هذه الحياة الدنيا | ٧٢ | ك طه | ٢٠ |
| | قال فاذهب فإن لك فى الحياة أن تقول لا مساس | ٩٧ | ك « | ٢٠ |
| | ولا تمدنّ عينيك إلى ما متعنا به أزواجا منهم زهرة الحياة الدنيا ... ... ... ... ... ... ... | ١٣١ | م « | ٢٠ |
| | وقال الملأ من قومه الذين كفروا وكذبوا بلقاء الآخرة وأترفناهم فى الحياة الدنيا ما هذا إلا بشر مثلكم | ٣٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ولا تكرهوا فتياتكم على البغاء إن أردن تحصنا لتبتغوا عرض الحياة الدنيا ... ... ... ... ... | ٣٣ | م النور | ٢٤ |
| | ولا يملكون موتا ولا حياة ولا نشورا ... ... ... | ٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وما أوتيتم من شىء فمتاع الحياة الدنيا وزينتها | ٦٠ | ك القصص | ٢٨ |
| | أفمن وعدناه وعدا حسنا فهو لاقيه كمن متعناه متاع الحياة الدنيا ... ... ... ... ... ... ... | ٦١ | ك « | ٢٨ |
| | قال الذين يريدون الحياة الدنيا ياليت لنا مثل ما أوتى قارون | ٧٩ | ك « | ٢٨ |
| | إنما اتخذتم من دون الله أوثانا مودة بينكم فى الحياة الدنيا | ٢٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وما هذه الحياة الدنيا إلا لهو ولعب ... ... ... | ٦٤ | ك « | ٢٩ |
| | يعلمون ظاهرا من الحياة الدنيا وهم عن الآخرة هم غافلون | ٧ | ك الروم | ٣٠ |
| | فلا تغرنكم الحياة الدنيا ولا يغرنكم بالله الغرور | ٣٣ | ك لقمان | ٣١ |
| | إن كنتنّ تردن الحياة الدنيا وزينتها فتعالين أمتعكن | ٢٨ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | يأيها الناس إن وعد الله حق فلا تغرنكم الحياة الدنيا | ٥ | ك فاطر | ٣٥ |
| | فأذاقهم الله الخزى فى الحياة الدنيا ... ... ... | ٢٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ياقوم إنما هذه الحياة الدنيا متاع وإن الآخرة هى دار القرار | ٣٩ | ك غافر | ٤٠ |
| | إنا لننصر رسلنا والذين آمنوا فى الحياة الدنيا | ٥١ | ك « | ٤٠ |
| | لنذيقهم عذاب الخزى فى الحياة الدنيا ... ... ... | ١٦ | ك فصلت | ٤١ |
| | نحن أولياؤكم فى الحياة الدنيا وفى الآخرة ... ... ... | ٣١ | ك « | ٤١ |
| | فما أوتيتم من شىء فمتاع الحياة الدنيا ... ... ... | ٣٦ | ك الشورى | ٤٢ |
| | نحن قسمنا بينهم معيشتهم فى الحياة الدنيا ... ... | ٣٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وإن كل ذلك لما متاع الحياة الدنيا ... ... ... | ٣٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ذلكم بأنكم اتخذتم آيات الله هزوا وغرتكم الحياة الدنيا | ٣٥ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | إنما الحياة الدنيا لعب ولهو ... ... ... ... ... | ٣٦ | م محمد | ٤٧ |
| | فأعرض عن من تولى عن ذكرنا ولم يرد إلا الحياة الدنيا | ٢٩ | ك النجم | ٥٣ |
| | اعلموا أنما الحياة الدنيا لعب ولهو وزينة ... ... | ٢٠ | م الحديد | ٥٧ |
| | وما الحياة الدنيا إلا متاع الغرور ... ... ... ... | ٢٠ | م « | ٥٧ |
| | الذى خلق الموت والحياة ليبلوكم أيكم أحسن عملا | ٢ | ك الملك | ٦٧ |
| | فأما من طغى . وآثر الحياة الدنيا . فإن الجحيم هى المأوى | ٣٨ | ك النازعات | ٧٩ |
| | بل تؤثرون الحياة الدنيا ... ... ... ... ... ... | ١٦ | ك الأعلى | ٨٧ |
| حَيَاتِكُمْ | : أذهبتم طيباتكم فى حياتكم الدنيا واستمتعتم بها | ٢٠ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| حَيَاتُنَا | : وقالوا إن هى إلا حياتنا الدنيا وما نحن بمبعوثين | ٢٩ | ك الأنعام | ٦ |
| (٣) | إن هى إلا حياتنا الدنيا نموت ونحيا وما نحن بمبعوثين | ٣٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وقالوا ما هى إلا حياتنا الدنيا نموت ونحيا ... ... | ٢٤ | ك الجاثية | ٤٥ |
| لِحَيَاتِى | : يقول ياليتنى قدمت لحياتى ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك الفجر | ٨٩ |
| الْحَيَوَانُ | : وإن الدار الآخرة لهى الحيوان لو كانوا يعلمون | ٦٤ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| تَحِيَّةٍ | : وإذا حييتم بتحية فحيوا بأحسن منها أو ردوها | ٨٦ | م النساء | ٤ |
| (٣) | فإذا دخلتم بيوتا فسلموا على أنفسكم تحية من عند الله | ٦١ | م النور | ٢٤ |
| | أولئك يجزون الغرفة بما صبروا ويلقون فيها تحية وسلاما | ٧٥ | ك الفرقان | ٢٥ |
| تَحِيَّتُهُمْ | : دعواهم فيها سبحانك اللهم وتحيتهم فيها سلام | ١٠ | ك يونس | ١٠ |
| (٣) | خالدين فيها بإذن ربهم تحيتهم فيها سلام ... ... | ٢٣ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | تحيتهم يوم يلقونه سلام وأعد لهم أجرا كريما ... ... | ٤٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| اسْتِحْيَاءٍ | : فجاءته إحداهما تمشى على استحياء ... ... | ٢٥ | ك القصص | ٢٨ |
| مَحْيَاهُمْ | : أم حسب الذين اجترحوا السيئات أن نجعلهم كالذين آمنوا وعملوا الصالحات سواء محياهم ومماتهم | ٢١ | ك الجاثية | ٤٥ |
| مَحْيَاىَ | : قل إن صلاتى ونسكى ومحياى ومماتى لله رب العالمين | ١٦٢ | ك الأنعام | ٦ |
| يُحْيِى | : إن ذلك لمحيى الموتى وهو على كل شىء قدير ... ... | ٥٠ | ك الروم | ٣٠ |
| (٢) | إن الذى أحياها لمحيى الموتى إنه على كل شىء قدير | ٣٩ | ك فصلت | ٤١ |
| يَحْيَى | : أن الله يبشرك بيحيى مصدقا بكلمة من الله وسيدا وحصورا | ٣٩ | م آل عمران | ٣ |
| (٥) | وزكريا ويحيى وعيسى وإلياس كل من الصالحين | ٨٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | يا زكريا إنا نبشرك بغلام اسمه يحيى لم نجعل له من قبل سميا | ٧ | ك مريم | ١٩ |
| | يا يحيى خذ الكتاب بقوة وآتيناه الحكم صبيا | ١٢ | ك « | ١٩ |
| | فاستجبنا له ووهبنا له يحيى وأصلحنا له زوجه | ٩٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| حَيَّةٌ | : قال ألقها ياموسى . فألقاها فإذا هى حية تسعى | ٢٠ | ك طه | ٢٠ |

# باب الخاء

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الْخَبْءَ: | ألا يسجدوا لله الذي يخرج الخبء في السموات والأرض ويعلم ما تخفون وما تعلنون ... ... ... | ٢٥ | ك النمل | ٢٧ |
| أَخْبَتُوا: | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات وأخبتوا إلى ربهم أولئك أصحاب الجنة ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك هود | ١١ |
| فَتُخْبِتَ: | وليعلم الذين أوتوا العلم أنه الحق من ربك فيؤمنوا به فتخبت له قلوبهم ... ... ... ... | ٥٤ | م الحج | ٢٢ |
| الْمُخْبِتِينَ: | فإلهكم إله واحد فله أسلموا وبشر المخبتين | ٣٤ | م « | ٢٢ |
| خَبُثَ: | والذي خبث لا يخرج إلا نكدا ... ... ... ... | ٥٨ | ك الأعراف | ٧ |
| الْخَبِيثُ: | ولا تيمموا الخبيث منه تنفقون ... ... ... | ٢٦٧ | م البقرة | ٢ |
| (٧) | ما كان الله ليذر المؤمنين على ما أنتم عليه حتى يميز الخبيث من الطيب... ... ... ... ... ... | ١٧٩ | م آل عمران | ٣ |
| | وآتوا اليتامى أموالهم ولا تتبدلوا الخبيث بالطيب | ٢ | م النساء | ٤ |
| | قل لا يستوي الخبيث والطيب ... ... ... ... | ١٠٠ | م المائدة | ٥ |
| | ولو أعجبك كثرة الخبيث ... ... ... ... ... | ١٠٠ | م « | ٥ |
| | ليميز الله الخبيث من الطيب ... ... ... ... | ٣٧ | م الأنفال | ٨ |
| | ويجعل الخبيث بعضه على بعض فيركمه جميعا ... ... | ٣٧ | م « | ٨ |
| الْخَبِيثُونَ: | الخبيثات للخبيثين والخبيثون للخبيثات ... ... | ٢٦ | م النور | ٢٤ |
| لِلْخَبِيثِينَ: | الخبيثات للخبيثين والخبيثون للخبيثات ... ... | ٢٦ | م « | ٢٤ |
| خَبِيثَةٍ: | ومثل كلمة خبيثة ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك إبراهيم | ١٤ |
| (٢) | كشجرة خبيثة اجتثت من فوق الأرض ... ... ... | ٢٦ | ك « | ١٤ |
| الْخَبِيثَاتُ: | الخبيثات للخبيثين ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | م النور | ٢٤ |
| (٢) | والخبيثون للخبيثات ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | م « | ٢٤ |
| الْخَبَائِثَ: | ويحل لهم الطيبات ويحرم عليهم الخبائث | ١٥٧ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | ونجيناه من القرية التي كانت تعمل الخبائث ... ... | ٧٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| خُبْرًا: | وكيف تصبر على ما لم تحط به خبرا ... ... ... | ٦٨ | ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | كذلك وقد أحطنا بما لديه خبرا ... ... ... ... | ٩١ | م « | ١٨ |
| خَبَرٍ: | إذ قال موسى لأهله إني آنست نارا سآتيكم منها بخبر | ٧ | ك النمل | ٢٧ |
| (٢) | قال لأهله امكثوا إني آنست نارا لعلي آتيكم منها بخبر | ٢٩ | ك القصص | ٢٨ |
| أَخْبَارَكُمْ: | قل لا تعتذروا لن نؤمن لكم قد نبأنا الله من أخباركم | ٩٤ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | ولنبلونكم حتى نعلم المجاهدين منكم والصابرين ونبلوا أخباركم | ٣١ | م محمد | ٤٧ |
| أَخْبَارَهَا: | يومئذ تحدث أخبارها . بأن ربك أوحى لها | ٤ | م الزلزلة | ٩٩ |
| خَبِيرٌ (٣٣): | فلا جناح عليكم فيما فعلن في أنفسهن بالمعروف والله بما تعملون خبير ... ... ... ... ... ... | ٢٣٤ | م البقرة | ٢ |
| | فهو خير لكم ويكفر عنكم من سيئاتكم والله بما تعملون خبير | ٢٧١ | م « | ٢ |
| | لكيلا تحزنوا على ما فاتكم ولا ما أصابكم والله خبير بما تعملون ... ... ... ... ... ... | ١٥٣ | م آل عمران | ٣ |
| | ولله ميراث السموات والأرض والله بما تعملون خبير | ١٨٠ | م « | ٣ |
| | اعدلوا هو أقرب للتقوى واتقوا الله إن الله خبير بما تعملون ... ... ... ... ... ... | ٨ | م المائدة | ٥ |
| | وهو القاهر فوق عباده وهو الحكيم الخبير ... ... | ١٨ | ك الأنعام | ٦ |
| | عالم الغيب والشهادة وهو الحكيم الخبير ... ... ... | ٧٣ | ك « | ٦ |
| | لا تدركه الأبصار وهو يدرك الأبصار وهو اللطيف الخبير | ١٠٣ | ك « | ٦ |
| | ولم يتخذوا من دون الله ولا رسوله ولا المؤمنين وليجة والله خبير بما تعملون... ... ... ... ... ... | ١٦ | م التوبة | ٩ |
| | الر كتاب أحكمت آياته ثم فصلت من لدن حكيم خبير | ١ | ك هود | ١١ |
| | وإن كلا لما ليوفينهم ربك أعمالهم إنه بما يعملون خبير | ١١١ | ك « | ١١ |
| | ألم تر أن الله أنزل من السماء ماء فتصبح الأرض مخضرة إن الله لطيف خبير ... ... ... ... | ٦٣ | م الحج | ٢٢ |
| | ذلك أزكى لهم إن الله خبير بما يصنعون ... ... | ٣٠ | م النور | ٢٤ |
| | قل لا تقسموا طاعة معروفة إن الله خبير بما تعملون | ٥٣ | م « | ٢٤ |
| | صنع الله الذي أتقن كل شيء إنه خبير بما تفعلون | ٨٨ | ك النمل | ٢٧ |
| | فتكن في صخرة أو في السموات أو في الأرض يأت بها الله إن الله لطيف خبير ... ... ... ... | ١٦ | ك لقمان | ٣١ |
| | وسخر الشمس والقمر كل يجري إلى أجل مسمى وأن الله بما تعملون خبير... ... ... ... ... | ٢٩ | م « | ٣١ |
| | وما تدري نفس بأي أرض تموت إن الله عليم خبير | ٣٤ | ك « | ٣١ |
| | وله الحمد في الآخرة وهو الحكيم الخبير ... ... ... | ١ | ك سبأ | ٣٤ |
| | ويوم القيامة يكفرون بشرككم ولا ينبئك مثل خبير | ١٤ | ك فاطر | ٣٥ |
| | إن الله بعباده لخبير بصير ... ... ... ... ... | ٣١ | ك « | ٣٥ |
| | ولكن ينزل بقدر ما يشاء إنه بعباده خبير بصير | ٢٧ | م الشورى | ٤٢ |
| | إن أكرمكم عند الله أتقاكم إن الله عليم خبير | ١٣ | م الحجرات | ٤٩ |
| | وكلا وعد الله الحسنى والله بما تعملون خبير | ١٠ | م الحديد | ٥٧ |
| | ذلكم توعظون به والله بما تعملون خبير ... ... | ٣ | م المجادلة | ٥٨ |
| | يرفع الله الذين آمنوا منكم والذين أوتوا العلم درجات والله بما تعملون خبير ... ... ... ... ... | ١١ | م « | ٥٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| خَبِيرٌ | : وأطيعوا الله ورسوله والله خبير بما تعملون... ... | ١٣ م المجادلة | ٥٨ |
| | ولتنظر نفس ما قدمت لغد واتقوا الله إن الله خبير بما تعملون ... ... ... ... ... ... | ١٨ م الحشر | ٥٩ |
| | ولن يؤخر الله نفسا إذا جاء أجلها والله خبير بما تعملون | ١١ م المنافقون | ٦٣ |
| | فآمنوا بالله ورسوله والنور الذى أنزلنا والله بما تعملون خبير | ٨ م التغابن | ٦٤ |
| | قالت من أنبأك هذا قال نبأنى العليم الخبير ... ... | ٣ م التحريم | ٦٦ |
| | ألا يعلم من خلق وهو اللطيف الخبير ... ... ... | ١٤ ك الملك | ٦٧ |
| | إن ربهم بهم يومئذ لخبير ... ... ... ... ... ... | ١١ ك العاديات | ١٠٠ |
| خَبِيرًا | : إن يريدا إصلاحا يوفق الله بينهما إن الله كان عليما خبيرا | ٣٥ م النساء | ٤ |
| (١٢) | فتبينوا إن الله كان بما تعملون خبيرا ... ... ... | ٩٤ م « | ٤ |
| | وإن تحسنوا وتتقوا فإن الله كان بما تعملون خبيرا | ١٢٨ م « | ٤ |
| | وإن تلووا أو تعرضوا فإن الله كان بما تعملون خبيرا | ١٣٥ م « | ٤ |
| | وكفى بربك بذنوب عباده خبيرا بصيرا ... ... ... | ١٧ ك الإسراء | ١٧ |
| | إن ربك يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر إنه كان بعباده خبيرا بصيرا ... ... ... ... ... ... | ٣٠ ك « | ١٧ |
| | قل كفى بالله شهيدا بينى وبينكم إنه كان بعباده خبيرا بصيرا | ٩٦ ك « | ١٧ |
| | وسبح بحمده وكفى به بذنوب عباده خبيرا ... ... | ٥٨ ك الفرقان | ٢٥ |
| | ثم استوى على العرش الرحمن فسئل به خبيرا ... ... | ٥٩ ك « | ٢٥ |
| | واتبع ما يوحى إليك من ربك إن الله كان بما تعملون خبيرا | ٢ م الأحزاب | ٣٣ |
| | واذكرن ما يتلى فى بيوتكن من آيات الله والحكمة إن الله كان لطيفا خبيرا ... ... ... ... | ٣٤ م « | ٣٣ |
| | بل كان الله بما تعملون خبيرا ... ... ... ... | ١١ م الفتح | ٤٨ |
| خُبْزًا | : وقال الآخر إنى أرانى أحمل فوق رأسى خبزا | ٣٦ ك يوسف | ١٢ |
| يَتَخَبَّطُهُ | : الذين يأكلون الربا لا يقومون إلا كما يقوم الذى يتخبطه الشيطان من المس... ... ... ... | ٢٧٥ م البقرة | ٢ |
| خَبَالًا | : لا تتخذوا بطانة من دونكم لا يألونكم خبالا | ١١٨ م آل عمران | ٣ |
| (٢) | لو خرجوا فيكم ما زادوكم إلا خبالا ... ... ... ... | ٤٧ م التوبة | ٩ |
| خَبَتْ | : مأواهم جهنم كلما خبت زدناهم سعيرا ... ... | ٩٧ ك الإسراء | ١٧ |
| خَتَّارٍ | : وما يجحد بآياتنا إلا كل ختار كفور ... ... ... | ٣٢ ك لقمان | ٣١ |
| خَتَمَ | : ختم الله على قلوبهم وعلى سمعهم وعلى أبصارهم غشاوة | ٧ م البقرة | ٢ |
| (٣) | قل أرأيتم إن أخذ الله سمعكم وأبصاركم وختم على قلوبكم من إله غير الله يأتيكم به ... ... ... ... | ٤٦ ك الأنعام | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| خَتَمَ | : أفرأيت من اتخذ إلهه هواه وأضله الله على علم وختم على سمعه وقلبه ... ... ... ... ... ... | ٢٣ ك الجاثية | ٤٥ |
| نَخْتِمُ | : اليوم نختم على أفواههم وتكلمنا أيديهم ... ... | ٦٥ ك يس | ٣٦ |
| يَخْتِمْ | : أم يقولون افترى على الله كذبا فإن يشإ الله يختم على قلبك | ٢٤ م الشورى | ٤٢ |
| خَاتَمَ | : ما كان محمد أبا أحد من رجالكم ولكن رسول الله وخاتم النبيين ... ... ... ... ... ... | ٤٠ م الأحزاب | ٣٣ |
| خِتَامُهُ | : ختامه مسك وفى ذلك فليتنافس المتنافسون | ٢٦ ك المطففين | ٨٣ |
| مَخْتُومٍ | : يسقون من رحيق مختوم ... ... ... ... | ٢٥ ك « | ٨٣ |
| خَدَّكَ | : ولا تصعر خدك للناس ولا تمش فى الأرض مرحا | ١٨ ك لقمان | ٣١ |
| الْأُخْدُودِ | : قتل أصحاب الأخدود ... ... ... ... ... | ٤ ك البروج | ٨٥ |
| يَخْدَعُوكَ | : وإن يريدوا أن يخدعوك فإن حسبك الله | ٦١ م الأنفال | ٨ |
| يَخْدَعُونَ | : وما يخدعون إلا أنفسهم وما يشعرون ... ... | ٩ م البقرة | ٢ |
| يُخَادِعُونَ | : يخادعون الله والذين آمنوا وما يخدعون | | |
| (٢) | إلا أنفسهم ... ... ... ... ... ... | ٩ م « | ٢ |
| | إن المنافقين يخادعون الله وهو خادعهم ... ... | ١٤٢ م النساء | ٤ |
| خَادِعُهُمْ | : إن المنافقين يخادعون الله وهو خادعهم | ١٤٢ م « | ٤ |
| أَخْدَانٍ | : وآتوهن أجورهن بالمعروف محصنات غير | | |
| (٢) | مسافحات ولا متخذات أخدان ... ... ... ... | ٢٥ م النساء | ٤ |
| | إذا آتيتموهن أجورهن محصنين غير مسافحين ولا متخذى أخدان ... ... ... ... ... | ٥ م المائدة | ٥ |
| يَخْذُلْكُمْ | : وإن يخذلكم فمن ذا الذى ينصركم من بعده | ١٦٠ م آل عمران | ٣ |
| خَذُولًا | : وكان الشيطان للإنسان خذولا ... ... ... ... | ٢٩ ك الفرقان | ٢٥ |
| مَخْذُولًا | : لا تجعل مع الله إلها آخر فتقعد مذموما مخذولا | ٢٢ ك الإسراء | ١٧ |
| يُخْرِبُونَ | : يخربون بيوتهم بأيديهم وأيدى المؤمنين فاعتبروا يا أولى الأبصار ... ... ... ... ... | ٢ م الحشر | ٥٩ |
| خَرَابِهَا | : ومن أظلم ممن منع مساجد الله أن يذكر فيها اسمه وسعى فى خرابها ... ... ... ... ... ... | ١١٤ م البقرة | ٢ |
| خَرَجَ | : فخرج على قومه من المحراب فأوحى إليهم أن | | |
| (٣) | سبحوا بكرة وعشيا ... ... ... ... ... ... | ١١ ك مريم | ١٩ |
| | فخرج منها خائفا يترقب قال رب نجنى من القوم الظالمين | ٢١ ك القصص | ٢٨ |
| | فخرج على قومه فى زينته ... ... ... ... ... | ٧٩ ك « | ٢٨ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| خَرَجْتَ | ومن حيث خرجت فولّ وجهك شطر المسجد | | | |
| (٢) | الحرام وإنه للحق من ربك ... ... ... ... ... | ١٤٩ | م البقرة | ٢ |
| | ومن حيث خرجت فولّ وجهك شطر المسجد الحرام | ١٥٠ | م « | ٢ |
| خَرَجْتُمْ | : إن كنتم خرجتم جهادا فى سبيلى وابتغاء مرضاتى | ١ | م الممتحنة | ٦٠ |
| خَرَجْنَ | : فإن خرجن فلا جناح عليكم فى ما فعلن فى أنفسهن | | | |
| | من معروف ... ... ... ... ... ... ... | ٢٤٠ | م البقرة | ٢ |
| لَخَرَجْنَا | : وسيحلفون بالله لو استطعنا لخرجنا معكم ... ... | ٤٢ | م التوبة | ٩ |
| خَرَجُوا | : ألم تر إلى الذين خرجوا من ديارهم وهم ألوف | | | |
| (٥) | حذر الموت ... ... ... ... ... ... ... | ٢٤٣ | م البقرة | ٢ |
| | وإذا جاءوكم قالوا آمنا وقد دخلوا بالكفر وهم قد خرجوا به | ٦١ | م المائدة | ٥ |
| | ولا تكونوا كالذين خرجوا من ديارهم بطرا ورئاء الناس | ٤٧ | م الأنفال | ٨ |
| | لو خرجوا فيكم ما زادوكم إلا خبالا ... ... ... ... | ٤٧ | م التوبة | ٩ |
| | حتى إذا خرجوا من عندك قالوا للذين أوتوا العلم | | | |
| | ماذا قال آنفا ... ... ... ... ... ... ... | ١٦ | م محمد | ٤٧ |
| تَخْرُجُ | : كبرت كلمة تخرج من أفواههم إن يقولون إلا كذبا | ٥ | ك الكهف | ١٨ |
| (٨) | وأضمم يدك إلى جناحك تخرج بيضاء من غير سوء | | | |
| | آية أخرى ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك طه | ٢٠ |
| | وشجرة تخرج من طور سيناء تنبت بالدهن وصبغ للآكلين | ٢٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وأدخل يدك فى جيبك تخرج بيضاء من غير سوء | ١٢ | ك النمل | ٢٧ |
| | أسلك يدك فى جيبك تخرج بيضاء من غير سوء | ٣٢ | ك القصص | ٢٨ |
| | إنها شجرة تخرج فى أصل الجحيم ... ... ... ... | ٦٤ | ك الصافات | ٣٧ |
| | وما تخرج من ثمرات من أكمامها وما تحمل من أنثى | | | |
| | ولا تضع إلا بعلمه ... ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك فصلت | ٤١ |
| | ولو أنهم صبروا حتى تخرج إليهم لكان خيرا لهم | ٥ | م الحجرات | ٤٩ |
| تَخْرُجُوا | : فقل لن تخرجوا معى أبدا ولن تقاتلوا معى عدوا | ٨٣ | م التوبة | ٩ |
| تَخْرُجُونَ | : ثم إذا دعاكم دعوة من الأرض إذا أنتم تخرجون | ٢٥ | ك الروم | ٣٠ |
| لَنَخْرُجَنَّ | : لئن أخرجتم لنخرجن معكم ولا نطيع فيكم أحدا أبدا | ١١ | م الحشر | ٥٩ |
| يَخْرُجُ | : وإن منها لما يشقق فيخرج منه الماء ... ... | ٧٤ | م البقرة | ٢ |
| (١١) | ومن يخرج من بيته مهاجرا إلى الله ورسوله | | | |
| | ثم يدركه الموت فقد وقع أجره على الله ... ... | ١٠٠ | م النساء | ٤ |
| | والبلد الطيب يخرج نباته بإذن ربه ... ... ... ... | ٥٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | والذى خبث لا يخرج إلا نكدا ... ... ... ... | ٥٨ | ك « | ٧ |
| | يخرج من بطونها شراب مختلف ألوانه فيه شفاء للناس | ٦٩ | ك النحل | ١٦ |
| | ثم يؤلف بينه ثم يجعله ركاما فترى الودق يخرج من خلاله | ٤٣ | م النور | ٢٤ |
| | ويجعله كسفا فترى الودق يخرج من خلاله ... ... | ٤٨ | ك الروم | ٣٠ |
| | يعلم ما يلج فى الأرض وما يخرج منها ... ... ... | ٢ | ك سبأ | ٣٤ |
| | يخرج منهما اللؤلؤ والمرجان ... ... ... ... ... | ٢٢ | م الرحمن | ٥٥ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَخْرُجُ | : يعلم ما يلج فى الأرض وما يخرج منها وما ينزل | | | |
| | من السماء وما يعرج فيها ... ... ... ... ... ... | ٤ | م الحديد | ٥٧ |
| | خلق من ماء دافق . يخرج من بين الصلب والترائب | ٧ | ك الطارق | ٨٦ |
| لَيَخْرُجُنَّ | : وأقسموا بالله جهد أيمانهم لئن أمرتهم ليخرجن | ٥٣ | م النور | ٢٤ |
| يَخْرُجْنَ | : ولا يخرجن إلا أن يأتين بفاحشة مبينة ... ... | ١ | م الطلاق | ٦٥ |
| يَخْرُجُوا | : وإنا لن ندخلها حتى يخرجوا منها ... ... ... | ٢٢ | م المائدة | ٥ |
| (٦) | فإن يخرجوا منها فإنا داخلون ... ... ... ... | ٢٢ | م « | ٥ |
| | يريدون أن يخرجوا من النار وما هم بخارجين منها | ٣٧ | م « | ٥ |
| | كلما أرادوا أن يخرجوا منها من غم أعيدوا فيها | ٢٢ | م الحج | ٢٢ |
| | كلما أرادوا أن يخرجوا منها أعيدوا فيها ... ... | ٢ | م السجدة | ٣٢ |
| | ما ظننتم أن يخرجوا وظنوا أنهم مانعتهم حصونهم من الله | ٢ | م الحشر | ٥٩ |
| يَخْرُجُونَ | : خشعا أبصارهم يخرجون من الأجداث | ٧ | ك القمر | ٥٤ |
| (٣) | لئن أخرجوا لا يخرجون معهم ولئن قوتلوا لا ينصرونهم | ١٢ | م الحشر | ٥٩ |
| | يوم يخرجون من الأجداث سراعا كأنهم إلى | | | |
| | نصب يوفضون ... ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك المعارج | ٧٠ |
| أَخْرُجْ | : فما يكون لك أن تتكبر فيها فاخرج إنك من الصاغرين | ١٣ | ك الأعراف | ٧ |
| (٦) | قال اخرج منها مذءوما مدحورا ... ... ... ... | ١٨ | ك « | ٧ |
| | وآتت كل واحدة منهن سكينا وقالت اخرج عليهن | ٣١ | ك يوسف | ١٢ |
| | قال فاخرج منها فإنك رجيم . وإن عليك اللعنة | ٣٤ | ك الحجر | ١٥ |
| | إن الملأ يأتمرون بك ليقتلوك فاخرج إنى لك من الناصحين | ٢٠ | ك القصص | ٢٨ |
| | قال فاخرج منها فإنك رجيم . وإن عليك لعنتى | ٧٧ | ك ص | ٣٨ |
| أَخْرُجُوا | : ولو أنا كتبنا عليهم أن اقتلوا أنفسكم أو اخرجوا | | | |
| | من دياركم ما فعلوه إلا قليل منهم ... ... ... | ٦٦ | م النساء | ٤ |
| أَخْرَجَ | : وأنزل من السماء ماء فأخرج به من الثمرات رزقا لكم | ٢٢ | م البقرة | ٢ |
| (١١) | يا بنى آدم لا يفتننكم الشيطان كما أخرج أبويكم من الجنة | ٢٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | قل من حرم زينة الله التى أخرج لعباده ... ... | ٣٢ | ك « | ٧ |
| | وأنزل من السماء ماء فأخرج به من الثمرات رزقا لكم | ٣٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | فأخرج لهم عجلا جسدا له خوار فقالوا هذا إلهكم | ٨٨ | ك طه | ٢٠ |
| | ظلمات بعضها فوق بعض إذا أخرج يده لم يكد يراها | ٤٠ | م النور | ٢٤ |
| | ومثلهم فى الإنجيل كزرع أخرج شطأه فآزره فاستغلظ | ٢٩ | م الفتح | ٤٨ |
| | هو الذى أخرج الذين كفروا من أهل الكتاب | ٢ | م الحشر | ٥٩ |
| | رفع سمكها فسواها . وأغطش ليلها وأخرج ضحاها | ٢٩ | ك النازعات | ٧٩ |
| | والأرض بعد ذلك دحاها . أخرج منها ماءها ومرعاها | ٣١ | ك « | ٧٩ |
| | والذى أخرج المرعى . فجعله غثاء أحوى ... ... | ٤ | ك الأعلى | ٨٧ |
| أَخْرَجَتِ | : وأخرجت الأرض أثقالها ... ... ... ... ... | ٢ | م الزلزلة | ٩٩ |
| أَخْرَجَتْكَ | : وكأين من قرية هى أشد قوة من قريتك التى | | | |
| | أخرجتك أهلكناهم فلا ناصر لهم ... ... ... ... | ١٣ | م محمد | ٤٧ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| أَخْرَجَكَ | : كما أخرجك ربك من بيتك بالحق ... ... ... | ٥ م الأنفال | ٨ |
| أَخْرَجَكُمْ | : والله أخرجكم من بطون أمهاتكم لا تعلمون شيئا | ٧٨ ك النحل | ١٦ |
| أَخْرَجْنَا | : أنفقوا من طيبات ما كسبتم ومما أخرجنا لكم | | |
| (٩) | من الأرض ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦٧ م البقرة | ٢ |
| | وهو الذى أنزل من السماء ماء فأخرجنا به نبات كل شىء | ٩٩ ك الأنعام | ٦ |
| | فأخرجنا منه خضرا نخرج منه حبا متراكبا ... ... | ٩٩ ك « | ٦ |
| | سقناه لبلد ميت فأنزلنا به الماء فأخرجنا به من كل الثمرات | ٥٧ ك الأعراف | ٧ |
| | وأنزل من السماء ماء فأخرجنا به أزواجا من نبات شتى | ٥٣ ك طه | ٢٠ |
| | وإذا وقع القول عليهم أخرجنا لهم دابة من الأرض تكلمهم | ٨٢ ك النمل | ٢٧ |
| | أنزل من السماء ماء فأخرجنا به ثمرات مختلفا ألوانها | ٢٧ ك فاطر | ٣٥ |
| | وآية لهم الأرض الميتة أحييناها وأخرجنا منها حبا | ٣٣ ك يس | ٣٦ |
| | فأخرجنا من كان فيها من المؤمنين ... ... ... ... | ٣٥ ك الذاريات | ٥١ |
| فَأَخْرَجْنَاهُمْ | : فأخرجناهم من جنات وعيون ... ... ... | ٥٧ ك الشعراء | ٢٦ |
| أَخْرَجَنِي | : وقد أحسن بى إذ أخرجنى من السجن ... ... | ١٠٠ ك يوسف | ١٢ |
| أَخْرَجَهُ | : إلا تنصروه فقد نصره الله إذ أخرجه الذين كفروا | ٤٠ م التوبة | ٩ |
| فَأَخْرَجَهُمَا | : فأزلهما الشيطان عنها فأخرجهما مما كانا فيه | ٣٦ م البقرة | ٢ |
| أَخْرِجُوكُمْ | : وأخرجوهم من حيث أخرجوكم ... ... ... | ١٩١ م « | ٢ |
| (٢) | إنما ينهاكم الله عن الذين قاتلوكم فى الدين وأخرجوكم | | |
| | من دياركم... ... ... ... ... ... ... ... | ٩ م الممتحنة | ٦٠ |
| تُخْرِجُ | : تولج الليل فى النهار وتولج النهار فى الليل وتخرج | | |
| (٤) | الحى من الميت ... ... ... ... ... ... | ٢٧ م آل عمران | ٣ |
| | وتخرج الميت من الحى وترزق من تشاء بغير حساب | ٢٧ م « | ٣ |
| | وتبرئ الأكمه والأبرص بإذنى وإذ تخرج الموتى بإذنى | ١١٠ م المائدة | ٥ |
| | كتاب أنزلناه إليك لتخرج الناس من الظلمات إلى النور | ١ ك إبراهيم | ١٤ |
| لَتُخْرِجَنَا | : قال أجئتنا لتخرجنا من أرضنا بسحرك ياموسى | ٥٧ ك طه | ٢٠ |
| لَتُخْرِجُوا | : إن هذا لمكر مكرتموه فى المدينة لتخرجوا منها أهلها | ١٢٣ ك الأعراف | ٧ |
| تُخْرِجُونَ | : وإذ أخذنا ميثاقكم لا تسفكون دماءكم ولا تخرجون | | |
| (٢) | أنفسكم من دياركم... ... ... ... ... ... | ٨٤ م البقرة | ٢ |
| | ثم أنتم هؤلاء تقتلون أنفسكم وتخرجون فريقا منكم | | |
| | من ديارهم ... ... ... ... ... ... ... | ٨٥ م « | ٢ |
| فَتُخْرِجُوهُ | : قل هل عندكم من علم فتخرجوه لنا ... ... | ١٤٨ ك الأنعام | ٦ |
| تُخْرِجُوهُنَّ | : لا تخرجوهن من بيوتهن ... ... ... ... | ١ م الطلاق | ٦٥ |
| تُخْرِجُ | : فأخرجنا منه خضرا نخرج منه حبا متراكبا... ... | ٩٩ ك الأنعام | ٦ |
| (٥) | كذلك نخرج الموتى لعلكم تذكرون ... ... ... ... | ٥٧ ك الأعراف | ٧ |
| | ونخرج له يوم القيامة كتابا يلقاه منشورا... ... ... | ١٣ ك الإسراء | ١٧ |
| | أولم يروا أنا نسوق الماء إلى الأرض الجرز فنخرج به زرعا | ٢٧ ك السجدة | ٣٢ |
| | وأنزلنا من المعصرات ماء ثجاجا . لنخرج به حبا ونباتا | ١٥ ك النبأ | ٧٨ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| نُخْرِجُكُمْ | : منها خلقناكم وفيها نعيدكم ومنها نخرجكم تارة أخرى | ٥٥ ك طه | ٢٠ |
| (٢) | ونقر فى الأرحام ما نشاء إلى أجل مسمى ثم نخرجكم طفلا | ٥ م الحج | ٢٢ |
| لَنُخْرِجَنَّكَ | : لنخرجنك ياشعيب والذين آمنوا معك من قريتنا | ٨٨ ك الأعراف | ٧ |
| لَنُخْرِجَنَّكُمْ | : وقال الذين كفروا لرسلهم لنخرجنكم من أرضنا | ١٣ ك إبراهيم | ١٤ |
| لَنُخْرِجَنَّهُمْ | : فلنأتينهم بجنود لا قبل لهم بها ولنخرجنهم منها أذلة | ٣٧ ك النمل | ٢٧ |
| يُخْرِجُ | : فادع لنا ربك يخرج لنا مما تنبت الأرض من بقلها | ٦١ م البقرة | ٢ |
| (١١) | إن الله فالق الحب والنوى يخرج الحى من الميت | ٩٥ ك الأنعام | ٦ |
| | أمن يملك السمع والأبصار ومن يخرج الحى من الميت | ٣١ ك يونس | ١٠ |
| | ويخرج الميت من الحى ومن يدبر الأمر فسيقولون الله | ٣١ ك « | ١٠ |
| | ألا يسجدوا لله الذى يخرج الخبء فى السموات والأرض | ٢٥ ك النمل | ٢٧ |
| | يخرج الحى من الميت ... ... ... ... ... ... | ١٩ ك الروم | ٣٠ |
| | ويخرج الميت من الحى ويحيى الأرض بعد موتها | ١٩ ك « | ٣٠ |
| | ثم يخرج به زرعا مختلفا ألوانه ... ... ... ... ... | ٢١ ك الزمر | ٣٩ |
| | أم حسب الذين فى قلوبهم مرض أن لن يخرج الله أضغانهم | ٢٩ م محمد | ٤٧ |
| | إن يسئلكموها فيحفكم تبخلوا ويخرج أضغانكم | ٣٧ م « | ٤٧ |
| | ليخرج الذين آمنوا وعملوا الصالحات من الظلمات إلى النور | ١١ م الطلاق | ٦٥ |
| يُخْرِجَاكُمْ | : يريدان أن يخرجاكم من أرضكم بسحرهما | ٦٣ ك طه | ٢٠ |
| يُخْرِجَكُمْ | : يريد أن يخرجكم من أرضكم فماذا تأمرون | ١١٠ ك الأعراف | ٧ |
| (٦) | يريد أن يخرجكم من أرضكم بسحره فماذا تأمرون | ٣٥ ك الشعراء | ٢٦ |
| | هو الذى يصلى عليكم وملائكته ليخرجكم من | | |
| | الظلمات إلى النور... ... ... ... ... ... | ٤٣ م الأحزاب | ٣٣ |
| | ثم يخرجكم طفلا ثم لتبلغوا أشدكم ثم لتكونوا شيوخا | ٦٧ ك غافر | ٤٠ |
| | هو الذى ينزل على عبده آيات بينات ليخرجكم من | | |
| | الظلمات إلى النور ... ... ... ... ... ... | ٩ م الحديد | ٥٧ |
| | ثم يعيدكم فيها ويخرجكم إخراجا ... ... ... ... | ١٨ ك نوح | ٧١ |
| لَيُخْرِجَنَّ | : لئن رجعنا إلى المدينة ليخرجن الأعز منها الأذل | ٨ م المنافقون | ٦٣ |
| يُخْرِجَنَّكُمَا | : فلا يخرجنكما من الجنة فتشقى ... ... ... ... | ١١٧ ك طه | ٢٠ |
| يُخْرِجُهُمْ | : الله ولى الذين آمنوا يخرجهم من الظلمات إلى النور | ٢٥٧ م البقرة | ٢ |
| (٢) | ويخرجهم من الظلمات إلى النور بإذنه ... ... ... | ١٦ م المائدة | ٥ |
| يُخْرِجُوكَ | : وإذ يمكر بك الذين كفروا ليثبتوك أو يقتلوك | | |
| (٢) | أو يخرجوك ... ... ... ... ... ... ... | ٣٠ م الأنفال | ٨ |
| | وإن كادوا ليستفزونك من الأرض ليخرجوك منها | ٧٦ م الإسراء | ١٧ |
| يُخْرِجُوكُمْ | : لا ينهاكم الله عن الذين لم يقاتلوكم فى الدين | | |
| | ولم يخرجوكم من دياركم أن تبروهم ... ... ... | ٨ م الممتحنة | ٦٠ |
| يُخْرِجُونَ | : يخرجون الرسول وإياكم أن تؤمنوا بالله ربكم | ١ م « | ٦٠ |
| يُخْرِجُونَهُمْ | : والذين كفروا أولياؤهم الطاغوت يخرجونهم | | |
| | من النور إلى الظلمات ... ... ... ... ... ... | ٢٥٧ م البقرة | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| أَخْرِجْ | : أن أخرج قومك من الظلمات إلى النور ... ... | ك إبراهيم | ١٤ |
| أَخْرِجْنَا | : ربنا أخرجنا من هذه القرية الظالم أهلها ... ... | م النساء | ٤ |
| (٣) | ربنا أخرجنا منها فإن عدنا فإنا ظالمون ... ... ... | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ربنا أخرجنا نعمل صالحا غير الذى كنا نعمل... ... | ك فاطر | ٣٥ |
| أَخْرِجْنِي | : وقل رب أدخلنى مدخل صدق وأخرجنى مخرج صدق | م الإسراء | ١٧ |
| أَخْرِجُوا | : والملائكة باسطوا أيديهم أخرجوا أنفسكم... ... | م الأنعام | ٦ |
| (٢) | فما كان جواب قومه إلا أن قالوا أخرجوا آل لوط | | |
| | من قريتكم ... ... ... ... ... ... | ك النمل | ٢٧ |
| أَخْرِجُوهُمْ | : وأخرجوهم من حيث أخرجوكم ... ... ... | م البقرة | ٢ |
| (٢) | فما كان جواب قومه إلا أن قالوا أخرجوهم من قريتكم | ك الأعراف | ٧ |
| أُخْرِجَتْ | : كنتم خير أمة أخرجت للناس تأمرون بالمعروف | م آل عمران | ٣ |
| أُخْرِجْتُمْ | : لئن أخرجتم لنخرجن معكم ولا نطيع فيكم أحدا أبدا | م الحشر | ٥٩ |
| أُخْرِجْنَا | : وما لنا ألا نقاتل فى سبيل الله وقد أخرجنا من ديارنا | م البقرة | ٢ |
| أُخْرِجُوا | : فالذين هاجروا وأخرجوا من ديارهم ... ... | م آل عمران | ٣ |
| (٤) | الذين أخرجوا من ديارهم بغير حق إلا أن يقولوا ربنا الله | م الحج | ٢٢ |
| | للفقراء المهاجرين الذين أخرجوا من ديارهم وأموالهم | م الحشر | ٥٩ |
| | لئن أخرجوا لا يخرجون معهم ولئن قوتلوا لا ينصرونهم | م » | ٥٩ |
| أُخْرَجُ | : ويقول الإنسان أءذا ما مت لسوف أخرج حيا | ك مريم | ١٩ |
| (٢) | أتعداننى أن أخرج وقد خلت القرون من قبلى... ... | ك الأحقاف | ٤٦ |
| تُخْرَجُونَ | : قال فيها تحيون وفيها تموتون ومنها تخرجون | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | ويحيى الأرض بعد موتها وكذلك تخرجون ... ... | ك الروم | ٣٠ |
| | فأنشرنا به بلدة ميتا كذلك تخرجون ... ... ... | ك الزخرف | ٤٣ |
| يُخْرَجُونَ | : فاليوم لا يخرجون منها ولا هم يستعتبون | ك الجاثية | ٤٥ |
| أَسْتَخْرِجَهَا | : ثم استخرجها من وعاء أخيه ... ... ... | ك يوسف | ١٢ |
| تَسْتَخْرِجُوا | : وتستخرجوا منه حلية تلبسونها ... ... ... | ك النحل | ١٦ |
| تَسْتَخْرِجُونَ | : ومن كل تأكلون لحما طريا وتستخرجون | | |
| | حلية تلبسونها ... ... ... ... ... ... | ك فاطر | ٣٥ |
| يَسْتَخْرِجَا | : فأراد ربك أن يبلغا أشدهما ويستخرجا كنزهما | ك الكهف | ١٨ |
| خُرُوجٌ | : ولو أرادوا الخروج لأعدوا له عدة ... ... ... | م التوبة | ٩ |
| (٥) | فاستأذنوك للخروج فقل لن تخرجوا معى أبدا ... ... | م » | ٩ |
| | فاعترفنا بذنوبنا فهل إلى خروج من سبيل ... ... | ك غافر | ٤٠ |
| | رزقا للعباد وأحيينا به بلدة ميتا كذلك الخروج... ... | ك ق | ٥٠ |
| | يوم يسمعون الصيحة بالحق ذلك يوم الخروج... ... | ك » | ٥٠ |
| إِخْرَاجُ | : وإخراج أهله منه أكبر عند الله ... ... ... | م البقرة | ٢ |
| (٤) | وصية لأزواجهم متاعا إلى الحول غير إخراج ... ... | م » | ٢ |
| | ألا تقاتلون قوما نكثوا أيمانهم وهموا بإخراج الرسول | م التوبة | ٩ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| إِخْرَاجًا | : ثم يعيدكم فيها ويخرجكم إخراجا ... ... ... | ك نوح | ٧١ |
| إِخْرَاجِكُمْ | : وأخرجوكم من دياركم وظاهروا على إخراجكم | | |
| | أن تولوهم ... ... ... ... ... ... ... | م الممتحنة | ٦٠ |
| إِخْرَاجُهُمْ | : وهو محرم عليكم إخراجهم ... ... ... ... | م البقرة | ٢ |
| بِخَارِجٍ | : كمن مثله فى الظلمات ليس بخارج منها ... ... | ك الأنعام | ٦ |
| بِخَارِجِينَ | : وما هم بخارجين من النار... ... ... ... | م البقرة | ٢ |
| (٢) | يريدون أن يخرجوا من النار وما هم بخارجين منها | م المائدة | ٥ |
| مَخْرَجًا | : ومن يتق الله يجعل له مخرجا ... ... ... | م الطلاق | ٦٥ |
| مُخْرِجٌ | : والله مخرج ما كنتم تكتمون ... ... ... ... | م البقرة | ٢ |
| (٣) | يخرج الحى من الميت ومخرج الميت من الحى ذلكم الله | ك الأنعام | ٦ |
| | قل أستهزئوا إن الله مخرج ما تحذرون ... ... ... | م التوبة | ٩ |
| مُخْرَجَ | : وقل رب أدخلنى مدخل صدق وأخرجنى مخرج صدق | م الإسراء | ١٧ |
| مُخْرَجُونَ | : أيعدكم أنكم إذا متم وكنتم ترابا وعظاما | | |
| (٢) | أنكم مخرجون... ... ... ... ... ... ... | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وقال الذين كفروا أءذا كنا ترابا وآباؤنا أئنا لمخرجون | ك النمل | ٢٧ |
| مُخْرَجِينَ | : لا يمسهم فيها نصب وما هم منها بمخرجين ... ... | ك الحجر | ١٥ |
| (٢) | قالوا لئن لم تنته يا لوط لتكونن من المخرجين ... ... | ك الشعراء | ٢٦ |
| خَرْجًا | : فهل نجعل لك خرجا على أن تجعل بيننا وبينهم سدا | م الكهف | ١٨ |
| (٢) | أم تسئلهم خرجا فخراج ربك خير وهو خير الرازقين | ك المؤمنون | ٢٣ |
| فَخَرَاجُ | : أم تسئلهم خرجا فخراج ربك خير وهو خير الرازقين | ك » | ٢٣ |

✦✦✦

| | | | |
|---|---|---|---|
| خَرْدَلٍ | : وإن كان مثقال حبة من خردل أتينا بها وكفى بنا حاسبين | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٢) | إن تك مثقال حبة من خردل فتكن فى صخرة | | |
| | أو فى السموات أو فى الأرض يأت بها الله | ك لقمان | ٣١ |

✦✦✦

| | | | |
|---|---|---|---|
| خَرَّ | : فلما تجلى ربه للجبل جعله دكا وخر موسى صعقا... ... | ك الأعراف | ٧ |
| (٥) | فأتى الله بنيانهم من القواعد فخر عليهم السقف من فوقهم | ك النحل | ١٦ |
| | ومن يشرك بالله فكأنما خر من السماء فتخطفه الطير | م الحج | ٢٢ |
| | فلما خر تبينت الجن أن لو كانوا يعلمون الغيب ما لبثوا | | |
| | فى العذاب المهين ... ... ... ... ... ... | ك سبأ | ٣٤ |
| | وظن داود أنما فتناه فاستغفر ربه وخر راكعا وأناب | ك ص | ٣٨ |
| خَرُّوا | : ورفع أبويه على العرش وخروا له سجدا ... ... ... | ك يوسف | ١٢ |
| (٣) | إذا تتلى عليهم آيات الرحمن خروا سجدا وبكيا... ... | م مريم | ١٩ |
| | إنما يؤمن بآياتنا الذين إذا ذكروا بها خروا سجدا | ك السجدة | ٣٢ |
| تَخِرُّ | : تكاد السموات يتفطرن منه وتنشق الأرض وتخر الجبال هدا | ك مريم | ١٩ |
| يَخِرُّوا | : والذين إذا ذكروا بآيات ربهم لم يخروا عليها صما وعميانا | ك الفرقان | ٢٥ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| يَخِرُّونَ | : إن الذين أوتوا العلم من قبله إذا يتلى عليهم يخرون | | |
| (٢) | للأذقان سجدا ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٧ ك الإسراء | ١٧ |
| | ويخرون للأذقان يبكون ويزيدهم خشوعا ... ... | ١٠٩ ك « | ١٧ |
| | ✦✦✦ | | |
| تَخْرُصُونَ | : إن تتبعون إلا الظن وإن أنتم إلا تخرصون | ١٤٨ ك الأنعام | ٦ |
| يَخْرُصُونَ | : إن يتبعون إلا الظن وإن هم إلا يخرصون ... | ١١٦ ك « | ٦ |
| (٣) | إن يتبعون إلا الظن وإن هم إلا يخرصون ... ... | ٦٦ ك يونس | ١٠ |
| | ما لهم بذلك من علم إن هم إلا يخرصون ... ... ... | ٢٠ ك الزخرف | ٤٣ |
| الْخَرَّاصُونَ | : قتل الخراصون . الذين هم في غمرة ساهون | ١٠ ك الذاريات | ٥١ |
| | ✦✦✦ | | |
| الْخُرْطُومِ | : سنسمه على الخرطوم... ... ... ... ... ... | ١٦ ك القلم | ٦٨ |
| | ✦✦✦ | | |
| أَخْرَقْتَهَا | : قال أخرقتها لتغرق أهلها لقد جئت شيئا إمرا | ٧١ ك الكهف | ١٨ |
| خَرَقَهَا | : فانطلقا حتى إذا ركبا في السفينة خرقها ... ... ... | ٧١ ك « | ١٨ |
| خَرَقُوا | : وخلقهم وخرقوا له بنين وبنات بغير علم ... ... | ١٠٠ ك الأنعام | ٦ |
| تَخْرِقَ | : إنك لن تخرق الأرض ولن تبلغ الجبال طولا ... | ٣٧ ك الإسراء | ١٧ |
| | ✦✦✦ | | |
| بِخَازِنِينَ | : فأنزلنا من السماء ماء فأسقيناكموه وما أنتم له بخازنين | ٢٢ ك الحجر | ١٥ |
| لَخَزَنَةُ | : وقال الذين في النار لخزنة جهنم ادعوا ربكم يخفف عنا | ٤٩ ك غافر | ٤٠ |
| خَزَنَتُهَا | : وقال لهم خزنتها ألم يأتكم رسل منكم ... ... ... | ٧١ ك الزمر | ٣٩ |
| (٣) | وقال لهم خزنتها سلام عليكم ... ... ... ... ... | ٧٣ ك « | ٣٩ |
| | كلما ألقى فيها فوج سألهم خزنتها ألم يأتكم نذير... ... | ٨ ك الملك | ٦٧ |
| خَزَائِنُ | : قل لا أقول لكم عندي خزائن الله ولا أعلم الغيب | | |
| (٧) | ولا أقول لكم إني ملك ... ... ... ... ... ... | ٥٠ ك الأنعام | ٦ |
| | ولا أقول لكم عندي خزائن الله ولا أعلم الغيب ولا أقول | | |
| | إني ملك ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣١ ك هود | ١١ |
| | قال اجعلني على خزائن الأرض إني حفيظ عليم... ... | ٥٥ ك يوسف | ١٢ |
| | قل لو أنتم تملكون خزائن رحمة ربي إذا لأمسكتم | | |
| | خشية الإنفاق... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٠ ك الإسراء | ١٧ |
| | أم عندهم خزائن رحمة ربك العزيز الوهاب ... ... | ٩ ك ص | ٣٨ |
| | أم عندهم خزائن ربك أم هم المصيطرون ... ... ... | ٣٧ ك الطور | ٥٢ |
| | ولله خزائن السموات والأرض ولكن المنافقين لا يفقهون | ٧ م المنافقون | ٦٣ |
| خَزَائِنُهُ | : وإن من شيء إلا عندنا خزائنه وما ننزله إلا بقدر معلوم | ٢١ ك الحجر | ١٥ |
| | ✦✦✦ | | |
| تُخْزَى | : لولا أرسلت إلينا رسولا فنتبع آياتك من قبل | | |
| | أن نذل ونخزى ... ... ... ... ... ... ... | ١٣٤ ك طه | ٢٠ |
| أَخْزَيْتَهُ | : ربنا إنك من تدخل النار فقد أخزيته ... ... | ١٩٢ م آل عمران | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| تُخْزِنَا | : ربنا وآتنا ما وعدتنا على رسلك ولا تخزنا يوم القيامة | ١٩٤ م آل عمران | ٣ |
| تُخْزِنِي | : ولا تخزني يوم يبعثون ... ... ... ... ... ... | ٨٧ ك الشعراء | ٢٦ |
| تُخْزُونِ | : فاتقوا الله ولا تخزون في ضيفي أليس منكم رجل رشيد | ٧٨ ك هود | ١١ |
| (٢) | قال إن هؤلاء ضيفي فلا تفضحون . واتقوا الله ولا تخزون | ٦٩ ك الحجر | ١٥ |
| يُخْزِهِمْ | : قاتلوهم يعذبهم الله بأيديكم ويخزهم وينصركم عليهم | ١٤ م التوبة | ٩ |
| يُخْزِيَ | : ما قطعتم من لينة أو تركتموها قائمة على أصولها فبإذن الله | | |
| (٢) | وليخزي الفاسقين ... ... ... ... ... ... ... | ٥ م الحشر | ٥٩ |
| | يوم لا يخزي الله النبي والذين آمنوا معه ... ... ... | ٨ م التحريم | ٦٦ |
| يُخْزِيهِ | : فسوف تعلمون من يأتيه عذاب يخزيه ... ... | ٣٩ ك هود | ١١ |
| (٣) | سوف تعلمون من يأتيه عذاب يخزيه ومن هو كاذب | ٩٣ ك « | ١١ |
| | من يأتيه عذاب يخزيه ويحل عليه عذاب مقيم | ٤٠ ك الزمر | ٣٩ |
| يُخْزِيهِمْ | : ثم يوم القيامة يخزيهم ... ... ... ... ... ... | ٢٧ ك النحل | ١٦ |
| خِزْيٌ | : فما جزاء من يفعل ذلك منكم إلا خزي في الحياة الدنيا | ٨٥ م البقرة | ٢ |
| (١١) | لهم في الدنيا خزي ولهم في الآخرة عذاب عظيم... ... | ١١٤ م « | ٢ |
| | ذلك لهم خزي في الدنيا ولهم في الآخرة عذاب عظيم | ٣٣ م المائدة | ٥ |
| | لهم في الدنيا خزي ولهم في الآخرة عذاب عظيم... ... | ٤١ م « | ٥ |
| | فأن له نار جهنم خالدا فيها ذلك الخزي العظيم ... ... | ٦٣ م التوبة | ٩ |
| | كشفنا عنهم عذاب الخزي في الحياة الدنيا ومتعناهم إلى حين | ٩٨ ك يونس | ١٠ |
| | فلما جاء أمرنا نجينا صالحا والذين آمنوا معه برحمة منا | | |
| | ومن خزي يومئذ ... ... ... ... ... ... ... | ٦٦ ك هود | ١١ |
| | قال الذين أوتوا العلم إن الخزي اليوم والسوء على الكافرين | ٢٧ ك النحل | ١٦ |
| | له في الدنيا خزي ونذيقه يوم القيامة عذاب الحريق | ٩ م الحج | ٢٢ |
| | فأذاقهم الله الخزي في الحياة الدنيا ولعذاب الآخرة أكبر | ٢٦ ك الزمر | ٣٩ |
| | لنذيقهم عذاب الخزي في الحياة الدنيا ... ... ... | ١٦ ك فصلت | ٤١ |
| أَخْزَى | : ولعذاب الآخرة أخزى وهم لا ينصرون ... ... | ١٦ ك « | ٤١ |
| يُخْزِي | : واعلموا أنكم غير معجزي الله وأن الله مخزي الكافرين | ٢ م التوبة | ٩ |
| | ✦✦✦ | | |
| اخْسَئُوا | : قال اخسئوا فيها ولا تكلمون ... ... ... ... | ١٠٨ ك المؤمنون | ٢٣ |
| خَاسِئًا | : ثم ارجع البصر كرتين ينقلب إليك البصر خاسئا | ٤ ك الملك | ٦٧ |
| خَاسِئِينَ | : فقلنا لهم كونوا قردة خاسئين ... ... ... ... | ٦٥ م البقرة | ٢ |
| (٢) | فلما عتوا عن ما نهوا عنه قلنا لهم كونوا قردة خاسئين | ١٦٦ م الأعراف | ٧ |
| | ✦✦✦ | | |
| خَسِرَ | : ومن يتخذ الشيطان وليا من دون الله فقد خسر | | |
| (٧) | خسرانا مبينا ... ... ... ... ... ... ... | ١١٩ م النساء | ٤ |
| | قد خسر الذين كذبوا بلقاء الله ... ... ... ... | ٣١ ك الأنعام | ٦ |
| | قد خسر الذين قتلوا أولادهم سفها بغير علم ... ... | ١٤٠ ك « | ٦ |
| | قد خسر الذين كذبوا بلقاء الله وما كانوا مهتدين ... | ٤٥ ك يونس | ١٠ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| خَسِرَ: وإن أصابته فتنة انقلب على وجهه خسر الدنيا والآخرة | ١١ م الحج | | ٢٢ |
| فإذا جاء أمر الله قضى بالحق وخسر هنالك المبطلون | ٧٨ ك غافر | | ٤٠ |
| سنة الله التي قد خلت في عباده وخسر هنالك الكافرون | ٨٥ ك « | | ٤٠ |
| خَسِرُوا: الذين خسروا أنفسهم فهم لا يؤمنون ... ... | ١٢ ك الأنعام | | ٦ |
| (٨) يعرفونه كما يعرفون أبناءهم الذين خسروا أنفسهم فهم لا يؤمنون... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ م « | | ٦ |
| ومن خفت موازينه فأولئك الذين خسروا أنفسهم | ٩ ك الأعراف | | ٧ |
| قد خسروا أنفسهم وضل عنهم ما كانوا يفترون ... | ٥٣ ك « | | ٧ |
| أولئك الذين خسروا أنفسهم وضل عنهم ما كانوا يفترون | ٢١ ك هود | | ١١ |
| ومن خفت موازينه فأولئك الذين خسروا أنفسهم في جهنم خالدون ... ... ... ... ... ... | ١٠٣ ك المؤمنون | | ٢٣ |
| قل إن الخاسرين الذين خسروا أنفسهم وأهليهم يوم القيامة ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ ك الزمر | | ٣٩ |
| وقال الذين آمنوا إن الخاسرين الذين خسروا أنفسهم وأهليهم يوم القيامة ... ... ... ... ... ... | ٤٥ ك الشورى | | ٤٢ |
| يَخْسَرُ: ويوم تقوم الساعة يومئذ يخسر المبطلون ... ... | ٢٧ ك الجاثية | | ٤٥ |
| تُخْسِرُوا: وأقيموا الوزن بالقسط ولا تخسروا الميزان | ٩ م الرحمن | | ٥٥ |
| يُخْسِرُونَ: وإذا كالوهم أو وزنوهم يخسرون ... ... ... | ٣ ك المطففين | | ٨٣ |
| خُسْرٍ: والعصر . إن الإنسان لفي خسر ... ... ... ... | ٢ ك العصر | | ١٠٣ |
| خُسْرًا: فذاقت وبال أمرها وكان عاقبة أمرها خسرا ... | ٩ م الطلاق | | ٦٥ |
| خَاسِرُونَ: ويقطعون ما أمر الله به أن يوصل ويفسدون في الأرض أولئك هم الخاسرون... ... ... ... | ٢٧ م البقرة | | ٢ |
| (١٤) أولئك يؤمنون به ومن يكفر به فأولئك هم الخاسرون | ١٢١ م « | | ٢ |
| لئن اتبعتم شعيبا إنكم إذا لخاسرون ... ... ... | ٩٠ ك الأعراف | | ٧ |
| أفأمنوا مكر الله فلا يأمن مكر الله إلا القوم الخاسرون | ٩٩ ك « | | ٧ |
| من يهد الله فهو المهتدي ومن يضلل فأولئك هم الخاسرون | ١٧٨ ك « | | ٧ |
| فيركمه جميعا فيجعله في جهنم أولئك هم الخاسرون | ٣٧ م الأنفال | | ٨ |
| حبطت أعمالهم في الدنيا والآخرة وأولئك هم الخاسرون | ٦٩ م التوبة | | ٩ |
| قالوا لئن أكله الذئب ونحن عصبة إنا إذا لخاسرون | ١٤ ك يوسف | | ١٢ |
| لا جرم أنهم في الآخرة هم الخاسرون ... ... ... | ١٠٩ ك النحل | | ١٦ |
| ولئن أطعتم بشرا مثلكم إنكم إذا لخاسرون ... ... | ٣٤ ك المؤمنون | | ٢٣ |
| والذين آمنوا بالباطل وكفروا بالله أولئك هم الخاسرون | ٥٢ ك العنكبوت | | ٢٩ |
| والذين كفروا بآيات الله أولئك هم الخاسرون | ٦٣ ك الزمر | | ٣٩ |
| ألا إن حزب الشيطان هم الخاسرون... ... ... ... | ١٩ م المجادلة | | ٥٨ |
| ومن يفعل ذلك فأولئك هم الخاسرون ... ... ... | ٩ م المنافقون | | ٦٣ |
| خَاسِرِينَ: فلولا فضل الله عليكم ورحمته لكنتم من الخاسرين | ٦٤ م البقرة | | ٢ |
| (١٨) ومن يبتغ غير الإسلام دينا فلن يقبل منه وهو في الآخرة من الخاسرين ... ... ... ... | ٨٥ م آل عمران | | ٣ |
| خَاسِرِينَ: إن تطيعوا الذين كفروا يردوكم على أعقابكم فتنقلبوا خاسرين ... ... ... ... ... ... | ١٤٩ م آل عمران | | ٣ |
| ومن يكفر بالإيمان فقد حبط عمله وهو في الآخرة من الخاسرين... ... ... ... ... ... | ٥ م المائدة | | ٥ |
| ولا ترتدوا على أدباركم فتنقلبوا خاسرين... ... ... | ٢١ م « | | ٥ |
| فطوعت له نفسه قتل أخيه فقتله فأصبح من الخاسرين | ٣٠ م « | | ٥ |
| حبطت أعمالهم فأصبحوا خاسرين ... ... ... ... | ٥٣ م « | | ٥ |
| وإن لم تغفر لنا وترحمنا لنكونن من الخاسرين | ٢٣ ك الأعراف | | ٧ |
| الذين كذبوا شعيبا كانوا هم الخاسرين ... ... ... | ٩٢ ك « | | ٧ |
| لئن لم يرحمنا ربنا ويغفر لنا لنكونن من الخاسرين | ١٤٩ ك « | | ٧ |
| ولا تكونن من الذين كذبوا بآيات الله فتكون من الخاسرين | ٩٥ م يونس | | ١٠ |
| وإلا تغفر لي وترحمني أكن من الخاسرين ... ... | ٤٧ ك هود | | ١١ |
| قل إن الخاسرين الذين خسروا أنفسهم وأهليهم يوم القيامة | ١٥ ك الزمر | | ٣٩ |
| لئن أشركت ليحبطن عملك ولتكونن من الخاسرين | ٦٥ ك « | | ٣٩ |
| وذلكم ظنكم الذي ظننتم بربكم أرداكم فأصبحتم من الخاسرين | ٢٣ ك فصلت | | ٤١ |
| وحق عليهم القول في أمم قد خلت من قبلهم من الجن والإنس إنهم كانوا خاسرين ... ... ... ... | ٢٥ ك « | | ٤١ |
| إن الخاسرين الذين خسروا أنفسهم وأهليهم يوم القيامة | ٤٥ ك الشورى | | ٤٢ |
| قد خلت من قبلهم من الجن والإنس إنهم كانوا خاسرين | ١٨ ك الأحقاف | | ٤٦ |
| خَاسِرَةٌ: قالوا تلك إذا كرة خاسرة... ... ... ... | ١٢ ك النازعات | | ٧٩ |
| خَسَارًا: ولا يزيد الظالمين إلا خسارا ... ... ... | ٨٢ ك الإسراء | | ١٧ |
| (٣) ولا يزيد الكافرين كفرهم إلا خسارا ... ... ... | ٣٩ ك فاطر | | ٣٥ |
| وأتبعوا من لم يزده ماله وولده إلا خسارا ... ... | ٢١ ك نوح | | ٧١ |
| الْخُسْرَانُ: خسر الدنيا والآخرة ذلك هو الخسران المبين | ١١ م الحج | | ٢٢ |
| (٢) ألا ذلك هو الخسران المبين ... ... ... ... | ١٥ ك الزمر | | ٣٩ |
| خُسْرَانًا: ومن يتخذ الشيطان وليا من دون الله فقد خسر خسرانا مبينا... ... ... ... ... ... | ١١٩ م النساء | | ٤ |
| الْأَخْسَرُونَ: لا جرم أنهم في الآخرة هم الأخسرون | ٢٢ ك هود | | ١١ |
| (٢) أولئك الذين لهم سوء العذاب وهم في الآخرة هم الأخسرون | ٥ ك النمل | | ٢٧ |
| الْأَخْسَرِينَ: قل هل ننبئكم بالأخسرين أعمالا ... ... | ١٠٣ ك الكهف | | ١٨ |
| (٢) وأرادوا به كيدا فجعلناهم الأخسرين ... ... ... | ٧٠ ك الأنبياء | | ٢١ |
| تَخْسِيرٍ: فمن ينصرني من الله إن عصيته فما تزيدونني غير تخسير | ٦٣ ك هود | | ١١ |
| الْمُخْسِرِينَ: أوفوا الكيل ولا تكونوا من المخسرين... ... | ١٨١ ك الشعراء | | ٢٦ |

***

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| خَسَفَ: لولا أن من الله علينا لخسف بنا ... ... ... | ٨٢ ك القصص | | ٢٨ |
| (٢) فإذا برق البصر . وخسف القمر . وجمع الشمس والقمر . يقول الإنسان يومئذ أين المفر ... ... | ٨ ك القيامة | | ٧٥ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| خَسَفْنَا: | فخسفنا به وبداره الأرض ... ... ... ... ... | ك القصص | ٨١ | ٢٨ |
| (٢) | ومنهم من خسفنا به الأرض ومنهم من أغرقنا... ... | ك العنكبوت | ٤٠ | ٢٩ |
| نَخْسِفْ: | إن نشأ نخسف بهم الأرض ... ... ... ... | ك سبأ | ٩ | ٣٤ |
| يَخْسِفَ: | أفأمن الذين مكروا السيئات أن يخسف الله | | | |
| (٣) | بهم الأرض ... ... ... ... ... ... ... ... | ك النحل | ٤٥ | ١٦ |
| | أفأمنتم أن يخسف بكم جانب البر أو يرسل عليكم حاصبا | ك الإسراء | ٦٨ | ١٧ |
| | ءأمنتم من فى السماء أن يخسف بكم الأرض فإذا هى تمور | ك الملك | ١٦ | ٦٧ |
| خُشُبٌ: | وإن يقولوا تسمع لقولهم كأنهم خشب مسندة | م المنافقون | ٤ | ٦٣ |
| خَشَعَتْ: | وخشعت الأصوات للرحمن فلا تسمع إلا همسا | ك طه | ١٠٨ | ٢٠ |
| تَخْشَعَ: | ألم يأن للذين آمنوا أن تخشع قلوبهم لذكر الله | م الحديد | ١٦ | ٥٧ |
| خُشُوعًا: | ويخرون للأذقان يبكون ويزيدهم خشوعا... | ك الإسراء | ١٠٩ | ١٧ |
| خَاشِعًا: | لو أنزلنا هذا القرآن على جبل لرأيته خاشعا | | | |
| | متصدعا من خشية الله ... ... ... ... ... ... | م الحشر | ٢١ | ٥٩ |
| خَاشِعُونَ: | قد أفلح المؤمنون . الذين هم فى صلاتهم خاشعون | ك المؤمنون | ٢ | ٢٣ |
| خَاشِعِينَ: | وإنها لكبيرة إلا على الخاشعين ... ... ... ... | م البقرة | ٤٥ | ٢ |
| (٥) | خاشعين لله لا يشترون بآيات الله ثمنا قليلا ... ... | م آل عمران | ١٩٩ | ٣ |
| | ويدعوننا رغبا ورهبا وكانوا لنا خاشعين ... ... | ك الأنبياء | ٩٠ | ٢١ |
| | والخاشعين والخاشعات والمتصدقين والمتصدقات | م الأحزاب | ٣٥ | ٣٣ |
| | وتراهم يعرضون عليها خاشعين من الذل ... ... ... | ك الشورى | ٤٥ | ٤٢ |
| خُشَّعًا: | خشعا أبصارهم يخرجون من الأجداث كأنهم جراد منتشر | ك القمر | ٧ | ٥٤ |
| خَاشِعَةً: | ومن آياته أنك ترى الأرض خاشعة ... ... ... | ك فصلت | ٣٩ | ٤١ |
| (٥) | خاشعة أبصارهم ترهقهم ذلة ... ... ... ... ... | ك القلم | ٤٣ | ٦٨ |
| | خاشعة أبصارهم ترهقهم ذلة ذلك اليوم الذى كانوا يوعدون | ك المعارج | ٤٤ | ٧٠ |
| | قلوب يومئذ واجفة . أبصارها خاشعة ... ... ... | ك النازعات | ٩ | ٧٩ |
| | هل أتاك حديث الغاشية . وجوه يومئذ خاشعة | ك الغاشية | ٢ | ٨٨ |
| الخَاشِعَاتِ: | والخاشعين والخاشعات والمتصدقين والمتصدقات | م الأحزاب | ٣٥ | ٣٣ |
| خَشِيَ: | ذلك لمن خشى العنت منكم ... ... ... ... ... | م النساء | ٢٥ | ٤ |
| (٤) | إنما تنذر من اتبع الذكر وخشى الرحمن بالغيب | ك يس | ١١ | ٣٦ |
| | من خشى الرحمن بالغيب وجاء بقلب منيب ... ... | ك ق | ٣٣ | ٥٠ |
| | رضى الله عنهم ورضوا عنه ذلك لمن خشى ربه | م البينة | ٨ | ٩٨ |
| خَشِيتُ: | إنى خشيت أن تقول فرقت بين بنى إسرائيل | ك طه | ٩٤ | ٢٠ |
| خَشِينَا: | وأما الغلام فكان أبواه مؤمنين فخشينا أن | | | |
| | يرهقهما طغيانا وكفرا ... ... ... ... ... ... | ك الكهف | ٨٠ | ١٨ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَخْشَى: | فاضرب لهم طريقا فى البحر يبسا لا تخاف دركا ولا تخشى | ك طه | ٧٧ | ٢٠ |
| (٣) | وتخشى الناس والله أحق أن تخشاه ... ... ... | م الأحزاب | ٣٧ | ٣٣ |
| | وأهديك إلى ربك فتخشى .. ... ... ... ... ... | ك النازعات | ١٩ | ٧٩ |
| تَخْشَاهُ: | وتخشى الناس والله أحق أن تخشاه ... ... ... | م الأحزاب | ٣٧ | ٣٣ |
| تَخْشَوُا: | فلا تخشوا الناس واخشون ولا تشتروا بآياتى ثمنا قليلا | م المائدة | ٤٤ | ٥ |
| تَخْشَوْنَ: | وأموال اقترفتموها وتجارة تخشون كسادها | م التوبة | ٢٤ | ٩ |
| أَتَخْشَوْنَهُمْ: | وهموا بإخراج الرسول وهم بدءوكم أول مرة | | | |
| | أتخشونهم ... ... ... ... ... ... ... ... | م « | ١٣ | ٩ |
| تَخْشَوْهُ: | فالله أحق أن تخشوه إن كنتم مؤمنين ... ... | م « | ١٣ | ٩ |
| تَخْشَوْهُمْ: | إلا الذين ظلموا منهم فلا تخشوهم واخشونى | م البقرة | ١٥٠ | ٢ |
| (٢) | اليوم يئس الذين كفروا من دينكم فلا تخشوهم واخشون | م المائدة | ٣ | ٥ |
| نَخْشَى: | يقولون نخشى أن تصيبنا دائرة ... ... ... ... | م « | ٥٢ | ٥ |
| يَخْشَ: | وليخش الذين لو تركوا من خلفهم ذرية ضعافا خافوا عليهم | م النساء | ٩ | ٤ |
| (٣) | وأقام الصلاة وآتى الزكاة ولم يخش إلا الله... ... | م التوبة | ١٨ | ٩ |
| | ومن يطع الله ورسوله ويخش الله ويتقه فأولئك هم الفائزون | م النور | ٥٢ | ٢٤ |
| يَخْشَى: | ما أنزلنا عليك القرآن لتشقى . إلا تذكرة لمن يخشى | ك طه | ٣ | ٢٠ |
| (٦) | فقولا له قولا لينا لعله يتذكر أو يخشى ... ... ... | ك « | ٤٤ | ٢٠ |
| | إنما يخشى الله من عباده العلماء إن الله عزيز غفور | ك فاطر | ٢٨ | ٣٥ |
| | إن فى ذلك لعبرة لمن يخشى... ... ... ... ... | ك النازعات | ٢٦ | ٧٩ |
| | وأما من جاءك يسعى . وهو يخشى . فأنت عنه تلهى | ك عبس | ٩ | ٨٠ |
| | سيذكر من يخشى ... ... ... ... ... ... ... | ك الأعلى | ١٠ | ٨٧ |
| يَخْشَاهَا: | إنما أنت منذر من يخشاها... ... ... ... ... | ك النازعات | ٤٥ | ٧٩ |
| يَخْشَوْنَ: | فلما كتب عليهم القتال إذا فريق منهم يخشون | | | |
| (٧) | الناس كخشية الله ... ... ... ... ... ... | م النساء | ٧٧ | ٤ |
| | والذين يصلون ما أمر الله به أن يوصل ويخشون ربهم | م الرعد | ٢١ | ١٣ |
| | الذين يخشون ربهم بالغيب وهم من الساعة مشفقون | ك الأنبياء | ٤٩ | ٢١ |
| | ولا يخشون أحدا إلا الله ... ... ... ... ... | م الأحزاب | ٣٩ | ٣٣ |
| | إنما تنذر الذين يخشون ربهم بالغيب وأقاموا الصلاة | ك فاطر | ١٨ | ٣٥ |
| | تقشعر منه جلود الذين يخشون ربهم ... ... ... | ك الزمر | ٢٣ | ٣٩ |
| | إن الذين يخشون ربهم بالغيب لهم مغفرة وأجر كبير | ك الملك | ١٢ | ٦٧ |
| يَخْشَوْنَهُ: | الذين يبلغون رسالات الله ويخشونه ... ... | م الأحزاب | ٣٩ | ٣٣ |
| وَاخْشَوْا: | اتقوا ربكم واخشوا يوما لا يجزى والد عن ولده | ك لقمان | ٣٣ | ٣١ |
| وَاخْشَوْنِ: | اليوم يئس الذين كفروا من دينكم فلا | | | |
| (٢) | تخشوهم واخشون.. ... ... ... ... ... ... | م المائدة | ٣ | ٥ |
| | فلا تخشوا الناس واخشون ولا تشتروا بآياتى ثمنا قليلا | م « | ٤٤ | ٥ |
| وَاخْشَوْنِى: | فلا تخشوهم واخشونى ولأتم نعمتى عليكم | | | |
| | ولعلكم تهتدون ... ... ... ... ... ... ... | م البقرة | ١٥٠ | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| فَاخْشَوْهُمْ | : الذين قال لهم الناس إن الناس قد جمعوا لكم فاخشوهم فزادهم إيمانا ... ... ... ... ... | ١٧٣ | م آل عمران | ٣ |
| خَشْيَةَ | : وإن منها لما يهبط من خشية الله ... ... ... | ٧٤ | م البقـرة | ٢ |
| (٧) | إذا فريق منهم يخشون الناس كخشية الله ... ... | ٧٧ | م النسـاء | ٤ |
| | أو أشد خشية... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٧ | م « | ٤ |
| | ولا تقتلوا أولادكم خشية إملاق ... ... ... ... | ٣١ | ك الإسـراء | ١٧ |
| | قل لو أنتم تملكون خزائن رحمة ربى إذا لأمسكتم خشية الإنفاق ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٠ | ك « | ١٧ |
| | إن الذين هم من خشية ربهم مشفقون... ... ... | ٥٧ | ك المؤمنـون | ٢٣ |
| | لو أنزلنا هذا القرآن على جبل لرأيته خاشعا متصدعا من خشية الله... ... ... ... ... ... ... | ٢١ | م الحشـر | ٥٩ |
| خَشْيَتِهِ | : ولا يشفعون إلا لمن ارتضى وهم من خشيته مشفقون | ٢٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| يَخْتَصُّ | : والله يختص برحمته من يشاء والله ذو الفضل العظيم | ١٠٥ | م البقـرة | ٢ |
| (٢) | يختص برحمته من يشاء والله ذو الفضـل العظيم | ٧٤ | م آل عمران | ٣ |
| خَاصَّةً | : واتقوا فتنة لا تصيبن الذين ظلموا منكم خاصة | ٢٥ | م الأنفـال | ٨ |
| خَصَاصَةٌ | : ويؤثرون على أنفسهم ولو كان بهم خصاصة | ٩ | م الحشـر | ٥٩ |
| يَخْصِفَانِ | : وطفقا يخصفان عليهما من ورق الجنة... ... | ٢٢ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | فأكلا منها فبدت لهما سوآتهما وطفقا يخصفان عليهما من ورق الجنة... ... ... ... ... ... ... | ١٢١ | ك طـه | ٢٠ |
| اخْتَصَمُوا | : هذان خصمان اختصموا فى ربهم ... ... | ١٩ | م الحـج | ٢٢ |
| تَخْتَصِمُوا | : قال لا تختصموا لدىّ وقد قدمت إليكم بالوعيد | ٢٨ | ك قٓ | ٥٠ |
| تَخْتَصِمُونَ | : ثم إنكم يوم القيامة عند ربكم تختصمون | ٣١ | ك الزمر | ٣٩ |
| يَخْتَصِمُونَ | : وما كنت لديهم إذ يختصمون ... ... ... | ٤٤ | م آل عمران | ٣ |
| (٤) | قالوا وهم فيها يختصمون . تالله إن كنا لفى ضلال مبين | ٩٦ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| | فإذا هم فريقان يختصمون ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك النمـل | ٢٧ |
| | ما كان لى من علم بالملإ الأعلى إذ يختصمون ... ... | ٦٩ | ك صٓ | ٣٨ |
| يَخِصِّمُونَ | : ما ينظرون إلا صيحة واحدة تأخذهم وهم يخصمون ... ... ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك يسٓ | ٣٦ |
| تَخَاصُمُ | : إن ذلك لحق تخاصم أهل النار ... ... ... ... | ٦٤ | ك صٓ | ٣٨ |
| الْخَصْمِ | : وهل أتاك نبأ الخصم إذ تسوروا المحراب | ٢١ | ك « | ٣٨ |
| خَصْمَانِ | : هذان خصمان اختصموا فى ربهم ... ... ... | ١٩ | م الحـج | ٢٢ |
| (٢) | خصمان بغى بعضنا على بعض فاحكم بيننا بالحق ... | ٢٢ | ك صٓ | ٣٨ |
| خَصِمُونَ | : ما ضربوه لك إلا جدلا بل هم قوم خصمون | ٥٨ | ك الزخرف | ٤٣ |
| خَصِيمٌ | : خلق الإنسان من نطفة فإذا هو خصيم مبين | ٤ | ك النحـل | ١٦ |
| (٢) | أولم ير الإنسان أنا خلقناه من نطفة فإذا هو خصيم مبين | ٧٧ | ك يسٓ | ٣٦ |
| خَصِيمًا | : ولا تكن للخائنين خصيما ... ... ... ... ... | ١٠٥ | م النسـاء | ٤ |
| الْخِصَامِ | : ويشهد الله على ما فى قلبه وهو ألد الخصام | ٢٠٤ | م البقـرة | ٢ |
| (٢) | أو من ينشؤا فى الحلية وهو فى الخصام غير مبين | ١٨ | ك الزخرف | ٤٣ |
| مَخْضُودٍ | : وأصحاب اليمين . ما أصحاب اليمين . فى سدر مخضود | ٢٨ | ك الواقعـة | ٥٦ |
| خَضِرًا | : فأخرجنا به نبات كل شىء فأخرجنا منه خضرا | ٩٩ | ك الأنعـام | ٦ |
| الْأَخْضَرِ | : الذى جعل لكم من الشجر الأخضر نارا | ٨٠ | ك يسٓ | ٣٦ |
| خُضْرٍ | : إنى أرى سبع بقرات سمان يأكلهن سبع عجاف | | | |
| (٤) | وسبع سنبلات خضر وأخر يابسات ... ... ... | ٤٣ | ك يوسـف | ١٢ |
| | أفتنا فى سبع بقرات سمان يأكلهن سبع عجاف وسبع سنبلات خضر وأخر يابسات ... ... ... ... | ٤٦ | ك « | ١٢ |
| | متكئين على رفرف خضر وعبقرىّ حسان .. ... | ٧٦ | م الرحمـن | ٥٥ |
| | عاليهم ثياب سندس خضر وإستبرق ... ... ... ... | ٢١ | م الإنسـان | ٧٦ |
| خُضْرًا | : ويلبسون ثيابا خضرا من سندس وإستبرق | ٣١ | ك الكهف | ١٨ |
| مُخْضَرَّةً | : ألم تر أن الله أنزل من السماء ماء فتصبح الأرض مخضرة | ٦٣ | م الحـج | ٢٢ |
| تَخْضَعْنَ | : فلا تخضعن بالقول فيطمع الذى فى قلبه مرض | ٣٢ | م الأحزاب | ٣٣ |
| خَاضِعِينَ | : إن نشأ ننزل عليهم من السماء آية فظلت أعناقهم لها خاضعين ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| أَخْطَأْتُمْ | : وليس عليكم جناح فيما أخطأتم به ... ... ... | ٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| أَخْطَأْنَا | : ربنا لا تؤاخذنا إن نسينا أو أخطأنا ... ... | ٢٨٦ | م البقـرة | ٢ |
| خَطَأً | : وما كان لمؤمن أن يقتل مؤمنا إلا خطأ ... ... | ٩٢ | م النسـاء | ٤ |
| (٢) | ومن قتل مؤمنا خطأ فتحرير رقبة مؤمنة ودية مسلمة إلى أهله | ٩٢ | م « | ٤ |
| خِطْأً | : نحن نرزقهم وإياكم إن قتلهم كان خطأ كبيرا... ... | ٣١ | ك الإسراء | ١٧ |
| الْخَاطِئُونَ | : ولا طعام إلا من غسلين . لا يأكله إلا الخاطئون | ٣٧ | ك الحاقة | ٦٩ |
| خَاطِئِينَ | : واستغفرى لذنبك إنك كنت من الخاطئين | ٢٩ | ك يوسـف | ١٢ |
| (٤) | قالوا تالله لقد آثرك الله علينا وإن كنا لخاطئين | ٩١ | ك « | ١٢ |
| | قالوا يا أبانا استغفر لنا ذنوبنا إنا كنا خاطئين | ٩٧ | ك « | ١٢ |
| | إن فرعون وهامان وجنودهما كانوا خاطئين ... ... | ٨ | ك القصص | ٢٨ |
| خَاطِئَةٍ | : وجاء فرعون ومن قبله والمؤتفكات بالخاطئة | ٩ | ك الحاقة | ٦٩ |
| (٢) | كلا لئن لم ينته لنسفعا بالناصية . ناصية كاذبة خاطئة | ١٦ | ك العلق | ٩٦ |
| خَطِيئَةً | : ومن يكسب خطيئة أو إثما ثم يرم به بريئا فقد احتمل بهتانا وإثما مبينا ... ... ... ... ... | ١١٢ | م النسـاء | ٤ |
| خَطِيئَتُهُ | : بل من كسب سيئة وأحاطت به خطيئته فأولئك أصحاب النار هم فيها خالدون ... ... ... ... | ٨١ | م البقـرة | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| خَطِيئَتِي | : والذى أطمع أن يغفر لى خطيئتى يوم الدين | ك الشعراء | ٨٢ ٢٦ |
| خَطِيئَاتِكُمْ | : وادخلوا الباب سجدا نغفر لكم خطيئاتكم | ك الأعراف | ١٦١ ٧ |
| خَطِيئَاتِهِمْ | : مما خطيئاتهم أغرقوا فأدخلوا نارا ... ... | ك نوح | ٢٥ ٧١ |
| خَطَايَاكُمْ | : وادخلوا الباب سجدا وقولوا حطة نغفر لكم | | |
| (٢) | خطاياكم... ... ... ... ... ... ... ... | م البقرة | ٥٨ ٢ |
| | اتبعوا سبيلنا ولنحمل خطاياكم... ... ... ... ... | ك العنكبوت | ١٢ ٢٩ |
| خَطَايَانَا | : إنا آمنا بربنا ليغفر لنا خطايانا... ... ... ... | ك طه | ٧٣ ٢٠ |
| (٢) | إنا نطمع أن يغفر لنا ربنا خطايانا أن كنا أول المؤمنين | ك الشعراء | ٥١ ٢٦ |
| خَطَايَاهُمْ | : وما هم بحاملين من خطاياهم من شىء ... ... | ك العنكبوت | ١٢ ٢٩ |
| خَاطَبَهُمْ | : وإذا خاطبهم الجاهلون قالوا سلاما... ... ... | ك الفرقان | ٦٣ ٢٥ |
| تُخَاطِبْنِي | : ولا تخاطبنى فى الذين ظلموا ... ... ... ... | ك هود | ٣٧ ١١ |
| (٢) | ولا تخاطبنى فى الذين ظلموا إنهم مغرقون ... ... | ك المؤمنون | ٢٧ ٢٣ |
| خَطْبُكَ | : قال فما خطبك ياسامرى... ... ... ... ... | ك طه | ٩٥ ٢٠ |
| خَطْبُكُمْ | : قال فما خطبكم أيها المرسلون ... ... ... ... | ك الحجر | ٥٧ ١٥ |
| (٢) | قال فما خطبكم أيها المرسلون ... ... ... ... ... | ك الذاريات | ٣١ ٥١ |
| خَطْبُكُمَا | : قال ما خطبكما قالتا لا نسقى حتى يصدر الرعاء | ك القصص | ٢٣ ٢٨ |
| خَطْبُكُنَّ | : قال ما خطبكن إذ راودتن يوسف عن نفسه | ك يوسف | ٥١ ١٢ |
| الْخِطَابِ | : وشددنا ملكه وآتيناه الحكمة وفصل الخطاب | ك ص | ٢٠ ٣٨ |
| (٢) | فقال أكفلنيها وعزنى فى الخطاب ... ... ... ... | ك « | ٢٣ ٣٨ |
| خِطَابًا | : رب السموات والأرض وما بينهما الرحمن | | |
| | لا يملكون منه خطابا ... ... ... ... ... ... | ك النبأ | ٣٧ ٧٨ |
| خِطْبَةِ | : ولا جناح عليكم فيما عرّضتم به من خطبة النساء | م البقرة | ٢٣٥ ٢ |
| تَخُطُّهُ | : وما كنت تتلوا من قبله من كتاب ولا تخطه بيمينك | ك العنكبوت | ٤٨ ٢٩ |
| خَطِفَ | : إلا من خطف الخطفة فأتبعه شهاب ثاقب | ك الصافات | ١٠ ٣٧ |
| فَتَخْطَفُهُ | : فكأنما خرّ من السماء فتخطفه الطير ... ... | م الحج | ٣١ ٢٢ |
| يَخْطَفُ | : يكاد البرق يخطف أبصارهم كلما أضاء لهم مشوا فيه | م البقرة | ٢٠ ٢ |
| يَتَخَطَّفَكُمْ | : تخافون أن يتخطفكم الناس فآواكم وأيدكم بنصره | م الأنفال | ٢٦ ٨ |
| نُتَخَطَّفْ | : وقالوا إن نتبع الهدى معك نتخطف من أرضنا | ك القصص | ٥٧ ٢٨ |
| يُتَخَطَّفُ | : أولم يروا أنا جعلنا حرما آمنا ويتخطف الناس | | |
| | من حولهم... ... ... ... ... ... ... ... | ك العنكبوت | ٦٧ ٢٩ |
| الْخَطْفَةَ | : إلا من خطف الخطفة فأتبعه شهاب ثاقب... | ك الصافات | ١٠ ٣٧ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| خُطُوَاتِ | : يأيها الناس كلوا مما فى الأرض حلالا طيبا | | |
| (٥) | ولا تتبعوا خطوات الشيطان ... ... ... ... | م البقرة | ١٦٨ ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا ادخلوا فى السلم كافة ولا تتبعوا | | |
| | خطوات الشيطان ... ... ... ... ... ... ... | م « | ٢٠٨ ٢ |
| | كلوا مما رزقكم الله ولا تتبعوا خطوات الشيطان | ك الأنعام | ١٤٢ ٦ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تتبعوا خطوات الشيطان | م النور | ٢١ ٢٤ |
| | ومن يتبع خطوات الشيطان فإنه يأمر بالفحشاء والمنكر | م « | ٢١ ٢٤ |
| تُخَافِتْ | : ولا تجهر بصلاتك ولا تخافت بها وابتغ بين ذلك سبيلا | ك الإسراء | ١١٠ ١٧ |
| يَتَخَافَتُونَ | : يتخافتون بينهم إن لبثتم إلا عشرا ... ... ... | ك طه | ١٠٣ ٢٠ |
| (٢) | فانطلقوا وهم يتخافتون . أن لا يدخلنها اليوم عليكم مسكين | م القلم | ٢٣ ٦٨ |
| وَاخْفِضْ | : ولا تحزن عليهم واخفض جناحك للمؤمنين | ك الحجر | ٨٨ ١٥ |
| (٣) | واخفض لهما جناح الذل من الرحمة ... ... ... ... | ك الإسراء | ٢٤ ١٧ |
| | واخفض جناحك لمن اتبعك من المؤمنين ... ... | ك الشعراء | ٢١٥ ٢٦ |
| خَافِضَةٌ | : ليس لوقعتها كاذبة . خافضة رافعة ... ... ... | ك الواقعة | ٣ ٥٦ |
| خَفَّتْ | : ومن خفت موازينه فأولئك الذين خسروا | | |
| (٣) | أنفسهم بما كانوا بآياتنا يظلمون ... ... ... ... | ك الأعراف | ٩ ٧ |
| | ومن خفت موازينه فأولئك الذين خسروا أنفسهم | | |
| | فى جهنم خالدون ... ... ... ... ... ... ... | ك المؤمنون | ١٠٣ ٢٣ |
| | وأما من خفت موازينه . فأمه هاوية ... ... ... | ك القارعة | ٨ ١٠١ |
| خَفَّفَ | : الآن خفف الله عنكم وعلم أن فيكم ضعفا ... ... | م الأنفال | ٦٦ ٨ |
| يُخَفِّفَ | : يريد الله أن يخفف عنكم وخلق الإنسان ضعيفا | م النساء | ٢٨ ٤ |
| (٢) | وقال الذين فى النار لخزنة جهنم ادعوا ربكم يخفف | | |
| | عنا يوما من العذاب ... ... ... ... ... ... | ك غافر | ٤٩ ٤٠ |
| يُخَفَّفُ | : فلا يخفف عنهم العذاب ولاهم ينصرون ... ... | م البقرة | ٨٦ ٢ |
| (٥) | خالدين فيها لا يخفف عنهم العذاب ولاهم ينظرون | م « | ١٦٢ ٢ |
| | خالدين فيها لا يخفف عنهم العذاب ولاهم ينظرون | م آل عمران | ٨٨ ٣ |
| | وإذا رأى الذين ظلموا العذاب فلا يخفف عنهم | | |
| | ولاهم ينظرون... ... ... ... ... ... ... ... | ك النحل | ٨٥ ١٦ |
| | لا يقضى عليهم فيموتوا ولا يخفف عنهم من عذابها | ك فاطر | ٣٦ ٣٥ |
| فَاسْتَخَفَّ | : فاستخف قومه فأطاعوه إنهم كانوا قوما فاسقين | م الزخرف | ٥٤ ٤٣ |
| تَسْتَخِفُّونَهَا | : وجعل لكم من جلود الأنعام بيوتا | | |
| | تستخفونها يوم ظعنكم ويوم إقامتكم... ... ... | ك النحل | ٨٠ ١٦ |
| يَسْتَخِفَّنَّكَ | : فاصبر إن وعد الله حق ولا يستخفنك | | |
| | الذين لا يوقنون ... ... ... ... ... ... ... | ك الروم | ٦٠ ٣٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَخْفِيفٌ | : ذلك تخفيف من ربكم ورحمة ... ... ... ... | ١٧٨ | م البقـرة | ٢ |
| خَفِيفًا | : فلما تغشاها حملت حملا خفيفا فمرت به ... ... | ١٨٩ | ك الأعراف | ٧ |
| خِفَافًا | : انفروا خفافا وثقالا ... ... ... ... ... ... | ٤١ | م التـوبة | ٩ |
| تَخْفَى | : يومئذ تعرضون لا تخفى منكم خافيـة ... ... ... | ١٨ | ك الحاقة | ٦٩ |
| يَخْفَى | : إن الله لا يخفى عليه شيء في الأرض ولا في السماء | ٥ | م آل عمران | ٣ |
| (٤) | وما يخفى على الله من شيء في الأرض ولا في السماء | ٣٨ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | يوم هم بارزون لا يخفى على الله منهم شيء ... ... | ١٦ | ك غافر | ٤٠ |
| | سنقرئك فلا تنسى . إلا ما شاء الله إنه يعلم الجهر وما يخفى | ٧ | ك الأعلى | ٨٧ |
| يَخْفَوْنَ | : إن الذين يلحدون في آياتنا لا يخفون علينا | ٤٠ | ك فصلت | ٤١ |
| أَخْفَيْتُمْ | : تسرون إليهم بالمودة وأنا أعلم بما أخفيتم وما أعلنتم | ١ | م الممتحنة | ٦٠ |
| أُخْفِيهَا | : إن الساعة آتية أكاد أخفيها لتجزى كل نفس بما تسعى | ١٥ | ك طه | ٢٠ |
| تُخْفُوا | : قل إن تخفوا ما في صدوركم أو تبدوه يعلمه الله | ٢٩ | م آل عمران | ٣ |
| تُخْفُونَ | : قد جاءكم رسولنا يبين لكم كثيرا مما كنتم تخفون | | | |
| (٣) | من الكتاب ويعفوا عن كثير... ... ... ... ... | ١٥ | م المائدة | ٥ |
| | تجعلونه قراطيس تبدونها وتخفون كثيرا... ... ... | ٩١ | م الأنعام | ٦ |
| | ويعلم ما تخفون وما تعلنون ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك النمل | ٢٧ |
| تُخْفُوهُ | : إن تبدوا ما في أنفسكم أو تخفوه يحاسبكم به الله | ٢٨٤ | م البقـرة | ٢ |
| (٣) | إن تبدوا خيرا أو تخفوه أو تعفوا عن سوء فإن الله | | | |
| | كان عفوا قديرا ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٩ | م النساء | ٤ |
| | إن تبدوا شيئا أو تخفوه فإن الله كان بكل شيء عليما | ٥٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| تُخْفُوهَا | : إن تبدوا الصدقات فنعما هي وإن تخفوها | | | |
| | وتؤتوها الفقراء فهو خير لكم ... ... ... ... | ٢٧١ | م البقـرة | ٢ |
| تُخْفِي | : قد بدت البغضاء من أفواههم وما تخفي صدورهم أكبر | ١١٨ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | وتخفي في نفسك ما الله مبديه ... ... ... ... | ٣٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | يعلم خائنة الأعين وما تخفي الصدور ... ... ... | ١٩ | ك غافر | ٤٠ |
| تُخْفِي | : ربنا إنك تعلم ما نخفي وما نعلن ... ... ... ... | ٣٨ | ك إبراهيم | ١٤ |
| يُخْفُونَ | : قل إن الأمر كله لله يخفون في أنفسهم ما لا يبدون لك | ١٥٤ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | بل بدا لهم ما كانوا يخفون من قبل ... ... ... | ٢٨ | ك الأنعام | ٦ |
| يُخْفِينَ | : ولا يضربن بأرجلهن ليعلم ما يخفين من زينتهن | ٣١ | م النـور | ٢٤ |
| أُخْفِيَ | : فلا تعلم نفس ما أخفي لهم من قرة أعين ... ... | ١٧ | م السجدة | ٣٢ |
| لِيَسْتَخْفُوا | : ألا إنهم يثنون صدورهم ليستخفوا منه | ٥ | ك هـود | ١١ |
| يَسْتَخْفُونَ | : يستخفون من الناس ... ... ... ... ... | ١٠٨ | م النساء | ٤ |
| (٢) | ولا يستخفون من الله وهو معهم إذ يبيتون ما لا | | | |
| | يرضى من القول ... ... ... ... ... ... | ١٠٨ | « | ٤ |
| خَفِيٍّ | : وتراهم يعرضون عليها خاشعين من الذل ينظرون | | | |
| | من طرف خفيّ ... ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك الشورى | ٤٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| خَفِيًّا | : ذكر رحمة ربك عبده زكريا . إذ نادى ربه نداء خفيا | ٣ | ك مريم | ١٩ |
| وَأَخْفَى | : وإن تجهر بالقول فإنه يعلم السر وأخفى ... ... | ٧ | ك طه | ٢٠ |
| خَافِيَةٌ | : يومئذ تعرضون لا تخفى منكم خافية ... ... ... | ١٨ | ك الحاقة | ٦٩ |
| خُفْيَةً | : قل من ينجيكم من ظلمات البر والبحر تدعونه تضرعا وخفية | ٦٣ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | ادعوا ربكم تضرعا وخفية إنه لا يحب المعتدين | ٥٥ | ك الأعراف | ٧ |
| مُسْتَخْفٍ | : سواء منكم من أسرّ القول ومن جهر به ومن | | | |
| | هو مستخف بالليل وسارب بالنهار ... ... ... | ١٠ | م الرعد | ١٣ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تَخْلُدُونَ | : وتتخذون مصانع لعلكم تخلدون ... ... ... ... | ١٢٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| يَخْلُدْ | : يضاعف له العذاب يوم القيامة ويخلد فيه مهانا | ٦٩ | م الفرقان | ٢٥ |
| أَخْلَدَ | : ولو شئنا لرفعناه بها ولكنه أخلد إلى الأرض واتبع هواه | ١٧٦ | ك الأعراف | ٧ |
| أَخْلَدَهُ | : الذي جمع مالا وعدده . يحسب أن ماله أخلده | ٣ | ك الهمزة | ١٠٤ |
| الْخُلْدَ | : ثم قيل للذين ظلموا ذوقوا عذاب الخلد ... ... | ٥٢ | ك يونس | ١٠ |
| (٦) | قال يا آدم هل أدلك على شجرة الخلد وملك لا يبلى | ١٢٠ | ك طه | ٢٠ |
| | وما جعلنا لبشر من قبلك الخلد أفإن مت فهم الخالدون | ٣٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | قل أذلك خير أم جنة الخلد التي وعد المتقون | ١٥ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | إنا نسينا كم وذوقوا عذاب الخلد بما كنتم تعملون | ١٤ | ك السجدة | ٣٢ |
| | ذلك جزاء أعداء الله النار لهم فيها دار الخلد ... ... | ٢٨ | ك فصلت | ٤١ |
| خَالِدٌ | : كمن هو خالد في النار وسقوا ماء حميما فقطع أمعاءهم | ١٥ | م محمد | ٤٧ |
| خَالِدًا | : ومن يعص الله ورسوله ويتعد حدوده يدخله | | | |
| (٣) | نارا خالدا فيها ... ... ... ... ... ... | ١٤ | م النساء | ٤ |
| | ومن يقتل مؤمنا متعمدا فجزاؤه جهنم خالدا فيها | ٩٣ | م « | ٤ |
| | ألم يعلموا أنه من يحادد الله ورسوله فأن له نار جهنم خالدا فيها | ٦٣ | م التوبة | ٩ |
| خَالِدَيْنِ | : فكان عاقبتهما أنهما في النار خالدين فيها... ... | ١٧ | م الحشر | ٥٩ |
| خَالِدُونَ | : ولهم فيها أزواج مطهرة وهم فيها خالدون | ٢٥ | م البقـرة | ٢ |
| (٢٥) | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا أولئك أصحاب النار | | | |
| | هم فيها خالدون ... ... ... ... ... ... | ٣٩ | م « | ٢ |
| | وأحاطت به خطيئته فأولئك أصحاب النار هم فيها خالدون | ٨١ | م « | ٢ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات أولئك أصحاب | | | |
| | الجنة هم فيها خالدون ... ... ... ... ... | ٨٢ | م « | ٢ |
| | فأولئك حبطت أعمالهم في الدنيا والآخرة وأولئك | | | |
| | أصحاب النار هم فيها خالدون ... ... ... ... | ٢١٧ | م « | ٢ |
| | يخرجونهم من النور إلى الظلمات أولئك أصحاب | | | |
| | النار هم فيها خالدون ... ... ... ... ... | ٢٥٧ | م « | ٢ |
| | ومن عاد فأولئك أصحاب النار هم فيها خالدون | ٢٧٥ | م « | ٢ |
| | وأما الذين ابيضت وجوههم ففي رحمة الله هم فيها خالدون | ١٠٧ | م آل عمران | ٣ |
| | إن الذين كفروا لن تغني عنهم أموالهم ولا أولادهم | | | |
| | من الله شيئا وأولئك أصحاب النار هم فيها خالدون | ١١٦ | م « | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| خَالِدُونَ | لبئس ما قدمت لهم أنفسهم أن سخط الله عليهم وفى العذاب هم خالدون ... ... ... ... ... | ٨٠ | م المائدة | ٥ |
| | والذين كذبوا بآياتنا واستكبروا عنها أولئك أصحاب النار هم فيها خالدون ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات لا نكلف نفسا إلا وسعها أولئك أصحاب الجنة هم فيها خالدون | ٤٢ | ك « | ٧ |
| | أولئك حبطت أعمالهم وفى النار هم خالدون ... ... | ١٧ | م التوبة | ٩ |
| | ولا يرهق وجوههم قتر ولا ذلة أولئك أصحاب الجنة هم فيها خالدون ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك يونس | ١٠ |
| | كأنما أغشيت وجوههم قطعا من الليل مظلما أولئك أصحاب النار هم فيها خالدون ... ... ... | ٢٧ | ك « | ١٠ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات وأخبتوا إلى ربهم أولئك أصحاب الجنة هم فيها خالدون ... ... | ٢٣ | ك هود | ١١ |
| | وأولئك الأغلال فى أعناقهم وأولئك أصحاب النار هم فيها خالدون ... ... ... ... ... ... | ٥ | م الرعد | ١٣ |
| | وما جعلنا لبشر من قبلك الخلد أفإن مت فهم الخالدون | ٣٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | لو كان هؤلاء آلهة ما وردوها وكل فيها خالدون | ٩٩ | ك « | ٢١ |
| | لا يسمعون حسيسها وهم فيما اشتهت أنفسهم خالدون | ١٠٢ | ك « | ٢١ |
| | الذين يرثون الفردوس هم فيها خالدون ... ... ... | ١١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ومن خفت موازينه فأولئك الذين خسروا أنفسهم فى جهنم خالدون ... ... ... ... ... ... | ١٠٣ | ك « | ٢٣ |
| | وفيها ما تشتهيه الأنفس وتلذ الأعين وأنتم فيها خالدون | ٧١ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | إن المجرمين فى عذاب جهنم خالدون... ... ... ... | ٧٤ | ك « | ٤٣ |
| | لن تغنى عنهم أموالهم ولا أولادهم من الله شيئا أولئك أصحاب النار هم فيها خالدون ... ... ... ... | ١٧ | م المجادلة | ٥٨ |
| خَالِدِينَ | خالدين فيها لا يخفف عنهم العذاب ولا هم ينظرون | ١٦٢ | م البقرة | ٢ |
| (٤٤) | للذين اتقوا عند ربهم جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | م آل عمران | ٣ |
| | خالدين فيها لا يخفف عنهم العذاب ولا هم ينظرون | ٨٨ | م « | ٣ |
| | أولئك جزاؤهم مغفرة من ربهم وجنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها ... ... ... ... ... | ١٣٦ | م « | ٣ |
| | لكن الذين اتقوا ربهم لهم جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها نزلا من عند الله ... ... | ١٩٨ | م « | ٣ |
| | ومن يطع الله ورسوله يدخله جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها ... ... ... ... ... | ١٣ | م النساء | ٤ |
| | سندخلهم جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها أبدا لهم فيها أزواج مطهرة... ... ... ... ... | ٥٧ | م « | ٤ |
| | سندخلهم جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها أبدا وعد الله حقا ... ... ... ... ... | ١٢٢ | م « | ٤ |
| | إلا طريق جهنم خالدين فيها أبدا ... ... ... ... | ١٦٩ | م « | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| خَالِدِينَ | فأثابهم الله بما قالوا جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها ... ... ... ... ... ... | ٨٥ | م المائدة | ٥ |
| | لهم جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها أبدا | ١١٩ | م « | ٥ |
| | قال النار مثواكم خالدين فيها إلا ما شاء الله | ١٢٨ | ك الأنعام | ٦ |
| | مانهاكما ربكما عن هذه الشجرة إلا أن تكونا ملكين أو تكونا من الخالدين ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | خالدين فيها أبدا إن الله عنده أجر عظيم ... ... | ٢٢ | م التوبة | ٩ |
| | وعد الله المنافقين والمنافقات والكفار نار جهنم خالدين فيها | ٦٨ | م « | ٩ |
| | وعد الله المؤمنين والمؤمنات جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها ... ... ... ... ... | ٧٢ | م « | ٩ |
| | أعد الله لهم جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها | ٨٩ | م « | ٩ |
| | وأعد لهم جنات تجرى تحتها الأنهار خالدين فيها أبدا | ١٠٠ | م « | ٩ |
| | خالدين فيها مادامت السموات والأرض إلا ما شاء ربك | ١٠٧ | ك هود | ١١ |
| | وأما الذين سعدوا ففى الجنة خالدين فيها مادامت السموات والأرض... ... ... ... ... ... | ١٠٨ | ك « | ١١ |
| | وأدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها ... ... | ٢٣ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | فادخلوا أبواب جهنم خالدين فيها فلبئس مثوى المتكبرين | ٢٩ | ك النحل | ١٦ |
| | خالدين فيها لا يبغون عنها حولا ... ... ... ... | ١٠٨ | ك الكهف | ١٨ |
| | جنات عدن تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها | ٧٦ | ك طه | ٢٠ |
| | خالدين فيه وساء لهم يوم القيامة حملا ... ... ... | ١٠١ | ك « | ٢٠ |
| | وما جعلناهم جسدا لا يأكلون الطعام وما كانوا خالدين | ٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | لهم فيها ما يشاءون خالدين كان على ربك وعدا مسئولا | ١٦ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | خالدين فيها حسنت مستقرا ومقاما ... ... ... ... | ٧٦ | ك « | ٢٥ |
| | لنبوئنهم من الجنة غرفا تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها | ٥٨ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | خالدين فيها وعد الله حقا وهو العزيز الحكيم | ٩ | ك لقمان | ٣١ |
| | خالدين فيها أبدا لا يجدون وليا ولا نصيرا ... ... | ٦٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | قيل ادخلوا أبواب جهنم خالدين فيها ... ... ... | ٧٢ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وقال لهم خزنتها سلام عليكم طبتم فادخلوها خالدين | ٧٣ | ك « | ٣٩ |
| | ادخلوا أبواب جهنم خالدين فيها فبئس مثوى المتكبرين | ٧٦ | ك غافر | ٤٠ |
| | أولئك أصحاب الجنة خالدين فيها جزاء بما كانوا يعملون | ١٤ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | ليدخل المؤمنين والمؤمنات جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها ... ... ... ... ... ... | ٥ | م الفتح | ٤٨ |
| | بشراكم اليوم جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها | ١٢ | م الحديد | ٥٧ |
| | ويدخلهم جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها | ٢٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| | ويدخله جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها أبدا | ٩ | م التغابن | ٦٤ |
| | أولئك أصحاب النار خالدين فيها وبئس المصير | ١٠ | م « | ٦٤ |
| | يدخله جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها أبدا | ١١ | م الطلاق | ٦٥ |
| | ومن يعص الله ورسوله فإن له نار جهنم خالدين فيها أبدا | ٢٣ | ك الجن | ٧٢ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| خَالِدِينَ | إن الذين كفروا من أهـل الكتاب والمشركين في نار جهنم خالدين فيها ... ... ... ... ... | م البينة | ٩٨ ٦ |
| | جزاؤهم عند ربهـم جنات عدن تجـرى من تحتها الأنهار خالدين فيها أبدا ... ... ... ... ... | م « | ٩٨ ٨ |
| الْخُلُودِ | ادخلوها بسلام ذلك يوم الخلود ... ... ... | ك ق | ٥٠ ٣٤ |
| مُخَلَّدُونَ | يطوف عليهم ولدان مخلدون... ... ... ... | ك الواقعة | ٥٦ ١٧ |
| (٢) | ويطوف عليهم ولدان مخلدون إذا رأيتهم حسبتهم لؤلؤا منثورا ... ... ... ... ... ... ... | م الإنسان | ٧٦ ١٩ |
| خَلَصُوا | فلما استيأسوا منه خلصوا نجيا ... ... ... ... | ك يوسف | ١٢ ٨٠ |
| أَخْلَصْنَاهُمْ | إنا أخلصناهم بخالصة ذكرى الدار ... ... | ك ص | ٣٨ ٤٦ |
| أَخْلَصُوا | إلا الذين تابوا وأصلحوا واعتصموا بالله وأخلصوا دينهم لله فأولئك مع المؤمنين ... ... | م النساء | ٤ ١٤٦ |
| أَسْتَخْلِصْهُ | وقال الملك ائتونى به أستخلصه لنفسى | ك يوسف | ١٢ ٥٤ |
| الْخَالِصُ | ألا لله الدين الخالص ... ... ... ... ... | ك الزمر | ٣٩ ٣ |
| خَالِصًا | نسقيكم مما فى بطونه من بين فرث ودم لبنا خالصا | ك النحل | ١٦ ٦٦ |
| خَالِصَةً | قل إن كانت لكم الدار الآخرة عند الله خالصة | | |
| (٥) | من دون الناس فتمنوا الموت ... ... ... ... | م البقرة | ٢ ٩٤ |
| | وقالوا ما فى بطون هـذه الأنعام خالصة لذكورنا ومحرم على أزواجنا ... ... ... ... ... | ك الأنعام | ٦ ١٣٩ |
| | قل هى للذين آمنوا فى الحياة الدنيا خالصة يوم القيامة | ك الأعراف | ٧ ٣٢ |
| | إن أراد النبى أن يستنكحها خالصة لك من دون المؤمنين | م الأحزاب | ٣٣ ٥٠ |
| | إنا أخلصناهم بخالصة ذكرى الدار ... ... ... ... | ك ص | ٣٨ ٤٦ |
| مُخْلِصًا | إنا أنزلنا إليك الكتاب بالحق فاعبد الله مخلصا | | |
| (٣) | له الدين ... ... ... ... ... ... ... ... | ك الزمر | ٣٩ ٢ |
| | قل إنى أمرت أن أعبد الله مخلصا له الدين ... ... | ك « | ٣٩ ١١ |
| | قل الله أعبد مخلصا له دينى ... ... ... ... | ك « | ٣٩ ١٤ |
| مُخْلِصُونَ | ولنا أعمالنا ولكم أعمالكم ونحن له مخلصون | م البقرة | ٢ ١٣٩ |
| مُخْلِصِينَ | وأقيموا وجوهكم عند كل مسجد وادعوه | | |
| (٧) | مخلصين له الدين ... ... ... ... ... ... | ك الأعراف | ٧ ٢٩ |
| | وظنوا أنهم أحيط بهم دعوا الله مخلصين له الدين | ك يونس | ١٠ ٢٢ |
| | فإذا ركبوا فى الفلك دعوا الله مخلصين له الدين | ك العنكبوت | ٢٩ ٦٥ |
| | وإذا غشيهم موج كالظلل دعوا الله مخلصين له الدين | ك لقمان | ٣١ ٣٢ |
| | فادعوا الله مخلصين له الدين ولو كره الكافرون | ك غافر | ٤٠ ١٤ |
| | هو الحى لا إله إلا هو فادعوه مخلصين له الدين | ك « | ٤٠ ٦٥ |
| | وما أمروا إلا ليعبدوا الله مخلصين له الدين حنفاء | م البينة | ٩٨ ٥ |
| مُخْلَصًا | إنه كان مخلصا وكان رسولا نبيا ... ... ... | ك مريم | ١٩ ٥١ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| الْمُخْلَصِينَ | كذلك لنصرف عنه السوء والفحشاء إنه من | | |
| (٨) | عبادنا المخلصين ... ... ... ... ... ... | ك يوسف | ١٢ ٢٤ |
| | ولأغوينهم أجمعين . إلا عبادك منهم المخلصين | ك الحجر | ١٥ ٤٠ |
| | وما تجزون إلا ما كنتم تعملون . إلا عباد الله المخلصين | ك الصافات | ٣٧ ٤٠ |
| | فانظر كيف كان عاقبة المنذرين . إلا عباد الله المخلصين | ك « | ٣٧ ٧٤ |
| | فكذبوه فإنهم لمحضرون . إلا عباد الله المخلصين | ك « | ٣٧ ١٢٨ |
| | سبحان الله عما يصفون . إلا عباد الله المخلصين | ك « | ٣٧ ١٦٠ |
| | لو أن عندنا ذكرا من الأولين . لكنا عباد الله المخلصين | ك « | ٣٧ ١٦٩ |
| | قال فبعزتك لأغوينهم أجمعين . إلا عبادك منهم المخلصين | ك ص | ٣٨ ٨٣ |
| خَلَطُوا | وآخرون اعترفوا بذنوبهم خلطوا عملا صالحا وآخر سيئا | م التوبة | ٩ ١٠٢ |
| تُخَالِطُوهُمْ | وإن تخالطوهم فإخوانكم ... ... ... ... | م البقرة | ٢ ٢٢٠ |
| اخْتَلَطَ | إلا ما حملت ظهورهما أو الحوايا أو ما اختلط بعظم | ك الأنعام | ٦ ١٤٦ |
| (٣) | إنما مثل الحياة الدنيا كماء أنزلناه من السماء فاختلط به نبات الأرض مما يأكل الناس والأنعام | ك يونس | ١٠ ٢٤ |
| | واضرب لهم مثل الحياة الدنيا كماء أنزلناه من السماء فاختلط به نبات الأرض فأصبح هشيما ... ... | ك الكهف | ١٨ ٤٥ |
| الْخُلَطَاءِ | وإن كثيرا من الخلطاء ليبغى بعضهم على بعض إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات ... ... ... | ك ص | ٣٨ ٢٤ |
| فَاخْلَعْ | إنى أنا ربك فاخلع نعليك إنك بالواد المقدس طوى | ك طه | ٢٠ ١٢ |
| خَلَفَ | تخلف من بعدهم خلف ورثوا الكتاب ... ... | م الأعراف | ٧ ١٦٩ |
| (٢) | تخلف من بعدهم خلف أضاعوا الصلاة واتبعوا الشهوات | ك مريم | ١٩ ٥٩ |
| خَلَفْتُمُونِى | ولما رجع موسى إلى قومه غضبان أسفا قال بئسما خلفتمونى من بعدى ... ... ... ... | ك الأعراف | ٧ ١٥٠ |
| يَخْلُفُونَ | ولو نشاء لجعلنا منكم ملائكة فى الأرض يخلفون | ك الزخرف | ٤٣ ٦٠ |
| اخْلُفْنِى | وقال موسى لأخيه هرون اخلفنى فى قومى وأصلح | ك الأعراف | ٧ ١٤٢ |
| خُلِّفُوا | وعلى الثلاثة الذين خلفوا حتى إذا ضاقت عليهم الأرض بما رحبت ... ... ... ... ... | م التوبة | ٩ ١١٨ |
| أُخَالِفَكُمْ | وما أريد أن أخالفكم إلى ما أنهاكم عنه | ك هود | ١١ ٨٨ |
| يُخَالِفُونَ | فليحذر الذين يخالفون عن أمره أن تصيبهم فتنة أو يصيبهم عذاب أليم ... ... ... ... | م النور | ٢٤ ٦٣ |
| فَأَخْلَفْتُكُمْ | إن الله وعدكم وعد الحق ووعدتكم فأخلفتكم | ك إبراهيم | ١٤ ٢٢ |
| فَأَخْلَفْتُمْ | أفطال عليكم العهد أم أردتم أن يحل عليكم غضب من ربكم فأخلفتم موعدى ... ... ... ... | ك طه | ٢٠ ٨٦ |
| أَخْلَفْنَا | قالوا ما أخلفنا موعدك بملكنا ... ... ... ... | ك « | ٢٠ ٨٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَخْلَفُوا | : فأعقبهم نفاقا فى قلوبهم إلى يوم يلقونه بما أخلفوا الله ما وعدوه ... .. .. ... ... ... | ٧٧ | م التوبة | ٩ |
| تُخْلِفُ | : ربنا وآتنا ما وعدتنا على رسلك ولا تخزنا يوم القيامة إنك لا تخلف الميعاد ... ... ... ... | ١٩٤ | م آل عمران | ٣ |
| نُخْلِفُهُ | : فاجعل بيننا وبينك موعدا لا نخلفه نحن ولا أنت مكانا سوى ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٨ | ك طه | ٢٠ |
| يُخْلِفَ | : قل أتخذتم عند الله عهدا فلن يخلف الله عهده | ٨٠ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | ربنا إنك جامع الناس ليوم لا ريب فيه إن الله لا يخلف الميعاد ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | م آل عمران | ٣ |
| | حتى يأتى وعد الله إن الله لا يخلف الميعاد ... ... | ٣١ | م الرعد | ١٣ |
| | ويستعجلونك بالعذاب ولن يخلف الله وعده ... ... | ٤٧ | م الحج | ٢٢ |
| | وعد الله لا يخلف الله وعده ولكن أكثر الناس لا يعلمون | ٦ | ك الروم | ٣٠ |
| | لهم غرف من فوقها غرف مبنية تجرى من تحتها الأنهار وعد الله لا يخلف الله الميعاد ... ... | ٢٠ | ك الزمر | ٣٩ |
| يُخْلِفُهُ | : وما أنفقتم من شىء فهو يخلفه وهو خير الرازقين | ٣٩ | ك سبإ | ٣٤ |
| تُخْلَفَهُ | : وإن لك موعدا لن تخلفه ... ... ... ... ... | ٩٧ | ك طه | ٢٠ |
| يَتَخَلَّفُوا | : ما كان لأهل المدينة ومن حولهم من الأعراب أن يتخلفوا عن رسول الله ... ... ... ... ... | ١٢٠ | م التوبة | ٩ |
| آخْتَلَفَ | : وما آختلف فيه إلا الذين أوتوه من بعد | | | |
| (٤) | ما جاءتهم البينات بغيا بينهم ... ... ... ... | ٢١٣ | م البقرة | ٢ |
| | وما آختلف الذين أوتوا الكتاب إلا من بعد ما جاءهم العلم بغيا بينهم ... ... ... ... ... ... | ١٩ | م آل عمران | ٣ |
| | فآختلف الأحزاب من بينهم فويل للذين كفروا من مشهد يوم عظيم ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك مريم | ١٩ |
| | فآختلف الأحزاب من بينهم فويل للذين ظلموا من عذاب يوم أليم ... ... ... ... ... ... ... | ٦٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| آخْتَلَفْتُمْ | : ولو تواعدتم لآختلفتم فى الميعاد ... ... ... ... | ٤٢ | م الأنفال | ٨ |
| (٢) | وما آختلفتم فيه من شىء فحكمه إلى الله ... ... ... | ١٠ | ك الشورى | ٤٢ |
| آخْتَلَفُوا | : وإن الذين آختلفوا فى الكتاب لفى شقاق بعيد | ١٧٦ | م البقرة | ٢ |
| (١١) | وأنزل معهم الكتاب بالحق ليحكم بين الناس فيما آختلفوا فيه ... ... ... ... ... ... ... | ٢١٣ | م « | ٢ |
| | فهدى الله الذين آمنوا لما آختلفوا فيه من الحق بإذنه | ٢١٣ | م « | ٢ |
| | ولكن آختلفوا فمنهم من آمن ومنهم من كفر ... ... | ٢٥٣ | م « | ٢ |
| | ولا تكونوا كالذين تفرقوا وآختلفوا من بعد ما جاءهم البينات ... ... ... ... ... ... | ١٠٥ | م آل عمران | ٣ |
| | وإن الذين آختلفوا فيه لفى شك منه ... ... ... | ١٥٧ | م النساء | ٤ |
| | وما كان الناس إلا أمة واحدة فآختلفوا ... ... ... | ١٩ | ك يونس | ١٠ |
| | ورزقناهم من الطيبات فما آختلفوا حتى جاءهم العلم | ٩٣ | ك « | ١٠ |
| | وما أنزلنا عليك الكتاب إلا لتبين لهم الذى آختلفوا فيه | ٦٤ | ك النحل | ١٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| آخْتَلَفُوا | : إنما جعل السبت على الذين آختلفوا فيه ... | ١٢٤ | ك النحل | ١٦ |
| | فما آختلفوا إلا من بعد ما جاءهم العلم بغيا بينهم... | ١٧ | ك الجاثية | ٤٥ |
| تَخْتَلِفُونَ | : ثم إلىّ مرجعكم فأحكم بينكم فيما كنتم فيه تختلفون | ٥٥ | م آل عمران | ٣ |
| (٦) | إلى الله مرجعكم جميعا فينبئكم بما كنتم فيه تختلفون | ٤٨ | م المائدة | ٥ |
| | ثم إلى ربكم مرجعكم فينبئكم بما كنتم فيه تختلفون | ١٦٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | وليبين لكم يوم القيامة ما كنتم فيه تختلفون... ... | ٩٢ | ك النحل | ١٦ |
| | الله يحكم بينكم يوم القيامة فيما كنتم فيه تختلفون | ٦٩ | م الحج | ٢٢ |
| | قال قد جئتكم بالحكمة ولأبين لكم بعض الذى تختلفون فيه | ٦٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| يَخْتَلِفُونَ | : فالله يحكم بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون | ١١٣ | م البقرة | ٢ |
| (١٠) | ولولا كلمة سبقت من ربك لقضى بينهم فيما فيه يختلفون | ١٩ | ك يونس | ١٠ |
| | إن ربك يقضى بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون | ٩٣ | ك « | ١٠ |
| | ليبين لهم الذى يختلفون فيه... ... ... ... ... | ٣٩ | ك النحل | ١٦ |
| | وإن ربك ليحكم بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون | ١٢٤ | ك « | ١٦ |
| | إن هذا القرآن يقص على بنى إسرائيل أكثر الذى هم فيه يختلفون ... ... ... ... ... ... | ٧٦ | ك النمل | ٢٧ |
| | إن ربك هو يفصل بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون | ٢٥ | ك السجدة | ٣٢ |
| | إن الله يحكم بينهم فى ما هم فيه يختلفون ... ... | ٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| | أنت تحكم بين عبادك فى ما كانوا فيه يختلفون | ٤٦ | ك « | ٣٩ |
| | إن ربك يقضى بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون | ١٧ | ك الجاثية | ٤٥ |
| فَآخْتُلِفَ | : ولقد آتينا موسى الكتاب فآختلف فيه | ١١٠ | ك هود | ١١ |
| (٢) | ولقد آتينا موسى الكتاب فآختلف فيه ... ... ... | ٤٥ | ك فصلت | ٤١ |
| آسْتَخْلَفَ | : ليستخلفنهم فى الأرض كما آستخلف الذين من قبلهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٥ | م النور | ٢٤ |
| يَسْتَخْلِفُ | : إن يشأ يذهبكم ويستخلف من بعدكم ما يشاء | ١٣٣ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | ويستخلف ربى قوما غيركم ولا تضرونه شيئا ... ... | ٥٧ | ك هود | ١١ |
| يَسْتَخْلِفَكُمْ | : قال عسى ربكم أن يهلك عدوكم ويستخلفكم فى الأرض ... ... ... ... ... ... ... | ١٢٩ | ك الأعراف | ٧ |
| لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ | : وعد الله الذين آمنوا منكم وعملوا الصالحات ليستخلفنهم فى الأرض ... ... ... ... ... ... | ٥٥ | م النور | ٢٤ |
| خَلْفٌ | : فخلف من بعدهم خلف ورثوا الكتاب يأخذون | | | |
| (٢) | عرض هذا الأدنى ... .. ... ... ... ... | ١٦٩ | م الأعراف | ٧ |
| | فخلف من بعدهم خلف أضاعوا الصلاة واتبعوا الشهوات | ٥٩ | ك مريم | ١٩ |
| خَلْفَكَ | : فاليوم ننجيك ببدنك لتكون لمن خلفك آية | ٩٢ | ك يونس | ١٠ |
| خَلْفَكُمْ | : وإذا قيل لهم اتقوا ما بين أيديكم وما خلفكم لعلكم ترحمون ... ... ... ... ... ... ... | ٤٥ | م يس | ٣٦ |
| خَلْفَنَا | : له ما بين أيدينا وما خلفنا وما بين ذلك ... ... | ٦٤ | ك مريم | ١٩ |
| خَلْفِهِ | : له معقبات من بين يديه ومن خلفه يحفظونه من أمر الله | ١١ | م الرعد | ١٣ |
| (٤) | لا يأتيه الباطل من بين يديه ولا من خلفه ... ... | ٤٢ | ك فصلت | ٤١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| خَلْفِهِ | : وقد خلت النذر من بين يديه ومن خلفه ... ... | ٢١ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | إلا من ارتضى من رسول فإنه يسلك من بين يديه | | | |
| | ومن خلفه رصدا ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك الجن | ٧٢ |
| خَلْفَهَا | : فجعلناها نكالا لما بين يديها وما خلفها وموعظة للمتقين | ٦٦ | م البقرة | ٢ |
| خَلْفَهُمْ | : يعلم ما بين أيديهم وما خلفهم ... ... ... ... | ٢٥٥ | م « | ٢ |
| (١٢) | ويستبشرون بالذين لم يلحقوا بهم من خلفهم... ... | ١٧٠ | م آل عمران | ٣ |
| | وليخش الذين لو تركوا من خلفهم ذرية ضعافا خافوا عليهم | ٩ | م النساء | ٤ |
| | ثم لآتينهم من بين أيديهم ومن خلفهم وعن أيمانهم | | | |
| | وعن شمائلهم ... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | فإما تثقفنهم في الحرب فشرد بهم من خلفهم لعلهم يذكرون | ٥٧ | م الأنفال | ٨ |
| | يعلم ما بين أيديهم وما خلفهم ولا يحيطون به علما | ١١٠ | ك طه | ٢٠ |
| | يعلم ما بين أيديهم وما خلفهم ولا يشفعون | | | |
| | إلا لمن ارتضى ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | يعلم ما بين أيديهم وما خلفهم وإلى الله ترجع الأمور | ٧٦ | م الحج | ٢٢ |
| | أفلم يروا إلى ما بين أيديهم وما خلفهم من السماء والأرض | ٩ | ك سبأ | ٣٤ |
| | وجعلنا من بين أيديهم سدا ومن خلفهم سدا | | | |
| | فأغشيناهم... ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك يس | ٣٦ |
| | إذ جاءتهم الرسل من بين أيديهم ومن خلفهم | | | |
| | ألا تعبدوا إلا الله ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك فصلت | ٤١ |
| | وقيضنا لهم قرناء فزينوا لهم ما بين أيديهم وما خلفهم | ٢٥ | ك « | ٤١ |
| الْخَالِفِينَ | : إنكم رضيتم بالقعود أول مرة فاقعدوا مع الخالفين | ٨٣ | م التوبة | ٩ |
| خِلَافَ | : أو تقطع أيديهم وأرجلهم من خلاف ... ... | ٣٣ | م المائدة | ٥ |
| (٥) | لأقطعن أيديكم وأرجلكم من خلاف ثم لأصلبنكم أجمعين | ١٢٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | فرح المخلفون بمقعدهم خلاف رسول الله ... ... | ٨١ | م التوبة | ٩ |
| | فلأقطعن أيديكم وأرجلكم من خلاف ولأصلبنكم | | | |
| | في جذوع النخل ... ... ... ... ... ... | ٧١ | ك طه | ٢٠ |
| | لأقطعن أيديكم وأرجلكم من خلاف ولأصلبنكم أجمعين | ٤٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| خِلَافَكَ | : وإذا لا يلبثون خلافك إلا قليلا ... ... ... | ٧٦ | م الإسراء | ١٧ |
| خِلْفَةً | : وهو الذي جعل الليل والنهار خلفة لمن أراد أن | | | |
| | يذكر أو أراد شكورا ... ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| الْخَوَالِفِ | : رضوا بأن يكونوا مع الخوالف وطبع على | | | |
| (٢) | قلوبهم فهم لا يفقهون ... ... ... ... ... | ٨٧ | م التوبة | ٩ |
| | رضوا بأن يكونوا مع الخوالف وطبع الله على قلوبهم | | | |
| | فهم لا يعلمون ... ... ... ... ... ... ... | ٩٣ | م « | ٩ |
| خَلِيفَةً | : وإذ قال ربك للملائكة إني جاعل في الأرض خليفة | ٣٠ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | يا داود إنا جعلناك خليفة في الأرض فاحكم بين الناس بالحق | ٢٦ | ك ص | ٣٨ |
| خَلَائِفَ | : وهو الذي جعلكم خلائف الأرض ... ... | ١٦٥ | ك الأنعام | ٦ |
| (٤) | ثم جعلناكم خلائف في الأرض من بعدهم لننظر كيف تعملون | ١٤ | ك يونس | ١٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| خَلَائِفَ | : وجعلناهم خلائف وأغرقنا الذين كذبوا بآياتنا | ٧٣ | ك يونس | ١ |
| | هو الذي جعلكم خلائف في الأرض فمن كفر فعليه كفره | ٣٩ | ك فاطر | ٣٥ |
| خُلَفَاءَ | : واذكروا إذ جعلكم خلفاء من بعد قوم نوح... ... | ٦٩ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | واذكروا إذ جعلكم خلفاء من بعد عاد وبوأكم في الأرض | ٧٤ | ك « | ٧ |
| | أمن يجيب المضطر إذا دعاه ويكشف السوء ويجعلكم | | | |
| | خلفاء الأرض ... ... ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك النمل | ٢٧ |
| الْمُخَلَّفُونَ | : فرح المخلفون بمقعدهم خلاف رسول الله | ٨١ | م التوبة | ٩ |
| (٣) | سيقول لك المخلفون من الأعراب شغلتنا أموالنا وأهلونا | ١١ | م الفتح | ٤٨ |
| | سيقول المخلفون إذا انطلقتم إلى مغانم لتأخذوها | | | |
| | ذرونا نتبعكم ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | م « | ٤٨ |
| لِلْمُخَلَّفِينَ | : قل للمخلفين من الأعراب ستدعون إلى قوم | | | |
| | أولي بأس شديد ... ... ... ... ... ... ... | ١٦ | م « | ٤٨ |
| مُخْلِفَ | : فلا تحسبن الله مخلف وعده رسله ... ... ... | ٤٧ | ك إبراهيم | ١٤ |
| اخْتِلَافِ | : إن في خلق السموات والأرض واختلاف | | | |
| (٦) | الليل والنهار والفلك التي تجري في البحر بما | | | |
| | ينفع الناس وما أنزل الله من السماء من ماء | | | |
| | فأحيا به الأرض بعد موتها وبث فيها من كل | | | |
| | دابة وتصريف الرياح والسحاب المسخر بين | | | |
| | السماء والأرض لآيات لقوم يعقلون ... ... ... | ١٦٤ | م البقرة | ٢ |
| | إن في خلق السموات والأرض واختلاف الليل | | | |
| | والنهار لآيات لأولي الألباب ... ... ... ... | ١٩٠ | م آل عمران | ٣ |
| | إن في اختلاف الليل والنهار وما خلق الله | | | |
| | في السموات والأرض لآيات لقوم يتقون | ٦ | ك يونس | ١٠ |
| | وهو الذي يحيي ويميت وله اختلاف الليل والنهار | ٨٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ومن آياته خلق السموات والأرض واختلاف | | | |
| | ألسنتكم وألوانكم ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك الروم | ٣٠ |
| | واختلاف الليل والنهار وما أنزل الله من السماء من | | | |
| | رزق فأحيا به الأرض بعد موتها وتصريف | | | |
| | الرياح آيات لقوم يعقلون ... ... ... ... ... | ٥ | ك الجاثية | ٤٥ |
| اخْتِلَافًا | : ولو كان من عند غير الله لوجدوا فيه اختلافا كثيرا | ٨٢ | م النساء | ٤ |
| مُخْتَلِفٌ | : يخرج من بطونها شراب مختلف ألوانه فيه شفاء للناس | ٦٩ | ك النحل | ١٦ |
| (٤) | ومن الجبال جدد بيض وحمر مختلف ألوانها ... ... | ٢٧ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ومن الناس والدواب والأنعام مختلف ألوانه كذلك | ٢٨ | ك « | ٣٥ |
| | والسماء ذات الحبك . إنكم لفي قول مختلف ... ... | ٨ | ك الذاريات | ٥١ |
| مُخْتَلِفًا | : وهو الذي أنشأ جنات معروشات وغير معروشات | | | |
| (٤) | والنخل والزرع مختلفا أكله ... ... ... ... | ١٤١ | م الأنعام | ٦ |
| | وما ذرأ لكم في الأرض مختلفا ألوانه ... ... ... | ١٣ | ك النحل | ١٦ |
| | ألم تر أن الله أنزل من السماء ماء فأخرجنا به ثمرات | | | |
| | مختلفا ألوانها . ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ثم يخرج به زرعا مختلفا ألوانه ثم يهيج فتراه مصفرا | ٢١ | ك الزمر | ٣٩ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مُخْتَلِفُونَ | عم يتساءلون . عن النبإ العظيم . الذى هم فيه مختلفون | ٣ | ك النبإ | ٧٨ |
| مُخْتَلِفِينَ | ولا يزالون مختلفين . إلا من رحم ربك ... ... | ١١٨ | ك هود | ١١ |
| مُسْتَخْلَفِينَ | وأنفقوا مما جعلكم مستخلفين فيه ... ... | ٧ | م الحديد | ٥٧ |
| ✦✦✦ | | | | |
| خَلَقَ | هو الذى خلق لكم ما فى الأرض جميعا ... ... ... | ٢٩ | م البقرة | ٢ |
| (٦٤) | ولا يحل لهن أن يكتمن ما خلق الله فى أرحامهن | ٢٢٨م | « | ٢ |
| | وخلق منها زوجها وبث منهما رجالا كثيرا ونساء | ١ | م النساء | ٤ |
| | بل أنتم بشر ممن خلق يغفر لمن يشاء ويعذب من يشاء | ١٨ | م المائدة | ٥ |
| | الحمد لله الذى خلق السموات والأرض وجعل | | | |
| | الظلمات والنور ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الأنعام | ٦ |
| | وهو الذى خلق السموات والأرض بالحق ... ... | ٧٣ | ك « | ٦ |
| | أنى يكون له ولد ولم تكن له صاحبة وخلق كل شىء | ١٠١ك | « | ٦ |
| | إن ربكم الله الذى خلق السموات والأرض فى ستة أيام | ٥٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | أولم ينظروا فى ملكوت السموات والأرض وما خلق | | | |
| | الله من شىء ... ... ... ... ... ... ... | ١٨٥ك | « | ٧ |
| | إن عدة الشهور عند الله اثنا عشر شهرا فى كتاب الله | | | |
| | يوم خلق السموات والأرض ... ... ... ... | ٣٦ | م التوبة | ٩ |
| | إن ربكم الله الذى خلق السموات والأرض فى ستة أيام | ٣ | ك يونس | ١٠ |
| | ما خلق الله ذلك إلا بالحق يفصل الآيات لقوم يعلمون | ٥ | ك « | ١٠ |
| | إن فى اختلاف الليل والنهار وما خلق الله | | | |
| | فى السموات والأرض لآيات لقوم يتقون ... | ٦ | ك « | ١٠ |
| | وهو الذى خلق السموات والارض فى ستة أيام | ٧ | ك هود | ١١ |
| | ألم تر أن الله خلق السموات والأرض بالحق | ١٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | الله الذى خلق السموات والأرض ... ... ... | ٣٢ | ك « | ١٤ |
| | خلق السموات والأرض بالحق تعالى عما يشركون | ٣ | ك النحل | ١٦ |
| | خلق الإنسان من نطفة فإذا هو خصيم مبين... ... | ٤ | ك « | ١٦ |
| | أو لم يروا إلى ما خلق الله من شىء يتفيؤ ظلاله | | | |
| | عن اليمين والشمائل سجدا لله وهم داخرون... ... | ٤٨ | ك « | ١٦ |
| | والله جعل لكم مما خلق ظلالا وجعل لكم من الجبال أكنانا | ٨١ | ك « | ١٦ |
| | أولم يروا أن الله الذى خلق السموات والأرض | | | |
| | قادر على أن يخلق مثلهم ... ... ... ... | ٩٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| | تنزيلا ممن خلق الأرض والسموات العلى ... ... | ٤ | ك طه | ٢٠ |
| | وهو الذى خلق الليل والنهار والشمس والقمر... ... | ٣٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | إذا لذهب كل إله بما خلق ولعلا بعضهم على بعض | ٩١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | والله خلق كل دابة من ماء ... ... ... ... ... | ٤٥ | م النور | ٢٤ |
| | وخلق كل شىء فقدره تقديرا ... ... ... ... | ٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وهو الذى خلق من الماء بشرا فجعله نسبا وصهرا | ٥٤ | ك « | ٢٥ |
| | الذى خلق السموات والأرض وما بينهما فى ستة أيام | ٥٩ | ك « | ٢٥ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| خَلَقَ | وتذرون ما خلق لكم ربكم من أزواجكم بل أنتم قوم عادون | ١٦٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | أمن خلق السموات والأرض وأنزل لكم من السماء ماء | ٦٠ | ك النمل | ٢٧ |
| | خلق الله السموات والأرض بالحق إن فى ذلك لآية للمؤمنين | ٤٤ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ولئن سألتهم من خلق السموات والأرض وسخر | | | |
| | الشمس والقمر ليقولن الله ... ... ... ... ... | ٦١ | ك « | ٢٩ |
| | ما خلق الله السموات والأرض وما بينهما إلا بالحق | | | |
| | وأجل مسمى ... ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك الروم | ٣٠ |
| | ومن آياته أن خلق لكم من أنفسكم أزواجا لتسكنوا إليها | ٢١ | ك « | ٣٠ |
| | خلق السموات بغير عمد ترونها ... ... ... ... | ١٠ | ك لقمان | ٣١ |
| | هذا خلق الله فأرونى ماذا خلق الذين من دونه... ... | ١١ | ك « | ٣١ |
| | ولئن سألتهم من خلق السموات والأرض ليقولن الله | ٢٥ | ك « | ٣١ |
| | الله الذى خلق السموات والأرض وما بينهما فى ستة أيام | ٤ | ك السجدة | ٣٢ |
| | سبحان الذى خلق الأزواج كلها مما تنبت | | | |
| | الأرض ومن أنفسهم ومما لا يعلمون ... ... | ٣٦ | ك يس | ٣٦ |
| | أوليس الذى خلق السموات والأرض بقادر على | | | |
| | أن يخلق مثلهم ... ... ... ... ... ... | ٨١ | ك « | ٣٦ |
| | خلق السموات والأرض بالحق ... ... ... ... | ٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ولئن سألتهم من خلق السموات والأرض ليقولن الله | ٣٨ | ك « | ٣٩ |
| | قل أئنكم لتكفرون بالذى خلق الأرض فى يومين | | | |
| | وتجعلون له أندادا ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك فصلت | ٤١ |
| | ولئن سألتهم من خلق السموات والأرض ليقولن | | | |
| | خلقهن العزيز العليم ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | والذى خلق الأزواج كلها وجعل لكم من الفلك | | | |
| | والأنعام ما تركبون ... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك « | ٤٣ |
| | وخلق الله السموات والأرض بالحق ولتجزى كل | | | |
| | نفس بما كسبت ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | أو لم يروا أن الله الذى خلق السموات والأرض | | | |
| | ولم يعى بخلقهن بقادر على أن يحيى الموتى... ... | ٣٣ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | وأنه خلق الزوجين الذكر والأنثى ... ... ... | ٤٥ | ك النجم | ٥٣ |
| | الرحمن . علم القرآن . خلق الإنسان . علمه البيان | ٣ | م الرحمن | ٥٥ |
| | خلق الإنسان من صلصال كالفخار ... ... ... | ١٤ | م « | ٥٥ |
| | وخلق الجانّ من مارج من نار ... ... ... ... | ١٥ | م « | ٥٥ |
| | هو الذى خلق السموات والأرض فى ستة أيام | ٤ | م الحديد | ٥٧ |
| | خلق السموات والأرض بالحق وصوركم فأحسن صوركم | ٣ | م التغابن | ٦٤ |
| | الله الذى خلق سبع سموات ومن الأرض مثلهن | ١٢ | م الطلاق | ٦٥ |
| | الذى خلق الموت والحياة ليبلوكم أيكم أحسن عملا | ٢ | ك الملك | ٦٧ |
| | الذى خلق سبع سموات طباقا ... ... ... ... | ٣ | ك « | ٦٧ |
| | ألا يعلم من خلق وهو اللطيف الخبير ... ... ... | ١٤ | ك « | ٦٧ |
| | ألم تروا كيف خلق الله سبع سموات طباقا ... ... | ١٥ | ك نوح | ٧١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| خَلَقَ | : ثم كان علقة فخلق فسوّى ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك القيامة | ٧٥ |
| | سبح اسم ربك الأعلى . الذى خلق فسوّى ... ... | ٢ | ك الأعلى | ٨٧ |
| | وما خلق الذكر والأنثى . إن سعيكم لشتى ... ... | ٣ | ك الليل | ٩٢ |
| | اقرأ باسم ربك الذى خلق... ... ... ... ... ... | ١ | ك العلق | ٩٦ |
| | خلق الإنسان من علق... ... ... ... ... ... ... | ٢ | ك « | ٩٦ |
| | قل أعوذ برب الفلق . من شر ما خلق... ... ... | ٢ | ك الفلق | ١١٣ |
| خَلَقْتَ | : ربنا ما خلقت هذا باطلا سبحانك فقنا عذاب النار | ١٩١ | م آل عمران | ٣ |
| (٥) | فسجدوا إلا إبليس قال أأسجد لمن خلقت طينا | ٦١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | قال يا إبليس ما منعك أن تسجد لما خلقت بيدىّ | ٧٥ | ك ص | ٣٨ |
| | وما خلقت الجن والإنس إلا ليعبدون ... ... ... | ٥٦ | ك الذاريات | ٥١ |
| | ذرنى ومن خلقت وحيدا ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك المدثر | ٧٤ |
| خَلَقْتُكَ | : وقد خلقتك من قبل ولم تك شيئا ... ... ... | ٩ | ك مريم | ١٩ |
| خَلَقْتَنِي | : قال ما منعك ألا تسجد إذ أمرتك قال أنا خير | | | |
| (٢) | منه خلقتنى من نار وخلقته من طين ... ... ... | ١٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | قال أنا خير منه خلقتنى من نار وخلقته من طين | ٧٦ | ك ص | ٣٨ |
| خَلَقْتَهُ | : قال أنا خير منه خلقتنى من نار وخلقته من طين | ١٢ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | قال لم أكن لأسجد لبشر خلقته من صلصال من حما | | | |
| | مسنون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك الحجر | ١٥ |
| | قال أنا خير منه خلقتنى من نار وخلقته من طين | ٧٦ | ك ص | ٣٨ |
| خَلَقَكَ | : قال له صاحبه وهو يحاوره أكفرت بالذى | | | |
| (٢) | خلقك من تراب ... ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك الكهف | ١٨ |
| | يأيها الإنسان ما غرك بربك الكريم . الذى | | | |
| | خلقك فسواك فعدلك ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك الانفطار | ٨٢ |
| خَلَقَكُمْ | : يأيها الناس اعبدوا ربكم الذى خلقكم والذين من قبلكم | ٢١ | م البقرة | ٢ |
| (١٦) | يأيها الناس اتقوا ربكم الذى خلقكم من نفس واحدة | ١ | م النساء | ٤ |
| | هو الذى خلقكم من طين ثم قضى أجلا ... ... ... | ٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | هو الذى خلقكم من نفس واحدة وجعل منها زوجها | | | |
| | ليسكن إليها ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٨٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | والله خلقكم ثم يتوفاكم ... ... ... ... ... ... | ٧٠ | ك النحل | ١٦ |
| | واتقوا الذى خلقكم والجبلة الأولين ... ... ... | ١٨٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | ومن آياته أن خلقكم من تراب ثم إذا أنتم بشر تنتشرون | ٢٠ | ك الروم | ٣٠ |
| | الله الذى خلقكم ثم رزقكم ثم يميتكم ثم يحييكم ... ... | ٤٠ | ك « | ٣٠ |
| | الله الذى خلقكم من ضعف ثم جعل من بعد ضعف قوة | ٥٤ | ك « | ٣٠ |
| | والله خلقكم من تراب ثم من نطفة ثم جعلكم أزواجا | ١١ | ك فاطر | ٣٥ |
| | والله خلقكم وما تعملون ... ... ... ... ... ... | ٩٦ | ك الصافات | ٣٧ |
| | خلقكم من نفس واحدة ثم جعل منها زوجها... ... | ٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| | هو الذى خلقكم من تراب ثم من نطفة ثم من علقة | ٦٧ | ك غافر | ٤٠ |
| | وهو خلقكم أول مرة وإليه ترجعون ... ... ... | ٢١ | ك فصلت | ٤١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| خَلَقَكُمْ | : هو الذى خلقكم فمنكم كافر ومنكم مؤمن ... ... | ٢ | م التغابن | ٦٤ |
| | ما لكم لا ترجون لله وقارا . وقد خلقكم أطوارا | ١٤ | ك نوح | ٧١ |
| خَلَقْنَا | : وممن خلقنا أمة يهدون بالحق وبه يعدلون... ... | ١٨١ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢٤) | ولقد خلقنا الإنسان من صلصال من حما مسنون | ٢٦ | ك الحجر | ١٥ |
| | وما خلقنا السموات والأرض وما بينهما إلا بالحق | ٨٥ | ك « | ١٥ |
| | وفضلناهم على كثير ممن خلقنا تفضيلا ... ... ... | ٧٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وما خلقنا السماء والأرض وما بينهما لاعبين ... ... | ١٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ولقد خلقنا الإنسان من سلالة من طين ... ... ... | ١٢ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ثم خلقنا النطفة علقة ... ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك « | ٢٣ |
| | فخلقنا العلقة مضغة... ... ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك « | ٢٣ |
| | فخلقنا المضغة عظاما فكسونا العظام لحما ... ... ... | ١٤ | ك « | ٢٣ |
| | ولقد خلقنا فوقكم سبع طرائق وما كنا عن الخلق غافلين | ١٧ | ك « | ٢٣ |
| | لنحيي به بلدة ميتا ونسقيه مما خلقنا أنعاما وأناسىّ كثيرا | ٤٩ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وخلقنا لهم من مثله ما يركبون ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك يس | ٣٦ |
| | أو لم يروا أنا خلقنا لهم مما عملت أيدينا أنعاما | | | |
| | فهم لها مالكون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧١ | ك « | ٣٦ |
| | فاستفتهم أهم أشد خلقا أم من خلقنا ... ... ... | ١١ | ك الصافات | ٣٧ |
| | أم خلقنا الملائكة إناثا وهم شاهدون ... ... ... | ١٥٠ | ك « | ٣٧ |
| | وما خلقنا السماء والأرض وما بينهما باطلا ... ... | ٢٧ | ك ص | ٣٨ |
| | وما خلقنا السموات والأرض وما بينهما لاعبين | ٣٨ | ك الدخان | ٤٤ |
| | ما خلقنا السموات والأرض وما بينهما إلا بالحق | | | |
| | وأجل مسمى ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | ولقد خلقنا الإنسان ونعلم ما توسوس به نفسه | ١٦ | ك ق | ٥٠ |
| | ولقد خلقنا السموات والأرض وما بينهما فى ستة | | | |
| | أيام وما مسنا من لغوب ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | م « | ٥٠ |
| | ومن كل شىء خلقنا زوجين لعلكم تذكرون ... ... | ٤٩ | ك الذاريات | ٥١ |
| | إنا خلقنا الإنسان من نطفة أمشاج نبتليه ... ... | ٢ | م الإنسان | ٧٦ |
| | لقد خلقنا الإنسان فى كبد ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك البلد | ٩٠ |
| | لقد خلقنا الإنسان فى أحسن تقويم ... ... ... | ٤ | ك التين | ٩٥ |
| خَلَقْنَاكُمْ | : ولقد جئتمونا فرادى كما خلقناكم أول مرة | ٩٤ | ك الأنعام | ٦ |
| (٩) | ولقد خلقناكم ثم صورناكم ثم قلنا للملائكة اسجدوا لآدم | ١١ | ك الأعراف | ٧ |
| | لقد جئتمونا كما خلقناكم أول مرة ... ... ... ... | ٤٨ | ك الكهف | ١٨ |
| | منها خلقناكم وفيها نعيدكم ومنها نخرجكم تارة أخرى | ٥٥ | ك طه | ٢٠ |
| | إن كنتم فى ريب من البعث فإنا خلقناكم من تراب | ٥ | م الحج | ٢٢ |
| | أفحسبتم أنما خلقناكم عبثا وأنكم إلينا لا ترجعون | ١١٥ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | يأيها الناس إنا خلقناكم من ذكر وأنثى وجعلناكم | | | |
| | شعوبا وقبائل لتعارفوا ... ... ... ... ... ... | ١٣ | م الحجرات | ٤٩ |
| | نحن خلقناكم فلولا تصدقون ... ... ... ... ... | ٥٧ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | وخلقناكم أزواجا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك النبأ | ٧٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| خَلَقْنَاهُ: | والجانَّ خلقناه من قبل من نار السموم ... ... | ٢٧ | ك الحجر | ١٥ |
| (٤) | أولا يذكر الإنسان أنا خلقناه من قبل ولم يك شيئا | ٦٧ | ك مريم | ١٩ |
| | أو لم ير الإنسان أنا خلقناه من نطفة فإذا هو | | | |
| | خصيم مبين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٧ | ك يس | ٣٦ |
| | إنا كل شيء خلقناه بقدر ... ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك القمر | ٥٤ |
| خَلَقْنَاهُمْ: | إنا خلقناهم من طين لازب ... ... ... ... ... | ١١ | ك الصافات | ٣٧ |
| (٣) | كلا إنا خلقناهم مما يعلمون ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك المعارج | ٧٠ |
| | نحن خلقناهم وشددنا أسرهم وإذا شئنا بدلنا أمثالهم تبديلا | ٢٨ | م الإنسان | ٧٦ |
| خَلَقْنَاهُمَا: | ما خلقناهما إلا بالحق ولكن أكثرهم لا يعلمون | ٣٩ | ك الدخان | ٤٤ |
| خَلَقَنِي: | الذي خلقني فهو يهدين ... ... ... ... ... ... | ٧٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| خَلَقَهُ: | خلقه من تراب ثم قال له كن فيكون ... ... ... | ٥٩ | م آل عمران | ٣ |
| (٤) | الذي أحسن كل شيء خلقه وبدأ خلق الإنسان من طين | ٧ | ك السجدة | ٣٢ |
| | قتل الإنسان ما أكفره . من أي شيء خلقه ... | ١٨ | ك عبس | ٨٠ |
| | من نطفة خلقه فقدره ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك « | ٨٠ |
| خَلَقَهَا: | والأنعام خلقها لكم فيها دفء ومنافع ومنها تأكلون | ٥ | ك النحل | ١٦ |
| خَلَقَهُمْ: | وجعلوا لله شركاء الجن وخلقهم ... ... ... ... | ١٠٠ | ك الأنعام | ٦ |
| (٤) | ولا يزالون مختلفين . إلا من رحم ربك ولذلك خلقهم | ١١٩ | ك هود | ١١ |
| | أو لم يروا أن الله الذي خلقهم هو أشد منهم قوة | ١٥ | ك فصلت | ٤١ |
| | ولئن سألتهم من خلقهم ليقولن الله فأنى يؤفكون | ٨٧ | ك الزخرف | ٤٣ |
| خَلَقَهُنَّ: | واسجدوا لله الذي خلقهن ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك فصلت | ٤١ |
| (٢) | ولئن سألتهم من خلق السموات والأرض ليقولن | | | |
| | خلقهن العزيز العليم... ... ... ... ... ... | ٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| خَلَقُوا: | أم جعلوا لله شركاء خلقوا كخلقه فتشابه الخلق عليهم | ١٦ | م الرعد | ١٣ |
| (٤) | أرونى ماذا خلقوا من الأرض أم لهم شرك في السموات | ٤٠ | ك فاطر | ٣٥ |
| | قل أرأيتم ما تدعون من دون الله أرونى ماذا خلقوا | | | |
| | من الأرض ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | أم خلقوا السموات والأرض بل لا يوقنون... ... | ٣٦ | ك الطور | ٥٢ |
| أَخْلُقُ: | أني أخلق لكم من الطين كهيئة الطير فأنفخ فيه | | | |
| | فيكون طيرا بإذن الله ... ... ... ... ... ... | ٤٩ | م آل عمران | ٣ |
| تَخْلُقُ: | وإذ تخلق من الطين كهيئة الطير بإذني ... ... | ١١٠ | م المائدة | ٥ |
| تَخْلُقُونَ: | إنما تعبدون من دون الله أوثانا وتخلقون إفكا | ١٧ | ك العنكبوت | ٩ |
| تَخْلُقُونَهُ: | أفرأيتم ما تمنون . أأنتم تخلقونه أم نحن الخالقون | ٥٩ | ك الواقعة | ٥٦ |
| نَخْلُقْكُمْ: | ألم نخلقكم من ماء مهين ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك المرسلات | ٧٧ |
| يَخْلُقُ: | قال كذلك الله يخلق ما يشاء ... ... ... ... | ٤٧ | م آل عمران | ٣ |
| (١٤) | يخلق ما يشاء والله على كل شيء قدير ... ... | ١٧ | م المائدة | ٥ |
| | أيشركون ما لا يخلق شيئا وهم يخلقون ... ... | ١٩١ | ك الأعراف | ٧ |
| | والخيل والبغال والحمير لتركبوها وزينة ويخلق ما لا تعلمون | ٨ | ك النحل | ١٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَخْلُقُ: | أفمن يخلق ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك النحل | ١٦ |
| | كمن لا يخلق أفلا تذكرون ... ... ... ... ... | ١٧ | ك « | ١٦ |
| | أو لم يروا أن الله الذي خلق السموات والأرض | | | |
| | قادر على أن يخلق مثلهم ... ... ... ... ... | ٩٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ومنهم من يمشي على أربع يخلق الله ما يشاء ... ... | ٤٥ | م النور | ٢٤ |
| | وربك يخلق ما يشاء ويختار ... ... ... ... ... | ٦٨ | ك القصص | ٢٨ |
| | ثم جعل من بعد قوة ضعفا وشيبة يخلق ما يشاء ... | ٥٤ | ك الروم | ٣٠ |
| | أو ليس الذي خلق السموات والأرض بقادر على أن | | | |
| | يخلق مثلهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨١ | ك يس | ٣٦ |
| | لو أراد الله أن يتخذ ولدا لاصطفى مما يخلق ما يشاء | ٤ | ك الزمر | ٣٩ |
| | لله ملك السموات والأرض يخلق ما يشاء ... ... | ٤٩ | ك الشورى | ٤٢ |
| | أم اتخذ مما يخلق بنات وأصفاكم بالبنين ... ... | ١٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| يَخْلُقُكُمْ: | يخلقكم في بطون أمهاتكم خلقا من بعد خلق | | | |
| | في ظلمات ثلاث ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| يَخْلُقُوا: | إن الذين تدعون من دون الله لن يخلقوا ذبابا | | | |
| | ولو اجتمعوا له ... ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | م الحج | ٢٢ |
| يَخْلُقُونَ: | والذين يدعون من دون الله لا يخلقون شيئا | | | |
| (٢) | وهم يخلقون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك النحل | ١٦ |
| | واتخذوا من دونه آلهة لا يخلقون شيئا وهم يخلقون | ٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| خُلِقَ: | يريد الله أن يخفف عنكم وخلق الإنسان ضعيفا | ٢٨ | م النساء | ٤ |
| (٥) | خلق الإنسان من عجل سأريكم آياتي فلا تستعجلون | ٣٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | إن الإنسان خلق هلوعا ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك المعارج | ٧٠ |
| | فلينظر الإنسان مم خلق ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك الطارق | ٨٦ |
| | خلق من ماء دافق... ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك « | ٨٦ |
| خُلِقَتْ: | أفلا ينظرون إلى الإبل كيف خلقت ... ... | ١٧ | ك الغاشية | ٨٨ |
| خُلِقُوا: | أم خلقوا من غير شيء أم هم الخالقون ... ... | ٣٥ | ك الطور | ٥٢ |
| يُخْلَقْ: | إرم ذات العماد . التي لم يخلق مثلها في البلاد... | ٨ | ك الفجر | ٨٩ |
| يُخْلَقُونَ: | أيشركون ما لا يخلق شيئا وهم يخلقون ... ... | ١٩١ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | والذين يدعون من دون الله لا يخلقون شيئا وهم يخلقون | ٢٠ | ك النحل | ١٦ |
| | واتخذوا من دونه آلهة لا يخلقون شيئا وهم يخلقون | ٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| خَلْقِ: | إن في خلق السموات والأرض واختلاف الليل | | | |
| (٣٨) | والنهار والفلك التي تجري في البحر بما ينفع الناس | | | |
| | وما أنزل الله من السماء من ماء فأحيا به الأرض | | | |
| | بعد موتها وبث فيها من كل دابة وتصريف | | | |
| | الرياح والسحاب المسخر بين السماء والأرض | | | |
| | لآيات لقوم يعقلون ... ... ... ... ... ... | ١٦٤ | م البقرة | ٢ |
| | إن في خلق السموات والأرض واختلاف الليل | | | |
| | والنهار لآيات لأولي الألباب ... ... ... ... | ١٩٠ | م آل عمران | ٣ |
| | ويتفكرون في خلق السموات والأرض ربنا ما خلقت | | | |
| | هذا باطلا ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٩١ | م « | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| خَلْقٍ | ولآمرنَّهم فليغيرنَّ خلق الله ... ... ... ... ... | ١١٩ | م النساء | ٤ |
| | ألا له الخلق والأمر تبارك الله رب العالمين ... ... | ٥٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | وأذكروا إذ جعلكم خلفاء من بعد قوم نوح وزادكم | | | |
| | فى الخلق بسطة... ... ... ... ... ... ... | ٦٩ | ك « | ٧ |
| | إنه يبدؤ الخلق ثم يعيده ليجزى الذين آمنوا وعملوا | | | |
| | الصالحات بالقسط ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك يونس | ١٠ |
| | قل هل من شركائكم من يبدؤ الخلق ثم يعيده ... | ٣٤ | ك « | ١٠ |
| | قل الله يبدؤ الخلق ثم يعيده فأنى تؤفكون ... ... | ٣٤ | ك « | ١٠ |
| | وإن تعجب فعجب قولهم أئذا كنا ترابا أئنا لفى خلق جديد | ٥ | م الرعد | ١٣ |
| | أم جعلوا لله شركاء خلقوا كخلقه فتشابه الخلق عليهم | ١٦ | م « | ١٣ |
| | إن يشأ يذهبكم ويأت بخلق جديد ... ... ... ... | ١٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | ما أشهدتهم خلق السموات والأرض ... ... ... | ٥١ | ك الكهف | ١٨ |
| | ولا خلق أنفسهم وما كنت متخذ المضلين عضدا | ٥١ | ك « | ١٨ |
| | كما بدأنا أول خلق نعيده وعدا علينا إنا كنا فاعلين | ١٠٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ولقد خلقنا فوقكم سبع طرائق وما كنا عن الخلق غافلين | ١٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | أفمن يبدؤ الخلق ثم يعيده ومن يرزقكم من السماء والأرض | ٦٤ | ك النمل | ٢٧ |
| | أو لم يروا كيف يبدئ الله الخلق ثم يعيده ... ... | ١٩ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | قل سيروا فى الأرض فانظروا كيف بدأ الخلق ... | ٢٠ | ك « | ٢٩ |
| | الله يبدؤ الخلق ثم يعيده ثم إليه ترجعون ... ... | ١١ | ك الروم | ٣٠ |
| | ومن آياته خلق السموات والأرض واختلاف | | | |
| | ألسنتكم وألوانكم ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك « | ٣٠ |
| | وهو الذى يبدؤ الخلق ثم يعيده وهو أهون عليه ... | ٢٧ | ك « | ٣٠ |
| | فطرة الله التى فطر الناس عليها لا تبديل لخلق الله | ٣٠ | ك « | ٣٠ |
| | هذا خلق الله فأرونى ماذا خلق الذين من دونه | ١١ | ك لقمان | ٣١ |
| | الذى أحسن كل شىء خلقه وبدأ خلق الإنسان من طين | ٧ | ك السجدة | ٣٢ |
| | وقالوا أئذا ضللنا فى الأرض أئنا لفى خلق جديد | ١٠ | ك « | ٣٢ |
| | ينبئكم إذا مزقتم كل ممزق إنكم لفى خلق جديد... ... | ٧ | ك سبأ | ٣٤ |
| | يزيد فى الخلق ما يشاء إن الله على كل شىء قدير | ١ | ك فاطر | ٣٥ |
| | إن يشأ يذهبكم ويأت بخلق جديد ... ... ... ... | ١٦ | ك « | ٣٥ |
| | ومن نعمره ننكسه فى الخلق أفلا يعقلون... ... ... | ٦٨ | ك يس | ٣٦ |
| | قل يحييها الذى أنشأها أول مرة وهو بكل خلق عليم | ٧٩ | ك « | ٣٦ |
| | يخلقكم فى بطون أمهاتكم خلقا من بعد خلق فى ظلمات ثلاث | ٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| | لخلق السموات والأرض ... ... ... ... ... ... | ٥٧ | م غافر | ٤٠ |
| | أكبر من خلق الناس ولكن أكثر الناس لا يعلمون | ٥٧ | م « | ٤٠ |
| | ومن آياته خلق السموات والأرض وما بثَّ فيهما من دابَّة | ٢٩ | ك الشورى | ٤٢ |
| | أفعيينا بالخلق الأول ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك ق | ٥٠ |
| | بل هم فى لبس من خلق جديد... ... ... ... ... | ١٥ | ك « | ٥٠ |
| | ما ترى فى خلق الرحمن من تفاوت ... ... ... ... | ٣ | ك الملك | ٦٧ |
| خَلْقًا | وقالوا أئذا كنا عظاما ورفاتا أئنا لمبعوثون خلقا جديدا | ٤٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٧) | قل كونوا حجارة أو حديدا . أو خلقا مما يكبر فى صدوركم | ٥١ | ك « | ١٧ |
| | وقالوا أئذا كنا عظاما ورفاتا أئنا لمبعوثون خلقا جديدا | ٩٨ | ك « | ١٧ |
| | ثم أنشأناه خلقا آخر فتبارك الله أحسن الخالقين ... | ١٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فاستفتهم أهم أشد خلقا أم من خلقنا ... ... ... | ١١ | ك الصافات | ٣٧ |
| | يخلقكم فى بطون أمهاتكم خلقا من بعد خلق فى ظلمات ثلاث | ٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| | أأنتم أشد خلقا أم السماء بناها ... ... ... ... | ٢٧ | ك النازعات | ٧٩ |
| خَلْقَكُمْ | ما خلقكم ولا بعثكم إلا كنفس واحدة إن الله سميع بصير | ٢٨ | م لقمان | ٣١ |
| (٢) | وفى خلقكم وما يبثُّ من دابَّة آياتٌ لقوم يوقنون ... | ٤ | ك الجاثية | ٤٥ |
| خَلْقِهِ | أم جعلوا لله شركاء خلقوا كخلقه فتشابه الخلق عليهم | ١٦ | م الرعد | ١٣ |
| (٣) | قال ربنا الذى أعطى كل شىء خلقه ثم هدى ... ... | ٥٠ | ك طه | ٢٠ |
| | وضرب لنا مثلا ونسى خلقه قال من يحيى العظام وهى رميم | ٧٨ | ك يس | ٣٦ |
| خَلْقَهُمْ | وجعلوا الملائكة الذين هم عباد الرحمن إناثا | | | |
| | أشهدوا خلقهم ... ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| بِخَلْقِهِنَّ | أو لم يروا أن الله الذى خلق السموات | | | |
| | والأرض ولم يعى بخلقهن بقادر على أن يحيى الموتى | ٣٣ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| خَالِقٍ | ذلكم الله ربكم لا إله إلا هو خالق كل شىء فاعبدوه | ١٠٢ | ك الأنعام | ٦ |
| (٨) | قل الله خالق كل شىء وهو الواحد القهار ... ... | ١٦ | م الرعد | ١٣ |
| | وإذ قال ربك للملائكة إنى خالق بشرا من صلصال | | | |
| | من حمإ مسنون ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك الحجر | ١٥ |
| | هل من خالق غير الله يرزقكم من السماء والأرض ... | ٣ | ك فاطر | ٣٥ |
| | إذ قال ربك للملائكة إنى خالق بشرا من طين ... | ٧١ | ك ص | ٣٨ |
| | الله خالق كل شىء وهو على كل شىء وكيل ... ... | ٦٢ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ذلكم الله ربكم خالق كل شىء لا إله إلا هو ... ... | ٦٢ | ك غافر | ٤٠ |
| | هو الله الخالق البارئ المصور له الأسماء الحسنى ... | ٢٤ | م الحشر | ٥٩ |
| الْخَالِقُونَ | أم خلقوا من غير شىء أم هم الخالقون ... | ٣٥ | ك الطور | ٥٢ |
| (٢) | أفرأيتم ما تمنون . أأنتم تخلقونه أم نحن الخالقون | ٥٩ | ك الواقعة | ٥٦ |
| الْخَالِقِينَ | ثم أنشأناه خلقا آخر فتبارك الله أحسن الخالقين | ١٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٢) | أتدعون بعلا وتذرون أحسن الخالقين ... ... ... | ١٢٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| الْخَلَّاقُ | إن ربك هو الخلَّاق العليم ... ... ... ... ... | ٨٦ | ك الحجر | ١٥ |
| (٢) | بلى وهو الخلَّاق العليم ... ... ... ... ... ... | ٨١ | ك يس | ٣٦ |
| مُخَلَّقَةٍ | فإنا خلقناكم من تراب ثم من نطفة ثم من علقة | | | |
| (٢) | ثم من مضغة مخلَّقة ... ... ... ... ... ... | ٥ | م الحج | ٢٢ |
| | وغير مخلَّقة لنبيِّن لكم ... ... ... ... ... ... | ٥ | م « | ٢٢ |
| اخْتِلَاقٍ | ما سمعنا بهذا فى الملة الآخرة إن هذا إلا اختلاق | ٧ | ك ص | ٣٨ |
| خَلَاقٍ | ولقد علموا لمن اشتراه ماله فى الآخرة من خلاق | ١٠٢ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | فمن الناس من يقول ربنا آتنا فى الدنيا وماله | | | |
| | فى الآخرة من خلاق ... ... ... ... ... ... | ٢٠٠ | م « | ٢ |
| | أولئك لا خلاق لهم فى الآخرة ... ... ... ... ... | ٧٧ | م آل عمران | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بِخَلَاقِكُمْ | : فاستمتعتم بخلاقكم كما استمتع الذين من قبلكم بخلاقهم | ٦٩ | م التوبة | ٩ |
| بِخَلَاقِهِمْ | : فاستمتعوا بخلاقهم فاستمتعتم بخلاقكم ... ... | ٦٩ | م « | ٩ |
| (٢) | كما استمتع الذين من قبلكم بخلاقهم ... ... ... | ٦٩ | م « | ٩ |
| خُلُقُ | : إن هذا إلا خلق الأولين ... ... ... ... ... | ١٣٧ | ك الشعراء | ٢٦ |
| (٢) | وإنك لعلى خلق عظيم ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك القلم | ٦٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| خِلَالٌ | : من قبل أن يأتي يوم لا بيع فيه ولا خلال ... ... | ٣١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| (٢) | فجاسوا خلال الديار ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| خِلَالَكُمْ | : ولأوضعوا خلالكم يبغونكم الفتنة ... ... ... | ٤٧ | م التوبة | ٩ |
| خِلَالِهِ | : ثم يجعله ركاما فترى الودق يخرج من خلاله ... ... | ٤٣ | م النور | ٢٤ |
| (٢) | ويجعله كسفا فترى الودق يخرج من خلاله ... ... | ٤٨ | ك الروم | ٣٠ |
| خِلَالَهَا | : أو تكون لك جنة من نخيل وعنب فتفجر الأنهار | | | |
| (٢) | خلالها تفجيرا ... ... ... ... ... ... ... | ٩١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | أمن جعل الأرض قرارا وجعل خلالها أنهارا ... ... | ٦١ | ك النمل | ٢٧ |
| خِلَالَهُمَا | : وبجرنا خلالهما نهرا .. ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك الكهف | ١٨ |
| خُلَّةٌ | : من قبل أن يأتي يوم لا بيع فيه ولا خلة ولا شفاعة | ٢٥٤ | م البقرة | ٢ |
| خَلِيلًا | : واتخذ الله إبراهيم خليلا ... ... ... ... ... | ١٢٥ | م النساء | ٤ |
| (٣) | وإذا لاتخذوك خليلا ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | م الإسراء | ١٧ |
| | يا ويلتى ليتنى لم أتخذ فلانا خليلا ... ... ... ... | ٢٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| الْأَخِلَّاءُ | : الأخلاء يومئذ بعضهم لبعض عدو إلا المتقين | ٦٧ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ✦✦✦ | | | |
| خَلَا | : وإذا خلا بعضهم إلى بعض قالوا أتحدثونهم | | | |
| (٢) | بما فتح الله عليكم ... ... ... ... ... ... | ٧٦ | م البقرة | ٢ |
| | وإن من أمة إلا خلا فيها نذير ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك فاطر | ٣٥ |
| خَلَتْ | : تلك أمة قد خلت لها ما كسبت ولكم ما كسبتم | ١٣٤ | م البقرة | ٢ |
| (١٥) | تلك أمة قد خلت لها ما كسبت ولكم ما كسبتم ... | ١٤١ | م « | ٢ |
| | قد خلت من قبلكم سنن ... ... ... ... ... ... | ١٣٧ | م آل عمران | ٣ |
| | وما محمد إلا رسول قد خلت من قبله الرسل ... ... | ١٤٤ | م « | ٣ |
| | ما المسيح ابن مريم إلا رسول قد خلت من قبله الرسل | ٧٥ | م المائدة | ٥ |
| | قال ادخلوا فى أمم قد خلت من قبلكم من الجن | | | |
| | والإنس فى النار ... ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | وقد خلت من قبلهم المثلات... ... ... ... ... ... | ٦ | م الرعد | ١٣ |
| | كذلك أرسلناك فى أمة قد خلت من قبلها أمم ... | ٣٠ | م « | ١٣ |
| | لا يؤمنون به وقد خلت سنة الأولين ... ... ... | ١٣ | ك الحجر | ١٥ |
| | سنة الله التى قد خلت فى عباده ... ... ... ... | ٨٥ | ك غافر | ٤٠ |
| | وحق عليهم القول فى أمم قد خلت من قبلهم... ... | ٢٥ | ك فصلت | ٤١ |
| | أتعداننى أن أخرج وقد خلت القرون من قبلى ... ... | ١٧ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| خَلَتْ | : أولئك الذين حق عليهم القول فى أمم قد خلت من قبلهم | ١٨ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | وأذكر أخا عاد إذ أنذر قومه بالأحقاف وقد خلت | | | |
| | النذر من بين يديه ومن خلفه ... ... ... ... | ٢١ | ك « | ٤٦ |
| | سنة الله التى قد خلت من قبل ولن تجد لسنة الله تبديلا | ٢٣ | م الفتح | ٤٨ |
| خَلَوْا | : وإذا خلوا إلى شياطينهم قالوا إنا معكم ... ... | ١٤ | م البقرة | ٢ |
| (٧) | أم حسبتم أن تدخلوا الجنة ولما يأتكم مثل الذين | | | |
| | خلوا من قبلكم ... ... ... ... ... ... ... | ٢١٤ | م « | ٢ |
| | وإذا خلوا عضوا عليكم الأنامل من الغيظ ... ... | ١١٩ | م آل عمران | ٣ |
| | فهل ينتظرون إلا مثل أيام الذين خلوا من قبلهم | ١٠٢ | ك يونس | ١٠ |
| | ولقد أنزلنا إليكم آيات مبينات ومثلا من الذين | | | |
| | خلوا من قبلكم ... ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | م النور | ٢٤ |
| | سنة الله فى الذين خلوا من قبل ... ... ... ... | ٣٨ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | سنة الله فى الذين خلوا من قبل ... ... ... ... | ٦٢ | م « | ٣٣ |
| يَخْلُ | : اقتلوا يوسف أو اطرحوه أرضا يخل لكم وجه أبيكم | ٩ | ك يوسف | ١٢ |
| خَلَّوْا | : فإن تابوا وأقاموا الصلاة وآتوا الزكاة فخلوا سبيلهم | ٥ | م التوبة | ٩ |
| تَخَلَّتْ | : وإذا الأرض مدت . وألقت ما فيها وتخلت ... | ٤ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| الْخَالِيَةِ | : كلوا واشربوا هنيئا بما أسلفتم فى الأيام الخالية | ٢٤ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| خَامِدُونَ | : إن كانت إلا صيحة واحدة فإذا هم خامدون | ٢٩ | ك يس | ٣٦ |
| خَامِدِينَ | : فما زالت تلك دعواهم حتى جعلناهم حصيدا خامدين | ١٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| خَمْرِ | : يسئلونك عن الخمر والميسر قل فيهما إثم كبير ومنافع للناس | ٢١٩ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | إنما الخمر والميسر والأنصاب والأزلام رجس من عمل | | | |
| | الشيطان ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩٠ | م المائدة | ٥ |
| | إنما يريد الشيطان أن يوقع بينكم العداوة والبغضاء | | | |
| | فى الخمر والميسر ... ... ... ... ... ... | ٩١ | م « | ٥ |
| | وأنهار من خمر لذة للشاربين ... ... ... ... ... | ١٥ | م محمد | ٤٧ |
| خَمْرًا | : قال أحدهما إنى أرانى أعصر خمرا ... ... ... ... | ٣٦ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | ياصاحبى السجن أما أحدكما فيسقى ربه خمرا... ... | ٤١ | ك « | ١٢ |
| بِخُمُرِهِنَّ | : وليضربن بخمرهن على جيوبهن ... ... ... ... | ٣١ | م النور | ٢٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| خَمْسَةٍ | : يمددكم ربكم بخمسة آلاف من الملائكة مسومين | ١٢٥ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | ويقولون خمسة سادسهم كلبهم رجما بالغيب ... ... | ٢٢ | ك الكهف | ١٨ |
| | ما يكون من نجوى ثلاثة إلا هو رابعهم ولا خمسة | | | |
| | إلا هو سادسهم ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | م المجادلة | ٥٨ |
| الْخَامِسَةُ | : والخامسة أن لعنة الله عليه إن كان من الكاذبين | ٧ | م النور | ٢٤ |
| (٢) | والخامسة أن غضب الله عليها إن كان من الصادقين | ٩ | م « | ٢٤ |
| خَمْسِينَ | : فلبث فيهم ألف سنة إلا خمسين عاما ... ... ... | ١٤ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| (٢) | تعرج الملائكة والروح إليه فى يوم كان مقداره | | | |
| | خمسين ألف سنة ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك المعارج | ٧٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| خُمُسَهُ | : واعلموا أنما غنمتم من شيء فأن لله خمسه وللرسول | | | |
| | ولذى القربى واليتامى والمساكين وابن السبيل | ٤١ | م الأنفال | ٨ |
| ✦✦✦ | | | | |
| مَخْمَصَةٍ | : فمن اضطر فى مخمصة غير متجانف لإثم فإن الله غفور رحيم | ٣ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | ذلك بأنهم لا يصيبهم ظمأ ولا نصب ولا مخمصة | | | |
| | فى سبيل الله ولا يطأون موطئا يغيظ الكفار | | | |
| | ولا ينالون من عدو نيلا إلا كتب لهم به عمل صالح | ١٢٠ | م التوبة | ٩ |
| ✦✦✦ | | | | |
| خَمْطٍ | : وبدلناهم بجنتيهم جنتين ذواتى أكل خمط وأثل | | | |
| | وشىء من سدر قليل ... ... ... ... ... ... | ١٦ | ك سبأ | ٣٤ |
| ✦✦✦ | | | | |
| خِنْزِيرٍ | : إنما حرم عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما أهل به | | | |
| (٤) | لغير الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٧٣ | م البقرة | ٢ |
| | حرمت عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما أهل لغير الله به | ٣ | م المائدة | ٥ |
| | إلا أن يكون ميتة أو دما مسفوحا أو لحم خنزير فإنه رجس | ١٤٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | إنما حرم عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما أهل | | | |
| | لغير الله به ... ... ... ... ... ... ... | ١١٥ | ك النحل | ١٦ |
| الْخَنَازِيرَ | : من لعنه الله وغضب عليه وجعل منهم القردة | | | |
| | والخنازير وعبد الطاغوت ... ... ... ... ... | ٦٠ | م المائدة | ٥ |
| ✦✦✦ | | | | |
| الْخَنَّاسِ | : قل أعوذ برب الناس . ملك الناس . إله الناس . | | | |
| | من شر الوسواس الخناس ... ... ... ... ... | ٤ | ك الناس | ١١٤ |
| الْخُنَّسِ | : فلا أقسم بالخنس . الجوار الكنس ... ... | ١٥ | ك التكوير | ٨١ |
| ✦✦✦ | | | | |
| الْمُنْخَنِقَةُ | : حرمت عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما أهل | | | |
| | لغير الله به والمنخنقة ... ... ... ... ... | ٣ | م المائدة | ٥ |
| ✦✦✦ | | | | |
| خُوَارٌ | : واتخذ قوم موسى من بعده من حليهم عجلا جسدا له خوار | ١٤٨ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | فأخرج لهم عجلا جسدا له خوار فقالوا هذا إلهكم وإله موسى | ٨٨ | ك طه | ٢٠ |
| ✦✦✦ | | | | |
| خَاضُوا | : وخضتم كالذى خاضوا ... ... ... ... ... | ٦٩ | م التوبة | ٩ |
| خُضْتُمْ | : وخضتم كالذى خاضوا ... ... ... ... ... | ٦٩ | م « | ٩ |
| نَخُوضُ | : ولئن سألتهم ليقولن إنما كنا نخوض ونلعب ... | ٦٥ | م « | ٩ |
| (٢) | وكنا نخوض مع الخائضين ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك المدثر | ٧٤ |
| يَخُوضُوا | : فلا تقعدوا معهم حتى يخوضوا فى حديث غيره | ١٤٠ | م النساء | ٤ |
| (٤) | فأعرض عنهم حتى يخوضوا فى حديث غيره ... ... | ٦٨ | ك الأنعام | ٦ |
| | فذرهم يخوضوا ويلعبوا حتى يلاقوا يومهم الذى يوعدون | ٨٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | فذرهم يخوضوا ويلعبوا حتى يلاقوا يومهم الذى يوعدون | ٤٢ | ك المعارج | ٧٠ |
| يَخُوضُونَ | : وإذا رأيت الذين يخوضون فى آياتنا فأعرض عنهم | ٦٨ | ك الأنعام | ٦ |
| خَوْضٍ | : فويل يومئذ للمكذبين . الذين هم فى خوض يلعبون | ١٢ | ك الطور | ٥٢ |
| خَوْضِهِمْ | : قل الله ثم ذرهم فى خوضهم يلعبون ... ... | ٩١ | م الأنعام | ٦ |
| الْخَائِضِينَ | : وكنا نخوض مع الخائضين ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك المدثر | ٧٤ |
| ✦✦✦ | | | | |
| خَافَ | : فمن خاف من موص جنفا أو إثما فأصلح بينهم فلا إثم عليه | ١٨٢ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | إن فى ذلك لآية لمن خاف عذاب الآخرة ... ... | ١٠٣ | ك هود | ١١ |
| | ولنسكننكم الأرض من بعدهم ذلك لمن خاف مقامى | ١٤ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وخاف وعيد ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك « | ١٤ |
| | ولمن خاف مقام ربه جنتان ... ... ... ... ... | ٤٦ | م الرحمن | ٥٥ |
| | وأما من خاف مقام ربه ونهى النفس عن الهوى . | | | |
| | فإن الجنة هى المأوى ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك النازعات | ٧٩ |
| خَافَتْ | : وإن امرأة خافت من بعلها نشوزا أو إعراضا | | | |
| | فلا جناح عليهما أن يصلحا بينهما صلحا ... ... | ١٢٨ | م النساء | ٤ |
| خَافُوا | : وليخش الذين لو تركوا من خلفهم ذرية ضعافا | | | |
| | خافوا عليهم فليتقوا الله ... ... ... ... ... | ٩ | م « | ٤ |
| خِفْتُ | : وإنى خفت الموالى من ورائى وكانت امرأتى عاقرا | ٥ | ك مريم | ١٩ |
| (٢) | فإذا خفت عليه فألقيه فى اليم ولا تخافى ولا تحزنى | ٧ | ك القصص | ٢٨ |
| خِفْتُكُمْ | : ففررت منكم لما خفتكم فوهب لى ربى حكما | ٢١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| خِفْتُمْ | : فإن خفتم ألا يقيما حدود الله فلا جناح عليهما فيما افتدت به | ٢٢٩ | م البقرة | ٢ |
| (٧) | فإن خفتم فرجالا أو ركبانا ... ... ... ... ... | ٢٣٩ | م « | ٢ |
| | وإن خفتم ألا تقسطوا فى اليتامى فانكحوا ما طاب لكم | | | |
| | من النساء مثنى وثلاث ورباع ... ... ... ... | ٣ | م النساء | ٤ |
| | فإن خفتم ألا تعدلوا فواحدة أو ما ملكت أيمانكم | ٣ | م « | ٤ |
| | وإن خفتم شقاق بينهما فابعثوا حكما من أهله وحكما من أهلها | ٣٥ | م « | ٤ |
| | فليس عليكم جناح أن تقصروا من الصلاة إن خفتم | | | |
| | أن يفتنكم الذين كفروا ... ... ... ... ... | ١٠١ | م « | ٤ |
| | وإن خفتم عيلة فسوف يغنيكم الله من فضله إن شاء | ٢٨ | م التوبة | ٩ |
| أَخَافُ | : لئن بسطت إلىّ يدك لتقتلنى ما أنا بباسط يدى | | | |
| (٢٣) | إليك لأقتلك إنى أخاف الله رب العالمين ... ... | ٢٨ | م المائدة | ٥ |
| | قل إنى أخاف إن عصيت ربى عذاب يوم عظيم | ١٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | ولا أخاف ما تشركون به إلا أن يشاء ربى شيئا ... ... | ٨٠ | ك « | ٦ |
| | وكيف أخاف ما أشركتم ولا تخافون أنكم أشركتم | | | |
| | بالله ما لم ينزل به عليكم سلطانا ... ... ... ... | ٨١ | ك « | ٦ |
| | إنى أخاف عليكم عذاب يوم عظيم ... ... ... ... | ٥٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | إنى برىء منكم إنى أرى ما لا ترون إنى أخاف الله | ٤٨ | م الأنفال | ٨ |
| | إنى أخاف إن عصيت ربى عذاب يوم عظيم ... ... | ١٥ | ك يونس | ١٠ |
| | وإن تولوا فإنى أخاف عليكم عذاب يوم كبير ... ... | ٣ | ك هود | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَخَافُ: | إنى أخاف عليكم عذاب يوم أليم ... ... ... ... | ٢٦ | ك هـود | ١١ |
| | إنى أراكم بخير وإنى أخاف عليكم عذاب يوم محيط | ٨٤ | ك « | ١١ |
| | قال إنى ليحزننى أن تذهبوا به وأخاف أن يأكله الذئب | ١٣ | ك يوسف | ١٢ |
| | يأبت إنى أخاف أن يمسك عذاب من الرحمن فتكون للشيطان وليا ... ... ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك مـريم | ١٩ |
| | قال رب إنى أخاف أن يكذبون ... ... ... ... | ١٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | ولهم علىّ ذنب فأخاف أن يقتلون ... ... ... ... | ١٤ | ك « | ٢٦ |
| | إنى أخاف عليكم عذاب يوم عظيم ... ... ... ... | ١٣٥ | ك « | ٢٦ |
| | قال رب إنى قتلت منهم نفسا فأخاف أن يقتلون | ٣٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | فأرسله معى ردءا يصدقنى إنى أخاف أن يكذبون | ٣٤ | ك « | ٢٨ |
| | قل إنى أخاف إن عصيت ربى عذاب يوم عظيم | ١٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| | إنى أخاف أن يبدل دينكم أو أن يظهر فى الأرض الفساد | ٢٦ | ك غافـر | ٤٠ |
| | وقال الذى آمن يا قوم إنى أخاف عليكم مثل يوم الأحزاب | ٣٠ | ك « | ٤٠ |
| | ويا قوم إنى أخاف عليكم يوم التناد ... ... ... | ٣٢ | ك « | ٤٠ |
| | ألا تعبدوا إلا الله إنى أخاف عليكم عذاب يوم عظيم | ٢١ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | فلما كفر قال إنى برىء منك إنى أخاف الله رب العالمين | ١٦ | م الحشر | ٥٩ |
| تَخَافُ: | فاضرب لهم طريقا فى البحر يبسا لا تخاف دركا ولا تخشى | ٧٧ | ك طـه | ٢٠ |
| تَخَافَا: | قال لا تخافا إننى معكما أسمع وأرى ... ... ... | ٤٦ | ك « | ٢٠ |
| تَخَافَنَّ: | وإما تخافنّ من قوم خيانة فانبذ إليهم على سواء | ٥٨ | م الأنفال | ٨ |
| تَخَافُوا: | تتنزل عليهم الملائكة ألا تخافوا ولا تحزنوا ... | ٣٠ | ك فصلت | ٤١ |
| تَخَافُونَ: (٤) | واللاتى تخافون نشوزهن فعظوهن واهجروهن فى المضاجع ... ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | م النساء | ٤ |
| | وكيف أخاف ما أشركتم ولا تخافون أنكم أشركتم بالله | ٨١ | ك الأنعام | ٦ |
| | واذكروا إذ أنتم قليل مستضعفون فى الأرض تخافون إن يتخطفكم الناس فآواكم ... ... ... ... ... | ٢٦ | م الأنفال | ٨ |
| | محلقين رءوسكم ومقصرين لا تخافون ... ... ... | ٢٧ | م الفتح | ٤٨ |
| تَخَافُونَهُمْ: | فأنتم فيه سواء تخافونهم كخيفتكم أنفسكم ... | ٢٨ | ك الروم | ٣٠ |
| تَخَافُوهُمْ: | فلا تخافوهم وخافون إن كنتم مؤمنين ... ... | ١٧٥ | م آل عمران | ٣ |
| تَخَافِى: | فإذا خفت عليه فألقيه فى اليمّ ولا تخافى ولا تحزنى | ٧ | ك القصص | ٢٨ |
| تَخَفْ: | قالوا لا تخف إنا أرسلنا إلى قوم لوط ... ... | ٧٠ | ك هـود | ١١ |
| (٩) | قال خذها ولا تخف سنعيدها سيرتها الأولى ... ... | ٢١ | ك طـه | ٢٠ |
| | قلنا لا تخف إنك أنت الأعلى ... ... ... ... ... | ٦٨ | ك « | ٢٠ |
| | ياموسى لا تخف إنى لا يخاف لدىّ المرسلون ... | ١٠ | ك النمـل | ٢٧ |
| | فلما جاءه وقص عليه القصص قال لا تخف ... ... | ٢٥ | ك القصص | ٢٨ |
| | ياموسى أقبل ولا تخف إنك من الآمنين ... ... | ٣١ | ك « | ٢٨ |
| | وقالوا لا تخف ولا تحزن إنا منجوك وأهلك إلا امرأتك | ٣٣ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | إذ دخلوا على داود ففزع منهم قالوا لا تخف ... | ٢٢ | ك صـ | ٣٨ |
| تَخَفْ: | فأوجس منهم خيفة قالوا لا تخف وبشروه بغلام عليم | ٢٨ | ك الذاريات | ٥١ |
| تَخَافُ: | قالا ربنا إننا نخاف أن يفرط علينا أو أن يطغى | ٤٥ | ك طـه | ٢٠ |
| (٢) | إنا نخاف من ربنا يوما عبوسا قمطريرا ... ... ... | ١٠ | م الإنسان | ٧٦ |
| يَخَافُ: (٥) | ومن يعمل من الصالحات وهو مؤمن فلا يخاف ظلما ولا هضما ... ... ... ... ... ... ... | ١١٢ | ك طـه | ٢٠ |
| | يا موسى لا تخف إنى لا يخاف لدىّ المرسلون | ١٠ | ك النمـل | ٢٧ |
| | فذكر بالقرآن من يخاف وعيد ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك قـ | ٥٠ |
| | فمن يؤمن بربه فلا يخاف بخسا ولا رهقا ... ... | ١٣ | ك الجـن | ٧٢ |
| | فدمدم عليهم ربهم بذنبهم فسواها. ولا يخاف عقباها | ١٥ | ك الشمس | ٩١ |
| يَخَافَا: | ولا يحل لكم أن تأخذوا مما آتيتموهن شيئا إلا أن يخافا ألا يقيما حدود الله ... ... ... | ٢٢٩ | م البقـرة | ٢ |
| يَخَافُهُ: | ليبلونكم الله بشىء من الصيد تناله أيديكم ورماحكم ليعلم الله من يخافه بالغيب ... ... ... ... ... | ٩٤ | م المائدة | ٥ |
| يَخَافُوا: | ذلك أدنى أن يأتوا بالشهادة على وجهها أو يخافوا أن ترد أيمان بعد أيمانهم ... ... ... ... | ١٠٨ | م « | ٥ |
| يَخَافُونَ: (١١) | قال رجلان من الذين يخافون أنعم الله عليهما ادخلوا عليهم الباب ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | م « | ٥ |
| | يجاهدون فى سبيل الله ولا يخافون لومة لائم ... ... | ٥٤ | م « | ٥ |
| | وأنذر به الذين يخافون أن يحشروا إلى ربهم ... ... | ٥١ | ك الأنعام | ٦ |
| | والذين يصلون ما أمر الله به أن يوصل ويخشون ربهم ويخافون سوء الحساب ... ... ... ... | ٢١ | م الرعـد | ١٣ |
| | يخافون ربهم من فوقهم ويفعلون ما يؤمرون | ٥٠ | ك النحل | ١٦ |
| | يبتغون إلى ربهم الوسيلة أيهم أقرب ويرجون رحمته ويخافون عذابه ... ... ... ... ... ... | ٥٧ | م الإسراء | ١٧ |
| | يخافون يوما تتقلب فيه القلوب والأبصار ... ... | ٣٧ | م النـور | ٢٤ |
| | أفى قلوبهم مرض أم ارتابوا أم يخافون أن يحيف الله عليهم ورسوله ... ... ... ... ... ... | ٥٠ | م « | ٢٤ |
| | وتركنا فيها آية للذين يخافون العذاب الأليم ... ... | ٣٧ | ك الذاريات | ٥١ |
| | كلا بل لا يخافون الآخرة ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك المدثر | ٧٤ |
| | يوفون بالنذر ويخافون يوما كان شره مستطيرا | ٧ | م الإنسان | ٧٦ |
| خَافُونِ: | إنما ذلكم الشيطان يخوف أولياءه فلا تخافوهم وخافون إن كنتم مؤمنين ... ... ... ... ... | ١٧٥ | م آل عمران | ٣ |
| يُخَوِّفُهُمْ: | ونخوفهم فما يزيدهم إلا طغيانا كبيرا ... ... | ٦٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| يُخَوِّفُ: (٢) | إنما ذلكم الشيطان يخوف أولياءه فلا تخافوهم ذلك يخوف الله به عباده يا عباد فاتقون ... ... | ١٧٥ | م آل عمران | ٣ |
| | | ١٦ | ك الزمـر | ٣٩ |
| وَيُخَوِّفُونَكَ: | ويخوفونك بالذين من دونه ... ... ... | ٣٦ | ك « | ٣٩ |
| خَوْفٌ: (٢١) | فمن تبع هداى فلا خوف عليهم ولا هم يحزنون | ٣٨ | م البقـرة | ٢ |
| | فلهم أجرهم عند ربهم ولا خوف عليهم ولا هم يحزنون | ٦٢ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| خَاوِيَةٌ: فكأين من قرية أهلكناها وهى ظالمة فهى خاوية | | | | |
| | على عروشها ... ... ... ... ... ... ... | ٤٥ م | الحـج | ٢٢ |
| | فتلك بيوتهم خاوية بما ظلموا ... ... ... ... ... | ٥٢ ك | النمـل | ٢٧ |
| | فترى القوم فيها صرعى كأنهم أعجاز نخل خاوية | ٧ ك | الحـاقة | ٦٩ |
| ✦✦✦ | | | | |
| خَابَ: واستفتحوا وخاب كل جبار عنيد ... ... ... | | ١٥ ك | إبراهيم | ١٤ |
| (٤) فيسحتكم بعذاب وقد خاب من افترى ... ... ... | | ٦١ ك | طـه | ٢٠ |
| | وعنت الوجوه للحى القيوم وقد خاب من حمل ظلما | ١١١ ك | « | ٢٠ |
| | قد أفلح من زكاها . وقد خاب من دسّاها... ... | ١٠ ك | الشمس | ٩١ |
| خَائِبِينَ: ليقطع طرفا من الذين كفروا أو يكبتهم فينقلبوا | | | | |
| | خائبين ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٢٧ م | آل عمران | ٣ |
| ✦✦✦ | | | | |
| اخْتَارَ: واختار موسى قومه سبعين رجلا لميقاتنا ... ... | | ١٥٥ ك | الأعراف | ٧ |
| اخْتَرْتُكَ: وأنا اخترتك فاستمع لما يوحى... ... ... ... | | ١٣ ك | طـه | ٢٠ |
| اخْتَرْنَاهُمْ: ولقد اخترناهم على علم على العالمين ... ... ... | | ٣٢ ك | الدخان | ٤٤ |
| يَخْتَارُ: وربك يخلق ما يشاء ويختار ما كان لهم الخيرة | | ٦٨ ك | القصص | ٢٨ |
| تَخَيَّرُونَ: إن لكم فيه لما تخيرون... ... ... ... ... | | ٣٨ ك | القـلم | ٦٨ |
| يَتَخَيَّرُونَ: وفاكهة مما يتخيرون ... ... ... ... ... | | ٢٠ ك | الواقعـة | ٥٦ |
| خَيْرٌ: ذلكم خير لكم عند بارئكم فتاب عليكم إنه هو التواب الرحيم | | ٥٤ م | البقـرة | ٢ |
| (١٣٦) قال أتستبدلون الذى هو أدنى بالذى هو خير... ... | | ٦١ م | « | ٢ |
| | ولو أنهم آمنوا واتقوا لمثوبة من عند الله خير | ١٠٣ م | « | ٢ |
| | ما يودُّ الذين كفروا من أهل الكتاب ولا المشركين أن ينزل عليكم من خير من ربكم... ... ... ... | ١٠٥ م | « | ٢ |
| | ما ننسخ من آية أو ننسها نأت بخير منها أو مثلها | ١٠٦ م | « | ٢ |
| | وما تقدموا لأنفسكم من خير تجدوه عند الله ... ... | ١١٠ م | « | ٢ |
| | فمن تطوع خيرا فهو خير له ... ... ... ... ... | ١٨٤ م | « | ٢ |
| | وأن تصوموا خير لكم إن كنتم تعلمون ... ... ... | ١٨٤ م | « | ٢ |
| | وما تفعلوا من خير يعلمه الله ... ... ... ... ... | ١٩٧ م | « | ٢ |
| | وتزودوا فإن خير الزاد التقوى ... ... ... ... ... | ١٩٧ م | « | ٢ |
| | قل ما أنفقتم من خير فللوالدين والأقربين ... ... | ٢١٥ م | « | ٢ |
| | وما تفعلوا من خير فإن الله به عليم... ... ... ... | ٢١٥ م | « | ٢ |
| | وعسى أن تكرهوا شيئا وهو خير لكم ... ... ... | ٢١٦ م | « | ٢ |
| | ويسئلونك عن اليتامى قل إصلاح لهم خير ... ... | ٢٢٠ م | « | ٢ |
| | ولأمة مؤمنة خير من مشركة ولو أعجبتكم ... ... ... | ٢٢١ م | « | ٢ |
| | ولعبد مؤمن خير من مشرك ولو أعجبكم ... ... ... | ٢٢١ م | « | ٢ |
| | قول معروف ومغفرة خير من صدقة يتبعها أذى | ٢٦٣ م | « | ٢ |
| | وإن تخفوها وتؤتوها الفقراء فهو خير لكم ... ... | ٢٧١ م | « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| خَيْرٌ: وما تنفقوا من خير فلأنفسكم... ... ... ... ... | | ٢٧٢ م | البقـرة | ٢ |
| | وما تنفقوا من خير يوفَّ إليكم وأنتم لا تظلمون | ٢٧٢ م | « | ٢ |
| | وما تنفقوا من خير فإن الله به عليم... ... ... ... | ٢٧٣ م | « | ٢ |
| | وإن كان ذو عسرة فنظرة إلى ميسرة وأن تصدقوا خير لكم | ٢٨٠ م | « | ٢ |
| | قل أؤنبئكم بخير من ذلكم ... ... ... ... ... ... | ١٥ م | آل عمران | ٣ |
| | بيدك الخير إنك على كل شىء قدير ... ... ... ... | ٢٦ م | « | ٣ |
| | يوم تجد كل نفس ما عملت من خير محضرا ... ... | ٣٠ م | « | ٣ |
| | ومكروا ومكر الله والله خير الماكرين ... ... ... | ٥٤ م | « | ٣ |
| | ولتكن منكم أمة يدعون إلى الخير ... ... ... ... | ١٠٤ م | « | ٣ |
| | كنتم خير أمة أخرجت للناس... ... ... ... ... | ١١٠ م | « | ٣ |
| | وما يفعلوا من خير فلن يكفروه والله عليم بالمتقين | ١١٥ م | « | ٣ |
| | بل الله مولاكم وهو خير الناصرين... ... ... ... | ١٥٠ م | « | ٣ |
| | ولئن قتلتم فى سبيل الله أو متم لمغفرة من الله ورحمة خير مما يجمعون ... ... ... ... ... ... | ١٥٧ م | « | ٣ |
| | ولا يحسبن الذين كفروا أنما نملى لهم خير لأنفسهم | ١٧٨ م | « | ٣ |
| | وما عند الله خير للأبرار ... ... ... ... ... ... | ١٩٨ م | « | ٣ |
| | وأن تصبروا خير لكم والله غفور رحيم ... ... ... | ٢٥ م | النسـاء | ٤ |
| | ذلك خير وأحسن تأويلا ... ... ... ... ... ... | ٥٩ م | « | ٤ |
| | قل متاع الدنيا قليل والآخرة خير لمن اتقى ولا تظلمون فتيلا | ٧٧ م | « | ٤ |
| | لا خير فى كثير من نجواهم إلا من أمر بصدقة أو معروف | ١١٤ م | « | ٤ |
| | وما تفعلوا من خير فإن الله كان به عليما... ... ... | ١٢٧ م | « | ٤ |
| | فلا جناح عليهما أن يصلحا بينهما صلحا والصلح خير | ١٢٨ م | « | ٤ |
| | وارزقنا وأنت خير الرازقين... ... ... ... ... ... | ١١٤ م | المـائدة | ٥ |
| | وإن يمسسك بخير فهو على كل شىء قدير ... ... | ١٧ ك | الأنعـام | ٦ |
| | وللدار الآخرة خير للذين يتقون أفلا تعقلون ... ... | ٣٢ ك | « | ٦ |
| | إن الحكم إلا لله يقص الحق وهو خير الفاصلين | ٥٧ ك | « | ٦ |
| | قال ما منعك ألا تسجد إذ أمرتك قال أنا خير منه | ١٢ ك | الأعراف | ٧ |
| | ولباس التقوى ذلك خير ذلك من آيات الله لعلهم يذكرون | ٢٦ ك | « | ٧ |
| | ذلكم خير لكم إن كنتم مؤمنين ... ... ... ... ... | ٨٥ ك | « | ٧ |
| | فاصبروا حتى يحكم الله بيننا وهو خير الحاكمين | ٨٧ ك | « | ٧ |
| | ربنا افتح بيننا وبين قومنا بالحق وأنت خير الفاتحين | ٨٩ ك | « | ٧ |
| | أنت ولينا فاغفر لنا وارحمنا وأنت خير الغافرين... ... | ١٥٥ ك | « | ٧ |
| | والدار الآخرة خير للذين يتقون أفلا تعقلون ... ... | ١٦٩ م | « | ٧ |
| | ولو كنت أعلم الغيب لاستكثرت من الخير وما مسنى السوء | ١٨٨ ك | « | ٧ |
| | إن تستفتحوا فقد جاءكم الفتح وإن تنتهوا فهو خير لكم | ١٩ م | الأنفـال | ٨ |
| | ويمكرون ويمكر الله والله خير الماكرين ... ... | ٣٠ ك | « | ٨ |
| | فإن تبتم فهو خير لكم وإن توليتم فاعلموا أنكم غير معجزى الله | ٣ م | التـوبة | ٩ |
| | ذلكم خير لكم إن كنتم تعلمون ... ... ... ... ... | ٤١ م | « | ٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| خَيْرٌ: | قل أذن خير لكم يؤمن بالله ويؤمن للمؤمنين... ... | ٦١ | م التوبة | ٩ |
| | أفمن أسس بنيانه على تقوى من الله ورضوان خير | | | |
| | أم من أسس بنيانه على شفا جرف ... ... ... | ١٠٩ | م » | ٩ |
| | ولو يعجل الله للناس الشر استعجالهم بالخير لقضى | | | |
| | إليهم أجلهم ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك يونس | ١٠ |
| | قل بفضل الله وبرحمته فبذلك فليفرحوا هو خير مما يجمعون | ٥٨ | ك » | ١٠ |
| | وإن يردك بخير فلا رادّ لفضله ... ... ... ... ... | ١٠٧ | ك » | ١٠ |
| | واصبر حتى يحكم الله وهو خير الحاكمين ... ... ... | ١٠٩ | ك » | ١٠ |
| | ولا تنقصوا المكيال والميزان إني أراكم بخير... ... | ٨٤ | ك هود | ١١ |
| | بقية الله خير لكم إن كنتم مؤمنين ... ... ... ... | ٨٦ | ك » | ١١ |
| | أأرباب متفرقون خير أم الله الواحد القهار... ... | ٣٩ | ك يوسف | ١٢ |
| | ولأجر الآخرة خير للذين آمنوا وكانوا يتقون... ... | ٥٧ | ك » | ١٢ |
| | ألا ترون أني أوفي الكيل وأنا خير المنزلين... ... | ٥٩ | ك » | ١٢ |
| | فالله خير حافظا وهو أرحم الراحمين... ... ... ... | ٦٤ | ك » | ١٢ |
| | أو يحكم الله لي وهو خير الحاكمين ... ... ... ... | ٨٠ | ك » | ١٢ |
| | ولدار الآخرة خير للذين اتقوا أفلا تعقلون ... ... | ١٠٩ | ك » | ١٢ |
| | للذين أحسنوا في هذه الدنيا حسنة ولدار الآخرة خير | ٣٠ | ك النحل | ١٦ |
| | وهو كَلٌّ على مولاه أينما يوجهه لا يأت بخير ... ... | ٧٦ | ك » | ١٦ |
| | إنما عند الله هو خير لكم إن كنتم تعلمون ... ... | ٩٥ | ك » | ١٦ |
| | ولئن صبرتم لهو خير للصابرين ... ... ... ... ... | ١٢٦ | م » | ١٦ |
| | ويدع الإنسان بالشر دعاءه بالخير وكان الإنسان عجولا | ١١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وزنوا بالقسطاس المستقيم ذلك خير وأحسن تأويلا | ٣٥ | ك » | ١٧ |
| | هنالك الولاية لله الحق هو خير ثوابا ... ... ... | ٤٤ | ك الكهف | ١٨ |
| | وخير عقبا... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك » | ١٨ |
| | والباقيات الصالحات خير عند ربك ثوابا ... ... | ٤٦ | ك » | ١٨ |
| | وخير أملا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك » | ١٨ |
| | قال ما مكني فيه ربي خير ... ... ... ... ... | ٩٥ | م » | ١٨ |
| | قال الذين كفروا للذين آمنوا أي الفريقين خير مقاما | ٧٣ | ك مريم | ١٩ |
| | والباقيات الصالحات خير عند ربك ثوابا ... ... | ٧٦ | ك » | ١٩ |
| | وخير مردّا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٦ | ك » | ١٩ |
| | والله خير وأبقى ... ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك طه | ٢٠ |
| | ورزق ربك خير وأبقى... ... ... ... ... ... | ١٣١ | م » | ٢٠ |
| | كل نفس ذائقة الموت ونبلوكم بالشر والخير فتنة | ٣٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وزكريا إذ نادى ربه رب لا تذرني فردا وأنت خير الوارثين | ٨٩ | ك » | ٢١ |
| | ومن الناس من يعبد الله على حرف فإن أصابه خير اطمأن به | ١١ | م الحج | ٢٢ |
| | ذلك ومن يعظم حرمات الله فهو خير له عند ربه | ٣٠ | م » | ٢٢ |
| | والبدن جعلناها لكم من شعائر الله لكم فيها خير | ٣٦ | م » | ٢٢ |
| | وإن الله لهو خير الرازقين... ... ... ... ... | ٥٨ | م » | ٢٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| خَيْرٌ: | ارْكعوا واسجدوا واعبدوا ربكم وافعلوا الخير | ٧٧ | م الحج | ٢٢ |
| | وقل رب أنزلني منزلا مباركا وأنت خير المنزلين | ٢٩ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | أم تسئلهم خرجا فخراج ربك خير ... ... ... ... | ٧٢ | ك » | ٢٣ |
| | وهو خير الرازقين ... ... ... ... ... ... ... | ٧٢ | ك » | ٢٣ |
| | ربنا آمنا فاغفر لنا وارحمنا وأنت خير الراحمين | ١٠٩ | ك » | ٢٣ |
| | وقل رب اغفر وارحم وأنت خير الراحمين ... ... | ١١٨ | ك » | ٢٣ |
| | لا تحسبوه شرا لكم بل هو خير لكم... ... ... ... | ١١ | م النور | ٢٤ |
| | ذلكم خير لكم لعلكم تذكرون ... ... ... ... ... | ٢٧ | م » | ٢٤ |
| | وأن يستعففن خير لهن والله سميع عليم ... ... ... | ٦٠ | م » | ٢٤ |
| | قل أذلك خير أم جنة الخلد التي وعد المتقون | ١٥ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | أصحاب الجنة يومئذ خير مستقرا وأحسن مقيلا | ٢٤ | ك » | ٢٥ |
| | أتمدونن بمال فما آتاني الله خير مما آتاكم ... ... | ٣٦ | ك النمل | ٢٧ |
| | الله خير أمّا يشركون ... ... ... ... ... ... | ٥٩ | ك » | ٢٧ |
| | من جاء بالحسنة فله خير منها وهم من فزع يومئذ آمنون | ٨٩ | ك » | ٢٧ |
| | فقال رب إني لما أنزلت إليّ من خير فقير ... ... | ٢٤ | ك القصص | ٢٨ |
| | إن خير من استأجرت القوي الأمين... ... ... ... | ٢٦ | ك » | ٢٨ |
| | وما عند الله خير وأبقى أفلا تعقلون... ... ... ... | ٦٠ | ك » | ٢٨ |
| | ويلكم ثواب الله خير لمن آمن وعمل صالحا... ... | ٨٠ | ك » | ٢٨ |
| | من جاء بالحسنة فله خير منها ... ... ... ... ... | ٨٤ | ك » | ٢٨ |
| | ذلكم خير لكم إن كنتم تعلمون ... ... ... ... ... | ١٦٠ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ذلك خير للذين يريدون وجه الله وأولئك هم المفلحون | ٣٨ | ك الروم | ٣٠ |
| | فإذا ذهب الخوف سلقوكم بألسنة حداد أشحة على الخير | ١٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وما أنفقتم من شيء فهو يخلفه وهو خير الرازقين | ٣٩ | ك سبأ | ٣٤ |
| | أذلك خير نزلا أم شجرة الزقوم... ... ... ... ... | ٦٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| | فقال إني أحببت حب الخير عن ذكر ربي... ... | ٣٢ | ك ص | ٣٨ |
| | قال أنا خير منه خلقتني من نار وخلقته من طين | ٧٦ | ك » | ٣٨ |
| | أفمن يلقى في النار خير أم من يأتي آمنا يوم القيامة | ٤٠ | ك فصلت | ٤١ |
| | لا يسأم الإنسان من دعاء الخير... ... ... ... ... | ٤٩ | ك » | ٤١ |
| | وما عند الله خير وأبقى للذين آمنوا وعلى ربهم يتوكلون | ٣٦ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ورحمة ربك خير مما يجمعون ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | أم أنا خير من هذا الذي هو مهين ولا يكاد يُبين | ٥٢ | ك » | ٤٣ |
| | وقالوا أآلهتنا خير أم هو ما ضربوه لك إلا جدلا | ٥٨ | ك » | ٤٣ |
| | أهم خير أم قوم تبع والذين من قبلهم ... ... ... | ٣٧ | ك الدخان | ٤٤ |
| | ألقيا في جهنم كل كفار عنيد. مناع للخير معتد مريب | ٢٥ | ك ق | ٥٠ |
| | أكفاركم خير من أولئكم أم لكم براءة في الزبر | ٤٣ | ك القمر | ٥٤ |
| | ذلك خير لكم وأطهر ... ... ... ... ... ... ... | ١٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| | ذلكم خير لكم إن كنتم تعلمون ... ... ... ... ... | ١١ | م الصف | ٦١ |
| | وذروا البيع ذلكم خير لكم إن كنتم تعلمون ... ... | ٩ | م الجمعة | ٦٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| خَيْرٌ | : قل ما عند الله خير من اللهو ومن التجارة ... ... | ١١ | م الجمعة | ٦٢ |
| | والله خير الرازقين ... ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | م « | ٦٢ |
| | هماز مشاء بنميم . مناع للخير معتد أثيم ... ... ... | ١٢ | ك القلم | ٦٨ |
| | إذا مسّه الشر جزوعا . وإذا مسّه الخير منوعا... ... | ٢١ | ك المعارج | ٧٠ |
| | وما تقدموا لأنفسكم من خير تجدوه عند الله هو | | | |
| | خيرا وأعظم أجرا ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | م المزمل | ٧٣ |
| | والآخرة خير وأبقى ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الأعلى | ٨٧ |
| | وللآخرة خير لك من الأولى... ... ... ... ... ... | ٤ | ك الضحى | ٩٣ |
| | ليلة القدر خير من ألف شهر ... ... ... ... ... | ٣ | ك القدر | ٩٧ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات أولئك هم خير البرية | ٧ | م البينة | ٩٨ |
| | وإنه لحب الخير لشديد... ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك العاديات | ١٠٠ |
| خَيْرًا | : ومن تطوع خيرا فإن الله شاكر عليم ... ... ... | ١٥٨ | م البقرة | ٢ |
| (٣٧) | إن ترك خيرا الوصية للوالدين والأقربين بالمعروف | ١٨٠ | م « | ٢ |
| | فمن تطوع خيرا فهو خير له ... ... ... ... ... ... | ١٨٤ | م « | ٢ |
| | ومن يؤت الحكمة فقد أوتي خيرا كثيرا ... ... ... | ٢٦٩ | م « | ٢ |
| | ولو آمن أهل الكتاب لكان خيرا لهم ... ... ... | ١١٠ | م آل عمران | ٣ |
| | ولا يحسبن الذين يبخلون بما آتاهم الله من فضله | | | |
| | هو خيرا لهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٨٠ | م « | ٣ |
| | فعسى أن تكرهوا شيئا ويجعل الله فيه خيرا كثيرا | ١٩ | م النساء | ٤ |
| | ولو أنهم قالوا سمعنا وأطعنا وأسمع وانظرنا لكان | | | |
| | خيرا لهم ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٦ | م « | ٤ |
| | ولو أنهم فعلوا ما يوعظون به لكان خيرا لهم وأشد تثبيتا | ٦٦ | م « | ٤ |
| | إن تبدوا خيرا أو تخفوه أو تعفوا عن سوء فإن الله | | | |
| | كان عفوا قديرا ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٩ | م « | ٤ |
| | يأيها الناس قد جاءكم الرسول بالحق من ربكم فآمنوا | | | |
| | خيرا لكم ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٧٠ | م « | ٤ |
| | ولا تقولوا ثلاثة انتهوا خيرا لكم إنما الله إله واحد | ١٧١ | م « | ٤ |
| | يوم يأتي بعض آيات ربك لا ينفع نفسا إيمانها لم تكن | | | |
| | آمنت من قبل أو كسبت في إيمانها خيرا... ... | ١٥٨ | ك الأنعام | ٦ |
| | ولو علم الله فيهم خيرا لأسمعهم ... ... ... ... | ٢٣ | م الأنفال | ٨ |
| | إن يعلم الله في قلوبكم خيرا... ... ... ... ... | ٧٠ | م « | ٨ |
| | يؤتكم خيرا مما أخذ منكم ويغفر لكم والله غفور رحيم | ٧٠ | م « | ٨ |
| | فإن يتوبوا يك خيرا لهم ... ... ... ... ... ... | ٧٤ | م التوبة | ٩ |
| | ولا أقول للذين تزدري أعينكم لن يؤتيهم الله خيرا | ٣١ | ك هود | ١١ |
| | وقيل للذين اتقوا ماذا أنزل ربكم قالوا خيرا... ... | ٣٠ | ك النحل | ١٦ |
| | ولئن رددت إلى ربي لأجدن خيرا منها منقلبا... ... | ٣٦ | ك الكهف | ١٨ |
| | فعسى ربي أن يؤتين خيرا من جنتك ... ... ... | ٤٠ | ك « | ١٨ |
| | فأردنا أن يبدلهما ربهما خيرا منه زكاة وأقرب رحما | ٨١ | ك « | ١٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| خَيْرًا | : لولا إذ سمعتموه ظن المؤمنون والمؤمنات بأنفسهم خيرا | ١٢ | م النور | ٢٤ |
| | فكاتبوهم إن علمتم فيهم خيرا ... ... ... ... ... | ٣٣ | م « | ٢٤ |
| | تبارك الذي إن شاء جعل لك خيرا من ذلك جنات | | | |
| | تجري من تحتها الأنهار... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ورد الله الذين كفروا بغيظهم لم ينالوا خيرا ... ... | ٢٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وقال الذين كفروا للذين آمنوا لو كان خيرا | | | |
| | ما سبقونا إليه... ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | فإذا عزم الأمر فلو صدقوا الله لكان خيرا لهم | ٢١ | م محمد | ٤٧ |
| | ولو أنهم صبروا حتى تخرج إليهم لكان خيرا لهم | ٥ | م الحجرات | ٤٩ |
| | لا يسخر قوم من قوم عسى أن يكونوا خيرا منهم | ١١ | م « | ٤٩ |
| | ولا نساء من نساء عسى أن يكن خيرا منهن... ... | ١١ | م « | ٤٩ |
| | وآسمعوا وأطيعوا وأنفقوا خيرا لأنفسكم... ... ... | ١٦ | م التغابن | ٦٤ |
| | عسى ربه إن طلقكن أن يبدله أزواجا خيرا منكن | ٥ | م التحريم | ٦٦ |
| | عسى ربنا أن يبدلنا خيرا منها إنا إلى ربنا راغبون | ٣٢ | م القلم | ٦٨ |
| | على أن نبدل خيرا منهم وما نحن بمسبوقين ... ... | ٤١ | ك المعارج | ٧٠ |
| | وما تقدموا لأنفسكم من خير تجدوه عند الله هو | | | |
| | خيرا وأعظم أجرا ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | م المزمل | ٧٣ |
| | فمن يعمل مثقال ذرة خيرا يره ... ... ... ... ... | ٧ | م الزلزلة | ٩٩ |
| الأَخْيَارِ | : وإنهم عندنا لمن المصطفين الأخيار... ... ... | ٤٧ | ك ص | ٣٨ |
| (٢) | وآذكر إسماعيل واليسع وذا الكفل وكل من الأخيار | ٤٨ | ك « | ٣٨ |
| الخَيْرَاتُ | : ولكل وجهة هو موليها فاستبقوا الخيرات | ١٤٨ | م البقرة | ٢ |
| (١٠) | ويأمرون بالمعروف وينهون عن المنكر ويسارعون | | | |
| | في الخيرات ... ... ... ... ... ... ... ... | ١١٤ | م آل عمران | ٣ |
| | ولكن ليبلوكم في ما آتاكم فاستبقوا الخيرات ... ... | ٤٨ | م المائدة | ٥ |
| | وأولئك لهم الخيرات وأولئك هم المفلحون ... ... | ٨٨ | م التوبة | ٩ |
| | وجعلناهم أئمة يهدون بأمرنا وأوحينا إليهم فعل | | | |
| | الخيرات ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | إنهم كانوا يسارعون في الخيرات ويدعوننا رغبا ورهبا | ٩٠ | ك « | ٢١ |
| | نسارع لهم في الخيرات بل لا يشعرون ... ... ... | ٥٦ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | أولئك يسارعون في الخيرات وهم لها سابقون... .. | ٦١ | ك « | ٢٣ |
| | ومنهم سابق بالخيرات بإذن الله... ... ... ... ... | ٣٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| | فيهن خيرات حسان ... ... ... ... ... ... ... | ٧٠ | م الرحمن | ٥٥ |
| الخِيَرَةُ | : وربك يخلق ما يشاء ويختار ما كان لهم الخيرة | ٦٨ | ك القصص | ٢٨ |
| (٢) | وما كان لمؤمن ولا مؤمنة إذا قضى الله ورسوله أمرا | | | |
| | أن يكون لهم الخيرة من أمرهم ... ... ... | ٣٦ | م الأحزاب | ٣٣ |

* * *

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| الخَيْطُ | : وكلوا واشربوا حتى يتبين لكم الخيط الأبيض | ١٨٧ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | من الخيط الأسود من الفجر... ... ... ... ... | ١٨٧ | م « | ٢ |
| الخِيَاطِ | : ولا يدخلون الجنة حتى يلج الجمل في سم الخياط | ٤٠ | ك الأعراف | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| يُخَيَّلُ: | فإذا حبالهم وعصيهم يخيل إليه من سحرهم أنها تسعى | ٦٦ | ك طه | ٢٠ |
| مُخْتَالٍ: | إن الله لا يحب كل مختال فخور ... ... ... ... | ١٨ | ك لقمان | ٣١ |
| (٢) | والله لا يحب كل مختال فخور ... ... ... ... | ٢٣ | م الحديد | ٥٧ |
| مُخْتَالًا: | إن الله لا يحب من كان مختالا فخورا ... ... | ٣٦ | م النساء | ٤ |
| الْخَيْلِ: | زين للناس حب الشهوات من النساء والبنين والقناطير | | | |
| (٤) | المقنطرة من الذهب والفضة والخيل المسومة | ١٤ | م آل عمران | ٣ |
| الْخَيْلَ: | وأعدوا لهم ما استطعتم من قوة ومن رباط الخيل | ٦٠ | م الأنفال | ٨ |
| | والخيل والبغال والحمير لتركبوها وزينة ويخلق مالا تعلمون | ٨ | ك النحل | ٦ |
| | وما أفاء الله على رسوله منهم فما أوجفتم عليه من خيل | | | |
| | ولا ركاب... ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | م الحشر | ٥٩ |
| بِخَيْلِكَ: | واستفزز من استطعت منهم بصوتك وأجلب عليهم | | | |
| | بخيلك ورجلك ... ... ... ... ... ... | ٦٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| الْخِيَامِ: | حور مقصورات فى الخيام ... ... ... ... | ٧٢ | م الرحمن | ٥٥ |

# باب الدال

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| دَأْبِ: | كدأب آل فرعون والذين من قبلهم كذبوا بآياتنا | ١١ | م آل عمران | ٣ |
| (٤) | كدأب آل فرعون والذين من قبلهم كفروا بآيات الله | ٥٢ | م الأنفال | ٨ |
| | كدأب آل فرعون والذين من قبلهم كذبوا بآيات ربهم | ٥٤ | م « | ٨ |
| | مثل دأب قوم نوح وعاد وثمود والذين من بعدهم | ٣١ | ك غافر | ٤٠ |
| دَأَبًا: | قال تزرعون سبع سنين دأبا ... ... ... ... | ٤٧ | ك يوسف | ١٢ |
| دَائِبَيْنِ: | وسخر لكم الشمس والقمر دائبين وسخر لكم الليل والنهار | ٣٣ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| دَابَّةٍ: | فأحيا به الأرض بعد موتها وبث فيها من كل دابة | ١٦٤ | م البقرة | ٢ |
| (١٤) | وما من دابة فى الأرض ولا طائر يطير بجناحيه | | | |
| | إلا أمم أمثالكم ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك الأنعام | ٦ |
| | وما من دابة فى الأرض إلا على الله رزقها ... ... | ٦ | ك هود | ١١ |
| | ما من دابة إلا هو آخذ بناصيتها إن ربى على صراط مستقيم | ٥٦ | ك « | ١١ |
| | ولله يسجد ما فى السموات وما فى الأرض من دابة | | | |
| | والملائكة وهم لا يستكبرون ... ... ... ... | ٤٩ | ك النحل | ١٦ |
| | ولو يؤاخذ الله الناس بظلمهم ما ترك عليها من دابة | ٦١ | ك « | ١٦ |
| | والله خلق كل دابة من ماء... ... ... ... ... | ٤٥ | م النور | ٢٤ |
| | وإذا وقع القول عليهم أخرجنا لهم دابة من الأرض تكلمهم | ٨٢ | ك النمل | ٢٧ |
| | وكأين من دابة لا تحمل رزقها الله يرزقها وإياكم | ٦٠ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وألقى فى الأرض رواسى أن تميد بكم وبث فيها من كل دابة | ١٠ | ك لقمان | ٣١ |
| | فلما قضينا عليه الموت ما دلهم على موته إلا دابة | | | |
| | الأرض تأكل منسأته ... ... ... ... ... | ١٤ | ك سبأ | ٣٤ |
| | ولو يؤاخذ الله الناس بما كسبوا ما ترك على ظهرها من دابة | ٤٥ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ومن آياته خلق السموات والأرض وما بث فيهما من دابة | ٢٩ | ك الشورى | ٤٢ |
| | وفى خلقكم وما يبث من دابة آيات لقوم يوقنون | ٤ | ك الجاثية | ٤٥ |
| الدَّوَابِّ: | إن شر الدواب عند الله الصم البكم الذين لا يعقلون | ٢٢ | م الأنفال | ٨ |
| (٤) | إن شر الدواب عند الله الذين كفروا فهم لا يؤمنون | ٥٥ | م « | ٨ |
| | ألم تر أن الله يسجد له من فى السموات ومن فى الأرض | | | |
| | والشمس والقمر والنجوم والجبال والشجر | | | |
| | والدواب وكثير من الناس ... ... ... ... | ١٨ | م الحج | ٢٢ |
| | ومن الناس والدواب والأنعام مختلف ألوانه كذلك | ٢٨ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| يُدَبِّرُ: | ثم استوى على العرش يدبر الأمر... ... ... ... | ٣ | ك يونس | ١٠ |
| (٤) | ومن يدبر الأمر فسيقولون الله ... ... ... ... | ٣١ | ك « | ١٠ |
| | يدبر الأمر يفصل الآيات لعلكم بلقاء ربكم توقنون | ٢ | م الرعد | ١٣ |
| | يدبر الأمر من السماء إلى الأرض ... ... ... | ٥ | ك السجدة | ٣٢ |
| يَتَدَبَّرُونَ: | أفلا يتدبرون القرآن ... ... ... ... ... | ٨٢ | م النساء | ٤ |
| (٢) | أفلا يتدبرون القرآن أم على قلوب أقفالها ... ... | ٢٤ | م محمد | ٤٧ |
| يَدَّبَّرُوا: | أفلم يدبروا القول أم جاءهم ما لم يأت آباءهم الأولين | ٦٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٢) | كتاب أنزلناه إليك مبارك ليدبروا آياته وليتذكر | | | |
| | أولوا الألباب ... ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك ص | ٣٨ |
| أَدْبَرَ: | كلا إنها لظى . نزاعة للشوى . تدعو من أدبر وتولى | ١٧ | ك المعارج | ٧٠ |
| (٤) | ثم أدبر واستكبر . فقال إن هذا إلا سحر يؤثر ... | ٢٣ | ك المدثر | ٧٤ |
| | والليل إذ أدبر . والصبح إذا أسفر . إنها لإحدى الكبر | ٣٣ | ك « | ٧٤ |
| | ثم أدبر يسعى . فحشر فنادى . فقال أنا ربكم الأعلى | ٢٢ | ك النازعات | ٧٩ |
| الْمُدَبِّرَاتِ: | والسابحات سبحا . فالسابقات سبقا . | | | |
| | فالمدبرات أمرا ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك « | ٧٩ |
| مُدْبِرًا: | فلما رآها تهتز كأنها جان ولى مدبرا ولم يعقب | ١٠ | ك النمل | ٢٧ |
| (٢) | فلما رآها تهتز كأنها جان ولى مدبرا ولم يعقب ... ... | ٣١ | ك القصص | ٢٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مُدْبِرِينَ | : وضاقت عليكم الأرض بما رحبت ثم وليتم مدبرين | ٢٥ | م التوبة | ٩ |
| (٦) | وتالله لأكيدنّ أصنامكم بعد أن تولوا مدبرين ... | ٥٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | إنك لاتسمع الموتى ولاتسمع الصم الدعاء إذا ولوا مدبرين | ٨٠ | ك النمل | ٢٧ |
| | فانك لاتسمع الموتى ولاتسمع الصم الدعاء إذا ولوا مدبرين | ٥٢ | ك الروم | ٣٠ |
| | فتولوا عنه مدبرين . فراغ إلى آلهتهم فقال ألا تأكلون | ٩٠ | ك الصافات | ٣٧ |
| | يوم تولون مدبرين ما لكم من الله من عاصم | ٣٣ | ك غافر | ٤٠ |
| إِدْبَارَ | : ومن الليل فسبحه وإدبار النجوم ... ... ... ... | ٤٩ | ك الطور | ٥٢ |
| دَابِرُ | : فقطع دابر القوم الذين ظلموا والحمد لله رب العالمين | ٤٥ | ك الأنعام | ٦ |
| (٤) | وقطعنا دابر الذين كذبوا بآياتنا وما كانوا مؤمنين | ٧٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | ويريد الله أن يحق الحق بكلماته ويقطع دابر الكافرين | ٧ | م الأنفال | ٨ |
| | وقضينا إليه ذلك الأمر أن دابر هؤلاء مقطوع مصبحين | ٦٦ | ك الحجر | ١٥ |
| دُبُرَ | : واستبقا الباب وقدت قميصه من دبر ... ... ... | ٢٥ | ك يوسف | ١٢ |
| (٤) | وإن كان قميصه قدّ من دبر فكذبت وهو من الصادقين | ٢٧ | ك « | ١٢ |
| | فلما رأى قميصه قدّ من دبر قال إنه من كيدكن إن كيدكن عظيم | ٢٨ | ك « | ١٢ |
| | سيهزم الجمع ويولون الدبر ... ... ... ... ... | ٤٥ | م القمر | ٥٤ |
| دُبُرَه | : ومن يولهم يومئذ دبره إلا متحرفا لقتال أو متحيزا | | | |
| | إلى فئة فقد باء بغضب من الله ... ... ... | ١٦ | م الأنفال | ٨ |
| أَدْبَارَ | : وإن يقاتلوكم يولوكم الأدبار ثم لاينصرون... ... | ١١١ | م آل عمران | ٣ |
| (٦) | إذا لقيتم الذين كفروا زحفا فلا تولوهم الأدبار | ١٥ | م الأنفال | ٨ |
| | ولقد كانوا عاهدوا الله من قبل لا يولون الأدبار | ١٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ولو قاتلكم الذين كفروا لولوا الأدبار ... ... ... | ٢٢ | م الفتح | ٤٨ |
| | ومن الليل فسبحه وأدبار السجود ... ... ... ... | ٤٠ | ك قٓ | ٥٠ |
| | ولئن نصروهم ليولن الأدبار ثم لا ينصرون ... ... | ١٢ | م الحشر | ٥٩ |
| أَدْبَارِكُمْ | : ولا ترتدوا على أدباركم فتنقلبوا خاسرين ... ... | ٢١ | م المائدة | ٥ |
| أَدْبَارِهَا | : من قبل أن نطمس وجوها فنردها على أدبارها | ٤٧ | م النساء | ٤ |
| أَدْبَارَهُمْ | : ولو ترى إذ يتوفى الذين كفروا الملائكة | | | |
| (٥) | يضربون وجوههم وأدبارهم ... ... ... ... | ٥٠ | م الأنفال | ٨ |
| | فأسر بأهلك بقطع من الليل واتبع أدبارهم ... ... | ٦٥ | ك الحجر | ١٥ |
| | وإذا ذكرت ربك في القرآن وحده ولوا على أدبارهم نفورا | ٤٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| | إن الذين ارتدوا على أدبارهم من بعد ما تبين لهم الهدى | | | |
| | الشيطان سوّل لهم وأملى لهم ... ... ... ... | ٢٥ | م محمد | ٤٧ |
| | فكيف إذا توفتهم الملائكة يضربون وجوههم وأدبارهم | ٢٧ | م « | ٤٧ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| الْمُدَّثِّرُ | : يأيها المدثر . قم فأنذر... ... ... ... ... | ١ | ك المدثر | ٧٤ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| دُحُورًا | : ويقذفون من كل جانب . دحورا ... ... ... | ٩ | ك الصافات | ٣٧ |
| مَدْحُورًا | : قال اخرج منها مذءوما مدحورا ... ... ... | ١٨ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | | | | |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مَدْحُورًا | : ثم جعلنا له جهنم يصلاها مذءوما مدحورا | ١٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ولا تجعل مع الله إلها آخر فتلقى في جهنم ملوما مدحورا | ٣٩ | ك « | ١٧ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| لِيُدْحِضُوا | : ويجادل الذين كفروا بالباطل ليدحضوا | | | |
| (٢) | به الحق ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٦ | ك الكهف | ١٨ |
| | وجادلوا بالباطل ليدحضوا به الحق فأخذتهم ... ... | ٥ | ك غافر | ٤٠ |
| دَاحِضَةٌ | : والذين يحاجون في الله من بعد ما استجيب له | | | |
| | حجتهم داحضة عند ربهم ... ... ... ... ... | ١٦ | ك الشورى | ٤٢ |
| الْمُدْحَضِينَ | : فساهم فكان من المدحضين ... ... ... | ١٤١ | ك الصافات | ٣٧ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| دَحَاهَا | : والأرض بعد ذلك دحاها ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك النازعات | ٧٩ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| دَاخِرُونَ | : أو لم يروا إلى ما خلق الله من شيء يتفيؤ | | | |
| (٢) | ظلاله عن اليمين والشمائل سجدا لله وهم داخرون | ٤٨ | ك النحل | ١٦ |
| | قل نعم وأنتم داخرون ... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك الصافات | ٣٧ |
| دَاخِرِينَ | : وكل أتوه داخرين ... ... ... ... ... ... | ٨٧ | ك النمل | ٢٧ |
| (٢) | إن الذين يستكبرون عن عبادتي سيدخلون جهنم داخرين | ٦٠ | ك غافر | ٤٠ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| دَخَلَ | : كلما دخل عليها زكريا المحراب وجد عندها رزقا | ٣٧ | م آل عمران | ٣ |
| (٥) | ودخل معه السجن فتيان ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | ودخل جنته وهو ظالم لنفسه ... ... ... ... | ٣٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | ودخل المدينة على حين غفلة من أهلها ... ... ... | ١٥ | ك القصص | ٢٨ |
| | رب اغفر لي ولوالدي ولمن دخل بيتي مؤمنا ... ... | ٢٨ | ك نوح | ٧١ |
| دَخَلَتْ | : كلما دخلت أمة لعنت أختها ... ... ... ... | ٣٨ | ك الأعراف | ٧ |
| دَخَلْتَ | : ولولا إذ دخلت جنتك قلت ماشاء الله لاقوة إلا بالله | ٣٩ | ك الكهف | ١٨ |
| دَخَلْتُمْ | : وربائبكم اللاتي في حجوركم من نسائكم اللاتي | | | |
| (٣) | دخلتم بهن ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | م النساء | ٤ |
| | فإن لم تكونوا دخلتم بهن فلا جناح عليكم ... ... | ٢٣ | م « | ٤ |
| | فإذا دخلتم بيوتا فسلموا على أنفسكم تحية من عند الله | | | |
| | مباركة طيبة ... ... ... ... ... ... ... | ٦١ | م النور | ٢٤ |
| دَخَلْتُمُوهُ | : أدخلوا عليهم الباب فإذا دخلتموه فإنكم غالبون | ٢٣ | م المائدة | ٥ |
| دَخَلَهُ | : فيه آيات بينات مقام إبراهيم ومن دخله كان آمنا | ٩٧ | م آل عمران | ٣ |
| دَخَلُوا | : وقد دخلوا بالكفر وهم قد خرجوا به... ... ... | ٦١ | م المائدة | ٥ |
| (١٠) | وجاء إخوة يوسف فدخلوا عليه فعرفهم وهم له منكرون | ٥٨ | ك يوسف | ١٢ |
| | ولما دخلوا من حيث أمرهم أبوهم ما كان يغني عنهم | | | |
| | من الله من شيء ... ... ... ... ... ... | ٦٨ | ك « | ١٢ |
| | ولما دخلوا على يوسف آوى إليه أخاه... ... ... | ٦٩ | ك « | ١٢ |
| | فلما دخلوا عليه قالوا يأيها العزيز مسنا وأهلنا الضر | ٨٨ | ك « | ١٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| دَخَلُوا: | فلما دخلوا على يوسف آوى إليه أبويه ... ... | ٩٩ | ك يوسف | ١٢ |
| | إذ دخلوا عليه فقالوا سلاما قال إنا منكم وجلون | ٥٢ | ك الحجر | ١٥ |
| | قالت إن الملوك إذا دخلوا قرية أفسدوها ... ... | ٣٤ | ك النمل | ٢٧ |
| | إذ دخلوا على داود ففزع منهم قالوا لا تخف | ٢٢ | ك ص | ٣٨ |
| | إذ دخلوا عليه فقالوا سلاما قال سلام قوم منكرون | ٢٥ | ك الذاريات | ٥١ |
| دَخَلُوهُ: | وليدخلوا المسجد كما دخلوه أول مرة... ... | ٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| لَتَدْخُلُنَّ: | لتدخلن المسجد الحرام إن شاء الله آمنين | ٢٧ | م الفتح | ٤٨ |
| تَدْخُلُوا: (٦) | أم حسبتم أن تدخلوا الجنة ولما يأتكم مثل الذين خلوا من قبلكم ... ... ... ... ... | ٢١٤ | م البقرة | ٢ |
| | أم حسبتم أن تدخلوا الجنة ولما يعلم الله الذين جاهدوا منكم ويعلم الصابرين ... ... ... ... | ١٤٢ | م آل عمران | ٣ |
| | وقال يا بنيّ لا تدخلوا من باب واحد ... ... ... | ٦٧ | ك يوسف | ١٢ |
| | لا تدخلوا بيوتا غير بيوتكم حتى تستأنسوا وتسلموا على أهلها | ٢٧ | م النور | ٢٤ |
| | ليس عليكم جناح أن تدخلوا بيوتا غير مسكونة فيها متاع لكم | ٢٩ | م « | ٢٤ |
| | لا تدخلوا بيوت النبيّ إلا أن يؤذن لكم إلى طعام غير ناظرين إناه ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| تَدْخُلُوهَا: | فإن لم تجدوا فيها أحدا فلا تدخلوها حتى يؤذن لكم | ٢٨ | م النور | ٢٤ |
| نَدْخُلَهَا: | وإنا لن ندخلها حتى يخرجوا منها ... ... ... | ٢٢ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | قالوا يا موسى إنا لن ندخلها أبدا ما داموا فيها | ٢٤ | م « | ٥ |
| يَدْخُلَ: | وقالوا لن يدخل الجنة إلا من كان هودا أو نصارى | ١١١ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | ولكن قولوا أسلمنا ولما يدخل الإيمان في قلوبكم | ١٤ | م الحجرات | ٤٩ |
| يَدْخُلَنَّهَا: | فانطلقوا وهم يتخافتون . أن لا يدخلنها اليوم عليكم مسكين ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | م القلم | ٦٨ |
| وَلِيَدْخُلُوا: | وليدخلوا المسجد كما دخلوه أول مرة ... ... | ٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| يَدْخُلُونَ: | فأولئك يدخلون الجنة ولا يظلمون نقيرا... ... | ١٢٤ | م النساء | ٤ |
| (٧) | ولا يدخلون الجنة حتى يلج الجمل في سم الخياط | ٤٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | والملائكة يدخلون عليهم من كل باب ... ... ... | ٢٣ | م الرعد | ١٣ |
| | فأولئك يدخلون الجنة ولا يظلمون شيئا ... ... ... | ٦٠ | ك مريم | ١٩ |
| | فأولئك يدخلون الجنة يرزقون فيها بغير حساب | ٤٠ | ك غافر | ٤٠ |
| | إن الذين يستكبرون عن عبادتي سيدخلون جهنم داخرين | ٦٠ | ك « | ٤٠ |
| | ورأيت الناس يدخلون في دين الله أفواجا ... ... | ٢ | م النصر | ١١٠ |
| يَدْخُلُونَهَا: (٣) | جنات عدن يدخلونها ومن صلح من آبائهم أزواجهم وذرياتهم ... ... ... ... ... | ٢٣ | م الرعد | ١٣ |
| | جنات عدن يدخلونها تجري من تحتها الأنهار | ٣١ | ك النحل | ١٦ |
| | جنات عدن يدخلونها يحلون فيها من أساور من ذهب ولؤلؤا ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك فاطر | ٣٥ |
| يَدْخُلُوهَا: (٢) | أولئك ما كان لهم أن يدخلوها إلا خائفين | ١١٤ | م البقرة | ٢ |
| | لم يدخلوها وهم يطمعون ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك الأعراف | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| اُدْخُلِ: | قيل ادخل الجنة ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك يس | ٣٦ |
| اُدْخُلَا: | وقيل ادخلا النار مع الداخلين ... ... ... ... | ١٠ | م التحريم | ٦٦ |
| اُدْخُلُوا: | وإذ قلنا ادخلوا هذه القرية فكلوا منها حيث شئتم رغدا | ٥٨ | م البقرة | ٢ |
| (١٨) | وادخلوا الباب سجدا وقولوا حطة نغفر لكم خطاياكم | ٥٨ | م « | ٢ |
| | يا أيها الذين آمنوا ادخلوا في السلم كافة ... ... ... | ٢٠٨ | م « | ٢ |
| | وقلنا لهم ادخلوا الباب سجدا وقلنا لهم لا تعدوا في السبت | ١٥٤ | م النساء | ٤ |
| | يا قوم ادخلوا الأرض المقدسة التي كتب الله لكم | ٢١ | م المائدة | ٥ |
| | ادخلوا عليهم الباب فإذا دخلتموه فإنكم غالبون | ٢٣ | م « | ٥ |
| | قال ادخلوا في أمم قد خلت من قبلكم من الجن والإنس في النار ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | ادخلوا الجنة لا خوف عليكم ولا أنتم تحزنون | ٤٩ | ك « | ٧ |
| | وادخلوا الباب سجدا نغفر لكم خطيئاتكم ... ... | ١٦١ | ك « | ٧ |
| | لا تدخلوا من باب واحد وادخلوا من أبواب متفرقة | ٦٧ | ك يوسف | ١٢ |
| | وقال ادخلوا مصر إن شاء الله آمنين ... ... ... | ٩٩ | ك « | ١٢ |
| | فادخلوا أبواب جهنم خالدين فيها فلبئس مثوى المتكبرين | ٢٩ | ك النحل | ١٦ |
| | يقولون سلام عليكم ادخلوا الجنة بما كنتم تعملون... | ٣٢ | ك « | ١٦ |
| | قالت نملة يا أيها النمل ادخلوا مساكنكم ... ... | ١٨ | ك النمل | ٢٧ |
| | ولكن إذا دعيتم فادخلوا فإذا طعمتم فانتشروا | ٥٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | قيل ادخلوا أبواب جهنم خالدين فيها ... ... ... | ٧٢ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ادخلوا أبواب جهنم خالدين فيها فبئس مثوى المتكبرين | ٧٦ | ك غافر | ٤٠ |
| | ادخلوا الجنة أنتم وأزواجكم تحبرون ... ... ... | ٧٠ | ك الزخرف | ٤٣ |
| اُدْخُلُوهَا: | ادخلوها بسلام آمنين... ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك الحجر | ١٥ |
| (٣) | وقال لهم خزنتها سلام عليكم طبتم فادخلوها خالدين | ٧٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ادخلوها بسلام ذلك يوم الخلود ... ... ... ... | ٣٤ | ك ق | ٥٠ |
| اُدْخُلِي: | قيل لها ادخلي الصرح ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك النمل | ٢٧ |
| (٣) | ارجعي إلى ربك راضية مرضية . فادخلي في عبادي | ٢٩ | ك الفجر | ٨٩ |
| | وادخلي جنتي ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك « | ٨٩ |
| دُخِلَتْ: | ولو دخلت عليهم من أقطارها ثم سئلوا الفتنة لآتوها | ١٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| أَدْخَلْنَاهُ: | وأدخلناه في رحمتنا إنه من الصالحين ... ... | ٧٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| أَدْخَلْنَاهُمْ: (٢) | ولو أن أهل الكتاب آمنوا واتقوا لكفرنا عنهم سيئاتهم ولأدخلناهم جنات النعيم ... ... ... | ٦٥ | م المائدة | ٥ |
| | وأدخلناهم في رحمتنا إنهم من الصالحين... ... ... | ٨٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| لَأُدْخِلَنَّكُمْ: | ولأدخلنكم جنات تجري من تحتها الأنهار | ١٢ | م المائدة | ٥ |
| لَأُدْخِلَنَّهُمْ: | ولأدخلنهم جنات تجري من تحتها الأنهار | ١٩٥ | م آل عمران | ٣ |
| تُدْخِلِ: | ربنا إنك من تدخل النار فقد أخزيته ... ... | ١٩٢ | م « | ٣ |
| نُدْخِلْكُمْ: | إن تجتنبوا كبائر ما تنهون عنه نكفر عنكم سيئاتكم وندخلكم مدخلا كريما ... ... ... ... ... | ٣١ | م النساء | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| دَرَجَةٌ | ولهن مثل الذى عليهن بالمعروف وللرجال عليهن درجة | ٢٢٨ | م البقـرة | ٢ |
| (٤) | فضّل الله المجاهدين بأموالهم وأنفسهم على القاعدين درجة | ٩٥ | م النسـاء | ٤ |
| | الذين آمنوا وهاجروا وجاهدوا فى سبيل الله بأموالهم | | | |
| | وأنفسهم أعظم درجة عند الله ... ... ... ... | ٢٠ | م التـوبة | ٩ |
| | أولئك أعظم درجة من الذين أنفقوا من بعد وقاتلوا | ١٠ | م الحـديد | ٥٧ |
| دَرَجَاتٌ | منهم من كلم الله ورفع بعضهم درجات ... | ٢٥٣ | م البقـرة | ٢ |
| (١٤) | هم درجات عنـد الله والله بصير بما يعملون ... | ١٦٣ | م آل عمران | ٣ |
| | درجاتٍ منه ومغفرةً ورحمةً وكان الله غفورا رحيما | ٩٦ | م النسـاء | ٤ |
| | نرفع درجات من نشاء إن ربك حكيم عليم ... ... | ٨٣ | ك الأنعـام | ٦ |
| | ولكل درجاتٌ مما عملوا وما ربك بغافل عما يعملون | ١٣٢ | ك « | ٦ |
| | وهـو الذى جعلكم خلائف الأرض ورفع بعضكم | | | |
| | فوق بعض درجات ليبلوكم فيما آتاكم... ... ... | ١٦٥ | ك « | ٦ |
| | لهم درجات عند ربهم ومغفرة ورزق كريم ... ... | ٤ | م الأنفـال | ٨ |
| | نرفع درجات من نشاء وفوق كل ذى علم عليم ... | ٧٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | وللآخرة أكبر درجات وأكبر تفضيلا ... ... ... | ٢١ | ك الإسـراء | ١٧ |
| | فأولئك لهم الدرجات العلى ... ... ... ... ... | ٧٥ | ك طـه | ٢٠ |
| | رفيع الدرجات ذو العرش ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك غافـر | ٤٠ |
| | ورفعنا بعضهم فوق بعض درجات ليتخذ بعضهم بعضا سخريا | ٣٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ولكلٍّ درجات مما عملوا ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | يرفع الله الذين آمنوا منكم والذين أوتوا العلم درجات | ١١ | م المجادلة | ٥٨ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| مِدْرَارًا | وأرسلنا السماء عليهم مدرارا ... ... ... ... ... | ٦ | ك الأنعـام | ٦ |
| (٣) | ويا قوم استغفروا ربكم ثم توبوا إليـه يرسل السماء | | | |
| | عليكم مدرارا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك هـود | ١١ |
| | يرسل السماء عليكم مدرارا ... ... ... ... ... | ١١ | ك نـوح | ٧١ |
| دُرِّىٌّ | الزجاجة كأنها كوكب درّى يوقد من شجرة مباركة زيتونة | ٣٥ | م النـور | ٢٤ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| دَرَسْتَ | وكذلك نصرّف الآيات وليقولوا دَرَسْتَ ولنبينه | | | |
| | لقوم يعلمون ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٥ | ك الأنعـام | ٦ |
| دَرَسُوا | ألم يؤخذ عليهم ميثاق الكتاب أن لا يقولوا على | | | |
| | الله إلا الحق ودرسوا ما فيه ... ... ... ... | ١٦٩ | م الأعراف | ٧ |
| تَدْرُسُونَ | كونوا ربانيين بما كنتم تعلّمون الكتاب | | | |
| (٢) | وبما كنتم تدرسون ... ... ... ... ... ... | ٧٩ | م آل عمران | ٣ |
| | أم لكم كتاب فيه تدرسون... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك القـلم | ٦٨ |
| يَدْرُسُونَهَا | وما آتيناهم من كتب يدرسونها ... ... ... ... | ٤٤ | ك سـبأ | ٣٤ |
| دِرَاسَتِهِمْ | أن تقولوا إنما أنزل الكتاب على طائفتين | | | |
| | من قبلنا وإن كنا عن دراستهم لغافلين ... ... | ١٥٦ | ك الأنعـام | ٦ |
| إِدْرِيسَ | واذكر فى الكتاب إدريس إنه كان صديقا نبيا | ٥٦ | ك مـريم | ١٩ |
| (٢) | وإسماعيل وإدريس وذا الكفل كل من الصابرين | ٨٥ | ك الأنبيـاء | ٢١ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| أَدْرَكَهُ | حتى إذا أدركه الغرق قال آمنت أنه لا إله إلا | | | |
| | الذى آمنت به بنـوا إسرائيل ... ... ... ... | ٩٠ | ك يـونس | ١٠ |
| تُدْرِكَ | لا الشمس ينبغى لها أن تدرك القمر ولا الليل سابق النهار | ٤٠ | ك يـس | ٣٦ |
| تُدْرِكُهُ | لا تدركه الأبصار ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٣ | ك الأنعـام | ٦ |
| يُدْرِكُ | وهو يدرك الأبصار وهو اللطيف الخبير ... ... | ١٠٣ | ك « | ٦ |
| يُدْرِكْكُمُ | أينما تكونوا يدرككم الموت ولو كنتم فى بروج مشيدة | ٧٨ | م النسـاء | ٤ |
| يُدْرِكْهُ | ومن يخرج من بيته مهاجرا إلى الله ورسوله ثم يدركه | | | |
| | الموت فقد وقع أجره على الله ... ... ... ... | ١٠٠ | م « | ٤ |
| تَدَارَكَهُ | لولا أن تداركه نعمة من ربه لنبذ بالعراء وهو مذموم | ٤٩ | م القـلم | ٦٨ |
| أَدَّارَكَ | بل أدارك علمهم فى الآخرة بل هم فى شك منها | ٦٦ | ك النمـل | ٢٧ |
| ادَّارَكُوا | حتى إذا ادّاركوا فيها جميعا قالت أخراهم لأولاهم | | | |
| | ربنا هؤلاء أضلونا... ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك الأعراف | ٧ |
| الدَّرْكِ | إن المنافقين فى الدرك الأسفل من النار ولن تجد لهم نصيرا | ١٤٥ | م النسـاء | ٤ |
| دَرَكًا | فاضرب لهم طريقا فى البحر يبسا لا تخاف دركا ولا تخشى | ٧٧ | ك طـه | ٢٠ |
| لَمُدْرَكُونَ | فلما تراءا الجمعان قال أصحاب موسى إنا لمدركون | ٦١ | ك الشـعراء | ٢٦ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| دَرَاهِمَ | وشروه بثمن بخس دراهم معدودة ... ... ... | ٢٠ | ك يوسـف | ١٢ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| أَدْرِ | فيقول يا ليتنى لم أوت كتابيه . ولم أدر ما حسابيه | ٢٦ | ك الحـاقة | ٦٩ |
| أَدْرِى | وإن أدرى أقريب أم بعيد ما توعدون ... ... | ١٠٩ | ك الأنبيـاء | ٢١ |
| (٤) | وإن أدرى لعله فتنة لكم ومتاع إلى حين... ... ... | ١١١ | ك « | ٢١ |
| | قل ما كنت بدعا من الرسل وما أدرى ما يفعل بى ولا بكم | ٩ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | قل إن أدرى أقريب ما توعدون أم يجعل له ربى أمدا | ٢٥ | ك الجـن | ٧٢ |
| تَدْرُونَ | آباؤكم وأبناؤكم لا تدرون أيهم أقرب لكم نفعا | ١١ | م النسـاء | ٤ |
| تَدْرِى | وما تدرى نفس ما ذا تكسب غدا ... ... ... | ٣٤ | ك لقـمان | ٣١ |
| (٤) | وما تدرى نفس بأىّ أرض تموت ... ... ... ... | ٣٤ | ك « | ٣١ |
| | ما كنتَ تدرى ما الكتاب ولا الإيمان ولكن جعلناه | | | |
| | نورا نهدى به من نشاء من عبادنا ... ... ... | ٥٢ | ك الشـورى | ٤٢ |
| | لا تدرى لعل الله يحدث بعـد ذلك أمرا ... ... | ١ | م الطـلاق | ٦٥ |
| نَدْرِى | وإذا قيل إن وعد الله حق والساعة لا ريب فيها | | | |
| (٢) | قلتم ما ندرى ما الساعة ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك الجـاثية | ٤٥ |
| | وأنا لا ندرى أشر أريد بمن فى الأرض أم أراد بهم | | | |
| | ربهم رشـدا ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك الجـن | ٧٢ |
| أَدْرَاكَ | الحاقة . ما الحاقة . وما أدراك ما الحاقة ... | ٣ | ك الحـاقة | ٦٩ |
| (١٣) | سأصليه سقر . وما أدراك ما سقر ... ... ... | ٢٧ | ك المـدثر | ٧٤ |
| | وما أدراك ما يوم الفصل ... ... ... ... ... | ١٤ | ك المرسلات | ٧٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَدْرَاكَ | : وما أدراك ما يوم الدين ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الانفطار | ٨٢ |
| | ثم ما أدراك ما يوم الدين ... ... .. ... ... ... | ١٨ | ك « | ٨٢ |
| | وما أدراك ما سجين . كتاب مرقوم... ... ... ... | ٨ | ك المطففين | ٨٣ |
| | وما أدراك ما عليون . كتاب مرقوم ... ... ... | ١٩ | ك « | ٨٣ |
| | وما أدراك ما الطارق . النجم الثاقب ... ... ... | ٢ | ك الطارق | ٨٦ |
| | وما أدراك ما العقبة . فك رقبة ... ... ... ... | ١٢ | ك البلد | ٩٠ |
| | وما أدراك ما ليلة القدر . ليلة القدر خير من ألف شهر | ٢ | ك القدر | ٩٧ |
| | القارعة . ما القارعة . وما أدراك ما القارعة... ... | ٣ | ك القارعة | ١٠١ |
| | فأمه هاوية . وما أدراك ما هيه . نار حامية... ... | ١٠ | ك « | ١٠١ |
| | وما أدراك ما الحطمة . نار الله الموقدة ... ... | ٥ | ك الهمزة | ١٠٤ |
| أَدْرَاكُمْ | : قل لو شاء الله ما تلوته عليكم ولا أدراكم به | ١٦ | ك يونس | ١٠ |
| يُدْرِيكَ | : وما يدريك لعل الساعة تكون قريبا ... ... | ٦٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| (٣) | وما يدريك لعل الساعة قريب ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الشورى | ٤٢ |
| | عبس وتولى . أن جاءه الأعمى . وما يدريك لعله يزكى | ٣ | ك عبس | ٨٠ |
| | ✦✦✦ | | | |
| دُسُرٍ | : وحملناه على ذات ألواح ودسر ... ... ... ... | ١٣ | ك القمر | ٥٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| يَدُسُّهُ | . أيمسكه على هون أم يدسه في التراب... ... ... | ٥٩ | ك النحل | ١٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| دَسَّاهَا | : قد أفلح من زكاها . وقد خاب من دساها... ... | ١٠ | ك الشمس | ٩١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| يَدُعُّ | : أرأيت الذي يكذب بالدين . فذلك الذي يدع اليتيم | ٢ | ك الماعون | ١٠٧ |
| يُدَعُّونَ | : يوم يدعون إلى نار جهنم دعا ... ... ... ... | ١٣ | ك الطور | ٥٢ |
| دَعًّا | : يوم يدعون إلى نار جهنم دعا ... ... ... ... | ١٣ | ك « | ٥٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| دَعَا | : هنالك دعا زكريا ربه قال رب هب لي من لدنك ذرية طيبة | ٣٨ | م آل عمران | ٣ |
| (٥) | وإذا مس الإنسان ضر دعا ربه منيبا إليه ... ... | ٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ومن أحسن قولا ممن دعا إلى الله وعمل صالحا وقال إنني من المسلمين ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك فصلت | ٤١ |
| | فدعا ربه أن هؤلاء قوم مجرمون ... ... ... ... | ٢٢ | ك الدخان | ٤٤ |
| | فدعا ربه أني مغلوب فانتصر ... ... ... ... ... | ١٠ | ك القمر | ٥٤ |
| دَعَاكُمْ | : يا أيها الذين آمنوا استجيبوا لله وللرسول إذا دعاكم | | | |
| (٢) | لما يحييكم... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | م الأنفال | ٨ |
| | ثم إذا دعاكم دعوة من الأرض إذا أنتم تخرجون | ٢٥ | ك الروم | ٣٠ |
| دَعَانِ | : وإذا سألك عبادي عني فإني قريب أجيب دعوة الداع إذا دعان ... ... ... ... ... ... | ١٨٦ | م البقرة | ٢ |
| دَعَانَا | : وإذا مس الإنسان الضر دعانا لجنبه أو قاعدا أو قائما | ١٢ | ك يونس | ١٠ |
| (٢) | فإذا مس الإنسان ضر دعانا ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك الزمر | ٣٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| دَعَاهُ | : أمن يجيب المضطر إذا دعاه ويكشف السوء... ... | ٦٢ | ك النمل | ٢٧ |
| دَعَوَا | : فلما أثقلت دعوا الله ربهما لئن آتيتنا صالحا لنكونن من الشاكرين ... ... ... ... ... ... ... | ١٨٩ | ك الأعراف | ٧ |
| دَعَوُا | : دعوا الله مخلصين له الدين لئن أنجيتنا من هذه لنكونن | | | |
| (٦) | من الشاكرين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك يونس | ١٠ |
| | وتخر الجبال هدا . أن دعوا للرحمن ولدا ... ... | ٩١ | ك مريم | ١٩ |
| | وإذا ألقوا منها مكانا ضيقا مقرنين دعوا هنالك ثبورا | ١٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | فإذا ركبوا في الفلك دعوا الله مخلصين له الدين | ٦٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وإذا مس الناس ضر دعوا ربهم منيبين إليه ... ... | ٣٣ | ك الروم | ٣٠ |
| | وإذا غشيهم موج كالظلل دعوا الله مخلصين له الدين | ٣٢ | ك لقمان | ٣١ |
| دَعَوْتُ | : قال رب إني دعوت قومي ليلا ونهارا ... ... | ٥ | ك نوح | ٧١ |
| دَعْوَتُكُمْ | : وما كان لي عليكم من سلطان إلا أن دعوتكم فاستجبتم لي | ٢٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| أَدَعَوْتُمُوهُمْ | : سواء عليكم أدعوتموهم أم أنتم صامتون | ١٩٣ | ك الأعراف | ٧ |
| دَعَوْتُهُمْ | : وإني كلما دعوتهم لتغفر لهم جعلوا أصابعهم | | | |
| (٢) | في آذانهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك نوح | ٧١ |
| | ثم إني دعوتهم جهارا ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك « | ٧١ |
| دَعَوْهُمْ | : ويوم يقول نادوا شركائي الذين زعمتم فدعوهم | | | |
| (٢) | فلم يستجيبوا لهم ... ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك الكهف | ١٨ |
| | وقيل ادعوا شركاءكم فدعوهم فلم يستجيبوا لهم... ... | ٦٤ | ك القصص | ٢٨ |
| أَدْعُوا | : قل هذه سبيلي أدعوا إلى الله ... ... ... | ١٠٨ | ك يوسف | ١٢ |
| (٤) | إليه أدعوا وإليه مآب... ... ... ... ... ... | ٣٦ | م الرعد | ١٣ |
| | وأعتزلكم وما تدعون من دون الله وأدعوا ربي | ٤٨ | ك مريم | ١٩ |
| | قل إنما أدعوا ربي ولا أشرك به أحدا ... ... ... | ٢٠ | ك الجن | ٧٢ |
| أَدْعُوكُمْ | : ويا قوم ما لي أدعوكم إلى النجاة وتدعونني إلى النار | ٤١ | ك غافر | ٤٠ |
| (٢) | تدعونني لأكفر بالله وأشرك به ما ليس لي به علم | | | |
| | وأنا أدعوكم إلى العزيز الغفار ... ... ... ... | ٤٢ | ك « | ٤٠ |
| تَدْعُ | : ولا تدع من دون الله ما لا ينفعك ولا يضرك | ١٠٦ | ك يونس | ١٠ |
| (٤) | فلا تدع مع الله إلها آخر فتكون من المعذبين ... ... | ٢١٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | ولا تدع مع الله إلها آخر لا إله إلا هو ... ... | ٨٨ | ك القصص | ٢٨ |
| | وإن تدع مثقلة إلى حملها لا يحمل منه شيء ولو كان ذا قربى | ١٨ | ك فاطر | ٣٥ |
| تَدْعُهُمْ | : وإن تدعهم إلى الهدى فلن يهتدوا إذا أبدا | ٥٧ | ك الكهف | ١٨ |
| تَدْعُوا | : أيا ما تدعوا فله الأسماء الحسنى ... ... ... ... | ١١٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٥) | لا تدعوا اليوم ثبورا واحدا وادعوا ثبورا كثيرا | ١٤ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | فلا تهنوا وتدعوا إلى السلم وأنتم الأعلون والله معكم | ٣٥ | م محمد | ٤٧ |
| | كلا إنها لظى . نزاعة للشوى . تدعوا من أدبر وتولى | ١٧ | ك المعارج | ٧٠ |
| | وأن المساجد لله فلا تدعوا مع الله أحدا ... ... | ١٨ | ك الجن | ٧٢ |
| تَدْعُونَ | : أغير الله تدعون إن كنتم صادقين ... ... ... | ٤٠ | ك الأنعام | ٦ |
| (١٧) | بل إياه تدعون ... ... ... ... ... ... ... | ٤١ | ك « | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَدْعُونَ: | فيكشف ما تدعون إليه إن شاء وتنسون ما تشركون | ٤١ | ك الأنعام | ٦ |
| | قل إني نهيت أن أعبد الذين تدعون من دون الله | ٥٦ | ك « | ٦ |
| | حتى إذا جاءتهم رسلنا يتوفونهم قالوا أين ما كنتم تدعون من دون الله ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | إن الذين تدعون من دون الله عباد أمثالكم ... ... | ١٩٤ | ك « | ٧ |
| | والذين تدعون من دونه لا يستطيعون نصركم ... ... | ١٩٧ | ك « | ٧ |
| | وإذا مسكم الضر في البحر ضل من تدعون إلا إياه | ٦٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وأعتزلكم وما تدعون من دون الله وأدعوا ربي | ٤٨ | ك مريم | ١٩ |
| | إن الذين تدعون من دون الله لن يخلقوا ذبابا ولو اجتمعوا له ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | م الحج | ٢٢ |
| | هل يسمعونكم إذ تدعون ... ... ... ... ... ... | ٧٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | والذين تدعون من دونه ما يملكون من قطمير ... ... | ١٣ | ك فاطر | ٣٥ |
| | قل أرأيتم شركاءكم الذين تدعون من دون الله أروني ماذا خلقوا من الأرض ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك « | ٣٥ |
| | أتدعون بعلا وتذرون أحسن الخالقين ... ... ... | ١٢٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| | قل أفرأيتم ما تدعون من دون الله إن أرادني الله بضر هل هن كاشفات ضره ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| | قل إني نهيت أن أعبد الذين تدعون من دون الله لما جاءني البينات من ربي ... ... ... ... ... | ٦٦ | ك غافر | ٤٠ |
| | قل أرأيتم ما تدعون من دون الله أروني ماذا خلقوا من الأرض ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| تَدْعُونَا: (٢) | أتنهانا أن نعبد ما يعبد آباؤنا وإننا لفي شك مما تدعونا إليه مريب ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك هود | ١١ |
| | وقالوا قلوبنا في أكنة مما تدعونا إليه وفي آذاننا وقر | ٥ | ك فصلت | ٤١ |
| تَدْعُونَنَا: | وقالوا إنا كفرنا بما أرسلتم به وإنا لفي شك مما تدعوننا إليه مريب ... ... ... ... ... | ٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| تَدْعُونَنِي: (٣) | ويا قوم مالي أدعوكم إلى النجاة وتدعونني إلى النار ... ... ... ... ... ... ... | ٤١ | ك غافر | ٤٠ |
| | تدعونني لأكفر بالله وأشرك به ما ليس لي به علم | ٤٢ | ك « | ٤٠ |
| | لا جرم أنما تدعونني إليه ليس له دعوة في الدنيا ولا في الآخرة ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك « | ٤٠ |
| تَدْعُونَهُ: | قل من ينجيكم من ظلمات البر والبحر تدعونه تضرعا وخفية ... ... ... ... ... ... | ٦٣ | ك الأنعام | ٦ |
| تَدْعُوهُمْ: | وإن تدعوهم إلى الهدى لا يتبعوكم ... ... ... | ١٩٣ | ك الأعراف | ٧ |
| (٥) | وإن تدعوهم إلى الهدى لا يسمعوا ... ... ... | ١٩٨ | ك « | ٧ |
| | وإنك لتدعوهم إلى صراط مستقيم ... ... ... ... | ٧٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | إن تدعوهم لا يسمعوا دعاءكم ولو سمعوا ما استجابوا لكم | ١٤ | ك فاطر | ٣٥ |
| | كبر على المشركين ما تدعوهم إليه ... ... ... ... | ١٣ | ك الشورى | ٤٢ |
| نَدْعُ: (٢) | فمن حاجك فيه من بعد ما جاءك من العلم فقل تعالوا ندع أبناءنا وأبناءكم ... ... ... ... ... | ٦١ | م آل عمران | ٣ |
| نَدْعُ: | وليدع ناديه . سندع الزبانية ... ... ... ... ... | ١٨ | ك العلق | ٩٦ |
| نَدْعُوا: | قل أندعوا من دون الله ما لا ينفعنا ولا يضرنا | ٧١ | ك الأنعام | ٦ |
| (٤) | قالوا ربنا هؤلاء شركاؤنا الذين كنا ندعوا من دونك | ٨٦ | ك النحل | ١٦ |
| | يوم ندعوا كل أناس بإمامهم ... ... ... ... ... | ٧١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | قالوا ضلوا عنا بل لم نكن ندعوا من قبل شيئا ... ... | ٧٤ | ك غافر | ٤٠ |
| نَدْعُوَا: | لن ندعوا من دونه إلها لقد قلنا إذا شططا ... ... | ١٤ | ك الكهف | ١٨ |
| نَدْعُوهُ: | إنا كنا من قبل ندعوه إنه هو البر الرحيم ... ... | ٢٨ | ك الطور | ٥٢ |
| يَدْعُ: | ويدع الإنسان بالشر دعاءه بالخير وكان الإنسان عجولا | ١١ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٥) | ومن يدع مع الله إلها آخر لا برهان له به فإنما حسابه عند ربه | ١١٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وقال فرعون ذروني أقتل موسى وليدع ربه ... .. | ٢٦ | ك غافر | ٤٠ |
| | فتول عنهم يوم يدع الداع إلى شيء نكر ... ... | ٦ | ك القمر | ٥٤ |
| | فليدع ناديه . سندع الزبانية ... ... ... ... ... | ١٧ | ك العلق | ٩٦ |
| يَدْعُنَا: | فلما كشفنا عنه ضره مر كأن لم يدعنا إلى ضر مسه | ١٢ | ك يونس | ١٠ |
| يَدْعُوا: (٨) | أولئك يدعون إلى النار والله يدعوا إلى الجنة والمغفرة بإذنه ... ... ... ... ... ... | ٢٢١ | م البقرة | ٢ |
| | والله يدعوا إلى دار السلام ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك يونس | ١٠ |
| | يدعوا من دون الله ما لا يضره وما لا ينفعه ... ... | ١٢ | م الحج | ٢٢ |
| | يدعوا لمن ضره أقرب من نفعه لبئس المولى ولبئس العشير | ١٣ | م « | ٢٢ |
| | إنما يدعوا حزبه ليكونوا من أصحاب السعير ... ... | ٦ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ثم إذا خوله نعمة منه نسي ما كان يدعوا إليه من قبل | ٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ومن أضل ممن يدعوا من دون الله من لا يستجيب له إلى يوم القيامة ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | وأما من أوتي كتابه وراء ظهره . فسوف يدعوا ثبورا | ١١ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| يَدْعُوكَ: | قالت إن أبي يدعوك ليجزيك أجر ما سقيت لنا | ٢٥ | ك القصص | ٢٨ |
| يَدْعُوكُمْ: (٩) | إذ تصعدون ولا تلوون على أحد والرسول يدعوكم في أخراكم ... ... ... ... ... ... | ١٥٣ | م آل عمران | ٣ |
| | يدعوكم ليغفر لكم من ذنوبكم ويؤخركم إلى أجل مسمى | ١٠ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | يوم يدعوكم فتستجيبون بحمده وتظنون إن لبثتم إلا قليلا | ٥٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وما لكم لا تؤمنون بالله والرسول يدعوكم لتؤمنوا بربكم | ٨ | م الحديد | ٥٧ |
| يَدْعُونَ: (٢٣) | أولئك يدعون إلى النار ... ... ... ... ... | ٢٢١ | م البقرة | ٢ |
| | ولتكن منكم أمة يدعون إلى الخير ويأمرون بالمعروف | ١٠٤ | م آل عمران | ٣ |
| | إن يدعون من دونه إلا إناثا ... ... ... ... ... | ١١٧ | م النساء | ٤ |
| | وإن يدعون إلا شيطانا مريدا ... ... ... ... ... | ١١٧ | م « | ٤ |
| | ولا تطرد الذين يدعون ربهم بالغداة والعشي يريدون وجهه ... ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | ولا تسبوا الذين يدعون من دون الله فيسبوا الله عدوا بغير علم ... ... ... ... ... ... | ١٠٨ | ك « | ٦ |
| | وما يتبع الذين يدعون من دون الله شركاء ... ... | ٦٦ | ك يونس | ١٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَدْعُونَ: | فما أغنت عنهم آلهتهم التي يدعون من دون الله من شيء | ١٠١ | ك هـود | ١١ |
| | والذين يدعون من دونه لا يستجيبون لهم بشيء إلا كباسط كفيه إلى الماء ليبلغ فاه ... ... ... | ١٤ | م الرعـد | ١٣ |
| | والذين يدعون من دون الله لا يخلقون شيئا وهم يخلقون | ٢٠ | ك النحل | ١٦ |
| | أولئك الذين يدعون يبتغون إلى ربهم الوسيلة أيهم أقرب | ٥٧ | م الإسراء | ١٧ |
| | واصبر نفسك مع الذين يدعون ربهم بالغداة والعشي يريدون وجهه... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م الكهف | ١٨ |
| | وأن ما يدعون من دونه هو الباطل ... ... ... | ٦٢ | م الحج | ٢٢ |
| | والذين لا يدعون مع الله إلها آخر ولا يقتلون النفس التي حرم الله إلا بالحق ولا يزنون ... ... ... | ٦٨ | م الفرقان | ٢٥ |
| | ويجعلهم أئمة يدعون إلى النار ويوم القيامة لا ينصرون | ٤١ | ك القصص | ٢٨ |
| | إن الله يعلم ما يدعون من دونه من شيء ... ... ... | ٤٢ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ذلك بأن الله هو الحق وأن ما يدعون من دونه الباطل | ٣٠ | ك لقمان | ٣١ |
| | تتجافى جنوبهم عن المضاجع يدعون ربهم خوفا وطمعا | ١٦ | م السجدة | ٣٢ |
| | متكئين فيها يدعون فيها بفاكهة كثيرة وشراب ... | ٥١ | ك ص | ٣٨ |
| | والله يقضي بالحق والذين يدعون من دونه لا يقضون بشيء | ٢٠ | ك غافر | ٤٠ |
| | وضل عنهم ما كانوا يدعون من قبل وظنوا ما لهم من محيص | ٤٨ | ك فصلت | ٤١ |
| | ولا يملك الذين يدعون من دونه الشفاعة إلا من شهد بالحق | ٨٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | يدعون فيها بكل فاكهة آمنين ... ... ... ... | ٥٥ | ك الدخان | ٤٤ |
| يَدْعُونَنَا: | إنهم كانوا يسارعون في الخيرات ويدعوننا رغبا ورهبا | ٩٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| يَدْعُونَنِي: | قال رب السجن أحب إلي مما يدعونني إليه ... | ٣٣ | ك يوسف | ١٢ |
| يَدْعُونَهُ: | له أصحاب يدعونه إلى الهدى ... ... ... | ٧١ | ك الأنعام | ٦ |
| يَدْعُوهُ: | وأنه لما قام عبد الله يدعوه كادوا يكونون عليه لبدا | ١٩ | ك الجن | ٧٢ |
| يَدْعُوهُمْ: | أولو كان الشيطان يدعوهم إلى عذاب السعير ... | ٢١ | ك لقمان | ٣١ |
| آدْعُ: | فادع لنا ربك يخرج لنا مما تنبت الأرض ... ... | ٦١ | م البقرة | ٢ |
| (١٠) | قالوا ادع لنا ربك يبين لنا ما هي ... ... ... | ٦٨ | م » | ٢ |
| | قالوا ادع لنا ربك يبين لنا ما لونها ... ... ... | ٦٩ | م » | ٢ |
| | قالوا ادع لنا ربك يبين لنا ما هي إن البقر تشابه علينا | ٧٠ | م » | ٢ |
| | ولما وقع عليهم الرجز قالوا يا موسى ادع لنا ربك بما عهد عندك ... ... ... ... ... ... | ١٣٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | ادع إلى سبيل ربك بالحكمة والموعظة الحسنة | ١٢٥ | ك النحل | ١٦ |
| | فلا ينازعنك في الأمر وادع إلى ربك ... ... ... | ٦٧ | م الحج | ٢٢ |
| | ولا يصدنك عن آيات الله بعد إذ أنزلت إليك وادع إلى ربك ... ... ... ... ... ... | ٨٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | فلذلك فادع واستقم كما أمرت ولا تتبع أهواءهم | ١٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| | وقالوا يا أيه الساحر ادع لنا ربك بما عهد عندك | ٤٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| آدْعُهُنَّ: | ثم اجعل على كل جبل منهن جزءا ثم ادعهن يأتينك سعيا ... ... ... ... ... ... | ٢٦٠ | م البقرة | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| آدْعُوا: | فأتوا بسورة من مثله وادعوا شهداءكم من دون الله | | | |
| (١٤) | إن كنتم صادقين ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | م البقرة | ٢ |
| | ادعوا ربكم تضرعا وخفية إنه لا يحب المعتدين ... | ٥٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | قل ادعوا شركاءكم ثم كيدون فلا تنظرون ... ... | ١٩٥ | ك » | ٧ |
| | قل فأتوا بسورة مثله وادعوا من استطعتم من دون الله إن كنتم صادقين ... ... ... ... | ٣٨ | ك يونس | ١٠ |
| | قل فأتوا بعشر سور مثله مفتريات وادعوا من استطعتم من دون الله ... ... ... ... ... | ١٣ | ك هود | ١١ |
| | قل ادعوا الذين زعمتم من دونه فلا يملكون كشف الضر عنكم ولا تحويلا ... ... ... ... ... | ٥٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| | قل ادعوا الله... ... ... ... ... ... ... | ١١٠ | ك » | ١٧ |
| | أو ادعوا الرحمن أيا ما تدعوا فله الأسماء الحسنى | ١١٠ | ك » | ١٧ |
| | لا تدعوا اليوم ثبورا واحدا وادعوا ثبورا كثيرا | ١٤ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وقيل ادعوا شركاءكم فدعوهم فلم يستجيبوا لهم... ... | ٦٤ | ك القصص | ٢٨ |
| | قل ادعوا الذين زعمتم من دون الله ... ... ... | ٢٢ | ك سبأ | ٣٤ |
| | فادعوا الله مخلصين له الدين ولو كره الكافرون | ١٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | وقال الذين في النار لخزنة جهنم ادعوا ربكم يخفف عنا يوما من العذاب ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك » | ٤٠ |
| | قالوا فادعوا وما دعاء الكافرين إلا في ضلال... ... | ٥٠ | ك » | ٤٠ |
| آدْعُونِي: | وقال ربكم ادعوني أستجب لكم ... ... ... | ٦٠ | ك » | ٤٠ |
| آدْعُوهُ: | وادعوه مخلصين له الدين كما بدأكم تعودون... ... | ٢٩ | ك الأعراف | ٧ |
| (٤) | ولا تفسدوا في الأرض بعد إصلاحها وادعوه خوفا وطمعا | ٥٦ | ك » | ٧ |
| | ولله الأسماء الحسنى فادعوه بها ... ... ... ... | ١٨٠ | ك » | ٧ |
| | هو الحي لا إله إلا هو فادعوه مخلصين له الدين ... | ٦٥ | ك غافر | ٤٠ |
| آدْعُوهُمْ: | إن الذين تدعون من دون الله عباد أمثالكم | | | |
| (٢) | فادعوهم فليستجيبوا لكم ... ... ... ... | ١٩٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | ادعوهم لآبائهم هو أقسط عند الله... ... ... ... | ٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| دُعُوا: | ولا يأب الشهداء إذا ما دعوا ... ... ... ... | ٢٨٢ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | وإذا دعوا إلى الله ورسوله ليحكم بينهم إذا فريق منهم معرضون ... ... ... ... ... ... | ٤٨ | م النور | ٢٤ |
| | إنما كان قول المؤمنين إذا دعوا إلى الله ورسوله ليحكم بينهم أن يقولوا سمعنا وأطعنا ... ... | ٥١ | م » | ٢٤ |
| دُعِيَ: | ذلكم بأنه إذا دعي الله وحده كفرتم ... ... ... | ١٢ | ك غافر | ٤٠ |
| دُعِيتُمْ: | ولكن إذا دعيتم فادخلوا فإذا طعمتم فانتشروا | ٥٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| تُدْعَى: | كل أمة تدعى إلى كتابها اليوم تجزون ما كنتم تعملون | ٢٨ | ك الجاثية | ٤٥ |
| تُدْعَوْنَ: | لمقت الله أكبر من مقتكم أنفسكم إذ تدعون | | | |
| (٣) | إلى الإيمان فتكفرون ... ... ... ... ... | ١٠ | ك غافر | ٤٠ |
| | ها أنتم هؤلاء تدعون لتنفقوا في سبيل الله فمنكم من يبخل | ٣٨ | م محمد | ٤٧ |
| | قل للمخلفين من الأعراب ستدعون إلى قوم أولي بأس شديد | ١٦ | م الفتح | ٤٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| دَكَّةً | وحملت الأرض والجبال فدكتا دكة واحدة ... ... | ١٤ | ك الحاقة | ٦٩ |
| دَكَّاءَ | فإذا جاء وعد ربي جعله دكاء ... ... ... ... | ٩٨ | م الكهف | ١٨ |
| ✦✦✦ | | | | |
| دُلُوكِ | أقم الصلاة لدلوك الشمس إلى غسق الليل وقرآن الفجر | ٧٨ | م الإسراء | ١٧ |
| ✦✦✦ | | | | |
| دَلَّهُمْ | ما دلهم على موته إلا دابة الأرض تأكل منسأته | ١٤ | ك سبأ | ٣٤ |
| أَدُلُّكَ | قال يآدم هل أدلك على شجرة الخلد وملك لا يبلى | ١٢٠ | ك طه | ٢٠ |
| أَدُلُّكُمْ | إذ تمشي أختك فتقول هل أدلكم على من يكفله | ٤٠ | ك « | ٢٠ |
| (٣) | هل أدلكم على أهل بيت يكفلونه لكم ... ... ... | ١٢ | ك القصص | ٢٨ |
| | يأيها الذين آمنوا هل أدلكم على تجارة تنجيكم من عذاب أليم | ١٠ | م الصف | ٦١ |
| نَدُلُّكُمْ | هل ندلكم على رجل ينبئكم إذا مزقتم كل ممزق | ٧ | ك سبأ | ٣٤ |
| دَلِيلًا | ولو شاء لجعله ساكنا ثم جعلنا الشمس عليه دليلا | ٤٥ | ك الفرقان | ٢٥ |
| ✦✦✦ | | | | |
| فَدَلَّاهُمَا | فدلاهما بغرور فلما ذاقا الشجرة بدت لهما سوآتهما | ٢٢ | ك الأعراف | ٧ |
| فَأَدْلَى | وجاءت سيارة فأرسلوا واردهم فأدلى دلوه ... | ١٩ | ك يوسف | ١٢ |
| تُدْلُوا | ولا تأكلوا أموالكم بينكم بالباطل وتدلوا بها إلى الحكام | ١٨٨ | م البقرة | ٢ |
| تَدَلَّى | ثم دنا فتدلى . فكان قاب قوسين أو أدنى... ... | ٨ | ك النجم | ٥٣ |
| دَلْوَهُ | وجاءت سيارة فأرسلوا واردهم فأدلى دلوه ... ... | ١٩ | ك يوسف | ١٢ |
| ✦✦✦ | | | | |
| دَمْدَمَ | فكذبوه فعقروها فدمدم عليهم ربهم بذنبهم فسواها | ١٤ | ك الشمس | ٩١ |
| ✦✦✦ | | | | |
| دَمَّرَ | دمر الله عليهم وللكافرين أمثالها ... ... ... ... | ١٠ | م محمد | ٤٧ |
| دَمَّرْنَا | ودمرنا ما كان يصنع فرعون وقومه وما كانوا يعرشون | ١٣٧ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | ثم دمرنا الآخرين . وأمطرنا عليهم مطرا ... ... | ١٧٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | ثم دمرنا الآخرين . وإنكم لتمرون عليهم مصبحين | ١٣٦ | ك الصافات | ٣٧ |
| دَمَّرْنَاهَا | أمرنا مترفيها ففسقوا فيها فحق عليها القول | | | |
| | فدمرناها تدميرا ... ... ... ... ... ... | ١٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| دَمَّرْنَاهُمْ | فقلنا اذهبا إلى القوم الذين كذبوا بآياتنا | | | |
| (٢) | فدمرناهم تدميرا ... ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | فانظر كيف كان عاقبة مكرهم أنا دمرناهم وقومهم أجمعين | ٥١ | ك النمل | ٢٧ |
| تُدَمِّرُ | تدمر كل شيء بأمر ربها فأصبحوا لا يرى إلا مساكنهم | ٢٥ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| تَدْمِيرًا | أمرنا مترفيها ففسقوا فيها فحق عليها القول | | | |
| (٢) | فدمرناها تدميرا ... ... ... ... ... ... | ١٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فقلنا اذهبا إلى القوم الذين كذبوا بآياتنا فدمرناهم تدميرا | ٣٦ | ك الفرقان | ٢٥ |
| ✦✦✦ | | | | |
| الدَّمْعِ | وإذا سمعوا ما أنزل إلى الرسول ترى أعينهم | | | |
| (٢) | تفيض من الدمع مما عرفوا من الحق ... ... | ٨٣ | م المائدة | ٥ |
| الدَّمْعِ | تولوا وأعينهم تفيض من الدمع حزنا ألا يجدوا | | | |
| | ما ينفقون... ... ... ... ... ... ... ... | ٩٢ | م التوبة | ٩ |
| ✦✦✦ | | | | |
| يَدْمَغُهُ | بل نقذف بالحق على الباطل فيدمغه فإذا هو زاهق | ١٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| ✦✦✦ | | | | |
| دَمٌ | إنما حرم عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما أهل به لغير الله | ١٧٣ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | حرمت عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما أهل لغير الله به | ٣ | م المائدة | ٥ |
| | فأرسلنا عليهم الطوفان والجراد والقمل والضفادع | | | |
| | والدم آيات مفصلات... ... ... ... ... ... | ١٣٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | وجاءوا على قميصه بدم كذب قال بل سولت لكم أنفسكم أمرا | ١٨ | ك يوسف | ١٢ |
| | نسقيكم مما في بطونه من بين فرث ودم لبنا خالصا | | | |
| | سائغا للشاربين ... ... ... ... ... ... | ٦٦ | ك النحل | ١٦ |
| | إنما حرم عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما أهل لغير الله به | ١١٥ | ك « | ١٦ |
| دَمًا | إلا أن يكون ميتة أو دما مسفوحا أو لحم خنزير فإنه رجس | ١٤٥ | ك الأنعام | ٦ |
| الدِّمَاءَ | قالوا أتجعل فيها من يفسد فيها ويسفك الدماء | | | |
| | ونحن نسبح بحمدك ونقدس لك ... ... ... ... | ٣٠ | م البقرة | ٢ |
| دِمَاءَكُمْ | وإذ أخذنا ميثاقكم لا تسفكون دماءكم ولا تخرجون | | | |
| | أنفسكم من دياركم... ... ... ... ... ... | ٨٤ | م « | ٢ |
| دِمَاؤُهَا | لن ينال الله لحومها ولا دماؤها ولكن يناله التقوى منكم | ٣٧ | م الحج | ٢٢ |
| ✦✦✦ | | | | |
| بِدِينَارٍ | ومنهم من إن تأمنه بدينار لا يؤده إليك إلا ما دمت | | | |
| | عليه قائما... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٥ | م آل عمران | ٣ |
| ✦✦✦ | | | | |
| دَنَا | ثم دنا فتدلى . فكان قاب قوسين أو أدنى ... ... | ٨ | ك النجم | ٥٣ |
| يُدْنِينَ | يأيها النبي قل لأزواجك وبناتك ونساء المؤمنين | | | |
| | يدنين عليهن من جلابيبهن ... ... ... ... ... | ٥٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| دَانٍ | متكئين على فرش بطائنها من إستبرق وجنى الجنتين دان | ٥٤ | م الرحمن | ٥٥ |
| دَانِيَةٌ | ومن النخل من طلعها قنوان دانية وجنات من أعناب | ٩٩ | ك الأنعام | ٦ |
| (٣) | في جنة عالية . قطوفها دانية ... ... ... ... | ٢٣ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | ودانية عليهم ظلالها وذللت قطوفها تذليلا... ... ... | ١٤ | م الإنسان | ٧٦ |
| أَدْنَى | قال أتستبدلون الذي هو أدنى بالذي هو خير | ٦١ | م البقرة | ٢ |
| (١٢) | ذلكم أقسط عند الله وأقوم للشهادة وأدنى ألا ترتابوا | ٢٨٢ | م « | ٢ |
| | ذلك أدنى ألا تعولوا ... ... ... ... ... ... | ٣ | م النساء | ٤ |
| | ذلك أدنى أن يأتوا بالشهادة على وجهها ... ... ... | ١٠٨ | م المائدة | ٥ |
| | فخلف من بعدهم خلف ورثوا الكتاب يأخذون | | | |
| | عرض هذا الأدنى... ... ... ... ... ... ... | ١٦٩ | م الأعراف | ٧ |
| | غلبت الروم . في أدنى الأرض وهم من بعد غلبهم سيغلبون | ٣ | ك الروم | ٣٠ |
| | ولنذيقنهم من العذاب الأدنى دون العذاب الأكبر | ٢١ | ك السجدة | ٣٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَدْنَى: | ذلك أدنى أن تقر أعينهن ولا يحزنَّ ويرضين بما آتيتهن كلهن ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ذلك أدنى أن يعرفن فلا يؤذين ... ... ... ... | ٥٩ | م « | ٣٣ |
| | فكان قاب قوسين أو أدنى... ... ... ... ... ... | ٩ | ك النجم | ٥٣ |
| | ولا أدنى من ذلك ولا أكثر إلا هو معهم أين ما كانوا | ٧ | م المجادلة | ٥٨ |
| | إن ربك يعلم أنك تقوم أدنى من ثلثي الليل ونصفه وثلثه | ٢٠ | م المزمل | ٧٣ |
| الدُّنْيَا: | فما جزاء من يفعل ذلك منكم إلا خزى فى الحياة الدنيا | ٨٥ | م البقرة | ٢ |
| | (١١٥) أولئك الذين اشتروا الحياة الدنيا بالآخرة ... ... | ٨٦ | م « | ٢ |
| | لهم فى الدنيا خزى ولهم فى الآخرة عذاب عظيم... ... | ١١٤ | م « | ٢ |
| | ولقد اصطفيناه فى الدنيا وإنه فى الآخرة لمن الصالحين | ١٣٠ | م « | ٢ |
| | فمن الناس من يقول ربنا آتنا فى الدنيا وماله فى الآخرة من خلاق ... ... ... ... ... ... | ٢٠٠ | م « | ٢ |
| | ومنهم من يقول ربنا آتنا فى الدنيا حسنة وفى الآخرة حسنة وقنا عذاب النار ... ... ... ... | ٢٠١ | م « | ٢ |
| | ومن الناس من يعجبك قوله فى الحياة الدنيا ويشهد الله على ما فى قلبه ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠٤ | م « | ٢ |
| | زين للذين كفروا الحياة الدنيا ويسخرون من الذين آمنوا | ٢١٢ | م « | ٢ |
| | فأولئك حبطت أعمالهم فى الدنيا والآخرة ... ... | ٢١٧ | م « | ٢ |
| | فى الدنيا والآخرة ويسئلونك عن اليتامى قل إصلاح لهم خير | ٢٢٠ | م « | ٢ |
| | ذلك متاع الحياة الدنيا والله عنده حسن المآب | ١٤ | م آل عمران | ٣ |
| | أولئك الذين حبطت أعمالهم فى الدنيا والآخرة | ٢٢ | م « | ٣ |
| | اسمه المسيح عيسى ابن مريم وجيها فى الدنيا والآخرة | ٤٥ | م « | ٣ |
| | فأما الذين كفروا فأعذبهم عذابا شديدا فى الدنيا والآخرة وما لهم من ناصرين... ... ... ... | ٥٦ | م « | ٣ |
| | مثل ما ينفقون فى هذه الحياة الدنيا كمثل ريح فيها صرٌّ | ١١٧ | م « | ٣ |
| | ومن يرد ثواب الدنيا نؤته منها ... ... ... ... | ١٤٥ | م « | ٣ |
| | فآتاهم الله ثواب الدنيا وحسن ثواب الآخرة... ... | ١٤٨ | م « | ٣ |
| | منكم من يريد الدنيا ومنكم من يريد الآخرة ... ... | ١٥٢ | م « | ٣ |
| | وما الحياة الدنيا إلا متاع الغرور ... ... ... ... | ١٨٥ | م « | ٣ |
| | فليقاتل فى سبيل الله الذين يشرون الحياة الدنيا بالآخرة | ٧٤ | م النساء | ٤ |
| | قل متاع الدنيا قليل والآخرة خير لمن اتقى ولا تظلمون فتيلا | ٧٧ | م « | ٤ |
| | تبتغون عرض الحياة الدنيا فعند الله مغانم كثيرة | ٩٤ | م « | ٤ |
| | ها أنتم هؤلاء جادلتم عنهم فى الحياة الدنيا ... ... | ١٠٩ | م « | ٤ |
| | من كان يريد ثواب الدنيا... ... ... ... ... | ١٣٤ | م « | ٤ |
| | فعند الله ثواب الدنيا والآخرة ... ... ... ... | ١٣٤ | م « | ٤ |
| | ذلك لهم خزى فى الدنيا ولهم فى الآخرة عذاب عظيم | ٣٣ | م المائدة | ٥ |
| | أولئك الذين لم يرد الله أن يطهر قلوبهم لهم فى الدنيا خزى | ٤١ | م « | ٥ |
| | وقالوا إن هى إلا حياتنا الدنيا وما نحن بمبعوثين | ٢٩ | ك الأنعام | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الدُّنْيَا: | وما الحياة الدنيا إلا لعب ولهو ... ... ... ... | ٣٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | وذر الذين اتخذوا دينهم لعبا ولهوا وغرتهم الحياة الدنيا | ٧٠ | ك « | ٦ |
| | قالوا شهدنا على أنفسنا وغرتهم الحياة الدنيا... ... | ١٣٠ | ك « | ٦ |
| | قل هى للذين آمنوا فى الحياة الدنيا خالصة يوم القيامة | ٣٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | الذين اتخذوا دينهم لهوا ولعبا وغرتهم الحياة الدنيا | ٥١ | ك « | ٧ |
| | إن الذين اتخذوا العجل سينالهم غضب من ربهم وذلة فى الحياة الدنيا ... ... ... ... ... ... | ١٥٢ | ك « | ٧ |
| | واكتب لنا فى هذه الدنيا حسنة وفى الآخرة إنا هدنا إليك | ١٥٦ | ك « | ٧ |
| | إذ أنتم بالعدوة الدنيا وهم بالعدوة القصوى والركب أسفل منكم ... ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | م الأنفال | ٨ |
| | تريدون عرض الدنيا والله يريد الآخرة والله عزيز حكيم | ٦٧ | م « | ٨ |
| | أرضيتم بالحياة الدنيا من الآخرة... ... ... ... | ٣٨ | م التوبة | ٩ |
| | فما متاع الحياة الدنيا فى الآخرة إلا قليل ... ... | ٣٨ | م « | ٩ |
| | إنما يريد الله ليعذبهم بها فى الحياة الدنيا وتزهق أنفسهم وهم كافرون ... ... ... ... ... ... | ٥٥ | م « | ٩ |
| | أولئك حبطت أعمالهم فى الدنيا والآخرة ... ... | ٦٩ | م « | ٩ |
| | وإن يتولوا يعذبهم الله عذابا أليما فى الدنيا والآخرة | ٧٤ | م « | ٩ |
| | إنما يريد الله أن يعذبهم بها فى الدنيا وتزهق أنفسهم وهم كافرون ... ... ... ... ... ... | ٨٥ | م « | ٩ |
| | إن الذين لا يرجون لقاءنا ورضوا بالحياة الدنيا واطمأنوا بها ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك يونس | ١٠ |
| | يأيها الناس إنما بغيكم على أنفسكم متاع الحياة الدنيا | ٢٣ | ك « | ١٠ |
| | إنما مثل الحياة الدنيا كماء أنزلناه من السماء فاختلط به نبات الأرض ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك « | ١٠ |
| | لهم البشرى فى الحياة الدنيا وفى الآخرة ... ... ... | ٦٤ | ك « | ١٠ |
| | متاع فى الدنيا ثم إلينا مرجعهم ثم نذيقهم العذاب الشديد | ٧٠ | ك « | ١٠ |
| | وقال موسى ربنا إنك آتيت فرعون وملأه زينة وأموالا فى الحياة الدنيا ... ... ... ... ... | ٨٨ | ك « | ١٠ |
| | لما آمنوا كشفنا عنهم عذاب الخزى فى الحياة الدنيا | ٩٨ | ك « | ١٠ |
| | من كان يريد الحياة الدنيا وزينتها نوف إليهم أعمالهم فيها | ١٥ | ك هود | ١١ |
| | وأتبعوا فى هذه الدنيا لعنة ويوم القيامة ... ... ... | ٦٠ | ك « | ١١ |
| | فاطر السموات والأرض أنت ولى فى الدنيا والآخرة | ١٠١ | ك يوسف | ١٢ |
| | وفرحوا بالحياة الدنيا ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | م الرعد | ١٣ |
| | وما الحياة الدنيا فى الآخرة إلا متاع... ... ... ... | ٢٦ | م « | ١٣ |
| | لهم عذاب فى الحياة الدنيا ولعذاب الآخرة أشق | ٣٤ | م « | ١٣ |
| | الذين يستحبون الحياة الدنيا على الآخرة... ... ... | ٣ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | يثبت الله الذين آمنوا بالقول الثابت فى الحياة الدنيا | ٢٧ | ك « | ١٤ |
| | للذين أحسنوا فى هذه الدنيا حسنة ولدار الآخرة خير | ٣٠ | ك النحل | ١٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الدُّنْيَا | والذين هاجروا فى الله من بعد ما ظلموا لنبوئنهم فى الدنيا حسنة ... ... ... ... ... ... ... | ٤١ | ك النحل | ١٦ |
| | ذلك بأنهم استحبوا الحياة الدنيا على الآخرة... ... | ١٠٧ | ك » | ١٦ |
| | وآتيناه فى الدنيا حسنة وإنه فى الآخرة لمن الصالحين | ١٢٢ | ك » | ١٦ |
| | ولا تعدُ عيناك عنهم تريد زينة الحياة الدنيا ... ... | ٢٨ | م الكهف | ١٨ |
| | واضرب لهم مثل الحياة الدنيا كماء أنزلناه من السماء فاختلط به نبات الأرض ... .. ... ... ... | ٤٥ | ك » | ١٨ |
| | المال والبنون زينة الحياة الدنيا ... ... ... ... | ٤٦ | ك » | ١٨ |
| | الذين ضل سعيهم فى الحياة الدنيا وهم يحسبون أنهم يحسنون صنعا ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٤ | ك » | ١٨ |
| | فاقض ما أنت قاض إنما تقضى هذه الحياة الدنيا | ٧٢ | ك طه | ٢٠ |
| | ولا تمدن عينيك إلى ما متعنا به أزواجا منهم زهرة الحياة الدنيا ... ... ... ... ... ... ... | ١٣١ | م » | ٢٠ |
| | ثانى عطفه ليضل عن سبيل الله له فى الدنيا خزى | ٩ | م الحج | ٢٢ |
| | وإن أصابته فتنة انقلب على وجهه خسر الدنيا والآخرة | ١١ | م » | ٢٢ |
| | من كان يظن أن لن ينصره الله فى الدنيا والآخرة فليمدد بسبب إلى السماء... ... ... .. ... ... | ١٥ | م » | ٢٢ |
| | وكذبوا بلقاء الآخرة وأترفناهم فى الحياة الدنيا ... ... | ٣٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | إن هى إلا حياتنا الدنيا نموت ونحيا وما نحن بمبعوثين | ٣٧ | ك » | ٢٣ |
| | ولولا فضل الله عليكم ورحمته فى الدنيا والآخرة لمسكم فى ما أفضتم فيه عذاب عظيم ... ... ... ... ... | ١٤ | م النور | ٢٤ |
| | إن الذين يحبون أن تشيع الفاحشة فى الذين آمنوا لهم عذاب أليم فى الدنيا والآخرة ... ... ... | ١٩ | م » | ٢٤ |
| | إن الذين يرمون المحصنات الغافلات المؤمنات لعنوا فى الدنيا والآخرة ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | م » | ٢٤ |
| | ولا تكرهوا فتياتكم على البغاء إن أردن تحصنا لتبتغوا عرض الحياة الدنيا ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | م » | ٢٤ |
| | وأتبعناهم فى هذه الدنيا لعنة ويوم القيامة هم من المقبوحين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك القصص | ٢٨ |
| | وما أوتيتم من شىء فتاع الحياة الدنيا وزينتها... ... | ٦٠ | ك » | ٢٨ |
| | أفمن وعدناه وعدا حسنا فهو لاقيه كمن متعناه متاع الحياة الدنيا ... ... ... ... ... ... ... | ٦١ | ك » | ٢٨ |
| | وابتغ فيما آتاك الله الدار الآخرة ولا تنس نصيبك من الدنيا... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٧ | ك » | ٢٨ |
| | قال الذين يريدون الحياة الدنيا يا ليت لنا مثل ما أوتى قارون... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٩ | ك » | ٢٨ |
| | وقال إنما اتخذتم من دون الله أوثانا مودة بينكم فى الحياة الدنيا ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وآتيناه أجره فى الدنيا وإنه فى الآخرة لمن الصالحين | ٢٧ | ك » | ٢٩ |
| | وما هذه الحياة الدنيا إلا لهو ولعب وإن الدار الآخرة لهى الحيوان ... ... ... ... ... ... | ٦٤ | ك » | ٢٩ |
| | يعلمون ظاهرا من الحياة الدنيا وهم عن الآخرة هم غافلون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك الروم | ٣٠ |
| | وصاحبهما فى الدنيا معروفا واتبع سبيل من أناب إلىّ | ١٥ | ك لقمان | ٣١ |
| | فلا تغرنكم الحياة الدنيا ولا يغرنكم بالله الغرور ... ... | ٣٣ | ك » | ٣١ |
| | إن كنتن تردن الحياة الدنيا وزينتها فتعالين أمتعكن | ٢٨ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | إن الذين يؤذون الله ورسوله لعنهم الله فى الدنيا والآخرة | ٥٧ | م » | ٣٣ |
| | يأيها الناس إن وعد الله حق فلا تغرنكم الحياة الدنيا | ٥ | ك فاطر | ٣٥ |
| | إنا زينا السماء الدنيا بزينة الكواكب ... ... ... | ٦ | ك الصافات | ٣٧ |
| | للذين أحسنوا فى هذه الدنيا حسنة وأرض الله واسعة | ١٠ | ك الزمر | ٣٩ |
| | فأذاقهم الله الخزى فى الحياة الدنيا ... ... ... ... | ٢٦ | ك » | ٣٩ |
| | يا قوم إنما هذه الحياة الدنيا متاع ... ... ... ... | ٣٩ | ك غافر | ٤٠ |
| | لا جرم أنما تدعوننى إليه ليس له دعوة فى الدنيا ولا فى الآخرة ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك » | ٤٠ |
| | إنا لننصر رسلنا والذين آمنوا فى الحياة الدنيا ويوم يقوم الأشهاد ... ... ... ... ... ... | ٥١ | ك » | ٤٠ |
| | وزينا السماء الدنيا بمصابيح وحفظا ... ... ... ... | ١٢ | ك فصلت | ٤١ |
| | لنذيقهم عذاب الخزى فى الحياة الدنيا ... ... ... | ١٦ | ك » | ٤١ |
| | نحن أولياؤكم فى الحياة الدنيا وفى الآخرة ... ... | ٣١ | ك » | ٤١ |
| | ومن كان يريد حرث الدنيا نؤته منها وما له فى الآخرة من نصيب... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك الشورى | ٤٢ |
| | فما أوتيتم من شىء فتاع الحياة الدنيا ... ... ... | ٣٦ | ك » | ٤٢ |
| | نحن قسمنا بينهم معيشتهم فى الحياة الدنيا ... ... | ٣٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وإن كل ذلك لما متاع الحياة الدنيا... ... ... ... | ٣٥ | ك » | ٤٣ |
| | وقالوا ما هى إلا حياتنا الدنيا نموت ونحيا وما يهلكنا إلا الدهر ... ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | ذلكم بأنكم اتخذتم آيات الله هزوا وغرتكم الحياة الدنيا | ٣٥ | ك » | ٤٥ |
| | أذهبتم طيباتكم فى حياتكم الدنيا واستمتعتم بها... ... | ٢٠ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | إنما الحياة الدنيا لعب ولهو وإن تؤمنوا وتتقوا يؤتكم أجوركم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٦ | م محمد | ٤٧ |
| | فأعرض عن من تولى عن ذكرنا ولم يرد إلا الحياة الدنيا | ٢٩ | ك النجم | ٥٣ |
| | اعلموا أنما الحياة الدنيا لعب ولهو وزينة وتفاخر بينكم | ٢٠ | م الحديد | ٥٧ |
| | وما الحياة الدنيا إلا متاع الغرور ... ... ... ... | ٢٠ | م » | ٥٧ |
| | ولولا أن كتب الله عليهم الجلاء لعذبهم فى الدنيا | ٣ | م الحشر | ٥٩ |
| | ولقد زينا السماء الدنيا بمصابيح وجعلناها رجوما للشياطين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك الملك | ٦٧ |
| | فأما من طغى . وآثر الحياة الدنيا . فإن الجحيم هى المأوى ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك النازعات | ٧٩ |
| | بل تؤثرون الحياة الدنيا . والآخرة خير وأبقى ... ... | ١٦ | ك الأعلى | ٨٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الدَّهْرُ: | وقالوا ما هى إلا حياتنا الدنيا نموت ونحيا | | | |
| (٢) | وما يهلكنا إلا الدهر ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | هل أتى على الإنسان حين من الدهر لم يكن شيئا مذكورا | ١ | م الإنسان | ٧٦ |
| دِهَاقًا: | إن للتقين مفازا . حدائق وأعنابا . وكواعب | | | |
| | أترابا . وكأسا دهاقا ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك النبأ | ٧٨ |
| مُدْهَامَّتَانِ: | مدهامتان.فبأى آلاء ربكما تكذبان... ... | ٦٤ | م الرحمن | ٥٥ |
| تُدْهِنُ: | فلا تطع المكذبين . ودوا لو تدهن ... ... ... | ٩ | ك القلم | ٦٨ |
| يُدْهِنُونَ: | فيدهنون ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك « | ٦٨ |
| مُدْهِنُونَ: | أفبهذا الحديث أنتم مدهنون ... ... ... ... | ٨١ | م الواقعة | ٥٦ |
| بِالدُّهْنِ: | وشجرة تخرج من طور سيناء تنبت بالدهن وصبغ | | | |
| | للآكلين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| كَالدِّهَانِ: | فإذا انشقت السماء فكانت وردة كالدهان... ... | ٣٧ | م الرحمن | ٥٥ |
| أَدْهَى: | بل الساعة موعدهم والساعة أدهى وأمر ... ... | ٤٦ | م القمر | ٥٤ |
| دَاوُدُ: | فهزموهم بإذن الله وقتل داود جالوت... ... ... | ٢٥١ | م البقرة | ٢ |
| (١٦) | وآتينا داود زبورا... ... ... ... ... ... ... | ١٦٣ | م النساء | ٤ |
| | لعن الذين كفروا من بنى إسرائيل على لسان داود | ٧٨ | م المائدة | ٥ |
| | ونوحا هدينا من قبل ومن ذريته داود وسليمان | ٨٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | ولقد فضلنا بعض النبيين على بعض وآتينا داود زبورا | ٥٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وداود وسليمان إذ يحكمان فى الحرث إذ نفشت فيه غنم القوم | ٧٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وسخرنا مع داود الجبال يسبحن والطير وكنا فاعلين... | ٧٩ | ك « | ٢١ |
| | ولقد آتينا داود وسليمان علما ... ... ... ... ... | ١٥ | ك النمل | ٢٧ |
| | وورث سليمان داود وقال يا أيها الناس علمنا منطق الطير | ١٦ | ك « | ٢٧ |
| | ولقد آتينا داود منا فضلا يا جبال أوبى معه والطير | ١٠ | ك سبأ | ٣٤ |
| | اعملوا آل داود شكرا وقليل من عبادى الشكور ... | ١٣ | ك « | ٣٤ |
| | اصبر على ما يقولون واذكر عبدنا داود ذا الأيد إنه أواب | ١٧ | ك ص | ٣٨ |
| | إذ دخلوا على داود ففزع منهم قالوا لا تخف... ... | ٢٢ | ك « | ٣٨ |
| | وظن داود أنما فتناه فاستغفر ربه وخر راكعا وأناب | ٢٤ | ك « | ٣٨ |
| | يا داود إنا جعلناك خليفة فى الأرض فاحكم بين الناس بالحق | ٢٦ | ك « | ٣٨ |
| | ووهبنا لداود سليمان نعم العبد إنه أواب ... ... | ٣٠ | ك « | ٣٨ |
| تَدُورُ: | ينظرون إليك تدور أعينهم كالذى يغشى عليه من الموت | ١٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| تُدِيرُونَهَا: | إلا أن تكون تجارة حاضرة تديرونها بينكم... | ٢٨٢ | م البقرة | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| دَارُ: | قل إن كانت لكم الدار الآخرة عند الله خالصة من | | | |
| (٢٦) | دون الناس فتمنوا الموت ... ... ... ... ... | ٩٤ | م البقرة | ٢ |
| | وللدار الآخرة خير للذين يتقون أفلا تعقلون ... ... | ٣٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | لهم دار السلام عند ربهم وهو وليهم بما كانوا يعملون | ١٢٧ | ك « | ٦ |
| | فسوف تعلمون من تكون له عاقبة الدار ... ... | ١٣٥ | ك « | ٦ |
| | وأمر قومك يأخذوا بأحسنها سأريكم دار الفاسقين | ١٤٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | والدار الآخرة خير للذين يتقون أفلا تعقلون... ... | ١٦٩ | م « | ٧ |
| | والله يدعوا إلى دار السلام... ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك يونس | ١٠ |
| | ولدار الآخرة خير للذين آمنوا أفلا تعقلون ... ... | ١٠٩ | ك يوسف | ١٢ |
| | ويدرءون بالحسنة السيئة أولئك لهم عقبى الدار | ٢٢ | م الرعد | ١٣ |
| | سلام عليكم بما صبرتم فنعم عقبى الدار ... ... ... | ٢٤ | م « | ١٣ |
| | أولئك لهم اللعنة ولهم سوء الدار... ... ... ... | ٢٥ | م « | ١٣ |
| | يعلم ما تكسب كل نفس وسيعلم الكفار لمن عقبى الدار | ٤٢ | م « | ١٣ |
| | وأحلوا قومهم دار البوار ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م إبراهيم | ١٤ |
| | للذين أحسنوا فى هذه الدنيا حسنة ولدار الآخرة خير | ٣٠ | ك النحل | ١٦ |
| | ولنعم دار المتقين ... ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك « | ١٦ |
| | وقال موسى ربى أعلم بمن جاء بالهدى من عنده ومن | | | |
| | تكون له عاقبة الدار ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | وابتغ فيما آتاك الله الدار الآخرة ولا تنس نصيبك من الدنيا | ٧٧ | ك « | ٢٨ |
| | تلك الدار الآخرة نجعلها للذين لا يريدون علوا | | | |
| | فى الأرض ولا فسادا ... ... ... ... ... ... | ٨٣ | ك « | ٢٨ |
| | وإن الدار الآخرة لهى الحيوان لو كانوا يعلمون | ٦٤ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وإن كنتن تردن الله ورسوله والدار الآخرة فإن الله | | | |
| | أعد للمحسنات منكن أجرا عظيما ... ... ... ... | ٢٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | الذى أحلنا دار المقامة من فضله لا يمسنا فيها نصب | ٣٥ | ك فاطر | ٣٥ |
| | إنا أخلصناهم بخالصة ذكرى الدار ... ... ... ... | ٤٦ | ك ص | ٣٨ |
| | وإن الآخرة هى دار القرار... ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك غافر | ٤٠ |
| | يوم لا ينفع الظالمين معذرتهم ولهم اللعنة ولهم سوء الدار | ٥٢ | ك « | ٤٠ |
| | ذلك جزاء أعداء الله النار لهم فيها دار الخلد ... ... | ٢٨ | ك فصلت | ٤١ |
| | والذين تبوءوا الدار والإيمان من قبلهم يحبون من هاجر إليهم | ٩ | م الحشر | ٥٩ |
| دَارِكُمْ: | فعقروها فقال تمتعوا فى داركم ثلاثة أيام... ... | ٦٥ | ك هود | ١١ |
| دَارِهِ: | فخسفنا به وبداره الأرض... ... ... ... ... ... | ٨١ | ك القصص | ٢٨ |
| دَارِهِمْ: | فأخذتهم الرجفة فأصبحوا فى دارهم جاثمين... ... | ٧٨ | ك الأعراف | ٧ |
| (٤) | فأخذتهم الرجفة فأصبحوا فى دارهم جاثمين... ... | ٩١ | ك « | ٧ |
| | أو تحل قريبا من دارهم حتى يأتى وعد الله ... ... | ٣١ | م الرعد | ١٣ |
| | فكذبوه فأخذتهم الرجفة فأصبحوا فى دارهم جاثمين | ٣٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| الدِّيَارِ: | بعثنا عليكم عبادا لنا أولى بأس شديد فجاسوا خلال الديار | ٥ | ك الإسراء | ١٧ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| دِيَارِكُمْ (٤) | وإذ أخذنا ميثاقكم لا تسفكون دماءكم ولا تخرجون أنفسكم من دياركم ... ... ... ... ... ... | البقرة | ٢ |
| | ولو أنا كتبنا عليهم أن اقتلوا أنفسكم أو اخرجوا من دياركم ما فعلوه إلا قليل منهم... ... ... ... | النساء | ٤ |
| | لا ينهاكم الله عن الذين لم يقاتلوكم فى الدين ولم يخرجوكم من دياركم أن تبروهم ... ... ... ... ... | الممتحنة | ٦٠ |
| | إنما ينهاكم الله عن الذين قاتلوكم فى الدين وأخرجوكم من دياركم... ... ... ... ... ... ... | » | ٦٠ |
| دِيَارِنَا | قالوا وما لنا ألا نقاتل فى سبيل الله وقد أخرجنا من ديارنا | البقرة | ٢ |
| دِيَارِهِمْ (١٠) | ثم أنتم هؤلاء تقتلون أنفسكم وتخرجون فريقا منكم من ديارهم ... ... ... ... ... ... | » | ٢ |
| | ألم تر إلى الذين خرجوا من ديارهم وهم ألوف حذر الموت ... ... ... ... ... ... ... | » | ٢ |
| | فالذين هاجروا وأخرجوا من ديارهم وأوذوا فى سبيلى وقاتلوا وقتلوا لأكفرن عنهم سيئاتهم ... ... | آل عمران | ٣ |
| | ولا تكونوا كالذين خرجوا من ديارهم بطرا ورئاء الناس | الأنفال | ٨ |
| | وأخذ الذين ظلموا الصيحة فأصبحوا فى ديارهم جاثمين | هود | ١١ |
| | وأخذت الذين ظلموا الصيحة فأصبحوا فى ديارهم جاثمين | » | ١١ |
| | الذين أخرجوا من ديارهم بغير حق إلا أن يقولوا ربنا الله ... ... ... ... ... ... ... | الحج | ٢٢ |
| | وأورثكم أرضهم وديارهم وأموالهم وأرضا لم تطئوها | الأحزاب | ٣٣ |
| | هو الذى أخرج الذين كفروا من أهل الكتاب من ديارهم لأول الحشر ... ... ... ... ... | الحشر | ٥٩ |
| | الفقراء الذين أخرجوا من ديارهم وأموالهم يبتغون فضلا من الله ورضوانا ... ... ... ... ... ... | » | ٥٩ |
| دَيَّارًا | وقال نوح رب لا تذر على الأرض من الكافرين ديارا | نوح | ٧١ |
| دَائِرَةٌ (٣) | يسارعون فيهم يقولون نخشى أن تصيبنا دائرة | المائدة | ٥ |
| | ومن الأعراب من يتخذ ما ينفق مغرما ويتربص بكم الدوائر عليهم دائرة السوء ... ... ... ... | التوبة | ٩ |
| | عليهم دائرة السوء وغضب الله عليهم ولعنهم ... ... | الفتح | ٤٨ |
| الدَّوَائِرَ | ومن الأعراب من يتخذ ما ينفق مغرما ويتربص بكم الدوائر عليهم دائرة السوء ... ... ... ... | التوبة | ٩ |
| نُدَاوِلُهَا | وتلك الأيام نداولها بين الناس ... ... ... | آل عمران | ٣ |
| دُولَةً | كى لا يكون دولة بين الأغنياء منكم ... ... ... | الحشر | ٥٩ |
| دَامَتْ (٢) | خالدين فيها ما دامت السموات والأرض إلا ما شاء ربك ... ... ... ... ... ... ... | هود | ١١ |
| | وأما الذين سعدوا ففى الجنة خالدين فيها ما دامت السموات والأرض ... ... ... ... ... ... | » | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| دَامُوا | قالوا يا موسى إنا لن ندخلها أبدا ما داموا فيها | المائدة | ٥ |
| دُمْتَ (٣) | ومنهم من إن تأمنه بدينار لا يؤده إليك إلا ما دمت عليه قائما ... ... ... ... ... ... | آل عمران | ٣ |
| | وكنت عليهم شهيدا ما دمت فيهم... ... ... ... ... | المائدة | ٥ |
| | وأوصانى بالصلاة والزكاة ما دمت حيا ... ... ... | مريم | ١٩ |
| دُمْتُمْ | وحرم عليكم صيد البر ما دمتم حرما ... ... ... ... | المائدة | ٥ |
| دَائِمٌ | مثل الجنة التى وعد المتقون تجرى من تحتها الأنهار أكلها دائم وظلها ... ... ... ... ... ... ... | الرعد | ١٣ |
| دَائِمُونَ | إلا المصلين . الذين هم على صلاتهم دائمون | المعارج | ٧٠ |
| دُونَ | وادعوا شهداءكم من دون الله إن كنتم صادقين | البقرة | ٢ |
| (٩٢) | قل إن كانت لكم الدار الآخرة عند الله خالصة من دون الناس فتمنوا الموت ... ... ... ... | » | ٢ |
| | وما لكم من دون الله من ولى ولا نصير ... ... ... | » | ٢ |
| | ومن الناس من يتخذ من دون الله أندادا يحبونهم كحب الله... ... ... ... ... ... ... ... | » | ٢ |
| | لا يتخذ المؤمنون الكافرين أولياء من دون المؤمنين | آل عمران | ٣ |
| | ولا يتخذ بعضنا بعضا أربابا من دون الله ... ... | » | ٣ |
| | ثم يقول للناس كونوا عبادا لى من دون الله ... ... | » | ٣ |
| | إن الله لا يغفر أن يشرك به ويغفر ما دون ذلك لمن يشاء | النساء | ٤ |
| | إن الله لا يغفر أن يشرك به ويغفر ما دون ذلك لمن يشاء | » | ٤ |
| | ومن يتخذ الشيطان وليا من دون الله فقد خسر خسرانا مبينا ... ... ... ... ... ... ... | » | ٤ |
| | من يعمل سوءا يجز به ولا يجد له من دون الله وليا ولا نصيرا... ... ... ... ... ... ... | » | ٤ |
| | الذين يتخذون الكافرين أولياء من دون المؤمنين | » | ٤ |
| | يا أيها الذين آمنوا لا تتخذوا الكافرين أولياء من دون المؤمنين ... ... ... ... ... ... | » | ٤ |
| | ولا يجدون لهم من دون الله وليا ولا نصيرا ... ... | » | ٤ |
| | قل أتعبدون من دون الله ما لا يملك لكم ضرا ولا نفعا | المائدة | ٥ |
| | أأنت قلت للناس اتخذونى وأمى إلهين من دون الله | » | ٥ |
| | قل إنى نهيت أن أعبد الذين تدعون من دون الله | الأنعام | ٦ |
| | وذكر به أن تبسل نفس بما كسبت ليس لها من دون الله ولى ولا شفيع ... ... ... ... ... ... | » | ٦ |
| | قل أندعوا من دون الله ما لا ينفعنا ولا يضرنا | » | ٦ |
| | ولا تسبوا الذين يدعون من دون الله فيسبوا الله عدوا بغير علم ... ... ... ... ... ... ... | » | ٦ |
| | إنهم اتخذوا الشياطين أولياء من دون الله ... ... | الأعراف | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| دُونَ: | حتى إذا جاءتهم رسلنا يتوفونهم قالوا أين ما كنتم تدعون من دون الله ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | إنكم لتأتون الرجال شهوة من دون النساء بل أنتم قوم مسرفون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨١ | ك « | ٧ |
| | وقطعناهم فى الأرض أمما منهم الصالحون ومنهم دون ذلك | ١٦٨ | م « | ٧ |
| | إن الذين تدعون من دون الله عباد أمثالكم ... ... | ١٩٤ | ك « | ٧ |
| | واذكر ربك فى نفسك تضرعا وخيفة ودون الجهر من القول ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠٥ | ك « | ٧ |
| | ولم يتخذوا من دون الله ولا رسوله ولا المؤمنين وليجة | ١٦ | م التوبة | ٩ |
| | اتخذوا أحبارهم ورهبانهم أربابا من دون الله | ٣١ | م « | ٩ |
| | وما لكم من دون الله من ولىّ ولا نصير... ... ... | ١١٦ | م « | ٩ |
| | ويعبدون من دون الله ما لا يضرهم ولا ينفعهم | ١٨ | ك يونس | ١٠ |
| | وما كان هذا القرآن أن يفترى من دون الله ... ... | ٣٧ | ك « | ١٠ |
| | وادعوا من استطعتم من دون الله إن كنتم صادقين | ٣٨ | ك « | ١٠ |
| | وما يتبع الذين يدعون من دون الله شركاء ... ... | ٦٦ | ك « | ١٠ |
| | فلا أعبد الذين تعبدون من دون الله ... ... ... | ١٠٤ | ك « | ١٠ |
| | ولا تدع من دون الله ما لا ينفعك ولا يضرك... ... | ١٠٦ | ك « | ١٠ |
| | وادعوا من استطعتم من دون الله إن كنتم صادقين | ١٣ | ك هود | ١١ |
| | وما كان لهم من دون الله من أولياء يضاعف لهم العذاب | ٢٠ | ك « | ١١ |
| | فما أغنت عنهم آلهتهم التى يدعون من دون الله من شىء | ١٠١ | ك « | ١١ |
| | وما لكم من دون الله من أولياء ثم لا تنصرون... ... | ١١٣ | ك « | ١١ |
| | والذين يدعون من دون الله لا يخلقون شيئا وهم يخلقون | ٢٠ | ك النحل | ١٦ |
| | ويعبدون من دون الله ما لا يملك لهم رزقا من السموات والأرض شيئا ولا يستطيعون ... ... | ٧٣ | ك « | ١٦ |
| | ولم تكن له فئة ينصرونه من دون الله وما كان منتصرا | ٤٣ | ك الكهف | ١٨ |
| | وأعتزلكم وما تدعون من دون الله وأدعوا ربى ... | ٤٨ | ك مريم | ١٩ |
| | فلما اعتزلهم وما يعبدون من دون الله وهبنا له إسحق ويعقوب ... ... ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك « | ١٩ |
| | واتخذوا من دون الله آلهة ليكونوا لهم عزا ... ... | ٨١ | ك « | ١٩ |
| | قال أفتعبدون من دون الله ما لا ينفعكم شيئا ولا يضركم | ٦٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | أفّ لكم ولما تعبدون من دون الله أفلا تعقلون | ٦٧ | ك « | ٢١ |
| | ومن الشياطين من يغوصون له ويعملون عملا دون ذلك | ٨٢ | ك « | ٢١ |
| | إنكم وما تعبدون من دون الله حصب جهنم... ... | ٩٨ | ك « | ٢١ |
| | يدعوا من دون الله ما لا يضره وما لا ينفعه... ... | ١٢ | م الحج | ٢٢ |
| | ويعبدون من دون الله ما لم ينزل به سلطانا ... ... | ٧١ | م « | ٢٢ |
| | إن الذين تدعون من دون الله لن يخلقوا ذبابا ولو اجتمعوا له ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | م « | ٢٢ |
| | ولهم أعمال من دون ذلك هم لها عاملون ... ... ... | ٦٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| دُونِ: | ويوم يحشرهم وما يعبدون من دون الله فيقول أأنتم أضللتم عبادى ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ويعبدون من دون الله ما لا ينفعهم ولا يضرهم | ٥٥ | ك « | ٢٥ |
| | وقيل لهم أين ما كنتم تعبدون . من دون الله... ... | ٩٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وجدتها وقومها يسجدون للشمس من دون الله | ٢٤ | ك النمل | ٢٧ |
| | وصدها ما كانت تعبد من دون الله ... ... ... | ٤٣ | ك « | ٢٧ |
| | أئنكم لتأتون الرجال شهوة من دون النساء ... ... | ٥٥ | ك « | ٢٧ |
| | فما كان له من فئة ينصرونه من دون الله ... ... | ٨١ | ك القصص | ٢٨ |
| | إنما تعبدون من دون الله أوثانا وتخلقون إفكا | ١٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | إن الذين تعبدون من دون الله لا يملكون لكم رزقا | ١٧ | ك « | ٢٩ |
| | وما لكم من دون الله من ولىّ ولا نصير... ... ... | ٢٢ | ك « | ٢٩ |
| | وقال إنما اتخذتم من دون الله أوثانا مودة بينكم فى الحياة الدنيا ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك « | ٢٩ |
| | مثل الذين اتخذوا من دون الله أولياء كمثل العنكبوت | ٤١ | ك « | ٢٩ |
| | ولنذيقنهم من العذاب الأدنى دون العذاب الأكبر | ٢١ | ك السجدة | ٣٢ |
| | ولا يجدون لهم من دون الله وليّا ولا نصيرا ... ... | ١٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | إن أراد النبىّ أن يستنكحها خالصة لك من دون المؤمنين | ٥٠ | م « | ٣٣ |
| | قل ادعوا الذين زعمتم من دون الله لا يملكون مثقال ذرة فى السموات ولا فى الأرض ... ... | ٢٢ | ك سبإ | ٣٤ |
| | قل أرأيتم شركاءكم الذين تدعون من دون الله أرونى ماذا خلقوا من الأرض ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك فاطر | ٣٥ |
| | واتخذوا من دون الله آلهة لعلهم ينصرون ... ... | ٧٤ | ك يس | ٣٦ |
| | من دون الله فاهدوهم إلى صراط الجحيم ... ... ... | ٢٣ | ك الصافات | ٣٧ |
| | أئفكا آلهة دون الله تريدون ... ... ... ... ... | ٨٦ | ك « | ٣٧ |
| | قل أفرأيتم ما تدعون من دون الله إن أرادنى الله بضر هل هن كاشفات ضره ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| | أم اتخذوا من دون الله شفعاء ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك « | ٣٩ |
| | قل إنى نهيت أن أعبد الذين تدعون من دون الله لما جاءنى البينات من ربى ... ... ... ... ... | ٦٦ | ك غافر | ٤٠ |
| | ثم قيل لهم أين ما كنتم تشركون . من دون الله قالوا ضلوا عنا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٤ | ك « | ٤٠ |
| | وما لكم من دون الله من ولىّ ولا نصير ... ... ... | ٣١ | ك الشورى | ٤٢ |
| | وما كان لهم من أولياء ينصرونهم من دون الله... ... | ٤٦ | ك « | ٤٢ |
| | أجعلنا من دون الرحمن آلهة يعبدون ... ... ... | ٤٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ولا يغنى عنهم ما كسبوا شيئا ولا ما اتخذوا من دون الله أولياء ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | قل أرأيتم ما تدعون من دون الله أرونى ماذا خلقوا من الأرض ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | ومن أضل ممن يدعوا من دون الله من لا يستجيب له إلى يوم القيامة ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك « | ٤٦ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| دُونَ: | فلولا نصرهم الذين اتخذوا من دون الله قربانا آلهة | ٢٨ ك الأحقاف | ٤٦ |
| | فعلم ما لم تعلموا فجعل من دون ذلك فتحا قريبا... ... | ٢٧ م الفتح | ٤٨ |
| | وإن للذين ظلموا عذابا دون ذلك ولكن أكثرهم لا يعلمون | ٤٧ ك الطور | ٥٢ |
| | أفرأيت اللات والعزى . ليس لها من دون الله كاشفة ... ... | ٥٨ ك النجم | ٥٣ |
| | إنا برآء منكم ومما تعبدون من دون الله ... ... ... | ٤ م الممتحنة | ٦٠ |
| | إن زعمتم أنكم أولياء لله من دون الناس فتمنوا الموت | ٦ م الجمعة | ٦٢ |
| | أمن هذا الذى هو جند لكم ينصركم من دون الرحمن | ٢٠ ك الملك | ٦٧ |
| | أغرقوا فأدخلوا نارا فلم يجدوا لهم من دون الله أنصارا | ٢٥ ك نوح | ٧١ |
| | وأنا منا الصالحون ومنا دون ذلك كنا طرائق قددا | ١١ ك الجن | ٧٢ |
| دُونِكَ: | هؤلاء شركاؤنا الذين كنا ندعوا من دونك... ... | ٨٦ ك النحل | ١٦ |
| (٢) | قالوا سبحانك ما كان ينبغى لنا أن نتخذ من دونك من أولياء | ١٨ ك الفرقان | ٢٥ |
| دُونِكُمْ: | يأيها الذين آمنوا لا تتخذوا بطانة من دونكم | | |
| | لا يألونكم خبالا ... ... ... ... ... ... | ١١٨ م آل عمران | ٣ |
| دُونِنَا: | أم لهم آلهة تمنعهم من دوننا لا يستطيعون نصر أنفسهم | ٤٣ ك الأنبياء | ٢١ |
| دُونِهِ: | إن يدعون من دونه إلا إناثا وإن يدعون إلا شيطانا مريدا | ١١٧ م النساء | ٤ |
| (٣٨) | وأنذر به الذين يخافون أن يحشروا إلى ربهم ليس | | |
| | لهم من دونه ولىّ ولا شفيع... ... ... ... ... | ٥١ ك الأنعام | ٦ |
| | اتبعوا ما أنزل إليكم من ربكم ولا تتبعوا من دونه أولياء | ٣ ك الأعراف | ٧ |
| | والذين تدعون من دونه لا يستطيعون نصركم | | |
| | ولا أنفسهم ينصرون ... ... ... ... ... ... | ١٩٧ ك » | ٧ |
| | من دونه فكيدونى جميعا ثم لا تنظرون ... ... ... | ٥٥ ك هود | ١١ |
| | ما تعبدون من دونه إلا أسماء سميتموها أنتم وآباؤكم | ٤٠ ك يوسف | ١٢ |
| | وإذا أراد الله بقوم سوءا فلا مرد له وما لهم من دونه من وال | ١١ م الرعد | ١٣ |
| | والذين يدعون من دونه لا يستجيبون لهم بشىء | ١٤ م » | ١٣ |
| | قل أفاتخذتم من دونه أولياء لا يملكون لأنفسهم نفعا | | |
| | ولا ضرا ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٦ م » | ١٣ |
| | وقال الذين أشركوا لو شاء الله ما عبدنا من دونه من شىء | ٣٥ ك النحل | ١٦ |
| | نحن ولا آباؤنا ولا حرمنا من دونه من شىء... ... | ٣٥ ك » | ١٦ |
| | قل ادعوا الذين زعمتم من دونه فلا يملكون كشف | | |
| | الضر عنكم ولا تحويلا ... ... ... ... ... ... | ٥٦ ك الإسراء | ١٧ |
| | ومن يهد الله فهو المهتد ومن يضلل فلن تجد لهم أولياء من دونه | ٩٧ ك » | ١٧ |
| | ربنا رب السموات والأرض لن ندعوا من دونه إلها | ١٤ ك الكهف | ١٨ |
| | هؤلاء قومنا اتخذوا من دونه آلهة ... ... ... .. | ١٥ ك » | ١٨ |
| | مالهم من دونه من ولىّ ولا يشرك فى حكمه أحدا | ٢٦ ك » | ١٨ |
| | لا مبدل لكلماته ولن تجد من دونه ملتحدا ... ... | ٢٧ ك » | ١٨ |
| | بل لهم موعد لن يجدوا من دونه موئلا ... ... ... | ٥٨ ك » | ١٨ |
| | أم اتخذوا من دونه آلهة قل هاتوا برهانكم ... ... | ٢٤ ك الأنبياء | ٢١ |
| | ومن يقل منهم إنى إله من دونه فذلك نجزيه جهنم | ٢٩ ك » | ٢١ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| دُونِهِ: | ذلك بأن الله هو الحق وأن ما يدعون من دونه هو الباطل | ٦٢ م الحج | ٢٢ |
| | واتخذوا من دونه آلهة لا يخلقون شيئا وهم يخلقون | ٣ ك الفرقان | ٢٥ |
| | إن الله يعلم ما يدعون من دونه من شىء وهو العزيز الحكيم | ٤٢ ك العنكبوت | ٢٩ |
| | هذا خلق الله فأرونى ماذا خلق الذين من دونه | ١١ ك لقمان | ٣١ |
| | ذلك بأن الله هو الحق وأن ما يدعون من دونه الباطل | ٣٠ ك » | ٣١ |
| | ثم استوى على العرش ما لكم من دونه من ولىّ ولا شفيع | ٤ ك السجدة | ٣٢ |
| | والذين تدعون من دونه ما يملكون من قطمير | ١٣ ك فاطر | ٣٥ |
| | أأتخذ من دونه آلهة إن يردن الرحمن بضر لا تغن | | |
| | عنى شفاعتهم شيئا ... ... ... ... ... ... | ٢٣ ك يس | ٣٦ |
| | والذين اتخذوا من دونه أولياء ما نعبدهم إلا ليقربونا | | |
| | إلى الله زلفى ... ... ... ... ... ... ... | ٣ ك الزمر | ٣٩ |
| | فاعبدوا ما شئتم من دونه ... ... ... ... ... | ١٥ ك » | ٣٩ |
| | أليس الله بكاف عبده ويخوفونك بالذين من دونه | ٣٦ ك » | ٣٩ |
| | وإذا ذكر الذين من دونه إذا هم يستبشرون... ... | ٤٥ ك » | ٣٩ |
| | والله يقضى بالحق والذين يدعون من دونه لا يقضون بشىء | ٢٠ ك غافر | ٤٠ |
| | والذين اتخذوا من دونه أولياء الله حفيظ عليهم | ٦ ك الشورى | ٤٢ |
| | أم اتخذوا من دونه أولياء فالله هو الولى ... ... | ٩ ك » | ٤٢ |
| | ولا يملك الذين يدعون من دونه الشفاعة إلا من شهد بالحق | ٨٦ ك الزخرف | ٤٣ |
| | وليس له من دونه أولياء ... ... ... ... ... | ٣٢ ك الأحقاف | ٤٦ |
| | قل إنى لن يجيرنى من الله أحد ولن أجد من دونه ملتحدا | ٢٢ ك الجن | ٧٢ |
| دُونِهَا: | وجدها تطلع على قوم لم نجعل لهم من دونها سترا | ٩٠ م الكهف | ١٨ |
| دُونِهِمْ: | ترهبون به عدو الله وعدوكم وآخرين من دونهم | ٦٠ م الأنفال | ٨ |
| (٤) | فاتخذت من دونهم حجابا ... ... ... ... ... | ١٧ ك مريم | ١٩ |
| | ووجد من دونهم امرأتين تذودان ... ... ... ... | ٢٣ ك القصص | ٢٨ |
| | قالوا سبحانك أنت ولينا من دونهم بل كانوا يعبدون الجن | ٤١ ك سبأ | ٣٤ |
| دُونِهِمَا: | وجد من دونهما قوما لا يكادون يفقهون قولا | ٩٣ م الكهف | ١٨ |
| (٢) | ومن دونهما جنتان ... ... ... ... ... ... | ٦٢ م الرحمن | ٥٥ |
| دُونِى: | وجعلناه هدى لبنى إسرائيل ألا تتخذوا من دونى وكيلا | ٢ ك الإسراء | ١٧ |
| (٣) | أفتتخذونه وذريته أولياء من دونى وهم لكم عدو | ٥٠ ك الكهف | ١٨ |
| | أحسب الذين كفروا أن يتخذوا عبادى من دونى أولياء | ١٠٢ ك » | ١٨ |

✦✦✦

| | | | |
|---|---|---|---|
| يَدِينُونَ: | ولا يحرمون ما حرم الله ورسوله ولا يدينون دين الحق | ٢٩ م التوبة | ٩ |
| تَدَايَنْتُمْ: | إذا تداينتم بدين إلى أجل مسمى فاكتبوه ... ... | ٢٨٢ م البقرة | ٢ |
| دَيْنٍ: | إذا تداينتم بدين إلى أجل مسمى فاكتبوه ... ... | ٢٨٢ م » | ٢ |
| (٥) | فإن كان له إخوة فلأمه السدس من بعد وصية | | |
| | يوصى بها أو دين ... ... ... ... ... ... | ١١ م النساء | ٤ |
| | فإن كان لهن ولد فلكم الربع مما تركن من بعد وصية | | |
| | يوصين بها أو دين ... ... ... ... ... ... | ١٢ م » | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| دَيْنٍ: | فإن كان لكم ولد فلهن الثمن مما تركتم من بعد وصية توصون بها أو دين ... ... ... ... ... ... | ١٢ | م النساء | ٤ |
| | فإن كانوا أكثر من ذلك فهم شركاء في الثلث من بعد وصية يوصى بها أو دين غير مضار ... ... | ١٢ | م « | ٤ |
| الدِّينِ: | الرحمن الرحيم . مالك يوم الدين ... ... ... | ٤ | ك الفاتحة | ١ |
| (٦٢) | يا بني إن الله اصطفى لكم الدين فلا تموتن إلا وأنتم مسلمون | ١٣٢ | م البقرة | ٢ |
| | وقاتلوهم حتى لا تكون فتنة ويكون الدين لله | ١٩٣ | م « | ٢ |
| | لا إكراه في الدين قد تبين الرشد من الغي ... ... | ٢٥٦ | م « | ٢ |
| | إن الدين عند الله الإسلام ... ... ... ... ... | ١٩ | م آل عمران | ٣ |
| | أفغير دين الله يبغون ... ... ... ... ... ... | ٨٣ | م « | ٣ |
| | ويقولون سمعنا وعصينا واسمع غير مسمع وراعنا ليًّا بألسنتهم وطعنا في الدين ... ... ... ... ... | ٤٦ | م النساء | ٤ |
| | وأقيموا وجوهكم عند كل مسجد وادعوه مخلصين له الدين | ٢٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | وقاتلوهم حتى لا تكون فتنة ويكون الدين كله لله | ٣٩ | م الأنفال | ٨ |
| | وإن استنصروكم في الدين فعليكم النصر إلا على قوم بينكم وبينهم ميثاق... ... ... ... ... ... | ٧٢ | م « | ٨ |
| | فإن تابوا وأقاموا الصلاة وآتوا الزكاة فإخوانكم في الدين | ١١ | م التوبة | ٩ |
| | ولا يدينون دين الحق من الذين أوتوا الكتاب حتى يعطوا الجزية عن يد وهم صاغرون ... ... | ٢٩ | م « | ٩ |
| | هو الذي أرسل رسوله بالهدى ودين الحق ... ... | ٣٣ | م « | ٩ |
| | ليظهره على الدين كله ولو كره المشركون ... ... ... | ٣٣ | م « | ٩ |
| | ذلك الدين القيم فلا تظلموا فيهن أنفسكم... ... ... | ٣٦ | م « | ٩ |
| | فلولا نفر من كل فرقة منهم طائفة ليتفقهوا في الدين | ١٢٢ | م « | ٩ |
| | وظنوا أنهم أحيط بهم دعوا الله مخلصين له الدين | ٢٢ | ك يونس | ١٠ |
| | وأن أقم وجهك للدين حنيفا ولا تكونن من المشركين | ١٠٥ | ك « | ١٠ |
| | أمر ألا تعبدوا إلا إياه ذلك الدين القيم ولكن أكثر الناس لا يعلمون ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | ما كان ليأخذ أخاه في دين الملك إلا أن يشاء الله | ٧٦ | ك « | ١٢ |
| | وإن عليك اللعنة إلى يوم الدين ... ... ... ... | ٣٥ | ك الحجر | ١٥ |
| | وله ما في السموات والأرض وله الدين واصبا ... | ٥٢ | ك النحل | ١٦ |
| | وما جعل عليكم في الدين من حرج ... ... ... ... | ٧٨ | م الحج | ٢٢ |
| | ولا تأخذكم بهما رأفة في دين الله ... ... ... ... | ٢ | م النور | ٢٤ |
| | والذي أطمع أن يغفر لي خطيئتي يوم الدين ... ... | ٨٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فإذا ركبوا في الفلك دعوا الله مخلصين له الدين | ٦٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | فأقم وجهك للدين حنيفا ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك الروم | ٣٠ |
| | ذلك الدين القيم ولكن أكثر الناس لا يعلمون | ٣٠ | ك « | ٣٠ |
| | فأقم وجهك للدين القيم من قبل أن يأتي يوم لا مرد له من الله ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك « | ٣٠ |
| | وإذا غشيهم موج كالظلل دعوا الله مخلصين له الدين | ٣٢ | ك لقمان | ٣١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الدِّينِ: | فإن لم تعلموا آباءهم فإخوانكم في الدين ومواليكم | ٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وقالوا يا ويلنا هذا يوم الدين ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك الصافات | ٣٧ |
| | وإن عليك لعنتي إلى يوم الدين ... ... ... ... ... | ٧٨ | ك ص | ٣٨ |
| | إنا أنزلنا إليك الكتاب بالحق فاعبد الله مخلصا له الدين | ٢ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ألا لله الدين الخالص ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك « | ٣٩ |
| | قل إني أمرت أن أعبد الله مخلصا له الدين... ... | ١١ | ك « | ٣٩ |
| | فادعوا الله مخلصين له الدين ولو كره الكافرون | ١٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | هو الحي لا إله إلا هو فادعوه مخلصين له الدين | ٦٥ | ك « | ٤٠ |
| | شرع لكم من الدين ما وصى به نوحا والذي أوحينا إليك | ١٣ | ك الشورى | ٤٢ |
| | أن أقيموا الدين ولا تتفرقوا فيه ... ... ... ... | ١٣ | ك « | ٤٢ |
| | أم لهم شركاء شرعوا لهم من الدين ما لم يأذن به الله | ٢١ | ك « | ٤٢ |
| | هو الذي أرسل رسوله بالهدى ودين الحق ... ... | ٢٨ | م الفتح | ٤٨ |
| | ليظهره على الدين كله ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م « | ٤٨ |
| | إنما توعدون لصادق . وإن الدين لواقع ... ... | ٦ | ك الذاريات | ٥١ |
| | يسئلون أيان يوم الدين... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك « | ٥١ |
| | هذا نزلهم يوم الدين ... ... ... ... ... ... | ٥٦ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | لا ينهاكم الله عن الذين لم يقاتلوكم في الدين ولم يخرجوكم من دياركم أن تبروهم ... ... ... ... ... | ٨ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | إنما ينهاكم الله عن الذين قاتلوكم في الدين وأخرجوكم من دياركم وظاهروا على إخراجكم أن تولوهم | ٩ | م « | ٦٠ |
| | هو الذي أرسل رسوله بالهدى ودين الحق ... ... | ٩ | م الصف | ٦١ |
| | ليظهره على الدين كله ولو كره المشركون ... ... ... | ٩ | م « | ٦١ |
| | والذين يصدقون بيوم الدين ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك المعارج | ٧٠ |
| | وكنا نكذب بيوم الدين... ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك المدثر | ٧٤ |
| | كلا بل تكذبون بالدين... ... ... ... ... ... | ٩ | ك الانفطار | ٨٢ |
| | وإن الفجار لفي جحيم . يصلونها يوم الدين ... ... | ١٥ | ك « | ٨٢ |
| | وما أدراك ما يوم الدين ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك « | ٨٢ |
| | ثم ما أدراك ما يوم الدين ... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك « | ٨٢ |
| | الذين يكذبون بيوم الدين ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك المطففين | ٨٣ |
| | فما يكذبك بعد بالدين ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك التين | ٩٥ |
| | وما أمروا إلا ليعبدوا الله مخلصين له الدين حنفاء | ٥ | م البينة | ٩٨ |
| | ويقيموا الصلاة ويؤتوا الزكاة وذلك دين القيمة | ٥ | م « | ٩٨ |
| | أرأيت الذي يكذب بالدين... ... ... ... ... ... | ١ | ك الماعون | ١٠٧ |
| | ورأيت الناس يدخلون في دين الله أفواجا ... ... | ٢ | م النصر | ١١٠ |
| دِينِ: | لكم دينكم ولي دين ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك الكافرون | ١٠٩ |
| دِينًا: | ومن يبتغ غير الإسلام دينا فلن يقبل منه... ... | ٨٥ | م آل عمران | ٣ |
| (٤) | ومن أحسن دينا ممن أسلم وجهه لله وهو محسن | ١٢٥ | م النساء | ٤ |
| | وأتممت عليكم نعمتي ورضيت لكم الإسلام دينا | ٣ | م المائدة | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| دِينًا | قل إنني هداني ربي إلى صراط مستقيم دينا قيما ملة إبراهيم حنيفا ... ... ... ... ... ... ... | الأنعام | ك ١٦١ | ٦ |
| دِينِكُمْ (١١) | ولا يزالون يقاتلونكم حتى يردوكم عن دينكم إن استطاعوا | البقرة | م ٢١٧ | ٢ |
| | ولا تؤمنوا إلا لمن تبع دينكم ... ... ... ... ... | آل عمران | م ٧٣ | ٣ |
| | يأهل الكتاب لا تغلوا في دينكم ولا تقولوا على الله إلا الحق | النساء | م ١٧١ | ٤ |
| | اليوم يئس الذين كفروا من دينكم فلا تخشوهم واخشون | المائدة | م ٣ | ٥ |
| | اليوم أكملت لكم دينكم وأتممت عليكم نعمتي ... ... | » | م ٣ | ٥ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تتخذوا الذين اتخذوا دينكم هزوا ولعبا من الذين أوتوا الكتاب من قبلكم والكفار أولياء | » | م ٥٧ | ٥ |
| | قل يأهل الكتاب لا تغلوا في دينكم غير الحق | » | م ٧٧ | ٥ |
| | وإن نكثوا أيمانهم من بعد عهدهم وطعنوا في دينكم فقاتلوا أئمة الكفر ... ... ... ... ... ... | التوبة | م ١٢ | ٩ |
| | إني أخاف أن يبدل دينكم أو أن يظهر في الأرض الفساد | غافر | ك ٢٦ | ٤٠ |
| | قل أتعلمون الله بدينكم والله يعلم ما في السموات وما في الأرض... ... ... ... ... ... ... | الحجرات | م ١٦ | ٤٩ |
| | لكم دينكم ولي دين ... ... ... ... ... ... ... | الكافرون | ك ٦ | ١٠٩ |
| دِينِهِ (٢) | ومن يرتدد منكم عن دينه فيمت وهو كافر فأولئك حبطت أعمالهم ... ... ... ... ... ... | البقرة | م ٢١٧ | ٢ |
| دِينِهِ | يأيها الذين آمنوا من يرتد منكم عن دينه فسوف يأتي الله بقوم يحبهم ويحبونه ... ... ... ... | المائدة | م ٥٤ | ٥ |
| دِينِهِمْ (١٠) | وغرهم في دينهم ما كانوا يفترون ... ... ... | آل عمران | م ٢٤ | ٣ |
| | إلا الذين تابوا وأصلحوا واعتصموا بالله وأخلصوا دينهم لله فأولئك مع المؤمنين ... ... ... ... | النساء | م ١٤٦ | ٤ |
| | وذر الذين اتخذوا دينهم لعبا ولهوا وغرتهم الحياة الدنيا | الأنعام | ك ٧٠ | ٦ |
| | ليردوهم وليلبسوا عليهم دينهم ... ... ... ... ... | » | ك ١٣٧ | ٦ |
| | إن الذين فرقوا دينهم وكانوا شيعا لست منهم في شيء | » | ك ١٥٩ | ٦ |
| | الذين اتخذوا دينهم لهوا ولعبا وغرتهم الحياة الدنيا | الأعراف | ك ٥١ | ٧ |
| | إذ يقول المنافقون والذين في قلوبهم مرض غر هؤلاء دينهم | الأنفال | م ٤٩ | ٨ |
| | يومئذ يوفيهم الله دينهم الحق ... ... ... ... ... | النور | م ٢٥ | ٢٤ |
| | وليمكنن لهم دينهم الذي ارتضى لهم ... ... ... ... | » | م ٥٥ | ٢٤ |
| | من الذين فرقوا دينهم وكانوا شيعا... ... ... ... | الروم | ك ٣٢ | ٣٠ |
| دِينِي (٢) | قل يأيها الناس إن كنتم في شك من ديني فلا أعبد الذين تعبدون من دون الله ... ... ... ... | يونس | ك ١٠٤ | ١٠ |
| | قل الله أعبد مخلصا له ديني ... ... ... ... ... | الزمر | ك ١٤ | ٣٩ |
| لَمَدِينُونَ | أئذا متنا وكنا ترابا وعظاما أئنا لمدينون... ... | الصافات | ك ٥٣ | ٣٧ |
| مَدِينِينَ | فلولا إن كنتم غير مدينين. ترجعونها إن كنتم صادقين | الواقعة | ك ٨٦ | ٥٦ |

# باب الذال

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الذِّئْبُ | قال إني ليحزنني أن تذهبوا به وأخاف أن يأكله الذئب | يوسف | ك ١٣ | ١٢ |
| (٣) | قالوا لئن أكله الذئب ونحن عصبة إنا إذا لخاسرون | » | ك ١٤ | ١٢ |
| | قالوا يا أبانا إنا ذهبنا نستبق وتركنا يوسف عند متاعنا فأكله الذئب ... ... ... ... ... | » | ك ١٧ | ١٢ |
| مَذْءُومًا | قال اخرج منها مذءوما مدحورا.. ... ... ... | الأعراف | ك ١٨ | ٧ |
| الذُّبَابُ | وإن يسلبهم الذباب شيئا لا يستنقذوه منه | الحج | م ٧٣ | ٢٢ |
| ذُبَابًا | إن الذين تدعون من دون الله لن يخلقوا ذبابا ولو اجتمعوا له ... ... ... ... ... ... | » | م ٧٣ | ٢٢ |
| فَذَبَحُوهَا | قالوا الآن جئت بالحق فذبحوها وما كادوا يفعلون | البقرة | م ٧١ | ٢ |
| أَذْبَحُكَ | يا بني إني أرى في المنام أني أذبحك فانظر ماذا ترى | الصافات | ك ١٠٢ | ٣٧ |
| لَأُذَبِّحَنَّهُ | لأعذبنه عذابا شديدا أو لأذبحنه أو ليأتيني بسلطان مبين | النمل | ك ٢١ | ٢٧ |
| تَذْبَحُوا | وإذ قال موسى لقومه إن الله يأمركم أن تذبحوا بقرة | البقرة | م ٦٧ | ٢ |
| ذُبِحَ | وما أكل السبع إلا ما ذكيتم وما ذبح على النصب | المائدة | م ٣ | ٥ |
| يُذَبِّحُ | يستضعف طائفة منهم يذبح أبناءهم ويستحيي نساءهم | القصص | ك ٤ | ٢٨ |
| يُذَبِّحُونَ (٢) | يسومونكم سوء العذاب يذبحون أبناءكم ويستحيون نساءكم... ... ... ... ... ... | البقرة | م ٤٩ | ٢ |
| | يسومونكم سوء العذاب ويذبحون أبناءكم ويستحيون نساءكم | إبراهيم | ك ٦ | ١٤ |
| ذِبْحٍ | وفديناه بذبح عظيم ... ... ... ... ... ... | الصافات | ك ١٠٧ | ٣٧ |
| مُذَبْذَبِينَ | مذبذبين بين ذلك لا إلى هؤلاء ولا إلى هؤلاء | النساء | م ١٤٣ | ٤ |
| تَدَّخِرُونَ | وأنبئكم بما تأكلون وما تدخرون في بيوتكم | آل عمران | م ٤٩ | ٣ |
| ذَرَأَ | وجعلوا لله مما ذرأ من الحرث والأنعام نصيبا | الأنعام | ك ١٣٦ | ٦ |
| (٢) | وما ذرأ لكم في الأرض مختلفا ألوانه ... ... ... | النحل | ك ١٣ | ١٦ |
| ذَرَأَكُمْ | وهو الذي ذرأكم في الأرض وإليه تحشرون | المؤمنون | ك ٧٩ | ٢٣ |
| (٢) | قل هو الذي ذرأكم في الأرض وإليه تحشرون | الملك | ك ٢٤ | ٦٧ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ذَرَأْنَا | ولقد ذرأنا لجهنم كثيرا من الجن والإنس ... ... | ١٧٩ | ك الأعراف | ٧ |
| يَذْرَؤُكُمْ | جعل لكم من أنفسكم أزواجا ومن الأنعام أزواجا يذرؤكم فيه... ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك الشورى | ٤٢ |
| ذَرَّةٍ | إن الله لا يظلم مثقال ذرة وإن تك حسنة يضاعفها | ٤٠ | م النساء | ٤ |
| (٦) | وما يعزب عن ربك من مثقال ذرة في الأرض ولا في السماء | ٦١ | ك يونس | ١٠ |
| | لا يعزب عنه مثقال ذرة في السموات ولا في الأرض | ٣ | ك سبأ | ٣٤ |
| | قل أدعوا الذين زعمتم من دون الله لا يملكون مثقال ذرة في السموات ولا في الأرض ..... | ٢٢ | ك « | ٣٤ |
| | فمن يعمل مثقال ذرة خيرا يره ... ... ... ... ... | ٧ | م الزلزلة | ٩٩ |
| | ومن يعمل مثقال ذرة شرا يره ... ... ... ... ... | ٨ | م « | ٩٩ |
| ذُرِّيَّةٌ | له فيها من كل الثمرات وأصابه الكبر وله ذرية ضعفاء | ٢٦٦ | م البقرة | ٢ |
| (١١) | ذرية بعضها من بعض والله سميع عليم ... ... ... | ٣٤ | م آل عمران | ٣ |
| | هنالك دعا زكريا ربه قال رب هب لي من لدنك ذرية طيبة | ٣٨ | م « | ٣ |
| | وليخش الذين لو تركوا من خلفهم ذرية ضعافا خافوا عليهم | ٩ | م النساء | ٤ |
| | إن يشأ يذهبكم ويستخلف من بعدكم ما يشاء كما أنشأكم من ذرية قوم آخرين ... ... ... ... | ١٣٣ | ك الأنعام | ٦ |
| | أو تقولوا إنما أشرك آباؤنا من قبل وكنا ذرية من بعدهم | ١٧٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | فما آمن لموسى إلا ذرية من قومه على خوف من فرعون وملائهم أن يفتنهم... ... ... ... ... ... | ٨٣ | ك يونس | ١٠ |
| | ولقد أرسلنا رسلا من قبلك وجعلنا لهم أزواجا وذرية | ٣٨ | م الرعد | ١٣ |
| | ذرية من حملنا مع نوح إنه كان عبدا شكورا ... ... | ٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| | أولئك الذين أنعم الله عليهم من النبيين من ذرية آدم | ٥٨ | م مريم | ١٩ |
| | ومن حملنا مع نوح ومن ذرية إبراهيم وإسرائيل | ٥٨ | م « | ١٩ |
| ذُرِّيَّتِنَا | ربنا واجعلنا مسلمين لك ومن ذريتنا أمة مسلمة لك | ١٢٨ | م البقرة | ٢ |
| ذُرِّيَّتِهِ | ومن ذريته داود وسليمان وأيوب ويوسف وموسى | | | |
| (٥) | وهرون ... ... ... ... ... ... ... | ٨٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | لئن أخرتن إلى يوم القيامة لأحتنكن ذريته إلا قليلا | ٦٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| | أفتتخذونه وذريته أولياء من دوني وهم لكم عدو | ٥٠ | ك الكهف | ١٨ |
| | ووهبنا له إسحق ويعقوب وجعلنا في ذريته النبوة والكتاب | ٢٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وجعلنا ذريته هم الباقين ... ... ... ... ... | ٧٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| ذُرِّيَّتَهَا | وإني أعيذها بك وذريتها من الشيطان الرجيم | ٣٦ | م آل عمران | ٣ |
| ذُرِّيَّتَهُمْ | وإذ أخذ ربك من بني آدم من ظهورهم ذريتهم | ١٧٢ | ك الأعراف | ٧ |
| (٤) | وآية لهم أنا حملنا ذريتهم في الفلك المشحون | ٤١ | ك يس | ٣٦ |
| | والذين آمنوا واتبعتهم ذريتهم بإيمان ... ... ... | ٢١ | ك الطور | ٥٢ |
| | ألحقنا بهم ذريتهم وما ألتناهم من عملهم من شيء | ٢١ | ك « | ٥٢ |
| ذُرِّيَّتِهِمَا | وباركنا عليه وعلى إسحق ومن ذريتهما محسن وظالم لنفسه مبين ... ... ... ... ... ... | ١١٣ | ك الصافات | ٣٧ |
| (٢) | ولقد أرسلنا نوحا وإبراهيم وجعلنا في ذريتهما النبوة والكتاب... ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | م الحديد | ٥٧ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ذُرِّيَّتِي | قال ومن ذريتي قال لا ينال عهدي الظالمين | ١٢٤ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | ربنا إني أسكنت من ذريتي بواد غير ذي زرع عند بيتك المحرم ... ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | رب اجعلني مقيم الصلاة ومن ذريتي ربنا وتقبل دعاء | ٤٠ | ك « | ١٤ |
| | وأصلح لي في ذريتي إني تبت إليك وإني من المسلمين | ١٥ | م الأحقاف | ٤٦ |
| ذُرِّيَّاتِنَا | والذين يقولون ربنا هب لنا من أزواجنا وذرياتنا قرة أعين... ... ... ... ... ... ... | ٧٤ | ك الفرقان | ٢٥ |
| ذُرِّيَّاتِهِمْ | ومن آبائهم وذرياتهم وإخوانهم واجتبيناهم | | | |
| (٣) | وهديناهم إلى صراط مستقيم... ... ... ... ... | ٨٧ | ك الأنعام | ٦ |
| | جنات عدن يدخلونها ومن صلح من آبائهم وأزواجهم وذرياتهم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | م الرعد | ١٣ |
| | ربنا وأدخلهم جنات عدن التي وعدتهم ومن صلح من آبائهم وأزواجهم وذرياتهم ... ... ... | ٨ | ك غافر | ٤٠ |
| ذَرْعًا | ولما جاءت رسلنا لوطا سيء بهم وضاق بهم ذرعا | ٧٧ | ك هود | ١١ |
| (٢) | ولما أن جاءت رسلنا لوطا سيء بهم وضاق بهم ذرعا وقالوا لا تخف ولا تحزن ... ... ... ... | ٣٣ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| ذَرْعُهَا | ثم في سلسلة ذرعها سبعون ذراعا فاسلكوه... ... | ٣٢ | ك الحاقة | ٦٩ |
| ذِرَاعًا | ثم في سلسلة ذرعها سبعون ذراعا فاسلكوه ... | ٣٢ | ك « | ٦٩ |
| ذِرَاعَيْهِ | وكلبهم باسط ذراعيه بالوصيد ... ... ... ... | ١٨ | ك الكهف | ١٨ |
| تَذْرُوهُ | كماء أنزلناه من السماء فاختلط به نبات الأرض فأصبح هشيما تذروه الرياح... ... ... ... ... | ٤٥ | ك الكهف | ١٨ |
| ذَرْوًا | والذاريات ذروا... ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الذاريات | ٥١ |
| الذَّارِيَاتِ | والذاريات ذروا ... ... ... ... ... ... | ١ | ك « | ٥١ |
| مُذْعِنِينَ | وإن يكن لهم الحق يأتوا إليه مذعنين ... ... | ٤٩ | م النور | ٢٤ |
| الْأَذْقَانِ | إن الذين أوتوا العلم من قبله إذا يتلى عليهم | | | |
| (٣) | يخرون للأذقان سجدا ... ... ... ... ... | ١٠٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ويخرون للأذقان يبكون ويزيدهم خشوعا ... ... | ١٠٩ | ك « | ١٧ |
| | إنا جعلنا في أعناقهم أغلالا فهي إلى الأذقان فهم مقمحون | ٨ | ك يس | ٣٦ |
| ذَكَرَ | لمن كان يرجوا الله واليوم الآخر وذكر الله كثيرا | ٢١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| (٢) | قد أفلح من تزكى . وذكر اسم ربه فصلى ... ... | ١٥ | ك الأعلى | ٨٧ |
| ذَكَرْتَ | وإذا ذكرت ربك في القرآن وحده ولوا على أدبارهم نفورا ... ... ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| ذَكَرَهُ | كلا إنها تذكرة . فمن شاء ذكره... ... ... ... | ٥٥ | ك المدثر | ٧٤ |
| (٢) | كلا إنها تذكرة . فمن شاء ذكره ... ... ... ... | ١٢ | ك عبس | ٨٠ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| ذَكَرُوا | : والذين إذا فعلوا فاحشة أو ظلموا أنفسهم | | |
| (٢) | ذكروا الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٣٥ م آل عمران | ٣ |
| | إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات وذكروا الله كثيرا | ٢٢٧ م الشعراء | ٢٦ |
| أَذْكُرْكُمْ | : فاذكرونى أذكركم واشكروا لى ولا تكفرون ... | ١٥٢ م البقرة | ٢ |
| أَذْكُرَهُ | : فإنى نسيت الحوت وما أنسانيه إلا الشيطان أن أذكره | ٦٣ ك الكهف | ١٨ |
| تَذْكُرُ | : قالوا تالله تفتؤا تذكر يوسف حتى تكون حرضا | ٨٥ ك يوسف | ١٢ |
| تَذْكُرُوا | : لتستووا على ظهوره ثم تذكروا نعمة ربكم | | |
| | إذا استويتم عليه ... ... ... ... ... ... ... | ١٣ ك الزخرف | ٤٣ |
| تَذْكُرُونَ | : فستذكرون ما أقول لكم وأفوض أمرى إلى الله | ٤٤ ك غافر | ٤٠ |
| تَذْكُرُونَهُنَّ | : علم الله أنكم ستذكرونهن ولكن لا تواعدوهن سرا | ٢٣٥ م البقرة | ٢ |
| تَذْكُرَكَ | : وأشركه فى أمرى . كى نسبحك كثيرا . | | |
| | ونذكرك كثيرا ... ... ... ... ... ... ... | ٣٤ ك طه | ٢٠ |
| يَذْكُرُ | : أو لا يذكر الإنسان أنا خلقناه من قبل ولم يك شيئا | ٦٧ ك مريم | ١٩ |
| (٢) | أهذا الذى يذكر آلهتكم ... ... ... ... ... | ٣٦ ك الأنبياء | ٢١ |
| يَذْكُرُهُمْ | : قالوا سمعنا فتى يذكرهم يقال له إبراهيم... ... | ٦٠ ك « | ٢١ |
| يَذْكُرُوا | : ليشهدوا منافع لهم ويذكروا اسم الله فى أيام | | |
| (٢) | معلومات على ما رزقهم من بهيمة الأنعام ... ... | ٢٨ م الحج | ٢٢ |
| | ولكل أمة جعلنا منسكا ليذكروا اسم الله على ما رزقهم | | |
| | من بهيمة الأنعام ... ... ... ... ... ... ... | ٣٤ م « | ٢٢ |
| يَذْكُرُونَ | : الذين يذكرون الله قياما وقعودا وعلى جنوبهم | ١٩١ م آل عمران | ٣ |
| (٥) | وإذا قاموا إلى الصلاة قاموا كسالى يراءون الناس | | |
| | ولا يذكرون الله إلا قليلا ... ... ... ... ... | ١٤٢ م النساء | ٤ |
| | وأنعام لا يذكرون اسم الله عليها افتراء عليه ... ... | ١٣٨ ك الأنعام | ٦ |
| | وإذا ذكروا لا يذكرون ... ... ... ... ... ... | ١٣ ك الصافات | ٣٧ |
| | وما يذكرون إلا أن يشاء الله ... ... ... ... ... | ٥٦ ك المدثر | ٧٤ |
| أَذْكُرْ | : واذكر ربك كثيرا وسبح بالعشى والإبكار ... ... | ٤١ م آل عمران | ٣ |
| (١٦) | اذكر نعمتى عليك وعلى والدتك... ... ... ... ... | ١١٠ م المائدة | ٥ |
| | واذكر ربك فى نفسك تضرعا وخيفة ... ... ... | ٢٠٥ ك الأعراف | ٧ |
| | واذكر ربك إذا نسيت... ... ... ... ... ... ... | ٢٤ ك الكهف | ١٨ |
| | واذكر فى الكتاب مريم إذ انتبذت من أهلها مكانا شرقيا | ١٦ ك مريم | ١٩ |
| | واذكر فى الكتاب إبراهيم إنه كان صديقا نبيا... ... | ٤١ ك « | ١٩ |
| | واذكر فى الكتاب موسى إنه كان مخلصا وكان رسولا نبيا | ٥١ ك « | ١٩ |
| | واذكر فى الكتاب إسماعيل إنه كان صادق الوعد | ٥٤ ك « | ١٩ |
| | واذكر فى الكتاب إدريس إنه كان صديقا نبيا ... | ٥٦ ك « | ١٩ |
| | اصبر على ما يقولون واذكر عبدنا داود ذا الأيد | ١٧ ك ص | ٣٨ |
| | واذكر عبدنا أيوب إذ نادى ربه أنى مسنى الشيطان | | |
| | بنصب وعذاب ... ... ... ... ... ... ... | ٤١ ك « | ٣٨ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| أَذْكُرْ | : واذكر عبادنا إبراهيم وإسحق ويعقوب | | |
| | أولى الأيدى والأبصار ... ... ... ... ... ... | ٤٥ ك ص | ٣٨ |
| | واذكر إسماعيل واليسع وذا الكفل وكل من الأخيار | ٤٨ ك « | ٣٨ |
| | واذكر أخا عاد إذ أنذر قومه بالأحقاف ... ... | ٢١ ك الأحقاف | ٤٦ |
| | واذكر اسم ربك وتبتل إليه تبتيلا ... ... ... ... | ٨ ك المزمل | ٧٣ |
| | واذكر اسم ربك بكرة وأصيلا ... ... ... ... ... | ٢٥ م الإنسان | ٧٦ |
| أَذْكُرْنَ | : واذكرن ما يتلى فى بيوتكن من آيات الله والحكمة | ٣٤ م الأحزاب | ٣٣ |
| أَذْكُرْنِى | : وقال للذى ظن أنه ناج منهما اذكرنى عند ربك | ٤٢ ك يوسف | ١٢ |
| أَذْكُرُوا | : يا بنى إسرائيل اذكروا نعمتى التى أنعمت | | |
| (٢٩) | عليكم وأوفوا بعهدى ... ... ... ... ... ... | ٤٠ م البقرة | ٢ |
| | يا بنى إسرائيل اذكروا نعمتى التى أنعمت عليكم | | |
| | وأنى فضلتكم على العالمين ... ... ... ... ... | ٤٧ م « | ٢ |
| | خذوا ما آتيناكم بقوة واذكروا ما فيه لعلكم تتقون | ٦٣ م « | ٢ |
| | يا بنى إسرائيل اذكروا نعمتى التى أنعمت عليكم... ... | ١٢٢ م « | ٢ |
| | فإذا أفضتم من عرفات فاذكروا الله عند المشعر الحرام | ١٩٨ م « | ٢ |
| | فإذا قضيتم مناسككم فاذكروا الله كذكركم آباءكم | ٢٠٠ م « | ٢ |
| | واذكروا الله فى أيام معدودات ... ... ... ... | ٢٠٣ م « | ٢ |
| | واذكروا نعمة الله عليكم وما أنزل عليكم من الكتاب والحكمة | ٢٣١ م « | ٢ |
| | فإذا أمنتم فاذكروا الله كما علمكم ما لم تكونوا تعلمون | ٢٣٩ م « | ٢ |
| | واذكروا نعمة الله عليكم إذ كنتم أعداء فألف بين قلوبكم | ١٠٣ م آل عمران | ٣ |
| | فإذا قضيتم الصلاة فاذكروا الله قياما وقعودا وعلى جنوبكم | ١٠٣ م النساء | ٤ |
| | فكلوا مما أمسكن عليكم واذكروا اسم الله عليه... ... | ٤ م المائدة | ٥ |
| | واذكروا نعمة الله عليكم وميثاقه الذى واثقكم به | ٧ م « | ٥ |
| | يأيها الذين آمنوا اذكروا نعمة الله عليكم إذ هم قوم | | |
| | أن يبسطوا إليكم أيديهم ... ... ... ... ... | ١١ م « | ٥ |
| | يا قوم اذكروا نعمة الله عليكم إذ جعل فيكم أنبياء | ٢٠ م « | ٥ |
| | واذكروا إذ جعلكم خلفاء من بعد قوم نوح ... ... | ٦٩ ك الأعراف | ٧ |
| | وزادكم فى الخلق بسطة فاذكروا آلاء الله لعلكم تفلحون | ٦٩ ك « | ٧ |
| | واذكروا إذ جعلكم خلفاء من بعد عاد ... ... ... | ٧٤ ك « | ٧ |
| | فاذكروا آلاء الله ولا تعثوا فى الأرض مفسدين | ٧٤ ك « | ٧ |
| | واذكروا إذ كنتم قليلا فكثركم ... ... ... ... | ٨٦ ك « | ٧ |
| | خذوا ما آتيناكم بقوة واذكروا ما فيه لعلكم تتقون | ١٧١ ك « | ٧ |
| | واذكروا إذ أنتم قليل مستضعفون فى الأرض... ... | ٢٦ م الأنفال | ٨ |
| | يأيها الذين آمنوا إذا لقيتم فئة فاثبتوا واذكروا الله كثيرا | ٤٥ م « | ٨ |
| | وإذ قال موسى لقومه اذكروا نعمة الله عليكم إذ أنجاكم | | |
| | من آل فرعون... ... ... ... ... ... ... ... | ٦ ك إبراهيم | ١٤ |
| | والبدن جعلناها لكم من شعائر الله لكم فيها خير | | |
| | فاذكروا اسم الله عليها صواف... ... ... ... | ٣٦ م الحج | ٢٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أذكروا: | يأيها الذين آمنوا اذكروا نعمة الله عليكم إذ جاءتكم جنود ... ... ... ... ... ... | ٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | يأيها الذين آمنوا اذكروا الله ذكرا كثيرا ... ... | ٤١ | م « | ٣٣ |
| | يأيها الناس اذكروا نعمة الله عليكم... ... ... ... | ٣ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وابتغوا من فضل الله واذكروا الله كثيرا لعلكم تفلحون | ١٠ | م الجمعه | ٦٢ |
| أذكرونى: | فاذكرونى أذكركم واشكروا لى ولا تكفرون | ١٥٢ | م البقـرة | ٢ |
| أذكروه: | فاذكروا الله عند المشعر الحرام واذكروه كما هداكم... ... ... ... ... ... ... ... | ١٩٨ | م « | ٢ |
| ذكر: | فكلوا مما ذكر اسم الله عليه إن كنتم بآياته مؤمنين | ١١٨ | ك الأنعام | ٦ |
| (٧) | وما لكم ألا تأكلوا مما ذكر اسم الله عليه ... ... | ١١٩ | ك « | ٦ |
| | إنما المؤمنون الذين إذا ذكر الله وجلت قلوبهم | ٢ | م الأنفال | ٨ |
| | الذين إذا ذكر الله وجلت قلوبهم والصابرين على ما أصابهم | ٣٥ | م الحج | ٢٢ |
| | وإذا ذكر الله وحده اشمأزت قلوب الذين لا يؤمنون بالآخرة ... ... ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وإذا ذكر الذين من دونه إذا هم يستبشرون... ... | ٤٥ | ك « | ٣٩ |
| | فإذا أنزلت سورة محكمة وذكر فيها القتال رأيت الذين فى قلوبهم مرض ينظرون إليك ... ... ... ... | ٢٠ | م محمد | ٤٧ |
| يذكر: | ومن أظلم ممن منع مساجد الله أن يذكر فيها اسمه | ١١٤ | م البقـرة | ٢ |
| (٤) | ولا تأكلوا مما لم يذكر اسم الله عليه وإنه لفسق | ١٢١ | ك الأنعام | ٦ |
| | ولولا دفع الله الناس بعضهم ببعض لهدمت صوامع وبيع وصلوات ومساجد يذكر فيها اسم الله | ٤٠ | م الحج | ٢٢ |
| | فى بيوت أذن الله أن ترفع ويذكر فيها اسمه ... ... | ٣٦ | م النور | ٢٤ |
| تذكر: | أن تضل إحداهما فتذكر إحداهما الأخرى... ... | ٢٨٢ | م البقـرة | ٢ |
| ذكر: | وذكر به أن تبسل نفس بما كسبت ... ... ... | ٧٠ | ك الأنعام | ٦ |
| (٦) | فذكر بالقرآن من يخاف وعيد ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك ق | ٥٠ |
| | وذكر فإن الذكرى تنفع المؤمنين ... ... ... ... | ٥٥ | ك الذاريات | ٥١ |
| | فذكر فما أنت بنعمة ربك بكاهن ولا مجنون ... ... | ٢٩ | ك الطور | ٥٢ |
| | فذكر إن نفعت الذكرى... ... ... ... ... ... | ٩ | ك الأعلى | ٨٧ |
| | فذكر إنما أنت مذكر... ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك الغاشية | ٨٨ |
| ذكرهم: | أن أخرج قومك من الظلمات إلى النور وذكرهم بأيام الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك إبراهيم | ١٤ |
| ذكر: | ومن أظلم ممن ذكر بآيات ربه فأعرض عنها... ... | ٥٧ | ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | ومن أظلم ممن ذكر بآيات ربه ثم أعرض عنها | ٢٢ | ك السجدة | ٣٢ |
| ذكرتم: | قالوا طائركم معكم أئن ذكرتم بل أنتم قوم مسرفون | ١٩ | ك يس | ٣٦ |
| ذكروا: | يحرفون الكلم عن مواضعه ونسوا حظا مما ذكروا به | ١٣ | م المائدة | ٥ |
| (٧) | ومن الذين قالوا إنا نصارى أخذنا ميثاقهم فنسوا حظا مما ذكروا به ... ... ... ... ... ... ... | ١٤ | م « | ٥ |
| | فلما نسوا ما ذكروا به فتحنا عليهم أبواب كل شىء | ٤٤ | ك الأنعام | ٦ |
| ذكروا: | فلما نسوا ما ذكروا به أنجينا الذين ينهون عن السوء | ١٦٥ | م الأعراف | ٧ |
| | والذين إذا ذكروا بآيات ربهم لم يخروا عليها صما وعميانا | ٧٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | إنما يؤمن بآياتنا الذين إذا ذكروا بها خروا سجدا | ١٥ | ك السجدة | ٣٢ |
| | وإذا ذكروا لا يذكرون ... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك الصافات | ٣٧ |
| تذكر: | أولم نعمركم ما يتذكر فيه من تذكر وجاءكم النذير | ٣٧ | ك فاطر | ٣٥ |
| تذكروا: | إن الذين اتقوا إذا مسهم طائف من الشيطان تذكروا فإذا هم مبصرون ... ... ... ... ... | ٢٠١ | ك الأعراف | ٧ |
| تتذكرون: | وسع ربى كل شىء علما أفلا تتذكرون | ٨٠ | ك الأنعام | ٦ |
| (٣) | مالكم من دونه من ولىّ ولا شفيع أفلا تتذكرون | ٤ | ك السجدة | ٣٢ |
| | وما يستوى الأعمى والبصير والذين آمنوا وعملوا الصالحات ولا المسىء قليلا ما تتذكرون ... ... ... ... | ٥٨ | ك غافر | ٤٠ |
| تذكرون: | وبعهد الله أوفوا ذلكم وصاكم به لعلكم تذكرون | ١٥٢ | م الأنعام | ٦ |
| (١٧) | اتبعوا ما أنزل إليكم من ربكم ولا تتبعوا من دونه أولياء قليلا ما تذكرون ... ... ... ... ... | ٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | كذلك نخرج الموتى لعلكم تذكرون ... ... ... ... | ٥٧ | ك « | ٧ |
| | ذلكم الله ربكم فاعبدوه أفلا تذكرون ... ... ... | ٣ | ك يونس | ١٠ |
| | مثل الفريقين كالأعمى والأصم والبصير والسميع هل يستويان مثلا أفلا تذكرون ... ... ... | ٢٤ | ك هود | ١١ |
| | ويا قوم من ينصرنى من الله إن طردتهم أفلا تذكرون | ٣٠ | ك « | ١١ |
| | أفمن يخلق كمن لا يخلق أفلا تذكرون ... ... ... | ١٧ | ك النحل | ١٦ |
| | وينهى عن الفحشاء والمنكر والبغى يعظكم لعلكم تذكرون | ٩٠ | ك « | ١٦ |
| | سيقولون لله قل أفلا تذكرون ... ... ... ... ... | ٨٥ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | سورة أنزلناها وفرضناها وأنزلنا فيها آيات بينات لعلكم تذكرون ... ... ... ... ... ... ... | ١ | م النور | ٢٤ |
| | ذلكم خير لكم لعلكم تذكرون ... ... ... ... ... | ٢٧ | م « | ٢٤ |
| | أإله مع الله قليلا ما تذكرون ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك النمل | ٢٧ |
| | أصطفى البنات على البنين . مالكم كيف تحكمون . أفلا تذكرون ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| | وجعل على بصره غشاوة فمن يهديه من بعد الله أفلا تذكرون | ٢٣ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | ومن كل شىء خلقنا زوجين لعلكم تذكرون ... ... | ٤٩ | ك الذاريات | ٥١ |
| | ولقد علمتم النشأة الأولى فلولا تذكرون... ... ... | ٦٢ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | ولا بقول كاهن قليلا ما تذكرون ... ... ... ... | ٤٢ | ك الحاقة | ٦٩ |
| يتذكر: | أفمن يعلم أنما أنزل إليك من ربك الحق كمن | | | |
| (٨) | هو أعمى إنما يتذكر أولوا الألباب ... ... ... | ١٩ | م الرعد | ١٣ |
| | فقولا له قولا لينا لعله يتذكر أو يخشى ... ... ... | ٤٤ | ك طه | ٢٠ |
| | أولم نعمركم ما يتذكر فيه من تذكر وجاءكم النذير | ٣٧ | ك فاطر | ٣٥ |
| | كتاب أنزلناه إليك مبارك ليدبروا آياته وليتذكر أولوا الألباب ... ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك ص | ٣٨ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| يَتَذَكَّرُ: | قل هـل يستوى الذين يعلمون والذين لا يعلمون إنما يتذكر أولوا الألباب ... ... ... ... ... | ٩ ك الزمـر | ٣٩ |
| | هو الذى يريكم آياته و يـنزل لكم من السماء رزقا وما يتذكر إلا من ينيب ... ... ... ... ... | ١٣ ك غافـر | ٤٠ |
| | يوم يتذكر الإنسان ماسعى ... ... ... ... ... ... | ٣٥ ك النازعات | ٧٩ |
| | وجىء يومئذ بجهنم يومئذ يتذكر الإنسان وأنى له الذكرى | ٢٣ ك الفجـر | ٨٩ |
| يَتَذَكَّرُونَ: | و يبين آياته للناس لعلهم يتذكرون ... ... | ٢٢١ م البقـرة | ٢ |
| (٧) | و يضرب الله الأمثال للناس لعلهم يتذكرون ... ... | ٢٥ ك إبراهـيم | ١٤ |
| | بصائر للناس وهدى و رحمة لعلهم يتذكرون ... ... | ٤٣ ك القصص | ٢٨ |
| | لتنذر قوما ماأتاهم من نذير من قبلك لعلهم يتذكرون | ٤٦ ك « | ٢٨ |
| | ولقد وصلنا لهم القول لعلهم يتذكرون ... ... ... | ٥١ ك « | ٢٨ |
| | ولقد ضربنا للناس فى هـذا القرآن من كل مثـل لعلهم يتذكرون ... ... ... ... ... ... | ٢٧ ك الزمـر | ٣٩ |
| | فإنما يسرناه بلسانك لعلهم يتذكرون ... ... ... | ٥٨ ك الدخان | ٤٤ |
| يَذَّكَّرُ: | ومن يؤت الحكمة فقد أوتى خيرا كثيرا وما يذكر | | |
| (٦) | إلا أولوا الألباب ... ... ... ... ... ... | ٢٦٩ م البقـرة | ٢ |
| | والراسخون فى العلم يقولون آمنا به كل من عند ربنا وما يذكر إلا أولوا الألباب ... ... ... ... | ٧ م آل عمران | ٣ |
| | وليعلموا أنما هو إله واحد وليـذكر أولوا الألباب | ٥٢ ك إبراهـيم | ١٤ |
| | وهو الذى جعل الليل والنهار خلفة لمن أراد أن يذكر | ٦٢ ك الفـرقان | ٢٥ |
| | وما يدريك لعـله يزكى . أو يذكر فتنفعه الذكرى | ٤ ك عبس | ٨٠ |
| | سيذكر من يخشى ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ ك الأعـلى | ٨٧ |
| لِيَذَّكَّرُوا: | ولقد صرفنا فى هذا القرآن ليذكروا... ... ... | ٤١ ك الإسـراء | ١٧ |
| (٢) | ولقد صرفناه بينهم ليذكروا فأبى أكثر الناس إلا كفورا | ٥٠ ك الفـرقان | ٢٥ |
| يَذَّكَّرُونَ: | قـد فصلنا الآيات لقوم يذكرون ... ... | ١٢٦ ك الانعـام | ٦ |
| (٦) | ولباس التقوى ذلك خير ذلك من آيات الله لعلهم يذكرون | ٢٦ ك الأعراف | ٧ |
| | ولقد أخذنا آل فرعون بالسـنين ونقص من الثمرات لعلهـم يذكرون ... ... ... ... ... ... | ١٣٠ ك « | ٧ |
| | فإما تثقفنهم فى الحرب فشرد بهم من خلفهم لعلهم يذكرون | ٥٧ م الأنفـال | ٨ |
| | أو لا يرون أنهم يفتنون فى كل عام مرة أو مرتين ثم لا يتوبون ولاهم يذكرون ... ... ... ... | ١٢٦ م التـوبة | ٩ |
| | إن فى ذلك لآية لقوم يذكرون ... ... ... ... | ١٣ ك النـحل | ١٦ |
| ذِكْرٌ: | ذلك نتـلوه عليـك من الآيات والذكر الحكيم | ٥٨ م آل عمران | ٣ |
| (٥٢) | إنمـا يريد الشيطان أن يوقع بينكم العداوة والبغضاء فى الخمر والميسر و يصدكم عن ذكر الله ... ... | ٩١ م المـائدة | ٥ |
| | أوعجبتم أن جاءكم ذكر من ربكم على رجل منكم لينذركم ولتتقوا | ٦٣ ك الأعراف | ٧ |
| | أوعجبتم أن جاءكم ذكر من ربكم على رجل منكم لينذركم واذكروا إذ جعلكم خلفاء ... ... ... ... | ٦٩ ك « | ٧ |
| | فأنساه الشيطان ذكر ربه فلبث فى السجن بضع سنين | ٤٢ ك يوسف | ١٢ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| ذِكْرٌ: | وما تسئلهم عليـه من أجر إن هو إلا ذكر للعالمين | ١٠٤ ك يوسف | ١٢ |
| | الذين آمنوا وتطمئن قلوبهم بذكر الله ... ... ... | ٢٨ م الرعـد | ١٣ |
| | ألا بذكر الله تطمئن القلوب ... ... ... ... ... | ٢٨ م « | ١٣ |
| | وقالوا يأيها الذى نزل عليه الذكر إنك لمجنون... .. | ٦ ك الحجـر | ١٥ |
| | إنا نحن نزلنا الذكر و إنا له لحافظون ... ... ... | ٩ ك « | ١٥ |
| | وما أرسلنا من قبلك إلا رجالا نوحى إليهـم فسئلوا أهل الذكر إن كنتم لا تعلمون ... ... ... ... | ٤٣ ك النحـل | ١٦ |
| | وأنزلنا إليك الذكر لتبين للناس ما نزل إليهم ولعلهم يتفكرون | ٤٤ ك « | ١٦ |
| | ذكر رحمة ربك عبده زكريا ... ... ... ... ... | ٢ ك مريم | ١٩ |
| | ما يأتيهم من ذكر من ربهم محدث إلا استمعوه وهم يلعبون | ٢ ك الأنبيـاء | ٢١ |
| | وما أرسلنا قبلك إلا رجالا نوحى إليهم فسئلوا أهـل الذكر إن كنتم لا تعلمون ... ... ... ... ... | ٧ ك « | ٢١ |
| | أم اتخذوا من دونه آلهة قل هاتوا برهانكم هذا ذكر من معى | ٢٤ ك « | ٢١ |
| | وذكر من قبلى بل أكثرهم لا يعلمون الحق فهم معرضون | ٢٤ ك « | ٢١ |
| | أهذا الذى يذكر آلهتكم وهم بذكر الرحمن هم كافرون | ٣٦ ك « | ٢١ |
| | قل من يكلؤكم بالليل والنهار من الرحمن بل هم عن ذكر ربهم معرضون... ... ... ... ... ... ... | ٤٢ ك « | ٢١ |
| | وهذا ذكر مبارك أنزلناه أفأنتم له منكرون ... ... | ٥٠ ك « | ٢١ |
| | ولقد كتبنا فى الزبور من بعد الذكر أن الأرض يرثها عبادى الصالحون ... ... ... ... ... ... | ١٠٥ ك « | ٢١ |
| | رجال لا تلهيهم تجارة ولا بيع عن ذكر الله و إقام الصلاة | ٣٧ م النـور | ٢٤ |
| | ولكن متعتهم وآباءهم حتى نسوا الذكر وكانوا قوما بورا | ١٨ ك الفـرقان | ٢٥ |
| | لقـد أضلنى عن الذكر بعـد إذ جاءنى ... ... ... | ٢٩ ك « | ٢٥ |
| | وما يأتيهم من ذكر من الرحمن محدث إلا كانوا عنـه معـرضين... ... ... ... ... ... ... | ٥ ك الشـعراء | ٢٦ |
| | إن الصلاة تنهى عن الفحشاء والمنكر ولذكر الله أكبر | ٤٥ ك العنكبوت | ٢٩ |
| | إنمـا تنذر من اتبـع الذكر وخشى الرحمن بالغيب | ١١ ك يس | ٣٦ |
| | إن هو إلا ذكر وقرآن مبين... ... ... ... ... | ٦٩ ك « | ٣٦ |
| | ص والقرآن ذى الذكر . بل الذين كفروا فى عزة وشقاق | ١ ك ص | ٣٨ |
| | أؤنزل عليه الذكر من بيننا بل هم فى شك من ذكرى | ٨ ك « | ٣٨ |
| | فقال إنى أحببت حب الخير عن ذكر ربى ... ... | ٣٢ ك « | ٣٨ |
| | هذا ذكر و إن للتقين لحسن مآب ... ... ... ... | ٤٩ ك « | ٣٨ |
| | إن هو إلا ذكر للعالمين... ... ... ... ... ... | ٨٧ ك « | ٣٨ |
| | فويل للقاسية قلوبهم من ذكر الله أولئك فى ضلال مبين | ٢٢ ك الزمر | ٣٩ |
| | ثم تلين جلودهم وقلوبهم إلى ذكر الله... ... ... ... | ٢٣ ك « | ٣٩ |
| | إن الذين كفروا بالذكر لما جاءهم و إنه لكتاب عزيز | ٤١ ك فصـلت | ٤١ |
| | أفنضرب عنـكم الذكر صفحا أن كنتم قوما مسرفين | ٥ ك الزخرف | ٤٣ |
| | ومن يعش عن ذكر الرحمن نقيض له شيطانا فهو له قرين | ٣٦ ك « | ٤٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ذِكْر: | وإنه لذكر لك ولقومك وسوف تسئلون ... ... | ٤٤ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ولقد يسرنا القرآن للذكر فهل من مدَّكر . كذبت عاد | ١٧ | ك القمر | ٥٤ |
| | ولقد يسرنا القرآن للذكر فهل من مدَّكر . كذبت ثمود | ٢٢ | ك « | ٥٤ |
| | أؤلق الذكر عليه من بيننا بل هو كذاب أشر ... ... | ٢٥ | ك « | ٥٤ |
| | ولقد يسرنا القرآن للذكر فهل من مدَّكر . كذبت قوم لوط | ٣٢ | ك « | ٥٤ |
| | ولقد يسرنا القرآن للذكر فهل من مدَّكر . ولقد جاء آل فرعون النذر ... ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك « | ٥٤ |
| | ألم يأن للذين آمنوا أن تخشع قلوبهم لذكر الله | ١٦ | م الحديد | ٥٧ |
| | استحوذ عليهم الشيطان فأنساهم ذكر الله ... ... | ١٩ | م المجادلة | ٥٨ |
| | إذا نودى للصلاة من يوم الجمعة فاسعوا إلى ذكر الله | ٩ | م الجمعة | ٦٢ |
| | يا أيها الذين آمنوا لا تلهكم أموالكم ولا أولادكم عن ذكر الله | ٩ | م المنافقون | ٦٣ |
| | وإن يكاد الذين كفروا ليزلقونك بأبصارهم لما سمعوا الذكر ... ... ... ... ... ... ... | ٥١ | ك القلم | ٦٨ |
| | وما هو إلا ذكر للعالمين... ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك « | ٦٨ |
| | ومن يعرض عن ذكر ربه يسلكه عذابا صعدا | ١٧ | ك الجن | ٧٢ |
| | إن هو إلا ذكر للعالمين ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك التكوير | ٨١ |
| ذِكْرًا: (١١) | فإذا قضيتم مناسككم فاذكروا الله كذكركم آباءكم أو أشد ذكرا ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠٠ | م البقرة | ٢ |
| | قال فإن اتبعتني فلا تسئلني عن شيء حتى أحدث لك منه ذكرا | ٧٠ | ك الكهف | ١٨ |
| | ويسئلونك عن ذي القرنين قل سأتلوا عليكم منه ذكرا | ٨٣ | م « | ١٨ |
| | كذلك نقص عليك من أنباء ما قد سبق وقد آتيناك من لدنا ذكرا... ... ... ... ... ... ... | ٩٩ | ك طه | ٢٠ |
| | وصرفنا فيه من الوعيد لعلهم يتقون أو يحدث لهم ذكرا | ١١٣ | ك « | ٢٠ |
| | ولقد آتينا موسى وهرون الفرقان وضياء وذكرا للمتقين | ٤٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | يا أيها الذين آمنوا اذكروا الله ذكرا كثيرا ... ... | ٤١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | فالتاليات ذكرا . إن إلهكم لواحد ... ... ... ... | ٣ | ك الصافات | ٣٧ |
| | وإن كانوا ليقولون . لو أن عندنا ذكرا من الأولين | ١٦٨ | ك « | ٣٧ |
| | قد أنزل الله إليكم ذكرا... ... ... ... ... ... | ١٠ | م الطلاق | ٦٥ |
| | فالملقيات ذكرا . عذرا أو نذرا . إنما توعدون لواقع | ٥ | ك المرسلات | ٧٧ |
| ذِكْرَكَ: | ورفعنا لك ذكرك ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك الشرح | ٩٤ |
| ذِكْرُكُمْ: (٢) | فإذا قضيتم مناسككم فاذكروا الله كذكركم آباءكم أو أشد ذكرا ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠٠ | م البقرة | ٢ |
| | لقد أنزلنا إليكم كتابا فيه ذكركم أفلا تعقلون... ... | ١٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| ذِكْرِنَا: (٢) | ولا تطع من أغفلنا قلبه عن ذكرنا واتبع هواه | ٢٨ | م الكهف | ١٨ |
| | فأعرض عن من تولى عن ذكرنا ولم يرد إلا الحياة الدنيا | ٢٩ | ك النجم | ٥٣ |
| ذِكْرِهِمْ: (٢) | بل أتيناهم بذكرهم... ... ... ... ... ... | ٧١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فهم عن ذكرهم معرضون ... ... ... ... ... ... | ٧١ | ك « | ٢٣ |
| ذِكْرِي: (٦) | الذين كانت أعينهم في غطاء عن ذكري ... ... | ١٠١ | م الكهف | ١٨ |
| | إنني أنا الله لا إله إلا أنا فاعبدني وأقم الصلاة لذكري | ١٤ | ك طه | ٢٠ |
| ذِكْرِي: | اذهب أنت وأخوك بآياتي ولا تنيا في ذكري ... | ٤٢ | ك طه | ٢٠ |
| | ومن أعرض عن ذكري فإن له معيشة ضنكا... ... | ١٢٤ | ك « | ٢٠ |
| | فاتخذتموهم سخريا حتى أنسوكم ذكري وكنتم منهم تضحكون | ١١٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | أؤنزل عليه الذكر من بيننا بل هم في شك من ذكري | ٨ | ك ص | ٣٨ |
| ذِكْرَى: (٢١) | فلا تقعد بعد الذكرى مع القوم الظالمين... ... | ٦٨ | ك الأنعام | ٦ |
| | وما على الذين يتقون من حسابهم من شيء ولكن ذكرى لعلهم يتقون ... ... ... ... ... ... | ٦٩ | ك « | ٦ |
| | قل لا أسئلكم عليه أجرا إن هو إلا ذكرى للعالمين | ٩٠ | ك « | ٦ |
| | فلا يكن في صدرك حرج منه لتنذر به وذكرى للمؤمنين | ٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | إن الحسنات يذهبن السيئات ذلك ذكرى للذاكرين | ١١٤ | م هود | ١١ |
| | وجاءك في هذه الحق وموعظة وذكرى للمؤمنين | ١٢٠ | ك « | ١١ |
| | وآتيناه أهله ومثلهم معهم رحمة من عندنا وذكرى للعابدين ... ... ... ... ... ... ... | ٨٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وما أهلكنا من قرية إلا لها منذرون . ذكرى وما كنا ظالمين | ٢٠٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | إن في ذلك لرحمة وذكرى لقوم يؤمنون ... ... ... | ٥١ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ووهبنا له أهله ومثلهم معهم رحمة منا وذكرى لأولي الألباب... ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك ص | ٣٨ |
| | إنا أخلصناهم بخالصة ذكرى الدار ... ... ... ... | ٤٦ | ك « | ٣٨ |
| | إن في ذلك لذكرى لأولي الألباب ... ... ... ... | ٢١ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وأورثناها بني إسرائيل الكتاب . هدى وذكرى لأولي الألباب... ... ... ... ... ... ... | ٥٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | أنى لهم الذكرى وقد جاءهم رسول مبين... ... ... | ١٣ | ك الدخان | ٤٤ |
| | تبصرة وذكرى لكل عبد منيب ... ... ... ... ... | ٨ | ك ق | ٥٠ |
| | إن في ذلك لذكرى لمن كان له قلب أو ألقى السمع وهو شهيد | ٣٧ | ك « | ٥٠ |
| | وذكر فإن الذكرى تنفع المؤمنين ... ... ... ... | ٥٥ | ك الذاريات | ٥١ |
| | وما يعلم جنود ربك إلا هو وما هي إلا ذكرى للبشر | ٣١ | ك المدثر | ٧٤ |
| | وما يدريك لعله يزكى . أو يذكر فتنفعه الذكرى | ٤ | ك عبس | ٨٠ |
| | فذكر إن نفعت الذكرى ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك الأعلى | ٨٧ |
| | وجيء يومئذ بجهنم يومئذ يتذكر الإنسان وأنى له الذكرى | ٢٣ | ك الفجر | ٨٩ |
| ذِكْرَاهَا: | يسئلونك عن الساعة أيان مرساها . فيم أنت من ذكراها ... ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك النازعات | ٧٩ |
| ذِكْرَاهُمْ: | فقد جاء أشراطها فأنى لهم إذا جاءتهم ذكراهم | ١٨ | م محمد | ٤٧ |
| تَذْكِرَةً: (٩) | ما أنزلنا عليك القرآن لتشقى . إلا تذكرة لمن يخشى | ٣ | ك طه | ٢٠ |
| | نحن جعلناها تذكرة ومتاعا للمقوين ... ... ... | ٧٣ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | لنجعلها لكم تذكرة وتعيها أذن واعية... ... ... | ١٢ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | وإنه لتذكرة للمتقين... ... ... ... ... ... ... | ٤٨ | ك « | ٦٩ |
| | إن هذه تذكرة فمن شاء اتخذ إلى ربه سبيلا... ... | ١٩ | ك المزمل | ٧٣ |
| | فما لهم عن التذكرة معرضين... ... ... ... ... | ٤٩ | ك المدثر | ٧٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَذْكِرَةٌ: | كلا إنه تذكرة . فمن شاء ذكره ... ... ... ... | ٥٤ | ك المدثر | ٧٤ |
| | إن هذه تذكرة فمن شاء اتخذ إلى ربه سبيلا ... ... | ٢٩ | م الإنسان | ٧٦ |
| | كلا إنها تذكرة . فمن شاء ذكره ... ... ... ... | ١١ | ك عبس | ٨٠ |
| تَذْكِيرِي: | إن كان كبر عليكم مقامى وتذكيرى بآيات الله فعلى الله توكلت ... ... ... ... ... ... | ٧١ | ك يونس | ١٠ |
| مَذْكُورًا: | هل أتى على الإنسان حين من الدهر لم يكن شيئا مذكورا ... ... ... ... ... ... ... | ١ | م الإنسان | ٧٦ |
| مُذَكِّرٌ: | فذكر إنما أنت مذكر ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك الغاشية | ٨٨ |
| الذَّاكِرَاتِ: | والذاكرات أعد الله لهم مغفرة وأجرا عظيما | ٣٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| الذَّاكِرِينَ: (٢) | إن الحسنات يذهبن السيئات ذلك ذكرى للذاكرين ... ... ... ... ... ... ... | ١١٤م | هود | ١١ |
| | والذاكرين الله كثيرا والذاكرات أعد الله لهم مغفرة وأجرا عظيما ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| ذَكَرٌ: (١٢) | وليس الذكر كالأنثى ... ... ... ... ... ... | ٣٦ | م آل عمران | ٣ |
| | فاستجاب لهم ربهم أنى لا أضيع عمل عامل منكم من ذكر أو أنثى ... ... ... ... ... ... | ١٩٥م | « | ٣ |
| | يوصيكم الله فى أولادكم للذكر مثل حظ الأنثيين | ١١ | م النساء | ٤ |
| | ومن يعمل من الصالحات من ذكر أو أنثى وهو مؤمن فأولئك يدخلون الجنة ... ... ... ... ... | ١٢٤م | « | ٤ |
| | وإن كانوا إخوة رجالا ونساء فللذكر مثل حظ الأنثيين | ١٧٦م | « | ٤ |
| | من عمل صالحا من ذكر أو أنثى وهو مؤمن فلنحيينه حياة طيبة ... ... ... ... ... ... ... | ٩٧ | ك النحل | ١٦ |
| | ومن عمل صالحا من ذكر أو أنثى وهو مؤمن فأولئك يدخلون الجنة ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك غافر | ٤٠ |
| | يأيها الناس إنا خلقناكم من ذكر وأنثى وجعلناكم شعوبا وقبائل لتعارفوا ... ... ... ... ... | ١٣ | م الحجرات | ٤٩ |
| | ألكم الذكر وله الأنثى ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك النجم | ٥٣ |
| | وأنه خلق الزوجين الذكر والأنثى ... ... ... ... | ٤٥ | ك « | ٥٣ |
| | يجعل منه الزوجين الذكر والأنثى ... ... ... ... | ٣٩ | ك القيامة | ٧٥ |
| | وما خلق الذكر والأنثى . إن سعيكم لشتى ... ... ... | ٣ | ك الليل | ٩٢ |
| ءَآلذَّكَرَيْنِ: (٢) | من الضأن اثنين ومن المعز اثنين قل آلذكرين حرم أم الأنثيين ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٣ك | الأنعام | ٦ |
| | ومن الإبل اثنين ومن البقر اثنين قل آلذكرين حرم أم الأنثيين ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٤ك | « | ٦ |
| الذُّكُورَ: | يهب لمن يشاء إناثا ويهب لمن يشاء الذكور | ٤٩ | ك الشورى | ٤٢ |
| ذُكُورِنَا: | وقالوا ما فى بطون هذه الأنعام خالصة لذكورنا ومحرم على أزواجنا ... ... ... ... ... ... | ١٣٩ك | الأنعام | ٦ |
| الذُّكْرَانَ: | أتأتون الذكران من العالمين ... ... ... ... | ١٦٥ك | الشعراء | ٢٦ |
| ذُكْرَانًا: | أو يزوجهم ذكرانا وإناثا ويجعل من يشاء عقيما | ٥٠ | ك الشورى | ٤٢ |
| أَدَّكَرَ: | وقال الذى نجا منهما وادكر بعد أمة أنا أنبئكم بتأويله فأرسلون ... ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك يوسف | ١٢ |
| مُدَّكِرٍ: | ولقد تركناها آية فهل من مدكر ... ... ... ... | ١٥ | ك القمر | ٥٤ |
| (٦) | ولقد يسرنا القرآن للذكر فهل من مدكر . كذبت عاد | ١٧ | ك « | ٥٤ |
| | ولقد يسرنا القرآن للذكر فهل من مدكر . كذبت ثمود | ٢٢ | ك « | ٥٤ |
| | ولقد يسرنا القرآن للذكر فهل من مدكر . كذبت قوم لوط | ٣٢ | ك « | ٥٤ |
| | ولقد يسرنا القرآن للذكر فهل من مدكر . ولقد جاء آل فرعون النذر ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك « | ٥٤ |
| | ولقد أهلكنا أشياعكم فهل من مدكر ... ... ... ... | ٥١ | ك « | ٥٤ |
| ذَكَّيْتُمْ: | وما أكل السبع إلا ما ذكيتم وما ذبح على النصب | ٣ | م المائدة | ٥ |
| نَذِلَّ: | لولا أرسلت إلينا رسولا فنتبع آياتك من قبل أن نذل ونخزى | ١٣٤ك | طه | ٢٠ |
| ذَلَّلْنَاهَا: | وذللناها لهم فمنها ركوبهم ومنها يأكلون ... ... | ٧٢ | ك يس | ٣٦ |
| ذُلِّلَتْ: | ودانية عليهم ظلالها وذللت قطوفها تذليلا ... ... | ١٤ | م الإنسان | ٧٦ |
| تُذِلُّ: | تؤتى الملك من تشاء وتنزع الملك ممن تشاء وتعز من تشاء وتذل من تشاء ... ... ... ... ... | ٢٦ | م آل عمران | ٣ |
| تَذْلِيلًا: | ودانية عليهم ظلالها وذللت قطوفها تذليلا ... ... | ١٤ | م الإنسان | ٧٦ |
| الذُّلِّ: | واخفض لهما جناح الذل من الرحمة ... ... ... | ٢٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٣) | ولم يكن له شريك فى الملك ولم يكن له ولى من الذل | ١١١ك | « | ١٧ |
| | وتراهم يعرضون عليها خاشعين من الذل ... ... | ٤٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| ذِلَّةٌ: | وضربت عليهم الذلة والمسكنة وباءو بغضب من الله | ٦١ | م البقرة | ٢ |
| (٧) | ضربت عليهم الذلة أين ما ثقفوا إلا بحبل من الله وحبل من الناس ... ... ... ... ... ... | ١١٢م | آل عمران | ٣ |
| | إن الذين اتخذوا العجل سينالهم غضب من ربهم وذلة فى الحياة الدنيا ... ... ... ... ... | ١٥٢ك | الأعراف | ٧ |
| | للذين أحسنوا الحسنى وزيادة ولا يرهق وجوههم قتر ولا ذلة ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك يونس | ١٠ |
| | والذين كسبوا السيئات جزاء سيئة بمثلها وترهقهم ذلة | ٢٧ | ك « | ١٠ |
| | خاشعة أبصارهم ترهقهم ذلة وقد كانوا يدعون إلى السجود وهم سالمون ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك القلم | ٦٨ |
| | خاشعة أبصارهم ترهقهم ذلة ذلك اليوم الذى كانوا يوعدون ... ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك المعارج | ٧٠ |
| أَذِلَّةٌ: | ولقد نصركم الله ببدر وأنتم أذلة فاتقوا الله لعلكم تشكرون | ١٢٣م | آل عمران | ٣ |
| (٤) | أذلة على المؤمنين أعزة على الكافرين ... ... ... | ٥٤ | م المائدة | ٥ |
| | وجعلوا أعزة أهلها أذلة ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك النمل | ٢٧ |
| | ولنخرجنهم منها أذلة ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك « | ٢٧ |
| الأَذَلَّ: | يقولون لئن رجعنا إلى المدينة ليخرجن الأعز منها الأذل | ٨ | م المنافقون | ٦٣ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| الأَذَلِّينَ: | إن الذين يحادون الله ورسوله أولئك فى الأذلين | م المجادلة | ٢٠ ٥٨ |
| ذَلُولٌ: | قال إنه يقول إنها بقرة لا ذلول تثير الأرض ولا تسقى الحرث ... ... ... ... ... ... ... | م البقـرة | ٧١ ٢ |
| ذَلُولًا: | هو الذى جعل لكم الأرض ذلولا فامشوا فى مناكبها وكلوا من رزقه... ... ... ... ... ... ... | ك الملك | ١٥ ٦٧ |
| ذُلُلًا: | ثم كلى من كل الثمرات فاسلكى سبل ربك ذللا ... | ك النحل | ٦٩ ١٦ |
| ذِمَّةً: | كيف وإن يظهروا عليكم لا يرقبوا فيكم إلا ولا ذمة | م التوبة | ٨ ٩ |
| (٢) | لا يرقبون فى مؤمن إلا ولا ذمة وأولئك هم المعتدون | م « | ١٠ ٩ |
| مَذْمُومٌ: | لولا أن تداركه نعمة من ربه لنبذ بالعراء وهو مذموم | م القلم | ٤٩ ٦٨ |
| مَذْمُومًا: | ثم جعلنا له جهنم يصلاها مذموما مدحورا | ك الإسراء | ١٨ ١٧ |
| (٢) | لا تجعل مع الله إلها آخر فتقعد مذموما مخذولا | ك « | ٢٢ ١٧ |
| ذَنْبٌ: | ولهم علىّ ذنب فأخاف أن يقتلون... ... ... ... | ك الشعراء | ١٤ ٢٦ |
| (٣) | غافر الذنب وقابل التوب شديد العقاب ذى الطول | ك غافر | ٣ ٤٠ |
| | وإذا الموءودة سئلت . بأى ذنب قتلت ... ... ... | ك التكوير | ٩ ٨١ |
| ذَنْبِكَ: | يوسف أعرض عن هذا واستغفرى لذنبك ... | ك يوسف | ٢٩ ١٢ |
| (٤) | فاصبر إن وعد الله حق واستغفر لذنبك وسبح بحمد ربك | ك غافر | ٥٥ ٤٠ |
| | فاعلم أنه لا إله إلا الله واستغفر لذنبك وللمؤمنين والمؤمنات | م محمد | ١٩ ٤٧ |
| | ليغفر لك الله ما تقدم من ذنبك وما تأخر ... ... | م الفتح | ٢ ٤٨ |
| ذَنْبِهِ: | فكلا أخذنا بذنبه ... ... ... ... ... ... ... | ك العنكبوت | ٤٠ ٢٩ |
| (٢) | فيومئذ لا يسئل عن ذنبه إنس ولا جان... ... ... | م الرحمن | ٣٩ ٥٥ |
| ذَنْبِهِمْ: | فاعترفوا بذنبهم فسحقا لأصحاب السعير ... ... | ك الملك | ١١ ٦٧ |
| (٢) | فكذبوه فعقروها فدمدم عليهم ربهم بذنبهم فسواها | ك الشمس | ١٤ ٩١ |
| ذُنُوبِ: | فاستغفروا لذنوبهم ومن يغفر الذنوب إلا الله | م آل عمران | ١٣٥ ٣ |
| (٤) | وكفى بربك بذنوب عباده خبيرا بصيرا ... ... ... | ك الإسراء | ١٧ ١٧ |
| | وكفى به بذنوب عباده خبيرا ... ... ... ... ... | ك الفرقان | ٥٨ ٢٥ |
| | لا تقنطوا من رحمة الله إن الله يغفر الذنوب جميعا | م الزمر | ٥٣ ٣٩ |
| ذُنُوبِكُمْ: | قل إن كنتم تحبون الله فاتبعونى يحببكم الله | | |
| (٧) | ويغفر لكم ذنوبكم... ... ... ... ... ... ... | م آل عمران | ٣١ ٣ |
| | وقالت اليهود والنصارى نحن أبناء الله وأحباؤه | | |
| | قل فلم يعذبكم بذنوبكم ... ... ... ... ... ... | م المائدة | ١٨ ٥ |
| | يدعوكم ليغفر لكم من ذنوبكم ويؤخركم إلى أجل مسمى | ك إبراهيم | ١٠ ١٤ |
| | يصلح لكم أعمالكم ويغفر لكم ذنوبكم ... ... ... | م الأحزاب | ٧١ ٣٣ |
| | يا قومنا أجيبوا داعى الله وآمنوا به يغفر لكم من ذنوبكم | ك الأحقاف | ٣١ ٤٦ |
| | يغفر لكم ذنوبكم ويدخلكم جنات تجرى من تحتها الأنهار | م الصف | ١٢ ٦١ |
| | يغفر لكم من ذنوبكم ويؤخركم إلى أجل مسمى... ... | ك نوح | ٤ ٧١ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| ذُنُوبَنَا: | الذين يقولون ربنا إننا آمنا فاغفر لنا ذنوبنا | | |
| (٥) | وقنا عذاب النار... ... ... ... ... ... ... | م آل عمران | ١٦ ٣ |
| | قالوا ربنا اغفر لنا ذنوبنا وإسرافنا فى أمرنا | م « | ١٤٧ ٣ |
| | ربنا فاغفر لنا ذنوبنا وكفر عنا سيئاتنا وتوفنا مع الأبرار | م « | ١٩٣ ٣ |
| | قالوا يا أبانا استغفر لنا ذنوبنا إنا كنا خاطئين | ك يوسف | ٩٧ ١٢ |
| | قالوا ربنا أمتنا اثنتين وأحييتنا اثنتين فاعترفنا بذنوبنا | ك غافر | ١١ ٤٠ |
| ذُنُوبِهِمْ: | فأخذهم الله بذنوبهم والله شديد العقاب | م آل عمران | ١١ ٣ |
| (١٠) | والذين إذا فعلوا فاحشة أو ظلموا أنفسهم ذكروا الله فاستغفروا لذنوبهم ... ... ... ... ... | م « | ١٣٥ ٣ |
| | فإن تولوا فاعلم أنما يريد الله أن يصيبهم ببعض ذنوبهم | م المائدة | ٤٩ ٥ |
| | فأهلكناهم بذنوبهم وأنشأنا من بعدهم قرنا آخرين | ك الأنعام | ٦ ٦ |
| | أو لم يهد للذين يرثون الأرض من بعد أهلها أن لو نشاء أصبناهم بذنوبهم ... ... ... ... ... | ك الأعراف | ١٠٠ ٧ |
| | كفروا بآيات الله فأخذهم الله بذنوبهم ... ... | م الأنفال | ٥٢ ٨ |
| | كذبوا بآيات ربهم فأهلكناهم بذنوبهم وأغرقنا آل فرعون | م « | ٥٤ ٨ |
| | وآخرون اعترفوا بذنوبهم خلطوا عملا صالحا وآخر سيئا | م التوبة | ١٠٢ ٩ |
| | ولا يسئل عن ذنوبهم المجرمون ... ... ... ... ... | ك القصص | ٧٨ ٢٨ |
| | فأخذهم الله بذنوبهم وما كان لهم من الله من واق | ك غافر | ٢١ ٤٠ |
| ذَنُوبِ: | فإن للذين ظلموا ذنوبا مثل ذنوب أصحابهم | ك الذاريات | ٥٩ ٥١ |
| ذَنُوبًا: | فإن للذين ظلموا ذنوبا مثل ذنوب أصحابهم | ك « | ٥٩ ٥١ |
| ذَهَبَ: | ذهب الله بنورهم وتركهم فى ظلمات لا يبصرون | م البقرة | ١٧ ٢ |
| (٨) | ولو شاء الله لذهب بسمعهم وأبصارهم ... ... ... | م « | ٢٠ ٢ |
| | ولئن أذقناه نعماء بعد ضراء مسته ليقولن ذهب السيئات عنى | ك هود | ١٠ ١١ |
| | فلما ذهب عن إبراهيم الروع وجاءته البشرى يجادلنا فى قوم لوط ... ... ... ... ... ... ... | ك « | ٧٤ ١١ |
| | وذا النون إذ ذهب مغاضبا فظن أن لن نقدر عليه | ك الأنبياء | ٨٧ ٢١ |
| | إذا لذهب كل إله بما خلق ولعلا بعضهم على بعض | ك المؤمنون | ٩١ ٢٣ |
| | فإذا ذهب الخوف سلقوكم بألسنة حداد أشحة على الخير | م الأحزاب | ١٩ ٣٣ |
| | ثم ذهب إلى أهله يتمطى ... ... ... ... ... ... | ك القيامة | ٣٣ ٧٥ |
| ذَهَبَتْ: | فآتوا الذين ذهبت أزواجهم مثل ما أنفقوا | م الممتحنة | ١١ ٦٠ |
| ذَهَبْنَا: | إنا ذهبنا نستبق وتركنا يوسف عند متاعنا فأكله الذئب | ك يوسف | ١٧ ١٢ |
| ذَهَبُوا: | فلما ذهبوا به وأجمعوا أن يجعلوه فى غيابة الجب | ك « | ١٥ ١٢ |
| تَذْهَبَ: | ولا تنازعوا فتفشلوا وتذهب ريحكم واصبروا | م الأنفال | ٤٦ ٨ |
| (٢) | فلا تذهب نفسك عليهم حسرات... ... ... ... ... | ك فاطر | ٨ ٣٥ |
| تَذْهَبُوا: | ولا تعضلوهن لتذهبوا ببعض ما آتيتموهن | م النساء | ١٩ ٤ |
| (٢) | قال إنى ليحزننى أن تذهبوا به وأخاف أن يأكله الذئب | ك يوسف | ١٣ ١٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَذْهَبُونَ | : وما هو بقول شيطان رجيم . فأين تذهبون | ٢٦ | ك التكوير | ٨١ |
| نَذْهَبَنَّ | : ولئن شئنا لنذهبن بالذى أوحينا إليك... ... ... | ٨٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٢) | فإما نذهبن بك فإنا منهم منتقمون ... ... ... ... | ٤١ | ك الزخرف | ٤٣ |
| يَذْهَبُ | : فأما الزبد فيذهب جفاء ... ... ... ... ... | ١٧ | م الرعد | ١٣ |
| (٢) | يكاد سنا برقه يذهب بالأبصار ... ... ... ... ... | ٤٣ | م النور | ٢٤ |
| يَذْهَبَا | : ويذهبا بطريقتكم المثلى ... ... ... ... ... ... | ٦٣ | ك طه | ٢٠ |
| يَذْهَبُوا | : وإذا كانوا معه على أمر جامع لم يذهبوا حتى يستأذنوه | ٦٢ | م النور | ٢٤ |
| (٢) | يحسبون الأحزاب لم يذهبوا ... ... ... ... ... | ٢٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| اذْهَبْ | : فاذهب أنت وربك فقاتلا إنا هاهنا قاعدون | ٢٤ | م المائدة | ٥ |
| (٧) | قال اذهب فمن تبعك منهم فإن جهنم جزاؤكم جزاء موفورا | ٦٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| | اذهب إلى فرعون إنه طغى ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك طه | ٢٠ |
| | اذهب أنت وأخوك بآياتى ولا تنيا فى ذكرى ... ... | ٤٢ | ك « | ٢٠ |
| | قال فاذهب فإن لك فى الحياة أن تقول لا مساس | ٩٧ | ك « | ٢٠ |
| | اذهب بكتابى هذا فألقه إليهم ثم تول عنهم ... ... | ٢٨ | ك النمل | ٢٧ |
| | اذهب إلى فرعون إنه طغى... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك النازعات | ٧٩ |
| اذْهَبَا | : اذهبا إلى فرعون إنه طغى ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك طه | ٢٠ |
| (٣) | فقلنا اذهبا إلى القوم الذين كذبوا بآياتنا فدمرناهم تدميرا | ٣٦ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | قال كلا فاذهبا بآياتنا إنا معكم مستمعون ... ... | ١٥ | ك الشعراء | ٢٦ |
| اذْهَبُوا | : يا بنىّ اذهبوا فتحسسوا من يوسف وأخيه | ٨٧ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | اذهبوا بقميصى هذا فألقوه على وجه أبى يأت بصيرا | ٩٣ | ك « | ١٢ |
| أَذْهَبَ | : وقالوا الحمد لله الذى أذهب عنا الحزن ... ... | ٣٤ | ك فاطر | ٣٥ |
| أَذْهَبْتُمْ | : أذهبتم طيباتكم فى حياتكم الدنيا واستمتعتم بها | ٢٠ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| يُذْهِبْ | : ويذهب عنكم رجز الشيطان... ... ... ... ... | ١١ | م الأنفال | ٨ |
| (٣) | ويذهب غيظ قلوبهم ويتوب الله على من يشاء | ١٥ | م التوبة | ٩ |
| | إنما يريد الله ليذهب عنكم الرجس أهل البيت | ٣٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| يُذْهِبْكُمْ | : إن يشأ يذهبكم أيها الناس ويأت بآخرين... ... | ١٣٣ | م النساء | ٤ |
| (٤) | إن يشأ يذهبكم ويستخلف من بعدكم ما يشاء... ... | ١٣٣ | ك الأنعام | ٦ |
| | إن يشأ يذهبكم ويأت بخلق جديد ... ... ... ... | ١٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | إن يشأ يذهبكم ويأت بخلق جديد... ... ... ... | ١٦ | ك فاطر | ٣٥ |
| يُذْهِبْنَ | : إن الحسنات يذهبن السيئات ذلك ذكرى للذاكرين | ١١٤ | م هود | ١١ |
| يُذْهِبَنَّ | : ثم ليقطع فلينظر هل يذهبن كيده ما يغيظ ... ... | ١٥ | م الحج | ٢٢ |
| ذَاهِبٌ | : وقال إنى ذاهب إلى ربى سيهدين ... ... ... | ٩٩ | ك الصافات | ٣٧ |
| ذَهَابٍ | : وإنا على ذهاب به لقادرون ... ... ... ... | ١٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| الذَّهَبِ | : زين للناس حب الشهوات من النساء والبنين | | | |
| (٧) | والقناطير المقنطرة من الذهب والفضة ... ... | ١٤ | م آل عمران | ٣ |
| | والذين يكنزون الذهب والفضة ولا ينفقونها فى سبيل الله فبشرهم بعذاب أليم ... ... ... ... | ٣٤ | م التوبة | ٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الذَّهَبِ | : يحلون فيها من أساور من ذهب ويلبسون ثيابا خضرا من سندس ... ... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك الكهف | ١٨ |
| | يحلون فيها من أساور من ذهب ولؤلؤا ولباسهم فيها حرير | ٢٣ | م الحج | ٢٢ |
| | يحلون فيها من أساور من ذهب ولؤلؤا ولباسهم فيها حرير | ٣٣ | م فاطر | ٣٥ |
| | فلولا ألقى عليه أسورة من ذهب أو جاء معه الملائكة مقترنين | ٥٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | يطاف عليهم بصحاف من ذهب وأكواب ... ... | ٧١ | ك « | ٤٣ |
| ذَهَبًا | : فلن يقبل من أحدهم ملء الأرض ذهبا ولو افتدى به | ٩١ | م آل عمران | ٣ |
| تَذْهَلُ | : يوم ترونها تذهل كل مرضعة عما أرضعت ... ... | ٢ | م الحج | ٢٢ |
| ذُو | : والله يختص برحمته من يشاء والله ذو الفضل العظيم | ١٠٥م | البقرة | ٢ |
| (٣٥) | إن الله لذو فضل على الناس ولكن أكثر الناس لا يشكرون | ٢٤٣م | « | ٢ |
| | ولكن الله ذو فضل على العالمين... ... ... ... ... | ٢٥١م | « | ٢ |
| | وإن كان ذو عسرة فنظرة إلى ميسرة ... ... ... | ٢٨٠م | « | ٢ |
| | إن الذين كفروا بآيات الله لهم عذاب شديد والله عزيز ذو انتقام ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | م آل عمران | ٣ |
| | يختص برحمته من يشاء والله ذو الفضل العظيم | ٧٤ | م « | ٣ |
| | ولقد عفا عنكم والله ذو فضل على المؤمنين ... ... | ١٥٢م | « | ٣ |
| | واتبعوا رضوان الله والله ذو فضل عظيم ... ... | ١٧٤م | « | ٣ |
| | ومن عاد فينتقم الله منه والله عزيز ذو انتقام | ٩٥ | م المائدة | ٥ |
| | وربك الغنى ذو الرحمة ... ... ... ... ... ... | ١٣٣ | ك الأنعام | ٦ |
| | فإن كذبوك فقل ربكم ذو رحمة واسعة ... ... ... | ١٤٧ | ك « | ٦ |
| | ويكفر عنكم سيئاتكم ويغفر لكم والله ذو الفضل العظيم | ٢٩ | م الأنفال | ٨ |
| | إن الله لذو فضل على الناس ولكن أكثرهم لا يشكرون | ٦٠ | ك يونس | ١٠ |
| | وإنه لذو علم لما علمناه ولكن أكثر الناس لا يعلمون | ٦٨ | ك يوسف | ١٢ |
| | وإن ربك لذو مغفرة للناس على ظلمهم ... ... ... | ٦ | م الرعد | ١٣ |
| | فلا تحسبن الله مخلف وعده رسله إن الله عزيز ذو انتقام | ٤٧ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وربك الغفور ذو الرحمة ... ... ... ... ... ... | ٥٨ | ك الكهف | ١٨ |
| | وإن ربك لذو فضل على الناس ولكن أكثرهم لا يشكرون | ٧٣ | ك النمل | ٢٧ |
| | ياليت لنا مثل ما أوتى قارون إنه لذو حظ عظيم | ٧٩ | ك القصص | ٢٨ |
| | كذبت قبلهم قوم نوح وعاد وفرعون ذو الأوتاد | ١٢ | ك ص | ٣٨ |
| | رفيع الدرجات ذو العرش ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك غافر | ٤٠ |
| | إن الله لذو فضل على الناس ولكن أكثر الناس لا يشكرون | ٦١ | ك « | ٤٠ |
| | وما يلقاها إلا الذين صبروا وما يلقاها إلا ذو حظ عظيم | ٣٥ | ك فصلت | ٤١ |
| | إن ربك لذو مغفرة ... ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك « | ٤١ |
| | وذو عقاب أليم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك « | ٤٢ |
| | وإذا مسه الشر فذو دعاء عريض ... ... ... ... | ٥١ | ك « | ٤١ |
| | إن الله هو الرزاق ذو القوة المتين ... ... ... ... | ٥٨ | ك الذاريات | ٥١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ذُو: | علّمه شديد القوى . ذو مرة فاستوى ... ... ... | ٦ | ك النجم | ٥٣ |
| | والحب ذو العصف والريحان ... ... ... ... ... | ١٢ | م الرحمن | ٥٥ |
| | ويبقى وجه ربك ذو الجلال والإكرام ... ... ... | ٢٧ | م « | ٥٥ |
| | ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء والله ذو الفضل العظيم | ٢١ | م الحديد | ٥٧ |
| | وأن الفضل بيد الله يؤتيه من يشاء والله ذو الفضل العظيم | ٢٩ | م « | ٥٧ |
| | ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء والله ذو الفضل العظيم | ٤ | م الجمعة | ٦٢ |
| | لينفق ذو سعة من سعته ومن قدر عليه رزقه فلينفق مما آتاه الله | ٧ | م الطلاق | ٦٥ |
| | وهو الغفور الودود . ذو العرش المجيد ... ... ... | ١٥ | ك البروج | ٨٥ |
| ذَا: | فيقسمان بالله إن ارتبتم لا نشترى به ثمنا ولو كان ذا قربى | ١٠٦ | م المائدة | ٥ |
| (١٦) | وإذا قلتم فاعدلوا ولو كان ذا قربى ... ... ... | ١٥٢ | م الأنعام | ٦ |
| | وآت ذا القربى حقه والمسكين وابن السبيل ولا تبذر تبذيرا | ٢٦ | م الإسراء | ١٧ |
| | قلنا يا ذا القرنين إما أن تعذب وإما أن تتخذ فيهم حسنا | ٨٦ | م الكهف | ١٨ |
| | قالوا يا ذا القرنين إن يأجوج ومأجوج مفسدون | | | |
| | فى الأرض ... ... ... ... ... ... ... | ٩٤ | م « | ١٨ |
| | وإسمعيل وإدريس وذا الكفل كل من الصابرين ... | ٨٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وذا النون إذ ذهب مغاضبا فظن أن لن نقدر عليه | ٨٧ | ك « | ٢١ |
| | حتى إذا فتحنا عليهم بابا ذا عذاب شديد إذا هم فيه مبلسون | ٧٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فآت ذا القربى حقه والمسكين وابن السبيل ... ... | ٣٨ | ك الروم | ٣٠ |
| | وإن تدع مثقلة إلى حملها لا يحمل منه شىء ولو كان ذا قربى | ١٨ | ك فاطر | ٣٥ |
| | أصبر على ما يقولون واذكر عبدنا داود ذا الأيد إنه أواب | ١٧ | ك ص | ٣٨ |
| | واذكر إسمعيل واليسع وذا الكفل وكل من الأخيار | ٤٨ | ك « | ٣٨ |
| | أن كان ذا مال وبنين... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك القلم | ٦٨ |
| | إن لدينا أنكالا وجحيما . وطعاما ذا غصة وعذابا أليما | ١٣ | ك المزمل | ٧٣ |
| | أو إطعام فى يوم ذى مسغبة . يتيما ذا مقربة ... | ١٥ | ك البلد | ٩٠ |
| | أو مسكينا ذا متربة ... ... ... ... ... ... | ١٦ | ك « | ٩٠ |
| ذِى: | وبالوالدين إحسانا وذى القربى واليتامى والمساكين | ٨٣ | م البقرة | ٢ |
| (٢٤) | وبالوالدين إحسانا وبذى القربى واليتامى والمساكين | ٣٦ | م النساء | ٤ |
| | والجار ذى القربى والجار الجنب ... ... ... ... | ٣٦ | م « | ٤ |
| | وعلى الذين هادوا حرمنا كل ذى ظفر ... ... ... | ١٤٦ | ك الأنعام | ٦ |
| | واعلموا أنما غنمتم من شىء فأن لله خمسه وللرسول | | | |
| | ولذى القربى ... ... ... ... ... ... ... | ٤١ | م الأنفال | ٨ |
| | ويؤت كل ذى فضل فضله... ... ... ... ... ... | ٣ | ك هود | ١١ |
| | نرفع درجات من نشاء وفوق كل ذى علم عليم | ٧٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | ربنا إنى أسكنت من ذريتى بواد غير ذى زرع | ٣٧ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | إن الله يأمر بالعدل والإحسان وإيتاء ذى القربى | ٩٠ | ك النحل | ١٦ |
| | قل لو كان معه آلهة كما يقولون إذا لابتغوا إلى ذى | | | |
| | العرش سبيلا ... ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ويسئلونك عن ذى القرنين قل سأتلوا عليكم منه ذكرا | ٨٣ | م الكهف | ١٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ذِى: ص | والقرآن ذى الذكر... ... ... ... ... ... | ١ | ك ص | ٣٨ |
| | قرآنا عربيا غير ذى عوج لعلهم يتقون ... ... ... | ٢٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ومن يهد الله فماله من مضل أليس الله بعزيز ذى انتقام | ٣٧ | ك « | ٣٩ |
| | غافر الذنب وقابل التوب شديد العقاب ذى الطول | ٣ | ك غافر | ٤٠ |
| | تبارك اسم ربك ذى الجلال والإكرام ... ... ... | ٧٨ | م الرحمن | ٥٥ |
| | ما أفاء الله على رسوله من أهل القرى فلله وللرسول | | | |
| | ولذى القربى ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | م الحشر | ٥٩ |
| | للكافرين ليس له دافع . من الله ذى المعارج | ٣ | ك المعارج | ٧٠ |
| | انطلقوا إلى ظل ذى ثلاث شعب ... ... ... ... | ٣٠ | ك المرسلات | ٧٧ |
| | إنه لقول رسول كريم . ذى قوة ... ... ... ... | ٢٠ | ك التكوير | ٨١ |
| | عند ذى العرش مكين ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك « | ٨١ |
| | هل فى ذلك قسم لذى حجر... ... ... ... ... | ٥ | ك الفجر | ٨٩ |
| | وفرعون ذى الأوتاد ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك « | ٨٩ |
| | أو إطعام فى يوم ذى مسغبة ... ... ... ... ... | ١٤ | ك البلد | ٩٠ |
| ذَوَا: | بجزاء مثل ما قتل من النعم يحكم به ذوا عدل منكم | ٩٥ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | إذا حضر أحدكم الموت حين الوصية اثنان ذوا عدل منكم | ١٠٦ | م « | ٥ |
| ذَوَىْ: | وأشهدوا ذوى عدل منكم وأقيموا الشهادة لله | ٢ | م الطلاق | ٦٥ |
| ذَوِى: | وآتى المال على حبه ذوى القربى واليتامى والمساكين | ١٧٧ | م البقرة | ٢ |
| ذَاتِ: | قل موتوا بغيظكم إن الله عليم بذات الصدور | ١١٩ | م آل عمران | ٣ |
| (٣٠) | وليمحص ما فى قلوبكم والله عليم بذات الصدور | ١٥٤ | م « | ٣ |
| | واتقوا الله إن الله عليم بذات الصدور... ... ... | ٧ | م المائدة | ٥ |
| | فاتقوا الله وأصلحوا ذات بينكم وأطيعوا الله ورسوله | ١ | م الأنفال | ٨ |
| | وتودون أن غير ذات الشوكة تكون لكم ... ... | ٧ | م « | ٨ |
| | ولكن الله سلم إنه عليم بذات الصدور ... ... ... | ٤٣ | م « | ٨ |
| | يعلم ما يسرون وما يعلنون إنه عليم بذات الصدور ... | ٥ | ك هود | ١١ |
| | وترى الشمس إذا طلعت تزاور عن كهفهم ذات اليمين | ١٧ | ك الكهف | ١٨ |
| | وإذا غربت تقرضهم ذات الشمال وهم فى فجوة منه | ١٧ | ك « | ١٨ |
| | وتحسبهم أيقاظا وهم رقود ونقلبهم ذات اليمين ... | ١٨ | ك « | ١٨ |
| | وذات الشمال وكلبهم باسط ذراعيه بالوصيد ... ... | ١٨ | ك « | ١٨ |
| | وتضع كل ذات حمل حملها... ... ... ... ... | ٢ | م الحج | ٢٢ |
| | وآويناهما إلى ربوة ذات قرار ومعين ... ... ... | ٥٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فأنبتنا به حدائق ذات بهجة ما كان لكم أن تنبتوا شجرها | ٦٠ | ك النمل | ٢٧ |
| | إلينا مرجعهم فننبئهم بما عملوا إن الله عليم بذات الصدور | ٢٣ | ك لقمان | ٣١ |
| | إن الله عالم غيب السموات والأرض إنه عليم بذات الصدور | ٣٨ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ثم إلى ربكم مرجعكم فينبئكم بما كنتم تعملون إنه عليم | | | |
| | بذات الصدور... ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ويمح الله الباطل ويحق الحق بكلماته إنه عليم بذات الصدور | ٢٤ | م الشورى | ٤٢ |
| | والسماء ذات الحبك . إنكم لفى قول مختلف ... ... | ٧ | ك الذاريات | ٥١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ذَاتٍ: | وحملناه على ذات ألواح ودسر ... ... ... ... | ١٣ | ك القمـر | ٥٤ |
| | فيها فاكهة والنخل ذات الأكمام ... ... ... ... | ١١ | م الرحمن | ٥٥ |
| | يولج الليل فى النهار ويولج النهار فى الليل وهو عليم بذات الصدور ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | م الحديد | ٥٧ |
| | ويعلم ما تسرون وما تعلنون والله عليم بذات الصدور | ٤ | م التغابن | ٦٤ |
| | وأسروا قولكم أو اجهروا به إنه عليم بذات الصدور | ١٣ | ك الملك | ٦٧ |
| | والسماء ذات البروج . واليوم الموعود . وشاهد ومشهود | ١ | ك البروج | ٨٥ |
| | قتل أصحاب الأخدود . النار ذات الوقود ... ... | ٥ | ك « | ٨٥ |
| | والسماء ذات الرجع ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك الطارق | ٨٦ |
| | والأرض ذات الصدع . إنه لقول فصل ... ... | ١٢ | ك « | ٨٦ |
| | ألم تر كيف فعل ربك بعاد . إرم ذات العماد ... | ٧ | ك الفجر | ٨٩ |
| | سيصلى نارا ذات لهب... ... ... ... ... ... | ٣ | ك المسد | ١١١ |
| ذَوَاتَا: | ذواتا أفنان . فبأى آلاء ربكما تكذبان... ... ... | ٤٨ | م الرحمن | ٥٥ |
| ذَوَاتَىْ: | وبدلناهم بجنتيهم جنتين ذواتى أكل خمط... ... | ١٦ | ك سبأ | ٣٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تَذُودَانِ: | ووجد من دونهم امرأتين تذودان... ... ... | ٢٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| ذَاقَا: | فلما ذاقا الشجرة بدت لهما سوآتهما ... ... ... | ٢٢ | ك الأعراف | ٧ |
| ذَاقَتْ: | فذاقت وبال أمرها وكان عاقبة أمرها خسرا | ٩ | م الطلاق | ٦٥ |
| ذَاقُوا: | كذلك كذب الذين من قبلهم حتى ذاقوا بأسنا | ١٤٨ | ك الأنعام | ٦ |
| (٣) | كمثل الذين من قبلهم قريبا ذاقوا وبال أمرهم | ١٥ | م الحشر | ٥٩ |
| | ألم يأتكم نبأ الذين كفروا من قبل فذاقوا وبال أمرهم | ٥ | م التغابن | ٦٤ |
| تَذُوقُوا: | وتذوقوا السوء بما صددتم عن سبيل الله ... ... | ٩٤ | ك النحل | ١٦ |
| يَذُوقَ: | أو عدل ذلك صياما ليذوق وبال أمره ... ... | ٩٥ | م المائدة | ٥ |
| يَذُوقُوا: | كلما نضجت جلودهم بدلناهم جلودا غيرها | | | |
| (٢) | ليذوقوا العذاب ... ... ... ... ... ... | ٥٦ | م النساء | ٤ |
| | بل هم فى شك من ذكرى بل لما يذوقوا عذاب | ٨ | ك ص | ٣٨ |
| يَذُوقُونَ: | لا يذوقون فيها الموت إلا الموتة الأولى ... ... | ٥٦ | ك الدخان | ٤٤ |
| (٢) | لا يذوقون فيها بردا ولا شرابا ... ... ... ... | ٢٤ | ك النبأ | ٧٨ |
| يَذُوقُوهُ: | هذا فليذوقوه حميم وغساق ... ... ... ... | ٥٧ | ك ص | ٣٨ |
| ذُقْ: | ذق إنك أنت العزيز الكريم ... ... ... ... | ٤٩ | ك الدخان | ٤٤ |
| ذُوقُوا: | أكفرتم بعد إيمانكم فذوقوا العذاب بما كنتم تكفرون | ١٠٦ | م آل عمران | ٣ |
| (٢٢) | ونقول ذوقوا عذاب الحريق ... ... ... ... | ١٨١ | م « | ٣ |
| | قال فذوقوا العذاب بما كنتم تكفرون ... ... ... | ٣٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | فما كان لكم علينا من فضل فذوقوا العذاب بما كنتم تكسبون | ٣٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | فذوقوا العذاب بما كنتم تكفرون ... ... ... | ٣٥ | ك الأنفال | ٨ |
| | يضربون وجوههم وأدبارهم وذوقوا عذاب الحريق | ٥٠ | م « | ٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ذُوقُوا: | هذا ما كنزتم لأنفسكم فذوقوا ما كنتم تكنزون ... | ٣٥ | م التوبة | ٩ |
| | ثم قيل للذين ظلموا ذوقوا عذاب الخلد ... ... ... | ٥٢ | ك يونس | ١٠ |
| | كلما أرادوا أن يخرجوا منها من غم أعيدوا فيها وذوقوا عذاب الحريق... ... ... ... ... ... | ٢٢ | م الحج | ٢٢ |
| | ويقول ذوقوا ما كنتم تعملون ... ... ... ... | ٥٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | فذوقوا بما نسيتم لقاء يومكم هذا ... ... ... ... | ١٤ | ك السجدة | ٣٢ |
| | وذوقوا عذاب الخلد بما كنتم تعملون ... ... ... | ١٤ | ك « | ٣٢ |
| | وقيل لهم ذوقوا عذاب النار الذى كنتم به تكذبون | ٢٠ | م « | ٣٢ |
| | ونقول للذين ظلموا ذوقوا عذاب النار التى كنتم بها تكذبون ... ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك سبأ | ٣٤ |
| | فذوقوا فما للظالمين من نصير ... ... ... ... | ٣٧ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وقيل للظالمين ذوقوا ما كنتم تكسبون ... ... ... | ٢٤ | ك الزمر | ٣٩ |
| | قالوا بلى وربنا قال فذوقوا العذاب بما كنتم تكفرون | ٣٤ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | ذوقوا فتنتكم هذا الذى كنتم به تستعجلون ... ... | ١٤ | ك الذاريات | ٥١ |
| | ولقد راودوه عن ضيفه فطمسنا أعينهم فذوقوا عذابى ونذر | ٣٧ | ك القمر | ٥٤ |
| | ولقد صبحهم بكرة عذاب مستقر . فذوقوا عذابى ونذر | ٣٩ | ك « | ٥٤ |
| | يوم يسحبون فى النار على وجوههم ذوقوا مس سقر | ٤٨ | ك « | ٥٤ |
| | فذوقوا فلن نزيدكم إلا عذابا ... ... ... ... | ٣٠ | ك النبأ | ٧٨ |
| فَذُوقُوهُ: | ذلكم فذوقوه وأن للكافرين عذاب النار ... | ١٤ | م الأنفال | ٨ |
| أَذَاقَهَا: | فكفرت بأنعم الله فأذاقها الله لباس الجوع والخوف | ١١٢ | ك النحل | ١٦ |
| أَذَاقَهُمْ: | ثم إذا أذاقهم منه رحمة إذا فريق منهم بربهم يشركون | ٣٣ | ك الروم | ٣٠ |
| (٢) | فأذاقهم الله الخزى فى الحياة الدنيا ولعذاب الآخرة أكبر | ٢٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| أَذَقْنَا: | وإذا أذقنا الناس رحمة من بعد ضراء مستهم إذا | | | |
| (٤) | لهم مكر فى آياتنا ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك يونس | ١٠ |
| | ولئن أذقنا الإنسان منا رحمة ثم نزعناها منه إنه ليئوس كفور | ٩ | ك هود | ١١ |
| | وإذا أذقنا الناس رحمة فرحوا بها ... ... ... ... | ٣٦ | ك الروم | ٣٠ |
| | وإنا إذا أذقنا الإنسان منا رحمة فرح بها ... ... | ٤٨ | ك الشورى | ٤٢ |
| أَذَقْنَاكَ: | إذا لأذقناك ضعف الحياة وضعف الممات | ٧٥ | م الإسراء | ١٧ |
| أَذَقْنَاهُ: | ولئن أذقناه نعماء بعد ضراء مسته ليقولن ذهب | | | |
| (٢) | السيئات عنى ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك هود | ١١ |
| | ولئن أذقناه رحمة منا من بعد ضراء مسته ليقولن هذا لى | ٥٠ | ك فصلت | ٤١ |
| نُذِقْهُ: | ومن يرد فيه بإلحاد بظلم نذقه من عذاب أليم | ٢٥ | م الحج | ٢٢ |
| (٣) | ومن يظلم منكم نذقه عذابا كبيرا... ... ... ... | ١٩ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ومن يزغ منهم عن أمرنا نذقه من عذاب السعير ... | ١٢ | ك سبأ | ٣٤ |
| فَلَنُذِيقَنَّ: | فلنذيقن الذين كفروا عذابا شديدا ... ... | ٢٧ | ك فصلت | ٤١ |
| وَلَنُذِيقَنَّهُمْ: | ولنذيقنهم من العذاب الأدنى دون العذاب | | | |
| (٢) | الأكبر لعلهم يرجعون ... ... ... ... ... | ٢١ | ك السجدة | ٣٢ |
| | فلننبئن الذين كفروا بما عملوا ولنذيقنهم من عذاب غليظ | ٥٠ | ك فصلت | ٤١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| نُذِيقُهُ | : له فى الدنيا خزى ونذيقه يوم القيامة عذاب الحريق | ٩ | م الحج | ٢٢ |
| نُذِيقُهُمْ | : ثم نذيقهم العذاب الشديد بما كانوا يكفرون | ٧٠ | ك يونس | ١٠ |
| (٢) | فأرسلنا عليهم ريحا صرصرا فى أيام نحسات لنذيقهم عذاب الخزى فى الحياة الدنيا ... ... ... ... | ١٦ | ك فصلت | ٤١ |
| يُذِيقَ | : أو يلبسكم شيعا و يذيق بعضكم بأس بعض ... ... | ٦٥ | ك الأنعام | ٦ |
| لِيُذِيقَكُمْ | : ومن آياته أن يرسل الرياح مبشرات وليذيقكم من رحمته ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك الروم | ٣٠ |
| لِيُذِيقَهُمْ | : ليذيقهم بعض الذى عملوا لعلهم يرجعون | ٤١ | ك « | ٣٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ذَائِقَةُ | : كل نفس ذائقة الموت و إنما توفون أجوركم | | | |
| (٣) | يوم القيامة ... ... ... ... ... ... ... | ١٨٥ | م آل عمران | ٣ |
| | كل نفس ذائقة الموت ونبلوكم بالشر والخير فتنة | ٣٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | كل نفس ذائقة الموت ثم إلينا ترجعون ... ... ... | ٥٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| ذَائِقُوا | : إنكم لذائقوا العذاب الأليم ... ... ... ... | ٣٨ | ك الصافات | ٣٧ |
| ذَائِقُونَ | : فحق علينا قول ربنا إنا لذائقون ... ... ... | ٣١ | ك « | ٣٧ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| أَذَاعُوا | : و إذا جاءهم أمر من الأمن أو الخوف أذاعوا به | ٨٣ | م النساء | ٤ |

---

# باب الراء

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| رَأْسِ | : وألقى الألواح وأخذ برأس أخيه يجره إليه ... ... | ١٥٠ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | قال رب إنى وهن العظم منى واشتعل الرأس شيبا | ٤ | ك مريم | ١٩ |
| رَأْسِهِ | : فمن كان منكم مريضا أو به أذى من رأسه ففدية | | | |
| (٣) | من صيام ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٩٦ | م البقرة | ٢ |
| | وأما الآخر فيصلب فتأكل الطير من رأسه ... ... | ٤١ | ك يوسف | ١٢ |
| | ثم صبوا فوق رأسه من عذاب الحميم ... ... ... | ٤٨ | ك الدخان | ٤٤ |
| رَأْسِي | : إنى أرانى أحمل فوق رأسى خبزا تأكل الطير منه | ٣٦ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | قال يا ابن أم لا تأخذ بلحيتى ولا برأسى ... ... | ٩٤ | ك طه | ٢٠ |
| رُءُوسُ | : و إن تبتم فلكم رءوس أموالكم لا تظلمون ولا تظلمون | ٢٧٩ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | إنها شجرة تخرج فى أصل الجحيم . طلعها كأنه رءوس الشياطين ... ... ... ... ... ... | ٦٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| رُءُوسِكُمْ | : ولا تحلقوا رءوسكم حتى يبلغ الهدى محله | ١٩٦ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | وامسحوا برءوسكم وأرجلكم إلى الكعبين ... ... | ٦ | م المائدة | ٥ |
| | لتدخلن المسجد الحرام إن شاء الله آمنين محلقين رءوسكم | ٢٧ | م الفتح | ٤٨ |
| رُءُوسِهِمْ | : مهطعين مقنعى رءوسهم لا يرتد إليهم طرفهم | ٤٣ | ك إبراهيم | ١٤ |
| (٦) | فسينغضون إليك رءوسهم و يقولون متى هو ... ... | ٥١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ثم نكسوا على رءوسهم لقد علمت ما هؤلاء ينطقون | ٦٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | يصب من فوق رءوسهم الحميم ... ... ... ... ... | ١٩ | م الحج | ٢٢ |
| | ولو ترى إذ المجرمون ناكسوا رءوسهم عند ربهم | ١٢ | ك السجدة | ٣٢ |
| | و إذا قيل لهم تعالوا يستغفر لكم رسول الله لوّوا رءوسهم ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | م المنافقون | ٦٣ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| رَأْفَةٌ | : ولا تأخذكم بهما رأفة فى دين الله ... ... ... | ٢ | م النور | ٢٤ |
| (٢) | وجعلنا فى قلوب الذين اتبعوه رأفة ورحمة ورهبانية | ٢٧ | م الحديد | ٥٧ |
| رَءُوفٌ | : وما كان الله ليضيع إيمانكم إن الله بالناس لرءوف رحيم | ١٤٣ | م البقرة | ٢ |
| (١١) | ومن الناس من يشرى نفسه ابتغاء مرضاة الله والله رءوف بالعباد ... ... ... ... ... ... | ٢٠٧ | م « | ٢ |
| | ويحذركم الله نفسه والله رءوف بالعباد ... ... ... | ٣٠ | م آل عمران | ٣ |
| | ثم تاب عليهم إنه بهم رءوف رحيم ... ... ... ... | ١١٧ | م التوبة | ٩ |
| | عزيز عليه ما عنتم حريص عليكم بالمؤمنين رءوف رحيم | ١٢٨ | ك « | ٩ |
| | وتحمل أثقالكم إلى بلد لم تكونوا بالغيه إلا بشق الأنفس إن ربكم لرءوف رحيم ... ... ... ... | ٧ | ك النحل | ١٦ |
| | أ يأخذهم على تخوف فإن ربكم لرءوف رحيم ... | ٤٧ | ك « | ١٦ |
| | إن الله بالناس لرءوف رحيم ... ... ... ... ... | ٦٥ | م الحج | ٢٢ |
| | ولولا فضل الله عليكم ورحمته وأن الله رءوف رحيم | ٢٠ | م النور | ٢٤ |
| | ليخرجكم من الظلمات إلى النور و إن الله بكم لرءوف رحيم | ٩ | م الحديد | ٥٧ |
| | ولا تجعل فى قلوبنا غلا للذين آمنوا ربنا إنك رءوف رحيم | ١٠ | م الحشر | ٥٩ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| رَأَى | : فلما جنَّ عليه الليل رأى كوكبا قال هذا ربى ... | ٧٦ | ك الأنعام | ٦ |
| (١٣) | فلما رأى القمر بازغا قال هذا ربى ... ... ... ... | ٧٧ | ك « | ٦ |
| | فلما رأى الشمس بازغة قال هذا ربى هذا أكبر | ٧٨ | ك « | ٦ |
| | فلما رأى أيديهم لا تصل إليه نكرهم وأوجس منهم خيفة | ٧٠ | ك هود | ١١ |
| | ولقد همت به وهمَّ بها لولا أن رأى برهان ربه | ٢٤ | ك يوسف | ١٢ |
| | فلما رأى قميصه قدَّ من دبر قال إنه من كيدكن ... ... | ٢٨ | ك « | ١٢ |
| | و إذا رأى الذين ظلموا العذاب فلا يخفف عنهم | ٨٥ | ك النحل | ١٦ |
| | و إذا رأى الذين أشركوا شركاءهم قالوا ربنا هؤلاء شركاؤنا | ٨٦ | ك « | ١٦ |
| | ورأى المجرمون النار فظنوا أنهم مواقعوها ... ... | ٥٣ | ك الكهف | ١٨ |
| | إذ رأى نارا فقال لأهله امكثوا إنى آنست نارا | ١٠ | ك طه | ٢٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَأَى: | ولما رأى المؤمنون الأحزاب قالوا هـذا ما وعدنا الله ورسوله ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ما كذب الفـؤاد ما رأى ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك النجـم | ٥٣ |
| | لقـد رأى من آيات ربه الكبرى ... ... ... ... ... | ١٨ | ك « | ٥٣ |
| رَءَاكَ: | وإذا رآك الذين كفروا إن يتخذونك إلا هزوا | ٣٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| رَءَاهُ: | فلما رآه مستقرا عنده قال هذا من فضل ربي... ... | ٤٠ | ك النمـل | ٢٧ |
| (٦) | أفمن زين له سوء عمله فرآه حسنا ... ... ... ... | ٨ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | فاطلع فرآه في سواء الجحيم ... ... ... ... ... | ٥٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| | ولقد رآه نزلة أخرى ... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك النجـم | ٥٣ |
| | ولقد رآه بالأفق المبين ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك التكـوير | ٨١ |
| | كلا إن الإنسان ليطغى . أن رآه استغنى ... ... | ٧ | ك العلق | ٩٦ |
| رَءَاهَا: | وألق عصاك فلما رآها تهتز كأنها جان ولى مدبرا ولم يعقب | ١٠ | ك النمـل | ٢٧ |
| (٢) | فلما رآها تهتز كأنها جان ولى مدبرا ولم يعقب ... ... | ٣١ | ك القصص | ٢٨ |
| رَأَتْهُ: | فلما رأته حسبته لجـة وكشفت عن ساقيها... ... | ٤٤ | ك النمـل | ٢٧ |
| رَأَتْهُمْ: | إذا رأتهم من مكان بعيد سمعوا لها تغيظا وزفيرا | ١٢ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| رَأَوْا: | إذ تبرأ الذين اتبعـوا من الذين اتبعـوا ورأوا | | | |
| (١٣) | العـذاب وتقطعت بهم الأسباب ... ... ... ... | ١٦٦ | م البقـرة | ٢ |
| | ولما سقط في أيديهم ورأوا أنهم قـد ضلوا قالوا لئن لم يرحمنا ربنا ويغفر لنا لنكونن من الخاسرين | ١٤٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | وأسروا الندامة لما رأوا العـذاب وقضى بينهـم بالقسط وهم لا يظلمـون ... ... ... ... ... | ٥٤ | ك يـونس | ١٠ |
| | ثم بدا لهم من بعد ما رأوا الآيات ليسجننه حتى حين | ٣٥ | ك يوسـف | ١٢ |
| | حتى إذا رأوا ما يوعدون إما العذاب وإما الساعة | ٧٥ | ك مريم | ١٩ |
| | فدعوهم فلم يستجيبوا لهم ورأوا العـذاب ... ... | ٦٤ | ك القصص | ٢٨ |
| | وأسروا الندامة لما رأوا العذاب وجعلنا الأغلال في أعنـاق الذين كفروا ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك سـبأ | ٣٤ |
| | وإذا رأوا آية يستسخرون... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك الصافات | ٣٧ |
| | فلما رأوا بأسنا قالوا آمنا بالله وحده ... ... ... | ٨٤ | ك غافـر | ٤٠ |
| | فلم يك ينفعهم إيمانهم لما رأوا بأسنا ... ... ... | ٨٥ | ك « | ٤٠ |
| | وترى الظالمين لما رأوا العذاب يقولون هل إلى مرد من سبيل ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك الشـورى | ٤٢ |
| | وإذا رأوا تجارة أو لهوا انفضوا إليها وتركوك قائما | ١١ | م الجمعـة | ٦٢ |
| | حتى إذا رأوا ما يوعدون فسيعلمـون من أضعف ناصرا وأقل عددا ... ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك الجـن | ٧٢ |
| رَأَوْكَ: | وإذا رأوك إن يتخذونك إلا هزوا أهذا الذي بعث الله رسـولا ... ... ... ... ... ... ... | ٤١ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| رَأَوْهُ: | ولئن أرسلنا ريحا فرأوه مصفرا لظلوا من بعده يكفرون | ٥١ | ك الروم | ٣٠ |
| (٣) | فلما رأوه عارضا مستقبل أوديتهم قالوا هذا عارض ممطرنا | ٢٤ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | فلما رأوه زلفة سيئت وجوه الذين كفروا ... ... | ٢٧ | ك المـلك | ٦٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَأَوْهَا: | فلما رأوها قالوا إنا لضالون ... ... ... ... ... | ٢٦ | م القـلم | ٦٨ |
| رَأَوْهُمْ: | وإذا رأوهم قالوا إن هؤلاء لضالون ... ... ... | ٣٢ | ك المطففين | ٨٣ |
| رَأَيْتُ: | وإذا قيل لهم تعالوا إلى ما أنزل الله وإلى الرسول | | | |
| (١٧) | رأيت المنافقين يصدون عنك صدودا ... ... | ٦١ | م النسـاء | ٤ |
| | وإذا رأيت الذين يخوضون في آياتنا فأعرض عنهم | ٦٨ | ك الأنعـام | ٦ |
| | يا أبت إني رأيت أحد عشر كوكبا والشمس والقمر رأيتهـم لي ساجدين ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك يوسـف | ١٢ |
| | قال أرأيت إذ أوينا إلى الصخرة فإني نسيت الحوت | ٦٣ | ك الكهـف | ١٨ |
| | أفرأيت الذي كفر بآياتنا وقال لأوتين مالا وولدا | ٧٧ | ك مريم | ١٩ |
| | أرأيت من اتخذ إلهه هواه أفأنت تكون عليه وكيلا | ٤٣ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| | أفرأيت إن متعناهم سنين ... ... ... ... ... | ٢٠٥ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| | أفرأيت من اتخـذ إلهه هواه وأضـله الله على علم | ٢٣ | ك الجاثيـة | ٤٥ |
| | رأيت الذين في قلوبهم مرض ينظرون إليك نظـر المغشي عليه من الموت ... ... ... ... ... | ٢٠ | م محمـد | ٤٧ |
| | أفرأيت الذي تولى . وأعطى قليلا وأكدى ... ... | ٣٣ | ك النـجم | ٥٣ |
| | وإذا رأيت ثم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | م الإنسان | ٧٦ |
| | رأيت نعيما وملكا كبيرا ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | م « | ٧٦ |
| | أرأيت الذي ينهى . عبدا إذا صـلى ... ... ... | ٩ | ك العـلق | ٩٦ |
| | أرأيت إن كان على الهـدى . أو أمر بالتقـوى | ١١ | ك « | ٩٦ |
| | أرأيت إن كذب وتولى . ألم يعـلم بأن الله يرى | ١٣ | ك « | ٩٦ |
| | أرأيت الذي يكذب بالدين . فذلك الذي يدع اليتيم | ١ | ك الماعون | ١٠٧ |
| | ورأيت الناس يدخلون في دين الله أفواجا ... ... | ٢ | م النصـر | ١١٠ |
| أَرَأَيْتَكَ: | قال أرأيتك هـذا الذي كرمت عليَّ لئن أخرتن إلى يوم القيامة لأحتنكن ذريتـه إلا قليـلا | ٦٢ | ك الإسـراء | ١٧ |
| أَرَأَيْتَكُمْ: | قـل أرأيتكم إن أتاكم عذاب الله أو أتـتكم | | | |
| (٢) | الساعة أغير الله تدعون... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك الأنعـام | ٦ |
| | قل أرأيتكم إن أتاكم عذاب الله بغتة أو جهرة هل يهـلك إلا القوم الظالمون ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك « | ٦ |
| أَرَأَيْتُمْ: | قل أرأيتم إن أخذ الله سمعكم وأبصاركم وختم على | | | |
| (٢١) | قلوبكم من إله غير الله يأتيكم به ... ... ... | ٤٦ | ك « | ٦ |
| | قـل أرأيتم إن أتاكم عذابه بياتا أو نهارا ماذا يستعجل منه المجرمون ... ... ... ... ... ... | ٥٠ | ك يونس | ١٠ |
| | قل أرأيتم ما أنزل الله لكم من رزق فجعلتم منه حراما وحلالا قل آلله أذن لكم ... ... ... ... ... | ٥٩ | ك « | ١٠ |
| | قال ياقوم أرأيتم إن كنت على بينة من ربي وآتاني رحمة من عنده... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك هـود | ١١ |
| | قال ياقوم أرأيتم إن كنت على بينة من ربي وآتاني منه رحمة | ٦٣ | ك « | ١١ |
| | قال ياقوم أرأيتم إن كنت على بينة من ربي ورزقني منـه رزقا حسنا ... ... ... ... ... ... | ٨٨ | ك « | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أرأيتم: | قال أفرأيتم ما كنتم تعبدون ... ... ... ... ... | ٧٥ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | قل أرأيتم إن جعل الله عليكم الليل سرمدا إلى يوم القيامة | ٧١ | ك القصص | ٢٨ |
| | قل أرأيتم إن جعل الله عليكم النهار سرمدا إلى يوم القيامة | ٧٢ | ك « | ٢٨ |
| | قل أرأيتم شركاءكم الذين تدعون من دون الله | ٤٠ | ك فاطر | ٣٥ |
| | قل أفرأيتم ما تدعون من دون الله إن أرادنى الله بضر هل هن كاشفات ضره... ... ... ... ... | ٣٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| | قل أرأيتم إن كان من عند الله ثم كفرتم به من أضل ممن هو فى شقاق بعيد ... ... ... ... | ٥٢ | ك فصلت | ٤١ |
| | قل أرأيتم ما تدعون من دون الله أرونى ماذا خلقوا من الأرض... ... ... ... ... ... | ٤ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | قل أرأيتم إن كان من عند الله وكفرتم به وشهد شاهد من بنى إسرائيل على مثله ... ... ... | ١٠ | م « | ٤٦ |
| | أفرأيتم اللات والعزى ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك النجم | ٥٣ |
| | أفرأيتم ما تمنون . أأنتم تخلقونه أم نحن الخالقون | ٥٨ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | أفرأيتم ما تحرثون . أأنتم تزرعونه أم نحن الزارعون | ٦٣ | ك « | ٥٦ |
| | أفرأيتم الماء الذى تشربون ... ... ... ... ... | ٦٨ | ك « | ٥٦ |
| | أفرأيتم النار التى تورون ... ... ... ... ... ... | ٧١ | ك « | ٥٦ |
| | قل أرأيتم إن أهلكنى الله ومن معى أو رحمنا فمن يجير الكافرين من عذاب أليم ... ... ... ... | ٢٨ | ك الملك | ٦٧ |
| | قل أرأيتم إن أصبح ماؤكم غورا فمن يأتيكم بماء معين | ٣٠ | ك « | ٦٧ |
| رأيتموه: | فقد رأيتموه وأنتم تنظرون... ... ... ... ... | ١٤٣ | م آل عمران | ٣ |
| رأيته: | لو أنزلنا هذا القرآن على جبل لرأيته خاشعا متصدعا من خشية الله ... ... ... ... ... | ٢١ | م الحشر | ٥٩ |
| رأيتهم: | رأيتهم لى ساجدين ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك يوسف | ١٢ |
| (٦) | قال يا هرون ما منعك إذ رأيتهم ضلوا . ألا تتبعن | ٩٢ | ك طه | ٢٠ |
| | فإذا جاء الخوف رأيتهم ينظرون إليك ... ... ... | ١٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وإذا رأيتهم تعجبك أجسامهم ... ... ... ... ... | ٤ | م المنافقون | ٦٣ |
| | لوّوا رءوسهم ورأيتهم يصدون وهم مستكبرون ... | ٥ | م « | ٦٣ |
| | إذا رأيتهم حسبتهم لؤلؤا منثورا ... ... ... ... | ١٩ | م الإنسان | ٧٦ |
| رأيته: | فلما رأينه أكبرنه وقطعن أيديهن وقلن حاش لله | ٣١ | ك يوسف | ١٢ |
| أرى: | إنى برىء منكم إنى أرى ما لا ترون إنى أخاف الله | ٤٨ | م الأنفال | ٨ |
| (٦) | وقال الملك إنى أرى سبع بقرات سمان يأكلهن سبع عجاف ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك يوسف | ١٢ |
| | قال لا تخافا إننى معكما أسمع وأرى ... ... ... | ٤٦ | ك طه | ٢٠ |
| | وتفقد الطير فقال ما لى لا أرى الهدهد أم كان من الغائبين | ٢٠ | ك النمل | ٢٧ |
| | يا بنىّ إنى أرى فى المنام أنى أذبحك فانظر ماذا ترى | ١٠٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| | قال فرعون ما أريكم إلا ما أرى ... ... ... ... | ٢٩ | ك غافر | ٤٠ |
| أراك: | أتتخذ أصناما آلهة إنى أراك وقومك فى ضلال مبين | ٧٤ | ك الأنعام | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أراكم: | إنهم ملاقوا ربهم ولكنى أراكم قوما تجهلون | ٢٩ | ك هود | ١١ |
| (٣) | إنى أراكم بخير وإنى أخاف عليكم عذاب يوم محيط | ٨٤ | ك « | ١١ |
| | وأبلغكم ما أرسلت به ولكنى أراكم قوما تجهلون | ٢٣ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| أرانى: | قال أحدهما إنى أرانى أعصر خمرا ... ... ... | ٣٦ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | وقال الآخر إنى أرانى أحمل فوق رأسى خبزا... ... | ٣٦ | ك « | ١٢ |
| تر: | ألم تر إلى الذين خرجوا من ديارهم وهم ألوف حذر الموت | ٢٤٣ | م البقرة | ٢ |
| (٣١) | ألم تر إلى الملإ من بنى إسرائيل من بعد موسى | ٢٤٦ | م « | ٢ |
| | ألم تر إلى الذى حاجّ إبراهيم فى ربه أن آتاه الله الملك | ٢٥٨ | م « | ٢ |
| | ألم تر إلى الذين أوتوا نصيبا من الكتاب يدعون إلى كتاب الله ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | م آل عمران | ٣ |
| | ألم تر إلى الذين أوتوا نصيبا من الكتاب يشترون الضلالة | ٤٤ | م النساء | ٤ |
| | ألم تر إلى الذين يزكون أنفسهم بل الله يزكى من يشاء | ٤٩ | م « | ٤ |
| | ألم تر إلى الذين أوتوا نصيبا من الكتاب يؤمنون بالجبت والطاغوت ... ... ... ... ... ... | ٥١ | م « | ٤ |
| | ألم تر إلى الذين يزعمون أنهم آمنوا بما أنزل إليك | ٦٠ | م « | ٤ |
| | ألم تر إلى الذين قيل لهم كفوا أيديكم وأقيموا الصلاة | ٧٧ | م « | ٤ |
| | ألم تر أن الله خلق السموات والأرض بالحق ... ... | ١٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | ألم تر كيف ضرب الله مثلا كلمة طيبة كشجرة طيبة | ٢٤ | ك « | ١٤ |
| | ألم تر إلى الذين بدلوا نعمة الله كفرا... ... ... ... | ٢٨ | م « | ١٤ |
| | ألم تر أنا أرسلنا الشياطين على الكافرين تؤزهم أزا | ٨٣ | ك مريم | ١٩ |
| | ألم تر أن الله يسجد له من فى السموات ومن فى الأرض والشمس والقمر... ... ... ... ... | ١٨ | م الحج | ٢٢ |
| | ألم تر أن الله أنزل من السماء ماء فتصبح الأرض مخضرة | ٦٣ | م « | ٢٢ |
| | ألم تر أن الله سخر لكم ما فى الأرض والفلك تجرى فى البحر بأمره ... ... ... ... ... ... ... | ٦٥ | م « | ٢٢ |
| | ألم تر أن الله يسبح له من فى السموات والأرض والطير صافات ... ... ... ... ... ... ... | ٤١ | م النور | ٢٤ |
| | ألم تر أن الله يزجى سحابا ثم يؤلف بينه ثم يجعله ركاما | ٤٣ | م « | ٢٤ |
| | ألم تر إلى ربك كيف مدّ الظل ولو شاء لجعله ساكنا | ٤٥ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ألم تر أنهم فى كل واد يهيمون ... ... ... ... ... | ٢٢٥ | م الشعراء | ٢٦ |
| | ألم تر أن الله يولج الليل فى النهار ويولج النهار فى الليل | ٢٩ | م لقمان | ٣١ |
| | ألم تر أن الفلك تجرى فى البحر بنعمة الله ليريكم من آياته | ٣١ | ك « | ٣١ |
| | ألم تر أن الله أنزل من السماء ماء فأخرجنا به ثمرات مختلفا ألوانها ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ألم تر أن الله أنزل من السماء ماء فسلكه ينابيع فى الأرض | ٢١ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ألم تر إلى الذين يجادلون فى آيات الله أنى يصرفون | ٦٩ | ك غافر | ٤٠ |
| | ألم تر أن الله يعلم ما فى السموات وما فى الأرض | ٧ | م المجادلة | ٥٨ |
| | ألم تر إلى الذين نهوا عن النجوى ثم يعودون لما نهوا عنه | ٨ | م « | ٥٨ |

| اللفظة | الآيـة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَـرَ: | ألم تر إلى الذين تولوا قوما غضب الله عليهم ما هم منكم ولا منهم ... ... ... ... ... ... ... | ١٤ | م المجادلة | ٥٨ |
| | ألم تر إلى الذين نافقوا يقولون لإخوانهم الذين كفروا من أهل الكتاب لئن أخرجتم لنخرجن معكم | ١١ | م الحشر | ٥٩ |
| | ألم تر كيف فعل ربك بعاد ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك الفجر | ٨٩ |
| | ألم تر كيف فعل ربك بأصحاب الفيل... ... ... ... | ١ | ك الفيل | ١٠٥ |
| تَرَى: | فترى الذين فى قلوبهم مرض يسارعون فيهم ... | ٥٢ | م المائدة | ٥ |
| (٣٦) | وترى كثيرا منهم يسارعون فى الإثم والعدوان وأكلهم السحت ... ... ... ... ... ... | ٦٢ | م « | ٥ |
| | ترى كثيرا منهم يتولون الذين كفروا ... ... ... | ٨٠ | م « | ٥ |
| | وإذا سمعوا ما أنزل إلى الرسول ترى أعينهم تفيض من الدمع مما عرفوا من الحق ... ... ... ... | ٨٣ | م « | ٥ |
| | ولو ترى إذ وقفوا على النار فقالوا يا ليتنا نرد... ... | ٢٧ | ك الأنعام | ٦ |
| | ولو ترى إذ وقفوا على ربهم قال أليس هذا بالحق | ٣٠ | ك « | ٦ |
| | ولو ترى إذ الظالمون فى غمرات الموت ... ... ... | ٩٣ | م « | ٦ |
| | ولو ترى إذ يتوفى الذين كفروا الملائكة... ... ... | ٥٠ | م الأنفال | ٨ |
| | وترى المجرمين يومئذ مقرنين فى الأصفاد ... ... ... | ٤٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وترى الفلك مواخر فيه ولتبتغوا من فضله ولعلكم تشكرون | ١٤ | ك النحل | ١٦ |
| | وترى الشمس إذا طلعت تزاور عن كهفهم ذات اليمين | ١٧ | ك الكهف | ١٨ |
| | ويوم نسير الجبال وترى الأرض بارزة... ... ... | ٤٧ | ك « | ١٨ |
| | ووضع الكتاب فترى المجرمين مشفقين مما فيه | ٤٩ | ك « | ١٨ |
| | لا ترى فيها عوجا ولا أمتا ... ... ... ... ... | ١٠٧ | ك طه | ٢٠ |
| | وترى الناس سكارى ... ... ... ... ... ... ... | ٢ | م الحج | ٢٢ |
| | وترى الأرض هامدة فإذا أنزلنا عليها الماء اهتزت وربت | ٥ | م « | ٢٢ |
| | ثم يجعله ركاما فترى الودق يخرج من خلاله... ... | ٤٣ | م النور | ٢٤ |
| | وترى الجبال تحسبها جامدة وهى تمر مر السحاب | ٨٨ | ك النمل | ٢٧ |
| | ويجعله كسفا فترى الودق يخرج من خلاله ... ... | ٤٨ | ك الروم | ٣٠ |
| | ولو ترى إذ المجرمون ناكسوا رءوسهم عند ربهم | ١٢ | ك السجدة | ٣٢ |
| | ولو ترى إذ الظالمون موقوفون عند ربهم ... ... | ٣١ | ك سبإ | ٣٤ |
| | ولو ترى إذ فزعوا فلا فوت وأخذوا من مكان قريب | ٥١ | ك « | ٣٤ |
| | وترى الفلك فيه مواخر لتبتغوا من فضله ولعلكم تشكرون | ١٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| | إنى أرى فى المنام أنى أذبحك فانظر ماذا ترى | ١٠٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| | أو تقول حين ترى العذاب لو أن لى كرة فأكون من المحسنين ... ... ... ... ... ... ... | ٥٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ويوم القيامة ترى الذين كذبوا على الله وجوههم مسودة | ٦٠ | ك « | ٣٩ |
| | وترى الملائكة حافين من حول العرش يسبحون بحمد ربهم | ٧٥ | ك « | ٣٩ |
| | ومن آياته أنك ترى الأرض خاشعة ... ... ... ... | ٣٩ | ك فصلت | ٤١ |
| | ترى الظالمين مشفقين مما كسبوا وهو واقع بهم ... ... | ٢٢ | ك الشورى | ٤٢ |
| تَرَى: | وترى الظالمين لما رأوا العذاب يقولون هل إلى مرد من سبيل ... ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك الشورى | ٤٢ |
| | وترى كل أمة جاثية كل أمة تدعى إلى كتابها | ٢٨ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | يوم ترى المؤمنين والمؤمنات يسعى نورهم بين أيديهم | ١٢ | م الحديد | ٥٧ |
| | ما ترى فى خلق الرحمن من تفاوت ... ... ... | ٣ | ك الملك | ٦٧ |
| | فارجع البصر هل ترى من فطور... ... ... ... | ٣ | ك « | ٦٧ |
| | فترى القوم فيها صرعى كأنهم أعجاز نخل خاوية | ٧ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | فهل ترى لهم من باقية ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك « | ٦٩ |
| تَرَانِى: | قال رب أرنى أنظر إليك قال لن ترانى ... ... | ١٤٣ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | ولكن انظر إلى الجبل فإن استقر مكانه فسوف ترانى | ١٤٣ | ك « | ٧ |
| فَتَرَاهُ: | ثم يهيج فتراه مصفرا ثم يجعله حطاما... ... ... | ٢١ | ك الزمر | ٣٩ |
| (٢) | ثم يهيج فتراه مصفرا ثم يكون حطاما ... ... ... | ٢٠ | م الحديد | ٥٧ |
| تَرَاهُمْ: | وتراهم ينظرون إليك وهم لا يبصرون ... ... ... | ١٩٨ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | وتراهم يعرضون عليها خاشعين من الذل ... ... | ٤٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| | تراهم ركعا سجدا يبتغون فضلا من الله ورضوانا | ٢٩ | م الفتح | ٤٨ |
| تَرَنِ: | إن ترن أنا أقل منك مالا وولدا ... ... ... ... | ٣٩ | ك الكهف | ١٨ |
| تَرَوْا: | ألم تروا أن الله سخر لكم ما فى السموات وما فى الأرض | ٢٠ | ك لقمان | ٣١ |
| (٢) | ألم تروا كيف خلق الله سبع سموات طباقا ... ... | ١٥ | ك نوح | ٧١ |
| تَرَوْنَ: | إنى برىء منكم إنى أرى ما لا ترون إنى أخاف الله | ٤٨ | م الأنفال | ٨ |
| (٢) | ألا ترون أنى أوفى الكيل وأنا خير المنزلين ... ... | ٥٩ | ك يوسف | ١٢ |
| لَتَرَوُنَّ: | كلا لو تعلمون علم اليقين . لترون الجحيم ... ... | ٦ | ك التكاثر | ١٠٢ |
| تَرَوْنَهَا: | الله الذى رفع السموات بغير عمد ترونها ... ... | ٢ | م الرعد | ١٣ |
| (٣) | يوم ترونها تذهل كل مرضعة عما أرضعت ... ... | ٢ | م الحج | ٢٢ |
| | خلق السموات بغير عمد ترونها ... ... ... ... | ١٠ | ك لقمان | ٣١ |
| لَتَرَوُنَّهَا: | لترون الجحيم . ثم لترونها عين اليقين ... ... ... | ٧ | ك التكاثر | ١٠٢ |
| تَرَوْنَهُمْ: | إنه يراكم هو وقبيله من حيث لا ترونهم... ... | ٢٧ | ك الأعراف | ٧ |
| تَرَوْهَا: | وأنزل جنودا لم تروها وعذب الذين كفروا ... ... | ٢٦ | م التوبة | ٩ |
| (٣) | فأنزل الله سكينته عليه وأيده بجنود لم تروها ... ... | ٤٠ | م « | ٩ |
| | إذ جاءتكم جنود فأرسلنا عليهم ريحا وجنودا لم تروها | ٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| تَرَيِنَّ: | فإما ترين من البشر أحدا فقولى إنى نذرت للرحمن صوما | ٢٦ | ك مريم | ١٩ |
| تَرَى: | وإذ قلتم يا موسى لن نؤمن لك حتى نرى الله جهرة | ٥٥ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | قد نرى تقلب وجهك فى السماء فلنولينك قبلة ترضاها | ١٤٤ | م « | ٢ |
| | وما نرى معكم شفعاءكم الذين زعمتم أنهم فيكم شركاء | ٩٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | وما نرى لكم علينا من فضل بل نظنكم كاذبين | ٢٧ | ك هود | ١١ |
| | لولا أنزل علينا الملائكة أو نرى ربنا ... ... ... | ٢١ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وقالوا مالنا لا نرى رجالا كنا نعدهم من الأشرار | ٦٢ | ك ص | ٣٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| نَرَاكَ | : قال الملأ من قومه إنا لنراك فى ضلال مبين | ٦٠ | ك الأعراف | ٧ |
| (٧) | قال الملأ الذين كفروا من قومه إنا لنراك فى سفاهة | ٦٦ | ك « | ٧ |
| | فقال الملأ الذين كفروا من قومه ما نراك إلا بشرا مثلنا | ٢٧ | ك هـود | ١١ |
| | وما نراك اتبعك إلا الذين هم أراذلنا بادى الرأى | ٢٧ | ك « | ١١ |
| | قالوا ياشعيب ما نفقه كثيرا مما تقول وإنا لنراك فينا ضعيفا | ٩١ | ك « | ١١ |
| | نبئنا بتأويله إنا نراك من المحسنين ... ... ... ... | ٣٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | إن له أبا شيخا كبيرا فخذ أحدنا مكانه إنا نراك من المحسنين | ٧٨ | ك « | ١٢ |
| نَرَاهُ | : إنهم يرونه بعيدا . ونراه قريبا ... ... ... ... | ٧ | ك المعارج | ٧٠ |
| لَنَرَاهَا | : إنا لنراها فى ضلال مبين ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك يوسف | ١٢ |
| يَرَ | : أو لم ير الذين كفروا أن السموات والأرض | | | |
| (٢) | كانتا رتقا ففتقناهما ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | أو لم ير الإنسان أنا خلقناه من نطفة فإذا هو خصيم مبين | ٧٧ | ك يس | ٣٦ |
| يَرَى | : ولو يرى الذين ظلموا إذ يرون العذاب أن القوة لله جميعا | ١٦٥ | م البقرة | ٢ |
| (٨) | وسيرى الله عملكم ورسوله ... ... ... ... ... ... | ٩٤ | م التوبة | ٩ |
| | وقل اعملوا فسيرى الله عملكم ورسوله والمؤمنون | ١٠٥م | « | ٩ |
| | ويرى الذين أوتوا العلم الذى أنزل إليك من ربك هو الحق | ٦ | م سبأ | ٣٤ |
| | أفتمارونه على ما يرى ... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك النجم | ٥٣ |
| | أعنده علم الغيب فهو يرى ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك « | ٥٣ |
| | وبرزت الجحيم لمن يرى... ... ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك النازعات | ٧٩ |
| | ألم يعلم بأن الله يرى ... ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك العلق | ٩٦ |
| يَرَاكَ | : وتوكل على العزيز الرحيم . الذى يراك حين تقوم | ٢١٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| يَرَاكُمْ | : إنه يراكم هو وقبيله من حيث لا ترونهم... ... ... | ٢٧ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | هل يراكم من أحد ثم انصرفوا ... ... ... ... ... | ١٢٧م | التوبة | ٩ |
| يَرَاهَا | : ظلمات بعضها فوق بعض إذا أخرج يده لم يكد يراها | ٤٠ | م النور | ٢٤ |
| يَرَهُ | : أيحسب أن لم يره أحد ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك البلد | ٩٠ |
| (٣) | فمن يعمل مثقال ذرة خيرا يره ... ... ... ... ... | ٧ | م الزلزلة | ٩٩ |
| | ومن يعمل مثقال ذرة شرا يره ... ... ... ... ... | ٨ | م « | ٩٩ |
| يَرَوْا | : ألم يروا كم أهلكنا من قبلهم من قرن ... ... ... | ٦ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢٧) | وإن يروا كل آية لا يؤمنوا بها... ... ... ... ... | ٢٥ | ك « | ٦ |
| | وإن يروا كل آية لا يؤمنوا بها... ... ... ... ... | ١٤٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | وإن يروا سبيل الرشد لا يتخذوه سبيلا ... ... ... | ١٤٦ | ك « | ٧ |
| | وإن يروا سبيل الغى يتخذوه سبيلا ... ... ... ... | ١٤٦ | ك « | ٧ |
| | ألم يروا أنه لا يكلمهم ولا يهديهم سبيلا ... ... | ١٤٨ | ك « | ٧ |
| | واشدد على قلوبهم فلا يؤمنوا حتى يروا العذاب الأليم | ٨٨ | ك يونس | ١٠ |
| | ولو جاءتهم كل آية حتى يروا العذاب الأليم... ... | ٩٧ | ك « | ١٠ |
| | أو لم يروا أنا نأتى الأرض ننقصها من أطرافها | ٤١ | م الرعد | ١٣ |
| | أو لم يروا إلى ما خلق الله من شىء ... ... ... | ٤٨ | ك النحل | ١٦ |
| يَرَوْا | : ألم يروا إلى الطير مسخرات فى جو السماء ما يمسكهن إلا الله | ٧٩ | ك النحل | ١٦ |
| | أو لم يروا أن الله الذى خلق السموات والأرض | | | |
| | قادر على أن يخلق مثلهم ... ... ... ... ... | ٩٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| | أو لم يروا إلى الأرض كم أنبتنا فيها من كل زوج كريم | ٧ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | لا يؤمنون به حتى يروا العذاب الأليم ... ... ... | ٢٠١ | ك « | ٢٦ |
| | ألم يروا أنا جعلنا الليل ليسكنوا فيه والنهار مبصرا... | ٨٦ | ك النمل | ٢٧ |
| | أو لم يروا كيف يبدئ الله الخلق ثم يعيده ... ... | ١٩ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | أو لم يروا أنا جعلنا حرما آمنا ويتخطف الناس من حولهم | ٦٧ | ك « | ٢٩ |
| | أو لم يروا أن الله يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر | ٣٧ | ك الروم | ٣٠ |
| | أو لم يروا أنا نسوق الماء إلى الأرض الجرز... ... | ٢٧ | ك السجدة | ٣٢ |
| | أفلم يروا إلى ما بين أيديهم وما خلفهم من السماء والأرض | ٩ | ك سبأ | ٣٤ |
| | ألم يروا كم أهلكنا قبلهم من القرون أنهم إليهم لا يرجعون | ٣١ | ك يس | ٣٦ |
| | أو لم يروا أنا خلقنا لهم مما عملت أيدينا أنعاما | ٧١ | ك « | ٣٦ |
| | أو لم يروا أن الله الذى خلقهم هو أشد منهم قوة | ١٥ | ك فصلت | ٤١ |
| | أو لم يروا أن الله الذى خلق السموات والأرض | | | |
| | ولم يعى بخلقهن بقادر على أن يحيى الموتى | ٣٣ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | وإن يروا كسفا من السماء ساقطا يقولوا سحاب مركوم | ٤٤ | ك الطور | ٥٢ |
| | وإن يروا آية يعرضوا ويقولوا سحر مستمر ... ... | ٢ | ك القمر | ٥٤ |
| | أو لم يروا إلى الطير فوقهم صافات ويقبضن... ... | ١٩ | ك الملك | ٦٧ |
| يَرَوْنَ | : ولو يرى الذين ظلموا إذ يرون العذاب أن القوة | | | |
| (٨) | لله جميعا ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٦٥م | البقرة | ٢ |
| | أو لا يرون أنهم يفتنون فى كل عام مرة أو مرتين | ١٢٦م | التوبة | ٩ |
| | أفلا يرون أن لا يرجع إليهم قولا ولا يملك لهم ضرا ولا نفعا | ٨٩ | ك طه | ٢٠ |
| | أفلا يرون أنا نأتى الأرض ننقصها من أطرافها ... | ٤٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | يوم يرون الملائكة لا بشرى يومئذ للمجرمين ... ... | ٢٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وسوف يعلمون حين يرون العذاب من أضل سبيلا | ٤٢ | ك « | ٢٥ |
| | كأنهم يوم يرون ما يوعدون لم يلبثوا إلا ساعة من نهار | ٣٥ | م الأحقاف | ٤٦ |
| | متكئين فيها على الأرائك لا يرون فيها شمسا ولا زمهريرا | ١٣ | م الإنسان | ٧٦ |
| يَرَوْنَهُ | : إنهم يرونه بعيدا ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك المعارج | ٧٠ |
| يَرَوْنَهَا | : أفلم يكونوا يرونها بل كانوا لا يرجون نشورا... ... | ٤٠ | ك الفرقان | ٢٥ |
| (٢) | كأنهم يوم يرونها لم يلبثوا إلا عشية أو ضحاها ... | ٤٦ | ك النازعات | ٧٩ |
| يَرَوْنَهُمْ | : وأخرى كافرة يرونهم مثليهم رأى العين ... ... | ١٣ | م آل عمران | ٣ |
| يُرَى | : تدمر كل شىء بأمر ربها فأصبحوا لا يرى إلا مساكنهم | ٢٥ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| (٢) | وأن ليس للإنسان إلا ما سعى . وأن سعيه سوف يرى | ٤٠ | ك النجم | ٥٣ |
| أَرَاكَ | : إنا أنزلنا إليك الكتاب بالحق لتحكم بين الناس | | | |
| | بما أراك الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٥م | النساء | ٤ |
| أَرَاكُمْ | : وعصيتم من بعد ما أراكم ما تحبون ... ... ... | ١٥٢م | آل عمران | ٣ |
| أَرَاكَهُمْ | : ولو أراكهم كثيرا لفشلتم ... ... ... ... ... | ٤٣ | م الأنفال | ٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| فَأَرَاهُ: فأراه الآية الكبرى ... ... ... ... ... ... | ٢٠ ك النازعات | ٧٩ | |
| أَرَيْنَاكَ: وما جعلنا الرؤيا التي أريناك إلا فتنة للناس | ٦٠ ك الإسراء | ١٧ | |
| أَرَيْنَاكَهُمْ: ولو نشاء لأريناكهم فلعرفتهم بسيماهم ... ... | ٣٠ م محمد | ٤٧ | |
| أَرَيْنَاهُ: ولقد أريناه آياتنا كلها فكذب وأبى ... ... | ٥٦ ك طه | ٢٠ | |
| أُرِيكُمْ: وأمر قومك يأخذوا بأحسنها سأريكم دار الفاسقين | ١٤٥ ك الأعراف | ٧ | |
| (٣) خلق الإنسان من عجل سأريكم آياتي فلا تستعجلون | ٣٧ ك الأنبياء | ٢١ | |
| قال فرعون ما أريكم إلا ما أرى وما أهديكم إلا سبيل الرشاد | ٢٩ ك غافر | ٤٠ | |
| تُرِيَنِّي: قل رب إما تريني ما يوعدون ... ... ... ... | ٩٣ ك المؤمنون | ٢٣ | |
| نُرِيَ: وكذلك نرى إبراهيم ملكوت السموات والأرض | ٧٥ ك الأنعام | ٦ | |
| (٢) ونرى فرعون وهامان وجنودهما منهم ما كانوا يحذرون | ٦ ك القصص | ٢٨ | |
| نُرِيَكَ: لنريك من آياتنا الكبرى ... ... ... ... ... | ٢٣ ك طه | ٢٠ | |
| (٢) وإنا على أن نريك ما نعدهم لقادرون ... ... ... | ٩٥ ك المؤمنون | ٢٣ | |
| نُرِيَنَّكَ: وإما نرينك بعض الذي نعدهم أو نتوفينك | | | |
| (٤) فإلينا مرجعهم ... ... ... ... ... ... ... | ٤٦ ك يونس | ١٠ | |
| وإن ما نرينك بعض الذي نعدهم أو نتوفينك | | | |
| فإنما عليك البلاغ... ... ... ... ... ... | ٤٠ م الرعد | ١٣ | |
| فإما نرينك بعض الذي نعدهم أو نتوفينك فإلينا يرجعون | ٧٧ ك غافر | ٤٠ | |
| أو نرينك الذي وعدناهم فإنا عليهم مقتدرون ... | ٤٢ ك الزخرف | ٤٣ | |
| لِنُرِيَهُ: إلى المسجد الأقصى الذي باركنا حوله لنريه من آياتنا | ١ ك الإسراء | ١٧ | |
| نُرِيهِمْ: سنريهم آياتنا في الآفاق وفي أنفسهم حتى يتبين | | | |
| (٢) لهم أنه الحق ... ... ... ... ... ... ... | ٥٣ ك فصلت | ٤١ | |
| وما نريهم من آية إلا هي أكبر من أختها ... ... | ٤٨ ك الزخرف | ٤٣ | |
| يُرِيكُمْ: كذلك يحيي الله الموتى ويريكم آياته لعلكم تعقلون | ٧٣ م البقرة | ٢ | |
| (٧) هو الذي يريكم البرق خوفا وطمعا وينشئ السحاب الثقال | ١٢ م الرعد | ١٣ | |
| وقل الحمد لله سيريكم آياته فتعرفونها ... ... ... | ٩٣ ك النمل | ٢٧ | |
| ومن آياته يريكم البرق خوفا وطمعا ... ... | ٢٤ ك الروم | ٣٠ | |
| ألم تر أن الفلك تجري في البحر بنعمة الله ليريكم من آياته | ٣١ ك لقمان | ٣١ | |
| هو الذي يريكم آياته وينزل لكم من السماء رزقا | ١٣ ك غافر | ٤٠ | |
| ويريكم آياته فأي آيات الله تنكرون ... ... | ٨١ ك « | ٤٠ | |
| يُرِيكُمُوهُمْ: وإذ يريكموهم إذ التقيتم في أعينكم قليلا ... | ٤٤ م الأنفال | ٨ | |
| يُرِيكَهُمُ: إذ يريكهم الله في منامك قليلا ... ... ... | ٤٣ م « | ٨ | |
| لِيُرِيَهُ: يبحث في الأرض ليريه كيف يواري سوءة أخيه | ٣١ م المائدة | ٥ | |
| يُرِيهِمُ: كذلك يريهم الله أعمالهم حسرات عليهم ... ... | ١٦٧ م البقرة | ٢ | |
| لِيُرِيَهُمَا: ينزع عنهما لباسهما ليريهما سوآتهما ... ... | ٢٧ ك الأعراف | ٧ | |
| أَرِنَا: وأرنا مناسكنا وتب علينا إنك أنت التواب الرحيم | ١٢٨ م البقرة | ٢ | |
| (٣) فقد سألوا موسى أكبر من ذلك فقالوا أرنا الله جهرة | ١٥٣ م النساء | ٤ | |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| أَرِنَا: وقال الذين كفروا ربنا أرنا اللذين أضلانا من | | | |
| الجن والإنس ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٩ ك فصلت | ٤١ | |
| أَرِنِي: وإذ قال إبراهيم رب أرني كيف تحيي الموتى... ... | ٢٦٠ م البقرة | ٢ | |
| (٢) قال رب أرني أنظر إليك ... ... ... ... ... ... | ١٤٣ ك الأعراف | ٧ | |
| أَرُونِي: هذا خلق الله فأروني ماذا خلق الذين من دونه | ١١ ك لقمان | ٣١ | |
| (٤) قل أروني الذين ألحقتم به شركاء كلا ... ... ... | ٢٧ ك سبإ | ٣٤ | |
| أروني ماذا خلقوا من الأرض أم لهم شرك في السموات | ٤٠ ك فاطر | ٣٥ | |
| قل أرأيتم ما تدعون من دون الله أروني ماذا خلقوا | | | |
| من الأرض ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤ ك الأحقاف | ٤٦ | |
| لِيُرَوْا: يومئذ يصدر الناس أشتاتا ليروا أعمالهم ... ... | ٦ م الزلزلة | ٩٩ | |
| تَرَاءَا: فلما تراءا الجمعان قال أصحاب موسى إنا لمدركون ... | ٦١ ك الشعراء | ٢٦ | |
| تَرَاءَتِ: فلما تراءت الفئتان نكص على عقبيه... ... ... | ٤٨ م الأنفال | ٨ | |
| يُرَاءُونَ: يراءون الناس ولا يذكرون الله إلا قليلا... ... | ١٤٢ م النساء | ٤ | |
| (٢) الذين هم يراءون . ويمنعون الماعون ... ... ... | ٦ م الماعون | ١٠٧ | |
| رِئَاءَ: لا تبطلوا صدقاتكم بالمن والأذى كالذي ينفق ماله رئاء الناس | ٢٦٤ م البقرة | ٢ | |
| (٣) والذين ينفقون أموالهم رئاء الناس ولا يؤمنون | | | |
| بالله ولا باليوم الآخر... ... ... ... ... ... | ٣٨ م النساء | ٤ | |
| ولا تكونوا كالذين خرجوا من ديارهم بطرا ورئاء الناس | ٤٧ م الأنفال | ٨ | |
| رَأْيَ: فئة تقاتل في سبيل الله وأخرى كافرة يرونهم مثليهم | | | |
| (٢) رأي العين .. ... ... ... ... ... ... ... | ١٣ م آل عمران | ٣ | |
| وما نراك اتبعك إلا الذين هم أراذلنا بادي الرأي | ٢٧ ك هود | ١١ | |
| رِئْيًا: وكم أهلكنا قبلهم من قرن هم أحسن أثاثا ورئيا | ٧٤ ك مريم | ١٩ | |
| الرُّؤْيَا: يأيها الملأ أفتوني في رؤياي إن كنتم للرؤيا تعبرون | ٤٣ ك يوسف | ١٢ | |
| (٤) وما جعلنا الرؤيا التي أريناك إلا فتنة للناس ... ... | ٦٠ ك الإسراء | ١٧ | |
| قد صدقت الرؤيا إنا كذلك نجزي المحسنين ... ... | ١٠٥ ك الصافات | ٣٧ | |
| لقد صدق الله رسوله الرؤيا بالحق ... ... ... ... | ٢٧ م الفتح | ٤٨ | |
| رُؤْيَاكَ: لا تقصص رؤياك على إخوتك فيكيدوا لك كيدا | ٥ ك يوسف | ١٢ | |
| رُؤْيَايَ: يأيها الملأ أفتوني في رؤياي إن كنتم للرؤيا تعبرون | ٤٣ ك « | ١٢ | |
| (٢) وقال يا أبت هذا تأويل رؤياي من قبل قد جعلها ربي حقا | ١٠٠ ك « | ١٢ | |
| رَبِّ: الحمد لله رب العالمين ... ... ... ... ... ... | ٢ ك الفاتحة | ١ | |
| (٨٤) إذ قال له ربه أسلم قال أسلمت لرب العالمين ... ... | ١٣١ م البقرة | ٢ | |
| ما أنا بباسط يدي إليك لأقتلك إني أخاف الله رب العالمين | ٢٨ م المائدة | ٥ | |
| فقطع دابر القوم الذين ظلموا والحمد لله رب العالمين | ٤٥ ك الأنعام | ٦ | |
| قل إن هدى الله هو الهدى وأمرنا لنسلم لرب العالمين | ٧١ ك « | ٦ | |
| قل إن صلاتي ونسكي ومحياي ومماتي لله رب العالمين | ١٦٢ ك « | ٦ | |
| قل أغير الله أبغي ربا وهو رب كل شيء ... ... | ١٦٤ ك « | ٦ | |
| ألا له الخلق والأمر تبارك الله رب العالمين... ... | ٥٤ ك الأعراف | ٧ | |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَبِّ: | قل أعوذ برب الفلق ... ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الفـلق | ١١٣ |
| | قل أعوذ برب النـاس ... ... ... ... ... ... ... | ١ | ك النـاس | ١١٤ |
| رَبِّ: | وإذ قال إبراهيم رب أجعل هذا بلداً آمنا ... ... | ١٢٦ | م البقـرة | ٢ |
| (١٦٧) | وإذ قال إبراهيم رب أرنى كيف تحيى الموتى ... ... | ٢٦٠ | م « | ٢ |
| | إذ قالت امرأة عمران رب إنى نذرت لك ما فى بطنى محررا | ٣٥ | م آل عمران | ٣ |
| | فلما وضعتها قالت رب إنى وضعتها أنثى ... ... | ٣٦ | م « | ٣ |
| | قال رب هب لى من لدنك ذرية طيبة ... ... ... | ٣٨ | م « | ٣ |
| | قال رب أنى يكون لى غلام وقد بلغنى الكبر وامرأتى عاقر | ٤٠ | م « | ٣ |
| | قال رب اجعل لى آية ... ... ... ... ... ... ... | ٤١ | م « | ٣ |
| | قالت رب أنى يكون لى ولد ولم يمسسنى بشر... ... | ٤٧ | م « | ٣ |
| | قال رب إنى لا أملك إلا نفسى وأخى ... ... ... | ٢٥ | م المائدة | ٥ |
| | قال رب أرنى أنظر إليك ... ... ... ... ... ... | ١٤٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | قال رب اغفر لى ولأخى وأدخلنا فى رحمتك ... ... | ١٥١ | ك « | ٧ |
| | قال رب لو شئت أهلكتهم من قبل وإياى ... ... | ١٥٥ | ك « | ٧ |
| | فقال رب إن ابنى من أهلى وإن وعدك الحق ... | ٤٥ | ك هـود | ١١ |
| | قال رب إنى أعوذ بك أن أسئلك ما ليس لى به علم | ٤٧ | ك « | ١١ |
| | قال رب السجن أحب إلىّ مما يدعوننى إليه ... ... | ٣٣ | ك يوسـف | ١٢ |
| | رب قد آتيتنى من الملك وعلمتنى من تأويل الأحاديث | ١٠١ | ك « | ١٢ |
| | وإذ قال إبراهيم رب اجعل هذا البلد آمنا ... ... | ٣٥ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | رب إنهن أضللن كثيرا من الناس فمن تبعنى فإنه منى | ٣٦ | ك « | ١٤ |
| | رب اجعلنى مقيم الصلاة ومن ذريتى ربنا وتقبل دعاء | ٤٠ | ك « | ١٤ |
| | قال رب فأنظرنى إلى يوم يبعثون ... ... ... ... | ٣٦ | ك الحجـر | ١٥ |
| | قال رب بما أغويتنى لأزينن لهم فى الأرض | ٣٩ | ك « | ١٥ |
| | وقل رب ارحمهما كما ربيانى صغيرا ... ... ... ... | ٢٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وقل رب أدخلنى مدخل صدق وأخرجنى مخرج صدق | ٨٠ | م « | ١٧ |
| | قال رب إنى وهن العظم منى واشتعل الرأس شيبا | ٤ | ك مريم | ١٩ |
| | ولم أكن بدعائك رب شقيا... ... ... ... ... ... | ٤ | ك « | ١٩ |
| | يرثنى ويرث من آل يعقوب واجعله رب رضيا | ٦ | ك « | ١٩ |
| | قال رب أنى يكون لى غلام وكانت امرأتى عاقرا | ٨ | ك « | ١٩ |
| | قال رب اجعل لى آية ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك « | ١٩ |
| | قال رب اشرح لى صدرى ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك طـه | ٢٠ |
| | قال هم أولاء على أثرى وعجلت إليك رب لترضى | ٨٤ | ك « | ٢٠ |
| | وقل رب زدنى علما ... ... ... ... ... ... ... | ١١٤ | ك « | ٢٠ |
| | قال رب لم حشرتنى أعمى وقد كنت بصيرا ... ... | ١٢٥ | ك « | ٢٠ |
| | وزكريا إذ نادى ربه رب لا تذرنى فردا وأنت خير الوارثين | ٨٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | قال رب احكم بالحق وربنا الرحمن المستعان على ما تصفون | ١١٢ | ك « | ٢١ |
| | قال رب انصرنى بما كذبون... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وقل رب أنزلنى منزلا مباركا وأنت خير المنزلين | ٢٩ | ك « | ٢٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَبِّ: | قال رب انصرنى بما كذبون ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | قل رب إما ترينى ما يوعدون ... ... ... ... ... | ٩٣ | ك « | ٢٣ |
| | رب فلا تجعلنى فى القوم الظالمين ... ... ... ... | ٩٤ | ك « | ٢٣ |
| | وقل رب أعوذ بك من همزات الشياطين ... ... | ٩٧ | ك « | ٢٣ |
| | وأعوذ بك رب أن يحضرون ... ... ... ... ... | ٩٨ | ك « | ٢٣ |
| | حتى إذا جاء أحدهم الموت قال رب ارجعون | ٩٩ | ك « | ٢٣ |
| | وقل رب اغفر وارحم وأنت خير الراحمين ... ... | ١١٨ | ك « | ٢٣ |
| | وقال الرسول يا رب إن قومى اتخذوا هذا القرآن مهجورا | ٣٠ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| | قال رب إنى أخاف أن يكذبون ... ... ... ... | ١٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | رب هب لى حكما وألحقنى بالصالحين ... ... ... | ٨٣ | ك « | ٢٦ |
| | قال رب إن قومى كذبون ... ... ... ... ... ... | ١١٧ | ك « | ٢٦ |
| | رب نجنى وأهلى مما يعملون... ... ... ... ... | ١٦٩ | ك « | ٢٦ |
| | وقال رب أوزعنى أن أشكر نعمتك التى أنعمت علىّ | ١٩ | ك النمـل | ٢٧ |
| | قالت رب إنى ظلمت نفسى... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك « | ٢٧ |
| | قال رب إنى ظلمت نفسى فاغفر لى فغفر له ... ... | ١٦ | ك القصص | ٢٨ |
| | قال رب بما أنعمت علىّ فلن أكون ظهيرا للمجرمين | ١٧ | ك « | ٢٨ |
| | فخرج منها خائفا يترقب قال رب نجنى من القوم الظالمين | ٢١ | ك « | ٢٨ |
| | فقال رب إنى لما أنزلت إلىّ من خير فقير ... ... | ٢٤ | ك « | ٢٨ |
| | قال رب إنى قتلت منهم نفسا فأخاف أن يقتلون | ٣٣ | ك « | ٢٨ |
| | قال رب انصرنى على القوم المفسدين ... ... ... | ٣٠ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | رب هب لى من الصالحين ... ... ... ... ... ... | ١٠٠ | ك الصافات | ٣٧ |
| | قال رب اغفر لى وهب لى ملكا لا ينبغى لأحد من بعدى | ٣٥ | ك صٓ | ٣٨ |
| | قال رب فأنظرنى إلى يوم يبعثون ... ... ... ... | ٧٩ | ك « | ٣٨ |
| | وقيله يا رب إن هؤلاء قوم لا يؤمنون ... ... ... | ٨٨ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | قال رب أوزعنى أن أشكر نعمتك التى أنعمت علىّ وعلى والدىّ ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | م الأحقاف | ٤٦ |
| | رب لولا أخرتنى إلى أجل قريب فأصدق وأكن من الصالحين | ١٠ | م المنافقون | ٦٣ |
| | رب ابن لى عندك بيتا فى الجنة ونجنى من فرعون وعمله | ١١ | م التحـريم | ٦٦ |
| | قال رب إنى دعوت قومى ليلا ونهارا ... ... ... | ٥ | ك نـوح | ٧١ |
| | قال نوح رب إنهم عصونى واتبعوا من لم يزده ماله وولده إلا خسارا ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك « | ٧١ |
| | وقال نوح رب لا تذر على الأرض من الكافرين ديارا | ٢٦ | ك « | ٧١ |
| | رب اغفر لى ولوالدىّ ولمن دخل بيتى مؤمنا ... ... | ٢٨ | ك « | ٧١ |
| رَبًّا: | قل أغير الله أبغى ربا وهو رب كل شىء ... ... | ١٦٤ | ك الأنعـام | ٦ |
| رَبُّكَ: | وإذ قال ربك للملائكة إنى جاعل فى الأرض خليفة | ٣٠ | م البقـرة | ٢ |
| (٢٤٢) | فادع لنا ربك يخرج لنا مما تنبت الأرض من بقلها وقثائها ... ... ... ... ... ... ... | ٦١ | م « | ٢ |
| | قالوا ادع لنا ربك يبين لنا ما هى ... ... ... ... | ٦٨ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَبُّكَ | : قالوا ادع لنا ربك يبين لنا ما لونها ... ... ... | ٦٩ م | البقـرة | ٢ |
| | قالوا ادع لنا ربك يبين لنا ما هي إن البقر تشابه علينا | ٧٠ م | « | ٢ |
| | الحق من ربك فلا تكونن من الممترين ... ... ... | ١٤٧م | « | ٢ |
| | وإنه للحق من ربك وما الله بغافل عما تعملون | ١٤٩م | « | ٢ |
| | واذكر ربك كثيرا وسبح بالعشيّ والإبكار ... ... | ٤١ م | آل عمران | ٣ |
| | يا مريم اقنتي لربك واسجدي واركعي مع الراكعين | ٤٣ م | « | ٣ |
| | الحق من ربك فلا تكن من الممترين ... ... ... | ٦٠ م | « | ٣ |
| | فلا وربك لا يؤمنون حتى يحكموك فيما شجر بينهم | ٦٥ م | النساء | ٤ |
| | فاذهب أنت وربك فقاتلا إنا ههنا قاعدون... ... | ٢٤ م | المائدة | ٥ |
| | وليزيدن كثيرا منهم ما أنزل إليك من ربك طغيانا وكفرا | ٦٤ م | « | ٥ |
| | يا أيها الرسول بلغ ما أنزل إليك من ربك ... ... | ٦٧ م | « | ٥ |
| | وليزيدن كثيرا منهم ما أنزل إليك من ربك طغيانا وكفرا | ٦٨ م | « | ٥ |
| | هل يستطيع ربك أن ينزل علينا مائدة من السماء | ١١٢م | « | ٥ |
| | نرفع درجات من نشاء إن ربك حكيم عليم ..... | ٨٣ ك | الأنعام | ٦ |
| | اتبع ما أوحي إليك من ربك لا إله إلا هو ... | ١٠٦ك | « | ٦ |
| | ولو شاء ربك ما فعلوه فذرهم وما يفترون ... ... | ١١٢ك | « | ٦ |
| | والذين آتيناهم الكتاب يعلمون أنه منزّل من ربك بالحق | ١١٤م | « | ٦ |
| | وتمت كلمة ربك صدقا وعدلا لا مبدل لكلماته | ١١٥ك | « | ٦ |
| | إن ربك هو أعلم من يضل عن سبيله وهو أعلم بالمهتدين | ١١٧ك | « | ٦ |
| | إن ربك هو أعلم بالمعتدين ... ... ... ... ... | ١١٩ك | « | ٦ |
| | وهذا صراط ربك مستقيما قد فصلنا الآيات لقوم يذكرون | ١٢٦ك | « | ٦ |
| | قال النار مثواكم خالدين فيها إلا ما شاء الله | | | |
| | إن ربك حكيم عليم ... ... ... ... ... ... | ١٢٨ك | « | ٦ |
| | ذلك أن لم يكن ربك مهلك القرى بظلم وأهلها غافلون | ١٣١ك | « | ٦ |
| | ولكل درجات مما عملوا وما ربك بغافل عما يعملون | ١٣٢ك | « | ٦ |
| | وربك الغني ذو الرحمة ... ... ... ... ... ... | ١٣٣ك | « | ٦ |
| | فمن اضطر غير باغ ولا عاد فإن ربك غفور رحيم | ١٤٥ك | « | ٦ |
| | هل ينظرون إلا أن تأتيهم الملائكة أو يأتي ربك | ١٥٨ك | « | ٦ |
| | أو يأتي بعض آيات ربك ... ... ... ... ... ... | ١٥٨ك | « | ٦ |
| | يوم يأتي بعض آيات ربك لا ينفع نفسا إيمانها لم تكن | | | |
| | آمنت من قبل ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٨ك | « | ٦ |
| | إن ربك سريع العقاب وإنه لغفور رحيم ... ... | ١٦٥ك | « | ٦ |
| | ولما وقع عليهم الرجز قالوا يا موسى ادع لنا ربك | | | |
| | بما عهد عندك ... ... ... ... ... ... ... | ١٣٤ك | الأعراف | ٧ |
| | وتمت كلمة ربك الحسنى على بني إسرائيل بما صبروا | ١٣٧ك | « | ٧ |
| | إن ربك من بعدها لغفور رحيم ... ... ... | ١٥٣ك | « | ٧ |
| | وإذ تأذّن ربك ليبعثن عليهم إلى يوم القيامة من | | | |
| | يسومهم سوء العذاب ... ... ... ... ... ... | ١٦٧م | « | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَبُّكَ | : إن ربك لسريع العقاب وإنه لغفور رحيم ... ... | ١٦٧م | الأعراف | ٧ |
| | وإذ أخذ ربك من بني آدم من ظهورهم ذريتهم | ١٧٢ك | « | ٧ |
| | واذكر ربك في نفسك تضرعا وخيفة ودون الجهر من القول | ٢٠٥ك | « | ٧ |
| | إن الذين عند ربك لا يستكبرون عن عبادته ويسبحونه | | | |
| | وله يسجدون ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠٦ك | « | ٧ |
| | كما أخرجك ربك من بيتك بالحق وإن فريقا من | | | |
| | المؤمنين لكارهون ... ... ... ... ... ... | ٥ م | الأنفال | ٨ |
| | إذ يوحي ربك إلى الملائكة أني معكم فثبتوا الذين آمنوا | ١٢ م | « | ٨ |
| | ولولا كلمة سبقت من ربك لقضي بينهم فيما فيه يختلفون | ١٩ ك | يونس | ١٠ |
| | كذلك حقت كلمة ربك على الذين فسقوا أنهم لا يؤمنون | ٣٣ ك | « | ١٠ |
| | وربك أعلم بالمفسدين ... ... ... ... ... ... | ٤٠ م | « | ١٠ |
| | وما يعزب عن ربك من مثقال ذرة في الأرض ولا في السماء | ٦١ ك | « | ١٠ |
| | إن ربك يقضي بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون | ٩٣ ك | « | ١٠ |
| | لقد جاءك الحق من ربك فلا تكونن من الممترين | ٩٤ م | « | ١٠ |
| | إن الذين حقت عليهم كلمة ربك لا يؤمنون ... ... | ٩٦ م | « | ١٠ |
| | ولو شاء ربك لآمن من في الأرض كلهم جميعا ... | ٩٩ ك | « | ١٠ |
| | إنه الحق من ربك ولكن أكثر الناس لا يؤمنون | ١٧ م | هود | ١١ |
| | إن ربك هو القوي العزيز ... ... ... ... ... | ٦٦ ك | « | ١١ |
| | يا إبراهيم أعرض عن هذا إنه قد جاء أمر ربك | ٧٦ ك | « | ١١ |
| | قالوا يا لوط إنا رسل ربك لن يصلوا إليك ... ... | ٨١ ك | « | ١١ |
| | وأمطرنا عليها حجارة من سجيل منضود . مسومة عند ربك | ٨٣ ك | « | ١١ |
| | فما أغنت عنهم آلهتهم التي يدعون من دون الله من | | | |
| | شيء لما جاء أمر ربك ... ... ... ... ... | ١٠١ك | « | ١١ |
| | وكذلك أخذ ربك إذا أخذ القرى وهي ظالمة... ... | ١٠٢ك | « | ١١ |
| | خالدين فيها ما دامت السموات والأرض إلا ما شاء ربك | ١٠٧ك | « | ١١ |
| | إن ربك فعّال لما يريد ... ... ... ... ... ... | ١٠٧ك | « | ١١ |
| | إلا ما شاء ربك عطاء غير مجذوذ ... ... ... ... | ١٠٨ك | « | ١١ |
| | ولولا كلمة سبقت من ربك لقضي بينهم... ... ... | ١١٠ك | « | ١١ |
| | وإنّ كُلًّا لما ليوفينهم ربك أعمالهم ... ... ... | ١١١ك | « | ١١ |
| | وما كان ربك ليهلك القرى بظلم وأهلها مصلحون | ١١٧ك | « | ١١ |
| | ولو شاء ربك لجعل الناس أمة واحدة ولا يزالون مختلفين | ١١٨ك | « | ١١ |
| | إلا من رحم ربك ولذلك خلقهم ... ... ... ... | ١١٩ك | « | ١١ |
| | وتمت كلمة ربك لأملأن جهنم من الجنة والناس أجمعين | ١١٩ك | « | ١١ |
| | فاعبده وتوكل عليه وما ربك بغافل عما تعملون | ١٢٣ك | « | |
| | وكذلك يجتبيك ربك ويعلمك من تأويل الأحاديث | ٦ ك | يوسف | ١٢ |
| | إن ربك عليم حكيم ... ... ... ... ... ... | ٦ ك | « | ١٢ |
| | وقال للذي ظن أنه ناج منهما اذكرني عند ربك | ٤٢ ك | « | ١٢ |
| | فلما جاءه الرسول قال ارجع إلى ربك فسئله ما بال | | | |
| | النسوة اللاتي قطعن أيديهن... ... ... ... ... | ٥٠ ك | « | ١٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَبُّكَ | والذى أنزل إليك من ربك الحق ... ... ... ... | ١ | م الرعـد | ١٣ |
| | وإن ربك لذو مغفرة للناس على ظلمهم... ... ... | ٦ | م « | ١٣ |
| | وإن ربك لشديد العقاب ... ... ... ... ... ... | ٦ | م « | ١٣ |
| | أفمن يعلم أنما أنزل إليك من ربك الحق كما هو أعمى | ١٩ | م « | ١٣ |
| | وإن ربك هو يحشرهم إنه حكيم عليم ... ... ... | ٢٥ | ك الحجـر | ١٥ |
| | وإذ قال ربك للملائكة إنى خالق بشرا من صلصال | | | |
| | من حمإ مسنون ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ١٥ |
| | إن ربك هو الخلاق العليم ... ... ... ... ... ... | ٨٦ | ك « | ١٥ |
| | فوربك لنسئلنهم أجمعين ... ... ... ... ... ... | ٩٢ | ك « | ١٥ |
| | فسبح بحمد ربك وكن من الساجدين ... ... ... | ٩٨ | ك « | ١٥ |
| | واعبد ربك حتى يأتيك اليقين ... ... ... ... ... | ٩٩ | ك « | ١٥ |
| | هل ينظرون إلا أن تأتيهم الملائكة أو يأتى أمر ربك | ٣٣ | ك النحـل | ١٦ |
| | وأوحى ربك إلى النحل أن اتخذى من الجبال بيوتا | ٦٨ | ك « | ١٦ |
| | ثم كلى من كل الثمرات فاسلكى سبل ربك ذُلُلاً | ٦٩ | ك « | ١٦ |
| | قل نزله روح القدس من ربك بالحق ليثبت الذين آمنوا | ١٠٢ | ك « | ١٦ |
| | ثم إن ربك للذين هاجروا من بعد ما فتنوا ... ... | ١١٠ | ك « | ١٦ |
| | ثم جاهدوا وصبروا إن ربك من بعدها لغفور رحيم | ١١٠ | ك « | ١٦ |
| | ثم إن ربك للذين عملوا السوء بجهالة ثم تابوا | ١١٩ | ك « | ١٦ |
| | من بعد ذلك وأصلحوا إن ربك من بعدها لغفور رحيم | ١١٩ | ك « | ١٦ |
| | وإن ربك ليحكم بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون | ١٢٤ | ك « | ١٦ |
| | ادع إلى سبيل ربك بالحكمة والموعظة الحسنة | ١٢٥ | ك « | ١٦ |
| | إن ربك هو أعلم بمن ضل عن سبيله وهو أعلم بالمهتدين | ١٢٥ | ك « | ١٦ |
| | وكفى بربك بذنوب عباده خبيرا بصيرا... ... ... | ١٧ | ك الإسـراء | ١٧ |
| | كلًّا نمدّ هؤلاء وهؤلاء من عطاء ربك ... ... ... | ٢٠ | ك « | ١٧ |
| | وما كان عطاء ربك محظورا ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك « | ١٧ |
| | وقضى ربك ألا تعبدوا إلا إياه وبالوالدين إحسانا | ٢٣ | ك « | ١٧ |
| | وإما تعرضنّ عنهم ابتغاء رحمة من ربك ترجوها | | | |
| | فقل لهم قولا ميسورا ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ١٧ |
| | إن ربك يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ... ... ... | ٣٠ | ك « | ١٧ |
| | كل ذلك كان سيئه عند ربك مكروها ... ... ... | ٣٨ | ك « | ١٧ |
| | ذلك مما أوحى إليك ربك من الحكمة ... ... ... | ٣٩ | ك « | ١٧ |
| | وإذا ذكرت ربك فى القرآن وحده ولّوا على أدبارهم نفورا | ٤٦ | ك « | ١٧ |
| | وربك أعلم بمن فى السموات والأرض ... ... ... | ٥٥ | ك « | ١٧ |
| | إن عذاب ربك كان محذورا ... ... ... ... ... | ٥٧ | م « | ١٧ |
| | وإذ قلنا لك إن ربك أحاط بالناس ... ... ... | ٦٠ | ك « | ١٧ |
| | إن عبادى ليس لك عليهم سلطان وكفى بربك وكيلا | ٦٥ | ك « | ١٧ |
| | ومن الليل فتهجد به نافلة لك عسى أن يبعثك ربك | | | |
| | مقاما محمودا ... ... ... ... ... ... ... | ٧٩ | م « | ١٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَبُّكَ | إلا رحمة من ربك إن فضله كان عليك كبيرا ... | ٨٧ | ك الإسـراء | ١٧ |
| | واذكر ربك إذا نسيت... ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك الكهف | ١٨ |
| | واتل ما أوحى إليك من كتاب ربك... ... ... ... | ٢٧ | ك « | ١٨ |
| | والباقيات الصالحات خير عند ربك ثوابا وخير أملا | ٤٦ | ك « | ١٨ |
| | وعرضوا على ربك صفا لقد جئتمونا كما خلقناكم أول مرة | ٤٨ | ك « | ١٨ |
| | ووجدوا ما عملوا حاضرا ولا يظلم ربك أحدا ... | ٤٩ | ك « | ١٨ |
| | وربك الغفور ذو الرحمة ... ... ... ... ... ... | ٥٨ | ك « | ١٨ |
| | فأراد ربك أن يبلغا أشدهما ويستخرجا كنزهما ... | ٨٢ | ك « | ١٨ |
| | رحمة من ربك... ... ... ... ... ... ... ... | ٨٢ | ك « | ١٨ |
| | ذكر رحمة ربك عبده زكريا ... ... ... ... ... | ٢ | ك مـريم | ١٩ |
| | قال كذلك قال ربك هو علىّ هيّن وقد خلقتك من قبل | ٩ | ك « | ١٩ |
| | قال إنما أنا رسول ربك لأهب لك غلاما زكيا ... | ١٩ | ك « | ١٩ |
| | قال كذلك قال ربك هو علىّ هيّن ولنجعله آية للناس | ٢١ | ك « | ١٩ |
| | فناداها من تحتها ألا تحزنى قد جعل ربك تحتك سريا | ٢٤ | ك « | ١٩ |
| | وما نتنزل إلا بأمر ربك ... ... ... ... ... ... | ٦٤ | ك « | ١٩ |
| | وما كان ربك نسيا... ... ... ... ... ... ... | ٦٤ | ك « | ١٩ |
| | فوربك لنحشرنهم والشياطين ... ... ... ... ... | ٦٨ | ك « | ١٩ |
| | وإن منكم إلا واردها كان على ربك حتما مقضيا | ٧١ | م « | ١٩ |
| | والباقيات الصالحات خير عند ربك ثوابا وخير مردّا | ٧٦ | ك « | ١٩ |
| | إنى أنا ربك فاخلع نعليك إنك بالواد المقدس طوى | ١٢ | ك طـه | ٢٠ |
| | فأتياه فقولا إنا رسولا ربك فأرسل معنا بنى إسرائيل | ٤٧ | ك « | ٢٠ |
| | قد جئناك بآية من ربك والسلام على من اتبع الهدى | ٤٧ | ك « | ٢٠ |
| | ولولا كلمة سبقت من ربك لكان لزاما وأجل مسمى | ١٢٩ | ك « | ٢٠ |
| | وسبح بحمد ربك قبل طلوع الشمس وقبل غروبها | ١٣٠ | م « | ٢٠ |
| | ورزق ربك خير وأبقى ... ... ... ... ... ... | ١٣١ | م « | ٢٠ |
| | ولئن مستهم نفحة من عذاب ربك ليقولن يا ويلنا | ٤٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وإن يوما عند ربك كألف سنة مما تعدون ... ... | ٤٧ | م الحـج | ٢٢ |
| | وليعلم الذين أوتوا العلم أنه الحق من ربك ... ... | ٥٤ | م « | ٢٢ |
| | وادع إلى ربك إنك لعلى هدى مستقيم ... ... ... | ٦٧ | م « | ٢٢ |
| | أم تسئلهم خرجا فخراج ربك خير وهو خير الرازقين | ٧٢ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | لهم فيها ما يشاءون خالدين كان على ربك وعدا مسئولا | ١٦ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| | وجعلنا بعضكم لبعض فتنة أتصبرون وكان ربك بصيرا | ٢٠ | ك « | ٢٥ |
| | وكفى بربك هاديا ونصيرا ... ... ... ... ... | ٣١ | ك « | ٢٥ |
| | ألم تر إلى ربك كيف مدّ الظل ولو شاء لجعله ساكنا | ٤٥ | ك « | ٢٥ |
| | لجعله نسبا وصهرا وكان ربك قديرا ... ... ... | ٥٤ | ك « | ٢٥ |
| | وإن ربك لهو العزيز الرحيم ... ... ... ... ... | ٩ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| | وإذ نادى ربك موسى أن ائت القوم الظالمين ... | ١٠ | ك « | ٢٦ |
| | وإن ربك لهو العزيز الرحيم . واتل عليهم نبأ إبراهيم | ٦٨ | ك « | ٢٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَبُّكَ | : وإن ربك لهو العزيز الرحيم . كذبت قوم نوح المرسلين | ١٠٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وإن ربك لهو العزيز الرحيم . كذبت عاد المرسلين | ١٢٢ | ك « | ٢٦ |
| | وإن ربك لهو العزيز الرحيم . كذبت ثمود المرسلين | ١٤٠ | ك « | ٢٦ |
| | وإن ربك لهو العزيز الرحيم . كذبت قوم لوط المرسلين | ١٥٩ | ك « | ٢٦ |
| | وإن ربك لهو العزيز الرحيم . كذب أصحاب الأيكة المرسلين ... ... ... ... ... ... ... | ١٧٥ | ك « | ٢٦ |
| | وإن ربك لهو العزيز الرحيم . وإنه لتنزيل رب العالمين | ١٩١ | ك « | ٢٦ |
| | وإن ربك لذو فضل على الناس ولكن أكثرهم لا يشكرون | ٧٣ | ك النمل | ٢٧ |
| | وإن ربك ليعلم ما تكن صدورهم وما يعلنون ... | ٧٤ | ك « | ٢٧ |
| | إن ربك يقضى بينهم بحكمه وهو العزيز العليم ... ... | ٧٨ | ك « | ٢٧ |
| | سيريكم آياته فتعرفونها وما ربك بغافل عما تعملون | ٩٣ | ك « | ٢٧ |
| | فذانك برهانان من ربك إلى فرعون وملائه... ... | ٣٢ | ك القصص | ٢٨ |
| | وما كنت بجانب الطور إذ نادينا ولكن رحمة من ربك | ٤٦ | ك « | ٢٨ |
| | وما كان ربك مهلك القرى حتى يبعث فى أمها رسولا | ٥٩ | ك « | ٢٨ |
| | وربك يخلق ما يشاء ويختار ما كان لهم الخيرة ... | ٦٨ | ك « | ٢٨ |
| | وربك يعلم ما تكن صدورهم وما يعلنون ... ... | ٦٩ | ك « | ٢٨ |
| | وما كنت ترجوا أن يلقى إليك الكتاب إلا رحمة من ربك | ٨٦ | ك « | ٢٨ |
| | وادع إلى ربك ولا تكونن من المشركين ... ... | ٨٧ | ك « | ٢٨ |
| | ولئن جاء نصر من ربك ليقولن إنا كنا معكم ... ... | ١٠ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | بل هو الحق من ربك لتنذر قوما ما أتاهم من نذير من قبلك | ٣ | ك السجدة | ٣٢ |
| | إن ربك هو يفصل بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون | ٢٥ | ك « | ٣٢ |
| | واتبع ما يوحى إليك من ربك إن الله كان بما تعملون خبيرا | ٢ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ويرى الذين أوتوا العلم الذى أنزل إليك من ربك هو الحق | ٦ | م سبأ | ٣٤ |
| | وربك على كل شىء حفيظ ... ... ... ... ... | ٢١ | ك « | ٣٤ |
| | فاستفتهم ألربك البنات ولهم البنون ... ... ... ... | ١٤٩ | ك الصافات | ٣٧ |
| | سبحان ربك رب العزة عما يصفون ... ... ... | ١٨٠ | ك « | ٣٧ |
| | أم عندهم خزائن رحمة ربك العزيز الوهاب ... ... | ٩ | ك ص | ٣٨ |
| | إذ قال ربك للملائكة إنى خالق بشرا من طين ... | ٧١ | ك « | ٣٨ |
| | وكذلك حقت كلمة ربك على الذين كفروا أنهم أصحاب النار | ٦ | ك غافر | ٤٠ |
| | واستغفر لذنبك وسبح بحمد ربك بالعشى والإبكار | ٥٥ | ك « | ٤٠ |
| | فإن استكبروا فالذين عند ربك يسبحون له بالليل والنهار | ٣٨ | ك فصلت | ٤١ |
| | إن ربك لذو مغفرة وذو عقاب أليم ... ... ... | ٤٣ | ك « | ٤١ |
| | ولولا كلمة سبقت من ربك لقضى بينهم... ... ... | ٤٥ | ك « | ٤١ |
| | من عمل صالحا فلنفسه ومن أساء فعليها وما ربك بظلام للعبيد | ٤٦ | ك « | ٤١ |
| | أولم يكف بربك أنه على كل شىء شهيد ... ... ... | ٥٣ | ك « | ٤١ |
| | ولولا كلمة سبقت من ربك إلى أجل مسمى لقضى بينهم | ١٤ | ك الشورى | ٤٢ |
| | أهم يقسمون رحمة ربك ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ورحمة ربك خير مما يجمعون ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك « | ٤٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَبُّكَ | : وإن كل ذلك لما متاع الحياة الدنيا والآخرة عند ربك للتقين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وقالوا يأيه الساحر ادع لنا ربك بما عهد عندك | ٤٩ | ك « | ٤٣ |
| | ونادوا يا مالك ليقض علينا ربك قال إنكم ماكثون | ٧٧ | ك « | ٤٣ |
| | رحمة من ربك إنه هو السميع العليم ... ... ... ... | ٦ | ك الدخان | ٤٤ |
| | فضلا من ربك ذلك هو الفوز العظيم ... ... ... | ٥٧ | ك « | ٤٤ |
| | إن ربك يقضى بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون | ١٧ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | فاصبر على ما يقولون وسبح بحمد ربك قبل طلوع الشمس وقبل الغروب ... ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك ق | ٥٠ |
| | قالوا كذلك قال ربك إنه هو الحكيم العليم ... ... | ٣٠ | ك الذاريات | ٥١ |
| | مسومة عند ربك للمسرفين ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك « | ٥١ |
| | إن عذاب ربك لواقع... ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك الطور | ٥٢ |
| | فذكر فما أنت بنعمة ربك بكاهن ولا مجنون ... | ٢٩ | ك « | ٥٢ |
| | أم عندهم خزائن ربك أم هم المسيطرون... ... ... | ٣٧ | ك « | ٥٢ |
| | واصبر لحكم ربك فإنك بأعيننا ... ... ... ... | ٤٨ | ك « | ٥٢ |
| | وسبح بحمد ربك حين تقوم ... ... ... ... ... | ٤٨ | ك « | ٥٢ |
| | إن ربك هو أعلم بمن ضل عن سبيله وهو أعلم بمن اهتدى | ٣٠ | ك النجم | ٥٣ |
| | إن ربك واسع المغفرة... ... ... ... ... ... | ٣٢ | م « | ٥٣ |
| | وأن إلى ربك المنتهى... ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك « | ٥٣ |
| | فبأى آلاء ربك تتمارى ... ... ... ... ... ... | ٥٥ | ك « | ٥٣ |
| | ويبقى وجه ربك ذو الجلال والإكرام ... ... ... | ٢٧ | م الرحمن | ٥٥ |
| | تبارك اسم ربك ذى الجلال والإكرام ... ... ... | ٧٨ | م « | ٥٥ |
| | نحن جعلناها تذكرة ومتاعا للمقوين . فسبح باسم ربك العظيم ... ... ... ... ... ... ... | ٧٤ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | إن هذا لهو حق اليقين . فسبح باسم ربك العظيم | ٩٦ | ك « | ٥٦ |
| | ما أنت بنعمة ربك بمجنون ... ... ... ... ... | ٢ | ك القلم | ٦٨ |
| | إن ربك هو أعلم بمن ضل عن سبيله وهو أعلم بالمهتدين | ٧ | ك « | ٦٨ |
| | فطاف عليها طائف من ربك وهم نائمون ... ... | ١٩ | م « | ٦٨ |
| | فاصبر لحكم ربك ولا تكن كصاحب الحوت إذ نادى وهو مكظوم ... ... ... ... ... ... ... | ٤٨ | م « | ٦٨ |
| | والملك على أرجائها ويحمل عرش ربك فوقهم يومئذ ثمانية | ١٧ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | وإنه لحق اليقين . فسبح باسم ربك العظيم ... ... | ٥٢ | ك « | ٦٩ |
| | واذكر اسم ربك وتبتل إليه تبتيلا ... ... ... ... | ٨ | ك المزمل | ٧٣ |
| | إن ربك يعلم أنك تقوم أدنى من ثلثى الليل ونصفه | ٢٠ | م « | ٧٣ |
| | وربك فكبر ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك المدثر | ٧٤ |
| | ولربك فاصبر ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك « | ٧٤ |
| | وما يعلم جنود ربك إلا هو ... ... ... ... ... | ٣١ | ك « | ٧٤ |
| | إلى ربك يومئذ المستقر... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك القيامة | ٧٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَبِّكَ: | إلى ربك يومئذ المساق ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك القيامة | ٧٥ |
| | فاصبر لحكم ربك ولا تطع منهم آثما أو كفورا ... | ٢٤ | م الإنسان | ٧٦ |
| | واذكر اسم ربك بكرة وأصيلا ... ... ... ... ... | ٢٥ | م « | ٧٦ |
| | جزاء من ربك عطاء حسابا ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك النبأ | ٧٨ |
| | وأهديك إلى ربك فتخشى ... ... ... ... ... | ١٩ | ك النازعات | ٧٩ |
| | إلى ربك منتهاها ... ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك « | ٧٩ |
| | يأيها الإنسان ما غرك بربك الكريم ... ... ... | ٦ | ك الانفطار | ٨٢ |
| | يأيها الإنسان إنك كادح إلى ربك كدحا فملاقيه | ٦ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| | إن بطش ربك لشديد ... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك البروج | ٨٥ |
| | سبح اسم ربك الأعلى ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الأعلى | ٨٧ |
| | ألم تر كيف فعل ربك بعاد... ... ... ... ... | ٦ | ك الفجر | ٨٩ |
| | فصب عليهم ربك سوط عذاب... ... ... ... ... | ١٣ | ك « | ٨٩ |
| | إن ربك لبالمرصاد... ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك « | ٨٩ |
| | وجاء ربك والملك صفا صفا ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك « | ٨٩ |
| | ارجعي إلى ربك راضية مرضية... ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٨٩ |
| | ما ودعك ربك وما قلى... ... ... ... ... ... | ٣ | ك الضحى | ٩٣ |
| | ولسوف يعطيك ربك فترضى ... ... ... ... ... | ٥ | ك « | ٩٣ |
| | وأما بنعمة ربك فحدث ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك « | ٩٣ |
| | وإلى ربك فارغب... ... ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك الشرح | ٩٤ |
| | اقرأ باسم ربك الذي خلق... ... ... ... ... ... | ١ | ك العلق | ٩٦ |
| | اقرأ وربك الأكرم ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك « | ٩٦ |
| | إن إلى ربك الرجعى ... ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك « | ٩٦ |
| | يومئذ تحدث أخبارها . بأن ربك أوحى لها ... | ٥ | م الزلزلة | ٩٩ |
| | ألم تر كيف فعل ربك بأصحاب الفيل ... ... ... | ١ | ك الفيل | ١٠٥ |
| | فصل لربك وانحر ... ... ... ... ... ... ... | ٢ | ك الكوثر | ١٠٨ |
| | فسبح بحمد ربك واستغفره إنه كان توابا... ... ... | ٣ | م النصر | ١١٠ |
| رَبِّكُمُ: | يأيها الناس اعبدوا ربكم الذي خلقكم ... ... | ٢١ | م البقرة | ٢ |
| | (١١٨) ويستحيون نساءكم وفي ذلكم بلاء من ربكم عظيم | ٤٩ | م « | ٢ |
| | أتحدثونهم بما فتح الله عليكم ليحاجوكم به عند ربكم | ٧٦ | م « | ٢ |
| | ما يود الذين كفروا من أهل الكتاب ولا المشركين أن ينزل عليكم من خير من ربكم ... ... ... | ١٠٥ | م « | ٢ |
| | قل أتحاجوننا في الله وهو ربنا وربكم... ... ... | ١٣٩ | م « | ٢ |
| | ذلك تخفيف من ربكم ورحمة ... ... ... ... ... | ١٧٨ | م « | ٢ |
| | ليس عليكم جناح أن تبتغوا فضلا من ربكم ... ... | ١٩٨ | م « | ٢ |
| | إن آية ملكه أن يأتيكم التابوت فيه سكينة من ربكم | ٢٤٨ | م « | ٢ |
| | ورسولا إلى بني إسرائيل أني قد جئتكم بآية من ربكم | ٤٩ | م آل عمران | ٣ |
| | وجئتكم بآية من ربكم فاتقوا الله وأطيعون ... ... | ٥٠ | م « | ٣ |
| | إن الله ربي وربكم فاعبدوه هذا صراط مستقيم... | ٥١ | م « | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَبِّكُمْ: | قل إن الهدى هدى الله أن يؤتى أحد مثل ما أوتيتم أو يحاجوكم عند ربكم ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | م آل عمران | ٣ |
| | ألن يكفيكم أن يمدكم ربكم بثلاثة آلاف من الملائكة منزلين | ١٢٤ | م « | ٣ |
| | يمددكم ربكم بخمسة آلاف من الملائكة مسومين ... | ١٢٥ | م « | ٣ |
| | وسارعوا إلى مغفرة من ربكم ... ... ... ... ... | ١٣٣ | م « | ٣ |
| | ربنا إننا سمعنا مناديا ينادي للإيمان أن آمنوا بربكم | ١٩٣ | م « | ٣ |
| | يأيها الناس اتقوا ربكم الذي خلقكم من نفس واحدة | ١ | م النساء | ٤ |
| | يأيها الناس قد جاءكم الرسول بالحق من ربكم | ١٧٠ | م « | ٤ |
| | يأيها الناس قد جاءكم برهان من ربكم ... ... ... | ١٧٤ | م « | ٤ |
| | حتى تقيموا التوراة والإنجيل وما أنزل إليكم من ربكم | ٦٨ | م المائدة | ٥ |
| | وقال المسيح يا بني إسرائيل اعبدوا الله ربي وربكم | ٧٢ | م « | ٥ |
| | ما قلت لهم إلا ما أمرتني به أن اعبدوا الله ربي وربكم | ١١٧ | م « | ٥ |
| | فقل سلام عليكم كتب ربكم على نفسه الرحمة... ... | ٥٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | ذلكم الله ربكم لا إله إلا هو خالق كل شيء فاعبدوه | ١٠٢ | ك « | ٦ |
| | قد جاءكم بصائر من ربكم فمن أبصر فلنفسه ومن عمي فعليها | ١٠٤ | ك « | ٦ |
| | فإن كذبوك فقل ربكم ذو رحمة واسعة ... ... ... | ١٤٧ | ك « | ٦ |
| | قل تعالوا أتل ما حرم ربكم عليكم ... ... ... ... | ١٥١ | م « | ٦ |
| | فقد جاءكم بينة من ربكم وهدى ورحمة ... ... ... | ١٥٧ | ك « | ٦ |
| | ثم إلى ربكم مرجعكم فينبئكم بما كنتم فيه تختلفون | ١٦٤ | ك « | ٦ |
| | اتبعوا ما أنزل إليكم من ربكم ولا تتبعوا من دونه أولياء | ٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | قد وجدنا ما وعدنا ربنا حقا فهل وجدتم ما وعد ربكم حقا | ٤٤ | ك « | ٧ |
| | إن ربكم الله الذي خلق السموات والأرض في ستة أيام | ٥٤ | ك « | ٧ |
| | ادعوا ربكم تضرعا وخفية إنه لا يحب المعتدين | ٥٥ | ك « | ٧ |
| | أو عجبتم أن جاءكم ذكر من ربكم على رجل منكم لينذركم ولتتقوا | ٦٣ | ك « | ٧ |
| | أو عجبتم أن جاءكم ذكر من ربكم على رجل منكم لينذركم | ٦٩ | ك « | ٧ |
| | قال قد وقع عليكم من ربكم رجس وغضب ... ... | ٧١ | ك « | ٧ |
| | قد جاءتكم بينة من ربكم هذه ناقة الله لكم آية | ٧٣ | ك « | ٧ |
| | قد جاءتكم بينة من ربكم فأوفوا الكيل والميزان | ٨٥ | ك « | ٧ |
| | قد جئتكم ببينة من ربكم فأرسل معي بني إسرائيل | ١٠٥ | ك « | ٧ |
| | قال عسى ربكم أن يهلك عدوكم ويستخلفكم في الأرض | ١٢٩ | ك « | ٧ |
| | ويستحيون نساءكم وفي ذلكم بلاء من ربكم عظيم | ١٤١ | ك « | ٧ |
| | قال بئسما خلفتموني من بعدي أعجلتم أمر ربكم | ١٥٠ | ك « | ٧ |
| | قالوا معذرة إلى ربكم ولعلهم يتقون... ... ... ... | ١٦٤ | م « | ٧ |
| | وأشهدهم على أنفسهم ألست بربكم قالوا بلى... ... | ١٧٢ | ك « | ٧ |
| | هذا بصائر من ربكم وهدى ورحمة لقوم يؤمنون | ٢٠٣ | ك « | ٧ |
| | إذ تستغيثون ربكم فاستجاب لكم أني ممدكم بألف من الملائكة مردفين ... ... ... ... ... ... | ٩ | م الأنفال | ٨ |
| | إن ربكم الله الذي خلق السموات والأرض في ستة أيام | ٣ | ك يونس | ١٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَبُّكُمْ: | ذلكم الله ربكم فاعبدوه أفلا تذكرون ... ... ... | ٣ | ك يونس | ١٠ |
| | فذلكم الله ربكم الحق فماذا بعد الحق إلا الضلال | ٣٢ | ك « | ١٠ |
| | يأيها الناس قد جاءتكم موعظة من ربكم وشفاء لما في الصدور | ٥٧ | ك « | ١٠ |
| | قل يأيها الناس قد جاءكم الحق من ربكم ... ... ... | ١٠٨ | ك « | ١٠ |
| | وأن استغفروا ربكم ثم توبوا إليه يمتعكم متاعا حسنا | ٣ | ك هود | ١١ |
| | إن كان الله يريد أن يغويكم هو ربكم وإليه ترجعون | ٣٤ | ك « | ١١ |
| | ويا قوم استغفروا ربكم ثم توبوا إليه يرسل السماء | | | |
| | عليكم مدرارا ... ... ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك « | ١١ |
| | إني توكلت على الله ربي وربكم... ... ... ... | ٥٦ | ك « | ١١ |
| | واستغفروا ربكم ثم توبوا إليه إن ربي رحيم ودود | ٩٠ | ك « | ١١ |
| | يدبر الأمر يفصل الآيات لعلكم بلقاء ربكم توقنون | ٢ | م الرعد | ١٣ |
| | ويستحيون نساءكم وفي ذلكم بلاء من ربكم عظيم ... | ٦ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وإذ تأذن ربكم لئن شكرتم لأزيدنكم ... ... ... | ٧ | ك « | ١٤ |
| | وتحمل أثقالكم إلى بلد لم تكونوا بالغيه إلا بشق | | | |
| | الأنفس إن ربكم لرءوف رحيم... ... ... ... | ٧ | ك النحل | ١٦ |
| | وإذا قيل لهم ماذا أنزل ربكم قالوا أساطير الأولين | ٢٤ | ك « | ١٦ |
| | وقيل للذين اتقوا ماذا أنزل ربكم قالوا خيرا... ... | ٣٠ | ك « | ١٦ |
| | أو يأخذهم على تخوف فإن ربكم لرءوف رحيم ... | ٤٧ | ك « | ١٦ |
| | عسى ربكم أن يرحمكم وإن عدتم عدنا ... ... ... | ٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وجعلنا آية النهار مبصرة لتبتغوا فضلا من ربكم ... | ١٢ | ك « | ١٧ |
| | ربكم أعلم بما في نفوسكم ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك « | ١٧ |
| | أفأصفاكم ربكم بالبنين واتخذ من الملائكة إناثا ... | ٤٠ | ك « | ١٧ |
| | ربكم أعلم بكم إن يشأ يرحمكم أو إن يشأ يعذبكم ... | ٥٤ | ك « | ١٧ |
| | ربكم الذي يزجي لكم الفلك في البحر لتبتغوا من فضله | ٦٦ | ك « | ١٧ |
| | قل كل يعمل على شاكلته فربكم أعلم بمن هو أهدى سبيلا | ٨٤ | ك « | ١٧ |
| | فأووا إلى الكهف ينشر لكم ربكم من رحمته ... ... | ١٦ | ك الكهف | ١٨ |
| | قالوا ربكم أعلم بما لبثتم ... ... ... ... ... | ١٩ | ك « | ١٨ |
| | وقل الحق من ربكم فمن شاء فليؤمن ومن شاء فليكفر | ٢٩ | ك « | ١٨ |
| | وإن الله ربي وربكم فاعبدوه هذا صراط مستقيم | ٣٦ | ك مريم | ١٩ |
| | قال يا قوم ألم يعدكم ربكم وعدا حسنا ... ... ... | ٨٦ | ك طه | ٢٠ |
| | وإن ربكم الرحمن فاتبعوني وأطيعوا أمري ... ... | ٩٠ | ك « | ٢٠ |
| | قال بل ربكم رب السموات والأرض الذي فطرهن | ٥٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | إن هذه أمتكم أمة واحدة وأنا ربكم فاعبدون | ٩٢ | ك « | ٢١ |
| | يأيها الناس اتقوا ربكم إن زلزلة الساعة شيء عظيم | ١ | م الحج | ٢٢ |
| | يأيها الذين آمنوا اركعوا واسجدوا واعبدوا ربكم | ٧٧ | م « | ٢٢ |
| | وإن هذه أمتكم أمة واحدة وأنا ربكم فاتقون | ٥٢ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | قال ربكم ورب آبائكم الأولين ... ... ... ... | ٢٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وتذرون ما خلق لكم ربكم من أزواجكم بل أنتم قوم عادون | ١٦٦ | ك « | ٢٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَبَّكُمْ: | يأيها الناس اتقوا ربكم واخشوا يوما لا يجزي | | | |
| | والد عن ولده ... ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك لقمان | ٣١ |
| | قل يتوفاكم ملك الموت الذي وكل بكم ثم إلى ربكم ترجعون | ١١ | ك السجدة | ٣٢ |
| | كلوا من رزق ربكم واشكروا له بلدة طيبة ورب غفور | ١٥ | ك سبأ | ٣٤ |
| | حتى إذا فزع عن قلوبهم قالوا ماذا قال ربكم قالوا الحق | ٢٣ | ك « | ٣٤ |
| | ذلكم الله ربكم له الملك ... ... ... ... ... | ١٣ | ك فاطر | ٣٥ |
| | إني آمنت بربكم فاسمعون ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك يس | ٣٦ |
| | الله ربكم ورب آبائكم الأولين ... ... ... ... | ١٢٦ | ك الصافات | ٣٧ |
| | ذلكم الله ربكم له الملك لا إله إلا هو فأنى تصرفون | ٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ثم إلى ربكم مرجعكم فينبئكم بما كنتم تعملون... ... | ٧ | ك « | ٣٩ |
| | قل يا عباد الذين آمنوا اتقوا ربكم... ... ... ... | ١٠ | ك « | ٣٩ |
| | ثم إنكم يوم القيامة عند ربكم تختصمون. . ... ... | ٣١ | ك « | ٣٩ |
| | وأنيبوا إلى ربكم وأسلموا له من قبل أن يأتيكم العذاب | ٥٤ | م « | ٣٩ |
| | واتبعوا أحسن ما أنزل إليكم من ربكم ... ... ... | ٥٥ | ك « | ٣٩ |
| | ألم يأتكم رسل منكم يتلون عليكم آيات ربكم ... ... | ٧١ | ك « | ٣٩ |
| | وقال موسى إني عذت بربي وربكم من كل متكبر | | | |
| | لا يؤمن بيوم الحساب... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك غافر | ٤٠ |
| | أتقتلون رجلا أن يقول ربي الله وقد جاءكم بالبينات | | | |
| | من ربكم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٤٠ |
| | وقال الذين في النار لخزنة جهنم ادعوا ربكم يخفف | | | |
| | عنا يوما من العذاب ... ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك « | ٤٠ |
| | وقال ربكم ادعوني أستجب لكم ... ... ... ... | ٦٠ | ك « | ٤٠ |
| | ذلكم الله ربكم خالق كل شيء لا إله إلا هو... ... | ٦٢ | ك « | ٤٠ |
| | ذلكم الله ربكم فتبارك الله رب العالمين ... ... | ٦٤ | ك « | ٤٠ |
| | وذلكم ظنكم الذي ظننتم بربكم أرداكم ... ... ... | ٢٣ | ك فصلت | ٤١ |
| | الله ربنا وربكم لنا أعمالنا ولكم أعمالكم ... ... | ١٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| | استجيبوا لربكم من قبل أن يأتي يوم لا مرد له من الله | ٤٧ | ك « | ٤٢ |
| | لتستووا على ظهوره ثم تذكروا نعمة ربكم إذا استويتم عليه | ١٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | إن الله هو ربي وربكم فاعبدوه هذا صراط مستقيم | ٦٤ | ك « | ٤٣ |
| | لا إله إلا هو يحيي ويميت ربكم ورب آبائكم الأولين | ٨ | ك الدخان | ٤٤ |
| | وإني عذت بربي وربكم أن ترجمون ... ... ... | ٢٠ | ك « | ٤٤ |
| | من عمل صالحا فلنفسه ومن أساء فعليها ثم إلى ربكم ترجعون | ١٥ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | وما لكم لا تؤمنون بالله والرسول يدعوكم لتؤمنوا بربكم | ٨ | م الحديد | ٥٧ |
| | سابقوا إلى مغفرة من ربكم... ... ... ... ... | ٢١ | م « | ٥٧ |
| | يخرجون الرسول وإياكم أن تؤمنوا بالله ربكم ... | ١ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | فطلقوهن لعدتهن وأحصوا العدة واتقوا الله ربكم | ١ | م الطلاق | ٦٥ |
| | عسى ربكم أن يكفر عنكم سيئاتكم ... ... ... ... | ٨ | م التحريم | ٦٦ |
| | فقلت استغفروا ربكم إنه كان غفارا ... ... ... | ١٠ | ك نوح | ٧١ |
| | لحشر فنادى . فقال أنا ربكم الأعلى ... ... ... | ٢٤ | ك النازعات | ٧٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَبُّكُمَا | وقال ما نهاكما ربكما عن هـذه الشجرة إلا أن | | | |
| (٤٣) | تكونا ملكين ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | قال فمن ربكما ياموسى ... ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك طـه | ٢٠ |
| | والحب ذو العصف والريحان . فبأى آلاء ربكما تكذبان | ١٣ | م الرحمـن | ٥٥ |
| | وخلق الجان من مارج من نار . فبأى آلاء ربكما تكذبان | ١٦ | م » | ٥٥ |
| | رب المشرقين ورب المغربين . فبأى آلاء ربكما تكذبان | ١٨ | م » | ٥٥ |
| | بينهما برزخ لا يبغيان . فبأى آلاء ربكما تكذبان | ٢١ | م » | ٥٥ |
| | يخرج منهما اللؤلؤ والمرجان . فبأى آلاء ربكما تكذبان | ٢٣ | م » | ٥٥ |
| | وله الجوار المنشآت فى البحر كالأعلام . فبأى آلاء | | | |
| | ربكما تكذبان ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | م » | ٥٥ |
| | ويبقى وجه ربك ذو الجلال والإكرام . فبأى آلاء | | | |
| | ربكما تكذبان ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م » | ٥٥ |
| | كل يوم هو فى شأن . فبأى آلاء ربكما تكذبان | ٣٠ | م » | ٥٥ |
| | سنفرغ لكم أيه الثقلان . فبأى آلاء ربكما تكذبان | ٣٢ | م » | ٥٥ |
| | لا تنفذون إلا بسلطان . فبأى آلاء ربكما تكذبان ... | ٣٤ | م » | ٥٥ |
| | يرسل عليكما شواظ من نار ونحاس فلا تنتصران . | | | |
| | فبأى آلاء ربكما تكذبان ... ... ... ... ... | ٣٦ | م » | ٥٥ |
| | فإذا انشقت السماء فكانت وردة كالدهان . فبأى | | | |
| | آلاء ربكما تكذبان... ... ... ... ... ... | ٣٨ | م » | ٥٥ |
| | فيومئذ لا يسئل عن ذنبه إنس ولا جان . فبأى | | | |
| | آلاء ربكما تكذبان ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | م » | ٥٥ |
| | فيؤخذ بالنواصى والأقدام . فبأى آلاء ربكما تكذبان | ٤٢ | م » | ٥٥ |
| | يطوفون بينها وبين حميم آن . فبأى آلاء ربكما تكذبان | ٤٥ | م » | ٥٥ |
| | ولمن خاف مقام ربه جنتان . فبأى آلاء ربكما تكذبان | ٤٧ | م » | ٥٥ |
| | ذواتا أفنان . فبأى آلاء ربكما تكذبان ... ... ... | ٤٩ | م » | ٥٥ |
| | فيهما عينان تجريان . فبأى آلاء ربكما تكذبان ... | ٥١ | م » | ٥٥ |
| | فيهما من كل فاكهة زوجان . فبأى آلاء ربكما تكذبان | ٥٣ | م » | ٥٥ |
| | وجنى الجنتين دان . فبأى آلاء ربكما تكذبان ... | ٥٥ | م » | ٥٥ |
| | لم يطمثهن إنس قبلهم ولا جان . فبأى آلاء ربكما تكذبان | ٥٧ | م » | ٥٥ |
| | كأنهن الياقوت والمرجان . فبأى آلاء ربكما تكذبان | ٥٩ | م » | ٥٥ |
| | هل جزاء الإحسان إلا الإحسان . فبأى آلاء ربكما تكذبان | ٦١ | م » | ٥٥ |
| | ومن دونهما جنتان . فبأى آلاء ربكما تكذبان ... | ٦٣ | م » | ٥٥ |
| | مدهامتان . فبأى آلاء ربكما تكذبان ... ... ... | ٦٥ | م » | ٥٥ |
| | فيهما عينان نضاختان . فبأى آلاء ربكما تكذبان... | ٦٧ | م » | ٥٥ |
| | فيهما فاكهة ونخل ورمان . فبأى آلاء ربكما تكذبان | ٦٩ | م » | ٥٥ |
| | فيهن خيرات حسان . فبأى آلاء ربكما تكذبان ... | ٧١ | م » | ٥٥ |
| | حور مقصورات فى الخيام . فبأى آلاء ربكما تكذبان | ٧٣ | م » | ٥٥ |
| | لم يطمثهن إنس قبلهم ولا جان . فبأى آلاء ربكما تكذبان | ٧٥ | م » | ٥٥ |
| | متكئين على رفرف خضر وعبقرى حسان . فبأى آلاء | | | |
| | ربكما تكذبان ... ... ... ... ... ... ... | ٧٧ | م » | ٥٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَبَّنَا | : ربنا تقبل منا إنك أنت السميع العليم ... ... ... | ١٢٧ | م البقـرة | ٢ |
| (١١١) | ربنا واجعلنا مسلمين لك ومن ذريتنا أمة مسلمة لك | ١٢٨ | م » | ٢ |
| | ربنا وابعث فيهم رسولا منهم يتلو عليهم آياتك | ١٢٩ | م » | ٢ |
| | قل أتحاجوننا فى الله وهو ربنا وربكم ... ... ... | ١٣٩ | م » | ٢ |
| | فمن الناس من يقول ربنا آتنا فى الدنيا وماله | | | |
| | فى الآخرة من خلاق ... ... ... ... ... ... | ٢٠٠ | م » | ٢ |
| | ومنهم من يقول ربنا آتنا فى الدنيا حسنة وفى الآخرة حسنة | ٢٠١ | م » | ٢ |
| | ولما برزوا لجالوت وجنوده قالوا ربنا أفرغ علينا صبرا | ٢٥٠ | م » | ٢ |
| | وقالوا سمعنا وأطعنا غفرانك ربنا وإليك المصير ... | ٢٨٥ | م » | ٢ |
| | ربنا لا تؤاخذنا إن نسينا أو أخطأنا ... ... ... | ٢٨٦ | م » | ٢ |
| | ربنا ولا تحمل علينا إصرا كما حملته على الذين من قبلنا | ٢٨٦ | م » | ٢ |
| | ربنا ولا تحملنا مالا طاقة لنا به ... ... ... ... | ٢٨٦ | م » | ٢ |
| | والراسخون فى العلم يقولون آمنا به كل من عند ربنا | ٧ | م آل عمران | ٣ |
| | ربنا لا تزغ قلوبنا بعد إذ هديتنا وهب لنا من لدنك رحمة | ٨ | م » | ٣ |
| | ربنا إنك جامع الناس ليوم لا ريب فيه ... ... | ٩ | م » | ٣ |
| | الذين يقولون ربنا إننا آمنا فاغفر لنا ذنوبنا وقنا عذاب النار | ١٦ | م » | ٣ |
| | ربنا آمنا بما أنزلت واتبعنا الرسول فاكتبنا مع الشاهدين | ٥٣ | م » | ٣ |
| | ربنا اغفر لنا ذنوبنا وإسرافنا فى أمرنا ... ... | ١٤٧ | م » | ٣ |
| | ربنا ما خلقت هذا باطلا سبحانك فقنا عذاب النار | ١٩١ | م » | ٣ |
| | ربنا إنك من تدخل النار فقد أخزيته وما للظالمين من أنصار | ١٩٢ | م » | ٣ |
| | ربنا إننا سمعنا مناديا ينادى للإيمان أن آمنوا بربكم فآمنا | ١٩٣ | م » | ٣ |
| | ربنا فاغفر لنا ذنوبنا وكفر عنا سيئاتنا وتوفنا مع الأبرار | ١٩٣ | م » | ٣ |
| | ربنا وآتنا ما وعدتنا على رسلك ولا تخزنا يوم القيامة | ١٩٤ | م » | ٣ |
| | ربنا أخرجنا من هذه القرية الظالم أهلها... ... ... | ٧٥ | م النسـاء | ٤ |
| | وقالوا ربنا لم كتبت علينا القتال لولا أخرتنا إلى أجل قريب | ٧٧ | م » | ٤ |
| | يقولون ربنا آمنا فاكتبنا مع الشاهدين ... ... ... | ٨٣ | م المائدة | ٥ |
| | ونطمع أن يدخلنا ربنا مع القوم الصالحين ... ... | ٨٤ | م » | ٥ |
| | قال عيسى ابن مريم اللهم ربنا أنزل علينا مائدة من السماء | ١١٤ | م » | ٥ |
| | ثم لم تكن فتنتهم إلا أن قالوا والله ربنا ما كنا مشركين | ٢٣ | م الأنعام | ٦ |
| | ياليتنا نرد ولا نكذب بآيات ربنا ونكون من المؤمنين | ٢٧ | ك » | ٦ |
| | قال أليس هذا بالحق قالوا بلى وربنا قال فذوقوا العذاب | ٣٠ | ك » | ٦ |
| | وقال أولياؤهم من الإنس ربنا استمتع بعضنا ببعض | ١٢٨ | ك » | ٦ |
| | قالا ربنا ظلمنا أنفسنا وإن لم تغفر لنا وترحمنا | | | |
| | لنكونن من الخاسرين ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | ربنا هؤلاء أضلونا فآتهم عذابا ضعفا من النار ... | ٣٨ | ك » | ٧ |
| | لقد جاءت رسل ربنا بالحق ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك » | ٧ |
| | ونادى أصحاب الجنة أصحاب النار أن قد وجدنا | | | |
| | ما وعدنا ربنا حقا ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك » | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَبَّنَا | قالوا ربنا لا تجعلنا مع القوم الظالمين ... ... ... | ٤٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | قد جاءت رسل ربنا بالحق ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك « | ٧ |
| | وما يكون لنا أن نعود فيها إلا أن يشاء الله ربنا ... | ٨٩ | ك « | ٧ |
| | وسع ربنا كل شيء علما ... ... ... ... ... | ٨٩ | ك « | ٧ |
| | ربنا افتح بيننا وبين قومنا بالحق وأنت خير الفاتحين | ٨٩ | ك « | ٧ |
| | قالوا إنا إلى ربنا منقلبون ... ... ... ... ... | ١٢٥ | ك « | ٧ |
| | وما تنقم منا إلا أن آمنا بآيات ربنا لما جاءتنا | ١٢٦ | ك « | ٧ |
| | ربنا أفرغ علينا صبرا وتوفنا مسلمين ... ... ... | ١٢٦ | ك « | ٧ |
| | لئن لم يرحمنا ربنا ويغفر لنا لنكونن من الخاسرين | ١٤٩ | ك « | ٧ |
| | فقالوا على الله توكلنا ربنا لا تجعلنا فتنة للقوم الظالمين | ٨٥ | ك يونس | ١٠ |
| | وقال موسى ربنا إنك آتيت فرعون وملأه زينة وأموالا في الحياة الدنيا ... ... ... ... | ٨٨ | ك « | ١٠ |
| | ربنا ليضلوا عن سبيلك ... ... ... ... ... | ٨٨ | ك « | ١٠ |
| | ربنا اطمس على أموالهم واشدد على قلوبهم | ٨٨ | ك « | ١٠ |
| | ربنا إني أسكنت من ذريتي بواد غير ذي زرع عند بيتك المحرم ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | ربنا ليقيموا الصلاة فاجعل أفئدة من الناس تهوي إليهم | ٣٧ | ك « | ١٤ |
| | ربنا إنك تعلم ما نخفي وما نعلن ... ... ... ... | ٣٨ | ك « | ١٤ |
| | رب اجعلني مقيم الصلاة ومن ذريتي ربنا وتقبل دعاء | ٤٠ | ك « | ١٤ |
| | ربنا اغفر لي ولوالدي وللمؤمنين يوم يقوم الحساب | ٤١ | ك « | ١٤ |
| | ربنا أخرنا إلى أجل قريب نجب دعوتك ونتبع الرسل | ٤٤ | ك « | ١٤ |
| | ربنا هؤلاء شركاؤنا الذين كنا ندعوا من دونك | ٨٦ | ك النحل | ١٦ |
| | ويقولون سبحان ربنا إن كان وعد ربنا لمفعولا | ١٠٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ربنا آتنا من لدنك رحمة وهيئ لنا من أمرنا رشدا | ١٠ | ك الكهف | ١٨ |
| | ربنا رب السموات والأرض لن ندعوا من دونه إلها | ١٤ | ك « | ١٨ |
| | قالا ربنا إننا نخاف أن يفرط علينا أو أن يطغى | ٤٥ | ك طه | ٢٠ |
| | قال ربنا الذي أعطى كل شيء خلقه ثم هدى | ٥٠ | ك « | ٢٠ |
| | إنا آمنا بربنا ليغفر لنا خطايانا وما أكرهتنا عليه من السحر | ٧٣ | ك « | ٢٠ |
| | ربنا لولا أرسلت إلينا رسولا فنتبع آياتك من قبل أن نذل ونخزى ... ... ... ... ... | ١٣٤ | ك « | ٢٠ |
| | قال رب احكم بالحق وربنا الرحمن المستعان على ما تصفون ... ... ... ... ... | ١١٢ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | الذين أخرجوا من ديارهم بغير حق إلا أن يقولوا ربنا الله | ٤٠ | م الحج | ٢٢ |
| | قالوا ربنا غلبت علينا شقوتنا وكنا قوما ضالين ... | ١٠٦ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ربنا أخرجنا منها فإن عدنا فإنا ظالمون ... ... ... | ١٠٧ | ك « | ٢٣ |
| | ربنا آمنا فاغفر لنا وارحمنا وأنت خير الراحمين ... | ١٠٩ | ك « | ٢٣ |
| | لولا أنزل علينا الملائكة أو نرى ربنا ... ... ... | ٢١ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | والذين يقولون ربنا اصرف عنا عذاب جهنم ... ... | ٦٥ | ك « | ٢٥ |
| رَبَّنَا | والذين يقولون ربنا هب لنا من أزواجنا وذرياتنا قرة أعين ... ... ... ... ... ... ... | ٧٤ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | قالوا لا ضير إنا إلى ربنا منقلبون ... ... ... ... | ٥٠ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | إنا نطمع أن يغفر لنا ربنا خطايانا أن كنا أول المؤمنين | ٥١ | ك « | ٢٦ |
| | ربنا لولا أرسلت إلينا رسولا فنتبع آياتك ... ... | ٤٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | وإذا يتلى عليهم قالوا آمنا به إنه الحق من ربنا | ٥٣ | م « | ٢٨ |
| | ربنا هؤلاء الذين أغوينا أغويناهم كما غوينا ... ... | ٦٣ | ك « | ٢٨ |
| | ربنا أبصرنا وسمعنا فارجعنا نعمل صالحا إنا موقنون | ١٢ | ك السجدة | ٣٢ |
| | وقالوا ربنا إنا أطعنا سادتنا وكبراءنا فأضلونا السبيلا | ٦٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ربنا آتهم ضعفين من العذاب والعنهم لعنا كبيرا | ٦٨ | م « | ٣٣ |
| | فقالوا ربنا باعد بين أسفارنا وظلموا أنفسهم ... ... | ١٩ | ك سبأ | ٣٤ |
| | قل يجمع بيننا ربنا ثم يفتح بيننا بالحق وهو الفتاح العليم | ٢٦ | ك « | ٣٤ |
| | إن ربنا لغفور شكور ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ربنا أخرجنا نعمل صالحا غير الذي كنا نعمل ... ... | ٣٧ | ك « | ٣٥ |
| | قالوا ربنا يعلم إنا إليكم لمرسلون ... ... ... ... | ١٦ | ك يس | ٣٦ |
| | فحق علينا قول ربنا إنا لذائقون ... ... ... ... | ٣١ | ك الصافات | ٣٧ |
| | وقالوا ربنا عجل لنا قطنا قبل يوم الحساب ... ... | ١٦ | ك ص | ٣٨ |
| | قالوا ربنا من قدم لنا هذا فزده عذابا ضعفا في النار | ٦١ | ك « | ٣٨ |
| | ربنا وسعت كل شيء رحمة وعلما فاغفر للذين تابوا | ٧ | ك غافر | ٤٠ |
| | ربنا وأدخلهم جنات عدن التي وعدتهم ... ... ... | ٨ | ك « | ٤٠ |
| | قالوا ربنا أمتنا اثنتين وأحييتنا اثنتين فاعترفنا بذنوبنا | ١١ | ك « | ٤٠ |
| | قالوا لو شاء ربنا لأنزل ملائكة ... ... ... ... | ١٤ | ك فصلت | ٤١ |
| | وقال الذين كفروا ربنا أرنا الذين أضلانا من الجن والإنس نجعلهما تحت أقدامنا ... ... ... | ٢٩ | ك « | ٤١ |
| | إن الذين قالوا ربنا الله ثم استقاموا تتنزل عليهم الملائكة ألا تخافوا ولا تحزنوا ... ... ... ... | ٣٠ | ك « | ٤١ |
| | الله ربنا وربكم لنا أعمالنا ولكم أعمالكم ... ... | ١٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| | وإنا إلى ربنا لمنقلبون ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ربنا اكشف عنا العذاب إنا مؤمنون ... ... ... | ١٢ | ك الدخان | ٤٤ |
| | إن الذين قالوا ربنا الله ثم استقاموا فلا خوف عليهم | ١٣ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | أليس هذا بالحق قالوا بلى وربنا قال فذوقوا العذاب | ٣٤ | ك « | ٤٦ |
| | قال قرينه ربنا ما أطغيته ولكن كان في ضلال بعيد | ٢٧ | ك ق | ٥٠ |
| | ربنا اغفر لنا ولإخواننا الذين سبقونا بالإيمان | ١٠ | م الحشر | ٥٩ |
| | ولا تجعل في قلوبنا غلا للذين آمنوا ربنا إنك رءوف رحيم | ١٠ | م « | ٥٩ |
| | ربنا عليك توكلنا وإليك أنبنا وإليك المصير ... ... | ٤ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | ربنا لا تجعلنا فتنة للذين كفروا ... ... ... ... | ٥ | م « | ٦٠ |
| | واغفر لنا ربنا إنك أنت العزيز الحكيم ... ... ... | ٥ | م « | ٦٠ |
| | ربنا أتمم لنا نورنا واغفر لنا إنك على كل شيء قدير | ٨ | م التحريم | ٦٦ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَبَّنَا: | قالوا سبحان ربنا إنا كنا ظالمين ... ... ... ... ... | ٢٩ م القلم | ٦٨ | |
| | عسى ربنا أن يبدلنا خيرا منها ... ... ... ... ... | ٣٢ م « | ٦٨ | |
| | إنا إلى ربنا راغبون ... ... ... ... ... ... | ٣٢ م « | ٦٨ | |
| | يهدى إلى الرشد فآمنا به ولن نشرك بربنا أحدا ... ... | ٢ ك الجن | ٧٢ | |
| | وأنه تعالى جد ربنا ما اتخذ صاحبة ولا ولدا ... ... | ٣ ك « | ٧٢ | |
| | إنا نخاف من ربنا يوما عبوسا قمطريرا ... ... ... | ١٠ م الإنسان | ٧٦ | |
| رَبُّهُ: | فتلقى آدم من ربه كلمات فتاب عليه ... ... ... | ٣٧ م البقرة | ٢ | |
| (٧٦) | بلى من أسلم وجهه لله وهو محسن فله أجره عند ربه | ١١٢م « | ٢ | |
| | وإذ ابتلى إبراهيم ربه بكلمات فأتمهن ... ... ... | ١٢٤م « | ٢ | |
| | إذ قال له ربه أسلم قال أسلمت لرب العالمين ... ... | ١٣١م « | ٢ | |
| | ألم تر إلى الذى حاج إبراهيم فى ربه أن آتاه الله الملك | ٢٥٨م « | ٢ | |
| | فمن جاءه موعظة من ربه فانتهى فله ما سلف وأمره إلى الله | ٢٧٥م « | ٢ | |
| | فليكتب وليملل الذى عليه الحق وليتق الله ربه ... ... | ٢٨٢م « | ٢ | |
| | فإن أمن بعضكم بعضا فليؤد الذى اؤتمن أمانته وليتق الله ربه | ٢٨٣م « | ٢ | |
| | آمن الرسول بما أنزل إليه من ربه والمؤمنون... ... | ٢٨٥م « | ٢ | |
| | هنالك دعا زكريا ربه ... ... ... ... ... ... | ٣٨ م آل عمران | ٣ | |
| | وقالوا لولا نزل عليه آية من ربه ... ... ... ... | ٣٧ ك الأنعام | ٦ | |
| | والبلد الطيب يخرج نباته بإذن ربه ... ... ... | ٥٨ ك الأعراف | ٧ | |
| | أتعلمون أن صالحا مرسل من ربه ... ... ... ... | ٧٥ ك « | ٧ | |
| | وواعدنا موسى ثلاثين ليلة وأتممناها بعشر فتم ميقات ربه أربعين ليلة ... ... ... ... ... ... | ١٤٢ك « | ٧ | |
| | ولما جاء موسى لميقاتنا وكلمه ربه قال رب أرنى أنظر إليك | ١٤٣ك « | ٧ | |
| | فلما تجلى ربه للجبل جعله دكا وخر موسى صعقا ... ... | ١٤٣ك « | ٧ | |
| | ويقولون لولا أنزل عليه آية من ربه ... ... ... | ٢٠ ك يونس | ١٠ | |
| | أفمن كان على بينة من ربه ويتلوه شاهد منه ومن قبله كتاب موسى إماما ورحمة ... ... ... ... | ١٧ م هود | ١١ | |
| | ونادى نوح ربه فقال رب إن ابنى من أهلى ... ... | ٤٥ ك « | ١١ | |
| | ولقد همت به وهم بها لولا أن رأى برهان ربه... ... | ٢٤ ك يوسف | ١٢ | |
| | فاستجاب له ربه فصرف عنه كيدهن ... ... ... | ٣٤ ك « | ١٢ | |
| | ياصاحبى السجن أما أحدكما فيسقى ربه خمرا ... ... | ٤١ ك « | ١٢ | |
| | فأنساه الشيطان ذكر ربه فلبث فى السجن بضع سنين | ٤٢ ك « | ١٢ | |
| | ويقول الذين كفروا لولا أنزل عليه آية من ربه... | ٧ م الرعد | ١٣ | |
| | ويقول الذين كفروا لولا أنزل عليه آية من ربه | ٢٧ م « | ١٣ | |
| | قال ومن يقنط من رحمة ربه إلا الضالون ... ... | ٥٦ ك الحجر | ١٥ | |
| | وكان الشيطان لربه كفورا ... ... ... ... ... | ٢٧ ك الإسراء | ١٧ | |
| | فسجدوا إلا إبليس كان من الجن ففسق عن أمر ربه | ٥٠ ك الكهف | ١٨ | |
| | ومن أظلم ممن ذكر بآيات ربه فأعرض عنها ... ... | ٥٧ ك « | ١٨ | |
| | قال أما من ظلم فسوف نعذبه ثم يرد إلى ربه فيعذبه عذابا نكرا | ٨٧ م « | ١٨ | |
| رَبُّهُ: | فمن كان يرجوا لقاء ربه فليعمل عملا صالحا... ... | ١١٠ك الكهف | ١٨ | |
| | ولا يشرك بعبادة ربه أحدا... ... ... ... ... | ١١٠ك « | ١٨ | |
| | ذكر رحمة ربك عبده زكريا. إذ نادى ربه نداء خفيا | ٣ ك مريم | ١٩ | |
| | وكان يأمر أهله بالصلاة والزكاة وكان عند ربه مرضيا | ٥٥ ك « | ١٩ | |
| | إنه من يأت ربه مجرما فإن له جهنم ... ... ... ... | ٧٤ ك طه | ٢٠ | |
| | وعصى آدم ربه فغوى ... ... ... ... ... ... | ١٢١ك « | ٢٠ | |
| | ثم اجتباه ربه فتاب عليه وهدى ... ... ... ... | ١٢٢ك « | ٢٠ | |
| | وكذلك نجزى من أسرف ولم يؤمن بآيات ربه ... ... | ١٢٧ك « | ٢٠ | |
| | وقالوا لولا يأتينا بآية من ربه ... ... ... ... | ١٣٣ك « | ٢٠ | |
| | وأيوب إذ نادى ربه أنى مسنى الضر وأنت أرحم الراحمين | ٨٣ ك الأنبياء | ٢١ | |
| | وزكريا إذ نادى ربه رب لا تذرنى فردا وأنت خير الوارثين | ٨٩ ك « | ٢١ | |
| | ذلك ومن يعظم حرمات الله فهو خير له عند ربه | ٣٠ م الحج | ٢٢ | |
| | ومن يدع مع الله إلها آخر لا برهان له به فإنما حسابه عند ربه ... ... ... ... ... ... | ١١٧ك المؤمنون | ٢٣ | |
| | وكان الكافر على ربه ظهيرا... ... ... ... ... | ٥٥ ك الفرقان | ٢٥ | |
| | قل ما أسئلكم عليه من أجر إلا من شاء أن يتخذ إلى ربه سبيلا | ٥٧ ك « | ٢٥ | |
| | وقالوا لولا أنزل عليه آيات من ربه ... ... ... | ٥٠ ك العنكبوت | ٢٩ | |
| | ومن أظلم ممن ذكر بآيات ربه ثم أعرض عنها | ٢٢ ك السجدة | ٣٢ | |
| | ومن الجن من يعمل بين يديه بإذن ربه ... ... | ١٢ ك سبأ | ٣٤ | |
| | وإن من شيعته لإبراهيم . إذ جاء ربه بقلب سليم | ٨٤ ك الصافات | ٣٧ | |
| | وظن داود أنما فتناه فاستغفر ربه وخر راكعا وأناب | ٢٤ ك ص | ٣٨ | |
| | واذكر عبدنا أيوب إذ نادى ربه أنى مسنى الشيطان بنصب وعذاب... ... ... ... ... ... | ٤١ ك « | ٣٨ | |
| | وإذا مس الإنسان ضر دعا ربه منيبا إليه ... ... | ٨ ك الزمر | ٣٩ | |
| | يحذر الآخرة ويرجو رحمة ربه ... ... ... ... | ٩ ك « | ٣٩ | |
| | أفمن شرح الله صدره للإسلام فهو على نور من ربه | ٢٢ ك « | ٣٩ | |
| | وقال فرعون ذرونى أقتل موسى وليدع ربه ... ... | ٢٦ ك غافر | ٤٠ | |
| | فدعا ربه أن هؤلاء قوم مجرمون ... ... ... ... | ٢٢ ك الدخان | ٤٤ | |
| | أفمن كان على بينة من ربه كمن زين له سوء عمله | ١٤ م محمد | ٤٧ | |
| | لقد رأى من آيات ربه الكبرى... ... ... ... ... | ١٨ ك النجم | ٥٣ | |
| | فدعا ربه أنى مغلوب فانتصر ... ... ... ... ... | ١٠ ك القمر | ٥٤ | |
| | ولمن خاف مقام ربه جنتان ... ... ... ... ... | ٤٦ م الرحمن | ٥٥ | |
| | عسى ربه إن طلقكن أن يبدله أزواجا خيرا منكن | ٥ م التحريم | ٦٦ | |
| | لولا أن تداركه نعمة من ربه لنبذ بالعراء وهو مذموم | ٤٩ م القلم | ٦٨ | |
| | فاجتباه ربه فجعله من الصالحين... ... ... ... | ٥٠ م « | ٦٨ | |
| | فمن يؤمن بربه فلا يخاف بخسا ولا رهقا ... ... | ١٣ ك الجن | ٧٢ | |
| | ومن يعرض عن ذكر ربه يسلكه عذابا صعدا ... ... | ١٧ ك « | ٧٢ | |
| | إن هذه تذكرة فمن شاء اتخذ إلى ربه سبيلا ... ... | ١٩ ك المزمل | ٧٣ | |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| ربه: | إن هذه تذكرة فمن شاء اتخذ إلى ربه سبيلا ... ... | م الإنسان | ٢٩ ٧٦ |
| | ذلك اليوم الحق فمن شاء اتخذ إلى ربه مآبا ... ... | ك النبأ | ٣٩ ٧٨ |
| | إذ ناداه ربه بالواد المقدس طوى ... ... ... ... | ك النازعات | ١٦ ٧٩ |
| | وأما من خاف مقام ربه ونهى النفس عن الهوى. | | |
| | فإن الجنة هى المأوى ... ... ... ... ... ... | ك « | ٤٠ ٧٩ |
| | بل إن ربه كان به بصيرا ... ... ... ... ... ... | ك الانشقاق | ١٥ ٨٤ |
| | قد أفلح من تزكى . وذكر اسم ربه فصلى ... ... | ك الأعلى | ١٥ ٨٧ |
| | فأما الإنسان إذا ما ابتلاه ربه فأكرمه ونعمه فيقول | | |
| | ربى أكرمن ... ... ... ... ... ... ... ... | ك الفجر | ١٥ ٨٩ |
| | وما لأحد عنده من نعمة تجزى . إلا ابتغاء وجه ربه الأعلى | ك الليل | ٢٠ ٩٢ |
| | رضى الله عنهم ورضوا عنه ذلك لمن خشى ربه ... | م البينة | ٨ ٩٨ |
| | إن الإنسان لربه لكنود ... ... ... ... ... ... | ك العاديات | ٦ ١٠٠ |
| ربها: | فتقبلها ربها بقبول حسن وأنبتها نباتا حسنا... ... | م آل عمران | ٣٧ ٣ |
| (٩) | تؤتى أكلها كل حين بإذن ربها ... ... ... ... | ك إبراهيم | ٢٥ ١٤ |
| | وأشرقت الأرض بنور ربها ووضع الكتاب ... ... | ك الزمر | ٦٩ ٣٩ |
| | تدمر كل شىء بأمر ربها فأصبحوا لا يرى إلا مساكنهم | ك الأحقاف | ٢٥ ٤٦ |
| | وكأين من قرية عتت عن أمر ربها ورسله فحاسبناها | | |
| | حسابا شديدا ... ... ... ... ... ... ... ... | م الطلاق | ٨ ٦٥ |
| | وصدقت بكلمات ربها وكتبه وكانت من القانتين | م التحريم | ١٢ ٦٦ |
| | وجوه يومئذ ناضرة . إلى ربها ناظرة ... ... ... | ك القيامة | ٢٣ ٧٥ |
| | إذا السماء انشقت . وأذنت لربها وحقت ... ... | ك الانشقاق | ٢ ٨٤ |
| | وألقت ما فيها وتخلت . وأذنت لربها وحقت... ... | ك « | ٥ ٨٤ |
| ربهم: | أولئك على هدى من ربهم وأولئك هم المفلحون | م البقرة | ٥ ٢ |
| (١٢٥) | فأما الذين آمنوا فيعلمون أنه الحق من ربهم... ... | م « | ٢٦ ٢ |
| | الذين يظنون أنهم ملاقوا ربهم وأنهم إليه راجعون | م « | ٤٦ ٢ |
| | فلهم أجرهم عند ربهم ولا خوف عليهم ولاهم يحزنون | م « | ٦٢ ٢ |
| | وما أوتى موسى وعيسى وما أوتى النبيون من ربهم | م « | ١٣٦ ٢ |
| | وإن الذين أوتوا الكتاب ليعلمون أنه الحق من ربهم | م « | ١٤٤ ٢ |
| | أولئك عليهم صلوات من ربهم ورحمة ... ... ... | م « | ١٥٧ ٢ |
| | ثم لا يتبعون ما أنفقوا منًا ولا أذى لهم أجرهم عند ربهم | م « | ٢٦٢ ٢ |
| | الذين ينفقون أموالهم بالليل والنهار سرا وعلانية | | |
| | فلهم أجرهم عند ربهم ... ... ... ... ... ... | م « | ٢٧٤ ٢ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات وأقاموا الصلاة | | |
| | وآتوا الزكاة لهم أجرهم عند ربهم ... ... ... | م « | ٢٧٧ ٢ |
| | للذين اتقوا عند ربهم جنات تجرى من تحتها الأنهار | م آل عمران | ١٥ ٣ |
| | وما أوتى موسى وعيسى والنبيون من ربهم ... ... | م « | ٨٤ ٣ |
| | أولئك جزاؤهم مغفرة من ربهم... ... ... ... ... | م « | ١٣٦ ٣ |
| | بل أحياء عند ربهم يرزقون ... ... ... ... ... | م « | ١٦٩ ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| ربهم: | فاستجاب لهم ربهم أنى لا أضيع عمل عامل منكم | م آل عمران | ١٩٥ ٣ |
| | لكن الذين اتقوا ربهم لهم جنات تجرى من تحتها الأنهار | م « | ١٩٨ ٣ |
| | أولئك لهم أجرهم عند ربهم إن الله سريع الحساب | م « | ١٩٩ ٣ |
| | ولا آمّين البيت الحرام يبتغون فضلا من ربهم ورضوانا | م المائدة | ٢ ٥ |
| | ولو أنهم أقاموا التوراة والإنجيل وما أنزل إليهم | | |
| | من ربهم لأكلوا من فوقهم ومن تحت أرجلهم | م « | ٦٦ ٥ |
| | ثم الذين كفروا بربهم يعدلون ... ... ... ... ... | ك الأنعام | ١ ٦ |
| | وما تأتيهم من آية من آيات ربهم إلا كانوا عنها معرضين | ك « | ٤ ٦ |
| | ولو ترى إذ وقفوا على ربهم قال أليس هذا بالحق | ك « | ٣٠ ٦ |
| | ما فرطنا فى الكتاب من شىء ثم إلى ربهم يحشرون | ك « | ٣٨ ٦ |
| | وأنذر به الذين يخافون أن يحشروا إلى ربهم... ... | ك « | ٥١ ٦ |
| | ولا تطرد الذين يدعون ربهم بالغداة والعشى... ... | ك « | ٥٢ ٦ |
| | كذلك زيّنا لكل أمة عملهم ثم إلى ربهم مرجعهم | ك « | ١٠٨ ٦ |
| | لهم دار السلام عند ربهم وهو وليهم بما كانوا يعملون | ك « | ١٢٧ ٦ |
| | وهم بربهم يعدلون ... ... ... ... ... ... ... | ك « | ١٥٠ ٦ |
| | وهدى ورحمة لعلهم بلقاء ربهم يؤمنون ... ... ... | ك « | ١٥٤ ٦ |
| | فعقروا الناقة وعتوا عن أمر ربهم ... ... ... ... | ك الأعراف | ٧٧ ٧ |
| | إن الذين اتخذوا العجل سينالهم غضب من ربهم | ك « | ١٥٢ ٧ |
| | وفى نسختها هدى ورحمة للذين هم لربهم يرهبون | ك « | ١٥٤ ٧ |
| | وإذا تليت عليهم آياته زادتهم إيمانا وعلى ربهم يتوكلون | م الأنفال | ٢ ٨ |
| | لهم درجات عند ربهم ومغفرة ورزق كريم ... ... | م « | ٤ ٨ |
| | كذبوا بآيات ربهم فأهلكناهم بذنوبهم وأغرقنا آل فرعون | م « | ٥٤ ٨ |
| | يبشرهم ربهم برحمة منه ورضوان وجنات لهم فيها نعيم مقيم | م التوبة | ٢١ ٩ |
| | وبشر الذين آمنوا أن لهم قدم صدق عند ربهم | ك يونس | ٢ ١٠ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات يهديهم ربهم بإيمانهم | ك « | ٩ ١٠ |
| | أولئك يعرضون على ربهم ... ... ... ... ... ... | ك هود | ١٨ ١١ |
| | ويقول الأشهاد هؤلاء الذين كذبوا على ربهم | ك « | ١٨ ١١ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات وأخبتوا إلى | | |
| | ربهم أولئك أصحاب الجنة ... ... ... ... ... | ك « | ٢٣ ١١ |
| | إنهم ملاقوا ربهم ولكنى أراكم قوما تجهلون ... ... | ك « | ٢٩ ١١ |
| | وتلك عاد جحدوا بآيات ربهم وعصوا رسله... ... | ك « | ٥٩ ١١ |
| | ألا إن عادا كفروا ربهم ألا بعدا لعاد قوم هود | ك « | ٦٠ ١١ |
| | ألا إن ثمودا كفروا ربهم ألا بعدا لثمود ... ... | ك « | ٦٨ ١١ |
| | أولئك الذين كفروا بربهم وأولئك الأغلال فى أعناقهم | م الرعد | ٥ ١٣ |
| | للذين استجابوا لربهم الحسنى ... ... ... ... ... | م « | ١٨ ١٣ |
| | والذين يصلون ما أمر الله به أن يوصل ويخشون ربهم | م « | ٢١ ١٣ |
| | والذين صبروا ابتغاء وجه ربهم وأقاموا الصلاة | م « | ٢٢ ١٣ |
| | لتخرج الناس من الظلمات إلى النور بإذن ربهم | ك إبراهيم | ١ ١٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ربهم: | فأوحى إليهم ربهم لنهلكن الظالمين ... ... ... | ١٣ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | مثل الذين كفروا بربهم أعمالهم كرماد اشتدت به | | | |
| | الريح فى يوم عاصف ... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك « | ١٤ |
| | خالدين فيها بإذن ربهم تحيتهم فيها سلام ... ... ... | ٢٣ | ك « | ١٤ |
| | الذين صبروا وعلى ربهم يتوكلون ... ... ... ... | ٤٢ | ك النحل | ١٦ |
| | يخافون ربهم من فوقهم ويفعلون ما يؤمرون ... | ٥٠ | ك « | ١٦ |
| | ثم إذا كشف الضر عنكم إذا فريق منكم بربهم يشركون | ٥٤ | ك « | ١٦ |
| | إنه ليس له سلطان على الذين آمنوا وعلى ربهم يتوكلون | ٩٩ | ك « | ١٦ |
| | أولئك الذين يدعون يبتغون إلى ربهم الوسيلة ... | ٥٧ | م الإسراء | ١٧ |
| | إنهم فتية آمنوا بربهم وزدناهم هدى ... ... ... | ١٣ | ك الكهف | ١٨ |
| | فقالوا ابنوا عليهم بنيانا ربهم أعلم بهم ... ... ... | ٢١ | ك « | ١٨ |
| | واصبر نفسك مع الذين يدعون ربهم بالغداة والعشى | ٢٨ | م « | ١٨ |
| | وما منع الناس أن يؤمنوا إذ جاءهم الهدى | | | |
| | ويستغفروا ربهم إلا أن تأتيهم سنة الأولين ... | ٥٥ | ك « | ١٨ |
| | أولئك الذين كفروا بآيات ربهم ولقائه فحبطت أعمالهم | ١٠٥ | ا « | ١٨ |
| | ما يأتيهم من ذكر من ربهم محدث إلا استمعوه وهم يلعبون | ٢ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | بل هم عن ذكر ربهم معرضون ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك « | ٢١ |
| | الذين يخشون ربهم بالغيب وهم من الساعة مشفقون | ٤٩ | ك « | ٢١ |
| | هذان خصمان اختصموا فى ربهم ... ... ... ... | ١٩ | م الحج | ٢٢ |
| | إن الذين هم من خشية ربهم مشفقون ... ... ... | ٥٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | والذين هم بآيات ربهم يؤمنون ... ... ... ... | ٥٨ | ك « | ٢٣ |
| | والذين هم بربهم لا يشركون ... ... ... ... | ٥٩ | ك « | ٢٣ |
| | والذين يؤتون ما آتوا وقلوبهم وجلة أنهم إلى | | | |
| | ربهم راجعون ... ... ... ... ... ... ... | ٦٠ | ك « | ٢٣ |
| | ولقد أخذناهم بالعذاب فما استكانوا لربهم وما يتضرعون | ٧٦ | ك « | ٢٣ |
| | والذين يبيتون لربهم سجدا وقياما ... ... ... ... | ٦٤ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | والذين إذا ذكروا بآيات ربهم لم يخروا عليها صما وعميانا | ٧٣ | ك « | ٢٥ |
| | الذين صبروا وعلى ربهم يتوكلون ... ... ... ... | ٥٩ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وإن كثيرا من الناس بلقاء ربهم لكافرون ... ... | ٨ | ك الروم | ٣٠ |
| | وإذا مس الناس ضر دعوا ربهم منيبين إليه ... ... | ٣٣ | ك « | ٣٠ |
| | ثم إذا أذاقهم منه رحمة إذا فريق منهم بربهم يشركون | ٣٣ | ك « | ٣٠ |
| | أولئك على هدى من ربهم وأولئك هم المفلحون ... | ٥ | ك لقمان | ٣١ |
| | بل هم بلقاء ربهم كافرون ... ... ... ... ... | ١٠ | ك السجدة | ٣٢ |
| | ولو ترى إذ المجرمون ناكسوا رءوسهم عند ربهم | ١٢ | ك « | ٣٢ |
| | خروا سجدا وسبحوا بحمد ربهم وهم لا يستكبرون | ١٥ | ك « | ٣٢ |
| | يدعون ربهم خوفا وطمعا ومما رزقناهم ينفقون | ١٦ | م « | ٣٢ |
| | ولو ترى إذ الظالمون موقوفون عند ربهم ... ... | ٣١ | ك سبأ | ٣٤ |
| | إنما تنذر الذين يخشون ربهم بالغيب وأقاموا الصلاة | ١٨ | ك فاطر | ٣٥ |
| ربهم: | ولا يزيد الكافرين كفرهم عند ربهم إلا مقتا ... | ٣٩ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وما تأتيهم من آية من آيات ربهم إلا كانوا عنها معرضين | ٤٦ | ك يس | ٣٦ |
| | ونفخ فى الصور فإذا هم من الأجداث إلى ربهم ينسلون | ٥١ | ك « | ٣٦ |
| | لكن الذين اتقوا ربهم لهم غرف من فوقها غرف | ٢٠ | ك الزمر | ٣٩ |
| | تقشعر منه جلود الذين يخشون ربهم ... ... ... | ٢٣ | ك « | ٣٩ |
| | لهم ما يشاءون عند ربهم ذلك جزاء المحسنين... ... | ٣٤ | ك « | ٣٩ |
| | وسيق الذين اتقوا ربهم إلى الجنة زمرا ... ... | ٧٣ | ك « | ٣٩ |
| | وترى الملائكة حافين من حول العرش يسبحون بحمد ربهم | ٧٥ | ك « | ٣٩ |
| | الذين يحملون العرش ومن حوله يسبحون بحمد ربهم | ٧ | ك غافر | ٤٠ |
| | ألا إنهم فى مرية من لقاء ربهم ألا إنه بكل شىء محيط | ٥٤ | ك فصلت | ٤١ |
| | والملائكة يسبحون بحمد ربهم ويستغفرون لمن فى الأرض | ٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| | حجتهم داحضة عند ربهم وعليهم غضب ولهم عذاب شديد | ١٦ | ك « | ٤٢ |
| | لهم ما يشاءون عند ربهم ذلك هو الفضل الكبير | ٢٢ | ك « | ٤٢ |
| | وما عند الله خير وأبقى للذين آمنوا وعلى ربهم يتوكلون | ٣٦ | ك « | ٤٢ |
| | والذين استجابوا لربهم وأقاموا الصلاة وأمرهم | | | |
| | شورى بينهم ... ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك « | ٤٢ |
| | والذين كفروا بآيات ربهم لهم عذاب من رجز أليم | ١١ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | فأما الذين آمنوا وعملوا الصالحات فيدخلهم ربهم فى رحمته | ٣٠ | ك « | ٤٥ |
| | وآمنوا بما نزل على محمد وهو الحق من ربهم كفر عنهم سيئاتهم | ٢ | م محمد | ٤٧ |
| | وأن الذين آمنوا اتبعوا الحق من ربهم ... ... ... | ٣ | م « | ٤٧ |
| | ولهم فيها من كل الثمرات ومغفرة من ربهم ... ... | ١٥ | م « | ٤٧ |
| | آخذين ما آتاهم ربهم إنهم كانوا قبل ذلك محسنين | ١٦ | ك الذاريات | ٥١ |
| | فعتوا عن أمر ربهم فأخذتهم الصاعقة وهم ينظرون | ٤٤ | ك « | ٥١ |
| | فاكهين بما آتاهم ربهم ... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك الطور | ٥٢ |
| | ووقاهم ربهم عذاب الجحيم ... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك « | ٥٢ |
| | ولقد جاءهم من ربهم الهدى ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك النجم | ٥٣ |
| | والشهداء عند ربهم لهم أجرهم ونورهم ... ... ... | ١٩ | م الحديد | ٥٧ |
| | وللذين كفروا بربهم عذاب جهنم وبئس المصير | ٦ | ك الملك | ٦٧ |
| | إن الذين يخشون ربهم بالغيب لهم مغفرة وأجر كبير | ١٢ | ك « | ٦٧ |
| | إن للمتقين عند ربهم جنات النعيم... ... ... ... | ٣٤ | ك القلم | ٦٨ |
| | فعصوا رسول ربهم فأخذهم أخذة رابية... ... ... | ١٠ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | والذين هم من عذاب ربهم مشفقون... ... ... ... | ٢٧ | ك المعارج | ٧٠ |
| | إن عذاب ربهم غير مأمون... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٧٠ |
| | أشر أريد بمن فى الأرض أم أراد بهم ربهم رشدا | ١٠ | ك الجن | ٧٢ |
| | ليعلم أن قد أبلغوا رسالات ربهم وأحاط بما لديهم | ٢٨ | ك « | ٧٢ |
| | وحلوا أساور من فضة وسقاهم ربهم شرابا طهورا | ٢١ | م الإنسان | ٧٦ |
| | كلا إنهم عن ربهم يومئذ لمحجوبون ... ... ... | ١٥ | ك المطففين | ٨٣ |
| | فكذبوه فعقروها فدمدم عليهم ربهم بذنبهم فسواها | ١٤ | ك الشمس | ٩١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَبِّهِم | : تنزل الملائكة والروح فيها بإذن ربهم من كل أمر | ٤ | ك القـدر | ٩٧ |
| | جزاؤهم عند ربهم جنات عدن تجرى من تحتها الأنهار | ٨ | م البينـة | ٩٨ |
| | إن ربهم بهم يومئذ لخبير ... ... ... ... ... | ١١ | ك العاديات | ١٠٠ |
| رَبُّهُمَا | : وناداهما ربهما ألم أنهكما عن تلكما الشجرة... ... | ٢٢ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | فلما أثقلت دعوا الله ربهما لئن آتيتنا صالحا | | | |
| | لنكونن من الشاكرين ... ... ... ... ... ... | ١٨٩ | ك » | ٧ |
| | فأردنا أن يبدلهما ربهما خيرا منه زكاة وأقرب رحما | ٨١ | ك الكهـف | ١٨ |
| رَبِّيَ | : إذ قال إبراهيم ربى الذى يحيى ويميت ... ... | ٢٥٨ | م البقـرة | ٢ |
| (١٠٠) | إن الله ربى وربكم فاعبدوه هـذا صراط مستقيم | ٥١ | م آل عمران | ٣ |
| | وقال المسيح يابنى إسرائيل اعبدوا الله ربى وربكم | ٧٢ | م المائدة | ٥ |
| | ماقلت لهم إلا ماأمرتنى به أن اعبدوا الله ربى وربكم | ١١٧ | م » | ٥ |
| | قل إنى أخاف إن عصيت ربى عذاب يوم عظيم | ١٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | قل إنى على بينة من ربى وكذبتم به ... ... ... ... | ٥٧ | ك » | ٦ |
| | فلما رأى القمر بازغا قال هذا ربى ... ... ... ... | ٧٧ | ك » | ٦ |
| | فلما أفل قال لئن لم يهدنى ربى لأكونن من القوم الضالين | ٧٧ | ك » | ٦ |
| | فلما رأى الشمس بازغة قال هذا ربى هذا أكبر | ٧٨ | ك » | ٦ |
| | ولا أخاف ما تشركون به إلا أن يشاء ربى شيئا | ٨٠ | ك » | ٦ |
| | وسع ربى كل شىء علما أفلا تتذكرون ... ... ... | ٨٠ | ك » | ٦ |
| | قل إننى هدانى ربى إلى صراط مستقيم دينا قيما | ١٦١ | ك » | ٦ |
| | قل أمر ربى بالقسط ... ... ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | قل إنما حرم ربى الفواحش ما ظهر منها وما بطن | ٣٣ | ك » | ٧ |
| | أبلغكم رسالات ربى وأنصح لكم وأعلم من الله مالا تعلمون | ٦٢ | ك » | ٧ |
| | أبلغكم رسالات ربى وأنا لكم ناصح أمين... ... ... | ٦٨ | ك » | ٧ |
| | فتولى عنهم وقال ياقوم لقد أبلغتكم رسالة ربى ونصحت لكم | ٧٩ | ك » | ٧ |
| | وقال ياقوم لقد أبلغتكم رسالات ربى ونصحت لكم | ٩٣ | ك » | ٧ |
| | قل إنما علمها عند ربى لا يجليها لوقتها إلا هو ... | ١٨٧ | ك » | ٧ |
| | قل إنما أتبع ما يوحى إلىّ من ربى ... ... ... ... | ٢٠٣ | ك » | ٧ |
| | إنى أخاف إن عصيت ربى عذاب يوم عظيم... ... | ١٥ | ك يونس | ١٠ |
| | ويستنبئونك أحق هو قل إى وربى إنه لحق ... ... | ٥٣ | ك » | ١٠ |
| | قال ياقوم أرأيتم إن كنت على بينة من ربى وآتانى | | | |
| | رحمة من عنده... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك هـود | ١١ |
| | وقال اركبوا فيها باسم الله مجريها ومرساها إن ربى | | | |
| | لغفور رحيم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤١ | ك » | ١١ |
| | إنى توكلت على الله ربى وربكم... ... ... ... ... | ٥٦ | ك » | ١١ |
| | إن ربى على صراط مستقيم... ... ... ... ... ... | ٥٦ | ك » | ١١ |
| | ويستخلف ربى قوما غيركم ولا تضرونه شيئا ... ... | ٥٧ | ك » | ١١ |
| | إن ربى على كل شىء حفيظ ... ... ... ... ... | ٥٧ | ك » | ١١ |
| | فاستغفروه ثم توبوا إليه إن ربى قريب مجيب | ٦١ | ك » | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَبِّى | : قال ياقوم أرأيتم إن كنت على بينة من ربى وآتانى منه رحمة | ٦٣ | ك هـود | ١١ |
| | قال ياقوم أرأيتم إن كنت على بينة من ربى ورزقنى | | | |
| | منه رزقا حسنا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨٨ | ك » | ١١ |
| | واستغفروا ربكم ثم توبوا إليه إن ربى رحيم ودود | ٩٠ | ك » | ١١ |
| | إن ربى بما تعملون محيط ... ... ... ... ... ... | ٩٢ | ك » | ١١ |
| | قال معاذ الله إنه ربى أحسن مثواى ... ... ... | ٢٣ | ك يوسف | ١٢ |
| | ذلكما مما علمنى ربى إنى تركت ملة قوم لا يؤمنون بالله | ٣٧ | ك » | ١٢ |
| | مابال النسوة اللاتى قطعن أيديهن إن ربى بكيدهن عليم | ٥٠ | ك » | ١٢ |
| | إن النفس لأمارة بالسوء إلا مارحم ربى ... ... | ٥٣ | ك » | ١٢ |
| | إن ربى غفور رحيم ... ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك » | ١٢ |
| | قال سوف أستغفر لكم ربى إنه هو الغفور الرحيم | ٩٨ | ك » | ١٢ |
| | هـذا تأويل رؤياى من قبل قد جعلها ربى حقا | ١٠٠ | ك » | ١٢ |
| | إن ربى لطيف لما يشاء إنه هو العليم الحكيم | ١٠٠ | ك » | ١٢ |
| | قل هو ربى لا إله إلا هو عليه توكلت وإليه متاب | ٣٠ | م الرعـد | ١٣ |
| | إن ربى لسميع الدعاء... ... ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | قل الروح من أمر ربى وما أوتيتم من العلم إلا قليلا | ٨٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| | قل سبحان ربى هل كنت إلا بشرا رسولا ... ... | ٩٣ | ك » | ١٧ |
| | قل لو أنتم تملكون خزائن رحمة ربى إذا لأمسكتم | | | |
| | خشية الإنفاق... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٠ | ك » | ١٧ |
| | قل ربى أعلم بعدتهم ما يعلمهم إلا قليل ... ... ... | ٢٢ | ك الكهـف | ١٨ |
| | وقل عسى أن يهدين ربى لأقرب من هذا رشدا ... | ٢٤ | ك » | ١٨ |
| | ولئن رددت إلى ربى لأجدن خيرا منها منقلبا ... | ٣٦ | ك » | ١٨ |
| | لكنا هو الله ربى ... ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك » | ١٨ |
| | ولا أشرك بربى أحدا ... ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك » | ١٨ |
| | فعسى ربى أن يؤتين خيرا من جنتك ... ... ... | ٤٠ | ك » | ١٨ |
| | ويقول ياليتنى لم أشرك بربى أحدا... ... ... ... | ٤٢ | ك » | ١٨ |
| | قال ما مكنى فيه ربى خير فأعينونى بقوة ... ... | ٩٥ | م » | ١٨ |
| | قال هذا رحمة من ربى... ... ... ... ... ... ... | ٩٨ | م » | ١٨ |
| | فإذا جاء وعد ربى جعله دكاء ... ... ... ... ... | ٩٨ | م » | ١٨ |
| | وكان وعد ربى حقا ... ... ... ... ... ... ... | ٩٨ | م » | ١٨ |
| | قل لو كان البحر مدادا لكلمات ربى ... ... ... | ١٠٩ | ك » | ١٨ |
| | لنفد البحر قبل أن تنفد كلمات ربى... ... ... ... | ١٠٩ | ك » | ١٨ |
| | وإن الله ربى وربكم فاعبدوه هـذا صراط مستقيم | ٣٦ | ك مريم | ١٩ |
| | قال سلام عليك سأستغفر لك ربى إنه كان بى حفيا | ٤٧ | ك » | ١٩ |
| | وأعتزلكم وما تدعون من دون الله وأدعوا ربى | ٤٨ | ك » | ١٩ |
| | عسى ألا أكون بدعاء ربى شقيا... ... ... ... ... | ٤٨ | ك » | ١٩ |
| | قال علمها عند ربى فى كتاب ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك طـه | ٢٠ |
| | لا يضل ربى ولا ينسى... ... ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك » | ٢٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَبِّي: ويسئلونك عن الجبال فقل ينسفها ربي نسفا... ... | ١٠٥ | ك طه | ٢٠ | |
| قال ربي يعلم القول في السماء والأرض وهو السميع العليم | ٤ | ك الأنبياء | ٢١ | |
| قل ما يعبأ بكم ربي لولا دعاؤكم... ... ... ... ... | ٧٧ | ك الفرقان | ٢٥ | |
| ففررت منكم لما خفتكم فوهب لي ربي حكما... ... | ٢١ | ك الشعراء | ٢٦ | |
| قال كلا إن معي ربي سيهدين ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك « | ٢٦ | |
| إن حسابهم إلا على ربي لو تشعرون ... ... ... ... | ١١٣ | ك « | ٢٦ | |
| قال ربي أعلم بما تعملون ... ... ... ... ... ... | ١٨٨ | ك « | ٢٦ | |
| قال هذا من فضل ربي ليبلوني أأشكر أم أكفر ... | ٤٠ | ك النمل | ٢٧ | |
| ومن شكر فإنما يشكر لنفسه ومن كفر فإن ربي غني كريم | ٤٠ | ك « | ٢٧ | |
| ولما توجه تلقاء مدين قال عسى ربي أن يهديني سواء السبيل | ٢٢ | ك القصص | ٢٨ | |
| وقال موسى ربي أعلم بمن جاء بالهدى من عنده | ٣٧ | ك « | ٢٨ | |
| قل ربي أعلم من جاء بالهدى ومن هو في ضلال مبين | ٨٥ | م « | ٢٨ | |
| فآمن له لوط وقال إني مهاجر إلى ربي إنه هو العزيز الحكيم | ٢٦ | ك العنكبوت | ٢٩ | |
| قل بلى وربي لتأتينكم عالم الغيب... ... ... ... ... | ٣ | ك سبأ | ٣٤ | |
| قل إن ربي يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ... ... | ٣٦ | ك « | ٣٤ | |
| قل إن ربي يبسط الرزق لمن يشاء من عباده ويقدر له | ٣٩ | ك « | ٣٤ | |
| قل إن ربي يقذف بالحق علام الغيوب ... ... ... | ٤٨ | ك « | ٣٤ | |
| وإن اهتديت فبما يوحي إليّ ربي ... ... ... ... | ٥٠ | ك « | ٣٤ | |
| قال يا ليت قومي يعلمون. بما غفر لي ربي وجعلني من المكرمين | ٢٧ | ك يس | ٣٦ | |
| ولولا نعمة ربي لكنت من المحضرين ... ... ... | ٥٧ | ك الصافات | ٣٧ | |
| وقال إني ذاهب إلى ربي سيهدين ... ... ... ... | ٩٩ | ك « | ٣٧ | |
| فقال إني أحببت حب الخير عن ذكر ربي ... ... | ٣٢ | ك ص | ٣٨ | |
| قل إني أخاف إن عصيت ربي عذاب يوم عظيم | ١٣ | ك الزمر | ٣٩ | |
| وقال موسى إني عذت بربي وربكم من كل متكبر | ٢٧ | ك غافر | ٤٠ | |
| أتقتلون رجلا أن يقول ربيَ الله ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٤٠ | |
| قل إني نهيت أن أعبد الذين تدعون من دون الله لما جاءني البينات من ربي ... ... ... ... ... | ٦٦ | ك « | ٤٠ | |
| ولئن رجعت إلى ربي إن لي عنده للحسنى ... ... | ٥٠ | ك فصلت | ٤١ | |
| ذلكم الله ربي عليه توكلت وإليه أنيب... ... ... | ١٠ | ك الشورى | ٤٢ | |
| إن الله هو ربي وربكم فاعبدوه هذا صراط مستقيم | ٦٤ | ك الزخرف | ٤٣ | |
| وإني عذت بربي وربكم أن ترجمون ... ... ... | ٢٠ | ك الدخان | ٤٤ | |
| قل بلى وربي لتبعثن ثم لتنبؤنَّ بما عملتم... ... ... | ٧ | ك التغابن | ٦٤ | |
| قل إنما أدعو ربي ولا أشرك به أحدا ... ... ... | ٢٠ | ك الجن | ٧٢ | |
| قل إن أدري أقريب ما توعدون أم يجعل له ربي أمدا | ٢٥ | ك « | ٧٢ | |
| فأما الإنسان إذا ما ابتلاه ربه فأكرمه ونعّمه فيقول ربي أكرمن ... ... ... ... ... | ١٥ | ك الفجر | ٨٩ | |
| وأما إذا ما ابتلاه فقدر عليه رزقه فيقول ربي أهانن | ١٦ | ك « | ٨٩ | |
| أَرْبَابٌ: أأرباب متفرقون خير أم الله الواحد القهار | ٣٩ | ك يوسف | ١٢ | |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَرْبَابًا: ولا يتخذ بعضنا بعضا أربابا من دون الله... ... | ٦٤ | م آل عمران | ٣ | |
| (٣) ولا يأمركم أن تتخذوا الملائكة والنبيين أربابا ... | ٨٠ | م « | ٣ | |
| اتخذوا أحبارهم ورهبانهم أربابا من دون الله... ... | ٣١ | م التوبة | ٩ | |
| رِبِّيُّونَ: وكأين من نبيّ قاتل معه ربيون كثير ... ... | ١٤٦ | م آل عمران | ٣ | |
| الرَّبَّانِيُّونَ: يحكم بها النبيون الذين أسلموا للذين هادوا | | | | |
| (٢) والربانيون والأحبار ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | م المائدة | ٥ | |
| لولا ينهاهم الربانيون والأحبار عن قولهم الإثم وأكلهم السحت ... ... ... ... ... ... | ٦٣ | م « | ٥ | |
| رَبَّانِيِّينَ: ولكن كونوا ربانيين بما كنتم تعلمون الكتاب | ٧٩ | م آل عمران | ٣ | |
| رَبَائِبُكُمُ: وربائبكم اللاتي في حجوركم من نسائكم اللاتي دخلتم بهن | ٢٣ | م النساء | ٤ | |
| ✦✦✦ | | | | |
| رَبِحَت: أولئك الذين اشتروا الضلالة بالهدى فما ربحت تجارتهم | ١٦ | م البقرة | ٢ | |
| ✦✦✦ | | | | |
| تَرَبَّصْتُمْ: ولكنكم فتنتم أنفسكم وتربصتم وارتبتم وغرتكم الأماني | ١٤ | م الحديد | ٥٧ | |
| تَرَبَّصُونَ: قل هل تربصون بنا إلا إحدى الحسنيين... ... | ٥٢ | م التوبة | ٩ | |
| نَتَرَبَّصُ: ونحن نتربص بكم أن يصيبكم الله بعذاب من | | | | |
| (٢) عنده أو بأيدينا ... ... ... ... ... ... | ٥٢ | م « | ٩ | |
| أم يقولون شاعر نتربص به ريب المنون ... ... | ٣٠ | ك الطور | ٥٢ | |
| يَتَرَبَّصُ: ومن الأعراب من يتخذ ما ينفق مغرما ويتربص بكم الدوائر ... ... ... ... ... ... | ٩٨ | م التوبة | ٩ | |
| يَتَرَبَّصْنَ: والمطلقات يتربصن بأنفسهن ثلاثة قروء ... | ٢٢٨ | م البقرة | ٢ | |
| (٢) والذين يتوفون منكم ويذرون أزواجا يتربصن بأنفسهن أربعة أشهر وعشرا ... ... ... ... | ٢٣٤ | م « | ٢ | |
| يَتَرَبَّصُونَ: الذين يتربصون بكم فإن كان لكم فتح من الله قالوا ألم نكن معكم ... ... ... ... ... | ١٤١ | م النساء | ٤ | |
| تَرَبَّصُوا: فتربصوا حتى يأتي الله بأمره ... ... ... ... | ٢٤ | م التوبة | ٩ | |
| (٥) فتربصوا إنا معكم متربصون ... ... ... ... ... | ٥٢ | م « | ٩ | |
| قل كل متربص فتربصوا ... ... ... ... ... ... | ١٣٥ | ك طه | ٢٠ | |
| إن هو إلا رجل به جنة فتربصوا به حتى حين... ... | ٢٥ | ك المؤمنون | ٢٣ | |
| قل تربصوا فإني معكم من المتربصين ... ... ... | ٣١ | ك الطور | ٥٢ | |
| تَرَبُّصُ: للذين يؤلون من نسائهم تربص أربعة أشهر | ٢٢٦ | م البقرة | ٢ | |
| مُتَرَبِّصٌ: قل كلٌّ متربصٌ فتربصوا ... ... ... ... | ١٣٥ | ك طه | ٢٠ | |
| مُتَرَبِّصُونَ: فتربصوا إنا معكم متربصون... ... ... ... | ٥٢ | م التوبة | ٩ | |
| مُتَرَبِّصِينَ: قل تربصوا فإني معكم من المتربصين ... ... | ٣١ | ك الطور | ٥٢ | |
| ✦✦✦ | | | | |
| رَبَطْنَا: وربطنا على قلوبهم إذ قاموا فقالوا ربنا رب | | | | |
| (٢) السموات والأرض ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك الكهف | ١٨ | |
| إن كادت لتبدي به لولا أن ربطنا على قلبها لتكون من المؤمنين ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك القصص | ٢٨ | |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَرْبِطَ | : وليربط على قلوبكم ويثبت به الأقدام... ... ... | ١١ | م الأنفال | ٨ |
| رَابِطُوا | : يأيها الذين آمنوا اصبروا وصابروا ورابطوا | ٢٠٠ | م آل عمران | ٣ |
| رِبَاطِ | : وأعدوا لهم ما استطعتم من قوة ومن رباط الخيل | ٦٠ | م الأنفال | ٨ |
| ✦✦✦ | | | | |
| الرُّبُعُ | : فإن كان لهن ولد فلكم الربع مما تركن ... ... | ١٢ | م النساء | ٤ |
| (٢) | ولهن الربع مما تركتم إن لم يكن لكم ولد ... ... ... | ١٢ | م « | ٤ |
| رُبَاعَ | : فانكحوا ما طاب لكم من النساء مثنى وثلاث ورباع | ٣ | م « | ٤ |
| (٢) | جاعل الملائكة رسلا أولى أجنحة مثنى وثلاث ورباع | ١ | ك فاطر | ٣٥ |
| أَرْبَعُ | : فشهادة أحدهم أربع شهادات بالله إنه لمن الصادقين | ٦ | م النور | ٢٤ |
| (٣) | ويدرؤا عنها العذاب أن تشهد أربع شهادات بالله إنه لمن الكاذبين ... ... ... ... ... ... | ٨ | م « | ٢٤ |
| | ومنهم من يمشى على رجلين ومنهم من يمشى على أربع | ٤٥ | م « | ٢٤ |
| أَرْبَعَةُ | : للذين يؤلون من نسائهم تربص أربعة أشهر... ... | ٢٢٦ | م البقرة | ٢ |
| (٩) | يتربصن بأنفسهن أربعة أشهر وعشرا... ... ... ... | ٢٣٤ | م « | ٢ |
| | قال فخذ أربعة من الطير فصرهن إليك... ... ... ... | ٢٦٠ | م « | ٢ |
| | فاستشهدوا عليهن أربعة منكم ... ... ... ... ... | ١٥ | م النساء | ٤ |
| | فسيحوا فى الأرض أربعة أشهر ... ... ... ... ... | ٢ | م التوبة | ٩ |
| | منها أربعة حرم ذلك الدين القيم... ... ... ... ... | ٣٦ | م « | ٩ |
| | والذين يرمون المحصنات ثم لم يأتوا بأربعة شهداء فاجلدوهم ثمانين جلدة ... ... ... ... ... ... | ٤ | م النور | ٢٤ |
| | لولا جاءو عليه بأربعة شهداء ... ... ... ... ... | ١٣ | م « | ٢٤ |
| | وقدر فيها أقواتها فى أربعة أيام سواء للسائلين | ١٠ | ك فصلت | ٤١ |
| أَرْبَعِينَ | : وإذ واعدنا موسى أربعين ليلة ... ... ... ... | ٥١ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | قال فإنها محرمة عليهم أربعين سنة يتيهون فى الأرض | ٢٦ | م المائدة | ٥ |
| | فتم ميقات ربه أربعين ليلة ... ... ... ... ... | ١٤٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | حتى إذا بلغ أشده وبلغ أربعين سنة قال رب أوزعنى أن أشكر نعمتك التى أنعمت على... ... ... ... | ١٥ | م الأحقاف | ٤٦ |
| رَابِعُهُمْ | : سيقولون ثلاثة رابعهم كلبهم ... ... ... ... | ٢٢ | ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | ما يكون من نجوى ثلاثة إلا هو رابعهم ... ... ... | ٧ | م المجادلة | ٥٨ |
| ✦✦✦ | | | | |
| رَبَتْ | : وترى الأرض هامدة فإذا أنزلنا عليها الماء اهتزت وربت | ٥ | م الحج | ٢٢ |
| (٢) | ومن آياته أنك ترى الأرض خاشعة فإذا أنزلنا عليها الماء اهتزت وربت ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك فصلت | ٤١ |
| يَرْبُوا | : وما آتيتم من ربا ليربوا فى أموال الناس ... ... | ٣٩ | ك الروم | ٣٠ |
| (٢) | فلا يربو عند الله ... ... ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك « | ٣٠ |
| رَبَّيَانِى | : وقل رب ارحمهما كما ربيانى صغيرا ... ... ... | ٢٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| نُرَبِّكَ | : قال ألم نربك فينا وليدا ولبثت فينا من عمرك سنين | ١٨ | ك الشعراء | ٢٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يُرْبِى | : يمحق الله الربا ويربى الصدقات ... ... ... ... | ٢٧٦ | م البقرة | ٢ |
| رَابِيًا | : فسالت أودية بقدرها فاحتمل السيل زبدا رابيا | ١٧ | م الرعد | ١٣ |
| رَابِيَةً | : فعصوا رسول ربهم فأخذهم أخذة رابية ... ... | ١٠ | ك الحاقة | ٦٩ |
| أَرْبَى | : تتخذون أيمانكم دخلا بينكم أن تكون أمة هى أربى من أمة | ٩٢ | ك النحل | ١٦ |
| الرِّبَوا | : الذين يأكلون الربا لا يقومون إلا كما يقوم الذى | | | |
| (٧) | يتخبطه الشيطان من المس ... ... ... ... ... | ٢٧٥ | م البقرة | ٢ |
| | ذلك بأنهم قالوا إنما البيع مثل الربا ... ... ... ... | ٢٧٥ | م « | ٢ |
| | وأحل الله البيع وحرم الربا ... ... ... ... ... ... | ٢٧٥ | م « | ٢ |
| | يمحق الله الربا ويربى الصدقات ... ... ... ... ... | ٢٧٦ | م « | ٢ |
| | اتقوا الله وذروا ما بقى من الربا إن كنتم مؤمنين | ٢٧٨ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تأكلوا الربا أضعافا مضاعفة | ١٣٠ | م آل عمران | ٣ |
| | وأخذهم الربا وقد نهوا عنه وأكلهم أموال الناس بالباطل | ١٦١ | م النساء | ٤ |
| رِبًا | : وما آتيتم من ربا ليربوا فى أموال الناس فلا يربو عند الله | ٣٩ | ك الروم | ٣٠ |
| رَبْوَةٍ | : كمثل جنة بربوة أصابها وابل فآتت أكلها ضعفين | ٢٦٥ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | وجعلنا ابن مريم وأمه آية وآويناهما إلى ربوة ذات قرار ومعين ... ... ... ... ... ... ... | ٥٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| ✦✦✦ | | | | |
| يَرْتَعْ | : أرسله معنا غدا يرتع ويلعب وإنا له لحافظون... ... | ١٢ | ك يوسف | ١٢ |
| ✦✦✦ | | | | |
| رَتْقًا | : أولم ير الذين كفروا أن السموات والأرض كانتا رتقا ففتقناهما ... ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| ✦✦✦ | | | | |
| رَتَّلْنَاهُ | : كذلك لنثبت به فؤادك ورتلناه ترتيلا ... ... | ٣٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| رَتِّلِ | : أو زد عليه ورتل القرآن ترتيلا ... ... ... ... | ٤ | ك المزمل | ٧٣ |
| تَرْتِيلًا | : كذلك لنثبت به فؤادك ورتلناه ترتيلا ... ... | ٣٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| (٢) | أو زد عليه ورتل القرآن ترتيلا ... ... ... ... ... | ٤ | ك المزمل | ٧٣ |
| ✦✦✦ | | | | |
| رُجَّتِ | : إذا رجت الأرض ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك الواقعة | ٥٦ |
| رَجًّا | : رجا . وبست الجبال بسا . فكانت هباء منبثا ... ... | ٤ | ك « | ٥٦ |
| ✦✦✦ | | | | |
| رِجْزِ | : ولما وقع عليهم الرجز قالوا يا موسى ادع لنا ربك بما عهد عندك ... ... ... ... ... ... ... | ١٣٤ | ك الأعراف | ٧ |
| (٦) | لئن كشفت عنا الرجز لنؤمنن لك ... ... ... ... | ١٣٤ | ك « | ٧ |
| | فلما كشفنا عنهم الرجز إلى أجل هم بالغوه إذا هم ينكثون | ١٣٥ | ك « | ٧ |
| | وينزل عليكم من السماء ماء ليطهركم به ويذهب عنكم رجز الشيطان ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | م الأنفال | ٨ |
| | أولئك لهم عذاب من رجز أليم ... ... ... ... ... | ٥ | ك سبأ | ٣٤ |
| | والذين كفروا بآيات ربهم لهم عذاب من رجز أليم | ١١ | ك الجاثية | ٤٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| رِجْزًا: | فأنزلنا على الذين ظلموا رجزا من السماء ... ... | ٥٩ م البقـرة | ٢ |
| (٣) | فأرسلنا عليهـم رجزا من السماء بمـا كانوا يظلمون | ١٦٢ك الأعراف | ٧ |
| | إنا منزلون على أهل هـذه القرية رجزا من السماء | ٣٤ ك العنكبوت | ٢٩ |
| الرُّجْزَ: | وثيابك فطهر . والرجز فاهجر ... ... ... ... | ٥ ك المـدثر | ٧٤ |
| رِجْسٌ: | إنمـا الخمر والميسر والأنصـاب والأزلام رجس | | |
| (٨) | من عمل الشيطان ... ... ... ... ... ... | ٩٠ م المـائدة | ٥ |
| | كذلك يجعل الله الرجس على الذين لا يؤمنون... ... | ١٢٥ك الأنعـام | ٦ |
| | إلا أن يكون ميتة أو دما مسفوحا أو لحم خنزير فإنه رجس | ١٤٥ك « | ٦ |
| | قال قد وقع عليكم من ربكم رجس وغضب ... ... | ٧١ ك الأعراف | ٧ |
| | فأعرضوا عنهم إنهـم رجس ... ... ... ... | ٩٥ م التـوبة | ٩ |
| | ويجعل الرجس على الذين لا يعقلون ... ... ... | ١٠٠ك يـونس | ١٠ |
| | فاجتنبوا الرجس من الأوثان واجتنبوا قول الزور | ٣٠ م الحـج | ٢٢ |
| | إنمـا يريد الله ليذهب عنكم الرجس أهـل البيت | ٣٣ م الأحزاب | ٣٣ |
| رِجْسًا: | وأما الذين فى قلوبهـم مرض فزادتهـم رجسا | ١٢٥م التـوبة | ٩ |
| رِجْسِهِمْ: | إلى رجسهم وماتوا وهم كافرون ... ... ... | ١٢٥م « | ٩ |
| رَجَعَ: | ولمـا رجع موسى إلى قومه غضبان أسفا قال بئسما | | |
| (٢) | خلفتمونى من بعـدى ... ... ... ... ... | ١٥٠ك الأعراف | ٧ |
| | فرجع موسى إلى قومه غضبان أسفا ... ... ... | ٨٦ ك طـه | ٢٠ |
| رَجَعْتُمْ: | فمن لم يجد فصيام ثلاثة أيام فى الحج وسبعة إذا رجعتم | ١٩٦م البقـرة | ٢ |
| (٢) | يعتذرون إليكم إذا رجعتم إليهم ... ... ... ... | ٩٤ م التـوبة | ٩ |
| رَجَعَكَ: | فإن رجعك الله إلى طائفة منهم فاستأذنوك للخروج | | |
| | فقل لن تخرجوا معى أبدا ... ... ... ... ... | ٨٣ م « | ٩ |
| رَجَعْنَا: | يقولون لئن رجعنا إلى المدينة ليخرجن الأعز منها الأذل | ٨ م المنافقون | ٦٣ |
| رَجَعْنَاكَ: | فرجعناك إلى أمك كى تقـر عينها ولا تحزن | ٤٠ ك طـه | ٢٠ |
| رَجَعُوا: | ولينذروا قومهم إذا رجعوا إليهم لعلهم يحذرون | ١٢٢م التـوبة | ٩ |
| (٣) | فلما رجعوا إلى أبيهم قالوا يا أبانا منع منا الكيل... | ٦٣ ك يوسـف | ١٢ |
| | فرجعوا إلى أنفسهم فقالوا إنكم أنتم الظالمون... ... | ٦٤ ك الأنبيـاء | ٢١ |
| أَرْجِعُ: | لعلى أرجع إلى الناس لعلهم يعلمون ... ... ... | ٤٦ ك يوسـف | ١٢ |
| تَرْجِعُونَهَا: | ترجعـونها إن كنتم صادقين ... ... ... ... | ٨٧ ك الواقعـة | ٥٦ |
| تَرْجِعُوهُنَّ: | فإن علمتموهن مؤمنات فلا ترجعوهن إلى الكفار | ١٠ م الممتحنـة | ٦٠ |
| يَرْجِعُ: | أفلا يرون ألا يرجع إليهم قولا ولا يملك لهم ضرا ولا نفعا | ٨٩ ك طـه | ٢٠ |
| (٤) | قالوا لن نبرح عليه عاكفين حتى يرجع إلينا موسى | ٩١ ك « | ٢٠ |
| | وإنى مرسلة إليهم بهدية فناظرة بم يرجع المرسلون | ٣٥ ك النمـل | ٢٧ |
| | ولو ترى إذ الظالمون موقوفون عنـد ربهم يرجع | | |
| | بعضهم إلى بعض القـول ... ... ... ... ... | ٣١ ك سـبأ | ٣٤ |
| يَرْجِعُونَ: | صم بكم عمى فهم لا يرجعون ... ... ... ... | ١٨ م البقـرة | ٢ |
| (١٦) | وأكفروا آخره لعلهم يرجعون ... ... ... ... | ٧٢ م آل عمران | ٣ |
| | وبلوناهم بالحسنات والسيئات لعلهم يرجعون... ... | ١٦٨م الأعراف | ٧ |
| | وكذلك نفصل الآيات ولعلهم يرجعون ... ... ... | ١٧٤ك « | ٧ |
| | لعلهم يعرفونها إذا انقلبوا إلى أهلهم لعلهم يرجعون | ٦٢ ك يوسـف | ١٢ |
| | فجعلهـم جذاذا إلا كبيرا لهم لعلهم إليـه يرجعون | ٥٨ ك الأنبيـاء | ٢١ |
| | وحرام على قرية أهلكناها أنهم لا يرجعون ... ... | ٩٥ ك « | ٢١ |
| | ثم تولّ عنهم فانظر ماذا يرجعون ... ... ... ... | ٢٨ ك النمـل | ٢٧ |
| | ليذيقهم بعض الذى عملوا لعلهم يرجعون ... ... | ٤١ ك الروم | ٣٠ |
| | ولنذيقنهم من العذاب الأدنى دون العذاب الأكبر | | |
| | لعلهم يرجعون... ... ... ... ... ... ... ... | ٢١ ك السـجدة | ٣٢ |
| | ألم يروا كم أهلكنا قبلهم من القرون أنهم إليهم لا يرجعون | ٣١ ك يـس | ٣٦ |
| | فلا يستطيعون توصية ولا إلى أهلهم يرجعون... ... | ٥٠ ك « | ٣٦ |
| | ولو نشاء لمسخناهم على مكانتهم فما استطاعوا مضيا | | |
| | ولا يرجعون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦٧ ك « | ٣٦ |
| | وجعلها كلمة باقية فى عقبـه لعلهم يرجعون ... ... | ٢٨ ك الزخرف | ٤٣ |
| | وأخذناهم بالعذاب لعلهم يرجعون ... ... ... ... | ٤٨ ك « | ٤٣ |
| | ولقد أهلكنا ما حولكم من القرى وصرفنا الآيات | | |
| | لعلهم يرجعون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧ ك الأحقاف | ٤٦ |
| ٱرْجِعْ: | ارجع إلى ربك فسئله ما بال النسوة اللاتى قطعن أيديهن | ٥٠ ك يوسـف | ١٢ |
| (٤) | ارجع إليهم فلنأتينهم بجنود لا قبل لهم بها ... ... | ٣٧ ك النمـل | ٢٧ |
| | فارجع البصر هل ترى من فطور ... ... ... ... | ٣ ك المـلك | ٦٧ |
| | ثم ارجع البصر كرتين ينقلب إليك البصر خاسئا ... | ٤ ك « | ٦٧ |
| فَٱرْجِعْنَا: | ربنا أبصرنا وسمعنا فارجعنا نعمل صالحا إنا موقنون | ١٢ ك السـجدة | ٣٢ |
| ٱرْجِعُوا: | ارجعوا إلى أبيكم فقولوا يا أبانا إن ابنك سرق | ٨١ ك يوسـف | ١٢ |
| (٦) | لا تركضوا وارجعوا إلى ما أترفتم فيه ... ... ... | ١٣ ك الأنبيـاء | ٢١ |
| | وإن قيل لكم ارجعوا ... ... ... ... ... ... | ٢٨ م النـور | ٢٤ |
| | فارجعوا هو أزكى لكم والله بما تعملون عليم ... ... | ٢٨ م « | ٢٤ |
| | وإذ قالت طائفة منهم يأهل يثرب لا مقام لكم فارجعوا | ١٣ م الأحزاب | ٣٣ |
| | قيل ارجعوا وراءكم فالتمسوا نورا ... ... ... ... | ١٣ م الحـديد | ٥٧ |
| ٱرْجِعُونِ: | حتى إذا جاء أحدهم الموت قال رب ارجعون | ٩٩ ك المؤمنون | ٢٣ |
| ٱرْجِعِى: | ارجعى إلى ربك راضية مرضية... ... ... ... | ٢٨ ك الفجـر | ٨٩ |
| رُجِعْتُ: | ولئن رجعت إلى ربى إن لى عنده للحسنى ... | ٥٠ ك فصـلت | ٤١ |
| تُرْجَعُ: | وقضى الأمر وإلى الله ترجع الأمور ... ... ... | ٢١٠م البقـرة | ٢ |
| (٦) | ولله ما فى السموات وما فى الأرض وإلى الله ترجع الأمور | ١٠٩م آل عمران | ٣ |
| | ليقضى الله أمرا كان مفعولا وإلى الله ترجع الأمور | ٤٤ م الأنفـال | ٨ |
| | يعلم ما بين أيديهم وما خلفهم وإلى الله ترجع الأمور | ٧٦ م الحـج | ٢٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تُرْجَعُ: | فقد كذبت رسل من قبلك و إلى الله ترجع الأمور | ٤ | ك فاطر | ٣٥ |
| | له ملك السموات والأرض و إلى الله ترجع الأمور | ٥ | م الحديد | ٥٧ |
| تُرْجَعُونَ: | ثم يميتكم ثم يحييكم ثم إليه ترجعون ... ... ... | ٢٨ | م البقرة | ٢ |
| (١٩) | والله يقبض و يبسط و إليه ترجعون ... ... ... ... | ٢٤٥م | « | ٢ |
| | واتقوا يوما ترجعون فيه إلى الله ... ... ... ... | ٢٨١م | « | ٢ |
| | هو يحيي و يميت و إليه ترجعون ... ... ... ... ... | ٥٦ | ك يونس | ١٠ |
| | إن كان الله يريد أن يغويكم هو ربكم و إليه ترجعون | ٣٤ | ك هود | ١١ |
| | ونبلوكم بالشر والخير فتنة و إلينا ترجعون ... ... ... | ٣٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | أفحسبتم أنما خلقناكم عبثا وأنكم إلينا لا ترجعون | ١١٥ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | له الحمد في الأولى والآخرة وله الحكم و إليه ترجعون | ٧٠ | ك القصص | ٢٨ |
| | كل شيء هالك إلا وجهه له الحكم و إليه ترجعون | ٨٨ | ك « | ٢٨ |
| | فابتغوا عند الله الرزق واعبدوه واشكروا له إليه ترجعون | ١٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | كل نفس ذائقة الموت ثم إلينا ترجعون ... ... | ٥٧ | ك « | ٢٩ |
| | الله يبدؤ الخلق ثم يعيده ثم إليه ترجعون ... ... | ١١ | ك الروم | ٣٠ |
| | قل يتوفاكم ملك الموت الذي وكل بكم ثم إلى ربكم ترجعون | ١١ | ك السجدة | ٣٢ |
| | ومالي لا أعبد الذي فطرني و إليه ترجعون ... ... | ٢٢ | ك يس | ٣٦ |
| | فسبحان الذي بيده ملكوت كل شيء و إليه ترجعون | ٨٣ | ك « | ٣٦ |
| | له ملك السموات والأرض ثم إليه ترجعون ... ... | ٤٤ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وهو خلقكم أول مرة و إليه ترجعون ... ... ... | ٢١ | ك فصلت | ٤١ |
| | وعنده علم الساعة و إليه ترجعون ... ... ... ... | ٨٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | من عمل صالحا فلنفسه ومن أساء فعليها ثم إلى ربكم ترجعون | ١٥ | ك الجاثية | ٤٥ |
| يُرْجَعُ: | ولله غيب السموات والأرض و إليه يرجع الأمر كله | ١٢٣ | ك هود | ١١ |
| يُرْجَعُونَ: | وله أسلم من في السموات والأرض طوعا | | | |
| (٦) | وكرها و إليه يرجعون... ... ... ... ... ... | ٨٣ | م آل عمران | ٣ |
| | والموتى يبعثهم الله ثم إليه يرجعون ... ... ... ... | ٣٦ | ك الأنعام | ٦ |
| | إنا نحن نرث الأرض ومن عليها و إلينا يرجعون | ٤٠ | ك مريم | ١٩ |
| | قد يعلم ما أنتم عليه و يوم يرجعون إليه فينبئهم بما عملوا | ١٤ | م النور | ٢٤ |
| | وظنوا أنهم إلينا لا يرجعون ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك القصص | ٢٨ |
| | فإما نرينك بعض الذي نعدهم أو نتوفينك فإلينا يرجعون | ٧٧ | ك غافر | ٤٠ |
| يَتَرَاجَعَا: | فإن طلقها فلا جناح عليهما أن يتراجعا إن ظنا | | | |
| | أن يقيما حدود الله... ... ... ... ... ... ... | ٢٣٠م | البقرة | ٢ |
| رَجْعٌ: | أئذا متنا وكنا ترابا ذلك رجع بعيد ... ... ... | ٣ | ك ق | ٥٠ |
| (٢) | والسماء ذات الرجع . والأرض ذات الصدع . | | | |
| | إنه لقول فصل... ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك الطارق | ٨٦ |
| رَجْعِهِ: | إنه على رجعه لقادر ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك « | ٨٦ |
| الرُّجْعَى: | إن إلى ربك الرجعى ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك العلق | ٩٦ |
| رَاجِعُونَ: | الذين يظنون أنهم ملاقوا ربهم وأنهم إليه راجعون | ٤٦ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | الذين إذا أصابتهم مصيبة قالوا إنا لله و إنا إليه راجعون | ١٥٦م | « | ٢ |
| رَاجِعُونَ: | وتقطعوا أمرهم بينهم كل إلينا راجعون ... | ٩٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | والذين يؤتون ما آتوا وقلوبهم وجلة أنهم إلى | | | |
| | ربهم راجعون ... ... ... ... ... ... ... | ٦٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| مَرْجِعُكُمْ: | ثم إلي مرجعكم فأحكم بينكم فيما كنتم فيه تختلفون | ٥٥ | م آل عمران | ٣ |
| (١١) | إلى الله مرجعكم جميعا فينبئكم بما كنتم فيه تختلفون | ٤٨ | م المائدة | ٥ |
| | إلى الله مرجعكم جميعا فينبئكم بما كنتم تعملون | ١٠٥م | « | ٥ |
| | ثم إليه مرجعكم ثم ينبئكم بما كنتم تعملون ... ... | ٦٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | ثم إلى ربكم مرجعكم فينبئكم بما كنتم فيه تختلفون | ١٦٤ك | « | ٦ |
| | إليه مرجعكم جميعا وعد الله حقا إنه يبدؤ الخلق ثم يعيده | ٤ | ك يونس | ١٠ |
| | ثم إلينا مرجعكم فنبئكم بما كنتم تعملون ... ... | ٢٣ | ك « | ١٠ |
| | إلى الله مرجعكم وهو على كل شيء قدير ... ... | ٤ | ك هود | ١١ |
| | إلي مرجعكم فأنبئكم بما كنتم تعملون ... ... ... | ٨ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | ثم إلي مرجعكم فأنبئكم بما كنتم تعملون... ... ... | ١٥ | ك لقمان | ٣١ |
| | ثم إلى ربكم مرجعكم فينبئكم بما كنتم تعملون... ... | ٧ | ك الزمر | ٣٩ |
| مَرْجِعُهُمْ: | ثم إلى ربهم مرجعهم فينبئهم بما كانوا يعملون | ١٠٨ك | الأنعام | ٦ |
| (٥) | وإما نرينك بعض الذي نعدهم أو نتوفينك فإلينا مرجعهم | ٤٦ | ك يونس | ١٠ |
| | متاع في الدنيا ثم إلينا مرجعهم ثم نذيقهم العذاب الشديد | ٧٠ | ك « | ١٠ |
| | ومن كفر فلا يحزنك كفره إلينا مرجعهم فننبئهم بما عملوا | ٢٣ | ك لقمان | ٣١ |
| | ثم إن مرجعهم لإلى الجحيم ... ... ... ... ... | ٦٨ | ك الصافات | ٣٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تَرْجُفُ: | يوم ترجف الأرض والجبال وكانت الجبال كثيبا مهيلا | ١٤ | ك المزمل | ٧٣ |
| (٢) | يوم ترجف الراجفة . تتبعها الرادفة . قلوب يومئذ واجفة | ٦ | ك النازعات | ٧٩ |
| الرَّجْفَةُ: | فأخذتهم الرجفة فأصبحوا في دارهم جاثمين . | ٧٨ | ك الأعراف | ٧ |
| (٤) | فأخذتهم الرجفة فأصبحوا في دارهم جاثمين . | ٩١ | ك « | ٧ |
| | فلما أخذتهم الرجفة قال رب لو شئت أهلكتهم | | | |
| | من قبل وإياي ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٥ك | « | ٧ |
| | فكذبوه فأخذتهم الرجفة فأصبحوا في دارهم جاثمين | ٣٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| الرَّاجِفَةُ: | يوم ترجف الراجفة . تتبعها الرادفة ... ... | ٦ | ك النازعات | ٧٩ |
| الْمُرْجِفُونَ: | لئن لم ينته المنافقون والذين في قلوبهم مرض | | | |
| | والمرجفون في المدينة لنغرينك بهم ... ... ... | ٦٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ✦✦✦ | | | |
| رَجُلٌ: | فإن لم يكونا رجلين فرجل وامرأتان ممن ترضون من الشهداء | ٢٨٢م | البقرة | ٢ |
| (١٦) | وإن كان رجل يورث كلالة أو امرأة وله أخ أو أخت | | | |
| | فلكل واحد منهما السدس ... ... ... ... ... | ١٢ | م النساء | ٤ |
| | أو عجبتم أن جاءكم ذكر من ربكم على رجل منكم لينذركم ولتتقوا | ٦٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | أو عجبتم أن جاءكم ذكر من ربكم على رجل منكم لينذركم | ٦٩ | ك « | ٧ |
| | أكان للناس عجبا أن أوحينا إلى رجل منهم أن أنذر الناس | ٢ | ك يونس | ١٠ |
| | فاتقوا الله ولا تخزون في ضيفي أليس منكم رجل رشيد | ٧٨ | ك هود | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَجُلٍ | : إن هو إلا رجل به جنة فتربصوا به حتى حين ... | ٢٥ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | إن هو إلا رجل افترى على الله كذبا وما نحن له بمؤمنين | ٣٨ | ك « | ٢٣ |
| | وجاء رجل من أقصا المدينة يسعى قال يا موسى إن الملأ يأتمرون بك ليقتلوك ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك القصص | ٢٨ |
| | ما جعل الله لرجل من قلبين فى جوفه ... ... ... | ٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | هل ندلكم على رجل ينبئكم إذا مزقتم كل ممزق... ... | ٧ | ك سبأ | ٣٤ |
| | ماهذا إلا رجل يريد أن يصدكم عما كان يعبد آباؤكم | ٤٣ | ك « | ٣٤ |
| | وجاء من أقصا المدينة رجل يسعى قال يا قوم اتبعوا المرسلين | ٢٠ | ك يس | ٣٦ |
| | ضرب الله مثلا رجلا فيه شركاء متشاكسون ورجلا سلما لرجل هل يستويان مثلا ... ... ... ... | ٢٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وقال رجل مؤمن من آل فرعون يكتم إيمانه أتقتلون رجلا أن يقول ربى الله ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك غافر | ٤٠ |
| | وقالوا لولا نزل هذا القرآن على رجل من القريتين عظيم | ٣١ | ك الزخرف | ٤٣ |
| رَجُلًا | : ولو جعلناه ملكا لجعلناه رجلا ولبسنا عليهم ما يلبسون | ٩ | ك الأنعام | ٦ |
| (٨) | واختار موسى قومه سبعين رجلا لميقاتنا ... ... ... | ١٥٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | إذ يقول الظالمون إن تتبعون إلا رجلا مسحورا... ... | ٤٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| | أكفرت بالذى خلقك من تراب ثم من نطفة ثم سواك رجلا | ٣٧ | ك الكهف | ١٨ |
| | وقال الظالمون إن تتبعون إلا رجلا مسحورا ... ... | ٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ضرب الله مثلا رجلا فيه شركاء متشاكسون ... ... | ٢٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ورجلا سلما لرجل هل يستويان مثلا ... ... ... | ٢٩ | ك « | ٣٩ |
| | أتقتلون رجلا أن يقول ربى الله وقد جاءكم بالبينات | ٢٨ | ك غافر | ٤٠ |
| رَجُلَانِ | : قال رجلان من الذين يخافون أنعم الله عليهما ادخلوا عليهم الباب ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | م المائدة | ٥ |
| رَجُلَيْنِ | : فإن لم يكونا رجلين فرجل وامرأتان ... ... ... | ٢٨٢ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | وضرب الله مثلا رجلين أحدهما أبكم لا يقدر على شىء | ٧٦ | ك النحل | ١٦ |
| | واضرب لهم مثلا رجلين جعلنا لأحدهما جنتين من أعناب | ٣٢ | ك الكهف | ١٨ |
| | فوجد فيها رجلين يقتتلان هذا من شيعته وهذا من عدوه | ١٥ | ك القصص | ٢٨ |
| الرِّجَالُ | : ولهن مثل الذى عليهن بالمعروف وللرجال عليهن درجة | ٢٢٨ | م البقرة | ٢ |
| (١٧) | للرجال نصيب مما ترك الوالدان والأقربون ... ... | ٧ | م النساء | ٤ |
| | للرجال نصيب مما اكتسبوا وللنساء نصيب مما اكتسبن | ٣٢ | م « | ٤ |
| | الرجال قوامون على النساء بما فضل الله بعضهم على بعض | ٣٤ | م « | ٤ |
| | وما لكم لا تقاتلون فى سبيل الله والمستضعفين من الرجال إلا المستضعفين من الرجال والنساء والولدان لا يستطيعون حيلة ... ... ... ... ... ... | ٩٨ | م « | ٤ |
| | وعلى الأعراف رجال يعرفون كلا بسيماهم ... ... | ٤٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | إنكم لتأتون الرجال شهوة من دون النساء بل أنتم قوم مسرفون ... ... ... ... ... ... ... | ٨١ | ك « | ٧ |
| | فيه رجال يحبون أن يتطهروا والله يحب المطهرين... | ١٠٨ | م التوبة | ٩ |
| | أو التابعين غير أولى الإربة من الرجال ... ... ... | ٣١ | م النور | ٢٤ |
| الرِّجَالُ | : رجال لا تلهيهم تجارة ولا بيع عن ذكر الله ... | ٣٧ | م النور | ٢٤ |
| | أئنكم لتأتون الرجال شهوة من دون النساء ... ... | ٥٥ | ك النمل | ٢٧ |
| | أئنكم لتأتون الرجال وتقطعون السبيل ... ... ... | ٢٩ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | من المؤمنين رجال صدقوا ما عاهدوا الله عليه... ... | ٢٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ولولا رجال مؤمنون ونساء مؤمنات لم تعلموهم أن تطئوهم | ٢٥ | م الفتح | ٤٨ |
| | وأنه كان رجال من الإنس ... ... ... ... ... | ٦ | ك الجن | ٧٢ |
| | يعوذون برجال من الجن فزادوهم رهقا ... ... ... | ٦ | ك « | ٧٢ |
| رِجَالًا | : فإن خفتم فرجالا أو ركبانا ... ... ... ... ... | ٢٣٩ | م البقرة | ٢ |
| (٩) | وخلق منها زوجها وبث منهما رجالا كثيرا ونساء | ١ | م النساء | ٤ |
| | وإن كانوا إخوة رجالا ونساء فللذكر مثل حظ الأنثيين | ١٧٦ | م « | ٤ |
| | ونادى أصحاب الأعراف رجالا يعرفونهم بسيماهم | ٤٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | وما أرسلنا من قبلك إلا رجالا نوحى إليهم من أهل القرى | ١٠٩ | ك يوسف | ١٢ |
| | وما أرسلنا من قبلك إلا رجالا نوحى إليهم فسئلوا أهل الذكر | ٤٣ | ك النحل | ١٦ |
| | وما أرسلنا قبلك إلا رجالا نوحى إليهم فسئلوا أهل الذكر | ٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وأذن فى الناس بالحج يأتوك رجالا وعلى كل ضامر | ٢٧ | م الحج | ٢٢ |
| | وقالوا ما لنا لا نرى رجالا كنا نعدهم من الأشرار | ٦٢ | ك ص | ٣٨ |
| رِجَالِكُمْ | : واستشهدوا شهيدين من رجالكم... ... ... ... | ٢٨٢ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | ما كان محمد أبا أحد من رجالكم ولكن رسول الله | ٤٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| بِرِجْلِكَ | : اركض برجلك هذا مغتسل بارد وشراب... ... | ٤٢ | ك ص | ٣٨ |
| رِجْلَيْنِ | : ومنهم من يمشى على رجلين ومنهم من يمشى على أربع | ٤٥ | م النور | ٢٤ |
| أَرْجُلٌ | : ألهم أرجل يمشون بها ... ... ... ... ... | ١٩٥ | ك الأعراف | ٧ |
| أَرْجُلِكُمْ | : وامسحوا برؤسكم وأرجلكم إلى الكعبين ... ... | ٦ | م المائدة | ٥ |
| (٥) | قل هو القادر على أن يبعث عليكم عذابا من فوقكم أو من تحت أرجلكم ... ... ... ... ... | ٦٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | لأقطعن أيديكم وأرجلكم من خلاف ثم لأصلبنكم أجمعين | ١٢٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | فلأقطعن أيديكم وأرجلكم من خلاف ولأصلبنكم فى جذوع النخل ... ... ... ... ... ... | ٧١ | ك طه | ٢٠ |
| | لأقطعن أيديكم وأرجلكم من خلاف ولأصلبنكم أجمعين | ٤٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| أَرْجُلِهِمْ | : أو تقطع أيديهم وأرجلهم من خلاف ... ... | ٣٣ | م المائدة | ٥ |
| (٥) | لأكلوا من فوقهم ومن تحت أرجلهم ... ... ... | ٦٦ | م « | ٥ |
| | يوم تشهد عليهم ألسنتهم وأيديهم وأرجلهم بما كانوا يعملون | ٢٤ | م النور | ٢٤ |
| | يوم يغشاهم العذاب من فوقهم ومن تحت أرجلهم | ٥٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | اليوم نختم على أفواههم وتكلمنا أيديهم وتشهد أرجلهم بما كانوا يكسبون ... ... ... ... ... | ٦٥ | ك يس | ٣٦ |
| أَرْجُلِهِنَّ | : ولا يضربن بأرجلهن ليعلم ما يخفين من زينتهن | ٣١ | م النور | ٢٤ |
| (٢) | ولا يأتين ببهتان يفترينه بين أيديهن وأرجلهن | ١٢ | م الممتحنة | ٦٠ |
| رِجْلِكَ | : واجلب عليهم بخيلك ورجلك ... ... ... ... | ٦٤ | ك الإسراء | ١٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| لَرَجَمْنَاكَ | : ولولا رهطك لرجمناك وما أنت علينا بعزيز | ٩١ | ك هـود | ١١ |
| لَأَرْجُمَنَّكَ | : لئن لم تنته لأرجمنك واهجرني مليا... ... ... | ٤٦ | ك مريم | ١٩ |
| تَرْجُمُونِ | : وإني عذت بربي وربكم أن ترجمون ... ... | ٢٠ | ك الدخان | ٤٤ |
| لَنَرْجُمَنَّكُمْ | : لئن لم تنتهوا لنرجمنكم وليمسنكم منا عذاب أليم | ١٨ | ك يس | ٣٦ |
| يَرْجُمُوكُمْ | : إنهم إن يظهروا عليكم يرجموكم أو يعيدوكم في ملتهم | ٢٠ | ك الكهف | ١٨ |
| رَجْمًا | : ويقولون خمسة سادسهم كلبهم رجما بالغيب ... | ٢٢ | ك « | ١٨ |
| رُجُومًا | : وجعلناها رجوما للشياطين ... ... ... ... ... | ٥ | ك الملك | ٦٧ |
| رَجِيمٍ | : وإني أعيذها بك وذريتها من الشيطان الرجيم | ٣٦ | م آل عمران | ٣ |
| (٦) | وحفظناها من كل شيطان رجيم... ... ... ... ... | ١٧ | ك الحجر | ١٥ |
| | قال فاخرج منها فإنك رجيم... ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك « | ١٥ |
| | فإذا قرأت القرآن فاستعذ بالله من الشيطان الرجيم | ٩٨ | ك النحل | ١٦ |
| | قال فاخرج منها فإنك رجيم... ... ... ... ... ... | ٧٧ | ك ص | ٣٨ |
| | وما هو بقول شيطان رجيم... ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك التكوير | ٨١ |
| الْمَرْجُومِينَ | : قالوا لئن لم تنته يانوح لتكونن من المرجومين | ١١٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تَرْجُوا | : وما كنت ترجو أن يلقى إليك الكتاب إلا رحمة من ربك | ٨٦ | ك القصص | ٢٨ |
| تَرْجُونَ | : فإنهم يألمون كما تألمون وترجون من الله ما لا يرجون | ١٠٤ | م النساء | ٤ |
| (٢) | مالكم لا ترجون لله وقارا ... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك نوح | ٧١ |
| تَرْجُوهَا | : وإما تعرضن عنهم ابتغاء رحمة من ربك ترجوها | | | |
| | فقل لهم قولا ميسورا ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| يَرْجُوا | : فمن كان يرجو لقاء ربه فليعمل عملا صالحا ... | ١١٠ | ك الكهف | ١٨ |
| (٥) | من كان يرجو لقاء الله فإن أجل الله لآت... ... | ٥ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | لقد كان لكم في رسول الله أسوة حسنة لمن كان | | | |
| | يرجو الله واليوم الآخر ... ... ... ... ... ... | ٢١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | يحذر الآخرة ويرجو رحمة ربه ... ... ... ... ... | ٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| | لقد كان لكم فيهم أسوة حسنة لمن كان يرجو الله واليوم الآخر | ٦ | م الممتحنة | ٦٠ |
| يَرْجُونَ | : أولئك يرجون رحمة الله ... ... ... ... ... | ٢١٨ | م البقرة | ٢ |
| (١٢) | فإنهم يألمون كما تألمون وترجون من الله ما لا يرجون | ١٠٤ | م النساء | ٤ |
| | إن الذين لا يرجون لقاءنا ورضوا بالحياة الدنيا | ٧ | ك يونس | ١٠ |
| | فنذر الذين لا يرجون لقاءنا في طغيانهم يعمهون ... | ١١ | ك « | ١٠ |
| | قال الذين لا يرجون لقاءنا ائت بقرآن غير هذا أو بدله | ١٥ | ك « | ١٠ |
| | يبتغون إلى ربهم الوسيلة أيهم أقرب ويرجون رحمته | ٥٧ | م الإسراء | ١٧ |
| | والقواعد من النساء اللاتي لا يرجون نكاحا ... ... | ٦٠ | م النور | ٢٤ |
| | وقال الذين لا يرجون لقاءنا لولا أنزل علينا الملائكة | ٢١ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | أفلم يكونوا يرونها بل كانوا لا يرجون نشورا ... ... | ٤٠ | ك « | ٢٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَرْجُونَ | : وأنفقوا مما رزقناهم سرا وعلانية يرجون تجارة | | | |
| | لن تبور ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك فاطر | ٣٥ |
| | قل للذين آمنوا يغفروا للذين لا يرجون أيام الله ... | ١٤ | م الجاثية | ٤٥ |
| | إنهم كانوا لا يرجون حسابا ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك النبأ | ٧٨ |
| أَرْجُوا | : فقال يا قوم اعبدوا الله وارجوا اليوم الآخر | ٣٦ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| تُرْجِي | : ترجي من تشاء منهن وتؤوي إليك من تشاء ... ... | ٥١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| أَرْجِهْ | : قالوا أرجه وأخاه وأرسل في المدائن حاشرين ... | ١١١ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | قالوا أرجه وأخاه وابعث في المدائن حاشرين... ... | ٣٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| مَرْجُوًّا | : قالوا يا صالح قد كنت فينا مرجوا قبل هذا ... | ٦٢ | ك هـود | ١١ |
| مُرْجَوْنَ | : وآخرون مرجون لأمر الله ... ... ... ... | ١٠٦ | م التوبة | ٩ |
| أَرْجَائِهَا | : والملك على أرجائها... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| رَحُبَتْ | : وضاقت عليكم الأرض بما رحبت ثم وليتم مدبرين | ٢٥ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | حتى إذا ضاقت عليهم الأرض بما رحبت وضاقت | | | |
| | عليهم أنفسهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ١١٨ | م « | ٩ |
| مَرْحَبًا | : هذا فوج مقتحم معكم لا مرحبا بهم إنهم صالوا النار | ٥٩ | ك ص | ٣٨ |
| (٢) | قالوا بل أنتم لا مرحبا بكم أنتم قدمتموه لنا فبئس القرار | ٦٠ | ك « | ٣٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| رَحِيقٍ | : يسقون من رحيق مختوم ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك المطففين | ٨٣ |
| | ✦✦✦ | | | |
| رَحْلِ | : فلما جهزهم بجهازهم جعل السقاية في رحل أخيه | ٧٠ | ك يوسف | ١٢ |
| رَحْلِهِ | : قالوا جزاؤه من وجد في رحله فهو جزاؤه ... ... | ٧٥ | ك « | ١٢ |
| رِحَالِهِمْ | : وقال لفتيانه اجعلوا بضاعتهم في رحالهم ... ... | ٦٢ | ك « | ١٢ |
| رِحْلَةَ | : لإيلاف قريش . إيلافهم رحلة الشتاء والصيف | ٢ | ك قريش | ١٠٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| رَحِمَ | : قال لا عاصم اليوم من أمر الله إلا من رحم ... ... | ٤٣ | ك هـود | ١١ |
| (٤) | ولا يزالون مختلفين . إلا من رحم ربك ولذلك خلقهم | ١١٩ | ك « | ١١ |
| | إن النفس لأمارة بالسوء إلا ما رحم ربي ... ... | ٥٣ | ك يوسف | ١٢ |
| | إلا من رحم الله إنه هو العزيز الرحيم ... ... ... | ٤٢ | ك الدخان | ٤٤ |
| رَحِمَهُ | : وقهم السيئات ومن تق السيئات يومئذ فقد رحمته | ٩ | ك غافر | ٤٠ |
| رَحِمَنَا | : قل أرأيتم إن أهلكني الله ومن معي أو رحمنا | | | |
| | فمن يجير الكافرين من عذاب أليم ... ... ... | ٢٨ | ك الملك | ٦٧ |
| رَحِمْنَاهُمْ | : ولو رحمناهم وكشفنا ما بهم من ضر لجوا في طغيانهم | ٧٥ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| رَحِمَهُ | : من يصرف عنه يومئذ فقد رحمه وذلك الفوز المبين | ١٦ | ك الأنعام | ٦ |
| تَرْحَمْنَا | : وإن لم تغفر لنا وترحمنا لنكونن من الخاسرين ... | ٢٣ | ك الأعراف | ٧ |
| تَرْحَمْنِي | : وإلا تغفر لي وترحمني أكن من الخاسرين ... ... | ٤٧ | ك هـود | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يُرْحَمُ | : يعذب من يشاء و يرحم من يشاء و إليه تقلبون... ... | ٢١ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| يَرْحَمَكُمْ | : عسى ربكم أن يرحمكم و إن عدتم عدنا ... ... | ٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٢) | ربكم أعلم بكم إن يشأ يرحمكم أو إن يشأ يعذبكم | ٥٤ | ك « | ١٧ |
| يَرْحَمْنَا | : قالوا لئن لم يرحمنا ربنا و يغفرلنا لنكونن من الخاسرين | ١٤٩ | ك الأعراف | ٧ |
| سَيَرْحَمُهُمُ | : أولئك سيرحمهم الله إن الله عزيز حكيم | ٧١ | م التوبة | ٩ |
| ارْحَمْ | : وقل رب اغفر وارحم وأنت خير الراحمين ... ... | ١١٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| ارْحَمْنَا | : واعف عنا واغفرلنا وارحمنا ... ... ... | ٢٨٦ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | أنت ولينا فاغفر لنا وارحمنا وأنت خير الغافرين ... | ١٥٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | يقولون ربنا آمنا فاغفرلنا وارحمنا وأنت خير الراحمين | ١٠٩ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| ارْحَمْهُمَا | : وقل رب ارحمهما كما ربياني صغيرا ... ... ... | ٢٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| تُرْحَمُونَ | : وأطيعوا الله والرسول لعلكم ترحمون ... ... ... | ١٣٢ | م آل عمران | ٣ |
| (٨) | وهذا كتاب أنزلناه مبارك فاتبعوه واتقوا لعلكم ترحمون | ١٥٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | أو عجبتم أن جاءكم ذكر من ربكم على رجل منكم لينذركم ولتتقوا ولعلكم ترحمون ... ... ... | ٦٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | و إذا قرئ القرآن فاستمعوا له وأنصتوا لعلكم ترحمون | ٢٠٤ | ك « | ٧ |
| | وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة وأطيعوا الرسول لعلكم ترحمون ... ... ... ... ... ... | ٥٦ | م النور | ٢٤ |
| | لولا تستغفرون الله لعلكم ترحمون ... ... ... | ٤٦ | ك النمل | ٢٧ |
| | و إذا قيل لهم اتقوا ما بين أيديكم وما خلفكم لعلكم ترحمون | ٤٥ | م يس | ٣٦ |
| | فأصلحوا بين أخويكم واتقوا الله لعلكم ترحمون ... | ١٠ | م الحجرات | ٤٩ |
| رَحْمَةٌ | : أولئك عليهم صلوات من ربهم ورحمة ... ... ... | ١٥٧ | م البقرة | ٢ |
| (٧٩) | ذلك تخفيف من ربكم ورحمة ... ... ... ... | ١٧٨ | م « | ٢ |
| | أولئك يرجون رحمة الله والله غفور رحيم ... ... | ٢١٨ | م « | ٢ |
| | ربنا لا تزغ قلوبنا بعد إذ هديتنا وهب لنا من لدنك رحمة | ٨ | م آل عمران | ٣ |
| | وأما الذين ابيضت وجوههم ففي رحمة الله ... ... | ١٠٧ | م « | ٣ |
| | لمغفرة من الله ورحمة خير مما يجمعون ... ... ... | ١٥٧ | م « | ٣ |
| | فبما رحمة من الله لنت لهم ... ... ... ... ... | ١٥٩ | م « | ٣ |
| | درجات منه ومغفرة ورحمة وكان الله غفورا رحيما | ٩٦ | م النساء | ٤ |
| | فأما الذين آمنوا بالله واعتصموا به فسيدخلهم في رحمة منه | ١٧٥ | م « | ٤ |
| | كتب على نفسه الرحمة ليجمعنكم إلى يوم القيامة لا ريب فيه | ١٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | فقل سلام عليكم كتب ربكم على نفسه الرحمة ... ... | ٥٤ | ك « | ٦ |
| | وربك الغني ذو الرحمة ... ... ... ... ... ... | ١٣٣ | ك « | ٦ |
| | فإن كذبوك فقل ربكم ذو رحمة واسعة ... ... ... | ١٤٧ | ك « | ٦ |
| | وهدى ورحمة لعلهم بلقاء ربهم يؤمنون ... ... ... | ١٥٤ | ك « | ٦ |
| | فقد جاءكم بينة من ربكم وهدى ورحمة ... ... ... | ١٥٧ | ك « | ٦ |
| | أهؤلاء الذين أقسمتم لا ينالهم الله برحمة ... ... ... | ٤٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولقد جئناهم بكتاب فصلناه على علم هدى ورحمة لقوم يؤمنون ... ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك « | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَحْمَةٌ | : إن رحمة الله قريب من المحسنين ... ... ... ... | ٥٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | فأنجيناه والذين معه برحمة منا ... ... ... ... | ٧٢ | ك « | ٧ |
| | وفي نسختها هدى ورحمة للذين هم لربهم يرهبون | ١٥٤ | ك « | ٧ |
| | هذا بصائر من ربكم وهدى ورحمة لقوم يؤمنون | ٢٠٣ | ك « | ٧ |
| | يبشرهم ربهم برحمة منه ورضوان وجنات لهم فيها نعيم مقيم | ٢١ | م التوبة | ٩ |
| | يؤمن بالله و يؤمن للمؤمنين ورحمة للذين آمنوا منكم ... | ٦١ | م « | ٩ |
| | و إذا أذقنا الناس رحمة من بعد ضراء مستهم إذا لهم مكر في آياتنا ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك يونس | ١٠ |
| | وشفاء لما في الصدور وهدى ورحمة للمؤمنين... ... | ٥٧ | ك « | ١٠ |
| | ولئن أذقنا الإنسان منا رحمة ثم نزعناها منه إنه ليؤس كفور | ٩ | ك هود | ١١ |
| | ومن قبله كتاب موسى إماما ورحمة ... ... ... ... | ١٧ | م « | ١١ |
| | قال يا قوم أرأيتم إن كنت على بينة من ربي وآتاني رحمة من عنده... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ١١ |
| | ولما جاء أمرنا نجينا هودا والذين آمنوا معه برحمة منا | ٥٨ | ك « | ١١ |
| | قال يا قوم أرأيتم إن كنت على بينة من ربي وآتاني منه رحمة | ٦٣ | ك « | ١١ |
| | فلما جاء أمرنا نجينا صالحا والذين آمنوا معه برحمة منا | ٦٦ | ك « | ١١ |
| | رحمة الله و بركاته عليكم أهل البيت إنه حميد مجيد | ٧٣ | ك « | ١١ |
| | ولما جاء أمرنا نجينا شعيبا والذين آمنوا معه برحمة منا | ٩٤ | ك « | ١١ |
| | ولكن تصديق الذي بين يديه وتفصيل كل شيء وهدى ورحمة لقوم يؤمنون ... ... ... ... | ١١١ | ك يوسف | ١٢ |
| | قال ومن يقنط من رحمة ربه إلا الضالون ... ... | ٥٦ | ك الحجر | ١٥ |
| | إلا لتبين لهم الذي اختلفوا فيه وهدى ورحمة لقوم يؤمنون | ٦٤ | ك النحل | ١٦ |
| | ونزلنا عليك الكتاب تبيانا لكل شيء وهدى ورحمة وبشرى للمسلمين ... ... ... ... ... ... | ٨٩ | ك « | ١٦ |
| | واخفض لهما جناح الذل من الرحمة... ... ... ... | ٢٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| | و إما تعرضن عنهم ابتغاء رحمة من ربك ترجوها فقل لهم قولا ميسورا ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ١٧ |
| | وننزل من القرآن ما هو شفاء ورحمة للمؤمنين ... ... | ٨٢ | ك « | ١٧ |
| | إلا رحمة من ربك إن فضله كان عليك كبيرا... ... | ٨٧ | ك « | ١٧ |
| | قل لو أنتم تملكون خزائن رحمة ربي إذا لأمسكتم خشية الإنفاق... ... ... ... ... ... | ١٠٠ | ك « | ١٧ |
| | ربنا آتنا من لدنك رحمة وهيئ لنا من أمرنا رشدا | ١٠ | ك الكهف | ١٨ |
| | وربك الغفور ذو الرحمة ... ... ... ... ... ... | ٥٨ | ك « | ١٨ |
| | فوجدا عبدا من عبادنا آتيناه رحمة من عندنا... ... | ٦٥ | ك « | ١٨ |
| | فأراد ربك أن يبلغا أشدهما ويستخرجا كنزهما رحمة من ربك ... ... ... ... ... ... | ٨٢ | ك « | ١٨ |
| | قال هذا رحمة من ربي فإذا جاء وعد ربي جعله دكاء | ٩٨ | م « | ١٨ |
| | ذكر رحمة ربك عبده زكريا... ... ... ... ... | ٢ | ك مريم | ١٩ |
| | ولنجعله آية للناس ورحمة منا وكان أمرا مقضيا | ٢١ | ك « | ١٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَحْمَةً | : وآتيناه أهله ومثلهم معهم رحمة من عندنا وذكرى للعابدين | ٨٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ... ما أرسلناك إلا رحمة للعالمين ... ... ... ... ... | ١٠٧ | ك « | ٢١ |
| | وإنه لهدى ورحمة للمؤمنين ... ... ... ... ... ... | ٧٧ | ك النمل | ٢٧ |
| | بصائر للناس وهدى ورحمة لعلهم يتذكرون ... ... | ٤٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | وما كنت بجانب الطور إذ نادينا ولكن رحمة من ربك | ٤٦ | ك « | ٢٨ |
| | وما كنت ترجو أن يلقى إليك الكتاب إلا رحمة من ربك | ٨٦ | ك « | ٢٨ |
| | إن فى ذلك لرحمة وذكرى لقوم يؤمنون ... ... | ٥١ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ومن آياته أن خلق لكم من أنفسكم أزواجا لتسكنوا إليها وجعل بينكم مودّة ورحمة ... ... ... ... | ٢١ | ك الروم | ٣٠ |
| | ثم إذا أذاقهم منه رحمة إذا فريق منهم بربهم يشركون | ٣٣ | ك « | ٣٠ |
| | وإذا أذقنا الناس رحمة فرحوا بها... ... ... ... | ٣٦ | ك « | ٣٠ |
| | فانظر إلى آثار رحمة الله كيف يحيى الأرض بعد موتها | ٥٠ | ك « | ٣٠ |
| | تلك آيات الكتاب الحكيم . هدى ورحمة للمحسنين | ٣ | ك لقمان | ٣١ |
| | قل من ذا الذى يعصمكم من الله إن أراد بكم سوءا أو أراد بكم رحمة... ... ... ... ... ... | ١٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ما يفتح الله للناس من رحمة فلا ممسك لها ... ... | ٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| | إلا رحمة منا ومتاعا إلى حين ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك يس | ٣٦ |
| | أم عندهم خزائن رحمة ربك العزيز الوهاب ... ... | ٩ | ك ص | ٣٨ |
| | ووهبنا له أهله ومثلهم معهم رحمة منا ... ... ... | ٤٣ | ك « | ٣٨ |
| | يحذر الآخرة ويرجو رحمة ربه ... ... ... ... ... | ٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| | أو أرادنى برحمة هل هن ممسكات رحمته... ... ... | ٣٨ | ك « | ٣٩ |
| | قل يا عبادى الذين أسرفوا على أنفسهم لا تقنطوا من رحمة الله ... ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | م « | ٣٩ |
| | ربنا وسعت كل شىء رحمة وعلما... ... ... ... ... | ٧ | ك غافر | ٤٠ |
| | ولئن أذقناه رحمة منا من بعد ضراء مسته ليقولن هذا لى | ٥٠ | ك فصلت | ٤١ |
| | وإنا إذا أذقنا الإنسان منا رحمة فرح بها ... ... | ٤٨ | ك الشورى | ٤٢ |
| | أهم يقسمون رحمة ربك ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ورحمة ربك خير مما يجمعون... ... ... ... ... | ٣٢ | ك « | ٤٣ |
| | رحمة من ربك إنه هو السميع العليم ... ... ... ... | ٦ | ك الدخان | ٤٤ |
| | هذا بصائر للناس وهدى ورحمة لقوم يوقنون | ٢٠ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | ومن قبله كتاب موسى إماما ورحمة ... ... ... ... | ١٢ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | باطنه فيه الرحمة وظاهره من قبله العذاب ... ... | ١٣ | م الحديد | ٥٧ |
| | وجعلنا فى قلوب الذين اتبعوه رأفة ورحمة ... ... | ٢٧ | م « | ٥٧ |
| رَحْمَتِكَ | : قال رب اغفر لى ولأخى وأدخلنا فى رحمتك | ١٥١ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | ونجنا برحمتك من القوم الكافرين ... ... ... ... | ٨٦ | ك يونس | ١٠ |
| | وأدخلنى برحمتك فى عبادك الصالحين ... ... ... | ١٩ | ك النمل | ٢٧ |
| رَحْمَتِنَا | : نصيب برحمتنا من نشاء ولا نضيع أجر المحسنين | ٥٦ | ك يوسف | ١٢ |
| (٥) | ووهبنا لهم من رحمتنا وجعلنا لهم لسان صدق عليا | ٥٠ | ك مريم | ١٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَحْمَتِنَا | : ووهبنا له من رحمتنا أخاه هرون نبيا ... ... | ٥٣ | ك مريم | ١٩ |
| | وأدخلناه فى رحمتنا إنه من الصالحين ... ... ... ... | ٧٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وأدخلناهم فى رحمتنا إنهم من الصالحين ... ... | ٨٦ | ك « | ٢١ |
| رَحْمَتِهِ | : فلولا فضل الله عليكم ورحمته لكنتم من الخاسرين | ٦٤ | م البقرة | ٢ |
| (٢٥) | والله يختص برحمته من يشاء والله ذو الفضل العظيم | ١٠٥ | م « | ٢ |
| | يختص برحمته من يشاء والله ذو الفضل العظيم | ٧٤ | م آل عمران | ٣ |
| | ولولا فضل الله عليكم ورحمته لأتبعتم الشيطان إلا قليلا | ٨٣ | م النساء | ٤ |
| | ولولا فضل الله عليك ورحمته لهمت طائفة منهم أن يضلوك | ١١٣ | م « | ٤ |
| | وهو الذى يرسل الرياح بشرا بين يدى رحمته | ٥٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | سيدخلهم الله فى رحمته إن الله غفور رحيم ... ... | ٩٩ | م التوبة | ٩ |
| | قل بفضل الله وبرحمته فبذلك فليفرحوا ... ... ... | ٥٨ | ك يونس | ١٠ |
| | يبتغون إلى ربهم الوسيلة أيهم أقرب ويرجون رحمته | ٥٧ | م الإسراء | ١٧ |
| | فأووا إلى الكهف ينشر لكم ربكم من رحمته ... ... | ١٦ | ك الكهف | ١٨ |
| | ولولا فضل الله عليكم ورحمته وأن الله تواب حكيم | ١٠ | م النور | ٢٤ |
| | ولولا فضل الله عليكم ورحمته فى الدنيا والآخرة لمسكم فى ما أفضتم فيه عذاب عظيم ... ... ... ... | ١٤ | م « | ٢٤ |
| | ولولا فضل الله عليكم ورحمته وأن الله رءوف رحيم | ٢٠ | م « | ٢٤ |
| | ولولا فضل الله عليكم ورحمته ما زكى منكم من أحد أبدا | ٢١ | م « | ٢٤ |
| | وهو الذى أرسل الرياح بشرا بين يدى رحمته... ... | ٤٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ومن يرسل الرياح بشرا بين يدى رحمته ... ... ... | ٦٣ | ك النمل | ٢٧ |
| | ومن رحمته جعل لكم الليل والنهار لتسكنوا فيه ولتبتغوا من فضله ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | ومن آياته أن يرسل الرياح مبشرات وليذيقكم من رحمته | ٤٦ | ك الروم | ٣٠ |
| | أو أرادنى برحمة هل هن ممسكات رحمته ... ... | ٣٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ولكن يدخل من يشاء فى رحمته... ... ... ... ... | ٨ | ك الشورى | ٤٢ |
| | وهو الذى ينزل الغيث من بعد ما قنطوا وينشر رحمته | ٢٨ | ك « | ٤٢ |
| | فأما الذين آمنوا وعملوا الصالحات فيدخلهم ربهم فى رحمته | ٣٠ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | ليدخل الله فى رحمته من يشاء ... ... ... ... ... | ٢٥ | م الفتح | ٤٨ |
| | اتقوا الله وآمنوا برسوله يؤتكم كفلين من رحمته | ٢٨ | م الحديد | ٥٧ |
| | يدخل من يشاء فى رحمته والظالمين أعد لهم عذابا أليما | ٣١ | م الإنسان | ٧٦ |
| رَحْمَتِي | : قال عذابى أصيب به من أشاء ورحمتى وسعت كل شىء | ١٥٦ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | والذين كفروا بآيات الله ولقائه أولئك يئسوا من رحمتى | ٢٣ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| الرَّاحِمِينَ | : وأدخلنا فى رحمتك وأنت أرحم الراحمين... ... | ١٥١ | ك الأعراف | ٧ |
| (٦) | فالله خير حافظا وهو أرحم الراحمين ... ... ... ... | ٦٤ | ك يوسف | ١٢ |
| | قال لا تثريب عليكم اليوم يغفر الله لكم وهو أرحم الراحمين | ٩٢ | ك « | ١٢ |
| | وأيوب إذ نادى ربه أنى مسنى الضر وأنت أرحم الراحمين | ٨٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ربنا آمنا فاغفر لنا وارحمنا وأنت خير الراحمين... ... | ١٠٩ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وقل رب اغفر وارحم وأنت خير الراحمين ... ... | ١١٨ | ك « | ٢٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الرَّحْمَٰنِ: | بسم الله الرحمن الرحيم ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الفاتحة | ١ |
| (٥٧) | الحمد لله رب العالمين . الرحمن الرحيم ... ... ... | ٣ | ك « | ١ |
| | وإلهكم إله واحد لا إله إلا هو الرحمن الرحيم ... ... | ١٦٣ | م البقـرة | ٢ |
| | لتتلو عليهم الذى أوحينا إليك وهم يكفرون بالرحمن | ٣٠ | م الرعـد | ١٣ |
| | قل ادعوا الله أو ادعوا الرحمن ... ... ... ... ... | ١١٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| | قالت إنى أعوذ بالرحمن منك إن كنت تقيا ... ... | ١٨ | ك مـريم | ١٩ |
| | إنى نذرت للرحمن صوما فلن أكلم اليوم إنسيا... ... | ٢٦ | ك « | ١٩ |
| | يا أبت لا تعبد الشيطان إن الشيطان كان للرحمن عصيا | ٤٤ | ك « | ١٩ |
| | يا أبت إنى أخاف أن يمسك عذاب من الرحمن | | | |
| | فتكون للشيطان وليا ... ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك « | ١٩ |
| | إذا تتلى عليهم آيات الرحمن خروا سجدا وبكيا | ٥٨ | م « | ١٩ |
| | جنات عدن التى وعد الرحمن عباده بالغيب ... ... | ٦١ | ك « | ١٩ |
| | ثم لننزعن من كل شيعة أيهم أشد على الرحمن عتيا | ٦٩ | ك « | ١٩ |
| | قل من كان فى الضلالة فليمدد له الرحمن مدا ... ... | ٧٥ | ك « | ١٩ |
| | أطلع الغيب أم اتخذ عند الرحمن عهدا ... ... ... | ٧٨ | ك « | ١٩ |
| | يوم نحشر المتقين إلى الرحمن وفدا ... ... ... ... | ٨٥ | ك « | ١٩ |
| | لا يملكون الشفاعة إلا من اتخذ عند الرحمن عهدا | ٨٧ | ك « | ١٩ |
| | وقالوا اتخذ الرحمن ولدا ... ... ... ... ... ... | ٨٨ | ك « | ١٩ |
| | وتخر الجبال هدا ... أن دعوا للرحمن ولدا ... ... | ٩١ | ك « | ١٩ |
| | وما ينبغى للرحمن أن يتخذ ولدا ... ... ... ... ... | ٩٢ | ك « | ١٩ |
| | إن كل من فى السموات والأرض إلا آتى الرحمن عبدا | ٩٣ | ك « | ١٩ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات سيجعل لهم الرحمن ودا | ٩٦ | ك « | ١٩ |
| | الرحمن على العرش استوى ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك طـه | ٢٠ |
| | وإن ربكم الرحمن فاتبعونى وأطيعوا أمرى ... ... | ٩٠ | ك « | ٢٠ |
| | وخشعت الأصوات للرحمن فلا تسمع إلا همسا... ... | ١٠٨ | ك « | ٢٠ |
| | يومئذ لا تنفع الشفاعة إلا من أذن له الرحمن ورضى له قولا | ١٠٩ | ك « | ٢٠ |
| | وقالوا اتخذ الرحمن ولدا سبحانه بل عباد مكرمون | ٢٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | أهذا الذى يذكر آلهتكم وهم بذكر الرحمن هم كافرون | ٣٦ | ك « | ٢١ |
| | قل من يكلؤكم بالليل والنهار من الرحمن ... ... ... | ٤٢ | ك « | ٢١ |
| | قال رب احكم بالحق وربنا الرحمن المستعان على ما تصفون | ١١٢ | ك « | ٢١ |
| | الملك يومئذ الحق للرحمن وكان يوما على الكافرين عسيرا | ٢٦ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| | ثم استوى على العرش الرحمن فسئل به خبيرا ... ... | ٥٩ | ك « | ٢٥ |
| | وإذا قيل لهم اسجدوا للرحمن ... ... ... ... ... | ٦٠ | ك « | ٢٥ |
| | قالوا وما الرحمن أنسجد لما تأمرنا وزادهم نفورا | ٦٠ | ك « | ٢٥ |
| | وعباد الرحمن الذين يمشون على الأرض هونا ... ... | ٦٣ | ك « | ٢٥ |
| | وما يأتيهم من ذكر من الرحمن محدث إلا كانوا عنه معرضين | ٥ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| | إنه من سليمان وإنه بسم الله الرحمن الرحيم ... ... | ٣٠ | ك النمـل | ٢٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الرَّحْمَٰنِ: | إنما تنذر من اتبع الذكر وخشى الرحمن بالغيب | ١١ | ك يـس | ٣٦ |
| | قالوا ما أنتم إلا بشر مثلنا وما أنزل الرحمن من شىء | ١٥ | ك « | ٣٦ |
| | إن يردن الرحمن بضر لا تغن عنى شفاعتهم شيئا... ... | ٢٣ | ك « | ٣٦ |
| | هـذا ما وعد الرحمن وصدق المرسلون ... ... ... | ٥٢ | ك « | ٣٦ |
| | تنزيل من الرحمن الرحيم ... ... ... ... ... ... | ٢ | ك فصـلت | ٤١ |
| | وإذا بشر أحدهم بما ضرب للرحمن مثلا ظل وجهه مسودا | ١٧ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وجعلوا الملائكة الذين هم عباد الرحمن إناثا ... ... | ١٩ | ك « | ٤٣ |
| | وقالوا لو شاء الرحمن ما عبدناهم ... ... ... ... | ٢٠ | ك « | ٤٣ |
| | لجعلنا لمن يكفر بالرحمن لبيوتهم سقفا من فضة ... ... | ٣٣ | ك « | ٤٣ |
| | ومن يعش عن ذكر الرحمن نقيض له شيطانا فهو له قرين | ٣٦ | ك « | ٤٣ |
| | أجعلنا من دون الرحمن آلهة يعبدون ... ... ... ... | ٤٥ | ك « | ٤٣ |
| | قل إن كان للرحمن ولد فأنا أول العابدين ... ... | ٨١ | ك « | ٤٣ |
| | من خشى الرحمن بالغيب وجاء بقلب منيب ... ... | ٣٣ | ك قـ | ٥٠ |
| | الرحمن . علم القـرآن ... ... ... ... ... ... | ١ | م الرحمن | ٥٥ |
| | عالم الغيب والشهادة هو الرحمن الرحيم ... ... ... | ٢٢ | م الحشـر | ٥٩ |
| | ما ترى فى خلق الرحمن من تفاوت ... ... ... ... | ٣ | ك المـلك | ٦٧ |
| | ما يمسكهن إلا الرحمن إنه بكل شىء بصير ... ... | ١٩ | ك « | ٦٧ |
| | أمن هذا الذى هو جند لكم ينصركم من دون الرحمن | ٢٠ | ك « | ٦٧ |
| | قل هو الرحمن آمنا به وعليه توكلنا ... ... ... ... | ٢٩ | ك « | ٦٧ |
| | رب السموات والأرض وما بينهما الرحمن ... ... | ٣٧ | ك النبـأ | ٧٨ |
| | لا يتكلمون إلا من أذن له الرحمن وقال صوابا... ... | ٣٨ | ك « | ٧٨ |
| الرَّحِيمِ: | بسم الله الرحمن الرحيم ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الفاتحة | ١ |
| (٩٥) | الحمد لله رب العالمين . الرحمن الرحيم ... ... ... | ٣ | ك « | ١ |
| | فتلقى آدم من ربه كلمات فتاب عليه إنه هو التواب الرحيم | ٣٧ | م البقـرة | ٢ |
| | ذلكم خير لكم عند بارئكم فتاب عليكم إنه هو التواب الرحيم | ٥٤ | م « | ٢ |
| | وأرنا مناسكنا وتب علينا إنك أنت التواب الرحيم | ١٢٨ | م « | ٢ |
| | وما كان الله ليضيع إيمانكم إن الله بالناس لرءوف رحيم | ١٤٣ | م « | ٢ |
| | فأولئك أتوب عليهم وأنا التواب الرحيم ... ... ... | ١٦٠ | م « | ٢ |
| | وإلهكم إله واحد لا إله إلا هو الرحمن الرحيم... ... | ١٦٣ | م « | ٢ |
| | فمن اضطر غير باغ ولا عاد فلا إثم عليه إن الله غفور رحيم | ١٧٣ | م « | ٢ |
| | فلا إثم عليه إن الله غفور رحيم ... ... ... ... | ١٨٢ | م « | ٢ |
| | فإن انتهوا فإن الله غفور رحيم ... ... ... ... ... | ١٩٢ | م « | ٢ |
| | واستغفروا الله إن الله غفور رحيم ... ... ... ... | ١٩٩ | م « | ٢ |
| | أولئك يرجون رحمة الله والله غفور رحيم ... ... | ٢١٨ | م « | ٢ |
| | فإن فاءوا فإن الله غفور رحيم ... ... ... ... ... | ٢٢٦ | م « | ٢ |
| | يحببكم الله ويغفر لكم ذنوبكم والله غفور رحيم | ٣١ | م آل عمران | ٣ |
| | إلا الذين تابوا من بعد ذلك وأصلحوا فإن الله غفور رحيم | ٨٩ | م « | ٣ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الرَّحِيمُ | يغفر لمن يشاء و يعذب من يشاء والله غفور رحيم | ١٢٩ | م آل عمران | ٣ |
| | وأن تصبروا خير لكم والله غفور رحيم ... ... ... | ٢٥ | م النساء | ٤ |
| | فمن اضطر في مخمصة غير متجانف لإثم فإن الله غفور رحيم | ٣ | م المائدة | ٥ |
| | إلا الذين تابوا من قبل أن تقدروا عليهم فاعلموا أن الله غفور رحيم... ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | م « | ٥ |
| | فمن تاب من بعد ظلمه وأصلح فإن الله يتوب عليه إن الله غفور رحيم... ... ... ... ... ... ... | ٣٩ | م « | ٥ |
| | أفلا يتوبون إلى الله ويستغفرونه والله غفور رحيم | ٧٤ | م « | ٥ |
| | اعلموا أن الله شديد العقاب وأن الله غفور رحيم | ٩٨ | م « | ٥ |
| | أنه من عمل منكم سوءا بجهالة ثم تاب من بعده وأصلح فأنه غفور رحيم ... ... ... ... ... ... ... | ٥٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | فمن اضطر غير باغ ولا عاد فإن ربك غفور رحيم | ١٤٥ | ك « | ٦ |
| | إن ربك سريع العقاب وإنه لغفور رحيم ... ... | ١٦٥ | ك « | ٦ |
| | والذين عملوا السيئات ثم تابوا من بعدها وآمنوا إن ربك من بعدها لغفور رحيم ... ... ... | ١٥٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | إن ربك لسريع العقاب وإنه لغفور رحيم ... ... | ١٦٧ | م « | ٧ |
| | فكلوا مما غنمتم حلالا طيبا واتقوا الله إن الله غفور رحيم | ٦٩ | م الأنفال | ٨ |
| | يؤتكم خيرا مما أخذ منكم ويغفر لكم والله غفور رحيم | ٧٠ | م « | ٨ |
| | فإن تابوا وأقاموا الصلاة وآتوا الزكاة فخلوا سبيلهم إن الله غفور رحيم... ... ... ... ... ... | ٥ | م التوبة | ٩ |
| | ثم يتوب الله من بعد ذلك على من يشاء والله غفور رحيم | ٢٧ | م « | ٩ |
| | ما على المحسنين من سبيل والله غفور رحيم ... ... | ٩١ | م « | ٩ |
| | سيدخلهم الله في رحمته إن الله غفور رحيم ... ... | ٩٩ | م « | ٩ |
| | عسى الله أن يتوب عليهم إن الله غفور رحيم ... ... | ١٠٢ | م « | ٩ |
| | ألم يعلموا أن الله هو يقبل التوبة عن عباده و يأخذ الصدقات وأن الله هو التواب الرحيم ... ... | ١٠٤ | م « | ٩ |
| | ثم تاب عليهم إنه بهم رءوف رحيم ... ... ... ... | ١١٧ | م « | ٩ |
| | ثم تاب عليهم ليتوبوا إن الله هو التواب الرحيم | ١١٨ | م « | ٩ |
| | حريص عليكم بالمؤمنين رءوف رحيم ... ... ... ... | ١٢٨ | ك « | ٩ |
| | يصيب به من يشاء من عباده وهو الغفور الرحيم | ١٠٧ | ك يونس | ١٠ |
| | بسم الله مجريها ومرساها إن ربي لغفور رحيم | ٤١ | ك هود | ١١ |
| | واستغفروا ربكم ثم توبوا إليه إن ربي رحيم ودود | ٩٠ | ك « | ١١ |
| | إن النفس لأمارة بالسوء إلا ما رحم ربي إن ربي غفور رحيم | ٥٣ | ك يوسف | ١٢ |
| | قال سوف أستغفر لكم ربي إنه هو الغفور الرحيم | ٩٨ | ك « | ١٢ |
| | فمن تبعني فإنه مني ومن عصاني فإنك غفور رحيم | ٣٦ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | نبئ عبادي أني أنا الغفور الرحيم ... ... ... ... | ٤٩ | ك الحجر | ١٥ |
| | لم تكونوا بالغيه إلا بشق الأنفس إن ربكم لرءوف رحيم | ٧ | ك النحل | ٦ |
| | وإن تعدوا نعمة الله لا تحصوها إن الله لغفور رحيم | ١٨ | ك « | ١٦ |
| | وأن تصبروا خير لكم والله غفور رحيم ... ... ... | ٤٧ | ك النحل | ١٦ |
| | ثم جاهدوا وصبروا إن ربك من بعدها لغفور رحيم | ١١٠ | ك « | ١٦ |
| | فمن اضطر غير باغ ولا عاد فإن الله غفور رحيم | ١١٥ | ك « | ١٦ |
| | إن ربك من بعدها لغفور رحيم ... ... ... ... | ١١٩ | ك « | ١٦ |
| | إن الله بالناس لرءوف رحيم ... ... ... ... ... | ٦٥ | م الحج | ٢٢ |
| | إلا الذين تابوا من بعد ذلك وأصلحوا فإن الله غفور رحيم | ٥ | م النور | ٢٤ |
| | ولولا فضل الله عليكم ورحمته وأن الله رءوف رحيم | ٢٠ | م « | ٢٤ |
| | ألا تحبون أن يغفر الله لكم والله غفور رحيم... ... | ٢٢ | م « | ٢٤ |
| | ومن يكرههن فإن الله من بعد إكراههن غفور رحيم | ٣٣ | م « | ٢٤ |
| | فأذن لمن شئت منهم واستغفر لهم الله إن الله غفور رحيم | ٦٢ | م « | ٢٤ |
| | وإن ربك لهو العزيز الرحيم. وإذ نادى ربك موسى | ٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وإن ربك لهو العزيز الرحيم. واتل عليهم نبأ إبراهيم | ٦٨ | ك « | ٢٦ |
| | وإن ربك لهو العزيز الرحيم. كذبت قوم نوح المرسلين | ١٠٤ | ك « | ٢٦ |
| | وإن ربك لهو العزيز الرحيم. كذبت عاد المرسلين | ١٢٢ | ك « | ٢٦ |
| | وإن ربك لهو العزيز الرحيم. كذبت ثمود المرسلين | ١٤٠ | ك « | ٢٦ |
| | وإن ربك لهو العزيز الرحيم. كذبت قوم لوط المرسلين | ١٥٩ | ك « | ٢٦ |
| | وإن ربك لهو العزيز الرحيم. كذب أصحاب الأيكة المرسلين | ١٧٥ | ك « | ٢٦ |
| | وإن ربك لهو العزيز الرحيم. وإنه لتنزيل رب العالمين | ١٩١ | ك « | ٢٦ |
| | وتوكل على العزيز الرحيم ... ... ... ... ... | ٢١٧ | ك « | ٢٦ |
| | إلا من ظلم ثم بدل حسنا بعد سوء فإني غفور رحيم | ١١ | ك النمل | ٢٧ |
| | إنه من سليمان وإنه بسم الله الرحمن الرحيم ... ... | ٣٠ | ك « | ٢٧ |
| | قال رب إني ظلمت نفسي فاغفر لي فغفر له إنه هو الغفور الرحيم | ١٦ | ك القصص | ٢٨ |
| | بنصر الله ينصر من يشاء وهو العزيز الرحيم ... ... | ٥ | ك الروم | ٣٠ |
| | ذلك عالم الغيب والشهادة العزيز الرحيم ... ... ... | ٦ | ك السجدة | ٣٢ |
| | وما ينزل من السماء وما يعرج فيها وهو الرحيم الغفور | ٢ | ك سبأ | ٣٤ |
| | تنزيل العزيز الرحيم ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك يس | ٣٦ |
| | سلام قولا من رب رحيم ... ... ... ... ... ... | ٥٨ | ك « | ٣٦ |
| | إن الله يغفر الذنوب جميعا إنه هو الغفور الرحيم | ٥٣ | م الزمر | ٣٩ |
| | تنزيل من الرحمن الرحيم ... ... ... ... ... ... | ٢ | ك فصلت | ٤١ |
| | نزلا من غفور رحيم... ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك « | ٤١ |
| | ألا إن الله هو الغفور الرحيم ... ... ... ... ... | ٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| | إلا من رحم الله إنه هو العزيز الرحيم ... ... ... | ٤٢ | ك الدخان | ٤٤ |
| | كفى به شهيدا بيني وبينكم وهو الغفور الرحيم... ... | ٨ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | ولو أنهم صبروا حتى تخرج إليهم لكان خيرا لهم والله غفور رحيم ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | م الحجرات | ٤٩ |
| | واتقوا الله إن الله تواب رحيم... ... ... ... ... | ١٢ | م « | ٤٩ |
| | لا يلتكم من أعمالكم شيئا إن الله غفور رحيم... ... | ١٤ | م « | ٤٩ |
| | إنا كنا من قبل ندعوه إنه هو البر الرحيم ... ... | ٢٨ | ك الطور | ٥٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الرَّحِيمُ | ليخرجكم من الظلمات إلى النور وإن الله بكم لرءوف رحيم | ٩ | م الحديد | ٥٧ |
| | ويجعل لكم نورا تمشون به ويغفر لكم والله غفور رحيم | ٢٨ | م » | ٥٧ |
| | ذلك خير لكم وأطهر فإن لم تجدوا فإن الله غفور رحيم | ١٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| | ولا تجعل في قلوبنا غلا للذين آمنوا ربنا إنك رءوف رحيم | ١٠ | م الحشر | ٥٩ |
| | عالم الغيب والشهادة هو الرحمن الرحيم ... ... ... | ٢٢ | م » | ٥٩ |
| | والله قدير والله غفور رحيم... ... ... ... ... ... | ٧ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | فبايعهن واستغفر لهن الله إن الله غفور رحيم | ١٢ | م » | ٦٠ |
| | وإن تعفوا وتصفحوا وتغفروا فإن الله غفور رحيم | ١٤ | م التغابن | ٦٤ |
| | تبتغي مرضاة أزواجك والله غفور رحيم... ... ... | ١ | م التحريم | ٦٦ |
| | واستغفروا الله إن الله غفور رحيم ... ... ... ... | ٢٠ | م المزمل | ٧٣ |
| رَحِيمًا | إن الله كان توابا رحيما ... ... ... ... ... ... | ١٦ | م النساء | ٤ |
| (٢٠) | إلا ما قد سلف إن الله كان غفورا رحيما... ... ... | ٢٣ | م » | ٤ |
| | ولا تقتلوا أنفسكم إن الله كان بكم رحيما... ... ... | ٢٩ | م » | ٤ |
| | لوجدوا الله توابا رحيما ... ... ... ... ... ... | ٦٤ | م » | ٤ |
| | درجات منه ومغفرة ورحمة وكان الله غفورا رحيما | ٩٦ | م » | ٤ |
| | ثم يدركه الموت فقد وقع أجره على الله وكان الله غفورا رحيما | ١٠٠ | م » | ٤ |
| | واستغفر الله إن الله كان غفورا رحيما ... ... ... | ١٠٦ | م » | ٤ |
| | ومن يعمل سوءا أو يظلم نفسه ثم يستغفر الله يجد الله غفورا رحيما ... ... ... ... ... ... ... | ١١٠ | م » | ٤ |
| | وإن تصلحوا وتتقوا فإن الله كان غفورا رحيما | ١٢٩ | م » | ٤ |
| | أولئك سوف يؤتيهم أجورهم وكان الله غفورا رحيما | ١٥٢ | م » | ٤ |
| | ربكم الذي يزجي لكم الفلك في البحر لتبتغوا من فضله إنه كان بكم رحيما ... ... ... ... ... ... | ٦٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| | قل أنزله الذي يعلم السر في السموات والأرض إنه كان غفورا رحيما ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | فأولئك يبدل الله سيئاتهم حسنات وكان الله غفورا رحيما | ٧٠ | م » | ٢٥ |
| | ولكن ما تعمدت قلوبكم وكان الله غفورا رحيما ... | ٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ويعذب المنافقين إن شاء أو يتوب عليهم إن الله كان غفورا رحيما ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | م » | ٣٣ |
| | ليخرجكم من الظلمات إلى النور وكان بالمؤمنين رحيما | ٤٣ | م » | ٣٣ |
| | لكيلا يكون عليك حرج وكان الله غفورا رحيما | ٥٠ | م » | ٣٣ |
| | ذلك أدنى أن يعرفن فلا يؤذين وكان الله غفورا رحيما | ٥٩ | م » | ٣٣ |
| | ويتوب الله على المؤمنين والمؤمنات وكان الله غفورا رحيما | ٧٣ | م » | ٣٣ |
| | يغفر لمن يشاء ويعذب من يشاء وكان الله غفورا رحيما | ١٤ | م الفتح | ٤٨ |
| رُحَمَاءُ | محمد رسول الله والذين معه أشداء على الكفار رحماء بينهم | ٢٩ | م » | ٤٨ |
| أَرْحَمُ | وأدخلنا في رحمتك وأنت أرحم الراحمين ... ... | ١٥١ | ك الأعراف | ٧ |
| (٤) | فالله خير حافظا وهو أرحم الراحمين... ... ... ... | ٦٤ | ك يوسف | ١٢ |
| | قال لا تثريب عليكم اليوم يغفر الله لكم وهو أرحم الراحمين | ٩٢ | ك » | ١٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَرْحَمُ | وأيوب إذ نادى ربه أني مسني الضر وأنت أرحم الراحمين | ٨٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| بِالْمَرْحَمَةِ | وتواصوا بالصبر وتواصوا بالمرحمة... ... ... | ١٧ | ك البلد | ٩٠ |
| الْأَرْحَامِ | هو الذي يصوركم في الأرحام كيف يشاء ... | ٦ | م آل عمران | ٣ |
| (٩) | واتقوا الله الذي تساءلون به والأرحام ... ... ... | ١ | م النساء | ٤ |
| | أما اشتملت عليه أرحام الأنثيين نبئوني بعلم إن كنتم صادقين | ١٤٣ | ك الأنعام | ٦ |
| | أما اشتملت عليه أرحام الأنثيين أم كنتم شهداء إذ وصاكم الله بهذا ... ... ... ... ... ... | ١٤٤ | ك » | ٦ |
| | وأولوا الأرحام بعضهم أولى ببعض في كتاب الله... | ٧٥ | م الأنفال | ٨ |
| | الله يعلم ما تحمل كل أنثى وما تغيض الأرحام وما تزداد | ٨ | م الرعد | ١٣ |
| | ونقر في الأرحام ما نشاء إلى أجل مسمى ... ... | ٥ | م الحج | ٢٢ |
| | إن الله عنده علم الساعة وينزل الغيث ويعلم ما في الأرحام | ٣٤ | ك لقمان | ٣١ |
| | وأولوا الأرحام بعضهم أولى ببعض في كتاب الله من المؤمنين والمهاجرين ... ... ... ... ... ... | ٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| أَرْحَامَكُمْ | فهل عسيتم إن توليتم أن تفسدوا في الأرض | | | |
| (٢) | وتقطعوا أرحامكم ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | م محمد | ٤٧ |
| | لن تنفعكم أرحامكم ولا أولادكم يوم القيامة يفصل بينكم | ٣ | م الممتحنة | ٦٠ |
| أَرْحَامِهِنَّ | ولا يحل لهن أن يكتمن ما خلق الله في أرحامهن | ٢٢٨ | م البقرة | ٢ |
| رُحْمًا | فأردنا أن يبدلهما ربهما خيرا منه زكاة وأقرب رحما | ٨١ | ك الكهف | ١٨ |
| ✦✦✦ | | | | |
| رُخَاءً | فسخرنا له الريح تجري بأمره رخاء حيث أصاب | ٣٦ | ك ص | ٣٨ |
| ✦✦✦ | | | | |
| رِدْءًا | وأخي هرون هو أفصح مني لسانا فأرسله معي ردءا يصدقني | ٣٤ | ك القصص | ٢٨ |
| ✦✦✦ | | | | |
| رَدَّ | ورد الله الذين كفروا بغيظهم لم ينالوا خيرا ... | ٢٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| رَدَدْنَا | ثم رددنا لكم الكرة عليهم وأمددناكم بأموال وبنين | ٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| رَدَدْنَاهُ | فرددناه إلى أمه كي تقر عينها ولا تحزن ... ... | ١٣ | ك القصص | ٢٨ |
| (٢) | ثم رددناه أسفل سافلين ... ... ... ... ... | ٥ | ك التين | ٩٥ |
| رَدَّهَا | فلا يستطيعون ردها ولا هم ينظرون ... ... ... | ٤٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| رَدُّوا | جاءتهم رسلهم بالبينات فردوا أيديهم في أفواههم | ٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| رَدُّوهُ | ولو ردوه إلى الرسول وإلى أولي الأمر منهم لعلمه الذين يستنبطونه منهم ... ... ... ... ... | ٨٣ | م النساء | ٤ |
| فَنَرُدَّهَا | من قبل أن نطمس وجوها فنردها على أدبارها | ٤٧ | م » | ٤ |
| يَرُدُّوكُمْ | ولا يزالون يقاتلونكم حتى يردوكم عن دينكم إن استطاعوا | ٢١٧ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | إن تطيعوا فريقا من الذين أوتوا الكتاب يردوكم بعد إيمانكم كافرين ... ... ... ... ... | ١٠٠ | م آل عمران | ٣ |
| | إن تطيعوا الذين كفروا يردوكم على أعقابكم ... ... | ١٤٩ | م » | ٣ |
| يَرُدُّونَكُمْ | ود كثير من أهل الكتاب لو يردونكم من بعد إيمانكم كفارا... ... ... ... ... ... ... | ١٠٩ | م البقرة | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| رُدُّوهُ: | فإن تنازعتم فى شىء فـردوه إلى الله والرسـول | ٥٩ م النسـاء | ٤ |
| رُدُّوهَا: | وإذا حييتم بتحيـة فحيوا بأحسن منها أو ردوها | ٨٦ م « | ٤ |
| (٢) | ردوها علىّ فطفق مسحا بالسوق والأعناق ... ... | ٣٣ ك ص | ٣٨ |
| رُدَّتْ: | ولما فتحوا متاعهم وجدوا بضاعتهم ردت إليهم | ٦٥ ك يوسـف | ١٢ |
| (٢) | قالوا يا أبانا ما نبغى هذه بضاعتنا ردت إلينا ... ... | ٦٥ ك « | ١٢ |
| رُدِدتُّ: | ولئن رددت إلى ربى لأجدن خيرا منهـا منقلبا | ٣٦ ك الكهف | ١٨ |
| رُدُّوا: | كل ما ردوا إلى الفتنة أركسوا فيهـا ... ... ... | ٩١ م النسـاء | ٤ |
| (٤) | ولو ردوا لعادوا لما نهوا عنه وإنهم لكاذبون ... | ٢٨ ك الأنعـام | ٦ |
| | ثم ردوا إلى الله مولاهم الحق ... ... ... ... | ٦٢ ك « | ٦ |
| | وردوا إلى الله مولاهم الحق ... ... ... ... | ٣٠ ك يـونس | ١٠ |
| تُرَدَّ: | أو يخافوا أن ترد أيمـان بعد أيمانهم ... ... ... | ١٠٨م المـائدة | ٥ |
| تُرَدُّونَ: | وسيرى الله عملكم ورسـوله ثم تردون إلى عالم | | |
| (٣) | الغيب والشهـادة ... ... ... ... ... ... | ٩٤ م التـوبة | ٩ |
| | وستردون إلى عالم الغيب والشهادة فينبئكم بمـا كنتم تعملون | ١٠٥م « | ٩ |
| | ثم تردون إلى عالم الغيب والشهادة فينبئكم بمـا كنتم تعملون | ٨ م الجمعـة | ٦٢ |
| نُرَدُّ: | فقالوا يا ليتنا نرد ولا نكذب بآيات ربنا ونكون من المؤمنين | ٢٧ ك الأنعـام | ٦ |
| (٣) | قل أندعوا من دون الله مالا ينفعنا ولا يضرنا ونرد | | |
| | على أعقابنا بعد إذ هدانا الله ... ... ... ... | ٧١ ك « | ٦ |
| | فهل لنا من شفعاء فيشفعوا لنا أو نرد فنعمل غير الذى كنا نعمل | ٥٣ ك الأعراف | ٧ |
| يُرَدُّ: | ولا يرد بأسه عن القوم المجرمين ... ... ... ... | ١٤٧ك الأنعـام | ٦ |
| (٦) | جاءهم نصرنا فنجى من نشاء ولا يرد بأسنا عن القوم المجرمين | ١١٠ك يوسـف | ١٢ |
| | ومنكم من يرد إلى أرذل العمر لكى لا يعلم بعد علم شيئا | ٧٠ ك النحـل | ١٦ |
| | قال أما من ظلم فسوف نعذبه ثم يرد إلى ربه فيعذبه عذابا نكرا | ٨٧ م الكهف | ١٨ |
| | ومنكم من يرد إلى أرذل العمر لكيلا يعلم من بعد علم شيئا | ٥ م الحـج | ٢٢ |
| | إليه يرد علم السـاعة ... ... ... ... ... ... | ٤٧ ك فصـلت | ٤١ |
| يُرَدُّونَ: | ويوم القيامة يردون إلى أشد العذاب ... ... | ٨٥ م البقـرة | ٢ |
| (٢) | سنعذبهم مرتين ثم يردون إلى عذاب عظيم ... ... | ١٠١م التـوبة | ٩ |
| يَتَرَدَّدُونَ: | وارتابت قلوبهم فهـم فى ريبهـم يترددون | ٤٥ م « | ٩ |
| ارْتَدَّ: | فلمـا أن جاء البشير ألقاه على وجهه فارتد بصيرا | ٩٦ ك يوسـف | ١٢ |
| ارْتَدَّا: | قال ذلك ما كنا نبغ فارتدا على آثارهما قصصا ... | ٦٤ ك الكهف | ١٨ |
| ارْتَدُّوا: | إن الذين ارتدوا على أدبارهم من بعد ما تبين | | |
| | لهم الهـدى الشيطان سوّل لهم ... ... ... ... | ٢٥ م محمـد | ٤٧ |
| تَرْتَدُّوا: | ولا ترتدوا على أدباركم فتنقلبوا خاسرين ... ... | ٢١ م المـائدة | ٥ |
| يَرْتَدَّ: | من يرتدد منكم عن دينه فسوف يأتى الله بقوم يحبهم ويحبونه | ٥٤ م « | ٥ |
| (٣) | مهطعين مقنعى رءوسهم لا يرتد إليهم طرفهم ... ... | ٤٣ ك إبراهيم | ١٤ |
| | أنا آتيك به قبل أن يرتد إليك طرفك ... ... ... | ٤٠ ك النمـل | ٢٧ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| يَرْتَدِدْ: | ومن يرتدد منكم عن دينه فيمت وهو كافر فأولئك | | |
| | حبطت أعمالهم فى الدنيا والآخرة ... ... ... | ٢١٧م البقـرة | ٢ |
| رَدَّهَا: | بل تأتيهم بغتة فتبهتهم فلا يستطيعون ردها ... ... | ٤٠ ك الأنبيـاء | ٢١ |
| بِرَدِّهِنَّ: | وبعولتهن أحق بردهن فى ذلك إن أرادوا إصلاحا | ٢٢٨م البقـرة | ٢ |
| رَادَّ: | وإن يردك بخير فلا رادّ لفضله ... ... ... ... | ١٠٧ك يـونس | ١٠ |
| لَرَادُّكَ: | إن الذى فرض عليك القـرآن لرادك إلى معـاد | ٨٥ م القصص | ٢٨ |
| رَادُّوهُ: | إنا رادوه إليك وجاعلوه من المرسلين ... ... | ٧ ك « | ٢٨ |
| رَادِّى: | فما الذين فضلوا برادى رزقهم على ما ملكت أيمانهم | ٧١ ك النحـل | ١٦ |
| مَرَدَّ: | وإذا أراد الله بقوم سوءا فلا مرد له ... ... | ١١ م الرعـد | ١٣ |
| (٤) | فأقم وجهك للدين القيم من قبل أن يأتى يوم لا مرد له من الله | ٤٣ ك الروم | ٣٠ |
| | وترى الظالمين لما رأوا العذاب يقولون هل إلى مرد من سبيل | ٤٤ ك الشورى | ٤٢ |
| | استجيبوا لربكم من قبل أن يأتى يوم لا مرد له من الله | ٤٧ ك « | ٤٢ |
| مَرَدًّا: | والباقيات الصالحات خير عند ربك ثوابا وخير مردا | ٧٦ ك مريم | ١٩ |
| مَرَدَّنَا: | وأن مردنا إلى الله وأن المسرفين هم أصحاب النار | ٤٣ ك غافـر | ٤٠ |
| مَرْدُودٍ: | وإنهـم آتيهم عذاب غير مردود ... ... ... | ٧٦ ك هـود | ١١ |
| لَمَرْدُودُونَ: | يقولون أئنا لمردودون فى الحافرة ... ... | ١٠ ك النازعات | ٧٩ |
| | ✦✦✦ | | |
| رَدِفَ: | قل عسى أن يكون ردف لكم بعض الذى تستعجلون | ٧٢ ك النمـل | ٢٧ |
| الرَّادِفَةُ: | يوم ترجف الراجفة . تتبعها الرادفـة ... ... | ٧ ك النازعات | ٧٩ |
| مُرْدِفِينَ: | فاستجاب لكم أنى ممدكم بألف من الملائكة مردفين | ٩ م الأنفـال | ٨ |
| | ✦✦✦ | | |
| رَدْمًا: | فأعينونى بقـوة أجعل بينكم وبينهم ردما ... ... | ٩٥ م الكهف | ١٨ |
| | ✦✦✦ | | |
| فَتَرْدَى: | فلا يصدنك عنها من لا يؤمن بها واتبع هواه فتردى | ١٦ ك طـه | ٢٠ |
| أَرْدَاكُمْ: | وذلكم ظنكم الذى ظننتم بربكم أرداكم ... ... | ٢٣ ك فصلت | ٤١ |
| لَتُرْدِينِ: | قال تالله إن كدت لتردين ... ... ... ... | ٥٦ ك الصافات | ٣٧ |
| لِيُرْدُوهُمْ: | وكذلك زين لكثير من المشركين قتل أولادهم | | |
| | شركاؤهم ليردوهم ... ... ... ... ... ... | ١٣٧ك الأنعـام | ٦ |
| تَرَدَّى: | وما يغنى عنه ماله إذا تردى ... ... ... ... | ١١ ك الليـل | ٩٢ |
| الْمُتَرَدِّيَةُ: | والموقوذة والمتردية والنطيحة وما أكل السبع | ٣ م المـائدة | ٥ |
| | ✦✦✦ | | |
| أَرْذَلِ: | ومنكم من يرد إلى أرذل العمر لكى لا يعلم بعد علم شيئا | ٧٠ ك النحـل | ١٦ |
| (٢) | ومنكم من يرد إلى أرذل العمر لكيلا يعلم من بعد علم شيئا | ٥ م الحـج | ٢٢ |
| الْأَرْذَلُونَ: | قالوا أنؤمن لك واتبعك الأرذلون ... ... | ١١١ك الشـعراء | ٢٦ |
| أَرَاذِلُنَا: | وما نراك اتبعك إلا الذين هم أراذلنا بادى الرأى | ٢٧ ك هـود | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| رَزَقْنَاكُمْ | وكلوا مما رزقكم الله حلالا طيبا... ... ... ... | ٨٨ | م المائدة | ٥ |
| (٩) | كلوا مما رزقكم الله ولا تتبعوا خطوات الشيطان... | ١٤٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | أن أفيضوا علينا من الماء أو مما رزقكم الله ... ... | ٥٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | فآواكم وأيدكم بنصره ورزقكم من الطيبات لعلكم تشكرون | ٢٦ | م الأنفال | ٨ |
| | وجعل لكم من أزواجكم بنين وحفدة ورزقكم من الطيبات | ٧٢ | ك النحل | ١٦ |
| | فكلوا مما رزقكم الله حلالا طيبا... ... ... ... ... | ١١٤ | ك « | ١٦ |
| | الله الذى خلقكم ثم رزقكم ثم يميتكم ثم يحييكم ... ... | ٤٠ | ك الروم | ٣٠ |
| | وإذا قيل لهم أنفقوا مما رزقكم الله قال الذين كفروا | | | |
| | للذين آمنوا أنطعم من لو يشاء الله أطعمه... ... | ٤٧ | ك يس | ٣٦ |
| | وصوركم فأحسن صوركم ورزقكم من الطيبات... ... | ٦٤ | ك غافر | ٤٠ |
| رَزَقْنَاكُمْ | وأنزلنا عليكم المنّ والسلوى كلوا من طيبات ما رزقناكم | ٥٧ | م البقرة | ٢ |
| (٧) | يأيها الذين آمنوا كلوا من طيبات ما رزقناكم واشكروا لله | ١٧٢ | م « | ٢ |
| | أنفقوا مما رزقناكم من قبل أن يأتى يوم لا بيع فيه | ٢٥٤ | م « | ٢ |
| | وأنزلنا عليهم المنّ والسلوى كلوا من طيبات ما رزقناكم | ١٦٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | كلوا من طيبات ما رزقناكم ولا تطغوا فيه فيحل عليكم غضبى | ٨١ | ك طه | ٢٠ |
| | هل لكم من ما ملكت أيمانكم من شركاء فى ما رزقناكم | ٢٨ | ك الروم | ٣٠ |
| | وأنفقوا من ما رزقناكم من قبل أن يأتى أحدكم الموت | ١٠ | م المنافقون | ٦٣ |
| رَزَقْنَاهُ | ومن رزقناه منا رزقا حسنا فهو ينفق منه سرا وجهرا | ٧٥ | ك النحل | ١٦ |
| رَزَقْنَاهُمْ | الذين يؤمنون بالغيب ويقيمون الصلاة | | | |
| (١٣) | ومما رزقناهم ينفقون ... ... ... ... ... | ٣ | م البقرة | ٢ |
| | الذين يقيمون الصلاة ومما رزقناهم ينفقون ... ... | ٣ | م الأنفال | ٨ |
| | ولقد بوأنا بنى إسرائيل مبوأ صدق ورزقناهم من الطيبات | ٩٣ | ك يونس | ١٠ |
| | وأقاموا الصلاة وأنفقوا مما رزقناهم سرا وعلانية | ٢٢ | م الرعد | ١٣ |
| | قل لعبادى الذين آمنوا يقيموا الصلاة وينفقوا | | | |
| | مما رزقناهم سرا وعلانية... ... ... ... ... | ٣١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | ويجعلون لما لا يعلمون نصيبا مما رزقناهم ... ... | ٥٦ | ك النحل | ١٦ |
| | وحملناهم فى البر والبحر ورزقناهم من الطيبات... ... | ٧٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| | والمقيمى الصلاة ومما رزقناهم ينفقون ... ... ... | ٣٥ | م الحج | ٢٢ |
| | ويدرءون بالحسنة السيئة ومما رزقناهم ينفقون | ٥٤ | م القصص | ٢٨ |
| | يدعون ربهم خوفا وطمعا ومما رزقناهم ينفقون | ١٦ | م السجدة | ٣٢ |
| | وأنفقوا مما رزقناهم سرا وعلانية يرجون تجارة لن تبور | ٢٩ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وأمرهم شورى بينهم ومما رزقناهم ينفقون ... ... | ٣٨ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ورزقناهم من الطيبات وفضلناهم على العالمين ... ... | ١٦ | الجاثية | ٤٥ |
| رَزَقَهُمْ | وماذا عليهم لو آمنوا بالله واليوم الآخر وأنفقوا | | | |
| (٤) | مما رزقهم الله... ... ... ... ... ... ... | ٣٩ | م النساء | ٤ |
| | وحرموا ما رزقهم الله افتراء على الله... ... ... | ١٤٠ | ك الأنعام | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَزَقَهُمْ | ويذكروا اسم الله فى أيام معلومات على ما رزقهم | | | |
| | من بهيمة الأنعام ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م الحج | ٢٢ |
| | ولكل أمة جعلنا منسكا ليذكروا اسم الله على ما رزقهم | | | |
| | من بهيمة الأنعام ... ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | م « | ٢٢ |
| رَزَقَنِى | قال يا قوم أرأيتم إن كنت على بينة من ربى | | | |
| | ورزقنى منه رزقا حسنا ... ... ... ... ... | ٨٨ | ك هود | ١١ |
| تَرْزُقُ | وتخرج الميت من الحىّ وترزق من تشاء بغير حساب | ٢٧ | م آل عمران | ٣ |
| نَرْزُقُكَ | لا نسألك رزقا نحن نرزقك... ... ... ... ... | ١٣٢ | ك طه | ٢٠ |
| نَرْزُقُكُمْ | ولا تقتلوا أولادكم من إملاق نحن نرزقكم وإياهم | ١٥١ | م الأنعام | ٦ |
| نَرْزُقُهُمْ | ولا تقتلوا أولادكم خشية إملاق نحن نرزقهم وإياكم | ٣١ | ك الإسراء | ١٧ |
| يَرْزُقُ | والله يرزق من يشاء بغير حساب ... ... ... ... | ٢١٢ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | قالت هو من عند الله إن الله يرزق من يشاء بغير حساب | ٣٧ | م آل عمران | ٣ |
| | ويزيدهم من فضله والله يرزق من يشاء بغير حساب | ٣٨ | م النور | ٢٤ |
| | الله لطيف بعباده يرزق من يشاء وهو القوىّ العزيز | ١٩ | ك الشورى | ٤٢ |
| يَرْزُقُكُمْ | قل من يرزقكم من السماء والأرض أمّن يملك | | | |
| (٥) | السمع والأبصار ... ... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك يونس | ١٠ |
| | أمّن يبدؤا الخلق ثم يعيده ومن يرزقكم من السماء والأرض | ٦٤ | ك النمل | ٢٧ |
| | قل من يرزقكم من السموات والأرض قل الله... ... | ٢٤ | ك سبأ | ٣٤ |
| | هل من خالق غير الله يرزقكم من السماء والأرض | ٣ | ك فاطر | ٣٥ |
| | أمّن هذا الذى يرزقكم إن أمسك رزقه... ... ... | ٢١ | ك الملك | ٦٧ |
| لَيَرْزُقَنَّهُمُ | والذين هاجروا فى سبيل الله ثم قتلوا أو ماتوا | | | |
| | ليرزقنهم الله رزقا حسنا ... ... ... ... ... | ٥٨ | م الحج | ٢٢ |
| يَرْزُقْهُ | ومن يتق الله يجعل له مخرجا ويرزقه من حيث لا يحتسب | ٣ | م الطلاق | ٦٥ |
| يَرْزُقُهَا | وكأيّن من دابة لا تحمل رزقها الله يرزقها وإياكم | ٦٠ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| ٱرْزُقْ | رب اجعل هذا بلدا آمنا وارزق أهله من الثمرات | ١٢٦ | م البقرة | ٢ |
| ٱرْزُقْنَا | وآية منك وارزقنا وأنت خير الرازقين... ... | ١١٤ | م المائدة | ٥ |
| ٱرْزُقْهُمْ | وارزقهم من الثمرات لعلهم يشكرون ... ... | ٣٧ | ك إبراهيم | ١٤ |
| ٱرْزُقُوهُمْ | وارزقوهم فيها واكسوهم ... ... ... ... ... | ٥ | م النساء | ٤ |
| (٢) | وإذا حضر القسمة أولوا القربى واليتامى والمساكين | | | |
| | فارزقوهم منه ... ... ... ... ... ... ... | ٨ | م « | ٤ |
| رُزِقْنَا | قالوا هذا الذى رزقنا من قبل وأتوا به متشابها | ٢٥ | م البقرة | ٢ |
| رُزِقُوا | كلما رزقوا منها من ثمرة رزقا قالوا هذا الذى رزقنا | | | |
| | من قبل ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | م « | ٢ |
| تُرْزَقَانِهِ | قال لا يأتيكما طعام ترزقانه إلا نبأتكما بتأويله | ٣٧ | ك يوسف | ١٢ |
| يُرْزَقُونَ | بل أحياء عند ربهم يرزقون ... ... ... ... | ١٦٩ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | فأولئك يدخلون الجنة يرزقون فيها بغير حساب | ٤٠ | ك غافر | ٤٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رِزْقٍ: | كلوا وآشربوا من رزق الله ... ... ... ... ... | ٦٠ | م البقـرة | ٢ |
| (٢) | قل من حرم زينة الله التي أخرج لعباده والطيبات من الرزق | ٣٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | لهم درجات عند ربهم ومغفرة ورزق كريم .. ... | ٤ | م الأنفال | ٨ |
| | أولئك هم المؤمنون حقا لهم مغفـرة ورزق كريم | ٧٤ | م « | ٨ |
| | قل أرأيتم ما أنزل الله لكم من رزق فجعلتم منه حراما وحلالا | ٥٩ | ك يـونس | ١٠ |
| | الله يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ... ... ... ... | ٢٦ | م الرعـد | ١٣ |
| | والله فضل بعضكم على بعض في الرزق ... ... ... | ٧١ | ك النـحل | ١٦ |
| | إن ربك يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ... ... ... | ٣٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فلينظر أيها أزكى طعاما فليأتكم برزق منـه ... ... | ١٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | ورزق ربك خير وأبقى ... ... ... ... ... ... | ١٣١ | م طـه | ٢٠ |
| | فالذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم مغفرة ورزق كريم | ٥٠ | م الحـج | ٢٢ |
| | أولئك مبرءون مما يقولون لهم مغفرة ورزق كريم | ٢٦ | م النـور | ٢٤ |
| | ويكأن الله يبسط الرزق لمن يشاء من عباده ويقدر | ٨٢ | ك القصص | ٢٨ |
| | فابتغوا عند الله الرزق واعبدوه واشكروا له ... ... | ١٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | الله يبسط الرزق لمن يشاء من عباده ويقدر له... ... | ٦٢ | ك « | ٢٩ |
| | أو لم يروا أن الله يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر... ... | ٣٧ | ك الروم | ٣٠ |
| | أولئـك لهم مغفرة ورزق كريم ... ... ... ... ... | ٤ | ك سـبأ | ٣٤ |
| | كلوا من رزق ربكم واشكروا له بلدة طيبة ورب غفور | ١٥ | ك « | ٣٤ |
| | قل إن ربي يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر... ... ... | ٣٦ | ك « | ٣٤ |
| | قل إن ربي يبسط الرزق لمن يشاء من عباده ويقدر له | ٣٩ | ك « | ٣٤ |
| | إلا عباد الله المخلصين. أولئك لهم رزق معلوم... ... | ٤١ | ك الصافات | ٣٧ |
| | أو لم يعلموا أن الله يبسط الرزق لمن يشاء ويقـدر | ٥٢ | م الزمر | ٣٩ |
| | له مقاليد السموات والأرض يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر | ١٢ | ك الشـورى | ٤٢ |
| | ولو بسط الله الرزق لعباده لبغوا في الأرض ... ... | ٢٧ | م « | ٤٢ |
| | وما أنزل الله من السماء من رزق فأحيا به الأرض بعد موتها | ٥ | ك الجاثيـة | ٤٥ |
| | ما أريد منهم من رزق وما أريد أن يطعمون ... ... | ٥٧ | ك الذاريات | ٥١ |
| رِزْقًا: | وأنزل من السماء ماء فأخرج به من الثمرات رزقا لكم | ٢٢ | م البقـرة | ٢ |
| (١٦) | كلما رزقوا منها من ثمرة رزقا قالوا هذا الذي رزقنا من قبل | ٢٥ | م « | ٢ |
| | كلما دخل عليها زكريا المحراب وجد عنـدها رزقا | ٣٧ | م آل عمران | ٣ |
| | قال يا قوم أرأيتم إن كنت على بينة من ربي ورزقني منـه رزقا حسنا ... ... ... ... ... ... | ٨٨ | ك هـود | ١١ |
| | وأنزل من السماء ماء فأخرج به من الثمرات رزقا لكم | ٣٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | تتخذون منه سكرا ورزقا حسنا ... ... ... ... ... | ٦٧ | ك النـحل | ١٦ |
| | ويعبـدون من دون الله ما لا يملك لهم رزقا من السموات والأرض شيئا ولا يستطيعون ... ... | ٧٣ | ك « | ١٦ |
| | ومن رزقناه منا رزقا حسنا فهو ينفق منه سرا وجهرا | ٧٥ | ك « | ١٦ |
| | لا نسئلك رزقا نحن نرزقك والعاقبة للتقوى ... ... | ١٣٢ | م طـه | ٢٠ |
| | والذين هاجروا في سبيل الله ثم قتلوا أو ماتوا ليرزقنهم الله رزقا حسنا ... ... ... ... ... ... | ٥٨ | م الحـج | ٢٢ |
| رِزْقًا: | أولم نمكن لهم حرما آمنا يجبى إليه ثمرات كل شيء رزقا من لدنا | ٥٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | إن الذين تعبدون من دون الله لا يملكون لكم رزقا | ١٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | نؤتها أجرها مرتين وأعتدنا لها رزقا كريما... ... ... | ٣١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | هو الذي يريكم آياته وينزل لكم من السماء رزقا... ... | ١٣ | ك غافـر | ٤٠ |
| | رزقا للعباد وأحيينا به بلدة ميتا كذلك الخروج ... ... | ١١ | ك قٓ | ٥٠ |
| | قد أحسن الله له رزقا ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | م الطـلاق | ٦٥ |
| رِزْقُكُمْ: | وفي السماء رزقكم وما توعدون... ... ... ... ... | ٢٢ | ك الذاريات | ٥١ |
| (٢) | وتجعلون رزقكم أنكم تكذبون... ... ... ... ... | ٨٢ | م الواقعـة | ٥٦ |
| لَرَزَقْنَا: | إن هذا لرزقنا ماله من نفاد ... ... ... ... ... | ٥٤ | ك صٓ | ٣٨ |
| رِزْقُهُ: | ومن قدر عليـه رزقه فلينفق مما آتاه الله ... ... | ٧ | م الطـلاق | ٦٥ |
| (٤) | فامشوا في مناكبها وكلوا من رزقه ... ... ... ... | ١٥ | ك المـلك | ٦٧ |
| | أمن هذا الذي يرزقكم إن أمسك رزقه بل لجوا في عتو ونفور | ٢١ | ك « | ٦٧ |
| | وأما إذا ما ابتلاه فقدر عليه رزقه فيقول ربي أهانن | ١٦ | ك الفجـر | ٨٩ |
| رِزْقُهَا: | وما من دابة في الأرض إلا على الله رزقها ... ... | ٦ | ك هـود | ١١ |
| (٣) | يأتيها رزقها رغدا من كل مكان ... ... ... ... | ١١٢ | ك النـحل | ١٦ |
| | وكأين من دابة لا تحمـل رزقها الله يرزقها وإياكم | ٦٠ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| رِزْقُهُمْ: | فما الذين فضلوا برادي رزقهم على ما ملكت أيمانهم | ٧١ | ك النـحل | ١٦ |
| (٢) | لا يسمعون فيها لغوا إلا سلاما ولهم رزقهم فيها بكرة وعشيا | ٦٢ | ك مريم | ١٩ |
| رِزْقُهُنَّ: | وعلى المولود له رزقهن وكسوتهن بالمعـروف | ٢٣٣ | م البقـرة | ٢ |
| رَازِقِينَ: | وارزقنا وأنت خير الرازقين ... ... ... ... ... | ١١٤ | م المائدة | ٥ |
| (٦) | وجعلنا لكم فيها معايش ومن لستم له برازقين ... ... | ٢٠ | ك الحجـر | ١٥ |
| | ليرزقنهم الله رزقا حسنا وإن الله لهو خير الرازقين | ٥٨ | م الحـج | ٢٢ |
| | أم تسئلهم خرجا فخراج ربك خـير وهو خير الرازقين | ٧٢ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وما أنفقتم من شيء فهو يخلفـه وهو خير الرازقين | ٣٩ | ك سـبأ | ٣٤ |
| | قـل ما عند الله خير من اللهـو ومن التجارة والله خير الرازقين ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | م الجمعـة | ٦٢ |
| الرَّزَّاقُ: | إن الله هو الرزاق ذو القوة المتين... ... ... ... | ٥٨ | ك الذاريات | ٥١ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| الرَّاسِخُونَ: | والراسخون في العـلم يقولون آمنا به ... ... | ٧ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | لكن الراسخون في العلم منهم والمؤمنون يؤمنون بما أنزل إليك ... ... ... ... ... ... | ١٦٢ | م النسـاء | ٤ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| الرَّسِّ: | وعادا وثمودا وأصحاب الرس وقرونا بين ذلك كثيرا | ٣٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| (٢) | كذبت قبلهم قوم نوح وأصحاب الرس وثمود ... ... | ١٢ | ك قٓ | ٥٠ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| أَرْسَلَ: | هو الذي أرسـل رسوله بالهـدى ودين الحق | | | |
| (٧) | ليظهره على الدين كله ... ... ... ... ... | ٣٣ | م التـوبة | ٩ |
| | وهو الذي أرسـل الرياح بشرا بين يدي رحمتـه | ٤٨ | ك الفـرقان | ٢٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَرْسَلَ : | فأرسل فرعون فى المدائن حاشرين ... ... ... | ٥٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | والله الذى أرسل الرياح فتثير سحابا ... ... ... | ٩ | ك فاطر | ٣٥ |
| | هو الذى أرسل رسوله بالهدى ودين الحق ليظهره على الدين كله ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م الفتح | ٤٨ |
| | هو الذى أرسل رسوله بالهدى ودين الحق ليظهره على الدين كله ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | م الصف | ٦١ |
| | وأرسل عليهم طيرا أبابيل ... ... ... ... ... | ٣ | ك الفيل | ١٠٥ |
| أَرْسَلَتْ : | فلما سمعت بمكرهن أرسلت إليهن وأعتدت لهن متكأ | ٣١ | ك يوسف | ١٢ |
| أَرْسَلْتَ : | لولا أرسلت إلينا رسولا فنتبع آياتك من قبل أن نذل ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٣٤ | ك طه | ٢٠ |
| | لولا أرسلت إلينا رسولا فنتبع آياتك ونكون من المؤمنين | ٤٧ | ك القصص | ٢٨ |
| أَرْسَلْنَا : | كما أرسلنا فيكم رسولا منكم يتلوا عليكم آياتنا | ١٥١ | م البقرة | ٢ |
| (٥٨) | وما أرسلنا من رسول إلا ليطاع بإذن الله ... ... | ٦٤ | م النساء | ٤ |
| | لقد أخذنا ميثاق بنى إسرائيل وأرسلنا إليهم رسلا | ٧٠ | م المائدة | ٥ |
| | وأرسلنا السماء عليهم مدرارا ... ... ... ... ... | ٦ | ك الأنعام | ٦ |
| | ولقد أرسلنا إلى أمم من قبلك فأخذناهم بالبأساء والضراء | ٤٢ | ك « | ٦ |
| | لقد أرسلنا نوحا إلى قومه فقال يا قوم اعبدوا الله | ٥٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | وما أرسلنا فى قرية من نبى إلا أخذنا أهلها بالبأساء | ٩٤ | ك « | ٧ |
| | فأرسلنا عليهم الطوفان والجراد والقمل والضفادع | ١٣٣ | ك « | ٧ |
| | فأرسلنا عليهم رجزا من السماء بما كانوا يظلمون | ١٦٢ | ك « | ٧ |
| | ولقد أرسلنا نوحا إلى قومه إنى لكم نذير مبين | ٢٥ | ك هود | ١١ |
| | ولقد أرسلنا موسى بآياتنا وسلطان مبين... ... ... | ٩٦ | ك « | ١١ |
| | وما أرسلنا من قبلك إلا رجالا نوحى إليهم ... ... | ١٠٩ | ك يوسف | ١٢ |
| | ولقد أرسلنا رسلا من قبلك وجعلنا لهم أزواجا وذرية | ٣٨ | م الرعد | ١٣ |
| | وما أرسلنا من رسول إلا بلسان قومه ليبين لهم | ٤ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | ولقد أرسلنا موسى بآياتنا أن أخرج قومك من الظلمات إلى النور ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك « | ١٤ |
| | ولقد أرسلنا من قبلك فى شيع الأولين ... ... ... | ١٠ | ك الحجر | ١٥ |
| | وأرسلنا الرياح لواقح فأنزلنا من السماء ماء ... ... | ٢٢ | ك « | ١٥ |
| | وما أرسلنا من قبلك إلا رجالا نوحى إليهم ... ... | ٤٣ | ك النحل | ١٦ |
| | تالله لقد أرسلنا إلى أمم من قبلك فزين لهم الشيطان أعمالهم | ٦٣ | ك « | ١٦ |
| | سنة من قد أرسلنا قبلك من رسلنا ولا تجد لسنتنا تحويلا | ٧٧ | م الإسراء | ١٧ |
| | فأرسلنا إليها روحنا فتمثل لها بشرا سويا ... ... | ١٧ | ك مريم | ١٩ |
| | ألم تر أنا أرسلنا الشياطين على الكافرين تؤزهم أزا | ٨٣ | ك « | ١٩ |
| | وما أرسلنا قبلك إلا رجالا نوحى إليهم ... ... ... | ٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وما أرسلنا من قبلك من رسول إلا نوحى إليه أنه لا إله إلا أنا فاعبدون ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك « | ٢١ |
| | وما أرسلنا من قبلك من رسول ولا نبى إلا إذا تمنى ألقى الشيطان فى أمنيته ... ... ... ... ... | ٥٢ | م الحج | ٢٢ |
| أَرْسَلْنَا : | ولقد أرسلنا نوحا إلى قومه فقال يا قوم اعبدوا الله | ٢٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فأرسلنا فيهم رسولا منهم أن اعبدوا الله... ... ... | ٣٢ | ك « | ٢٣ |
| | ثم أرسلنا رسلنا تترى ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك « | ٢٣ |
| | ثم أرسلنا موسى وأخاه هرون بآياتنا وسلطان مبين | ٤٥ | ك « | ٢٣ |
| | وما أرسلنا قبلك من المرسلين إلا إنهم ليأكلون الطعام | ٢٠ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ولقد أرسلنا إلى ثمود أخاهم صالحا أن اعبدوا الله | ٤٥ | ك النمل | ٢٧ |
| | ولقد أرسلنا نوحا إلى قومه فلبث فيهم ألف سنة إلا خمسين عاما ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | فمنهم من أرسلنا عليه حاصبا ومنهم من أخذته الصيحة | ٤٠ | ك « | ٢٩ |
| | ولقد أرسلنا من قبلك رسلا إلى قومهم فجاءوهم بالبينات | ٤٧ | ك الروم | ٣٠ |
| | ولئن أرسلنا ريحا فرأوه مصفرا لظلوا من بعده يكفرون | ٥١ | ك « | ٣٠ |
| | إذ جاءتكم جنود فأرسلنا عليهم ريحا وجنودا لم تروها | ٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | فأعرضوا فأرسلنا عليهم سيل العرم ... ... ... ... | ١٦ | ك سبإ | ٣٤ |
| | وما أرسلنا فى قرية من نذير إلا قال مترفوها إنا بما أرسلتم به كافرون ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك « | ٣٤ |
| | وما أرسلنا إليهم قبلك من نذير... ... ... ... ... | ٤٤ | ك « | ٣٤ |
| | إذ أرسلنا إليهم اثنين فكذبوهما فعززنا بثالث... ... | ١٤ | ك يس | ٣٦ |
| | ولقد أرسلنا فيهم منذرين ... ... ... ... ... ... | ٧٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| | ولقد أرسلنا موسى بآياتنا وسلطان مبين... ... ... | ٢٣ | ك غافر | ٤٠ |
| | الذين كذبوا بالكتاب وبما أرسلنا به رسلنا فسوف يعلمون | ٧٠ | ك « | ٤٠ |
| | ولقد أرسلنا رسلا من قبلك منهم من قصصنا عليك ... | ٧٨ | ك « | ٤٠ |
| | فأرسلنا عليهم ريحا صرصرا فى أيام نحسات ... ... | ١٦ | ك فصلت | ٤١ |
| | وكم أرسلنا من نبى فى الأولين... ... ... ... ... | ٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وكذلك ما أرسلنا من قبلك فى قرية من نذير إلا قال مترفوها إنا وجدنا آباءنا على أمة ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك « | ٤٣ |
| | وسئل من أرسلنا من قبلك من رسلنا ... ... ... ... | ٤٥ | ك « | ٤٣ |
| | ولقد أرسلنا موسى بآياتنا إلى فرعون وملائه ... ... | ٤٦ | ك « | ٤٣ |
| | وفى عاد إذ أرسلنا عليهم الريح العقيم ... ... ... | ٤١ | ك الذاريات | ٥١ |
| | إنا أرسلنا عليهم ريحا صرصرا فى يوم نحس مستمر | ١٩ | ك القمر | ٥٤ |
| | إنا أرسلنا عليهم صيحة واحدة فكانوا كهشيم المحتظر | ٣١ | ك « | ٥٤ |
| | إنا أرسلنا عليهم حاصبا إلا آل لوط نجيناهم بسحر | ٣٤ | ك « | ٥٤ |
| | لقد أرسلنا رسلنا بالبينات ... ... ... ... ... | ٢٥ | م الحديد | ٥٧ |
| | ولقد أرسلنا نوحا وإبراهيم وجعلنا فى ذريتهما النبوة والكتاب ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | م « | ٥٧ |
| | إنا أرسلنا نوحا إلى قومه أن أنذر قومك من قبل أن يأتيهم عذاب أليم ... ... ... ... ... ... | ١ | ك نوح | ٧١ |
| | إنا أرسلنا إليكم رسولا شاهدا عليكم ... ... ... | ١٥ | ك المزمل | ٧٣ |
| | كما أرسلنا إلى فرعون رسولا ... ... ... ... ... | ١٥ | ك « | ٧٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَرْسَلْنَاكَ: | إنا أرسلناك بالحق بشيرا ونذيرا ... ... ... | ١١٩ | م البقرة | ٢ |
| (١٣) | وأرسلناك للناس رسولا وكفى بالله شهيدا ... ... | ٧٩ | م النساء | ٤ |
| | ومن تولى فما أرسلناك عليهم حفيظا ... ... ... ... | ٨٠ | م « | ٤ |
| | كذلك أرسلناك فى أمة قد خلت من قبلها أمم ... ... | ٣٠ | م الرعد | ١٣ |
| | وما أرسلناك عليهم وكيلا ... ... ... ... ... ... | ٥٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وبالحق أنزلناه وبالحق نزل وما أرسلناك إلا مبشرا ونذيرا | ١٠٥ | ك « | ١٧ |
| | وما أرسلناك إلا رحمة للعالمين ... ... ... ... ... | ١٠٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وما أرسلناك إلا مبشرا ونذيرا ... ... ... ... ... | ٥٦ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | يأيها النبى إنا أرسلناك شاهدا ومبشرا ونذيرا ... ... | ٤٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وما أرسلناك إلا كافة للناس بشيرا ونذيرا ... ... ... | ٢٨ | ك سبأ | ٣٤ |
| | إنا أرسلناك بالحق بشيرا ونذيرا ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك فاطر | ٣٥ |
| | فإن أعرضوا فما أرسلناك عليهم حفيظا ... ... ... | ٤٨ | ك الشورى | ٤٢ |
| | إنا أرسلناك شاهدا ومبشرا ونذيرا ... ... ... ... | ٨ | م الفتح | ٤٨ |
| أَرْسَلْنَاهُ: | وأرسلناه إلى مائة ألف أو يزيدون ... ... ... | ١٤٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| (٢) | وفى موسى إذ أرسلناه إلى فرعون بسلطان مبين... ... | ٣٨ | ك الذاريات | ٥١ |
| فَأَرْسَلُوا: | وجاءت سيارة فأرسلوا واردهم فأدلى دلوه | ١٩ | ك يوسف | ١٢ |
| أَرْسِلَهُ: | قال لن أرسله معكم حتى تؤتون موثقا من الله | ٦٦ | ك « | ١٢ |
| نُرْسِلُ: | وما نرسل المرسلين إلا مبشرين ومنذرين ... ... | ٤٨ | ك الأنعام | ٦ |
| (٥) | وما منعنا أن نرسل بالآيات إلا أن كذب بها الأولون | ٥٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وما نرسل بالآيات إلا تخويفا ... ... ... ... ... | ٥٩ | ك « | ١٧ |
| | وما نرسل المرسلين إلا مبشرين ومنذرين ... ... | ٥٦ | ك الكهف | ١٨ |
| | لنرسل عليهم حجارة من طين ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك الذاريات | ٥١ |
| لَنُرْسِلَنَّ: | لنؤمنن لك ولنرسلن معك بنى إسرائيل ... ... | ١٣٤ | ك الأعراف | ٧ |
| يُرْسِلُ: | وهو القاهر فوق عباده ويرسل عليكم حفظة | ٦١ | ك الأنعام | ٦ |
| (١٤) | وهو الذى يرسل الرياح بشرا بين يدى رحمته.. ... | ٥٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | ويا قوم استغفروا ربكم ثم توبوا إليه يرسل السماء عليكم مدرارا ... ... ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك هود | ١١ |
| | ويرسل الصواعق فيصيب بها من يشاء ... ... ... | ١٣ | م الرعد | ١٣ |
| | أفأمنتم أن يخسف بكم جانب البر أو يرسل عليكم حاصبا | ٦٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فيرسل عليكم قاصفا من الريح .. ... ... ... ... | ٦٩ | ك « | ١٧ |
| | ويرسل عليها حسبانا من السماء ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك الكهف | ١٨ |
| | ومن يرسل الرياح بشرا بين يدى رحمته ... ... ... | ٦٣ | ك النمل | ٢٧ |
| | ومن آياته أن يرسل الرياح مبشرات وليذيقكم من رحمته | ٤٦ | ك الروم | ٣٠ |
| | الله الذى يرسل الرياح فتثير سحابا ... ... ... ... | ٤٨ | ك « | ٣٠ |
| | ويرسل الأخرى إلى أجل مسمى ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك الزمر | ٣٩ |
| | أو يرسل رسولا فيوحى بإذنه ما يشاء ... ... ... | ٥١ | ك الشورى | ٤٢ |
| | أم أمنتم من فى السماء أن يرسل عليكم حاصبا ... ... | ١٧ | ك الملك | ٦٧ |
| | يرسل السماء عليكم مدرارا ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك نوح | ٧١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَرْسِلْ: | قد جئتكم ببينة من ربكم فأرسل معى بنى إسرائيل | ١٠٥ | ك الأعراف | ٧ |
| (٦) | قالوا أرجه وأخاه وأرسل فى المدائن حاشرين | ١١١ | ك « | ٧ |
| | فأرسل معنا أخانا نكتل وإنا له لحافظون ... ... ... | ٦٣ | ك يوسف | ١٢ |
| | فأرسل معنا بنى إسرائيل ولا تعذبهم ... ... ... ... | ٤٧ | ك طه | ٢٠ |
| | ويضيق صدرى ولا ينطلق لسانى فأرسل إلى هرون | ١٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | أن أرسل معنا بنى إسرائيل... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك « | ٢٦ |
| أَرْسِلْهُ: | أرسله معنا غدا يرتع ويلعب وإنا له لحافظون | ١٢ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | فأرسله معى ردءا يصدقنى ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك القصص | ٢٨ |
| فَأَرْسِلُونِ: | أنا أنبئكم بتأويله فأرسلون ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك يوسف | ١٢ |
| أُرْسِلَ: | فلنسألن الذين أرسل إليهم ولنسألن المرسلين... ... | ٦ | ك الأعراف | ٧ |
| (٤) | قالوا إنا بما أرسل به مؤمنون ... ... ... ... | ٧٥ | ك « | ٧ |
| | بل هو شاعر فليأتنا بآية كما أرسل الأولون ... ... | ٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | قال إن رسولكم الذى أرسل إليكم لمجنون ... ... | ٢٧ | ك الشعراء | ٢٦ |
| أُرْسِلْتُ: | وإن كان طائفة منكم آمنوا بالذى أرسلت به | | | |
| (٣) | وطائفة لم يؤمنوا فاصبروا حتى يحكم الله بيننا | ٨٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | فإن تولوا فقد أبلغتكم ما أرسلت به إليكم ... ... ... | ٥٧ | ك هود | ١١ |
| | قال إنما العلم عند الله وأبلغكم ما أرسلت به... ... | ٢٣ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| أُرْسِلْتُمْ: | وقالوا إنا كفرنا بما أرسلتم به ... ... ... ... | ٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| (٤) | إنا بما أرسلتم به كافرون ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك سبأ | ٣٤ |
| | قالوا لو شاء ربنا لأنزل ملائكة فإنا بما أرسلتم به كافرون | ١٤ | ك فصلت | ٤١ |
| | قالوا إنا بما أرسلتم به كافرون... ... ... ... ... | ٢٤ | ك الزخرف | ٤٣ |
| أُرْسِلْنَا: | قالوا لا تخف إنا أرسلنا إلى قوم لوط ... ... | ٧٠ | ك هود | ١١ |
| (٣) | قالوا إنا أرسلنا إلى قوم مجرمين . إلا آل لوط ... | ٥٨ | ك الحجر | ١٥ |
| | قالوا إنا أرسلنا إلى قوم مجرمين . لنرسل عليهم حجارة من طين | ٣٢ | ك الذاريات | ٥١ |
| أُرْسِلُوا: | وما أرسلوا عليهم حافظين ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك المطففين | ٨٣ |
| يُرْسَلُ: | يرسل عليكما شواظ من نار ونحاس فلا تنتصران | ٣٥ | م الرحمن | ٥٥ |
| رَسُولٌ: | أفكلما جاءكم رسول بما لا تهوى أنفسكم استكبرتم | ٨٧ | م البقرة | ٢ |
| (١٩٦) | ولما جاءهم رسول من عند الله مصدق لما معهم نبذ فريق من الذين أوتوا الكتاب كتاب الله وراء ظهورهم | ١٠١ | م « | ٢ |
| | لتكونوا شهداء على الناس ويكون الرسول عليكم شهيدا | ١٤٣ | م « | ٢ |
| | وما جعلنا القبلة التى كنت عليها إلا لنعلم من يتبع الرسول | ١٤٣ | م « | ٢ |
| | حتى يقول الرسول والذين آمنوا معه متى نصر الله | ٢١٤ | م « | ٢ |
| | آمن الرسول بما أنزل إليه من ربه والمؤمنون... ... | ٢٨٥ | م « | ٢ |
| | قل أطيعوا الله والرسول ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | م آل عمران | ٣ |
| | ربنا آمنا بما أنزلت واتبعنا الرسول فاكتبنا مع الشاهدين | ٥٣ | م « | ٣ |
| | ثم جاءكم رسول مصدق لما معكم لتؤمنن به ولتنصرنه | ٨١ | م « | ٣ |
| | وشهدوا أن الرسول حق وجاءهم البينات ... ... ... | ٨٦ | م « | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَسُولٌ | : وأطيعوا الله والرسول لعلكم ترحمون ... ... ... | ١٣٢ | م آل عمران | ٣ |
| | وما محمد إلا رسول قد خلت من قبله الرسل ... ... | ١٤٤ | م » | ٣ |
| | إذ تصعدون ولا تلوون على أحد والرسول يدعوكم | | | |
| | فى أخراكم ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٣ | م » | ٣ |
| | الذين استجابوا لله والرسول من بعد ما أصابهم القرح | ١٧٢ | م » | ٣ |
| | الذين قالوا إن الله عهد إلينا ألا نؤمن لرسول حتى | | | |
| | يأتينا بقربان ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٨٣ | م » | ٣ |
| | يومئذ يود الذين كفروا وعصوا الرسول لو تسوى | | | |
| | بهم الأرض ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | م النساء | ٤ |
| | أطيعوا الله وأطيعوا الرسول وأولى الأمر منكم ... | ٥٩ | م » | ٤ |
| | فإن تنازعتم فى شىء فردوه إلى الله والرسول ... ... | ٥٩ | م » | ٤ |
| | وإذا قيل لهم تعالوا إلى ما أنزل الله وإلى الرسول | | | |
| | رأيت المنافقين يصدون عنك صدودا... ... ... | ٦١ | م » | ٤ |
| | وما أرسلنا من رسول إلا ليطاع بإذن الله ... ... | ٦٤ | م » | ٤ |
| | واستغفر لهم الرسول لوجدوا الله توابا رحيما ... ... | ٦٤ | م » | ٤ |
| | ومن يطع الله والرسول فأولئك مع الذين أنعم الله عليهم | ٦٩ | م » | ٤ |
| | من يطع الرسول فقد أطاع الله ... ... ... ... ... | ٨٠ | م » | ٤ |
| | ولو ردوه إلى الرسول وإلى أولى الأمر منهم لعلمه | | | |
| | الذين يستنبطونه منهم ... ... ... ... ... ... | ٨٣ | م » | ٤ |
| | ومن يشاقق الرسول من بعد ما تبين له الهدى ... ... | ١١٥ | م » | ٤ |
| | وقولهم إنا قتلنا المسيح عيسى ابن مريم رسول الله ... | ١٥٧ | م » | ٤ |
| | يأيها الناس قد جاءكم الرسول بالحق من ربكم ... ... | ١٧٠ | م » | ٤ |
| | إنما المسيح عيسى ابن مريم رسول الله وكلمته... ... | ١٧١ | م » | ٤ |
| | يأيها الرسول لا يحزنك الذين يسارعون فى الكفر | ٤١ | م المائدة | ٥ |
| | يأيها الرسول بلغ ما أنزل إليك من ربك ... ... ... | ٦٧ | م » | ٥ |
| | كلما جاءهم رسول بما لا تهوى أنفسهم فريقا كذبوا | | | |
| | وفريقا يقتلون... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٠ | م » | ٥ |
| | ما المسيح ابن مريم إلا رسول قد خلت من قبله الرسل | ٧٥ | م » | ٥ |
| | وإذا سمعوا ما أنزل إلى الرسول ترى أعينهم تفيض | | | |
| | من الدمع ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨٣ | م » | ٥ |
| | وأطيعوا الله وأطيعوا الرسول واحذروا... ... ... | ٩٢ | م » | ٥ |
| | ما على الرسول إلا البلاغ والله يعلم ما تبدون وما تكتمون | ٩٩ | م » | ٥ |
| | وإذا قيل لهم تعالوا إلى ما أنزل الله وإلى الرسول | | | |
| | قالوا حسبنا ما وجدنا عليه آباءنا ... ... ... ... | ١٠٤ | م » | ٥ |
| | قال ياقوم ليس بى ضلالة ولكنى رسول من رب العالمين | ٦١ | ك الأعراف | ٧ |
| | قال ياقوم ليس بى سفاهة ولكنى رسول من رب العالمين | ٦٧ | ك » | ٧ |
| | وقال موسى يا فرعون إنى رسول من رب العالمين ... | ١٠٤ | ك » | ٧ |
| | الذين يتبعون الرسول النبى الأمى ... ... ... ... | ١٥٧ | ك » | ٧ |
| | قل يأيها الناس إنى رسول الله إليكم جميعا ... ... ... | ١٥٨ | ك » | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَسُولٌ | : يسئلونك عن الأنفال قل الأنفال لله والرسول... | ١ | م الأنفال | ٨ |
| | استجيبوا لله وللرسول إذا دعاكم لما يحييكم ... ... | ٢٤ | م » | ٨ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تخونوا الله والرسول ... ... | ٢٧ | م » | ٨ |
| | واعلموا أنما غنمتم من شىء فأن لله خمسه وللرسول | ٤١ | م » | ٨ |
| | ألا تقاتلون قوما نكثوا أيمانهم وهموا بإخراج الرسول | ١٣ | م التوبة | ٩ |
| | والذين يؤذون رسول الله لهم عذاب أليم... ... ... | ٦١ | م » | ٩ |
| | فرح المخلفون بمقعدهم خلاف رسول الله... ... ... | ٨١ | م » | ٩ |
| | لكن الرسول والذين آمنوا معه جاهدوا بأموالهم وأنفسهم | ٨٨ | م » | ٩ |
| | ويتخذ ما ينفق قربات عند الله وصلوات الرسول | ٩٩ | م » | ٩ |
| | ما كان لأهل المدينة ومن حولهم من الأعراب أن | | | |
| | يتخلفوا عن رسول الله ... ... ... ... ... ... | ١٢٠ | م » | ٩ |
| | لقد جاءكم رسول من أنفسكم عزيز عليه ما عنتم ... | ١٢٨ | ك » | ٩ |
| | ولكل أمة رسول ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك يونس | ١٠ |
| | فلما جاءه الرسول قال ارجع إلى ربك فسئله ما بال | | | |
| | النسوة اللاتى قطعن أيديهن ... ... ... ... ... | ٥٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | وما كان لرسول أن يأتى بآية إلا بإذن الله ... ... | ٣٨ | م الرعد | ١٣ |
| | وما أرسلنا من رسول إلا بلسان قومه ليبين لهم ... | ٤ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وما يأتيهم من رسول إلا كانوا به يستهزئون ... ... | ١١ | ك الحجر | ١٥ |
| | ولقد جاءهم رسول منهم فكذبوه فأخذهم العذاب | ١١٣ | ك النحل | ١٦ |
| | قال إنما أنا رسول ربك لأهب لك غلاما زكيا | ١٩ | ك مريم | ١٩ |
| | فقبضت قبضة من أثر الرسول فنبذتها ... ... ... | ٩٦ | ك طه | ٢٠ |
| | وما أرسلنا من قبلك من رسول إلا نوحى إليه ... ... | ٢٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وما أرسلنا من قبلك من رسول ولا نبى إلا إذا تمنى | | | |
| | ألقى الشيطان فى أمنيته... ... ... ... ... ... | ٥٢ | م الحج | ٢٢ |
| | هو سماكم المسلمين من قبل وفى هذا ليكون الرسول | | | |
| | شهيدا عليكم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٨ | م » | ٢٢ |
| | ويقولون آمنا بالله وبالرسول وأطعنا ... ... ... | ٤٧ | م النور | ٢٤ |
| | قل أطيعوا الله وأطيعوا الرسول فإن تولوا فإنما عليه ما حمل | ٥٤ | م » | ٢٤ |
| | وإن تطيعوه تهتدوا وما على الرسول إلا البلاغ المبين | ٥٤ | م » | ٢٤ |
| | وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة وأطيعوا الرسول لعلكم ترحمون | ٥٦ | م » | ٢٤ |
| | لا تجعلوا دعاء الرسول بينكم كدعاء بعضكم بعضا... | ٦٣ | م » | ٢٤ |
| | وقالوا ما لهذا الرسول يأكل الطعام ويمشى فى الأسواق | ٧ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | يقول ياليتنى اتخذت مع الرسول سبيلا ... ... ... | ٢٧ | ك » | ٢٥ |
| | وقال الرسول يارب إن قومى اتخذوا هذا القرآن مهجورا | ٣٠ | ك » | ٢٥ |
| | فأتيا فرعون فقولا إنا رسول رب العالمين ... ... | ١٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | إذ قال لهم أخوهم نوح ألا تتقون . إنى لكم رسول أمين | ١٠٧ | ك » | ٢٦ |
| | إذ قال لهم أخوهم هود ألا تتقون . إنى لكم رسول أمين | ١٢٥ | ك » | ٢٦ |
| | إذ قال لهم أخوهم صالح ألا تتقون . إنى لكم رسول أمين | ١٤٣ | ك » | ٢٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَسُولٌ : | إذ قال لهم أخوهم لوط ألا تتقون . إنى لكم رسول أمين | ١٦٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | إذ قال لهم شعيب ألا تتقون . إنى لكم رسول أمين | ١٧٨ | ك « | ٢٦ |
| | وما على الرسول إلا البلاغ المبين... ... ... ... ... | ١٨ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | لقد كان لكم فى رسول الله أسوة حسنة... ... ... ... | ٢١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ما كان محمد أبا أحد من رجالكم ولكن رسول الله وخاتم النبيين | ٤٠ | م « | ٣٣ |
| | وما كان لكم أن تؤذوا رسول الله... ... ... ... ... | ٥٣ | م « | ٣٣ |
| | ما يأتيهم من رسول إلا كانوا به يستهزئون... ... | ٣٠ | ك يس | ٣٦ |
| | وما كان لرسول أن يأتى بآية إلا بإذن الله ... ... | ٧٨ | ك غافر | ٤٠ |
| | بل متعت هؤلاء وآباءهم حتى جاءهم الحق ورسول مبين | ٢٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | فقال إنى رسول رب العالمين ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك « | ٤٣ |
| | أنى لهم الذكرى وقد جاءهم رسول مبين... ... ... | ١٣ | ك الدخان | ٤٤ |
| | ولقد فتنا قبلهم قوم فرعون وجاءهم رسول كريم ... | ١٧ | ك « | ٤٤ |
| | أن أدوا إلىّ عباد الله إنى لكم رسول أمين... ... | ١٨ | ك « | ٤٤ |
| | وشاقوا الرسول من بعد ما تبين لهم الهدى لن يضروا الله شيئا | ٣٢ | م محمد | ٤٧ |
| | أطيعوا الله وأطيعوا الرسول ولا تبطلوا أعمالكم... | ٣٣ | م « | ٤٧ |
| | بل ظننتم أن لن ينقلب الرسول والمؤمنون إلى أهليهم أبدا | ١٢ | م الفتح | ٤٨ |
| | محمد رسول الله والذين معه أشداء على الكفار رحماء بينهم | ٢٩ | م « | ٤٨ |
| | إن الذين يغضون أصواتهم عند رسول الله أولئك الذين امتحن الله قلوبهم للتقوى ... ... ... | ٣ | م الحجرات | ٤٩ |
| | واعلموا أن فيكم رسول الله لو يطيعكم فى كثير من الأمر لعنتم | ٧ | م « | ٤٩ |
| | كذلك ما أتى الذين من قبلهم من رسول إلا قالوا ساحر أو مجنون ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك الذاريات | ٥١ |
| | ومالكم لا تؤمنون بالله والرسول يدعوكم لتؤمنوا بربكم | ٨ | م الحديد | ٥٧ |
| | ويتناجون بالإثم والعدوان ومعصية الرسول... ... | ٨ | م المجادلة | ٥٨ |
| | فلا تتناجوا بالإثم والعدوان ومعصية الرسول | ٩ | م « | ٥٨ |
| | إذا ناجيتم الرسول فقدموا بين يدى نجواكم صدقة | ١٢ | م « | ٥٨ |
| | ما أفاء الله على رسوله من أهل القرى فلله وللرسول | ٧ | م الحشر | ٥٩ |
| | وما آتاكم الرسول فخذوه وما نهاكم عنه فانتهوا | ٧ | م « | ٥٩ |
| | يخرجون الرسول وإياكم أن تؤمنوا بالله ربكم | ١ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | يا قوم لم تؤذوننى وقد تعلمون أنى رسول الله إليكم | ٥ | م الصف | ٦١ |
| | وإذ قال عيسى ابن مريم يا بنى إسرائيل إنى رسول الله إليكم | ٦ | م « | ٦١ |
| | ومبشرا برسول يأتى من بعدى اسمه أحمد ... ... | ٦ | م « | ٦١ |
| | إذا جاءك المنافقون قالوا نشهد إنك لرسول الله | ١ | م المنافقون | ٦٣ |
| | وإذا قيل لهم تعالوا يستغفر لكم رسول الله لووا رءوسهم | ٥ | م « | ٦٣ |
| | هم الذين يقولون لا تنفقوا على من عند رسول الله | ٧ | م « | ٦٣ |
| | وأطيعوا الله وأطيعوا الرسول ... ... ... ... ... | ١٢ | م التغابن | ٦٤ |
| | فعصوا رسول ربهم فأخذهم أخذة رابية ... ... | ١٠ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | إنه لقول رسول كريم . وما هو بقول شاعر... ... | ٤٠ | ك « | ٦٩ |
| رَسُولٍ : | إلا من ارتضى من رسول ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك الجن | ٧٢ |
| | فعصى فرعون الرسول فأخذناه أخذا وبيلا ... ... | ١٦ | ك المزمل | ٧٣ |
| | إنه لقول رسول كريم . ذى قوة عند ذى العرش مكين | ١٩ | ك التكوير | ٨١ |
| | فقال لهم رسول الله ناقة الله وسقياها ... ... ... | ١٣ | ك الشمس | ٩١ |
| | رسول من الله يتلوا صحفا مطهرة ... ... ... ... | ٢ | م البينة | ٩٨ |
| الرَّسُولَا : | يقولون يا ليتنا أطعنا الله وأطعنا الرسولا... ... | ٦٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| رَسُولًا : | ربنا وابعث فيهم رسولا منهم يتلوا عليهم آياتك | ١٢٩ | م البقرة | ٢ |
| (٢٣) | كما أرسلنا فيكم رسولا منكم يتلوا عليكم آياتنا... ... | ١٥١ | م « | ٢ |
| | ورسولا إلى بنى إسرائيل أنى قد جئتكم بآية من ربكم | ٤٩ | م آل عمران | ٣ |
| | لقد من الله على المؤمنين إذ بعث فيهم رسولا من أنفسهم | ١٦٤ | م « | ٣ |
| | وأرسلناك للناس رسولا وكفى بالله شهيدا ... ... | ٧٩ | م النساء | ٤ |
| | ولقد بعثنا فى كل أمة رسولا أن اعبدوا الله... ... | ٣٦ | ك النحل | ١٦ |
| | وما كنا معذبين حتى نبعث رسولا ... ... ... ... | ١٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| | قل سبحان ربى هل كنت إلا بشرا رسولا ... ... | ٩٣ | ك « | ١٧ |
| | أبعث الله بشرا رسولا... ... ... ... ... ... ... | ٩٤ | ك « | ١٧ |
| | لنزلنا عليهم من السماء ملكا رسولا ... ... ... ... | ٩٥ | ك « | ١٧ |
| | واذكر فى الكتاب موسى إنه كان مخلصا وكان رسولا نبيا | ٥١ | ك مريم | ١٩ |
| | إنه كان صادق الوعد وكان رسولا نبيا ... ... ... | ٥٤ | ك « | ١٩ |
| | لولا أرسلت إلينا رسولا فنتبع آياتك ... ... ... | ١٣٤ | ك طه | ٢٠ |
| | فأرسلنا فيهم رسولا منهم أن اعبدوا الله ما لكم من إله غيره | ٣٢ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | أهذا الذى بعث الله رسولا... ... ... ... ... ... | ٤١ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ربنا لولا أرسلت إلينا رسولا فنتبع آياتك... ... ... | ٤٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | وما كان ربك مهلك القرى حتى يبعث فى أمها رسولا | ٥٩ | ك « | ٢٨ |
| | حتى إذا هلك قلتم لن يبعث الله من بعده رسولا | ٣٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | أو يرسل رسولا فيوحى بإذنه ما يشاء ... ... ... | ٥١ | ك الشورى | ٤٢ |
| | هو الذى بعث فى الأميين رسولا منهم ... ... ... | ٢ | م الجمعة | ٦٢ |
| | رسولا يتلوا عليكم آيات الله مبينات... ... ... ... | ١١ | م الطلاق | ٦٥ |
| | إنا أرسلنا إليكم رسولا شاهدا عليكم... ... ... ... | ١٥ | ك المزمل | ٧٣ |
| | كما أرسلنا إلى فرعون رسولا ... ... ... ... ... | ١٥ | ك « | ٧٣ |
| رَسُولَكُمْ : | أم تريدون أن تسئلوا رسولكم كما سئل موسى من قبل | ١٠٨ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | قال إن رسولكم الذى أرسل إليكم لمجنون ... ... | ٢٧ | ك الشعراء | ٢٦ |
| رَسُولُنَا : | قد جاءكم رسولنا يبين لكم كثيرا مما كنتم تخفون من الكتاب ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | م المائدة | ٥ |
| (٤) | يا أهل الكتاب قد جاءكم رسولنا يبين لكم على فترة من الرسل | ١٩ | م « | ٥ |
| | فإن توليتم فإنما على رسولنا البلاغ المبين ... | ٩٢ | م « | ٥ |
| | فإن توليتم فإنما على رسولنا البلاغ المبين... ... ... | ١٢ | م التغابن | ٦٤ |
| رَسُولِهِ : | فإن لم تفعلوا فأذنوا بحرب من الله ورسوله | ٢٧٩ | م البقرة | ٢ |
| (٨٤) | وكيف تكفرون وأنتم تتلى عليكم آيات الله وفيكم رسوله | ١٠١ | م آل عمران | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَسُولُهُ | ومن يطع الله ورسوله يدخله جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... ... | ١٣ م | النساء | ٤ |
| | ومن يعص الله ورسوله ويتعدّ حدوده يدخله نارا خالدا فيها ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٤ م | » | ٤ |
| | ومن يخرج من بيته مهاجرا إلى الله ورسوله ثم يدركه الموت فقد وقع أجره على الله ... ... ... ... | ١٠٠ م | » | ٤ |
| | يأيها الذين آمنوا آمنوا بالله ورسوله ... ... ... | ١٣٦ م | » | ٤ |
| | والكتاب الذى نزّل على رسوله ... ... ... ... ... | ١٣٦ م | » | ٤ |
| | إنما جزاء الذين يحاربون الله ورسوله ويسعون فى الأرض فسادا أن يقتّلوا... ... ... ... ... | ٣٣ م | المائدة | ٥ |
| | إنما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا ... ... ... | ٥٥ م | » | ٥ |
| | ومن يتولّ الله ورسوله والذين آمنوا فإن حزب الله هم الغالبون ... ... ... ... ... ... ... | ٥٦ م | » | ٥ |
| | فآمنوا بالله ورسوله النبىّ الأمىّ الذى يؤمن بالله وكلماته | ١٥٨ ك | الأعراف | ٧ |
| | فاتقوا الله وأصلحوا ذات بينكم وأطيعوا الله ورسوله | ١ م | الأنفال | ٨ |
| | ذلك بأنهم شاقّوا الله ورسوله ... ... ... ... ... | ١٣ م | » | ٨ |
| | ومن يشاقق الله ورسوله فإن الله شديد العقاب | ١٣ م | » | ٨ |
| | أطيعوا الله ورسوله ولا تولّوا عنه وأنتم تسمعون | ٢٠ م | » | ٨ |
| | وأطيعوا الله ورسوله ولا تنازعوا فتفشلوا ... ... | ٤٦ م | » | ٨ |
| | براءة من الله ورسوله إلى الذين عاهدتم من المشركين | ١ م | التوبة | ٩ |
| | وأذان من الله ورسوله إلى الناس يوم الحج الأكبر | ٣ م | » | ٩ |
| | أن الله برىء من المشركين ورسولُه ... ... ... ... | ٣ م | » | ٩ |
| | كيف يكون للمشركين عهد عند الله وعند رسوله إلا الذين عاهدتم عند المسجد الحرام ... ... ... | ٧ م | » | ٩ |
| | ولم يتخذوا من دون الله ولا رسوله ولا المؤمنين وليجة | ١٦ م | » | ٩ |
| | أحب إليكم من الله ورسوله وجهاد فى سبيله فتربصوا | ٢٤ م | » | ٩ |
| | ثم أنزل الله سكينته على رسوله وعلى المؤمنين ... ... | ٢٦ م | » | ٩ |
| | ولا يحرّمون ماحرم الله ورسوله ولا يدينون دين الحق | ٢٩ م | » | ٩ |
| | هو الذى أرسل رسوله بالهدى ودين الحق ليظهره على الدين كله ... ... ... ... ... ... ... | ٣٣ م | » | ٩ |
| | وما منعهم أن تقبل منهم نفقاتهم إلا أنهم كفروا بالله وبرسوله ... ... ... ... ... ... ... | ٥٤ م | » | ٩ |
| | ولو أنهم رضوا ما آتاهم الله ورسوله ... ... ... ... | ٥٩ م | » | ٩ |
| | وقالوا حسبنا الله سيؤتينا الله من فضله ورسوله | ٥٩ م | » | ٩ |
| | والله ورسوله أحق أن يرضوه إن كانوا مؤمنين | ٦٢ م | » | ٩ |
| | ألم يعلموا أنه من يحادد الله ورسوله فأن له نار جهنم | ٦٣ م | » | ٩ |
| | قل أبالله وآياته ورسوله كنتم تستهزئون ... ... ... | ٦٥ م | » | ٩ |
| | ويقيمون الصلاة ويؤتون الزكاة ويطيعون الله ورسوله | ٧١ م | » | ٩ |
| | وما نقموا إلا أن أغناهم الله ورسوله من فضله | ٧٤ م | » | ٩ |
| رَسُولُهُ | ذلك بأنهم كفروا بالله ورسوله والله لا يهدى القوم الفاسقين ... ... ... ... ... ... ... | ٨٠ م | التوبة | ٩ |
| | إنهم كفروا بالله ورسوله وماتوا وهم فاسقون | ٨٤ م | » | ٩ |
| | وإذا أنزلت سورة أن آمنوا بالله وجاهدوا مع رسوله استأذنك أولوا الطول منهم ... ... ... ... ... | ٨٦ م | » | ٩ |
| | وقعد الذين كذبوا الله ورسوله ... ... ... ... ... | ٩٠ م | » | ٩ |
| | ولا على الذين لا يجدون ما ينفقون حرج إذا نصحوا لله ورسوله ... ... ... ... ... ... ... | ٩١ م | » | ٩ |
| | وسيرى الله عملكم ورسوله ثم تردون إلى عالم الغيب والشهادة | ٩٤ م | » | ٩ |
| | وأجدر ألا يعلموا حدود ما أنزل الله على رسوله... ... | ٩٧ م | » | ٩ |
| | وقل اعملوا فسيرى الله عملكم ورسوله والمؤمنون | ١٠٥ م | » | ٩ |
| | وإرصادا لمن حارب الله ورسوله من قبل ... ... | ١٠٧ م | » | ٩ |
| | وإذا دعوا إلى الله ورسوله ليحكم بينهم إذا فريق منهم معرضون ... ... ... ... ... ... ... | ٤٨ م | النور | ٢٤ |
| | أم يخافون أن يحيف الله عليهم ورسوله ... ... ... | ٥٠ م | » | ٢٤ |
| | إنما كان قول المؤمنين إذا دعوا إلى الله ورسوله ليحكم بينهم أن يقولوا سمعنا وأطعنا ... ... ... ... | ٥١ م | » | ٢٤ |
| | ومن يطع الله ورسوله ويخش الله ويتقه فأولئك هم الفائزون ... ... ... ... ... ... ... | ٥٢ م | » | ٢٤ |
| | إنما المؤمنون الذين آمنوا بالله ورسوله ... ... ... | ٦٢ م | » | ٢٤ |
| | إن الذين يستأذنونك أولئك الذين يؤمنون بالله ورسوله | ٦٢ م | » | ٢٤ |
| | وإذ يقول المنافقون والذين فى قلوبهم مرض ما وعدنا الله ورسوله إلا غرورا... ... ... ... ... ... | ١٢ م | الأحزاب | ٣٣ |
| | ولما رأى المؤمنون الأحزاب قالوا هذا ما وعدنا الله ورسوله ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ م | » | ٣٣ |
| | وصدق الله ورسوله وما زادهم إلا إيمانا وتسليما | ٢٢ م | » | ٣٣ |
| | وإن كنتن تردن الله ورسوله والدار الآخرة فإن الله أعد للمحسنات منكن أجرا عظيما ... ... ... ... | ٢٩ م | » | ٣٣ |
| | ومن يقنت منكن لله ورسوله وتعمل صالحا نؤتها أجرها مرتين ... ... ... ... ... ... ... | ٣١ م | » | ٣٣ |
| | وأقمن الصلاة وآتين الزكاة وأطعن الله ورسوله | ٣٣ م | » | ٣٣ |
| | وما كان لمؤمن ولا مؤمنة إذا قضى الله ورسوله أمرا أن يكون لهم الخيرة من أمرهم ... ... ... ... | ٣٦ م | » | ٣٣ |
| | ومن يعص الله ورسوله فقد ضل ضلالا مبينا ... ... | ٣٦ م | » | ٣٣ |
| | إن الذين يؤذون الله ورسوله لعنهم الله فى الدنيا والآخرة | ٥٧ م | » | ٣٣ |
| | ومن يطع الله ورسوله فقد فاز فوزا عظيما ... ... ... | ٧١ م | » | ٣٣ |
| | لتؤمنوا بالله ورسوله وتعزروه وتوقّروه ... ... ... | ٩ م | الفتح | ٤٨ |
| | ومن لم يؤمن بالله ورسوله فإنا أعتدنا للكافرين سعيرا | ١٣ م | » | ٤٨ |
| | ومن يطع الله ورسوله يدخله جنات تجرى من تحتها الأنهار | ١٧ م | » | ٤٨ |
| | فأنزل الله سكينته على رسوله وعلى المؤمنين... ... ... | ٢٦ م | » | ٤٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَسُولُهُ: | لقد صدق الله رسوله الرؤيا بالحق ... ... ... | ٢٧ | م الفتح | ٤٨ |
| | هو الذى أرسل رسوله بالهدى ودين الحق ليظهره على الدين كله ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م « | ٤٨ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تقدموا بين يدى الله ورسوله | ١ | م الحجرات | ٤٩ |
| | وإن تطيعوا الله ورسوله لا يلتكم من أعمالكم شيئا | ١٤ | م « | ٤٩ |
| | إنما المؤمنون الذين آمنوا بالله ورسوله ثم لم يرتابوا | ١٥ | م « | ٤٩ |
| | آمنوا بالله ورسوله وأنفقوا مما جعلكم مستخلفين فيه | ٧ | م الحديد | ٥٧ |
| | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله وآمنوا برسوله ... ... | ٢٨ | م « | ٥٧ |
| | ذلك لتؤمنوا بالله ورسوله وتلك حدود الله... ... | ٤ | م المجادلة | ٥٨ |
| | إن الذين يحادون الله ورسوله كبتوا كما كبت الذين من قبلهم | ٥ | م « | ٥٨ |
| | فأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة وأطيعوا الله ورسوله | ١٣ | م « | ٥٨ |
| | إن الذين يحادون الله ورسوله أولئك فى الأذلين | ٢٠ | م « | ٥٨ |
| | لا تجد قوما يؤمنون بالله واليوم الآخر يوادون من حاد الله ورسوله ... ... ... ... ... | ٢٢ | م « | ٥٨ |
| | ذلك بأنهم شاقوا الله ورسوله ... ... ... ... ... | ٤ | م الحشر | ٥٩ |
| | وما أفاء الله على رسوله منهم فما أوجفتم عليه من خيل ولا ركاب ... ... ... ... ... ... | ٦ | م « | ٥٩ |
| | ما أفاء الله على رسوله من أهل القرى فلله وللرسول | ٧ | م « | ٥٩ |
| | يبتغون فضلا من الله ورضوانا وينصرون الله ورسوله | ٨ | م « | ٥٩ |
| | هو الذى أرسل رسوله بالهدى ودين الحق ليظهره على الدين كله ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | م الصف | ٦١ |
| | تؤمنون بالله ورسوله وتجاهدون فى سبيل الله بأموالكم وأنفسكم ... ... ... ... ... ... | ١١ | م « | ٦١ |
| | قالوا نشهد إنك لرسول الله والله يعلم إنك لرسوله | ١ | م المنافقون | ٦٣ |
| | ولله العزة ولرسوله وللمؤمنين ولكن المنافقين لا يعلمون | ٨ | م « | ٦٣ |
| | فآمنوا بالله ورسوله والنور الذى أنزلنا ... ... ... | ٨ | م التغابن | ٦٤ |
| | ومن يعص الله ورسوله فإن له نار جهنم خالدين فيها أبدا | ٢٣ | ك الجن | ٧٢ |
| رَسُولَهَا: | كلما جاء أمة رسولها كذبوه فأتبعنا بعضهم بعضا | ٤٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| رَسُولُهُمْ: | فإذا جاء رسولهم قضى بينهم بالقسط ... ... | ٤٧ | ك يونس | ١٠ |
| (٣) | أم لم يعرفوا رسولهم فهم له منكرون ... ... ... | ٦٩ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وهمت كل أمة برسولهم ليأخذوه ... ... ... ... | ٥ | ك غافر | ٤٠ |
| رَسُولِي: | وإذ أوحيت إلى الحواريين أن آمنوا بى وبرسولى | ١١١ | م المائدة | ٥ |
| رَسُولَا: | فأتياه فقولا إنا رسولا ربك ... ... ... ... | ٤٧ | ك طه | ٢٠ |
| رُسُلٌ: | ولقد آتينا موسى الكتاب وقفينا من بعده بالرسل | ٨٧ | م البقرة | ٢ |
| (٣٤) | تلك الرسل فضلنا بعضهم على بعض... ... ... | ٢٥٣ | م « | ٢ |
| | وما محمد إلا رسول قد خلت من قبله الرسل ... ... | ١٤٤ | م آل عمران | ٣ |
| | قل قد جاءكم رسل من قبلى بالبينات وبالذى قلتم | ١٨٣ | م « | ٣ |
| | فإن كذبوك فقد كذب رسل من قبلك جاءوا بالبينات | ١٨٤ | م « | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رُسُلٍ: | رسلا مبشرين ومنذرين لئلا يكون للناس على الله حجة بعد الرسل... ... ... ... ... ... ... | ١٦٥ | م النساء | ٤ |
| | يأهل الكتاب قد جاءكم رسولنا يبين لكم على فترة من الرسل | ١٩ | م المائدة | ٥ |
| | ما المسيح ابن مريم إلا رسول قد خلت من قبله الرسل | ٧٥ | م « | ٥ |
| | يوم يجمع الله الرسل فيقول ماذا أجبتم ... ... ... | ١٠٩ | م « | ٥ |
| | ولقد استهزئ برسل من قبلك فحاق بالذين سخروا منهم ما كانوا به يستهزءون ... ... ... ... ... | ١٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | ولقد كذبت رسل من قبلك فصبروا على ما كذبوا | ٣٤ | ك « | ٦ |
| | لن نؤمن حتى نؤتى مثل ما أوتى رسل الله ... ... | ١٢٤ | ك « | ٦ |
| | يامعشر الجن والإنس ألم يأتكم رسل منكم ... ... | ١٣٠ | ك « | ٦ |
| | يا بنى آدم إما يأتينكم رسل منكم يقصون عليكم آياتى | ٣٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | لقد جاءت رسل ربنا بالحق ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك « | ٧ |
| | قد جاءت رسل ربنا بالحق فهل لنا من شفعاء فيشفعوا لنا | ٥٣ | ك « | ٧ |
| | قالوا يا لوط إنا رسل ربك لن يصلوا إليك... ... | ٨١ | ك هود | ١١ |
| | وكلا نقص عليك من أنباء الرسل ما نثبت به فؤادك | ١٢٠ | ك « | ١١ |
| | حتى إذا استيأس الرسل وظنوا أنهم قد كذبوا جاءهم نصرنا | ١١٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | ولقد استهزىء برسل من قبلك فأمليت للذين كفروا | ٣٢ | م الرعد | ١٣ |
| | ربنا أخرنا إلى أجل قريب نجب دعوتك ونتبع الرسل | ٤٤ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | فهل على الرسل إلا البلاغ المبين... ... ... ... | ٣٥ | ك النحل | ١٦ |
| | ولقد استهزىء برسل من قبلك فحاق بالذين سخروا منهم ما كانوا به يستهزءون ... ... ... ... ... | ٤١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | يأيها الرسل كلوا من الطيبات واعملوا صالحا ... ... | ٥١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وقوم نوح لما كذبوا الرسل أغرقناهم ... ... ... | ٣٧ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وإن يكذبوك فقد كذبت رسل من قبلك... ... ... | ٤ | ك فاطر | ٣٥ |
| | إن كل إلا كذب الرسل فحق عقاب... ... ... ... | ١٤ | ك ص | ٣٨ |
| | ألم يأتكم رسل منكم يتلون عليكم آيات ربكم ... ... | ٧١ | ك الزمر | ٣٩ |
| | إذ جاءتهم الرسل من بين أيديهم ومن خلفهم ألا تعبدوا إلا الله... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك فصلت | ٤١ |
| | ما يقال لك إلا ما قد قيل للرسل من قبلك ... ... | ٤٣ | ك « | ٤١ |
| | قل ما كنت بدعا من الرسل ... ... ... ... ... | ٩ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | فاصبر كما صبر أولوا العزم من الرسل ولا تستعجل لهم | ٣٥ | م « | ٤٦ |
| | كل كذب الرسل فحق وعيد... ... ... ... ... | ١٤ | ك ق | ٥٠ |
| | وإذا الرسل أقتت . لأى يوم أجلت . ليوم الفصل | ١١ | ك المرسلات | ٧٧ |
| رُسُلًا: | ورسلا قد قصصناهم عليك من قبل ... ... ... | ١٦٤ | م النساء | ٤ |
| (١٠) | ورسلا لم نقصصهم عليك ... ... ... ... ... | ١٦٤ | م « | ٤ |
| | رسلا مبشرين ومنذرين لئلا يكون للناس على الله حجة بعد الرسل ... ... ... ... ... ... | ١٦٥ | م « | ٤ |
| | لقد أخذنا ميثاق بنى إسرائيل وأرسلنا إليهم رسلا | ٧٠ | م المائدة | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| رُسُلًا: | ثم بعثنا من بعده رسلا إلى قومهم فجاءوهم بالبينات | ك يونس | ٧٤ ١٠ |
| | ولقد أرسلنا رسلا من قبلك وجعلنا لهم أزواجا وذرية | م الرعد | ٣٨ ١٣ |
| | الله يصطفى من الملائكة رسلا ومن الناس ... ... | م الحج | ٧٥ ٢٢ |
| | ولقد أرسلنا من قبلك رسلا إلى قومهم فجاءوهم بالبينات | ك الروم | ٤٧ ٣٠ |
| | الحمد لله فاطر السموات والأرض جاعل الملائكة رسلا | ك فاطر | ١ ٣٥ |
| | ولقد أرسلنا رسلا من قبلك منهم من قصصنا عليك | ك غافر | ٧٨ ٤٠ |
| رُسُلِكَ: | ربنا وآتنا ما وعدتنا على رسلك ولا تخزنا يوم القيامة | م آل عمران | ١٩٤ ٣ |
| رُسُلُكُمْ: | قالوا أو لم تك تأتيكم رسلكم بالبينات قالوا بلى | ك غافر | ٥٠ ٤٠ |
| رُسُلُنَا: | ولقد جاءتهم رسلنا بالبينات ... ... ... ... ... | م المائدة | ٣٢ ٥ |
| (١٧) | حتى إذا جاء أحدكم الموت توفته رسلنا وهم لا يفرطون | ك الأنعام | ٦١ ٦ |
| | حتى إذا جاءتهم رسلنا يتوفونهم قالوا أين ما كنتم تدعون من دون الله ... ... ... ... ... ... ... | ك الأعراف | ٣٧ ٧ |
| | قل الله أسرع مكرا إن رسلنا يكتبون ما تمكرون... | ك يونس | ٢١ ١٠ |
| | ثم نجى رسلنا والذين آمنوا كذلك حقا علينا ننج المؤمنين | ك « | ١٠٣ ١٠ |
| | ولقد جاءت رسلنا إبراهيم بالبشرى قالوا سلاما | ك هود | ٦٩ ١١ |
| | ولما جاءت رسلنا لوطا سيء بهم وضاق بهم ذرعا | ك « | ٧٧ ١١ |
| | سنة من قد أرسلنا قبلك من رسلنا ولا تجد لسنتنا تحويلا | م الإسراء | ٧٧ ١٧ |
| | ثم أرسلنا رسلنا تترا كل ما جاء أمة رسولها كذبوه | ك المؤمنون | ٤٤ ٢٣ |
| | ولما جاءت رسلنا إبراهيم بالبشرى قالوا إنا مهلكوا أهل هذه القرية ... ... ... ... ... ... ... | ك العنكبوت | ٣١ ٢٩ |
| | ولما أن جاءت رسلنا لوطا سيء بهم وضاق بهم ذرعا | ك « | ٣٣ ٢٩ |
| | إنا لننصر رسلنا والذين آمنوا في الحياة الدنيا ... ... | ك غافر | ٥١ ٤٠ |
| | الذين كذبوا بالكتاب وبما أرسلنا به رسلنا ... ... | ك « | ٧٠ ٤٠ |
| | وسئل من أرسلنا من قبلك من رسلنا... ... ... ... | ك الزخرف | ٤٥ ٤٣ |
| | بلى ورسلنا لديهم يكتبون ... ... ... ... ... ... | ك « | ٨٠ ٤٣ |
| | لقد أرسلنا رسلنا بالبينات وأنزلنا معهم الكتاب والميزان | م الحديد | ٢٥ ٥٧ |
| | ثم قفينا على آثارهم برسلنا وقفينا بعيسى ابن مريم ... | م « | ٢٧ ٥٧ |
| رُسُلِهِ: | من كان عدوا لله وملائكته ورسله وجبريل وميكال | | |
| (١٧) | فإن الله عدو للكافرين ... ... ... ... ... ... | م البقرة | ٩٨ ٢ |
| | كل آمن بالله وملائكته وكتبه ورسله... ... ... ... | م « | ٢٨٥ ٢ |
| | لا نفرق بين أحد من رسله ... ... ... ... ... ... | م « | ٢٨٥ ٢ |
| | ولكن الله يجتبي من رسله من يشاء ... ... ... ... | م آل عمران | ١٧٩ ٣ |
| | فآمنوا بالله ورسله وإن تؤمنوا وتتقوا فلكم أجر عظيم | م « | ١٧٩ ٣ |
| | ومن يكفر بالله وملائكته وكتبه ورسله واليوم الآخر فقد ضل ضلالا بعيدا ... ... ... ... ... ... | م النساء | ١٣٦ ٤ |
| | إن الذين يكفرون بالله ورسله ... ... ... ... ... | م « | ١٥٠ ٤ |
| | ويريدون أن يفرقوا بين الله ورسله... ... ... ... | م « | ١٥٠ ٤ |
| | والذين آمنوا بالله ورسله ولم يفرقوا بين أحد منهم أولئك سوف يؤتيهم أجورهم ... ... ... ... | م « | ١٥٢ ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| رُسُلِهِ: | فآمنوا بالله ورسله ولا تقولوا ثلاثة انتهوا خيرا لكم | م النساء | ١٧١ ٤ |
| | وتلك عاد جحدوا بآيات ربهم وعصوا رسله ... ... | ك هود | ٥٩ ١١ |
| | فلا تحسبن الله مخلف وعده رسله إن الله عزيز ذو انتقام | ك إبراهيم | ٤٧ ١٤ |
| | والذين آمنوا بالله ورسله أولئك هم الصديقون ... | م الحديد | ١٩ ٥٧ |
| | أعدت للذين آمنوا بالله ورسله ... ... ... ... ... | م « | ٢١ ٥٧ |
| | وليعلم الله من ينصره ورسله بالغيب إن الله قوي عزيز | م « | ٢٥ ٥٧ |
| | ولكن الله يسلط رسله على من يشاء والله على كل شيء قدير | م الحشر | ٦ ٥٩ |
| | وكأين من قرية عتت عن أمر ربها ورسله فحاسبناها حسابا شديدا ... ... ... ... ... ... ... ... | م الطلاق | ٨ ٦٥ |
| رُسُلُهُمْ: (١٢) | ولقد جاءتهم رسلهم بالبينات فما كانوا ليؤمنوا بما كذبوا من قبل ... ... ... ... ... ... ... | ك الأعراف | ١٠١ ٧ |
| | أتتهم رسلهم بالبينات فما كان الله ليظلمهم ... ... | م التوبة | ٧٠ ٩ |
| | وجاءتهم رسلهم بالبينات وما كانوا ليؤمنوا ... ... | ك يونس | ١٣ ١٠ |
| | جاءتهم رسلهم بالبينات فردوا أيديهم في أفواههم | ك إبراهيم | ٩ ١٤ |
| | قالت لهم رسلهم أفي الله شك فاطر السموات والأرض | ك « | ١٠ ١٤ |
| | قالت لهم رسلهم إن نحن إلا بشر مثلكم ... ... ... | ك « | ١١ ١٤ |
| | وقال الذين كفروا لرسلهم لنخرجنكم من أرضنا ... | ك « | ١٣ ١٤ |
| | وعمروها أكثر مما عمروها وجاءتهم رسلهم بالبينات | ك الروم | ٩ ٣٠ |
| | جاءتهم رسلهم بالبينات وبالزبر وبالكتاب المنير ... | ك فاطر | ٢٥ ٣٥ |
| | ذلك بأنهم كانت تأتيهم رسلهم بالبينات فكفروا | ك غافر | ٢٢ ٤٠ |
| | فلما جاءتهم رسلهم بالبينات فرحوا بما عندهم من العلم | ك « | ٨٣ ٤٠ |
| | ذلك بأنه كانت تأتيهم رسلهم بالبينات فقالوا أبشر يهدوننا | م التغابن | ٦ ٦٤ |
| رُسُلِي: | لئن أقمتم الصلاة وآتيتم الزكاة وآمنتم برسلي وعزرتموهم | م المائدة | ١٢ ٥ |
| (٤) | ذلك جزاؤهم جهنم بما كفروا واتخذوا آياتي ورسلي هزوا ... ... ... ... ... ... ... ... | ك الكهف | ١٠٦ ١٨ |
| | وما بلغوا معشار ما آتيناهم فكذبوا رسلي ... ... ... | ك سبأ | ٤٥ ٣٤ |
| | كتب الله لأغلبن أنا ورسلي إن الله قوي عزيز | م المجادلة | ٢١ ٥٨ |
| رِسَالَةَ: | فتولى عنهم وقال يا قوم لقد أبلغتكم رسالة ربي | ك الأعراف | ٧٩ ٧ |
| رِسَالَتَهُ: | وإن لم تفعل فما بلغت رسالته ... ... ... ... ... | م المائدة | ٦٧ ٥ |
| (٢) | الله أعلم حيث يجعل رسالته ... ... ... ... ... | ك الأنعام | ١٢٤ ٦ |
| رِسَالَاتِ: | أبلغكم رسالات ربي وأنصح لكم ... ... ... ... | ك الأعراف | ٦٢ ٧ |
| (٥) | أبلغكم رسالات ربي وأنا لكم ناصح أمين ... ... ... | ك « | ٦٨ ٧ |
| | لقد أبلغتكم رسالات ربي ونصحت لكم ... ... ... | ك « | ٩٣ ٧ |
| | الذين يبلغون رسالات الله ويخشونه ولا يخشون أحدا إلا الله ... ... ... ... ... ... ... ... | م الأحزاب | ٣٩ ٣٣ |
| | ليعلم أن قد أبلغوا رسالات ربهم وأحاط بما لديهم | ك الجن | ٢٨ ٧٢ |
| رِسَالَاتِهِ: | إلا بلاغا من الله ورسالاته ... ... ... ... ... | ك « | ٢٣ ٧٢ |
| رِسَالَاتِي: | إني اصطفيتك على الناس برسالاتي وبكلامي ... | ك الأعراف | ١٤٤ ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| مُرْسِلَ | : وما يمسك فلا مرسل له من بعده ... ... ... | ٢ ك فاطر | ٣٥ |
| مُرْسِلُوا | : إنا مرسلوا الناقة فتنة لهم فارتقبهم واصطبر | ٢٧ ك القمر | ٥٤ |
| مُرْسِلِينَ | : ولكنا كنا مرسلين ... ... ... ... ... | ٤٥ ك القصص | ٢٨ |
| (٢) | أمرا من عندنا إنا كنا مرسلين ... ... ... ... | ٥ ك الدخان | ٤٤ |
| مُرْسِلَةٌ | : وإني مرسلة إليهم بهدية فناظرة بم يرجع المرسلون | ٣٥ ك النمل | ٢٧ |
| مُرْسَلَ | : أتعلمون أن صالحا مرسل من ربه ... ... ... | ٧٥ ك الأعراف | ٧ |
| مُرْسَلًا | : ويقول الذين كفروا لست مرسلا ... ... ... | ٤٣ م الرعد | ١٣ |
| مُرْسَلُونَ | : قال فما خطبكم أيها المرسلون ... ... ... | ٥٧ ك الحجر | ١٥ |
| (٩) | فلما جاء آل لوط المرسلون . قال إنكم قوم منكرون ... | ٦١ ك « | ١٥ |
| | يا موسى لا تخف إني لا يخاف لدي المرسلون ... ... | ١٠ ك النمل | ٢٧ |
| | وإني مرسلة إليهم بهدية فناظرة بم يرجع المرسلون | ٣٥ ك « | ٢٧ |
| | واضرب لهم مثلا أصحاب القرية إذ جاءها المرسلون | ١٣ ك يس | ٣٦ |
| | فعززنا بثالث فقالوا إنا إليكم مرسلون ... ... ... | ١٤ ك « | ٣٦ |
| | قالوا ربنا يعلم إنا إليكم لمرسلون ... ... ... | ١٦ ك « | ٣٦ |
| | هذا ما وعد الرحمن وصدق المرسلون ... ... ... | ٥٢ ك « | ٣٦ |
| | قال فما خطبكم أيها المرسلون ... ... ... ... | ٣١ ك الذاريات | ٥١ |
| مُرْسَلِينَ | : تلك آيات الله نتلوها عليك بالحق وإنك لمن المرسلين | ٢٥٢ م البقرة | ٢ |
| (٢٤) | ولا مبدل لكلمات الله ولقد جاءك من نبإ المرسلين | ٣٤ ك الأنعام | ٦ |
| | وما نرسل المرسلين إلا مبشرين ومنذرين ... ... | ٤٨ ك « | ٦ |
| | فلنسئلن الذين أرسل إليهم ولنسئلن المرسلين ... ... | ٦ ك الأعراف | ٧ |
| | وقالوا يا صالح ائتنا بما تعدنا إن كنت من المرسلين | ٧٧ ك « | ٧ |
| | ولقد كذب أصحاب الحجر المرسلين ... ... ... | ٨٠ ك الحجر | ١٥ |
| | وما نرسل المرسلين إلا مبشرين ومنذرين ... ... | ٥٦ ك الكهف | ١٨ |
| | وما أرسلنا قبلك من المرسلين إلا إنهم ليأكلون الطعام | ٢٠ ك الفرقان | ٢٥ |
| | فوهب لي ربي حكما وجعلني من المرسلين ... ... | ٢١ ك الشعراء | ٢٦ |
| | كذبت قوم نوح المرسلين ... ... ... ... ... | ١٠٥ك « | ٢٦ |
| | كذبت عاد المرسلين ... ... ... ... ... ... | ١٢٣ك « | ٢٦ |
| | كذبت ثمود المرسلين ... ... ... ... ... ... | ١٤١ك « | ٢٦ |
| | كذبت قوم لوط المرسلين ... ... ... ... ... | ١٦٠ك « | ٢٦ |
| | كذب أصحاب الأيكة المرسلين ... ... ... ... | ١٧٦ك « | ٢٦ |
| | إنا رادوه إليك وجاعلوه من المرسلين ... ... ... | ٧ ك القصص | ٢٨ |
| | ويوم يناديهم فيقول ماذا أجبتم المرسلين ... ... | ٦٥ ك « | ٢٨ |
| | يس . والقرآن الحكيم . إنك لمن المرسلين ... ... | ٣ ك يس | ٣٦ |
| | وجاء من أقصا المدينة رجل يسعى قال يا قوم اتبعوا المرسلين | ٢٠ ك « | ٣٦ |
| | بل جاء بالحق وصدق المرسلين ... ... ... ... | ٣٧ ك الصافات | ٣٧ |
| | وإن إلياس لمن المرسلين ... ... ... ... ... | ١٢٣ك « | ٣٧ |
| | وإن لوطا لمن المرسلين... ... ... ... ... ... | ١٣٣ك « | ٣٧ |
| مُرْسَلِينَ | : وإن يونس لمن المرسلين ... ... ... .. ... | ١٣٩ك الصافات | ٣٧ |
| | ولقد سبقت كلمتنا لعبادنا المرسلين ... ... ... | ١٧١ك « | ٣٧ |
| | وسلام على المرسلين . والحمد لله رب العالمين... ... | ١٨١ك « | ٣٧ |
| الْمُرْسَلَاتِ | : والمرسلات عرفا . فالعاصفات عصفا | ١ ك المرسلات | ٧٧ |
| | ✦✦✦ | | |
| أَرْسَاهَا | : والجبال أرساها ... ... ... ... ... ... | ٣٢ ك النازعات | ٧٩ |
| رَوَاسِيَ | : وهو الذي مد الأرض وجعل فيها رواسي وأنهارا | ٣ م الرعد | ١٣ |
| (٩) | والأرض مددناها وألقينا فيها رواسي... ... ... | ١٩ ك الحجر | ١٥ |
| | وألقى في الأرض رواسي أن تميد بكم وأنهارا... ... | ١٥ ك النحل | ١٦ |
| | وجعلنا في الأرض رواسي أن تميد بهم ... ... ... | ٣١ ك الأنبياء | ٢١ |
| | أمن جعل الأرض قرارا وجعل خلالها أنهارا | | |
| | وجعل لها رواسي ... ... ... ... ... ... | ٦١ ك النمل | ٢٧ |
| | وألقى في الأرض رواسي أن تميد بكم وبث فيها من كل دابة | ١٠ ك لقمان | ٣١ |
| | وجعل فيها رواسي من فوقها وبارك فيها ... ... ... | ١٠ ك فصلت | ٤١ |
| | والأرض مددناها وألقينا فيها رواسي ... ... ... | ٧ ك ق | ٥٠ |
| | وجعلنا فيها رواسي شامخات وأسقيناكم ماء فراتا | ٢٧ ك المرسلات | ٧٧ |
| رَاسِيَاتٍ | : وجفان كالجواب وقدور راسيات ... ... ... | ١٣ ك سبإ | ٣٤ |
| مُرْسَاهَا | : يسئلونك عن الساعة أيان مرساها قل إنما | | |
| (٣) | علمها عند ربي ... ... ... ... ... ... ... | ١٨٧ك الأعراف | ٧ |
| | وقال اركبوا فيها بسم الله مجريها ومرساها... ... ... | ٤١ ك هود | ١١ |
| | يسئلونك عن الساعة أيان مرساها . فيم أنت من ذكراها | ٤٢ ك النازعات | ٧٩ |
| | ✦✦✦ | | |
| يَرْشُدُونَ | : فليستجيبوا لي وليؤمنوا بي لعلهم يرشدون... ... | ١٨٦ م البقرة | ٢ |
| الرُّشْدُ | : لا إكراه في الدين قد تبين الرشد من الغي ... ... | ٢٥٦ م « | ٢ |
| (٣) | وإن يروا سبيل الرشد لا يتخذوه سبيلا ... ... ... | ١٤٦ك الاعراف | ٧ |
| | إنا سمعنا قرآنا عجبا . يهدي إلى الرشد فآمنا به ... ... | ٢ ك الجن | ٧٢ |
| رُشْدًا | : فإن آنستم منهم رشدا فادفعوا إليهم أموالهم... ... | ٦ م النساء | ٤ |
| (٢) | قال له موسى هل أتبعك على أن تعلمن مما علمت رشدا | ٦٦ ك الكهف | ١٨ |
| رُشْدَهُ | : ولقد آتينا إبراهيم رشده من قبل وكنا به عالمين | ٥١ ك الأنبياء | ٢١ |
| رَشَدًا | : ربنا آتنا من لدنك رحمة وهيئ لنا من أمرنا رشدا | ١٠ ك الكهف | ١٨ |
| (٥) | وقل عسى أن يهدين ربي لأقرب من هذا رشدا | ٢٤ ك « | ١٨ |
| | أشر أريد بمن في الأرض أم أراد بهم ربهم رشدا | ١٠ ك الجن | ٧٢ |
| | فمن أسلم فأولئك تحروا رشدا... ... ... ... ... | ١٤ ك « | ٧٢ |
| | قل إني لا أملك لكم ضرا ولا رشدا ... ... ... | ٢١ ك « | ٧٢ |
| الرَّشَادِ | : وما أهديكم إلا سبيل الرشاد ... ... ... ... | ٢٩ ك غافر | ٤٠ |
| (٢) | وقال الذي آمن يا قوم اتبعون أهدكم سبيل الرشاد | ٣٨ ك « | ٤٠ |
| الرَّاشِدُونَ | : أولئك هم الراشدون... ... ... ... ... ... | ٧ م الحجرات | ٤٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَشِيدٌ | : فاتقوا الله ولا تخزون في ضيفي أليس منكم رجل رشيد | ٧٨ | ك هـود | ١١ |
| (٣) | أو أن تفعل في أموالنا ما نشاء إنك لأنت الحليم الرشيد | ٨٧ | ك « | ١١ |
| | فاتبعوا أمر فرعون وما أمر فرعون برشيد | ٩٧ | ك « | ١١ |
| مُرْشِدًا | : ومن يضلل فلن تجد له وليا مرشدا | ١٧ | ك الكهف | ١٨ |
| رَصَدًا | : فمن يستمع الآن يجد له شهابا رصدا | ٩ | ك الجن | ٧٢ |
| (٢) | فإنه يسلك من بين يديه ومن خلفه رصدا | ٢٧ | ك « | ٧٢ |
| إِرْصَادًا | : وإرصادا لمن حارب الله ورسوله من قبل | ١٠٧ | م التوبة | ٩ |
| مَرْصَدٍ | : وخذوهم واحصروهم واقعدوا لهم كل مرصد | ٥ | م « | ٩ |
| الْمِرْصَادِ | : إن ربك لبالمرصاد | ١٤ | ك الفجر | ٨٩ |
| مِرْصَادًا | : إن جهنم كانت مرصادا | ٢١ | ك النبأ | ٧٨ |
| مَرْصُوصٌ | : إن الله يحب الذين يقاتلون في سبيله صفا كأنهم بنيان مرصوص | ٤ | م الصف | ٦١ |
| أَرْضَعَتْ | : يوم ترونها تذهل كل مرضعة عما أرضعت | ٢ | م الحج | ٢٢ |
| أَرْضَعْنَ | : فإن أرضعن لكم فآتوهن أجورهن | ٦ | م الطلاق | ٦٥ |
| أَرْضَعْنَكُمْ | : وأمهاتكم اللاتي أرضعنكم وأخواتكم من الرضاعة | ٢٣ | م النساء | ٤ |
| فَسَتُرْضِعُ | : وإن تعاسرتم فسترضع له أخرى | ٦ | م الطلاق | ٦٥ |
| يُرْضِعْنَ | : والوالدات يرضعن أولادهن حولين كاملين | ٢٣٣ | م البقرة | ٢ |
| أَرْضِعِيهِ | : وأوحينا إلى أم موسى أن أرضعيه | ٧ | ك القصص | ٢٨ |
| تَسْتَرْضِعُوا | : وإن أردتم أن تسترضعوا أولادكم فلا جناح عليكم | ٢٣٣ | م البقرة | ٢ |
| الرَّضَاعَةَ | : والوالدات يرضعن أولادهن حولين كاملين | | | |
| (٢) | لمن أراد أن يتم الرضاعة | ٢٣٣ | م « | ٢ |
| | وأمهاتكم اللاتي أرضعنكم وأخواتكم من الرضاعة | ٢٣ | م النساء | ٤ |
| مُرْضِعَةٍ | : يوم ترونها تذهل كل مرضعة عما أرضعت | ٢ | م الحج | ٢٢ |
| الْمَرَاضِعَ | : وحرمنا عليه المراضع من قبل | ١٢ | ك القصص | ٢٨ |
| رَضِيَ | : رضي الله عنهم ورضوا عنه ذلك الفوز العظيم | ١١٩ | م المائدة | ٥ |
| (٦) | والذين اتبعوهم بإحسان رضي الله عنهم ورضوا عنه | ١٠٠ | م التوبة | ٩ |
| | يومئذ لا تنفع الشفاعة إلا من أذن له الرحمن ورضي له قولا | ١٠٩ | ك طه | ٢٠ |
| | لقد رضي الله عن المؤمنين إذ يبايعونك تحت الشجرة | ١٨ | م الفتح | ٤٨ |
| | رضي الله عنهم ورضوا عنه أولئك حزب الله | ٢٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| | رضي الله عنهم ورضوا عنه ذلك لمن خشي ربه | ٨ | م البينة | ٩٨ |
| رَضِيتُ | : وأتممت عليكم نعمتي ورضيت لكم الإسلام دينا | ٣ | م المائدة | ٥ |
| رَضِيتُمْ | : أرضيتم بالحياة الدنيا من الآخرة | ٣٨ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | إنكم رضيتم بالقعود أول مرة فاقعدوا مع الخالفين | ٨٣ | م « | ٩ |
| رَضُوا | : رضي الله عنهم ورضوا عنه ذلك الفوز العظيم | ١١٩ | م المائدة | ٥ |
| (٩) | فإن أعطوا منها رضوا وإن لم يعطوا منها إذا هم يسخطون | ٥٨ | م التوبة | ٩ |
| | ولو أنهم رضوا ما آتاهم الله ورسوله وقالوا حسبنا الله | ٥٩ | م « | ٩ |
| | رضوا بأن يكونوا مع الخوالف وطبع على قلوبهم | ٨٧ | م « | ٩ |
| | رضوا بأن يكونوا مع الخوالف وطبع الله على قلوبهم | ٩٣ | م « | ٩ |
| | والذين اتبعوهم بإحسان رضي الله عنهم ورضوا عنه | ١٠٠ | م « | ٩ |
| | إن الذين لا يرجون لقاءنا ورضوا بالحياة الدنيا واطمأنوا بها | ٧ | ك يونس | ١٠ |
| | رضي الله عنهم ورضوا عنه أولئك حزب الله | ٢٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| | رضي الله عنهم ورضوا عنه ذلك لمن خشي ربه | ٨ | م البينة | ٩٨ |
| تَرْضَى | : ولن ترضى عنك اليهود ولا النصارى حتى تتبع ملتهم | ١٢٠ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | قال هم أولاء على أثري وعجلت إليك رب لترضى | ٨٤ | ك طه | ٢٠ |
| | ومن آناء الليل فسبح وأطراف النهار لعلك ترضى | ١٣٠ | م « | ٢٠ |
| | ولسوف يعطيك ربك فترضى | ٥ | ك الضحى | ٩٣ |
| تَرْضَاهُ | : وأن أعمل صالحا ترضاه وأدخلني برحمتك في عبادك الصالحين | ١٩ | ك النمل | ٢٧ |
| (٢) | وأن أعمل صالحا ترضاه وأصلح لي في ذريتي | ١٥ | م الأحقاف | ٤٦ |
| تَرْضَاهَا | : قد نرى تقلب وجهك في السماء فلنولينك قبلة ترضاها | ١٤٤ | م البقرة | ٢ |
| تَرْضَوْا | : يحلفون لكم لترضوا عنهم | ٩٦ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | فإن ترضوا عنهم فإن الله لا يرضى عن القوم الفاسقين | ٩٦ | م « | ٩ |
| تَرْضَوْنَ | : فرجل وامرأتان ممن ترضون من الشهداء | ٢٨٢ | م البقرة | ٢ |
| تَرْضَوْنَهَا | : ومساكن ترضونها أحب إليكم من الله ورسوله | ٢٤ | م التوبة | ٩ |
| يَرْضَى | : وهو معهم إذ يبيتون ما لا يرضى من القول | ١٠٨ | م النساء | ٤ |
| (٥) | فإن ترضوا عنهم فإن الله لا يرضى عن القوم الفاسقين | ٩٦ | م التوبة | ٩ |
| | إن تكفروا فإن الله غني عنكم ولا يرضى لعباده الكفر | ٧ | ك الزمر | ٣٩ |
| | إلا من بعد أن يأذن الله لمن يشاء ويرضى | ٢٦ | ك النجم | ٥٣ |
| | إلا ابتغاء وجه ربه الأعلى . ولسوف يرضى | ٢١ | ك الليل | ٩٢ |
| يَرْضَهُ | : ولا يرضى لعباده الكفر وإن تشكروا يرضه لكم | ٧ | ك الزمر | ٣٩ |
| يَرْضَوْنَهُ | : ليدخلنهم مدخلا يرضونه وإن الله لعليم حليم | ٥٩ | م الحج | ٢٢ |
| لِيَرْضَوْهُ | : ولتصغى إليه أفئدة الذين لا يؤمنون بالآخرة وليرضوه | ١١٣ | ك الأنعام | ٦ |
| يَرْضَيْنَ | : ولا يحزن ويرضين بما آتيتهن كلهن | ٥١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| يُرْضُوكُمْ | : يحلفون بالله لكم ليرضوكم | ٦٢ | م التوبة | ٩ |
| يُرْضُونَكُمْ | : يرضونكم بأفواههم وتأبى قلوبهم وأكثرهم فاسقون | ٨ | م « | ٩ |
| يُرْضُوهُ | : والله ورسوله أحق أن يرضوه إن كانوا مؤمنين | ٦٢ | م « | ٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَرَاضَوْا: | فلا تعضلوهن أن ينكحن أزواجهن إذا تراضوا بينهم بالمعروف ... ... ... ... ... ... | ٢٣٢ | م البقرة | ٢ |
| تَرَاضَيْتُمْ: | ولا جناح عليكم فيما تراضيتم به من بعد الفريضة | ٢٤ | م النساء | ٤ |
| ارْتَضَى: | ولا يشفعون إلا لمن ارتضى وهم من خشيته مشفقون | ٢٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٣) | وليمكنن لهم دينهم الذى ارتضى لهم ... ... ... ... | ٥٥ | م النور | ٢٤ |
| | إلا من ارتضى من رسول فإنه يسلك من بين يديه ومن خلفه رصدا ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك الجن | ٧٢ |
| تَرَاضٍ: | فإن أرادا فصالا عن تراض منهما وتشاور فلا جناح عليهما ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣٣ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | إلا أن تكون تجارة عن تراض منكم ... ... ... ... | ٢٩ | م النساء | ٤ |
| رَاضِيَةٍ: | فهو فى عيشة راضية . فى جنة عالية ... ... ... | ٢١ | ك الحاقة | ٦٩ |
| (٤) | وجوه يومئذ ناعمة . لسعيها راضية ... ... ... ... | ٩ | ك الغاشية | ٨٨ |
| | ارجعى إلى ربك راضية مرضية ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك الفجر | ٨٩ |
| | فأما من ثقلت موازينه . فهو فى عيشة راضية ... ... | ٧ | ك القارعة | ١٠١ |
| رَضِيًّا: | يرثنى ويرث من آل يعقوب واجعله رب رضيا | ٦ | ك مريم | ١٩ |
| رِضْوَانٍ: | خالدين فيها وأزواج مطهرة ورضوانٌ من الله | ١٥ | م آل عمران | ٣ |
| (٨) | أفمن اتبع رضوان الله كمن باء بسخط من الله ومأواه جهنم | ١٦٢ | م « | ٣ |
| | واتبعوا رضوان الله والله ذو فضل عظيم ... ... ... | ١٧٤ | م « | ٣ |
| | يبشرهم ربهم برحمة منه ورضوانٍ وجنات ... ... | ٢١ | م التوبة | ٩ |
| | ومساكن طيبة فى جنات عدن ورضوانٌ من الله أكبر | ٧٢ | م « | ٩ |
| | أفمن أسس بنيانه على تقوى من الله ورضوانٍ خيرٌ | ١٠٩ | م « | ٩ |
| | وفى الآخرة عذاب شديد ومغفرة من الله ورضوان | ٢٠ | م الحديد | ٥٧ |
| | ما كتبناها عليهم إلا ابتغاء رضوانِ الله ... ... ... | ٢٧ | م « | ٥٧ |
| رِضْوَانًا: | ولا آمِّين البيت الحرام يبتغون فضلا من ربهم ورضوانا | ٢ | م المائدة | ٥ |
| (٣) | تراهم ركعا سجدا يبتغون فضلا من الله ورضوانا | ٢٩ | م الفتح | ٤٨ |
| | الذين أخرجوا من ديارهم وأموالهم يبتغون فضلا من الله ورضوانا ... ... ... ... ... ... ... | ٨ | م الحشر | ٥٩ |
| رِضْوَانَهُ: | يهدى به الله من اتبع رضوانه سبل السلام ... | ١٦ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | ذلك بأنهم اتبعوا ما أسخط الله وكرهوا رضوانه | ٢٨ | م محمد | ٤٧ |
| مَرْضِيًّا: | وكان يأمر أهله بالصلاة والزكاة وكان عند ربه مرضيا | ٥٥ | ك مريم | ١٩ |
| مَرْضِيَّةً: | ارجعى إلى ربك راضية مرضية ... ... ... | ٢٨ | ك الفجر | ٨٩ |
| مَرْضَاتَ: | ومن الناس من يشرى نفسه ابتغاء مرضات الله | ٢٠٧ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | ومثل الذين ينفقون أموالهم ابتغاء مرضات الله | ٢٦٥ | م « | ٢ |
| | ومن يفعل ذلك ابتغاء مرضات الله فسوف نؤتيه أجرا عظيما ... ... ... ... ... ... ... | ١١٤ | م النساء | ٤ |
| | يا أيها النبى لم تحرم ما أحل الله لك تبتغى مرضات أزواجك | ١ | م التحريم | ٦٦ |
| مَرْضَاتِى: | إن كنتم خرجتم جهادا فى سبيل وابتغاء مرضاتى | ١ | م الممتحنة | ٦٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَطْبٍ: | ولا رطب ولا يابس إلا فى كتاب مبين ... ... | ٥٩ | ك الأنعام | ٦ |
| رُطَبًا: | وهزى إليك بجذع النخلة تساقط عليك رطبا جنيا | ٢٥ | ك مريم | ١٩ |
| الرُّعْبَ: | سنلقى فى قلوب الذين كفروا الرعب بما أشركوا بالله | ١٥١ | م آل عمران | ٣ |
| (٤) | سألقى فى قلوب الذين كفروا الرعب فاضربوا فوق الأعناق | ١٢ | م الأنفال | ٨ |
| | وقذف فى قلوبهم الرعب فريقا تقتلون وتأسرون فريقا | ٢٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | فأتاهم الله من حيث لم يحتسبوا وقذف فى قلوبهم الرعب | ٢ | م الحشر | ٥٩ |
| رُعْبًا: | لو اطلعت عليهم لوليت منهم فرارا ولملئت منهم رعبا | ١٨ | ك الكهف | ١٨ |
| رَعْدٌ: | أو كصيب من السماء فيه ظلمات ورعد وبرق ... | ١٩ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | ويسبح الرعد بحمده والملائكة من خيفته ... ... | ١٣ | م الرعد | ١٣ |
| رَعَوْهَا: | فما رعوها حق رعايتها ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | م الحديد | ٥٧ |
| ارْعَوْا: | كلوا وارعوا أنعامكم إن فى ذلك لآيات لأولى النهى | ٥٤ | ك طه | ٢٠ |
| رَاعِنَا: | يا أيها الذين آمنوا لا تقولوا راعنا وقولوا انظرنا واسمعوا | ١٠٤ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | ويقولون سمعنا وعصينا واسمع غير مسمع وراعنا ليًّا بألسنتهم | ٤٦ | م النساء | ٤ |
| رَاعُونَ: | والذين هم لأماناتهم وعهدهم راعون ... ... ... | ٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٢) | والذين هم لأماناتهم وعهدهم راعون ... ... ... ... | ٣٢ | ك المعارج | ٧٠ |
| رِعَايَتِهَا: | فما رعوها حق رعايتها فآتينا الذين آمنوا منهم أجرهم | ٢٧ | م الحديد | ٥٧ |
| الرِّعَاءُ: | قال ما خطبكما قالتا لا نسقى حتى يصدر الرعاء ... | ٢٣ | ك القصص | ٢٨ |
| الْمَرْعَى: | والذى أخرج المرعى فجعله غثاء أحوى ... ... | ٤ | ك الأعلى | ٨٧ |
| مَرْعَاهَا: | والأرض بعد ذلك دحاها . أخرج منها ماءها ومرعاها | ٣١ | ك النازعات | ٧٩ |
| تَرْغَبُونَ: | وترغبون أن تنكحوهن والمستضعفين من الولدان | ١٢٧ | م النساء | ٤ |
| يَرْغَبُ: | ومن يرغب عن ملة إبراهيم إلا من سفه نفسه | ١٣٠ | م البقرة | ٢ |
| يَرْغَبُوا: | أن يتخلفوا عن رسول الله ولا يرغبوا بأنفسهم عن نفسه | ١٢٠ | م التوبة | ٩ |
| فَارْغَبْ: | فإذا فرغت فانصب . وإلى ربك فارغب ... ... | ٨ | ك الشرح | ٩٤ |
| رَغَبًا: | إنهم كانوا يسارعون فى الخيرات ويدعوننا رغبا ورهبا | ٩٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| رَاغِبٌ: | قال أراغب أنت عن آلهتى يا إبراهيم ... ... | ٤٦ | ك مريم | ١٩ |
| رَاغِبُونَ: | سيؤتينا الله من فضله ورسوله إنا إلى الله راغبون | ٥٩ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | عسى ربنا أن يبدلنا خيرا منها إنا إلى ربنا راغبون | ٣٢ | م القلم | ٦٨ |
| رَغَدًا: | اسكن أنت وزوجك الجنة وكلا منها رغدا حيث شئتما | ٣٥ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | وإذ قلنا ادخلوا هذه القرية فكلوا منها حيث شئتم رغدا | ٥٨ | م « | ٢ |
| | يأتيها رزقها رغدا من كل مكان فكفرت بأنعم الله | ١١٢ | ك النحل | ١٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| مُرَاغَمًا | : ومن يهاجر في سبيل الله يجد في الأرض مراغما كثيرا وسعة ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٠ | م النساء | ٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| رُفَاتًا | : وقالوا أئذا كنا عظاما ورفاتا أئنا لمبعوثون خلقا جديدا | ٤٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٢) | وقالوا أئذا كنا عظاما ورفاتا أئنا لمبعوثون خلقا جديدا | ٩٨ | ك « | ١٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| رَفَثُ | : أحل لكم ليلة الصيام الرفث إلى نسائكم | ١٨٧ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | فمن فرض فيهن الحج فلا رفث ولا فسوق ولا جدال في الحج | ١٩٧ | م « | ٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| الرِّفْدُ | : وأتبعوا في هذه لعنة ويوم القيامة بئس الرفد المرفود | ٩٩ | ك هود | ١١ |
| المَرْفُودُ | : وأتبعوا في هذه لعنة ويوم القيامة بئس الرفد المرفود | ٩٩ | ك « | ١١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| رَفْرَفٍ | : متكئين على رفرف خضر وعبقري حسان ... ... | ٧٦ | م الرحمن | ٥٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| رَفَعَ | : منهم من كلم الله ورفع بعضهم درجات ... ... ... | ٢٥٣ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | ورفع بعضكم فوق بعض درجات ... ... ... ... | ١٦٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | ورفع أبويه على العرش وخروا له سجدا ... ... ... | ١٠٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | الله الذي رفع السموات بغير عمد ترونها ... ... ... | ٢ | م الرعد | ١٣ |
| | أأنتم أشد خلقا أم السماء بناها . رفع سمكها فسواها | ٢٨ | ك النازعات | ٧٩ |
| رَفَعْنَا | : وإذ أخذنا ميثاقكم ورفعنا فوقكم الطور ... ... | ٦٣ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | وإذ أخذنا ميثاقكم ورفعنا فوقكم الطور ... ... ... | ٩٣ | م « | ٢ |
| | ورفعنا فوقهم الطور بميثاقهم وقلنا لهم ادخلوا الباب سجدا | ١٥٤ | م النساء | ٤ |
| | ورفعنا بعضهم فوق بعض درجات ليتخذ بعضهم بعضا سخريا | ٣٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ورفعنا لك ذكرك ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك الشرح | ٩٤ |
| رَفَعْنَاهُ | : ولو شئنا لرفعناه بها ولكنه أخلد إلى الأرض واتبع هواه | ١٧٦ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | ورفعناه مكانا عليا ... ... ... ... ... ... ... | ٥٧ | ك مريم | ١٩ |
| رَفَعَهُ | : بل رفعه الله إليه وكان الله عزيزا حكيما ... ... ... | ١٥٨ | م النساء | ٤ |
| رَفَعَهَا | : والسماء رفعها ووضع الميزان ... ... ... ... | ٧ | م الرحمن | ٥٥ |
| تَرْفَعُوا | : يأيها الذين آمنوا لا ترفعوا أصواتكم فوق صوت النبي | ٢ | م الحجرات | ٤٩ |
| نَرْفَعُ | : وتلك حجتنا آتيناها إبراهيم على قومه نرفع درجات من نشاء | ٨٣ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | نرفع درجات من نشاء وفوق كل ذي علم عليم ... ... | ٧٦ | ك يوسف | ١٢ |
| يَرْفَعُ | : وإذ يرفع إبراهيم القواعد من البيت وإسمعيل ... ... | ١٢٧ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | يرفع الله الذين آمنوا منكم والذين أوتوا العلم درجات | ١١ | م المجادلة | ٥٨ |
| يَرْفَعُهُ | : إليه يصعد الكلم الطيب والعمل الصالح يرفعه ... ... | ١٠ | ك فاطر | ٣٥ |
| رُفِعَتْ | : وإلى السماء كيف رفعت ... ... ... ... ... | ١٨ | ك الغاشية | ٨٨ |
| تُرْفَعَ | : في بيوت أذن الله أن ترفع ويذكر فيها اسمه ... ... | ٣٦ | م النور | ٢٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَافِعَةٌ | : ليس لوقعتها كاذبة . خافضة رافعة ... ... ... | ٣ | ك الواقعة | ٥٦ |
| رَافِعُكَ | : إذ قال الله ياعيسى إني متوفيك ورافعك إلي | ٥٥ | م آل عمران | ٣ |
| رَفِيعُ | : رفيع الدرجات ذو العرش ... ... ... ... ... | ١٥ | ك غافر | ٤٠ |
| المَرْفُوعِ | : والسقف المرفوع . والبحر المسجور ... ... | ٥ | ك الطور | ٥٢ |
| مَرْفُوعَةٌ | : وفرش مرفوعة . إنا أنشأناهن إنشاء ... ... | ٣٤ | ك الواقعة | ٥٦ |
| (٣) | في صحف مكرمة . مرفوعة مطهرة ... ... ... ... | ١٤ | ك عبس | ٨٠ |
| | فيها سرر مرفوعة . وأكواب موضوعة ... ... ... | ١٣ | ك الغاشية | ٨٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| رَفِيقًا | : والشهداء والصالحين وحسن أولئك رفيقا ... ... | ٦٩ | م النساء | ٤ |
| مِرْفَقًا | : ينشر لكم ربكم من رحمته ويهيئ لكم من أمركم مرفقا | ١٦ | ك الكهف | ١٨ |
| المَرَافِقِ | : فاغسلوا وجوهكم وأيديكم إلى المرافق ... ... | ٦ | م المائدة | ٥ |
| مُرْتَفَقًا | : بئس الشراب وساءت مرتفقا ... ... ... ... | ٢٩ | ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | نعم الثواب وحسنت مرتفقا ... ... ... ... ... | ٣١ | ك « | ١٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تَرْقُبْ | : إني خشيت أن تقول فرقت بين بني إسرائيل ولم ترقب قولي ... ... ... ... ... ... ... | ٩٤ | ك طه | ٢٠ |
| يَرْقُبُوا | : كيف وإن يظهروا عليكم لا يرقبوا فيكم إلا ولا ذمة | ٨ | م التوبة | ٩ |
| يَرْقُبُونَ | : لا يرقبون في مؤمن إلا ولا ذمة وأولئك هم المعتدون | ١٠ | م « | ٩ |
| يَتَرَقَّبُ | : فأصبح في المدينة خائفا يترقب ... ... ... ... | ١٨ | ك القصص | ٢٨ |
| (٢) | فخرج منها خائفا يترقب ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك « | ٢٨ |
| فَارْتَقِبْ | : فارتقب يوم تأتي السماء بدخان مبين ... ... | ١٠ | ك الدخان | ٤٤ |
| (٢) | فارتقب إنهم مرتقبون ... ... ... ... ... ... | ٥٩ | ك « | ٤٤ |
| وَارْتَقِبُوا | : وارتقبوا إني معكم رقيب ... ... ... ... ... | ٩٣ | ك هود | ١١ |
| فَارْتَقِبْهُمْ | : إنا مرسلوا الناقة فتنة لهم فارتقبهم واصطبر | ٢٧ | ك القمر | ٥٤ |
| مُرْتَقِبُونَ | : فارتقب إنهم مرتقبون ... ... ... ... ... | ٥٩ | ك الدخان | ٤٤ |
| رَقِيبٌ | : فلما توفيتني كنت أنت الرقيب عليهم ... ... ... | ١١٧ | م المائدة | ٥ |
| (٣) | وارتقبوا إني معكم رقيب ... ... ... ... ... | ٩٣ | ك هود | ١١ |
| | ما يلفظ من قول إلا لديه رقيب عتيد ... ... ... | ١٨ | ك ق | ٥٠ |
| رَقِيبًا | : إن الله كان عليكم رقيبا ... ... ... ... ... | ١ | م النساء | ٤ |
| (٢) | وكان الله على كل شيء رقيبا ... ... ... ... ... | ٥٢ | م الأحزاب | ٣٣ |
| رَقَبَةٍ | : ومن قتل مؤمنا خطأ فتحرير رقبة مؤمنة ودية مسلمة إلى أهله | ٩٢ | م النساء | ٤ |
| (٦) | فإن كان من قوم عدو لكم وهو مؤمن فتحرير رقبة مؤمنة | ٩٢ | م « | ٤ |
| | وإن كان من قوم بينكم وبينهم ميثاق فدية مسلمة إلى أهله وتحرير رقبة مؤمنة ... ... ... ... | ٩١ | م « | ٤ |
| | من أوسط ما تطعمون أهليكم أو كسوتهم أو تحرير رقبة | ٨٩ | م المائدة | ٥ |
| | ثم يعودون لما قالوا فتحرير رقبة من قبل أن يتماسا | ٣ | م المجادلة | ٥٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| رَقَبَة | : وما أدراك ما العقبة . فك رقبة ... ... ... ... | ١٣ ك البلد | ٩٠ |
| الرِّقَاب | : والمساكين وابن السبيل والسائلين وفى الرقاب | ١٧٧ م البقرة | ٢ |
| (٣) | والعاملين عليها والمؤلفة قلوبهم وفى الرقاب ... ... | ٦٠ م التوبة | ٩ |
| | فإذا لقيتم الذين كفروا فضرب الرقاب ... ... ... | ٤ م محمد | ٤٧ |
| رُقُود | : وتحسبهم أيقاظا وهم رقود ... ... ... ... | ١٨ ك الكهف | ١٨ |
| مَرْقَدِنَا | : قالوا يا ويلنا من بعثنا من مرقدنا ... ... ... | ٥٢ ك يس | ٣٦ |
| رَقّ | : والطور . وكتاب مسطور . فى رق منشور... ... ... | ٣ ك الطور | ٥٢ |
| الرَّقِيم | : أم حسبت أن أصحاب الكهف والرقيم كانوا من آياتنا عجبا... ... ... ... ... ... | ٩ ك الكهف | ١٨ |
| مَرْقُوم | : وما أدراك ما سجين . كتاب مرقوم... ... ... | ٩ ك المطففين | ٨٣ |
| (٢) | وما أدراك ما عليون . كتاب مرقوم ... ... ... | ٢٠ ك « | ٨٣ |
| تَرْقَى | : أو يكون لك بيت من زخرف أو ترقى فى السماء | ٩٣ ك الإسراء | ١٧ |
| فَلْيَرْتَقُوا | : فليرتقوا فى الأسباب ... ... ... ... ... | ١٠ ك ص | ٣٨ |
| لِرُقِيِّكَ | : ولن نؤمن لرقيك حتى تنزل علينا كتابا نقرؤه | ٩٣ ك الإسراء | ١٧ |
| رَاقٍ | : كلا إذا بلغت التراقى . وقيل من راق... ... ... | ٢٧ ك القيامة | ٧٥ |
| التَّرَاقِيَ | : كلا إذا بلغت التراقى ... ... ... ... ... | ٢٦ ك « | ٧٥ |
| رَكِبَا | : فانطلقا حتى إذا ركبا فى السفينة خرقها ... ... ... | ٧١ ك الكهف | ١٨ |
| رَكِبُوا | : فإذا ركبوا فى الفلك دعوا الله مخلصين له الدين | ٦٥ ك العنكبوت | ٢٩ |
| لَتَرْكَبُنَّ | : والقمر إذا اتسق . لتركبن طبقا عن طبق ... | ١٩ ك الانشقاق | ٨٤ |
| لِتَرْكَبُوا | : الله الذى جعل لكم الأنعام لتركبوا منها ومنها تأكلون | ٧٩ ك غافر | ٤٠ |
| تَرْكَبُونَ | : وجعل لكم من الفلك والأنعام ما تركبون... ... | ١٢ ك الزخرف | ٤٣ |
| لِتَرْكَبُوهَا | : والخيل والبغال والحمير لتركبوها وزينة... ... | ٨ ك النحل | ١٦ |
| يَرْكَبُونَ | : وخلقنا لهم من مثله ما يركبون ... ... ... | ٤٢ ك يس | ٣٦ |
| ارْكَبْ | : يا بنى اركب معنا ولا تكن مع الكافرين ... ... | ٤٢ ك هود | ١١ |
| ارْكَبُوا | : وقال اركبوا فيها بسم الله مجريها ومرساها | ٤١ ك « | ١١ |
| رَكَّبَكَ | : فى أى صورة ما شاء ركبك ... ... ... ... | ٨ ك الانفطار | ٨٢ |
| مُتَرَاكِبًا | : فأخرجنا منه خضرا نخرج منه حبا متراكبا | ٩٩ ك الأنعام | ٦ |
| الرَّكْب | : وهم بالعدوة القصوى والركب أسفل منكم | ٤٢ م الأنفال | ٨ |
| رُكْبَانًا | : فإن خفتم فرجالا أو ركبانا ... ... ... ... | ٢٣٩ م البقرة | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| رِكَاب | : فما أوجفتم عليه من خيل ولا ركاب ... ... ... | ٩ م الحشر | ٥٩ |
| رَكُوبُهُمْ | : وذللناها لهم فمنها ركوبهم ومنها يأكلون... ... | ٧٢ ك يس | ٣٦ |
| رَوَاكِدَ | : إن يشأ يسكن الريح فيظللن رواكد على ظهره | ٣٣ ك الشورى | ٤٢ |
| رِكْزًا | : هل تحس منهم من أحد أو تسمع لهم ركزا ... ... | ٩٨ ك مريم | ١٩ |
| أَرْكَسَهُمْ | : فما لكم فى المنافقين فئتين والله أركسهم بما كسبوا | ٨٨ م النساء | ٤ |
| أُرْكِسُوا | : كل ما ردوا إلى الفتنة أركسوا فيها... ... ... | ٩١ م « | ٤ |
| تَرْكُضُوا | : لا تركضوا وارجعوا إلى ما أترفتم فيه ومساكنكم | ١٣ ك الأنبياء | ٢١ |
| يَرْكُضُونَ | : فلما أحسوا بأسنا إذا هم منها يركضون... ... | ١٢ ك « | ٢١ |
| ارْكُضْ | : اركض برجلك هذا مغتسل بارد وشراب ... | ٤٢ ك ص | ٣٨ |
| يَرْكَعُونَ | : وإذا قيل لهم اركعوا لا يركعون... ... ... ... | ٤٨ م المرسلات | ٧٧ |
| ارْكَعُوا | : وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة واركعوا مع الراكعين | ٤٣ م البقرة | ٢ |
| (٣) | يا أيها الذين آمنوا اركعوا واسجدوا واعبدوا ربكم | ٧٧ م الحج | ٢٢ |
| | وإذا قيل لهم اركعوا لا يركعون... ... ... ... | ٤٨ م المرسلات | ٧٧ |
| ارْكَعِى | : يا مريم اقنتى لربك واسجدى واركعى مع الراكعين | ٤٣ م آل عمران | ٣ |
| رَاكِعًا | : وظن داود أنما فتناه فاستغفر ربه وخر راكعا وأناب | ٢٤ ك ص | ٣٨ |
| رَاكِعُونَ | : الذين يقيمون الصلاة ويؤتون الزكاة وهم راكعون | ٥٥ م المائدة | ٥ |
| (٢) | التائبون العابدون الحامدون السائحون الراكعون | ١١٢ م التوبة | ٩ |
| الرَّاكِعِينَ | : وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة واركعوا مع الراكعين | ٤٣ م البقرة | ٢ |
| (٢) | يا مريم اقنتى لربك واسجدى واركعى مع الراكعين | ٤٣ م آل عمران | ٣ |
| الرُّكَّع | : وعهدنا إلى إبراهيم وإسمعيل أن طهرا بيتى للطائفين والعاكفين والركع السجود ... ... ... | ١٢٥ م البقرة | ٢ |
| | وطهر بيتى للطائفين والقائمين والركع السجود ... ... | ٢٦ م الحج | ٢٢ |
| رُكَّعًا | : تراهم ركعا سجدا يبتغون فضلا من الله ورضوانا | ٢٩ م الفتح | ٤٨ |
| فَيَرْكُمَهُ | : فيركمه جميعا فيجعله فى جهنم... ... ... ... | ٣٧ م الأنفال | ٨ |
| مَرْكُومٌ | : وإن يروا كسفا من السماء ساقطا يقولوا سحاب مركوم | ٤٤ ك الطور | ٥٢ |
| رُكَامًا | : ألم تر أن الله يزجى سحابا ثم يؤلف بينه ثم يجعله ركاما | ٤٣ م النور | ٢٤ |
| تَرْكَنُ | : ولولا أن ثبتناك لقد كدت تركن إليهم شيئا قليلا | ٧٤ م الإسراء | ١٧ |
| تَرْكَنُوا | : ولا تركنوا إلى الذين ظلموا فتمسكم النار ... ... | ١١٣ ك هود | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رُكْنٍ | : قال لو أن لى بكم قوة أو آوى إلى ركن شديد | ٨٠ | ك هـود | ١١ |
| بِرُكْنِهِ | : فتولى بركنه وقال ساحر أو مجنون ... ... ... | ٣٩ | ك الذاريات | ٥١ |
| ✦✦✦ | | | | |
| رِمَاحُكُمْ | : ليبلونكم الله بشىء من الصيد تناله أيديكم ورماحكم | ٩٤ | م المائدة | ٥ |
| ✦✦✦ | | | | |
| كَرَمَادٍ | : أعمالهم كرماد اشتدت به الريح فى يوم عاصف | ١٨ | ك إبراهيم | ١٤ |
| ✦✦✦ | | | | |
| رَمْزًا | : قال آيتك ألا تكلم الناس ثلاثة أيام إلا رمزا | ٤١ | م آل عمران | ٣ |
| ✦✦✦ | | | | |
| رَمَضَانَ | : شهر رمضان الذى أنزل فيه القرآن هدى للناس | ١٨٥ | م البقرة | ٢ |
| ✦✦✦ | | | | |
| رَمِيمٌ | : وضرب لنا مثلا ونسى خلقه قال من يحيى العظام وهى رميم | ٧٨ | ك يس | ٣٦ |
| (٢) | ما تذر من شىء أتت عليه إلا جعلته كالرميم ... ... | ٤٢ | ك الذاريات | ٥١ |
| ✦✦✦ | | | | |
| رُمَّانٌ | : والزيتون والرمان مشتبها وغير متشابه ... ... ... | ٩٩ | ك الأنعام | ٦ |
| (٣) | والزيتون والرمان متشابها وغير متشابه ... ... ... | ١٤١ | م » | ٦ |
| | فيهما فاكهة ونخل ورمان ... ... ... ... ... | ٦٨ | م الرحمن | ٥٥ |
| ✦✦✦ | | | | |
| رَمَى | : وما رميت إذ رميت ولكن الله رمى ... ... ... | ١٧ | م الأنفال | ٨ |
| رَمَيْتَ | : وما رميت ... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | م » | ٨ |
| (٢) | إذ رميت ولكن الله رمى ... ... ... ... ... | ١٧ | م » | ٨ |
| تَرْمِى | : إنها ترمى بشرر كالقصر . كأنه جمالة صفر ... ... | ٣٢ | ك المرسلات | ٧٧ |
| تَرْمِيهِم | : وأرسل عليهم طيرا أبابيل . ترميهم بحجارة من سجيل | ٤ | ك الفيل | ١٠٥ |
| يَرْمِ | : ومن يكسب خطيئة أو إثما ثم يرم به بريئا فقد احتمل بهتانا | ١١٢ | م النساء | ٤ |
| يَرْمُونَ | : والذين يرمون المحصنات ثم لم يأتوا بأربعة | | | |
| (٣) | شهداء فاجلدوهم ثمانين جلدة ... ... ... ... | ٤ | م النور | ٢٤ |
| | والذين يرمون أزواجهم ولم يكن لهم شهداء إلا أنفسهم | | | |
| | فشهادة أحدهم أربع شهادات بالله ... ... | ٦ | م » | ٢٤ |
| | إن الذين يرمون المحصنات الغافلات المؤمنات لعنوا | | | |
| | فى الدنيا والآخرة ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | م » | ٢٤ |
| ✦✦✦ | | | | |
| يَرْهَبُونَ | : وفى نسختها هدى ورحمة للذين هم لربهم يرهبون | ١٥٤ | ك الأعراف | ٧ |
| فَارْهَبُونِ | : وأوفوا بعهدى أوف بعهدكم وإياى فارهبون | ٤٠ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | إنما هو إله واحد فإياى فارهبون ... ... ... ... | ٥١ | ك النحل | ١٦ |
| تُرْهِبُونَ | : ترهبون به عدو الله وعدوكم وآخرين من دونهم | ٦٠ | م الأنفال | ٨ |
| اسْتَرْهَبُوهُمْ | : واسترهبوهم وجاءوا بسحر عظيم ... ... ... | ١١٦ | ك الأعراف | ٧ |
| الرَّهْبِ | : واضم إليك جناحك من الرهب ... ... ... ... | ٣٢ | ك القصص | ٢٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَهْبَةً | : لأنتم أشد رهبة فى صدورهم من الله ... ... ... | ١٣ | م الحشر | ٥٩ |
| رَهَبًا | : إنهم كانوا يسارعون فى الخيرات ويدعوننا رغبا ورهبا | ٩٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| الرُّهْبَانِ | : إن كثيرا من الأحبار والرهبان ليأكلون أموال | | | |
| | الناس بالباطل... ... ... ... ... ... ... | ١٤ | م التوبة | ٩ |
| رُهْبَانًا | : ذلك بأن منهم قسيسين ورهبانا وأنهم لا يستكبرون | ٨٢ | م المائدة | ٥ |
| رُهْبَانَهُمْ | : اتخذوا أحبارهم ورهبانهم أربابا من دون الله | ٣١ | م التوبة | ٩ |
| رَهْبَانِيَّةً | : وجعلنا فى قلوب الذين اتبعوه رأفة ورحمة | | | |
| | ورهبانية ابتدعوها... ... ... ... ... ... | ٢٧ | م الحديد | ٥٧ |
| ✦✦✦ | | | | |
| رَهْطٍ | : وكان فى المدينة تسعة رهط يفسدون فى الأرض | ٤٨ | ك النمل | ٢٧ |
| رَهْطُكَ | : وإنا لنراك فينا ضعيفا ولولا رهطك لرجمناك | ٩١ | ك هود | ١١ |
| رَهْطِى | : قال يا قوم أرهطى أعز عليكم من الله ... ... | ٩٢ | ك » | ١١ |
| ✦✦✦ | | | | |
| تَرْهَقُهَا | : ووجوه يومئذ عليها غبرة . ترهقها قترة ... ... | ٤١ | ك عبس | ٩٠ |
| تَرْهَقُهُمْ | : والذين كسبوا السيئات جزاء سيئة بمثلها وترهقهم ذلة | ٢٧ | ك يونس | ١٠ |
| (٣) | خاشعة أبصارهم ترهقهم ذلة وقد كانوا يدعون | | | |
| | إلى السجود ... ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك القلم | ٦٨ |
| | خاشعة أبصارهم ترهقهم ذلة ذلك اليوم الذى | | | |
| | كانوا يوعدون ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك المعارج | ٧٠ |
| يَرْهَقُ | : ولا يرهق وجوههم قتر ولا ذلة ... ... ... ... | ٢٦ | ك يونس | ١٠ |
| سَأُرْهِقُهُ | : كلا إنه كان لآياتنا عنيدا . سأرهقه صعودا | ١٧ | ك المدثر | ٧٤ |
| تُرْهِقْنِى | : قال لا تؤاخذنى بما نسيت ولا ترهقنى من أمرى عسرا | ٧٣ | ك الكهف | ١٨ |
| يُرْهِقَهُمَا | : فخشينا أن يرهقهما طغيانا وكفرا ... ... ... | ٨٠ | ك » | ١٨ |
| رَهَقًا | : وأنه كان رجال من الإنس يعوذون برجال من الجن | | | |
| (٢) | فزادوهم رهقا ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك الجن | ٧٢ |
| | فمن يؤمن بربه فلا يخاف بخسا ولا رهقا ... ... | ١٣ | ك » | ٧٢ |
| ✦✦✦ | | | | |
| رَهِينٌ | : كل امرئ بما كسب رهين ... ... ... ... ... | ٢١ | ك الطور | ٥٢ |
| رَهِينَةٌ | : كل نفس بما كسبت رهينة ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك المدثر | ٧٤ |
| رِهَانٌ | : وإن كنتم على سفر ولم تجدوا كاتبا فرهان مقبوضة | ٢٨٣ | م البقرة | ٢ |
| ✦✦✦ | | | | |
| رَهْوًا | : واترك البحر رهوا إنهم جند مغرقون ... ... ... | ٢٤ | ك الدخان | ٤٤ |
| ✦✦✦ | | | | |
| تُرِيحُونَ | : ولكم فيها جمال حين تريحون وحين تسرحون | ٦ | ك النحل | ١٦ |
| رَوَاحُهَا | : ولسليمان الريح غدوها شهر ورواحها شهر ... ... | ١٢ | ك سبأ | ٣٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| روح: | ولا تيأسوا من روح الله ... ... ... ... ... ... | ٨٧ | ك يوسف | ١٢ |
| (٣١) | إنه لا ييأس من روح الله إلا القوم الكافرون | ٨٧ | ك « | ١٢ |
| | فأما إن كان من المقربين . فروح وريحان وجنة نعيم | ٨٩ | ك الواقعة | ٥٦ |
| روح: | وآتينا عيسى ابن مريم البينات وأيدناه بروح القدس | ٨٧ | م البقرة | ٢ |
| (١٤) | وآتينا عيسى ابن مريم البينات وأيدناه بروح القدس | ٢٥٣م | « | ٢ |
| | وكلمته ألقاها إلى مريم وروح منه ... ... ... .. | ١٧١م | النساء | ٤ |
| | اذكر نعمتي عليك وعلى والدتك إذ أيدتك بروح القدس | ١١٠م | المائدة | ٥ |
| | ينزل الملائكة بالروح من أمره على من يشاء من عباده | ٢ | ك النحل | ١٦ |
| | قل نزله روح القدس من ربك بالحق ليثبت الذين آمنوا | ١٠٢ك | « | ١٦ |
| | ويسئلونك عن الروح ... ... ... ... ... ... | ٨٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| | قل الروح من أمر ربي وما أوتيتم من العلم إلا قليلا | ٨٥ | ك « | ١٧ |
| | نزل به الروح الأمين . على قلبك لتكون من المنذرين | ١٩٣ك | الشعراء | ٢٦ |
| | يلقي الروح من أمره على من يشاء من عباده لينذر يوم التلاق | ١٥ | ك غافر | ٤٠ |
| | أولئك كتب في قلوبهم الإيمان وأيدهم بروح منه | ٢٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| | تعرج الملائكة والروح إليه في يوم كان مقداره خمسين ألف سنة ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك المعارج | ٧٠ |
| | يوم يقوم الروح والملائكة صفا... ... ... ... ... | ٣٨ | ك النبأ | ٧٨ |
| | تنزل الملائكة والروح فيها بإذن ربهم من كل أمر | ٤ | ك القدر | ٩٧ |
| روحا: | وكذلك أوحينا إليك روحا من أمرنا ... ... ... | ٥٢ | ك الشورى | ٤٢ |
| روحنا: | فأرسلنا إليها روحنا فتمثل لها بشرا سويا ... ... | ١٧ | ك مريم | ١٩ |
| (٣) | والتي أحصنت فرجها فنفخنا فيها من روحنا... ... | ٩١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ومريم ابنة عمران التي أحصنت فرجها فنفخنا فيه من روحنا | ١٢ | م التحريم | ٦٦ |
| روحه: | ثم سواه ونفخ فيه من روحه ... ... ... ... | ٩ | ك السجدة | ٣٢ |
| روحي: | فإذا سويته ونفخت فيه من روحي فقعوا له ساجدين | ٢٩ | ك الحجر | ١٥ |
| (٢) | فإذا سويته ونفخت فيه من روحي فقعوا له ساجدين | ٧٢ | ك ص | ٣٨ |
| ريح: | كمثل ريح فيها صر أصابت حرث قوم ظلموا أنفسهم | ١١٧م | آل عمران | ٣ |
| (١٤) | حتى إذا كنتم في الفلك وجرين بهم بريح طيبة... ... | ٢٢ | ك يونس | ١٠ |
| | وفرحوا بها جاءتها ريح عاصف وجاءهم الموج من كل مكان | ٢٢ | ك « | ١٠ |
| | ولما فصلت العير قال أبوهم إني لأجد ريح يوسف | ٩٤ | ك يوسف | ١٢ |
| | أعمالهم كرماد اشتدت به الريح في يوم عاصف | ١٨ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | فيرسل عليكم قاصفا من الريح فيغرقكم بما كفرتم | ٦٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ولسليمان الريح عاصفة تجري بأمره ... ... ... ... | ٨١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | فتخطفه الطير أو تهوي به الريح في مكان سحيق... ... | ٣١ | م الحج | ٢٢ |
| | ولسليمان الريح غدوها شهر ورواحها شهر ... ... | ١٢ | ك سبأ | ٣٤ |
| | فسخرنا له الريح تجري بأمره رخاء حيث أصاب | ٣٦ | ك ص | ٣٨ |
| | إن يشأ يسكن الريح فيظللن رواكد على ظهره ... ... | ٣٣ | ك الشورى | ٤٢ |
| | بل هو ما استعجلتم به ريح فيها عذاب أليم ... ... | ٢٤ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| ريح: | وفي عاد إذ أرسلنا عليهم الريح العقيم ... ... ... | ٤١ | ك الذاريات | ٥١ |
| | وأما عاد فأهلكوا بريح صرصر عاتية ... ... ... | ٦ | ك الحاقة | ٦٩ |
| ريحا: | ولئن أرسلنا ريحا فرأوه مصفرا لظلوا من بعده يكفرون | ٥١ | ك الروم | ٣٠ |
| (٤) | إذ جاءتكم جنود فأرسلنا عليهم ريحا وجنودا لم تروها | ٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | فأرسلنا عليهم ريحا صرصرا في أيام نحسات ... ... | ١٦ | ك فصلت | ٤١ |
| | أرسلنا عليهم ريحا صرصرا في يوم نحس مستمر | ١٩ | ك القمر | ٥٤ |
| ريحكم: | ولا تنازعوا فتفشلوا وتذهب ريحكم واصبروا | ٤٦ | م الأنفال | ٨ |
| الرياح: | وتصريف الرياح والسحاب المسخر بين السماء والأرض لآيات لقوم يعقلون ... ... ... ... | ١٦٤م | البقرة | ٢ |
| (١٠) | وهو الذي يرسل الرياح بشرا بين يدي رحمته... ... | ٥٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | وأرسلنا الرياح لواقح فأنزلنا من السماء ماء فأسقيناكموه | ٢٢ | ك الحجر | ١٥ |
| | فاختلط به نبات الأرض فأصبح هشيما تذروه الرياح | ٤٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | وهو الذي أرسل الرياح بشرا بين يدي رحمته ... ... | ٤٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ومن يرسل الرياح بشرا بين يدي رحمته ... ... ... | ٦٣ | ك النمل | ٢٧ |
| | ومن آياته أن يرسل الرياح مبشرات وليذيقكم من رحمته | ٤٦ | ك الروم | ٣٠ |
| | الله الذي يرسل الرياح فتثير سحابا فيبسطه في السماء | ٤٨ | ك « | ٣٠ |
| | والله الذي أرسل الرياح فتثير سحابا فسقناه إلى بلد ميت فأحيا به الأرض بعد موتها وتصريف الرياح آيات لقوم يعقلون ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك الجاثية | ٤٥ |
| ريحان: | والحب ذو العصف والريحان ... ... ... ... | ١٢ | م الرحمن | ٥٥ |
| (٢) | فأما إن كان من المقربين . فروح وريحان وجنة نعيم | ٨٩ | ك الواقعة | ٥٦ |
| أراد: | وأما الذين كفروا فيقولون ماذا أراد الله بهذا مثلا | ٢٦ | م البقرة | ٢ |
| (٢٠) | والوالدات يرضعن أولادهن حولين كاملين لمن أراد أن يتم الرضاعة ... ... ... ... ... ... | ٢٣٣م | « | ٢ |
| | قل فمن يملك من الله شيئا إن أراد أن يهلك المسيح ابن مريم وأمه ومن في الأرض جميعا ... ... | ١٧ | م المائدة | ٥ |
| | قالت ما جزاء من أراد بأهلك سوءا إلا أن يسجن | ٢٥ | ك يوسف | ١٢ |
| | وإذا أراد الله بقوم سوءا فلا مرد له ... ... ... | ١١ | م الرعد | ١٣ |
| | ومن أراد الآخرة وسعى لها سعيها وهو مؤمن فأولئك كان سعيهم مشكورا ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فأراد أن يستفزهم من الأرض فأغرقناه ومن معه جميعا | ١٠٣ك | « | ١٧ |
| | فأراد ربك أن يبلغا أشدهما ويستخرجا كنزهما | ٨٢ | ك الكهف | ١٨ |
| | وهو الذي جعل الليل والنهار خلفة لمن أراد أن يذكر أو أراد شكورا ... ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | | ٦٢ | ك « | ٢٥ |
| | فلما أن أراد أن يبطش بالذي هو عدو لهما قال يا موسى أتريد أن تقتلني كما قتلت نفسا بالأمس ... ... | ١٩ | ك القصص | ٢٨ |
| | قل من ذا الذي يعصمكم من الله إن أراد بكم سوءا | ١٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | أو أراد بكم رحمة ... ... ... ... ... ... | ١٧ | م « | ٣٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَرَادَ: | إن أراد النبي أن يستنكحها خالصة لك من دون المؤمنين | ٥٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | إنما أمره إذا أراد شيئا أن يقول له كن فيكون | ٨٢ | ك يس | ٣٦ |
| | لو أراد الله أن يتخذ ولدا لاصطفى مما يخلق ما يشاء | ٤ | ك الزمر | ٣٩ |
| | قل فمن يملك لكم من الله شيئا إن أراد بكم ضرا ... | ١١ | م الفتح | ٤٨ |
| | أو أراد بكم نفعا بل كان الله بما تعملون خبيرا ... | ١١ | م « | ٤٨ |
| | أشر أريد بمن في الأرض أم أراد بهم ربهم رشدا | ١٠ | ك الجن | ٧٢ |
| | ماذا أراد الله بهذا مثلا ... ... ... ... ... | ٣١ | ك المدثر | ٧٤ |
| أَرَادَا: | فإن أرادا فصالا عن تراض منهما وتشاور فلا جناح عليهما | ٢٣٣ | م البقرة | ٢ |
| أَرَادَنِي: | إن أرادني الله بضر هل هن كاشفات ضره ... | ٣٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| (٢) | أو أرادني برحمة هل هن ممسكات رحمته ... ... ... | ٣٨ | ك « | ٣٩ |
| أَرَادُوا: | وبعولتهن أحق بردهن في ذلك إن أرادوا إصلاحا | ٢٢٨ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | ولو أرادوا الخروج لأعدوا له عدة ولكن كره الله انبعاثهم | ٤٦ | م التوبة | ٩ |
| | وأرادوا به كيدا فجعلناهم الأخسرين ... ... ... | ٧٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | كلما أرادوا أن يخرجوا منها من غم أعيدوا فيها | ٢٢ | م الحج | ٢٢ |
| | كلما أرادوا أن يخرجوا منها أعيدوا فيها ... ... | ٢٠ | م السجدة | ٣٢ |
| | فأرادوا به كيدا فجعلناهم الأسفلين ... ... ... ... | ٩٨ | ك الصافات | ٣٧ |
| أَرَدْتُ: | ولا ينفعكم نصحي إن أردت أن أنصح لكم إن | | | |
| (٢) | كان الله يريد أن يغويكم ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك هود | ١١ |
| | أما السفينة فكانت لمساكين يعملون في البحر فأردت | | | |
| | أن أعيبها ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٩ | ك الكهف | ١٨ |
| أَرَدْتُمْ: | وإن أردتم أن تسترضعوا أولادكم فلا جناح عليكم | ٢٣٣ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | وإن أردتم استبدال زوج مكان زوج وآتيتم إحداهن | | | |
| | قنطارا فلا تأخذوا منه شيئا ... ... ... ... ... | ٢٠ | م النساء | ٤ |
| | أم أردتم أن يحل عليكم غضب من ربكم فأخلفتم موعدي | ٨٦ | ك طه | ٢٠ |
| أَرَدْنَ: | ولا تكرهوا فتياتكم على البغاء إن أردن تحصنا ... ... | ٣٣ | م النور | ٢٤ |
| أَرَدْنَا: | ثم جاءوك يحلفون بالله إن أردنا إلا إحسانا وتوفيقا | ٦٢ | م النساء | ٤ |
| (٥) | وليحلفن إن أردنا إلا الحسنى والله يشهد إنهم لكاذبون | ١٠٧ | م التوبة | ٩ |
| | وإذا أردنا أن نهلك قرية أمرنا مترفيها ففسقوا فيها | ١٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فأردنا أن يبدلهما ربهما خيرا منه زكاة وأقرب رحما | ٨١ | ك الكهف | ١٨ |
| | لو أردنا أن نتخذ لهوا لاتخذناه من لدنا إن كنا فاعلين | ١٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| أَرَدْنَاهُ: | إنما قولنا لشيء إذا أردناه أن نقول له كن فيكون | ٤٠ | ك النحل | ١٦ |
| أُرِيدُ: | إني أريد أن تبوأ بإثمي وإثمك فتكون من أصحاب النار | ٢٩ | م المائدة | ٥ |
| (٧) | وما أريد أن أخالفكم إلى ما أنهاكم عنه ... ... ... | ٨٨ | ك هود | ١١ |
| | إن أريد إلا الإصلاح ما استطعت وما توفيقي إلا بالله | ٨٨ | ك « | ١١ |
| | قال إني أريد أن أنكحك إحدى ابنتي هاتين ... ... | ٢٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | وما أريد أن أشق عليك ستجدني إن شاء الله من الصالحين | ٢٧ | ك « | ٢٨ |
| | ما أريد منهم من رزق... ... ... ... ... ... ... | ٥٧ | ك الذاريات | ٥١ |
| | وما أريد أن يطعمون ... ... ... ... ... ... ... | ٥٧ | ك « | ٥١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تُرِدْنَ: | إن كنتن تردن الحياة الدنيا وزينتها فتعالين أمتعكن | ٢٨ | م الأحزاب | ٣٣ |
| (٢) | وإن كنتن تردن الله ورسوله والدار الآخرة فإن الله | | | |
| | أعد للمحسنات منكن أجرا عظيما ... ... ... ... | ٢٩ | م « | ٣٣ |
| تُرِيدُ: | ولا تعد عيناك عنهم تريد زينة الحياة الدنيا ... ... | ٢٨ | م الكهف | ١٨ |
| (٤) | أتريد أن تقتلني كما قتلت نفسا بالأمس ... ... ... | ١٩ | ك القصص | ٢٨ |
| | إن تريد إلا أن تكون جبارا في الأرض ... ... ... | ١٩ | ك « | ٢٨ |
| | وما تريد أن تكون من المصلحين ... ... ... ... | ١٩ | ك « | ٢٨ |
| تُرِيدُونَ: | أم تريدون أن تسئلوا رسولكم كما سئل موسى من قبل | ١٠٨ | م البقرة | ٢ |
| (٧) | أتريدون أن تهدوا من أضل الله ... ... ... ... | ٨٨ | م النساء | ٤ |
| | أتريدون أن تجعلوا لله عليكم سلطانا مبينا... ... ... | ١٤٤ | م « | ٤ |
| | تريدون عرض الدنيا والله يريد الآخرة... ... ... | ٦٧ | م الأنفال | ٨ |
| | تريدون أن تصدونا عما كان يعبد آباؤنا ... ... ... | ١٠ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وما آتيتم من زكاة تريدون وجه الله فأولئك هم المضعفون | ٣٩ | ك الروم | ٣٠ |
| | أئفكا آلهة دون الله تريدون ... ... ... ... ... | ٨٦ | ك الصافات | ٣٧ |
| نُرِيدُ: | قالوا نريد أن نأكل منها وتطمئن قلوبنا .. ... | ١١٣ | م المائدة | ٥ |
| (٥) | قالوا لقد علمت ما لنا في بناتك من حق وإنك لتعلم ما نريد | ٧٩ | ك هود | ١١ |
| | من كان يريد العاجلة عجلنا له فيها ما نشاء لمن نريد | ١٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ونريد أن نمن على الذين استضعفوا في الأرض | ٥ | ك القصص | ٢٨ |
| | إنما نطعمكم لوجه الله لا نريد منكم جزاء ولا شكورا | ٩ | م الإنسان | ٧٦ |
| يُرِدْ: | ومن يرد ثواب الدنيا نؤته منها ... ... ... ... | ١٤٥ | م آل عمران | ٣ |
| (٨) | ومن يرد ثواب الآخرة نؤته منها... ... ... ... | ١٤٥ | م « | ٣ |
| | ومن يرد الله فتنته فلن تملك له من الله شيئا ... ... | ٤١ | م المائدة | ٥ |
| | أولئك الذين لم يرد الله أن يطهر قلوبهم ... ... ... | ٤١ | م « | ٥ |
| | فمن يرد الله أن يهديه يشرح صدره للإسلام ... ... | ١٢٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | ومن يرد أن يضله يجعل صدره ضيقا حرجا ... ... | ١٢٥ | ك « | ٦ |
| | ومن يرد فيه بإلحاد بظلم نذقه من عذاب أليم ... ... | ٢٥ | م الحج | ٢٢ |
| | فأعرض عن من تولى عن ذكرنا ولم يرد إلا الحياة الدنيا | ٢٩ | ك النجم | ٥٣ |
| يُرِدْكَ: | وإن يردك بخير فلا رادّ لفضله... ... ... ... ... | ١٠٧ | ك يونس | ١٠ |
| يُرِدْنِ: | إن يردن الرحمن بضر لا تغن عني شفاعتهم شيئا | ٢٣ | ك يس | ٣٦ |
| يُرِيدُ: | يريد الله بكم اليسر ... ... ... ... ... ... | ١٨٥ | م البقرة | ٢ |
| (٤١) | ولا يريد بكم العسر... ... ... ... ... ... ... | ١٨٥ | م « | ٢ |
| | ولو شاء الله ما اقتتلوا ولكن الله يفعل ما يريد ... | ٢٥٣ | م « | ٢ |
| | تلك آيات الله نتلوها عليك بالحق وما الله يريد ظلما للعالمين | ١٠٨ | م آل عمران | ٣ |
| | منكم من يريد الدنيا ... ... ... ... ... ... | ١٥٢ | م « | ٣ |
| | ومنكم من يريد الآخرة ... ... ... ... ... ... | ١٥٢ | م « | ٣ |
| | يريد الله ألا يجعل لهم حظا في الآخرة ... ... ... | ١٧٦ | م « | ٣ |
| | يريد الله ليبين لكم ويهديكم سنن الذين من قبلكم | ٢٦ | م النساء | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يُرِيدُ: والله يريد أن يتوب عليكم ... ... ... ... ... | ٢٧ | م | النساء | ٤ |
| ويريد الذين يتبعون الشهوات أن تميلوا ميلا عظيما | ٢٧ | م | » | ٤ |
| يريد الله أن يخفف عنكم وخلق الإنسان ضعيفا | ٢٨ | م | » | ٤ |
| ويريد الشيطان أن يضلهم ضلالا بعيدا ... ... ... | ٦٠ | م | » | ٤ |
| من كان يريد ثواب الدنيا فعند الله ثواب الدنيا والآخرة | ١٣٤ | م | » | ٤ |
| إن الله يحكم ما يريد ... ... ... ... ... ... | ١ | م | المائدة | ٥ |
| ما يريد الله ليجعل عليكم من حرج ... ... ... ... | ٦ | م | » | ٥ |
| ولكن يريد ليطهركم وليتم نعمته عليكم ... ... ... | ٦ | م | » | ٥ |
| فإن تولوا فاعلم أنما يريد الله أن يصيبهم ببعض ذنوبهم | ٤٩ | م | » | ٥ |
| إنما يريد الشيطان أن يوقع بينكم العداوة والبغضاء في الخمر والميسر ويصدكم عن ذكر الله وعن الصلاة | ٩١ | م | » | ٥ |
| يريد أن يخرجكم من أرضكم فماذا تأمرون ... ... | ١١٠ | ك | الأعراف | ٧ |
| ويريد الله أن يحق الحق بكلماته ويقطع دابر الكافرين | ٧ | م | الأنفال | ٨ |
| تريدون عرض الدنيا والله يريد الآخرة ... ... ... | ٦٧ | م | » | ٨ |
| إنما يريد الله ليعذبهم بها في الحياة الدنيا ... ... ... | ٥٥ | م | التوبة | ٩ |
| إنما يريد الله أن يعذبهم بها في الدنيا ... ... ... | ٨٥ | م | » | ٩ |
| من كان يريد الحياة الدنيا وزينتها نوف إليهم أعمالهم فيها | ١٥ | ك | هود | ١١ |
| ولا ينفعكم نصحي إن أردت أن أنصح لكم إن كان الله يريد أن يغويكم ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك | » | ١١ |
| إن ربك فعال لما يريد ... ... ... ... ... ... | ١٠٧ | ك | » | ١١ |
| من كان يريد العاجلة عجلنا له فيها ما نشاء لمن نريد | ١٨ | ك | الإسراء | ١٧ |
| فوجدا فيها جدارا يريد أن ينقض فأقامه ... ... ... | ٧٧ | ك | الكهف | ١٨ |
| إن الله يفعل ما يريد ... ... ... ... ... ... | ١٤ | م | الحج | ٢٢ |
| وكذلك أنزلناه آيات بينات وأن الله يهدي من يريد | ١٦ | م | » | ٢٢ |
| ما هذا إلا بشر مثلكم يريد أن يتفضل عليكم ... ... | ٢٤ | ك | المؤمنون | ٢٣ |
| يريد أن يخرجكم من أرضكم بسحره فماذا تأمرون | ٣٥ | ك | الشعراء | ٢٦ |
| إنما يريد الله ليذهب عنكم الرجس أهل البيت... ... | ٣٣ | م | الأحزاب | ٣٣ |
| ما هذا إلا رجل يريد أن يصدكم عما كان يعبد آباؤكم | ٤٣ | ك | سبأ | ٣٤ |
| من كان يريد العزة فلله العزة جميعا ... ... ... ... | ١٠ | ك | فاطر | ٣٥ |
| وما الله يريد ظلما للعباد ... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك | غافر | ٤٠ |
| من كان يريد حرث الآخرة نزد له في حرثه ... ... ... | ٢٠ | ك | الشورى | ٤٢ |
| ومن كان يريد حرث الدنيا نؤته منها وما له في الآخرة من نصيب... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك | » | ٤٢ |
| بل يريد كل امرئ منهم أن يؤتى صحفا منشرة... ... | ٥٢ | ك | المدثر | ٧٤ |
| بل يريد الإنسان ليفجر أمامه ... ... ... ... ... | ٥ | ك | القيامة | ٧٥ |
| ذو العرش المجيد . فعال لما يريد ... ... ... ... | ١٦ | ك | البروج | ٨٥ |
| يُرِيدَا: إن يريدا إصلاحا يوفق الله بينهما... ... ... | ٣٥ | م | النساء | ٤ |
| يُرِيدَانِ: يريدان أن يخرجاكم من أرضكم بسحرهما... ... | ٦٣ | ك | طه | ٢٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يُرِيدُوا: وإن يريدوا أن يخدعوك فإن حسبك الله... ... | ٦٢ | م | الأنفال | ٨ |
| (٢) وإن يريدوا خيانتك فقد خانوا الله من قبل فأمكن منهم | ٧١ | م | » | ٨ |
| يُرِيدُونَ: يشترون الضلالة ويريدون أن تضلوا السبيل | ٤٤ | م | النساء | ٤ |
| (١٦) يريدون أن يتحاكموا إلى الطاغوت وقد أمروا أن يكفروا به... ... ... ... ... ... ... ... | ٦٠ | م | » | ٤ |
| ستجدون آخرين يريدون أن يأمنوكم ويأمنوا قومهم | ٩١ | م | » | ٤ |
| ويريدون أن يفرقوا بين الله ورسله... ... ... ... | ١٥٠ | م | » | ٤ |
| ويريدون أن يتخذوا بين ذلك سبيلا ... ... ... ... | ١٥٠ | م | » | ٤ |
| يريدون أن يخرجوا من النار وما هم بخارجين منها | ٣٧ | م | المائدة | ٥ |
| ولا تطرد الذين يدعون ربهم بالغداة والعشي يريدون وجهه | ٥٢ | ك | الأنعام | ٦ |
| يريدون أن يطفئوا نور الله بأفواههم ... ... ... | ٣٢ | م | التوبة | ٩ |
| واصبر نفسك مع الذين يدعون ربهم بالغداة والعشي يريدون وجهه ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م | الكهف | ١٨ |
| قال الذين يريدون الحياة الدنيا يا ليت لنا مثل ما أوتي قارون | ٧٩ | ك | القصص | ٢٨ |
| نجعلها للذين لا يريدون علوا في الأرض ولا فسادا | ٨٣ | ك | » | ٢٨ |
| ذلك خير للذين يريدون وجه الله... ... ... ... ... | ٣٨ | ك | الروم | ٣٠ |
| يقولون إن بيوتنا عورة وما هي بعورة إن يريدون إلا فرارا | ١٣ | م | الأحزاب | ٣٣ |
| يريدون أن يبدلوا كلام الله ... ... ... ... ... | ١٥ | م | الفتح | ٤٨ |
| أم يريدون كيدا فالذين كفروا هم المكيدون ... ... | ٤٢ | ك | الطور | ٥٢ |
| يريدون ليطفئوا نور الله بأفواههم ... ... ... ... | ٨ | م | الصف | ٦١ |
| أُرِيدَ: وأنا لا ندري أشر أريد بمن في الأرض أم أراد بهم ربهم رشدا ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك | الجن | ٧٢ |
| يُرَادُ: أن امشوا واصبروا على آلهتكم إن هذا لشيء يراد ... | ٦ | ك | ص | ٣٨ |
| رَاوَدَتْنَ: قال ما خطبكن إذ راودتن يوسف عن نفسه ... | ٥١ | ك | يوسف | ١٢ |
| رَاوَدَتْنِي: قال هي راودتني عن نفسي... ... ... ... | ٢٦ | ك | » | ١٢ |
| رَاوَدَتْهُ: وراودته التي هو في بيتها عن نفسه وغلقت الأبواب | ٢٣ | ك | » | ١٢ |
| رَاوَدْتُهُ: ولقد راودته عن نفسه فاستعصم ... ... ... | ٣٢ | ك | » | ١٢ |
| (٢) أنا راودته عن نفسه وإنه لمن الصادقين ... ... ... | ٥١ | ك | » | ١٢ |
| رَاوَدُوهُ: ولقد راودوه عن ضيفه فطمسنا أعينهم ... ... | ٣٧ | ك | القمر | ٥٤ |
| تُرَاوِدُ: وقال نسوة في المدينة امرأة العزيز تراود فتاها عن نفسه | ٣٠ | ك | يوسف | ١٢ |
| سَنُرَاوِدُ: قالوا سنراود عنه أباه وإنا لفاعلون ... ... ... | ٦١ | ك | » | ١٢ |
| رُوَيْدًا: فمهل الكافرين أمهلهم رويدا ... ... ... ... | ١٧ | ك | الطارق | ٨٦ |

***

رَوْضَةٍ: فأما الذين آمنوا وعملوا الصالحات فهم في روضة يحبرون | ١٥ | ك | الروم | ٣٠

رَوْضَاتِ: والذين آمنوا وعملوا الصالحات في روضات الجنات | ٢٢ | ك | الشورى | ٤٢

***

الرَّوْعُ: فلما ذهب عن إبراهيم الروع وجاءته البشرى يجادلنا في قوم لوط ... ... ... ... ... ... ... | ٧٤ | ك | هود | ١١

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| رَاغَ: | فراغ إلى آلهتهم فقال ألا تأكلون ... ... ... ... | ٩١ | ك الصافات | ٣٧ |
| (٣) | فراغ عليهم ضربا باليمين ... ... ... ... ... ... | ٩٣ | ك « | ٣٧ |
| | فراغ إلى أهله فجاء بعجل سمين ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك الذاريات | ٥١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| الرُّومُ: | الم . غلبت الروم . في أدنى الأرض ... ... | ٢ | ك الروم | ٣٠ |
| | ✦✦✦ | | | |
| أَرْتَابَ: | إذًا لارتاب المبطلون ... ... ... ... ... | ٤٨ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| أَرْتَابَتْ: | إنما يستأذنك الذين لا يؤمنون بالله واليوم الآخر وارتابت قلوبهم ... ... ... ... ... | ٤٥ | م التوبة | ٩ |
| أَرْتَابُوا: | أفي قلوبهم مرض أم ارتابوا ... ... ... ... | ٥٠ | م النور | ٢٤ |
| أَرْتَبْتُمْ: | فيقسمان بالله إن ارتبتم لا نشتري به ثمنا ولو كان ذا قربى | ١٠٦ | م المائدة | ٥ |
| (٣) | ولكنكم فتنتم أنفسكم وتربصتم وارتبتم وغرتكم الأماني | ١٤ | م الحديد | ٥٧ |
| | إن ارتبتم فعدتهن ثلاثة أشهر ... ... ... ... ... | ٤ | م الطلاق | ٦٥ |
| تَرْتَابُوا: | ذلكم أقسط عند الله وأقوم للشهادة وأدنى ألا ترتابوا | ٢٨٢ | م البقرة | ٢ |
| يَرْتَابَ: | ولا يرتاب الذين أوتوا الكتاب والمؤمنون ... ... | ٣١ | ك المدثر | ٧٤ |
| يَرْتَابُوا: | إنما المؤمنون الذين آمنوا بالله ورسوله ثم لم يرتابوا | ١٥ | م الحجرات | ٤٩ |
| رَيْبَ: | ذلك الكتاب لا ريب فيه هدى للمتقين ... ... ... | ٢ | م البقرة | ٢ |
| (١٧) | وإن كنتم في ريب مما نزلنا على عبدنا فأتوا بسورة من مثله | ٢٣ | م « | ٢ |
| | ربنا إنك جامع الناس ليوم لا ريب فيه ... ... ... | ٩ | م آل عمران | ٣ |
| | فكيف إذا جمعناهم ليوم لا ريب فيه ... ... ... | ٢٥ | م « | ٣ |
| | الله لا إله إلا هو ليجمعنكم إلى يوم القيامة لا ريب فيه | ٨٧ | م النساء | ٤ |
| | كتب على نفسه الرحمة ليجمعنكم إلى يوم القيامة لا ريب فيه | ١٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | ولكن تصديق الذي بين يديه وتفصيل الكتاب لا ريب فيه | ٣٧ | ك يونس | ١٠ |
| | وجعل لهم أجلا لا ريب فيه فأبى الظالمون إلا كفورا | ٩٩ | ك الإسراء | ١٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| رَيْبَ: | ليعلموا أن وعد الله حق وأن الساعة لا ريب فيها | ٢١ | ك الكهف | ١٨ |
| | يأيها الناس إن كنتم في ريب من البعث فإنا خلقناكم من تراب | ٥ | م الحج | ٢٢ |
| | وأن الساعة آتية لا ريب فيها وأن الله يبعث من في القبور | ٧ | م « | ٢٢ |
| | تنزيل الكتاب لا ريب فيه من رب العالمين ... ... | ٢ | م السجدة | ٣٢ |
| | إن الساعة لآتية لا ريب فيها ولكن أكثر الناس لا يؤمنون | ٥٩ | ك غافر | ٤٠ |
| | لتنذر أم القرى ومن حولها وتنذر يوم الجمع لا ريب فيه | ٧ | ك الشورى | ٤٢ |
| | قل الله يحييكم ثم يميتكم ثم يجمعكم إلى يوم القيامة لا ريب فيه | ٢٦ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | وإذا قيل إن وعد الله حق والساعة لا ريب فيها قلتم ما ندري ما الساعة ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك « | ٤٥ |
| | أم يقولون شاعر نتربص به ريب المنون ... ... ... | ٣٠ | ك الطور | ٥٢ |
| رَيْبِهِمْ: | وارتابت قلوبهم فهم في ريبهم يترددون ... ... | ٤٥ | م التوبة | ٩ |
| رِيبَةً: | لا يزال بنيانهم الذي بنوا ريبة في قلوبهم ... ... | ١١٠ | م « | ٩ |
| مُرِيبٍ: | وإننا لفي شك مما تدعونا إليه مريب ... ... | ٦٢ | ك هود | ١١ |
| (٧) | وإنهم لفي شك منه مريب ... ... ... ... ... | ١١٠ | ك « | ١١ |
| | وإنا لفي شك مما تدعوننا إليه مريب ... ... ... | ٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | كما فعل بأشياعهم من قبل إنهم كانوا في شك مريب | ٥٤ | ك سبإ | ٣٤ |
| | وإنهم لفي شك منه مريب ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك فصلت | ٤١ |
| | وإن الذين أورثوا الكتاب من بعدهم لفي شك منه مريب | ١٤ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ألقيا في جهنم كل كفار عنيد . مناع للخير معتد مريب | ٢٥ | ك ق | ٥٠ |
| مُرْتَابٌ: | كذلك يضل الله من هو مسرف مرتاب ... ... | ٣٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | ✦✦✦ | | | |
| رِيشًا: | يابني آدم قد أنزلنا عليكم لباسا يواري سوآتكم وريشا | ٢٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| رِيعٍ: | أتبنون بكل ريع آية تعبثون ... ... ... ... ... | ١٢٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| رَانَ: | كلا بل ران على قلوبهم ما كانوا يكسبون ... ... | ١٤ | ك المطففين | ٨٣ |

# باب الزاي

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| زَبَدٌ: | ومما يوقدون عليه في النار ابتغاء حلية أو متاع زبد مثله | ١٧ | م الرعد | ١٣ |
| (٢) | فأما الزبد فيذهب جفاء ... ... ... ... ... | ١٧ | م « | ١٣ |
| زَبَدًا: | فسالت أودية بقدرها فاحتمل السيل زبدا رابيا ... | ١٧ | م « | ١٣ |
| | ✦✦✦ | | | |
| الزَّبُورِ: | ولقد كتبنا في الزبور من بعد الذكر أن الأرض يرثها عبادي الصالحون ... ... ... ... ... ... | ١٠٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| زَبُورًا: | وآتينا داود زبورا ... ... ... ... ... ... | ١٦٣ | م النساء | ٤ |
| (٢) | | | | |
| زَبُورًا: | ولقد فضلنا بعض النبيين على بعض وآتينا داود زبورا | ٥٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| الزُّبُرِ: | جاءوا بالبينات والزبر والكتاب المنير ... ... ... | ١٨٤ | م آل عمران | ٣ |
| (٦) | فسئلوا أهل الذكر إن كنتم لا تعلمون . بالبينات والزبر | ٤٤ | ك النحل | ١٦ |
| | وإنه لفي زبر الأولين ... ... ... ... ... ... | ١٩٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | جاءتهم رسلهم بالبينات وبالزبر وبالكتاب المنير | ٢٥ | ك فاطر | ٣٥ |
| | أكفاركم خير من أولئكم أم لكم براءة في الزبر ... ... | ٤٣ | ك القمر | ٥٤ |
| | وكل شيء فعلوه في الزبر ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك « | ٥٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| زُبُرًا | فتقطعوا أمرهم بينهم زبرا... ... ... ... ... | ٥٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| زُبَر | آتونى زبر الحديد حتى إذا ساوى بين الصدفين قال انفخوا | ٩٦ | م الكهف | ١٨ |
| الزَّبَانِيَةَ | فليدع ناديه . سندع الزبانية ... ... ... ... | ١٨ | ك العلق | ٩٦ |
| الزُّجَاجَةُ | مثل نوره كمشكاة فيها مصباح المصباح فى زجاجة | ٣٥ | م النور | ٢٤ |
| (٢) | الزجاجة كأنها كوكب درى يوقد من شجرة مباركة | ٣٥ | م « | ٢٤ |
| أَزْدُجِرَ | فكذبوا عبدنا وقالوا مجنون وازدجر ... ... ... | ٩ | ك القمر | ٥٤ |
| مُزْدَجَرٌ | ولقد جاءهم من الأنباء ما فيه مزدجر ... ... | ٤ | ك « | ٥٤ |
| زَجْرًا | فالزاجرات زجرا . فالتاليات ذكرا . إن إلهكم لواحد | ٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| زَجْرَةٌ | فإنما هى زجرة واحدة فإذا هم ينظرون ... ... | ١٩ | ك « | ٣٧ |
| (٢) | فإنما هى زجرة واحدة . فإذا هم بالساهرة ... ... | ١٣ | ك النازعات | ٧٩ |
| الزَّاجِرَاتِ | فالزاجرات زجرا . فالتاليات ذكرا . إن إلهكم لواحد | ٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| يُزْجِى | ربكم الذى يزجى لكم الفلك فى البحر لتبتغوا من فضله | ٦٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٢) | ألم تر أن الله يزجى سحابا ثم يؤلف بينه ثم يجعله ركاما | ٤٣ | م النور | ٢٤ |
| مُزْجَاةٍ | يأيها العزيز مسنا وأهلنا الضر وجئنا ببضاعة مزجاة | ٨٨ | ك يوسف | ١٢ |
| زُحْزِحَ | فمن زحزح عن النار وأدخل الجنة فقد فاز ... ... | ١٨٥ | م آل عمران | ٣ |
| بِمُزَحْزِحِهِ | وما هو بمزحزحه من العذاب أن يعمر ... ... | ٩٦ | م البقرة | ٢ |
| زَحْفًا | إذا لقيتم الذين كفروا زحفا فلا تولوهم الأدبار | ١٥ | م الأنفال | ٨ |
| زُخْرُفَ | يوحى بعضهم إلى بعض زخرف القول غرورا | ١١٢ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | أو يكون لك بيت من زخرف أو ترقى فى السماء... ... | ٩٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| زُخْرُفًا | ولبيوتهم أبوابا وسررا عليها يتكئون . وزخرفا | ٣٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| زُخْرُفَهَا | حتى إذا أخذت الأرض زخرفها وازينت وظن أهلها أنهم قادرون عليها أتاها أمرنا ليلا أو نهارا | ٢٤ | ك يونس | ١٠ |
| زَرَابِىُّ | ونمارق مصفوفة . وزرابى مبثوثة ... ... ... | ١٦ | ك الغاشية | ٨٨ |
| تَزْرَعُونَ | قال تزرعون سبع سنين دأبا... ... ... ... | ٤٧ | ك يوسف | ١٢ |
| تَزْرَعُونَهُ | أفرأيتم ما تحرثون . أأنتم تزرعونه أم نحن الزارعون | ٦٤ | ك الواقعة | ٥٦ |
| الزَّارِعُونَ | أفرأيتم ما تحرثون . أأنتم تزرعونه أم نحن الزارعون | ٦٤ | ك « | ٥٦ |
| الزُّرَّاعَ | فاستوى على سوقه يعجب الزراع ليغيظ بهم الكفار | ٢٩ | م الفتح | ٤٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| زَرْعٍ (٥) | وهو الذى أنشأ جنات معروشات وغير معروشات والنخل والزرع مختلفا أكله... ... ... ... ... | ١٤١ | م الأنعام | ٦ |
| | وفى الأرض قطع متجاورات وجنات من أعناب وزرع ونخيل ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | م الرعد | ١٣ |
| | ربنا إنى أسكنت من ذريتى بواد غير ذى زرع... ... | ٣٧ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | ينبت لكم به الزرع والزيتون والنخيل والأعناب | ١١ | ك النحل | ١٦ |
| | ومثلهم فى الإنجيل كزرع أخرج شطأه ... ... ... | ٢٩ | م الفتح | ٤٨ |
| زَرْعًا | وحففناهما بنخل وجعلنا بينهما زرعا ... ... ... | ٣٢ | ك الكهف | ١٨ |
| (٣) | أولم يروا أنا نسوق الماء إلى الأرض الجرز فنخرج به زرعا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك السجدة | ٣٢ |
| | ثم يخرج به زرعا مختلفا ألوانه ثم يهيج فتراه مصفرا | ٢١ | ك الزمر | ٣٩ |
| زُرُوعٍ | فى جنات وعيون . وزروع ونخل طلعها هضيم | ١٤٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| (٢) | كم تركوا من جنات وعيون . وزروع ومقام كريم | ٢٦ | ك الدخان | ٤٤ |
| زُرْقًا | يوم ينفخ فى الصور ونحشر المجرمين يومئذ زرقا | ١٠٢ | ك طه | ٢٠ |
| تَزْدَرِى | ولا أقول للذين تزدرى أعينكم لن يؤتيهم الله خيرا | ٣١ | ك هود | ١١ |
| زَعَمَ | زعم الذين كفروا أن لن يبعثوا قل بلى وربى لتبعثن | ٧ | م التغابن | ٦٤ |
| زَعَمْتَ | أو تسقط السماء كما زعمت علينا كسفا ... ... ... | ٩٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| زَعَمْتُمْ (٦) | وما نرى معكم شفعاءكم الذين زعمتم أنهم فيكم شركاء | ٩٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | قل ادعوا الذين زعمتم من دونه فلا يملكون كشف الضر عنكم ولا تحويلا ... ... ... ... ... ... | ٥٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| | بل زعمتم ألن نجعل لكم موعدا ... ... ... ... ... | ٤٨ | ك الكهف | ١٨ |
| | ويوم يقول نادوا شركائى الذين زعمتم فدعوهم فلم يستجيبوا لهم ... ... ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك « | ١٨ |
| | قل ادعوا الذين زعمتم من دون الله ... ... ... ... | ٢٢ | ك سبأ | ٣٤ |
| | إن زعمتم أنكم أولياء لله من دون الناس فتمنوا الموت | ٦ | م الجمعة | ٦٢ |
| تَزْعُمُونَ | أين شركاؤكم الذين كنتم تزعمون ... ... ... ... | ٢٢ | ك الأنعام | ٦ |
| (٤) | لقد تقطع بينكم وضل عنكم ما كنتم تزعمون ... ... | ٩٤ | ك « | ٦ |
| | ويوم يناديهم فيقول أين شركائى الذين كنتم تزعمون | ٦٢ | ك القصص | ٢٨ |
| | ويوم يناديهم فيقول أين شركائى الذين كنتم تزعمون | ٧٤ | ك « | ٢٨ |
| يَزْعُمُونَ | ألم تر إلى الذين يزعمون أنهم آمنوا بما أنزل إليك | ٦٠ | م النساء | ٤ |
| بِزَعْمِهِمْ | فقالوا هذا لله بزعمهم وهذا لشركائنا... ... ... | ١٣٦ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | وقالوا هذه أنعام وحرث حجر لا يطعمها إلا من نشاء بزعمهم | ١٣٨ | ك « | ٦ |
| زَعِيمٌ | قالوا فقد صواع الملك ولمن جاء به حمل بعير وأنا به زعيم | ٧٢ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | سلهم أيهم بذلك زعيم ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك القلم | ٦٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| زَفِيرٌ: | فأما الذين شقوا ففي النار لهم فيها زفير وشهيق... ... | ١٠٦ | ك هـود | ١١ |
| (٢) | لهم فيها زفير وهم فيها لا يسمعون ... ... ... ... ... | ١٠٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| زَفِيرًا: | إذا رأتهم من مكان بعيد سمعوا لها تغيظا وزفيرا | ١٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| يَزِفُّونَ: | فأقبلوا إليه يزفون ... ... ... ... ... ... | ٩٤ | ك الصافات | ٣٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| الزَّقُّومِ: | أذلك خير نزلا أم شجرة الزقوم ... ... ... ... | ٦٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| (٣) | إن شجرة الزقوم . طعام الأثيم ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك الدخان | ٤٤ |
| | ثم إنكم أيها الضالون المكذبون . لآكلون من شجر من زقوم | ٥٢ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| زَكَرِيَّا: | وأنبتها نباتا حسنا وكفلها زكريا... .. ... ... | ٣٧ | م آل عمران | ٣ |
| (٧) | كلما دخل عليها زكريا المحراب وجد عندها رزقا | ٣٧ | م » | ٣ |
| | هنالك دعا زكريا ربه ... ... .. ... ... ... | ٣٨ | م » | ٣ |
| | وزكريا ويحيى وعيسى وإلياس كل من الصالحين ... | ٨٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | ذكر رحمة ربك عبده زكريا... ... ... ... ... | ٢ | ك مريم | ١٩ |
| | يا زكريا إنا نبشرك بغلام اسمه يحيى لم نجعل له من قبل سميا | ٧ | ك » | ١٩ |
| | وزكريا إذ نادى ربه رب لا تذرني فردا وأنت خير الوارثين | ٨٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| زَكَى: | ولولا فضل الله عليكم ورحمته ما زكى منكم من أحد أبدا | ٢١ | م النور | ٢٤ |
| زَكَّاهَا: | قد أفلح من زكاها... ... ... ... ... ... | ٩ | ك الشمس | ٩١ |
| تُزَكُّوا: | فلا تزكوا أنفسكم هو أعلم بمن اتقى... ... ... ... | ٣٢ | م النجم | ٥٣ |
| تُزَكِّيهِمْ: | خذ من أموالهم صدقة تطهرهم وتزكيهم بها وصل عليهم | ١٠٣م | التوبة | ٩ |
| يُزَكُّونَ: | ألم تر إلى الذين يزكون أنفسهم ... ... ... ... | ٤٩ | م النساء | ٤ |
| يُزَكِّي: | بل الله يزكي من يشاء ولا يظلمون فتيلا ... ... ... | ٤٩ | م » | ٤ |
| (٢) | ولكن الله يزكي من يشاء والله سميع عليم ... ... ... | ٢١ | م النور | ٢٤ |
| يُزَكِّيكُمْ: | كما أرسلنا فيكم رسولا منكم يتلو عليكم آياتنا ويزكيكم | ١٥١م | البقرة | ٢ |
| يُزَكِّيهِمْ: | يتلو عليهم آياتك ويعلمهم الكتاب والحكمة ويزكيهم | ١٢٩م | » | ٢ |
| (٥) | ولا يكلمهم الله يوم القيامة ولا يزكيهم ولهم عذاب أليم | ١٧٤م | » | ٢ |
| | ولا يكلمهم الله ولا ينظر إليهم يوم القيامة ولا يزكيهم | ٧٧ | م آل عمران | ٣ |
| | يتلو عليهم آياته ويزكيهم ويعلمهم الكتاب والحكمة | ١٦٤م | » | ٣ |
| | يتلو عليهم آياته ويزكيهم ويعلمهم الكتاب والحكمة | ٢ | م الجمعة | ٦٢ |
| تَزَكَّى: | خالدين فيها وذلك جزاء من تزكى ... ... ... ... | ٧٦ | ك طه | ٢٠ |
| (٣) | ومن تزكى فإنما يتزكى لنفسه وإلى الله المصير... ... | ١٨ | ك فاطر | ٣٥ |
| | قد أفلح من تزكى ... ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك الأعلى | ٨٧ |
| تَزَكَّى: | فقل هل لك إلى أن تزكى ... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك النازعات | ٧٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يتزكى: | ومن تزكى فإنما يتزكى لنفسه وإلى الله المصير... | ١٨ | ك فاطر | ٣٥ |
| (٢) | وسيجنبها الأتقى . الذي يؤتي ماله يتزكى ... ... ... | ١٨ | ك الليل | ٩٢ |
| يزكي: | وما يدريك لعله يزكى... ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك عبس | ٨٠ |
| (٢) | وما عليك ألا يزكى ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | » | ٨٠ |
| أَزْكَى: | ذلكم أزكى لكم وأطهر والله يعلم وأنتم لا تعلمون | ٢٣٢م | البقرة | ٢ |
| (٤) | فلينظر أيها أزكى طعاما فليأتكم برزق منه ... ... | ١٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | وإن قيل لكم ارجعوا فارجعوا هو أزكى لكم | ٢٨ | م النور | ٢٤ |
| | ويحفظوا فروجهم ذلك أزكى لهم ... ... ... ... | ٣٠ | م » | ٢٤ |
| زَكِيًّا: | قال إنما أنا رسول ربك لأهب لك غلاما زكيا | ١٩ | ك مريم | ١٩ |
| زَكِيَّةً: | قال أقتلت نفسا زكية بغير نفس لقد جئت شيئا نكرا | ٧٤ | ك الكهف | ١٨ |
| الزَّكَاةَ: | وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة واركعوا مع الراكعين | ٤٣ | م البقرة | ٢ |
| (٣٢) | وقولوا للناس حسنا وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة | ٨٣ | م » | ٢ |
| | وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة وما تقدموا لأنفسكم | | | |
| | من خير تجدوه عند الله ... ... ... ... ... ... | ١١٠م | » | ٢ |
| | وأقام الصلاة وآتى الزكاة والموفون بعهدهم إذا عاهدوا | ١٧٧م | » | ٢ |
| | وأقاموا الصلاة وآتوا الزكاة لهم أجرهم عند ربهم | ٢٧٧م | » | ٢ |
| | ألم تر إلى الذين قيل لهم كفوا أيديكم وأقيموا | | | |
| | الصلاة وآتوا الزكاة ... ... ... ... ... ... | ٧٧ | م النساء | ٤ |
| | والمقيمين الصلاة والمؤتون الزكاة والمؤمنون بالله | | | |
| | واليوم الآخر أولئك سنؤتيهم أجرا عظيما... ... | ١٦٢م | » | ٤ |
| | لئن أقمتم الصلاة وآتيتم الزكاة وآمنتم برسلي وعزرتموهم | | | |
| | وأقرضتم الله قرضا حسنا لأكفرن عنكم سيئاتكم | ١٢ | م المائدة | ٥ |
| | الذين يقيمون الصلاة ويؤتون الزكاة وهم راكعون | ٥٥ | م » | ٥ |
| | فسأكتبها للذين يتقون ويؤتون الزكاة ... ... ... | ١٥٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | فإن تابوا وأقاموا الصلاة وآتوا الزكاة فخلوا سبيلهم | ٥ | م التوبة | ٩ |
| | فإن تابوا وأقاموا الصلاة وآتوا الزكاة فإخوانكم في الدين | ١١ | م » | ٩ |
| | من آمن بالله واليوم الآخر وأقام الصلاة وآتى الزكاة | ١٨ | م » | ٩ |
| | ويقيمون الصلاة ويؤتون الزكاة ويطيعون الله ورسوله | ٧١ | م » | ٩ |
| | فأردنا أن يبدلهما ربهما خيرا منه زكاة وأقرب رحما | ٨١ | ك الكهف | ١٨ |
| | وحنانا من لدنا وزكاة وكان تقيا ... ... ... ... | ١٣ | ك مريم | ١٩ |
| | وأوصاني بالصلاة والزكاة ما دمت حيا... ... ... | ٣١ | ك » | ١٩ |
| | وكان يأمر أهله بالصلاة والزكاة وكان عند ربه مرضيا | ٥٥ | ك » | ١٩ |
| | وأوحينا إليهم فعل الخيرات وإقام الصلاة وإيتاء الزكاة | ٧٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | الذين إن مكناهم في الأرض أقاموا الصلاة وآتوا الزكاة | ٤١ | م الحج | ٢٢ |
| | فأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة واعتصموا بالله هو مولاكم | ٧٨ | م » | ٢٢ |
| | والذين هم للزكاة فاعلون ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | رجال لا تلهيهم تجارة ولا بيع عن ذكر الله وإقام | | | |
| | الصلاة وإيتاء الزكاة ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | م النور | ٢٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الزَّكَاةَ: | وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة وأطيعوا الرسول | ٥٦ | م النور | ٢٤ |
| | الذين يقيمون الصلاة ويؤتون الزكاة وهم بالآخرة هم يوقنون | ٣ | ك النمل | ٢٧ |
| | وما آتيتم من زكاة تريدون وجه الله فأولئك هم المضعفون | ٣٩ | ك الروم | ٣٠ |
| | الذين يقيمون الصلاة ويؤتون الزكاة وهم بالآخرة هم يوقنون | ٤ | ك لقمان | ٣١ |
| | وأقمن الصلاة وآتين الزكاة وأطعن الله ورسوله | ٣٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | الذين لا يؤتون الزكاة وهم بالآخرة هم كافرون | ٧ | ك فصلت | ٤١ |
| | فإذ لم تفعلوا وتاب الله عليكم فأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة | ١٣ | م المجادلة | ٥٨ |
| | وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة وأقرضوا الله قرضا حسنا | ٢٠ | م المزمل | ٧٣ |
| | ويقيموا الصلاة ويؤتوا الزكاة وذلك دين القيمة | ٥ | م البينة | ٩٨ |
| ✦✦✦ | | | | |
| زُلْزِلَتِ: | إذا زلزلت الأرض زلزالها | ١ | م الزلزلة | ٩٩ |
| زُلْزِلُوا: | مسهم البأساء والضراء وزلزلوا | ٢١٤ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | هنالك ابتلى المؤمنون وزلزلوا | ١١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| زِلْزَالًا: | زلزالا شديدا | ١١ | م » | ٣٣ |
| زِلْزَالَهَا: | إذا زلزلت الأرض زلزالها | ١ | م الزلزلة | ٩٩ |
| زَلْزَلَةَ: | يأيها الناس اتقوا ربكم إن زلزلة الساعة شيء عظيم | ١ | م الحج | ٢٢ |
| ✦✦✦ | | | | |
| أَزْلَفْنَا: | وأزلفنا ثم الآخرين | ٦٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| أُزْلِفَتْ: | وأزلفت الجنة للمتقين | ٩٠ | ك » | ٢٦ |
| (٣) | وأزلفت الجنة للمتقين غير بعيد | ٣١ | ك ق | ٥٠ |
| | وإذا الجنة أزلفت | ١٣ | ك التكوير | ٨١ |
| زُلْفَةً: | فلما رأوه زلفة سيئت وجوه الذين كفروا | ٢٧ | ك الملك | ٦٧ |
| زُلَفًا: | وأقم الصلاة طرفي النهار وزلفا من الليل | ١١٤ | م هود | ١١ |
| زُلْفَى: | وما أموالكم ولا أولادكم بالتي تقربكم عندنا زلفى | ٣٧ | ك سبأ | ٣٤ |
| (٤) | فغفرنا له ذلك وإن له عندنا لزلفى وحسن مآب | ٢٥ | ك ص | ٣٨ |
| | وإن له عندنا لزلفى وحسن مآب | ٤٠ | ك » | ٣٨ |
| | ما نعبدهم إلا ليقربونا إلى الله زلفى | ٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| ✦✦✦ | | | | |
| لَيُزْلِقُونَكَ: | وإن يكاد الذين كفروا ليزلقونك بأبصارهم لما سمعوا الذكر | ٥١ | ك القلم | ٦٨ |
| زَلَقًا: | ويرسل عليها حسبانا من السماء فتصبح صعيدا زلقا | ٤٠ | ك الكهف | ١٨ |
| ✦✦✦ | | | | |
| زَلَلْتُمْ: | فإن زللتم من بعد ما جاءتكم البينات فاعلموا أن الله عزيز حكيم | ٢٠٩ | م البقرة | ٢ |
| فَتَزِلَّ: | ولا تتخذوا أيمانكم دخلا بينكم فتزل قدم بعد ثبوتها | ٩٤ | ك النحل | ١٦ |
| فَأَزَلَّهُمَا: | فأزلهما الشيطان عنها فأخرجهما مما كانا فيه | ٣٦ | م البقرة | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَسْتَزَلَّهُمُ: | إنما استزلهم الشيطان ببعض ما كسبوا | ١٥٥ | م آل عمران | ٣ |
| ✦✦✦ | | | | |
| الْأَزْلَامُ: | وأن تستقسموا بالأزلام ذلكم فسق | ٣ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | إنما الخمر والميسر والأنصاب والأزلام رجس | ٩٠ | م » | ٥ |
| ✦✦✦ | | | | |
| زُمَرًا: | وسيق الذين كفروا إلى جهنم زمرا | ٧١ | ك الزمر | ٣٩ |
| (٢) | وسيق الذين اتقوا ربهم إلى الجنة زمرا | ٧٣ | ك » | ٣٩ |
| ✦✦✦ | | | | |
| الْمُزَّمِّلُ: | يأيها المزمل . قم الليل إلا قليلا | ١ | ك المزمل | ٧٣ |
| ✦✦✦ | | | | |
| زَمْهَرِيرًا: | متكئين فيها على الأرائك لا يرون فيها شمسا ولا زمهريرا | ١٣ | م الإنسان | ٧٦ |
| ✦✦✦ | | | | |
| زَنْجَبِيلًا: | ويسقون فيها كأسا كان مزاجها زنجبيلا | ١٧ | م » | ٧٦ |
| ✦✦✦ | | | | |
| زَنِيمٍ: | عتل بعد ذلك زنيم | ١٣ | ك القلم | ٦٨ |
| ✦✦✦ | | | | |
| يَزْنُونَ: | ولا يقتلون النفس التي حرم الله إلا بالحق ولا يزنون | ٦٨ | م الفرقان | ٢٥ |
| يَزْنِينَ: | يبايعنك على أن لا يشركن بالله شيئا ولا يسرقن ولا يزنين | ١٢ | م الممتحنة | ٦٠ |
| الزِّنَى: | ولا تقربوا الزنى إنه كان فاحشة وساء سبيلا | ٣٢ | م الإسراء | ١٧ |
| الزَّانِي: | الزانية والزاني فاجلدوا كل واحد منهما مائة جلدة | ٢ | م النور | ٢٤ |
| (٣) | الزاني لا ينكح إلا زانية أو مشركة | ٣ | م » | ٢٤ |
| | والزانية لا ينكحها إلا زان أو مشرك | ٣ | م » | ٢٤ |
| الزَّانِيَةُ: | الزانية والزاني فاجلدوا كل واحد منهما مائة جلدة | ٢ | م » | ٢٤ |
| (٣) | الزاني لا ينكح إلا زانية أو مشركة | ٣ | م » | ٢٤ |
| | والزانية لا ينكحها إلا زان أو مشرك | ٣ | م » | ٢٤ |
| ✦✦✦ | | | | |
| الزَّاهِدِينَ: | وكانوا فيه من الزاهدين | ٢٠ | ك يوسف | ١٢ |
| ✦✦✦ | | | | |
| زَهْرَةَ: | ولا تمدن عينيك إلى ما متعنا به أزواجا منهم زهرة الحياة الدنيا | ١٣١ | م طه | ٢٠ |
| ✦✦✦ | | | | |
| زَهَقَ: | وقل جاء الحق وزهق الباطل إن الباطل كان زهوقا | ٨١ | ك الإسراء | ١٧ |
| تَزْهَقَ: | إنما يريد الله ليعذبهم بها في الحياة الدنيا وتزهق أنفسهم | ٥٥ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | إنما يريد الله أن يعذبهم بها في الدنيا وتزهق أنفسهم | ٨٥ | م » | ٩ |
| زَاهِقٌ: | بل نقذف بالحق على الباطل فيدمغه فإذا هو زاهق | ١٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| زَهُوقًا: | وقل جاء الحق وزهق الباطل إن الباطل كان زهوقا | ٨١ | ك الإسراء | ١٧ |
| ✦✦✦ | | | | |
| زَوَّجْنَاكَهَا: | فلما قضى زيد منها وطرا زوجناكها | ٣٧ | م الأحزاب | ٣٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| زَوَّجْنَاهُمْ: كذلك وزوجناهم بحور عين ... ... ... ... | | ٥٤ | ك الدخان | ٤٤ |
| (٢) متكئين على سرر مصفوفة وزوجناهم بحور عين ... ... | | ٢٠ | ك الطور | ٥٢ |
| يُزَوِّجُهُمْ: أو يزوجهم ذكرانا وإناثا ويجعل من يشاء عقيما | | ٥٠ | ك الشورى | ٤٢ |
| زُوِّجَتْ: وإذا النفوس زوجت ... ... ... ... ... ... | | ٧ | ك التكوير | ٨١ |
| زَوْجٍ: وإن أردتم استبدال زوج... ... ... ... ... ... | | ٢٠ | م النساء | ٤ |
| (٦) مكان زوج وآتيتم إحداهن قنطارا فلا تأخذوا منه شيئا | | ٢٠ | م « | ٤ |
| اهتزت وربت وأنبتت من كل زوج بهيج ... ... | | ٥ | م الحج | ٢٢ |
| أولم يروا إلى الأرض كم أنبتنا فيها من كل زوج كريم | | ٧ | ك الشعراء | ٢٦ |
| وأنزلنا من السماء ماء فأنبتنا فيها من كل زوج كريم | | ١٠ | ك لقمان | ٣١ |
| وألقينا فيها رواسي وأنبتنا فيها من كل زوج بهيج | | ٧ | ك قٓ | ٥٠ |
| زَوْجًا: فإن طلقها فلا تحل له من بعد حتى تنكح زوجا غيره | | ٢٣٠م | البقرة | ٢ |
| زَوْجُكَ: وقلنا يا آدم اسكن أنت وزوجك الجنة وكلا منها رغدا | | ٣٥ | م « | ٢ |
| (٤) ويا آدم اسكن أنت وزوجك الجنة فكلا من حيث شئتما | | ١٩ | ك الأعراف | ٧ |
| فقلنا يا آدم إن هذا عدو لك ولزوجك ... ... ... | | ١١٧ | ك طه | ٢٠ |
| أمسك عليك زوجك واتق الله ... ... ... ... ... | | ٣٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| زَوْجِهِ: فيتعلمون منهما ما يفرقون به بين المرء وزوجه | | ١٠٢م | البقرة | ٢ |
| (٢) فاستجبنا له ووهبنا له يحيى وأصلحنا له زوجه ... ... | | ٩٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| زَوْجَهَا: يا أيها الناس اتقوا ربكم الذي خلقكم من نفس | | | | |
| (٤) واحدة وخلق منها زوجها ... ... ... ... ... | | ١ | م النساء | ٤ |
| هو الذي خلقكم من نفس واحدة وجعل منها زوجها | | ١٨٩ | ك الأعراف | ٧ |
| خلقكم من نفس واحدة ثم جعل منها زوجها ... ... | | ٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| قد سمع الله قول التي تجادلك في زوجها ... ... ... | | ١ | م المجادلة | ٥٨ |
| زَوْجَانِ: فيهما من كل فاكهة زوجان... ... ... ... ... | | ٥٢ | م الرحمن | ٥٥ |
| زَوْجَيْنِ: قلنا احمل فيها من كل زوجين اثنين ... ... ... | | ٤٠ | ك هود | ١١ |
| (٦) ومن كل الثمرات جعل فيها زوجين اثنين ... ... ... | | ٣ | م الرعد | ١٣ |
| فإذا جاء أمرنا وفار التنور فاسلك فيها من كل زوجين اثنين | | ٢٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| ومن كل شيء خلقنا زوجين لعلكم تذكرون ... ... | | ٤٩ | ك الذاريات | ٥١ |
| وأنه خلق الزوجين الذكر والأنثى ... ... ... ... | | ٤٥ | ك النجم | ٥٣ |
| فجعل منه الزوجين الذكر والأنثى ... ... ... ... | | ٣٩ | ك القيامة | ٧٥ |
| أَزْوَاجٌ: ولهم فيها أزواج مطهرة وهم فيها خالدون ... ... | | ٢٥ | م البقرة | ٢ |
| (١٠) وأزواج مطهرة ورضوان من الله والله بصير بالعباد | | ١٥ | م آل عمران | ٣ |
| لهم فيها أزواج مطهرة وندخلهم ظلا ظليلا... ... ... | | ٥٧ | م النساء | ٤ |
| ثمانية أزواج من الضأن اثنين ومن المعز اثنين... ... | | ١٤٣ | ك الأنعام | ٦ |
| لكي لا يكون على المؤمنين حرج في أزواج أدعيائهم | | ٣٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| لا يحل لك النساء من بعد ولا أن تبدل بهن من أزواج | | ٥٢ | م « | ٣٣ |
| سبحان الذي خلق الأزواج كلها مما تنبت الأرض | | ٣٦ | ك يسٓ | ٣٦ |
| هذا فليذوقوه حميم وغساق . وآخر من شكله أزواج | | ٥٨ | ك صٓ | ٣٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَزْوَاجَ: ثم جعل منها زوجها وأنزل لكم من الأنعام ثمانية أزواج | | ٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| والذي خلق الأزواج كلها وجعل لكم من الفلك | | | | |
| والأنعام ما ترتبون ... ... ... ... ... ... | | ١٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| أَزْوَاجًا: والذين يتوفون منكم ويذرون أزواجا يتربصن | | | | |
| (١٤) بأنفسهن أربعة أشهر وعشرا... ... ... ... ... | | ٢٣٤م | البقرة | ٢ |
| والذين يتوفون منكم ويذرون أزواجا وصية لأزواجهم | | ٢٤٠م | « | ٢ |
| ولقد أرسلنا رسلا من قبلك وجعلنا لهم أزواجا وذرية | | ٣٨ | م الرعد | ١٣ |
| لا تمدنَّ عينيك إلى ما متعنا به أزواجا منهم ... ... | | ٨٨ | ك الحجر | ١٥ |
| والله جعل لكم من أنفسكم أزواجا ... ... ... ... | | ٧٢ | ك النحل | ١٦ |
| وأنزل من السماء ماء فأخرجنا به أزواجا من نبات شتى | | ٥٣ | ك طه | ٢٠ |
| ولا تمدن عينيك إلى ما متعنا به أزواجا منهم زهرة | | | | |
| الحياة الدنيا ... ... ... ... ... ... ... ... | | ١٣١م | « | ٢٠ |
| ومن آياته أن خلق لكم من أنفسكم أزواجا لتسكنوا إليها | | ٢١ | ك الروم | ٣٠ |
| والله خلقكم من تراب ثم من نطفة ثم جعلكم أزواجا | | ١١ | ك فاطر | ٣٥ |
| فاطر السموات والأرض جعل لكم من أنفسكم أزواجا | | ١١ | ك الشورى | ٤٢ |
| ومن الأنعام أزواجا يذرؤكم فيه ليس كمثله شيء ... | | ١١ | ك « | ٤٢ |
| وكنتم أزواجا ثلاثة ... ... ... ... ... ... | | ٧ | ك الواقعة | ٥٦ |
| عسى ربه إن طلقكن أن يبدله أزواجا خيرا منكن | | ٥ | م التحريم | ٦٦ |
| وخلقناكم أزواجا ... ... ... ... ... ... ... | | ٨ | ك النبأ | ٧٨ |
| أَزْوَاجِكَ: يا أيها النبي قل لأزواجك إن كنتن تردن الحياة | | | | |
| (٤) الدنيا وزينتها فتعالين أمتعكن ... ... ... ... | | ٢٨ | م الأحزاب | ٣٣ |
| يا أيها النبي إنا أحللنا لك أزواجك اللاتي آتيت أجورهن | | ٥٠ | م « | ٣٣ |
| يا أيها النبي قل لأزواجك وبناتك ونساء المؤمنين | | | | |
| يدنين عليهن من جلابيبهن ... ... ... ... ... | | ٥٩ | م « | ٣٣ |
| يا أيها النبي لم تحرم ما أحل الله لك تبتغي مرضاة أزواجك | | ١ | م التحريم | ٦٦ |
| أَزْوَاجُكُمْ: ولكم نصف ما ترك أزواجكم إن لم يكن لهن ولد | | ١٢ | م النساء | ٤ |
| (٨) وأزواجكم وعشيرتكم وأموال اقترفتموها ... ... ... | | ٢٤ | م التوبة | ٩ |
| وجعل لكم من أزواجكم بنين وحفدة ... ... ... | | ٧٢ | ك النحل | ١٦ |
| وتذرون ما خلق لكم ربكم من أزواجكم ... ... ... | | ١٦٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| وما جعل أزواجكم اللائي تظاهرون منهن أمهاتكم | | ٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| ادخلوا الجنة أنتم وأزواجكم تحبرون ... ... ... | | ٧٠ | ك الزخرف | ٤٣ |
| فآتوا الذين ذهبت أزواجهم مثل ما أنفقوا ... ... | | ١١ | م الممتحنة | ٦٠ |
| إن من أزواجكم وأولادكم عدوا لكم فاحذروهم ... | | ١٤ | م التغابن | ٦٤ |
| أَزْوَاجِنَا: خالصة لذكورنا ومحرم على أزواجنا ... ... ... | | ١٣٩ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) هب لنا من أزواجنا وذرياتنا قرة أعين ... ... ... | | ٧٤ | ك الفرقان | ٢٥ |
| أَزْوَاجُهُ: النبي أولى بالمؤمنين من أنفسهم وأزواجه أمهاتهم | | ٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| (٣) ولا أن تنكحوا أزواجه من بعده أبدا ... ... ... | | ٥٣ | م « | ٣٣ |
| وإذ أسر النبي إلى بعض أزواجه حديثا ... ... ... | | ٣ | م التحريم | ٦٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَزْوَاجِهِمْ | : وصية لأزواجهم متاعا إلى الحول غير إخراج | ٢٤٠م | البقـرة | ٢ |
| (١٠) | جنات عدن يدخلونها ومن صلح من آبائهم وأزواجهم | ٢٣ م | الرعـد | ١٣ |
| | إلا على أزواجهم أو ما ملكت أيمانهم فإنهم غير ملومين | ٦ ك | المؤمنون | ٢٣ |
| | والذين يرمون أزواجهم ولم يكن لهم شهداء إلا أنفسهم | | | |
| | شهادة أحدهم أربع شهادات بالله إنه لمن الصادقين | ٦ م | النـور | ٢٤ |
| | قد علمنا ما فرضنا عليهم فى أزواجهم... ... ... ... | ٥٠ م | الأحزاب | ٣٣ |
| | هم وأزواجهم فى ظلال على الأرائك متكئون | ٥٦ ك | يس | ٣٦ |
| | احشروا الذين ظلموا وأزواجهم وما كانوا يعبدون | ٢٢ ك | الصافات | ٣٧ |
| | ومن صلح من آبائهم وأزواجهم وذرياتهم ... ... | ٨ ك | غافـر | ٤٠ |
| | فآتوا الذين ذهبت أزواجهم مثل ما أنفقوا... ... | ١١ م | الممتحنة | ٦٠ |
| | إلا على أزواجهم أو ما ملكت أيمانهم فإنهم غير ملومين | ٣٠ ك | المعارج | ٧٠ |
| أَزْوَاجَهُنَّ | : فلا تعضلوهن أن ينكحن أزواجهن | | | |
| | إذا تراضوا بينهم بالمعروف... ... ... ... ... | ٢٣٢م | البقـرة | ٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تَزَوَّدُوا | : وما تفعلوا من خير يعلمه الله وتزودوا ... ... | ١٩٧م | « | ٢ |
| الزَّاد | : فإن خير الزاد التقوى... ... ... ... ... ... | ١٩٧م | « | ٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| زُرْتُمُ | : ألهاكم التكاثر . حتى زرتم المقابر ... ... ... | ٢ ك | التكاثر | ١٠٢ |
| تَزَاوَرُ | : وترى الشمس إذا طلعت تزاور عن كهفهم ذات اليمين | ١٧ ك | الكهف | ١٨ |
| الزُّورِ | : فاجتنبوا الرجس من الأوثان واجتنبوا قول الزور | ٣٠ م | الحـج | ٢٢ |
| (٢) | والذين لا يشهدون الزور وإذا مروا باللغو مروا كراما | ٧٢ ك | الفرقان | ٢٥ |
| زُورًا | : وأعانه عليه قوم آخرون فقد جاءوا ظلما وزورا | ٤ ك | « | ٢٥ |
| (٢) | وإنهم ليقولون منكرا من القول وزورا ... ... ... | ٢ م | المجادلة | ٥٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| زَالَتَا | : ولئن زالتا إن أمسكهما من أحد من بعده... ... | ٤١ ك | فاطـر | ٣٥ |
| لَتَزُولَ | : وإن كان مكرهم لتزول منه الجبال ... ... ... | ٤٦ ك | إبراهيم | ١٤ |
| تَزُولَا | : إن الله يمسك السموات والأرض أن تزولا | ٤١ ك | فاطـر | ٣٥ |
| زَوَالٍ | : أو لم تكونوا أقسمتم من قبل ما لكم من زوال | ٤٤ ك | إبراهيم | ١٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| زَيْتُهَا | : يكاد زيتها يضيء ولو لم تمسسه نار ... ... ... | ٣٥ م | النـور | ٢٤ |
| الزَّيْتُونَ | : وجنات من أعناب والزيتون والرمان مشتبها | | | |
| (٤) | وغير متشابه ... ... ... ... ... ... ... | ٩٩ ك | الأنعام | ٦ |
| | والنخل والزرع مختلفا أكله والزيتون والرمان... ... | ١٤١م | « | ٦ |
| | ينبت لكم به الزرع والزيتون والنخيل والأعناب | ١١ ك | النحـل | ١٦ |
| | والتين والزيتون . وطور سينين . وهذا البلد الأمين . | | | |
| | لقد خلقنا الإنسان فى أحسن تقويم... ... ... | ١ ك | التين | ٩٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| زَيْتُونًا | : فأنبتنا فيها حبا . وعنبا وقضبا . وزيتونا ونخلا . | ٢٩ ك | عبس | ٨٠ |
| زَيْتُونَةٍ | : يوقد من شجرة مباركة زيتونة لا شرقية ولا غربية | ٣٥ م | النـور | ٢٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| زَادَتْهُ | : فمنهم من يقول أيكم زادته هذه إيمانا ... ... ... | ١٢٤م | التـوبة | ٩ |
| زَادَتْهُمْ | : وإذا تليت عليهم آياته زادتهم إيمانا ... ... ... | ٢ م | الأنفـال | ٨ |
| (٣) | فأما الذين آمنوا فزادتهم إيمانا وهم يستبشرون... ... | ١٢٤م | التـوبة | ٩ |
| | وأما الذين فى قلوبهم مرض فزادتهم رجسا إلى رجسهم | ١٢٥م | « | ٩ |
| زَادَكُمْ | : وزادكم فى الخلق بصطة ... ... ... ... ... ... | ٦٩ ك | الأعراف | ٧ |
| زَادَهُ | : وزاده بسطة فى العلم والجسم ... ... ... ... ... | ٢٤٧م | البقـرة | ٢ |
| زَادَهُمْ | : فى قلوبهم مرض فزادهم الله مرضا ... ... ... | ١٠ م | « | ٢ |
| (٦) | إن الناس قد جمعوا لكم فاخشوهم فزادهم إيمانا | ١٧٣م | آل عمران | ٣ |
| | قالوا وما الرحمن أنسجد لما تأمرنا وزادهم نفورا | ٦٠ ك | الفرقان | ٢٥ |
| | وصدق الله ورسوله وما زادهم إلا إيمانا وتسليما | ٢٢ م | الأحزاب | ٣٣ |
| | فلما جاءهم نذير ما زادهم إلا نفورا ... ... ... ... | ٤٢ ك | فاطـر | ٣٥ |
| | والذين اهتدوا زادهم هدى وآتاهم تقواهم ... ... | ١٧ م | محمـد | ٤٧ |
| زَادُوكُمْ | : لو خرجوا فيكم ما زادوكم إلا خبالا ... ... ... | ٤٧ م | التـوبة | ٩ |
| زَادُوهُمْ | : وما زادوهم غير تتبيب ... ... ... ... ... ... | ١٠١ك | هـود | ١١ |
| (٢) | وأنه كان رجال من الإنس يعوذون برجال من الجن | | | |
| | فزادوهم رهقا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦ ك | الجن | ٧٢ |
| زِدْنَاهُمْ | : زدناهم عذابا فوق العذاب بما كانوا يفسدون | ٨٨ ك | النحـل | ١٦ |
| (٣) | مأواهم جهنم كلما خبت زدناهم سعيرا ... ... ... | ٩٧ ك | الإسراء | ١٧ |
| | إنهم فتية آمنوا بربهم وزدناهم هدى... ... ... ... | ١٣ ك | الكهف | ١٨ |
| أَزِيدَ | : ومهدت له تمهيدا . ثم يطمع أن أزيد ... ... ... | ١٥ ك | المدثر | ٧٤ |
| لَأَزِيدَنَّكُمْ | : وإذ تأذن ربكم لئن شكرتم لأزيدنكم ... ... | ٧ ك | إبراهيم | ١٤ |
| تَزِيدُ | : ولا تزد الظالمين إلا ضلالا ... ... ... ... ... | ٢٤ ك | نوح | ٧١ |
| (٢) | ولا تزد الظالمين إلا تبارا ... ... ... ... ... | ٢٨ ك | « | ٧١ |
| تَزِيدُونَنِي | : فمن ينصرنى من الله إن عصيته فما تزيدوننى غير تخسير | ٦٣ ك | هـود | ١١ |
| نَزِدْ | : من كان يريد حرث الآخرة نزد له فى حرثه... ... ... | ٢٠ ك | الشورى | ٤٢ |
| (٢) | ومن يقترف حسنة نزد له فيها حسنا... ... ... ... | ٢٣ م | « | ٤٢ |
| سَنَزِيدُ | : وقولوا حطة نغفر لكم خطاياكم وسنزيد المحسنين | ٥٨ م | البقـرة | ٢ |
| (٢) | وادخلوا الباب سجدا نغفر لكم خطيئاتكم سنزيد المحسنين | ١٦١ك | الأعراف | ٧ |
| نَزِيدَكُمْ | : فذوقوا فلن نزيدكم إلا عذابا ... ... ... ... | ٣٠ ك | النبأ | ٧٨ |
| يَزِدْكُمْ | : يرسل السماء عليكم مدرارا ويزدكم قوة إلى قوتكم | ٥٢ ك | هـود | ١١ |
| يَزِدْهُ | : واتبعوا من لم يزده ماله وولده إلا خسارا ... ... | ٢١ ك | نوح | ٧١ |
| يَزِدْهُمْ | : فلم يزدهم دعائى إلا فرارا ... ... ... ... ... | ٦ ك | « | ٧١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَزِيدُ (٥) | ونُنزل من القرآن ما هو شفاء ورحمة للمؤمنين ولا يزيد الظالمين إلا خسارا ... ... ... ... ... ... | ٨٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ويزيد الله الذين آهتدوا هدى ... ... ... ... ... | ٧٦ | ك مريم | ١٩ |
| | يزيد فى الخلق ما يشاء إن الله على كل شىء قدير | ١ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ولا يزيد الكافرين كفرهم عند ربهم إلا مقتا ... ... | ٣٩ | ك « | ٣٥ |
| | ولا يزيد الكافرين كفرهم إلا خسارا ... ... ... | ٣٩ | ك « | ٣٥ |
| لَيَزِيدَنَّ (٢) | وليزيدنَّ كثيرا منهم ما أنزل إليك من ربك طغيانا وكفرا ... ... ... ... ... ... ... | ٦٤ | م المائدة | ٥ |
| | وليزيدن كثيرا منهم ما أنزل إليك من ربك طغيانا وكفرا | ٦٨ | م « | ٥ |
| يَزِيدَهُمْ (٧) | فأما الذين آمنوا وعملوا الصالحات فيوفيهم أجورهم ويزيدهم من فضله ... ... ... ... ... | ١٧٣ | م النساء | ٤ |
| | ولقد صرفنا فى هذا القرآن ليذكروا وما يزيدهم إلا نفورا | ٤١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ونخوفهم فما يزيدهم إلا طغيانا كبيرا ... ... ... ... | ٦٠ | ك « | ١٧ |
| | ويخرون للأذقان يبكون ويزيدهم خشوعا ... ... | ١٠٩ | ك « | ١٧ |
| | ليجزيهم الله أحسن ما عملوا ويزيدهم من فضله | ٣٨ | م النور | ٢٤ |
| | ليوفيهم أجورهم ويزيدهم من فضله ... ... ... ... | ٣٠ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ويستجيب الذين آمنوا وعملوا الصالحات ويزيدهم من فضله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك الشورى | ٤٢ |
| يَزِيدُونَ | وأرسلناه إلى مائة ألف أو يزيدون... ... ... | ١٤٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| زِدْ | أو زد عليه ورتِّل القرآن ترتيلا ... ... ... ... ... | ٤ | ك المزمل | ٧٣ |
| زِدْنِى | وقل رب زدنى علما ... ... ... ... ... ... ... | ١١٤ | ك طه | ٢٠ |
| فَزِدْهُ | قالوا ربنا من قدم لنا هذا فزده عذابا ضعفا فى النار | ٦١ | ك ص | ٣٨ |
| آزْدَادُوا (٣) | إن الذين كفروا بعد إيمانهم ثم آزدادوا كفرا لن تقبل توبتهم ... ... ... ... ... ... ... | ٩٠ | م آل عمران | ٣ |
| | إن الذين آمنوا ثم كفروا ثم آمنوا ثم كفروا ثم آزدادوا كفرا لم يكن الله ليغفر لهم ... ... ... | ١٣٧ | م النساء | ٤ |
| | ولبثوا فى كهفهم ثلاث مائة سنين وآزدادوا تسعا | ٢٥ | ك الكهف | ١٨ |
| تَزْدَادُ | الله يعلم ما تحمل كل أنثى وما تغيض الأرحام وما تزداد | ٨ | م الرعد | ١٣ |
| نَزْدَادُ | ونمير أهلنا ونحفظ أخانا ونزداد كيل بعير ... ... | ٦٥ | ك يوسف | ١٢ |
| يَزْدَادَ | ليستيقن الذين أوتوا الكتاب ويزداد الذين آمنوا إيمانا | ٣١ | ك المدثر | ٧٤ |
| لِيَزْدَادُوا | إنما نملى لهم ليزدادوا إثما ولهم عذاب مهين | ١٧٨ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | هو الذى أنزل السكينة فى قلوب المؤمنين ليزدادوا إيمانا | ٤ | م الفتح | ٤٨ |
| زِيَادَةً | إنما النسىء زيادة فى الكفر يضل به الذين كفروا | ٣٧ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | للذين أحسنوا الحسنى وزيادة ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك يونس | ١٠ |
| مَزِيدٍ | يوم نقول لجهنم هل آمتلأت وتقول هل من مزيد | ٣٠ | ك ق | ٥٠ |
| (٢) | لهم ما يشاءون فيها ولدينا مزيد ... ... ... ... | ٣٥ | ك « | ٥٠ |
| زَيْدٌ | فلما قضى زيد منها وطرا زوجناكها ... ... ... | ٣٧ | م الأحزاب | ٣٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| زَاغَ | ما زاغ البصر وما طغى... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك النجم | ٥٣ |
| زَاغَتْ (٢) | إذ جاءوكم من فوقكم ومن أسفل منكم وإذ زاغت الأبصار ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | أتخذناهم سخريا أم زاغت عنهم الأبصار... ... ... | ٦٣ | ك ص | ٣٨ |
| زَاغُوا | فلما زاغوا أزاغ الله قلوبهم ... ... ... ... ... | ٥ | م الصف | ٦١ |
| يَزِغْ | ومن يزغ منهم عن أمرنا نذقه من عذاب السعير | ١٢ | ك سبإ | ٣٤ |
| يَزِيغُ | من بعد ما كاد يزيغ قلوب فريق منهم ثم تاب عليهم | ١١٧ | م التوبة | ٩ |
| أَزَاغَ | فلما زاغوا أزاغ الله قلوبهم ... ... ... ... ... | ٥ | م الصف | ٦١ |
| تُزِغْ | ربنا لا تزغ قلوبنا بعد إذ هديتنا ... ... ... ... | ٨ | م آل عمران | ٣ |
| زَيْغٌ | فأما الذين فى قلوبهم زيغ فيتبعون ما تشابه منه | ٧ | م « | ٣ |
| زَالَتْ | فما زالت تلك دعواهم حتى جعلناهم حصيدا خامدين | ١٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| زِلْتُمْ | ولقد جاءكم يوسف من قبل بالبينات فما زلتم فى شك مما جاءكم به ... ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك غافر | |
| تَزَالُ | ولا تزال تطلع على خائنة منهم إلا قليلا منهم ... ... | ١٣ | م المائدة | ٥ |
| يَزَالُ | لا يزال بنيانهم الذى بنوا ريبة فى قلوبهم ... ... | ١١٠ | م التوبة | ٩ |
| (٣) | ولا يزال الذين كفروا تصيبهم بما صنعوا قارعة | ٣١ | م الرعد | ١٣ |
| | ولا يزال الذين كفروا فى مرية منه حتى تأتيهم الساعة | ٥٥ | م الحج | ٢٢ |
| يَزَالُونَ (٢) | ولا يزالون يقاتلونكم حتى يردوكم عن دينكم إن آستطاعوا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢١٧ | م البقرة | ٢ |
| | ولو شاء ربك لجعل الناس أمة واحدة ولا يزالون مختلفين | ١١٨ | ك هود | ١١ |
| فَزَيَّلْنَا | فزيلنا بينهم وقال شركاؤهم ما كنتم إيانا تعبدون | ٢٨ | ك يونس | ١٠ |
| تَزَيَّلُوا | لو تزيلوا لعذبنا الذين كفروا منهم عذابا أليما | ٢٥ | م الفتح | ٤٨ |
| زَيَّنَ | ولكن قست قلوبهم وزين لهم الشيطان ما كانوا يعملون | ٤٣ | ك الأنعام | ٦ |
| (٦) | وكذلك زين لكثير من المشركين قتل أولادهم شركاؤهم | ١٣٧ | ك « | ٦ |
| | وإذ زين لهم الشيطان أعمالهم وقال لا غالب لكم اليوم من الناس... ... ... ... ... ... ... | ٤٨ | م الأنفال | ٨ |
| | تالله لقد أرسلنا إلى أمم من قبلك فزين لهم الشيطان أعمالهم | ٦٣ | ك النحل | ١٦ |
| | وجدتها وقومها يسجدون للشمس من دون الله وزين لهم الشيطان أعمالهم ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك النمل | ٢٧ |
| | وعادا وثمود وقد تبين لكم من مساكنهم وزين لهم الشيطان أعمالهم... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| زَيَّنَّا (٥) | كذلك زينا لكل أمة عملهم ثم إلى ربهم مرجعهم | ١٠٨ | ك الأنعام | ٦ |
| | إن الذين لا يؤمنون بالآخرة زينا لهم أعمالهم ... ... | ٤ | ك النمل | ٢٧ |
| | إنا زينا السماء الدنيا بزينة الكواكب... ... ... ... | ٦ | ك الصافات | ٣٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| زَيَّنَّا | وزينا السماء الدنيا بمصابيح وحفظا ... ... ... ... | ١٢ | ك فصلت | ٤١ |
| | ولقد زينا السماء الدنيا بمصابيح وجعلناها رجوما للشياطين | ٥ | ك الملك | ٦٧ |
| زَيَّنَّاهَا | ولقد جعل في السماء بروجا وزيناها للناظرين | ١٦ | ك الحجر | ١٥ |
| (٢) | أفلم ينظروا إلى السماء فوقهم كيف بنيناها وزيناها | ٦ | ك قٓ | ٥٠ |
| زَيَّنَهُ | ولكن الله حبب إليكم الإيمان وزينه في قلوبكم | ٧ | م الحجرات | ٤٩ |
| فَزَيَّنُوا | وقيضنا لهم قرناء فزينوا لهم ما بين أيديهم | ٢٥ | ك فصلت | ٤١ |
| لَأُزَيِّنَنَّ | قال رب بما أغويتني لأزينن لهم في الأرض ... ... | ٣٩ | ك الحجر | ١٥ |
| زُيِّنَ | زين للذين كفروا الحياة الدنيا ... ... ... ... ... | ٢١٢ | م البقرة | ٢ |
| (١) | زين للناس حب الشهوات من النساء والبنين ... ... | ١٤ | م آل عمران | ٣ |
| | كذلك زين للكافرين ما كانوا يعملون ... ... ... | ١٢٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | فبطلوا ما حرم الله زين لهم سوء أعمالهم ... ... ... | ٣١ | م التوبة | ٩ |
| | كذلك زين للمسرفين ما كانوا يعملون ... ... ... | ١٢ | ك يونس | ١٠ |
| | بل زين للذين كفروا مكرهم وصدوا عن السبيل ... ... | ٣٣ | م الرعد | ١٣ |
| | أفمن زين له سوء عمله فرآه حسنا فإن الله يضل من يشاء | ٨ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وكذلك زين لفرعون سوء عمله وصد عن السبيل | ٣٧ | ك غافر | ٤٠ |
| | أفمن كان على بينة من ربه كمن زين له سوء عمله | ١٤ | م محمد | ٤٧ |
| | وزين ذلك في قلوبكم وظننتم ظن السوء ... ... ... | ١٢ | م الفتح | ٤٨ |
| أَزَّيَّنَتْ | حتى إذا أخذت الأرض زخرفها وازينت وظن أهلها أنهم قادرون عليها أتاها أمرنا ... ... ... | ٢٤ | ك يونس | ١٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| زِينَةَ | قل من حرم زينة الله التي أخرج لعباده والطيبات من الرزق | ٣٢ | ك الأعراف | ٧ |
| (١١) | وقال موسى ربنا إنك آتيت فرعون وملأه زينة | ٨٨ | ك يونس | ١٠ |
| | والخيل والبغال والحمير لتركبوها وزينة ... ... ... | ٨ | ك النحل | ١٦ |
| | إنا جعلنا ما على الأرض زينة لها لنبلوهم أيهم أحسن عملا | ٧ | ك الكهف | ١٨ |
| | ولا تعد عيناك عنهم تريد زينة الحياة الدنيا ... ... | ٢٨ | م « | ١٨ |
| | المال والبنون زينة الحياة الدنيا ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك « | ١٨ |
| | قال موعدكم يوم الزينة وأن يحشر الناس ضحى ... ... | ٥٩ | ك طه | ٢٠ |
| | ولكنا حملنا أوزارا من زينة القوم فقذفناها ... ... | ٨٧ | ك « | ٢٠ |
| | فليس عليهن جناح أن يضعن ثيابهن غير متبرجات بزينة | ٦٠ | م النور | ٢٤ |
| | إنا زينا السماء الدنيا بزينة الكواكب ... ... ... | ٦ | ك الصافات | ٣٧ |
| | اعلموا أنما الحياة الدنيا لعب ولهو وزينة وتفاخر بينكم | ٢٠ | م الحديد | ٥٧ |
| زِينَتَكُمْ | يا بني آدم خذوا زينتكم عند كل مسجد ... ... | ٣١ | ك الأعراف | ٧ |
| زِينَتِهِ | فخرج على قومه في زينته ... ... ... ... ... ... | ٧٩ | ك القصص | ٢٨ |
| زِينَتَهَا | من كان يريد الحياة الدنيا وزينتها نوف إليهم أعمالهم فيها | ١٥ | ك هود | ١١ |
| (٣) | وما أوتيتم من شيء فمتاع الحياة الدنيا وزينتها ... ... | ٦٠ | ك القصص | ٢٨ |
| | إن كنتن تردن الحياة الدنيا وزينتها فتعالين أمتعكن | ٢٨ | م الأحزاب | ٣٣ |
| زِينَتِهِنَّ | ولا يبدين زينتهن إلا ما ظهر منها ... ... ... ... | ٣١ | م النور | ٢٤ |
| (٣) | ولا يبدين زينتهن إلا لبعولتهن أو آبائهن ... ... ... | ٣١ | م « | ٢٤ |
| | ولا يضربن بأرجلهن ليعلم ما يخفين من زينتهن ... ... | ٣١ | م « | ٢٤ |

# باب السين

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| سَأَلَ | سأل سائل بعذاب واقع ... ... ... ... ... ... | ١ | ك المعارج | ٧٠ |
| سَأَلْتُكَ | قال إن سألتك عن شيء بعدها فلا تصاحبني | ٧٦ | ك الكهف | ١٨ |
| سَأَلْتُكُمْ | فإن توليتم فما سألتكم من أجر إن أجري إلا على الله | ٧٢ | ك يونس | ١٠ |
| (٢) | قل ما سألتكم من أجر فهو لكم إن أجري إلا على الله | ٤٧ | ك سبأ | ٣٤ |
| سَأَلْتُمْ | اهبطوا مصرا فإن لكم ما سألتم ... ... ... ... | ٦١ | م البقرة | ٢ |
| سَأَلْتُمُوهُ | وآتاكم من كل ما سألتموه ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك إبراهيم | ١٤ |
| سَأَلْتُمُوهُنَّ | وإذا سألتموهن متاعا فسئلوهن من وراء حجاب | ٥٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| سَأَلْتَهُمْ | ولئن سألتهم ليقولن إنما كنا نخوض ونلعب | ٦٥ | م التوبة | ٩ |
| (٧) | ولئن سألتهم من خلق السموات والأرض وسخر | | | |
| | الشمس والقمر ليقولن الله ... ... ... ... ... | ٦١ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ولئن سألتهم من نزل من السماء ماء فأحيا به الأرض | | | |
| | من بعد موتها ليقولن الله ... ... ... ... ... | ١٣ | ك « | ٢٩ |
| سَأَلْتَهُمْ | ولئن سألتهم من خلق السموات والأرض ليقولن الله | ٢٥ | ك لقمان | ٣١ |
| | ولئن سألتهم من خلق السموات والأرض ليقولن الله | ٣٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ولئن سألتهم من خلق السموات والأرض ليقولن | | | |
| | خلقهن العزيز العليم ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ولئن سألتهم من خلقهم ليقولن الله فأنى يؤفكون | ٨٧ | ك « | ٤٣ |
| سَأَلَكَ | وإذا سألك عبادي عني فإني قريب ... ... ... | ١٨٦ | م البقرة | ٢ |
| سَأَلَهَا | قد سألها قوم من قبلكم ثم أصبحوا بها كافرين | ١٠٢ | م المائدة | ٥ |
| سَأَلَهُمْ | كلما ألقي فيها فوج سألهم خزنتها ألم يأتكم نذير | ٨ | ك الملك | ٦٧ |
| سَأَلُوا | فقد سألوا موسى أكبر من ذلك فقالوا أرنا الله جهرة | ١٥٣ | م النساء | ٤ |
| أَسْأَلُكَ | قال رب إني أعوذ بك أن أسألك ما ليس لي به علم | ٤٧ | ك هود | ١١ |
| أَسْئَلُكُمْ | قل لا أسئلكم عليه أجرا إن هو إلا ذكرى للعالمين | ٩٠ | ك الأنعام | ٦ |
| (١١) | ويا قوم لا أسئلكم عليه مالا إن أجري إلا على الله | ٢٩ | ك هود | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَسْئَلُكُمْ | : يا قوم لا أسئلكم عليه أجرا إن أجرى إلا على الذى فطرنى | ٥١ | ك هـود | ١١ |
| | قل ما أسئلكم عليه من أجر إلا من شاء أن يتخذ إلى ربه سبيلا | ٥٧ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| | وما أسئلكم عليه من أجر إن أجرى إلا على رب العالمين | ١٠٩ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| | وما أسئلكم عليه من أجر إن أجرى إلا على رب العالمين | ١٢٧ | ك « | ٢٦ |
| | وما أسئلكم عليه من أجر إن أجرى إلا على رب العالمين | ١٤٥ | ك « | ٢٦ |
| | وما أسئلكم عليه من أجر إن أجرى إلا على رب العالمين | ١٦٤ | ك « | ٢٦ |
| | وما أسئلكم عليه من أجر إن أجرى إلا على رب العالمين | ١٨٠ | ك « | ٢٦ |
| | قل ما أسئلكم عليه من أجر وما أنا من المتكلفين | ٨٦ | ك ص | ٣٨ |
| | قل لا أسئلكم عليه أجرا إلا المودة فى القربى... ... | ٢٣ | م الشورى | ٤٢ |
| تَسْئَلْنِ | : إنه عمل غير صالح فلا تسئلن ما ليس لك به علم | ٤٦ | ك هـود | ١١ |
| تَسْئَلْنِى | : قال فإن اتبعتنى فلا تسئلنى عن شىء حتى أحدث لك منه ذكرا ... ... ... ... ... ... | ٧٠ | ك الكهف | ١٨ |
| تَسْئَلُهُمْ | : وما تسئلهم عليه من أجر إن هو إلا ذكر للعالمين | ١٠٤ | ك يوسف | ١٢ |
| (٤) | أم تسئلهم خرجا فخراج ربك خير وهو خير الرازقين | ٧٢ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | أم تسئلهم أجرا فهم من مغرم مثقلون ... ... ... ... | ٤٠ | ك الطـور | ٥٢ |
| | أم تسئلهم أجرا فهم من مغرم مثقلون ... ... ... | ٤٦ | ك القـلم | ٦٨ |
| تَسْئَلُوا | : أم تريدون أن تسئلوا رسولكم كما سئل موسى من قبل | ١٠٨ | م البقـرة | ٢ |
| (٣) | يا أيها الذين آمنوا لا تسئلوا عن أشياء إن تبد لكم تسؤكم | ١٠١ | م المائدة | ٥ |
| | وإن تسئلوا عنها حين ينزل القرآن تبد لكم عفا الله عنها | ١٠١ | « | ٥ |
| نَسْئَلُكَ | : لا نسئلك رزقا نحن نرزقك والعاقبة للتقوى | ١٣٢ | ك طـه | ٢٠ |
| لَنَسْئَلَنَّ | : فلنسئلن الذين أرسل إليهم ... ... ... ... ... | ٦ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | ولنسئلن المرسلين ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك « | ٧ |
| لَنَسْئَلَنَّهُمْ | : فوربك لنسئلنهم أجمعين ... ... ... ... ... | ٩٢ | ك الحجـر | ١٥ |
| يَسْئَلُ | : ليسئل الصادقين عن صدقهم وأعد للكافرين عذابا أليما | ٨ | م الأحزاب | ٣٣ |
| (٣) | ولا يسئل حميم حميما ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك المعارج | ٧٠ |
| | يسئل أيان يوم القيامة ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك القيامة | ٧٥ |
| يَسْئَلُكَ | : يسئلك أهل الكتاب أن تنزل عليهم كتابا من السماء | ١٥٣ | م النسـاء | ٤ |
| (٢) | يسئلك الناس عن الساعة قل إنما علمها عند الله | ٦٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| يَسْئَلُكُمْ | : اتبعوا من لا يسئلكم أجرا وهم مهتدون ... ... | ٢١ | ك يس | ٣٦ |
| (٢) | وإن تؤمنوا وتتقوا يؤتكم أجوركم ولا يسئلكم أموالكم | ٣٦ | م محمد | ٤٧ |
| يَسْئَلْكُمُوهَا | : إن يسئلكموها فيحفكم تبخلوا ويخرج أضغانكم | ٣٧ | م « | ٤٧ |
| يَسْئَلُهُ | : يسئله من فى السموات والأرض كل يوم هو فى شأن | ٢٩ | م الرحمن | ٥٥ |
| يَسْئَلُوا | : وسئلوا ما أنفقتم وليسئلوا ما أنفقوا ... ... ... | ١٠ | م الممتحنة | ٦٠ |
| يَسْئَلُونَ | : تعرفهم بسيماهم لا يسئلون الناس إلحافا ... ... | ٢٧٣ | م البقـرة | ٢ |
| (٣) | يسئلون عن أنبائكم ولو كانوا فيكم ما قاتلوا إلا قليلا | ٢٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | يسئلون أيان يوم الدين ... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك الذاريات | ٥١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَسْئَلُونَكَ | : يسئلونك عن الأهلة قل هى مواقيت للناس والحج | ١٨٩ | م البقـرة | ٢ |
| (١٥) | يسئلونك ماذا ينفقون قل ما أنفقتم من خير فللوالدين | ٢١٥ | م « | ٢ |
| | يسئلونك عن الشهر الحرام قتال فيه قل قتال فيه كبير | ٢١٧ | م « | ٢ |
| | يسئلونك عن الخمر والميسر قل فيهما إثم كبير ... ... | ٢١٩ | م « | ٢ |
| | ويسئلونك ماذا ينفقون قل العفو ... ... ... ... | ٢١٩ | م « | ٢ |
| | ويسئلونك عن اليتامى قل إصلاح لهم خير ... ... ... | ٢٢٠ | م « | ٢ |
| | ويسئلونك عن المحيض قل هو أذى ... ... ... ... | ٢٢٢ | م « | ٢ |
| | يسئلونك ماذا أحل لهم قل أحل لكم الطيبات... ... | ٤ | م المائدة | ٥ |
| | يسئلونك عن الساعة أيان مرساها قل إنما علمها عند ربى ... ... ... ... ... ... ... | ١٨٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | يسئلونك كأنك حفى عنها قل إنما علمها عند الله | ١٨٧ | ك « | ٧ |
| | يسئلونك عن الأنفال قل الأنفال لله والرسول... ... | ١ | م الأنفـال | ٨ |
| | ويسئلونك عن الروح قل الروح من أمر ربى... ... | ٨٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ويسئلونك عن ذى القرنين قل سأتلوا عليكم منه ذكرا | ٨٣ | م الكهف | ١٨ |
| | ويسئلونك عن الجبال فقل ينسفها ربى نسفا ... ... | ١٠٥ | ك طـه | ٢٠ |
| | يسئلونك عن الساعة أيان مرساها ... ... ... ... | ٤٢ | ك النازعات | ٧٩ |
| أَسْئَلِ | : فسئل الذين يقرءون الكتاب من قبلك ... ... ... | ٩٤ | م يـونس | ١٠ |
| (٦) | وسئل القرية التى كنا فيها والعير التى أقبلنا فيها ... ... | ٨٢ | ك يوسـف | ١٢ |
| | فسئل بنى إسرائيل إذ جاءهم... ... ... ... ... ... | ١٠١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | قالوا لبثنا يوما أو بعض يوم فسئل العادين ... ... | ١١٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ثم استوى على العرش الرحمن فسئل به خبيرا ... ... | ٥٩ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| | وسئل من أرسلنا من قبلك من رسلنا ... ... ... ... | ٤٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| فَسْئَلْهُ | : ارجع إلى ربك فسئله ما بال النسوة اللاتى قطعن أيديهن | ٥٠ | ك يوسـف | ١٢ |
| وَسْئَلْهُمْ | : وسئلهم عن القرية التى كانت حاضرة البحر ... ... | ١٦٣ | م الأعراف | ٧ |
| اسْئَلُوا | : وللنساء نصيب مما اكتسبن وسئلوا الله من فضله | ٣٢ | م النسـاء | ٤ |
| (٤) | فسئلوا أهل الذكر إن كنتم لا تعلمون... ... ... ... | ٤٣ | ك النحل | ١٦ |
| | فسئلوا أهل الذكر إن كنتم لا تعلمون... ... ... ... | ٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ولا تمسكوا بعصم الكوافر وسئلوا ما أنفقتم... ... | ١٠ | م الممتحنة | ٦٠ |
| فَسْئَلُوهُمْ | : قال بل فعله كبيرهم هذا فسئلوهم إن كانوا ينطقون | ٦٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| فَسْئَلُوهُنَّ | : وإذا سألتموهن متاعا فسئلوهن من وراء حجاب | ٥٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| سَلْ | : سل بنى إسرائيل كم آتيناهم من آية بينة ... ... ... | ٢١١ | م البقـرة | ٢ |
| سَلْهُمْ | : سلهم أيهم بذلك زعيم ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك القـلم | ٦٨ |
| سُئِلَ | : أم تريدون أن تسئلوا رسولكم كما سئل موسى من قبل | ١٠٨ | م البقـرة | ٢ |
| سُئِلَتْ | : وإذا الموءودة سئلت . بأى ذنب قتلت ... ... | ٨ | ك التكوير | ٨١ |
| سُئِلُوا | : ولو دخلت عليهم من أقطارها ثم سئلوا الفتنة لآتوها | ١٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| تُسْئَلُ | : ولا تسئل عن أصحاب الجحيم ... ... ... ... ... | ١١٩ | م البقـرة | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| لَتُسْئَلُنَّ | : تالله لتسئلن عما كنتم تفترون ... ... ... ... | ٥٦ ك النحل | ١٦ |
| (٣) | ولتسئلن عما كنتم تعملون ... ... ... ... ... ... | ٩٣ ك « | ١٦ |
| | ثم لتسئلن يومئذ عن النعيم ... ... ... ... ... ... | ٨ ك التكاثر | ١٠٢ |
| تُسْئَلُونَ | : لها ما كسبت ولكم ما كسبتم ولا تسئلون عما | | |
| (٥) | كانوا يعملون... ... ... ... ... ... ... | ١٣٤ م البقرة | ٢ |
| | لها ما كسبت ولكم ما كسبتم ولا تسئلون عما كانوا يعملون | ١٤١ م « | ٢ |
| | وارجعوا إلى ما أترفتم فيه ومساكنكم لعلكم تسئلون | ١٣ ك الأنبياء | ٢١ |
| | قل لا تسئلون عما أجرمنا ولا نسئل عما تعملون... ... | ٢٥ ك سبإ | ٣٤ |
| | وإنه لذكر لك ولقومك وسوف تسئلون ... ... ... | ٤٤ ك الزخرف | ٤٣ |
| نُسْئَلُ | : قل لا تسئلون عما أجرمنا ولا نسئل عما تعملون | ٢٥ ك سبإ | ٣٤ |
| يُسْئَلُ | : لا يسئل عما يفعل وهم يسئلون... ... ... ... ... | ٢٣ ك الأنبياء | ٢١ |
| (٣) | ولا يسئل عن ذنوبهم المجرمون... ... ... ... ... | ٧٨ ك القصص | ٢٨ |
| | فيومئذ لا يسئل عن ذنبه إنس ولا جانٌّ ... ... ... | ٣٩ م الرحمن | ٥٥ |
| لَيُسْئَلُنَّ | : وليسئلن يوم القيامة عما كانوا يفترون ... ... | ١٣ ك العنكبوت | ٢٩ |
| يُسْئَلُونَ | : لا يسئل عما يفعل وهم يسئلون ... ... ... ... | ٢٣ ك الأنبياء | ٢١ |
| (٢) | أشهدوا خلقهم ستكتب شهادتهم ويسئلون ... ... | ١٩ ك الزخرف | ٤٣ |
| تَسَاءَلُونَ | : واتقوا الله الذى تساءلون به والأرحام... ... | ١ م النساء | ٤ |
| لِيَتَسَاءَلُوا | : وكذلك بعثناهم ليتساءلوا بينهم... ... ... ... | ١٩ ك الكهف | ١٨ |
| يَتَسَاءَلُونَ | : فلا أنساب بينهم يومئذ ولا يتساءلون ... ... | ١٠١ ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٧) | فعميت عليهم الأنباء يومئذ فهم لا يتساءلون ... ... | ٦٦ ك القصص | ٢٨ |
| | وأقبل بعضهم على بعض يتساءلون... ... ... ... ... | ٢٧ ك الصافات | ٣٧ |
| | فأقبل بعضهم على بعض يتساءلون... ... ... ... ... | ٥٠ ك « | ٣٧ |
| | وأقبل بعضهم على بعض يتساءلون ... ... ... ... | ٢٥ ك الطور | ٥٢ |
| | فى جنات يتساءلون . عن المجرمين ... ... ... ... | ٤٠ ك المدثر | ٧٤ |
| | عم يتساءلون . عن النبإ العظيم . الذى هم فيه مختلفون | ١ ك النبإ | ٧٨ |
| سُؤْلَكَ | : قال قد أوتيت سؤلك ياموسى ... ... ... ... | ٣٦ ك طه | ٢٠ |
| سُؤَالِ | : قال لقد ظلمك بسؤال نعجتك إلى نعاجه ... ... | ٢٤ ك ص | ٣٨ |
| سَائِلِ | : وفى أموالهم حق للسائل والمحروم ... ... ... | ١٩ ك الذاريات | ٥١ |
| (٤) | سأل سائل بعذاب واقع . للكافرين ليس له دافع | ١ ك المعارج | ٧٠ |
| | والذين فى أموالهم حق معلوم . للسائل والمحروم | ٢٥ ك « | ٧٠ |
| | وأما السائل فلا تنهر ... ... ... ... ... ... | ١٠ ك الضحى | ٩٣ |
| السَّائِلِينَ | : وآتى المال على حبه ذوى القربى واليتامى | | |
| (٣) | والمساكين وابن السبيل والسائلين ... ... ... | ١٧٧ م البقرة | ٢ |
| | لقد كان فى يوسف وإخوته آيات للسائلين ... ... | ٧ م يوسف | ١٢ |
| | وقدر فيها أقواتها فى أربعة أيام سواء للسائلين... ... | ١٠ ك فصلت | ٤١ |
| مَسْئُولًا | : وأوفوا بالعهد إن العهد كان مسئولا... ... ... | ٣٤ ك الإسراء | ١٧ |
| (٤) | إن السمع والبصر والفؤاد كل أولئك كان عنه مسئولا | ٣٦ ك « | ١٧ |
| مَسْئُولًا | : لهم فيها ما يشاءون خالدين كان على ربك وعدا مسئولا | ١٦ ك الفرقان | ٢٥ |
| | ولقد كانوا عاهدوا الله من قبل لا يولون الأدبار | | |
| | وكان عهد الله مسئولا ... ... ... ... ... ... | ١٥ م الأحزاب | ٣٣ |
| مَسْئُولُونَ | : وقفوهم إنهم مسئولون ... ... ... ... ... | ٢٤ ك الصافات | ٣٧ |
| تَسْئَمُوا | : ولا تسئموا أن تكتبوه صغيرا أو كبيرا إلى أجله | ٢٨٢ م البقرة | ٢ |
| يَسْئَمُ | : لا يسئم الإنسان من دعاء الخير وإن مسه الشر | | |
| | فيئوس قنوط ... ... ... ... ... ... ... | ٤٩ ك فصلت | ٤١ |
| يَسْئَمُونَ | : يسبحون له بالليل والنهار وهم لا يسئمون... ... | ٣٨ ك « | ٤١ |
| سَبَإٍ | : أحطت بما لم تحط به وجئتك من سبإ بنبإ يقين | ٢٢ ك النمل | ٢٧ |
| (٢) | لقد كان لسبإ فى مسكنهم آية جنتان عن يمين وشمال | ١٥ ك سبإ | ٣٤ |
| تَسُبُّوا | : ولا تسبوا الذين يدعون من دون الله ... ... ... | ١٠٨ ك الأنعام | ٦ |
| يَسُبُّوا | : فيسبوا الله عدوا بغير علم ... ... ... ... ... | ١٠٨ ك « | ٦ |
| بِسَبَبٍ | : فليمدد بسبب إلى السماء ثم ليقطع فلينظر هل | | |
| | يذهبن كيده ما يغيظ ... ... ... ... ... ... | ١٥ م الحج | ٢٢ |
| سَبَبًا | : إنا مكنا له فى الأرض وآتيناه من كل شىء سببا | ٨٤ م الكهف | ١٨ |
| (٤) | فأتبع سببا . حتى إذا بلغ مغرب الشمس ... ... ... | ٨٥ م « | ١٨ |
| | ثم أتبع سببا . حتى إذا بلغ مطلع الشمس... ... ... | ٨٩ م « | ١٨ |
| | ثم أتبع سببا . حتى إذا بلغ بين السدين ... ... ... | ٩٢ م « | ١٨ |
| أَسْبَابُ | : إذ تبرأ الذين اتبعوا من الذين اتبعوا ورأوا | | |
| (٤) | العذاب وتقطعت بهم الأسباب ... ... ... ... | ١٦٦ م البقرة | ٢ |
| | فليرتقوا فى الأسباب ... ... ... ... ... ... | ١٠ ك ص | ٣٨ |
| | وقال فرعون ياهامان ابن لى صرحا لعلى أبلغ الأسباب | ٣٦ ك غافر | ٤٠ |
| | أسباب السموات فأطلع إلى إله موسى وإنى لأظنه كاذبا | ٣٧ ك « | ٤٠ |
| يَسْبِتُونَ | : ويوم لا يسبتون لا تأتيهم ... ... ... ... ... | ١٦٣ م الأعراف | ٧ |
| السَّبْتِ | : ولقد علمتم الذين اعتدوا منكم فى السبت ... ... | ٦٥ م البقرة | ٢ |
| (٥) | فنردها على أدبارها أو نلعنهم كما لعنا أصحاب السبت | ٤٧ م النساء | ٤ |
| | وقلنا لهم لا تعدوا فى السبت وأخذنا منهم ميثاقا غليظا | ١٥٤ م « | ٤ |
| | وسئلهم عن القرية التى كانت حاضرة البحر إذ يعدون | | |
| | فى السبت ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٦٣ م الأعراف | ٧ |
| | إنما جعل السبت على الذين اختلفوا فيه... ... ... | ١٢٤ ك النحل | ١٦ |
| سَبْتِهِمْ | : إذ تأتيهم حيتانهم يوم سبتهم شرعا ... ... ... | ١٦٣ م الأعراف | ٧ |
| سُبَاتًا | : وهو الذى جعل لكم الليل لباسا والنوم سباتا... ... | ٤٧ ك الفرقان | ٢٥ |
| (٢) | وجعلنا نومكم سباتا... ... ... ... ... ... ... | ٩ ك النبإ | ٧٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | * * * | | | |
| يَسْبَحُونَ | : كل فى فلك يسبحون... ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٢) | ولا الليل سابق النهار وكل فى فلك يسبحون... ... ... | ٤٠ | ك يس | ٣٦ |
| سَبَّحَ | : سبح لله ما فى السموات والأرض وهو العزيز الحكيم | ١ | م الحديد | ٥٧ |
| (٣) | سبح لله ما فى السموات وما فى الأرض وهو العزيز الحكيم | ١ | م الحشر | ٥٩ |
| | سبح لله ما فى السموات وما فى الأرض وهو العزيز الحكيم | ١ | م الصف | ٦١ |
| سَبَّحُوا | : إنما يؤمن بآياتنا الذين إذا ذكروا بها خروا سجدا | | | |
| | وسبحوا بحمد ربهم ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك السجدة | ٣٢ |
| يُسَبِّحُ | : تسبح له السموات السبع والأرض ومن فيهن | ٤٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| يُسَبِّحُونَ | : قال أوسطهم ألم أقل لكم لولا تسبحون... ... | ٢٨ | م القلم | ٦٨ |
| يُسَبِّحُوهُ | : لتؤمنوا بالله ورسوله وتعزروه وتوقروه وتسبحوه | | | |
| | بكرة وأصيلا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | م الفتح | ٤٨ |
| يُسَبِّحُ | : قالوا أتجعل فيها من يفسد فيها ويسفك الدماء | | | |
| | ونحن نسبح بحمدك ونقدس لك ... ... ... ... | ٣٠ | م البقرة | ٢ |
| نُسَبِّحَكَ | : وأشركه فى أمرى . كى نسبحك كثيرا ... ... | ٣٣ | ك طه | ٢٠ |
| يُسَبِّحُ | : ويسبح الرعد بحمده والملائكة من خيفته ... ... | ١٣ | م الرعد | ١٣ |
| (٧) | وإن من شىء إلا يسبح بحمده ولكن لا تفقهون تسبيحهم | ٤٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| | يسبح له فيها بالغدو والآصال . رجال ... ... ... | ٣٦ | م النور | ٢٤ |
| | ألم تر أن الله يسبح له من فى السموات والأرض | | | |
| | والطير صافات ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤١ | م « | ٢٤ |
| | يسبح له ما فى السموات والأرض وهو العزيز الحكيم | ٢٤ | م الحشر | ٥٩ |
| | يسبح لله ما فى السموات وما فى الأرض الملك القدوس | ١ | م الجمعة | ٦٢ |
| | يسبح لله ما فى السموات وما فى الأرض له الملك وله الحمد | ١ | م التغابن | ٦٤ |
| يُسَبِّحْنَ | : وسخرنا مع داود الجبال يسبحن والطير ... ... | ٧٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٢) | إنا سخرنا الجبال معه يسبحن بالعشىّ والإشراق... ... | ١٨ | ك ص | ٣٨ |
| يُسَبِّحُونَ | : يسبحون الليل والنهار لا يفترون... ... ... | ٢٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٥) | وترى الملائكة حافين من حول العرش يسبحون بحمد ربهم | ٧٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| | الذين يحملون العرش ومن حوله يسبحون بحمد ربهم | ٧ | ك غافر | ٤ |
| | فإن استكبروا فالذين عند ربك يسبحون له بالليل والنهار | ٣٨ | ك فصلت | ٤١ |
| | والملائكة يسبحون بحمد ربهم ويستغفرون لمن فى الأرض | ٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| يُسَبِّحُونَهُ | : إن الذين عند ربك لا يستكبرون عن عبادته | | | |
| | ويسبحونه وله يسجدون... ... ... ... ... ... | ٢٠٦ | ك الأعراف | ٧ |
| سَبِّحْ | : واذكر ربك كثيرا وسبح بالعشىّ والإبكار ... ... | ٤١ | م آل عمران | ٣ |
| (١٣) | فسبح بحمد ربك وكن من الساجدين... ... ... ... | ٩٨ | ك الحجر | ١٥ |
| | وسبح بحمد ربك قبل طلوع الشمس وقبل غروبها | ١٣٠ | م طه | ٢٠ |
| | ومن آناء الليل فسبح وأطراف النهار لعلك ترضى ... | ١٣٠ | م « | ٢٠ |
| | وتوكل على الحىّ الذى لا يموت وسبح بحمده... ... | ٥٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | واستغفر لذنبك وسبح بحمد ربك بالعشىّ والإبكار | ٥٥ | ك غافر | ٤٠ |
| سَبِّحْ | : وسبح بحمد ربك قبل طلوع الشمس وقبل الغروب | ٣٩ | ك ق | ٥٠ |
| | واصبر لحكم ربك فإنك بأعيننا وسبح بحمد ربك حين تقوم | ٤٨ | ك الطور | ٥٢ |
| | فسبح باسم ربك العظيم... ... ... ... ... ... | ٧٤ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | إن هذا لهو حق اليقين . فسبح باسم ربك العظيم | ٩٦ | ك « | ٥٦ |
| | وإنه لحق اليقين . فسبح باسم ربك العظيم ... ... | ٥٢ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | سبح اسم ربك الأعلى ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الأعلى | ٨٧ |
| | فسبح بحمد ربك واستغفره إنه كان توابا... ... ... | ٣ | م النصر | ١١٠ |
| سَبِّحْهُ | : ومن الليل فسبحه وأدبار السجود ... ... ... | ٤٠ | ك ق | ٥٠ |
| (٣) | ومن الليل فسبحه وإدبار النجوم ... ... ... ... | ٤٩ | ك الطور | ٥٢ |
| | ومن الليل فاسجد له وسبحه ليلا طويلا ... ... ... | ٢٦ | م الإنسان | ٧٦ |
| سَبِّحُوا | : فأوحى إليهم أن سبحوا بكرة وعشيا ... ... ... | ١١ | ك مريم | ١٩ |
| سَبِّحُوهُ | : وسبحوه بكرة وأصيلا ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | م الأحزاب | ٣٣ |
| سَبْحًا | : إن لك فى النهار سبحا طويلا ... ... ... ... | ٧ | ك المزمل | ٧٣ |
| (٢) | والناشطات نشطا . والسابحات سبحا... ... ... ... | ٣ | ك النازعات | ٧٩ |
| السَّابِحَاتِ | : والسابحات سبحا . فالسابقات سبقا ... ... | ٣ | ك « | ٧٩ |
| سُبْحَانَ | : وسبحان الله وما أنا من المشركين ... ... ... | ١٠٨ | ك يوسف | ١٢ |
| (١٨) | سبحان الذى أسرى بعبده ليلا من المسجد الحرام | | | |
| | إلى المسجد الأقصا ... ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | قل سبحان ربى هل كنت إلا بشرا رسولا ... ... | ٩٣ | ك « | ١٧ |
| | ويقولون سبحان ربنا إن كان وعد ربنا لمفعولا | ١٠٨ | ك « | ١٧ |
| | فسبحان الله رب العرش عما يصفون ... ... ... | ٢٢ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ولعلا بعضهم على بعض سبحان الله عما يصفون | ٩١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | أن بورك من فى النار ومن حولها وسبحان الله رب العالمين | ٨ | ك النمل | ٢٧ |
| | ما كان لهم الخيرة سبحان الله وتعالى عما يشركون | ٦٨ | ك القصص | ٢٨ |
| | فسبحان الله حين تمسون وحين تصبحون... ... ... | ١٧ | م الروم | ٣٠ |
| | سبحان الذى خلق الأزواج كلها مما تنبت الأرض | ٣٦ | ك يس | ٣٦ |
| | فسبحان الذى بيده ملكوت كل شىء وإليه ترجعون | ٨٣ | ك « | ٣٦ |
| | سبحان الله عما يصفون ... ... ... ... ... ... | ١٥٩ | ك الصافات | ٣٧ |
| | سبحان ربك رب العزة عما يصفون ... ... ... ... | ١٨٠ | ك « | ٣٧ |
| | وتقولوا سبحان الذى سخر لنا هذا وما كنا له مقرنين | ١٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | سبحان رب السموات والأرض رب العرش عما يصفون | ٨٢ | ك « | ٤٣ |
| | أم لهم إله غير الله سبحان الله عما يشركون ... ... | ٤٣ | ك الطور | ٥٢ |
| | المهيمن العزيز الجبار المتكبر سبحان الله عما يشركون | ٢٣ | م الحشر | ٥٩ |
| | قالوا سبحان ربنا إنا كنا ظالمين ... ... ... ... | ٢٩ | م القلم | ٦٨ |
| سُبْحَانَكَ | : قالوا سبحانك لا علم لنا إلا ما علمتنا ... ... | ٣٢ | م البقرة | ٢ |
| (٩) | ربنا ما خلقت هذا باطلا سبحانك فقنا عذاب النار | ١٩١ | م آل عمران | ٣ |
| | قال سبحانك ما يكون لى أن أقول ما ليس لى بحق | ١١٦ | م المائدة | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| سُبْحَانَكَ | فلما أفاق قال سبحانك تبت إليك وأنا أول المؤمنين | الأعراف | ٧ |
| | دعواهم فيها سبحانك اللهم وتحيتهم فيها سلام | يونس | ١٠ |
| | فنادى فى الظلمات أن لا إله إلا أنت سبحانك إنى كنت من الظالمين | الأنبياء | ٢١ |
| | ما يكون لنا أن نتكلم بهذا سبحانك هذا بهتان عظيم | النور | ٢٤ |
| | قالوا سبحانك ما كان ينبغى لنا أن نتخذ من دونك من أولياء | الفرقان | ٢٥ |
| | قالوا سبحانك أنت ولينا من دونهم | سبأ | ٣٤ |
| سُبْحَانَهُ | وقالوا اتخذ الله ولدا سبحانه | البقرة | ٢ |
| (١٤) | سبحانه أن يكون له ولد له ما فى السموات وما فى الأرض | النساء | ٤ |
| | سبحانه وتعالى عما يصفون | الأنعام | ٦ |
| | لا إله إلا هو سبحانه عما يشركون | التوبة | ٩ |
| | قل أتنبئون الله بما لا يعلم فى السموات ولا فى الأرض سبحانه وتعالى عما يشركون | يونس | ١٠ |
| | قالوا اتخذ الله ولدا سبحانه هو الغنى | « | ١٠ |
| | أتى أمر الله فلا تستعجلوه سبحانه وتعالى عما يشركون | النحل | ١٦ |
| | ويجعلون لله البنات سبحانه ولهم ما يشتهون | « | ١٦ |
| | سبحانه وتعالى عما يقولون علوا كبيرا | الإسراء | ١٧ |
| | ما كان لله أن يتخذ من ولد سبحانه | مريم | ١٩ |
| | وقالوا اتخذ الرحمن ولدا سبحانه بل عباد مكرمون | الأنبياء | ٢١ |
| | هل من شركائكم من يفعل من ذلكم من شىء سبحانه وتعالى عما يشركون | الروم | ٣٠ |
| | لو أراد الله أن يتخذ ولدا لاصطفى مما يخلق ما يشاء سبحانه | الزمر | ٣٩ |
| | والسموات مطويات بيمينه سبحانه وتعالى عما يشركون | « | ٣٩ |
| تَسْبِيحَهُ | كل قد علم صلاته وتسبيحه والله عليم بما يفعلون | النور | ٢٤ |
| تَسْبِيحَهُمْ | ولكن لا تفقهون تسبيحهم إنه كان حليما غفورا | الإسراء | ١٧ |
| الْمُسَبِّحُونَ | وإنا لنحن المسبحون | الصافات | ٣٧ |
| الْمُسَبِّحِينَ | فلولا أنه كان من المسبحين . للبث فى بطنه إلى يوم يبعثون | « | ٣٧ |
| الْأَسْبَاطِ | وما أنزل إلى إبراهيم وإسمعيل وإسحق ويعقوب والأسباط | البقرة | ٢ |
| (٤) | أم تقولون إن إبراهيم وإسمعيل وإسحق ويعقوب والأسباط كانوا هودا أو نصارى | « | ٢ |
| | وما أنزل على إبراهيم وإسمعيل وإسحق ويعقوب والأسباط | آل عمران | ٣ |
| | وأوحينا إلى إبراهيم وإسمعيل وإسحق ويعقوب والأسباط | النساء | ٤ |
| أَسْبَاطًا | وقطعناهم اثنتى عشرة أسباطا أمما | الأعراف | ٧ |
| سَبْعٍ | ثم استوى إلى السماء فسواهن سبع سموات | البقرة | ٢ |
| (١٨) | كمثل حبة أنبتت سبع سنابل فى كل سنبلة مائة حبة | « | ٢ |
| سَبْعٌ | وقال الملك إنى أرى سبع بقرات سمان | يوسف | ١٢ |
| | يا أيها سبع عجاف | « | ١٢ |
| | وسبع سنبلات خضر وأخر يابسات | « | ١٢ |
| | يوسف أيها الصديق أفتنا فى سبع بقرات سمان | « | ١٢ |
| | يأكلهن سبع عجاف | « | ١٢ |
| | وسبع سنبلات خضر وأخر يابسات | « | ١٢ |
| | قال تزرعون سبع سنين دأبا | « | ١٢ |
| | ثم يأتى من بعد ذلك سبع شداد يأكلن ما قدمتم لهن | « | ١٢ |
| | تسبح له السموات السبع والأرض ومن فيهن | الإسراء | ١٧ |
| | ولقد خلقنا فوقكم سبع طرائق وما كنا عن الخلق غافلين | المؤمنون | ٢٣ |
| | قل من رب السموات السبع ورب العرش العظيم | « | ٢٣ |
| | فقضاهن سبع سموات فى يومين وأوحى فى كل سماء أمرها | فصلت | ٤١ |
| | الله الذى خلق سبع سموات ومن الأرض مثلهن | الطلاق | ٦٥ |
| | الذى خلق سبع سموات طباقا | الملك | ٦٧ |
| | سخرها عليهم سبع ليال وثمانية أيام حسوما | الحاقة | ٦٩ |
| | ألم تروا كيف خلق الله سبع سموات طباقا | نوح | ٧١ |
| سَبْعًا | ولقد آتيناك سبعا من المثانى والقرآن العظيم | الحجر | ١٥ |
| (٢) | وبنينا فوقكم سبعا شدادا | النبأ | ٧٨ |
| سَبْعَةٍ | فمن لم يجد فصيام ثلاثة أيام فى الحج وسبعة إذا رجعتم | البقرة | ٢ |
| (٤) | لها سبعة أبواب لكل باب منهم جزء مقسوم | الحجر | ١٥ |
| | ويقولون سبعة وثامنهم كلبهم | الكهف | ١٨ |
| | والبحر يمده من بعده سبعة أبحر ما نفدت كلمات الله | لقمان | ٣١ |
| سَبْعُونَ | ثم فى سلسلة ذرعها سبعون ذراعا فاسلكوه | الحاقة | ٦٩ |
| سَبْعِينَ | واختار موسى قومه سبعين رجلا لميقاتنا | الأعراف | ٧ |
| (٢) | إن تستغفر لهم سبعين مرة فلن يغفر الله لهم | التوبة | ٩ |
| السَّبُعُ | وما أكل السبع إلا ما ذكيتم وما ذبح على النصب | المائدة | ٥ |
| أَسْبَغَ | وأسبغ عليكم نعمه ظاهرة وباطنة | لقمان | ٣١ |
| سَابِغَاتٍ | أن اعمل سابغات وقدر فى السرد واعملوا صالحا | سبأ | ٣٤ |
| سَبَقَ | لولا كتاب من الله سبق لمسكم فيما أخذتم عذاب عظيم | الأنفال | ٨ |
| (٤) | احمل فيها من كل زوجين اثنين وأهلك إلا من سبق عليه القول | هود | ١١ |
| | كذلك نقص عليك من أنباء ما قد سبق | طه | ٢٠ |
| | فاسلك فيها من كل زوجين اثنين وأهلك إلا من سبق عليه القول منهم | المؤمنون | ٢٣ |
| سَبَقَتْ | ولولا كلمة سبقت من ربك لقضى بينهم فيما فيه يختلفون | يونس | ١٠ |
| (٧) | ولولا كلمة سبقت من ربك لقضى بينهم | هود | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| سَبَقَتْ | : ولولا كلمة سبقت من ربك لكان لزاما وأجل مسمى | ١٢٩ | ك طه | ٢٠ |
| | إن الذين سبقت لهم منا الحسنى أولئك عنها مبعدون | ١٠١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ولقد سبقت كلمتنا لعبادنا المرسلين ... ... ... ... | ١٧١ | ك الصافات | ٣٧ |
| | ولولا كلمة سبقت من ربك لقضى بينهم ... ... ... | ٤٥ | ك فصلت | ٤١ |
| | ولولا كلمة سبقت من ربك إلى أجل مسمى لقضى بينهم | ١٤ | ك الشورى | ٤٢ |
| سَبَقَكُمْ | : أتأتون الفاحشة ما سبقكم بها من أحد من العالمين | ٨٠ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | إنكم لتأتون الفاحشة ما سبقكم بها من أحد من العالمين | ٢٨ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| سَبَقُوا | : ولا يحسبن الذين كفروا سبقوا إنهم لا يعجزون | ٥٩ | م الأنفال | ٨ |
| سَبَقُونَا | : لو كان خيرا ما سبقونا إليه ... ... ... ... ... | ١١ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| (٢) | ربنا اغفر لنا ولإخواننا الذين سبقونا بالإيمان | ١٠ | م الحشر | ٥٩ |
| تَسْبِقُ | : ما تسبق من أمة أجلها وما يستأخرون ... ... ... | ٥ | ك الحجر | ١٥ |
| (٢) | ما تسبق من أمة أجلها وما يستأخرون ... ... ... | ٤٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| يَسْبِقُونَا | : أم حسب الذين يعملون السيئات أن يسبقونا | ٤ | م العنكبوت | ٢٩ |
| يَسْبِقُونَهُ | : لا يسبقونه بالقول وهم بأمره يعملون ... ... | ٢٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| سَابِقُوا | : سابقوا إلى مغفرة من ربكم ... ... ... ... ... | ٢١ | م الحديد | ٥٧ |
| اسْتَبَقَا | : واستبقا الباب وقدت قميصه من دبر ... ... ... | ٢٥ | ك يوسف | ١٢ |
| اسْتَبَقُوا | : ولو نشاء لطمسنا على أعينهم فاستبقوا الصراط | ٦٦ | ك يس | ٣٦ |
| نَسْتَبِقُ | : قالوا يا أبانا إنا ذهبنا نستبق وتركنا يوسف عند متاعنا | ١٧ | ك يوسف | ١٢ |
| اسْتَبِقُوا | : ولكل وجهة هو موليها فاستبقوا الخيرات | ١٤٨ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | ولكن ليبلوكم في ما آتاكم فاستبقوا الخيرات ... ... | ٤٨ | م المائدة | ٥ |
| سَبْقًا | : فالسابقات سبقا . فالمدبرات أمرا ... ... ... | ٤ | ك النازعات | ٧٩ |
| سَابِقٌ | : ومنهم سابق بالخيرات بإذن الله ... ... ... ... | ٣٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| (٢) | لا الشمس ينبغي لها أن تدرك القمر ولا الليل سابق النهار | ٤٠ | ك يس | ٣٦ |
| السَّابِقَاتِ | : فالسابقات سبقا . فالمدبرات أمرا ... ... | ٤ | ك النازعات | ٧٩ |
| السَّابِقُونَ | : والسابقون الأولون من المهاجرين والأنصار | ١٠٠ | م التوبة | ٩ |
| (٤) | أولئك يسارعون في الخيرات وهم لها سابقون ... ... | ٦١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | والسابقون ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | السابقون . أولئك المقربون ... ... ... ... ... | ١٠ | ك » | ٥٦ |
| سَابِقِينَ | : فاستكبروا في الأرض وما كانوا سابقين ... ... | ٣٩ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| مَسْبُوقِينَ | : نحن قدرنا بينكم الموت وما نحن بمسبوقين | ٦٠ | ك الواقعة | ٥٦ |
| (٢) | على أن نبدل خيرا منهم وما نحن بمسبوقين ... ... | ٤١ | ك المعارج | ٧٠ |

***

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| سَبِيلٍ | : ومن يتبدل الكفر بالإيمان فقد ضل سواء السبيل | ١٠٨ | م البقرة | ٢ |
| (١١٦) | ولا تقولوا لمن يقتل في سبيل الله أموات ... ... | ١٥٤ | م » | ٢ |
| | وآتى المال على حبه ذوي القربى واليتامى والمساكين | | | |
| | وابن السبيل ... ... ... ... ... ... ... | ١٧٧ | م » | ٢ |
| سَبِيلِ | : وقاتلوا في سبيل الله الذين يقاتلونكم ولا تعتدوا | ١٩٠ | م البقرة | ٢ |
| | وأنفقوا في سبيل الله ولا تلقوا بأيديكم إلى التهلكة | ١٩٥ | م » | ٢ |
| | قل ما أنفقتم من خير فللوالدين والأقربين واليتامى | | | |
| | والمساكين وابن السبيل... ... ... ... ... ... | ٢١٥ | م » | ٢ |
| | قل قتال فيه كبير وصد عن سبيل الله وكفر به ... ... | ٢١٧ | م » | ٢ |
| | إن الذين آمنوا والذين هاجروا وجاهدوا في سبيل الله | | | |
| | أولئك يرجون رحمة الله... ... ... ... ... ... | ٢١٨ | م » | ٢ |
| | وقاتلوا في سبيل الله واعلموا أن الله سميع عليم... ... | ٢٤٤ | م » | ٢ |
| | إذ قالوا لنبي لهم ابعث لنا ملكا نقاتل في سبيل الله | ٢٤٦ | م » | ٢ |
| | قالوا وما لنا ألا نقاتل في سبيل الله وقد أخرجنا من | | | |
| | ديارنا وأبنائنا... ... ... ... ... ... ... | ٢٤٦ | م » | ٢ |
| | مثل الذين ينفقون أموالهم في سبيل الله كمثل حبة | | | |
| | أنبتت سبع سنابل ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦١ | م » | ٢ |
| | الذين ينفقون أموالهم في سبيل الله ثم لا يتبعون | | | |
| | ما أنفقوا منا ولا أذى لهم أجرهم عند ربهم | ٢٦٢ | م » | ٢ |
| | للفقراء الذين أحصروا في سبيل الله لا يستطيعون | | | |
| | ضربا في الأرض ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧٣ | م » | ٢ |
| | فئة تقاتل في سبيل الله وأخرى كافرة يرونهم مثليهم رأي العين | ١٣ | م آل عمران | ٣ |
| | ذلك بأنهم قالوا ليس علينا في الأميين سبيل ... ... | ٧٥ | م » | ٣ |
| | قل يا أهل الكتاب لم تصدون عن سبيل الله من آمن | ٩٩ | م » | ٣ |
| | فما وهنوا لما أصابهم في سبيل الله وما ضعفوا وما استكانوا | ١٤٦ | م » | ٣ |
| | ولئن قتلتم في سبيل الله أو متم لمغفرة من الله ورحمة | | | |
| | خير مما يجمعون ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٧ | م » | ٣ |
| | وقيل لهم تعالوا قاتلوا في سبيل الله أو ادفعوا... ... | ١٦٧ | م » | ٣ |
| | ولا تحسبن الذين قتلوا في سبيل الله أمواتا ... ... | ١٦٩ | م » | ٣ |
| | والجار الجنب والصاحب بالجنب وابن السبيل ... ... | ٣٦ | م النساء | ٤ |
| | ولا جنبا إلا عابري سبيل حتى تغتسلوا ... ... ... | ٤٣ | م » | ٤ |
| | يشترون الضلالة ويريدون أن تضلوا السبيل ... ... | ٤٤ | م » | ٤ |
| | فليقاتل في سبيل الله الذين يشرون الحياة الدنيا بالآخرة | ٧٤ | م » | ٤ |
| | ومن يقاتل في سبيل الله فيقتل أو يغلب فسوف | | | |
| | نؤتيه أجرا عظيما ... ... ... ... ... ... ... | ٧٤ | م » | ٤ |
| | وما لكم لا تقاتلون في سبيل الله... ... ... ... ... | ٧٥ | م » | ٤ |
| | الذين آمنوا يقاتلون في سبيل الله ... ... ... ... | ٧٦ | م » | ٤ |
| | والذين كفروا يقاتلون في سبيل الطاغوت... ... ... | ٧٦ | م » | ٤ |
| | فقاتل في سبيل الله لا تكلف إلا نفسك ... ... ... | ٨٤ | م » | ٤ |
| | فلا تتخذوا منهم أولياء حتى يهاجروا في سبيل الله | ٨٩ | م » | ٤ |
| | يا أيها الذين آمنوا إذا ضربتم في سبيل الله فتبينوا | ٩٤ | م » | ٤ |
| | لا يستوي القاعدون من المؤمنين غير أولي الضرر | | | |
| | والمجاهدون في سبيل الله بأموالهم وأنفسهم ... | ٩٥ | م » | ٤ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| سبيل: | ومن يهاجر فى سبيل الله يجد فى الأرض مراغما كثيرا وسعة ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٠ م | النساء | ٤ |
| | ويتبع غير سبيل المؤمنين نوله ما تولى ونصله جهنم | ١١٥ م | » | ٤ |
| | حرمنا عليهم طيبات أحلت لهم وبصدهم عن سبيل الله كثيرا | ١٦٠ م | » | ٤ |
| | إن الذين كفروا وصدوا عن سبيل الله قد ضلوا ضلالا بعيدا | ١٦٧ م | » | ٤ |
| | فمن كفر بعد ذلك منكم فقد ضل سواء السبيل | ١٢ م | المائدة | ٥ |
| | يجاهدون فى سبيل الله ولا يخافون لومة لائم | ٥٤ م | » | ٥ |
| | أولئك شر مكانا وأضل عن سواء السبيل... ... ... | ٦٠ م | » | ٥ |
| | قد ضلوا من قبل وأضلوا كثيرا وضلوا عن سواء السبيل | ٧٧ م | » | ٥ |
| | وكذلك نفصل الآيات ولتستبين سبيل المجرمين ... | ٥٥ ك | الأنعام | ٦ |
| | وإن تطع أكثر من فى الأرض يضلوك عن سبيل الله | ١١٦ ك | » | ٦ |
| | الذين يصدون عن سبيل الله ويبغونها عوجا ... ... | ٤٥ ك | الأعراف | ٧ |
| | ولا تقعدوا بكل صراط توعدون وتصدون عن سبيل الله | ٨٦ ك | » | ٧ |
| | اخلفنى فى قومى وأصلح ولا تتبع سبيل المفسدين | ١٤٢ ك | » | ٧ |
| | وإن يروا سبيل الرشد لا يتخذوه سبيلا ... ... ... | ١٤٦ ك | » | ٧ |
| | وإن يروا سبيل الغى يتخذوه سبيلا ... ... ... ... | ١٤٦ ك | » | ٧ |
| | إن الذين كفروا ينفقون أموالهم ليصدوا عن سبيل الله | ٣٦ ك | الأنفال | ٨ |
| | ولذى القربى واليتامى والمساكين وابن السبيل... ... | ٤١ م | » | ٨ |
| | ولا تكونوا كالذين خرجوا من ديارهم بطرا ورئاء الناس ويصدون عن سبيل الله ... ... ... ... | ٤٧ م | » | ٨ |
| | وما تنفقوا من شىء فى سبيل الله يوف إليكم ... ... | ٦٠ م | » | ٨ |
| | إن الذين آمنوا وهاجروا وجاهدوا بأموالهم وأنفسهم فى سبيل الله والذين آووا ونصروا أولئك بعضهم أولياء بعض ... ... ... ... ... ... ... | ٧٢ م | » | ٨ |
| | والذين آمنوا وهاجروا وجاهدوا فى سبيل الله والذين آووا ونصروا أولئك هم المؤمنون حقا ... ... | ٧٤ م | » | ٧ |
| | كن آمن بالله واليوم الآخر وجاهد فى سبيل الله | ١٩ م | التوبة | ٩ |
| | الذين آمنوا وهاجروا وجاهدوا فى سبيل الله بأموالهم وأنفسهم أعظم درجة عند الله ... ... ... ... | ٢٠ م | » | ٩ |
| | ليأكلون أموال الناس بالباطل ويصدون عن سبيل الله | ٣٤ م | » | ٩ |
| | والذين يكنزون الذهب والفضة ولا ينفقونها فى سبيل الله فبشرهم بعذاب أليم... ... ... ... ... ... | ٣٤ م | » | ٩ |
| | إذا قيل لكم انفروا فى سبيل الله اثاقلتم إلى الأرض | ٣٨ م | » | ٩ |
| | انفروا خفافا وثقالا وجاهدوا بأموالكم وأنفسكم فى سبيل الله ... ... ... ... ... ... ... | ٤١ م | » | ٩ |
| | وفى الرقاب والغارمين وفى سبيل الله ... ... ... ... | ٦٠ م | » | ٩ |
| | وابن السبيل فريضة من الله... ... ... ... ... ... | ٦٠ م | » | ٩ |
| | وكرهوا أن يجاهدوا بأموالهم وأنفسهم فى سبيل الله | ٨١ م | » | ٩ |
| | ما على المحسنين من سبيل والله غفور رحيم ... ... | ٩١ م | » | ٩ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| سبيل: | إنما السبيل على الذين يستأذنونك وهم أغنياء... ... | ٩٣ م | التوبة | ٩ |
| | يقاتلون فى سبيل الله فيقتلون ويقتلون ... ... ... | ١١١ م | » | ٩ |
| | ذلك بأنهم لا يصيبهم ظمأ ولا نصب ولا مخمصة فى سبيل الله | ١٢٠ م | » | ٩ |
| | فاستقيما ولا تتبعان سبيل الذين لا يعلمون ... ... | ٨٩ ك | يونس | ١٠ |
| | الذين يصدون عن سبيل الله ويبغونها عوجا ... ... | ١٩ ك | هود | ١١ |
| | بل زين للذين كفروا مكرهم وصدوا عن السبيل | ٣٣ م | الرعد | ١٣ |
| | ويصدون عن سبيل الله ويبغونها عوجا أولئك فى ضلال بعيد ... ... ... ... ... ... ... | ٣ ك | إبراهيم | ١٤ |
| | وإنها لبسبيل مقيم ... ... ... ... ... ... ... | ٧٦ ك | الحجر | ١٥ |
| | وعلى الله قصد السبيل ومنها جائر... ... ... ... ... | ٩ ك | النحل | ١٦ |
| | الذين كفروا وصدوا عن سبيل الله زدناهم عذابا فوق العذاب ... ... ... ... ... ... ... | ٨٨ ك | » | ١٦ |
| | فتزل قدم بعد ثبوتها وتذوقوا السوء بما صددتم عن سبيل الله | ٩٤ ك | » | ١٦ |
| | ادع إلى سبيل ربك بالحكمة والموعظة الحسنة ... | ١٢٥ ك | » | ١٦ |
| | وآت ذا القربى حقه والمسكين وابن السبيل ولا تبذر تبذيرا | ٢٦ م | الإسراء | ١٧ |
| | ثانى عطفه ليضل عن سبيل الله... ... ... ... ... | ٩ م | الحج | ٢٢ |
| | إن الذين كفروا ويصدون عن سبيل الله والمسجد الحرام | ٢٥ م | » | ٢٢ |
| | والذين هاجروا فى سبيل الله ثم قتلوا أو ماتوا ليرزقنهم الله رزقا حسنا ... ... ... ... ... ... ... | ٥٨ م | » | ٢٢ |
| | أن يؤتوا أولى القربى والمساكين والمهاجرين فى سبيل الله | ٢٢ م | النور | ٢٤ |
| | أأنتم أضللتم عبادى هؤلاء أم هم ضلوا السبيل... ... | ١٧ ك | الفرقان | ٢٥ |
| | وزين لهم الشيطان أعمالهم فصدهم عن السبيل فهم لا يهتدون | ٢٤ ك | النمل | ٢٧ |
| | ولما توجه تلقاء مدين قال عسى ربى أن يهدينى سواء السبيل ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ ك | القصص | ٢٨ |
| | أئنكم لتأتون الرجال وتقطعون السبيل وتأتون فى ناديكم المنكر... ... ... ... ... ... ... | ٢٩ ك | العنكبوت | ٢٩ |
| | وزين لهم الشيطان أعمالهم فصدهم عن السبيل وكانوا مستبصرين ... ... ... ... ... ... ... | ٣٨ ك | » | ٢٩ |
| | فآت ذا القربى حقه والمسكين وابن السبيل ... ... | ٣٨ ك | الروم | ٣٠ |
| | ومن الناس من يشترى لهو الحديث ليضل عن سبيل الله | ٦ ك | لقمان | ٣١ |
| | واتبع سبيل من أناب إلى ... ... ... ... ... ... | ١٥ ك | » | ٣١ |
| | والله يقول الحق وهو يهدى السبيل ... ... ... ... | ٤ م | الأحزاب | ٣٣ |
| | ولا تتبع الهوى فيضلك عن سبيل الله ... ... ... | ٢٦ ك | ص | ٣٨ |
| | إن الذين يضلون عن سبيل الله لهم عذاب شديد | ٢٦ ك | » | ٣٨ |
| | فاعترفنا بذنوبنا فهل إلى خروج من سبيل... ... ... | ١١ ك | غافر | ٤٠ |
| | ما أريكم إلا ما أرى وما أهديكم إلا سبيل الرشاد | ٢٩ ك | » | ٤٠ |
| | وكذلك زين لفرعون سوء عمله وصد عن السبيل ... | ٣٧ ك | » | ٤٠ |
| | وقال الذى آمن يا قوم اتبعون أهدكم سبيل الرشاد | ٣٨ ك | » | ٤٠ |
| | ولمن انتصر بعد ظلمه فأولئك ما عليهم من سبيل ... | ٤١ ك | الشورى | ٤٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| سبيلٍ | : إنما السبيل على الذين يظلمون الناس ... ... ... | ٤٢ | ك الشورى | ٤٢ |
| | يقولون هـل إلى مردّ من سبيل ... ... ... ... | ٤٤ | ك « | ٤٢ |
| | ومن يضلل الله فما له من سبيل ... ... ... ... | ٤٦ | ك « | ٤٢ |
| | وإنهم ليصدونهم عن السبيل ويحسبون أنهم مهتدون | ٣٧ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | الذين كفروا وصـدوا عن سبيل الله أضـل أعمالهم | ١ | م محمـد | ٤٧ |
| | والذين قُتلوا فى سبيل الله فلن يضل أعمالهم ... ... | ٤ | م « | ٤٧ |
| | إن الذين كفروا وصدوا عن سبيل الله وشاقوا الرسول | ٣٢ | م « | ٤٧ |
| | إن الذين كفروا وصدوا عن سبيل الله ثم ماتوا وهم كفار | ٣٤ | م « | ٤٧ |
| | هأنتم هؤلاء تدعون لتنفقوا فى سبيل الله فمنكم من يبخل | ٣٨ | م « | ٤٧ |
| | ثم لم يرتابوا وجاهدوا بأموالهم وأنفسهم فى سبيل الله | ١٥ | م الحجرات | ٤٩ |
| | وما لكم ألا تنفقوا فى سبيل الله ... ... ... ... | ١٠ | م الحـديد | ٥٧ |
| | اتخذوا أيمانهم جُنة فصدوا عن سبيل الله ... ... | ١٦ | م المجادلة | ٥٨ |
| | فقسم الرسول ولذى القربى واليتامى والمساكين وابن السبيل | ٧ | م الحشـر | ٥٩ |
| | ومن يفعله منكم فقد ضل سواء السبيل ... ... ... | ١ | م الممتحنـة | ٦٠ |
| | وتجاهدون فى سبيل الله بأموالكم وأنفسكم ... ... | ١١ | م الصـف | ٦١ |
| | اتخذوا أيمانهم جُنة فصدوا عن سبيل الله ... ... | ٢ | م المنافقون | ٦٣ |
| | وآخرون يقاتلون فى سبيل الله ... ... ... ... ... | ٢٠ | م المـزمل | ٧٣ |
| | إنا هديناه السبيل إما شاكرا وإما كفورا ... ... | ٣ | م الإنسان | ٧٦ |
| | من نطفة خلقه فقدره . ثم السبيل يسره ... ... ... | ٢٠ | ك عبس | ٨٠ |
| السَّبِيلَا | : وقالوا ربنا إنا أطعنا سادتنا وكبراءنا فأضلونا السبيلا | ٦٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| سَبِيلًا | : ولله على الناس حج البيت من استطاع إليه سبيلا | ٩٧ | م آل عمران | ٣ |
| (٢٩) | حتى يتوفاهن الموت أو يجعل الله لهن سبيلا ... ... | ١٥ | م النسـاء | ٤ |
| | إنه كان فاحشة ومقتا وساء سبيلا ... ... ... ... | ٢٢ | م « | ٤ |
| | فإن أطعنكم فلا تبغوا عليهن سبيلا ... ... ... ... | ٣٤ | م « | ٤ |
| | ويقولون للذين كفروا هؤلاء أهدى من الذين آمنوا سبيلا | ٥١ | م « | ٤ |
| | ومن يضلل الله فلن تجد له سبيلا ... ... ... ... | ٨٨ | م « | ٤ |
| | فما جعل الله لكم عليهم سبيلا ... ... ... ... ... | ٩٠ | م « | ٤ |
| | لا يستطيعون حيلة ولا يهتدون سبيلا... ... ... ... | ٩٨ | م « | ٤ |
| | لم يكن الله ليغفر لهم ولا ليهديهم سبيلا ... ... ... | ١٣٧ | م « | ٤ |
| | ولن يجعل الله للكافرين على المؤمنين سبيلا ... ... | ١٤١ | م « | ٤ |
| | ومن يضلل الله فلن تجد له سبيلا... ... ... ... ... | ١٤٣ | م « | ٤ |
| | ويريدون أن يتخذوا بين ذلك سبيلا ... ... ... ... | ١٥٠ | م « | ٤ |
| | وإن يروا سبيل الرشد لا يتخذوه سبيلا ... ... ... | ١٤٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | وإن يروا سبيل الغى يتخذوه سبيلا ... ... ... ... | ١٤٦ | ك « | ٧ |
| | ألم يروا أنه لا يكلمهم ولا يهديهم سبيلا ... ... ... | ١٤٨ | ك « | ٧ |
| | ولا تقربوا الزنى إنه كان فاحشة وساء سبيلا ... ... | ٣٢ | م الإسـراء | ١٧ |
| | إذا لابتغوا إلى ذى العرش سبيلا ... ... ... ... | ٤٢ | ك « | ١٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| سَبِيلًا | : انظر كيف ضربوا لك الأمثال فضلوا فلا يستطيعون سبيلا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٨ | ك الإسـراء | ١٧ |
| | ومن كان فى هذه أعمى فهو فى الآخرة أعمى وأضل سبيلا | ٧٢ | ك « | ١٧ |
| | قل كلٌّ يعمل على شاكلته فربكم أعلم بمن هو أهدى سبيلا | ٨٤ | ك « | ١٧ |
| | ولا تجهر بصلاتك ولا تخافت بها وابتغ بين ذلك سبيلا | ١١٠ | ك « | ١٧ |
| | انظر كيف ضربوا لك الأمثال فضلوا فلا يستطيعون سبيلا | ٩ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| | يقول يا ليتنى اتخذت مع الرسول سبيلا ... ... ... | ٢٧ | ك « | ٢٥ |
| | أولئك شر مكانا وأضل سبيلا ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك « | ٢٥ |
| | وسوف يعلمون حين يرون العـذاب من أضل سبيلا | ٤٢ | ك « | ٢٥ |
| | إن هم إلا كالأنعام بل هم أضل سبيلا ... ... ... | ٤٤ | ك « | ٢٥ |
| | قل ما أسئلكم عليه من أجر إلا من شاء أن يتخذ إلى ربه سبيلا | ٥٧ | ك « | ٢٥ |
| | إن هذه تذكرة فمن شاء اتخذ إلى ربه سبيلا ... ... | ١٩ | ك المزمـل | ٧٣ |
| | إن هذه تذكرة فمن شاء اتخذ إلى ربه سبيلا ... ... | ٢٩ | م الإنسان | ٧٦ |
| سَبِيلَكَ | : وقال موسى ربنا إنك آتيت فرعون وملأه زينة | | | |
| (٢) | وأموالا فى الحياة الدنيا ربنا ليضلوا عن سبيلك | ٨٨ | ك يونس | ١٠ |
| | فاغفر للذين تابوا واتبعوا سبيلك وقهم عذاب الجحيم | ٧ | ك غافـر | ٤٠ |
| سَبِيلَنَا | : وقال الذين كفروا للذين آمنوا اتبعوا سبيلنا... ... | ١٢ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| سَبِيلَهُ | : اتقوا الله وابتغوا إليه الوسيلة وجاهدوا فى سبيله | ٣٥ | م المائدة | ٥ |
| (١٣) | إن ربك هو أعلم من يضل عن سبيله وهو أعلم بالمهتدين | ١١٧ | ك الأنعـام | ٦ |
| | ولا تتبعوا السبل فتفرق بكم عن سبيله ... ... ... | ١٥٣ | م « | ٦ |
| | اشتروا بآيات الله ثمنا قليلا فصدوا عن سبيله ... ... | ٩ | م التـوبة | ٩ |
| | أحب إليكم من الله ورسوله وجهاد فى سبيله ... ... | ٢٤ | م « | ٩ |
| | وجعلوا لله أندادا ليضلوا عن سبيله ... ... ... ... | ٣٠ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | إن ربك هو أعلم بمن ضل عن سبيله وهو أعلم بالمهتدين | ١٢٥ | ك النحـل | ١٦ |
| | فلما بلغا مجمع بينهما نسيا حوتهما فاتخذ سبيله فى البحر سربا | ٦١ | ك الكهف | ١٨ |
| | واتخذ سبيله فى البحر عجبا ... ... ... ... ... | ٦٣ | ك « | ١٨ |
| | وجعل لله أندادا ليضل عن سبيله ... ... ... ... | ٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| | إن ربك هو أعلم بمن ضل عن سبيله وهو أعلم بمن اهتدى | ٣٠ | ك النجـم | ٥٣ |
| | إن الله يحب الذين يقاتلون فى سبيله صفا ... ... | ٤ | م الصـف | ٦١ |
| | إن ربك هو أعلم بمن ضل عن سبيله وهو أعلم بالمهتدين | ٧ | ك القـلم | ٦٨ |
| سَبِيلَهُمْ | : فإن تابوا وأقاموا الصلاة وآتوا الزكاة فخلوا سبيلهم | ٥ | م التـوبة | ٩ |
| سَبِيلِي | : وأوذوا فى سبيلى وقاتلوا وقتلوا لأكفرنّ عنهم سيئاتهم | ١٩٥ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | قل هذه سبيلى أدعوا إلى الله على بصيرة ... ... ... | ١٠٨ | ك يوسـف | ١٢ |
| | إن كنتم خرجتم جهادا فى سبيلى وابتغاء مرضاتى | ١ | م الممتحنـة | ٦٠ |
| سُبُلَ | : يهدى به الله من اتبع رضوانه سبل السلام ... ... | ١٦ | م المائدة | ٥ |
| (٣) | ولا تتبعوا السبل فتفرق بكم عن سبيله... ... ... ... | ١٥٣ | م الأنعـام | ٦ |
| | ثم كلى من كل الثمرات فاسلكى سبل ربك ذللا ... | ٦٩ | ك النحـل | ١٦ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| سُبُلًا | وألقى فى الأرض رواسى أن تميد بكم وأنهارا وسبلا | ١٥ ك النحل | ١٦ |
| (٥) | الذى جعل لكم الأرض مهدا وسلك لكم فيها سبلا | ٥٣ ك طه | ٢٠ |
| | وجعلنا فيها فجاجا سبلا لعلهم يهتدون... ... ... ... | ٣١ ك الأنبياء | ٢١ |
| | الذى جعل لكم الأرض مهدا وجعل لكم فيها سبلا | ١٠ ك الزخرف | ٤٣ |
| | لتسلكوا منها سبلا فجاجا ... ... ... ... ... | ٢٠ ك نوح | ٧١ |
| سُبُلَنَا | وما لنا ألا نتوكل على الله وقد هدانا سبلنا ... ... | ١٢ ك إبراهيم | ١٤ |
| (٢) | والذين جاهدوا فينا لنهدينهم سبلنا وإن الله لمع المحسنين | ٦٩ ك العنكبوت | ٢٩ |

✦✦✦

| | | | |
|---|---|---|---|
| سِتَّةِ | إن ربكم الله الذى خلق السموات والأرض فى ستة أيام | ٥٤ ك الأعراف | ٧ |
| (٧) | إن ربكم الله الذى خلق السموات والأرض فى ستة أيام | ٣ ك يونس | ١٠ |
| | وهو الذى خلق السموات والأرض فى ستة أيام | ٧ ك هود | ١١ |
| | الذى خلق السموات والأرض وما بينهما فى ستة أيام | ٥٩ ك الفرقان | ٢٥ |
| | الله الذى خلق السموات والأرض وما بينهما فى ستة أيام | ٤ ك السجدة | ٣٢ |
| | ولقد خلقنا السموات والأرض وما بينهما فى ستة أيام | ٣٨ م قٓ | ٥٠ |
| | هو الذى خلق السموات والأرض فى ستة أيام | ٤ م الحديد | ٥٧ |
| سِتِّينَ | فمن لم يستطع فإطعام ستين مسكينا ... ... ... ... | ٤ م المجادلة | ٥٨ |

✦✦✦

| | | | |
|---|---|---|---|
| تَسْتَتِرُونَ | وما كنتم تستترون أن يشهد عليكم سمعكم ولا أبصاركم | ٢٢ ك فصلت | ٤١ |
| سِتْرًا | وجدها تطلع على قوم لم نجعل لهم من دونها سترا | ٩٠ م الكهف | ١٨ |
| مَسْتُورًا | وإذا قرأت القرآن جعلنا بينك وبين الذين | | |
| | لا يؤمنون بالآخرة حجابا مستورا... ... ... ... | ٤٥ ك الإسراء | ١٧ |

✦✦✦

| | | | |
|---|---|---|---|
| سَجَدَ | فسجد الملائكة كلهم أجمعون . إلا إبليس أبى | ٣٠ ك الحجر | ١٥ |
| (٢) | فسجد الملائكة كلهم أجمعون . إلا إبليس استكبر | ٧٣ ك صٓ | ٣٨ |
| سَجَدُوا | وإذ قلنا للملائكة اسجدوا لآدم فسجدوا إلا إبليس أبى | ٣٤ م البقرة | ٢ |
| (٦) | فإذا سجدوا فليكونوا من ورائكم ... ... ... ... | ١٠٢ م النساء | ٤ |
| | ثم قلنا للملائكة اسجدوا لآدم فسجدوا إلا إبليس | ١١ ك الأعراف | ٧ |
| | وإذ قلنا للملائكة اسجدوا لآدم فسجدوا إلا إبليس | | |
| | قال أأسجد لمن خلقت طينا... ... ... ... ... | ٦١ ك الإسراء | ١٧ |
| | وإذ قلنا للملائكة اسجدوا لآدم فسجدوا إلا إبليس | | |
| | كان من الجن... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٠ ك الكهف | ١٨ |
| | وإذ قلنا للملائكة اسجدوا لآدم فسجدوا إلا إبليس أبى | ١١٦ ك طه | ٢٠ |
| | يأيها الذين آمنوا اركعوا واسجدوا واعبدوا ربكم | ٧٧ م الحج | ٢٢ |
| | وإذا قيل لهم اسجدوا للرحمن قالوا وما الرحمن... ... | ٦٠ ك الفرقان | ٢٥ |
| | لا تسجدوا للشمس ولا للقمر واسجدوا لله الذى خلقهن | ٣٧ ك فصلت | ٤١ |
| | فاسجدوا لله واعبدوا ... ... ... ... ... ... | ٦٢ ك النجم | ٥٣ |
| اسْجُدِى | يا مريم اقنتى لربك واسجدى واركعى مع الراكعين | ٤٣ م آل عمران | ٣ |
| السُّجُودِ | سيماهم فى وجوههم من أثر السجود ... ... | ٢٩ م الفتح | ٤٨ |
| (٤) | ومن الليل فسبحه وأدبار السجود ... ... ... ... | ٤٠ ك قٓ | ٥٠ |
| | يوم يكشف عن ساق ويدعون إلى السجود فلا يستطيعون | ٤٢ ك القلم | ٦٨ |
| | وقد كانوا يدعون إلى السجود وهم سالمون ... ... | ٤٣ ك « | ٦٨ |
| سَاجِدًا | أمن هو قانت آناء الليل ساجدا وقائما يحذر الآخرة | ٩ ك الزمر | ٣٩ |
| السَّاجِدُونَ | الراكعون الساجدون الآمرون بالمعروف | | |
| | والناهون عن المنكر ... ... ... ... ... ... | ١١٢ م التوبة | ٩ |
| السَّاجِدِينَ | فسجدوا إلا إبليس لم يكن من الساجدين | ١١ ك الأعراف | ٧ |
| (١٠) | وألقى السحرة ساجدين . قالوا آمنا برب العالمين | ١٢٠ ك « | ٧ |
| | إنى رأيت أحد عشر كوكبا والشمس والقمر رأيتهم | | |
| | لى ساجدين ... ... ... ... ... ... ... | ٤ ك يوسف | ١٢ |
| | فإذا سويته ونفخت فيه من روحى فقعوا له ساجدين | ٢٩ ك الحجر | ١٥ |
| | إلا إبليس أبى أن يكون مع الساجدين ... ... ... | ٣١ ك « | ١٥ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| يَسْجُدُ | ولله يسجد من فى السموات والأرض طوعا وكرها | ١٥ م الرعد | ١٣ |
| (٣) | ولله يسجد ما فى السموات وما فى الأرض ... ... | ٤٩ ك النحل | ١٦ |
| | ألم تر أن الله يسجد له من فى السموات ومن فى الأرض | ١٨ م الحج | ٢٢ |
| يَسْجُدَانِ | والنجم والشجر يسجدان ... ... ... ... ... | ٦ م الرحمن | ٥٥ |
| يَسْجُدُوا | ألا يسجدوا لله الذى يخرج الخبء فى السموات | | |
| | والأرض ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥ ك النمل | ٢٧ |
| يَسْجُدُونَ | يتلون آيات الله آناء الليل وهم يسجدون | ١١٣ م آل عمران | ٣ |
| (٤) | إن الذين عند ربك لا يستكبرون عن عبادته | | |
| | ويسبحونه وله يسجدون ... ... ... ... ... | ٢٠٦ ك الأعراف | ٧ |
| | وجدتها وقومها يسجدون للشمس من دون الله... ... | ٢٤ ك النمل | ٢٧ |
| | وإذا قرىء عليهم القرآن لا يسجدون ... ... ... | ٢١ ك الانشقاق | ٨٤ |
| اسْجُدْ | ومن الليل فاسجد له وسبحه ليلا طويلا... .. ... | ٢٦ م الإنسان | ٧٦ |
| (٢) | كلا لا تطعه واسجد واقترب... ... ... ... ... | ١٩ ك العلق | ٩٦ |
| اسْجُدُوا | وإذ قلنا للملائكة اسجدوا لآدم فسجدوا إلا إبليس أبى | ٣٤ م البقرة | ٢ |
| (٩) | ثم قلنا للملائكة اسجدوا لآدم فسجدوا إلا إبليس | ١١ ك الأعراف | ٧ |
| | وإذ قلنا للملائكة اسجدوا لآدم فسجدوا إلا إبليس | | |
| | قال أأسجد لمن خلقت طينا... ... ... ... ... | ٦١ ك الإسراء | ١٧ |
| | وإذ قلنا للملائكة اسجدوا لآدم فسجدوا إلا إبليس | | |
| | كان من الجن... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٠ ك الكهف | ١٨ |
| | وإذ قلنا للملائكة اسجدوا لآدم فسجدوا إلا إبليس أبى | ١١٦ ك طه | ٢٠ |
| | يأيها الذين آمنوا اركعوا واسجدوا واعبدوا ربكم | ٧٧ م الحج | ٢٢ |
| | وإذا قيل لهم اسجدوا للرحمن قالوا وما الرحمن... ... | ٦٠ ك الفرقان | ٢٥ |
| | لا تسجدوا للشمس ولا للقمر واسجدوا لله الذى خلقهن | ٣٧ ك فصلت | ٤١ |
| | فاسجدوا لله واعبدوا ... ... ... ... ... ... | ٦٢ ك النجم | ٥٣ |
| اسْجُدِى | يا مريم اقنتى لربك واسجدى واركعى مع الراكعين | ٤٣ م آل عمران | ٣ |
| السُّجُودِ | سيماهم فى وجوههم من أثر السجود ... ... | ٢٩ م الفتح | ٤٨ |
| (٤) | ومن الليل فسبحه وأدبار السجود ... ... ... ... | ٤٠ ك قٓ | ٥٠ |
| | يوم يكشف عن ساق ويدعون إلى السجود فلا يستطيعون | ٤٢ ك القلم | ٦٨ |
| | وقد كانوا يدعون إلى السجود وهم سالمون ... ... | ٤٣ ك « | ٦٨ |
| سَاجِدًا | أمن هو قانت آناء الليل ساجدا وقائما يحذر الآخرة | ٩ ك الزمر | ٣٩ |
| السَّاجِدُونَ | الراكعون الساجدون الآمرون بالمعروف | | |
| | والناهون عن المنكر ... ... ... ... ... ... | ١١٢ م التوبة | ٩ |
| السَّاجِدِينَ | فسجدوا إلا إبليس لم يكن من الساجدين | ١١ ك الأعراف | ٧ |
| (١٠) | وألقى السحرة ساجدين . قالوا آمنا برب العالمين | ١٢٠ ك « | ٧ |
| | إنى رأيت أحد عشر كوكبا والشمس والقمر رأيتهم | | |
| | لى ساجدين ... ... ... ... ... ... ... | ٤ ك يوسف | ١٢ |
| | فإذا سويته ونفخت فيه من روحى فقعوا له ساجدين | ٢٩ ك الحجر | ١٥ |
| | إلا إبليس أبى أن يكون مع الساجدين ... ... ... | ٣١ ك « | ١٥ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| السَّاجِدِينَ | : قال يا إبليس مالك ألا تكون مع الساجدين | ٣٢ ك الحجر | ١٥ |
| | فسبح بحمد ربك وكن من الساجدين ... ... ... ... | ٩٨ ك » | ١٥ |
| | فألقى السحرة ساجدين . قالوا آمنا برب العالمين ... | ٤٦ ك الشعراء | ٢٦ |
| | الذى يراك حين تقوم وتقلبك فى الساجدين ... ... | ٢١٩ ك » | ٢٦ |
| | فإذا سويته ونفخت فيه من روحى فقعوا له ساجدين | ٧٢ ك ص | ٣٨ |
| سُجَّدًا | : فكلوا منها حيث شئتم رغدا وادخلوا الباب سجدا | ٥٨ م البقرة | ٢ |
| (١١) | ورفعنا فوقهم الطور بميثاقهم وقلنا لهم ادخلوا الباب سجدا | ١٥٤ م النساء | ٤ |
| | وقولوا حطة وادخلوا الباب سجدا نغفر لكم خطيئاتكم | ١٦١ ك الأعراف | ٧ |
| | ورفع أبويه على العرش وخروا له سجدا ... ... ... | ١٠٠ ك يوسف | ١٢ |
| | يتفيؤا ظلاله عن اليمين والشمائل سجدا لله وهم داخرون | ٤٨ ك النحل | ١٦ |
| | إذا يتلى عليهم يخرون للأذقان سجدا ... ... ... | ١٠٧ ك الإسراء | ١٧ |
| | إذا تتلى عليهم آيات الرحمن خروا سجدا وبكيا | ٥٨ م مريم | ١٩ |
| | فألقى السحرة سجدا قالوا آمنا برب هرون وموسى | ٧٠ ك طه | ٢٠ |
| | والذين يبيتون لربهم سجدا وقياما ... ... ... ... | ٦٤ ك الفرقان | ٢٥ |
| | إنما يؤمن بآياتنا الذين إذا ذكروا بها خروا سجدا | ١٥ ك السجدة | ٣٢ |
| | تراهم ركعا سجدا يبتغون فضلا من الله ورضوانا | ٢٩ م الفتح | ٤٨ |
| السُّجُود | : أن طهرا بيتى للطائفين والعاكفين والركع السجود | ١٢٥ م البقرة | ٢ |
| (٢) | وطهر بيتى للطائفين والقائمين والركع السجود ... ... | ٢٦ م الحج | ٢٢ |
| مَسْجِد | : فلنولينك قبلة ترضاها فول وجهك شطر المسجد الحرام | ١٤٤ م البقرة | ٢ |
| (٢٠) | ومن حيث خرجت فول وجهك شطر المسجد الحرام | ١٤٩ م » | ٢ |
| | ومن حيث خرجت فول وجهك شطر المسجد الحرام | ١٥٠ م » | ٢ |
| | ولا تقاتلوهم عند المسجد الحرام حتى يقاتلوكم فيه | ١٩١ م » | ٢ |
| | ذلك لمن لم يكن أهله حاضرى المسجد الحرام ... ... | ١٩٦ م » | ٢ |
| | وصد عن سبيل الله وكفر به والمسجد الحرام ... ... | ٢١٧ م » | ٢ |
| | ولا يجرمنكم شنآن قوم أن صدوكم عن المسجد الحرام أن تعتدوا ... ... ... ... ... ... | ٢ م المائدة | ٥ |
| | وأقيموا وجوهكم عند كل مسجد وادعوه مخلصين له الدين | ٢٩ ك الأعراف | ٧ |
| | يا بنى آدم خذوا زينتكم عند كل مسجد ... ... ... | ٣١ ك » | ٧ |
| | وما لهم ألا يعذبهم الله وهم يصدون عن المسجد الحرام | ٣٤ ك الأنفال | ٨ |
| | إلا الذين عاهدتم عند المسجد الحرام ... ... ... | ٧ م التوبة | ٩ |
| | أجعلتم سقاية الحاج وعمارة المسجد الحرام كمن آمن بالله | ١٩ م » | ٩ |
| | فلا يقربوا المسجد الحرام بعد عامهم هذا ... ... | ٢٨ م » | ٩ |
| | لمسجد أسس على التقوى من أول يوم أحق أن تقوم فيه | ١٠٨ م » | ٩ |
| | سبحان الذى أسرى بعبده ليلا من المسجد الحرام ... | ١ ك الإسراء | ١٧ |
| | إلى المسجد الأقصا الذى باركنا حوله لنريه من آياتنا | ١ ك » | ١٧ |
| | وليدخلوا المسجد كما دخلوه أول مرة ... ... ... | ٧ ك » | ١٧ |
| | إن الذين كفروا ويصدون عن سبيل الله والمسجد الحرام | ٢٥ م الحج | ٢٢ |
| مَسْجِدٍ | : هم الذين كفروا وصدوكم عن المسجد الحرام ... | ٢٥ م الفتح | ٤٨ |
| | لتدخلن المسجد الحرام إن شاء الله آمنين ... ... ... | ٢٧ م » | ٤٨ |
| مَسْجِدًا | : والذين اتخذوا مسجدا ضرارا وكفرا وتفريقا | | |
| (٢) | بين المؤمنين ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٧ م التوبة | ٩ |
| | قال الذين غلبوا على أمرهم لنتخذن عليهم مسجدا | ٢١ ك الكهف | ١٨ |
| مَسَاجِد | : ومن أظلم ممن منع مساجد الله أن يذكر فيها اسمه | ١١٤ م البقرة | ٢ |
| (٦) | ولا تباشروهن وأنتم عاكفون فى المساجد... ... ... | ١٨٧ م » | ٢ |
| | ما كان للمشركين أن يعمروا مساجد الله شاهدين على أنفسهم بالكفر ... ... ... ... ... ... | ١٧ م التوبة | ٩ |
| | إنما يعمر مساجد الله من آمن بالله واليوم الآخر | ١٨ م » | ٩ |
| | لهدمت صوامع وبيع وصلوات ومساجد يذكر فيها اسم الله كثيرا ... ... ... ... ... ... ... | ٤٠ م الحج | ٢٢ |
| | وأن المساجد لله فلا تدعوا مع الله أحدا ... ... ... | ١٨ ك الجن | ٧٢ |
| يُسْجَرُونَ | : فى الحميم ثم فى النار يسجرون ... ... ... ... | ٧٢ ك غافر | ٤٠ |
| سُجِّرَتْ | : وإذا البحار سجرت... ... ... ... ... ... ... | ٦ ك التكوير | ٨١ |
| المَسْجُورِ | : والبحر المسجور . إن عذاب ربك لواقع... ... | ٦ ك الطور | ٥٢ |
| السِّجِلِّ | : يوم نطوى السماء كطى السجل للكتب ... ... | ١٠٤ ك الأنبياء | ٢١ |
| سِجِّيل | : وأمطرنا عليها حجارة من سجيل منضود ... ... ... | ٨٢ ك هود | ١١ |
| (٣) | فجعلنا عاليها سافلها وأمطرنا عليهم حجارة من سجيل | ٧٤ ك الحجر | ١٥ |
| | وأرسل عليهم طيرا أبابيل . ترميهم بحجارة من سجيل | ٤ ك الفيل | ١٠٥ |
| لَيَسْجُنُنَّهُ | : ثم بدا لهم من بعد ما رأوا الآيات ليسجننه حتى حين | ٣٥ ك يوسف | ١٢ |
| يُسْجَنَ | : إلا أن يسجن أو عذاب أليم... ... ... ... ... | ٢٥ ك » | ١٢ |
| لَيُسْجَنَنَّ | : ليسجنن وليكونا من الصاغرين... ... ... ... | ٣٢ ك » | ١٢ |
| المَسْجُونِينَ | : لأجعلنك من المسجونين ... ... ... ... | ٢٩ ك الشعراء | ٢٦ |
| السِّجْنُ | : قال رب السجن أحب إلى مما يدعوننى إليه | ٣٣ ك يوسف | ١٢ |
| (٦) | ودخل معه السجن فتيان قال أحدهما إنى أرانى أعصر خمرا | ٣٦ ك » | ١٢ |
| | يا صاحبى السجن أأرباب متفرقون خير أم الله الواحد القهار... ... ... ... ... ... ... | ٣٩ ك » | ١٢ |
| | يا صاحبى السجن أما أحدكما فيسقى ربه خمرا ... ... | ٤١ ك » | ١٢ |
| | فأنساه الشيطان ذكر ربه فلبث فى السجن بضع سنين | ٤٢ ك » | ١٢ |
| | وقد أحسن بى إذ أخرجنى من السجن وجاء بكم من البدو | ١٠٠ ك » | ١٢ |
| سِجِّينٍ | : كلا إن كتاب الفجار لفى سجين ... ... ... ... | ٧ ك المطففين | ٨٣ |
| (٢) | وما أدراك ما سجين . كتاب مرقوم ... ... ... ... | ٨ ك » | ٨٣ |
| سَجَى | : والضحى . والليل إذا سجى . ما ودعك ربك وما قلى | ٢ ك الضحى | ٩٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | * * * | | | |
| يُسْحَبُونَ: | إذ الأغلال فى أعناقهم والسلاسل يسحبون | ٧١ | ك غافـر | ٤٠ |
| (٢) | يوم يسحبون فى النار على وجوههم ذوقوا مس سقر | ٤٨ | ك القـمر | ٥٤ |
| سَحَابٌ: | وتصريف الرياح والسحاب المسخر بين السماء | | | |
| (٥) | والأرض لآيات لقوم يعقلون ... ... ... ... | ١٦٤ | م البقـرة | ٢ |
| | هو الذى يريكم البرق خوفا وطمعا وينشئ السحاب الثقال | ١٢ | م الرعـد | ١٣ |
| | يغشاه موج من فوقه موج من فوقه سحاب ... ... | ٤٠ | م النـور | ٢٤ |
| | وترى الجبال تحسبها جامدة وهى تمر مر السحاب | ٨٨ | ك النمـل | ٢٧ |
| | وإن يروا كسفا من السماء ساقطا يقولوا سحاب مركوم | ٤٤ | ك الطـور | ٥٢ |
| سَحَابًا: | حتى إذا أقلت سحابا ثقالا سقناه لبلد ميت فأنزلنا به الماء | ٥٧ | ك الأعراف | ٧ |
| (٤) | ألم تر أن الله يزجى سحابا ثم يؤلف بينه ثم يجعله ركاما | ٤٣ | م النـور | ٢٤ |
| | الله الذى يرسل الرياح فتثير سحابا فيبسطه فى السماء كيف يشاء | ٤٨ | ك الروم | ٣٠ |
| | والله الذى أرسل الرياح فتثير سحابا فسقناه إلى بلد ميت | ٩ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | * * * | | | |
| فَيُسْحِتَكُمْ: | لا تفتروا على الله كذبا فيسحتكم بعذاب | ٦١ | ك طـه | ٢٠ |
| السُّحْتَ: | سماعون للكذب أكالون للسحت ... ... ... | ٤٢ | م المائدة | ٥ |
| (٣) | وترى كثيرا منهم يسارعون فى الإثم والعدوان . | | | |
| | وأكلهم السحت ... ... ... ... ... ... | ٦٢ | م » | ٥ |
| | لولا ينهاهم الربانيون والأحبار عن قولهم الإثم | | | |
| | وأكلهم السحت ... ... ... ... ... ... | ٦٣ | م » | ٥ |
| | * * * | | | |
| سَحَرُوا: | فلما ألقوا سحروا أعين الناس واسترهبوهم ... ... | ١١٦ | ك الأعراف | ٧ |
| لَتَسْحَرَنَا: | وقالوا مهما تأتنا به من آية لتسحرنا بها فما | | | |
| | نحن لك بمؤمنين ... ... ... ... ... ... | ١٣٢ | ك » | ٧ |
| تُسْحَرُونَ: | سيقولون لله قل فأنى تسحرون ... ... ... | ٨٩ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| سِحْرٌ: | يعلمون الناس السحر وما أنزل على الملكين ببابل ... | ١٠٢ | م البقـرة | ٢ |
| (٢٣) | فقال الذين كفروا منهم إن هذا إلا سحر مبين... ... | ١١٠ | م المائدة | ٥ |
| | فلمسوه بأيديهم لقال الذين كفروا إن هذا إلا سحر مبين | ٧ | ك الأنعام | ٦ |
| | سحروا أعين الناس واسترهبوهم وجاءوا بسحر عظيم | ١١٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | فلما جاءهم الحق من عندنا قالوا إن هـذا لسحر مبين | ٧٦ | ك يـونس | ١٠ |
| | أسحر هذا ولا يفلح الساحرون ... ... ... ... | ٧٧ | ك » | ١٠ |
| | فلما ألقوا قال موسى ما جئتم به السحر إن الله سيبطله | ٨١ | ك » | ١٠ |
| | ليقولن الذين كفروا إن هذا إلا سحر مبين ... ... | ٧ | ك هـود | ١١ |
| | فلنأتينك بسحر مثله فاجعل بيننا وبينك موعدا | ٥٨ | ك طـه | ٢٠ |
| | إنه لكبيركم الذى علمكم السحر ... ... ... ... | ٧١ | ك » | ٢٠ |
| | إنا آمنا بربنا ليغفر لنا خطايانا وما أكرهتنا عليه من السحر | ٧٣ | ك » | ٢٠ |
| | هل هذا إلا بشر مثلكم أفتأتون السحر وأنتم تبصرون | ٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | إنه لكبيركم الذى علمكم السحر فلسوف تعلمون... ... | ٤٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فلما جاءتهم آياتنا مبصرة قالوا هذا سحر مبين... ... | ١٣ | ك النمـل | ٢٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| سِحْرٌ: | فلما جاءهم موسى بآياتنا بينات قالوا ما هذا إلا سحر مفترى | ٣٦ | ك القصص | ٢٨ |
| | وقال الذين كفروا للحق لما جاءهم إن هذا إلا سحر مبين | ٤٣ | ك سبـأ | ٣٤ |
| | وقالوا إن هـذا إلا سحر مبين ... ... ... ... ... | ١٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| | ولما جاءهم الحق قالوا هـذا سحر وإنا به كافرون | ٣٠ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | قال الذين كفروا للحق لما جاءهم هـذا سحر مبين | ٧ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | أفسحر هذا أم أنتم لا تبصرون ... ... ... ... ... | ١٥ | ك الطـور | ٥٢ |
| | وإن يروا آية يعرضوا ويقولوا سحر مستمر ... ... | ٢ | ك القـمر | ٥٤ |
| | فلما جاءهم بالبينات قالوا هذا سحر مبين ... ... ... | ٦ | م الصـف | ٦١ |
| | فقال إن هذا إلا سحر يؤثر ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك المـدثر | ٧٤ |
| بِسِحْرِكَ: | قال أجئتنا لتخرجنا من أرضنا بسحرك يا موسى | ٥٧ | ك طـه | ٢٠ |
| بِسِحْرِهِ: | يريد أن يخرجكم من أرضكم بسحره فماذا تأمرون | ٣٥ | ك الشعراء | ٢٦ |
| بِسِحْرِهِمَا: | يريدان أن يخرجاكم من أرضكم بسحرهما | ٦٣ | ك طـه | ٢٠ |
| سِحْرِهِمْ: | فإذا حبالهم وعصيهم يخيل إليه من سحرهم أنها تسعى | ٦٦ | ك » | ٢٠ |
| سِحْرَانِ: | قالوا سحران تظاهرا وقالوا إنا بكل كافرون | ٤٨ | ك القصص | ٢٨ |
| سَاحِرٌ: | قال الملأ من قوم فرعون إن هـذا لساحر عليم | ١٠٩ | ك الأعراف | ٧ |
| (١٢) | وأرسل فى المدائن حاشرين . يأتوك بكل ساحر عليم | ١١٢ | ك » | ٧ |
| | قال الكافرون إن هذا لساحر مبين ... ... ... ... | ٢ | ك يـونس | ١٠ |
| | وقال فرعون ائتونى بكل ساحر عليم ... ... ... ... | ٧٩ | ك » | ١٠ |
| | وألق ما فى يمينك تلقف ما صنعوا إنما صنعوا كيد ساحر | ٦٩ | ك طـه | ٢٠ |
| | ولا يفلح الساحر حيث أتى ... ... ... ... ... | ٦٩ | ك » | ٢٠ |
| | قال للملإ حوله إن هذا لساحر عليم ... ... ... ... | ٣٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وقال الكافرون هذا ساحر كذاب ... ... ... ... | ٤ | ك ص | ٣٨ |
| | إلى فرعون وهامان وقارون فقالوا ساحر كذاب... ... | ٢٤ | ك غافـر | ٤٠ |
| | وقالوا يا أيه الساحر ادع لنا ربك بما عهد عندك | ٤٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | فتولى بركنه وقال ساحر أو مجنون ... ... ... ... | ٣٩ | ك الذاريات | ٥١ |
| | كذلك ما أتى الذين من قبلهم من رسول إلا قالوا | | | |
| | ساحر أو مجنـون ... ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك » | ٥١ |
| سَاحِرَانِ: | قالوا إن هذان لساحران يريدان أن يخرجاكم | | | |
| | من أرضكم بسحرهما ... ... ... ... ... ... | ٦٣ | ك طـه | ٢٠ |
| السَّاحِرُونَ: | أسحر هذا ولا يفلح الساحرون ... ... ... ... | ٧٧ | ك يـونس | ١٠ |
| السَّحَرَةُ: | وجاء السحرة فرعون قالوا إن لنا لأجرا إن كنا | | | |
| (٨) | نحن الغالبين ... ... ... ... ... ... ... | ١١٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | وألقى السحرة ساجدين ... ... ... ... ... ... | ١٢٠ | ك » | ٧ |
| | فلما جاء السحرة قال لهم موسى ألقوا ما أنتم ملقون | ٨٠ | ك يـونس | ١٠ |
| | فألقى السحرة سجـدا قالوا آمنا برب هرون وموسى | ٧٠ | ك طـه | ٢٠ |
| | لجمع السحرة لميقات يوم معلوم ... ... ... ... | ٣٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | لعلنا نتبع السحرة إن كانوا هم الغالبين ... ... ... | ٤٠ | ك » | ٢٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| السَّحَرَةُ: | فلما جاء السحرة قالوا لفرعون أئن لنا لأجرًا ... | ٤١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فألقى السحرة ساجدين ... ... ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك « | ٢٦ |
| سَحَّارٍ: | وأبعث فى المدائن حاشرين . يأتوك بكل سحار عليم | ٣٧ | ك « | ٢٦ |
| مَسْحُورًا: | إذ يقول الظالمون إن تتبعون إلا رجلا مسحورا | ٤٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٣) | فقال له فرعون إنى لأظنك يا موسى مسحورا ... ... | ١٠١ | ك « | ١٧ |
| | وقال الظالمون إن تتبعون إلا رجلا مسحورا ... ... | ٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| مَسْحُورُونَ: | بل نحن قوم مسحورون ... ... ... ... ... | ١٥ | ك الحجر | ١٥ |
| الْمُسَحَّرِينَ: | قالوا إنما أنت من المسحرين ... ... ... | ١٥٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| (٢) | قالوا إنما أنت من المسحرين . وما أنت إلا بشر مثلنا | ١٨٥ | ك « | ٢٦ |
| سَحَرٍ: | إنا أرسلنا عليهم حاصبا إلا آل لوط نجيناهم بسحر | ٣٤ | ك القمر | ٥٤ |
| بِالْأَسْحَارِ: | الصابرين والصادقين والقانتين والمنفقين | | | |
| (٢) | والمستغفرين بالأسحار ... ... ... ... ... | ١٧ | م آل عمران | ٣ |
| | وبالأسحار هم يستغفرون... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك الذاريات | ٥١ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| سُحْقًا: | فاعترفوا بذنبهم فسحقا لأصحاب السعير ... ... ... | ١١ | ك الملك | ٦٧ |
| سَحِيقٍ: | فتخطفه الطير أو تهوى به الريح فى مكان سحيق | ٣١ | م الحج | ٢٢ |
| إِسْحَقَ: | قالوا نعبد إلهك وإله آبائك إبراهيم وإسمعيل | | | |
| (١٧) | وإسحق... ... ... ... ... ... ... ... | ١٣٣ | م البقرة | ٢ |
| | وما أنزل إلى إبراهيم وإسمعيل وإسحق ... ... ... | ١٣٦ | م « | ٢ |
| | أم تقولون إن إبراهيم وإسمعيل وإسحق ويعقوب | | | |
| | والأسباط كانوا هودا أو نصارى ... ... ... | ١٤٠ | م « | ٢ |
| | قل آمنا بالله وما أنزل علينا وما أنزل على إبراهيم | | | |
| | وإسمعيل وإسحق ويعقوب والأسباط ... ... | ٨٤ | م آل عمران | ٣ |
| | وأوحينا إلى إبراهيم وإسمعيل وإسحق ويعقوب | ١٦٣ | م النساء | ٤ |
| | ووهبنا له إسحق ويعقوب كلا هدينا ... ... ... ... | ٨٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | وامرأته قائمة فضحكت فبشرناها بإسحق ... ... ... | ٧١ | ك هود | ١١ |
| | ومن وراء إسحق يعقوب ... ... ... ... ... ... | ٧١ | ك « | ١١ |
| | كما أتمها على أبويك من قبل إبراهيم وإسحق... ... | ٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | واتبعت ملة آبائى إبراهيم وإسحق ويعقوب ... ... | ٣٨ | ك « | ١٢ |
| | الحمد لله الذى وهب لى على الكبر إسمعيل وإسحق | ٣٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | فلما اعتزلهم وما يعبدون من دون الله وهبنا له إسحق | | | |
| | ويعقوب ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك مريم | ١٩ |
| | ووهبنا له إسحق ويعقوب نافلة وكلا جعلنا صالحين | ٧٢ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ووهبنا له إسحق ويعقوب وجعلنا فى ذريته النبوة والكتاب | ٢٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وبشرناه بإسحق نبيا من الصالحين ... ... ... ... | ١١٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| | وباركنا عليه وعلى إسحق... ... ... ... ... ... | ١١٣ | ك « | ٣٧ |
| | واذكر عبادنا إبراهيم وإسحق ويعقوب ... ... ... | ٤٥ | ك ص | ٣٨ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| بِالسَّاحِلِ: | فاقذفيه فى اليم فليلقه اليم بالساحل... ... ... ... | ٣٩ | ك طه | ٢٠ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| سَخِرَ: | فيسخرون منهم سخر الله منهم ولهم عذاب أليم ... ... | ٧٩ | م التوبة | ٩ |
| سَخِرُوا: | فحاق بالذين سخروا منهم ما كانوا به يستهزئون | ١٠ | ك الأنعام | ٦ |
| (٣) | ويصنع الفلك وكلما مر عليه ملأ من قومه سخروا منه | ٣٨ | ك هود | ١١ |
| | فحاق بالذين سخروا منهم ما كانوا به يستهزئون ... ... | ٤١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| تَسْخَرُوا: | قال إن تسخروا منا فإنا نسخر منكم ... ... ... | ٣٨ | ك هود | ١١ |
| تَسْخَرُونَ: | كما تسخرون... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك « | ١١ |
| تَسْخَرُ: | قال إن تسخروا منا فإنا نسخر منكم كما تسخرون | ٣٨ | ك « | ١١ |
| يَسْخَرْ: | لا يسخر قوم من قوم عسى أن يكونوا خيرا منهم | ١١ | م الحجرات | ٤٩ |
| يَسْخَرُونَ: | زين للذين كفروا الحياة الدنيا ويسخرون | | | |
| (٣) | من الذين آمنوا ... ... ... ... ... ... ... | ٢١٢ | م البقرة | ٢ |
| | فيسخرون منهم سخر الله منهم ... ... ... ... ... | ٧٩ | م التوبة | ٩ |
| | بل عجبت ويسخرون ... ... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| سَخَّرَ: | ثم استوى على العرش وسخر الشمس والقمر ... ... | ٢ | م الرعد | ١٣ |
| (١٦) | وسخر لكم الفلك لتجرى فى البحر بأمره ... ... ... | ٣٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وسخر لكم الأنهار ... ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك « | ١٤ |
| | وسخر لكم الشمس والقمر دائبين... ... ... ... ... | ٣٣ | ك « | ١٤ |
| | وسخر لكم الليل والنهار ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك « | ١٤ |
| | وسخر لكم الفلك والنهار والشمس والقمر ... ... ... | ١٢ | ك النحل | ١٦ |
| | وهو الذى سخر البحر لتأكلوا منه لحما طريا ... ... | ١٤ | ك « | ١٦ |
| | ألم تر أن الله سخر لكم ما فى الأرض ... ... ... ... | ٦٥ | م الحج | ٢٢ |
| | ولئن سألتهم من خلق السموات والأرض وسخر الشمس | | | |
| | والقمر ليقولن الله ... ... ... ... ... ... ... | ٦١ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ألم تروا أن الله سخر لكم ما فى السموات وما فى الأرض | ٢٠ | ك لقمان | ٣١ |
| | وسخر الشمس والقمر كل يجرى إلى أجل مسمى ... | ٢٩ | م « | ٣١ |
| | وسخر الشمس والقمر كل يجرى لأجل مسمى ذلكم الله ربكم | ١٣ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وسخر الشمس والقمر كل يجرى لأجل مسمى ... ... | ٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| | سبحان الذى سخر لنا هذا وما كنا له مقرنين ... ... | ١٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | الله الذى سخر لكم البحر لتجرى الفلك فيه بأمره ... | ١٢ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | وسخر لكم ما فى السموات وما فى الأرض جميعا منه | ١٣ | ك « | ٤٥ |
| سَخَّرْنَا: | وسخرنا مع داود الجبال يسبحن والطير ... ... ... | ٧٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٣) | إنا سخرنا الجبال معه يسبحن بالعشى والإشراق... ... | ١٨ | ك ص | ٣٨ |
| | فسخرنا له الريح تجرى بأمره رخاء حيث أصاب | ٣٦ | ك « | ٣٨ |
| سَخَّرْنَاهَا: | كذلك سخرناها لكم لعلكم تشكرون ... ... ... | ٣٦ | م الحج | ٢٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| سَخَّرَهَا: | كذلك سخرها لكم لتكبروا الله على ما هداكم | ٣٧ | م الحج | ٢٢ |
| (٢) | سخرها عليهم سبع ليال وثمانية أيام حسوما ... ... | ٧ | ك الحاقة | ٦٩ |
| يَسْتَسْخِرُونَ: | وإذا رأوا آية يستسخرون... ... ... ... | ١٤ | ك الصافات | ٣٧ |
| السَّاخِرِينَ: | ياحسرتى على مافرطت فى جنب الله وإن كنت من الساخرين ... ... ... ... ... ... ... | ٥٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| سِخْرِيًّا: | فاتخذتموهم سخريا حتى أنسوكم ذكرى ... ... ... | ١١٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٢) | أتخذناهم سخريا أم زاغت عنهم الأبصار ... ... ... | ٦٣ | ك ص | ٣٨ |
| سُخْرِيًّا: | ورفعنا بعضهم فوق بعض درجات ليتخذ بعضهم بعضا سخريا ... ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| الْمُسَخَّرِ: | والسحاب المسخر بين السماء والأرض لآيات لقوم يعقلون ... ... ... ... ... ... ... | ١٦٤ | م البقرة | ٢ |
| مُسَخَّرَاتٌ: | والشمس والقمر والنجوم مسخرات بأمره | ٥٤ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | والنجوم مسخرات بأمره إن فى ذلك لآيات لقوم يعقلون | ١٢ | ك النحل | ١٦ |
| | ألم يروا إلى الطير مسخرات فى جو السماء ما يمسكهن إلا الله | ٧٩ | ك « | ١٦ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| سَخِطَ: | لبئس ما قدمت لهم أنفسهم أن سخط الله عليهم ... | ٨٠ | م المائدة | ٥ |
| يَسْخَطُونَ: | وإن لم يعطوا منها إذا هم يسخطون ... ... | ٥٨ | م التوبة | ٩ |
| أَسْخَطَ: | ذلك بأنهم اتبعوا ما أسخط الله وكرهوا رضوانه... | ٢٨ | م محمد | ٤٧ |
| سَخَطٍ: | أفمن اتبع رضوان الله كمن باء بسخط من الله ... | ١٦٢ | م آل عمران | ٣ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| سَدًّا: | فهل نجعل لك خرجا على أن تجعل بيننا وبينهم سدا | ٩٤ | م الكهف | ١٨ |
| (٣) | وجعلنا من بين أيديهم سدا ... ... ... ... ... | ٩ | ك يس | ٣٦ |
| | ومن خلفهم سدا فأغشيناهم فهم لا يبصرون ... ... | ٩ | ك « | ٣٦ |
| السَّدَّيْنِ: | حتى إذا بلغ بين السدين وجد من دونهما قوما لا يكادون يفقهون قولا ... ... ... ... | ٩٣ | م الكهف | ١٨ |
| سَدِيدًا: | فليتقوا الله وليقولوا قولا سديدا ... ... ... | ٩ | م النساء | ٤ |
| (٢) | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله وقولوا قولا سديدا ... | ٧٠ | م الأحزاب | ٣٣ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| سِدْرٍ: | ذواتى أكل خمط وأثل وشىء من سدر قليل... ... | ١٦ | ك سبإ | ٣٤ |
| (٢) | وأصحاب اليمين ما أصحاب اليمين . فى سدر مخضود | ٢٨ | ك الواقعة | ٥٦ |
| سِدْرَةِ: | ولقد رآه نزلة أخرى . عند سدرة المنتهى ... ... | ١٤ | ك النجم | ٥٣ |
| (٢) | إذ يغشى السدرة ما يغشى ... ... ... ... ... | ١٦ | ك « | ٥٣ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| السُّدُسُ: | ولأبويه لكل واحد منهما السدس مما ترك إن كان له ولد ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | م النساء | ٤ |
| (٣) | فإن كان له أخوة فلأمه السدس... ... ... ... | ١١ | م « | ٤ |
| | وله أخ أو أخت فلكل واحد منهما السدس ... ... | ١٢ | م « | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| سَادِسُهُمْ: | ويقولون خمسة سادسهم كلبهم رجما بالغيب... | ٢٢ | ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | ولا خمسة إلا هو سادسهم ... ... ... ... ... ... | ٧ | م المجادلة | ٥٨ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| سُدًى: | أيحسب الإنسان أن يترك سدى ... ... ... ... | ٣٦ | ك القيامة | ٧٥ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| سَرَبًا: | فلما بلغا مجمع بينهما نسيا حوتهما فاتخذ سبيله فى البحر سربا | ٦١ | ك الكهف | ١٨ |
| كَسَرَابٍ: | أعمالهم كسراب بقيعة يحسبه الظمآن ماء... ... | ٣٩ | م النور | ٢٤ |
| سَرَابًا: | وسيرت الجبال فكانت سرابا ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك النبإ | ٧٨ |
| سَارِبٌ: | ومن هو مستخف بالليل وسارب بالنهار ... ... | ١٠ | م الرعد | ١٣ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| سَرَابِيلَ: | وجعل لكم سرابيل تقيكم الحر... ... ... ... | ٨١ | ك النحل | ١٦ |
| (٢) | وسرابيل تقيكم بأسكم ... ... ... ... ... ... | ٨١ | ك « | ١٦ |
| سَرَابِيلُهُمْ: | سرابيلهم من قطران وتغشى وجوههم النار | ٥٠ | ك إبراهيم | ١٤ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| سِرَاجًا: | وجعل فيها سراجا وقمرا منيرا... ... ... ... ... | ٦١ | ك الفرقان | ٢٥ |
| (٤) | وداعيا إلى الله بإذنه وسراجا منيرا... ... ... ... | ٤٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وجعل القمر فيهن نورا وجعل الشمس سراجا... ... | ١٦ | ك نوح | ٧١ |
| | وجعلنا سراجا وهاجا ... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك النبإ | ٧٨ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| تَسْرَحُونَ: | ولكم فيها جمال حين تريحون وحين تسرحون | ٦ | ك النحل | ١٦ |
| أُسَرِّحْكُنَّ: | فتعالين أمتعكن وأسرحكن سراحا جميلا... ... | ٢٨ | م الأحزاب | ٣٣ |
| سَرِّحُوهُنَّ: | فأمسكوهن بمعروف أو سرحوهن بمعروف | ٢٣١ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | فمتعوهن وسرحوهن سراحا جميلا... ... ... ... | ٤٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| سَرَاحًا: | فتعالين أمتعكن وأسرحكن سراحا جميلا ... ... | ٢٨ | م « | ٣٣ |
| (٢) | فمتعوهن وسرحوهن سراحا جميلا... ... ... ... | ٤٩ | م « | ٣٣ |
| تَسْرِيحٌ: | الطلاق مرتان فإمساك بمعروف أو تسريح بإحسان | ٢٢٩ | م البقرة | ٢ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| السَّرْدِ: | أن اعمل سابغات وقدر فى السرد واعملوا صالحا | ١١ | ك سبإ | ٣٤ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| سُرَادِقُهَا: | إنا أعتدنا للظالمين نارا أحاط بهم سرادقها | ٢٩ | ك الكهف | ١٨ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| تَسُرُّ: | قال إنه يقول إنها بقرة صفراء فاقع لونها تسر الناظرين | ٦٩ | م البقرة | ٢ |
| أَسَرَّ: | سواء منكم من أسر القول ومن جهر به ... ... ... | ١٠ | م الرعد | ١٣ |
| (٢) | وإذ أسر النبى إلى بعض أزواجه حديثا .. ... ... | ٣ | م التحريم | ٦٦ |
| أَسْرَرْتُ: | ثم إنى أعلنت لهم وأسررت لهم إسرارا ... ... | ٩ | ك نوح | ٧١ |
| أَسَرَّهَا: | فأسرها يوسف فى نفسه ولم يبدها لهم قال أنتم شر مكانا | ٧٧ | ك يوسف | ١٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَسَرُّوا: | فيصبحوا على ما أسروا فى أنفسهم نادمين ... ... | ٥٢ | م المائدة | ٥ |
| (٥) | وأسروا الندامة لما رأوا العذاب وقضى بينهم بالقسط | ٥٤ | ك يونس | ١٠ |
| | فتنازعوا أمرهم بينهم وأسروا النجوى ... ... ... | ٦٢ | ك طه | ٢٠ |
| | وأسروا النجوى الذين ظلموا هل هذا إلا بشر مثلكم | ٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وأسروا الندامة لما رأوا العذاب ... ... ... ... | ٣٣ | ك سبأ | ٣٤ |
| أَسَرُّوهُ: | قال يابشرى هذا غلام وأسروه بضاعة ... ... | ١٩ | ك يوسف | ١٢ |
| تُسِرُّونَ: | والله يعلم ما تسرون وما تعلنون ... ... ... ... | ١٩ | ك النحل | ١٦ |
| (٣) | تسرون إليهم بالمودة وأنا أعلم بما أخفيتم وما أعلنتم | ١ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | يعلم ما فى السموات والأرض ويعلم ما تسرون وما تعلنون | ٤ | م التغابن | ٦٤ |
| يُسِرُّونَ: | أولا يعلمون أن الله يعلم ما يسرون وما يعلنون | ٧٧ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | ألا حين يستغشون ثيابهم يعلم ما يسرون وما يعلنون | ٥ | ك هود | ١١ |
| | لا جرم أن الله يعلم ما يسرون وما يعلنون... ... ... | ٢٣ | ك النحل | ١٦ |
| | فلا يحزنك قولهم إنا نعلم ما يسرون وما يعلنون... ... | ٧٦ | ك يس | ٣٦ |
| أَسِرُّوا: | وأسروا قولكم أو اجهروا به إنه عليم بذات الصدور | ١٣ | ك الملك | ٦٧ |
| إِسْرَارًا: | ثم إنى أعلنت لهم وأسررت لهم إسرارا ... ... | ٩ | ك نوح | ٧١ |
| إِسْرَارَهُمْ: | سنطيعكم فى بعض الأمر والله يعلم إسرارهم | ٢٦ | م محمد | ٤٧ |
| السِّرَّ: | وإن تجهر بالقول فإنه يعلم السر وأخفى ... ... ... | ٧ | ك طه | ٢٠ |
| (٢) | قل أنزله الذى يعلم السر فى السموات والأرض | ٦ | ك الفرقان | ٢٥ |
| سِرًّا: | علم الله أنكم ستذكرونهن ولكن لا تواعدوهن سرا | ٢٣٥ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | الذين ينفقون أموالهم بالليل والنهار سرا وعلانية فلهم | | | |
| | أجرهم عند ربهم ولا خوف عليهم ولاهم يحزنون | ٢٧٤ | م » | ٢ |
| | وأنفقوا مما رزقناهم سرا وعلانية ويدرءون بالحسنة | | | |
| | السيئة أولئك لهم عقبى الدار... ... ... ... | ٢٢ | م الرعد | ١٣ |
| | قل لعبادى الذين آمنوا يقيموا الصلاة وينفقوا مما | | | |
| | رزقناهم سرا وعلانية ... ... ... ... ... | ٣١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | ومن رزقناه منا رزقا حسنا فهو ينفق منه سرا وجهرا | ٧٥ | ك النحل | ١٦ |
| | وأنفقوا مما رزقناهم سرا وعلانية يرجون تجارة لن تبور | ٢٩ | ك فاطر | ٣٥ |
| سِرَّكُمْ: | وهو الله فى السموات وفى الأرض يعلم سركم وجهركم | ٣ | ك الأنعام | ٦ |
| سِرَّهُمْ: | ألم يعلموا أن الله يعلم سرهم ونجواهم ... ... | ٧٨ | ك التوبة | ٩ |
| (٦) | أم يحسبون أنا لا نسمع سرهم ونجواهم ... ... ... | ٨٠ | ك الزخرف | ٤٣ |
| سُرُورًا: | فوقاهم الله شر ذلك اليوم ولقاهم نضرة وسرورا | ١١ | م الإنسان | ٧٦ |
| مَسْرُورًا: | وينقلب إلى أهله مسرورا ... ... ... ... | ٩ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| (٢) | ويصلى سعيرا . إنه كان فى أهله مسرورا ... ... | ١٣ | ك » | ٨٤ |
| السَّرَائِرُ: | إنه على رجعه لقادر . يوم تبلى السرائر ... ... | ٩ | ك الطارق | ٨٦ |
| السَّرَّاءُ: | الذين ينفقون فى السراء والضراء والكاظمين الغيظ | ١٣٤ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | وقالوا قد مس آباءنا الضراء والسراء فأخذناهم بغتة | ٩٥ | ك الأعراف | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| سُرُرٍ: | ونزعنا ما فى صدورهم من غل إخوانا على سرر متقابلين | ٤٧ | ك الحجر | ١٥ |
| (٥) | فى جنات النعيم . على سرر متقابلين ... ... ... ... | ٤٤ | ك الصافات | ٣٧ |
| | متكئين على سرر مصفوفة وزوجناهم بحور عين... ... | ٢٠ | ك الطور | ٥٢ |
| | ثلة من الأولين . وقليل من الآخرين . على سرر موضونة | ١٥ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | فيها سرر مرفوعة ... ... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك الغاشية | ٨٨ |
| سُرُرًا: | ولبيوتهم أبوابا وسررا عليها يتكئون... ... ... | ٣٤ | ك الزخرف | ٤٣ |

***

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| نُسَارِعُ: | أيحسبون أنما نمدهم به من مال وبنين . نسارع | | | |
| | لهم فى الخيرات ... ... ... ... ... ... ... | ٥٦ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| يُسَارِعُونَ: | ويسارعون فى الخيرات وأولئك من الصالحين | ١١٤ | م آل عمران | ٣ |
| (٧) | ولا يحزنك الذين يسارعون فى الكفر... ... ... ... | ١٧٦ | م » | ٣ |
| | يأيها الرسول لا يحزنك الذين يسارعون فى الكفر | ٤١ | م المائدة | ٥ |
| | وترى الذين فى قلوبهم مرض يسارعون فيهم ... ... | ٥٢ | م » | ٥ |
| | وترى كثيرا منهم يسارعون فى الإثم والعدوان... ... | ٦٢ | م » | ٥ |
| | إنهم كانوا يسارعون فى الخيرات ويدعوننا رغبا ورهبا | ٩٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | أولئك يسارعون فى الخيرات وهم لها سابقون... ... | ٦١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| سَارِعُوا: | وسارعوا إلى مغفرة من ربكم ... ... ... ... | ١٣٣ | م آل عمران | ٣ |
| سَرِيعُ: | أولئك لهم نصيب مما كسبوا والله سريع الحساب | ٢٠٢ | م البقرة | ٢ |
| (١٠) | ومن يكفر بآيات الله فإن الله سريع الحساب ... ... | ١٩ | م آل عمران | ٣ |
| | أولئك لهم أجرهم عند ربهم إن الله سريع الحساب | ١٩٩ | م » | ٣ |
| | واذكروا اسم الله عليه واتقوا الله إن الله سريع الحساب | ٤ | م المائدة | ٥ |
| | إن ربك سريع العقاب وإنه لغفور رحيم ... ... ... | ١٦٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | إن ربك لسريع العقاب وإنه لغفور رحيم... ... ... | ١٦٧ | م الأعراف | ٧ |
| | والله يحكم لا معقب لحكمه وهو سريع الحساب... ... | ٤١ | م الرعد | ١٣ |
| | ليجزى الله كل نفس ما كسبت إن الله سريع الحساب | ٥١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | ووجد الله عنده فوفاه حسابه والله سريع الحساب | ٣٩ | م النور | ٢٤ |
| | لا ظلم اليوم إن الله سريع الحساب ... ... ... ... | ١٧ | ك غافر | ٤٠ |
| سِرَاعًا: | يوم تشقق الأرض عنهم سراعا ذلك حشر علينا يسير | ٤٤ | ك ق | ٥٠ |
| (٢) | يوم يخرجون من الأجداث سراعا ... ... ... ... | ٤٣ | ك المعارج | ٧٠ |
| أَسْرَعُ: | ألا له الحكم وهو أسرع الحاسبين... ... ... ... | ٦٢ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | قل الله أسرع مكرا إن رسلنا يكتبون ما تمكرون ... | ٢١ | ك يونس | ١٠ |

***

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَسْرَفَ: | وكذلك نجزى من أسرف ولم يؤمن بآيات ربه | ١٢٧ | ك طه | ٢٠ |
| أَسْرَفُوا: | قل يا عبادى الذين أسرفوا على أنفسهم لا تقنطوا | | | |
| | من رحمة الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | م الزمر | ٣٩ |
| تُسْرِفُوا: | وآتوا حقه يوم حصاده ولا تسرفوا ... ... | ١٤١ | م الأنعام | ٦ |
| (٢) | وكلوا واشربوا ولا تسرفوا... ... ... ... ... | ٣١ | ك الأعراف | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يُسْرِفْ | : فلا يسرف فى القتل إنه كان منصورا ... .. ... | ٣٣ | م الإسراء | ١٧ |
| يُسْرِفُوا | : والذين إذا أنفقوا لم يسرفوا ولم يقتروا ... ... | ٦٧ | ك الفرقان | ٢٥ |
| إِسْرَافًا | : ولا تأكلوها إسرافا وبدارا أن يكبروا ... ... | ٦ | م النساء | ٤ |
| إِسْرَافَنَا | : ربنا اغفرلنا ذنوبنا وإسرافنا فى أمرنا وثبت أقدامنا | ١٤٧ | م آل عمران | ٣ |
| مُسْرِفٌ | : إن الله لا يهدى من هو مسرف كذاب ... ... | ٢٨ | ك غافر | ٤٠ |
| (٢) | كذلك يضل الله من هو مسرف مرتاب ... ... | ٣٤ | ك « | ٤٠ |
| مُسْرِفُونَ | : ثم إن كثيرا منهم بعد ذلك فى الأرض لمسرفون | ٣٢ | م المائدة | ٥ |
| (٣) | بل أنتم قوم مسرفون ... ... ... ... ... ... | ٨١ | ك الأعراف | ٧ |
| | قالوا طائركم معكم أئن ذُكِّرتم بل أنتم قوم مسرفون ... | ١٩ | ك يس | ٣٦ |
| مُسْرِفِينَ | : ولا تسرفوا إنه لا يحب المسرفين... ... ... ... | ١٤١ | م الأنعام | ٦ |
| (١٠) | وكلوا واشربوا ولا تسرفوا إنه لا يحب المسرفين | ٣١ | ك الأعراف | ٧ |
| | كذلك زين للمسرفين ما كانوا يعملون... ... ... ... | ١٢ | ك يونس | ١٠ |
| | وإن فرعون لعال فى الأرض وإنه لمن المسرفين | ٨٣ | ك « | ١٠ |
| | ثم صدقناهم الوعد فأنجيناهم ومن نشاء وأهلكنا المسرفين | ٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ولا تطيعوا أمر المسرفين... ... ... ... ... ... | ١٥١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وأن مردنا إلى الله وأن المسرفين هم أصحاب النار | ٤٣ | ك غافر | ٤٠ |
| | أفنضرب عنكم الذكر صفحا أن كنتم قوما مسرفين | ٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | من فرعون إنه كان عاليا من المسرفين... ... ... ... | ٣١ | ك الدخان | ٤٤ |
| | مسومة عند ربك للمسرفين ... ... .. ... ... ... | ٣٤ | ك الذاريات | ٥١ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| سَرَقَ | : قالوا إن يسرق فقد سرق أخ له من قبل... ... ... | ٧٧ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | ارجعوا إلى أبيكم فقولوا يا أبانا إن ابنك سرق | ٨١ | ك « | ١٢ |
| يَسْرِقْ | : قالوا إن يسرق فقد سرق أخ له من قبل... ... ... | ٧٧ | ك « | ١٢ |
| يَسْرِقْنَ | : يبايعنك على أن لا يشركن بالله شيئا ولا يسرقن | ١٢ | م الممتحنة | ٦٠ |
| أَسْتَرَقَ | : إلا من استرق السمع فأتبعه شهاب مبين... ... ... | ١٨ | ك الحجر | ١٥ |
| السَّارِقُ | : والسارق ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | م المائدة | ٥ |
| السَّارِقَةُ | : والسارقة فاقطعوا أيديهما جزاء بما كسبا ... ... | ٣٨ | م « | ٥ |
| لَسَارِقُونَ | : ثم أذن مؤذن أيتها العير إنكم لسارقون | ٧٠ | ك يوسف | ١٢ |
| سَارِقِينَ | : ما جئنا لنفسد فى الأرض وما كنا سارقين... ... | ٧٣ | ك « | ١٢ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| سَرْمَدًا | : قل أرأيتم إن جعل الله عليكم الليل سرمدا إلى | | | |
| (٢) | يوم القيامة من إله غير الله يأتيكم بضياء ... ... | ٧١ | ك القصص | ٢٨ |
| | قل أرأيتم إن جعل الله عليكم النهار سرمدا إلى يوم | | | |
| | القيامة من إله غير الله يأتيكم بليل ... ... ... | ٧٢ | ك « | ٢٨ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| يَسْرِ | : والفجر. وليال عشر. والشفع والوتر. والليل إذا يسر | ٤ | ك الفجر | ٨٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَسْرَى | : سبحان الذى أسرى بعبده ليلا من المسجد الحرام | | | |
| | إلى المسجد الأقصا ... ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الإسراء | ١٧ |
| أَسْرِ | : فأسر بأهلك بقطع من الليل ولا يلتفت منكم أحد... ... | ٨١ | ك هود | ١١ |
| (٥) | فأسر بأهلك بقطع من الليل واتبع أدبارهم... ... ... | ٦٥ | ك الحجر | ١٥ |
| | ولقد أوحينا إلى موسى أن أسر بعبادى ... ... ... | ٧٧ | ك طه | ٢٠ |
| | وأوحينا إلى موسى أن أسر بعبادى إنكم متبعون... ... | ٥٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فأسر بعبادى ليلا إنكم متبعون ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك الدخان | ٤٤ |
| سَرِيًّا | : فناداها من تحتها ألا تحزنى قد جعل ربك تحتك سريا | ٢٤ | ك مريم | ١٩ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| سُطِحَتْ | : وإلى الأرض كيف سطحت ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك الغاشية | ٨٨ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| يَسْطُرُونَ | : نَ والقلم وما يسطرون. ما أنت بنعمة ربك بمجنون | ١ | ك القلم | ٦٨ |
| مَسْطُورٍ | : والطور. وكتاب مسطور. فى رق منشور... ... | ٢ | ك الطور | ٥٢ |
| مَسْطُورًا | : كان ذلك فى الكتاب مسطورا ... ... ... ... | ٥٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٢) | إلا أن تفعلوا إلى أوليائكم معروفا كان ذلك | | | |
| | فى الكتاب مسطورا... ... ... ... ... ... ... | ٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| مُسْتَطَرٌ | : وكل صغير وكبير مستطر... ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك القمر | ٥٤ |
| أَسَاطِيرُ | : يقول الذين كفروا إن هذا إلا أساطير الأولين | ٢٥ | ك الأنعام | ٦ |
| (٩) | قد سمعنا لو نشاء لقلنا مثل هذا إن هذا إلا أساطير الأولين | ٣١ | ك الأنفال | ٨ |
| | وإذا قيل لهم ماذا أنزل ربكم قالوا أساطير الأولين | ٢٤ | ك النحل | ١٦ |
| | إن هذا إلا أساطير الأولين... ... ... ... ... ... | ٨٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وقالوا أساطير الأولين اكتتبها فهى تملى عليه بكرة وأصيلا | ٥ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | لقد وعدنا هذا نحن وآباؤنا من قبل إن هذا إلا | | | |
| | أساطير الأولين ... ... ... ... ... ... ... | ٦٨ | ك النمل | ٢٧ |
| | فيقول ما هذا إلا أساطير الأولين ... ... ... ... | ١٧ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | إذا تتلى عليه آياتنا قال أساطير الأولين ... ... ... | ١٥ | ك القلم | ٦٨ |
| | إذا تتلى عليه آياتنا قال أساطير الأولين ... ... ... | ١٣ | ك المطففين | ٨٣ |
| بِمُصَيْطِرٍ | : فذكر إنما أنت مذكر. لست عليهم بمصيطر | ٢٢ | ك الغاشية | ٨٨ |
| الْمُصَيْطِرُونَ | : أم عندهم خزائن ربك أم هم المصيطرون | ٣٧ | ك الطور | ٥٢ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| يَسْطُونَ | : يكادون يسطون بالذين يتلون عليهم آياتنا... ... | ٧٢ | م الحج | ٢٢ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| سُعِدُوا | : وأما الذين سعدوا ففى الجنة خالدين فيها ... ... | ١٠٨ | ك هود | ١١ |
| سَعِيدٌ | : يوم يأت لا تكلم نفس إلا بإذنه فمنهم شقى وسعيد | ١٠٥ | ك « | ١١ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| سُعِّرَتْ | : وإذا الجحيم سعرت. وإذا الجنة أزلفت. | | | |
| | علمت نفس ما أحضرت ... ... ... ... ... | ١٢ | ك التكوير | ٨١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **السَّعِير**: كتب عليه أنه من تولاه فأنه يضله ويهديه | | | | |
| (٨) | إلى عذاب السعير ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | م الحج | ٢٢ |
| | أولو كان الشيطان يدعوهم إلى عذاب السعير ... ... | ٢١ | ك لقمان | ٣١ |
| | ومن يزغ منهم عن أمرنا نذقه من عذاب السعير | ١٢ | ك سبإ | ٣٤ |
| | إنما يدعوا حزبه ليكونوا من أصحاب السعير ... ... | ٦ | ك فاطر | ٣٥ |
| | فريق فى الجنة وفريق فى السعير ... ... ... ... | ٧ | ك الشورى | ٤٢ |
| | وجعلناها رجوما للشياطين وأعتدنا لهم عذاب السعير | ٥ | ك الملك | ٦٧ |
| | وقالوا لو كنا نسمع أو نعقل ما كنا فى أصحاب السعير | ١٠ | ك « | ٦٧ |
| | فاعترفوا بذنبهم فسحقا لأصحاب السعير ... ... ... | ١١ | ك « | ٦٧ |
| **سَعِيرًا**: إنما يأكلون فى بطونهم نارا وسيصلون سعيرا | | ١٠ | م النساء | ٤ |
| (٨) | فمنهم من آمن به ومنهم من صدّ عنه وكفى بجهنم سعيرا | ٥٥ | م « | ٤ |
| | مأواهم جهنم كلما خبت زدناهم سعيرا... ... ... ... | ٩٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| | بل كذبوا بالساعة وأعتدنا لمن كذب بالساعة سعيرا | ١١ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | إن الله لعن الكافرين وأعد لهم سعيرا ... ... ... | ٦٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ومن لم يؤمن بالله ورسوله فإنا أعتدنا للكافرين سعيرا | ١٣ | م الفتح | ٤٨ |
| | إنا أعتدنا للكافرين سلاسلا وأغلالا وسعيرا ... ... | ٤ | م الإنسان | ٧٦ |
| | فسوف يدعوا ثبورا . ويصلى سعيرا ... ... ... ... | ١٢ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| **سُعُر**: فقالوا أبشرا منا واحدا نتبعه إنا إذا لفى ضلال وسعر | | ٢٤ | ك القمر | ٥٤ |
| (٢) | إن المجرمين فى ضلال وسعر ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك « | ٥٤ |

✦✦✦

**سَعَى**: ومن أظلم ممن منع مساجد الله أن يذكر فيها اسمه
(٥) وسعى فى خرابها ... ... ... ... ... ... ... | ١١٤ | م البقرة | ٢
وإذا تولى سعى فى الأرض ليفسد فيها ... ... ... | ٢٠٥ | م « | ٢
ومن أراد الآخرة وسعى لها سعيها وهو مؤمن فأولئك كان سعيهم مشكورا ... ... ... ... ... | ١٩ | ك الإسراء | ١٧
وأن ليس للإنسان إلا ما سعى ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك النجم | ٥٣
يوم يتذكر الإنسان ما سعى ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك النازعات | ٧٩
**سَعَوْا**: والذين سعوا فى آياتنا معاجزين أولئك أصحاب الجحيم | ٥١ | م الحج | ٢٢
(٢) والذين سعوا فى آياتنا معاجزين أولئك لهم عذاب من رجز أليم | ٥ | ك سبإ | ٣٤
**فَسَعَى**: إن الساعة آتية أكاد أخفيها لتجزى كل نفس بما تسعى | ١٥ | ك طه | ٢٠
(٣) فألقاها فإذا هى حية تسعى ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك « | ٢٠
فإذا حبالهم وعصيهم يخيل إليه من سحرهم أنها تسعى | ٦٦ | ك « | ٢٠
**يَسْعَى**: وجاء رجل من أقصا المدينة يسعى قال ياموسى
(٦) إن الملأ يأتمرون بك ليقتلوك ... ... ... ... | ٢٠ | ك القصص | ٢٨
وجاء من أقصا المدينة رجل يسعى قال ياقوم اتبعوا المرسلين | ٢٠ | ك يس | ٣٦
يوم ترى المؤمنين والمؤمنات يسعى نورهم بين أيديهم | ١٢ | م الحديد | ٥٧
نورهم يسعى بين أيديهم وبأيمانهم ... ... ... ... | ٨ | م التحريم | ٦٦
فكذب وعصى . ثم أدبر يسعى ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك النازعات | ٧٩
وأما من جاءك يسعى . وهو يخشى . فأنت عنه تلهى | ٨ | ك عبس | ٨٠

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **يَسْعَوْنَ**: إنما جزاء الذين يحاربون الله ورسوله ويسعون | | | | |
| (٣) | فى الأرض فسادا أن يقتلوا ... ... ... ... ... | ٣٣ | م المائدة | ٥ |
| | ويسعون فى الأرض فسادا والله لا يحب المفسدين | ٦٤ | م « | ٥ |
| | والذين يسعون فى آياتنا معاجزين أولئك فى العذاب محضرون | ٣٨ | ك سبإ | ٣٤ |
| **فَاسْعَوْا**: إذا نودى للصلاة من يوم الجمعة فاسعوا إلى ذكر الله | | ٩ | م الجمعة | ٦٢ |
| **السَّعْيَ**: فلما بلغ معه السعى قال يا بنى إنى أرى فى المنام | | | | |
| | أنى أذبحك ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| **سَعْيًا**: ثم اجعل على كل جبل منهن جزءا ثم ادعهن يأتينك سعيا | | ٢٦٠ | م البقرة | ٢ |
| **سَعْيُكُمْ**: إن هذا كان لكم جزاء وكان سعيكم مشكورا... ... | | ٢٢ | م الإنسان | ٧٦ |
| (٢) | إن سعيكم لشتى... ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك الليل | ٩٢ |
| **سَعْيِهِ**: فمن يعمل من الصالحات وهو مؤمن فلا كفران لسعيه | | ٩٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٢) | وأن ليس للإنسان إلا ما سعى . وأن سعيه سوف يرى | ٤٠ | ك النجم | ٥٣ |
| **سَعْيَهَا**: وسعى لها سعيها وهو مؤمن فأولئك كان سعيهم مشكورا | | ١٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٢) | وجوه يومئذ ناعمة . لسعيها راضية ... ... ... ... | ٩ | ك الغاشية | ٨٨ |
| **سَعْيُهُمْ**: فأولئك كان سعيهم مشكورا ... ... ... ... | | ١٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٢) | الذين ضل سعيهم فى الحياة الدنيا ... ... ... ... | ١٠٤ | ك الكهف | ١٨ |

✦✦✦

**مَسْغَبَةٍ**: أو إطعام فى يوم ذى مسغبة . يتيما ذا مقربة | ١٤ | ك البلد | ٩٠

✦✦✦

**مَسْفُوحًا**: إلا أن يكون ميتة أو دما مسفوحا أو لحم خنزير | ١٤٥ | ك الأنعام | ٦
**مُسَافِحِينَ**: وأحل لكم ما وراء ذلكم أن تبتغوا بأموالكم
(٢) محصنين غير مسافحين ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | م النساء | ٤
إذا آتيتموهن أجورهن محصنين غير مسافحين
ولا متخذى أخدان ... ... ... ... ... ... | ٥ | م المائدة | ٥
**مُسَافِحَاتٍ**: وآتوهن أجورهن بالمعروف محصنات غير مسافحات ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | م النساء | ٤

✦✦✦

**أَسْفَرَ**: والصبح إذا أسفر . إنها لإحدى الكبر ... ... | ٣٤ | ك المدثر | ٧٤
**مُسْفِرَةٌ**: وجوه يومئذ مسفرة . ضاحكة مستبشرة ... ... | ٣٨ | ك عبس | ٨٠
**سَفَرَةٍ**: بأيدى سفرة . كرام بررة ... ... ... ... ... | ١٥ | ك « | ٨٠
**سَفَرٍ**: فمن كان منكم مريضا أو على سفر فعدة من أيام أخر | ١٨٤ | م البقرة | ٢
(٥) ومن كان مريضا أو على سفر فعدة من أيام أخر | ١٨٥ | م « | ٢
وإن كنتم على سفر ولم تجدوا كاتبا فرهان مقبوضة | ٢٨٣ | م « | ٢
وإن كنتم مرضى أو على سفر أو جاء أحد منكم من الغائط أو لامستم النساء فلم تجدوا ماء فتيمموا | ٤٣ | م النساء | ٤
وإن كنتم مرضى أو على سفر أو جاء أحد منكم من الغائط أو لامستم النساء فلم تجدوا ماء فتيمموا | ٦ | م المائدة | ٥
**سَفَرًا**: لو كان عرضا قريبا وسفرا قاصدا لاتبعوك... ... | ٤٢ | م التوبة | ٩

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| سَفَرْنَا | : لقد لقينا من سفرنا هذا نصبا ... ... ... ... | ٦٢ | ك الكهف | ١٨ |
| أَسْفَارِنَا | : فقالوا ربنا باعد بين أسفارنا وظلموا أنفسهم | ١٩ | ك سبأ | ٣٤ |
| أَسْفَارًا | : كمثل الحمار يحمل أسفارا ... ... ... ... | ٥ | م الجمعة | ٦٢ |
| لَنَسْفَعًا | : كلا لئن لم ينته لنسفعا بالناصية ... ... ... | ١٥ | ك العلق | ٩٦ |
| تَسْفِكُونَ | : وإذ أخذنا ميثاقكم لا تسفكون دماءكم ... ... | ٨٤ | م البقرة | ٢ |
| يَسْفِكُ | : قالوا أتجعل فيها من يفسد فيها ويسفك الدماء ونحن نسبح بحمدك ونقدس لك ... ... ... | ٣٠ | م » | ٢ |
| سَافِلَهَا | : فلما جاء أمرنا جعلنا عاليها سافلها وأمطرنا عليها حجارة | ٨٢ | ك هود | ١١ |
| (٢) | جعلنا عاليها سافلها وأمطرنا عليهم حجارة من سجيل | ٧٤ | ك الحجر | ١٥ |
| سَافِلِينَ | : ثم رددناه أسفل سافلين ... ... ... ... | ٥ | ك التين | ٩٥ |
| أَسْفَلَ | : إن المنافقين في الدرك الأسفل من النار ... ... | ١٤٥ | م النساء | ٤ |
| (٤) | وهم بالعدوة القصوى والركب أسفل منكم ... ... | ٤٢ | م الأنفال | ٨ |
| | إذ جاءوكم من فوقكم ومن أسفل منكم وإذ زاغت الأبصار | ١٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ثم رددناه أسفل سافلين ... ... ... ... ... | ٥ | ك التين | ٩٥ |
| الأَسْفَلِينَ | : فأرادوا به كيدا فجعلناهم الأسفلين ... ... ... | ٩٨ | ك الصافات | ٣٧ |
| (٢) | نجعلهما تحت أقدامنا ليكونا من الأسفلين ... ... | ٢٩ | ك فصلت | ٤١ |
| السُّفْلَى | : وجعل كلمة الذين كفروا السفلى .. ... ... ... | ٤٠ | م التوبة | ٩ |
| السَّفِينَةُ | : فانطلقا حتى إذا ركبا في السفينة خرقها ... ... | ٧١ | ك الكهف | ١٨ |
| (٤) | أما السفينة فكانت لمساكين يعملون في البحر ... ... | ٧٩ | ك » | ١٨ |
| | وكان وراءهم ملك يأخذ كل سفينة غصبا ... ... ... | ٧٩ | ك » | ١٨ |
| | فأنجيناه وأصحاب السفينة وجعلناها آية للعالمين | ١٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| سَفِهَ | : ومن يرغب عن ملة إبراهيم إلا من سفه نفسه | ١٣٠ | م البقرة | ٢ |
| سَفَهًا | : قد خسر الذين قتلوا أولادهم سفها بغير علم ... ... | ١٤٠ | ك الأنعام | ٦ |
| سَفَاهَةٌ | : قال الملأ الذين كفروا من قومه إنا لنراك في سفاهة | ٦٦ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | قال يا قوم ليس بي سفاهة ولكني رسول من رب العالمين | ٦٧ | ك » | ٧ |
| سَفِيهًا | : فإن كان الذي عليه الحق سفيها أو ضعيفا أو لا يستطيع أن يمل هو فليملل وليه بالعدل | ٢٨٢ | م البقرة | ٢ |
| سَفِيهُنَا | : وأنه كان يقول سفيهنا على الله شططا ... ... | ٤ | ك الجن | ٧٢ |
| السُّفَهَاءُ | : قالوا أنؤمن كما آمن السفهاء ... ... ... ... | ١٣ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | ألا إنهم هم السفهاء ولكن لا يعلمون ... ... ... | ١٣ | م » | ٢ |
| | سيقول السفهاء من الناس ما ولاهم عن قبلتهم التي كانوا عليها ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٢ | م » | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| السُّفَهَاءَ | : ولا تؤتوا السفهاء أموالكم التي جعل الله لكم قياما | ٥ | م النساء | ٤ |
| | أتهلكنا بما فعل السفهاء منا ... ... ... ... ... | ١٥٥ | ك الأعراف | ٧ |
| سَقَرُ | : يوم يسحبون في النار على وجوههم ذوقوا مس سقر | ٤٨ | ك القمر | ٥٤ |
| (٤) | سأصليه سقر ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك المدثر | ٧٤ |
| | وما أدراك ما سقر ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك » | ٧٤ |
| | ما سلككم في سقر ... ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك » | ٧٤ |
| سَقَطُوا | : ومنهم من يقول ائذن لي ولا تفتني ألا في الفتنة سقطوا | ٤٩ | م التوبة | ٩ |
| تَسْقُطُ | : وما تسقط من ورقة إلا يعلمها ... ... ... ... | ٥٩ | ك الأنعام | ٦ |
| سُقِطَ | : ولما سقط في أيديهم ورأوا أنهم قد ضلوا قالوا لئن لم يرحمنا ربنا ويغفر لنا لنكونن من الخاسرين | ١٤٩ | ك الأعراف | ٧ |
| تُسَاقِطْ | : وهزي إليك بجذع النخلة تساقط عليك رطبا جنيا | ٢٥ | ك مريم | ١٩ |
| تُسْقِطَ | : أو تسقط السماء كما زعمت علينا كسفا ... ... ... | ٩٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| نُسْقِطْ | : إن نشأ نخسف بهم الأرض أو نسقط عليهم كسفا من السماء ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك سبأ | ٣٤ |
| فَأَسْقِطْ | : فأسقط علينا كسفا من السماء إن كنت من الصادقين | ١٨٧ | ك الشعراء | ٢٦ |
| سَاقِطًا | : وإن يروا كسفا من السماء ساقطا يقولوا سحاب مركوم | ٤٤ | ك الطور | ٥٢ |
| السَّقْفُ | : نخر عليهم السقف من فوقهم ... ... ... ... | ٢٦ | ك النحل | ١٦ |
| (٢) | والسقف المرفوع . والبحر المسجور . إن عذاب ربك لواقع | ٥ | ك الطور | ٥٢ |
| سَقْفًا | : وجعلنا السماء سقفا محفوظا وهم عن آياتها معرضون | ٣٢ | ك الأنبياء | ٢١ |
| سُقُفًا | : لجعلنا لمن يكفر بالرحمن لبيوتهم سقفا من فضة | ٣٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| سَقِيمٌ | : فنظر نظرة في النجوم . فقال إني سقيم ... ... ... | ٨٩ | ك الصافات | ٣٧ |
| (٢) | فنبذناه بالعراء وهو سقيم ... ... ... ... ... | ١٤٥ | ك » | ٣٧ |
| سَقَى | : فسقى لهما ثم تولى إلى الظل فقال رب إني لما أنزلت إلي من خير فقير ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك القصص | ٢٨ |
| سَقَاهُمْ | : وحلوا أساور من فضة وسقاهم ربهم شرابا طهورا | ٢١ | م الإنسان | ٧٦ |
| سَقَيْتَ | : قالت إن أبي يدعوك ليجزيك أجر ما سقيت لنا | ٢٥ | ك القصص | ٢٨ |
| تَسْقِي | : إنها بقرة لا ذلول تثير الأرض ولا تسقي الحرث | ٧١ | م البقرة | ٢ |
| نَسْقِي | : قالتا لا نسقي حتى يصدر الرعاء وأبونا شيخ كبير | ٢٣ | ك القصص | ٢٨ |
| يَسْقُونَ | : ولما ورد ماء مدين وجد عليه أمة من الناس يسقون | ٢٣ | ك » | ٢٨ |
| يَسْقِي | : يا صاحبي السجن أما أحدكما فيسقي ربه خمرا | ٤١ | ك يوسف | ١٢ |
| يَسْقِينِ | : والذي هو يطعمني ويسقين . وإذا مرضت فهو يشفين | ٧٩ | ك الشعراء | ٢٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| سُقُوا | : كمن هو خالد فى النار وسقوا ماء حميما فقطع أمعاءهم | ١٥ | م محمد | ٤٧ |
| تُسْقَى | : تسقى من عين آنية ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك الغاشية | ٨٨ |
| يُسْقَى | : وزرع ونخيل صنوان وغير صنوان يسقى بماء واحد | ٤ | م الرعد | ١٣ |
| (٢) | من ورائه جهنم ويسقى من ماء صديد... ... ... ... | ١٦ | ك إبراهيم | ١٤ |
| يُسْقَوْنَ | : ويسقون فيها كأسا كان مزاجها زنجبيلا... ... | ١٧ | م الإنسان | ٧٦ |
| (٢) | يسقون من رحيق مختوم ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك المطففين | ٨٣ |
| أَسْقَيْنَاكُمْ | : وجعلنا فيها رواسى شامخات وأسقيناكم ماء فراتا | ٢٧ | ك المرسلات | ٧٧ |
| أَسْقَيْنَاكُوهُ | : فأنزلنا من السماء ماء فأسقيناكوه ... ... | ٢٢ | ك الحجر | ١٥ |
| لَأَسْقَيْنَاهُمْ | : ولو استقاموا على الطريقة لأسقيناهم ماء غدقا | ١٦ | ك الجن | ٧٢ |
| نُسْقِيكُمْ | : نسقيكم مما فى بطونه من بين فرث ودم لبنا خالصا | ٦٦ | ك النحل | ١٦ |
| (٢) | نسقيكم مما فى بطونها ولكم فيها منافع كثيرة... ... ... | ٢١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| نُسْقِيَهُ | : لنحيى به بلدة ميتا ونسقيه مما خلقنا أنعاما وأناسى كثيرا | ٤٩ | ك الفرقان | ٢٥ |
| اسْتَسْقَى | : وإذ استسقى موسى لقومه فقلنا اضرب بعصاك الحجر | ٦٠ | م البقرة | ٢ |
| اسْتَسْقَاهُ | : وأوحينا إلى موسى إذ استسقاه قومه أن اضرب بعصاك الحجر ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٦٠ | ك الأعراف | ٧ |
| سِقَايَةَ | : أجعلتم سقاية الحاج وعمارة المسجد الحرام كمن آمن بالله | ١٩ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | فلما جهزهم بجهازهم جعل السقاية فى رحل أخيه | ٧٠ | ك يوسف | ١٢ |
| سُقْيَاهَا | : فقال لهم رسول الله ناقة الله وسقياها... ... ... | ١٣ | ك الشمس | ٩١ |
| مَسْكُوبٍ | : وظل ممدود . وماء مسكوب . وفاكهة كثيرة | ٣١ | ك الواقعة | ٥٦ |
| سَكَتَ | : ولما سكت عن موسى الغضب أخذ الألواح | ١٥٤ | ك الأعراف | ٧ |
| سُكِّرَتْ | : لقالوا إنما سكرت أبصارنا بل نحن قوم مسحورون | ١٥ | ك الحجر | ١٥ |
| سَكَرًا | : ومن ثمرات النخيل والأعناب تتخذون منه سكرا ورزقا حسنا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦٧ | ك النحل | ١٦ |
| سَكْرَةُ | : وجاءت سكرة الموت بالحق ذلك ما كنت منه تحيد | ١٩ | ك ق | ٥٠ |
| سَكْرَتِهِمْ | : لعمرك إنهم لفى سكرتهم يعمهون ... ... ... | ٧٢ | ك الحجر | ١٥ |
| سُكَارَى | : لا تقربوا الصلاة وأنتم سكارى حتى تعلموا | | | |
| (٣) | ما تقولون .. ... ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | م النساء | ٤ |
| | وترى الناس سكارى ... ... ... ... ... ... | ٢ | م الحج | ٢٢ |
| | وما هم بسكارى ولكن عذاب الله شديد ... ... | ٢ | م « | ٢٢ |
| سَكَنَ | : وله ما سكن فى الليل والنهار وهو السميع العليم | ١٣ | ك الأنعام | ٦ |
| سَكَنْتُمْ | : وسكنتم فى مساكن الذين ظلموا أنفسهم ... | ٤٥ | ك إبراهيم | ١٤ |
| (٢) | أسكنوهن من حيث سكنتم من وجدكم ... ... ... | ٦ | م الطلاق | ٦٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| لِتَسْكُنُوا | : «والذى جعل لكم الليل لتسكنوا فيه والنهار مبصرا | ٦٧ | ك يونس | ١٠ |
| (٤) | ومن رحمته جعل لكم الليل والنهار لتسكنوا فيه ولتبتغوا من فضله ولعلكم تشكرون ... ... ... | ٧٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | ومن آياته أن خلق لكم من أنفسكم أزواجا لتسكنوا إليها | ٢١ | ك الروم | ٣٠ |
| | الله الذى جعل لكم الليل لتسكنوا فيه والنهار مبصرا | ٦١ | ك غافر | ٤٠ |
| تَسْكُنُونَ | : من إله غير الله يأتيكم بليل تسكنون فيه ... | ٧٢ | ك القصص | ٢٨ |
| لِيَسْكُنَ | : وجعل منها زوجها ليسكن إليها ... ... ... ... | ١٨٩ | ك الأعراف | ٧ |
| لِيَسْكُنُوا | : ألم يروا أنا جعلنا الليل ليسكنوا فيه والنهار مبصرا | ٨٦ | ك النمل | ٢٧ |
| اسْكُنْ | : وقلنا يا آدم اسكن أنت وزوجك الجنة وكلا منها رغدا | ٣٥ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | ويا آدم اسكن أنت وزوجك الجنة فكلا من حيث شئتما | ١٩ | ك الأعراف | ٧ |
| اسْكُنُوا | : وإذ قيل لهم اسكنوا هذه القرية وكلوا منها حيث شئتم | ١٦١ | ك « | ٧ |
| (٢) | وقلنا من بعده لبنى إسرائيل اسكنوا الأرض ... ... | ١٠٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| تُسْكَنْ | : فتلك مساكنهم لم تسكن من بعدهم إلا قليلا ... | ٥٨ | ك القصص | ٢٨ |
| أَسْكَنْتُ | : ربنا إنى أسكنت من ذريتى بواد غير ذى زرع | ٣٧ | ك إبراهيم | ١٤ |
| فَأَسْكَنَّاهُ | : وأنزلنا من السماء ماء بقدر فأسكناه فى الأرض | ١٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ | : ولنسكننكم الأرض من بعدهم ... ... ... | ١٤ | ك إبراهيم | ١٤ |
| يُسْكِنِ | : إن يشأ يسكن الريح فيظللن رواكد على ظهره ... | ٣٣ | ك الشورى | ٤٢ |
| أَسْكِنُوهُنَّ | : أسكنوهن من حيث سكنتم من وجدكم... ... | ٦ | م الطلاق | ٦٥ |
| سَكَنٌ | : وصلّ عليهم إن صلاتك سكن لهم والله سميع عليم | ١٠٣ | م التوبة | ٩ |
| سَكَنًا | : فالق الإصباح وجعل الليل سكنا والشمس والقمر حسبانا | ٩٦ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | والله جعل لكم من بيوتكم سكنا ... ... ... ... | ٨٠ | ك النحل | ١٦ |
| سَاكِنًا | : ألم تر إلى ربك كيف مد الظل ولو شاء لجعله ساكنا | ٤٥ | ك الفرقان | ٢٥ |
| سَكِينَةٌ | : إن آية ملكه أن يأتيكم التابوت فيه سكينة من ربكم | ٢٤٨ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | هو الذى أنزل السكينة فى قلوب المؤمنين ليزدادوا إيمانا | ٤ | م الفتح | ٤٨ |
| | فعلم ما فى قلوبهم فأنزل السكينة عليهم وأثابهم فتحا قريبا | ١٨ | م « | ٤٨ |
| سَكِينَتَهُ | : ثم أنزل الله سكينته على رسوله وعلى المؤمنين | ٢٦ | م التوبة | ٩ |
| (٣) | فأنزل الله سكينته عليه وأيده بجنود لم تروها ... ... | ٤٠ | م « | ٩ |
| | فأنزل الله سكينته على رسوله وعلى المؤمنين ... ... | ٢٦ | م الفتح | ٤٨ |
| مَسْكَنِهِمْ | : لقد كان لسبإ فى مسكنهم آية جنتان عن يمين وشمال | ١٥ | ك سبإ | ٣٤ |
| مَسَاكِنُ | : وتجارة تخشون كسادها ومساكن ترضونها ... | ٢٤ | م التوبة | ٩ |
| (٤) | ومساكن طيبة فى جنات عدن ورضوان من الله أكبر | ٧٢ | م « | ٩ |
| | وسكنتم فى مساكن الذين ظلموا أنفسهم ... ... ... | ٤٥ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | ويدخلكم جنات تجرى من تحتها الأنهار ومساكن طيبة فى جنات عدن ... ... ... ... ... ... | ١٢ | م الصف | ٦١ |
| مَسَاكِنِكُمْ | : لا تركضوا وارجعوا إلى ما أترفتم فيه ومساكنكم | ١٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٢) | قالت نملة يا أيها النمل ادخلوا مساكنكم ... ... ... | ١٨ | ك النمل | ٢٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مَسَاكِنِهِمْ (٥) | أفلم يهد لهم كم أهلكنا قبلهم من القرون يمشون فى مساكنهم ... ... ... ... ... | ١٢٨ | ك طـه | ٢٠ |
| | فتلك مساكنهم لم تسكن من بعدهم إلا قليلا ... ... | ٥٨ | ك القصص | ٢٨ |
| | وعادا وثمودا وقد تبين لكم من مساكنهم ... ... | ٣٨ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | أو لم يهد لهم كم أهلكنا من قبلهم من القرون يمشون فى مساكنهم ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك السجدة | ٣٢ |
| | تدمر كل شىء بأمر ربها فأصبحوا لا يرى إلا مساكنهم | ٢٥ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| مَسْكُونَةٍ | ليس عليكم جناح أن تدخلوا بيوتا غير مسكونة فيها متاع لكم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٩ | م النور | ٢٤ |
| الْمَسْكَنَةُ | وضربت عليهم الذلة والمسكنة وباءو بغضب من الله | ٦١ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | وباءو بغضب من الله وضربت عليهم المسكنة ... | ١١٢ | م آل عمران | ٣ |
| مِسْكِينٌ (٨) | وعلى الذين يطيقونه فدية طعام مسكين ... ... | ١٨٤ | م البقرة | ٢ |
| | وآت ذا القربى حقه والمسكين وابن السبيل ولا تبذر تبذيرا | ٢٦ | م الإسراء | ١٧ |
| | فآت ذا القربى حقه والمسكين وابن السبيل ... ... | ٣٨ | ك الروم | ٣٠ |
| | فانطلقوا وهم يتخافتون . أن لا يدخلنها اليوم عليكم مسكين | ٢٤ | م القلم | ٦٨ |
| | ولا يحض على طعام المسكين ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | ولم نك نطعم المسكين ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك المدثر | ٧٤ |
| | ولا تحاضون على طعام المسكين... ... ... ... ... | ١٨ | ك الفجر | ٨٩ |
| | ولا يحض على طعام المسكين ... ... ... ... ... | ٣ | ك الماعون | ١٠٧ |
| مِسْكِينًا | فمن لم يستطع فإطعام ستين مسكينا ... ... ... | ٤ | م المجادلة | ٥٨ |
| (٣) | ويطعمون الطعام على حبه مسكينا ويتيما وأسيرا | ٨ | م الإنسان | ٧٦ |
| | يتيما ذا مقربة . أو مسكينا ذا متربة ... ... ... | ١٦ | ك البلد | ٩٠ |
| مَسَاكِينُ (١٢) | لا تعبدون إلا الله وبالوالدين إحسانا وذى القربى واليتامى والمساكين ... ... ... ... | ٨٣ | م البقرة | ٢ |
| | وآتى المال على حبه ذوى القربى واليتامى والمساكين | ١٧٧ | » | ٢ |
| | قل ما أنفقتم من خير فللوالدين والأقربين واليتامى والمساكين ... ... ... ... ... ... ... | ٢١٥ | » | ٢ |
| | وإذا حضر القسمة أولوا القربى واليتامى والمساكين فارزقوهم منه ... ... ... ... ... ... ... | ٨ | م النساء | ٤ |
| | وبالوالدين إحسانا وبذى القربى واليتامى والمساكين | ٣٦ | » | ٤ |
| | فكفارته إطعام عشرة مساكين ... ... ... ... ... | ٨٩ | م المائدة | ٥ |
| | أو كفارة طعام مساكين أو عدل ذلك صياما... ... | ٩٥ | » | ٥ |
| | واعلموا أنما غنمتم من شىء فأن لله خمسه وللرسول ولذى القربى واليتامى والمساكين ... ... ... | ٤١ | م الأنفال | ٨ |
| | إنما الصدقات للفقراء والمساكين والعاملين عليها | ٦٠ | م التوبة | ٩ |
| | أما السفينة فكانت لمساكين يعملون فى البحر ... ... | ٧٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | ولا يأتل أولوا الفضل منكم والسعة أن يؤتوا أولى القربى والمساكين ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | م النور | ٢٤ |
| | فلله وللرسول ولذى القربى واليتامى والمساكين... ... | ٧ | م الحشر | ٥٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| سِكِّينًا | وآتت كل واحدة منهن سكينا وقالت اخرج عليهن | ٣١ | ك يوسف | ١٢ |
| يَسْلُبْهُمُ | وإن يسلبهم الذباب شيئا لا يستنقذوه منه... ... | ٧٣ | م الحج | ٢٢ |
| أَسْلِحَتِكُمْ (٢) | ودّ الذين كفروا لو تغفلون عن أسلحتكم وأمتعتكم | ١٠٢ | م النساء | ٤ |
| | ولا جناح عليكم إن كان بكم أذى من مطر أو كنتم مرضى أن تضعوا أسلحتكم وخذوا حذركم... ... | ١٠٢ | » | ٤ |
| أَسْلِحَتَهُمْ (٢) | فلتقم طائفة منهم معك وليأخذوا أسلحتهم | ١٠٢ | » | ٤ |
| | ولتأت طائفة أخرى لم يصلوا فليصلوا معك وليأخذوا حذرهم وأسلحتهم ... ... ... ... ... ... | ١٠٢ | » | ٤ |
| نَسْلَخُ | وآية لهم الليل نسلخ منه النهار فإذا هم مظلمون | ٣٧ | ك يس | ٣٦ |
| أَنْسَلَخَ (٢) | واتل عليهم نبأ الذى آتيناه آياتنا فانسلخ منها | ١٧٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | فإذا انسلخ الأشهر الحرم فاقتلوا المشركين حيث وجدتموهم | ٥ | م التوبة | ٩ |
| سَلْسَبِيلًا | عينا فيها تسمى سلسبيلا ... ... ... ... ... | ١٨ | م الإنسان | ٧٦ |
| سِلْسِلَةٍ | ثم فى سلسلة ذرعها سبعون ذراعا فاسلكوه | ٣٢ | ك الحاقة | ٦٩ |
| السَّلَاسِلُ | إذ الأغلال فى أعناقهم والسلاسل يسحبون | ٧١ | ك غافر | ٤٠ |
| سَلَاسِلَا | إنا أعتدنا للكافرين سلاسلا وأغلالا وسعيرا | ٤ | م الإنسان | ٧٦ |
| لَسَلَّطَهُمْ | ولو شاء الله لسلطهم عليكم فلقاتلوكم ... ... | ٩٠ | م النساء | ٤ |
| يُسَلِّطُ | ولكن الله يسلط رسله على من يشاء والله على كل شىء قدير | ٦ | م الحشر | ٥٩ |
| سُلْطَانٍ (٢٤) | أتجادلوننى فى أسماء سميتموها أنتم وآباؤكم ما نزل الله بها من سلطان ... ... ... ... ... ... | ٧١ | ك الأعراف | ٧ |
| | إن عندكم من سلطان بهذا أتقولون على الله ما لا تعلمون | ٦٨ | ك يونس | ١٠ |
| | ولقد أرسلنا موسى بآياتنا وسلطان مبين... ... ... | ٩٦ | ك هود | ١١ |
| | ما تعبدون من دونه إلا أسماء سميتموها أنتم وآباؤكم ما أنزل الله بها من سلطان ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | تريدون أن تصدونا عما كان يعبد آباؤنا فأتونا بسلطان مبين | ١٠ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وما كان لنا أن نأتيكم بسلطان إلا بإذن الله ... ... | ١١ | ك » | ١٤ |
| | وما كان لى عليكم من سلطان إلا أن دعوتكم فاستجبتم لى | ٢٢ | ك » | ١٤ |
| | إن عبادى ليس لك عليهم سلطان إلا من اتبعك من الغاوين | ٤٢ | ك الحجر | ١٥ |
| | إنه ليس له سلطان على الذين آمنوا وعلى ربهم يتوكلون | ٩٩ | ك النحل | ١٦ |
| | إن عبادى ليس لك عليهم سلطان وكفى بربك وكيلا | ٦٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| | لولا يأتون عليهم بسلطان بين ... ... ... ... ... | ١٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | ثم أرسلنا موسى وأخاه هرون بآياتنا وسلطان مبين | ٤٥ | ك المؤمنون | ٢٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| سُلْطَانٌ | : لأعذبنه عذابا شديدا أو لأذبحنه أو ليأتينى بسلطان مبين ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك النمل | ٢٧ |
| | وما كان له عليهم من سلطان إلا لنعلم من يؤمن بالآخرة | ٢١ | ك سبإ | ٣٤ |
| | وما كان لنا عليكم من سلطان بل كنتم قوما طاغين | ٣٠ | ك الصافات | ٣٧ |
| | أم لكم سلطان مبين . فأتوا بكتابكم إن كنتم صادقين | ١٥٦ | ك « | ٣٧ |
| | ولقد أرسلنا موسى بآياتنا وسلطان مبين ... ... ... | ٢٣ | ك غافر | ٤٠ |
| | الذين يجادلون فى آيات الله بغير سلطان أتاهم | ٣٥ | ك « | ٤٠ |
| | إن الذين يجادلون فى آيات الله بغير سلطان أتاهم إن فى صدورهم إلا كبر ما هم ببالغيه... ... ... | ٥٦ | م « | ٤٠ |
| | وأن لا تعلوا على الله إنى آتيكم بسلطان مبين ... ... | ١٩ | ك الدخان | ٤٤ |
| | وفى موسى إذ أرسلناه إلى فرعون بسلطان مبين... ... | ٣٨ | ك الذاريات | ٥١ |
| | أم لهم سلم يستمعون فيه فليأت مستمعهم بسلطان مبين | ٣٨ | ك الطور | ٥٢ |
| | إن هى إلا أسماء سميتموها أنتم وآباؤكم ما أنزل الله بها من سلطان... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك النجم | ٥٣ |
| | فانفذوا لا تنفذون إلا بسلطان ... ... ... ... ... | ٣٣ | م الرحمن | ٥٥ |
| سُلْطَانًا | : سنلقى فى قلوب الذين كفروا الرعب بما أشركوا بالله (١١) مالم ينزل به سلطانا ومأواهم النار ... ... ... | ١٥١ | م آل عمران | ٣ |
| | وأولئكم جعلنا لكم عليهم سلطانا مبينا ... ... ... ... | ٩١ | م النساء | ٤ |
| | أتريدون أن تجعلوا لله عليكم سلطانا مبينا... ... ... | ١٤٤ | م « | ٤ |
| | فعفونا عن ذلك وآتينا موسى سلطانا مبينا... ... ... | ١٥٣ | م « | ٤ |
| | ولا تخافون أنكم أشركتم بالله مالم ينزل به عليكم سلطانا | ٨١ | ك الأنعام | ٦ |
| | وأن تشركوا بالله ما لم ينزل به سلطانا ... ... ... | ٣٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | ومن قتل مظلوما فقد جعلنا لوليه سلطانا... ... ... | ٣٣ | م الإسراء | ١٧ |
| | وأخرجنى مخرج صدق واجعل لى من لدنك سلطانا نصيرا | ٨٠ | م « | ١٧ |
| | ويعبدون من دون الله ما لم ينزل به سلطانا ... ... | ٧١ | م الحج | ٢٢ |
| | قال سنشد عضدك بأخيك ونجعل لكما سلطانا ... ... | ٣٥ | ك القصص | ٢٨ |
| | أم أنزلنا عليهم سلطانا فهو يتكلم بما كانوا به يشركون | ٣٥ | ك الروم | ٣٠ |
| سُلْطَانُهُ | : إنما سلطانه على الذين يتولونه والذين هم به مشركون | ١٠٠ | ك النحل | ١٦ |
| سُلْطَانِيَهْ | : هلك عنى سلطانيه ... ... ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك الحاقة | ٦٩ |
| سَلَفَ | : فمن جاءه موعظة من ربه فانتهى فله ما سلف | ٢٧٥ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | ولا تنكحوا ما نكح آباؤكم من النساء إلا ما قد سلف | ٢٢ | م النساء | ٤ |
| | وأن تجمعوا بين الأختين إلا ما قد سلف ... ... ... | ٢٣ | م « | ٤ |
| | عفا الله عما سلف ومن عاد فينتقم الله منه ... ... | ٩٥ | م المائدة | ٥ |
| | قل للذين كفروا إن ينتهوا يغفر لهم ما قد سلف ... ... | ٣٨ | م الأنفال | ٨ |
| أَسْلَفَتْ | : هنالك تبلوا كل نفس ما أسلفت ... ... ... | ٣٠ | ك يونس | ١٠ |
| أَسْلَفْتُمْ | : كلوا واشربوا هنيئا بما أسلفتم فى الأيام الخالية | ٢٤ | ك الحاقة | ٦٩ |
| سَلَفًا | : فجعلناهم سلفا ومثلا للآخرين ... ... ... ... | ٥٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| سَلْقُوكُمْ | : فإذا ذهب الخوف سلقوكم بألسنة حداد ... ... | ١٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| سَلَكَ | : الذى جعل لكم الأرض مهدا وسلك لكم فيها سبلا | ٥٣ | ك طه | ٢٠ |
| سَلَكَكُمْ | : فى جنات يتساءلون . عن المجرمين . ما سلككم فى سقر | ٤٢ | ك المدثر | ٧٤ |
| سَلَكْنَاهُ | : كذلك سلكناه فى قلوب المجرمين... ... ... ... | ٢٠٠ | ك الشعراء | ٢٦ |
| فَسَلَكَهُ | : ألم تر أن الله أنزل من السماء ماء فسلكه ينابيع فى الأرض... ... ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك الزمر | ٣٩ |
| لِتَسْلُكُوا | : لتسلكوا منها سبلا فجاجا ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك نوح | ٧١ |
| نَسْلُكُهُ | : كذلك نسلكه فى قلوب المجرمين ... ... ... ... | ١٢ | ك الحجر | ١٥ |
| يَسْلُكُ | : فإنه يسلك من بين يديه ومن خلفه رصدا ... ... | ٢٧ | ك الجن | ٧٢ |
| يَسْلُكْهُ | : ومن يعرض عن ذكر ربه يسلكه عذابا صعدا | ١٧ | ك « | ٧٢ |
| اسْلُكْ | : فاسلك فيها من كل زوجين اثنين وأهلك ... ... | ٢٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٢) | اسلك يدك فى جيبك تخرج بيضاء من غير سوء... ... | ٣٢ | ك القصص | ٢٨ |
| فَاسْلُكُوهُ | : ثم فى سلسلة ذرعها سبعون ذراعا فاسلكوه | ٣٢ | ك الحاقة | ٦٩ |
| فَاسْلُكِى | : ثم كلى من كل الثمرات فاسلكى سبل ربك ذللا | ٦٩ | ك النحل | ١٦ |
| يَتَسَلَّلُونَ | : قد يعلم الله الذين يتسللون منكم لواذا ... ... | ٦٣ | م النور | ٢٤ |
| سُلَالَةٍ | : ولقد خلقنا الإنسان من سلالة من طين ... ... | ١٢ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٢) | ثم جعل نسله من سلالة من ماء مهين... ... ... ... | ٨ | ك السجدة | ٣٢ |
| سَلَّمَ | : ولو أراكهم كثيرا لفشلتم ولتنازعتم فى الأمر ولكن الله سلم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | م الأنفال | ٨ |
| سَلَّمْتُمْ | : فلا جناح عليكم إذا سلمتم ما آتيتم بالمعروف... ... | ٢٣٣ | م البقرة | ٢ |
| تُسَلِّمُوا | : لا تدخلوا بيوتا غير بيوتكم حتى تستأنسوا وتسلموا على أهلها ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | م النور | ٢٤ |
| يُسَلِّمُوا | : ثم لا يجدوا فى أنفسهم حرجا مما قضيت ويسلموا تسليما | ٦٥ | م النساء | ٤ |
| سَلِّمُوا | : فإذا دخلتم بيوتا فسلموا على أنفسكم تحية من عند الله | ٦١ | م النور | ٢٤ |
| (٢) | يأيها الذين آمنوا صلوا عليه وسلموا تسليما... ... ... | ٥٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| أَسْلَمَ | : بلى من أسلم وجهه لله وهو محسن فله أجره عند ربه | ١١٢ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | أفغير دين الله يبغون وله أسلم من فى السموات والأرض | ٨٣ | م آل عمران | ٣ |
| | ومن أحسن دينا ممن أسلم وجهه لله وهو محسن... ... | ١٢٥ | م النساء | ٤ |
| | قل إنى أمرت أن أكون أول من أسلم ... ... ... | ١٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | فمن أسلم فأولئك تحروا رشدا ... ... ... ... | ١٤ | ك الجن | ٧٢ |
| أَسْلَمَا | : فلما أسلما وتله للجبين ... ... ... ... ... | ١٠٣ | ك الصافات | ٣٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَسْلَمْتُ | : إذ قال له ربه أسلم قال أسلمت لرب العالمين | ١٣١ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | فإن حاجوك فقل أسلمت وجهى لله ومن اتبعن | ٢٠ | م آل عمران | ٣ |
| | وأسلمت مع سليمان لله رب العالمين ... ... ... ... | ٤٤ | ك النمل | ٢٧ |
| وَأَسْلَمْتُمْ | : وقل للذين أوتوا الكتاب والأميين أأسلمتم... ... | ٢٠ | م آل عمران | ٣ |
| أَسْلَمْنَا | : قالت الأعراب آمنا قل لم تؤمنوا ولكن قولوا أسلمنا | ١٤ | م الحجرات | ٤٩ |
| أَسْلَمُوا | : فإن أسلموا فقد اهتدوا وإن تولوا فإنما عليك البلاغ | ٢٠ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | يحكم بها النبيون الذين أسلموا للذين هادوا... ... ... | ٤٤ | م المائدة | ٥ |
| | يمنون عليك أن أسلموا قل لا تمنوا علىّ إسلامكم ... | ١٧ | م الحجرات | ٤٩ |
| أُسْلِمَ | : وأمرت أن أسلم لرب العالمين ... ... ... ... ... | ٦٦ | ك غافر | ٤٠ |
| تُسْلِمُونَ | : كذلك يتم نعمته عليكم لعلكم تسلمون ... ... | ٨١ | ك النحل | ١٦ |
| لِنُسْلِمَ | : قل إن هدى الله هو الهدى وأمرنا لنسلم لرب العالمين | ٧١ | ك الأنعام | ٦ |
| يُسْلِمْ | : ومن يسلم وجهه إلى الله وهو محسن فقد استمسك | | | |
| | بالعروة الوثقى ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك لقمان | ٣١ |
| يُسْلِمُونَ | : تقاتلونهم أو يسلمون ... ... ... ... ... ... | ١٦ | م الفتح | ٤٨ |
| أَسْلِمْ | : إذ قال له ربه أسلم قال أسلمت لرب العالمين | ١٣١ | م البقرة | ٢ |
| أَسْلِمُوا | : فإلهكم إله واحد فله أسلموا وبشر المخبتين | ٣٤ | م الحج | ٢٢ |
| (٢) | وأنيبوا إلى ربكم وأسلموا له من قبل أن يأتيكم العذاب | ٥٤ | م الزمر | ٣٩ |
| السِّلْمِ | : يأيها الذين آمنوا ادخلوا فى السلم كافة ... ... ... | ٢٠٨ | م البقرة | ٢ |
| السَّلْمِ | : وإن جنحوا للسلم فاجنح لها وتوكل على الله | ٦١ | م الأنفال | ٨ |
| (٢) | فلا تهنوا وتدعوا إلى السلم وأنتم الأعلون ... ... | ٣٥ | م محمد | ٤٧ |
| السَّلَمَ | : فإن اعتزلوكم فلم يقاتلوكم وألقوا إليكم السلم فما جعل | | | |
| (٤) | الله لكم عليهم سبيلا ... ... ... ... ... ... | ٩٠ | م النساء | ٤ |
| | فإن لم يعتزلوكم ويلقوا إليكم السلم ويكفوا أيديهم فخذوهم | ٩١ | م « | ٤ |
| | فألقوا السلم ما كنا نعمل من سوء... ... ... ... | ٢٨ | ك النحل | ١٦ |
| | وألقوا إلى الله يومئذ السلم وضل عنهم ما كانوا يفترون | ٨٧ | ك « | ١٦ |
| سَلَمًا | : ضرب الله مثلا رجلا فيه شركاء متشاكسون | | | |
| | ورجلا سلما لرجل هل يستويان مثلا ... ... | ٢٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| سَالِمُونَ | : وقد كانوا يدعون إلى السجود وهم سالمون | ٤٣ | ك القلم | ٦٨ |
| سَلَامٌ | : ولا تقولوا لمن ألقى إليكم السلام لست مؤمنا | ٩٤ | م النساء | ٤ |
| (٣٣) | يهدى به الله من اتبع رضوانه سبل السلام ... ... | ١٦ | م المائدة | ٥ |
| | وإذا جاءك الذين يؤمنون بآياتنا فقل سلام عليكم | ٥٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | لهم دار السلام عند ربهم وهو وليهم بما كانوا يعملون | ١٢٧ | ك « | ٦ |
| | ونادوا أصحاب الجنة أن سلام عليكم ... ... ... | ٤٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | دعواهم فيها سبحانك اللهم وتحيتهم فيها سلام ... | ١٠ | ك يونس | ١٠ |
| | والله يدعوا إلى دار السلام ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك « | ١٠ |
| | قيل يانوح اهبط بسلام منا وبركات عليك ... ... | ٤٨ | ك هود | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| سَلَامٌ | : ولقد جاءت رسلنا إبراهيم بالبشرى قالوا سلاما | | | |
| | قال سلام ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦٩ | ك هود | ١١ |
| | سلام عليكم بما صبرتم فنعم عقبى الدار ... ... ... | ٢٤ | م الرعد | ١٣ |
| | خالدين فيها بإذن ربهم تحيتهم فيها سلام ... ... | ٢٣ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | إن المتقين فى جنات وعيون . ادخلوها بسلام آمنين | ٤٦ | ك الحجر | ١٥ |
| | يقولون سلام عليكم ادخلوا الجنة بما كنتم تعملون | ٣٢ | ك النحل | ١٦ |
| | وسلام عليه يوم ولد ويوم يموت ويوم يبعث حيا | ١٥ | ك مريم | ١٩ |
| | والسلام علىّ يوم ولدت ويوم أموت ويوم أبعث حيا | ٣٣ | ك « | ١٩ |
| | قال سلام عليك سأستغفر لك ربى إنه كان بى حفيا | ٤٧ | ك « | ١٩ |
| | قد جئناك بآية من ربك والسلام على من اتبع الهدى | ٤٧ | ك طه | ٢٠ |
| | قل الحمد لله وسلام على عباده الذين اصطفى ... ... | ٥٩ | ك النمل | ٢٧ |
| | سلام عليكم لا نبتغى الجاهلين ... ... ... ... ... | ٥٥ | م القصص | ٢٨ |
| | تحيتهم يوم يلقونه سلام وأعد لهم أجرا كريما ... ... | ٤٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | سلام قولا من رب رحيم ... ... ... ... ... ... | ٥٨ | ك يس | ٣٦ |
| | وتركنا عليه فى الآخرين . سلام على نوح فى العالمين | ٧٩ | ك الصافات | ٣٧ |
| | وتركنا عليه فى الآخرين . سلام على إبراهيم ... ... | ١٠٩ | ك « | ٣٧ |
| | وتركنا عليهما فى الآخرين . سلام على موسى وهرون | ١٢٠ | ك « | ٣٧ |
| | وتركنا عليه فى الآخرين . سلام على إل ياسين ... | ١٣٠ | ك « | ٣٧ |
| | وسلام على المرسلين . والحمد لله رب العالمين ... | ١٨١ | ك « | ٣٧ |
| | وقال لهم خزنتها سلام عليكم طبتم فادخلوها خالدين | ٧٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| | فاصفح عنهم وقل سلام فسوف يعلمون ... ... ... | ٨٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ادخلوها بسلام ذلك يوم الخلود ... ... ... ... | ٣٤ | ك ق | ٥٠ |
| | إذ دخلوا عليه فقالوا سلاما قال سلام قوم منكرون | ٢٥ | ك الذاريات | ٥١ |
| | فسلام لك من أصحاب اليمين ... ... ... ... ... | ٩١ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | هو الله الذى لا إله إلا هو الملك القدوس السلام | ٢٣ | م الحشر | ٥٩ |
| | سلام هى حتى مطلع الفجر ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك القدر | ٩٧ |
| سَلَامًا | : ولقد جاءت رسلنا إبراهيم بالبشرى قالوا سلاما | ٦٩ | ك هود | ١١ |
| (٩) | إذ دخلوا عليه فقالوا سلاما قال إنا منكم وجلون | ٥٢ | ك الحجر | ١٥ |
| | لا يسمعون فيها لغوا إلا سلاما ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك مريم | ١٩ |
| | قلنا يانار كونى بردا وسلاما على إبراهيم ... ... ... | ٦٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وإذا خاطبهم الجاهلون قالوا سلاما ... ... ... ... | ٦٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ويلقون فيها تحية وسلاما ... ... ... ... ... ... | ٧٥ | ك « | ٢٥ |
| | إذ دخلوا عليه فقالوا سلاما قال سلام قوم منكرون | ٢٥ | ك الذاريات | ٥١ |
| | لا يسمعون فيها لغوا ولا تأثيما . إلا قيلا سلاما — | ٢٦ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | — سلاما ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك « | ٥٦ |
| سَلِيمٍ | : يوم لا ينفع مال ولا بنون . إلا من أتى الله بقلب سليم | ٨٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| (٢) | وإن من شيعته لإبراهيم . إذ جاء ربه بقلب سليم | ٨٤ | ك الصافات | ٣٧ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| الإِسْلَامُ: | إن الدين عند الله الإسلام ... ... ... ... | م آل عمران | ١٩ ٣ |
| (٦) | ومن يبتغ غير الإسلام دينا فلن يقبل منه ... ... | م » | ٨٥ ٣ |
| | وأتممت عليكم نعمتي ورضيت لكم الإسلام دينا ... | م المائدة | ٣ ٥ |
| | فمن يرد الله أن يهديه يشرح صدره للإسلام ... ... | ك الأنعام | ١٢٥ ٦ |
| | أفمن شرح الله صدره للإسلام فهو على نور من ربه | ك الزمر | ٢٢ ٣٩ |
| | ومن أظلم ممن افترى على الله الكذب وهو يدعى إلى الإسلام ... ... ... ... ... ... ... | م الصف | ٧ ٦١ |
| إِسْلَامَكُمْ: | يمنون عليك أن أسلموا قل لا تمنوا علي إسلامكم | م الحجرات | ١٧ ٤٩ |
| إِسْلَامِهِمْ: | ولقد قالوا كلمة الكفر وكفروا بعد إسلامهم | م التوبة | ٧٤ ٩ |
| مُسْلِمًا: | ما كان إبراهيم يهوديا ولا نصرانيا ولكن كان حنيفا مسلما ... ... ... ... ... ... ... | م آل عمران | ٦٧ ٣ |
| (٢) | أنت وليي في الدنيا والآخرة توفني مسلما وألحقني بالصالحين ... ... ... ... ... ... ... | ك يوسف | ١٠١ ١٢ |
| مُسْلِمَيْنِ: | ربنا واجعلنا مسلمين لك ومن ذريتنا أمة مسلمة لك | م البقرة | ١٢٨ ٢ |
| مُسْلِمُونَ: | إن الله اصطفى لكم الدين فلا تموتن إلا وأنتم مسلمون | م » | ١٣٢ ٢ |
| (١٥) | قالوا نعبد إلهك وإله آبائك إبراهيم وإسمعيل وإسحق إلها واحدا ونحن له مسلمون ... ... ... ... | م » | ١٣٣ ٢ |
| | لا نفرق بين أحد منهم ونحن له مسلمون ... ... ... | م » | ١٣٦ ٢ |
| | آمنا بالله واشهد بأنا مسلمون ... ... ... ... ... | م آل عمران | ٥٢ ٣ |
| | فإن تولوا فقولوا اشهدوا بأنا مسلمون ... ... ... | م » | ٦٤ ٣ |
| | أيأمركم بالكفر بعد إذ أنتم مسلمون... ... ... ... | م » | ٨٠ ٣ |
| | لا نفرق بين أحد منهم ونحن له مسلمون... ... ... | م » | ٨٤ ٣ |
| | اتقوا الله حق تقاته ولا تموتن إلا وأنتم مسلمون ... | م » | ١٠٢ ٣ |
| | وإذ أوحيت إلى الحواريين أن آمنوا بي وبرسولي قالوا آمنا واشهد بأننا مسلمون ... ... ... ... | م المائدة | ١١١ ٥ |
| | فاعلموا أنما أنزل بعلم الله وأن لا إله إلا هو فهل أنتم مسلمون | ك هود | ١٤ ١١ |
| | قل إنما يوحى إلي أنما إلهكم إله واحد فهل أنتم مسلمون ... ... ... ... ... ... ... | ك الأنبياء | ١٠٨ ٢١ |
| | إن تسمع إلا من يؤمن بآياتنا فهم مسلمون ... ... | ك النمل | ٨١ ٢٧ |
| | وإلهنا وإلهكم واحد ونحن له مسلمون ... ... ... | ك العنكبوت | ٤٦ ٢٩ |
| | إن تسمع إلا من يؤمن بآياتنا فهم مسلمون ... ... | ك الروم | ٥٣ ٣٠ |
| | وأنا منا المسلمون ومنا القاسطون ... ... ... ... | ك الجن | ١٤ ٧٢ |
| مُسْلِمِينَ: | لا شريك له وبذلك أمرت وأنا أول المسلمين | ك الأنعام | ١٦٣ ٦ |
| (٢١) | ربنا أفرغ علينا صبرا وتوفنا مسلمين ... ... ... | ك الأعراف | ١٢٦ ٧ |
| | إن أجري إلا على الله وأمرت أن أكون من المسلمين | ك يونس | ٧٢ ١٠ |
| | إن كنتم آمنتم بالله فعليه توكلوا إن كنتم مسلمين | ك » | ٨٤ ١٠ |
| | لا إله إلا الذي آمنت به بنو إسرائيل وأنا من المسلمين | ك » | ٩٠ ١٠ |
| | ربما يود الذين كفروا لو كانوا مسلمين ... ... ... | ك الحجر | ٢ ١٥ |
| مُسْلِمِينَ: | ونزلنا عليك الكتاب تبيانا لكل شيء وهدى ورحمة وبشرى للمسلمين... ... ... ... ... ... | ك النحل | ٨٩ ١٦ |
| | ليثبت الذين آمنوا وهدى وبشرى للمسلمين ... ... | ك » | ١٠٢ ١٦ |
| | هو سماكم المسلمين من قبل وفي هذا ... ... ... | م الحج | ٧٨ ٢٢ |
| | ألا تعلوا علي وأتوني مسلمين ... ... ... ... ... | ك النمل | ٣١ ٧ |
| | قال يا أيها الملأ أيكم يأتيني بعرشها قبل أن يأتوني مسلمين | ك » | ٣٨ ٢٧ |
| | وأوتينا العلم من قبلها وكنا مسلمين ... ... ... ... | ك » | ٤٢ ٢٧ |
| | وله كل شيء وأمرت أن أكون من المسلمين... ... | ك » | ٩١ ٢٧ |
| | آمنا به إنه الحق من ربنا إنا كنا من قبله مسلمين | م القصص | ٥٣ ٢٨ |
| | إن المسلمين والمسلمات والمؤمنين والمؤمنات ... ... | م الأحزاب | ٣٥ ٣٣ |
| | وأمرت لأن أكون أول المسلمين ... ... ... ... | ك الزمر | ١٢ ٣٩ |
| | ومن أحسن قولا ممن دعا إلى الله وعمل صالحا وقال إنني من المسلمين ... ... ... ... ... ... | ك فصلت | ٣٣ ٤١ |
| | الذين آمنوا بآياتنا وكانوا مسلمين ... ... ... ... | ك الزخرف | ٦٩ ٤٣ |
| | وأصلح لي في ذريتي إني تبت إليك وإني من المسلمين | م الأحقاف | ١٥ ٤٦ |
| | فما وجدنا فيها غير بيت من المسلمين ... ... ... | ك الذاريات | ٣٦ ٥١ |
| | أفنجعل المسلمين كالمجرمين ... ... ... ... ... | ك القلم | ٣٥ ٦٨ |
| مُسْلِمَةً: | ربنا واجعلنا مسلمين لك ومن ذريتنا أمة مسلمة لك | م البقرة | ١٢٨ ٢ |
| مُسْلِمَاتِ: | إن المسلمين والمسلمات والمؤمنين والمؤمنات | م الأحزاب | ٣٥ ٣٣ |
| (٢) | عسى ربه إن طلقكن أن يبدله أزواجا خيرا منكن مسلمات | م التحريم | ٥ ٦٦ |
| مُسَلَّمَةٌ: | تثير الأرض ولا تسقي الحرث مسلمة لا شية فيها | م البقرة | ٧١ ٢ |
| (٣) | فتحرير رقبة مؤمنة ودية مسلمة إلى أهله ... ... | م النساء | ٩٢ ٤ |
| | وإن كان من قوم بينكم وبينهم ميثاق فدية مسلمة إلى أهله | م » | ٩٢ ٤ |
| تَسْلِيمًا: | ثم لا يجدوا في أنفسهم حرجا مما قضيت ويسلموا تسليما | م » | ٦٥ ٤ |
| (٣) | وما زادهم إلا إيمانا وتسليما... ... ... ... ... | م الأحزاب | ٢٢ ٣٣ |
| | يا أيها الذين آمنوا صلوا عليه وسلموا تسليما ... ... | م » | ٥٦ ٣٣ |
| مُسْتَسْلِمُونَ: | ما لكم لا تناصرون . بل هم اليوم مستسلمون | ك الصافات | ٢٦ ٣٧ |
| سُلَّمٌ: | أم لهم سلم يستمعون فيه فليأت مستمعهم بسلطان مبين | ك الطور | ٣٨ ٥٢ |
| سُلَّمًا: | فإن استطعت أن تبتغي نفقا في الأرض أو سلما في السماء | ك الأنعام | ٣٥ ٦ |
| سُلَيْمَانُ: | واتبعوا ما تتلو الشياطين على ملك سليمان ... ... | م البقرة | ١٠٢ ٢ |
| (١٧) | وما كفر سليمان ولكن الشياطين كفروا ... ... ... | م » | ١٠٢ ٢ |
| | وأيوب ويونس وهرون وسليمان وآتينا داود زبورا | م النساء | ١٦٣ ٤ |
| | ونوحا هدينا من قبل ومن ذريته داود وسليمان | ك الأنعام | ٨٤ ٦ |
| | وداود وسليمان إذ يحكمان في الحرث إذ نفشت فيه غنم القوم | ك الأنبياء | ٧٨ ٢١ |
| | ففهمناها سليمان وكلا آتينا حكما وعلما ... ... ... | ك » | ٧٩ ٢١ |
| | ولسليمان الريح عاصفة تجري بأمره ... ... ... ... | ك » | ٨١ ٢١ |
| | ولقد آتينا داود وسليمان علما ... ... ... ... ... | ك النمل | ١٥ ٢٧ |

| اللفظة | الآية | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| سُلَيْمَانُ | : وورث سليمان داود وقال يأيها الناس علمنا منطق الطير | ١٦ ك النمل | ٢٧ |
| | وحشر لسليمان جنوده من الجن والإنس والطير | ١٧ ك « | ٢٧ |
| | يأيها النمل ادخلوا مساكنكم لا يحطمنكم سليمان وجنوده | ١٨ ك « | ٢٧ |
| | إنه من سليمان وإنه بسم الله الرحمن الرحيم ... ... | ٣٠ ك « | ٢٧ |
| | فلما جاء سليمان قال أتمدونن بمال ... ... ... ... | ٣٦ ك « | ٢٧ |
| | قالت رب إني ظلمت نفسي وأسلمت مع سليمان لله رب العالمين | ٤٤ ك « | ٢٧ |
| | ولسليمان الريح غدوها شهر ورواحها شهر ... ... | ١٢ ك سبأ | ٣٤ |
| | ووهبنا لداود سليمان نعم العبد إنه أواب... ... ... | ٣٠ ك ص | ٣٨ |
| | ولقد فتنا سليمان وألقينا على كرسيه جسدا ثم أناب | ٣٤ ك « | ٣٨ |
| ✦✦✦ | | | |
| السَّلْوَى | : وظللنا عليكم الغمام وأنزلنا عليكم المنَّ والسلوى | ٥٧ م البقرة | ٢ |
| (٣) | وظللنا عليهم الغمام وأنزلنا عليهم المنَّ والسلوى | ١٦٠ ك الأعراف | ٧ |
| | وواعدناكم جانب الطور الأيمن ونزلنا عليكم المنَّ والسلوى | ٨٠ ك طه | ٢٠ |
| ✦✦✦ | | | |
| سَامِدُونَ | : وتضحكون ولا تبكون . وأنتم سامدون | ٦١ ك النجم | ٥٣ |
| ✦✦✦ | | | |
| سَامِرًا | : مستكبرين به سامرا تهجرون ... ... ... ... | ٦٧ ك المؤمنون | ٢٣ |
| السَّامِرِيّ | : قال فإنا قد فتنا قومك من بعدك وأضلهم السامريّ | ٨٥ ك طه | ٢٠ |
| (٣) | فقذفناها فكذلك ألقى السامريّ... ... ... ... ... | ٨٧ ك « | ٢٠ |
| | قال فما خطبك يا سامريّ... ... ... ... ... ... | ٩٥ ك « | ٢٠ |
| ✦✦✦ | | | |
| سَمِعَ | : لقد سمع الله قول الذين قالوا إن الله فقير ونحن أغنياء | ١٨١ م آل عمران | ٣ |
| (٢) | قد سمع الله قول التي تجادلك في زوجها وتشتكي إلى الله | ١ م المجادلة | ٥٨ |
| سَمِعَتْ | : فلما سمعت بمكرهن أرسلت إليهن وأعتدت لهن متكأ | ٣١ ك يوسف | ١٢ |
| سَمِعْتُمْ | : أن إذا سمعتم آيات الله يكفر بها ويستهزأ بها | | |
| | فلا تقعدوا معهم حتى يخوضوا في حديث غيره | ١٤٠ م النساء | ٤ |
| سَمِعْتُمُوهُ | : لولا إذ سمعتموه ظن المؤمنون والمؤمنات | | |
| (٢) | بأنفسهم خيرا ... ... ... ... ... ... ... | ١٢ م النور | ٢٤ |
| | ولولا إذ سمعتموه قلتم ما يكون لنا أن نتكلم بهذا | ١٦ م « | ٢٤ |
| سَمِعْنَا | : قالوا سمعنا وعصينا وأشربوا في قلوبهم العجل بكفرهم | ٩٣ م البقرة | ٢ |
| (١٧) | وقالوا سمعنا وأطعنا غفرانك ربنا وإليك المصير | ٢٨٥ م « | ٢ |
| | ربنا إننا سمعنا مناديا ينادي للإيمان أن آمنوا بربكم فآمنا | ١٩٣ م آل عمران | ٣ |
| | ويقولون سمعنا وعصينا واسمع غير مسمع ... ... | ٤٦ م النساء | ٤ |
| | ولو أنهم قالوا سمعنا وأطعنا واسمع وانظرنا لكان خيرا لهم | ٤٦ م « | ٤ |
| | واذكروا نعمة الله عليكم وميثاقه الذي واثقكم به | | |
| | إذ قلتم سمعنا وأطعنا ... ... ... ... ... ... | ٧ م المائدة | ٥ |
| | ولا تكونوا كالذين قالوا سمعنا وهم لا يسمعون | ٢١ م الأنفال | ٨ |
| | قد سمعنا لو نشاء لقلنا مثل هذا إن هذا إلا أساطير الأولين | ٣١ ك « | ٨ |

| اللفظة | الآية | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| سَمِعْنَا | : قالوا سمعنا فتى يذكرهم يقال له إبراهيم ... ... | ٦٠ ك الأنبياء | ٢١ |
| | ولو شاء الله لأنزل ملائكة ما سمعنا بهذا في آبائنا الأولين | ٢٤ ك المؤمنون | ٢٣ |
| | أن يقولوا سمعنا وأطعنا وأولئك هم المفلحون... ... | ٥١ م النور | ٢٤ |
| | قالوا ما هذا إلا سحر مفترى وما سمعنا بهذا في آبائنا الأولين | ٣٦ ك القصص | ٢٨ |
| | ربنا أبصرنا وسمعنا فارجعنا نعمل صالحا إنا موقنون | ١٢ ك السجدة | ٣٢ |
| | ما سمعنا بهذا في الملة الآخرة إن هذا إلا اختلاق | ٧ ك ص | ٣٨ |
| | قالوا يا قومنا إنا سمعنا كتابا أنزل من بعد موسى ... | ٣٠ ك الأحقاف | ٤٦ |
| | إنا سمعنا قرآنا عجبا . يهدي إلى الرشد فآمنا به ... ... | ١ ك الجن | ٧٢ |
| | وأنا لما سمعنا الهدى آمنا به... ... ... ... ... ... | ١٣ ك « | ٧٢ |
| سَمِعَهُ | : فمن بدله بعد ما سمعه فإنما إثمه على الذين يبدلونه | ١٨١ م البقرة | ٢ |
| سَمِعُوا | : وإذا سمعوا ما أنزل إلى الرسول ترى أعينهم تفيض | | |
| (٦) | من الدمع مما عرفوا من الحق ... ... ... ... | ٨٣ م المائدة | ٥ |
| | إذا رأتهم من مكان بعيد سمعوا لها تغيظا وزفيرا | ١٢ ك الفرقان | ٢٥ |
| | وإذا سمعوا اللغو أعرضوا عنه ... ... ... ... ... | ٥٥ م القصص | ٢٨ |
| | إن تدعوهم لا يسمعوا دعاءكم ولو سمعوا ما استجابوا لكم | ١٤ ك فاطر | ٣٥ |
| | إذا ألقوا فيها سمعوا لها شهيقا وهي تفور ... ... | ٧ ك الملك | ٦٧ |
| | وإن يكاد الذين كفروا ليزلقونك بأبصارهم لما | | |
| | سمعوا الذكر ... ... ... ... ... ... ... | ٥١ ك القلم | ٦٨ |
| أَسْمَعُ | : قال لا تخافا إنني معكما أسمع وأرى... ... ... ... | ٤٦ ك طه | ٢٠ |
| تَسْمَعُ | : هل تحس منهم من أحد أو تسمع لهم ركزا ... ... | ٩٨ ك مريم | ١٩ |
| (٤) | وخشعت الأصوات للرحمن فلا تسمع إلا همسا... ... | ١٠٨ ك طه | ٢٠ |
| | وإن يقولوا تسمع لقولهم كأنهم خشب مسندة... ... | ٤ م المنافقون | ٦٣ |
| | في جنة عالية . لا تسمع فيها لاغية ... ... ... ... | ١١ ك الغاشية | ٨٨ |
| وَلَتَسْمَعُنَّ | : ولتسمعن من الذين أوتوا الكتاب من قبلكم | | |
| | ومن الذين أشركوا أذى كثيرا ... ... ... ... | ١٨٦ م آل عمران | ٣ |
| تَسْمَعُوا | : وقال الذين كفروا لا تسمعوا لهذا القرآن والغوا فيه | ٢٦ ك فصلت | ٤١ |
| تَسْمَعُونَ | : أطيعوا الله ورسوله ولا تولوا عنه وأنتم تسمعون | ٢٠ م الأنفال | ٨ |
| (٢) | من إله غير الله يأتيكم بضياء أفلا تسمعون... ... ... | ٧١ ك القصص | ٢٨ |
| تَسْمَعُ | : أم يحسبون أنا لا نسمع سرهم ونجواهم... ... ... | ٨٠ ك الزخرف | ٤٣ |
| (٢) | وقالوا لو كنا نسمع أو نعقل ما كنا في أصحاب السعير | ١٠ ك الملك | ٦٧ |
| يَسْمَعُ | : ومثل الذين كفروا كمثل الذي ينعق بما لا يسمع | | |
| (٦) | إلا دعاء ونداء... ... ... ... ... ... ... | ١٧١ م البقرة | ٢ |
| | وإن أحد من المشركين استجارك فأجره حتى يسمع كلام الله | ٦ م التوبة | ٩ |
| | إذ قال لأبيه يا أبت لم تعبد ما لا يسمع ولا يبصر | ٤٢ ك مريم | ١٩ |
| | ولا يسمع الصم الدعاء إذا ما ينذرون ... ... ... ... | ٤٥ ك الأنبياء | ٢١ |
| | يسمع آيات الله تتلى عليه ثم يصر مستكبرا كأن لم يسمعها | ٨ ك الجاثية | ٤٥ |
| | وتشتكي إلى الله والله يسمع تحاوركما إن الله سميع بصير | ١ م المجادلة | ٥٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَسْمَعُهَا | : وإذا تتلى عليه آياتنا ولّى مستكبرا كأن لم يسمعها | ٧ | ك لقمان | ٣١ |
| (٢) | يسمع آيات الله تتلى عليه ثم يصر مستكبرا كأن لم يسمعها | ٨ | ك الجاثية | ٤٥ |
| يَسْمَعُوا | : وإن تدعوهم إلى الهدى لا يسمعوا ... ... ... | ١٩٨ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | إن تدعوهم لا يسمعوا دعاءكم ولو سمعوا ما استجابوا لكم | ١٤ | ك فاطر | ٣٥ |
| يَسْمَعُونَ | : أفتطمعون أن يؤمنوا لكم وقد كان فريق منهم | | | |
| (١٩) | يسمعون كلام الله ثم يحرفونه من بعد ما عقلوه | ٧٥ | م البقرة | ٢ |
| | إنما يستجيب الذين يسمعون والموتى يبعثهم الله | ٣٦ | ك الأنعام | ٦ |
| | ونطبع على قلوبهم فهم لا يسمعون ... ... ... ... | ١٠٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولهم أعين لا يبصرون بها ولهم آذان لا يسمعون بها | ١٧٩ | ك « | ٧ |
| | أم لهم أعين يبصرون بها أم لهم آذان يسمعون بها | ١٩٥ | ك « | ٧ |
| | ولا تكونوا كالذين قالوا سمعنا وهم لا يسمعون... ... | ٢١ | م الأنفال | ٨ |
| | إن في ذلك لآيات لقوم يسمعون... ... ... ... ... | ٦٧ | ك يونس | ١٠ |
| | إن في ذلك لآية لقوم يسمعون ... ... ... ... ... | ٦٥ | ك النحل | ١٦ |
| | لا يسمعون فيها لغوا إلا سلاما ولهم رزقهم فيها بكرة وعشيا | ٦٢ | ك مريم | ١٩ |
| | لهم فيها زفير وهم فيها لا يسمعون ... ... ... ... | ١٠٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | لا يسمعون حسيسها وهم في ما اشتهت أنفسهم خالدون | ١٠٢ | ك « | ٢١ |
| | فتكونَ لهم قلوب يعقلون بها أو آذان يسمعون بها | ٤٦ | م الحج | ٢٢ |
| | أم تحسب أن أكثرهم يسمعون أو يعقلون ... ... | ٤٤ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | إن في ذلك لآيات لقوم يسمعون ... ... ... ... | ٢٣ | ك الروم | ٣٠ |
| | إن في ذلك لآيات أفلا يسمعون ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك السجدة | ٣٢ |
| | بشيرا ونذيرا فأعرض أكثرهم فهم لا يسمعون... ... | ٤ | ك فصلت | ٤١ |
| | يوم يسمعون الصيحة بالحق ذلك يوم الخروج... ... | ٤٢ | ك قٓ | ٥٠ |
| | لا يسمعون فيها لغوا ولا تأثيما ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | لا يسمعون فيها لغوا ولا كِذّابا ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك النبأ | ٧٨ |
| يَسْمَعُونَكُمْ | : قال هل يسمعونكم إذ تدعون ... ... ... | ٧٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| اسْمَعْ | : ويقولون سمعنا وعصينا واسمع غير مسمع... ... ... | ٤٦ | م النساء | ٤ |
| (٢) | ولو أنهم قالوا سمعنا وأطعنا واسمع وانظرنا لكان خيرا لهم | ٤٦ | م « | ٤ |
| اسْمَعُوا | : خذوا ما آتيناكم بقوة واسمعوا قالوا سمعنا وعصينا | ٩٣ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | يا أيها الذين آمنوا لا تقولوا راعنا وقولوا انظرنا واسمعوا | ١٠٤ | م « | ٢ |
| | واتقوا الله واسمعوا والله لا يهدي القوم الفاسقين | ١٠٨ | م المائدة | ٥ |
| | فاتقوا الله ما استطعتم واسمعوا وأطيعوا وأنفقوا | ١٦ | م التغابن | ٦٤ |
| فَاسْمَعُونِ | : إني آمنت بربكم فاسمعون... ... ... ... ... | ٢٥ | ك يسٓ | ٣٦ |
| أَسْمَعَهُمْ | : ولو علم الله فيهم خيرا لأسمعهم ... ... ... ... | ٢٣ | م الأنفال | ٨ |
| (٢) | ولو أسمعهم لتولّوا وهم معرضون ... ... ... ... | ٢٣ | م « | ٨ |
| تُسْمِعُ | : أفأنت تسمع الصم ولو كانوا لا يعقلون... ... ... | ٤٢ | ك يونس | ١٠ |
| (٨) | إنك لا تسمع الموتى ... ... ... ... ... ... | ٨٠ | ك النمل | ٢٧ |
| | ولا تسمع الصم الدعاء إذا ولوا مدبرين ... ... ... | ٨٠ | ك « | ٢٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تُسْمِعُ | : إن تسمع إلا من يؤمن بآياتنا فهم مسلمون... ... | ٨١ | ك النمل | ٢٧ |
| | فإنك لا تسمع الموتى ... ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك الروم | ٣٠ |
| | ولا تسمع الصم الدعاء إذا ولوا مدبرين ... ... ... | ٥٢ | ك « | ٣٠ |
| | إن تسمع إلا من يؤمن بآياتنا فهم مسلمون ... ... | ٥٣ | ك « | ٣٠ |
| | أفأنت تسمع الصم أو تهدي العمي ومن كان في ضلال مبين | ٤٠ | ك الزخرف | ٤٣ |
| يُسْمِعُ | : إن الله يسمع من يشاء وما أنت بمسمع من في القبور | ٢٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| أَسْمِعْ | : له غيب السموات والأرض أبصر به وأسمع ... | ٢٦ | ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | أسمع بهم وأبصر يوم يأتوننا ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك مريم | ١٩ |
| يَسَّمَّعُونَ | : لا يسمعون إلى الملإ الأعلى ويقذفون من كل جانب | ٨ | ك الصافات | ٣٧ |
| اسْتَمَعَ | : قل أوحي إليّ أنه استمع نفر من الجن ... ... | ١ | ك الجن | ٧٢ |
| اسْتَمَعُوهُ | : ما يأتيهم من ذكر من ربهم محدث إلا استمعوه | | | |
| | وهم يلعبون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢ | ك الأنبياء | ٢١ |
| تَسْتَمِعُونَ | : قال لمن حوله ألا تستمعون ... ... ... ... | ٢٥ | ك الشعراء | ٢٦ |
| يَسْتَمِعُ | : ومنهم من يستمع إليك وجعلنا على قلوبهم أكنة | | | |
| (٣) | أن يفقهوه ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | ومنهم من يستمع إليك حتى إذا خرجوا من عندك قالوا | | | |
| | للذين أوتوا العلم ماذا قال آنفا ... ... ... ... | ١٦ | م محمد | ٤٧ |
| | فمن يستمع الآن يجد له شهابا رصدا ... ... ... | ٩ | ك الجن | ٧٢ |
| يَسْتَمِعُونَ | : ومنهم من يستمعون إليك أفأنت تسمع الصم | | | |
| (٦) | ولو كانوا لا يعقلون... ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك يونس | ١٠ |
| | نحن أعلم بما يستمعون به ... ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| | إذ يستمعون إليك وإذ هم نجوى ... ... ... ... | ٤٧ | ك « | ١٧ |
| | الذين يستمعون القول فيتبعون أحسنه ... ... ... | ١٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وإذ صرفنا إليك نفرا من الجن يستمعون القرآن | ٢٩ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | أم لهم سلم يستمعون فيه فليأت مستمعهم بسلطان مبين | ٣٨ | ك الطور | ٥٢ |
| اسْتَمِعْ | : وأنا اخترتك فاستمع لما يوحى ... ... ... ... | ١٣ | ك طه | ٢٠ |
| (٢) | واستمع يوم يناد المناد من مكان قريب ... ... ... | ٤١ | ك قٓ | ٥٠ |
| فَاسْتَمِعُوا | : وإذا قرئ القرآن فاستمعوا له وأنصتوا | ٢٠٤ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | يا أيها الناس ضرب مثل فاستمعوا له ... ... ... | ٧٣ | م الحج | ٢٢ |
| السَّمْعَ | : قل من يرزقكم من السماء والأرض أمن يملك | | | |
| (١٢) | السمع والأبصار ... ... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك يونس | ١٠ |
| | ما كانوا يستطيعون السمع وما كانوا يبصرون ... ... | ٢٠ | ك هود | ١١ |
| | إلا من استرق السمع فأتبعه شهاب مبين ... ... | ١٨ | ك الحجر | ١٥ |
| | وجعل لكم السمع والأبصار والأفئدة لعلكم تشكرون | ٧٨ | ك النحل | ١٦ |
| | إن السمع والبصر والفؤاد كل أولئك كان عنه مسئولا | ٣٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وهو الذي أنشأ لكم السمع والأبصار والأفئدة ... | ٧٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | إنهم عن السمع لمعزولون ... ... ... ... ... ... | ٢١٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | يلقون السمع وأكثرهم كاذبون ... ... ... ... ... | ٢٢٣ | ك « | ٢٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| السَّمْعَ: | ثم سواه ونفخ فيه من روحه وجعل لكم السمع والأبصار والأفئدة قليلا ما تشكرون ... ... ... | ٩ | ك السجدة | ٣٢ |
| | إن في ذلك لذكرى لمن كان له قلب أو ألقى السمع وهو شهيد | ٣٧ | ك ق | ٥٠ |
| | قل هو الذي أنشأكم وجعل لكم السمع والأبصار والأفئدة | ٢٣ | ك الملك | ٦٧ |
| | وأنا كنا نقعد منها مقاعد للسمع ... ... ... ... ... | ٩ | ك الجن | ٧٢ |
| سَمْعًا: | وكانوا لا يستطيعون سمعا ... ... ... ... ... ... | ١٠١ | م الكهف | ١٨ |
| (٢) | وجعلنا لهم سمعا وأبصارا وأفئدة فما أغنى عنهم سمعهم | ٢٦ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| سَمْعُكُمْ: | قل أرأيتم إن أخذ الله سمعكم وأبصاركم وختم على قلوبكم من إله غير الله يأتيكم به ... ... ... ... | ٤٦ | ك الأنعام | ٦ |
| | وما كنتم تستترون أن يشهد عليكم سمعكم ولا أبصاركم | ٢٢ | ك فصلت | ٤١ |
| سَمْعِهِ: | أفرأيت من اتخذ إلهه هواه وأضله الله على علم وختم على سمعه وقلبه ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك الجاثية | ٤٥ |
| سَمْعِهِمْ: | ختم الله على قلوبهم وعلى سمعهم وعلى أبصارهم غشاوة | ٧ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | ولو شاء الله لذهب بسمعهم وأبصارهم ... ... ... | ٢٠ | م « | ٢ |
| | أولئك الذين طبع الله على قلوبهم وسمعهم وأبصارهم | ١٠٨ | ك النحل | ١٦ |
| | حتى إذا ما جاءوها شهد عليهم سمعهم وأبصارهم وجلودهم | ٢٠ | ك فصلت | ٤١ |
| | فما أغنى عنهم سمعهم ولا أبصارهم ولا أفئدتهم من شيء | ٢٦ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| سَمِيعُ: | ربنا تقبل منا إنك أنت السميع العليم ... ... ... | ١٢٧ | م البقرة | ٢ |
| (٤٣) | فسيكفيكهم الله وهو السميع العليم ... ... ... ... | ١٣٧ | م « | ٢ |
| | فإنما إثمه على الذين يبدلونه إن الله سميع عليم... ... | ١٨١ | م « | ٢ |
| | أن تبروا وتتقوا وتصلحوا بين الناس والله سميع عليم | ٢٢٤ | م « | ٢ |
| | وإن عزموا الطلاق فإن الله سميع عليم ... ... ... | ٢٢٧ | م « | ٢ |
| | وقاتلوا في سبيل الله واعلموا أن الله سميع عليم | ٢٤٤ | م « | ٢ |
| | فقد استمسك بالعروة الوثقى لا انفصام لها والله سميع عليم | ٢٥٦ | م « | ٢ |
| | ذرية بعضها من بعض والله سميع عليم ... ... ... | ٣٤ | م آل عمران | ٣ |
| | فتقبل مني إنك أنت السميع العليم ... ... ... ... | ٣٥ | م « | ٣ |
| | قال رب هب لي من لدنك ذرية طيبة إنك سميع الدعاء | ٣٨ | م « | ٣ |
| | وإذ غدوت من أهلك تبوئ المؤمنين مقاعد للقتال والله سميع عليم... ... ... ... ... ... ... | ١٢١ | م « | ٣ |
| | قل أتعبدون من دون الله ما لا يملك لكم ضرا ولا نفعا والله هو السميع العليم ... ... ... ... ... | ٧٦ | م المائدة | ٥ |
| | وله ما سكن في الليل والنهار وهو السميع العليم... ... | ١٣ | ك الأنعام | ٦ |
| | لا مبدل لكلماته وهو السميع العليم ... ... ... ... | ١١٥ | ك « | ٦ |
| | وإما ينزغنك من الشيطان نزغ فاستعذ بالله إنه سميع عليم | ٢٠٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | وليبلي المؤمنين منه بلاء حسنا إن الله سميع عليم | ١٧ | م الأنفال | ٨ |
| | ليهلك من هلك عن بينة ويحيى من حي عن بينة وإن الله لسميع عليم ... ... ... ... ... | ٤٢ | م « | ٨ |
| | ذلك بأن الله لم يك مغيرا نعمة أنعمها على قوم حتى يغيروا ما بأنفسهم وأن الله سميع عليم... ... | ٥٣ | م « | ٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| سَمِيعٌ: | وتوكل على الله إنه هو السميع العليم ... ... ... | ٦١ | م الأنفال | ٨ |
| | عليهم دائرة السوء والله سميع عليم ... ... ... ... | ٩٨ | م التوبة | ٩ |
| | إن صلاتك سكن لهم والله سميع عليم ... ... ... ... | ١٠٣ | م « | ٩ |
| | ولا يحزنك قولهم إن العزة لله جميعا هو السميع العليم | ٦٥ | ك يونس | ١٠ |
| | مثل الفريقين كالأعمى والأصم والبصير والسميع | ٢٤ | ك هود | ١١ |
| | فاستجاب له ربه فصرف عنه كيدهن إنه هو السميع العليم | ٣٤ | ك يوسف | ١٢ |
| | الحمد لله الذي وهب لي على الكبر إسمعيل وإسحق إن ربي لسميع الدعاء ... ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | لنريه من آياتنا إنه هو السميع البصير ... ... ... | ١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | قال ربي يعلم القول في السماء والأرض وهو السميع العليم | ٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ويولج النهار في الليل وأن الله سميع بصير ... ... | ٦١ | م الحج | ٢٢ |
| | الله يصطفي من الملائكة رسلا ومن الناس إن الله سميع بصير | ٧٥ | م « | ٢٢ |
| | ولكن الله يزكي من يشاء والله سميع عليم ... ... | ٢١ | م النور | ٢٤ |
| | وأن يستعففن خير لهن والله سميع عليم ... ... ... | ٦٠ | م « | ٢٤ |
| | إنه هو السميع العليم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢٠ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | من كان يرجوا لقاء الله فإن أجل الله لآت وهو السميع العليم | ٥ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | الله يرزقها وإياكم وهو السميع العليم ... ... ... | ٦٠ | ك « | ٢٩ |
| | ما خلقكم ولا بعثكم إلا كنفس واحدة إن الله سميع بصير | ٢٨ | م لقمان | ٣١ |
| | وإن اهتديت فبما يوحي إليّ ربي إنه سميع قريب ... | ٥٠ | ك سبأ | ٣٤ |
| | والذين يدعون من دونه لا يقضون بشيء إن الله هو السميع البصير ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك غافر | ٤٠ |
| | فاستعذ بالله إنه هو السميع البصير... ... ... ... | ٥٦ | م « | ٤٠ |
| | وإما ينزغنك من الشيطان نزغ فاستعذ بالله إنه هو السميع العليم ... ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك فصلت | ٤١ |
| | ليس كمثله شيء وهو السميع البصير ... ... ... ... | ١١ | ك الشورى | ٤٢ |
| | رحمة من ربك إنه هو السميع العليم ... ... ... ... | ٦ | ك الدخان | ٤٤ |
| | واتقوا الله إن الله سميع عليم ... ... ... ... ... | ١ | م الحجرات | ٤٩ |
| | والله يسمع تحاوركما إن الله سميع بصير ... ... ... | ١ | م المجادلة | ٥٨ |
| سَمِيعًا: | إن الله نعما يعظكم به إن الله كان سميعا بصيرا | ٥٨ | م النساء | ٤ |
| (٤) | فعند الله ثواب الدنيا والآخرة وكان الله سميعا بصيرا | ١٣٤ | م « | ٤ |
| | لا يحب الله الجهر بالسوء من القول إلا من ظلم وكان الله سميعا عليما ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٨ | م « | ٤ |
| | إنا خلقنا الإنسان من نطفة أمشاج نبتليه فجعلناه سميعا بصيرا | ٢ | م الإنسان | ٧٦ |
| سَمَّاعُونَ: | ومن الذين هادوا سماعون للكذب ... ... ... | ٤١ | م المائدة | ٥ |
| (٤) | سماعون لقوم آخرين لم يأتوك ... ... ... ... ... | ٤١ | م « | ٥ |
| | سماعون للكذب أكالون للسحت... ... ... ... ... | ٤٢ | م « | ٥ |
| | ولأوضعوا خلالكم يبغونكم الفتنة وفيكم سماعون لهم | ٤٧ | م التوبة | ٩ |
| بِمُسْمِعٍ: | إن الله يسمع من يشاء وما أنت بمسمع من في القبور | ٢٢ | ك فاطر | ٣٥ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| مُسْمَعٍ | : ويقولون سمعنا وعصينا واسمع غير مسمع ... ... | ٤ النساء | ٤٦ |
| مُسْتَمِعُهُمْ | : فلياتِ مستمعهم بسلطان مبين... ... ... ... | ٣٨ الطور | ٥٢ |
| مُسْتَمِعُونَ | : قال كلا فاذهبا بآياتنا إنا معكم مستمعون | ١٥ الشعراء | ٢٦ |
| سَمْكَهَا | : أأنتم أشد خلقا أم السماء بناها . رفع سمكها فسواها | ٢٨ النازعات | ٧٩ |
| سَمِّ | : ولا يدخلون الجنة حتى يلج الجمل فى سم الخياط | ٤٠ الأعراف | ٧ |
| السَّمُومِ | : والجانَّ خلقناه من قبل من نار السموم ... ... | ٢٧ الحجر | ١٥ |
| (٣) | فمنَّ الله علينا ووقانا عذاب السموم ... ... ... ... | ٢٧ الطور | ٥٢ |
| | وأصحاب الشمال ما أصحاب الشمال . فى سموم وحميم | ٤٢ الواقعة | ٥٦ |
| يُسْمِنُ | : لا يسمن ولا يغنى من جوع ... ... ... ... ... | ٧ الغاشية | ٨٨ |
| سَمِينٍ | : فراغ إلى أهله فجاء بعجل سمين ... ... ... ... | ٢٦ الذاريات | ٥١ |
| سِمَانٍ | : وقال الملك إنى أرى سبع بقرات سمان يأكلهن سبع عجاف | ٤٣ يوسف | ١٢ |
| (٢) | يوسف أيها الصديق أفتنا فى سبع بقرات سمان | | |
| | يأكلهن سبع عجاف ... ... ... ... ... ... | ٤٦ » | ١٢ |
| سَمَّاكُمُ | : هو سماكم المسلمين من قبل وفى هذا ... ... ... | ٧٨ الحج | ٢٢ |
| سَمَّيْتُمُوهَا | : أتجادلوننى فى أسماء سميتموها أنتم وآباؤكم | ٧١ الأعراف | ٧ |
| (٣) | ما تعبدون من دونه إلا أسماء سميتموها أنتم وآباؤكم | ٤٠ يوسف | ١٢ |
| | إن هى إلا أسماء سميتموها أنتم وآباؤكم ... ... ... | ٢٣ النجم | ٥٣ |
| سَمَّيْتُهَا | : وإنى سميتها مريم ... ... ... ... ... ... ... | ٣٦ آل عمران | ٣ |
| لَيُسَمُّونَ | : إن الذين لا يؤمنون بالآخرة ليسمون الملائكة | | |
| | تسمية الأنثى ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧ النجم | ٥٣ |
| سَمُّوهُمْ | : وجعلوا لله شركاء قل سموهم ... ... ... ... ... | ٣٣ الرعد | ١٣ |
| تُسَمَّى | : عينا فيها تسمى سلسبيلا ... ... ... ... ... ... | ١٨ الإنسان | ٧٦ |
| تَسْمِيَةَ | : إن الذين لا يؤمنون بالآخرة ليسمون الملائكة | | |
| | تسمية الأنثى ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧ النجم | ٥٣ |
| مُسَمًّى | : إذا تداينتم بدين إلى أجل مسمى فاكتبوه ... ... | ٢٨٢ البقرة | ٢ |
| (٢١) | هو الذى خلقكم من طين ثم قضى أجلا وأجل مسمى عنده | ٢ الأنعام | ٦ |
| | ويعلم ما جرحتم بالنهار ثم يبعثكم فيه ليقضى أجل مسمى | ٦٠ » | ٦ |
| | ثم توبوا إليه يمتعكم متاعا حسنا إلى أجل مسمى | ٣ هود | ١١ |
| | وسخر الشمس والقمر كل يجرى لأجل مسمى ... ... | ٢ الرعد | ١٣ |
| | يدعوكم ليغفر لكم من ذنوبكم ويؤخركم إلى أجل مسمى | ١٠ إبراهيم | ١٤ |
| | ما ترك عليها من دابة ولكن يؤخرهم إلى أجل مسمى | ٦١ النحل | ١٦ |
| | ولولا كلمة سبقت من ربك لكان لزاما وأجل مسمى | ١٢٩ طه | ٢٠ |
| مُسَمًّى | : ونقر فى الأرحام ما نشاء إلى أجل مسمى ... ... | ٥ الحج | ٢٢ |
| | لكم فيها منافع إلى أجل مسمى ثم محلها إلى البيت العتيق | ٣٣ » | ٢٢ |
| | ويستعجلونك بالعذاب ولولا أجل مسمى لجاءهم العذاب | ٥٣ العنكبوت | ٢٩ |
| | ما خلق الله السموات والأرض وما بينهما إلا بالحق | | |
| | وأجل مسمى ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨ الروم | ٣٠ |
| | وسخر الشمس والقمر كل يجرى إلى أجل مسمى ... | ٢٩ لقمان | ٣١ |
| | وسخر الشمس والقمر كل يجرى لأجل مسمى ... ... | ١٣ فاطر | ٣٥ |
| | ما ترك على ظهرها من دابة ولكن يؤخرهم إلى أجل مسمى | ٤٥ » | ٣٥ |
| | وسخر الشمس والقمر كل يجرى لأجل مسمى ... ... | ٥ الزمر | ٣٩ |
| | فيمسك التى قضى عليها الموت ويرسل الأخرى إلى | | |
| | أجل مسمى ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٢ » | ٣٩ |
| | ولتبلغوا أجلا مسمى ولعلكم تعقلون ... ... ... ... | ٦٧ غافر | ٤٠ |
| | ولولا كلمة سبقت من ربك إلى أجل مسمى لقضى بينهم | ١٤ الشورى | ٤٢ |
| | ما خلقنا السموات والأرض وما بينهما إلا بالحق | | |
| | وأجل مسمى ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣ الأحقاف | ٤٦ |
| | يغفر لكم من ذنوبكم ويؤخركم إلى أجل مسمى... ... | ٤ نوح | ٧١ |
| سَمِيًّا | : يا زكريا إنا نبشرك بغلام اسمه يحيى لم نجعل له من قبل سميا | ٧ مريم | ١٩ |
| (٢) | فاعبده واصطبر لعبادته هل تعلم له سميا ... ... ... | ٦٥ » | ١٩ |
| آسْمِ | : فكلوا مما أمسكن عليكم واذكروا اسم الله عليه | ٤ المائدة | ٥ |
| (١٩) | فكلوا مما ذكر اسم الله عليه إن كنتم بآياته مؤمنين | ١١٨ الأنعام | ٦ |
| | وما لكم ألا تأكلوا مما ذكر اسم الله عليه ... ... | ١١٩ » | ٦ |
| | ولا تأكلوا مما لم يذكر اسم الله عليه وإنه لفسق | ١٢١ » | ٦ |
| | وأنعام لا يذكرون اسم الله عليها افتراء عليه ... ... | ١٣٨ » | ٦ |
| | ليشهدوا منافع لهم ويذكروا اسم الله فى أيام معلومات | ٢٨ الحج | ٢٢ |
| | ولكل أمة جعلنا منسكا ليذكروا اسم الله على ما رزقهم | | |
| | من بهيمة الأنعام ... ... ... ... ... ... ... | ٣٤ » | ٢٢ |
| | فاذكروا اسم الله عليها صوافَّ ... ... ... ... ... | ٣٦ » | ٢٢ |
| | ولولا دفع الله الناس بعضهم ببعض لهدمت صوامع وبيع | | |
| | وصلوات ومساجد يذكر فيها اسم الله كثيرا ... | ٤٠ » | ٢٢ |
| | ولا تنابزوا بالألقاب بئس الاسم الفسوق بعد الإيمان | ١١ الحجرات | ٤٩ |
| | تبارك اسم ربك ذى الجلال والإكرام ... ... ... | ٧٨ الرحمن | ٥٥ |
| | نحن جعلناها تذكرة ومتاعا للمقوين . فسبح باسم | | |
| | ربك العظيم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٤ الواقعة | ٥٦ |
| | إن هذا لهو حق اليقين . فسبح باسم ربك العظيم | ٩٦ » | ٥٦ |
| | وإنه لحق اليقين . فسبح باسم ربك العظيم ... ... | ٥٢ الحاقة | ٦٩ |
| | واذكر اسم ربك وتبتل إليه تبتيلا ... ... ... ... | ٨ المزمل | ٧٣ |
| | واذكر اسم ربك بكرة وأصيلا ... ... ... ... ... | ٢٥ الإنسان | ٧٦ |
| | سبح اسم ربك الأعلى ... ... ... ... ... ... ... | ١ الأعلى | ٨٧ |

| اللفظة | الآية | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| أَسْمٍ: | قد أفلح من تزكى . وذكر اسم ربه فصلى ... ... | الأعلى | ٨٧ |
| | اقرأ باسم ربك الذى خلق ... ... ... ... ... | العلق | ٩٦ |
| بِسْمِ: | بسم الله الرحمن الرحيم . الحمد لله رب العالمين ... ... | الفاتحة | ١ |
| (٣) | وقال اركبوا فيها بسم الله مجريها ومرساها ... ... | هود | ١١ |
| | إنه من سليمان وإنه بسم الله الرحمن الرحيم ... ... | النمل | ٢٧ |
| أَسْمُهُ: | ومن أظلم ممن منع مساجد الله أن يذكر فيها اسمه | البقرة | ٢ |
| (٥) | إن الله يبشرك بكلمة منه اسمه المسيح عيسى ابن مريم | آل عمران | ٣ |
| | يازكريا إنا نبشرك بغلام اسمه يحيى لم نجعل له من قبل سميا | مريم | ١٩ |
| | فى بيوت أذن الله أن ترفع ويذكر فيها اسمه ... ... | النور | ٢٤ |
| | ومبشرا برسول يأتى من بعدى اسمه أحمد ... ... | الصف | ٦١ |
| أَسْمَاءَ: | وعلم آدم الأسماء كلها ثم عرضهم على الملائكة | البقرة | ٢ |
| (٩) | فقال أنبئونى بأسماء هؤلاء إن كنتم صادقين ... .. | البقرة | ٢ |
| | أتجادلوننى فى أسماء سميتموها أنتم وآباؤكم ... ... | الأعراف | ٧ |
| | ولله الأسماء الحسنى فادعوه بها ... ... ... ... | الأعراف | ٧ |
| | ما تعبدون من دونه إلا أسماء سميتموها أنتم وآباؤكم | يوسف | ١٢ |
| | أيا ما تدعوا فله الأسماء الحسنى ... ... ... ... | الإسراء | ١٧ |
| | الله لا إله إلا هو له الأسماء الحسنى ... ... ... | طه | ٢٠ |
| | إن هى إلا أسماء سميتموها أنتم وآباؤكم ... ... ... | النجم | ٥٣ |
| | هو الله الخالق البارئ المصور له الأسماء الحسنى | الحشر | ٥٩ |
| أَسْمَائِهِ: | وذروا الذين يلحدون فى أسمائه ... ... ... ... | الأعراف | ٧ |
| أَسْمَائِهِمْ: | قال يا آدم أنبئهم بأسمائهم ... ... ... ... | البقرة | ٢ |
| | فلما أنبأهم بأسمائهم قال ألم أقل لكم إنى أعلم غيب السموات والأرض ... ... ... ... ... | البقرة | ٢ |
| السَّمَاءِ: | أو كصيب من السماء فيه ظلمات ورعد وبرق | البقرة | ٢ |
| (١٢٠) | الذى جعل لكم الأرض فراشا والسماء بناء ... ... | البقرة | ٢ |
| | وأنزل من السماء ماء فأخرج به من الثمرات رزقا لكم | البقرة | ٢ |
| | ثم استوى إلى السماء فسواهن سبع سموات ... ... | البقرة | ٢ |
| | فأنزلنا على الذين ظلموا رجزا من السماء بما كانوا يفسقون | البقرة | ٢ |
| | قد نرى تقلب وجهك فى السماء فلنولينك قبلة ترضاها | البقرة | ٢ |
| | وما أنزل الله من السماء من ماء فأحيا به الأرض بعد موتها | البقرة | ٢ |
| | وتصريف الرياح والسحاب المسخر بين السماء والأرض | البقرة | ٢ |
| | إن الله لا يخفى عليه شىء فى الأرض ولا فى السماء | آل عمران | ٣ |
| | يسئلك أهل الكتاب أن تنزل عليهم كتابا من السماء | النساء | ٤ |
| | هل يستطيع ربك أن ينزل علينا مائدة من السماء | المائدة | ٥ |
| | قال عيسى ابن مريم اللهم ربنا أنزل علينا مائدة من السماء | المائدة | ٥ |
| | وأرسلنا السماء عليهم مدرارا وجعلنا الأنهار تجرى من تحتهم ... ... ... ... ... ... | الأنعام | ٦ |
| السَّمَاءَ: | فإن استطعت أن تبتغى نفقا فى الأرض أو سلما فى السماء فتأتيهم بآية ... ... ... ... ... | الأنعام | ٦ |
| | وهو الذى أنزل من السماء ماء فأخرجنا به نبات كل شىء | الأنعام | ٦ |
| | ومن يرد أن يضله يجعل صدره ضيقا حرجا كأنما يصعد فى السماء ... ... ... ... ... ... | الأنعام | ٦ |
| | إن الذين كذبوا بآياتنا واستكبروا عنها لا تفتح لهم أبواب السماء ... ... ... ... ... ... | الأعراف | ٧ |
| | ولو أن أهل القرى آمنوا واتقوا لفتحنا عليهم بركات من السماء والأرض ... ... ... ... ... | الأعراف | ٧ |
| | فأرسلنا عليهم رجزا من السماء بما كانوا يظلمون ... | الأعراف | ٧ |
| | إذ يغشيكم النعاس أمنة منه وينزل عليكم من السماء ماء | الأنفال | ٨ |
| | إن كان هذا هو الحق من عندك فأمطر علينا حجارة من السماء | الأنفال | ٨ |
| | إنما مثل الحياة الدنيا كماء أنزلناه من السماء فاختلط به نبات الأرض ... ... ... ... ... ... ... | يونس | ١٠ |
| | قل من يرزقكم من السماء والأرض أمن يملك السمع والأبصار | يونس | ١٠ |
| | وما يعزب عن ربك من مثقال ذرة فى الأرض ولا فى السماء | يونس | ١٠ |
| | وقيل يا أرض ابلعى ماءك ويا سماء أقلعى ... ... | هود | ١١ |
| | ويا قوم استغفروا ربكم ثم توبوا إليه يرسل السماء عليكم مدرارا ... ... ... ... ... ... ... | هود | ١١ |
| | أنزل من السماء ماء فسالت أودية بقدرها ... ... | الرعد | ١٣ |
| | كلمة طيبة كشجرة طيبة أصلها ثابت وفرعها فى السماء | إبراهيم | ١٤ |
| | وأنزل من السماء ماء فأخرج به من الثمرات رزقا لكم | إبراهيم | ١٤ |
| | وما يخفى على الله من شىء فى الأرض ولا فى السماء | إبراهيم | ١٤ |
| | ولو فتحنا عليهم بابا من السماء فظلوا فيه يعرجون | الحجر | ١٥ |
| | ولقد جعلنا فى السماء بروجا وزيناها للناظرين ... ... | الحجر | ١٥ |
| | وأرسلنا الرياح لواقح فأنزلنا من السماء ماء فأسقيناكموه | الحجر | ١٥ |
| | هو الذى أنزل من السماء ماء لكم منه شراب ... ... | النحل | ١٦ |
| | والله أنزل من السماء ماء فأحيا به الأرض بعد موتها | النحل | ١٦ |
| | ألم يروا إلى الطير مسخرات فى جو السماء ما يمسكهن إلا الله | النحل | ١٦ |
| | أو تسقط السماء كما زعمت علينا كسفا ... ... ... ... | الإسراء | ١٧ |
| | أو يكون لك بيت من زخرف أو ترقى فى السماء ... | الإسراء | ١٧ |
| | أنزلنا عليهم من السماء ملكا رسولا ... ... ... ... | الإسراء | ١٧ |
| | ويرسل عليها حسبانا من السماء فتصبح صعيدا زلقا ... | الكهف | ١٨ |
| | واضرب لهم مثل الحياة الدنيا كماء أنزلناه من السماء | الكهف | ١٨ |
| | وأنزل من السماء ماء فأخرجنا به أزواجا من نبات شتى | طه | ٢٠ |
| | قال ربى يعلم القول فى السماء والأرض ... ... ... | الأنبياء | ٢١ |
| | وما خلقنا السماء والأرض وما بينهما لاعبين ... ... | الأنبياء | ٢١ |
| | وجعلنا السماء سقفا محفوظا وهم عن آياتها معرضون | الأنبياء | ٢١ |
| | يوم نطوى السماء كطى السجل للكتب ... ... ... | الأنبياء | ٢١ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| السَّمَاءِ: | فليمدد بسبب إلى السماء ثم ليقطع فلينظر هل يذهبن كيده ما يغيظ ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | م الحج | ٢٢ |
| | ومن يشرك بالله فكأنما خرّ من السماء فتخطفه الطير | ٣١ | م « | ٢٢ |
| | ألم تر أن الله أنزل من السماء ماء فتصبح الأرض مخضرة | ٦٣ | م « | ٢٢ |
| | ويمسك السماء أن تقع على الأرض إلا بإذنه | ٦٥ | م « | ٢٢ |
| | ألم تعلم أن الله يعلم ما فى السماء والأرض ... ... | ٧٠ | م « | ٢٢ |
| | وأنزلنا من السماء ماء بقدر فأسكناه فى الأرض | ١٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وينزل من السماء من جبال فيها من برد ... ... ... | ٤٣ | م النور | ٢٤ |
| | ويوم تشقق السماء بالغمام ونزل الملائكة تنزيلا ... | ٢٥ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وأنزلنا من السماء ماء طهورا ... ... ... ... ... | ٤٨ | ك « | ٢٥ |
| | تبارك الذى جعل فى السماء بروجا وجعل فيها سراجا | ٦١ | ك « | ٢٥ |
| | إن نشأ ننزل عليهم من السماء آية فظلت أعناقهم لها خاضعين | ٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فأسقط علينا كسفا من السماء إن كنت من الصادقين | ٨٧ | ك « | ٢٦ |
| | وأنزل لكم من السماء ماء فأنبتنا به حدائق ذات بهجة | ٦٠ | ك النمل | ٢٧ |
| | أمن يبدؤا الخلق ثم يعيده ومن يرزقكم من السماء والأرض | ٦٤ | ك « | ٢٧ |
| | وما من غائبة فى السماء والأرض إلا فى كتاب مبين | ٧٥ | ك « | ٢٧ |
| | وما أنتم بمعجزين فى الأرض ولا فى السماء ... ... | ٢٢ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | إنا منزلون على أهل هذه القرية رجزا من السماء | ٣٤ | ك « | ٢٩ |
| | ولئن سألتهم من نزل من السماء ماء فأحيا به الأرض من بعد موتها ليقولن الله ... ... ... ... ... | ٦٣ | ك « | ٢٩ |
| | وينزل من السماء ماء فيحيى به الأرض بعد موتها ... | ٢٤ | ك الروم | ٣٠ |
| | ومن آياته أن تقوم السماء والأرض بأمره ... ... | ٢٥ | ك « | ٣٠ |
| | فتثير سحابا فيبسطه فى السماء كيف يشاء ... ... ... | ٤٨ | ك « | ٣٠ |
| | وأنزلنا من السماء ماء فأنبتنا فيها من كل زوج كريم | ١٠ | ك لقمان | ٣١ |
| | يدبر الأمر من السماء إلى الأرض ... ... ... ... | ٥ | ك السجدة | ٣٢ |
| | يعلم ما يلج فى الأرض وما يخرج منها وما ينزل من السماء وما يعرج فيها ... ... ... ... ... ... | ٢ | ك سبأ | ٣٤ |
| | أفلم يروا إلى ما بين أيديهم وما خلفهم من السماء والأرض | ٩ | ك « | ٣٤ |
| | إن نشأ نخسف بهم الأرض أو نسقط عليهم كسفا من السماء | ٩ | ك « | ٣٤ |
| | هل من خالق غير الله يرزقكم من السماء والأرض | ٣ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ألم تر أن الله أنزل من السماء ماء ... ... ... ... | ٢٧ | ك « | ٣٥ |
| | وما أنزلنا على قومه من بعده من جند من السماء وما كنا منزلين | ٢٨ | ك يس | ٣٦ |
| | إنا زينا السماء الدنيا بزينة الكواكب ... ... ... | ٦ | ك الصافات | ٣٧ |
| | وما خلقنا السماء والأرض وما بينهما باطلا ... ... | ٢٧ | ك ص | ٣٨ |
| | ألم تر أن الله أنزل من السماء ماء فسلكه ينابيع فى الأرض | ٢١ | ك الزمر | ٣٩ |
| | هو الذى يريكم آياته وينزل لكم من السماء رزقا | ١٣ | ك غافر | ٤٠ |
| | الله الذى جعل لكم الأرض قرارا والسماء بناء ... ... | ٦٤ | ك « | ٤٠ |
| | ثم استوى إلى السماء وهى دخان ... ... ... ... | ١١ | ك فصلت | ٤١ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| السَّمَاءِ: | فقضاهن سبع سموات فى يومين وأوحى فى كل سماء أمرها ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك فصلت | ٤١ |
| | وزينا السماء الدنيا بمصابيح وحفظا... ... ... ... | ١٢ | ك « | ٤١ |
| | والذى نزل من السماء ماء بقدر... ... ... ... ... | ١١ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وهو الذى فى السماء إله وفى الأرض إله ... ... ... | ٨٤ | ك « | ٤٣ |
| | فارتقب يوم تأتى السماء بدخان مبين... ... ... ... | ١٠ | ك الدخان | ٤٤ |
| | فما بكت عليهم السماء والأرض وما كانوا منظرين | ٢٩ | ك « | ٤٤ |
| | واختلاف الليل والنهار وما أنزل الله من السماء من رزق فأحيا به الأرض بعد موتها وتصريف الرياح آيات لقوم يعقلون ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | أفلم ينظروا إلى السماء فوقهم كيف بنيناها وزيناها ... | ٦ | ك ق | ٥٠ |
| | ونزلنا من السماء ماء مباركا فأنبتنا به جنات وحب الحصيد | ٩ | ك « | ٥٠ |
| | والسماء ذات الحبك . إنكم لفى قول مختلف ... ... | ٧ | ك الذاريات | ٥١ |
| | وفى السماء رزقكم وما توعدون ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك « | ٥١ |
| | فورب السماء والأرض إنه لحق مثل ما أنكم تنطقون | ٢٣ | ك « | ٥١ |
| | والسماء بنيناها بأيد وإنا لموسعون ... ... ... ... | ٤٧ | ك « | ٥١ |
| | يوم تمور السماء مورا ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك الطور | ٥٢ |
| | وإن يروا كسفا من السماء ساقطا يقولوا سحاب مركوم | ٤٤ | ك « | ٥٢ |
| | ففتحنا أبواب السماء بماء منهمر ... ... ... ... ... | ١١ | ك القمر | ٥٤ |
| | والسماء رفعها ووضع الميزان ... ... ... ... ... ... | ٧ | م الرحمن | ٥٥ |
| | فإذا انشقت السماء فكانت وردة كالدهان ... ... ... | ٣٧ | م « | ٥٥ |
| | يعلم ما يلج فى الأرض وما يخرج منها وما ينزل من السماء وما يعرج فيها ... ... ... ... ... ... | ٤ | م الحديد | ٥٧ |
| | سابقوا إلى مغفرة من ربكم وجنة عرضها كعرض السماء والأرض... ... ... ... ... ... ... | ٢١ | م « | ٥٧ |
| | ولقد زينا السماء الدنيا بمصابيح وجعلناها رجوما للشياطين | ٥ | ك الملك | ٦٧ |
| | أأمنتم من فى السماء أن يخسف بكم الأرض فإذا هى تمور | ١٦ | ك « | ٦٧ |
| | أم أمنتم من فى السماء أن يرسل عليكم حاصبا ... ... | ١٧ | ك « | ٦٧ |
| | وانشقت السماء فهى يومئذ واهية... ... ... ... ... | ١٦ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | يوم تكون السماء كالمهل ... ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك المعارج | ٧٠ |
| | إنه كان غفارا . يرسل السماء عليكم مدرارا ... ... | ١٢ | ك نوح | ٧١ |
| | وأنا لمسنا السماء فوجدناها ملئت حرسا شديدا وشهبا | ٨ | ك الجن | ٧٢ |
| | السماء منفطر به كان وعده مفعولا... ... ... ... ... | ١٨ | ك المزمل | ٧٣ |
| | وإذا السماء فرجت ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك المرسلات | ٧٧ |
| | وفتحت السماء فكانت أبوابا ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك النبأ | ٧٨ |
| | أأنتم أشد خلقا أم السماء بناها ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك النازعات | ٧٩ |
| | وإذا السماء كشطت ... ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك التكوير | ٨١ |
| | إذا السماء انفطرت ... ... ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الانفطار | ٨٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| السَّمَاءُ: | إذا السماء انشقت ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| | والسماء ذات البروج ... ... ... ... ... ... ... | ١ | ك البروج | ٨٥ |
| | والسماء والطارق... ... ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الطارق | ٨٦ |
| | والسماء ذات الرجع... ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك » | ٨٦ |
| | أفلا ينظرون إلى الإبل كيف خلقت . وإلى السماء | | | |
| | كيف رفعت ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك الغاشية | ٨٨ |
| | والسماء وما بناها ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك الشمس | ٩١ |
| السَّمَاوَاتُ: | ثم استوى إلى السماء فسواهن سبع سموات | ٢٩ | م البقرة | ٢ |
| (١٩٠) | قال ألم أقل لكم إني أعلم غيب السموات والأرض | ٣٣ | م » | ٢ |
| | ألم تعلم أن الله له ملك السموات والأرض ... ... | ١٠٧ | م » | ٢ |
| | وقالوا اتخذ الله ولدا سبحانه بل له ما في السموات والأرض | ١١٦ | م » | ٢ |
| | بديع السموات والأرض وإذا قضى أمرا فإنما يقول | | | |
| | له كن فيكون ... ... ... ... ... ... ... ... | ١١٧ | م » | ٢ |
| | إن في خلق السموات والأرض واختلاف الليل والنهار | ١٦٤ | م » | ٢ |
| | لا تأخذه سنة ولا نوم له ما في السموات وما في الأرض | ٢٥٥ | م » | ٢ |
| | وسع كرسيه السموات والأرض ولا يؤوده حفظهما | ٢٥٥ | م » | ٢ |
| | لله ما في السموات وما في الأرض ... ... ... ... | ٢٨٤ | م » | ٢ |
| | ويعلم ما في السموات وما في الأرض ... ... ... | ٢٩ | م آل عمران | ٣ |
| | أفغير دين الله يبغون وله أسلم من في السموات والأرض | ٨٣ | م » | ٣ |
| | ولله ما في السموات وما في الأرض وإلى الله ترجع الأمور | ١٠٩ | م » | ٣ |
| | ولله ما في السموات وما في الأرض ... ... ... ... | ١٢٩ | م » | ٣ |
| | وسارعوا إلى مغفرة من ربكم وجنة عرضها السموات | | | |
| | والأرض ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٣٣ | م » | ٣ |
| | ولله ميراث السموات والأرض والله بما تعملون خبير | ١٨٠ | م » | ٣ |
| | ولله ملك السموات والأرض والله على كل شيء قدير | ١٨٩ | م » | ٣ |
| | إن في خلق السموات والأرض واختلاف الليل | | | |
| | والنهار لآيات لأولي الألباب ... ... ... ... | ١٩٠ | م » | ٣ |
| | ويتفكرون في خلق السموات والأرض ... ... ... | ١٩١ | م » | ٣ |
| | ولله ما في السموات وما في الأرض وكان الله بكل | | | |
| | شيء محيطا... ... ... ... ... ... ... ... | ١٢٦ | م النساء | ٤ |
| | ولله ما في السموات وما في الأرض ولقد وصينا الذين | | | |
| | أوتوا الكتاب من قبلكم وإياكم أن اتقوا الله ... | ١٣١ | م » | ٤ |
| | وإن تكفروا فإن لله ما في السموات وما في الأرض | ١٣١ | م » | ٤ |
| | ولله ما في السموات وما في الأرض وكفى بالله وكيلا | ١٣٢ | م » | ٤ |
| | وإن تكفروا فإن لله ما في السموات والأرض... ... | ١٧٠ | م » | ٤ |
| | له ما في السموات وما في الأرض وكفى بالله وكيلا | ١٧١ | م » | ٤ |
| | ولله ملك السموات والأرض وما بينهما يخلق ما يشاء | ١٧ | م المائدة | ٥ |
| | ولله ملك السموات والأرض وما بينهما وإليه المصير | ١٨ | م » | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| السَّمَاوَاتُ: | ألم تعلم أن الله له ملك السموات والأرض | ٤٠ | م المائدة | ٥ |
| | ذلك لتعلموا أن الله يعلم ما في السموات وما في الأرض | ٩٧ | م » | ٥ |
| | لله ملك السموات والأرض وما فيهن وهو على كل شيء قدير | ١٢٠ | م » | ٥ |
| | الحمد لله الذي خلق السموات والأرض ... ... | ١ | ك الأنعام | ٦ |
| | وهو الله في السموات وفي الأرض يعلم سركم وجهركم | ٣ | ك » | ٦ |
| | قل لمن ما في السموات والأرض قل لله ... ... ... | ١٢ | ك » | ٦ |
| | قل أغير الله أتخذ وليا فاطر السموات والأرض ... | ١٤ | ك » | ٦ |
| | وهو الذي خلق السموات والأرض بالحق ... ... | ٧٣ | ك » | ٦ |
| | وكذلك نري إبراهيم ملكوت السموات والأرض ... | ٧٥ | ك » | ٦ |
| | إني وجهت وجهي للذي فطر السموات والأرض حنيفا | ٧٩ | ك » | ٦ |
| | بديع السموات والأرض أنى يكون له ولد ولم تكن له صاحبة | ١٠١ | ك » | ٦ |
| | إن ربكم الله الذي خلق السموات والأرض في ستة أيام | ٥٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | إني رسول الله إليكم جميعا الذي له ملك السموات والأرض | ١٥٨ | ك » | ٧ |
| | أو لم ينظروا في ملكوت السموات والأرض ... ... | ١٨٥ | ك » | ٧ |
| | ثقلت في السموات والأرض لا تأتيكم إلا بغتة... ... | ١٨٧ | ك » | ٧ |
| | في كتاب الله يوم خلق السموات والأرض منها أربعة حرم | ٣٦ | م التوبة | ٩ |
| | إن الله له ملك السموات والأرض يحيي ويميت ... | ١١٦ | م » | ٩ |
| | إن ربكم الله الذي خلق السموات والأرض في ستة أيام | ٣ | ك يونس | ١٠ |
| | إن في اختلاف الليل والنهار وما خلق الله في السموات | | | |
| | والأرض لآيات لقوم يتقون ... ... ... ... | ٦ | ك » | ١٠ |
| | قل أتنبئون الله بما لا يعلم في السموات ولا في الأرض | ١٨ | ك » | ١٠ |
| | ألا إن لله ما في السموات والأرض ألا إن وعد الله حق | ٥٥ | ك » | ١٠ |
| | ألا إن لله من في السموات ومن في الأرض ... ... | ٦٦ | ك » | ١٠ |
| | سبحانه هو الغني له ما في السموات وما في الأرض | ٦٨ | ك » | ١٠ |
| | قل انظروا ماذا في السموات والأرض ... ... ... | ١٠١ | ك » | ١٠ |
| | وهو الذي خلق السموات والأرض في ستة أيام ... | ٧ | ك هود | ١١ |
| | خالدين فيها ما دامت السموات والأرض إلا ما شاء ربك | ١٠٧ | ك » | ١١ |
| | خالدين فيها ما دامت السموات والأرض ... ... | ١٠٨ | ك » | ١١ |
| | ولله غيب السموات والأرض وإليه يرجع الأمر كله | ١٢٣ | ك » | ١١ |
| | فاطر السموات والأرض أنت وليي في الدنيا والآخرة | ١٠١ | ك يوسف | ١٢ |
| | وكأين من آية في السموات والأرض يمرون عليها | ١٠٥ | ك » | ١٢ |
| | الله الذي رفع السموات بغير عمد ترونها ... ... ... | ٢ | م الرعد | ١٣ |
| | ولله يسجد من في السموات والأرض طوعا وكرها ... | ١٥ | م » | ١٣ |
| | قل من رب السموات والأرض قل الله ... ... ... | ١٦ | م » | ١٣ |
| | الله الذي له ما في السموات وما في الأرض ... ... | ٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | قالت رسلهم أفي الله شك فاطر السموات والأرض | ١٠ | ك » | ١٤ |
| | ألم تر أن الله خلق السموات والأرض بالحق ... ... | ١٩ | ك » | ١٤ |
| | الله الذي خلق السموات والأرض وأنزل من السماء ماء | ٣٢ | ك » | ١٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| السَّمٰوَاتُ | يوم تبدل الأرض غير الأرض والسموات... | ٤٨ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وما خلقنا السموات والأرض وما بينهما إلا بالحق | ٨٥ | ك الحجر | ١٥ |
| | خلق السموات والأرض بالحق تعالى عما يشركون | ٣ | ك النحل | ١٦ |
| | ولله يسجد ما فى السموات وما فى الأرض من دابة | ٤٩ | ك » | ١٦ |
| | وله ما فى السموات والأرض وله الدين واصبا ... | ٥٢ | ك » | ١٦ |
| | ويعبدون من دون الله مالا يملك لهم رزقا من السموات والأرض شيئا ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك » | ١٦ |
| | ولله غيب السموات والأرض ... ... ... ... | ٧٧ | ك » | ١٦ |
| | تسبح له السموات السبع والأرض ومن فيهن ... ... | ٤٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وربك أعلم بمن فى السموات والأرض ... ... ... | ٥٥ | ك » | ١٧ |
| | أو لم يروا أن الله الذى خلق السموات والأرض قادر على أن يخلق مثلهم... ... ... ... ... ... | ٩٩ | ك » | ١٧ |
| | ما أنزل هؤلاء إلا رب السموات والأرض بصائر... | ١٠٢ | ك » | ١٧ |
| | فقالوا ربنا رب السموات والأرض... ... ... ... | ١٤ | ك الكهف | ١٨ |
| | قل الله أعلم بما لبثوا له غيب السموات والأرض | ٢٦ | ك » | ١٨ |
| | ما أشهدتهم خلق السموات والأرض ولا خلق أنفسهم | ٥١ | ك » | ١٨ |
| | رب السموات والأرض وما بينهما فاعبده واصطبر لعبادته | ٦٥ | ك مريم | ١٩ |
| | تكاد السموات يتفطرن منه وتنشق الأرض وتخر الجبال هدا | ٩٠ | ك » | ١٩ |
| | إن كل من فى السموات والأرض إلا آتى الرحمن عبدا | ٩٣ | ك » | ١٩ |
| | تنزيلا ممن خلق الأرض والسموات العلى... ... ... | ٤ | ك طه | ٢٠ |
| | له ما فى السموات وما فى الأرض وما بينهما وما تحت الثرى | ٦ | ك » | ٢٠ |
| | وله من فى السموات والأرض ... ... ... ... ... | ١٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | أو لم ير الذين كفروا أن السموات والأرض كانتا رتقا ففتقناهما ... ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك » | ٢١ |
| | قال بل ربكم رب السموات والأرض الذى فطرهن | ٥٦ | ك » | ٢١ |
| | ألم تر أن الله يسجد له من فى السموات ومن فى الأرض | ١٨ | م الحج | ٢٢ |
| | له ما فى السموات وما فى الأرض وإن الله لهو الغنى الحميد | ٦٤ | م » | ٢٢ |
| | ولو اتبع الحق أهواءهم لفسدت السموات والأرض ومن فيهن ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | قل من رب السموات السبع ورب العرش العظيم ... | ٨٦ | ك » | ٢٣ |
| | الله نور السموات والأرض... ... ... ... ... ... | ٣٥ | م النور | ٢٤ |
| | ألم تر أن الله يسبح له من فى السموات والأرض | ٤١ | م » | ٢٤ |
| | ولله ملك السموات والأرض وإلى الله المصير ... ... | ٤٢ | م » | ٢٤ |
| | ألا إن لله ما فى السموات والأرض ... ... ... ... | ٦٤ | م » | ٢٤ |
| | الذى له ملك السموات والأرض ولم يتخذ ولدا ... | ٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | قل أنزله الذى يعلم السر فى السموات والأرض ... | ٦ | ك » | ٢٥ |
| | الذى خلق السموات والأرض وما بينهما فى ستة أيام | ٥٩ | ك » | ٢٥ |
| | قال رب السموات والأرض وما بينهما إن كنتم موقنين | ٢٤ | ك الشعراء | ٢٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| السَّمٰوَاتُ | ألا يسجدوا لله الذى يخرج الخبء فى السموات والأرض ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك النمل | ٢٧ |
| | أمن خلق السموات والأرض وأنزل لكم من السماء ماء | ٦٠ | ك » | ٢٧ |
| | قل لا يعلم من فى السموات والأرض الغيب إلا الله | ٦٥ | ك » | ٢٧ |
| | ويوم ينفخ فى الصور ففزع من فى السموات ومن فى الأرض ... ... ... ... ... ... ... | ٨٧ | ك » | ٢٧ |
| | خلق الله السموات والأرض بالحق ... ... ... ... | ٤٤ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | قل كفى بالله بينى وبينكم شهيدا يعلم ما فى السموات والأرض | ٥٢ | ك » | ٢٩ |
| | ولئن سألتهم من خلق السموات والأرض وسخر الشمس والقمر ليقولن الله ... ... ... ... ... | ٦١ | ك » | ٢٩ |
| | ما خلق الله السموات والأرض وما بينهما إلا بالحق | ٨ | ك الروم | ٣٠ |
| | وله الحمد فى السموات والأرض وعشيا وحين تظهرون | ١٨ | ك » | ٣٠ |
| | ومن آياته خلق السموات والأرض واختلاف ألسنتكم | ٢٢ | ك » | ٣٠ |
| | وله من فى السموات والأرض كل له قانتون ... ... | ٢٦ | ك » | ٣٠ |
| | وله المثل الأعلى فى السموات والأرض وهو العزيز الحكيم | ٢٧ | ك » | ٣٠ |
| | خلق السموات بغير عمد ترونها ... ... ... ... | ١٠ | ك لقمان | ٣١ |
| | فتكن فى صخرة أو فى السموات أو فى الأرض يأت بها الله | ١٦ | ك » | ٣١ |
| | ألم تروا أن الله سخر لكم ما فى السموات وما فى الأرض | ٢٠ | ك » | ٣١ |
| | ولئن سألتهم من خلق السموات والأرض ليقولن الله | ٢٥ | ك » | ٣١ |
| | لله ما فى السموات والأرض إن الله هو الغنى الحميد | ٢٦ | ك » | ٣١ |
| | الله الذى خلق السموات والأرض وما بينهما فى ستة أيام | ٤ | ك السجدة | ٣٢ |
| | إنا عرضنا الأمانة على السموات والأرض والجبال | ٧٢ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | الحمد لله الذى له ما فى السموات وما فى الأرض | ١ | ك سبإ | ٣٤ |
| | لا يعزب عنه مثقال ذرة فى السموات ولا فى الأرض | ٣ | ك » | ٣٤ |
| | لا يملكون مثقال ذرة فى السموات ولا فى الأرض | ٢٢ | ك » | ٣٤ |
| | قل من يرزقكم من السموات والأرض قل الله | ٢٤ | ك » | ٣٤ |
| | الحمد لله فاطر السموات والأرض جاعل الملائكة رسلا | ١ | ك فاطر | ٣٥ |
| | إن الله عالم غيب السموات والأرض ... ... ... | ٣٨ | ك » | ٣٥ |
| | ماذا خلقوا من الأرض أم لهم شرك فى السموات | ٤٠ | ك » | ٣٥ |
| | إن الله يمسك السموات والأرض أن تزولا ... ... | ٤١ | ك » | ٣٥ |
| | وما كان الله ليعجزه من شىء فى السموات ولا فى الأرض | ٤٤ | ك » | ٣٥ |
| | أو ليس الذى خلق السموات والأرض بقادر على أن يخلق مثلهم ... ... ... ... ... ... ... | ٨١ | ك يس | ٣٦ |
| | رب السموات والأرض وما بينهما ورب المشارق | ٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| | أم لهم ملك السموات والأرض وما بينهما ... ... | ١٠ | ك ص | ٣٨ |
| | رب السموات والأرض وما بينهما العزيز الغفار | ٦٦ | ك » | ٣٨ |
| | خلق السموات والأرض بالحق ... ... ... ... | ٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ولئن سألتهم من خلق السموات والأرض ليقولن الله | ٣٨ | ك » | ٣٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| السَّمٰوَاتُ | قل لله الشفاعة جميعا له ملك السموات والأرض | ٤٤ | ك الزمر | ٣٩ |
| | قل اللهم فاطر السموات والأرض عالم الغيب والشهادة | ٤٦ | ك « | ٣٩ |
| | له مقاليد السموات والأرض ... ... ... ... ... | ٦٣ | ك « | ٣٩ |
| | والسموات مطويات بيمينه سبحانه وتعالى عما يشركون | ٦٧ | ك « | ٣٩ |
| | ونفخ في الصور فصعق من في السموات ومن في الأرض | ٦٨ | ك « | ٣٩ |
| | أسباب السموات فأطلع إلى إله موسى و إني لأظنه كاذبا | ٣٧ | ك غافر | ٤٠ |
| | لخلق السموات والأرض أكبر من خلق الناس | ٥٧ | م « | ٤٠ |
| | فقضاهن سبع سموات في يومين وأوحى في كل سماء أمرها | ١٢ | ك فصلت | ٤١ |
| | له ما في السموات وما في الأرض وهو العلي العظيم | ٤ | ك الشورى | ٤٢ |
| | تكاد السموات يتفطرن من فوقهن ... ... ... ... | ٥ | ك « | ٤٢ |
| | فاطر السموات والأرض جعل لكم من أنفسكم أزواجا | ١١ | ك « | ٤٢ |
| | له مقاليد السموات والأرض يبسط الرزق لمن يشاء و يقدر | ١٢ | ك « | ٤٢ |
| | ومن آياته خلق السموات والأرض وما بث فيهما من دابة | ٢٩ | ك « | ٤٢ |
| | لله ملك السموات والأرض يخلق ما يشاء ... ... | ٤٩ | ك « | ٤٢ |
| | صراط الله الذي له ما في السموات وما في الأرض | ٥٣ | ك « | ٤٢ |
| | ولئن سألتهم من خلق السموات والأرض ليقولن خلقهن العزيز العليم ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | سبحان رب السموات والأرض رب العرش عما يصفون | ٨٢ | ك « | ٤٣ |
| | وتبارك الذي له ملك السموات والأرض وما بينهما | ٨٥ | ك « | ٤٣ |
| | رب السموات والأرض وما بينهما إن كنتم موقنين | ٧ | ك الدخان | ٤٤ |
| | وما خلقنا السموات والأرض وما بينهما لاعبين | ٣٨ | ك « | ٤٤ |
| | إن في السموات والأرض لآيات للمؤمنين ... ... | ٣ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | وسخر لكم ما في السموات وما في الأرض جميعا منه | ١٣ | ك « | ٤٥ |
| | وخلق الله السموات والأرض بالحق ولتجزى كل نفس بما كسبت ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك « | ٤٥ |
| | ولله ملك السموات والأرض ... ... ... ... | ٢٧ | ك « | ٤٥ |
| | فلله الحمد رب السموات ورب الأرض رب العالمين | ٣٦ | ك « | ٤٥ |
| | وله الكبرياء في السموات والأرض وهو العزيز الحكيم | ٣٧ | ك « | ٤٥ |
| | ما خلقنا السموات والأرض وما بينهما إلا بالحق | ٣ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | ماذا خلقوا من الأرض أم لهم شرك في السموات | ٤ | ك « | ٤٦ |
| | أو لم يروا أن الله الذي خلق السموات والأرض ولم يعي بخلقهن بقادر على أن يحيي الموتى... ... | ٣٣ | ك « | ٤٦ |
| | ولله جنود السموات والأرض وكان الله عليما حكيما | ٤ | م الفتح | ٤٨ |
| | ولله جنود السموات والأرض ... ... ... ... | ٧ | م « | ٤٨ |
| | ولله ملك السموات والأرض ... ... ... ... | ١٤ | م « | ٤٨ |
| | قل أتعلمون الله بدينكم والله يعلم ما في السموات وما في الأرض... ... ... ... ... ... | ١٦ | م الحجرات | ٤٩ |
| | إن الله يعلم غيب السموات والأرض والله بصير بما تعملون | ١٨ | م « | ٤٩ |
| | ولقد خلقنا السموات والأرض وما بينهما في ستة أيام | ٣٨ | م ق | ٥٠ |
| | أم خلقوا السموات والأرض بل لا يوقنون | ٣٦ | ك الطور | ٥٢ |
| | وكم من ملك في السموات لا تغني شفاعتهم شيئا... ... | ٢٦ | ك النجم | ٥٣ |
| | ولله ما في السموات وما في الأرض .. ... ... | ٣١ | ك « | ٥٣ |
| | يسئله من في السموات والأرض كل يوم هو في شأن | ٢٩ | م الرحمن | ٥٥ |
| | إن استطعتم أن تنفذوا من أقطار السموات والأرض فانفذوا ... ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | م « | ٥٥ |
| | سبح لله ما في السموات والأرض وهو العزيز الحكيم | ١ | م الحديد | ٥٧ |
| | له ملك السموات والأرض يحيي ويميت ... ... ... | ٢ | م « | ٥٧ |
| | هو الذي خلق السموات والأرض في ستة أيام ... | ٤ | م « | ٥٧ |
| | له ملك السموات والأرض و إلى الله ترجع الأمور | ٥ | م « | ٥٧ |
| | ولله ميراث السموات والأرض ... ... ... ... ... | ١٠ | م « | ٥٧ |
| | ألم تر أن الله يعلم ما في السموات وما في الأرض ... | ٧ | م المجادلة | ٥٨ |
| | سبح لله ما في السموات وما في الأرض وهو العزيز الحكيم | ١ | م الحشر | ٥٩ |
| | يسبح له ما في السموات والأرض وهو العزيز الحكيم | ٢٤ | م « | ٥٩ |
| | سبح لله ما في السموات وما في الأرض وهو العزيز الحكيم | ١ | م الصف | ٦١ |
| | يسبح لله ما في السموات وما في الأرض الملك القدوس | ١ | م الجمعة | ٦٢ |
| | ولله خزائن السموات والأرض ... ... ... ... ... | ٧ | م المنافقون | ٦٣ |
| | يسبح لله ما في السموات وما في الأرض له الملك وله الحمد | ١ | م التغابن | ٦٤ |
| | خلق السموات والأرض بالحق وصوركم فأحسن صوركم | ٣ | م « | ٦٤ |
| | يعلم ما في السموات والأرض و يعلم ما تسرون وما تعلنون | ٤ | م « | ٦٤ |
| | الله الذي خلق سبع سموات ومن الأرض مثلهن ... | ١٢ | م الطلاق | ٦٥ |
| | الذي خلق سبع سموات طباقا ... ... ... ... | ٣ | ك الملك | ٦٧ |
| | ألم تروا كيف خلق الله سبع سموات طباقا ... ... | ١٥ | ك نوح | ٧١ |
| | رب السموات والأرض وما بينهما الرحمن... ... ... | ٣٧ | ك النبأ | ٧٨ |
| | الذي له ملك السموات والأرض والله على كل شيء شهيد | ٩ | ك البروج | ٨٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| سُنْبُلَةٍ | كمثل حبة أنبتت سبع سنابل في كل سنبلة مائة حبة | ٢٦١ | م البقرة | ٢ |
| سَنَابِلَ | كمثل حبة أنبتت سبع سنابل في كل سنبلة مائة حبة | ٢٦١ | م « | ٢ |
| سُنْبُلِهِ | فما حصدتم فذروه في سنبله إلا قليلا مما تأكلون | ٤٧ | ك يوسف | ١٢ |
| سُنْبُلَاتٍ | إني أرى سبع بقرات سمان يأكلهن سبع عجاف وسبع سنبلات خضر ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك « | ١٢ |
| (٢) | يأكلهن سبع عجاف وسبع سنبلات خضر... ... ... | ٤٦ | ك « | ١٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| مُسَنَّدَةٌ | و إن يقولوا تسمع لقولهم كأنهم خشب مسندة | ٤ | م المنافقون | ٦٣ |
| | ✦✦✦ | | | |
| سُنْدُسٍ | و يلبسون ثيابا خضرا من سندس و إستبرق ... | ٣١ | ك الكهف | ١٨ |
| (٣) | يلبسون من سندس و إستبرق متقابلين ... ... ... | ٥٣ | ك الدخان | ٤٤ |
| | عاليهم ثياب سندس خضر و إستبرق ... ... ... ... | ٢١ | م الإنسان | ٧٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | * * * | | | |
| تَسْنِيم | : ومزاجه من تسنيم . عينا يشرب بها المقربون ... | ٢٧ | ك المطففين | ٨٣ |
| | * * * | | | |
| السِّنَّ | : وكتبنا عليهم فيها أن النفس بالنفس والعين بالعين | | | |
| (٢) | والأنف بالأنف والأذن بالأذن والسن ... ... | ٤٥ | م المائدة | ٥ |
| | بالسن والجروح قصاص... ... ... ... ... ... | ٤٥ | م « | ٥ |
| سُنَّةُ | : وإن يعودوا فقد مضت سنة الأولين ... ... ... | ٣٨ | م الأنفال | ٨ |
| (١٣) | لا يؤمنون به وقد خلت سنة الأولين ... ... ... | ١٣ | ك الحجر | ١٥ |
| | سنة من قد أرسلنا قبلك من رسلنا ولا تجد لسنتنا تحويلا | ٧٧ | م الإسراء | ١٧ |
| | وما منع الناس أن يؤمنوا إذ جاءهم الهدى | | | |
| | ويستغفروا ربهم إلا أن تأتيهم سنة الأولين... | ٥٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | سنة الله في الذين خلوا من قبل وكان أمر الله قدرا مقدورا | ٣٨ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | سنة الله في الذين خلوا من قبل ... ... ... ... | ٦٢ | م « | ٣٣ |
| | ولن تجد لسنة الله تبديلا ... ... ... ... ... | ٦٢ | م « | ٣٣ |
| | فهل ينظرون إلا سنة الأولين ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك فاطر | ٣٥ |
| | فلن تجد لسنة الله تبديلا ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك « | ٣٥ |
| | ولن تجد لسنة الله تحويلا... ... ... ... ... | ٤٣ | ك « | ٣٥ |
| | سنة الله التي قد خلت في عباده وخسر هنالك الكافرون | ٨٥ | ك غافر | ٤٠ |
| | سنة الله التي قد خلت من قبل ... ... ... ... | ٢٣ | م الفتح | ٤٨ |
| | ولن تجد لسنة الله تبديلا ... ... ... ... ... | ٢٣ | م « | ٤٨ |
| لِسُنَّتِنَا | : سنة من قد أرسلنا قبلك من رسلنا ولا تجد لسنتنا تحويلا | ٧٧ | م الإسراء | ١٧ |
| سُنَنٌ | : قد خلت من قبلكم سنن فسيروا في الأرض ... ... | ١٣٧ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | يريد الله ليبين لكم ويهديكم سنن الذين من قبلكم | ٢٦ | م النساء | ٤ |
| مَسْنُونٍ | : ولقد خلقنا الإنسان من صلصال من حمإ مسنون | ٢٦ | ك الحجر | ١٥ |
| (٣) | إني خالق بشرا من صلصال من حمإ مسنون ... ... | ٢٨ | ك « | ١٥ |
| | قال لم أكن لأسجد لبشر خلقته من صلصال من حمإ مسنون | ٣٣ | ك « | ١٥ |
| | * * * | | | |
| يَتَسَنَّهْ | : فانظر إلى طعامك وشرابك لم يتسنه ... ... ... | ٢٥٩ | م البقرة | ٢ |
| | * * * | | | |
| سَنَا | : يكاد سنا برقه يذهب بالأبصار ... ... ... ... | ٤٣ | م النور | ٢٤ |
| سَنَةً | : يود أحدهم لو يعمر ألف سنة ... ... ... ... | ٩٦ | م البقرة | ٢ |
| (٧) | قال فإنها محرمة عليهم أربعين سنة يتيهون في الأرض | ٢٦ | م المائدة | ٥ |
| | وإن يوما عند ربك كألف سنة مما تعدون ... ... | ٤٧ | م الحج | ٢٢ |
| | فلبث فيهم ألف سنة إلا خمسين عاما ... ... ... | ١٤ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ثم يعرج إليه في يوم كان مقداره ألف سنة مما تعدون | ٥ | ك السجدة | ٣٢ |
| | حتى إذا بلغ أشده وبلغ أربعين سنة قال رب أوزعني | | | |
| | أن أشكر نعمتك ... ... ... ... ... ... | ١٥ | م الأحقاف | ٤٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| سَنَةٍ | : تعرج الملائكة والروح إليه في يوم كان مقداره | | | |
| | خمسين ألف سنة ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك المعارج | ٧٠ |
| سِنِينَ | : ولقد أخذنا آل فرعون بالسنين ونقص من الثمرات | ١٣٠ | ك الأعراف | ٧ |
| (١٢) | وقدره منازل لتعلموا عدد السنين والحساب ... ... | ٥ | ك يونس | ١٠ |
| | فأنساه الشيطان ذكر ربه فلبث في السجن بضع سنين | ٤٢ | ك يوسف | ١٢ |
| | قال تزرعون سبع سنين دأبا فما حصدتم فذروه في سنبله | ٤٧ | ك « | ١٢ |
| | لتبتغوا فضلا من ربكم ولتعلموا عدد السنين والحساب | ١٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فضربنا على آذانهم في الكهف سنين عددا ... ... | ١١ | ك الكهف | ١٨ |
| | ولبثوا في كهفهم ثلاث مائة سنين وازدادوا تسعا | ٢٥ | ك « | ١٨ |
| | فلبثت سنين في أهل مدين ثم جئت على قدر يا موسى | ٤٠ | ك طه | ٢٠ |
| | قال كم لبثتم في الأرض عدد سنين... ... ... ... | ١١٢ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | قال ألم نربك فينا وليدا ولبثت فينا من عمرك سنين | ١٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | أفرأيت إن متعناهم سنين . ثم جاءهم ما كانوا يوعدون | ٢٠٥ | ك « | ٢٦ |
| | وهم من بعد غلبهم سيغلبون . في بضع سنين ... ... | ٤ | ك الروم | ٣٠ |
| | * * * | | | |
| بِالسَّاهِرَةِ | : فإنما هي زجرة واحدة . فإذا هم بالساهرة | ١٤ | ك النازعات | ٦ |
| | * * * | | | |
| سُهُولِهَا | : وبوأكم في الأرض تتخذون من سهولها قصورا | ٧٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | * * * | | | |
| فَسَاهَمَ | : فساهم فكان من المدحضين ... ... ... ... | ١٤١ | ك الصافات | ٣٧ |
| | * * * | | | |
| سَاهُونَ | : قتل الخراصون . الذين هم في غمرة ساهون | ١١ | ك الذاريات | ٥١ |
| (٢) | فويل للمصلين . الذين هم عن صلاتهم ساهون... ... | ٥ | م الماعون | ١٠٧ |
| | * * * | | | |
| سَاءَ | : إنه كان فاحشة ومقتا وساء سبيلا... ... ... ... | ٢٢ | م النساء | ٤ |
| (١٨) | ومن يكن الشيطان له قرينا فساء قرينا ... ... ... | ٣٨ | م « | ٤ |
| | منهم أمة مقتصدة وكثير منهم ساء ما يعملون ... ... | ٦٦ | م المائدة | ٥ |
| | وهم يحملون أوزارهم على ظهورهم ألا ساء ما يزرون | ٣١ | ك الأنعام | ٦ |
| | وما كان الله فهو يصل إلى شركائهم ساء ما يحكمون | ١٣٦ | ك « | ٦ |
| | ساء مثلا القوم الذين كذبوا بآياتنا وأنفسهم كانوا يظلمون | ١٧٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | فصدوا عن سبيله إنهم ساء ما كانوا يعملون ... ... | ٩ | م التوبة | ٩ |
| | ليحملوا أوزارهم كاملة يوم القيامة ومن أوزار الذين | | | |
| | يضلونهم بغير علم ألا ساء ما يزرون ... ... ... | ٢٥ | ك النحل | ١٦ |
| | أيمسكه على هون أم يدسه في التراب ألا ساء ما يحكمون | ٥٩ | ك « | ١٦ |
| | ولا تقربوا الزنى إنه كان فاحشة وساء سبيلا ... ... | ٣٢ | م الإسراء | ١٧ |
| | خالدين فيه وساء لهم يوم القيامة حملا... ... ... | ١٠١ | ك طه | ٢٠ |
| | وأمطرنا عليهم مطرا فساء مطر المنذرين ... ... ... | ١٧٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وأمطرنا عليهم مطرا فساء مطر المنذرين ... ... ... | ٥٨ | ك النمل | ٢٧ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| سَاءَ: | أم حسب الذين يعملون السيئات أن يسبقونا ساء ما يحكمون ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | فإذا نزل بساحتهم فساء صباح المنذرين ... ... ... | ١٧٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| | سواء محياهم ومماتهم ساء ما يحكمون ... ... ... ... | ٢١ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | أعد الله لهم عذابا شديدا إنهم ساء ما كانوا يعملون | ١٥ | م المجادلة | ٥٨ |
| | فصدوا عن سبيل الله إنهم ساء ما كانوا يعملون ... | ٢ | م المنافقون | ٦٣ |
| سَاءَتْ: | فأولئك مأواهم جهنم وساءت مصيرا ... ... ... | ٩٧ | م النساء | ٤ |
| (٥) | نوله ما تولى ونصله جهنم وساءت مصيرا ... ... ... | ١١٥ | م « | ٤ |
| | بئس الشراب وساءت مرتفقا ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | إنها ساءت مستقرا ومقاما ... ... ... ... ... ... | ٦٦ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وغضب الله عليهم ولعنهم وأعد لهم جهنم وساءت مصيرا | ٦ | م الفتح | ٤٨ |
| تَسُؤْكُمْ: | يأيها الذين آمنوا لا تسئلوا عن أشياء إن تبد لكم تسؤكم | ١٠١ | م المائدة | ٥ |
| تَسُؤْهُمْ: | إن تمسسكم حسنة تسؤهم ... ... ... ... ... | ١٢٠ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | إن تصبك حسنة تسؤهم ... ... ... ... ... ... | ٥٠ | م التوبة | ٩ |
| لِيَسُوءُوا: | فإذا جاء وعد الآخرة ليسوءوا وجوهكم... ... | ٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| سِيءَ: | ولما جاءت رسلنا لوطا سيء بهم وضاق بهم ذرعا | ٧٧ | ك هود | ١١ |
| (٢) | ولما أن جاءت رسلنا لوطا سيء بهم وضاق بهم ذرعا | ٣٣ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| سِيئَتْ: | فلما رأوه زلفة سيئت وجوه الذين كفروا ... ... | ٢٧ | ك الملك | ٦٧ |
| أَسَاءَ: | من عمل صالحا فلنفسه ومن أساء فعليها ... ... ... | ٤٦ | ك فصلت | ٤١ |
| (٢) | من عمل صالحا فلنفسه ومن أساء فعليها ثم إلى ربكم ترجعون | ١٥ | ك الجاثية | ٤٥ |
| أَسَأْتُمْ: | إن أحسنتم أحسنتم لأنفسكم وإن أسأتم فلها ... | ٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| أَسَاءُوا: | ثم كان عاقبة الذين أساءوا السوأى أن كذبوا | | | |
| (٢) | بآيات الله... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك الروم | ٣٠ |
| | ليجزى الذين أساءوا بما عملوا ... ... ... ... | ٣١ | ك النجم | ٥٣ |
| السُّوءِ: | ويتربص بكم الدوائر عليهم دائرة السوء والله سميع عليم | ٩٨ | م التوبة | ٩ |
| (٩) | للذين لا يؤمنون بالآخرة مثل السوء ولله المثل الأعلى | ٦٠ | ك النحل | ١٦ |
| | يا أخت هرون ما كان أبوك امرأ سوء وما كانت أمك بغيا | ٢٨ | ك مريم | ١٩ |
| | إنهم كانوا قوم سوء فاسقين ... ... ... ... | ٧٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | إنهم كانوا قوم سوء فأغرقناهم أجمعين ... ... ... | ٧٧ | ك « | ٢١ |
| | ولقد أتوا على القرية التي أمطرت مطر السوء ... ... | ٤٠ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ويعذب المنافقين والمنافقات والمشركين والمشركات الظانين بالله ظن السوء... ... ... ... ... ... | ٦ | م الفتح | ٤٨ |
| | عليهم دائرة السوء وغضب الله عليهم ولعنهم ... ... | ٦ | م « | ٤٨ |
| | وزين ذلك في قلوبكم وظننتم ظن السوء وكنتم قوما بورا | ١٢ | م « | ٤٨ |
| السُّوءِ: | وإذ نجيناكم من آل فرعون يسومونكم سوء العذاب | ٤٩ | م البقرة | ٢ |
| (٤٤) | إنما يأمركم بالسوء والفحشاء ... ... ... ... | ١٦٩ | م « | ٢ |
| | وما عملت من سوء تود لو أن بينها وبينه أمدا بعيدا | ٣٠ | م آل عمران | ٣ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| السُّوءُ: | فانقلبوا بنعمة من الله وفضل لم يمسسهم سوء ... | ١٧٤ | م آل عمران | ٣ |
| | إنما التوبة على الله للذين يعملون السوء بجهالة ثم يتوبون من قريب ... ... ... ... ... ... | ١٧ | م النساء | ٤ |
| | لا يحب الله الجهر بالسوء من القول إلا من ظلم ... | ١٤٨ | م « | ٤ |
| | إن تبدوا خيرا أو تخفوه أو تعفوا عن سوء فإن الله كان عفوا قديرا ... ... ... ... ... ... | ١٤٩ | م « | ٤ |
| | سنجزى الذين يصدفون عن آياتنا سوء العذاب ... | ١٥٧ | ك الأنعام | ٦ |
| | ولا تمسوها بسوء فيأخذكم عذاب أليم ... ... ... | ٧٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | وإذ أنجيناكم من آل فرعون يسومونكم سوء العذاب | ١٤١ | ك « | ٧ |
| | فلما نسوا ما ذكروا به أنجينا الذين ينهون عن السوء | ١٦٥ | م « | ٧ |
| | وإذ تأذن ربك ليبعثن عليهم إلى يوم القيامة من يسومهم سوء العذاب ... ... ... ... ... ... | ١٦٧ | م « | ٧ |
| | ولو كنت أعلم الغيب لاستكثرت من الخير وما مسني السوء | ١٨٨ | ك « | ٧ |
| | زين لهم سوء أعمالهم والله لا يهدى القوم الكافرين | ٣٧ | م التوبة | ٩ |
| | إن نقول إلا اعتراك بعض آلهتنا بسوء ... ... ... | ٥٤ | ك هود | ١١ |
| | ولا تمسوها بسوء فيأخذكم عذاب قريب ... ... ... | ٦٤ | ك « | ١١ |
| | كذلك لنصرف عنه السوء والفحشاء إنه من عبادنا المخلصين | ٢٤ | ك يوسف | ١٢ |
| | قلن حاش لله ما علمنا عليه من سوء ... ... ... ... | ٥١ | ك « | ١٢ |
| | إن النفس لأمارة بالسوء إلا ما رحم ربي ... ... ... | ٥٣ | ك « | ١٢ |
| | أولئك لهم سوء الحساب ومأواهم جهنم وبئس المهاد | ١٨ | م الرعد | ١٣ |
| | والذين يصلون ما أمر الله به أن يوصل ويخشون ربهم ويخافون سوء الحساب ... ... ... ... | ٢١ | م « | ١٣ |
| | أولئك لهم اللعنة ولهم سوء الدار ... ... ... ... | ٢٥ | م « | ١٣ |
| | إذ أنجاكم من آل فرعون يسومونكم سوء العذاب ... | ٦ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | قال الذين أوتوا العلم إن الخزى اليوم والسوء على الكافرين | ٢٧ | ك النحل | ١٦ |
| | فألقوا السلم ما كنا نعمل من سوء... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ١٦ |
| | يتوارى من القوم من سوء ما بشر به ... ... ... ... | ٥٩ | ك « | ١٦ |
| | فتزل قدم بعد ثبوتها وتذوقوا السوء بما صددتم عن سبيل الله | ٩٤ | ك « | ١٦ |
| | ثم إن ربك للذين عملوا السوء بجهالة ثم تابوا من بعد ذلك وأصلحوا إن ربك من بعدها لغفور رحيم... ... | ١١٩ | ك « | ١٦ |
| | واضم يدك إلى جناحك تخرج بيضاء من غير سوء آية أخرى ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك طه | ٢٠ |
| | ولا تمسوها بسوء فيأخذكم عذاب يوم عظيم ... ... | ١٥٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | أولئك الذين لهم سوء العذاب ... ... ... ... ... | ٥ | ك النمل | ٢٧ |
| | إلا من ظلم ثم بدل حسنا بعد سوء فإني غفور رحيم | ١١ | ك « | ٢٧ |
| | وأدخل يدك في جيبك تخرج بيضاء من غير سوء | ١٢ | ك « | ٢٧ |
| | أمن يجيب المضطر إذا دعاه ويكشف السوء ... ... | ٦٢ | ك « | ٢٧ |
| | اسلك يدك في جيبك تخرج بيضاء من غير سوء ... | ٣٢ | ك القصص | ٢٨ |
| | أفمن زين له سوء عمله فرآه حسنا فإن الله يضل من يشاء | ٨ | ك فاطر | ٣٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| السُّوءُ: | أفمن يتقى بوجهه سوء العذاب يوم القيامة ... ... | ٢٤ | ك الزمر | ٣٩ |
| | لافتدوا به من سوء العذاب يوم القيامة ... ... ... | ٤٧ | ك « | ٣٩ |
| | وينجى الله الذين اتقوا بمفازتهم لا يمسهم السوء ... | ٦١ | ك « | ٣٩ |
| | وكذلك زين لفرعون سوء عمله وصد عن السبيل ... | ٣٧ | ك غافر | ٤٠ |
| | فوقاه الله سيئات ما مكروا وحاق بآل فرعون سوء العذاب | ٤٥ | ك « | ٤٠ |
| | يوم لا ينفع الظالمين معذرتهم ولهم اللعنة ولهم سوء الدار | ٥٢ | ك « | ٤٠ |
| | أفمن كان على بينة من ربه كمن زين له سوء عمله ... | ١٤ | م محمد | ٤٧ |
| | ويبسطوا إليكم أيديهم وألسنتهم بالسوء ... ... ... | ٢ | م الممتحنة | ٦٠ |
| سُوءًا: | ومن يعمل سوءا أو يظلم نفسه ثم يستغفر الله | | | |
| (٦) | يجد الله غفورا رحيما ... ... ... ... ... ... | ١١٠ | م النساء | ٤ |
| | من يعمل سوءا يجز به ولا يجد له من دون الله وليا ولا نصيرا | ١٢٣ | م « | ٤ |
| | أنه من عمل منكم سوءا بجهالة ثم تاب من بعده | | | |
| | وأصلح فأنه غفور رحيم ... ... ... ... ... | ٥٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | قالت ما جزاء من أراد بأهلك سوءا إلا أن يسجن | | | |
| | أو عذاب أليم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك يوسف | ١٢ |
| | وإذا أراد الله بقوم سوءا فلا مرد له وما لهم من دونه | | | |
| | من وال ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | م الرعد | ١٣ |
| | قل من ذا الذى يعصمكم من الله إن أراد بكم سوءا | | | |
| | أو أراد بكم رحمة ... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| السُّوأَى: | ثم كان عاقبة الذين أساءوا السوأى أن كذبوا | | | |
| | بآيات الله وكانوا بها يستهزئون ... ... ... ... | ١٠ | ك الروم | ٣٠ |
| السَّيِّئُ: | استكبارا فى الأرض ومكر السيئ ... ... ... ... | ٤٣ | ك فاطر | ٣٥ |
| (٢) | ولا يحيق المكر السيئ إلا بأهله ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك « | ٣٥ |
| سَيِّئًا: | وآخرون اعترفوا بذنوبهم خلطوا عملا صالحا وآخر سيئا | ١٠٢ | م التوبة | ٩ |
| سَيِّئُهُ: | كل ذلك كان سيئه عند ربك مكروها ... ... ... | ٣٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| السَّيِّئَةُ: | بلى من كسب سيئة وأحاطت به خطيئته فأولئك | | | |
| (٢٢) | أصحاب النار هم فيها خالدون ... ... ... ... | ٨١ | م البقرة | ٢ |
| | إن تمسسكم حسنة تسؤهم وإن تصبكم سيئة يفرحوا بها | ١٢٠ | م آل عمران | ٣ |
| | وإن تصبهم سيئة يقولوا هذه من عندك ... ... ... | ٧٨ | م النساء | ٤ |
| | وما أصابك من سيئة فمن نفسك ... ... ... ... | ٧٩ | م « | ٤ |
| | ومن يشفع شفاعة سيئة يكن له كفل منها ... ... | ٨٥ | م « | ٤ |
| | ومن جاء بالسيئة فلا يجزى إلا مثلها وهم لا يظلمون | ١٦٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | ثم بدلنا مكان السيئة الحسنة حتى عفوا ... ... ... | ٩٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | وإن تصبهم سيئة يطيروا بموسى ومن معه ... ... | ١٣١ | ك « | ٧ |
| | والذين كسبوا السيئات جزاء سيئة بمثلها ... ... ... | ٢٧ | ك يونس | ١٠ |
| | ويستعجلونك بالسيئة قبل الحسنة ... ... ... ... | ٦ | م الرعد | ١٣ |
| | ويدرءون بالحسنة السيئة أولئك لهم عقبى الدار | ٢٢ | م « | ١٣ |
| | ادفع بالتى هى أحسن السيئة نحن أعلم بما يصفون | ٩٦ | ك المؤمنون | ٢٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| السَّيِّئَةُ: | قال يا قوم لم تستعجلون بالسيئة قبل الحسنة ... | ٤٦ | ك النمل | ٢٧ |
| | ومن جاء بالسيئة فكبت وجوههم فى النار ... ... | ٩٠ | ك « | ٢٧ |
| | ويدرءون بالحسنة السيئة ومما رزقناهم ينفقون ... | ٥٤ | م القصص | ٢٨ |
| | ومن جاء بالسيئة فلا يجزى الذين عملوا السيئات | | | |
| | إلا ما كانوا يعملون ... ... ... ... ... ... | ٨٤ | ك « | ٢٨ |
| | وإن تصبهم سيئة بما قدمت أيديهم إذا هم يقنطون | ٣٦ | ك الروم | ٣٠ |
| | من عمل سيئة فلا يجزى إلا مثلها ... ... ... ... | ٤٠ | ك غافر | ٤٠ |
| | ولا تستوى الحسنة ولا السيئة ... ... ... ... | ٣٤ | ك فصلت | ٤١ |
| | وجزاء سيئة ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك الشورى | ٤٢ |
| | سيئة مثلها... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك « | ٤٢ |
| | وإن تصبهم سيئة بما قدمت أيديهم فإن الإنسان كفور | ٤٨ | ك « | ٤٢ |
| السَّيِّئَاتُ: | وليست التوبة للذين يعملون السيئات حتى إذا | | | |
| (٢١) | حضر أحدهم الموت قال إنى تبت الآن ... ... | ١٨ | م النساء | ٤ |
| | والذين عملوا السيئات ثم تابوا من بعدها وآمنوا | | | |
| | إن ربك من بعدها لغفور رحيم ... ... ... ... | ١٥٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | وبلوناهم بالحسنات والسيئات لعلهم يرجعون ... ... | ١٦٨ | م « | ٧ |
| | والذين كسبوا السيئات جزاء سيئة بمثلها وترهقهم ذلة | ٢٧ | ك يونس | ١٠ |
| | ولئن أذقناه نعماء بعد ضراء مسته ليقولن ذهب | | | |
| | السيئات عنى ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك هود | ١١ |
| | وجاءه قومه يهرعون إليه ومن قبل كانوا يعملون السيئات | ٧٨ | ك « | ١١ |
| | إن الحسنات يذهبن السيئات ذلك ذكرى للذاكرين | ١١٤ | م « | ١١ |
| | فأصابهم سيئات ما عملوا وحاق بهم ما كانوا به يستهزئون | ٣٤ | ك النحل | ١٦ |
| | أفأمن الذين مكروا السيئات أن يخسف الله بهم الأرض | ٤٥ | ك « | ١٦ |
| | فلا يجزى الذين عملوا السيئات إلا ما كانوا يعملون | ٨٤ | ك القصص | ٢٨ |
| | أم حسب الذين يعملون السيئات أن يسبقونا ... ... | ٤ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | والذين يمكرون السيئات لهم عذاب شديد ... ... ... | ١٠ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وبدا لهم سيئات ما كسبوا وحاق بهم ما كانوا به يستهزئون | ٤٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| | فأصابهم سيئات ما كسبوا ... ... ... ... ... | ٥١ | ك « | ٣٩ |
| | والذين ظلموا من هؤلاء سيصيبهم سيئات ما كسبوا | ٥١ | ك « | ٣٩ |
| | وقهم السيئات ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك غافر | ٤٠ |
| | ومن تق السيئات يومئذ فقد رحمته... ... ... ... | ٩ | ك « | ٤٠ |
| | فوقاه الله سيئات ما مكروا وحاق بآل فرعون سوء العذاب | ٤٥ | ك « | ٤٠ |
| | وهو الذى يقبل التوبة عن عباده ويعفوا عن السيئات | ٢٥ | م الشورى | ٤٢ |
| | أم حسب الذين اجترحوا السيئات أن نجعلهم كالذين آمنوا | ٢١ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | وبدا لهم سيئات ما عملوا وحاق بهم ما كانوا به يستهزئون | ٣٣ | ك « | ٤٥ |
| سَيِّئَاتِكُمْ: | ويكفر عنكم من سيئاتكم ... ... ... ... ... | ٢٧١ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | إن تجتنبوا كبائر ما تنهون عنه نكفر عنكم سيئاتكم ... | ٣١ | م النساء | ٤ |
| | لأكفرن عنكم سيئاتكم ولأدخلنكم جنات تجرى من | | | |
| | تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٢ | م المائدة | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| سَيِّئَاتِكُمْ | : إن تتقوا الله يجعل لكم فرقانا ويكفر عنكم سيئاتكم | ٢٩ | م الأنفال | ٨ |
| | عسى ربكم أن يكفر عنكم سيئاتكم ... ... ... ... | ٨ | م التحريم | ٦٦ |
| سَيِّئَاتِنَا | : ربنا فاغفر لنا ذنوبنا وكفر عنا سيئاتنا وتوفنا مع الأبرار | ١٩٣ | م آل عمران | ٣ |
| سَيِّئَاتِهِ | : ومن يؤمن بالله ويعمل صالحا يكفر عنه سيئاته | ٩ | م التغابن | ٦٤ |
| (٢) | ومن يتق الله يكفر عنه سيئاته ويعظم له أجرا ... ... | ٥ | م الطلاق | ٦٥ |
| سَيِّئَاتِهِمْ | : لأكفرن عنهم سيئاتهم ولأدخلنهم جنات تجرى | | | |
| (٧) | من تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... ... | ١٩٥ | م آل عمران | ٣ |
| | ولو أن أهل الكتاب آمنوا واتقوا لكفرنا عنهم سيئاتهم | ٦٥ | م المائدة | ٥ |
| | فأولئك يبدل الله سيئاتهم حسنات وكان الله غفورا رحيما | ٧٠ | م الفرقان | ٢٥ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات لنكفرن عنهم سيئاتهم | ٧ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | ونتجاوز عن سيئاتهم فى أصحاب الجنة ... ... ... | ١٦ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | وآمنوا بما نزل على محمد وهو الحق من ربهم كفر عنهم سيئاتهم | ٢ | م محمد | ٤٧ |
| | ليدخل المؤمنين والمؤمنات جنات تجرى من تحتها الأنهار | | | |
| | خالدين فيها ويكفر عنهم سيئاتهم... ... ... ... | ٥ | م الفتح | ٤٨ |
| سَوْءَةَ | : يبحث فى الأرض ليريه كيف يوارى سوءة أخيه | ٣١ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | قال يا ويلتى أعجزت أن أكون مثل هذا الغراب فأوارى | | | |
| | سوءة أخى... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣١ | م » | ٥ |
| سَوْءَاتِكُمْ | : يا بنى آدم قد أنزلنا عليكم لباسا يوارى سوءاتكم وريشا | ٢٦ | ك الأعراف | ٧ |
| سَوْءَاتِهِمَا | : فوسوس لهما الشيطان ليبدى لهما ما ووارى عنهما | | | |
| (٤) | من سوءاتهما ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك » | ٧ |
| | فدلاهما بغرور فلما ذاقا الشجرة بدت لهما سوءاتهما... | ٢٢ | ك » | ٧ |
| | ينزع عنهما لباسهما ليريهما سوءاتهما ... ... ... ... | ٢٧ | ك » | ٧ |
| | فأكلا منها فبدت لهما سوءاتهما ... ... ... ... ... | ١٢١ | ك طه | ٢٠ |
| أَسْوَأَ | : ليكفر الله عنهم أسوأ الذى عملوا ويجزيهم أجرهم | ٣٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| (٢) | ولنجزينهم أسوأ الذى كانوا يعملون... ... ... ... | ٢٧ | ك فصلت | ٤١ |
| الْمُسِيءُ | : وما يستوى الأعمى والبصير والذين آمنوا وعملوا | | | |
| | الصالحات ولا المسىء ... ... ... ... ... ... | ٥٨ | ك غافر | ٤٠ |
| بِسَاحَتِهِمْ | : فإذا نزل بساحتهم فساء صباح المنذرين... ... | ١٧٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| أَسْوَدَّتْ | : فأما الذين اسودت وجوههم أكفرتم بعد إيمانكم | ١٠٦ | م آل عمران | ٣ |
| تَسْوَدُّ | : يوم تبيض وجوه وتسود وجوه ... ... ... ... | ١٠٦ | م » | ٣ |
| الْأَسْوَدِ | : وكلوا واشربوا حتى يتبين لكم الخيط الأبيض من | | | |
| | الخيط الأسود من الفجر... ... ... ... ... ... | ١٨٧ | م البقرة | ٢ |
| سُودٌ | : ومن الجبال جدد بيض وحمر مختلف ألوانها | | | |
| | وغرابيب سود ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك فاطر | ٣٥ |
| مُسْوَدًّا | : وإذا بشر أحدهم بالأنثى ظل وجهه مسودا وهو كظيم | ٥٨ | ك النحل | ١٦ |
| (٢١) | وإذا بشر أحدهم بما ضرب للرحمن مثلا ظل وجهه | | | |
| | مسودا وهو كظيم ... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الزخرف | ٤٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مُسْوَدَّةٌ | : ترى الذين كذبوا على الله وجوههم مسودة ... | ٦٠ | ك الزمر | ٣٩ |
| سَيِّدًا | : مصدقا بكلمة من الله وسيدا وحصورا ... ... ... | ٣٩ | م آل عمران | ٣ |
| سَيِّدَهَا | : وقدت قميصه من دبر وألفيا سيدها لدى الباب | ٢٥ | ك يوسف | ١٢ |
| سَادَتَنَا | : وقالوا ربنا إنا أطعنا سادتنا وكبراءنا فأضلونا السبيلا | ٦٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تَسَوَّرُوا | : وهل أتاك نبأ الخصم إذ تسوروا المحراب... ... | ٢١ | ك ص | ٣٨ |
| بِسُورٍ | : فضرب بينهم بسور له باب باطنه فيه الرحمة ... ... | ١٣ | م الحديد | ٥٧ |
| أَسَاوِرَ | : يحلون فيها من أساور من ذهب ويلبسون ثيابا خضرا | ٣١ | ك الكهف | ١٨ |
| (٤) | يحلون فيها من أساور من ذهب ولؤلؤا ولباسهم فيها حرير | ٢٣ | م الحج | ٢٢ |
| | يحلون فيها من أساور من ذهب ولؤلؤا ولباسهم فيها حرير | ٣٣ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وحلوا أساور من فضة وسقاهم ربهم شرابا طهورا | ٢١ | م الإنسان | ٧٦ |
| أَسْوِرَةٌ | : فلولا ألقى عليه أسورة من ذهب أو جاء معه الملائكة | ٥٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| سُورَةٌ | : وإن كنتم فى ريب مما نزلنا على عبدنا فأتوا | | | |
| (٩) | بسورة من مثله ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | م البقرة | ٢ |
| | يحذر المنافقون أن تنزل عليهم سورة تنبئهم بما فى قلوبهم | ٦٤ | م التوبة | ٩ |
| | وإذا أنزلت سورة أن آمنوا بالله وجاهدوا مع | | | |
| | رسوله استأذنك أولوا الطول منهم ... ... ... | ٨٦ | م » | ٩ |
| | وإذا ما أنزلت سورة فمنهم من يقول أيكم زادته هذه إيمانا | ١٢٤ | م » | ٩ |
| | وإذا ما أنزلت سورة نظر بعضهم إلى بعض هل | | | |
| | يراكم من أحد ... ... ... ... ... ... ... | ١٢٧ | م » | ٩ |
| | قل فأتوا بسورة مثله وادعوا من استطعتم من دون الله | ٣٨ | ك يونس | ١٠ |
| | سورة أنزلناها وفرضناها وأنزلنا فيها آيات بينات | ١ | م النور | ٢٤ |
| | ويقول الذين آمنوا لولا نزلت سورة ... ... ... | ٢٠ | م محمد | ٤٧ |
| | فإذا أنزلت سورة محكمة وذكر فيها القتال رأيت | | | |
| | الذين فى قلوبهم مرض ينظرون إليك ... ... | ٢٠ | م » | ٤٧ |
| سُوَرٍ | : قل فأتوا بعشر سور مثله مفتريات ... ... ... | ١٣ | ك هود | ١١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| سَوْطَ | : فصب عليهم ربك سوط عذاب ... ... ... ... | ١٣ | ك الفجر | ٨٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| السَّاعَةُ | : حتى إذا جاءتهم الساعة بغتة قالوا يا حسرتنا | | | |
| (٤٨) | على ما فرطنا فيها ... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك الأنعام | ٦ |
| | قل أرأيتكم إن أتاكم عذاب الله أو أتتكم الساعة | | | |
| | أغير الله تدعون ... ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك » | ٦ |
| | فإذا جاء أجلهم لا يستأخرون ساعة ولا يستقدمون | ٣٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | يسئلونك عن الساعة أيان مرساها قل إنما علمها عند ربى | ١٨٧ | ك » | ٧ |
| | لقد تاب الله على النبى والمهاجرين والأنصار الذين | | | |
| | اتبعوه فى ساعة العسرة ... ... ... ... ... | ١١٧ | م التوبة | ٩ |
| | ويوم يحشرهم كأن لم يلبثوا إلا ساعة من النهار ... | ٤٥ | ك يونس | ١٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| السَّاعَةُ | : إذا جاء أجلهم فلا يستأخرون ساعة ولا يستقدمون | ٤٩ | ك يونس | ١٠ |
| | أو تأتيهم الساعة بغتة وهم لا يشعرون ... ... ... | ١٠٧ | ك يوسف | ١٢ |
| | وإن الساعة لآتية فاصفح الصفح الجميل ... ... ... | ٨٥ | ك الحجر | ١٥ |
| | فإذا جاء أجلهم لا يستأخرون ساعة ولا يستقدمون | ٦١ | ك النحل | ١٦ |
| | وما أمر الساعة إلا كلمح البصر أو هو أقرب... ... | ٧٧ | ك « | ١٦ |
| | ليعلموا أن وعد الله حق وأن الساعة لا ريب فيها | ٢١ | ك الكهف | ١٨ |
| | وما أظن الساعة قائمة ... ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك « | ١٨ |
| | حتى إذا رأوا ما يوعدون إما العذاب وإما الساعة | ٧٥ | ك مريم | ١٩ |
| | إن الساعة آتية أكاد أخفيها لتجزى كل نفس بما تسعى | ١٥ | ك طه | ٢٠ |
| | الذين يخشون ربهم بالغيب وهم من الساعة مشفقون | ٤٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | يأيها الناس اتقوا ربكم إن زلزلة الساعة شيء عظيم | ١ | م الحج | ٢٢ |
| | وأن الساعة آتية لا ريب فيها وأن الله يبعث من في القبور | ٧ | م « | ٢٢ |
| | ولا يزال الذين كفروا في مرية منه حتى تأتيهم الساعة بغتة | ٥٥ | م « | ٢٢ |
| | بل كذبوا بالساعة ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وأعتدنا لمن كذب بالساعة سعيرا ... ... ... ... | ١١ | ك « | ٢٥ |
| | ويوم تقوم الساعة يبلس المجرمون ... ... ... ... | ١٢ | ك الروم | ٣٠ |
| | ويوم تقوم الساعة يومئذ يتفرقون ... ... ... ... | ١٤ | ك « | ٣٠ |
| | ويوم تقوم الساعة... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٥ | ك « | ٣٠ |
| | يقسم المجرمون ما لبثوا غير ساعة ... ... ... ... | ٥٥ | ك « | ٣٠ |
| | إن الله عنده علم الساعة وينزل الغيث ويعلم ما في الأرحام | ٣٤ | ك لقمان | ٣١ |
| | يسئلك الناس عن الساعة قل إنما علمها عند الله | ٦٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وما يدريك لعل الساعة تكون قريبا ... ... ... | ٦٣ | م « | ٣٣ |
| | وقال الذين كفروا لا تأتينا الساعة ... ... ... ... | ٣ | ك سبأ | ٣٤ |
| | قل لكم ميعاد يوم لا تستأخرون عنه ساعة ولا تستقدمون | ٣٠ | ك « | ٣٤ |
| | ويوم تقوم الساعة أدخلوا آل فرعون أشد العذاب | ٤٦ | ك غافر | ٤٠ |
| | إن الساعة لآتية لا ريب فيها ولكن أكثر الناس لا يؤمنون | ٥٩ | ك « | ٤٠ |
| | إليه يرد علم الساعة... ... ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك فصلت | ٤١ |
| | وما أظن الساعة قائمة ولئن رجعت إلى ربي إن لي عنده للحسنى | ٥٠ | ك « | ٤١ |
| | وما يدريك لعل الساعة قريب ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ألا إن الذين يمارون في الساعة لفي ضلال بعيد | ١٨ | ك « | ٤٢ |
| | وإنه لعلم للساعة فلا تمترن بها واتبعون ... ... ... | ٦١ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | هل ينظرون إلا الساعة أن تأتيهم بغتة وهم لا يشعرون | ٦٦ | ك « | ٤٣ |
| | وعنده علم الساعة وإليه ترجعون ... ... ... ... | ٨٥ | ك « | ٤٣ |
| | ويوم تقوم الساعة يومئذ يخسر المبطلون ... ... | ٢٧ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | وإذا قيل إن وعد الله حق والساعة لا ريب فيها | ٣٢ | ك « | ٤٥ |
| | قلتم ما ندري ما الساعة إن نظن إلا ظنا وما نحن بمستيقنين | ٣٢ | ك « | ٤٥ |
| | كأنهم يوم يرون ما يوعدون لم يلبثوا إلا ساعة من نهار | ٣٥ | م الأحقاف | ٤٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| السَّاعَةُ | : فهل ينظرون إلا الساعة أن تأتيهم بغتة ... ... | ١٨ | م محمد | ٤٧ |
| | اقتربت الساعة وانشق القمر... ... ... ... ... ... | ١ | ك القمر | ٥٤ |
| | بل الساعة موعدهم... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٦ | م « | ٥٤ |
| | والساعة أدهى وأمر ... ... ... ... ... ... ... | ٤٦ | م « | ٥٤ |
| | يسئلونك عن الساعة أيان مرساها ... ... ... ... | ٤٢ | ك النازعات | ٧٩ |
| سُوَاعًا | : ولا تذرن ودا ولا سواعا ولا يغوث ... ... ... | ٢٣ | ك نوح | ٧١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| يُسِيغُهُ | : يجرعه ولا يكاد يسيغه ويأتيه الموت من كل مكان | ١٧ | ك إبراهيم | ١٤ |
| سَائِغٌ | : هذا عذب فرات سائغ شرابه وهذا ملح أجاج | ١٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| سَائِغًا | : نسقيكم مما في بطونه من بين فرث ودم لبنا خالصا سائغا للشاربين... ... ... ... ... ... ... ... | ٦٦ | ك النحل | ١٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| سَوْفَ | : ومن يفعل ذلك عدوانا وظلما فسوف نصليه نارا | ٣٠ | م النساء | ٤ |
| (٤٢) | إن الذين كفروا بآياتنا سوف نصليهم نارا ... ... | ٥٦ | م « | ٤ |
| | ومن يقاتل في سبيل الله فيقتل أو يغلب فسوف نؤتيه أجرا عظيما ... ... ... ... ... ... | ٧٤ | م « | ٤ |
| | ومن يفعل ذلك ابتغاء مرضات الله فسوف نؤتيه أجرا عظيما... ... ... ... ... ... ... | ١١٤ | م « | ٤ |
| | وسوف يؤت الله المؤمنين أجرا عظيما... ... ... ... | ١٤٦ | م « | ٤ |
| | أولئك سوف يؤتيهم أجورهم ... ... ... ... ... | ١٥٢ | م « | ٤ |
| | وسوف ينبئهم الله بما كانوا يصنعون ... ... ... | ١٤ | م المائدة | ٥ |
| | فسوف يأتي الله بقوم يحبهم ويحبونه ... ... ... | ٥٤ | م « | ٥ |
| | فسوف يأتيهم أنباء ما كانوا به يستهزئون ... ... | ٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | لكل نبأ مستقر وسوف تعلمون ... ... ... ... ... | ٦٧ | ك « | ٦ |
| | فسوف تعلمون من تكون له عاقبة الدار... ... ... | ١٣٥ | ك « | ٦ |
| | إن هذا لمكر مكرتموه في المدينة لتخرجوا منها أهلها فسوف تعلمون ... ... ... ... ... ... | ١٢٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولكن انظر إلى الجبل فإن استقر مكانه فسوف تراني | ١٤٣ | ك « | ٧ |
| | وإن خفتم عيلة فسوف يغنيكم الله من فضله إن شاء | ٢٨ | م التوبة | ٩ |
| | فسوف تعلمون من يأتيه عذاب يخزيه ... ... ... | ٣٩ | ك هود | ١١ |
| | سوف تعلمون من يأتيه عذاب يخزيه ومن هو كاذب | ٩٣ | ك « | ١١ |
| | قال سوف أستغفر لكم ربي إنه هو الغفور الرحيم | ٩٨ | ك يوسف | ١٢ |
| | ذرهم يأكلوا ويتمتعوا ويلههم الأمل فسوف يعلمون | ٣ | ك الحجر | ١٥ |
| | الذين يجعلون مع الله إلها آخر فسوف يعلمون ... | ٩٦ | ك « | ١٥ |
| | ليكفروا بما آتيناهم فتمتعوا فسوف تعلمون... ... | ٥٥ | ك النحل | ١٦ |
| | قال أما من ظلم فسوف نعذبه ... ... ... ... ... | ٨٧ | م الكهف | ١٨ |
| | فخلف من بعدهم خلف أضاعوا الصلاة واتبعوا الشهوات فسوف يلقون غيا... ... ... ... ... | ٥٩ | ك مريم | ١٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| سَوْفَ: ويقول الإنسان أئذا ما مت لسوف أخرج حيا | | ٦٦ | ك مريم | ١٩ |
| وسوف يعلمون حين يرون العذاب من أضل سبيلا | | ٤٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| فقد كذبتم فسوف يكون لزاما ... ... ... ... ... | | ٧٧ | ك « | ٢٥ |
| إنه لكبيركم الذى علمكم السحر فلسوف تعلمون ... | | ٤٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| ليكفروا بما آتيناهم وليتمتعوا فسوف يعلمون ... | | ٦٦ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| ليكفروا بما آتيناهم فتمتعوا فسوف تعلمون... ... | | ٣٤ | ك الروم | ٣٠ |
| فكفروا به فسوف يعلمون ... ... ... ... ... ... | | ١٧٠ | ك الصافات | ٣٧ |
| وأبصرهم فسوف يبصرون ... ... ... ... ... ... | | ١٧٥ | ك « | ٣٧ |
| وأبصر فسوف يبصرون... ... ... ... ... ... ... | | ١٧٩ | ك « | ٣٧ |
| اعملوا على مكانتكم إنى عامل فسوف تعلمون... ... | | ٣٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| الذين كذبوا بالكتاب وبما أرسلنا به رسلنا فسوف يعلمون ... ... ... ... ... ... ... ... | | ٧٠ | ك غافر | ٤٠ |
| وإنه لذكر لك ولقومك وسوف تسئلون ... ... ... | | ٤٤ | ك الزخرف | ٤٣ |
| فاصفح عنهم وقل سلام فسوف يعلمون... ... ... | | ٨٩ | ك « | ٤٣ |
| وأن ليس للإنسان إلا ما سعى . وأن سعيه سوف يرى | | ٤٠ | ك النجم | ٥٣ |
| فأما من أوتى كتابه بيمينه . فسوف يحاسب حسابا يسيرا | | ٨ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| وأما من أوتى كتابه وراء ظهره . فسوف يدعوا ثبورا | | ١١ | ك « | ٨٤ |
| إلا ابتغاء وجه ربه الأعلى . ولسوف يرضى... ... | | ٢١ | ك الليل | ٩٢ |
| ولسوف يعطيك ربك فترضى ... ... ... ... ... | | ٥ | ك الضحى | ٩٣ |
| كلا سوف تعلمون... ... ... ... ... ... ... ... | | ٣ | ك التكاثر | ١٠٢ |
| ثم كلا سوف تعلمون ... ... ... ... ... ... ... | | ٤ | ك « | ١٠٢ |
| ✦✦✦ | | | | |
| سُقْنَاهُ: حتى إذا أقلت سحابا ثقالا سقناه لبلد ميت فأنزلنا به الماء | | ٥٧ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) والله الذى أرسل الرياح فتثير سحابا فسقناه إلى بلد ميت | | ٩ | ك فاطر | ٣٥ |
| نَسُوقُ: ونسوق المجرمين إلى جهنم وردا ... ... ... ... | | ٨٦ | ك مريم | ١٩ |
| (٢) أولم يروا أنا نسوق الماء إلى الأرض الجرز فنخرج به زرعا | | ٢٧ | ك السجدة | ٣٢ |
| سِيقَ: وسيق الذين كفروا إلى جهنم زمرا... ... ... ... | | ٧١ | ك الزمر | ٣٩ |
| (٢) وسيق الذين اتقوا ربهم إلى الجنة زمرا ... ... | | ٧٣ | ك « | ٣٩ |
| يُسَاقُونَ: كأنما يساقون إلى الموت وهم ينظرون ... ... | | ٦ | م الأنفال | ٨ |
| سَائِقٌ: وجاءت كل نفس معها سائق وشهيد ... ... ... | | ٢١ | ك ق | ٥٠ |
| الْمَسَاقُ: إلى ربك يومئذ المساق... ... ... ... ... | | ٣٠ | ك القيامة | ٧٥ |
| السَّاقِ: يوم يكشف عن ساق ويدعون إلى السجود | | | | |
| (٣) فلا يستطيعون ... ... ... ... ... ... ... ... | | ٤٢ | ك القلم | ٦٨ |
| والتفت الساق ... ... ... ... ... ... ... ... | | ٢٩ | ك القيامة | ٧٥ |
| بالساق . إلى ربك يومئذ المساق ... ... ... ... | | ٢٩ | ك « | ٧٥ |
| سَاقَيْهَا: فلما رأته حسبته لجة وكشفت عن ساقيها... ... | | ٤٤ | ك النمل | ٢٧ |
| بِالسُّوقِ: ردوها علىّ فطفق مسحا بالسوق والأعناق... | | ٣٣ | ك ص | ٣٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| سُوقِهِ: فاستغلظ فاستوى على سوقه يعجب الزراع ... ... | | ٢٩ | م الفتح | ٤٨ |
| الْأَسْوَاقِ: وقالوا مال هذا الرسول يأكل الطعام ويمشى | | | | |
| (٢) فى الأسواق لولا أنزل إليه ملك فيكون معه نذيرا | | ٧ | ك الفرقان | ٢٥ |
| وما أرسلنا قبلك من المرسلين إلا إنهم ليأكلون الطعام ويمشون فى الأسواق ... ... ... ... ... ... | | ٢٠ | ك « | ٢٥ |
| ✦✦✦ | | | | |
| سَوَّلَ: إن الذين ارتدوا على أدبارهم من بعد ما تبين لهم الهدى الشيطان سوّل لهم وأملى لهم ... ... ... | | ٢٥ | م محمد | ٤٧ |
| سَوَّلَتْ: قال بل سولت لكم أنفسكم أمرا فصبر جميل والله | | | | |
| (٣) المستعان على ما تصفون ... ... ... ... ... | | ١٨ | ك يوسف | ١٢ |
| قال بل سولت لكم أنفسكم أمرا فصبر جميل عسى الله أن يأتينى بهم جميعا... ... ... ... ... ... ... | | ٨٣ | ك « | ١٢ |
| وكذلك سولت لى نفسى ... ... ... ... ... ... ... | | ٩٦ | ك طه | ٢٠ |
| ✦✦✦ | | | | |
| يَسُومُهُمْ: وإذ تأذن ربك ليبعثن عليهم إلى يوم القيامة | | | | |
| من يسومهم سوء العذاب ... ... ... ... ... | | ١٦٧ | م الأعراف | ٧ |
| يَسُومُونَكُمْ: يسومونكم سوء العذاب يذبحون أبناءكم ... | | ٤٩ | م البقرة | ٢ |
| (٣) يسومونكم سوء العذاب يقتلون أبناءكم ... ... ... | | ١٤١ | ك الأعراف | ٧ |
| يسومونكم سوء العذاب ويذبحون أبناءكم... ... ... | | ٦ | ك إبراهيم | ١٤ |
| تُسِيمُونَ: لكم منه شراب ومنه شجر فيه تسيمون ... ... | | ١٠ | ك النحل | ١٦ |
| مُسَوِّمِينَ: يمددكم ربكم بخمسة آلاف من الملائكة مسومين | | ١٢٥ | م آل عمران | ٣ |
| مُسَوَّمَةِ: زين للناس حب الشهوات من النساء والبنين | | | | |
| (٣) والقناطير المقنطرة من الذهب والفضة والخيل المسومة | | ١٤ | م « | ٣ |
| مسومة عند ربك وما هى من الظالمين ببعيد ... ... | | ٨٣ | ك هود | ١١ |
| لنرسل عليهم حجارة من طين . مسومة عند ربك للمسرفين | | ٣٤ | ك الذاريات | ٥١ |
| سِيمَاهُمْ: تعرفهم بسيماهم لا يسئلون الناس إلحافا ... ... | | ٢٧٣ | م البقرة | ٢ |
| (٦) وعلى الأعراف رجال يعرفون كلا بسيماهم... ... ... | | ٤٦ | ك الأعراف | ٧ |
| ونادى أصحاب الأعراف رجالا يعرفونهم بسيماهم ... | | ٤٨ | ك « | ٧ |
| ولو نشاء لأريناكهم فلعرفتهم بسيماهم... ... ... ... | | ٣٠ | م محمد | ٤٧ |
| سيماهم فى وجوههم من أثر السجود ... ... ... ... | | ٢٩ | م الفتح | ٤٨ |
| يعرف المجرمون بسيماهم فيؤخذ بالنواصى والأقدام... | | ٤١ | م الرحمن | ٥٥ |
| ✦✦✦ | | | | |
| سَوَّى: ثم كان علقة فخلق فسوى ... ... ... ... ... | | ٣٨ | ك القيامة | ٧٥ |
| (٢) سبح اسم ربك الأعلى . الذى خلق فسوى ... ... | | ٢ | ك الأعلى | ٨٧ |
| سَوَّاكَ: أكفرت بالذى خلقك من تراب ثم من نطفة | | | | |
| (٢) ثم سواك رجلا ... ... ... ... ... ... ... | | ٣٧ | ك الكهف | ١٨ |
| الذى خلقك فسواك فعدلك... ... ... ... ... ... | | ٧ | ك الانفطار | ٨٢ |
| سَوَّاهُ: ثم سواه ونفخ فيه من روحه ... ... ... ... | | ٩ | ك السجدة | ٣٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| سَوَّاهَا : أأنتم أشد خلقا أم السماء بناها . رفع سمكها فسوّاها | ٢٨ | ك النازعات | ٧٩ |
| (٣) ونفس وما سوّاها . فألهمها فجورها وتقواها ... ... | ٧ | ك الشمس | ٩١ |
| فكذبوه فعقروها فدمدم عليهم ربهم بذنبهم فسوّاها ... | ١٤ | ك « | ٩١ |
| فَسَوَّاهُنَّ : ثم استوى إلى السماء فسوّاهنّ سبع سموات ... | ٢٩ | م البقرة | ٢ |
| سَوَّيْتُهُ : فإذا سويته ونفخت فيه من روحى فقعوا له ساجدين | ٢٩ | ك الحجر | ١٥ |
| (٢) فإذا سويته ونفخت فيه من روحى فقعوا له ساجدين | ٧٢ | ك ص | ٣٨ |
| نُسَوِّيَ : بلى قادرين على أن نسوّى بنانه ... ... ... ... | ٤ | ك القيامة | ٧٥ |
| نُسَوِّيكُمْ : تالله إن كنا لفى ضلال مبين . إذ نسوّيكم برب العالمين | ٩٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| تُسَوَّى : يومئذ يودّ الذين كفروا وعصوا الرسول لو تسوى بهم الأرض ولا يكتمون الله حديثا ... ... ... | ٤٢ | م النساء | ٤ |
| سَاوَى : حتى إذا ساوى بين الصدفين قال انفخوا ... ... | ٩٦ | م الكهف | ١٨ |
| اسْتَوَى : ثم استوى إلى السماء فسوّاهنّ سبع سموات... ... | ٢٩ | م البقرة | ٢ |
| (١٢) ثم استوى على العرش يغشى الليل النهار يطلبه حثيثا ... | ٥٤ | ك الأعراف | ٧ |
| ثم استوى على العرش يدبر الأمر ما من شفيع إلا من بعد إذنه | ٣ | ك يونس | ١٠ |
| الله الذى رفع السموات بغير عمد ترونها ثم استوى على العرش | ٢ | م الرعد | ١٣ |
| الرحمن على العرش استوى ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك طه | ٢٠ |
| الذى خلق السموات والأرض وما بينهما فى ستة أيام ثم استوى على العرش ... ... ... ... ... ... | ٥٩ | ك الفرقان | ٢٥ |
| ولما بلغ أشده واستوى آتيناه حكما وعلما ... ... | ١٤ | ك القصص | ٢٨ |
| الله الذى خلق السموات والأرض وما بينهما فى ستة أيام ثم استوى على العرش ... ... ... ... ... | ٤ | ك السجدة | ٣٢ |
| ثم استوى إلى السماء وهى دخان ... ... ... ... | ١١ | ك فصلت | ٤١ |
| كزرع أخرج شطأه فآزره فاستغلظ فاستوى على سوقه | ٢٩ | م الفتح | ٤٨ |
| ذو مرة فاستوى . وهو بالأفق الأعلى ... ... ... | ٦ | ك النجم | ٥٣ |
| هو الذى خلق السموات والأرض فى ستة أيام ثم استوى على العرش ... ... ... ... ... ... | ٤ | م الحديد | ٥٧ |
| اسْتَوَتْ : وغيض الماء وقضى الأمر واستوت على الجودى | ٤٤ | ك هود | ١١ |
| اسْتَوَيْتَ : فإذا استويت أنت ومن معك على الفلك فقل الحمد لله الذى نجانا من القوم الظالمين ... ... | ٢٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| اسْتَوَيْتُمْ : ثم تذكروا نعمة ربكم إذا استويتم عليه ... ... | ١٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| لِتَسْتَوُوا : لتستووا على ظهوره ثم تذكروا نعمة ربكم إذا استويتم عليه ... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك « | ٤٣ |
| تَسْتَوِي : قل هل يستوى الأعمى والبصير أم هل تستوى الظلمات والنور ... ... ... ... ... ... | ١٦ | م الرعد | ١٣ |
| (٢) ولا تستوى الحسنة ولا السيئة ادفع بالتى هى أحسن | ٣٤ | ك فصلت | ٤١ |
| يَسْتَوُونَ : لا يستوون عند الله ... ... ... ... ... | ١٩ | م التوبة | ٩ |
| (٣) فهو ينفق منه سرا وجهرا هل يستوون ... ... ... | ٧٥ | ك النحل | ١٦ |
| أفمن كان مؤمنا كمن كان فاسقا لا يستوون ... ... | ١٨ | ك السجدة | ٣٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| يَسْتَوِي : لا يستوى القاعدون من المؤمنين غير أولى الضرر والمجاهدون فى سبيل الله ... ... ... ... ... | ٩٥ | م النساء | ٤ |
| (١٢) قل لا يستوى الخبيث والطيب ولو أعجبك كثرة الخبيث | ١٠٠ | م المائدة | ٥ |
| قل هل يستوى الأعمى والبصير أفلا تتفكرون ... | ٥٠ | ك الأنعام | ٦ |
| قل هل يستوى الأعمى والبصير أم هل تستوى الظلمات والنور ... ... ... ... ... ... | ١٦ | م الرعد | ١٣ |
| هل يستوى هو ومن يأمر بالعدل وهو على صراط مستقيم | ٧٦ | ك النحل | ١٦ |
| وما يستوى البحران ... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| وما يستوى الأعمى والبصير . ولا الظلمات ولا النور | ١٩ | ك « | ٣٥ |
| وما يستوى الأحياء ولا الأموات إن الله يسمع من يشاء | ٢٢ | ك « | ٣٥ |
| قل هل يستوى الذين يعلمون والذين لا يعلمون ... | ٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| وما يستوى الأعمى والبصير والذين آمنوا وعملوا الصالحات | ٥٨ | ك غافر | ٤٠ |
| لا يستوى منكم من أنفق من قبل الفتح وقاتل ... | ١٠ | م الحديد | ٥٧ |
| لا يستوى أصحاب النار وأصحاب الجنة ... ... ... | ٢٠ | م الحشر | ٥٩ |
| يَسْتَوِيَانِ : مثل الفريقين كالأعمى والأصم والبصير والسميع هل يستويان مثلا ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك هود | ١١ |
| (٢) ضرب الله مثلا رجلا فيه شركاء متشاكسون ورجلا سلما لرجل هل يستويان مثلا ... ... ... ... | ٢٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| سُوًى : لا نخلفه نحن ولا أنت مكانا سوى ... ... ... | ٥٨ | ك طه | ٢٠ |
| سَوَاءٌ : سواء عليهم أأنذرتهم أم لم تنذرهم لا يؤمنون ... | ٦ | م البقرة | ٢ |
| (٢٧) ومن يتبدل الكفر بالإيمان فقد ضل سواء السبيل ... | ١٠٨م | « | ٢ |
| قل يأهل الكتاب تعالوا إلى كلمة سواء بيننا وبينكم | ٦٤ | م آل عمران | ٣ |
| ليسوا سواء ... ... ... ... ... ... ... | ١١٣م | « | ٣ |
| ودوا لو تكفرون كما كفروا فتكونون سواء ... ... | ٨٩ | م النساء | ٤ |
| فمن كفر بعد ذلك منكم فقد ضل سواء السبيل ... | ١٢ | م المائدة | ٥ |
| أولئك شر مكانا وأضل عن سواء السبيل ... ... | ٦٠ | م « | ٥ |
| قد ضلوا من قبل وأضلوا كثيرا وضلوا عن سواء السبيل | ٧٧ | م « | ٥ |
| سواء عليكم أدعوتموهم أم أنتم صامتون ... ... ... | ١٩٣ | ك الأعراف | ٧ |
| وإما تخافن من قوم خيانة فانبذ إليهم على سواء ... | ٥٨ | م الأنفال | ٨ |
| سواء منكم من أسر القول ومن جهر به ... ... ... | ١٠ | م الرعد | ١٣ |
| سواء علينا أجزعنا أم صبرنا ما لنا من محيص ... ... | ٢١ | ك إبرهيم | ١٤ |
| فهم فيه سواء أفبنعمة الله يجحدون ... ... ... ... | ٧١ | ك النحل | ١٦ |
| فإن تولوا فقل آذنتكم على سواء ... ... ... ... | ١٠٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| الذى جعلناه للناس سواء العاكف فيه والباد ... | ٢٥ | م الحج | ٢٢ |
| قالوا سواء علينا أوعظت أم لم تكن من الواعظين ... | ١٣٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| ولما توجه تلقاء مدين قال عسى ربى أن يهدينى سواء السبيل | ٢٢ | ك القصص | ٢٨ |
| فأنتم فيه سواء تخافونهم كخيفتكم أنفسكم ... ... | ٢٨ | ك الروم | ٣٠ |
| وسواء عليهم أأنذرتهم أم لم تنذرهم لا يؤمنون... ... | ١٠ | ك يس | ٣٦ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| سَوَاءٌ: | فاطلع فرآه فى سواء الجحيم ... ... ... ... ... ... | الصافات ك | ٣٧ |
| | فاحكم بيننا بالحق ولا تشطط واهدنا إلى سواء الصراط | ص ك | ٣٨ |
| | وقدر فيها أقواتها فى أربعة أيام سواء للسائلين... ... | فصلت ك | ٤١ |
| | خذوه فاعتلوه إلى سواء الجحيم ... ... ... ... ... | الدخان ك | ٤٤ |
| | أم حسب الذين اجترحوا السيآت أن نجعلهم كالذين آمنوا وعملوا الصالحات سواء محياهم ومماتهم... | الجاثية ك | ٤٥ |
| | اصلوها فاصبروا أو لا تصبروا سواء عليكم ... ... | الطور ك | ٥٢ |
| | ومن يفعله منكم فقد ضل سواء السبيل ... ... ... | الممتحنة م | ٦٠ |
| | سواء عليهم أستغفرت لهم أم لم تستغفر لهم لن يغفر الله لهم | المنافقون م | ٦٣ |
| السَّوِىِّ: | فستعلمون من أصحاب الصراط السوى ومن اهتدى | طه ك | ٢٠ |
| سَوِيًّا: | قال آيتك ألا تكلم الناس ثلاث ليال سويا ... | مريم ك | ١٩ |
| (٤) | فأرسلنا إليها روحنا فتمثل لها بشرا سويا... ... ... | » ك | ١٩ |
| | فاتبعنى أهدك صراطا سويا ... ... ... ... ... ... | » ك | ١٩ |
| | أفمن يمشى مكبا على وجهه أهدى أمن يمشى سويا على صراط مستقيم... ... ... ... ... ... ... | الملك ك | ٦٧ |

✦✦✦

| | | | |
|---|---|---|---|
| سَائِبَةٍ: | ما جعل الله من بحيرة ولا سائبة ولا وصيلة ولا حام | المائدة م | ٥ |

✦✦✦

| | | | |
|---|---|---|---|
| فَسِيحُوا: | فسيحوا فى الأرض أربعة أشهر ... ... ... | التوبة م | ٩ |
| السَّائِحُونَ: | التائبون العابدون الحامدون السائحون الراكعون الساجدون ... ... ... ... ... ... | » م | ٩ |
| سَائِحَاتٍ: | أن يبدله أزواجا خيرا منكن مسلمات مؤمنات قانتات تائبات عابدات سائحات ... ... ... | التحريم م | ٦٦ |

✦✦✦

| | | | |
|---|---|---|---|
| سَارَ: | فلما قضى موسى الأجل وسار بأهله آنس من جانب الطور نارا... ... ... ... ... ... ... ... | القصص ك | ٢٨ |
| تَسِيرُ: | يوم تمور السماء مورا . وتسير الجبال سيرا ... ... | الطور ك | ٥٢ |
| يَسِيرُوا: | أفلم يسيروا فى الأرض فينظروا كيف كان عاقبة الذين من قبلهم ولدار الآخرة خير ... ... ... | يوسف ك | ١٢ |
| (٧) | أفلم يسيروا فى الأرض فتكون لهم قلوب يعقلون بها | الحج م | ٢٢ |
| | أو لم يسيروا فى الأرض فينظروا كيف كان عاقبة الذين من قبلهم كانوا أشد منهم قوة ... ... | الروم ك | ٣٠ |
| | أو لم يسيروا فى الأرض فينظروا كيف كان عاقبة الذين من قبلهم وكانوا أشد منهم قوة ... ... | فاطر ك | ٣٥ |
| | أو لم يسيروا فى الأرض فينظروا كيف كان عاقبة الذين كانوا من قبلهم كانوا هم أشد منهم قوة... | غافر ك | ٤٠ |
| يَسِيرُوا: | أفلم يسيروا فى الأرض فينظروا كيف كان عاقبة الذين من قبلهم كانوا أكثر منهم ... ... ... | غافر ك | ٤٠ |
| | أفلم يسيروا فى الأرض فينظروا كيف كان عاقبة الذين من قبلهم دمر الله عليهم ... ... ... ... | محمد م | ٤٧ |
| سِيرُوا: | قد خلت من قبلكم سنن فسيروا فى الأرض ... | آل عمران م | ٣ |
| (٧) | قل سيروا فى الأرض ثم انظروا كيف كان عاقبة المكذبين ... ... ... ... ... ... ... | الأنعام ك | ٦ |
| | فسيروا فى الأرض فانظروا كيف كان عاقبة المكذبين | النحل ك | ١٦ |
| | قل سيروا فى الأرض فانظروا كيف كان عاقبة المجرمين | النمل ك | ٢٧ |
| | قل سيروا فى الأرض فانظروا كيف بدأ الخلق ... | العنكبوت ك | ٢٩ |
| | قل سيروا فى الأرض فانظروا كيف كان عاقبة الذين من قبل... ... ... ... ... ... ... | الروم ك | ٣٠ |
| | وقدرنا فيها السير سيروا فيها ليالى وأياما آمنين ... | سبأ ك | ٣٤ |
| نُسَيِّرُ: | ويوم نسير الجبال وترى الأرض بارزة... ... ... | الكهف ك | ١٨ |
| يُسَيِّرُكُمْ: | هو الذى يسيركم فى البر والبحر ... ... ... ... | يونس ك | ١٠ |
| سُيِّرَتْ: | ولو أن قرآنا سيرت به الجبال أو قطعت به الأرض | الرعد م | ١٣ |
| (٣) | وسيرت الجبال فكانت سرابا ... ... ... ... ... | النبأ ك | ٧٨ |
| | وإذا الجبال سيرت ... ... ... ... ... ... ... | التكوير ك | ٨١ |
| السَّيْرَ: | وقدرنا فيها السير... ... ... ... ... ... ... | سبأ ك | ٣٤ |
| سَيْرًا: | يوم تمور السماء مورا . وتسير الجبال سيرا ... ... | الطور ك | ٥٢ |
| سِيرَتَهَا: | قال خذها ولا تخف سنعيدها سيرتها الأولى ... | طه ك | ٢٠ |
| السَّيَّارَةُ: | أحل لكم صيد البحر وطعامه متاعا لكم وللسيارة | المائدة م | ٥ |
| (٣) | وألقوه فى غيابة الجب يلتقطه بعض السيارة... ... | يوسف ك | ١٢ |
| | وجاءت سيارة فأرسلوا واردهم فأدلى دلوه ... ... | » ك | ١٢ |

✦✦✦

| | | | |
|---|---|---|---|
| سَالَتْ: | أنزل من السماء ماء فسالت أودية بقدرها... ... | الرعد م | ١٣ |
| أَسَلْنَا: | وأسلنا له عين القطر ... ... ... ... ... ... | سبأ ك | ٣٤ |
| السَّيْلُ: | فسالت أودية بقدرها فاحتمل السيل زبدا رابيا | الرعد م | ١٣ |
| (٢) | فأعرضوا فأرسلنا عليهم سيل العرم ... ... ... | سبأ ك | ٣٤ |

✦✦✦

| | | | |
|---|---|---|---|
| سَيْنَاءَ: | وشجرة تخرج من طور سيناء تنبت بالدهن وصبغ للآكلين ... ... ... ... ... ... ... ... | المؤمنون ك | ٢٣ |

✦✦✦

| | | | |
|---|---|---|---|
| سِينِينَ: | والتين والزيتون . وطور سينين ... ... ... ... | التين ك | ٩٥ |

# باب الشين

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| **المَشْئَمَة**: وأصحاب المشئمة ... ... ... ... ... | ٩ | ك الواقعة | ٥٦ |
| (٣) ما أصحاب المشئمة... ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك « | ٥٦ |
| والذين كفروا بآياتنا هم أصحاب المشئمة ... ... | ١٩ | ك البلد | ٩٠ |
| ✦✦✦ | | | |
| **شَأْنٌ**: وما تكون فى شأن وما تتلوا منه من قرآن ولا تعملون | | | |
| (٣) من عمل إلا كنا عليكم شهودا إذ تفيضون فيه ... | ٦١ | ك يونس | ١٠ |
| يسئله من فى السموات والأرض كل يوم هو فى شأن | ٢٩ | م الرحمن | ٥٥ |
| لكل امرئ منهم يومئذ شأن يغنيه ... ... ... ... | ٣٧ | ك عبس | ٨٠ |
| **شَأْنِهِمْ**: فإذا استأذنوك لبعض شأنهم فأذن لمن شئت منهم | ٦٢ | م النور | ٢٤ |
| ✦✦✦ | | | |
| **شُبِّهَ**: وما قتلوه وما صلبوه ولكن شبه لهم ... ... ... ... | ١٥٧ | م النساء | ٤ |
| **تَشَابَهَ**: قالوا ادع لنا ربك يبين لنا ما هى إن البقر تشابه علينا | ٧٠ | م البقرة | ٢ |
| (٣) فأما الذين فى قلوبهم زيغ فيتبعون ما تشابه منه ... | ٧ | م آل عمران | ٣ |
| أم جعلوا لله شركاء خلقوا كخلقه فتشابه الخلق عليهم | ١٦ | م الرعد | ١٣ |
| **تَشَابَهَتْ**: تشابهت قلوبهم قد بينا الآيات لقوم يوقنون | ١١٨ | م البقرة | ٢ |
| **مُتَشَابِهٍ**: والزيتون والرمان مشتبها وغير متشابه... ... ... | ٩٩ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) والزيتون والرمان متشابها وغير متشابه ... ... ... | ١٤١ | م « | ٦ |
| **مُتَشَابِهًا**: قالوا هذا الذى رزقنا من قبل وأتوا به متشابها | ٢٥ | م البقرة | ٢ |
| (٣) والزيتون والرمان متشابها وغير متشابه ... ... ... | ١٤١ | م الأنعام | ٦ |
| الله نزل أحسن الحديث كتابا متشابها... ... ... ... | ٢٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| **مُتَشَابِهَاتٌ**: هو الذى أنزل عليك الكتاب منه آيات محكمات | | | |
| هن أم الكتاب وأخر متشابهات ... ... ... ... | ٧ | م آل عمران | ٣ |
| **مُشْتَبِهًا**: والزيتون والرمان مشتبها وغير متشابه ... ... ... | ٩٩ | ك الأنعام | ٦ |
| ✦✦✦ | | | |
| **أَشْتَاتًا**: ليس عليكم جناح أن تأكلوا جميعا أو أشتاتا ... | ٦١ | م النور | ٢٤ |
| (٢) يومئذ يصدر الناس أشتاتا ليروا أعمالهم ... ... ... | ٦ | م الزلزلة | ٩٩ |
| **شَتَّى**: وأنزل من السماء ماء فأخرجنا به أزواجا من نبات شتى | ٥٣ | ك طه | ٢٠ |
| (٣) تحسبهم جميعا وقلوبهم شتى ... ... ... ... ... | ١٤ | م الحشر | ٥٩ |
| إن سعيكم لشتى... ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك الليل | ٩٢ |
| **الشِّتَاءِ**: لإيلاف قريش . إيلافهم رحلة الشتاء والصيف | ٢ | ك قريش | ١٠٦ |
| ✦✦✦ | | | |
| **شَجَرَ**: فلا وربك لا يؤمنون حتى يحكموك فيما شجر بينهم ... | ٦٥ | م النساء | ٤ |
| **الشَّجَرُ**: لكم منه شراب ومنه شجر فيه تسيمون ... ... | ١٠ | ك النحل | ١٦ |
| (٦) أن اتخذى من الجبال بيوتا ومن الشجر ومما يعرشون | ٦٨ | ك « | ١٦ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| **الشَّجَرِ**: والشمس والقمر والنجوم والجبال والشجر والدواب | | | |
| وكثير من الناس ... ... ... ... ... ... ... | ١٨ | م الحج | ٢٢ |
| الذى جعل لكم من الشجر الأخضر نارا فإذا أنتم منه توقدون | ٨٠ | ك يس | ٣٦ |
| والنجم والشجر يسجدان... ... ... ... ... ... ... | ٦ | م الرحمن | ٥٥ |
| ثم إنكم أيها الضالون المكذبون . لآكلون من شجر من زقوم | ٥٢ | ك الواقعة | ٥٦ |
| **شَجَرَهَا**: فأنبتنا به حدائق ذات بهجة ما كان لكم أن تنبتوا شجرها | ٦٠ | ك النمل | ٢٧ |
| **الشَّجَرَةَ**: ولا تقربا هذه الشجرة فتكونا من الظالمين ... | ٣٥ | م البقرة | ٢ |
| (١٨) ولا تقربا هذه الشجرة فتكونا من الظالمين ... ... | ١٩ | ك الأعراف | ٧ |
| ما نهاكما ربكما عن هذه الشجرة إلا أن تكونا ملكين | ٢٠ | ك « | ٧ |
| فلما ذاقا الشجرة بدت لهما سوءاتهما... ... ... ... | ٢٢ | ك « | ٧ |
| وناداهما ربهما ألم أنهكما عن تلكما الشجرة... ... ... | ٢٢ | ك « | ٧ |
| ألم تر كيف ضرب الله مثلا كلمة طيبة كشجرة طيبة | ٢٤ | ك إبراهيم | ١٤ |
| ومثل كلمة خبيثة كشجرة خبيثة اجتثت من فوق الأرض | ٢٦ | ك « | ١٤ |
| وما جعلنا الرؤيا التى أريناك إلا فتنة للناس والشجرة | | | |
| الملعونة فى القرآن ... ... ... ... ... ... ... | ٦٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| قال يا آدم هل أدلك على شجرة الخلد وملك لا يبلى | ١٢٠ | ك طه | ٢٠ |
| وشجرة تخرج من طور سيناء تنبت بالدهن ... ... ... | ٢٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| كأنها كوكب درى يوقد من شجرة مباركة زيتونة ... | ٣٥ | م النور | ٢٤ |
| فلما أتاها نودى من شاطىء الواد الأيمن فى البقعة | | | |
| المباركة من الشجرة ... ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك القصص | ٢٨ |
| ولو أنما فى الأرض من شجرة أقلام والبحر يمده من | | | |
| بعده سبعة أبحر ما نفدت كلمات الله... ... ... | ٢٧ | م لقمان | ٣١ |
| أذلك خير نزلا أم شجرة الزقوم ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| إنها شجرة تخرج فى أصل الجحيم ... ... ... ... ... | ٦٤ | ك « | ٣٧ |
| وأنبتنا عليه شجرة من يقطين ... ... ... ... ... ... | ١٤٦ | ك « | ٣٧ |
| إن شجرة الزقوم . طعام الأثيم ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك الدخان | ٤٤ |
| لقد رضى الله عن المؤمنين إذ يبايعونك تحت الشجرة | ١٨ | م الفتح | ٤٨ |
| **شَجَرَتَهَا**: أأنتم أنشأتم شجرتها أم نحن المنشئون ... ... ... | ٧٢ | ك الواقعة | ٥٦ |
| ✦✦✦ | | | |
| **الشُّحَّ**: والصلح خير وأحضرت الأنفس الشح ... ... ... | ١٢٨ | م النساء | ٤ |
| (٣) ومن يوق شح نفسه فأولئك هم المفلحون ... ... ... | ٩ | م الحشر | ٥٩ |
| ومن يوق شح نفسه فأولئك هم المفلحون ... ... ... | ١٦ | م التغابن | ٦٤ |
| **أَشِحَّةً**: أشحة عليكم فإذا جاء الخوف رأيتهم ينظرون إليك... | ١٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| (٢) فإذا ذهب الخوف سلقوكم بألسنة حداد أشحة على الخير | ١٩ | م « | ٣٣ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | |
| شُحُومَهُمَا | ومن البقر والغنم حرمنا عليهم شحومهما ... ... | ك الأنعام | ١٤٦ ٦ |
| | ✦✦✦ | | |
| المَشْحُونِ | فأنجيناه ومن معه فى الفلك المشحون ... ... | ك الشعراء | ١١٩ ٢٦ |
| (٣) | وآية لهم أنا حملنا ذريتهم فى الفلك المشحون ... ... | ك يس | ٤١ ٣٦ |
| | وإن يونس لمن المرسلين . إذ أبق إلى الفلك المشحون | ك الصافات | ١٤٠ ٣٧ |
| | ✦✦✦ | | |
| تَشْخَصُ | إنما يؤخرهم ليوم تشخص فيه الأبصار ... ... | ك إبراهيم | ٤٢ ١٤ |
| شَاخِصَةٌ | واقترب الوعد الحق فإذا هى شاخصة أبصار الذين كفروا ... ... ... ... ... ... ... | ك الأنبياء | ٩٧ ٢١ |
| | ✦✦✦ | | |
| شَدَدْنَا | وشددنا ملكه وآتيناه الحكمة وفصل الخطاب | ك ص | ٢٠ ٣٨ |
| (٢) | نحن خلقناهم وشددنا أسرهم... ... ... ... ... ... | م الإنسان | ٢٨ ٧٦ |
| سَنَشُدُّ | قال سنشد عضدك بأخيك ونجعل لكما سلطانا | ك القصص | ٣٥ ٢٨ |
| اشْدُدْ | ربنا اطمس على أموالهم واشدد على قلوبهم | ك يونس | ٨٨ ١٠ |
| (٢) | واجعل لى وزيرا من أهلى . هرون أخى . اشدد به أزرى | ك طه | ٣١ ٢٠ |
| شُدُّوا | حتى إذا أثخنتموهم فشدوا الوثاق... ... ... ... | م محمد | ٤ ٤٧ |
| اشْتَدَّتْ | أعمالهم كرماد اشتدت به الريح فى يوم عاصف | ك إبراهيم | ١٨ ١٤ |
| شَدِيدٌ | أن القوة لله جميعا وأن الله شديد العذاب ... ... | م البقرة | ١٦٥ ٢ |
| (٤١) | واتقوا الله واعلموا أن الله شديد العقاب... ... ... | » | ١٩٦ م ٢ |
| | ومن يبدل نعمة الله من بعد ما جاءته فإن الله شديد العقاب | » | ٢١١ م ٢ |
| | إن الذين كفروا بآيات الله لهم عذاب شديد ... ... | م آل عمران | ٤ ٣ |
| | كذبوا بآياتنا فأخذهم الله بذنوبهم والله شديد العقاب | » | ١١ م ٣ |
| | واتقوا الله إن الله شديد العقاب ... ... ... ... | م المائدة | ٢ ٥ |
| | اعلموا أن الله شديد العقاب وأن الله غفور رحيم | » | ٩٨ م ٥ |
| | سيصيب الذين أجرموا صغار عند الله وعذاب شديد | ك الأنعام | ١٢٤ ٦ |
| | ومن يشاقق الله ورسوله فإن الله شديد العقاب ... | م الأنفال | ١٣ ٨ |
| | واعلموا أن الله شديد العقاب ... ... ... ... ... | » | ٢٥ م ٨ |
| | إنى أرى ما لا ترون إنى أخاف الله والله شديد العقاب | » | ٤٨ م ٨ |
| | فأخذهم الله بذنوبهم إن الله قوى شديد العقاب ... | » | ٥٢ م ٨ |
| | متاع فى الدنيا ثم إلينا مرجعهم ثم نذيقهم العذاب الشديد | ك يونس | ٧٠ ١٠ |
| | قال لو أن لى بكم قوة أو آوى إلى ركن شديد ... ... | ك هود | ٨٠ ١١ |
| | إن أخذه أليم شديد... ... ... ... ... ... ... | ك | ١٠٢ ك ١١ |
| | وإن ربك لشديد العقاب ... ... ... ... ... ... | م الرعد | ٦ ١٣ |
| | وهم يجادلون فى الله وهو شديد المحال... ... ... | » | ١٣ م ١٣ |
| | وويل للكافرين من عذاب شديد ... ... ... ... | ك إبراهيم | ٢ ١٤ |
| | لئن شكرتم لأزيدنكم ولئن كفرتم إن عذابى لشديد | ك | ٧ ك ١٤ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| شَدِيدٌ | فإذا جاء وعد أولاهما بعثنا عليكم عبادا لنا أولى بأس شديد ... ... ... ... ... ... | ك الإسراء | ٥ ١٧ |
| | وترى الناس سكارى وما هم بسكارى ولكن عذاب الله شديد | م الحج | ٢ ٢٢ |
| | حتى إذا فتحنا عليهم بابا ذا عذاب شديد إذا هم فيه مبلسون ... ... ... ... ... ... ... | ك المؤمنون | ٧٧ ٢٣ |
| | قالوا نحن أولوا قوة وأولوا بأس شديد ... ... ... | ك النمل | ٣٣ ٢٧ |
| | إن هو إلا نذير لكم بين يدى عذاب شديد ... ... | ك سبإ | ٤٦ ٣٤ |
| | الذين كفروا لهم عذاب شديد ... ... ... ... ... | ك فاطر | ٧ ٣٥ |
| | والذين يمكرون السيئات لهم عذاب شديد ... ... ... | ك » | ١٠ ٣٥ |
| | إن الذين يضلون عن سبيل الله لهم عذاب شديد | ك ص | ٢٦ ٣٨ |
| | غافر الذنب وقابل التوب شديد العقاب ذى الطول | ك غافر | ٣ ٤٠ |
| | فكفروا فأخذهم الله إنه قوى شديد العقاب ... ... | » | ٢٢ ك ٤٠ |
| | حجتهم داحضة عند ربهم وعليهم غضب ولهم عذاب شديد | ك الشورى | ١٦ ٤٢ |
| | والكافرون لهم عذاب شديد... ... ... ... ... ... | » | ٢٦ ك ٤٢ |
| | قل للمخلفين من الأعراب ستدعون إلى قوم أولى بأس شديد | م الفتح | ١٦ ٤٨ |
| | الذى جعل مع الله إلها آخر فألقياه فى العذاب الشديد | ك ق | ٢٦ ٥٠ |
| | إن هو إلا وحى يوحى . علمه شديد القوى ... ... | ك النجم | ٥ ٥٣ |
| | وفى الآخرة عذاب شديد ومغفرة من الله ورضوان | م الحديد | ٢٠ ٥٧ |
| | وأنزلنا الحديد فيه بأس شديد ومنافع للناس ... ... | م | ٢٥ م ٥٧ |
| | ومن يشاق الله فإن الله شديد العقاب ... ... ... | م الحشر | ٤ ٥٩ |
| | وما نهاكم عنه فانتهوا واتقوا الله إن الله شديد العقاب | م | ٧ م ٥٩ |
| | بأسهم بينهم شديد تحسبهم جميعا وقلوبهم شتى... ... | م | ١٤ م ٥٩ |
| | إن بطش ربك لشديد ... ... ... ... ... ... ... | ك البروج | ١٢ ٨٥ |
| | وإنه لحب الخير لشديد ... ... ... ... ... ... ... | ك العاديات | ٨ ١٠٠ |
| شَدِيدًا | فأما الذين كفروا فأعذبهم عذابا شديدا فى الدنيا والآخرة ... ... ... ... ... ... ... ... | م آل عمران | ٥٦ ٣ |
| (١٦) | لم تعظون قوما الله مهلكهم أو معذبهم عذابا شديدا | م الأعراف | ١٦٤ ٧ |
| | وإن من قرية إلا نحن مهلكوها قبل يوم القيامة أو معذبوها عذابا شديدا ... ... ... ... ... | ك الإسراء | ٥٨ ١٧ |
| | قيما لينذر بأسا شديدا من لدنه ويبشر المؤمنين ... ... | ك الكهف | ٢ ١٨ |
| | لأعذبنه عذابا شديدا أو لأذبحنه أو ليأتينى بسلطان مبين | ك النمل | ٢١ ٢٧ |
| | هنالك ابتلى المؤمنون وزلزلوا زلزالا شديدا ... ... | م الأحزاب | ١١ ٣٣ |
| | فلنذيقن الذين كفروا عذابا شديدا ... ... ... ... | ك فصلت | ٢٧ ٤١ |
| | أعد الله لهم عذابا شديدا إنهم ساء ما كانوا يعملون... | م المجادلة | ١٥ ٥٨ |
| | وكأين من قرية عتت عن أمر ربها ورسله فحاسبناها حسابا شديدا ... ... ... ... ... ... ... | م الطلاق | ٨ ٦٥ |
| | أعد الله لهم عذابا شديدا فاتقوا الله يا أولى الألباب | » | ١٠ م ٦٥ |
| | وأنا لمسنا السماء فوجدناها ملئت حرسا شديدا وشهبا | ك الجن | ٨ ٧٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| شَدَّادٌ: | ثم يأتى من بعد ذلك سبع شداد يأكلن ما قدمتم لهن | ٤٨ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | وقودها الناس والحجارة عليها ملائكة غلاظ شداد ... | ٦ | م التحريم | ٦٦ |
| شِدَادًا: | وبنينا فوقكم سبعا شدادا ... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك النبأ | ٧٨ |
| أَشِدَّاءُ: | محمد رسول الله والذين معه أشداء على الكفار رحماء بينهم | ٢٩ | م الفتح | ٤٨ |
| أَشَدُّ: | ثم قست قلوبكم من بعد ذلك فهى كالحجارة أو أشد قسوة | ٧٤ | م البقرة | ٢ |
| (٣١) | ويوم القيامة يردون إلى أشد العذاب ... ... ... | ٨٥ | م » | ٢ |
| | يحبونهم كحب الله والذين آمنوا أشد حبا لله ... ... | ١٦٥ | م » | ٢ |
| | وأخرجوهم من حيث أخرجوكم والفتنة أشد من القتل | ١٩١ | م » | ٢ |
| | فإذا قضيتم مناسككم فاذكروا الله كذكركم آباءكم أو أشد ذكرا | ٢٠٠ | م » | ٢ |
| | ولو أنهم فعلوا ما يوعظون به لكان خيرا لهم وأشد تثبيتا | ٦٦ | م النساء | ٤ |
| | إذا فريق منهم يخشون الناس كخشية الله أو أشد خشية | ٧٧ | م » | ٤ |
| | والله أشد بأسا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨٤ | م » | ٤ |
| | وأشد تنكيلا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨٤ | م » | ٤ |
| | لتجدن أشد الناس عداوة للذين آمنوا اليهود ... ... | ٨٢ | م المائدة | ٥ |
| | كالذين من قبلكم كانوا أشد منكم قوة ... ... ... | ٦٩ | م التوبة | ٩ |
| | قل نار جهنم أشد حرا لو كانوا يفقهون ... ... ... | ٨١ | م » | ٩ |
| | الأعراب أشد كفرا ونفاقا ... ... ... ... ... ... | ٩٧ | م » | ٩ |
| | ثم لننزعن من كل شيعة أيهم أشد على الرحمن عتيا ... | ٦٩ | ك مريم | ١٩ |
| | ولتعلمن أينا أشد عذابا وأبقى ... ... ... ... ... | ٧١ | ك طه | ٢٠ |
| | ولعذاب الآخرة أشد وأبقى ... ... ... ... ... ... | ١٢٧ | ك » | ٢٠ |
| | أو لم يعلم أن الله قد أهلك من قبله من القرون من هو أشد منه قوة وأكثر جمعا ... ... ... ... ... ... | ٧٨ | ك القصص | ٢٨ |
| | كانوا أشد منهم قوة وأثاروا الأرض ... ... ... ... | ٩ | ك الروم | ٣٠ |
| | وكانوا أشد منهم قوة وما كان الله ليعجزه من شىء | ٤٤ | ك فاطر | ٣٥ |
| | فاستفتهم أهم أشد خلقا أم من خلقنا ... ... ... ... | ١١ | ك الصافات | ٣٧ |
| | كانوا هم أشد منهم قوة وآثارا فى الأرض ... ... ... | ٢١ | ك غافر | ٤٠ |
| | ويوم تقوم الساعة أدخلوا آل فرعون أشد العذاب | ٤٦ | ك » | ٤٠ |
| | كانوا أكثر منهم وأشد قوة وآثارا فى الأرض... ... | ٨٢ | ك » | ٤٠ |
| | وقالوا من أشد منا قوة ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك فصلت | ٤١ |
| | أو لم يروا أن الله الذى خلقهم هو أشد منهم قوة ... | ١٥ | ك » | ٤١ |
| | فأهلكنا أشد منهم بطشا ومضى مثل الأولين ... ... | ٨ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وكأين من قرية هى أشد قوة من قريتك التى أخرجتك أهلكناهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٣ | م محمد | ٤٧ |
| | وكم أهلكنا قبلهم من قرن هم أشد منهم بطشا ... ... | ٣٦ | ك قٓ | ٥٠ |
| | لأنتم أشد رهبة فى صدورهم من الله ... ... ... ... | ١٣ | م الحشر | ٥٩ |
| | إن ناشئة الليل هى أشد وطئا وأقوم قيلا ... ... ... | ٦ | ك المزمل | ٧٣ |
| | أأنتم أشد خلقا أم السماء بناها ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك النازعات | ٧٩ |
| أَشُدَّكُمْ: | ثم نخرجكم طفلا ثم لتبلغوا أشدكم ... ... ... ... | ٥ | م الحج | ٢٢ |
| (٢) | ثم يخرجكم طفلا ثم لتبلغوا أشدكم ثم لتكونوا شيوخا | ٦٧ | ك غافر | ٤٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَشُدَّهُ: | ولا تقربوا مال اليتيم إلا بالتى هى أحسن حتى يبلغ أشده | ١٥٢ | م الأنعام | ٦ |
| (٥) | ولما بلغ أشده آتيناه حكما وعلما ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك يوسف | ١٢ |
| | ولا تقربوا مال اليتيم إلا بالتى هى أحسن حتى يبلغ أشده | ٣٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ولما بلغ أشده واستوى آتيناه حكما وعلما ... ... | ١٤ | ك القصص | ٢٨ |
| | حتى إذا بلغ أشده وبلغ أربعين سنة قال رب أوزعنى أن أشكر نعمتك التى أنعمت على وعلى والدىّ... | ١٥ | م الأحقاف | ٤٦ |
| أَشُدَّهُمَا: | فأراد ربك أن يبلغا أشدهما ويستخرجا كنزهما | ٨٢ | ك الكهف | ١٨ |

* * *

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| شَرِبَ: | إن الله مبتليكم بنهر فمن شرب منه فليس منى ... | ٢٤٩ | م البقرة | ٢ |
| شَرِبُوا: | فشربوا منه إلا قليلا منهم ... ... ... ... ... | ٢٤٩ | م » | ٢ |
| تَشْرَبُونَ: | يأكل مما تأكلون منه ويشرب مما تشربون | ٣٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٢) | أفرأيتم الماء الذى تشربون ... ... ... ... ... | ٦٨ | ك الواقعة | ٥٦ |
| يَشْرَبُ: | يأكل مما تأكلون منه ويشرب مما تشربون... | ٣٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٣) | عينا يشرب بها عباد الله يفجرونها تفجيرا ... ... | ٦ | م الإنسان | ٧٦ |
| | ومزاجه من تسنيم . عينا يشرب بها المقربون ... ... | ٢٨ | ك المطففين | ٨٣ |
| يَشْرَبُونَ: | إن الأبرار يشربون من كأس كان مزاجها كافورا | ٥ | م الإنسان | ٧٦ |
| اشْرَبُوا: | كلوا واشربوا من رزق الله ... ... ... ... ... | ٦٠ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | وكلوا واشربوا حتى يتبين لكم الخيط الأبيض من الخيط الأسود من الفجر ... ... ... ... ... | ١٨٧ | م » | ٢ |
| | وكلوا واشربوا ولا تسرفوا إنه لا يحب المسرفين ... | ٣١ | ك الأعراف | ٧ |
| | كلوا واشربوا هنيئا بما كنتم تعملون ... ... ... | ١٩ | ك الطور | ٥٢ |
| | كلوا واشربوا هنيئا بما أسلفتم فى الأيام الخالية | ٢٤ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | كلوا واشربوا هنيئا بما كنتم تعملون ... ... ... | ٤٣ | ك المرسلات | ٧٧ |
| اشْرَبِى: | فكلى واشربى وقرى عينا ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك مريم | ١٩ |
| أُشْرِبُوا: | واشربوا فى قلوبهم العجل بكفرهم ... ... | ٩٣ | م البقرة | ٢ |
| شِرْبٌ: | قال هذه ناقة لها شرب ... ... ... ... ... ... | ١٥٥ | ك الشعراء | ٢٦ |
| (٣) | ولكم شرب يوم معلوم ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٥ | ك » | ٢٦ |
| | ونبئهم أن الماء قسمة بينهم كل شرب محتضر ... ... | ٢٨ | ك القمر | ٥٤ |
| شُرْبَ: | فشاربون شرب الهيم ... ... ... ... ... ... ... | ٥٥ | ك الواقعة | ٥٦ |
| شَارِبُونَ: | فشاربون عليه من الحميم ... ... ... ... ... ... | ٥٤ | ك » | ٥٦ |
| (٢) | فشاربون شرب الهيم ... ... ... ... ... ... ... | ٥٥ | ك » | ٥٦ |
| لِلشَّارِبِينَ: | نسقيكم مما فى بطونه من بين فرث ودم لبنا خالصا سائغا للشاربين... ... ... ... ... ... | ٦٦ | ك النحل | ١٦ |
| (٣) | يطاف عليهم بكأس من معين . بيضاء لذة للشاربين | ٤٦ | ك الصافات | ٣٧ |
| | وأنهار من خمر لذة للشاربين ... ... ... ... ... | ١٥ | م محمد | ٤٧ |
| شَرَابٌ: | لهم شراب من حميم وعذاب أليم بما كانوا يكفرون | ٧٠ | ك الأنعام | ٦ |
| (٧) | والذين كفروا لهم شراب من حميم وعذاب أليم ... | ٤ | ك يونس | ١٠ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| شَرَابٌ: | هو الذى أنزل من السماء ماء لكم منه شراب ... | ١٠ ك النحـل | ١٦ |
| | يخرج من بطونها شراب مختلف ألوانه فيه شفاء للناس | ٦٩ ك « | ١٦ |
| | بئس الشراب وساءت مرتفقا ... ... ... ... ... | ٢٩ ك الكهف | ١٨ |
| | أركض برجلك هـذا مغتسل بارد وشراب ... ... | ٤٢ ك ص | ٣٨ |
| | متكئين فيها يدعون فيها بفاكهـة كثيرة وشراب | ٥١ ك « | ٣٨ |
| شَرَابًا: | وحلوا أساور من فضة وسقاهم ربهم شرابا طهورا | ٢١ م الإنسان | ٧٦ |
| (٢) | لا يذوقون فيها بردا ولا شرابا ... ... ... ... | ٢٤ ك النبأ | ٧٨ |
| شَرَابِكَ: | فانظر إلى طعامك وشرابك لم يتسنه ... ... ... | ٢٥٩ م البقـرة | ٢ |
| شَرَابُهُ: | هـذا عذب فرات سائغ شرابه وهذا ملح أجاج | ١٢ ك فاطـر | ٣٥ |
| مَشْرَبَهُمْ: | قـد علم كل أناس مشربهم ... ... ... ... | ٦٠ م البقـرة | ٢ |
| (٢) | فانبجست منه اثنتا عشرة عينا قد علم كل أناس مشربهم | ١٦٠ ك الأعراف | ٧ |
| مَشَارِبُ: | ولهم فيها منافع ومشارب أفلا يشكرون ... ... | ٧٣ ك يس | ٣٦ |
| | ✦✦✦ | | |
| شَرَحَ: | ولكن من شرح بالكفر صدرا فعليهم غضب من الله | ١٠٦ ك النحل | ١٦ |
| (٢) | أفمن شرح الله صدره للإسلام فهو على نور من ربه | ٢٢ ك الزمـر | ٣٩ |
| نَشْرَحْ: | ألم نشرح لك صدرك... ... ... ... ... ... | ١ ك الشـرح | ٩٤ |
| يَشْرَحْ: | فمن يرد الله أن يهديه يشرح صدره للإسلام ... | ١٢٥ ك الأنعام | ٦ |
| اشْرَحْ: | قال رب اشرح لى صـدرى ... ... ... ... | ٢٥ ك طـه | ٢٠ |
| | ✦✦✦ | | |
| شَرِّدْ: | فشرد بهم من خلفهم لعلهم يذكرون ... ... ... | ٥٧ م الأنفـال | ٨ |
| | ✦✦✦ | | |
| شِرْذِمَةٌ: | إن هؤلاء لشرذمة قليلون ... ... ... ... ... | ٥٤ ك الشـعراء | ٢٦ |
| | ✦✦✦ | | |
| الشَّرُّ: | وعسى أن تحبوا شيئا وهو شر لكم والله يعلم وأنتم لا تعلمون | ٢١٦ م البقـرة | ٢ |
| (٢٦) | ولا يحسبن الذين يبخلون بما آتاهم الله من فضله هو خيرا لهم بل هو شر لهم ... ... ... ... ... | ١٨٠ م آل عمران | ٣ |
| | قل هل أنبئكم بشر من ذلك مثوبة عند الله... ... | ٦٠ م المائدة | ٥ |
| | أولئك شر مكانا وأضل عن سواء السبيل ... ... | ٦٠ م « | ٥ |
| | إن شر الدوابّ عند الله الصم البكم الذين لا يعقلون | ٢٢ م الأنفال | ٨ |
| | إن شر الدوابّ عند الله الذين كفروا فهم لا يؤمنون | ٥٥ م « | ٨ |
| | ولو يعجل الله للناس الشر استعجالهم بالخير لقضى إليهم أجلهم ... ... ... ... ... ... ... | ١١ ك يـونس | ١٠ |
| | قال أنتم شر مكانا والله أعلم بما تصفون ... ... | ٧٧ ك يوسـف | ١٢ |
| | ويدع الإنسان بالشر دعاءه بالخير وكان الإنسان عجولا | ١١ ك الإسـراء | ١٧ |
| | وإذا مسه الشر كان يؤسا ... ... ... ... ... | ٨٣ ك « | ١٧ |
| | فسيعلمون من هو شر مكانا وأضعف جندا ... .. | ٧٥ ك مـريم | ١٩ |
| | ونبلوكم بالشر والخير فتنة وإلينا ترجعون ... ... | ٣٥ ك الأنبياء | ٢١ |
| | قل أفأنبئكم بشر من ذلكم النار وعدها الله الذين كفروا | ٧٢ م الحـج | ٢٢ |
| الشَّرُّ: | الذين يحشرون على وجوههم إلى جهنم أولئك شر مكانا | ٣٤ ك الفـرقان | ٢٥ |
| | هذا وإن للطاغين لشر مآب ... ... ... ... ... | ٥٥ ك ص | ٣٨ |
| | لا يسئم الإنسان من دعاء الخير وإن مسه الشر فيؤس قنوط | ٤٩ ك فصـلت | ٤١ |
| | وإذا مسه الشر فذو دعاء عريض ... ... ... ... | ٥١ ك « | ٤١ |
| | إن الإنسان خلق هـلوعا . إذا مسه الشر جزوعا | ٢٠ ك المعارج | ٧٠ |
| | وأنا لا ندرى أشر أريد بمن فى الأرض أم أراد بهم ربهـم رشدا ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ ك الجـن | ٧٢ |
| | فوقاهم الله شر ذلك اليـوم ولقاهم نضرة وسرورا | ١١ م الإنسان | ٧٦ |
| | فى نار جهنم خالدين فيها أولئك هم شر البرية... ... | ٦ م البينـة | ٩٨ |
| | قل أعوذ برب الفلق . من شر ما خلق... ... ... | ٢ ك الفـلق | ١١٣ |
| | ومن شر غاسق إذا وقب ... ... ... ... ... | ٣ ك « | ١١٣ |
| | ومن شر النفاثات فى العقد ... ... ... ... ... | ٤ ك « | ١١٣ |
| | ومن شر حاسد إذا حسد ... ... ... ... ... | ٥ ك « | ١١٣ |
| | قل أعوذ برب الناس . ملك الناس . إله الناس . من شر الوسواس الخناس ... ... ... ... ... | ٤ ك النـاس | ١١٤ |
| شَرًّا: | إن الذين جاءو بالإفك عصبة منكم لا تحسبوه شرا لكم | ١١ م النـور | ٢٤ |
| (٢) | ومن يعمل مثقال ذرة شرا يره ... ... ... ... | ٨ م الزلزلة | ٩٩ |
| شَرُّهُ: | يوفون بالنـذر ويخافون يوما كان شره مستطيرا | ٧ م الإنسان | ٧٦ |
| الأَشْرَارِ: | وقالوا ما لنا لا نرى رجالا كنا نعدهم من الأشرار | ٦٢ ك ص | ٣٨ |
| بِشَرَرٍ: | إنها ترمى بشرر كالقصر ... ... ... ... ... | ٣٢ ك المرسلات | ٧٧ |
| | ✦✦✦ | | |
| أَشْرَاطُهَا: | فهـل ينظرون إلا الساعة أن تأتيهـم بغتة فقد جاء أشراطها ... ... ... ... ... ... | ١٨ م محمـد | ٤٧ |
| | ✦✦✦ | | |
| شَرَعَ: | شرع لكم من الدين ما وصى به نوحا والذى أوحينا إليك | ١٣ ك الشـورى | ٤٢ |
| شَرَعُوا: | أم لهم شركاء شرعوا لهم من الدين ما لم يأذن به الله | ٢١ ك « | ٤٢ |
| شُرَّعًا: | إذ تأتيهم حيتانهم يوم سبتهم شرعا ... ... ... | ١٦٣ م الأعراف | ٧ |
| شِرْعَةً: | لكل جعلنا منكم شرعة ومنهاجا ... ... ... ... | ٤٨ م المائدة | ٥ |
| شَرِيعَةٍ: | ثم جعلناك على شريعة من الأمر فاتبعها... ... | ١٨ ك الجاثية | ٤٥ |
| | ✦✦✦ | | |
| أَشْرَقَتِ: | وأشرقت الأرض بنـور ربها ووضع الكتاب | ٦٩ ك الزمـر | ٣٩ |
| شَرْقِيًّا: | واذكر فى الكتاب مريم إذ انتبذت من أهلها مكانا شرقيا | ١٦ ك مـريم | ١٩ |
| شَرْقِيَّةٍ: | يوقد من شجرة مباركة زيتونة لا شرقية ولا غربية | ٣٥ م النـور | ٢٤ |
| الإِشْرَاقِ: | إنا سخرنا الجبال معه يسبحن بالعشىّ والإشراق | ١٨ ك ص | ٣٨ |
| مُشْرِقِينَ: | فأخذتهم الصيحة مشرقين ... ... ... ... ... | ٧٣ ك الحجـر | ١٥ |
| (٢) | فأتبعوهم مشرقين ... ... ... ... ... ... | ٦٠ ك الشـعراء | ٢٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| المَشْرِقُ: | ولله المشرق والمغرب فأينما تولوا فثمّ وجه الله | ١١٥ | م البقـرة | ٢ |
| (٦) | قل لله المشرق والمغرب يهدى من يشاء إلى صراط مستقيم | ١٤٢ | م « | ٢ |
| | ليس البر أن تولوا وجوهكم قبل المشرق والمغرب ... | ١٧٧ | م « | ٢ |
| | قال إبراهيم فإن الله يأتى بالشمس من المشرق ... | ٢٥٨ | م « | ٢ |
| | قال رب المشرق والمغرب وما بينهما إن كنتم تعقلون | ٢٨ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| | رب المشرق والمغرب لا إله إلا هو فاتخذه وكيلا ... | ٩ | ك المزمـل | ٧٣ |
| المَشْرِقَيْنِ: | حتى إذا جاءنا قال ياليت بينى وبينك بعد المشرقين | ٣٨ | ك الزخرف | ٤٣ |
| (٢) | رب المشرقين ورب المغربين . فبأى آلاء ربكما تكذبان | ١٧ | م الرحمن | ٥٥ |
| المَشَارِقِ: | وأورثنا القوم الذين كانوا يستضعفون مشارق | | | |
| (٣) | الأرض ومغاربها التى باركنا فيها ... ... ... | ١٣٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | رب السموات والأرض وما بينهما ورب المشارق | ٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| | فلا أقسم برب المشارق والمغارب إنا لقادرون ... | ٤٠ | ك المعارج | ٧٠ |

❖

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَشْرَكَ: | أو تقولوا إنما أشرك آباؤنا من قبل وكنا ذرية من بعدهم | ١٧٣ | ك الأعراف | ٧ |
| أَشْرَكْتَ: | لئن أشركت ليحبطن عملك ولتكونن من الخاسرين | ٦٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| أَشْرَكْتُمْ: | وكيف أخاف ما أشركتم ... ... ... ... ... | ٨١ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | ولا تخافون أنكم أشركتم بالله ما لم ينزل به عليكم سلطانا | ٨١ | ك « | ٦ |
| أَشْرَكْتُمُونِ: | إنى كفرت بما أشركتمون من قبل ... | ٢٢ | ك إبرهيم | ١٤ |
| أَشْرَكْنَا: | لو شاء الله ما أشركنا ولا آباؤنا ولا حرمنا من شىء | ١٤٨ | ك الأنعام | ٦ |
| أَشْرَكُوا: | ولتجدنهم أحرص الناس على حياة ومن الذين أشركوا | ٩٦ | م البقـرة | ٢ |
| (١٢) | سنلقى فى قلوب الذين كفروا الرعب بما أشركوا بالله | ١٥١ | م آل عمران | ٣ |
| | ولتسمعن من الذين أوتوا الكتاب من قبلكم ومن الذين أشركوا أذى كثيرا ... ... ... ... ... ... | ١٨٦ | م « | ٣ |
| | لتجدن أشد الناس عداوة للذين آمنوا اليهود والذين أشركوا | ٨٢ | م المائدة | ٥ |
| | ويوم نحشرهم جميعا ثم نقول للذين أشركوا أين شركاؤكم | ٢٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | ولو أشركوا لحبط عنهم ما كانوا يعملون ... ... ... | ٨٨ | ك « | ٦ |
| | ولو شاء الله ما أشركوا وما جعلناك عليهم حفيظا | ١٠٧ | ك « | ٦ |
| | سيقول الذين أشركوا لو شاء الله ما أشركنا ... ... | ١٤٨ | ك « | ٦ |
| | ويوم نحشرهم جميعا ثم نقول للذين أشركوا مكانكم | ٢٨ | ك يـونس | ١٠ |
| | وقال الذين أشركوا لو شاء الله ما عبدنا من دونه من شىء | ٣٥ | ك النحـل | ١٦ |
| | وإذا رءا الذين أشركوا شركاءهم قالوا ربنا هؤلاء شركاؤنا الذين كنا ندعوا من دونك ... ... ... | ٨٦ | ك « | ١٦ |
| | إن الذين آمنوا والذين هادوا والصابئين والنصارى والمجوس والذين أشركوا إن الله يفصل بينهم يوم القيامة ... ... ... ... ... ... | ١٧ | م الحـج | ٢٢ |
| شَارِكْهُمْ: | وشاركهم فى الأموال والأولاد وعدهم ... ... | ٦٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| أُشْرِكُ: | قل إنما أمرت أن أعبد الله ولا أشرك به ... | ٣٦ | م الرعـد | ١٣ |
| (٥) | لكنا هو الله ربى ولا أشرك بربى أحدا ... ... ... | ٣٨ | ك الكهف | ١٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أُشْرِكُ: | ويقول ياليتنى لم أشرك بربى أحدا ... ... ... | ٤٢ | ك الكهف | ١٨ |
| | تدعوننى لأكفر بالله وأشرك به ما ليس لى به علم ... | ٤٢ | ك غافـر | ٤٠ |
| | قل إنما أدعوا ربى ولا أشرك به أحدا... ... ... | ٢٠ | ك الجن | ٧٢ |
| تُشْرِكْ: | وإذ بوأنا لإبراهيم مكان البيت أن لا تشرك بى شيئا | ٢٦ | م الحـج | ٢٢ |
| (٤) | وإن جاهداك لتشرك بى ما ليس لك به علم فلا تطعهما | ٨ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | وإذ قال لقمان لابنه وهو يعظه يابنىّ لا تشرك بالله | ١٣ | ك لقمان | ٣١ |
| | وإن جاهداك على أن تشرك بى ما ليس لك به علم فلا تطعهما | ١٥ | ك « | ٣١ |
| تُشْرِكُوا: | واعبدوا الله ولا تشركوا به شيئا ... ... ... | ٣٦ | م النسـاء | ٤ |
| (٣) | قل تعالوا أتل ما حرم ربكم عليكم أن لا تشركوا به شيئا | ١٥١ | م الأنعام | ٦ |
| | وأن تشركوا بالله ما لم ينزل به سلطانا ... ... ... | ٣٣ | ك الأعراف | ٧ |
| تُشْرِكُونَ: | قل إنما هو إله واحد وإننى برىء مما تشركون | ١٩ | ك الأنعام | ٦ |
| (٧) | فيكشف ما تدعون إليه إن شاء وتنسون ما تشركون | ٤١ | ك « | ٦ |
| | قل الله ينجيكم منها ومن كل كرب ثم أنتم تشركون | ٦٤ | ك « | ٦ |
| | فلما أفلت قال ياقوم إنى برىء مما تشركون ... ... | ٧٨ | ك « | ٦ |
| | ولا أخاف ما تشركون به إلا أن يشاء ربى شيئا | ٨٠ | ك « | ٦ |
| | قال إنى أشهد الله واشهدوا إنى برىء مما تشركون | ٥٤ | ك هـود | ١١ |
| | ثم قيل لهم أين ما كنتم تشركون ... ... ... | ٧٣ | ك غافـر | ٤٠ |
| تُشْرِكَ: | ألا نعبد إلا الله ولا نشرك به شيئا ... ... ... | ٦٤ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | ما كان لنا أن نشرك بالله من شىء ... ... ... ... | ٣٨ | ك يوسـف | ١٢ |
| | ولن نشرك بربنا أحدا ... ... ... ... ... ... | ٢ | ك الجن | ٧٢ |
| يُشْرِكُ: | ومن يشرك بالله فقد افترى إثما عظيما ... ... | ٤٨ | م النسـاء | ٤ |
| (٦) | ومن يشرك بالله فقد ضل ضلالا بعيدا ... ... ... | ١١٦ | م « | ٤ |
| | إنه من يشرك بالله فقد حرم الله عليه الجنة ... ... | ٧٢ | م المائدة | ٥ |
| | ما لهم من دونه من ولىّ ولا يشرك فى حكمه أحدا | ٢٦ | ك الكهف | ١٨ |
| | فليعمل عملا صالحا ولا يشرك بعبادة ربه أحدا ... | ١١٠ | ك « | ١٨ |
| | ومن يشرك بالله فكأنما خرّ من السماء فتخطفه الطير | ٣١ | م الحـج | ٢٢ |
| يُشْرِكُونَ: | فتعالى الله عما يشركون ... ... ... ... ... | ١٩٠ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢٠) | أيشركون ما لا يخلق شيئا وهم يخلقون ... ... ... | ١٩١ | ك « | ٧ |
| | لا إله إلا هو سبحانه عما يشركون ... ... ... ... | ٣١ | م التـوبة | ٩ |
| | سبحانه وتعالى عما يشركون ... ... ... ... ... | ١٨ | ك يـونس | ١٠ |
| | أتى أمر الله فلا تستعجلوه سبحانه وتعالى عما يشركون | ١ | ك النحـل | ١٦ |
| | خلق السموات والأرض بالحق تعالى عما يشركون | ٣ | ك « | ١٦ |
| | ثم إذا كشف الضر عنكم إذا فريق منكم بربهم يشركون | ٥٤ | ك « | ١٦ |
| | والذين هم بربهم لا يشركون... ... ... ... ... | ٥٩ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | عالم الغيب والشهادة فتعالى عما يشركون ... ... | ٩٢ | ك « | ٢٣ |
| | يعبدوننى لا يشركون بى شيئا ... ... ... ... ... | ٥٥ | م النـور | ٢٤ |
| | آلله خير أما يشركون ... ... ... ... ... ... | ٥٩ | ك النمـل | ٢٧ |
| | أإله مع الله تعالى الله عما يشركون ... ... ... | ٦٣ | ك « | ٢٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يُشْرِكُونَ | : ما كان لهم الخيرة سبحان الله وتعالى عما يشركون | ٦٨ | ك القصص | ٢٨ |
| | فلما نجاهم إلى البر إذا هم يشركون ... ... ... ... | ٦٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ثم إذا أذاقهم منه رحمة إذا فريق منهم بربهم يشركون | ٣٣ | ك الروم | ٣٠ |
| | أم أنزلنا عليهم سلطانا فهو يتكلم بما كانوا به يشركون | ٣٥ | ك « | ٣٠ |
| | سبحانه وتعالى عما يشركون ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك « | ٣٠ |
| | والسموات مطويات بيمينه سبحانه وتعالى عما يشركون | ٦٧ | ك الزمر | ٣٩ |
| | أم لهم إله غير الله سبحان الله عما يشركون ... ... | ٤٣ | ك الطور | ٥٢ |
| | العزيز الجبار المتكبر سبحان الله عما يشركون... ... | ٢٣ | م الحشر | ٥٩ |
| يُشْرِكْنَ | : إذا جاءك المؤمنات يبايعنك على أن لا يشركن | | | |
| | بالله شيئا ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٢ | م الممتحنة | ٦٠ |
| أُشْرِكْهُ | : أشدد به أزرى . وأشركه فى أمرى ... ... ... | ٣٢ | ك طه | ٢٠ |
| يُشْرَكَ | : إن الله لا يغفر أن يشرك به و يغفر مادون ذلك لمن يشاء | ٤٨ | م النساء | ٤ |
| (٣) | إن الله لا يغفر أن يشرك به و يغفر مادون ذلك لمن يشاء | ١١٦م | « | ٤ |
| | ذلكم بأنه إذا دعى الله وحده كفرتم و إن يشرك به تؤمنوا | ١٢ | ك غافر | ٤٠ |
| الشِّرْكُ | : يا بنى لا تشرك بالله إن الشرك لظلم عظيم ... ... | ١٣ | ك لقمان | ٣١ |
| (٤) | وما لهم فيهما من شرك وما له منهم من ظهير... ... | ٢٢ | ك سبإ | ٣٤ |
| | أروني ماذا خلقوا من الأرض أم لهم شرك فى السموات | ٤٠ | ك فاطر | ٣٥ |
| | أروني ماذا خلقوا من الأرض أم لهم شرك فى السموات | ٤ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| بِشِرْكِكُمْ | : و يوم القيامة يكفرون بشرككم ولا ينبئك مثل خبير | ١٤ | ك فاطر | ٣٥ |
| شَرِيكَ | : لا شريك له وبذلك أمرت وأنا أول المسلمين | ١٦٣ك | الأنعام | ٦ |
| (٣) | وقل الحمد لله الذى لم يتخذ ولدا ولم يكن له شريك فى الملك | ١١١ك | الإسراء | ١٧ |
| | ولم يتخذ ولدا ولم يكن له شريك فى الملك ... ... ... | ٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| شُرَكَاءُ | : فإن كانوا أكثر من ذلك فهم شركاء فى الثلث | ١٢ | م النساء | ٤ |
| (١٣) | وما نرى معكم شفعاءكم الذين زعمتم أنهم فيكم شركاء | ٩٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | وجعلوا لله شركاء الجن وخلقهم وخرقوا له بنين... ... | ١٠٠ك | « | ٦ |
| | وإن يكن ميتة فهم فيه شركاء ... ... ... ... ... | ١٣٩ك | « | ٦ |
| | فلما آتاهما صالحا جعلا له شركاء فيما آتاهما ... ... | ١٩٠ك | الأعراف | ٧ |
| | وما يتبع الذين يدعون من دون الله شركاء ... ... ... | ٦٦ | ك يونس | ١٠ |
| | أم جعلوا لله شركاء خلقوا كخلقه فتشابه الخلق عليهم | ١٦ | م الرعد | ١٣ |
| | وجعلوا لله شركاء قل سموهم ... ... ... ... ... | ٣٣ | م « | ١٣ |
| | هل لكم من ما ملكت أيمانكم من شركاء فى ما رزقناكم | ٢٨ | ك الروم | ٣٠ |
| | قل أروني الذين ألحقتم به شركاء كلا ... ... ... ... | ٢٧ | ك سبإ | ٣٤ |
| | ضرب الله مثلا رجلا فيه شركاء متشاكسون ... ... | ٢٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| | أم لهم شركاء شرعوا لهم من الدين ما لم يأذن به الله | ٢١ | ك الشورى | ٤٢ |
| | أم لهم شركاء فليأتوا بشركائهم إن كانوا صادقين | ٤١ | ك القلم | ٦٨ |
| شُرَكَاءَكُمْ | : قل ادعوا شركاءكم ثم كيدون فلا تنظرون ... | ١٩٥ك | الأعراف | ٧ |
| (٤) | فأجمعوا أمركم وشركاءكم ثم لا يكن أمركم عليكم غمة ... | ٧١ | ك يونس | ١٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| شُرَكَاءَكُمْ | : وقيل ادعوا شركاءكم فدعوهم فلم يستجيبوا لهم | ٦٤ | ك القصص | ٢٨ |
| | قل أرأيتم شركاءكم الذين تدعون من دون الله... ... | ٤٠ | ك فاطر | ٣٥ |
| شُرَكَاءَهُمْ | : و إذا رأى الذين أشركوا شركاءهم قالوا ربنا | | | |
| | هؤلاء شركاؤنا الذين كنا ندعوا من دونك... ... | ٨٦ | ك النحل | ١٦ |
| شُرَكَاؤُكُمْ | : ثم نقول للذين أشركوا أين شركاؤكم ... ... | ٢٢ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | ثم نقول للذين أشركوا مكانكم أنتم وشركاؤكم ... ... | ٢٨ | ك يونس | ١٠ |
| شُرَكَاؤُنَا | : قالوا ربنا هؤلاء شركاؤنا الذين كنا ندعوا من دونك | ٨٦ | ك النحل | ١٦ |
| شُرَكَاؤُهُمْ | : وكذلك زين لكثير من المشركين قتل أولادهم | | | |
| (٢) | شركاؤهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٣٧ك | الأنعام | ٦ |
| | فزيلنا بينهم وقال شركاؤهم ما كنتم إيانا تعبدون | ٢٨ | ك يونس | ١٠ |
| شُرَكَائِكُمْ | : قل هل من شركائكم من يبدؤا الخلق ثم يعيده | ٣٤ | ك « | ١٠ |
| (٣) | قل هل من شركائكم من يهدى إلى الحق ... ... ... | ٣٥ | ك « | ١٠ |
| | هل من شركائكم من يفعل من ذلكم من شىء... ... | ٤٠ | ك الروم | ٣٠ |
| لِشُرَكَائِنَا | : فقالوا هذا لله بزعمهم وهذا لشركائنا ... ... | ١٣٦ك | الأنعام | ٦ |
| لِشُرَكَائِهِمْ | : فما كان لشركائهم فلا يصل إلى الله ... ... | ١٣٦ك | « | ٦ |
| (٥) | وما كان لله فهو يصل إلى شركائهم ... ... ... ... | ١٣٦ك | « | ٦ |
| | ولم يكن لهم من شركائهم شفعاء ... ... ... ... ... | ١٣ | ك الروم | ٣٠ |
| | وكانوا بشركائهم كافرين ... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك « | ٣٠ |
| | أم لهم شركاء فليأتوا بشركائهم إن كانوا صادقين | ٤١ | ك القلم | ٦٨ |
| شُرَكَائِي | : و يقول أين شركائى الذين كنتم تشاقون فيهم | ٢٧ | ك النحل | ١٦ |
| (٥) | و يوم يقول نادوا شركائى الذين زعمتم فدعوهم | ٥٢ | ك الكهف | ١٨ |
| | و يوم يناديهم فيقول أين شركائى الذين كنتم تزعمون | ٦٢ | ك القصص | ٢٨ |
| | و يوم يناديهم فيقول أين شركائى الذين كنتم تزعمون | ٧٤ | ك « | ٢٨ |
| | و يوم يناديهم أين شركائى قالوا آذناك ما منا من شهيد | ٤٧ | ك فصلت | ٤١ |
| مُشْرِكٌ | : ولعبد مؤمن خير من مشرك ولو أعجبكم ... ... | ٢٢١م | البقرة | ٢ |
| (٢) | والزانية لا ينكحها إلا زان أو مشرك ... ... ... | ٣ | م النور | ٢٤ |
| الْمُشْرِكُونَ | : و إن أطعتموهم إنكم لمشركون ... ... ... | ١٢١ك | الأنعام | ٦ |
| (٦) | إنما المشركون نجس ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م التوبة | ٩ |
| | ليظهره على الدين كله ولو كره المشركون ... ... ... | ٣٣ | م « | ٩ |
| | وما يؤمن أكثرهم بالله إلا وهم مشركون ... ... | ١٠٦ك | يوسف | ١٢ |
| | إنما سلطانه على الذين يتولونه والذين هم به مشركون | ١٠٠ك | النحل | ١٦ |
| | ليظهره على الدين كله ولو كره المشركون ... ... ... | ٩ | م الصف | ٦١ |
| الْمُشْرِكِينَ | : ما يود الذين كفروا من أهل الكتاب | | | |
| (٣٦) | ولا المشركين أن ينزل عليكم من خير من ربكم | ١٠٥م | البقرة | ٢ |
| | قل بل ملة إبراهيم حنيفا وما كان من المشركين | ١٣٥م | « | ٢ |
| | ولا تنكحوا المشركين حتى يؤمنوا ... ... ... ... | ٢٢١م | « | ٢ |
| | ولكن كان حنيفا مسلما وما كان من المشركين ... | ٦٧ | م آل عمران | ٣ |
| | قل صدق الله فاتبعوا ملة إبراهيم حنيفا وما كان من المشركين | ٩٥ | م « | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **المُشْرِكِينَ** | : ولا تكونن من المشركين ... ... ... ... | ١٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | ثم لم تكن فتنتهم إلا أن قالوا والله ربنا ما كنا مشركين | ٢٣ | م » | ٦ |
| | إنى وجهت وجهى للذى فطر السموات والأرض حنيفا وما أنا من المشركين ... ... ... ... | ٧٩ | ك » | ٦ |
| | لا إله إلا هو وأعرض عن المشركين ... ... ... | ١٠٦ | ك » | ٦ |
| | وكذلك زين لكثير من المشركين قتل أولادهم شركاؤهم | ١٣٧ | ك » | ٦ |
| | دينا قيما ملة إبراهيم حنيفا وما كان من المشركين | ١٦١ | ك » | ٦ |
| | براءة من الله ورسوله إلى الذين عاهدتم من المشركين | ١ | م التوبة | ٩ |
| | أن الله برىء من المشركين ورسوله... ... ... ... | ٣ | م » | ٩ |
| | إلا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا | ٤ | م » | ٩ |
| | فإذا انسلخ الأشهر الحرم فاقتلوا المشركين حيث وجدتموهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | م » | ٩ |
| | وإن أحد من المشركين استجارك فأجره حتى يسمع كلام الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | م » | ٩ |
| | كيف يكون للمشركين عهد عند الله وعند رسوله | ٧ | م » | ٩ |
| | ما كان للمشركين أن يعمروا مساجد الله شاهدين على أنفسهم بالكفر... ... ... ... ... ... | ١٧ | م » | ٩ |
| | وقاتلوا المشركين كافة كما يقاتلونكم كافة ... ... ... | ٣٦ | م » | ٩ |
| | ما كان للنبى والذين آمنوا أن يستغفروا للمشركين ... | ١١٣ | م » | ٩ |
| | وأن أقم وجهك للدين حنيفا ولا تكونن من المشركين | ١٠٥ | ك يونس | ١٠ |
| | على بصيرة أنا ومن اتبعنى وسبحان الله وما أنا من المشركين | ١٠٨ | ك يوسف | ١٢ |
| | فاصدع بما تؤمر وأعرض عن المشركين... ... ... | ٩٤ | ك الحجر | ١٥ |
| | إن إبراهيم كان أمة قانتا لله حنيفا ولم يك من المشركين | ١٢٠ | ك النحل | ١٦ |
| | ثم أوحينا إليك أن اتبع ملة إبراهيم حنيفا وما كان من المشركين ... ... ... ... ... ... ... | ١٢٣ | ك » | ١٦ |
| | حنفاء لله غير مشركين به... ... ... ... ... ... | ٣١ | م الحج | ٢٢ |
| | وادع إلى ربك ولا تكونن من المشركين ... ... ... | ٨٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | منيبين إليه واتقوه وأقيموا الصلاة ولا تكونوا من المشركين | ٣١ | ك الروم | ٣٠ |
| | فانظروا كيف كان عاقبة الذين من قبل كان أكثرهم مشركين ... ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك » | ٣٠ |
| | ليعذب الله المنافقين والمنافقات والمشركين والمشركات | ٧٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | قالوا آمنا بالله وحده وكفرنا بما كنا به مشركين ... | ٨٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | فاستقيموا إليه واستغفروه وويل للمشركين ... ... ... | ٦ | ك فصلت | ٤١ |
| | كبر على المشركين ما تدعوهم إليه... ... ... ... | ١٣ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ويعذب المنافقين والمنافقات والمشركين والمشركات | ٦ | م الفتح | ٤٨ |
| | لم يكن الذين كفروا من أهل الكتاب والمشركين منفكين حتى تأتيهم البينة ... ... ... ... ... | ١ | م البينة | ٩٨ |
| | إن الذين كفروا من أهل الكتاب والمشركين فى نار جهنم | ٦ | م » | ٩٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **مُشْرِكَةٍ** | : ولأمة مؤمنة خير من مشركة ولو أعجبتكم ... ... | ٢٢١ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | الزانى لا ينكح إلا زانية أو مشركة ... ... ... ... | ٣ | م النور | ٢٤ |
| **المُشْرِكَاتِ** | : ولا تنكحوا المشركات حتى يؤمنّ ... ... | ٢٢١ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | ليعذب الله المنافقين والمنافقات والمشركين والمشركات | ٧٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ويعذب المنافقين والمنافقات والمشركين والمشركات | ٦ | م الفتح | ٤٨ |
| **مُشْتَرِكُونَ** | : فإنهم يومئذ فى العذاب مشتركون... ... ... | ٣٣ | ك الصافات | ٣٧ |
| (٢) | ولن ينفعكم اليوم إذ ظلمتم أنكم فى العذاب مشتركون | ٣٩ | ك الزخرف | ٤٣ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **شَرَوْا** | : ولبئس ما شروا به أنفسهم لو كانوا يعلمون ... ... | ١٠٢ | م البقرة | ٢ |
| **شَرَوْهُ** | : وشروه بثمن بخس دراهم معدودة ... ... ... | ٢٠ | ك يوسف | ١٢ |
| **يَشْرُونَ** | : فليقاتل فى سبيل الله الذين يشرون الحياة الدنيا بالآخرة ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٤ | م النساء | ٤ |
| **يَشْرِى** | : ومن الناس من يشرى نفسه ابتغاء مرضاة الله | ٢٠٧ | م البقرة | ٢ |
| **اشْتَرَى** | : إن الله اشترى من المؤمنين أنفسهم وأموالهم بأن لهم الجنة ... ... ... ... ... ... ... ... | ١١١ | م التوبة | ٩ |
| **اشْتَرَاهُ** | : ولقد علموا لمن اشتراه ما له فى الآخرة من خلاق | ١٠٢ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | وقال الذى اشتراه من مصر لامرأته أكرمى مثواه | ٢١ | ك يوسف | ١٢ |
| **اشْتَرَوُا** | : أولئك الذين اشتروا الضلالة بالهدى... ... ... | ١٦ | م البقرة | ٢ |
| (٧) | أولئك الذين اشتروا الحياة الدنيا بالآخرة... ... ... | ٨٦ | م » | ٢ |
| | بئسما اشتروا به أنفسهم ... ... ... ... ... ... | ٩٠ | م » | ٢ |
| | أولئك الذين اشتروا الضلالة بالهدى والعذاب بالمغفرة | ١٧٥ | م » | ٢ |
| | إن الذين اشتروا الكفر بالإيمان لن يضروا الله شيئا | ١٧٧ | م آل عمران | ٣ |
| | فنبذوه وراء ظهورهم واشتروا به ثمنا قليلا... ... ... | ١٨٧ | م » | ٣ |
| | اشتروا بآيات الله ثمنا قليلا فصدوا عن سبيله... ... | ٩ | م التوبة | ٩ |
| **تَشْتَرُوا** | : ولا تشتروا بآياتى ثمنا قليلا وإياى فاتقون... ... | ٤١ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | فلا تخشوا الناس واخشون ولا تشتروا بآياتى ثمنا قليلا | ٤٤ | م المائدة | ٥ |
| | ولا تشتروا بعهد الله ثمنا قليلا ... ... ... ... | ٩٥ | ك النحل | ١٦ |
| **نَشْتَرِى** | : فيقسمان بالله إن ارتبتم لا نشترى به ثمنا ... ... | ١٠٦ | م المائدة | ٥ |
| **يَشْتَرُوا** | : ثم يقولون هذا من عند الله ليشتروا به ثمنا قليلا | ٧٩ | م البقرة | ٢ |
| **يَشْتَرُونَ** | : ويشترون به ثمنا قليلا أولئك ما يأكلون فى بطونهم إلا النار ... ... ... ... ... ... | ١٧٤ | م » | ٢ |
| (٥) | إن الذين يشترون بعهد الله وأيمانهم ثمنا قليلا أولئك لا خلاق لهم فى الآخرة ... ... ... ... ... ... | ٧٧ | م آل عمران | ٣ |
| | فنبذوه وراء ظهورهم واشتروا به ثمنا قليلا فبئس ما يشترون | ١٨٧ | م » | ٣ |
| | خاشعين لله لا يشترون بآيات الله ثمنا قليلا ... ... | ١٩٩ | م » | ٣ |
| | يشترون الضلالة ويريدون أن تضلوا السبيل ... ... | ٤٤ | م النساء | ٤ |
| **يَشْتَرِى** | : ومن الناس من يشترى لهو الحديث ليضل عن سبيل الله | ٦ | ك لقمان | ٣١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | * * * | | | |
| شَطْأَهُ: | ومثلهم فى الإنجيل كزرع أخرج شطأه ... ... ... ... | ٢٩ | م الفتح | ٤٨ |
| شَاطِئِ: | فلما أتاها نودى من شاطئ الواد الأيمن فى البقعة المباركة من الشجرة أن يا موسى ... ... ... ... | ٣٠ | ك القصص | ٢٨ |
| | * * * | | | |
| شَطْرَ: | فلنولينك قبلة ترضاها فول وجهك شطر المسجد الحرام | ١٤٤ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | ومن حيث خرجت فول وجهك شطر المسجد الحرام | ١٤٩ | م » | ٢ |
| | ومن حيث خرجت فول وجهك شطر المسجد الحرام | ١٥٠ | م » | ٢ |
| شَطْرَهُ: | وحيث ما كنتم فولوا وجوهكم شطره ... ... ... | ١٤٤ | م » | ٢ |
| (٢) | وحيث ما كنتم فولوا وجوهكم شطره ... ... ... | ١٥٠ | م » | ٢ |
| | * * * | | | |
| تُشْطِطْ: | فاحكم بيننا بالحق ولا تشطط ... ... ... ... | ٢٢ | ك ص | ٣٨ |
| شَطَطًا: | لن ندعوا من دونه إلها لقد قلنا إذا شططا ... ... | ١٤ | ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | وأنه كان يقول سفيهنا على الله شططا ... ... ... ... | ٤ | ك الجن | ٧٢ |
| | * * * | | | |
| الشَّيْطَانُ: | فأزلهما الشيطان عنها فأخرجهما مما كانا فيه ... | ٣٦ | م البقرة | ٢ |
| (٦٨) | كلوا مما فى الأرض حلالا طيبا ولا تتبعوا خطوات الشيطان ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٦٨ | م » | ٢ |
| | ادخلوا فى السلم كافة ولا تتبعوا خطوات الشيطان... | ٢٠٨ | م » | ٢ |
| | الشيطان يعدكم الفقر ويأمركم بالفحشاء ... ... ... | ٢٦٨ | م » | ٢ |
| | الذين يأكلون الربا لا يقومون إلا كما يقوم الذى يتخبطه الشيطان من المس ... ... ... ... ... | ٢٧٥ | م » | ٢ |
| | وإنى أعيذها بك وذريتها من الشيطان الرجيم... ... | ٣٦ | م آل عمران | ٣ |
| | إنما استزلهم الشيطان ببعض ما كسبوا ... ... ... | ١٥٥ | م » | ٣ |
| | إنما ذلكم الشيطان يخوف أولياءه فلا تخافوهم ... | ١٧٥ | م » | ٣ |
| | ومن يكن الشيطان له قرينا فساء قرينا ... ... ... | ٣٨ | م النساء | ٤ |
| | ويريد الشيطان أن يضلهم ضلالا بعيدا ... ... ... | ٦٠ | م » | ٤ |
| | فقاتلوا أولياء الشيطان ... ... ... ... ... ... | ٧٦ | م » | ٤ |
| | إن كيد الشيطان كان ضعيفا... ... ... ... ... ... | ٧٦ | م » | ٤ |
| | ولولا فضل الله عليكم ورحمته لاتبعتم الشيطان إلا قليلا | ٨٣ | م » | ٤ |
| | ومن يتخذ الشيطان وليا من دون الله فقد خسر خسرانا مبينا ... ... ... ... ... ... ... | ١١٩ | م » | ٤ |
| | يعدهم ويمنيهم وما يعدهم الشيطان إلا غرورا... ... | ١٢٠ | م » | ٤ |
| | إنما الخمر والميسر والأنصاب والأزلام رجس من عمل الشيطان ... ... ... ... ... ... ... | ٩٠ | م المائدة | ٥ |
| | إنما يريد الشيطان أن يوقع بينكم العداوة والبغضاء فى الخمر والميسر ... ... ... ... ... ... | ٩١ | م » | ٥ |
| | ولكن قست قلوبهم وزين لهم الشيطان ما كانوا يعملون | ٤٣ | ك الأنعام | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الشَّيْطَانُ: | وإما ينسينك الشيطان فلا تقعد بعد الذكرى مع القوم الظالمين ... ... ... ... ... ... ... | ٦٨ | ك الأنعام | ٦ |
| | كلوا مما رزقكم الله ولا تتبعوا خطوات الشيطان... | ١٤٢ | ك » | ٦ |
| | فوسوس لهما الشيطان ليبدى لهما ما ووارى عنهما من سوءاتهما ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | إن الشيطان لكما عدو مبين ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك » | ٧ |
| | يابنى آدم لا يفتننكم الشيطان كما أخرج أبويكم من الجنة | ٢٧ | ك » | ٧ |
| | فانسلخ منها فأتبعه الشيطان فكان من الغاوين... ... | ١٧٥ | ك » | ٧ |
| | وإما ينزغنك من الشيطان نزغ فاستعذ بالله ... ... | ٢٠٠ | ك » | ٧ |
| | إن الذين اتقوا إذا مسهم طائف من الشيطان تذكروا | ٢٠١ | ك » | ٧ |
| | ويذهب عنكم رجز الشيطان وليربط على قلوبكم ... | ١١ | م الأنفال | ٨ |
| | وإذ زين لهم الشيطان أعمالهم ... ... ... ... ... | ٤٨ | م » | ٨ |
| | إن الشيطان للإنسان عدو مبين ... ... ... ... ... | ٥ | ك يوسف | ١٢ |
| | فأنساه الشيطان ذكر ربه فلبث فى السجن بضع سنين | ٤٢ | ك » | ١٢ |
| | وجاء بكم من البدو من بعد أن نزغ الشيطان بينى وبين إخوتى | ١٠٠ | ك » | ١٢ |
| | وقال الشيطان لما قضى الأمر إن الله وعدكم وعد الحق | ٢٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وحفظناها من كل شيطان رجيم ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الحجر | ١٥ |
| | تالله لقد أرسلنا إلى أمم من قبلك فزين لهم الشيطان أعمالهم | ٦٣ | ك النحل | ١٦ |
| | فإذا قرأت القرآن فاستعذ بالله من الشيطان الرجيم | ٩٨ | ك » | ١٦ |
| | وكان الشيطان لربه كفورا ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| | إن الشيطان ينزغ بينهم ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك » | ١٧ |
| | إن الشيطان كان للإنسان عدوا مبينا ... ... ... ... | ٥٣ | ك » | ١٧ |
| | وما يعدهم الشيطان إلا غرورا ... ... ... ... ... | ٦٤ | ك » | ١٧ |
| | فإنى نسيت الحوت وما أنسانيه إلا الشيطان أن أذكره | ٦٣ | ك الكهف | ١٨ |
| | ياأبت لا تعبد الشيطان ... ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك مريم | ١٩ |
| | إن الشيطان كان للرحمن عصيا ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك » | ١٩ |
| | ياأبت إنى أخاف أن يمسك عذاب من الرحمن فتكون للشيطان وليا... ... ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك » | ١٩ |
| | فوسوس إليه الشيطان قال ياآدم هل أدلك على شجرة الخلد | ١٢٠ | ك طه | ٢٠ |
| | ومن الناس من يجادل فى الله بغير علم ويتبع كل شيطان مريد | ٣ | م الحج | ٢٢ |
| | وما أرسلنا من قبلك من رسول ولا نبى إلا إذا تمنى ألقى الشيطان فى أمنيته ... ... ... ... ... ... | ٥٢ | م » | ٢٢ |
| | فينسخ الله ما يلقى الشيطان ثم يحكم الله آياته ... ... | ٥٢ | م » | ٢٢ |
| | ليجعل ما يلقى الشيطان فتنة للذين فى قلوبهم مرض | ٥٣ | م » | ٢٢ |
| | ياأيها الذين آمنوا لا تتبعوا خطوات الشيطان ... ... | ٢١ | م النور | ٢٤ |
| | ومن يتبع خطوات الشيطان فإنه يأمر بالفحشاء والمنكر | ٢١ | م » | ٢٤ |
| | وكان الشيطان للإنسان خذولا ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وزين لهم الشيطان أعمالهم فصدهم عن السبيل ... ... | ٢٤ | ك النمل | ٢٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الشَّيْطَانُ: فوكزه موسى فقضى عليه قال هذا من عمل الشيطان | | ١٥ | ك القصص | ٢٨ |
| وزين لهم الشيطان أعمالهم فصدهم عن السبيل... ... | | ٣٨ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| أو لو كان الشيطان يدعوهم إلى عذاب السعير... ... | | ٢١ | ك لقمان | ٣١ |
| إن الشيطان لكم عدو فاتخذوه عدوا ... ... ... ... | | ٦ | ك فاطر | ٣٥ |
| ألم أعهد إليكم يا بنى آدم أن لا تعبدوا الشيطان ... | | ٦٠ | ك يس | ٣٦ |
| وحفظا من كل شيطان مارد... ... ... ... ... | | ٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| أنى مسنى الشيطان بنصب وعذاب ... ... ... ... | | ٤١ | ك ص | ٣٨ |
| وإما ينزغنك من الشيطان نزغ فاستعذ بالله ... ... | | ٣٦ | ك فصلت | ٤١ |
| ولا يصدنكم الشيطان إنه لكم عدو مبين... ... ... | | ٦٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| إن الذين ارتدوا على أدبارهم من بعد ما تبين لهم الهدى الشيطان سول لهم ... ... ... ... ... | | ٢٥ | م محمد | ٤٧ |
| إنما النجوى من الشيطان ليحزن الذين آمنوا ... ... | | ١٠ | م المجادلة | ٥٨ |
| استحوذ عليهم الشيطان فأنساهم ذكر الله ... ... ... | | ١٩ | م « | ٥٨ |
| أولئك حزب الشيطان ... ... ... ... ... ... | | ١٩ | م « | ٥٨ |
| ألا إن حزب الشيطان هم الخاسرون ... ... ... ... | | ١٩ | م « | ٥٨ |
| كمثل الشيطان إذ قال للإنسان اكفر ... ... ... | | ١٦ | م الحشر | ٥٩ |
| وما هو بقول شيطان رجيم ... ... ... ... ... | | ٢٥ | ك التكوير | ٨١ |
| شَيْطَانًا: وإن يدعون إلا شيطانا مريدا ... ... ... ... | | ١١٧ | م النساء | ٤ |
| (٢) ومن يعش عن ذكر الرحمن نقيض له شيطانا فهو له قرين | | ٣٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| الشَّيَاطِينُ: واتبعوا ما تتلوا الشياطين على ملك سليمان ... | | ١٠٢ | م البقرة | ٢ |
| (١٧) وما كفر سليمان ولكن الشياطين كفروا ... ... ... | | ١٠٢ | م « | ٢ |
| كالذى استهوته الشياطين فى الأرض حيران ... ... | | ٧١ | ك الأنعام | ٦ |
| وكذلك جعلنا لكل نبى عدوا شياطين الإنس والجن | | ١١٢ | ك « | ٦ |
| وإن الشياطين ليوحون إلى أوليائهم ليجادلوكم ... | | ١٢١ | ك « | ٦ |
| إنا جعلنا الشياطين أولياء للذين لا يؤمنون ... ... | | ٢٧ | ك الأعراف | ٧ |
| إنهم اتخذوا الشياطين أولياء من دون الله ... ... | | ٣٠ | ك « | ٧ |
| إن المبذرين كانوا إخوان الشياطين... ... ... ... | | ٢٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| فوربك لنحشرنهم والشياطين ... ... ... ... | | ٦٨ | ك مريم | ١٩ |
| ألم تر أنا أرسلنا الشياطين على الكافرين تؤزهم أزا... | | ٨٣ | ك « | ١٩ |
| ومن الشياطين من يغوصون له ... ... ... ... | | ٨٢ | ك الأنبياء | ٢١ |
| وقل رب أعوذ بك من همزات الشياطين ... ... | | ٩٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| وما تنزلت به الشياطين . وما ينبغى لهم وما يستطيعون | | ٢١٠ | ك الشعراء | ٢٦ |
| هل أنبئكم على من تنزل الشياطين ... ... ... ... | | ٢٢١ | ك « | ٢٦ |
| طلعها كأنه رؤوس الشياطين ... ... ... ... ... | | ٦٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| والشياطين كل بناء وغواص ... ... ... ... ... | | ٣٧ | ك ص | ٣٨ |
| ولقد زينا السماء الدنيا بمصابيح وجعلناها رجوما للشياطين | | ٥ | ك الملك | ٦٧ |
| شَيَاطِينِهِمْ: وإذا خلوا إلى شياطينهم قالوا إنا معكم... ... | | ١٤ | م البقرة | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ✦✦✦ | | | | |
| شُعُوبًا: وجعلناكم شعوبا وقبائل لتعارفوا ... ... ... | | ١٣ | م الحجرات | ٤٩ |
| شُعَبٍ: انطلقوا إلى ظل ذى ثلاث شعب ... ... ... | | ٣٠ | ك المرسلات | ٧٧ |
| شُعَيْبٌ: لنخرجنك يا شعيب والذين آمنوا معك من قريتنا | | ٨٨ | ك الأعراف | ٧ |
| (٤) قالوا يا شعيب أصلاتك تأمرك أن نترك ما يعبد آباؤنا | | ٨٧ | ك هود | ١١ |
| قالوا يا شعيب ما نفقه كثيرا مما تقول وإنا لنراك فينا ضعيفا | | ٩١ | ك « | ١١ |
| إذ قال لهم شعيب ألا تتقون ... ... ... ... ... | | ١٧٧ | ك الشعراء | ٢٦ |
| شُعَيْبًا: وإلى مدين أخاهم شعيبا ... ... ... ... ... | | ٨٥ | ك الأعراف | ٧ |
| (٧) لئن اتبعتم شعيبا إنكم إذا لخاسرون ... ... ... ... | | ٩٠ | ك « | ٧ |
| الذين كذبوا شعيبا كأن لم يغنوا فيها ... ... ... ... | | ٩٢ | ك « | ٧ |
| الذين كذبوا شعيبا كانوا هم الخاسرين ... ... ... | | ٩٢ | ك « | ٧ |
| وإلى مدين أخاهم شعيبا ... ... ... ... ... ... | | ٨٤ | ك هود | ١١ |
| ولما جاء أمرنا نجينا شعيبا والذين آمنوا معه برحمة منا | | ٩٤ | ك « | ١١ |
| وإلى مدين أخاهم شعيبا ... ... ... ... ... ... | | ٣٦ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| ✦✦✦ | | | | |
| تَشْعُرُونَ: بل أحياء ولكن لا تشعرون ... ... ... ... | | ١٥٤ | م البقرة | ٢ |
| (٤) إن حسابهم إلا على ربى لو تشعرون ... ... ... | | ١١٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| من قبل أن يأتيكم العذاب بغتة وأنتم لا تشعرون ... | | ٥٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| أن تحبط أعمالكم وأنتم لا تشعرون... ... ... ... | | ٢ | م الحجرات | ٤٩ |
| يَشْعُرُونَ: وما يخدعون إلا أنفسهم وما يشعرون... ... | | ٩ | م البقرة | ٢ |
| (٢١) ألا إنهم هم المفسدون ولكن لا يشعرون ... ... | | ١٢ | م « | ٢ |
| وما يضلون إلا أنفسهم وما يشعرون... ... ... ... | | ٦٩ | م آل عمران | ٣ |
| وإن يهلكون إلا أنفسهم وما يشعرون ... ... ... ... | | ٢٦ | ك الأنعام | ٦ |
| وما يمكرون إلا بأنفسهم وما يشعرون... ... ... ... | | ١٢٣ | ك « | ٦ |
| فأخذناهم بغتة وهم لا يشعرون ... ... ... ... ... | | ٩٥ | ك الأعراف | ٧ |
| وأوحينا إليه لتنبئنهم بأمرهم هذا وهم لا يشعرون ... | | ١٥ | ك يوسف | ١٢ |
| أو تأتيهم الساعة بغتة وهم لا يشعرون... ... ... ... | | ١٠٧ | ك « | ١٢ |
| أموات غير أحياء وما يشعرون أيان يبعثون... ... | | ٢١ | ك النحل | ١٦ |
| وأتاهم العذاب من حيث لا يشعرون ... ... ... ... | | ٢٦ | ك « | ١٦ |
| أو يأتيهم العذاب من حيث لا يشعرون ... ... ... ... | | ٤٥ | ك « | ١٦ |
| نسارع لهم فى الخيرات بل لا يشعرون ... ... ... ... | | ٥٦ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| فيأتيهم بغتة وهم لا يشعرون... ... ... ... ... ... | | ٢٠٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| لا يحطمنكم سليمان وجنوده وهم لا يشعرون ... ... | | ١٨ | ك النمل | ٢٧ |
| ومكروا مكرا ومكرنا مكرا وهم لا يشعرون... ... ... | | ٥٠ | ك « | ٢٧ |
| وما يشعرون أيان يبعثون ... ... ... ... ... ... | | ٦٥ | ك « | ٢٧ |
| لا تقتلوه عسى أن ينفعنا أو نتخذه ولدا وهم لا يشعرون | | ٩ | ك القصص | ٢٨ |
| وقالت لأخته قصيه فبصرت به عن جنب وهم لا يشعرون | | ١١ | ك « | ٢٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَشْعُرُونَ | : وليأتينهم بغتة وهم لا يشعرون ... ... ... ... | ٥٣ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | كذب الذين من قبلهم فأتاهم العذاب من حيث لا يشعرون | ٢٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| | هل ينظرون إلا الساعة أن تأتيهم بغتة وهم لا يشعرون | ٦٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| يُشْعِرُكُمْ | : وما يشعركم أنها إذا جاءت لا يؤمنون ... ... | ١٠٩ | ك الأنعام | ٦ |
| يُشْعِرَنَّ | : فليأتكم برزق منه وليتلطف ولا يشعرن بكم أحدا | ١٩ | ك الكهف | ١٨ |
| أَشْعَارِهَا | : ومن أصوافها وأوبارها وأشعارها أثاثا ومتاعا | | | |
| | إلى حين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨٠ | ك النحل | ١٦ |
| الشِّعْرَ | : وما علمناه الشعر وما ينبغي له إن هو إلا ذكر وقرآن مبين | ٦٩ | ك يس | ٣٦ |
| شَاعِرٌ | : بل قالوا أضغاث أحلام بل افتراه بل هو شاعر... | ٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٤) | ويقولون أئنا لتاركوا آلهتنا لشاعر مجنون ... ... | ٣٦ | ك الصافات | ٣٧ |
| | أم يقولون شاعر نتربص به ريب المنون ... ... | ٣٠ | ك الطور | ٥٢ |
| | وما هو بقول شاعر قليلا ما تؤمنون ... ... ... | ٤١ | ك الحاقة | ٦٩ |
| الشُّعَرَاءُ | : والشعراء يتبعهم الغاوون ... ... ... ... ... | ٢٢٤ | م الشعراء | ٢٦ |
| الشِّعْرَى | : وأنه هو رب الشعرى ... ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك النجم | ٥٣ |
| شَعَائِرَ | : إن الصفا والمروة من شعائر الله ... ... ... ... | ١٥٨ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | يأيها الذين آمنوا لا تحلوا شعائر الله ولا الشهر الحرام | ٢ | م المائدة | ٥ |
| | ذلك ومن يعظم شعائر الله فإنها من تقوى القلوب | ٣٢ | م الحج | ٢٢ |
| | والبدن جعلناها لكم من شعائر الله لكم فيها خير ... | ٣٦ | م « | ٢٢ |
| المَشْعَرِ | : فإذا أفضتم من عرفات فاذكروا الله عند المشعر الحرام | ١٩٨ | م البقرة | ٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| اشْتَعَلَ | : قال رب إني وهن العظم مني واشتعل الرأس شيبا | ٤ | ك مريم | ١٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| شَغَفَهَا | : امرأة العزيز تراود فتاها عن نفسه قد شغفها حبا | ٣٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| شَغَلَتْنَا | : شغلتنا أموالنا وأهلونا فاستغفر لنا ... ... ... | ١١ | م الفتح | ٤٨ |
| شُغُلٍ | : إن أصحاب الجنة اليوم في شغل فاكهون ... ... | ٥٥ | ك يس | ٣٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| يَشْفَعُ | : من ذا الذي يشفع عنده إلا بإذنه... ... ... | ٢٥٥ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | من يشفع شفاعة حسنة يكن له نصيب منها ... ... | ٨٥ | م النساء | ٤ |
| | ومن يشفع شفاعة سيئة يكن له كفل منها ... ... | ٨٥ | م « | ٤ |
| يَشْفَعُوا | : فهل لنا من شفعاء فيشفعوا لنا ... ... ... | ٥٣ | ك الأعراف | ٧ |
| يَشْفَعُونَ | : ولا يشفعون إلا لمن ارتضى ... ... ... ... | ٢٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| شَافِعِينَ | : فما لنا من شافعين ... ... ... ... ... ... | ١٠٠ | ك الشعراء | ٢٦ |
| (٢) | فما تنفعهم شفاعة الشافعين ... ... ... ... ... | ٤٨ | ك المدثر | ٧٤ |
| شَفِيعٍ | : ليس لهم من دونه ولي ولا شفيع لعلهم يتقون | ٥١ | ك الأنعام | ٦ |
| (٥) | ليس لها من دون الله ولي ولا شفيع ... ... ... | ٧٠ | ك « | ٦ |
| شَفِيعَ | : ما من شفيع إلا من بعد إذنه ... ... ... ... | ٣ | ك يونس | ١٠ |
| | ما لكم من دونه من ولي ولا شفيع أفلا تتذكرون | ٤ | ك السجدة | ٣٢ |
| | ما للظالمين من حميم ولا شفيع يطاع ... ... ... | ١٨ | ك غافر | ٤٠ |
| شُفَعَاءَ | : قد جاءت رسل ربنا بالحق فهل لنا من شفعاء فيشفعوا لنا | ٥٣ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | ولم يكن لهم من شركائهم شفعاء وكانوا بشركائهم كافرين | ١٣ | ك الروم | ٣٠ |
| | أم اتخذوا من دون الله شفعاء ... ... ... ... | ٤٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| شُفَعَاءَكُمُ | : وما نرى معكم شفعاءكم الذين زعمتم أنهم فيكم شركاء | ٩٤ | ك الأنعام | ٦ |
| شُفَعَاؤُنَا | : ويقولون هؤلاء شفعاؤنا عند الله ... ... ... | ١٨ | ك يونس | ١٠ |
| شَفَاعَةٌ | : ولا يقبل منها شفاعة ولا يؤخذ منها عدل ولا هم ينصرون | ٤٨ | م البقرة | ٢ |
| (١١) | ولا يقبل منها عدل ولا تنفعها شفاعة... ... ... ... | ١٢٣ | م « | ٢ |
| | أنفقوا مما رزقناكم من قبل أن يأتي يوم لا بيع فيه | | | |
| | ولا خلة ولا شفاعة ... ... ... ... ... ... | ٢٥٤ | م « | ٢ |
| | من يشفع شفاعة حسنة يكن له نصيب منها ... ... | ٨٥ | م النساء | ٤ |
| | ومن يشفع شفاعة سيئة يكن له كفل منها ... ... | ٨٥ | م « | ٤ |
| | لا يملكون الشفاعة إلا من اتخذ عند الرحمن عهدا | ٨٧ | ك مريم | ١٩ |
| | يومئذ لا تنفع الشفاعة إلا من أذن له الرحمن... ... | ١٠٩ | ك طه | ٢٠ |
| | ولا تنفع الشفاعة عنده إلا لمن أذن له ... ... ... | ٢٣ | ك سبأ | ٣٤ |
| | قل لله الشفاعة جميعا له ملك السموات والأرض | ٤٤ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ولا يملك الذين يدعون من دونه الشفاعة إلا من شهد بالحق | ٨٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | فما تنفعهم شفاعة الشافعين ... ... ... ... ... | ٤٨ | ك المدثر | ٧٤ |
| شَفَاعَتُهُمْ | : إن يردن الرحمن بضر لا تغن عني شفاعتهم شيئا | ٢٣ | ك يس | ٣٦ |
| (٢) | لا تغني شفاعتهم شيئا إلا من بعد أن يأذن الله لمن يشاء | ٢٦ | ك النجم | ٥٣ |
| الشَّفْعِ | : والشفع والوتر . والليل إذا يسر... ... ... ... | ٣ | ك الفجر | ٨٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| ءَأَشْفَقْتُمْ | : أأشفقتم أن تقدموا بين يدي نجواكم صدقات | ١٣ | م المجادلة | ٥٨ |
| أَشْفَقْنَ | : فأبين أن يحملنها وأشفقن منها وحملها الإنسان | ٧٢ | م الأحزاب | ٣٣ |
| مُشْفِقُونَ | : وهم من خشيته مشفقون ... ... ... ... | ٢٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٥) | الذين يخشون ربهم بالغيب وهم من الساعة مشفقون | ٤٩ | ك « | ٢١ |
| | إن الذين هم من خشية ربهم مشفقون ... ... | ٥٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | والذين آمنوا مشفقون منها ويعلمون أنها الحق | ١٨ | ك الشورى | ٤٢ |
| | والذين هم من عذاب ربهم مشفقون ... ... ... | ٢٧ | ك المعارج | ٧٠ |
| مُشْفِقِينَ | : ووضع الكتاب فترى المجرمين مشفقين مما فيه | ٤٩ | ك الكهف | ١٨ |
| (٣) | ترى الظالمين مشفقين مما كسبوا وهو واقع بهم | ٢٢ | ك الشورى | ٤٢ |
| | قالوا إنا كنا قبل في أهلنا مشفقين ... ... ... | ٢٦ | ك الطور | ٥٢ |
| الشَّفَقِ | : فلا أقسم بالشفق . والليل وما وسق ... ... | ١٦ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| شَفَتَيْنِ | : ألم نجعل له عينين . ولسانا وشفتين ... .. ... | ٩ | ك البلد | ٩٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| يَشْفِ | : ويخزهم وينصركم عليهم ويشف صدور قوم مؤمنين | ١٤ | م التوبة | ٩ |
| يَشْفِينِ | : وإذا مرضت فهو يشفين ... ... ... ... ... | ٨٠ | ك الشعراء | ٢٦ |
| شِفَاءٌ | : قد جاءتكم موعظة من ربكم وشفاء لما فى الصدور | ٥٧ | ك يونس | ١٠ |
| (٤) | يخرج من بطونها شراب مختلف ألوانه فيه شفاء للناس | ٦٩ | ك النحل | ١٦ |
| | وننزل من القرآن ما هو شفاء ورحمة للمؤمنين ... ... | ٨٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| | أأعجمى وعربى قل هو للذين آمنوا هدى وشفاء | ٤٤ | ك فصلت | ٤١ |
| شَفَا | : وكنتم على شفا حفرة من النار فأنقذكم منها... ... ... | ١٠٣ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | أم من أسس بنيانه على شفا جرف هار فانهار به | | | |
| | فى نار جهنم ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٩ | م التوبة | ٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| شَقَقْنَا | : ثم شققنا الأرض شقا . فأنبتنا فيها حبا ... ... | ٢٦ | ك عبس | ٨٠ |
| أَشُقُّ | : فإن أتممت عشرا فمن عندك وما أريد أن أشق عليك | ٢٧ | ك القصص | ٢٨ |
| شَاقُّوا | : ذلك بأنهم شاقوا الله ورسوله... ... ... ... ... | ١٣ | م الأنفال | ٨ |
| (٣) | وشاقوا الرسول من بعد ما تبين لهم الهدى ... ... | ٣٢ | م محمد | ٤٧ |
| | ذلك بأنهم شاقوا الله ورسوله ... ... ... ... ... | ٤ | م الحشر | ٥٩ |
| تُشَاقُّونِ | : ويقول أين شركائى الذين كنتم تشاقون فيهم | ٢٧ | ك النحل | ١٦ |
| يُشَاقِّ | : ومن يشاق الله فإن الله شديد العقاب ... ... ... | ٤ | م الحشر | ٥٩ |
| يُشَاقِقِ | : ومن يشاقق الرسول من بعد ما تبين له الهدى ويتبع | | | |
| (٢) | غير سبيل المؤمنين نوله ما تولى ... ... ... ... | ١١٥ | م النساء | ٤ |
| | ومن يشاقق الله ورسوله فإن الله شديد العقاب ... | ١٣ | م الأنفال | ٨ |
| تَشَقَّقُ | : ويوم تشقق السماء بالغمام ونزل الملائكة تنزيلا | ٢٥ | ك الفرقان | ٢٥ |
| (٢) | يوم تشقق الأرض عنهم سراعا ذلك حشر علينا يسير | ٤٤ | ك ق | ٥٠ |
| يَشَّقَّقُ | : وإن منها لما يشقق فيخرج منه الماء ... ... ... | ٧٤ | م البقرة | ٢ |
| انْشَقَّ | : اقتربت الساعة وانشق القمر ... ... ... ... ... | ١ | ك القمر | ٥٤ |
| انْشَقَّتْ | : فإذا انشقت السماء فكانت وردة كالدهان ... ... | ٣٧ | م الرحمن | ٥٥ |
| (٣) | وانشقت السماء فهى يومئذ واهية... ... ... ... ... | ١٦ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | إذا السماء انشقت . وأذنت لربها وحقت... ... ... | ١ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| تَنْشَقُّ | : تكاد السموات يتفطرن منه وتنشق الأرض ... | ٩٠ | ك مريم | ١٩ |
| شَقًّا | : أنا صببنا الماء صبا . ثم شققنا الأرض شقا ... ... | ٢٦ | ك عبس | ٨٠ |
| بِشِقِّ | : وتحمل أثقالكم إلى بلد لم تكونوا بالغيه إلا بشق الأنفس | ٧ | ك النحل | ١٦ |
| الشُّقَّةُ | : ولكن بعدت عليهم الشقة ... ... ... ... ... | ٤٢ | م التوبة | ٩ |
| أَشَقُّ | : لهم عذاب فى الحياة الدنيا ولعذاب الآخرة أشق ... | ٣٤ | م الرعد | ١٣ |
| شِقَاقٍ | : وإن تولوا فإنما هم فى شقاق ... ... ... ... ... | ١٣٧ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | وإن الذين اختلفوا فى الكتاب لفى شقاق بعيد ... | ١٧٦ | م » | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| شِقَاقَ | : وإن خفتم شقاق بينهما فابعثوا حكما من أهله وحكما | | | |
| | من أهلها إن يريدا إصلاحا يوفق الله بينهما ... | ٣٥ | م النساء | ٤ |
| | وإن الظالمين لفى شقاق بعيد... ... ... ... ... | ٥٣ | م الحج | ٢٢ |
| | بل الذين كفروا فى عزة وشقاق... ... ... ... ... | ٢ | ك ص | ٣٨ |
| | من أضل ممن هو فى شقاق بعيد ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك فصلت | ٤١ |
| شِقَاقِى | : ويا قوم لا يجرمنكم شقاقى أن يصيبكم مثل ما أصاب | | | |
| | قوم نوح أو قوم هود أو قوم صالح... ... ... | ٨٩ | ك هود | ١١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| شَقُوا | : فأما الذين شقوا ففى النار لهم فيها زفير وشهيق | ١٠٦ | ك هود | ١١ |
| تَشْقَى | : ما أنزلنا عليك القرآن لتشقى ... ... ... ... ... | ٢ | ك طه | ٢٠ |
| (٢) | إن هذا عدو لك ولزوجك فلا يخرجنكما من الجنة فتشقى | ١١٧ | ك » | ٢٠ |
| يَشْقَى | : فإما يأتينكم منى هدى فمن اتبع هداى فلا يضل ولا يشقى | ١٢٣ | ك » | ٢٠ |
| شَقِىٌّ | : يوم يأت لا تكلم نفس إلا بإذنه فمنهم شقى وسعيد | ١٠٥ | ك هود | ١١ |
| شَقِيًّا | : ولم أكن بدعائك رب شقيا... ... ... ... ... ... | ٤ | ك مريم | ١٩ |
| (٣) | وبرا بوالدتى ولم يجعلنى جبارا شقيا ... ... ... ... | ٣٢ | ك » | ١٩ |
| | وأدعوا ربى عسى ألا أكون بدعاء ربى شقيا ... ... | ٤٨ | ك » | ١٩ |
| الْأَشْقَى | : ويتجنبها الأشقى . الذى يصلى النار الكبرى ... | ١١ | ك الأعلى | ٨٧ |
| (٢) | فأنذرتكم نارا تلظى . لا يصلاها إلا الأشقى ... ... | ١٥ | ك الليل | ٩٢ |
| أَشْقَاهَا | : كذبت ثمود بطغواها . إذ انبعث أشقاها... ... | ١٢ | ك الشمس | ٩١ |
| شِقْوَتُنَا | : قالوا ربنا غلبت علينا شقوتنا وكنا قوما ضالين | ١٠٦ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ✦✦✦ | | | |
| شَكَرَ | : ومن شكر فإنما يشكر لنفسه ومن كفر فإن ربى غنى كريم | ٤٠ | ك النمل | ٢٧ |
| (٢) | نعمة من عندنا كذلك نجزى من شكر ... ... ... ... | ٣٥ | ك القمر | ٥٤ |
| شَكَرْتُمْ | : ما يفعل الله بعذابكم إن شكرتم وآمنتم ... ... ... | ١٤٧ | م النساء | ٤ |
| (٢) | وإذ تأذن ربكم لئن شكرتم لأزيدنكم... ... ... ... | ٧ | ك إبراهيم | ١٤ |
| أَشْكُرُ | : وقال رب أوزعنى أن أشكر نعمتك التى أنعمت علىّ | | | |
| (٣) | وعلى والدىّ ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك النمل | ٢٧ |
| | قال هذا من فضل ربى ليبلونى أأشكر أم أكفر | ٤٠ | ك » | ٢٧ |
| | قال رب أوزعنى أن أشكر نعمتك التى أنعمت علىّ | | | |
| | وعلى والدىّ ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | م الأحقاف | ٤٦ |
| تَشْكُرُوا | : وإن تشكروا يرضه لكم ولا تزر وازرة وزر أخرى | ٧ | ك الزمر | ٣٩ |
| تَشْكُرُونَ | : ثم عفونا عنكم من بعد ذلك لعلكم تشكرون | ٥٢ | م البقرة | ٢ |
| (١٩) | ثم بعثناكم من بعد موتكم لعلكم تشكرون ... ... ... | ٥٦ | م » | ٢ |
| | ولتكبروا الله على ما هداكم ولعلكم تشكرون ... ... | ١٨٥ | م » | ٢ |
| | فاتقوا الله لعلكم تشكرون ... ... ... ... ... ... | ١٢٣ | م آل عمران | ٣ |
| | ولكن يريد ليطهركم وليتم نعمته عليكم لعلكم تشكرون | ٦ | م المائدة | ٥ |
| | كذلك يبين الله لكم آياته لعلكم تشكرون ... ... | ٨٩ | م » | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَشْكُرُونَ | : وجعلنا لكم فيها معايش قليلا ما تشكرون... ... | ١٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | وأيدكم بنصره ورزقكم من الطيبات لعلكم تشكرون | ٢٦ | م الأنفال | ٨ |
| | وترى الفلك مواخر فيه ولتبتغوا من فضله ولعلكم تشكرون | ١٤ | ك النحل | ١٦ |
| | وجعل لكم السمع والأبصار والأفئدة لعلكم تشكرون | ٧٨ | ك « | ١٦ |
| | كذلك سخرناها لكم لعلكم تشكرون ... ... ... ... | ٣٦ | م الحج | ٢٢ |
| | وهو الذى أنشأ لكم السمع والأبصار والأفئدة قليلا ما تشكرون ... ... ... ... ... ... ... | ٧٨ | ك المؤمنين | ٢٣ |
| | لتسكنوا فيه ولتبتغوا من فضله ولعلكم تشكرون ... | ٧٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | ولتجرى الفلك بأمره ولتبتغوا من فضله ولعلكم تشكرون | ٤٦ | ك الروم | ٣٠ |
| | وجعل لكم السمع والأبصار والأفئدة قليلا ما تشكرون | ٩ | ك السجدة | ٣٢ |
| | وترى الفلك فيه مواخر لتبتغوا من فضله ولعلكم تشكرون | ١٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| | لتجرى الفلك فيه بأمره ولتبتغوا من فضله ولعلكم تشكرون | ١٢ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | لو نشاء جعلناه أجاجا فلولا تشكرون ... ... ... ... | ٧٠ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | وجعل لكم السمع والأبصار والأفئدة قليلا ما تشكرون | ٢٣ | ك الملك | ٦٧ |
| يَشْكُرُ | : ليبلونى أأشكر أم أكفر ومن شكر فإنما يشكر لنفسه | ٤٠ | ك النمل | ٢٧ |
| (٣) | ولقد آتينا لقمان الحكمة أن اشكر لله ومن يشكر ... | ١٢ | ك لقمان | ٣١ |
| | فإنما يشكر لنفسه ومن كفر فإن الله غنى حميد... ... | ١٢ | ك « | ٣١ |
| يَشْكُرُونَ | : ولكن أكثر الناس لا يشكرون ... ... ... | ٢٤٣ | م البقرة | ٢ |
| (٩) | كذلك نصرف الآيات لقوم يشكرون ... ... ... | ٥٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | إن الله لذو فضل على الناس ولكن أكثرهم لا يشكرون | ٦٠ | ك يونس | ١٠ |
| | ولكن أكثر الناس لا يشكرون ... ... ... ... | ٣٨ | ك يوسف | ١٢ |
| | وارزقهم من الثمرات لعلهم يشكرون ... ... ... | ٣٧ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | ولكن أكثرهم لا يشكرون ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك النمل | ٢٧ |
| | ليأكلوا من ثمره وما عملته أيديهم أفلا يشكرون... ... | ٣٥ | ك يس | ٣٦ |
| | ولهم فيها منافع ومشارب أفلا يشكرون ... ... ... | ٧٣ | ك « | ٣٦ |
| | إن الله لذو فضل على الناس ولكن أكثر الناس لا يشكرون | ٦١ | ك غافر | ٤٠ |
| أَشْكُرْ | : ولقد آتينا لقمان الحكمة أن اشكر لله ... ... | ١٢ | ك لقمان | ٣١ |
| (٢) | أن اشكر لى ولوالديك إلى المصير ... ... ... | ١٤ | ك « | ٣١ |
| أَشْكُرُوا | : فاذكرونى أذكركم واشكروا لى ولا تكفرون ... | ١٥٢ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | يأيها الذين آمنوا كلوا من طيبات ما رزقناكم واشكروا لله | ١٧٢ | م « | ٢ |
| | فكلوا مما رزقكم الله حلالا طيبا واشكروا نعمة الله | ١١٤ | ك النحل | ١٦ |
| | فابتغوا عند الله الرزق واعبدوه واشكروا له ... ... | ١٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | كلوا من رزق ربكم واشكروا له بلدة طيبة ورب غفور | ١٥ | ك سبإ | ٣٤ |
| شُكْرًا | : اعملوا آل داود شكرا وقليل من عبادى الشكور | ١٣ | ك « | ٣٤ |
| شُكُورًا | : وهو الذى جعل الليل والنهار خلفة لمن أراد أن يذكر أو أراد شكورا ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | إنما نطعمكم لوجه الله لا نريد منكم جزاء ولا شكورا | ٩ | م الإنسان | ٧٦ |
| شَاكِرٌ | : ومن تطوع خيرا فإن الله شاكر عليم... ... ... | ١٥٨ | م البقرة | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| شَاكِرًا | : وكان الله شاكرا عليما ... ... ... ... ... | ١٤٧ | م النساء | ٤ |
| (٣) | شاكرا لأنعمه اجتباه وهداه إلى صراط مستقيم ... | ١٢١ | ك النحل | ١٦ |
| | إنا هديناه السبيل إما شاكرا وإما كفورا ... ... | ٣ | م الإنسان | ٧٦ |
| شَاكِرُونَ | : فهل أنتم شاكرون ... ... ... ... ... | ٨٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| الشَّاكِرِينَ | : ومن ينقلب على عقبيه فلن يضر الله شيئا وسيجزى الله الشاكرين ... ... ... ... ... ... | ١٤٤ | م آل عمران | ٣ |
| (٩) | ومن يرد ثواب الآخرة نؤته منها وسنجزى الشاكرين | ١٤٥ | م « | ٣ |
| | أليس الله بأعلم بالشاكرين... ... ... ... ... | ٥٣ | ك الأنعام | ٦ |
| | لئن أنجانا من هذه لنكونن من الشاكرين ... ... | ٦٣ | ك « | ٦ |
| | ولا تجد أكثرهم شاكرين ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | فخذ ما آتيتك وكن من الشاكرين ... ... ... ... | ١٤٤ | ك « | ٧ |
| | لئن آتيتنا صالحا لنكونن من الشاكرين ... ... ... | ١٨٩ | ك « | ٧ |
| | لئن أنجيتنا من هذه لنكونن من الشاكرين ... ... | ٢٢ | ك يونس | ١٠ |
| | بل الله فاعبد وكن من الشاكرين ... ... ... ... | ٦٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| شَكُورٍ | : إن فى ذلك لآيات لكل صبار شكور ... ... ... | ٥ | ك إبراهيم | ١٤ |
| (٩) | ليريكم من آياته إن فى ذلك لآيات لكل صبار شكور | ٣١ | ك لقمان | ٣١ |
| | اعملوا آل داود شكرا وقليل من عبادى الشكور | ١٣ | ك سبإ | ٣٤ |
| | ومزقناهم كل ممزق إن فى ذلك لآيات لكل صبار شكور | ١٩ | ك « | ٣٤ |
| | ليوفيهم أجورهم ويزيدهم من فضله إنه غفور شكور | ٣٠ | ك فاطر | ٣٥ |
| | إن ربنا لغفور شكور ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك « | ٣٥ |
| | ومن يقترف حسنة نزد له فيها حسنا إن الله غفور شكور | ٢٣ | م الشورى | ٤٢ |
| | إن يشأ يسكن الريح فيظللن رواكد على ظهره إن فى ذلك لآيات لكل صبار شكور ... ... ... | ٣٣ | ك « | ٤٢ |
| | والله شكور حليم ... ... ... ... ... ... | ١٧ | م التغابن | ٦٤ |
| شَكُورًا | : ذرية من حملنا مع نوح إنه كان عبدا شكورا ... | ٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| مَشْكُورًا | : فأولئك كان سعيهم مشكورا ... ... ... ... | ١٩ | ك « | ١٧ |
| (٢) | إن هذا كان لكم جزاء وكان سعيكم مشكورا ... ... | ٢٢ | م الإنسان | ٧٦ |
| مُتَشَاكِسُونَ | : ضرب الله مثلا رجلا فيه شركاء متشاكسون ورجلا سلما لرجل هل يستويان مثلا... ... ... | ٢٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| شَكٍّ | : إن الذين اختلفوا فيه لفى شك منه ... ... ... | ١٥٧ | م النساء | ٤ |
| (١٥) | فإن كنت فى شك مما أنزلنا إليك فسئل الذين يقرءون الكتاب من قبلك ... ... ... ... ... ... | ٩٤ | م يونس | ١٠ |
| | إن كنتم فى شك من دينى فلا أعبد الذين تعبدون من دون الله | ١٥٤ | ك « | ١٠ |
| | وإننا لفى شك مما تدعونا إليه مريب ... ... ... | ٦٢ | ك هود | ١١ |
| | وإنهم لفى شك منه مريب ... ... ... ... ... | ١١٠ | ك « | ١١ |
| | وإنا لفى شك مما تدعوننا إليه مريب ... ... ... | ٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | قالت رسلهم أفى الله شك فاطر السموات والأرض | ١٠ | ك « | ١٤ |
| | بل هم فى شك منها بل هم منها عمون ... ... ... | ٦٦ | ك النمل | ٢٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| شَكٍّ | إلا لنعلم من يؤمن بالآخرة ممن هو منها فى شك... ... | ٢١ | ك سبأ | ٣٤ |
| | إنهم كانوا فى شك مريب ... ... ... ... ... ... | ٥٤ | ك « | ٣٤ |
| | أؤنزل عليه الذكر من بيننا بل هم فى شك من ذكرى | ٨ | ك ص | ٣٨ |
| | فما زلتم فى شك مما جاءكم به... ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | وإنهم لفى شك منه مريب ... ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك فصلت | ٤١ |
| | وإن الذين أورثوا الكتاب من بعدهم لفى شك منه مريب | ١٤ | ك الشورى | ٤٢ |
| | بل هم فى شك يلعبون ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك الدخان | ٤٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| شَكْلِهِ | هذا فليذوقوه حميم وغساق . وآخر من شكله أزواج | ٥٨ | ك ص | ٣٨ |
| شَاكِلَتِهِ | قل كل يعمل على شاكلته ... ... ... ... ... ... | ٨٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| أَشْكُو | قال إنما أشكو بثى وحزنى إلى الله ... ... ... | ٨٦ | ك يوسف | ١٢ |
| تَشْتَكِى | قد سمع الله قول التى تجادلك فى زوجها وتشتكى إلى الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ١ | م المجادلة | ٥٨ |
| كَمِشْكَاةٍ | مثل نوره كمشكاة فيها مصباح المصباح فى زجاجة | ٣٥ | م النور | ٢٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تُشْمِتْ | فلا تشمت بى الأعداء ... ... ... ... ... ... | ١٥٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| شَامِخَاتٍ | وجعلنا فيها رواسى شامخات وأسقيناكم ماء فراتا | ٢٧ | ك المرسلات | ٧٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| اشْمَأَزَّتْ | وإذا ذكر الله وحده اشمأزت قلوب الذين لا يؤمنون بالآخرة... ... ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| الشَّمْسُ | قال إبراهيم فإن الله يأتى بالشمس من المشرق | | | |
| (٣٢) | فأت بها من المغرب ... ... ... ... ... ... | ٢٥٨ | م البقرة | ٢ |
| | فلما رأى الشمس بازغة قال هذا ربى هذا أكبر... | ٧٨ | ك الأنعام | ٦ |
| | فالق الإصباح وجعل الليل سكنا والشمس والقمر حسبانا | ٩٦ | ك « | ٦ |
| | والشمس والقمر والنجوم مسخرات بأمره ... ... | ٥٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | هو الذى جعل الشمس ضياء والقمر نورا وقدره منازل | ٥ | ك يونس | ١٠ |
| | إنى رأيت أحد عشر كوكبا والشمس والقمر رأيتهم لى ساجدين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك يوسف | ١٢ |
| | وسخر الشمس والقمر كل يجرى لأجل مسمى ... ... | ٢ | م الرعد | ١٣ |
| | وسخر لكم الشمس والقمر دائبين وسخر لكم الليل والنهار | ٣٣ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وسخر لكم الليل والنهار والشمس والقمر والنجوم مسخرات بأمره ... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك النحل | ١٦ |
| | أقم الصلاة لدلوك الشمس إلى غسق الليل وقرآن الفجر | ٧٨ | م الإسراء | ١٧ |
| | وترى الشمس إذا طلعت تزاور عن كهفهم ذات اليمين | ١٧ | ك الكهف | ١٨ |
| | حتى إذا بلغ مغرب الشمس وجدها تغرب فى عين حمئة | ٨٦ | م « | ١٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الشَّمْسُ | حتى إذا بلغ مطلع الشمس وجدها تطلع على قوم لم نجعل لهم من دونها سترا ... ... ... ... ... | ٩٠ | م الكهف | ١٨ |
| | وسبح بحمد ربك قبل طلوع الشمس وقبل غروبها | ١٣٠ | م طه | ٢٠ |
| | وهو الذى خلق الليل والنهار والشمس والقمر... ... | ٣٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ألم تر أن الله يسجد له من فى السموات ومن فى الأرض والشمس والقمر ... ... ... ... ... ... | ١٨ | م الحج | ٢٢ |
| | ولو شاء لجعله ساكنا ثم جعلنا الشمس عليه دليلا ... | ٤٥ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وجدتها وقومها يسجدون للشمس من دون الله ... | ٢٤ | ك النمل | ٢٧ |
| | ولئن سألتهم من خلق السموات والأرض وسخر الشمس والقمر ليقولن الله ... ... ... ... ... | ٦١ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وسخر الشمس والقمر كل يجرى إلى أجل مسمى ... | ٢٩ | م لقمان | ٣١ |
| | وسخر الشمس والقمر كل يجرى لأجل مسمى... ... | ١٣ | ك فاطر | ٣٥ |
| | والشمس تجرى لمستقر لها ذلك تقدير العزيز العليم... | ٣٨ | ك يس | ٣٦ |
| | لا الشمس ينبغى لها أن تدرك القمر ولا الليل سابق النهار | ٤٠ | ك « | ٣٦ |
| | وسخر الشمس والقمر كل يجرى لأجل مسمى... ... | ٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ومن آياته الليل والنهار والشمس والقمر... ... ... | ٣٧ | ك فصلت | ٤١ |
| | لا تسجدوا للشمس ولا للقمر واسجدوا لله الذى خلقهن | ٣٧ | ك « | ٤١ |
| | فاصبر على ما يقولون وسبح بحمد ربك قبل طلوع الشمس | ٣٩ | ك ق | ٥٠ |
| | الشمس والقمر بحسبان ... ... ... ... ... ... | ٥ | م الرحمن | ٥٥ |
| | وجعل القمر فيهن نورا وجعل الشمس سراجا ... ... | ١٦ | ك نوح | ٧١ |
| | فإذا برق البصر . وخسف القمر . وجمع الشمس والقمر | ٩ | ك القيامة | ٧٥ |
| | إذا الشمس كورت ... ... ... ... ... ... ... | ١ | ك التكوير | ٨١ |
| | والشمس وضحاها ... ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الشمس | ٩١ |
| شَمْسًا | متكئين فيها على الأرائك لا يرون فيها شمسا ولا زمهريرا | ١٣ | م الإنسان | ٧٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| اشْتَمَلَتْ | قل آلذكرين حرم أم الأنثيين أما اشتملت عليه | | | |
| (٢) | أرحام الأنثيين ... ... ... ... ... ... | ١٤٣ | ك الأنعام | ٦ |
| | قل آلذكرين حرم أم الأنثيين أما اشتملت عليه أرحام الأنثيين أم كنتم شهداء إذ وصاكم الله بهذا... | ١٤٤ | ك « | ٦ |
| الشِّمَالِ | وإذا غربت تقرضهم ذات الشمال وهم فى فجوة منه | ١٧ | ك الكهف | ١٨ |
| (٧) | ونقلبهم ذات اليمين وذات الشمال ... ... ... ... | ١٨ | ك « | ١٨ |
| | لقد كان لسبإ فى مسكنهم آية جنتان عن يمين وشمال | ١٥ | ك سبأ | ٣٤ |
| | إذ يتلقى المتلقيان عن اليمين وعن الشمال قعيد... ... | ١٧ | ك ق | ٥٠ |
| | وأصحاب الشمال ... ... ... ... ... ... ... | ٤١ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | ما أصحاب الشمال . فى سموم وحميم ... ... ... ... | ٤١ | ك « | ٥٦ |
| | عن اليمين وعن الشمال عزين... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك المعارج | ٧٠ |
| بِشِمَالِهِ | وأما من أوتى كتابه بشماله فيقول يا ليتنى لم أوت كتابيه | ٢٥ | ك الحاقة | ٦٩ |
| الشَّمَائِلِ | يتفيؤا ظلاله عن اليمين والشمائل سجدا لله... ... | ٤٨ | ك النحل | ١٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| شَمَائِلِهِمْ: | ثم لآتينهم من بين أيديهم ومن خلفهم وعن أيمانهم وعن شمائلهم ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الأعراف | ٧ |
| شَنَآنُ: | ولا يجرمنكم شنآن قوم أن صدوكم عن المسجد (٢) الحرام أن تعتدوا ... ... ... ... ... ... | ٢ | م المائدة | ٥ |
| | ولا يجرمنكم شنآن قوم على ألا تعدلوا ... ... ... | ٨ | م « | ٥ |
| شَانِئَكَ: | إن شانئك هو الأبتر ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك الكوثر | ١٠٨ |
| شِهَابٌ: | إلا من استرق السمع فأتبعه شهاب مبين ... ... | ١٨ | ك الحجر | ١٥ |
| | سآتيكم منها بخبر أو آتيكم بشهاب قبس لعلكم تصطلون (٣) | ٧ | ك النمل | ٢٧ |
| | إلا من خطف الخطفة فأتبعه شهاب ثاقب ... ... | ١٠ | ك الصافات | ٣٧ |
| شِهَاباً: | فمن يستمع الآن يجد له شهابا رصدا ... ... ... | ٩ | ك الجن | ٧٢ |
| شُهُباً: | وأنا لمسنا السماء فوجدناها ملئت حرسا شديدا وشهبا | ٨ | ك « | ٧٢ |
| شَهِدَ: | فمن شهد منكم الشهر فليصمه... ... ... ... ... | ١٨٥ | م البقرة | ٢ |
| | شهد الله أنه لا إله إلا هو والملائكة وأولوا العلم (٦) قائما بالقسط ... ... ... ... ... ... | ١٨ | م آل عمران | ٣ |
| | وشهد شاهد من أهلها إن كان قميصه قد من قبل فصدقت | ٢٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | حتى إذا ما جاءوها شهد عليهم سمعهم وأبصارهم وجلودهم | ٢٠ | ك فصلت | ٤١ |
| | ولا يملك الذين يدعون من دونه الشفاعة إلا من شهد بالحق | ٨٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وشهد شاهد من بني إسرائيل على مثله فآمن واستكبرتم | ١٠ | م الأحقاف | ٤٦ |
| شَهِدْتُمْ: | وقالوا لجلودهم لم شهدتم علينا ... ... ... ... | ٢١ | ك فصلت | ٤١ |
| شَهِدْنَا: | قالوا شهدنا على أنفسنا وغرتهم الحياة الدنيا ... | ١٣٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | شهدنا أن تقولوا يوم القيامة إنا كنا عن هذا غافلين... (٤) | ١٧٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | فقولوا يا أبانا إن ابنك سرق وما شهدنا إلا بما علمنا | ٨١ | ك يوسف | ١٢ |
| | ثم لنقولن لوليه ما شهدنا مهلك أهله وإنا لصادقون | ٤٩ | ك النمل | ٢٧ |
| شَهِدُوا: | كيف يهدي الله قوما كفروا بعد إيمانهم وشهدوا (٦) أن الرسول حق وجاءهم البينات ... ... ... ... | ٨٦ | م آل عمران | ٣ |
| | فإن شهدوا فأمسكوهن في البيوت حتى يتوفاهن الموت | ١٥ | م النساء | ٤ |
| | وشهدوا على أنفسهم أنهم كانوا كافرين ... ... | ١٣٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | فإن شهدوا فلا تشهد معهم ... ... ... ... ... | ١٥٠ | ك « | ٦ |
| | قالوا ضلوا عنا وشهدوا على أنفسهم أنهم كانوا كافرين | ٣٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | أشهدوا خلقهم ستكتب شهادتهم ... ... ... ... | ١٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| أَشَهِدْتُ: | أئنكم لتشهدون أن مع الله آلهة أخرى قل لا أشهد | ١٩ | ك الأنعام | ٦ |
| تَشْهَدُ: | فإن شهدوا فلا تشهد معهم ... ... ... ... ... | ١٥٠ | ك « | ٦ |
| | ويدرؤا عنها العذاب أن تشهد أربع شهادات بالله (٤) | ٨ | م النور | ٢٤ |
| | يوم تشهد عليهم ألسنتهم وأيديهم وأرجلهم بما كانوا يعملون ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | م « | ٢٤ |
| | وتكلمنا أيديهم وتشهد أرجلهم بما كانوا يكسبون | ٦٥ | ك يس | ٣٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَشْهَدُونَ: | ثم أقررتم وأنتم تشهدون ... ... ... ... ... | ٨٤ | م البقرة | ٢ |
| | يا أهل الكتاب لم تكفرون بآيات الله وأنتم تشهدون (٣) | ٧٠ | م آل عمران | ٣ |
| | أئنكم لتشهدون أن مع الله آلهة أخرى قل لا أشهد | ١٩ | ك الأنعام | ٦ |
| تَشْهَدُونِ: | أفتوني في أمري ما كنت قاطعة أمرا حتى تشهدون | ٣٢ | ك النمل | ٢٧ |
| نَشْهَدُ: | إذا جاءك المنافقون قالوا نشهد إنك لرسول الله | ١ | م المنافقون | ٦٣ |
| يَشْهَدُ: | لكن الله يشهد بما أنزل إليك أنزله بعلمه... ... | ١٦٦ | م النساء | ٤ |
| | وليحلفن إن أردنا إلا الحسنى والله يشهد إنهم لكاذبون (٦) | ١٠٧ | م التوبة | ٩ |
| | وليشهد عذابهما طائفة من المؤمنين ... ... ... | ٢ | م النور | ٢٤ |
| | وما كنتم تستترون أن يشهد عليكم سمعكم ولا أبصاركم | ٢٢ | ك فصلت | ٤١ |
| | وإن قوتلتم لننصرنكم والله يشهد إنهم لكاذبون ... | ١١ | م الحشر | ٥٩ |
| | والله يشهد إن المنافقين لكاذبون ... ... ... ... | ١ | م المنافقون | ٦٣ |
| يَشْهَدُهُ: | كتاب مرقوم . يشهده المقربون ... ... ... | ٢١ | ك المطففين | ٨٣ |
| لِيَشْهَدُوا: | ليشهدوا منافع لهم ويذكروا اسم الله في أيام معلومات ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م الحج | ٢٢ |
| يَشْهَدُونَ: | أنزله بعلمه والملائكة يشهدون... ... ... ... | ١٦٦ | م النساء | ٤ |
| | قل هلم شهداءكم الذين يشهدون أن الله حرم هذا (٤) | ١٥٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | قالوا فأتوا به على أعين الناس لعلهم يشهدون ... ... | ٦١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | والذين لا يشهدون الزور وإذا مروا باللغو مروا كراما | ٧٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| أَشْهَدْ: | آمنا بالله واشهد بأننا مسلمون ... ... ... ... | ٥٢ | م آل عمران | ٣ |
| | قالوا آمنا واشهد بأننا مسلمون ... ... ... ... (٢) | ١١١ | م المائدة | ٥ |
| أَشْهَدُوا: | فإن تولوا فقولوا اشهدوا بأنا مسلمون ... ... | ٦٤ | م آل عمران | ٣ |
| | قالوا أقررنا قال فاشهدوا وأنا معكم من الشاهدين (٣) | ٨١ | م « | ٣ |
| | قال إني أشهد الله واشهدوا أني بريء مما تشركون | ٥٤ | ك هود | ١١ |
| أَشْهَدْتُهُمْ: | ما أشهدتهم خلق السموات والأرض ... ... | ٥١ | ك الكهف | ١٨ |
| أَشْهَدَهُمْ: | واشهدهم على أنفسهم ألست بربكم قالوا بلى | ١٧٢ | ك الأعراف | ٧ |
| أُشْهِدُ: | قال إني أشهد الله واشهدوا أني بريء مما تشركون | ٥٤ | ك هود | ١١ |
| يُشْهِدُ: | ويشهد الله على ما في قلبه وهو ألد الخصام... ... | ٢٠٤ | م البقرة | ٢ |
| أَشْهِدُوا: | واشهدوا إذا تبايعتم ولا يضار كاتب ولا شهيد | ٢٨٢ | م « | ٢ |
| | فإذا دفعتم إليهم أموالهم فأشهدوا عليهم ... ... ... (٣) | ٦ | م النساء | ٤ |
| | وأشهدوا ذوي عدل منكم وأقيموا الشهادة لله ... ... | ٢ | م الطلاق | ٦٥ |
| اسْتَشْهِدُوا: | واستشهدوا شهيدين من رجالكم ... ... ... | ٢٨٢ | م البقرة | ٢ |
| | فاستشهدوا عليهن أربعة منكم ... ... ... ... (٢) | ١٥ | م النساء | ٤ |
| شَاهِدٌ: | أفمن كان على بينة من ربه ويتلوه شاهد منه | ١٧ | م هود | ١١ |
| | وشهد شاهد من أهلها إن كان قميصه قد من قبل فصدقت (٤) | ٢٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | وشهد شاهد من بني إسرائيل على مثله فآمن واستكبرتم | ١٠ | م الأحقاف | ٤٦ |
| | واليوم الموعود . وشاهد ومشهود . قتل أصحاب الأخدود | ٣ | ك البروج | ٨٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **شَاهِدًا**: يأيها النبي إنا أرسلناك شاهدا ومبشرا ونذيرا ... | ٤٥ | م | الأحزاب | ٣٣ |
| (٣) إنا أرسلناك شاهدا ومبشرا ونذيرا ... ... ... ... ... | ٨ | م | الفتح | ٤٨ |
| إنا أرسلنا إليكم رسولا شاهدا عليكم ... ... ... ... ... | ١٥ | ك | المزمل | ٧٣ |
| **شَاهِدُونَ**: أم خلقنا الملائكة إناثا وهم شاهدون ... ... | ١٥٠ | ك | الصافات | ٣٧ |
| **شَاهِدِينَ**: فاكتبنا مع الشاهدين... ... ... ... ... ... | ٥٣ | م | آل عمران | ٣ |
| (٨) قالوا أقررنا قال فاشهدوا وأنا معكم من الشاهدين ... | ٨١ | م | « | ٣ |
| يقولون ربنا آمنا فاكتبنا مع الشاهدين ... ... ... ... | ٨٣ | م | المائدة | ٥ |
| ونعلم أن قد صدقتنا ونكون عليها من الشاهدين ... | ١١٣ | م | « | ٥ |
| ما كان للمشركين أن يعمروا مساجد الله شاهدين على أنفسهم بالكفر ... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | م | التوبة | ٩ |
| وأنا على ذلكم من الشاهدين ... ... ... ... ... | ٥٦ | ك | الأنبياء | ٢١ |
| إذ نفشت فيه غنم القوم وكنا لحكمهم شاهدين... ... | ٧٨ | ك | « | ٢١ |
| وما كنت من الشاهدين ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك | القصص | ٢٨ |
| **شُهُودٌ**: وهم على ما يفعلون بالمؤمنين شهود... ... ... ... | ٧ | ك | البروج | ٨٥ |
| **شُهُودًا**: ولا تعملون من عمل إلا كنا عليكم شهودا إذ تفيضون فيه | ٦١ | ك | يونس | ١٠ |
| (٢) وجعلت له مالا ممدودا . وبنين شهودا ... ... ... | ١٣ | ك | المدثر | ٧٤ |
| **الأَشْهَادُ**: ويقول الأشهاد هؤلاء الذين كذبوا على ربهم | ١٨ | ك | هود | ١١ |
| (٢) إنا لننصر رسلنا والذين آمنوا في الحياة الدنيا ويوم يقوم الأشهاد ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥١ | ك | غافر | ٤٠ |
| **شَهِيدٌ**: وأشهدوا إذا تبايعتم ولا يضار كاتب ولا شهيد ... | ٢٨٢ | م | البقرة | ٢ |
| (١٥) لم تكفرون بآيات الله والله شهيد على ما تعملون ... | ٩٨ | م | آل عمران | ٣ |
| فكيف إذا جئنا من كل أمة بشهيد ... ... ... ... | ٤١ | م | النساء | ٤ |
| فلما توفيتني كنت أنت الرقيب عليهم وأنت على كل شيء شهيد | ١١٧ | م | المائدة | ٥ |
| قل أي شيء أكبر شهادة قل الله شهيد بيني وبينكم | ١٩ | ك | الأنعام | ٦ |
| فإلينا مرجعهم ثم الله شهيد على ما يفعلون ... ... | ٤٦ | ك | يونس | ١٠ |
| إن الله يفصل بينهم يوم القيامة إن الله على كل شيء شهيد | ١٧ | م | الحج | ٢٢ |
| إن أجري إلا على الله وهو على كل شيء شهيد ... ... | ٤٧ | ك | سبأ | ٣٤ |
| ويوم يناديهم أين شركائي قالوا آذناك ما منا من شهيد | ٤٧ | ك | فصلت | ٤١ |
| أولم يكف بربك أنه على كل شيء شهيد ... ... ... | ٥٣ | ك | « | ٤١ |
| وجاءت كل نفس معها سائق وشهيد ... ... ... ... | ٢١ | ك | ق | ٥٠ |
| إن في ذلك لذكرى لمن كان له قلب أو ألقى السمع وهو شهيد | ٣٧ | ك | « | ٥٠ |
| أحصاه الله ونسوه والله على كل شيء شهيد ... ... | ٦ | م | المجادلة | ٥٨ |
| الذي له ملك السموات والأرض والله على كل شيء شهيد | ٩ | ك | البروج | ٨٥ |
| إن الإنسان لربه لكنود . وإنه على ذلك لشهيد ... | ٧ | ك | العاديات | ١٠٠ |
| **شَهِيدًا**: لتكونوا شهداء على الناس ويكون الرسول عليكم شهيدا | ١٤٣ | م | البقرة | ٢ |
| (٢٠) إن الله كان على كل شيء شهيدا ... ... ... ... | ٣٣ | م | النساء | ٤ |
| وجئنا بك على هؤلاء شهيدا... ... ... ... ... ... | ٤١ | م | « | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **شَهِيدًا**: قال قد أنعم الله علي إذ لم أكن معهم شهيدا ... | ٧٢ | م | النساء | ٤ |
| وأرسلناك للناس رسولا وكفى بالله شهيدا ... ... ... | ٧٩ | م | « | ٤ |
| ويوم القيامة يكون عليهم شهيدا ... ... ... ... ... | ١٥٩ | م | « | ٤ |
| أنزله بعلمه والملائكة يشهدون وكفى بالله شهيدا ... | ١٦٦ | م | | ٤ |
| وكنت عليهم شهيدا ما دمت فيهم ... ... ... ... ... | ١١٧ | م | المائدة | ٥ |
| فكفى بالله شهيدا بيننا وبينكم إن كنا عن عبادتكم لغافلين | ٢٩ | ك | يونس | ١٠ |
| قل كفى بالله شهيدا بيني وبينكم ومن عنده علم الكتاب | ٤٣ | م | الرعد | ١٣ |
| ويوم نبعث من كل أمة شهيدا ثم لا يؤذن للذين كفروا | ٨٤ | ك | النحل | ١٦ |
| ويوم نبعث في كل أمة شهيدا عليهم من أنفسهم ... | ٨٩ | ك | « | ١٦ |
| وجئنا بك شهيدا على هؤلاء ... ... ... ... ... ... | ٨٩ | ك | « | ١٦ |
| قل كفى بالله شهيدا بيني وبينكم إنه كان بعباده خبيرا بصيرا | ٩٦ | ك | الإسراء | ١٧ |
| هو سماكم المسلمين من قبل وفي هذا ليكون الرسول شهيدا عليكم وتكونوا شهداء على الناس ... ... | ٧٨ | م | الحج | ٢٢ |
| ونزعنا من كل أمة شهيدا فقلنا هاتوا برهانكم ... ... | ٧٥ | ك | القصص | ٢٨ |
| قل كفى بالله بيني وبينكم شهيدا... ... ... ... ... | ٥٢ | ك | العنكبوت | ٢٩ |
| واتقين الله إن الله كان على كل شيء شهيدا ... ... | ٥٥ | م | الأحزاب | ٣٣ |
| هو أعلم بما تفيضون فيه كفى به شهيدا بيني وبينكم ... | ٨ | ك | الأحقاف | ٤٦ |
| هو الذي أرسل رسوله بالهدى ودين الحق ليظهره على الدين كله وكفى بالله شهيدا ... ... ... ... | ٢٨ | م | الفتح | ٤٨ |
| **شَهِيدَيْنِ**: واستشهدوا شهيدين من رجالكم ... ... ... ... | ٢٨٢ | م | البقرة | ٢ |
| **شُهَدَاءَ**: أم كنتم شهداء إذ حضر يعقوب الموت إذ قال (١٨) لبنيه ما تعبدون من بعدي ... ... ... ... ... | ١٣٣ | م | « | ٢ |
| وكذلك جعلناكم أمة وسطا لتكونوا شهداء على الناس | ١٤٣ | م | « | ٢ |
| فرجل وامرأتان ممن ترضون من الشهداء... ... ... | ٢٨٢ | م | « | ٢ |
| ولا يأب الشهداء إذا ما دعوا ... ... ... ... ... | ٢٨٢ | م | « | ٢ |
| لم تصدون عن سبيل الله من آمن تبغونها عوجا وأنتم شهداء | ٩٩ | م | آل عمران | ٣ |
| وليعلم الله الذين آمنوا ويتخذ منكم شهداء ... ... ... | ١٤٠ | م | « | ٣ |
| فأولئك مع الذين أنعم الله عليهم من النبيين والصديقين والشهداء والصالحين... ... ... ... ... ... | ٦٩ | م | النساء | ٤ |
| يأيها الذين آمنوا كونوا قوامين بالقسط شهداء لله | ١٣٥ | م | « | ٤ |
| يأيها الذين آمنوا كونوا قوامين لله شهداء بالقسط | ٨ | م | المائدة | ٥ |
| بما استحفظوا من كتاب الله وكانوا عليه شهداء ... | ٤٤ | م | « | ٥ |
| أم كنتم شهداء إذ وصاكم الله بهذا ... ... ... ... | ١٤٤ | ك | الأنعام | ٦ |
| ليكون الرسول شهيدا عليكم وتكونوا شهداء على الناس | ٧٨ | م | الحج | ٢٢ |
| والذين يرمون المحصنات ثم لم يأتوا بأربعة شهداء فاجلدوهم ثمانين جلدة ... ... ... ... ... | ٤ | م | النور | ٢٤ |
| والذين يرمون أزواجهم ولم يكن لهم شهداء إلا أنفسهم فشهادة أحدهم أربع شهادات بالله إنه لمن الصادقين | ٦ | م | « | ٢٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| شُهَدَاءَ: | لولا جاءو عليه بأربعة شهداء ... ... ... ... ... | ١٣ | م النـور | ٢٤ |
| | فإذ لم يأتوا بالشهداء فأولئك عند الله هم الكاذبون | ١٣ | م « | ٢٤ |
| | وجيء بالنبيين والشهداء وقضى بينهم بالحق وهم لا يظلمون | ٦٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| | والشهداء عند ربهم لهم أجرهم ونورهم ... ... ... | ١٩ | م الحـديد | ٥٧ |
| شُهَدَاءَكُمْ: | وادعوا شهداءكم من دون الله إن كنتم صادقين | ٢٣ | م البقـرة | ٢ |
| (٢) | قل هلم شهداءكم الذين يشهدون أن الله حرم هذا ... | ١٥٠ | ك الأنعام | ٦ |
| الشَّهَادَةَ: | ومن أظلم ممن كتم شهادة عنده من الله وما الله | | | |
| (٢٠) | بغافل عما تعملون ... ... ... ... ... ... | ١٤٠ | م البقـرة | ٢ |
| | ذلكم أقسط عند الله وأقوم للشهادة وأدنى ألا ترتابوا | ٢٨٢ | م « | ٢ |
| | ولا تكتموا الشهادة ومن يكتمها فإنه آثم قلبه ... ... | ٢٨٣ | م « | ٢ |
| | شهادة بينكم إذا حضر أحدكم الموت حين الوصية | | | |
| | اثنان ذوا عدل منكم ... ... ... ... ... | ١٠٦ | م المائدة | ٥ |
| | ولا نكتم شهادة الله إنا إذا لمن الآثمين ... ... ... | ١٠٦ | م « | ٥ |
| | ذلك أدنى أن يأتوا بالشهادة على وجهها ... ... ... | ١٠٨ | م « | ٥ |
| | قل أي شيء أكبر شهادة قل الله شهيد بيني وبينكم | ١٩ | ك الأنعام | ٦ |
| | وله الملك يوم ينفخ في الصور عالم الغيب والشهادة ... | ٧٣ | ك « | ٦ |
| | ثم تردون إلى عالم الغيب والشهادة فينبئكم بما كنتم تعملون | ٩٤ | م التـوبة | ٩ |
| | وستردون إلى عالم الغيب والشهادة فينبئكم بما كنتم تعملون | ١٠٥ | م « | ٩ |
| | عالم الغيب والشهادة الكبير المتعال ... ... ... ... | ٩ | م الرعـد | ١٣ |
| | عالم الغيب والشهادة فتعالى عما يشركون ... ... ... | ٩٢ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فاجلدوهم ثمانين جلدة ولا تقبلوا لهم شهادة أبدا ... | ٤ | م النـور | ٢٤ |
| | فشهادة أحدهم أربع شهادات بالله إنه لمن الصادقين | ٦ | م « | ٢٤ |
| | ذلك عالم الغيب والشهادة العزيز الرحيم ... ... ... | ٦ | ك السـجدة | ٣٢ |
| | عالم الغيب والشهادة أنت تحكم بين عبادك في ما كانوا | | | |
| | فيه يختلفون ... ... ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| | هو الله الذي لا إله إلا هو عالم الغيب والشهادة هو | | | |
| | الرحمن الرحيم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | م الحشـر | ٥٩ |
| | ثم تردون إلى عالم الغيب والشهادة فينبئكم بما كنتم تعملون | ٨ | م الجمعـة | ٦٢ |
| | عالم الغيب والشهادة العزيز الحكيم ... ... ... ... | ١٨ | م التغـابن | ٦٤ |
| | وأشهدوا ذوي عدل منكم وأقيموا الشهادة لله ... ... | ٢ | م الطـلاق | ٦٥ |
| شَهَادَتُنَا: | فيقسمان بالله لشهادتنا أحق من شهادتهما وما اعتدينا | ١٠٧ | م المائدة | ٥ |
| شَهَادَتُهُمْ: | أشهدوا خلقهم ستكتب شهادتهم ويسئلون ... | ١٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| شَهَادَتِهِمَا: | فيقسمان بالله لشهادتنا أحق من شهادتهما | | | |
| | وما اعتدينا ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٧ | م المائدة | ٥ |
| شَهَادَاتٍ: | فشهادة أحدهم أربع شهادات بالله إنه لمن الصادقين | ٦ | م النـور | ٢٤ |
| (٢) | ويدرؤا عنها العذاب أن تشهد أربع شهادات بالله | | | |
| | إنه لمن الكاذبين ... ... ... ... ... ... | ٨ | م « | ٢٤ |
| بِشَهَادَاتِهِمْ: | والذين هم بشهاداتهم قائمون... ... ... ... | ٣٣ | ك المعـارج | ٧٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مَشْهَدِ: | فويل للذين كفروا من مشهد يوم عظيم ... ... | ٣٧ | ك مريم | ١٩ |
| مَشْهُودٌ: | ذلك يوم مجموع له الناس وذلك يوم مشهود ... | ١٠٣ | ك هـود | ١١ |
| (٢) | وشاهد ومشهود . قتل أصحاب الأخدود ... ... | ٣ | ك البـروج | ٨٥ |
| مَشْهُودًا: | إن قرآن الفجر كان مشهودا ... ... ... ... | ٧٨ | م الإسراء | ١٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| الشَّهْرُ: | شهر رمضان الذي أنزل فيه القرآن هدى للناس ... | ١٨٥ | م البقـرة | ٢ |
| (١٠) | فمن شهد منكم الشهر فليصمه ... ... ... ... ... | ١٨٥ | م « | ٢ |
| | الشهر الحرام ... ... ... ... ... ... ... | ١٩٤ | م « | ٢ |
| | بالشهر الحرام والحرمات قصاص... ... ... ... ... | ١٩٤ | م « | ٢ |
| | يسئلونك عن الشهر الحرام قتال فيه قل قتال فيه كبير | ٢١٧ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تحلوا شعائر الله ولا الشهر الحرام | ٢ | م المائدة | ٥ |
| | جعل الله الكعبة البيت الحرام قياما للناس والشهر الحرام | ٩٧ | م « | ٥ |
| | ولسليمان الريح غدوها شهر ... ... ... ... ... | ١٢ | ك سـبأ | ٣٤ |
| | ورواحها شهر ... ... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك « | ٣٤ |
| | ليلة القدر خير من ألف شهر ... ... ... ... ... | ٣ | ك القـدر | ٩٧ |
| شَهْرًا: | إن عدة الشهور عند الله اثنا عشر شهرا في كتاب الله | ٣٦ | م التـوبة | ٩ |
| (٢) | حمله أمه كرها ووضعته كرها وحمله وفصاله ثلاثون شهرا | ١٥ | م الأحقاف | ٤٦ |
| شَهْرَيْنِ: | فمن لم يجد فصيام شهرين متتابعين توبة من الله | ٩٢ | م النسـاء | ٤ |
| (٢) | فمن لم يجد فصيام شهرين متتابعين من قبل أن يتماسا | ٤ | م المجادلة | ٥٨ |
| الشُّهُورِ: | إن عدة الشهور عند الله اثنا عشر شهرا في كتاب الله | ٣٦ | م التـوبة | ٩ |
| أَشْهُرٍ: | الحج أشهر معلومات ... ... ... ... ... ... | ١٩٧ | م البقـرة | ٢ |
| (٦) | للذين يؤلون من نسائهم تربص أربعة أشهر ... ... | ٢٢٦ | م « | ٢ |
| | يتربصن بأنفسهن أربعة أشهر وعشرا... ... ... ... | ٢٣٤ | م « | ٢ |
| | فسيحوا في الأرض أربعة أشهر ... ... ... ... | ٢ | م التـوبة | ٩ |
| | فإذا انسلخ الأشهر الحرم فاقتلوا المشركين حيث وجدتموهم | ٥ | م « | ٩ |
| | إن ارتبتم فعدتهن ثلاثة أشهر ... ... ... ... | ٤ | م الطـلاق | ٦٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| شَهِيقٌ: | فأما الذين شقوا ففي النار لهم فيها زفير وشهيق ... | ١٠٦ | ك هـود | ١١ |
| شَهِيقًا: | إذا ألقوا فيها سمعوا لها شهيقا وهي تفور... ... | ٧ | ك المـلك | ٦٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| اشْتَهَتْ: | وهم في ما اشتهت أنفسهم خالدون ... ... ... | ١٠٢ | ك الأنبياء | ٢١ |
| تَشْتَهِي: | ولكم فيها ما تشتهي أنفسكم ولكم فيها ما تدعون | ٣١ | ك فصـلت | ٤١ |
| تَشْتَهِيهِ: | وفيها ما تشتهيه الأنفس وتلذ الأعين ... ... ... | ٧١ | ك الزخرف | ٤٣ |
| يَشْتَهُونَ: | ويجعلون لله البنات سبحانه ولهم ما يشتهون ... | ٥٧ | ك النحـل | ١٦ |
| (٥) | وحيل بينهم وبين ما يشتهون كما فعل بأشياعهم من قبل | ٥٤ | ك سـبأ | ٣٤ |
| | وأمددناهم بفاكهة ولحم مما يشتهون ... ... ... | ٢٢ | ك الطـور | ٥٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَشْتَهُونَ: | وفاكهة مما يخيرون . ولحم طير مما يشتهون... ... | ٢١ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | إن المتقين فى ظلال وعيون . وفواكه مما يشتهون | ٤٢ | ك المرسلات | ٧٧ |
| شَهْوَةً: | إنكم لتأتون الرجال شهوة من دون النساء... ... | ٨١ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | أئنكم لتأتون الرجال شهوة من دون النساء ... ... | ٥٥ | ك النمل | ٢٧ |
| الشَّهَوَاتِ: | زين للناس حب الشهوات من النساء والبنين | | | |
| (٣) | والقناطير المقنطرة من الذهب والفضة ... ... | ١٤ | م آل عمران | ٣ |
| | ويريد الذين يتبعون الشهوات أن تميلوا ميلا عظيما | ٢٧ | م النساء | ٤ |
| | فخلف من بعدهم خلف أضاعوا الصلاة واتبعوا الشهوات | ٥٩ | ك مريم | ١٩ |
| لَشَوْبًا: | ثم إن لهم عليها لشوبا من حميم ... ... ... ... | ٦٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| فَأَشَارَتْ: | فأشارت إليه قالوا كيف نكلم من كان فى المهد صبيا | ٢٩ | ك مريم | ١٩ |
| شَاوِرْهُمْ: | فاعف عنهم واستغفر لهم وشاورهم فى الأمر | ١٥٩ | م آل عمران | ٣ |
| شُورَى: | وأمرهم شورى بينهم ومما رزقناهم ينفقون ... | ٣٨ | ك الشورى | ٤٢ |
| تَشَاوُرٍ: | فإن أرادا فصالا عن تراض منهما وتشاور فلا جناح | | | |
| | عليهما ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣٣ | م البقرة | ٢ |
| شُوَاظٌ: | يرسل عليكما شواظ من نار ونحاس فلا تنتصران | ٣٥ | م الرحمن | ٥٥ |
| الشَّوْكَةِ: | وتودون أن غير ذات الشوكة تكون لكم ... | ٧ | م الأنفال | ٨ |
| يَشْوِى: | وإن يستغيثوا يغاثوا بماء كالمهل يشوى الوجوه | ٢٩ | ك الكهف | ١٨ |
| لِلشَّوَى: | كلا إنها لظى . نزاعة للشوى ... ... ... ... | ١٦ | ك المعارج | ٧٠ |
| شَاءَ: | ولو شاء الله لذهب بسمعهم وأبصارهم ... ... ... | ٢٠ | م البقرة | ٢ |
| (٥٦) | إن البقر تشابه علينا وإنا إن شاء الله لمهتدون ... ... | ٧٠ | م » | ٢ |
| | ولو شاء الله لأعنتكم إن الله عزيز حكيم ... ... ... | ٢٢٠ | م » | ٢ |
| | ولو شاء الله ما اقتتل الذين من بعدهم من بعد | | | |
| | ما جاءتهم البينات ... ... ... ... ... ... | ٢٥٣ | م » | ٢ |
| | ولو شاء الله ما اقتتلوا ولكن الله يفعل ما يريد ... | ٢٥٣ | م » | ٢ |
| | ولا يحيطون بشىء من علمه إلا بما شاء... ... ... | ٢٥٥ | م » | ٢ |
| | ولو شاء الله لسلطهم عليكم فلقاتلوكم ... ... ... | ٩٠ | م النساء | ٤ |
| | ولو شاء الله لجعلكم أمة واحدة ولكن ليبلوكم فى ما آتاكم | ٤٨ | م المائدة | ٥ |
| | ولو شاء الله لجمعهم على الهدى فلا تكونن من الجاهلين | ٣٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | بل إياه تدعون فيكشف ما تدعون إليه إن شاء ... | ٤١ | ك » | ٦ |
| | ولو شاء الله ما أشركوا وما جعلناك عليهم حفيظا ... | ١٠٧ | ك » | ٦ |
| | ولو شاء ربك ما فعلوه فذرهم وما يفترون... ... ... | ١١٢ | ك » | ٦ |
| شَاءَ: | قال النار مثواكم خالدين فيها إلا ما شاء الله ... ... | ١٢٨ | ك الأنعام | ٦ |
| | ولو شاء الله ما فعلوه فذرهم وما يفترون ... ... ... | ١٣٧ | ك » | ٦ |
| | سيقول الذين أشركوا لو شاء الله ما أشركنا ولا آباؤنا | ١٤٨ | ك » | ٦ |
| | قل فلله الحجة البالغة فلو شاء لهداكم أجمعين ... ... | ١٤٩ | ك » | ٦ |
| | قل لا أملك لنفسى نفعا ولا ضرا إلا ما شاء الله ... | ١٨٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | وإن خفتم عيلة فسوف يغنيكم الله من فضله إن شاء | ٢٨ | م التوبة | ٩ |
| | قل لو شاء الله ما تلوته عليكم ولا أدراكم به ... ... | ١٦ | ك يونس | ١٠ |
| | قل لا أملك لنفسى ضرا ولا نفعا إلا ما شاء الله ... | ٤٩ | ك » | ١٠ |
| | ولو شاء ربك لآمن من فى الأرض كلهم جميعا ... | ٩٩ | ك » | ١٠ |
| | قال إنما يأتيكم به الله إن شاء وما أنتم بمعجزين ... | ٣٣ | ك هود | ١١ |
| | خالدين فيها ما دامت السموات والأرض إلا ما شاء | | | |
| | ربك إن ربك فعال لما يريد ... ... ... ... ... | ١٠٧ | ك » | ١١ |
| | خالدين فيها ما دامت السموات والأرض إلا ما شاء | | | |
| | ربك عطاء غير مجذوذ ... ... ... ... ... ... | ١٠٨ | ك » | ١١ |
| | ولو شاء ربك لجعل الناس أمة واحدة ... ... ... | ١١٨ | ك » | ١١ |
| | وقال ادخلوا مصر إن شاء الله آمنين ... ... ... ... | ٩٩ | ك يوسف | ١٢ |
| | وعلى الله قصد السبيل ومنها جائر ولو شاء لهداكم أجمعين | ٩ | ك النحل | ١٦ |
| | وقال الذين أشركوا لو شاء الله ما عبدنا من دونه من شىء | ٣٥ | ك » | ١٦ |
| | ولو شاء الله لجعلكم أمة واحدة ... ... ... ... ... | ٩٣ | ك » | ١٦ |
| | وقل الحق من ربكم فمن شاء فليؤمن ... ... ... ... | ٢٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | ومن شاء فليكفر... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك » | ١٨ |
| | ولولا إذ دخلت جنتك قلت ما شاء الله لا قوة إلا بالله | ٣٩ | ك » | ١٨ |
| | قال ستجدنى إن شاء الله صابرا ولا أعصى لك أمرا | ٦٩ | ك » | ١٨ |
| | ولو شاء الله لأنزل ملائكة ما سمعنا بهذا فى آبائنا الأولين | ٢٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | تبارك الذى إن شاء جعل لك خيرا من ذلك ... ... | ١٠ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ألم تر إلى ربك كيف مد الظل ولو شاء لجعله ساكنا | ٤٥ | ك » | ٢٥ |
| | قل ما أسئلكم عليه من أجر إلا من شاء أن يتخذ إلى ربه سبيلا | ٥٧ | ك » | ٢٥ |
| | ففزع من فى السموات ومن فى الأرض إلا من شاء الله | ٨٧ | ك النمل | ٢٧ |
| | وما أريد أن أشق عليك ستجدنى إن شاء الله من الصالحين | ٢٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | ليجزى الله الصادقين بصدقهم ويعذب المنافقين إن شاء | ٢٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | قال يا أبت افعل ما تؤمر ستجدنى إن شاء الله من الصابرين | ١٠٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| | فصعق من فى السموات ومن فى الأرض إلا من شاء الله | ٦٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| | قالوا لو شاء ربنا لأنزل ملائكة فإنا بما أرسلتم به كافرون | ١٤ | ك فصلت | ٤١ |
| | ولو شاء الله لجعلهم أمة واحدة ... ... ... ... ... | ٨ | ك الشورى | ٤٢ |
| | وقالوا لو شاء الرحمن ما عبدناهم ما لهم بذلك من علم | ٢٠ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | لتدخلن المسجد الحرام إن شاء الله آمنين محلقين رءوسكم | ٢٧ | م الفتح | ٤٨ |
| | إن هذه تذكرة فمن شاء اتخذ إلى ربه سبيلا ... ... | ١٩ | ك المزمل | ٧٣ |
| | نذيرا للبشر . لمن شاء منكم أن يتقدم أو يتأخر ... | ٣٧ | ك المدثر | ٧٤ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| شَاءَ: | كلا إنه تذكرة . فمن شاء ذكره ... ... ... ... | ٥٥ ك المدثر | ٧٤ |
| | إن هذه تذكرة فمن شاء اتخذ إلى ربه سبيلا ... ... | ٢٩ م الإنسان | ٧٦ |
| | ذلك اليوم الحق فمن شاء اتخذ إلى ربه مآبا ... ... | ٣٩ ك النبأ | ٧٨ |
| | كلا إنها تذكرة . فمن شاء ذكره ... ... ... ... | ١٢ ك عبس | ٨٠ |
| | ثم أماته فأقبره . ثم إذا شاء أنشره ... ... ... ... | ٢٢ ك « | ٨٠ |
| | إن هو إلا ذكر للعالمين . لمن شاء منكم أن يستقيم | ٢٨ ك التكوير | ٨١ |
| | الذى خلقك فسواك فعدلك . فى أى صورة ماشاء ركبك | ٨ ك الانفطار | ٨٢ |
| | سنقرئك فلا تنسى . إلا ما شاء الله إنه يعلم الجهر وما يخفى | ٧ ك الأعلى | ٨٧ |
| شِئْتَ: | قال رب لو شئت أهلكتهم من قبل وإياى... ... | ١٥٥ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | قال لو شئت لاتخذت عليه أجرا ... ... ... ... | ٧٧ ك الكهف | ١٨ |
| | فإذا استأذنوك لبعض شأنهم فأذن لمن شئت منهم | ٦٢ م النور | ٢٤ |
| شِئْتُمْ: | وإذ قلنا ادخلوا هذه القرية فكلوا منها حيث شئتم رغدا | ٥٨ م البقرة | ٢ |
| (٥) | نساؤكم حرث لكم فأتوا حرثكم أنى شئتم ... ... ... | ٢٢٣م « | ٢ |
| | وإذ قيل لهم اسكنوا هذه القرية وكلوا منها حيث شئتم | ١٦١ك الأعراف | ٧ |
| | فاعبدوا ما شئتم من دونه ... ... ... ... ... | ١٥ ك الزمر | ٣٩ |
| | اعملوا ما شئتم إنه بما تعملون بصير ... ... ... | ٤٠ ك فصلت | ٤١ |
| شِئْتُمَا: | اسكن أنت وزوجك الجنة وكلا منها رغدا حيث شئتما | ٣٥ م البقرة | ٢ |
| (٢) | ويا آدم اسكن أنت وزوجك الجنة فكلا من حيث شئتما | ١٩ ك الأعراف | ٧ |
| شِئْنَا: | ولو شئنا لرفعناه بها ولكنه أخلد إلى الأرض واتبع هواه | ١٧٦ك « | ٧ |
| (٥) | ولئن شئنا لنذهبن بالذى أوحينا إليك ... ... ... | ٨٦ ك الإسراء | ١٧ |
| | ولو شئنا لبعثنا فى كل قرية نذيرا ... ... ... ... | ٥١ ك الفرقان | ٢٥ |
| | ولو شئنا لآتينا كل نفس هداها ... ... ... ... | ١٣ ك السجدة | ٣٢ |
| | وإذا شئنا بدلنا أمثالهم تبديلا ... ... ... ... ... | ٢٨ م الإنسان | ٧٦ |
| أَشَاءُ: | قال عذابى أصيب به من أشاء ورحمتى وسعت كل شىء | ١٥٦ك الأعراف | ٧ |
| تَشَاءُ: | قل اللهم مالك الملك تؤتى الملك من تشاء ... ... | ٢٦ م آل عمران | ٣ |
| (٩) | وتنزع الملك ممن تشاء ... ... ... ... ... ... | ٢٦ م « | ٣ |
| | وتعز من تشاء ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦ م « | ٣ |
| | وتذل من تشاء بيدك الخير إنك على كل شىء قدير ... | ٢٦ م « | ٣ |
| | وترزق من تشاء بغير حساب ... ... ... ... ... | ٢٧ م « | ٣ |
| | إن هى إلا فتنتك تضل بها من تشاء ... ... ... ... | ١٥٥ك الأعراف | ٧ |
| | وتهدى من تشاء ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٥ك « | ٧ |
| | ترجى من تشاء منهن ... ... ... ... ... ... | ٥١ م الأحزاب | ٣٣ |
| | وتؤوى إليك من تشاء ... ... ... ... ... ... | ٥١ م « | ٣٣ |
| تَشَاءُونَ: | وما تشاءون إلا أن يشاء الله ... ... ... ... | ٣٠ م الإنسان | ٧٦ |
| (٢) | وما تشاءون إلا أن يشاء الله رب العالمين ... ... | ٢٩ ك التكوير | ٨١ |
| نَشَاءُ: | نرفع درجات من نشاء إن ربك حكيم عليم ... ... | ٨٣ ك الأنعام | ٦ |
| (١٩) | وقالوا هذه أنعام وحرث حجر لا يطعمها إلا من نشاء بزعمهم | ١٣٨ك « | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| نَشَاءُ: | أن لو نشاء أصبناهم بذنوبهم ... ... ... ... ... | ١٠٠ك الأعراف | ٧ |
| | وإذا تتلى عليهم آياتنا قالوا قد سمعنا لو نشاء لقلنا مثل هذا | ٣١ ك الأنفال | ٨ |
| | أصلاتك تأمرك أن نترك ما يعبد آباؤنا أو أن نفعل | | |
| | فى أموالنا ما نشاء ... ... ... ... ... ... | ٨٧ ك هود | ١١ |
| | نصيب برحمتنا من نشاء ولا نضيع أجر المحسنين... ... | ٥٦ ك يوسف | ١٢ |
| | نرفع درجات من نشاء وفوق كل ذى علم عليم ... ... | ٧٦ ك « | ١٢ |
| | جاءهم نصرنا فنجى من نشاء ولا يرد بأسنا عن القوم المجرمين | ١١٠ك « | ١٢ |
| | من كان يريد العاجلة عجلنا له فيها ما نشاء لمن نريد | ١٨ ك الإسراء | ١٧ |
| | ثم صدقناهم الوعد فأنجيناهم ومن نشاء وأهلكنا المسرفين | ٩ ك الأنبياء | ٢١ |
| | ونقر فى الأرحام ما نشاء إلى أجل مسمى ... ... | ٥ م الحج | ٢٢ |
| | ولو نشاء لطمسنا على أعينهم فاستبقوا الصراط ... | ٦٦ ك يس | ٣٦ |
| | ولو نشاء لمسخناهم على مكانتهم فما استطاعوا مضيا | ٦٧ ك « | ٣٦ |
| | وأورثنا الأرض نتبوأ من الجنة حيث نشاء ... ... | ٧٤ ك الزمر | ٣٩ |
| | ولكن جعلناه نورا نهدى به من نشاء من عبادنا ... | ٥٢ ك الشورى | ٤٢ |
| | ولو نشاء لجعلنا منكم ملائكة فى الأرض يخلفون ... | ٦٠ ك الزخرف | ٤٣ |
| | ولو نشاء لأريناكهم فلعرفتهم بسيماهم ... ... ... | ٣٠ م محمد | ٤٧ |
| | لو نشاء لجعلناه حطاما فظلتم تفكهون ... ... ... | ٦٥ ك الواقعة | ٥٦ |
| | لو نشاء جعلناه أجاجا فلولا تشكرون ... ... ... | ٧٠ ك « | ٥٦ |
| نَشَأْ: | إن نشأ ننزل عليهم من السماء آية ... ... ... ... | ٤ ك الشعراء | ٢٦ |
| (٣) | إن نشأ نخسف بهم الأرض... ... ... ... ... ... | ٩ ك سبأ | ٣٤ |
| | وإن نشأ نغرقهم فلا صريخ لهم ولا هم ينقذون ... | ٤٣ ك يس | ٣٦ |
| يَشَاءُ: | أن ينزل الله من فضله على من يشاء من عباده ... | ٩٠ م البقرة | ٢ |
| (١١٦) | والله يختص برحمته من يشاء والله ذو الفضل العظيم | ١٠٥م « | ٢ |
| | قل لله المشرق والمغرب يهدى من يشاء إلى صراط مستقيم | ١٤٢م « | ٢ |
| | والله يرزق من يشاء بغير حساب ... ... ... ... | ٢١٢م « | ٢ |
| | والله يهدى من يشاء إلى صراط مستقيم ... ... ... | ٢١٣م « | ٢ |
| | والله يؤتى ملكه من يشاء والله واسع عليم... ... ... | ٢٤٧م « | ٢ |
| | وآتاه الله الملك والحكمة وعلمه مما يشاء... ... ... | ٢٥١م « | ٢ |
| | والله يضاعف لمن يشاء والله واسع عليم ... ... ... | ٢٦١م « | ٢ |
| | يؤتى الحكمة من يشاء ... ... ... ... ... ... | ٢٦٩م « | ٢ |
| | ليس عليك هداهم ولكن الله يهدى من يشاء ... ... | ٢٧٢م « | ٢ |
| | فيغفر لمن يشاء... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨٤م « | ٢ |
| | ويعذب من يشاء ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨٤م « | ٢ |
| | هو الذى يصوركم فى الأرحام كيف يشاء... ... ... | ٦ م آل عمران | ٣ |
| | والله يؤيد بنصره من يشاء إن فى ذلك لعبرة لأولى الأبصار | ١٣ م « | ٣ |
| | قال هو من عند الله إن الله يرزق من يشاء بغير حساب | ٣٧ م « | ٣ |
| | وقد بلغنى الكبر وامرأتى عاقر قال كذلك الله يفعل ما يشاء | ٤٠ م « | ٣ |
| | قال كذلك الله يخلق ما يشاء ... ... ... ... ... | ٤٧ م « | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَشَاءُ | قل إن الفضل بيد الله يؤتيه من يشاء ... ... ... | ٧٣ | م آل عمران | ٣ |
| | يختص برحمته من يشاء والله ذو الفضل العظيم ... ... | ٧٤ | م « | ٣ |
| | ولله ما فى السموات وما فى الأرض يغفر لمن يشاء ... | ١٢٩ | م « | ٣ |
| | ويعذب من يشاء والله غفور رحيم ... ... ... ... | ١٢٩ | م « | ٣ |
| | ولكن الله يجتبى من رسله من يشاء ... ... ... ... | ١٧٩ | م « | ٣ |
| | إن الله لا يغفر أن يشرك به ويغفر مادون ذلك لمن يشاء | ٤٨ | م النساء | ٤ |
| | بل الله يزكى من يشاء ولا يظلمون فتيلا ... ... ... | ٤٩ | م « | ٤ |
| | إن الله لا يغفر أن يشرك به ويغفر مادون ذلك لمن يشاء | ١١٦ | م « | ٤ |
| | ولله ملك السموات والأرض وما بينهما يخلق مايشاء | ١٧ | م المائدة | ٥ |
| | بل أنتم بشر ممن خلق يغفر لمن يشاء ... ... ... ... | ١٨ | م « | ٥ |
| | ويعذب من يشاء ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٨ | م « | ٥ |
| | يعذب من يشاء ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | م « | ٥ |
| | ويغفر لمن يشاء والله على كل شىء قدير ... ... ... | ٤٠ | م « | ٥ |
| | ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء والله واسع عليم ... ... | ٥٤ | م « | ٥ |
| | بل يداه مبسوطتان ينفق كيف يشاء ... ... ... ... | ٦٤ | م « | ٥ |
| | ولا أخاف ما تشركون به إلا أن يشاء ربى شيئا ... | ٨٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | ذلك هدى الله يهدى به من يشاء من عباده ... ... | ٨٨ | ك « | ٦ |
| | ما كانوا ليؤمنوا إلا أن يشاء الله ولكن أكثرهم يجهلون | ١١١ | ك « | ٦ |
| | إن يشأ يذهبكم ويستخلف من بعدكم ما يشاء ... ... | ١٣٣ | ك « | ٦ |
| | وما يكون لنا أن نعود فيها إلا أن يشاء الله ربنا | ٨٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | إن الأرض لله يورثها من يشاء من عباده ... ... | ١٢٨ | ك « | ٧ |
| | ويذهب غيظ قلوبهم ويتوب الله على من يشاء ... | ١٥ | م التوبة | ٩ |
| | ثم يتوب الله من بعد ذلك على من يشاء والله غفور رحيم | ٢٧ | م « | ٩ |
| | ويهدى من يشاء إلى صراط مستقيم ... ... ... ... | ٢٥ | ك يونس | ١٠ |
| | يصيب به من يشاء من عباده وهو الغفور الرحيم ... | ١٠٧ | ك « | ١٠ |
| | وكذلك مكنا ليوسف فى الأرض يتبوأ منها حيث يشاء | ٥٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | ما كان ليأخذ أخاه فى دين الملك إلا أن يشاء الله | ٧٦ | ك « | ١٢ |
| | إن ربى لطيف لما يشاء إنه هو العليم الحكيم ... ... | ١٠٠ | ك « | ١٢ |
| | ويرسل الصواعق فيصيب بها من يشاء ... ... ... | ١٣ | م الرعد | ١٣ |
| | الله يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ... ... ... ... | ٢٦ | م « | ١٣ |
| | قل إن الله يضل من يشاء ويهدى إليه من أناب ... | ٢٧ | م « | ١٣ |
| | أفلم ييأس الذين آمنوا أن لو يشاء الله لهدى الناس جميعا | ٣١ | م « | ١٣ |
| | يمحوا الله ما يشاء ويثبت وعنده أم الكتاب ... ... | ٣٩ | م « | ١٣ |
| | وما أرسلنا من رسول إلا بلسان قومه ليبين لهم فيضل الله من يشاء ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | ويهدى من يشاء وهو العزيز الحكيم ... ... ... ... | ٤ | ك « | ١٤ |
| | ولكن الله يمن على من يشاء من عباده ... ... ... | ١١ | ك « | ١٤ |
| | ويضل الله الظالمين ويفعل الله ما يشاء ... ... ... | ٢٧ | ك « | ١٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَشَاءُ | ينزل الملائكة بالروح من أمره على من يشاء من عباده | ٢ | ك النحل | ١٦ |
| | ولو شاء الله لجعلكم أمة واحدة ولكن يضل من يشاء | ٩٣ | ك « | ١٦ |
| | ويهدى من يشاء ولتسئلن عما كنتم تعملون ... ... | ٩٣ | ك « | ١٦ |
| | إن ربك يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ... ... ... | ٣٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ولا تقولن لشىء إنى فاعل ذلك غدا . إلا أن يشاء الله | ٢٤ | ك الكهف | ١٨ |
| | ومن يهن الله فما له من مكرم إن الله يفعل ما يشاء | ١٨ | م الحج | ٢٢ |
| | ما زكى منكم من أحد أبدا ولكن الله يزكى من يشاء | ٢١ | م النور | ٢٤ |
| | يهدى الله لنوره من يشاء ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | م « | ٢٤ |
| | والله يرزق من يشاء بغير حساب ... ... ... ... | ٣٨ | م « | ٢٤ |
| | وينزل من السماء من جبال فيها من برد فيصيب به من يشاء | ٤٣ | م « | ٢٤ |
| | ويصرفه عمن يشاء ... ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | م « | ٢٤ |
| | ومنهم من يمشى على أربع يخلق الله ما يشاء ... ... | ٤٥ | م « | ٢٤ |
| | والله يهدى من يشاء إلى صراط مستقيم ... ... ... | ٤٦ | م « | ٢٤ |
| | إنك لا تهدى من أحببت ولكن الله يهدى من يشاء | ٥٦ | ك القصص | ٢٨ |
| | وربك يخلق ما يشاء ويختار ... ... ... ... ... | ٦٨ | ك « | ٢٨ |
| | ويكأن الله يبسط الرزق لمن يشاء من عباده ويقدر | ٨٢ | ك « | ٢٨ |
| | يعذب من يشاء ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ويرحم من يشاء وإليه تقلبون ... ... ... ... ... | ٢١ | ك « | ٢٩ |
| | الله يبسط الرزق لمن يشاء من عباده ويقدر له ... ... | ٦٢ | ك « | ٢٩ |
| | ينصر الله ينصر من يشاء وهو العزيز الرحيم ... ... | ٥ | ك الروم | ٣٠ |
| | أو لم يروا أن الله يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ... | ٣٧ | ك « | ٣٠ |
| | فتثير سحابا فيبسطه فى السماء كيف يشاء ... ... ... | ٤٨ | ك « | ٣٠ |
| | فإذا أصاب به من يشاء من عباده إذا هم يستبشرون | ٤٨ | ك « | ٣٠ |
| | يخلق ما يشاء وهو العليم القدير ... ... ... ... | ٥٤ | ك « | ٣٠ |
| | يعملون له ما يشاء من محاريب وتماثيل ... ... ... | ١٣ | ك سبأ | ٣٤ |
| | قل إن ربى يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ... ... ... | ٣٦ | ك « | ٣٤ |
| | قل إن ربى يبسط الرزق لمن يشاء من عباده ويقدر له | ٣٩ | ك « | ٣٤ |
| | يزيد فى الخلق ما يشاء إن الله على كل شىء قدير ... | ١ | ك فاطر | ٣٥ |
| | فإن الله يضل من يشاء ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك « | ٣٥ |
| | ويهدى من يشاء فلا تذهب نفسك عليهم حسرات ... | ٨ | ك « | ٣٥ |
| | إن الله يسمع من يشاء وما أنت بمسمع من فى القبور | ٢٢ | ك « | ٣٥ |
| | أنطعم من لو يشاء الله أطعمه إن أنتم إلا فى ضلال مبين | ٤٧ | ك يس | ٣٦ |
| | لو أراد الله أن يتخذ ولدا لاصطفى مما يخلق ما يشاء | ٤ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ذلك هدى الله يهدى به من يشاء ومن يضلل الله فما له من هاد ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك « | ٣٩ |
| | أو لم يعلموا أن الله يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ... | ٥٢ | م « | ٣٩ |
| | يلقى الروح من أمره على من يشاء من عباده لينذر يوم التلاق | ١٥ | ك غافر | ٤٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَشَاءُ: | ولكن يدخل من يشاء فى رحمته ... ... ... ... | ٨ | ك الشورى | ٤٢ |
| | له مقاليد السموات والأرض يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر | ١٢ | ك « | ٤٢ |
| | الله يجتبى إليه من يشاء ويهدى إليه من ينيب ... ... | ١٣ | ك « | ٤٢ |
| | الله لطيف بعباده يرزق من يشاء وهو القوى العزيز | ١٩ | ك « | ٤٢ |
| | ولكن ينزل بقدر ما يشاء ... ... ... ... ... | ٢٧ | م « | ٤٢ |
| | وهو على جمعهم إذا يشاء قدير... ... ... ... | ٢٩ | ك « | ٤٢ |
| | لله ملك السموات والأرض يخلق ما يشاء ... ... | ٤٩ | ك « | ٤٢ |
| | يهب لمن يشاء إناثا ... ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك « | ٤٢ |
| | ويهب لمن يشاء الذكور... ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك « | ٤٢ |
| | أو يزوجهم ذكرانا وإناثا ويجعل من يشاء عقيما ... | ٥٠ | ك « | ٤٢ |
| | أو يرسل رسولا فيوحى بإذنه ما يشاء ... ... ... | ٥١ | ك « | ٤٢ |
| | ولو يشاء الله لانتصر منهم ولكن ليبلوا بعضكم ببعض | ٤ | م محمد | ٤٧ |
| | ولله ملك السموات والأرض يغفر لمن يشاء ... ... | ١٤ | م الفتح | ٤٨ |
| | ويعذب من يشاء وكان الله غفورا رحيما... ... ... | ١٤ | م « | ٤٨ |
| | ليدخل الله فى رحمته من يشاء ... ... ... ... | ٢٥ | م « | ٤٨ |
| | إلا من بعد أن يأذن الله لمن يشاء ويرضى... ... ... | ٢٦ | ك النجم | ٥٣ |
| | ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء والله ذو الفضل العظيم | ٢١ | م الحديد | ٥٧ |
| | وأن الفضل بيد الله يؤتيه من يشاء والله ذو الفضل العظيم | ٢٩ | م « | ٥٧ |
| | ولكن الله يسلط رسله على من يشاء والله على كل شىء قدير | ٦ | م الحشر | ٥٩ |
| | ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء والله ذو الفضل العظيم | ٤ | م الجمعة | ٦٢ |
| | ماذا أراد الله بهذا مثلا كذلك يضل الله من يشاء | ٣١ | ك المدثر | ٧٤ |
| | ويهدى من يشاء وما يعلم جنود ربك إلا هو ... ... | ٣١ | ك « | ٧٤ |
| | وما يذكرون إلا أن يشاء الله هو أهل التقوى وأهل المغفرة | ٥٦ | ك « | ٧٤ |
| | وما تشاءون إلا أن يشاء الله إن الله كان عليما حكيما | ٣٠ | م الإنسان | ٧٦ |
| | يدخل من يشاء فى رحمته والظالمين أعد لهم عذابا أليما | ٣١ | م « | ٧٦ |
| | وما تشاءون إلا أن يشاء الله رب العالمين ... ... ... | ٢٩ | ك التكوير | ٨١ |
| يَشَاءُونَ: | تجرى من تحتها الأنهار لهم فيها ما يشاءون... ... | ٣١ | ك النحل | ١٦ |
| (٥) | لهم فيها ما يشاءون خالدين كان على ربك وعدا مسئولا | ١٦ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | لهم ما يشاءون عند ربهم ذلك جزاء المحسنين ... ... | ٣٤ | ك الزمر | ٣٩ |
| | لهم ما يشاءون عند ربهم ذلك هو الفضل الكبير ... | ٢٢ | ك الشورى | ٤٢ |
| | لهم ما يشاءون فيها ولدينا مزيد ... ... ... ... | ٣٥ | ك ق | ٥٠ |
| يَشَأْ: | إن يشأ يذهبكم أيها الناس ويأت بآخرين ... ... ... | ١٣٣ | م النساء | ٤ |
| (١٠) | والذين كذبوا بآياتنا صم وبكم فى الظلمات من يشإ الله يضلله | ٣٩ | ك الأنعام | ٦ |
| | ومن يشأ يجعله على صراط مستقيم ... ... ... ... | ٣٩ | ك « | ٦ |
| | إن يشأ يذهبكم ويستخلف من بعدكم ما يشاء ... ... | ١٣٣ | ك « | ٦ |
| | إن يشأ يذهبكم ويأت بخلق جديد ... ... ... ... | ١٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | ربكم أعلم بكم إن يشأ يرحمكم... ... ... ... ... | ٥٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| يَشَأْ: | أو إن يشأ يعذبكم وما أرسلناك عليهم وكيلا ... ... | ٥٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| | إن يشأ يذهبكم ويأت بخلق جديد ... ... ... ... | ١٦ | ك فاطر | ٣٥ |
| | فإن يشإ الله يختم على قلبك ويمح الله الباطل ويحق الحق بكلماته ... ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | م الشورى | ٤٢ |
| | إن يشأ يسكن الريح فيظللن رواكد على ظهره ... ... | ٣٣ | ك « | ٤٢ |
| شَيْءٍ: | إن الله على كل شىء قدير... ... ... ... ... | ٢٠ | م البقرة | ٢ |
| (٢٠٢) | فسواهن سبع سموات وهو بكل شىء عليم... ... ... | ٢٩ | م « | ٢ |
| | ألم تعلم أن الله على كل شىء قدير ... ... ... ... | ١٠٦ | م « | ٢ |
| | فاعفوا واصفحوا حتى يأتى الله بأمره إن الله على كل شىء قدير... ... ... ... ... ... ... | ١٠٩ | م « | ٢ |
| | وقالت اليهود ليست النصارى على شىء ... ... ... | ١١٣ | م « | ٢ |
| | وقالت النصارى ليست اليهود على شىء وهم يتلون الكتاب | ١١٣ | م « | ٢ |
| | أين ما تكونوا يأت بكم الله جميعا إن الله على كل شىء قدير | ١٤٨ | م « | ٢ |
| | ولنبلونكم بشىء من الخوف والجوع ونقص من الأموال | ١٥٥ | م « | ٢ |
| | فمن عفى له من أخيه شىء فاتباع بالمعروف ... ... | ١٧٨ | م « | ٢ |
| | واتقوا الله واعلموا أن الله بكل شىء عليم ... ... | ٢٣١ | م « | ٢ |
| | ولا يحيطون بشىء من علمه إلا بما شاء ... ... ... | ٢٥٥ | م « | ٢ |
| | فلما تبين له قال أعلم أن الله على كل شىء قدير... ... | ٢٥٩ | م « | ٢ |
| | لا يقدرون على شىء مما كسبوا والله لا يهدى القوم الكافرين | ٢٦٤ | م « | ٢ |
| | واتقوا الله ويعلمكم الله والله بكل شىء عليم ... ... | ٢٨٢ | م « | ٢ |
| | فيغفر لمن يشاء ويعذب من يشاء والله على كل شىء قدير | ٢٨٤ | م « | ٢ |
| | إن الله لا يخفى عليه شىء فى الأرض ولا فى السماء ... | ٥ | م آل عمران | ٣ |
| | بيدك الخير إنك على كل شىء قدير ... ... ... ... | ٢٦ | م « | ٣ |
| | ومن يفعل ذلك فليس من الله فى شىء إلا أن تتقوا منهم تقاة | ٢٨ | م « | ٣ |
| | ويعلم ما فى السموات وما فى الأرض والله على كل شىء قدير | ٢٩ | م « | ٣ |
| | وما تنفقوا من شىء فإن الله به عليم ... ... ... ... | ٩٢ | م « | ٣ |
| | ليس لك من الأمر شىء أو يتوب عليهم أو يعذبهم | ١٢٨ | م « | ٣ |
| | يقولون هل لنا من الأمر من شىء قل إن الأمر كله لله | ١٥٤ | م « | ٣ |
| | يقولون لو كان لنا من الأمر شىء ما قتلنا ههنا ... | ١٥٤ | م « | ٣ |
| | قل هو من عند أنفسكم إن الله على كل شىء قدير ... | ١٦٥ | م « | ٣ |
| | ولله ملك السموات والأرض والله على كل شىء قدير | ١٨٩ | م « | ٣ |
| | فإن طبن لكم عن شىء منه نفسا فكلوه هنيئا مريئا.... | ٤ | م النساء | ٤ |
| | وسئلوا الله من فضله إن الله كان بكل شىء عليما ... | ٣٢ | م « | ٤ |
| | فآتوهم نصيبهم إن الله كان على كل شىء شهيدا ... | ٣٣ | م « | ٤ |
| | فإن تنازعتم فى شىء فردوه إلى الله والرسول ... ... | ٥٩ | م « | ٤ |
| | وكان الله على كل شىء مقيتا ... ... ... ... ... | ٨٥ | م « | ٤ |
| | إن الله كان على كل شىء حسيبا ... ... ... ... ... | ٨٦ | م « | ٤ |
| | وما يضلون إلا أنفسهم وما يضرونك من شىء... ... | ١١٣ | م « | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| شَيْءٌ: | وكان الله بكل شيء محيطا ... ... ... ... ... | ١٢٦ م | النساء | ٤ |
| | يبين الله لكم أن تضلوا والله بكل شيء عليم ... ... | ١٧٦ م | « | ٤ |
| | يخلق ما يشاء والله على كل شيء قدير ... ... ... ... | ١٧ م | المائدة | ٥ |
| | فقد جاءكم بشير ونذير والله على كل شيء قدير ... ... | ١٩ م | « | ٥ |
| | يعذب من يشاء ويغفر لمن يشاء والله على كل شيء قدير | ٤٠ م | « | ٥ |
| | لستم على شيء حتى تقيموا التوراة والإنجيل ... ... | ٦٨ م | « | ٥ |
| | ليبلونكم الله بشيء من الصيد تناله أيديكم ورماحكم | ٩٤ م | « | ٥ |
| | ذلك لتعلموا أن الله يعلم ما في السموات وما في الأرض | | | |
| | وأن الله بكل شيء عليم ... ... ... ... ... ... | ٩٧ م | « | ٥ |
| | وأنت على كل شيء شهيد ... ... ... ... ... ... | ١١٧ م | « | ٥ |
| | لله ملك السموات والأرض وما فيهن وهو على كل شيء قدير | ١٢٠ م | « | ٥ |
| | وإن يمسسك بخير فهو على كل شيء قدير ... ... ... | ١٧ ك | الأنعام | ٦ |
| | قل أي شيء أكبر شهادة قل الله شهيد بيني وبينكم... | ١٩ ك | « | ٦ |
| | ما فرطنا في الكتاب من شيء ثم إلى ربهم يحشرون ... | ٣٨ ك | « | ٦ |
| | فلما نسوا ما ذكروا به فتحنا عليهم أبواب كل شيء... | ٤٤ ك | « | ٦ |
| | ما عليك من حسابهم من شيء ... ... ... ... ... | ٥٢ ك | « | ٦ |
| | وما من حسابك عليهم من شيء فتطردهم فتكون من الظالمين | ٥٢ ك | « | ٦ |
| | وما على الذين يتقون من حسابهم من شيء ... ... | ٦٩ ك | « | ٦ |
| | وسع ربي كل شيء علما أفلا تتذكرون... ... ... ... | ٨٠ ك | « | ٦ |
| | وما قدروا الله حق قدره إذ قالوا ما أنزل الله على | | | |
| | بشر من شيء ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩١ م | « | ٦ |
| | ومن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو قال أوحي إلي | | | |
| | ولم يوح إليه شيء ... ... ... ... ... ... ... | ٩٣ م | « | ٦ |
| | وهو الذي أنزل من السماء ماء فأخرجنا به نبات كل شيء | ٩٩ ك | « | ٦ |
| | أنى يكون له ولد ولم تكن له صاحبة وخلق كل شيء | ١٠١ ك | « | ٦ |
| | وهو بكل شيء عليم ... ... ... ... ... ... ... | ١٠١ ك | « | ٦ |
| | ذلكم الله ربكم لا إله إلا هو خالق كل شيء فاعبدوه | ١٠٢ ك | « | ٦ |
| | وهو على كل شيء وكيل ... ... ... ... ... ... | ١٠٢ ك | « | ٦ |
| | وحشرنا عليهم كل شيء قُبُلا... ... ... ... ... | ١١١ ك | « | ٦ |
| | لو شاء الله ما أشركنا ولا آباؤنا ولا حرمنا من شيء... | ١٤٨ ك | « | ٦ |
| | ثم آتينا موسى الكتاب تماما على الذي أحسن وتفصيلا | | | |
| | لكل شيء... ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٤ ك | « | ٦ |
| | إن الذين فرقوا دينهم وكانوا شيعا لست منهم في شيء | ١٥٩ ك | « | ٦ |
| | قل أغير الله أبغي ربا وهو رب كل شيء ... ... ... | ١٦٤ ك | « | ٦ |
| | وسع ربنا كل شيء علما على الله توكلنا ... ... ... | ٨٩ ك | الأعراف | ٧ |
| | وكتبنا له في الألواح من كل شيء ... ... ... ... | ١٤٥ ك | « | ٧ |
| | موعظة وتفصيلا لكل شيء ... ... ... ... ... ... | ١٤٥ ك | « | ٧ |
| | قال عذابي أصيب به من أشاء ورحمتي وسعت كل شيء | ١٥٦ ك | « | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| شَيْءٌ: | أو لم يتفكروا في ملكوت السموات والأرض وما خلق | | | |
| | الله من شيء ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٨٥ ك | الأعراف | ٧ |
| | واعلموا أنما غنمتم من شيء فأن لله خمسه ... ... | ٤١ م | الأنفال | ٨ |
| | وما أنزلنا على عبدنا يوم الفرقان يوم التقى الجمعان | | | |
| | والله على كل شيء قدير... ... ... ... ... ... | ٤١ م | « | ٨ |
| | وما تنفقوا من شيء في سبيل الله يوف إليكم ... ... | ٦٠ م | « | ٨ |
| | مالكم من ولايتهم من شيء حتى يهاجروا ... ... ... | ٧٢ م | « | ٨ |
| | وأولوا الأرحام بعضهم أولى ببعض في كتاب الله إن | | | |
| | الله بكل شيء عليم ... ... ... ... ... ... ... | ٧٥ م | « | ٨ |
| | ويستبدل قوما غيركم ولا تضروه شيئا والله على كل شيء قدير | ٣٩ م | التوبة | ٩ |
| | حتى يبين لهم ما يتقون إن الله بكل شيء عليم... ... | ١١٥ م | « | ٩ |
| | إلى الله مرجعكم وهو على كل شيء قدير ... ... ... | ٤ ك | هود | ١١ |
| | إنما أنت نذير والله على كل شيء وكيل ... ... ... | ١٢ م | « | ١١ |
| | ولا تضرونه شيئا إن ربي على كل شيء حفيظ... ... | ٥٧ ك | « | ١١ |
| | أألد وأنا عجوز وهذا بعلي شيخا إن هذا لشيء عجيب | ٧٢ ك | « | ١١ |
| | فما أغنت عنهم آلهتهم التي يدعون من دون الله من شيء | ١٠١ ك | « | ١١ |
| | ما كان لنا أن نشرك بالله من شيء ... ... ... ... | ٣٨ ك | يوسف | ١٢ |
| | وما أغنى عنكم من الله من شيء إن الحكم إلا لله ... | ٦٧ ك | « | ١٢ |
| | ما كان يغني عنهم من الله من شيء ... ... ... ... | ٦٨ ك | « | ١٢ |
| | ولكن تصديق الذي بين يديه وتفصيل كل شيء... | ١١١ ك | « | ١٢ |
| | وكل شيء عنده بمقدار ... ... ... ... ... ... ... | ٨ م | الرعد | ١٣ |
| | والذين يدعون من دونه لا يستجيبون لهم بشيء ... | ١٤ م | « | ١٣ |
| | قل الله خالق كل شيء وهو الواحد القهار ... ... ... | ١٦ م | « | ١٣ |
| | لا يقدرون مما كسبوا على شيء ذلك هو الضلال البعيد | ١٨ ك | إبراهيم | ١٤ |
| | فهل أنتم مغنون عنا من عذاب الله من شيء... ... | ٢١ ك | « | ١٤ |
| | وما يخفى على الله من شيء في الأرض ولا في السماء | ٣٨ ك | « | ١٤ |
| | وأنبتنا فيها من كل شيء موزون ... ... ... ... ... | ١٩ ك | الحجر | ١٥ |
| | وإن من شيء إلا عندنا خزائنه وما ننزله إلا بقدر معلوم | ٢١ ك | « | ١٥ |
| | لو شاء الله ما عبدنا من دونه من شيء نحن ولا آباؤنا | ٣٥ ك | النحل | ١٦ |
| | ولا حرمنا من دونه من شيء ... ... ... ... ... | ٣٥ ك | « | ١٦ |
| | إنما قولنا لشيء إذا أردناه أن نقول له كن فيكون | ٤٠ ك | « | ١٦ |
| | أولم يروا إلى ما خلق الله من شيء يتفيؤا ظلاله ... | ٤٨ ك | « | ١٦ |
| | ضرب الله مثلا عبدا مملوكا لا يقدر على شيء... ... | ٧٥ ك | « | ١٦ |
| | وضرب الله مثلا رجلين أحدهما أبكم لا يقدر على شيء | ٧٦ ك | « | ١٦ |
| | أو هو أقرب إن الله على كل شيء قدير ... ... ... | ٧٧ ك | « | ١٦ |
| | ونزلنا عليك الكتاب تبيانا لكل شيء وهدى ورحمة | ٨٩ ك | « | ١٦ |
| | ولتعلموا عدد السنين والحساب وكل شيء فصلناه تفصيلا | ١٢ ك | الإسراء | ١٧ |
| | وإن من شيء إلا يسبح بحمده ولكن لا تفقهون تسبيحهم | ٤٤ ك | « | ١٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| شَيْءٍ | ولا تقولن لشيء إني فاعل ذلك غدا . إلا أن يشاء الله | ٢٣ | ك الكهف | ١٨ |
| | وكان الله على كل شيء مقتدرا ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك « | ١٨ |
| | وكان الإنسان أكثر شيء جدلا ... ... ... ... ... | ٥٤ | ك « | ١٨ |
| | قال فإن اتبعتني فلا تسئلني عن شيء حتى أحدث لك منه ذكرا | ٧٠ | ك « | ١٨ |
| | قال إن سألتك عن شيء بعدها فلا تصاحبني ... ... | ٧٦ | ك « | ١٨ |
| | إنا مكنا له في الأرض وآتيناه من كل شيء سببا ... | ٨٤ | م « | ١٨ |
| | قال ربنا الذي أعطى كل شيء خلقه ثم هدى ... ... | ٥٠ | ك طـه | ٢٠ |
| | إنما إلهكم الله الذي لا إله إلا هو وسع كل شيء علما | ٩٨ | ك « | ٢٠ |
| | وجعلنا من الماء كل شيء حي أفلا يؤمنون ... ... | ٣٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وكنا بكل شيء عالمين ... ... ... ... ... ... | ٨١ | ك « | ٢١ |
| | يأيها الناس اتقوا ربكم إن زلزلة الساعة شيء عظيم ... | ١ | م الحـج | ٢٢ |
| | ذلك بأن الله هو الحق وأنه يحيي الموتى وأنه على كل شيء قدير | ٦ | م « | ٢٢ |
| | إن الله يفصل بينهم يوم القيامة إن الله على كل شيء شهيد | ١٧ | م « | ٢٢ |
| | قل من بيده ملكوت كل شيء وهو يجير ولا يجار عليه | ٨٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ويضرب الله الأمثال للناس والله بكل شيء عليم ... | ٣٥ | م النـور | ٢٤ |
| | يخلق الله ما يشاء إن الله على كل شيء قدير ... ... | ٤٥ | م « | ٢٤ |
| | ويوم يرجعون إليه فينبئهم بما عملوا والله بكل شيء عليم | ٦٤ | م « | ٢٤ |
| | ولم يكن له شريك في الملك وخلق كل شيء فقدره تقديرا | ٢ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| | قال أو لو جئتك بشيء مبين ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| | وقال يأيها الناس علمنا منطق الطير وأوتينا من كل شيء | ١٦ | ك النمـل | ٢٧ |
| | إني وجدت امرأة تملكهم وأوتيت من كل شيء ... | ٢٣ | ك « | ٢٧ |
| | صنع الله الذي أتقن كل شيء إنه خبير بما تفعلون ... | ٨٨ | ك « | ٢٧ |
| | إنما أمرت أن أعبد رب هذه البلدة الذي حرمها وله كل شيء | ٩١ | ك « | ٢٧ |
| | أو لم نمكن لهم حرما آمنا يجبى إليه ثمرات كل شيء ... | ٥٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | وما أوتيتم من شيء فمتاع الحياة الدنيا وزينتها ... | ٦٠ | ك « | ٢٨ |
| | لا إله إلا هو كل شيء هالك إلا وجهه ... ... ... | ٨٨ | ك « | ٢٨ |
| | وما هم بحاملين من خطاياهم من شيء ... ... ... | ١٢ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ثم الله ينشئ النشأة الآخرة إن الله على كل شيء قدير | ٢٠ | ك « | ٢٩ |
| | إن الله يعلم ما يدعون من دونه من شيء ... ... ... | ٤٢ | ك « | ٢٩ |
| | الله يبسط الرزق لمن يشاء من عباده ويقدر له إن الله بكل شيء عليم ... ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك « | ٢٩ |
| | هل من شركائكم من يفعل من ذلكم من شيء ... ... | ٤٠ | ك الـروم | ٣٠ |
| | إن ذلك لمحيي الموتى وهو على كل شيء قدير ... ... | ٥٠ | ك « | ٣٠ |
| | الذي أحسن كل شيء خلقه وبدأ خلق الإنسان من طين | ٧ | ك السـجدة | ٣٢ |
| | وكان الله على كل شيء قديرا ... ... ... ... ... | ٢٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ولكن رسول الله وخاتم النبيين وكان الله بكل شيء عليما | ٤٠ | م « | ٣٣ |
| | إلا ما ملكت يمينك وكان الله على كل شيء رقيبا ... | ٥٢ | م « | ٣٣ |
| | إن تبدوا شيئا أو تخفوه فإن الله كان بكل شيء عليما | ٥٤ | م « | ٣٣ |
| شَيْءٍ | واتقين الله إن الله كان على كل شيء شهيدا ... ... | ٥٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وأثل وشيء من سدر قليل ... ... ... ... ... ... | ١٦ | ك سـبأ | ٣٤ |
| | وربك على كل شيء حفيظ ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك « | ٣٤ |
| | وما أنفقتم من شيء فهو يخلفه وهو خير الرازقين ... | ٣٩ | ك « | ٣٤ |
| | إن أجري إلا على الله وهو على كل شيء شهيد ... ... | ٤٧ | ك « | ٣٤ |
| | يزيد في الخلق ما يشاء إن الله على كل شيء قدير ... | ١ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | وإن تدع مثقلة إلى حملها لا يحمل منه شيء ولو كان ذا قربى | ١٨ | ك « | ٣٥ |
| | وما كان الله ليعجزه من شيء في السموات ولا في الأرض | ٤٤ | ك « | ٣٥ |
| | وكل شيء أحصيناه في إمام مبين... ... ... ... ... | ١٢ | ك يـس | ٣٦ |
| | وما أنزل الرحمن من شيء إن أنتم إلا تكذبون ... ... | ١٥ | ك « | ٣٦ |
| | فسبحان الذي بيده ملكوت كل شيء وإليه ترجعون | ٨٣ | ك « | ٣٦ |
| | أجعل الآلهة إلها واحدا إن هذا لشيء عجاب ... ... | ٥ | ك صـ | ٣٨ |
| | أن امشوا واصبروا على آلهتكم إن هذا لشيء يراد ... | ٦ | ك « | ٣٨ |
| | الله خالق كل شيء ... ... ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وهو على كل شيء وكيل ... ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك « | ٣٩ |
| | ربنا وسعت كل شيء رحمة وعلما ... ... ... ... ... | ٧ | ك غافـر | ٤٠ |
| | يوم هم بارزون لا يخفى على الله منهم شيء ... ... | ١٦ | ك « | ٤٠ |
| | والله يقضي بالحق والذين يدعون من دونه لا يقضون بشيء | ٢٠ | ك « | ٤٠ |
| | ذلكم الله ربكم خالق كل شيء لا إله إلا هو ... ... | ٦٢ | ك « | ٤٠ |
| | قالوا أنطقنا الله الذي أنطق كل شيء ... ... ... | ٢١ | ك فصـلت | ٤١ |
| | إن الذي أحياها لمحيي الموتى إنه على كل شيء قدير... | ٣٩ | ك « | ٤١ |
| | أو لم يكف بربك أنه على كل شيء شهيد ... ... ... | ٥٣ | ك « | ٤١ |
| | ألا إنهم في مرية من لقاء ربهم ألا إنه بكل شيء محيط | ٥٤ | ك « | ٤١ |
| | فالله هو الولي وهو يحيي الموتى وهو على كل شيء قدير | ٩ | ك الشورى | ٤٢ |
| | وما اختلفتم فيه من شيء فحكمه إلى الله ... ... ... | ١٠ | ك « | ٤٢ |
| | ليس كمثله شيء وهو السميع العليم... ... ... ... | ١١ | ك « | ٤٢ |
| | يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر إنه بكل شيء عليم ... | ١٢ | ك « | ٤٢ |
| | فما أوتيتم من شيء فمتاع الحياة الدنيا ... ... ... | ٣٦ | ك « | ٤٢ |
| | تدمر كل شيء بأمر ربها فأصبحوا لا يرى إلا مساكنهم | ٢٥ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | فما أغنى عنهم سمعهم ولا أبصارهم ولا أفئدتهم من شيء | ٢٦ | ك « | ٤٦ |
| | بلى إنه على كل شيء قدير ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك « | ٤٦ |
| | وكان الله على كل شيء قديرا ... ... ... ... ... | ٢١ | م الفتـح | ٤٨ |
| | وكانوا أحق بها وأهلها وكان الله بكل شيء عليما ... | ٢٦ | م « | ٤٨ |
| | والله يعلم ما في السموات وما في الأرض والله بكل شيء عليم | ١٦ | م الحجرات | ٤٩ |
| | بل عجبوا أن جاءهم منذر منهم فقال الكافرون هذا شيء عجيب... ... ... ... ... ... ... | ٢ | ك قـ | ٥٠ |
| | ما تذر من شيء أتت عليه إلا جعلته كالرميم ... ... | ٤٢ | ك الذاريات | ٥١ |
| | ومن كل شيء خلقنا زوجين لعلكم تذكرون ... ... | ٤٩ | ك « | ٥١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| شَيْءٌ: | ألحقنا بهم ذريتهم وما ألتناهم من عملهم من شيء... | ٢١ | ك الطور | ٥٢ |
| | أم خلقوا من غير شيء أم هم الخالقون ... ... ... | ٣٥ | ك « | ٥٢ |
| | فتولّ عنهم يوم يدع الداع إلى شيء نكر ... ... | ٦ | ك القمر | ٥٤ |
| | إنا كل شيء خلقناه بقدر ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك « | ٥٤ |
| | وكل شيء فعلوه في الزبر ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك « | ٥٤ |
| | يحيي ويميت وهو على كل شيء قدير ... ... ... | ٢ | م الحديد | ٥٧ |
| | هو الأول والآخر والظاهر والباطن وهو بكل شيء عليم | ٣ | م « | ٥٧ |
| | لئلا يعلم أهل الكتاب ألا يقدرون على شيء من فضل الله | ٢٩ | م « | ٥٧ |
| | أحصاه الله ونسوه والله على كل شيء شهيد ... ... | ٦ | م المجادلة | ٥٨ |
| | ثم ينبئهم بما عملوا يوم القيامة إن الله بكل شيء عليم | ٧ | م « | ٥٨ |
| | فيحلفون له كما يحلفون لكم ويحسبون أنهم على شيء | ١٨ | م « | ٥٨ |
| | ولكن الله يسلط رسله على من يشاء والله على كل شيء قدير | ٦ | م الحشر | ٥٩ |
| | لأستغفرن لك وما أملك لك من الله من شيء ... ... | ٤ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | وإن فاتكم شيء من أزواجكم إلى الكفار فعاقبتم فآتوا الذين ذهبت أزواجهم مثل ما أنفقوا ... ... | ١١ | م « | ٦٠ |
| | له الملك وله الحمد وهو على كل شيء قدير ... ... | ١ | م التغابن | ٦٤ |
| | ومن يؤمن بالله يهد قلبه والله بكل شيء عليم ... ... | ١١ | م « | ٦٤ |
| | إن الله بالغ أمره قد جعل الله لكل شيء قدرا... | ٣ | م الطلاق | ٦٥ |
| | لتعلموا أن الله على كل شيء قدير ... ... ... | ١٢ | م « | ٦٥ |
| | وأن الله قد أحاط بكل شيء علما ... ... ... | ١٢ | م « | ٦٥ |
| | ربنا أتمم لنا نورنا واغفر لنا إنك على كل شيء قدير | ٨ | م التحريم | ٦٦ |
| | تبارك الذي بيده الملك وهو على كل شيء قدير... ... | ١ | ك الملك | ٦٧ |
| | قد جاءنا نذير فكذبنا وقلنا ما نزل الله من شيء... ... | ٩ | ك « | ٦٧ |
| | ما يمسكهن إلا الرحمن إنه بكل شيء بصير ... ... | ١٩ | ك « | ٦٧ |
| | وأحاط بما لديهم وأحصى كل شيء عددا ... ... | ٢٨ | ك الجن | ٧٢ |
| | وكل شيء أحصيناه كتابا ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك النبأ | ٧٨ |
| | قتل الإنسان ما أكفره . من أي شيء خلقه ... ... | ١٨ | ك عبس | ٨٠ |
| | الذي له ملك السموات والأرض والله على كل شيء شهيد | ٩ | ك البروج | ٨٥ |
| شَيْئًا: | واتقوا يوما لا تجزي نفس عن نفس شيئا ... ... | ٤٨ | م البقرة | ٢ |
| (٧٧) | واتقوا يوما لا تجزي نفس عن نفس شيئا ... ... | ١٢٣م | « | ٢ |
| | أو لو كان آباؤهم لا يعقلون شيئا ولا يهتدون ... ... | ١٧٠م | « | ٢ |
| | وعسى أن تكرهوا شيئا وهو خير لكم ... ... ... | ٢١٦م | « | ٢ |
| | وعسى أن تحبوا شيئا وهو شر لكم ... ... ... | ٢١٦م | « | ٢ |
| | ولا يحل لكم أن تأخذوا مما آتيتموهن شيئا ... ... | ٢٢٩م | « | ٢ |
| | وليملل الذي عليه الحق وليتق الله ربه ولا يبخس منه شيئا | ٢٨٢م | « | ٢ |
| | لن تغني عنهم أموالهم ولا أولادهم من الله شيئا... ... | ١٠ | م آل عمران | ٣ |
| | ألا نعبد إلا الله ولا نشرك به شيئا ... ... ... | ٦٤ | م « | ٣ |
| | لن تغني عنهم أموالهم ولا أولادهم من الله شيئا... ... | ١١٦م | « | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| شَيْئًا: | وإن تصبروا وتتقوا لا يضركم كيدهم شيئا ... ... | ١٢٠م | آل عمران | ٣ |
| | ومن ينقلب على عقبيه فلن يضر الله شيئا ... ... ... | ١٤٤م | « | ٣ |
| | إنهم لن يضروا الله شيئا ... ... ... ... ... | ١٧٦م | « | ٣ |
| | إن الذين اشتروا الكفر بالإيمان لن يضروا الله شيئا | ١٧٧م | « | ٣ |
| | فعسى أن تكرهوا شيئا ويجعل الله فيه خيرا كثيرا | ١٩ | م النساء | ٤ |
| | وآتيتم إحداهن قنطارا فلا تأخذوا منه شيئا ... ... | ٢٠ | م « | ٤ |
| | واعبدوا الله ولا تشركوا به شيئا ... ... ... ... | ٣٦ | م « | ٤ |
| | قل فمن يملك من الله شيئا إن أراد أن يهلك المسيح ابن مريم وأمه ومن في الأرض جميعا ... ... ... | ١٧ | م المائدة | ٥ |
| | ومن يرد الله فتنته فلن تملك له من الله شيئا ... ... | ٤١ | م « | ٥ |
| | وإن تعرض عنهم فلن يضروك شيئا ... ... ... ... | ٤٢ | م « | ٥ |
| | أو لو كان آباؤهم لا يعلمون شيئا ولا يهتدون... ... | ١٠٤م | « | ٥ |
| | ولا أخاف ما تشركون به إلا أن يشاء ربي شيئا ... | ٨٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | ألا تشركوا به شيئا وبالوالدين إحسانا ... ... ... | ١٥١م | « | ٦ |
| | أيشركون ما لا يخلق شيئا وهم يخلقون ... ... ... | ١٩١ك | الأعراف | ٧ |
| | وإن تعودوا نعد ولن تغني عنكم فئتكم شيئا ولو كثرت | ١٩ | م الأنفال | ٨ |
| | إلا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ... | ٤ | م التوبة | ٩ |
| | ويوم حنين إذ أعجبتكم كثرتكم فلم تغن عنكم شيئا ... | ٢٥ | م « | ٩ |
| | ويستبدل قوما غيركم ولا تضروه شيئا ... ... ... | ٣٩ | م « | ٩ |
| | إن الظن لا يغني من الحق شيئا ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك يونس | ١٠ |
| | إن الله لا يظلم الناس شيئا ولكن الناس أنفسهم يظلمون | ٤٤ | ك « | ١٠ |
| | ويستخلف ربي قوما غيركم ولا تضرونه شيئا ... ... | ٥٧ | ك هود | ١١ |
| | والذين يدعون من دون الله لا يخلقون شيئا وهم يخلقون | ٢٠ | ك النحل | ١٦ |
| | ومنكم من يرد إلى أرذل العمر لكي لا يعلم بعد علم شيئا | ٧٠ | ك « | ١٦ |
| | ويعبدون من دون الله ما لا يملك لهم رزقا من السموات والأرض شيئا ولا يستطيعون ... ... ... ... | ٧٣ | ك « | ١٦ |
| | والله أخرجكم من بطون أمهاتكم لا تعلمون شيئا ... | ٧٨ | ك « | ١٦ |
| | ولولا أن ثبتناك لقد كدت تركن إليهم شيئا قليلا ... | ٧٤ | م الإسراء | ١٧ |
| | كلتا الجنتين آتت أكلها ولم تظلم منه شيئا ... ... ... | ٣٣ | ك الكهف | ١٨ |
| | قال أخرقتها لتغرق أهلها لقد جئت شيئا إمرا ... ... | ٧١ | ك « | ١٨ |
| | قال أقتلت نفسا زكية بغير نفس لقد جئت شيئا نكرا | ٧٤ | ك « | ١٨ |
| | قال ربك هو علي هين وقد خلقتك من قبل ولم تك شيئا | ٩ | ك مريم | ١٩ |
| | قالوا يا مريم لقد جئت شيئا فريا... ... ... ... | ٢٧ | ك « | ١٩ |
| | لم تعبد ما لا يسمع ولا يبصر ولا يغني عنك شيئا ... | ٤٢ | ك « | ١٩ |
| | فأولئك يدخلون الجنة ولا يظلمون شيئا ... ... ... | ٦٠ | ك « | ١٩ |
| | أولا يذكر الإنسان أنا خلقناه من قبل ولم يك شيئا | ٦٧ | ك « | ١٩ |
| | لقد جئتم شيئا إدا ... ... ... ... ... ... ... | ٨٩ | ك « | ١٩ |
| | ونضع الموازين القسط ليوم القيامة فلا تظلم نفس شيئا | ٤٧ | ك الأنبياء | ٢١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| شَيْئًا | : قال أفتعبدون من دون الله ما لا ينفعكم شيئا ولا يضركم | ٦٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ومنكم من يرد إلى أرذل العمر لكيلا يعلم من بعد علم شيئا | ٥ | م الحج | ٢٢ |
| | وإذ بوأنا لإبراهيم مكان البيت أن لا تشرك بي شيئا | ٢٦ | م « | ٢٢ |
| | وإن يسلبهم الذباب شيئا لا يستنقذوه منه... ... ... | ٧٣ | م « | ٢٢ |
| | يحسبه الظمآن ماء حتى إذا جاءه لم يجده شيئا ... ... | ٣٩ | م النور | ٢٤ |
| | يعبدونني لا يشركون بي شيئا... ... ... ... ... ... | ٥٥ | م « | ٢٤ |
| | واتخذوا من دونه آلهة لا يخلقون شيئا وهم يخلقون | ٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ولا مولود هو جاز عن والده شيئا ... ... ... ... | ٣٣ | ك لقمان | ٣١ |
| | إن تبدوا شيئا أو تخفوه فإن الله كان بكل شيء عليما | ٥٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | إن يردن الرحمن بضر لا تغن عني شفاعتهم شيئا ... | ٢٣ | ك يس | ٣٦ |
| | فاليوم لا تظلم نفس شيئا ولا تجزون إلا ما كنتم تعملون | ٥٤ | ك « | ٣٦ |
| | إنما أمره إذا أراد شيئا أن يقول له كن فيكون ... | ٨٢ | ك « | ٣٦ |
| | قل أو لو كانوا لا يملكون شيئا ولا يعقلون ... ... | ٤٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| | قالوا ضلوا عنا بل لم نكن ندعوا من قبل شيئا... ... | ٧٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | يوم لا يغني مولى عن مولى شيئا ولا هم ينصرون ... | ٤١ | ك الدخان | ٤٤ |
| | وإذا علم من آياتنا شيئا اتخذها هزوا ... ... ... | ٩ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | من ورائهم جهنم ولا يغني عنهم ما كسبوا شيئا... ... | ١٠ | ك « | ٤٥ |
| | إنهم لن يغنوا عنك من الله شيئا ... ... ... ... | ١٩ | ك « | ٤٥ |
| | قل إن افتريته فلا تملكون لي من الله شيئا ... ... | ٨ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | لن يضروا الله شيئا وسيحبط أعمالهم ... ... ... | ٣٢ | م محمد | ٤٧ |
| | قل فمن يملك لكم من الله شيئا إن أراد بكم ضرا | | | |
| | أو أراد بكم نفعا ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | م الفتح | ٤٨ |
| | وإن تطيعوا الله ورسوله لا يلتكم من أعمالكم شيئا... | ١٤ | م الحجرات | ٤٩ |
| | يوم لا يغني عنهم كيدهم شيئا ولا هم ينصرون ... ... | ٤٦ | ك الطور | ٥٢ |
| | لا تغني شفاعتهم شيئا إلا من بعد أن يأذن الله لمن يشاء | ٢٦ | ك النجم | ٥٣ |
| | وإن الظن لا يغني من الحق شيئا ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٥٣ |
| | وليس بضارهم شيئا إلا بإذن الله ... ... ... ... | ١٠ | م المجادلة | ٥٨ |
| | لن تغني عنهم أموالهم ولا أولادهم من الله شيئا ... | ١٧ | م « | ٥٨ |
| | يبايعنك على أن لا يشركن بالله شيئا ... ... ... | ١٢ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | فلم يغنيا عنهما من الله شيئا وقيل ادخلا النار | | | |
| | مع الداخلين ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | م التحريم | ٦٦ |
| | هل أتى على الإنسان حين من الدهر لم يكن شيئا مذكورا | ١ | م الإنسان | ٧٦ |
| | يوم لا تملك نفس لنفس شيئا والأمر يومئذ لله ... | ١٩ | ك الانفطار | ٨٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَشْيَاءَ | : يا أيها الذين آمنوا لا تسئلوا عن أشياء إن تبد لكم تسؤكم | ١٠١ | م المائدة | ٥ |
| أَشْيَاءَهُمْ | : فأوفوا الكيل والميزان ولا تبخسوا الناس أشياءهم | ٨٥ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | ولا تبخسوا الناس أشياءهم ولا تعثوا في الأرض مفسدين | ٨٥ | ك هود | ١١ |
| | ولا تبخسوا الناس أشياءهم ... ... ... ... ... | ١٨٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| شَيْبًا | : قال رب إني وهن العظم مني واشتعل الرأس شيبا ... | ٤ | ك مريم | ١٩ |
| شِيبًا | . فكيف تتقون إن كفرتم يوما يجعل الولدان شيبا | ١٧ | ك المزمل | ٧٣ |
| وَشَيْبَةً | : ثم جعل من بعد قوة ضعفا وشيبة... ... ... ... | ٥٤ | ك الروم | ٣٠ |
| | ✦✦✦ | | | |
| شَيْخٌ | : قالتا لا نسقي حتى يصدر الرعاء وأبونا شيخ كبير ... | ٢٣ | ك القصص | ٢٨ |
| شَيْخًا | : قالت يا ويلتى أألد وأنا عجوز وهذا بعلي شيخا ... | ٧٢ | ك هود | ١١ |
| (٢) | قالوا يا أيها العزيز إن له أبا شيخا كبيرا فخذ أحدنا مكانه | ٧٨ | ك يوسف | ١٢ |
| شُيُوخًا | : ثم لتبلغوا أشدكم ثم لتكونوا شيوخا ... ... ... | ٦٧ | ك غافر | ٤٠ |
| | ✦✦✦ | | | |
| مَشِيدٍ | : فهي خاوية على عروشها وبئر معطلة وقصر مشيد | ٤٥ | م الحج | ٢٢ |
| مُشَيَّدَةٍ | : أينما تكونوا يدرككم الموت ولو كنتم في بروج مشيدة | ٧٨ | م النساء | ٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تَشِيعَ | : إن الذين يحبون أن تشيع الفاحشة في الذين آمنوا | | | |
| | لهم عذاب أليم ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٩ | م النور | ٢٤ |
| شِيعَةٍ | : ثم لننزعن من كل شيعة أيهم أشد على الرحمن عتيا | ٦٩ | ك مريم | ١٩ |
| شِيعَتِهِ | : فوجد فيها رجلين يقتتلان هذا من شيعته وهذا من عدوه | ١٥ | ك القصص | ٢٨ |
| (٣) | فاستغاثه الذي من شيعته على الذي من عدوه ... ... | ١٥ | ك « | ٢٨ |
| | وإن من شيعته لإبراهيم . إذ جاء ربه بقلب سليم ... | ٨٣ | ك الصافات | ٣٧ |
| شِيَعٍ | : ولقد أرسلنا من قبلك في شيع الأولين ... ... ... | ١٠ | ك الحجر | ١٥ |
| شِيَعًا | أو يلبسكم شيعا ويذيق بعضكم بأس بعض ... ... | ٦٥ | ك الأنعام | ٦ |
| (٤) | إن الذين فرقوا دينهم وكانوا شيعا لست منهم في شيء | ١٥٩ | ك « | ٦ |
| | إن فرعون علا في الأرض وجعل أهلها شيعا ... ... | ٤ | ك القصص | ٢٨ |
| | من الذين فرقوا دينهم وكانوا شيعا ... ... ... ... | ٣٢ | ك الروم | ٣٠ |
| أَشْيَاعَكُمْ | : ولقد أهلكنا أشياعكم فهل من مدكر ... ... ... | ٥١ | ك القمر | ٥٤ |
| بِأَشْيَاعِهِمْ | : وحيل بينهم وبين ما يشتهون كما فعل | | | |
| | بأشياعهم من قبل ... ... ... ... ... ... ... | ٥٤ | ك سبأ | ٣٤ |

# باب الصاد

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| صٓ : | صٓ والقرآن ذى الذكر . بل الذين كفروا فى عزة وشقاق | ١ | ك صٓ | ٣٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| الصَّابِئُونَ : | إن الذين آمنوا والذين هادوا والصابئون والنصارى من آمن بالله واليوم الآخر وعمل صالحا فلا خوف عليهم ولا هم يحزنون ... ... | ٦٩ | م المائدة | ٥ |
| الصَّابِئِينَ : | (٢) إن الذين آمنوا والذين هادوا والنصارى والصابئين من آمن بالله واليوم الآخر وعمل صالحا فلهم أجرهم عند ربهم ... ... ... ... ... ... | ٦٢ | م البقرة | ٢ |
| | إن الذين آمنوا والذين هادوا والصابئين والنصارى والمجوس والذين أشركوا إن الله يفصل بينهم يوم القيامة... ... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | م الحج | ٢٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| فَصَبَّ : | فصب عليهم ربك سوط عذاب ... ... ... ... | ١٣ | ك الفجر | ٨٩ |
| صَبَبْنَا : | فلينظر الإنسان إلى طعامه . أنا صببنا الماء صبا... | ٢٥ | ك عبس | ٨٠ |
| صُبُّوا : | ثم صبوا فوق رأسه من عذاب الحميم ... ... ... | ٤٨ | ك الدخان | ٤٤ |
| يُصَبُّ : | قطعت لهم ثياب من نار يصب من فوق رءوسهم الحميم | ١٩ | م الحج | ٢٢ |
| صَبًّا : | فلينظر الإنسان إلى طعامه . أنا صببنا الماء صبا... | ٢٥ | ك عبس | ٨٠ |
| | ✦✦✦ | | | |
| صَبَّحَهُمْ : | ولقد صبحهم بكرة عذاب مستقر ... ... ... | ٣٨ | ك القمر | ٥٤ |
| أَصْبَحَ : | فقتله فأصبح من الخاسرين ... ... ... ... | ٣٠ | م المائدة | ٥ |
| | (٨) فأرارى سوءة أخى فأصبح من النادمين ... ... | ٣١ | م « | ٥ |
| | وأحيط بثمره فأصبح يقلب كفيه على ما أنفق فيها ... | ٤٢ | ك الكهف | ١٨ |
| | فاختلط به نبات الأرض فأصبح هشيما تذروه الرياح | ٤٥ | ك « | ١٨ |
| | وأصبح فؤاد أم موسى فارغا ... ... ... ... ... | ١٠ | ك القصص | ٢٨ |
| | فأصبح فى المدينة خائفا يترقب ... ... ... ... | ١٨ | ك « | ٢٨ |
| | وأصبح الذين تمنوا مكانه بالأمس يقولون ويكأن الله يبسط الرزق لمن يشاء ... ... ... ... | ٨٢ | ك « | ٢٨ |
| | قل أرأيتم إن أصبح ماؤكم غورا فمن يأتيكم بماء معين | ٣٠ | ك الملك | ٦٧ |
| فَأَصْبَحَتْ : | فأصبحت كالصريم ... ... ... ... ... | ٢٠ | م القلم | ٦٨ |
| أَصْبَحْتُمْ : | فألف بين قلوبكم فأصبحتم بنعمته إخوانا... ... | ١٠٣ | م آل عمران | ٣ |
| | (٢) ظنكم الذى ظننتم بربكم أرداكم فأصبحتم من الخاسرين | ٢٣ | ك فصلت | ٤١ |
| أَصْبَحُوا : | حبطت أعمالهم فأصبحوا خاسرين ... ... ... | ٥٣ | م المائدة | ٥ |
| | (١٠) قد سألها قوم من قبلكم ثم أصبحوا بها كافرين ... | ١٠٢ | م « | ٥ |
| | فأخذتهم الرجفة فأصبحوا فى دارهم جاثمين ... ... | ٧٨ | ك الأعراف | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَصْبَحُوا : | فأخذتهم الرجفة فأصبحوا فى دارهم جاثمين... | ٩١ | ك الأعراف | ٧ |
| | وأخذ الذين ظلموا الصيحة فأصبحوا فى ديارهم جاثمين | ٦٧ | ك هود | ١١ |
| | وأخذت الذين ظلموا الصيحة فأصبحوا فى ديارهم جاثمين | ٩٤ | ك « | ١١ |
| | فعقروها فأصبحوا نادمين ... ... ... ... ... | ١٥٧ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فكذبوه فأخذتهم الرجفة فأصبحوا فى دارهم جاثمين | ٣٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | تدمر كل شىء بأمر ربها فأصبحوا لا يرى إلا مساكنهم | ٢٥ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | فأيدنا الذين آمنوا على عدوهم فأصبحوا ظاهرين | ١٤ | م الصف | ٦١ |
| فَتُصْبِحَ : | ويرسل عليها حسبانا من السماء فتصبح صعيدا زلقا | ٤٠ | ك الكهف | ١٨ |
| | (٢) ألم تر أن الله أنزل من السماء ماء فتصبح الأرض مخضرة | ٦٣ | م الحج | ٢٢ |
| فَتُصْبِحُوا : | فتصبحوا على ما فعلتم نادمين ... ... ... ... | ٦ | م الحجرات | ٤٩ |
| تُصْبِحُونَ : | فسبحان الله حين تمسون وحين تصبحون | ١٧ | م الروم | ٣٠ |
| يُصْبِحَ : | أو يصبح ماؤها غورا فلن تستطيع له طلبا ... ... | ٤١ | ك الكهف | ١٨ |
| لَيُصْبِحُنَّ : | قال عما قليل ليصبحن نادمين ... ... ... ... | ٤٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| فَيُصْبِحُوا : | فيصبحوا على ما أسروا فى أنفسهم نادمين | ٥٢ | م المائدة | ٥ |
| الصُّبْحُ : | إنه مصيبها ما أصابهم إن موعدهم الصبح ... ... | ٨١ | ك هود | ١١ |
| | (٤) أليس الصبح بقريب ... ... ... ... ... ... | ٨١ | ك « | ١١ |
| | والصبح إذا أسفر . إنها لإحدى الكبر ... ... ... | ٣٤ | ك المدثر | ٧٤ |
| | والصبح إذا تنفس . إنه لقول رسول كريم ... ... | ١٨ | ك التكوير | ٨١ |
| صُبْحًا : | والعاديات ضبحا . فالموريات قدحا . فالمغيرات صبحا | ٣ | ك العاديات | ١٠٠ |
| صَبَاحُ : | فإذا نزل بساحتهم فساء صباح المنذرين... ... | ١٧٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| الْإِصْبَاحِ : | فالق الإصباح وجعل الليل سكنا ... ... ... | ٩٦ | ك الأنعام | ٦ |
| مُصْبِحِينَ : | أن دابر هؤلاء مقطوع مصبحين... ... ... | ٦٦ | ك الحجر | ١٥ |
| | (٥) فأخذتهم الصيحة مصبحين ... ... ... ... ... | ٨٣ | ك « | ١٥ |
| | وإنكم لتمرون عليهم مصبحين ... ... ... ... ... | ١٣٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| | إذ أقسموا ليصرمنها مصبحين ... ... ... ... ... | ١٧ | م القلم | ٦٨ |
| | فتنادوا مصبحين . أن اغدوا على حرثكم إن كنتم صارمين | ٢١ | م « | ٦٨ |
| مِصْبَاحٌ : | مثل نوره كمشكاة فيها مصباح ... ... ... ... | ٣٥ | م النور | ٢٤ |
| | (٢) المصباح فى زجاجة ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | م « | ٢٤ |
| بِمَصَابِيحَ : | وزينا السماء الدنيا بمصابيح وحفظا ... ... | ١٢ | ك فصلت | ٤١ |
| | (٢) ولقد زينا السماء الدنيا بمصابيح وجعلناها رجوما للشياطين | ٥ | ك الملك | ٦٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| صَبَرَ : | ولمن صبر وغفر إن ذلك لمن عزم الأمور... ... ... | ٤٣ | ك الشورى | ٤٢ |
| | (٢) فاصبر كما صبر أولوا العزم من الرسل ولا تستعجل لهم | ٣٥ | م الأحقاف | ٤٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| صَبَرْتُمْ | : سلام عليكم بما صبرتم فنعم عقبى الدار ... ... ... | ٢٤ | م الرعـد | ١٣ |
| (٢) | ولئن صبرتم لهو خير للصابرين ... ... ... ... ... | ١٢٦ | م النحـل | ١٦ |
| صَبَرْنَا | : سواء علينا أجزعنا أم صبرنا ما لنا من محيص... ... | ٢١ | ك إبراهـيم | ١٤ |
| (٢) | إن كاد ليضلنا عن آلهتنا لولا أن صبرنا عليها ... ... | ٤٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| صَبَرُوا | : ولقد كذبت رسل من قبلك فصبروا على ما كذبوا | ٣٤ | ك الأنعام | ٦ |
| (١٥) | وتمت كلمة ربك الحسنى على بنى إسرائيل بما صبروا | ١٣٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | إلا الذين صبروا وعملوا الصالحات ... ... ... ... | ١١ | ك هـود | ١١ |
| | والذين صبروا ابتغاء وجه ربهم وأقاموا الصلاة ... | ٢٢ | م الرعـد | ١٣ |
| | الذين صبروا وعلى ربهم يتوكلون ... ... ... ... | ٤٢ | ك النحـل | ١٦ |
| | ولنجزين الذين صبروا أجرهم بأحسن ما كانوا يعملون | ٩٦ | ك « | ١٦ |
| | ثم جاهدوا وصبروا إن ربك من بعدها لغفور رحيم | ١١٠ | ك « | ١٦ |
| | إنى جزيتهم اليوم بما صبروا أنهم هم الفائزون ... ... | ١١١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | أولئك يجزون الغرفة بما صبروا ويلقون فيها تحية وسلاما | ٧٥ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| | أولئك يؤتون أجرهم مرتين بما صبروا ... ... ... | ٥٤ | م القصـص | ٢٨ |
| | الذين صبروا وعلى ربهم يتوكلون ... ... ... ... | ٥٩ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وجعلنا منهم أئمة يهدون بأمرنا لما صبروا ... ... | ٢٤ | ك السـجدة | ٣٢ |
| | وما يلقاها إلا الذين صبروا وما يلقاها إلا ذو حظ عظيم | ٣٥ | ك فصـلت | ٤١ |
| | ولو أنهم صبروا حتى تخرج إليهم لكان خيرا لهم ... | ٥ | م الحجرات | ٤٩ |
| | وجزاهم بما صبروا جنة وحريرا... ... ... ... ... | ١٢ | م الإنسان | ٧٦ |
| تَصْبِرُ | : وكيف تصبر على ما لم تحط به خبرا ... ... ... | ٦٨ | ك الكهف | ١٨ |
| تَصْبِرُوا | : وإن تصبروا وتتقوا لا يضركم كيدهم شيئا ... | ١٢٠ | م آل عمران | ٣ |
| (٥) | بل إن تصبروا وتتقوا ويأتوكم من فورهم هذا يمددكم ربكم بخمسة آلاف من الملائكة ... ... ... ... | ١٢٥ | م « | ٣ |
| | وإن تصبروا وتتقوا فإن ذلك من عزم الأمور ... | ١٨٦ | م « | ٣ |
| | وأن تصبروا خير لكم والله غفور رحيم ... ... ... | ٢٥ | م النسـاء | ٤ |
| | أصلوها فاصبروا أو لا تصبروا سواء عليكم ... ... | ١٦ | ك الطـور | ٥٢ |
| أَتَصْبِرُونَ | : وجعلنا بعضكم لبعض فتنة أتصبرون ... ... ... | ٢٠ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| تَصْبِرَ | : وإذ قلتم يا موسى لن نصبر على طعام واحد ... ... | ٦١ | م البقـرة | ٢ |
| وَلَنَصْبِرَنَّ | : ولنصبرن على ما آذيتمونا وعلى الله فليتوكل المتوكلون | ١٢ | ك إبراهـيم | ١٤ |
| يَصْبِرْ | : إنه من يتق ويصبر فإن الله لا يضيع أجر المحسنين... | ٩٠ | ك يوسف | ١٢ |
| يَصْبِرُوا | : فإن يصبروا فالنار مثوى لهم ... ... ... ... | ٢٤ | ك فصـلت | ٤١ |
| اصْبِرْ | : واتبع ما يوحى إليك واصبر حتى يحكم الله ... ... | ١٠٩ | ك يـونس | ١٠ |
| (١٩) | ما كنت تعلمها أنت ولا قومك من قبل هذا فاصبر... | ٤٩ | ك هـود | ١١ |
| | واصبر فإن الله لا يضيع أجر المحسنين... ... ... ... | ١١٥ | ك « | ١١ |
| | واصبر وما صبرك إلا بالله ولا تحزن عليهم... ... ... | ١٢٧ | م النحـل | ١٦ |
| | واصبر نفسك مع الذين يدعون ربهم بالغداة والعشى | ٢٨ | م الكهف | ١٨ |
| اصْبِرْ | : فاصبر على ما يقولون وسبح بحمد ربك قبل طلوع الشمس وقبل غروبها ... ... ... ... ... ... | ١٣٠ | م طـه | ٢٠ |
| | فاصبر إن وعد الله حق ولا يستخفنك الذين لا يوقنون | ٦٠ | ك الروم | ٣٠ |
| | واصبر على ما أصابك إن ذلك من عزم الأمور... | ١٧ | ك لقمان | ٣١ |
| | اصبر على ما يقولون واذكر عبدنا داود ذا الأيد ... | ١٧ | ك صـ | ٣٨ |
| | فاصبر إن وعد الله حق واستغفر لذنبك ... ... ... | ٥٥ | ك غافـر | ٤٠ |
| | فاصبر إن وعد الله حق ... ... ... ... ... ... | ٧٧ | ك « | ٤٠ |
| | فاصبر كما صبر أولوا العزم من الرسل ولا تستعجل لهم | ٣٥ | م الأحقاف | ٤٦ |
| | فاصبر على ما يقولون وسبح بحمد ربك ... ... ... | ٣٩ | ك قـ | ٥٠ |
| | واصبر لحكم ربك فإنك بأعيننا ... ... ... ... | ٤٨ | ك الطـور | ٥٢ |
| | فاصبر لحكم ربك ولا تكن كصاحب الحوت ... ... | ٤٨ | م القـلم | ٦٨ |
| | فاصبر صبرا جميلا . إنهم يرونه بعيدا . ونراه قريبا | ٥ | ك المعارج | ٧٠ |
| | واصبر على ما يقولون واهجرهم هجرا جميلا ... ... | ١٠ | م المـزمل | ٧٣ |
| | ولا تمنن تستكثر . ولربك فاصبر... ... ... ... | ٧ | ك المـدثر | ٧٤ |
| | فاصبر لحكم ربك ولا تطع منهم آثما أو كفورا ... | ٢٤ | م الإنسان | ٧٦ |
| اصْبِرُوا | : اصبروا وصابروا ورابطوا واتقوا الله ... ... | ٢٠٠ | م آل عمران | ٣ |
| (٦) | فاصبروا حتى يحكم الله بيننا وهو خير الحاكمين... ... | ٨٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | قال موسى لقومه استعينوا بالله واصبروا ... ... ... | ١٢٨ | ك « | ٧ |
| | ولا تنازعوا فتفشلوا وتذهب ريحكم واصبروا ... ... | ٤٦ | م الأنفـال | ٨ |
| | وانطلق الملأ منهم أن امشوا واصبروا على آلهتكم ... | ٦ | ك صـ | ٣٨ |
| | اصلوها فاصبروا أو لا تصبروا سواء عليكم... ... ... | ١٦ | ك الطـور | ٥٢ |
| صَابِرُوا | : يا أيها الذين آمنوا اصبروا وصابروا ورابطوا ... | ٢٠٠ | م آل عمران | ٣ |
| مَا أَصْبَرَهُمْ | : فما أصبرهم على النار ... ... ... ... ... ... | ١٧٥ | م البقـرة | ٢ |
| اصْطَبِرْ | : فاعبده واصطبر لعبادته ... ... ... ... ... ... | ٦٥ | ك مريم | ١٩ |
| (٣) | وأمر أهلك بالصلاة واصطبر عليها ... ... ... ... | ١٣٢ | ك طـه | ٢٠ |
| | إنا مرسلوا الناقة فتنة لهم فارتقبهم واصطبر ... ... | ٢٧ | ك القمـر | ٥٤ |
| الصَّبْرِ | : واستعينوا بالصبر والصلاة ... ... ... ... ... | ٤٥ | م البقـرة | ٢ |
| (٦) | يا أيها الذين آمنوا استعينوا بالصبر والصلاة ... ... | ١٥٣ | م « | ٢ |
| | قال بل سولت لكم أنفسكم أمرا فصبر جميل ... ... | ١٨ | ك يوسف | ١٢ |
| | قال بل سولت لكم أنفسكم أمرا فصبر جميل ... ... | ٨٣ | ك « | ١٢ |
| | ثم كان من الذين آمنوا وتواصوا بالصبر وتواصوا بالمرحمة | ١٧ | ك البـلد | ٩٠ |
| | وتواصوا بالحق وتواصوا بالصبر... ... ... ... ... | ٣ | ك العصـر | ١٠٣ |
| صَبْرًا | : ربنا أفرغ علينا صبرا وثبت أقدامنا ... ... ... ... | ٢٥٠ | م البقـرة | ٢ |
| (٨) | ربنا أفرغ علينا صبرا وتوفنا مسلمين ... ... ... ... | ١٢٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | قال إنك لن تستطيع معى صبرا ... ... ... ... ... | ٦٧ | ك الكهف | ١٨ |
| | قال ألم أقل إنك لن تستطيع معى صبرا ... ... ... | ٧٢ | ك « | ١٨ |
| | قال ألم أقل لك إنك لن تستطيع معى صبرا... ... ... | ٧٥ | ك « | ١٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| صَبْرًا: | سأنبئك بتأويل ما لم تستطع عليه صبرا ... ... ... | ٧٨ ك الكهف | ١٨ |
| | ذلك تأويل ما لم تسطع عليه صبرا... ... ... ... ... | ٨٢ ك « | ١٨ |
| | فاصبر صبرا جميلا . إنهم يرونه بعيدا . ونراه قريبا | ٥ ك المعارج | ٧٠ |
| صَبْرُكَ: | واصبر وما صبرك إلا بالله ... ... ... ... ... | ١٢٧ م النحل | ١٦ |
| صَابِرًا: | قال ستجدني إن شاء الله صابرا ولا أعصي لك أمرا | ٦٩ ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | إنا وجدناه صابرا نعم العبد إنه أواب ... ... ... ... | ٤٤ ك ص | ٣٨ |
| الصَّابِرُونَ: | إن يكن منكم عشرون صابرون يغلبوا مائتين | ٦٥ م الأنفال | ٨ |
| (٣) | ولا يلقاها إلا الصابرون ... ... ... ... ... | ٨٠ ك القصص | ٢٨ |
| | إنما يوفى الصابرون أجرهم بغير حساب ... ... ... | ١٠ ك الزمر | ٣٩ |
| الصَّابِرِينَ: | استعينوا بالصبر والصلاة إن الله مع الصابرين | ١٥٣ م البقرة | ٢ |
| (١٥) | ونقص من الأموال والأنفس والثمرات وبشر الصابرين | ١٥٥ م « | ٢ |
| | والصابرين في البأساء والضراء وحين البأس ... ... | ١٧٧ م « | ٢ |
| | كم من فئة قليلة غلبت فئة كثيرة بإذن الله والله مع الصابرين | ٢٤٩ م « | ٢ |
| | الصابرين والصادقين والقانتين والمنفقين والمستغفرين بالأسحار ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٧ م آل عمران | ٣ |
| | ولما يعلم الله الذين جاهدوا منكم ويعلم الصابرين | ١٤٢ م « | ٣ |
| | وما ضعفوا وما استكانوا والله يحب الصابرين | ١٤٦ م « | ٣ |
| | واصبروا إن الله مع الصابرين ... ... ... ... ... | ٤٦ م الأنفال | ٨ |
| | يغلبوا ألفين بإذن الله والله مع الصابرين... ... ... | ٦٦ م « | ٨ |
| | ولئن صبرتم لهو خير للصابرين ... ... ... ... ... | ١٢٦ م النحل | ١٦ |
| | وإسمعيل وإدريس وذا الكفل كل من الصابرين | ٨٥ ك الأنبياء | ٢١ |
| | والصابرين على ما أصابهم ... ... ... ... ... | ٣٥ م الحج | ٢٢ |
| | والصادقين والصادقات والصابرين والصابرات ... | ٣٥ م الأحزاب | ٣٣ |
| | ستجدني إن شاء الله من الصابرين ... ... ... ... | ١٠٢ ك الصافات | ٣٧ |
| | ولنبلونكم حتى نعلم المجاهدين منكم والصابرين ... ... | ٣١ م محمد | ٤٧ |
| صَابِرَةٌ: | فإن يكن منكم مائة صابرة يغلبوا مائتين ... ... | ٦٦ م الأنفال | ٨ |
| الصَّابِرَاتِ: | والصادقين والصادقات والصابرين والصابرات | ٣٥ م الأحزاب | ٣٣ |
| صَبَّارٍ: | وذكرهم بأيام الله إن في ذلك لآيات لكل صبار شكور | ٥ ك إبراهيم | ١٤ |
| (٤) | ليريكم من آياته إن في ذلك لآيات لكل صبار شكور | ٣١ ك لقمان | ٣١ |
| | ومزقناهم كل ممزق إن في ذلك لآيات لكل صبار شكور | ١٩ ك سبإ | ٣٤ |
| | فيظللن رواكد على ظهره إن في ذلك لآيات لكل صبار شكور ... ... ... ... ... ... ... | ٣٣ ك الشورى | ٤٢ |
| أَصَابِعَهُمْ: | يجعلون أصابعهم في آذانهم من الصواعق | ١٩ م البقرة | ٢ |
| (٢) | وإني كلما دعوتهم لتغفر لهم جعلوا أصابعهم في آذانهم | ٧ ك نوح | ٧١ |
| صِبْغٍ: | وشجرة تخرج من طور سيناء تنبت بالدهن وصبغ للآكلين | ٢٠ ك المؤمنون | ٢٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| صِبْغَةَ: | صبغة الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٣٨ م البقرة | ٢ |
| (٢) | ومن أحسن من الله صبغة ونحن له عابدون ... ... | ١٣٨ م « | ٢ |
| أَصْبُ: | وإلا تصرف عني كيدهن أصب إليهن وأكن من الجاهلين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٣ ك يوسف | ١٢ |
| صَبِيًّا: | يا يحيى خذ الكتاب بقوة وآتيناه الحكم صبيا ... ... | ١٢ ك مريم | ١٩ |
| (٢) | فأشارت إليه قالوا كيف نكلم من كان في المهد صبيا ... | ٢٩ ك « | ١٩ |
| تُصَاحِبْنِي: | قال إن سألتك عن شيء بعدها فلا تصاحبني | ٧٦ ك الكهف | ١٨ |
| وَصَاحِبَيْهِمَا: | فلا تطعهما وصاحبهما في الدنيا معروفا ... | ١٥ ك لقمان | ٣١ |
| يُصْحَبُونَ: | لا يستطيعون نصر أنفسهم ولا هم منا يصحبون | ٤٣ ك الأنبياء | ٢١ |
| الصَّاحِبِ: | والجار الجنب والصاحب بالجنب وابن السبيل | ٣٦ م النساء | ٤ |
| (٢) | فاصبر لحكم ربك ولا تكن كصاحب الحوت ... ... | ٤٨ م القلم | ٦٨ |
| صَاحِبُكُمْ: | ما بصاحبكم من جنة ... ... ... ... ... ... | ٤٦ ك سبإ | ٣٤ |
| (٣) | ما ضل صاحبكم وما غوى ... ... ... ... ... ... | ٢ ك النجم | ٥٣ |
| | وما صاحبكم بمجنون ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ ك التكوير | ٨١ |
| صَاحِبِهِ: | إذ يقول لصاحبه لا تحزن إن الله معنا ... ... | ٤٠ م التوبة | ٩ |
| (٣) | فقال لصاحبه وهو يحاوره أنا أكثر منك مالا ... | ٣٤ ك الكهف | ١٨ |
| | قال له صاحبه وهو يحاوره أكفرت بالذي خلقك من تراب | ٣٧ ك « | ١٨ |
| صَاحِبِهِمْ: | أو لم يتفكروا ما بصاحبهم من جنة إن هو إلا نذير | ١٨٤ ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | فنادوا صاحبهم فتعاطى فعقر ... ... ... ... ... | ٢٩ ك القمر | ٥٤ |
| صَاحِبَيِ: | يا صاحبي السجن أأرباب متفرقون خير أم الله الواحد القهار... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٩ ك يوسف | ١٢ |
| | يا صاحبي السجن أما أحدكما فيسقي ربه خمرا ... ... | ٤١ ك « | ١٢ |
| صَاحِبَةٌ: | أنى يكون له ولد ولم تكن له صاحبة وخلق كل شيء | ١٠١ ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | وأنه تعالى جد ربنا ما اتخذ صاحبة ولا ولدا ... ... | ٣ ك الجن | ٧٢ |
| صَاحِبَتِهِ: | يود المجرم لو يفتدي من عذاب يومئذ ببنيه . | | |
| (٢) | وصاحبته وأخيه ... ... ... ... ... ... ... | ١٢ ك المعارج | ٧٠ |
| | يوم يفر المرء من أخيه . وأمه وأبيه . وصاحبته وبنيه | ٣٦ ك عبس | ٨٠ |
| أَصْحَابُ: | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا أولئك أصحاب النار | ٣٩ م البقرة | ٢ |
| (٧٧) | بلى من كسب سيئة وأحاطت به خطيئته فأولئك أصحاب النار | ٨١ م « | ٢ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات أولئك أصحاب الجنة | ٨٢ م « | ٢ |
| | إنا أرسلناك بالحق بشيرا ونذيرا ولا تسئل عن أصحاب الجحيم | ١١٩ م « | ٢ |
| | فأولئك حبطت أعمالهم في الدنيا والآخرة وأولئك أصحاب النار هم فيها خالدون ... ... ... ... | ٢١٧ م « | ٢ |
| | يخرجونهم من النور إلى الظلمات أولئك أصحاب النار | ٢٥٧ م « | ٢ |
| | ومن عاد فأولئك أصحاب النار هم فيها خالدون ... | ٢٧٥ م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| أَصْحَابُ: لن تغنى عنهم أموالهم ولا أولادهم من الله شيئا | | | |
| | وأولئك أصحاب النار هم فيها خالدون ... ... ... | آل عمران | ٣ |
| | أو نلعنهم كما لعنا أصحاب السبت وكان أمر الله مفعولا | النساء | ٤ |
| | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا أولئك أصحاب الجحيم | المائدة | ٥ |
| | إنى أريد أن تبوأ بإثمى وإثمك فتكون من أصحاب النار | » | ٥ |
| | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا أولئك أصحاب الجحيم | » | ٥ |
| | حيران له أصحاب يدعونه إلى الهدى آتنا ... ... | الأنعام | ٦ |
| | والذين كذبوا بآياتنا واستكبروا عنها أولئك أصحاب النار | الأعراف | ٧ |
| | لا نكلف نفسا إلا وسعها أولئك أصحاب الجنة ... | » | ٧ |
| | ونادى أصحاب الجنة ... ... ... ... ... ... | » | ٧ |
| | أصحاب النار أن قد وجدنا ما وعدنا ربنا حقا ... ... | » | ٧ |
| | ونادوا أصحاب الجنة أن سلام عليكم... ... ... ... | » | ٧ |
| | وإذا صرفت أبصارهم تلقاء أصحاب النار قالوا ربنا لا تجعلنا مع القوم الظالمين ... ... ... ... ... | » | ٧ |
| | ونادى أصحاب الأعراف رجالا يعرفونهم بسيماهم | » | ٧ |
| | ونادى أصحاب النار ... ... ... ... ... ... | » | ٧ |
| | أصحاب الجنة أن أفيضوا علينا من الماء... ... ... | » | ٧ |
| | وقوم إبراهيم وأصحاب مدين والمؤتفكات... ... ... | التوبة | ٩ |
| | من بعد ما تبين لهم أنهم أصحاب الجحيم ... ... ... | » | ٩ |
| | ولا يرهق وجوههم قتر ولا ذلة أولئك أصحاب الجنة | يونس | ١٠ |
| | أولئك أصحاب النار هم فيها خالدون ... ... ... ... | » | ١٠ |
| | وأخبتوا إلى ربهم أولئك أصحاب الجنة ... ... ... | هود | ١١ |
| | وأولئك الأغلال فى أعناقهم وأولئك أصحاب النار | الرعد | ١٣ |
| | وإن كان أصحاب الأيكة لظالمين ... ... ... ... | الحجر | ١٥ |
| | ولقد كذب أصحاب الحجر المرسلين ... ... ... ... | » | ١٥ |
| | أم حسبت أن أصحاب الكهف والرقيم كانوا من آياتنا عجبا... ... ... ... ... ... ... | الكهف | ١٨ |
| | فستعلمون من أصحاب الصراط السوى ومن اهتدى | طه | ٢٠ |
| | وأصحاب مدين وكذب موسى فأمليت للكافرين | الحج | ٢٢ |
| | والذين سعوا فى آياتنا معاجزين أولئك أصحاب الجحيم | » | ٢٢ |
| | أصحاب الجنة يومئذ خير مستقرا وأحسن مقيلا... ... | الفرقان | ٢٥ |
| | وعادا وثمودا وأصحاب الرس وقرونا بين ذلك كثيرا | » | ٢٥ |
| | فلما رآه الجمان قال أصحاب موسى إنا لمدركون | الشعراء | ٢٦ |
| | كذب أصحاب الأيكة المرسلين ... ... ... ... | » | ٢٦ |
| | فأنجيناه وأصحاب السفينة وجعلناها آية للعالمين... ... | العنكبوت | ٢٩ |
| | إنما يدعوا حزبه ليكونوا من أصحاب السعير... ... | فاطر | ٣٥ |
| | واضرب لهم مثلا أصحاب القرية إذ جاءها المرسلون | يس | ٣٦ |
| | إن أصحاب الجنة اليوم فى شغل فاكهون ... ... | » | ٣٦ |
| أَصْحَابُ: وثمود وقوم لوط وأصحاب الأيكة أولئك الأحزاب | | ص | ٣٨ |
| | قل تمتع بكفرك قليلا إنك من أصحاب النار... ... | الزمر | ٣٩ |
| | وكذلك حقت كلمة ربك على الذين كفروا أنهم أصحاب النار ... ... ... ... ... ... ... | غافر | ٤٠ |
| | وأن مردنا إلى الله وأن المسرفين هم أصحاب النار | » | ٤٠ |
| | أولئك أصحاب الجنة خالدين فيها جزاء بما كانوا يعملون | الأحقاف | ٤٦ |
| | ونتجاوز عن سيئاتهم فى أصحاب الجنة ... ... ... | » | ٤٦ |
| | كذبت قبلهم قوم نوح وأصحاب الرس وثمود... ... | ق | ٥٠ |
| | وأصحاب الأيكة وقوم تبع كل كذب الرسل فحق وعيد | » | ٥٠ |
| | فأصحاب الميمنة ... ... ... ... ... ... ... | الواقعة | ٥٦ |
| | ما أصحاب الميمنة... ... ... ... ... ... ... | » | ٥٦ |
| | وأصحاب المشئمة... ... ... ... ... ... ... | » | ٥٦ |
| | ما أصحاب المشئمة ... ... ... ... ... ... ... | » | ٥٦ |
| | وأصحاب اليمين ... ... ... ... ... ... ... | » | ٥٦ |
| | ما أصحاب اليمين . فى سدر مخضود ... ... ... ... | » | ٥٦ |
| | لأصحاب اليمين . ثلة من الأولين . وثلة من الآخرين | » | ٥٦ |
| | وأصحاب الشمال ... ... ... ... ... ... ... | » | ٥٦ |
| | ما أصحاب الشمال . فى سموم وحميم ... ... ... ... | » | ٥٦ |
| | وأما إن كان من أصحاب اليمين ... ... ... ... ... | » | ٥٦ |
| | فسلام لك من أصحاب اليمين ... ... ... ... ... | » | ٥٦ |
| | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا أولئك أصحاب الجحيم | الحديد | ٥٧ |
| | أولئك أصحاب النار هم فيها خالدون ... ... ... | المجادلة | ٥٨ |
| | لا يستوى أصحاب النار... ... ... ... ... ... | الحشر | ٥٩ |
| | وأصحاب الجنة ... ... ... ... ... ... ... | » | ٥٩ |
| | أصحاب الجنة هم الفائزون ... ... ... ... ... | » | ٥٩ |
| | قد يئسوا من الآخرة كما يئس الكفار من أصحاب القبور | الممتحنة | ٦٠ |
| | أولئك أصحاب النار خالدين فيها ... ... ... ... | التغابن | ٦٤ |
| | وقالوا لو كنا نسمع أو نعقل ما كنا فى أصحاب السعير | الملك | ٦٧ |
| | فاعترفوا بذنبهم فسحقا لأصحاب السعير ... ... ... | » | ٦٧ |
| | إنا بلوناهم كما بلونا أصحاب الجنة ... ... ... ... | القلم | ٦٨ |
| | وما جعلنا أصحاب النار إلا ملائكة... ... ... ... | المدثر | ٧٤ |
| | كل نفس بما كسبت رهينة . إلا أصحاب اليمين ... | » | ٧٤ |
| | قتل أصحاب الأخدود... ... ... ... ... ... ... | البروج | ٨٥ |
| | أولئك أصحاب الميمنة ... ... ... ... ... ... ... | البلد | ٩٠ |
| | والذين كفروا بآياتنا هم أصحاب المشئمة ... ... ... | » | ٩٠ |
| | ألم تر كيف فعل ربك بأصحاب الفيل... ... ... ... | الفيل | ١٠٥ |
| أَصْحَابِهِمْ: فإن للذين ظلموا ذنوبا مثل ذنوب أصحابهم | | الذاريات | ٥١ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | |
| بِصِحَافٍ: | يطاف عليهم بصحاف من ذهب وأكواب ... | ك الزخرف | ٧١ ٤٣ |
| الصُّحُفُ: | أو لم تأتهم بينة ما فى الصحف الأولى ... ... | ك طه | ١٣٣ ٢٠ |
| (٦) | أم لم ينبأ بما فى صحف موسى... ... ... ... ... ... | ك النجم | ٣٦ ٥٣ |
| | فمن شاء ذكره . فى صحف مكرمة... ... ... ... .. | ك عبس | ١٣ ٨٠ |
| | وإذا الصحف نشرت ... ... ... ... ... ... ... | ك التكوير | ١٠ ٨١ |
| | إن هذا لفى الصحف الأولى... ... ... ... ... ... | ك الأعلى | ١٨ ٨٧ |
| | صحف إبراهيم وموسى ... ... ... ... ... ... ... | ك « | ١٩ ٨٧ |
| صُحُفًا: | بل يريد كل امرئ منهم أن يؤتى صحفا منشرة ... | ك المدثر | ٥٢ ٧٤ |
| (٢) | رسول من الله يتلوا صحفا مطهرة... ... ... ... ... | م البينة | ٢ ٩٨ |
| | ✦✦✦ | | |
| الصَّاخَّةُ: | فإذا جاءت الصاخة . يوم يفر المرء من أخيه | ك عبس | ٣٣ ٨٠ |
| | ✦✦✦ | | |
| الصَّخْرَ: | وثمود الذين جابوا الصخر بالواد... ... ... ... | ك الفجر | ٩ ٨٩ |
| الصَّخْرَةِ: | قال أرأيت إذ أوينا إلى الصخرة فإنى نسيت الحوت | ك الكهف | ٦٣ ١٨ |
| (٢) | يا بنى إنها إن تك مثقال حبة من خردل فتكن فى صخرة | | |
| | أو فى السموات أو فى الأرض يأت بها الله ... | ك لقمان | ١٦ ٣١ |
| | ✦✦✦ | | |
| صَدَّ: | فمنهم من آمن به ومنهم من صدّ عنه وكفى بجهنم سعيرا | م النساء | ٥٥ ٤ |
| صَدَدْتُمْ: | وتذوقوا السوء بما صددتم عن سبيل الله ... ... | ك النحل | ٩٤ ١٦ |
| صَدَدْنَاكُمْ: | أنحن صددناكم عن الهدى بعد إذ جاءكم ... | ك سبأ | ٣٢ ٣٤ |
| صَدَّهَا: | وصدها ما كانت تعبد من دون الله ... ... ... | ك النمل | ٤٣ ٢٧ |
| صَدَّهُمْ: | وزين لهم الشيطان أعمالهم فصدهم عن السبيل ... | ك « | ٢٤ ٢٧ |
| (٢) | وزين لهم الشيطان أعمالهم فصدهم عن السبيل... ... | ك العنكبوت | ٣٨ ٢٩ |
| صَدُّوا: | إن الذين كفروا وصدوا عن سبيل الله قد ضلوا | | |
| (٨) | ضلالا بعيدا ... ... ... ... ... ... ... ... | م النساء | ١٦٧ ٤ |
| | اشتروا بآيات الله ثمنا قليلا فصدوا عن سبيله ... ... | م التوبة | ٩ ٩ |
| | الذين كفروا وصدوا عن سبيل الله زدناهم عذابا | | |
| | فوق العذاب ... ... ... ... ... ... ... ... | ك النحل | ٨٨ ١٦ |
| | الذين كفروا وصدوا عن سبيل الله أضل أعمالهم ... | م محمد | ١ ٤٧ |
| | إن الذين كفروا وصدوا عن سبيل الله وشاقوا الرسول | | |
| | من بعد ما تبين لهم الهدى لن يضروا الله شيئا ... | م « | ٣٢ ٤٧ |
| | إن الذين كفروا وصدوا عن سبيل الله ثم ماتوا وهم | | |
| | كفار فلن يغفر الله لهم ... ... ... ... ... ... | م « | ٣٤ ٤٧ |
| | اتخذوا أيمانهم جنة فصدوا عن سبيل الله فلهم | | |
| | عذاب مهين ... ... ... ... ... ... ... ... | م المجادلة | ١٦ ٥٨ |
| | اتخذوا أيمانهم جنة فصدوا عن سبيل الله إنهم ساء | | |
| | ما كانوا يعملون ... ... ... ... ... ... ... | م المنافقون | ٢ ٦٣ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| صَدُّوكُمْ: | ولا يجرمنكم شنآن قوم أن صدوكم عن المسجد | | |
| (٢) | الحرام أن تعتدوا ... ... ... ... ... ... ... | م المائدة | ٢ ٥ |
| | هم الذين كفروا وصدوكم عن المسجد الحرام ... ... | م الفتح | ٢٥ ٤٨ |
| تَصُدُّونَ: | لم تصدون عن سبيل الله من آمن تبغونها عوجا | م آل عمران | ٩٩ ٣ |
| (٢) | وتصدون عن سبيل الله من آمن به ... ... ... ... | ك الأعراف | ٨٦ ٧ |
| تَصُدُّونَا: | تريدون أن تصدونا عما كان يعبد آباؤنا... ... | ك إبراهيم | ١٠ ١٤ |
| يَصُدَّكُمْ: | ويصدكم عن ذكر الله وعن الصلاة فهل أنتم منتهون | م المائدة | ٩١ ٥ |
| (٢) | ما هذا إلا رجل يريد أن يصدكم عما كان يعبد آباؤكم | ك سبأ | ٤٣ ٣٤ |
| يَصُدَّنَّكَ: | فلا يصدنك عنها من لا يؤمن بها واتبع هواه فتردى | ك طه | ١٦ ٢٠ |
| يَصُدُّنَّكَ: | ولا يصدنك عن آيات الله بعد إذ أنزلت إليك | ك القصص | ٨٧ ٢٨ |
| يَصُدَّنَّكُمُ: | ولا يصدنكم الشيطان إنه لكم عدو مبين ... ... | ك الزخرف | ٦٢ ٤٣ |
| لِيَصُدُّوا: | ينفقون أموالهم ليصدوا عن سبيل الله ... ... | ك الأنفال | ٣٦ ٨ |
| يَصُدُّونَ: | رأيت المنافقين يصدون عنك صدودا ... ... | م النساء | ٦١ ٤ |
| (٩) | الذين يصدون عن سبيل الله ويبغونها عوجا ... ... | ك الأعراف | ٤٥ ٧ |
| | وما لهم ألا يعذبهم الله وهم يصدون عن المسجد الحرام | ك الأنفال | ٣٤ ٨ |
| | خرجوا من ديارهم بطرا ورئاء الناس ويصدون عن سبيل الله | م « | ٤٧ ٨ |
| | ليأكلون أموال الناس بالباطل ويصدون عن سبيل الله | م التوبة | ٣٤ ٩ |
| | الذين يصدون عن سبيل الله ويبغونها عوجا | ك هود | ١٩ ١١ |
| | الذين يستحبون الحياة الدنيا على الآخرة ويصدون | | |
| | عن سبيل الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ك إبراهيم | ٣ ١٤ |
| | إن الذين كفروا ويصدون عن سبيل الله والمسجد الحرام | م الحج | ٢٥ ٢٢ |
| | لووا رءوسهم ورأيتهم يصدون وهم مستكبرون... ... | م المنافقون | ٥ ٦٣ |
| يَصُدُّونَ: | ولما ضرب ابن مريم مثلا إذا قومك منه يصدون | ك الزخرف | ٥٧ ٤٣ |
| يَصُدُّونَهُمْ: | وإنهم ليصدونهم عن السبيل... ... ... ... | ك « | ٣٧ ٤٣ |
| صُدَّ: | وكذلك زين لفرعون سوء عمله وصد عن السبيل | ك غافر | ٣٧ ٤٠ |
| صُدُّوا: | بل زين للذين كفروا مكرهم وصدوا عن السبيل | م الرعد | ٣٣ ١٣ |
| صَدٌّ: | وصد عن سبيل الله وكفر به والمسجد الحرام | م البقرة | ٢١٧ ٢ |
| وَبِصَدِّهِمْ: | فبظلم من الذين هادوا حرمنا عليهم طيبات | | |
| | أحلت لهم وبصدهم عن سبيل الله كثيرا... ... | م النساء | ١٦٠ ٤ |
| صُدُودًا: | رأيت المنافقين يصدون عنك صدودا ... ... | م « | ٦١ ٤ |
| صَدِيدٍ: | من ورائه جهنم ويسقى من ماء صديد ... ... | ك إبراهيم | ١٦ ١٤ |
| | ✦✦✦ | | |
| يَصْدُرُ: | يومئذ يصدر الناس أشتاتا ليروا أعمالهم ... ... | م الزلزلة | ٦ ٩٩ |
| يُصْدِرَ: | قالتا لا نسقى حتى يصدر الرعاء وأبونا شيخ كبير | ك القصص | ٢٣ ٢٨ |
| صَدْرًا: | ولكن من شرح بالكفر صدرا فعليهم غضب من الله | ك النحل | ١٠٦ ١٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| صَدَّقَ: | فلا صدّق ولا صلى . ولكن كذب وتولى ... ... | ٣١ | ك القيامة | ٧٥ |
| | فأما من أعطى وآتقى . وصدق بالحسنى . فسنيسره لليسرى | ٦ | ك الليل | ٩٢ |
| صَدَّقْتَ: | قد صدقت الرؤيا إنا كذلك نجزى المحسنين | ١٠٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| صَدَّقَتْ: | وصدقت بكلمات ربها وكتبه وكانت من القانتين | ١٢ | م التحريم | ٦٦ |
| تُصَدِّقُونَ: | نحن خلقناكم فلولا تصدقون ... ... ... ... | ٥٧ | ك الواقعة | ٥٦ |
| يُصَدِّقُنِي: | فأرسله معى ردءا يصدقنى ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك القصص | ٢٨ |
| يُصَدِّقُونَ: | والذين يصدقون بيوم الدين... ... ... ... | ٢٦ | ك المعارج | ٧٠ |
| تَصَدَّقَ: | والجروح قصاص فمن تصدق به فهو كفارة له | ٤٥ | م المائدة | ٥ |
| فَأَصَّدَّقَ: | فأصدق وأكن من الصالحين ... ... ... ... | ١٠ | م المنافقين | ٦٣ |
| تَصَدَّقُوا: | وأن تصدقوا خير لكم إن كنتم تعلمون... ... | ٢٨٠ | م البقرة | ٢ |
| لَنَصَّدَّقَنَّ: | ومنهم من عاهد الله لئن آتانا من فضله لنصدقن | ٧٥ | م التوبة | ٩ |
| يَصَّدَّقُوا: | ودية مسلمة إلى أهله إلا أن يصدقوا ... ... | ٩٢ | م النساء | ٤ |
| تَصَدَّقْ: | فأوف لنا الكيل وتصدق علينا إن الله يجزى المتصدقين | ٨٨ | ك يوسف | ١٢ |
| الصِّدْقِ: | وبشر الذين آمنوا أن لهم قدم صدق عند ربهم | ٢ | ك يونس | ١٠ |
| (١٠) | ولقد بوأنا بنى إسرائيل مبوأ صدق... ... ... ... | ٩٣ | ك « | ١٠ |
| | وقل رب أدخلنى مدخل صدق ... ... ... ... ... | ٨٠ | م الإسراء | ١٧ |
| | وأخرجنى مخرج صدق ... ... ... ... ... ... | ٨٠ | م « | ١٧ |
| | ووهبنا لهم من رحمتنا وجعلنا لهم لسان صدق عليا | ٥٠ | ك مريم | ١٩ |
| | واجعل لى لسان صدق فى الآخرين ... ... ... ... | ٨٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فمن أظلم ممن كذب على الله وكذب بالصدق إذ جاءه | ٣٢ | ك الزمر | ٣٩ |
| | والذى جاء بالصدق وصدق به أولئك هم المتقون | ٣٣ | ك « | ٣٩ |
| | وعد الصدق الذى كانوا يوعدون ... ... ... ... | ١٦ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | فى مقعد صدق عند مليك مقتدر ... ... ... ... | ٥٥ | ك القمر | ٥٤ |
| صِدْقًا: | وتمت كلمة ربك صدقا وعدلا لا مبدل لكلماته | ١١٥ | ك الأنعام | ٦ |
| صِدْقُهُمْ: | قال الله هذا يوم ينفع الصادقين صدقهم | ١١٩ | م المائدة | ٥ |
| (٣) | ليسئل الصادقين عن صدقهم وأعد للكافرين عذابا أليما | ٨ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ليجزى الله الصادقين بصدقهم ... ... ... ... | ٢٤ | م « | ٣٣ |
| صَادِقَ: | إنه كان صادق الوعد وكان رسولا نبيا ... ... | ٥٤ | ك مريم | ١٩ |
| (٢) | إنما توعدون لصادق ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك الذاريات | ٥١ |
| صَادِقًا: | وإن يك صادقا يصبكم بعض الذى يعدكم... ... | ٢٨ | ك غافر | ٤٠ |
| صَادِقُونَ: | ذلك جزيناهم ببغيهم وإنا لصادقون ... ... | ١٤٦ | ك الأنعام | ٦ |
| (٦) | وسئل القرية التى كنا فيها والعير التى أقبلنا فيها وإنا لصادقون | ٨٢ | ك يوسف | ١٢ |
| | وأتيناك بالحق وإنا لصادقون ... ... ... ... | ٦٤ | ك الحجر | ١٥ |
| | ثم لنقولن لوليه ما شهدنا مهلك أهله وإنا لصادقون | ٤٩ | ك النمل | ٢٧ |
| | أولئك هم الصادقون ... ... ... ... ... ... | ١٥ | م الحجرات | ٤٩ |
| | وينصرون الله ورسوله أولئك هم الصادقون ... ... | ٨ | م الحشر | ٥٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| صَادِقِينَ: | وادعوا شهداءكم من دون الله إن كنتم صادقين | ٢٣ | م البقرة | ٢ |
| (٥٠) | فقال أنبئونى بأسماء هؤلاء إن كنتم صادقين ... ... | ٣١ | م « | ٢ |
| | فتمنوا الموت إن كنتم صادقين ... ... ... ... ... | ٩٤ | م « | ٢ |
| | قل هاتوا برهانكم إن كنتم صادقين ... ... ... ... | ١١١ | م « | ٢ |
| | الصابرين والصادقين والقانتين والمنفقين والمستغفرين بالأسحار... ... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | م آل عمران | ٣ |
| | قل فأتوا بالتوراة فاتلوها إن كنتم صادقين ... ... | ٩٣ | م « | ٣ |
| | قل فادرءوا عن أنفسكم الموت إن كنتم صادقين | ١٦٨ | م « | ٣ |
| | فلم قتلتموهم إن كنتم صادقين ... ... ... ... | ١٨٣ | م « | ٣ |
| | قال الله هذا يوم ينفع الصادقين صدقهم ... ... ... | ١١٩ | م المائدة | ٥ |
| | أغير الله تدعون إن كنتم صادقين ... ... ... ... | ٤٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | نبئونى بعلم إن كنتم صادقين... ... ... ... ... | ١٤٣ | ك « | ٦ |
| | فأتنا بما تعدنا إن كنت من الصادقين ... ... ... | ٧٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | قال إن كنت جئت بآية فأت بها إن كنت من الصادقين | ١٠٦ | ك « | ٧ |
| | فادعوهم فليستجيبوا لكم إن كنتم صادقين ... ... | ١٩٤ | ك « | ٧ |
| | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله وكونوا مع الصادقين | ١١٩ | م التوبة | ٩ |
| | وادعوا من استطعتم من دون الله إن كنتم صادقين | ٣٨ | ك يونس | ١٠ |
| | ويقولون متى هذا الوعد إن كنتم صادقين ... ... | ٤٨ | ك « | ١٠ |
| | وادعوا من استطعتم من دون الله إن كنتم صادقين | ١٣ | ك هود | ١١ |
| | فأتنا بما تعدنا إن كنت من الصادقين ... ... ... | ٣٢ | ك « | ١١ |
| | وما أنت بمؤمن لنا ولو كنا صادقين ... ... ... ... | ١٧ | ك يوسف | ١٢ |
| | وإن كان قميصه قد من دبر فكذبت وهو من الصادقين | ٢٧ | ك « | ١٢ |
| | أنا راودته عن نفسه وإنه لمن الصادقين ... ... ... | ٥١ | ك « | ١٢ |
| | لو ما تأتينا بالملائكة إن كنت من الصادقين ... ... | ٧ | ك الحجر | ١٥ |
| | ويقولون متى هذا الوعد إن كنتم صادقين ... ... | ٣٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | فشهادة أحدهم أربع شهادات بالله إنه لمن الصادقين | ٦ | م النور | ٢٤ |
| | والخامسة أن غضب الله عليها إن كان من الصادقين | ٩ | م « | ٢٤ |
| | قال فأت به إن كنت من الصادقين ... ... ... ... | ٣١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | ما أنت إلا بشر مثلنا فأت بآية إن كنت من الصادقين | ١٥٤ | ك « | ٢٦ |
| | فأسقط علينا كسفا من السماء إن كنت من الصادقين | ١٨٧ | ك « | ٢٦ |
| | أإله مع الله قل هاتوا برهانكم إن كنتم صادقين | ٦٤ | ك النمل | ٢٧ |
| | ويقولون متى هذا الوعد إن كنتم صادقين ... ... | ٧١ | ك « | ٢٧ |
| | قل فأتوا بكتاب من عند الله هو أهدى منهما أتبعه إن كنتم صادقين ... ... ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك القصص | ٢٨ |
| | إلا أن قالوا ائتنا بعذاب الله إن كنت من الصادقين | ٢٩ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ويقولون متى هذا الفتح إن كنتم صادقين ... ... | ٢٨ | ك السجده | ٣٢ |
| | ليسئل الصادقين عن صدقهم وأعد للكافرين عذابا أليما | ٨ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ليجزى الله الصادقين بصدقهم ويعذب المنافقين إن شاء | ٢٤ | م « | ٣٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| صَادِقِينَ | : والقانتين والقانتات والصادقين والصادقات... | ٣٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ويقولون متى هـذا الوعد إن كنتم صادقين ... ... | ٢٩ | ك سبأ | ٣٤ |
| | ويقولون متى هـذا الوعد إن كنتم صادقين ... ... | ٤٨ | ك يس | ٣٦ |
| | فأتوا بكتابكم إن كنتم صادقين ... ... ... ... ... | ١٥٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| | فأتوا بآبائنا إن كنتم صادقين ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك الدخان | ٤٤ |
| | ما كان حجتهم إلا أن قالوا ائتوا بآبائنا إن كنتم صادقين | ٢٥ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | أو أثارة من علم إن كنتم صادقين ... ... ... ... | ٤ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | فأتنا بما تعدنا إن كنت من الصادقين ... ... ... | ٢٢ | ك « | ٤٦ |
| | بل الله يمن عليكم أن هداكم للإيمان إن كنتم صادقين | ١٧ | م الحجرات | ٤٩ |
| | فليأتوا بحديث مثله إن كانوا صادقين... ... ... ... | ٣٤ | ك الطور | ٥٢ |
| | فلولا إن كنتم غير مدينين . ترجعونها إن كنتم صادقين | ٨٧ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | فتمنوا الموت إن كنتم صادقين ... ... ... ... ... | ٦ | م الجمعة | ٦٢ |
| | ويقولون متى هذا الوعد إن كنتم صادقين ... ... | ٢٥ | ك الملك | ٦٧ |
| | أم لهم شركاء فليأتوا بشركائهم إن كانوا صادقين ... | ٤١ | ك القلم | ٦٨ |
| الصَّادِقَاتِ | : والصادقين والصادقات والصابرين والصابرات | ٣٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| أَصْدَقُ | : ومن أصدق من الله حديثا ... ... ... ... ... | ٨٧ | م النساء | ٤ |
| (٢) | وعد الله حقا ومن أصدق من الله قيلا ... ... ... | ١٢٢ | م « | ٤ |
| صَدَقَةٌ | : ففدية من صيام أو صدقة أو نسك ... ... ... | ١٩٦ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | قول معروف ومغفرة خير من صدقة يتبعها أذى ... | ٢٦٣ | م « | ٢ |
| | لا خير في كثير من نجواهم إلا من أمر بصدقة أو معروف | ١١٤ | م النساء | ٤ |
| | خذ من أموالهم صدقة تطهرهم وتزكيهم بها وصل عليهم | ١٠٣ | م التوبة | ٩ |
| | إذا ناجيتم الرسول فقدموا بين يدي نجواكم صدقة | ١٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| الصَّدَقَاتُ | : إن تبدوا الصدقات فنعما هي ... ... ... | ٢٧١ | م البقرة | ٢ |
| (٧) | يمحق الله الربا ويربي الصدقات ... ... ... ... | ٢٧٦ | م « | ٢ |
| | ومنهم من يلمزك في الصدقات فإن أعطوا منها رضوا | ٥٨ | م التوبة | ٩ |
| | إنما الصدقات للفقراء والمساكين والعاملين عليها | ٦٠ | م « | ٩ |
| | الذين يلمزون المطوعين من المؤمنين في الصدقات ... | ٧٩ | م « | ٩ |
| | ألم يعلموا أن الله هو يقبل التوبة عن عباده ويأخذ الصدقات ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٤ | م « | ٩ |
| | أأشفقتم أن تقدموا بين يدي نجواكم صدقات ... | ١٣ | م المجادلة | ٥٨ |
| صَدَقَاتِكُمْ | : يا أيها الذين آمنوا لا تبطلوا صدقاتكم بالمن والأذى | ٢٦٤ | م البقرة | ٢ |
| صَدُقَاتِهِنَّ | : وآتوا النساء صدقاتهن نحلة ... ... ... ... | ٤ | م النساء | ٤ |
| صَدِيقٍ | : فما لنا من شافعين . ولا صديق حميم ... ... ... | ١٠١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| صَدِيقِكُمْ | : أو بيوت خالاتكم أو ما ملكتم مفاتحه أو صديقكم | ٦١ | م النور | ٢٤ |
| الصِّدِّيقُ | : يوسف أيها الصديق أفتنا في سبع بقرات سمان | ٤٦ | ك يوسف | ١٢ |
| صِدِّيقًا | : واذكر في الكتاب إبراهيم إنه كان صديقا نبيا ... | ٤١ | ك مريم | ١٩ |
| (٢) | واذكر في الكتاب إدريس إنه كان صديقا نبيا ... | ٥٦ | ك « | ١٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الصِّدِّيقُونَ | : والذين آمنوا بالله ورسله أولئك هم الصديقون | ١٩ | م الحديد | ٥٧ |
| الصِّدِّيقِينَ | : فأولئك مع الذين أنعم الله عليهم من النبيين والصديقين والشهداء والصالحين ... ... ... ... | ٦٩ | م النساء | ٤ |
| صِدِّيقَةٌ | : وأمه صديقة كانا يأكلان الطعام ... ... ... | ٧٥ | م المائدة | ٥ |
| تَصْدِيقَ | : ولكن تصديق الذي بين يديه وتفصيل الكتاب | ٣٧ | ك يونس | ١٠ |
| (٢) | ما كان حديثا يفترى ولكن تصديق الذي بين يديه... | ١١١ | ك يوسف | ١٢ |
| مُصَدِّقٌ | : ولما جاءهم كتاب من عند الله مصدق لما معهم | ٨٩ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | ولما جاءهم رسول من عند الله مصدق لما معهم | ١٠١ | م « | ٢ |
| | ثم جاءكم رسول مصدق لما معكم لتؤمنن به ... ... | ٨١ | م آل عمران | ٣ |
| | وهذا كتاب أنزلناه مبارك مصدق الذي بين يديه... | ٩٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | وهذا كتاب مصدق لسانا عربيا لينذر الذين ظلموا | ١٢ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| مُصَدِّقًا | : وآمنوا بما أنزلت مصدقا لما معكم ... ... ... | ٤١ | م البقرة | ٢ |
| (١٣) | ويكفرون بما وراءه وهو الحق مصدقا لما معهم | ٩١ | م « | ٢ |
| | فإنه نزله على قلبك بإذن الله مصدقا لما بين يديه | ٩٧ | م « | ٢ |
| | نزل عليك الكتاب بالحق مصدقا لما بين يديه... ... | ٣ | م آل عمران | ٣ |
| | أن الله يبشرك بيحيى مصدقا بكلمة من الله ... ... | ٣٩ | م « | ٣ |
| | ومصدقا لما بين يدي من التوراة ... ... ... ... | ٥٠ | م « | ٣ |
| | يا أيها الذين أوتوا الكتاب آمنوا بما نزلنا مصدقا لما معكم | ٤٧ | م النساء | ٤ |
| | مصدقا لما بين يديه من التوراة ... ... ... ... ... | ٤٦ | م المائدة | ٥ |
| | فيه هدى ونور ومصدقا لما بين يديه من التوراة ... | ٤٦ | م « | ٥ |
| | وأنزلنا إليك الكتاب بالحق مصدقا لما بين يديه من الكتاب | ٤٨ | م « | ٥ |
| | والذي أوحينا إليك من الكتاب هو الحق مصدقا لما بين يديه ... ... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك فاطر | ٣٥ |
| | إنا سمعنا كتابا أنزل من بعد موسى مصدقا لما بين يديه | ٣٠ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | إني رسول الله إليكم مصدقا لما بين يدي من التوراة | ٦ | م الصف | ٦١ |
| المُصَدِّقِينَ | : إني كان لي قرين . يقول أئنك لمن المصدقين | ٥٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| المُصَّدِّقِينَ | : إن المصدقين والمصدقات وأقرضوا الله قرضا حسنا يضاعف لهم ... ... ... ... ... ... | ١٨ | م الحديد | ٥٧ |
| المُصَّدِّقَاتِ | : إن المصدقين والمصدقات وأقرضوا الله قرضا حسنا يضاعف لهم ... ... ... ... ... ... | ١٨ | م « | ٥٧ |
| المُتَصَدِّقِينَ | : وتصدق علينا إن الله يجزي المتصدقين ... | ٨٨ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | والمتصدقين والمتصدقات والصائمين والصائمات ... | ٣٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| المُتَصَّدِّقَاتِ | : والمتصدقين والمتصدقات والصائمين والصائمات ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | م « | ٣٣ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| تَصَدَّى | : أما من استغنى . فأنت له تصدى ... ... ... | ٦ | ك عبس | ٨٠ |
| تَصْدِيَةً | : وما كان صلاتهم عند البيت إلا مكاء وتصدية | ٣٥ | ك الأنفال | ٨ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | |
| صَرْحٌ | قيل لها ادخلى الصرح فلما رأته حسبته لجة ... ... | ٤٤ ك النمل | ٢٧ |
| (٢) | قال إنه صرح ممرد من قوارير ... ... ... ... ... | ٤٤ ك « | ٢٧ |
| صَرْحًا | فأوقد لى يا هامان على الطين فاجعل لى صرحا | ٣٨ ك القصص | ٢٨ |
| (٢) | وقال فرعون يا هامان ابن لى صرحا لعلى أبلغ الأسباب | ٣٦ ك غافر | ٤٠ |
| | ✦✦✦ | | |
| يَسْتَصْرِخُهُ | فإذا الذى استنصره بالأمس يستصرخه ... | ١٨ ك القصص | ٢٨ |
| يَصْطَرِخُونَ | وهم يصطرخون فيها ربنا أخرجنا نعمل صالحا | ٣٧ ك فاطر | ٣٥ |
| صَرِيخَ | وإن نشأ نغرقهم فلا صريخ لهم ولا هم ينقذون | ٤٣ ك يس | ٣٦ |
| بِمُصْرِخِكُمْ | فلا تلومونى ولوموا أنفسكم ما أنا بمصرخكم | ٢٢ ك إبراهيم | ١٤ |
| بِمُصْرِخِىَّ | وما أنتم بمصرخى ... ... ... ... ... ... | ٢٢ ك « | ١٤ |
| | ✦✦✦ | | |
| أَصَرُّوا | واستغشوا ثيابهم وأصروا واستكبروا استكبارا | ٧ ك نوح | ٧١ |
| يُصِرُّ | يسمع آيات الله تتلى عليه ثم يصر مستكبرا كأن لم يسمعها | ٨ ك الجاثية | ٤٥ |
| يُصِرُّوا | ولم يصروا على ما فعلوا وهم يعلمون ... ... ... | ١٣٥ م آل عمران | ٣ |
| يُصِرُّونَ | وكانوا يصرون على الحنث العظيم ... ... ... | ٤٦ ك الواقعة | ٥٦ |
| صِرٌّ | كمثل ريح فيها صر أصابت حرث قوم ظلموا أنفسهم فأهلكته | ١١٧ م آل عمران | ٣ |
| صَرَّةٌ | فأقبلت امرأته فى صرة فصكت وجهها وقالت عجوز عقيم | ٢٩ ك الذاريات | ٥١ |
| | ✦✦✦ | | |
| صَرْصَرٍ | وأما عاد فأهلكوا بريح صرصر عاتية ... ... | ٦ ك الحاقة | ٦٩ |
| صَرْصَرًا | فأرسلنا عليهم ريحا صرصرا فى أيام نحسات | ١٦ ك فصلت | ٤١ |
| (٢) | إنا أرسلنا عليهم ريحا صرصرا فى يوم نحس مستمر | ١٩ ك القمر | ٥٤ |
| | ✦✦✦ | | |
| الصِّرَاطَ | اهدنا الصراط المستقيم ... ... ... ... ... | ٦ ك الفاتحة | ١ |
| (٣٨) | صراط الذين أنعمت عليهم غير المغضوب عليهم ولا الضالين | ٧ ك « | ١ |
| | قل لله المشرق والمغرب يهدى من يشاء إلى صراط مستقيم | ١٤٢ م البقرة | ٢ |
| | والله يهدى من يشاء إلى صراط مستقيم ... ... ... | ٢١٣ م « | ٢ |
| | إن الله ربى وربكم فاعبدوه هذا صراط مستقيم .. | ٥١ م آل عمران | ٣ |
| | ومن يعتصم بالله فقد هدى إلى صراط مستقيم ... | ١٠١ م « | ٣ |
| | ويهديهم إلى صراط مستقيم... ... ... ... ... | ١٦ م المائدة | ٥ |
| | من يشإ الله يضلله ومن يشأ يجعله على صراط مستقيم | ٣٩ ك الأنعام | ٦ |
| | واجتبيناهم وهديناهم إلى صراط مستقيم... ... ... | ٨٧ ك « | ٦ |
| | وهذا صراط ربك مستقيما... ... ... ... ... | ١٢٦ ك « | ٦ |
| | قل إننى هدانى ربى إلى صراط مستقيم دينا قيما ... | ١٦١ ك « | ٦ |
| | ولا تقعدوا بكل صراط توعدون وتصدون عن سبيل الله | ٨٦ ك الأعراف | ٧ |
| | ويهدى من يشاء إلى صراط مستقيم... ... ... ... | ٢٥ ك يونس | ١٠ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| الصِّرَاطِ | ما من دابة إلا هو آخذ بناصيتها إن ربى على صراط مستقيم... ... ... ... ... ... ... | ٥٦ ك هود | ١١ |
| | لتخرج الناس من الظلمات إلى النور بإذن ربهم إلى صراط العزيز الحميد ... ... ... ... ... ... | ١ ك إبراهيم | ١٤ |
| | قال هذا صراط علىّ مستقيم... ... ... ... ... | ٤١ ك الحجر | ١٥ |
| | هل يستوى هو ومن يأمر بالعدل وهو على صراط مستقيم | ٧٦ ك النحل | ١٦ |
| | شاكرا لأنعمه اجتباه وهداه إلى صراط مستقيم ... | ١٢١ ك « | ١٦ |
| | وإن الله ربى وربكم فاعبدوه هذا صراط مستقيم | ٣٦ ك مريم | ١٩ |
| | فستعلمون من أصحاب الصراط السوىّ ومن اهتدى | ١٣٥ ك طه | ٢٠ |
| | وهدوا إلى الطيب من القول وهدوا إلى صراط الحميد | ٢٤ م الحج | ٢٢ |
| | وإن الله لهاد الذين آمنوا إلى صراط مستقيم ... | ٥٤ م « | ٢٢ |
| | وإنك لتدعوهم إلى صراط مستقيم ... ... ... ... | ٧٣ ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وإن الذين لا يؤمنون بالآخرة عن الصراط لناكبون | ٧٤ ك « | ٢٣ |
| | والله يهدى من يشاء إلى صراط مستقيم... ... ... | ٤٦ م النور | ٢٤ |
| | هو الحق ويهدى إلى صراط العزيز الحميد ... ... | ٦ م سبأ | ٣٤ |
| | إنك لمن المرسلين . على صراط مستقيم ... ... ... | ٤ ك يس | ٣٦ |
| | وأن اعبدونى هذا صراط مستقيم ... ... ... ... | ٦١ ك « | ٣٦ |
| | ولو نشاء لطمسنا على أعينهم فاستبقوا الصراط فأنى يبصرون ... ... ... ... ... ... ... | ٦٦ ك « | ٣٦ |
| | من دون الله فاهدوهم إلى صراط الجحيم... ... ... | ٢٣ ك الصافات | ٣٧ |
| | وهديناهما الصراط المستقيم... ... ... ... ... | ١١٨ ك « | ٣٧ |
| | فاحكم بيننا بالحق ولا تشطط واهدنا إلى سواء الصراط | ٢٢ ك ص | ٣٨ |
| | وإنك لتهدى إلى صراط مستقيم... ... ... ... ... | ٥٢ ك الشورى | ٤٢ |
| | صراط الله الذى له ما فى السموات وما فى الأرض | ٥٣ ك « | ٤٢ |
| | إنك على صراط مستقيم... ... ... ... ... ... | ٤٣ ك الزخرف | ٤٣ |
| | وإنه لعلم للساعة فلا تمترن بها واتبعون هذا صراط مستقيم | ٦١ ك « | ٤٣ |
| | إن الله هو ربى وربكم فاعبدوه هذا صراط مستقيم | ٦٤ ك « | ٤٣ |
| | أفمن يمشى مكبا على وجهه أهدى أمن يمشى سويا على صراط مستقيم... ... ... ... ... ... | ٢٢ ك الملك | ٦٧ |
| صِرَاطًا | ولهديناهم صراطا مستقيما ... ... ... ... ... | ٦٨ م النساء | ٤ |
| (٥) | فسيدخلهم فى رحمة منه وفضل ويهديهم إليه صراطا مستقيما | ١٧٥ م « | ٤ |
| | فاتبعنى أهدك صراطا سويا... ... ... ... ... | ٤٣ ك مريم | ١٩ |
| | ويتم نعمته عليك ويهديك صراطا مستقيما ... ... | ٢ م الفتح | ٤٨ |
| | ولتكون آية للمؤمنين ويهديكم صراطا مستقيما ... ... | ٢٠ م « | ٤٨ |
| صِرَاطَكَ | قال فبما أغويتنى لأقعدن لهم صراطك المستقيم | ١٦ ك الأعراف | ٧ |
| صِرَاطِى | وأن هذا صراطى مستقيما فاتبعوه ... ... ... | ١٥١ م الأنعام | ٦ |
| | ✦✦✦ | | |
| صَرْعَى | فترى القوم فيها صرعى كأنهم أعجاز نخل خاوية | ٧ ك الحاقة | ٦٩ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | |
| صَرَفَ: | صرف الله قلوبهم بأنهم قوم لا يفقهون ... ... | ٩ التوبة م | ١٢٧ |
| (٢) | فاستجاب له ربه فصرف عنه كيدهن ... ... ... | ١٢ يوسف ك | ٣٤ |
| صَرَفَكُمْ: | ثم صرفكم عنهم ليبتليكم ولقد عفا عنكم ... ... | ٣ آل عمران م | ١٥٢ |
| صَرَفْنَا: | وإذ صرفنا إليك نفرا من الجن يستمعون القرآن | ٤٦ الأحقاف ك | ٢٩ |
| سَأَصْرِفُ: | سأصرف عن آياتي الذين يتكبرون في الأرض | ٧ الأعراف ك | ١٤٦ |
| تَصْرِفْ: | وإلا تصرف عني كيدهن أصب إليهن ... ... | ١٢ يوسف ك | ٣٣ |
| لِنَصْرِفَ: | كذلك لنصرف عنه السوء والفحشاء ... ... | ١٢ « ك | ٢٤ |
| يَصْرِفُهُ: | فيصيب به من يشاء ويصرفه عن من يشاء ... ... | ٢٤ النور م | ٤٣ |
| أَصْرِفْ: | والذين يقولون ربنا اصرف عنا عذاب جهنم | ٢٥ الفرقان ك | ٦٥ |
| صُرِفَتْ: | وإذا صرفت أبصارهم تلقاء أصحاب النار قالوا | | |
| | ربنا لا تجعلنا مع القوم الظالمين ... ... ... ... | ٧ الأعراف ك | ٤٧ |
| تُصْرَفُونَ: | فماذا بعد الحق إلا الضلال فأنى تصرفون... | ١٠ يونس ك | ٣٢ |
| (٢) | ذلكم الله ربكم له الملك لا إله إلا هو فأنى تصرفون | ٣٩ الزمر ك | ٦ |
| يُصْرَفْ: | من يصرف عنه يومئذ فقد رحمه وذلك الفوز المبين | ٦ الأنعام ك | ١٦ |
| يُصْرَفُونَ: | ألم تر إلى الذين يجادلون في آيات الله أنى يصرفون | ٤٠ غافر ك | ٦٩ |
| صَرَّفْنَا: | ولقد صرفنا في هذا القرآن ليذكروا ... ... ... | ١٧ الإسراء ك | ٤١ |
| (٥) | ولقد صرفنا للناس في هذا القرآن من كل مثل ... | ١٧ « ك | ٨٩ |
| | ولقد صرفنا في هذا القرآن للناس من كل مثل... ... | ١٨ الكهف ك | ٥٤ |
| | وكذلك أنزلناه قرآنا عربيا وصرفنا فيه من الوعيد... | ٢٠ طه ك | ١١٣ |
| | وصرفنا الآيات لعلهم يرجعون ... ... ... ... | ٤٦ الأحقاف ك | ٢٧ |
| صَرَّفْنَاهُ: | ولقد صرفناه بينهم ليذكروا ... ... ... ... | ٢٥ الفرقان ك | ٥٠ |
| نُصَرِّفُ: | انظر كيف نصرف الآيات ثم هم يصدفون ... | ٦ الأنعام ك | ٤٦ |
| (٤) | انظر كيف نصرف الآيات لعلهم يفقهون ... ... | ٦ « ك | ٦٥ |
| | وكذلك نصرف الآيات وليقولوا درست ... ... | ٦ « ك | ١٠٥ |
| | كذلك نصرف الآيات لقوم يشكرون ... ... ... | ٧ الأعراف ك | ٥٨ |
| انْصَرَفُوا: | ثم انصرفوا صرف الله قلوبهم ... ... ... ... | ٩ التوبة م | ١٢٧ |
| صَرْفًا: | فقد كذبوكم بما تقولون فما تستطيعون صرفا ولا نصرا | ٢٥ الفرقان ك | ١٩ |
| تَصْرِيفِ: | وتصريف الرياح والسحاب المسخر بين السماء | | |
| (٢) | والأرض لآيات لقوم يعقلون ... ... ... ... | ٢ البقرة م | ١٦٤ |
| | وتصريف الرياح آيات لقوم يعقلون ... ... ... | ٤٥ الجاثية ك | ٥ |
| مَصْرُوفًا: | ألا يوم يأتيهم ليس مصروفا عنهم ... ... ... | ١١ هود ك | ٨ |
| مَصْرِفًا: | فظنوا أنهم مواقعوها ولم يجدوا عنها مصرفا ... | ١٨ الكهف ك | ٥٣ |
| | ✦✦✦ | | |
| لَيَصْرِمُنَّهَا: | إنا بلوناهم كما بلونا أصحاب الجنة إذ أقسموا | | |
| | ليصرمنها مصبحين ... ... ... ... ... ... | ٦٨ القلم م | ١٧ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| صَارِمِينَ: | أن اغدوا على حرثكم إن كنتم صارمين ... ... | ٦٨ القلم م | ٢٢ |
| كَالصَّرِيمِ: | فأصبحت كالصريم ... ... ... ... ... ... | ٦٨ « م | ٢٠ |
| | ✦✦✦ | | |
| يَصْعَدُ: | إليه يصعد الكلم الطيب والعمل الصالح يرفعه ... | ٣٥ فاطر ك | ١٠ |
| تُصْعِدُونَ: | إذ تصعدون ولا تلوون على أحد والرسول يدعوكم | ٣ آل عمران م | ١٥٣ |
| يَصَّعَّدُ: | يجعل صدره ضيقا حرجا كأنما يصعد في السماء ... | ٦ الأنعام ك | ١٢٥ |
| صَعَدًا: | ومن يعرض عن ذكر ربه يسلكه عذابا صعدا ... | ٧٢ الجن ك | ١٧ |
| صَعُودًا: | كلا إنه كان لآياتنا عنيدا . سأرهقه صعودا ... | ٧٤ المدثر ك | ١٧ |
| صَعِيدًا: | فتيمموا صعيدا طيبا فامسحوا بوجوهكم وأيديكم | ٤ النساء م | ٤٣ |
| (٤) | فتيمموا صعيدا طيبا فامسحوا بوجوهكم وأيديكم منه | ٥ المائدة م | ٦ |
| | وإنا لجاعلون ما عليها صعيدا جرزا ... ... ... | ١٨ الكهف ك | ٨ |
| | ويرسل عليها حسبانا من السماء فتصبح صعيدا زلقا ... | ١٨ « ك | ٤٠ |
| | ✦✦✦ | | |
| تُصَعِّرْ: | ولا تصعر خدك للناس ولا تمش في الأرض مرحا | ٣١ لقمان ك | ١٨ |
| | ✦✦✦ | | |
| فَصَعِقَ: | ونفخ في الصور فصعق من في السموات ومن في الأرض | ٣٩ الزمر ك | ٦٨ |
| يُصْعَقُونَ: | فذرهم حتى يلاقوا يومهم الذي فيه يصعقون | ٥٢ الطور ك | ٤٥ |
| صَعِقًا: | فلما تجلى ربه للجبل جعله دكا وخر موسى صعقا ... | ٧ الأعراف ك | ١٤٣ |
| الصَّاعِقَةُ: | لن نؤمن لك حتى نرى الله جهرة فأخذتكم الصاعقة | ٢ البقرة م | ٥٥ |
| (٦) | فقالوا أرنا الله جهرة فأخذتهم الصاعقة بظلمهم ... | ٤ النساء م | ١٥٣ |
| | فإن أعرضوا فقل أنذرتكم صاعقة ... ... ... | ٤١ فصلت ك | ١٣ |
| | مثل صاعقة عاد وثمود ... ... ... ... ... | ٤١ « ك | ١٣ |
| | فأخذتهم صاعقة العذاب الهون بما كانوا يكسبون | ٤١ « ك | ١٧ |
| | فعتوا عن أمر ربهم فأخذتهم الصاعقة وهم ينظرون | ٥١ الذاريات ك | ٤٤ |
| الصَّوَاعِقِ: | يجعلون أصابعهم في آذانهم من الصواعق | | |
| (٢) | حذر الموت ... ... ... ... ... ... | ٢ البقرة م | ١٩ |
| | ويرسل الصواعق فيصيب بها من يشاء ... ... ... | ١٣ الرعد م | ١٣ |
| | ✦✦✦ | | |
| صَاغِرُونَ: | حتى يعطوا الجزية عن يد وهم صاغرون ... | ٩ التوبة م | ٢٩ |
| (٢) | ولنخرجنهم منها أذلة وهم صاغرون ... ... ... | ٢٧ النمل ك | ٣٧ |
| الصَّاغِرِينَ: | فاخرج إنك من الصاغرين ... ... ... ... | ٧ الأعراف ك | ١٣ |
| (٣) | فغلبوا هنالك وانقلبوا صاغرين ... ... ... ... | ٧ « ك | ١١٩ |
| | ولئن لم يفعل ما آمره ليسجنن وليكونا من الصاغرين | ١٢ يوسف ك | ٣٢ |
| صَغِيرٍ: | وكل صغير وكبير مستطر ... ... ... ... ... | ٥٤ القمر ك | ٥٣ |
| صَغِيرًا: | ولا تسئموا أن تكتبوه صغيرا أو كبيرا إلى أجله... | ٢ البقرة م | ٢٨٢ |
| (٢) | وقل رب ارحمهما كما ربياني صغيرا ... ... ... | ١٧ الإسراء ك | ٢٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| صَغِيرَةً | : ولا ينفقون نفقة صغيرة ولا كبيرة ولا يقطعون | | | |
| (٢) | واديا إلا كتب لهم ... ... ... ... ... ... | ١٢١ | م التوبة | ٩ |
| | لا يغادر صغيرة ولا كبيرة إلا أحصاها ... ... ... | ٤٩ | ك الكهف | ١٨ |
| أَصْغَرُ | : ولا أصغر من ذلك ولا أكبر إلا فى كتاب مبين ... | ٦١ | ك يونس | ١٠ |
| (٢) | ولا أصغر من ذلك ولا أكبر إلا فى كتاب مبين ... | ٣ | ك سبإ | ٣٤ |
| صَغَارٌ | : سيصيب الذين أجرموا صغار عند الله وعذاب شديد | ١٢٤ | ك الأنعام | ٦ |
| صَغَتْ | : إن تتوبا إلى الله فقد صغت قلوبكما ... ... ... | ٤ | ك التحريم | ٦٦ |
| لِتَصْغَى | : ولتصغى إليه أفئدة الذين لا يؤمنون بالآخرة ... | ١١٣ | ك الأنعام | ٦ |
| تَصْفَحُوا | : وإن تعفوا وتصفحوا وتغفروا فإن الله غفور رحيم | ١٤ | م التغابن | ٦٤ |
| وَلْيَصْفَحُوا | : وليعفوا وليصفحوا ألا تحبون أن يغفر الله لكم | ٢٢ | م النور | ٢٤ |
| اصْفَحْ | : فاعف عنهم واصفح إن الله يحب المحسنين ... | ١٣ | م المائدة | ٥ |
| (٣) | وإن الساعة لآتية فاصفح الصفح الجميل ... ... ... | ٨٥ | ك الحجر | ١٥ |
| | فاصفح عنهم وقل سلام فسوف يعلمون ... ... ... | ٨٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| اصْفَحُوا | : فاعفوا واصفحوا حتى يأتى الله بأمره ... ... | ١٠٩ | م البقرة | ٢ |
| الصَّفْحَ | : وإن الساعة لآتية فاصفح الصفح الجميل ... ... | ٨٥ | ك الحجر | ١٥ |
| صَفْحًا | : أفنضرب عنكم الذكر صفحا أن كنتم قوما مسرفين | ٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| الأَصْفَادِ | : وترى المجرمين يومئذ مقرنين فى الأصفاد | ٤٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| (٢) | وآخرين مقرنين فى الأصفاد ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك ص | ٣٨ |
| صَفْرَاءُ | : قال إنه يقول إنها بقرة صفراء فاقع لونها ... ... | ٦٩ | م البقرة | ٢ |
| صُفْرٌ | : إنها ترمى بشرر كالقصر. كأنه جمالت صفر ... ... | ٣٣ | ك المرسلات | ٧٧ |
| مُصْفَرًّا | : ولئن أرسلنا ريحا فرأوه مصفرا لظلوا من بعده يكفرون | ٥١ | ك الروم | ٣٠ |
| (٣) | ثم يهيج فتراه مصفرا ثم يجعله حطاما ... ... ... | ٢١ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ثم يهيج فتراه مصفرا ثم يكون حطاما ... ... ... | ٢٠ | م الحديد | ٥٧ |
| صَفْصَفًا | : فقل ينسفها ربى نسفا . فيذرها قاعا صفصفا | ١٠٦ | ك طه | ٢٠ |
| صَفًّا | : وعرضوا على ربك صفا ... ... ... ... ... ... | ٤٨ | ك الكهف | ١٨ |
| (٧) | فأجمعوا كيدكم ثم ائتوا صفا ... ... ... ... ... | ٦٤ | ك طه | ٢٠ |
| | والصافات صفا . فالزاجرات زجرا . فالتاليات ذكرا . | | | |
| | إن إلهكم لواحد ... ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الصافات | ٣٧ |
| | إن الله يحب الذين يقاتلون فى سبيله صفا ... ... | ٤ | م الصف | ٦١ |
| | يوم يقوم الروح والملائكة صفا ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك النبأ | ٧٨ |
| | وجاء ربك والملك صفا... ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك الفجر | ٨٩ |
| | صفا ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك » | ٨٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| صَافَّاتٍ | : والطير صافات كل قد علم صلاته وتسبيحه ... | ٤١ | م النور | ٢٤ |
| (٣) | والصافات صفا ... ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الصافات | ٣٧ |
| | أولم يروا إلى الطير فوقهم صافات ويقبضن ... ... | ١٩ | ك الملك | ٦٧ |
| الصَّافُّونَ | : وإنا لنحن الصافون ... ... ... ... ... ... | ١٦٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| صَوَافَّ | : فاذكروا اسم الله عليها صواف ... ... ... ... | ٣٦ | م الحج | ٢٢ |
| مَصْفُوفَةٍ | : متكئين على سرر مصفوفة وزوجناهم بحور عين | ٢٠ | ك الطور | ٥٢ |
| (٢) | وأكواب موضوعة . ونمارق مصفوفة ... ... ... | ١٥ | ك الغاشية | ٨٨ |
| الصَّافِنَاتُ | : إذ عرض عليه بالعشى الصافنات الجياد ... | ٣١ | ك ص | ٣٨ |
| أَصْفَاكُمْ | : أفأصفاكم ربكم بالبنين واتخذ من الملائكة إناثا | ٤٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٢) | أم اتخذ مما يخلق بنات وأصفاكم بالبنين ... ... | ١٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| اصْطَفَى | : إن الله اصطفى لكم الدين ... ... ... ... ... | ١٣٢ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | إن الله اصطفى آدم ونوحا وآل إبراهيم ... ... ... | ٣٣ | م آل عمران | ٣ |
| | قل الحمد لله وسلام على عباده الذين اصطفى ... ... | ٥٩ | ك النمل | ٢٧ |
| | لو أراد الله أن يتخذ ولدا لاصطفى مما يخلق ما يشاء | ٤ | ك الزمر | ٣٩ |
| أَصْطَفَى | : أصطفى البنات على البنين . مالكم كيف تحكمون | ١٥٣ | ك الصافات | ٣٧ |
| اصْطَفَاكِ | : يا مريم إن الله اصطفاك وطهرك ... ... | ٤٢ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | واصطفاك على نساء العالمين ... ... ... ... ... | ٤٢ | م » | ٣ |
| اصْطَفَاهُ | : قال إن الله اصطفاه عليكم وزاده بسطة فى العلم والجسم | ٢٤٧ | م البقرة | ٢ |
| اصْطَفَيْتُكَ | : إنى اصطفيتك على الناس برسالاتى وبكلامى | ١٤٤ | ك الأعراف | ٧ |
| اصْطَفَيْنَا | : ثم أورثنا الكتاب الذين اصطفينا من عبادنا | ٣٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| اصْطَفَيْنَاهُ | : ولقد اصطفيناه فى الدنيا ... ... ... ... | ١٣٠ | م البقرة | ٢ |
| يَصْطَفِى | : الله يصطفى من الملائكة رسلا ومن الناس ... | ٧٥ | م الحج | ٢٢ |
| الْمُصْطَفَيْنَ | : وإنهم عندنا لمن المصطفين الأخيار ... ... | ٤٧ | ك ص | ٣٨ |
| مُصَفًّى | : وأنهار من خمر لذة للشاربين وأنهار من عسل مصفى | ١٥ | م محمد | ٤٧ |
| الصَّفَا | : إن الصفا والمروة من شعائر الله ... ... ... ... | ١٥٨ | م البقرة | ٢ |
| صَفْوَانٍ | : فمثله كمثل صفوان عليه تراب فأصابه وابل فتركه صلدا | ٢٦٤ | م » | ٢ |
| فَصَكَّتْ | : فأقبلت امرأته فى صرة فصكت وجهها ... ... | ٢٩ | ك الذاريات | ٥١ |
| صَلَبُوهُ | : وما قتلوه وما صلبوه ولكن شبه لهم ... ... ... | ١٥٧ | م النساء | ٤ |
| يُصْلَبُ | : وأما الآخر فيصلب فتأكل الطير من رأسه ... ... | ٤١ | ك يوسف | ١٢ |
| لَأُصَلِّبَنَّكُمْ | : لأقطعن أيديكم وأرجلكم من خلاف ثم لأصلبنكم | | | |
| (٣) | أجمعين ... ... ... ... ... ... ... | ١٢٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولأصلبنكم فى جذوع النخل ... ... ... ... ... | ٧١ | ك طه | ٢٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| لَأُصَلِّبَنَّكُمْ | : لأقطعن أيديكم وأرجلكم من خلاف ولأصلبنكم أجمعين ... ... ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| يُصَلَّبُوا | : أن يقتلوا أو يصلبوا أو تقطع أيديهم وأرجلهم من خلاف ... ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | م المائدة | ٥ |
| الصُّلْبِ | : خلق من ماء دافق . يخرج من بين الصلب والترائب | ٧ | ك الطارق | ٨٦ |
| أَصْلَابِكُمْ | : وحلائل أبنائكم الذين من أصلابكم ... ... | ٢٣ | م النساء | ٤ |
| صَلَحَ | : جنات عدن يدخلونها ومن صلح من آبائهم ... ... | ٢٣ | م الرعد | ١٣ |
| (٢) | وأدخلهم جنات عدن التي وعدتهم ومن صلح من آبائهم | ٨ | ك غافر | ٤٠ |
| أَصْلَحَ | : فمن خاف من موص جنفا أو إثما فأصلح بينهم فلا إثم عليه ... ... ... ... ... ... ... | ١٨٢ | م البقرة | ٢ |
| (٧) | فمن تاب من بعد ظلمه وأصلح فإن الله يتوب عليه | ٣٩ | م المائدة | ٥ |
| | فمن آمن وأصلح فلا خوف عليهم ولا هم يحزنون ... | ٤٨ | ك الأنعام | ٦ |
| | ثم تاب من بعده وأصلح فأنه غفور رحيم ... ... ... | ٥٤ | ك « | ٦ |
| | فمن اتقى وأصلح فلا خوف عليهم ولا هم يحزنون | ٣٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | فمن عفا وأصلح فأجره على الله ... ... ... ... | ٤٠ | ك الشورى | ٤٢ |
| | كفر عنهم سيئاتهم وأصلح بالهم ... ... ... ... | ٢ | م محمد | ٤٧ |
| أَصْلَحَا | : فإن تابا وأصلحا فأعرضوا عنهما ... ... ... ... | ١٦ | م النساء | ٤ |
| أَصْلَحْنَا | : فاستجبنا له ووهبنا له يحيى وأصلحنا له زوجه | ٩٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| أَصْلَحُوا | : إلا الذين تابوا وأصلحوا وبينوا ... ... ... | ١٦٠ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | إلا الذين تابوا من بعد ذلك وأصلحوا ... ... ... | ٨٩ | م آل عمران | ٣ |
| | إلا الذين تابوا وأصلحوا واعتصموا بالله ... ... | ١٤٦ | م النساء | ٤ |
| | ثم تابوا من بعد ذلك وأصلحوا إن ربك من بعدها لغفور رحيم ... ... ... ... ... ... ... | ١١٩ | ك النحل | ١٦ |
| | إلا الذين تابوا من بعد ذلك وأصلحوا فإن الله غفور رحيم | ٥ | م النور | ٢٤ |
| تُصْلِحُوا | : أن تبروا وتتقوا وتصلحوا بين الناس ... ... | ٢٢٤ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | وإن تصلحوا وتتقوا فإن الله كان غفورا رحيما ... | ١٢٩ | م النساء | ٤ |
| يُصْلِحُ | : إن الله لا يصلح عمل المفسدين ... ... ... ... | ٨١ | ك يونس | ١٠ |
| (٣) | يصلح لكم أعمالكم ويغفر لكم ذنوبكم ... ... ... | ٧١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | سيهديهم ويصلح بالهم ... ... ... ... ... ... | ٥ | م محمد | ٤٧ |
| يُصْلِحَا | : فلا جناح عليهما أن يصلحا بينهما صلحا ... ... | ١٢٨ | م النساء | ٤ |
| يُصْلِحُونَ | : الذين يفسدون في الأرض ولا يصلحون ... | ١٥٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| (٢) | وكان في المدينة تسعة رهط يفسدون في الأرض ولا يصلحون ... ... ... ... ... ... ... | ٤٨ | ك النمل | ٢٧ |
| أَصْلِحْ | : اخلفني في قومي وأصلح ولا تتبع سبيل المفسدين | ١٤٢ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | وأصلح لي في ذريتي إني تبت إليك وإني من المسلمين | ١٥ | م الأحقاف | ٤٦ |
| أَصْلِحُوا | : فاتقوا الله وأصلحوا ذات بينكم ... ... ... | ١ | م الأنفال | ٨ |
| (٤) | وإن طائفتان من المؤمنين اقتتلوا فأصلحوا بينهما ... | ٩ | م الحجرات | ٤٩ |
| أَصْلَحُوا | : فإن فاءت فأصلحوا بينهما بالعدل وأقسطوا ... | ٩ | م الحجرات | ٤٩ |
| | إنما المؤمنون إخوة فأصلحوا بين أخويكم ... ... | ١٠ | م « | ٤٩ |
| الصُّلْحُ | : والصلح خير وأحضرت الأنفس الشح ... ... | ١٢٨ | م النساء | ٤ |
| صُلْحًا | : فلا جناح عليهما أن يصلحا بينهما صلحا ... ... | ١٢٨ | م « | ٤ |
| صَالِحَ | : وقالوا يا صالح ائتنا بما تعدنا إن كنت من المرسلين | ٧٧ | ك الأعراف | ٧ |
| (٨) | ولا ينالون من عدو نيلا إلا كتب لهم به عمل صالح | ١٢٠ | م التوبة | ٩ |
| | قال يا نوح إنه ليس من أهلك إنه عمل غير صالح ... | ٤٦ | ك هود | ١١ |
| | قالوا يا صالح قد كنت فينا مرجوا قبل هذا ... ... | ٦٢ | ك « | ١١ |
| | أن يصيبكم مثل ما أصاب قوم نوح أو قوم هود أو قوم صالح | ٨٩ | ك « | ١١ |
| | إذ قال لهم أخوهم صالح ألا تتقون ... ... ... ... | ١٤٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | إليه يصعد الكلم الطيب والعمل الصالح يرفعه ... ... | ١٠ | ك فاطر | ٣٥ |
| | فإن الله هو مولاه وجبريل وصالح المؤمنين ... ... | ٤ | م التحريم | ٦٦ |
| صَالِحًا | : من آمن بالله واليوم الآخر وعمل صالحا فلهم أجرهم عند ربهم ... ... ... ... ... ... | ٦٢ | م البقرة | ٢ |
| (٣١) | من آمن بالله واليوم الآخر وعمل صالحا فلا خوف عليهم | ٦٩ | م المائدة | ٥ |
| | وإلى ثمود أخاهم صالحا قال يا قوم اعبدوا الله | ٧٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | أتعلمون أن صالحا مرسل من ربه ... ... ... ... | ٧٥ | ك « | ٧ |
| | دعوا الله ربهما لئن آتيتنا صالحا لنكونن من الشاكرين | ١٨٩ | ك « | ٧ |
| | فلما آتاهما صالحا جعلا له شركاء فيما آتاهما ... ... | ١٩٠ | ك « | ٧ |
| | وآخرون اعترفوا بذنوبهم خلطوا عملا صالحا وآخر سيئا | ١٠٢ | م التوبة | ٩ |
| | وإلى ثمود أخاهم صالحا قال يا قوم اعبدوا الله | ٦١ | ك هود | ١١ |
| | فلما جاء أمرنا نجينا صالحا والذين آمنوا معه ... ... | ٦٦ | ك « | ١١ |
| | من عمل صالحا من ذكر أو أنثى وهو مؤمن فلنحيينه حياة طيبة ... ... ... ... ... ... ... | ٩٧ | ك النحل | ١٦ |
| | وكان تحته كنز لهما وكان أبوهما صالحا ... ... ... | ٨٢ | ك الكهف | ١٨ |
| | وأما من آمن وعمل صالحا فله جزاء الحسنى ... ... | ٨٨ | م « | ١٨ |
| | فمن كان يرجوا لقاء ربه فليعمل عملا صالحا ... ... | ١١٠ | ك « | ١٨ |
| | إلا من تاب وآمن وعمل صالحا فأولئك يدخلون الجنة | ٦٠ | ك مريم | ١٩ |
| | وإني لغفار لمن تاب وآمن وعمل صالحا ثم اهتدى | ٨٢ | ك طه | ٢٠ |
| | يا أيها الرسل كلوا من الطيبات واعملوا صالحا ... ... | ٥١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | لعلي أعمل صالحا فيما تركت كلا إنها كلمة هو قائلها | ١٠٠ | ك « | ٢٣ |
| | إلا من تاب وآمن وعمل عملا صالحا ... ... ... ... | ٧٠ | م الفرقان | ٢٥ |
| | ومن تاب وعمل صالحا فإنه يتوب إلى الله متابا ... ... | ٧١ | ك « | ٢٥ |
| | وأن أعمل صالحا ترضاه ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك النمل | ٢٧ |
| | ولقد أرسلنا إلى ثمود أخاهم صالحا أن اعبدوا الله | ٤٥ | ك « | ٢٧ |
| | فأما من تاب وآمن وعمل صالحا فعسى أن يكون من المفلحين ... ... ... ... ... ... ... | ٦٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | ويلكم ثواب الله خير لمن آمن وعمل صالحا ... ... | ٨٠ | ك « | ٢٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| صَالِحًا: | من كفر فعليه كفره ومن عمل صالحا فلأنفسهم يمهدون ... ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك الروم | ٣٠ |
| | ربنا أبصرنا وسمعنا فارجعنا نعمل صالحا إنا موقنون | ١٢ | ك السجدة | ٣٢ |
| | ومن يقنت منكن لله ورسوله وتعمل صالحا نؤتها أجرها مرتين ... ... ... ... ... ... ... | ٣١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | أن أعمل صالحا ترضاه وأدخلني برحمتك في عبادك الصالحين | ١٩ | ك النمل | ٢٧ |
| | إلا من آمن وعمل صالحا فأولئك لهم جزاء الضعف وهم في الغرفات آمنون | ٣٧ | ك » | ٣٤ |
| | ربنا أخرجنا نعمل صالحا غير الذي كنا نعمل | ٣٧ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ومن عمل صالحا من ذكر أو أنثى وهو مؤمن فأولئك يدخلون الجنة يرزقون فيها بغير حساب ... ... | ٤٠ | ك غافر | ٤٠ |
| | ومن أحسن قولا ممن دعا إلى الله وعمل صالحا ... ... | ٣٣ | ك فصلت | ٤١ |
| | من عمل صالحا فلنفسه ومن أساء فعليها ... ... ... | ٤٦ | ك » | ٤١ |
| | من عمل صالحا فلنفسه ومن أساء فعليها ... ... ... | ١٥ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | وأن أعمل صالحا ترضاه وأصلح لي في ذريتي ... ... | ١٥ | م الأحقاف | ٤٦ |
| | ومن يؤمن بالله ويعمل صالحا يكفر عنه سيئاته ... | ٩ | م التغابن | ٦٤ |
| | ومن يؤمن بالله ويعمل صالحا يدخله جنات ... ... | ١١ | م الطلاق | ٦٥ |
| الصَّالِحُونَ: | منهم الصالحون ومنهم دون ذلك ... ... | ١٦٨ | م الأعراف | ٧ |
| (٣) | أن الأرض يرثها عبادي الصالحون ... ... ... ... | ١٠٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وأنا منا الصالحون ومنا دون ذلك كنا طرائق قددا | ١١ | ك الجن | ٧٢ |
| صَالِحَيْنِ: | كانتا تحت عبدين من عبادنا صالحين فخانتاهما | ١٠ | م التحريم | ٦٦ |
| الصَّالِحِينَ: | وإنه في الآخرة لمن الصالحين ... ... ... ... | ١٣٠ | م البقرة | ٢ |
| (٢٦) | وسيدا وحصورا ونبيا من الصالحين ... ... ... ... | ٣٩ | م آل عمران | ٣ |
| | ويكلم الناس في المهد وكهلا ومن الصالحين ... ... | ٤٦ | م » | ٣ |
| | ويسارعون في الخيرات وأولئك من الصالحين... ... | ١١٤ | م » | ٣ |
| | فأولئك مع الذين أنعم الله عليهم من النبيين والصديقين والشهداء والصالحين ... ... ... ... ... | ٦٩ | م النساء | ٤ |
| | ونطمع أن يدخلنا ربنا مع القوم الصالحين ... ... | ٨٤ | م المائدة | ٥ |
| | وزكريا ويحيى وعيسى وإلياس كل من الصالحين | ٨٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | إن وليي الله الذي نزل الكتاب وهو يتولى الصالحين | ١٩٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | لئن آتانا من فضله لنصدقن ولنكونن من الصالحين | ٧٥ | التوبة | ٩ |
| | يخل لكم وجه أبيكم وتكونوا من بعده قوما صالحين | ٩ | ك يوسف | ١٢ |
| | أنت وليي في الدنيا والآخرة توفني مسلما وألحقني بالصالحين | ١٠١ | ك » | ١٢ |
| | وآتيناه في الدنيا حسنة وإنه في الآخرة لمن الصالحين | ١٢٢ | ك النحل | ١٦ |
| | إن تكونوا صالحين فإنه كان للأوابين غفورا... ... | ٢٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ووهبنا له إسحق ويعقوب نافلة وكلا جعلنا صالحين | ٧٢ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وأدخلناه في رحمتنا إنه من الصالحين ... ... ... | ٧٥ | ك » | ٢١ |
| | وأدخلناهم في رحمتنا إنهم من الصالحين ... ... ... | ٨٦ | ك » | ٢١ |
| | وأنكحوا الأيامى منكم والصالحين من عبادكم وإمائكم | ٣٢ | م النور | ٢٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الصَّالِحِينَ: | رب هب لي حكما وألحقني بالصالحين ... ... | ٨٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وأدخلني برحمتك في عبادك الصالحين ... ... ... ... | ١٩ | ك النمل | ٢٧ |
| | ستجدني إن شاء الله من الصالحين ... ... ... ... | ٢٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات لندخلنهم في الصالحين | ٩ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | وآتيناه أجره في الدنيا وإنه في الآخرة لمن الصالحين | ٢٧ | ك » | ٢٩ |
| | رب هب لي من الصالحين ... ... ... ... ... ... | ١٠٠ | ك الصافات | ٣٧ |
| | وبشرناه بإسحق نبيا من الصالحين ... ... ... ... | ١١٢ | ك » | ٣٧ |
| | لولا أخرتني إلى أجل قريب فأصدق وأكن من الصالحين | ١٠ | م المنافقون | ٦٣ |
| | فاجتباه ربه فجعله من الصالحين ... ... ... ... | ٥٠ | م القلم | ٦٨ |
| الصَّالِحَاتُ: | وبشر الذين آمنوا وعملوا الصالحات أن | | | |
| (٦٢) | لهم جنات تجري من تحتها الأنهار ... ... ... | ٢٥ | م البقرة | ٢ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات أولئك أصحاب الجنة | ٨٢ | م » | ٢ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات وأقاموا الصلاة وآتوا الزكاة لهم أجرهم عند ربهم ... ... ... | ٢٧٧ | م » | ٢ |
| | وأما الذين آمنوا وعملوا الصالحات فيوفيهم أجورهم | ٥٧ | م آل عمران | ١ |
| | فالصالحات قانتات حافظات للغيب بما حفظ الله ... | ٣٤ | م النساء | ٤ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات سندخلهم جنات ... | ٥٧ | م » | ٤ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات سندخلهم جنات ... | ١٢٢ | م » | ٤ |
| | ومن يعمل من الصالحات من ذكر أو أنثى وهو مؤمن فأولئك يدخلون الجنة ... ... ... ... ... ... | ١٢٤ | م » | ٤ |
| | فأما الذين آمنوا وعملوا الصالحات فيوفيهم أجورهم | ١٧٣ | م » | ٤ |
| | وعد الله الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم مغفرة وأجر عظيم | ٩ | م المائدة | ٥ |
| | ليس على الذين آمنوا وعملوا الصالحات جناح فيما طعموا | ٩٣ | م » | ٥ |
| | إذا ما اتقوا وآمنوا وعملوا الصالحات ... ... ... | ٩٣ | م » | ٥ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات لا نكلف نفسا إلا وسعها | ٤٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | ليجزي الذين آمنوا وعملوا الصالحات بالقسط... ... | ٤ | ك يونس | ١٠ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات يهديهم ربهم بإيمانهم | ٩ | ك » | ١٠ |
| | إلا الذين صبروا وعملوا الصالحات أولئك لهم مغفرة | ١١ | ك هود | ١١ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات وأخبتوا إلى ربهم أولئك أصحاب الجنة ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك » | ١١ |
| | الذين آمنوا وعملوا الصالحات طوبى لهم وحسن مآب | ٢٩ | م الرعد | ١٣ |
| | وأدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات... ... | ٢٣ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | ويبشر المؤمنين الذين يعملون الصالحات أن لهم أجرا كبيرا | ٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ويبشر المؤمنين الذين يعملون الصالحات أن لهم أجرا حسنا | ٢ | ك الكهف | ١٨ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات إنا لا نضيع أجر من أحسن عملا ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك » | ١٨ |
| | والباقيات الصالحات خير عند ربك ثوابا وخير أملا | ٤٦ | ك » | ١٨ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات كانت لهم جنات الفردوس نزلا .. ... ... ... ... ... ... | ١٠٧ | ك » | ١٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **الصَّالِحَاتُ** : والباقيات الصالحات خير عند ربك ثوابا | | | | |
| | وخير مردا ... ... ... ... ... ... ... | ٧٦ | ك مريم | ١٩ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات سيجعل لهم الرحمن ودا | ٩٦ | ك « | ١٩ |
| | ومن يأته مؤمنا قد عمل الصالحات فأولئك لهم الدرجات العلى... ... ... ... ... ... ... | ٧٥ | ك طه | ٢٠ |
| | ومن يعمل من الصالحات وهو مؤمن فلا يخاف ظلما ولا هضما ... ... ... ... ... ... ... | ١١٢ | ك « | ٢٠ |
| | فمن يعمل من الصالحات وهو مؤمن فلا كفران لسعيه | ٩٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | إن الله يدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات | ١٤ | م الحج | ٢٢ |
| | إن الله يدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات | ٢٣ | م « | ٢٢ |
| | فالذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم مغفرة ورزق كريم | ٥٠ | م « | ٢٢ |
| | فالذين آمنوا وعملوا الصالحات فى جنات النعيم ... | ٥٦ | م « | ٢٢ |
| | وعد الله الذين آمنوا منكم وعملوا الصالحات ليستخلفنهم | ٥٥ | م النور | ٢٤ |
| | إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات وذكروا الله كثيرا | ٢٢٧ | م الشعراء | ٢٦ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات لنكفرن عنهم سيئاتهم | ٧ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات لندخلنهم فى الصالحين | ٩ | م « | ٢٩ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات لنبوئنهم من الجنة غرفا | ٥٨ | م « | ٢٩ |
| | فأما الذين آمنوا وعملوا الصالحات فهم فى روضة يحبرون | ١٥ | ك الروم | ٣٠ |
| | ليجزى الذين آمنوا وعملوا الصالحات من فضله ... | ٤٥ | ك « | ٣٠ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم جنات النعيم... | ٨ | ك لقمان | ٣١ |
| | أما الذين آمنوا وعملوا الصالحات فلهم جنات المأوى | ١٩ | م السجدة | ٣٢ |
| | ليجزى الذين آمنوا وعملوا الصالحات أولئك لهم مغفرة | ٤ | ك سبإ | ٣٤ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم مغفرة وأجر كبير | ٧ | ك فاطر | ٣٥ |
| | إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات وقليل ما هم... ... | ٢٤ | ك ص | ٣٨ |
| | أم نجعل الذين آمنوا وعملوا الصالحات كالمفسدين فى الأرض ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٣٨ |
| | وما يستوى الأعمى والبصير والذين آمنوا وعملوا الصالحات ولا المسىء ... ... ... ... ... ... | ٥٨ | ك غافر | ٤٠ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم أجر غير ممنون... | ٨ | ك فصلت | ٤١ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات فى روضات الجنات | ٢٢ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ذلك الذى يبشر الله عباده الذين آمنوا وعملوا الصالحات | ٢٣ | م « | ٤٢ |
| | ويستجيب الذين آمنوا وعملوا الصالحات ... ... | ٢٦ | ك « | ٤٢ |
| | أم حسب الذين اجترحوا السيئات أن نجعلهم كالذين آمنوا وعملوا الصالحات سواء محياهم ومماتهم ... | ٢١ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | فأما الذين آمنوا وعملوا الصالحات فيدخلهم ربهم فى رحمته ... ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك « | ٤٥ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات وآمنوا بما نزل على محمد وهو الحق من ربهم كفر عنهم سيئاتهم ... | ٢ | م محمد | ٤٧ |
| | إن الله يدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات | ١٢ | م « | ٤٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **الصَّالِحَاتِ** : وعد الله الذين آمنوا وعملوا الصالحات منهم مغفرة وأجرا عظيما ... ... ... ... ... ... | | ٢٩ | م الفتح | ٤٨ |
| | ليخرج الذين آمنوا وعملوا الصالحات من الظلمات إلى النور | ١١ | م الطلاق | ٦٥ |
| | إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم أجر غير ممنون... | ٢٥ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم جنات ... ... | ١١ | ك البروج | ٨٥ |
| | إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات فلهم أجر غير ممنون | ٦ | ك التين | ٩٥ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات أولئك هم خير البرية | ٧ | م البينة | ٩٨ |
| | إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات وتواصوا بالحق | ٣ | ك العصر | ١٠٣ |
| **إِصْلَاحٍ** : ويسئلونك عن اليتامى قل إصلاح لهم خير ... | | ٢٢٠ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | إلا من أمر بصدقة أو معروف أو إصلاح بين الناس | ١١٤ | م النساء | ٤ |
| | إن أريد إلا الإصلاح ما استطعت ... ... ... ... | ٨٨ | ك هود | ١١ |
| **إِصْلَاحًا** : وبعولتهن أحق بردهن فى ذلك إن أرادوا إصلاحا | | ٢٢٨ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | إن يريدا إصلاحا يوفق الله بينهما ... ... ... ... | ٣٥ | م النساء | ٤ |
| **إِصْلَاحِهَا** : ولا تفسدوا فى الأرض بعد إصلاحها... ... | | ٥٦ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | ولا تفسدوا فى الأرض بعد إصلاحها ذلكم خير لكم | ٨٥ | ك « | ٧ |
| **الْمُصْلِحِ** : والله يعلم المفسد من المصلح ... ... ... ... | | ٢٢٠ | م البقرة | ٢ |
| **مُصْلِحُونَ** : قالوا إنما نحن مصلحون ... ... ... ... | | ١١ | م « | ٢ |
| (٢) | وما كان ربك ليهلك القرى بظلم وأهلها مصلحون ... | ١١٧ | ك هود | ١١ |
| **الْمُصْلِحِينَ** : إنا لا نضيع أجر المصلحين ... ... ... ... | | ١٧٠ | م الأعراف | ٧ |
| (٢) | وما تريد أن تكون من المصلحين ... ... ... ... | ١٩ | ك القصص | ٢٨ |
| **صَلْدًا** : فمثله كمثل صفوان عليه تراب فأصابه وابل فتركه صلدا | | ٢٦٤ | م البقرة | ٢ |
| **صَلْصَالٍ** : ولقد خلقنا الإنسان من صلصال من حمإ مسنون | | ٢٦ | ك الحجر | ١٥ |
| (٤) | إنى خالق بشرا من صلصال من حمإ مسنون... ... | ٢٨ | ك « | ١٥ |
| | قال لم أكن لأسجد لبشر خلقته من صلصال من حمإ مسنون | ٣٣ | ك « | ١٥ |
| | خلق الإنسان من صلصال كالفخار ... ... ... ... | ١٤ | م الرحمن | ٥٥ |
| **صَلَّى** : فلا صدق ولا صلى ... ... ... ... ... ... | | ٣١ | ك القيامة | ٧٥ |
| (٣) | وذكر اسم ربه فصلى ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك الأعلى | ٨٧ |
| | أرأيت الذى ينهى ، عبدا إذا صلى ... ... ... ... | ١٠ | ك العلق | ٩٦ |
| **تُصَلِّ** : ولا تصل على أحد منهم مات أبدا ولا تقم على قبره | | ٨٤ | م التوبة | ٩ |
| **يُصَلُّوا** : ولتأت طائفة أخرى لم يصلوا... ... ... ... | | ١٠٢ | م النساء | ٤ |
| (٢) | فليصلوا معك وليأخذوا حذرهم وأسلحتهم... ... ... | ١٠٢ | م « | ٤ |
| **يُصَلُّونَ** : إن الله وملائكته يصلون على النبى ... ... ... | | ٥٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| **يُصَلِّى** : فنادته الملائكة وهو قائم يصلى فى المحراب ... ... | | ٣٩ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | هو الذى يصلى عليكم وملائكته ... ... ... ... ... | ٤٣ | م الأحزاب | ٣٣ |

| اللفظة | الآيـة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| صَلِّ | : خذ من أموالهم صدقة تطهرهم وتزكيهم بها وصل عليهم | ١٠٣ م | التوبة | ٩ |
| (٢) | إنا أعطيناك الكوثر . فصل لربك وانحر ... ... ... | ٢ ك | الكوثر | ١٠٨ |
| صَلُّوا | : يأيها الذين آمنوا صلوا عليه وسلموا تسليما ... ... | ٥٦ م | الأحزاب | ٣٣ |
| الصَّلَاةَ | : الذين يؤمنون بالغيب و يقيمون الصلاة ... ... | ٣ م | البقرة | ٢ |
| (٦٧) | وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة وأركعوا مع الراكعين | ٤٣ م | » | ٢ |
| | واستعينوا بالصبر والصلاة وإنها لكبيرة إلا على الخاشعين | ٤٥ م | » | ٢ |
| | وقولوا للناس حسنا وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة | ٨٣ م | » | ٢ |
| | وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة ... ... ... ... ... | ١١٠ م | » | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا استعينوا بالصبر والصلاة ... ... | ١٥٣ م | » | ٢ |
| | والسائلين وفى الرقاب وأقام الصلاة وآتى الزكاة | ١٧٧ م | » | ٢ |
| | حافظوا على الصلوات والصلاة الوسطى ... ... ... | ٢٣٨ م | » | ٢ |
| | وأقاموا الصلاة وآتوا الزكاة لهم أجرهم عند ربهم | ٢٧٧ م | » | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تقربوا الصلاة وأنتم سكارى ... | ٤٣ م | النساء | ٤ |
| | ألم تر إلى الذين قيل لهم كفوا أيديكم وأقيموا الصلاة | ٧٧ م | » | ٤ |
| | و إذا ضربتم فى الأرض فليس عليكم جناح أن تقصروا | | | |
| | من الصلاة إن خفتم أن يفتنكم الذين كفروا ... | ١٠١ م | » | ٤ |
| | و إذا كنت فيهم فأقمت لهم الصلاة فلتقم طائفة منهم معك | ١٠٢ م | » | ٤ |
| | فإذا قضيتم الصلاة فاذكروا الله قياما وقعودا وعلى جنوبكم | ١٠٣ م | » | ٤ |
| | فإذا اطمأننتم فأقيموا الصلاة ... ... ... ... ... | ١٠٣ م | » | ٤ |
| | إن الصلاة كانت على المؤمنين كتابا موقوتا ... ... ... | ١٠٣ م | » | ٤ |
| | و إذا قاموا إلى الصلاة قاموا كسالى ... ... ... ... | ١٤٢ م | » | ٤ |
| | يؤمنون بما أنزل إليك وما أنزل من قبلك والمقيمين الصلاة | ١٦٢ م | » | ٤ |
| | يأيها الذين آمنوا إذا قمتم إلى الصلاة فاغسلوا وجوهكم | ٦ م | المائدة | ٥ |
| | لئن أقمتم الصلاة وآتيتم الزكاة وآمنتم برسلى ... ... | ١٢ م | » | ٥ |
| | الذين يقيمون الصلاة و يؤتون الزكاة وهم راكعون | ٥٥ م | » | ٥ |
| | و إذا ناديتم إلى الصلاة اتخذوها هزوا ولعبا ... ... | ٥٨ م | » | ٥ |
| | و يصدكم عن ذكر الله وعن الصلاة فهل أنتم منتهون | ٩١ م | » | ٥ |
| | تحبسونهما من بعد الصلاة فيقسمان بالله ... ... ... | ١٠٦ م | » | ٥ |
| | وأن أقيموا الصلاة واتقوه وهو الذى إليه تحشرون | ٧٢ ك | الأنعام | ٦ |
| | والذين يمسكون بالكتاب وأقاموا الصلاة إنا لا نضيع | | | |
| | أجر المصلحين ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٧٠ م | الأعراف | ٧ |
| | الذين يقيمون الصلاة ومما رزقناهم ينفقون ... ... | ٣ م | الأنفال | ٨ |
| | فإن تابوا وأقاموا الصلاة وآتوا الزكاة فخلوا سبيلهم | ٥ م | التوبة | ٩ |
| | فإن تابوا وأقاموا الصلاة وآتوا الزكاة فإخوانكم | | | |
| | فى الدين ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ١١ م | » | ٩ |
| | من آمن بالله واليوم الآخر وأقام الصلاة وآتى الزكاة | ١٨ م | » | ٩ |
| | ولا يأتون الصلاة إلا وهم كسالى ... ... ... ... | ٥٤ م | » | ٩ |
| | و يقيمون الصلاة و يؤتون الزكاة و يطيعون الله ورسوله | ٧١ م | » | ٩ |

| اللفظة | الآيـة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الصَّلَاةَ | : واجعلوا بيوتكم قبلة وأقيموا الصلاة وبشر المؤمنين | ٨٧ ك | يونس | ١٠ |
| | وأقم الصلاة طرفى النهار وزلفا من الليل ... ... ... | ١١٤ م | هود | ١١ |
| | والذين صبروا ابتغاء وجه ربهم وأقاموا الصلاة ... | ٢٢ م | الرعد | ١٣ |
| | قل لعبادى الذين آمنوا يقيموا الصلاة ... ... ... | ٣١ ك | إبراهيم | ١٤ |
| | ربنا ليقيموا الصلاة فاجعل أفئدة من الناس تهوى إليهم | ٣٧ ك | » | ١٤ |
| | رب اجعلنى مقيم الصلاة ومن ذريتى ... ... ... | ٤٠ ك | » | ١٤ |
| | أقم الصلاة لدلوك الشمس إلى غسق الليل ... ... | ٧٨ م | الإسراء | ١٧ |
| | وأوصانى بالصلاة والزكاة ما دمت حيا ... ... ... | ٣١ ك | مريم | ١٩ |
| | وكان يأمر أهله بالصلاة والزكاة وكان عند ربه مرضيا | ٥٥ ك | » | ١٩ |
| | فخلف من بعدهم خلف أضاعوا الصلاة واتبعوا الشهوات | ٥٩ ك | » | ١٩ |
| | إننى أنا الله لا إله إلا أنا فاعبدنى وأقم الصلاة لذكرى | ١٤ ك | طه | ٢٠ |
| | وأمر أهلك بالصلاة واصطبر عليها ... ... ... ... | ١٣٢ ك | » | ٢٠ |
| | وأوحينا إليهم فعل الخيرات و إقام الصلاة ... ... | ٧٣ ك | الأنبياء | ٢١ |
| | والصابرين على ما أصابهم والمقيمى الصلاة ... ... | ٣٥ م | الحج | ٢٢ |
| | الذين إن مكناهم فى الأرض أقاموا الصلاة وآتوا الزكاة | ٤١ م | » | ٢٢ |
| | فأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة واعتصموا بالله هو | | | |
| | مولاكم ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٨ م | » | ٢٢ |
| | رجال لا تلهيهم تجارة ولا بيع عن ذكر الله و إقام الصلاة | ٣٧ م | النور | ٢٤ |
| | وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة وأطيعوا الرسول ... | ٥٦ م | » | ٢٤ |
| | ليستأذنكم الذين ملكت أيمانكم والذين لم يبلغوا الحلم | | | |
| | منكم ثلاث مرات من قبل صلاة الفجر ... ... | ٥٨ م | » | ٢٤ |
| | وحين تضعون ثيابكم من الظهيرة ومن بعد صلاة العشاء | ٥٨ م | » | ٢٤ |
| | الذين يقيمون الصلاة و يؤتون الزكاة ... ... ... | ٣ ك | النمل | ٢٧ |
| | اتل ما أوحى إليك من الكتاب وأقم الصلاة ... ... | ٤٥ ك | العنكبوت | ٢٩ |
| | إن الصلاة تنهى عن الفحشاء والمنكر ... ... ... | ٤٥ ك | » | ٢٩ |
| | منيبين إليه واتقوه وأقيموا الصلاة ولا تكونوا | | | |
| | من المشركين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣١ ك | الروم | ٣٠ |
| | الذين يقيمون الصلاة و يؤتون الزكاة ... ... ... | ٤ ك | لقمان | ٣١ |
| | يا بنى أقم الصلاة وأمر بالمعروف وانه عن المنكر ... | ١٧ ك | » | ٣١ |
| | وأقمن الصلاة وآتين الزكاة وأطعن الله ورسوله ... | ٣٣ م | الأحزاب | ٣٣ |
| | إنما تنذر الذين يخشون ربهم بالغيب وأقاموا الصلاة | ١٨ ك | فاطر | ٣٥ |
| | إن الذين يتلون كتاب الله وأقاموا الصلاة ... ... | ٢٩ ك | » | ٣٥ |
| | والذين استجابوا لربهم وأقاموا الصلاة ... ... ... | ٣٨ ك | الشورى | ٤٢ |
| | فإذ لم تفعلوا وتاب الله عليكم فأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة | ١٣ م | المجادلة | ٥٨ |
| | إذا نودى للصلاة من يوم الجمعة فاسعوا إلى ذكر الله | ٩ م | الجمعة | ٦٢ |
| | فإذا قضيت الصلاة فانتشروا فى الأرض ... ... ... | ١٠ م | » | ٦٢ |
| | وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة وأقرضوا الله قرضا حسنا | ٢٠ م | المزمل | ٧٣ |
| | مخلصين له الدين حنفاء ويقيموا الصلاة ... ... | ٥ م | البينة | ٩٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| صَلَاتَكَ | : وصل عليهم إن صلاتك سكن لهم ... ... ... | ١٠٣ | م التوبة | ٩ |
| (٣) | قالوا ياشعيب أصلاتك تأمرك أن نترك ما يعبد آباؤنا | ٨٧ | ك هـود | ١١ |
| | ولا تجهر بصلاتك ولا تخافت بها وابتغ بين ذلك سبيلا | ١١٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| صَلَاتَهُ | : كل قد علم صلاته وتسبيحه ... ... ... ... | ٤١ | م النور | ٢٤ |
| صَلَاتِهِمْ | : وهم على صلاتهم يحافظون ... ... ... ... | ٩٢ | ك الأنعام | ٦ |
| (٦) | وما كان صلاتهم عند البيت إلا مكاء وتصدية ... ... | ٣٥ | ك الأنفال | ٨ |
| | قد أفلح المؤمنون . الذين هم فى صلاتهم خاشعون | ٢ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | إلا المصلين . الذين هم على صلاتهم دائمون ... ... | ٢٣ | ك المعارج | ٧٠ |
| | والذين هم على صلاتهم يحافظون ... ... ... ... | ٣٤ | ك « | ٧٠ |
| | فويل للمصلين . الذين هم عن صلاتهم ساهون | ٥ | م الماعون | ١٠٧ |
| صَلَاتِي | : قل إن صلاتى ونسكى ومحياى ومماتى لله رب العالمين | ١٦٢ | ك الأنعام | ٦ |
| صَلَوَاتٌ | : أولئك عليهم صلوات من ربهم ورحمة ... ... | ١٥٧ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | حافظوا على الصلوات والصلاة الوسطى ... ... ... | ٢٣٨ | م « | ٢ |
| | ويتخذ ما ينفق قربات عند الله وصلوات الرسول | ٩٩ | م التوبة | ٩ |
| | ولولا دفع الله الناس بعضهم ببعض لهدمت صوامع | | | |
| | وبيع وصلوات ومساجد يذكر فيها اسم الله كثيرا | ٤٠ | م الحج | ٢٢ |
| صَلَوَاتِهِمْ | : والذين هم على صلواتهم يحافظون ... ... ... | ٩ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| الْمُصَلِّينَ | : إلا المصلين . الذين هم على صلاتهم دائمون | ٢٢ | ك المعارج | ٧٠ |
| (٣) | قالوا لم نك من المصلين ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك المدثر | ٧٤ |
| | فويل للمصلين . الذين هم عن صلاتهم ساهون ... ... | ٤ | م الماعون | ١٠٧ |
| مُصَلًّى | : واتخذوا من مقام إبراهيم مصلى ... ... ... ... | ١٢٥ | م البقرة | ٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تَصْلَى | : وجوه يومئذ خاشعة . عاملة ناصبة . تصلى نارا حامية | ٤ | ك الغاشية | ٨٨ |
| نَصْلِهِ | : فسوف يدعوا ثبورا . ويصلى سعيرا ... ... ... | ١٢ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| (٣) | ويتجنبها الأشقى . الذى يصلى النار الكبرى ... ... | ٣٢ | ك الأعلى | ٨٧ |
| | سيصلى نارا ذات لهب ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك المسد | ١١١ |
| يَصْلَاهَا | : ثم جعلنا له جهنم يصلاها مذموما مدحورا | ١٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٢) | فأنذرتكم نارا تلظى . لا يصلاها إلا الأشقى ... ... | ١٥ | ك الليل | ٩٢ |
| يَصْلَوْنَ | : إنما يأكلون فى بطونهم نارا وسيصلون سعيرا | ١٠ | م النساء | ٤ |
| يَصْلَوْنَهَا | : جهنم يصلونها وبئس القرار ... ... ... ... | ٢٩ | م إبراهيم | ١٤ |
| (٤) | جهنم يصلونها فبئس المهاد ... ... ... ... ... | ٥٦ | ك ص | ٣٨ |
| | حسبهم جهنم يصلونها فبئس المصير ... ... ... ... | ٨ | م المجادلة | ٥٨ |
| | وإن الفجار لفى جحيم . يصلونها يوم الدين ... ... | ١٥ | ك الانفطار | ٨٢ |
| أَصْلَوْهَا | : اصلوها اليوم بما كنتم تكفرون ... ... ... ... | ٦٤ | ك يس | ٣٦ |
| (٢) | اصلوها فاصبروا أو لا تصبروا سواء عليكم ... ... ... | ١٦ | ك الطور | ٥٢ |
| صَلُّوهُ | : خذوه فغلوه . ثم الجحيم صلوه ... ... ... ... | ٣١ | ك الحاقة | ٦٩ |
| سَأُصْلِيهِ | : سأصليه سقر ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك المدثر | ٧٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| نُصْلِهِ | : نوله ما تولى ونصله جهنم وساءت مصيرا ... ... | ١١٥ | م النساء | ٤ |
| نُصْلِيهِ | : ومن يفعل ذلك عدوانا وظلما فسوف نصليه نارا | ٣٠ | م « | ٤ |
| نُصْلِيهِمْ | : إن الذين كفروا بآياتنا سوف نصليهم نارا ... | ٥٦ | م « | ٤ |
| تَصْطَلُونَ | : أو آتيكم بشهاب قبس لعلكم تصطلون ... ... | ٧ | ك النمل | ٢٧ |
| (٢) | لعلى آتيكم منها بخبر أو جذوة من النار لعلكم تصطلون | ٢٩ | ك القصص | ٢٨ |
| صَالٍ | : ما أنتم عليه بفاتنين . إلا من هو صال الجحيم ... | ١٦٣ | ك الصافات | ٣٧ |
| صَالُوا | : هذا فوج مقتحم معكم لا مرحبا بهم إنهم صالوا النار | ٥٩ | ك ص | ٣٨ |
| (٢) | كلا إنهم عن ربهم يومئذ لمحجوبون . ثم إنهم لصالوا الجحيم | ١٦ | ك المطففين | ٨٣ |
| صِلِيًّا | : ثم لنحن أعلم بالذين هم أولى بها صليا ... ... ... | ٧٠ | ك مريم | ١٩ |
| تَصْلِيَةُ | : فنزل من حميم . وتصلية جحيم ... ... ... ... | ٩٤ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| صَامِتُونَ | : سواء عليكم أدعوتموهم أم أنتم صامتون ... ... | ١٩٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| الصَّمَدُ | : قل هو الله أحد . الله الصمد ... ... ... ... | ٢ | ك الإخلاص | ١١٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| صَوَامِعُ | : ولولا دفع الله الناس بعضهم ببعض لهدمت | | | |
| | صوامع وبيع ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | م الحج | ٢٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| صَمُّوا | : وحسبوا ألا تكون فتنة فعموا وصموا ... ... ... | ٧١ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | ثم تاب الله عليهم ثم عموا وصموا كثير منهم ... ... | ٧١ | م « | ٥ |
| أَصَمَّهُمْ | : أولئك الذين لعنهم الله فأصمهم وأعمى أبصارهم | ٢٣ | م محمد | ٤٧ |
| صُمٌّ | : صم بكم عمى فهم لا يرجعون ... ... ... ... ... | ١٨ | م البقرة | ٢ |
| (٩) | صم بكم عمى فهم لا يعقلون ... ... ... ... ... | ١٧١ | م « | ٢ |
| | والذين كذبوا بآياتنا صم وبكم فى الظلمات ... ... | ٣٩ | ك الأنعام | ٦ |
| | إن شر الدواب عند الله الصم البكم الذين لا يعقلون | ٢٢ | م الأنفال | ٨ |
| | أفأنت تسمع الصم ولو كانوا لا يعقلون ... ... ... | ٤٢ | ك يونس | ١٠ |
| | ولا يسمع الصم الدعاء إذا ما ينذرون ... ... ... | ٤٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | إنك لا تسمع الموتى ولا تسمع الصم الدعاء إذا ولوا مدبرين | ٨٠ | ك النمل | ٢٧ |
| | فإنك لا تسمع الموتى ولا تسمع الصم الدعاء إذا ولوا مدبرين | ٥٢ | ك الروم | ٣٠ |
| | أفأنت تسمع الصم أو تهدى العمى ومن كان فى ضلال مبين | ٤٠ | ك الزخرف | ٤٣ |
| صُمًّا | : ونحشرهم يوم القيامة على وجوههم عميا وبكما وصما | ٩٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٢) | والذين إذا ذكروا بآيات ربهم لم يخروا عليها صما وعميانا | ٧٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| الْأَصَمِّ | : مثل الفريقين كالأعمى والأصم والبصير والسميع | ٢٤ | ك هود | ١١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| صَنَعُوا | : وحبط ما صنعوا فيها ... ... ... ... ... ... | ١٦ | ك هود | ١١ |
| (٤) | ولا يزال الذين كفروا تصيبهم بما صنعوا قارعة ... | ٣١ | م الرعد | ١٣ |
| | وألق ما فى يمينك تلقف ما صنعوا ... ... ... ... | ٦٩ | ك طه | ٢٠ |
| | إنما صنعوا كيد ساحر ... ... ... ... ... ... | ٦٩ | ك « | ٢٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| تَصْنَعُونَ | : ولذكر الله أكبر والله يعلم ما تصنعون ... ... | ٤٥ ك العنكبوت | ٢٩ |
| يَصْنَعُ | : ودمرنا ما كان يصنع فرعون وقومه وما كانوا يعرشون | ١٣٧ ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | ويصنع الفلك وكلما مر عليه ملأ من قومه سخروا منه | ٣٨ ك هـود | ١١ |
| يَصْنَعُونَ | : وسوف ينبئهم الله بما كانوا يصنعون ... ... | ١٤ م المائدة | » |
| (٥) | وأكلهم السحت لبئس ما كانوا يصنعون... ... ... | ٦٣ م « | ٥ |
| | فأذاقها الله لباس الجوع والخوف بما كانوا يصنعون | ١١٢ ك النحل | ١٦ |
| | إن الله خبير بما يصنعون ... ... ... ... ... | ٣٠ م النور | ٢٤ |
| | إن الله عليم بما يصنعون ... ... ... ... ... | ٨ ك فاطر | ٣٥ |
| أَصْنَعِ | : واصنع الفلك بأعيننا ووحينا ولا تخاطبني | | |
| (٢) | في الذين ظلموا ... ... ... ... ... | ٣٧ ك هـود | ١١ |
| | فأوحينا إليه أن اصنع الفلك بأعيننا ووحينا ... ... | ٢٧ ك المؤمنون | ٢٣ |
| لِتُصْنَعَ | : وألقيت عليك محبة مني ولتصنع على عيني ... ... | ٣٩ ك طه | ٢٠ |
| أَصْطَنَعْتُكَ | : ثم جئت على قدر يا موسى . واصطنعتك لنفسي | ٤١ ك « | ٢٠ |
| صُنْعَ | : صنع الله الذي أتقن كل شيء إنه خبير بما تفعلون | ٨٨ ك النمل | ٢٧ |
| صُنْعًا | : وهم يحسبون أنهم يحسنون صنعا ... ... ... ... | ١٠٤ ك الكهف | ١٨ |
| صَنْعَةَ | : وعلمناه صنعة لبوس لكم لتحصنكم من بأسكم ... | ٨٠ ك الأنبياء | ٢١ |
| مَصَانِعَ | : وتتخذون مصانع لعلكم تخلدون ... ... ... | ١٢٩ ك الشعراء | ٢٦ |
| | ✦✦✦ | | |
| أَصْنَامٍ | : فأتوا على قوم يعكفون على أصنام لهم ... ... | ١٣٨ ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | رب اجعل هذا البلد آمنا واجنبني وبني أن نعبد الأصنام | ٣٥ ك إبراهيم | ١٤ |
| أَصْنَامًا | : وإذ قال إبراهيم لأبيه آزر أتتخذ أصناما آلهة ... | ٧٤ ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | قالوا نعبد أصناما فنظل لها عاكفين... ... ... ... | ٧١ ك الشعراء | ٢٦ |
| أَصْنَامَكُمْ | : وتالله لأكيدن أصنامكم بعد أن تولوا مدبرين | ٥٧ ك الأنبياء | ٢١ |
| | ✦✦✦ | | |
| صِنْوَانٌ | : وجنات من أعناب وزرع ونخيل صنوان ... ... | ٤ م الرعد | ١٣ |
| (٢) | وغير صنوان يسقى بماء واحد ... ... ... ... | ٤ م « | ١٣ |
| | ✦✦✦ | | |
| يُصْهَرُ | : يصهر به ما في بطونهم والجلود ... ... ... ... | ٢٠ م الحج | ٢٢ |
| صِهْرًا | : وهو الذي خلق من الماء بشرا فجعله نسبا وصهرا | ٥٤ ك الفرقان | ٢٥ |
| | ✦✦✦ | | |
| أَصَابَ | : لا يجرمنكم شقاقي أن يصيبكم مثل ما أصاب قوم نوح | ٨٩ ك هـود | ١١ |
| (٥) | فإذا أصاب به من يشاء من عباده إذا هم يستبشرون | ٤٨ ك الروم | ٣٠ |
| | فسخرنا له الريح تجري بأمره رخاء حيث أصاب ... | ٣٦ ك ص | ٣٨ |
| | ما أصاب من مصيبة في الأرض ولا في أنفسكم إلا في كتاب | ٢٢ م الحديد | ٥٧ |
| | ما أصاب من مصيبة إلا بإذن الله ... ... ... ... | ١١ م التغابن | ٦٤ |
| أَصَابَتْ | : كمثل ريح فيها صر أصابت حرث قوم ظلموا أنفسهم | ١١٧ م آل عمران | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| أَصَابَتْكُمْ | : أولما أصابتكم مصيبة قد أصبتم مثليها قلتم أنى هذا | ١٦٥ م آل عمران | ٣ |
| (٣) | فإن أصابتكم مصيبة قال قد أنعم الله علي إذ لم أكن | | |
| | معهم شهيدا ... ... ... ... ... ... ... | ٧٢ م النساء | ٤ |
| | إن أنتم ضربتم في الأرض فأصابتكم مصيبة الموت ... | ١٠٦ م المائدة | ٥ |
| أَصَابَتْهُ | : وإن أصابته فتنة انقلب على وجهه خسر الدنيا والآخرة | ١١ م الحج | ٢٢ |
| أَصَابَتْهُمْ | : الذين إذا أصابتهم مصيبة قالوا إنا لله وإنا إليه | | |
| (٢) | راجعون ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٦ م البقرة | ٢ |
| | فكيف إذا أصابتهم مصيبة بما قدمت أيديهم ... | ٦٢ م النساء | ٤ |
| أَصَابَكَ | : ما أصابك من حسنة فمن الله ... ... ... ... | ٧٩ م « | ٤ |
| (٢) | وما أصابك من سيئة فمن نفسك ... ... ... ... | ٧٩ م « | ٤ |
| | واصبر على ما أصابك إن ذلك من عزم الأمور | ١٧ ك لقمان | ٣١ |
| أَصَابَكُمْ | : لكيلا تحزنوا على ما فاتكم ولا ما أصابكم... ... | ١٥٣ م آل عمران | ٣ |
| (٤) | وما أصابكم يوم التقى الجمعان فبإذن الله ... ... | ١٦٦ م « | ٣ |
| | ولئن أصابكم فضل من الله ليقولن كأن لم تكن بينكم | | |
| | وبينه مودة ياليتني كنت معهم ... ... ... ... | ٧٣ م النساء | ٤ |
| | وما أصابكم من مصيبة فبما كسبت أيديكم... ... ... | ٣٠ ك الشورى | ٤٢ |
| أَصَابَهُ | : فمثله كمثل صفوان عليه تراب فأصابه وابل فتركه صلدا | ٢٦٤ م البقرة | ٢ |
| (٣) | له فيها من كل الثمرات وأصابه الكبر وله ذرية ضعفاء | ٢٦٦ م « | ٢ |
| | ومن الناس من يعبد الله على حرف فإن أصابه خير اطمأن به | ١١ م الحج | ٢٢ |
| أَصَابَهَا | : كمثل جنة بربوة أصابها وابل فآتت أكلها ضعفين | ٢٦٥ م البقرة | ٢ |
| (٢) | فأصابها إعصار فيه نار فاحترقت ... ... ... ... | ٢٦٦ م « | ٢ |
| أَصَابَهُمْ | : فما وهنوا لما أصابهم في سبيل الله وما ضعفوا | ١٤٦ م آل عمران | ٣ |
| (٧) | الذين استجابوا لله والرسول من بعد ما أصابهم القرح | ١٧٢ م « | ٣ |
| | ولا يلتفت منكم أحد إلا امرأتك إنه مصيبها ما أصابهم | ٨١ ك هـود | ١١ |
| | فأصابهم سيئات ما عملوا وحاق بهم ما كانوا به يستهزئون | ٣٤ ك النحل | ١٦ |
| | الذين إذا ذكر الله وجلت قلوبهم والصابرين على ما أصابهم | ٣٥ م الحج | ٢٢ |
| | فأصابهم سيئات ما كسبوا ... ... ... ... ... | ٥١ ك الزمر | ٣٩ |
| | والذين إذا أصابهم البغي هم ينتصرون ... ... ... | ٣٩ ك الشورى | ٤٢ |
| أَصَبْتُمْ | : أولما أصابتكم مصيبة قد أصبتم مثليها قلتم أنى هذا | ١٦٥ م آل عمران | ٣ |
| أَصَبْنَاهُمْ | : أن لو نشاء أصبناهم بذنوبهم ... ... ... ... | ١٠٠ ك الأعراف | ٧ |
| أُصِيبُ | : قال عذابي أصيب به من أشاء ورحمتي وسعت كل شيء | ١٥٦ ك « | ٧ |
| تُصِبْكَ | : إن تصبك حسنة تسؤهم ... ... ... ... ... | ٥٠ م التوبة | ٩ |
| (٢) | وإن تصبك مصيبة يقولوا قد أخذنا أمرنا من قبل | ٥٠ م « | ٩ |
| تُصِبْكُمْ | : إن تمسسكم حسنة تسؤهم وإن تصبكم سيئة يفرحوا بها | ١٢٠ م آل عمران | ٣ |
| تُصِبْهُمْ | : وإن تصبهم حسنة يقولوا هذه من عند الله | ٧٨ م النساء | ٤ |
| (٥) | وإن تصبهم سيئة يقولوا هذه من عندك... ... ... | ٧٨ م « | ٤ |
| | وإن تصبهم سيئة يطيروا بموسى ومن معه ... ... | ١٣١ ك الأعراف | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تُصِيبَهُمْ | : وإن تصيبهم سيئة بما قدمت أيديهم إذا هم يقنطون | ٣٦ | ك الروم | ٣٠ |
| | وإن تصيبهم سيئة بما قدمت أيديهم فإن الإنسان كفور | ٤٨ | ك الشورى | ٤٢ |
| فَتُصِيبَكُمْ | : لم تعلموهم أن تطئوهم فتصيبكم منهم معرة بغير علم | ٢٥ | م الفتح | ٤٨ |
| تُصِيبَنَا | : يسارعون فيهم يقولون نخشى أن تصيبنا دائرة... | ٥٢ | م المائدة | ٥ |
| تُصِيبَنَّ | : واتقوا فتنة لا تصيبن الذين ظلموا منكم خاصة... | ٢٥ | م الأنفال | ٨ |
| تُصِيبُهُمْ | : ولا يزال الذين كفروا تصيبهم بما صنعوا قارعة | ٣١ | م الرعد | ١٣ |
| (٣) | فليحذر الذين يخالفون عن أمره أن تصيبهم فتنة ... | ٦٣ | م النور | ٢٤ |
| | ولولا أن تصيبهم مصيبة بما قدمت أيديهم ... ... | ٤٧ | ك القصص | ٢٨ |
| تُصِيبُوا | : فتبينوا أن تصيبوا قوما بجهالة ... ... ... ... | ٦ | م الحجرات | ٤٩ |
| نُصِيبُ | : نصيب برحمتنا من نشاء ولا نضيع أجر المحسنين | ٥٦ | ك يوسف | ١٢ |
| يُصِبْكُمْ | : وإن يك صادقا يصبكم بعض الذى يعدكم... ... | ٢٨ | ك غافر | ٤٠ |
| يُصِبْهَا | : فإن لم يصبها وابل فطل ... ... ... ... ... | ٢٦٥ | م البقرة | ٢ |
| يُصِيبُ | : سيصيب الذين أجرموا صغار عند الله وعذاب شديد | ١٢٤ | ك الأنعام | ٦ |
| (٥) | سيصيب الذين كفروا منهم عذاب أليم ... ... ... | ٩٠ | م التوبة | ٩ |
| | يصيب به من يشاء من عباده وهو الغفور الرحيم ... | ١٠٧ | ك يونس | ١٠ |
| | ويرسل الصواعق فيصيب بها من يشاء ... ... ... | ١٣ | م الرعد | ١٣ |
| | وينزل من السماء من جبال فيها من برد فيصيب به من يشاء | ٤٣ | م النور | ٢٤ |
| يُصِيبَكُمْ | : ونحن نتربص بكم أن يصيبكم الله بعذاب من عنده | ٥٢ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | لا يجرمنكم شقاقى أن يصيبكم مثل ما أصاب قوم نوح | ٨٩ | ك هود | ١١ |
| يُصِيبَنَا | : قل لن يصيبنا إلا ما كتب الله لنا هو مولانا ... | ٥١ | م التوبة | ٩ |
| يُصِيبَهُمْ | : نأعلم أنما يريد الله أن يصيبهم ببعض ذنوبهم | ٤٩ | م المائدة | ٥ |
| (٤) | ذلك بأنهم لا يصيبهم ظمأ ولا نصب ولا مخمصة فى سبيل الله | ١٢٠ | م التوبة | ٩ |
| | فليحذر الذين يخالفون عن أمره أن تصيبهم فتنة | | | |
| | أو يصيبهم عذاب أليم ... ... ... ... ... ... | ٦٣ | م النور | ٢٤ |
| | والذين ظلموا من هؤلاء سيصيبهم سيئات ما كسبوا... | ٥١ | ك الزمر | ٣٩ |
| مُصِيبُهَا | : ولا يلتفت منكم أحد إلا امرأتك إنه مصيبها | | | |
| | ما أصابهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨١ | ك هود | ١١ |
| مُصِيبَةٌ | : الذين إذا أصابتهم مصيبة قالوا إنا لله وإنا إليه | | | |
| (١٠) | راجعون ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٦ | م البقرة | ٢ |
| | أو لما أصابتكم مصيبة قد أصبتم مثليها قلتم أنى هذا | ١٦٥ | م آل عمران | ٣ |
| | فكيف إذا أصابتهم مصيبة بما قدمت أيديهم ... ... | ٦٢ | م النساء | ٤ |
| | فإن أصابتكم مصيبة قال قد أنعم الله علىّ إذ لم أكن | | | |
| | معهم شهيدا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٢ | م » | ٤ |
| | إن أنتم ضربتم فى الأرض فأصابتكم مصيبة الموت ... | ١٠٦ | م المائدة | ٥ |
| | وإن تصبك مصيبة يقولوا قد أخذنا أمرنا من قبل | ٥٠ | م التوبة | ٩ |
| | ولولا أن تصيبهم مصيبة بما قدمت أيديهم ... ... | ٤٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | وما أصابكم من مصيبة فبما كسبت أيديكم ... ... ... | ٣٠ | ك الشورى | ٤٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مُصِيبَةٍ | : ما أصاب من مصيبة فى الأرض ولا فى أنفسكم | | | |
| | إلا فى كتاب ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | م الحديد | ٥٧ |
| | ما أصاب من مصيبة إلا بإذن الله ... ... ... ... | ١١ | م التغابن | ٦٤ |
| صَوَابًا | : لا يتكلمون إلا من أذن له الرحمن وقال صوابا... | ٣٨ | ك النبأ | ٧٨ |
| كَصَيِّبٍ | : أو كصيب من السماء فيه ظلمات ورعد وبرق | ١٩ | م البقرة | ٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| صَوْتُ | : إن أنكر الأصوات لصوت الحمير ... ... ... | ١٩ | ك لقمان | ٣١ |
| (٢) | يأيها الذين آمنوا لا ترفعوا أصواتكم فوق صوت النبى | ٢ | م الحجرات | ٤٩ |
| صَوْتِكَ | : واستفزز من استطعت منهم بصوتك ... ... ... | ٦٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٢) | واقصد فى مشيك واغضض من صوتك ... ... ... | ١٩ | ك لقمان | ٣١ |
| الْأَصْوَاتُ | : وخشعت الأصوات للرحمن فلا تسمع إلا همسا | ١٠٨ | ك طه | ٢٠ |
| (٢) | واغضض من صوتك إن أنكر الأصوات لصوت الحمير | ١٩ | ك لقمان | ٣١ |
| أَصْوَاتَكُمْ | : لا ترفعوا أصواتكم فوق صوت النبى ... ... | ٢ | م الحجرات | ٤٩ |
| أَصْوَاتَهُمْ | : إن الذين يغضون أصواتهم عند رسول الله | | | |
| | أولئك الذين امتحن الله قلوبهم للتقوى ... ... | ٣ | م » | ٤٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| فَصُرْهُنَّ | : قل فخذ أربعة من الطير فصرهن إليك ... ... | ٢٦٠ | م البقرة | ٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| صُوَرَكُمْ | : وصوركم فأحسن صوركم ورزقكم من الطيبات | ٦٤ | ك غافر | ٤٠ |
| (٢) | وصوركم فأحسن صوركم وإليه المصير ... ... ... ... | ٣ | م التغابن | ٦٤ |
| صَوَّرْنَاكُمْ | : ولقد خلقناكم ثم صورناكم ثم قلنا للملائكة | | | |
| | اسجدوا لآدم ... ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك الأعراف | ٧ |
| يُصَوِّرُكُمْ | : هو الذى يصوركم فى الأرحام كيف يشاء... ... | ٦ | م آل عمران | ٣ |
| صُورَةٍ | : فى أى صورة ما شاء ركبك ... ... ... ... ... | ٨ | ك الانفطار | ٨٢ |
| صُوَرَكُمْ | : وصوركم فأحسن صوركم ورزقكم من الطيبات | ٦٤ | ك غافر | ٤٠ |
| (٢) | وصوركم فأحسن صوركم وإليه المصير ... ... ... ... | ٣ | م التغابن | ٦٤ |
| الْمُصَوِّرُ | : هو الله الخالق البارئ المصور ... ... ... ... | ٢٤ | م الحشر | ٥٩ |
| الصُّورِ | : قوله الحق وله الملك يوم ينفخ فى الصور ... ... | ٧٣ | ك الأنعام | ٦ |
| (١٠) | ونفخ فى الصور فجمعناهم جمعا ... ... ... ... | ٩٩ | م الكهف | ١٨ |
| | يوم ينفخ فى الصور ونحشر المجرمين يومئذ زرقا... ... | ١٠٢ | ك طه | ٢٠ |
| | فإذا نفخ فى الصور فلا أنساب بينهم يومئذ ولا يتساءلون | ١٠١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ويوم ينفخ فى الصور ففزع من فى السموات ومن | | | |
| | فى الأرض... ... ... ... ... ... ... ... | ٨٧ | ك النمل | ٢٧ |
| | ونفخ فى الصور فإذا هم من الأجداث إلى ربهم ينسلون | ٥١ | ك يس | ٣٦ |
| | ونفخ فى الصور فصعق من فى السموات ومن فى الأرض | ٦٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ونفخ فى الصور ذلك يوم الوعيد ... ... ... ... | ٢٠ | ك ق | ٥٠ |
| | فإذا نفخ فى الصور نفخة واحدة ... ... ... ... | ١٣ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | يوم ينفخ فى الصور فتأتون أفواجا ... ... ... ... | ١٨ | ك النبأ | ٧٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| صُوَاعَ | : قالوا نفقد صواع الملك ولمن جاء به حمل بعير | ٧٢ | ك يوسف | ١٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| أَصْوَافِهَا | : ومن أصوافها وأوبارها وأشعارها أثاثا ومتاعا إلى حين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨٠ | ك النحل | ١٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تَصُومُوا | : فمن تطوع خيرا فهو خير له وأن تصوموا خير لكم | ١٨٤ م | البقرة | ٢ |
| فَلْيَصُمْهُ | : فمن شهد منكم الشهر فليصمه... ... ... ... ... | ١٨٥ م | « | ٢ |
| صَوْمًا | : فقولى إنى نذرت للرحمن صوما فلن أكلم اليوم إنسيا | ٢٦ | ك مريم | ١٩ |
| الصِّيَامُ | : يأيها الذين آمنوا كتب عليكم الصيام ... ... ... | ١٨٣ م | البقرة | ٢ |
| (٧) | أحل لكم ليلة الصيام الرفث إلى نسائكم ... ... ... | ١٨٧ م | « | ٢ |
| | ففدية من صيام أو صدقة أو نسك ... ... ... ... | ١٩٦ م | « | ٢ |
| | فمن لم يجد فصيام ثلاثة أيام فى الحج وسبعة إذا رجعتم | ١٩٦ م | « | ٢ |
| | فمن لم يجد فصيام شهرين متتابعين توبة من الله... ... | ٩٢ م | النساء | ٤ |
| | فمن لم يجد فصيام ثلاثة أيام ذلك كفارة أيمانكم | ٨٩ م | المائدة | ٥ |
| | فمن لم يجد فصيام شهرين متتابعين من قبل أن يتماسا | ٤ م | المجادلة | ٥٨ |
| صِيَامًا | : أو عدل ذلك صياما ليذوق وبال أمره ... ... | ٩٥ م | المائدة | ٥ |
| الصَّائِمِينَ | : والمتصدقين والمتصدقات والصائمين ... ... | ٣٥ م | الأحزاب | ٣٣ |
| الصَّائِمَاتِ | : والصائمات والحافظين فروجهم والحافظات | ٣٥ م | « | ٣٣ |
| | ✦✦✦ | | | |
| الصَّيْحَةُ | : وأخذ الذين ظلموا الصيحة ... ... ... ... ... | ٦٧ | ك هود | ١١ |
| (١٣) | وأخذت الذين ظلموا الصيحة فأصبحوا فى ديارهم جاثمين | ٩٤ | ك « | ١١ |
| | فأخذتهم الصيحة مشرقين ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك الحجر | ١٥ |
| | فأخذتهم الصيحة مصبحين ... ... ... ... ... ... | ٨٣ | ك « | ١٥ |
| | فأخذتهم الصيحة بالحق فجعلناهم غثاء ... ... ... | ٤١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ومنهم من أخذته الصيحة ومنهم من خسفنا به الأرض | ٤٠ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | إن كانت إلا صيحة واحدة فإذاهم خامدون ... ... | ٢٩ | ك يس | ٣٦ |
| | ما ينظرون إلا صيحة واحدة تأخذهم وهم يخصمون | ٤٩ | ك « | ٣٦ |
| | إن كانت إلا صيحة واحدة فإذاهم جميع لدينا محضرون | ٥٣ | ك « | ٣٦ |
| | وما ينظر هؤلاء إلا صيحة واحدة ما لها من فواق | ١٥ | ك ص | ٣٨ |
| | يوم يسمعون الصيحة بالحق ذلك يوم الخروج ... ... | ٤٢ | ك ق | ٥٠ |
| | إنا أرسلنا عليهم صيحة واحدة فكانوا كهشيم المحتظر | ٣١ | ك القمر | ٥٤ |
| | يحسبون كل صيحة عليهم هم العدو فاحذرهم ... ... | ٤ | م المنافقون | ٦٣ |
| | ✦✦✦ | | | |
| فَاصْطَادُوا | : وإذا حللتم فاصطادوا... ... ... ... ... ... | ٢ | م المائدة | ٥ |
| الصَّيْدُ | : أحلت لكم بهيمة الأنعام إلا ما يتلى عليكم غير محلى الصيد | ١ | م « | ٥ |
| (٥) | يأيها الذين آمنوا ليبلونكم الله بشىء من الصيد تناله أيديكم | ٩٤ | م « | ٥ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تقتلوا الصيد وأنتم حرم ... ... | ٩٥ | م « | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الصَّيْدُ | : أحل لكم صيد البحر وطعامه متاعا لكم وللسيارة... | ٩٦ | م المائدة | ٥ |
| | وحرم عليكم صيد البر ما دمتم حرما ... ... ... ... | ٩٦ | م « | ٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تَصِيرُ | : ألا إلى الله تصير الأمور ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك الشورى | ٤٢ |
| الْمَصِيرُ | : فأمتعه قليلا ثم أضطره إلى عذاب النار وبئس المصير | ١٢٦ م | البقرة | ٢ |
| (٢٣) | وقالوا سمعنا وأطعنا غفرانك ربنا وإليك المصير | ٢٨٥ م | « | ٢ |
| | ويحذركم الله نفسه وإلى الله المصير ... ... ... ... | ٢٨ م | آل عمران | ٣ |
| | أفمن اتبع رضوان الله كمن باء بسخط من الله ومأواه جهنم وبئس المصير ... ... ... ... ... | ١٦٢ م | « | ٣ |
| | ولله ملك السموات والأرض وما بينهما وإليه المصير | ١٨ م | المائدة | ٥ |
| | فقد باء بغضب من الله ومأواه جهنم وبئس المصير | ١٦ م | الأنفال | ٨ |
| | واغلظ عليهم ومأواهم جهنم وبئس المصير ... ... | ٧٣ م | التوبة | ٩ |
| | وكأين من قرية أمليت لها وهى ظالمة ثم أخذتها وإلى المصير | ٤٨ م | الحج | ٢٢ |
| | النار وعدها الله الذين كفروا وبئس المصير ... ... | ٧٢ م | « | ٢٢ |
| | ولله ملك السموات والأرض وإلى الله المصير ... ... | ٤٢ م | النور | ٢٤ |
| | لا تحسبن الذين كفروا معجزين فى الأرض ومأواهم النار ولبئس المصير... ... ... ... ... ... | ٥٧ م | « | ٢٤ |
| | أن اشكر لى ولوالديك إلىّ المصير ... ... ... ... | ١٤ | ك لقمان | ٣١ |
| | ومن تزكى فإنما يتزكى لنفسه وإلى الله المصير ... | ١٨ | ك فاطر | ٣٥ |
| | شديد العقاب ذى الطول لا إله إلا هو إليه المصير | ٣ | ك غافر | ٤٠ |
| | لا حجة بيننا وبينكم الله يجمع بيننا وإليه المصير ... | ١٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| | إنا نحن نحيى ونميت وإلينا المصير ... ... ... ... | ٤٣ | ك ق | ٥٠ |
| | مأواكم النار هى مولاكم وبئس المصير ... ... ... | ١٥ | م الحديد | ٥٧ |
| | حسبهم جهنم يصلونها فبئس المصير ... ... ... ... | ٨ | م المجادلة | ٥٨ |
| | ربنا عليك توكلنا وإليك أنبنا وإليك المصير ... | ٤ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | وصوركم فأحسن صوركم وإليه المصير ... ... ... | ٣ | م التغابن | ٦٤ |
| | أولئك أصحاب النار خالدين فيها وبئس المصير ... | ١٠ | م « | ٦٤ |
| | واغلظ عليهم ومأواهم جهنم وبئس المصير ... ... | ٩ | م التحريم | ٦٦ |
| | والذين كفروا بربهم عذاب جهنم وبئس المصير ... | ٦ | ك الملك | ٦٧ |
| مَصِيرًا | : فأولئك مأواهم جهنم وساءت مصيرا... ... ... | ٩٧ م | النساء | ٤ |
| (٤) | نوله ما تولى ونصله جهنم وساءت مصيرا ... ... ... | ١١٥ م | « | ٤ |
| | كانت لهم جزاء ومصيرا ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وغضب الله عليهم ولعنهم وأعد لهم جهنم وساءت مصيرا | ٦ م | الفتح | ٤٨ |
| مَصِيرَكُمْ | : قل تمتعوا فإن مصيركم إلى النار ... ... ... | ٣٠ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| صَيَاصِيهِمْ | : وأنزل الذين ظاهروهم من أهل الكتاب من صياصيهم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦ م | الأحزاب | ٣٣ |
| | ✦✦✦ | | | |
| الصَّيْفِ | : لإيلاف قريش . إيلافهم رحلة الشتاء والصيف | ٢ | ك قريش | ١٠٦ |

# باب الضاد

اللفظة — الآيـــة — رقمها السورة رقمها

**الضَّأْن**: ثمانية أزواج من الضأن آثنين ومن المعز آثنين ... ٤٣ ك الأنعام ٦

✦✦✦

**ضَبْحًا**: والعاديات ضبحا . فالموريات قدحا... ... ... ١ ك العاديات ١٠٠

✦✦✦

**الْمَضَاجِعِ**: فعظوهن وآهجروهن فى المضاجع وآضربوهن ٣٤ م النساء ٤

(٢) تتجافى جنوبهم عن المضاجع يدعون ربهم خوفا وطمعا ١٦ م السجدة ٣٢

**مَضَاجِعِهِمْ**: قل لو كنتم فى بيوتكم لبرز الذين كتب عليهم القتل إلى مضاجعهم ... ... ... ... ... ١٥٤ م آل عمران ٣

✦✦✦

**فَضَحِكَتْ**: وآمرأته قائمة فضحكت فبشرناها بإسحق ... ٧١ ك هود ١١

**تَضْحَكُونَ**: وكنتم منهم تضحكون ... ... ... ... ١١٠ ك المؤمنون ٢٣

(٢) أفمن هذا الحديث تعجبون . وتضحكون ولا تبكون ٦٠ ك النجم ٥٣

**فَلْيَضْحَكُوا**: فليضحكوا قليلا وليبكوا كثيرا جزاء بما كانوا يكسبون ... ... ... ... ... ٨٢ م التوبة ٩

**يَضْحَكُونَ**: فلما جاءهم بآياتنا إذا هم منها يضحكون ... ٤٧ ك الزخرف ٤٣

(٣) إن الذين أجرموا كانوا من الذين آمنوا يضحكون... ٢٩ ك المطففين ٨٣

فاليوم الذين آمنوا من الكفار يضحكون ... ... ... ٣٤ ك « ٨٣

**أَضْحَكَ**: وأنه هو أضحك وأبكى . وأنه هو أمات وأحيا... ٤٣ ك النجم ٥٣

**ضَاحِكًا**: فتبسم ضاحكا من قولها ... ... ... ... ١٩ ك النمل ٢٧

**ضَاحِكَةٌ**: وجوه يومئذ مسفرة . ضاحكة مستبشرة ... ٣٩ ك عبس ٨٠

✦✦✦

**تَضْحَى**: وأنك لا تظمأ فيها ولا تضحى ... ... ... ١١٩ ك طه ٢٠

**ضُحًى**: أو أمن أهل القرى أن يأتيهم بأسنا ضحى وهم يلعبون ٩٨ ك الأعراف ٧

(٣) قال موعدكم يوم الزينة وأن يحشر الناس ضحى... ... ٥٩ ك طه ٢٠

والضحى . والليل إذا سجى . ما ودعك ربك وما قلى ١ ك الضحى ٩٣

**ضُحَاهَا**: وأغطش ليلها وأخرج ضحاها ... ... ... ... ٢٩ ك النازعات ٧٩

(٣) كأنهم يوم يرونها لم يلبثوا إلا عشية أو ضحاها ... ٤٦ ك « ٧٩

والشمس وضحاها . والقمر إذا تلاها ... ... ... ١ ك الشمس ٩١

✦✦✦

**ضِدًّا**: كلا سيكفرون بعبادتهم ويكونون عليهم ضدا ... ٨٢ ك مريم ١٩

✦✦✦

**ضَرَبَ**: ألم تر كيف ضرب الله مثلا كلمة طيبة كشجرة طيبة ٢٤ ك إبراهيم ١٤

(١٠) ضرب الله مثلا عبدا مملوكا لا يقدر على شىء ... ... ٧٥ ك النحل ١٦

وضرب الله مثلا رجلين أحدهما أبكم لا يقدر على شىء ٧٦ ك « ١٦

اللفظة — الآيـــة — رقمها السورة رقمها

**ضَرَبَ**: وضرب الله مثلا قرية كانت آمنة مطمئنة يأتيها رزقها رغدا ... ... ... ... ... ... ١١٢ ك النحل ١٦

ضرب لكم مثلا من أنفسكم ... ... ... ... ... ٢٨ ك الروم ٣٠

وضرب لنا مثلا ونسى خلقه قال من يحيى العظام وهى رميم ٧٨ ك يس ٣٦

ضرب الله مثلا رجلا فيه شركاء متشاكسون ... ... ٢٩ ك الزمر ٣٩

وإذا بشر أحدهم بما ضرب للرحمن مثلا ظل وجهه مسودا ١٧ ك الزخرف ٤٣

ضرب الله مثلا للذين كفروا آمرأة نوح وآمرأة لوط ١٠ م التحريم ٦٦

وضرب الله مثلا للذين آمنوا آمرأة فرعون ... ... ١١ م « ٦٦

**ضَرَبْتُمْ**: يأيها الذين آمنوا إذا ضربتم فى سبيل الله فتبينوا ٩٤ م النساء ٤

(٣) وإذا ضربتم فى الأرض فليس عليكم جناح أن تقصروا من الصلاة... ... ... ... ... ... ... ١٠١ م « ٤

إن أنتم ضربتم فى الأرض فأصابتكم مصيبة الموت ... ١٠٦ م المائدة ٥

**ضَرَبْنَا**: وتبين لكم كيف فعلنا بهم وضربنا لكم الأمثال ٤٥ ك إبراهيم ١٤

(٥) فضربنا على آذانهم فى الكهف سنين عددا ... ... ١١ ك الكهف ١٨

وكلا ضربنا له الأمثال وكلا تبرنا تتبيرا ... ... ... ٣٩ ك الفرقان ٢٥

ولقد ضربنا للناس فى هذا القرآن من كل مثل... ... ٥٨ ك الروم ٣٠

ولقد ضربنا للناس فى هذا القرآن من كل مثل لعلهم يتذكرون ٢٧ ك الزمر ٣٩

**ضَرَبُوا**: إذا ضربوا فى الأرض أو كانوا غزى لو كانوا

(٣) عندنا ما ماتوا وما قتلوا... ... ... ... ... ١٥٦ م آل عمران ٣

آنظر كيف ضربوا لك الأمثال فضلوا فلا يستطيعون سبيلا ٤٨ ك الإسراء ١٧

آنظر كيف ضربوا لك الأمثال فضلوا فلا يستطيعون سبيلا ٩ ك الفرقان ٢٥

**ضَرَبُوهُ**: وقالوا آلهتنا خير أم هو ما ضربوا لك إلا جدلا ٥٨ ك الزخرف ٤٣

**تَضْرِبُوا**: فلا تضربوا لله الأمثال إن الله يعلم وأنتم لا تعلمون ٧٤ ك النحل ١٦

**أَفَنَضْرِبُ**: أفنضرب عنكم الذكر صفحا أن كنتم قوما مسرفين ٥ ك الزخرف ٤٣

**نَضْرِبُهَا**: وتلك الأمثال نضربها للناس وما يعقلها إلا العالمون ٤٣ ك العنكبوت ٢٩

(٢) وتلك الأمثال نضربها للناس لعلهم يتفكرون ... ... ٢١ م الحشر ٥٩

**يَضْرِبَ**: إن الله لا يستحيى أن يضرب مثلا ما بعوضة فما فوقها ٢٦ م البقرة ٢

(٦) كذلك يضرب الله الحق والباطل ... ... ... ... ١٧ م الرعد ١٣

كذلك يضرب الله الأمثال ... ... ... ... ... ١٧ م « ١٣

ويضرب الله الأمثال للناس لعلهم يتذكرون ... ... ٢٥ ك إبراهيم ١٤

ويضرب الله الأمثال للناس والله بكل شىء عليم ... ٣٥ م النور ٢٤

كذلك يضرب الله للناس أمثالهم... ... ... ... ... ٣ م محمد ٤٧

**يَضْرِبْنَ**: وليضربن بخمرهن على جيوبهن ... ... ... ٣١ م النور ٢٤

(٢) ولا يضربن بأرجلهن ليعلم ما يخفين من زينتهن... ... ٣١ م « ٢٤

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| يَضْرِبُونَ | : ولو ترى إذ يتوفى الذين كفروا الملائكة ... ... | ٥٠ م الأنفال | ٨ |
| (٣) | فكيف إذا توفتهم الملائكة يضربون وجوههم وأدبارهم | ٢٧ م محمد | ٤٧ |
| | وآخرون يضربون فى الأرض يبتغون من فضل الله | ٢٠ م المزمل | ٧٣ |
| اضْرِبْ | : وإذ استسقى موسى لقومه فقلنا اضرب بعصاك الحجر | ٦٠ م البقرة | ٢ |
| (٨) | وأوحينا إلى موسى إذ استسقاه قومه أن اضرب بعصاك الحجر ... ... ... ... ... ... | ١٦٠ ك الأعراف | ٧ |
| | واضرب لهم مثلا رجلين جعلنا لأحدهما جنتين من أعناب | ٣٢ ك الكهف | ١٨ |
| | واضرب لهم مثل الحياة الدنيا كماء أنزلناه من السماء ... | ٤٥ ك « | ١٨ |
| | أن أسر بعبادى فاضرب لهم طريقا فى البحر يبسا ... | ٧٧ ك طه | ٢٠ |
| | فأوحينا إلى موسى أن اضرب بعصاك البحر ... ... | ٦٣ ك الشعراء | ٢٦ |
| | واضرب لهم مثلا أصحاب القرية إذ جاءها المرسلون | ١٣ ك يس | ٣٦ |
| | وخذ بيدك ضغثا فاضرب به ولا تحنث ... ... ... | ٤٤ ك ص | ٣٨ |
| اضْرِبُوا | : فاضربوا فوق الأعناق ... ... ... ... ... | ١٢ م الأنفال | ٨ |
| (٢) | واضربوا منهم كل بنان ... ... ... ... ... ... | ١٢ م « | ٨ |
| اضْرِبُوهُ | : فقلنا اضربوه ببعضها كذلك يحيى الله الموتى ... | ٧٣ م البقرة | ٢ |
| اضْرِبُوهُنَّ | : فعظوهن واهجروهن فى المضاجع واضربوهن | ٣٤ م النساء | ٤ |
| ضُرِبَ | : يا أيها الناس ضرب مثل فاستمعوا له ... ... ... | ٧٣ م الحج | ٢٢ |
| (٣) | ولما ضرب ابن مريم مثلا إذا قومك منه يصدون ... | ٥٧ ك الزخرف | ٤٣ |
| | فضرب بينهم بسور له باب باطنه فيه الرحمة ... ... | ١٣ م الحديد | ٥٧ |
| ضُرِبَتْ | : وضربت عليهم الذلة والمسكنة وباء بغضب من الله | ٦١ م البقرة | ٢ |
| (٢٣) | ضربت عليهم الذلة أين ما ثقفوا ... ... ... ... | ١١٢ م آل عمران | ٣ |
| | وباء بغضب من الله وضربت عليهم المسكنة ... ... | ١١٢ م « | ٣ |
| ضَرْبَ | : فإذا لقيتم الذين كفروا فضرب الرقاب ... ... | ٤ م محمد | ٤٧ |
| ضَرْبًا | : للفقراء الذين أحصروا فى سبيل الله لا يستطيعون | | |
| (٢) | ضربا فى الأرض ... ... ... ... ... ... | ٢٧٣ م البقرة | ٢ |
| | فراغ عليهم ضربا باليمين ... ... ... ... ... | ٩٣ ك الصافات | ٣٧ |

***

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| تَضُرُّونَهُ | : ويستخلف ربى قوما غيركم ولا تضرونه شيئا ... | ٥٧ ك هود | ١١ |
| تَضُرُّوهُ | : ويستبدل قوما غيركم ولا تضروه شيئا ... ... ... | ٣٩ م التوبة | ٩ |
| يَضُرَّ | : ومن ينقلب على عقبيه فلن يضر الله شيئا ... ... ... | ١٤٤ م آل عمران | ٣ |
| يَضُرُّكَ | : ولا تدع من دون الله ما لا ينفعك ولا يضرك ... | ١٠٦ ك يونس | ١٠ |
| يَضُرُّكُمْ | : وإن تصبروا وتتقوا لا يضركم كيدهم شيئا ... ... | ١٢٠ م آل عمران | ٣ |
| (٣) | عليكم أنفسكم لا يضركم من ضل إذا اهتديتم ... ... | ١٠٥ م المائدة | ٥ |
| | قال أتعبدون من دون الله ما لا ينفعكم شيئا ولا يضركم | ٦٦ ك الأنبياء | ٢١ |
| يَضُرُّنَا | : قل أندعوا من دون الله ما لا ينفعنا ولا يضرنا | ٧١ ك الأنعام | ٦ |
| يَضُرُّهُ | : يدعوا من دون الله ما لا يضره وما لا ينفعه ... | ١٢ م الحج | ٢٢ |
| يَضُرُّهُمْ | : ويتعلمون ما يضرهم ولا ينفعهم ... ... ... ... | ١٠٢ م البقرة | ٢ |
| (٣) | ويعبدون من دون الله ما لا يضرهم ولا ينفعهم ... | ١٨ ك يونس | ١ |
| | ويعبدون من دون الله ما لا ينفعهم ولا يضرهم ... | ٥٥ ك الفرقان | ٢٥ |
| يَضُرُّوا | : إنهم لن يضروا الله شيئا ... ... ... ... ... | ١٧٦ م آل عمران | ٣ |
| (٣) | إن الذين اشتروا الكفر بالإيمان لن يضروا الله شيئا | ١٧٧ م « | ٣ |
| | وشاقوا الرسول من بعد ما تبين لهم الهدى لن يضروا الله شيئا | ٣٢ م محمد | ٤٧ |
| يَضُرُّوكَ | : وإن تعرض عنهم فلن يضروك شيئا ... ... | ٤٢ م المائدة | ٥ |
| يَضُرُّوكُمْ | : لن يضروكم إلا أذى وإن يقاتلوكم يولوكم الأدبار | ١١١ م آل عمران | ٣ |
| يَضُرُّونَ | : أو ينفعونكم أو يضرون ... ... ... ... ... | ٧٣ ك الشعراء | ٢٦ |
| يَضُرُّونَكَ | : وما يضلون إلا أنفسهم وما يضرونك من شىء | ١١٣ م النساء | ٤ |
| تُضَارَّ | : لا تضار والدة بولدها ولا مولود له بولده ... ... | ٢٣٣ م البقرة | ٢ |
| تُضَارُّوهُنَّ | : ولا تضاروهن لتضيقوا عليهن ... ... ... ... | ٦ م الطلاق | ٦٥ |
| يُضَارَّ | : وأشهدوا إذا تبايعتم ولا يضار كاتب ولا شهيد ... | ٢٨٢ م البقرة | ٢ |
| أَضْطَرُّهُ | : ومن كفر فأمتعه قليلا ثم أضطره إلى عذاب النار | ١٢٦ م « | ٢ |
| نَضْطَرُّهُمْ | : نمتعهم قليلا ثم نضطرهم إلى عذاب غليظ ... | ٢٤ ك لقمان | ٣١ |
| اضْطُرَّ | : فمن اضطر غير باغ ولا عاد فلا إثم عليه ... ... | ١٧٣ م البقرة | ٢ |
| (٤) | فمن اضطر فى مخمصة غير متجانف لإثم فإن الله غفور رحيم | ٣ م المائدة | ٥ |
| | فمن اضطر غير باغ ولا عاد فإن ربك غفور رحيم ... | ١٤٥ ك الأنعام | ٦ |
| | فمن اضطر غير باغ ولا عاد فإن الله غفور رحيم ... | ١١٥ ك النحل | ١٦ |
| اضْطُرِرْتُمْ | : وقد فصل لكم ما حرم عليكم إلا ما اضطررتم إليه | ١١٩ ك الأنعام | ٦ |
| ضَرًّا | : قل أتعبدون من دون الله ما لا يملك لكم ضرا ولا نفعا | ٧٦ م المائدة | ٥ |
| (٩) | قل لا أملك لنفسى نفعا ولا ضرا إلا ما شاء الله | ١٨٨ ك الأعراف | ٧ |
| | قل لا أملك لنفسى ضرا ولا نفعا إلا ما شاء الله | ٤٩ ك يونس | ١٠ |
| | قل أفاتخذتم من دونه أولياء لا يملكون لأنفسهم نفعا ولا ضرا ... ... ... ... ... ... | ١٦ م الرعد | ١٣ |
| | أفلا يرون ألا يرجع إليهم قولا ولا يملك لهم ضرا ولا نفعا | ٨٩ ك طه | ٢٠ |
| | ولا يملكون لأنفسهم ضرا ولا نفعا ... ... ... ... | ٣ ك الفرقان | ٢٥ |
| | فاليوم لا يملك بعضكم لبعض نفعا ولا ضرا ... ... | ٤٢ ك سبإ | ٣٤ |
| | قل فمن يملك لكم من الله شيئا إن أراد بكم ضرا أو أراد بكم نفعا ... ... ... ... ... ... | ١١ م الفتح | ٤٨ |
| | قل إنى لا أملك لكم ضرا ولا رشدا ... ... ... ... | ٢١ ك الجن | ٧٢ |
| ضُرُّهُ | : يدعوا لمن ضره أقرب من نفعه ... ... ... ... | ١٣ م الحج | ٢٢ |
| ضُرٍّ | : وإن يمسسك الله بضر فلا كاشف له إلا هو ... ... | ١٧ ك الأنعام | ٦ |
| (١٧) | وإذا مس الإنسان الضر دعانا لجنبه أو قاعدا أو قائما | ١٢ ك يونس | ١٠ |
| | فلما كشفنا عنه ضره مر كأن لم يدعنا إلى ضر مسه | ١٢ ك « | ١٠ |
| | وإن يمسسك الله بضر فلا كاشف له إلا هو ... ... | ١٠٧ ك « | ١٠ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| ضُرٍّ: | فلما دخلوا عليه قالوا يأيها العزيز مسنا وأهلنا الضر | ك يوسف | ١٢ |
| | وما بكم من نعمة فمن الله ثم إذا مسكم الضر فإليه تجأرون | ك النحل | ١٦ |
| | ثم إذا كشف الضر عنكم إذا فريق منكم بربهم يشركون | ك « | ١٦ |
| | فلا يملكون كشف الضر عنكم ولا تحويلا ... ... | ك الإسراء | ١٧ |
| | وإذا مسكم الضر فى البحر ضل من تدعون إلا إياه | ك « | ١٧ |
| | وأيوب إذ نادى ربه أنى مسنى الضر وأنت أرحم الراحمين | ك الأنبياء | ٢١ |
| | فاستجبنا له فكشفنا ما به من ضر وآتيناه أهله | ك « | ٢١ |
| | ولو رحمناهم وكشفنا ما بهم من ضر لجوا فى طغيانهم يعمهون | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وإذا مس الناس ضر دعوا ربهم منيبين إليه ... ... | ك الروم | ٣٠ |
| | إن يردن الرحمن بضر لا تغن عنى شفاعتهم شيئا ... | ك يس | ٣٦ |
| | وإذا مس الإنسان ضر دعا ربه منيبا إليه... ... ... | ك الزمر | ٣٩ |
| | إن أرادنى الله بضر هل هن كاشفات ضره ... ... | ك « | ٣٩ |
| | وإذا مس الإنسان ضر دعانا... ... ... ... ... | ك « | ٣٩ |
| ضُرِّهِ: | فلما كشفنا عنه ضره مر كأن لم يدعنا إلى ضر مسه | ك يونس | ١٠ |
| (٢) | إن أرادنى الله بضر هل هن كاشفات ضره ... ... | ك الزمر | ٣٩ |
| الضَّرَرِ: | لا يستوى القاعدون من المؤمنين غير أولى الضرر | م النساء | ٤ |
| بِضَارِّهِمْ: | وليس بضارهم شيئا إلا بإذن الله ... ... ... | م المجادلة | ٥٨ |
| بِضَارِّينَ: | وما هم بضارين به من أحد إلا بإذن الله ... | م البقرة | ٢ |
| الضَّرَّاءُ: | والصابرين فى البأساء والضراء وحين البأس ... | م « | ٢ |
| (٩) | مستهم البأساء والضراء وزلزلوا ... ... ... ... | م « | ٢ |
| | الذين ينفقون فى السراء والضراء والكاظمين الغيظ | م آل عمران | ٣ |
| | ولقد أرسلنا إلى أمم من قبلك فأخذناهم بالبأساء والضراء | ك الأنعام | ٦ |
| | إلا أخذنا أهلها بالبأساء والضراء ... ... ... | ك الأعراف | ٧ |
| | وقالوا قد مس آباءنا الضراء والسراء فأخذناهم بغتة | ك « | ٧ |
| | وإذا أذقنا الناس رحمة من بعد ضراء مستهم إذا لهم مكر فى آياتنا ... ... ... ... ... | ك يونس | ١٠ |
| | ولئن أذقناه نعماء بعد ضراء مسته ليقولن ذهب السيئات عنى | ك هود | ١١ |
| | ولئن أذقناه رحمة منا من بعد ضراء مسته ليقولن هذا لى | ك فصلت | ٤١ |
| ضِرَارًا: | ولا تمسكوهن ضرارا لتعتدوا ... ... ... ... | م البقرة | ٢ |
| (٢) | والذين اتخذوا مسجدا ضرارا وكفرا وتفريقا بين المؤمنين | م التوبة | ٩ |
| مُضَارٍّ: | من بعد وصية يوصى بها أو دين غير مضار ... ... | م النساء | ٤ |
| الْمُضْطَرَّ: | أمن يجيب المضطر إذا دعاه ويكشف السوء... | ك النمل | ٢٧ |
| ✦✦✦ | | | |
| تَضَرَّعُوا: | فلولا إذ جاءهم بأسنا تضرعوا ولكن قست قلوبهم | ك الأنعام | ٦ |
| يَتَضَرَّعُونَ: | فأخذناهم بالبأساء والضراء لعلهم يتضرعون | ك « | ٦ |
| (٢) | ولقد أخذناهم بالعذاب فما استكانوا لربهم وما يتضرعون | ك المؤمنون | ٢٣ |
| يَضَّرَّعُونَ: | إلا أخذنا أهلها بالبأساء والضراء لعلهم يضرعون | ك الأعراف | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| تَضَرُّعًا: | تدعونه تضرعا وخفية ... ... ... ... ... | ك الأنعام | ٦٣ |
| (٣) | ادعوا ربكم تضرعا وخفية إنه لا يحب المعتدين ... | ك الأعراف | ٧ |
| | واذكر ربك فى نفسك تضرعا وخيفة ... ... ... | ك « | ٧ |
| ضَرِيعٍ: | ليس لهم طعام إلا من ضريع ... ... ... ... | ك الغاشية | ٨٨ |
| ✦✦✦ | | | |
| ضَعُفَ: | ضعف الطالب والمطلوب ... ... ... ... ... | م الحج | ٢٢ |
| ضَعُفُوا: | وما ضعفوا وما استكانوا والله يحب الصابرين | م آل عمران | ٣ |
| يُضَاعِفُ: | والله يضاعف لمن يشاء والله واسع عليم ... | م البقرة | ٢ |
| يُضَاعِفْهُ: | فيضاعفه له أضعافا كثيرة ... ... ... ... ... | م « | ٢ |
| (٣) | من ذا الذى يقرض الله قرضا حسنا فيضاعفه له وله أجر كريم | م الحديد | ٥٧ |
| | إن تقرضوا الله قرضا حسنا يضاعفه لكم ويغفر لكم | م التغابن | ٦٤ |
| يُضَاعِفْهَا: | وإن تك حسنة يضاعفها ويؤت من لدنه أجرا عظيما | م النساء | ٤ |
| يُضَاعَفُ: | يضاعف لهم العذاب ما كانوا يستطيعون السمع | ك هود | ١١ |
| (٤) | يضاعف له العذاب يوم القيامة ويخلد فيه مهانا ... | م الفرقان | ٢٥ |
| | من يأت منكن بفاحشة مبينة يضاعف لها العذاب ضعفين | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وأقرضوا الله قرضا حسنا يضاعف لهم ولهم أجر كريم | م الحديد | ٥٧ |
| اسْتَضْعَفُونِي: | إن القوم استضعفونى وكادوا يقتلوننى ... | ك الأعراف | ٧ |
| يَسْتَضْعِفُ: | وجعل أهلها شيعا يستضعف طائفة منهم | ك القصص | ٢٨ |
| اسْتُضْعِفُوا: | قال الملأ الذين استكبروا من قومه للذين | | |
| (٥) | استضعفوا لمن آمن منهم أتعلمون أن صالحا مرسل من ربه | ك الأعراف | ٧ |
| | ونريد أن نمن على الذين استضعفوا فى الأرض... ... | ك القصص | ٢٨ |
| | يقول الذين استضعفوا للذين استكبروا لولا أنتم لكنا مؤمنين ... ... ... ... ... ... | ك سبأ | ٣٤ |
| | قال الذين استكبروا للذين استضعفوا أنحن صددناكم | ك « | ٣٤ |
| | وقال الذين استضعفوا للذين استكبروا بل مكر الليل والنهار | ك « | ٣٤ |
| يُسْتَضْعَفُونَ: | وأورثنا القوم الذين كانوا يستضعفون مشارق الأرض ومغاربها التى باركنا فيها ... ... | ك الأعراف | ٧ |
| ضَعْفٍ: | الله الذى خلقكم من ضعف... ... ... ... ... | ك الروم | ٣٠ |
| (٢) | ثم جعل من بعد ضعف قوة... ... ... ... ... | ك « | ٣٠ |
| ضَعْفًا: | الآن خفف الله عنكم وعلم أن فيكم ضعفا ... ... | م الأنفال | ٨ |
| (٢) | ثم جعل من بعد قوة ضعفا وشيبة ... ... ... ... | ك الروم | ٣٠ |
| ضِعْفَ: | قال لكل ضعف ولكن لا تعلمون ... ... ... | ك الأعراف | ٧ |
| (٤) | إذا لأذقناك ضعف الحياة ... ... ... ... ... | م الإسراء | ١٧ |
| | وضعف الممات ثم لا تجد لك علينا نصيرا ... ... | م « | ١٧ |
| | فأولئك لهم جزاء الضعف بما عملوا وهم فى الغرفات آمنون | ك سبأ | ٣٤ |
| ضِعْفًا: | ربنا هؤلاء أضلونا فآتهم عذابا ضعفا من النار... | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | قالوا ربنا من قدم لنا هذا فزده عذابا ضعفا فى النار | ك ص | ٣٨ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **ضِعْفَيْنِ** | : كمثل جنة بربوة أصابها وابل فآتت أكلها ضعفين | ٢٦٥ م | البقرة | ٢ |
| (٣) | من يأت منكن بفاحشة مبينة يضاعف لها العذاب ضعفين | ٣٠ م | الأحزاب | ٣٣ |
| | ربنا آتهم ضعفين من العذاب والعنهم لعنا كبيرا ... ... | ٦٨ م | « | ٣٣ |
| **أَضْعَافًا** | : فيضاعفه له أضعافا كثيرة ... ... ... ... ... | ٢٤٥ م | البقرة | ٢ |
| (٢) | يا أيها الذين آمنوا لا تأكلوا الربا أضعافا مضاعفة ... | ١٣٠ م | آل عمران | ٣ |
| **ضَعِيفًا** | : فإن كان الذى عليه الحق سفيها أو ضعيفا | | | |
| (٤) | أو لا يستطيع أن يمل هو فليملل وليه بالعدل ... | ٢٨٢ م | البقرة | ٢ |
| | يريد الله أن يخفف عنكم وخلق الإنسان ضعيفا ... | ٢٨ م | النساء | ٤ |
| | فقاتلوا أولياء الشيطان إن كيد الشيطان كان ضعيفا | ٧٦ م | « | ٤ |
| | ما نفقه كثيرا مما تقول وإنا لنراك فينا ضعيفا ... | ٩١ ك | هود | ١١ |
| **ضِعَافًا** | : وليخش الذين لو تركوا من خلفهم ذرية ضعافا | | | |
| | خافوا عليهم ... ... ... ... ... ... ... | ٩ م | النساء | ٤ |
| **الضُّعَفَاءُ** | : له فيها من كل الثمرات وأصابه الكبر وله ذرية ضعفاء | ٢٦٦ م | البقرة | ٢ |
| (٤) | ليس على الضعفاء ولا على المرضى ولا على الذين | | | |
| | لا يجدون ما ينفقون حرج ... ... ... ... ... | ٩١ م | التوبة | ٩ |
| | فقال الضعفاء للذين استكبروا إنا كنا لكم تبعا ... ... | ٢١ ك | إبراهيم | ١٤ |
| | فيقول الضعفاء للذين استكبروا إنا كنا لكم تبعا ... | ٤٧ ك | غافر | ٤٠ |
| **أَضْعَفُ** | : فسيعلمون من هو شر مكانا وأضعف جندا ... | ٧٥ ك | مريم | ١٩ |
| (٢) | فسيعلمون من أضعف ناصرا وأقل عددا ... ... | ٢٤ ك | الجن | ٧٢ |
| **الْمُضْعِفُونَ** | : وما آتيتم من زكاة تريدون وجه الله | | | |
| | فأولئك هم المضعفون ... ... ... ... ... ... | ٣٩ ك | الروم | ٣٠ |
| **مُضَاعَفَةً** | : يا أيها الذين آمنوا لا تأكلوا الربا أضعافا مضاعفة | ١٣٠ م | آل عمران | ٣ |
| **مُسْتَضْعَفُونَ** | : واذكروا إذ أنتم قليل مستضعفون فى الأرض | ٢٦ م | الأنفال | ٨ |
| **الْمُسْتَضْعَفِينَ** | : وما لكم لا تقاتلون فى سبيل الله والمستضعفين | | | |
| (٤) | من الرجال والنساء والولدان ... ... ... ... | ٧٥ م | النساء | ٤ |
| | قالوا فيم كنتم قالوا كنا مستضعفين فى الأرض... ... | ٩٧ م | « | ٤ |
| | إلا المستضعفين من الرجال والنساء والولدان ... ... | ٩٨ م | « | ٤ |
| | والمستضعفين من الولدان وأن تقوموا لليتامى بالقسط | ١٢٧ م | « | ٤ |
| **ضِغْثًا** | : وخذ بيدك ضغثا فاضرب به ولا تحنث ... ... | ٤٤ ك | ص | ٣٨ |
| **أَضْغَاثُ** | : قالوا أضغاث أحلام وما نحن بتأويل الأحلام بعالمين | ٤٤ ك | يوسف | ١٢ |
| (٢) | بل قالوا أضغاث أحلام بل افتراه بل هو شاعر | ٥ ك | الأنبياء | ٢١ |
| **أَضْغَانَكُمْ** | : إن يسئلكموها فيحفكم تبخلوا ويخرج أضغانكم | ٣٧ م | محمد | ٤٧ |
| **أَضْغَانَهُمْ** | : أم حسب الذين فى قلوبهم مرض أن لن يخرج | | | |
| | الله أضغانهم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٩ م | « | ٤٧ |
| **الضَّفَادِعَ** | : فأرسلنا عليهم الطوفان والجراد والقمل والضفادع | ١٣٣ ك | الأعراف | ٧ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **ضَلَّ** | : ومن يتبدل الكفر بالإيمان فقد ضل سواء السبيل | ١٠٨ م | البقرة | ٢ |
| (٢٦) | ومن يشرك بالله فقد ضل ضلالا بعيدا ... ... ... | ١١٦ م | النساء | ٤ |
| | ومن يكفر بالله وملائكته وكتبه ورسله واليوم الآخر | | | |
| | فقد ضل ضلالا بعيدا ... ... ... ... ... ... | ١٣٦ م | « | ٤ |
| | فمن كفر بعد ذلك منكم فقد ضل سواء السبيل ... ... | ١٢ م | المائدة | ٥ |
| | يا أيها الذين آمنوا عليكم أنفسكم لا يضركم من ضل إذا اهتديتم | ١٠٥ م | « | ٥ |
| | انظر كيف كذبوا على أنفسهم وضل عنهم ما كانوا يفترون | ٢٤ ك | الأنعام | ٦ |
| | لقد تقطع بينكم وضل عنكم ما كنتم تزعمون ... ... | ٩٤ ك | « | ٦ |
| | قد خسروا أنفسهم وضل عنهم ما كانوا يفترون ... | ٥٣ ك | الأعراف | ٧ |
| | وردوا إلى الله مولاهم الحق وضل عنهم ما كانوا يفترون | ٣٠ ك | يونس | ١٠ |
| | فمن اهتدى فإنما يهتدى لنفسه ومن ضل فإنما يضل عليها | ١٠٨ ك | « | ١٠ |
| | أولئك الذين خسروا أنفسهم وضل عنهم ما كانوا يفترون | ٢١ ك | هود | ١١ |
| | وألقوا إلى الله يومئذ السلم وضل عنهم ما كانوا يفترون | ٨٧ ك | النحل | ١٦ |
| | إن ربك هو أعلم بمن ضل عن سبيله وهو أعلم بالمهتدين | ١٢٥ ك | « | ١٦ |
| | من اهتدى فإنما يهتدى لنفسه ومن ضل فإنما يضل عليها | ١٥ ك | الإسراء | ١٧ |
| | وإذا مسكم الضر فى البحر ضل من تدعون إلا إياه | ٦٧ ك | « | ١٧ |
| | الذين ضل سعيهم فى الحياة الدنيا ... ... ... ... | ١٠٤ ك | الكهف | ١٨ |
| | ومن ضل فقل إنما أنا من المنذرين ... ... ... | ٩٢ ك | النمل | ٢٧ |
| | فعلموا أن الحق لله وضل عنهم ما كانوا يفترون | ٧٥ ك | القصص | ٢٨ |
| | ومن يعص الله ورسوله فقد ضل ضلالا مبينا | ٣٦ م | الأحزاب | ٣٣ |
| | ولقد ضل قبلهم أكثر الأولين ... ... ... ... ... | ٧١ ك | الصافات | ٣٧ |
| | فمن اهتدى فلنفسه ومن ضل فإنما يضل عليها ... ... | ٤١ ك | الزمر | ٣٩ |
| | وضل عنهم ما كانوا يدعون من قبل وظنوا ما لهم من محيص | ٤٨ ك | فصلت | ٤١ |
| | والنجم إذا هوى . ما ضل صاحبكم وما غوى... ... | ٢ ك | النجم | ٥٣ |
| | إن ربك هو أعلم بمن ضل عن سبيله وهو أعلم بمن اهتدى | ٣٠ ك | « | ٥٣ |
| | ومن يفعله منكم فقد ضل سواء السبيل ... ... ... | ١ م | الممتحنة | ٦٠ |
| | إن ربك هو أعلم بمن ضل عن سبيله وهو أعلم بالمهتدين | ٧ ك | القلم | ٦٨ |
| **ضَلَلْتُ** | : قل لا أتبع أهواءكم قد ضللت إذا وما أنا من المهتدين | ٥٦ ك | الأنعام | ٦ |
| (٢) | قل إن ضللت فإنما أضل على نفسى ... ... ... | ٥٠ ك | سبأ | ٣٤ |
| **ضَلَلْنَا** | : وقالوا أئذا ضللنا فى الأرض أئنا لفى خلق جديد | ١٠ ك | السجدة | ٣٢ |
| **ضَلُّوا** | : إن الذين كفروا وصدوا عن سبيل الله قد ضلوا ضلالا بعيدا | ١٦٧ م | النساء | ٤ |
| (١٢) | ولا تتبعوا أهواء قوم قد ضلوا من قبل ... ... ... | ٧٧ م | المائدة | ٥ |
| | وأضلوا كثيرا وضلوا عن سواء السبيل ... ... ... | ٧٧ م | « | ٥ |
| | قد ضلوا وما كانوا مهتدين ... ... ... ... ... | ١٤٠ ك | الأنعام | ٦ |
| | قالوا ضلوا عنا وشهدوا على أنفسهم أنهم كانوا كافرين | ٣٧ ك | الأعراف | ٧ |
| | ولما سقط فى أيديهم ورأوا أنهم قد ضلوا قالوا لئن | | | |
| | لم يرحمنا ربنا ويغفر لنا لنكونن من الخاسرين | ١٤٩ ك | « | ٧ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ضَلُّوا: | انظر كيف ضربوا لك الأمثال فضلوا فلا يستطيعون سبيلا | ٤٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| | قال يا هرون ما منعك إذ رأيتهم ضلوا . ألا تتبعن | ٩٢ | ك طه | ٢٠ |
| | انظر كيف ضربوا لك الأمثال فضلوا فلا يستطيعون سبيلا | ٩ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | أأنتم أضللتم عبادى هؤلاء أم هم ضلوا السبيل ... ... | ١٧ | ك « | ٢٥ |
| | قالوا ضلوا عنا بل لم نكن ندعوا من قبل شيئا ... ... | ٧٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | بل ضلوا عنهم وذلك إفكهم ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| أَضِلُّ: | قل إن ضللت فإنما أضل على نفسى ... ... ... | ٥٠ | ك سبإ | ٣٤ |
| تَضِلَّ: | أن تضل إحداهما فتذكر إحداهما الأخرى ... ... | ٢٨٢ | م البقرة | ٢ |
| تَضِلُّوا: | يشترون الضلالة ويريدون أن تضلوا السبيل ... | ٤٤ | م النساء | ٤ |
| (٢) | يبين الله لكم أن تضلوا والله بكل شىء عليم ... ... | ١٧٦ | م « | ٤ |
| يَضِلُّ: | إن ربك هو أعلم من يضل عن سبيله ... ... ... | ١١٧ | ك الأنعام | ٦ |
| (٦) | فمن اهتدى فإنما يهتدى لنفسه ومن ضل فإنما يضل عليها | ١٠٨ | ك يونس | ١٠ |
| | من اهتدى فإنما يهتدى لنفسه ومن ضل فإنما يضل عليها | ١٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| | قال علمها عند ربى فى كتاب لا يضل ربى ولا ينسى | ٥٢ | ك طه | ٢٠ |
| | فإما يأتينكم منى هدى فمن اتبع هداى فلا يضل ولا يشقى | ١٢٣ | ك « | ٢٠ |
| | فمن اهتدى فلنفسه ومن ضل فإنما يضل عليها ... ... | ٤١ | ك الزمر | ٣٩ |
| يَضِلُّونَ: | إن الذين يضلون عن سبيل الله لهم عذاب شديد | ٢٦ | ك ص | ٣٨ |
| أَضَلَّ: | أتريدون أن تهدوا من أضل الله ... ... ... ... | ٨٨ | م النساء | ٤ |
| (٦) | وأضل فرعون قومه وما هدى ... ... ... ... ... | ٧٩ | ك طه | ٢٠ |
| | فمن يهدى من أضل الله ... ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك الروم | ٣٠ |
| | ولقد أضل منكم جبلا كثيرا أفلم تكونوا تعقلون ... | ٦٢ | ك يس | ٣٦ |
| | الذين كفروا وصدوا عن سبيل الله أضل أعمالهم ... | ١ | م محمد | ٤٧ |
| | والذين كفروا فتعسا لهم وأضل أعمالهم ... ... ... | ٨ | م « | ٤٧ |
| أَضَلَّانَا: | ربنا أرنا اللذين أضلانا من الجن والإنس ... | ٢٩ | ك فصلت | ٤١ |
| أَضْلَلْتُمْ: | أأنتم أضللتم عبادى هؤلاء أم هم ضلوا السبيل | ١٧ | ك الفرقان | ٢٥ |
| أَضْلَلْنَ: | رب إنهن أضللن كثيرا من الناس ... ... ... | ٣٦ | ك إبراهيم | ١٤ |
| أَضَلَّنَا: | وما أضلنا إلا المجرمون ... ... ... ... ... | ٩٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| أَضَلَّنِى: | لقد أضلنى عن الذكر بعد إذ جاءنى ... ... ... | ٢٩ | ك الفرقان | ٢٥ |
| أَضَلَّهُ: | أفرأيت من اتخذ إلهه هواه وأضله الله على علم | ٢٣ | ك الجاثية | ٤٥ |
| أَضَلَّهُمُ: | قال فإنا قد فتنا قومك من بعدك وأضلهم السامرىّ | ٨٥ | ك طه | ٢٠ |
| أَضَلُّوا: | ولا تتبعوا أهواء قوم قد ضلوا من قبل وأضلوا كثيرا | ٧٧ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | وقد أضلوا كثيرا ولا تزد الظالمين إلا ضلالا ... ... | ٢٤ | ك نوح | ٧١ |
| أَضَلُّونَا: | ربنا هؤلاء أضلونا فآتهم عذابا ضعفا من النار | ٣٨ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | إنا أطعنا سادتنا وكبراءنا فأضلونا السبيلا... ... ... | ٦٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| لَأُضِلَّنَّهُمْ: | ولأضلنهم ولأمنينهم ولآمرنهم فليبتكن آذان الأنعام | ١١٩ | م النساء | ٤ |
| تُضِلُّ: | إن هى إلا فتنتك تضل بها من تشاء وتهدى من تشاء | ١٥٥ | ك الأعراف | ٧ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يُضِلُّ: | يضل به كثيرا ويهدى به كثيرا ... ... ... ... | ٢٦ | م البقرة | ٢ |
| (١٧) | وما يضل به إلا الفاسقين ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | م « | ٢ |
| | فمن أظلم ممن افترى على الله كذبا ليضل الناس بغير علم | ١٤٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | وما كان الله ليضل قوما بعد إذ هداهم حتى يبين لهم ما يتقون | ١١٥ | م التوبة | ٩ |
| | قل إن الله يضل من يشاء ويهدى إليه من أناب | ٢٧ | م الرعد | ١٣ |
| | فيضل الله من يشاء ويهدى من يشاء وهو العزيز الحكيم | ٤ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | ويضل الله الظالمين ويفعل الله ما يشاء ... ... ... | ٢٧ | ك « | ١٤ |
| | إن تحرص على هداهم فإن الله لا يهدى من يضل | ٣٧ | ك النحل | ١٦ |
| | ولكن يضل من يشاء ويهدى من يشاء ... ... ... | ٩٣ | ك « | ١٦ |
| | ثانى عطفه ليضل عن سبيل الله ... ... ... ... ... | ٩ | م الحج | ٢٢ |
| | ومن الناس من يشترى لهو الحديث ليضل عن سبيل الله | ٦ | ك لقمان | ٣١ |
| | فإن الله يضل من يشاء ويهدى من يشاء ... ... | ٨ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وجعل لله أندادا ليضل عن سبيله ... ... ... ... | ٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| | كذلك يضل الله من هو مسرف مرتاب... ... ... | ٣٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | كذلك يضل الله الكافرين... ... ... ... ... ... | ٧٤ | ك « | ٤٠ |
| | والذين قتلوا فى سبيل الله فلن يضل أعمالهم ... ... | ٤ | م محمد | ٤٧ |
| | كذلك يضل الله من يشاء ويهدى من يشاء ... ... | ٣١ | ك المدثر | ٧٤ |
| فَيُضِلَّكَ: | ولا تتبع الهوى فيضلك عن سبيل الله ... ... | ٢٦ | ك ص | ٣٨ |
| يُضْلِلْ: | ومن يضلل الله فلن تجد له سبيلا ... ... ... | ٨٨ | م النساء | ٤ |
| (١٢) | ومن يضلل الله فلن تجد له سبيلا ... ... ... ... | ١٤٣ | م « | ٤ |
| | من يهد الله فهو المهتدى ومن يضلل فأولئك هم الخاسرون | ١٧٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | من يضلل الله فلا هادى له ويذرهم فى طغيانهم يعمهون | ١٨٦ | ك « | ٧ |
| | ومن يضلل الله فما له من هاد ... ... ... ... ... | ٣٣ | م الرعد | ١٣ |
| | ومن يضلل فلن تجد لهم أولياء من دونه ... ... ... | ٩٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| | من يهد الله فهو المهتد ومن يضلل فلن تجد له وليا مرشدا | ١٧ | ك الكهف | ١٨ |
| | ومن يضلل الله فما له من هاد ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ويخوفونك بالذين من دونه ومن يضلل الله فما له من هاد | ٣٦ | ك « | ٣٩ |
| | ما لكم من الله من عاصم ومن يضلل الله فما له من هاد | ٣٣ | ك غافر | ٤٠ |
| | ومن يضلل الله فما له من ولىّ من بعده ... ... ... | ٤٤ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ومن يضلل الله فما له من سبيل ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك « | ٤٢ |
| يُضْلِلْهُ: | من يشإ الله يضلله ومن يشأ يجعله على صراط مستقيم | ٣٩ | ك الأنعام | ٦ |
| يُضِلُّنَا: | إن كاد ليضلنا عن آلهتنا لولا أن صبرنا عليها ... | ٤٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| يُضِلَّهُ: | ومن يرد أن يضله يجعل صدره ضيقا حرجا ... ... | ١٢٥ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | كتب عليه أنه من تولاه فأنه يضله ويهديه إلى عذاب السعير | ٤ | م الحج | ٢٢ |
| يُضِلَّهُمْ: | ويريد الشيطان أن يضلهم ضلالا بعيدا ... ... | ٦٠ | م النساء | ٤ |
| يُضِلُّوا: | ربنا ليضلوا عن سبيلك ... ... ... ... ... ... | ٨٨ | ك يونس | ١٠ |
| (٣) | وجعلوا لله أندادا ليضلوا عن سبيله ... ... ... ... | ٣٠ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | إنك إن تذرهم يضلوا عبادك ولا يلدوا إلا فاجرا كفارا | ٢٧ | ك نوح | ٧١ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| يُضِلُّوكَ | : لهمت طائفة منهم أن يضلوك وما يضلون إلا أنفسهم | النساء | ٤ |
| (٢) | و إن تطع أكثر من فى الأرض يضلوك عن سبيل الله | الأنعام | ٦ |
| يُضِلُّونَ | : وما يضلون إلا أنفسهم وما يشعرون | آل عمران | ٣ |
| (٣) | لهمت طائفة منهم أن يضلوك وما يضلون إلا أنفسهم | النساء | ٤ |
| | و إن كثيرا ليضلون بأهوائهم بغير علم | الأنعام | ٦ |
| يُضِلُّونَكُمْ | : ودت طائفة من أهل الكتاب لو يضلونكم | آل عمران | ٣ |
| يُضِلُّونَهُمْ | : ومن أوزار الذين يضلونهم بغير علم | النحل | ١٦ |
| يُضَلُّ | : إنما النسىء زيادة فى الكفر يضل به الذين كفروا | التوبة | ٩ |
| ضَالًّا | : ألم يجدك يتيما فآوى . ووجدك ضالا فهدى | الضحى | ٩٣ |
| الضَّالُّونَ | : لن تقبل توبتهم وأولئك هم الضالون | آل عمران | ٣ |
| (٥) | قال ومن يقنط من رحمة ربه إلا الضالون | الحجر | ١٥ |
| | ثم إنكم أيها الضالون المكذبون . لآكلون من شجر من زقوم | الواقعة | ٥٦ |
| | فلما رأوها قالوا إنا لضالون | القلم | ٦٨ |
| | و إذا رأوهم قالوا إن هؤلاء لضالون | المطففين | ٨٣ |
| الضَّالِّينَ | : صراط الذين أنعمت عليهم غير المغضوب عليهم | | |
| (٨) | ولا الضالين | الفاتحة | ١ |
| | واذكروه كما هداكم و إن كنتم من قبله لمن الضالين | البقرة | ٢ |
| | فلما أفل قال لئن لم يهدنى ربى لأكونن من القوم الضالين | الأنعام | ٦ |
| | قالوا ربنا غلبت علينا شقوتنا وكنا قوما ضالين | المؤمنون | ٢٣ |
| | قال فعلتها إذا وأنا من الضالين | الشعراء | ٢٦ |
| | واغفر لأبى إنه كان من الضالين | » | ٢٦ |
| | إنهم ألفوا آباءهم ضالين | الصافات | ٣٧ |
| | وأما إن كان من المكذبين الضالين . فنزل من حميم | الواقعة | ٥٦ |
| أَضَلُّ | : أولئك شر مكانا وأضل عن سواء السبيل | المائدة | ٥ |
| (٩) | أولئك كالأنعام بل هم أضل أولئك هم الغافلون | الأعراف | ٧ |
| | ومن كان فى هذه أعمى فهو فى الآخرة أعمى وأضل سبيلا | الإسراء | ١٧ |
| | أولئك شر مكانا وأضل سبيلا | الفرقان | ٢٥ |
| | وسوف يعلمون حين يرون العذاب من أضل سبيلا | » | ٢٥ |
| | إن هم إلا كالأنعام بل هم أضل سبيلا | » | ٢٥ |
| | ومن أضل ممن اتبع هواه بغير هدى من الله | القصص | ٢٨ |
| | من أضل ممن هو فى شقاق بعيد | فصلت | ٤١ |
| | ومن أضل ممن يدعوا من دون الله من لا يستجيب له إلى يوم القيامة | الأحقاف | ٤٦ |
| تَضْلِيلٍ | : ألم يجعل كيدهم فى تضليل | الفيل | ١٠٥ |
| مُضِلٌّ | : قال هذا من عمل الشيطان إنه عدو مضل مبين | القصص | ٢٨ |
| (٢) | ومن يهد الله فما له من مضل أليس الله بعزيز ذى انتقام | الزمر | ٣٩ |
| الْمُضِلِّينَ | : وما كنت متخذ المضلين عضدا | الكهف | ١٨ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| ضَلَالٍ | : و إن كانوا من قبل لفى ضلال مبين | آل عمران | ٣ |
| (٣١) | إنى أراك وقومك فى ضلال مبين | الأنعام | ٦ |
| | قال الملأ من قومه إنا لنراك فى ضلال مبين | الأعراف | ٧ |
| | فذلكم الله ربكم الحق فماذا بعد الحق إلا الضلال | يونس | ١٠ |
| | إن أبانا لفى ضلال مبين | يوسف | ١٢ |
| | تراود فتاها عن نفسه قد شغفها حبا إنا لنراها فى ضلال مبين | » | ١٢ |
| | وما دعاء الكافرين إلا فى ضلال | الرعد | ١٣ |
| | و يبغونها عوجا أولئك فى ضلال بعيد | إبراهيم | ١٤ |
| | لا يقدرون مما كسبوا على شىء ذلك هو الضلال البعيد | » | ١٤ |
| | لكن الظالمون اليوم فى ضلال مبين | مريم | ١٩ |
| | قال لقد كنتم أنتم وآباؤكم فى ضلال مبين | الأنبياء | ٢١ |
| | ذلك هو الضلال البعيد | الحج | ٢٢ |
| | تالله إن كنا لفى ضلال مبين | الشعراء | ٢٦ |
| | قل ربى أعلم من جاء بالهدى ومن هو فى ضلال مبين | القصص | ٢٨ |
| | بل الظالمون فى ضلال مبين | لقمان | ٣١ |
| | بل الذين لا يؤمنون بالآخرة فى العذاب والضلال البعيد | سبأ | ٣٤ |
| | و إنا أو إياكم لعلى هدى أو فى ضلال مبين | » | ٣٤ |
| | إنى إذا لفى ضلال مبين | يس | ٣٦ |
| | أنطعم من لو يشاء الله أطعمه إن أنتم إلا فى ضلال مبين | » | ٣٦ |
| | فويل للقاسية قلوبهم من ذكر الله أولئك فى ضلال مبين | الزمر | ٣٩ |
| | وما كيد الكافرين إلا فى ضلال | غافر | ٤٠ |
| | وما دعاء الكافرين إلا فى ضلال | » | ٤٠ |
| | ألا إن الذين يمارون فى الساعة لفى ضلال بعيد | الشورى | ٤٢ |
| | أفأنت تسمع الصم أو تهدى العمى ومن كان فى ضلال مبين | الزخرف | ٤٣ |
| | وليس له من دونه أولياء أولئك فى ضلال مبين | الأحقاف | ٤٦ |
| | قال قرينه ربنا ما أطغيته ولكن كان فى ضلال بعيد | قٓ | ٥٠ |
| | فقالوا أبشرا منا واحدا نتبعه إنا إذا لفى ضلال وسعر | القمر | ٥٤ |
| | إن المجرمين فى ضلال وسعر | » | ٥٤ |
| | ويعلمهم الكتاب والحكمة و إن كانوا من قبل لفى ضلال مبين | الجمعة | ٦٢ |
| | فكذبنا وقلنا ما نزل الله من شىء إن أنتم إلا فى ضلال كبير | الملك | ٦٧ |
| | فستعلمون من هو فى ضلال مبين | » | ٦٧ |
| ضَلَالًا | : ويريد الشيطان أن يضلهم ضلالا بعيدا | النساء | ٤ |
| (٦) | ومن يشرك بالله فقد ضل ضلالا بعيدا | » | ٤ |
| | ومن يكفر بالله وملائكته وكتبه ورسله واليوم الآخر فقد ضل ضلالا بعيدا | » | ٤ |
| | إن الذين كفروا وصدوا عن سبيل الله قد ضلوا ضلالا بعيدا | » | ٤ |
| | ومن يعص الله ورسوله فقد ضل ضلالا مبينا | الأحزاب | ٣٣ |
| | وقد أضلوا كثيرا ولا تزد الظالمين إلا ضلالا | نوح | ٧١ |

# باب الطاء

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| طَبَعَ | : بل طبع الله عليها بكفرهم فلا يؤمنون إلا قليلا ... ... | النساء م | ١٥٥ ٤ |
| (٤) | وطبع الله على قلوبهم فهم لا يعلمون ... ... ... ... | التوبة م | ٩٣ ٩ |
| | أولئك الذين طبع الله على قلوبهم وسمعهم وأبصارهم | النحل ك | ١٠٨ ١٦ |
| | أولئك الذين طبع الله على قلوبهم واتبعوا أهواءهم | محمد م | ١٦ ٤٧ |
| نَطْبَعُ | : ونطبع على قلوبهم فهم لا يسمعون ... ... ... ... | الأعراف ك | ١٠٠ ٧ |
| (٢) | كذلك نطبع على قلوب المعتدين ... ... ... ... ... | يونس ك | ٧٤ ١٠ |
| يَطْبَعُ | : كذلك يطبع الله على قلوب الكافرين ... ... ... | الأعراف ك | ١٠١ ٧ |
| (٣) | كذلك يطبع الله على قلوب الذين لا يعلمون ... ... | الروم ك | ٥٩ ٣٠ |
| | كذلك يطبع الله على كل قلب متكبر جبار ... ... ... | غافر ك | ٣٥ ٤٠ |
| طُبِعَ | : وطبع على قلوبهم فهم لا يفقهون ... ... ... ... | التوبة م | ٨٧ ٩ |
| (٢) | ذلك بأنهم آمنوا ثم كفروا فطبع على قلوبهم فهم لا يفقهون | المنافقون م | ٣ ٦٣ |
| طَبَقٍ | : والقمر إذا اتسق . لتركبن طبقا عن طبق ... ... | الانشقاق ك | ١٩ ٨٤ |
| طَبَقًا | : والقمر إذا اتسق . لتركبن طبقا عن طبق ... ... | الانشقاق ك | ١٩ ٨٤ |
| طِبَاقًا | : الذي خلق سبع سموات طباقا ... ... ... ... ... | الملك ك | ٣ ٦٧ |
| (٢) | ألم تروا كيف خلق الله سبع سموات طباقا ... ... | نوح ك | ١٥ ٧١ |
| طَحَاهَا | : والسماء وما بناها . والأرض وما طحاها ... ... | الشمس ك | ٦ ٩١ |
| أَطْرَحُوهُ | : اقتلوا يوسف أو اطرحوه أرضا يخل لكم وجه أبيكم | يوسف ك | ٩ ١٢ |
| طَرَدْتُهُمْ | : ويا قوم من ينصرني من الله إن طردتهم أفلا تذكرون | هود ك | ٣٠ ١١ |
| تَطْرُدْ | : ولا تطرد الذين يدعون ربهم بالغداة والعشي ... | الأنعام ك | ٥٢ ٦ |
| فَتَطْرُدَهُمْ | : فتطردهم فتكون من الظالمين ... ... ... ... | الأنعام ك | ٥٢ « ٦ |
| بِطَارِدِ | : وما أنا بطارد الذين آمنوا إنهم ملاقوا ربهم ... | هود ك | ٢٩ ١١ |
| (٢) | وما أنا بطارد المؤمنين . إن أنا إلا نذير مبين ... ... | الشعراء ك | ١١٤ ٢٦ |
| الطَّرْفِ | : وعندهم قاصرات الطرف عين ... ... ... ... | الصافات ك | ٤٨ ٣٧ |
| (٤) | وعندهم قاصرات الطرف أتراب ... ... ... ... | ص ك | ٥٢ ٣٨ |
| | ينظرون من طرف خفي ... ... ... ... ... ... | الشورى ك | ٤٥ ٤٢ |
| | فيهن قاصرات الطرف لم يطمثهن إنس قبلهم ولا جان | الرحمن م | ٥٦ ٥٥ |
| طَرْفُكَ | : أنا آتيك به قبل أن يرتد إليك طرفك ... ... | النمل ك | ٤٠ ٢٧ |
| طَرْفُهُمْ | : مهطعين مقنعي رءوسهم لا يرتد إليهم طرفهم ... | إبراهيم ك | ٤٣ ١٤ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| طَرَفَا | : ليقطع طرفا من الذين كفروا أو يكبتهم فينقلبوا خائبين | آل عمران م | ١٢٧ ٣ |
| طَرَفَيِ | : وأقم الصلاة طرفي النهار وزلفا من الليل ... ... | هود م | ١١٤ ١١ |
| أَطْرَافَ | : ومن آناء الليل فسبح وأطراف النهار لعلك ترضى | طه م | ١٣٠ ٢٠ |
| أَطْرَافِهَا | : أولم يروا أنا نأتي الأرض ننقصها من أطرافها | الرعد م | ٤١ ١٣ |
| (٢) | أفلا يرون أنا نأتي الأرض ننقصها من أطرافها ... | الأنبياء ك | ٤٤ ٢١ |
| الطَّارِقُ | : والسماء والطارق ... ... ... ... ... ... | الطارق ك | ١ ٨٦ |
| (٢) | وما أدراك ما الطارق . النجم الثاقب ... ... ... | الطارق ك | ٢ « ٨٦ |
| طَرِيقَ | : إلا طريق جهنم خالدين فيها أبدا ... ... ... | النساء م | ١٦٩ ٤ |
| (٢) | مصدقا لما بين يديه يهدي إلى الحق وإلى طريق مستقيم | الأحقاف ك | ٣٠ ٤٦ |
| طَرِيقًا | : إن الذين كفروا وظلموا لم يكن الله ليغفر لهم | | |
| (٢) | ولا ليهديهم طريقا ... ... ... ... ... ... | النساء م | ١٦٨ ٤ |
| | أن أسر بعبادي فاضرب لهم طريقا في البحر يبسا ... | طه ك | ٧٧ ٢٠ |
| طَرِيقَةً | : إذ يقول أمثلهم طريقة إن لبثتم إلا يوما ... | طه ك | ١٠٤ « ٢٠ |
| (٢) | وألو استقاموا على الطريقة لأسقيناهم ماء غدقا | الجن ك | ١٦ ٧٢ |
| بِطَرِيقَتِكُمُ | : ويذهبا بطريقتكم المثلى ... ... ... ... ... | طه ك | ٦٣ ٢٠ |
| طَرَائِقَ | : ولقد خلقنا فوقكم سبع طرائق وما كنا عن الخلق غافلين | المؤمنون ك | ١٧ ٢٣ |
| (٢) | وأنا منا الصالحون ومنا دون ذلك كنا طرائق قددا | الجن ك | ١١ ٧٢ |
| طَرِيًّا | : وهو الذي سخر البحر لتأكلوا منه لحما طريا ... | النحل ك | ١٤ ١٦ |
| (٢) | ومن كل تأكلون لحما طريا وتستخرجون حلية تلبسونها | فاطر ك | ١٢ ٣٥ |
| طسٓ | : طسٓ تلك آيات القرآن وكتاب مبين ... ... ... | النمل ك | ١ ٢٧ |
| طسٓمٓ | : طسٓمٓ . تلك آيات الكتاب المبين ... ... ... | الشعراء ك | ١ ٢٦ |
| (٢) | طسٓمٓ . تلك آيات الكتاب المبين ... ... ... ... | القصص ك | ١ ٢٨ |
| طَعِمْتُمْ | : ولكن إذا دعيتم فادخلوا فإذا طعمتم فانتشروا | الأحزاب م | ٥٣ ٣٣ |
| طَعِمُوا | : ليس على الذين آمنوا وعملوا الصالحات جناح فيما طعموا | المائدة م | ٩٣ ٥ |
| يَطْعَمْهُ | : فمن شرب منه فليس مني ومن لم يطعمه فإنه مني | البقرة م | ٢٤٩ ٢ |
| (٢) | قل لا أجد في ما أوحي إلي محرما على طاعم يطعمه | الأنعام ك | ١٤٥ ٦ |
| يَطْعَمُهَا | : وقالوا هذه أنعام وحرث حجر لا يطعمها إلا من نشاء | الأنعام ك | ١٣٨ « ٦ |
| أَطْعَمَهُ | : أنطعم من لو يشاء الله أطعمه إن أنتم إلا في ضلال مبين | يس ك | ٤٧ ٣٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَطْعَمَهُمْ | : الذى أطعمهم من جوع وآمنهم من خوف... | ٤ | ك قريش | ١٠٦ |
| تُطْعِمُونَ | : من أوسط ما تطعمون أهليكم... ... ... ... | ٨٩ | م المائدة | ٥ |
| نُطْعِمُ | : أنطعم من لو يشاء الله أطعمه إن أنتم إلا فى ضلال مبين | ٤٧ | ك يس | ٣٦ |
| (٢) | قالوا لم نك من المصلين . ولم نك نطعم المسكين ... | ٤٤ | ك المدثر | ٧٤ |
| نُطْعِمُكُمْ | : إنما نطعمكم لوجه الله لا نريد منكم جزاء ولا شكورا | ٩ | م الإنسان | ٧٦ |
| يُطْعِمُ | : فاطر السموات والأرض وهو يطعم ولا يطعم ... | ١٤ | ك الأنعام | ٦ |
| يُطْعِمُنِي | : الذى خلقنى فهو يهدين والذى هو يطعمنى ويسقين | ٧٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| يُطْعِمُونَ | : ويطعمون الطعام على حبه مسكينا ويتيما وأسيرا | ٨ | م الإنسان | ٧٦ |
| يُطْعِمُونِ | : ما أريد منهم من رزق وما أريد أن يطعمون | ٥٧ | الذاريات | ٥١ |
| أَطْعِمُوا | : فكلوا منها وأطعموا البائس الفقير... ... ... | ٢٨ | م الحج | ٢٢ |
| (٢) | فكلوا منها وأطعموا القانع والمعتر... ... ... ... | ٣٦ | م « | ٢٢ |
| يُطْعَمُ | : فاطر السموات والأرض وهو يطعم ولا يطعم ... | ١٤ | ك الأنعام | ٦ |
| اسْتَطْعَمَا | : فانطلقا حتى إذا أتيا أهل قرية استطعما أهلها | ٧٧ | ك الكهف | ١٨ |
| إِطْعَامُ | : فكفارته إطعام عشرة مساكين ... ... ... ... | ٨٩ | م المائدة | ٥ |
| (٣) | فمن لم يستطع فإطعام ستين مسكينا ... ... ... ... | ٤ | م المجادلة | ٥٨ |
| | أو إطعام فى يوم ذى مسغبة . يتيما ذا مقربة... ... | ١٤ | ك البلد | ٩٠ |
| طَاعِمٍ | : قل لا أجد فى ما أوحى إلى محرما على طاعم يطعمه | ١٤٥ | ك الأنعام | ٦ |
| طَعَامٍ | : وإذ قلتم يا موسى لن نصبر على طعام واحد ... | ٦١ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | وعلى الذين يطيقونه فدية طعام مسكين ... ... ... | ١٨٤ | م « | ٢ |
| | كل الطعام كان حلا لبنى إسرائيل ... ... ... ... | ٩٣ | م آل عمران | ٣ |
| | وطعام الذين أوتوا الكتاب حل لكم وطعامكم حل لهم | ٥ | م المائدة | ٥ |
| | وأمه صديقة كانا يأكلان الطعام ... ... ... ... | ٧٥ | م « | ٥ |
| | أو كفارة طعام مساكين أو عدل ذلك صياما ... ... | ٩٥ | م « | ٥ |
| | قال لا يأتيكما طعام ترزقانه إلا نبأتكما بتأويله... ... | ٣٧ | ك يوسف | ١٢ |
| | وما جعلناهم جسدا لا يأكلون الطعام... ... ... ... | ٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وقالوا مال هذا الرسول يأكل الطعام ويمشى | | | |
| | فى الأسواق ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وما أرسلنا قبلك من المرسلين إلا إنهم ليأكلون الطعام | ٢٠ | ك « | ٢٥ |
| | إلا أن يؤذن لكم إلى طعام غير ناظرين إناه ... ... | ٥٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | إن شجرة الزقوم . طعام الأثيم ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك الدخان | ٤٤ |
| | ولا يحض على طعام المسكين ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | فليس له اليوم ههنا حميم . ولا طعام إلا من غسلين | ٣٦ | ك « | ٦٩ |
| | ويطعمون الطعام على حبه مسكينا ويتيما وأسيرا ... | ٨ | م الإنسان | ٧٦ |
| | ليس لهم طعام إلا من ضريع ... ... ... ... ... | ٦ | ك الغاشية | ٨٨ |
| | ولا تحاضون على طعام المسكين ... ... ... ... ... | ١٨ | ك الفجر | ٨٩ |
| | ولا يحض على طعام المسكين... ... ... ... ... ... | ٣ | ك الماعون | ١٠٧ |
| طَعَامًا | : فلينظر أيها أزكى طعاما فليأتكم برزق منه ... ... | ١٩ | ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | إن لدينا أنكالا وجحيما . وطعاما ذا غصة وعذابا أليما | ١٣ | ك المزمل | ٧٣ |
| طَعَامِكَ | : فانظر إلى طعامك وشرابك لم يتسنه ... ... ... | ٢٥٩ | م البقرة | ٢ |
| طَعَامُكُمْ | : وطعام الذين أوتوا الكتاب حل لكم وطعامكم حل لهم | ٥ | م المائدة | ٥ |
| طَعَامُهُ | : أحل لكم صيد البحر وطعامه متاعا لكم وللسيارة | ٩٦ | م « | ٥ |
| (٢) | فلينظر الإنسان إلى طعامه ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك عبس | ٨٠ |
| طَعْمُهُ | : أنهار من لبن لم يتغير طعمه ... ... ... ... ... | ١٥ | م محمد | ٤٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| طَعَنُوا | : وطعنوا فى دينكم فقاتلوا أئمة الكفر إنهم لا أيمان لهم | ١٢ | م التوبة | ٩ |
| طَعْنًا | : وأسمع غير مسمع وراعنا ليا بألسنتهم وطعنا فى الدين | ٤٦ | م النساء | ٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| طَغَى | : اذهب إلى فرعون إنه طغى... ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك طه | ٢٠ |
| (٦) | اذهبا إلى فرعون إنه طغى ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك « | ٢٠ |
| | ما زاغ البصر وما طغى ... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك النجم | ٥٣ |
| | إنا لما طغا الماء حملناكم فى الجارية ... ... ... ... | ١١ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | اذهب إلى فرعون إنه طغى . فقل هل لك إلى أن تزكى | ١٧ | ك النازعات | ٧٩ |
| | فأما من طغى . وآثر الحياة الدنيا . فإن الجحيم | | | |
| | هى المأوى ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك « | ٧٩ |
| طَغَوْا | : وفرعون ذى الأوتاد . الذين طغوا فى البلاد... ... | ١١ | ك الفجر | ٨٩ |
| تَطْغَوْا | : فاستقم كما أمرت ومن تاب معك ولا تطغوا ... | ١١٢ | ك هود | ١١ |
| (٣) | ولا تطغوا فيه فيحل عليكم غضبى ... ... ... ... | ٨١ | ك طه | ٢٠ |
| | والسماء رفعها ووضع الميزان . ألا تطغوا فى الميزان... | ٨ | م الرحمن | ٥٥ |
| يَطْغَى | : قالا ربنا إننا نخاف أن يفرط علينا أو أن يطغى | ٤٥ | ك طه | ٢٠ |
| (٢) | كلا إن الإنسان ليطغى . أن رآه استغنى... ... ... | ٦ | ك العلق | ٩٦ |
| أَطْغَيْتُهُ | : قال قرينه ربنا ما أطغيته ولكن كان فى ضلال بعيد | ٢٧ | ك ق | ٥٠ |
| طَاغُونَ | : أتواصوا به بل هم قوم طاغون... ... ... ... | ٥٣ | ك الذاريات | ٥١ |
| (٢) | أم تأمرهم أحلامهم بهذا أم هم قوم طاغون ... ... | ٣٢ | ك الطور | ٥٢ |
| طَاغِينَ | : وما كان لنا عليكم من سلطان بل كنتم قوما طاغين | ٣٠ | ك الصافات | ٣٧ |
| (٤) | هذا وإن للطاغين لشر مآب ... ... ... ... ... | ٥٥ | ك ص | ٣٨ |
| | قالوا يا ويلنا إنا كنا طاغين ... ... ... ... ... | ٣١ | م القلم | ٦٨ |
| | إن جهنم كانت مرصادا . للطاغين مآبا ... ... ... | ٢٢ | ك النبأ | ٧٨ |
| أَطْغَى | : وقوم نوح من قبل إنهم كانوا هم أظلم وأطغى ... | ٥٢ | ك النجم | ٥٣ |
| بِالطَّاغِيَةِ | : فأما ثمود فأهلكوا بالطاغية ... ... ... ... | ٥ | ك الحاقة | ٦٩ |
| بِطَغْوَاهَا | : كذبت ثمود بطغواها . إذ انبعث أشقاها ... | ١١ | ك الشمس | ٩١ |
| طُغْيَانًا | : وليزيدن كثيرا منهم ما أنزل إليك من ربك | | | |
| (٤) | طغيانا وكفرا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦٤ | م المائدة | ٥ |
| | وليزيدن كثيرا منهم ما أنزل إليك من ربك طغيانا وكفرا | ٦٨ | م « | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| طُغْيَانًا | : ونخوفهم فما يزيدهم إلا طغيانا كبيرا ... ... | ك الإسراء | ١٧ ٦٠ |
| | نخشينا أن يرهقهما طغيانا وكفرا ... ... ... ... | ك الكهف | ١٨ ٨٠ |
| طُغْيَانِهِمْ | : الله يستهزئ بهم ويمدهم في طغيانهم يعمهون... | م البقرة | ٢ ١٥ |
| (٥) | ونذرهم في طغيانهم يعمهون ... ... ... ... ... | ك الأنعام | ٦ ١١٠ |
| | من يضلل الله فلا هادي له ويذرهم في طغيانهم يعمهون | ك الأعراف | ٧ ١٨٦ |
| | فنذر الذين لا يرجون لقاءنا في طغيانهم يعمهون ... | ك يونس | ١٠ ١١ |
| | ولو رحمناهم وكشفنا ما بهم من ضر لجوا في طغيانهم يعمهون | ك المؤمنون | ٢٣ ٧٥ |
| الطَّاغُوتِ | : فمن يكفر بالطاغوت ويؤمن بالله فقد استمسك | | |
| (٨) | بالعروة الوثقى ... ... ... ... ... ... ... | م البقرة | ٢ ٢٥٦ |
| | والذين كفروا أولياؤهم الطاغوت ... ... ... ... | « | ٢ ٢٥٧ |
| | ألم تر إلى الذين أوتوا نصيبا من الكتاب يؤمنون | | |
| | بالجبت والطاغوت ... ... ... ... ... ... | م النساء | ٤ ٥١ |
| | يريدون أن يتحاكموا إلى الطاغوت وقد أمروا أن | | |
| | يكفروا به... ... ... ... ... ... ... ... | « | ٤ ٦٠ |
| | والذين كفروا يقاتلون في سبيل الطاغوت ... ... | « | ٤ ٧٦ |
| | وجعل منهم القردة والخنازير وعبد الطاغوت... ... | م المائدة | ٥ ٦٠ |
| | أن اعبدوا الله واجتنبوا الطاغوت ... ... ... ... | ك النحل | ١٦ ٣٦ |
| | والذين اجتنبوا الطاغوت أن يعبدوها وأنابوا إلى الله | | |
| | لهم البشرى... ... ... ... ... ... ... ... | ك الزمر | ٣٩ ١٧ |

✦✦✦

أَطْفَأَهَا : كلما أوقدوا نارا للحرب أطفأها الله ... ... ... | م المائدة | ٥ ٦٤

يُطْفِئُوا : يريدون أن يطفئوا نور الله بأفواههم ... ... | م التوبة | ٩ ٣٢

(٢) يريدون ليطفئوا نور الله بأفواههم والله متم نوره... | م الصف | ٦١ ٨

✦✦✦

لِلْمُطَفِّفِينَ : ويل للمطففين ... ... ... ... ... ... | ك المطففين | ٨٣ ١

✦✦✦

فَطَفِقَ : ردوها علي فطفق مسحا بالسوق والأعناق... ... | ك ص | ٣٨ ٣٣

طَفِقَا : وطفقا يخصفان عليهما من ورق الجنة ... ... ... | ك الأعراف | ٧ ٢٢

(٢) وطفقا يخصفان عليهما من ورق الجنة ... ... ... | ك طه | ٢٠ ١٢١

✦✦✦

الطِّفْلِ : أو الطفل الذين لم يظهروا على عورات النساء ... | م النور | ٢٤ ٣١

طِفْلًا : ونقر في الأرحام ما نشاء إلى أجل مسمى ثم نخرجكم طفلا | م الحج | ٢٢ ٥

(٢) هو الذي خلقكم من تراب ثم من نطفة ثم من علقة ثم

يخرجكم طفلا ... ... ... ... ... ... ... | ك غافر | ٤٠ ٦٧

الأَطْفَالُ : وإذا بلغ الأطفال منكم الحلم فليستأذنوا ... | م النور | ٢٤ ٥٩

✦✦✦

يَطْلُبُهُ : ثم استوى على العرش يغشى الليل النهار يطلبه حثيثا | ك الأعراف | ٧ ٥٤

طَلَبًا : أو يصبح ماؤها غورا فلن تستطيع له طلبا... ... ... | ك الكهف | ١٨ ٤١

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| الطَّالِبُ | : لا يستنقذوه منه ضعف الطالب ... ... ... ... | م الحج | ٢٢ ٧٣ |
| الْمَطْلُوبُ | : والمطلوب ... ... ... ... ... ... ... ... | « | ٢٢ ٧٣ |

✦✦✦

طَالُوتَ : وقال لهم نبيهم إن الله قد بعث لكم طالوت ملكا | م البقرة | ٢ ٢٤٧

(٢) فلما فصل طالوت بالجنود قال إن الله مبتليكم بنهر ... | « | ٢ ٢٤٩

✦✦✦

طَلْحٍ : في سدر مخضود . وطلح منضود ... ... ... ... | ك الواقعة | ٥٦ ٢٩

✦✦✦

طَلَعَتْ : وترى الشمس إذا طلعت تزاور عن كهفهم

ذات اليمين ... ... ... ... ... ... ... ... | ك الكهف | ١٨ ١٧

تَطْلُعُ : حتى إذا بلغ مطلع الشمس وجدها تطلع على قوم | « | ١٨ ٩٠

لِيُطْلِعَكُمْ : وما كان الله ليطلعكم على الغيب... ... ... ... | م آل عمران | ٣ ١٧٩

فَاطَّلَعَ : فاطلع فرآه في سواء الجحيم... ... ... ... ... | ك الصافات | ٣٧ ٥٥

أَطَّلَعَ : أطلع الغيب أم اتخذ عند الرحمن عهدا ... ... ... | ك مريم | ١٩ ٧٨

اطَّلَعْتَ : لو اطلعت عليهم لوليت منهم فرارا ولملئت منهم رعبا | ك الكهف | ١٨ ١٨

أَطَّلِعُ : فاجعل لي صرحا لعلي أطلع إلى إله موسى ... ... | ك القصص | ٢٨ ٣٨

(٢) لعلي أبلغ الأسباب . أسباب السموات فأطلع إلى إله موسى | ك غافر | ٤٠ ٣٧

تَطَّلِعُ : ولا تزال تطلع على خائنة منهم إلا قليلا منهم | م المائدة | ٥ ١٣

(٢) نار الله الموقدة . التي تطلع على الأفئدة ... ... ... | ك الهمزة | ١٠٤ ٧

طُلُوعِ : وسبح بحمد ربك قبل طلوع الشمس وقبل غروبها | ك طه | ٢٠ ١٣٠

(٢) وسبح بحمد ربك قبل طلوع الشمس وقبل الغروب | ك ق | ٥٠ ٣٩

مَطْلَعِ : سلام هي حتى مطلع الفجر ... ... ... ... ... | ك القدر | ٩٧ ٥

مَطْلِعَ : حتى إذا بلغ مطلع الشمس وجدها تطلع على قوم | م الكهف | ١٨ ٩٠

مُطَّلِعُونَ : قال هل أنتم مطلعون ... ... ... ... ... ... | ك الصافات | ٣٧ ٥٤

طَلْعٌ : والنخل باسقات لها طلع نضيد ... ... ... ... ... | ك ق | ٥٠ ١٠

طَلْعِهَا : ومن النخل من طلعها قنوان دانية وجنات من أعناب | ك الأنعام | ٦ ٩٩

(٣) وزروع ونخل طلعها هضيم ... ... ... ... ... ... | ك الشعراء | ٢٦ ١٤٨

طلعها كأنه رءوس الشياطين ... ... ... ... ... ... | ك الصافات | ٣٧ ٦٥

✦✦✦

طَلَّقْتُمُ : وإذا طلقتم النساء فبلغن أجلهن فأمسكوهن بمعروف | م البقرة | ٢ ٢٣١

(٤) وإذا طلقتم النساء فبلغن أجلهن فلا تعضلوهن... ... | « | ٢ ٢٣٢

لا جناح عليكم إن طلقتم النساء ما لم تمسوهن ... ... | « | ٢ ٢٣٦

يا أيها النبي إذا طلقتم النساء فطلقوهن لعدتهن ... ... | م الطلاق | ٦٥ ١

طَلَّقْتُمُوهُنَّ : وإن طلقتموهن من قبل أن تمسوهن وقد

(٢) فرضتم لهن فريضة فنصف ما فرضتم ... ... ... | م البقرة | ٢ ٢٣٧

إذا نكحتم المؤمنات ثم طلقتموهن من قبل أن تمسوهن

فما لكم عليهن من عدة تعتدونها ... ... ... ... | م الأحزاب | ٣٣ ٤٩

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| طَلَّقَكُنَّ | : عسى ربه إن طلقكن أن يبدله أزواجا خيرا منكن | ٥ | م التحريم | ٦٦ |
| طَلَّقَهَا | : فإن طلقها فلا تحل له من بعد حتى تنكح زوجا غيره | ٢٣٠ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | فإن طلقها فلا جناح عليهما أن يتراجعا ... ... ... | ٢٣٠ | م « | ٢ |
| فَطَلِّقُوهُنَّ | : يأيها النبي إذا طلقتم النساء فطلقوهن لعدتهن | ١ | م الطلاق | ٦٥ |
| انْطَلَقَ | : وانطلق الملأ منهم أن امشوا واصبروا على آلهتكم | ٦ | ك ص | ٣٨ |
| فَانْطَلَقَا | : فانطلقا حتى إذا ركبا في السفينة خرقها ... ... | ٧١ | ك الكهف | ١٨ |
| (٣) | فانطلقا حتى إذا لقيا غلاما فقتله قال أقتلت نفسا زكية | ٧٤ | ك « | ١٨ |
| | فانطلقا حتى إذا أتيا أهل قرية استطعما أهلها... ... | ٧٧ | ك « | ١٨ |
| انْطَلَقْتُمْ | : سيقول المخلفون إذا انطلقتم إلى مغانم لتأخذوها | | | |
| | ذرونا نتبعكم ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | م الفتح | ٤٨ |
| فَانْطَلَقُوا | : فانطلقوا وهم يتخافتون ... ... ... ... ... | ٢٣ | م القلم | ٦٨ |
| يَنْطَلِقُ | : ويضيق صدري ولا ينطلق لساني فأرسل إلى هرون | ١٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| انْطَلِقُوا | : انطلقوا إلى ما كنتم به تكذبون... ... ... ... | ٢٩ | ك المرسلات | ٧٧ |
| (٢) | انطلقوا إلى ظل ذي ثلاث شعب ... ... ... ... | ٣٠ | ك « | ٧٧ |
| الطَّلَاقُ | : وإن عزموا الطلاق فإن الله سميع عليم ... ... | ٢٢٧ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | الطلاق مرتان فإمساك بمعروف أو تسريح بإحسان | ٢٢٩ | م « | ٢ |
| الْمُطَلَّقَاتُ | : والمطلقات يتربصن بأنفسهن ثلاثة قروء ... | ٢٢٨ | م « | ٢ |
| (٢) | وللمطلقات متاع بالمعروف حقا على المتقين... ... ... | ٢٤١ | م « | ٢ |
| فَطَلٌّ | : أصابها وابل فآتت أكلها ضعفين فإن لم يصبها | | | |
| | وابل فطل... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦٥ | م « | ٢ |
| يَطْمِثْهُنَّ | : لم يطمثهن إنس قبلهم ولا جان ... ... ... | ٥٦ | م الرحمن | ٥٥ |
| (٢) | لم يطمثهن إنس قبلهم ولا جان ... ... ... ... | ٧٤ | م « | ٥٥ |
| طَمَسْنَا | : ولو نشاء لطمسنا على أعينهم فاستبقوا الصراط | ٦٦ | ك يس | ٣٦ |
| (٢) | ولقد راودوه عن ضيفه فطمسنا أعينهم فذوقوا عذابي ونذر | ٣٧ | ك القمر | ٥٤ |
| نَطْمِسَ | : آمنوا بما نزلنا مصدقا لما معكم من قبل أن | | | |
| | نطمس وجوها... ... ... ... ... ... ... | ٤٧ | م النساء | ٤ |
| اطْمِسْ | : ربنا اطمس على أموالهم واشدد على قلوبهم | ٨٨ | ك يونس | ١٠ |
| طُمِسَتْ | : فإذا النجوم طمست . وإذا السماء فرجت ... | ٨ | ك المرسلات | ٧٧ |
| أَطْمَعُ | : والذي أطمع أن يغفر لي خطيئتي يوم الدين | ٨٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| أَفَتَطْمَعُونَ | : أفتطمعون أن يؤمنوا لكم وقد كان فريق | | | |
| | منهم يسمعون كلام الله ثم يحرفونه ... ... ... | ٧٥ | م البقرة | ٢ |
| نَطْمَعُ | : ونطمع أن يدخلنا ربنا مع القوم الصالحين ... | ٨٤ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | إنا نطمع أن يغفر لنا ربنا خطايانا أن كنا أول المؤمنين | ٥١ | ك الشعراء | ٢٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَطْمَعَ | : إن اتقيتن فلا تخضعن بالقول فيطمع الذي في قلبه مرض | ٣٢ | م الأحزاب | ٣٣ |
| (٣) | أيطمع كل امرئ منهم أن يدخل جنة نعيم ... ... | ٣٨ | ك المعارج | ٧٠ |
| | ومهدت له تمهيدا . ثم يطمع أن أزيد ... ... ... | ١٥ | ك المدثر | ٧٤ |
| يَطْمَعُونَ | : لم يدخلوها وهم يطمعون ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك الأعراف | ٧ |
| طَمَعًا | : وادعوه خوفا وطمعا... ... ... ... ... ... | ٥٦ | ك « | ٧ |
| (٤) | هو الذي يريكم البرق خوفا وطمعا وينشئ السحاب الثقال | ١٢ | م الرعد | ١٣ |
| | من آياته يريكم البرق خوفا وطمعا ... ... ... ... | ٢٤ | ك الروم | ٣٠ |
| | تتجافى جنوبهم عن المضاجع يدعون ربهم خوفا وطمعا | ١٦ | م السجدة | ٣٢ |
| الطَّامَّةُ | : فإذا جاءت الطامة الكبرى . يوم يتذكر الإنسان ما سعى | ٣٤ | ك النازعات | ٧٩ |
| اطْمَأَنَّ | : فإن أصابه خير اطمأن به ... ... ... ... ... | ١١ | م الحج | ٢٢ |
| اطْمَأْنَنْتُمْ | : فإذا اطمأننتم فأقيموا الصلاة ... ... ... | ١٠٣ | م النساء | ٤ |
| اطْمَأَنُّوا | : إن الذين لا يرجون لقاءنا ورضوا بالحياة الدنيا | | | |
| | واطمأنوا بها ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك يونس | ١٠ |
| تَطْمَئِنَّ | : وما جعله الله إلا بشرى لكم ولتطمئن قلوبكم به | ١٢٦ | م آل عمران | ٣ |
| (٥) | قالوا نريد أن نأكل منها وتطمئن قلوبنا ... ... ... | ١١٣ | م المائدة | ٥ |
| | وما جعله الله إلا بشرى ولتطمئن به قلوبكم ... ... | ١٠ | م الأنفال | ٨ |
| | الذين آمنوا وتطمئن قلوبهم بذكر الله ... ... ... | ٢٨ | م الرعد | ١٣ |
| | ألا بذكر الله تطمئن القلوب... ... ... ... ... | ٢٨ | م « | ١٣ |
| لِيَطْمَئِنَّ | : قال أولم تؤمن قال بلى ولكن ليطمئن قلبي ... | ٢٦٠ | م البقرة | ٢ |
| مُطْمَئِنٌّ | : إلا من أكره وقلبه مطمئن بالإيمان ... ... ... | ١٠٦ | ك النحل | ١٦ |
| مُطْمَئِنِّينَ | : قل لو كان في الأرض ملائكة يمشون مطمئنين | | | |
| | لنزلنا عليهم من السماء ملكا رسولا... ... ... ... | ٩٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| مُطْمَئِنَّةً | : وضرب الله مثلا قرية كانت آمنة مطمئنة | ١١٢ | ك النحل | ١٦ |
| (٢) | يأيتها النفس المطمئنة . ارجعي إلى ربك راضية مرضية | ٢٧ | ك الفجر | ٨٩ |
| طه | : طه . ما أنزلنا عليك القرآن لتشقى... ... ... ... | ١ | ك طه | ٢٠ |
| يَطْهُرْنَ | : فاعتزلوا النساء في المحيض ولا تقربوهن حتى يطهرن | ٢٢٢ | م البقرة | ٢ |
| طَهَّرَكِ | : إذ الله اصطفاك وطهرك واصطفاك على نساء العالمين | ٤٢ | م آل عمران | ٣ |
| تُطَهِّرُهُمْ | : خذ من أموالهم صدقة تطهرهم وتزكيهم بها | ١٠٣ | م التوبة | ٩ |
| يُطَهِّرَ | : أولئك الذين لم يرد الله أن يطهر قلوبهم ... ... | ٤١ | م المائدة | ٥ |
| لِيُطَهِّرَكُمْ | : ولكن يريد ليطهركم وليتم نعمته عليكم ... ... | ٦ | م « | ٥ |
| (٣) | وينزل عليكم من السماء ماء ليطهركم به ... ... ... | ١١ | م الأنفال | ٨ |
| | إنما يريد الله ليذهب عنكم الرجس أهل البيت | | | |
| | ويطهركم تطهيرا ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | م الأحزاب | ٣٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| طَهِّرْ | وطهر بيتى للطائفين والقائمين والركع السجود ... ... | ٢٦ | م الحج | ٢٢ |
| (٢) | وثيابك فطهر . والرجز فاهجر ... ... ... ... ... | ٤ | ك المدثر | ٧٤ |
| طَهَّرَا | وعهدنا إلى إبراهيم وإسمعيل أن طهرا بيتى للطائفين والعاكفين ... ... ... ... ... ... | ١٢٥ | م البقرة | ٢ |
| تَطَهَّرْنَ | فإذا تطهرن فأتوهن من حيث أمركم الله ... ... | ٢٢٢ | م « | ٢ |
| يَتَطَهَّرُوا | فيه رجال يحبون أن يتطهروا والله يحب المطهرين | ١٠٨ | م التوبة | ٩ |
| يَتَطَهَّرُونَ | أخرجوهم من قريتكم إنهم أناس يتطهرون | ٨٢ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | أخرجوا آل لوط من قريتكم إنهم أناس يتطهرون | ٥٦ | ك النمل | ٢٧ |
| فَاطَّهَّرُوا | وإن كنتم جنبا فاطهروا ... ... ... ... ... | ٦ | م المائدة | ٥ |
| طَهُورًا | وأنزلنا من السماء ماء طهورا ... ... ... ... ... | ٤٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| (٢) | وحلوا أساور من فضة وسقاهم ربهم شرابا طهورا | ٢١ | م الإنسان | ٧٦ |
| أَطْهَرُ | ذلكم أزكى لكم وأطهر والله يعلم وأنتم لا تعلمون | ٢٣٢ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | قال ياقوم هؤلاء بناتى هن أطهر لكم... ... ... ... | ٧٨ | ك هود | ١١ |
| | ذلكم أطهر لقلوبكم وقلوبهن ... ... ... ... ... | ٥٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | فقدموا بين يدى نجواكم صدقة ذلك خير لكم وأطهر | ١٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| تَطْهِيرًا | إنما يريد الله ليذهب عنكم الرجس أهل البيت ويطهركم تطهيرا ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| مُطَهِّرُكَ | إنى متوفيك ورافعك إلى ومطهرك من الذين كفروا | ٥٥ | م آل عمران | ٣ |
| مُطَهَّرَةٌ | ولهم فيها أزواج مطهرة وهم فيها خالدون ... ... | ٢٥ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | خالدين فيها وأزواج مطهرة ورضوان من الله... ... | ١٥ | م آل عمران | ٣ |
| | لهم فيها أزواج مطهرة وندخلهم ظلا ظليلا... ... ... | ٥٧ | م النساء | ٤ |
| | فمن شاء ذكره . فى صحف مكرمة . مرفوعة مطهرة | ١٤ | ك عبس | ٨٠ |
| | رسول من الله يتلوا صحفا مطهرة... ... ... ... ... | ٢ | م البينة | ٩٨ |
| الْمُطَهَّرُونَ | فى كتاب مكنون . لا يمسه إلا المطهرون ... | ٧٩ | ك الواقعة | ٥٦ |
| الْمُتَطَهِّرِينَ | إن الله يحب التوابين ويحب المتطهرين | ٢٢٢ | م البقرة | ٢ |
| الْمُطَّهِّرِينَ | فيه رجال يحبون أن يتطهروا والله يحب المطهرين | ١٠٨ | م التوبة | ٩ |
| كَالطَّوْدِ | فانفلق فكان كل فرق كالطود العظيم... ... ... | ٦٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| الطُّورَ | وإذ أخذنا ميثاقكم ورفعنا فوقكم الطور... ... ... | ٦٣ | م البقرة | ٢ |
| (١٠) | وإذ أخذنا ميثاقكم ورفعنا فوقكم الطور ... ... ... | ٩٣ | م « | ٢ |
| | ورفعنا فوقهم الطور بميثاقهم وقلنا لهم ادخلوا الباب سجدا | ١٥٤ | م النساء | ٤ |
| | وناديناه من جانب الطور الأيمن وقربناه نجيا ... ... | ٥٢ | ك مريم | ١٩ |
| | قد أنجيناكم من عدوكم وواعدناكم جانب الطور الأيمن | ٨٠ | ك طه | ٢٠ |
| | وشجرة تخرج من طور سيناء تنبت بالدهن وصبغ للآكلين | ٢٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | آنس من جانب الطور نارا ... ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك القصص | ٢٨ |
| | وما كنت بجانب الطور إذ نادينا ولكن رحمة من ربك | ٤٦ | ك « | ٢٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الطُّورِ | والطور . وكتاب مسطور . فى رق منشور ... ... | ١ | ك الطور | ٥٢ |
| | والتين والزيتون . وطور سينين . وهذا البلد الأمين | ٢ | ك التين | ٩٥ |
| أَطْوَارًا | ما لكم لا ترجون لله وقارا . وقد خلقكم أطوارا | ١٤ | ك نوح | ٧١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| فَطَوَّعَتْ | فطوعت له نفسه قتل أخيه فقتله ... ... ... | ٣٠ | م المائدة | ٥ |
| أَطَاعَ | من يطع الرسول فقد أطاع الله ... ... ... ... | ٨٠ | م النساء | ٤ |
| أَطَاعُونَا | الذين قالوا لإخوانهم وقعدوا لو أطاعونا ماقتلوا | ١٦٨ | م آل عمران | ٣ |
| فَأَطَاعُوهُ | فاستخف قومه فأطاعوه إنهم كانوا قوما فاسقين | ٥٤ | م الزخرف | ٤٣ |
| أَطَعْتُمْ | ولئن أطعتم بشرا مثلكم إنكم إذا لخاسرون ... ... | ٣٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| أَطَعْتُمُوهُمْ | وإن أطعتموهم إنكم لمشركون ... ... ... | ١٢١ | ك الأنعام | ٦ |
| أَطَعْنَا | وقالوا سمعنا وأطعنا غفرانك ربنا وإليك المصير | ٢٨٥ | م البقرة | ٢ |
| (٨) | ولو أنهم قالوا سمعنا وأطعنا واسمع وانظرنا لكان خيرا لهم | ٤٦ | م النساء | ٤ |
| | واذكروا نعمة الله عليكم وميثاقه الذى واثقكم به إذ قلتم سمعنا وأطعنا ... ... ... ... ... ... | ٧ | م المائدة | ٥ |
| | ويقولون آمنا بالله وبالرسول وأطعنا ... ... ... | ٤٧ | م النور | ٢٤ |
| | إنما كان قول المؤمنين إذا دعوا إلى الله ورسوله ليحكم بينهم أن يقولوا سمعنا وأطعنا ... ... ... | ٥١ | م « | ٢٤ |
| | يوم تقلب وجوههم فى النار يقولون ياليتنا أطعنا الله | ٦٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وأطعنا الرسولا ... ... ... ... ... ... ... | ٦٦ | م « | ٣٣ |
| | وقالوا ربنا إنا أطعنا سادتنا وكبراءنا فأضلونا السبيلا | ٦٧ | م « | ٣٣ |
| أَطَعْنَكُمْ | فإن أطعنكم فلا تبغوا عليهن سبيلا ... ... ... | ٣٤ | م النساء | ٤ |
| تُطِعْ | وإن تطع أكثر من فى الأرض يضلوك عن سبيل الله | ١١٦ | ك الأنعام | ٦ |
| (٨) | ولا تطع من أغفلنا قلبه عن ذكرنا واتبع هواه... ... | ٢٨ | م الكهف | ١٨ |
| | فلا تطع الكافرين وجاهدهم به جهادا كبيرا ... ... | ٥٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | يأيها النبى اتق الله ولا تطع الكافرين والمنافقين ... | ١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ولا تطع الكافرين والمنافقين ودع أذاهم وتوكل على الله | ٤٨ | م « | ٣٣ |
| | فلا تطع المكذبين . ودوا لو تدهن فيدهنون ... ... | ٨ | ك القلم | ٦٨ |
| | ولا تطع كل حلاف مهين ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك « | ٦٨ |
| | فاصبر لحكم ربك ولا تطع منهم آثما أو كفورا ... | ٢٤ | م الإنسان | ٧٦ |
| تُطِعْهُ | كلا لا تطعه واسجد واقترب ... ... ... ... ... | ١٩ | ك العلق | ٩٦ |
| تُطِعْهُمَا | وإن جاهداك لتشرك بى ماليس لك به علم فلا تطعهما | ٨ | م العنكبوت | ٢٩ |
| (٢) | وإن جاهداك على أن تشرك بى ماليس لك به علم فلا تطعهما | ١٥ | ك لقمان | ٣١ |
| تُطِيعُوا | إن تطيعوا فريقا من الذين أوتوا الكتاب يردوكم | | | |
| (٥) | بعد إيمانكم كافرين ... ... ... ... ... ... | ١٠٠ | م آل عمران | ٣ |
| | إن تطيعوا الذين كفروا يردوكم على أعقابكم ... ... | ١٤٩ | م « | ٣ |
| | فاتقوا الله وأطيعون . ولا تطيعوا أمر المسرفين ... | ١٥١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فإن تطيعوا يؤتكم الله أجرا حسنا ... ... ... ... | ١٦ | م الفتح | ٤٨ |
| | وإن تطيعوا الله ورسوله لا يلتكم من أعمالكم شيئا | ١٤ | م الحجرات | ٤٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تُطِيعُوهُ | : وإن تطيعوه تهتدوا وما على الرسول إلا البلاغ المبين | ٥٤ | م النور | ٢٤ |
| نُطِيعُ | : لئن أخرجتم لنخرجن معكم ولا نطيع فيكم أحدا أبدا | ١١ | م الحشر | ٥٩ |
| سَنُطِيعُكُمْ | : ذلك بأنهم قالوا للذين كرهوا ما نزل الله سنطيعكم في بعض الأمر ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | م محمد | ٤٧ |
| يُطِعِ | : ومن يطع الله ورسوله يدخله جنات تجرى من | | | |
| (٦) | تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... ... | ١٣ | م النساء | ٤ |
| | ومن يطع الله والرسول فأولئك مع الذين أنعم الله عليهم | ٦٩ | م « | ٤ |
| | من يطع الرسول فقد أطاع الله ... ... ... ... ... | ٨٠ | م « | ٤ |
| | ومن يطع الله ورسوله ويخش الله ويتقه فأولئك هم | | | |
| | الفائزون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٢ | م النور | ٢٤ |
| | ومن يطع الله ورسوله فقد فاز فوزا عظيما ... ... ... | ٧١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ومن يطع الله ورسوله يدخله جنات تجرى من | | | |
| | تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | م الفتح | ٤٨ |
| يُطِيعُكُمْ | : لو يطيعكم في كثير من الأمر لعنتم ... ... ... | ٧ | م الحجرات | ٤٩ |
| يُطِيعُونَ | : ويطيعون الله ورسوله أولئك سيرحمهم الله ... | ٧١ | م التوبة | ٩ |
| أَطِعْنَ | : وأقمن الصلاة وآتين الزكاة وأطعن الله ورسوله ... | ٣٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| أَطِيعُوا | : قل أطيعوا الله والرسول ... ... ... ... ... | ٣٢ | م آل عمران | ٣ |
| (١٩) | وأطيعوا الله والرسول لعلكم ترحمون ... ... ... ... | ١٣٢ | م « | ٣ |
| | يأيها الذين آمنوا أطيعوا الله ... ... ... ... ... | ٥٩ | م النساء | ٤ |
| | وأطيعوا الرسول وأولى الأمر منكم ... ... ... ... | ٥٩ | م « | ٤ |
| | وأطيعوا الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩٢ | م المائدة | ٥ |
| | وأطيعوا الرسول واحذروا ... ... ... ... ... ... | ٩٢ | م « | ٥ |
| | فاتقوا الله وأصلحوا ذات بينكم وأطيعوا الله ورسوله | ١ | م الأنفال | ٨ |
| | أطيعوا الله ورسوله ولا تولوا عنه وأنتم تسمعون ... | ٢٠ | م « | ٨ |
| | وأطيعوا الله ورسوله ولا تنازعوا فتفشلوا... ... ... | ٤٦ | م « | ٨ |
| | وإن ربكم الرحمن فاتبعونى وأطيعوا أمرى ... ... | ٩٠ | ك طه | ٢٠ |
| | قل أطيعوا الله... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٤ | م النور | ٢٤ |
| | وأطيعوا الرسول فإن تولوا فإنما عليه ما حمل وعليكم ما حملتم | ٥٤ | م « | ٢٤ |
| | وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة وأطيعوا الرسول لعلكم ترحمون | ٥٦ | م « | ٢٤ |
| | يأيها الذين آمنوا أطيعوا الله ... ... ... ... ... | ٣٣ | م محمد | ٤٧ |
| | وأطيعوا الرسول ولا تبطلوا أعمالكم... ... ... ... | ٣٣ | م « | ٤٧ |
| | فأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة وأطيعوا الله ورسوله ... | ١٣ | م المجادلة | ٥٨ |
| | وأطيعوا الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٢ | م التغابن | ٦٤ |
| | وأطيعوا الرسول فإن توليتم فإنما على رسولنا البلاغ المبين | ١٢ | م « | ٦٤ |
| | فاتقوا الله ما استطعتم واسمعوا وأطيعوا ... ... ... | ١٦ | م « | ٦٤ |
| أَطِيعُونِ | : وجئتكم بآية من ربكم فاتقوا الله وأطيعون ... | ٥٠ | م آل عمران | ٣ |
| (١١) | إنى لكم رسول أمين . فاتقوا الله وأطيعون ... ... | ١٠٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| أَطِيعُونِ | : إن أجرى إلا على رب العالمين . فاتقوا الله وأطيعون | ١١٠ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | إنى لكم رسول أمين . فاتقوا الله وأطيعون ... ... | ١٢٦ | ك « | ٢٦ |
| | فاتقوا الله وأطيعون . واتقوا الذى أمدكم بما تعلمون | ١٣١ | ك « | ٢٦ |
| | إنى لكم رسول أمين . فاتقوا الله وأطيعون ... ... | ١٤٤ | ك « | ٢٦ |
| | فاتقوا الله وأطيعون . ولا تطيعوا أمر المسرفين... | ١٥٠ | ك « | ٢٦ |
| | إنى لكم رسول أمين . فاتقوا الله وأطيعون ... ... | ١٦٣ | ك « | ٢٦ |
| | إنى لكم رسول أمين . فاتقوا الله وأطيعون ... ... | ١٧٩ | ك « | ٢٦ |
| | ولأبين لكم بعض الذى تختلفون فيه فاتقوا الله وأطيعون | ٦٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | أن اعبدوا الله واتقوه وأطيعون ... ... ... ... | ٣ | ك نوح | ٧١ |
| يُطَاعُ | : وما أرسلنا من رسول إلا ليطاع بإذن الله ... ... | ٦٤ | م النساء | ٤ |
| (٢) | ما للظالمين من حميم ولا شفيع يطاع ... ... ... ... | ١٨ | ك غافر | ٤٠ |
| تَطَوَّعَ | : ومن تطوع خيرا فإن الله شاكر عليم ... ... ... | ١٥٨ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | فمن تطوع خيرا فهو خير له ... ... ... ... ... | ١٨٤ | م « | ٢ |
| اسْتَطَاعَ | : ولله على الناس حج البيت من استطاع إليه سبيلا | ٩٧ | م آل عمران | ٣ |
| اسْتَطَاعُوا | : ولا يزالون يقاتلونكم حتى يردوكم عن دينكم | | | |
| (٤) | إن استطاعوا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢١٧ | م البقرة | ٢ |
| | فما اسطاعوا أن يظهروه وما استطاعوا له نقبا ... ... | ٩٧ | م الكهف | ١٨ |
| | ولو نشاء لمسخناهم على مكانتهم فما استطاعوا مضيا | ٦٧ | ك يس | ٣٦ |
| | فما استطاعوا من قيام وما كانوا منتصرين ... ... | ٤٥ | ك الذاريات | ٥١ |
| اسْتَطَعْتَ | : فإن استطعت أن تبتغى نفقا فى الأرض | | | |
| (٣) | أو سلما فى السماء فتأتيهم بآية ... ... ... ... | ٣٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | إن أريد إلا الإصلاح ما استطعت ... ... ... ... | ٨٨ | ك هود | ١١ |
| | واستفزز من استطعت منهم بصوتك وأجلب عليهم بخيلك | ٦٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| اسْتَطَعْتُمْ | : وأعدوا لهم ما استطعتم من قوة ومن رباط الخيل | ٦٠ | م الأنفال | ٨ |
| (٥) | وادعوا من استطعتم من دون الله إن كنتم صادقين | ٣٨ | ك يونس | ١٠ |
| | وادعوا من استطعتم من دون الله إن كنتم صادقين | ١٣ | ك هود | ١١ |
| | إن استطعتم أن تنفذوا من أقطار السموات والأرض | | | |
| | فانفذوا لا تنفذون إلا بسلطان ... ... ... ... | ٣٣ | م الرحمن | ٥٥ |
| | فاتقوا الله ما استطعتم واسمعوا وأطيعوا ... ... ... | ١٦ | م التغابن | ٦٤ |
| اسْتَطَعْنَا | : وسيحلفون بالله لو استطعنا لخرجنا معكم... ... | ٤٢ | م التوبة | ٩ |
| اسْتَطَاعُوا | : فما اسطاعوا أن يظهروه وما استطاعوا له نقبا | ٩٧ | م الكهف | ١٨ |
| تَسْتَطِعْ | : سأنبئك بتأويل ما لم تستطع عليه صبرا ... ... | ٧٨ | ك « | ١٨ |
| تَسْتَطِعْ | : أو يصبح ماؤها غورا فلن تستطيع له طلبا ... ... | ٤١ | ك « | ١٨ |
| (٤) | قال إنك لن تستطيع معى صبرا ... ... ... ... ... | ٦٧ | ك « | ١٨ |
| | قال ألم أقل إنك لن تستطيع معى صبرا ... ... ... | ٧٢ | ك « | ١٨ |
| | قال ألم أقل لك إنك لن تستطيع معى صبرا ... ... | ٧٥ | ك « | ١٨ |
| تَسْتَطِيعُوا | : ولن تستطيعوا أن تعدلوا بين النساء ولو حرصتم | ١٢٩ | م النساء | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| تَسْتَطِيعُونَ | فقد كذبوكم بما تقولون فما تستطيعون صرفا | ك الفرقان | ١٩ ٢٥ |
| تَسْطِعْ | ذلك تأويل ما لم تسطع عليه صبرا ... ... ... | ك الكهف | ٨٢ ١٨ |
| يَسْتَطِعْ | ومن لم يستطع منكم طولا أن ينكح المحصنات | | |
| (٢) | المؤمنات فمن ما ملكت أيمانكم ... ... ... | م النساء | ٢٥ ٤ |
| | فمن لم يستطع فإطعام ستين مسكينا ... ... ... | م المجادلة | ٤ ٥٨ |
| يَسْتَطِيعُ | أو لا يستطيع أن يمل هو فليملل وليه بالعدل ... | م البقرة | ٢٨٢ ٢ |
| (٢) | هل يستطيع ربك أن ينزل علينا مائدة من السماء | م المائدة | ١١٢ ٥ |
| يَسْتَطِيعُونَ | لا يستطيعون ضربا في الأرض يحسبهم الجاهل | | |
| (١٥) | أغنياء من التعفف ... ... ... ... ... ... | م البقرة | ٢٧٣ ٢ |
| | لا يستطيعون حيلة ولا يهتدون سبيلا ... ... ... | م النساء | ٩٨ ٤ |
| | ولا يستطيعون لهم نصرا ولا أنفسهم ينصرون ... ... | ك الأعراف | ١٩٢ ٧ |
| | والذين تدعون من دونه لا يستطيعون نصركم ... ... | ك » | ١٩٧ ٧ |
| | ما كانوا يستطيعون السمع وما كانوا يبصرون ... ... | ك هود | ٢٠ ١١ |
| | ويعبدون من دون الله ما لا يملك لهم رزقا من السموات | | |
| | والأرض شيئا ولا يستطيعون ... ... ... ... | ك النحل | ٧٣ ١٦ |
| | انظر كيف ضربوا لك الأمثال فضلوا فلا يستطيعون سبيلا | ك الإسراء | ٤٨ ١٧ |
| | وكانوا لا يستطيعون سمعا ... ... ... ... ... | م الكهف | ١٠١ ١٨ |
| | بل تأتيهم بغتة فتبهتهم فلا يستطيعون ردها ... ... | ك الأنبياء | ٤٠ ٢١ |
| | لا يستطيعون نصر أنفسهم ولا هم منا يصحبون ... ... | ك » | ٤٣ ٢١ |
| | انظر كيف ضربوا لك الأمثال فضلوا فلا يستطيعون سبيلا | ك الفرقان | ٩ ٢٥ |
| | وما تنزلت به الشياطين . وما ينبغي لهم وما يستطيعون | ك الشعراء | ٢١١ ٢٦ |
| | فلا يستطيعون توصية ولا إلى أهلهم يرجعون ... ... | ك يس | ٥٠ ٣٦ |
| | لا يستطيعون نصرهم وهم لهم جند محضرون ... ... | ك » | ٧٥ ٣٦ |
| | يوم يكشف عن ساق ويدعون إلى السجود فلا يستطيعون | ك القلم | ٤٢ ٦٨ |
| طَوْعًا | وله أسلم من في السموات والأرض طوعا وكرها ... | م آل عمران | ٨٣ ٣ |
| (٤) | قل أنفقوا طوعا أو كرها لن يتقبل منكم ... ... ... | م التوبة | ٥٣ ٩ |
| | ولله يسجد من في السموات والأرض طوعا وكرها | م الرعد | ١٥ ١٣ |
| | فقال لها وللأرض ائتيا طوعا أو كرها ... ... ... | ك فصلت | ١١ ٤١ |
| طَاعَةٌ | ويقولون طاعة فإذا برزوا من عندك بيت طائفة | | |
| (٣) | منهم غير الذي تقول ... ... ... ... ... | م النساء | ٨١ ٤ |
| | قل لا تقسموا طاعة معروفة إن الله خبير بما تعملون | م النور | ٥٣ ٢٤ |
| | طاعة وقول معروف ... ... ... ... ... ... | م محمد | ٢١ ٤٧ |
| طَائِعِينَ | فقال لها وللأرض ائتيا طوعا أو كرها قالتا | | |
| | أتينا طائعين ... ... ... ... ... ... ... | ك فصلت | ١١ ٤١ |
| مُطَاعٍ | ذي قوة عند ذي العرش مكين . مطاع ثم أمين | ك التكوير | ٢١ ٨١ |
| المُطَّوِّعِينَ | الذين يلمزون المطوعين من المؤمنين في الصدقات | م التوبة | ٧٩ ٩ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| طَافَ | فطاف عليها طائف من ربك وهم نائمون ... ... | م القلم | ١٩ ٦٨ |
| يَطُوفُ | ويطوف عليهم غلمان لهم كأنهم لؤلؤ مكنون ... | ك الطور | ٢٤ ٥٢ |
| (٣) | يطوف عليهم ولدان مخلدون... ... ... ... ... | ك الواقعة | ١٧ ٥٦ |
| | ويطوف عليهم ولدان مخلدون ... ... ... ... ... | م الإنسان | ١٩ ٧٦ |
| يَطُوفُونَ | يطوفون بينها وبين حميم آن ... ... ... ... | م الرحمن | ٤٤ ٥٥ |
| يُطَافُ | يطاف عليهم بكأس من معين ... ... ... ... | ك الصافات | ٤٥ ٣٧ |
| (٣) | يطاف عليهم بصحاف من ذهب وأكواب ... ... | ك الزخرف | ٧١ ٤٣ |
| | ويطاف عليهم بآنية من فضة وأكواب كانت قواريرا | م الإنسان | ١٥ ٧٦ |
| يَطَّوَّفَ | فمن حج البيت أو اعتمر فلا جناح عليه أن يطوف بهما | م البقرة | ١٥٨ ٢ |
| وَلْيَطَّوَّفُوا | وليوفوا نذورهم وليطوفوا بالبيت العتيق ... | م الحج | ٢٩ ٢٢ |
| طَائِفٌ | إن الذين اتقوا إذا مسهم طائف من الشيطان تذكروا | ك الأعراف | ٢٠١ ٧ |
| (٢) | فطاف عليها طائف من ربك وهم نائمون ... ... ... | م القلم | ١٩ ٦٨ |
| لِلطَّائِفِينَ | وعهدنا إلى إبراهيم وإسمعيل أن طهرا بيتي | | |
| (٢) | للطائفين والعاكفين والركع السجود ... ... ... | م البقرة | ١٢٥ ٢ |
| | وطهر بيتي للطائفين والقائمين والركع السجود ... ... | م الحج | ٢٦ ٢٢ |
| طَائِفَةٌ | ودت طائفة من أهل الكتاب لو يضلونكم ... ... | م آل عمران | ٦٩ ٣ |
| (٢٠) | وقالت طائفة من أهل الكتاب آمنوا بالذي أنزل على | | |
| | الذين آمنوا وجه النهار واكفروا آخره ... ... | م » | ٧٢ ٣ |
| | ثم أنزل عليكم من بعد الغم أمنة نعاسا يغشى طائفة منكم | م » | ١٥٤ ٣ |
| | وطائفة قد أهمتهم أنفسهم يظنون بالله غير الحق | م » | ١٥٤ ٣ |
| | فإذا برزوا من عندك بيت طائفة منهم غير الذي تقول | م النساء | ٨١ ٤ |
| | فلتقم طائفة منهم معك وليأخذوا أسلحتهم ... ... | م » | ١٠٢ ٤ |
| | ولتأت طائفة أخرى لم يصلوا فليصلوا معك ... ... | م » | ١٠٢ ٤ |
| | ولولا فضل الله عليك ورحمته لهمت طائفة منهم | | |
| | أن يضلوك ... ... ... ... ... ... ... | م » | ١١٣ ٤ |
| | وإن كان طائفة منكم آمنوا بالذي أرسلت به ... ... | ك الأعراف | ٨٧ ٧ |
| | وطائفة لم يؤمنوا فاصبروا حتى يحكم الله بيننا ... ... | ك » | ٨٧ ٧ |
| | إن نعف عن طائفة منكم ... ... ... ... ... | م التوبة | ٦٦ ٩ |
| | نعذب طائفة بأنهم كانوا مجرمين... ... ... ... | م » | ٦٦ ٩ |
| | فإن رجعك الله إلى طائفة منهم فاستأذنوك للخروج | | |
| | فقل لن تخرجوا معي أبدا ... ... ... ... ... | م » | ٨٣ ٩ |
| | فلولا نفر من كل فرقة منهم طائفة ليتفقهوا في الدين | م » | ١٢٢ ٩ |
| | وليشهد عذابهما طائفة من المؤمنين... ... ... ... | م النور | ٢ ٢٤ |
| | وجعل أهلها شيعا يستضعف طائفة منهم ... ... ... | ك القصص | ٤ ٢٨ |
| | وإذ قالت طائفة منهم يا أهل يثرب لا مقام لكم | م الأحزاب | ١٣ ٣٣ |
| | فآمنت طائفة من بني إسرائيل ... ... ... ... | م الصف | ١٤ ٦١ |
| | وكفرت طائفة فأيدنا الذين آمنوا على عدوهم... ... | م » | ١٤ ٦١ |
| | إن ربك يعلم أنك تقوم أدنى من ثلثي الليل ونصفه | | |
| | وثلثه وطائفة من الذين معك ... ... ... ... | م المزمل | ٢٠ ٧٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| طَائِفَتَانِ | : إذ همت طائفتان منكم أن تفشلا والله وليهما | ١٢٢ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | وإن طائفتان من المؤمنين اقتتلوا فأصلحوا بينهما | ٩ | م الحجرات | ٤٩ |
| طَائِفَتَيْنِ | : أن تقولوا إنما أنزل الكتاب على طائفتين | | | |
| (٢) | من قبلنا ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٦ | ك الأنعام | ٦ |
| | وإذ يعدكم الله إحدى الطائفتين أنها لكم ... ... ... | ٧ | م الأنفال | ٨ |
| طَوَّافُونَ | : طوافون عليكم بعضكم على بعض... ... ... ... | ٥٨ | م النور | ٢٤ |
| الطُّوفَانَ | : فأرسلنا عليهم الطوفان والجراد والقمل والضفادع | ١٣٣ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | فلبث فيهم ألف سنة إلا خمسين عاما فأخذهم الطوفان | ١٤ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| سَيُطَوَّقُونَ | : بل هو شر لهم سيطوقون ما بخلوا به يوم القيامة | ١٨٠ | م آل عمران | ٣ |
| يُطِيقُونَهُ | : وعلى الذين يطيقونه فدية طعام مسكين ... ... | ١٨٤ | م البقرة | ٢ |
| طَاقَةَ | : قالوا لا طاقة لنا اليوم بجالوت وجنوده... ... ... | ٢٤٩ | م » | ٢ |
| (٢) | ربنا ولا تحملنا ما لا طاقة لنا به ... ... ... ... ... | ٢٨٦ | م » | ٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| طَالَ | : أفطال عليكم العهد أم أردتم أن يحل عليكم غضب من ربكم | ٨٦ | ك طه | ٢٠ |
| (٣) | بل متعنا هؤلاء وآباءهم حتى طال عليهم العمر ... ... | ٤٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | فطال عليهم الأمد فقست قلوبهم ... ... ... ... | ١٦ | م الحديد | ٥٧ |
| فَتَطَاوَلَ | : ولكنا أنشأنا قرونا فتطاول عليهم العمر ... ... | ٤٥ | ك القصص | ٢٨ |
| الطَّوْلِ | : آستأذنك أولوا الطول منهم... ... ... ... ... | ٨٦ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | غافر الذنب وقابل التوب شديد العقاب ذى الطول | ٣ | ك غافر | ٤٠ |
| طَوْلًا | : ومن لم يستطع منكم طولا أن ينكح المحصنات | | | |
| | المؤمنات فمن ما ملكت أيمانكم ... ... ... ... | ٢٥ | م النساء | ٤ |
| طُولًا | : إنك لن تخرق الأرض ولن تبلغ الجبال طولا | ٣٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| طَوِيلًا | : إن لك فى النهار سبحا طويلا ... ... ... ... | ٧ | ك المزمل | ٧٣ |
| (٢) | ومن الليل فاسجد له وسبحه ليلا طويلا ... ... ... | ٢٦ | م الإنسان | ٧٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| نَطْوِى | : يوم نطوى السماء كطى السجل للكتب ... ... | ١٠٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| كَطَىِّ | : يوم نطوى السماء كطى السجل للكتب... ... ... | ١٠٤ | ك » | ٢١ |
| طُوًى | : إنى أنا ربك فاخلع نعليك إنك بالواد المقدس طوى | ١٢ | ك طه | ٢٠ |
| (٢) | إذ ناداه ربه بالواد المقدس طوى ... ... ... ... | ١٦ | ك النازعات | ٧٩ |
| مَطْوِيَّاتٌ | : والسموات مطويات بيمينه ... ... ... ... | ٦٧ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| طَابَ | : فانكحوا ما طاب لكم من النساء مثنى وثلاث ورباع | ٣ | م النساء | ٤ |
| طِبْتُمْ | : وقال لهم خزنتها سلام عليكم طبتم فادخلوها خالدين | ٧٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| طِبْنَ | : فإن طبن لكم عن شىء منه نفسا فكلوه هنيئا مريئا | ٤ | م النساء | ٤ |
| طُوبَى | : الذين آمنوا وعملوا الصالحات طوبى لهم وحسن مآب | ٢٩ | م الرعد | ١٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الطَّيِّبُ | : ما كان الله ليذر المؤمنين على ما أنتم عليه حتى يميز | | | |
| (٧) | الخبيث من الطيب ... ... ... ... ... ... ... | ١٧٩ | م آل عمران | ٣ |
| | وآتوا اليتامى أموالهم ولا تتبدلوا الخبيث بالطيب | ٢ | م النساء | ٤ |
| | قل لا يستوى الخبيث والطيب ولو أعجبك كثرة الخبيث | ١٠٠ | م المائدة | ٥ |
| | والبلد الطيب يخرج نباته بإذن ربه ... ... ... ... | ٥٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | ليميز الله الخبيث من الطيب ويجعل الخبيث بعضه على بعض | ٣٧ | م الأنفال | ٨ |
| | وهدوا إلى الطيب من القول وهدوا إلى صراط الحميد | ٢٤ | م الحج | ٢٢ |
| | إليه يصعد الكلم الطيب والعمل الصالح يرفعه ... ... | ١٠ | ك فاطر | ٣٥ |
| طَيِّبًا | : يأيها الناس كلوا مما فى الأرض حلالا طيبا ... ... | ١٦٨ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | فتيمموا صعيدا طيبا فامسحوا بوجوهكم وأيديكم... | ٤٣ | م النساء | ٤ |
| | فتيمموا صعيدا طيبا فامسحوا بوجوهكم وأيديكم منه | ٦ | م المائدة | ٥ |
| | وكلوا مما رزقكم الله حلالا طيبا ... ... ... ... | ٨٨ | م » | ٥ |
| | فكلوا مما غنمتم حلالا طيبا واتقوا الله ... ... ... | ٦٩ | م الأنفال | ٨ |
| | فكلوا مما رزقكم الله حلالا طيبا واشكروا نعمة الله | ١١٤ | ك النحل | ١٦ |
| الطَّيِّبُونَ | : والطيبات للطيبين والطيبون للطيبات... ... ... | ٢٦ | م النور | ٢٤ |
| طَيِّبِينَ | : الذين تتوفاهم الملائكة طيبين يقولون سلام عليكم | ٣٢ | ك النحل | ١٦ |
| (٢) | والطيبات للطيبين والطيبون للطيبات ... ... ... ... | ٢٦ | م النور | ٢٤ |
| طَيِّبَةً | : قال رب هب لى من لدنك ذرية طيبة إنك سميع الدعاء | ٣٨ | م آل عمران | ٣ |
| (٩) | ومساكن طيبة فى جنات عدن ورضوان من الله أكبر | ٧٢ | م التوبة | ٩ |
| | حتى إذا كنتم فى الفلك وجرين بهم بريح طيبة ... | ٢٢ | ك يونس | ١٠ |
| | ألم تر كيف ضرب الله مثلا كلمة طيبة... ... ... ... | ٢٤ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | كشجرة طيبة أصلها ثابت وفرعها فى السماء ... ... | ٢٤ | ك » | ١٤ |
| | من عمل صالحا من ذكر أو أنثى وهو مؤمن فلنحيينه | | | |
| | حياة طيبة ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩٧ | ك النحل | ١٦ |
| | فسلموا على أنفسكم تحية من عند الله مباركة طيبة ... | ٦١ | م النور | ٢٤ |
| | كلوا من رزق ربكم واشكروا له بلدة طيبة ورب غفور | ١٥ | ك سبإ | ٣٤ |
| | ومساكن طيبة فى جنات عدن ذلك الفوز العظيم ... | ١٢ | م الصف | ٦١ |
| طَيِّبَاتُ | : وأنزلنا عليكم المن والسلوى كلوا من طيبات ما رزقناكم | ٥٧ | م البقرة | ٢ |
| (٢٠) | يأيها الذين آمنوا كلوا من طيبات ما رزقناكم واشكروا لله | ١٧٢ | م » | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا أنفقوا من طيبات ما كسبتم ... ... | ٢٦٧ | م » | ٢ |
| | فبظلم من الذين هادوا حرمنا عليهم طيبات أحلت لهم | ١٦٠ | م النساء | ٤ |
| | يسئلونك ماذا أحل لهم قل أحل لكم الطيبات... ... | ٤ | م المائدة | ٥ |
| | اليوم أحل لكم الطيبات... ... ... ... ... ... | ٥ | م » | ٥ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تحرموا طيبات ما أحل الله لكم | ٨٧ | م » | ٥ |
| | قل من حرم زينة الله التى أخرج لعباده والطيبات من الرزق | ٣٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | ويحل لهم الطيبات ويحرم عليهم الخبائث... ... ... | ١٥٧ | ك » | ٧ |
| | وأنزلنا عليهم المن والسلوى كلوا من طيبات ما رزقناكم | ١٦٠ | ك » | ٧ |
| | فآواكم وأيدكم بنصره ورزقكم من الطيبات لعلكم تشكرون | ٢٦ | م الأنفال | ٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| طَيِّبَاتُ | ولقد بوأنا بنى إسرائيل مبوأ صدق ورزقناهم من الطيبات ... ... ... ... ... ... | ٩٣ | ك يونس | ١٠ |
| | وجعل لكم من أزواجكم بنين وحفدة ورزقكم من الطيبات ... ... ... ... ... ... | ٧٢ | ك النحل | ١٦ |
| | وحملناهم فى البر والبحر ورزقناهم من الطيبات .. ... | ٧٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| | كلوا من طيبات ما رزقناكم ولا تطغوا فيه ... ... | ٨١ | ك طه | ٢٠ |
| | يأيها الرسل كلوا من الطيبات واعملوا صالحا ... ... | ٥١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | والخبيثون للخبيثات والطيبات للطيبين ... ... ... ... | ٢٦ | م النور | ٢٤ |
| | والطيبون للطيبات أولئك مبرءون مما يقولون ... ... | ٢٦ | م « | ٢٤ |
| | وصوركم فأحسن صوركم ورزقكم من الطيبات ... ... | ٦٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | ورزقناهم من الطيبات وفضلناهم على العالمين ... ... | ١٦ | ك الجاثية | ٤٥ |
| طَيِّبَاتِكُمْ | أذهبتم طيباتكم فى حياتكم الدنيا واستمتعتم بها ... | ٢٠ | ك الأحقاف | ٤٦ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَطِيرُ | وما من دابة فى الأرض ولا طائر يطير بجناحيه إلا أمم أمثالكم ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك الأنعام | ٦ |
| تَطَيَّرْنَا | قالوا إنا تطيرنا بكم لئن لم تنتهوا لنرجمنكم ... ... | ١٨ | ك يس | ٣٦ |
| اطَّيَّرْنَا | قالوا اطيرنا بك وبمن معك ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك النمل | ٢٧ |
| يَطَّيَّرُوا | وإن تصبهم سيئة يطيروا بموسى ومن معه ... ... | ١٣١ | ك الأعراف | ٧ |
| الطَّيْرُ | قال فخذ أربعة من الطير فصرهن إليك ... ... ... | ٢٦٠ | م البقرة | ٢ |
| (١٦) | أنى أخلق لكم من الطين كهيئة الطير ... ... ... ... | ٤٩ | م آل عمران | ٣ |
| | وإذ تخلق من الطين كهيئة الطير بإذنى ... ... ... | ١١٠ | م المائدة | ٥ |
| | إنى أرانى أحمل فوق رأسى خبزا تأكل الطير منه ... | ٣٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | وأما الآخر فيصلب فتأكل الطير من رأسه ... ... ... | ٤١ | ك « | ١٢ |
| | ألم يروا إلى الطير مسخرات فى جو السماء ... ... ... | ٧٩ | ك النحل | ١٦ |
| | وسخرنا مع داود الجبال يسبحن والطير ... ... ... | ٧٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ومن يشرك بالله فكأنما خر من السماء فتخطفه الطير | ٣١ | م الحج | ٢٢ |
| | ألم تر أن الله يسبح له من فى السموات والأرض والطير صافات كل قد علم صلاته وتسبيحه... ... | ٤١ | م النور | ٢٤ |
| | وورث سليمان داود وقال يأيها الناس علمنا منطق الطير ... ... ... ... ... ... ... | ١٦ | ك النمل | ٢٧ |
| | وحشر لسليمان جنوده من الجن والإنس والطير ... | ١٧ | ك « | ٢٧ |
| الطَّيْرُ | وتفقد الطير فقال مالى لا أرى الهدهد ... ... ... | ٢٠ | ك النمل | ٢٧ |
| | ولقد آتينا داود منا فضلا يا جبال أوبى معه والطير | ١٠ | ك سبأ | ٣٤ |
| | والطير محشورة كل له أواب ... ... ... ... ... | ١٩ | ك ص | ٣٨ |
| | ولحم طير مما يشتهون ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | أو لم يروا إلى الطير فوقهم صافات ويقبضن ... ... | ١٩ | ك الملك | ٦٧ |
| طَيْرًا | فأنفخ فيه فيكون طيرا بإذن الله... ... ... ... ... | ٤٩ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | فتنفخ فيها فتكون طيرا بإذنى... ... ... ... ... | ١١٠ | م المائدة | ٥ |
| | وأرسل عليهم طيرا أبابيل ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك الفيل | ١٠٥ |
| طَائِرٍ | وما من دابة فى الأرض ولا طائر يطير بجناحيه إلا أمم أمثالكم ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك الأنعام | ٦ |
| طَائِرُكُمْ | قالوا اطيرنا بك وبمن معك قال طائركم (٢) عند الله ... ... ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك النمل | ٢٧ |
| | قالوا طائركم معكم أئن ذكرتم بل أنتم قوم مسرفون ... | ١٩ | ك يس | ٣٦ |
| طَائِرَهُ | وكل إنسان ألزمناه طائره فى عنقه ... ... ... ... | ١٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| طَائِرُهُمْ | ألا إنما طائرهم عند الله ولكن أكثرهم لا يعلمون ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٣١ | ك الأعراف | ٧ |
| مُسْتَطِيرًا | يوفون بالنذر ويخافون يوما كان شره مستطيرا | ٧ | م الإنسان | ٧٦ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الطِّينِ | أنى أخلق لكم من الطين كهيئة الطير ... ... ... | ٤٩ | م آل عمران | ٣ |
| (١١) | وإذ تخلق من الطين كهيئة الطير بإذنى ... ... ... | ١١٠ | م المائدة | ٥ |
| | هو الذى خلقكم من طين ثم قضى أجلا ... ... ... | ٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | قال أنا خير منه خلقتنى من نار وخلقته من طين... ... | ١٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولقد خلقنا الإنسان من سلالة من طين ... ... ... | ١٢ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فأوقد لى يا هامان على الطين فاجعل لى صرحا ... ... | ٣٨ | ك القصص | ٢٨ |
| | الذى أحسن كل شىء خلقه وبدأ خلق الإنسان من طين ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك السجدة | ٣٢ |
| | إنا خلقناهم من طين لازب ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك الصافات | ٣٧ |
| | إذ قال ربك للملائكة إنى خالق بشرا من طين ... ... | ٧١ | ك ص | ٣٨ |
| | قال أنا خير منه خلقتنى من نار وخلقته من طين... ... | ٧٦ | ك « | ٣٨ |
| | لنرسل عليهم حجارة من طين ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك الذاريات | ٥١ |
| طِينًا | فسجدوا إلا إبليس قال أأسجد لمن خلقت طينا ... | ٦١ | ك الإسراء | ١٧ |

# باب الظاء

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| ظَعْنِكُمْ | : تستخفونها يوم ظعنكم ويوم إقامتكم ... ... ... | ك النحـل | ١٦ ٨٠ |
| أَظْفَرَكُمْ | : وهو الذى كف أيديهم عنكم وأيديكم عنهم ببطن مكة من بعد أن أظفركم عليهم ... ... ... ... | م الفتـح | ٤٨ ٢٤ |
| ظُفُرٍ | : وعلى الذين هادوا حرمنا كل ذى ظفر ... ... ... | ك الأنعـام | ٦ ١٤٦ |
| ظَلَّ | : وإذا بشر أحدهم بالأنثى ظل وجهه مسودا ... ... | ك النحـل | ١٦ ٥٨ |
| (٢) | وإذا بشر أحدهم بما ضرب للرحمن مثلا ظل وجهه مسودا وهو كظيم ... ... ... ... ... ... | ك الزخرف | ٤٣ ١٧ |
| ظَلَّتْ | : فظلت أعناقهم لها خاضعين ... ... ... ... | ك الشعراء | ٢٦ ٤ |
| ظَلْتَ | : وانظر إلى إلهك الذى ظلت عليه عاكفا ... ... | ك طـه | ٢٠ ٩٧ |
| فَظَلْتُمْ | : لو نشاء لجعلناه حطاما فظلتم تفكهون ... ... ... | ك الواقعـة | ٥٦ ٦٥ |
| ظَلُّوا | : ولو فتحنا عليهم بابا من السماء فظلوا فيه يعرجون | ك الحجـر | ١٥ ١٤ |
| (٢) | ولئن أرسلنا ريحا فرأوه مصفرا لظلوا من بعده يكفرون | ك الروم | ٣٠ ٥١ |
| فَتَظَلُّ | : قالوا نعبد أصناما فنظل لها عاكفين ... ... ... | ك الشعراء | ٢٦ ٧١ |
| فَيَظْلَلْنَ | : إن يشأ يسكن الريح فيظللن رواكد على ظهره | ك الشورى | ٤٢ ٣٣ |
| وَظَلَّلْنَا | : وظللنا عليكم الغمام وأنزلنا عليكم المن والسلوى ... | م البقـرة | ٢ ٥٧ |
| (٢) | وظللنا عليهم الغمام وأنزلنا عليهم المن والسلوى ... ... | ك الأعراف | ٧ ١٦٠ |
| الظِّلِّ | : ألم تر إلى ربك كيف مد الظل ولو شاء لجعله ساكنا | ك الفرقان | ٢٥ ٤٥ |
| (٦) | فسق لها ثم تولى إلى الظل ... ... ... ... ... | ك القصص | ٢٨ ٢٤ |
| | وما يستوى الأعمى والبصير . ولا الظلمات ولا النور . ولا الظل ولا الحرور ... ... ... ... ... | ك فاطـر | ٣٥ ٢١ |
| | فى سدر مخضود . وطلح منضود . وظل ممدود... ... | ك الواقعـة | ٥٦ ٣٠ |
| | فى سموم وحميم . وظل من يحموم ... ... ... ... | ك « | ٥٦ ٤٣ |
| | انطلقوا إلى ظل ذى ثلاث شعب ... ... ... ... | ك المرسلات | ٧٧ ٣٠ |
| ظِلًّا | : لهم فيها أزواج مطهرة وندخلهم ظلا ظليلا ... ... | م النسـاء | ٤ ٥٧ |
| ظِلُّهَا | : تجرى من تحتها الأنهار أكلها دائم وظلها ... ... | م الرعـد | ١٣ ٣٥ |
| ظِلَالٍ | : هم وأزواجهم فى ظلال على الأرائك متكئون ... | ك يس | ٣٦ ٥٦ |
| (٢) | إن المتقين فى ظلال وعيون ... ... ... ... ... | ك المرسلات | ٧٧ ٤١ |
| ظِلَالًا | : والله جعل لكم مما خلق ظلالا ... ... ... ... | ك النحـل | ١٦ ٨١ |
| ظِلَالُهُ | : يتفيؤا ظلاله عن اليمين والشمائل سجدا لله ... ... | ك « | ١٦ ٤٨ |
| ظِلَالُهَا | : ودانية عليهم ظلالها وذللت قطوفها تذليلا ... | م الإنسـان | ٧٦ ١٤ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| ظِلَالُهُمْ | : ولله يسجد من فى السموات والأرض طوعا وكرها وظلالهم بالغدو والآصال ... ... ... ... ... | م الرعـد | ١٣ ١٥ |
| ظُلَّةٌ | : وإذ نتقنا الجبل فوقهم كأنه ظلة ... ... ... ... | ك الأعراف | ٧ ١٧١ |
| (٢) | فكذبوه فأخذهم عذاب يوم الظلة ... ... ... ... | ك الشعراء | ٢٦ ١٨٩ |
| ظُلَلٍ | : هل ينظرون إلا أن يأتيهم الله فى ظلل من الغمام | م البقـرة | ٢ ٢١٠ |
| (٤) | وإذا غشيهم موج كالظلل دعوا الله مخلصين له الدين | ك لقمان | ٣١ ٣٢ |
| | لهم من فوقهم ظلل من النار ... ... ... ... ... | ك الزمر | ٣٩ ١٦ |
| | ومن تحتهم ظلل ذلك يخوف الله به عباده... ... ... | ك « | ٣٩ ١٦ |
| ظَلِيلٍ | : لا ظليل ولا يغنى من اللهب ... ... ... ... ... | ك المرسلات | ٧٧ ٣١ |
| ظَلِيلًا | : لهم فيها أزواج مطهرة وندخلهم ظلا ظليلا ... ... | م النسـاء | ٤ ٥٧ |
| ظَلَمَ | : ومن يفعل ذلك فقد ظلم نفسه ... ... ... ... | م البقـرة | ٢ ٢٣١ |
| (٤) | قال أما من ظلم فسوف نعذبه ... ... ... ... ... | م الكهف | ١٨ ٨٧ |
| | إلا من ظلم ثم بدل حسنا بعد سوء فإنى غفور رحيم | ك النمـل | ٢٧ ١١ |
| | ومن يتعد حدود الله فقد ظلم نفسه ... ... ... ... | م الطـلاق | ٦٥ ١ |
| ظَلَمَتْ | : ولو أن لكل نفس ظلمت ما فى الأرض لافتدت به | ك يـونس | ١٠ ٥٤ |
| ظَلَمْتُ | : قالت رب إنى ظلمت نفسى وأسلمت مع سليمان ... | ك النمـل | ٢٧ ٤٤ |
| (٢) | قال رب إنى ظلمت نفسى فاغفر لى فغفر له ... ... | ك القصص | ٢٨ ١٦ |
| ظَلَمْتُمْ | : يا قوم إنكم ظلمتم أنفسكم باتخاذكم العجل ... ... | م البقـرة | ٢ ٥٤ |
| (٢) | ولن ينفعكم اليوم إذ ظلمتم أنكم فى العذاب مشتركون | ك الزخرف | ٤٣ ٣٩ |
| ظَلَمَكَ | قال لقد ظلمك بسؤال نعجتك إلى نعاجه ... ... | ك ص | ٣٨ ٢٤ |
| ظَلَمْنَا | : قالا ربنا ظلمنا أنفسنا ... ... ... ... ... | ك الأعراف | ٧ ٢٣ |
| ظَلَمْنَاهُمْ | : وما ظلمناهم ولكن ظلموا أنفسهم ... ... ... | ك هـود | ١١ ١٠١ |
| (٣) | وما ظلمناهم ولكن كانوا أنفسهم يظلمون... ... ... | ك النحـل | ١٦ ١١٨ |
| | وما ظلمناهم ولكن كانوا هم الظالمين ... ... ... | ك الزخرف | ٤٣ ٧٦ |
| ظَلَمَهُمْ | : وما ظلمهم الله ولكن أنفسهم يظلمون ... ... | م آل عمران | ٣ ١١٧ |
| (٢) | وما ظلمهم الله ولكن كانوا أنفسهم يظلمون ... ... | ك النحـل | ١٦ ٣٣ |
| ظَلَمُوا | : فبدل الذين ظلموا قولا غير الذى قيل لهم ... ... | م البقـرة | ٢ ٥٩ |
| (٤٣) | فأنزلنا على الذين ظلموا رجزا من السماء ... ... ... | م « | ٢ ٥٩ |
| | إلا الذين ظلموا منهم فلا تخشوهم واخشونى ... ... | م « | ٢ ١٥٠ |
| | ولو يرى الذين ظلموا إذ يرون العذاب أن القوة لله جميعا | م « | ٢ ١٦٥ |
| | كمثل ريح فيها صر أصابت حرث قوم ظلموا أنفسهم | م آل عمران | ٣ ١١٧ |
| | والذين إذا فعلوا فاحشة أو ظلموا أنفسهم ذكروا الله | م « | ٣ ١٣٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ظَلَمُوا | : ولو أنهم إذ ظلموا أنفسهم جاءوك فاستغفروا الله | ٦٤ | م النساء | ٤ |
| | إن الذين كفروا وظلموا لم يكن الله ليغفر لهم ... ... | ١٦٨م | « | ٤ |
| | فقطع دابر القوم الذين ظلموا والحمد لله رب العالمين | ٤٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | ثم بعثنا من بعدهم موسى بآياتنا إلى فرعون وملائه فظلموا بها ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | فبدل الذين ظلموا منهم قولا غير الذى قيل لهم... ... | ١٦٢ | ك « | ٧ |
| | وأخذنا الذين ظلموا بعذاب بئيس بما كانوا يفسقون | ١٦٥م | « | ٧ |
| | واتقوا فتنة لا تصيبن الذين ظلموا منكم خاصة ... ... | ٢٥ | م الأنفال | ٨ |
| | ولقد أهلكنا القرون من قبلكم لما ظلموا ... ... ... | ١٣ | ك يونس | ١٠ |
| | ثم قيل للذين ظلموا ذوقوا عذاب الخلد ... ... ... | ٥٢ | ك « | ١٠ |
| | واصنع الفلك بأعيننا ووحينا ولا تخاطبنى فى الذين ظلموا | ٢٧ | ك هود | ١١ |
| | وأخذ الذين ظلموا الصيحة فأصبحوا فى ديارهم جاثمين | ٦٧ | ك « | ١١ |
| | وأخذت الذين ظلموا الصيحة فأصبحوا فى ديارهم جاثمين | ٩٤ | ك « | ١١ |
| | وما ظلمناهم ولكن ظلموا أنفسهم ... ... ... ... | ١٠١ | ك « | ١١ |
| | ولا تركنوا إلى الذين ظلموا فتمسكم النار ... ... ... | ١١٣ | ك « | ١١ |
| | واتبع الذين ظلموا ما أترفوا فيه وكانوا مجرمين ... | ١١٦ | ك « | ١١ |
| | فيقول الذين ظلموا ربنا أخرنا إلى أجل قريب ... | ٤٤ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وسكنتم فى مساكن الذين ظلموا أنفسهم ... ... ... | ٤٥ | ك « | ١٤ |
| | وإذا رأى الذين ظلموا العذاب فلا يخفف عنهم ... | ٨٥ | ك النحل | ١٦ |
| | وآتينا ثمود الناقة مبصرة فظلموا بها ... ... ... ... | ٥٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وتلك القرى أهلكناهم لما ظلموا وجعلنا لمهلكهم موعدا | ٥٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | وأسروا النجوى الذين ظلموا هل هذا إلا بشر مثلكم | ٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ولا تخاطبنى فى الذين ظلموا إنهم مغرقون ... ... ... | ٢٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وسيعلم الذين ظلموا أى منقلب ينقلبون ... ... ... | ٢٢٧م | الشعراء | ٢٦ |
| | فتلك بيوتهم خاوية بما ظلموا ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك النمل | ٢٧ |
| | ووقع القول عليهم بما ظلموا فهم لا ينطقون ... ... | ٨٥ | ك « | ٢٧ |
| | ولا تجادلوا أهل الكتاب إلا بالتى هى أحسن إلا الذين ظلموا منهم ... ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | بل اتبع الذين ظلموا أهواءهم بغير علم... ... ... ... | ٢٩ | ك الروم | ٣٠ |
| | فيومئذ لا ينفع الذين ظلموا معذرتهم ولا هم يستعتبون | ٥٧ | ك « | ٣٠ |
| | فقالوا ربنا باعد بين أسفارنا وظلموا أنفسهم ... ... | ١٩ | ك سبأ | ٣٤ |
| | ونقول للذين ظلموا ذوقوا عذاب النار التى كنتم بها تكذبون | ٤٢ | ك « | ٣٤ |
| | احشروا الذين ظلموا وأزواجهم وما كانوا يعبدون | ٢٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| | ولو أن للذين ظلموا ما فى الأرض جميعا ومثله معه لافتدوا به | ٤٧ | ك الزمر | ٣٩ |
| | والذين ظلموا من هؤلاء سيصيبهم سيئات ما كسبوا | ٥١ | ك « | ٣٩ |
| | فويل للذين ظلموا من عذاب يوم أليم ... ... ... | ٦٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | لينذر الذين ظلموا وبشرى للمحسنين ... ... ... ... | ١٢ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | فإن للذين ظلموا ذنوبا مثل ذنوب أصحابهم فلا يستعجلون | ٥٩ | ك الذاريات | ٥١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ظَلَمُوا | : وإن للذين ظلموا عذابا دون ذلك .. ... ... | ٤٧ | ك الطور | ٥٢ |
| ظَلَمُونَا | : وما ظلمونا ولكن كانوا أنفسهم يظلمون ... ... | ٥٧ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | وما ظلمونا ولكن كانوا أنفسهم يظلمون ... ... ... | ١٦٠ | ك الأعراف | ٧ |
| تَظْلِمْ | : كلتا الجنتين آتت أكلها ولم تظلم منه شيئا ... ... | ٣٣ | ك الكهف | ٨ |
| تَظْلِمُوا | : ذلك الدين القيم فلا تظلموا فيهن أنفسكم ... ... | ٣٦ | م التوبة | ٩ |
| تَظْلِمُونَ | : وإن تبتم فلكم رءوس أموالكم لا تظلمون ولا تظلمون | ٢٧٩م | البقرة | ٢ |
| يَظْلِمُ | : إن الله لا يظلم مثقال ذرة ... ... ... ... ... | ٤٠ | م النساء | ٤ |
| (٥) | ومن يعمل سوءا أو يظلم نفسه ثم يستغفر الله يجد الله غفورا رحيما ... ... ... ... ... ... ... | ١١٠م | « | ٤ |
| | إن الله لا يظلم الناس شيئا ولكن الناس أنفسهم يظلمون | ٤٤ | ك يونس | ١٠ |
| | ووجدوا ما عملوا حاضرا ولا يظلم ربك أحدا ... ... | ٤٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | ومن يظلم منكم نذقه عذابا كبيرا ... ... ... ... | ١٩ | ك الفرقان | ٢٥ |
| لِيَظْلِمَهُمْ | : فما كان الله ليظلمهم ولكن كانوا أنفسهم يظلمون | ٧٠ | م التوبة | ٩ |
| (٣) | وما كان الله ليظلمهم ولكن كانوا أنفسهم يظلمون ... | ٤٠ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | فما كان الله ليظلمهم ولكن كانوا أنفسهم يظلمون ... | ٩ | ك الروم | ٣٠ |
| يَظْلِمُونَ | : وما ظلمونا ولكن كانوا أنفسهم يظلمون ... ... | ٥٧ | م البقرة | ٢ |
| (١٣) | وما ظلمهم الله ولكن أنفسهم يظلمون ... ... ... | ١١٧م | آل عمران | ٣ |
| | فأولئك الذين خسروا أنفسهم بما كانوا بآياتنا يظلمون | ٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | وما ظلمونا ولكن كانوا أنفسهم يظلمون ... ... ... | ١٦٠ك | « | ٧ |
| | فأرسلنا عليهم رجزا من السماء بما كانوا يظلمون... ... | ١٦٢ك | « | ٧ |
| | ساء مثلا القوم الذين كذبوا بآياتنا وأنفسهم كانوا يظلمون | ١٧٧ك | « | ٧ |
| | فما كان الله ليظلمهم ولكن كانوا أنفسهم يظلمون | ٧٠ | م التوبة | ٩ |
| | إن الله لا يظلم الناس شيئا ولكن الناس أنفسهم يظلمون | ٤٤ | ك يونس | ١٠ |
| | وما ظلمهم الله ولكن كانوا أنفسهم يظلمون ... ... | ٣٣ | ك النحل | ١٦ |
| | وما ظلمناهم ولكن كانوا أنفسهم يظلمون ... ... ... | ١١٨ك | « | ١٦ |
| | وما كان الله ليظلمهم ولكن كانوا أنفسهم يظلمون | ٤٠ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | فما كان الله ليظلمهم ولكن كانوا أنفسهم يظلمون | ٩ | ك الروم | ٣٠ |
| | إنما السبيل على الذين يظلمون الناس ... ... ... ... | ٤٢ | ك الشورى | ٤٢ |
| ظُلِمَ | : لا يحب الله الجهر بالسوء من القول إلا من ظلم ... | ١٤٨م | النساء | ٤ |
| ظُلِمُوا | : والذين هاجروا فى الله من بعد ما ظلموا لنبوئنهم | | | |
| (٣) | فى الدنيا حسنة ... ... ... ... ... ... ... | ٤١ | ك النحل | ١٦ |
| | أذن للذين يقاتلون بأنهم ظلموا ... ... ... ... ... | ٣٩ | م الحج | ٢٢ |
| | وذكروا الله كثيرا وانتصروا من بعد ما ظلموا ... | ٢٢٧م | الشعراء | ٢٦ |
| تُظْلَمُ | : ونضع الموازين القسط ليوم القيامة فلا تظلم نفس شيئا | ٤٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٢) | فاليوم لا تظلم نفس شيئا ولا تجزون إلا ما كنتم تعملون | ٥٤ | ك يس | ٣٦ |
| تُظْلَمُونَ | : وما تنفقوا من خير يوف إليكم وأنتم لا تظلمون | ٢٧٢م | البقرة | ٢ |
| (٤) | وإن تبتم فلكم رءوس أموالكم لا تظلمون ولا تظلمون | ٢٧٩م | « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تُظْلَمُونَ: | قل متاع الدنيا قليل والآخرة خير لمن اتقى | | | |
| | ولا تظلمون فتيلا ... ... ... ... ... ... | ٧٧ | م النساء | ٤ |
| | وما تنفقوا من شيء في سبيل الله يوف إليكم وأنتم | | | |
| | لا تظلمون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦٠ | م الأنفال | ٨ |
| يُظْلَمُونَ: | ثم توفى كل نفس ما كسبت وهم لا يظلمون ... | ٢٨١ | م البقرة | ٢ |
| (١٥) | ووفيت كل نفس ما كسبت وهم لا يظلمون ... ... | ٢٥ | م آل عمران | ٣ |
| | ثم توفى كل نفس ما كسبت وهم لا يظلمون ... ... | ١٦١ | م « | ٣ |
| | بل الله يزكى من يشاء ولا يظلمون فتيلا ... ... ... | ٤٩ | م النساء | ٤ |
| | فأولئك يدخلون الجنة ولا يظلمون نقيرا ... ... ... | ١٢٤ | م « | ٤ |
| | ومن جاء بالسيئة فلا يجزى إلا مثلها وهم لا يظلمون | ١٦٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | فإذا جاء رسولهم قضى بينهم بالقسط وهم لا يظلمون | ٤٧ | ك يونس | ١٠ |
| | وقضى بينهم بالقسط وهم لا يظلمون... ... ... ... | ٥٤ | ك « | ١٠ |
| | وتوفى كل نفس ما عملت وهم لا يظلمون ... ... | ١١١ | ك النحل | ١٦ |
| | فأولئك يقرءون كتابهم ولا يظلمون فتيلا... ... ... | ٧١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فأولئك يدخلون الجنة ولا يظلمون شيئا ... ... ... | ٦٠ | ك مريم | ١٩ |
| | ولدينا كتاب ينطق بالحق وهم لا يظلمون... ... ... | ٦٢ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وقضى بينهم بالحق وهم لا يظلمون ... ... ... ... | ٦٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ولتجزى كل نفس بما كسبت وهم لا يظلمون ... ... | ٢٢ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | ولكل درجات مما عملوا وليوفيهم أعمالهم وهم لا يظلمون | ١٩ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| ظُلْمٍ: | فبظلم من الذين هادوا حرمنا عليهم طيبات أحلت لهم | ١٦٠ | م النساء | ٤ |
| (١) | الذين آمنوا ولم يلبسوا إيمانهم بظلم أولئك لهم الأمن | ٨٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | ذلك أن لم يكن ربك مهلك القرى بظلم وأهلها غافلون | ١٣١ | ك « | ٦ |
| | وما كان ربك ليهلك القرى بظلم وأهلها مصلحون | ١١٧ | ك هود | ١١ |
| | ومن يرد فيه بإلحاد بظلم نذقه من عذاب أليم... ... | ٢٥ | م الحج | ٢٢ |
| | يا بني لا تشرك بالله إن الشرك لظلم عظيم ... ... ... | ١٣ | ك لقمان | ٣١ |
| | اليوم تجزى كل نفس بما كسبت لا ظلم اليوم ... ... | ١٧ | ك غافر | ٤٠ |
| ظُلْمًا: | تلك آيات الله نتلوها عليك بالحق وما الله يريد ظلما للعالمين | ١٠٨ | م آل عمران | ٣ |
| (٨) | إن الذين يأكلون أموال اليتامى ظلما إنما يأكلون | | | |
| | في بطونهم نارا ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | م النساء | ٤ |
| | ومن يفعل ذلك عدوانا وظلما فسوف نصليه نارا ... | ٣٠ | م « | ٤ |
| | وعنت الوجوه للحي القيوم وقد خاب من حمل ظلما | ١١١ | ك طه | ٢٠ |
| | ومن يعمل من الصالحات وهو مؤمن فلا يخاف ظلما | | | |
| | ولا هضما ... ... ... ... ... ... ... ... | ١١٢ | ك « | ٢٠ |
| | فقد جاءوا ظلما وزورا ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وجحدوا بها واستيقنتها أنفسهم ظلما وعلوا ... ... | ١٤ | ك النمل | ٢٧ |
| | وما الله يريد ظلما للعباد ... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك غافر | ٤٠ |
| ظُلْمِهِ: | فمن تاب من بعد ظلمه وأصلح فإن الله يتوب عليه | ٣٩ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | ولمن انتصر بعد ظلمه فأولئك ما عليهم من سبيل ... | ٤١ | ك الشورى | ٤٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ظُلْمِهِمْ: | فقالوا أرنا الله جهرة فأخذتهم الصاعقة بظلمهم | ١٥٣ | م النساء | ٤ |
| (٣) | وإن ربك لذو مغفرة للناس على ظلمهم... ... ... | ٦ | م الرعد | ١٣ |
| | ولو يؤاخذ الله الناس بظلمهم ما ترك عليها من دابة | ٦١ | ك النحل | ١٦ |
| ظَالِمٌ: | ربنا أخرجنا من هذه القرية الظالم أهلها ... ... | ٧٥ | م النساء | ٤ |
| (٥) | ودخل جنته وهو ظالم لنفسه ... ... ... ... | ٣٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | ويوم يعض الظالم على يديه يقول يا ليتني اتخذت | | | |
| | مع الرسول سبيلا ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | فمنهم ظالم لنفسه ومنهم مقتصد ومنهم سابق بالخيرات | ٣٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ومن ذريتهما محسن وظالم لنفسه مبين ... ... ... | ١١٣ | ك الصافات | ٣٧ |
| ظَالِمَةٌ: | وكذلك أخذ ربك إذا أخذ القرى وهي ظالمة | ١٠٢ | ك هود | ١١ |
| (٤) | وكم قصمنا من قرية كانت ظالمة وأنشأنا بعدها قوما آخرين | ١١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | فكأين من قرية أهلكناها وهي ظالمة ... ... ... | ٤٥ | م الحج | ٢٢ |
| | وكأين من قرية أمليت لها وهي ظالمة ... ... ... | ٤٨ | م « | ٢٢ |
| ظَالِمُونَ: | ثم اتخذتم العجل من بعده وأنتم ظالمون ... ... | ٥١ | م البقرة | ٢ |
| (٣٣) | ثم اتخذتم العجل من بعده وأنتم ظالمون ... ... ... | ٩٢ | م « | ٢ |
| | ومن يتعد حدود الله فأولئك هم الظالمون ... ... | ٢٢٩ | م « | ٢ |
| | والكافرون هم الظالمون ... ... ... ... ... ... | ٢٥٤ | م « | ٢ |
| | فمن افترى على الله الكذب من بعد ذلك فأولئك هم الظالمون | ٩٤ | م آل عمران | ٣ |
| | أو يتوب عليهم أو يعذبهم فإنهم ظالمون ... ... ... | ١٢٨ | م « | ٣ |
| | ومن لم يحكم بما أنزل الله فأولئك هم الظالمون ... | ٤٥ | م المائدة | ٥ |
| | إنه لا يفلح الظالمون ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك الأنعام | ٦ |
| | هل يهلك إلا القوم الظالمون ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك « | ٦ |
| | ولو ترى إذ الظالمون في غمرات الموت ... ... ... | ٩٣ | م « | ٦ |
| | فسوف تعلمون من تكون له عاقبة الدار إنه لا يفلح الظالمون | ١٣٥ | ك « | ٦ |
| | ومن يتولهم منكم فأولئك هم الظالمون ... ... ... | ٢٣ | م التوبة | ٩ |
| | قال معاذ الله إنه ربي أحسن مثواي إنه لا يفلح الظالمون | ٢٣ | ك يوسف | ١٢ |
| | قال معاذ الله أن نأخذ إلا من وجدنا متاعنا عنده | | | |
| | إنا إذا لظالمون ... ... ... ... ... ... ... | ٧٩ | ك « | ١٢ |
| | ولا تحسبن الله غافلا عما يعمل الظالمون... ... ... | ٤٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | فكذبوه فأخذهم العذاب وهم ظالمون ... ... ... | ١١٣ | ك النحل | ١٦ |
| | إذ يقول الظالمون إن تتبعون إلا رجلا مسحورا ... | ٤٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وجعل لهم أجلا لا ريب فيه فأبى الظالمون إلا كفورا | ٩٩ | ك « | ١٧ |
| | لكن الظالمون اليوم في ضلال مبين ... ... ... ... | ٣٨ | ك مريم | ١٩ |
| | فرجعوا إلى أنفسهم فقالوا إنكم أنتم الظالمون ... | ٦٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ربنا أخرجنا منها فإن عدنا فإنا ظالمون ... ... ... | ١٠٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | بل أولئك هم الظالمون ... ... ... ... ... ... | ٥٠ | م النور | ٢٤ |
| | وقال الظالمون إن تتبعون إلا رجلا مسحورا ... ... | ٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ومن تكون له عاقبة الدار إنه لا يفلح الظالمون ... | ٣٧ | ك القصص | ٢٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ظَالِمُونَ: | وما كنا مهلكي القرى إلا وأهلها ظالمون... ... | ٥٩ | ك القصص | ٢٨ |
| | فأخذهم الطوفان وهم ظالمون ... ... ... ... ... | ١٤ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وما يجحد بآياتنا إلا الظالمون ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك « | ٢٩ |
| | بل الظالمون فى ضلال مبين ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك لقمان | ٣١ |
| | ولو ترى إذ الظالمون موقوفون عند ربهم ... ... | ٣١ | ك سبإ | ٣٤ |
| | بل إن يعد الظالمون بعضهم بعضا إلا غرورا ... ... | ٤٠ | ك فاطر | ٣٥ |
| | والظالمون مالهم من ولىّ ولا نصير ... ... ... ... | ٨ | الشورى | ٤٢ |
| | ومن لم يتب فأولئك هم الظالمون ... ... ... ... | ١١ | م الحجرات | ٤٩ |
| | ومن يتولهم فأولئك هم الظالمون ... ... ... ... ... | ٩ | م الممتحنة | ٦٠ |
| ظَالِمِى: | إن الذين توفاهم الملائكة ظالمى أنفسهم ... ... | ٩٧ | م النساء | ٤ |
| (٢) | الذين تتوفاهم الملائكة ظالمى أنفسهم ... ... ... | ٢٨ | ك النحل | ١٦ |
| ظَالِمِينَ: | ولا تقربا هذه الشجرة فتكونا من الظالمين ... | ٣٥ | م البقرة | ٢ |
| (٩١) | ولن يتمنوه أبدا بما قدمت أيديهم والله عليم بالظالمين | ٩٥ | م « | ٢ |
| | قال ومن ذريتى قال لا ينال عهدى الظالمين ... ... | ١٢٤ | م « | ٢ |
| | إنك إذا لمن الظالمين ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٥ | م « | ٢ |
| | فإن انتهوا فلا عدوان إلا على الظالمين ... ... ... | ١٩٣ | م « | ٢ |
| | تولوا إلا قليلا منهم والله عليم بالظالمين ... ... ... | ٢٤٦ | م « | ٢ |
| | فبهت الذى كفر والله لا يهدى القوم الظالمين... ... | ٢٥٨ | م « | ٢ |
| | وما للظالمين من أنصار... ... ... ... ... ... ... | ٢٧٠ | م « | ٢ |
| | فيوفيهم أجورهم والله لا يحب الظالمين ... ... ... | ٥٧ | م آل عمران | ٣ |
| | والله لا يهدى القوم الظالمين... ... ... ... ... ... | ٨٦ | م « | ٣ |
| | ويتخذ منكم شهداء والله لا يحب الظالمين ... ... ... | ١٤٠ | م « | ٣ |
| | ومأواهم النار وبئس مثوى الظالمين ... ... ... ... | ١٥١ | م « | ٣ |
| | ربنا إنك من تدخل النار فقد أخزيته وما للظالمين من أنصار | ١٩٢ | م « | ٣ |
| | فتكون من أصحاب النار وذلك جزاء الظالمين ... ... | ٢٩ | م المائدة | ٥ |
| | ومن يتولهم منكم فإنه منهم إن الله لا يهدى القوم الظالمين | ٥١ | م « | ٥ |
| | ومأواه النار وما للظالمين من أنصار ... ... ... ... | ٧٢ | م « | ٥ |
| | لشهادتنا أحق من شهادتهما وما اعتدينا إنا إذا لمن الظالمين | ١٠٧ | م « | ٥ |
| | فإنهم لا يكذبونك ولكن الظالمين بآيات الله يجحدون | ٣٣ | ك الأنعام | ٦ |
| | وما من حسابك عليهم من شىء فتطردهم فتكون من الظالمين | ٥٢ | ك « | ٦ |
| | والله أعلم بالظالمين ... ... ... ... ... ... ... | ٥٨ | ك « | ٦ |
| | فلا تقعد بعد الذكرى مع القوم الظالمين ... ... ... | ٦٨ | ك « | ٦ |
| | وكذلك نولى بعض الظالمين بعضا بما كانوا يكسبون | ١٢٩ | ك « | ٦ |
| | إن الله لا يهدى القوم الظالمين ... ... ... ... ... | ١٤٤ | ك « | ٦ |
| | فما كان دعواهم إذ جاءهم بأسنا إلا أن قالوا إنا كنا ظالمين | ٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولا تقربا هذه الشجرة فتكونا من الظالمين... ... ... | ١٩ | ك « | ٧ |
| | ومن فوقهم غواش وكذلك نجزى الظالمين ... ... ... | ٤١ | ك « | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ظَالِمِينَ: | فأذن مؤذن بينهم أن لعنة الله على الظالمين ... | ٤٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | قالوا ربنا لا تجعلنا مع القوم الظالمين... ... ... ... | ٤٧ | ك « | ٧ |
| | اتخذوه وكانوا ظالمين ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٨ | ك « | ٧ |
| | فلا تشمت بى الأعداء ولا تجعلنى مع القوم الظالمين... | ١٥٠ | ك « | ٧ |
| | وأغرقنا آل فرعون وكل كانوا ظالمين ... ... ... ... | ٥٤ | م الأنفال | ٨ |
| | لا يستوون عند الله والله لا يهدى القوم الظالمين ... | ١٩ | م التوبة | ٩ |
| | وفيكم سماعون لهم والله عليم بالظالمين ... ... ... ... | ٤٧ | م « | ٩ |
| | فانهار به فى نار جهنم والله لا يهدى القوم الظالمين ... | ١٠٩ | م « | ٩ |
| | فانظر كيف كان عاقبة الظالمين ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك يونس | ١٠ |
| | فقالوا على الله توكلنا ربنا لا تجعلنا فتنة للقوم الظالمين | ٨٥ | ك « | ١٠ |
| | فإن فعلت فإنك إذا من الظالمين ... ... ... ... ... | ١٠٦ | ك « | ١٠ |
| | هؤلاء الذين كذبوا على ربهم ألا لعنة الله على الظالمين | ١٨ | ك هود | ١١ |
| | الله أعلم بما فى أنفسهم إنى إذا لمن الظالمين ... ... | ٣١ | ك « | ١١ |
| | واستوت على الجودىّ وقيل بعدا للقوم الظالمين... ... | ٤٤ | ك « | ١١ |
| | مسوّمة عند ربك وما هى من الظالمين ببعيد ... ... | ٨٣ | ك « | ١١ |
| | من وجد فى رحله فهو جزاؤه كذلك نجزى الظالمين ... | ٧٥ | ك يوسف | ١٢ |
| | فأوحى إليهم ربهم لنهلكن الظالمين ... ... ... ... | ١٣ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | إن الظالمين لهم عذاب أليم ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك « | ١٤ |
| | ويضل الله الظالمين ويفعل الله ما يشاء ... ... ... | ٢٧ | ك « | ١٤ |
| | وإن كان أصحاب الأيكة لظالمين ... ... ... ... ... | ٧٨ | ك الحجر | ١٥ |
| | ولا يزيد الظالمين إلا خسارا ... ... ... ... ... ... | ٨٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| | إنا أعتدنا للظالمين نارا أحاط بهم سرادقها ... ... | ٢٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | وهم لكم عدوّ بئس للظالمين بدلا ... ... ... ... ... | ٥٠ | ك « | ١٨ |
| | ثم ننجى الذين اتقوا ونذر الظالمين فيها جثيا ... ... | ٧٢ | ك مريم | ١٩ |
| | قالوا ياويلنا إنا كنا ظالمين ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | فذلك نجزيه جهنم كذلك نجزى الظالمين ... ... ... | ٢٩ | ك « | ٢١ |
| | ليقولن يا ويلنا إنا كنا ظالمين ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك « | ٢١ |
| | قالوا من فعل هذا بآلهتنا إنه لمن الظالمين ... ... ... | ٥٩ | ك « | ٢١ |
| | لا إله إلا أنت سبحانك إنى كنت من الظالمين... ... | ٨٧ | ك « | ٢١ |
| | يا ويلنا قد كنا فى غفلة من هذا بل كنا ظالمين ... ... | ٩٧ | ك « | ٢١ |
| | وإن الظالمين لفى شقاق بعيد... ... ... ... ... ... | ٥٣ | م الحج | ٢٢ |
| | وما ليس لهم به علم وما للظالمين من نصير ... ... ... | ٧١ | م « | ٢٢ |
| | فقل الحمد لله الذى نجانا من القوم الظالمين ... ... | ٢٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فأخذتهم الصيحة بالحق فجعلناهم غثاء فبعدا للقوم الظالمين | ٤١ | ك « | ٢٣ |
| | رب فلا تجعلنى فى القوم الظالمين ... ... ... ... ... | ٩٤ | ك « | ٢٣ |
| | وأعتدنا للظالمين عذابا أليما... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وإذ نادى ربك موسى أن ائت القوم الظالمين ... | ١٠ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وما أهلكنا من قرية إلا لها منذرون. ذكرى وما كنا ظالمين | ٢٠٩ | ك « | ٢٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ظَالِمِينَ: | فخرج منها خائفا يترقب قال رب نجني من القوم الظالمين ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك القصص | ٢٨ |
| | قال لا تخف نجوت من القوم الظالمين ... ... ... | ٢٥ | ك « | ٢٨ |
| | فنبذناهم في اليم فانظر كيف كان عاقبة الظالمين... ... | ٤٠ | ك « | ٢٨ |
| | إن الله لا يهدي القوم الظالمين ... ... ... ... ... | ٥٠ | ك « | ٢٨ |
| | إنا مهلكوا أهل هذه القرية إن أهلها كانوا ظالمين | ٣١ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وجاءكم النذير فذوقوا فما للظالمين من نصير ... ... ... | ٣٧ | ك فاطر | ٣٥ |
| | إنا جعلناها فتنة للظالمين... ... ... ... ... ... ... | ٦٣ | ك الصافات | ٣٧ |
| | وقيل للظالمين ذوقوا ما كنتم تكسبون ... ... ... ... | ٢٤ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ما للظالمين من حميم ولا شفيع يطاع ... ... ... ... | ١٨ | ك غافر | ٤٠ |
| | يوم لا ينفع الظالمين معذرتهم ولهم اللعنة ولهم سوء الدار | ٥٢ | ك « | ٤٠ |
| | ولولا كلمة الفصل لقضي بينهم وإن الظالمين لهم عذاب أليم | ٢١ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ترى الظالمين مشفقين مما كسبوا وهو واقع بهم... ... | ٢٢ | ك « | ٤٢ |
| | فمن عفا وأصلح فأجره على الله إنه لا يحب الظالمين ... | ٤٠ | ك « | ٤٢ |
| | وترى الظالمين لما رأوا العذاب يقولون هل إلى مرد من سبيل ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك « | ٤٢ |
| | ألا إن الظالمين في عذاب مقيم ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك « | ٤٢ |
| | وما ظلمناهم ولكن كانوا هم الظالمين ... ... ... ... | ٧٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وإن الظالمين بعضهم أولياء بعض والله ولي المتقين | ١٩ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | فآمن واستكبرتم إن الله لا يهدي القوم الظالمين... ... | ١٠ | م الأحقاف | ٤٦ |
| | فكان عاقبتهما أنهما في النار خالدين فيها وذلك جزاء الظالمين | ١٧ | م الحشر | ٥٩ |
| | وهو يدعى إلى الإسلام والله لا يهدي القوم الظالمين | ٧ | م الصف | ٦١ |
| | والله لا يهدي القوم الظالمين ... ... ... ... ... ... | ٥ | م الجمعة | ٦٢ |
| | ولا يتمنونه أبدا بما قدمت أيديهم والله عليم بالظالمين | ٧ | م « | ٦٢ |
| | ونجني من فرعون وعمله ونجني من القوم الظالمين ... | ١١ | م التحريم | ٦٦ |
| | قالوا سبحان ربنا إنا كنا ظالمين ... ... ... ... ... | ٢٩ | م القلم | ٦٨ |
| | وقد أضلوا كثيرا ولا تزد الظالمين إلا ضلالا ... ... | ٢٤ | ك نوح | ٧١ |
| | ولا تزد الظالمين إلا تبارا ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٧١ |
| | يدخل من يشاء في رحمته والظالمين أعد لهم عذابا أليما | ٣١ | م الإنسان | ٧٦ |
| أَظْلَمُ: | ومن أظلم ممن منع مساجد الله أن يذكر فيها اسمه... | ١١٤ | م البقرة | ٢ |
| (١٦) | ومن أظلم ممن كتم شهادة عنده من الله ... ... ... | ١٤٠ | م « | ٢ |
| | ومن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو كذب بآياته ... | ٢١ | ك الأنعام | ٦ |
| | ومن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو قال أوحي إلي | ٩٣ | م « | ٦ |
| | فمن أظلم ممن افترى على الله كذبا ليضل الناس بغير علم | ١٤٤ | ك « | ٦ |
| | فمن أظلم ممن كذب بآيات الله وصدف عنها ... ... | ١٥٧ | ك « | ٦ |
| | فمن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو كذب بآياته ... | ٣٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | فمن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو كذب بآياته ... | ١٧ | ك يونس | ١٠ |
| | ومن أظلم ممن افترى على الله كذبا أولئك يعرضون على ربهم | ١٨ | ك هود | ١١ |
| أَظْلَمَ: | لولا يأتون عليهم بسلطان بين فمن أظلم ممن افترى على الله كذبا ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | ومن أظلم ممن ذكر بآيات ربه فأعرض عنها ... ... | ٥٧ | ك « | ١٨ |
| | ومن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو كذب بالحق لما جاءه | ٦٨ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ومن أظلم ممن ذكر بآيات ربه ثم أعرض عنها ... ... | ٢٢ | ك السجدة | ٣٢ |
| | فمن أظلم ممن كذب على الله وكذب بالصدق إذ جاءه | ٣٢ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وقوم نوح من قبل إنهم كانوا هم أظلم وأطغى... ... | ٥٢ | ك النجم | ٥٣ |
| | ومن أظلم ممن افترى على الله كذبا وهو يدعى إلى الإسلام | ٧ | م الصف | ٦١ |
| ظَلُومٌ: | وإن تعدوا نعمة الله لا تحصوها إن الإنسان لظلوم كفار | ٣٤ | ك إبراهيم | ١٤ |
| ظَلُومًا: | وأشفقن منها وحملها الإنسان إنه كان ظلوما جهولا | ٧٢ | م الأحزاب | ٣٣ |
| ظَلَّامٍ: | ذلك بما قدمت أيديكم وأن الله ليس بظلام للعبيد | ١٨٢ | م آل عمران | ٣ |
| (٥) | ذلك بما قدمت أيديكم وأن الله ليس بظلام للعبيد | ٥١ | م الأنفال | ٨ |
| | ذلك بما قدمت يداك وأن الله ليس بظلام للعبيد | ١٠ | م الحج | ٢٢ |
| | من عمل صالحا فلنفسه ومن أساء فعليها وما ربك بظلام للعبيد | ٤٦ | ك فصلت | ٤١ |
| | ما يبدل القول لدي وما أنا بظلام للعبيد ... ... ... | ٢٩ | ك ق | ٥٠ |
| مَظْلُومًا: | ومن قتل مظلوما فقد جعلنا لوليه سلطانا ... ... | ٣٣ | م الإسراء | ١٧ |
| أَظْلَمَ: | كلما أضاء لهم مشوا فيه وإذا أظلم عليهم قاموا | ٢٠ | م البقرة | ٢ |
| مُظْلِمًا: | كأنما أغشيت وجوههم قطعا من الليل مظلما ... | ٢٧ | ك يونس | ١٠ |
| مُظْلِمُونَ: | وآية لهم الليل نسلخ منه النهار فإذا هم مظلمون | ٣٧ | ك يس | ٣٦ |
| ظُلُمَاتٌ: | ذهب الله بنورهم وتركهم في ظلمات لا يبصرون | ١٧ | م البقرة | ٢ |
| (٢٣) | أو كصيب من السماء فيه ظلمات ورعد وبرق ... ... | ١٩ | م « | ٢ |
| | الله ولي الذين آمنوا يخرجهم من الظلمات إلى النور | ٢٥٧ | م « | ٢ |
| | يخرجونهم من النور إلى الظلمات ... ... ... ... ... | ٢٥٧ | م « | ٢ |
| | ويخرجهم من الظلمات إلى النور بإذنه ... ... ... | ١٦ | م المائدة | ٥ |
| | الحمد لله الذي خلق السموات والأرض وجعل الظلمات والنور ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الأنعام | ٦ |
| | والذين كذبوا بآياتنا صم وبكم في الظلمات ... ... | ٣٩ | ك « | ٦ |
| | ولا حبة في ظلمات الأرض ولا رطب ولا يابس إلا في كتاب مبين ... ... ... ... ... ... | ٥٩ | ك « | ٦ |
| | قل من ينجيكم من ظلمات البر والبحر تدعونه تضرعا وخفية | ٦٣ | ك « | ٦ |
| | وهو الذي جعل لكم النجوم لتهتدوا بها في ظلمات البر والبحر | ٩٧ | ك « | ٦ |
| | كمن مثله في الظلمات ليس بخارج منها ... ... ... | ١٢٢ | ك « | ٦ |
| | قل هل يستوي الأعمى والبصير أم هل تستوي الظلمات والنور | ١٦ | م الرعد | ١٣ |
| | كتاب أنزلناه إليك لتخرج الناس من الظلمات إلى النور | ١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | أن أخرج قومك من الظلمات إلى النور ... ... ... | ٥ | ك « | ١٤ |
| | فنادى في الظلمات أن لا إله إلا أنت سبحانك... ... | ٨٧ | ك الأنبياء | ٢١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ظُلُمَاتٌ | : أو كظلمات فى بحر لجىّ يغشاه موج من فوقه موج | ٤٠ | م النـور | ٢٤ |
| | من فوقه سحاب ظلمات بعضها فوق بعض ... ... ... | ٤٠ | م « | ٢٤ |
| | أمّن يهديكم فى ظلمات البرّ والبحر ... ... ... ... | ٦٣ | ك النمـل | ٢٧ |
| | هو الذى يصلى عليكم وملائكته ليخرجكم من الظلمات | | | |
| | إلى النور ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وما يستوى الأعمى والبصير ، ولا الظلمات ولا النور | ٢٠ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | يخلقكم فى بطون أمهاتكم خلقا من بعد خلق فى ظلمات ثلاث | ٦ | ك الـزمر | ٣٩ |
| | هو الذى ينزل على عبـده آيات بينات ليخرجكم من | | | |
| | الظلمات إلى النور ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | م الحـديد | ٥٧ |
| | ليخرج الذين آمنوا وعمـلوا الصالحات من الظلمات | | | |
| | إلى النور ... ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | م الطـلاق | ٦٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تَظْمَؤُا | : وأنك لا تظمؤا فيها ولا تضحى ... ... ... ... | ١١٩ | ك طـه | ٢٠ |
| ظَمَأٌ | : ذلك بأنهم لا يصيبهم ظمأ ولا نصب ... ... ... | ١٢٠ | م التـوبة | ٩ |
| الظَّمْآنُ | : كسراب بقيعة يحسبه الظمآن ماء ... ... ... | ٣٩ | م النـور | ٢٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| ظَنَّ | : وظن أهلها أنهم قادرون عليها أتاها أمرنا ... ... | ٢٤ | ك يـونس | ١٠ |
| (٧) | وقال للذى ظنّ أنه ناج منهما اذكرنى عند ربك... ... | ٤٢ | ك يوسـف | ١٢ |
| | وذا النون إذ ذهب مغاضبا فظن أن لن نقدر عليـه | ٨٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | لولا إذ سمعتموه ظنّ المؤمنون والمؤمنات بأنفسهم خيرا | ١٢ | م النـور | ٢٤ |
| | وظنّ داود أنما فتناه فاستغفر ربه وخرّ راكعا وأناب | ٢٤ | ك صٓ | ٣٨ |
| | كلا إذا بلغت التراقى ، وقيل من راق ، وظنّ أنه الفراق | ٢٨ | ك القيـامة | ٧٥ |
| | إنه ظنّ أن لن يحور ، بلى إن ربه كان به بصيرا ... | ١٤ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| ظَنَّا | : فلا جناح عليهما أن يتراجعا إن ظنا أن يقيما حدود الله | ٢٣٠ | م البقـرة | ٢ |
| ظَنَنْتُ | : إنى ظننت أنى ملاق حسابيه ... ... ... ... | ٢٠ | ك الحـاقة | ٦٩ |
| ظَنَنْتُمْ | : ولكن ظننتم أن الله لا يعلم كثيرا مما تعملون... ... | ٢٢ | ك فصـلت | ٤١ |
| (٦) | وذلكم ظنكم الذى ظننتم بربكم أرداكم ... ... ... | ٢٣ | ك « | ٤١ |
| | بل ظننتم أن لن ينقلب الرسول والمؤمنون إلى أهليهم أبدا | ١٢ | م الفتـح | ٤٨ |
| | وظننتم ظنّ السوء وكنتم قوما بورا ... ... ... ... | ١٢ | م « | ٤٨ |
| | ما ظننتم أن يخرجوا وظنوا أنهم مانعتهم حصونهم من الله | ٢ | م الحشـر | ٥٩ |
| | وأنهم ظنوا كما ظننتم أن لن يبعث الله أحدا ... ... | ٧ | ك الجن | ٧٢ |
| ظَنَنَّا | : وأنا ظننا أن لن تقول الإنس والجن على الله كذبا | ٥ | ك « | ٧٢ |
| (٢) | وأنا ظننا أن لن نعجز الله فى الأرض ولن نعجزه هربا | ١٢ | ك « | ٧٢ |
| ظَنُّوا | : وإذ نتقنا الجبل فوقهم كأنه ظلة وظنوا أنه واقع بهم | ١٧١ | ك الأعراف | ٧ |
| (٩) | وظنوا أن لا ملجأ من الله إلا إليه ... ... ... ... | ١١٨ | م التـوبة | ٩ |
| | وجاءهم الموج من كل مكان وظنوا أنهم أحيط بهم | ٢٢ | ك يـونس | ١٠ |
| | وظنوا أنهم قد كذبوا جاءهم نصرنا ... ... ... ... | ١١٠ | ك يوسـف | ١٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ظَنُّوا | : ورأى المجرمون النار فظنوا أنهم مواقعوها ... ... | ٥٣ | ك الكهف | ١٨ |
| | وظنوا أنهم إلينا لا يرجعون... ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك القصص | ٢٨ |
| | وظنوا ما لهم من محيص... ... ... ... ... ... ... | ٤٨ | ك فصـلت | ٤١ |
| | ما ظننتم أن يخرجوا وظنوا أنهم مانعتهم حصونهم من الله | ٢ | م الحشـر | ٥٩ |
| | وأنهم ظنوا كما ظننتم أن لن يبعث الله أحدا ... ... | ٧ | ك الجن | ٧٢ |
| أَظُنُّ | : قال ما أظن أن تبيد هذه أبدا ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك الكهف | ١٨ |
| (٣) | وما أظنّ الساعة قائمة ولئن رددت إلى ربى لأجدن | | | |
| | خيرا منها منقلبا ... ... ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك « | ١٨ |
| | وما أظن الساعة قائمـة ولئن رجعت إلى ربى إن لى | | | |
| | عنـده للحسنى ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٠ | ك فصـلت | ٤١ |
| لَأَظُنُّكَ | : فقال له فرعون إنى لأظنك يا موسى مسحورا ... | ١٠١ | ك الإسـراء | ١٧ |
| (٢) | وإنى لأظنك يا فرعون مثبورا ... ... ... ... ... | ١٠٢ | ك « | ١٧ |
| لَأَظُنُّهُ | : لعلى أطلع إلى إله موسى وإنى لأظنه من الكاذبين | ٣٨ | ك القصص | ٢٨ |
| (٢) | فأطلع إلى إله موسى وإنى لأظنه كاذبا ... ... ... | ٣٧ | ك غافـر | ٤٠ |
| تَظُنُّ | : ووجوه يومئذ باسرة ، تظن أن يفعل بها فاقرة ... | ٢٥ | ك القيـامة | ٧٥ |
| تَظُنُّونَ | : وتظنون إن لبثتم إلا قليلا ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك الإسـراء | ١٧ |
| (٢) | وبلغت القلوب الحناجر وتظنون بالله الظنونا ... ... | ١٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| نَظُنُّ | : إن نظن إلا ظنا وما نحن بمستيقنين ... ... ... | ٣٢ | ك الجاثيـة | ٤٥ |
| نَظُنُّكَ | : إنا لنراك فى سفاهة وإنا لنظنك من الكاذبين ... | ٦٦ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | وما أنت إلا بشر مثلنا وإن نظنك لمن الكاذبين ... | ١٨٦ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| نَظُنُّكُمْ | : وما نرى لكم علينا من فضل بل نظنكم كاذبين ... | ٢٧ | ك هـود | ١١ |
| يَظُنُّ | : من كان يظن أن لن ينصره الله فى الدنيا والآخرة | | | |
| (٢) | فليمدد بسبب إلى السماء ... ... ... ... ... ... | ١٥ | م الحـج | ٢٢ |
| | ألا يظن أولئك أنهم مبعوثون ، ليوم عظيم ... ... | ٤ | ك المطففين | ٨٣ |
| يَظُنُّونَ | : الذين يظنون أنهم ملاقوا ربهم وأنهم إليه راجعون | ٤٦ | م البقـرة | ٢ |
| (٥) | لا يعلمون الكتاب إلا أمانىّ وإن هم إلا يظنون ... | ٧٨ | م « | ٢ |
| | قال الذين يظنون أنهم ملاقوا الله كم من فئة قليلـة | | | |
| | غلبت فئة كثيرة بإذن الله ... ... ... ... ... | ٢٤٩ | م « | ٢ |
| | يظنون بالله غير الحق ظن الجاهلية ... ... ... ... | ١٥٤ | م آل عمران | ٣ |
| | وما لهم بذلك من علم إن هم إلا يظنون ... ... ... | ٢٤ | ك الجاثيـة | ٤٥ |
| الظَّنَّ | : يظنون بالله غير الحق ظن الجاهلية ... ... ... ... | ١٥٤ | م آل عمران | ٣ |
| (١٥) | ما لهم به من علم إلا اتباع الظن وما قتلوه يقينا ... ... | ١٥٧ | م النسـاء | ٤ |
| | إن يتبعون إلا الظن وإن هم إلا يخرصون ... ... | ١١٦ | ك الأنعـام | ٦ |
| | إن تتبعون إلا الظن وإن أنتم إلا تخرصون ... ... | ١٤٨ | ك « | ٦ |
| | وما يتبع أكثرهم إلا ظنا إن الظن لا يغنى من الحق شيئا | ٣٦ | ك يـونس | ١٠ |
| | وما ظن الذين يفترون على الله الكذب يوم القيامة | ٦٠ | ك « | ١٠ |
| | إن يتبعون إلا الظن وإن هم إلا يخرصون ... ... | ٦٦ | ك « | ١٠ |
| | ذلك ظن الذين كفروا فويل للذين كفروا من النار | ٢٧ | ك صٓ | ٣٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الظَّنُّ: | الظانين بالله ظن السوء عليهم دائرة السوء ... ... ... | ٦ | م الفتح | ٤٨ |
| | وظننتم ظن السوء وكنتم قوما بورا ... ... ... ... ... | ١٢ | م « | ٤٨ |
| | يأيها الذين آمنوا اجتنبوا كثيرا من الظن ... ... | ١٢ | م الحجرات | ٤٩ |
| | إن بعض الظن إثم ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٢ | م « | ٤٩ |
| | إن يتبعون إلا الظن وما تهوى الأنفس ... ... ... | ٢٣ | ك النجم | ٥٣ |
| | وما لهم به من علم إن يتبعون إلا الظن ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٥٣ |
| | وإن الظن لا يغنى من الحق شيئا ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٥٣ |
| ظَنًّا: | وما يتبع أكثرهم إلا ظنا ... ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك يونس | ١٠ |
| (٢) | قلتم ما ندرى ما الساعة إن نظن إلا ظنا ... ... ... | ٣٢ | ك الجاثية | ٤٥ |
| ظَنُّكُمْ: | فما ظنكم برب العالمين ... ... ... ... ... ... ... | ٨٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| (٢) | وذلكم ظنكم الذى ظننتم بربكم أردا كم ... ... ... | ٢٣ | ك فصلت | ٤١ |
| ظَنَّهُ: | ولقد صدق عليهم إبليس ظنه ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك سبأ | ٣٤ |
| الظُّنُونَا: | وبلغت القلوب الحناجر وتظنون بالله الظنونا ... | ١٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| الظَّانِّينَ: | الظانين بالله ظن السوء عليهم دائرة السوء ... ... | ٦ | م الفتح | ٤٨ |

* * *

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ظَهَرَ: | ولا تقربوا الفواحش ما ظهر منها وما بطن ... ... | ١٥١ | م الأنعام | ٦ |
| (٥) | قل إنما حرم ربى الفواحش ما ظهر منها وما بطن ... | ٣٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | حتى جاء الحق وظهر أمر الله وهم كارهون ... ... | ٤٨ | م التوبة | ٩ |
| | ولا يبدين زينتهن إلا ما ظهر منها ... ... ... ... | ٣١ | م النور | ٢٤ |
| | ظهر الفساد فى البر والبحر بما كسبت أيدى الناس ... | ٤١ | ك الروم | ٣٠ |
| يَظْهَرُوا: | كيف وإن يظهروا عليكم لا يرقبوا فيكم إلا ولا ذمة | ٨ | م التوبة | ٩ |
| (٣) | إنهم إن يظهروا عليكم يرجموكم أو يعيدوكم فى ملتهم | ٢٠ | ك الكهف | ١٨ |
| | أو الطفل الذين لم يظهروا على عورات النساء ... ... | ٣١ | م النور | ٢٤ |
| يَظْهَرُونَ: | لجعلنا لمن يكفر بالرحمن لبيوتهم سقفا من فضة | | | |
| | ومعارج عليها يظهرون ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| يَظْهَرُوهُ: | فما اسطاعوا أن يظهروه وما استطاعوا له نقبا | ٩٧ | م الكهف | ١٨ |
| ظَاهَرُوا: | وأخرجوكم من دياركم وظاهروا على إخراجكم... | ٩ | م الممتحنة | ٦٠ |
| ظَاهَرُوهُمْ: | وأنزل الذين ظاهروهم من أهل الكتاب | | | |
| | من صياصيهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| تُظَاهِرُونَ: | وما جعل أزواجكم اللائى تظاهرون منهن | | | |
| | أمهاتكم ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | م « | ٣٣ |
| يُظَاهِرُوا: | ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم أحدا... | ٤ | م التوبة | ٩ |
| يُظَاهِرُونَ: | الذين يظاهرون منكم من نسائهم ما هن | | | |
| (٢) | أمهاتهم ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| | والذين يظاهرون من نسائهم ثم يعودون لما قالوا | | | |
| | فتحرير رقبة من قبل أن يتماسا ... ... ... ... | ٣ | م « | ٥٨ |
| أَظْهَرَهُ: | فلما نبأت به وأظهره الله عليه عرف بعضه... ... | ٣ | م التحريم | ٦٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تُظْهِرُونَ: | وله الحمد فى السموات والأرض وعشيا وحين | | | |
| | تظهرون... ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك الروم | ٣٠ |
| يُظْهِرَ: | إنى أخاف أن يبدل دينكم أو أن يظهر فى الأرض الفساد | ٢٦ | ك غافر | ٤٠ |
| (٢) | عالم الغيب فلا يظهر على غيبه أحدا ... ... ... ... | ٢٦ | ك الجن | ٧٢ |
| لِيُظْهِرَهُ: | هو الذى أرسل رسوله بالهدى ودين الحق ليظهره | | | |
| (٣) | على الدين كله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | م التوبة | ٩ |
| | هو الذى أرسل رسوله بالهدى ودين الحق ليظهره | | | |
| | على الدين كله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م الفتح | ٤٨ |
| | هو الذى أرسل رسوله بالهدى ودين الحق ليظهره | | | |
| | على الدين كله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | م الصف | ٦١ |
| تَظَاهَرَا: | قالوا سحران تظاهرا وقالوا إنا بكل كافرون | ٤٨ | ك القصص | ٢٨ |
| تَظَاهَرَا: | وإن تظاهرا عليه فإن الله هو مولاه وجبريل | ٤ | م التحريم | ٦٦ |
| تَظَاهَرُونَ: | تظاهرون عليهم بالإثم والعدوان... ... ... ... | ٨٥ | م البقرة | ٢ |
| ظَهْرَكَ: | ووضعنا عنك وزرك . الذى أنقض ظهرك ... | ٣ | ك الشرح | ٩٤ |
| ظَهْرِهِ: | إن يشأ يسكن الريح فيظللن رواكد على ظهره... ... | ٣٣ | ك الشورى | ٤٢ |
| (٢) | وأما من أوتى كتابه وراء ظهره . فسوف يدعوا ثبورا | ١٠ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| ظَهْرِهَا: | ولو يؤاخذ الله الناس بما كسبوا ما ترك على ظهرها | | | |
| | من دابة ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك فاطر | ٣٥ |
| ظُهُورِكُمْ: | وتركتم ما خولناكم وراء ظهوركم... ... ... ... | ٩٤ | ك الأنعام | ٦ |
| ظُهُورِهِ: | لتستووا على ظهوره ثم تذكروا نعمة ربكم إذا | | | |
| | استويتم عليه ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| ظُهُورِهَا: | وليس البر بأن تأتوا البيوت من ظهورها... ... | ١٨٩ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | وأنعام حرمت ظهورها وأنعام لا يذكرون اسم الله عليها | ١٣٨ | ك الأنعام | ٦ |
| ظُهُورِهِمْ: | نبذ فريق من الذين أوتوا الكتاب كتاب الله | | | |
| (٦) | وراء ظهورهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠١ | م البقرة | ٢ |
| | فنبذوه وراء ظهورهم واشتروا به ثمنا قليلا ... ... | ١٨٧ | م آل عمران | ٣ |
| | وهم يحملون أوزارهم على ظهورهم ألا ساء ما يزرون... | ٣١ | ك الأنعام | ٦ |
| | وإذ أخذ ربك من بنى آدم من ظهورهم ذريتهم ... | ١٧٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | فتكوى بها جباههم وجنوبهم وظهورهم ... ... ... | ٣٥ | م التوبة | ٩ |
| | حين لا يكفون عن وجوههم النار ولا عن ظهورهم ... | ٣٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| ظُهُورُهُمَا: | حرمنا عليهم شحومهما إلا ما حملت ظهورهما ... | ١٤٦ | ك الأنعام | ٦ |
| ظَاهِرَ: | وذروا ظاهر الإثم وباطنه ... ... ... ... ... | ١٢٠ | ك « | ٦ |
| (٣) | أم تنبئونه بما لا يعلم فى الأرض أم بظاهر من القول | ٣٣ | م الرعد | ١٣ |
| | هو الأول والآخر والظاهر والباطن وهو بكل | | | |
| | شىء عليم ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | م الحديد | ٥٧ |
| ظَاهِرًا: | فلا تمار فيهم إلا مراء ظاهرا... ... ... ... | ٢٢ | ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | يعلمون ظاهرا من الحياة الدنيا وهم عن الآخرة | | | |
| | هم غافلون... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك الروم | |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ظَاهِرَةً | : وأسبغ عليكم نعمه ظاهرة وباطنة ... ... ... | ٢٠ | ك لقمان | ٣١ |
| (٢) | وجعلنا بينهم وبين القرى التى باركنا فيها قرى ظاهرة | ١٨ | ك سبا | ٣٤ |
| ظَاهِرُهُ | : باطنه فيه الرحمة وظاهره من قبله العذاب... ... | ١٣ | م الحديد | ٥٧ |
| ظَاهِرِينَ | : يا قوم لكم الملك اليوم ظاهرين فى الأرض ... | ٢٩ | ك غافر | ٤٠ |
| (٢) | فأيدنا الذين آمنوا على عدوهم فأصبحوا ظاهرين ... | ١٤ | م الصف | ٦١ |
| ظَهِيرٌ | : وما لهم فيهما من شرك وما له منهم من ظهير... ... | ٢٢ | ك سبا | ٣٤ |
| (٢) | والملائكة بعد ذلك ظهير ... ... ... ... ... | ٤ | م التحريم | ٦٦ |
| ظَهِيرًا | : لا يأتون بمثله ولو كان بعضهم لبعض ظهيرا... ... | ٨٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٤) | وكان الكافر على ربه ظهيرا ... ... ... ... ... | ٥٥ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | قال رب بما أنعمت علىّ فلن أكون ظهيرا للمجرمين | ١٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | فلا تكونن ظهيرا للكافرين... ... ... ... ... ... | ٨٦ | ك « | ٢٨ |
| الظَّهِيرَةِ | : وحين تضعون ثيابكم من الظهيرة ومن بعد صلاة العشاء ... ... ... ... ... ... ... | ٥٨ | م النور | ٢٤ |
| ظِهْرِيًّا | : أرهطى أعز عليكم من الله واتخذتموه وراءكم ظهريا | ٩٢ | ك هود | ١١ |

# باب العين

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| يَعْبَؤُا | : قل ما يعبؤا بكم ربى لولا دعاؤكم ... ... ... ... | ٧٧ | ك الفرقان | ٢٥ |
| تَعْبَثُونَ | : أتبنون بكل ريع آية تعبثون ... ... ... ... | ١٢٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| عَبَثًا | : أفحسبتم أنما خلقناكم عبثا وأنكم إلينا لا ترجعون ... | ١١٥ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| عَبَدَ | : وجعل منهم القردة والخنازير وعبد الطاغوت... ... | ٦٠ | م المائدة | ٥ |
| عَبَدْتُمْ | : ولا أنا عابد ما عبدتم ... ... ... ... ... | ٤ | ك الكافرون | ١٠٩ |
| عَبَدْنَا | : وقال الذين أشركوا لو شاء الله ما عبدنا من دونه من شىء ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك النحل | ١٦ |
| عَبَدْنَاهُمْ | : وقالوا لو شاء الرحمن ما عبدناهم ... ... ... | ٢٠ | ك الزخرف | ٤٣ |
| أَعْبُدُ | : قل إنى نهيت أن أعبد الذين تدعون من دون الله | ٥٦ | ك الأنعام | ٦ |
| (١٣) | إن كنتم فى شك من دينى فلا أعبد الذين تعبدون من دون الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٤ | ك يونس | ١٠ |
| | ولكن أعبد الله الذى يتوفاكم ... ... ... ... ... | ١٠٤ | ك « | ١٠ |
| | قل إنما أمرت أن أعبد الله ولا أشرك به ... ... | ٣٦ | م الرعد | ١٣ |
| | إنما أمرت أن أعبد رب هذه البلدة الذى حرمها | ٩١ | ك النمل | ٢٧ |
| | وما لى لا أعبد الذى فطرنى وإليه ترجعون ... ... | ٢٢ | ك يس | ٣٦ |
| | قل إنى أمرت أن أعبد الله مخلصا له الدين... ... | ١١ | ك الزمر | ٣٩ |
| | قل الله أعبد مخلصا له دينى... ... ... ... ... | ١٤ | ك « | ٣٩ |
| | قل أفغير الله تأمرونى أعبد أيها الجاهلون ... ... | ٦٤ | ك « | ٣٩ |
| | قل إنى نهيت أن أعبد الذين تدعون من دون الله | ٦٦ | ك غافر | ٤٠ |
| | قل يا أيها الكافرون . لا أعبد ما تعبدون ... ... | ٢ | ك الكافرون | ١٠٩ |
| | ولا أنتم عابدون ما أعبد ... ... ... ... ... | ٣ | ك « | ١٠٩ |
| | ولا أنا عابد ما عبدتم . ولا أنتم عابدون ما أعبد ... | ٥ | ك « | ١٠٩ |
| تَعْبُدُ | : إذ قال لأبيه يا أبت لم تعبد ما لا يسمع ولا يبصر | ٤٢ | ك مريم | ١٩ |
| (٣) | يا أبت لا تعبد الشيطان إن الشيطان كان للرحمن عصيا | ٤٤ | ك « | ١٩ |
| | وصدها ما كانت تعبد من دون الله إنها كانت من قوم كافرين ... ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك النمل | ٢٧ |
| تَعْبُدُوا | : ألا تعبدوا إلا الله إننى لكم منه نذير وبشير ... | ٢ | ك هود | ١١ |
| (٧) | أن لا تعبدوا إلا الله إنى أخاف عليكم عذاب يوم أليم | ٢٦ | ك « | ١١ |
| | إن الحكم إلا لله أمر ألا تعبدوا إلا إياه ... ... | ٤٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | وقضى ربك ألا تعبدوا إلا إياه وبالوالدين إحسانا | ٢٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ألم أعهد إليكم يا بنى آدم أن لا تعبدوا الشيطان ... | ٦٠ | ك يس | ٣٦ |
| | إذ جاءتهم الرسل من بين أيديهم ومن خلفهم ألا تعبدوا إلا الله... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك فصلت | ٤١ |
| | وقد خلت النذر من بين يديه ومن خلفه ألا تعبدوا إلا الله | ٢١ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| تَعْبُدُونَ | : وإذ أخذنا ميثاق بنى إسرائيل لا تعبدون إلا الله | ٨٣ | م البقرة | ٢ |
| (٢٣) | إذ قال لبنيه ما تعبدون من بعدى ... ... ... ... | ١٣٣ | م « | ٢ |
| | واشكروا لله إن كنتم إياه تعبدون ... ... ... ... | ١٧٢ | م « | ٢ |
| | قل أتعبدون من دون الله ما لا يملك لكم ضرا ولا نفعا | ٧٦ | م المائدة | ٥ |
| | فزيلنا بينهم وقال شركاؤهم ما كنتم إيانا تعبدون ... | ٢٨ | ك يونس | ١٠ |
| | إن كنتم فى شك من دينى فلا أعبد الذين تعبدون من دون الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٤ | ك « | ١٠ |
| | ما تعبدون من دونه إلا أسماء سميتموها أنتم وآباؤكم | ٤٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | واشكروا نعمة الله إن كنتم إياه تعبدون ... ... ... | ١١٤ | ك النحل | ١٦ |
| | قال أفتعبدون من دون الله ما لا ينفعكم شيئا ولا يضركم | ٦٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | أف لكم ولما تعبدون من دون الله أفلا تعقلون | ٦٧ | ك « | ٢١ |
| | إنكم وما تعبدون من دون الله حصب جهنم أنتم لها واردون | ٩٨ | ك « | ٢١ |
| | واتل عليهم نبأ إبراهيم . إذ قال لأبيه وقومه ما تعبدون | ٧٠ | ك الشعراء | ٢٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَعْبُدُونَ | : قال أفرأيتم ما كنتم تعبدون... ... ... ... ... | ٧٥ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وقيل لهم أين ما كنتم تعبدون ... ... ... ... ... | ٩٢ | ك « | ٢٦ |
| | إنما تعبدون من دون الله أوثانا وتخلقون إفكا... ... | ١٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | إن الذين تعبدون من دون الله لا يملكون لكم رزقا | ١٧ | ك « | ٢٩ |
| | إذ قال لأبيه وقومه ماذا تعبدون... ... ... ... ... | ٨٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| | قال أتعبدون ماتنحتون ... ... ... ... ... ... | ٩٥ | ك « | ٣٧ |
| | فإنكم وما تعبدون . ما أنتم عليه بفاتنين ... ... ... | ١٦١ | ك « | ٣٧ |
| | واعبدوا الله الذى خلقهن إن كنتم إياه تعبدون ... | ٣٧ | ك فصلت | ٤١ |
| | وإذ قال إبراهيم لأبيه وقومه إننى براء مما تعبدون | ٢٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | إذ قالوا لقومهم إنا برءاء منكم ومما تعبدون من دون الله | ٤ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | قل يأيها الكافرون . لا أعبد ما تعبدون ... ... ... | ٢ | ك الكافرون | ١٠٩ |
| نَعْبُدُ | : إياك نعبد وإياك نستعين ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك الفاتحة | ١ |
| (٧) | قالوا نعبد إلهك وإله آبائك إبراهيم وإسمعيل وإسحق | ١٣٣ | م البقرة | ٢ |
| | تعالوا إلى كلمة سواء بيننا وبينكم ألا نعبد إلا الله | ٦٤ | م آل عمران | ٣ |
| | قالوا أجئتنا لنعبد الله وحده... ... ... ... ... ... | ٧٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | أتنهانا أن نعبد ما يعبد آباؤنا ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك هود | ١١ |
| | رب اجعل هذا البلد آمنا واجنبنى وبنىّ أن نعبد الأصنام | ٣٥ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | قالوا نعبد أصناما فنظل لها عاكفين ... ... ... ... | ٧١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| نَعْبُدُهُمْ | : ما نعبدهم إلا ليقربونا إلى الله زلفى ... ... ... | ٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| يَعْبُدُ | : قالوا أجئتنا لنعبد الله وحده ونذر ما كان يعبد آباؤنا | ٧٠ | ك الأعراف | ٧ |
| (٨) | أتنهانا أن نعبد ما يعبد آباؤنا ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك هود | ١١ |
| | أصلاتك تأمرك أن نترك ما يعبد آباؤنا ... ... ... | ٨٧ | ك « | ١١ |
| | فلا تك فى مرية مما يعبد هؤلاء ... ... ... ... ... | ١٠٩ | ك « | ١١ |
| | ما يعبدون إلا كما يعبد آباؤهم من قبل... ... ... ... | ١٠٩ | ك « | ١١ |
| | تريدون أن تصدونا عما كان يعبد آباؤنا ... ... ... | ١٠ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | ومن الناس من يعبد الله على حرف ... ... ... ... | ١١ | م الحج | ٢٢ |
| | ما هذا إلا رجل يريد أن يصدكم عما كان يعبد آباؤكم | ٤٣ | ك سبأ | ٣٤ |
| يَعْبُدُوا | : وما أمروا إلا ليعبدوا إلها واحدا... ... ... ... | ٣١ | م التوبة | ٩ |
| (٣) | وما أمروا إلا ليعبدوا الله مخلصين له الدين ... ... | ٥ | م البينة | ٩٨ |
| | فليعبدوا رب هذا البيت . الذى أطعمهم من جوع | ٣ | ك قريش | ١٠٦ |
| يَعْبُدُونَ | : ويعبدون من دون الله ما لا يضرهم ولا ينفعهم | ١٨ | ك يونس | ١٠ |
| (١٢) | ما يعبدون إلا كما يعبد آباؤهم من قبل ... ... ... | ١٠٩ | ك هود | ١١ |
| | ويعبدون من دون الله ما لا يملك لهم رزقا ... ... | ٧٣ | ك النحل | ١٦ |
| | وإذ اعتزلتموهم وما يعبدون إلا الله فأووا إلى الكهف | ١٦ | ك الكهف | ١٨ |
| | فلما اعتزلهم وما يعبدون من دون الله وهبنا له | | | |
| | إسحق ويعقوب ... ... ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك مريم | ١٩ |
| | ويعبدون من دون الله ما لم ينزل به سلطانا ... ... | ٧١ | م الحج | ٢٢ |
| يَعْبُدُونَ | : ويوم يحشرهم وما يعبدون من دون الله... ... ... | ١٧ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ويعبدون من دون الله ما لا ينفعهم ولا يضرهم ... | ٥٥ | ك « | ٢٥ |
| | تبرأنا إليك ما كانوا إيانا يعبدون ... ... ... ... | ٦٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | ثم يقول للملائكة أهؤلاء إياكم كانوا يعبدون ... ... | ٤٠ | ك سبأ | ٣٤ |
| | قالوا سبحانك أنت ولينا من دونهم بل كانوا يعبدون الجن | ٤١ | ك « | ٣٤ |
| | احشروا الذين ظلموا وأزواجهم وما كانوا يعبدون | ٢٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| لِيَعْبُدُونِ | : وما خلقت الجن والإنس إلا ليعبدون ... ... | ٥٦ | ك الذاريات | ٥١ |
| يَعْبُدُونَنِي | : يعبدوننى لا يشركون بى شيئا ... ... ... ... | ٥٥ | م النور | ٢٤ |
| يَعْبُدُوهَا | : والذين اجتنبوا الطاغوت أن يعبدوها ... ... | ١٧ | ك الزمر | ٣٩ |
| أَعْبُدُ | : واعبد ربك حتى يأتيك اليقين ... ... ... ... ... | ٩٩ | ك الحجر | ١٥ |
| (٣) | إنا أنزلنا إليك الكتاب بالحق فاعبد الله مخلصا له الدين | ٢ | ك الزمر | ٣٩ |
| | بل الله فاعبد وكن من الشاكرين... ... ... ... ... | ٦٦ | ك « | ٣٩ |
| فَاعْبُدْنِي | : إننى أنا الله لا إله إلا أنا فاعبدنى وأقم الصلاة لذكرى ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك طه | ٢٠ |
| فَاعْبُدْهُ | : وإليه يرجع الأمر كله فاعبده وتوكل عليه ... | ١٢٣ | ك هود | ١١ |
| (٢) | رب السموات والأرض وما بينهما فاعبده واصطبر لعبادته | ٦٥ | ك مريم | ١٩ |
| اعْبُدُوا | : يأيها الناس اعبدوا ربكم الذى خلقكم والذين من قبلكم | ٢١ | م البقرة | ٢ |
| (٢١) | واعبدوا الله ولا تشركوا به شيئا... ... ... ... ... | ٣٦ | م النساء | ٤ |
| | وقال المسيح يابنى إسرائيل اعبدوا الله ربى وربكم... | ٧٢ | م المائدة | ٥ |
| | ما قلت لهم إلا ما أمرتنى به أن اعبدوا الله ربى وربكم | ١١٧ | م « | ٥ |
| | فقال ياقوم اعبدوا الله مالكم من إله غيره ... ... | ٥٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | وإلى عاد أخاهم هودا قال ياقوم اعبدوا الله... ... | ٦٥ | ك « | ٧ |
| | وإلى ثمود أخاهم صالحا قال ياقوم اعبدوا الله... ... | ٧٣ | ك « | ٧ |
| | وإلى مدين أخاهم شعيبا قال ياقوم اعبدوا الله... ... | ٨٥ | ك « | ٧ |
| | وإلى عاد أخاهم هودا قال ياقوم اعبدوا الله... ... | ٥٠ | ك هود | ١١ |
| | وإلى ثمود أخاهم صالحا قال ياقوم اعبدوا الله... ... | ٦١ | ك « | ١١ |
| | وإلى مدين أخاهم شعيبا قال ياقوم اعبدوا الله... ... | ٨٤ | ك « | ١١ |
| | ولقد بعثنا فى كل أمة رسولا أن اعبدوا الله... ... | ٣٦ | ك النحل | ١٦ |
| | يأيها الذين آمنوا اركعوا واسجدوا واعبدوا ربكم... | ٧٧ | م الحج | ٢٢ |
| | ولقد أرسلنا نوحا إلى قومه فقال ياقوم اعبدوا الله... | ٢٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فأرسلنا فيهم رسولا منهم أن اعبدوا الله مالكم من إله غيره | ٣٢ | ك « | ٢٣ |
| | ولقد أرسلنا إلى ثمود أخاهم صالحا أن اعبدوا الله... | ٤٥ | ك النمل | ٢٧ |
| | وإبراهيم إذ قال لقومه اعبدوا الله واتقوه ... ... | ١٦ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وإلى مدين أخاهم شعيبا فقال ياقوم اعبدوا الله ... | ٣٦ | ك « | ٢٩ |
| | فاعبدوا ما شئتم من دونه ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| | فاسجدوا لله واعبدوا ... ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك النجم | ٥٣ |
| | إنى لكم نذير مبين . أن اعبدوا الله واتقوه وأطيعون | ٣ | ك نوح | ٧١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| فَاعْبُدُونِ: | وما أرسلنا من قبلك من رسول إلا نوحى إليه | | | |
| (٣) | أنه لا إله إلا أنا فاعبدون ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | إن هذه أمتكم أمة واحدة وأنا ربكم فاعبدون ... ... | ٩٢ | ك « | ٢١ |
| | إن أرضى واسعة فإياى فاعبدون... ... ... ... ... | ٥٦ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| أَعْبُدُرِنِي: | أن لا تعبدوا الشيطان إنه لكم عدو مبين . | | | |
| | وأن اعبدونى ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦١ | ك يس | ٣٦ |
| أَعْبُدُوهُ: | إن الله ربى وربكم فاعبدوه هذا صراط مستقيم | ٥١ | م آل عمران | ٣ |
| (٦) | ذلكم الله ربكم لا إله إلا هو خالق كل شىء فاعبدوه | ١٠٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | ذلكم الله ربكم فاعبدوه أفلا تذكرون... ... ... ... | ٣ | ك يونس | ١٠ |
| | وإن الله ربى وربكم فاعبدوه هذا صراط مستقيم ... | ٣٦ | ك مريم | ١٩ |
| | فابتغوا عند الله الرزق واعبدوه واشكروا له ... ... | ١٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | إن الله هو ربى وربكم فاعبدوه هذا صراط مستقيم... | ٦٤ | ك الزخرف | ٤٣ |
| يَعْبُدُونَ: | أجعلنا من دون الرحمن آلهة يعبدون... ... ... | ٤٥ | ك « | ٤٣ |
| عَبَّدْتَ: | وتلك نعمة تمنها علىّ أن عبدت بنى إسرائيل ... | ٢٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| الْعَبْدُ: | الحر بالحر والعبد ... ... ... ... ... ... | ١٧٨ | م البقرة | ٢ |
| (١٠) | بالعبد والأنثى بالأنثى ... ... ... ... ... ... | ١٧٨ | م « | ٢ |
| | ولعبد مؤمن خير من مشرك ولو أعجبكم ... ... ... | ٢٢١ | م « | ٢ |
| | قال إنى عبد الله آتانى الكتاب وجعلنى نبيا... ... ... | ٣٠ | ك مريم | ١٩ |
| | إن فى ذلك لآية لكل عبد منيب ... ... ... ... ... | ٩ | ك سبأ | ٣٤ |
| | ووهبنا لداود سليمان نعم العبد إنه أواب ... ... ... | ٣٠ | ك ص | ٣٨ |
| | إنا وجدناه صابرا نعم العبد إنه أواب ... ... ... ... | ٤٤ | ك « | ٣٨ |
| | إن هو إلا عبد أنعمنا عليه وجعلناه مثلا لبنى إسرائيل | ٥٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | تبصرة وذكرى لكل عبد منيب ... ... ... ... ... | ٨ | ك ق | ٥٠ |
| | وأنه لما قام عبد الله يدعوه كادوا يكونون عليه لبدا | ١٩ | ك الجن | ٧٢ |
| عَبْدًا: | لن يستنكف المسيح أن يكون عبدا لله ... ... ... | ١٧٢ | م النساء | ٤ |
| (٦) | ضرب الله مثلا عبدا مملوكا لا يقدر على شىء ... ... | ٧٥ | ك النحل | ١٦ |
| | ذرية من حملنا مع نوح إنه كان عبدا شكورا ... ... | ٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فوجدا عبدا من عبادنا آتيناه رحمة من عندنا ... ... | ٦٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | إن كل من فى السموات والأرض إلا آتى الرحمن عبدا | ٩٣ | ك مريم | ١٩ |
| | أرأيت الذى ينهى . عبدا إذا صلى ... ... ... ... | ١٠ | ك العلق | ٩٦ |
| عَبْدِنَا: | وإن كنتم فى ريب مما نزلنا على عبدنا فأتوا بسورة | | | |
| (٥) | من مثله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | م البقرة | ٢ |
| | إن كنتم آمنتم بالله وما أنزلنا على عبدنا يوم الفرقان | ٤١ | م الأنفال | ٨ |
| | اصبر على ما يقولون واذكر عبدنا داود ذا الأيد ... | ١٧ | ك ص | ٣٨ |
| | واذكر عبدنا أيوب إذ نادى ربه... ... ... ... ... | ٤١ | ك « | ٣٨ |
| | كذبت قبلهم قوم نوح فكذبوا عبدنا وقالوا مجنون وازدجر | ٩ | ك القمر | ٥٤ |
| عَبْدِهِ: | سبحان الذى أسرى بعبده ليلا ... ... ... ... ... | ١ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٧) | الحمد لله الذى أنزل على عبده الكتاب ولم يجعل له عوجا | ١ | ك الكهف | ١٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عَبْدِهِ: | ذكر رحمة ربك عبده زكريا ... ... ... ... ... | ٢ | ك مريم | ١٩ |
| | تبارك الذى نزل الفرقان على عبده ليكون للعالمين نذيرا | ١ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | أليس الله بكاف عبده ... ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| | فأوحى إلى عبده ما أوحى ... ... ... ... ... | ١٠ | ك النجم | ٥٣ |
| | هو الذى ينزل على عبده آيات بينات ... ... ... | ٩ | م الحديد | ٥٧ |
| عَبْدَيْنِ: | كانتا تحت عبدين من عبادنا صالحين فخانتاهما | ١٠ | م التحريم | ٦٦ |
| الْعِبَادُ: | والله رءوف بالعباد ... ... ... ... ... ... | ٢٠٧ | م البقرة | ٢ |
| (٢٠) | وأزواج مطهرة ورضوان من الله والله بصير بالعباد | ١٥ | م آل عمران | ٣ |
| | وإن تولوا فإنما عليك البلاغ والله بصير بالعباد ... | ٢٠ | م « | ٣ |
| | ويحذركم الله نفسه والله رءوف بالعباد ... ... ... | ٣٠ | م « | ٣ |
| | إن الذين تدعون من دون الله عباد أمثالكم ... ... | ١٩٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | وقالوا اتخذ الرحمن ولدا سبحانه بل عباد مكرمون ... | ٢٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وعباد الرحمن الذين يمشون على الأرض هونا... ... | ٦٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ياحسرة على العباد ما يأتيهم من رسول إلا كانوا به | | | |
| | يستهزئون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك يس | ٣٦ |
| | إلا عباد الله المخلصين . أولئك لهم رزق معلوم ... | ٤٠ | ك الصافات | ٣٧ |
| | فانظر كيف كان عاقبة المنذرين . إلا عباد الله المخلصين | ٧٤ | ك « | ٣٧ |
| | فكذبوه فإنهم لمحضرون . إلا عباد الله المخلصين ... | ١٢٨ | ك « | ٣٧ |
| | سبحان الله عما يصفون . إلا عباد الله المخلصين ... | ١٦٠ | ك « | ٣٧ |
| | لكنا عباد الله المخلصين ... ... ... ... ... ... | ١٦٩ | ك « | ٣٧ |
| | وما الله يريد ظلما للعباد ... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك غافر | ٤٠ |
| | وأفوض أمرى إلى الله إن الله بصير بالعباد ... ... | ٤٤ | ك « | ٤٠ |
| | قال الذين استكبروا إنا كل فيها إن الله قد حكم بين العباد | ٤٨ | ك « | ٤٠ |
| | وجعلوا الملائكة الذين هم عباد الرحمن إناثا ... ... | ١٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | أن أدوا إلىّ عباد الله إنى لكم رسول أمين ... ... | ١٨ | ك الدخان | ٤٤ |
| | والنخل باسقات لها طلع نضيد . رزقا للعباد ... ... | ١١ | ك ق | ٥٠ |
| | عينا يشرب بها عباد الله يفجرونها تفجيرا ... ... | ٦ | م الإنسان | ٧٦ |
| عِبَادِ(ى): | قل ياعبادِ الذين آمنوا اتقوا ربكم ... ... | ١٠ | ك الزمر | ٣٩ |
| (٤) | ذلك يخوف الله به عباده ياعبادِ فاتقون ... ... | ١٦ | ك « | ٣٩ |
| | وأنابوا إلى الله لهم البشرى فبشر عبادِ ... ... ... | ١٧ | ك « | ٣٩ |
| | ياعبادِ لاخوف عليكم اليوم ولا أنتم تحزنون ... ... | ٦٨ | ك الزخرف | ٤٣ |
| عِبَادًا: | ثم يقول للناس كونوا عبادا لى من دون الله... ... | ٧٩ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | فإذا جاء وعد أولاهما بعثنا عليكم عبادا لنا أولى بأس شديد | ٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| عِبَادَكَ: | وقال لأتخذن من عبادك نصيبا مفروضا ... ... | ١١٨ | م النساء | ٤ |
| (٧) | إن تعذبهم فإنهم عبادك وإن تغفر لهم فإنك أنت | | | |
| | العزيز الحكيم ... ... ... ... ... ... ... | ١١٨ | م المائدة | ٥ |
| | ولأغوينهم أجمعين . إلا عبادك منهم المخلصين ... | ٤٠ | ك الحجر | ١٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عِبَادِكَ: | وأدخلنى برحمتك فى عبادك الصالحين ... ... ... | ١٩ | ك النمل | ٢٧ |
| | قال فبعزتك لأغوينهم أجمعين . إلا عبادك منهم المخلصين | ٨٣ | ك ص | ٣٨ |
| | أنت تحكم بين عبادك فى ما كانوا فيه يختلفون... ... | ٤٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| | إنك إن تذرهم يضلوا عبادك ولا يلدوا إلا فاجرا كفارا | ٢٧ | ك نوح | ٧١ |
| عِبَادِكُمْ: | وأنكحوا الأيامى منكم والصالحين من عبادكم وإمائكم | ٣٢ | م النور | ٢٤ |
| عِبَادِنَا: (١٢) | كذلك لنصرف عنه السوء والفحشاء إنه من عبادنا المخلصين ... ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك يوسف | ١٢ |
| | فوجدا عبدا من عبادنا آتيناه رحمة من عندنا ... ... | ٦٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | تلك الجنة التى نورث من عبادنا من كان تقيا ... | ٦٣ | ك مريم | ١٩ |
| | ثم أورثنا الكتاب الذين اصطفينا من عبادنا ... ... | ٣٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| | إنا كذلك نجزى المحسنين . إنه من عبادنا المؤمنين | ٨١ | ك الصافات | ٣٧ |
| | كذلك نجزى المحسنين . إنه من عبادنا المؤمنين ... | ١١١ك | « | ٣٧ |
| | إنا كذلك نجزى المحسنين . إنهما من عبادنا المؤمنين | ١٢٢ك | « | ٣٧ |
| | إنا كذلك نجزى المحسنين . إنه من عبادنا المؤمنين | ١٣٢ك | « | ٣٧ |
| | ولقد سبقت كلمتنا لعبادنا المرسلين ... ... ... ... | ١٧١ك | « | ٣٧ |
| | واذكر عبادنا إبراهيم وإسحق ويعقوب... ... ... | ٤٥ | ك ص | ٣٨ |
| | ولكن جعلناه نورا نهدى به من نشاء من عبادنا ... | ٥٢ | ك الشورى | ٤٢ |
| | كانتا تحت عبدين من عبادنا صالحين فخانتاهما ... | ١٠ | م التحريم | ٦٦ |
| عِبَادِهِ: (٣٤) | أن ينزل الله من فضله على من يشاء من عباده ... | ٩٠ | م البقرة | ٢ |
| | وهو القاهر فوق عباده وهو الحكيم الخبير ... ... | ١٨ | ك الأنعام | ٦ |
| | وهو القاهر فوق عباده ويرسل عليكم حفظة ... ... | ٦١ | ك « | ٦ |
| | ذلك هدى الله يهدى به من يشاء من عباده ... ... | ٨٨ | ك « | ٦ |
| | قل من حرم زينة الله التى أخرج لعباده والطيبات من الرزق | ٣٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | إن الأرض لله يورثها من يشاء من عباده ... ... | ١٢٨ك | « | ٧ |
| | ألم يعلموا أن الله هو يقبل التوبة عن عباده ... ... | ١٠٤م | التوبة | ٩ |
| | يصيب به من يشاء من عباده وهو الغفور الرحيم ... | ١٠٧ك | يونس | ١٠ |
| | ولكن الله يمن على من يشاء من عباده ... ... ... | ١١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | ينزل الملائكة بالروح من أمره على من يشاء من عباده | ٢ | ك النحل | ١٩ |
| | وكفى بربك بذنوب عباده خبيرا بصيرا... ... ... | ١٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| | إنه كان بعباده خبيرا بصيرا... ... ... ... ... | ٣٠ | ك « | ١٧ |
| | قل كفى بالله شهيدا بينى وبينكم إنه كان بعباده خبيرا بصيرا | ٩٦ | ك « | ١٧ |
| | جنات عدن التى وعد الرحمن عباده بالغيب ... ... | ٦١ | ك مريم | ١٩ |
| | وكفى به بذنوب عباده خبيرا ... ... ... ... ... | ٥٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وقالا الحمد لله الذى فضلنا على كثير من عباده المؤمنين | ١٥ | ك النمل | ٢٧ |
| | قل الحمد لله وسلام على عباده الذين اصطفى ... ... | ٥٩ | ك « | ٢٧ |
| | ويكأن الله يبسط الرزق لمن يشاء من عباده ويقدر | ٨٢ | ك القصص | ٢٨ |
| | الله يبسط الرزق لمن يشاء من عباده ويقدر له... ... | ٦٢ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | فإذا أصاب به من يشاء من عباده إذا هم يستبشرون | ٤٨ | ك الروم | ٣٠ |
| عِبَادِهِ: | قل إن ربى يبسط الرزق لمن يشاء من عباده ويقدر له | ٣٩ | ك سبأ | ٣٤ |
| | إنما يخشى الله من عباده العلماء... ... ... ... ... | ٢٨ | ك فاطر | ٣٥ |
| | إن الله بعباده لخبير بصير ... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك « | ٣٥ |
| | فإذا جاء أجلهم فإن الله كان بعباده بصيرا ... ... | ٤٥ | ك « | ٣٥ |
| | إن تكفروا فإن الله غنى عنكم ولا يرضى لعباده الكفر | ٧ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ذلك يخوف الله به عباده ياعباد فاتقون ... ... ... | ١٦ | ك « | ٣٩ |
| | يلقى الروح من أمره على من يشاء من عباده ... ... | ١٥ | ك غافر | ٤٠ |
| | سنة الله التى قد خلت فى عباده وخسر هنالك الكافرون | ٨٥ | ك « | ٤٠ |
| | الله لطيف بعباده يرزق من يشاء وهو القوى العزيز | ١٩ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ذلك الذى يبشر الله عباده الذين آمنوا وعملوا الصالحات | ٢٣ | م « | ٤٢ |
| | وهو الذى يقبل التوبة عن عباده ويعفوا عن السيئات | ٢٥ | م « | ٤٢ |
| | ولو بسط الله الرزق لعباده لبغوا فى الأرض ... ... | ٢٧ | م « | ٤٢ |
| | ولكن ينزل بقدر ما يشاء إنه بعباده خبير بصير ... ... | ٢٧ | م « | ٤٢ |
| | وجعلوا له من عباده جزءا إن الإنسان لكفور مبين | ١٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| عِبَادِى: (١٧) | وإذا سألك عبادى عنى فإنى قريب ... ... ... | ١٨٦ | م البقرة | ٢ |
| | قل لعبادى الذين آمنوا يقيموا الصلاة ... ... ... | ٣١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | إن عبادى ليس لك عليهم سلطان ... ... ... ... | ٤٢ | ك الحجر | ١٥ |
| | نبئ عبادى أنى أنا الغفور الرحيم... ... ... ... | ٤٩ | ك « | ١٥ |
| | وقل لعبادى يقولوا التى هى أحسن ... ... ... ... | ٥٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| | إن عبادى ليس لك عليهم سلطان وكفى بربك وكيلا | ٦٥ | ك « | ١٧ |
| | أفحسب الذين كفروا أن يتخذوا عبادى من دونى أولياء | ١٠٢ك | الكهف | ١٨ |
| | ولقد أوحينا إلى موسى أن أسر بعبادى ... ... ... | ٧٧ | ك طه | ٢٠ |
| | ولقد كتبنا فى الزبور من بعد الذكر أن الأرض يرثها عبادى الصالحون ... ... ... ... ... ... | ١٠٥ك | الأنبياء | ٢١ |
| | إنه كان فريق من عبادى يقولون ربنا آمنا ... ... | ١٠٩ك | المؤمنون | ٢٣ |
| | فيقول أأنتم أضللتم عبادى هؤلاء أم هم ضلوا السبيل | ١٧ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وأوحينا إلى موسى أن أسر بعبادى إنكم متبعون ... | ٥٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | ياعبادى الذين آمنوا إن أرضى واسعة فإياى فاعبدون | ٥٦ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | اعملوا آل داود شكرا وقليل من عبادى الشكور ... | ١٣ | ك سبأ | ٣٤ |
| | قل ياعبادى الذين أسرفوا على أنفسهم لا تقنطوا من رحمة الله . . ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | م الزمر | ٣٩ |
| | فأسر بعبادى ليلا إنكم متبعون ... ... ... ... | ٢٣ | ك الدخان | ٤٤ |
| | ارجعى إلى ربك راضية مرضية . فادخلى فى عبادى | ٢٩ | ك الفجر | ٨٩ |
| لِلْعَبِيدِ: (٥) | ذلك بما قدمت أيديكم وأن الله ليس بظلام للعبيد | ١٨٢ | م آل عمران | ٣ |
| | ذلك بما قدمت أيديكم وأن الله ليس بظلام للعبيد ... | ٥١ | م الأنفال | ٨ |
| | ذلك بما قدمت يداك وأن الله ليس بظلام للعبيد ... | ١٠ | م الحج | ٢٢ |
| | ومن أساء فعليها وما ربك بظلام للعبيد ... ... ... | ٤٦ | ك فصلت | ٤١ |
| | ما يبدل القول لدىّ وما أنا بظلام للعبيد ... ... ... | ٢٩ | ك ق | ٥٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عَابِدٌ: | ولا أنا عابد ما عبدتم . ولا أنتم عابدون ما أعبد ... | ٤ | ك الكافرون | ١٠٩ |
| عَابِدَاتٍ: | مسلمات مؤمنات قانتات تائبات عابدات ... | ٥ | م التحريم | ٦٦ |
| عَابِدُونَ: | ومن أحسن من الله صبغة ونحن له عابدون ... | ١٣٨ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | التائبون العابدون الحامدون السائحون ... ... ... | ١١٢ | م التوبة | ٩ |
| | فقالوا أنؤمن لبشرين مثلنا وقومهما لنا عابدون ... | ٤٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | لا أعبد ما تعبدون . ولا أنتم عابدون ما أعبد ... ... | ٣ | ك الكافرون | ١٠٩ |
| | ولا أنا عابد ما عبدتم . ولا أنتم عابدون ما أعبد ... | ٥ | ك « | ١٠٩ |
| عَابِدِينَ: | قالوا وجدنا آباءنا لها عابدين ... ... ... ... | ٥٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٥) | وكانوا لنا عابدين ... ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك « | ٢١ |
| | وآتيناه أهله ومثلهم معهم رحمة من عندنا وذكرى للعابدين | ٨٤ | ك « | ٢١ |
| | إن فى هذا لبلاغا لقوم عابدين ... ... ... ... | ١٠٦ | ك « | ٢١ |
| | قل إن كان للرحمن ولد فأنا أول العابدين ... ... ... | ٨١ | ك الزخرف | ٤٣ |
| بِعِبَادَةِ: | فليعمل عملا صالحا ولا يشرك بعبادة ربه أحدا | ١١٠ | ك الكهف | ١٨ |
| عِبَادَتِكُمْ: | إن كنا عن عبادتكم لغافلين ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك يونس | ١٠ |
| عِبَادَتِهِ: | ومن يستنكف عن عبادته ويستكبر فسيحشرهم | | | |
| (٤) | إليه جميعا ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٧٢ | م النساء | ٤ |
| | إن الذين عند ربك لا يستكبرون عن عبادته ... ... | ٢٠٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | فاعبده واصطبر لعبادته ... ... ... ... ... ... | ٦٥ | ك مريم | ١٩ |
| | ومن عنده لا يستكبرون عن عبادته ولا يستحسرون | ١٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| بِعِبَادَتِهِمْ: | كلا سيكفرون بعبادتهم ويكونون عليهم ضدا | ٨٢ | ك مريم | ١٩ |
| (٢) | وكانوا بعبادتهم كافرين... ... ... ... ... ... | ٦ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| عِبَادَتِى: | إن الذين يستكبرون عن عبادتى سيدخلون جهنم | | | |
| | داخرين ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦٠ | ك غافر | ٤٠ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَعْبُرُونَ: | يأيها الملأ أفتونى فى رؤياى إن كنتم للرؤيا تعبرون | ٤٣ | ك يوسف | ١٢ |
| فَاعْتَبِرُوا: | فاعتبروا يا أولى الأبصار... ... ... ... ... | ٢ | م الحشر | ٥٩ |
| عَابِرِى: | ولا جنبا إلا عابرى سبيل حتى تغتسلوا ... ... | ٤٣ | م النساء | ٤ |
| عِبْرَةٌ: | والله يؤيد بنصره من يشاء إن فى ذلك لعبرة لأولى الأبصار | ١٣ | م آل عمران | ٣ |
| (٦) | لقد كان فى قصصهم عبرة لأولى الألباب ... ... ... | ١١١ | ك يوسف | ١٢ |
| | وإن لكم فى الأنعام لعبرة نسقيكم مما فى بطونه ... ... | ٦٦ | ك النحل | ١٦ |
| | وإن لكم فى الأنعام لعبرة نسقيكم مما فى بطونها ... ... | ٢١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | يقلب الله الليل والنهار إن فى ذلك لعبرة لأولى الأبصار | ٤٤ | م النور | ٢٤ |
| | إن فى ذلك لعبرة لمن يخشى ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك النازعات | ٧٩ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عَبَسَ: | ثم نظر . ثم عبس وبسر . ثم أدبر واستكبر ... ... | ٢٢ | ك المدثر | ٧٤ |
| (٢) | عبس وتولى . أن جاءه الأعمى ... ... ... ... ... | ١ | ك عبس | ٨٠ |
| عَبُوسًا: | إنا نخاف من ربنا يوما عبوسا قمطريرا ... ... | ١٠ | م الإنسان | ٧٦ |
| عَبْقَرِىٍّ: | متكئين على رفرف خضر وعبقرىّ حسان... ... ... | ٧٦ | م الرحمن | ٥٥ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَسْتَعْتِبُوا: | وإن يستعتبوا فما هم من المعتبين ... ... ... ... | ٢٤ | ك فصلت | ٤١ |
| يُسْتَعْتَبُونَ: | ثم لا يؤذن للذين كفروا ولا هم يستعتبون ... | ٨٤ | ك النحل | ١٦ |
| (٣) | فيومئذ لا ينفع الذين ظلموا معذرتهم ولا هم يستعتبون | ٥٧ | ك الروم | ٣٠ |
| | فاليوم لا يخرجون منها ولا هم يستعتبون ... ... ... | ٣٥ | ك الجاثية | ٤٥ |
| الْمُعْتَبِينَ: | وإن يستعتبوا فما هم من المعتبين ... ... ... ... | ٢٤ | ك فصلت | ٤١ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَعْتَدَتْ: | أرسلت إليهن وأعتدت لهن متكأ ... ... ... ... | ٣١ | ك يوسف | ١٢ |
| أَعْتَدْنَا: | أولئك أعتدنا لهم عذابا أليما ... ... ... ... ... | ١٨ | م النساء | ٤ |
| (١٣) | وأعتدنا للكافرين عذابا مهينا ... ... ... ... ... | ٣٧ | م « | ٤ |
| | أولئك هم الكافرون حقا وأعتدنا للكافرين عذابا مهينا | ١٥١ | م « | ٤ |
| | وأعتدنا للكافرين منهم عذابا أليما ... ... ... ... | ١٦١ | م « | ٤ |
| | وأن الذين لا يؤمنون بالآخرة أعتدنا لهم عذابا أليما | ١٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| | إنا أعتدنا للظالمين نارا أحاط بهم سرادقها ... ... | ٢٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | إنا أعتدنا جهنم للكافرين نزلا ... ... ... ... ... | ١٠٢ | ك « | ١٨ |
| | بل كذبوا بالساعة وأعتدنا لمن كذب بالساعة سعيرا | ١١ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وجعلناهم للناس آية وأعتدنا للظالمين عذابا أليما ... | ٣٧ | ك « | ٢٥ |
| | نؤتها أجرها مرتين وأعتدنا لها رزقا كريما... ... ... | ٣١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ومن لم يؤمن بالله ورسوله فإنا أعتدنا للكافرين سعيرا | ١٣ | م الفتح | ٤٨ |
| | وجعلناها رجوما للشياطين وأعتدنا لهم عذاب السعير | ٥ | ك الملك | ٦٧ |
| | إنا أعتدنا للكافرين سلاسلا وأغلالا وسعيرا ... ... | ٤ | م الإنسان | ٧٦ |
| عَتِيدٌ: | ما يلفظ من قول إلا لديه رقيب عتيد ... ... ... | ١٨ | ك ق | ٥٠ |
| (٢) | وقال قرينه هذا ما لدىّ عتيد ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك « | ٥٠ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الْعَتِيقِ: | وليوفوا نذورهم وليطوفوا بالبيت العتيق ... ... | ٢٩ | م الحج | ٢٢ |
| (٢) | لكم فيها منافع إلى أجل مسمى ثم محلها إلى البيت العتيق | ٣٣ | م « | ٢٢ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| فَاعْتِلُوهُ: | خذوه فاعتلوه إلى سواء الجحيم ... ... ... ... | ٤٧ | ك الدخان | ٤٤ |
| عُتُلٍّ: | عتل بعد ذلك زنيم... ... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك القلم | ٦٨ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عَتَتْ: | وكأين من قرية عتت عن أمر ربها ورسله ... ... | ٨ | م الطلاق | ٦٥ |
| عَتَوْا: | فعقروا الناقة وعتوا عن أمر ربهم ... ... ... ... | ٧٧ | ك الأعراف | ٧ |
| (٤) | فلما عتوا عن ما نهوا عنه قلنا لهم كونوا قردة خاسئين | ١٦٦ | م « | ٧ |
| | لقد استكبروا فى أنفسهم وعتوا عتوا كبيرا ... ... | ٢١ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | فعتوا عن أمر ربهم فأخذتهم الصاعقة وهم ينظرون | ٤٤ | ك الذاريات | ٥١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عُتُوٍّ | : بل لجوا فى عتو ونفور ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك الملك | ٦٧ |
| عُتُوًّا | : لقد استكبروا فى أنفسهم وعتوا عتوا كبيرا ... ... | ٢١ | ك الفرقان | ٢٥ |
| عِتِيًّا | : وقد بلغت من الكبر عتيا ... ... ... ... ... | ٨ | ك مريم | ١٩ |
| (٢) | ثم لننزعن من كل شيعة أيهم أشد على الرحمن عتيا ... | ٦٩ | ك « | ١٩ |
| عَاتِيَةٍ | : وأما عاد فأهلكوا بريح صرصر عاتية ... ... ... | ٦ | ك الحاقة | ٦٩ |
| ✦✦✦ | | | | |
| عُثِرَ | : فإن عثر على أنهما استحقا إثما فآخران يقومان مقامهما | ١٠٧ | م المائدة | ٥ |
| أَعْثَرْنَا | : وكذلك أعثرنا عليهم ليعلموا أن وعد الله حق ... | ٢١ | ك الكهف | ١٨ |
| ✦✦✦ | | | | |
| تَعْثَوْا | : كلوا واشربوا من رزق الله ولا تعثوا فى الأرض مفسدين | ٦٠ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | فاذكروا آلاء الله ولا تعثوا فى الأرض مفسدين ... | ٧٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولا تبخسوا الناس أشياءهم ولا تعثوا فى الأرض مفسدين | ٨٥ | ك هود | ١١ |
| | ولا تبخسوا الناس أشياءهم ولا تعثوا فى الأرض مفسدين | ١٨٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وارجوا اليوم الآخر ولا تعثوا فى الأرض مفسدين | ٣٦ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| ✦✦✦ | | | | |
| عَجِبْتَ | : بل عجبت ويسخرون ... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| أَوَعَجِبْتُمْ | : أوعجبتم أن جاءكم ذكر من ربكم على رجل منكم لينذركم | ٦٣ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | أوعجبتم أن جاءكم ذكر من ربكم على رجل منكم لينذركم | ٦٩ | ك « | ٧ |
| عَجِبُوا | : وعجبوا أن جاءهم منذر منهم ... ... ... ... | ٤ | ك ص | ٣٨ |
| (٢) | بل عجبوا أن جاءهم منذر منهم ... ... ... ... | ٢ | ك ق | ٥٠ |
| تَعْجَبْ | : وإن تعجب فعجب قولهم أئذا كنا ترابا أئنا لفى | | | |
| | خلق جديد ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | م الرعد | ١٣ |
| تَعْجَبُونَ | : أفمن هذا الحديث تعجبون ... ... ... ... | ٥٩ | ك النجم | ٥٣ |
| أَتَعْجَبِينَ | : قالوا أتعجبين من أمر الله ... ... ... ... | ٧٣ | ك هود | ١١ |
| أَعْجَبَ | : كمثل غيث أعجب الكفار نباته ثم يهيج فتراه مصفرا | ٢٠ | م الحديد | ٥٧ |
| أَعْجَبَتْكُمْ | : ولأمة مؤمنة خير من مشركة ولو أعجبتكم ... ... | ٢٢١ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | ويوم حنين إذ أعجبتكم كثرتكم ... ... ... ... | ٢٥ | م التوبة | ٩ |
| أَعْجَبَكَ | : قل لا يستوى الخبيث والطيب ولو أعجبك كثرة الخبيث | ١٠٠ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | ولا أن تبدل بهن من أزواج ولو أعجبك حسنهن ... | ٥٢ | م الأحزاب | ٣٣ |
| أَعْجَبَتْكُمْ | : ولعبد مؤمن خير من مشرك ولو أعجبكم ... ... | ٢٢١ | م البقرة | ٢ |
| تُعْجِبْكَ | : فلا تعجبك أموالهم ولا أولادهم ... ... ... | ٥٥ | م التوبة | ٩ |
| (١٣) | ولا تعجبك أموالهم وأولادهم ... ... ... ... | ٨٥ | م « | ٩ |
| | وإذا رأيتهم تعجبك أجسامهم ... ... ... ... | ٤ | م المنافقون | ٦٣ |
| يُعْجِبُ | : فاستوى على سوقه يعجب الزراع ليغيظ بهم الكفار | ٢٩ | م الفتح | ٤٨ |
| يُعْجِبُكَ | : ومن الناس من يعجبك قوله فى الحياة الدنيا ... | ٢٠٤ | م البقرة | ٢ |
| عُجَابٌ | : أجعل الآلهة إلها واحدا إن هذا لشىء عجاب ... | ٥ | ك ص | ٣٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عَجَبٌ | : وإن تعجب فعجب قولهم أئذا كنا ترابا أئنا لفى | | | |
| | خلق جديد ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | م الرعد | ١٣ |
| عَجَبًا | : أكان للناس عجبا أن أوحينا إلى رجل منهم أن أنذر الناس | ٢ | ك يونس | ١٠ |
| (٤) | كانوا من آياتنا عجبا ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | واتخذ سبيله فى البحر عجبا ... ... ... ... ... | ٦٣ | ك « | ١٨ |
| | استمع نفر من الجن فقالوا إنا سمعنا قرآنا عجبا ... ... | ١ | ك الجن | ٧٢ |
| عَجِيبٌ | : أألد وأنا عجوز وهذا بعلى شيخا إن هذا لشىء عجيب | ٧٢ | ك هود | ١١ |
| (٢) | فقال الكافرون هذا شىء عجيب ... ... ... ... | ٢ | ك ق | ٥٠ |
| ✦✦✦ | | | | |
| أَعَجَزْتُ | : قال يا ويلتى أعجزت أن أكون مثل هذا الغراب | ٣١ | م المائدة | ٥ |
| نُعْجِزَ | : وأنا ظننا أن لن نعجز الله فى الأرض ... ... ... | ١٢ | ك الجن | ٧٢ |
| نُعْجِزَهُ | : ولن نعجزه هربا ... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك « | ٧٢ |
| لِيُعْجِزَهُ | : وما كان الله ليعجزه من شىء فى السموات | | | |
| | ولا فى الأرض ... ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك فاطر | ٣٥ |
| يُعْجِزُونَ | : ولا يحسبن الذين كفروا سبقوا إنهم لا يعجزون | ٥٩ | م الأنفال | ٨ |
| عَجُوزٌ | : قالت يا ويلتى أألد وأنا عجوز وهذا بعلى شيخا ... | ٧٢ | ك هود | ١١ |
| (٢) | فأقبلت امرأته فى صرة فصكت وجهها وقالت عجوز عقيم | ٢٩ | ك الذاريات | ٥١ |
| عَجُوزًا | : فنجيناه وأهله أجمعين إلا عجوزا فى الغابرين ... | ١٧١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| (٢) | إذ نجيناه وأهله أجمعين إلا عجوزا فى الغابرين ... | ١٣٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| أَعْجَازُ | : تنزع الناس كأنهم أعجاز نخل منقعر ... ... ... | ٢٠ | ك القمر | ٥٤ |
| (٢) | فترى القوم فيها صرعى كأنهم أعجاز نخل خاوية ... | ٧ | ك الحاقة | ٦٩ |
| مُعَاجِزِينَ | : والذين سعوا فى آياتنا معاجزين أولئك أصحاب | | | |
| (٣) | الجحيم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥١ | م الحج | ٢٢ |
| | والذين سعوا فى آياتنا معاجزين أولئك لهم عذاب ... | ٥ | ك سبأ | ٣٤ |
| | والذين يسعون فى آياتنا معاجزين أولئك فى العذاب | | | |
| | محضرون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك « | ٣٤ |
| بِمُعْجِزٍ | : ومن لا يجب داعى الله فليس بمعجز فى الأرض ... | ٣٢ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| مُعْجِزِي | : واعلموا أنكم غير معجزى الله ... ... ... ... | ٢ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | وإن توليتم فاعلموا أنكم غير معجزى الله ... ... ... | ٣ | م « | ٩ |
| مُعْجِزِينَ | : إن ما توعدون لآت وما أنتم بمعجزين ... ... | ١٣٤ | ك الأنعام | ٦ |
| (٩) | قل إى وربى إنه لحق وما أنتم بمعجزين ... ... ... | ٥٣ | ك يونس | ١٠ |
| | أولئك لم يكونوا معجزين فى الأرض ... ... ... ... | ٢٠ | ك هود | ١١ |
| | قال إنما يأتيكم به الله إن شاء وما أنتم بمعجزين ... | ٣٣ | ك « | ١١ |
| | أو يأخذهم فى تقلبهم فما هم بمعجزين ... ... ... ... | ٤٦ | ك النحل | ١٦ |
| | لا تحسبن الذين كفروا معجزين فى الأرض ومأواهم النار | ٥٧ | م النور | ٢٤ |
| | وما أنتم بمعجزين فى الأرض ولا فى السماء ... ... ... | ٢٢ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | سيصيبهم سيئات ما كسبوا وما هم بمعجزين ... ... | ٥١ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وما أنتم بمعجزين فى الأرض ... ... ... ... ... | ٣١ | ك الشورى | ٤٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| عِجَافٌ | : إنى أرى سبع بقرات سمان يأكلهن سبع عجاف | ٤٣ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | أفتنا فى سبع بقرات سمان يأكلهن سبع عجاف... ... | ٤٦ | ك « | ١٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| عَجِلْتُ | : قال هم أولاء على أثرى وعجلت إليك رب لترضى | ٨٤ | ك طه | ٢٠ |
| أَعَجِلْتُمْ | : قال بئسما خلفتمونى من بعدى أعجلتم أمر ربكم | ١٥٠ | ك الأعراف | ٧ |
| تَعْجَلْ | : فلا تعجل عليهم إنما نعد لهم عدا ... ... ... ... | ٨٤ | ك مريم | ١٩ |
| (٣) | ولا تعجل بالقرآن من قبل أن يقضى إليك وحيه | ١١٤ | ك طه | ٢٠ |
| | لا تحرك به لسانك لتعجل به... ... ... ... ... ... | ١٦ | ك القيامة | ٧٥ |
| عَجِّلْ | : لو يؤاخذهم بما كسبوا لعجل لهم العذاب... ... ... | ٥٨ | ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | وعدكم الله مغانم كثيرة تأخذونها فعجل لكم هذه... | ٢٠ | م الفتح | ٤٨ |
| عَجَّلْنَا | : من كان يريد العاجلة عجلنا له فيها مانشاء لمن نريد | ١٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| يُعَجِّلُ | : ولو يعجل الله للناس الشر استعجالهم بالخير لقضى إليهم أجلهم ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك يونس | ١٠ |
| عَجِّلْ | : وقالوا ربنا عجل لنا قطنا قبل يوم الحساب ... ... | ١٦ | ك ص | ٣٨ |
| أَعْجَلَكَ | : وما أعجلك عن قومك يا موسى ... ... ... ... | ٨٣ | ك طه | ٢٠ |
| تَعَجَّلَ | : فمن تعجل فى يومين فلا إثم عليه ومن تأخر فلا إثم عليه | ٢٠٣ | م البقرة | ٢ |
| اسْتَعْجَلْتُمْ | : بل هو ما استعجلتم به ريح فيها عذاب أليم | ٢٤ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| تَسْتَعْجِلْ | : فاصبر كما صبر أولوا العزم من الرسل ولا تستعجل لهم | ٣٥ | م « | ٤٦ |
| تَسْتَعْجِلُونَ | : ما عندى ما تستعجلون به إن الحكم إلا لله | ٥٧ | ك الأنعام | ٦ |
| (٦) | قل لو أن عندى ما تستعجلون به لقضى الأمر بينى وبينكم | ٥٨ | ك « | ٦ |
| | أثم إذا ما وقع آمنتم به آلآن وقد كنتم به تستعجلون | ٥١ | ك يونس | ١٠ |
| | قال يا قوم لم تستعجلون بالسيئة قبل الحسنة ... ... | ٤٦ | ك النمل | ٢٧ |
| | قل عسى أن يكون ردف لكم بعض الذى تستعجلون | ٧٢ | ك « | ٢٧ |
| | ذوقوا فتنتكم هذا الذى كنتم به تستعجلون... ... ... | ١٤ | ك الذاريات | ٥١ |
| تَسْتَعْجِلُونِ | : سأريكم آياتى فلا تستعجلون ... ... ... ... | ٣٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| تَسْتَعْجِلُوهُ | : أتى أمر الله فلا تستعجلوه ... ... ... ... | ١ | ك النحل | ١٦ |
| يَسْتَعْجِلُ | : ماذا يستعجل منه المجرمون ... ... ... ... | ٥٠ | ك يونس | ١٠ |
| (٢) | يستعجل بها الذين لا يؤمنون بها... ... ... ... ... | ١٨ | ك الشورى | ٤٢ |
| يَسْتَعْجِلُونَ | : فيقولوا هل نحن منظرون . أفبعذابنا يستعجلون | ٢٠٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| (٢) | وأبصرهم فسوف يبصرون . أفبعذابنا يستعجلون | ١٧٦ | ك الصافات | ٣٧ |
| يَسْتَعْجِلُونَ | : فإن للذين ظلموا ذنوبا مثل ذنوب أصحابهم فلا يستعجلون... ... ... ... ... ... ... | ٥٩ | ك الذاريات | ٥١ |
| يَسْتَعْجِلُونَكَ | : ويستعجلونك بالسيئة قبل الحسنة ... ... | ٦ | م الرعد | ١٣ |
| (٤) | ويستعجلونك بالعذاب ولن يخلف الله وعده ... ... | ٤٧ | م الحج | ٢٢ |
| | ويستعجلونك بالعذاب ولولا أجل مسمى لجاءهم العذاب | ٥٣ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | يستعجلونك بالعذاب وإن جهنم لمحيطة بالكافرين | ٥٤ | ك « | ٢٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| اسْتِعْجَالَهُمْ | : ولو يعجل الله للناس الشر استعجالهم بالخير لقضى إليهم أجلهم ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك يونس | ١٠ |
| الْعَاجِلَةَ | : من كان يريد العاجلة عجلنا له فيها مانشاء لمن نريد | ١٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٣) | كلا بل تحبون العاجلة ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك القيامة | ٧٥ |
| | إن هؤلاء يحبون العاجلة ويذرون وراءهم يوما ثقيلا | ٢٧ | م الإنسان | ٧٦ |
| عَجَلٍ | : خلق الإنسان من عجل... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| عَجُولًا | : ويدع الإنسان بالشر دعاءه بالخير وكان الإنسان عجولا | ١١ | ك الإسراء | ١٧ |
| الْعِجْلَ | : ثم اتخذتم العجل من بعده وأنتم ظالمون ... ... | ٥١ | م البقرة | ٢ |
| (٨) | يا قوم إنكم ظلمتم أنفسكم باتخاذكم العجل ... ... ... | ٥٤ | م « | ٢ |
| | ثم اتخذتم العجل من بعده وأنتم ظالمون ... ... ... | ٩٢ | م « | ٢ |
| | قالوا سمعنا وعصينا وأشربوا فى قلوبهم العجل بكفرهم | ٩٣ | م « | ٢ |
| | ثم اتخذوا العجل من بعد ما جاءتهم البينات ... ... | ١٥٣ | م النساء | ٤ |
| | إن الذين اتخذوا العجل سينالهم غضب من ربهم | ١٥٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | قالوا سلاما قال سلام فما لبث أن جاء بعجل حنيذ | ٦٩ | ك هود | ١١ |
| | فراغ إلى أهله فجاء بعجل سمين ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك الذاريات | ٥١ |
| عِجْلًا | : واتخذ قوم موسى من بعده من حليهم عجلا جسدا | | | |
| (٢) | له خوار ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | فأخرج لهم عجلا جسدا له خوار ... ... ... ... ... | ٨٨ | ك طه | ٢٠ |
| | ✦✦✦ | | | |
| أَعْجَمِيٌّ | : لسان الذى يلحدون إليه أعجمى ... ... ... | ١٠٣ | ك النحل | ١٦ |
| (٢) | أأعجمى وعربى قل هو للذين آمنوا هدى وشفاء | ٤٤ | ك فصلت | ٤١ |
| أَعْجَمِيًّا | : ولو جعلناه قرآنا أعجميا لقالوا لولا فصلت آياته | ٤٤ | ك « | ٤١ |
| الْأَعْجَمِينَ | : ولو نزلناه على بعض الأعجمين . فقرأه عليهم ما كانوا به مؤمنين ... ... ... ... ... ... ... | ١٩٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| عَدَدَهُمْ | : لقد أحصاهم وعدهم عدا ... ... ... ... ... ... | ٩٤ | ك مريم | ١٩ |
| تَعُدُّوا | : وإن تعدوا نعمة الله لا تحصوها إن الإنسان لظلوم كفار | ٣٤ | ك إبراهيم | ١٤ |
| (٢) | وإن تعدوا نعمة الله لا تحصوها إن الله لغفور رحيم | ١٨ | ك النحل | ١٦ |
| تَعُدُّونَ | : وإن يوما عند ربك كألف سنة مما تعدون | ٤٧ | م الحج | ٢٢ |
| (٢) | ثم يعرج إليه فى يوم كان مقداره ألف سنة مما تعدون | ٥ | ك السجدة | ٣٢ |
| نَعُدُّ | : فلا تعجل عليهم إنما نعد لهم عدا ... ... ... ... | ٨٤ | ك مريم | ١٩ |
| نَعُدُّهُمْ | : وقالوا ما لنا لا نرى رجالا كنا نعدهم من الأشرار | ٦٢ | ك ص | ٣٨ |
| عَدَّدَهُ | : ويل لكل همزة لمزة . الذى جمع مالا وعدده ... | ٢ | ك الهمزة | ١٠٤ |
| أَعَدَّ | : وغضب الله عليه ولعنه وأعد له عذابا عظيما ... ... | ٩٣ | م النساء | ٤ |
| (١٤) | وخذوا حذركم إن الله أعد للكافرين عذابا مهينا ... | ١٠٢ | م « | ٤ |
| | أعد الله لهم جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها | ٨٩ | م التوبة | ٩ |
| | وأعد لهم جنات تجرى تحتها الأنهار ... ... ... ... | ١٠٠ | م « | ٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَعَدَّ: | ليسئل الصادقين عن صدقهم وأعدّ للكافرين عذابا أليما | ٨ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | فإن الله أعدّ للمحسنات منكن أجرا عظيما ... ... ... | ٢٩ | م « | ٣٣ |
| | أعدّ الله لهم مغفرة وأجرا عظيما ... ... ... ... | ٣٥ | م « | ٣٣ |
| | تحيتهم يوم يلقونه سلام وأعدّ لهم أجرا كريما ... ... | ٤٤ | م « | ٣٣ |
| | لعنهم الله فى الدنيا والآخرة وأعدّ لهم عذابا مهينا ... | ٥٧ | م « | ٣٣ |
| | إن الله لعن الكافرين وأعدّ لهم سعيرا ... ... ... | ٦٤ | م « | ٣٣ |
| | وغضب الله عليهم ولعنهم وأعدّ لهم جهنم وساءت مصيرا | ٦ | م الفتح | ٤٨ |
| | أعدّ الله لهم عذابا شديدا إنهم ساء ما كانوا يعملون | ١٥ | م المجادلة | ٥٨ |
| | أعدّ الله لهم عذابا شديدا فاتقوا الله يا أولى الألباب | ١٠ | م الطلاق | ٦٥ |
| | يدخل من يشاء فى رحمته والظالمين أعدّ لهم عذابا أليما | ٣١ | م الإنسان | ٧٦ |
| أَعَدُّوا: | ولو أرادوا الخروج لأعدّوا له عدّة ... ... ... | ٤٦ | م التوبة | ٩ |
| أَعِدُّوا: | وأعدّوا لهم ما استطعتم من قوة ومن رباط الخيل | ٦٠ | م الأنفال | ٨ |
| أُعِدَّتْ: | فاتقوا النار التى وقودها الناس والحجارة أعدّت | | | |
| (٤) | للكافرين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | م البقرة | ٢ |
| | واتقوا النار التى أعدت للكافرين ... ... ... ... | ١٣١ | م آل عمران | ٣ |
| | وجنة عرضها السموات والأرض أعدّت للمتقين ... | ١٣٣ | م « | ٣ |
| | أعدّت للذين آمنوا بالله ورسله ... ... ... ... | ٢١ | م الحديد | ٥٧ |
| تَعْتَدُّونَهَا: | فما لكم عليهن من عدّة تعتدونها ... ... ... ... | ٤٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| عَدًّا: | فلا تعجل عليهم إنما نعدّ لهم عدا ... ... ... ... | ٨٤ | ك مريم | ١٩ |
| (٢) | لقد أحصاهم وعدّهم عدا ... ... ... ... ... | ٩٤ | ك « | ١٩ |
| الْعَادِّينَ: | قالوا لبثنا يوم أو بعض يوم فسئل العادين ... | ١١٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| عَدَدَ: | وقدّره منازل لتعلموا عدد السنين والحساب ... ... | ٥ | ك يونس | ١٠ |
| (٣) | لتبتغوا فضلا من ربكم ولتعلموا عدد السنين والحساب | ١٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| | قال كم لبثتم فى الأرض عدد سنين ... ... ... ... | ١١٢ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| عَدَدًا: | فضربنا على آذانهم فى الكهف سنين عددا ... ... | ١١ | ك الكهف | ١٨ |
| (٣) | فسيعلمون من أضعف ناصرا وأقل عددا ... ... ... | ٢٤ | ك الجن | ٧٢ |
| | وأحاط بما لديهم وأحصى كل شىء عددا ... ... | ٢٨ | ك « | ٧٢ |
| عِدَّةٍ: | فمن كان منكم مريضا أو على سفر فعدة من أيام أخر | ١٨٤ | م البقرة | ٢ |
| (٧) | ومن كان مريضا أو على سفر فعدة من أيام أخر | ١٨٥ | م « | ٢ |
| | يريد الله بكم اليسر ولا يريد بكم العسر ولتكملوا العدة | ١٨٥ | م « | ٢ |
| | إن عدة الشهور عند الله اثنا عشر شهرا فى كتاب الله | ٣٦ | م التوبة | ٩ |
| | يحلونه عاما ويحرمونه عاما ليواطئوا عدة ما حرم الله | ٣٧ | م « | ٩ |
| | فما لكم عليهن من عدة تعتدونها ... ... ... ... | ٤٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | إذا طلقتم النساء فطلقوهن لعدّتهن وأحصوا العدّة ... | ١ | م الطلاق | ٦٥ |
| عِدَّتِهِمْ: | قل ربى أعلم بعدّتهم ما يعلمهم إلا قليل ... ... | ٢٢ | ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | وما جعلنا عدّتهم إلا فتنة للذين كفروا ... ... ... | ٣١ | ك المدثر | ٧٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عِدَّتَهُنَّ: | إذا طلقتم النساء فطلقوهن لعدّتهن وأحصوا العدة | ١ | م الطلاق | ٦٥ |
| (٢) | إن ارتبتم فعدّتهن ثلاثة أشهر... ... ... ... ... | ٤ | م « | ٦٥ |
| عُدَّةً: | ولو أرادوا الخروج لأعدّوا له عدّة ... ... ... | ٤٦ | م التوبة | ٩ |
| مَعْدُودٍ: | وما نؤخره إلا لأجل معدود ... ... ... ... | ١٠٤ | ك هود | ١١ |
| مَعْدُودَةً: | وقالوا لن تمسنا النار إلا أياما معدودة ... ... | ٨٠ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | ولئن أخرنا عنهم العذاب إلى أمة معدودة ليقولن ما يحبسه | ٨ | ك هود | ١١ |
| | وشروه بثمن بخس دراهم معدودة... ... ... ... | ٢٠ | ك يوسف | ١٢ |
| مَعْدُودَاتٍ: | أياما معدودات ... ... ... ... ... ... | ١٨٤ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | واذكروا الله فى أيام معدودات ... ... ... ... | ٢٠٣ | م « | ٢ |
| | ذلك بأنهم قالوا لن تمسنا النار إلا أياما معدودات | ٢٤ | م آل عمران | ٣ |
| | ✦✦✦ | | | |
| عَدَسِهَا: | من بقلها وقثائها وفومها وعدسها وبصلها... ... | ٦١ | م البقرة | ٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| فَعَدَلَكَ: | ما غرك بربك الكريم . الذى خلقك فسواك فعدلك | ٧ | ك الانفطار | ٨٢ |
| لِأَعْدِلَ: | وأمرت لأعدل بينكم ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| تَعْدِلْ: | وإن تعدل كل عدل لا يؤخذ منها ... ... ... ... | ٧٠ | ك الأنعام | ٦ |
| تَعْدِلُوا: | فإن خفتم ألا تعدلوا فواحدة أو ما ملكت أيمانكم | ٣ | م النساء | ٤ |
| (٤) | ولن تستطيعوا أن تعدلوا بين النساء ولو حرصتم ... | ١٢٩ | م « | ٤ |
| | فلا تتبعوا الهوى أن تعدلوا... ... ... ... ... | ١٣٥ | م « | ٤ |
| | ولا يجرمنكم شنآن قوم على ألا تعدلوا... ... ... | ٨ | م المائدة | ٥ |
| يَعْدِلُونَ: | ثم الذين كفروا بربهم يعدلون ... ... ... ... | ١ | ك الأنعام | ٦ |
| (٥) | والذين لا يؤمنون بالآخرة وهم بربهم يعدلون ... ... | ١٥٠ | ك « | ٦ |
| | ومن قوم موسى أمة يهدون بالحق وبه يعدلون... ... | ١٥٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | وممن خلقنا أمة يهدون بالحق وبه يعدلون ... ... | ١٨١ | ك « | ٧ |
| | أإله مع الله بل هم قوم يعدلون ... ... ... ... | ٦٠ | ك النمل | ٢٧ |
| اعْدِلُوا: | اعدلوا هو أقرب للتقوى واتقوا الله ... ... ... | ٨ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | وإذا قلتم فاعدلوا ولو كان ذا قربى ... ... ... | ١٥٢ | م الأنعام | ٦ |
| عَدْلٌ: | ولا يقبل منها شفاعة ولا يؤخذ منها عدل ... ... | ٤٨ | م البقرة | ٢ |
| (١٣) | ولا يقبل منها عدل ولا تنفعها شفاعة... ... ... | ١٢٣ | م « | ٢ |
| | وليكتب بينكم كاتب بالعدل ... ... ... ... ... | ٢٨٢ | م « | ٢ |
| | أو لا يستطيع أن يمل هو فليملل وليه بالعدل ... ... | ٢٨٢ | م « | ٢ |
| | وإذا حكمتم بين الناس أن تحكموا بالعدل... ... ... | ٥٨ | م النساء | ٤ |
| | جزاء مثل ما قتل من النعم يحكم به ذوا عدل منكم ... | ٩٥ | م المائدة | ٥ |
| | أو عدل ذلك صياما ليذوق وبال أمره ... ... ... | ٩٥ | م « | ٥ |
| | اثنان ذوا عدل منكم أو آخران من غيركم ... ... ... | ١٠٦ | م « | ٥ |
| | وإن تعدل كل عدل لا يؤخذ منها ... ... ... ... | ٧٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | هل يستوى هو ومن يأمر بالعدل وهو على صراط مستقيم | ٧٦ | ك النحل | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| عَدْلٌ | : إن الله يأمر بالعدل والإحسان وإيتاء ذى القربى | ٩٠ ك النحل | ١٦ |
| | فإن فاءت فأصلحوا بينهما بالعدل وأقسطوا ... ... | ٩ م الحجرات | ٤٩ |
| | وأشهدوا ذوى عدل منكم وأقيموا الشهادة لله ... ... | ٢ م الطلاق | ٦٥ |
| عَدْلًا | : وتمت كلمة ربك صدقا وعدلا لا مبدل لكلماته ... | ١١٥ ك الأنعام | ٦ |
| | ✦✦✦ | | |
| عَدْنٍ | : ومساكن طيبة فى جنات عدن ورضوان من الله أكبر | ٧٢ م التوبة | ٩ |
| (١١) | جنات عدن يدخلونها ومن صلح من آبائهم وأزواجهم | ٢٣ م الرعد | ١٣ |
| | جنات عدن يدخلونها تجرى من تحتها الأنهار ... ... | ٣١ ك النحل | ١٦ |
| | أولئك لهم جنات عدن تجرى من تحتهم الأنهار ... ... | ٣١ ك الكهف | ١٨ |
| | جنات عدن التى وعد الرحمن عباده بالغيب ... ... | ٦١ ك مريم | ١٩ |
| | جنات عدن تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها ... | ٧٦ ك طه | ٢٠ |
| | جنات عدن يدخلونها يحلون فيها من أساور من ذهب | ٣٣ ك فاطر | ٣٥ |
| | جنات عدن مفتحة لهم الأبواب... ... ... ... ... | ٥٠ ك ص | ٣٨ |
| | ربنا وأدخلهم جنات عدن التى وعدتهم ... ... ... | ٨ ك غافر | ٤٠ |
| | ومساكن طيبة فى جنات عدن ... .. ... ... ... | ١٢ م الصف | ٦١ |
| | جزاؤهم عند ربهم جنات عدن تجرى من تحتها الأنهار | ٨ م البينة | ٩٨ |
| | ✦✦✦ | | |
| تَعْدُ | : ولا تعدُ عيناك عنهم تريد زينة الحياة الدنيا ... ... | ٢٨ م الكهف | ١٨ |
| تَعْدُوا | : وقلنا لهم لا تعدوا فى السبت وأخذنا منهم ميثاقا غليظا | ١٥٤ م النساء | ٤ |
| يَعْدُونَ | : وسئلهم عن القرية التى كانت حاضرة البحر إذ | | |
| | يعدون فى السبت ... ... ... ... ... ... ... | ١٦٣ م الأعراف | ٧ |
| عَادَيْتُمْ | : عسى الله أن يجعل بينكم وبين الذين عاديتم منهم مودة | ٧ م الممتحنة | ٦٠ |
| يَتَعَدَّ | : ومن يتعد حدود الله فأولئك هم الظالمون ... ... | ٢٢٩ م البقرة | ٢ |
| (٣) | ومن يعص الله ورسوله ويتعد حدوده يدخله نارا خالدا فيها | ١٤ م النساء | ٤ |
| | ومن يتعد حدود الله فقد ظلم نفسه ... ... ... ... | ١ م الطلاق | ٦٥ |
| أَعْتَدَى | : فمن اعتدى بعد ذلك فله عذاب أليم ... ... ... | ١٧٨ م البقرة | ٢ |
| (٤) | فمن اعتدى عليكم ... ... ... ... ... ... ... | ١٩٤ م » | ٢ |
| | فاعتدوا عليه بمثل ما اعتدى عليكم ... ... ... ... | ١٩٤ م » | ٢ |
| | فمن اعتدى بعد ذلك فله عذاب أليم ... ... ... ... | ٩٤ م المائدة | ٥ |
| أَعْتَدَوْا | : ولقد علمتم الذين اعتدوا منكم فى السبت ... ... | ٦٥ م البقرة | ٢ |
| أَعْتَدَيْنَا | : لشهادتنا أحق من شهادتهما وما اعتدينا... ... | ١٠٧ م المائدة | ٥ |
| تَعْتَدُوا | : وقاتلوا فى سبيل الله الذين يقاتلونكم ولا تعتدوا | ١٩٠ م البقرة | ٢ |
| (٤) | ولا تمسكوهن ضرارا لتعتدوا ... ... ... ... ... | ٢٣١ م » | ٢ |
| | ولا يجرمنكم شنئان قوم أن صدوكم عن المسجد الحرام | | |
| | أن تعتدوا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢ م المائدة | ٥ |
| | لا تحرموا طيبات ما أحل الله لكم ولا تعتدوا... ... | ٨٧ م » | ٥ |
| تَعْتَدُوهَا | : تلك حدود الله فلا تعتدوها ... ... ... ... | ٢٢٩ م البقرة | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| يَعْتَدُونَ | : ذلك بما عصوا وكانوا يعتدون... ... ... ... | ٦١ م البقرة | ٢ |
| (٣) | ويقتلون الأنبياء بغير حق ذلك بما عصوا وكانوا يعتدون | ١١٢ م آل عمران | ٣ |
| | ذلك بما عصوا وكانوا يعتدون ... ... ... ... ... | ٧٨ م المائدة | ٥ |
| فَاعْتَدُوا | : فمن اعتدى عليكم فاعتدوا عليه بمثل ما اعتدى عليكم | ١٩٤ م البقرة | ٢ |
| عَدْوًا | : فيسبوا الله عدوا بغير علم ... ... ... ... ... | ١٠٨ ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | فأتبعهم فرعون وجنوده بغيا وعدوا ... ... ... ... | ٩٠ ك يونس | ١٠ |
| عَادٍ | : فمن اضطر غير باغ ولا عاد فلا إثم عليه إن الله غفور رحيم | ١٧٣ م البقرة | ٢ |
| (٣) | فمن اضطر غير باغ ولا عاد فإن ربك غفور رحيم ... | ١٤٥ ك الأنعام | ٦ |
| | فمن اضطر غير باغ ولا عاد فإن الله غفور رحيم ... | ١١٥ ك النحل | ١٦ |
| الْعَادُونَ | : فمن ابتغى وراء ذلك فأولئك هم العادون... ... | ٧ ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٣) | بل أنتم قوم عادون... ... ... ... ... ... ... | ١٦٦ ك الشعراء | ٢٦ |
| | فمن ابتغى وراء ذلك فأولئك هم العادون ... ... | ٣١ ك المعارج | ٧٠ |
| الْعَادِيَاتِ | : والعاديات ضبحا... ... ... ... ... ... ... | ١ ك العاديات | ١٠٠ |
| مُعْتَدٍ | : ألقيا فى جهنم كل كفار عنيد . مناع للخير معتد مريب | ٢٥ ك ق | ٥٠ |
| (٣) | مناع للخير معتد أثيم ... ... ... ... ... ... | ١٢ ك القلم | ٦٨ |
| | وما يكذب به إلا كل معتد أثيم ... ... ... ... | ١٢ ك المطففين | ٨٣ |
| الْمُعْتَدُونَ | : وأولئك هم المعتدون ... ... ... ... ... ... | ١٠ م التوبة | ٩ |
| الْمُعْتَدِينَ | : ولا تعتدوا إن الله لا يحب المعتدين ... ... | ١٩٠ م البقرة | ٢ |
| (٥) | ولا تعتدوا إن الله لا يحب المعتدين ... ... ... ... | ٨٧ م المائدة | ٥ |
| | إن ربك هو أعلم بالمعتدين ... ... ... ... ... | ١١٩ ك الأنعام | ٦ |
| | ادعوا ربكم تضرعا وخفية إنه لا يحب المعتدين ... | ٥٥ ك الأعراف | ٧ |
| | كذلك نطبع على قلوب المعتدين ... ... ... ... | ٧٤ ك يونس | ١٠ |
| عَدُوٌّ | : وقلنا اهبطوا بعضكم لبعض عدو ... ... ... ... | ٣٦ م البقرة | ٢ |
| (٢٥) | فإن الله عدو للكافرين ... ... ... ... ... ... | ٩٨ م » | ٢ |
| | ولا تتبعوا خطوات الشيطان إنه لكم عدو مبين ... | ١٦٨ م » | ٢ |
| | ولا تتبعوا خطوات الشيطان إنه لكم عدو مبين ... | ٢٠٨ م » | ٢ |
| | فإن كان من قوم عدو لكم وهو مؤمن فتحرير رقبة مؤمنة | ٩٢ م النساء | ٤ |
| | ولا تتبعوا خطوات الشيطان إنه لكم عدو مبين ... | ١٤٢ ك الأنعام | ٦ |
| | وأقل لكما إن الشيطان لكما عدو مبين ... ... ... | ٢٢ ك الأعراف | ٧ |
| | قال اهبطوا بعضكم لبعض عدو ... ... ... ... ... | ٢٤ ك » | ٧ |
| | ترهبون به عدو الله وعدوكم ... ... ... ... ... | ٦٠ م الأنفال | ٨ |
| | فلما تبين له أنه عدو لله تبرأ منه ... ... ... ... | ١١٤ م التوبة | ٩ |
| | ولا ينالون من عدو نيلا إلا كتب لهم به عمل صالح | ١٢٠ م » | ٩ |
| | إن الشيطان للإنسان عدو مبين ... ... ... ... ... | ٥ ك يوسف | ١٢ |
| | أفتتخذونه وذريته أولياء من دونى وهم لكم عدو ... | ٥٠ ك الكهف | ١٨ |
| | فاقذفيه فى اليم فليلقه اليم بالساحل يأخذه عدو لى ... | ٣٩ ك طه | ٢٠ |
| | وعدو له وألقيت عليك محبة منى ... ... ... ... | ٣٩ ك » | ٢٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عَدُوٌّ: | فقلنا يا آدم إن هذا عدو لك ولزوجك ... ... ... | ١١٧ | ك طـه | ٢٠ |
| | قال اهبطا منها جميعا بعضكم لبعض عدو ... ... ... | ١٢٣ | ك « | ٢٠ |
| | فإنهـم عدو لى إلا رب العالمين ... ... ... ... ... | ٧٧ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| | قال هذا من عمل الشيطان إنه عدو مضل مبين ... ... | ١٥ | ك القصص | ٢٨ |
| | فلما أن أراد أن يبطش بالذى هو عدو لهما قال يا موسى أتريد أن تقتلنى كما قتلت نفسا بالأمس ... ... | ١٩ | ك « | ٢٨ |
| | إن الشيطان لكم عدو فاتخذوه عدوا ... ... ... ... | ٦ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | أن لا تعبدوا الشيطان إنه لكم عدو مبين ... ... ... | ٦٠ | ك يـس | ٣٦ |
| | ولا يصدنكم الشيطان إنه لكم عدو مبين ... ... ... | ٦٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | الأخلاء يومئذ بعضهم لبعض عدو إلا المتقين ... ... | ٦٧ | ك « | ٤٣ |
| | هم العدو فاحذرهم قاتلهم الله أنى يؤفكون ... ... | ٤ | م المنافقون | ٦٣ |
| عَدُوًّا: | قل من كان عدوا لجبريل فإنه نزله على قلبك... ... | ٩٧ | م البقـرة | ٢ |
| (١٠) | من كان عدوا لله وملائكته ورسله وجبريل وميكال فإن الله عدو للكافرين ... ... ... ... ... ... | ٩٨ | م « | ٢ |
| | إن الكافرين كانوا لكم عدوا مبينا ... ... ... ... | ١٠١ | م النسـاء | ٤ |
| | وكذلك جعلنا لكل نبى عدوا شياطين الإنس والجن | ١١٢ | ك الأنعـام | ٦ |
| | فقل لن تخرجوا معى أبدا ولن تقاتلوا معى عدوا ... | ٨٣ | م التـوبة | ٩ |
| | إن الشيطان كان للإنسان عدوا مبينا ... ... ... ... | ٥٣ | ك الإسـراء | ١٧ |
| | وكذلك جعلنا لكل نبى عدوا من المجرمين... ... ... | ٣١ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| | فالتقطه آل فرعون ليكون لهم عدوا وحزنا ... ... ... | ٨ | ك القصص | ٢٨ |
| | إن الشيطان لكم عدو فاتخذوه عدوا ... ... ... ... | ٦ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | إن من أزواجكم وأولادكم عدوا لكم فاحذروهم... ... | ١٤ | م التغـابن | ٦٤ |
| عَدُوِّكُمْ: | قال عسى ربكم أن يهلك عدوكم ويستخلفكم فى الأرض | ١٢٩ | ك الأعراف | ٧ |
| (٤) | ترهبون به عدو الله وعدوكم وآخرين من دونهم... ... | ٦٠ | م الأنفـال | ٨ |
| | يا بنى إسرائيل قد أنجيناكم من عدوكم ... ... ... | ٨٠ | ك طـه | ٢٠ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تتخذوا عدوى وعدوكم أولياء ... | ١ | م الممتحنـة | ٦٠ |
| عَدُوِّهِ: | فوجد فيها رجلين يقتتلان هذا من شيعته وهذا من عدوه | ١٥ | ك القصص | ٢٨ |
| (٢) | فاستغاثه الذى من شيعته على الذى من عدوه ... ... | ١٥ | ك « | ٢٨ |
| عَدُوِّهِمْ: | فأيدنا الذين آمنوا على عدوهم فأصبحوا ظاهرين | ١٤ | م الصـف | ٦١ |
| عَدُوِّى: | يأيها الذين آمنوا لا تتخذوا عدوى وعدوكم أولياء | ١ | م الممتحنـة | ٦٠ |
| أَعْدَاءً: | واذكروا نعمة الله عليكم إذ كنتم أعداء فألف بين قلوبكم | ١٠٣ | م آل عمران | ٣ |
| (٦) | فلا تشمت بى الأعداء ... ... ... ... ... ... | ١٥٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | ويوم يحشر أعداء الله إلى النار فهم يوزعون ... ... | ١٩ | ك فصـلت | ٤١ |
| | ذلك جزاء أعداء الله النار لهم فيها دار الخلد ... ... | ٢٨ | ك « | ٤١ |
| | وإذا حشر الناس كانوا لهم أعداء ... ... ... ... | ٦ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | إن يثقفوكم يكونوا لكم أعداء ... ... ... ... ... | ٢ | م الممتحنـة | ٦٠ |
| بِأَعْدَائِكُمْ: | والله أعلم بأعدائكم وكفى بالله وليا وكفى بالله نصيرا | ٤٥ | م النسـاء | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الْعَدَاوَةَ: | فأغرينا بينهم العـداوة والبغضاء إلى يوم القيامة | ١٤ | م المائدة | ٥ |
| (٦) | وألقينا بينهم العداوة والبغضاء إلى يوم القيامة ... ... | ٦٤ | م « | ٥ |
| | لتجدن أشد الناس عداوة للذين آمنوا اليهود ... ... | ٨٢ | م « | ٥ |
| | إنما يريد الشيطان أن يوقع بينكم العداوة والبغضاء | ٩١ | م « | ٥ |
| | فإذا الذى بينك وبينه عداوة كأنه ولى حميم ... ... | ٣٤ | ك فصـلت | ٤١ |
| | وبدا بيننا وبينكم العداوة والبغضاء أبدا ... ... ... | ٤ | م الممتحنـة | ٦٠ |
| الْعُدْوَانِ: | تظاهرون عليهم بالإثم والعدوان ... ... ... | ٨٥ | م البقـرة | ٢ |
| (٧) | فإن انتهوا فلا عدوان إلا على الظالمين ... ... ... | ١٩٣ | م « | ٢ |
| | وتعاونوا على البر والتقوى ولا تعاونوا على الإثم والعدوان | ٢ | م المائدة | ٥ |
| | وترى كثيرا منهم يسارعون فى الإثم والعدوان... ... | ٦٢ | م « | ٥ |
| | قال ذلك بينى وبينك أيما الأجلين قضيت فلا عدوان علىّ | ٢٨ | ك القصص | ٢٨ |
| | ويتناجون بالإثم والعدوان ومعصية الرسول.... ... | ٨ | م المجادلة | ٥٨ |
| | يأيها الذين آمنوا إذا تناجيتم فلا تتناجوا بالإثم والعدوان | ٩ | م « | ٥٨ |
| عُدْوَانًا: | ومن يفعل ذلك عدوانا وظلما فسوف نصليه نارا | ٣٠ | م النسـاء | ٤ |
| بِالْعُدْوَةِ: | إذ أنتم بالعدوة الدنيا ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | م الأنفـال | ٨ |
| (٢) | وهم بالعدوة القصوى والركب أسفل منكم... ... ... | ٤٢ | م « | ٨ |

* * *

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عَذَّبَ: | وأنزل جنودا لم تروها وعذب الذين كفروا... ... | ٢٦ | م التـوبة | ٩ |
| لَعَذَّبْنَا: | لو تزيلوا لعذبنا الذين كفروا منهم عذابا أليما ... | ٢٥ | م الفتـح | ٤٨ |
| عَذَّبْنَاهَا: | فحاسبناها حسابا شـديدا وعذبناها عذابا نكرا | ٨ | م الطـلاق | ٦٥ |
| لَعَذَّبَهُمْ: | ولولا أن كتب الله عليهم الجلاء لعذبهم فى الدنيا | ٣ | م الحشـر | ٥٩ |
| لَأُعَذِّبَنَّهُ: | لأعذبنه عذابا شديدا أو لأذبحنه ... ... ... | ٢١ | ك النمـل | ٢٧ |
| أُعَذِّبُهُ: | قال الله إنى منزلها عليكم فمن يكفر بعد منكم فإنى أعذبه عذابا | ١١٥ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | لا أعذبه أحدا من العالمين ... ... ... ... ... | ١١٥ | م « | ٥ |
| فَأُعَذِّبُهُمْ: | فأما الذين كفروا فأعذبهم عذابا شديدا... ... | ٥٦ | م آل عمران | ٣ |
| تُعَذِّبَ: | إما أن تعذب وإما أن تتخذ فيهم حسنا ... ... | ٨٦ | م الكهف | ١٨ |
| تُعَذِّبْهُمْ: | إن تعـذبهم فإنهم عبادك ... ... ... ... ... | ١١٨ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | إنا رسولا ربك فأرسل معنا بنى إسرائيل ولا تعذبهم | ٤٧ | ك طـه | ٢٠ |
| نُعَذِّبْ: | إن نعف عن طائفة منكم نعذب طائفة... ... ... | ٦٦ | م التـوبة | ٩ |
| نُعَذِّبُهُ: | قال أما من ظلم فسوف نعذبه ثم يرد إلى ربه فيعذبه | ٨٧ | م الكهف | ١٨ |
| سَنُعَذِّبُهُمْ: | سنعذبهم مرتين ثم يردون إلى عـذاب عظيم | ١٠١ | م التـوبة | ٩ |
| يُعَذِّبُ: | فيغفر لمن يشاء ويعذب من يشاء والله على كل شىء قدير | ٢٨٤ | م البقـرة | ٢ |
| (٩) | يغفر لمن يشاء ويعذب من يشاء والله غفور رحيم ... | ١٢٩ | م آل عمران | ٣ |
| | يغفر لمن يشاء ويعذب من يشاء ولله ملك السموات والأرض وما بينهما... ... ... ... ... ... | ١٨ | م المائدة | ٥ |
| | يعذب من يشاء ويغفر لمن يشاء والله على كل شىء قدير | ٤٠ | م « | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يُعَذِّبُ | : يعذب من يشاء ويرحم من يشاء وإليه تقلبون ... | ٢١ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ليجزى الله الصادقين بصدقهم ويعذب المنافقين إن شاء | ٢٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ليعذب الله المنافقين والمنافقات ... ... ... ... ... | ٧٣ | م « | ٣٣ |
| | ويعذب المنافقين والمنافقات والمشركين والمشركات | ٦ | م الفتح | ٤٨ |
| | فيومئذ لا يعذب عذابه أحد ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك الفجر | ٨٩ |
| يُعَذِّبُكُمْ | : قل فلم يعذبكم بذنوبكم بل أنتم بشر ممن خلق ... | ١٨ | م المائدة | ٥ |
| (٤) | إلا تنفروا يعذبكم عذابا أليما ويستبدل قوما غيركم... | ٣٩ | م التوبة | ٩ |
| | ربكم أعلم بكم إن يشأ يرحمكم أو إن يشأ يعذبكم ... | ٥٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وإن تتولوا كما توليتم من قبل يعذبكم عذابا أليما ... | ١٦ | م الفتح | ٤٨ |
| يُعَذِّبُنَا | : ويقولون في أنفسهم لولا يعذبنا الله بما نقول... | ٨ | م المجادلة | ٥٨ |
| يُعَذِّبُهُ | : ثم يرد إلى ربه فيعذبه عذابا نكرا ... ... ... ... | ٨٧ | م الكهف | ١٨ |
| (٣) | ومن يتول يعذبه عذابا أليما... ... ... ... ... ... | ١٧ | م الفتح | ٤٨ |
| | إلا من تولى وكفر . فيعذبه الله العذاب الأكبر ... | ٢٤ | ك الغاشية | ٨٨ |
| يُعَذِّبَهُمْ | : ليس لك من الأمر شيء أو يتوب عليهم أو يعذبهم | ١٢٨ | م آل عمران | ٣ |
| (٩) | وأما الذين استنكفوا واستكبروا فيعذبهم عذابا أليما | ١٧٣ | م النساء | ٤ |
| | وما كان الله ليعذبهم وأنت فيهم ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك الأنفال | ٨ |
| | وما لهم ألا يعذبهم الله وهم يصدون عن المسجد الحرام | ٣٤ | ك « | ٨ |
| | قاتلوهم يعذبهم الله بأيديكم ويخزهم وينصركم عليهم | ١٤ | م التوبة | ٩ |
| | إنما يريد الله ليعذبهم بها في الحياة الدنيا ... ... | ٥٥ | م « | ٩ |
| | وإن يتولوا يعذبهم الله عذابا أليما في الدنيا والآخرة | ٧٤ | م « | ٩ |
| | إنما يريد الله أن يعذبهم بها في الدنيا ... ... ... | ٨٥ | م « | ٩ |
| | وآخرون مرجون لأمر الله إما يعذبهم وإما يتوب عليهم | ١٠٦ | م « | ٩ |
| الْعَذَابُ | : وعلى أبصارهم غشاوة ولهم عذاب عظيم ... ... | ٧ | م البقرة | ٢ |
| (٢٦٤) | ولهم عذاب أليم بما كانوا يكذبون ... ... ... ... | ١٠ | م « | ٢ |
| | وإذ نجيناكم من آل فرعون يسومونكم سوء العذاب | ٤٩ | م « | ٢ |
| | ويوم القيامة يردون إلى أشد العذاب ... ... ... | ٨٥ | م « | ٢ |
| | فلا يخفف عنهم العذاب ولا هم ينصرون ... ... ... | ٨٦ | م « | ٢ |
| | فباءو بغضب على غضب وللكافرين عذاب مهين ... | ٩٠ | م « | ٢ |
| | وما هو بمزحزحه من العذاب أن يعمر... ... ... ... | ٩٦ | م « | ٢ |
| | وقولوا انظرنا واسمعوا وللكافرين عذاب أليم ... ... | ١٠٤ | م « | ٢ |
| | لهم في الدنيا خزى ولهم في الآخرة عذاب عظيم... ... | ١١٤ | م « | ٢ |
| | قال ومن كفر فأمتعه قليلا ثم أضطره إلى عذاب النار | ١٢٦ | م « | ٢ |
| | خالدين فيها لا يخفف عنهم العذاب ولا هم ينظرون ... | ١٦٢ | م « | ٢ |
| | ولو يرى الذين ظلموا إذ يرون العذاب أن القوة لله جميعا | ١٦٥ | م « | ٢ |
| | وأن الله شديد العذاب ... ... ... ... ... ... ... | ١٦٥ | م « | ٢ |
| | إذ تبرأ الذين اتبعوا من الذين اتبعوا ورأوا العذاب | ١٦٦ | م « | ٢ |
| | ولا يكلمهم الله يوم القيامة ولا يزكيهم ولهم عذاب أليم | ١٧٤ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الْعَذَابُ | : أولئك الذين اشتروا الضلالة بالهدى والعذاب | | | |
| | بالمغفرة ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٧٥ | م البقرة | ٢ |
| | فمن اعتدى بعد ذلك فله عذاب أليم ... ... ... ... | ١٧٨ | م « | ٢ |
| | آتنا في الدنيا حسنة وفي الآخرة حسنة وقنا عذاب النار | ٢٠١ | م « | ٢ |
| | إن الذين كفروا بآيات الله لهم عذاب شديد ... ... | ٤ | م آل عمران | ٣ |
| | ربنا إننا آمنا فاغفر لنا ذنوبنا وقنا عذاب النار... | ١٦ | م « | ٣ |
| | فبشرهم بعذاب أليم... ... ... ... ... ... ... ... | ٢١ | م « | ٣ |
| | ولا ينظر إليهم يوم القيامة ولا يزكيهم ولهم عذاب أليم | ٧٧ | م « | ٣ |
| | خالدين فيها لا يخفف عنهم العذاب ولا هم ينظرون ... | ٨٨ | م « | ٣ |
| | أولئك لهم عذاب أليم وما لهم من ناصرين ... ... | ٩١ | م « | ٣ |
| | واختلفوا من بعد ما جاءهم البينات وأولئك لهم عذاب عظيم | ١٠٥ | م « | ٣ |
| | أكفرتم بعد إيمانكم فذوقوا العذاب بما كنتم تكفرون | ١٠٦ | م « | ٣ |
| | يريد الله ألا يجعل لهم حظا في الآخرة ولهم عذاب عظيم | ١٧٦ | م « | ٣ |
| | لن يضروا الله شيئا ولهم عذاب أليم ... ... ... ... | ١٧٧ | م « | ٣ |
| | إنما نملي لهم ليزدادوا إثما ولهم عذاب مهين ... ... | ١٧٨ | م « | ٣ |
| | ونقول ذوقوا عذاب الحريق ... ... ... ... ... ... | ١٨١ | م « | ٣ |
| | فلا تحسبنهم بمفازة من العذاب ... ... ... ... ... | ١٨٨ | م « | ٣ |
| | ولهم عذاب أليم ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٨٨ | م « | ٣ |
| | ربنا ما خلقت هذا باطلا سبحانك فقنا عذاب النار | ١٩١ | م « | ٣ |
| | يدخله نارا خالدا فيها وله عذاب مهين ... ... ... | ١٤ | م النساء | ٤ |
| | فعليهن نصف ما على المحصنات من العذاب ... ... | ٢٥ | م « | ٤ |
| | كلما نضجت جلودهم بدلناهم جلودا غيرها ليذوقوا | | | |
| | العـذاب ... ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٦ | م « | ٤ |
| | ذلك لهم خزى في الدنيا ولهم في الآخرة عذاب عظيم | ٣٣ | م المائدة | ٥ |
| | ليفتدوا به من عذاب يوم القيامة ما تقبل منهم ... | ٣٦ | م « | ٥ |
| | ولهم عذاب أليم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٦ | م « | ٥ |
| | وما هم بخارجين منها ولهم عذاب مقيم ... ... ... | ٣٧ | م « | ٥ |
| | لهم في الدنيا خزى ولهم في الآخرة عذاب عظيم... ... | ٤١ | م « | ٥ |
| | يمسن الذين كفروا منهم عذاب أليم ... ... ... ... | ٧٣ | م « | ٥ |
| | أن سخط الله عليهم وفي العذاب هم خالدون ... ... | ٨٠ | م « | ٥ |
| | فمن اعتدى بعد ذلك فله عذاب أليم ... ... ... ... | ٩٤ | م « | ٥ |
| | قل إني أخاف إن عصيت ربي عذاب يوم عظيم... | ١٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | قال فذوقوا العذاب بما كنتم تكفرون... ... ... ... | ٣٠ | ك « | ٦ |
| | قل أرأيتكم إن أتاكم عذاب الله أو أتتكم الساعة ... | ٤٠ | ك « | ٦ |
| | قل أرأيتكم إن أتاكم عذاب الله بغتة أو جهرة هل | | | |
| | يهلك إلا القوم الظالمون... ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك « | ٦ |
| | والذين كذبوا بآياتنا يمسهم العذاب بما كانوا يفسقون | ٤٩ | ك « | ٦ |
| | لهم شراب من حميم وعذاب أليم بما كانوا يكفرون | ٧٠ | ك « | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| العَذَابُ: اليوم تجزون عذاب الهون بما كنتم تقولون | | | | |
| | على الله غير الحق ... ... ... ... ... ... | ٩٣ | م الأنعام | ٦ |
| | سيصيب الذين أجرموا صغار عند الله وعذاب شديد | ١٢٤ | ك « | ٦ |
| | سنجزى الذين يصدفون عن آياتنا سوء العذاب ... | ١٥٧ | ك « | ٦ |
| | فما كان لكم علينا من فضل فذوقوا العذاب بما كنتم تكسبون | ٣٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | إنى أخاف عليكم عذاب يوم عظيم ... ... ... ... | ٥٩ | ك « | ٧ |
| | ولا تمسوها بسوء فيأخذكم عذاب أليم ... ... ... ... | ٧٣ | ك « | ٧ |
| | وإذ أنجيناكم من آل فرعون يسومونكم سوء العذاب | ١٤١ | ك « | ٧ |
| | وأخذنا الذين ظلموا بعذاب بئيس بما كانوا يفسقون | ١٦٥ | م « | ٧ |
| | ليبعثن عليهم إلى يوم القيامة من يسومهم سوء العذاب | ١٦٧ | م « | ٧ |
| | ذلكم فذوقوه وأن للكافرين عذاب النار... ... ... | ١٤ | م الأنفال | ٨ |
| | فأمطر علينا حجارة من السماء أو ائتنا بعذاب أليم... ... | ٣٢ | ك « | ٨ |
| | فذوقوا العذاب بما كنتم تكفرون ... ... ... ... | ٣٥ | ك « | ٨ |
| | يضربون وجوههم وأدبارهم وذوقوا عذاب الحريق | ٥٠ | م « | ٨ |
| | لولا كتاب من الله سبق لمسكم فيما أخذتم عذاب عظيم | ٦٨ | م « | ٨ |
| | وبشر الذين كفروا بعذاب أليم ... ... ... ... ... | ٣ | م التوبة | ٩ |
| | ولا ينفقونها فى سبيل الله فبشرهم بعذاب أليم ... ... | ٣٤ | م « | ٩ |
| | ونحن نتربص بكم أن يصيبكم الله بعذاب من عنده ... | ٥٢ | م « | ٩ |
| | والذين يؤذون رسول الله لهم عذاب أليم ... ... ... | ٦١ | م « | ٩ |
| | هى حسبهم ولعنهم الله ولهم عذاب مقيم ... ... ... | ٦٨ | م « | ٩ |
| | فيسخرون منهم سخر الله منهم ولهم عذاب أليم ... ... | ٧٩ | م « | ٩ |
| | سيصيب الذين كفروا منهم عذاب أليم ... ... ... | ٩٠ | م « | ٩ |
| | سنعذبهم مرتين ثم يردون إلى عذاب عظيم ... ... | ١٠١ | م « | ٩ |
| | لهم شراب من حميم وعذاب أليم بما كانوا يكفرون | ٤ | ك يونس | ١٠ |
| | إنى أخاف إن عصيت ربى عذاب يوم عظيم ... ... | ١٥ | ك « | ١٠ |
| | ثم قيل للذين ظلموا ذوقوا عذاب الخلد ... ... ... | ٥٢ | ك « | ١٠ |
| | وأسروا الندامة لما رأوا العذاب ... ... ... ... | ٥٤ | ك « | ١٠ |
| | ثم نذيقهم العذاب الشديد بما كانوا يكفرون ... ... | ٧٠ | ك « | ١٠ |
| | واشدد على قلوبهم فلا يؤمنوا حتى يروا العذاب الأليم | ٨٨ | ك « | ١٠ |
| | ولو جاءتهم كل آية حتى يروا العذاب الأليم ... ... | ٩٧ | ك « | ١٠ |
| | لما آمنوا كشفنا عنهم عذاب الخزى فى الحياة الدنيا | ٩٨ | ك « | ١٠ |
| | وإن تولوا فإنى أخاف عليكم عذاب يوم كبير ... ... | ٣ | ك هود | ١١ |
| | ولئن أخرنا عنهم العذاب إلى أمة معدودة ليقولن ما يحبسه | ٨ | ك « | ١١ |
| | وما كان لهم من دون الله من أولياء يضاعف لهم العذاب | ٢٠ | ك « | ١١ |
| | أن لا تعبدوا إلا الله إنى أخاف عليكم عذاب يوم أليم | ٢٦ | ك « | ١١ |
| | فسوف تعلمون من يأتيه عذاب يخزيه ... ... ... | ٣٩ | ك « | ١١ |
| | ويحل عليه عذاب مقيم... ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك « | ١١ |
| | وأمتعهم ثم يمسهم منا عذاب أليم ... ... ... | ٤٨ | ك « | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| العَذَابُ: ونجيناهم من عذاب غليظ ... ... ... ... ... | | ٥٨ | ك هود | ١١ |
| | ولا تمسوها بسوء فيأخذكم عذاب قريب ... ... ... | ٦٤ | ك « | ١١ |
| | إنه قد جاء أمر ربك وإنهم آتيهم عذاب غير مردود | ٧٦ | ك « | ١١ |
| | إنى أراكم بخير وإنى أخاف عليكم عذاب يوم محيط | ٨٤ | ك « | ١١ |
| | سوف تعلمون من يأتيه عذاب يخزيه ومن هو كاذب | ٩٣ | ك « | ١١ |
| | إن فى ذلك لآية لمن خاف عذاب الآخرة ... ... ... | ١٠٣ | ك « | ١١ |
| | إلا أن يسجن أو عذاب أليم ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك يوسف | ١٢ |
| | أفأمنوا أن تأتيهم غاشية من عذاب الله ... ... ... | ١٠٧ | ك « | ١٢ |
| | لهم عذاب فى الحياة الدنيا ... ... ... ... ... | ٣٤ | م الرعد | ١٣ |
| | ولعذاب الآخرة أشق وما لهم من الله من واق... ... | ٣٤ | م « | ١٣ |
| | وويل للكافرين من عذاب شديد ... ... ... ... | ٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | إذ أنجاكم من آل فرعون يسومونكم سوء العذاب ... | ٦ | ك « | ١٤ |
| | وما هو بميت ومن ورائه عذاب غليظ... ... ... ... | ١٧ | ك « | ١٤ |
| | إنا كنا لكم تبعا فهل أنتم مغنون عنا من عذاب الله من شىء | ٢١ | ك « | ١٤ |
| | إن الظالمين لهم عذاب أليم ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك « | ١٤ |
| | وأنذر الناس يوم يأتيهم العذاب ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك « | ١٤ |
| | وأن عذابى هو العذاب الأليم ... ... ... ... ... | ٥٠ | ك الحجر | ١٥ |
| | وأتاهم العذاب من حيث لا يشعرون ... ... ... ... | ٢٦ | ك النحل | ١٦ |
| | أو يأتيهم العذاب من حيث لا يشعرون ... ... ... | ٤٥ | ك « | ١٦ |
| | فزين لهم الشيطان أعمالهم فهو وليهم اليوم ولهم عذاب أليم | ٦٣ | ك « | ١٦ |
| | وإذا رأى الذين ظلموا العذاب فلا يخفف عنهم ... | ٨٥ | ك « | ١٦ |
| | زدناهم عذابا فوق العذاب بما كانوا يفسدون... ... | ٨٨ | ك « | ١٦ |
| | وتذوقوا السوء بما صددتم عن سبيل الله ولكم عذاب عظيم | ٩٤ | ك « | ١٦ |
| | لا يهديهم الله ولهم عذاب أليم ... ... ... ... ... | ١٠٤ | ك « | ١٦ |
| | فعليهم غضب من الله ولهم عذاب عظيم ... ... ... | ١٠٦ | ك « | ١٦ |
| | فكذبوه فأخذهم العذاب وهم ظالمون ... ... ... ... | ١١٣ | ك « | ١٦ |
| | متاع قليل ولهم عذاب أليم ... ... ... ... ... ... | ١١٧ | ك « | ١٦ |
| | إن عذاب ربك كان محذورا ... ... ... ... ... | ٥٧ | م الإسراء | ١٧ |
| | إلا أن تأتيهم سنة الأولين أو يأتيهم العذاب قبلا | ٥٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | لو يؤاخذهم بما كسبوا لعجل لهم العذاب ... ... ... | ٥٨ | ك « | ١٨ |
| | يا أبت إنى أخاف أن يمسك عذاب من الرحمن ... | ٤٥ | ك مريم | ١٩ |
| | حتى إذا رأوا ما يوعدون إما العذاب وإما الساعة | ٧٥ | ك « | ١٩ |
| | كلا سنكتب ما يقول ونمد له من العذاب مدا ... | ٧٩ | ك « | ١٩ |
| | إنا قد أوحى إلينا أن العذاب على من كذب وتولى ... | ٤٨ | ك طه | ٢٠ |
| | قال لهم موسى ويلكم لا تفتروا على الله كذبا فيسحتكم بعذاب | ٦١ | ك « | ٢٠ |
| | ولعذاب الآخرة أشد وأبقى ... ... ... ... ... | ١٢٧ | ك « | ٢٠ |
| | ولو أنا أهلكناهم بعذاب من قبله لقالوا ربنا لولا أرسلت إلينا رسولا فنتبع آياتك ... ... ... ... | ١٣٤ | ك « | ٢٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| العَذَابُ: | ولئن مستهم نفحة من عذاب ربك ليقولن ياويلنا | ٤٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وما هم بسكارى ولكن عذاب الله شديد ... ... ... | ٢ | م الحـج | ٢٢ |
| | كتب عليه أنه من تولاه فأنه يضله ويهديه إلى عذاب السعير | ٤ | م « | ٢٢ |
| | له فى الدنيا خزى ونذيقه يوم القيامة عذاب الحريق | ٩ | م « | ٢٢ |
| | وكثير من الناس وكثير حق عليه العذاب ... ... ... | ١٨ | م « | ٢٢ |
| | أعيدوا فيها وذوقوا عذاب الحريق ... ... ... ... | ٢٢ | م « | ٢٢ |
| | ومن يرد فيه بإلحاد بظلم نذقه من عذاب أليم ... ... | ٢٥ | م « | ٢٢ |
| | ويستعجلونك بالعذاب ولن يخلف الله وعده ... ... | ٤٧ | م « | ٢٢ |
| | حتى تأتيهم الساعة بغتة أو يأتيهم عذاب يوم عقيم ... | ٥٥ | م « | ٢٢ |
| | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا فأولئك لهم عذاب مهين | ٥٧ | م « | ٢٢ |
| | حتى إذا أخذنا مترفيهم بالعذاب إذا هم يجأرون ... | ٦٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ولقد أخذناهم بالعذاب فما استكانوا لربهم وما يتضرعون | ٧٦ | ك « | ٢٣ |
| | حتى إذا فتحنا عليهم بابا ذا عذاب شديد إذا هم فيه مبلسون | ٧٧ | ك « | ٢٣ |
| | ويدرؤا عنها العذاب أن تشهد أربع شهادات بالله إنه | | | |
| | لمن الكاذبين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨ | م النـور | ٢٤ |
| | والذى تولى كبره منهم له عذاب عظيم ... ... ... | ١١ | م « | ٢٤ |
| | لمسكم فى ما أفضتم فيه عذاب عظيم ... ... ... ... | ١٤ | م « | ٢٤ |
| | إن الذين يحبون أن تشيع الفاحشة فى الذين آمنوا | | | |
| | لهم عذاب أليم ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٩ | م « | ٢٤ |
| | لعنوا فى الدنيا والآخرة ولهم عذاب عظيم ... ... ... | ٢٣ | م « | ٢٤ |
| | فليحذر الذين يخالفون عن أمره أن تصيبهم فتنة أو يصيبهم | | | |
| | عذاب أليم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦٣ | م « | ٢٤ |
| | وسوف يعلمون حين يرون العـذاب من أضل سبيلا | ٤٢ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| | والذين يقولون ربنا اصرف عنا عذاب جهنم ... ... | ٦٥ | ك « | ٢٥ |
| | يضاعف له العذاب يوم القيامة ويخلد فيه مهانا ... | ٦٩ | م « | ٢٥ |
| | إنى أخاف عليكم عذاب يوم عظيم ... ... ... ... | ١٣٥ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| | ولا تمسوها بسوء فيأخذكم عذاب يوم عظيم ... ... | ١٥٦ | ك « | ٢٦ |
| | فأخذهم العذاب إن فى ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين | ١٥٨ | ك « | ٢٦ |
| | فكذبوه فأخذهم عذاب يوم الظلة ... ... ... ... | ١٨٩ | ك « | ٢٦ |
| | إنه كان عذاب يوم عظيم ... ... ... ... ... ... | ١٨٩ | ك « | ٢٦ |
| | لا يؤمنون به حتى يروا العـذاب الأليم ... ... ... | ٢٠١ | ك « | ٢٦ |
| | أولئك الذين لهم سوء العذاب وهم فى الآخرة هم الأخسرون | ٥ | ك النمـل | ٢٧ |
| | فدعوهم فلم يستجيبوا لهم ورأوا العذاب ... ... ... | ٦٤ | ك القصص | ٢٨ |
| | فإذا أوذى فى الله جعل فتنة الناس كعذاب الله ... | ١٠ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | أولئك يئسوا من رحمتى وأولئك لهم عذاب أليم... ... | ٢٣ | ك « | ٢٩ |
| | فما كان جواب قومه إلا أن قالوا ائتنا بعذاب الله | ٢٩ | ك « | ٢٩ |
| | ويستعجلونك بالعذاب ... ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك « | ٢٩ |
| | ولولا أجل مسمى لجاءهم العذاب ... ... ... ... | ٥٣ | ك « | ٢٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| العَذَابُ: | يستعجلونك بالعذاب وإن جهنم لمحيطة بالكافرين | ٥٤ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | يوم يغشاهم العذاب من فوقهم ومن تحت أرجلهم... | ٥٥ | ك « | ٢٩ |
| | فأولئك فى العذاب محضرون ... ... ... ... ... | ١٦ | ك الـروم | ٣٠ |
| | أولئك لهم عذاب مهين ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك لقمان | ٣١ |
| | كأن فى أذنيه وقرا فبشره بعذاب أليم ... ... ... | ٧ | ك « | ٣١ |
| | أولو كان الشيطان يدعوهم إلى عذاب السعير ... ... | ٢١ | ك « | ٣١ |
| | نمتعهم قليلا ثم نضطرهم إلى عذاب غليظ... ... ... | ٢٤ | ك « | ٣١ |
| | وذوقوا عذاب الخلد بما كنتم تعملون ... ... ... | ١٤ | ك السـجدة | ٣٢ |
| | وقيل لهم ذوقوا عذاب النار الذى كنتم به تكذبون... | ٢٠ | م « | ٣٢ |
| | ولنذيقنهم من العذاب الأدنى ... ... ... ... ... | ٢١ | ك « | ٣٢ |
| | دون العذاب الأكبر لعلهم يرجعون ... ... ... ... | ٢١ | ك « | ٣٢ |
| | من يأت منكن بفاحشة مبينة يضاعف لها العذاب ضعفين | ٣٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ربنا آتهم ضعفين من العذاب والعنهم لعنا كبيرا ... | ٦٨ | م « | ٣٣ |
| | أولئك لهم عذاب من رجز أليم ... ... ... ... ... | ٥ | ك سـبأ | ٣٤ |
| | بل الذين لا يؤمنون بالآخرة فى العذاب والضلال البعيد | ٨ | ك « | ٣٤ |
| | ومن يزغ منهم عن أمرنا نذقه من عذاب السعير ... | ١٢ | ك « | ٣٤ |
| | أن لو كانوا يعلمون الغيب ما لبثوا فى العذاب المهين | ١٤ | ك « | ٣٤ |
| | وأسروا الندامة لما رأوا العذاب ... ... ... ... | ٣٣ | ك « | ٣٤ |
| | أولئك فى العذاب محضرون ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك « | ٣٤ |
| | ذوقوا عذاب النار التى كنتم بها تكذبون ... ... ... | ٤٢ | ك « | ٣٤ |
| | إن هو إلا نذير لكم بين يدى عذاب شديد ... ... | ٤٦ | ك « | ٣٤ |
| | الذين كفروا لهم عذاب شديد ... ... ... ... ... | ٧ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | والذين يمكرون السيئات لهم عذاب شديد ... ... ... | ١٠ | ك « | ٣٥ |
| | لئن لم تنتهوا لنرجمنكم وليمسنكم منا عذاب أليم ... ... | ١٨ | ك يـس | ٣٦ |
| | ويقذفون من كل جانب دحورا ولهم عذاب واصب | ٩ | ك الصافات | ٣٧ |
| | فإنهم يومئذ فى العذاب مشتركون ... ... ... ... | ٣٣ | ك « | ٣٧ |
| | إنكم لذائقوا العذاب الأليم... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك « | ٣٧ |
| | إن الذين يضلون عن سبيل الله لهم عذاب شديد ... | ٢٦ | ك ص | ٣٨ |
| | إذ نادى ربه أنى مسنى الشيطان بنصب وعذاب ... | ٤١ | ك « | ٣٨ |
| | قل إنى أخاف إن عصيت ربى عذاب يوم عظيم ... | ١٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| | أفمن حق عليه كلمة العذاب أفأنت تنقذ من فى النار | ١٩ | ك « | ٣٩ |
| | أفمن يتقى بوجهه سوء العذاب يوم القيامة ... ... | ٢٤ | ك « | ٣٩ |
| | فأتاهم العذاب من حيث لا يشعرون ... ... ... ... | ٢٥ | ك « | ٣٩ |
| | ولعذاب الآخرة أكبر لو كانوا يعلمون ... ... ... | ٢٦ | ك « | ٣٩ |
| | من يأتيه عذاب يخزيه ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك « | ٣٩ |
| | ويحل عليه عذاب مقيم ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك « | ٣٩ |
| | لافتدوا به من سوء العذاب يوم القيامة ... ... ... | ٤٧ | ك « | ٣٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| العَذَابُ: | وأسلموا له من قبل أن يأتيكم العذاب ثم لا تنصرون | ٥٤ | م الزمر | ٣٩ |
| | من قبل أن يأتيكم العذاب بغتة وأنتم لا تشعرون ... | ٥٥ | ك » | ٣٩ |
| | أو تقول حين ترى العذاب لو أن لى كرة ... ... ... | ٥٨ | ك » | ٣٩ |
| | قالوا بلى ولكن حقت كلمة العذاب على الكافرين ... | ٧١ | ك » | ٣٩ |
| | فاغفر للذين تابوا واتبعوا سبيلك وقهم عذاب الجحيم | ٧ | ك غافر | ٤٠ |
| | فوقاه الله سيئات ما مكروا وحاق بآل فرعون سوء العذاب | ٤٥ | ك » | ٤٠ |
| | ويوم تقوم الساعة أدخلوا آل فرعون أشد العذاب | ٤٦ | ك » | ٤٠ |
| | ادعوا ربكم يخفف عنا يوما من العـذاب ... ... | ٤٩ | ك » | ٤٠ |
| | فأرسلنا عليهم ريحا صرصرا فى أيام نحسات لنذيقهم عذاب الخزى فى الحياة الدنيا ... ... ... ... | ١٦ | ك فصلت | ٤١ |
| | ولعذاب الآخرة أخزى وهم لا ينصرون ... ... ... | ١٦ | ك » | ٤١ |
| | فأخذتهم صاعقة العذاب الهون بما كانوا يكسبون | ١٧ | ك » | ٤١ |
| | فلنذيقن الذين كفروا بما عملوا ولنذيقنهم من عذاب غليظ | ٥٠ | ك » | ٤١ |
| | جهنم داحضة عند ربهم وعليهم غضب ولهم عذاب شديد | ١٦ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ولولا كلمة الفصل لقضى بينهم وإن الظالمين لهم عذاب أليم | ٢١ | ك » | ٤٢ |
| | والكافرون لهم عذاب شـديد ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك » | ٤٢ |
| | ويبغون فى الأرض بغير الحق أولئك لهم عذاب أليم | ٤٢ | ك » | ٤٢ |
| | وترى الظالمين لما رأوا العذاب يقولون هل إلى مرد من سبيل ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك » | ٤٢ |
| | ألا إن الظالمين فى عذاب مقيم ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك » | ٤٢ |
| | ولن ينفعكم اليوم إذ ظلمتم أنكم فى العذاب مشتركون | ٣٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وأخذناهم بالعذاب لعلهم يرجعون ... ... ... ... | ٤٨ | ك » | ٤٣ |
| | فلما كشفنا عنهم العذاب إذا هم ينكثون ... ... ... | ٥٠ | ك » | ٤٣ |
| | فويل للذين ظلموا من عذاب يوم أليم ... ... ... | ٦٥ | ك » | ٤٣ |
| | إن المجرمين فى عذاب جهنم خالدون ... ... ... ... | ٧٤ | ك » | ٤٣ |
| | يغشى الناس هذا عذاب أليم ... ... ... ... ... | ١١ | ك الدخان | ٤٤ |
| | ربنا اكشف عنا العذاب إنا مؤمنون ... ... ... ... | ١٢ | ك » | ٤٤ |
| | إنا كاشفوا العذاب قليلا إنكم عائدون ... ... ... | ١٥ | ك » | ٤٤ |
| | ولقد نجينا بنى إسرائيل من العذاب المهين ... ... | ٣٠ | ك » | ٤٤ |
| | ثم صبوا فوق رأسه من عذاب الحميم ... ... ... ... | ٤٨ | ك » | ٤٤ |
| | لا يذوقون فيها الموت إلا الموتة الأولى ووقاهم عذاب الجحيم | ٥٦ | ك » | ٤٤ |
| | ثم يصر مستكبرا كأن لم يسمعها فبشره بعـذاب أليم | ٨ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | وإذا علم من آياتنا شيئا اتخذها هزوا أولئك لهم عذاب مهين | ٩ | ك » | ٤٥ |
| | ولا ما اتخذوا من دون الله أولياء ولهم عذاب عظيم | ١٠ | ك » | ٤٥ |
| | والذين كفروا بآيات ربهم لهم عذاب من رجز أليم | ١١ | ك » | ٤٥ |
| | فاليوم تجزون عذاب الهون بما كنتم تستكبرون فى الأرض | ٢٠ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | ألا تعبدوا إلا الله إنى أخاف عليكم عذاب يوم عظيم | ٢١ | ك » | ٤٦ |
| | بل هو ما استعجلتم به ريح فيها عذاب أليم... ... ... | ٢٤ | ك » | ٤٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| العَذَابُ: | يغفر لكم من ذنوبكم ويجركم من عذاب أليم ... | ٣١ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | قال فذوقوا العذاب بما كنتم تكفرون ... ... ... | ٣٤ | ك » | ٤٦ |
| | الذى جعل مع الله إلها آخر فألقياه فى العذاب الشديد | ٢٦ | ك ق | ٥٠ |
| | وتركنا فيها آية للذين يخافون العذاب الأليم... ... ... | ٣٧ | ك الذاريات | ٥١ |
| | إن عذاب ربك لواقع ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك الطور | ٥٢ |
| | فاكهين بما آتاهم ربهم ووقاهم ربهم عذاب الجحيم | ١٨ | ك » | ٥٢ |
| | فمن الله علينا ووقانا عذاب السموم ... ... ... ... | ٢٧ | ك » | ٥٢ |
| | ولقد صبحهم بكرة عذاب مستقر... ... ... ... ... | ٣٨ | ك القمر | ٥٤ |
| | باطنه فيه الرحمة وظاهره من قبله العذاب ... ... | ١٣ | م الحديد | ٥٧ |
| | وفى الآخرة عذاب شـديد ومغفرة من الله ورضوان | ٢٠ | م » | ٥٧ |
| | وتلك حدود الله وللكافرين عذاب أليم ... ... ... | ٤ | م المجادلة | ٥٨ |
| | ولقد أنزلنا آيات بينات وللكافرين عذاب مهـين | ٥ | م » | ٥٨ |
| | فصدوا عن سبيل الله فلهم عذاب مهين ... ... ... | ١٦ | م » | ٥٨ |
| | لعذبهم فى الدنيا ولهم فى الآخرة عذاب النار ... ... | ٣ | م الحشر | ٥٩ |
| | ذاقوا وبال أمرهم ولهم عذاب أليم ... ... ... ... | ١٥ | م » | ٥٩ |
| | هل أدلكم على تجارة تنجيكم من عذاب أليم ... ... | ١٠ | م الصف | ٦١ |
| | فذاقوا وبال أمرهم ولهم عذاب أليم... ... ... ... | ٥ | م التغابن | ٦٤ |
| | وأعتدنا لهم عذاب السعير ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك الملك | ٦٧ |
| | وللذين كفروا بربهم عذاب جهنم وبئس المصير ... | ٦ | ك » | ٦٧ |
| | فمن يجير الكافرين من عذاب أليم... ... ... ... | ٢٨ | ك » | ٦٧ |
| | كذلك العذاب... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | م القلم | ٦٨ |
| | ولعذاب الآخرة أكبر لو كانوا يعلمون ... ... ... | ٣٣ | م » | ٦٨ |
| | سأل سائل بعذاب واقع . للكافرين ليس له دافع... | ١ | ك المعارج | ٧٠ |
| | يود المجرم لو يفتدى من عذاب يومئذ ببنيه ... ... | ١١ | ك » | ٧٠ |
| | والذين هم من عذاب ربهم مشفقون... ... ... ... | ٢٧ | ك » | ٧٠ |
| | إن عذاب ربهم غير مأمون ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك » | ٧٠ |
| | أن أنذر قومك من قبل أن يأتيهم عذاب أليم... ... | ١ | ك نوح | ٧١ |
| | فبشرهم بعـذاب أليم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| | ثم لم يتوبوا فلهم عذاب جهنم ... ... ... ... ... | ١٠ | ك البروج | ٨٥ |
| | ولهم عذاب الحريق... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك » | ٨٥ |
| | إلا من تولى وكفر . فيعذبه الله العذاب الأكبر ... | ٢٤ | ك الغاشية | ٨٨ |
| | فصب عليهم ربك سوط عذاب ... ... ... ... ... | ١٣ | ك الفجر | ٨٩ |
| عَذَابٍ: | بل هم فى شك من ذكرى بل لما يذوقوا عذاب | ٨ | ك ص | ٣٨ |
| عَذَاباً: | فأما الذين كفروا فأعذبهم عذابا شديدا ... ... | ٥٦ | م آل عمران | ٣ |
| | (٣٩) ولا الذين يموتون وهم كفار أولئك أعتدنا لهم عذابا أليما | ١٨ | م النساء | ٤ |
| | وأعتدنا للكافرين عذابا مهينا ... ... ... ... ... | ٣٧ | م » | ٤ |
| | وغضب الله عليه ولعنه وأعد له عذابا عظيما... ... | ٩٣ | م » | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عَذَاباً | : إن الله أعدّ للكافرين عذابا مهينا ... ... ... ... | ١٠٢ | م النساء | ٤ |
| | بشر المنافقين بأن لهم عذابا أليما ... ... ... ... ... | ١٣٨ | م « | ٤ |
| | وأعتدنا للكافرين عذابا مهينا ... ... ... ... ... | ١٥١ | م « | ٤ |
| | وأعتدنا للكافرين منهم عذابا أليما ... ... ... ... | ١٦١ | م « | ٤ |
| | وأما الذين استنكفوا واستكبروا فيعذبهم عذابا أليما | ١٧٣ | م « | ٤ |
| | فإنى أعذبه عذابا لا أعذبه أحدا من العالمين ... ... | ١١٥ | م المائدة | ٥ |
| | قل هو القادر على أن يبعث عليكم عذابا من فوقكم ... | ٦٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | ربنا هؤلاء أضلونا فآتهم عذابا ضعفا من النار... | ٣٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | لم تعظون قوما الله مهلكهم أو معذبهم عذابا شديدا | ١٦٤ | م « | ٧ |
| | إلا تنفروا يعذبكم عذابا أليما ويستبدل قوما غيركم ... | ٣٩ | م التوبة | ٩ |
| | وإن يتولوا يعذبهم الله عذابا أليما فى الدنيا والآخرة | ٧٤ | م « | ٩ |
| | زدناهم عذابا فوق العذاب بما كانوا يفسدون ... | ٨٨ | ك النحل | ١٦ |
| | وأن الذين لا يؤمنون بالآخرة أعتدنا لهم عذابا أليما... | ١٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وإن من قرية إلا نحن مهلكوها قبل يوم القيامة | | | |
| | أو معذبوها عذابا شديدا ... ... ... ... ... | ٥٨ | ك « | ١٧ |
| | ثم يردّ إلى ربه فيعذبه عذابا نُكرا... ... ... ... ... | ٨٧ | م الكهف | ١٨ |
| | ولتعلمن أينا أشد عذابا وأبقى ... ... ... ... .. | ٧١ | ك طه | ٢٠ |
| | ومن يظلم منكم نذقه عذابا كبيرا ... ... ... ... ... | ١٩ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وأعتدنا للظالمين عذابا أليما... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك « | ٢٥ |
| | لأعذبنه عذابا شديدا أو لأذبحنه... ... ... ... ... | ٢١ | ك النمل | ٢٧ |
| | وأعد للكافرين عذابا أليما ... ... ... ... ... ... | ٨ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | لعنهم الله فى الدنيا والآخرة وأعد لهم عذابا مهينا ... | ٥٧ | م « | ٣٣ |
| | قالوا ربنا من قدم لنا هذا فزده عذابا ضعفا فى النار | ٦١ | ك ص | ٣٨ |
| | فلنذيقن الذين كفروا عذابا شديدا ... ... ... ... | ٢٧ | ك فصلت | ٤١ |
| | وإن تتولوا كما توليتم من قبل يعذبكم عذابا أليما ... | ١٦ | م الفتح | ٤٨ |
| | ومن يتول يعذبه عذابا أليما... ... ... ... ... ... | ١٧ | م « | ٤٨ |
| | لو تزيلوا لعذبنا الذين كفروا منهم عذابا أليما ... ... | ٢٥ | م « | ٤٨ |
| | وإن للذين ظلموا عذابا دون ذلك ... ... ... ... | ٤٧ | ك الطور | ٥٢ |
| | أعد الله لهم عذابا شديدا إنهم ساء ما كانوا يعملون | ١٥ | م المجادلة | ٥٨ |
| | فحاسبناها حسابا شديدا وعذبناها عذابا نكرا... ... ... | ٨ | م الطلاق | ٦٥ |
| | أعد الله لهم عذابا شديدا فاتقوا الله يا أولى الألباب | ١٠ | م « | ٦٥ |
| | ومن يعرض عن ذكر ربه يسلكه عذابا صعدا ... ... | ١٧ | ك الجن | ٧٢ |
| | إن لدينا أنكالا وجحيما . وطعاما ذا غصة وعذابا أليما | ١٣ | ك المزمل | ٧٣ |
| | والظالمين أعد لهم عذابا أليما ... ... ... ... ... | ٣١ | م الإنسان | ٧٦ |
| | فذوقوا فلن نزيدكم إلا عذابا... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك النبأ | ٧٨ |
| | إنا أنذرناكم عذابا قريبا ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك « | ٧٨ |
| بِعَذَابِكُمْ | : ما يفعل الله بعذابكم إن شكرتم وآمنتم ... ... | ١٤٧ | م النساء | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَفَبِعَذَابِنَا | : فيقولوا هل نحن منظرون . أفبعذابنا يستعجلون | ٢٠٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | (٢) وأبصرهم فسوف يبصرون . أفبعذابنا يستعجلون ... | ١٧٦ | ك الصافات | ٣٧ |
| عَذَابُهُ | : قل أرأيتم إن أتاكم عذابه بياتا أو نهارا ... ... | ٥٠ | ك يونس | ١٠ |
| | (٣) أيهم أقرب ويرجون رحمته ويخافون عذابه... ... | ٥٧ | م الإسراء | ١٧ |
| | فيومئذ لا يعذب عذابه أحد ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك الفجر | ٨٩ |
| عَذَابَهَا | : ربنا اصرف عنا عذاب جهنم إن عذابها كان غراما | ٦٥ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | (٢) لا يقضى عليهم فيموتوا ولا يخفف عنهم من عذابها | ٣٦ | ك فاطر | ٣٥ |
| عَذَابَهُمَا | : وليشهد عذابهما طائفة من المؤمنين ... ... ... | ٢ | م النور | ٢٤ |
| عَذَابِي | : قال عذابى أصيب به من أشاء ورحمتى وسعت كل شىء | ١٥٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | (٩) ولئن كفرتم إن عذابى لشديد ... ... ... ... ... | ٧ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وأن عذابى هو العذاب الأليم ... ... ... ... ... | ٥٠ | ك الحجر | ١٥ |
| | ولقد تركناها آية فهل من مدكر . فكيف كان عذابى ونذر | ١٦ | ك القمر | ٥٤ |
| | كذبت عاد فكيف كان عذابى ونذر... ... ... ... | ١٨ | ك « | ٥٤ |
| | تنزع الناس كأنهم أعجاز نخل منقعر . فكيف كان عذابى ونذر | ٢١ | ك « | ٥٤ |
| | فنادوا صاحبهم فتعاطى فعقر . فكيف كان عذابى ونذر | ٣٠ | ك « | ٥٤ |
| | ولقد راودوه عن ضيفه فطمسنا أعينهم فذوقوا عذابى ونذر | ٣٧ | ك « | ٥٤ |
| | ولقد صبحهم بكرة عذاب مستقر . فذوقوا عذابى ونذر | ٣٩ | ك « | ٥٤ |
| مُعَذِّبَهُمْ | : لم تعظون قوما الله مهلكهم أو معذبهم عذابا شديدا | ١٦٤ | م الأعراف | ٧ |
| | (٢) وما كان الله معذبهم وهم يستغفرون ... ... ... | ٣٣ | ك الأنفال | ٨ |
| مُعَذِّبُوهَا | : وإن من قرية إلا نحن مهلكوها قبل يوم القيامة | | | |
| | أو معذبوها عذابا شديدا ... ... ... ... ... | ٥٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| مُعَذِّبِينَ | : وما كنا معذبين حتى نبعث رسولا ... ... ... | ١٥ | ك « | ١٧ |
| مُعَذَّبِينَ | : إن هذا إلا خلق الأولين . وما نحن بمعذبين... | ١٣٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | (٤) فلا تدع مع الله إلها آخر فتكون من المعذبين ... ... | ٢١٣ | ك « | ٢٦ |
| | وقالوا نحن أكثر أموالا وأولادا وما نحن بمعذبين | ٣٥ | ك سبأ | ٣٤ |
| | أفما نحن بميتين . إلا موتتنا الأولى وما نحن بمعذبين | ٥٩ | ك الصافات | ٣٧ |
| عَذْبٌ | : هذا عذب فرات وهذا ملح أجاج ... ... ... | ٥٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | (٢) هذا عذب فرات سائغ شرابه وهذا ملح أجاج... ... | ١٢ | ك فاطر | ٣٥ |

* * *

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَعْتَذِرُوا | : لا تعتذروا قد كفرتم بعد إيمانكم ... ... ... | ٦٦ | م التوبة | ٩ |
| | (٣) قل لا تعتذروا لن نؤمن لكم قد نبأنا الله من أخباركم | ٩٤ | م « | ٩ |
| | يأيها الذين كفروا لا تعتذروا اليوم ... ... ... ... | ٧ | م التحريم | ٦٦ |
| يَعْتَذِرُونَ | : يعتذرون إليكم إذا رجعتم إليهم... ... ... ... | ٩٤ | م التوبة | ٩ |
| | (٢) هذا يوم لا ينطقون . ولا يؤذن لهم فيعتذرون ... | ٣٦ | ك المرسلات | ٧٧ |
| عُذْرًا | : فلا تصاحبنى قد بلغت من لدنى عذرا ... ... ... | ٧٦ | ك الكهف | ١٨ |
| | (٢) فالملقيات ذكرا . عذرا أو نذرا ... ... ... ... | ٦ | ك المرسلات | ٧٧ |
| الْمُعَذِّرُونَ | : وجاء المعذرون من الأعراب ليؤذن لهم ... | ٩٠ | م التوبة | ٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مَعْذِرَةً: | قالوا معذرة إلى ربكم ولعلهم يتقون ... ... ... | ١٦٤ | م الأعراف | ٧ |
| مَعْذِرَتُهُمْ: | فيومئذ لا ينفع الذين ظلموا معذرتهم ولا هم يستعتبون | ٥٧ | ك الروم | ٣٠ |
| (٢) | يوم لا ينفع الظالمين معذرتهم ولهم اللعنة ولهم سوء الدار | ٥٢ | ك غافر | ٤٠ |
| مَعَاذِيرَهُ: | بل الإنسان على نفسه بصيرة . ولو ألقى معاذيره | ١٥ | ك القيامة | ٧٥ |
| عُرُبًا: | فجعلناهن أبكارا . عربا أترابا... ... ... ... ... | ٣٧ | ك الواقعة | ٥٦ |
| عَرَبِيٌّ: | وهذا لسان عربي مبين ... ... ... ... ... ... | ١٠٣ | ك النحل | ١٦ |
| (٣) | نزل به الروح الأمين . على قلبك لتكون من المنذرين . | | | |
| | بلسان عربي مبين ... ... ... ... ... ... ... | ١٩٥ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | أأعجمي وعربي قل هو للذين آمنوا هدى وشفاء ... | ٤٤ | ك فصلت | ٤١ |
| عَرَبِيًّا: | إنا أنزلناه قرآنا عربيا لعلكم تعقلون ... ... ... | ٢ | ك يوسف | ١٢ |
| (٨) | وكذلك أنزلناه حكما عربيا ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | م الرعد | ١٣ |
| | وكذلك أنزلناه قرآنا عربيا وصرفنا فيه من الوعيد ... | ١١٣ | ك طه | ٢٠ |
| | قرآنا عربيا غير ذي عوج لعلهم يتقون ... ... ... | ٢٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| | كتاب فصلت آياته قرآنا عربيا لقوم يعلمون ... ... | ٣ | ك فصلت | ٤١ |
| | وكذلك أوحينا إليك قرآنا عربيا... ... ... ... ... | ٧ | ك الشورى | ٤٢ |
| | إنا جعلناه قرآنا عربيا لعلكم تعقلون ... ... ... ... | ٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وهذا كتاب مصدق لسانا عربيا لينذر الذين ظلموا | ١٢ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| الْأَعْرَابُ: | وجاء المعذرون من الأعراب ليؤذن لهم ... | ٩٠ | م التوبة | ٩ |
| (١٠) | الأعراب أشد كفرا ونفاقا... ... ... ... ... ... | ٩٧ | م « | ٩ |
| | ومن الأعراب من يتخذ ما ينفق مغرما ... ... ... | ٩٨ | م « | ٩ |
| | ومن الأعراب من يؤمن بالله واليوم الآخر ... ... | ٩٩ | م « | ٩ |
| | ومن حولكم من الأعراب منافقون ومن أهل المدينة | ١٠١ | م « | ٩ |
| | ما كان لأهل المدينة ومن حولهم من الأعراب أن | | | |
| | يتخلفوا عن رسول الله ... ... ... ... ... ... | ١٢٠ | م « | ٩ |
| | وإن يأت الأحزاب يودوا لو أنهم بادون في الأعراب | ٢٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | سيقول لك المخلفون من الأعراب شغلتنا أموالنا | | | |
| | وأهلونا فاستغفر لنا ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | م الفتح | ٤٨ |
| | قل للمخلفين من الأعراب ستدعون إلى قوم أولي بأس | | | |
| | شديد تقاتلونهم أو يسلمون ... ... ... ... ... | ١٦ | م « | ٤٨ |
| | قالت الأعراب آمنا قل لم تؤمنوا ولكن قولوا أسلمنا | ١٤ | م الحجرات | ٤٩ |
| تَعْرُجُ: | تعرج الملائكة والروح إليه ... ... ... ... ... | ٤ | ك المعارج | ٧٠ |
| يَعْرُجُ: | ثم يعرج إليه في يوم كان مقداره ألف سنة مما تعدون | ٥ | ك السجدة | ٣٢ |
| (٣) | يعلم ما يلج في الأرض وما يخرج منها وما ينزل من | | | |
| | السماء وما يعرج فيها وهو الرحيم الغفور ... ... | ٢ | ك سبأ | ٣٤ |
| | يعلم ما يلج في الأرض وما يخرج منها وما ينزل من | | | |
| | السماء وما يعرج فيها وهو معكم أين ما كنتم ... | ٤ | م الحديد | ٥٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَعْرُجُونَ: | ولو فتحنا عليهم بابا من السماء فظلوا فيه يعرجون | ١٤ | ك الحجر | ١٥ |
| الْأَعْرَجِ: | ليس على الأعمى حرج ولا على الأعرج حرج | ٦١ | م النور | ٢٤ |
| (٢) | ليس على الأعمى حرج ولا على الأعرج حرج ... ... | ١٧ | م الفتح | ٤٨ |
| مَعَارِجَ: | يجادلنا لمن يكفر بالرحمن لبيوتهم سقفا من فضة | | | |
| (٢) | ومعارج عليها يظهرون ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | سأل سائل بعذاب واقع . للكافرين ليس له دافع . | | | |
| | من الله ذي المعارج ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك المعارج | ٧٠ |
| كَالْعُرْجُونِ: | والقمر قدرناه منازل حتى عاد كالعرجون القديم | ٣٩ | ك يس | ٣٦ |
| مَعَرَّةٌ: | فتصيبكم منهم معرة بغير علم ... ... ... ... ... | ٢٥ | م الفتح | ٤٨ |
| الْمُعْتَرَّ: | فإذا وجبت جنوبها فكلوا منها وأطعموا القانع والمعتر | ٣٦ | م الحج | ٢٢ |
| يَعْرِشُونَ: | ودمرنا ما كان يصنع فرعون وقومه وما كانوا | | | |
| (٢) | يعرشون ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٣٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | أن اتخذي من الجبال بيوتا ومن الشجر ومما يعرشون | ٦٨ | ك النحل | ١٦ |
| الْعَرْشِ: | ثم استوى على العرش يغشى الليل النهار ... ... | ٥٤ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢٢) | عليه توكلت وهو رب العرش العظيم ... ... ... ... | ١٢٩ | ك التوبة | ٩ |
| | ثم استوى على العرش يدبر الأمر... ... ... ... ... | ٣ | ك يونس | ١٠ |
| | ورفع أبويه على العرش وخروا له سجدا ... ... ... | ١٠٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | ثم استوى على العرش وسخر الشمس والقمر ... ... | ٢ | م الرعد | ١٣ |
| | إذا لابتغوا إلى ذي العرش سبيلا ... ... ... ... | ٤٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| | الرحمن على العرش استوى ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك طه | ٢٠ |
| | فسبحان الله رب العرش عما يصفون... ... ... ... | ٢٢ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | قل من رب السموات السبع ورب العرش العظيم ... | ٨٦ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فتعالى الله الملك الحق لا إله إلا هو رب العرش الكريم | ١١٦ | ك « | ٢٣ |
| | ثم استوى على العرش الرحمن فسئل به خبيرا ... ... | ٥٩ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وأوتيت من كل شيء ولها عرش عظيم ... ... ... | ٢٣ | ك النمل | ٢٧ |
| | الله لا إله إلا هو رب العرش العظيم ... ... ... ... | ٢٦ | ك « | ٢٧ |
| | ثم استوى على العرش ما لكم من دونه من ولي ولا شفيع | ٤ | ك السجدة | ٣٢ |
| | وترى الملائكة حافين من حول العرش ... ... ... | ٧٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| | الذين يحملون العرش ومن حوله يسبحون بحمد ربهم | ٧ | ك غافر | ٤٠ |
| | رفيع الدرجات ذو العرش ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك « | ٤٠ |
| | سبحان رب السموات والأرض رب العرش عما يصفون | ٨٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ثم استوى على العرش يعلم ما يلج في الأرض وما يخرج منها | ٤ | م الحديد | ٥٧ |
| | ويحمل عرش ربك فوقهم يومئذ ثمانية ... ... ... | ١٧ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | إنه لقول رسول كريم . ذي قوة عند ذي العرش مكين | ٢٠ | ك التكوير | ٨١ |
| | وهو الغفور الودود . ذو العرش المجيد ... ... ... | ١٥ | ك البروج | ٨٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عَرْشُكِ | : فلما جاءت قيل أهكذا عرشك ... ... ... ... | ٤٢ | ك النمل | ٢٧ |
| عَرْشُهُ | : وكان عرشه على الماء ليبلوكم أيكم أحسن عملا | ٧ | ك هود | ١١ |
| عَرْشَهَا | : أيكم يأتيني بعرشها قبل أن يأتوني مسلمين ... | ٣٨ | ك النمل | ٢٧ |
| (٢) | قال نكروا لها عرشها ننظر أتهتدي أم تكون من الذين لايهتدون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤١ | ك « | ٢٧ |
| عُرُوشِهَا | : أو كالذي مر على قرية وهي خاوية على عروشها | ٢٥٩ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | فأصبح يقلب كفيه على ما أنفق فيها وهي خاوية على عروشها | ٤٢ | ك الكهف | ١٨ |
| | وهي ظالمة فهي خاوية على عروشها ... ... ... ... | ٤٥ | م الحج | ٢٢ |
| مَعْرُوشَاتٍ | : وهو الذي أنشأ جنات معروشات... ... ... | ١٤١ | م الأنعام | ٦ |
| (٢) | وغير معروشات والنخل والزرع مختلفا أكله ... ... | ١٤١ | م « | ٦ |
| عَرَضْنَا | : وعرضنا جهنم يومئذ للكافرين عرضا ... ... | ١٠٠ | م الكهف | ١٨ |
| (٢) | إنا عرضنا الأمانة على السموات والأرض والجبال | ٧٢ | م الأحزاب | ٣٣ |
| عَرَضَهُمْ | : وعلم آدم الأسماء كلها ثم عرضهم على الملائكة | ٣١ | م البقرة | ٢ |
| عُرِضَ | : إذ عرض عليه بالعشي الصافنات الجياد ... ... | ٣١ | ك ص | ٣٨ |
| عُرِضُوا | : وعرضوا على ربك صفا ... ... ... ... ... | ٤٨ | ك الكهف | ١٨ |
| تُعْرَضُونَ | : يومئذ تعرضون لا تخفى منكم خافية ... ... | ١٨ | ك الحاقة | ٦٩ |
| يُعْرَضُ | : ويوم يعرض الذين كفروا على النار أذهبتم طيباتكم | | | |
| (٢) | في حياتكم الدنيا واستمتعتم بها ... ... ... ... | ٢٠ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | ويوم يعرض الذين كفروا على النار أليس هذا بالحق | ٣٤ | ك « | ٤٦ |
| يُعْرَضُونَ | : أولئك يعرضون على ربهم ... ... ... ... | ١٨ | ك هود | ١١ |
| (٣) | النار يعرضون عليها غدوا وعشيا ... ... ... ... | ٤٦ | ك غافر | ٤٠ |
| | وتراهم يعرضون عليها خاشعين من الذل ... ... ... | ٤٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| عَرَّضْتُمْ | : ولا جناح عليكم فيما عرضتم به من خطبة النساء | ٢٣٥ | م البقرة | ٢ |
| أَعْرَضَ | : وإذا أنعمنا على الإنسان أعرض ونأى بجانبه | ٨٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٨) | ومن أظلم ممن ذكر بآيات ربه فأعرض عنها ... ... | ٥٧ | ك الكهف | ١٨ |
| | من أعرض عنه فإنه يحمل يوم القيامة وزرا ... ... | ١٠٠ | ك طه | ٢٠ |
| | ومن أعرض عن ذكري فإن له معيشة ضنكا ... ... | ١٢٤ | ك « | ٢٠ |
| | ومن أظلم ممن ذكر بآيات ربه ثم أعرض عنها ... ... | ٢٢ | ك السجدة | ٣٢ |
| | بشيرا ونذيرا فأعرض أكثرهم فهم لا يسمعون... ... | ٤ | ك فصلت | ٤١ |
| | وإذا أنعمنا على الإنسان أعرض ونأى بجانبه... ... | ٥١ | ك « | ٤١ |
| | صرف بعضه وأعرض عن بعض ... ... ... ... | ٣ | م التحريم | ٦٦ |
| أَعْرَضْتُمْ | : فلما نجاكم إلى البر أعرضتم وكان الإنسان كفورا | ٦٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| أَعْرَضُوا | : وإذا سمعوا اللغو أعرضوا عنه وقالوا لنا أعمالنا | ٥٥ | م القصص | ٢٨ |
| (٤) | فأعرضوا فأرسلنا عليهم سيل العرم ... ... ... ... | ١٦ | ك سبأ | ٣٤ |
| | فإن أعرضوا فقل أنذرتكم صاعقة مثل صاعقة عاد وثمود | ١٣ | ك فصلت | ٤١ |
| | فإن أعرضوا فما أرسلناك عليهم حفيظا ... ... ... | ٤٨ | ك الشورى | ٤٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تُعْرِضْ | : وإن تعرض عنهم فإن يضروك شيئا ... ... ... | ٤٢ | م المائدة | ٥ |
| تُعْرِضَنَّ | : وإما تعرضن عنهم ابتغاء رحمة من ربك ترجوها | | | |
| | فقل لهم قولا ميسورا ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| تُعْرِضُوا | : وإن تلووا أو تعرضوا فإن الله كان بما تعملون خبيرا | ١٣٥ | م النساء | ٤ |
| (٢) | سيحلفون بالله لكم إذا انقلبتم إليهم لتعرضوا عنهم ... | ٩٥ | م التوبة | ٩ |
| يُعْرِضْ | : ومن يعرض عن ذكر ربه يسلكه عذابا صعدا... | ١٧ | ك الجن | ٧٢ |
| يُعْرِضُوا | : وإن يروا آية يعرضوا ويقولوا سحر مستمر ... | ٢ | ك القمر | ٥٤ |
| أَعْرِضْ | : أولئك الذين يعلم الله ما في قلوبهم فأعرض عنهم | ٦٣ | م النساء | ٤ |
| (١١) | والله يكتب ما يبيتون فأعرض عنهم وتوكل على الله | ٨١ | م « | ٤ |
| | فإن جاءوك فاحكم بينهم أو أعرض عنهم... ... ... | ٤٢ | م المائدة | ٥ |
| | وإذا رأيت الذين يخوضون في آياتنا فأعرض عنهم | ٦٨ | ك الأنعام | ٦ |
| | لا إله إلا هو وأعرض عن المشركين ... ... ... ... | ١٠٦ | ك « | ٦ |
| | خذ العفو وأمر بالعرف وأعرض عن الجاهلين... ... | ١٩٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | يا إبراهيم أعرض عن هذا إنه قد جاء أمر ربك ... | ٧٦ | ك هود | ١١ |
| | يوسف أعرض عن هذا واستغفري لذنبك ... ... | ٢٩ | ك يوسف | ١٢ |
| | فاصدع بما تؤمر وأعرض عن المشركين ... ... ... | ٩٤ | ك الحجر | ١٥ |
| | فأعرض عنهم وانتظر إنهم منتظرون ... ... ... ... | ٣٠ | ك السجدة | ٣٢ |
| | فأعرض عن من تولى عن ذكرنا ولم يرد إلا الحياة الدنيا | ٢٩ | ك النجم | ٥٣ |
| فَأَعْرِضُوا | : فإن تابا وأصلحا فأعرضوا عنهما ... ... ... | ١٦ | م النساء | ٤ |
| (٢) | فأعرضوا عنهم إنهم رجس ومأواهم جهنم ... ... | ٩٥ | م التوبة | ٩ |
| كَعَرْضِ | : سابقوا إلى مغفرة من ربكم وجنة عرضها كعرض السماء والأرض... ... ... ... ... ... ... | ٢١ | م الحديد | ٥٧ |
| عَرْضًا | : وعرضنا جهنم يومئذ للكافرين عرضا ... ... ... | ١٠٠ | م الكهف | ١٨ |
| عَرْضُهَا | : وسارعوا إلى مغفرة من ربكم وجنة عرضها | | | |
| (٢) | السموات والأرض ... ... ... ... ... ... | ١٣٣ | م آل عمران | ٣ |
| | سابقوا إلى مغفرة من ربكم وجنة عرضها كعرض السماء والأرض... ... ... ... ... ... ... | ٢١ | م الحديد | ٥٧ |
| إِعْرَاضًا | : وإن امرأة خافت من بعلها نشوزا أو إعراضا | | | |
| | فلا جناح عليهما أن يصلحا بينهما صلحا ... ... | ١٢٨ | م النساء | ٤ |
| إِعْرَاضُهُمْ | : وإن كان كبر عليك إعراضهم فإن استطعت | | | |
| | أن تبتغي نفقا في الأرض أو سلما في السماء فتأتيهم بآية | ٣٥ | ك الأنعام | ٦ |
| مُعْرِضُونَ | : ثم توليتم إلا قليلا منكم وأنتم معرضون ... ... | ٨٣ | م البقرة | ٢ |
| (١٤) | ثم يتولى فريق منهم وهم معرضون ... ... ... ... | ٢٣ | م آل عمران | ٣ |
| | ولو أسمعهم لتولوا وهم معرضون ... ... ... ... ... | ٢٣ | م الأنفال | ٨ |
| | فلما آتاهم من فضله بخلوا به وتولوا وهم معرضون ... | ٧٦ | م التوبة | ٩ |
| | يمرون عليها وهم عنها معرضون ... ... ... ... ... | ١٠٥ | ك يوسف | ١٢ |
| | اقترب للناس حسابهم وهم في غفلة معرضون ... ... | ١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | بل أكثرهم لا يعلمون الحق فهم معرضون... ... ... | ٢٤ | ك « | ٢١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مُعْرِضُونَ | : وجعلنا السماء سقفا محفوظا وهم عن آياتها معرضون | ٣٢ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | بل هم عن ذكر ربهم معرضون ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك « | ٢١ |
| | والذين هم عن اللغو معرضون ... ... ... ... ... | ٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | بل أتيناهم بذكرهم فهم عن ذكرهم معرضون ... ... | ٧١ | ك « | ٢٣ |
| | إذا فريق منهم معرضون ... ... ... ... ... | ٤٨ | م النور | ٢٤ |
| | قل هو نبأ عظيم . أنتم عنه معرضون ... ... ... ... | ٦٨ | ك ص | ٣٨ |
| | والذين كفروا عما أنذروا معرضون ... ... ... ... | ٣ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| مُعْرِضِينَ | : وما تأتيهم من آية من آيات ربهم إلا كانوا عنها معرضين ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | وآتيناهم آياتنا فكانوا عنها معرضين ... ... ... ... | ٨١ | ك الحجر | ١٥ |
| | وما يأتيهم من ذكر من الرحمن محدث إلا كانوا عنه معرضين ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وما تأتيهم من آية من آيات ربهم إلا كانوا عنها معرضين | ٤٦ | ك يس | ٣٦ |
| | فما لهم عن التذكرة معرضين ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك المدثر | ٧٤ |
| عَرَضَ | : تبتغون عرض الحياة الدنيا فعند الله مغانم كثيرة | ٩٤ | م النساء | ٤ |
| (٥) | يأخذون عرض هذا الأدنى ويقولون سيغفر لنا ... | ١٦٩ | م الأعراف | ٧ |
| | وإن يأتهم عرض مثله يأخذوه ... ... ... ... ... | ١٦٩ | م « | ٧ |
| | تريدون عرض الدنيا والله يريد الآخرة ... ... ... | ٦٧ | م الأنفال | ٨ |
| | لتبتغوا عرض الحياة الدنيا ... ... ... ... ... | ٣٣ | م النور | ٢٤ |
| عَرَضًا | : لو كان عرضا قريبا وسفرا قاصدا لاتبعوك ... | ٤٢ | م التوبة | ٩ |
| عَرِيضٍ | : وإذا مسه الشر فذو دعاء عريض ... ... ... | ٥١ | ك فصلت | ٤١ |
| عَارِضٌ | : قالوا هذا عارض ممطرنا بل هو ما استعجلتم به... | ٢٤ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| عَارِضًا | : فلما رأوه عارضا مستقبل أوديتهم قالوا هذا عارض | ٢٤ | ك « | ٤٦ |
| عُرْضَةً | : ولا تجعلوا الله عرضة لأيمانكم أن تبروا وتتقوا | ٢٢٤ | م البقرة | ٢ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| فَلَعَرَفْتَهُمْ | : ولو نشاء لأريناكهم فلعرفتهم بسيماهم ... ... | ٣٠ | م محمد | ٤٧ |
| فَعَرَفَهُمْ | : فدخلوا عليه فعرفهم وهم له منكرون ... ... ... | ٥٨ | ك يوسف | ١٢ |
| عَرَفُوا | : فلما جاءهم ما عرفوا كفروا به فلعنة الله على الكافرين | ٨٩ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | ترى أعينهم تفيض من الدمع مما عرفوا من الحق | ٨٣ | م المائدة | ٥ |
| تَعْرِفُ | : تعرف في وجوه الذين كفروا المنكر... ... ... | ٧٢ | م الحج | ٢٢ |
| (٢) | تعرف في وجوههم نضرة النعيم ... ... ... ... | ٢٤ | ك المطففين | ٨٣ |
| وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ | : ولتعرفنهم في لحن القول ... ... ... ... | ٣٠ | م محمد | ٤٧ |
| تَعْرِفُهُمْ | : تعرفهم بسيماهم لا يسألون الناس إلحافا ... ... | ٢٧٣ | م البقرة | ٢ |
| فَتَعْرِفُونَهَا | : وقل الحمد لله سيريكم آياته فتعرفونها ... ... | ٩٣ | ك النمل | ٢٧ |
| يَعْرِفُوا | : أم لم يعرفوا رسولهم فهم له منكرون ... ... ... | ٦٩ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| يَعْرِفُونَ | : الذين آتيناهم الكتاب يعرفونه كما يعرفون أبناءهم | ١٤٦ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | الذين آتيناهم الكتاب يعرفونه كما يعرفون أبناءهم ... | ٢٠ | م الأنعام | ٦ |
| يَعْرِفُونَ | : وعلى الأعراف رجال يعرفون كلا بسيماهم ... | ٤٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | يعرفون نعمة الله ثم ينكرونها وأكثرهم الكافرون ... | ٨٣ | ك النحل | ١٦ |
| يَعْرِفُونَهُ | : الذين آتيناهم الكتاب يعرفونه كما يعرفون أبناءهم | ١٤٦ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | الذين آتيناهم الكتاب يعرفونه كما يعرفون أبناءهم ... | ٢٠ | م الأنعام | ٦ |
| يَعْرِفُونَهَا | : لعلهم يعرفونها إذا انقلبوا إلى أهلهم ... ... | ٦٢ | ك يوسف | ١٢ |
| يَعْرِفُونَهُمْ | : ونادى أصحاب الأعراف رجالا يعرفونهم بسيماهم | ٤٨ | ك الأعراف | ٧ |
| يُعْرَفُ | : يعرف المجرمون بسيماهم فيؤخذ بالنواصي والأقدام | ٤١ | م الرحمن | ٥٥ |
| يُعْرَفْنَ | : ذلك أدنى أن يعرفن فلا يؤذين ... ... ... ... | ٥٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| عَرَّفَ | : فلما نبأت به وأظهره الله عليه عرف بعضه... ... | ٣ | م التحريم | ٦٦ |
| عَرَّفَهَا | : ويدخلهم الجنة عرفها لهم ... ... ... ... ... | ٦ | م محمد | ٤٧ |
| لِتَعَارَفُوا | : وجعلناكم شعوبا وقبائل لتعارفوا ... ... ... | ١٣ | م الحجرات | ٤٩ |
| يَتَعَارَفُونَ | : كأن لم يلبثوا إلا ساعة من النهار يتعارفون بينهم | ٤٥ | ك يونس | ١٠ |
| فَاعْتَرَفْنَا | : فاعترفنا بذنوبنا فهل إلى خروج من سبيل... ... | ١١ | ك غافر | ٤٠ |
| اعْتَرَفُوا | : وآخرون اعترفوا بذنوبهم خلطوا عملا صالحا وآخر سيئا | ١٠٢ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | فاعترفوا بذنبهم فسحقا لأصحاب السعير ... ... ... | ١١ | ك الملك | ٦٧ |
| الْعُرْفِ | : خذ العفو وأمر بالعرف وأعرض عن الجاهلين | ١٩٩ | ك الأعراف | ٧ |
| عُرْفًا | : والمرسلات عرفا . فالعاصفات عصفا ... ... ... | ١ | ك المرسلات | ٧٧ |
| الْمَعْرُوفِ | : فمن عفي له من أخيه شيء فاتباع بالمعروف ... | ١٧٨ | م البقرة | ٢ |
| (٣٢) | الوصية للوالدين والأقربين بالمعروف حقا على المتقين | ١٨٠ | م « | ٢ |
| | ولهن مثل الذي عليهن بالمعروف ... ... ... ... | ٢٢٨ | م « | ٢ |
| | الطلاق مرتان فإمساك بمعروف أو تسريح بإحسان | ٢٢٩ | م « | ٢ |
| | فأمسكوهن بمعروف ... ... ... ... ... ... | ٢٣١ | م « | ٢ |
| | أو سرحوهن بمعروف ... ... ... ... ... ... | ٢٣١ | م « | ٢ |
| | فلا تعضلوهن أن ينكحن أزواجهن إذا تراضوا بينهم بالمعروف ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣٢ | م « | ٢ |
| | وعلى المولود له رزقهن وكسوتهن بالمعروف ... ... | ٢٣٣ | م « | ٢ |
| | فلا جناح عليكم إذا سلمتم ما آتيتم بالمعروف ... ... | ٢٣٣ | م « | ٢ |
| | فلا جناح عليكم فيما فعلن في أنفسهن بالمعروف ... ... | ٢٣٤ | م « | ٢ |
| | ومتعوهن على الموسع قدره وعلى المقتر قدره متاعا بالمعروف | ٢٣٦ | م « | ٢ |
| | فإن خرجن فلا جناح عليكم في ما فعلن في أنفسهن من معروف | ٢٤٠ | م « | ٢ |
| | وللمطلقات متاع بالمعروف حقا على المتقين ... ... | ٢٤١ | م « | ٢ |
| | قول معروف ومغفرة خير من صدقة يتبعها أذى ... | ٢٦٣ | م « | ٢ |
| | ولتكن منكم أمة يدعون إلى الخير ويأمرون بالمعروف | ١٠٤ | م آل عمران | ٣ |
| | تأمرون بالمعروف وتنهون عن المنكر وتؤمنون بالله | ١١٠ | م « | ٣ |
| | يؤمنون بالله واليوم الآخر ويأمرون بالمعروف ... | ١١٤ | م « | ٣ |
| | ومن كان فقيرا فليأكل بالمعروف ... ... ... ... | ٦ | م النساء | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **المَعْرُوفُ** | : وعاشروهن بالمعروف ... ... ... ... ... ... | ١٩ | م النساء | ٤ |
| | وآتوهن أجورهن بالمعروف محصنات غير مسافحات | ٢٥ | م « | ٤ |
| | لاخير فى كثير من نجواهم إلا من أمر بصدقة أو معروف | ١١٤ | م « | ٤ |
| | يأمرهم بالمعروف وينهاهم عن المنكر ويحل لهم الطيبات | ١٥٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | يأمرون بالمنكر وينهون عن المعروف ويقبضون أيديهم | ٦٧ | م التوبة | ٩ |
| | يأمرون بالمعروف وينهون عن المنكر ويقيمون الصلاة | ٧١ | م « | ٩ |
| | الآمرون بالمعروف والناهون عن المنكر والحافظون لحدود الله ... ... ... ... ... ... ... | ١١٢ | م « | ٩ |
| | وأمروا بالمعروف ونهوا عن المنكر ... ... ... ... | ٤١ | م الحج | ٢٢ |
| | يا بنى أقم الصلاة وأمر بالمعروف وانه عن المنكر ... | ١٧ | ك لقمان | ٣١ |
| | طاعة وقول معروف ... ... ... ... ... ... | ٢١ | م محمد | ٤٧ |
| | ولا يعصينك فى معروف فبايعهن واستغفر لهن الله | ١٢ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | فإذا بلغن أجلهن فأمسكوهن بمعروف ... ... ... | ٢ | م الطلاق | ٦٥ |
| | أو فارقوهن بمعروف ... ... ... ... ... ... | ٢ | م « | ٦٥ |
| | فإن أرضعن لكم فآتوهن أجورهن وأتمروا بينكم بمعروف | ٦ | م « | ٦٥ |
| **مَعْرُوفًا** | : ولكن لا تواعدوهن سرا إلا أن تقولوا قولا معروفا | ٢٣٥ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | وارزقوهم فيها واكسوهم وقولوا لهم قولا معروفا ... | ٥ | م النساء | ٤ |
| | فارزقوهم منه وقولوا لهم قولا معروفا ... ... ... | ٨ | م « | ٤ |
| | فلا تطعهما وصاحبهما فى الدنيا معروفا ... ... ... | ١٥ | ك لقمان | ٣١ |
| | إلا أن تفعلوا إلى أوليائكم معروفا ... ... ... ... | ٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وقلن قولا معروفا ... ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | م « | ٣٣ |
| **مَعْرُوفَةٍ** | : قل لا تقسموا طاعة معروفة إن الله خبير بما تعملون | ٥٣ | م النور | ٢٤ |
| **الأَعْرَافِ** | : وعلى الأعراف رجال يعرفون كلا بسيماهم | ٤٦ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | ونادى أصحاب الأعراف رجالا يعرفونهم بسيماهم | ٤٨ | ك « | ٧ |
| **عَرَفَاتٍ** | : فإذا أفضتم من عرفات فاذكروا الله عند المشعر الحرام ... ... ... ... ... ... | ١٩٨ | م البقرة | ٢ |
| **الْعَرِمِ** | : فأعرضوا فأرسلنا عليهم سيل العرم ... ... ... | ١٦ | ك سبأ | ٣٤ |
| **اعْتَرَاكَ** | : إن نقول إلا اعتراك بعض آلهتنا بسوء ... ... | ٥٤ | ك هود | ١١ |
| **بِالْعُرْوَةِ** | : فقد استمسك بالعروة الوثقى لا انفصام لها... ... | ٢٥٦ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | ومن يسلم وجهه إلى الله وهو محسن فقد استمسك بالعروة الوثقى ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك لقمان | ٣١ |
| **تَعْرَى** | : إن لك ألا تجوع فيها ولا تعرى ... ... ... ... | ١١٨ | ك طه | ٢٠ |
| **بِالْعَرَاءِ** | : فنبذناه بالعراء وهو سقيم ... ... ... ... ... | ١٤٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| (٢) | لولا أن تداركه نعمة من ربه لنبذ بالعراء وهو مذموم | ٤٩ | م القلم | ٦٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **يَعْزُبُ** | : وما يعزب عن ربك من مثقال ذرة فى الأرض | | | |
| (٢) | ولا فى السماء ... ... ... ... ... ... ... | ٦١ | ك يونس | ١٠ |
| | لا يعزب عنه مثقال ذرة فى السموات ولا فى الأرض | ٣ | ك سبأ | ٣٤ |
| **عَزَّرْتُمُوهُمْ** | : وعزرتموهم وأقرضتم الله قرضا حسنا لأكفرن عنكم سيئاتكم ... ... ... ... ... ... ... | ١٢ | م المائدة | ٥ |
| **وَعَزَّرُوهُ** | : فالذين آمنوا به وعزروه ونصروه واتبعوا النور الذى أنزل معه أولئك هم المفلحون ... ... ... | ١٥٧ | ك الأعراف | ٧ |
| **تُعَزِّرُوهُ** | : لتؤمنوا بالله ورسوله وتعزروه ... ... ... ... | ٩ | م الفتح | ٤٨ |
| **عُزَيْرٌ** | : وقالت اليهود عزير ابن الله ... ... ... ... ... | ٣٠ | م التوبة | ٩ |
| **فَعَزَّزْنَا** | : إذ أرسلنا إليهم اثنين فكذبوهما فعززنا بثالث | ١٤ | ك يس | ٣٦ |
| **عَزَّنِى** | : ولى نعجة واحدة فقال أكفلنيها وعزنى فى الخطاب | ٢٣ | ك ص | ٣٨ |
| **تُعِزُّ** | : وتعز من تشاء وتذل من تشاء... ... ... ... ... | ٢٦ | م آل عمران | ٣ |
| **عِزًّا** | : واتخذوا من دون الله آلهة ليكونوا لهم عزا ... | ٨١ | ك مريم | ١٩ |
| **الْعِزَّةُ** | : وإذا قيل له اتق الله أخذته العزة بالإثم ... ... | ٢٠٦ | م البقرة | ٢ |
| (١٠) | أيبتغون عندهم العزة ... ... ... ... ... ... | ١٣٩ | م النساء | ٤ |
| | فإن العزة لله جميعا ... ... ... ... ... ... ... | ١٣٩ | م « | ٤ |
| | ولا يحزنك قولهم إن العزة لله جميعا هو السميع العليم | ٦٥ | ك يونس | ١٠ |
| | وقالوا بعزة فرعون إنا لنحن الغالبون ... ... ... | ٤٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | من كان يريد العزة ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك فاطر | ٣٥ |
| | فلله العزة جميعا ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك « | ٣٥ |
| | سبحان ربك رب العزة عما يصفون ... ... ... | ١٨٠ | ك الصافات | ٣٧ |
| | بل الذين كفروا فى عزة وشقاق ... ... ... ... | ٢ | ك ص | ٣٨ |
| | ولله العزة ولرسوله وللمؤمنين ولكن المنافقين لا يعلمون | ٨ | م المنافقون | ٦٣ |
| **فَبِعِزَّتِكَ** | : قال فبعزتك لأغوينهم أجمعين ... ... ... ... | ٨٢ | ك ص | ٣٨ |
| **الْعَزِيزُ** | : ويزكيهم إنك أنت العزيز الحكيم ... ... ... ... | ١٢٩ | م البقرة | ٢ |
| (٩٢) | فاعلموا أن الله عزيز حكيم... ... ... ... ... | ٢٠٩ | م « | ٢ |
| | ولو شاء الله لأعنتكم إن الله عزيز حكيم ... ... ... | ٢٢٠ | م « | ٢ |
| | وللرجال عليهن درجة والله عزيز حكيم ... ... ... | ٢٢٨ | م « | ٢ |
| | فإن خرجن فلا جناح عليكم فى ما فعلن فى أنفسهن من معروف والله عزيز حكيم ... ... ... ... | ٢٤٠ | م « | ٢ |
| | ثم ادعهن يأتينك سعيا واعلم أن الله عزيز حكيم ... | ٢٦٠ | م « | ٢ |
| | لهم عذاب شديد والله عزيز ذو انتقام ... ... ... | ٤ | م آل عمران | ٣ |
| | لا إله إلا هو العزيز الحكيم... ... ... ... ... | ٦ | م « | ٣ |
| | وأولوا العلم قائما بالقسط لا إله إلا هو العزيز الحكيم | ١٨ | م « | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| العَزِيزُ | وما من إله إلا الله وإن الله لهو العزيز الحكيم | ٦٢ | م آل عمران | ٣ |
| | وما النصر إلا من عند الله العزيز الحكيم ... ... | ١٢٦ | م « | ٣ |
| | جزاء بما كسبا نكالا من الله والله عزيز حكيم ... | ٣٨ | م المائدة | ٥ |
| | ومن عاد فينتقم الله منه والله عزيز ذو انتقام ... | ٩٥ | م « | ٥ |
| | وإن تغفر لهم فإنك أنت العزيز الحكيم ... ... ... | ١١٨ | م « | ٥ |
| | ذلك تقدير العزيز العليم ... ... ... ... ... ... | ٩٦ | ك الأنعام | ٦ |
| | وما النصر إلا من عند الله إن الله عزيز حكيم ... | ١٠ | م الأنفال | ٨ |
| | ومن يتوكل على الله فإن الله عزيز حكيم ... ... ... | ٤٩ | م « | ٨ |
| | ولكن الله ألف بينهم إنه عزيز حكيم ... ... ... ... | ٦٣ | م « | ٨ |
| | تريدون عرض الدنيا والله يريد الآخرة والله عزيز حكيم | ٦٧ | م « | ٨ |
| | وكلمة الله هي العليا والله عزيز حكيم ... ... ... ... | ٤٠ | م التوبة | ٩ |
| | أولئك سيرحمهم الله إن الله عزيز حكيم ... ... ... | ٧١ | م « | ٩ |
| | لقد جاءكم رسول من أنفسكم عزيز عليه ما عنتم ... ... | ١٢٨ | ك « | ٩ |
| | إن ربك هو القوي العزيز ... ... ... ... ... ... | ٦٦ | ك هود | ١١ |
| | ولولا رهطك لرجمناك وما أنت علينا بعزيز ... ... | ٩١ | ك « | ١١ |
| | وقال نسوة في المدينة امرأة العزيز تراود فتاها عن نفسه | ٣٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | قالت امرأة العزيز الآن حصحص الحق أنا راودته | ٥١ | ك « | ١٢ |
| | قالوا يأيها العزيز إن له أبا شيخا كبيرا فخذ أحدنا مكانه | ٧٨ | ك « | ١٢ |
| | فلما دخلوا عليه قالوا يأيها العزيز مسنا وأهلنا الضر | ٨٨ | ك « | ١٢ |
| | لتخرج الناس من الظلمات إلى النور بإذن ربهم إلى صراط العزيز الحميد ... ... ... ... ... ... | ١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | فيضل الله من يشاء ويهدي من يشاء وهو العزيز الحكيم | ٤ | ك « | ١٤ |
| | وما ذلك على الله بعزيز ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك « | ١٤ |
| | فلا تحسبن الله مخلف وعده رسله إن الله عزيز ذو انتقام | ٤٧ | ك « | ١٤ |
| | ولله المثل الأعلى وهو العزيز الحكيم ... ... ... ... | ٦٠ | ك النحل | ١٦ |
| | ولينصرن الله من ينصره إن الله لقوي عزيز ... ... | ٤٠ | م الحج | ٢٢ |
| | ما قدروا الله حق قدره إن الله لقوي عزيز ... ... | ٧٤ | م « | ٢٢ |
| | وإن ربك لهو العزيز الرحيم . وإذ نادى ربك موسى | ٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وإن ربك لهو العزيز الرحيم . واتل عليهم نبأ إبراهيم | ٦٨ | ك « | ٢٦ |
| | وإن ربك لهو العزيز الرحيم . كذبت قوم نوح المرسلين | ١٠٤ | ك « | ٢٦ |
| | وإن ربك لهو العزيز الرحيم . كذبت عاد المرسلين | ١٢٢ | ك « | ٢٦ |
| | وإن ربك لهو العزيز الرحيم . كذبت ثمود المرسلين | ١٤٠ | ك « | ٢٦ |
| | وإن ربك لهو العزيز الرحيم . كذبت قوم لوط المرسلين | ١٥٩ | ك « | ٢٦ |
| | وإن ربك لهو العزيز الرحيم . كذب أصحاب الأيكة المرسلين | ١٧٥ | ك « | ٢٦ |
| | وإن ربك لهو العزيز الرحيم . وإنه لتنزيل رب العالمين | ١٩١ | ك « | ٢٦ |
| | وتوكل على العزيز الرحيم . الذي يراك حين تقوم ... | ٢١٧ | ك « | ٢٦ |
| | يا موسى إنه أنا الله العزيز الحكيم ... ... ... ... | ٩ | ك النمل | ٢٧ |
| | إن ربك يقضي بينهم بحكمه وهو العزيز العليم ... | ٧٨ | ك « | ٢٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| العَزِيزُ | وقال إني مهاجر إلى ربي إنه هو العزيز الحكيم ... | ٢٦ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | إن الله يعلم ما يدعون من دونه من شيء وهو العزيز الحكيم | ٤٢ | ك « | ٢٩ |
| | بنصر الله ينصر من يشاء وهو العزيز الرحيم ... ... | ٥ | ك الروم | ٣٠ |
| | وله المثل الأعلى في السموات والأرض وهو العزيز الحكيم | ٢٧ | ك « | ٣٠ |
| | خالدين فيها وعد الله حقا وهو العزيز الحكيم ... | ٩ | ك لقمان | ٣١ |
| | ما نفدت كلمات الله إن الله عزيز حكيم ... ... | ٢٧ | م « | ٣١ |
| | ذلك عالم الغيب والشهادة العزيز الرحيم ... ... ... | ٦ | ك السجدة | ٣٢ |
| | هو الحق ويهدي إلى صراط العزيز الحميد ... ... | ٦ | م سبأ | ٣٤ |
| | قل أروني الذين ألحقتم به شركاء كلا بل هو الله العزيز الحكيم | ٢٧ | ك « | ٣٤ |
| | وما يمسك فلا مرسل له من بعده وهو العزيز الحكيم | ٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| | إن يشأ يذهبكم ويأت بخلق جديد . وما ذلك على الله بعزيز | ١٧ | ك « | ٣٥ |
| | إنما يخشى الله من عباده العلماء إن الله عزيز غفور | ٢٨ | ك « | ٣٥ |
| | تنزيل العزيز الرحيم ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك يس | ٣٦ |
| | والشمس تجري لمستقر لها ذلك تقدير العزيز العليم | ٣٨ | ك « | ٣٦ |
| | أم عندهم خزائن رحمة ربك العزيز الوهاب ... ... | ٩ | ك ص | ٣٨ |
| | رب السموات والأرض وما بينهما العزيز الغفار ... | ٦٦ | ك « | ٣٨ |
| | تنزيل الكتاب من الله العزيز الحكيم ... ... ... | ١ | ك الزمر | ٣٩ |
| | كل يجري لأجل مسمى ألا هو العزيز الغفار ... | ٥ | ك « | ٣٩ |
| | أليس الله بعزيز ذي انتقام ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك « | ٣٩ |
| | تنزيل الكتاب من الله العزيز العليم ... ... ... ... | ٢ | ك غافر | ٤٠ |
| | إنك أنت العزيز الحكيم ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك « | ٤٠ |
| | وأنا أدعوكم إلى العزيز الغفار ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك « | ٤٠ |
| | ذلك تقدير العزيز العليم ... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك فصلت | ٤١ |
| | إن الذين كفروا بالذكر لما جاءهم وإنه لكتاب عزيز | ٤١ | ك « | ٤١ |
| | كذلك يوحي إليك وإلى الذين من قبلك الله العزيز الحكيم | ٣ | ك الشورى | ٤٢ |
| | الله لطيف بعباده يرزق من يشاء وهو القوي العزيز | ١٩ | ك « | ٤٢ |
| | ليقولن خلقهن العزيز العليم ... ... ... ... ... | ٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | إلا من رحم الله إنه هو العزيز الرحيم ... ... ... ... | ٤٢ | ك الدخان | ٤٤ |
| | ذق إنك أنت العزيز الكريم ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك « | ٤٤ |
| | تنزيل الكتاب من الله العزيز الحكيم ... ... ... ... | ٢ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | وله الكبرياء في السموات والأرض وهو العزيز الحكيم | ٣٧ | ك « | ٤٥ |
| | تنزيل الكتاب من الله العزيز الحكيم ... ... ... ... | ٢ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | كذبوا بآياتنا كلها فأخذناهم أخذ عزيز مقتدر ... ... | ٤٢ | ك القمر | ٥٤ |
| | سبح لله ما في السموات والأرض وهو العزيز الحكيم | ١ | م الحديد | ٥٧ |
| | وليعلم الله من ينصره ورسله بالغيب إن الله قوي عزيز | ٢٥ | م « | ٥٧ |
| | كتب الله لأغلبن أنا ورسلي إن الله قوي عزيز ... | ٢١ | م المجادلة | ٥٨ |
| | سبح لله ما في السموات وما في الأرض وهو العزيز الحكيم | ١ | م الحشر | ٥٩ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| الْعَزِيزُ: | الملك القدوس السلام المؤمن المهيمن العزيز الجبار | ٢٣ م الحشر | ٥٩ |
| | يسبح له ما فى السموات والأرض وهو العزيز الحكيم | ٢٤ م « | ٥٩ |
| | واغفر لنا ربنا إنك أنت العزيز الحكيم ... ... ... | ٥ م الممتحنة | ٦٠ |
| | سبح لله ما فى السموات وما فى الأرض وهو العزيز الحكيم | ١ م الصف | ٦١ |
| | الملك القدوس العزيز الحكيم ... ... ... ... ... | ١ م الجمعة | ٦٢ |
| | وآخرين منهم لما يلحقوا بهم وهو العزيز الحكيم ... | ٣ م « | ٦٢ |
| | عالم الغيب والشهادة العزيز الحكيم ... ... ... ... | ١٨ م التغابن | ٦٤ |
| | ليبلوكم أيكم أحسن عملا وهو العزيز الغفور ... ... | ٢ ك الملك | ٦٧ |
| | وما نقموا منهم إلا أن يؤمنوا بالله العزيز الحميد ... | ٨ ك البروج | ٨٥ |
| عَزِيزًا: | ليذوقوا العذاب إن الله كان عزيزا حكيما ... ... | ٥٦ م النساء | ٤ |
| (٧) | بل رفعه الله إليه وكان الله عزيزا حكيما ... ... ... | ١٥٨م « | ٤ |
| | لئلا يكون للناس على الله حجة بعد الرسل وكان الله عزيزا حكيما ... ... ... ... ... ... | ١٦٥م « | ٤ |
| | وكفى الله المؤمنين القتال وكان الله قويا عزيزا ... | ٢٥ م الأحزاب | ٣٣ |
| | وينصرك الله نصرا عزيزا ... ... ... ... ... ... | ٣ م الفتح | ٤٨ |
| | ولله جنود السموات والأرض وكان الله عزيزا حكيما | ٧ م « | ٤٨ |
| | ومغانم كثيرة يأخذونها وكان الله عزيزا حكيما ... | ١٩ م « | ٤٨ |
| أَعَزُّ: | قال ياقوم أرهطى أعز عليكم من الله ... ... ... | ٩٢ ك هود | ١١ |
| (٣) | فقال لصاحبه وهو يحاوره أنا أكثر منك مالا وأعز نفرا | ٣٤ ك الكهف | ١٨ |
| | يقولون لئن رجعنا إلى المدينة ليخرجن الأعز منها الأذل | ٨ م المنافقون | ٦٣ |
| أَعِزَّةٍ: | أذلة على المؤمنين أعزة على الكافرين ... ... | ٥٤ م المائدة | ٥ |
| (٢) | إذا دخلوا قرية أفسدوها وجعلوا أعزة أهلها أذلة | ٣٤ ك النمل | ٢٧ |
| الْعُزَّى: | أفرأيتم اللات والعزى . ومناة الثالثة الأخرى | ١٩ ك النجم | ٥٣ |
| عَزَلْتَ: | ومن ابتغيت ممن عزلت فلا جناح عليك ... ... | ٥١ م الأحزاب | ٣٣ |
| اعْتَزَلْتُمُوهُمْ: | وإذ اعتزلتموهم وما يعبدون إلا الله فأووا إلى الكهف ينشر لكم ربكم من رحمته ... ... | ١٦ ك الكهف | ١٨ |
| اعْتَزَلَهُمْ: | فلما اعتزلهم وما يعبدون من دون الله وهبنا له إسحق | ٤٩ ك مريم | ١٩ |
| اعْتَزَلُوكُمْ: | فإن اعتزلوكم فلم يقاتلوكم وألقوا إليكم السلم فما جعل الله لكم عليهم سبيلا ... ... ... ... | ٩٠ م النساء | ٤ |
| أَعْتَزِلُكُمْ: | وأعتزلكم وما تدعون من دون الله وأدعوا ربى | ٤٨ ك مريم | ١٩ |
| يَعْتَزِلُوكُمْ: | فإن لم يعتزلوكم ويلقوا إليكم السلم ويكفوا أيديهم فخذوهم ... ... ... ... ... ... | ٩١ م النساء | ٤ |
| فَاعْتَزِلُوا: | قل هو أذى فاعتزلوا النساء فى المحيض ... ... | ٢٢٢م البقرة | ٢ |
| فَاعْتَزِلُونِ: | وإن لم تؤمنوا لى فاعتزلون ... ... ... ... | ٢١ ك الدخان | ٤٤ |
| لَمَعْزُولُونَ: | إنهم عن السمع لمعزولون ... ... ... ... ... | ٢١٢ك الشعراء | ٢٦ |
| مَعْزِلٍ: | ونادى نوح ابنه وكان فى معزل يابنى اركب معنا ... | ٤٢ ك هود | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| عَزَمَ: | فإذا عزم الأمر فلو صدقوا الله لكان خيرا لهم ... | ٢١ م محمد | ٤٧ |
| عَزَمْتَ: | فإذا عزمت فتوكل على الله إن الله يحب المتوكلين | ١٥٩م آل عمران | ٣ |
| عَزَمُوا: | وإن عزموا الطلاق فإن الله سميع عليم ... ... | ٢٢٧م البقرة | ٢ |
| تَعْزِمُوا: | ولا تعزموا عقدة النكاح حتى يبلغ الكتاب أجله | ٢٣٥م « | ٢ |
| عَزْمِ: | وإن تصبروا وتتقوا فإن ذلك من عزم الأمور ... | ١٨٦م آل عمران | ٣ |
| (٤) | واصبر على ما أصابك إن ذلك من عزم الأمور ... | ١٧ ك لقمان | ٣١ |
| | ولمن صبر وغفر إن ذلك لمن عزم الأمور ... ... ... | ٤٣ ك الشورى | ٤٢ |
| | فاصبر كما صبر أولوا العزم من الرسل ولا تستعجل لهم | ٣٥ م الأحقاف | ٤٦ |
| عَزْمًا: | ولقد عهدنا إلى آدم من قبل فنسى ولم نجد له عزما | ١١٥ك طه | ٢٠ |
| عِزِينَ: | عن اليمين وعن الشمال عزين ... ... ... ... ... | ٣٧ ك المعارج | ٧٠ |
| تَعَاسَرْتُمْ: | وأتمروا بينكم بمعروف وإن تعاسرتم فسترضع له أخرى | ٦ م الطلاق | ٦٥ |
| عَسِرٌ: | مهطعين إلى الداع يقول الكافرون هذا يوم عسر | ٨ ك القمر | ٥٤ |
| الْعُسْرَ: | يريد الله بكم اليسر ولا يريد بكم العسر ... ... | ١٨٥م البقرة | ٢ |
| (٤) | سيجعل الله بعد عسر يسرا ... ... ... ... ... ... | ٧ م الطلاق | ٦٥ |
| | فإن مع العسر يسرا ... ... ... ... ... ... ... | ٥ ك الشرح | ٩٤ |
| | إن مع العسر يسرا ... ... ... ... ... ... ... | ٦ ك « | ٩٤ |
| عُسْرًا: | قال لا تؤاخذنى بما نسيت ولا ترهقنى من أمرى عسرا | ٧٣ ك الكهف | ١٨ |
| عُسْرَةٍ: | وإن كان ذو عسرة فنظرة إلى ميسرة ... ... ... | ٢٨٠م البقرة | ٢ |
| (٢) | والأنصار الذين اتبعوه فى ساعة العسرة ... ... ... | ١١٧م التوبة | ٩ |
| لِلْعُسْرَى: | وأما من بخل واستغنى . وكذب بالحسنى . فسنيسره للعسرى ... ... ... ... ... ... | ١٠ ك الليل | ٩٢ |
| عَسِيرٌ: | فإذا نقر فى الناقور . فذلك يومئذ يوم عسير ... | ٩ ك المدثر | ٧٤ |
| عَسِيرًا: | الملك يومئذ الحق للرحمن وكان يوما على الكافرين عسيرا | ٢٦ ك الفرقان | ٢٥ |
| عَسْعَسَ: | والليل إذا عسعس . والصبح إذا تنفس . إنه لقول رسول كريم ... ... ... ... ... | ١٧ ك التكوير | ٨١ |
| عسق: | حم . عسق . كذلك يوحى إليك وإلى الذين من قبلك الله العزيز الحكيم ... ... ... ... ... | ٢ ك الشورى | ٤٢ |
| عَسَلٍ: | وأنهار من خمر لذة للشاربين وأنهار من عسل مصفى | ١٥ م محمد | ٤٧ |
| عَسَى: | وعسى أن تكرهوا شيئا وهو خير لكم ... ... ... | ٢١٦م البقرة | ٢ |
| (٢٨) | وعسى أن تحبوا شيئا وهو شر لكم ... ... ... ... | ٢١٦م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عَسَى: | فعسى أن تكرهوا شيئا ويجعل الله فيه خيرا كثيرا | ١٩ | م النساء | ٤ |
| | عسى الله أن يكف بأس الذين كفروا ... ... ... | ٨٤ | م « | ٤ |
| | فأولئك عسى الله أن يعفو عنهم ... ... ... ... | ٩٩ | م « | ٤ |
| | فعسى الله أن يأتى بالفتح أو أمر من عنده ... ... | ٥٢ | م المائدة | ٥ |
| | قال عسى ربكم أن يهلك عدوكم ويستخلفكم فى الأرض | ١٢٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | وأن عسى أن يكون قد اقترب أجلهم ... ... ... | ١٨٥ | ك « | ٧ |
| | فعسى أولئك أن يكونوا من المهتدين ... ... ... | ١٨ | م التوبة | ٩ |
| | خلطوا عملا صالحا وآخر سيئا عسى الله أن يتوب عليهم | ١٠٢ | م « | ٩ |
| | أكرمى مثواه عسى أن ينفعنا أو نتخذه ولدا ... ... | ٢١ | ك يوسف | ١٢ |
| | فصبر جميل عسى الله أن يأتينى بهم جميعا ... ... | ٨٣ | ك « | ١٢ |
| | عسى ربكم أن يرحمكم وإن عدتم عدنا ... ... ... | ٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ويقولون متى هو قل عسى أن يكون قريبا ... ... | ٥١ | ك « | ١٧ |
| | عسى أن يبعثك ربك مقاما محمودا ... ... ... ... | ٧٩ | م « | ١٧ |
| | وقل عسى أن يهدين ربى لأقرب من هذا رشدا ... | ٢٤ | ك الكهف | ١٨ |
| | فعسى ربى أن يؤتين خيرا من جنتك ... ... ... | ٤٠ | ك « | ١٨ |
| | وأدعوا ربى عسى ألا أكون بدعاء ربى شقيا... ... | ٤٨ | ك مريم | ١٩ |
| | قل عسى أن يكون ردف لكم بعض الذى تستعجلون | ٧٢ | ك النمل | ٢٧ |
| | لا تقتلوه عسى أن ينفعنا أو نتخذه ولدا ... ... ... | ٩ | ك القصص | ٢٨ |
| | ولما توجه تلقاء مدين قال عسى ربى أن يهدينى سواء السبيل | ٢٢ | ك « | ٢٨ |
| | فأما من تاب وآمن وعمل صالحا فعسى أن يكون من المفلحين | ٦٧ | ك « | ٢٨ |
| | لا يسخر قوم من قوم عسى أن يكونوا خيرا منهم ... | ١١ | م الحجرات | ٤٩ |
| | ولا نساء من نساء عسى أن يكنّ خيرا منهن ... ... | ١١ | م « | ٤٩ |
| | عسى الله أن يجعل بينكم وبين الذين عاديتم منهم مودة | ٧ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | عسى ربه إن طلقكن أن يبدله أزواجا خيرا منكن | ٥ | م التحريم | ٦٦ |
| | عسى ربكم أن يكفر عنكم سيئاتكم ويدخلكم جنات | ٨ | م « | ٦٦ |
| | عسى ربنا أن يبدلنا خيرا منها إنا إلى ربنا راغبون | ٣٢ | م القلم | ٦٨ |
| عَسَيْتُمْ: | قال هل عسيتم إن كتب عليكم القتال ألا تقاتلوا | ٢٤٦ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | فهل عسيتم إن توليتم أن تفسدوا فى الأرض ... ... | ٢٢ | م محمد | ٤٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| عَاشِرُوهُنَّ: | وعاشروهن بالمعروف ... ... ... ... ... | ١٩ | م النساء | ٤ |
| الْعَشِيرُ: | لبئس المولى ولبئس العشير ... ... ... ... ... | ١٣ | م الحج | ٢٢ |
| عَشِيرَتَكَ: | وأنذر عشيرتك الأقربين ... ... ... ... ... | ٢١٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| عَشِيرَتُكُمْ: | قل إن كان آباؤكم وأبناؤكم وإخوانكم وأزواجكم وعشيرتكم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | م التوبة | ٩ |
| عَشِيرَتُهُمْ: | ولو كانوا آباءهم أو أبناءهم أو إخوانهم أو عشيرتهم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| الْعِشَارُ: | وإذا الجبال سيرت . وإذا العشار عطلت... ... | ٤ | ك التكوير | ٨١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مَعْشَرَ: | ويوم يحشرهم جميعا يا معشر الجن قد استكثرتم من الإنس | ١٢٨ | ك الأنعام | ٦ |
| (٣) | يا معشر الجن والإنس ألم يأتكم رسل منكم ... ... | ١٣٠ | ك « | ٦ |
| | يا معشر الجن والإنس إن استطعتم أن تنفذوا من أقطار السموات والأرض فانفذوا ... ... ... ... | ٣٣ | م الرحمن | ٥٥ |
| مِعْشَارَ: | وكذب الذين من قبلهم وما بلغوا معشار ما آتيناهم | ٤٥ | ك سبأ | ٣٤ |
| عَشْرُ: | من جاء بالحسنة فله عشر أمثالها ... ... ... ... | ١٦٠ | ك الأنعام | ٦ |
| (٤) | وواعدنا موسى ثلاثين ليلة وأتممناها بعشر ... ... | ١٤٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | أم يقولون افتراه قل فأتوا بعشر سور مثله مفتريات | ١٣ | ك هود | ١١ |
| | والفجر . وليال عشر . والشفع والوتر ... ... ... | ٢ | ك الفجر | ٨٩ |
| عَشْرًا: | يتربصن بأنفسهن أربعة أشهر وعشرا ... ... ... | ٢٣٤ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | يتخافتون بينهم إن لبثتم إلا عشرا ... ... ... ... | ١٠٣ | ك طه | ٢٠ |
| | فإن أتممت عشرا فمن عندك ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك القصص | ٢٨ |
| عَشْرَةَ: | فقلنا اضرب بعصاك الحجر فانفجرت منه اثنتا عشرة عينا | ٦٠ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | وقطعناهم اثنتى عشرة أسباطا أمما... ... ... ... | ١٦٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | أن اضرب بعصاك الحجر فانبجست منه اثنتا عشرة عينا | ١٦٠ | ك « | ٧ |
| عَشَرَ: | وبعثنا منهم اثنى عشر نقيبا ... ... ... ... ... | ١٢ | م المائدة | ٥ |
| (٤) | إن عدة الشهور عند الله اثنا عشر شهرا فى كتاب الله | ٣٦ | م التوبة | ٩ |
| | إذ قال يوسف لأبيه يا أبت إنى رأيت أحد عشر كوكبا | ٤ | ك يوسف | ١٢ |
| | لواحة للبشر . عليها تسعة عشر ... ... ... ... | ٣٠ | ك المدثر | ٧٤ |
| عَشَرَةٌ: | تلك عشرة كاملة ... ... ... ... ... ... | ١٩٦ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | فكفارته إطعام عشرة مساكين ... ... ... ... | ٨٩ | م المائدة | ٥ |
| عِشْرُونَ: | إن يكن منكم عشرون صابرون يغلبوا مائتين ... | ٦٥ | م الأنفال | ٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| يَعْشُ: | ومن يعش عن ذكر الرحمن نقيض له شيطانا فهو له قرين | ٣٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| عِشَاءً: | وجاءوا أباهم عشاء يبكون ... ... ... ... ... | ١٦ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | حين تضعون ثيابكم من الظهيرة ومن بعد صلاة العشاء | ٥٨ | م النور | ٢٤ |
| بِالْعَشِيِّ: | واذكر ربك كثيرا وسبح بالعشىّ والإبكار ... | ٤١ | م آل عمران | ٣ |
| (٦) | ولا تطرد الذين يدعون ربهم بالغداة والعشىّ... ... | ٥٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | واصبر نفسك مع الذين يدعون ربهم بالغداة والعشىّ | ٢٨ | م الكهف | ١٨ |
| | إنا سخرنا الجبال معه يسبحن بالعشىّ والإشراق... ... | ١٨ | ك ص | ٣٨ |
| | إذ عرض عليه بالعشىّ الصافنات الجياد ... ... ... | ٣١ | ك « | ٣٨ |
| | واستغفر لذنبك وسبح بحمد ربك بالعشىّ والإبكار ... | ٥٥ | ك غافر | ٤٠ |
| عَشِيًّا: | فأوحى إليهم أن سبحوا بكرة وعشيا ... ... ... | ١١ | ك مريم | ١٩ |
| (٤) | لا يسمعون فيها لغوا إلا سلاما ولهم رزقهم فيها بكرة وعشيا | ٦٢ | ك « | ١٩ |
| | وله الحمد فى السموات والأرض وعشيا وحين تظهرون | ١٨ | ك الروم | ٣٠ |
| | النار يعرضون عليها غدوا وعشيا ... ... ... ... | ٤٦ | ك غافر | ٤٠ |
| عَشِيَّةً: | كأنهم يوم يرونها لم يلبثوا إلا عشية أو ضحاها ... | ٤٦ | ك النازعات | ٧٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| عُصْبَةٌ | : أحب إلى أبينا منا ونحن عصبة ... ... ... ... | ٨ | ك يوسف | ١٢ |
| (٤) | قالوا لئن أكله الذئب ونحن عصبة إنا إذا لخاسرون | ١٤ | ك « | ١٢ |
| | إن الذين جاءو بالإفك عصبة منكم ... ... ... ... | ١١ | م النور | ٢٤ |
| | وآتيناه من الكنوز ما إن مفاتحه لتنوأ بالعصبة ... | ٧٦ | ك القصص | ٢٨ |
| عَصِيبٌ | : سيء بهم وضاق بهم ذرعا وقال هذا يوم عصيب | ٧٧ | ك هود | ١١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| أَعْصِرُ | : قال أحدهما إني أراني أعصر خمرا ... ... ... | ٣٦ | ك يوسف | ١٢ |
| يَعْصِرُونَ | : فيه يغاث الناس وفيه يعصرون ... ... ... | ٤٩ | ك « | ١٢ |
| وَالْعَصْرِ | : والعصر . إن الإنسان لفي خسر ... ... ... ... | ١ | ك العصر | ١٠٣ |
| إِعْصَارٌ | : فأصابها إعصار فيه نار فاحترقت ... ... ... ... | ٢٦٦ | م البقرة | ٢ |
| الْمُعْصِرَاتِ | : وأنزلنا من المعصرات ماء ثجاجا ... ... ... | ١٤ | ك النبأ | ٧٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| الْعَصْفِ | : والحب ذو العصف والريحان ... ... ... ... | ١٢ | م الرحمن | ٥٥ |
| (٢) | فجعلهم كعصف مأكول ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك الفيل | ١٠٥ |
| عَصْفًا | : والمرسلات عرفا . فالعاصفات عصفا ... ... ... | ٢ | ك المرسلات | ٧٧ |
| عَاصِفٌ | : جاءتها ريح عاصف وجاءهم الموج من كل مكان | ٢٢ | ك يونس | ١٠ |
| (٢) | أعمالهم كرماد اشتدت به الريح في يوم عاصف ... | ١٨ | ك إبراهيم | ١٤ |
| عَاصِفَةً | : ولسليمان الريح عاصفة تجري بأمره ... ... ... | ٨١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| فَالْعَاصِفَاتِ | : والمرسلات عرفا . فالعاصفات عصفا ... | ٢ | ك المرسلات | ٧٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| يَعْصِمُكَ | : والله يعصمك من الناس ... ... ... ... ... | ٦٧ | م المائدة | ٥ |
| يَعْصِمُكُمْ | : قل من ذا الذي يعصمكم من الله إن أراد بكم سوءا | ١٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| يَعْصِمُنِي | : قال سآوي إلى جبل يعصمني من الماء ... ... | ٤٣ | ك هود | ١١ |
| اعْتَصَمُوا | : إلا الذين تابوا وأصلحوا واعتصموا بالله | | | |
| (٢) | وأخلصوا دينهم لله فأولئك مع المؤمنين ... ... | ١٤٦ | م النساء | ٤ |
| | فأما الذين آمنوا بالله واعتصموا به فسيدخلهم في رحمة منه | ١٧٥ | م « | ٤ |
| يَعْتَصِمْ | : ومن يعتصم بالله فقد هدي إلى صراط مستقيم | ١٠١ | م آل عمران | ٣ |
| اعْتَصِمُوا | : واعتصموا بحبل الله جميعا ولا تفرقوا ... ... | ١٠٣ | م « | ٣ |
| (٢) | وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة واعتصموا بالله هو مولاكم | ٧٨ | م الحج | ٢٢ |
| اسْتَعْصَمَ | : ولقد راودته عن نفسه فاستعصم ... ... ... | ٣٢ | ك يوسف | ١٢ |
| عَاصِمٍ | : وترهقهم ذلة مالهم من الله من عاصم ... ... ... | ٢٧ | ك يونس | ١٠ |
| (٣) | قال لا عاصم اليوم من أمر الله إلا من رحم ... ... | ٤٣ | ك هود | ١١ |
| | يوم تولون مدبرين مالكم من الله من عاصم ... ... | ٣٣ | ك غافر | ٤٠ |
| عِصَمِ | : ولا تمسكوا بعصم الكوافر وسئلوا ما أنفقتم ... ... | ١٠ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | ✦✦✦ | | | |
| عَصَاكَ | : وإذ استسقى موسى لقومه فقلنا اضرب بعصاك الحجر | ٦٠ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | وأوحينا إلى موسى أن ألق عصاك فإذا هي تلقف ما يأفكون | ١١٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | أن اضرب بعصاك الحجر... ... ... ... ... ... | ١٦٠ | ث « | ٧ |
| | فأوحينا إلى موسى أن اضرب بعصاك البحر فانفلق | ٦٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وألق عصاك فلما رآها تهتز كأنها جان ولى مدبرا ولم يعقب | ١٠ | ك النمل | ٢٧ |
| | وأن ألق عصاك فلما رآها تهتز كأنها جان ولى مدبرا | ٣١ | ك القصص | ٢٨ |
| عَصَاهُ | : فألقى عصاه فإذا هي ثعبان مبين ... ... ... ... | ١٠٧ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | فألقى عصاه فإذا هي ثعبان مبين ... ... ... ... | ٣٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فألقى موسى عصاه فإذا هي تلقف ما يأفكون ... ... | ٤٥ | ك « | ٢٦ |
| عَصَايَ | : قال هي عصاي أتوكأ عليها وأهش بها على غنمي | ١٨ | ك طه | ٢٠ |
| عِصِيُّهُمْ | : فإذا حبالهم وعصيهم يخيل إليه من سحرهم أنها تسعى | ٦٦ | ك « | ٢٠ |
| (٢) | فألقوا حبالهم وعصيهم وقالوا بعزة فرعون إنا لنحن الغالبون | ٤٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| عَصَى | : وعصى آدم ربه فغوى ... ... ... ... ... ... | ١٢١ | ك طه | ٢٠ |
| (٣) | فعصى فرعون الرسول فأخذناه أخذا وبيلا ... ... | ١٦ | ك المزمل | ٧٣ |
| | فأراه الآية الكبرى . فكذب وعصى . ثم أدبر يسعى | ٢١ | ك النازعات | ٧٩ |
| عَصَانِي | : فمن تبعني فإنه مني ومن عصاني فإنك غفور رحيم | ٣٦ | ك إبراهيم | ١٤ |
| عَصَوْا | : ذلك بما عصوا وكانوا يعتدون ... ... ... ... | ٦١ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | ويقتلون الأنبياء بغير حق ذلك بما عصوا وكانوا يعتدون | ١١٢ | م آل عمران | ٣ |
| | يومئذ يود الذين كفروا وعصوا الرسول لو تسوى بهم الأرض | ٤٢ | م النساء | ٤ |
| | ذلك بما عصوا وكانوا يعتدون... ... ... ... ... | ٧٨ | م المائدة | ٥ |
| | وتلك عاد جحدوا بآيات ربهم وعصوا رسله... ... | ٥٩ | ك هود | ١١ |
| | فعصوا رسول ربهم فأخذهم أخذة رابية... ... ... | ١٠ | ك الحاقة | ٦٩ |
| عَصَوْكَ | : فإن عصوك فقل إني بريء مما تعملون ... ... | ٢١٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| عَصَوْنِي | : قال نوح رب إنهم عصوني ... ... ... ... | ٢١ | ك نوح | ٧١ |
| عَصَيْتُ | : قل إني أخاف إن عصيت ربي عذاب يوم عظيم | ١٥ | ك الأنعام | ٦ |
| (٥) | إني أخاف إن عصيت ربي عذاب يوم عظيم ... ... | ١٥ | ك يونس | ١٠ |
| | آلآن وقد عصيت قبل وكنت من المفسدين ... ... | ٩١ | ك « | ١٠ |
| | ألا تتبعن أفعصيت أمري ... ... ... ... ... ... | ٩٣ | ك طه | ٢٠ |
| | قل إني أخاف إن عصيت ربي عذاب يوم عظيم | ١٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| عَصَيْتُمْ | : وعصيتم من بعد ما أراكم ما تحبون ... ... ... | ١٥٢ | م آل عمران | ٣ |
| عَصَيْتُهُ | : فمن ينصرني من الله إن عصيته ... ... ... ... | ٦٣ | ك هود | ١١ |
| عَصَيْنَا | : قالوا سمعنا وعصينا وأشربوا في قلوبهم العجل بكفرهم | ٩٣ | ا البقرة | ٢ |
| (٢) | ويقولون سمعنا وعصينا واسمع غير مسمع ... ... ... | ٤٦ | م النساء | ٤ |
| أَعْصِي | : قال ستجدني إن شاء الله صابرا ولا أعصي لك أمرا | ٦٩ | ك الكهف | ١٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَعْصِ | : ومن يعص الله ورسوله ويتعد حدوده يدخله نارا | ١٤ | م النساء | ٤ |
| (٣) | ومن يعص الله ورسوله فقد ضل ضلالا مبينا... ... | ٣٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ومن يعص الله ورسوله فإن له نار جهنم خالدين فيها أبدا | ٢٣ | ك الجن | ٧٢ |
| يَعْصُونَ | : عليها ملائكة غلاظ شداد لا يعصون الله ما أمرهم | ٦ | م التحريم | ٦٦ |
| يَعْصِينَكَ | : ولا يأتين ببهتان يفترينه بين أيديهن وأرجلهن | | | |
| | ولا يعصينك فى معروف... ... ... ... ... | ١٢ | م الممتحنة | ٦٠ |
| عَصِيًّا | : وبرا بوالديه ولم يكن جبارا عصيا... ... ... | ١٤ | ك مريم | ١٩ |
| (٢) | يا أبت لا تعبد الشيطان إن الشيطان كان للرحمن عصيا | ٤٤ | ك « | ١٩ |
| الْعِصْيَانَ | : وكره إليكم الكفر والفسوق والعصيان ... ... | ٧ | م الحجرات | ٤٩ |
| مَعْصِيَةِ | : ويتناجون بالإثم والعدوان ومعصية الرسول ... | ٨ | م المجادلة | ٥٨ |
| (٢) | إذا تناجيتم فلا تتناجوا بالإثم والعدوان ومعصية الرسول | ٩ | م « | ٥٨ |
| عَضُدًا | : وما كنت متخذ المضلين عضدا ... ... ... ... | ٥١ | ك الكهف | ١٨ |
| عَضُدَكَ | : قال سنشد عضدك بأخيك ونجعل لكما سلطانا | ٣٥ | ك القصص | ٢٨ |
| عَضُّوا | : وإذا خلوا عضوا عليكم الأنامل من الغيظ... ... | ١١٩ | م آل عمران | ٣ |
| يَعَضُّ | : ويوم يعض الظالم على يديه يقول يا ليتنى اتخذت | | | |
| | مع الرسول سبيلا ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك الفرقان | ٢٥ |
| تَعْضُلُوهُنَّ | : فلا تعضلوهن أن ينكحن أزواجهن ... ... | ٢٣٢ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | ولا تعضلوهن لتذهبوا ببعض ما آتيتموهن ... ... | ١٩ | م النساء | ٤ |
| عِضِينَ | : كما أنزلنا على المقتسمين . الذين جعلوا القرآن عضين | ٩١ | ك الحجر | ١٥ |
| عِطْفِهِ | : ثانى عطفه ليضل عن سبيل الله ... ... ... | ٩ | م الحج | ٢٢ |
| عُطِّلَتْ | : وإذا العشار عطلت . وإذا الوحوش حشرت | ٤ | ك التكوير | ٨١ |
| مُعَطَّلَةٍ | : فهى خاوية على عروشها وبئر معطلة وقصر مشيد | ٤٥ | م الحج | ٢٢ |
| أَعْطَى | : قال ربنا الذى أعطى كل شىء خلقه ثم هدى | ٥٠ | ك طه | ٢٠ |
| (٣) | أفرأيت الذى تولى . وأعطى قليلا وأكدى ... ... | ٣٤ | ك النجم | ٥٣ |
| | فأما من أعطى واتقى . وصدق بالحسنى . فسنيسره لليسرى | ٥ | ك الليل | ٩٢ |
| أَعْطَيْنَاكَ | : إنا أعطيناك الكوثر ... ... ... ... ... | ١ | ك الكوثر | ١٠٨ |
| يُعْطُوا | : حتى يعطوا الجزية عن يد وهم صاغرون ... ... | ٢٩ | م التوبة | ٩ |
| يُعْطِيكَ | : ولسوف يعطيك ربك فترضى ... ... ... ... | ٥ | ك الضحى | ٩٣ |
| أُعْطُوا | : ومنهم من يلمزك فى الصدقات فإن أعطوا منها رضوا | ٥٨ | م التوبة | ٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يُعْطَوْا | : وإن لم يعطوا منها إذا هم يسخطون ... ... ... | ٥٨ | م التوبة | ٩ |
| فَتَعَاطَى | : فنادوا صاحبهم فتعاطى فعقر ... ... ... ... | ٢٩ | ك القمر | ٥٤ |
| عَطَاءً | : عطاء غير مجذوذ ... ... ... ... ... ... | ١٠٨ | ك هود | ١١ |
| (٤) | كلا نمد هؤلاء وهؤلاء من عطاء ربك ... ... ... | ٢٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وما كان عطاء ربك محظورا ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك « | ١٧ |
| | جزاء من ربك عطاء حسابا ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك النبأ | ٧٨ |
| عَطَاؤُنَا | : هذا عطاؤنا فامنن أو أمسك بغير حساب... ... | ٣٩ | ك ص | ٣٨ |
| يُعَظِّمْ | : ذلك ومن يعظم حرمات الله فهو خير له عند ربه | ٣٠ | م الحج | ٢٢ |
| (٢) | ذلك ومن يعظم شعائر الله فإنها من تقوى القلوب | ٣٢ | م « | ٢٢ |
| يُعْظِمْ | : ومن يتق الله يكفر عنه سيئاته ويعظم له أجرا ... | ٥ | م الطلاق | ٦٥ |
| عَظِيمٌ | : وعلى أبصارهم غشاوة ولهم عذاب عظيم... ... ... | ٧ | م البقرة | ٢ |
| (٨٥) | وفى ذلكم بلاء من ربكم عظيم ... ... ... ... | ٤٩ | م « | ٢ |
| | والله يختص برحمته من يشاء والله ذو الفضل العظيم | ١٠٥ | م « | ٢ |
| | لهم فى الدنيا خزى ولهم فى الآخرة عذاب عظيم... ... | ١١٤ | م « | ٢ |
| | ولا يئوده حفظهما وهو العلى العظيم ... ... ... | ٢٥٥ | م « | ٢ |
| | يختص برحمته من يشاء والله ذو الفضل العظيم ... ... | ٧٤ | م آل عمران | ٣ |
| | وأولئك لهم عذاب عظيم ... ... ... ... ... | ١٠٥ | م « | ٣ |
| | للذين أحسنوا منهم واتقوا أجر عظيم ... ... ... | ١٧٢ | م « | ٣ |
| | واتبعوا رضوان الله والله ذو فضل عظيم ... ... ... | ١٧٤ | م « | ٣ |
| | يريد الله ألا يجعل لهم حظا فى الآخرة ولهم عذاب عظيم | ١٧٦ | م « | ٣ |
| | فآمنوا بالله ورسله وإن تؤمنوا وتتقوا فلكم أجر عظيم | ١٧٩ | م « | ٣ |
| | تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها وذلك الفوز العظيم | ١٣ | م النساء | ٤ |
| | وعد الله الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم مغفرة | | | |
| | وأجر عظيم... ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | م المائدة | ٥ |
| | ذلك لهم خزى فى الدنيا ولهم فى الآخرة عذاب عظيم | ٣٣ | م « | ٥ |
| | لهم فى الدنيا خزى ولهم فى الآخرة عذاب عظيم ... ... | ٤١ | م « | ٥ |
| | رضى الله عنهم ورضوا عنه ذلك الفوز العظيم ... ... | ١١٩ | م « | ٥ |
| | قل إنى أخاف إن عصيت ربى عذاب يوم عظيم ... | ١٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | إنى أخاف عليكم عذاب يوم عظيم ... ... ... ... | ٥٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | سحروا أعين الناس واسترهبوهم وجاءوا بسحر عظيم | ١١٦ | ك « | ٧ |
| | ويستحيون نساءكم وفى ذلكم بلاء من ربكم عظيم ... | ١٤١ | ك « | ٧ |
| | وأن الله عنده أجر عظيم... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م الأنفال | ٨ |
| | ويكفر عنكم سيئاتكم ويغفر لكم والله ذو الفضل العظيم | ٢٩ | م « | ٨ |
| | لولا كتاب من الله سبق لمسكم فيما أخذتم عذاب عظيم | ٦٨ | م « | ٨ |
| | خالدين فيها أبدا إن الله عنده أجر عظيم ... ... ... | ٢٢ | م التوبة | ٩ |
| | فأن له نار جهنم خالدا فيها ذلك الخزى العظيم ... ... | ٦٣ | م « | ٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عَظِيمٌ: | ورضوان من الله أكبر ذلك هو الفوز العظيم... ... | ٧٢ | م التوبة | ٩ |
| | تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها ذلك الفوز العظيم | ٨٩ | م « | ٩ |
| | تجرى تحتها الأنهار خالدين فيها أبدا ذلك الفوز العظيم | ١٠٠ | م « | ٩ |
| | سنعذبهم مرتين ثم يردون إلى عذاب عظيم ... ... | ١٠١ | م « | ٩ |
| | فاستبشروا ببيعكم الذى بايعتم به وذلك هو الفوز العظيم | ١١١ | م « | ٩ |
| | عليه توكلت وهو رب العرش العظيم... ... ..... | ١٢٩ | ك « | ٩ |
| | إنى أخاف إن عصيت ربى عذاب يوم عظيم ... ... | ١٥ | ك يونس | ١٠ |
| | لا تبديل لكلمات الله ذلك هو الفوز العظيم ... ... | ٦٤ | ك « | ١٠ |
| | قال إنه من كيدكن إن كيدكن عظيم... ... ... ... | ٢٨ | ك يوسف | ١٢ |
| | ويستحيون نساءكم وفى ذلكم بلاء من ربكم عظيم ... | ٦ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | ولقد آتيناك سبعا من المثانى والقرآن العظيم ... ... | ٨٧ | م الحجر | ١٥ |
| | وتذوقوا السوء بما صددتم عن سبيل الله ولكم عذاب عظيم ... ... ... ... ... ... ... | ٩٤ | ك النحل | ١٦ |
| | فعليهم غضب من الله ولهم عذاب عظيم ... ... ... | ١٠٦ | ك « | ١٦ |
| | فويل للذين كفروا من مشهد يوم عظيم... ... ... | ٣٧ | ك مريم | ١٩ |
| | فاستجبنا له فنجيناه وأهله من الكرب العظيم ... ... | ٧٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | يأيها الناس اتقوا ربكم إن زلزلة الساعة شىء عظيم ... | ١ | م الحج | ٢٢ |
| | قل من رب السموات السبع ورب العرش العظيم ... | ٨٦ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | والذى تولى كبره منهم له عذاب عظيم ... ... ... | ١١ | م النور | ٢٤ |
| | لمسكم فى ما أفضتم فيه عذاب عظيم ... ... ... ... | ١٤ | م « | ٢٤ |
| | وتحسبونه هينا وهو عند الله عظيم ... ... ... ... | ١٥ | م « | ٢٤ |
| | فلم ما يكون لنا أن نتكلم بهذا سبحانك هذا بهتان عظيم | ١٦ | م « | ٢٤ |
| | لعنوا فى الدنيا والآخرة ولهم عذاب عظيم... ... ... | ٢٣ | م « | ٢٤ |
| | فانفلق فكان كل فرق كالطود العظيم... ... ... ... | ٦٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | إنى أخاف عليكم عذاب يوم عظيم ... ... ... ... | ١٣٥ | ك « | ٢٦ |
| | ولا تمسوها بسوء فيأخذكم عذاب يوم عظيم ... ... | ١٥٦ | ك « | ٢٦ |
| | فأخذهم عذاب يوم الظلة إنه كان عذاب يوم عظيم... | ١٨٩ | ك « | ٢٦ |
| | وأوتيت من كل شىء ولها عرش عظيم ... ... ... | ٢٣ | ك النمل | ٢٧ |
| | الله لا إله إلا هو رب العرش العظيم... ... ... ... | ٢٦ | ك « | ٢٧ |
| | يا ليت لنا مثل ما أوتى قارون إنه لذو حظ عظيم ... | ٧٩ | ك القصص | ٢٨ |
| | يا بنىّ لا تشرك بالله إن الشرك لظلم عظيم ... ... | ١٣ | ك لقمان | ٣١ |
| | إن هذا لهو الفوز العظيم ... ... ... ... ... ... | ٦٠ | ك الصافات | ٣٧ |
| | ونجيناه وأهله من الكرب العظيم... ... ... ... ... | ٧٦ | ك « | ٣٧ |
| | وفديناه بذبح عظيم ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٧ | ك « | ٣٧ |
| | ونجيناهما وقومهما من الكرب العظيم... ... ... ... | ١١٥ | ك « | ٣٧ |
| | قل هو نبأ عظيم . أنتم عنه معرضون ... ... ... | ٦٧ | ك ص | ٣٨ |
| | قل إنى أخاف إن عصيت ربى عذاب يوم عظيم ... | ١٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ومن تق السيئات يومئذ فقد رحمته وذلك هو الفوز العظيم | ٩ | ك غافر | ٤٠ |
| عَظِيمٌ: | وما يلقاها إلا الذين صبروا وما يلقاها إلا ذو حظ عظيم | ٣٥ | ك فصلت | ٤١ |
| | له ما فى السموات وما فى الأرض وهو العلىّ العظيم | ٤ | ك الشورى | ٤٢ |
| | وقالوا لولا نزل هذا القرآن على رجل من القريتين عظيم | ٣١ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | فضلا من ربك ذلك هو الفوز العظيم ... ... ... | ٥٧ | ك الدخان | ٤٤ |
| | ولهم عذاب عظيم ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | ألا تعبدوا إلا الله إنى أخاف عليكم عذاب يوم عظيم | ٢١ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | لهم مغفرة وأجر عظيم ... ... ... ... ... ... | ٣ | م الحجرات | ٤٩ |
| | وكانوا يصرون على الحنث العظيم... ... ... ... ... | ٤٦ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | فسبح باسم ربك العظيم ... ... ... ... ... ... | ٧٤ | ك « | ٥٦ |
| | وإنه لقسم لو تعلمون عظيم ... ... ... ... ... | ٧٦ | ك « | ٥٦ |
| | إن هذا لهو حق اليقين . فسبح باسم ربك العظيم ... | ٩٦ | ك « | ٥٦ |
| | ذلك هو الفوز العظيم ... ... ... ... ... ... | ١٢ | م الحديد | ٥٧ |
| | ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء والله ذو الفضل العظيم | ٢١ | م « | ٥٧ |
| | وأن الفضل بيد الله يؤتيه من يشاء والله ذو الفضل العظيم | ٢٩ | م « | ٥٧ |
| | ومساكن طيبة فى جنات عدن ذلك الفوز العظيم ... | ١٢ | م الصف | ٦١ |
| | ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء والله ذو الفضل العظيم | ٤ | م الجمعة | ٦٢ |
| | خالدين فيها أبدا ذلك الفوز العظيم ... ... ... ... | ٩ | م التغابن | ٦٤ |
| | إنما أموالكم وأولادكم فتنة والله عنده أجر عظيم ... | ١٥ | م « | ٦٤ |
| | وإنك لعلى خلق عظيم ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك القلم | ٦٨ |
| | إنه كان لا يؤمن بالله العظيم ... .. ... ... ... | ٣٣ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | وإنه لحق اليقين . فسبح باسم ربك العظيم ... ... | ٥٢ | ك « | ٦٩ |
| | عم يتساءلون . عن النبإ العظيم . الذى هم فيه مختلفون | ٢ | ك النبإ | ٧٨ |
| | ألا يظن أولئك أنهم مبعوثون . ليوم عظيم ... ... | ٥ | ك المطففين | ٨٣ |
| عَظِيمًا: | ويريد الذين يتبعون الشهوات أن تميلوا ميلا عظيما | ٢٧ | م النساء | ٤ |
| | (٢٢) وإن تك حسنة يضاعفها ويؤت من لدنه أجرا عظيما | ٤٠ | م « | ٤ |
| | ومن يشرك بالله فقد افترى إثما عظيما ... ... ... | ٤٨ | م « | ٤ |
| | فقد آتينا آل إبراهيم الكتاب والحكمة وآتيناهم ملكا عظيما | ٥٤ | م « | ٤ |
| | وإذا لآتيناهم من لدنا أجرا عظيما ... ... ... ... | ٦٧ | م « | ٤ |
| | يا ليتنى كنت معهم فأفوز فوزا عظيما ... ... ... ... | ٧٣ | م « | ٤ |
| | فسوف نؤتيه أجرا عظيما... ... ... ... ... ... | ٧٤ | م « | ٤ |
| | وغضب الله عليه ولعنه وأعد له عذابا عظيما ... ... | ٩٣ | م « | ٤ |
| | وفضل الله المجاهدين على القاعدين أجرا عظيما ... ... | ٩٥ | م « | ٤ |
| | وكان فضل الله عليك عظيما ... ... ... ... ... | ١١٣ | م « | ٤ |
| | ومن يفعل ذلك ابتغاء مرضاة الله فسوف نؤتيه أجرا عظيما | ١١٤ | م « | ٤ |
| | وسوف يؤت الله المؤمنين أجرا عظيما ... ... ... | ١٤٦ | م « | ٤ |
| | وبكفرهم وقولهم على مريم بهتانا عظيما ... ... ... | ١٥٦ | م « | ٤ |
| | والمؤمنون بالله واليوم الآخر أولئك سنؤتيهم أجرا عظيما | ١٦٢ | م « | ٤ |
| | إنكم لتقولون قولا عظيما... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك الإسراء | ١٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عَظِيماً | : فإن الله أعد للمحسنات منكن أجرا عظيما ... ... ... | ٢٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | أعد الله لهم مغفرة وأجرا عظيما ... ... ... ... ... | ٣٥ | م « | ٣٣ |
| | إن ذلكم كان عند الله عظيما ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | م « | ٣٣ |
| | ومن يطع الله ورسوله فقد فاز فوزا عظيما ... ... ... | ٧١ | م « | ٣٣ |
| | ويكفر عنهم سيئاتهم وكان ذلك عند الله فوزا عظيما | ٥ | م الفتح | ٤٨ |
| | ومن أوفى بما عاهد عليه الله فسيؤتيه أجرا عظيما ... | ١٠ | م « | ٤٨ |
| | وعد الله الذين آمنوا وعملوا الصالحات منهم مغفرة وأجرا عظيما ... ... ... ... ... ... | ٢٩ | م « | ٤٨ |
| أَعْظَمُ | : وجاهدوا فى سبيل الله بأموالهم وأنفسهم أعظم درجة | | | |
| (٣) | عند الله وأولئك هم الفائزون ... ... ... ... | ٢٠ | م التوبة | ٩ |
| | أولئك أعظم درجة من الذين أنفقوا من بعد وقاتلوا | ١٠ | م الحديد | ٥٧ |
| | تجدوه عند الله هو خيرا وأعظم أجرا ... ... ... | ٢٠ | م المزمل | ٧٣ |
| الْعَظْمِ | : إلا ما حملت ظهورهما أو الحوايا أو ما اختلط بعظم | ١٤٦ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | قال رب إنى وهن العظم منى واشتعل الرأس شيبا ... | ٤ | ك مريم | ١٩ |
| الْعِظَامَ | : وانظر إلى العظام كيف ننشزها ثم نكسوها لحما | ٢٥٩ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | فكسونا العظام لحما ثم أنشأناه خلقا آخر ... ... | ١٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وضرب لنا مثلا ونسى خلقه قال من يحيى العظام وهى رميم | ٧٨ | ك يس | ٣٦ |
| عِظَاماً | : وقالوا أئذا كنا عظاما ورفاتا أئنا لمبعوثون خلقا جديدا | ٤٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٩) | وقالوا أئذا كنا عظاما ورفاتا أئنا لمبعوثون خلقا جديدا | ٩٨ | ك « | ١٧ |
| | فخلقنا العلقة مضغة فخلقنا المضغة عظاما ... ... ... | ١٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | أيعدكم أنكم إذا متم وكنتم ترابا وعظاما أنكم مخرجون | ٣٥ | ك « | ٢٣ |
| | قالوا أئذا متنا وكنا ترابا وعظاما أئنا لمبعوثون ... | ٨٢ | ك « | ٢٣ |
| | أئذا متنا وكنا ترابا وعظاما أئنا لمبعوثون ... ... | ١٦ | ك الصافات | ٣٧ |
| | أئذا متنا وكنا ترابا وعظاما أئنا لمدينون ... ... | ٥٣ | ك « | ٣٧ |
| | وكانوا يقولون أئذا متنا وكنا ترابا وعظاما أئنا لمبعوثون | ٤٧ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | أئذا كنا عظاما نخرة . قالوا تلك إذا كرة خاسرة ... | ١١ | ك النازعات | ٧٩ |
| عِظَامَهُ | : أيحسب الإنسان ألن نجمع عظامه ... ... ... | ٣ | ك القيامة | ٧٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| عِفْرِيتٌ | : قال عفريت من الجن أنا آتيك به ... ... ... | ٣٩ | ك النمل | ٢٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| فَلْيَسْتَعْفِفْ | : ومن كان غنيا فليستعفف ... ... ... ... | ٦ | م النساء | ٤ |
| (٢) | وليستعفف الذين لا يجدون نكاحا حتى يغنيهم الله من فضله | ٣٣ | م النور | ٢٤ |
| يَسْتَعْفِفْنَ | : وأن يستعففن خير لهن والله سميع عليم ... ... | ٦٠ | م « | ٢٤ |
| التَّعَفُّفِ | : يحسبهم الجاهل أغنياء من التعفف تعرفهم بسيماهم | ٢٧٣ | م البقرة | ٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| عَفَا | : علم الله أنكم كنتم تختانون أنفسكم فتاب عليكم وعفا عنكم | ١٨٧ | م البقرة | ٢ |
| (٧) | ثم صرفكم عنهم ليبتليكم ولقد عفا عنكم ... ... ... | ١٥٢ | م آل عمران | ٣ |
| | ولقد عفا الله عنهم إن الله غفور حليم ... ... ... | ١٥٥ | م « | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عَفَا | : عفا الله عما سلف ومن عاد فينتقم الله منه ... ... | ٩٥ | م المائدة | ٥ |
| | وإن تسئلوا عنها حين ينزل القرآن تبد لكم عفا الله عنها | ١٠١ | م « | ٥ |
| | عفا الله عنك لم أذنت لهم حتى يتبين لك الذين صدقوا | ٤٣ | م التوبة | ٩ |
| | وجزاء سيئة سيئة مثلها فمن عفا وأصلح فأجره على الله | ٤٠ | ك الشورى | ٤٢ |
| عَفَوْا | : ثم بدلنا مكان السيئة الحسنة حتى عفوا ... ... | ٩٥ | ك الأعراف | ٧ |
| عَفَوْنَا | : ثم عفونا عنكم من بعد ذلك لعلكم تشكرون ... ... | ٥٢ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | ثم اتخذوا العجل من بعد ما جاءتهم البينات فعفونا عن ذلك | ١٥٣ | م النساء | ٤ |
| تَعْفُوا | : وأن تعفوا أقرب للتقوى ولا تنسوا الفضل بينكم | ٢٣٧ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | إن تبدوا خيرا أو تخفوه أو تعفوا عن سوء فإن الله | | | |
| | كان عفوا قديرا ... ... ... ... ... ... | ١٤٩ | م النساء | ٤ |
| | وإن تعفوا وتصفحوا وتغفروا فإن الله غفور رحيم | ١٤ | م التغابن | ٦٤ |
| نَعْفُ | : إن نعف عن طائفة منكم نعذب طائفة ... ... ... | ٦٦ | م التوبة | ٩ |
| يَعْفُ | : أو يوبقهن بما كسبوا ويعف عن كثير ... ... | ٣٤ | ك الشورى | ٤٢ |
| يَعْفُوَا | : إلا أن يعفون أو يعفوا الذى بيده عقدة النكاح | ٢٣٧ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | فأولئك عسى الله أن يعفو عنهم ... ... ... ... | ٩٩ | م النساء | ٤ |
| يَعْفُوا | : بين لكم كثيرا مما كنتم تخفون من الكتاب ويعفوا | | | |
| (٣) | عن كثير ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | م المائدة | ٥ |
| | وهو الذى يقبل التوبة عن عباده ويعفوا عن السيئات | ٢٥ | م الشورى | ٤٢ |
| | وما أصابكم من مصيبة فبما كسبت أيديكم ويعفوا عن كثير | ٣٠ | ك « | ٤٢ |
| وَلْيَعْفُوا | : وليعفوا وليصفحوا ألا تحبون أن يغفر الله لكم | ٢٢ | م النور | ٢٤ |
| يَعْفُونَ | : إلا أن يعفون أو يعفوا الذى بيده عقدة النكاح | ٢٣٧ | م البقرة | ٢ |
| اعْفُ | : واعف عنا واغفر لنا وارحمنا أنت مولانا ... ... | ٢٨٦ | م « | ٢ |
| (٣) | فاعف عنهم واستغفر لهم وشاورهم فى الأمر ... ... | ١٥٩ | م آل عمران | ٣ |
| | فاعف عنهم واصفح إن الله يحب المحسنين ... ... | ١٣ | م المائدة | ٥ |
| اعْفُوا | : فاعفوا واصفحوا حتى يأتى الله بأمره ... ... ... | ١٠٩ | م البقرة | ٢ |
| عُفِيَ | : فمن عفى له من أخيه شىء فاتباع بالمعروف ... ... | ١٧٨ | م « | ٢ |
| الْعَفْوَ | : ويسئلونك ماذا ينفقون قل العفو ... ... ... ... | ٢١٩ | م « | ٢ |
| (٢) | خذ العفو وأمر بالعرف وأعرض عن الجاهلين ... | ١٩٩ | ك الأعراف | ٧ |
| عَفُوٌّ | : لينصرنه الله إن الله لعفو غفور ... ... ... ... | ٦٠ | م الحج | ٢٢ |
| (٢) | وإنهم ليقولون منكرا من القول وزورا وإن الله | | | |
| | لعفو غفور ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| عَفُوًّا | : فامسحوا بوجوهكم وأيديكم إن الله كان عفوا غفورا | ٤٣ | م النساء | ٤ |
| (٣) | فأولئك عسى الله أن يعفو عنهم وكان الله عفوا غفورا | ٩٩ | م « | ٤ |
| | إن تبدوا خيرا أو تخفوه أو تعفوا عن سوء فإن الله | | | |
| | كان عفوا قديرا ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٩ | م « | ٤ |
| الْعَافِينَ | : والكاظمين الغيظ والعافين عن الناس ... ... | ١٣٤ | م آل عمران | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | * * * | | | |
| يُعَقِّبْ | : ولى مدبرا ولم يعقب يا موسى لا تخف ... ... | ١٠ | ك النمل | ٢٧ |
| (٢) | ولى مدبرا ولم يعقب يا موسى أقبل ولا تخف ... ... | ٣١ | ك القصص | ٢٨ |
| عَاقَبَ | : ذلك ومن عاقب بمثل ما عوقب به ثم بغى عليه لينصرنه الله | ٦٠ | م الحج | ٢٢ |
| عَاقَبْتُمْ | : وإن عاقبتم فعاقبوا بمثل ما عوقبتم به ... ... ... | ١٢٦ | م النحل | ١٦ |
| (٢) | فعاقبتم فآتوا الذين ذهبت أزواجهم مثل ما أنفقوا | ١١ | م الممتحنة | ٦٠ |
| فَعَاقِبُوا | : وإن عاقبتم فعاقبوا بمثل ما عوقبتم به ... ... | ١٢٦ | م النحل | ١٦ |
| عُوقِبَ | : ذلك ومن عاقب بمثل ما عوقب به ثم بغى عليه لينصرنه الله | ٦٠ | م الحج | ٢٢ |
| عُوقِبْتُمْ | : وإن عاقبتم فعاقبوا بمثل ما عوقبتم به ... ... ... | ١٢٦ | م النحل | ١٦ |
| فَأَعْقَبَهُمْ | : فأعقبهم نفاقا فى قلوبهم إلى يوم يلقونه ... ... | ٧٧ | م التوبة | ٩ |
| عُقْبًا | : هنالك الولاية لله الحق هو خير ثوابا وخير عقبا ... | ٤٤ | ك الكهف | ١٨ |
| عَقِبِهِ | : وجعلها كلمة باقية فى عقبه لعلهم يرجعون ... ... | ٢٨ | ك الزخرف | ٤٣ |
| عَقِبَيْهِ | : إلا لنعلم من يتبع الرسول ممن ينقلب على عقبيه ... | ١٤٣ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | ومن ينقلب على عقبيه فلن يضر الله شيئا ... ... ... | ١٤٤ | م آل عمران | ٣ |
| | فلما ترامى الفئتان نكص على عقبيه وقال إنى برىء منكم... | ٤٨ | م الأنفال | ٨ |
| أَعْقَابِكُمْ | : أفإن مات أو قتل انقلبتم على أعقابكم ... ... | ١٤٤ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | إن تطيعوا الذين كفروا يردوكم على أعقابكم ... ... | ١٤٩ | م » | ٣ |
| | قد كانت آياتى تتلى عليكم فكنتم على أعقابكم تنكصون | ٦٦ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| أَعْقَابِنَا | : ونرد على أعقابنا بعد إذ هدانا الله ... ... ... | ٧١ | ك الأنعام | ٦ |
| الْعِقَابِ | : واتقوا الله واعلموا أن الله شديد العقاب ... | ١٩٦ | م البقرة | ٢ |
| (١٧) | ومن يبدل نعمة الله من بعد ما جاءته فإن الله شديد العقاب | ٢١١ | م » | ٢ |
| | كذبوا بآياتنا فأخذهم الله بذنوبهم والله شديد العقاب | ١١ | م آل عمران | ٣ |
| | واتقوا الله إن الله شديد العقاب ... ... ... ... | ٢ | م المائدة | ٥ |
| | اعلموا أن الله شديد العقاب وأن الله غفور رحيم ... | ٩٨ | م » | ٥ |
| | إن ربك سريع العقاب وإنه لغفور رحيم ... ... | ١٦٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | إن ربك لسريع العقاب وإنه لغفور رحيم ... ... | ١٦٧ | م الأعراف | ٧ |
| | ومن يشاقق الله ورسوله فإن الله شديد العقاب ... | ١٣ | م الأنفال | ٨ |
| | واعلموا أن الله شديد العقاب ... ... ... ... | ٢٥ | م » | ٨ |
| | إنى أرى ما لا ترون إنى أخاف الله والله شديد العقاب | ٤٨ | م » | ٨ |
| | فأخذهم الله بذنوبهم إن الله قوى شديد العقاب ... | ٥٢ | م » | ٨ |
| | وإن ربك لشديد العقاب ... ... ... ... ... | ٦ | م الرعد | ١٣ |
| | غافر الذنب وقابل التوب شديد العقاب ذى الطول... | ٣ | ك غافر | ٤٠ |
| | فكفروا فأخذهم الله إنه قوى شديد العقاب... ... | ٢٢ | ك » | ٤٠ |
| | إن ربك لذو مغفرة وذو عقاب أليم ... ... ... | ٤٣ | ك فصلت | ٤١ |
| | ومن يشاقق الله فإن الله شديد العقاب ... ... ... | ٤ | م الحشر | ٥٩ |
| | وما نهاكم عنه فانتهوا واتقوا الله إن الله شديد العقاب | ٧ | م » | ٥٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عِقَابِ | : ثم أخذتهم فكيف كان عقاب ... ... ... ... | ٣٢ | م الرعد | ١٣ |
| (٣) | إن كل إلا كذب الرسل فحق عقاب ... ... ... ... | ١٤ | ك ص | ٣٨ |
| | وجادلوا بالباطل ليدحضوا به الحق فأخذتهم فكيف | | | |
| | كان عقاب ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك غافر | ٤٠ |
| الْعَقَبَةُ | : وهديناه النجدين . فلا اقتحم العقبة ... ... ... | ١١ | ك البلد | ٩٠ |
| (٢) | وما أدراك ما العقبة . فك رقبة ... ... ... ... | ١٢ | ك » | ٩٠ |
| عُقْبَى | : ويدرءون بالحسنة السيئة أولئك لهم عقبى الدار | ٢٢ | م الرعد | ١٣ |
| (٥) | سلام عليكم بما صبرتم فنعم عقبى الدار ... ... ... | ٢٤ | م » | ١٣ |
| | أكلها دائم وظلها تلك عقبى الذين اتقوا... ... ... | ٣٥ | م » | ١٣ |
| | وعقبى الكافرين النار ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | م » | ١٣ |
| | يعلم ما تكسب كل نفس وسيعلم الكفار لمن عقبى الدار | ٤٢ | م » | ١٣ |
| عُقْبَاهَا | : فدمدم عليهم ربهم بذنبهم فسواها . ولا يخاف عقباها | ١٥ | ك الشمس | ٩١ |
| الْعَاقِبَةُ | : فسيروا فى الأرض فانظروا كيف كان عاقبة المكذبين | ١٣٧ | م آل عمران | ٣ |
| (٣١) | قل سيروا فى الأرض ثم انظروا كيف كان عاقبة المكذبين | ١١ | ك الأنعام | ٦ |
| | فسوف تعلمون من تكون له عاقبة الدار ... ... ... | ١٣٥ | ك » | ٦ |
| | وأمطرنا عليهم مطرا فانظر كيف كان عاقبة المجرمين | ٨٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | وانظروا كيف كان عاقبة المفسدين ... ... ... ... | ٨٦ | ك » | ٧ |
| | فانظر كيف كان عاقبة المفسدين ... ... ... ... | ١٠٣ | ك » | ٧ |
| | إن الأرض لله يورثها من يشاء من عباده والعاقبة للتقين | ١٢٨ | ك » | ٧ |
| | فانظر كيف كان عاقبة الظالمين ... ... ... ... | ٣٩ | ك يونس | ١٠ |
| | فانظر كيف كان عاقبة المنذرين ... ... ... ... | ٧٣ | ك » | ١٠ |
| | فاصبر إن العاقبة للتقين ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك هود | ١١ |
| | أفلم يسيروا فى الأرض فينظروا كيف كان عاقبة | | | |
| | الذين من قبلهم ... ... ... ... ... ... | ١٠٩ | ك يوسف | ١٢ |
| | فسيروا فى الأرض فانظروا كيف كان عاقبة المكذبين | ٣٦ | ك النحل | ١٦ |
| | لا نسئلك رزقا نحن نرزقك والعاقبة للتقوى ... ... | ١٣٢ | ك طه | ٢٠ |
| | وأمروا بالمعروف ونهوا عن المنكر ولله عاقبة الأمور | ٤١ | م الحج | ٢٢ |
| | فانظر كيف كان عاقبة المفسدين ... ... ... ... | ١٤ | ك النمل | ٢٧ |
| | فانظر كيف كان عاقبة مكرهم أنا دمرناهم وقومهم أجمعين | ٥١ | ك » | ٢٧ |
| | قل سيروا فى الأرض فانظروا كيف كان عاقبة المجرمين | ٦٩ | ك » | ٢٧ |
| | ربى أعلم بمن جاء بالهدى من عنده ومن تكون له | | | |
| | عاقبة الدار ... ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | فنبذناهم فى اليم فانظر كيف كان عاقبة الظالمين ... | ٤٠ | ك » | ٢٨ |
| | نجعلها للذين لا يريدون علوا فى الأرض ولا فسادا | | | |
| | والعاقبة للتقين ... ... ... ... ... ... | ٨٣ | ك » | ٢٨ |
| | أولم يسيروا فى الأرض فينظروا كيف كان عاقبة | | | |
| | الذين من قبلهم ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك الروم | ٣٠ |
| | ثم كان عاقبة الذين أساؤا السوأى أن كذبوا بآيات الله | ١٠ | ك » | ٣٠ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| **العَاقِبَةُ**: فانظروا كيف كان عاقبة الذين من قبل ... ... | ٤٢ | ك الروم | ٣٠ |
| وإلى الله عاقبة الأمور... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك لقمان | ٣١ |
| أولم يسيروا فى الأرض فينظروا كيف كان عاقبة الذين من قبلهم ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك فاطر | ٣٥ |
| فانظر كيف كان عاقبة المنذرين ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك الصافات | ٣٧ |
| أولم يسيروا فى الأرض فينظروا كيف كان عاقبة الذين كانوا من قبلهم ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك غافر | ٤٠ |
| أفلم يسيروا فى الأرض فينظروا كيف كان عاقبة الذين من قبلهم ... ... ... ... ... ... | ٨٢ | ك « | ٤٠ |
| فانتقمنا منهم فانظر كيف كان عاقبة المكذبين ... ... | ٢٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| أفلم يسيروا فى الأرض فينظروا كيف كان عاقبة الذين من قبلهم ... ... ... ... ... ... | ١٠ | م محمد | ٤٧ |
| فذاقت وبال أمرها وكان عاقبة أمرها خسرا... ... | ٩ | م الطلاق | ٦٥ |
| **عَاقِبَتَهُمَا**: فكان عاقبتهما أنهما فى النار خالدين فيها ... | ١٧ | م الحشر | ٥٩ |
| **مُعَقِّبَ**: والله يحكم لا معقب لحكمه وهو سريع الحساب | ٤١ | م الرعد | ١٣ |
| **مُعَقِّبَاتٌ**: له معقبات من بين يديه ومن خلفه... ... ... | ١١ | م « | ١٣ |
| ✦✦✦ | | | |
| **عَقَدَتْ**: والذين عقدت أيمانكم فآتوهم نصيبهم ... ... | ٣٣ | م النساء | ٤ |
| **عَقَّدتُّم**: ولكن يؤاخذكم بما عقدتم الأيمان ... ... ... | ٨٩ | م المائدة | ٥ |
| **بِالْعُقُودِ**: يأيها الذين آمنوا أوفوا بالعقود ... ... ... | ١ | م « | ٥ |
| **عُقْدَةُ**: ولا تعزموا عقدة النكاح حتى يبلغ الكتاب أجله | ٢٣٥ | م البقرة | ٢ |
| (٣) إلا أن يعفون أو يعفوا الذى بيده عقدة النكاح | ٢٣٧ | م « | ٢ |
| ويسر لى أمرى . واحلل عقدة من لسانى ... ... | ٢٧ | ك طه | ٢٠ |
| **الْعُقَدِ**: ومن شر النفاثات فى العقد ... ... ... ... | ٤ | ك الفلق | ١١٣ |
| ✦✦✦ | | | |
| **فَعَقَرَ**: فنادوا صاحبهم فتعاطى فعقر ... ... ... ... | ٢٩ | ك القمر | ٥٤ |
| **فَعَقَرُوا**: فعقروا الناقة وعتوا عن أمر ربهم ... ... ... | ٧٧ | ك الأعراف | ٧ |
| **فَعَقَرُوهَا**: فعقروها فقال تمتعوا فى داركم ثلاثة أيام ... | ٦٥ | ك هود | ١١ |
| (٣) فعقروها فأصبحوا نادمين ... ... ... ... ... | ١٥٧ | ك الشعراء | ٢٦ |
| فكذبوه فعقروها فدمدم عليهم ربهم بذنبهم فسواها | ١٤ | ك الشمس | ٩١ |
| **عَاقِرٌ**: قال رب أنى يكون لى غلام وقد بلغنى الكبر وامرأتى عاقر | ٤٠ | م آل عمران | ٣ |
| **عَاقِرًا**: وإنى خفت الموالى من ورائى وكانت امرأتى عاقرا | ٥ | ك مريم | ١٩ |
| (٢) قال رب أنى يكون لى غلام وكانت امرأتى عاقرا | ٨ | ك « | ١٩ |
| ✦✦✦ | | | |
| **عَقَلُوهُ**: يسمعون كلام الله ثم يحرفونه من بعد ما عقلوه ... | ٧٥ | م البقرة | ٢ |
| **تَعْقِلُونَ**: أتأمرون الناس بالبر وتنسون أنفسكم وأنتم تتلون (٢٤) الكتاب أفلا تعقلون ... ... ... ... ... | ٤٤ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| **تَعْقِلُونَ**: كذلك يحيى الله الموتى ويريكم آياته لعلكم تعقلون | ٧٣ | م البقرة | ٢ |
| أتحدثونهم بما فتح الله عليكم ليحاجوكم به عند ربكم أفلا تعقلون ... ... ... ... ... ... ... | ٧٦ | م « | ٢ |
| كذلك يبين الله لكم آياته لعلكم تعقلون ... ... ... | ٢٤٢ | م « | ٢ |
| وما أنزلت التوراة والإنجيل إلا من بعده أفلا تعقلون | ٦٥ | م آل عمران | ٣ |
| قد بينا لكم الآيات إن كنتم تعقلون ... ... ... ... | ١١٨ | م « | ٣ |
| وللدار الآخرة خير للذين يتقون أفلا تعقلون ... ... | ٣٢ | ك الأنعام | ٦ |
| ذلكم وصاكم به لعلكم تعقلون ... ... ... ... ... | ١٥١ | م « | ٦ |
| والدار الآخرة خير للذين يتقون أفلا تعقلون ... ... | ١٦٩ | م الأعراف | ٧ |
| فقد لبثت فيكم عمرا من قبله أفلا تعقلون ... ... ... | ١٦ | ك يونس | ١٠ |
| إن أجرى إلا على الذى فطرنى أفلا تعقلون ... ... | ٥١ | ك هود | ١١ |
| إنا أنزلناه قرآنا عربيا لعلكم تعقلون ... ... ... ... | ٢ | م يوسف | ١٢ |
| ولدار الآخرة خير للذين اتقوا أفلا تعقلون ... ... | ١٠٩ | ك « | ١٢ |
| لقد أنزلنا إليكم كتابا فيه ذكركم أفلا تعقلون ... ... | ١٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| أف لكم ولما تعبدون من دون الله أفلا تعقلون | ٦٧ | ك « | ٢١ |
| وله اختلاف الليل والنهار أفلا تعقلون ... ... ... | ٨٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| كذلك يبين الله لكم الآيات لعلكم تعقلون ... ... | ٦١ | م النور | ٢٤ |
| قال رب المشرق والمغرب وما بينهما إن كنتم تعقلون | ٢٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| وما عند الله خير وأبقى أفلا تعقلون ... ... ... ... | ٦٠ | ك القصص | ٢٨ |
| ولقد أضل منكم جبلا كثيرا أفلم تكونوا تعقلون | ٦٢ | ك يس | ٣٦ |
| وإنكم لتمرون عليهم مصبحين . وبالليل أفلا تعقلون | ١٣٨ | ك الصافات | ٣٧ |
| ولتبلغوا أجلا مسمى ولعلكم تعقلون ... ... ... ... | ٦٧ | ك غافر | ٤٠ |
| إنا جعلناه قرآنا عربيا لعلكم تعقلون ... ... ... ... | ٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| قد بينا لكم الآيات لعلكم تعقلون ... ... ... ... | ١٧ | م الحديد | ٥٧ |
| **نَعْقِلُ**: وقالوا لو كنا نسمع أو نعقل ما كنا فى أصحاب السعير | ١٠ | ك الملك | ٦٧ |
| **يَعْقِلُهَا**: وتلك الأمثال نضربها للناس وما يعقلها إلا العالمون | ٤٣ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| **يَعْقِلُونَ**: وتصريف الرياح والسحاب المسخر بين السماء (٣٢) والأرض لآيات لقوم يعقلون ... ... ... ... | ١٦٤ | م البقرة | ٢ |
| أولو كان آباؤهم لا يعقلون شيئا ولا يهتدون ... ... | ١٧٠ | م « | ٢ |
| صم بكم عمى فهم لا يعقلون ... ... ... ... ... ... | ١٧١ | م « | ٢ |
| اتخذوها هزوا ولعبا ذلك بأنهم قوم لا يعقلون ... | ٥٨ | م المائدة | ٥ |
| يفترون على الله الكذب وأكثرهم لا يعقلون... ... | ١٠٣ | م « | ٥ |
| إن شر الدواب عند الله الصم البكم الذين لا يعقلون | ٢٢ | م الأنفال | ٨ |
| أفأنت تسمع الصم ولو كانوا لا يعقلون ... ... ... | ٤٢ | ك يونس | ١٠ |
| ويجعل الرجس على الذين لا يعقلون... ... ... ... | ١٠٠ | ك « | ١٠ |
| إن فى ذلك لآيات لقوم يعقلون... ... ... ... ... | ٤ | م الرعد | ١٣ |
| والنجوم مسخرات بأمره إن فى ذلك لآيات لقوم يعقلون | ١٢ | ك النحل | ١٦ |
| إن فى ذلك لآية لقوم يعقلون ... ... ... ... ... | ٦٧ | ك « | ١٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَعْقِلُونَ | : أفلم يسيروا فى الأرض فتكون لهم قلوب يعقلون بها | ٤٦ | م الحـج | ٢٢ |
| | أم تحسب أن أكثرهم يسمعون أو يعقلون ... ... | ٤٤ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| | ولقد تركنا منها آية بينة لقوم يعقلون ... ... ... ... | ٣٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | قل الحمد لله بل أكثرهم لا يعقلون ... ... ... ... | ٦٣ | ك « | ٢٩ |
| | فيحيى به الأرض بعد موتها إن فى ذلك لآيات لقوم يعقلون | ٢٤ | ك الروم | ٣٠ |
| | كذلك نفصل الآيات لقوم يعقلون ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٣٠ |
| | ومن نعمره ننكسه فى الخلق أفلا يعقلون ... ... ... | ٦٨ | ك يس | ٣٦ |
| | قل أولو كانوا لا يملكون شيئا ولا يعقلون ... ... | ٤٣ | ك الزمـر | ٣٩ |
| | فأحيا به الأرض بعد موتها وتصريف الرياح آيات لقوم يعقلون ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | إن الذين ينادونك من وراء الحجرات أكثرهم لا يعقلون | ٤ | م الحجرات | ٤٩ |
| | تحسبهم جميعا وقلوبهم شتى ذلك بأنهم قوم لا يعقلون | ١٤ | م الحشـر | ٥٩ |
| عَقِيمٌ | : حتى تأتيهم الساعة بغتة أو يأتيهم عذاب يوم عقيم | ٥٥ | م الحـج | ٢٢ |
| (٣) | فأقبلت امرأته فى صرة فصكت وجهها وقالت عجوز عقيم | ٢٩ | ك الذاريات | ٥١ |
| | وفى عاد إذ أرسلنا عليهم الريح العقيم ... ... ... ... | ٤١ | ك « | ٥١ |
| عَقِيمًا | : أو يزوجهم ذكرانا وإناثا ويجعل من يشاء عقيما ... | ٥٠ | ك الشـورى | ٤٢ |
| يَعْكُفُونَ | : فأتوا على قوم يعكفون على أصنام لهم ... ... | ١٣٨ | ك الأعراف | ٧ |
| الْعَاكِفُ | : والمسجد الحرام الذى جعلناه للناس سواء العاكف فيه والباد ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | م الحـج | ٢٢ |
| عَاكِفًا | : وانظر إلى إلهك الذى ظلت عليه عاكفا لنحرقنه | ٩٧ | ك طـه | ٢٠ |
| عَاكِفُونَ | : ولا تباشروهن وأنتم عاكفون فى المساجد ... | ١٨٧ | م البقـرة | ٢ |
| (٢) | إذ قال لأبيه وقومه ما هذه التماثيل التى أنتم لها عاكفون | ٥٢ | ك الأنبياء | ٢١ |
| الْعَاكِفِينَ | : أن طهرا بيتى للطائفين والعاكفين والركع السجود | ١٢٥ | م البقـرة | ٢ |
| (٣) | قالوا لن نبرح عليه عاكفين حتى يرجع إلينا موسى ... | ٩١ | ك طـه | ٢٠ |
| | قالوا نعبد أصناما فنظل لها عاكفين ... ... ... ... | ٧١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| مَعْكُوفًا | : وصدوكم عن المسجد الحرام والهدى معكوفا أن يبلغ محله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | م الفتـح | ٤٨ |
| عَلَقٍ | : اقرأ باسم ربك الذى خلق . خلق الإنسان من علق | ٢ | ك العـلق | ٩٦ |
| عَلَقَةٍ | : فإنا خلقناكم من تراب ثم من نطفة ثم من علقة ... | ٥ | م الحـج | ٢٢ |
| (٥) | ثم خلقنا النطفة علقة ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فخلقنا العلقة مضغة فخلقنا المضغة عظاما ... ... ... | ١٤ | ك « | ٢٣ |
| | هو الذى خلقكم من تراب ثم من نطفة ثم من علقة | ٦٧ | ك غافـر | ٤٠ |
| | ألم يك نطفة من منى يمنى . ثم كان علقة فخلق فسوى | ٣٨ | ك القيامة | ٧٥ |
| كَالْمُعَلَّقَةِ | : فلا تميلوا كل الميل فتذروها كالمعلقة ... ... | ١٢٩ | م النسـاء | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عَلِمَ | : فانفجرت منه اثنتا عشرة عينا قد علم كل أناس مشربهم | ٦٠ | م البقـرة | ٢ |
| (١٢) | علم الله أنكم كنتم تختانون أنفسكم فتاب عليكم... ... | ١٨٧ | م « | ٢ |
| | علم الله أنكم ستذكرونهن ولكن لا تواعدوهن سرا | ٢٣٥ | م « | ٢ |
| | فانبجست منه اثنتا عشرة عينا قد علم كل أناس مشربهم | ١٦٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولو علم الله فيهم خيرا لأسمعهم ... ... ... ... ... | ٢٣ | م الأنفـال | ٨ |
| | الآن خفف الله عنكم وعلم أن فيكم ضعفا ... ... ... | ٦٦ | م « | ٨ |
| | كل قد علم صلاته وتسبيحه والله عليم بما يفعلون | ٤١ | م النـور | ٢٤ |
| | وإذا علم من آياتنا شيئا اتخذها هزوا ... ... ... | ٩ | ك الجاثيـة | ٤٥ |
| | فعلم ما فى قلوبهم فأنزل السكينة عليهم ... ... ... | ١٨ | م الفتـح | ٤٨ |
| | فعلم ما لم تعلموا فجعل من دون ذلك فتحا قريبا... ... | ٢٧ | م « | ٤٨ |
| | علم أن لن تحصوه فتاب عليكم ... ... ... ... ... | ٢٠ | م المزمـل | ٧٣ |
| | علم أن سيكون منكم مرضى وآخرون يضربون فى الأرض | ٢٠ | م « | ٧٣ |
| عَلِمْتُ | : قالوا لقد علمت ما لنا فى بناتك من حق ... ... | ٧٩ | ك هـود | ١١ |
| (٤) | قال لقد علمت ما أنزل هؤلاء إلا رب السموات والأرض | ١٠٢ | ك الإسـراء | ١٧ |
| | ثم نكسوا على رءوسهم لقد علمت ما هؤلاء ينطقون | ٦٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وقال فرعون يا أيها الملأ ما علمت لكم من إله غيرى | ٣٨ | ك القصص | ٢٨ |
| عَلِمَتْ | : ولقد علمت الجنة إنهم لمحضرون ... ... ... ... | ١٥٨ | ك الصافات | ٣٧ |
| (٣) | وإذا الجنة أزلفت . علمت نفس ما أحضرت ... ... | ١٤ | ك التكوير | ٨١ |
| | وإذا القبور بعثرت . علمت نفس ما قدمت وأخرت | ٥ | ك الانفطار | ٨٢ |
| عَلِمْتُمُ | : ولقد علمتم الذين اعتدوا منكم فى السبت... ... ... | ٦٥ | م البقـرة | ٢ |
| (٥) | قالوا تالله لقد علمتم ما جئنا لنفسد فى الأرض... ... | ٧٣ | ك يوسـف | ١٢ |
| | قال هل علمتم ما فعلتم بيوسف وأخيه إذ أنتم جاهلون | ٨٩ | ك « | ١٢ |
| | فكاتبوهم إن علمتم فيهم خيرا... ... ... ... ... | ٣٣ | م النـور | ٢٤ |
| | ولقد علمتم النشأة الأولى فلولا تذكرون ... ... ... | ٦٢ | ك الواقعـة | ٥٦ |
| عَلِمْتُمُوهُنَّ | : فإن علمتموهن مؤمنات فلا ترجعوهن إلى الكفار | ١٠ | م الممتحنـة | ٦٠ |
| عَلِمْتَهُ | : إن كنت قلته فقد علمته ... ... ... ... ... ... | ١١٦ | م المائدة | ٥ |
| عَلِمْنَا | : قلن حاش لله ما علمنا عليه من سوء... ... ... ... | ٥١ | ك يوسـف | ١٢ |
| (٦) | فقولوا يا أبانا إن ابنك سرق وما شهدنا إلا بما علمنا | ٨١ | ك « | ١٢ |
| | ولقد علمنا المستقدمين منكم ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك الحجر | ١٥ |
| | ولقد علمنا المستأخرين ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك « | ١٥ |
| | قد علمنا ما فرضنا عليهم فى أزواجهم... ... ... ... | ٥٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | قد علمنا ما تنقص الأرض منهم وعندنا كتاب حفيظ | ٤ | ك قٓ | ٥٠ |
| عَلِمَهُ | : ولو ردوه إلى الرسول وإلى أولى الأمر منهم لعلمه الذين يستنبطونه منهم ... ... ... ... ... ... | ٨٣ | م النسـاء | ٤ |
| عَلِمُوا | : ولقد علموا لمن اشتراه ما له فى الآخرة من خلاق | ١٠٢ | م البقـرة | ٢ |
| (٢) | فقلنا هاتوا برهانكم فعلموا أن الحق لله ... ... ... | ٧٥ | ك القصص | ٢٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَعْلَمُ: | قال إنى أعلم ما لا تعلمون ... ... ... ... ... | ٣٠ | م البقـرة | ٢ |
| (١١) | قال ألم أقل لكم إنى أعلم غيب السموات والأرض | ٣٣ | م « | ٢ |
| | وأعلم ما تبدون وما كنتم تكتمون ... ... ... ... | ٣٣ | م « | ٢ |
| | فلما تبين له قال أعلم أن الله على كل شىء قدير ... ... | ٢٥٩ | م « | ٢ |
| | تعلم ما فى نفسى ولا أعلم ما فى نفسك إنك أنت علام الغيوب | ١١٦ | م المائدة | ٥ |
| | قل لا أقول لكم عندى خزائن الله ولا أعلم الغيب | ٥٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | أبلغكم رسالات ربى وأنصح لكم وأعلم من الله ما لا تعلمون | ٦٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولو كنت أعلم الغيب لاستكثرت من الخير وما مسنى السوء | ١٨٨ | ك « | ٧ |
| | ولا أقول لكم عندى خزائن الله ولا أعلم الغيب... ... | ٣١ | ك هـود | ١١ |
| | قال إنما أشكوا بثى وحزنى إلى الله وأعلم من الله ما لا تعلمون | ٨٦ | ك يوسـف | ١٢ |
| | قال ألم أقل لكم إنى أعلم من الله ما لا تعلمون... ... | ٩٦ | ك « | ١٢ |
| تَعْلَمْ: | ألم تعلم أن الله على كل شىء قدير ... ... ... ... | ١٠٦ | م البقـرة | ٢ |
| (١٢) | ألم تعلم أن الله له ملك السموات والأرض ... ... | ١٠٧ | م « | ٢ |
| | وأنزل الله عليك الكتاب والحكمة وعلمك ما لم تكن تعلم | ١١٣ | م النسـاء | ٤ |
| | ألم تعلم أن الله له ملك السموات والأرض ... ... | ٤٠ | م المائدة | ٥ |
| | تعلم ما فى نفسى ولا أعلم ما فى نفسك إنك أنت علام الغيوب | ١١٦ | م « | ٥ |
| | حتى يتبين لك الذين صدقوا وتعلم الكاذبين ... ... | ٤٣ | م التـوبة | ٩ |
| | قالوا لقد علمت ما لنا فى بناتك من حق وإنك لتعلم ما نريد | ٧٩ | ك هـود | ١١ |
| | ربنا إنك تعلم ما نخفى وما نعلن ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك إبراهـيم | ١٤ |
| | فاعبده واصطبر لعبادته هل تعلم له سميا ... ... ... | ٦٥ | ك مـريم | ١٩ |
| | ألم تعلم أن الله يعلم ما فى السماء والأرض ... ... ... | ٧٠ | م الحـج | ٢٢ |
| | فرددناه إلى أمه كى تقر عينها ولا تحزن ولتعلم أن وعد الله حق ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | فلا تعلم نفس ما أخفى لهم من قرة أعين ... ... ... | ١٧ | م السـجدة | ٣٢ |
| لَتَعْلَمُنَّ: | ولتعلمن أينا أشد عذابا وأبقى ... ... ... ... ... | ٧١ | ك طـه | ٢٠ |
| (٢) | ولتعلمن نبأه بعد حين ... ... ... ... ... ... ... | ٨٨ | ك ص | ٣٨ |
| تَعْلَمُهَا: | ما كنت تعلمها أنت ولا قومك من قبل هـذا ... | ٤٩ | ك هـود | ١١ |
| تَعْلَمُهُمْ: | ومن أهل المدينة مردوا على النفاق لا تعلمهم ... | ١٠١ | م التـوبة | ٩ |
| تَعْلَمُوا: | لا تقربوا الصلاة وأنتم سكارى حتى تعلموا ما تقولون | ٤٣ | م النسـاء | ٤ |
| (٩) | ذلك لتعلموا أن الله يعلم ما فى السموات وما فى الأرض | ٩٧ | م المائدة | ٥ |
| | وعلمتم ما لم تعلموا أنتم ولا آباؤكم ... ... ... ... | ٩١ | م الأنعام | ٦ |
| | وقدره منازل لتعلموا عدد السنين والحساب ... ... | ٥ | ك يـونس | ١٠ |
| | ألم تعلموا أن أباكم قد أخذ عليكم موثقا من الله ... | ٨٠ | ك يوسـف | ١٢ |
| | لتبتغوا فضلا من ربكم ولتعلموا عدد السنين والحساب | ١٢ | ك الإسـراء | ١٧ |
| | فإن لم تعلموا آباءهم فإخوانكم فى الدين ومواليكم ... | ٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | فعلم ما لم تعلموا فجعل من دون ذلك فتحا قريبا ... | ٢٧ | م الفتـح | ٤٨ |
| | لتعلموا أن الله على كل شىء قدير ... ... ... ... | ١٢ | م الطـلاق | ٦٥ |
| تَعْلَمُونَ: | فلا تجعلوا لله أندادا وأنتم تعلمون ... ... ... | ٢٢ | م البقـرة | ٢ |
| (٥٦) | قال إنى أعلم ما لا تعلمون ... ... ... ... ... | ٣٠ | م « | ٢ |
| | ولا تلبسوا الحق بالباطل وتكتموا الحق وأنتم تعلمون | ٤٢ | م « | ٢ |
| | أم تقولون على الله ما لا تعلمون... ... ... ... ... | ٨٠ | م « | ٢ |
| | ويعلمكم ما لم تكونوا تعلمون ... ... ... ... ... | ١٥١ | م « | ٢ |
| | وأن تقولوا على الله ما لا تعلمون ... ... ... ... | ١٦٩ | م « | ٢ |
| | وأن تصوموا خير لكم إن كنتم تعلمون ... ... ... | ١٨٤ | م « | ٢ |
| | لتأكلوا فريقا من أموال الناس بالإثم وأنتم تعلمون | ١٨٨ | م « | ٢ |
| | وعسى أن تحبوا شيئا وهو شر لكم والله يعلم وأنتم لا تعلمون | ٢١٦ | م « | ٢ |
| | ذلكم أزكى لكم وأطهر والله يعلم وأنتم لا تعلمون | ٢٣٢ | م « | ٢ |
| | فإذا أمنتم فاذكروا الله كما علمكم ما لم تكونوا تعلمون | ٢٣٩ | م « | ٢ |
| | وأن تصدقوا خير لكم إن كنتم تعلمون ... ... ... | ٢٨٠ | م « | ٢ |
| | فلم تحاجون فيما ليس لكم به علم والله يعلم وأنتم لا تعلمون | ٦٦ | م آل عمران | ٣ |
| | لم تلبسون الحق بالباطل وتكتمون الحق وأنتم تعلمون | ٧١ | م « | ٣ |
| | لكل نبأ مستقر وسوف تعلمون ... ... ... ... ... | ٦٧ | ك الأنعام | ٦ |
| | فأى الفريقين أحق بالأمن إن كنتم تعلمون ... ... | ٨١ | ك « | ٦ |
| | فسوف تعلمون من تكون له عاقبة الدار ... ... ... | ١٣٥ | ك « | ٦ |
| | قل إن الله لا يأمر بالفحشاء أتقولون على الله ما لا تعلمون | ٢٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | وأن تقولوا على الله ما لا تعلمون ... ... ... ... | ٣٣ | ك « | ٧ |
| | قال لكل ضعف ولكن لا تعلمون ... ... ... ... | ٣٨ | ك « | ٧ |
| | أبلغكم رسالات ربى وأنصح لكم وأعلم من الله ما لا تعلمون | ٦٢ | ك « | ٧ |
| | أتعلمون أن صالحا مرسل من ربه ... ... ... ... | ٧٥ | ك « | ٧ |
| | لتخرجوا منها أهلها فسوف تعلمون ... ... ... ... | ١٢٣ | ك « | ٧ |
| | لا تخونوا الله والرسول وتخونوا أماناتكم وأنتم تعلمون | ٢٧ | م الأنفـال | ٨ |
| | ذلكم خير لكم إن كنتم تعلمون ... ... ... ... ... | ٤١ | م التـوبة | ٩ |
| | إن عندكم من سلطان بهذا أتقولون على الله ما لا تعلمون | ٦٨ | ك يـونس | ١٠ |
| | فسوف تعلمون من يأتيه عذاب يخزيه ... ... ... | ٣٩ | ك هـود | ١١ |
| | سوف تعلمون من يأتيه عذاب يخزيه ومن هو كاذب | ٩٣ | ك « | ١١ |
| | قال إنما أشكوا بثى وحزنى إلى الله وأعلم من الله ما لا تعلمون | ٨٦ | ك يوسـف | ١٢ |
| | قال ألم أقل لكم إنى أعلم من الله ما لا تعلمون ... ... | ٩٦ | ك « | ١٢ |
| | والخيل والبغال والحمير لتركبوها وزينة ويخلق ما لا تعلمون | ٨ | ك النحـل | ١٦ |
| | فسئلوا أهل الذكر إن كنتم لا تعلمون... ... ... ... | ٤٣ | ك « | ١٦ |
| | ليكفروا بما آتيناهم فتمتعوا فسوف تعلمون ... ... | ٥٥ | ك « | ١٦ |
| | فلا تضربوا لله الأمثال إن الله يعلم وأنتم لا تعلمون | ٧٤ | ك « | ١٦ |
| | والله أخرجكم من بطون أمهاتكم لا تعلمون شيئا ... | ٧٨ | ك « | ١٦ |
| | إنما عند الله هو خير لكم إن كنتم تعلمون ... ... ... | ٩٥ | ك « | ١٦ |
| | فسئلوا أهل الذكر إن كنتم لا تعلمون... ... ... ... | ٧ | ك الأنبياء | ٢١ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَعْلَمُونَ: | قل لمن الأرض ومن فيها إن كنتم تعلمون ... | ٨٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وهو يجير ولا يجار عليه إن كنتم تعلمون... ... ... | ٨٨ | ك « | ٢٣ |
| | قال إن لبثتم إلا قليلا لو أنكم كنتم تعلمون ... ... | ١١٤ | ك « | ٢٣ |
| | لهم عذاب أليم فى الدنيا والآخرة والله يعلم وأنتم لا تعلمون | ١٩ | م النور | ٢٤ |
| | إنه لكبيركم الذى علمكم السحر فلسوف تعلمون... ... | ٤٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | واتقوا الذى أمدكم بما تعلمون ... ... ... ... | ١٣٢ | ك « | ٢٦ |
| | اعبدوا الله واتقوه ذلكم خير لكم إن كنتم تعلمون | ١٦ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ليكفروا بما آتيناهم فتمتعوا فسوف تعلمون... ... | ٣٤ | ك الروم | ٣٠ |
| | فهذا يوم البعث ولكنكم كنتم لا تعلمون ... ... ... | ٥٦ | ك « | ٣٠ |
| | قل ياقوم اعملوا على مكانتكم إنى عامل فسوف تعلمون | ٣٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| | على أن نبدل أمثالكم وننشئكم فى ما لا تعلمون ... | ٦١ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | وإنه لقسم لو تعلمون عظيم ... ... ... ... ... ... | ٧٦ | ك « | ٥٦ |
| | لم تؤذوننى وقد تعلمون أنى رسول الله إليكم ... ... | ٥ | م الصف | ٦١ |
| | ذلكم خير لكم إن كنتم تعلمون ... ... ... ... ... | ١١ | م « | ٦١ |
| | وذروا البيع ذلكم خير لكم إن كنتم تعلمون ... ... | ٩ | م الجمعة | ٦٢ |
| | إن أجل الله إذا جاء لا يؤخر لو كنتم تعلمون ... | ٤ | ك نوح | ٧١ |
| | ألهاكم التكاثر . حتى زرتم المقابر . كلا سوف تعلمون | ٣ | ك التكاثر | ١٠٢ |
| | ثم كلا سوف تعلمون ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك « | ١٠٢ |
| | كلا لو تعلمون علم اليقين . لترون الجحيم ... ... ... | ٥ | ك « | ١٠٢ |
| فَسَتَعْلَمُونَ: | فستعلمون من أصحاب الصراط السوى | | | |
| (٣) | ومن اهتدى ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٣٥ | ك طه | ٢٠ |
| | فستعلمون كيف نذير ... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الملك | ٦٧ |
| | آمنا به وعليه توكلنا فستعلمون من هو فى ضلال مبين | ٢٩ | ك « | ٦٧ |
| تَعْلَمُونَهُمْ: | وآخرين من دونهم لا تعلمونهم ... ... ... ... | ٦٠ | م الأنفال | ٨ |
| تَعْلَمُوهُمْ: | ولولا رجال مؤمنون ونساء مؤمنات لم تعلموهم | ٢٥ | م الفتح | ٤٨ |
| نَعْلَمَ: | وما جعلنا القبلة التى كنت عليها إلا لنعلم من يتبع الرسول | ١٤٣ | م البقرة | ٢ |
| (١٢) | قالوا لو نعلم قتالا لاتبعناكم ... ... ... ... ... | ١٦٧ | م آل عمران | ٣ |
| | نريد أن نأكل منها وتطمئن قلوبنا ونعلم أن قد صدقتنا | ١١٣ | م المائدة | ٥ |
| | قد نعلم إنه ليحزنك الذى يقولون ... ... ... ... | ٣٣ | ك الأنعام | ٦ |
| | ولقد نعلم أنك يضيق صدرك بما يقولون ... ... | ٩٧ | ك الحجر | ١٥ |
| | ولقد نعلم أنهم يقولون إنما يعلمه بشر ... ... ... | ١٠٣ | ك النحل | ١٦ |
| | ثم بعثناهم لنعلم أى الحزبين أحصى لما لبثوا أمدا ... | ١٢ | ك الكهف | ١٨ |
| | وما كان له عليهم من سلطان إلا لنعلم من يؤمن بالآخرة | ٢١ | ك سبأ | ٣٤ |
| | فلا يحزنك قولهم إنا نعلم ما يسرون وما يعلنون ... ... | ٧٦ | ك يس | ٣٦ |
| | ولنبلونكم حتى نعلم المجاهدين منكم والصابرين ... ... | ٣١ | م محمد | ٤٧ |
| | ولقد خلقنا الإنسان ونعلم ما توسوس به نفسه... ... | ١٦ | ك ق | ٥٠ |
| | وإنا لنعلم أن منكم مكذبين ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك الحاقة | ٦٩ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَعْلَمُهُمْ: | ومن أهل المدينة مردوا على النفاق لا تعلمهم | | | |
| | نحن نعلمهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠١ | م التوبة | ٩ |
| يَعْلَمُ: | أولا يعلمون أن الله يعلم ما يسرون وما يعلنون... ... | ٧٧ | م البقرة | ٢ |
| (٩٣) | وعسى أن تحبوا شيئا وهو شر لكم والله يعلم وأنتم لا تعلمون | ٢١٦ | م « | ٢ |
| | وإن تخالطوهم فإخوانكم والله يعلم المفسد من المصلح | ٢٢٠ | م « | ٢ |
| | ذلكم أزكى لكم وأطهر والله يعلم وأنتم لا تعلمون | ٢٣٢ | م « | ٢ |
| | واعلموا أن الله يعلم ما فى أنفسكم فاحذروه... ... | ٢٣٥ | م « | ٢ |
| | يعلم ما بين أيديهم وما خلفهم ... ... ... ... ... | ٢٥٥ | م « | ٢ |
| | وما يعلم تأويله إلا الله ... ... ... ... ... ... | ٧ | م آل عمران | ٣ |
| | ويعلم ما فى السموات وما فى الأرض والله على كل شىء قدير | ٢٩ | م « | ٣ |
| | فلم تحاجون فيما ليس لكم به علم والله يعلم وأنتم لا تعلمون | ٦٦ | م « | ٣ |
| | وليعلم الله الذين آمنوا ويتخذ منكم شهداء ... ... | ١٤٠ | م « | ٣ |
| | أم حسبتم أن تدخلوا الجنة ولما يعلم الله الذين | | | |
| | جاهدوا منكم ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٢ | م « | ٢ |
| | ويعلم الصابرين ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٢ | م « | ٣ |
| | وما أصابكم يوم التقى الجمعان فبإذن الله وليعلم المؤمنين | ١٦٦ | م « | ٣ |
| | وليعلم الذين نافقوا وقيل لهم تعالوا قاتلوا فى سبيل الله | ١٦٧ | م « | ٣ |
| | أولئك الذين يعلم الله ما فى قلوبهم فأعرض عنهم | ٦٣ | م النساء | ٤ |
| | تناله أيديكم ورماحكم ليعلم الله من يخافه بالغيب | ٩٤ | م المائدة | ٥ |
| | ذلك لتعلموا أن الله يعلم ما فى السموات وما فى الأرض | ٩٧ | م « | ٥ |
| | ما على الرسول إلا البلاغ والله يعلم ما تبدون وما تكتمون | ٩٩ | م « | ٥ |
| | وهو الله فى السموات وفى الأرض يعلم سركم وجهركم | ٣ | ك الأنعام | ٦ |
| | ويعلم ما تكسبون ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك « | ٦ |
| | وعنده مفاتح الغيب لا يعلمها إلا هو ويعلم ما فى البر والبحر | ٥٩ | ك « | ٦ |
| | وهو الذى يتوفاكم بالليل ويعلم ما جرحتم بالنهار... | ٦٠ | ك « | ٦ |
| | إن يعلم الله فى قلوبكم خيرا يؤتكم خيرا مما أخذ منكم | ٧٠ | م الأنفال | ٨ |
| | أم حسبتم أن تتركوا ولما يعلم الله الذين جاهدوا منكم | ١٦ | م التوبة | ٩ |
| | يهلكون أنفسهم والله يعلم إنهم لكاذبون ... ... | ٤٢ | م « | ٩ |
| | ألم يعلموا أن الله يعلم سرهم ونجواهم وأن الله علام الغيوب | ٧٨ | م « | ٩ |
| | قل أتنبئون الله بما لا يعلم فى السموات ولا فى الأرض | ١٨ | ك يونس | ١٠ |
| | ألا حين يستغشون ثيابهم يعلم ما يسرون وما يعلنون | ٥ | ك هود | ١١ |
| | ويعلم مستقرها ومستودعها ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك « | ١١ |
| | ذلك ليعلم أنى لم أخنه بالغيب وأن الله لا يهدى كيد الخائنين | ٥٢ | ك يوسف | ١٢ |
| | الله يعلم ما تحمل كل أنثى وما تغيض الأرحام وما تزداد | ٨ | م الرعد | ١٣ |
| | أفمن يعلم أنما أنزل إليك من ربك الحق كمن هو أعمى | ١٩ | م « | ١٣ |
| | أم تنبئونه بما لا يعلم فى الأرض أم بظاهر من القول | ٣٣ | م « | ١٣ |
| | يعلم ما تكسب كل نفس وسيعلم الكفار لمن عقبى الدار | ٤٢ | م « | ١٣ |
| | والله يعلم ما تسرون وما تعلنون... ... ... ... ... | ١٩ | ك النحل | ١٦ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَعْلَمُ | : لا جرم أن الله يعلم ما يسرون وما يعلنون ... ... | ٢٣ | ك النحل | ١٦ |
| | وليعلم الذين كفروا أنهم كانوا كاذبين ... ... ... | ٣٩ | ك « | ١٦ |
| | ومنكم من يرد إلى أرذل العمر لكي لا يعلم بعد علم شيئا | ٧٠ | ك « | ١٦ |
| | فلا تضربوا لله الأمثال إن الله يعلم وأنتم لا تعلمون | ٧٤ | ك « | ١٦ |
| | وقد جعلتم الله عليكم كفيلا إن الله يعلم ما تفعلون | ٩١ | ك « | ١٦ |
| | وإن تجهر بالقول فإنه يعلم السر وأخفى ... ... ... | ٧ | ك طه | ٢٠ |
| | يعلم ما بين أيديهم وما خلفهم ولا يحيطون به علما | ١١٠ | ك « | ٢٠ |
| | قال ربي يعلم القول في السماء والأرض ... ... ... | ٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | يعلم ما بين أيديهم وما خلفهم ولا يشفعون إلا لمن ارتضى | ٢٨ | ك « | ٢١ |
| | لو يعلم الذين كفروا حين لا يكفون عن وجوههم النار | ٣٩ | ك « | ٢١ |
| | إنه يعلم الجهر من القول ... ... ... ... ... ... | ١١٠ | ك « | ٢١ |
| | ويعلم ما تكتمون... ... ... ... ... ... ... | ١١٠ | ك « | ٢١ |
| | ومنكم من يرد إلى أرذل العمر لكيلا يعلم من بعد علم شيئا | ٥ | م الحج | ٢٢ |
| | وليعلم الذين أوتوا العلم أنه الحق من ربك ... ... | ٥٤ | م « | ٢٢ |
| | ألم تعلم أن الله يعلم ما في السماء والأرض إن ذلك في كتاب | ٧٠ | م « | ٢٢ |
| | يعلم ما بين أيديهم وما خلفهم وإلى الله ترجع الأمور | ٧٦ | م « | ٢٢ |
| | لهم عذاب أليم في الدنيا والآخرة والله يعلم وأنتم لا تعلمون | ١٩ | م النور | ٢٤ |
| | والله يعلم ما تبدون وما تكتمون ... ... ... ... | ٢٩ | م « | ٢٤ |
| | قد يعلم الله الذين يتسللون منكم لواذا ... ... ... | ٦٣ | م « | ٢٤ |
| | ألا إن لله ما في السموات والأرض قد يعلم ما أنتم عليه | ٦٤ | م « | ٢٤ |
| | قل أنزله الذي يعلم السر في السموات والأرض ... | ٦ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ويعلم ما تخفون وما تعلنون ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك النمل | ٢٧ |
| | قل لا يعلم من في السموات والأرض الغيب إلا الله | ٦٥ | ك « | ٢٧ |
| | وإن ربك ليعلم ما تكن صدورهم وما يعلنون... ... | ٧٤ | ك « | ٢٧ |
| | وربك يعلم ما تكن صدورهم وما يعلنون ... ... | ٦٩ | ك القصص | ٢٨ |
| | أولم يعلم أن الله قد أهلك من قبله من القرون | | | |
| | من هو أشد منه قوة وأكثر جمعا ... ... ... | ٧٨ | ك « | ٢٨ |
| | إن الله يعلم ما يدعون من دونه من شيء ... ... | ٤٢ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ولذكر الله أكبر والله يعلم ما تصنعون ... ... ... | ٤٥ | ك « | ٢٩ |
| | قل كفى بالله بيني وبينكم شهيدا يعلم ما في السموات والأرض | ٥٢ | ك « | ٢٩ |
| | إن الله عنده علم الساعة وينزل الغيث ويعلم ما في الأرحام | ٣٤ | ك لقمان | ٣١ |
| | قد يعلم الله المعوقين منكم والقائلين لإخوانهم هلم إلينا | ١٨ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | والله يعلم ما في قلوبكم وكان الله عليما حليما ... ... | ٥١ | م « | ٣٣ |
| | يعلم ما يلج في الأرض وما يخرج منها ... ... ... | ٢ | ك سبأ | ٣٤ |
| | قالوا ربنا يعلم إنا إليكم لمرسلون ... ... ... ... | ١٦ | ك يس | ٣٦ |
| | يعلم خائنة الأعين وما تخفي الصدور ... ... ... ... | ١٩ | ك غافر | ٤٠ |
| | ولكن ظننتم أن الله لا يعلم كثيرا مما تعملون ... | ٢٢ | ك فصلت | ٤١ |
| | ويعفوا عن السيئات ويعلم ما تفعلون ... ... ... | ٢٥ | م الشورى | ٤٢ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَعْلَمُ | : ويعلم الذين يجادلون في آياتنا ما لهم من محيص ... | ٣٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| | والله يعلم متقلبكم ومثواكم ... ... ... ... ... | ١٩ | م محمد | ٤٧ |
| | والله يعلم إسرارهم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | م « | ٤٧ |
| | ولتعرفنهم في لحن القول والله يعلم أعمالكم ... ... | ٣٠ | م « | ٤٧ |
| | والله يعلم ما في السموات وما في الأرض... ... ... | ١٦ | م الحجرات | ٤٩ |
| | إن الله يعلم غيب السموات والأرض والله بصير | | | |
| | بما تعملون ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٨ | م « | ٤٩ |
| | يعلم ما يلج في الأرض وما يخرج منها ... ... ... | ٤ | م الحديد | ٥٧ |
| | وليعلم الله من ينصره ورسله بالغيب... ... ... ... | ٢٥ | م « | ٥٧ |
| | لئلا يعلم أهل الكتاب ألا يقدرون على شيء من فضل الله | ٢٩ | م « | ٥٧ |
| | ألم تر أن الله يعلم ما في السموات وما في الأرض | ٧ | م المجادلة | ٥٨ |
| | والله يعلم إنك لرسوله والله يشهد إن المنافقين لكاذبون | ١ | م المنافقون | ٦٣ |
| | يعلم ما في السموات والأرض ... ... ... ... ... | ٤ | م التغابن | ٦٤ |
| | ويعلم ما تسرون وما تعلنون... ... ... ... ... | ٤ | م « | ٦٤ |
| | ألا يعلم من خلق وهو اللطيف الخبير ... ... ... | ١٤ | ك الملك | ٦٧ |
| | ليعلم أن قد أبلغوا رسالات ربهم وأحاط بما لديهم | ٢٨ | ك الجن | ٧٢ |
| | إن ربك يعلم أنك تقوم أدنى من ثلثي الليل ونصفه وثلثه | ٢٠ | م المزمل | ٧٣ |
| | وما يعلم جنود ربك إلا هو وما هي إلا ذكرى للبشر | ٣١ | ك المدثر | ٧٤ |
| | إلا ما شاء الله إنه يعلم الجهر وما يخفى ... ... ... | ٧ | ك الأعلى | ٨٧ |
| | علم الإنسان ما لم يعلم ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك العلق | ٩٦ |
| | ألم يعلم بأن الله يرى ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك « | ٩٦ |
| | أفلا يعلم إذا بعثر ما في القبور ... ... ... ... | ٩ | ك العاديات | ١٠٠ |
| سَيَعْلَمُ | : وسيعلم الكفار لمن عقبى الدار ... ... ... ... | ٤٢ | م الرعد | ١٣ |
| (٢) | وسيعلم الذين ظلموا أي منقلب ينقلبون ... ... ... | ٢٢٧ | م الشعراء | ٢٦ |
| لَيَعْلَمَنَّ | : ولقد فتنا الذين من قبلهم فليعلمن الله الذين صدقوا | ٣ | م العنكبوت | ٢٩ |
| (٤) | وليعلمن الكاذبين ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | م « | ٢٩ |
| | وليعلمن الله الذين آمنوا ... ... ... ... ... ... | ١١ | م « | ٢٩ |
| | وليعلمن المنافقين ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | م « | ٢٩ |
| يَعْلَمْهُ | : وما تفعلوا من خير يعلمه الله ... ... ... ... ... | ١٩٧ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | وما أنفقتم من نفقة أو نذرتم من نذر فإن الله يعلمه | ٢٧٠ | م « | ٢ |
| | قل إن تخفوا ما في صدوركم أو تبدوه يعلمه الله ... | ٢٩ | م آل عمران | ٣ |
| | أو لم يكن لهم آية أن يعلمه علماء بني إسرائيل ... | ١٩٧ | م الشعراء | ٢٦ |
| يَعْلَمُهَا | : وعنده مفاتح الغيب لا يعلمها إلا هو ... ... ... | ٥٩ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | وما تسقط من ورقة إلا يعلمها ... ... ... ... ... | ٥٩ | ك « | ٦ |
| يَعْلَمُهُمْ | : وآخرين من دونهم لا تعلمونهم الله يعلمهم ... | ٦٠ | م الأنفال | ٨ |
| (٣) | والذين من بعدهم لا يعلمهم إلا الله... ... ... ... | ٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | قل ربي أعلم بعدتهم ما يعلمهم إلا قليل ... ... ... | ٢٢ | ك الكهف | ١٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَعْلَمُوا: | ألم يعلموا أنه من يحادد الله ورسوله فأن له نار | | | |
| (٧) | جهنم خالدا فيها ... ... ... ... ... ... | ٦٣ | م التوبة | ٩ |
| | ألم يعلموا أن الله يعلم سرهم ونجواهم وأن الله علام الغيوب | ٧٨ | م « | ٩ |
| | وأجدر ألا يعلموا حدود ما أنزل الله على رسوله ... | ٩٧ | م « | ٩ |
| | ألم يعلموا أن الله هو يقبل التوبة عن عباده ... ... | ١٠٤ | م « | ٩ |
| | هذا بلاغ للناس ولينذروا به وليعلموا أنما هو إله واحد | ٥٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وكذلك أعثرنا عليهم ليعلموا أن وعد الله حق ... ... | ٢١ | ك الكهف | ١٨ |
| | أو لم يعلموا أن الله يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ... | ٥٢ | م الزمر | ٣٩ |
| يَعْلَمُونَ: | ألا إنهم هم السفهاء ولكن لا يعلمون ... ... | ١٣ | م البقرة | ٢ |
| (٨٥) | فأما الذين آمنوا فيعلمون أنه الحق من ربهم ... | ٢٦ | م « | ٢ |
| | ثم يحرفونه من بعد ما عقلوه وهم يعلمون ... ... ... | ٧٥ | م « | ٢ |
| | أو لا يعلمون أن الله يعلم ما يسرون وما يعلنون ... | ٧٧ | م « | ٢ |
| | ومنهم أميون لا يعلمون الكتاب إلا أماني ... ... | ٧٨ | م « | ٢ |
| | نبذ فريق من الذين أوتوا الكتاب كتاب الله وراء | | | |
| | ظهورهم كأنهم لا يعلمون ... ... ... ... ... | ١٠١ | م « | ٢ |
| | ولبئس ما شروا به أنفسهم لو كانوا يعلمون ... ... | ١٠٢ | م « | ٢ |
| | لمثوبة من عند الله خير لو كانوا يعلمون ... ... ... | ١٠٣ | م « | ٢ |
| | كذلك قال الذين لا يعلمون مثل قولهم ... ... ... | ١١٣ | م « | ٢ |
| | وقال الذين لا يعلمون لولا يكلمنا الله أو تأتينا آية | ١١٨ | م « | ٢ |
| | وإن الذين أوتوا الكتاب ليعلمون أنه الحق من ربهم | ١٤٤ | م « | ٢ |
| | وإن فريقا منهم ليكتمون الحق وهم يعلمون ... ... | ١٤٦ | م « | ٢ |
| | وتلك حدود الله يبينها لقوم يعلمون ... ... ... ... | ٢٣٠ | م « | ٢ |
| | ويقولون على الله الكذب وهم يعلمون ... ... ... | ٧٥ | م آل عمران | ٣ |
| | ويقولون على الله الكذب وهم يعلمون ... ... ... | ٧٨ | م « | ٣ |
| | ولم يصروا على ما فعلوا وهم يعلمون ... ... ... ... | ١٣٥ | م « | ٣ |
| | أو لو كان آباؤهم لا يعلمون شيئا ولا يهتدون ... ... | ١٠٤ | م المائدة | ٥ |
| | قل إن الله قادر على أن ينزل آية ولكن أكثرهم لا يعلمون | ٣٧ | ك الأنعام | ٦ |
| | قد فصلنا الآيات لقوم يعلمون ... ... ... ... | ٩٧ | ك « | ٦ |
| | وليقولوا درست ولنبينه لقوم يعلمون... ... ... .. | ١٠٥ | ك « | ٦ |
| | والذين آتيناهم الكتاب يعلمون أنه منزل من ربك بالحق | ١١٤ | م « | ٦ |
| | كذلك نفصل الآيات لقوم يعلمون ... ... ... ... | ٣٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | ألا إنما طائرهم عند الله ولكن أكثرهم لا يعلمون | ١٣١ | ك « | ٧ |
| | والذين كذبوا بآياتنا سنستدرجهم من حيث لا يعلمون | ١٨٢ | ك « | ٧ |
| | قل إنما علمها عند الله ولكن أكثر الناس لا يعلمون | ١٨٧ | ك « | ٧ |
| | إن أولياؤه إلا المتقون ولكن أكثرهم لا يعلمون ... | ٣٤ | م الأنفال | ٨ |
| | ثم أبلغه مأمنه ذلك بأنهم قوم لا يعلمون ... ... ... | ٦ | م التوبة | ٩ |
| | ونفصل الآيات لقوم يعلمون ... ... ... ... ... | ١١ | م « | ٩ |
| | وطبع الله على قلوبهم فهم لا يعلمون... ... ... ... | ٩٣ | م « | ٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَعْلَمُونَ: | نفصل الآيات لقوم يعلمون... ... ... ... ... | ٥ | ك يونس | ١٠ |
| | ألا إن وعد الله حق ولكن أكثرهم لا يعلمون ... | ٥٥ | ك « | ١٠ |
| | فاستقيما ولا تتبعان سبيل الذين لا يعلمون ... ... | ٨٩ | ك « | ١٠ |
| | والله غالب على أمره ولكن أكثر الناس لا يعلمون | ٢١ | ك يوسف | ١٢ |
| | ذلك الدين القيم ولكن أكثر الناس لا يعلمون ... | ٤٠ | ك « | ١٢ |
| | لعلي أرجع إلى الناس لعلهم يعلمون ... ... ... ... | ٤٦ | ك « | ١٢ |
| | وإنه لذو علم لما علمناه ولكن أكثر الناس لا يعلمون | ٦٨ | ك « | ١٢ |
| | دعهم يأكلوا ويتمتعوا ويلههم الأمل فسوف يعلمون | ٣ | ك الحجر | ١٥ |
| | الذين يجعلون مع الله إلها آخر فسوف يعلمون ... | ٩٦ | ك « | ١٥ |
| | إن وعدا عليه حقا ولكن أكثر الناس لا يعلمون ... | ٣٨ | ك النحل | ١٦ |
| | ولأجر الآخرة أكبر لو كانوا يعلمون ... ... ... ... | ٤١ | ك « | ١٦ |
| | ويجعلون لما لا يعلمون نصيبا مما رزقناهم ... ... | ٥٦ | ك « | ١٦ |
| | بل يستوون الحمد لله بل أكثرهم لا يعلمون ... ... | ٧٥ | ك « | ١٦ |
| | قالوا إنما أنت مفتر بل أكثرهم لا يعلمون ... ... | ١٠١ | ك « | ١٦ |
| | بل أكثرهم لا يعلمون الحق فهم معرضون... ... | ٢٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ويعلمون أن الله هو الحق المبين ... ... ... ... | ٢٥ | م النور | ٢٤ |
| | وسوف يعلمون حين يرون العذاب من أضل سبيلا | ٤٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | فتلك بيوتهم خاوية بما ظلموا إن في ذلك لآية لقوم يعلمون | ٥٢ | ك النمل | ٢٧ |
| | أإله مع الله بل أكثرهم لا يعلمون | ٦١ | ك « | ٢٧ |
| | ولكن أكثرهم لا يعلمون ... | ١٣ | ك القصص | ٣٨ |
| | يجبى إليه ثمرات كل شيء رزقا من لدنا ولكن أكثرهم | | | |
| | لا يعلمون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٧ | ك « | ٢٨ |
| | وإن أوهن البيوت لبيت العنكبوت لو كانوا يعلمون | ٤١ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وإن الدار الآخرة لهي الحيوان لو كانوا يعلمون ... | ٦٤ | ك « | ٢٩ |
| | ليكفروا بما آتيناهم وليتمتعوا فسوف يعلمون ... ... | ٦٦ | ك « | ٢٩ |
| | وعد الله لا يخلف الله وعده ولكن أكثر الناس لا يعلمون | ٦ | ك الروم | ٣٠ |
| | يعلمون ظاهرا من الحياة الدنيا وهم عن الآخرة هم غافلون | ٧ | ك « | ٣٠ |
| | ذلك الدين القيم ولكن أكثر الناس لا يعلمون ... | ٣٠ | ك « | ٣٠ |
| | كذلك يطبع الله على قلوب الذين لا يعلمون ... ... | ٥٩ | ك « | ٣٠ |
| | قل الحمد لله بل أكثرهم لا يعلمون ... ... ... ... | ٢٥ | ك لقمان | ٣١ |
| | أن لو كانوا يعلمون الغيب ما لبثوا في العذاب المهين | ١٤ | ك سبأ | ٣٤ |
| | وما أرسلناك إلا كافة للناس بشيرا ونذيرا ولكن أكثر | | | |
| | الناس لا يعلمون ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٣٤ |
| | قل إن ربي يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ولكن أكثر | | | |
| | الناس لا يعلمون ... ... ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك « | ٣٤ |
| | قال يا ليت قومي يعلمون . بما غفر لي ربي ... ... | ٢٦ | ك يس | ٣٦ |
| | سبحان الذي خلق الأزواج كلها مما تنبت الأرض | | | |
| | ومن أنفسهم ومما لا يعلمون ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك « | ٣٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَعْلَمُونَ | : فكفروا به فسوف يعلمون ... ... ... ... ... | ١٧٠ | ك الصافات | ٣٧ |
| | قل هل يستوى الذين يعلمون... ... ... ... ... | ٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| | والذين لا يعلمون ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك « | ٣٩ |
| | ولعذاب الآخرة أكبر لو كانوا يعلمون ... ... ... | ٢٦ | ك « | ٣٩ |
| | هل يستويان مثلا الحمد لله بل أكثرهم لا يعلمون | ٢٩ | ك « | ٣٩ |
| | بل هى فتنة ولكن أكثرهم لا يعلمون ... ... ... | ٤٩ | ك « | ٣٩ |
| | لخلق السموات والأرض أكبر من خلق الناس ولكن أكثر الناس لا يعلمون ... ... ... ... ... ... | ٥٧ | م غافر | ٤٠ |
| | الذين كذبوا بالكتاب وبما أرسلنا به رسلنا فسوف يعلمون | ٧٠ | ك « | ٤٠ |
| | كتاب فصلت آياته قرآنا عربيا لقوم يعلمون ... ... | ٣ | ك فصلت | ٤١ |
| | والذين آمنوا مشفقون منها ويعلمون أنها الحق ... | ١٨ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ولا يملك الذين يدعون من دونه الشفاعة إلا من شهد بالحق وهم يعلمون ... ... ... ... ... ... | ٨٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | فاصفح عنهم وقل سلام فسوف يعلمون ... ... ... | ٨٩ | ك « | ٤٣ |
| | ما خلقناهما إلا بالحق ولكن أكثرهم لا يعلمون ... | ٣٩ | ك الدخان | ٤٤ |
| | فاتبعها ولا تتبع أهواء الذين لا يعلمون ... ... ... | ١٨ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | ثم يجمعكم إلى يوم القيامة لا ريب فيه ولكن أكثر الناس لا يعلمون ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك « | ٤٥ |
| | وإن للذين ظلموا عذابا دون ذلك ولكن أكثرهم لا يعلمون ... ... ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك الطور | ٥٢ |
| | ما هم منكم ولا منهم ويحلفون على الكذب وهم يعلمون | ١٤ | م المجادلة | ٥٨ |
| | ولله العزة ولرسوله وللمؤمنين ولكن المنافقين لا يعلمون | ٨ | م المنافقون | ٦٣ |
| | كذلك العذاب ولعذاب الآخرة أكبر لو كانوا يعلمون | ٣٣ | م القلم | ٦٨ |
| | سنستدرجهم من حيث لا يعلمون .. ... ... ... | ٤٤ | ك « | ٦٨ |
| | كلا إنا خلقناهم مما يعلمون ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك المعارج | ٧٠ |
| | وإن عليكم لحافظين . كراما كاتبين . يعلمون ما تفعلون | ١٢ | ك الانفطار | ٨٢ |
| سَيَعْلَمُونَ | : فسيعلمون من هو شر مكانا وأضعف جندا | ٧٥ | ك مريم | ١٩ |
| (٥) | سيعلمون غدا من الكذاب الأشر ... ... ... ... | ٢٦ | ك القمر | ٥٤ |
| | فسيعلمون من أضعف ناصرا وأقل عددا... ... ... | ٢٤ | ك الجن | ٧٢ |
| | كلا سيعلمون ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك النبأ | ٧٨ |
| | ثم كلا سيعلمون ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك « | ٧٨ |
| أَعْلَمْ | : ثم ادعهن يأتينك سعيا واعلم أن الله عزيز حكيم | ٢٦٠ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | فإن تولوا فاعلم أنما يريد الله أن يصيبهم ببعض ذنوبهم | ٤٩ | م المائدة | ٥ |
| | فإن لم يستجيبوا لك فاعلم أنما يتبعون أهواءهم ... ... | ٥٠ | ك القصص | ٢٨ |
| | فاعلم أنه لا إله إلا الله واستغفر لذنبك ... ... ... | ١٩ | م محمد | ٤٧ |
| أَعْلَمُوا | : واتقوا الله واعلموا أن الله مع المتقين ... ... | ١٩٤ | م البقرة | ٢ |
| (٢٧) | واتقوا الله واعلموا أن الله شديد العقاب ... ... | ١٩٦ | م « | ٢ |
| | واتقوا الله واعلموا أنكم إليه تحشرون ... ... ... | ٢٠٣ | م « | ٢ |
| أَعْلَمُوا | : فإن زللتم من بعد ما جاءتكم البينات فاعلموا أن الله عزيز حكيم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠٩ | م البقرة | ٢ |
| | واتقوا الله واعلموا أنكم ملاقوه وبشر المؤمنين... ... | ٢٢٣ | م « | ٢ |
| | واتقوا الله واعلموا أن الله بكل شىء عليم... ... ... | ٢٣١ | م « | ٢ |
| | واتقوا الله واعلموا أن الله بما تعملون بصير ... ... | ٢٣٣ | م « | ٢ |
| | واعلموا أن الله يعلم ما فى أنفسكم فاحذروه ... ... | ٢٣٥ | م « | ٢ |
| | واعلموا أن الله غفور حليم ... ... ... ... ... | ٢٣٥ | م « | ٢ |
| | وقاتلوا فى سبيل الله واعلموا أن الله سميع عليم ... | ٢٤٤ | م « | ٢ |
| | ولستم بآخذيه إلا أن تغمضوا فيه واعلموا أن الله غنى حميد ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦٧ | م « | ٢ |
| | إلا الذين تابوا من قبل أن تقدروا عليهم فاعلموا أن الله غفور رحيم... ... ... ... ... ... | ٣٤ | م المائدة | ٥ |
| | فإن توليتم فاعلموا أنما على رسولنا البلاغ المبين ... | ٩٢ | م « | ٥ |
| | اعلموا أن الله شديد العقاب وأن الله غفور رحيم | ٩٨ | م « | ٥ |
| | واعلموا أن الله يحول بين المرء وقلبه وأنه إليه تحشرون | ٢٤ | م الأنفال | ٨ |
| | واعلموا أن الله شديد العقاب ... ... ... ... | ٢٥ | م « | ٨ |
| | واعلموا أنما أموالكم وأولادكم فتنة وأن الله عنده أجر عظيم | ٢٨ | م « | ٨ |
| | وإن تولوا فاعلموا أن الله مولاكم نعم المولى ونعم النصير | ٤٠ | م « | ٨ |
| | واعلموا أنما غنمتم من شىء فأن لله خمسه وللرسول | ٤١ | م « | ٨ |
| | واعلموا أنكم غير معجزى الله وأن الله مخزى الكافرين | ٢ | م التوبة | ٩ |
| | وإن توليتم فاعلموا أنكم غير معجزى الله ... ... ... | ٣ | م « | ٩ |
| | واعلموا أن الله مع المتقين ... ... ... ... ... | ٣٦ | م « | ٩ |
| | وليجدوا فيكم غلظة واعلموا أن الله مع المتقين ... ... | ١٢٣ | م « | ٩ |
| | فإلم يستجيبوا لكم فاعلموا أنما أنزل بعلم الله ... ... | ١٤ | ك هود | ١١ |
| | واعلموا أن فيكم رسول الله ... ... ... ... ... | ٧ | م الحجرات | ٤٩ |
| | اعلموا أن الله يحيى الأرض بعد موتها... ... ... ... | ١٧ | م الحديد | ٥٧ |
| | اعلموا أنما الحياة الدنيا لعب ولهو وزينة ... ... ... | ٢٠ | م « | ٥٧ |
| لِيُعْلَمَ | : ولا يضربن بأرجلهن ليعلم ما يخفين من زينتهن ... | ٣١ | م النور | ٢٤ |
| عَلَّمَ | : وعلم آدم الأسماء كلها ثم عرضهم على الملائكة... ... | ٣١ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | الرحمن . علم القرآن . خلق الإنسان . علمه البيان | ٢ | م الرحمن | ٥٥ |
| | الذى علم بالقلم... ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك العلق | ٩٦ |
| | علم الإنسان ما لم يعلم ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك « | ٩٦ |
| عَلَّمْتُكَ | : وإذ علمتك الكتاب والحكمة والتوراة والإنجيل | ١١٠ | م المائدة | ٥ |
| عَلَّمْتُمْ | : قل أحل لكم الطيبات وما علمتم من الجوارح... ... | ٤ | م « | ٥ |
| عَلَّمْتَنَا | : قالوا سبحانك لا علم لنا إلا ما علمتنا ... ... ... | ٣٢ | م البقرة | ٢ |
| عَلَّمْتَنِي | : رب قد آتيتنى من الملك وعلمتنى من تأويل الأحاديث | ١٠١ | ك يوسف | ١٢ |
| عَلَّمَكَ | : وأنزل الله عليك الكتاب والحكمة وعلمك ما لم تكن تعلم | ١١٣ | م النساء | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| عَلَّمَكُمْ | : فإذا أمنتم فاذكروا الله كما علمكم ما لم تكونوا تعلمون ... | ٢ البقـرة | ٢٣٩ |
| (٤) | تعلمونهن مما علمكم الله ... ... ... ... ... ... ... | ٥ المائدة | ٤ |
| | إنه لكبيركم الذى علمكم السحر ... ... ... ... ... | ٢٠ طـه | ٧١ |
| | إنه لكبيركم الذى علمكم السحر فلسوف تعلمون ... ... | ٢٦ الشعراء | ٤٩ |
| عَلَّمْنَاهُ | : وإنه لذو علم لما علمناه ولكن أكثر الناس لا يعلمون | ١٢ يوسف | ٦٨ |
| (٤) | آتيناه رحمة من عندنا وعلمناه من لدنا علما ... ... | ١٨ الكهف | ٦٥ |
| | وعلمناه صنعة لبوس لكم لتحصنكم من بأسكم ... ... | ٢١ الأنبياء | ٨٠ |
| | وما علمناه الشعر وما ينبغى له إن هو إلا ذكر وقرآن مبين | ٣٦ يس | ٦٩ |
| عَلَّمَنِي | : ذلكما مما علمنى ربى ... ... ... ... ... ... | ١٢ يوسف | ٣٧ |
| عَلَّمَهُ | : وآتاه الله الملك والحكمة وعلمه مما يشاء ... ... ... | ٢ البقـرة | ٢٥١ |
| (٤) | ولا يأب كاتب أن يكتب كما علمه الله ... ... ... | ٢ « | ٢٨٢ |
| | إن هو إلا وحى يوحى . علمه شديد القوى ... ... | ٥٣ النجم | ٥ |
| | خلق الإنسان . علمه البيان ... ... ... ... ... ... | ٥٥ الرحمن | ٤ |
| تُعَلِّمَنِ | : قال له موسى هل أتبعك على أن تعلمن مما علمت رشدا | ١٨ الكهف | ٦٦ |
| تُعَلِّمُونَ | : ولكن كونوا ربانيين بما كنتم تعلمون الكتاب | ٣ آل عمران | ٧٩ |
| (٢) | قل أتعلمون الله بدينكم والله يعلم ما فى السموات | | |
| | وما فى الأرض ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٩ الحجرات | ١٦ |
| تَعْلَمُونَهُنَّ | : تعلمونهن مما علمكم الله ... ... ... ... ... | ٥ المائدة | ٤ |
| وَلِنُعَلِّمَهُ | : ولنعلمه من تأويل الأحاديث ... ... ... ... | ١٢ يوسف | ٢١ |
| يُعَلِّمَانِ | : وما يعلمان من أحد حتى يقولا إنما نحن فتنة فلا تكفر | ٢ البقـرة | ١٠٢ |
| يُعَلِّمُكَ | : وكذلك يجتبيك ربك ويعلمك من تأويل الأحاديث | ١٢ يوسف | ٦ |
| يُعَلِّمُكُمْ | : يتلوا عليكم آياتنا ويزكيكم ويعلمكم الكتاب والحكمة | ٢ البقـرة | ١٥١ |
| (٣) | ويعلمكم ما لم تكونوا تعلمون ... ... ... ... ... | ٢ « | ١٥١ |
| | واتقوا الله ويعلمكم الله والله بكل شىء عليم ... ... | ٢ « | ٢٨٢ |
| يُعَلِّمُهُ | : ويعلمه الكتاب والحكمة والتوراة والإنجيل ... | ٣ آل عمران | ٤٨ |
| (٢) | ولقد نعلم أنهم يقولون إنما يعلمه بشر ... ... ... | ١٦ النحل | ١٠٣ |
| يُعَلِّمُهُمُ | : يتلوا عليهم آياتك ويعلمهم الكتاب والحكمة ويزكيهم | ٢ البقـرة | ١٢٩ |
| (٣) | يتلوا عليهم آياته ويزكيهم ويعلمهم الكتاب والحكمة | ٣ آل عمران | ١٦٤ |
| | يتلوا عليهم آياته ويزكيهم ويعلمهم الكتاب والحكمة | ٦٢ الجمعة | ٢ |
| يُعَلِّمُونَ | : ولكن الشياطين كفروا يعلمون الناس السحر ... | ٢ البقـرة | ١٠٢ |
| عُلِّمْتَ | : هل أتبعك على أن تعلمن مما علمت رشدا ... ... | ١٨ الكهف | ٦٦ |
| عُلِّمْتُمْ | : وعلمتم ما لم تعلموا أنتم ولا آباؤكم ... ... ... | ٦ الأنعام | ٩١ |
| عُلِّمْنَا | : وقال يأيها الناس علمنا منطق الطير وأوتينا من كل شىء | ٢٧ النمل | ١٦ |
| يَتَعَلَّمُونَ | : فيتعلمون منهما ما يفرقون به بين المرء وزوجه ... | ٢ البقـرة | ١٠٢ |
| (٢) | ويتعلمون ما يضرهم ولا ينفعهم ... ... ... ... | ٢ « | ١٠٢ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| عَالِمُ | : وله الملك يوم ينفخ فى الصور عالم الغيب والشهادة | ٦ الأنعام | ٧٣ |
| (١٣) | ثم تردون إلى عالم الغيب والشهادة فينبئكم بما كنتم تعملون | ٩ التوبة | ٩٤ |
| | وستردون إلى عالم الغيب والشهادة فينبئكم بما كنتم تعملون | ٩ « | ١٠٥ |
| | عالم الغيب والشهادة الكبير المتعال ... ... ... ... | ١٣ الرعد | ٩ |
| | عالم الغيب والشهادة فتعالى عما يشركون ... ... ... | ٢٣ المؤمنون | ٩٢ |
| | ذلك عالم الغيب والشهادة العزيز الرحيم ... ... ... | ٣٢ السجدة | ٦ |
| | قل بلى وربى لتأتينكم عالم الغيب ... ... ... ... ... | ٣٤ سبأ | ٣ |
| | إن الله عالم غيب السموات والأرض إنه عليم بذات الصدور | ٣٥ فاطر | ٣٨ |
| | قل اللهم فاطر السموات والأرض عالم الغيب والشهادة | ٣٩ الزمر | ٤٦ |
| | هو الله الذى لا إله إلا هو عالم الغيب والشهادة ... | ٥٩ الحشر | ٢٢ |
| | ثم تردون إلى عالم الغيب والشهادة فينبئكم بما كنتم تعملون | ٦٢ الجمعة | ٨ |
| | عالم الغيب والشهادة العزيز الحكيم ... ... ... ... | ٦٤ التغابن | ١٨ |
| | عالم الغيب فلا يظهر على غيبه أحدا ... ... ... ... | ٧٢ الجن | ٢٦ |
| الْعَالِمُونَ | : وتلك الأمثال نضربها للناس وما يعقلها إلا العالمون | ٢٩ العنكبوت | ٤٣ |
| عَالِمِينَ | : قالوا أضغاث أحلام وما نحن بتأويل الأحلام بعالمين | ١٢ يوسف | ٤٤ |
| (٤) | ولقد آتينا إبراهيم رشده من قبل وكنا به عالمين ... ... | ٢١ الأنبياء | ٥١ |
| | وكنا بكل شىء عالمين ... ... ... ... ... ... ... | ٢١ « | ٨١ |
| | إن فى ذلك لآيات للعالمين ... ... ... ... ... ... | ٣٠ الروم | ٢٢ |
| عُلَمَاءُ | : أو لم يكن لهم آية أن يعلمه علماء بنى إسرائيل ... | ٢٦ الشعراء | ١٩٧ |
| (٢) | إنما يخشى الله من عباده العلماء ... ... ... ... ... | ٣٥ فاطر | ٢٨ |
| مَعْلُومٍ | : وما أهلكنا من قرية إلا ولها كتاب معلوم ... ... | ١٥ الحجر | ٤ |
| (١١) | وإن من شىء إلا عندنا خزائنه وما ننزله إلا بقدر معلوم | ١٥ « | ٢١ |
| | قال فإنك من المنظرين . إلى يوم الوقت المعلوم ... | ١٥ « | ٣٨ |
| | فجمع السحرة لميقات يوم معلوم ... ... ... ... ... | ٢٦ الشعراء | ٣٨ |
| | قال هذه ناقة لها شرب ولكم شرب يوم معلوم ... ... | ٢٦ « | ١٥٥ |
| | إلا عباد الله المخلصين . أولئك لهم رزق معلوم ... ... | ٣٧ الصافات | ٤١ |
| | وما منا إلا له مقام معلوم ... ... ... ... ... ... | ٣٧ « | ١٦٤ |
| | قال فإنك من المنظرين . إلى يوم الوقت المعلوم ... | ٣٨ ص | ٨١ |
| | لمجموعون إلى ميقات يوم معلوم ... ... ... ... ... | ٥٦ الواقعة | ٥٠ |
| | والذين فى أموالهم حق معلوم . للسائل والمحروم ... | ٧٠ المعارج | ٢٤ |
| | فجعلناه فى قرار مكين . إلى قدر معلوم ... ... ... | ١٧ المرسلات | ٢٢ |
| مَعْلُومَاتٌ | : الحج أشهر معلومات ... ... ... ... ... ... | ٢ البقـرة | ١٩٧ |
| (٢) | ليشهدوا منافع لهم ويذكروا اسم الله فى أيام معلومات | ٢٢ الحج | ٢٨ |
| مُعَلَّمٌ | : ثم تولوا عنه وقالوا معلم مجنون ... ... ... ... | ٤٤ الدخان | ١٤ |
| أَعْلَمُ | : أأنتم أعلم أم الله ومن أظلم ممن كتم شهادة عنده من الله | ٢ البقـرة | ١٤٠ |
| (٤٩) | قالت رب إنى وضعتها أنثى والله أعلم بما وضعت ... | ٣ آل عمران | ٣٦ |
| | يقولون بأفواههم ما ليس فى قلوبهم والله أعلم بما يكتمون | ٣ « | ١٦٧ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَعْلَمُ | والله أعلم بإيمانكم بعضكم من بعض ... ... ... ... | ٢٥ | م النساء | ٤ |
| | والله أعلم بأعدائكم وكفى بالله وليا وكفى بالله نصيرا | ٤٥ | م « | ٤ |
| | وهم قد خرجوا به والله أعلم بما كانوا يكتمون ... | ٦١ | م المائدة | ٥ |
| | أهؤلاء من الله عليهم من بيننا أليس الله بأعلم بالشاكرين | ٥٣ | ك الأنعام | ٦ |
| | لقضى الأمر بيني وبينكم والله أعلم بالظالمين ... ... | ٥٨ | ك « | ٦ |
| | إن ربك هو أعلم من يضل عن سبيله ... ... ... | ١١٧ | ك « | ٦ |
| | وهو أعلم بالمهتدين ... ... ... ... ... ... ... | ١١٧ | ك « | ٦ |
| | إن ربك هو أعلم بالمعتدين ... ... ... ... ... ... | ١١٩ | ك « | ٦ |
| | الله أعلم حيث يجعل رسالته ... ... ... ... ... ... | ١٢٤ | ك « | ٦ |
| | ومنهم من لا يؤمن به وربك أعلم بالمفسدين ... ... | ٤٠ | م يونس | ١٠ |
| | الله أعلم بما في أنفسهم ... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك هود | ١١ |
| | قال أنتم شر مكانا والله أعلم بما تصفون ... ... | ٧٧ | ك يوسف | ١٢ |
| | وإذا بدلنا آية مكان آية والله أعلم بما ينزل قالوا إنما أنت مفتر | ١٠١ | ك النحل | ١٦ |
| | إن ربك هو أعلم بمن ضل عن سبيله ... ... ... | ١٢٥ | ك « | ١٦ |
| | وهو أعلم بالمهتدين ... ... ... ... ... ... ... | ١٢٥ | ك « | ١٦ |
| | ربكم أعلم بما في نفوسكم ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| | نحن أعلم بما يستمعون به إذ يستمعون إليك ... ... | ٤٧ | ك « | ١٧ |
| | ربكم أعلم بكم إن يشأ يرحمكم أو إن يشأ يعذبكم ... | ٥٤ | ك « | ١٧ |
| | وربك أعلم بمن في السموات والأرض ... ... ... | ٥٥ | ك « | ١٧ |
| | قل كل يعمل على شاكلته فربكم أعلم بمن هو أهدى سبيلا | ٨٤ | ك « | ١٧ |
| | قالوا ربكم أعلم بما لبثتم ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | فقالوا ابنوا عليهم بنيانا ربهم أعلم بهم ... ... ... | ٢١ | ك « | ١٨ |
| | قل ربي أعلم بعدتهم ما يعلمهم إلا قليل ... ... ... | ٢٢ | ك « | ١٨ |
| | قل الله أعلم بما لبثوا له غيب السموات والأرض | ٢٦ | ك « | ١٨ |
| | ثم لنحن أعلم بالذين هم أولى بها صليا ... ... ... | ٧٠ | ك مريم | ١٩ |
| | نحن أعلم بما يقولون إذ يقول أمثلهم طريقة إن لبثتم إلا يوما | ١٠٤ | ك طه | ٢٠ |
| | وإن جادلوك فقل الله أعلم بما تعملون... ... ... | ٦٨ | م الحج | ٢٢ |
| | ادفع بالتي هي أحسن السيئة نحن أعلم بما يصفون | ٩٦ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | قال ربي أعلم بما تعملون ... ... ... ... ... ... | ١٨٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وقال موسى ربي أعلم بمن جاء بالهدى من عنده ... | ٣٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | ولكن الله يهدي من يشاء وهو أعلم بالمهتدين ... ... | ٥٦ | ك « | ٢٨ |
| | قل ربي أعلم من جاء بالهدى ومن هو في ضلال مبين | ٨٥ | م « | ٢٨ |
| | أوليس الله بأعلم بما في صدور العالمين .. ... ... | ١٠ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | قال إن فيها لوطا قالوا نحن أعلم بمن فيها ... ... | ٣٢ | ك « | ٢٩ |
| | ووفيت كل نفس ما عملت وهو أعلم بما يفعلون ... | ٧٠ | ك الزمر | ٣٩ |
| | هو أعلم بما تفيضون فيه كفى به شهيدا بيني وبينكم | ٨ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | نحن أعلم بما يقولون وما أنت عليهم بجبار ... ... | ٤٥ | ك ق | ٥٠ |
| | وهو أعلم بمن اهتدى ... ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك النجم | ٥٣ |
| | هو أعلم بكم إذ أنشأكم من الأرض ... ... ... ... | ٣٢ | م « | ٥٣ |
| | فلا تزكوا أنفسكم هو أعلم بمن اتقى ... ... ... ... | ٣٢ | م « | ٥٣ |
| | تسرون إليهم بالمودة وأنا أعلم بما أخفيتم وما أعلنتم | ١ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | فامتحنوهن الله أعلم بإيمانهن ... ... ... ... ... | ١٠ | م « | ٦٠ |
| | إن ربك هو أعلم بمن ضل عن سبيله ... ... ... | ٧ | ك القلم | ٦٨ |
| | وهو أعلم بالمهتدين ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك « | ٦٨ |
| | بل الذين كفروا يكذبون . والله أعلم بما يوعون | ٢٣ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| عَلِيمٌ | فسواهن سبع سموات وهو بكل شيء عليم ... ... | ٢٩ | م البقرة | ٢ |
| (١٤٠) | قالوا سبحانك لا علم لنا إلا ما علمتنا إنك أنت العليم الحكيم | ٣٢ | م « | ٢ |
| | ولن يتمنوه أبدا بما قدمت أيديهم والله عليم بالظالمين | ٩٥ | م « | ٢ |
| | فأينما تولوا فثم وجه الله إن الله واسع عليم ... ... | ١١٥ | م « | ٢ |
| | ربنا تقبل منا إنك أنت السميع العليم ... ... ... | ١٢٧ | م « | ٢ |
| | فسيكفيكهم الله وهو السميع العليم ... ... ... ... | ١٣٧ | م « | ٢ |
| | ومن تطوع خيرا فإن الله شاكر عليم... ... ... ... | ١٥٨ | م « | ٢ |
| | فإنما إثمه على الذين يبدلونه إن الله سميع عليم ... | ١٨١ | م « | ٢ |
| | وما تفعلوا من خير فإن الله به عليم... ... ... ... | ٢١٥ | م « | ٢ |
| | ولا تجعلوا الله عرضة لأيمانكم أن تبروا وتتقوا وتصلحوا بين الناس والله سميع عليم ... ... ... | ٢٢٤ | م « | ٢ |
| | وإن عزموا الطلاق فإن الله سميع عليم ... ... ... | ٢٢٧ | م « | ٢ |
| | واتقوا الله واعلموا أن الله بكل شيء عليم ... ... | ٢٣١ | م « | ٢ |
| | وقاتلوا في سبيل الله واعلموا أن الله سميع عليم ... | ٢٤٤ | م « | ٢ |
| | تولوا إلا قليلا منهم والله عليم بالظالمين ... ... ... | ٢٤٦ | م « | ٢ |
| | والله يؤتي ملكه من يشاء والله واسع عليم ... ... | ٢٤٧ | م « | ٢ |
| | فمن يكفر بالطاغوت ويؤمن بالله فقد استمسك بالعروة الوثقى لا انفصام لها والله سميع عليم | ٢٥٦ | م « | ٢ |
| | والله يضاعف لمن يشاء والله واسع عليم... ... ... | ٢٦١ | م « | ٢ |
| | والله يعدكم مغفرة منه وفضلا والله واسع عليم | ٢٦٨ | م « | ٢ |
| | وما تنفقوا من خير فإن الله به عليم ... ... ... | ٢٧٣ | م « | ٢ |
| | واتقوا الله ويعلمكم الله والله بكل شيء عليم ... ... | ٢٨٢ | م « | ٢ |
| | ومن يكتمها فإنه آثم قلبه والله بما تعملون عليم ... | ٢٨٣ | م « | ٢ |
| | ذرية بعضها من بعض والله سميع عليم ... ... ... | ٣٤ | م آل عمران | ٣ |
| | فتقبل مني إنك أنت السميع العليم ... ... ... ... | ٣٥ | م « | ٣ |
| | فإن تولوا فإن الله عليم بالمفسدين ... ... ... ... | ٦٣ | م « | ٣ |
| | قل إن الفضل بيد الله يؤتيه من يشاء والله واسع عليم | ٧٣ | م « | ٣ |
| | وما تنفقوا من شيء فإن الله به عليم... ... ... ... | ٩٢ | م « | ٣ |
| | وما يفعلوا من خير فلن يكفروه والله عليم بالمتقين ... | ١١٥ | م « | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عَلِيمٌ | قل موتوا بغيظكم إن الله عليم بذات الصدور ... ... | ١١٩م | آل عمران | ٣ |
| | تبوئ المؤمنين مقاعد القتال والله سميع عليم ... ... | ١٢١م | « | ٣ |
| | وليمحص ما فى قلوبكم والله عليم بذات الصدور ... | ١٥٤م | « | ٣ |
| | وصية من الله والله عليم حليم ... ... ... ... ... | ١٢ م | النساء | ٤ |
| | ويتوب عليكم والله عليم حكيم ... ... ... ... ... | ٢٦ م | « | ٤ |
| | يبين الله لكم أن تضلوا والله بكل شىء عليم ... ... | ١٧٦م | « | ٤ |
| | واتقوا الله إن الله عليم بذات الصدور ... ... ... | ٧ م | المائدة | ٥ |
| | ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء والله واسع عليم... ... | ٥٤ م | « | ٥ |
| | قل أتعبدون من دون الله مالا يملك لكم ضرا ولا نفعا والله هو السميع العليم ... ... ... ... ... ... | ٧٦ م | « | ٥ |
| | وأن الله بكل شىء عليم... ... ... ... ... ... ... | ٩٧ م | « | ٥ |
| | وله ما سكن فى الليل والنهار وهو السميع العليم... ... | ١٣ ك | الأنعام | ٦ |
| | نرفع درجات من نشاء إن ربك حكيم عليم ... ... | ٨٣ ك | « | ٦ |
| | ذلك تقدير العزيز العليم ... ... ... ... ... ... | ٩٦ ك | « | ٦ |
| | وخالق كل شىء وهو بكل شىء عليم ... ... ... ... | ١٠١ك | « | ٦ |
| | لا مبدل لكلماته وهو السميع العليم ... ... ... ... | ١١٥ك | « | ٦ |
| | خالدين فيها إلا ماشاء الله إن ربك حكيم عليم... ... | ١٢٨ك | « | ٦ |
| | سيجزيهم وصفهم إنه حكيم عليم... ... ... ... ... | ١٣٩ك | « | ٦ |
| | قال الملأ من قوم فرعون إن هذا لساحر عليم ... ... | ١٠٩ك | الأعراف | ٧ |
| | وأرسل فى المدائن حاشرين . يأتوك بكل ساحر عليم | ١١٢ك | « | ٧ |
| | وإما ينزغنك من الشيطان نزغ فاستعذ بالله إنه سميع عليم | ٢٠٠ك | « | ٧ |
| | وليبلى المؤمنين منه بلاء حسنا إن الله سميع عليم... ... | ١٧ م | الأنفال | ٨ |
| | ويحيى من حى عن بينة وإن الله لسميع عليم ... ... | ٤٢ م | « | ٨ |
| | ولكن الله سلم إنه عليم بذات الصدور ... ... ... | ٤٣ م | « | ٨ |
| | ذلك بأن الله لم يك مغيرا نعمة أنعمها على قوم حتى يغيروا ما بأنفسهم وأن الله سميع عليم ... ... ... | ٥٣ م | « | ٨ |
| | وتوكل على الله إنه هو السميع العليم ... ... ... ... | ٦١ م | « | ٨ |
| | فقد خانوا الله من قبل فأمكن منهم والله عليم حكيم | ٧١ م | « | ٨ |
| | بعضهم أولى ببعض فى كتاب الله إن الله بكل شىء عليم | ٧٥ م | « | ٨ |
| | ويتوب الله على من يشاء والله عليم حكيم ... ... | ١٥ م | التوبة | ٩ |
| | فسوف يغنيكم الله من فضله إن شاء إن الله عليم حكيم | ٢٨ م | « | ٩ |
| | أن يجاهدوا بأموالهم وأنفسهم والله عليم بالمتقين ... | ٤٤ م | « | ٩ |
| | يبغونكم الفتنة وفيكم سماعون لهم والله عليم بالظالمين ... | ٤٧ م | « | ٩ |
| | فريضة من الله والله عليم حكيم ... ... ... ... | ٦٠ م | « | ٩ |
| | وأجدر ألا يعلموا حدود ما أنزل الله على رسوله والله عليم حكيم | ٩٧ م | « | ٩ |
| | عليهم دائرة السوء والله سميع عليم ... ... ... ... | ٩٨ م | « | ٩ |
| | إن صلاتك سكن لهم والله سميع عليم... ... ... ... | ١٠٣م | « | ٩ |
| | إما يعذبهم وإما يتوب عليهم والله عليم حكيم... ... | ١٠٦م | « | ٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عَلِيمٌ | إلا أن تقطع قلوبهم والله عليم حكيم ... ... ... ... | ١١٠م | التوبة | ٩ |
| | حتى يبين لهم ما يتقون إن الله بكل شىء عليم... ... | ١١٥م | « | ٩ |
| | إن الظن لا يغنى من الحق شيئا إن الله عليم بما يفعلون | ٣٦ ك | يونس | ١٠ |
| | إن العزة لله جميعا هو السميع العليم ... ... ... ... | ٦٥ ك | « | ١٠ |
| | وقال فرعون ائتونى بكل ساحر عليم ... ... ... ... | ٧٩ ك | « | ١٠ |
| | يعلم مايسرون وما يعلنون إنه عليم بذات الصدور ... | ٥ ك | هود | ١١ |
| | إن ربك عليم حكيم... ... ... ... ... ... ... ... | ٦ ك | يوسف | ١٢ |
| | وأسروه بضاعة والله عليم بما يعملون ... ... ... | ١٩ ك | « | ١٢ |
| | فصرف عنه كيدهن إنه هو السميع العليم... ... ... | ٣٤ ك | « | ١٢ |
| | إن ربى بكيدهن عليم ... ... ... ... ... ... ... | ٥٠ ك | « | ١٢ |
| | قال اجعلنى على خزائن الأرض إنى حفيظ عليم ... | ٥٥ ك | « | ١٢ |
| | نرفع درجات من نشاء وفوق كل ذى علم عليم ... ... | ٧٦ ك | « | ١٢ |
| | عسى الله أن يأتينى بهم جميعا إنه هو العليم الحكيم ... | ٨٣ ك | « | ١٢ |
| | إن ربى لطيف لما يشاء إنه هو العليم الحكيم ... | ١٠٠ك | « | ١٢ |
| | وإن ربك هو يحشرهم إنه حكيم عليم ... ... ... | ٢٥ ك | الحجر | ١٥ |
| | قالوا لا توجل إنا نبشرك بغلام عليم ... ... ... ... | ٥٣ ك | « | ١٥ |
| | إن ربك هو الخلاق العليم ... ... ... ... ... ... | ٨٦ ك | « | ١٥ |
| | بلى إن الله عليم بما كنتم تعملون ... ... ... ... | ٢٨ ك | النحل | ١٦ |
| | لكى لا يعلم بعد علم شيئا إن الله عليم قدير ... ... | ٧٠ ك | « | ١٦ |
| | قال ربى يعلم القول فى السماء والأرض وهو السميع العليم | ٤ ك | الأنبياء | ٢١ |
| | ثم يحكم الله آياته والله عليم حكيم ... ... ... ... | ٥٢ م | الحج | ٢٢ |
| | ليدخلنهم مدخلا يرضونه وإن الله لعليم حليم ... ... | ٥٩ م | « | ٢٢ |
| | وأعملوا صالحا إنى بما تعملون عليم ... ... .. ... | ٥١ ك | المؤمنون | ٢٣ |
| | ويبين الله لكم الآيات والله عليم حكيم ... ... ... | ١٨ م | النور | ٢٤ |
| | ولكن الله يزكى من يشاء والله سميع عليم ... ... ... | ٢١ م | « | ٢٤ |
| | هو أزكى لكم والله بما تعملون عليم ... ... ... ... | ٢٨ م | « | ٢٤ |
| | إن يكونوا فقراء يغنهم الله من فضله والله واسع عليم | ٣٢ م | « | ٢٤ |
| | ويضرب الله الأمثال للناس والله بكل شىء عليم ... | ٣٥ م | « | ٢٤ |
| | كل قد علم صلاته وتسبيحه والله عليم بما يفعلون ... | ٤١ م | « | ٢٤ |
| | كذلك يبين الله لكم الآيات والله عليم حكيم... ... | ٥٨ م | « | ٢٤ |
| | كذلك يبين الله لكم آياته والله عليم حكيم ... ... ... | ٥٩ م | « | ٢٤ |
| | وأن يستعففن خير لهن والله سميع عليم ... ... ... | ٦٠ م | « | ٢٤ |
| | ويوم يرجعون إليه فينبئهم بما عملوا والله بكل شىء عليم | ٦٤ م | « | ٢٤ |
| | قال للملإ حوله إن هذا لساحر عليم .. ... ... ... | ٣٤ ك | الشعراء | ٢٦ |
| | وابعث فى المدائن حاشرين . يأتوك بكل سحار عليم | ٣٧ ك | « | ٢٦ |
| | إنه هو السميع العليم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢٠ك | « | ٢٦ |
| | وإنك لتلقى القرآن من لدن حكيم عليم ... ... ... | ٦ ك | النمل | ٢٧ |
| | إن ربك يقضى بينهم بحكمه وهو العزيز العليم ... ... | ٧٨ ك | « | ٢٧ |

| اللفظة | الآيـة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عَلِيمٌ: | فإن أجل الله لآت وهو السميع العليم ... ... ... | ٥ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | الله يرزقها وإياكم وهو السميع العليم ... ... ... | ٦٠ | ك « | ٢٩ |
| | إن الله بكل شيء عليم ... ... ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك « | ٢٩ |
| | يخلق ما يشاء وهو العليم القدير ... ... ... ... ... | ٥٤ | ك الروم | ٣٠ |
| | إن الله عليم بذات الصدور ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك لقمان | ٣١ |
| | وما تدرى نفس بأى أرض تموت إن الله عليم خبير | ٣٤ | ك « | ٣١ |
| | قل يجمع بيننا ربنا ثم يفتح بيننا بالحق وهو الفتاح العليم | ٢٦ | ك سبأ | ٣٤ |
| | فلا تذهب نفسك عليهم حسرات إن الله عليم بما يصنعون | ٨ | ك فاطر | ٣٥ |
| | إن الله عالم غيب السموات والأرض إنه عليم بذات الصدور | ٣٨ | ك « | ٣٥ |
| | والشمس تجرى لمستقر لها ذلك تقدير العزيز العليم ... | ٣٨ | ك يس | ٣٦ |
| | قل يحييها الذى أنشأها أول مرة وهو بكل خلق عليم | ٧٩ | ك « | ٣٦ |
| | بلى وهو الخلاق العليم ... ... ... ... ... ... ... | ٨١ | ك « | ٣٦ |
| | فينبئكم بما كنتم تعملون إنه عليم بذات الصدور ... | ٧ | ك الزمر | ٣٩ |
| | تنزيل الكتاب من الله العزيز العليم ... ... ... ... | ٢ | ك غافر | ٤٠ |
| | وزينا السماء الدنيا بمصابيح وحفظا ذلك تقدير العزيز العليم | ١٢ | ك فصلت | ٤١ |
| | فاستعذ بالله إنه هو السميع العليم... ... ... ... ... | ٣٦ | ك « | ٤١ |
| | يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر إنه بكل شيء عليم ... | ١٢ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ويحق الحق بكلماته إنه عليم بذات الصدور ... ... | ٢٤ | م « | ٤٢ |
| | ويجعل من يشاء عقيما إنه عليم قدير ... ... ... ... | ٥٠ | ك « | ٤٢ |
| | ليقولن خلقهن العزيز العليم ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وهو الذى فى السماء إله وفى الأرض إله وهو الحكيم العليم | ٨٤ | ك « | ٤٣ |
| | رحمة من ربك إنه هو السميع العليم ... ... ... ... | ٦ | ك الدخان | ٤٤ |
| | واتقوا الله إن الله سميع عليم ... ... ... ... ... | ١ | م الحجرات | ٤٩ |
| | فضلا من الله ونعمة والله عليم حكيم ... ... ... ... | ٨ | م « | ٤٩ |
| | إن أكرمكم عند الله أتقاكم إن الله عليم خبير ... ... | ١٣ | م « | ٤٩ |
| | والله يعلم ما فى السموات وما فى الأرض والله بكل شيء عليم | ١٦ | م « | ٤٩ |
| | قالوا لا تخف وبشروه بغلام عليم ... ... ... ... | ٢٨ | ك الذاريات | ٥١ |
| | قالوا كذلك قال ربك إنه هو الحكيم العليم ... ... | ٣٠ | ك « | ٥١ |
| | هو الأول والآخر والظاهر والباطن وهو بكل شيء عليم | ٣ | م الحديد | ٥٧ |
| | ويولج النهار فى الليل وهو عليم بذات الصدور ... | ٦ | م « | ٥٧ |
| | ثم ينبئهم بما عملوا يوم القيامة إن الله بكل شيء عليم | ٧ | م المجادلة | ٥٨ |
| | ذلكم حكم الله يحكم بينكم والله عليم حكيم... ... ... | ١٠ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | ولا يتمنونه أبدا بما قدمت أيديهم والله عليم بالظالمين | ٧ | م الجمعة | ٦٢ |
| | ويعلم ما تسرون وما تعلنون . والله عليم بذات الصدور | ٤ | م التغابن | ٦٤ |
| | ومن يؤمن بالله يهد قلبه والله بكل شيء عليم ... ... | ١١ | م « | ٦٤ |
| | والله مولاكم وهو العليم الحكيم ... ... ... ... ... | ٢ | م التحريم | ٦٦ |
| | قالت من أنبأك هذا قال نبأنى العليم الخبير ... ... | ٣ | م « | ٦٦ |
| | وأسروا قولكم أو اجهروا به إنه عليم بذات الصدور | ١٣ | ك الملك | ٦٧ |

| اللفظة | الآيـة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عَلِيمًا: | فريضة من الله إن الله كان عليما حكيما ... ... ... | ١١ | م النساء | ٤ |
| (٢٢) | فأولئك يتوب الله عليهم وكان الله عليما حكيما ... ... | ١٧ | م « | ٤ |
| | إن الله كان عليما حكيما ... ... ... .. ... ... ... | ٢٤ | م « | ٤ |
| | وسئلوا الله من فضله إن الله كان بكل شيء عليما ... | ٣٢ | م « | ٤ |
| | إن يريدا إصلاحا يوفق الله بينهما إن الله كان عليما خبيرا | ٣٥ | م « | ٤ |
| | وأنفقوا مما رزقهم الله وكان الله بهم عليما... ... ... | ٣٩ | م « | ٤ |
| | ذلك الفضل من الله وكفى بالله عليما ... ... ... ... | ٧٠ | م « | ٤ |
| | فصيام شهرين متتابعين توبة من الله وكان الله عليما حكيما | ٩٢ | م « | ٤ |
| | وترجون من الله ما لا يرجون وكان الله عليما حكيما | ١٠٤ | م « | ٤ |
| | ومن يكسب إثما فإنما يكسبه على نفسه وكان الله عليما حكيما | ١١١ | م « | ٤ |
| | وما تفعلوا من خير فإن الله كان به عليما ... ... ... | ١٢٧ | م « | ٤ |
| | ما يفعل الله بعذابكم إن شكرتم وآمنتم وكان الله شاكرا عليما | ١٤٧ | م « | ٤ |
| | وكان الله سميعا عليما... ... ... ... ... ... ... | ١٤٨ | م « | ٤ |
| | فإن لله ما فى السموات والأرض وكان الله عليما حكيما | ١٧٠ | م « | ٤ |
| | ولا تطع الكافرين والمنافقين إن الله كان عليما حكيما | ١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ولكن رسول الله وخاتم النبيين وكان الله بكل شيء عليما | ٤٠ | م « | ٣٣ |
| | والله يعلم ما فى قلوبكم وكان الله عليما حليما... ... ... | ٥١ | م « | ٣٣ |
| | إن تبدوا شيئا أو تخفوه فإن الله كان بكل شيء عليما | ٥٤ | م « | ٣٣ |
| | إنه كان عليما قديرا ... ... .. ... ... ... ... | ٤٤ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ولله جنود السموات والأرض وكان الله عليما حكيما | ٤ | م الفتح | ٤٨ |
| | وكانوا أحق بها وأهلها وكان الله بكل شيء عليما ... | ٢٦ | م « | ٤٨ |
| | وما تشاءون إلا أن يشاء الله إن الله كان عليما حكيما | ٣٠ | م الإنسان | ٧٦ |
| عَلَّامُ: | قالوا لا علم لنا إنك أنت علام الغيوب ... ... ... | ١٠٩ | م المائدة | ٥ |
| (٤) | تعلم ما فى نفسى ولا أعلم ما فى نفسك إنك أنت علام الغيوب | ١١٦ | م « | ٥ |
| | ألم يعلموا أن الله يعلم سرهم ونجواهم وأن الله علام الغيوب | ٧٨ | م التوبة | ٩ |
| | قل إن ربى يقذف بالحق علام الغيوب ... ... ... | ٤٨ | ك سبأ | ٣٤ |
| الْعِلْمُ: | قالوا سبحانك لا علم لنا إلا ما علمتنا إنك أنت العليم الحكيم | ٣٢ | م البقرة | ٢ |
| (٨٠) | ولئن اتبعت أهواءهم بعد الذى جاءك من العلم ما لك من الله من ولى ولا نصير ... ... ... ... ... ... | ١٢٠ | م « | ٢ |
| | ولئن اتبعت أهواءهم من بعد ما جاءك من العلم إنك إذا لمن الظالمين... ... ... ... ... ... ... | ١٤٥ | م « | ٢ |
| | قال إن الله اصطفاه عليكم وزاده بسطة فى العلم والجسم | ٢٤٧ | م « | ٢ |
| | والراسخون فى العلم يقولون آمنا به كل من عند ربنا | ٧ | م آل عمران | ٣ |
| | شهد الله أنه لا إله إلا هو والملائكة وأولوا العلم قائما بالقسط | ١٨ | م « | ٣ |
| | وما اختلف الذين أوتوا الكتاب إلا من بعد ما جاءهم العلم بغيا بينهم... ... ... ... ... ... ... | ١٩ | م « | ٣ |
| | فمن حاجك فيه من بعد ما جاءك من العلم فقل تعالوا | ٦١ | م « | ٣ |
| | ها أنتم هؤلاء حاججتم فيما لكم به علم ... ... ... ... | ٦٦ | م « | ٣ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| العِلْمُ | فلم تحاجون فيما ليس لكم به علم ... ... ... ... | ٦٦ | م آل عمران | ٣ |
| | ما لهم به من علم إلا اتباع الظن ... ... ... ... | ١٥٧ | م النساء | ٤ |
| | لكن الراسخون فى العلم منهم والمؤمنون يؤمنون بما أنزل إليك | ١٦٢ | م « | ٤ |
| | قالوا لا علم لنا إنك أنت علام الغيوب ... ... ... | ١٠٩ | م المائدة | ٥ |
| | وخرقوا له بنين وبنات بغير علم ... ... ... ... | ١٠٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | فيسبوا الله عدوا بغير علم ... ... ... ... ... | ١٠٨ | ك « | ٦ |
| | وإن كثيرا ليضلون بأهوائهم بغير علم ... ... ... | ١١٩ | ك « | ٦ |
| | قد خسر الذين قتلوا أولادهم سفها بغير علم ... ... | ١٤٠ | ك « | ٦ |
| | نبئونى بعلم إن كنتم صادقين ... ... ... ... ... | ١٤٣ | ك « | ٦ |
| | فمن أظلم ممن افترى على الله كذبا ليضل الناس بغير علم | ١٤٤ | ك « | ٦ |
| | قل هل عندكم من علم فتخرجوه لنا ... ... ... | ١٤٨ | ك « | ٦ |
| | فلنقصن عليهم بعلم وما كنا غائبين ... ... ... ... | ٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولقد جئناهم بكتاب فصلناه على علم هدى ورحمة ... | ٥٢ | ك « | ٧ |
| | ورزقناهم من الطيبات فما اختلفوا حتى جاءهم العلم ... | ٩٣ | ك يونس | ١٠ |
| | فإلم يستجيبوا لكم فاعلموا أنما أنزل بعلم الله ... ... | ١٤ | ك هود | ١١ |
| | إنه عمل غير صالح فلا تسئلن ما ليس لك به علم ... | ٤٦ | ك « | ١١ |
| | قال رب إنى أعوذ بك أن أسئلك ما ليس لى به علم | ٤٧ | ك « | ١١ |
| | وإنه لذو علم لما علمناه ولكن أكثر الناس لا يعلمون | ٦٨ | ك يوسف | ١٢ |
| | نرفع درجات من نشاء وفوق كل ذى علم عليم ... ... | ٧٦ | ك « | ١٢ |
| | ولئن اتبعت أهواءهم بعد ما جاءك من العلم مالك من الله من ولى ولا واق ... ... ... ... ... | ٣٧ | م الرعد | ١٣ |
| | قل كفى بالله شهيدا بينى وبينكم ومن عنده علم الكتاب | ٤٣ | م « | ١٣ |
| | ومن أوزار الذين يضلونهم بغير علم ... ... ... ... | ٢٥ | ك النحل | ١٦ |
| | قال الذين أوتوا العلم إن الخزى اليوم والسوء على الكافرين | ٢٧ | ك « | ١٦ |
| | ومنكم من يرد إلى أرذل العمر لكى لا يعلم بعد علم شيئا | ٧٠ | ك « | ١٦ |
| | ولا تقف ما ليس لك به علم ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| | قل الروح من أمر ربى وما أوتيتم من العلم إلا قليلا | ٨٥ | ك « | ١٧ |
| | إن الذين أوتوا العلم من قبله إذا يتلى عليهم يخرون للأذقان سجدا... ... ... ... ... ... | ١٠٧ | ك « | ١٧ |
| | ما لهم به من علم ولا لآبائهم ... ... ... ... ... | ٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | يا أبت إنى قد جاءنى من العلم ما لم يأتك ... ... ... | ٤٣ | ك مريم | ١٩ |
| | ومن الناس من يجادل فى الله بغير علم ... ... ... | ٣ | م الحج | ٢٢ |
| | ومنكم من يرد إلى أرذل العمر لكيلا يعلم من بعد علم شيئا | ٥ | م « | ٢٢ |
| | ومن الناس من يجادل فى الله بغير علم ولا هدى ... | ٨ | م « | ٢٢ |
| | وليعلم الذين أوتوا العلم أنه الحق من ربك فيؤمنوا به | ٥٤ | م « | ٢٢ |
| | ويعبدون من دون الله مالم ينزل به سلطانا وما ليس لهم به علم ... ... ... ... ... ... ... | ٧١ | م « | ٢٢ |
| | إذ تلقونه بألسنتكم وتقولون بأفواهكم ما ليس لكم به علم | ١٥ | م النور | ٢٤ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| العِلْمُ | قال الذى عنده علم من الكتاب أنا آتيك به ... ... | ٤٠ | ك النمل | ٢٧ |
| | وأوتينا العلم من قبلها وكنا مسلمين ... ... ... ... | ٤٢ | ك « | ٢٧ |
| | قال إنما أوتيته على علم عندى ... ... ... ... ... | ٧٨ | ك القصص | ٢٨ |
| | وقال الذين أوتوا العلم ويلكم ثواب الله خير ... ... | ٨٠ | ك « | ٢٨ |
| | وإن جاهداك لتشرك بى ما ليس لك به علم فلا تطعهما | ٨ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | بل هو آيات بينات فى صدور الذين أوتوا العلم ... | ٤٩ | ك « | ٢٩ |
| | بل اتبع الذين ظلموا أهواءهم بغير علم... ... ... ... | ٢٩ | ك الروم | ٣٠ |
| | وقال الذين أوتوا العلم والإيمان لقد لبثتم فى كتاب الله | ٥٦ | ك « | ٣٠ |
| | ومن الناس من يشترى لهو الحديث ليضل عن سبيل الله بغير علم ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك لقمان | ٣١ |
| | وإن جاهداك على أن تشرك بى ما ليس لك به علم فلا تطعهما | ١٥ | ك « | ٣١ |
| | ومن الناس من يجادل فى الله بغير علم ولا هدى ... | ٢٠ | ك « | ٣١ |
| | إن الله عنده علم الساعة ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك « | ٣١ |
| | ويرى الذين أوتوا العلم الذى أنزل إليك من ربك هو الحق | ٦ | م سبأ | ٣٤ |
| | ما كان لى من علم بالملإ الأعلى إذ يختصمون ... ... | ٦٩ | ك ص | ٣٨ |
| | ثم إذا خولناه نعمة منا قال إنما أوتيته على علم ... ... | ٤٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| | تدعوننى لأكفر بالله وأشرك به ما ليس لى به علم ... | ٤٢ | ك غافر | ٤٠ |
| | فلما جاءتهم رسلهم بالبينات فرحوا بما عندهم من العلم | ٨٣ | ك « | ٤٠ |
| | إليه يرد علم الساعة ... ... ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك فصلت | ٤١ |
| | وما تفرقوا إلا من بعد ما جاءهم العلم بغيا بينهم ... | ١٤ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ما لهم بذلك من علم إن هم إلا يخرصون ... ... ... | ٢٠ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وإنه لعلم للساعة فلا تمترن بها واتبعون ... ... ... | ٦١ | ك « | ٤٣ |
| | وعنده علم الساعة وإليه ترجعون ... ... ... ... ... | ٨٥ | ك « | ٤٣ |
| | ولقد اخترناهم على علم على العالمين ... ... ... ... | ٣٢ | ك الدخان | ٤٤ |
| | فما اختلفوا إلا من بعد ما جاءهم العلم بغيا بينهم ... | ١٧ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | أفرأيت من اتخذ إلهه هواه وأضله الله على علم... ... | ٢٣ | ك « | ٤٥ |
| | وما لهم بذلك من علم إن هم إلا يظنون ... ... ... | ٢٤ | ك « | ٤٥ |
| | ائتونى بكتاب من قبل هذا أو أثارة من علم ... ... | ٤ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | قال إنما العلم عند الله وأبلغكم ما أرسلت به ... ... | ٢٣ | ك « | ٤٦ |
| | حتى إذا خرجوا من عندك قالوا للذين أوتوا العلم ماذا قال آنفا ... ... ... ... ... ... ... | ١٦ | م محمد | ٤٧ |
| | أن تطئوهم فتصيبكم منهم معرة بغير علم ... ... ... | ٢٥ | م الفتح | ٤٨ |
| | وما لهم به من علم إن يتبعون إلا الظن... ... ... ... | ٢٨ | ك النجم | ٥٣ |
| | ذلك مبلغهم من العلم ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك « | ٥٣ |
| | أعنده علم الغيب فهو يرى ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك « | ٥٣ |
| | يرفع الله الذين آمنوا منكم والذين أوتوا العلم درجات | ١١ | م المجادلة | ٥٨ |
| | قل إنما العلم عند الله وإنما أنا نذير مبين ... ... ... | ٢٦ | ك الملك | ٦٧ |
| | كلا لو تعلمون علم اليقين . لترون الجحيم ... ... ... | ٥ | ك التكاثر | ١٠٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **عِلْمًا** | وسع ربى كل شىء علما أفلا تتذكرون ... ... ... | ٨٠ | ك الأنعام | ٦ |
| (١٤) | وسع ربنا كل شىء علما على الله توكلنا ... ... ... | ٨٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولما بلغ أشده آتيناه حكما وعلما ... ... ... ... | ٢٢ | ك يوسف | ١٢ |
| | آتيناه رحمة من عندنا وعلمناه من لدنا علما ... ... | ٦٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | إنما إلهكم الله الذى لا إله إلا هو وسع كل شىء علما | ٩٨ | ك طه | ٢٠ |
| | يعلم ما بين أيديهم وما خلفهم ولا يحيطون به علما | ١١٠ | ك « | ٢٠ |
| | وقل رب زدنى علما ... ... ... ... ... ... ... | ١١٤ | ك « | ٢٠ |
| | ولوطا آتيناه حكما وعلما ... ... ... ... ... ... | ٧٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ففهمناها سليمان وكلا آتينا حكما وعلما ... ... ... | ٧٩ | ك « | ٢١ |
| | ولقد آتينا داود وسليمان علما ... ... ... ... ... | ١٥ | ك النمل | ٢٧ |
| | حتى إذا جاءو قال أكذبتم بآياتى ولم تحيطوا بها علما | ٨٤ | ك « | ٢٧ |
| | ولما بلغ أشده واستوى آتيناه حكما وعلما ... ... | ١٤ | ك القصص | ٢٨ |
| | ربنا وسعت كل شىء رحمة وعلما ... ... ... ... | ٧ | ك غافر | ٤٠ |
| | وأن الله قد أحاط بكل شىء علما ... ... ... ... | ١٢ | م الطلاق | ٦٥ |
| **عِلْمِهِ** | ولا يحيطون بشىء من علمه إلا بما شاء ... ... ... | ٢٥٥ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | لكن الله يشهد بما أنزل إليك أنزله بعلمه ... ... ... | ١٦٦ | م النساء | ٤ |
| | بل كذبوا بما لم يحيطوا بعلمه ولما يأتهم تأويله ... | ٣٩ | ك يونس | ١٠ |
| | وما تحمل من أنثى ولا تضع إلا بعلمه ... ... ... ... | ١١ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وما تحمل من أنثى ولا تضع إلا بعلمه ... ... ... ... | ٤٧ | ك فصلت | ٤١ |
| **عِلْمُهَا** | قل إنما علمها عند ربى لا يجليها لوقتها إلا هو ... | ١٨٧ | ك الأعراف | ٧ |
| (٤) | قل إنما علمها عند الله ولكن أكثر الناس لا يعلمون | ١٨٧ | ك « | ٧ |
| | قال علمها عند ربى فى كتاب لا يضل ربى ولا ينسى ... | ٥٢ | ك طه | ٢٠ |
| | يسئلك الناس عن الساعة قل إنما علمها عند الله ... ... | ٦٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| **عِلْمُهُمْ** | بل ادّارك علمهم فى الآخرة بل هم فى شك منها ... | ٦٦ | ك النمل | ٢٧ |
| **عِلْمِى** | قال وما علمى بما كانوا يعملون ... ... ... ... | ١١٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| **الْأَعْلَامِ** | ومن آياته الجوار فى البحر كالأعلام ... ... ... | ٣٢ | ك الشورى | ٤٢ |
| (٢) | وله الجوار المنشآت فى البحر كالأعلام ... ... ... | ٢٤ | م الرحمن | ٥٥ |
| **الْعَالَمِينَ** | الحمد لله رب العالمين . الرحمن الرحيم ... ... ... | ٢ | ك الفاتحة | ١ |
| (٧٣) | اذكروا نعمتى التى أنعمت عليكم وأنى فضلتكم على العالمين | ٤٧ | م البقرة | ٢ |
| | اذكروا نعمتى التى أنعمت عليكم وأنى فضلتكم على العالمين | ١٢٢ | م « | ٢ |
| | إذ قال له ربه أسلم قال أسلمت لرب العالمين ... ... | ١٣١ | م « | ٢ |
| | ولكن الله ذو فضل على العالمين ... ... ... ... ... | ٢٥١ | م « | ٢ |
| | إن الله اصطفى آدم ونوحا وآل إبراهيم وآل عمران على العالمين ... ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | م آل عمران | ٣ |
| | إن الله اصطفاك وطهرك واصطفاك على نساء العالمين | ٤٢ | م « | ٣ |
| | إن أول بيت وضع للناس للذى ببكة مباركا وهدى للعالمين | ٩٦ | م « | ٣ |
| | ومن كفر فإن الله غنى عن العالمين ... ... ... ... | ٩٧ | م « | ٣ |
| | وما الله يريد ظلما للعالمين ... ... ... ... ... ... | ١٠٨ | م « | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **الْعَالَمِينَ** | وجعلكم ملوكا وآتاكم ما لم يؤت أحدا من العالمين | ٢٠ | م المائدة | ٥ |
| | ما أنا بباسط يدى إليك لأقتلك إنى أخاف الله رب العالمين | ٢٨ | م « | ٥ |
| | فإنى أعذبه عذابا لا أعذبه أحدا من العالمين ... ... | ١١٥ | م « | ٥ |
| | فقطع دابر القوم الذين ظلموا والحمد لله رب العالمين | ٤٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | قل إن هدى الله هو الهدى وأمرنا لنسلم لرب العالمين | ٧١ | ك « | ٦ |
| | وإسمعيل واليسع ويونس ولوطا وكلا فضلنا على العالمين | ٨٦ | ك « | ٦ |
| | قل لا أسئلكم عليه أجرا إن هو إلا ذكرى للعالمين ... | ٩٠ | ك « | ٦ |
| | قل إن صلاتى ونسكى ومحياى ومماتى لله رب العالمين | ١٦٢ | ك « | ٦ |
| | ألا له الخلق والأمر تبارك الله رب العالمين ... ... | ٥٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | قال يا قوم ليس بى ضلالة ولكنى رسول من رب العالمين | ٦١ | ك « | ٧ |
| | قال يا قوم ليس بى سفاهة ولكنى رسول من رب العالمين | ٦٧ | ك « | ٧ |
| | أتأتون الفاحشة ما سبقكم بها من أحد من العالمين ... | ٨٠ | ك « | ٧ |
| | وقال موسى يا فرعون إنى رسول من رب العالمين ... | ١٠٤ | ك « | ٧ |
| | وألقى السحرة ساجدين . قالوا آمنا برب العالمين ... | ١٢١ | ك « | ٧ |
| | قال أغير الله أبغيكم إلها وهو فضلكم على العالمين ... | ١٤٠ | ك « | ٧ |
| | وآخر دعواهم أن الحمد لله رب العالمين ... ... ... | ١٠ | ك يونس | ١٠ |
| | لا ريب فيه من رب العالمين ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك « | ١٠ |
| | وما تسئلهم عليه من أجر إن هو إلا ذكر للعالمين ... ... | ١٠٤ | ك يوسف | ١٢ |
| | قالوا أولم ننهك عن العالمين ... ... ... ... ... ... | ٧٠ | ك الحجر | ١٥ |
| | ونجيناه ولوطا إلى الأرض التى باركنا فيها للعالمين | ٧١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | فنفخنا فيها من روحنا وجعلناها وابنها آية للعالمين | ٩١ | ك « | ٢١ |
| | وما أرسلناك إلا رحمة للعالمين ... ... ... ... ... | ١٠٧ | ك « | ٢١ |
| | تبارك الذى نزل الفرقان على عبده ليكون للعالمين نذيرا | ١ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | فأتيا فرعون فقولا إنا رسول رب العالمين ... ... ... | ١٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | قال فرعون وما رب العالمين ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك « | ٢٦ |
| | فألقى السحرة ساجدين . قالوا آمنا برب العالمين ... | ٤٧ | ك « | ٢٦ |
| | فإنهم عدو لى إلا رب العالمين ... ... ... ... ... | ٧٧ | ك « | ٢٦ |
| | تالله إن كنا لفى ضلال مبين . إذ نسويكم برب العالمين | ٩٨ | ك « | ٢٦ |
| | وما أسئلكم عليه من أجر إن أجرى إلا على رب العالمين | ١٠٩ | ك « | ٢٦ |
| | وما أسئلكم عليه من أجر إن أجرى إلا على رب العالمين | ١٢٧ | ك « | ٢٦ |
| | وما أسئلكم عليه من أجر إن أجرى إلا على رب العالمين | ١٤٥ | ك « | ٢٦ |
| | وما أسئلكم عليه من أجر إن أجرى إلا على رب العالمين | ١٦٤ | ك « | ٢٦ |
| | أتأتون الذكران من العالمين ... ... ... ... ... ... | ١٦٥ | ك « | ٢٦ |
| | وما أسئلكم عليه من أجر إن أجرى إلا على رب العالمين | ١٨٠ | ك « | ٢٦ |
| | وإنه لتنزيل رب العالمين ... ... ... ... ... ... | ١٩٢ | ك « | ٢٦ |
| | أن بورك من فى النار ومن حولها وسبحان الله رب العالمين | ٨ | ك النمل | ٢٧ |
| | قالت رب إنى ظلمت نفسى وأسلمت مع سليمان لله رب العالمين | ٤٤ | ك « | ٢٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الْعَالَمِينَ | : يا موسى إنى أنا الله رب العالمين ... ... ... ... | ٣٠ | ك القصص | ٢٨ |
| | ومن جاهد فإنما يجاهد لنفسه إن الله لغنى عن العالمين | ٦ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | أو ليس الله بأعلم بما فى صدور العالمين ... ... ... | ١٠ | م « | ٢٩ |
| | فأنجيناه وأصحاب السفينة وجعلناها آية للعالمين ... | ١٥ | ك « | ٢٩ |
| | إنكم لتأتون الفاحشة ما سبقكم بها من أحد من العالمين | ٢٨ | ك « | ٢٩ |
| | تنزيل الكتاب لا ريب فيه من رب العالمين ... ... | ٢ | ك السجدة | ٣٢ |
| | سلام على نوح فى العالمين ... ... ... ... ... | ٧٩ | ك الصافات | ٣٧ |
| | فما ظنكم برب العالمين ... ... ... ... ... ... | ٨٧ | ك « | ٣٧ |
| | وسلام على المرسلين . والحمد لله رب العالمين ... ... | ١٨٢ | ك « | ٣٧ |
| | إن هو إلا ذكر للعالمين ... ... ... ... ... ... | ٨٧ | ك ص | ٣٨ |
| | وقضى بينهم بالحق وقيل الحمد لله رب العالمين ... ... | ٧٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ذلكم الله ربكم فتبارك الله رب العالمين ... ... ... | ٦٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | فادعوه مخلصين له الدين الحمد لله رب العالمين ... ... | ٦٥ | ك « | ٤٠ |
| | وأمرت أن أسلم لرب العالمين ... ... ... ... ... | ٦٦ | ك « | ٤٠ |
| | وتجعلون له أندادا ذلك رب العالمين ... ... ... ... | ٩ | ك فصلت | ٤١ |
| | فقال إنى رسول رب العالمين... ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ولقد اخترناهم على علم على العالمين ... ... ... ... | ٣٢ | ك الدخان | ٤٤ |
| | ورزقناهم من الطيبات وفضلناهم على العالمين ... ... | ١٦ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | فلله الحمد رب السموات ورب الأرض رب العالمين | ٣٦ | ك « | ٤٥ |
| | لا يمسه إلا المطهرون . تنزيل من رب العالمين ... | ٨٠ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | فلما كفر قال إنى برىء منك إنى أخاف الله رب العالمين | ١٦ | م الحشر | ٥٩ |
| | وما هو إلا ذكر للعالمين... ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك القلم | ٦٨ |
| | ولا بقول كاهن قليلا ما تذكرون . تنزيل من رب العالمين | ٤٣ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | أين تذهبون . إن هو إلا ذكر للعالمين ... ... ... | ٢٧ | ك التكوير | ٨١ |
| | وما تشاءون إلا أن يشاء الله رب العالمين ... ... ... | ٢٩ | ك « | ٨١ |
| | يوم يقوم الناس لرب العالمين ... ... ... ... ... | ٦ | ك المطففين | ٨٣ |
| عَلَامَاتٍ | : وعلامات وبالنجم هم يهتدون ... ... ... ... | ١٦ | ك النحل | ١٦ |
| | ✦ | | | |
| أَعْلَنْتُ | : ثم إنى أعلنت لهم وأسررت لهم إسرارا... ... ... | ٩ | ك نوح | ٧١ |
| أَعْلَنْتُمْ | : تسرون إليهم بالمودة وأنا أعلم بما أخفيتم وما أعلنتم | ١ | م الممتحنة | ٦٠ |
| تُعْلِنُونَ | : والله يعلم ما تسرون وما تعلنون ... ... ... ... | ١٩ | ك النحل | ١٦ |
| (٣) | ويعلم ما تخفون وما تعلنون ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك النمل | ٢٧ |
| | يعلم ما فى السموات والأرض ويعلم ما تسرون وما تعلنون | ٤ | م التغابن | ٦٤ |
| نُعْلِنُ | : ربنا إنك تعلم ما نخفى وما نعلن ... ... ... ... | ٣٨ | ك إبراهيم | ١٤ |
| يَعْلِنُونَ | : أو لا يعلمون أن الله يعلم ما يسرون وما يعلنون | ٧٧ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | ألا حين يستغشون ثيابهم يعلم ما يسرون وما يعلنون | ٥ | ك هود | ١١ |
| | لا جرم أن الله يعلم ما يسرون وما يعلنون ... ... ... | ٢٣ | ك النحل | ١٦ |
| | وإن ربك ليعلم ما تكن صدورهم وما يعلنون ... ... | ٧٤ | ك النمل | ٢٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يُعْلِنُونَ | : وربك يعلم ما تكن صدورهم وما يعلنون ... ... | ٦٩ | ك القصص | ٢٨ |
| | فلا يحزنك قولهم إنا نعلم ما يسرون وما يعلنون ... ... | ٧٦ | ك يس | ٣٦ |
| عَلَانِيَةً | : الذين ينفقون أموالهم بالليل والنهار سرا وعلانية | | | |
| (٤) | لهم أجرهم عند ربهم ... ... ... ... ... ... | ٢٧٤ | م البقرة | ٢ |
| | وأقاموا الصلاة وأنفقوا مما رزقناهم سرا وعلانية ... | ٢٢ | م الرعد | ١٣ |
| | قل لعبادى الذين آمنوا يقيموا الصلاة وينفقوا مما رزقناهم سرا وعلانية ... ... ... ... ... | ٣١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وأنفقوا مما رزقناهم سرا وعلانية يرجون تجارة لن تبور | ٢٩ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ✦ | | | |
| عَلَا | : إذا لذهب كل إله بما خلق ولعلا بعضهم على بعض... | ٩١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٢) | إن فرعون علا فى الأرض وجعل أهلها شيعا ... ... | ٤ | ك القصص | ٢٨ |
| عَلَوْا | : وليتبروا ما علوا تتبيرا ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| لَتَعْلُنَّ | : لتفسدن فى الأرض مرتين ولتعلن علوا كبيرا... ... | ٤ | ك « | ١٧ |
| تَعْلُوا | : ألا تعلوا علىّ وأتونى مسلمين ... ... ... ... | ٣١ | ك النمل | ٢٧ |
| (٢) | وأن لا تعلوا على الله إنى آتيكم بسلطان مبين ... ... | ١٩ | ك الدخان | ٤٤ |
| تَعَالَى | : وخرقوا له بنين وبنات بغير علم سبحانه وتعالى عما يصفون | ١٠٠ | ك الأنعام | ٦ |
| (١٤) | جعلا له شركاء فيما آتاهما فتعالى الله عما يشركون ... | ١٩٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | قل أتنبئون الله بما لا يعلم فى السموات ولا فى الأرض سبحانه وتعالى عما يشركون ... ... ... ... ... | ١٨ | ك يونس | ١٠ |
| | أتى أمر الله فلا تستعجلوه سبحانه وتعالى عما يشركون | ١ | ك النحل | ١٦ |
| | خلق السموات والأرض بالحق تعالى عما يشركون... | ٣ | ك « | ١٦ |
| | سبحانه وتعالى عما يقولون علوا كبيرا... ... ... ... | ٤٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فتعالى الله الملك الحق ... ... ... ... ... ... | ١١٤ | ك طه | ٢٠ |
| | عالم الغيب والشهادة فتعالى عما يشركون ... ... ... | ٩٢ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فتعالى الله الملك الحق لا إله إلا هو رب العرش الكريم | ١١٦ | ك « | ٢٣ |
| | أإله مع الله تعالى الله عما يشركون ... ... ... ... | ٦٣ | ك النمل | ٢٧ |
| | ما كان لهم الخيرة سبحان الله وتعالى عما يشركون ... | ٦٨ | ك القصص | ٢٨ |
| | سبحانه وتعالى عما يشركون ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك الروم | ٣٠ |
| | والسموات مطويات بيمينه سبحانه وتعالى عما يشركون | ٦٧ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وأنه تعالى جد ربنا ما اتخذ صاحبة ولا ولدا ... ... | ٣ | ك الجن | ٧٢ |
| تَعَالَوْا | : قل تعالوا ندع أبناءنا وأبناءكم ونساءنا ونساءكم... | ٦١ | م آل عمران | ٣ |
| (٧) | قل يا أهل الكتاب تعالوا إلى كلمة سواء بيننا وبينكم | ٦٤ | م « | ٣ |
| | وقيل لهم تعالوا قاتلوا فى سبيل الله أو ادفعوا... ... | ١٦٧ | م « | ٣ |
| | وإذا قيل لهم تعالوا إلى ما أنزل الله وإلى الرسول رأيت المنافقين يصدون عنك صدودا ... ... | ٦١ | م النساء | ٤ |
| | وإذا قيل لهم تعالوا إلى ما أنزل الله وإلى الرسول قالوا حسبنا ما وجدنا عليه آباءنا ... ... ... ... | ١٠٤ | م المائدة | ٥ |
| | قل تعالوا أتل ما حرم ربكم عليكم ... ... ... ... | ١٥١ | م الأنعام | ٦ |
| | وإذا قيل لهم تعالوا يستغفر لكم رسول الله لووا رءوسهم | ٥ | م المنافقون | ٦٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| فَتَعَالَيْنَ | : إن كنتن تردن الحياة الدنيا وزينتها فتعالين أمتعكن | ٢٨ | م الأحزاب | ٣٣ |
| اسْتَعْلَى | : فأجمعوا كيدكم ثم ائتوا صفا وقد أفلح اليوم من استعلى | ٦٤ | ك طـه | ٢٠ |
| لَعَالٍ | : وإن فرعون لعال فى الأرض وإنه لمن المسرفين ... | ٨٣ | ك يـونس | ١٠ |
| عَالِيًا | : من فرعون إنه كان عاليا من المسرفين .. ... ... | ٣١ | ك الدخان | ٤٤ |
| عَالِينَ | : إلى فرعون وملائه فاستكبروا وكانوا قوما عالين ... | ٤٦ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٢) | أستكبرت أم كنت من العالين ... ... ... ... ... | ٧٥ | ك ص | ٣٨ |
| عَالِيَةٍ | : فهو فى عيشة راضية . فى جنة عالية ... ... ... ... | ٢٢ | ك الحاقة | ٦٩ |
| (٢) | وجوه يومئذ ناعمة . لسعيها راضية . فى جنة عالية ... | ١٠ | ك الغاشية | ٨٨ |
| عَالِيَهَا | : فلما جاء أمرنا جعلنا عاليها سافلها ... ... ... ... | ٨٢ | ك هـود | ١١ |
| (٢) | فجعلنا عاليها سافلها وأمطرنا عليهم حجارة من سجيل ... | ٧٤ | ك الحجر | ١٥ |
| عَالِيَهُمْ | : عاليهم ثياب سندس خضر وإستبرق ... ... ... | ٢١ | م الإنسان | ٧٦ |
| الْعُلَى | : تنزيلا ممن خلق الأرض والسموات العلى ... ... | ٤ | ك طـه | ٢٠ |
| (٢) | فأولئك لهم الدرجات العلى ... ... ... ... ... ... | ٧٥ | ك « | ٢٠ |
| الْعُلْيَا | : وجعل كلمة الذين كفروا السفلى وكلمة الله هى العليا | ٤٠ | م التـوبة | ٩ |
| عُلُوًّا | : لتفسدن فى الأرض مرتين ولتعلن علوا كبيرا ... ... | ٤ | ك الإسـراء | ١٧ |
| (٤) | سبحانه وتعالى عما يقولون علوا كبيرا ... ... ... ... | ٤٣ | ك « | ١٧ |
| | وجحدوا بها واستيقنتها أنفسهم ظلما وعلوا ... .. | ١٤ | ك النمـل | ٢٧ |
| | تلك الدار الآخرة نجعلها للذين لا يريدون علوا فى الأرض | ٨٣ | ك القصص | ٢٨ |
| الْعَلِيُّ | : ولا يئوده حفظهما وهو العلىّ العظيم ... ... ... | ٢٥٥ | م البقـرة | ٢ |
| (٨) | وأن ما يدعون من دونه هو الباطل وأن الله هو العلىّ الكبير | ٦٢ | م الحـج | ٢٢ |
| | وأن ما يدعون من دونه الباطل وأن الله هو العلىّ الكبير | ٣٠ | ك لقمان | ٣١ |
| | قالوا ماذا قال ربكم قالوا الحق وهو العلىّ الكبير ... | ٢٣ | ك سـبأ | ٣٤ |
| | وإن يشرك به تؤمنوا فالحكم لله العلىّ الكبير... ... | ١٢ | ك غافـر | ٤٠ |
| | له ما فى السموات وما فى الأرض وهو العلىّ العظيم | ٤ | ك الشـورى | ٤٢ |
| | أو يرسل رسولا فيوحى بإذنه ما يشاء إنه علىّ حكيم | ٥١ | ك « | ٤٢ |
| | وإنه فى أم الكتاب لدينا لعلىّ حكيم ... ... ... ... | ٤ | ك الزخرف | ٤٣ |
| عَلِيًّا | : فإن أطعنكم فلا تبغوا عليهنّ سبيلا إن الله كان عليا كبيرا | ٣٤ | م النسـاء | ٤ |
| (٣) | ووهبنا لهم من رحمتنا وجعلنا لهم لسان صدق عليا | ٥٠ | ك مـريم | ١٩ |
| | إنه كان صديقا نبيا . ورفعناه مكانا عليا... ... ... | ٥٧ | ك « | ١٩ |
| الْأَعْلَى | : للذين لا يؤمنون بالآخرة مثل السوء ولله المثل الأعلى | ٦٠ | ك النحل | ١٦ |
| (٩) | قلنا لا تخف إنك أنت الأعلى ... ... ... ... ... | ٦٨ | ك طـه | ٢٠ |
| | وله المثل الأعلى فى السموات والأرض وهو العزيز الحكيم | ٢٧ | ك الـروم | ٣٠ |
| | لا يسمّعون إلى الملإ الأعلى ويقذفون من كل جانب | ٨ | ك الصافات | ٣٧ |
| | ما كان لى من علم بالملإ الأعلى إذ يختصمون ... ... | ٦٩ | ك ص | ٣٨ |
| | ذو مرة فاستوى . وهو بالأفق الأعلى ... ... ... | ٧ | ك النجـم | ٥٣ |
| | فحشر فنادى . فقال أنا ربكم الأعلى ... ... ... ... | ٢٤ | ك النازعات | ٧٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الْأَعْلَى | : سبح اسم ربك الأعلى . الذى خلق فسوى ... ... | ١ | ك الأعـلى | ٨٧ |
| | وما لأحد عنده من نعمة تجزى . إلا ابتغاء وجه ربه الأعلى | ٢٠ | ك اللـيل | ٩٢ |
| الْأَعْلَوْنَ | : ولا تهنوا ولا تحزنوا وأنتم الأعلون إن كنتم مؤمنين | ١٣٩ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | فلا تهنوا وتدعوا إلى السلم وأنتم الأعلون والله معكم | ٣٥ | م محمـد | ٤٧ |
| الْمُتَعَالِ | : عالم الغيب والشهادة الكبير المتعال ... ... ... | ٩ | م الرعـد | ١٣ |
| عِلِّيُّونَ | : وما أدراك ما عليون . كتاب مرقوم ... ... ... | ١٩ | ك المطففين | ٨٣ |
| عِلِّيِّينَ | : كلا إن كتاب الأبرار لفى عليين ... ... ... ... | ١٨ | ك « | ٨٣ |
| | ✦ ✦ ✦ | | | |
| تَعَمَّدَتْ | : وليس عليكم جناح فيما أخطأتم به ولكن ما تعمدت | | | |
| | قلوبكم ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| عَمَدٍ | : الله الذى رفع السموات بغير عمد ترونها ... ... ... | ٢ | م الرعـد | ١٣ |
| (٣) | خلق السموات بغير عمد ترونها وألقى فى الأرض رواسى | ١٠ | ك لقمان | ٣١ |
| | إنها عليهم مؤصدة . فى عمد ممددة ... ... ... ... | ٩ | ك الهمـزة | ١٠٤ |
| الْعِمَادِ | : ألم تر كيف فعل ربك بعاد . إرم ذات العماد | ٧ | ك الفجـر | ٨٩ |
| مُتَعَمِّدًا | : ومن يقتل مؤمنا متعمدا فجزاؤه جهنم خالدا فيها | ٩٣ | م النسـاء | ٤ |
| (٢) | ومن قتله منكم متعمدا فجزاء مثل ما قتل من النعم | | | |
| | يحكم به ذوا عدل منكم هديا بالغ الكعبة ... ... | ٩٥ | م المائدة | ٥ |
| | ✦ ✦ ✦ | | | |
| عَمَرُوهَا | : كانوا أشد منهم قوة وأثاروا الأرض وعمروها | ٩ | ك الـروم | ٣٠ |
| (٢) | أكثر مما عمروها وجاءتهم رسلهم بالبينات ... ... | ٩ | ك « | ٣٠ |
| يَعْمُرُ | : إنما يعمر مساجد الله من آمن بالله واليوم الآخر | ١٨ | م التـوبة | ٩ |
| يَعْمُرُوا | : ما كان للمشركين أن يعمروا مساجد الله شاهدين | | | |
| | على أنفسهم بالكفر... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | م « | ٩ |
| نُعَمِّرْكُمْ | : أو لم نعمركم ما يتذكر فيه من تذكر وجاءكم النذير | ٣٧ | ك فاطـر | ٣٥ |
| نُعَمِّرْهُ | : ومن نعمره ننكسه فى الخلق أفلا يعقلون ... ... | ٦٨ | ك يـس | ٣٦ |
| يُعَمَّرُ | : يود أحدهم لو يعمر ألف سنة ... ... ... ... ... | ٩٦ | م البقـرة | ٢ |
| (٣) | وما هو بمزحزحه من العذاب أن يعمر ... ... ... ... | ٩٦ | م « | ٢ |
| | وما يعمر من معمر ولا ينقص من عمره إلا فى كتاب | ١١ | ك فاطـر | ٣٥ |
| اعْتَمَرَ | : فمن حج البيت أو اعتمر فلا جناح عليه أن يطوف بهما | ١٥٨ | م البقـرة | ٢ |
| اسْتَعْمَرَكُمْ | : هو أنشأكم من الأرض واستعمركم فيها ... ... | ٦١ | ك هـود | ١١ |
| الْمَعْمُورِ | : والبيت المعمور . والسقف المرفوع... ... ... | ٤ | ك الطـور | ٥٢ |
| مُعَمَّرٍ | : وما يعمر من معمر ولا ينقص من عمره إلا فى كتاب | ١١ | ك فاطـر | ٣٥ |
| لَعَمْرُكَ | : لعمرك إنهم لفى سكرتهم يعمهون... ... ... ... | ٧٢ | ك الحجـر | ١٥ |
| الْعُمُرِ | : ومنكم من يرد إلى أرذل العمر لكى لا يعلم بعد علم شيئا | ٧٠ | ك النحـل | ١٦ |
| (٤) | بل متعنا هؤلاء وآباءهم حتى طال عليهم العمر ... ... | ٤٤ | ك الأنبيـاء | ٢١ |
| | ومنكم من يرد إلى أرذل العمر لكيلا يعلم من بعد علم شيئا | ٥ | م الحـج | ٢٢ |
| | ولكنا أنشأنا قرونا فتطاول عليهم العمر ... ... ... | ٤٥ | ك القصص | ٢٨ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| عُمُرًا: | فقد لبثت فيكم عمرا من قبله أفلا تعقلون... ... ... | ك يـونس | ١٦ ١٠ |
| عُمُرِكَ: | قال ألم نربك فينا وليدا ولبثت فينا من عمرك سنين | ك الشـعراء | ١٨ ٢٦ |
| عُمُرِهِ: | وما يعمر من معمر ولا ينقص من عمره إلا في كتاب | ك فاطـر | ١١ ٣٥ |
| الْعُمْرَةَ: | وأتموا الحج والعمرة لله ... ... ... ... ... ... | م البقـرة | ١٩٦ ٢ |
| (٢) | فإذا أمنتم فمن تمتع بالعمرة إلى الحج فما استيسر من الهدى | م » | ١٩٦ ٢ |
| عِمَارَةَ: | أجعلتم سقاية الحاج وعمارة المسجد الحرام كمن آمن بالله واليوم الآخر وجاهد في سبيل الله ... | م التـوبة | ١٩ ٩ |
| عِمْرَانَ: | إن الله اصطفى آدم ونوحا وآل إبراهيم وآل عمران | | |
| (٣) | على العالمين ... ... ... ... ... ... ... | م آل عمران | ٣٣ ٣ |
| | إذ قالت امرأة عمران رب إني نذرت لك ما في بطني محررا | م » | ٣٥ ٣ |
| | ومريم ابنة عمران التي أحصنت فرجها ... ... ... | م التحـريم | ١٢ ٦٦ |
| | ✦✦✦ | | |
| عَمِيقٍ: | يأتين من كل فج عميق ... ... ... ... ... ... | م الحـج | ٢٧ ٢٢ |
| | ✦✦✦ | | |
| عَمِلَ: | من آمن بالله واليوم الآخر وعمل صالحا فلهم أجرهم | | |
| (١٩) | عند ربهم ... ... ... ... ... ... ... ... | م البقـرة | ٦٢ ٢ |
| | من آمن بالله واليوم الآخر وعمل صالحا فلا خوف عليهم | م المـائدة | ٦٩ ٥ |
| | أنه من عمل منكم سوءا بجهالة ثم تاب من بعده وأصلح | | |
| | فأنه غفور رحيم ... ... ... ... ... ... ... | ك الأنعـام | ٥٤ ٦ |
| | من عمل صالحا من ذكر أو أنثى وهو مؤمن فلنحيينه | | |
| | حياة طيبة ... ... ... ... ... ... ... ... | ك النحـل | ٩٧ ١٦ |
| | وأما من آمن وعمل صالحا فله جزاء الحسنى ... ... | م الكهف | ٨٨ ١٨ |
| | إلا من تاب وآمن وعمل صالحا فأولئك يدخلون الجنة | ك مـريم | ٦٠ ١٩ |
| | ومن يأته مؤمنا قد عمل الصالحات فأولئك لهم الدرجات العلى | ك طـه | ٧٥ ٢٠ |
| | وإني لغفار لمن تاب وآمن وعمل صالحا ثم اهتـدى | ك » | ٨٢ ٢٠ |
| | إلا من تاب وآمن وعمل عملا صالحا فأولئك يبدل | | |
| | الله سيئاتهم حسنات وكان الله غفورا رحيما ... | م الفـرقان | ٧٠ ٢٥ |
| | ومن تاب وعمل صالحا فإنه يتوب إلى الله متابا ... | ك » | ٧١ ٢٥ |
| | فأما من تاب وآمن وعمل صالحا فعسى أن يكون من المفلحين | ك القصص | ٦٧ ٢٨ |
| | ويلكم ثواب الله خير لمن آمن وعمل صالحا ... ... | ك » | ٨٠ ٢٨ |
| | من كفر فعليه كفره ومن عمل صالحا فلأنفسهم يمهدون | ك الـروم | ٤٤ ٣٠ |
| | إلا من آمن وعمل صالحا فأولئك لهم جزاء الضعف بما عملوا | ك سـبإ | ٣٧ ٣٤ |
| | من عمل سيئة فلا يجزى إلا مثلها... ... ... ... | ك غافـر | ٤٠ ٤٠ |
| | ومن عمل صالحا من ذكر أو أنثى وهو مؤمن فأولئك | | |
| | يدخلون الجنة يرزقون فيها بغير حساب ... ... | ك » | ٤٠ ٤٠ |
| | ومن أحسن قولا ممن دعا إلى الله وعمل صالحا... ... | ك فصـلت | ٣٣ ٤١ |
| | من عمل صالحا فلنفسه ومن أساء فعليها وما ربك بظلام للعبيد | ك » | ٤٦ ٤١ |
| | من عمل صالحا فلنفسه ومن أساء فعليها ثم إلى ربكم ترجعون | ك الجاثيـة | ١٥ ٤٥ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| عَمِلَتْ: | يوم تجد كل نفس ما عملت من خير محضرا... ... | م آل عمران | ٣٠ ٣ |
| (٥) | وما عملت من سوء تود لو أن بينها وبينه أمدا بعيدا | م » | ٣٠ ٣ |
| | وتوفى كل نفس ما عملت وهم لا يظلمون ... ... ... | ك النحـل | ١١١ ١٦ |
| | أولم يروا أنا خلقنا لهم مما عملت أيدينا أنعاما فهم | | |
| | لها مالكون ... ... ... ... ... ... ... ... | ك يـس | ٧١ ٣٦ |
| | ووفيت كل نفس ما عملت وهو أعلم بما يفعلون ... | ك الـزمر | ٧٠ ٣٩ |
| عَمِلْتُمْ: | قل بلى وربي لتبعثن ثم لتنبؤن بما عملتم ... ... ... | م التغـابن | ٧ ٦٤ |
| عَمِلَتْهُ: | ليأكلوا من ثمره وما عملته أيديهم أفلا يشكرون | ك يـس | ٣٥ ٣٦ |
| عَمِلُوا: | وبشر الذين آمنوا وعملوا الصالحات أن لهم جنات | م البقـرة | ٢٥ ٢ |
| (٧٣) | والذين آمنوا وعملوا الصالحات أولئك أصحاب الجنة | م » | ٨٢ ٢ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات وأقاموا الصلاة | | |
| | وآتوا الزكاة لهم أجرهم عند ربهم ... ... ... | م » | ٢٧٧ ٢ |
| | وأما الذين آمنوا وعملوا الصالحات فيوفيهم أجورهم | م آل عمران | ٥٧ ٣ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات سندخلهم جنات | م النسـاء | ٥٧ ٤ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات سندخلهم جنات | م » | ١٢٢ ٤ |
| | فأما الذين آمنوا وعملوا الصالحات فيوفيهم أجورهم | م » | ١٧٣ ٤ |
| | وعد الله الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم مغفرة وأجر عظيم | م المـائدة | ٩ ٥ |
| | ليس على الذين آمنوا وعملوا الصالحات جناح فيما طعموا | م » | ٩٣ ٥ |
| | إذا ما اتقوا وآمنوا وعملوا الصالحات ... ... ... | م » | ٩٣ ٥ |
| | ولكل درجات مما عملوا وما ربك بغافل عما يعملون | ك الأنعـام | ١٣٢ ٦ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات لا نكلف نفسا إلا وسعها | ك الأعـراف | ٤٢ ٧ |
| | والذين عملوا السيئات ثم تابوا من بعدها وآمنوا إن | | |
| | ربك من بعدها لغفور رحيم ... ... ... ... ... | ك » | ١٥٣ ٧ |
| | ليجزى الذين آمنوا وعملوا الصالحات بالقسط ... ... | ك يـونس | ٤ ١٠ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات يهديهم ربهم بإيمانهم | ك » | ٩ ١٠ |
| | إلا الذين صبروا وعملوا الصالحات أولئك لهم مغفرة | | |
| | وأجر كبير ... ... ... ... ... ... ... ... | ك هـود | ١١ ١١ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات وأخبتوا إلى ربهم | | |
| | أولئك أصحاب الجنة ... ... ... ... ... ... | ك » | ٢٣ ١١ |
| | الذين آمنوا وعملوا الصالحات طوبى لهم وحسن مآب | م الرعـد | ٢٩ ١٣ |
| | وأدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات... ... | ك إبراهيـم | ٢٣ ١٤ |
| | فأصابهم سيئات ما عملوا وحاق بهم ما كانوا به يستهزئون | ك النحـل | ٣٤ ١٦ |
| | ثم إن ربك للذين عملوا السوء بجهالة ثم تابوا من بعد ذلك | ك » | ١١٩ ١٦ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات إنا لا نضيع أجر | | |
| | من أحسن عملا ... ... ... ... ... ... ... | ك الكهف | ٣٠ ١٨ |
| | ووجدوا ما عملوا حاضرا ولا يظلم ربك أحدا... ... | ك » | ٤٩ ١٨ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات كانت لهم جنات | | |
| | الفردوس نزلا ... ... ... ... ... ... ... | ك » | ١٠٧ ١٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عَمِلُوا: | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات سيجعل لهم الرحمن ودا | ٩٦ | ك مريم | ١٩ |
| | إن الله يدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات | ١٤ | م الحج | ٢٢ |
| | إن الله يدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات | ٢٣ | م « | ٢٢ |
| | فالذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم مغفرة ورزق كريم | ٥٠ | م « | ٢٢ |
| | فالذين آمنوا وعملوا الصالحات فى جنات النعيم ... | ٥٦ | م « | ٢٢ |
| | ليجزيهم الله أحسن ما عملوا ويزيدهم من فضله ... | ٣٨ | م النور | ٢٤ |
| | وعد الله الذين آمنوا منكم وعملوا الصالحات ليستخلفنهم | | | |
| | فى الأرض كما استخلف الذين من قبلهم ... ... | ٥٥ | م « | ٢٤ |
| | ويوم يرجعون إليه فينبئهم بما عملوا ... ... ... ... | ٦٤ | م « | ٢٤ |
| | وقدمنا إلى ما عملوا من عمل فجعلناه هباء منثورا ... | ٢٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات وذكروا الله كثيرا | ٢٢٧ | م الشعراء | ٢٦ |
| | فلا يجزى الذين عملوا السيئات إلا ما كانوا يعملون | ٨٤ | ك القصص | ٢٨ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات لنكفرن عنهم سيئاتهم | ٧ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات لندخلنهم فى الصالحين | ٩ | م « | ٢٩ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات لنبوئنهم من الجنة غرفا | ٥٨ | ك « | ٢٩ |
| | فأما الذين آمنوا وعملوا الصالحات فهم فى روضة يحبرون | ١٥ | ك الروم | ٣٠ |
| | ليذيقهم بعض الذى عملوا لعلهم يرجعون ... ... ... | ٤١ | ك « | ٣٠ |
| | ليجزى الذين آمنوا وعملوا الصالحات من فضله ... | ٤٥ | ك « | ٣٠ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم جنات النعيم ... | ٨ | ك لقمان | ٣١ |
| | إلينا مرجعهم فننبئهم بما عملوا ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك « | ٣١ |
| | أما الذين آمنوا وعملوا الصالحات فلهم جنات المأوى | ١٩ | م السجدة | ٣٢ |
| | ليجزى الذين آمنوا وعملوا الصالحات ... ... ... | ٤ | ك سبإ | ٣٤ |
| | فأولئك لهم جزاء الضعف بما عملوا وهم فى الغرفات آمنون | ٣٧ | ك « | ٣٤ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم مغفرة وأجر كبير | ٧ | ك فاطر | ٣٥ |
| | إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات وقليل ما هم... ... | ٢٤ | ك ص | ٣٨ |
| | أم نجعل الذين آمنوا وعملوا الصالحات كالمفسدين | | | |
| | فى الأرض... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٣٨ |
| | ليكفر الله عنهم أسوأ الذى عملوا ... ... ... ... | ٣٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وما يستوى الأعمى والبصير والذين آمنوا وعملوا | | | |
| | الصالحات ولا المسىء ... ... ... ... ... ... | ٥٨ | ك غافر | ٤٠ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم أجر غير ممنون | ٨ | ك فصلت | ٤١ |
| | فلنذيقن الذين كفروا بما عملوا ولنذيقنهم من عذاب غليظ | ٥٠ | ك « | ٤١ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات فى روضات الجنات | ٢٢ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ذلك الذى يبشر الله عباده الذين آمنوا وعملوا الصالحات | ٢٣ | م « | ٤٢ |
| | ويستجيب الذين آمنوا وعملوا الصالحات ويزيدهم | | | |
| | من فضله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك « | ٤٢ |
| | أم حسب الذين اجترحوا السيئات أن نجعلهم كالذين | | | |
| | آمنوا وعملوا الصالحات سواء محياهم ومماتهم ... | ٢١ | ك الجاثية | ٤٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عَمِلُوا: | فأما الذين آمنوا وعملوا الصالحات فيدخلهم ربهم | | | |
| | فى رحمته ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | وبدا لهم سيئات ما عملوا وحاق بهم ما كانوا به يستهزئون | ٣٣ | ك « | ٤٥ |
| | أولئك الذين نتقبل عنهم أحسن ما عملوا ... ... ... | ١٦ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | ولكل درجات مما عملوا ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك « | ٤٦ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات وآمنوا بما نزل على محمد | | | |
| | وهو الحق من ربهم كفر عنهم سيئاتهم ... ... | ٢ | م محمد | ٤٧ |
| | إن الله يدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات | ١٢ | م « | ٤٧ |
| | وعد الله الذين آمنوا وعملوا الصالحات منهم مغفرة | ٢٩ | م الفتح | ٤٨ |
| | ليجزى الذين أساؤا بما عملوا ... ... ... ... ... | ٣١ | ك النجم | ٥٣ |
| | يوم يبعثهم الله جميعا فينبئهم بما عملوا... ... ... ... | ٦ | م المجادلة | ٥٨ |
| | ثم ينبئهم بما عملوا يوم القيامة ... ... ... ... ... | ٧ | م « | ٥٨ |
| | ليخرج الذين آمنوا وعملوا الصالحات من الظلمات إلى النور | ١١ | م الطلاق | ٦٥ |
| | إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم أجر غير ممنون | ٢٥ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم جنات تجرى | | | |
| | من تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك البروج | ٨٥ |
| | إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات فلهم أجر غير ممنون | ٦ | ك التين | ٩٥ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات أولئك هم خير البرية | ٧ | م البينة | ٩٨ |
| | إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات وتواصوا بالحق | ٣ | ك العصر | ١٠٣ |
| أَعْمَلَ: | أنتم بريئون مما أعمل وأنا برىء مما تعملون ... ... | ٤١ | ك يونس | ١٠ |
| (٤) | لعلى أعمل صالحا فيما تركت ... ... ... ... ... | ١٠٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وأن أعمل صالحا ترضاه وأدخلنى برحمتك فى عبادك | | | |
| | الصالحين... ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك النمل | ٢٧ |
| | وأن أعمل صالحا ترضاه وأصلح لى فى ذريتى ... ... | ١٥ | م الأحقاف | ٤٦ |
| تَعْمَلُ: | ونجيناه من القرية التى كانت تعمل الخبائث... ... | ٧٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٢) | ومن يقنت منكن لله ورسوله وتعمل صالحا نؤتها | | | |
| | أجرها مرتين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| تَعْمَلُونَ: | وما الله بغافل عما تعملون... ... ... ... ... | ٧٤ | م البقرة | ٢ |
| (٨٣) | ويوم القيامة يردون إلى أشد العذاب وما الله بغافل | | | |
| | عما تعملون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨٥ | م « | ٢ |
| | إن الله بما تعملون بصير ... ... ... ... ... ... | ١١٠ | م « | ٢ |
| | ومن أظلم ممن كتم شهادة عنده من الله وما الله بغافل | | | |
| | عما تعملون ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٠ | م « | ٢ |
| | وإنه لحق من ربك وما الله بغافل عما تعملون ... | ١٤٩ | م « | ٢ |
| | واتقوا الله واعلموا أن الله بما تعملون بصير ... | ٢٣٣ | م « | ٢ |
| | فلا جناح عليكم فيما فعلن فى أنفسهن بالمعروف والله | | | |
| | بما تعملون خبير ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣٤ | م « | ٢ |
| | ولا تنسوا الفضل بينكم إن الله بما تعملون بصير... | ٢٣٧ | م « | ٢ |
| | فإن لم يصبها وابل فطل والله بما تعملون بصير... | ٢٦٥ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَعْمَلُونَ | ويكفر عنكم من سيئاتكم والله بما تعملون خبير | ٢٧١ | م البقرة | ٢ |
| | ومن يكتمها فإنه آثم قلبه والله بما تعملون عليم ... | ٢٨٣ | م « | ٢ |
| | لم تكفرون بآيات الله والله شهيد على ما تعملون ... | ٩٨ | م آل عمران | ٣ |
| | تبغونها عوجا وأنتم شهداء وما الله بغافل عما تعملون | ٩٩ | م « | ٣ |
| | لكيلا تحزنوا على ما فاتكم ولا ما أصابكم والله خبير بما تعملون | ١٥٣ | م « | ٣ |
| | والله يحيي ويميت والله بما تعملون بصير ... ... | ١٥٦ | م « | ٢ |
| | ولله ميراث السموات والأرض والله بما تعملون خبير | ١٨٠ | م « | ٣ |
| | إن الله كان بما تعملون خبيرا ... ... ... ... ... | ٩٤ | م النساء | ٤ |
| | وإن تحسنوا وتتقوا فإن الله كان بما تعملون خبيرا | ١٢٨ | م « | ٤ |
| | وإن تلووا أو تعرضوا فإن الله كان بما تعملون خبيرا | ١٣٥ | م « | ٤ |
| | اعدلوا هو أقرب للتقوى واتقوا الله إن الله خبير بما تعملون | ٨ | م المائدة | ٥ |
| | إلى الله مرجعكم جميعا فينبئكم بما كنتم تعملون ... | ١٠٥ | م « | ٥ |
| | ثم إليه مرجعكم ثم ينبئكم بما كنتم تعملون ... ... | ٦٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | ونودوا أن تلكم الجنة أورثتموها بما كنتم تعملون | ٤٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | ويستخلفكم في الأرض فينظر كيف تعملون ... ... | ١٢٩ | ك « | ٧ |
| | إلا على قوم بينكم وبينهم ميثاق والله بما تعملون بصير | ٧٢ | م الأنفال | ٨ |
| | ولم يتخذوا من دون الله ولا رسوله ولا المؤمنين وليجة والله خبير بما تعملون ... ... ... ... ... ... | ١٦ | م التوبة | ٩ |
| | ثم تردون إلى عالم الغيب والشهادة فينبئكم بما كنتم تعملون | ٩٤ | م « | ٩ |
| | وستردون إلى عالم الغيب والشهادة فينبئكم بما كنتم تعملون | ١٠٥ | م « | ٩ |
| | ثم جعلناكم خلائف في الأرض من بعدهم لننظر كيف تعملون | ١٤ | ك يونس | ١٠ |
| | ثم إلينا مرجعكم فننبئكم بما كنتم تعملون... ... ... | ٢٣ | ك « | ١٠ |
| | أنتم بريئون مما أعمل وأنا برىء مما تعملون... ... | ٤١ | ك « | ١٠ |
| | ولا تعملون من عمل إلا كنا عليكم شهودا ... ... ... | ٦١ | ك « | ١٠ |
| | إن ربي بما تعملون محيط ... ... ... ... ... ... | ٩٢ | ك هود | ١١ |
| | ولا تطغوا إنه بما تعملون بصير... ... ... ... ... | ١١٢ | ك « | ١١ |
| | فاعبده وتوكل عليه وما ربك بغافل عما تعملون ... | ١٢٣ | ك « | ١١ |
| | بلى إن الله عليم بما كنتم تعملون ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك النحل | ١٦ |
| | يقولون سلام عليكم ادخلوا الجنة بما كنتم تعملون ... | ٣٢ | ك « | ١٦ |
| | ولتسئلن عما كنتم تعملون ... ... ... ... ... ... | ٩٣ | ك « | ١٦ |
| | وإن جادلوك فقل الله أعلم بما تعملون ... ... ... | ٦٨ | م الحج | ٢٢ |
| | واعملوا صالحا إني بما تعملون عليم ... ... ... ... | ٥١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | هو أزكى لكم والله بما تعملون عليم ... ... ... ... | ٢٨ | م النور | ٢٤ |
| | قل لا تقسموا طاعة معروفة إن الله خبير بما تعملون | ٥٣ | م « | ٢٤ |
| | قال ربي أعلم بما تعملون ... ... ... ... ... ... | ١٨٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فإن عصوك فقل إني برىء مما تعملون ... ... ... | ٢١٦ | ك « | ٢٦ |
| | أكذبتم بآياتي ولم تحيطوا بها علما أمّا ذا كنتم تعملون | ٨٤ | ك النمل | ٢٧ |
| | فكبت وجوههم في النار هل تجزون إلا ما كنتم تعملون | ٩٠ | ك « | ٢٧ |
| تَعْمَلُونَ | سيريكم آياته فتعرفونها وما ربك بغافل عما تعملون | ٩٣ | ك النمل | ٢٧ |
| | إلي مرجعكم فأنبئكم بما كنتم تعملون ... ... ... | ٨ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | ويقول ذوقوا ما كنتم تعملون ... ... ... ... ... | ٥٥ | ك « | ٢٩ |
| | ثم إلي مرجعكم فأنبئكم بما كنتم تعملون ... ... | ١٥ | ك لقمان | ٣١ |
| | كل يجري إلى أجل مسمى وأن الله بما تعملون خبير | ٢٩ | م « | ٣١ |
| | وذوقوا عذاب الخلد بما كنتم تعملون ... ... ... | ١٤ | ك السجدة | ٣٢ |
| | واتبع ما يوحى إليك من ربك إن الله كان بما تعملون خبيرا | ٢ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وكان الله بما تعملون بصيرا ... ... ... ... ... | ٩ | م « | ٣٣ |
| | واعملوا صالحا إني بما تعملون بصير ... ... ... | ١١ | ك سبأ | ٣٤ |
| | قل لا تسئلون عما أجرمنا ولا نسئل عما تعملون ... | ٢٥ | ك « | ٣٤ |
| | فاليوم لا تظلم نفس شيئا ولا تجزون إلا ما كنتم تعملون | ٥٤ | ك يس | ٣٦ |
| | وما تجزون إلا ما كنتم تعملون ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك الصافات | ٣٧ |
| | والله خلقكم وما تعملون... ... ... ... ... ... | ٩٦ | ك « | ٣٧ |
| | ثم إلى ربكم مرجعكم فينبئكم بما كنتم تعملون ... ... | ٧ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ولكن ظننتم أن الله لا يعلم كثيرا مما تعملون ... ... | ٢٢ | ك فصلت | ٤١ |
| | اعملوا ما شئتم إنه بما تعملون بصير ... ... ... ... | ٤٠ | ك « | ٤١ |
| | وتلك الجنة التي أورثتموها بما كنتم تعملون ... ... | ٧٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | كل أمة تدعى إلى كتابها اليوم تجزون ما كنتم تعملون | ٢٨ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | هذا كتابنا ينطق عليكم بالحق إنا كنا نستنسخ ما كنتم تعملون | ٢٩ | ك « | ٤٥ |
| | بل كان الله بما تعملون خبيرا ... ... ... ... ... | ١١ | م الفتح | ٤٨ |
| | من بعد أن أظفركم عليهم وكان الله بما تعملون بصيرا | ٢٤ | م « | ٤٨ |
| | إن الله يعلم غيب السموات والأرض والله بصير بما تعملون | ١٨ | م الحجرات | ٤٩ |
| | سواء عليكم إنما تجزون ما كنتم تعملون ... ... ... | ١٦ | ك الطور | ٥٢ |
| | كلوا واشربوا هنيئا بما كنتم تعملون ... ... ... ... | ١٩ | ك « | ٥٢ |
| | وهو معكم أينما كنتم والله بما تعملون بصير ... ... ... | ٤ | م الحديد | ٥٧ |
| | وكلا وعد الله الحسنى والله بما تعملون خبير ... ... | ١٠ | م « | ٥٧ |
| | ذلكم توعظون به والله بما تعملون خبير ... ... ... | ٣ | م المجادلة | ٥٨ |
| | يرفع الله الذين آمنوا منكم والذين أوتوا العلم درجات والله بما تعملون خبير ... ... ... ... ... ... | ١١ | م « | ٥٨ |
| | وأطيعوا الله ورسوله والله خبير بما تعملون ... ... | ١٣ | م « | ٥٨ |
| | واتقوا الله إن الله خبير بما تعملون ... ... ... ... | ١٨ | م الحشر | ٥٩ |
| | يوم القيامة يفصل بينكم والله بما تعملون بصير... ... | ٣ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | ثم تردون إلى عالم الغيب والشهادة فينبئكم بما كنتم تعملون | ٨ | م الجمعة | ٦٢ |
| | ولن يؤخر الله نفسا إذا جاء أجلها والله خبير بما تعملون | ١١ | م المنافقون | ٦٣ |
| | فمنكم كافر ومنكم مؤمن والله بما تعملون بصير ... ... | ٢ | م التغابن | ٦٤ |
| | فآمنوا بالله ورسوله والنور الذي أنزلنا والله بما تعملون خبير | ٨ | م « | ٦٤ |
| | لا تعتذروا اليوم إنما تجزون ما كنتم تعملون ... ... | ٧ | م التحريم | ٦٦ |
| | كلوا واشربوا هنيئا بما كنتم تعملون... ... ... ... | ٤٣ | ك المرسلات | ٧٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| نَعْمَلُ: | فهل لنا من شفعاء فيشفعوا لنا أو نردّ فنعمل ... | ٥٣ | ك الأعراف | ٧ |
| (٦) | غير الذى كنا نعمل ... ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك « | ٧ |
| | فألقوا السلم ما كنا نعمل من سوء... ... ... ... ... | ٢٨ | ك النحل | ١٦ |
| | ربنا أبصرنا وسمعنا فارجعنا نعمل صالحا إنا موقنون | ١٢ | ك السجدة | ٣٢ |
| | وهم يصطرخون فيها ربنا أخرجنا نعمل صالحا... ... | ٣٧ | ك فاطر | ٣٥ |
| | غير الذى كنا نعمل ... ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك « | ٣٥ |
| يَعْمَلْ: | ومن يعمل سوءا أو يظلم نفسه ثم يستغفر الله يجد | | | |
| (١٤) | الله غفورا رحيما ... ... ... ... ... ... ... | ١١٠ | م النساء | ٤ |
| | من يعمل سوءا يجز به ولا يجد له من دون الله وليا ولا نصيرا | ١٢٣ | م « | ٤ |
| | ومن يعمل من الصالحات من ذكر أو أنثى وهو مؤمن | | | |
| | فأولئك يدخلون الجنة ... ... ... ... ... ... | ١٢٤ | م « | ٤ |
| | ولا تحسبن الله غافلا عما يعمل الظالمون ... ... ... | ٤٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | قل كل يعمل على شاكلته ... ... ... ... ... ... | ٨٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فمن كان يرجوا لقاء ربه فليعمل عملا صالحا ... ... | ١١٠ | ك الكهف | ١٨ |
| | ومن يعمل من الصالحات وهو مؤمن فلا يخاف ظلما | | | |
| | ولا هضما ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ١١٢ | ك طه | ٢٠ |
| | فمن يعمل من الصالحات وهو مؤمن فلا كفران لسعيه | ٩٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ومن الجن من يعمل بين يديه بإذن ربه ... ... ... | ١٢ | ك سبإ | ٣٤ |
| | لمثل هذا فليعمل العاملون ... ... ... ... ... ... | ٦١ | ك الصافات | ٣٧ |
| | ومن يؤمن بالله ويعمل صالحا يكفر عنه سيئاته ... | ٩ | م التغابن | ٦٤ |
| | ومن يؤمن بالله ويعمل صالحا يدخله جنات ... ... | ١١ | م الطلاق | ٦٥ |
| | فمن يعمل مثقال ذرة خيرا يره ... ... ... ... ... | ٧ | م الزلزلة | ٩٩ |
| | ومن يعمل مثقال ذرة شرا يره ... ... ... ... ... | ٨ | م « | ٩٩ |
| يَعْمَلُونَ: | وما هو بمزحزحه من العذاب أن يعمر والله بصير | | | |
| (٥٦) | بما يعملون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩٦ | م البقرة | ٢ |
| | لها ما كسبت ولكم ما كسبتم ولا تسئلون عما كانوا يعملون | ١٣٤ | م « | ٢ |
| | لها ما كسبت ولكم ما كسبتم ولا تسئلون عما كانوا يعملون | ١٤١ | م « | ٢ |
| | إن الله بما يعملون محيط ... ... ... ... ... ... | ١٢٠ | م آل عمران | ٣ |
| | هم درجات عند الله والله بصير بما يعملون ... ... | ١٦٣ | م « | ٣ |
| | إنما التوبة على الله للذين يعملون السوء بجهالة ... | ١٧ | م النساء | ٤ |
| | وليست التوبة للذين يعملون السيئات ... ... ... ... | ١٨ | م « | ٤ |
| | إذ يبيتون ما لا يرضى من القول وكان الله بما يعملون محيطا | ١٠٨ | م « | ٤ |
| | لبئس ما كانوا يعملون ... ... ... ... ... ... ... | ٦٢ | م المائدة | ٥ |
| | منهم أمة مقتصدة وكثير منهم ساء ما يعملون ... ... | ٦٦ | م « | ٥ |
| | ثم عموا وصموا كثير منهم والله بصير بما يعملون ... | ٧١ | م « | ٥ |
| | ولكن قست قلوبهم وزين لهم الشيطان ما كانوا يعملون | ٤٣ | ك الأنعام | ٦ |
| | ولو أشركوا لحبط عنهم ما كانوا يعملون ... ... ... | ٨٨ | ك « | ٦ |
| | ثم إلى ربهم مرجعهم فينبئهم بما كانوا يعملون... ... | ١٠٨ | ك « | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَعْمَلُونَ: | كذلك زين للكافرين ما كانوا يعملون ... ... ... | ١٢٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | لهم دار السلام عند ربهم وهو وليهم بما كانوا يعملون | ١٢٧ | ك « | ٦ |
| | ولكل درجات مما عملوا وما ربك بغافل عما يعملون | ١٣٢ | ك « | ٦ |
| | فوقع الحق وبطل ما كانوا يعملون ... ... ... ... | ١١٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | إن هؤلاء متبر ما هم فيه وباطل ما كانوا يعملون ... | ١٣٩ | ك « | ٧ |
| | حبطت أعمالهم هل يجزون إلا ما كانوا يعملون ... | ١٤٧ | ك « | ٧ |
| | وذروا الذين يلحدون فى أسمائه سيجزون ما كانوا يعملون | ١٨٠ | ك « | ٧ |
| | فإن انتهوا فإن الله بما يعملون بصير ... ... ... ... | ٣٩ | م الأنفال | ٨ |
| | ويصدون عن سبيل الله والله بما يعملون محيط ... | ٤٧ | م « | ٨ |
| | فصدوا عن سبيله إنهم ساء ما كانوا يعملون ... ... | ٩ | م التوبة | ٩ |
| | ليجزيهم الله أحسن ما كانوا يعملون ... ... ... | ١٢١ | م « | ٩ |
| | كذلك زين للمسرفين ما كانوا يعملون ... ... ... | ١٢ | ك يونس | ١٠ |
| | وحبط ما صنعوا فيها وباطل ما كانوا يعملون... ... | ١٦ | ك هود | ١١ |
| | وجاءه قومه يهرعون إليه ومن قبل كانوا يعملون السيئات | ٧٨ | ك « | ١١ |
| | وإن كلا لما ليوفينهم ربك أعمالهم إنه بما يعملون خبير | ١١١ | ك « | ١١ |
| | قال يا بشرى هذا غلام وأسروه بضاعة والله عليم بما يعملون | ١٩ | ك يوسف | ١٢ |
| | قال إنى أنا أخوك فلا تبتئس بما كانوا يعملون ... | ٦٩ | ك « | ١٢ |
| | فوربك لنسألنهم أجمعين . عما كانوا يعملون... ... | ٩٣ | ك الحجر | ١٥ |
| | ولنجزين الذين صبروا أجرهم بأحسن ما كانوا يعملون | ٩٦ | ك النحل | ١٦ |
| | ولنجزينهم أجرهم بأحسن ما كانوا يعملون ... ... | ٩٧ | ك « | ١٦ |
| | ويبشر المؤمنين الذين يعملون الصالحات أن لهم أجرا كبيرا | ٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ويبشر المؤمنين الذين يعملون الصالحات أن لهم أجرا حسنا | ٢ | ك الكهف | ١٨ |
| | أما السفينة فكانت لمساكين يعملون فى البحر... ... | ٧٩ | ك « | ١٨ |
| | لا يسبقونه بالقول وهم بأمره يعملون ... ... ... | ٢٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ومن الشياطين من يغوصون له ويعملون عملا دون ذلك | ٨٢ | ك « | ٢١ |
| | يوم تشهد عليهم ألسنتهم وأيديهم وأرجلهم بما كانوا | | | |
| | يعملون ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | م النور | ٢٤ |
| | قال وما علمى بما كانوا يعملون ... ... ... ... ... | ١١٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | رب نجنى وأهلى مما يعملون ... ... ... ... ... | ١٦٩ | ك « | ٢٦ |
| | فلا يجزى الذين عملوا السيئات إلا ما كانوا يعملون | ٨٤ | ك القصص | ٢٨ |
| | أم حسب الذين يعملون السيئات أن يسبقونا... ... | ٤ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | ولنجزينهم أحسن الذى كانوا يعملون ... ... ... | ٧ | م « | ٢٩ |
| | فلا تعلم نفس ما أخفى لهم من قرة أعين جزاء بما كانوا | | | |
| | يعملون ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | م السجدة | ٣٢ |
| | فلهم جنات المأوى نزلا بما كانوا يعملون ... ... | ١٩ | م « | ٣٢ |
| | يعملون له ما يشاء من محاريب وتماثيل وجفان كالجواب | ١٣ | ك سبإ | ٣٤ |
| | هل يجزون إلا ما كانوا يعملون... ... ... ... ... | ٣٣ | ك « | ٣٤ |
| | ويجزيهم أجرهم بأحسن الذى كانوا يعملون ... ... | ٣٥ | ك الزمر | ٣٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَعْمَلُونَ: | شهد عليهم سمعهم وأبصارهم وجلودهم بما كانوا يعملون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك فصلت | ٤١ |
| | ولنجزينهم أسوأ الذى كانوا يعملون... ... ... ... | ٢٧ | ك « | ٤١ |
| | أولئك أصحاب الجنة خالدين فيها جزاء بما كانوا يعملون | ١٤ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | كأمثال اللؤلؤ المكنون . جزاء بما كانوا يعملون ... | ٢٤ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | أعد الله لهم عذابا شديدا إنهم ساء ما كانوا يعملون | ١٥ | م المجادلة | ٥٨ |
| | فصدوا عن سبيل الله إنهم ساء ما كانوا يعملون ... | ٢ | م المنافقون | ٦٣ |
| أَعْمَلُ: | أن اعمل سابغات وقدر فى السرد ... ... ... ... | ١١ | ك سبأ | ٣٤ |
| (٢) | ومن بيننا وبينك حجاب فاعمل إننا عاملون ... ... | ٥ | ك فصلت | ٤١ |
| اعْمَلُوا: | قل ياقوم اعملوا على مكانتكم إنى عامل ... ... | ١٣٥ | ك الأنعام | ٦ |
| (٩) | وقل اعملوا فسيرى الله عملكم ورسوله والمؤمنون ... | ١٠٥ | م التوبة | ٩ |
| | وياقوم اعملوا على مكانتكم إنى عامل ... ... ... | ٩٣ | ك هود | ١١ |
| | وقل للذين لا يؤمنون اعملوا على مكانتكم إنا عاملون | ١٢١ | ك « | ١١ |
| | يأيها الرسل كلوا من الطيبات واعملوا صالحا ... ... | ٥١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | أن اعمل سابغات وقدر فى السرد واعملوا صالحا ... | ١١ | ك سبأ | ٣٤ |
| | اعملوا آل داود شكرا وقليل من عبادى الشكور ... | ١٣ | ك « | ٣٤ |
| | قل ياقوم اعملوا على مكانتكم إنى عامل فسوف تعلمون | ٣٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| | اعملوا ما شئتم إنه بما تعملون بصير ... ... ... ... | ٤٠ | ك فصلت | ٤١ |
| عَمَلٍ: | أنى لا أضيع عمل عامل منكم من ذكر أو أنثى ... ... | ١٩٥ | م آل عمران | ٣ |
| (٩) | رجس من عمل الشيطان ... ... ... ... ... ... | ٩٠ | م المائدة | ٥ |
| | ولا ينالون من عدو نيلا إلا كتب لهم به عمل صالح | ١٢٠ | م التوبة | ٩ |
| | ولا تعملون من عمل إلا كنا عليكم شهودا ... ... | ٦١ | ك يونس | ١٠ |
| | إن الله لا يصلح عمل المفسدين ... ... ... ... ... | ٨١ | ك « | ١٠ |
| | إنه عمل غير صالح فلا تسئلن ما ليس لك به علم... ... | ٤٦ | ك هود | ١١ |
| | وقدمنا إلى ما عملوا من عمل فجعلناه هباء منثورا ... | ٢٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | قال هذا من عمل الشيطان إنه عدو مضل مبين ... | ١٥ | ك القصص | ٢٨ |
| | إليه يصعد الكلم الطيب والعمل الصالح يرفعه ... ... | ١٠ | ك فاطر | ٣٥ |
| عَمَلًا: | وآخرون اعترفوا بذنوبهم خلطوا عملا صالحا وآخر سيئا | ١٠٢ | م التوبة | ٩ |
| (٨) | وكان عرشه على الماء ليبلوكم أيكم أحسن عملا | ٧ | ك هود | ١١ |
| | إنا جعلنا ما على الأرض زينة لها لنبلوهم أيهم أحسن عملا ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك الكهف | ١٨ |
| | إنا لا نضيع أجر من أحسن عملا ... ... ... ... | ٣٠ | ك « | ١٨ |
| | فمن كان يرجوا لقاء ربه فليعمل عملا صالحا ... ... | ١١٠ | ك « | ١٨ |
| | ومن الشياطين من يغوصون له ويعملون عملا دون ذلك | ٨٢ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | إلا من تاب وآمن وعمل عملا صالحا ... ... ... | ٧٠ | م الفرقان | ٢٥ |
| | الذى خلق الموت والحياة ليبلوكم أيكم أحسن عملا | ٢ | ك الملك | ٦٧ |
| عَمَلُكَ: | لئن أشركت ليحبطن عملك ولتكونن من الخاسرين | ٦٥ | ك الزمر | ٣٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عَمَلَكُمْ: | وسيرى الله عملكم ورسوله ثم تردون إلى عالم الغيب | ٩٤ | م التوبة | ٩ |
| (٤) | وقل اعملوا فسيرى الله عملكم ورسوله والمؤمنون | ١٠٥ | م « | ٩ |
| | وإن كذبوك فقل لى عملى ولكم عملكم ... ... ... | ٤١ | ك يونس | ١٠ |
| | قال إنى لعملكم من القالين ... ... ... ... ... | ١٦٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| عَمَلَهُ: | ومن يكفر بالإيمان فقد حبط عمله ... ... ... | ٥ | م المائدة | ٥ |
| (٥) | أفمن زين له سوء عمله فرآه حسنا ... ... ... ... | ٨ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وكذلك زين لفرعون سوء عمله وصد عن السبيل ... | ٣٧ | ك غافر | ٤٠ |
| | أفمن كان على بينة من ربه كمن زين له سوء عمله ... | ١٤ | م محمد | ٤٧ |
| | رب ابن لى عندك بيتا فى الجنة ونجنى من فرعون وعمله | ١١ | م التحريم | ٦٦ |
| عَمَلِهِمْ: | كذلك زينا لكل أمة عملهم ... ... ... ... ... | ١٠٨ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | ألحقنا بهم ذريتهم وما ألتناهم من عملهم من شىء | ٢١ | ك الطور | ٥٢ |
| عَمَلِي: | وإن كذبوك فقل لى عملى ولكم عملكم ... ... | ٤١ | ك يونس | ١٠ |
| أَعْمَالٌ: | بل قلوبهم فى غمرة من هذا ولهم أعمال من دون ذلك | ٦٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| أَعْمَالًا: | قل هل ننبئكم بالأخسرين أعمالا ... ... ... ... | ١٠٣ | ك الكهف | ١٨ |
| أَعْمَالُكُمْ: | وهو ربنا وربكم ولنا أعمالنا ولكم أعمالكم ... | ١٣٩ | م البقرة | ٢ |
| (٩) | وقالوا لنا أعمالنا ولكم أعمالكم سلام عليكم ... ... | ٥٥ | م القصص | ٢٨ |
| | يصلح لكم أعمالكم ويغفر لكم ذنوبكم ... ... ... | ٧١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | الله ربنا وربكم لنا أعمالنا ولكم أعمالكم ... ... | ١٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ولتعرفنهم فى لحن القول والله يعلم أعمالكم ... ... | ٣٠ | م محمد | ٤٧ |
| | أطيعوا الله وأطيعوا الرسول ولا تبطلوا أعمالكم ... | ٣٣ | م « | ٤٧ |
| | والله معكم ولن يتركم أعمالكم ... ... ... ... | ٣٥ | م « | ٤٧ |
| | ولا تجهروا له بالقول كجهر بعضكم لبعض أن تحبط أعمالكم وأنتم لا تشعرون ... ... ... ... ... | ٢ | م الحجرات | ٤٩ |
| | وإن تطيعوا الله ورسوله لا يلتكم من أعمالكم شيئا | ١٤ | م « | ٤٩ |
| أَعْمَالُنَا: | ولنا أعمالنا ولكم أعمالكم ... ... ... ... ... | ١٣٩ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | وقالوا لنا أعمالنا ولكم أعمالكم ... ... ... ... | ٥٥ | م القصص | ٢٨ |
| | الله ربنا وربكم لنا أعمالنا ولكم أعمالكم ... ... | ١٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| أَعْمَالَهُمْ: | كذلك يريهم الله أعمالهم حسرات عليهم ... | ١٦٧ | م البقرة | ٢ |
| (٢٧) | فأولئك حبطت أعمالهم فى الدنيا والآخرة ... ... | ٢١٧ | م « | ٢ |
| | أولئك الذين حبطت أعمالهم فى الدنيا والآخرة ... | ٢٢ | م آل عمران | ٣ |
| | حبطت أعمالهم فأصبحوا خاسرين ... ... ... ... | ٥٣ | م المائدة | ٥ |
| | والذين كذبوا بآياتنا ولقاء الآخرة حبطت أعمالهم... | ١٤٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | وإذ زين لهم الشيطان أعمالهم ... ... ... ... ... | ٤٨ | م الأنفال | ٨ |
| | أولئك حبطت أعمالهم وفى النار هم خالدون... ... | ١٧ | م التوبة | ٩ |
| | زين لهم سوء أعمالهم والله لا يهدى القوم الكافرين | ٣٧ | م « | ٩ |
| | أولئك حبطت أعمالهم فى الدنيا والآخرة ... ... ... | ٦٩ | م « | ٩ |
| | من كان يريد الحياة الدنيا وزينتها نوف إليهم أعمالهم فيها | ١٥ | ك هود | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَعْمَالَهُمْ: | وإن كلا لما ليوفينهم ربك أعمالهم ... ... ... | ١١١ | ك هـود | ١١ |
| | أعمالهم كرماد اشتدت به الريح فى يوم عاصف ... | ١٨ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | تالله لقد أرسلنا إلى أمم من قبلك فزين لهم الشيطان أعمالهم | ٦٣ | ك النحل | ١٦ |
| | أولئك الذين كفروا بآيات ربهم ولقائه فحبطت أعمالهم | ١٠٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | والذين كفروا أعمالهم كسراب بقيعة يحسبه الظمآن ماء | ٣٩ | م النور | ٢٤ |
| | إن الذين لا يؤمنون بالآخرة زينا لهم أعمالهم فهم يعمهون | ٤ | ك النمل | ٢٧ |
| | وزين لهم الشيطان أعمالهم فصدهم عن السبيل فهم لا يهتدون | ٢٤ | ك « | ٢٧ |
| | وزين لهم الشيطان أعمالهم فصدهم عن السبيل ... ... | ٣٨ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | أولئك لم يؤمنوا فأحبط الله أعمالهم ... ... ... | ١٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ولكل درجات مما عملوا وليوفيهم أعمالهم وهم لا يظلمون | ١٩ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | الذين كفروا وصدوا عن سبيل الله أضل أعمالهم ... | ١ | م محمد | ٤٧ |
| | والذين قتلوا فى سبيل الله فلن يضل أعمالهم ... ... | ٤ | م « | ٤٧ |
| | والذين كفروا فتعسا لهم وأضل أعمالهم ... ... ... | ٨ | م « | ٤٧ |
| | ذلك بأنهم كرهوا ما أنزل الله فأحبط أعمالهم ... | ٩ | م « | ٤٧ |
| | ذلك بأنهم اتبعوا ما أسخط الله وكرهوا رضوانه فأحبط أعمالهم... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م « | ٤٧ |
| | لن يضروا الله شيئا وسيحبط أعمالهم ... ... ... | ٣٢ | م « | ٤٧ |
| | يومئذ يصدر الناس أشتاتا ليروا أعمالهم ... ... ... | ٦ | م الزلزلة | ٩٩ |
| عَامِلٌ: | أنى لا أضيع عمل عامل منكم من ذكر أو أنثى ... | ١٩٥ | م آل عمران | ٣ |
| (٤) | قل يا قوم اعملوا على مكانتكم إنى عامل ... ... ... | ١٣٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | ويا قوم اعملوا على مكانتكم إنى عامل ... ... ... | ٩٣ | ك هـود | ١١ |
| | قل يا قوم اعملوا على مكانتكم إنى عامل ... ... ... | ٣٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| عَامِلَةٌ: | وجوه يومئذ خاشعة . عاملة ناصبة ... ... ... | ٣ | ك الغاشية | ٨٨ |
| عَامِلُونَ: | وقل للذين لا يؤمنون اعملوا على مكانتكم إنا عاملون | ١٢١ | ك هـود | ١١ |
| (٤) | ولهم أعمال من دون ذلك هم لها عاملون ... ... | ٦٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | لمثل هذا فليعمل العاملون ... ... ... ... ... | ٦١ | ك الصافات | ٣٧ |
| | ومن بيننا وبينك حجاب فاعمل إننا عاملون ... ... | ٥ | ك فصلت | ٤١ |
| الْعَامِلِينَ: | خالدين فيها ونعم أجر العاملين ... ... ... ... | ١٣٦ | م آل عمران | ٣ |
| (٤) | إنما الصدقات للفقراء والمساكين والعاملين عليها ... | ٦٠ | م التوبة | ٩ |
| | تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها نعم أجر العاملين | ٥٨ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | تتبوأ من الجنة حيث نشاء فنعم أجر العاملين ... ... | ٧٤ | ك الزمر | ٣٩ |
| عَمَّكَ: | وما ملكت يمينك مما أفاء الله عليك وبنات عمك | ٥٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| أَعْمَامِكُمْ: | أو بيوت إخوانكم أو بيوت أخواتكم أو بيوت أعمامكم | ٦١ | م النور | ٢٤ |
| عَمَّاتِكَ: | وبنات عمك وبنات عماتك... ... ... ... ... | ٥٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| عَمَّاتُكُمْ: | حرمت عليكم أمهاتكم وبناتكم وأخواتكم وعماتكم | ٢٣ | م النساء | ٤ |
| (٢) | أو بيوت أعمامكم أو بيوت عماتكم أو بيوت أخوالكم | ٦١ | م النور | ٢٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَعْمَهُونَ: | الله يستهزئ بهم ويمدهم فى طغيانهم يعمهون | ١٥ | م البقرة | ٢ |
| (٧) | ونذرهم فى طغيانهم يعمهون... ... ... ... ... | ١١٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | من يضلل الله فلا هادى له ويذرهم فى طغيانهم يعمهون | ١٨٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | فنذر الذين لا يرجون لقاءنا فى طغيانهم يعمهون ... | ١١ | ك يونس | ١٠ |
| | لعمرك إنهم لفى سكرتهم يعمهون ... ... ... ... | ٧٢ | ك الحجر | ١٥ |
| | ولو رحمناهم وكشفنا ما بهم من ضر لجوا فى طغيانهم يعمهون ... ... ... ... ... ... ... | ٧٥ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | إن الذين لا يؤمنون بالآخرة زينا لهم أعمالهم فهم يعمهون | ٤ | ك النمل | ٢٧ |
| عَمِيَ: | فمن أبصر فلنفسه ومن عمى فعليها ... ... ... ... | ١٠٤ | ك الأنعام | ٦ |
| عَمُوا: | وحسبوا ألا تكون فتنة فعموا وصموا ... ... ... | ٧١ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | ثم تاب الله عليهم ثم عموا وصموا كثير منهم ... ... | ٧١ | م « | ٥ |
| فَعَمِيَتْ: | فعميت عليهم الأنباء يومئذ فهم لا يتساءلون ... | ٦٦ | ك القصص | ٢٨ |
| تَعْمَى: | فإنها لا تعمى الأبصار ... ... ... ... ... ... | ٤٦ | م الحج | ٢٢ |
| (٢) | ولكن تعمى القلوب التى فى الصدور ... ... ... ... | ٤٦ | م « | ٢٢ |
| أَعْمَى: | أولئك الذين لعنهم الله فأصمهم وأعمى أبصارهم ... | ٢٣ | م محمد | ٤٧ |
| فَعُمِّيَتْ: | فعميت عليكم أنلزمكموها وأنتم لها كارهون ... | ٢٨ | ك هـود | ١١ |
| عَمًى: | وأما ثمود فهديناهم فاستحبوا العمى على الهدى ... | ١٧ | ك فصلت | ٤١ |
| (٢) | والذين لا يؤمنون فى آذانهم وقر وهو عليهم عمى ... | ٤٤ | ك « | ٤١ |
| عُمْيٌ: | بل هم فى شك منها بل هم منها عمون ... ... ... | ٦٦ | ك النمل | ٢٧ |
| عَمِينَ: | وأغرقنا الذين كذبوا بآياتنا إنهم كانوا قوما عمين | ٦٤ | ك الأعراف | ٧ |
| أَعْمَى: | قل هل يستوى الأعمى والبصير أفلا تتفكرون ... | ٥٠ | ك الأنعام | ٦ |
| (١٣) | مثل الفريقين كالأعمى والأصم والبصير والسميع ... | ٢٤ | ك هـود | ١١ |
| | قل هل يستوى الأعمى والبصير أم هل تستوى الظلمات والنور... ... ... ... ... ... ... | ١٦ | م الرعد | ١٣ |
| | أفمن يعلم أنما أنزل إليك من ربك الحق كمن هو أعمى | ١٩ | م « | ١٣ |
| | ومن كان فى هذه أعمى ... ... ... ... ... ... | ٧٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فهو فى الآخرة أعمى وأضل سبيلا ... ... ... ... | ٧٢ | ك « | ١٧ |
| | فإن له معيشة ضنكا ونحشره يوم القيامة أعمى... ... | ١٢٤ | ك طه | ٢٠ |
| | قال رب لم حشرتنى أعمى وقد كنت بصيرا ... ... | ١٢٥ | ك « | ٢٠ |
| | ليس على الأعمى حرج ولا على الأعرج حرج ... ... | ٦١ | م النور | ٢٤ |
| | وما يستوى الأعمى والبصير . ولا الظلمات ولا النور | ١٩ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وما يستوى الأعمى والبصير والذين آمنوا وعملوا الصالحات ولا المسىء ... ... ... ... ... ... | ٥٨ | ك غافر | ٤٠ |
| | ليس على الأعمى حرج ولا على الأعرج حرج ... ... | ١٧ | م الفتح | ٤٨ |
| | عبس وتولى . أن جاءه الأعمى... ... ... ... ... | ٢ | ك عبس | ٨٠ |

| اللفظة | الآيـة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عُمْيٌ | : صم بكم عمى فهم لا يرجعون ... ... ... ... ... | ١٨ | م البقـرة | ٢ |
| (٦) | صم بكم عمى فهم لا يعقلون ... ... ... ... ... ... | ١٧١ | م « | ٢ |
| | أفأنت تهدى العمى ولو كانوا لا يبصرون ... ... ... | ٤٣ | ك يـونس | ١٠ |
| | وما أنت بهادى العمى عن ضلالتهم ... ... ... ... | ٨١ | ك النمـل | ٢٧ |
| | وما أنت بهادى العمى عن ضلالتهم ... ... ... ... | ٥٣ | ك الـروم | ٣٠ |
| | أفأنت تسمع الصم أو تهدى العمى ... ... ... ... | ٤٠ | ك الزخرف | ٤٣ |
| عُمْيًا | : ونحشرهم يوم القيامة على وجوههم عميا وبكما وصما | ٩٧ | ك الإسـراء | ١٧ |
| عُمْيَانًا | : والذين إذا ذكروا بآيات ربهم لم يخروا عليها صما وعميانا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك الفـرقان | ٢٥ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| عِنَبٍ | : أو تكون لك جنة من نخيل وعنب ... ... ... ... | ٩١ | ك الإسـراء | ١٧ |
| عِنَبًا | : فأنبتنا فيها حبا . وعنبا وقضبا ... ... ... ... | ٢٨ | ك عبـس | ٨٠ |
| أَعْنَابٍ | : أيود أحدكم أن تكون له جنة من نخيل وأعناب | ٢٦٦ | م البقـرة | ٢ |
| (٨) | ومن النخل من طلعها قنوان دانية وجنات من أعناب | ٩٩ | ك الأنعـام | ٦ |
| | وفى الأرض قطع متجاورات وجنات من أعناب ... | ٤ | م الرعـد | ١٣ |
| | ينبت لكم به الزرع والزيتون والنخيل والأعناب ... | ١١ | ك النحـل | ١٦ |
| | ومن ثمرات النخيل والأعناب تتخذون منه سكرا ... | ٦٧ | ك « | ١٦ |
| | واضرب لهم مثلا رجلين جعلنا لأحدهما جنتين من أعناب | ٣٢ | ك الكهف | ١٨ |
| | فأنشأنا لكم به جنات من نخيل وأعناب ... ... ... | ١٩ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وجعلنا فيها جنات من نخيل وأعناب ... ... ... ... | ٣٤ | ك يـس | ٣٦ |
| أَعْنَابًا | : إن للتقين مفازا . حدائق وأعنابا ... ... ... ... | ٣٢ | ك النـبأ | ٧٨ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| عَنِتُّمْ | : لا تتخذوا بطانة من دونكم لا يألونكم خبالا ودوا ما عنتم | ١١٨ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | لقد جاءكم رسول من أنفسكم عزيز عليه ما عنتم... ... | ١٢٨ | ك التـوبة | ٩ |
| | لو يطيعكم فى كثير من الأمر لعنتم... ... ... ... | ٧ | م الحجرات | ٤٩ |
| لَأَعْنَتَكُمْ | : ولو شاء الله لأعنتكم إن الله عزيز حكيم... ... | ٢٢٠ | م البقـرة | ٢ |
| الْعَنَتَ | : ذلك لمن خشى العنت منكم ... ... ... ... ... | ٢٥ | م النسـاء | ٤ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| عَنِيدٍ | : وعصوا رسله واتبعوا أمر كل جبار عنيد ... ... | ٥٩ | ك هـود | ١١ |
| (٣) | واستفتحوا وخاب كل جبار عنيد ... ... ... ... | ١٥ | ك إبراهـيم | ١٤ |
| | ألقيا فى جهنم كل كفار عنيد... ... ... ... ... | ٢٤ | ك قـ | ٥٠ |
| عَنِيدًا | : كلا إنه كان لآياتنا عنيدا... ... ... ... ... | ١٦ | ك المـدثر | ٧٤ |
| عِنْدَ | : ذلكم خير لكم عند بارئكم فتاب عليكم ... ... ... | ٥٤ | م البقـرة | ٢ |
| (١٢٢) | من آمن بالله واليوم الآخر وعمل صالحا فلهم أجرهم عند ربهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦٢ | م « | ٢ |
| | أتحدثونهم بما فتح الله عليكم ليحاجوكم به عند ربكم | ٧٦ | م « | ٢ |
| | ثم يقولون هذا من عند الله ليشتروا به ثمنا قليلا ... | ٧٩ | م « | ٢ |
| عِنْدَ | : قل أتخذتم عند الله عهدا فلن يخلف الله عهده ... | ٨٠ | م البقـرة | ٢ |
| | ولما جاءهم كتاب من عند الله مصدق لما معهم | ٨٩ | م « | ٢ |
| | قل إن كانت لكم الدار الآخرة عند الله خالصة من دون الناس ... ... ... ... ... ... ... | ٩٤ | م « | ٢ |
| | ولما جاءهم رسول من عند الله مصدق لما معهم ... | ١٠١ | م « | ٢ |
| | ولو أنهم آمنوا واتقوا لمثوبة من عند الله خير... ... | ١٠٣ | م « | ٢ |
| | لو يردونكم من بعد إيمانكم كفارا حسدا من عند أنفسهم | ١٠٩ | م « | ٢ |
| | وما تقدموا لأنفسكم من خير تجدوه عند الله ... ... | ١١٠ | م « | ٢ |
| | بلى من أسلم وجهه لله وهو محسن فله أجره عند ربه | ١١٢ | م « | ٢ |
| | ولا تقاتلوهم عند المسجد الحرام حتى يقاتلوكم فيه ... | ١٩١ | م « | ٢ |
| | فإذا أفضتم من عرفات فاذكروا الله عند المشعر الحرام | ١٩٨ | م « | ٢ |
| | وإخراج أهله منه أكبر عند الله ... ... ... ... | ٢١٧ | م « | ٢ |
| | ثم لا يتبعون ما أنفقوا منا ولا أذى لهم أجرهم عند ربهم | ٢٦٢ | م « | ٢ |
| | الذين ينفقون أموالهم بالليل والنهار سرا وعلانية فلهم أجرهم عند ربهم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧٤ | م « | ٢ |
| | وأقاموا الصلاة وآتوا الزكاة لهم أجرهم عند ربهم ... | ٢٧٧ | م « | ٢ |
| | ذلكم أقسط عند الله وأقوم للشهادة وأدنى ألا ترتابوا | ٢٨٢ | م « | ٢ |
| | والراسخون فى العلم يقولون آمنا به كل من عند ربنا | ٧ | م آل عمران | ٣ |
| | للذين اتقوا عند ربهم جنات تجرى من تحتها الأنهار | ١٥ | م « | ٣ |
| | إن الدين عند الله الإسلام ... ... ... ... ... ... | ١٩ | م « | ٣ |
| | قال يا مريم أنى لك هـذا قالت هو من عند الله ... | ٣٧ | م « | ٣ |
| | إن مثل عيسى عند الله كمثل آدم خلقه من تراب ... | ٥٩ | م « | ٣ |
| | أن يؤتى أحد مثل ما أوتيتم أو يحاجوكم عند ربكم | ٧٣ | م « | ٣ |
| | ويقولون هو من عند الله ... ... ... ... ... ... | ٧٨ | م « | ٣ |
| | وما هو من عند الله ويقولون على الله الكذب وهم يعلمون | ٧٨ | م « | ٣ |
| | وما النصر إلا من عند الله العزيز الحكيم ... ... ... | ١٢٦ | م « | ٣ |
| | هم درجات عند الله والله بصير بما يعملون ... ... | ١٦٣ | م « | ٣ |
| | قل هو من عند أنفسكم إن الله على كل شىء قدير ... | ١٦٥ | م « | ٣ |
| | بل أحياء عند ربهم يرزقون... ... ... ... ... ... | ١٦٩ | م « | ٣ |
| | ولأدخلنهم جنات تجرى من تحتها الأنهار ثوابا من عند الله | ١٩٥ | م « | ٣ |
| | لهم جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها نزلا من عند الله | ١٩٨ | م « | ٣ |
| | وما عند الله خير للأبرار ... ... ... ... ... ... | ١٩٨ | م « | ٣ |
| | أولئك لهم أجرهم عند ربهم إن الله سريع الحساب | ١٩٩ | م « | ٣ |
| | وإن تصبهم حسنة يقولوا هذه من عند الله ... ... | ٧٨ | م النسـاء | ٤ |
| | وإن تصبهم سيئة يقولوا هذه من عندك قل كل من عند الله | ٧٨ | م « | ٤ |
| | ولو كان من عند غير الله لوجدوا فيه اختلافا كثيرا | ٨٢ | م « | ٤ |
| | تبتغون عرض الحياة الدنيا فعند الله مغانم كثيرة | ٩٤ | م « | ٤ |
| | من كان يريد ثواب الدنيا فعند الله ثواب الدنيا والآخرة | ١٣٤ | م « | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عِنْدَ: | قل هل أنبئكم بشر من ذلك مثوبة عند الله ... ... | ٦٠ | م المائدة | ٥ |
| | قل إنما الآيات عند الله ... ... ... ... ... ... | ١٠٩ | ك الأنعام | ٦ |
| | سيصيب الذين أجرموا صغار عند الله وعذاب شديد | ١٢٤ | ك « | ٦ |
| | لهم دار السلام عند ربهم ... ... ... ... ... ... | ١٢٧ | ك « | ٦ |
| | وأقيموا وجوهكم عند كل مسجد وادعوه مخلصين له الدين | ٢٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | يا بنى آدم خذوا زينتكم عند كل مسجد ... ... ... | ٣١ | ك « | ٧ |
| | ألا إنما طائرهم عند الله ولكن أكثرهم لا يعلمون ... | ١٣١ | ك « | ٧ |
| | قل إنما علمها عند ربى لا يجليها لوقتها إلا هو ... | ١٨٧ | ك « | ٧ |
| | قل إنما علمها عند الله ولكن أكثر الناس لا يعلمون | ١٨٧ | ك « | ٧ |
| | إن الذين عند ربك لا يستكبرون عن عبادته ... ... | ٢٠٦ | ك « | ٧ |
| | لهم درجات عند ربهم ومغفرة ورزق كريم ... ... | ٤ | م الأنفال | ٨ |
| | وما النصر إلا من عند الله إن الله عزيز حكيم ... | ١٠ | م « | ٨ |
| | إن شر الدواب عند الله الصم البكم الذين لا يعقلون | ٢٢ | م « | ٨ |
| | وما كان صلاتهم عند البيت إلا مكاء وتصدية ... | ٣٥ | ك « | ٨ |
| | إن شر الدواب عند الله الذين كفروا فهم لا يؤمنون | ٥٥ | م « | ٨ |
| | كيف يكون للمشركين عهد عند الله ... ... ... ... | ٧ | م التوبة | ٩ |
| | وعند رسوله ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | م « | ٩ |
| | إلا الذين عاهدتم عند المسجد الحرام ... ... ... | ٧ | م « | ٩ |
| | لا يستوون عند الله والله لا يهدى القوم الظالمين ... | ١٩ | م « | ٩ |
| | وجاهدوا فى سبيل الله بأموالهم وأنفسهم أعظم درجة عند الله ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | م « | ٩ |
| | إن عدة الشهور عند الله اثنا عشر شهرا فى كتاب الله | ٣٦ | م « | ٩ |
| | ويتخذ ما ينفق قربات عند الله وصلوات الرسول ... | ٩٩ | م « | ٩ |
| | وبشر الذين آمنوا أن لهم قدم صدق عند ربهم ... | ٢ | ك يونس | ١٠ |
| | ويقولون هؤلاء شفعاؤنا عند الله ... ... ... ... | ١٨ | ك « | ١٠ |
| | مسومة عند ربك وما هى من الظالمين ببعيد ... ... | ٨٣ | ك هود | ١١ |
| | قالوا يا أبانا إنا ذهبنا نستبق وتركنا يوسف عند متاعنا | ١٧ | ك يوسف | ١٢ |
| | وقال للذى ظن أنه ناج منهما اذكرنى عند ربك ... | ٤٢ | ك « | ١٢ |
| | ربنا إنى أسكنت من ذريتى بواد غير ذى زرع عند بيتك المحرم | ٣٧ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | إنما عند الله هو خير لكم إن كنتم تعلمون ... ... | ٩٥ | ك النحل | ١٦ |
| | ما عندكم ينفد وما عند الله باق ... ... ... ... | ٩٦ | ك « | ١٦ |
| | كل ذلك كان سيئه عند ربك مكروها ... ... ... | ٣٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| | والباقيات الصالحات خير عند ربك ثوابا وخير أملا | ٤٦ | ك الكهف | ١٨ |
| | وكان يأمر أهله بالصلاة والزكاة وكان عند ربه مرضيا | ٥٥ | ك مريم | ١٩ |
| | والباقيات الصالحات خير عند ربك ثوابا وخير مردا | ٧٦ | ك « | ١٩ |
| | أطلع الغيب أم اتخذ عند الرحمن عهدا ... ... ... | ٧٨ | ك « | ١٩ |
| | لا يملكون الشفاعة إلا من اتخذ عند الرحمن عهدا | ٨٧ | ك « | ١٩ |
| | قال علمها عند ربى فى كتاب لا يضل ربى ولا ينسى | ٥٢ | ك طه | ٢٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عِنْدَ: | ذلك ومن يعظم حرمات الله فهو خير له عند ربه ... | ٣٠ | م الحج | ٢٢ |
| | وإن يوما عند ربك كألف سنة مما تعدون ... ... | ٤٧ | م « | ٢٢ |
| | ومن يدع مع الله إلها آخر لا برهان له به فإنما حسابه عند ربه | ١١٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فإذ لم يأتوا بالشهداء فأولئك عند الله هم الكاذبون | ١٣ | م النور | ٢٤ |
| | وتحسبونه هينا وهو عند الله عظيم ... ... ... ... | ١٥ | م « | ٢٤ |
| | فإذا دخلتم بيوتا فسلموا على أنفسكم تحية من عند الله | ٦١ | م « | ٢٤ |
| | قالوا اطيرنا بك وبمن معك قال طائركم عند الله ... | ٤٧ | ك النمل | ٢٧ |
| | قل فأتوا بكتاب من عند الله هو أهدى منهما أتبعه | ٤٩ | ك القصص | ٢٨ |
| | وما عند الله خير وأبقى أفلا تعقلون ... ... ... | ٦٠ | ك « | ٢٨ |
| | فابتغوا عند الله الرزق واعبدوه واشكروا له ... ... | ١٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | قل إنما الآيات عند الله وإنما أنا نذير مبين ... | ٥٠ | ك « | ٢٩ |
| | وما آتيتم من ربا ليربوا فى أموال الناس فلا يربوا عند الله | ٣٩ | ك الروم | ٣٠ |
| | ولو ترى إذ المجرمون ناكسوا رءوسهم عند ربهم | ١٢ | ك السجدة | ٣٢ |
| | ادعوهم لآبائهم هو أقسط عند الله ... ... ... ... | ٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | إن ذلكم كان عند الله عظيما ... ... ... ... ... | ٥٣ | م « | ٣٣ |
| | يسئلك الناس عن الساعة قل إنما علمها عند الله ... | ٦٣ | م « | ٣٣ |
| | فبرأه الله مما قالوا وكان عند الله وجيها ... ... ... | ٦٩ | م « | ٣٣ |
| | ولو ترى إذ الظالمون موقوفون عند ربهم ... ... | ٣١ | ك سبإ | ٣٤ |
| | ولا يزيد الكافرين كفرهم عند ربهم إلا مقتا ... | ٣٩ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ثم إنكم يوم القيامة عند ربكم تختصمون... ... ... | ٣١ | ك الزمر | ٣٩ |
| | لهم ما يشاءون عند ربهم ذلك جزاء المحسنين ... ... | ٣٤ | ك « | ٣٩ |
| | الذين يجادلون فى آيات الله بغير سلطان أتاهم كبر مقتا عند الله | ٣٥ | ك غافر | ٤٠ |
| | وعند الذين آمنوا ... ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك « | ٤٠ |
| | فإن استكبروا فالذين عند ربك يسبحون له بالليل والنهار | ٣٨ | ك فصلت | ٤١ |
| | قل أرأيتم إن كان من عند الله ثم كفرتم به ... ... | ٥٢ | ك « | ٤١ |
| | حجتهم داحضة عند ربهم وعليهم غضب ... ... ... | ١٦ | ك الشورى | ٤٢ |
| | لهم ما يشاءون عند ربهم ذلك هو الفضل الكبير ... | ٢٢ | ك « | ٤٢ |
| | وما عند الله خير وأبقى للذين آمنوا وعلى ربهم يتوكلون | ٣٦ | ك « | ٤٢ |
| | وإن كل ذلك لما متاع الحياة الدنيا والآخرة عند ربك للمتقين | ٣٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | قل أرأيتم إن كان من عند الله وكفرتم به... ... ... | ١٠ | م الأحقاف | ٤٦ |
| | قال إنما العلم عند الله وأبلغكم ما أرسلت به ... ... | ٢٣ | ك « | ٤٦ |
| | ويكفر عنهم سيئاتهم وكان ذلك عند الله فوزا عظيما | ٥ | م الفتح | ٤٨ |
| | إن الذين يغضون أصواتهم عند رسول الله أولئك الذين امتحن الله قلوبهم للتقوى ... ... ... | ٣ | م الحجرات | ٤٩ |
| | إن أكرمكم عند الله أتقاكم إن الله عليم خبير ... ... | ١٣ | م « | ٤٩ |
| | لنرسل عليهم حجارة من طين . مسومة عند ربك للمسرفين | ٣٤ | ك الذاريات | ٥١ |
| | ولقد رآه نزلة أخرى . عند سدرة المنتهى ... ... | ١٤ | ك النجم | ٥٣ |
| | إن المتقين فى جنات ونهر . فى مقعد صدق عند مليك مقتدر | ٥٥ | ك القمر | ٥٤ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عِنْدَ | : والشهداء عند ربهم لهم أجرهم ونورهم ... ... ... | الحديد | ١٩ م | ٥٧ |
| | كبر مقتا عند الله أن تقولوا مالا تفعلون ... ... | الصف | ٣ م | ٦١ |
| | قل ما عند الله خير من اللهو ومن التجارة ... ... | الجمعة | ١١ م | ٦٢ |
| | هم الذين يقولون لا تنفقوا على من عند رسول الله | المنافقون | ٧ م | ٦٣ |
| | قل إنما العلم عند الله وإنما أنا نذير مبين ... ... | الملك | ٢٦ ك | ٦٧ |
| | إن للمتقين عند ربهم جنات النعيم ... ... ... | القلم | ٣٤ ك | ٦٨ |
| | وما تقدموا لأنفسكم من خير تجدوه عند الله هو خيرا | المزمل | ٢٠ م | ٧٣ |
| | إنه لقول رسول كريم . ذى قوة عند ذى العرش مكين | التكوير | ٢٠ ك | ٨١ |
| عِنْدَكَ | : وإن تصبهم سيئة يقولوا هذه من عندك ... ... | النساء | ٧٨ م | ٤ |
| (٩) | فإذا برزوا من عندك بيت طائفة منهم غير الذى تقول | | ٨١ م | « ٤ |
| | قالوا يا موسى ادع لنا ربك بما عهد عندك ... ... | الأعراف | ١٣٤ ك | ٧ |
| | إن كان هذا هو الحق من عندك فأمطر علينا حجارة من السماء | الأنفال | ٣٢ ك | ٨ |
| | إما يبلغن عندك الكبر أحدهما أو كلاهما فلا تقل لهما أف | الإسراء | ٢٣ ك | ١٧ |
| | فإن أتممت عشرا فمن عندك ... ... ... ... ... | القصص | ٢٧ ك | ٢٨ |
| | وقالوا يأيها الساحر ادع لنا ربك بما عهد عندك ... ... | الزخرف | ٤٩ ك | ٤٣ |
| | حتى إذا خرجوا من عندك قالوا للذين أوتوا العلم ماذا قال آنفا | محمد | ١٦ م | ٤٧ |
| | إذ قالت رب ابن لى عندك بيتا فى الجنة ... ... ... | التحريم | ١١ م | ٦٦ |
| عِنْدَكُمْ | : قل هل عندكم من علم فتخرجوه لنا ... ... ... | الأنعام | ١٤٨ ك | ٦ |
| (٣) | إن عندكم من سلطان بهذا أتقولون على الله ما لا تعلمون | يونس | ٦٨ ك | ١٠ |
| | ما عندكم ينفد وما عند الله باق ... ... ... ... | النحل | ٩٦ ك | ١٦ |
| عِنْدَنَا | : لو كانوا عندنا ما ماتوا وما قتلوا ... ... ... | آل عمران | ١٥٦ م | ٣ |
| (١٥) | فلما جاءهم الحق من عندنا قالوا إن هذا لسحر مبين | يونس | ٧٦ ك | ١٠ |
| | وإن من شىء إلا عندنا خزائنه وما ننزله إلا بقدر معلوم | الحجر | ٢١ ك | ١٥ |
| | فوجدا عبدا من عبادنا آتيناه رحمة من عندنا ... ... | الكهف | ٦٥ ك | ١٨ |
| | وآتيناه أهله ومثلهم معهم رحمة من عندنا ... ... ... | الأنبياء | ٨٤ ك | ٢١ |
| | فلما جاءهم الحق من عندنا قالوا لولا أوتى مثل ما أوتى موسى | القصص | ٤٨ ك | ٢٨ |
| | وما أموالكم ولا أولادكم بالتى تقربكم عندنا زلفى | سبإ | ٣٧ ك | ٣٤ |
| | وإن كانوا ليقولون . لو أن عندنا ذكرا من الأولين | الصافات | ١٦٨ ك | ٣٧ |
| | فغفرنا له ذلك وإن له عندنا لزلفى وحسن مآب ... | ص | ٢٥ ك | ٣٨ |
| | وإن له عندنا لزلفى وحسن مآب ... ... ... ... | « | ٤٠ ك | ٣٨ |
| | وإنهم عندنا لمن المصطفين الأخيار ... ... ... | « | ٤٧ ك | ٣٨ |
| | فلما جاءهم الحق من عندنا قالوا اقتلوا أبناء الذين آمنوا معه | غافر | ٢٥ ك | ٤٠ |
| | أمرا من عندنا إنا كنا مرسلين ... ... ... ... | الدخان | ٥ ك | ٤٤ |
| | قد علمنا ما تنقص الأرض منهم وعندنا كتاب حفيظ | ق | ٤ ك | ٥٠ |
| | نعمة من عندنا كذلك نجزى من شكر ... ... ... | القمر | ٣٥ ك | ٥٤ |
| عِنْدَهُ | : ومن أظلم ممن كتم شهادة عنده من الله ... ... ... | البقرة | ١٤٠ م | ٢ |
| (٢٧) | من ذا الذى يشفع عنده إلا بإذنه ... ... ... | « | ٢٥٥ م | ٢ |
| | ذلك متاع الحياة الدنيا والله عنده حسن المآب ... | آل عمران | ١٤ م | ٣ |
| عِنْدَهُ | : والله عنده حسن الثواب ... ... ... ... ... | آل عمران | ١٩٥ م | ٣ |
| | فعسى الله أن يأتى بالفتح أو أمر من عنده ... ... | المائدة | ٥٢ م | ٥ |
| | هو الذى خلقكم من طين ثم قضى أجلا وأجل مسمى عنده | الأنعام | ٢ ك | ٦ |
| | وعنده مفاتح الغيب لا يعلمها إلا هو ... ... ... | « | ٥٩ ك | ٦ |
| | وأن الله عنده أجر عظيم ... ... ... ... ... | الأنفال | ٢٨ م | ٨ |
| | خالدين فيها أبدا إن الله عنده أجر عظيم ... ... | التوبة | ٢٢ م | ٩ |
| | ونحن نتربص بكم أن يصيبكم الله بعذاب من عنده أو بأيدينا | « | ٥٢ م | ٩ |
| | أرأيتم إن كنت على بينة من ربى وآتانى رحمة من عنده | هود | ٢٨ ك | ١١ |
| | قال معاذ الله أن نأخذ إلا من وجدنا متاعنا عنده ... | يوسف | ٧٩ ك | ١٢ |
| | وكل شىء عنده بمقدار ... ... ... ... ... ... | الرعد | ٨ م | ١٣ |
| | يمحوا الله ما يشاء ويثبت وعنده أم الكتاب ... ... | « | ٣٩ م | ١٣ |
| | قل كفى بالله شهيدا بينى وبينكم ومن عنده علم الكتاب | « | ٤٣ م | ١٣ |
| | ومن عنده لا يستكبرون عن عبادته ولا يستحسرون ... | الأنبياء | ١٩ ك | ٢١ |
| | حتى إذا جاءه لم يجده شيئا ووجد الله عنده فوفاه حسابه | النور | ٣٩ م | ٢٤ |
| | قال الذى عنده علم من الكتاب أنا آتيك به قبل أن | | | |
| | يرتد إليك طرفك ... ... ... ... ... ... | النمل | ٤٠ ك | ٢٧ |
| | فلما رآه مستقرا عنده قال هذا من فضل ربى ليبلونى | « | ٤٠ ك | ٢٧ |
| | وقال موسى ربى أعلم بمن جاء بالهدى من عنده ... ... | القصص | ٣٧ ك | ٢٨ |
| | إن الله عنده علم الساعة وينزل الغيث... ... ... ... | لقمان | ٣٤ ك | ٣١ |
| | ولا تنفع الشفاعة عنده إلا لمن أذن له ... ... ... | سبإ | ٢٣ ك | ٣٤ |
| | ولئن رجعت إلى ربى إن لى عنده للحسنى ... ... ... | فصلت | ٥٠ ك | ٤١ |
| | وعنده علم الساعة وإليه ترجعون ... ... ... ... | الزخرف | ٨٥ ك | ٤٣ |
| | أعنده علم الغيب فهو يرى ... ... ... ... ... | النجم | ٣٥ ك | ٥٣ |
| | إنما أموالكم وأولادكم فتنة والله عنده أجر عظيم ... | التغابن | ١٥ م | ٦٤ |
| | وما لأحد عنده من نعمة تجزى ... ... ... ... ... | الليل | ١٩ ك | ٩٢ |
| عِنْدَهَا | : كلما دخل عليها زكريا المحراب وجد عندها رزقا | آل عمران | ٣٧ م | ٣ |
| (٣) | وجدها تغرب فى عين حمئة ووجد عندها قوما ... ... | الكهف | ٨٦ م | ١٨ |
| | عند سدرة المنتهى . عندها جنة المأوى ... ... ... | النجم | ١٥ ك | ٥٣ |
| عِنْدَهُمُ | : أيبتغون عندهم العزة فإن العزة لله جميعا ... ... | النساء | ١٣٩ م | ٤ |
| (١٠) | وكيف يحكمونك وعندهم التوراة فيها حكم الله ... | المائدة | ٤٣ م | ٥ |
| | الذى يجدونه مكتوبا عندهم فى التوراة والإنجيل ... | الأعراف | ١٥٧ ك | ٧ |
| | وعندهم قاصرات الطرف عين ... ... ... ... ... | الصافات | ٤٨ ك | ٣٧ |
| | أم عندهم خزائن رحمة ربك العزيز الوهاب ... ... | ص | ٩ ك | ٣٨ |
| | وعندهم قاصرات الطرف أتراب ... ... ... ... | « | ٥٢ ك | ٣٨ |
| | فلما جاءتهم رسلهم بالبينات فرحوا بما عندهم من العلم | غافر | ٨٣ ك | ٤٠ |
| | أم عندهم خزائن ربك أم هم المصيطرون ... ... | الطور | ٣٧ ك | ٥٢ |
| | أم عندهم الغيب فهم يكتبون ... ... ... ... ... | « | ٤١ ك | ٥٢ |
| | أم عندهم الغيب فهم يكتبون ... ... ... ... ... | القلم | ٤٧ ك | ٦٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عِنْدِى | : قل لا أقول لكم عندى خزائن الله ولا أعلم الغيب | ٥٠ | ك الأنعام | ٦ |
| (٦) | ما عندى ما تستعجلون به إن الحكم إلا لله ... ... | ٥٧ | ك « | ٦ |
| | قل لو أن عندى ما تستعجلون به لقضى الأمر بينى وبينكم | ٥٨ | ك « | ٦ |
| | ولا أقول لكم عندى خزائن الله ولا أعلم الغيب ... | ٣١ | ك هـود | ١١ |
| | فإن لم تأتونى به فلا كيل لكم عندى ولا تقربون ... | ٦٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | قال إنما أوتيته على علم عندى ... ... ... ... | ٧٨ | ك القصص | ٢٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| عُنُقِكَ | : ولا تجعل يدك مغلولة إلى عنقك ... ... ... | ٢٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| عُنُقِهِ | : وكل إنسان ألزمناه طائره فى عنقه ... ... ... | ١٣ | ك « | ١٧ |
| الأَعْنَاقِ | : فاضربوا فوق الأعناق واضربوا منهم كل بنان | ١٢ | م الأنفال | ٨ |
| (٣) | وجعلنا الأغلال فى أعناق الذين كفروا ... ... | ٣٣ | ك سبإ | ٣٤ |
| | ردوها علىّ فطفق مسحا بالسوق والأعناق ... ... | ٣٣ | ك ص | ٣٨ |
| أَعْنَاقُهُمْ | : وأولئك الأغلال فى أعناقهم ... ... ... | ٥ | م الرعد | ١٣ |
| (٤) | فظلت أعناقهم لها خاضعين ... ... ... ... | ٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | إنا جعلنا فى أعناقهم أغلالا ... ... ... ... | ٨ | ك يس | ٣٦ |
| | إذ الأغلال فى أعناقهم والسلاسل يسحبون ... ... | ٧١ | ك غافر | ٤٠ |
| | ✦✦✦ | | | |
| الْعَنْكَبُوتِ | : كمثل العنكبوت اتخذت بيتا ... ... ... | ٤١ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| (٢) | وإن أوهن البيوت لبيت العنكبوت ... ... ... | ٤١ | ك « | ٢٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| عَنَتِ | : وعنت الوجوه للحى القيوم وقد خاب من حمل ظلما | ١١١ | ك طه | ٢٠ |
| | ✦✦✦ | | | |
| عَهِدَ | : إن الله عهد إلينا ألا نؤمن لرسول حتى يأتينا بقربان | | | |
| (٣) | تأكله النار ... ... ... ... ... ... | ١٨٣ | م آل عمران | ٣ |
| | قالوا يا موسى ادع لنا ربك بما عهد عندك... ... ... | ١٣٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | وقالوا يا أيه الساحر ادع لنا ربك بما عهد عندك... ... | ٤٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| عَهِدْنَا | : وعهدنا إلى إبراهيم وإسمعيل أن طهرا بيتى للطائفين | ١٢٥ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | ولقد عهدنا إلى آدم من قبل فنسى ولم نجد له عزما... | ١١٥ | ك طه | ٢٠ |
| أَعْهَدْ | : ألم أعهد إليكم يا بنى آدم أن لا تعبدوا الشيطان ... | ٦٠ | ك يس | ٣٦ |
| عَاهَدَ | : ومنهم من عاهد الله لئن آتانا من فضله لنصدقن ... | ٧٥ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | ومن أوفى بما عاهد عليه الله فسيؤتيه أجرا عظيما... ... | ١٠ | م الفتح | ٤٨ |
| عَاهَدتَّ | : الذين عاهدت منهم ثم ينقضون عهدهم فى كل مرة | ٥٦ | م الأنفال | ٨ |
| عَاهَدتُّم | : براءة من الله ورسوله إلى الذين عاهدتم من المشركين | ١ | م التوبة | ٩ |
| (٤) | إلا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ... | ٤ | م « | ٩ |
| | إلا الذين عاهدتم عند المسجد الحرام فما استقاموا | | | |
| | لكم فاستقيموا لهم ... ... ... ... ... | ٧ | م « | ٩ |
| | وأوفوا بعهد الله إذا عاهدتم ... ... ... ... | ٩١ | ك النحل | ١٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| عَاهَدُوا | : أو كلما عاهدوا عهدا نبذه فريق منهم ... ... | ١٠٠ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | والموفون بعهدهم إذا عاهدوا ... ... ... ... | ١٧٧ | م « | ٢ |
| | ولقد كانوا عاهدوا الله من قبل لا يولون الأدبار ... | ١٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | من المؤمنين رجال صدقوا ما عاهدوا الله عليه... ... | ٢٣ | م « | ٣٣ |
| عَهْدُ | : الذين ينقضون عهد الله من بعد ميثاقه ... ... ... | ٢٧ | م البقرة | ٢ |
| (١٣) | إن الذين يشترون بعهد الله وأيمانهم ثمنا قليلا | | | |
| | أولئك لا خلاق لهم فى الآخرة ... ... ... ... | ٧٧ | م آل عمران | ٣ |
| | وإذا قلتم فاعدلوا ولو كان ذا قربى وبعهد الله أوفوا | ١٥٢ | م الأنعام | ٦ |
| | وما وجدنا لأكثرهم من عهد وإن وجدنا أكثرهم لفاسقين | ١٠٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | كيف يكون للمشركين عهد عند الله وعند رسوله ... | ٧ | م التوبة | ٩ |
| | الذين يوفون بعهد الله ولا ينقضون الميثاق ... ... | ٢٠ | م الرعد | ١٣ |
| | والذين ينقضون عهد الله من بعد ميثاقه ... ... ... | ٢٥ | م « | ١٣ |
| | وأوفوا بعهد الله إذا عاهدتم ... ... ... ... | ٩١ | ك النحل | ١٦ |
| | ولا تشتروا بعهد الله ثمنا قليلا ... ... ... ... | ٩٥ | ك « | ١٦ |
| | وأوفوا بالعهد ... ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| | إن العهد كان مسئولا ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك « | ١٧ |
| | أفطال عليكم العهد أم أردتم أن يحل عليكم غضب من ربكم | ٨٦ | ك طه | ٢٠ |
| | وكان عهد الله مسئولا ... ... ... ... ... ... | ١٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| عَهْدًا | : قل أتخذتم عند الله عهدا فلن يخلف الله عهده | ٨٠ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | أو كلما عاهدوا عهدا نبذه فريق منهم... ... ... | ١٠٠ | م « | ٢ |
| | أطلع الغيب أم اتخذ عند الرحمن عهدا ... ... ... | ٧٨ | ك مريم | ١٩ |
| | لا يملكون الشفاعة إلا من اتخذ عند الرحمن عهدا | ٨٧ | ك « | ١٩ |
| بِعَهْدِكُمْ | : وأوفوا بعهدى أوف بعهدكم وإياى فارهبون ... | ٤٠ | م البقرة | ٢ |
| عَهْدَهُ | : قل أتخذتم عند الله عهدا فلن يخلف الله عهده | ٨٠ | م « | ٢ |
| (٣) | بل من أوفى بعهده واتقى فإن الله يحب المتقين... ... | ٧٦ | م آل عمران | ٣ |
| | ومن أوفى بعهده من الله ... ... ... ... ... | ١١١ | م التوبة | ٩ |
| عَهْدِهِمْ | : والموفون بعهدهم إذا عاهدوا ... ... ... ... | ١٧٧ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | الذين عاهدت منهم ثم ينقضون عهدهم فى كل مرة | ٥٦ | م الأنفال | ٨ |
| | فأتموا إليهم عهدهم إلى مدتهم ... ... ... ... | ٤ | م التوبة | ٩ |
| | وإن نكثوا أيمانهم من بعد عهدهم وطعنوا فى دينكم | | | |
| | فقاتلوا أئمة الكفر ... ... ... ... ... ... | ١٢ | م « | ٩ |
| | والذين هم لأماناتهم وعهدهم راعون ... ... ... | ٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | والذين هم لأماناتهم وعهدهم راعون ... ... ... | ٣٢ | ك المعارج | ٧٠ |
| عَهْدِى | : وأوفوا بعهدى أوف بعهدكم وإياى فارهبون | ٤٠ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | قال ومن ذريتى قال لا ينال عهدى الظالمين ... ... | ١٢٤ | م « | ٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| كَالْعِهْنِ | : يوم تكون السماء كالمهل ، وتكون الجبال كالعهن | ٩ | ك المعارج | ٧٠ |
| (٢) | وتكون الجبال كالعهن المنفوش ... ... ... ... | ٥ | ك القارعة | ١٠١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| عِوَجَ | يومئذ يتبعون الداعى لا عوج له ... ... ... ... | ١٠٨ | ك طـه | ٢٠ |
| (٢) | قرآنا عربيا غير ذى عوج لعلهم يتقون ... ... .. | ٢٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| عِوَجًا | لم تصـدون عن سبيل الله من آمن تبغونها عوجا | ٩٩ | م آل عمران | ٣ |
| (٧) | الذين يصدون عن سبيل الله ويبغونها عوجا... ... | ٤٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | وتصـدون عن سبيل الله من آمن به وتبغونها عوجا | ٨٦ | ك « | ٧ |
| | الذين يصدون عن سبيل الله ويبغونها عوجا ... ... | ١٩ | ك هـود | ١١ |
| | ويصدون عن سبيل الله ويبغونها عوجا أولئك فى ضلال بعيد | ٣ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | الحمد لله الذى أنزل على عبده الكتاب ولم يجعل له عوجا | ١ | ك الكهف | ١٨ |
| | لا ترى فيها عوجا ولا أمتا ... ... ... ... ... | ١٠٧ | ك طـه | ٢٠ |
| | ✦✦✦ | | | |
| عَادَ | ومن عاد فأولئك أصحاب النار هم فيها خالدون... ... | ٢٧٥ | م البقـرة | ٢ |
| (٣) | ومن عاد فينتقم الله منه والله عزيز ذو انتقام ... ... | ٩٥ | م المائدة | ٥ |
| | والقمر قدرناه منازل حتى عاد كالعرجون القديم ... | ٣٩ | ك يس | ٣٦ |
| لَعَادُوا | ولو ردوا لعادوا لما نهوا عنه وإنهم لكاذبون | ٢٨ | ك الأنعام | ٦ |
| عُدتُّمْ | وإن عدتم عدنا وجعلنا جهنم للكافرين حصيرا ... | ٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| عُدْنَا | قد افترينا على الله كذبا إن عدنا فى ملتكم... ... ... | ٨٩ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | وإن عدتم عدنا وجعلنا جهنم للكافرين حصيرا ... | ٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ربنا أخرجنا منها فإن عدنا فإنا ظالمون ... ... ... | ١٠٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| لَتَعُودُنَّ | أو لتعودن فى ملتنا... ... ... ... ... ... | ٨٨ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | لنخرجنكم من أرضنا أو لتعودن فى ملتنا ... ... ... | ١٣ | ك إبراهيم | ١٤ |
| تَعُودُوا | وإن تعودوا نعد ولن تغنى عنكم فئتكم شيئا ولو كثرت | ١٩ | م الأنفال | ٨ |
| (٢) | يعظكم الله أن تعودوا لمثله أبدا إن كنتم مؤمنين | ١٧ | م النور | ٢٤ |
| تَعُودُونَ | وادعوه مخلصين له الدين كما بدأكم تعودون ... | ٢٩ | ك الأعراف | ٧ |
| نَعُدْ | وإن تعودوا نعد ولن تغنى عنكم فئتكم شيئا ولو كثرت | ١٩ | م الأنفال | ٨ |
| نَعُودَ | وما يكون لنا أن نعود فيها إلا أن يشاء الله ربنا | ٨٩ | ك الأعراف | ٧ |
| يَعُودُوا | وإن يعودوا فقد مضت سنة الأولين ... ... | ٣٨ | م الأنفال | ٨ |
| يَعُودُونَ | ثم يعودون لما قالوا فتحرير رقبة من قبل أن يتماسا | ٣ | م المجادلة | ٥٨ |
| (٢) | ألم تر إلى الذين نهوا عن النجوى ثم يعودون لما نهوا عنه | ٨ | م « | ٥٨ |
| نُعِيدُكُمْ | منها خلقناكم وفيها نعيدكم ومنها نخرجكم تارة أخرى | ٥٥ | ك طـه | ٢٠ |
| نُعِيدُهُ | كما بدأنا أول خلق نعيده ... ... ... ... ... | ١٠٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| سَنُعِيدُهَا | قال خذها ولا تخف سنعيدها سيرتها الأولى | ٢١ | ك طـه | ٢٠ |
| يُعِيدُ | قل جاء الحق وما يبدئ الباطل وما يعيد ... ... | ٤٩ | ك سبأ | ٣٤ |
| (٢) | إن بطش ربك لشديد . إنه هو يبدئ ويعيد ... | ١٣ | ك البروج | ٨٥ |
| يُعِيدَكُمْ | أم أمنتم أن يعيدكم فيه تارة أخرى ... ... ... | ٦٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٢) | ثم يعيدكم فيها ويخرجكم إخراجا ... ... ... ... | ١٨ | ك نوح | ٧١ |
| يُعِيدُنَا | فسيقولون من يعيدنا قل الذى فطركم أول مرة | ٥١ | ك الإسراء | ١٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يُعِيدُهُ | إنه يبدؤا الخلق ثم يعيده ... ... ... ... ... | ٤ | ك يونس | ١٠ |
| (٧) | قل هل من شركائكم من يبدؤا الخلق ثم يعيده ... | ٣٤ | ك « | ١٠ |
| | قل الله يبدؤا الخلق ثم يعيده فأنى تؤفكون ... ... | ٣٤ | ك « | ١٠ |
| | أمن يبدؤا الخلق ثم يعيده ومن يرزقكم من السماء والأرض | ٦٤ | ك النمل | ٢٧ |
| | أو لم يروا كيف يبدئ الله الخلق ثم يعيده ... ... | ١٩ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | الله يبدؤا الخلق ثم يعيده ثم إليه ترجعون ... ... | ١١ | ك الروم | ٣٠ |
| | وهو الذى يبدؤا الخلق ثم يعيده وهو أهون عليه ... | ٢٧ | ك « | ٣٠ |
| يُعِيدُوكُمْ | إنهم إن يظهروا عليكم يرجموكم أو يعيدوكم فى ملتهم | ٢٠ | ك الكهف | ١٨ |
| أُعِيدُوا | كلما أرادوا أن يخرجوا منها من غم أعيدوا فيها | ٢٢ | م الحج | ٢٢ |
| (٢) | كلما أرادوا أن يخرجوا منها أعيدوا فيها ... ... ... | ٢٠ | م السجدة | ٣٢ |
| عَائِدُونَ | إنا كاشفوا العذاب قليلا إنكم عائدون ... ... | ١٥ | ك الدخان | ٤٤ |
| مَعَادٍ | إن الذى فرض عليك القرآن لرادك إلى معاد ... | ٨٥ | م القصص | ٢٨ |
| عَادٍ | وإلى عاد أخاهم هودا قال يا قوم اعبدوا الله ... | ٦٥ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢٠) | واذكروا إذ جعلكم خلفاء من بعد عاد وبوأكم فى الأرض | ٧٤ | ك « | ٧ |
| | ألم يأتهم نبأ الذين من قبلهم قوم نوح وعاد وثمود | ٧٠ | م التوبة | ٩ |
| | وإلى عاد أخاهم هودا قال يا قوم اعبدوا الله ... ... | ٥٠ | ك هـود | ١١ |
| | وتلك عاد جحدوا بآيات ربهم وعصوا رسله... ... | ٥٩ | ك « | ١١ |
| | ألا بعدا لعاد قوم هـود ... ... ... ... ... ... | ٦٠ | ك « | ١١ |
| | ألم يأتكم نبأ الذين من قبلكم قوم نوح وعاد وثمود | ٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وإن يكذبوك فقد كذبت قبلهم قوم نوح وعاد وثمود | ٤٢ | م الحج | ٢٢ |
| | كذبت عاد المرسلين ... ... ... ... ... ... | ١٢٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | كذبت قبلهم قوم نوح وعاد وفرعون ذو الأوتاد | ١٢ | ك ص | ٣٨ |
| | مثل دأب قوم نوح وعاد وثمود والذين من بعدهم | ٣١ | ك غافر | ٤٠ |
| | فإن أعرضوا فقل أنذرتكم صاعقة مثل صاعقة عاد وثمود | ١٣ | ك فصلت | ٤١ |
| | فأما عاد فاستكبروا فى الأرض بغير الحق ... ... | ١٥ | ك « | ٤١ |
| | واذكر أخا عاد إذ أنذر قومه بالأحقاف ... ... | ٢١ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | كذبت قبلهم قوم نوح وأصحاب الرس وثمود . وعاد | ١٣ | ك ق | ٥٠ |
| | وفى عاد إذ أرسلنا عليهم الريح العقيم ... ... ... | ٤١ | ك الذاريات | ٥١ |
| | كذبت عاد فكيف كان عذابى ونذر... ... ... ... | ١٨ | ك القمر | ٥٤ |
| | كذبت ثمود وعاد بالقارعة ... ... ... ... ... | ٤ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | وأما عاد فأهلكوا بريح صرصر عاتية ... ... ... | ٦ | ك « | ٦٩ |
| | ألم تر كيف فعل ربك بعاد ... ... ... ... ... | ٦ | ك الفجر | ٨٩ |
| عَادًا | ألا إن عادا كفروا ربهم ألا بعدا لعاد قوم هود | ٦٠ | ك هـود | ١١ |
| (٤) | وعادا وثمودا وأصحاب الرس وقرونا بين ذلك كثيرا | ٣٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وعادا وثمودا وقد تبين لكم من مساكنهم ... ... | ٣٨ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وأنه أهلك عادا الأولى ... ... ... ... ... ... | ٥٠ | ك النجم | ٥ |
| عِيدًا | تكون لنا عيدا لأولنا وآخرنا وآية منك ... ... ... | ١١٤ | م المائدة | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| عُذْتُ | : إنى عذت بربى وربكم من كل متكبر لا يؤمن بيوم الحساب | ٢٧ | ك غافر | ٤٠ |
| (٢) | وإنى عذت بربى وربكم أن ترجمون ... ... ... | ٢٠ | ك الدخان | ٤٤ |
| أَعُوذُ | : قالوا أتتخذنا هزوا قال أعوذ بالله أن أكون من الجاهلين | ٦٧ | م البقرة | ٢ |
| (٧) | قال رب إنى أعوذ بك أن أسئلك ما ليس لى به علم | ٤٧ | ك هود | ١١ |
| | قالت إنى أعوذ بالرحمن منك إن كنت تقيا ... ... | ١٨ | ك مريم | ١٩ |
| | وقل رب أعوذ بك من همزات الشياطين ... ... | ٩٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وأعوذ بك رب أن يحضرون ... ... ... ... ... | ٩٨ | ك « | ٢٣ |
| | قل أعوذ برب الفلق ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الفلق | ١١٣ |
| | قل أعوذ برب الناس ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الناس | ١١٤ |
| يَعُوذُونَ | : وأنه كان رجال من الإنس يعوذون برجال من الجن | ٦ | ك الجن | ٧٢ |
| أُعِيذُهَا | : وإنى أعيذها بك وذريتها من الشيطان الرجيم | ٣٦ | م آل عمران | ٣ |
| فَاسْتَعِذْ | : وإما ينزغنك من الشيطان نزغ فاستعذ بالله | ٢٠٠ | ك الأعراف | ٧ |
| (٤) | فإذا قرأت القرآن فاستعذ بالله من الشيطان الرجيم... | ٩٨ | ك النحل | ١٦ |
| | إن فى صدورهم إلا كبر ما هم ببالغيه فاستعذ بالله ... | ٥٦ | م غافر | ٤٠٠ |
| | وإما ينزغنك من الشيطان نزغ فاستعذ بالله ... ... | ٣٦ | ك فصلت | ٤١ |
| مَعَاذَ | : قال معاذ الله إنه ربى أحسن مثواى ... ... ... | ٢٣ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | قال معاذ الله أن نأخذ إلا من وجدنا متاعنا عنده... | ٧٩ | ك « | ١٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| عَوْرَةٌ | : ويستأذن فريق منهم النبى يقولون إن بيوتنا عورة | ١٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| (٢) | وما هى بعورة إن يريدون إلا فرارا ... ... ... ... | ١٣ | م « | ٣٣ |
| عَوْرَاتٍ | : أو الطفل الذين لم يظهروا على عورات النساء... | ٣١ | م النور | ٢٤ |
| (٢) | ثلاث عورات لكم ليس عليكم ولا عليهم جناح بعدهن | ٥٨ | م « | ٢٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| الْمُعَوِّقِينَ | : قد يعلم الله المعوقين منكم والقائلين لإخوانهم هلم إلينا ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٨ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تَعُولُوا | : ذلك أدنى ألا تعولوا ... ... ... ... ... | ٣ | م النساء | ٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| عَامٍ | : فأماته الله مائة عام ثم بعثه ... ... ... ... ... | ٢٥٩م | البقرة | ٢ |
| (٤) | قال بل لبثت مائة عام فانظر إلى طعامك وشرابك لم يتسنه | ٢٥٩م | « | ٢ |
| | أو لا يرون أنهم يفتنون فى كل عام مرة أو مرتين... | ١٢٦م | التوبة | ٩ |
| | ثم يأتى من بعد ذلك عام فيه يغاث الناس ... ... | ٤٩ | ك يوسف | ١٢ |
| عَامًا | : يضل به الذين كفروا يحلونه عاما ... ... ... ... | ٣٧ | م التوبة | ٩ |
| (٣) | ويحرمونه عاما ليواطئوا عدة ما حرم الله ... ... | ٣٧ | م « | ٩ |
| | فلبث فيهم ألف سنة إلا خمسين عاما ... ... ... | ١٤ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| عَامِهِمْ | : فلا يقربوا المسجد الحرام بعد عامهم هذا ... ... | ٢٨ | م التوبة | ٩ |
| عَامَيْنِ | : حمله أمه وهنا على وهن وفصاله فى عامين ... ... | ١٤ | ك لقمان | ٣١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| أَعَانَهُ | : إن هذا إلا إفك افتراه وأعانه عليه قوم آخرون ... | ٤ . | ك الفرقان | ٢٥ |
| فَأَعِينُونِى | : قال ما مكنى فيه ربى خير فأعينونى بقوة... ... | ٩٥ | م الكهف | ١٨ |
| تَعَاوَنُوا | : ولا تعاونوا على الإثم والعدوان واتقوا الله ... | ٢ | م المائدة | ٥ |
| تَعَاوَنُوا | : وتعاونوا على البر والتقوى ... ... ... ... ... | ٢ | م « | ٥ |
| نَسْتَعِينُ | : إياك نعبد وإياك نستعين ... ... ... ... ... | ٥ | ك الفاتحة | ١ |
| اسْتَعِينُوا | : واستعينوا بالصبر والصلاة ... ... ... ... ... | ٤٥ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | استعينوا بالصبر والصلاة إن الله مع الصابرين ... | ١٥٣م | « | ٢ |
| | قال موسى لقومه استعينوا بالله واصبروا ... ... | ١٢٨ | ك الأعراف | ٧ |
| الْمُسْتَعَانُ | : فصبر جميل والله المستعان على ما تصفون... ... | ١٨ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | قال رب احكم بالحق وربنا الرحمن المستعان على ما تصفون | ١١٢ | ك الأنبياء | ٢١ |
| عَوَانٌ | : قال إنه يقول إنها بقرة لا فارض ولا بكر عوان بين ذلك | ٦٨ | م البقرة | ٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| أَعِيبَهَا | : فأردت أن أعيبها ... ... ... ... ... ... ... | ٧٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| الْعِيرُ | : ثم أذن مؤذن أيتها العير إنكم لسارقون ... ... ... | ٧٠ | ك يوسف | ١٢ |
| (٣) | وسئل القرية التى كنا فيها والعير التى أقبلنا فيها ... ... | ٨٢ | ك « | ١٢ |
| | ولما فصلت العير قال أبوهم إنى لأجد ريح يوسف | ٩٤ | ك « | ١٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| عِيسَى | : وآتينا عيسى ابن مريم البينات وأيدناه بروح القدس | ٨٧ | م البقرة | ٢ |
| (٢٥) | وما أوتى موسى وعيسى وما أوتى النبيون من ربهم | ١٣٦م | « | ٢ |
| | وآتينا عيسى ابن مريم البينات وأيدناه بروح القدس | ٢٥٣م | « | ٢ |
| | إن الله يبشرك بكلمة منه اسمه المسيح عيسى ابن مريم | ٤٥ | م آل عمران | ٣ |
| | فلما أحس عيسى منهم الكفر قال من أنصارى إلى الله | ٥٢ | م « | ٣ |
| | إذ قال الله يا عيسى إنى متوفيك ورافعك إلى... ... | ٥٥ | م « | ٣ |
| | إن مثل عيسى عند الله كمثل آدم خلقه من تراب ... | ٥٩ | م « | ٣ |
| | وما أوتى موسى وعيسى والنبيون من ربهم ... ... | ٨٤ | م « | ٣ |
| | وقولهم إنا قتلنا المسيح عيسى ابن مريم رسول الله ... | ١٥٧م | النساء | ٤ |
| | وأوحينا إلى إبراهيم وإسمعيل وإسحق ويعقوب والأسباط وعيسى وأيوب ويونس وهرون وسليمن | ١٦٣م | « | ٤ |
| | إنما المسيح عيسى ابن مريم رسول الله وكلمته ألقاها إلى مريم | ١٧١م | « | ٤ |
| | وقفينا على آثارهم بعيسى ابن مريم مصدقا لما بين يديه | ٤٦ | م المائدة | ٥ |
| | لعن الذين كفروا من بنى إسرائيل على لسان داود وعيسى ابن مريم ... ... ... ... ... ... | ٧٨ | م « | ٥ |
| | إذ قال الله يا عيسى ابن مريم اذكر نعمتى عليك وعلى والدتك | ١١٠م | « | ٥ |
| | إذ قال الحواريون يا عيسى ابن مريم هل يستطيع ربك أن ينزل علينا مائدة من السماء ... ... ... ... | ١١٢م | « | ٥ |
| | قال عيسى ابن مريم اللهم ربنا أنزل علينا مائدة من السماء | ١١٤م | « | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| عِيسَى | : وإذ قال الله يا عيسى آبن مريم أأنت قلت للناس | | |
| | آتخذونى وأمى إلهين من دون الله ... ... ... | ١١٦ م المائدة | ٥ |
| | وزكريا ويحيى وعيسى وإلياس كل من الصالحين ... | ٨٥ ك الأنعام | ٦ |
| | ذلك عيسى آبن مريم قول الحق الذى فيه يمترون ... | ٣٤ ك مريم | ١٩ |
| | رمنك ومن نوح وإبراهيم وموسى وعيسى آبن مريم | ٧ م الأحزاب | ٣٣ |
| | وما وصينا به إبراهيم وموسى وعيسى ... ... ... | ١٣ ك الشورى | ٤٢ |
| | ولما جاء عيسى بالبينات قال قد جئتكم بالحكمة ... | ٦٣ ك الزخرف | ٤٣ |
| | وقفينا بعيسى آبن مريم وآتيناه الإنجيل ... ... | ٢٧ م الحديد | ٥٧ |
| | وإذ قال عيسى آبن مريم يا بنى إسرائيل إنى رسول الله إليكم | ٦ م الصف | ٦١ |
| | كما قال عيسى آبن مريم للحواريين من أنصارى إلى الله | ١٤ م « | ٦١ |
| | ✦✦✦ | | |
| عِيشَة | : فهو فى عيشة راضية . فى جنة عالية ... ... ... | ٢١ ك الحاقة | ٦٩ |
| (٢) | فأما من ثقلت موازينه . فهو فى عيشة راضية ... ... | ٧ ك القارعة | ١٠١ |
| مَعَاشًا | : وجعلنا النهار معاشا ... ... ... ... ... ... | ١١ ك النبأ | ٧٨ |
| مَعِيشَةً | : ومن أعرض عن ذكرى فإن له معيشة ضنكا ... | ١٢٤ ك طه | ٢٠ |
| مَعِيشَتَهَا | : وكم أهلكنا من قرية بطرت معيشتها ... ... ... | ٥٨ ك القصص | ٢٨ |
| مَعِيشَتَهُم | : نحن قسمنا بينهم معيشتهم فى الحياة الدنيا ... | ٣٢ ك الزخرف | ٤٣ |
| مَعَايِش | : ولقد مكناكم فى الأرض وجعلنا لكم فيها معايش | ١٠ ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | وجعلنا لكم فيها معايش ومن لستم له برازقين ... ... | ٢٠ ك الحجر | ١٥ |
| | ✦✦✦ | | |
| عَائِلًا | : ووجدك عائلا فأغنى ... ... ... ... ... ... | ٨ ك الضحى | ٩٣ |
| عَيْلَةً | : وإن خفتم عيلة فسوف يغنيكم الله من فضله إن شاء | ٢٨ م التوبة | ٩ |
| | ✦✦✦ | | |
| عَيْنٍ | : يرونهم مثليهم رأى العين ... ... ... ... ... | ١٣ م آل عمران | ٣ |
| (٩) | وكتبنا عليهم فيها أن النفس بالنفس والعين ... ... | ٤٥ م المائدة | ٥ |
| | بالعين والأنف بالأنف والأذن بالأذن والسن بالسن | ٤٥ م « | ٥ |
| | حتى إذا بلغ مغرب الشمس وجدها تغرب فى عين حمئة | ٨٦ م الكهف | ١٨ |
| | وقالت آمرأة فرعون قرة عين لى ولك ... ... ... | ٩ ك القصص | ٢٨ |
| | ولسليمان الريح غدوها شهر ورواحها شهر وأسلنا له | | |
| | عين القطر ... ... ... ... ... ... ... | ١٢ ك سبأ | ٣٤ |
| | تصلى نارا حامية . تسقى من عين آنية ... ... ... | ٥ ك الغاشية | ٨٨ |
| | فيها عين جارية ... ... ... ... ... ... ... | ١٢ ك « | ٨٨ |
| | لترون الجحيم . ثم لترونها عين اليقين ... ... ... | ٧ ك التكاثر | ١٠٢ |
| عَيْنًا | : فقلنا آضرب بعصاك الحجر فانفجرت منه آثنتا عشرة عينا | ٦٠ م البقرة | ٢ |
| (٦) | فانبجست منه آثنتا عشرة عينا ... ... ... ... | ١٦٠ ك الأعراف | ٧ |
| | فكلى وآشربى وقرى عينا ... ... ... ... ... | ٢٦ ك مريم | ١٩ |
| | عينا يشرب بها عباد الله يفجرونها تفجيرا ... ... ... | ٦ م الإنسان | ٧٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| عَيْنًا | : عينا فيها تسمى سلسبيلا ... ... ... ... ... | ١٨ م الإنسان | ٧٦ |
| | عينا يشرب بها المقربون ... ... ... ... ... | ٢٨ ك المطففين | ٨٣ |
| عَيْنُهَا | : فرجعناك إلى أمك كى تقر عينها ولا تحزن ... ... | ٤٠ ك طه | ٢٠ |
| (٢) | فرددناه إلى أمه كى تقر عينها ولا تحزن ... ... ... | ١٣ ك القصص | ٢٨ |
| عَيْنِى | : وألقيت عليك محبة منى ولتصنع على عينى ... ... ... | ٣٩ ك طه | ٢٠ |
| عَيْنَاكَ | : ولا تمد عيناك عنهم تريد زينة الحياة الدنيا ... | ٢٨ م الكهف | ١٨ |
| عَيْنَانِ | : فيهما عينان تجريان ... ... ... ... ... ... | ٥٠ م الرحمن | ٥٥ |
| (٢) | فيهما عينان نضاختان ... ... ... ... ... ... | ٦٦ م « | ٥٥ |
| عَيْنَاهُ | : وآبيضت عيناه من الحزن فهو كظيم ... ... ... | ٨٤ ك يوسف | ١٢ |
| عَيْنَيْكَ | : لا تمدن عينيك إلى ما متعنا به أزواجا منهم ... | ٨٨ ك الحجر | ١٥ |
| (٢) | ولا تمدن عينيك إلى ما متعنا به أزواجا منهم ... ... | ١٣١ م طه | ٢٠ |
| عَيْنَيْنِ | : ألم نجعل له عينين . ولسانا وشفتين ... ... ... | ٨ ك البلد | ٩٠ |
| عُيُونٍ | : إن المتقين فى جنات وعيون ... ... ... ... ... | ٤٥ ك الحجر | ١٥ |
| (٩) | فأخرجناهم من جنات وعيون ... ... ... ... ... | ٥٧ ك الشعراء | ٢٦ |
| | أمدكم بأنعام وبنين . وجنات وعيون ... ... ... | ١٣٤ ك « | ٢٦ |
| | أتتركون فى ما ههنا آمنين . فى جنات وعيون ... ... | ١٤٧ ك « | ٢٦ |
| | وجعلنا فيها جنات من نخيل وأعناب وفجرنا فيها من العيون | ٣٤ ك يس | ٣٦ |
| | كم تركوا من جنات وعيون . وزروع ومقام كريم ... | ٢٥ ك الدخان | ٤٤ |
| | إن المتقين فى مقام أمين . فى جنات وعيون ... ... | ٥٢ ك « | ٤٤ |
| | إن المتقين فى جنات وعيون ... ... ... ... ... | ١٥ ك الذاريات | ٥١ |
| | إن المتقين فى ظلال وعيون ... ... ... ... ... | ٤١ ك المرسلات | ٧٧ |
| عُيُونًا | : وفجرنا الأرض عيونا فالتقى الماء على أمر قد قدر | ١٢ ك القمر | ٥٤ |
| أَعْيُنٍ | : فلما ألقوا سحروا أعين الناس وآسترهبوهم ... ... | ١١٦ ك الأعراف | ٧ |
| (٨) | لهم قلوب لا يفقهون بها ولهم أعين لا يبصرون بها ... | ١٧٩ ك « | ٧ |
| | أم لهم أيد يبطشون بها أم لهم أعين يبصرون بها ... | ١٩٥ ك « | ٧ |
| | قالوا فأتوا به على أعين الناس لعلهم يشهدون ... | ٦١ ك الأنبياء | ٢١ |
| | ربنا هب لنا من أزواجنا وذرياتنا قرة أعين ... | ٧٤ ك الفرقان | ٢٥ |
| | فلا تعلم نفس ما أخفى لهم من قرة أعين ... ... ... | ١٧ م السجدة | ٣٢ |
| | يعلم خائنة الأعين وما تخفى الصدور ... ... ... ... | ١٩ ك غافر | ٤٠ |
| | وفيها ما تشتهيه الأنفس وتلذ الأعين ... ... ... ... | ٧١ ك الزخرف | ٤٣ |
| أَعْيُنِكُمْ | : وإذ يريكموهم إذ التقيتم فى أعينكم قليلا ... ... | ٤٤ م الأنفال | ٨ |
| (٢) | ولا أقول للذين تزدرى أعينكم لن يؤتيهم الله خيرا | ٣١ ك هود | ١١ |
| أَعْيُنِنَا | : وآصنع الفلك بأعيننا ووحينا ... ... ... ... ... | ٣٧ ك « | ١١ |
| (٤) | فأوحينا إليه أن آصنع الفلك بأعيننا ووحينا ... ... | ٢٧ ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وآصبر لحكم ربك فإنك بأعيننا ... ... ... ... ... | ٤٨ ك الطور | ٥٢ |
| | تجرى بأعيننا جزاء لمن كان كفر ... ... ... ... ... | ١٤ ك القمر | ٥٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَعْيُنَهُمْ | : ترى أعينهم تفيض من الدمع ... ... ... ... | ٨٣ | م المائدة | ٥ |
| (٧) | ويقللكم فى أعينهم ليقضى الله أمرا كان مفعولا ... | ٤٤ | م الأنفال | ٨ |
| | تولوا وأعينهم تفيض من الدمع حزنا ألا يجدوا ما ينفقون | ٩٢ | م التوبة | ٩ |
| | الذين كانت أعينهم فى غطاء عن ذكرى ... ... ... | ١٠١ | م الكهف | ١٨ |
| | تدور أعينهم كالذى يغشى عليه من الموت... ... ... | ١٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ولو نشاء لطمسنا على أعينهم فاستبقوا الصراط فأنى يبصرون | ٦٦ | ك يس | ٣٦ |
| | ولقد راودوه عن ضيفه فطمسنا أعينهم ... ... ... | ٣٧ | ك القمر | ٥٤ |
| أَعْيُنُهُنَّ | : ذلك أدنى أن تقر أعينهن ولا يحزن ... ... ... | ٥١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| عِينٌ | : وعندهم قاصرات الطرف عين ... ... ... ... ... | ٤٨ | ك الصافات | ٣٧ |
| (٤) | كذلك وزوجناهم بحور عين... ... ... ... ... ... | ٥٤ | ك الدخان | ٤٤ |
| عِينٍ | : متكئين على سرر مصفوفة وزوجناهم بحور عين ... | ٢٠ | ك الطور | ٥٢ |
| | وحور عين . كأمثال اللؤلؤ المكنون ... ... ... ... | ٢٢ | ك الواقعة | ٥٦ |
| مَعِينٍ | : وآويناهما إلى ربوة ذات قرار ومعين ... ... ... | ٥٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٤) | يطاف عليهم بكأس من معين . بيضاء لذة للشاربين | ٤٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| | بأكواب وأباريق وكأس من معين ... ... ... ... | ١٨ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | قل أرأيتم إن أصبح ماؤكم غورا فمن يأتيكم بماء معين | ٣٠ | ك الملك | ٦٧ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| أَفَعَيِينَا | : أفعيينا بالخلق الأول بل هم فى لبس من خلق جديد | ١٥ | ك ق | ٥٠ |
| يَعْيَ | : أو لم يروا أن الله الذى خلق السموات والأرض | | | |
| | ولم يعى بخلقهن بقادر على أن يحيى الموتى ... ... | ٣٣ | ك الأحقاف | ٤٦ |

# باب الغين

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| الْغَابِرِينَ | : فأنجيناه وأهله إلا امرأته كانت من الغابرين | ٨٣ | ك الأعراف | ٧ |
| (٧) | إلا امرأته قدرنا إنها لمن الغابرين ... ... ... ... | ٦٠ | ك الحجر | ١٥ |
| | فنجيناه وأهله أجمعين . إلا عجوزا فى الغابرين ... | ١٧١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فأنجيناه وأهله إلا امرأته قدرناها من الغابرين ... | ٥٧ | ك النمل | ٢٧ |
| | لننجيه وأهله إلا امرأته كانت من الغابرين ... ... | ٣٢ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | إنا منجوك وأهلك إلا امرأتك كانت من الغابرين ... | ٣٣ | ك « | ٢٩ |
| | إذ نجيناه وأهله أجمعين . إلا عجوزا فى الغابرين ... | ١٣٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| غَبَرَةٌ | : ووجوه يومئذ عليها غبرة . ترهقها قترة ... ... ... | ٤٠ | ك عبس | ٨٠ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| التَّغَابُنِ | : يوم يجمعكم ليوم الجمع ذلك يوم التغابن ... ... | ٩ | م التغابن | ٦٤ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| غُثَاءً | : فأخذتهم الصيحة بالحق فجعلناهم غثاء... ... ... ... | ٤١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٢) | والذى أخرج المرعى . فجعله غثاء أحوى ... ... ... | ٥ | ك الأعلى | ٨٧ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| نُغَادِرْ | : وترى الأرض بارزة وحشرناهم فلم نغادر منهم أحدا | ٤٧ | ك الكهف | ١٨ |
| يُغَادِرُ | : لا يغادر صغيرة ولا كبيرة إلا أحصاها ... ... ... | ٤٩ | ك « | ١٨ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| غَدَقًا | : وألو استقاموا على الطريقة لأسقيناهم ماء غدقا ... | ١٦ | ك الجن | ٧٢ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| غَدَوْا | : وغدوا على حرد قادرين ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | م القلم | ٦٨ |
| غَدَوْتَ | : وإذ غدوت من أهلك تبوئ المؤمنين مقاعد للقتال | ١٢١ | م آل عمران | ٣ |
| أَغْدُوا | : فنادوا مصبحين . أن اغدوا على حرثكم إن كنتم صارمين | ٢٢ | م القلم | ٦٨ |
| لِغَدٍ | : يأيها الذين آمنوا اتقوا الله ولتنظر نفس ما قدمت لغد | ١٨ | م الحشر | ٥٩ |
| غَدًا | : أرسله معنا غدا يرتع ويلعب وإنا له لحافظون ... ... | ١٢ | ك يوسف | ١٢ |
| (٤) | ولا تقولن لشىء إنى فاعل ذلك غدا . إلا أن يشاء الله | ٢٣ | ك الكهف | ١٨ |
| | وما تدرى نفس ماذا تكسب غدا ... ... ... ... | ٣٤ | ك لقمان | ٣١ |
| | سيعلمون غدا من الكذاب الأشر ... ... ... ... | ٢٦ | ك القمر | ٥٤ |
| بِالْغُدُوِّ | : ودون الجهر من القول بالغدو والآصال ... ... | ٢٠٥ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | يسجد من فى السموات والأرض طوعا وكرها | | | |
| | وظلالهم بالغدو والآصال ... ... ... ... ... | ١٥ | م الرعد | ١٣ |
| | يسبح له فيها بالغدو والآصال ... ... ... ... ... | ٣٦ | م النور | ٢٤ |
| غُدُوًّا | : النار يعرضون عليها غدوا وعشيا ... ... ... ... | ٤٦ | ك غافر | ٤٠ |
| غُدُوُّهَا | : ولسليمان الريح غدوها شهر ورواحها شهر ... ... | ١٢ | ك سبأ | ٣٤ |
| بِالْغَدَاةِ | : ولا تطرد الذين يدعون ربهم بالغداة والعشى | ٥٢ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | واصبر نفسك مع الذين يدعون ربهم بالغداة والعشى | ٢٨ | م الكهف | ١٨ |
| غَدَاءَنَا | : فلما جاوزا قال لفتاه آتنا غداءنا ... ... ... ... | ٦٢ | ك « | ١٨ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| غَرَبَتْ | : وإذا غربت تقرضهم ذات الشمال وهم فى فجوة منه | ١٧ | ك « | ١٨ |
| تَغْرُبُ | : حتى إذا بلغ مغرب الشمس وجدها تغرب | | | |
| | فى عين حمئة ... ... ... ... ... ... ... | ٨٦ | م « | ١٨ |
| الْغُرُوبِ | : وسبح بحمد ربك قبل طلوع الشمس وقبل الغروب | ٣٩ | ك ق | ٥٠ |
| غُرُوبِهَا | : وسبح بحمد ربك قبل طلوع الشمس وقبل غروبها | ١٣٠ | م طه | ٢٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ٱلْمَغْرِبُ | : ولله المشرق والمغرب فأينما تولوا فثم وجه الله ... | ١١٥ م | البقـرة | ٢ |
| (٧) | قل لله المشرق والمغرب يهدى من يشاء إلى صراط مستقيم | ١٤٢ م | « | ٢ |
| | ليس البر أن تولوا وجوهكم قبل المشرق والمغرب ... | ١٧٧ م | « | ٢ |
| | فإن الله يأتى بالشمس من المشرق فأت بها من المغرب | ٢٥٨ م | « | ٢ |
| | حتى إذا بلغ مغرب الشمس وجدها تغرب فى عين حمئة | ٨٦ م | الكهف | ١٨ |
| | قال رب المشرق والمغرب وما بينهما إن كنتم تعقلون | ٢٨ ك | الشـعراء | ٢٦ |
| | رب المشرق والمغرب لا إله إلا هو فاتخذه وكيلا ... | ٩ ك | المزمـل | ٧٣ |
| ٱلْمَغْرِبَيْنِ | : رب المشرقين ورب المغربين ... ... ... ... | ١٧ م | الرحمـن | ٥٥ |
| ٱلْمَغَارِبِ | : فلا أقسم برب المشارق والمغارب إنا لقادرون | ٤٠ ك | المعـارج | ٧٠ |
| مَغَارِبَهَا | : وأورثنا القوم الذين كانوا يستضعفون مشارق الأرض ومغاربها التى باركنا فيها ... ... ... ... | ١٣٧ ك | الأعراف | ٧ |
| ٱلْغَرْبِىِّ | : وما كنت بجانب الغربى إذ قضينا إلى موسى الأمر | ٤٤ ك | القصص | ٢٨ |
| غَرْبِيَّةٍ | : يوقد من شجرة مباركة زيتونة لا شرقية ولا غربية | ٣٥ م | النـور | ٢٤ |
| ٱلْغُرَابِ | : قال يا ويلتى أعجزت أن أكون مثل هذا الغراب | ٣١ م | المائدة | ٥ |
| غُرَابًا | : فبعث الله غرابا يبحث فى الأرض ... ... ... ... | ٣١ م | « | ٥ |
| غَرَابِيبُ | : ومن الجبال جدد بيض وحمر مختلف ألوانها وغرابيب سود ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧ ك | فاطـر | ٣٥ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| غَرَّ | : إذ يقول المنافقون والذين فى قلوبهم مرض غر هؤلاء دينهم | ٤٩ م | الأنفـال | ٨ |
| غَرَّتْكُمُ | : ذلكم بأنكم اتخذتم آيات الله هزوا وغرتكم الحياة الدنيا ... ... ... ... ... ... ... | ٣٥ ك | الجاثيـة | ٤٥ |
| (٢) | ولكنكم فتنتم أنفسكم وتربصتم وارتبتم وغرتكم الأمانى | ١٤ م | الحـديد | ٥٧ |
| غَرَّتْهُمُ | : وذر الذين اتخذوا دينهم لعبا ولهوا وغرتهم الحياة الدنيا ... ... ... ... ... ... ... | ٧٠ ك | الأنعـام | ٦ |
| (٣) | وغرتهم الحياة الدنيا وشهدوا على أنفسهم أنهم كانوا كافرين... ... ... ... ... ... ... | ١٣٠ ك | « | ٦ |
| | الذين اتخذوا دينهم لهوا ولعبا وغرتهم الحياة الدنيا | ٥١ ك | الأعراف | ٧ |
| غَرَّكَ | : يأيها الإنسان ما غرك بربك الكريم ... ... ... | ٦ ك | الانفطار | ٨٢ |
| غَرَّكُمْ | : وغرتكم الأمانى حتى جاء أمر الله وغركم بالله الغرور | ١٤ م | الحـديد | ٥٧ |
| غَرَّهُمْ | : وغرهم فى دينهم ما كانوا يفترون... ... ... ... | ٢٤ م | آل عمران | ٣ |
| تَغُرَّنَّكُمُ | : فلا تغرنكم الحياة الدنيا ولا يغرنكم بالله الغرور | ٣٣ ك | لقمان | ٣١ |
| (٢) | فلا تغرنكم الحياة الدنيا ولا يغرنكم بالله الغرور ... | ٥ ك | فاطـر | ٣٥ |
| يَغُرُرْكَ | : فلا يغررك تقلبهم فى البلاد ... ... ... ... | ٤ ك | غافـر | ٤٠ |
| يَغُرَّنَّكَ | : لا يغرنك تقلب الذين كفروا فى البلاد ... ... | ١٩٦ م | آل عمران | ٣ |
| يَغُرَّنَّكُمْ | : فلا تغرنكم الحياة الدنيا ولا يغرنكم بالله الغرور | ٣٣ ك | لقمان | ٣١ |
| (٢) | فلا تغرنكم الحياة الدنيا ولا يغرنكم بالله الغرور... | ٥ ك | فاطـر | ٣٥ |
| ٱلْغُرُورِ | : وما الحياة الدنيا إلا متاع الغرور... ... ... ... | ١٨٥ م | آل عمران | ٣ |
| (٤) | فدلاهما بغرور فلما ذاقا الشجرة بدت لهما سوءاتهما | ٢٢ ك | الأعراف | ٧ |
| | وما الحياة الدنيا إلا متاع الغرور ... ... ... ... | ٢٠ م | الحـديد | ٥٧ |
| | إن الكافرون إلا فى غرور... ... ... ... ... ... | ٢٠ ك | المـلك | ٦٧ |
| غُرُورًا | : يعدهم ويمنيهم وما يعدهم الشيطان إلا غرورا | ١٢٠ م | النسـاء | ٤ |
| (٥) | يوحى بعضهم إلى بعض زخرف القول غرورا ... ... | ١١٢ ك | الأنعـام | ٦ |
| | وعدهم وما يعدهم الشيطان إلا غرورا ... ... ... | ٦٤ ك | الإسـراء | ١٧ |
| | وإذ يقـول المنافقون والذين فى قلوبهـم مرض ما وعدنا الله ورسوله إلا غرورا ... ... ... | ١٢ م | الأحزاب | ٣٣ |
| | بل إن يعد الظالمون بعضهم بعضا إلا غرورا... ... | ٤٠ ك | فاطـر | ٣٥ |
| ٱلْغَرُورُ | : فلا تغرنكم الحياة الدنيا ولا يغرنكم بالله الغرور | ٣٣ ك | لقمان | ٣١ |
| (٣) | فلا تغرنكم الحياة الدنيا ولا يغرنكم بالله الغرور ... | ٥ ك | فاطـر | ٣٥ |
| | حتى جاء أمر الله وغركم بالله الغرور ... ... ... | ١٤ م | الحـديد | ٥٧ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ٱغْتَرَفَ | : ومن لم يطعمه فإنه منى إلا من اغترف غرفة بيده | ٢٤٩ م | البقـرة | ٢ |
| غُرْفَةً | : إلا من اغترف غرفة بيده ... ... ... ... ... | ٢٤٩ م | « | ٢ |
| (٢) | أولئك يجزون الغرفة بما صبروا ويلقون فيها تحية وسلاما | ٧٥ ك | الفـرقان | ٢٥ |
| غُرَفٌ | : لكن الذين اتقوا ربهم لهم غرف ... ... ... | ٢٠ ك | الـزمر | ٣٩ |
| (٢) | من فوقها غرف مبنية تجرى من تحتها الأنهار... ... | ٢٠ ك | « | ٣٩ |
| غُرَفًا | : والذين آمنوا وعملوا الصالحات لنبوئنهم من الجنة غرفا | ٥٨ ك | العنكبوت | ٢٩ |
| ٱلْغُرُفَاتِ | : وهم فى الغرفات آمنون ... ... ... ... ... | ٣٧ ك | سـبإ | ٣٤ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| أَغْرَقْنَا | : وإذ فرقنا بكم البحر فأنجيناكم وأغرقنا آل فرعون | ٥٠ م | البقـرة | ٢ |
| (٨) | وأغرقنا الذين كذبوا بآياتنا ... ... ... ... ... | ٦٤ ك | الأعراف | ٧ |
| | فأهلكناهم بذنوبهم وأغرقنا آل فرعون ... ... ... | ٥٤ م | الأنفـال | ٨ |
| | وجعلناهم خلائف وأغرقنا الذين كذبوا بآياتنا ... | ٧٣ ك | يـونس | ١٠ |
| | وأنجينا موسى ومن معه أجمعين . ثم أغرقنا الآخرين | ٦٦ ك | الشـعراء | ٢٦ |
| | فأنجيناه ومن معه فى الفلك المشحون . ثم أغرقنا بعد الباقين | ١٢٠ ك | « | ٢٦ |
| | ومنهم من خسفنا به الأرض ومنهم من أغرقنا... ... | ٤٠ ك | العنكبوت | ٢٩ |
| | إنه من عبادنا المؤمنين . ثم أغرقنا الآخرين ... ... | ٨٢ ك | الصافات | ٣٧ |
| فَأَغْرَقْنَاهُ | : فأغرقناه ومن معه جميعا ... ... ... ... ... | ١٠٣ ك | الإسـراء | ١٧ |
| أَغْرَقْنَاهُمْ | : فانتقمنا منهم فأغرقناهم فى اليم ... ... ... | ١٣٦ ك | الأعراف | ٧ |
| (٤) | إنهم كانوا قوم سوء فأغرقناهم أجمعين ... ... ... | ٧٧ ك | الأنبيـاء | ٢١ |
| | وقوم نوح لما كذبوا الرسل أغرقناهم ... ... ... | ٣٧ ك | الفـرقان | ٢٥ |
| | فلما آسفونا انتقمنا منهم فأغرقناهم أجمعين ... ... | ٥٥ ك | الزخرف | ٤٣ |
| لِتُغْرِقَ | : قال أخرقتها لتغرق أهلها لقد جئت شيئا إمرا... | ٧١ ك | الكهف | ١٨ |
| نُغْرِقْهُمْ | : وإن نشأ نغرقهم فلا صريخ لهم ولاهم ينقذون | ٤٣ ك | يـس | ٣٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| فَيُغْرِقَكُمْ | : فيرسل عليكم قاصفا من الريح فيغرقكم بما كفرتم | ٦٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| أُغْرِقُوا | : مما خطيئاتهم أغرقوا فأدخلوا نارا ... ... ... | ٢٥ | ك نوح | ٧١ |
| غَرْقًا | : والنازعات غرقا . والناشطات نشطا ... ... ... | ١ | ك النازعات | ٧٩ |
| الْغَرَقُ | : حتى إذا أدركه الغرق قال آمنت أنه لا إله إلا الذى آمنت به بنوا إسرائيل ... ... ... ... ... | ٩٠ | ك يونس | ١٠ |
| مُغْرَقُونَ | : ولا تخاطبنى فى الذين ظلموا إنهم مغرقون ... | ٣٧ | ك هود | ١١ |
| (٣) | ولا تخاطبنى فى الذين ظلموا إنهم مغرقون ... ... | ٢٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وآترك البحر زهوا إنهم جند مغرقون... ... ... ... | ٢٤ | ك الدخان | ٤٤ |
| الْمُغْرَقِينَ | : وحال بينهما الموج فكان من المغرقين ... ... | ٤٣ | ك هود | ١١ |
| الْغَارِمِينَ | : وفى الرقاب والغارمين وفى سبيل الله وآبن السبيل | ٦٠ | م التوبة | ٩ |
| غَرَامًا | : ربنا آصرف عنا عذاب جهنم إن عذابها كان غراما ... ... ... ... ... ... ... | ٦٥ | ك الفرقان | ٢٥ |
| مَغْرَمٍ | : أم تسئلهم أجرا فهم من مغرم مثقلون ... ... ... | ٤٠ | ك الطور | ٥٢ |
| (٢) | أم تسئلهم أجرا فهم من مغرم مثقلون ... ... ... | ٤٦ | ك القلم | ٦٨ |
| مَغْرَمًا | : ومن الأعراب من يتخذ ما ينفق مغرما... ... ... | ٩٨ | م التوبة | ٩ |
| لَمُغْرَمُونَ | : إنا لمغرمون . بل نحن محرومون ... ... ... | ٦٦ | ك الواقعة | ٥٦ |
| فَأَغْرَيْنَا | : فأغرينا بينهم العداوة والبغضاء إلى يوم القيامة | ١٤ | م المائدة | ٥ |
| لَنُغْرِيَنَّكَ | : لنغرينك بهم ثم لا يجاورونك فيها إلا قليلا | ٦٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| غَزْلَهَا | : ولا تكونوا كالتى نقضت غزلها من بعد قوة أنكاثا | ٩٢ | ك النحل | ١٦ |
| غُزًّى | : إذا ضربوا فى الأرض أو كانوا غزى لو كانوا عندنا ما ماتوا... ... ... ... ... ... ... | ١٥٦ | م آل عمران | ٣ |
| غَسَقِ | : أقم الصلاة لدلوك الشمس إلى غسق الليل وقرآن الفجر | ٧٨ | م الإسراء | ١٧ |
| غَاسِقٍ | : من شر ما خلق . ومن شر غاسق إذا وقب ... ... | ٣ | ك الفلق | ١١٣ |
| غَسَّاقٌ | : هذا فليذوقوه حميم وغساق... ... ... ... ... | ٥٧ | ك ص | ٣٨ |
| غَسَّاقًا | : لا يذوقون فيها بردا ولا شرابا . إلا حميما وغساقا | ٢٥ | ك النبأ | ٧٨ |
| فَٱغْسِلُوا | : فاغسلوا وجوهكم وأيديكم إلى المرافق ... ... | ٦ | م المائدة | ٥ |
| تَغْتَسِلُوا | : ولا جنبا إلا عابرى سبيل حتى تغتسلوا ... ... | ٤٣ | م النساء | ٤ |
| مُغْتَسَلٌ | : آركض برجلك هذا مغتسل بارد وشراب ... ... | ٤٢ | ك ص | ٣٨ |
| غِسْلِينٍ | : فليس له اليوم ههنا حميم . ولا طعام إلا من غسلين | ٣٦ | ك الحاقة | ٦٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| غَشِيَهُمْ | : فأتبعهم فرعون بجنوده فغشيهم من اليم ... ... | ٧٨ | ك طه | ٢٠ |
| (٣) | ما غشيهم ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٨ | ك « | ٢٠ |
| | وإذا غشيهم موج كالظلل دعوا الله مخلصين له الدين | ٣٢ | ك لقمان | ٣١ |
| تَغْشَى | : سرابيلهم من قطران وتغشى وجوههم النار ... | ٥٠ | ك إبراهيم | ١٤ |
| يَغْشَى | : ثم أنزل عليكم من بعد الغم أمنة نعاسا يغشى طائفة منكم | ١٥٤ | م آل عمران | ٣ |
| (٥) | فارتقب يوم تأتى السماء بدخان مبين . يغشى الناس | ١١ | ك الدخان | ٤٤ |
| | عندها جنة المأوى . إذ يغشى السدرة ... ... ... | ١٦ | ك النجم | ٥٣ |
| | ما يغشى ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٦ | ك « | ٥٣ |
| | والليل إذا يغشى . والنهار إذا تجلى ... ... ... | ١ | ك الليل | ٩٢ |
| يَغْشَاهُ | : أو كظلمات فى بحر لجى يغشاه موج من فوقه موج | ٤٠ | م النور | ٢٤ |
| يَغْشَاهَا | : والنهار إذا جلاها . والليل إذا يغشاها ... ... | ٤ | ك الشمس | ٩١ |
| يَغْشَاهُمُ | : يوم يغشاهم العذاب من فوقهم ومن تحت أرجلهم | ٥٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| يُغْشَى | : تدور أعينهم كالذى يغشى عليه من الموت ... ... | ١٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| غَشَّى | : والمؤتفكة أهوى . فغشاها ما غشى ... ... ... | ٥٤ | ك النجم | ٥٣ |
| فَغَشَّاهَا | : والمؤتفكة أهوى . فغشاها ما غشى... ... ... | ٥٤ | ك « | ٥٣ |
| يُغَشِّيكُمُ | : إذ يغشيكم النعاس أمنة منه وينزل عليكم من السماء ماء | ١١ | م الأنفال | ٨ |
| فَأَغْشَيْنَاهُمْ | : فأغشيناهم فهم لا يبصرون ... ... ... ... | ٩ | ك يس | ٣٦ |
| يُغْشِى | : ثم آستوى على العرش يغشى الليل النهار يطلبه حثيثا | ٥٤ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | ومن كل الثمرات جعل فيها زوجين آثنين يغشى الليل النهار | ٣ | م الرعد | ١٣ |
| أُغْشِيَتْ | : كأنما أغشيت وجوههم قطعا من الليل مظلما | ٢٧ | ك يونس | ١٠ |
| تَغَشَّاهَا | : فلما تغشاها حملت حملا خفيفا فمرت به ... ... | ١٨٩ | ك الأعراف | ٧ |
| ٱسْتَغْشَوْا | : جعلوا أصابعهم فى آذانهم وآستغشوا ثيابهم | ٧ | ك نوح | ٧١ |
| يَسْتَغْشُونَ | : ألا حين يستغشون ثيابهم يعلم ما يسرون وما يعلنون ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك هود | ١١ |
| غَاشِيَةٌ | : أفأمنوا أن تأتيهم غاشية من عذاب الله ... ... | ١٠٧ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | هل أتاك حديث الغاشية ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الغاشية | ٨٨ |
| غَوَاشٍ | : لهم من جهنم مهاد ومن فوقهم غواش ... ... | ٤١ | ك الأعراف | ٧ |
| غِشَاوَةٌ | : ختم الله على قلوبهم وعلى سمعهم وعلى أبصارهم غشاوة | ٧ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | وختم على سمعه وقلبه وجعل على بصره غشاوة ... ... | ٢٣ | ك الجاثية | ٤٥ |
| ٱلْمَغْشِيِّ | : ينظرون إليك نظر المغشى عليه من الموت... ... | ٢٠ | م محمد | ٤٧ |
| غَصْبًا | : وكان وراءهم ملك يأخذ كل سفينة غصبا ... ... | ٧٩ | ك الكهف | ١٨ |
| غُصَّةٍ | : إن لدينا أنكالا وجحيما . وطعاما ذا غصة وعذابا أليما ... ... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك المزمل | ٧٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| غَضِبَ | وغضب الله عليه ولعنه وأعدّ له عذابا عظيما ... | ٩٣ | م النساء | ٤ |
| (٥) | من لعنه الله وغضب عليه وجعل منهم القردة والخنازير | ٦٠ | م المائدة | ٥ |
| | وغضب الله عليهم ولعنهم وأعدّ لهم جهنم ... ... ... | ٦ | م الفتح | ٤٨ |
| | ألم تر إلى الذين تولوا قوما غضب الله عليهم ... ... | ١٤ | م المجادلة | ٥٨ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تتولوا قوما غضب الله عليهم | ١٣ | م الممتحنة | ٦٠ |
| غَضِبُوا | وإذا ما غضبوا هم يغفرون... ... ... ... ... | ٣٧ | ك الشورى | ٤٢ |
| غَضَبٍ | وضربت عليهم الذلة والمسكنة وباءو بغضب من الله | ٦١ | م البقرة | ٢ |
| (١٢) | فباءو بغضب ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩٠ | م « | ٢ |
| | على غضب وللكافرين عذاب مهين ... ... ... ... | ٩٠ | م « | ٢ |
| | وباءو بغضب من الله وضربت عليهم المسكنة ... ... | ١١٢ | م آل عمران | ٣ |
| | قال قد وقع عليكم من ربكم رجس وغضب ... ... | ٧١ | ك الأعراف | ٧ |
| | إن الذين اتخذوا العجل سينالهم غضب من ربهم ... | ١٥٢ | ك « | ٧ |
| | ولما سكت عن موسى الغضب أخذ الألواح ... ... | ١٥٤ | ك « | ٧ |
| | فقد باء بغضب من الله ومأواه جهنم... ... ... ... | ١٦ | م الأنفال | ٨ |
| | ولكن من شرح بالكفر صدرا فعليهم غضب من الله | ١٠٦ | ك النحل | ١٦ |
| | أم أردتم أن يحل عليكم غضب من ربكم فأخلفتم موعدى | ٨٦ | ك طه | ٢٠ |
| | والخامسة أن غضب الله عليها إن كان من الصادقين | ٩ | م النور | ٢٤ |
| | جهنم داخضة عند ربهم وعليهم غضب ولهم عذاب شديد | ١٦ | ك الشورى | ٤٢ |
| غَضَبِي | ولا تطغوا فيه فيحل عليكم غضبي... ... ... ... | ٨١ | ك طه | ٢٠ |
| (٢) | ومن يحلل عليه غضبي فقد هوى ... ... ... ... | ٨١ | ك « | ٢٠ |
| غَضْبَانَ | ولما رجع موسى إلى قومه غضبان أسفا قال | | | |
| (٢) | خلفتمونى من بعدى ... ... ... ... ... | ١٥٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | فرجع موسى إلى قومه غضبان أسفا ... ... ... | ٨٦ | ك طه | ٢٠ |
| المَغْضُوبِ | صراط الذين أنعمت عليهم غير المغضوب عليهم | ٧ | ك الفاتحة | ١ |
| مُغَاضِبًا | وذا النون إذ ذهب مغاضبا فظن أن لن نقدر عليه | ٨٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| يَغْضُضْنَ | وقل للمؤمنات يغضضن من أبصارهن ... ... | ٣١ | م النور | ٢٤ |
| يَغُضُّوا | قل للمؤمنين يغضوا من أبصارهم ويحفظوا فروجهم | ٣٠ | م « | ٢٤ |
| يَغُضُّونَ | إن الذين يغضون أصواتهم عند رسول الله | | | |
| | أولئك الذين امتحن الله قلوبهم للتقوى ... ... | ٣ | م الحجرات | ٤٩ |
| اغْضُضْ | واقصد فى مشيك واغضض من صوتك... ... | ١٩ | ك لقمان | ٣١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| أَغْطَشَ | وأغطش ليلها وأخرج ضحاها ... ... ... ... | ٢٩ | ك النازعات | ٧٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| غِطَاءٍ | الذين كانت أعينهم فى غطاء عن ذكرى ... ... | ١٠١ | م الكهف | ١٨ |
| غِطَاءَكَ | لقد كنت فى غفلة من هذا فكشفنا عنك غطاءك | ٢٢ | ك ق | ٥٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| غَفَرَ | قال رب إنى ظلمت نفسى فاغفر لى فغفر له ... ... | ١٦ | ك القصص | ٢٨ |
| (٣) | ياليت قومى يعلمون . بما غفر لى ربى وجعلنى من المكرمين | ٢٧ | ك يس | ٣٦ |
| | ولمن صبر وغفر إن ذلك لمن عزم الأمور ... ... | ٤٣ | ك الشورى | ٤٢ |
| فَغَفَرْنَا | فغفرنا له ذلك وإن له عندنا لزلفى وحسن مآب | ٢٥ | ك ص | ٣٨ |
| تَغْفِرْ | وإن تغفر لهم فإنك أنت العزيز الحكيم ... ... ... | ١١٨ | م المائدة | ٥ |
| (٤) | وإن لم تغفر لنا وترحمنا لنكونن من الخاسرين... ... | ٢٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | وإلا تغفر لى وترحمنى أكن من الخاسرين ... ... | ٤٧ | ك هود | ١١ |
| | وإنى كلما دعوتهم لتغفر لهم جعلوا أصابعهم فى آذانهم | ٧ | ك نوح | ٧١ |
| تَغْفِرُوا | وإن تعفوا وتصفحوا وتغفروا فإن الله غفور رحيم | ١٤ | م التغابن | ٦٤ |
| نَغْفِرْ | وادخلوا الباب سجدا وقولوا حطة نغفر لكم خطاياكم | ٥٨ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | وقولوا حطة وادخلوا الباب سجدا نغفر لكم خطيئاتكم | ١٦١ | ك الأعراف | ٧ |
| يَغْفِرُ | وإن تبدوا ما فى أنفسكم أو تخفوه يحاسبكم به الله | | | |
| (٣٣) | فيغفر لمن يشاء ويعذب من يشاء ... ... ... | ٢٨٤ | م البقرة | ٢ |
| | فاتبعونى يحببكم الله ويغفر لكم ذنوبكم ... ... ... | ٣١ | م آل عمران | ٣ |
| | ولله ما فى السموات وما فى الأرض يغفر لمن يشاء... | ١٢٩ | م « | ٣ |
| | فاستغفروا لذنوبهم ومن يغفر الذنوب إلا الله ... | ١٣٥ | م « | ٣ |
| | إن الله لا يغفر أن يشرك به ... ... ... ... ... | ٤٨ | م النساء | ٤ |
| | ويغفر ما دون ذلك لمن يشاء ... ... ... ... ... | ٤٨ | م « | ٤ |
| | إن الله لا يغفر أن يشرك به ... ... ... ... ... | ١١٦ | م « | ٤ |
| | ويغفر ما دون ذلك لمن يشاء ... ... ... ... ... | ١١٦ | م « | ٤ |
| | ثم ازدادوا كفرا لم يكن الله ليغفر لهم ولا ليهديهم سبيلا | ١٣٧ | م « | ٤ |
| | لم يكن الله ليغفر لهم ولا ليهديهم طريقا... ... ... | ١٦٨ | م « | ٤ |
| | بل أنتم بشر ممن خلق يغفر لمن يشاء ويعذب من يشاء | ١٨ | م المائدة | ٥ |
| | ألم تعلم أن الله له ملك السموات والأرض يعذب | | | |
| | من يشاء ويغفر لمن يشاء ... ... ... ... ... | ٤٠ | م « | ٥ |
| | لئن لم يرحمنا ربنا ويغفر لنا لنكونن من الخاسرين | ١٤٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | يجعل لكم فرقانا ويكفر عنكم سيئاتكم ويغفر لكم ... | ٢٩ | م الأنفال | ٨ |
| | يؤتكم خيرا مما أخذ منكم ويغفر لكم ... ... ... | ٧٠ | م « | ٨ |
| | إن تستغفر لهم سبعين مرة فلن يغفر الله لهم ... ... | ٨٠ | م التوبة | ٩ |
| | قال لا تثريب عليكم اليوم يغفر الله لكم ... ... ... | ٩٢ | ك يوسف | ١٢ |
| | يدعوكم ليغفر لكم من ذنوبكم ويؤخركم إلى أجل مسمى | ١٠ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | إنا آمنا بربنا ليغفر لنا خطايانا ... ... ... ... | ٧٣ | ك طه | ٢٠ |
| | وليعفوا وليصفحوا ألا تحبون أن يغفر الله لكم ... | ٢٢ | م النور | ٢٤ |
| | إنا نطمع أن يغفر لنا ربنا خطايانا أن كنا أول المؤمنين | ٥١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | والذى أطمع أن يغفر لى خطيئتى يوم الدين ... ... | ٨٢ | ك « | ٢٦ |
| | يصلح لكم أعمالكم ويغفر لكم ذنوبكم ... ... ... | ٧١ | م الأحزاب | ٣٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَغْفِرْ: | لا تقنطوا من رحمة الله إن الله يغفر الذنوب جميعا | ٥٣ | م الزمر | ٣٩ |
| | ياقومنا أجيبوا داعي الله وآمنوا به يغفر لكم من ذنوبكم | ٣١ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | ثم ماتوا وهم كفار فلن يغفر الله لهم ... ... ... ... | ٣٤ | م محمد | ٤٧ |
| | ليغفر لك الله ما تقدم من ذنبك وما تأخر... ... ... | ٢ | م الفتح | ٤٨ |
| | ولله ملك السموات والأرض يغفر لمن يشاء ويعذب من يشاء | ١٤ | م » | ٤٨ |
| | ويجعل لكم نورا تمشون به ويغفر لكم ... ... ... | ٢٨ | م الحديد | ٥٧ |
| | يغفر لكم ذنوبكم ويدخلكم جنات تجري من تحتها الأنهار | ١٢ | م الصف | ٦١ |
| | سواء عليهم أستغفرت لهم أم لم تستغفر لهم لن يغفر الله لهم | ٦ | م المنافقون | ٦٣ |
| | إن تقرضوا الله قرضا حسنا يضاعفه لكم ويغفر لكم | ١٧ | م التغابن | ٦٤ |
| | يغفر لكم من ذنوبكم ويؤخركم إلى أجل مسمى... ... | ٤ | ك نوح | ٧١ |
| يَغْفِرُوا: | قل للذين آمنوا يغفروا للذين لا يرجون أيام الله | ١٤ | م الجاثية | ٤٥ |
| يَغْفِرُونَ: | وإذا ما غضبوا هم يغفرون... ... ... ... ... | ٣٧ | ك الشورى | ٤٢ |
| أَغْفِرْ: | وأعف عنا وأغفر لنا وارحمنا ... ... ... ... ... | ٢٨٦ | م البقرة | ٢ |
| (١٧) | الذين يقولون ربنا إننا آمنا فاغفر لنا ذنوبنا ... ... | ١٦ | م آل عمران | ٣ |
| | وما كان قولهم إلا أن قالوا ربنا اغفر لنا ذنوبنا | ١٤٧ | م » | ٣ |
| | ربنا فاغفر لنا ذنوبنا وكفر عنا سيئاتنا ... ... ... | ١٩٣ | م » | ٣ |
| | قال رب اغفر لي ولأخي وأدخلنا في رحمتك ... ... | ١٥١ | ك الأعراف | ٧ |
| | أنت ولينا فاغفر لنا وارحمنا وأنت خير الغافرين ... | ١٥٥ | ك » | ٧ |
| | ربنا اغفر لي ولوالدي وللمؤمنين يوم يقوم الحساب | ٤١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | إنه كان فريق من عبادي يقولون ربنا آمنا فاغفر لنا وارحمنا | ١٠٩ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وقل رب اغفر وارحم وأنت خير الراحمين... ... ... | ١١٨ | ك » | ٢٣ |
| | واغفر لأبي إنه كان من الضالين ... ... ... ... | ٨٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | قال رب إني ظلمت نفسي فاغفر لي فغفر له ... ... | ١٦ | ك القصص | ٢٨ |
| | قال رب اغفر لي وهب لي ملكا لا ينبغي لأحد من بعدي | ٣٥ | ك ص | ٣٨ |
| | فاغفر للذين تابوا واتبعوا سبيلك وقهم عذاب الجحيم | ٧ | ك غافر | ٤٠ |
| | ربنا اغفر لنا ولإخواننا الذين سبقونا بالإيمان ... | ١٠ | م الحشر | ٥٩ |
| | ربنا لا تجعلنا فتنة للذين كفروا واغفر لنا ربنا ... | ٥ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | يقولون ربنا أتمم لنا نورنا واغفر لنا ... ... ... | ٨ | م التحريم | ٦٦ |
| | رب اغفر لي ولوالدي ولمن دخل بيتي مؤمنا ... ... | ٢٨ | ك نوح | ٧١ |
| يُغْفَرْ: | يأخذون عرض هذا الأدنى ويقولون سيغفر لنا | ١٦٩ | م الأعراف | ٧ |
| (٢) | قل للذين كفروا إن ينتهوا يغفر لهم ما قد سلف ... | ٣٨ | م الأنفال | ٨ |
| أَسْتَغْفَرَ: | واستغفر لهم الرسول لوجدوا الله توابا رحيما ... | ٦٤ | م النساء | ٤ |
| (٢) | وظن داود أنما فتناه فاستغفر ربه وخر راكعا وأناب | ٢٤ | ك ص | ٣٨ |
| أَسْتَغْفَرْتَ: | سواء عليهم أستغفرت لهم أم لم تستغفر لهم | | | |
| | لن يغفر الله لهم ... ... ... ... ... ... | ٦ | م المنافقون | ٦٣ |
| أَسْتَغْفَرُوا: | والذين إذا فعلوا فاحشة أو ظلموا أنفسهم | | | |
| (٢) | ذكروا الله فاستغفروا لذنوبهم ... ... ... ... | ١٣٥ | م آل عمران | ٣ |
| | فاستغفروا الله واستغفر لهم الرسول لوجدوا الله توابا رحيما | ٦٤ | م النساء | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَسْتَغْفِرُ: | قال سوف أستغفر لكم ربي إنه هو الغفور الرحيم | ٩٨ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | قال سلام عليك سأستغفر لك ربي إنه كان بي حفيا | ٤٧ | ك مريم | ١٩ |
| لَأَسْتَغْفِرَنَّ: | إلا قول إبراهيم لأبيه لأستغفرن لك ... ... ... | ٤ | م الممتحنة | ٦٠ |
| تَسْتَغْفِرْ: | أستغفر لهم أو لا تستغفر لهم ... ... ... ... ... | ٨٠ | م التوبة | ٩ |
| (٣) | إن تستغفر لهم سبعين مرة فلن يغفر الله لهم ... ... | ٨٠ | م » | ٩ |
| | سواء عليهم أستغفرت لهم أم لم تستغفر لهم لن يغفر الله لهم | ٦ | م المنافقون | ٦٣ |
| تَسْتَغْفِرُونَ: | لولا تستغفرون الله لعلكم ترحمون ... ... ... | ٤٦ | ك النمل | ٢٧ |
| يَسْتَغْفِرِ: | ومن يعمل سوءا أو يظلم نفسه ثم يستغفر الله | | | |
| (٢) | يجد الله غفورا رحيما ... ... ... ... ... ... | ١١٠ | م النساء | ٤ |
| | وإذا قيل لهم تعالوا يستغفر لكم رسول الله لووا رءوسهم | ٥ | م المنافقون | ٦٣ |
| يَسْتَغْفِرُوا: | ما كان للنبي والذين آمنوا أن يستغفروا للمشركين | ١١٣ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | وما منع الناس أن يؤمنوا إذ جاءهم الهدى ويستغفروا | | | |
| | ربهم إلا أن تأتيهم سنة الأولين ... ... ... | ٥٥ | ك الكهف | ١٨ |
| يَسْتَغْفِرُونَ: | وما كان الله معذبهم وهم يستغفرون ... ... | ٣٣ | ك الأنفال | ٨ |
| (٤) | يسبحون بحمد ربهم ويؤمنون به ويستغفرون للذين آمنوا | ٧ | ك غافر | ٤٠ |
| | والملائكة يسبحون بحمد ربهم ويستغفرون لمن في الأرض | ٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| | وبالأسحار هم يستغفرون ... ... ... ... ... | ١٨ | ك الذاريات | ٥١ |
| يَسْتَغْفِرُونَهُ: | أفلا يتوبون إلى الله ويستغفرونه والله | | | |
| | غفور رحيم ... ... ... ... ... ... ... | ٧٤ | م المائدة | ٥ |
| أَسْتَغْفِرْ: | فاعف عنهم واستغفر لهم وشاورهم في الأمر ... | ١٥٩ | م آل عمران | ٣ |
| (٩) | واستغفر الله إن الله كان غفورا رحيما ... ... ... | ١٠٦ | م النساء | ٤ |
| | استغفر لهم أو لا تستغفر لهم ... ... ... ... ... | ٨٠ | م التوبة | ٩ |
| | قالوا يا أبانا استغفر لنا ذنوبنا إنا كنا خاطئين ... | ٩٧ | ك يوسف | ١٢ |
| | فأذن لمن شئت منهم واستغفر لهم الله ... ... ... | ٦٢ | م النور | ٢٤ |
| | فاصبر إن وعد الله حق واستغفر لذنبك ... ... ... | ٥٥ | ك غافر | ٤٠ |
| | فاعلم أنه لا إله إلا الله واستغفر لذنبك ... ... ... | ١٩ | م محمد | ٤٧ |
| | شغلتنا أموالنا وأهلونا فاستغفر لنا ... ... ... ... | ١١ | م الفتح | ٤٨ |
| | فبايعهن واستغفر لهن الله إن الله غفور رحيم ... | ١٢ | م الممتحنة | ٦٠ |
| أَسْتَغْفِرْهُ: | فسبح بحمد ربك واستغفره إنه كان توابا ... | ٣ | م النصر | ١١٠ |
| أَسْتَغْفِرُوا: | ثم أفيضوا من حيث أفاض الناس واستغفروا الله | ١٩٩ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | وأن استغفروا ربكم ثم توبوا إليه يمتعكم متاعا حسنا | ٣ | ك هود | ١١ |
| | وياقوم استغفروا ربكم ثم توبوا إليه ... ... ... | ٥٢ | ك » | ١١ |
| | واستغفروا ربكم ثم توبوا إليه إن ربي رحيم ودود | ٩٠ | ك » | ١١ |
| | فقلت استغفروا ربكم إنه كان غفارا... ... ... ... | ١٠ | ك نوح | ٧١ |
| | واستغفروا الله إن الله غفور رحيم ... ... ... ... | ٢٠ | م المزمل | ٧٣ |
| أَسْتَغْفِرُوهُ: | هو أنشأكم من الأرض واستعمركم فيها فاستغفروه | ٦١ | ك هود | ١١ |
| (٢) | فاستقيموا إليه واستغفروه ... ... ... ... ... | ٦ | ك فصلت | ٤١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| آسْتَغْفِرِى | : يوسف أعرض عن هـذا وآستغفرى لذنبك | ٢٩ | ك يوسف | ١٢ |
| غَافِرِ | : غافر الذنب وقابل التوب شديد العقاب ذى الطول | ٣ | ك غافـر | ٤٠ |
| ٱلْغَافِرِينَ | : فاغفر لنا وارحمنا وأنت خير الغافرين ... ... | ١٥٥ | ك الأعراف | ٧ |
| غَفُورٌ | . فمن اضطر غير باغ ولا عاد فلا إثم عليـه إن الله | | | |
| (٧١) | غفور رحيم ... ... ... ... ... ... ... | ١٧٣ | م البقـرة | ٢ |
| | فمن خاف من موص جنفا أو إثمـا فأصلح بينهـم | | | |
| | فلا إثم عليه إن الله غفور رحيم... ... ... ... | ١٨٢ | م « | ٢ |
| | فإن انتهوا فإن الله غفور رحيم ... ... ... ... | ١٩٢ | م « | ٢ |
| | ثم أفيضوا من حيث أفاض الناس وآستغفروا الله | | | |
| | إن الله غفور رحيم ... ... ... ... ... ... | ١٩٩ | م « | ٢ |
| | أولئك يرجون رحمة الله والله غفور رحيم ... ... | ٢١٨ | م « | ٢ |
| | ولكن يؤاخذكم بمـا كسبت قلوبكم والله غفور حليم | ٢٢٥ | م « | ٢ |
| | فإن فاءو فإن الله غفور رحيم ... ... ... ... ... | ٢٢٦ | م « | ٢ |
| | وآعلموا أن الله يعلم مافى أنفسكم فاحذروه وآعلموا | | | |
| | أن الله غفور حليم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣٥ | م « | ٢ |
| | فاتبعونى يحببكم الله و يغفر لكم ذنوبكم والله غفور رحيم | ٣١ | م آل عمران | ٣ |
| | إلا الذين تابوا من بعد ذلك وأصلحوا فإن الله غفور رحيم | ٨٩ | م « | ٣ |
| | يغفر لمن يشاء و يعذب من يشاء والله غفور رحيم ... | ١٢٩ | م « | ٣ |
| | ولقد عفا الله عنهم إن الله غفور حليم ... ... ... | ١٥٥ | م « | ٣ |
| | وأن تصبروا خير لكم والله غفور رحيم ... ... ... | ٢٥ | م النسـاء | ٤ |
| | فمن اضطر فى مخمصة غير متجانف لإثم فإن الله غفور رحيم | ٣ | م المـائدة | ٥ |
| | إلا الذين تابوا من قبل أن تقـدروا عليهم فاعلمـوا | | | |
| | أن الله غفور رحيم... ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | م « | ٥ |
| | فمن تاب من بعد ظلمه وأصلح فإن الله يتوب عليـه | | | |
| | إن الله غفور رحيم ... ... ... ... ... ... ... | ٣٩ | م « | ٥ |
| | أولا يتوبون إلى الله ويستغفرونه والله غفور رحيم | ٧٤ | م « | ٥ |
| | آعلموا أن الله شديد العقاب وأن الله غفور رحيم | ٩٨ | م « | ٥ |
| | عفا الله عنها والله غفور حليم ... ... ... ... ... | ١٠١ | م « | ٥ |
| | أنه من عمل منكم سـوءا بجهالة ثم تاب من بعـده | | | |
| | وأصلح فأنه غفور رحيم... ... ... ... ... ... | ٥٤ | ك الأنعـام | ٦ |
| | فمن اضطر غير باغ ولا عاد فإن ربك غفور رحيم ... | ١٤٥ | ك « | ٦ |
| | إن ربك سريع العقاب و إنه لغفور رحيم... ... ... | ١٦٥ | ك « | ٦ |
| | والذين عملوا السيئات ثم تابوا من بعدها وآمنوا إن | | | |
| | ربك من بعدها لغفور رحيم ... ... ... ... ... | ١٥٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | إن ربك لسريع العقاب و إنه لغفور رحيم ... ... | ١٦٧ | م « | ٧ |
| | فكلوا مما غنمتم حلالا طيبا واتقوا الله إن الله غفور رحيم | ٦٩ | م الأنفـال | ٨ |
| | يؤتكم خيرا مما أخذ منكم و يغفر لكم والله غفور رحيم | ٧٠ | م « | ٨ |
| | فخلوا سبيلهم إن الله غفور رحيم ... ... ... ... | ٥ | م التـوبة | ٩ |
| غَفُورٌ | : ثم يتوب الله من بعد ذلك على من يشاء والله غفور رحيم | ٢٧ | م التـوبة | ٩ |
| | ما على المحسنين من سبيل والله غفور رحيم ... ... | ٩١ | م « | ٩ |
| | سيدخلهم الله فى رحمته إن الله غفور رحيم ... ... | ٩٩ | م « | ٩ |
| | عسى الله أن يتوب عليهم إن الله غفور رحيم... ... | ١٠٢ | م « | ٩ |
| | يصيب به من يشاء من عباده وهو الغفور الرحيم ... | ١٠٧ | ك يـونس | ١٠ |
| | وقال آركبوا فيها بسم الله مجراها ومرساها إن ربى لغفور رحيم | ٤١ | ك هـود | ١١ |
| | إن النفس لأمارة بالسوء إلا ما رحم ربى إن ربى غفور رحيم | ٥٣ | ك يوسـف | ١٢ |
| | قال سوف أستغفر لكم ربى إنه هو الغفور الرحيم | ٩٨ | ك « | ١٢ |
| | فمن تبعنى فإنه منى ومن عصانى فإنك غفور رحيم ... | ٣٦ | ك إبراهـيم | ١٤ |
| | نبئ عبادى أنى أنا الغفور الرحيم ... ... ... ... | ٤٩ | ك الحجـر | ١٥ |
| | و إن تعدوا نعمة الله لا تحصوها إن الله لغفور رحيم | ١٨ | ك النحـل | ١٦ |
| | ثم جاهدوا وصبروا إن ربك من بعدها لغفور رحيم | ١١٠ | ك « | ١٦ |
| | فمن اضطر غير باغ ولا عاد فإن الله غفور رحيم ... | ١١٥ | ك « | ١٦ |
| | ثم تابوا من بعد ذلك وأصلحوا إن ربك من بعدها لغفور رحيم | ١١٩ | ك « | ١٦ |
| | و ربك الغفور ذو الرحمة ... ... ... ... ... ... | ٥٨ | ك الكهف | ١٨ |
| | ذلك ومن عاقب بمثـل ما عوقب به ثم بغى عليـه | | | |
| | لينصرنه الله إن الله لعفو غفور... ... ... ... | ٦٠ | م الحـج | ٢٢ |
| | إلا الذين تابوا من بعد ذلك وأصلحوا فإن الله غفور رحيم | ٥ | م النـور | ٢٤ |
| | ألا تحبون أن يغفر الله لكم والله غفور رحيم ... | ٢٢ | م « | ٢٤ |
| | ومن يكرههن فإن الله من بعد إكراههن غفور رحيم | ٣٣ | م « | ٢٤ |
| | فأذن لمن شئت منهم وآستغفر لهم الله إن الله غفور رحيم | ٦٢ | م « | ٢٤ |
| | إلا من ظلم ثم بدل حسنا بعد سوء فإنى غفور رحيم | ١١ | ك النمـل | ٢٧ |
| | قال رب إنى ظلمت نفسى فاغفر لى فغفر له إنه هو الغفور الرحيم | ١٦ | ك القصص | ٢٨ |
| | يعلم ما يلج فى الأرض وما يخرج منها وما ينزل من السماء | | | |
| | وما يعرج فيها وهو الرحيم الغفور... ... ... ... | ٢ | ك سـبإ | ٣٤ |
| | بلدة طيبة ورب غفور... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك « | ٣٤ |
| | إنما يخشى الله من عباده العلماء إن الله عزيز غفور | ٢٨ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | ليوفيهم أجورهم و يزيدهم من فضله إنه غفور شكور | ٣٠ | ك « | ٣٥ |
| | وقالوا الحمد لله الذى أذهب عنا الحزن إن ربنا لغفور شكور | ٣٤ | ك « | ٣٥ |
| | إن الله يغفر الذنوب جميعا إنه هو الغفور الرحيم ... | ٥٣ | م الـزمر | ٣٩ |
| | نزلا من غفور رحيم ... ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك فصـلت | ٤١ |
| | ألا إن الله هو الغفور الرحيم ... ... ... ... ... | ٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ومن يقترف حسنة نزد له فيها حسنا إن الله غفور شكور | ٢٣ | م « | ٤٢ |
| | كفى به شهيدا بينى و بينكم وهو الغفور الرحيم ... | ٨ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | ولو أنهم صبروا حتى تخرج إليهم لكان خيرا لهم | | | |
| | والله غفور رحيم ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | م الحجرات | ٤٩ |
| | لا يلتكم من أعمالكم شيئا إن الله غفور رحيم... ... | ١٤ | م « | ٤٩ |
| | و يجعل لكم نورا تمشون به و يغفر لكم والله غفور رحيم | ٢٨ | م الحـديد | ٥٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| غَفُورٌ: | وإنهم ليقولون منكرا من القول وزورا وإن الله | | | |
| | لعفو غفور ... ... ... ... ... ... ... | ٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| | ذلك خير لكم وأطهر فإن لم تجدوا فإن الله غفور رحيم | ١٢ | م « | ٥٨ |
| | والله قدير والله غفور رحيم ... ... ... ... ... ... | ٧ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | واستغفر لهن الله إن الله غفور رحيم ... ... ... | ١٢ | م « | ٦٠ |
| | وإن تعفوا وتصفحوا وتغفروا فإن الله غفور رحيم | ١٤ | م التغابن | ٦٤ |
| | تبتغي مرضاة أزواجك والله غفور رحيم... ... ... | ١ | م التحريم | ٦٦ |
| | ليبلوكم أيكم أحسن عملا وهو العزيز الغفور ... ... | ٢ | ك الملك | ٦٧ |
| | واستغفروا الله إن الله غفور رحيم ... ... ... ... | ٢٠ | م المزمل | ٧٣ |
| | إنه هو يبدئ ويعيد . وهو الغفور الودود ... ... | ١٤ | ك البروج | ٨٥ |
| غَفُورًا: | وأن تجمعوا بين الأختين إلا ما قد سلف إن الله | | | |
| (٢٠) | كان غفورا رحيما ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | م النساء | ٤ |
| | فامسحوا بوجوهكم وأيديكم إن الله كان عفوا غفورا | ٤٣ | م « | ٤ |
| | درجات منه ومغفرة ورحمة وكان الله غفورا رحيما | ٩٦ | م « | ٤ |
| | فأولئك عسى الله أن يعفو عنهم وكان الله عفوا غفورا | ٩٩ | م « | ٤ |
| | فقد وقع أجره على الله وكان الله غفورا رحيما ... ... | ١٠٠ | م « | ٤ |
| | واستغفر الله إن الله كان غفورا رحيما ... ... ... | ١٠٦ | م « | ٤ |
| | ومن يعمل سوءا أو يظلم نفسه ثم يستغفر الله يجد | | | |
| | الله غفورا رحيما ... ... ... ... ... ... ... | ١١٠ | م « | ٤ |
| | وإن تصلحوا وتتقوا فإن الله كان غفورا رحيما... | ١٢٩ | م « | ٤ |
| | أولئك سوف يؤتيهم أجورهم وكان الله غفورا رحيما | ١٥٢ | م « | ٤ |
| | إن تكونوا صالحين فإنه كان للأوابين غفورا ... | ٢٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ولكن لا تفقهون تسبيحهم إنه كان حليما غفورا ... | ٤٤ | ك « | ١٧ |
| | قل أنزله الذي يعلم السر في السموات والأرض إنه | | | |
| | كان غفورا رحيما ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | فأولئك يبدل الله سيئاتهم حسنات وكان الله غفورا رحيما | ٧٠ | م « | ٢٥ |
| | ولكن ما تعمدت قلوبكم وكان الله غفورا رحيما... | ٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ويعذب المنافقين إن شاء أو يتوب عليهم إن الله | | | |
| | كان غفورا رحيما ... ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | م « | ٣٣ |
| | لكيلا يكون عليك حرج وكان الله غفورا رحيما ... | ٥٠ | م « | ٣٣ |
| | ذلك أدنى أن يعرفن فلا يؤذين وكان الله غفورا رحيما | ٥٩ | م « | ٣٣ |
| | ويتوب الله على المؤمنين والمؤمنات وكان الله غفورا رحيما | ٧٣ | م « | ٣٣ |
| | ولئن زالتا إن أمسكهما من أحد من بعده إنه كان حليما غفورا | ٤١ | ك فاطر | ٣٥ |
| | يغفر لمن يشاء ويعذب من يشاء وكان الله غفورا رحيما | ١٤ | م الفتح | ٤٨ |
| الْغَفَّارُ: | وإني لغفار لمن تاب وآمن وعمل صالحا ثم اهتدى | ٨٢ | ك طه | ٢٠ |
| (٤) | رب السموات والأرض وما بينهما العزيز الغفار ... | ٦٦ | ك ص | ٣٨ |
| | كل يجري لأجل مسمى ألا هو العزيز الغفار ... ... | ٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وأنا أدعوكم إلى العزيز الغفار ... ... ... ... | ٤٢ | ك غافر | ٤٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| غَفَّارًا: | فقلت استغفروا ربكم إنه كان غفارا ... ... ... | ١٠ | ك نوح | ٧١ |
| غُفْرَانَكَ: | وقالوا سمعنا وأطعنا غفرانك ربنا وإليك المصير | ٢٨٥ | م البقرة | ٢ |
| مَغْفِرَةً: | أولئك الذين اشتروا الضلالة بالهدى والعذاب بالمغفرة | ١٧٥ | م « | ٢ |
| (٢٨) | والله يدعوا إلى الجنة والمغفرة بإذنه ... ... ... | ٢٢١ | م « | ٢ |
| | قول معروف ومغفرة خير من صدقة يتبعها أذى ... | ٢٦٣ | م « | ٢ |
| | والله يعدكم مغفرة منه وفضلا والله واسع عليم ... ... | ٢٦٨ | م « | ٢ |
| | وسارعوا إلى مغفرة من ربكم وجنة عرضها السموات | | | |
| | والأرض أعدت للمتقين ... ... ... ... ... ... | ١٣٣ | م آل عمران | ٣ |
| | أولئك جزاؤهم مغفرة من ربهم وجنات تجري من | | | |
| | تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٣٦ | م « | ٣ |
| | لمغفرة من الله ورحمة خير مما يجمعون... ... ... ... | ١٥٧ | م « | ٣ |
| | درجات منه ومغفرة ورحمة وكان الله غفورا رحيما | ٩٦ | م النساء | ٤ |
| | وعد الله الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم مغفرة وأجر عظيم | ٩ | م المائدة | ٥ |
| | لهم درجات عند ربهم ومغفرة ورزق كريم ... ... | ٤ | م الأنفال | ٨ |
| | أولئك هم المؤمنون حقا لهم مغفرة ورزق كريم ... | ٧٤ | م « | ٨ |
| | إلا الذين صبروا وعملوا الصالحات أولئك لهم مغفرة | | | |
| | وأجر كبير ... ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك هود | ١١ |
| | وإن ربك لذو مغفرة للناس على ظلمهم ... ... ... | ٦ | م الرعد | ١٣ |
| | فالذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم مغفرة ورزق كريم | ٥٠ | م الحج | ٢٢ |
| | أولئك مبرءون مما يقولون لهم مغفرة ورزق كريم | ٢٦ | م النور | ٢٤ |
| | والذاكرين الله كثيرا والذاكرات أعد الله لهم مغفرة | | | |
| | وأجرا عظيما... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ليجزي الذين آمنوا وعملوا الصالحات أولئك لهم مغفرة | | | |
| | ورزق كريم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك سبأ | ٣٤ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم مغفرة وأجر كبير | ٧ | ك فاطر | ٣٥ |
| | فبشره بمغفرة وأجر كريم ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك يس | ٣٦ |
| | إن ربك لذو مغفرة وذو عقاب أليم ... ... ... ... | ٤٣ | ك فصلت | ٤١ |
| | ولهم فيها من كل الثمرات ومغفرة من ربهم ... ... | ١٥ | م محمد | ٤٧ |
| | وعد الله الذين آمنوا وعملوا الصالحات منهم مغفرة | | | |
| | وأجرا عظيما ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٩ | م الفتح | ٤٨ |
| | أولئك الذين امتحن الله قلوبهم للتقوى لهم مغفرة | | | |
| | وأجر عظيم... ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | م الحجرات | ٤٩ |
| | إن ربك واسع المغفرة ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | م النجم | ٥٣ |
| | وفي الآخرة عذاب شديد ومغفرة من الله ورضوان | ٢٠ | م الحديد | ٥٧ |
| | سابقوا إلى مغفرة من ربكم وجنة عرضها كعرض السماء | | | |
| | والأرض أعدت للذين آمنوا بالله ورسله ... ... | ٢١ | م « | ٥٧ |
| | إن الذين يخشون ربهم بالغيب لهم مغفرة وأجر كبير | ١٢ | ك الملك | ٦٧ |
| | وما يذكرون إلا أن يشاء الله هو أهل التقوى | | | |
| | وأهل المغفرة ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٦ | ك المدثر | ٧٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **اسْتِغْفَارُ** | وما كان استغفار إبراهيم لأبيه إلا عن موعدة | ١١٤ | م التوبة | ٩ |
| **الْمُسْتَغْفِرِينَ** | الصابرين والصادقين والقانتين والمنفقين والمستغفرين بالأسحار ... ... ... ... ... | ١٧ | م آل عمران | ٣ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **تَغْفُلُونَ** | ودّ الذين كفروا لو تغفلون عن أسلحتكم وأمتعتكم | ١٠٢ | م النساء | ٤ |
| **أَغْفَلْنَا** | ولا تطع من أغفلنا قلبه عن ذكرنا واتبع هواه ... | ٢٨ | م الكهف | ١٨ |
| **بِغَافِلٍ** | وإن منها لما يهبط من خشية الله وما الله بغافل | | | |
| (٩) | عما تعملون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٤ | م البقرة | ٢ |
| | ويوم القيامة يردون إلى أشد العذاب وما الله بغافل | | | |
| | عما تعملون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨٥ | م » | ٢ |
| | ومن أظلم ممن كتم شهادة عنده من الله وما الله بغافل | | | |
| | عما تعملون ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٠ | م » | ٢ |
| | وإن الذين أوتوا الكتاب ليعلمون أنه الحق من ربهم | | | |
| | وما الله بغافل عما يعملون ... ... ... ... ... | ١٤٤ | م » | ٢ |
| | وإنه للحق من ربك وما الله بغافل عما تعملون ... | ١٤٩ | م » | ٢ |
| | تبغونها عوجا وأنتم شهداء وما الله بغافل عما تعملون | ٩٩ | م آل عمران | ٣ |
| | ولكل درجات مما عملوا وما ربك بغافل عما يعملون | ١٣٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | فاعبده وتوكل عليه وما ربك بغافل عما تعملون ... | ١٢٣ | ك هود | ١١ |
| | سيريكم آياته فتعرفونها وما ربك بغافل عما تعملون | ٩٣ | ك النمل | ٢٧ |
| **غَافِلًا** | ولا تحسبن الله غافلا عما يعمل الظالمون ... ... | ٤٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| **غَافِلُونَ** | ذلك أن لم يكن ربك مهلك القرى بظلم وأهلها غافلون | ١٣١ | ك الأنعام | ٦ |
| (٩) | أولئك كالأنعام بل هم أضل أولئك هم الغافلون ... | ١٧٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | والذين هم عن آياتنا غافلون . أولئك مأواهم النار | ٧ | ك يونس | ١٠ |
| | وإن كثيرا من الناس عن آياتنا لغافلون ... ... ... | ٩٢ | ك » | ١٠ |
| | وأخاف أن يأكله الذئب وأنتم عنه غافلون ... ... | ١٣ | ك يوسف | ١٢ |
| | أولئك الذين طبع الله على قلوبهم وسمعهم وأبصارهم وأولئك هم الغافلون... ... ... ... ... ... | ١٠٨ | ك النحل | ١٦ |
| | يعلمون ظاهرا من الحياة الدنيا وهم عن الآخرة هم غافلون | ٧ | ك الروم | ٣٠ |
| | لتنذر قوما ما أنذر آباؤهم فهم غافلون ... ... ... | ٦ | ك يس | ٣٦ |
| | وهم عن دعائهم غافلون... ... ... ... ... ... | ٥ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| **غَافِلِينَ** | وإن كنا عن دراستهم لغافلين... ... ... ... ... | ١٥٦ | ك الأنعام | ٦ |
| (٨) | فأغرقناهم في اليم بأنهم كذبوا بآياتنا وكانوا عنها غافلين | ١٣٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | ذلك بأنهم كذبوا بآياتنا وكانوا عنها غافلين ... ... | ١٤٦ | ك » | ٧ |
| | شهدنا أن تقولوا يوم القيامة إنا كنا عن هذا غافلين | ١٧٢ | ك » | ٧ |
| | ودون الجهر من القول بالغدو والآصال ولا تكن من الغافلين | ٢٠٥ | ك » | ٧ |
| | فكفى بالله شهيدا بيننا وبينكم إن كنا عن عبادتكم لغافلين | ٢٩ | ك يونس | ١٠ |
| | وإن كنت من قبله لمن الغافلين ... ... ... ... | ٣ | م يوسف | ١٢ |
| | ولقد خلقنا فوقكم سبع طرائق وما كنا عن الخلق غافلين | ١٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **الْغَافِلَاتِ** | إن الذين يرمون المحصنات الغافلات المؤمنات لعنوا في الدنيا والآخرة... ... ... ... ... ... | ٢٣ | م النور | ٢٤ |
| **غَفْلَةٍ** | وأنذرهم يوم الحسرة إذ قضى الأمر وهم في غفلة | ٣٩ | ك مريم | ١٩ |
| (٥) | اقترب للناس حسابهم وهم في غفلة معرضون ... ... | ١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | يا ويلنا قد كنا في غفلة من هذا بل كنا ظالمين ... ... | ٩٧ | ك » | ٢١ |
| | ودخل المدينة على حين غفلة من أهلها ... ... ... | ١٥ | ك القصص | ٢٨ |
| | لقد كنت في غفلة من هذا فكشفنا عنك غطاءك ... | ٢٢ | ك ق | ٥٠ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **غَلَبَتْ** | كم من فئة قليلة غلبت فئة كثيرة بإذن الله ... ... | ٢٤٩ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | قالوا ربنا غلبت علينا شقوتنا وكنا قوما ضالين ... ... | ١٠٦ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| **غَلَبُوا** | قال الذين غلبوا على أمرهم لنتخذن عليهم مسجدا | ٢١ | ك الكهف | ١٨ |
| **لَأَغْلِبَنَّ** | كتب الله لأغلبن أنا ورسلي... ... ... ... ... | ٢١ | م المجادلة | ٥٨ |
| **تَغْلِبُونَ** | لا تسمعوا لهذا القرآن والغوا فيه لعلكم تغلبون | ٢٦ | ك فصلت | ٤١ |
| **يَغْلِبْ** | ومن يقاتل في سبيل الله فيقتل أو يغلب فسوف نؤتيه أجرا عظيما ... ... ... ... ... ... | ٧٤ | م النساء | ٤ |
| **يَغْلِبُوا** | إن يكن منكم عشرون صابرون يغلبوا مائتين... ... | ٦٥ | م الأنفال | ٨ |
| (٤) | وإن يكن منكم مائة يغلبوا ألفا من الذين كفروا ... | ٦٥ | م » | ٨ |
| | فإن يكن منكم مائة صابرة يغلبوا مائتين ... ... ... | ٦٦ | م » | ٨ |
| | وإن يكن منكم ألف يغلبوا ألفين بإذن الله ... ... | ٦٦ | م » | ٨ |
| **سَيَغْلِبُونَ** | غلبت الروم . في أدنى الأرض وهم من بعد غلبهم سيغلبون . في بضع سنين ... ... ... ... ... | ٣ | ك الروم | ٣٠ |
| **غُلِبَتِ** | الم . غلبت الروم . في أدنى الأرض ... ... | ٢ | ك » | ٣٠ |
| **فَغُلِبُوا** | فغلبوا هنالك وانقلبوا صاغرين ... ... ... ... | ١١٩ | ك الأعراف | ٧ |
| **سَتُغْلَبُونَ** | قل للذين كفروا ستغلبون وتحشرون إلى جهنم | ١٢ | م آل عمران | ٣ |
| **يُغْلَبُونَ** | فسينفقونها ثم تكون عليهم حسرة ثم يغلبون ... | ٣٦ | ك الأنفال | ٨ |
| **غَلَبِهِمْ** | وهم من بعد غلبهم سيغلبون . في بضع سنين ... | ٣ | م الروم | ٣٠ |
| **غَالِبٌ** | إن ينصركم الله فلا غالب لكم... ... ... ... ... | ١٦٠ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | وقال لا غالب لكم اليوم من الناس وإني جار لكم ... | ٤٨ | م الأنفال | ٨ |
| | والله غالب على أمره ولكن أكثر الناس لا يعلمون | ٢١ | ك يوسف | ١٢ |
| **غَالِبُونَ** | ادخلوا عليهم الباب فإذا دخلتموه فإنكم غالبون | ٢٣ | م المائدة | ٥ |
| (٦) | فإن حزب الله هم الغالبون ... ... ... ... ... | ٥٦ | م » | ٥ |
| | أفلا يرون أنا نأتي الأرض ننقصها من أطرافها أفهم الغالبون ... ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | فألقوا حبالهم وعصيهم وقالوا بعزة فرعون إنا لنحن الغالبون ... ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | بآياتنا أنتما ومن اتبعكما الغالبون ... ... ... ... | ٣٥ | ك القصص | ٢٨ |
| | وإن جندنا لهم الغالبون ... ... ... ... ... ... | ١٧٣ | ك الصافات | ٣٧ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| **ٱلْغَالِبِينَ** | : قالوا إن لنا لأجرا إن كنا نحن الغالبين ... ... | الأعراف | ٧ ك ١١٣ |
| (٤) | لعلنا نتبع السحرة إن كانوا هم الغالبين ... ... ... | الشعراء | ٢٦ ك ٤٠ |
| | أئن لنا لأجرا إن كنا نحن الغالبين ... ... ... ... | « | ٢٦ ك ٤١ |
| | ونصرناهم فكانوا هم الغالبين ... ... ... ... ... | الصافات | ٣٧ ك ١١٦ |
| **مَغْلُوبٌ** | : فدعا ربه أني مغلوب فانتصر ... ... ... ... | القمر | ٥٤ ك ١٠ |
| **غُلْبًا** | : فأنبتنا فيها حبا . وعنبا وقضبا . وزيتونا ونخلا . | | |
| | وحدائق غلبا ... ... ... ... ... ... | عبس | ٨٠ ك ٣٠ |

✦✦✦

| | | | |
|---|---|---|---|
| **أَغْلُظْ** | : يأيها النبيّ جاهد الكفار والمنافقين وأغلظ عليهم... | التوبة | ٩ م ٧٣ |
| (٢) | يأيها النبيّ جاهد الكفار والمنافقين وأغلظ عليهم ... | التحريم | ٦٦ م ٩ |
| **ٱسْتَغْلَظَ** | : كزرع أخرج شطأه فآزره فاستغلظ فاستوى على سوقه | الفتح | ٤٨ م ٢٩ |
| **غَلِيظٌ** | : ولو كنت فظا غليظ القلب لانفضوا من حولك ... | آل عمران | ٣ م ١٥٩ |
| (٥) | ونجيناهم من عذاب غليظ ... ... ... ... ... | هود | ١١ ك ٥٨ |
| | وما هو بميت ومن ورائه عذاب غليظ ... ... ... | إبراهيم | ١٤ ك ١٧ |
| | نمتعهم قليلا ثم نضطرهم إلى عذاب غليظ ... ... ... | لقمان | ٣١ ك ٢٤ |
| | فلنذيقن الذين كفروا بما عملوا ولنذيقنهم من عذاب غليظ | فصلت | ٤١ ك ٥٠ |
| **غَلِيظًا** | : وأخذن منكم ميثاقا غليظا ... ... ... ... ... | النساء | ٤ م ٢١ |
| (٣) | وقلنا لهم لا تعدوا في السبت وأخذنا منهم ميثاقا غليظا | « | ٤ م ١٥٤ |
| | ومنك ومن نوح وإبراهيم وموسى وعيسى ابن مريم | | |
| | وأخذنا منهم ميثاقا غليظا ... ... ... ... ... | الأحزاب | ٣٣ م ٧ |
| **غِلَاظٌ** | : عليها ملائكة غلاظ شداد لا يعصون الله ما أمرهم | التحريم | ٦٦ م ٦ |
| **غِلْظَةً** | : فاقتلوا الذين يلونكم من الكفار وليجدوا فيكم غلظة | التوبة | ٩ م ١٢٣ |

✦✦✦

| | | | |
|---|---|---|---|
| **غُلْفٌ** | : وقالوا قلوبنا غلف بل لعنهم الله بكفرهم فقليلا ما يؤمنون | البقرة | ٢ م ٨٨ |
| (٢) | وقتلهم الأنبياء بغير حق وقولهم قلوبنا غلف ... ... | النساء | ٤ م ١٥٥ |

✦✦✦

| | | | |
|---|---|---|---|
| **غَلَّقَتِ** | : وغلقت الأبواب وقالت هيت لك ... ... ... | يوسف | ١٢ ك ٢٣ |

✦✦✦

| | | | |
|---|---|---|---|
| **غَلَّ** | : ومن يغلل يأت بما غل يوم القيامة ... ... ... ... | آل عمران | ٣ م ١٦١ |
| **يَغُلَّ** | : وما كان لنبيّ أن يغل ... ... ... ... ... ... | « | ٣ م ١٦١ |
| **يَغْلُلْ** | : ومن يغلل يأت بما غل يوم القيامة ... ... ... ... | « | ٣ م ١٦١ |
| **فَغُلُّوهُ** | : خذوه فغلوه . ثم الجحيم صلوه ... ... ... ... | الحاقة | ٦٩ ك ٣٠ |
| **غُلَّتْ** | : غلت أيديهم ولعنوا بما قالوا ... ... ... ... ... | المائدة | ٥ م ٦٤ |
| **غِلٍّ** | : ونزعنا ما في صدورهم من غل تجري من تحتهم الأنهار | الأعراف | ٧ ك ٤٣ |
| (٢) | ونزعنا ما في صدورهم من غل إخوانا على سرر متقابلين | الحجر | ١٥ ك ٤٧ |
| **غِلًّا** | : ولا تجعل في قلوبنا غلا للذين آمنوا ربنا إنك رءوف رحيم | الحشر | ٥٩ م ١٠ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| **ٱلْأَغْلَالُ** | : ويضع عنهم إصرهم والأغلال التي كانت عليهم | الأعراف | ٧ ك ١٥٧ |
| (٤) | أولئك الذين كفروا بربهم وأولئك الأغلال في أعناقهم | الرعد | ١٣ م ٥ |
| | وجعلنا الأغلال في أعناق الذين كفروا ... ... ... | سبأ | ٣٤ ك ٣٣ |
| | إذ الأغلال في أعناقهم والسلاسل يسحبون ... ... | غافر | ٤٠ ك ٧١ |
| **أَغْلَالًا** | : إنا جعلنا في أعناقهم أغلالا ... ... ... ... ... | يس | ٣٦ ك ٨ |
| (٢) | إنا أعتدنا للكافرين سلاسلا وأغلالا وسعيرا ... ... | الإنسان | ٧٦ م ٤ |
| **مَغْلُولَةٌ** | : وقالت اليهود يد الله مغلولة ... ... ... ... ... | المائدة | ٥ م ٦٤ |
| (٢) | ولا تجعل يدك مغلولة إلى عنقك ... ... ... ... | الإسراء | ١٧ ك ٢٩ |

✦✦✦

| | | | |
|---|---|---|---|
| **غُلَامٌ** | : قال رب أنى يكون لي غلام وقد بلغني الكبر ... ... | آل عمران | ٣ م ٤٠ |
| (٩) | فأرسلوا واردهم فأدلى دلوه قال يا بشرى هذا غلام | يوسف | ١٢ ك ١٩ |
| | قالوا لا توجل إنا نبشرك بغلام عليم ... ... ... ... | الحجر | ١٥ ك ٥٣ |
| | وأما الغلام فكان أبواه مؤمنين فخشينا أن يرهقهما | الكهف | ١٨ ك ٨٠ |
| | يا زكريا إنا نبشرك بغلام اسمه يحيى لم نجعل له من قبل سميا | مريم | ١٩ ك ٧ |
| | قال رب أنى يكون لي غلام وكانت امرأتي عاقرا ... | « | ١٩ ك ٨ |
| | قالت أنى يكون لي غلام ولم يمسسني بشر ... ... ... | « | ١٩ ك ٢٠ |
| | فبشرناه بغلام حليم ... ... ... ... ... ... ... | الصافات | ٣٧ ك ١٠١ |
| | فأوجس منهم خيفة قالوا لا تخف وبشروه بغلام عليم | الذاريات | ٥١ ك ٢٨ |
| **غُلَامًا** | : فانطلقا حتى إذا لقيا غلاما فقتله ... ... ... ... | الكهف | ١٨ ك ٧٤ |
| (٢) | قال إنما أنا رسول ربك لأهب لك غلاما زكيا ... ... | مريم | ١٩ ك ١٩ |
| **غُلَامَيْنِ** | : وأما الجدار فكان لغلامين يتيمين في المدينة ... | الكهف | ١٨ ك ٨٢ |
| **غِلْمَانٌ** | : ويطوف عليهم غلمان لهم كأنهم لؤلؤ مكنون ... | الطور | ٥٢ ك ٢٤ |

✦✦✦

| | | | |
|---|---|---|---|
| **تَغْلُوا** | : لا تغلوا في دينكم ولا تقولوا على الله إلا الحق ... | النساء | ٤ م ١٧١ |
| (٠) | قل يأهل الكتاب لا تغلوا في دينكم غير الحق ... ... | المائدة | ٥ م ٧٧ |

✦✦✦

| | | | |
|---|---|---|---|
| **يَغْلِي** | : إن شجرة الزقوم . طعام الأثيم . كالمهل يغلي في البطون | الدخان | ٤٤ ك ٤٥ |
| **كَغَلْيِ** | : كغلي الحميم ... ... ... ... ... ... ... | « | ٤٤ ك ٤٦ |

✦✦✦

| | | | |
|---|---|---|---|
| **غَمْرَةٍ** | : بل قلوبهم في غمرة من هذا ولهم أعمال من دون ذلك | المؤمنون | ٢٣ ك ٦٣ |
| (٢) | قتل الخراصون . الذين هم في غمرة ساهون ... ... | الذاريات | ٥١ ك ١١ |
| **غَمْرَتِهِمْ** | : فذرهم في غمرتهم حتى حين ... ... ... ... ... | المؤمنون | ٢٣ ك ٥٤ |
| **غَمَرَاتِ** | : ولو ترى إذ الظالمون في غمرات الموت ... ... | الأنعام | ٦ م ٩٣ |

✦✦✦

| | | | |
|---|---|---|---|
| **يَتَغَامَزُونَ** | : وإذا مروا بهم يتغامزون ... ... ... ... | المطففين | ٨٣ ك ٣٠ |

✦✦✦

| | | | |
|---|---|---|---|
| **تُغْمِضُوا** | : ولستم بآخذيه إلا أن تغمضوا فيه ... ... ... | البقرة | ٢ م ٢٦٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | * * * | | | |
| غَمٍّ | فأثابكم غما بغم لكيلا تحزنوا على ما فاتكم ... ... ... | ١٥٣ | م آل عمران | ٣ |
| (٥) | ثم أنزل عليكم من بعد الغم أمنة نعاسا ... ... ... ... | ١٥٤ | م « | ٣ |
| | وقتلت نفسا فنجيناك من الغم وفتناك فتونا ... ... | ٤٠ | ك طه | ٢٠ |
| | فاستجبنا له ونجيناه من الغم وكذلك ننجى المؤمنين ... | ٨٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | كلما أرادوا أن يخرجوا منها من غم أعيدوا فيها ... | ٢٢ | م الحج | ٢٢ |
| غَمًّا | فأثابكم غما بغم لكيلا تحزنوا على ما فاتكم ... ... ... | ١٥٣ | م آل عمران | ٣ |
| غُمَّةً | ثم لا يكن أمركم عليكم غمة ثم اقضوا إلىّ ولا تنظرون | ٧١ | ك يونس | ١٠ |
| الْغَمَامَ | وظللنا عليكم الغمام وأنزلنا عليكم المنّ والسلوى ... | ٥٧ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | هل ينظرون إلا أن يأتيهم الله فى ظلل من الغمام ... | ٢١٠ | م « | ٢ |
| | وظللنا عليهم الغمام وأنزلنا عليهم المنّ والسلوى ... ... | ١٦٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | ويوم تشقق السماء بالغمام ونزل الملائكة تنزيلا ... | ٢٥ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | * * * | | | |
| غَنِمْتُمْ | واعلموا أنما غنمتم من شىء فأن لله خمسه وللرسول | ٤١ | م الأنفال | ٨ |
| (٢) | فكلوا مما غنمتم حلالا طيبا واتقوا الله ... ... ... | ٦٩ | م « | ٨ |
| مَغَانِمَ | تبتغون عرض الحياة الدنيا فعند الله مغانم كثيرة | ٩٤ | م النساء | ٤ |
| (٤) | سيقول المخلفون إذا انطلقتم إلى مغانم لتأخذوها | | | |
| | ذرونا نتبعكم ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | م الفتح | ٤٨ |
| | ومغانم كثيرة يأخذونها وكان الله عزيزا حكيما ... | ١٩ | م « | ٤٨ |
| | وعدكم الله مغانم كثيرة تأخذونها... ... ... ... ... | ٢٠ | م « | ٤٨ |
| الْغَنَمِ | ومن البقر والغنم حرمنا عليهم شحومهما ... ... ... | ١٤٦ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | وداود وسليمان إذ يحكمان فى الحرث إذ نفشت فيه غنم القوم | ٧٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| غَنَمِى | قال هى عصاى أتوكأ عليها وأهش بها على غنمى | ١٨ | ك طه | ٢٠ |
| | * * * | | | |
| تَغْنَ | فجعلناها حصيدا كأن لم تغن بالأمس ... ... ... | ٢٤ | ك يونس | ١٠ |
| يَغْنَوْا | الذين كذبوا شعيبا كأن لم يغنوا فيها ... ... ... | ٩٢ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | فأصبحوا فى ديارهم جاثمين . كأن لم يغنوا فيها ... | ٦٨ | ك هود | ١١ |
| | فأصبحوا فى ديارهم جاثمين . كأن لم يغنوا فيها ألا بعدا لمدين | ٩٥ | ك « | ١١ |
| أَغْنَى | قالوا ما أغنى عنكم جمعكم وما كنتم تستكبرون ... ... | ٤٨ | ك الأعراف | ٧ |
| (١٠) | فما أغنى عنهم ما كانوا يكسبون... ... ... ... ... | ٨٤ | ك الحجر | ١٥ |
| | ما أغنى عنهم ما كانوا يمتعون ... ... ... ... ... | ٢٠٧ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | قد قالها الذين من قبلهم فما أغنى عنهم ما كانوا يكسبون | ٥٠ | ك الزمر | ٣٩ |
| | كانوا أكثر منهم وأشد قوة وآثارا فى الأرض | | | |
| | فما أغنى عنهم ما كانوا يكسبون ... ... ... | ٨٢ | ك غافر | ٤٠ |
| | فما أغنى عنهم سمعهم ولا أبصارهم ولا أفئدتهم من شىء | ٢٦ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | وأنه هو أغنى وأقنى ... ... ... ... ... ... | ٤٨ | ك النجم | ٥٣ |
| | ما أغنى عنى ماليه ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك الحاقة | ٦٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَغْنَى | ووجدك عائلا فأغنى ... ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك الضحى | ٩٣ |
| | ما أغنى عنه ماله وما كسب ... ... ... ... ... ... | ٢ | ك المسد | ١١١ |
| أَغْنَاهُمُ | وما نقموا إلا أن أغناهم الله ورسوله من فضله | ٧٤ | م التوبة | ٩ |
| أَغْنَتْ | فما أغنت عنهم آلهتهم التى يدعون من دون الله من شىء | ١٠١ | ك هود | ١١ |
| أُغْنِى | وما أغنى عنكم من الله من شىء إن الحكم إلا لله | ٦٧ | ك يوسف | ١٢ |
| تُغْنِ | ويوم حنين إذ أعجبتكم كثرتكم فلم تغن عنكم شيئا ... | ٢٥ | م التوبة | ٩ |
| (٣) | إن يردنِ الرحمن بضر لا تغن عنى شفاعتهم شيئا ... | ٢٣ | ك يس | ٣٦ |
| | حكمة بالغة فما تغن النذر ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك القمر | ٥٤ |
| تُغْنِىَ | لن تغنى عنهم أموالهم ولا أولادهم من الله شيئا ... | ١٠ | م آل عمران | ٣ |
| (٦) | لن تغنى عنهم أموالهم ولا أولادهم من الله شيئا ... | ١١٦ | م « | ٣ |
| | وإن تعودوا نعد ولن تغنى عنكم فئتكم شيئا ولو كثرت | ١٩ | م الأنفال | ٨ |
| | وما تغنى الآيات والنذر عن قوم لا يؤمنون ... ... | ١٠١ | ك يونس | ١٠ |
| | وكم من ملك فى السموات لا تغنى شفاعتهم شيئا ... | ٢٦ | ك النجم | ٥٣ |
| | لن تغنى عنهم أموالهم ولا أولادهم من الله شيئا ... | ١٧ | م المجادلة | ٥٨ |
| يُغْنِ | وإن يتفرقا يغن الله كلا من سعته ... ... ... ... | ١٣٠ | م النساء | ٤ |
| يُغْنِهِمُ | إن يكونوا فقراء يغنهم الله من فضله ... ... ... | ٣٢ | م النور | ٢٤ |
| يُغْنُوا | إنهم لن يغنوا عنك من الله شيئا ... ... ... ... | ١٩ | ك الجاثية | ٤٥ |
| يُغْنِى | وما يتبع أكثرهم إلا ظنا إن الظن لا يغنى من الحق شيئا | ٣٦ | ك يونس | ١٠ |
| (١٠) | ما كان يغنى عنهم من الله من شىء ... ... ... ... | ٦٨ | ك يوسف | ١٢ |
| | لم تعبد ما لا يسمع ولا يبصر ولا يغنى عنك شيئا ... | ٤٢ | ك مريم | ١٩ |
| | يوم لا يغنى مولى عن مولى شيئا ولا هم ينصرون ... | ٤١ | ك الدخان | ٤٤ |
| | ولا يغنى عنهم ما كسبوا شيئا ولا ما اتخذوا من دون | | | |
| | الله أولياء ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | يوم لا يغنى عنهم كيدهم شيئا ولا هم ينصرون... ... | ٤٦ | ك الطور | ٥٢ |
| | إن يتبعون إلا الظن وإن الظن لا يغنى من الحق شيئا | ٢٨ | ك النجم | ٥٣ |
| | لا ظليل ولا يغنى من اللهب... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك المرسلات | ٧٧ |
| | لا يسمن ولا يغنى من جوع... ... ... ... ... ... | ٧ | ك الغاشية | ٨٨ |
| | وما يغنى عنه ماله إذا تردّى... ... ... ... ... ... | ١١ | ك الليل | ٩٢ |
| يُغْنِيَا | فخانتاهما فلم يغنيا عنهما من الله شيئا ... ... ... | ١٠ | م التحريم | ٦٦ |
| يُغْنِيكُمُ | وإن خفتم عيلة فسوف يغنيكم الله من فضله ... | ٢٨ | م التوبة | ٩ |
| يُغْنِيهِ | لكل امرئ منهم يومئذ شأن يغنيه ... ... ... | ٣٧ | ك عبس | ٨٠ |
| يُغْنِيهِمُ | وليستعفف الذين لا يجدون نكاحا حتى يغنيهم | | | |
| | الله من فضله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | م النور | ٢٤ |
| اسْتَغْنَى | فقالوا أبشر يهدوننا فكفروا وتولوا واستغنى الله | ٦ | م التغابن | ٦٤ |
| (٤) | أما من استغنى . فأنت له تصدّى ... ... ... ... | ٥ | ك عبس | ٨٠ |
| | وأما من بخل واستغنى . وكذب بالحسنى . فسنيسره للعسرى | ٨ | ك الليل | ٩٢ |
| | كلا إن الإنسان ليطغى . أن رآه استغنى ... ... ... | ٧ | ك العلق | ٩٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| غَنِيٌّ (١٧) | : قول معروف ومغفرة خير من صدقة يتبعها أذى والله غنيّ حليم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦٣ م | البقـرة | ٢ |
| | واعلموا أن الله غنيّ حميد ... ... ... ... ... ... | ٢٦٧ م | « | ٢ |
| | ومن كفر فإن الله غنيّ عن العالمين ... ... ... ... | ٩٧ م | آل عمران | ٣ |
| | وربك الغنيّ ذو الرحمة ... ... ... ... ... ... ... | ١٣٣ ك | الأنعام | ٦ |
| | قالوا اتخذ الله ولدا سبحانه هو الغنيّ ... ... ... ... | ٦٨ ك | يـونس | ١٠ |
| | إن تكفروا أنتم ومن في الأرض جميعا فإن الله لغنيّ حميد | ٨ ك | إبراهيم | ١٤ |
| | له ما في السموات وما في الأرض وإن الله لهو الغنيّ الحميد | ٦٤ م | الحـج | ٢٢ |
| | ومن كفر فإن ربي غنيّ كريم ... ... ... ... ... | ٤٠ ك | النمـل | ٢٧ |
| | ومن جاهد فإنما يجاهد لنفسه إن الله لغنيّ عن العالمين | ٦ م | العنكبوت | ٢٩ |
| | ومن كفر فإن الله غنيّ حميد... ... ... ... ... ... | ١٢ ك | لقمان | ٣١ |
| | لله ما في السموات والأرض إن الله هو الغنيّ الحميد | ٢٦ ك | « | ٣١ |
| | يأيها الناس أنتم الفقراء إلى الله والله هو الغنيّ الحميد | ١٥ ك | فاطـر | ٣٥ |
| | إن تكفروا فإن الله غنيّ عنكم ... ... ... ... ... | ٧ ك | الـزمر | ٣٩ |
| | ومن يبخل فإنما يبخل عن نفسه والله الغنيّ وأنتم الفقراء | ٣٨ م | محمـد | ٤٧ |
| | ومن يتول فإن الله هو الغنيّ الحميد ... ... ... ... | ٢٤ م | الحـديد | ٥٧ |
| | ومن يتول فإن الله هو الغنيّ الحميد ... ... ... ... | ٦ م | الممتحنـة | ٦٠ |
| | فكفروا وتولوا واستغنى الله والله غنيّ حميد ... ... | ٦ م | التغـابن | ٦٤ |
| غَنِيًّا | : ومن كان غنيا فليستعفف ... ... ... ... ... ... | ٦ م | النسـاء | ٤ |
| (٣) | وكان الله غنيا حميدا ... ... ... ... ... ... ... | ١٣١ م | « | ٤ |
| | إن يكن غنيا أو فقيرا فالله أولى بهما ... ... ... ... | ١٣٥ م | « | ٤ |
| أَغْنِيَاءَ | : يحسبهم الجاهل أغنياء من التعفف ... ... ... ... | ٢٧٣ م | البقـرة | ٢ |
| (٤) | لقد سمع الله قول الذين قالوا إن الله فقير ونحن أغنياء | ١٨١ م | آل عمران | ٣ |
| | إنما السبيل على الذين يستأذنونك وهم أغنياء ... ... | ٩٣ م | التـوبة | ٩ |
| | كي لا يكون دولة بين الأغنياء منكم ... ... ... ... | ٧ م | الحشـر | ٥٩ |
| مُغْنُونَ | : فهل أنتم مغنون عنا من عذاب الله من شيء ... | ٢١ ك | إبراهيم | ١٤ |
| (٢) | إنا كنا لكم تبعا فهل أنتم مغنون عنا نصيبا من النار ... | ٤٧ ك | غافـر | ٤٠ |
| | ✦✦✦ | | | |
| يُغَاثُوا | : وإن يستغيثوا يغاثوا بماء كالمهل يشوي الوجوه | ٢٩ ك | الكهف | ١٨ |
| فَاسْتَغَاثَهُ | : فاستغاثه الذي من شيعته على الذي من عدوه | ١٥ ك | القصص | ٢٨ |
| يَسْتَغِيثَانِ | : وهما يستغيثان الله ويلك آمن... ... ... ... ... | ١٧ ك | الأحقاف | ٤٦ |
| تَسْتَغِيثُونَ | : إذ تستغيثون ربكم فاستجاب لكم ... ... ... ... | ٩ م | الأنفـال | ٨ |
| يَسْتَغِيثُوا | : وإن يستغيثوا يغاثوا بماء كالمهل يشوي الوجوه | ٢٩ ك | الكهف | ١٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| الْغَارِ | : إذ أخرجه الذين كفروا ثاني اثنين إذ هما في الغار | ٤٠ م | التـوبة | ٩ |
| غَوْرًا | : أو يصبح ماؤها غورا فلن تستطيع له طلبا ... ... | ٤١ ك | الكهف | ١٨ |
| (٢) | قل أرأيتم إن أصبح ماؤكم غورا فمن يأتيكم بماء معين | ٣٠ ك | المـلك | ٦٧ |
| مَغَارَاتٍ | : لو يجدون ملجأ أو مغارات أو مدخلا لولوا إليه | ٥٧ م | التـوبة | ٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| يَغُوصُونَ | : ومن الشياطين من يغوصون له ... ... ... | ٨٢ ك | الأنبياء | ٢١ |
| غَوَّاصٍ | : والشياطين كل بناء وغواص ... ... ... ... | ٣٧ ك | ص | ٣٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| الْغَائِطِ | : وإن كنتم مرضى أو على سفر أو جاء أحد منكم | | | |
| (٢) | من الغائط أو لامستم النساء فلم تجدوا ماء فتيمموا | ٤٣ م | النسـاء | ٤ |
| | وإن كنتم مرضى أو على سفر أو جاء أحد منكم | | | |
| | من الغائط ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦ م | المائدة | ٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| غَوْلٌ | : لا فيها غول ولا هم عنها ينزفون ... ... ... ... | ٤٧ ك | الصافات | ٣٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| غَوَى | : وعصى آدم ربه فغوى ... ... ... ... ... ... | ١٢١ ك | طـه | ٢٠ |
| (٢) | والنجم إذا هوى . ما ضل صاحبكم وما غوى ... ... | ٢ ك | النجـم | ٥٣ |
| غَوَيْنَا | : ربنا هؤلاء الذين أغوينا أغويناهم كما غوينا ... | ٦٣ ك | القصص | ٢٨ |
| أَغْوَيْتَنِي | : قال فبما أغويتني لأقعدن لهم صراطك المستقيم... | ١٦ ك | الأعراف | ٧ |
| (٢) | قال رب بما أغويتني لأزينن لهم في الأرض ... ... | ٣٩ ك | الحجـر | ١٥ |
| أَغْوَيْنَا | : ربنا هؤلاء الذين أغوينا أغويناهم كما غوينا ... | ٦٣ ك | القصص | ٢٨ |
| أَغْوَيْنَاكُمْ | : فأغوينا كم إنا كنا غاوين ... ... ... ... ... | ٣٢ ك | الصافات | ٣٧ |
| أَغْوَيْنَاهُمْ | : ربنا هؤلاء الذين أغوينا أغويناهم كما غوينا | ٦٣ ك | القصص | ٢٨ |
| لَأُغْوِيَنَّهُمْ | : لأزينن لهم في الأرض ولأغوينهم أجمعين ... | ٣٩ ك | الحجـر | ١٥ |
| (٢) | قال فبعزتك لأغوينهم أجمعين ... ... ... ... ... | ٨٢ ك | ص | ٣٨ |
| يُغْوِيَكُمْ | : ولا ينفعكم نصحي إن أردت أن أنصح لكم إن | | | |
| | كان الله يريد أن يغويكم ... ... ... ... ... | ٣٤ ك | هـود | ١١ |
| الْغَيِّ | : لا إكراه في الدين قد تبين الرشد من الغيّ ... ... | ٢٥٦ م | البقـرة | ٢ |
| (٣) | وإن يروا سبيل الغيّ يتخذوه سبيلا ... ... ... ... | ١٤٦ ك | الأعراف | ٧ |
| | وإخوانهم يمدونهم في الغيّ ثم لا يقصرون ... ... | ٢٠٢ ك | « | ٧ |
| غَيًّا | : فسوف يلقون غيا ... ... ... ... ... ... ... | ٥٩ ك | مـريم | ١٩ |
| غَوِيٌّ | : قال له موسى إنك لغويّ مبين ... ... ... ... ... | ١٨ ك | القصص | ٢٨ |
| الْغَاوُونَ | : فكبكبوا فيها هم والغاوون... ... ... ... ... | ٩٤ ك | الشعراء | ٢٦ |
| (٢) | والشعراء يتبعهم الغاوون ... ... ... ... ... ... | ٢٢٤ م | « | ٢٦ |
| الْغَاوِينَ | : فانسلخ منها فأتبعه الشيطان فكان من الغاوين | ١٧٥ ك | الأعراف | ٧ |
| (٤) | إن عبادي ليس لك عليهم سلطان إلا من اتبعك | | | |
| | من الغاوين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٢ ك | الحجـر | ٥ |
| | وبرزت الجحيم للغاوين ... ... ... ... ... ... | ٩١ ك | الشعراء | ٢٦ |
| | فأغوينا كم إنا كنا غاوين ... ... ... ... ... | ٣٢ ك | الصافات | ٣٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| يَغْتَبْ | : ولا تجسسوا ولا يغتب بعضكم بعضا ... ... ... | ١٢ | م الحجرات | ٤٩ |
| ٱلْغَيْبِ | : الذين يؤمنون بالغيب ويقيمون الصلاة ... ... | ٣ | م البقرة | ٢ |
| (٤٨) | إنى أعلم غيب السموات والأرض ... ... ... | ٣٣ | م « | ٢ |
| | ذلك من أنباء الغيب نوحيه إليك ... ... ... | ٤٤ | م آل عمران | ٣ |
| | وما كان الله ليطلعكم على الغيب ... ... ... | ١٧٩ | م « | ٣ |
| | فالصالحات قانتات حافظات للغيب بما حفظ الله | ٣٤ | م النساء | ٤ |
| | ليعلم الله من يخافه بالغيب ... ... ... ... | ٩٤ | م المائدة | ٥ |
| | قل لا أقول لكم عندى خزائن الله ولا أعلم الغيب ... | ٥٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | وعنده مفاتح الغيب لا يعلمها إلا هو ... ... ... | ٥٩ | ك « | ٦ |
| | عالم الغيب والشهادة وهو الحكيم الخبير ... ... | ٧٣ | ك « | ٦ |
| | ولو كنت أعلم الغيب لاستكثرت من الخير ... ... | ١٨٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | ثم تردون إلى عالم الغيب والشهادة ... ... ... | ٩٤ | م التوبة | ٩ |
| | وستردون إلى عالم الغيب والشهادة فينبئكم بما كنتم تعملون | ١٠٥ | م « | ٩ |
| | فقل إنما الغيب لله فانتظروا إنى معكم من المنتظرين | ٢٠ | ك يونس | ١٠ |
| | ولا أقول لكم عندى خزائن الله ولا أعلم الغيب ... ... | ٣١ | ك هود | ١١ |
| | تلك من أنباء الغيب نوحيها إليك ... ... ... | ٤٩ | ك « | ١١ |
| | ولله غيب السموات والأرض وإليه يرجع الأمر كله | ١٢٣ | ك « | ١١ |
| | ذلك ليعلم أنى لم أخنه بالغيب ... ... ... ... | ٥٢ | ك يوسف | ١٢ |
| | وما شهدنا إلا بما علمنا وما كنا للغيب حافظين ... ... | ٨١ | ك « | ١٢ |
| | ذلك من أنباء الغيب نوحيه إليك ... ... ... | ١٠٢ | ك « | ١٢ |
| | عالم الغيب والشهادة الكبير المتعال ... ... ... | ٩ | م الرعد | ١٣ |
| | ولله غيب السموات والأرض ... ... ... ... | ٧٧ | ك النحل | ١٦ |
| | ويقولون خمسة سادسهم كلبهم رجما بالغيب ... ... | ٢٢ | ك الكهف | ١٨ |
| | قل الله أعلم بما لبثوا له غيب السموات والأرض ... | ٢٦ | ك « | ١٨ |
| | جنات عدن التى وعد الرحمن عباده بالغيب ... ... | ٦١ | ك مريم | ١٩ |
| | أطلع الغيب أم اتخذ عند الرحمن عهدا ... ... ... | ٧٨ | ك « | ١٩ |
| | الذين يخشون ربهم بالغيب وهم من الساعة مشفقون | ٤٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | عالم الغيب والشهادة فتعالى عما يشركون ... ... ... | ٩٢ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | قل لا يعلم من فى السموات والأرض الغيب إلا الله | ٦٥ | ك النمل | ٢٧ |
| | ذلك عالم الغيب والشهادة العزيز الرحيم ... ... ... | ٦ | ك السجدة | ٣٢ |
| | قل بلى وربى لتأتينكم عالم الغيب ... ... ... ... | ٣ | ك سبأ | ٣٤ |
| | أن لو كانوا يعلمون الغيب ما لبثوا فى العذاب المهين | ١٤ | ك « | ٣٤ |
| | وقد كفروا به من قبل ويقذفون بالغيب من مكان بعيد | ٥٣ | ك « | ٣٤ |
| | إنما تنذر الذين يخشون ربهم بالغيب وأقاموا الصلاة | ١٨ | ك فاطر | ٣٥ |
| | إن الله عالم غيب السموات والأرض إنه عليم بذات الصدور | ٣٨ | ك « | ٣٥ |
| | إنما تنذر من اتبع الذكر وخشى الرحمن بالغيب ... ... | ١١ | ك يس | ٣٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ٱلْغَيْبُ | : عالم الغيب والشهادة أنت تحكم بين عبادك ... ... | ٤٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| | إن الله يعلم غيب السموات والأرض والله بصير بما تعملون | ١٨ | م الحجرات | ٤٩ |
| | من خشى الرحمن بالغيب وجاء بقلب منيب ... ... | ٣٣ | ك ق | ٥٠ |
| | أم عندهم الغيب فهم يكتبون... ... ... ... ... | ٤١ | ك الطور | ٥٢ |
| | أعنده علم الغيب فهو يرى ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك النجم | ٥٣ |
| | وليعلم الله من ينصره ورسله بالغيب إن الله قوى عزيز | ٢٥ | م الحديد | ٥٧ |
| | عالم الغيب والشهادة هو الرحمن الرحيم ... ... ... | ٢٢ | م الحشر | ٥٩ |
| | ثم تردون إلى عالم الغيب والشهادة فينبئكم بما كنتم تعملون | ٨ | م الجمعة | ٦٢ |
| | عالم الغيب والشهادة العزيز الحكيم ... ... ... | ١٨ | م التغابن | ٦٤ |
| | إن الذين يخشون ربهم بالغيب لهم مغفرة وأجر كبير | ١٢ | ك الملك | ٦٧ |
| | أم عندهم الغيب فهم يكتبون ... ... ... ... | ٤٧ | ك القلم | ٦٨ |
| | عالم الغيب فلا يظهر على غيبه أحدا ... ... ... | ٢٦ | ك الجن | ٧٢ |
| | وما هو على الغيب بضنين ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك التكوير | ٨١ |
| غَيْبِهِ | : عالم الغيب فلا يظهر على غيبه أحدا ... ... ... | ٢٦ | ك الجن | ٧٢ |
| ٱلْغُيُوبِ | : قالوا لا علم لنا إنك أنت علام الغيوب ... ... | ١٠٩ | م المائدة | ٥ |
| (٤) | تعلم ما فى نفسى ولا أعلم ما فى نفسك إنك أنت علام الغيوب | ١١٦ | م « | ٥ |
| | ألم يعلموا أن الله يعلم سرهم ونجواهم وأن الله علام الغيوب | ٧٨ | م التوبة | ٩ |
| | قل إن ربى يقذف بالحق علام الغيوب ... ... ... | ٤٨ | ك سبأ | ٣٤ |
| غَائِبَةٍ | : وما من غائبة فى السماء والأرض إلا فى كتاب مبين | ٧٥ | ك النمل | ٢٧ |
| غَائِبِينَ | : فلنقصن عليهم بعلم وما كنا غائبين... ... ... | ٧ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | وتفقد الطير فقال ما لى لا أرى الهدهد أم كان من الغائبين | ٢٠ | ك النمل | ٢٧ |
| | وما هم عنها بغائبين ... ... ... ... ... ... | ١٦ | ك الانفطار | ٨٢ |
| غَيَابَةِ | : قال قائل منهم لا تقتلوا يوسف وألقوه فى غيابة الجب | ١٠ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | فلما ذهبوا به وأجمعوا أن يجعلوه فى غيابة الجب ... | ١٥ | ك « | ١٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| يُغَاثُ | : ثم يأتى من بعد ذلك عام فيه يغاث الناس ... ... | ٤٩ | ك « | ١٢ |
| يُغَاثُوا | : وإن يستغيثوا يغاثوا بماء كالمهل يشوى الوجوه | ٢٩ | ك الكهف | ١٨ |
| يَسْتَغِيثُوا | : وإن يستغيثوا يغاثوا بماء كالمهل يشوى الوجوه | ٢٩ | ك « | ١٨ |
| ٱلْغَيْثَ | : إن الله عنده علم الساعة وينزل الغيث ويعلم ما فى الأرحام | ٣٤ | ك لقمان | ٣١ |
| (٣) | وهو الذى ينزل الغيث من بعد ما قنطوا وينشر رحمته | ٢٨ | ك الشورى | ٤٢ |
| | كمثل غيث أعجب الكفار نباته ثم يهيج فتراه مصفرا | ٢٠ | م الحديد | ٥٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| يُغَيِّرُ | : إن الله لا يغير ما بقوم حتى يغيروا ما بأنفسهم ... | ١١ | م الرعد | ١٣ |
| فَلَيُغَيِّرُنَّ | : ولآمرنهم فليغيرن خلق الله ... ... ... ... | ١١٩ | م النساء | ٤ |
| يُغَيِّرُوا | : ذلك بأن الله لم يك مغيرا نعمة أنعمها على قوم حتى | | | |
| (٢) | يغيروا ما بأنفسهم ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | م الأنفال | ٨ |
| | إن الله لا يغير ما بقوم حتى يغيروا ما بأنفسهم ... | ١١ | م الرعد | ١٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَتَغَيَّرْ: | فيها أنهار من ماء غير آسن وأنهار من لبن لم يتغير طعمه | ١٥ | م محمد | ٤٧ |
| مُغَيِّرًا: | ذلك بأن الله لم يك مغيرا نعمة أنعمها على قوم حتى يغيروا ما بأنفسهم ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | م الأنفال | ٨ |
| فَالْمُغِيرَاتِ: | فالموريات قدحا . فالمغيرات صبحا ... ... | ٣ | ك العاديات | ١٠٠ |
| غَيْرِ: | صراط الذين أنعمت عليهم غير المغضوب عليهم ولا الضالين | ٧ | ك الفاتحة | ١ |
| (١٢٧) فبدل | الذين ظلموا قولا غير الذى قيل لهم... ... ... | ٥٩ | م البقرة | ٢ |
| | ذلك بأنهم كانوا يكفرون بآيات الله و يقتلون النبيين بغير الحق ... ... ... ... ... ... ... | ٦١ | م « | ٢ |
| | إنما حرم عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما أهل به لغير الله | ١٧٣ | م « | ٢ |
| | فمن اضطر غير باغ ولا عاد فلا إثم عليه... ... ... ... | ١٧٣ | م « | ٢ |
| | والله يرزق من يشاء بغير حساب... ... ... ... ... | ٢١٢ | م « | ٢ |
| | وصية لأزواجهم متاعا إلى الحول غير إخراج ... ... | ٢٤٠ | م « | ٢ |
| | إن الذين يكفرون بآيات الله و يقتلون النبيين بغير حق | ٢١ | م آل عمران | ٣ |
| | وتخرج الميت من الحى وترزق من تشاء بغير حساب | ٢٧ | م « | ٣ |
| | قالت هو من عند الله إن الله يرزق من يشاء بغير حساب | ٣٧ | م « | ٣ |
| | أفغير دين الله يبغون وله أسلم من فى السموات والأرض | ٨٣ | م « | ٣ |
| | ومن يبتغ غير الإسلام دينا فلن يقبل منه ... ... ... | ٨٥ | م « | ٣ |
| | ذلك بأنهم كانوا يكفرون بآيات الله و يقتلون الأنبياء بغير حق ... ... ... ... ... ... ... | ١١٢ | م « | ٣ |
| | وطائفة قد أهمتهم أنفسهم يظنون بالله غير الحق | ١٥٤ | م « | ٣ |
| | سنكتب ما قالوا وقتلهم الأنبياء بغير حق... ... ... | ١٨١ | م « | ٣ |
| | من بعد وصية يوصى بها أو دين غير مضار... ... ... | ١٢ | م النساء | ٤ |
| | أن تبتغوا بأموالكم محصنين غير مسافحين ... ... ... | ٢٤ | م « | ٤ |
| | وآتوهن أجورهن بالمعروف محصنات غير مسافحات | ٢٥ | م « | ٤ |
| | و يقولون سمعنا وعصينا واسمع غير مسمع ... ... ... | ٤٦ | م « | ٤ |
| | فإذا برزوا من عندك بيت طائفة منهم غير الذى تقول | ٨١ | م « | ٤ |
| | ولو كان من عند غير الله لوجدوا فيه اختلافا كثيرا | ٨٢ | م « | ٤ |
| | لا يستوى القاعدون من المؤمنين غير أولى الضرر والمجاهدون | ٩٥ | م « | ٤ |
| | ويتبع غير سبيل المؤمنين نوله ما تولى ونصله جهنم | ١١٥ | م « | ٤ |
| | وقتلهم الأنبياء بغير حق وقولهم قلوبنا غلف ... ... | ١٥٥ | م « | ٤ |
| | أحلت لكم بهيمة الأنعام إلا ما يتلى عليكم غير محلى الصيد | ١ | م المائدة | ٥ |
| | حرمت عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما أهل لغير الله به | ٣ | م « | ٥ |
| | فمن اضطر فى مخمصة غير متجانف لإثم فإن الله غفور رحيم | ٣ | م « | ٥ |
| | إذا آتيتموهن أجورهن محصنين غير مسافحين ... ... | ٥ | م « | ٥ |
| | من قتل نفسا بغير نفس أو فساد فى الأرض فكأنما قتل الناس جميعا ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | م « | ٥ |
| | قل يأهل الكتاب لا تغلوا فى دينكم غير الحق ... ... | ٧٧ | م « | ٥ |
| | قل أغير الله أتخذ وليا فاطر السموات والأرض ... | ١٤ | ك الأنعام | ٦ |
| غَيْرُ: | أو أتتكم الساعة أغير الله تدعون ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | من إله غير الله يأتيكم به ... ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك « | ٦ |
| | اليوم تجزون عذاب الهون بما كنتم تقولون على الله غير الحق | ٩٣ | م « | ٦ |
| | والزيتون والرمان مشتبها وغير متشابه ... ... ... | ٩٩ | ك « | ٦ |
| | وخلقوا له بنين و بنات بغير علم... ... ... ... | ١٠٠ | ك « | ٦ |
| | ولا تسبوا الذين يدعون من دون الله فيسبوا الله عدوا بغير علم ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٨ | ك « | ٦ |
| | أفغير الله أبتغى حكما وهو الذى أنزل إليكم الكتاب مفصلا | ١١٤ | م « | ٦ |
| | و إن كثيرا ليضلون بأهوائهم بغير علم... ... ... ... | ١١٩ | ك « | ٦ |
| | قد خسر الذين قتلوا أولادهم سفها بغير علم ... ... | ١٤٠ | ك « | ٦ |
| | وهو الذى أنشأ جنات معروشات وغير معروشات | ١٤١ | م « | ٦ |
| | والزيتون والرمان متشابها وغير متشابه ... ... ... | ١٤١ | م « | ٦ |
| | فمن أظلم ممن افترى على الله كذبا ليضل الناس بغير علم | ١٤٤ | ك « | ٦ |
| | أو لحم خنزير فإنه رجس أو فسقا أهل لغير الله به ... | ١٤٥ | ك « | ٦ |
| | فمن اضطر غير باغ ولا عاد فإن ربك غفور رحيم ... | ١٤٥ | ك « | ٦ |
| | قل أغير الله أبغى ربا وهو رب كل شىء ... ... ... | ١٦٤ | ك « | ٦ |
| | قل إنما حرم ربى الفواحش ما ظهر منها وما بطن والإثم والبغى بغير الحق... ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | فهل لنا من شفعاء فيشفعوا لنا أو نرد فنعمل غير الذى كنا نعمل | ٥٣ | ك « | ٧ |
| | قال أغير الله أبغيكم إلها وهو فضلكم على العالمين ... | ١٤٠ | ك « | ٧ |
| | سأصرف عن آياتى الذين يتكبرون فى الأرض بغير الحق | ١٤٦ | ك « | ٧ |
| | فبدل الذين ظلموا منهم قولا غير الذى قيل لهم... ... | ١٦٢ | ك « | ٧ |
| | وتودون أن غير ذات الشوكة تكون لكم ... ... ... | ٧ | م الأنفال | ٨ |
| | فسيحوا فى الأرض أربعة أشهر واعلموا أنكم غير معجزى الله | ٢ | م التوبة | ٩ |
| | و إن توليتم فاعلموا أنكم غير معجزى الله ... ... ... | ٣ | م « | ٩ |
| | قال الذين لا يرجون لقاءنا ائت بقرآن غير هذا أو بدله | ١٥ | ك يونس | ١٠ |
| | فلما أنجاهم إذا هم يبغون فى الأرض بغير الحق ... | ٢٣ | ك « | ١٠ |
| | إنه عمل غير صالح فلا تسئلن ما ليس لك به علم ... | ٤٦ | ك هود | ١١ |
| | فمن ينصرنى من الله إن عصيته فما تزيدوننى غير تخسير | ٦٣ | ك « | ١١ |
| | فعقروها فقال تمتعوا فى داركم ثلاثة أيام ذلك وعد غير مكذوب | ٦٥ | ك « | ١١ |
| | إنه قد جاء أمر ربك و إنهم آتيهم عذاب غير مردود | ٧٦ | ك « | ١١ |
| | وما زادوهم غير تتبيب ... ... ... ... ... ... | ١٠١ | ك « | ١١ |
| | ما دامت السموات والأرض إلا ما شاء ربك عطاء غير مجذوذ | ١٠٨ | ك « | ١١ |
| | و إنا لموفوهم نصيبهم غير منقوص ... ... ... ... | ١٠٩ | ك « | ١١ |
| | الله الذى رفع السموات بغير عمد ترونها ... ... ... | ٢ | م الرعد | ١٣ |
| | صنوان وغير صنوان يسقى بماء واحد... ... ... ... | ٤ | م « | ١٣ |
| | ربنا إنى أسكنت من ذريتى بواد غير ذى زرع عند بيتك المحرم | ٣٧ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | يوم تبدل الأرض غير الأرض والسموات ... ... | ٤٨ | ك « | ١٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| غَيْرُ | أموات غير أحياء وما يشعرون أيان يبعثون ... ... | ٢١ | ك النحـل | ١٦ |
| | ومن أوزار الذين يضلونهـم بغير علم ... ... ... | ٢٥ | ك « | ١٦ |
| | وله الدين واصبا أفغير الله تتـقون ... ... ... ... | ٥٢ | ك « | ١٦ |
| | إنما حرم عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما أهل لغير الله به | ١١٥ | ك « | ١٦ |
| | فمن اضطر غير باغ ولا عاد فإن الله غفور رحيم... ... | ١١٥ | ك « | ١٦ |
| | قال أقتلت نفسا زكية بغير نفس لقد جئت شيئا نكرا | ٧٤ | ك الكهف | ١٨ |
| | واضم يدك إلى جناحك تخرج بيضاء من غير سوء آية أخرى | ٢٢ | ك طـه | ٢٠ |
| | ومن الناس من يجادل فى الله بغير علم ويتبع كل شيطان مريد | ٣ | م الحـج | ٢٢ |
| | ثم من مضغة مخلقة وغير مخلقة لنبين لكم ... ... ... | ٥ | م « | ٢٢ |
| | ومن الناس من يجادل فى الله بغير علم ولا هدى ولا كتاب منير | ٨ | م « | ٢٢ |
| | حنفاء لله غير مشركين به... ... ... ... ... ... | ٣١ | م « | ٢٢ |
| | الذين أخرجوا من ديارهم بغير حق إلا أن يقولوا ربنا الله | ٤٠ | م « | ٢٢ |
| | إلا على أزواجهم أو ما ملكت أيمانهم فإنهم غير ملومين | ٦ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | يا أيها الذين آمنوا لا تدخلوا بيوتا غير بيوتكم حتى تستأنسوا | ٢٧ | م النـور | ٢٤ |
| | ليس عليكم جناح أن تدخلوا بيوتا غير مسكونة فيها متاع لكم | ٢٩ | م « | ٢٤ |
| | أو ما ملكت أيمانهن أو التابعين غير أولى الإربة من الرجال | ٣١ | م « | ٢٤ |
| | والله يرزق من يشاء بغير حساب ... ... ... ... ... | ٣٨ | م « | ٢٤ |
| | فليس عليهن جناح أن يضعن ثيابهن غير متبرجات بزينة | ٦٠ | م « | ٢٤ |
| | وأدخل يدك فى جيبك تخرج بيضاء من غير سوء ... | ١٢ | ك النمـل | ٢٧ |
| | فمكث غير فقال أحطت بما لم تحط به... ... ... | ٢٢ | ك « | ٢٧ |
| | أسلك يدك فى جيبك تخرج بيضاء من غير سوء... ... | ٣٢ | ك القصص | ٢٨ |
| | واستكبر هو وجنوده فى الأرض بغير الحق ... ... | ٣٩ | ك « | ٢٨ |
| | ومن أضل ممن اتبع هواه بغير هدى من الله ... ... | ٥٠ | ك « | ٢٨ |
| | من إله غير الله يأتيكم بضياء أفلا تسمعون ... ... | ٧١ | ك « | ٢٨ |
| | من إله غير الله يأتيكم بليل تسكنون فيه أفلا تبصرون | ٧٢ | ك « | ٢٨ |
| | بل اتبع الذين ظلموا أهواءهم بغير علم... ... ... ... | ٢٩ | ك الـروم | ٣٠ |
| | ويوم تقوم الساعة يقسم المجرمون ما لبثوا غير ساعة | ٥٥ | ك « | ٣٠ |
| | ومن الناس من يشترى لهو الحديث ليضل عن سبيل الله بغير علم ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك لقمان | ٣١ |
| | خلق السموات بغير عمد ترونها ... ... ... ... ... | ١٠ | ك « | ٣١ |
| | ومن الناس من يجادل فى الله بغير علم ولا هدى ولا كتاب منير | ٢٠ | ك « | ٣١ |
| | لا تدخلوا بيوت النبى إلا أن يؤذن لكم إلى طعام غير ناظرين إناه ... ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | والذين يؤذون المؤمنين والمؤمنات بغير ما اكتسبوا فقد احتملوا بهتانا وإثما مبينا ... ... ... ... | ٥٨ | م « | ٣٣ |
| | هل من خالق غير الله يرزقكم من السماء والأرض ... | ٣ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | ربنا أخرجنا نعمل صالحا غير الذى كنا نعمل ... ... | ٣٧ | ك « | ٣٥ |
| | هذا عطاؤنا فامنن أو أمسك بغير حساب... ... ... | ٣٩ | ك ص | ٣٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| غَيْرُ | إنما يوفى الصابرون أجرهم بغير حساب ... ... ... | ١٠ | ك الـزمر | ٣٩ |
| | قرآنا عربيا غير ذى عوج لعلهم يتقون ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٣٩ |
| | قل أفغير الله تأمرونى أعبد أيها الجاهلون ... ... | ٦٤ | ك « | ٣٩ |
| | الذين يجادلون فى آيات الله بغير سلطان أتاهم ... | ٣٥ | ك غافـر | ٤٠ |
| | فأولئك يدخلون الجنة يرزقون فيها بغير حساب ... | ٤٠ | ك « | ٤٠ |
| | إن الذين يجادلون فى آيات الله بغير سلطان أتاهم إن فى صدورهم إلا كبر ما هم ببالغيه ... ... | ٥٦ | م « | ٤٠ |
| | ذلكم بما كنتم تفرحون فى الأرض بغير الحق... ... | ٧٥ | ك « | ٤٠ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم أجر غير ممنون | ٨ | ك فصلت | ٤١ |
| | فأما عاد فاستكبروا فى الأرض بغير الحق ... ... | ١٥ | ك « | ٤١ |
| | إنما السبيل على الذين يظلمـون الناس ويبغـون فى الأرض بغير الحق ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك الشورى | ٤٢ |
| | أو من ينشأ فى الحلية وهو فى الخصام غير مبين... ... | ١٨ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | فاليـوم تجزون عذاب الهون بما كنتم تستكبرون فى الأرض بغير الحق ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | فيها أنهار من ماء غير آسن وأنهار من لبن لم يتغير طعمه | ١٥ | م محمـد | ٤٧ |
| | فتصيبكم منهم معرة بغير علم ... ... ... ... ... | ٢٥ | م الفتـح | ٤٨ |
| | وأزلفت الجنة للمتقين غير بعيد ... ... ... ... ... | ٣١ | ك قٓ | ٥٠ |
| | فما وجدنا فيها غير بيت من المسلمين ... ... ... ... | ٣٦ | ك الذاريات | ٥١ |
| | أم خلقوا من غير شىء أم هم الخالقون ... ... ... | ٣٥ | ك الطـور | ٥٢ |
| | أم لهم إله غير الله سبحان الله عما يشركون ... ... | ٤٣ | ك « | ٥٢ |
| | فلولا إن كنتم غير مدينين . ترجعونها إن كنتم صادقين | ٨٦ | ك الواقعـة | ٥٦ |
| | وإن لك لأجرا غير ممنون ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك القـلم | ٦٨ |
| | إن عذاب ربهـم غير مأمون ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك المعـارج | ٧٠ |
| | إلا على أزواجهم أو ما ملكت أيمانهم فإنهم غير ملومين | ٣٠ | ك « | ٧٠ |
| | فذلك يومئذ يوم عسير . على الكافرين غير يسير... | ١٠ | ك المـدثر | ٧٤ |
| | إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم أجر غير ممنون | ٢٥ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| | إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات فلهم أجر غير ممنون | ٦ | ك التين | ٩٥ |
| غَيْرِكُمْ | : اثنان ذوا عدل منكم أو آخران من غيركم ... ... | ١٠٦ | م المائدة | ٥ |
| (٤) | إلا تنفروا يعذبكم عذابا أليما ويستبدل قوما غيركم | ٣٩ | م التـوبة | ٩ |
| | ويستخلف ربى قوما غيركم ولا تضرونه شيئا... ... | ٥٧ | ك هـود | ١١ |
| | وإن تتولوا يستبدل قوما غيركم ثم لا يكونوا أمثالكم | ٣٨ | م محمـد | ٤٧ |
| غَيْرِهِ | : فإن طلقها فلا تحل له من بعد حتى تنكح زوجا غيره | ٢٣٠ | البقـرة | ٢ |
| (١٣) | فلا تقعدوا معهم حتى يخوضوا فى حديث غيره ... | ١٤٠ | م النسـاء | ٤ |
| | فأعرض عنهم حتى يخوضوا فى حديث غيره... ... | ٦٨ | ك الأنعـام | ٦ |
| | فقال يا قوم اعبدوا الله ما لكم من إله غيره ... ... | ٥٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | قال يا قوم اعبـدوا الله ما لكم من إله غيره ... ... | ٦٥ | ك « | ٧ |
| | قال يا قوم اعبـدوا الله ما لكم من إله غيره ... ... | ٧٣ | ك « | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| غَيْرُهُ | : قال يا قوم اعبدوا الله ما لكم من إله غيره ... ... | ٨٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | قال يا قوم اعبدوا الله ما لكم من إله غيره ... ... | ٥٠ | ك هـود | ١١ |
| | قال يا قوم اعبدوا الله ما لكم من إله غيره ... ... | ٦١ | ك « | ١١ |
| | قال يا قوم اعبدوا الله ما لكم من إله غيره ... ... | ٨٤ | ك « | ١١ |
| | وإن كادوا ليفتنونك عن الذى أوحينا إليك لتفترى علينا غيره | ٧٣ | م الإسراء | ١٧ |
| | فقال يا قوم اعبدوا الله ما لكم من إله غيره ... ... | ٢٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فأرسلنا فيهم رسولا منهم أن اعبدوا الله ما لكم من إله غيره | ٣٢ | ك « | ٢٣ |
| غَيْرَهَا | : لما نضجت جلودهم بدلناهم جلودا غيرها ليذوقوا العذاب | ٥٦ | م النساء | ٤ |
| غَيْرِى | : قال لئن اتخذت إلها غيرى لأجعلنك من المسجونين | ٢٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| (٢) | وقال فرعون يا أيها الملأ ما علمت لكم من إله غيرى | ٣٨ | ك القصص | ٢٨ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| تَغِيضُ | : الله يعلم ما تحمل كل أنثى وما تغيض الأرحام وما تزداد | ٨ | م الرعد | ١٣ |
| غِيضَ | : وغيض الماء وقضى الأمر واستوت على الجودى | ٤٤ | ك هـود | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| يَغِيظُ | : ولا يطئون موطئا يغيظ الكفار ولا ينالون من | | | |
| (٣) | عدو نيلا إلا كتب لهم به عمل صالح ... ... | ١٢٠ | م التوبة | ٩ |
| | ثم ليقطع فلينظر هل يذهبن كيده ما يغيظ ... ... | ١٥ | م الحج | ٢٢ |
| | فاستغلظ فاستوى على سوقه يعجب الزراع ليغيظ بهم الكفار | ٢٩ | م الفتح | ٤٨ |
| الْغَيْظَ | : وإذا خلوا عضوا عليكم الأنامل من الغيظ... ... | ١١٩ | م آل عمران | ٣ |
| (٤) | الذين ينفقون فى السراء والضراء والكاظمين الغيظ | ١٣٤ | م « | ٣ |
| | ويذهب غيظ قلوبهم ويتوب الله على من يشاء ... | ١٥ | م التوبة | ٩ |
| | تكاد تميز من الغيظ... ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك الملك | ٦٧ |
| بِغَيْظِكُمْ | : قل موتوا بغيظكم إن الله عليم بذات الصدور | ١١٩ | م آل عمران | ٣ |
| بِغَيْظِهِمْ | : ورد الله الذين كفروا بغيظهم لم ينالوا خيرا | ٢٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| لَغَائِظُونَ | : إن هؤلاء لشرذمة قليلون . وإنهم لنا لغائظون | ٥٥ | ك الشعراء | ٢٦ |
| تَغَيُّظًا | : إذا رأتهم من مكان بعيد سمعوا لها تغيظا وزفيرا | ١٢ | ك الفرقان | ٢٥ |

# باب الفاء

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| الْفُؤَادُ | : إن السمع والبصر والفؤاد كل أولئك كان عنه مسئولا | ٣٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٣) | وأصبح فؤاد أم موسى فارغا ... ... ... ... ... | ١٠ | ك القصص | ٢٨ |
| | ما كذب الفؤاد ما رأى... ... ... ... ... ... | ١١ | ك النجم | ٥٣ |
| فُؤَادَكَ | : وكلا نقص عليك من أنباء الرسل ما نثبت به فؤادك | ١٢٠ | ك هـود | ١١ |
| (٢) | كذلك لنثبت به فؤادك ورتلناه ترتيلا ... ... ... | ٣٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| أَفْئِدَةٌ | : ولتصغى إليه أفئدة الذين لا يؤمنون بالآخرة ... | ١١٣ | ك الأنعام | ٦ |
| (٨) | فاجعل أفئدة من الناس تهوى إليهم وارزقهم من الثمرات | ٣٧ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وجعل لكم السمع والأبصار والأفئدة لعلكم تشكرون | ٧٨ | ك النحل | ١٦ |
| | وهو الذى أنشأ لكم السمع والأبصار والأفئدة قليلا ما تشكرون | ٧٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وجعل لكم السمع والأبصار والأفئدة قليلا ما تشكرون | ٩ | ك السجدة | ٣٢ |
| | وافئدتهم كما لم يؤمنوا به أول مرة | ١١٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | وأفئدتهم هواء | ٤٣ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | فما أغنى عنهم سمعهم ولا أبصارهم ولا أفئدتهم من شىء | ٢٦ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| أَفْئِدَتَهُمْ | : ونقلب أفئدتهم وأبصارهم كما لم يؤمنوا به أول مرة | ١١٠ | ك الأنعام | ٦ |
| (٣) | مهطعين مقنعى رءوسهم لا يرتد إليهم طرفهم وأفئدتهم هواء | ٤٣ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | فما أغنى عنهم سمعهم ولا أبصارهم ولا أفئدتهم من شىء | ٢٦ | ك الأحقاف | ٤٦ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| فِئَةً | : قال الذين يظنون أنهم ملاقوا الله كم من فئة قليلة | ٢٤٩ | م البقرة | ٢ |
| (٧) | غلبت فئة كثيرة بإذن الله والله مع الصابرين ... | ٢٤٩ | م « | ٢ |
| فِئَةٌ | : فئة تقاتل فى سبيل الله وأخرى كافرة ... ... ... | ١٣ | م آل عمران | ٣ |
| | ومن يولهم يومئذ دبره إلا متحرفا لقتال أو متحيزا إلى | | | |
| | فئة فقد باء بغضب من الله ... ... ... ... ... | ١٦ | م الأنفال | ٨ |
| | يا أيها الذين آمنوا إذا لقيتم فئة فاثبتوا واذكروا الله كثيرا | ٤٥ | م « | ٨ |
| | ولم تكن له فئة ينصرونه من دون الله وما كان منتصرا | ٤٣ | ك الكهف | ١٨ |
| | فما كان له من فئة ينصرونه من دون الله وما كان من المنتصرين | ٨١ | ك القصص | ٢٨ |
| فِئَتُكُمْ | : وإن تعودوا نعد ولن تغنى عنكم فئتكم شيئا ولو كثرت | ١٩ | م الأنفال | ٨ |
| الْفِئَتَانِ | : فلما تراءت الفئتان نكص على عقبيه وقال إنى برىء منكم | ٤٨ | م « | ٨ |
| فِئَتَيْنِ | : قد كان لكم آية فى فئتين التقتا ... ... ... ... | ١٣ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | فما لكم فى المنافقين فئتين والله أركسهم بما كسبوا | ٨٨ | م النساء | ٤ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| تَفْتَؤُا | : قالوا تالله تفتؤا تذكر يوسف حتى تكون حرضا... | ٨٥ | ك يوسف | ١٢ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| فَتَحَ | : أتحدثونهم بما فتح الله عليكم ليحاجوكم به عند ربكم | ٧٦ | م البقرة | ٢ |
| فَتَحْنَا | : فلما نسوا ما ذكروا به فتحنا عليهم أبواب كل شىء | ٤٤ | ك الأنعام | ٦ |
| (٦) | ولو أن أهل القرى آمنوا واتقوا لفتحنا عليهم بركات | | | |
| | من السماء والأرض ... ... ... ... ... ... | ٩٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولو فتحنا عليهم بابا من السماء فظلوا فيه يعرجون ... | ١٤ | ك الحجر | ١٥ |
| | حتى إذا فتحنا عليهم بابا ذا عذاب شديد إذا هم فيه مبلسون | ٧٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| فَتَحْنَا: | إنا فتحنا لك فتحا مبينا ... ... ... ... ... ... | ١ | م الفتح | ٤٨ |
| | ففتحنا أبواب السماء بماء منهمر ... ... ... ... ... | ١١ | ك القمر | ٥٤ |
| فَتَحُوا: | ولما فتحوا متاعهم وجدوا بضاعتهم ردت إليهم | ٦٥ | ك يوسف | ١٢ |
| يَفْتَحُ: | قل يجمع بيننا ربنا ثم يفتح بيننا بالحق وهو الفتاح العليم | ٢٦ | ك سبإ | ٣٤ |
| (٢) | ما يفتح الله للناس من رحمة فلا ممسك لها ... ... ... | ٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| أَفْتَحْ: | ربنا افتح بيننا وبين قومنا بالحق وأنت خير الفاتحين | ٨٩ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | فافتح بيني وبينهم فتحا ونجني ومن معي من المؤمنين | ١١٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| فُتِحَتْ: | حتى إذا فتحت يأجوج ومأجوج وهم من كل | | | |
| (٤) | حدب ينسلون ... ... ... ... ... ... ... | ٩٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | حتى إذا جاءوها فتحت أبوابها ... ... ... ... ... | ٧١ | ك الزمر | ٣٩ |
| | حتى إذا جاءوها وفتحت أبوابها وقال لهم خزنتها | | | |
| | سلام عليكم طبتم ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك « | ٣٩ |
| | وفتحت السماء فكانت أبوابا ... ... ... ... ... | ١٩ | ك النبإ | ٧٨ |
| تُفَتَّحُ: | لا تفتح لهم أبواب السماء ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك الأعراف | ٧ |
| اسْتَفْتَحُوا: | واستفتحوا وخاب كل جبار عنيد ... ... ... | ١٥ | ك إبراهيم | ١٤ |
| تَسْتَفْتِحُوا: | إن تستفتحوا فقد جاءكم الفتح ... ... ... ... | ١٩ | م الأنفال | ٨ |
| يَسْتَفْتِحُونَ: | وكانوا من قبل يستفتحون على الذين كفروا | ٨٩ | م البقرة | ٢ |
| الْفَتْحُ: | فإن كان لكم فتح من الله قالوا ألم نكن معكم ... ... | ١٤١ | م النساء | ٤ |
| (٨) | فعسى الله أن يأتي بالفتح أو أمر من عنده ... ... ... | ٥٢ | م المائدة | ٥ |
| | إن تستفتحوا فقد جاءكم الفتح ... ... ... ... ... | ١٩ | م الأنفال | ٨ |
| | ويقولون متى هذا الفتح إن كنتم صادقين ... ... | ٢٨ | ك السجدة | ٣٢ |
| | قل يوم الفتح لا ينفع الذين كفروا إيمانهم | | | |
| | ولا هم ينظرون ... ... ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك « | ٣٢ |
| | لا يستوي منكم من أنفق من قبل الفتح وقاتل ... ... | ١٠ | م الحديد | ٥٧ |
| | وأخرى تحبونها نصر من الله وفتح قريب ... ... ... | ١٣ | م الصف | ٦١ |
| | إذا جاء نصر الله والفتح ... ... ... ... ... ... | ١ | م النصر | ١١٠ |
| فَتْحًا: | فافتح بيني وبينهم فتحا ونجني ومن معي من المؤمنين | ١١٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| (٤) | إنا فتحنا لك فتحا مبينا ... ... ... ... ... ... | ١ | م الفتح | ٤٨ |
| | فأنزل السكينة عليهم وأثابهم فتحا قريبا ... ... ... | ١٨ | م « | ٤٨ |
| | فعلم ما لم تعلموا فجعل من دون ذلك فتحا قريبا ... ... | ٢٧ | م « | ٤٨ |
| الْفَاتِحِينَ: | ربنا افتح بيننا وبين قومنا بالحق وأنت خير الفاتحين | ٨٩ | ك الأعراف | ٧ |
| الْفَتَّاحُ: | قل يجمع بيننا ربنا ثم يفتح بيننا بالحق وهو الفتاح العليم | ٢٦ | ك سبإ | ٣٤ |
| مُفَتَّحَةً: | جنات عدن مفتحة لهم الأبواب ... ... ... ... | ٥٠ | ك ص | ٣٨ |
| مَفَاتِحُ: | وعنده مفاتح الغيب لا يعلمها إلا هو ... ... ... | ٥٩ | ك الأنعام | ٦ |
| مَفَاتِحَهُ: | أو بيوت خالاتكم أو ما ملكتم مفاتحه أو صديقكم | ٦١ | م النور | ٢٤ |
| (٢) | وآتيناه من الكنوز ما إن مفاتحه لتنوء بالعصبة أولي القوة | ٧٦ | ك القصص | ٢٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ✦✦✦ | | | | |
| يَفْتُرُونَ: | يسبحون الليل والنهار لا يفترون ... ... ... ... | ٢٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| يُفَتَّرُ: | لا يفتر عنهم وهم فيه مبلسون ... ... ... ... ... | ٧٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| فَتْرَةٍ: | يا أهل الكتاب قد جاءكم رسولنا يبين لكم على فترة | | | |
| | من الرسل ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٩ | م المائدة | ٥ |
| ✦✦✦ | | | | |
| فَفَتَقْنَاهُمَا: | كانتا رتقا ففتقناهما ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| ✦✦✦ | | | | |
| فَتِيلًا: | بل الله يزكي من يشاء ولا يظلمون فتيلا ... ... ... | ٤٩ | م النساء | ٤ |
| (٣) | قل متاع الدنيا قليل والآخرة خير لمن اتقى ولا تظلمون فتيلا | ٧٧ | م « | ٤ |
| | فمن أوتي كتابه بيمينه فأولئك يقرءون كتابهم ولا يظلمون فتيلا | ٧١ | ك الإسراء | ١٧ |
| ✦✦✦ | | | | |
| فَتَنَّا: | وكذلك فتنا بعضهم ببعض ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك الأنعام | ٦ |
| (٥) | قال فإنا قد فتنا قومك من بعدك وأضلهم السامري | ٨٥ | ك طه | ٢٠ |
| | ولقد فتنا الذين من قبلهم ... ... ... ... ... ... | ٣ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | ولقد فتنا سليمان وألقينا على كرسيه جسدا ثم أناب ... | ٣٤ | ك ص | ٣٨ |
| | ولقد فتنا قبلهم قوم فرعون وجاءهم رسول كريم ... | ١٧ | ك الدخان | ٤٤ |
| فَتَنَّاكَ: | وقتلت نفسا فنجيناك من الغم وفتناك فتونا ... ... | ٤٠ | ك طه | ٢٠ |
| فَتَنَّاهُ: | وظن داود أنما فتناه فاستغفر ربه وخر راكعا وأناب | ٢٤ | ك ص | ٣٨ |
| فَتَنْتُمْ: | ولكنكم فتنتم أنفسكم وتربصتم وارتبتم وغرتكم الأماني | ١٤ | م الحديد | ٥٧ |
| فَتَنُوا: | إن الذين فتنوا المؤمنين والمؤمنات ثم لم يتوبوا فلهم | | | |
| | عذاب جهنم ولهم عذاب الحريق ... ... ... | ١٠ | ك البروج | ٨٥ |
| تَفْتِنِّي: | ومنهم من يقول ائذن لي ولا تفتني ... ... ... ... | ٤٩ | م التوبة | ٩ |
| لِنَفْتِنَهُمْ: | ولا تمدن عينيك إلى ما متعنا به أزواجا منهم زهرة | | | |
| (٢) | الحياة الدنيا لنفتنهم فيه ... ... ... ... ... ... | ١٣١ | م طه | ٢٠ |
| | وألو استقاموا على الطريقة لأسقيناهم ماء غدقا . | | | |
| | لنفتنهم فيه ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الجن | ٧٢ |
| يَفْتِنَكُمْ: | فليس عليكم جناح أن تقصروا من الصلاة إن | | | |
| | خفتم أن يفتنكم الذين كفروا ... ... ... ... | ١٠١ | م النساء | ٤ |
| يَفْتِنَنَّكُمُ: | يا بني آدم لا يفتنكم الشيطان ... ... ... ... | ٢٧ | ك الأعراف | ٧ |
| يَفْتِنَهُمْ: | على خوف من فرعون وملائهم أن يفتنهم ... ... | ٨٣ | ك يونس | ١٠ |
| يَفْتِنُوكَ: | واحذرهم أن يفتنوك عن بعض ما أنزل الله إليك | ٤٩ | م المائدة | ٥ |
| لَيَفْتِنُونَكَ: | وإن كادوا ليفتنونك عن الذي أوحينا إليك | ٧٣ | م الإسراء | ١٧ |
| فُتِنْتُمْ: | ولقد قال لهم هرون من قبل يا قوم إنما فتنتم به ... | ٩٠ | ك طه | ٢٠ |
| فُتِنُوا: | ثم إن ربك للذين هاجروا من بعد ما فتنوا ثم جاهدوا | ١١٠ | ك النحل | ١٦ |
| تُفْتَنُونَ: | قال طائركم عند الله بل أنتم قوم تفتنون ... ... | ٤٧ | ك النمل | ٢٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يُفْتَنُونَ | أولا يرون أنهم يفتنون فى كل عام مرة أو مرتين | ١٢٦ | م التـوبة | ٩ |
| (٣) | أحسب الناس أن يتركوا أن يقولوا آمنا وهم لا يفتنون | ٢ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | يوم هم على النار يفتنون... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك الذاريات | ٥١ |
| فُتُونًا | وقتلت نفسا فنجيناك من الغم وفتناك فتونا ... ... | ٤٠ | ك طـه | ٢٠ |
| بِفَاتِنِينَ | فإنكم وما تعبدون . ما أنتم عليه بفاتنين ... ... | ١٦٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| * الْمَفْتُونُ | فستبصر ويبصرون . بأيكم المفتون ... ... | ٦ | ك القـلم | ٦٨ |
| الْفِتْنَةُ | وما يعلمان من أحد حتى يقولا إنما نحن فتنة فلا تكفر | ١٠٢ | م البقـرة | ٢ |
| (٣٠) | وأخرجوهم من حيث أخرجوكم والفتنة أشد من القتل | ١٩١ | « | ٢ |
| | وقاتلوهم حتى لا تكون فتنة ويكون الدين لله ... ... | ١٩٣ | « | ٢ |
| | وإخراج أهله منه أكبر عند الله والفتنة أكبر من القتل | ٢١٧ | « | ٢ |
| | فأما الذين فى قلوبهم زيغ فيتبعون ما تشابه منه | | | |
| | ابتغاء الفتنة ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | م آل عمران | ٣ |
| | كل ما ردوا إلى الفتنة أركسوا فيها ... ... ... | ٩١ | م النساء | ٤ |
| | وحسبوا ألا تكون فتنة فعموا وصموا ثم تاب الله عليهم | ٧١ | م المائدة | ٥ |
| | واتقوا فتنة لا تصيبن الذين ظلموا منكم خاصة ... | ٢٥ | م الأنفال | ٨ |
| | واعلموا أنما أموالكم وأولادكم فتنة وأن الله عنده أجر عظيم | ٢٨ | م « | ٨ |
| | وقاتلوهم حتى لا تكون فتنة ويكون الدين كله لله ... | ٣٩ | م « | ٨ |
| | إلا تفعلوه تكن فتنة فى الأرض وفساد كبير ... ... | ٧٣ | م « | ٨ |
| | ولأوضعوا خلالكم يبغونكم الفتنة ... ... ... ... | ٤٧ | م التـوبة | ٩ |
| | لقد ابتغوا الفتنة من قبل وقلبوا لك الأمور حتى جاء الحق | ٤٨ | م « | ٩ |
| | ومنهم من يقول ائذن لى ولا تفتنى ألا فى الفتنة سقطوا | ٤٩ | م « | ٩ |
| | فقالوا على الله توكلنا ربنا لا تجعلنا فتنة للقوم الظالمين | ٨٥ | ك يـونس | ١٠ |
| | وما جعلنا الرؤيا التى أريناك إلا فتنة للناس ... ... | ٦٠ | ك الإسـراء | ١٧ |
| | كل نفس ذائقة الموت ونبلوكم بالشر والخير فتنة ... | ٣٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وإن أدرى لعله فتنة لكم ومتاع إلى حين ... ... ... | ١١١ | ك « | ٢١ |
| | وإن أصابته فتنة انقلب على وجهه خسر الدنيا والآخرة | ١١ | م الحـج | ٢٢ |
| | ليجعل ما يلقى الشيطان فتنة للذين فى قلوبهم مرض ... | ٥٣ | م « | ٢٢ |
| | فليحذر الذين يخالفون عن أمره أن تصيبهم فتنة ... | ٦٣ | م النـور | ٢٤ |
| | وجعلنا بعضكم لبعض فتنة أتصبرون ... ... ... ... | ٢٠ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| | فإذا أوذى فى الله جعل فتنة الناس كعذاب الله ... | ١٠ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | ولو دخلت عليهم من أقطارها ثم سئلوا الفتنة لآتوها | ١٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | إنا جعلناها فتنة للظالمين... ... ... ... ... ... | ٦٣ | ك الصافات | ٣٧ |
| | بل هى فتنة ولكن أكثرهم لا يعلمون ... ... ... | ٤٩ | ك الـزمر | ٣٩ |
| | إنا مرسلوا الناقة فتنة لهم فارتقبهم واصطبر ... ... | ٢٧ | ك القمـر | ٥٤ |
| | ربنا لا تجعلنا فتنة للذين كفروا واغفر لنا ربنا ... | ٥ | م الممتحنـة | ٦٠ |
| | إنما أموالكم وأولادكم فتنة والله عنده أجر عظيم ... | ١٥ | م التغـابن | ٦٤ |
| | وما جعلنا عدتهم إلا فتنة للذين كفروا ... ... ... | ٣١ | ك المـدثر | ٧٤ |
| فِتْنَتُكَ | إن هى إلا فتنتك تضل بها من تشاء وتهدى من تشاء | ١٥٥ | ك الأعراف | ٧ |
| فِتْنَتَكُمْ | ذوقوا فتنتكم هذا الذى كنتم به تستعجلون... ... | ١٤ | ك الذاريات | ٥١ |
| فِتْنَتَهُ | ومن يرد الله فتنته فلن تملك له من الله شيئا... ... | ٤١ | م المائدة | ٥ |
| فِتْنَتُهُمْ | ثم لم تكن فتنتهم إلا أن قالوا والله ربنا ما كنا مشركين | ٢٣ | م الأنعام | ٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| يُفْتِيكُمْ | ويستفتونك فى النساء قل الله يفتيكم فيهن ... ... | ١٢٧ | م النساء | ٤ |
| (٢) | يستفتونك قل الله يفتيكم فى الكلالة... ... ... ... | ١٧٦ | م « | ٤ |
| أَفْتِنَا | يوسف أيها الصديق أفتنا فى سبع بقرات سمان ... | ٤٦ | ك يوسـف | ١٢ |
| أَفْتُونِى | يأيها الملأ أفتونى فى رؤياى إن كنتم للرؤيا تعبرون | ٤٣ | ك « | ١٢ |
| (٢) | قالت يأيها الملأ أفتونى فى أمرى ... ... ... ... | ٣٢ | ك النمـل | ٢٧ |
| تَسْتَفْتِ | ولا تستفت فيهم منهم أحدا... ... ... ... ... | ٢٢ | ك الكهف | ١٨ |
| تَسْتَفْتِيَانِ | قضى الأمر الذى فيه تستفتيان ... ... ... | ٤١ | ك يوسـف | ١٢ |
| يَسْتَفْتُونَكَ | ويستفتونك فى النساء قل الله يفتيكم فيهن... | ١٢٧ | م النساء | ٤ |
| (٢) | يستفتونك قل الله يفتيكم فى الكلالة... ... ... ... | ١٧٦ | م « | ٤ |
| فَاسْتَفْتِهِمْ | فاستفتهم أهم أشد خلقا أم من خلقنا ... ... | ١١ | ك الصافات | ٣٧ |
| (٢) | فاستفتهم ألربك البنات ولهم البنون ... ... ... | ١٤٩ | ك « | ٣٧ |
| فَتًى | قالوا سمعنا فتى يذكرهم يقال له إبراهيم ... ... ... | ٦٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| لِفَتَاهُ | وإذ قال موسى لفتاه لا أبرح حتى أبلغ مجمع البحرين | ٦٠ | ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | فلما جاوزا قال لفتاه آتنا غداءنا ... ... ... ... | ٦٢ | ك « | ١٨ |
| فَتَاهَا | وقال نسوة فى المدينة امرأة العزيز تراود فتاها عن نفسه | ٣٠ | ك يوسـف | ١٢ |
| فَتَيَانِ | ودخل معه السجن فتيان ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك « | ١٢ |
| الْفِتْيَةُ | إذ أوى الفتية إلى الكهف فقالوا ربنا آتنا من | | | |
| (٢) | لدنك رحمة ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك الكهف | ١٨ |
| | إنهم فتية آمنوا بربهم وزدناهم هدى ... ... ... | ١٣ | ك « | ١٨ |
| لِفِتْيَانِهِ | وقال لفتيانه اجعلوا بضاعتهم فى رحالهم لعلهم | | | |
| | يعرفونها ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك يوسـف | ١٢ |
| فَتَيَاتِكُمُ | فمن ما ملكت أيمانكم من فتياتكم المؤمنات... ... | ٢٥ | م النساء | ٤ |
| (٢) | ولا تكرهوا فتياتكم على البغاء إن أردن تحصنا ... ... | ٣٣ | م النـور | ٢٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| فَجٍّ | وعلى كل ضامر يأتين من كل فج عميق... ... ... ... | ٢٧ | م الحـج | ٢٢ |
| فِجَاجًا | وجعلنا فيها فجاجا سبلا لعلهم يهتدون... ... ... | ٣١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٢) | والله جعل لكم الأرض بساطا . لتسلكوا منها | | | |
| | سبلا فجاجا ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك نـوح | ٧١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تَفْجُرَ | وقالوا لن نؤمن لك حتى تفجر لنا من الأرض ينبوعا | ٩٠ | ك الإسـراء | ١٧ |
| لِيَفْجُرَ | بل يريد الإنسان ليفجر أمامه ... ... ... ... | ٥ | ك القيامة | ٧٥ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| فَجَّرْنَا | : وبفرنا خلالها نهرا ... ... ... ... ... ... | ك الكهف | ٣٣ ١٨ |
| (٣) | وجعلنا فيها جنات من نخيل وأعناب وبفرنا فيها من العيون | ك يس | ٣٤ ٣٦ |
| | وبفرنا الأرض عيونا فالتقى الماء على أمر قد قدر ... | ك القمر | ١٢ ٥٤ |
| تُفَجِّرَ | : فتفجر الأنهار خلالها تفجيرا ... ... ... ... | ك الإسراء | ٩١ ١٧ |
| يُفَجِّرُونَهَا | : عينا يشرب بها عباد الله يفجرونها تفجيرا ... | م الإنسان | ٦ ٧٦ |
| فُجِّرَتْ | : وإذا البحار فجرت . وإذا القبور بعثرت... ... | ك الانفطار | ٣ ٨٢ |
| يَتَفَجَّرُ | : وإن من الحجارة لما يتفجر منه الأنهار ... ... | م البقرة | ٧٤ ٢ |
| فَانْفَجَرَتْ | : فانفجرت منه اثنتا عشرة عينا ... ... ... | م » | ٦٠ ٢ |
| فَاجِرًا | : إنك إن تذرهم يضلوا عبادك ولا يلدوا إلا فاجرا كفارا | ك نوح | ٢٧ ٧١ |
| ٱلْفَجَرَةُ | : أولئك هم الكفرة الفجرة ... ... ... ... | ك عبس | ٤٢ ٨٠ |
| ٱلْفُجَّارِ | : أم نجعل المتقين كالفجار... ... ... ... ... | ك ص | ٢٨ ٣٨ |
| (٣) | إن الأبرار لفي نعيم . وإن الفجار لفي جحيم ... ... | ك الانفطار | ١٤ ٨٢ |
| | كلا إن كتاب الفجار لفي سجين ... ... ... ... | ك المطففين | ٧ ٨٣ |
| فُجُورَهَا | : ونفس وما سواها . فألهمها فجورها وتقواها | ك الشمس | ٨ ٩١ |
| تَفْجِيرًا | : فتفجر الأنهار خلالها تفجيرا ... ... ... ... | ك الإسراء | ٩١ ١٧ |
| (٢) | عينا يشرب بها عباد الله يفجرونها تفجيرا ... ... | م الإنسان | ٦ ٧٦ |
| ٱلْفَجْرِ | : وكلوا واشربوا حتى يتبين لكم الخيط الأبيض | | |
| (٦) | من الخيط الأسود من الفجر ... ... ... ... | م البقرة | ١٨٧ ٢ |
| | أقم الصلاة لدلوك الشمس إلى غسق الليل وقرآن الفجر | م الإسراء | ٧٨ ١٧ |
| | إن قرآن الفجر كان مشهودا... ... ... ... ... | م » | ٧٨ ١٧ |
| | من قبل صلاة الفجر وحين تضعون ثيابكم من الظهيرة | م النور | ٥٨ ٢٤ |
| | والفجر . وليال عشر . والشفع والوتر . والليل إذا يسر | ك الفجر | ١ ٨٩ |
| | سلام هي حتى مطلع الفجر ... ... ... ... ... | ك القدر | ٥ ٩٧ |
| فَجْوَةٍ | : وإذا غربت تقرضهم ذات الشمال وهم في فجوة منه | ك الكهف | ١٧ ١٨ |
| ٱلْفَحْشَاءَ | : إنما يأمركم بالسوء والفحشاء وأن تقولوا على الله | | |
| (٧) | ما لا تعلمون ... ... ... ... ... ... ... | م البقرة | ١٦٩ ٢ |
| | الشيطان يعدكم الفقر ويأمركم بالفحشاء ... ... ... | م » | ٢٦٨ ٢ |
| | قل إن الله لا يأمر بالفحشاء أتقولون على الله ما لا تعلمون | ك الأعراف | ٢٨ ٧ |
| | كذلك لنصرف عنه السوء والفحشاء إنه من عبادنا المخلصين | ك يوسف | ٢٤ ١٢ |
| | وينهى عن الفحشاء والمنكر والبغي يعظكم لعلكم تذكرون | ك النحل | ٩٠ ١٦ |
| | ومن يتبع خطوات الشيطان فإنه يأمر بالفحشاء والمنكر | م النور | ٢١ ٢٤ |
| | إن الصلاة تنهى عن الفحشاء والمنكر ولذكر الله أكبر | ك العنكبوت | ٤٥ ٢٩ |
| فَاحِشَةً | : والذين إذا فعلوا فاحشة أو ظلموا أنفسهم ذكروا | | |
| (١٣) | الله فاستغفروا لذنوبهم ... ... ... ... ... | م آل عمران | ١٣٥ ٣ |
| فَاحِشَةٌ | : واللاتي يأتين الفاحشة من نسائكم فاستشهدوا | | |
| | عليهن أربعة منكم ... ... ... ... ... ... | م النساء | ١٥ ٤ |
| | إلا أن يأتين بفاحشة مبينة ... ... ... ... ... | م » | ١٩ ٤ |
| | إنه كان فاحشة ومقتا وساء سبيلا ... ... ... ... | م » | ٢٢ ٤ |
| | فإن أتين بفاحشة فعليهن نصف ما على المحصنات | | |
| | من العذاب ... ... ... ... ... ... ... | م » | ٢٥ ٤ |
| | وإذا فعلوا فاحشة قالوا وجدنا عليها آباءنا والله أمرنا بها | ك الأعراف | ٢٨ ٧ |
| | أتأتون الفاحشة ما سبقكم بها من أحد من العالمين ... | ك » | ٨٠ ٧ |
| | ولا تقربوا الزنى إنه كان فاحشة وساء سبيلا ... ... | م الاسراء | ٣٢ ١٧ |
| | إن الذين يحبون أن تشيع الفاحشة في الذين آمنوا | | |
| | لهم عذاب أليم ... ... ... ... ... ... ... | م النور | ١٩ ٢٤ |
| | ولوطا إذ قال لقومه أتأتون الفاحشة وأنتم تبصرون | ك النمل | ٥٤ ٢٧ |
| | إنكم لتأتون الفاحشة ما سبقكم بها من أحد من العالمين | ك العنكبوت | ٢٨ ٢٩ |
| | من يأت منكن بفاحشة مبينة يضاعف لها العذاب ضعفين | م الأحزاب | ٣٠ ٣٣ |
| | ولا يخرجن إلا أن يأتين بفاحشة مبينة ... ... ... | م الطلاق | ١ ٦٥ |
| ٱلْفَوَاحِشَ | : ولا تقربوا الفواحش ما ظهر منها وما بطن | م الأنعام | ١٥١ ٦ |
| (٤) | قل إنما حرم ربي الفواحش ما ظهر منها وما بطن ... | ك الأعراف | ٣٣ ٧ |
| | والذين يجتنبون كبائر الإثم والفواحش ... ... ... | ك الشورى | ٣٧ ٤٢ |
| | الذين يجتنبون كبائر الإثم والفواحش إلا اللمم... ... | م النجم | ٣٢ ٥٣ |
| فَخُورٌ | : ليقولن ذهب السيئات عني إنه لفرح فخور ... ... | ك هود | ١٠ ١١ |
| (٣) | إن الله لا يحب كل مختال فخور ... ... ... ... | ك لقمان | ١٨ ٣١ |
| | ولا تفرحوا بما آتاكم والله لا يحب كل مختال فخور | م الحديد | ٢٣ ٥٧ |
| فَخُورًا | : إن الله لا يحب من كان مختالا فخورا... ... ... | م النساء | ٣٦ ٤ |
| تَفَاخُرٌ | : اعلموا أنما الحياة الدنيا لعب ولهو وزينة وتفاخر بينكم | م الحديد | ٢٠ ٥٧ |
| كَٱلْفَخَّارِ | : خلق الإنسان من صلصال كالفخار... ... ... | م الرحمن | ١٤ ٥٥ |
| فَدَيْنَاهُ | : وفديناه بذبح عظيم ... ... ... ... ... ... | ك الصافات | ١٠٧ ٣٧ |
| تُفَادُوهُمْ | : وإن يأتوكم أسارى تفادوهم وهو محرم عليكم | | |
| | إخراجهم ... ... ... ... ... ... ... ... | م البقرة | ٨٥ ٢ |
| ٱفْتَدَى | : فلن يقبل من أحدهم ملء الأرض ذهبا ولو افتدى به | م آل عمران | ٩١ ٣ |
| ٱفْتَدَتْ | : فلا جناح عليهما فيما افتدت به ... ... ... ... | م البقرة | ٢٢٩ ٢ |
| (٢) | ولو أن لكل نفس ظلمت ما في الأرض لافتدت به | ك يونس | ٥٤ ١٠ |
| لَٱفْتَدَوْا | : لو أن لهم ما في الأرض جميعا ومثله معه لافتدوا به | م الرعد | ١٨ ١٣ |
| (٢) | ولو أن للذين ظلموا ما في الأرض جميعا ومثله معه لافتدوا به | ك الزمر | ٤٧ ٣٩ |
| لِيَفْتَدُوا | : ليفتدوا به من عذاب يوم القيامة ما تقبل منهم | م المائدة | ٣٦ ٥ |
| يَفْتَدِي | : يود المجرم لو يفتدي من عذاب يومئذ ببنيه ... | ك المعارج | ١١ ٧٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| فِدَاءً | : فإما منا بعد و إما فداء حتى تضع الحرب أوزارها | ٤ | م محمد | ٤٧ |
| فِدْيَةٌ | : وعلى الذين يطيقونه فدية طعام مسكين ... ... ... | ١٨٤ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | فمن كان منكم مريضا أو به أذى من رأسه ففدية من صيام | ١٩٦ | م « | ٢ |
| | فاليوم لا يؤخذ منكم فدية ولا من الذين كفروا ... | ١٥ | م الحديد | ٥٧ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| فُرَاتٌ | : وهو الذي مرج البحرين هذا عذب فرات... ... | ٥٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| (٢) | وما يستوى البحران هذا عذب فرات سائغ شرابه ... | ١٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| فُرَاتًا | : وجعلنا فيها رواسى شامخات وأسقيناكم ماء فراتا | ٢٧ | ك المرسلات | ٧٧ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| فَرْثٍ | : نسقيكم مما فى بطونه من بين فرث ودم لبنا خالصا | ٦٦ | ك النحل | ١٦ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| فُرِجَتْ | : وإذا السماء فرجت . وإذا الجبال نسفت... ... | ٩ | ك المرسلات | ٧٧ |
| فَرْجَهَا | : والتى أحصنت فرجها فنفخنا فيها من روحنا... ... | ٩١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٢) | ومريم ابنة عمران التى أحصنت فرجها فنفخنا فيه من روحنا | ١٢ | م التحريم | ٦٦ |
| فُرُوجٍ | : كيف بنيناها وزيناها وما لها من فروج ... ... | ٦ | ك ق | ٥٠ |
| فُرُوجَهُمْ | : والذين هم لفروجهم حافظون ... ... ... ... | ٥ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٤) | قل للمؤمنين يغضوا من أبصارهم ويحفظوا فروجهم | ٣٠ | م النور | ٢٤ |
| | والحافظين فروجهم والحافظات والذاكرين الله كثيرا | | | |
| | والذاكرات أعد الله لهم مغفرة وأجرا عظيما ... | ٣٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | والذين هم لفروجهم حافظون ... ... ... ... | ٢٩ | ك المعارج | ٧٠ |
| فُرُوجَهُنَّ | : وقل للمؤمنات يغضضن من أبصارهن ويحفظن | | | |
| | فروجهن ... ... ... ... ... ... ... | ٣١ | م النور | ٢٤ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| فَرِحَ | : فرح المخلفون بمقعدهم خلاف رسول الله ... ... | ٨١ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | وإنا إذا أذقنا الإنسان منا رحمة فرح بها ... ... ... | ٤٨ | ك الشورى | ٤٢ |
| فَرِحُوا | : حتى إذا فرحوا بما أوتوا أخذناهم بغتة ... ... | ٤٤ | ك الأنعام | ٦ |
| (٥) | حتى إذا كنتم فى الفلك وجرين بهم بريح طيبة | | | |
| | وفرحوا بها جاءتها ريح عاصف ... ... ... ... | ٢٢ | ك يونس | ١٠ |
| | وفرحوا بالحياة الدنيا وما الحياة الدنيا فى الآخرة | | | |
| | إلا متاع ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | م الرعد | ١٣ |
| | وإذا أذقنا الناس رحمة فرحوا بها ... ... ... ... | ٣٦ | ك الروم | ٣٠ |
| | فلما جاءتهم رسلهم بالبينات فرحوا بما عندهم من العلم | ٨٣ | ك غافر | ٤٠ |
| تَفْرَحْ | : إذ قال له قومه لا تفرح إن الله لا يحب الفرحين | ٧٦ | ك القصص | ٢٨ |
| تَفْرَحُوا | : لكيلا تأسوا على ما فاتكم ولا تفرحوا بما آتاكم | ٢٣ | م الحديد | ٥٧ |
| تَفْرَحُونَ | : فما آتانى الله خير مما آتاكم بل أنتم بهديتكم تفرحون | ٣٦ | ك النمل | ٢٧ |
| (٢) | ذلكم بما كنتم تفرحون فى الأرض بغير الحق ... ... | ٧٥ | ك غافر | ٤٠ |
| يَفْرَحُ | : لله الأمر من قبل ومن بعد ويومئذ يفرح المؤمنون | ٤ | ك الروم | ٣٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَفْرَحُوا | : وإن تصبكم سيئة يفرحوا بها ... ... ... ... | ١٢٠ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | قل بفضل الله وبرحمته فبذلك فليفرحوا هو خير مما يجمعون | ٥٨ | ك يونس | ١٠ |
| يَفْرَحُونَ | : لا تحسبن الذين يفرحون بما أتوا ويحبون أن | | | |
| (٢) | يحمدوا بما لم يفعلوا ... ... ... ... ... ... | ١٨٨ | م آل عمران | ٣ |
| | والذين آتيناهم الكتاب يفرحون بما أنزل إليك ... | ٣٦ | م الرعد | ١٣ |
| فَرِحٌ | : ليقولن ذهب السيئات عنى إنه لفرح فخور ... ... | ١٠ | ك هود | ١١ |
| فَرِحُونَ | : ويتولوا وهم فرحون ... ... ... ... ... ... | ٥٠ | م التوبة | ٩ |
| (٣) | فتقطعوا أمرهم بينهم زبرا كل حزب بما لديهم فرحون | ٥٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ركانوا شيعا كل حزب بما لديهم فرحون ... ... ... | ٣٢ | ك الروم | ٣٠ |
| فَرِحِينَ | : فرحين بما آتاهم الله من فضله ... ... ... ... | ١٧٠ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | إذ قال له قومه لا تفرح إن الله لا يحب الفرحين ... | ٧٦ | ك القصص | ٢٨ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| فَرْدًا | : ونرثه ما يقول ويأتينا فردا ... ... ... ... ... | ٨٠ | ك مريم | ١٩ |
| (٣) | وكلهم آتيه يوم القيامة فردا ... ... ... ... ... | ٩٥ | ك « | ١٩ |
| | وزكريا إذ نادى ربه رب لا تذرنى فردا وأنت خير الوارثين | ٨٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| فُرَادَى | : ولقد جئتمونا فرادى كما خلقناكم أول مرة... ... | ٩٤ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | قل إنما أعظكم بواحدة أن تقوموا لله مثنى وفرادى | ٤٦ | ك سبأ | ٣٤ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| الْفِرْدَوْسِ | : كانت لهم جنات الفردوس نزلا ... ... ... | ١٠٧ | ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | الذين يرثون الفردوس هم فيها خالدون ... ... ... | ١١ | ك المؤمنون | ٢٣ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| فَرَّتْ | : كأنهم حمر مستنفرة . فرت من قسورة ... ... ... | ٥١ | ك المدثر | ٧٤ |
| فَرَرْتُ | : ففررت منكم لما خفتكم فوهب لى ربى حكما ... | ٢١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| فَرَرْتُمْ | : قل لن ينفعكم الفرار إن فررتم من الموت أو القتل | ١٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| تَفِرُّونَ | : قل إن الموت الذى تفرون منه فإنه ملاقيكم ... | ٨ | م الجمعة | ٦٢ |
| يَفِرُّ | : يوم يفر المرء من أخيه . وأمه وأبيه... ... ... ... | ٣٤ | ك عبس | ٨٠ |
| فَفِرُّوا | : ففروا إلى الله إنى لكم منه نذير مبين... ... ... ... | ٥٠ | ك الذاريات | ٥١ |
| الْفِرَارُ | : قل لن ينفعكم الفرار إن فررتم من الموت أو القتل | ١٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| فِرَارًا | : لو اطلعت عليهم لوليت منهم فرارا ولملئت منهم رعبا | ١٨ | ك الكهف | ١٨ |
| (٣) | وما هى بعورة إن يريدون إلا فرارا ... ... ... ... | ١٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | فلم يزدهم دعائى إلا فرارا... ... ... ... ... ... | ٦ | ك نوح | ٧١ |
| الْمَفَرُّ | : يقول الإنسان يومئذ أين المفر... ... ... ... ... | ١٠ | ك القيامة | ٧٥ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| فَرَشْنَاهَا | : والأرض فرشناها فنعم الماهدون ... ... ... | ٤٨ | ك الذاريات | ٥١ |
| فَرْشًا | : ومن الأنعام حمولة وفرشا كلوا مما رزقكم الله... ... | ١٤٢ | ك الأنعام | ٦ |
| فِرَاشًا | : الذى جعل لكم الأرض فراشا والسماء بناء ... ... | ٢٢ | م البقرة | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| فُرُش | : متكئين على فرش بطائنها من إستبرق وجنى الجنتين دان | ٥٤ م الرحمن | ٥٥ | |
| (٢) | وفرش مرفوعة . إنا أنشأناهن إنشاء . فجعلناهن أبكارا | ٣٤ ك الواقعة | ٥٦ | |
| الْفَرَاش | : يوم يكون الناس كالفراش المبثوث ... ... ... | ٤ ك القارعة | ١٠١ | |
| فَرَضَ | : فمن فرض فيهن الحج فلا رفث ولا فسوق ... | ١٩٧ م البقرة | ٢ | |
| (٤) | إن الذى فرض عليك القرآن لرادك إلى معاد ... ... | ٨٥ م القصص | ٢٨ | |
| | ما كان على النبي من حرج فيما فرض الله له ... ... | ٣٨ م الأحزاب | ٣٣ | |
| | قد فرض الله لكم تحلة أيمانكم والله مولاكم ... ... | ٢ م التحريم | ٦٦ | |
| فَرَضْتُمْ | : وإن طلقتموهن من قبل أن تمسوهن وقد فرضتم | | | |
| (٢) | لهن فريضة ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣٧ م البقرة | ٢ | |
| | فنصف ما فرضتم إلا أن يعفون ... ... ... ... ... | ٢٣٧ م « | ٢ | |
| فَرَضْنَا | : قد علمنا ما فرضنا عليهم فى أزواجهم وما ملكت أيمانهم | ٥٠ م الأحزاب | ٣٣ | |
| فَرَضْنَاهَا | : سورة أنزلناها وفرضناها وأنزلنا فيها آيات بينات | ١ م النور | ٢٤ | |
| تَفْرِضُوا | : لا جناح عليكم إن طلقتم النساء . ما لم تمسوهن | | | |
| | أو تفرضوا لهن فريضة ... ... ... ... ... ... | ٢٣٦ م البقرة | ٢ | |
| فَرِيضَةً | : ما لم تمسوهن أو تفرضوا لهن فريضة ... ... | ٢٣٦ م « | ٢ | |
| (٦) | وإن طلقتموهن من قبل أن تمسوهن وقد فرضتم لهن فريضة | ٢٣٧ م « | ٢ | |
| | آباؤكم وأبناؤكم لا تدرون أيهم أقرب لكم نفعا فريضة من الله | ١١ م النساء | ٤ | |
| | فما استمتعتم به منهن فآتوهن أجورهن فريضة ... | ٢٤ م « | ٤ | |
| | ولا جناح عليكم فيما تراضيتم به من بعد الفريضة ... | ٢٤ م « | ٤ | |
| | وفى سبيل الله وابن السبيل فريضة من الله والله عليم حكيم | ٦٠ م التوبة | ٩ | |
| مَفْرُوضًا | : مما قل منه أو كثر نصيبا مفروضا ... ... ... | ٧ م النساء | ٤ | |
| (٢) | وقال لأتخذن من عبادك نصيبا مفروضا ... ... ... | ١١٨ م « | ٤ | |
| فَارِضٌ | : قال إنه يقول إنها بقرة لا فارض ولا بكر عوان بين ذلك | ٦٨ م البقرة | ٢ | |
| يَفْرُطَ | : قالا ربنا إننا نخاف أن يفرط علينا أو أن يطغى | ٤٥ ك طه | ٢٠ | |
| فَرَّطْتُ | : أن تقول نفس يا حسرتى على ما فرطت فى جنب الله | ٥٦ ك الزمر | ٣٩ | |
| فَرَّطْتُمْ | : ومن قبل ما فرطتم فى يوسف ... ... ... ... | ٨٠ ك يوسف | ١٢ | |
| فَرَّطْنَا | : قالوا يا حسرتنا على ما فرطنا فيها ... ... ... | ٣١ ك الأنعام | ٦ | |
| (٢) | ما فرطنا فى الكتاب من شىء ... ... ... ... | ٣٨ ك « | ٦ | |
| يُفْرِطُونَ | : توفته رسلنا وهم لا يفرطون ... ... ... ... | ٦١ ك « | ٦ | |
| مُفْرَطُونَ | : لا جرم أن لهم النار وأنهم مفرطون ... ... | ٦٢ ك النحل | ١٦ | |
| فُرُطًا | : واتبع هواه وكان أمره فرطا ... ... ... ... | ٢٨ م الكهف | ١٨ | |
| فَرْعُهَا | : كشجرة طيبة أصلها ثابت وفرعها فى السماء ... ... | ٢٤ م إبراهيم | ١٤ | |
| فِرْعَوْنُ | : وإذ نجيناكم من آل فرعون يسومونكم سوء العذاب | ٤٩ م البقرة | ٢ | |
| (٧٤) | فأنجيناكم وأغرقنا آل فرعون وأنتم تنظرون .. ... | ٥٠ م « | ٢ | |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| فِرْعَوْنَ | : كذأب آل فرعون والذين من قبلهم ... ... ... | ١١ م آل عمران | ٣ | |
| | ثم بعثنا من بعدهم موسى بآياتنا إلى فرعون وملائه فظلموا بها | ١٠٣ ك الأعراف | ٧ | |
| | وقال موسى يا فرعون إنى رسول من رب العالمين | ١٠٤ ك « | ٧ | |
| | قال الملأ من قوم فرعون إن هذا لساحر عليم ... | ١٠٩ ك « | ٧ | |
| | وجاء السحرة فرعون قالوا إن لنا لأجرا إن كنا نحن الغالبين | ١١٣ ك « | ٧ | |
| | قال فرعون آمنتم به قبل أن آذن لكم ... ... ... | ١٢٣ ك « | ٧ | |
| | وقال الملأ من قوم فرعون أتذر موسى وقومه ليفسدوا | | | |
| | فى الأرض... ... ... ... ... ... ... ... | ١٢٧ ك « | ٧ | |
| | ولقد أخذنا آل فرعون بالسنين ونقص من الثمرات | ١٣٠ ك « | ٧ | |
| | ودمرنا ما كان يصنع فرعون وقومه وما كانوا يعرشون | ١٣٧ ك « | ٧ | |
| | وإذ أنجيناكم من آل فرعون يسومونكم سوء العذاب | ١٤١ ك « | ٧ | |
| | كذأب آل فرعون والذين من قبلهم كفروا بآيات الله | ٥٢ م الأنفال | ٨ | |
| | كذأب آل فرعون والذين من قبلهم كذبوا بآيات ربهم | ٥٤ م « | ٨ | |
| | فأهلكناهم بذنوبهم وأغرقنا آل فرعون ... ... ... | ٥٤ م « | ٨ | |
| | ثم بعثنا من بعدهم موسى وهرون إلى فرعون وملائه | ٧٥ ك يونس | ١٠ | |
| | وقال فرعون ائتونى بكل ساحر عليم ... ... ... ... | ٧٩ ك « | ١٠ | |
| | على خوف من فرعون وملائهم أن يفتنهم ... ... | ٨٣ ك « | ١٠ | |
| | وإن فرعون لعال فى الأرض وإنه لمن المسرفين ... | ٨٣ ك « | ١٠ | |
| | وقال موسى ربنا إنك آتيت فرعون وملأه زينة وأموالا | ٨٨ ك « | ١٠ | |
| | وجاوزنا ببنى إسرائيل البحر فأتبعهم فرعون وجنوده | ٩٠ ك « | ١٠ | |
| | ولقد أرسلنا موسى بآياتنا وسلطان مبين . إلى فرعون وملائه | ٩٧ ك هود | ١١ | |
| | فاتبعوا أمر فرعون ... ... ... ... ... ... ... | ٩٧ ك « | ١١ | |
| | وما أمر فرعون برشيد ... ... ... ... ... ... ... | ٩٧ ك « | ١١ | |
| | اذكروا نعمة الله عليكم إذ أنجاكم من آل فرعون | ٦ ك إبراهيم | ١٤ | |
| | فقال له فرعون إنى لأظنك يا موسى مسحورا ... | ١٠١ ك الإسراء | ١٧ | |
| | وإنى لأظنك يا فرعون مثبورا ... ... ... ... ... | ١٠٢ ك « | ١٧ | |
| | اذهب إلى فرعون إنه طغى ... ... ... ... ... ... | ٢٤ ك طه | ٢٠ | |
| | اذهبا إلى فرعون إنه طغى ... ... ... ... ... ... | ٤٣ ك « | ٢٠ | |
| | فتولى فرعون بجمع كيده ثم أتى ... ... ... ... ... | ٦٠ ك « | ٢٠ | |
| | فأتبعهم فرعون بجنوده فغشيهم من اليم ما غشيهم ... | ٧٨ ك « | ٢٠ | |
| | وأضل فرعون قومه وما هدى ... ... ... ... ... | ٧٩ ك « | ٢٠ | |
| | ثم أرسلنا موسى وأخاه هرون بآياتنا وسلطان مبين . | | | |
| | إلى فرعون وملائه ... ... ... ... ... ... ... | ٤٦ ك المؤمنون | ٢٣ | |
| | وإذ نادى ربك موسى أن ائت القوم الظالمين . قوم فرعون | ١١ ك الشعراء | ٢٦ | |
| | فأتيا فرعون فقولا إنا رسول رب العالمين ... ... ... | ١٦ ك « | ٢٦ | |
| | قال فرعون وما رب العالمين ... ... ... ... ... ... | ٢٣ ك « | ٢٦ | |
| | فلما جاء السحرة قالوا لفرعون أئن لنا لأجرا إن كنا نحن الغالبين | ٤١ ك « | ٢٦ | |
| | فألقوا حبالهم وعصيهم وقالوا بعزة فرعون إنا لنحن الغالبون | ٤٤ ك « | ٢٦ | |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| فِرْعَوْنَ: | فأرسل فرعون فى المدائن حاشرين ... ... ... | ٥٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فى تسع آيات إلى فرعون وقومه إنهم كانوا قوما فاسقين | ١٢ | ك النمل | ٢٧ |
| | نتلوا عليك من نبإ موسى وفرعون بالحق لقوم يؤمنون | ٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | إن فرعون علا فى الأرض وجعل أهلها شيعا ... ... | ٤ | ك « | ٢٨ |
| | ونرى فرعون وهامان وجنودهما منهم ما كانوا يحذرون | ٦ | ك « | ٢٨ |
| | فالتقطه آل فرعون ليكون لهم عدوا وحزنا ... ... | ٨ | ك « | ٢٨ |
| | إن فرعون وهامان وجنودهما كانوا خاطئين ... ... | ٨ | ك « | ٢٨ |
| | وقالت امرأة فرعون قرة عين لى ولك ... ... ... | ٩ | ك « | ٢٨ |
| | فذانك برهانان من ربك إلى فرعون وملائه ... ... | ٣٢ | ك « | ٢٨ |
| | وقال فرعون يأيها الملأ ما علمت لكم من إله غيرى | ٣٨ | ك « | ٢٨ |
| | وقارون وفرعون وهامان ولقد جاءهم موسى بالبينات | | | |
| | فاستكبروا فى الأرض وما كانوا سابقين ... ... | ٣٩ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | كذبت قبلهم قوم نوح وعاد وفرعون ذو الأوتاد ... | ١٢ | ك ص | ٣٨ |
| | ولقد أرسلنا موسى بآياتنا وسلطان مبين . إلى فرعون وهامان | ٢٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | وقال فرعون ذرونى أقتل موسى وليدع ربه ... ... | ٢٦ | ك « | ٤٠ |
| | وقال رجل مؤمن من آل فرعون يكتم إيمانه ... ... | ٢٨ | ك « | ٤٠ |
| | قال فرعون ما أريكم إلا ما أرى وما أهديكم إلا سبيل الرشاد | ٢٩ | ك « | ٤٠ |
| | وقال فرعون يا هامان ابن لى صرحا لعلى أبلغ الأسباب | ٣٦ | ك « | ٤٠ |
| | وكذلك زين لفرعون سوء عمله وصد عن السبيل ... | ٣٧ | ك « | ٤٠ |
| | وما كيد فرعون إلا فى تباب ... ... ... ... | ٣٧ | ك « | ٤٠ |
| | فوقاه الله سيئات ما مكروا وحاق بآل فرعون سوء العذاب | ٤٥ | ك « | ٤٠ |
| | ويوم تقوم الساعة أدخلوا آل فرعون أشد العذاب | ٤٦ | ك « | ٤٠ |
| | ولقد أرسلنا موسى بآياتنا إلى فرعون وملائه ... ... | ٤٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ونادى فرعون فى قومه قال يا قوم أليس لى ملك مصر | ٥١ | ك « | ٤٣ |
| | ولقد فتنا قبلهم قوم فرعون وجاءهم رسول كريم ... | ١٧ | ك الدخان | ٤٤ |
| | ولقد نجينا بنى إسرائيل من العذاب المهين . من فرعون | ٣١ | ك « | ٤٤ |
| | كذبت قبلهم قوم نوح وأصحاب الرس وثمود . وعاد وفرعون | ١٣ | ك ق | ٥٠ |
| | وفى موسى إذ أرسلناه إلى فرعون بسلطان مبين... ... | ٣٨ | ك الذاريات | ٥١ |
| | ولقد جاء آل فرعون النذر... ... ... ... ... | ٤١ | ك القمر | ٥٤ |
| | وضرب الله مثلا للذين آمنوا امرأة فرعون ... ... | ١١ | م التحريم | ٦٦ |
| | ونجنى من فرعون وعمله... ... ... ... ... ... | ١١ | م « | ٦٦ |
| | وجاء فرعون ومن قبله والمؤتفكات بالخاطئة ... ... | ٩ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | إنا أرسلنا إليكم رسولا شاهدا عليكم كما أرسلنا إلى | | | |
| | فرعون رسولا ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك المزمل | ٧٣ |
| | فعصى فرعون الرسول فأخذناه أخذا وبيلا ... ... | ١٦ | ك « | ٧٣ |
| | اذهب إلى فرعون إنه طغى ... ... ... ... ... | ١٧ | ك النازعات | ٧٩ |
| | هل أتاك حديث الجنود . فرعون وثمود ... ... ... | ١٨ | ك البروج | ٨٥ |
| | وثمود الذين جابوا الصخر بالواد . وفرعون ذى الأوتاد | ١٠ | ك الفجر | ٨٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| فَرَغْتَ: | فإذا فرغت فانصب . وإلى ربك فارغب... ... | ٧ | ك الشرح | ٩٤ |
| سَنَفْرُغُ: | سنفرغ لكم أيه الثقلان . فبأى آلاء ربكما تكذبان | ٣١ | م الرحمن | ٥٥ |
| أُفْرِغْ: | حتى إذا جعله نارا قال آتونى أفرغ عليه قطرا ... | ٩٦ | م الكهف | ١٨ |
| أَفْرِغْ: | ولما برزوا لجالوت وجنوده قالوا ربنا أفرغ علينا صبرا | ٢٥٠ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | ربنا أفرغ علينا صبرا وتوفنا مسلمين ... ... ... ... | ١٢٦ | ك الأعراف | ٧ |
| فَارِغًا: | وأصبح فؤاد أم موسى فارغا ... ... ... ... ... | ١٠ | ك القصص | ٢٨ |
| فَرَقْنَا: | وإذ فرقنا بكم البحر فأنجيناكم وأغرقنا آل فرعون | ٥٠ | م البقرة | ٢ |
| فَرَقْنَاهُ: | وقرآنا فرقناه لتقرأه على الناس على مكث ونزلناه تنزيلا | ١٠٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| يَفْرَقُونَ: | وما هم منكم ولكنهم قوم يفرقون ... ... ... | ٥٦ | م التوبة | ٩ |
| فَافْرُقْ: | فافرق بيننا وبين القوم الفاسقين ... ... ... ... | ٢٥ | م المائدة | ٥ |
| يُفْرَقُ: | فيها يفرق كل أمر حكيم ... ... ... ... ... | ٤ | ك الدخان | ٤٤ |
| فَرَّقْتَ: | إنى خشيت أن تقول فرقت بين بنى إسرائيل ... | ٩٤ | ك طه | ٢٠ |
| فَرَّقُوا: | إن الذين فرقوا دينهم وكانوا شيعا لست منهم فى شىء | ١٥٩ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | ولا تكونوا من المشركين . من الذين فرقوا دينهم | | | |
| | وكانوا شيعا ... ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك الروم | ٣٠ |
| نُفَرِّقُ: | لا نفرق بين أحد منهم ونحن له مسلمون... ... ... | ١٣٦ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | كل آمن بالله وملائكته وكتبه ورسله لا نفرق بين أحد | | | |
| | من رسله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨٥ | م « | ٢ |
| | لا نفرق بين أحد منهم ونحن له مسلمون ... ... ... | ٨٤ | م آل عمران | ٣ |
| يُفَرِّقُوا: | ويريدون أن يفرقوا بين الله ورسله ... ... | ١٥٠ | م النساء | ٤ |
| (٢) | والذين آمنوا بالله ورسله ولم يفرقوا بين أحد منهم | ١٥٢ | م « | ٤ |
| يُفَرِّقُونَ: | فيتعلمون منهما ما يفرقون به بين المرء وزوجه | ١٠٢ | م البقرة | ٢ |
| فَارِقُوهُنَّ: | فأمسكوهن بمعروف أو فارقوهن بمعروف ... | ٢ | م الطلاق | ٦٥ |
| تَفَرَّقَ: | وما تفرق الذين أوتوا الكتاب إلا من بعد ما جاءتهم البينة | ٤ | م البينة | ٩٨ |
| تَفَرَّقُوا: | ولا تكونوا كالذين تفرقوا واختلفوا من بعد | | | |
| (٢) | ما جاءهم البينات ... ... ... ... ... ... | ١٠٥ | م آل عمران | ٣ |
| | وما تفرقوا إلا من بعد ما جاءهم العلم بغيا بينهم... ... | ١٤ | ك الشورى | ٤٢ |
| (ت) تَفَرَّقَ: | ولا تتبعوا السبل فتفرق بكم عن سبيله... ... | ١٥٣ | م الأنعام | ٦ |
| (ت) تَفَرَّقُوا: | واعتصموا بحبل الله جميعا ولا تفرقوا | ١٠٣ | م آل عمران | ٣ |
| تَتَفَرَّقُوا: | أن أقيموا الدين ولا تتفرقوا فيه ... ... ... | ١٣ | ك الشورى | ٤٢ |
| يَتَفَرَّقَا: | وإن يتفرقا يغن الله كلا من سعته ... ... ... | ١٣٠ | م النساء | ٤ |
| يَتَفَرَّقُونَ: | ويوم تقوم الساعة يومئذ يتفرقون ... ... | ١٤ | ك الروم | ٣٠ |
| فَرْقًا: | والناشرات نشرا . فالفارقات فرقا ... ... ... ... | ٤ | ك المرسلات | ٧٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| فِرْقٍ | : فانفلق فكان كل فرق كالطود العظيم ... ... ... | ٦٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| فِرْقَةٍ | : فلولا نفر من كل فرقة منهم طائفة ليتفقهوا فى الدين | ١٢٢ | م التوبة | ٩ |
| فِرَاقُ | : قال هذا فراق بينى و بينك ... ... ... ... ... | ٧٨ | ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | كلا إذا بلغت التراقى . وقيل من راق . وظن أنه الفراق | ٢٨ | ك القيامة | ٧٥ |
| الْفَارِقَاتِ | : والناشرات نشرا . فالفارقات فرقا ... ... | ٤ | ك المرسلات | ٧٧ |
| فَرِيقٌ | : وقد كان فريق منهم يسمعون كلام الله ... ... | ٧٥ | م البقرة | ٢ |
| (١٤) | أو كلما عاهدوا عهدا نبذه فريق منهم ... ... ... | ١٠٠ | م « | ٢ |
| | نبذ فريق من الذين أوتوا الكتاب كتاب الله وراء ظهورهم | ١٠١ | م « | ٢ |
| | ثم يتولى فريق منهم وهم معرضون ... ... ... ... | ٢٣ | م آل عمران | ٣ |
| | فلما كتب عليهم القتال إذا فريق منهم يخشون الناس | ٧٧ | م النساء | ٤ |
| | من بعد ما كاد يزيغ قلوب فريق منهم ... ... ... | ١١٧ | م التوبة | ٩ |
| | ثم إذا كشف الضر عنكم إذا فريق منكم بربهم يشركون | ٥٤ | ك النحل | ١٦ |
| | إنه كان فريق من عبادى يقولون ربنا آمنا ... ... | ١٠٩ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ثم يتولى فريق منهم من بعد ذلك ... ... ... ... | ٤٧ | م النور | ٢٤ |
| | و إذا دعوا إلى الله ورسوله ليحكم بينهم إذا فريق | | | |
| | منهم معرضون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٨ | م « | ٢٤ |
| | ثم إذا أذاقهم منه رحمة إذا فريق منهم بربهم يشركون | ٣٣ | ك الروم | ٣٠ |
| | و يستئذن فريق منهم النبي يقولون إن بيوتنا عورة | ١٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وتنذر يوم الجمع لا ريب فيه فريق فى الجنة ... ... | ٧ | ك الشورى | ٤٢ |
| | وفريق فى السعير ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك « | ٤٢ |
| فَرِيقًا | : وتخرجون فريقا منكم من دياركم ... ... ... ... | ٨٥ | م البقرة | ٢ |
| (١٥) | أفكلما جاءكم رسول بما لا تهوى أنفسكم استكبرتم ففريقا كذبتم | ٨٧ | م « | ٢ |
| | وفريقا تقتلون ... ... ... ... ... ... ... | ٨٧ | م « | ٢ |
| | و إن فريقا منهم ليكتمون الحق وهم يعلمون ... ... | ١٤٦ | م « | ٢ |
| | لتأكلوا فريقا من أموال الناس بالإثم ... ... ... | ١٨٨ | م « | ٢ |
| | و إن منهم لفريقا يلوون ألسنتهم بالكتاب ... ... | ٧٨ | م آل عمران | ٣ |
| | إن تطيعوا فريقا من الذين أوتوا الكتاب يردوكم | | | |
| | بعد إيمانكم كافرين ... ... ... ... ... ... | ١٠٠ | م « | ٣ |
| | كلما جاءهم رسول بما لا تهوى أنفسهم فريقا كذبوا | ٧٠ | م المائدة | ٥ |
| | وفريقا يقتلون... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٠ | م « | ٥ |
| | فريقا هدى ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | وفريقا حق عليهم الضلالة ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك « | ٧ |
| | و إن فريقا من المؤمنين لكارهون ... ... ... ... | ٥ | م الأنفال | ٨ |
| | وقذف فى قلوبهم الرعب فريقا تقتلون ... ... ... | ٢٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وتأسرون فريقا ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | م « | ٣٣ |
| | ولقد صدق عليهم إبليس ظنه فاتبعوه إلا فريقا من المؤمنين | ٢٠ | ك سبإ | ٣٤ |
| فَرِيقَانِ | : فإذا هم فريقان يختصمون ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك النمل | ٢٧ |
| الْفَرِيقَيْنِ | : فأى الفريقين أحق بالأمن إن كنتم تعلمون | ٨١ | ك الأنعام | ٦ |
| (٣) | مثل الفريقين كالأعمى والأصم والبصير والسميع ... | ٢٤ | ك هود | ١١ |
| | قال الذين كفروا للذين آمنوا أى الفريقين خير مقاما | ٧٣ | ك مريم | ١٩ |
| الْفُرْقَانَ | : و إذ آتينا موسى الكتاب والفرقان لعلكم تهتدون | ٥٣ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | هدى للناس و بينات من الهدى والفرقان... ... ... | ١٨٥ | م « | ٢ |
| | وأنزل التوراة والإنجيل . من قبل هدى للناس وأنزل الفرقان | ٤ | م آل عمران | ٣ |
| | وما أنزلنا على عبدنا يوم الفرقان يوم التقى الجمعان | ٤١ | م الأنفال | ٨ |
| | ولقد آتينا موسى وهرون الفرقان وضياء وذكرا للمتقين | ٤٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | تبارك الذى نزل الفرقان على عبده ليكون للعالمين نذيرا | ١ | ك الفرقان | ٢٥ |
| فُرْقَانًا | : يأيها الذين آمنوا إن تتقوا الله يجعل لكم فرقانا ... | ٢٩ | م الأنفال | ٨ |
| تَفْرِيقًا | : والذين اتخذوا مسجدا ضرارا وكفرا وتفريقا بين المؤمنين | ١٠٧ | م التوبة | ٩ |
| مُتَفَرِّقُونَ | : أأرباب متفرقون خير أم الله الواحد القهار | ٣٩ | ك يوسف | ١٢ |
| مُتَفَرِّقَةٍ | : وادخلوا من أبواب متفرقة ... ... ... ... ... | ٦٧ | ك « | ١٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| فَارِهِينَ | : وتنحتون من الجبال بيوتا فارهين ... ... ... | ١٤٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| أَفْتَرَى | : فمن افترى على الله الكذب من بعد ذلك فأولئك | | | |
| (١٤) | هم الظالمون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩٤ | م آل عمران | ٣ |
| | ومن يشرك بالله فقد افترى إثما عظيما... ... ... ... | ٤٨ | م النساء | ٤ |
| | ومن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو كذب بآياته ... | ٢١ | ك الأنعام | ٦ |
| | ومن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو قال أوحى إلىّ | | | |
| | ولم يوح إليه شىء ... ... ... ... ... ... ... | ٩٣ | م « | ٦ |
| | فمن أظلم ممن افترى على الله كذبا ليضل الناس بغير علم | ١٤٤ | ك « | ٦ |
| | فمن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو كذب بآياته ... | ٣٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | فمن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو كذب بآياته ... | ١٧ | ك يونس | ١٠ |
| | ومن أظلم ممن افترى على الله كذبا أولئك يعرضون على ربهم | ١٨ | ك هود | ١١ |
| | فمن أظلم ممن افترى على الله كذبا ... ... ... ... | ١٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | وقد خاب من افترى ... ... ... ... ... ... ... | ٦١ | ك طه | ٢٠ |
| | إن هو إلا رجل افترى على الله كذبا وما نحن له بمؤمنين | ٣٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ومن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو كذب بالحق لما جاءه | ٦٨ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | أم يقولون افترى على الله كذبا فإن يشإ الله يختم على قلبك | ٢٤ | م الشورى | ٤٢ |
| | ومن أظلم ممن افترى على الله الكذب وهو يدعى إلى الإسلام | ٧ | م الصف | ٦١ |
| أَفْتَرَى | : افترى على الله كذبا أم به جنة ... ... ... ... | ٨ | ك سبإ | ٣٤ |
| أَفْتَرَاهُ | : أم يقولون افتراه قل فأتوا بسورة مثله ... ... | ٣٨ | ك يونس | ١٠ |
| (٧) | أم يقولون افتراه قل فأتوا بعشر سور مثله مفتريات | ١٣ | ك هود | ١١ |
| | أم يقولون افتراه قل إن افتريته فعلىّ إجرامى ... ... | ٣٥ | ك « | ١١ |
| | بل قالوا أضغاث أحلام بل افتراه بل هو شاعر ... | ٥ | ك الأنبياء | ٢١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَفْتَرَاهُ | : وقال الذين كفروا إن هذا إلا إفك افتراه... ... | ٤ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | أم يقولون افتراه بل هو الحق من ربك ... ... ... | ٣ | ك السجدة | ٣٢ |
| | أم يقولون افتراه قل إن افتريته فلا تملكون لى من الله شيئا | ٨ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| أَفْتَرَيْتُهُ | : قل إن افتريته فعلىّ إجرامى وأنا برىء مما تجرمون | ٣٥ | ك هود | ١١ |
| (٢) | قل إن افتريته فلا تملكون لى من الله شيئا ... ... | ٨ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| أَفْتَرَيْنَا | : قد افترينا على الله كذبا إن عدنا فى ملتكم ... ... | ٨٩ | ك الأعراف | ٧ |
| تَفْتَرُوا | : ولا تقولوا لما تصف ألسنتكم الكذب هذا حلال | | | |
| (٢) | وهذا حرام لتفتروا على الله الكذب ... ... ... | ١١٦ | ك النحل | ١٦ |
| | ويلكم لا تفتروا على الله كذبا فيسحتكم بعذاب ... ... | ٦١ | ك طه | ٢٠ |
| تَفْتَرُونَ | : قل آلله أذن لكم أم على الله تفترون ... ... | ٥٩ | ك يونس | ١٠ |
| (٢) | تالله لتسئلن عما كنتم تفترون ... ... ... ... | ٥٦ | ك النحل | ١٦ |
| تَفْتَرِيَ | : وإن كادوا ليفتنونك عن الذى أوحينا إليك | | | |
| | لتفترى علينا غيره ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | م الإسراء | ١٧ |
| يَفْتَرُونَ | : وغرهم فى دينهم ما كانوا يفترون ... ... ... | ٢٤ | م آل عمران | ٣ |
| (١٧) | انظر كيف يفترون على الله الكذب وكفى به إثما مبينا | ٥٠ | م النساء | ٤ |
| | ولكن الذين كفروا يفترون على الله الكذب ... ... | ١٠٣ | م المائدة | ٥ |
| | انظر كيف كذبوا على أنفسهم وضل عنهم ما كانوا يفترون | ٢٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | ولو شاء ربك ما فعلوه فذرهم وما يفترون ... ... ... | ١١٢ | ك « | ٦ |
| | ولو شاء الله ما فعلوه فذرهم وما يفترون ... ... ... | ١٣٧ | ك « | ٦ |
| | سيجزيهم بما كانوا يفترون ... ... ... ... | ١٣٨ | ك « | ٦ |
| | قد خسروا أنفسهم وضل عنهم ما كانوا يفترون ... | ٥٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | وردوا إلى الله مولاهم الحق وضل عنهم ما كانوا يفترون | ٣٠ | ك يونس | ١٠ |
| | وما ظن الذين يفترون على الله الكذب يوم القيامة | ٦٠ | ك « | ١٠ |
| | قل إن الذين يفترون على الله الكذب لا يفلحون ... | ٦٩ | ك « | ١٠ |
| | أولئك الذين خسروا أنفسهم وضل عنهم ما كانوا يفترون | ٢١ | ك هود | ١١ |
| | وألقوا إلى الله يومئذ السلم وضل عنهم ما كانوا يفترون | ٨٧ | ك النحل | ١٦ |
| | إن الذين يفترون على الله الكذب لا يفلحون ... ... | ١١٦ | ك « | ١٦ |
| | فعلموا أن الحق لله وضل عنهم ما كانوا يفترون ... | ٧٥ | ك القصص | ٢٨ |
| | وليسئلن يوم القيامة عما كانوا يفترون ... ... ... | ١٣ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | بل ضلوا عنهم وذلك إفكهم وما كانوا يفترون ... | ٢٨ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| يَفْتَرِي | : إنما يفترى الكذب الذين لا يؤمنون بآيات الله | ١٠٥ | ك النحل | ١٦ |
| يَفْتَرِينَهُ | : ولا يأتين ببهتان يفترينه بين أيديهن وأرجلهن... | ١٢ | م الممتحنة | ٦٠ |
| يُفْتَرَى | : وما كان هذا القرآن أن يفترى من دون الله ... | ٣٧ | ك يونس | ١٠ |
| (٢) | ما كان حديثا يفترى ولكن تصديق الذى بين يديه | ١١١ | ك يوسف | ١٢ |
| أَفْتِرَاءً | : وأنعام لا يذكرون اسم الله عليها افتراء عليه... ... | ١٣٨ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | وحرموا ما رزقهم الله افتراء على الله ... ... ... | ١٤٠ | ك « | ٦ |
| مُفْتَرًى | : قالوا ما هذا إلا سحر مفترى ... ... ... ... | ٣٦ | ك القصص | ٢٨ |
| (٢) | وقالوا ما هذا إلا إفك مفترى ... ... ... ... | ٤٣ | ك سبأ | ٣٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مُفْتَرَيَاتٍ | : أم يقولون افتراه قل فأتوا بعشر سور مثله مفتريات | ١٣ | ك هود | ١١ |
| مُفْتَرٍ | : قالوا إنما أنت مفتر بل أكثرهم لا يعلمون ... ... | ١٠١ | ك النحل | ١٦ |
| مُفْتَرُونَ | : ما لكم من إله غيره إن أنتم إلا مفترون ... ... | ٥٠ | ك هود | ١١ |
| مُفْتَرِينَ | : وكذلك نجزى المفترين ... ... ... ... ... | ١٥٢ | ك الأعراف | ٧ |
| فَرِيًّا | : فأتت به قومها تحمله قالوا يا مريم لقد جئت شيئا فريا | ٢٧ | ك مريم | ١٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| يَسْتَفِزَّهُمْ | : فأراد أن يستفزهم من الأرض فأغرقناه | | | |
| | ومن معه جميعا ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| لَيَسْتَفِزُّونَكَ | : وإن كادوا ليستفزونك من الأرض | | | |
| | ليخرجوك منها ... ... ... ... ... ... ... | ٧٦ | م « | ١٧ |
| وَاسْتَفْزِزْ | : واستفزز من استطعت منهم بصوتك ... ... | ٦٤ | ك « | ١٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| فَزِعَ | : ففزع من فى السموات ومن فى الأرض ... ... | ٨٧ | ك النمل | ٢٧ |
| (٢) | إذ دخلوا على داود ففزع منهم قالوا لا تخف ... ... | ٢٢ | ك ص | ٣٨ |
| فَزِعُوا | : ولو ترى إذ فزعوا فلا فوت وأخذوا من مكان قريب | ٥١ | ك سبأ | ٣٤ |
| فُزِّعَ | : حتى إذا فزع عن قلوبهم قالوا ماذا قال ربكم قالوا الحق | ٢٣ | ك « | ٣٤ |
| الْفَزَعُ | : لا يحزنهم الفزع الأكبر ... ... ... ... ... | ١٠٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٢) | من جاء بالحسنة فله خير منها وهم من فزع يومئذ آمنون | ٨٩ | ك النمل | ٢٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| يَفْسَحِ | : فافسحوا يفسح الله لكم ... ... ... ... ... | ١١ | م المجادلة | ٥٨ |
| افْسَحُوا | : إذا قيل لكم تفسحوا فى المجالس فافسحوا ... | ١١ | م « | ٥٨ |
| تَفَسَّحُوا | : إذا قيل لكم تفسحوا فى المجالس فافسحوا ... | ١١ | م « | ٥٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| لَفَسَدَتِ | . ولولا دفع الله الناس بعضهم ببعض لفسدت الأرض | ٢٥١ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | ولو اتبع الحق أهواءهم لفسدت السموات والأرض | ٧١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| لَفَسَدَتَا | : لو كان فيهما آلهة إلا الله لفسدتا ... ... ... | ٢٢ | ك الأنبياء | ٢١ |
| أَفْسَدُوهَا | : قالت إن الملوك إذا دخلوا قرية أفسدوها ... | ٣٤ | ك النمل | ٢٧ |
| لَتُفْسِدُنَّ | : لتفسدن فى الأرض مرتين ... ... ... ... | ٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| تُفْسِدُوا | : وإذا قيل لهم لا تفسدوا فى الأرض قالوا إنما | | | |
| (٤) | نحن مصلحون ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | م البقرة | ٢ |
| | ولا تفسدوا فى الأرض بعد إصلاحها وادعوه خوفا وطمعا | ٥٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولا تفسدوا فى الأرض بعد إصلاحها ... ... ... | ٨٥ | ك « | ٧ |
| | فهل عسيتم إن توليتم أن تفسدوا فى الأرض ... ... | ٢٢ | م محمد | ٤٧ |
| لِنُفْسِدَ | : قالوا تالله لقد علمتم ما جئنا لنفسد فى الأرض ... | ٧٣ | ك يوسف | ١٢ |
| يُفْسِدُ | : قالوا أتجعل فيها من يفسد فيها ويسفك الدماء ... | ٣٠ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | وإذا تولى سعى فى الأرض ليفسد فيها ... ... ... | ٢٠٥ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| لِيُفْسِدُوا: | أتذر موسى وقومه ليفسدوا فى الأرض ... ... | ك الأعراف | ١٢٧ ٧ |
| يُفْسِدُونَ: | ويقطعون ما أمر الله به أن يوصل ويفسدون | | |
| (٥) | فى الأرض أولئك هم الخاسرون ... ... ... ... | م البقرة | ٢٧ ٢ |
| | ويقطعون ما أمر الله به أن يوصل ويفسدون | | |
| | فى الأرض أولئك لهم اللعنة ولهم سوء الدار ... | م الرعد | ٢٥ ١٣ |
| | زدناهم عذابا فوق العذاب بما كانوا يفسدون ... ... | ك النحل | ٨٨ ١٦ |
| | الذين يفسدون فى الأرض ولا يصلحون ... ... ... | ك الشعراء | ١٥٢ ٢٦ |
| | وكان فى المدينة تسعة رهط يفسدون فى الأرض | | |
| | ولا يصلحون ... ... ... ... ... ... ... ... | ك النمل | ٤٨ ٢٧ |
| الْفَسَادَ: | ليفسد فيها ويهلك الحرث والنسل والله لا يحب الفساد | م البقرة | ٢٠٥ ٢ |
| (٨) | من قتل نفسا بغير نفس أو فساد فى الأرض فكأنما قتل | | |
| | الناس جميعا ... ... ... ... ... ... ... ... | م المائدة | ٣٢ ٥ |
| | إلا تفعلوه تكن فتنة فى الأرض وفساد كبير ... ... | م الأنفال | ٧٣ ٨ |
| | فلولا كان من القرون من قبلكم أولوا بقية ينهون عن | | |
| | الفساد فى الأرض ... ... ... ... ... ... ... | ك هود | ١١٦ ١١ |
| | وأحسن كما أحسن الله إليك ولا تبغ الفساد فى الأرض | ك القصص | ٧٧ ٢٨ |
| | ظهر الفساد فى البر والبحر بما كسبت أيدى الناس ... | ك الروم | ٤١ ٣٠ |
| | إنى أخاف أن يبدل دينكم أو أن يظهر فى الأرض الفساد | ك غافر | ٢٦ ٤٠ |
| | الذين طغوا فى البلاد . فأكثروا فيها الفساد ... ... | ك الفجر | ١٢ ٨٩ |
| فَسَادًا: | إنما جزاء الذين يحاربون الله ورسوله ويسعون | | |
| (٣) | فى الأرض فسادا أن يقتلوا .. ... ... ... ... | م المائدة | ٣٣ ٥ |
| | ويسعون فى الأرض فسادا والله لا يحب المفسدين | م « | ٦٤ ٥ |
| | نجعلها للذين لا يريدون علوا فى الأرض ولا فسادا | ك القصص | ٨٣ ٢٨ |
| الْمُفْسِدَ: | وإن تخالطوهم فإخوانكم والله يعلم المفسد من المصلح | م البقرة | ٢٢٠ ٢ |
| الْمُفْسِدُونَ: | ألا إنهم هم المفسدون ولكن لا يشعرون ... | م « | ١٢ ٢ |
| (٢) | إن يأجوج ومأجوج مفسدون فى الأرض ... ... | م الكهف | ٩٤ ١٨ |
| مُفْسِدِينَ: | ولا تعثوا فى الأرض مفسدين... ... ... ... | م البقرة | ٦٠ ٢ |
| (١٨) | فإن تولوا فإن الله عليم بالمفسدين ... ... ... | م آل عمران | ٦٣ ٣ |
| | ويسعون فى الأرض فسادا والله لا يحب المفسدين | م المائدة | ٦٤ ٥ |
| | فاذكروا آلاء الله ولا تعثوا فى الأرض مفسدين ... | ك الأعراف | ٧٤ ٧ |
| | وانظروا كيف كان عاقبة المفسدين ... ... ... ... | ك « | ٨٦ ٧ |
| | فانظر كيف كان عاقبة المفسدين... ... ... ... ... | ك « | ١٠٣ ٧ |
| | اخلفنى فى قومى وأصلح ولا تتبع سبيل المفسدين ... | ك « | ١٤٢ ٧ |
| | ومنهم من لا يؤمن به وربك أعلم بالمفسدين ... ... | م يونس | ٤٠ ١٠ |
| | إن الله سيبطله إن الله لا يصلح عمل المفسدين ... | ك « | ٨١ ١٠ |
| | آلآن وقد عصيت قبل وكنت من المفسدين ... ... | ك « | ٩١ ١٠ |
| | ولا تبخسوا الناس أشياءهم ولا تعثوا فى الأرض مفسدين | ك هود | ٨٥ ١١ |
| | ولا تبخسوا الناس أشياءهم ولا تعثوا فى الأرض مفسدين | ك الشعراء | ١٨٣ ٢٦ |
| مُفْسِدِينَ: | فانظر كيف كان عاقبة المفسدين ... ... ... ... | ك النمل | ١٤ ٢٧ |
| | يذبح أبناءهم ويستحيى نساءهم إنه كان من المفسدين | ك القصص | ٤ ٢٨ |
| | ولا تبغ الفساد فى الأرض إن الله لا يحب المفسدين | ك « | ٧٧ ٢٨ |
| | قال رب انصرنى على القوم المفسدين... ... ... ... | ك العنكبوت | ٣٠ ٢٩ |
| | وارجوا اليوم الآخر ولا تعثوا فى الأرض مفسدين | ك « | ٣٦ ٢٩ |
| | أم نجعل الذين آمنوا وعملوا الصالحات كالمفسدين | | |
| | فى الأرض ... ... ... ... ... ... ... ... | ك ص | ٢٨ ٣٨ |

◆◆◆

| | | | |
|---|---|---|---|
| تَفْسِيرًا: | ولا يأتونك بمثل إلا جئناك بالحق وأحسن تفسيرا | ك الفرقان | ٣٣ ٢٥ |

◆◆◆

| | | | |
|---|---|---|---|
| فَسَقَ: | فسجدوا إلا إبليس كان من الجن ففسق عن أمر ربه | ك الكهف | ٥٠ ١٨ |
| فَسَقُوا: | كذلك حقت كلمة ربك على الذين فسقوا... ... | ك يونس | ٣٣ ١٠ |
| (٣) | وإذا أردنا أن نهلك قرية أمرنا مترفيها ففسقوا فيها | | |
| | فحق عليها القول ... ... ... ... ... ... ... | ك الإسراء | ١٦ ١٧ |
| | وأما الذين فسقوا فأواهم النار ... ... ... ... | م السجدة | ٢٠ ٣٢ |
| تَفْسُقُونَ: | فاليوم تجزون عذاب الهون بما كنتم تستكبرون | | |
| | فى الأرض بغير الحق وبما كنتم تفسقون ... ... | ك الأحقاف | ٢٠ ٤٦ |
| يَفْسُقُونَ: | فأنزلنا على الذين ظلموا رجزا من السماء بما كانوا | | |
| (٥) | يفسقون ... ... ... ... ... ... ... ... | م البقرة | ٥٩ ٢ |
| | والذين كذبوا بآياتنا يمسهم العذاب بما كانوا يفسقون | ك الأنعام | ٤٩ ٦ |
| | ويوم لا يسبتون لا تأتيهم كذلك نبلوهم بما كانوا يفسقون | م الأعراف | ١٦٣ ٧ |
| | وأخذنا الذين ظلموا بعذاب بئيس بما كانوا يفسقون | م « | ١٦٥ ٧ |
| | إنا منزلون على أهل هذه القرية رجزا من السماء بما | | |
| | كانوا يفسقون ... ... ... ... ... ... ... | ك العنكبوت | ٣٤ ٢٩ |
| فِسْقٌ: | وما ذبح على النصب وأن تستقسموا بالأزلام ذلكم فسق | م المائدة | ٣ ٥ |
| (٢) | ولا تأكلوا مما لم يذكر اسم الله عليه وإنه لفسق ... | ك الأنعام | ١٢١ ٦ |
| فِسْقًا: | إلا أن يكون ميتة أو دما مسفوحا أو لحم خنزير فإنه | | |
| | رجس أو فسقا أهل لغير الله به ... ... ... ... | ك « | ١٤٥ ٦ |
| فَاسِقٌ: | يا أيها الذين آمنوا إن جاءكم فاسق بنبإ فتبينوا ... | م الحجرات | ٦ ٤٩ |
| فَاسِقًا: | أفمن كان مؤمنا كمن كان فاسقا لا يستوون ... ... | م السجدة | ١٨ ٣٢ |
| الْفَاسِقُونَ: | ولقد أنزلنا إليك آيات بينات وما يكفر بها | | |
| (١٧) | إلا الفاسقون ... ... ... ... ... ... ... ... | م البقرة | ٩٩ ٢ |
| | فمن تولى بعد ذلك فأولئك هم الفاسقون ... ... ... | م آل عمران | ٨٢ ٣ |
| | منهم المؤمنون وأكثرهم الفاسقون ... ... ... ... | م « | ١١٠ ٣ |
| | ومن لم يحكم بما أنزل الله فأولئك هم الفاسقون ... | م المائدة | ٤٧ ٥ |
| | وإن كثيرا من الناس لفاسقون ... ... ... ... ... | م « | ٤٩ ٥ |
| | هل تنقمون منا إلا أن آمنا بالله وما أنزل إلينا وما | | |
| | أنزل من قبل وأن أكثركم فاسقون ... ... ... ... | م « | ٥٩ ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **ٱلْفَاسِقُونَ** | : ولكن كثيرا منهم فاسقون ... ... ... ... | ٨١ | م المائدة | ٥ |
| | يرضونكم بأفواههم وتأبى قلوبهم وأكثرهم فاسقون | ٨ | م التوبة | ٩ |
| | نسوا الله فنسيهم إن المنافقين هم الفاسقون ... ... | ٦٧ | م « | ٩ |
| | إنهم كفروا بالله ورسوله وماتوا وهم فاسقون... ... | ٨٤ | م « | ٩ |
| | ولا تقبلوا لهم شهادة أبدا وأولئك هم الفاسقون ... | ٤ | م النور | ٢٤ |
| | ومن كفر بعد ذلك فأولئك هم الفاسقون ... ... ... | ٥٥ | م « | ٢٤ |
| | بلاغ فهل يهلك إلا القوم الفاسقون ... ... ... ... | ٣٥ | م الأحقاف | ٤٦ |
| | فطال عليهم الأمد فقست قلوبهم وكثير منهم فاسقون | ١٦ | م الحديد | ٥٧ |
| | فمنهم مهتد وكثير منهم فاسقون ... ... ... ... | ٢٦ | م « | ٥٧ |
| | فآتينا الذين آمنوا منهم أجرهم وكثير منهم فاسقون ... | ٢٧ | م « | ٥٧ |
| | فأنساهم أنفسهم أولئك هم الفاسقون... ... ... ... | ١٩ | م الحشر | ٥٩ |
| **ٱلْفَاسِقِينَ** | : وما يضل به إلا الفاسقين... ... ... ... ... | ٢٦ | م البقرة | ٢ |
| (١٨) | فافرق بيننا وبين القوم الفاسقين ... ... ... ... | ٢٥ | م المائدة | ٥ |
| | فلا تأس على القوم الفاسقين ... ... ... ... ... | ٢٦ | م « | ٥ |
| | واتقوا الله واسمعوا والله لا يهدى القوم الفاسقين | ١٠٨ | م « | ٥ |
| | وما وجدنا لأكثرهم من عهد وإن وجدنا أكثرهم لفاسقين | ١٠٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | وأمر قومك يأخذوا بأحسنها سأريكم دار الفاسقين | ١٤٥ | ك « | ٧ |
| | فتربصوا حتى يأتى الله بأمره والله لا يهدى القوم الفاسقين | ٢٤ | م التوبة | ٩ |
| | لن يتقبل منكم إنكم كنتم قوما فاسقين ... ... ... | ٥٣ | م « | ٩ |
| | والله لا يهدى القوم الفاسقين ... ... ... ... ... | ٨٠ | م « | ٩ |
| | فإن ترضوا عنهم فإن الله لا يرضى عن القوم الفاسقين | ٩٦ | م « | ٩ |
| | إنهم كانوا قوم سوء فاسقين ... ... ... ... ... | ٧٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | فى تسع آيات إلى فرعون وقومه إنهم كانوا قوما فاسقين | ١٢ | ك النمل | ٢٧ |
| | إلى فرعون وملائه إنهم كانوا قوما فاسقين ... ... | ٣٢ | ك القصص | ٢٨ |
| | فاستخف قومه فأطاعوه إنهم كانوا قوما فاسقين ... | ٥٤ | م الزخرف | ٤٣ |
| | وقوم نوح من قبل إنهم كانوا قوما فاسقين ... ... | ٤٦ | ك الذاريات | ٥١ |
| | فبإذن الله وليخزى الفاسقين ... ... ... ... ... | ٥ | م الحشر | ٥٩ |
| | فلما زاغوا أزاغ الله قلوبهم والله لا يهدى القوم الفاسقين | ٥ | م الصف | ٦١ |
| | لن يغفر الله لهم إن الله لا يهدى القوم الفاسقين ... | ٦ | م المنافقون | ٦٣ |
| **ٱلْفُسُوقُ** | : فلا رفث ولا فسوق ولا جدال فى الحج ... ... | ١٩٧ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | وإن تفعلوا فإنه فسوق بكم واتقوا الله ويعلمكم الله | ٢٨٢ | م « | ٢ |
| | وكره إليكم الكفر والفسوق والعصيان... ... ... ... | ٧ | م الحجرات | ٤٩ |
| | بئس الاسم الفسوق بعد الإيمان... ... ... ... ... | ١١ | م « | ٤٩ |
| **فَشِلْتُمْ** | : حتى إذا فشلتم وتنازعتم فى الأمر وعصيتم من بعد | | | |
| (٢) | ما أراكم ما تحبون ... ... ... ... ... ... | ١٥٢ | م آل عمران | ٣ |
| | ولو أراكهم كثيرا لفشلتم ولتنازعتم فى الأمر... ... | ٤٣ | م الأنفال | ٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **تَفْشَلَا** | : إذ همت طائفتان منكم أن تفشلا والله وليهما ... | ١٢٢ | م آل عمران | ٣ |
| **تَفْشَلُوا** | : وأطيعوا الله ورسوله ولا تنازعوا فتفشلوا... ... | ٤٦ | م الأنفال | ٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **أَفْصَحُ** | : وأخى هرون هو أفصح منى لسانا ... ... ... | ٣٤ | ك القصص | ٢٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **فَصَلَ** | : فلما فصل طالوت بالجنود قال إن الله مبتليكم بنهر | ٢٤٩ | م البقرة | ٢ |
| **فَصَلَتِ** | : ولما فصلت العير قال أبوهم إنى لأجد ريح يوسف | ٩٤ | ك يوسف | ١٢ |
| **يَفْصِلُ** | : إن الله يفصل بينهم يوم القيامة ... ... ... ... | ١٧ | م الحج | ٢٢ |
| (٣) | إن ربك هو يفصل بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون | ٢٥ | ك السجدة | ٣٢ |
| | لن تنفعكم أرحامكم ولا أولادكم يوم القيامة يفصل بينكم | ٣ | م الممتحنة | ٦٠ |
| **فَصَّلَ** | : وما لكم ألا تأكلوا مما ذكر اسم الله عليه وقد فصل | | | |
| | لكم ما حرم عليكم ... ... ... ... ... ... ... | ١١٩ | ك الأنعام | ٦ |
| **فَصَّلْنَا** | : قد فصلنا الآيات لقوم يعلمون ... ... ... ... | ٩٧ | ك « | ٦ |
| (٣) | فمستقر ومستودع قد فصلنا الآيات لقوم يفقهون ... | ٩٨ | ك « | ٦ |
| | وهذا صراط ربك مستقيما قد فصلنا الآيات لقوم يذكرون | ١٢٦ | ك « | ٦ |
| **فَصَّلْنَاهُ** | : ولقد جئناهم بكتاب فصلناه على علم ... ... ... | ٥٢ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | ولتعلموا عدد السنين والحساب وكل شىء فصلناه تفصيلا | ١٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| **نُفَصِّلُ** | : وكذلك نفصل الآيات ولتستبين سبيل المجرمين | ٥٥ | ك الأنعام | ٦ |
| (٦) | كذلك نفصل الآيات لقوم يعلمون ... ... ... ... | ٣٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | وكذلك نفصل الآيات ولعلهم يرجعون ... ... ... | ١٧٤ | ك « | ٧ |
| | فإخوانكم فى الدين ونفصل الآيات لقوم يعلمون ... | ١١ | م التوبة | ٩ |
| | كذلك نفصل الآيات لقوم يتفكرون... ... ... ... | ٢٤ | ك يونس | ١٠ |
| | كذلك نفصل الآيات لقوم يعقلون ... ... ... ... | ٢٨ | ك الروم | ٣٠ |
| **يُفَصِّلُ** | : ما خلق الله ذلك إلا بالحق يفصل الآيات لقوم يعلمون | ٥ | ك يونس | ١٠ |
| (٢) | يدبر الأمر يفصل الآيات لعلكم بلقاء ربكم توقنون | ٢ | م الرعد | ١٣ |
| **فُصِّلَتْ** | : الر كتاب أحكمت آياته ثم فصلت من لدن حكيم خبير | ١ | ك هود | ١١ |
| (٣) | كتاب فصلت آياته قرآنا عربيا لقوم يعلمون ... ... | ٣ | ك فصلت | ٤١ |
| | ولو جعلناه قرآنا أعجميا لقالوا لولا فصلت آياته ... | ٤٤ | ك « | ٤١ |
| **ٱلْفَصْلِ** | : هذا يوم الفصل الذى كنتم به تكذبون ... ... | ٢١ | ك الصافات | ٣٧ |
| (٩) | وشددنا ملكه وآتيناه الحكمة وفصل الخطاب ... ... | ٢٠ | ك ص | ٣٨ |
| | ولولا كلمة الفصل لقضى بينهم وإن الظالمين لهم عذاب أليم | ٢١ | ك الشورى | ٤٢ |
| | إن يوم الفصل ميقاتهم أجمعين ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك الدخان | ٤٤ |
| | وإذا الرسل أقتت . لأى يوم أجلت . ليوم الفصل | ١٣ | ك المرسلات | ٧٧ |
| | وما أدراك ما يوم الفصل ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك « | ٧٧ |
| | هذا يوم الفصل جمعناكم والأولين ... ... ... ... | ٣٨ | ك « | ٧٧ |
| | إن يوم الفصل كان ميقاتا ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك النبأ | ٧٨ |
| | إنه لقول فصل . وما هو بالهزل ... ... ... ... ... | ١٣ | ك الطارق | ٨٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **ٱلْفَاصِلِينَ** : | إن الحكم إلا لله يقص الحق وهو خير الفاصلين | ٥٧ | ك الأنعام | ٦ |
| **فِصَالًا** : | فإن أرادا فصالا عن تراض منهما وتشاور فلا جناح عليهما | ٢٣٣ | م البقـرة | ٢ |
| **فِصَالُهُ** : | حمله أمه وهنا على وهن وفصاله فى عامين ... ... | ١٤ | ك لقمان | ٣١ |
| (٢) | حمله أمه كرها ووضعته كرها وحمله وفصاله ثلاثون شهرا | ١٥ | م الأحقاف | ٤٦ |
| **فَصِيلَتِهِ** : | وصاحبته وأخيه . وفصيلته التى تؤويه ... ... | ١٣ | ك المعارج | ٧٠ |
| **تَفْصِيلَ** : | ولكن تصديق الذى بين يديه وتفصيل الكتاب | | | |
| (٢) | لا ريب فيـه ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك يـونس | ١٠ |
| | ولكن تصديق الذى بين يديه وتفصيل كل شىء ... | ١١١ | ك يوسـف | ١٢ |
| **تَفْصِيلًا** : | ثم آتينا موسى الكتاب تماما على الذى أحسن | | | |
| (٣) | وتفصيلا لكل شىء... ... ... ... ... ... ... | ١٥٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | وكتبنا له فى الألواح من كل شىء موعظة وتفصيلا لكل شىء | ١٤٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولتعلموا عدد السنين والحساب وكل شىء فصلناه تفصيلا | ١٢ | ك الإسـراء | ١٧ |
| **مُفَصَّلًا** : | وهو الذى أنزل إليكم الكتاب مفصلا ... ... | ١١٤ | م الأنعام | ٦ |
| **مُفَصَّلَاتٍ** : | فأرسلنا عليهم الطوفان والجراد والقمل | | | |
| | والضفادع والدم آيات مفصلات ... ... ... | ١٣٣ | ك الأعراف | ٧ |
| **ٱنفِصَامَ** : | فقد استمسك بالعروة الوثقى لا انفصام لها ... ... | ٢٥٦ | م البقـرة | ٢ |
| **تَفْضَحُونِ** : | قال إن هؤلاء ضيفى فلا تفضحون ... ... | ٦٨ | ك الحجـر | ١٥ |
| **ٱنفَضُّوا** : | ولو كنت فظا غليظ القلب لانفضوا من حولك | ١٥٩ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | وإذا رأوا تجارة أو لهوا انفضوا إليها وتركوك قائما | ١١ | م الجمعـة | ٦٢ |
| **يَنفَضُّوا** : | هم الذين يقولون لا تنفقوا على من عند رسول الله | | | |
| | حتى ينفضوا ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | م المنافقون | ٦٣ |
| **ٱلْفِضَّةِ** : | زين للناس حب الشهوات من النساء والبنين | | | |
| (٦) | والقناطير المقنطرة من الذهب والفضة ... ... | ١٤ | م آل عمران | ٣ |
| | والذين يكنزون الذهب والفضة ولا ينفقونها فى سبيل | | | |
| | الله فبشرهم بعذاب أليم... ... ... ... ... ... | ٣٤ | م التـوبة | ٩ |
| | لجعلنا لمن يكفر بالرحمن لبيوتهم سقفا من فضة ... ... | ٣٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ويطاف عليهم بآنية من فضة وأكواب كانت قواريرا | ١٥ | م الإنسـان | ٧٦ |
| | قواريرا من فضـة قدروها تقديرا ... ... ... ... | ١٦ | م « | ٧٦ |
| | وحلوا أساور من فضة وسقاهم ربهم شرابا طهورا | ٢١ | م « | ٧٦ |
| **فَضَّلَ** : | ولا تتمنوا ما فضل الله به بعضكم على بعض... ... | ٣٢ | م النسـاء | ٤ |
| (٥) | الرجال قوامون على النساء بما فضل الله بعضهم على بعض | ٣٤ | م « | ٤ |
| | فضل الله المجاهدين بأموالهم وأنفسهم على القاعدين درجة | ٩٥ | م « | ٤ |
| | وفضل الله المجاهدين على القاعدين أجرا عظيما... ... | ٩٥ | م « | ٤ |
| | والله فضل بعضكم على بعض فى الرزق ... ... ... | ٧١ | ك النحـل | ١٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **فَضَّلْتُكُمْ** : | اذكروا نعمتى التى أنعمت عليكم وأنى فضلتكم على العالمين | ٤٧ | م البقـرة | ٢ |
| (٢) | اذكروا نعمتى التى أنعمت عليكم وأنى فضلتكم على العالمين | ١٢٢ | م « | ٢ |
| **فَضَّلَكُمْ** : | قال أغير الله أبغيكم إلها وهو فضلكم على العالمين | ١٤٠ | ك الأعراف | ٧ |
| **فَضَّلْنَا** : | تلك الرسل فضلنا بعضهم على بعض منهم من كلم الله | ٢٥٣ | م البقـرة | ٢ |
| (٤) | وإسمعيل واليسع ويونس ولوطا وكلا فضلنا على العالمين | ٨٦ | ك الأنعام | ٦ |
| | انظر كيف فضلنا بعضهم على بعض ... ... ... ... | ٢١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ولقد فضلنا بعض النبيين على بعض وآتينا داود زبورا | ٥٥ | ك « | ١٧ |
| **فَضَّلْنَا** : | وقالا الحمد لله الذى فضلنا على كثير من عباده المؤمنين | ١٥ | ك النمـل | ٢٧ |
| **فَضَّلْنَاهُمْ** : | وفضلناهم على كثير ممن خلقنا تفضيلا ... ... | ٧٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٢) | ورزقناهم من الطيبات وفضلناهم على العالمين ... ... | ١٦ | ك الجاثية | ٤٥ |
| **نُفَضِّلُ** : | ونفضل بعضها على بعض فى الأكل... ... ... | ٤ | م الرعـد | ١٣ |
| **فُضِّلُوا** : | فما الذين فضلوا برادى رزقهم على ما ملكت أيمانهم | ٧١ | ك النحـل | ١٦ |
| **يَتَفَضَّلَ** : | ما هـذا إلا بشر مثلكم يريد أن يتفضل عليكم | ٢٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| **ٱلْفَضْلُ** : | فلولا فضل الله عليكم ورحمته لكنتم من الخاسرين | ٦٤ | م البقـرة | ٢ |
| (٤٥) | والله يختص برحمته من يشاء والله ذو الفضل العظيم | ١٠٥ | م « | ٢ |
| | وأن تعفوا أقرب للتقوى ولا تنسوا الفضل بينكم ... | ٢٣٧ | م « | ٢ |
| | إن الله لذو فضل على الناس ولكن أكثر الناس لا يشكرون | ٢٤٣ | م « | ٢ |
| | ولكن الله ذو فضل على العالمين ... ... ... ... ... | ٢٥١ | م « | ٢ |
| | قل إن الفضل بيد الله يؤتيه من يشاء ... ... ... | ٧٣ | م آل عمران | ٣ |
| | يختص برحمته من يشاء والله ذو الفضل العظيم ... | ٧٤ | م « | ٣ |
| | ولقد عفا عنكم والله ذو فضل على المؤمنين ... ... | ١٥٢ | م « | ٣ |
| | يستبشرون بنعمة من الله وفضـل ... ... ... ... | ١٧١ | م « | ٣ |
| | فانقلبوا بنعمـة من الله وفضل لم يمسسهم سوء ... | ١٧٤ | م « | ٣ |
| | واتبعوا رضوان الله والله ذو فضـل عظيم ... ... | ١٧٤ | م « | ٣ |
| | ذلك الفضـل من الله وكفى بالله عليما ... ... ... | ٧٠ | م النسـاء | ٤ |
| | ولئن أصابكم فضل من الله ليقولن كأن لم تكن بينكم | | | |
| | وبينه مودة ياليتنى كنت معهم ... ... ... ... | ٧٣ | م « | ٤ |
| | ولولا فضل الله عليكم ورحمته لاتبعتم الشيطان إلا قليلا | ٨٣ | م « | ٤ |
| | ولولا فضل الله عليك ورحمته لهمت طائفة منهم أن يضلوك | ١١٣ | م « | ٤ |
| | وعلمك ما لم تكن تعلم وكان فضل الله عليك عظيما ... | ١١٣ | م « | ٤ |
| | فسيدخلهم فى رحمة منه وفضل ... ... ... ... ... | ١٧٥ | م « | ٤ |
| | ذلك فضل الله يؤتيـه من يشاء والله واسع عليم ... | ٥٤ | م المائدة | ٥ |
| | وقالت أولاهم لأخراهم فما كان لكم علينا من فضل | ٣٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | ويكفر عنكم سيئاتكم ويغفر لكم والله ذو الفضل العظيم | ٢٩ | م الأنفـال | ٨ |
| | قل بفضل الله وبرحمته فبذلك فليفرحوا هو خير مما يجمعون | ٥٨ | ك يـونس | ١٠ |
| | إن الله لذو فضل على الناس ولكن أكثرهم لا يشكرون | ٦٠ | ك « | ١٠ |
| | ويؤت كل ذى فضل فضله... ... ... ... ... ... | ٣ | ك هـود | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **الْفَضْلُ** | : وما نرى لكم علينا من فضل بل نظنكم كاذبين ... | ٢٧ | ك هـود | ١١ |
| | ذلك من فضل الله علينا وعلى الناس ... ... ... ... | ٣٨ | ك يوسف | ١٢ |
| | ولولا فضل الله عليكم ورحمته وأن الله تواب حكيم | ١٠ | م النور | ٢٤ |
| | ولولا فضل الله عليكم ورحمته فى الدنيا والآخرة لمسكم | | | |
| | فى ما أفضتم فيه عذاب عظيم ... ... ... ... | ١٤ | م « | ٢٤ |
| | ولولا فضل الله عليكم ورحمته وأن الله رؤوف رحيم | ٢٠ | م « | ٢٤ |
| | ولولا فضل الله عليكم ورحمته ما زكى منكم من أحد أبدا | ٢١ | م « | ٢٤ |
| | ولا يأتل أولوا الفضل منكم والسعة أن يؤتوا أولى القربى | ٢٢ | م « | ٢٤ |
| | وآتينا من كل شىء إن هذا لهو الفضل المبين ... ... | ١٦ | ك النمل | ٢٧ |
| | فلما رآه مستقرا عنده قال هذا من فضل ربى ... ... | ٤٠ | ك « | ٢٧ |
| | وإن ربك لذو فضل على الناس ولكن أكثرهم لا يشكرون | ٧٣ | ك « | ٢٧ |
| | ومنهم سابق بالخيرات بإذن الله ذلك هو الفضل الكبير | ٣٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| | إن الله لذو فضل على الناس ولكن أكثر الناس لا يشكرون | ٦١ | ك غافر | ٤٠ |
| | لهم ما يشاءون عند ربهم ذلك هو الفضل الكبير ... | ٢٢ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء ... ... ... ... ... | ٢١ | م الحديد | ٥٧ |
| | والله ذو الفضل العظيم ... ... ... ... ... ... | ٢١ | م « | ٥٧ |
| | لئلا يعلم أهل الكتاب ألا يقدرون على شىء من فضل الله | ٢٩ | م « | ٥٧ |
| | وأن الفضل بيد الله يؤتيه من يشاء ... ... ... ... | ٢٩ | م « | ٥٧ |
| | والله ذو الفضل العظيم ... ... ... ... ... ... | ٢٩ | م « | ٥٧ |
| | ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء ... ... ... ... ... | ٤ | م الجمعة | ٦٢ |
| | والله ذو الفضل العظيم ... ... ... ... ... ... | ٤ | م « | ٦٢ |
| | فانتشروا فى الأرض وابتغوا من فضل الله ... ... | ١٠ | م « | ٦٢ |
| | وآخرون يضربون فى الأرض يبتغون من فضل الله | ٢٠ | م المزمل | ٧٣ |
| **فَضْلًا** | : ليس عليكم جناح أن تبتغوا فضلا من ربكم ... | ١٩٨ | م البقرة | ٢ |
| (١٠) | والله يعدكم مغفرة منه وفضلا والله واسع عليم ... | ٢٦٨ | م « | ٢ |
| | ولا آمين البيت الحرام يبتغون فضلا من ربهم ورضوانا | ٢ | م المائدة | ٥ |
| | وجعلنا آية النهار مبصرة لتبتغوا فضلا من ربكم ... | ١٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وبشر المؤمنين بأن لهم من الله فضلا كبيرا ... ... | ٤٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ولقد آتينا داود منا فضلا يا جبال أوبى معه والطير | ١٠ | ك سبأ | ٣٤ |
| | ووقاهم عذاب الجحيم . فضلا من ربك ذلك هو الفوز العظيم | ٥٧ | ك الدخان | ٤٤ |
| | تراهم ركعا سجدا يبتغون فضلا من الله ورضوانا ... | ٢٩ | م الفتح | ٤٨ |
| | فضلا من الله ونعمة والله عليم حكيم ... ... ... | ٨ | م الحجرات | ٤٩ |
| | يبتغون فضلا من الله ورضوانا وينصرون الله ورسوله | ٨ | م الحشر | ٥٩ |
| **فَضْلِهِ** | : أن ينزل الله من فضله على من يشاء من عباده ... | ٩٠ | م البقرة | ٢ |
| (٢٩) | فرحين بما آتاهم الله من فضله ويستبشرون بالذين لم يلحقوا بهم | ١٧٠ | م آل عمران | ٣ |
| | ولا يحسبن الذين يبخلون بما آتاهم الله من فضله هو خيرا لهم | ١٨٠ | م « | ٣ |
| | وسئلوا الله من فضله إن الله كان بكل شىء عليما ... | ٣٢ | م النساء | ٤ |
| | ويكتمون ما آتاهم الله من فضله ... ... ... ... | ٣٧ | م « | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **فَضْلِهِ** | : أم يحسدون الناس على ما آتاهم الله من فضله ... | ٥٤ | م النساء | ٤ |
| | فيوفيهم أجورهم ويزيدهم من فضله ... ... ... ... | ١٧٣ | م « | ٤ |
| | وإن خفتم عيلة فسوف يغنيكم الله من فضله إن شاء | ٢٨ | م التوبة | ٩ |
| | وقالوا حسبنا الله سيؤتينا الله من فضله ورسوله ... | ٥٩ | م « | ٩ |
| | وما نقموا إلا أن أغناهم الله ورسوله من فضله ... | ٧٤ | م « | ٩ |
| | ومنهم من عاهد الله لئن آتانا من فضله لنصدقن ... | ٧٥ | م « | ٩ |
| | فلما آتاهم من فضله بخلوا به وتولوا وهم معرضون | ٧٦ | م « | ٩ |
| | وإن يردك بخير فلا راد لفضله ... ... ... ... | ١٠٧ | ك يونس | ١٠ |
| | يمتعكم متاعا حسنا إلى أجل مسمى ويؤت كل | | | |
| | ذى فضل فضله ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك هود | ١١ |
| | وترى الفلك مواخر فيه ولتبتغوا من فضله ولعلكم تشكرون | ١٤ | ك النحل | ١٦ |
| | ربكم الذى يزجى لكم الفلك فى البحر لتبتغوا من فضله | ٦٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| | إلا رحمة من ربك إن فضله كان عليك كبيرا ... ... | ٨٧ | ك « | ١٧ |
| | إن يكونوا فقراء يغنهم الله من فضله والله واسع عليم | ٣٢ | م النور | ٢٤ |
| | وليستعفف الذين لا يجدون نكاحا حتى يغنيهم الله | | | |
| | من فضله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | م « | ٢٤ |
| | ليجزيهم الله أحسن ما عملوا ويزيدهم من فضله ... | ٣٨ | م « | ٢٤ |
| | ومن رحمته جعل لكم الليل والنهار لتسكنوا فيه | | | |
| | ولتبتغوا من فضله ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | ومن آياته منامكم بالليل والنهار وابتغاؤكم من فضله ... | ٢٣ | ك الروم | ٣٠ |
| | ليجزى الذين آمنوا وعملوا الصالحات من فضله ... | ٤٥ | ك « | ٣٠ |
| | ولتجرى الفلك بأمره ولتبتغوا من فضله ولعلكم تشكرون | ٤٦ | ك « | ٣٠ |
| | وترى الفلك فيه مواخر لتبتغوا من فضله ولعلكم تشكرون | ١٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ليوفيهم أجورهم ويزيدهم من فضله ... ... ... ... | ٣٠ | ك « | ٣٥ |
| | الذى أحلنا دار المقامة من فضله لا يمسنا فيها نصب | ٣٥ | ك « | ٣٥ |
| | ويستجيب الذين آمنوا وعملوا الصالحات ويزيدهم | | | |
| | من فضله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك الشورى | ٤٢ |
| | الله الذى سخر لكم البحر لتجرى الفلك فيه بأمره | | | |
| | ولتبتغوا من فضله ... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك الجاثية | ٤٥ |
| **تَفْضِيلًا** | : وللآخرة أكبر درجات وأكبر تفضيلا ... ... | ٢١ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٢) | ورزقناهم من الطيبات وفضلناهم على كثير ممن خلقنا تفضيلا | ٧٠ | ك « | ١٧ |

***

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **أَفْضَى** | : وكيف تأخذونه وقد أفضى بعضكم إلى بعض ... | ٢١ | م النساء | ٤ |

***

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **فَطَرَ** | : إنى وجهت وجهى للذى فطر السموات والأرض حنيفا | ٧٩ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | فطرة الله التى فطر الناس عليها لا تبديل لخلق الله ... | ٣٠ | ك الروم | ٣٠ |
| **فَطَرَكُمْ** | : فسيقولون من يعيدنا قل الذى فطركم أول مرة ... | ٥١ | ك الإسراء | ١٧ |
| **فَطَرَنَا** | : قالوا لن نؤثرك على ما جاءنا من البينات والذى فطرنا | ٧٢ | ك طه | ٢٠ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| فَطَرَنِى | : يا قوم لا أسئلكم عليه أجرا إن أجرى إلا على الذى فطرنى | ك هـود | ٥١ |
| (٣) | ومالى لا أعبد الذى فطرنى و إليه ترجعون... ... ... | ك يس | ٢٢ |
| | إلا الذى فطرنى فإنه سيهدين... ... ... ... ... | ك الزخرف | ٢٧ |
| فَطَرَهُنَّ | : قال بل ربكم رب السموات والأرض الذى فطرهن | ك الأنبياء | ٥٦ |
| يَتَفَطَّرْنَ | : تكاد السموات يتفطرن منه وتنشق الأرض ... | ك مريم | ٩٠ |
| (٢) | تكاد السموات يتفطرن من فوقهن ... ... ... ... | ك الشورى | ٥ |
| انْفَطَرَتْ | : إذا السماء انفطرت . و إذا الكواكب انتثرت | ك الانفطار | ١ |
| فَاطِرُ | : قل أغير الله أتخذ وليا فاطر السموات والأرض ... | ك الأنعام | ١٤ |
| (٦) | فاطر السموات والأرض أنت ولى فى الدنيا والآخرة | ك يوسف | ١٠١ |
| | قالت رسلهم أفى الله شك فاطر السموات والأرض | ك إبراهيم | ١٠ |
| | الحمد لله فاطر السموات والأرض جاعل الملائكة رسلا | ك فاطر | ١ |
| | قل اللهم فاطر السموات والأرض عالم الغيب والشهادة | ك الزمر | ٤٦ |
| | فاطر السموات والأرض جعل لكم من أنفسكم أزواجا | ك الشورى | ١١ |
| فِطْرَةَ | : فطرة الله التى فطر الناس عليها لا تبديل لخلق الله... | ك الروم | ٣٠ |
| فُطُورٍ | : فارجع البصر هل ترى من فطور ... ... ... ... | ك الملك | ٣ |
| مُنْفَطِرٌ | : السماء منفطر به كان وعده مفعولا ... ... ... ... | ك المزمل | ١٨ |

✦✦✦

| | | | |
|---|---|---|---|
| فَظًّا | : ولو كنت فظا غليظ القلب لانفضوا من حولك ... | م آل عمران | ١٥٩ |

✦✦✦

| | | | |
|---|---|---|---|
| فَعَلَ | : أتهلكنا بما فعل السفهاء منا ... ... ... ... ... | ك الأعراف | ١٥٥ |
| (٧) | أتهلكنا بما فعل المبطلون ... ... ... ... ... ... | « | ١٧٣ |
| | كذلك فعل الذين من قبلهم وما ظلمهم الله ... ... | ك النحل | ٣٣ |
| | كذلك فعل الذين من قبلهم فهل على الرسل إلا البلاغ المبين | ك « | ٣٥ |
| | قالوا من فعل هذا بآلهتنا إنه لمن الظالمين ... ... ... | ك الأنبياء | ٥٩ |
| | ألم تر كيف فعل ربك بعاد ... ... ... ... ... ... | ك الفجر | ٦ |
| | ألم تر كيف فعل ربك بأصحاب الفيل ... ... ... ... | ك الفيل | ١ |
| فَعَلْتَ | : فإن فعلت فإنك إذا من الظالمين ... ... ... ... | ك يونس | ١٠٦ |
| (٤) | قالوا أأنت فعلت هذا بآلهتنا يا إبراهيم ... ... ... | ك الأنبياء | ٦٢ |
| | وفعلت فعلتك ... ... ... ... ... ... ... ... | ك الشعراء | ١٩ |
| | التى فعلت وأنت من الكافرين ... ... ... ... ... | ك « | ١٩ |
| فَعَلْتُمْ | : قال هل علمتم ما فعلتم بيوسف وأخيه إذ أنتم جاهلون | ك يوسف | ٨٩ |
| (٢) | فتبينوا أن تصيبوا قوما بجهالة فتصبحوا على ما فعلتم نادمين | م الحجرات | ٦ |
| فَعَلْتُهُ | : وما فعلته عن أمرى ذلك تأويل ما لم تسطع عليه صبرا | ك الكهف | ٨٢ |
| فَعَلْتُهَا | : قال فعلتها إذا وأنا من الضالين ... ... ... ... | ك الشعراء | ٢٠ |
| فَعَلْنَ | : فلا جناح عليكم فيما فعلن فى أنفسهن بالمعروف ... | م البقرة | ٢٣٤ |
| (٢) | فإن خرجن فلا جناح عليكم فى ما فعلن فى أنفسهن من معروف | « | ٢٤٠ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| فَعَلْنَا | : وتبين لكم كيف فعلنا بهم وضربنا لكم الأمثال ... | ك إبراهيم | ٤٥ |
| فَعَلَهُ | : قال بل فعله كبيرهم هذا فسئلوهم إن كانوا ينطقون | ك الأنبياء | ٦٣ |
| فَعَلُوا | : والذين إذا فعلوا فاحشة أو ظلموا أنفسهم ذكروا الله | م آل عمران | ١٣٥ |
| (٤) | ولم يصروا على ما فعلوا وهم يعلمون ... ... ... ... | م « | ١٣٥ |
| | ولو أنهم فعلوا ما يوعظون به لكان خيرا لهم ... ... | م النساء | ٦٦ |
| | وإذا فعلوا فاحشة قالوا وجدنا عليها آباءنا والله أمرنا بها | ك الأعراف | ٢٨ |
| فَعَلُوهُ | : ولو أنا كتبنا عليهم أن اقتلوا أنفسكم أو اخرجوا | | |
| (٥) | من دياركم ما فعلوه إلا قليل منهم... ... ... ... | م النساء | ٦٦ |
| | كانوا لا يتناهون عن منكر فعلوه ... ... ... ... ... | م المائدة | ٧٩ |
| | ولو شاء ربك ما فعلوه فذرهم وما يفترون... ... ... | ك الأنعام | ١١٢ |
| | ولو شاء الله ما فعلوه فذرهم وما يفترون ... ... ... | ك « | ١٣٧ |
| | وكل شىء فعلوه فى الزبر ... ... ... ... ... ... | ك القمر | ٥٢ |
| تَفْعَلْ | : و إن لم تفعل فما بلغت رسالته ... ... ... ... ... | م المائدة | ٦٧ |
| تَفْعَلُوا | : فإن لم تفعلوا ... ... ... ... ... ... ... ... | م البقرة | ٢٤ |
| (٩) | ولن تفعلوا فاتقوا النار التى وقودها الناس والحجارة | م « | ٢٤ |
| | وما تفعلوا من خير يعلمه الله وتزودوا فإن خير | | |
| | الزاد التقوى ... ... ... ... ... ... ... ... | م « | ١٩٧ |
| | وما تفعلوا من خير فإن الله به عليم ... ... ... ... | م « | ٢١٥ |
| | فإن لم تفعلوا فأذنوا بحرب من الله ورسوله ... ... | م « | ٢٧٩ |
| | و إن تفعلوا فإنه فسوق بكم واتقوا الله و يعلمكم الله | م « | ٢٨٢ |
| | وما تفعلوا من خير فإن الله كان به عليما ... ... ... | م النساء | ١٢٧ |
| | إلا أن تفعلوا إلى أوليائكم معروفا ... ... ... ... | م الأحزاب | ٦ |
| | فإذ لم تفعلوا وتاب الله عليكم فأقيموا الصلاة ... ... | م المجادلة | ١٣ |
| تَفْعَلُونَ | : وقد جعلتم الله عليكم كفيلا إن الله يعلم ما تفعلون | ك النحل | ٩١ |
| (٦) | صنع الله الذى أتقن كل شىء إنه خبير بما تفعلون | ك النمل | ٨٨ |
| | و يعفوا عن السيئات و يعلم ما تفعلون ... ... ... | م الشورى | ٢٥ |
| | يا أيها الذين آمنوا لم تقولون ما لا تفعلون... ... ... | م الصف | ٢ |
| | كبر مقتا عند الله أن تقولوا ما لا تفعلون ... ... | م « | ٣ |
| | و إن عليكم لحافظين . كراما كاتبين . يعلمون ما تفعلون | ك الانفطار | ١٢ |
| تَفْعَلُوهُ | : إلا تفعلوه تكن فتنة فى الأرض وفساد كبير ... | م الأنفال | ٧٣ |
| نَفْعَلَ | : أصلاتك تأمرك أن نترك ما يعبد آباؤنا أو أن | | |
| (٣) | نفعل فى أموالنا ما نشاء ... ... ... ... ... | ك هود | ٨٧ |
| | إنا كذلك نفعل بالمجرمين ... ... ... ... ... ... | ك الصافات | ٣٤ |
| | كذلك نفعل بالمجرمين ... ... ... ... ... ... ... | ك المرسلات | ١٨ |
| يَفْعَلُ | : فما جزاء من يفعل ذلك منكم إلا خزى فى الحياة الدنيا | م البقرة | ٨٥ |
| (١٦) | ومن يفعل ذلك فقد ظلم نفسه ... ... ... ... ... | م « | ٢٣١ |
| | ولو شاء الله ما اقتتلوا ولكن الله يفعل ما يريد ... | م « | ٢٥٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| يَفْعَلْ | : ومن يفعل ذلك فليس من الله فى شىء ... ... ... | ٢٨ م آل عمران | ٣ |
| | قال كذلك الله يفعل ما يشاء ... ... ... ... ... | ٤٠ م « | ٣ |
| | ومن يفعل ذلك عدوانا وظلما فسوف نصليه نارا ... | ٣٠ م النساء | ٤ |
| | ومن يفعل ذلك ابتغاء مرضاة الله فسوف نؤتيه أجرا عظيما | ١١٤ م « | ٤ |
| | ما يفعل الله بعذابكم إن شكرتم وآمنتم وكان الله شاكرا عليما | ١٤٧ م « | ٤ |
| | ولئن لم يفعل ما آمره ليسجنن وليكونا من الصاغرين | ٣٢ ك يوسف | ١٢ |
| | ويضل الله الظالمين ويفعل الله ما يشاء ... ... ... | ٢٧ ك إبراهيم | ١٤ |
| | لا يسئل عما يفعل وهم يسئلون ... ... ... ... ... | ٢٣ ك الأنبياء | ٢١ |
| | إن الله يفعل ما يريد ... ... ... ... ... ... ... | ١٤ م الحج | ٢٢ |
| | ومن يهن الله فما له من مكرم إن الله يفعل ما يشاء | ١٨ م « | ٢٢ |
| | ومن يفعل ذلك يلق أثاما ... ... ... ... ... ... | ٦٨ م الفرقان | ٢٥ |
| | هل من شركائكم من يفعل من ذلكم من شىء ... ... | ٤٠ ك الروم | ٣٠ |
| | ومن يفعل ذلك فأولئك هم الخاسرون ... ... ... | ٩ م المنافقون | ٦٣ |
| يَفْعَلْهُ | : ومن يفعله منكم فقد ضل سواء السبيل ... ... | ١ م الممتحنة | ٦٠ |
| يَفْعَلُوا | : وما يفعلوا من خير فلن يكفروه والله عليم بالمتقين | ١١٥ م آل عمران | ٣ |
| (٢) | ويحبون أن يحمدوا بما لم يفعلوا فلا تحسبنهم بمفازة | | |
| | من العذاب ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٨٨ م « | ٣ |
| يَفْعَلُونَ | : قالوا الآن جئت بالحق فذبحوها وما كادوا يفعلون | ٧١ م البقرة | ٢ |
| (١٥) | كانوا لا يتناهون عن منكر فعلوه لبئس ما كانوا يفعلون | ٧٩ م المائدة | ٥ |
| | إنما أمرهم إلى الله ثم ينبئهم بما كانوا يفعلون ... | ١٥٩ ك الأنعام | ٦ |
| | إن الظن لا يغنى من الحق شيئا إن الله عليم بما يفعلون | ٣٦ ك يونس | ١٠ |
| | فإلينا مرجعهم ثم الله شهيد على ما يفعلون ... ... | ٤٦ ك « | ١٠ |
| | فلا تبتئس بما كانوا يفعلون ... ... ... ... ... | ٣٦ ك هود | ١١ |
| | يخافون ربهم من فوقهم ويفعلون ما يؤمرون ... | ٥٠ ك النحل | ١٦ |
| | كل قد علم صلاته وتسبيحه والله عليم بما يفعلون ... | ٤١ م النور | ٢٤ |
| | قالوا بل وجدنا آباءنا كذلك يفعلون ... ... ... ... | ٧٤ ك الشعراء | ٢٦ |
| | ألم تر أنهم فى كل واد يهيمون . وأنهم يقولون ما لا يفعلون | ٢٢٦ م « | ٢٦ |
| | وجعلوا أعزة أهلها أذلة وكذلك يفعلون ... ... | ٣٤ ك النمل | ٢٧ |
| | ووفيت كل نفس ما عملت وهو أعلم بما يفعلون ... | ٧٠ ك الزمر | ٣٩ |
| | لا يعصون الله ما أمرهم ويفعلون ما يؤمرون ... ... | ٦ م التحريم | ٦٦ |
| | هل ثوب الكفار ما كانوا يفعلون ... ... ... ... | ٣٦ ك المطففين | ٨٣ |
| | وهم على ما يفعلون بالمؤمنين شهود ... ... ... ... | ٧ ك البروج | ٨٥ |
| أَفْعَلْ | : قال يا أبت افعل ما تؤمر ستجدنى إن شاء الله | | |
| | من الصابرين ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٢ ك الصافات | ٣٧ |
| أَفْعَلُوا | : لا فارض ولا بكر عوان بين ذلك فافعلوا ما تؤمرون | ٦٨ م البقرة | ٢ |
| (٢) | اركعوا واسجدوا واعبدوا ربكم وافعلوا الخير لعلكم | | |
| | تفلحون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٧ م الحج | ٢٢ |
| فُعِلَ | : وحيل بينهم وبين ما يشتهون كما فعل بأشياعهم من قبل | ٥٤ ك سبأ | ٣٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| يُفْعَلُ | : قل ما كنت بدعا من الرسل وما أدرى ما يفعل بى ولا بكم | ٩ ك الأحقاف | ٤٦ |
| (٢) | ووجوه يومئذ باسرة . تظن أن يفعل بها فاقرة ... | ٢٥ ك القيامة | ٧٥ |
| فِعْلَ | : وجعلناهم أئمة يهدون بأمرنا وأوحينا إليهم فعل الخيرات | ٧٣ ك الأنبياء | ٢١ |
| فَعَلْتَكَ | : وفعلت فعلتك التى فعلت وأنت من الكافرين ... | ١٩ ك الشعراء | ٢٦ |
| فَاعِلٌ | : ولا تقولن لشىء إنى فاعل ذلك غدا . إلا أن يشاء الله | ٢٣ ك الكهف | ١٨ |
| فَاعِلُونَ | : قالوا سنراود عنه أباه وإنا لفاعلون ... ... ... | ٦١ ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | والذين هم للزكاة فاعلون ... ... ... ... ... | ٤ ك المؤمنون | ٢٣ |
| فَاعِلِينَ | : وألقوه فى غيابة الجب يلتقطه بعض السيارة | | |
| (٦) | إن كنتم فاعلين ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ ك يوسف | ١٢ |
| | قال هؤلاء بناتى إن كنتم فاعلين ... ... ... ... | ٧١ ك الحجر | ١٥ |
| | لو أردنا أن نتخذ لهوا لاتخذناه من لدنا إن كنا فاعلين | ١٧ ك الأنبياء | ٢١ |
| | قالوا حرقوه وانصروا آلهتكم إن كنتم فاعلين ... ... | ٦٨ ك « | ٢١ |
| | وسخرنا مع داود الجبال يسبحن والطير وكنا فاعلين ... | ٧٩ ك « | ٢١ |
| | كما بدأنا أول خلق نعيده وعدا علينا إنا كنا فاعلين | ١٠٤ ك « | ٢١ |
| فَعَّالٌ | : إن ربك فعال لما يريد ... ... ... ... ... ... | ١٠٧ ك هود | ١١ |
| (٢) | ذو العرش المجيد . فعال لما يريد ... ... ... ... | ١٦ ك البروج | ٨٥ |
| مَفْعُولًا | : أولئك معهم كالذين أصحاب السبت وكان أمر الله مفعولا | ٤٧ م النساء | ٤ |
| (٧) | ولكن ليقضى الله أمرا كان مفعولا ... ... ... ... | ٤٢ م الأنفال | ٨ |
| | ويقللكم فى أعينهم ليقضى الله أمرا كان مفعولا ... | ٤٤ م « | ٨ |
| | فجاسوا خلال الديار وكان وعدا مفعولا ... ... ... | ٥ ك الإسراء | ١٧ |
| | ويقولون سبحان ربنا إن كان وعد ربنا لمفعولا ... | ١٠٨ ك « | ١٧ |
| | وكان أمر الله مفعولا ... ... ... ... ... ... | ٣٧ م الأحزاب | ٣٣ |
| | السماء منفطر به كان وعده مفعولا ... ... ... ... | ١٨ ك المزمل | ٧٣ |

✦✦✦

| | | | |
|---|---|---|---|
| تَفْقِدُونَ | : قالوا وأقبلوا عليهم ماذا تفقدون ... ... ... | ٧١ ك يوسف | ١٢ |
| نَفْقِدُ | : قالوا نفقد صواع الملك ولمن جاء به حمل بعير وأنا به زعيم | ٧٢ ك « | ١٢ |
| تَفَقَّدَ | : وتفقد الطير فقال ما لى لا أرى الهدهد أم كان من الغائبين | ٢٠ ك النمل | ٢٧ |

✦✦✦

| | | | |
|---|---|---|---|
| ٱلْفَقْرَ | : الشيطان يعدكم الفقر ويأمركم بالفحشاء ... ... ... | ٢٦٨ م البقرة | ٢ |
| ٱلْفَقِيرُ | : لقد سمع الله قول الذين قالوا إن الله فقير ونحن أغنياء | ١٨١ م آل عمران | ٣ |
| (٣) | فكلوا منها وأطعموا البائس الفقير ... ... ... ... | ٢٨ م الحج | ٢٢ |
| | فقال رب إنى لما أنزلت إلىّ من خير فقير ... ... | ٢٤ ك القصص | ٢٨ |
| فَقِيرًا | : ومن كان فقيرا فليأكل بالمعروف ... ... ... ... | ٦ م النساء | ٤ |
| (٢) | إن يكن غنيا أو فقيرا فالله أولى بهما ... ... ... ... | ١٣٥ م « | ٤ |
| ٱلْفُقَرَاءُ | : وإن تخفوها وتؤتوها الفقراء فهو خير لكم ... | ٢٧١ م البقرة | ٢ |
| (٧) | للفقراء الذين أحصروا فى سبيل الله ... ... ... ... | ٢٧٣ م « | ٢ |
| | إنما الصدقات للفقراء والمساكين والعاملين عليها ... | ٦٠ م التوبة | ٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **ٱلْفُقَرَآءُ** | : إن يكونوا فقراء يغنهم الله من فضله والله واسع عليم | ٣٢ | م النور | ٢٤ |
| | يأيها الناس أنتم الفقراء إلى الله والله هو الغنى الحميد | ١٥ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ومن يبخل فإنما يبخل عن نفسه والله الغنى وأنتم الفقراء | ٣٨ | م محمد | ٤٧ |
| | للفقراء المهاجرين الذين أخرجوا من ديارهم وأموالهم | ٨ | م الحشر | ٥٩ |
| **فَاقِرَةٌ** | : ووجوه يومئذ باسرة . تظن أن يفعل بها فاقرة ... | ٢٥ | ك القيامة | ٧٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **فَاقِعٌ** | : قال إنه يقول إنها بقرة صفراء فاقع لونها تسر الناظرين | ٦٩ | م البقرة | ٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **تَفْقَهُونَ** | : ولكن لا تفقهون تسبيحهم ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| **نَفْقَهُ** | : قالوا يا شعيب ما نفقه كثيرا مما تقول... ... ... | ٩١ | ك هود | ١١ |
| **يَفْقَهُوا** | : واحلل عقدة من لسانى . يفقهوا قولى ... ... | ٢٨ | ك طه | ٢٠ |
| **يَفْقَهُونَ** | : فما لهؤلاء القوم لا يكادون يفقهون حديثا ... | ٧٨ | م النساء | ٤ |
| (١٣) | آنظر كيف نصرف الآيات لعلهم يفقهون ... ... | ٦٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | قد فصلنا الآيات لقوم يفقهون ... ... ... ... ... | ٩٨ | ك « | ٦ |
| | لهم قلوب لا يفقهون بها ... ... ... ... ... ... | ١٧٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | يغلبوا ألفا من الذين كفروا بأنهم قوم لا يفقهون ... | ٦٥ | م الأنفال | ٨ |
| | قل نار جهنم أشد حرا لو كانوا يفقهون ... ... ... | ٨١ | م التوبة | ٩ |
| | وطبع على قلوبهم فهم لا يفقهون ... ... ... ... | ٨٧ | م « | ٩ |
| | صرف الله قلوبهم بأنهم قوم لا يفقهون ... ... ... | ١٢٧ | م « | ٩ |
| | وجد من دونهما قوما لا يكادون يفقهون قولا ... | ٩٣ | م الكهف | ١٨ |
| | فسيقولون بل تحسدوننا بل كانوا لا يفقهون إلا قليلا | ١٥ | م الفتح | ٤٨ |
| | ذلك بأنهم قوم لا يفقهون ... ... ... ... ... ... | ١٣ | م الحشر | ٥٩ |
| | ذلك بأنهم آمنوا ثم كفروا فطبع على قلوبهم فهم لا يفقهون | ٣ | م المنافقون | ٦٣ |
| | ولكن المنافقين لا يفقهون ... ... ... ... ... ... | ٧ | م « | ٦٣ |
| **يَفْقَهُوهُ** | : وجعلنا على قلوبهم أكنة أن يفقهوه وفى آذانهم وقرا | ٢٥ | ك الأنعام | ٦ |
| (٣) | وجعلنا على قلوبهم أكنة أن يفقهوه وفى آذانهم وقرا | ٤٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| | إنا جعلنا على قلوبهم أكنة أن يفقهوه وفى آذانهم وقرا | ٥٧ | ك الكهف | ١٨ |
| **يَتَفَقَّهُوا** | : فلولا نفر من كل فرقة منهم طائفة ليتفقهوا فى الدين | ١٢٢ | م التوبة | ٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **فَكَّرَ** | : إنه فكر وقدر . فقتل كيف قدر ... ... ... ... ... | ١٨ | ك المدثر | ٧٤ |
| **تَتَفَكَّرُوا** | : أن تقوموا لله مثنى وفرادى ثم تتفكروا ... ... | ٤٦ | ك سبأ | ٣٤ |
| **تَتَفَكَّرُونَ** | : كذلك يبين الله لكم الآيات لعلكم تتفكرون | ٢١٩ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | كذلك يبين الله لكم الآيات لعلكم تتفكرون ... ... | ٢٦٦ | م « | ٢ |
| | قل هل يستوى الأعمى والبصير أفلا تتفكرون... ... | ٥٠ | ك الأنعام | ٦ |
| **يَتَفَكَّرُوا** | : أولم يتفكروا ما بصاحبهم من جنة إن هو إلا نذير مبين | ١٨٤ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | أولم يتفكروا فى أنفسهم ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك الروم | ٣٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **يَتَفَكَّرُونَ** | : الذين يذكرون الله قياما وقعودا وعلى جنوبهم | | | |
| (١١) | ويتفكرون فى خلق السموات والأرض ... ... | ١٩١ | م آل عمران | ٣ |
| | فاقصص القصص لعلهم يتفكرون ... ... ... ... | ١٧٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | كذلك نفصل الآيات لقوم يتفكرون ... ... ... ... | ٢٤ | ك يونس | ١٠ |
| | إن فى ذلك لآيات لقوم يتفكرون ... ... ... ... | ٣ | م الرعد | ١٣ |
| | إن فى ذلك لآية لقوم يتفكرون ... ... ... ... ... | ١١ | ك النحل | ١٦ |
| | وأنزلنا إليك الذكر لتبين للناس ما نزل إليهم | | | |
| | ولعلهم يتفكرون ... ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك « | ١٦ |
| | فيه شفاء للناس إن فى ذلك لآية لقوم يتفكرون ... | ٦٩ | ك « | ١٦ |
| | وجعل بينكم مودة ورحمة إن فى ذلك لآيات لقوم يتفكرون | ٢١ | ك الروم | ٣٠ |
| | إن فى ذلك لآيات لقوم يتفكرون ... ... ... ... | ٤٢ | ك الزمر | ٣٩ |
| | إن فى ذلك لآيات لقوم يتفكرون ... ... ... ... | ١٣ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | وتلك الأمثال نضربها للناس لعلهم يتفكرون ... ... | ٢١ | م الحشر | ٥٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **فَكُّ** | : وما أدراك ما العقبة . فك رقبة ... ... ... ... | ١٣ | ك البلد | ٩٠ |
| **مُنفَكِّينَ** | : لم يكن الذين كفروا من أهل الكتاب والمشركين | | | |
| | منفكين حتى تأتيهم البينة ... ... ... ... ... | ١ | م البينة | ٩٨ |
| | ✦ | | | |
| **تَفَكَّهُونَ** | : لو نشاء لجعلناه حطاما فظلتم تفكهون ... ... | ٦٥ | ك الواقعة | ٥٦ |
| **فَكِهِينَ** | : وإذا انقلبوا إلى أهلهم انقلبوا فكهين ... ... | ٣١ | ك المطففين | ٨٣ |
| **فَٰكِهُونَ** | : إن أصحاب الجنة اليوم فى شغل فاكهون ... | ٥٥ | ك يس | ٣٦ |
| **فَٰكِهِينَ** | : ونعمة كانوا فيها فاكهين ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك الدخان | ٤٤ |
| (٢) | فاكهين بما آتاهم ربهم ووقاهم ربهم عذاب الجحيم | ١٨ | ك الطور | ٥٢ |
| **فَٰكِهَةٌ** | : لهم فيها فاكهة ولهم ما يدعون ... ... ... ... | ٥٧ | ك يس | ٣٦ |
| (١١) | متكئين فيها يدعون فيها بفاكهة كثيرة وشراب ... | ٥١ | ك ص | ٣٨ |
| | لكم فيها فاكهة كثيرة منها تأكلون ... ... ... ... | ٧٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | يدعون فيها بكل فاكهة آمنين ... ... ... ... ... | ٥٥ | ك الدخان | ٤٤ |
| | وأمددناهم بفاكهة ولحم مما يشتهون ... ... ... | ٢٢ | ك الطور | ٥٢ |
| | فيها فاكهة والنخل ذات الأكمام ... ... ... ... | ١١ | م الرحمن | ٥٥ |
| | فيهما من كل فاكهة زوجان ... ... ... ... ... | ٥٢ | م « | ٥٥ |
| | فيهما فاكهة ونخل ورمان ... ... ... ... ... ... | ٦٨ | م « | ٥٥ |
| | وفاكهة مما يخيرون ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | وفاكهة كثيرة . لا مقطوعة ولا ممنوعة ... ... ... | ٣٢ | ك « | ٥٦ |
| | وحدائق غلبا . وفاكهة وأبا ... ... ... ... ... | ٣١ | ك عبس | ٨٠ |
| **فَوَٰكِهُ** | : لكم فيها فواكه كثيرة ومنها تأكلون... ... ... | ١٩ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٣) | أولئك لهم رزق معلوم . فواكه وهم مكرمون ... ... | ٤٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| | إن المتقين فى ظلال وعيون . وفواكه مما يشتهون | ٤٢ | ك المرسلات | ٧٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| أَفْلَحَ : | فأجمعوا كيدكم ثم ائتوا صفا وقد أفلح اليوم من استعلى | ٦٤ | ك طـــه | ٢٠ |
| (٤) | قد أفلح المؤمنون . الذين هم فى صلاتهم خاشعون | ١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | قد أفلح من تزكى ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك الأعـــلى | ٨٧ |
| | قد أفلح من زكاها ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك الشمس | ٩١ |
| تُفْلِحُوا : | يرجموكم أو يعيدوكم فى ملتهم ولن تفلحوا إذا أبدا | ٢٠ | ك الكهف | ١٨ |
| تُفْلِحُونَ : | وأتوا البيوت من أبوابها واتقوا الله لعلكم تفلحون | ١٨٩ | م البقـــرة | ٢ |
| (١١) | لا تأكلوا الربا أضعافا مضاعفة واتقوا الله لعلكم تفلحون | ١٣٠ | م آل عمران | ٣ |
| | اصبروا وصابروا ورابطوا واتقوا الله لعلكم تفلحون | ٢٠٠ | م « | ٣ |
| | وابتغوا إليه الوسيلة وجاهدوا فى سبيله لعلكم تفلحون | ٣٥ | م المائدة | ٥ |
| | رجس من عمل الشيطان فاجتنبوه لعلكم تفلحون ... | ٩٠ | م « | ٥ |
| | فاتقوا الله يا أولى الألباب لعلكم تفلحون ... ... | ١٠٠ | م « | ٥ |
| | فاذكروا آلاء الله لعلكم تفلحون ... ... ... ... | ٦٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | فاثبتوا واذكروا الله كثيرا لعلكم تفلحون ... ... | ٤٥ | م الأنفال | ٨ |
| | واعبدوا ربكم وافعلوا الخير لعلكم تفلحون ... ... | ٧٧ | م الحـــج | ٢٢ |
| | وتوبوا إلى الله جميعا أيه المؤمنون لعلكم تفلحون ... | ٣١ | م النـــور | ٢٤ |
| | وابتغوا من فضل الله واذكروا الله كثيرا لعلكم تفلحون | ١٠ | م الجمعـــة | ٦٢ |
| يُفْلِحُ : | ومن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو كذب بآياته | | | |
| (٩) | إنه لا يفلح الظالمون ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك الأنعـــام | ٦ |
| | فسوف تعلمون من تكون له عاقبة الدار إنه لا يفلح الظالمون | ١٣٥ | ك « | ٦ |
| | إنه لا يفلح المجرمون ... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك يـــونس | ١٠ |
| | أتقولون للحق لما جاءكم أسحر هذا ولا يفلح الساحرون | ٧٧ | ك « | ١٠ |
| | قال معاذ الله إنه ربى أحسن مثواى إنه لا يفلح الظالمون | ٢٣ | ك يوســف | ١٢ |
| | إنما صنعوا كيد ساحر ولا يفلح الساحر حيث أتى ... | ٦٩ | ك طـــه | ٢٠ |
| | فإنما حسابه عند ربه إنه لا يفلح الكافرون ... ... | ١١٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ومن تكون له عاقبة الدار إنه لا يفلح الظالمون ... ... | ٣٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | لولا أن من الله علينا لخسف بنا ويكأنه لا يفلح الكافرون | ٨٢ | ك « | ٢٨ |
| يُفْلِحُونَ : | قل إن الذين يفترون على الله الكذب لا يفلحون | ٦٩ | ك يـــونس | ١٠ |
| (٢) | إن الذين يفترون على الله الكذب لا يفلحون ... ... | ١١٦ | ك النحـــل | ١٦ |
| الْمُفْلِحُونَ : | أولئك على هدى من ربهم وأولئك هم المفلحون | ٥ | م البقـــرة | ٢ |
| (١٢) | ويأمرون بالمعروف وينهون عن المنكر وأولئك هم المفلحون | ١٠٤ | م آل عمران | ٣ |
| | فمن ثقلت موازينه فأولئك هم المفلحون ... ... ... | ٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | واتبعوا النور الذى أنزل معه أولئك هم المفلحون ... | ١٥٧ | ك « | ٧ |
| | وأولئك لهم الخيرات وأولئك هم المفلحون ... ... | ٨٨ | م التـــوبة | ٩ |
| | فمن ثقلت موازينه فأولئك هم المفلحون ... ... ... | ١٠٢ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | أن يقولوا سمعنا وأطعنا وأولئك هم المفلحون ... ... | ٥١ | ك النـــور | ٢٤ |
| | ذلك خير للذين يريدون وجه الله وأولئك هم المفلحون | ٣٨ | ك الـــروم | ٣٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الْمُفْلِحُونَ : | أولئك على هدى من ربهم وأولئك هم المفلحون | ٥ | ك لقمان | ٣١ |
| | أولئك حزب الله ألا إن حزب الله هم المفلحون ... | ٢٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| | ومن يوق شح نفسه فأولئك هم المفلحون ... ... ... | ٩ | م الحشـــر | ٥٩ |
| | ومن يوق شح نفسه فأولئك هم المفلحون... ... ... | ١٦ | م التغابن | ٦٤ |
| الْمُفْلِحِينَ : | فعسى أن يكون من المفلحين ... ... ... ... | ٦٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| أَنْفَلَقَ : | فانفلق فكان كل فرق كالطود العظيم... ... ... | ٦٣ | ك الشـــعراء | ٢٦ |
| الْفَلَقِ : | قل أعوذ برب الفلق . من شر ما خلق ... ... ... | ١ | ك الفـــلق | ١١٣ |
| فَالِقُ : | إن الله فالق الحب والنوى ... ... ... ... ... | ٩٥ | ك الأنعـــام | ٦ |
| (٢) | فالق الإصباح وجعل الليل سكنا والشمس والقمر حسبانا | ٩٦ | ك « | ٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| الْفُلْكُ : | والفلك التى تجرى فى البحر بما ينفع الناس ... ... | ١٦٤ | م البقـــرة | ٢ |
| (٢٣) | فكذبوه فأنجيناه والذين معه فى الفلك... ... ... ... | ٦٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | حتى إذا كنتم فى الفلك وجرين بهم بريح طيبة... ... | ٢٢ | ك يـــونس | ١٠ |
| | فكذبوه فنجيناه ومن معه فى الفلك ... ... ... ... | ٧٣ | ك « | ١٠ |
| | واصنع الفلك بأعيننا ووحينا ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك هـــود | ١١ |
| | ويصنع الفلك وكلما مر عليه ملأ من قومه سخروا منه | ٣٨ | ك « | ١١ |
| | وسخر لكم الفلك لتجرى فى البحر بأمره ... ... ... | ٣٢ | ك إبراهـــيم | ١٤ |
| | وترى الفلك مواخر فيه ولتبتغوا من فضله... ... ... | ١٤ | ك النحـــل | ١٦ |
| | ربكم الذى يزجى لكم الفلك فى البحر لتبتغوا من فضله | ٦٦ | ك الإســـراء | ١٧ |
| | ألم تر أن الله سخر لكم ما فى الأرض والفلك تجرى | | | |
| | فى البحر بأمره... ... ... ... ... ... ... ... | ٦٥ | م الحـــج | ٢٢ |
| | وعليها وعلى الفلك تحملون ... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فأوحينا إليه أن اصنع الفلك بأعيننا ووحينا ... ... | ٢٧ | ك « | ٢٣ |
| | فإذا استويت أنت ومن معك على الفلك فقل الحمد لله | ٢٨ | ك « | ٢٣ |
| | فأنجيناه ومن معه فى الفلك المشحون ... ... ... ... | ١١٩ | ك الشـــعراء | ٢٦ |
| | فإذا ركبوا فى الفلك دعوا الله مخلصين له الدين ... | ٦٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ولتجرى الفلك بأمره ولتبتغوا من فضله ولعلكم تشكرون | ٤٦ | ك الـــروم | ٣٠ |
| | ألم تر أن الفلك تجرى فى البحر بنعمة الله ليريكم من آياته | ٣١ | ك لقمان | ٣١ |
| | وترى الفلك فيه مواخر لتبتغوا من فضله ولعلكم تشكرون | ١٢ | ك فاطـــر | ٣٥ |
| | وآية لهم أنا حملنا ذريتهم فى الفلك المشحون ... ... | ٤١ | ك يـــس | ٣٦ |
| | وإن يونس لمن المرسلين . إذ أبق إلى الفلك المشحون | ١٤٠ | ك الصافات | ٣٧ |
| | ولتبلغوا عليها حاجة فى صدوركم وعليها وعلى الفلك تحملون | ٨٠ | ك غافـــر | ٤٠ |
| | وجعل لكم من الفلك والأنعام ما تركبون... ... ... | ١٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | الله الذى سخر لكم البحر لتجرى الفلك فيه بأمره ... | ١٢ | ك الجاثيـــة | ٤٥ |
| فَلَكٍ : | كل فى فلك يسبحون ... ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك الأنبيـــاء | ٢١ |
| (٢) | ولا الليل سابق النهار وكل فى فلك يسبحون ... ... | ٤٠ | ك يـــس | ٣٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| فُلَانًا | : ياويلتى ليتنى لم أتخذ فلانا خليلا ... ... ... ... | ٢٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تُفَنِّدُونِ | : إنى لأجد ريح يوسف لولا أن تفندون ... ... | ٩٤ | ك يوسف | ١٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| أَفْنَانٍ | : ذواتا أفنان . فبأى آلاء ربكما تكذبان ... ... | ٤٨ | م الرحمن | ٥٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| فَانٍ | : كل من عليها فان . ويبقى وجه ربك ذو الجلال والإكرام | ٢٦ | م « | ٥٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| فَفَهَّمْنَاهَا | : ففهمناها سليمان وكلا آتينا حكما وعلما ... ... | ٧٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| فَاتَكُمْ | : لكيلا تحزنوا على ما فاتكم ولا ما أصابكم ... ... | ١٥٣ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | لكيلا تأسوا على ما فاتكم ولا تفرحوا بما آتاكم ... | ٢٣ | م الحديد | ٥٧ |
| | وإن فاتكم شىء من أزواجكم إلى الكفار فعاقبتم فآتوا الذين ذهبت أزواجهم مثل ما أنفقوا ... ... | ١١ | م الممتحنة | ٦٠ |
| فَوْتَ | : ولو ترى إذ فزعوا فلا فوت وأخذوا من مكان قريب | ٥١ | ك سبأ | ٣٤ |
| تَفَاوُتٍ | : ما ترى فى خلق الرحمن من تفاوت ... ... ... | ٣ | ك الملك | ٦٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| فَوْجٌ | : هذا فوج مقتحم معكم لا مرحبا بهم إنهم صالوا النار | ٥٩ | ك ص | ٣٨ |
| (٢) | كلما ألقى فيها فوج سألهم خزنتها ألم يأتكم نذير ... ... | ٨ | ك الملك | ٦٧ |
| فَوْجًا | : ويوم نحشر من كل أمة فوجا ممن يكذب بآياتنا ... | ٨٣ | ك النمل | ٢٧ |
| أَفْوَاجًا | : يوم ينفخ فى الصور فتأتون أفواجا ... ... | ١٨ | ك النبأ | ٧٨ |
| (٢) | إذا جاء نصر الله والفتح . ورأيت الناس يدخلون فى دين الله أفواجا . فسبح بحمد ربك ... ... | ٢ | ك النصر | ١١٠ |
| | ✦✦✦ | | | |
| فَارَ | : حتى إذا جاء أمرنا وفار التنور قلنا احمل فيها من كل | | | |
| (٢) | زوجين اثنين ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك هود | ١١ |
| | فإذا جاء أمرنا وفار التنور فاسلك فيها من كل زوجين اثنين | ٢٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| تَفُورُ | : إذا ألقوا فيها سمعوا لها شهيقا وهى تفور ... ... | ٧ | ك الملك | ٦٧ |
| فَوْرِهِمْ | : بلى إن تصبروا وتتقوا ويأتوكم من فورهم هذا يمددكم ربكم بخمسة آلاف من الملائكة ... ... | ١٢٥ | م آل عمران | ٣ |
| | ✦✦✦ | | | |
| فَازَ | : فمن زحزح عن النار وأدخل الجنة فقد فاز ... ... ... | ١٨٥ | ك « | ٣ |
| (٢) | ومن يطع الله ورسوله فقد فاز فوزا عظيما ... ... ... | ٧١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| أَفُوزَ | : ياليتنى كنت معهم فأفوز فوزا عظيما ... ... ... ... | ٧٣ | م النساء | ٤ |
| الْفَوْزُ | : خالدين فيها وذلك الفوز العظيم ... ... ... ... | ١٣ | م « | ٤ |
| (١٦) | رضى الله عنهم ورضوا عنه ذلك الفوز العظيم ... ... | ١١٩ | م المائدة | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الْفَوْزُ | : من يصرف عنه يومئذ فقد رحمه وذلك الفوز المبين | ١٦ | ك الأنعام | ٦ |
| | ورضوان من الله أكبر ذلك هو الفوز العظيم ... ... | ٧٢ | م التوبة | ٩ |
| | خالدين فيها ذلك الفوز العظيم ... ... ... ... ... | ٨٩ | م « | ٩ |
| | خالدين فيها أبدا ذلك الفوز العظيم ... ... ... ... | ١٠٠ | م « | ٩ |
| | فاستبشروا ببيعكم الذى بايعتم به وذلك هو الفوز العظيم | ١١١ | م « | ٩ |
| | لا تبديل لكلمات الله ذلك هو الفوز العظيم ... ... | ٦٤ | ك يونس | ١٠ |
| | إن هذا لهو الفوز العظيم... ... ... ... ... ... | ٦٠ | ك الصافات | ٣٧ |
| | ومن تق السيئات يومئذ فقد رحمته وذلك هو الفوز العظيم | ٩ | ك غافر | ٤٠ |
| | فضلا من ربك ذلك هو الفوز العظيم ... ... ... ... | ٥٧ | ك الدخان | ٤٤ |
| | فيدخلهم ربهم فى رحمته ذلك هو الفوز المبين ... ... | ٣٠ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | خالدين فيها ذلك هو الفوز العظيم... ... ... ... | ١٢ | م الحديد | ٥٧ |
| | ومساكن طيبة فى جنات عدن ذلك الفوز العظيم ... | ١٢ | ك الصف | ٦١ |
| | خالدين فيها أبدا ذلك الفوز العظيم ... ... ... ... | ٩ | م التغابن | ٦٤ |
| | لهم جنات تجرى من تحتها الأنهار ذلك الفوز الكبير | ١١ | ك البروج | ٨٥ |
| فَوْزًا | : ياليتنى كنت معهم فأفوز فوزا عظيما ... ... ... ... | ٧٣ | م النساء | ٤ |
| (٣) | ومن يطع الله ورسوله فقد فاز فوزا عظيما... ... ... | ٧١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ويكفر عنهم سيئاتهم وكان ذلك عند الله فوزا عظيما | ٥ | م الفتح | ٤٨ |
| الْفَائِزُونَ | : أعظم درجة عند الله وأولئك هم الفائزون ... | ٢٠ | م التوبة | ٩ |
| (٤) | إنى جزيتهم اليوم بما صبروا أنهم هم الفائزون ... ... | ١١١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ويخش الله ويتقه فأولئك هم الفائزون ... ... ... | ٥٢ | م النور | ٢٤ |
| | أصحاب الجنة هم الفائزون ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | م الحشر | ٥٩ |
| مَفَازًا | : إن للمتقين مفازا . حدائق وأعنابا ... ... ... ... | ٣١ | ك النبأ | ٧٨ |
| مَفَازَةٍ | : فلا تحسبنهم بمفازة من العذاب ولهم عذاب أليم... | ١٨٨ | م آل عمران | ٣ |
| مَفَازَتِهِمْ | : وينجى الله الذين اتقوا بمفازتهم لا يمسهم السوء | ٦١ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| أُفَوِّضُ | : فستذكرون ما أقول لكم وأفوض أمرى إلى الله | ٤٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | ✦✦✦ | | | |
| أَفَاقَ | : فلما أفاق قال سبحانك تبت إليك وأنا أول المؤمنين | ١٤٣ | ك الأعراف | ٧ |
| فَوْقَ | : وجاعل الذين اتبعوك فوق الذين كفروا إلى يوم القيامة | ٥٥ | م آل عمران | ٣ |
| (١٦) | فإن كن نساء فوق اثنتين فلهن ثلثا ما ترك ... ... | ١١ | م النساء | ٤ |
| | وهو القاهر فوق عباده وهو الحكيم الخبير ... ... | ١٨ | ك الأنعام | ٦ |
| | وهو القاهر فوق عباده ويرسل عليكم حفظة ... ... | ٦١ | ك « | ٦ |
| | ورفع بعضكم فوق بعض درجات ليبلوكم فى ما آتاكم... | ١٦٥ | ك « | ٦ |
| | سألقى فى قلوب الذين كفروا الرعب فاضربوا فوق الأعناق | ١٢ | م الأنفال | ٨ |
| | إنى أرانى أحمل فوق رأسى خبزا تأكل الطير منه ... | ٣٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | نرفع درجات من نشاء وفوق كل ذى علم عليم ... ... | ٧٦ | ك « | ١٢ |
| | ومثل كلمة خبيثة كشجرة خبيثة اجتثت من فوق الأرض | ٢٦ | ك إبراهيم | ١٤ |

| الفقرة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| فَوْقَ: | زدناهم عذابا فوق العذاب بما كانوا يفسدون ... | ٨٨ | ك النحل | ١٦ |
| | قطعت لهم ثياب من نار يصب من فوق رءوسهم الحميم | ١٩ | م الحج | ٢٢ |
| | ظلمات بعضها فوق بعض إذا أخرج يده لم يكد يراها... | ٤٠ | م النور | ٢٤ |
| | ورفعنا بعضهم فوق بعض درجات ... ... ... ... | ٣٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ثم صبوا فوق رأسه من عذاب الحميم ... ... ... ... | ٤٨ | ك الدخان | ٤٤ |
| | إن الذين يبايعونك إنما يبايعون الله يد الله فوق أيديهم | ١٠ | م الفتح | ٤٨ |
| | يأيها الذين آمنوا لا ترفعوا أصواتكم فوق صوت النبيّ | ٢ | م الحجرات | ٤٩ |
| فَوْقَكُمْ: | وإذ أخذنا ميثاقكم ورفعنا فوقكم الطور ... ... | ٦٣ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | وإذ أخذنا ميثاقكم ورفعنا فوقكم الطور ... ... ... | ٩٣ | م « | ٢ |
| | قل هو القادر على أن يبعث عليكم عذابا من فوقكم ... | ٦٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | ولقد خلقنا فوقكم سبع طرائق وما كنا عن الخلق غافلين | ١٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | إذ جاءوكم من فوقكم ومن أسفل منكم وإذ زاغت الأبصار | ١٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وبنينا فوقكم سبعا شدادا ... ... ... ... ... | ١٢ | ك النبأ | ٧٨ |
| فَوْقِهِ: | أو كظلمات فى بحر لجىّ يغشاه موج من فوقه موج | ٤٠ | م النور | ٢٤ |
| (٢) | من فوقه سحاب ظلمات بعضها فوق بعض... ... ... | ٤٠ | م « | ٢٤ |
| فَوْقَهَا: | إن الله لا يستحيي أن يضرب مثلا ما بعوضة فما فوقها | ٢٦ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | لكن الذين اتقوا ربهم لهم غرف من فوقها غرف | ٢٠ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وجعل فيها رواسى من فوقها وبارك فيها وقدر فيها أقواتها | ١٠ | ك فصلت | ٤١ |
| فَوْقَهُمْ: | والذين اتقوا فوقهم يوم القيامة ... ... ... ... | ٢١٢ | م البقرة | ٢ |
| (١٣) | ورفعنا فوقهم الطور بميثاقهم... ... ... ... ... | ١٥٤ | م النساء | ٤ |
| | لأكلوا من فوقهم ومن تحت أرجلهم ... ... ... | ٦٦ | م المائدة | ٥ |
| | لهم من جهنم مهاد ومن فوقهم غواش ... ... ... | ٤١ | ك الأعراف | ٧ |
| | قال سنقتل أبناءهم ونستحيي نساءهم وإنا فوقهم قاهرون | ١٢٧ | ك « | ٧ |
| | وإذ نتقنا الجبل فوقهم كأنه ظلة... ... ... ... | ١٧١ | ك « | ٧ |
| | لخر عليهم السقف من فوقهم ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك النحل | ١٦ |
| | يخافون ربهم من فوقهم ويفعلون ما يؤمرون ... | ٥٠ | ك « | ١٦ |
| | يوم يغشاهم العذاب من فوقهم ومن تحت أرجلهم... | ٥٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | لهم من فوقهم ظلل من النار ومن تحتهم ظلل ... ... | ١٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| | أفلم ينظروا إلى السماء فوقهم كيف بنيناها وزيناها | ٦ | ك ق | ٥٠ |
| | أو لم يروا إلى الطير فوقهم صافات ويقبضن ... ... | ١٩ | ك الملك | ٦٧ |
| | ويحمل عرش ربك فوقهم يومئذ ثمانية ... ... ... | ١٧ | ك الحاقة | ٦٩ |
| فَوْقِهِنَّ: | تكاد السموات يتفطرن من فوقهن ... ... ... | ٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| فَوَاقٍ: | وما ينظر هؤلاء إلا صيحة واحدة ما لها من فواق | ١٥ | ك ص | ٣٨ |

✦✦✦

| الفقرة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| فُومِهَا: | فادع لنا ربك يخرج لنا مما تنبت الأرض من بقلها وقثائها وفومها... ... ... ... ... ... | ٦١ | م البقرة | ٢ |

✦✦✦

| الفقرة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| فَاهُ: | إلا كباسط كفيه إلى الماء ليبلغ فاه وما هو ببالغه ... | ١٤ | م الرعد | ١٣ |
| أَفْوَاهِكُمْ: | وتقولون بأفواهكم ما ليس لكم به علم ... ... | ١٥ | م النور | ٢٤ |
| (٢) | وما جعل أدعياءكم أبناءكم ذلكم قولكم بأفواهكم ... | ٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| أَفْوَاهِهِمْ: | قد بدت البغضاء من أفواههم وما تخفى صدورهم أكبر | ١١٨ | م آل عمران | ٣ |
| (١٠) | يقولون بأفواههم ما ليس فى قلوبهم والله أعلم بما يكتمون | ١٦٧ | م « | ٣ |
| | لا يحزنك الذين يسارعون فى الكفر من الذين قالوا آمنا بأفواههم ولم تؤمن قلوبهم ... ... ... ... | ٤١ | م المائدة | ٥ |
| | يرضونكم بأفواههم وتأبى قلوبهم وأكثرهم فاسقون | ٨ | م التوبة | ٩ |
| | وقالت النصارى المسيح ابن الله ذلك قولهم بأفواههم | ٣٠ | م « | ٩ |
| | يريدون أن يطفئوا نور الله بأفواههم ... ... ... | ٣٢ | م « | ٩ |
| | جاءتهم رسلهم بالبينات فردوا أيديهم فى أفواههم | ٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | كبرت كلمة تخرج من أفواههم إن يقولون إلا كذبا | ٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | اليوم نختم على أفواههم وتكلمنا أيديهم وتشهد أرجلهم | ٦٥ | ك يس | ٣٦ |
| | يريدون ليطفئوا نور الله بأفواههم والله متم نوره ... | ٨ | م الصف | ٦١ |

✦✦✦

| الفقرة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| فَاءَتْ: | فإن فاءت فأصلحوا بينهما بالعدل وأقسطوا ... | ٩ | م الحجرات | ٤٩ |
| فَاءُو: | فإن فاءو فإن الله غفور رحيم ... ... ... ... ... | ٢٢٦ | م البقرة | ٢ |
| تَفِيءَ: | فقاتلوا التى تبغى حتى تفيء إلى أمر الله... ... ... | ٩ | م الحجرات | ٤٩ |
| أَفَاءَ: | وما ملكت يمينك مما أفاء الله عليك... ... ... ... | ٥٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| (٣) | وما أفاء الله على رسوله منهم فما أوجفتم عليه من خيل | ٦ | م الحشر | ٥٩ |
| | ما أفاء الله على رسوله من أهل القرى فلله وللرسول | ٧ | م « | ٥٩ |
| يَتَفَيَّؤُا: | يتفيؤا ظلاله عن اليمين والشمائل سجدا لله ... ... | ٤٨ | ك النحل | ١٦ |

✦✦✦

| الفقرة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَفِيضُ: | ترى أعينهم تفيض من الدمع مما عرفوا من الحق | ٨٣ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | تولوا وأعينهم تفيض من الدمع حزنا ألا يجدوا ما ينفقون | ٩٢ | م التوبة | ٩ |
| أَفَاضَ: | ثم أفيضوا من حيث أفاض الناس واستغفروا الله | ١٩٩ | م البقرة | ٢ |
| أَفَضْتُمْ: | فإذا أفضتم من عرفات فاذكروا الله عند المشعر الحرام | ١٩٨ | م « | ٢ |
| (٢) | لمسكم فى ما أفضتم فيه عذاب عظيم ... ... ... ... | ١٤ | م النور | ٢٤ |
| تُفِيضُونَ: | إلا كنا عليكم شهودا إذ تفيضون فيه ... ... | ٦١ | ك يونس | ١٠ |
| (٢) | هو أعلم بما تفيضون فيه كفى به شهيدا بينى وبينكم | ٨ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| أَفِيضُوا: | ثم أفيضوا من حيث أفاض الناس واستغفروا الله | ١٩٩ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | ونادى أصحاب النار أصحاب الجنة أن أفيضوا علينا من الماء | ٥٠ | ك الأعراف | ٧ |

✦✦✦

| الفقرة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الْفِيلِ: | ألم تر كيف فعل ربك بأصحاب الفيل ... ... ... | ١ | ك الفيل | ١٠٥ |

# باب القاف

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قٓ | قٓ والقرآن المجيد . بل عجبوا أن جاءهم منذر منهم | ك قٓ | ١ | ٥٠ |
| ✦✦✦ | | | | |
| ٱلْمَقْبُوحِينَ | ويوم القيامة هم من المقبوحين ... ... ... | ك القصص | ٤٢ | ٢٨ |
| ✦✦✦ | | | | |
| أَقْبَرَهُ | من نطفة خلقه فقدره . ثم السبيل يسره . ثم أماته فأقبره | ك عبس | ٢١ | ٨٠ |
| قَبْرِهِ | ولا تصل على أحد منهم مات أبدا ولا تقم على قبره | م التوبة | ٨٤ | ٩ |
| ٱلْقُبُورِ | وأن الساعة آتية لا ريب فيها وأن الله يبعث من في القبور | م الحج | ٧ | ٢٢ |
| (٥) | إن الله يسمع من يشاء وما أنت بمسمع من في القبور | ك فاطر | ٢٢ | ٣٥ |
| | قد يئسوا من الآخرة كما يئس الكفار من أصحاب القبور | م الممتحنة | ١٣ | ٦٠ |
| | وإذا القبور بعثرت . علمت نفس ما قدمت وأخرت | ك الانفطار | ٤ | ٨٢ |
| | أفلا يعلم إذا بعثر ما في القبور . وحصل ما في الصدور | ك العاديات | ٩ | ١٠٠ |
| ٱلْمَقَابِرَ | ألهاكم التكاثر . حتى زرتم المقابر ... ... ... ... | ك التكاثر | ٢ | ١٠٢ |
| ✦✦✦ | | | | |
| نَقْتَبِسْ | انظرونا نقتبس من نوركم ... ... ... ... ... | م الحديد | ١٣ | ٥٧ |
| قَبَسٍ | لعلي آتيكم منها بقبس أو أجد على النار هدى ... | ك طه | ١٠ | ٢٠ |
| (٢) | سآتيكم منها بخبر أو آتيكم بشهاب قبس لعلكم تصطلون | ك النمل | ٧ | ٢٧ |
| ✦✦✦ | | | | |
| فَقَبَضْتُ | فقبضت قبضة من أثر الرسول ... ... ... ... | ك طه | ٩٦ | ٢٠ |
| قَبَضْنَاهُ | ثم جعلنا الشمس عليه دليلا . ثم قبضناه إلينا قبضا يسيرا | ك الفرقان | ٤٦ | ٢٥ |
| يَقْبِضُ | والله يقبض ويبسط وإليه ترجعون ... ... ... | م البقرة | ٢٤٥ | ٢ |
| يَقْبِضْنَ | أولم يروا إلى الطير فوقهم صافات ويقبضن | ك الملك | ١٩ | ٦٧ |
| يَقْبِضُونَ | وينهون عن المعروف ويقبضون أيديهم ... | م التوبة | ٦٧ | ٩ |
| قَبَضًا | ثم جعلنا الشمس عليه دليلا . ثم قبضناه إلينا قبضا يسيرا | ك الفرقان | ٤٦ | ٢٥ |
| قَبْضَةً | قال بصرت بما لم يبصروا به فقبضت قبضة من أثر الرسول | ك طه | ٩٦ | ٢٠ |
| قَبْضَتُهُ | والأرض جميعا قبضته يوم القيامة ... ... ... | ك الزمر | ٦٧ | ٣٩ |
| مَقْبُوضَةٌ | وإن كنتم على سفر ولم تجدوا كاتبا فرهان مقبوضة | م البقرة | ٢٨٣ | ٢ |
| ✦✦✦ | | | | |
| تَقْبَلُوا | فاجلدوهم ثمانين جلدة ولا تقبلوا لهم شهادة أبدا | م النور | ٤ | ٢٤ |
| يَقْبَلُ | ألم يعلموا أن الله هو يقبل التوبة عن عباده ... | م التوبة | ١٠٤ | ٩ |
| (٢) | وهو الذي يقبل التوبة عن عباده ويعفوا عن السيئات | م الشورى | ٢٥ | ٤٢ |
| تُقْبَلَ | إن الذين كفروا بعد إيمانهم ثم ازدادوا كفرا لن | | | |
| (٢) | تقبل توبتهم ... ... ... ... ... ... ... | م آل عمران | ٩٠ | ٣ |
| | وما منعهم أن تقبل منهم نفقاتهم إلا أنهم كفروا بالله | م التوبة | ٥٤ | ٩ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يُقْبَلُ | واتقوا يوما لا تجزي نفس عن نفس شيئا ولا يقبل | | | |
| (٤) | منها شفاعة ... ... ... ... ... ... ... | م البقرة | ٤٨ | ٢ |
| | واتقوا يوما لا تجزي نفس عن نفس شيئا ولا يقبل منها عدل | م « | ١٢٣ | ٢ |
| | ومن يبتغ غير الإسلام دينا فلن يقبل منه ... ... ... | م آل عمران | ٨٥ | ٣ |
| | فلن يقبل من أحدهم ملء الأرض ذهبا ولو افتدى به | م « | ٩١ | ٣ |
| أَقْبَلَ | وأقبل بعضهم على بعض يتساءلون ... ... ... ... | ك الصافات | ٢٧ | ٣٧ |
| (٤) | فأقبل بعضهم على بعض يتساءلون ... ... ... ... | ك « | ٥٠ | ٣٧ |
| | وأقبل بعضهم على بعض يتساءلون ... ... ... ... | ك الطور | ٢٥ | ٥٢ |
| | فأقبل بعضهم على بعض يتلاومون ... ... ... ... | م القلم | ٣٠ | ٦٨ |
| فَأَقْبَلَتِ | فأقبلت امرأته في صرة فصكت وجهها ... ... | ك الذاريات | ٢٩ | ٥١ |
| أَقْبَلْنَا | وسئل القرية التي كنا فيها والعير التي أقبلنا فيها ... | ك يوسف | ٨٢ | ١٢ |
| أَقْبَلُوا | قالوا وأقبلوا عليهم ماذا تفقدون... ... ... ... | ك « | ٧١ | ١٢ |
| (٢) | فأقبلوا إليه يزفون ... ... ... ... ... ... ... | ك الصافات | ٩٤ | ٣٧ |
| أَقْبِلْ | يا موسى أقبل ولا تخف إنك من الآمنين ... ... | ك القصص | ٣١ | ٢٨ |
| فَتَقَبَّلَهَا | فتقبلها ربها بقبول حسن وأنبتها نباتا حسنا ... | م آل عمران | ٣٧ | ٣ |
| نَتَقَبَّلُ | أولئك الذين نتقبل عنهم أحسن ما عملوا... ... | ك الأحقاف | ١٦ | ٤٦ |
| يَتَقَبَّلُ | قال لأقتلنك قال إنما يتقبل الله من المتقين ... | م المائدة | ٢٧ | ٥ |
| تَقَبَّلْ | ربنا تقبل منا إنك أنت السميع العليم ... ... ... | م البقرة | ١٢٧ | ٢ |
| (٣) | إني نذرت لك ما في بطني محررا فتقبل مني ... ... | م آل عمران | ٣٥ | ٣ |
| | رب اجعلني مقيم الصلاة ومن ذريتي ربنا وتقبل دعاء | ك إبراهيم | ٤٠ | ١٤ |
| تُقُبِّلَ | فتقبل من أحدهما ولم يتقبل من الآخر... ... ... | م المائدة | ٢٧ | ٥ |
| (٢) | ومثله معه ليفتدوا به من عذاب يوم القيامة ما تقبل منهم | م « | ٣٦ | ٥ |
| يُتَقَبَّلَ | إذ قربا قربانا فتقبل من أحدهما ولم يتقبل من الآخر | م « | ٢٧ | ٥ |
| (٢) | قل أنفقوا طوعا أو كرها لن يتقبل منكم ... ... ... | م التوبة | ٥٣ | ٩ |
| قَابِلِ | غافر الذنب وقابل التوب شديد العقاب ذي الطول | ك غافر | ٣ | ٤٠ |
| قَبُولٍ | فتقبلها ربها بقبول حسن وأنبتها نباتا حسنا ... | م آل عمران | ٣٧ | ٣ |
| مُتَقَابِلِينَ | ونزعنا ما في صدورهم من غل إخوانا على | | | |
| (٤) | سرر متقابلين ... ... ... ... ... ... ... | ك الحجر | ٤٧ | ١٥ |
| | في جنات النعيم . على سرر متقابلين ... ... ... | ك الصافات | ٤٤ | ٣٧ |
| | في جنات وعيون . يلبسون من سندس وإستبرق متقابلين | ك الدخان | ٥٣ | ٤٤ |
| | على سرر موضونة . متكئين عليها متقابلين ... ... | ك الواقعة | ١٦ | ٥٦ |
| مُسْتَقْبِلَ | فلما رأوه عارضا مستقبل أوديتهم قالوا هذا | | | |
| | عارض ممطرنا ... ... ... ... ... ... ... | ك الأحقاف | ٢٤ | ٤٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَلْقِبْلَةَ | : وما جعلنا القبلة التي كنت عليها إلا لنعلم من يتبع الرسول | ١٤٣ م | البقـرة | ٢ |
| (٤) | قد نرى تقلب وجهك في السماء فلنولينك قبلة ترضاها | ١٤٤ م | » | ٢ |
| | وما بعضهم بتابع قبلة بعض ... ... ... ... ... | ١٤٥ م | » | ٢ |
| | واجعلوا بيوتكم قبلة وأقيموا الصلاة ... ... ... | ٨٧ ك | يـونس | ١٠ |
| قِبْلَتَكَ | : ولئن أتيت الذين أوتوا الكتاب بكل آية ما تبعوا قبلتك | ١٤٥ م | البقـرة | ٢ |
| قِبْلَتَهُمْ | : ما ولاهم عن قبلتهم التي كانوا عليها ... ... ... | ١٤٢ م | » | ٢ |
| (٢) | ما تبعوا قبلتك وما أنت بتابع قبلتهم ... ... ... | ١٤٥ م | » | ٢ |
| قِبَلًا | : أو تأتي بالله والملائكة قبلا ... ... ... ... ... | ٩٢ ك | الإسراء | ١٧ |
| قَبِيلُهُ | : إنه يراكم هو وقبيله من حيث لا ترونهم... ... ... | ٢٧ ك | الأعراف | ٧ |
| قَبَائِلَ | : وجعلناكم شعوبا وقبائل لتعارفوا ... ... ... ... | ١٣ م | الحجرات | ٤٩ |
| قُبُلٍ | : إن كان قميصه قد من قبل فصدقت وهو من الكاذبين | ٢٦ ك | يوسـف | ١٢ |
| قُبُلًا | : وحشرنا عليهم كل شيء قبلا ما كانوا ليؤمنوا إلا أن يشاء الله | ١١١ ك | الأنعام | ٦ |
| (٢) | إلا أن تأتيهم سنة الأولين أو يأتيهم العذاب قبلا ... | ٥٥ ك | الكهف | ١٨ |
| قِبَلَ | : ليس البر أن تولوا وجوهكم قبل المشرق والمغرب ... | ١٧٧ م | البقـرة | ٢ |
| (٢) | ارجع إليهم فلنأتينهم بجنود لا قبل لهم بها ... ... ... | ٣٧ ك | النمـل | ٢٧ |
| قِبَلَكَ | : فمال الذين كفروا قبلك مهطعين ... ... ... ... | ٣٦ ك | المعارج | ٧٠ |
| قِبَلِهِ | : له باب باطنه فيه الرحمة وظاهره من قبله العذاب... | ١٣ م | الحـديد | ٥٧ |
| قَبْلُ | : كلما رزقوا منها من ثمرة رزقا قالوا هذا الذي رزقنا من قبل | ٢٥ م | البقـرة | ٢ |
| (١١٧) | وكانوا من قبل يستفتحون على الذين كفروا ... ... | ٨٩ م | » | ٢ |
| | قل فلم تقتلون أنبياء الله من قبل إن كنتم مؤمنين ... | ٩١ م | » | ٢ |
| | أم تريدون أن تسئلوا رسولكم كما سئل موسى من قبل | ١٠٨ م | » | ٢ |
| | وإن طلقتموهن من قبل أن تمسوهن ... ... ... | ٢٣٧ م | » | ٢ |
| | أنفقوا مما رزقناكم من قبل أن يأتي يوم لا بيع فيه | ٢٥٤ م | » | ٢ |
| | وأنزل التوراة والإنجيل . من قبل هدى للناس ... | ٤ م | آل عمران | ٣ |
| | إلا ما حرم إسرائيل على نفسه من قبل أن تنزل التوراة | ٩٣ م | » | ٣ |
| | ولقد كنتم تمنون الموت من قبل أن تلقوه فقد رأيتموه | ١٤٣ م | » | ٣ |
| | ويعلمهم الكتاب والحكمة وإن كانوا من قبل لفي ضلال | ١٦٤ م | » | ٣ |
| | آمنوا بما نزلنا مصدقا لما معكم من قبل أن نطمس وجوها | ٤٧ م | النسـاء | ٤ |
| | كذلك كنتم من قبل فمن الله عليكم فتبينوا ... ... ... | ٩٤ م | » | ٤ |
| | آمنوا بالله ورسوله والكتاب الذي نزل على رسوله | | | |
| | والكتاب الذي أنزل من قبـل ... ... ... ... | ١٣٦ م | » | ٤ |
| | وإن من أهل الكتاب إلا ليؤمنن به قبل موته... ... | ١٥٩ م | » | ٤ |
| | ورسلا قد قصصناهم عليك من قبل ورسلا لم نقصصهم عليك | ١٦٤ م | » | ٤ |
| | إلا الذين تابوا من قبل أن تقدروا عليهم ... ... ... | ٣٤ م | المائدة | ٥ |
| | إلا أن آمنا بالله وما أنزل إلينا وما أنزل من قبل ... | ٥٩ م | » | ٥ |
| | ولا تتبعوا أهواء قوم قد ضلوا من قبل وأضلوا كثيرا | ٧٧ م | » | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَبْلُ | : بل بدا لهم ما كانوا يخفون من قبل ... ... ... ... | ٢٨ ك | الأنعام | ٦ |
| | ووهبنا له إسحق ويعقوب كلا هدينا ونوحا هدينا من قبل | ٨٤ ك | » | ٦ |
| | لا ينفع نفسا إيمانها لم تكن آمنت من قبل ... ... | ١٥٨ ك | » | ٦ |
| | يقول الذين نسوه من قبل قد جاءت رسل ربنا بالحق | ٥٣ ك | الأعراف | ٧ |
| | فما كانوا ليؤمنوا بما كذبوا من قبل ... ... ... | ١٠١ ك | » | ٧ |
| | قال فرعون آمنتم به قبل أن آذن لكم ... ... ... | ١٢٣ ك | » | ٧ |
| | قالوا أوذينا من قبل أن تأتينا ومن بعد ما جئتنا ... | ١٢٩ ك | » | ٧ |
| | قال رب لو شئت أهلكتهم من قبل وإياي ... ... | ١٥٥ ك | » | ٧ |
| | أو تقولوا إنما أشرك آباؤنا من قبل وكنا ذرية من بعدهم | ١٧٣ ك | » | ٧ |
| | وإن يريدوا خيانتك فقد خانوا الله من قبل فأمكن منهم | ٧١ م | الأنفال | ٨ |
| | يضاهئون قول الذين كفروا من قبل ... ... ... ... | ٣٠ م | التوبة | ٩ |
| | لقد ابتغوا الفتنة من قبل وقلبوا لك الأمور ... ... | ٤٨ م | » | ٩ |
| | وإن تصبك مصيبة يقولوا قد أخذنا أمرنا من قبـل | ٥٠ م | » | ٩ |
| | وإرصادا لمن حارب الله ورسوله من قبل ... ... | ١٠٧ م | » | ٩ |
| | جاءتهم بالبينات فما كانوا ليؤمنوا بما كذبوا به من قبل | ٧٤ ك | يـونس | ١٠ |
| | آلآن وقد عصيت قبل وكنت من المفسدين ... ... | ٩١ ك | » | ١٠ |
| | ما كنت تعلمها أنت ولا قومك من قبل هذا ... ... | ٤٩ ك | هـود | ١١ |
| | قالوا يا صالح قد كنت فينا مرجوا قبل هذا ... ... | ٦٢ ك | » | ١١ |
| | وجاءه قومه يهرعون إليه ومن قبل كانوا يعملون السيئات | ٧٨ ك | » | ١١ |
| | ما يعبدون إلا كما يعبد آباؤهم من قبل ... ... ... | ١٠٩ ك | » | ١١ |
| | كما أتمها على أبويك من قبل إبراهيم وإسحق... ... | | ك يوسـف | ١٢ |
| | قال لا يأتيكما طعام ترزقانه إلا نبأتكما بتأويله قبـل | | | |
| | أن يأتيكما ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٧ ك | » | ١٢ |
| | قال هل آمنكم عليه إلا كما أمنتكم على أخيه من قبل | ٦٤ ك | » | ١٢ |
| | فبدأ بأوعيتهم قبل وعاء أخيه ثم استخرجها من وعاء أخيه | ٧٦ ك | » | ١٢ |
| | قالوا إن يسرق فقد سرق أخ له من قبل ... ... ... | ٧٧ ك | » | ١٢ |
| | قد أخذ عليكم موثقا من الله ومن قبل ما فرطتم في يوسف | ٨٠ ك | » | ١٢ |
| | وقال يا أبت هذا تأويل رؤياي من قبل قد جعلها ربي حقا | ١٠٠ ك | » | ١٢ |
| | ويستعجلونك بالسيئة قبـل الحسنة وقـد خلت من | | | |
| | قبلهم المثلات ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦ م | الرعـد | ١٣ |
| | إني كفرت بما أشركتمون من قبل ... ... ... ... | ٢٢ ك | إبراهيم | ١٤ |
| | من قبل أن يأتي يوم لا بيع فيه ولا خلال ... ... ... | ٣١ ك | » | ١٤ |
| | أو لم تكونوا أقسمتم من قبل ما لكم من زوال ... ... | ٤٤ ك | » | ١٤ |
| | والجانّ خلقناه من قبل من نار السموم ... ... ... | ٢٧ ك | الحجـر | ١٥ |
| | وعلى الذين هادوا حرمنا ما قصصنا عليك من قبل ... | ١١٨ ك | النحـل | ١٦ |
| | وإن من قرية إلا نحن مهلكوها قبل يوم القيامة ... | ٥٨ ك | الإسـراء | ١٧ |
| | لنفد البحر قبل أن تنفد كلمات ربي ... ... ... ... | ١٠٩ ك | الكهف | ١٨ |
| | يا زكريا إنا نبشرك بغلام اسمه يحيى لم نجعل له من قبل سميا | ٧ ك | مـريم | ١٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَبْلُ | : وقد خلقتك من قبل ولم تك شيئا ... ... ... ... | ٩ | ك مـريم | ١٩ |
| | قالت يا ليتنى مت قبل هذا وكنت نسيا منسيا ... ... | ٢٣ | ك « | ١٩ |
| | أو لا يذكر الإنسان أنا خلقناه من قبل ولم يك شيئا | ٦٧ | ك « | ١٩ |
| | قال آمنتم له قبـل أن آذن لكم ... ... ... ... ... | ٧١ | ك طـه | ٢٠ |
| | ولقـد قال لهم هرون من قبل يا قوم إنما فتنتم به ... | ٩٠ | ك « | ٢٠ |
| | ولا تعجل بالقرآن من قبل أن يقضى إليك وحيه ... | ١١٤ | ك « | ٢٠ |
| | ولقد عهدنا إلى آدم من قبل فنسى ولم نجد له عزما... | ١١٥ | ك « | ٢٠ |
| | فاصبر على ما يقولون وسبح بحمد ربك قبل طلوع الشمس | ١٣٠ | م « | ٢٠ |
| | وقبل غروبها ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٣٠ | م « | ٢٠ |
| | فتتبع آياتك من قبل أن نذل ونخزى ... ... ... ... | ١٣٤ | ك « | ٢٠ |
| | ولقد آتينا إبراهيم رشده من قبل وكنا به عالمين ... ... | ٥١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ونوحا إذ نادى من قبل فاستجبنا له... ... ... ... | ٧٦ | ك « | ٢١ |
| | هو سماكم المسلمين من قبل وفى هذا... ... ... ... | ٧٨ | م الحـج | ٢٢ |
| | لقد وعدنا نحن وآباؤنا هذا من قبل ... ... ... ... | ٨٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | من قبل صلاة الفجر وحين تضعون ثيابكم من الظهيرة | | | |
| | ومن بعد صلاة العشاء ... ... ... ... ... ... | ٥٨ | م النـور | ٢٤ |
| | قال آمنتم له قبل أن آذن لكم إنه لكبيركم الذى علمكم السحر | ٤٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | قال يأيها الملأ أيكم يأتينى بعرشها قبل أن يأتونى مسلمين | ٣٨ | ك النمـل | ٢٧ |
| | قال عفريت من الجن أنا آتيك به أن تقوم من مقامك | ٣٩ | ك « | ٢٧ |
| | أنا آتيك به قبل أن يرتد إليك طرفك ... ... ... | ٤٠ | ك « | ٢٧ |
| | قال يا قوم لم تستعجلون بالسيئة قبل الحسنة ... ... | ٤٦ | ك « | ٢٧ |
| | لقد وعدنا هذا نحن وآباؤنا من قبل ... ... ... ... | ٦٨ | ك « | ٢٧ |
| | وحرمنا عليـه المراضع من قبل ... ... ... ... ... | ١٢ | ك القصص | ٢٨ |
| | أو لم يكفروا بما أوتى موسى من قبل... ... ... ... | ٤٨ | ك « | ٢٨ |
| | لله الأمر من قبل ومن بعد ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك الـروم | ٣٠ |
| | قل سيروا فى الأرض فانظروا كيف كان عاقبة الذين من قبل | ٤٢ | ك « | ٣٠ |
| | فأقم وجهك للدين القيم من قبل أن يأتى يوم لا مرد له | | | |
| | من الله ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك « | ٣٠ |
| | وإن كانوا من قبل أن ينزل عليهم من قبله لمبلسين ... | ٤٩ | ك « | ٣٠ |
| | ولقد كانوا عاهدوا الله من قبل لا يولون الأدبار ... | ١٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | سنة الله فى الذين خلوا من قبل وكان أمر الله قدرا مقدورا | ٣٨ | م « | ٣٣ |
| | ثم طلقتموهن من قبل أن تمسوهن فما لكم عليهن من عدة | ٤٩ | م « | ٣٣ |
| | سنة الله فى الذين خلوا من قبل وإن تجد لسنة الله تبديلا | ٦٢ | م « | ٣٣ |
| | وقد كفروا به من قبل ويقذفون بالغيب من مكان بعيد | ٥٣ | ك سـبأ | ٣٤ |
| | وحيل بينهم وبين ما يشتهون كما فعل بأشياعهم من قبل | ٥٤ | ك « | ٣٤ |
| | وقالوا ربنا عجل لنا قطنا قبل يوم الحساب ... ... | ١٦ | ك ص | ٣٨ |
| | ثم إذا خوله نعمة منه نسى ما كان يدعوا إليه من قبل | ٨ | ك الـزمر | ٣٩ |
| | وأنيبوا إلى ربكم وأسلموا له من قبل أن يأتيكم العذاب | ٥٤ | م « | ٣٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَبْلُ | : واتبعوا أحسن ما أنزل إليكم من ربكم من قبل أن | | | |
| | يأتيكم العذاب بغتة ... ... ... ... ... ... ... | ٥٥ | ك الـزمر | ٣٩ |
| | ولقد جاءكم يوسف من قبل بالبينات فما زلتم فى شك | ٣٤ | ك غافـر | ٤٠ |
| | ثم لتكونوا شيوخا ومنكم من يتوفى من قبل ... ... | ٦٧ | ك « | ٤٠ |
| | قالوا ضلوا عنا بل لم نكن ندعوا من قبل شيئا... ... | ٧٤ | ك « | ٤٠ |
| | وضل عنهم ما كانوا يدعون من قبل وظنوا ما لهم من محيص | ٤٨ | ك فصلت | ٤١ |
| | استجيبوا لربكم من قبل أن يأتى يوم لا مرد له من الله | ٤٧ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ائتونى بكتاب من قبل هذا أو أثارة من علم إن كنتم صادقين | ٤ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | قل لن تتبعونا كذلكم قال الله من قبل ... ... ... | ١٥ | م الفتـح | ٤٨ |
| | وإن تتولوا كما توليتم من قبل يعذبكم عذابا أليما ... | ١٦ | م « | ٤٨ |
| | سنة الله التى قد خلت من قبل ولن تجد لسنة الله تبديلا | ٢٣ | م « | ٤٨ |
| | فاصبر على ما يقولون وسبح بحمد ربك قبل طلوع الشمس | ٣٩ | ك قـ | ٥٠ |
| | وقبل الغروب ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك « | ٥٠ |
| | آخذين ما آتاهم ربهم إنهم كانوا قبـل ذلك محسنين | ١٦ | ك الذاريات | ٥١ |
| | وقوم نوح من قبل إنهم كانوا قوما فاسقين ... ... | ٤٦ | ك « | ٥١ |
| | قالوا إنا كنا قبل فى أهلنا مشفقين ... ... ... ... | ٢٦ | ك الطـور | ٥٢ |
| | إنا كنا من قبل ندعوه إنه هو البر الرحيم ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٥٢ |
| | وقوم نوح من قبل إنهم كانوا هم أظلم وأطغى... ... | ٥٢ | ك النجـم | ٥٣ |
| | إنهم كانوا قبل ذلك مترفين ... ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك الواقعـة | ٥٦ |
| | لا يستوى منكم من أنفق من قبل الفتح وقاتل... ... | ١٠ | م الحـديد | ٥٧ |
| | ولا يكونوا كالذين أوتوا الكتاب من قبل ... ... ... | ١٦ | م « | ٥٧ |
| | ما أصاب من مصيبة فى الأرض ولا فى أنفسكم | | | |
| | إلا فى كتاب من قبل أن نبرأها ... ... ... ... | ٢٢ | م « | ٥٧ |
| | ثم يعودون لما قالوا فتحرير رقبة من قبل أن يتماسا | ٣ | م المجادلة | ٥٨ |
| | فمن لم يجد فصيام شهرين متتابعين من قبل أن يتماسا | ٤ | م « | ٥٨ |
| | وإن كانوا من قبل لفى ضلال مبين ... ... ... ... | ٢ | م الجمعـة | ٦٢ |
| | وأنفقوا من ما رزقناكم من قبل أن يأتى أحدكم الموت | ١٠ | م المنافقون | ٦٣ |
| | ألم يأتكم نبأ الذين كفروا من قبل فذاقوا وبال أمرهم | ٥ | م التغـابن | ٦٤ |
| | أن أنذر قومك من قبل أن يأتيهم عذاب أليم... ... | ١ | ك نـوح | ٧١ |
| قَبْلِكَ | : والذين يؤمنون بما أنزل إليك وما أنزل من قبلك | ٤ | م البقـرة | ٢ |
| | (٣٢) فإن كذبوك فقد كذب رسل من قبلك جاءو بالبينات | ١٨٤ | م آل عمران | ٣ |
| | ألم تر إلى الذين يزعمون أنهم آمنوا بما أنزل إليك | | | |
| | وما أنزل من قبلك ... ... ... ... ... ... ... | ٦٠ | م النسـاء | ٤ |
| | والمؤمنون يؤمنون بما أنزل إليك وما أنزل من قبلك | ١٦٢ | م « | ٤ |
| | ولقد استهزىء برسل من قبلك ... ... ... ... ... | ١٠ | ك الأنعـام | ٦ |
| | ولقد كذبت رسل من قبلك فصبروا على ما كذبوا ... | ٣٤ | ك « | ٦ |
| | ولقد أرسلنا إلى أمم من قبلك فأخذناهم بالبأساء ... | ٤٢ | ك « | ٦ |
| | فسئل الذين يقرءون الكتاب من قبلك ... ... ... | ٩٤ | م يـونس | ١٠ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| قَبْلِكَ: | وما أرسلنا من قبلك إلا رجالا نوحى إليهم ... ... | ١٠٩ ك يوسف | ١٢ |
| | ولقد استهزئ برسل من قبلك فأمليت للذين كفروا | ٣٢ م الرعد | ١٣ |
| | ولقد أرسلنا رسلا من قبلك وجعلنا لهم أزواجا وذرية | ٣٨ م « | ١٣ |
| | ولقد أرسلنا من قبلك فى شيع الأولين ... ... ... | ١٠ ك الحجر | ١٥ |
| | وما أرسلنا من قبلك إلا رجالا نوحى إليهم ... ... | ٤٣ ك النحل | ١٦ |
| | تالله لقد أرسلنا إلى أمم من قبلك فزين لهم الشيطان أعمالهم | ٦٣ ك « | ١٦ |
| | سنة من قد أرسلنا قبلك من رسلنا ... ... ... ... | ٧٧ م الإسراء | ١٧ |
| | وما أرسلنا قبلك إلا رجالا نوحى إليهم ... ... ... | ٧ ك الأنبياء | ٢١ |
| | وما أرسلنا من قبلك من رسول إلا نوحى إليه... ... | ٢٥ ك « | ٢١ |
| | وما جعلنا لبشر من قبلك الخلد ... ... ... ... | ٣٤ ك « | ٢١ |
| | ولقد استهزئ برسل من قبلك ... ... ... ... ... | ٤١ ك « | ٢١ |
| | وما أرسلنا من قبلك من رسول ولا نبى إلا إذا تمنى | | |
| | ألقى الشيطان فى أمنيته ... ... ... ... ... ... | ٥٢ م الحج | ٢٢ |
| | وما أرسلنا قبلك من المرسلين إلا إنهم ليأكلون الطعام | ٢٠ ك الفرقان | ٢٥ |
| | لتنذر قوما ما أتاهم من نذير من قبلك لعلهم يتذكرون | ٤٦ ك القصص | ٢٨ |
| | ولقد أرسلنا من قبلك رسلا إلى قومهم فجاءوهم بالبينات | ٤٧ ك الروم | ٣٠ |
| | لتنذر قوما ما أتاهم من نذير من قبلك لعلهم يهتدون | ٣ ك السجدة | ٣٢ |
| | وما أرسلنا إليهم قبلك من نذير ... ... ... ... ... | ٤٤ ك سبأ | ٣٤ |
| | وإن يكذبوك فقد كذبت رسل من قبلك ... ... ... | ٤ ك فاطر | ٣٥ |
| | ولقد أوحى إليك وإلى الذين من قبلك ... ... ... | ٦٥ ك الزمر | ٣٩ |
| | ولقد أرسلنا رسلا من قبلك منهم من قصصنا عليك | ٧٨ ك غافر | ٤٠ |
| | ما يقال لك إلا ما قد قيل للرسل من قبلك ... ... | ٤٣ ك فصلت | ٤١ |
| | كذلك يوحى إليك وإلى الذين من قبلك الله العزيز الحكيم | ٣ ك الشورى | ٤٢ |
| | وكذلك ما أرسلنا من قبلك فى قرية من نذير إلا قال مترفوها | ٢٣ ك الزخرف | ٤٣ |
| | وسئل من أرسلنا من قبلك من رسلنا ... ... ... ... | ٤٥ ك « | ٤٣ |
| قَبْلِكُمْ: | اعبدوا ربكم الذى خلقكم والذين من قبلكم لعلكم تتقون | ٢١ م البقرة | ٢ |
| (١٨) | كتب عليكم الصيام كما كتب على الذين من قبلكم ... | ١٨٣ م « | ٢ |
| | أم حسبتم أن تدخلوا الجنة ولما يأتكم مثل الذين | | |
| | خلوا من قبلكم... ... ... ... ... ... ... ... | ٢١٤ م « | ٢ |
| | قد خلت من قبلكم سنن فسيروا فى الأرض فانظروا | ١٣٧ م آل عمران | ٣ |
| | ولتسمعن من الذين أوتوا الكتاب من قبلكم ومن الذين | | |
| | أشركوا أذى كثيرا ... ... ... ... ... ... ... | ١٨٦ م « | ٣ |
| | يريد الله ليبين لكم ويهديكم سنن الذين من قبلكم ... | ٢٦ م النساء | ٤ |
| | ولقد وصينا الذين أوتوا الكتاب من قبلكم وإياكم | | |
| | أن اتقوا الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٣١ م « | ٤ |
| | والمحصنات من الذين أوتوا الكتاب من قبلكم ... | ٥ م المائدة | ٥ |
| | لا تتخذوا الذين اتخذوا دينكم هزوا ولعبا من الذين | | |
| | أوتوا الكتاب من قبلكم والكفار أولياء... ... | ٥٧ م « | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| قَبْلِكُمْ: | قد سألها قوم من قبلكم ثم أصبحوا بها كافرين ... | ١٠٢ م المائدة | ٥ |
| | قال ادخلوا فى أمم قد خلت من قبلكم من الجن والإنس | | |
| | فى النار ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٨ ك الأعراف | ٧ |
| | كالذين من قبلكم كانوا أشد منكم قوة وأكثر أموالا | ٦٩ م التوبة | ٩ |
| | فاستمتعتم بخلاقكم كما استمتع الذين من قبلكم بخلاقهم | ٦٩ م « | ٩ |
| | ولقد أهلكنا القرون من قبلكم لما ظلموا ... ... ... | ١٣ ك يونس | ١٠ |
| | فلولا كان من القرون من قبلكم أولوا بقية ينهون | | |
| | عن الفساد فى الأرض ... ... ... ... ... ... | ١١٦ ك هود | ١١ |
| | ألم يأتكم نبأ الذين من قبلكم قوم نوح وعاد وثمود ... | ٩ ك إبراهيم | ١٤ |
| | ومثلا من الذين خلوا من قبلكم ... ... ... ... ... | ٣٤ م النور | ٢٤ |
| | وإن تكذبوا فقد كذب أمم من قبلكم... ... ... ... | ١٨ ك العنكبوت | ٢٩ |
| قَبْلِنَا: | ربنا ولا تحمل علينا إصرا كما حملته على الذين من قبلنا | ٢٨٦ م البقرة | ٢ |
| (٢) | أن تقولوا إنما أنزل الكتاب على طائفتين من قبلنا | ١٥٦ ك الأنعام | ٦ |
| قَبْلِهِ: | واذكروه كما هداكم وإن كنتم من قبله لمن الضالين | ١٩٨ م البقرة | ٢ |
| (١٦) | وما محمد إلا رسول قد خلت من قبله الرسل ... ... | ١٤٤ م آل عمران | ٣ |
| | ما المسيح ابن مريم إلا رسول قد خلت من قبله الرسل | ٧٥ م المائدة | ٥ |
| | فقد لبثت فيكم عمرا من قبله أفلا تعقلون ... ... ... | ١٦ ك يونس | ١٠ |
| | ويتلوه شاهد منه ومن قبله كتاب موسى إماما ورحمة | ١٧ م هود | ١١ |
| | وإن كنت من قبله لمن الغافلين ... ... ... ... ... | ٣ م يوسف | ١٢ |
| | إن الذين أوتوا العلم من قبله إذا يتلى عليهم يخرون | | |
| | للأذقان سجدا... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٧ ك الإسراء | ١٧ |
| | ولو أنا أهلكناهم بعذاب من قبله لقالوا ربنا لولا | | |
| | أرسلت إلينا رسولا... ... ... ... ... ... ... | ١٣٤ ك طه | ٢٠ |
| | الذين آتيناهم الكتاب من قبله هم به يؤمنون... ... | ٥٢ م القصص | ٢٨ |
| | إنه الحق من ربنا إنا كنا من قبله مسلمين... ... ... | ٥٣ م « | ٢٨ |
| | أو لم يعلم أن الله قد أهلك من قبله من القرون | | |
| | من هو أشد منه قوة ... ... ... ... ... ... | ٧٨ ك « | ٢٨ |
| | وما كنت تتلوا من قبله من كتاب ولا تخطه بيمينك ... | ٤٨ ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وإن كانوا من قبل أن ينزل عليهم من قبله لمبلسين | ٤٩ ك الروم | ٣٠ |
| | أم آتيناهم كتابا من قبله فهم به مستمسكون ... ... | ٢١ ك الزخرف | ٤٣ |
| | ومن قبله كتاب موسى إماما ورحمة ... ... ... ... | ١٢ ك الأحقاف | ٤٦ |
| | وجاء فرعون ومن قبله والمؤتفكات بالخاطئة ... ... | ٩ ك الحاقة | ٦٩ |
| قَبْلِهَا: | كذلك أرسلناك فى أمة قد خلت من قبلها أمم ... | ٣٠ م الرعد | ١٣ |
| (٢) | وأوتينا العلم من قبلها وكنا مسلمين ... ... ... ... | ٤٢ ك النمل | ٢٧ |
| قَبْلِهِمْ: | كذلك قال الذين من قبلهم مثل قولهم... ... ... | ١١٨ م البقرة | ٢ |
| (٥٢) | كدأب آل فرعون والذين من قبلهم كذبوا بآياتنا | ١١ م آل عمران | ٣ |
| | ألم يروا كم أهلكنا من قبلهم من قرن مكناهم فى الأرض | ٦ ك الأنعام | ٦ |
| | كذلك كذب الذين من قبلهم حتى ذاقوا بأسنا ... | ١٤٨ ك « | ٦ |
| | كدأب آل فرعون والذين من قبلهم كفروا بآيات الله | ٥٢ م الأنفال | ٨ |
| | كدأب آل فرعون والذين من قبلهم كذبوا بآيات ربهم | ٥٤ م « | ٨ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَبْلِهِمْ | : ألم يأتهم نبأ الذين من قبلهم قوم نوح وعاد وثمود | ٧٠ | م التوبة | ٩ |
| | كذلك كذب الذين من قبلهم فانظر كيف كان عاقبة الظالمين | ٣٩ | ك يونس | ١٠ |
| | فهل ينتظرون إلا مثل أيام الذين خلوا من قبلهم ... | ١٠٢ | ك « | ١٠ |
| | أفلم يسيروا فى الأرض فينظروا كيف كان عاقبة الذين من قبلهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٩ | ك يوسف | ١٢ |
| | وقد خلت من قبلهم المثلات ... ... ... ... ... | ٦ | م الرعد | ١٣ |
| | وقد مكر الذين من قبلهم فلله المكر جميعا ... ... ... | ٤٢ | م « | ١٣ |
| | قد مكر الذين من قبلهم فأتى الله بنيانهم من القواعد | ٢٦ | ك النحل | ١٦ |
| | كذلك فعل الذين من قبلهم وما ظلمهم الله ... ... | ٣٣ | ك « | ١٦ |
| | كذلك فعل الذين من قبلهم فهل على الرسل إلا البلاغ | ٣٥ | ك « | ١٦ |
| | وكم أهلكنا قبلهم من قرن هم أحسن أثاثا ورئيا ... | ٧٤ | ك مريم | ١٩ |
| | وكم أهلكنا قبلهم من قرن هل تحس منهم من أحد ... | ٩٨ | ك « | ١٩ |
| | أفلم يهد لهم كم أهلكنا قبلهم من القرون يمشون فى مساكنهم | ١٢٨ | ك طه | ٢٠ |
| | ما آمنت قبلهم من قرية أهلكناها أفهم يؤمنون ... | ٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وإن يكذبوك فقد كذبت قبلهم قوم نوح وعاد وثمود | ٤٢ | م الحج | ٢٢ |
| | ليستخلفنهم فى الأرض كما استخلف الذين من قبلهم | ٥٥ | م النور | ٢٤ |
| | فليستأذنوا كما استأذن الذين من قبلهم ... ... ... | ٥٩ | م « | ٢٤ |
| | ولقد فتنا الذين من قبلهم ... ... ... ... ... | ٣ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | أو لم يسيروا فى الأرض فينظروا كيف كان عاقبة الذين من قبلهم ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك الروم | ٣٠ |
| | أو لم يهد لهم كم أهلكنا من قبلهم من القرون يمشون فى مساكنهم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك السجدة | ٣٢ |
| | وكذب الذين من قبلهم وما بلغوا معشار ما آتيناهم... | ٤٥ | ك سبأ | ٣٤ |
| | وإن يكذبوك فقد كذب الذين من قبلهم... ... ... | ٢٥ | ك فاطر | ٣٥ |
| | أو لم يسيروا فى الأرض فينظروا كيف كان عاقبة الذين من قبلهم ... ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك « | ٣٥ |
| | ألم يروا كم أهلكنا قبلهم من القرون أنهم إليهم لا يرجعون | ٣١ | ك يس | ٣٦ |
| | ولقد ضل قبلهم أكثر الأولين ... ... ... ... ... | ٧١ | ك الصافات | ٣٧ |
| | كم أهلكنا من قبلهم من قرن فنادوا ولات حين مناص | ٣ | ك ص | ٣٨ |
| | كذبت قبلهم قوم نوح وعاد وفرعون ذو الأوتاد ... | ١٢ | ك « | ٣٨ |
| | كذب الذين من قبلهم فأتاهم العذاب من حيث لا يشعرون | ٢٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| | قد قالها الذين من قبلهم فما أغنى عنهم ما كانوا يكسبون | ٥٠ | ك « | ٣٩ |
| | كذبت قبلهم قوم نوح والأحزاب من بعدهم ... ... | ٥ | ك غافر | ٤٠ |
| | فينظروا كيف كان عاقبة الذين كانوا من قبلهم ... | ٢١ | ك « | ٤٠ |
| | فينظروا كيف كان عاقبة الذين من قبلهم... ... ... | ٨٢ | ك « | ٤٠ |
| | وحق عليهم القول فى أمم قد خلت من قبلهم من الجن والإنس | ٢٥ | ك فصلت | ٤١ |
| | ولقد فتنا قبلهم قوم فرعون وجاءهم رسول كريم ... | ١٧ | ك الدخان | ٤٤ |
| | أهم خير أم قوم تبع والذين من قبلهم ... ... ... | ٣٧ | ك « | ٤٤ |
| | أولئك الذين حق عليهم القول فى أمم قد خلت من قبلهم من الجن والإنس... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | فينظروا كيف كان عاقبة الذين من قبلهم ... ... | ١٠ | م محمد | ٤٧ |
| | كذبت قبلهم قوم نوح وأصحاب الرس وثمود ... ... | ١٢ | ك ق | ٥٠ |
| | وكم أهلكنا قبلهم من قرن هم أشد منهم بطشا ... ... | ٣٦ | ك « | ٥٠ |
| | كذلك ما أتى الذين من قبلهم من رسول إلا قالوا ساحر أو مجنون ... ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك الذاريات | ٥١ |
| | كذبت قبلهم قوم نوح فكذبوا عبدنا وقالوا مجنون وازدجر | ٩ | ك القمر | ٥٤ |
| | فيهن قاصرات الطرف لم يطمثهن إنس قبلهم ولا جان | ٥٦ | م الرحمن | ٥٥ |
| | لم يطمثهن إنس قبلهم ولا جان ... ... ... ... ... | ٧٤ | م « | ٥٥ |
| | كبتوا كما كبت الذين من قبلهم ... ... ... ... ... | ٥٠ | م المجادلة | ٥٨ |
| | والذين تبوءوا الدار والإيمان من قبلهم يحبون من هاجر إليهم... ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | م الحشر | ٥٩ |
| | كمثل الذين من قبلهم قريبا ذاقوا وبال أمرهم ... | ١٥ | م « | ٥٩ |
| | ولقد كذب الذين من قبلهم فكيف كان نكير ... | ١٨ | ك الملك | ٦٧ |
| قَبْلِي | : قل قد جاءكم رسل من قبلى بالبينات وبالذى قلتم ... | ١٨٣ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | قل هاتوا برهانكم هذا ذكر من معى وذكر من قبلى ... | ٢٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | أتعداننى أن أخرج وقد خلت القرون من قبلى... ... | ١٧ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| يَقْتُرُوا | : والذين إذا أنفقوا لم يسرفوا ولم يقتروا ... ... | ٦٧ | ك الفرقان | ٢٥ |
| قَتَرٌ | : ولا يرهق وجوههم قتر ولا ذلة ... ... ... ... | ٢٦ | ك يونس | ١٠ |
| قَتَرَةٌ | : ووجوه يومئذ عليها غبرة ، ترهقها قترة ... ... ... | ٤١ | ك عبس | ٨٠ |
| قَتُورًا | : إذا لأمسكتم خشية الإنفاق وكان الإنسان قتورا | ١٠٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| الْمُقْتِرِ | : ومتعوهن على الموسع قدره وعلى المقتر قدره ... | ٢٣٦ | م البقرة | ٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| قَتَلَ | : فهزموهم بإذن الله وقتل داود جالوت وآتاه الله الملك | ٢٥١ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | ومن قتل مؤمنا خطأ فتحرير رقبة مؤمنة ... ... ... | ٩٢ | م النساء | ٤ |
| | من قتل نفسا بغير نفس أو فساد فى الأرض .. ... | ٣٢ | م المائدة | ٥ |
| | فكأنما قتل الناس جميعا ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | م « | ٥ |
| | ومن قتله منكم متعمدا فجزاء مثل ما قتل من النعم ... | ٩٥ | م « | ٥ |
| قَتَلْتُ | : قال أقتلت نفسا زكية بغير نفس لقد جئت شيئا نكرا | ٧٤ | ك الكهف | ١٨ |
| (٤) | وقتلت نفسا فنجيناك من الغم وفتناك فتونا... ... ... | ٤٠ | ك طه | ٢٠ |
| | قال يا موسى أتريد أن تقتلنى كما قتلت نفسا بالأمس | ١٩ | ك القصص | ٢٨ |
| | قال رب إنى قتلت منهم نفسا فأخاف أن يقتلون ... | ٣٣ | ك « | ٢٨ |
| قَتَلْتُمْ | : وإذ قتلتم نفسا فادارأتم فيها والله مخرج ما كنتم تكتمون | ٧٢ | م البقرة | ٢ |
| قَتَلْتُمُوهُمْ | : فلم قتلتموهم إن كنتم صادقين ... ... ... ... | ١٨٣ | م آل عمران | ٣ |
| قَتَلْنَا | : وقولهم إنا قتلنا المسيح عيسى ابن مريم رسول الله... | ١٥٧ | م النساء | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَتَلَهُ | : فطوعت له نفسه قتل أخيه فقتله فأصبح من الخاسرين | ٣٠ | م المائدة | ٥ |
| (٣) | ومن قتله منكم متعمدا فجزاء مثل ما قتل من النعم ... | ٩٥ | م « | ٥ |
| | فانطلقا حتى إذا لقيا غلاما فقتله ... ... ... ... ... | ٧٤ | ك الكهف | ١٨ |
| قَتَلَهُمْ | : فلم تقتلوهم ولكن الله قتلهم ... ... ... ... ... | ١٧ | م الأنفال | ٨ |
| قَتَلُوا | : قد خسر الذين قتلوا أولادهم سفها بغير علم ... ... | ١٤٠ | ك الأنعام | ٦ |
| قَتَلُوهُ | : وما قتلوه وما صلبوه ولكن شبه لهم ... ... ... ... | ١٥٧ | م النساء | ٤ |
| (٢) | مالهم به من علم إلا اتباع الظن وما قتلوه يقينا ... ... | ١٥٧ | م « | ٤ |
| أَقْتُلْ | : وقال فرعون ذروني أقتل موسى وليدع ربه ... ... | ٢٦ | ك غافر | ٤٠ |
| لَأَقْتُلَنَّكَ | : ما أنا بباسط يدي إليك لأقتلك ... ... ... | ٢٨ | م المائدة | ٥ |
| لَأَقْتُلَنَّكَ | : فتقبل من أحدهما ولم يتقبل من الآخر قال لأقتلنك | ٢٧ | م « | ٥ |
| تَقْتُلَنِي | : لئن بسطت إليّ يدك لتقتلني ما أنا بباسط يدي | | | |
| (٢) | إليك لأقتلك ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م « | ٥ |
| | قال يا موسى أتريد أن تقتلني كما قتلت نفسا بالأمس | ١٩ | ك القصص | ٢٨ |
| تَقْتُلُوا | : ولا تقتلوا أنفسكم إن الله كان بكم رحيما ... ... | ٢٩ | م النساء | ٤ |
| (٧) | يا أيها الذين آمنوا لا تقتلوا الصيد وأنتم حرم ... ... | ٩٥ | م المائدة | ٥ |
| | ولا تقتلوا أولادكم من إملاق نحن نرزقكم وإياهم | ١٥١ | م الأنعام | ٦ |
| | ولا تقتلوا النفس التي حرم الله إلا بالحق ... ... ... | ١٥١ | م « | ٦ |
| | قال قائل منهم لا تقتلوا يوسف وألقوه في غيابة الجب | ١٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | ولا تقتلوا أولادكم خشية إملاق نحن نرزقهم وإياكم | ٣١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ولا تقتلوا النفس التي حرم الله إلا بالحق ... ... ... | ٣٣ | م « | ١٧ |
| تَقْتُلُونَ | : ثم أنتم هؤلاء تقتلون أنفسكم وتخرجون فريقا منكم | ٨٥ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | أستكبرتم ففريقا كذبتم وفريقا تقتلون ... ... ... | ٨٧ | م « | ٢ |
| | قل فلم تقتلون أنبياء الله من قبل إن كنتم مؤمنين ... | ٩١ | م « | ٢ |
| | وقذف في قلوبهم الرعب فريقا تقتلون وتأسرون فريقا | ٢٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | أتقتلون رجلا أن يقول ربي الله وقد جاءكم بالبينات | ٢٨ | ك غافر | ٤٠ |
| تَقْتُلُوهُ | : لا تقتلوه عسى أن ينفعنا أو نتخذه ولدا ... ... | ٩ | ك القصص | ٢٨ |
| تَقْتُلُوهُمْ | : فلم تقتلوهم ولكن الله قتلهم ... ... ... ... ... | ١٧ | م الأنفال | ٨ |
| يَقْتُلَ | : وما كان لمؤمن أن يقتل مؤمنا إلا خطأ ... ... ... | ٩٢ | م النساء | ٤ |
| (٢) | ومن يقتل مؤمنا متعمدا فجزاؤه جهنم خالدا فيها ... | ٩٣ | م « | ٤ |
| يَقْتُلْنَ | : ولا يسرقن ولا يزنين ولا يقتلن أولادهن ... ... | ١٢ | م الممتحنة | ٦٠ |
| يَقْتُلُوكَ | : وإذ يمكر بك الذين كفروا ليثبتوك أو يقتلوك | | | |
| (٢) | أو يخرجوك ... ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك الأنفال | ٨ |
| | قال يا موسى إن الملأ يأتمرون بك ليقتلوك ... ... | ٢٠ | ك القصص | ٢٨ |
| يَقْتُلُونَ | : ذلك بأنهم كانوا يكفرون بآيات الله ويقتلون | | | |
| (٧) | النبيين بغير الحق ... ... ... ... ... ... | ٦١ | م البقرة | ٢ |
| | إن الذين يكفرون بآيات الله ويقتلون النبيين بغير حق | ٢١ | م آل عمران | ٣ |
| | ويقتلون الذين يأمرون بالقسط من الناس فبشرهم | | | |
| | بعذاب أليم ... ... ... ... ... ... ... | ٢١ | م « | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَقْتُلُونَ | : ذلك بأنهم كانوا يكفرون بآيات الله ويقتلون | | | |
| | الأنبياء بغير حق ... ... ... ... ... ... ... | ١١٢ | م آل عمران | ٣ |
| | فريقا كذبوا وفريقا يقتلون ... ... ... ... ... ... | ٧٠ | م المائدة | ٥ |
| | يقاتلون في سبيل الله فيقتلون ويقتلون ... ... ... | ١١١ | م التوبة | ٩ |
| | ولا يقتلون النفس التي حرم الله إلا بالحق ولا يزنون | ٦٨ | م الفرقان | ٢٥ |
| يَقْتُلُونِ | : ولهم عليّ ذنب فأخاف أن يقتلون ... ... ... | ١٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| (٢) | قال رب إني قتلت منهم نفسا فأخاف أن يقتلون ... | ٣٣ | ك القصص | ٢٨ |
| يَقْتُلُونَنِي | : إن القوم استضعفوني وكادوا يقتلونني ... ... | ١٥٠ | ك الأعراف | ٧ |
| اقْتُلُوا | : فتوبوا إلى بارئكم فاقتلوا أنفسكم ... ... ... ... | ٥٤ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | ولو أنا كتبنا عليهم أن اقتلوا أنفسكم أو اخرجوا من دياركم | | | |
| | ما فعلوه إلا قليل منهم ... ... ... ... ... ... | ٦٦ | م النساء | ٤ |
| | فإذا انسلخ الأشهر الحرم فاقتلوا المشركين حيث وجدتموهم | ٥ | م التوبة | ٩ |
| | اقتلوا يوسف أو اطرحوه أرضا يخل لكم وجه أبيكم | ٩ | ك يوسف | ١٢ |
| | فلما جاءهم بالحق من عندنا قالوا اقتلوا أبناء الذين آمنوا معه | ٢٥ | ك غافر | ٤٠ |
| اقْتُلُوهُ | : فما كان جواب قومه إلا أن قالوا اقتلوه أو حرقوه | ٢٤ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| اقْتُلُوهُمْ | : واقتلوهم حيث ثقفتموهم ... ... ... ... ... | ١٩١ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | فإن قاتلوكم فاقتلوهم كذلك جزاء الكافرين ... ... ... | ١٩١ | م « | ٢ |
| | فإن تولوا فخذوهم واقتلوهم حيث وجدتموهم ... ... | ٨٩ | م النساء | ٤ |
| | فخذوهم واقتلوهم حيث ثقفتموهم ... ... ... ... | ٩١ | م « | ٤ |
| قُتِلَ | : أفإن مات أو قتل انقلبتم على أعقابكم ... ... ... | ١٤٤ | م آل عمران | ٣ |
| (٧) | ومن قتل مظلوما فقد جعلنا لوليه سلطانا ... ... ... | ٣٣ | م الإسراء | ١٧ |
| | قتل الخراصون . الذين هم في غمرة ساهون ... ... | ١٠ | ك الذاريات | ٥١ |
| | إنه فكر وقدر . فقتل كيف قدر ... ... ... ... ... | ١٩ | ك المدثر | ٧٤ |
| | ثم قتل كيف قدر ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك « | ٧٤ |
| | قتل الإنسان ما أكفره ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك عبس | ٨٠ |
| | قتل أصحاب الأخدود ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك البروج | ٨٥ |
| قُتِلَتْ | : وإذا الموءودة سئلت . بأي ذنب قتلت ... ... | ٩ | ك التكوير | ٨١ |
| قُتِلْتُمْ | : ولئن قتلتم في سبيل الله أو متم لمغفرة من الله ورحمة | | | |
| (٢) | خير مما يجمعون ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٧ | م آل عمران | ٣ |
| | ولئن متم أو قتلتم لإلى الله تحشرون ... ... ... ... | ١٥٨ | م « | ٣ |
| قُتِلْنَا | : يقولون لو كان لنا من الأمر شيء ما قتلنا ههنا ... | ١٥٤ | م « | ٣ |
| قُتِلُوا | : لو كانوا عندنا ما ماتوا وما قتلوا .. ... ... ... | ١٥٦ | م « | ٣ |
| (٦) | الذين قالوا لإخوانهم وقعدوا لو أطاعونا ما قتلوا | ١٦٨ | م « | ٣ |
| | ولا تحسبن الذين قتلوا في سبيل الله أمواتا ... ... | ١٦٩ | م « | ٣ |
| | وقاتلوا وقتلوا لأكفرن عنهم سيئاتهم ... ... ... | ١٩٥ | م « | ٣ |
| | والذين هاجروا في سبيل الله ثم قتلوا أو ماتوا ليرزقنهم الله | ٥٨ | م الحج | ٢٢ |
| | والذين قتلوا في سبيل الله فلن يضل أعمالهم ... ... | ٤ | م محمد | ٤٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يُقْتَلُ | : ولا تقولوا لمن يقتل فى سبيل الله أموات ... ... | ١٥٤ | م البقـرة | ٢ |
| (٢) | ومن يقاتل فى سبيل الله فيقتل أو يغلب فسوف نؤتيه أجرا عظيما ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٤ | م النسـاء | ٤ |
| يُقْتَلُونَ | : يقاتلون فى سبيل الله فيقتلون و يقتلون ... ... | ١١١ | م التـوبة | ٩ |
| سَنُقَتِّلُ | : قال سنقتل أبناءهم ونستحيي نساءهم ... ... ... | ١٢٧ | ك الأعراف | ٧ |
| يُقَتِّلُونَ | : يقتلون أبناءكم ويستحيون نساءكم... ... ... ... | ١٤١ | ك « | ٧ |
| قُتِّلُوا | : ملعونين أينما ثقفوا أخذوا وقتلوا تقتيلا... ... ... | ٦١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| يُقَتَّلُوا | : أن يقتلوا أو يصلبوا أو تقطع أيديهم وأرجلهم من خلاف ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | م المائدة | ٥ |
| قَاتَلَ | : وكأين من نبيّ قاتل معه ربيون كثير فما وهنوا (٢) لما أصابهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٦ | م آل عمران | ٣ |
| | لا يستوى منكم من أنفق من قبل الفتح وقاتل ... ... | ١٠ | م الحديد | ٥٧ |
| قَاتَلَكُمْ | : ولو قاتلكم الذين كفروا لولوا الأدبار ... ... | ٢٢ | م الفتـح | ٤٨ |
| قَاتَلَهُمُ | : قاتلهم الله أنى يؤفكون... ... ... ... ... ... | ٣٠ | م التـوبة | ٩ |
| (٢) | هم العدوّ فاحذرهم قاتلهم الله أنى يؤفكون ... ... | ٤ | م المنافقون | ٦٣ |
| قَاتَلُوا | : وقاتلوا وقتلوا لأكفرن عنهم سيئاتهم ... ... ... | ١٩٥ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | يسئلون عن أنبائكم ولو كانوا فيكم ما قاتلوا إلا قليلا | ٢٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | أولئك أعظم درجة من الذين أنفقوا من بعد وقاتلوا | ١٠ | م الحديد | ٥٧ |
| قَاتَلُوكُمْ | : فإن قاتلوكم فاقتلوهم كذلك جزاء الكافرين... ... | ١٩١ | م البقـرة | ٢ |
| (٣) | ولو شاء الله لسلطهم عليكم فلقاتلوكم ... ... ... ... | ٩٠ | م النسـاء | ٤ |
| | إنما ينهاكم الله عن الذين قاتلوكم فى الدين ... ... | ٩ | م الممتحنـة | ٦٠ |
| تُقَاتِلُ | : فئة تقاتل فى سبيل الله وأخرى كافرة ... ... ... | ١٣ | م آل عمران | ٣ |
| تُقَاتِلُوا | : قال هل عسيتم إن كتب عليكم القتال ألا تقاتلوا | ٢٤٦ | م البقـرة | ٢ |
| (٢) | فقل لن تخرجوا معى أبدا ولن تقاتلوا معى عدوا... | ٨٣ | م التـوبة | ٩ |
| تُقَاتِلُونَ | : وما لكم لا تقاتلون فى سبيل الله ... ... ... | ٧٥ | م النسـاء | ٤ |
| (٢) | ألا تقاتلون قوما نكثوا أيمانهم وهموا بإخراج الرسول | ١٣ | م التـوبة | ٩ |
| تُقَاتِلُونَهُمْ | : ستدعون إلى قوم أولى بأس شديد تقاتلونهم أو يسلمون... ... ... ... ... ... ... ... | ١٦ | م الفتـح | ٤٨ |
| تُقَاتِلُوهُمْ | : ولا تقاتلوهم عند المسجد الحرام حتى يقاتلوكم فيه | ١٩١ | م البقـرة | ٢ |
| نُقَاتِلْ | : إذ قالوا لنبيّ لهم ابعث لنا ملكا نقاتل فى سبيل الله | ٢٤٦ | م « | ٢ |
| (٢) | قالوا ومالنا ألا نقاتل فى سبيل الله وقد أخرجنا من ديارنا | ٢٤٦ | م « | ٢ |
| يُقَاتِلْ | : فليقاتل فى سبيل الله الذين يشرون الحياة الدنيا بالآخرة | ٧٤ | م النسـاء | ٤ |
| (٢) | ومن يقاتل فى سبيل الله فيقتل أو يغلب فسوف نؤتيه أجرا عظيما ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٤ | م « | ٤ |
| يُقَاتِلُوا | : حصرت صدورهم أن يقاتلوكم أو يقاتلوا قومهم | ٩٠ | م « | ٤ |
| يُقَاتِلُوكُمْ | : ولا تقاتلوهم عند المسجد الحرام حتى يقاتلوكم فيه | ١٩١ | م البقـرة | ٢ |
| (٥) | لن يضروكم إلا أذى وإن يقاتلوكم يولوكم الأدبار... | ١١١ | م آل عمران | ٣ |
| يُقَاتِلُوكُمْ | : حصرت صدورهم أن يقاتلوكم أو يقاتلوا قومهم | ٩٠ | م النسـاء | ٤ |
| | فإن اعتزلوكم فلم يقاتلوكم وألقوا إليكم السلم فما جعل الله لكم عليهم سبيلا ... ... ... ... ... ... | ٩٠ | م « | ٤ |
| | لا ينهاكم الله عن الذين لم يقاتلوكم فى الدين ولم يخرجوكم من دياركم أن تبروهم ... ... ... ... ... ... | ٨ | م الممتحنـة | ٦٠ |
| يُقَاتِلُونَ | : الذين آمنوا يقاتلون فى سبيل الله ... ... ... | ٧٦ | م النسـاء | ٤ |
| (٥) | والذين كفروا يقاتلون فى سبيل الطاغوت ... ... | ٧٦ | م « | ٤ |
| | يقاتلون فى سبيل الله فيقتلون و يقتلون ... ... ... | ١١١ | م التـوبة | ٩ |
| | إن الله يحب الذين يقاتلون فى سبيله صفا... ... ... | ٤ | م الصـف | ٦١ |
| | وآخرون يقاتلون فى سبيل الله ... ... ... ... ... | ٢٠ | م المزمـل | ٧٣ |
| يُقَاتِلُونَكُمْ | : وقاتلوا فى سبيل الله الذين يقاتلونكم ولا تعتدوا | ١٩٠ | م البقـرة | ٢ |
| (٤) | ولا يزالون يقاتلونكم حتى يردوكم عن دينكم إن استطاعوا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢١٧ | م « | ٢ |
| | وقاتلوا المشركين كافة كما يقاتلونكم كافة ... ... ... | ٣٦ | م التـوبة | ٩ |
| | لا يقاتلونكم جميعا إلا فى قرى محصنة أو من وراء جدر | ١٤ | م الحشـر | ٥٩ |
| قَاتِلْ | : فقاتل فى سبيل الله لا تكلف إلا نفسك ... ... | ٨٤ | م النسـاء | ٤ |
| قَاتِلَا | : فاذهب أنت وربك فقاتلا إنا ههنا قاعدون ... | ٢٤ | م المائدة | ٥ |
| قَاتِلُوا | : وقاتلوا فى سبيل الله الذين يقاتلونكم ولا تعتدوا | ١٩٠ | م البقـرة | ٢ |
| (٩) | وقاتلوا فى سبيل الله واعلموا أن الله سميع عليم... ... | ٢٤٤ | م « | ٢ |
| | وقيل لهم تعالوا قاتلوا فى سبيل الله أو ادفعوا ... | ١٦٧ | م آل عمران | ٣ |
| | فقاتلوا أولياء الشيطان إن كيد الشيطان كان ضعيفا... | ٧٦ | م النسـاء | ٤ |
| | فقاتلوا أئمة الكفر إنهم لا أيمان لهم لعلهم ينتهون | ١٢ | م التـوبة | ٩ |
| | قاتلوا الذين لا يؤمنون بالله ولا باليوم الآخر... ... | ٢٩ | م « | ٩ |
| | وقاتلوا المشركين كافة كما يقاتلونكم كافة ... ... ... | ٣٦ | م « | ٩ |
| | يأيها الذين آمنوا قاتلوا الذين يلونكم من الكفار ... | ١٢٣ | م « | ٩ |
| | فقاتلوا التى تبغى حتى تفىء إلى أمر الله ... ... ... | ٩ | م الحجرات | ٤٩ |
| قَاتِلُوهُمْ | : وقاتلوهم حتى لا تكون فتنة و يكون الدين لله ... | ١٩٣ | م البقـرة | ٢ |
| (٣) | وقاتلوهم حتى لا تكون فتنة و يكون الدين كله لله ... | ٣٩ | م الأنفـال | ٨ |
| | قاتلوهم يعذبهم الله بأيديكم ويخزهم و ينصركم عليهم | ١٤ | م التـوبة | ٩ |
| قُوتِلْتُمْ | : وإن قوتلتم لننصرنكم ... ... ... ... ... ... | ١١ | م الحشـر | ٥٩ |
| قُوتِلُوا | : ولئن قوتلوا لا ينصرونهم ... ... ... ... ... ... | ١٢ | م « | ٥٩ |
| يُقَاتَلُونَ | : أذن للذين يقاتلون بأنهم ظلموا ... ... ... ... | ٣٩ | م الحـج | ٢٢ |
| اقْتَتَلَ | : ولو شاء الله ما اقتتل الذين من بعدهم ... ... ... | ٢٥٣ | م البقـرة | ٢ |
| اقْتَتَلُوا | : ولو شاء الله ما اقتتلوا ولكن الله يفعل ما يريد | ٢٥٣ | م « | ٢ |
| (٢) | وإن طائفتان من المؤمنين اقتتلوا فأصلحوا بينهما ... | ٩ | م الحجرات | ٤٩ |
| يَقْتَتِلَانِ | : فوجد فيها رجلين يقتتلان ... ... ... ... ... | ١٥ | ك القصص | ٢٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **ٱلْقَتْلُ** | : وأخرجوهم من حيث أخرجوكم والفتنة أشد من القتل | ١٩١ | م البقـرة | ٢ |
| (٧) | وإخراج أهله منه أكبر عند الله والفتنة أكبر من القتل | ٢١٧ | م « | ٢ |
| | قل لو كنتم فى بيوتكم لبرز الذين كتب عليهم القتل | | | |
| | إلى مضاجعهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٤ | م آل عمران | ٣ |
| | فطوعت له نفسه قتل أخيه فقتله فأصبح من الخاسرين | ٣٠ | م المائدة | ٥ |
| | وكذلك زين لكثير من المشركين قتل أولادهم شركاؤهم | ١٣٧ | ك الأنعام | ٦ |
| | ومن قتل مظلوما فقد جعلنا لوليه سلطانا فلا يسرف | | | |
| | فى القتل ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | م الإسراء | ١٧ |
| | قل لن ينفعكم الفرار إن فررتم من الموت أو القتل ... | ١٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| **قَتْلِهِمُ** | : سنكتب ما قالوا وقتلهم الأنبياء بغير حق ... ... | ١٨١ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | فبما نقضهم ميثاقهم وكفرهم بآيات الله وقتلهم الأنبياء | | | |
| | بغير حق ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٥ | م النساء | ٤ |
| | نحن نرزقهم وإياكم إن قتلهم كان خطئا كبيرا ... | ٣١ | ك الإسراء | ١٧ |
| **تَقْتِيلًا** | : ملعونين أينما ثقفوا أخذوا وقتلوا تقتيلا ... ... | ٦١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| **ٱلْقِتَالُ** | : كتب عليكم القتال وهو كره لكم ... ... ... ... | ٢١٦ | م البقـرة | ٢ |
| (١٢) | يسئلونك عن الشهر الحرام قتال فيه ... ... ... ... | ٢١٧ | م « | ٢ |
| | قل قتال فيه كبير ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢١٧ | م « | ٢ |
| | قال هل عسيتم إن كتب عليكم القتال ألا تقاتلوا ... | ٢٤٦ | م « | ٢ |
| | فلما كتب عليهم القتال تولوا إلا قليلا منهم ... ... | ٢٤٦ | م « | ٣ |
| | وإذ غدوت من أهلك تبوئ المؤمنين مقاعد للقتال | ١٢١ | م آل عمران | ٣ |
| | فلما كتب عليهم القتال إذا فريق منهم يخشون الناس | ٧٧ | م النساء | ٤ |
| | وقالوا ربنا لم كتبت علينا القتال لولا أخرتنا إلى أجل قريب | ٧٧ | م « | ٤ |
| | ومن يولهم يومئذ دبره إلا متحرفا لقتال أو متحيزا إلى فئة | ١٦ | م الأنفال | ٨ |
| | يا أيها النبى حرض المؤمنين على القتال ... ... ... | ٦٥ | م « | ٨ |
| | وكفى الله المؤمنين القتال وكان الله قويا عزيزا ... | ٢٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | فإذا أنزلت سورة محكمة وذكر فيها القتال رأيت الذين | | | |
| | فى قلوبهم مرض ينظرون إليك ... ... ... ... | ٢٠ | م محمد | ٤٧ |
| **قِتَالًا** | : قالوا لو نعلم قتالا لاتبعناكم... ... ... ... ... | ١٦٧ | م آل عمران | ٣ |
| **ٱلْقَتْلَى** | : يا أيها الذين آمنوا كتب عليكم القصاص فى القتلى ... | ١٧٨ | م البقـرة | ٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **قِثَّائِهَا** | : فادع لنا ربك يخرج لنا مما تنبت الأرض من بقلها | | | |
| | وقثائها وفومها وعدسها وبصلها ... ... ... ... | ٦١ | م البقـرة | ٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **ٱقْتَحَمَ** | : وهديناه النجدين . فلا اقتحم العقبة ... ... ... | ١١ | ك البلد | ٩٠ |
| **مُقْتَحِمٌ** | : هذا فوج مقتحم معكم لا مرحبا بهم إنهم صالوا النار | ٥٩ | ك ص | ٣٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **قَدْحًا** | : والعاديات ضبحا . فالموريات قدحا ... ... ... | ٢ | ك العاديات | ١٠٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| **قَدَّتْ** | : واستبقا الباب وقدت قميصه من دبر ... ... ... | ٢٥ | ك يوسف | ١٢ |
| **قُدَّ** | : إن كان قميصه قد من قبل فصدقت وهو من الكاذبين | ٢٦ | ك « | ١٢ |
| (٣) | وإن كان قميصه قد من دبر فكذبت وهو من الصادقين | ٢٧ | ك « | ١٢ |
| | فلما رأى قميصه قد من دبر قال إنه من كيدكن ... ... | ٢٨ | ك « | ١٢ |
| **قِدَدًا** | : وأنا منا الصالحون ومنا دون ذلك كنا طرائق قددا | ١١ | ك الجن | ٧٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **قَدَرَ** | : وأما إذا ما ابتلاه فقدر عليه رزقه فيقول ربى أهانن | ١٦ | ك الفجر | ٨٩ |
| **قَدَرْنَا** | : فقدرنا فنعم القادرون ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك المرسلات | ٧٧ |
| **قَدَرُوا** | : وما قدروا الله حق قدره... ... ... ... ... ... | ٩١ | م الأنعام | ٦ |
| (٣) | ما قدروا الله حق قدره إن الله لقوى عزيز ... ... | ٧٤ | م الحج | ٢٢ |
| | وما قدروا الله حق قدره والأرض جميعا قبضته يوم القيامة | ٦٧ | ك الزمر | ٣٩ |
| **تَقْدِرُوا** | : إلا الذين تابوا من قبل أن تقدروا عليهم ... ... | ٣٤ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | وأخرى لم تقدروا عليها قد أحاط الله بها ... ... ... | ٢١ | م الفتح | ٤٨ |
| **نَقْدِرَ** | : وذا النون إذ ذهب مغاضبا فظن أن لن نقدر عليه | ٨٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| **يَقْدِرُ** | : الله يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ... ... ... ... | ٢٦ | م الرعد | ١٣ |
| (١٢) | ضرب الله مثلا عبدا مملوكا لا يقدر على شىء ... ... | ٧٥ | ك النحل | ١٦ |
| | وضرب الله مثلا رجلين أحدهما أبكم لا يقدر على شىء | ٧٦ | ك « | ١٦ |
| | إن ربك يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ... ... ... | ٣٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ويكأن الله يبسط الرزق لمن يشاء من عباده ويقدر | ٨٢ | ك القصص | ٢٨ |
| | الله يبسط الرزق لمن يشاء من عباده ويقدر له... ... | ٦٢ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | أو لم يروا أن الله يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ... | ٣٧ | ك الروم | ٣٠ |
| | قل إن ربى يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر... ... ... | ٣٦ | ك سبأ | ٣٤ |
| | قل إن ربى يبسط الرزق لمن يشاء من عباده ويقدر له | ٣٩ | ك « | ٣٤ |
| | أو لم يعلموا أن الله يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ... | ٥٢ | م الزمر | ٣٩ |
| | له مقاليد السموات والأرض يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر | ١٢ | ك الشورى | ٤٢ |
| | أيحسب أن لن يقدر عليه أحد ... ... ... ... ... | ٥ | ك البلد | ٩٠ |
| **يَقْدِرُونَ** | : لا يقدرون على شىء مما كسبوا ... ... ... | ٢٦٤ | م البقـرة | ٢ |
| (٣) | لا يقدرون مما كسبوا على شىء ذلك هو الضلال البعيد | ١٨ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | لئلا يعلم أهل الكتاب ألا يقدرون على شىء من فضل الله | ٢٩ | م الحديد | ٥٧ |
| **قُدِرَ** | : وفجرنا الأرض عيونا فالتقى الماء على أمر قد قدر | ١٢ | ك القمر | ٥٤ |
| (٢) | ومن قدر عليه رزقه فلينفق مما آتاه الله ... ... ... | ٧ | م الطلاق | ٦٥ |
| **قَدَّرَ** | : وبارك فيها وقدر فيها أقواتها فى أربعة أيام ... ... | ١٠ | ك فصلت | ٤١ |
| (٥) | إنه فكر وقدر ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك المدثر | ٧٤ |
| | فقتل كيف قدر ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك « | ٧٤ |
| | ثم قتل كيف قدر ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك « | ٧٤ |
| | الذى خلق فسوى . والذى قدر فهدى ... ... ... | ٣ | ك الأعلى | ٨٧ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| قَدَّرْنَا: | إلا آمرأته قدّرنا إنها لمن الغابرين ... ... ... ... | ٦٠ ك الحجـر | ١٥ |
| (٣) | وجعلنا بينهم وبين القرى التي باركنا فيها قرى ظاهرة | | |
| | وقدّرنا فيها السير ... ... ... ... ... ... ... | ١٨ ك سـبإ | ٣٤ |
| | نحن قدّرنا بينكم الموت وما نحن بمسبوقين... ... ... | ٦٠ ك الواقعـة | ٥٦ |
| قَدَّرْنَاهُ: | والقمر قدّرناه منازل حتى عاد كالعرجون القديم | ٣٩ ك يـس | ٣٦ |
| قَدَّرْنَاهَا: | فأنجيناه وأهله إلا آمرأته قدّرناها من الغابرين | ٥٧ ك النمـل | ٢٧ |
| قَدَّرَهُ: | هو الذي جعل الشمس ضياء والقمر نورا وقدّره منازل | ٥ ك يـونس | ١٠ |
| (٣) | ولم يكن له شريك في الملك وخلق كل شيء فقدّره تقديرا | ٢ ك الفـرقان | ٢٥ |
| | من أي شيء خلقه • من نطفة خلقه فقدّره ... ... | ١٩ ك عبـس | ٨٠ |
| قَدَّرُوهَا: | قواريراً من فضة قدّروها تقديرا ... ... ... | ١٦ م الإنسـان | ٧٦ |
| يُقَدِّرُ: | والله يقدر الليل والنهار ... ... ... ... ... ... | ٢٠ م المزمـل | ٧٣ |
| قَدِّرْ: | أن اعمل سابغات وقدّر في السرد... ... ... ... ... | ١١ ك سـبإ | ٣٤ |
| ٱلْقَدْرِ: | إنا أنزلناه في ليلة القدر ... ... ... ... ... ... | ١ ك القـدر | ٩٧ |
| (٣) | وما أدراك ما ليلة القـدر ... ... ... ... ... ... | ٢ ك « | ٩٧ |
| | ليلة القدر خير من ألف شهر... ... ... ... ... ... | ٣ ك « | ٩٧ |
| قَدْرًا: | إن الله بالغ أمره قد جعل الله لكل شيء قدرا ... | ٣ م الطـلاق | ٦٥ |
| قَدْرِهِ: | وما قدروا الله حق قدره ... ... ... ... ... ... | ٩١ م الأنعـام | ٦ |
| (٣) | ما قدروا الله حق قدره إن الله لقوي عزيز ... ... | ٧٤ م الحـج | ٢٢ |
| | وما قدروا الله حق قدره والأرض جميعا قبضته يوم القيامة | ٦٧ ك الـزمر | ٣٩ |
| قَادِرٌ: | قل إن الله قادر على أن ينزل آية ولكن أكثرهم لا يعلمون | ٣٧ ك الأنعـام | ٦ |
| (٧) | قل هو القادر على أن يبعث عليكم عذابا من فوقكم ... | ٦٥ ك « | ٦ |
| | أو لم يروا أن الله الذي خلق السموات والأرض قادر | | |
| | على أن يخلق مثلهم... ... ... ... ... ... ... | ٩٩ ك الإسـراء | ١٧ |
| | أوليس الذي خلق السموات والأرض بقادر على أن | | |
| | يخلق مثلهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨١ ك يـس | ٣٦ |
| | أو لم يروا أن الله الذي خلق السموات والأرض ولم | | |
| | يعي بخلقهن بقادر على أن يحيي الموتى... ... ... | ٣٣ ك الأحقاف | ٤٦ |
| | أليس ذلك بقادر على أن يحيي الموتى... ... ... ... | ٤٠ ك القيامـة | ٧٥ |
| | إنه على رجعه لقـادر ... ... ... ... ... ... ... | ٨ ك الطـارق | ٨٦ |
| قَادِرُونَ: | وظن أهلها أنهم قادرون عليها أتاها أمرنا ليلا | | |
| (٥) | أو نهارا ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٤ ك يـونس | ١٠ |
| | وإنا على ذهاب به لقادرون... ... ... ... ... ... | ١٨ ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وإنا على أن نريك ما نعدهم لقـادرون ... ... ... | ٩٥ ك « | ٢٣ |
| | فلا أقسم برب المشارق والمغارب إنا لقادرون... ... | ٤٠ ك المعـارج | ٧٠ |
| | فقدرنا فنعم القادرون ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣ ك المرسلات | ٧٧ |
| قَادِرِينَ: | وغدوا على حرد قادرين... ... ... ... ... ... | ٢٥ م القـلم | ٦٨ |
| (٢) | بلى قادرين على أن نسوي بنانه ... ... ... ... ... | ٤ ك القيامـة | ٧٥ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| قَدِيرٌ: | ولو شاء الله لذهب بسمعهم وأبصارهم إن الله على | | |
| (٣٩) | كل شيء قدير ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ م البقـرة | ٢ |
| | نأت بخير منها أو مثلها ألم تعلم أن الله على كل شيء قدير | ١٠٦ م « | ٢ |
| | فاعفوا واصفحوا حتى يأتي الله بأمره إن الله على | | |
| | كل شيء قدير ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٩ م « | ٢ |
| | أين ما تكونوا يأت بكم الله جميعا إن الله على كل شيء قدير | ١٤٨ م « | ٢ |
| | فلما تبين له قال أعلم أن الله على كل شيء قدير... ... | ٢٥٩ م « | ٢ |
| | فيغفر لمن يشاء ويعذب من يشاء والله على كل شيء قدير | ٢٨٤ م « | ٢ |
| | بيدك الخير إنك على كل شيء قدير ... ... ... ... | ٢٦ م آل عمران | ٣ |
| | ويعلم ما في السموات وما في الأرض والله على كل شيء قدير | ٢٩ م « | ٣ |
| | قل هو من عند أنفسكم إن الله على كل شيء قدير ... | ١٦٥ م « | ٣ |
| | ولله ملك السموات والأرض والله على كل شيء قدير | ١٨٩ م « | ٣ |
| | يخلق ما يشاء والله على كل شيء قدير... ... ... ... | ١٧ م المـائدة | ٥ |
| | فقد جاءكم بشير ونذير والله على كل شيء قدير ... ... | ١٩ م « | ٥ |
| | يعذب من يشاء ويغفر لمن يشاء والله على كل شيء قدير | ٤٠ م « | ٥ |
| | لله ملك السموات والأرض وما فيهن وهو على كل شيء قدير | ١٢٠ م « | ٥ |
| | وإن يمسسك بخير فهو على كل شيء قدير ... ... ... | ١٧ ك الأنعـام | ٦ |
| | يوم التقى الجمعان والله على كل شيء قدير ... ... ... | ٤١ م الأنفـال | ٨ |
| | ويستبدل قوما غيركم ولا تضروه شيئا والله على كل شيء قدير | ٣٩ م التـوبة | ٩ |
| | إلى الله مرجعكم وهو على كل شيء قدير ... ... ... | ٤ ك هـود | ١١ |
| | ومنكم من يرد إلى أرذل العمر لكي لا يعلم بعد علم شيئا | | |
| | إن الله عليم قدير ... ... ... ... ... ... ... | ٧٠ ك النحـل | ١٦ |
| | وما أمر الساعة إلا كلمح البصر أو هو أقرب إن الله | | |
| | على كل شيء قدير ... ... ... ... ... ... ... | ٧٧ ك « | ١٦ |
| | وأنه يحيي الموتى وأنه على كل شيء قدير ... ... ... | ٦ م الحـج | ٢٢ |
| | أذن للذين يقاتلون بأنهم ظلموا وإن الله على نصرهم لقدير | ٣٩ م « | ٢٢ |
| | يخلق الله ما يشاء إن الله على كل شيء قدير... ... ... | ٤٥ م النـور | ٢٤ |
| | ثم الله ينشيء النشأة الآخرة إن الله على كل شيء قدير | ٢٠ ك العنكبوت | ٢٩ |
| | إن ذلك لمحيي الموتى وهو على كل شيء قـدير ... ... | ٥٠ ك الـروم | ٣٠ |
| | يخلق ما يشاء وهو العليم القدير ... ... ... ... ... | ٥٤ ك « | ٣٠ |
| | يزيد في الخلق ما يشاء إن الله على كل شيء قدير ... | ١ ك فاطـر | ٣٥ |
| | إن الذي أحياها لمحيي الموتى إنه على كل شيء قدير... | ٣٩ ك فصـلت | ٤١ |
| | فالله هو الولي وهو يحيي الموتى وهو على كل شيء قدير | ٩ ك الشورى | ٤٢ |
| | وهو على جمعهم إذا يشاء قدير ... ... ... ... ... | ٢٩ ك « | ٤٢ |
| | ويجعل من يشاء عقيما إنه عليم قدير ... ... ... ... | ٥٠ ك « | ٤٢ |
| | بلى إنه على كل شيء قـدير ... ... ... ... ... ... | ٣٣ ك الأحقاف | ٤٦ |
| | يحيي ويميت وهو على كل شيء قدير ... ... ... ... | ٢ م الحـديد | ٥٧ |
| | ولكن الله يسلط رسله على من يشاء والله على كل شيء قدير | ٦ م الحشـر | ٥٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَدِيرٌ: | والله قدير والله غفور رحيم... ... ... ... ... ... | ٧ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | له الملك وله الحمد وهو على كل شيء قدير... ... ... ... | ١ | م التغابن | ٦٤ |
| | لتعلموا أن الله على كل شيء قدير... .. ... ... ... | ١٢ | م الطلاق | ٦٥ |
| | ربنا أتمم لنا نورنا واغفر لنا إنك على كل شيء قدير... | ٨ | م التحريم | ٦٦ |
| | تبارك الذى بيده الملك وهو على كل شيء قدير... | ١ | ك الملك | ٦٧ |
| قَدِيرًا: | ويأت بآخرين وكان الله على ذلك قديرا... ... ... | ١٣٣ | م النساء | ٤ |
| (٦) | فإن الله كان عفوا قديرا ... ... ... ... ... ... | ١٤٩ | م « | ٤ |
| | فجعله نسبا وصهرا وكان ربك قديرا ... ... ... ... | ٥٤ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وكان الله على كل شيء قديرا ... ... ... ... ... | ٢٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وما كان الله ليعجزه من شيء فى السموات ولا فى الأرض إنه كان عليما قديرا ... ... ... ... ... .. | ٤٤ | ك فاطر | ٣٥ |
| | قد أحاط الله بها وكان الله على كل شيء قديرا ... | ٢١ | م الفتح | ٤٨ |
| تَقْدِيرُ: | والشمس والقمر حسبانا ذلك تقدير العزيز العليم... | ٩٦ | ك الأنعام | ٦ |
| (٣) | والشمس تجرى لمستقر لها ذلك تقدير العزيز العليم ... | ٣٨ | ك يس | ٣٦ |
| | وزينا السماء الدنيا بمصابيح وحفظا ذلك تقدير العزيز العليم | ١٢ | ك فصلت | ٤١ |
| تَقْدِيرًا: | ولم يكن له شريك فى الملك وخلق كل شيء فقدره تقديرا | ٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| (٢) | قواريرا من فضة قدروها تقديرا ... ... ... ... ... | ١٦ | م الإنسان | ٧٦ |
| مَقْدُورًا: | وكان أمر الله قدرا مقدورا ... ... ... ... ... | ٣٨ | م الأحزاب | ٣٣ |
| بِمِقْدَارٍ: | وكل شيء عنده بمقدار... ... ... ... ... ... | ٨ | م الرعد | ١٣ |
| مِقْدَارُهُ: | ثم يعرج إليه فى يوم كان مقداره ألف سنة مما تعدون | ٥ | ك السجدة | ٣٢ |
| (٢) | فى يوم كان مقداره خمسين ألف سنة... ... ... ... | ٤ | ك المعارج | ٧٠ |
| مُقْتَدِرٍ: | كذبوا بآياتنا كلها فأخذناهم أخذ عزيز مقتدر ... | ٤٢ | ك القمر | ٥٤ |
| (٢) | إن المتقين فى جنات ونهر . فى مقعد صدق عند مليك مقتدر | ٥٥ | ك « | ٥٤ |
| مُقْتَدِرًا: | وكان الله على كل شيء مقتدرا ... ... ... ... | ٤٥ | ك الكهف | ١٨ |
| مُقْتَدِرُونَ: | أو نرينك الذى وعدناهم فإنا عليهم مقتدرون | ٤٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| قَدَرٍ: | وإن من شيء إلا عندنا خزائنه وما ننزله إلا بقدر معلوم | ٢١ | ك الحجر | ١٥ |
| (٧) | فلبثت سنين فى أهل مدين ثم جئت على قدر يا موسى | ٤٠ | ك طه | ٢٠ |
| | وأنزلنا من السماء ماء بقدر فأسكناه فى الأرض ... ... | ١٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ولكن ينزل بقدر ما يشاء إنه بعباده خبير بصير ... ... | ٢٧ | م الشورى | ٤٢ |
| | والذى نزل من السماء ماء بقدر فأنشرنا به بلدة ميتا ... | ١١ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | إنا كل شيء خلقناه بقدر ... ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك القمر | ٥٤ |
| | فجعلناه فى قرار مكين . إلى قدر معلوم ... ... ... | ٢٢ | ك المرسلات | ٧٧ |
| قَدَرًا: | سنة الله فى الذين خلوا من قبل وكان أمر الله قدرا مقدورا | ٣٨ | م الأحزاب | ٣٣ |
| قَدَرُهُ: | ومتعوهن على الموسع قدره... ... ... ... ... ... | ٢٣٦ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | وعلى المقتر قدره متاعا بالمعروف ... ... ... ... ... | ٢٣٦ | م « | ٢ |
| بِقَدَرِهَا: | أنزل من السماء ماء فسالت أودية بقدرها ... ... | ١٧ | م الرعد | ١٣ |
| قُدُورٍ: | وجفان كالجواب وقدور راسيات ... ... ... ... | ١٣ | ك سبأ | ٣٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| نُقَدِّسُ: | ونحن نسبح بحمدك ونقدس لك ... ... ... ... ... | ٣٠ | م البقرة | ٢ |
| الْقُدُسِ: | وآتينا عيسى ابن مريم البينات وأيدناه بروح القدس | ٨٧ | م « | ٢ |
| (٤) | وآتينا عيسى ابن مريم البينات وأيدناه بروح القدس | ٢٥٣ | م « | ٢ |
| | إذ أيدتك بروح القدس تكلم الناس فى المهد وكهلا | ١١٠ | م المائدة | ٥ |
| | قل نزله روح القدس من ربك بالحق ... ... ... ... | ١٠٢ | ك النحل | ١٦ |
| الْقُدُّوسُ: | هو الله الذى لا إله إلا هو الملك القدوس ... | ٢٣ | م الحشر | ٥٩ |
| (٢) | يسبح لله ما فى السموات وما فى الأرض الملك القدوس | ١ | م الجمعة | ٦٢ |
| الْمُقَدَّسِ: | إنى أنا ربك فاخلع نعليك إنك بالواد المقدس | | | |
| (٢) | طوى ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك طه | ٢٠ |
| | إذ ناداه ربه بالواد المقدس طوى ... ... ... ... | ١٦ | ك النازعات | ٧٩ |
| الْمُقَدَّسَةَ: | يا قوم ادخلوا الأرض المقدسة التى كتب الله لكم | ٢١ | م المائدة | ٥ |
| قَدِمْنَا: | وقدمنا إلى ما عملوا من عمل فجعلناه هباء منثورا | ٢٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| يَقْدُمُ: | يقدم قومه يوم القيامة فأوردهم النار ... ... ... | ٩٨ | ك هود | ١١ |
| قَدَّمَ: | قالوا ربنا من قدم لنا هذا فزده عذابا ضعفا فى النار | ٦١ | ك ص | ٣٨ |
| (٢) | ينبؤا الإنسان يومئذ بما قدم وأخر ... ... ... ... | ١٣ | ك القيامة | ٧٥ |
| قَدَّمَتْ: | ولن يتمنوه أبدا بما قدمت أيديهم ... ... ... ... | ٩٥ | م البقرة | ٢ |
| (١٤) | ذلك بما قدمت أيديكم وأن الله ليس بظلام للعبيد | ١٨٢ | م آل عمران | ٣ |
| | فكيف إذا أصابتهم مصيبة بما قدمت أيديهم ... ... | ٦٢ | م النساء | ٤ |
| | لبئس ما قدمت لهم أنفسهم أن سخط الله عليهم... ... | ٨٠ | م المائدة | ٥ |
| | ذلك بما قدمت أيديكم وأن الله ليس بظلام للعبيد ... | ٥١ | م الأنفال | ٨ |
| | فأعرض عنها ونسى ما قدمت يداه ... ... ... ... | ٥٧ | ك الكهف | ١٨ |
| | ذلك بما قدمت يداك وأن الله ليس بظلام للعبيد ... | ١٠ | م الحج | ٢٢ |
| | ولولا أن تصيبهم مصيبة بما قدمت أيديهم ... ... | ٤٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | وإن تصبهم سيئة بما قدمت أيديهم إذا هم يقنطون | ٣٦ | ك الروم | ٣٠ |
| | وإن تصبهم سيئة بما قدمت أيديهم فإن الإنسان كفور | ٤٨ | ك الشورى | ٤٢ |
| | يا أيها الذين آمنوا اتقوا الله ولتنظر نفس ما قدمت لغد | ١٨ | م الحشر | ٥٩ |
| | ولا يتمنونه أبدا بما قدمت أيديهم والله عليم بالظالمين | ٧ | م الجمعة | ٦٢ |
| | إنا أنذرناكم عذابا قريبا يوم ينظر المرء ما قدمت يداه | ٤٠ | ك النبأ | ٧٨ |
| | وإذا القبور بعثرت . علمت نفس ما قدمت وأخرت | ٥ | ك الانفطار | ٨٢ |
| قَدَّمْتُ: | قال لا تختصموا لدىّ وقد قدمت إليكم بالوعيد | ٢٨ | ك ق | ٥٠ |
| (٢) | يقول يا ليتنى قدمت لحياتى ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك الفجر | ٨٩ |
| قَدَّمْتُمْ: | ثم يأتى من بعد ذلك سبع شداد يأكلن ما قدمتم لهن | ٤٨ | ك يوسف | ١٢ |
| قَدَّمْتُمُوهُ: | قالوا بل أنتم لا مرحبا بكم أنتم قدمتموه لنا | ٦٠ | ك ص | ٣٨ |
| قَدَّمُوا: | إنا نحن نحيى الموتى ونكتب ما قدموا وآثارهم ... | ١٢ | ك يس | ٣٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تُقَدِّمُوا | وما تقدموا لأنفسكم من خير تجدوه عند الله ... | ١١٠ | م البقـرة | ٢ |
| (٤) | يأيها الذين آمنوا لا تقدموا بين يدى الله ورسوله | ١ | م الحجرات | ٤٩ |
| | أأشفقتم أن تقدموا بين يدى نجواكم صدقات ... | ١٣ | م المجادلة | ٥٨ |
| | وما تقدموا لأنفسكم من خير تجدوه عند الله ... ... | ٢٠ | م المزمـل | ٧٣ |
| قَدِّمُوا | فأتوا حرثكم أنى شئتم وقدموا لأنفسكم ... ... | ٢٢٣ | م البقـرة | ٢ |
| (٢) | إذا ناجيتم الرسول فقدموا بين يدى نجواكم صدقة | ١٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| تَقَدَّمَ | ليغفر لك الله ما تقدم من ذنبك وما تأخر ... ... | ٢ | م الفتـح | ٤٨ |
| يَتَقَدَّمَ | لمن شاء منكم أن يتقدم أو يتأخر ... ... ... ... | ٣٧ | ك المـدثر | ٧٤ |
| تَسْتَقْدِمُونَ | قل لكم ميعاد يوم لا تستأخرون عنه ساعة | | | |
| | ولا تستقدمون... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك سـبأ | ٣٤ |
| يَسْتَقْدِمُونَ | فإذا جاء أجلهم لا يستأخرون ساعة ولا يستقدمون | ٣٤ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | إذا جاء أجلهـم فلا يستأخرون ساعة ولا يستقدمون | ٤٩ | ك يـونس | ١٠ |
| | فإذا جاء أجلهـم لا يستأخرون ساعة ولا يستقدمون | ٦١ | ك النحـل | ١٦ |
| قَدَمٌ | وبشر الذين آمنوا أن لهم قدم صدق عند ربهم ... | ٢ | ك يـونس | ١٠ |
| (٢) | ولا تتخذوا أيمانكم دخلا بينكم فتزل قدم بعـد ثبوتها | ٩٤ | ك النحـل | ١٦ |
| الْأَقْدَامَ | وليربط على قلوبكم ويثبت به الأقدام ... ... | ١١ | م الأنفـال | ٨ |
| (٢) | يعـرف المجرمون بسيماهم فيؤخذ بالنواصى والأقدام | ٤١ | م الرحمـن | ٥٥ |
| أَقْدَامَكُمْ | إن تنصروا الله ينصركم ويثبت أقدامكم... ... | ٧ | م محمـد | ٤٧ |
| أَقْدَامَنَا | ربنا أفرغ علينا صبرا وثبت أقدامنا ... ... ... | ٢٥٠ | م البقـرة | ٢ |
| (٣) | ربنا اغفر لنا ذنوبنا وإسرافنا فى أمرنا وثبت أقدامنا | ١٤٧ | م آل عمران | ٣ |
| | أرنا الذين أضلانا من الجن والإنس نجعلهما تحت أقدامنا | ٢٩ | ك فصـلت | ٤١ |
| الْقَدِيمِ | قالوا تالله إنك لفى ضـلالك القديم ... ... ... | ٩٥ | ك يوسف | ١٢ |
| (٣) | والقمر قدرناه منازل حتى عاد كالعرجون القـديم ... | ٣٩ | ك يـس | ٣٦ |
| | وإذ لم يهتدوا به فسيقولون هـذا إفك قديم ... ... | ١١ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| الْأَقْدَمُونَ | قال أفرأيتم ما كنتم تعبـدون . أنتم وآباؤكم | | | |
| | الأقدمون... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٦ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| الْمُسْتَقْدِمِينَ | ولقد علمنا المستقدمين منكم ... ... ... | ٢٤ | ك الحجـر | ١٥ |
| ✦✦✦ | | | | |
| اقْتَدِهْ | أولئك الذين هدى الله فبهداهم اقتده ... ... ... | ٩٠ | ك الأنعـام | ٦ |
| مُقْتَدُونَ | إنا وجدنا آباءنا على أمة وإنا على آثارهم مقتدون | ٢٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| ✦✦✦ | | | | |
| قَذَفَ | وقذف فى قلوبهم الرعب ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| (٢) | فأتاهم الله من حيث لم يحتسبوا وقذف فى قلوبهم الرعب | ٢ | م الحشـر | ٥٩ |
| قَذَفْنَاهَا | ولكنا حملنا أوزارا من زينة القوم فقذفناها ... | ٨٧ | ك طـه | ٢٠ |
| نَقْذِفُ | بل نقذف بالحق على الباطل فيدمغه فإذا هو زاهق | ١٨ | ك الأنبيـاء | ٢١ |
| يَقْذِفُ | قل إن ربى يقذف بالحق علام الغيوب ... ... | ٤٨ | ك سـبأ | ٣٤ |
| يَقْذِفُونَ | ويقذفون بالغيب من مكان بعيد ... ... ... | ٥٣ | ك « | ٣٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَقْذِفِيهِ | إذ أوحينا إلى أمك ما يوحى . أن اقذفيه فى التابوت | ٣٩ | ك طـه | ٢٠ |
| (٢) | فاقذفيه فى اليم فليلقه اليم بالساحل ... ... ... ... | ٣٩ | ك « | ٢٠ |
| يُقْذَفُونَ | لا يسمعون إلى الملإ الأعلى ويقذفون من كل جانب | ٨ | ك الصافات | ٣٧ |
| ✦✦✦ | | | | |
| قَرَأْتَ | فإذا قرأت القرآن فاستعذ بالله من الشيطان الرجيم | ٩٨ | ك النحـل | ١٦ |
| (٢) | وإذا قرأت القرآن جعلنا بينك وبين الذين لا يؤمنون | | | |
| | بالآخرة حجابا مستورا ... ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك الإسـراء | ١٧ |
| قَرَأْنَاهُ | فإذا قرأناه فاتبع قرآنه ... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك القيـامة | ٧٥ |
| قَرَأَهُ | ولو نزلناه على بعض الأعجمين . فقرأه عليهم ما كانوا | | | |
| | به مؤمنين... ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٩٩ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| لِتَقْرَأَهُ | وقرآنا فرقناه لتقرأه على الناس على مكث ... ... | ١٠٦ | ك الإسـراء | ١٧ |
| تَقْرَؤُهُ | ولن نؤمن لرقيك حتى تنزل علينا كتابا نقرؤه... ... | ٩٣ | ك « | ١٧ |
| يَقْرَءُونَ | فسئل الذين يقرءون الكتاب من قبلك ... ... | ٩٤ | م يـونس | ١٠ |
| (٢) | فمن أوتى كتابه بيمينه فأولئك يقرءون كتابهم ... ... | ٧١ | ك الإسـراء | ١٧ |
| اقْرَأْ | اقرأ كتابك كفى بنفسك اليوم عليك حسيبا ... ... | ١٤ | ك « | ١٧ |
| (٣) | اقرأ باسم ربك الذى خلق ... ... ... ... ... ... | ١ | ك العـلق | ٩٦ |
| | اقرأ وربك الأكرم ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك « | ٩٦ |
| اقْرَءُوا | فأما من أوتى كتابه بيمينه فيقول هاؤم اقرءوا كتابيه | ١٩ | ك الحـاقة | ٦٩ |
| (٣) | علم أن لن تحصوه فتاب عليكم فاقرءوا ما تيسر من القرآن | ٢٠ | م المـزمل | ٧٣ |
| | وآخرون يقاتلون فى سبيل الله فاقرءوا ما تيسر منه ... | ٢٠ | م « | ٧٣ |
| قُرِئَ | وإذا قرئ القرآن فاستمعوا له وأنصتوا لعلكم ترحمون | ٢٠٤ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | وإذا قرئ عليهم القرآن لا يسجدون ... ... ... ... | ٢١ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| سَنُقْرِئُكَ | سنقرئك فلا تنسى ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك الأعـلى | ٨٧ |
| الْقُرْآنُ | شهر رمضان الذى أنزل فيه القرآن هدى للناس | ١٨٥ | م البقـرة | ٢ |
| (٥٨) | أفلا يتدبرون القرآن ... ... ... ... ... ... | ٨٢ | م النسـاء | ٤ |
| | وإن تسئلوا عنها حين ينزل القرآن تبد لكم عفا الله عنها | ١٠١ | م المائدة | ٥ |
| | وأوحى إلىّ هذا القرآن لأنذركم به ومن بلغ ... ... | ١٩ | ك الأنعـام | ٦ |
| | وإذا قرئ القرآن فاستمعوا له وأنصتوا لعلكم ترحمون | ٢٠٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | وعدا عليه حقا فى التوراة والإنجيل والقرآن ... ... | ١١١ | م التـوبة | ٩ |
| | قال الذين لا يرجون لقاءنا ائت بقرآن غير هذا أو بدله | ١٥ | ك يـونس | ١٠ |
| | وما كان هذا القرآن أن يفترى من دون الله ... ... | ٣٧ | ك « | ١٠ |
| | وما تكون فى شأن وما تتلوا منه من قرآن ولا تعملون | | | |
| | من عمل إلا كنا عليكم شهودا إذ تفيضون فيه ... | ٦١ | ك « | ١٠ |
| | نحن نقص عليك أحسن القصص بما أوحينا إليك | | | |
| | هـذا القرآن ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | م يوسف | ١٢ |
| | الـر تلك آيات الكتاب والقرآن المبين ... ... ... | ١ | ك الحجـر | ١٥ |
| | ولقد آتيناك سبعا من المثانى والقرآن العظيم ... ... | ٨٧ | م « | ١٥ |
| | كما أنزلنا على المقتسمين . الذين جعلوا القرآن عضين | ٩١ | ك « | ١٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **القُرْآنَ**: فإذا قرأت القرآن فاستعذ بالله من الشيطان الرجيم | | ٩٨ | ك النحـل | ١٦ |
| إن هـذا القرآن يهدى التى هى أقوم ويبشر المؤمنين | | ٩ | ك الإسـراء | ١٧ |
| ولقد صرفنا فى هذا القرآن ليذكروا وما يزيدهم إلا نفورا | | ٤١ | ك « | ١٧ |
| وإذا قرأت القرآن جعلنا بينك وبين الذين لا يؤمنون بالآخرة حجابا مستورا ... ... ... ... ... | | ٤٥ | ك « | ١٧ |
| وإذا ذكرت ربك فى القرآن وحده ولوا على أدبارهم نفورا | | ٤٦ | ك « | ١٧ |
| وما جعلنا الرؤيا التى أريناك إلا فتنة للناس والشجرة الملعونة فى القرآن ... ... ... ... ... ... | | ٦٠ | ك « | ١٧ |
| أقم الصلاة لدلوك الشمس إلى غسق الليل وقرآن الفجر | | ٧٨ | م « | ١٧ |
| إن قرآن الفجر كان مشهودا... ... ... ... ... | | ٧٨ | م « | ١٧ |
| وننزل من القرآن ما هو شفاء ورحمة للمؤمنين ... ... | | ٨٢ | ك « | ١٧ |
| قل لئن اجتمعت الإنس والجن على أن يأتوا بمثل هذا القرآن لا يأتون بمثله ... ... ... ... ... | | ٨٨ | ك « | ١٧ |
| ولقد صرفنا للناس فى هذا القرآن من كل مثل ... ... | | ٨٩ | ك « | ١٧ |
| ولقد صرفنا فى هذا القرآن للناس من كل مثل ... ... | | ٥٤ | ك الكهف | ١٨ |
| ما أنزلنا عليك القرآن لتشقى ... ... ... ... ... | | ٢ | ك طـه | ٢٠ |
| ولا تعجل بالقرآن من قبل أن يقضى إليك وحيه ... | | ١١٤ | ك « | ٢٠ |
| وقال الرسول يا رب إن قومى اتخذوا هذا القرآن مهجورا | | ٣٠ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| وقال الذين كفروا لولا نزل عليه القرآن جملة واحدة | | ٣٢ | ك « | ٢٥ |
| طس تلك آيات القرآن وكتاب مبين ... ... ... ... | | ١ | ك النمـل | ٢٧ |
| وإنك لتلقى القرآن من لدن حكيم عليم ... ... ... | | ٦ | ك « | ٢٧ |
| إن هذا القرآن يقص على بنى إسرائيل أكثر الذى هم فيه يختلفون... ... ... ... ... ... ... | | ٧٦ | ك « | ٢٧ |
| وأمرت أن أكون من المسلمين . وأن أتلوا القرآن | | ٩٢ | ك « | ٢٧ |
| إن الذى فرض عليك القرآن لرادك إلى معاد ... ... | | ٨٥ | م القصص | ٢٨ |
| ولقد ضربنا للناس فى هذا القرآن من كل مثل... ... | | ٥٨ | ك الـروم | ٣٠ |
| وقال الذين كفروا لن نؤمن بهذا القرآن ولا بالذى بين يديه | | ٣١ | ك سـبأ | ٣٤ |
| والقرآن الحكيم . إنك لمن المرسلين ... ... ... ... | | ٢ | ك يس | ٣٦ |
| وما علمناه الشعر وما ينبغى له إن هو إلا ذكر وقرآن مبين | | ٦٩ | ك « | ٣٦ |
| ص والقرآن ذى الذكر . بل الذين كفروا فى عزة وشقاق | | ١ | ك ص | ٣٨ |
| ولقد ضربنا للناس فى هذا القرآن من كل مثل لعلهم يتذكرون | | ٢٧ | ك الزمـر | ٣٩ |
| وقال الذين كفروا لا تسمعوا لهذا القرآن... ... ... | | ٢٦ | ك فصـلت | ٤١ |
| وقالوا لولا نزل هذا القرآن على رجل من القريتين عظيم | | ٣١ | ك الزخرف | ٤٣ |
| وإذ صرفنا إليك نفرا من الجن يستمعون القرآن ... | | ٢٩ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| أفلا يتدبرون القرآن أم على قلوب أقفالها ... ... | | ٢٤ | م محمـد | ٤٧ |
| ق والقرآن المجيد . بل عجبوا أن جاءهم منذر منهم | | ١ | ك قـ | ٥٠ |
| فذكر بالقرآن من يخاف وعيد ... ... ... ... ... | | ٤٥ | ك « | ٥٠ |
| ولقد يسرنا القرآن للذكر فهل من مذكر . كذبت عاد | | ١٧ | ك القمـر | ٥٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **القُرْآنَ**: ولقد يسرنا القرآن للذكر فهل من مذكر . كذبت ثمود | | ٢٢ | ك القمـر | ٥٤ |
| ولقد يسرنا القرآن للذكر فهل من مذكر . كذبت قوم لوط | | ٣٢ | ك « | ٥٤ |
| ولقد يسرنا القرآن للذكر فهل من مذكر . ولقد جاء آل فرعون النذر ... ... ... ... ... ... | | ٤٠ | ك « | ٥٤ |
| الرحمن . علم القرآن ... ... ... ... ... ... | | ٢ | م الرحمـن | ٥٥ |
| إنه لقرآن كريم . فى كتاب مكنون ... ... ... ... | | ٧٧ | ك الواقعـة | ٥٦ |
| لو أنزلنا هذا القرآن على جبل لرأيته خاشعا متصدعا | | ٢١ | م الحشـر | ٥٩ |
| أو زد عليه ورتل القرآن ترتيلا ... ... ... ... | | ٤ | ك المـزمل | ٧٣ |
| فاقرءوا ما تيسر من القرآن ... ... ... ... ... | | ٢٠ | م « | ٧٣ |
| إنا نحن نزلنا عليك القرآن تنزيلا ... ... ... ... | | ٢٣ | م الإنسان | ٧٦ |
| وإذا قرئ عليهم القرآن لا يسجدون ... ... ... | | ٢١ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| بل هو قرآن مجيد . فى لوح محفوظ ... ... ... | | ٢١ | ك البروج | ٨٥ |
| **قُرْآنًا**: إنا أنزلناه قرآنا عربيا لعلكم تعقلون ... ... ... | | ٢ | م يوسـف | ١٢ |
| (١٠) ولو أن قرآنا سيرت به الجبال أو قطعت به الأرض | | ٣١ | م الرعـد | ١٣ |
| وقرآنا فرقناه لتقرأه على الناس على مكث ... ... | | ١٠٦ | ك الإسـراء | ١٧ |
| وكذلك أنزلناه قرآنا عربيا وصرفنا فيه من الوعيد | | ١١٣ | ك طـه | ٢٠ |
| قرآنا عربيا غير ذى عوج لعلهم يتقون ... ... ... | | ٢٨ | ك الـزمر | ٣٩ |
| كتاب فصلت آياته قرآنا عربيا لقوم يعلمون ... ... | | ٣ | ك فصـلت | ٤١ |
| ولو جعلناه قرآنا أعجميا لقالوا لولا فصلت آياته ... | | ٤٤ | ك « | ٤١ |
| وكذلك أوحينا إليك قرآنا عربيا لتنذر أم القرى ... | | ٧ | ك الشـورى | ٤٢ |
| إنا جعلناه قـرآنا عربيا لعلكم تعقلون ... ... ... | | ٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| فقالوا إنا سمعنا قرآنا عجبا ... ... ... ... ... | | ١ | ك الجن | ٧٢ |
| **قُرْآنَهُ**: إن علينا جمعه وقرآنه... ... ... ... ... ... | | ١٧ | ك القيامة | ٧٥ |
| (٢) فإذا قرأناه فاتبع قرآنه ... ... ... ... ... ... | | ١٨ | ك « | ٧٥ |
| **قُرُوءٍ**: والمطلقات يتربصن بأنفسهن ثلاثة قروء ... ... | | ٢٢٨ | م البقـرة | ٢ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **تَقْرَبَا**: وكلا منها رغدا حيث شئتما ولا تقربا هذه الشجرة | | ٣٥ | م البقـرة | ٢ |
| (٢) فكلا من حيث شئتما ولا تقربا هذه الشجرة... ... | | ١٩ | ك الأعراف | ٧ |
| **تَقْرَبُوا**: يأيها الذين آمنوا لا تقربوا الصلاة وأنتم سكارى | | ٤٣ | م النسـاء | ٤ |
| (٥) ولا تقربوا الفواحش ما ظهر منها وما بطن ... ... | | ١٥١ | م الأنعـام | ٦ |
| ولا تقربوا مال اليتيم إلا بالتى هى أحسن حتى يبلغ أشده | | ١٥٢ | م « | ٦ |
| ولا تقربوا الزنى إنه كان فاحشة وساء سبيلا ... ... | | ٣٢ | م الإسـراء | ١٧ |
| ولا تقربوا مال اليتيم إلا بالتى هى أحسن حتى يبلغ أشده | | ٣٤ | ك « | ١٧ |
| **تَقْرَبُونِ**: فإن لم تأتونى به فلا كيل لكم عندى ولا تقربون | | ٦٠ | ك يوسـف | ١٢ |
| **تَقْرَبُوهَا**: تلك حدود الله فلا تقربوها ... ... ... ... | | ١٨٧ | م البقـرة | ٢ |
| **تَقْرَبُوهُنَّ**: ولا تقربوهن حتى يطهرن ... ... ... ... | | ٢٢٢ | م « | ٢ |
| **يَقْرَبُوا**: فلا يقربوا المسجد الحرام بعد عامهم هذا... ... | | ٢٨ | م التـوبة | ٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قُرْبَانًا: | واتل عليهم نبأ ابنى آدم بالحق إذ قربا قربانا... ... | ٢٧ | م المائدة | ٥ |
| قَرَّبْنَاهُ: | وناديناه من جانب الطور الأيمن وقربناه نجيا | ٥٢ | ك مريم | ١٩ |
| قَرَّبَهُ: | فقربه إليهم قال ألا تأكلون... ... ... ... ... | ٢٧ | ك الذاريات | ٥١ |
| تُقَرِّبُكُمْ: | وما أموالكم ولا أولادكم بالتى تقربكم عندنا زلفى | ٣٧ | ك سبإ | ٣٤ |
| لِيُقَرِّبُونَا: | ما نعبدهم إلا ليقربونا إلى الله زلفى... ... ... | ٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| اقْتَرَبَ: | وأن عسى أن يكون قد اقترب أجلهم ... ... | ١٨٥ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) اقْتَرَبَ: | اقترب للناس حسابهم وهم فى غفلة معرضون... ... | ١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | واقترب الوعد الحق فإذا هى شاخصة أبصار الذين كفروا | ٩٧ | ك » | ٢١ |
| اقْتَرَبَتِ: | اقتربت الساعة وانشق القمر ... ... ... ... | ١ | ك القمر | ٥٤ |
| اقْتَرِبْ: | كلا لا تطعه واسجد واقترب ... ... ... ... | ١٩ | ك العلق | ٩٦ |
| قُرْبَةٌ: | ألا إنها قربة لهم سيدخلهم الله فى رحمته ... ... | ٩٩ | م التوبة | ٩ |
| قُرُبَاتٍ: | ويتخذ ما ينفق قربات عند الله ... ... ... ... | ٩٩ | م » | ٩ |
| قَرِيبٌ: | وإذا سألك عبادى عنى فإنى قريب ... ... ... | ١٨٦ | م البقرة | ٢ |
| (١٧) | ألا إن نصر الله قريب... ... ... ... ... ... | ٢١٤ | م » | ٢ |
| | إنما التوبة على الله للذين يعملون السوء بجهالة | | | |
| | ثم يتوبون من قريب ... ... ... ... ... ... | ١٧ | م النساء | ٤ |
| | لولا أخرتنا إلى أجل قريب ... ... ... ... ... | ٧٧ | م » | ٤ |
| | إن رحمة الله قريب من المحسنين ... ... ... ... | ٥٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | فاستغفروه ثم توبوا إليه إن ربى قريب مجيب ... | ٦١ | ك هود | ١١ |
| | ولا تمسوها بسوء فيأخذكم عذاب قريب ... ... ... | ٦٤ | ك » | ١١ |
| | إن موعدهم الصبح أليس الصبح بقريب ... ... ... | ٨١ | ك » | ١١ |
| | ربنا أخرنا إلى أجل قريب نجب دعوتك ونتبع الرسل | ٤٤ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وإن أدرى أقريب أم بعيد ما توعدون ... ... ... | ١٠٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وإن اهتديت فبما يوحى إلىّ ربى إنه سميع قريب | ٥٠ | ك سبإ | ٣٤ |
| | ولو ترى إذ فزعوا فلا فوت وأخذوا من مكان قريب | ٥١ | ك » | ٣٤ |
| | وما يدريك لعل الساعة قريب ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الشورى | ٤٢ |
| | واستمع يوم ينادِ المناد من مكان قريب ... ... ... | ٤١ | ك ق | ٥٠ |
| | وأخرى تحبونها نصر من الله وفتح قريب... ... ... | ١٣ | م الصف | ٦١ |
| | رب لولا أخرتنى إلى أجل قريب فأصدق ... ... ... | ١٠ | م المنافقون | ٦٣ |
| | قل إن أدرى أقريب ما توعدون أم يجعل له ربى أمدا | ٢٥ | ك الجن | ٧٢ |
| قَرِيبًا: | لو كان عرضا قريبا وسفرا قاصدا لاتبعوك... ... | ٤٢ | م التوبة | ٩ |
| (٩) | تصيبهم بما صنعوا قارعة أو تحل قريبا من دارهم ... | ٣١ | م الرعد | ١٣ |
| | ويقولون متى هو قل عسى أن يكون قريبا ... ... | ٥١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وما يدريك لعل الساعة تكون قريبا ... ... ... | ٦٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | فأنزل السكينة عليهم وأثابهم فتحا قريبا ... ... ... | ١٨ | م الفتح | ٤٨ |
| | فعلم ما لم تعلموا فجعل من دون ذلك فتحا قريبا ... | ٢٧ | م » | ٤٨ |
| قَرِيبًا: | كمثل الذين من قبلهم قريبا ذاقوا وبال أمرهم... | ١٥ | م الحشر | ٥٩ |
| | إنهم يرونه بعيدا . ونراه قريبا ... ... ... ... ... | ٧ | ك المعارج | ٧٠ |
| | إنا أنذرناكم عذابا قريبا... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك النبإ | ٧٨ |
| الْقُرْبَى: | وبالوالدين إحسانا وذى القربى واليتامى ... | ٨٣ | م البقرة | ٢ |
| (١٦) | وآتى المال على حبه ذوى القربى واليتامى والمساكين | ١٧٧ | م » | ٢ |
| | وإذا حضر القسمة أولوا القربى واليتامى والمساكين | | | |
| | فارزقوهم منه ... ... ... ... ... ... ... | ٨ | م النساء | ٤ |
| | وبالوالدين إحسانا وبذى القربى واليتامى والمساكين | ٣٦ | م » | ٤ |
| | والجار ذى القربى والجار الجنب... ... ... ... ... | ٣٦ | م » | ٤ |
| | فيقسمان بالله إن ارتبتم لا نشترى به ثمنا ولو كان ذا قربى | ١٠٦ | م المائدة | ٥ |
| | وإذا قلتم فاعدلوا ولو كان ذا قربى ... ... ... ... | ١٥٢ | م الأنعام | ٦ |
| | فأن لله خمسه وللرسول ولذى القربى ... ... ... | ٤١ | م الأنفال | ٨ |
| | ما كان للنبىّ والذين آمنوا أن يستغفروا للمشركين | | | |
| | ولو كانوا أولى قربى ... ... ... ... ... ... | ١١٣ | م التوبة | ٩ |
| | إن الله يأمر بالعدل والإحسان وإيتاء ذى القربى | ٩٠ | ك النحل | ١٦ |
| | وآت ذا القربى حقه والمسكين وابن السبيل ... ... | ٢٦ | م الإسراء | ١٧ |
| | ولا يأتل أولوا الفضل منكم والسعة أن يؤتوا أولى القربى | ٢٢ | م النور | ٢٤ |
| | فآت ذا القربى حقه والمسكين وابن السبيل ... ... | ٣٨ | ك الروم | ٣٠ |
| | وإن تدع مثقلة إلى حملها لا يحمل منه شىء ولو كان ذا قربى | ١٨ | ك فاطر | ٣٥ |
| | قل لا أسئلكم عليه أجرا إلا المودة فى القربى ... ... | ٢٣ | م الشورى | ٤٢ |
| | ما أفاء الله على رسوله من أهل القرى فلله وللرسول | | | |
| | ولذى القربى ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | م الحشر | ٥٩ |
| أَقْرَبُ: | وأن تعفوا أقرب للتقوى ولا تنسوا الفضل بينكم | ٢٣٧ | م البقرة | ٢ |
| (١١) | هم للكفر يومئذ أقرب منهم للإيمان ... ... ... ... | ١٦٧ | م آل عمران | ٣ |
| | آباؤكم وأبناؤكم لا تدرون أيهم أقرب لكم نفعا... ... | ١١ | م النساء | ٤ |
| | اعدلوا هو أقرب للتقوى ... ... ... ... ... ... | ٨ | م المائدة | ٥ |
| | وما أمر الساعة إلا كلمح البصر أو هو أقرب ... ... | ٧٧ | ك النحل | ١٦ |
| | أولئك الذين يدعون يبتغون إلى ربهم الوسيلة أيهم أقرب | ٥٧ | م الإسراء | ١٧ |
| | وقل عسى أن يهدين ربى لأقرب من هذا رشدا ... | ٢٤ | ك الكهف | ١٨ |
| | فأردنا أن يبدلهما ربهما خيرا منه زكاة وأقرب رحما | ٨١ | ك » | ١٨ |
| | يدعوا لمن ضره أقرب من نفعه ... ... ... ... ... | ١٣ | م الحج | ٢٢ |
| | ونحن أقرب إليه من حبل الوريد ... ... ... ... | ١٦ | ك ق | ٥٠ |
| | ونحن أقرب إليه منكم ولكن لا تبصرون ... ... ... | ٨٥ | ك الواقعة | ٥٦ |
| أَقْرَبَهُمْ: | ولتجدن أقربهم مودة للذين آمنوا الذين قالوا | | | |
| | إنا نصارى... ... ... ... ... ... ... ... | ٨٢ | م المائدة | ٥ |
| الْأَقْرَبُونَ: | للرجال نصيب مما ترك الوالدان والأقربون | ٧ | م النساء | ٤ |
| (٣) | وللنساء نصيب مما ترك الوالدان والأقربون ... ... | ٧ | م » | ٤ |
| | ولكل جعلنا موالى مما ترك الوالدان والأقربون ... | ٣٣ | م » | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| ٱلْأَقْرَبِينَ | : الوصية للوالدين والأقربين ... ... ... ... | ٢ البقـرة | ١٨٠ |
| (٤) | قل ما أنفقتم من خير فللوالدين والأقربين ... ... | ٢ » | ٢١٥ |
| | ولو على أنفسكم أو الوالدين والأقربين ... ... ... | ٤ النسـاء | ١٣٥ |
| | وأنذر عشيرتك الأقربين ... ... ... ... ... ... | ٢٦ ك الشـعراء | ٢١٤ |
| ٱلْمُقَرَّبُونَ | : لن يستنكف المسيح أن يكون عبـدا لله | | |
| (٤) | ولا الملائكة المقربون ... ... ... ... ... ... | ٤ النسـاء | ١٧٢ |
| | والسابقون السابقون . أولئك المقربون ... ... ... | ٥٦ ك الواقعـة | ١١ |
| | كتاب مرقوم . يشهده المقربون... ... ... ... ... | ٨٣ ك المطففين | ٢١ |
| | ومزاجه من تسنيم . عينا يشرب بها المقربون ... ... | ٨٣ ك » | ٢٨ |
| ٱلْمُقَرَّبِينَ | : وجيها فى الدنيا والآخرة ومن المقربين... ... | ٣ م آل عمران | ٤٥ |
| (٤) | قال نعم وإنكم لمن المقربين... ... ... ... ... | ٧ ك الأعراف | ١١٤ |
| | قال نعم وإنكم إذا لمن المقربين ... ... ... ... | ٢٦ ك الشـعراء | ٤٢ |
| | فأما إن كان من المقربين . فروح وريحان وجنة نعيم | ٥٦ ك الواقعـة | ٨٨ |
| مَقْرَبَةٍ | : أو إطعام فى يوم ذى مسغبة . يتيما ذا مقربة ... | ٩٠ ك البـلد | ١٥ |
| بِقُرْبَانٍ | : إن الله عهد إلينا ألا نؤمن لرسول حتى يأتينا بقربان | ٣ م آل عمران | ١٨٣ |
| قُرْبَانًا | : واتل عليهم نبأ ابنى آدم بالحق إذ قربا قربانا ... | ٥ م المائدة | ٢٧ |
| (٢) | فلولا نصرهم الذين اتخذوا من دون الله قربانا آلهة | ٤٦ ك الأحقاف | ٢٨ |
| | ✦✦✦ | | |
| قَرْحٌ | : إن يمسسكم قرح ... ... ... ... ... ... ... | ٣ م آل عمران | ١٤٠ |
| (٣) | فقد مس القوم قرح مثله ... ... ... ... ... ... | ٣ » | ١٤٠ |
| | الذين استجابوا لله والرسول من بعد ما أصابهم القرح | ٣ » | ١٧٢ |
| | ✦✦✦ | | |
| قِرَدَةً | : فقلنا لهم كونوا قردة خاسئين ... ... ... ... ... | ٢ البقـرة | ٦٥ |
| (٣) | من لعنه الله وغضب عليه وجعل منهم القردة والخنازير | ٥ م المائدة | ٦٠ |
| | فلما عتوا عن ما نهوا عنه قلنا لهم كونوا قردة خاسئين | ٧ الأعراف | ١٦٦ |
| | ✦✦✦ | | |
| تَقَرَّ | : فرجعناك إلى أمك كى تقر عينها ولا تحزن... ... ... | ٢٠ ك طـه | ٤٠ |
| (٣) | فرددناه إلى أمه كى تقر عينها ولا تحزن ... ... ... | ٢٨ ك القصص | ١٣ |
| | ذلك أدنى أن تقر أعينهن ولا يحزن ... ... ... ... | ٣٣ م الأحزاب | ٥١ |
| قَرْنَ | : وقرن فى بيوتكن ولا تبرجن تبرج الجاهلية الأولى... | ٣٣ م » | ٣٣ |
| قَرِّى | : فكلى واشربى وقرى عينا ... ... ... ... ... ... | ١٩ ك مـريم | ٢٦ |
| أَقْرَرْتُمْ | : ثم أقررتم وأنتم تشهدون ... ... ... ... ... ... | ٢ البقـرة | ٨٤ |
| (٢) | قال أأقررتم وأخذتم على ذلكم إصرى ... ... ... | ٣ م آل عمران | ٨١ |
| أَقْرَرْنَا | : قالوا أقررنا قال فاشهدوا وأنا معكم من الشاهدين | ٣ » | ٨١ |
| نُقِرُّ | : ونقر فى الأرحام ما نشاء إلى أجل مسمى ... ... ... | ٢٢ م الحـج | ٥ |
| ٱسْتَقَرَّ | : ولكن انظر إلى الجبل فإن استقر مكانه فسوف ترانى | ٧ ك الأعراف | ١٤٣ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| ٱلْقَرَارِ | : كشجرة خبيثة اجتثت من فوق الأرض ما لها من قرار | ١٤ ك إبراهيم | ٢٦ |
| (٧) | جهنم يصلونها وبئس القرار... ... ... ... ... ... | ١٤ ك » | ٢٩ |
| | ثم جعلناه نطفة فى قرار مكين ... ... ... ... ... | ٢٣ ك المؤمنون | ١٣ |
| | وآويناهما إلى ربوة ذات قرار ومعين ... ... ... ... | ٢٣ ك » | ٥٠ |
| | قالوا بل أنتم لا مرحبا بكم أنتم قدمتموه لنا فبئس القرار | ٣٨ ك ص | ٦٠ |
| | وإن الآخرة هى دار القرار ... ... ... ... ... ... | ٤٠ ك غافـر | ٣٩ |
| | ألم نخلقكم من ماء مهين . فجعلناه فى قرار مكين ... | ٧٧ ك المرسلات | ٢١ |
| قَرَارًا | : أمن جعل الأرض قرارا وجعل خلالها أنهارا ... | ٢٧ ك النمـل | ٦١ |
| (٢) | الله الذى جعل لكم الأرض قرارا والسماء بناء... ... | ٤٠ ك غافـر | ٦٤ |
| قُرَّةُ | : والذين يقولون ربنا هب لنا من أزواجنا وذرياتنا قرة أعين | ٢٥ ك الفـرقان | ٧٤ |
| (٣) | وقالت امرأة فرعون قرة عين لى ولك ... ... ... | ٢٨ ك القصص | ٩ |
| | فلا تعلم نفس ما أخفى لهم من قرة أعين جزاء بما كانوا يعملون | ٣٢ م السـجدة | ١٧ |
| مُسْتَقَرٌّ | : ولكم فى الأرض مستقر ومتاع إلى حين ... ... | ٢ م البقـرة | ٣٦ |
| (٦) | لكل نبأ مستقر وسوف تعلمون... ... ... ... ... | ٦ ك الأنعـام | ٦٧ |
| | وهو الذى أنشأكم من نفس واحدة فمستقر ومستودع | ٦ ك » | ٩٨ |
| | ولكم فى الأرض مستقر ومتاع إلى حين... ... ... | ٧ ك الأعراف | ٢٤ |
| | والشمس تجرى لمستقر لها ذلك تقدير العزيز العليم | ٣٦ ك يس | ٣٨ |
| | إلى ربك يومئذ المستقر... ... ... ... ... ... | ٧٥ ك القيامة | ١٢ |
| مُسْتَقَرًّا | : أصحاب الجنة يومئذ خير مستقرا وأحسن مقيلا | ٢٥ ك الفـرقان | ٢٤ |
| (٣) | إنها ساءت مستقرا ومقاما ... ... ... ... ... ... | ٢٥ ك » | ٦٦ |
| | خالدين فيها حسنت مستقرا ومقاما ... ... ... ... | ٢٥ ك » | ٧٦ |
| مُسْتَقَرَّهَا | : ويعلم مستقرها ومستودعها ... ... ... ... ... | ١١ ك هـود | ٦ |
| مُسْتَقِرٌّ | : وكذبوا واتبعوا أهواءهم وكل أمر مستقر... ... | ٥٤ ك القمـر | ٣ |
| (٢) | ولقد صبحهم بكرة عذاب مستقر ... ... ... ... | ٥٤ ك » | ٣٨ |
| مُسْتَقَرًّا | : فلما رآه مستقرا عنده قال هذا من فضل ربى ... | ٢٧ ك النمـل | ٤٠ |
| قَوَارِيرَ | : قال إنه صرح ممرد من قوارير ... ... ... ... | ٢٧ ك » | ٤٤ |
| قَوَارِيرَا | : ويطاف عليهم بآنية من فضة وأكواب كانت قواريرا | ٧٦ م الإنسـان | ١٥ |
| (٢) | قواريرا من فضة قدروها تقديرا ... ... ... ... | ٧٦ م » | ١٦ |
| | ✦✦✦ | | |
| قُرَيْشٍ | : لإيلاف قريش . إيلافهم رحلة الشتاء والصيف | ١٠٦ ك قـريش | ١ |
| | ✦✦✦ | | |
| تَقْرِضُهُمْ | : وإذا غربت تقرضهم ذات الشمال وهم فى فجوة منه | ١٨ ك الكهف | ١٧ |
| أَقْرَضْتُمُ | : وآمنتم برسلى وعزرتموهم وأقرضتم الله قرضا حسنا | ٥ م المائدة | ١٢ |
| أَقْرَضُوا | : إن المصدقين والمصدقات وأقرضوا الله قرضا | | |
| | حسنا يضاعف لهم ... ... ... ... ... ... ... | ٥٧ م الحـديد | ١٨ |
| تُقْرِضُوا | : إن تقرضوا الله قرضا حسنا يضاعفه لكم ويغفر لكم | ٦٤ م التغـابن | ١٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يُقْرِضُ | : من ذا الذى يقرض الله قرضا حسنا فيضاعفه له | ٢٤٥ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | من ذا الذى يقرض الله قرضا حسنا فيضاعفه له ... | ١١ | م الحديد | ٥٧ |
| أَقْرِضُوا | : وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة وأقرضوا الله قرضا حسنا ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | م المزمل | ٧٣ |
| قَرْضًا | : من ذا الذى يقرض الله قرضا حسنا ... ... ... | ٢٤٥ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | وأقرضتم الله قرضا حسنا لأكفرن عنكم سيئاتكم ... | ١٢ | م المائدة | ٥ |
| | من ذا الذى يقرض الله قرضا حسنا فيضاعفه له ... | ١١ | م الحديد | ٥٧ |
| | إن المصدقين والمصدقات وأقرضوا الله قرضا حسنا يضاعف لهم ... ... ... ... ... ... | ١٨ | م » | ٥٧ |
| | إن تقرضوا الله قرضا حسنا يضاعفه لكم ويغفر لكم | ١٧ | م التغابن | ٦٤ |
| | وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة وأقرضوا الله قرضا حسنا | ٢٠ | م المزمل | ٧٣ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| قِرْطَاسٍ | : ولو نزلنا عليك كتابا فى قرطاس فلمسوه بأيديهم لقال الذين كفروا إن هذا إلا سحر مبين ... ... | ٧ | ك الأنعام | ٦ |
| قَرَاطِيسَ | : تجعلونه قراطيس تبدونها وتخفون كثيرا... ... | ٩١ | م » | ٦ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ٱلْقَارِعَةُ | : ولا يزال الذين كفروا تصيبهم بما صنعوا قارعة | ٣١ | م الرعد | ١٣ |
| (٥) | كذبت ثمود وعاد بالقارعة ... ... ... ... ... | ٤ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | القارعة ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ١ | ك القارعة | ١٠١ |
| | ما القارعة ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢ | ك » | ١٠١ |
| | وما أدراك ما القارعة ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك » | ١٠١ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ٱقْتَرَفْتُمُوهَا | : وأموال اقترفتموها وتجارة تخشون كسادها | ٢٤ | م التوبة | ٩ |
| يَقْتَرِفْ | : ومن يقترف حسنة نزد له فيها حسنا ... ... ... | ٢٣ | م الشورى | ٤٢ |
| يَقْتَرِفُوا | : وليرضوه وليقترفوا ما هم مقترفون ... ... ... | ١١٣ | ك الأنعام | ٦ |
| يَقْتَرِفُونَ | : إن الذين يكسبون الإثم سيجزون بما كانوا يقترفون | ١٢٠ | ك » | ٦ |
| مُقْتَرِفُونَ | : وليرضوه وليقترفوا ما هم مقترفون... ... ... | ١١٣ | ك » | ٦ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| قَرْنٍ | : ألم يروا كم أهلكنا من قبلهم من قرن مكناهم فى الأرض | ٦ | ك » | ٦ |
| (٥) | وكم أهلكنا قبلهم من قرن هم أحسن أثاثا ورئيا ... | ٧٤ | ك مريم | ١٩ |
| | وكم أهلكنا قبلهم من قرن هل تحس منهم من أحد... | ٩٨ | ك » | ١٩ |
| | كم أهلكنا من قبلهم من قرن فنادوا ولات حين مناص | ٣ | ك ص | ٣٨ |
| | كم أهلكنا قبلهم من قرن هم أشد منهم بطشا ... ... | ٣٦ | ك ق | ٥٠ |
| قَرْنًا | : فأهلكناهم بذنوبهم وأنشأنا من بعدهم قرنا آخرين | ٦ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | ثم أنشأنا من بعدهم قرنا آخرين ... ... ... ... | ٣١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| ٱلْقَرْنَيْنِ | : ويسئلونك عن ذى القرنين قل سأتلوا عليكم منه ذكرا | ٨٣ | م الكهف | ١٨ |
| (٣) | قلنا ياذا القرنين إما أن تعذب وإما أن تتخذ فيهم حسنا | ٨٦ | م » | ١٨ |
| | قالوا ياذا القرنين إن يأجوج ومأجوج مفسدون فى الأرض... ... ... ... ... ... ... | ٩٤ | م » | ١٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ٱلْقُرُونِ | : ولقد أهلكنا القرون من قبلكم لما ظلموا... ... | ١٣ | ك يونس | ١٠ |
| (١٠) | فلولا كان من القرون من قبلكم أولوا بقية ينهون عن الفساد | ١١٦ | ك هود | ١١ |
| | وكم أهلكنا من القرون من بعد نوح ... ... ... ... | ١٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| | قال فما بال القرون الأولى ... ... ... ... ... | ٥١ | ك طه | ٢٠ |
| | أفلم يهد لهم كم أهلكنا قبلهم من القرون يمشون فى مساكنهم | ١٢٨ | ك » | ٢٠ |
| | ولقد آتينا موسى الكتاب من بعد ما أهلكنا القرون الأولى | ٤٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | أولم يعلم أن الله قد أهلك من قبله من القرون من هو أشد منه قوة وأكثر جمعا ... ... ... ... ... | ٧٨ | ك » | ٢٨ |
| | أولم يهد لهم كم أهلكنا من قبلهم من القرون يمشون فى مساكنهم .. ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك السجدة | ٣٢ |
| | ألم يروا كم أهلكنا قبلهم من القرون أنهم إليهم لا يرجعون | ٣١ | ك يس | ٣٦ |
| | أف لكما أتعدانى أن أخرج وقد خلت القرون من قبلى | ١٧ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| قُرُونًا | : ثم أنشأنا من بعدهم قرونا آخرين ... ... ... ... | ٤٢ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٣) | وعادا وثمودا وأصحاب الرس وقرونا بين ذلك كثيرا | ٣٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ولكنا أنشأنا قرونا فتطاول عليهم العمر ... ... ... | ٤٥ | ك القصص | ٢٨ |
| قَرِينٌ | : قال قائل منهم إنى كان لى قرين ... ... ... ... | ٥١ | ك الصافات | ٣٧ |
| (٣) | ومن يعش عن ذكر الرحمن نقيض له شيطانا فهو له قرين | ٣٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | قال ياليت بينى وبينك بعد المشرقين فبئس القرين | ٣٨ | ك » | ٤٣ |
| قَرِينًا | : ومن يكن الشيطان له قرينا ... ... ... ... ... | ٣٨ | م النساء | ٤ |
| (٢) | فساء قرينا... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | م » | ٤ |
| قَرِينُهُ | : وقال قرينه هذا ما لدىّ عتيد... ... ... ... ... | ٢٣ | ك ق | ٥٠ |
| (٢) | قال قرينه ربنا ما أطغيته ولكن كان فى ضلال بعيد | ٢٧ | ك » | ٥٠ |
| قُرَنَاءَ | : وقيضنا لهم قرناء فزينوا لهم ما بين أيديهم وما خلفهم | ٢٥ | ك فصلت | ٤١ |
| مُقَرَّنِينَ | : وترى المجرمين يومئذ مقرنين فى الأصفاد... ... | ٤٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| (٣) | وإذا ألقوا منها مكانا ضيقا مقرنين دعوا هنالك ثبورا | ١٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وآخرين مقرنين فى الأصفاد ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك ص | ٣٨ |
| مُقْرِنِينَ | : سبحان الذى سخر لنا هذا وما كنا له مقرنين ... | ١٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| مُقْتَرِنِينَ | : أو جاء معه الملائكة مقترنين ... ... ... ... | ٥٣ | ك » | ٤٣ |
| قَارُونُ | : إن قارون كان من قوم موسى فبغى عليهم ... ... | ٧٦ | ك القصص | ٢٨ |
| (٤) | قال الذين يريدون الحياة الدنيا ياليت لنا مثل ما أوتى قارون | ٧٩ | ك » | ٢٨ |
| | وقارون وفرعون وهامان ولقد جاءهم موسى بالبينات | ٣٩ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | إلى فرعون وهامان وقارون فقالوا ساحر كذاب ... | ٢٤ | ك غافر | ٤٠ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ٱلْقَرْيَةَ | : وإذ قلنا ادخلوا هذه القرية فكلوا منها حيث شئتم رغدا | ٥٨ | م البقرة | ٢ |
| (٢٣) | أو كالذى مر على قرية وهى خاوية على عروشها ... | ٢٥٩ | م » | ٢ |
| | ربنا أخرجنا من هذه القرية الظالم أهلها ...؟... | ٧٥ | م النساء | ٤ |
| | وكذلك جعلنا فى كل قرية أكابر مجرميها ليمكروا فيها | ١٢٣ | ك الأنعام | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **ٱلْقَرْيَةِ** : وكم من قرية أهلكناها فجاءها بأسنا بياتا أو هم قائلون | ٤ | ك | الأعراف | ٧ |
| وما أرسلنا فى قرية من نبى إلا أخذنا أهلها بالبأساء والضراء | ٩٤ | ك | « | ٧ |
| وإذ قيل لهم اسكنوا هذه القرية وكلوا منها حيث شئتم | ١٦١ | ك | « | ٧ |
| وسئلهم عن القرية التى كانت حاضرة البحر ... ... | ١٦٣ | م | « | ٧ |
| فلولا كانت قرية آمنت فنفعها إيمانها إلا قوم يونس | ٩٨ | ك | يونس | ١٠ |
| وسئل القرية التى كنا فيها والعير التى أقبلنا فيها ... | ٨٢ | ك | يوسف | ١٢ |
| وما أهلكنا من قرية إلا ولها كتاب معلوم ... ... | ٤ | ك | الحجر | ١٥ |
| وضرب الله مثلا قرية كانت آمنة مطمئنة ... ... ... | ١١٢ | ك | النحل | ١٦ |
| وإذا أردنا أن نهلك قرية أمرنا مترفيها ففسقوا فيها | ١٦ | ك | الإسراء | ١٧ |
| وإن من قرية إلا نحن مهلكوها قبل يوم القيامة ... | ٥٨ | ك | « | ١٧ |
| فانطلقا حتى إذا أتيا أهل قرية استطعما أهلها ... ... | ٧٧ | ك | الكهف | ١٨ |
| ما آمنت قبلهم من قرية أهلكناها أفهم يؤمنون ... | ٦ | ك | الأنبياء | ٢١ |
| وكم قصمنا من قرية كانت ظالمة... ... ... ... ... | ١١ | ك | « | ٢١ |
| ونجيناه من القرية التى كانت تعمل الخبائث ... ... | ٧٤ | ك | « | ٢١ |
| وحرام على قرية أهلكناها أنهم لا يرجعون... ... ... | ٩٥ | ك | « | ٢١ |
| فكأين من قرية أهلكناها وهى ظالمة... ... ... ... | ٤٥ | م | الحج | ٢٢ |
| وكأين من قرية أمليت لها وهى ظالمة ... ... ... | ٤٨ | م | « | ٢٢ |
| ولقد أتوا على القرية التى أمطرت مطر السوء ... ... | ٤٠ | ك | الفرقان | ٢٥ |
| ولو شئنا لبعثنا فى كل قرية نذيرا ... ... ... ... | ٥١ | ك | « | ٢٥ |
| وما أهلكنا من قرية إلا لها منذرون ... ... ... ... | ٢٠٨ | ك | الشعراء | ٢٦ |
| قالت إن الملوك إذا دخلوا قرية أفسدوها ... ... | ٣٤ | ك | النمل | ٢٧ |
| وكم أهلكنا من قرية بطرت معيشتها ... ... ... ... | ٥٨ | ك | القصص | ٢٨ |
| قالوا إنا مهلكوا أهل هذه القرية ... ... ... ... | ٣١ | ك | العنكبوت | ٢٩ |
| إنا منزلون على أهل هذه القرية رجزا من السماء ... | ٣٤ | ك | « | ٢٩ |
| وما أرسلنا فى قرية من نذير إلا قال مترفوها إنا بما أرسلتم به كافرون ... ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك | سبأ | ٣٤ |
| واضرب لهم مثلا أصحاب القرية إذ جاءها المرسلون | ١٣ | ك | يس | ٣٦ |
| وكذلك ما أرسلنا من قبلك فى قرية من نذير إلا قال مترفوها إنا وجدنا آباءنا على أمة ... ... ... | ٢٣ | ك | الزخرف | ٤٣ |
| وكأين من قرية هى أشد قوة من قريتك التى أخرجتك | ١٣ | م | محمد | ٤٧ |
| وكأين من قرية عتت عن أمر ربها ورسله ... ... | ٨ | م | الطلاق | ٦٥ |
| **قَرْيَتِكَ** : وكأين من قرية هى أشد قوة من قريتك التى أخرجتك أهلكناهم فلا ناصر لهم ... ... ... ... ... ... | ١٣ | م | محمد | ٤٧ |
| **قَرْيَتِكُمْ** : وما كان جواب قومه إلا أن قالوا أخرجوهم من قريتكم... ... ... ... ... ... ... ... (٢) | ٨٢ | ك | الأعراف | ٧ |
| فما كان جواب قومه إلا أن قالوا أخرجوا آل لوط من قريتكم... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٦ | ك | النمل | ٢٧ |
| **قَرْيَتِنَا** : لنخرجنك يا شعيب والذين آمنوا معك من قريتنا | ٨٨ | ك | الأعراف | ٧ |
| **ٱلْقَرْيَتَيْنِ** : وقالوا لولا نزل هذا القرآن على رجل من القريتين عظيم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك | الزخرف | ٤٣ |
| **ٱلْقُرَى** : ولتنذر أم القرى ومن حولها ... ... ... ... | ٩٢ | ك | الأنعام | ٦ |
| (١٨) ذلك أن لم يكن ربك مهلك القرى بظلم وأهلها غافلون | ١٣١ | ك | « | ٦ |
| ولو أن أهل القرى آمنوا واتقوا لفتحنا عليهم بركات من السماء والأرض ... ... ... ... ... ... ... | ٩٦ | ك | الأعراف | ٧ |
| أفأمن أهل القرى أن يأتيهم بأسنا بياتا وهم نائمون | ٩٧ | ك | « | ٧ |
| أو أمن أهل القرى أن يأتيهم بأسنا ضحى وهم يلعبون | ٩٨ | ك | « | ٧ |
| ذلك من أنباء القرى نقصه عليك منها قائم وحصيد ... | ١٠٠ | ك | هود | ١١ |
| وكذلك أخذ ربك إذا أخذ القرى وهى ظالمة... ... | ١٠٢ | ك | « | ١١ |
| وما كان ربك ليهلك القرى بظلم وأهلها مصلحون ... | ١١٧ | ك | « | ١١ |
| وما أرسلنا من قبلك إلا رجالا نوحى إليهم من أهل القرى | ١٠٩ | ك | يوسف | ١٢ |
| وتلك القرى أهلكناهم لما ظلموا وجعلنا لمهلكهم موعدا | ٥٩ | ك | الكهف | ١٨ |
| وما كان ربك مهلك القرى حتى يبعث فى أمها رسولا | ٥٩ | ك | القصص | ٢٨ |
| وما كنا مهلكى القرى إلا وأهلها ظالمون ... ... ... | ٥٩ | ك | « | ٢٨ |
| وجعلنا بينهم وبين القرى التى باركنا فيها ... ... ... | ١٨ | ك | سبأ | ٣٤ |
| قرى ظاهرة وقدرنا فيها السير ... ... ... ... ... | ١٨ | ك | « | ٣٤ |
| وكذلك أوحينا إليك قرآنا عربيا لتنذر أم القرى ومن حولها | ٧ | ك | الشورى | ٤٢ |
| ولقد أهلكنا ما حولكم من القرى وصرفنا الآيات ... | ٢٧ | ك | الأحقاف | ٤٦ |
| ما أفاء الله على رسوله من أهل القرى فلله وللرسول | ٧ | م | الحشر | ٥٩ |
| لا يقاتلونكم جميعا إلا فى قرى محصنة أو من وراء جدر | ١٤ | م | « | ٥٩ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **قَسْوَرَةٍ** : كأنهم حمر مستنفرة . فرت من قسورة ... ... | ٥١ | ك | المدثر | ٧٤ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **قِسِّيسِينَ** : ذلك بأن منهم قسيسين ورهبانا وأنهم لا يستكبرون | ٨٢ | م | المائدة | ٥ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **تُقْسِطُوا** : وإن خفتم ألا تقسطوا فى اليتامى فانكحوا ما طاب لكم من النساء ... ... ... ... ... ... ... (٢) | ٣ | م | النساء | ٤ |
| لا ينهاكم الله عن الذين لم يقاتلوكم فى الدين ولم يخرجوكم من دياركم أن تبروهم وتقسطوا إليهم ... ... | ٨ | م | الممتحنة | ٦٠ |
| **أَقْسِطُوا** : فإن فاءت فأصلحوا بينهما بالعدل وأقسطوا ... | ٩ | م | الحجرات | ٤٩ |
| **ٱلْقَاسِطُونَ** : وأنا منا المسلمون ومنا القاسطون... ... ... | ١٤ | ك | الجن | ٧٢ |
| (٢) وأما القاسطون فكانوا لجهنم حطبا ... ... ... ... | ١٥ | ك | « | ٧٢ |
| **أَقْسَطُ** : ذلكم أقسط عند الله وأقوم للشهادة وأدنى ألا ترتابوا | ٢٨٢ | م | البقرة | ٢ |
| (٢) ادعوهم لآبائهم هو أقسط عند الله ... ... ... ... | ٥ | م | الأحزاب | ٣٣ |
| **ٱلْمُقْسِطِينَ** : وإن حكمت فاحكم بينهم بالقسط إن الله يحب المقسطين... ... ... ... ... ... ... (٣) | ٤٢ | م | المائدة | ٥ |
| فأصلحوا بينهما بالعدل وأقسطوا إن الله يحب المقسطين | ٩ | م | الحجرات | ٤٩ |
| أن تبروهم وتقسطوا إليهم إن الله يحب المقسطين... | ٨ | م | الممتحنة | ٦٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **ٱلْقِسْطَ** | شهد الله أنه لا إله إلا هو والملائكة وأولوا العلم | | | |
| (١٥) | قائما بالقسط ... ... ... ... ... ... ... | ١٨ | م آل عمران | ٣ |
| | ويقتلون الذين يأمرون بالقسط من الناس فبشرهم | | | |
| | بعذاب أليم ... ... ... ... ... ... ... | ٢١ | م « | ٣ |
| | والمستضعفين من الولدان وأن تقوموا لليتامى بالقسط | ١٢٧ | م النساء | ٤ |
| | يأيها الذين آمنوا كونوا قوامين بالقسط شهداء لله | ١٣٥ | م « | ٤ |
| | يأيها الذين آمنوا كونوا قوامين لله شهداء بالقسط | ٨ | م المائدة | ٥ |
| | وإن حكمت فاحكم بينهم بالقسط إن الله يحب المقسطين | ٤٢ | م « | ٥ |
| | وأوفوا الكيل والميزان بالقسط ... ... ... ... | ١٥٢ | م الأنعام | ٦ |
| | قل أمر ربي بالقسط ... ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | ليجزي الذين آمنوا وعملوا الصالحات بالقسط ... ... | ٤ | ك يونس | ١٠ |
| | فإذا جاء رسولهم قضي بينهم بالقسط وهم لا يظلمون | ٤٧ | ك « | ١٠ |
| | وقضي بينهم بالقسط وهم لا يظلمون ... ... ... | ٥٤ | ك « | ١٠ |
| | ويا قوم أوفوا المكيال والميزان بالقسط ... ... ... | ٨٥ | ك هود | ١١ |
| | ونضع الموازين القسط ليوم القيامة ... ... ... ... | ٤٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وأقيموا الوزن بالقسط ولا تخسروا الميزان ... ... | ٩ | م الرحمن | ٥٥ |
| | وأنزلنا معهم الكتاب والميزان ليقوم الناس بالقسط | ٢٥ | م الحديد | ٥٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **ٱلْقِسْطَاسِ** | وأوفوا الكيل إذا كلتم وزنوا بالقسطاس المستقيم | ٣٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٢) | ولا تكونوا من المخسرين . وزنوا بالقسطاس المستقيم | ١٨٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **قَسَمْنَا** | نحن قسمنا بينهم معيشتهم في الحياة الدنيا ... | ٣٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| **يَقْسِمُونَ** | أهم يقسمون رحمة ربك ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك « | ٤٣ |
| **أَقْسَمْتُمْ** | أهؤلاء الذين أقسمتم لا ينالهم الله برحمة ... ... | ٤٩ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | أولم تكونوا أقسمتم من قبل ما لكم من زوال ... | ٤٤ | ك إبراهيم | ١٤ |
| **أَقْسَمُوا** | أهؤلاء الذين أقسموا بالله جهد أيمانهم إنهم لمعكم | ٥٣ | م المائدة | ٥ |
| (٦) | وأقسموا بالله جهد أيمانهم لئن جاءتهم آية ليؤمنن بها | ١٠٩ | ك الأنعام | ٦ |
| | وأقسموا بالله جهد أيمانهم لا يبعث الله من يموت | ٣٨ | ك النحل | ١٦ |
| | وأقسموا بالله جهد أيمانهم لئن أمرتهم ليخرجن ... | ٥٣ | م النور | ٢٤ |
| | وأقسموا بالله جهد أيمانهم لئن جاءهم نذير ليكونن أهدى | | | |
| | من إحدى الأمم ... ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| | إنا بلوناهم كما بلونا أصحاب الجنة إذ أقسموا ليصرمنها | | | |
| | مصبحين ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | م القلم | ٦٨ |
| **أُقْسِمُ** | فلا أقسم بمواقع النجوم ... ... ... ... ... | ٧٥ | ك الواقعة | ٥٦ |
| (٨) | فلا أقسم بما تبصرون . وما لا تبصرون ... ... ... | ٣٨ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | فلا أقسم برب المشارق والمغارب إنا لقادرون... ... | ٤٠ | ك المعارج | ٧٠ |
| | لا أقسم بيوم القيامة ... ... ... ... ... ... | ١ | ك القيامة | ٧٥ |
| | ولا أقسم بالنفس اللوامة ... ... ... ... ... | ٢ | ك « | ٧٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **أُقْسِمُ** | فلا أقسم بالخنس . الجوار الكنس... ... ... ... | ١٥ | ك التكوير | ٨١ |
| | فلا أقسم بالشفق . والليل وما وسق... ... ... ... | ١٦ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| | لا أقسم بهذا البلد . وأنت حل بهذا البلد ... ... | ١ | ك البلد | ٩٠ |
| **تُقْسِمُوا** | قل لا تقسموا طاعة معروفة إن الله خبير بما تعملون | ٥٣ | م النور | ٢٤ |
| **يُقْسِمُ** | ويوم تقوم الساعة يقسم المجرمون ما لبثوا غير ساعة | ٥٥ | ك الروم | ٣٠ |
| **يُقْسِمَانِ** | فيقسمان بالله إن ارتبتم لا نشتري به ثمنا ... ... | ١٠٦ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | فيقسمان بالله لشهادتنا أحق من شهادتهما ... ... ... | ١٠٧ | م « | ٥ |
| **قَاسَمَهُمَا** | وقاسمهما إني لكما لمن الناصحين ... ... ... ... | ٢١ | ك الأعراف | ٧ |
| **تَقَاسَمُوا** | قالوا تقاسموا بالله لنبيتنه وأهله... ... ... ... | ٤٩ | ك النمل | ٢٧ |
| **تَسْتَقْسِمُوا** | وما ذبح على النصب وأن تستقسموا بالأزلام | ٣ | م المائدة | ٥ |
| **قَسَمٌ** | وإنه لقسم لو تعلمون عظيم ... ... ... ... ... | ٧٦ | ك الواقعة | ٥٦ |
| (٢) | هل في ذلك قسم لذي حجر ... ... ... ... ... | ٥ | ك الفجر | ٨٩ |
| **ٱلْقِسْمَةَ** | وإذا حضر القسمة أولوا القربى واليتامى | | | |
| (٣) | والمساكين فارزقوهم منه ... ... ... ... ... | ٨ | م النساء | ٤ |
| | ألكم الذكر وله الأنثى . تلك إذا قسمة ضيزى ... | ٢٢ | ك النجم | ٥٣ |
| | ونبئهم أن الماء قسمة بينهم كل شرب محتضر... ... | ٢٨ | ك القمر | ٥٤ |
| **مَقْسُومٌ** | لها سبعة أبواب لكل باب منهم جزء مقسوم ... | ٤٤ | ك الحجر | ١٥ |
| **فَٱلْمُقَسِّمَاتِ** | فالمقسمات أمرا . إنما توعدون لواقع ... | ٤ | ك الذاريات | ٥١ |
| **ٱلْمُقْتَسِمِينَ** | كما أنزلنا على المقتسمين ... ... ... ... ... | ٩٠ | ك الحجر | ١٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **قَسَتْ** | ثم قست قلوبكم من بعد ذلك فهي كالحجارة أو أشد قسوة | ٧٤ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | ولكن قست قلوبهم وزين لهم الشيطان ما كانوا يعملون | ٤٣ | ك الأنعام | ٦ |
| | فطال عليهم الأمد فقست قلوبهم ... ... ... ... | ١٦ | م الحديد | ٥٧ |
| **ٱلْقَاسِيَةَ** | فبما نقضهم ميثاقهم لعناهم وجعلنا قلوبهم قاسية | ١٣ | م المائدة | ٥ |
| (٣) | ليجعل ما يلقي الشيطان فتنة للذين في قلوبهم مرض | | | |
| | والقاسية قلوبهم ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | م الحج | ٢٢ |
| | فويل للقاسية قلوبهم من ذكر الله ... ... ... ... | ٢٢ | ك الزمر | ٣٩ |
| **قَسْوَةً** | ثم قست قلوبكم من بعد ذلك فهي كالحجارة أو أشد قسوة | ٧٤ | م البقرة | ٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **تَقْشَعِرُّ** | مثاني تقشعر منه جلود الذين يخشون ربهم... ... | ٢٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **أَقْصِدْ** | واقصد في مشيك واغضض من صوتك ... ... | ١٩ | ك لقمان | ٣١ |
| **قَصْدُ** | وعلى الله قصد السبيل ومنها جائر ... ... ... ... | ٩ | ك النحل | ١٦ |
| **قَاصِدًا** | لو كان عرضا قريبا وسفرا قاصدا لاتبعوك ... | ٤٢ | م التوبة | ٩ |
| **مُقْتَصِدٌ** | فلما نجاهم إلى البر فمنهم مقتصد ... ... ... ... | ٣٢ | ك لقمان | ٣١ |
| (٢) | فمنهم ظالم لنفسه ومنهم مقتصد ومنهم سابق بالخيرات | ٣٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| **مُقْتَصِدَةٌ** | منهم أمة مقتصدة وكثير منهم ساء ما يعملون | ٦٦ | م المائدة | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| تَقْصُرُوا | : فليس عليكم جناح أن تقصروا من الصلاة ... | ١٠١ | م النساء | ٤ |
| يُقْصِرُونَ | : وإخوانهم يمدونهم فى الغى ثم لا يقصرون | ٢٠٢ | ك الأعراف | ٧ |
| قَصْرٍ | : فهى خاوية على عروشها وبئر معطلة وقصر مشيد | ٤٥ | م الحج | ٢٢ |
| (٢) | إنها ترمى بشرر كالقصر . كأنه جمالة صفر... ... ... | ٣٢ | ك المرسلات | ٧٧ |
| قُصُورًا | : تتخذون من سهولها قصورا وتنحتون الجبال بيوتا | ٧٤ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | ويجعل لك قصورا ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك الفرقان | ٢٥ |
| قَاصِرَاتُ | : وعندهم قاصرات الطرف عين ... ... ... ... | ٤٨ | ك الصافات | ٣٧ |
| (٣) | وعندهم قاصرات الطرف أتراب... ... ... ... | ٥٢ | ك ص | ٣٨ |
| | فيهن قاصرات الطرف لم يطمثهن إنس قبلهم ولا جان | ٥٦ | م الرحمن | ٥٥ |
| مَقْصُورَاتٌ | : حور مقصورات فى الخيام ... ... ... | ٧٢ | م « | ٥٥ |
| مُقَصِّرِينَ | : آمنين محلقين رءوسكم ومقصرين لا تخافون... | ٢٧ | م الفتح | ٤٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| قَصَّ | : فلما جاءه وقص عليه القصص قال لا تخف ... ... | ٢٥ | ك القصص | ٢٨ |
| قَصَصْنَا | : وعلى الذين هادوا حرمنا ما قصصنا عليك من قبل | ١١٨ | ك النحل | ١٦ |
| (٢) | ولقد أرسلنا رسلا من قبلك منهم من قصصنا عليك | ٧٨ | ك غافر | ٤٠ |
| قَصَصْنَاهُمْ | : ورسلا قد قصصناهم عليك من قبل ... ... | ١٦٤ | م النساء | ٤ |
| تَقْصُصْ | : قال يا بنىّ لا تقصص رؤياك على إخوتك ... | ٥ | ك يوسف | ١٢ |
| نَقُصُّ | : تلك القرى نقص عليك من أنبائها ... ... ... | ١٠١ | ك الأعراف | ٧ |
| (٥) | وكلا نقص عليك من أنباء الرسل ما نثبت به فؤادك | ١٢٠ | ك هود | ١١ |
| | نحن نقص عليك أحسن القصص ... ... ... ... | ٣ | م يوسف | ١٢ |
| | نحن نقص عليك نبأهم بالحق ... ... ... ... ... | ١٣ | ك الكهف | ١٨ |
| | كذلك نقص عليك من أنباء ما قد سبق ... ... ... | ٩٩ | ك طه | ٢٠ |
| نَقْصُصْ | : منهم من قصصنا عليك ومنهم من لم نقصص عليك | ٧٨ | ك غافر | ٤٠ |
| (٢) | ورسلا قد قصصناهم عليك من قبل ورسلا لم | | | |
| | نقصصهم عليك ... ... ... ... ... ... ... | ١٦٤ | م النساء | ٤ |
| فَلَنَقُصَّنَّ | : فلنقصن عليهم بعلم وما كنا غائبين ... ... ... | ٧ | ك الأعراف | ٧ |
| نَقُصُّهُ | : ذلك من أنباء القرى نقصه عليك منها قائم وحصيد | ١٠٠ | ك هود | ١١ |
| يَقُصُّ | : إن الحكم إلا لله يقص الحق وهو خير الفاصلين | ٥٧ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | إن هذا القرآن يقص على بنى إسرائيل أكثر الذى هم | | | |
| | فيه يختلفون ... ... ... ... ... ... ... | ٧٦ | ك النمل | ٢٧ |
| يَقُصُّونَ | : ألم يأتكم رسل منكم يقصون عليكم آياتى ... ... | ١٣٠ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | إما يأتينكم رسل منكم يقصون عليكم آياتى... ... ... | ٣٥ | ك الأعراف | ٧ |
| فَاقْصُصِ | : فاقصص القصص لعلهم يتفكرون ... ... ... | ١٧٦ | ك « | ٧ |
| قُصِّيهِ | : وقالت لأخته قصيه فبصرت به عن جنب وهم | | | |
| | لا يشعرون ... ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك القصص | ٢٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الْقَصَصُ | : إن هذا لهو القصص الحق وما من إله إلا الله | ٦٢ | م آل عمران | ٣ |
| (٤) | فاقصص القصص لعلهم يتفكرون... ... ... ... ... | ١٧٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | نحن نقص عليك أحسن القصص ... ... ... ... | ٣ | م يوسف | ١٢ |
| | فلما جاءه وقص عليه القصص قال لا تخف ... ... | ٢٥ | ك القصص | ٢٨ |
| قَصَصًا | : قال ذلك ما كنا نبغ فارتدا على آثارهما قصصا ... | ٦٤ | ك الكهف | ١٨ |
| قَصَصِهِمْ | : لقد كان فى قصصهم عبرة لأولى الألباب ... | ١١١ | ك يوسف | ١٢ |
| الْقِصَاصُ | : يأيها الذين آمنوا كتب عليكم القصاص فى القتلى | ١٧٨ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | ولكم فى القصاص حياة يا أولى الألباب لعلكم تتقون | ١٧٩ | م « | ٢ |
| | الشهر الحرام بالشهر الحرام والحرمات قصاص... ... | ١٩٤ | م « | ٢ |
| | وكتبنا عليهم فيها أن النفس بالنفس والعين بالعين | | | |
| | والأنف بالأنف والأذن بالأذن والسن بالسن | | | |
| | والجروح قصاص ... ... ... ... ... ... ... | ٤٥ | م المائدة | ٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| قَاصِفًا | : فيرسل عليكم قاصفا من الريح ... ... ... ... ... | ٦٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| قَصَمْنَا | : وكم قصمنا من قرية كانت ظالمة ... ... ... ... | ١١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| قَصِيًّا | : فحملته فانتبذت به مكانا قصيا ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك مريم | ١٩ |
| الْأَقْصَا | : سبحان الذى أسرى بعبده ليلا من المسجد الحرام | | | |
| (٣) | إلى المسجد الأقصا ... ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وجاء رجل من أقصا المدينة يسعى قال ياموسى ... | ٢٠ | ك القصص | ٢٨ |
| | وجاء من أقصا المدينة رجل يسعى قال ياقوم ... ... | ٢٠ | ك يس | ٣٦ |
| الْقُصْوَى | : إذ أنتم بالعدوة الدنيا وهم بالعدوة القصوى | ٤٢ | م الأنفال | ٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| قَضْبًا | : ثم شققنا الأرض شقا . فأنبتنا فيها حبا . وعنبا وقضبا | ٢٨ | ك عبس | ٨٠ |
| | ✦✦✦ | | | |
| يَنْقَضَّ | : فوجدا فيها جدارا يريد أن ينقض فأقامه... ... | ٧٧ | ك الكهف | ١٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| قَضَى | : وإذا قضى أمرا فإنما يقول له كن فيكون ... ... | ١١٧ | م البقرة | ٢ |
| (١٢) | إذا قضى أمرا فإنما يقول له كن فيكون ... ... | ٤٧ | م آل عمران | ٣ |
| | هو الذى خلقكم من طين ثم قضى أجلا ... ... ... | ٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | وقضى ربك ألا تعبدوا إلا إياه وبالوالدين إحسانا | ٢٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| | سبحانه إذا قضى أمرا فإنما يقول له كن فيكون ... | ٣٥ | ك مريم | ١٩ |
| | فوكزه موسى فقضى عليه ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك القصص | ٢٨ |
| | فلما قضى موسى الأجل وسار بأهله آنس من جانب | | | |
| | الطور نارا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك « | ٢٨ |
| | فمنهم من قضى نحبه ومنهم من ينتظر ... ... ... | ٢٣ | م الأحزاب | ٣٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَضَى | : وما كان لمؤمن ولا مؤمنة إذا قضى الله ورسوله أمرا | | | |
| | أن يكون لهم الخيرة من أمرهم ... ... ... ... | ٣٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | فلما قضى زيد منها وطرا زوجناكها ... ... ... ... | ٣٧ | م « | ٣٣ |
| | فيمسك التى قضى عليها الموت ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك الزمر | ٣٩ |
| | فإذا قضى أمرا فإنما يقول له كن فيكون... ... ... | ٦٨ | ك غافر | ٤٠ |
| قَضَاهَا | : إلا حاجة فى نفس يعقوب قضاها ... ... ... | ٦٨ | ك يوسف | ١٢ |
| قَضَاهُنَّ | : فقضاهن سبع سموات فى يومين ... ... ... | ١٢ | ك فصلت | ٤١ |
| قَضَوْا | : لكى لا يكون على المؤمنين حرج فى أزواج أدعيائهم | | | |
| | إذا قضوا منهن وطرا ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| قَضَيْتُ | : ثم لا يجدوا فى أنفسهم حرجا مما قضيت ويسلموا تسليما | ٦٥ | م النساء | ٤ |
| (٢) | أيما الأجلين قضيت فلا عدوان علىّ ... ... ... | ٢٨ | ك القصص | ٢٨ |
| قَضَيْتُمْ | : فإذا قضيتم مناسككم فاذكروا الله كذكركم آباءكم | ٢٠٠ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | فإذا قضيتم الصلاة فاذكروا الله قياما وقعودا وعلى جنوبكم | ١٠٣ | م النساء | ٤ |
| قَضَيْنَا | : وقضينا إليه ذلك الأمر أن دابر هؤلاء مقطوع | ٦٦ | ك الحجر | ١٥ |
| (٤) | وقضينا إلى بنى إسرائيل فى الكتاب لتفسدن فى الأرض | ٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وما كنت بجانب الغربى إذ قضينا إلى موسى الأمر | ٤٤ | ك القصص | ٢٨ |
| | فلما قضينا عليه الموت ما دلهم على موته إلا دابة الأرض | ١٤ | ك سبإ | ٣٤ |
| تَقْضِى | : فاقض ما أنت قاض إنما تقضى هذه الحياة الدنيا | ٧٢ | ك طه | ٢٠ |
| يَقْضِ | : ونادوا يا مالك ليقض علينا ربك قال إنكم ماكثون | ٧٧ | ك الزخرف | ٤٣ |
| (٢) | كلا لما يقض ما أمره ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك عبس | ٨٠ |
| لْيَقْضُوا | : ثم ليقضوا تفثهم وليوفوا نذورهم ... ... ... | ٢٩ | م الحج | ٢٢ |
| يَقْضُونَ | : والذين يدعون من دونه لا يقضون بشىء... ... | ٢٠ | ك غافر | ٤٠ |
| يَقْضِىَ | : ولكن ليقضى الله أمرا كان مفعولا... ... ... | ٤٢ | م الأنفال | ٨ |
| (٦) | ويقللكم فى أعينهم ليقضى الله أمرا كان مفعولا ... | ٤٤ | م « | ٨ |
| | إن ربك يقضى بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون | ٩٣ | ك يونس | ١٠ |
| | إن ربك يقضى بينهم بحكمه وهو العزيز العليم ... | ٧٨ | ك النمل | ٢٧ |
| | والله يقضى بالحق والذين يدعون من دونه لا يقضون بشىء | ٢٠ | ك غافر | ٤٠ |
| | إن ربك يقضى بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون | ١٧ | ك الجاثية | ٤٥ |
| فَاقْضِ | : فاقض ما أنت قاض ... ... ... ... ... ... | ٧٢ | ك طه | ٢٠ |
| أَقْضُوا | : ثم لا يكن أمركم عليكم غمة ثم اقضوا إلىّ ولا تنظرون | ٧١ | ك يونس | ١٠ |
| قُضِىَ | : وقضى الأمر وإلى الله ترجع الأمور... ... ... | ٢١٠ | م البقرة | ٢ |
| (١٩) | ولو أنزلنا ملكا لقضى الأمر ثم لا ينظرون ... ... | ٨ | ك الأنعام | ٦ |
| | قل لو أن عندى ما تستعجلون به لقضى الأمر بينى وبينكم | ٥٨ | ك « | ٦ |
| | ولو يعجل الله للناس الشر استعجالهم بالخير لقضى إليهم أجلهم | ١١ | ك يونس | ١٠ |
| | ولولا كلمة سبقت من ربك لقضى بينهم فيما فيه يختلفون | ١٩ | ك « | ١٠ |
| | فإذا جاء رسولهم قضى بينهم بالقسط وهم لا يظلمون | ٤٧ | ك « | ١٠ |
| | وقضى بينهم بالقسط وهم لا يظلمون ... ... ... | ٥٤ | ك « | ١٠ |
| | ويا سماء أقلعى وغيض الماء وقضى الأمر ... ... | ٤٤ | ك هود | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قُضِىَ | : ولولا كلمة سبقت من ربك لقضى بينهم ... ... | ١١٠ | ك هود | ١١ |
| | قضى الأمر الذى فيه تستفتيان ... ... ... ... | ٤١ | ك يوسف | ١٢ |
| | وقال الشيطان لما قضى الأمر إن الله وعدكم وعد الحق | ٢٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وأنذرهم يوم الحسرة إذ قضى الأمر ... ... ... | ٣٩ | ك مريم | ١٩ |
| | وقضى بينهم بالحق وهم لا يظلمون ... ... ... | ٦٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وقضى بينهم بالحق وقيل الحمد لله رب العالمين ... ... | ٧٥ | ك « | ٣٩ |
| | فإذا جاء أمر الله قضى بالحق وخسر هنالك المبطلون | ٧٨ | ك غافر | ٤٠ |
| | ولولا كلمة سبقت من ربك لقضى بينهم ... ... ... | ٤٥ | ك فصلت | ٤١ |
| | ولولا كلمة سبقت من ربك إلى أجل مسمى لقضى بينهم | ١٤ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ولولا كلمة الفصل لقضى بينهم ... ... ... ... | ٢١ | ك « | ٤٢ |
| | فلما حضروه قالوا أنصتوا فلما قضى ولوا إلى قومهم منذرين | ٢٩ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| قُضِيَتِ | : فإذا قضيت الصلاة فانتشروا فى الأرض... ... | ١٠ | م الجمعة | ٦٢ |
| يُقْضَى | : ثم يبعثكم فيه ليقضى أجل مسمى ... ... ... | ٦٠ | ك الأنعام | ٦ |
| (٣) | ولا تعجل بالقرآن من قبل أن يقضى إليك وحيه ... | ١١٤ | ك طه | ٢٠ |
| | والذين كفروا لهم نار جهنم لا يقضى عليهم فيموتوا | ٣٦ | ك فاطر | ٣٥ |
| قَاضٍ | : فاقض ما أنت قاض ... ... ... ... ... ... | ٧٢ | ك طه | ٢٠ |
| الْقَاضِيَةَ | : يا ليتها كانت القاضية ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك الحاقة | ٦٩ |
| مَقْضِيًّا | : ولنجعله آية للناس ورحمة منا وكان أمرا مقضيا... | ٢١ | ك مريم | ١٩ |
| (٢) | وإن منكم إلا واردها كان على ربك حتما مقضيا ... | ٧١ | م « | ١٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| الْقِطْرِ | : وأسلنا له عين القطر ... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك سبإ | ٣٤ |
| قِطْرًا | : حتى إذا جعله نارا قال آتونى أفرغ عليه قطرا ... | ٩٦ | م الكهف | ١٨ |
| أَقْطَارِ | : إن استطعتم أن تنفذوا من أقطار السموات | | | |
| | والأرض فانفذوا ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | م الرحمن | ٥٥ |
| أَقْطَارِهَا | : ولو دخلت عليهم من أقطارها ثم سئلوا الفتنة لآتوها | ١٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| قَطِرَانٍ | : سرابيلهم من قطران وتغشى وجوههم النار ... | ٥٠ | ك إبراهيم | ١٤ |
| قِنْطَارٍ | : ومن أهل الكتاب من إن تأمنه بقنطار يؤده إليك | ٧٥ | م آل عمران | ٣ |
| قِنْطَارًا | : وإن أردتم استبدال زوج مكان زوج وآتيتم | | | |
| | إحداهن قنطارا فلا تأخذوا منه شيئا... ... ... | ٢٠ | م النساء | ٤ |
| الْقَنَاطِيرِ | : زين للناس حب الشهوات من النساء والبنين والقناطير | ١٤ | م آل عمران | ٣ |
| الْمُقَنْطَرَةِ | : المقنطرة من الذهب والفضة والخيل المسومة | ١٤ | م « | ٣ |
| | ✦✦✦ | | | |
| قِطَّنَا | : وقالوا ربنا عجل لنا قطنا قبل يوم الحساب ... ... | ١٦ | ك ص | ٣٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| قَطَعْتُمْ | : ما قطعتم من لينة أو تركتموها قائمة على أصولها فبإذن الله | ٥ | م الحشر | ٥٩ |
| قَطَعْنَا | : وقطعنا دابر الذين كذبوا بآياتنا وما كانوا مؤمنين | ٧٢ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | لأخذنا منه باليمين . ثم لقطعنا منه الوتين ... ... ... | ٤٦ | ك الحاقة | ٦٩ |
| تَقْطَعُونَ | : أئنكم لتأتون الرجال وتقطعون السبيل ... ... | ٢٩ | ك العنكبوت | ٢٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَقْطَعَ | : ليقطع طرفا من الذين كفروا أو يكبتهم فينقلبوا خائبين | ١٢٧ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | ويريد الله أن يحق الحق بكلماته ويقطع دابر الكافرين | ٧ | م الأنفال | ٨ |
| | ثم ليقطع فلينظر هل يذهبن كيده ما يغيظ... ... ... | ١٥ | م الحج | ٢٢ |
| يَقْطَعُونَ | : ويقطعون ما أمر الله به أن يوصل ويفسدون | | | |
| (٣) | في الأرض أولئك هم الخاسرون... ... ... ... | ٢٧ | م البقرة | ٢ |
| | ولا ينفقون واديا إلا كتب لهم... ... ... ... | ١٢١ | م التوبة | ٩ |
| | ويقطعون ما أمر الله به أن يوصل ... ... ... | ٢٥ | م الرعد | ١٣ |
| فَٱقْطَعُوا | : والسارق والسارقة فاقطعوا أيديهما جزاء بما كسبا | ٣٨ | م المائدة | ٥ |
| قُطِعَ | : فقطع دابر القوم الذين ظلموا والحمد لله رب العالمين | ٤٥ | ك الأنعام | ٦ |
| فَقَطَّعَ | : وسقوا ماء حميما فقطع أمعاءهم... ... ... ... | ١٥ | م محمد | ٤٧ |
| قَطَّعْنَ | : فلما رأينه أكبرنه وقطعن أيديهن ... ... ... | ٣١ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | ارجع إلى ربك فسئله ما بال النسوة اللاتي قطعن أيديهن | ٥٠ | ك « | ١٢ |
| قَطَّعْنَاهُمُ | : وقطعناهم اثنتي عشرة أسباطا أمما... ... ... | ١٦٠ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | وقطعناهم في الأرض أمما ... ... ... ... ... | ١٦٨ | م « | ٧ |
| لَأُقَطِّعَنَّ | : لأقطعن أيديكم وأرجلكم من خلاف ... ... | ١٢٤ | ك « | ٧ |
| (٣) | فلأقطعن أيديكم وأرجلكم من خلاف ... ... ... | ٧١ | ك طه | ٢٠ |
| | لأقطعن أيديكم وأرجلكم من خلاف ولأصلبنكم أجمعين | ٤٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| تُقَطِّعُوا | : فهل عسيتم إن توليتم أن تفسدوا في الأرض | | | |
| | وتقطعوا أرحامكم ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | م محمد | ٤٧ |
| قُطِّعَتْ | : ولو أن قرآنا سيرت به الجبال أو قطعت به الأرض | ٣١ | م الرعد | ١٣ |
| (٢) | فالذين كفروا قطعت لهم ثياب من نار ... ... ... | ١٩ | م الحج | ٢٢ |
| تُقَطَّعَ | : أن يقتلوا أو يصلبوا أو تقطع أيديهم وأرجلهم | | | |
| | من خلاف ... ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | م المائدة | ٥ |
| تَقَطَّعَ | : لقد تقطع بينكم وضل عنكم ما كنتم تزعمون... ... | ٩٤ | ك الأنعام | ٦ |
| تَقَطَّعَتْ | : ورأوا العذاب وتقطعت بهم الأسباب ... ... | ١٦٦ | م البقرة | ٢ |
| تَقَطَّعُوا | : وتقطعوا أمرهم بينهم كل إلينا راجعون... ... | ٩٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٢) | فتقطعوا أمرهم بينهم زبرا كل حزب بما لديهم فرحون | ٥٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| تَقَطَّعَ | : لا يزال بنيانهم الذي بنوا ريبة في قلوبهم إلا أن | | | |
| | تقطع قلوبهم ... ... ... ... ... ... ... | ١١٠ | م التوبة | ٩ |
| قِطْعٍ | : فأسر بأهلك بقطع من الليل ولا يلتفت منكم أحد | ٨١ | ك هود | ١١ |
| (٢) | فأسر بأهلك بقطع من الليل واتبع أدبارهم ... ... | ٦٥ | ك الحجر | ١٥ |
| قِطَعٌ | : وفي الأرض قطع متجاورات وجنات من أعناب | ٤ | م الرعد | ١٣ |
| قِطَعًا | : كأنما أغشيت وجوههم قطعا من الليل مظلما ... | ٢٧ | ك يونس | ١٠ |
| قَاطِعَةً | : ما كنت قاطعة أمرا حتى تشهدون ... ... ... | ٣٢ | ك النمل | ٢٧ |
| مَقْطُوعٍ | : وقضينا إليه ذلك الأمر أن دابر هؤلاء مقطوع مصبحين | ٦٦ | ك الحجر | ١٥ |
| مَقْطُوعَةٍ | : وفاكهة كثيرة . لا مقطوعة ولا ممنوعة... ... | ٣٣ | ك الواقعة | ٥٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قُطُوفُهَا | : فهو في عيشة راضية . في جنة عالية . قطوفها دانية | ٢٣ | ك الحاقة | ٦٩ |
| (٢) | ودانية عليهم ظلالها وذللت قطوفها تذليلا ... ... | ١٤ | م الإنسان | ٧٦ |
| قِطْمِيرٍ | : والذين تدعون من دونه ما يملكون من قطمير ... | ١٣ | ك فاطر | ٣٥ |
| قَعَدَ | : وقعد الذين كذبوا الله ورسوله ... ... ... ... | ٩٠ | م التوبة | ٩ |
| قَعَدُوا | : الذين قالوا لإخوانهم وقعدوا لو أطاعونا ما قتلوا | ١٦٨ | م آل عمران | ٣ |
| لَأَقْعُدَنَّ | : قال فبما أغويتني لأقعدن لهم صراطك المستقيم | ١٦ | ك الأعراف | ٧ |
| تَقْعُدْ | : فلا تقعد بعد الذكرى مع القوم الظالمين... ... ... | ٦٨ | ك الأنعام | ٦ |
| (٣) | لا تجعل مع الله إلها آخر فتقعد مذموما مخذولا... ... | ٢٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ولا تبسطها كل البسط فتقعد ملوما محسورا ... ... | ٢٩ | ك « | ١٧ |
| تَقْعُدُوا | : إذا سمعتم آيات الله يكفر بها ويستهزأ بها فلا تقعدوا معهم | ١٤٠ | م النساء | ٤ |
| (٢) | ولا تقعدوا بكل صراط توعدون ... ... ... ... | ٨٦ | ك الأعراف | ٧ |
| نَقْعُدُ | : وأنا كنا نقعد منها مقاعد للسمع ... ... ... ... | ٩ | ك الجن | ٧٢ |
| ٱقْعُدُوا | : وخذوهم واحصروهم واقعدوا لهم كل مرصد ... | ٥ | م التوبة | ٩ |
| (٣) | ولكن كره الله انبعاثهم فثبطهم وقيل اقعدوا مع القاعدين | ٤٦ | م « | ٩ |
| | إنكم رضيتم بالقعود أول مرة فاقعدوا مع الخالفين... | ٨٣ | م « | ٩ |
| ٱلْقُعُودِ | : إنكم رضيتم بالقعود أول مرة ... ... ... ... | ٨٣ | م « | ٩ |
| (٤) | النار ذات الوقود . إذ هم عليها قعود ... ... ... ... | ٦ | ك البروج | ٨٥ |
| قُعُودًا | : الذين يذكرون الله قياما وقعودا وعلى جنوبهم... | ١٩١ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | فإذا قضيتم الصلاة فاذكروا الله قياما وقعودا وعلى جنوبكم | ١٠٣ | م النساء | ٤ |
| قَاعِدًا | : وإذا مس الإنسان الضر دعانا لجنبه أو قاعدا أو قائما | ١٢ | ك يونس | ١٠ |
| ٱلْقَاعِدُونَ | : لا يستوي القاعدون من المؤمنين غير أولي الضرر | | | |
| (٢) | والمجاهدون في سبيل الله ... ... ... ... ... | ٩٥ | م النساء | ٤ |
| | فاذهب أنت وربك فقاتلا إنا ههنا قاعدون ... ... | ٢٤ | م المائدة | ٥ |
| ٱلْقَاعِدِينَ | : فضل الله المجاهدين بأموالهم وأنفسهم على | | | |
| (٤) | القاعدين درجة ... ... ... ... ... ... | ٩٥ | م النساء | ٤ |
| | وفضل الله المجاهدين على القاعدين أجرا عظيما ... ... | ٩٥ | م « | ٤ |
| | ولكن كره الله انبعاثهم فثبطهم وقيل اقعدوا مع القاعدين | ٤٦ | م التوبة | ٩ |
| | استأذنك أولوا الطول منهم وقالوا ذرنا نكن مع القاعدين | ٨٦ | م « | ٩ |
| قَعِيدٌ | : إذ يتلقى المتلقيان عن اليمين وعن الشمال قعيد... ... | ١٧ | ك ق | ٥٠ |
| ٱلْقَوَاعِدُ | : وإذ يرفع إبراهيم القواعد من البيت وإسمعيل... | ١٢٧ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | قد مكر الذين من قبلهم فأتى الله بنيانهم من القواعد | ٢٦ | ك النحل | ١٦ |
| | والقواعد من النساء اللاتي لا يرجون نكاحا ... ... | ٦٠ | م النور | ٢٤ |
| مَقْعَدٍ | : في مقعد صدق عند مليك مقتدر ... ... ... ... | ٥٥ | ك القمر | ٥٤ |
| بِمَقْعَدِهِمْ | : فرح المخلفون بمقعدهم خلاف رسول الله... ... | ٨١ | م التوبة | ٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مَقَاعِدَ | : وإذ غدوت من أهلك تبوئ المؤمنين مقاعد للقتال | ١٢١ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | وأنا كنا نقعد منها مقاعد للسمع ... ... ... ... ... | ٩ | ك الجن | ٧٢ |
| مُقْتَدِرٍ | : تنزع الناس كأنهم أعجاز نخل منقعر ... ... ... | ٢٠ | ك القمر | ٥٤ |
| أَقْفَالُهَا | : أفلا يتدبرون القرآن أم على قلوب أقفالها ... ... | ٢٤ | م محمد | ٤٧ |
| تَقْفُ | : ولا تقف ما ليس لك به علم ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| قَفَّيْنَا | : ولقد آتينا موسى الكتاب وقفينا من بعده بالرسل... | ٨٧ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | وقفينا على آثارهم بعيسى ابن مريم مصدقا لما بين يديه | ٤٦ | م المائدة | ٥ |
| | ثم قفينا على آثارهم برسلنا ... ... ... ... ... | ٢٧ | م الحديد | ٥٧ |
| | وقفينا بعيسى ابن مريم وآتيناه الإنجيل ... ... ... | ٢٧ | م « | ٥٧ |
| تُقْلَبُونَ | : يعذب من يشاء ويرحم من يشاء وإليه تقلبون | ٢١ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| قَلَّبُوا | : لقد ابتغوا الفتنة من قبل وقلبوا لك الأمور ... ... | ٤٨ | م التوبة | ٩ |
| نُقَلِّبُ | : ونقلب أفئدتهم وأبصارهم كما لم يؤمنوا به أول مرة | ١١٠ | ك الأنعام | ٦ |
| نُقَلِّبُهُمْ | : ونقلبهم ذات اليمين وذات الشمال... ... ... ... | ١٨ | ك الكهف | ١٨ |
| يُقَلِّبُ | : وأحيط بثمره فأصبح يقلب كفيه على ما أنفق فيها | ٤٢ | ك « | ١٨ |
| (٢) | يقلب الله الليل والنهار إن في ذلك لعبرة لأولي الأبصار | ٤٤ | م النور | ٢٤ |
| تُقَلَّبُ | : يوم تقلب وجوههم في النار يقولون يا ليتنا أطعنا | | | |
| | الله وأطعنا الرسولا ... ... ... ... ... ... | ٦٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| تَتَقَلَّبُ | : يخافون يوما تتقلب فيه القلوب والأبصار ... | ٣٧ | م النور | ٢٤ |
| انْقَلَبَ | : وإن أصابته فتنة انقلب على وجهه خسر الدنيا والآخرة | ١١ | م الحج | ٢٢ |
| انْقَلَبْتُمْ | : أفإن مات أو قتل انقلبتم على أعقابكم ... ... | ١٤٤ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | سيحلفون بالله لكم إذا انقلبتم إليهم لتعرضوا عنهم | ٩٥ | م التوبة | ٩ |
| انْقَلَبُوا | : فانقلبوا بنعمة من الله وفضل لم يمسسهم سوء ... | ١٧٤ | م آل عمران | ٣ |
| (٥) | فغلبوا هنالك وانقلبوا صاغرين... ... ... ... ... | ١١٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | لعلهم يعرفونها إذا انقلبوا إلى أهلهم... ... ... ... | ٦٢ | ك يوسف | ١٢ |
| | وإذا انقلبوا إلى أهلهم... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك المطففين | ٨٣ |
| | انقلبوا فكهين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك « | ٨٣ |
| تَنْقَلِبُوا | : يردوكم على أعقابكم فتنقلبوا خاسرين ... ... ... | ١٤٩ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | ولا ترتدوا على أدباركم فتنقلبوا خاسرين ... ... ... | ٢١ | م المائدة | ٥ |
| يَنْقَلِبُ | : إلا لنعلم من يتبع الرسول ممن ينقلب على عقبيه... | ١٤٣ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | ومن ينقلب على عقبيه فلن يضر الله شيئا ... ... | ١٤٤ | م آل عمران | ٣ |
| | بل ظننتم أن لن ينقلب الرسول والمؤمنون إلى أهليهم أبدا | ١٢ | م الفتح | ٤٨ |
| | ثم ارجع البصر كرتين ينقلب إليك البصر خاسئا وهو حسير | ٤ | ك الملك | ٦٧ |
| | فسوف يحاسب حسابا يسيرا . وينقلب إلى أهله مسرورا | ٩ | ك الانشقاق | ٨٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَنْقَلِبُوا | : ليقطع طرفا من الذين كفروا أو يكبتهم فينقلبوا | | | |
| | خائبين ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٢٧ | م آل عمران | ٣ |
| يَنْقَلِبُونَ | : وسيعلم الذين ظلموا أي منقلب ينقلبون ... ... | ٢٢٧ | م الشعراء | ٢٦ |
| تَقَلُّبَ | : قد نرى تقلب وجهك في السماء فلنولينك قبلة ترضاها | ١٤٤ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | لا يغرنك تقلب الذين كفروا في البلاد ... ... ... | ١٩٦ | م آل عمران | ٣ |
| تَقَلُّبَكَ | : الذي يراك حين تقوم . وتقلبك في الساجدين... | ٢١٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| تَقَلُّبِهِمْ | : أو يأخذهم في تقلبهم فما هم بمعجزين ... ... ... | ٤٦ | ك النحل | ١٦ |
| (٢) | فلا يغررك تقلبهم في البلاد ... ... ... ... ... | ٤ | ك غافر | ٤٠ |
| مُتَقَلَّبَكُمْ | : والله يعلم متقلبكم ومثواكم... ... ... ... ... | ١٩ | م محمد | ٤٧ |
| مُنْقَلِبُونَ | : قالوا إنا إلى ربنا منقلبون ... ... ... ... ... | ١٢٥ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | قالوا لا ضير إنا إلى ربنا منقلبون ... ... ... ... | ٥٠ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وإنا إلى ربنا لمنقلبون ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك الزخرف | ٤٣ |
| مُنْقَلَبٍ | : وسيعلم الذين ظلموا أي منقلب ينقلبون ... ... | ٢٢٧ | م الشعراء | ٢٦ |
| مُنْقَلَبًا | : ولئن رددت إلى ربي لأجدن خيرا منها منقلبا... | ٣٦ | ك الكهف | ١٨ |
| قَلْبٍ | : ولو كنت فظا غليظ القلب لانفضوا من حولك ... | ١٥٩ | م آل عمران | ٣ |
| (٦) | إلا من أتى الله بقلب سليم ... ... ... ... ... | ٨٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وإن من شيعته لإبراهيم . إذ جاء ربه بقلب سليم | ٨٤ | ك الصافات | ٣٧ |
| | كذلك يطبع الله على كل قلب متكبر جبار... ... ... | ٣٥ | ك غافر | ٤٠ |
| | من خشي الرحمن بالغيب وجاء بقلب منيب... ... ... | ٣٣ | ك ق | ٥٠ |
| | إن في ذلك لذكرى لمن كان له قلب أو ألقى السمع | | | |
| | وهو شهيد ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك « | ٥٠ |
| قَلْبِكَ | : قل من كان عدوا لجبريل فإنه نزله على قلبك... ... | ٩٧ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | نزل به الروح الأمين . على قلبك لتكون من المنذرين | ١٩٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | أم يقولون افترى على الله كذبا فإن يشأ الله يختم | | | |
| | على قلبك ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | م الشورى | ٤٢ |
| قَلْبِهِ | : ويشهد الله على ما في قلبه وهو ألد الخصام ... ... | ٢٠٤ | م البقرة | ٢ |
| (٨) | ولا تكتموا الشهادة ومن يكتمها فإنه آثم قلبه ... ... | ٢٨٣ | م « | ٢ |
| | واعلموا أن الله يحول بين المرء وقلبه وأنه إليه تحشرون | ٢٤ | م الأنفال | ٨ |
| | إلا من أكره وقلبه مطمئن بالإيمان ... ... ... ... | ١٠٦ | ك النحل | ١٦ |
| | ولا تطع من أغفلنا قلبه عن ذكرنا واتبع هواه ... ... | ٢٨ | م الكهف | ١٨ |
| | إن اتقيتن فلا تخضعن بالقول فيطمع الذي في قلبه مرض | ٣٢ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وختم على سمعه وقلبه وجعل على بصره غشاوة ... ... | ٢٣ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | ومن يؤمن بالله يهد قلبه والله بكل شيء عليم ... ... | ١١ | م التغابن | ٦٤ |
| قَلْبِهَا | : إن كادت لتبدي به لولا أن ربطنا على قلبها... ... | ١٠ | ك القصص | ٢٨ |
| قَلْبِي | : قال أولم تؤمن قال بلى ولكن ليطمئن قلبي ... ... | ٢٦٠ | م البقرة | ٢ |
| قَلْبَيْنِ | : ما جعل الله لرجل من قلبين في جوفه ... ... ... | ٤ | م الأحزاب | ٣٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قُلُوبٌ | سنلقى فى قلوب الذين كفروا الرعب بما أشركوا بالله | ١٥١ | م آل عمران | ٣ |
| (٢١) | كذلك يطبع الله على قلوب الكافرين ... ... ... | ١٠١ | ك الأعراف | ٧ |
| | لهم قلوب لا يفقهون بها ولهم أعين لا يبصرون بها | ١٧٩ | ك « | ٧ |
| | سألقى فى قلوب الذين كفروا الرعب فاضربوا فوق الأعناق | ١٢ | م الأنفال | ٨ |
| | من بعد ما كاد يزيغ قلوب فريق منهم ... ... ... | ١١٧ | م التوبة | ٩ |
| | كذلك نطبع على قلوب المعتدين ... ... ... ... | ٧٤ | ك يونس | ١٠ |
| | ألا بذكر الله تطمئن القلوب ... ... ... ... | ٢٨ | م الرعد | ١٣ |
| | كذلك نسلكه فى قلوب المجرمين ... ... ... ... | ١٢ | ك الحجر | ١٥ |
| | ذلك ومن يعظم شعائر الله فإنها من تقوى القلوب | ٣٢ | م الحج | ٢٢ |
| | أفلم يسيروا فى الأرض فتكون لهم قلوب يعقلون بها | ٤٦ | م « | ٢٢ |
| | فإنها لا تعمى الأبصار ولكن تعمى القلوب التى فى الصدور | ٤٦ | م « | ٢٢ |
| | يخافون يوما تتقلب فيه القلوب والأبصار ... ... ... | ٣٧ | م النور | ٢٤ |
| | كذلك سلكناه فى قلوب المجرمين ... ... ... ... | ٢٠٠ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | كذلك يطبع الله على قلوب الذين لا يعلمون ... ... | ٥٩ | ك الروم | ٣٠ |
| | وإذ زاغت الأبصار وبلغت القلوب الحناجر ... ... | ١٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وإذا ذكر الله وحده اشمأزت قلوب الذين لا يؤمنون بالآخرة | ٤٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وأنذرهم يوم الآزفة إذ القلوب لدى الحناجر كاظمين | ١٨ | ك غافر | ٤٠ |
| | أفلا يتدبرون القرآن أم على قلوب أقفالها ... ... | ٢٤ | م محمد | ٤٧ |
| | هو الذى أنزل السكينة فى قلوب المؤمنين ليزدادوا إيمانا | ٤ | م الفتح | ٤٨ |
| | وجعلنا فى قلوب الذين اتبعوه رأفة ورحمة ... ... | ٢٧ | م الحديد | ٥٧ |
| | يوم ترجف الراجفة . تتبعها الرادفة . قلوب يومئذ واجفة | ٨ | ك النازعات | ٧٩ |
| قُلُوبُكُمَا | إن تتوبا إلى الله فقد صغت قلوبكما ... ... ... | ٤ | م التحريم | ٦٦ |
| قُلُوبُكُمْ | ثم قست قلوبكم من بعد ذلك فهى كالحجارة ... | ٧٤ | م البقرة | ٢ |
| (١٥) | ولكن يؤاخذكم بما كسبت قلوبكم ... ... ... ... | ٢٢٥ | م « | ٢ |
| | واذكروا نعمة الله عليكم إذ كنتم أعداء فألف بين قلوبكم | ١٠٣ | م آل عمران | ٣ |
| | وما جعله الله إلا بشرى لكم ولتطمئن قلوبكم به ... | ١٢٦ | م « | ٣ |
| | وليبتلى الله ما فى صدوركم وليمحص ما فى قلوبكم ... | ١٥٤ | م « | ٣ |
| | إن أخذ الله سمعكم وأبصاركم وختم على قلوبكم من إله غير الله يأتيكم به ... ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك الأنعام | ٦ |
| | وما جعله الله إلا بشرى ولتطمئن به قلوبكم ... ... | ١٠ | م الأنفال | ٨ |
| | وليربط على قلوبكم ويثبت به الأقدام ... ... ... | ١١ | م « | ٨ |
| | إن يعلم الله فى قلوبكم خيرا يؤتكم خيرا مما أخذ منكم | ٧٠ | م « | ٨ |
| | وليس عليكم جناح فيما أخطأتم به ولكن ما تعمدت قلوبكم | ٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | والله يعلم ما فى قلوبكم وكان الله عليما حليما ... ... ... | ٥١ | م « | ٣٣ |
| | ذلكم أطهر لقلوبكم وقلوبهن ... ... ... ... | ٥٣ | م « | ٣٣ |
| | وزين ذلك فى قلوبكم وظننتم ظن السوء وكنتم قوما بورا | ١٢ | م الفتح | ٤٨ |
| | ولكن الله حبب إليكم الإيمان وزينه فى قلوبكم ... | ٧ | م الحجرات | ٤٩ |
| | ولكن قولوا أسلمنا ولما يدخل الإيمان فى قلوبكم | ١٤ | م « | ٤٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قُلُوبُنَا | وقالوا قلوبنا غلف بل لعنهم الله بكفرهم فقليلا ما يؤمنون | ٨٨ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | ربنا لا تزغ قلوبنا بعد إذ هديتنا وهب لنا من لدنك رحمة | ٨ | م آل عمران | ٣ |
| | وقولهم قلوبنا غلف بل طبع الله عليها بكفرهم ... ... | ١٥٥ | م النساء | ٤ |
| | قالوا نريد أن نأكل منها وتطمئن قلوبنا ... ... | ١١٣ | م المائدة | ٥ |
| | وقالوا قلوبنا فى أكنة مما تدعونا إليه وفى آذاننا وقر | ٥ | ك فصلت | ٤١ |
| | ولا تجعل فى قلوبنا غلا للذين آمنوا ... ... ... ... | ١٠ | م الحشر | ٥٩ |
| قُلُوبِهِمْ | ختم الله على قلوبهم وعلى سمعهم وعلى أبصارهم غشاوة | ٧ | م البقرة | ٢ |
| (٦٨) | فى قلوبهم مرض فزادهم الله مرضا ... ... ... ... | ١٠ | م « | ٢ |
| | قالوا سمعنا وعصينا وأشربوا فى قلوبهم العجل بكفرهم | ٩٣ | م « | ٢ |
| | كذلك قال الذين من قبلهم مثل قولهم تشابهت قلوبهم | ١١٨ | م « | ٢ |
| | فأما الذين فى قلوبهم زيغ فيتبعون ما تشابه منه ... | ٧ | م آل عمران | ٣ |
| | ليجعل الله ذلك حسرة فى قلوبهم ... ... ... ... | ١٥٦ | م « | ٣ |
| | يقولون بأفواههم ما ليس فى قلوبهم ... ... ... | ١٦٧ | م « | ٣ |
| | أولئك الذين يعلم الله ما فى قلوبهم فأعرض عنهم ... | ٦٣ | م النساء | ٤ |
| | فبما نقضهم ميثاقهم لعناهم وجعلنا قلوبهم قاسية ... | ١٣ | م المائدة | ٥ |
| | لا يحزنك الذين يسارعون فى الكفر من الذين قالوا آمنا بأفواههم ولم تؤمن قلوبهم ... ... ... ... ... | ٤١ | م « | ٥ |
| | أولئك الذين لم يرد الله أن يطهر قلوبهم ... ... | ٤١ | م « | ٥ |
| | فترى الذين فى قلوبهم مرض يسارعون فيهم ... ... | ٥٢ | م « | ٥ |
| | وجعلنا على قلوبهم أكنة أن يفقهوه وفى آذانهم وقرا | ٢٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | فلولا إذ جاءهم بأسنا تضرعوا ولكن قست قلوبهم | ٤٣ | ك « | ٦ |
| | ونطبع على قلوبهم فهم لا يسمعون ... ... ... ... | ١٠٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | إنما المؤمنون الذين إذا ذكر الله وجلت قلوبهم ... | ٢ | م الأنفال | ٨ |
| | إذ يقول المنافقون والذين فى قلوبهم مرض غر هؤلاء دينهم ... ... ... ... ... ... ... | ٤٩ | م « | ٨ |
| | وألف بين قلوبهم ... ... ... ... ... ... ... | ٦٣ | م « | ٨ |
| | لو أنفقت ما فى الأرض جميعا ما ألفت بين قلوبهم | ٦٣ | م « | ٨ |
| | يرضونكم بأفواههم وتأبى قلوبهم وأكثرهم فاسقون | ٨ | م التوبة | ٩ |
| | ويذهب غيظ قلوبهم ويتوب الله على من يشاء ... | ١٥ | م « | ٩ |
| | وارتابت قلوبهم فهم فى ريبهم يترددون ... ... ... | ٤٥ | م « | ٩ |
| | إنما الصدقات للفقراء والمساكين والعاملين عليها والمؤلفة قلوبهم وفى الرقاب والغارمين وفى سبيل الله وابن السبيل ... ... ... ... ... ... ... | ٦٠ | م « | ٩ |
| | يحذر المنافقون أن تنزل عليهم سورة تنبئهم بما فى قلوبهم | ٦٤ | م « | ٩ |
| | فأعقبهم نفاقا فى قلوبهم إلى يوم يلقونه ... ... ... | ٧٧ | م « | ٩ |
| | وطبع على قلوبهم فهم لا يفقهون ... ... ... ... | ٨٧ | م « | ٩ |
| | رضوا بأن يكونوا مع الخوالف وطبع الله على قلوبهم فهم لا يعلمون ... ... ... ... ... ... ... | ٩٣ | م « | ٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قُلُوبِهِمْ | لايزال بنيانهم الذى بنوا ريبة فى قلوبهم... ... | ١١٠ | م التوبة | ٩ |
| | إلا أن تقطع قلوبهم ... ... ... ... ... ... | ١١٠ | م « | ٩ |
| | وأما الذين فى قلوبهم مرض فزادتهم رجسا إلى رجسهم | ١٢٥ | م « | ٩ |
| | صرف الله قلوبهم بأنهم قوم لا يفقهون ... ... | ١٢٧ | م « | ٩ |
| | ربنا اطمس على أموالهم واشدد على قلوبهم ... ... | ٨٨ | ك يونس | ١٠ |
| | الذين آمنوا وتطمئن قلوبهم بذكر الله ... ... ... | ٢٨ | م الرعد | ١٣ |
| | فالذين لا يؤمنون بالآخرة قلوبهم منكرة وهم مستكبرون | ٢٢ | ك النحل | ١٦ |
| | أولئك الذين طبع الله على قلوبهم وسمعهم وأبصارهم | ١٠٨ | ك « | ١٦ |
| | وجعلنا على قلوبهم أكنة أن يفقهوه وفى آذانهم وقرا | ٤٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وربطنا على قلوبهم إذ قاموا ... ... ... ... ... | ١٤ | ك الكهف | ١٨ |
| | إنا جعلنا على قلوبهم أكنة أن يفقهوه وفى آذانهم وقرا | ٥٧ | ك « | ١٨ |
| | لاهية قلوبهم وأسروا النجوى الذين ظلموا ... ... | ٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | الذين إذا ذكر الله وجلت قلوبهم ... ... ... ... | ٣٥ | م الحج | ٢٢ |
| | ليجعل ما يلقى الشيطان فتنة للذين فى قلوبهم مرض | ٥٣ | م « | ٢٢ |
| | والقاسية قلوبهم ... ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | م « | ٢٢ |
| | فيؤمنوا به فتخبت له قلوبهم ... ... ... ... ... | ٥٤ | م « | ٢٢ |
| | والذين يؤتون ما آتوا وقلوبهم وجلة ... ... ... | ٦٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | بل قلوبهم فى غمرة من هذا ولهم أعمال من دون ذلك | ٦٣ | ك « | ٢٣ |
| | أفى قلوبهم مرض أم ارتابوا ... ... ... ... ... | ٥٠ | م النور | ٢٤ |
| | وإذ يقول المنافقون والذين فى قلوبهم مرض ما وعدنا الله ورسوله إلا غرورا... ... ... ... | ١٢ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وقذف فى قلوبهم الرعب ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | م « | ٣٣ |
| | لئن لم ينته المنافقون والذين فى قلوبهم مرض والمرجفون فى المدينة لنغرينك بهم ... ... ... | ٦٠ | م « | ٣٣ |
| | حتى إذا فزع عن قلوبهم قالوا ماذا قال ربكم ... | ٢٣ | ك سبإ | ٣٤ |
| | فويل للقاسية قلوبهم من ذكر الله ... ... ... ... | ٢٢ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ثم تلين جلودهم وقلوبهم إلى ذكر الله ... ... ... | ٢٣ | ك « | ٣٩ |
| | أولئك الذين طبع الله على قلوبهم واتبعوا أهواءهم | ١٦ | م محمد | ٤٧ |
| | رأيت الذين فى قلوبهم مرض ينظرون إليك نظر المغشى عليه من الموت ... ... ... ... ... | ٢٠ | م « | ٤٧ |
| | أم حسب الذين فى قلوبهم مرض أن لن يخرج الله أضغانهم | ٢٩ | م « | ٤٧ |
| | يقولون بألسنتهم ما ليس فى قلوبهم ... ... ... ... | ١١ | م الفتح | ٤٨ |
| | فعلم ما فى قلوبهم فأنزل السكينة عليهم ... ... ... | ١٨ | م « | ٤٨ |
| | إذ جعل الذين كفروا فى قلوبهم الحمية حمية الجاهلية | ٢٦ | م « | ٤٨ |
| | أولئك الذين امتحن الله قلوبهم للتقوى ... ... ... | ٣ | م الحجرات | ٤٩ |
| | ألم يأن للذين آمنوا أن تخشع قلوبهم لذكر الله ... | ١٦ | م الحديد | ٥٧ |
| | فطال عليهم الأمد فقست قلوبهم... ... ... ... ... | ١٦ | م « | ٥٧ |
| | أولئك كتب فى قلوبهم الإيمان وأيدهم بروح منه | ٢٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| قُلُوبُهُمْ | فأتاهم الله من حيث لم يحتسبوا وقذف فى قلوبهم الرعب ... ... ... ... ... ... | ٢ | م الحشر | ٥٩ |
| | تحسبهم جميعا وقلوبهم شتى ... ... ... ... ... | ١٤ | م « | ٥٩ |
| | فلما زاغوا أزاغ الله قلوبهم... ... ... ... ... | ٥ | م الصف | ٦١ |
| | فطبع على قلوبهم فهم لا يفقهون ... ... ... ... | ٣ | م المنافقون | ٦٣ |
| | وليقول الذين فى قلوبهم مرض والكافرون ماذا أراد الله بهذا مثلا ... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك المدثر | ٧٤ |
| | كلا بل ران على قلوبهم ما كانوا يكسبون... ... ... | ١٤ | ك المطففين | ٨٣ |
| قُلُوبِهِنَّ | ذلكم أطهر لقلوبكم وقلوبهن ... ... ... ... | ٥٣ | م الأحزاب | ٣٣ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الْقَلَائِدَ | لا تحلوا شعائر الله ولا الشهر الحرام ولا الهدى (٢) ولا القلائد ... ... ... ... ... ... | ٢ | م المائدة | ٥ |
| | جعل الله الكعبة البيت الحرام قياما للناس والشهر الحرام والهدى والقلائد ... ... ... ... | ٩٧ | م « | ٥ |
| مَقَالِيدُ | له مقاليد السموات والأرض ... ... ... ... | ٦٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| | (٢) له مقاليد السموات والأرض يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ... ... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك الشورى | ٤٢ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَقْلِعِي | وقيل يا أرض ابلعى ماءك ويا سماء أقلعى ... ... | ٤٤ | ك هود | ١١ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَلَّ | وللنساء نصيب مما ترك الوالدان والأقربون مما قل منه أو كثر ... ... ... ... ... ... | ٧ | م النساء | ٤ |
| يُقَلِّلُكُمْ | ويقللكم فى أعينهم ليقضى الله أمرا كان مفعولا | ٤٤ | م الأنفال | ٨ |
| أَقَلَّتْ | حتى إذا أقلت سحابا ثقالا سقناه لبلد ميت... ... | ٥٧ | ك الأعراف | ٧ |
| قَلِيلٌ | متاع قليل ثم مأواهم جهنم وبئس المهاد... ... ... | ١٩٧ | م آل عمران | ٣ |
| | (١٣) ما فعلوه إلا قليل منهم ... ... ... ... ... | ٦٦ | م النساء | ٤ |
| | قل متاع الدنيا قليل والآخرة خير لمن اتقى ولا تظلمون فتيلا ... ... ... ... ... ... ... | ٧٧ | م « | ٤ |
| | واذكروا إذ أنتم قليل مستضعفون فى الأرض ... | ٢٦ | م الأنفال | ٨ |
| | فما متاع الحياة الدنيا فى الآخرة إلا قليل ... ... | ٣٨ | م التوبة | ٩ |
| | وما آمن معه إلا قليل ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك هود | ١١ |
| | متاع قليل ولهم عذاب أليم ... ... ... ... ... | ١١٧ | ك النحل | ١٦ |
| | قل ربى أعلم بعدتهم ما يعلمهم إلا قليل ... ... ... | ٢٢ | ك الكهف | ١٨ |
| | قال عما قليل ليصبحن نادمين ... ... ... ... | ٤٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وقليل من عبادى الشكور ... ... ... ... ... | ١٣ | ك سبإ | ٣٤ |
| | وأقل وشىء من سدر قليل ... ... ... ... ... | ١٦ | ك « | ٣٤ |
| | إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات وقليل ما هم... ... | ٢٤ | ك ص | ٣٨ |
| | ثلة من الأولين . وقليل من الآخرين ... ... ... | ١٤ | ك الواقعة | ٥٦ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| قَلِيلًا | ولا تشتروا بآياتى ثمنا قليلا وإياى فاتقون ... ... | البقـرة | ٢ |
| (٥٥) | ثم يقولون هذا من عند الله ليشتروا به ثمنا قليلا ... | » | ٢ |
| | ثم توليتم إلا قليلا منكم وأنتم معرضون ... ... ... | » | ٢ |
| | بل لعنهم الله بكفرهم فقليلا ما يؤمنون ... ... ... | » | ٢ |
| | قال ومن كفر فأمتعه قليلا ثم أضطره إلى عذاب النار | » | ٢ |
| | ويشترون به ثمنا قليلا أولئك ما يأكلون فى بطونهم إلا النار | » | ٢ |
| | فلما كتب عليهم القتال تولوا إلا قليلا منهم ... ... | » | ٢ |
| | فشربوا منه إلا قليلا منهم ... ... ... ... ... | » | ٢ |
| | إن الذين يشترون بعهد الله وأيمانهم ثمنا قليلا أولئك لا خلاق لهم فى الآخرة ... ... ... ... | آل عمران | ٣ |
| | فنبذوه وراء ظهورهم واشتروا به ثمنا قليلا ... ... | » | ٣ |
| | لا يشترون بآيات الله ثمنا قليلا ... ... ... ... | » | ٣ |
| | ولكن لعنهم الله بكفرهم فلا يؤمنون إلا قليلا ... | النسـاء | ٤ |
| | ولولا فضل الله عليكم ورحمته لاتبعتم الشيطان إلا قليلا | » | ٤ |
| | قاموا كسالى يراءون الناس ولا يذكرون الله إلا قليلا | » | ٤ |
| | بل طبع الله عليها بكفرهم فلا يؤمنون إلا قليلا ... | » | ٤ |
| | ولا تزال تطلع على خائنة منهم إلا قليلا منهم ... ... | المائدة | ٥ |
| | فلا تخشوا الناس واخشون ولا تشتروا بآياتى ثمنا قليلا | » | ٥ |
| | ولا تتبعوا من دونه أولياء قليلا ما تذكرون ... ... | الأعراف | ٧ |
| | وجعلنا لكم فيها معايش قليلا ما تشكرون ... ... | » | ٧ |
| | واذكروا إذ كنتم قليلا فكثركم ... ... ... ... | » | ٧ |
| | إذ يريكهم الله فى منامك قليلا ... ... ... ... | الأنفال | ٨ |
| | اشتروا بآيات الله ثمنا قليلا فصدوا عن سبيله ... ... | التوبة | ٩ |
| | فليضحكوا قليلا وليبكوا كثيرا جزاء بما كانوا يكسبون | » | ٩ |
| | ينهون عن الفساد فى الأرض إلا قليلا ممن أنجينا منهم | هـود | ١١ |
| | فما حصدتم فذروه فى سنبله إلا قليلا مما تأكلون | يوسـف | ١٢ |
| | يأكلن ما قدمتم لهن إلا قليلا مما تحصنون ... ... | » | ١٢ |
| | ولا تشتروا بعهد الله ثمنا قليلا ... ... ... ... | النحـل | ١٦ |
| | يوم يدعوكم فتستجيبون بحمده وتظنون إن لبثتم إلا قليلا | الإسـراء | ١٧ |
| | لئن أخرتن إلى يوم القيامة لأحتنكن ذريته إلا قليلا | » | ١٧ |
| | ولولا أن ثبتناك لقد كدت تركن إليهم شيئا قليلا ... | » | ١٧ |
| | وإذا لا يلبثون خلافك إلا قليلا ... ... ... ... | » | ١٧ |
| | قل الروح من أمر ربى وما أوتيتم من العلم إلا قليلا | » | ١٧ |
| | وهو الذى أنشأ لكم السمع والأبصار والأفئدة قليلا ما تشكرون ... ... ... ... ... | المؤمنون | ٢٣ |
| | قال إن لبثتم إلا قليلا لو أنكم كنتم تعلمون ... ... | » | ٢٣ |
| | أإله مع الله قليلا ما تذكرون ... ... ... ... | النمـل | ٢٧ |
| | فتلك مساكنهم لم تسكن من بعدهم إلا قليلا ... ... | القصص | ٢٨ |
| قَلِيلًا | نمتعهم قليلا ثم نضطرهم إلى عذاب غليظ... ... ... | لقمان | ٣١ |
| | وجعل لكم السمع والأبصار والأفئدة قليلا ما تشكرون | السجدة | ٣٢ |
| | وإذا لا تمتعون إلا قليلا ... ... ... ... ... | الأحزاب | ٣٣ |
| | ولا يأتون البأس إلا قليلا ... ... ... ... ... | » | ٣٣ |
| | ولو كانوا فيكم ما قاتلوا إلا قليلا ... ... ... ... | » | ٣٣ |
| | لنغرينك بهم ثم لا يجاورونك فيها إلا قليلا ... ... | » | ٣٣ |
| | قل تمتع بكفرك قليلا إنك من أصحاب النار ... ... | الزمر | ٣٩ |
| | وما يستوى الأعمى والبصير والذين آمنوا وعملوا الصالحات ولا المسىء قليلا ما تتذكرون ... ... | غافـر | ٤٠ |
| | إنا كاشفوا العذاب قليلا إنكم عائدون ... ... ... | الدخان | ٤٤ |
| | فسيقولون بل تحسدوننا بل كانوا لا يفقهون إلا قليلا | الفتـح | ٤٨ |
| | كانوا قليلا من الليل ما يهجعون ... ... ... ... | الذاريات | ٥١ |
| | أفرأيت الذى تولى . وأعطى قليلا وأكدى ... ... | النجـم | ٥٣ |
| | وجعل لكم السمع والأبصار والأفئدة قليلا ما تشكرون | الملك | ٦٧ |
| | إنه لقول رسول كريم . وما هو بقول شاعر قليلا ما تؤمنون... ... ... ... ... ... | الحاقة | ٦٩ |
| | ولا بقول كاهن قليلا ما تذكرون ... ... ... ... | » | ٦٩ |
| | قم الليل إلا قليلا ... ... ... ... ... ... | المزمل | ٧٣ |
| | نصفه أو انقص منه قليلا ... ... ... ... ... | » | ٧٣ |
| | وذرنى والمكذبين أولى النعمة ومهلهم قليلا ... ... | » | ٧٣ |
| | كلوا وتمتعوا قليلا إنكم مجرمون... ... ... ... | المرسلات | ٧٧ |
| قَلِيلُونَ | إن هؤلاء لشرذمة قليلون... ... ... ... ... | الشعراء | ٢٦ |
| قَلِيلَةٍ | كم من فئة قليلة غلبت فئة كثيرة بإذن الله ... ... | البقـرة | ٢ |
| أَقَلَّ | إن ترن أنا أقل منك مالا وولدا . فعسى ربى أن (٢) يؤتين خيرا من جنتك ... ... ... ... ... | الكهف | ١٨ |
| | فسيعلمون من أضعف ناصرا وأقل عددا ... ... ... | الجـن | ٧٢ |
| ✦✦✦ | | | |
| الْقَلَمِ | ن والقلم وما يسطرون . ما أنت بنعمة ربك بمجنون | القلم | ٦٨ |
| | (٢) اقرأ وربك الأكرم . الذى علم بالقلم ... ... ... | العلق | ٩٦ |
| أَقْلَامٌ | ولو أنما فى الأرض من شجرة أقلام والبحر يمده من بعده سبعة أبحر ما نفدت كلمات الله ... ... | لقمان | ٣١ |
| أَقْلَامَهُمْ | وما كنت لديهم إذ يلقون أقلامهم أيهم يكفل مريم | آل عمران | ٣ |
| ✦✦✦ | | | |
| قَلَى | والضحى . والليل إذا سجى . ما ودعك ربك وما قلى | الضحى | ٩٣ |
| الْقَالِينَ | قال إنى لعملكم من القالين ... ... ... ... | الشعراء | ٢٦ |
| ✦✦✦ | | | |
| مُقْمَحُونَ | فهى إلى الأذقان فهم مقمحون ... ... ... | يس | ٣٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| **ٱلْقَمَرُ**: فلما رأى القمر بازغا قال هـذا ربى ... ... ... | | ٧٧ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢٦) فالق الإصباح وجعل الليل سكنا والشمس والقمر حسبانا | | ٩٦ | ك « | ٦ |
| والشمس والقمر والنجوم مسخرات بأمره ... ... | | ٥٤ | ك الأعراف | ٧ |
| هو الذى جعل الشمس ضياء والقمر نورا ... ... | | ٥ | ك يونس | ١٠ |
| إنى رأيت أحد عشر كوكبا والشمس والقمر ... ... | | ٤ | ك يوسف | ١٢ |
| وسخر الشمس والقمر كل يجرى لأجل مسمى... ... | | ٢ | م الرعد | ١٣ |
| وسخر لكم الشمس والقمر دائبين وسخر لكم الليل والنهار | | ٣٣ | ك إبراهيم | ١٤ |
| وسخر لكم الليل والنهار والشمس والقمر ... ... ... | | ١٢ | ك النحل | ١٦ |
| وهو الذى خلق الليل والنهار والشمس والقمر ... ... | | ٣٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| ألم تر أن الله يسجد له من فى السموات ومن فى الأرض والشمس والقمر ... ... ... ... ... ... | | ١٨ | م الحج | ٢٢ |
| ولئن سألتهم من خلق السموات والأرض وسخر الشمس والقمر ليقولن الله ... ... ... ... ... ... | | ٦١ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| وسخر الشمس والقمر كل يجرى إلى أجل مسمى ... | | ٢٩ | م لقمان | ٣١ |
| وسخر الشمس والقمر كل يجرى لأجل مسمى ... ... | | ١٣ | ك فاطر | ٣٥ |
| والقمر قدرناه منازل حتى عاد كالعرجون القديم ... | | ٣٩ | ك يس | ٣٦ |
| لا الشمس ينبغى لها أن تدرك القمر ولا الليل سابق النهار | | ٤٠ | ك « | ٣٦ |
| وسخر الشمس والقمر كل يجرى لأجل مسمى ... ... | | ٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| ومن آياته الليل والنهار والشمس والقمر ... ... ... | | ٣٧ | ك فصلت | ٤١ |
| لا تسجدوا للشمس ولا للقمر واسجدوا لله الذى خلقهن | | ٣٧ | ك « | ٤١ |
| اقتربت الساعة وانشق القمر ... ... ... ... ... | | ١ | ك القمر | ٥٤ |
| الشمس والقمر بحسبان ... ... ... ... ... ... | | ٥ | م الرحمن | ٥٥ |
| وجعل القمر فيهن نورا وجعل الشمس سراجا ... ... | | ١٦ | ك نوح | ٧١ |
| كلا والقمر . والليل إذ أدبر . والصبح إذا أسفر ... | | ٣٢ | ك المدثر | ٧٤ |
| فإذا برق البصر . وخسف القمر ... ... ... ... | | ٨ | ك القيامة | ٧٥ |
| وجمع الشمس والقمر . يقول الإنسان يومئذ أين المفر | | ٩ | ك « | ٧٥ |
| والقمر إذا اتسق . لتركبن طبقا عن طبق ... ... | | ١٨ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| والشمس وضحاها . والقمر إذا تلاها ... ... ... | | ٢ | ك الشمس | ٩١ |
| **قَمَرًا**: وجعل فيها سراجا وقمرا منيرا ... ... ... ... | | ٦١ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **قَمِيصُهُ**: وجاءوا على قميصه بدم كذب ... ... ... ... | | ١٨ | ك يوسف | ١٢ |
| (٥) واستبقا الباب وقدت قميصه من دبر ... ... ... ... | | ٢٥ | ك « | ١٢ |
| إن كان قميصه قد من قبل فصدقت وهو من الكاذبين | | ٢٦ | ك « | ١٢ |
| وإن كان قميصه قد من دبر فكذبت وهو من الصادقين | | ٢٧ | ك « | ١٢ |
| فلما رأى قميصه قد من دبر قال إنه من كيدكن ... ... | | ٢٨ | ك « | ١٢ |
| **قَمِيصِى**: اذهبوا بقميصى هذا فألقوه على وجه أبى يأت بصيرا | | ٩٣ | ك « | ١٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| **قَمْطَرِيرًا**: إنا نخاف من ربنا يوما عبوسا قمطريرا ... ... | | ١٠ | م الإنسان | ٧٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **مَقَامِعُ**: ولهم مقامع من حديد ... ... ... ... ... ... | | ٢١ | م الحج | ٢٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **ٱلْقُمَّلَ**: فأرسلنا عليهم الطوفان والجراد والقمل والضفادع | | ١٣٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **يَقْنُتْ**: ومن يقنت منكن لله ورسوله وتعمل صالحا نؤتها أجرها مرتين ... ... ... ... ... ... ... | | ٣١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| **ٱقْنُتِى**: يا مريم اقنتى لربك واسجدى واركعى مع الراكعين | | ٤٣ | م آل عمران | ٣ |
| **قَانِتٌ**: أمن هو قانت آناء الليل ساجدا وقائما يحذر الآخرة ... ... ... ... ... ... ... | | ٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| **قَانِتًا**: إن إبراهيم كان أمة قانتا لله حنيفا ولم يك من المشركين ... ... ... ... ... ... ... | | ١٢٠ | ك النحل | ١٦ |
| **قَانِتَاتٌ**: فالصالحات قانتات حافظات للغيب بما حفظ الله | | ٣٤ | م النساء | ٤ |
| (٣) والمؤمنين والمؤمنات والقانتين والقانتات... ... ... | | ٣٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| عسى ربه إن طلقكن أن يبدله أزواجا خيرا منكن مسلمات مؤمنات قانتات ... ... ... ... ... | | ٥ | م التحريم | ٦٦ |
| **قَانِتُونَ**: سبحانه بل له ما فى السموات والأرض كل له (٢) قانتون ... ... ... ... ... ... ... | | ١١٦ | م البقرة | ٢ |
| وله من فى السموات والأرض كل له قانتون ... ... | | ٢٦ | ك الروم | ٣٠ |
| **قَانِتِينَ**: وقوموا لله قانتين ... ... ... ... ... ... | | ٢٣٨ | م البقرة | ٢ |
| (٤) الصابرين والصادقين والقانتين والمنفقين والمستغفرين بالأسحار... ... ... ... ... ... ... ... | | ١٧ | م آل عمران | ٣ |
| والمؤمنين والمؤمنات والقانتين والقانتات... ... ... | | ٣٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| وصدقت بكلمات ربها وكتبه وكانت من القانتين ... | | ١٢ | م التحريم | ٦٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **قَنَطُوا**: وهو الذى ينزل الغيث من بعد ما قنطوا وينشر رحمته ... ... ... ... ... ... ... ... | | ٢٨ | ك الشورى | ٤٢ |
| **تَقْنَطُوا**: لا تقنطوا من رحمة الله إن الله يغفر الذنوب جميعا ... ... ... ... ... ... ... ... | | ٥٣ | م الزمر | ٣٩ |
| **يَقْنَطُ**: قال ومن يقنط من رحمة ربه إلا الضالون ... ... | | ٥٦ | ك الحجر | ١٥ |
| **يَقْنَطُونَ**: وإن تصبهم سيئة بما قدمت أيديهم إذا هم يقنطون ... ... ... ... ... ... ... | | ٣٦ | ك الروم | ٣٠ |
| **ٱلْقَانِطِينَ**: قالوا بشرناك بالحق فلا تكن من القانطين .. | | ٥٥ | ك الحجر | ١٥ |
| **قَنُوطٌ**: وإن مسه الشر فيئوس قنوط ... ... ... ... | | ٤٩ | ك فصلت | ٤١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| **ٱلْقَانِعَ**: فإذا وجبت جنوبها فكلوا منها وأطعموا القانع والمعتر | ٣٦ م | | الحج | ٢٢ |
| **مُقْنِعِي**: مهطعين مقنعي رءوسهم لا يرتد إليهم طرفهم ... | ٤٣ ك | | إبراهيم | ١٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **قِنْوَانٌ**: ومن النخل من طلعها قنوان دانية وجنات من أعناب | ٩٩ ك | | الأنعام | ٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **أَقْنَى**: وأنه هو أغنى وأقنى ... ... ... ... ... ... | ٤٨ ك | | النجم | ٥٣ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **تَقْهَرْ**: فأما اليتيم فلا تقهر ... ... ... ... ... ... | ٩ ك | | الضحى | ٩٣ |
| **ٱلْقَاهِرُ**: وهو القاهر فوق عباده وهو الحكيم الخبير ... | ١٨ ك | | الأنعام | ٦ |
| (٢) وهو القاهر فوق عباده ويرسل عليكم حفظة ... ... | ٦١ ك | « | | ٦ |
| **قَاهِرُونَ**: ونستحيي نساءهم وإنا فوقهم قاهرون ... ... | ١٢٧ ك | | الأعراف | ٧ |
| **ٱلْقَهَّارُ**: أأرباب متفرقون خير أم الله الواحد القهار ... | ٣٩ ك | | يوسف | ١٢ |
| (٦) قل الله خالق كل شيء وهو الواحد القهار ... ... ... | ١٦ م | | الرعد | ١٣ |
| وبرزوا لله الواحد القهار ... ... ... ... ... ... | ٤٨ ك | | إبراهيم | ١٤ |
| قل إنما أنا منذر وما من إله إلا الله الواحد القهار | ٦٥ ك | | ص | ٣٨ |
| سبحانه هو الله الواحد القهار ... ... ... ... ... | ٤ ك | | الزمر | ٣٩ |
| لمن الملك اليوم لله الواحد القهار ... ... ... ... | ١٦ ك | | غافر | ٤٠ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **قَابَ**: ثم دنا فتدلى . فكان قاب قوسين أو أدنى ... ... | ٩ ك | | النجم | ٥٣ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **أَقْوَاتَهَا**: وقدر فيها أقواتها في أربعة أيام سواء ... ... | ١٠ ك | | فصلت | ٤١ |
| **مُقِيتًا**: وكان الله على كل شيء مقيتا ... ... ... ... | ٨٥ م | | النساء | ٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **قَوْسَيْنِ**: ثم دنا فتدلى . فكان قاب قوسين أو أدنى ... | ٩ ك | | النجم | ٥٣ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **قَاعًا**: فيذرها قاعا صفصفا ... | ١٠٦ ك | | طه | ٢٠ |
| **بِقِيعَةٍ**: والذين كفروا أعمالهم كسراب بقيعة ... ... ... | ٣٩ م | | النور | ٢٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **قَالَ**: وإذ قال ربك للملائكة إني جاعل في الأرض خليفة | ٣٠ م | | البقرة | ٢ |
| (٥٢٩) قال إني أعلم ما لا تعلمون ... ... ... ... ... | ٣٠ م | « | | ٢ |
| ثم عرضهم على الملائكة فقال أنبئوني بأسماء هؤلاء | ٣١ م | « | | ٢ |
| قال يا آدم أنبئهم بأسمائهم ... ... ... ... ... | ٣٣ م | « | | ٢ |
| قال ألم أقل لكم إني أعلم غيب السموات والأرض | ٣٣ م | « | | ٢ |
| وإذ قال موسى لقومه يا قوم إنكم ظلمتم أنفسكم بأتخاذكم العجل ... ... ... ... ... ... | ٥٤ م | « | | ٢ |
| قال أتستبدلون الذي هو أدنى بالذي هو خير ... ... | ٦١ م | « | | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **قَالَ**: وإذ قال موسى لقومه إن الله يأمركم أن تذبحوا بقرة | ٦٧ م | | البقرة | ٢ |
| قال أعوذ بالله أن أكون من الجاهلين ... ... ... | ٦٧ م | « | | ٢ |
| قال إنه يقول إنها بقرة لا فارض ولا بكر عوان بين ذلك | ٦٨ م | « | | ٢ |
| قال إنه يقول إنها بقرة صفراء فاقع لونها تسر الناظرين | ٦٩ م | « | | ٢ |
| قال إنه يقول إنها بقرة لا ذلول تثير الأرض ولا تسقي الحرث ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧١ م | « | | ٢ |
| كذلك قال الذين لا يعلمون مثل قولهم ... ... ... | ١١٣ م | « | | ٢ |
| وقال الذين لا يعلمون لولا يكلمنا الله أو تأتينا آية ... | ١١٨ م | « | | ٢ |
| كذلك قال الذين من قبلهم مثل قولهم ... ... ... | ١١٨ م | « | | ٢ |
| قال إني جاعلك للناس إماما ... ... ... ... ... | ١٢٤ م | « | | ٢ |
| قال ومن ذريتي ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٢٤ م | « | | ٢ |
| قال لا ينال عهدي الظالمين ... ... ... ... ... ... | ١٢٤ م | « | | ٢ |
| وإذ قال إبراهيم رب اجعل هذا بلدا آمنا ... ... ... | ١٢٦ م | « | | ٢ |
| قال ومن كفر فأمتعه قليلا ثم أضطره إلى عذاب النار | ١٢٦ م | « | | ٢ |
| إذ قال له ربه أسلم ... ... ... ... ... ... ... | ١٣١ م | « | | ٢ |
| قال أسلمت لرب العالمين ... ... ... ... ... ... | ١٣١ م | « | | ٢ |
| إذ قال لبنيه ما تعبدون من بعدي ... ... ... ... | ١٣٣ م | « | | ٢ |
| وقال الذين آمنوا لو أن لنا كرة فنتبرأ منهم ... ... | ١٦٧ م | « | | ٢ |
| فقال لهم الله موتوا ثم أحياهم ... ... ... ... ... | ٢٤٣ م | « | | ٢ |
| قال هل عسيتم إن كتب عليكم القتال ألا تقاتلوا | ٢٤٦ م | « | | ٢ |
| وقال لهم نبيهم إن الله قد بعث لكم طالوت ملكا | ٢٤٧ م | « | | ٢ |
| قال إن الله اصطفاه عليكم وزاده بسطة في العلم والجسم | ٢٤٧ م | « | | ٢ |
| وقال لهم نبيهم إن آية ملكه أن يأتيكم التابوت فيه سكينة | ٢٤٨ م | « | | ٢ |
| فلما فصل طالوت بالجنود قال إن الله مبتليكم بنهر | ٢٤٩ م | « | | ٢ |
| قال الذين يظنون أنهم ملاقوا الله كم من فئة قليلة غلبت فئة كثيرة بإذن الله ... ... ... ... ... | ٢٤٩ م | « | | ٢ |
| إذ قال إبراهيم ربي الذي يحيي ويميت ... ... ... | ٢٥٨ م | « | | ٢ |
| قال أنا أحيي وأميت ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥٨ م | « | | ٢ |
| قال إبراهيم فإن الله يأتي بالشمس من المشرق... ... | ٢٥٨ م | « | | ٢ |
| قال أنى يحيي هذه الله بعد موتها ... ... ... ... | ٢٥٩ م | « | | ٢ |
| قال كم لبثت ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥٩ م | « | | ٢ |
| قال لبثت يوما أو بعض يوم ... ... ... ... ... | ٢٥٩ م | « | | ٢ |
| قال بل لبثت مائة عام ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥٩ م | « | | ٢ |
| فلما تبين له قال أعلم أن الله على كل شيء قدير... | ٢٥٩ م | « | | ٢ |
| وإذ قال إبراهيم رب أرني كيف تحيي الموتى... ... | ٢٦٠ م | « | | ٢ |
| قال أو لم تؤمن ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦٠ م | « | | ٢ |
| قال بلى ولكن ليطمئن قلبي ... ... ... ... ... | ٢٦٠ م | « | | ٢ |
| قال فخذ أربعة من الطير فصرهن إليك ... ... ... | ٢٦٠ م | « | | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَالَ: | قال يا مريم أنى لك هذا قالت هو من عند الله ... | ٣٧ | م آل عمران | ٣ |
| | قال رب هب لى من لدنك ذرية طيبة ... ... ... | ٣٨ | م » | ٣ |
| | قال رب أنى يكون لى غلام وقد بلغنى الكبر وامرأتى عاقر | ٤٠ | م » | ٣ |
| | قال كذلك الله يفعل مايشاء ... ... ... ... ... | ٤٠ | م » | ٣ |
| | قال رب اجعل لى آية ... ... ... ... ... ... | ٤١ | م » | ٣ |
| | قال آيتك ألا تكلم الناس ثلاثة أيام إلا رمزا... ... | ٤١ | م » | ٣ |
| | قال كذلك الله يخلق مايشاء ... ... ... ... ... | ٤٧ | م » | ٣ |
| | فلما أحس عيسى منهم الكفر قال من أنصارى إلى الله | ٥٢ | م » | ٣ |
| | قال الحواريون نحن أنصار الله آمنا بالله... ... ... | ٥٢ | م » | ٣ |
| | إذ قال الله ياعيسى إنى متوفيك ورافعك إلىّ ... ... | ٥٥ | م » | ٣ |
| | خلقه من تراب ثم قال له كن فيكون ... ... ... ... | ٥٩ | م » | ٣ |
| | قال أأقررتم وأخذتم على ذلكم إصرى... ... ... ... | ٨١ | م » | ٣ |
| | قالوا أقررنا قال فاشهدوا وأنا معكم من الشاهدين ... | ٨١ | م » | ٣ |
| | الذين قال لهم الناس إن الناس قد جمعوا لكم فاخشوهم | ١٧٣م | » | ٣ |
| | حتى إذا حضر أحدهم الموت قال إنى تبت الآن ... | ١٨ | م النساء | ٤ |
| | فإن أصابتكم مصيبة قال قد أنعم الله علىّ ... ... ... | ٧٢ | م » | ٤ |
| | وقال لأتخذن من عبادك نصيبا مفروضا ... ... ... | ١١٨م | » | ٤ |
| | وبعثنا منهم اثنى عشر نقيبا وقال الله إنى معكم ... ... | ١٢ | م المائدة | ٥ |
| | وإذ قال موسى لقومه يا قوم اذكروا نعمة الله عليكم | ٢٠ | م » | ٥ |
| | قال رجلان من الذين يخافون أنعم الله عليهما ادخلوا | | | |
| | عليهم الباب ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | م » | ٥ |
| | قال رب إنى لا أملك إلا نفسى وأخى ... ... ... | ٢٥ | م » | ٥ |
| | قال فإنها محرمة عليهم أربعين سنة يتيهون فى الأرض | ٢٦ | م » | ٥ |
| | فتقبل من أحدهما ولم يتقبل من الآخر قال لأقتلنك | ٢٧ | م » | ٥ |
| | قال إنما يتقبل الله من المتقين ... ... ... ... ... | ٢٧ | م » | ٥ |
| | قال ياويلتى أعجزت أن أكون مثل هذا الغراب ... | ٣١ | م » | ٥ |
| | وقال المسيح يابنى إسرائيل اعبدوا الله ربى وربكم | ٧٢ | م » | ٥ |
| | إذ قال الله يا عيسى ابن مريم اذكر نعمتى عليك ... | ١١٠م | » | ٥ |
| | فقال الذين كفروا منهم إن هذا إلا سحر مبين... ... | ١١٠م | » | ٥ |
| | إذ قال الحواريون ياعيسى ابن مريم هل يستطيع ربك | | | |
| | أن ينزل علينا مائدة من السماء ... ... ... ... | ١١٢م | » | ٥ |
| | قال اتقوا الله إن كنتم مؤمنين ... ... ... ... | ١١٢م | » | ٥ |
| | قال عيسى ابن مريم اللهم ربنا أنزل علينا مائدة من السماء | ١١٤م | » | ٥ |
| | قال الله إنى منزلها عليكم ... ... ... ... ... | ١١٥م | » | ٥ |
| | وإذ قال الله يا عيسى ابن مريم أأنت قلت للناس | | | |
| | اتخذونى وأمى إلهين من دون الله ... ... ... | ١١٦م | » | ٥ |
| | قال سبحانك مايكون لى أن أقول مالیس لى بحق... | ١١٦م | » | ٥ |
| | قال الله هذا يوم ينفع الصادقين صدقهم ... ... ... | ١١٩م | » | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَالَ: | فلمسوه بأيديهم لقال الذين كفروا إن هذا إلا سحر مبين | ٧ | ك الأنعام | ٦ |
| | قال أليس هذا بالحق قالوا بلى وربنا ... ... ... | ٣٠ | ك » | ٦ |
| | قال فذوقوا العذاب بما كنتم تكفرون ... ... ... | ٣٠ | ك » | ٦ |
| | وإذ قال إبراهيم لأبيه آزر أتتخذ أصناما آلهة ... ... | ٧٤ | ك » | ٦ |
| | فلما جن عليه الليل رأى كوكبا قال هذا ربى ... ... | ٧٦ | ك » | ٦ |
| | فلما أفل قال لا أحب الآفلين ... ... ... ... ... | ٧٦ | ك » | ٦ |
| | فلما رأى القمر بازغا قال هذا ربى ... ... ... ... | ٧٧ | ك » | ٦ |
| | فلما أفل قال لئن لم يهدنى ربى لأكونن من القوم الضالين | ٧٧ | ك » | ٦ |
| | فلما رأى الشمس بازغة قال هذا ربى هذا أكبر ... | ٧٨ | ك » | ٦ |
| | فلما أفلت قال يا قوم إنى برىء مما تشركون ... ... | ٧٨ | ك » | ٦ |
| | وحاجه قومه قال أتحاجونى فى الله وقد هدان... ... | ٨٠ | ك » | ٦ |
| | ومن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو قال أوحى إلىّ | | | |
| | ولم يوح إليه شىء ... ... ... ... ... ... ... | ٩٣ | م » | ٦ |
| | ومن قال سأنزل مثل ما أنزل الله ... ... ... ... | ٩٣ | م » | ٦ |
| | وقال أولياؤهم من الإنس ربنا استمتع بعضنا ببعض | ١٢٨ك | » | ٦ |
| | قال النار مثواكم خالدين فيها إلا ما شاء الله ... ... | ١٢٨ك | » | ٦ |
| | قال ما منعك ألا تسجد إذ أمرتك ... ... ... ... | ١٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | قال أنا خير منه خلقتنى من نار وخلقته من طين... ... | ١٢ | ك » | ٧ |
| | قال فاهبط منها فما يكون لك أن تتكبر فيها... ... ... | ١٣ | ك » | ٧ |
| | قال أنظرنى إلى يوم يبعثون ... ... ... ... ... | ١٤ | ك » | ٧ |
| | قال إنك من المنظرين ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك » | ٧ |
| | قال فبما أغويتنى لأقعدن لهم صراطك المستقيم ... ... | ١٦ | ك » | ٧ |
| | قال اخرج منها مذءوما مدحورا... ... ... ... ... | ١٨ | ك » | ٧ |
| | وقال مانهاكما ربكما عن هذه الشجرة إلا أن تكونا ملكين | ٢٠ | ك » | ٧ |
| | قال اهبطوا بعضكم لبعض عدو ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك » | ٧ |
| | قال فيها تحيون وفيها تموتون ومنها تخرجون ... ... | ٢٥ | ك » | ٧ |
| | قال ادخلوا فى أمم قد خلت من قبلكم من الجن والإنس | | | |
| | فى النار ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك » | ٧ |
| | قال لكل ضعف ولكن لا تعلمون ... ... ... ... | ٣٨ | ك » | ٧ |
| | لقد أرسلنا نوحا إلى قومه فقال ياقوم اعبدوا الله | ٥٩ | ك » | ٧ |
| | قال الملأ من قومه إنا لنراك فى ضلال مبين... ... | ٦٠ | ك » | ٧ |
| | قال ياقوم ليس بى ضلالة ولكنى رسول من رب العالمين | ٦١ | ك » | ٧ |
| | وإلى عاد أخاهم هودا قال ياقوم اعبدوا الله... ... | ٦٥ | ك » | ٧ |
| | قال الملأ الذين كفروا من قومه إنا لنراك فى سفاهة | ٦٦ | ك » | ٧ |
| | قال ياقوم ليس بى سفاهة ولكنى رسول من رب العالمين | ٦٧ | ك » | ٧ |
| | قال قد وقع عليكم من ربكم رجس وغضب ... ... | ٧١ | ك » | ٧ |
| | وإلى ثمود أخاهم صالحا قال ياقوم اعبدوا الله ... | ٧٣ | ك » | ٧ |
| | قال الملأ الذين استكبروا من قومه للذين استضعفوا | ٧٥ | ك » | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَالَ: | قال الذين آستكبروا إنا بالذى آمنتم به كافرون ... | ٧٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | فتولى عنهم وقال ياقوم لقد أبلغتكم رسالة ربى ... ... | ٧٩ | ك « | ٧ |
| | ولوطا إذ قال لقومه أتأتون الفاحشة ... ... ... | ٨٠ | ك « | ٧ |
| | و إلى مدين أخاهم شعيبا قال ياقوم آعبدوا الله ... | ٨٥ | ك « | ٧ |
| | قال الملأ الذين آستكبروا من قومه لنخرجنك ياشعيب | ٨٨ | ك « | ٧ |
| | قال أو لو كنا كارهين ... ... ... ... ... ... | ٨٨ | ك « | ٧ |
| | وقال الملأ الذين كفروا من قومه لئن آتبعتم شعيبا | ٩٠ | ك « | ٧ |
| | فتولى عنهم وقال يا قوم لقد أبلغتكم رسالات ربى ... | ٩٣ | ك « | ٧ |
| | وقال موسى يافرعون إنى رسول من رب العالمين ... | ١٠٤ | ك « | ٧ |
| | قال إن كنت جئت بآية فأت بها إن كنت من الصادقين | ١٠٦ | ك « | ٧ |
| | قال الملأ من قوم فرعون إن هذا لساحر عليم ... ... | ١٠٩ | ك « | ٧ |
| | قال نعم و إنكم لمن المقربين ... ... ... ... ... | ١١٤ | ك « | ٧ |
| | قال ألقوا فلما ألقوا سحروا أعين الناس ... ... | ١١٦ | ك « | ٧ |
| | قال فرعون آمنتم به قبل أن آذن لكم ... ... ... | ١٢٣ | ك « | ٧ |
| | وقال الملأ من قوم فرعون أتذر موسى وقومه ليفسدوا فى الأرض ... ... ... ... ... | ١٢٧ | ك « | ٧ |
| | قال سنقتل أبناءهم ونستحيى نساءهم و إنا فوقهم قاهرون | ١٢٧ | ك « | ٧ |
| | قال موسى لقومه آستعينوا بالله وآصبروا ... ... ... | ١٢٨ | ك « | ٧ |
| | قال عسى ربكم أن يهلك عدوكم ويستخلفكم فى الأرض | ١٢٩ | ك « | ٧ |
| | قال إنكم قوم تجهلون ... ... ... ... ... ... | ١٣٨ | ك « | ٧ |
| | قال أغير الله أبغيكم إلها وهو فضلكم على العالمين ... | ١٤٠ | ك « | ٧ |
| | وقال موسى لأخيه هرون آخلفنى فى قومى وأصلح ... | ١٤٢ | ك « | ٧ |
| | ولما جاء موسى لميقاتنا وكلمه ربه قال رب أرنى أنظر إليك | ١٤٣ | ك « | ٧ |
| | قال لن ترانى ولكن آنظر إلى الجبل ... ... ... ... | ١٤٣ | ك « | ٧ |
| | فلما أفاق قال سبحانك تبت إليك وأنا أول المؤمنين | ١٤٣ | ك « | ٧ |
| | قال يا موسى إنى آصطفيتك على الناس برسالاتى ... | ١٤٤ | ك « | ٧ |
| | قال بئسما خلفتمونى من بعدى ... ... ... ... ... | ١٥٠ | ك « | ٧ |
| | قال آبن أم إن القوم آستضعفونى وكادوا يقتلوننى ... | ١٥٠ | ك « | ٧ |
| | قال رب آغفر لى ولأخى وأدخلنا فى رحمتك ... ... | ١٥١ | ك « | ٧ |
| | قال رب لو شئت أهلكتهم من قبل و إياى ... ... | ١٥٥ | ك « | ٧ |
| | قال عذابى أصيب به من أشاء ورحمتى وسعت كل شىء | ١٥٦ | ك « | ٧ |
| | وقال لا غالب لكم اليوم من الناس و إنى جار لكم ... | ٤٨ | م الأنفال | ٨ |
| | فلما تراءت الفئتان نكص على عقبيه وقال إنى برىء منكم | ٤٨ | م « | ٨ |
| | قال الكافرون إن هذا لساحر مبين ... ... ... ... | ٢ | ك يونس | ١٠ |
| | قال الذين لا يرجون لقاءنا آئت بقرآن غير هذا أو بدله | ١٥ | ك « | ١٠ |
| | فزيلنا بينهم وقال شركاؤهم ما كنتم إيانا تعبدون ... | ٢٨ | ك « | ١٠ |
| | وآتل عليهم نبأ نوح إذ قال لقومه ياقوم ... ... ... | ٧١ | ك « | ١٠ |
| | قال موسى أتقولون للحق لما جاءكم أسحر هذا ... ... | ٧٧ | ك « | ١٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَالَ: | وقال فرعون آئتونى بكل ساحر عليم ... ... ... ... | ٧٩ | ك يونس | ١٠ |
| | فلما جاء السحرة قال لهم موسى ألقوا ما أنتم ملقون | ٨٠ | ك « | ١٠ |
| | فلما ألقوا قال موسى ما جئتم به السحر إن الله سيبطله | ٨١ | ك « | ١٠ |
| | وقال موسى ياقوم إن كنتم آمنتم بالله فعليه توكلوا ... | ٨٤ | ك « | ١٠ |
| | وقال موسى ربنا إنك آتيت فرعون وملأه زينة وأموالا | ٨٨ | ك « | ١٠ |
| | قال قد أجيبت دعوتكما فآستقيما ... ... ... ... | ٨٩ | ك « | ١٠ |
| | قال آمنت أنه لا إله إلا الذى آمنت به بنوا إسرائيل | ٩٠ | ك « | ١٠ |
| | فقال الملأ الذين كفروا من قومه ما نراك إلا بشرا مثلنا | ٢٧ | ك هود | ١١ |
| | قال يا قوم أرأيتم إن كنت على بينة من ربى ... ... | ٢٨ | ك « | ١١ |
| | قال إنما يأتيكم به الله إن شاء وما أنتم بمعجزين ... | ٣٣ | ك « | ١١ |
| | قال إن تسخروا منا فإنا نسخر منكم كما تسخرون ... | ٣٨ | ك « | ١١ |
| | وقال آركبوا فيها بسم الله مجريها ومرساها ... ... ... | ٤١ | ك « | ١١ |
| | قال سآوى إلى جبل يعصمنى من الماء ... ... ... | ٤٣ | ك « | ١١ |
| | قال لا عاصم اليوم من أمر الله إلا من رحم ... ... | ٤٣ | ك « | ١١ |
| | ونادى نوح ربه فقال رب إن آبنى من أهلى ... ... | ٤٥ | ك « | ١١ |
| | قال يا نوح إنه ليس من أهلك ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك « | ١١ |
| | قال رب إنى أعوذ بك أن أسئلك ما ليس لى به علم ... | ٤٧ | ك « | ١١ |
| | و إلى عاد أخاهم هودا قال يا قوم آعبدوا الله ... | ٥٠ | ك « | ١١ |
| | قال إنى أشهد الله وآشهدوا إنى برىء مما تشركون... | ٥٤ | ك « | ١١ |
| | قال ياقوم آعبدوا الله ما لكم من إله غيره ... ... | ٦١ | ك « | ١١ |
| | قال يا قوم أرأيتم إن كنت على بينة من ربى ... ... | ٦٣ | ك « | ١١ |
| | فعقروها فقال تمتعوا فى داركم ثلاثة أيام ... ... ... | ٦٥ | ك « | ١١ |
| | ولقد جاءت رسلنا إبراهيم بالبشرى قالوا سلاما قال سلام | ٦٩ | ك « | ١١ |
| | سىء بهم وضاق بهم ذرعا وقال هذا يوم عصيب ... | ٧٧ | ك « | ١١ |
| | قال ياقوم هؤلاء بناتى هن أطهر لكم ... ... ... ... | ٧٨ | ك « | ١١ |
| | قال لو أن لى بكم قوة أو آوى إلى ركن شديد ... ... | ٨٠ | ك « | ١١ |
| | قال ياقوم آعبدوا الله ما لكم من إله غيره ... ... ... | ٨٤ | ك « | ١١ |
| | قال يا قوم أرأيتم إن كنت على بينة من ربى ... ... | ٨٨ | ك « | ١١ |
| | قال ياقوم أرهطى أعز عليكم من الله ... ... ... ... | ٩٢ | ك « | ١١ |
| | إذ قال يوسف لأبيه يا أبت إنى رأيت أحد عشر كوكبا | ٤ | ك يوسف | ١٢ |
| | قال يا بنى لا تقصص رؤياك على إخوتك فيكيدوا لك كيدا | ٥ | ك « | ١٢ |
| | قال قائل منهم لا تقتلوا يوسف وألقوه فى غيابة الجب | ١٠ | ك « | ١٢ |
| | قال إنى ليحزننى أن تذهبوا به وأخاف أن يأكله الذئب | ١٣ | ك « | ١٢ |
| | قال بل سولت لكم أنفسكم أمرا فصبر جميل ... ... | ١٨ | ك « | ١٢ |
| | قال يا بشرى هذا غلام وأسروه بضاعة ... ... ... | ١٩ | ك « | ١٢ |
| | وقال الذى آشتراه من مصر لامرأته أكرمى مثواه ... | ٢١ | ك « | ١٢ |
| | قال معاذ الله إنه ربى أحسن مثواى ... ... ... ... | ٢٣ | ك « | ١٢ |
| | قال هى راودتنى عن نفسى ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك « | ١٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَالَ: فلما رأى قميصه قد من دبر قال إنه من كيدكن ... | ٢٨ | ك | يوسف | ١٢ |
| وقال نسوة فى المدينة امرأة العزيز تراود فتاها عن نفسه | ٣٠ | ك | » | ١٢ |
| قال رب السجن أحب إلىّ مما يدعوننى إليه ... ... | ٣٣ | ك | » | ١٢ |
| ودخل معه السجن فتيان قال أحدهما إنى أرانى أعصر خمرا | ٣٦ | ك | » | ١٢ |
| وقال الآخر إنى أرانى أحمل فوق رأسى خبزا تأكل الطير منه | ٣٦ | ك | » | ١٢ |
| قال لا يأتيكما طعام ترزقانه إلا نبأتكما بتأويله ... | ٣٧ | ك | » | ١٢ |
| وقال للذى ظن أنه ناج منهما اذكرنى عند ربك ... | ٤٢ | ك | » | ١٢ |
| وقال الملك إنى أرى سبع بقرات سمان ... ... ... | ٤٣ | ك | » | ١٢ |
| وقال الذى نجا منهما وادّكر بعد أمة أنا أنبئكم بتأويله | ٤٥ | ك | » | ١٢ |
| قال تزرعون سبع سنين دأبا... ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك | » | ١٢ |
| وقال الملك ائتونى به ... ... ... ... ... ... ... | ٥٠ | ك | » | ١٢ |
| فلما جاءه الرسول قال ارجع إلى ربك ... ... ... | ٥٠ | ك | » | ١٢ |
| قال ما خطبكنّ إذ راودتنّ يوسف عن نفسه ... ... | ٥١ | ك | » | ١٢ |
| وقال الملك ائتونى به أستخلصه لنفسى... ... ... ... | ٥٤ | ك | » | ١٢ |
| فلما كلمه قال إنك اليوم لدينا مكين أمين ... ... ... | ٥٤ | ك | » | ١٢ |
| قال اجعلنى على خزائن الأرض إنى حفيظ عليم... ... | ٥٥ | ك | » | ١٢ |
| ولما جهزهم بجهازهم قال ائتونى بأخ لكم من أبيكم... | ٥٩ | ك | » | ١٢ |
| وقال لفتيانه اجعلوا بضاعتهم فى رحالهم لعلهم يعرفونها | ٦٢ | ك | » | ١٢ |
| قال هل آمنكم عليه إلا كما أمنتكم على أخيه من قبل ... | ٦٤ | ك | » | ١٢ |
| قال لن أرسله معكم حتى تؤتون موثقا من الله... ... | ٦٦ | ك | » | ١٢ |
| فلما آتوه موثقهم قال الله على ما نقول وكيل ... ... | ٦٦ | ك | » | ١٢ |
| وقال يا بنى لا تدخلوا من باب واحد ... ... ... | ٦٧ | ك | » | ١٢ |
| قال إنى أنا أخوك فلا تبتئس بما كانوا يعملون ... | ٦٩ | ك | » | ١٢ |
| قال أنتم شر مكانا والله أعلم بما تصفون ... ... ... | ٧٧ | ك | » | ١٢ |
| قال معاذ الله أن نأخذ إلا من وجدنا متاعنا عنده | ٧٩ | ك | » | ١٢ |
| قال كبيرهم ألم تعلموا أن أباكم قد أخذ عليكم موثقا من الله | ٨٠ | ك | » | ١٢ |
| قال بل سولت لكم أنفسكم أمرا فصبر جميل ... ... | ٨٣ | ك | » | ١٢ |
| وتولى عنهم وقال يا أسفى على يوسف ... ... ... | ٨٤ | ك | » | ١٢ |
| قال إنما أشكوا بثى وحزنى إلى الله ... ... ... ... | ٨٦ | ك | » | ١٢ |
| قال هل علمتم ما فعلتم بيوسف وأخيه إذ أنتم جاهلون | ٨٩ | ك | » | ١٢ |
| قال أنا يوسف وهذا أخى قد منّ الله علينا ... ... | ٩٠ | ك | » | ١٢ |
| قال لا تثريب عليكم اليوم يغفر الله لكم وهو أرحم الراحمين | ٩٢ | ك | » | ١٢ |
| ولما فصلت العير قال أبوهم إنى لأجد ريح يوسف | ٩٤ | ك | » | ١٢ |
| قال ألم أقل لكم إنى أعلم من الله ما لا تعلمون... ... | ٩٦ | ك | » | ١٢ |
| قال سوف أستغفر لكم ربى إنه هو الغفور الرحيم... | ٩٨ | ك | » | ١٢ |
| آوى إليه أبويه وقال ادخلوا مصر إن شاء الله آمنين | ٩٩ | ك | » | ١٢ |
| وقال يا أبت هذا تأويل رؤياى من قبل قد جعلها ربى حقا | ١٠٠ك | | » | ١٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَالَ: وإذ قال موسى لقومه اذكروا نعمة الله عليكم ... ... | ٦ | ك | إبراهيم | ١٤ |
| وقال موسى إن تكفروا أنتم ومن فى الأرض جميعا فإن الله لغنى حميد ... ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك | » | ١٤ |
| وقال الذين كفروا لرسلهم لنخرجنكم من أرضنا ... | ١٣ | ك | » | ١٤ |
| فقال الضعفاء للذين استكبروا إنا كنا لكم تبعا ... | ٢١ | ك | » | ١٤ |
| وقال الشيطان لما قضى الأمر إن الله وعدكم وعد الحق | ٢٢ | ك | » | ١٤ |
| وإذ قال إبراهيم رب اجعل هذا البلد آمنا ... ... | ٣٥ | ك | » | ١٤ |
| وإذ قال ربك للملائكة إنى خالق بشرا من صلصال | ٢٨ | ك | الحجر | ١٥ |
| قال يا إبليس ما لك ألا تكون مع الساجدين ... ... | ٣٢ | ك | » | ١٥ |
| قال لم أكن لأسجد لبشر خلقته من صلصال من حمإ مسنون | ٣٣ | ك | » | ١٥ |
| قال فاخرج منها فإنك رجيم ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك | » | ١٥ |
| قال رب فأنظرنى إلى يوم يبعثون... ... ... ... ... | ٣٦ | ك | » | ١٥ |
| قال فإنك من المنظرين ... ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك | » | ١٥ |
| قال رب بما أغويتنى لأزينن لهم فى الأرض ... ... | ٣٩ | ك | » | ١٥ |
| قال هذا صراط علىّ مستقيم... ... ... ... ... ... | ٤١ | ك | » | ١٥ |
| إذ دخلوا عليه فقالوا سلاما قال إنا منكم وجلون ... | ٥٢ | ك | » | ١٥ |
| قال أبشرتمونى على أن مسنى الكبر فبم تبشرون... ... | ٥٤ | ك | » | ١٥ |
| قال ومن يقنط من رحمة ربه إلا الضالون ... ... | ٥٦ | ك | » | ١٥ |
| قال فما خطبكم أيها المرسلون... ... ... ... ... ... | ٥٧ | ك | » | ١٥ |
| فلما جاء آل لوط المرسلون . قال إنكم قوم منكرون | ٦٢ | ك | » | ١٥ |
| قال إن هؤلاء ضيفى فلا تفضحون ... ... ... ... | ٦٨ | ك | » | ١٥ |
| قال هؤلاء بناتى إن كنتم فاعلين ... ... ... ... ... | ٧١ | ك | » | ١٥ |
| قال الذين أوتوا العلم إن الخزى اليوم والسوء على الكافرين | ٢٧ | ك | النحل | ١٦ |
| وقال الذين أشركوا لو شاء الله ما عبدنا من دونه من شىء | ٣٥ | ك | » | ١٦ |
| وقال الله لا تتخذوا إلهين اثنين ... ... ... ... ... | ٥١ | ك | » | ١٦ |
| فسجدوا إلا إبليس قال أأسجد لمن خلقت طينا... ... | ٦١ | ك | الإسراء | ١٧ |
| قال أرأيتك هذا الذى كرمت علىّ ... ... ... ... | ٦٢ | ك | » | ١٧ |
| قال اذهب فمن تبعك منهم فإن جهنم جزاؤكم جزاء موفورا | ٦٣ | ك | » | ١٧ |
| فقال له فرعون إنى لأظنك يا موسى مسحورا ... ... | ١٠١ك | | » | ١٧ |
| قال لقد علمت ما أنزل هؤلاء إلا رب السموات والأرض بصائر ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٢ك | | » | ١٧ |
| قال قائل منهم كم لبثتم قالوا لبثنا يوما أو بعض يوم | ١٩ | ك | الكهف | ١٨ |
| قال الذين غلبوا على أمرهم لنتخذن عليهم مسجدا ... | ٢١ | ك | » | ١٨ |
| فقال لصاحبه وهو يحاوره أنا أكثر منك مالا وأعز نفرا | ٣٤ | ك | » | ١٨ |
| ودخل جنته وهو ظالم لنفسه قال ما أظن أن تبيد هذه أبدا | ٣٥ | ك | | ١٨ |
| قال له صاحبه وهو يحاوره أكفرت بالذى خلقك من تراب | ٣٧ | ك | » | ١٨ |
| وإذ قال موسى لفتاه لا أبرح حتى أبلغ مجمع البحرين | ٦٠ | ك | » | ١٨ |
| فلما جاوزا قال لفتاه آتنا غداءنا لقد لقينا من سفرنا هذا نصبا | ٦٢ | ك | » | ١٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَالَ: | قال أرأيت إذ أوينا إلى الصخرة فإنى نسيت الحوت | ٦٣ | ك الكهف | ١٨ |
| | قال ذلك ما كنا نبغ فارتدا على آثارهما قصصا ... ... | ٦٤ | ك « | ١٨ |
| | قال له موسى هل أتبعك على أن تعلمن مما علمت رشدا | ٦٦ | ك « | ١٨ |
| | قال إنك لن تستطيع معى صبرا ... ... ... ... ... | ٦٧ | ك « | ١٨ |
| | قال ستجدنى إن شاء الله صابرا ولا أعصى لك أمرا | ٦٩ | ك « | ١٨ |
| | قال فإن اتبعتنى فلا تسئلنى عن شىء ... ... ... ... | ٧٠ | ك « | ١٨ |
| | قال أخرقتها لتغرق أهلها ... ... ... ... ... ... | ٧١ | ك « | ١٨ |
| | قال ألم أقل إنك لن تستطيع معى صبرا ... ... ... | ٧٢ | ك « | ١٨ |
| | قال لا تؤاخذنى بما نسيت ولا ترهقنى من أمرى عسرا | ٧٣ | ك « | ١٨ |
| | قال أقتلت نفسا زكية بغير نفس لقد جئت شيئا نكرا | ٧٤ | ك « | ١٨ |
| | قال ألم أقل لك إنك لن تستطيع معى صبرا ... ... | ٧٥ | ك « | ١٨ |
| | قال إن سألتك عن شىء بعدها فلا تصاحبنى ... ... | ٧٦ | ك « | ١٨ |
| | قال لو شئت لاتخذت عليه أجرا ... ... ... ... ... | ٧٧ | ك « | ١٨ |
| | قال هذا فراق بينى و بينك ... ... ... ... ... ... | ٧٨ | ك « | ١٨ |
| | قال أما من ظلم فسوف نعذبه ثم يرد إلى ربه ... ... | ٨٧ | م « | ١٨ |
| | قال ما مكنى فيه ربى خير فأعينونى بقوة ... ... ... | ٩٥ | م « | ١٨ |
| | حتى إذا ساوى بين الصدفين قال انفخوا ... ... ... | ٩٦ | م « | ١٨ |
| | حتى إذا جعله نارا قال آتونى أفرغ عليه قطرا ... ... | ٩٦ | م « | ١٨ |
| | قال هذا رحمة من ربى فإذا جاء وعد ربى جعله دكاء | ٩٨ | م « | ١٨ |
| | قال رب إنى وهن العظم منى واشتعل الرأس شيبا ... | ٤ | ك مريم | ١٩ |
| | قال رب أنى يكون لى غلام وكانت امرأتى عاقرا ... | ٨ | ك « | ١٩ |
| | قال كذلك ... ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك « | ١٩ |
| | قال ربك هو علىّ هين وقد خلقتك من قبل ... ... | ٩ | ك « | ١٩ |
| | قال رب اجعل لى آية ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك « | ١٩ |
| | قال آيتك ألا تكلم الناس ثلاث ليال سويا ... ... | ١٠ | ك « | ١٩ |
| | قال إنما أنا رسول ربك لأهب لك غلاما زكيا ... | ١٩ | ك « | ١٩ |
| | قال كذلك ... ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك « | ١٩ |
| | قال ربك هو علىّ هين ولنجعله آية للناس ... ... | ٢١ | ك « | ١٩ |
| | قال إنى عبد الله آتانى الكتاب وجعلنى نبيا ... ... | ٣٠ | ك « | ١٩ |
| | إذ قال لأبيه يا أبت لم تعبد ما لا يسمع ولا يبصر ... | ٤٢ | ك « | ١٩ |
| | قال أراغب أنت عن آلهتى يا إبراهيم ... ... ... | ٤٦ | ك « | ١٩ |
| | قال سلام عليك سأستغفر لك ربى ... ... ... ... | ٤٧ | ك « | ١٩ |
| | قال الذين كفروا للذين آمنوا أى الفريقين خير مقاما | ٧٣ | ك « | ١٩ |
| | أفرأيت الذى كفر بآياتنا وقال لأوتين مالا وولدا | ٧٧ | ك « | ١٩ |
| | إذ رأى نارا فقال لأهله امكثوا إنى آنست نارا ... | ١٠ | ك طـه | ٢٠ |
| | قال هى عصاى أتوكأ عليها وأهش بها على غنمى ... | ١٨ | ك « | ٢٠ |
| | قال ألقها يا موسى ... ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك « | ٢٠ |
| | قال خذها ولا تخف سنعيدها سيرتها الأولى ... ... | ٢١ | ك « | ٢٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَالَ: | قال رب اشرح لى صدرى ، ويسر لى أمرى ... ... | ٢٥ | ك طـه | ٢٠ |
| | قال قد أوتيت سؤلك يا موسى ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك « | ٢٠ |
| | قال لا تخافا إننى معكما أسمع وأرى ... ... ... ... | ٤٦ | ك « | ٢٠ |
| | قال فمن ربكما يا موسى ... ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك « | ٢٠ |
| | قال ربنا الذى أعطى كل شىء خلقه ثم هدى ... | ٥٠ | ك « | ٢٠ |
| | قال فما بال القرون الأولى ... ... ... ... ... | ٥١ | ك « | ٢٠ |
| | قال علمها عند ربى فى كتاب لا يضل ربى ولا ينسى | ٥٢ | ك « | ٢٠ |
| | قال أجئتنا لتخرجنا من أرضنا بسحرك يا موسى ... | ٥٧ | ك « | ٢٠ |
| | قال موعدكم يوم الزينة وأن يحشر الناس ضحى ... | ٥٩ | ك « | ٢٠ |
| | قال لهم موسى ويلكم لا تفتروا على الله كذبا ... ... | ٦١ | ك « | ٢٠ |
| | قال بل ألقوا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦٦ | ك « | ٢٠ |
| | قال آمنتم له قبل أن آذن لكم ... ... ... ... ... | ٧١ | ك « | ٢٠ |
| | قال هم أولاء على أثرى وعجلت إليك رب لترضى | ٨٤ | ك « | ٢٠ |
| | قال فإنا قد فتنا قومك من بعدك وأضلهم السامرى | ٨٥ | ك « | ٢٠ |
| | قال يا قوم ألم يعدكم ربكم وعدا حسنا ... ... ... | ٨٦ | ك « | ٢٠ |
| | ولقد قال لهم هرون من قبل يا قوم إنما فتنتم به ... | ٩٠ | ك « | ٢٠ |
| | قال يا هرون ما منعك إذ رأيتهم ضلوا . ألا تتبعن | ٩٢ | ك « | ٢٠ |
| | قال يا ابن أم لا تأخذ بلحيتى ولا برأسى ... ... ... | ٩٤ | ك « | ٢٠ |
| | قال فما خطبك يا سامرىّ ... ... ... ... ... ... | ٩٥ | ك « | ٢٠ |
| | قال بصرت بما لم يبصروا به فقبضت قبضة من أثر الرسول | ٩٦ | ك « | ٢٠ |
| | قال فاذهب فإن لك فى الحياة أن تقول لا مساس ... | ٩٧ | ك « | ٢٠ |
| | فوسوس إليه الشيطان قال يا آدم هل أدلك على شجرة الخلد | ١٢٠ | ك « | ٢٠ |
| | قال اهبطا منها جميعا بعضكم لبعض عدوّ ... ... ... | ١٢٣ | ك « | ٢٠ |
| | قال رب لم حشرتنى أعمى وقد كنت بصيرا ... ... | ١٢٥ | ك « | ٢٠ |
| | قال كذلك أتتك آياتنا فنسيتها ... ... ... ... ... | ١٢٦ | ك « | ٢٠ |
| | قال ربى يعلم القول فى السماء والأرض وهو السميع العليم | ٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | إذ قال لأبيه وقومه ما هذه التماثيل التى أنتم لها عاكفون | ٥٢ | ك « | ٢١ |
| | قال لقد كنتم أنتم وآباؤكم فى ضلال مبين ... ... ... | ٥٤ | ك « | ٢١ |
| | قال بل ربكم رب السموات والأرض الذى فطرهن | ٥٦ | ك « | ٢١ |
| | قال بل فعله كبيرهم هذا فسئلوهم إن كانوا ينطقون | ٦٣ | ك « | ٢١ |
| | قال أفتعبدون من دون الله ما لا ينفعكم شيئا ولا يضركم | ٦٦ | ك « | ٢١ |
| | قال رب احكم بالحق وربنا الرحمن المستعان على ما تصفون | ١١٢ | ك « | ٢١ |
| | ولقد أرسلنا نوحا إلى قومه فقال يا قوم اعبدوا الله... | ٢٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فقال الملأ الذين كفروا من قومه ما هذا إلا بشر مثلكم | ٢٤ | ك « | ٢٣ |
| | قال رب انصرنى بما كذبون ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك « | ٢٣ |
| | وقال الملأ من قومه الذين كفروا وكذبوا بلقاء الآخرة | ٣٣ | ك « | ٢٣ |
| | قال رب انصرنى بما كذبون ... ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك « | ٢٣ |
| | قال عما قليل ليصبحن نادمين... ... ... ... ... | ٤٠ | ك « | ٢٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَالَ: | بل قالوا مثل ما قال الأولون ... ... ... ... ... | ٨١ ك | المؤمنون | ٢٣ |
| | حتى إذا جاء أحدهم الموت قال رب ارجعونِ ... | ٩٩ ك | « | ٢٣ |
| | قال اخسئوا فيها ولا تكلمونِ ... ... ... ... ... | ١٠٨ك | « | ٢٣ |
| | قال كم لبثتم في الأرض عدد سنين ... ... ... ... | ١١٢ك | « | ٢٣ |
| | قال إن لبثتم إلا قليلا لو أنكم كنتم تعلمون ... ... | ١١٤ك | « | ٢٣ |
| | وقال الذين كفروا إن هذا إلا إفك افتراه ... ... | ٤ ك | الفرقان | ٢٥ |
| | وقال الظالمون إن تتبعون إلا رجلا مسحورا ... ... | ٨ ك | « | ٢٥ |
| | وقال الذين لا يرجون لقاءنا لولا أنزل علينا الملائكة | ٢١ ك | « | ٢٥ |
| | وقال الرسول يارب إن قومي اتخذوا هذا القرآن مهجورا | ٣٠ ك | « | ٢٥ |
| | وقال الذين كفروا لولا نزل عليه القرآن جملة واحدة | ٣٢ ك | « | ٢٥ |
| | قال رب إني أخاف أن يكذبونِ ... ... ... ... ... | ١٢ ك | الشعراء | ٢٦ |
| | قال كلا فاذهبا بآياتنا إنا معكم مستمعون ... ... | ١٥ ك | « | ٢٦ |
| | قال ألم نربك فينا وليدا ولبثت فينا من عمرك سنين | ١٨ ك | « | ٢٦ |
| | قال فعلتها إذا وأنا من الضالين ... ... ... ... ... | ٢٠ ك | « | ٢٦ |
| | قال فرعون وما رب العالمين ... ... ... ... ... ... | ٢٣ ك | « | ٢٦ |
| | قال رب السموات والأرض وما بينهما إن كنتم موقنين | ٢٤ ك | « | ٢٦ |
| | قال لمن حوله ألا تستمعون ... ... ... ... ... ... | ٢٥ ك | « | ٢٦ |
| | قال ربكم ورب آبائكم الأولين ... ... ... ... ... | ٢٦ ك | « | ٢٦ |
| | قال إن رسولكم الذي أرسل إليكم لمجنون ... ... ... | ٢٧ ك | « | ٢٦ |
| | قال رب المشرق والمغرب وما بينهما إن كنتم تعقلون | ٢٨ ك | « | ٢٦ |
| | قال لئن اتخذت إلها غيري لأجعلنك من المسجونين | ٢٩ ك | « | ٢٦ |
| | قال أولو جئتك بشيء مبين ... ... ... ... ... ... | ٣٠ ك | « | ٢٦ |
| | قال فأت به إن كنت من الصادقين ... ... ... ... | ٣١ ك | « | ٢٦ |
| | قال للملإ حوله إن هذا لساحر عليم... ... ... ... | ٣٤ ك | « | ٢٦ |
| | قال نعم وإنكم إذا لمن المقربين ... ... ... ... ... | ٤٢ ك | « | ٢٦ |
| | قال لهم موسى ألقوا ما أنتم ملقون ... ... ... ... | ٤٣ ك | « | ٢٦ |
| | قال آمنتم له قبل أن آذن لكم ... ... ... ... ... | ٤٩ ك | « | ٢٦ |
| | فلما تراءا الجمعان قال أصحاب موسى إنا لمدركون ... | ٦١ ك | « | ٢٦ |
| | قال كلا إن معي ربي سيهدينِ ... ... ... ... ... | ٦٢ ك | « | ٢٦ |
| | اذ قال لأبيه وقومه ما تعبدون ... ... ... ... ... | ٧٠ ك | « | ٢٦ |
| | قال هل يسمعونكم إذ تدعون ... ... ... ... ... ... | ٧٢ ك | « | ٢٦ |
| | قال أفرأيتم ما كنتم تعبدون ... ... ... ... ... ... | ٧٥ ك | « | ٢٦ |
| | إذ قال لهم أخوهم نوح ألا تتقون ... ... ... ... ... | ١٠٦ك | « | ٢٦ |
| | قال وما علمي بما كانوا يعملون ... ... ... ... ... | ١١٢ك | « | ٢٦ |
| | قال رب إن قومي كذبونِ ... ... ... ... ... ... | ١١٧ك | « | ٢٦ |
| | إذ قال لهم أخوهم هود ألا تتقون ... ... ... ... ... | ١٢٤ك | « | ٢٦ |
| | إذ قال لهم أخوهم صالح ألا تتقون... ... ... ... ... | ١٤٢ك | « | ٢٦ |
| | قال هذه ناقة لها شرب ولكم شرب يوم معلوم... ... | ١٥٥ك | « | ٢٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَالَ: | إذ قال لهم أخوهم لوط ألا تتقون ... ... ... ... ... | ١٦١ك | الشعراء | ٢٦ |
| | قال إني لعملكم من القالين ... ... ... ... ... ... | ١٦٨ك | « | ٢٦ |
| | إذ قال لهم شعيب ألا تتقون... ... ... ... ... ... | ١٧٧ك | « | ٢٦ |
| | قال ربي أعلم بما تعملون ... ... ... ... ... ... | ١٨٨ك | « | ٢٦ |
| | إذ قال موسى لأهله إني آنست نارا ... ... ... ... | ٧ ك | النمل | ٢٧ |
| | وقال يأيها الناس علمنا منطق الطير وأوتينا من كل شيء | ١٦ ك | « | ٢٧ |
| | وقال رب أوزعني أن أشكر نعمتك التي أنعمت عليّ | ١٩ ك | « | ٢٧ |
| | وتفقد الطير فقال ما لي لا أرى الهدهد ... ... ... | ٢٠ ك | « | ٢٧ |
| | فمكث غير بعيد فقال أحطت بما لم تحط به... ... ... | ٢٢ ك | « | ٢٧ |
| | قال سننظر أصدقت أم كنت من الكاذبين ... ... | ٢٧ ك | « | ٢٧ |
| | فلما جاء سليمان قال أتمدونن بمال ... ... ... ... | ٣٦ ك | « | ٢٧ |
| | قال يأيها الملأ أيكم يأتيني بعرشها قبل أن يأتوني مسلمين | ٣٨ ك | « | ٢٧ |
| | قال عفريت من الجن أنا آتيك به قبل أن تقوم من مقامك | ٣٩ ك | « | ٢٧ |
| | قال الذي عنده علم من الكتاب أنا آتيك به قبل أن يرتد إليك طرفك ... ... ... ... ... ... | ٤٠ ك | « | ٢٧ |
| | قال هذا من فضل ربي ليبلوني أأشكر أم أكفر ... | ٤٠ ك | « | ٢٧ |
| | قال نكروا لها عرشها ننظر أتهتدي ... ... ... ... | ٤١ ك | « | ٢٧ |
| | قال إنه صرح ممرد من قوارير ... ... ... ... ... | ٤٤ ك | « | ٢٧ |
| | قال يا قوم لم تستعجلون بالسيئة قبل الحسنة ... ... | ٤٦ ك | « | ٢٧ |
| | قال طائركم عند الله بل أنتم قوم تفتنون ... ... ... | ٤٧ ك | « | ٢٧ |
| | ولوطا إذ قال لقومه أتأتون الفاحشة وأنتم تبصرون | ٥٤ ك | « | ٢٧ |
| | وقال الذين كفروا أئذا كنا ترابا وآباؤنا أئنا لمخرجون | ٦٧ ك | « | ٢٧ |
| | حتى إذا جاءو قال أكذبتم بآياتي ولم تحيطوا بها علما | ٨٤ ك | « | ٢٧ |
| | قال هذا من عمل الشيطان إنه عدو مضل مبين... ... | ١٥ ك | القصص | ٢٨ |
| | قال رب إني ظلمت نفسي فاغفر لي فغفر له... ... ... | ١٦ ك | « | ٢٨ |
| | قال رب بما أنعمت عليّ فلن أكون ظهيرا للمجرمين | ١٧ ك | « | ٢٨ |
| | قال له موسى إنك لغويّ مبين ... ... ... ... ... | ١٨ ك | « | ٢٨ |
| | قال يا موسى أتريد أن تقتلني كما قتلت نفسا بالأمس | ١٩ ك | « | ٢٨ |
| | قال يا موسى إن الملأ يأتمرون بك ليقتلوك ... ... | ٢٠ ك | « | ٢٨ |
| | قال رب نجني من القوم الظالمين ... ... ... ... ... | ٢١ ك | « | ٢٨ |
| | ولما توجه تلقاء مدين قال عسى ربي أن يهديني سواء السبيل | ٢٢ ك | « | ٢٨ |
| | قال ما خطبكما قالتا لا نسقي حتى يصدر الرعاء ... ... | ٢٣ ك | « | ٢٨ |
| | فقال رب إني لما أنزلت إليّ من خير فقير ... ... | ٢٤ ك | « | ٢٨ |
| | فلما جاءه وقص عليه القصص قال لا تخف ... ... | ٢٥ ك | « | ٢٨ |
| | قال إني أريد أن أنكحك إحدى ابنتيّ هاتين... ... | ٢٧ ك | « | ٢٨ |
| | قال ذلك بيني وبينك أيما الأجلين قضيت فلا عدوان عليّ | ٢٨ ك | « | ٢٨ |
| | قال لأهله امكثوا إني آنست نارا ... ... ... ... | ٢٩ ك | « | ٢٨ |
| | قال رب إني قتلت منهم نفسا فأخاف أن يقتلونِ ... | ٣٣ ك | « | ٢٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَالَ: | قال سنشد عضدك بأخيك ونجعل لكما سلطانا ... ... | ٣٥ | ك القصص | ٢٨ |
| | وقال موسى ربى أعلم بمن جاء بالهدى من عنده... ... | ٣٧ | ك » | ٢٨ |
| | وقال فرعون يايها الملأ ما علمت لكم من إله غيرى | ٣٨ | ك » | ٢٨ |
| | قال الذين حق عليهم القول ربنا هؤلاء الذين أغوينا | ٦٣ | ك » | ٢٨ |
| | إذ قال له قومه لا تفرح إن الله لا يحب الفرحين ... | ٧٦ | ك » | ٢٨ |
| | قال إنما أوتيته على علم عندى... ... ... ... ... | ٧٨ | ك » | ٢٨ |
| | قال الذين يريدون الحياة الدنيا ياليت لنا مثل ما أوتى قارون ... ... ... ... ... ... ... | ٧٩ | ك » | ٢٨ |
| | وقال الذين أوتوا العلم ويلكم ثواب الله خير لمن آمن | ٨٠ | ك » | ٢٨ |
| | وقال الذين كفروا للذين آمنوا اتبعوا سبيلنا ... ... | ١٢ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وإبراهيم إذ قال لقومه اعبدوا الله واتقوه ... ... | ١٦ | ك » | ٢٩ |
| | وقال إنما اتخذتم من دون الله أوثانا مودة بينكم ... | ٢٥ | ك » | ٢٩ |
| | وقال إنى مهاجر إلى ربى إنه هو العزيز الحكيم ... ... | ٢٦ | ك » | ٢٩ |
| | ولوطا إذ قال لقومه إنكم لتأتون الفاحشة... ... ... | ٢٨ | ك » | ٢٩ |
| | قال رب انصرنى على القوم المفسدين ... ... ... ... | ٣٠ | ك » | ٢٩ |
| | قال إن فيها لوطا قالوا نحن أعلم بمن فيها ... ... ... | ٣٢ | ك » | ٢٩ |
| | فقال ياقوم اعبدوا الله وارجوا اليوم الآخر ... ... | ٣٦ | ك » | ٢٩ |
| | وقال الذين أوتوا العلم والإيمان لقد لبثتم فى كتاب الله إلى يوم البعث ... ... ... ... ... ... ... | ٥٦ | ك الروم | ٣٠ |
| | وإذ قال لقمان لابنه وهو يعظه يا بنى لا تشرك بالله | ١٣ | ك لقمان | ٣١ |
| | وقال الذين كفروا لا تأتينا الساعة ... ... ... ... | ٣ | ك سبأ | ٣٤ |
| | وقال الذين كفروا هل ندلكم على رجل ينبئكم إذا مزقتم كل ممزق إنكم لفى خلق جديد ... ... | ٧ | ك » | ٣٤ |
| | حتى إذا فزع عن قلوبهم قالوا ماذا قال ربكم ... | ٢٣ | ك » | ٣٤ |
| | وقال الذين كفروا لن نؤمن بهذا القرآن ولا بالذى بين يديه | ٣١ | ك » | ٣٤ |
| | قال الذين استكبروا للذين استضعفوا أنحن صددناكم | ٣٢ | ك » | ٣٤ |
| | وقال الذين استضعفوا للذين استكبروا بل مكر الليل والنهار | ٣٣ | ك » | ٣٤ |
| | وما أرسلنا فى قرية من نذير إلا قال مترفوها إنا بما أرسلتم به كافرون ... ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك » | ٣٤ |
| | وقال الذين كفروا للحق لما جاءهم إن هذا إلا سحر مبين | ٤٣ | ك » | ٣٤ |
| | وجاء من أقصا المدينة رجل يسعى قال يا قوم اتبعوا المرسلين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك يس | ٣٦ |
| | قال يا ليت قومى يعلمون . بما غفر لى ربى ... ... | ٢٦ | ك » | ٣٦ |
| | قال الذين كفروا للذين آمنوا أنطعم من لو يشاء الله أطعمه | ٤٧ | ك » | ٣٦ |
| | قال من يحيى العظام وهى رميم ... ... ... ... ... | ٧٨ | ك » | ٣٦ |
| | قال قائل منهم إنى كان لى قرين ... ... ... ... | ٥١ | ك الصافات | ٣٧ |
| | قال هل أنتم مطلعون ... ... ... ... ... ... ... | ٥٤ | ك » | ٣٧ |
| | قال تالله إن كدت لتردين ... ... ... ... ... ... | ٥٦ | ك » | ٣٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَالَ: | إذ قال لأبيه وقومه ما ذا تعبدون ... ... ... ... | ٨٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| | فنظر نظرة فى النجوم . فقال إنى سقيم ... ... ... | ٨٩ | ك » | ٣٧ |
| | فراغ إلى آلهتهم فقال ألا تأكلون ... ... ... ... | ٩١ | ك » | ٣٧ |
| | قال أتعبدون ما تنحتون . والله خلقكم وما تعملون | ٩٥ | ك » | ٣٧ |
| | وقال إنى ذاهب إلى ربى سيهدين ... ... ... ... | ٩٩ | ك » | ٣٧ |
| | فلما بلغ معه السعى قال يا بنى إنى أرى فى المنام أنى أذبحك | ١٠٢ | ك » | ٣٧ |
| | قال يا أبت افعل ما تؤمر ... ... ... ... ... ... | ١٠٢ | ك » | ٣٧ |
| | إذ قال لقومه ألا تتقون ... ... ... ... ... ... | ١٢٤ | ك » | ٣٧ |
| | وقال الكافرون هذا ساحر كذاب ... ... ... ... | ٤ | ك ص | ٣٨ |
| | فقال أكفلنيها وعزنى فى الخطاب ... ... ... ... | ٢٣ | ك » | ٣٨ |
| | قال لقد ظلمك بسؤال نعجتك إلى نعاجه ... ... | ٢٤ | ك » | ٣٨ |
| | فقال إنى أحببت حب الخير عن ذكر ربى ... ... | ٣٢ | ك » | ٣٨ |
| | قال رب اغفر لى وهب لى ملكا لا ينبغى لأحد من بعدى | ٣٥ | ك » | ٣٨ |
| | إذ قال ربك للملائكة إنى خالق بشرا من طين ... | ٧١ | ك » | ٣٨ |
| | قال يا إبليس ما منعك أن تسجد لما خلقت بيدىّ | ٧٥ | ك » | ٣٨ |
| | قال أنا خير منه خلقتنى من نار وخلقته من طين ... | ٧٦ | ك » | ٣٨ |
| | قال فاخرج منها فإنك رجيم ... ... ... ... ... | ٧٧ | ك » | ٣٨ |
| | قال رب فأنظرنى إلى يوم يبعثون ... ... ... .. | ٧٩ | ك » | ٣٨ |
| | قال فإنك من المنظرين ... ... ... ... ... ... | ٨٠ | ك » | ٣٨ |
| | قال فبعزتك لأغوينهم أجمعين ... ... ... ... ... | ٨٢ | ك » | ٣٨ |
| | قال فالحق والحق أقول... ... ... ... ... ... | ٨٤ | ك » | ٣٨ |
| | ثم إذا خولناه نعمة منا قال إنما أوتيته على علم ... | ٤٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وقال لهم خزنتها ألم يأتكم رسل منكم ... ... ... | ٧١ | ك » | ٣٩ |
| | وقال لهم خزنتها سلام عليكم طبتم فادخلوها خالدين | ٧٣ | ك » | ٣٩ |
| | وقال فرعون ذرونى أقتل موسى وليدع ربه ... ... | ٢٦ | ك غافر | ٤٠ |
| | وقال موسى إنى عذت بربى وربكم من كل متكبر ... | ٢٧ | ك » | ٤٠ |
| | وقال رجل مؤمن من آل فرعون يكتم إيمانه أتقتلون رجلا | ٢٨ | ك » | ٤٠ |
| | قال فرعون ما أريكم إلا ما أرى وما أهديكم إلا سبيل الرشاد | ٢٩ | ك » | ٤٠ |
| | وقال الذى آمن يا قوم إنى أخاف عليكم مثل يوم الأحزاب | ٣٠ | ك » | ٤٠ |
| | وقال فرعون يا هامان ابن لى صرحا لعلى أبلغ الأسباب | ٣٦ | ك » | ٤٠ |
| | وقال الذى آمن يا قوم اتبعون أهدكم سبيل الرشاد | ٣٨ | ك » | ٤٠ |
| | قال الذين استكبروا إنا كل فيها إن الله قد حكم بين العباد | ٤٨ | ك » | ٤٠ |
| | وقال الذين فى النار لخزنة جهنم ادعوا ربكم ... ... | ٤٩ | ك » | ٤٠ |
| | وقال ربكم ادعونى أستجب لكم ... ... ... ... ... | ٦٠ | ك » | ٤٠ |
| | فقال لها وللأرض ائتيا طوعا أو كرها ... ... ... | ١١ | ك فصلت | ٤١ |
| | وقال الذين كفروا لا تسمعوا لهذا القرآن والغوا فيه | ٢٦ | ك » | ٤١ |
| | وقال الذين كفروا ربنا أرنا اللذين أضلانا من الجن والإنس | ٢٩ | ك » | ٤١ |
| | وعمل صالحا وقال إننى من المسلمين ... ... ... ... | ٣٣ | ك » | ٤١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَالَ | : وقال الذين آمنوا إن الخاسرين الذين خسروا أنفسهم ... | ٤٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| | إلا قال مترفوها إنا وجدنا آباءنا على أمة ... ... ... | ٢٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | قال أو لو جئتكم بأهدى مما وجدتم عليه آباءكم... | ٢٤ | ك « | ٤٣ |
| | وإذ قال إبراهيم لأبيه وقومه إننى براء مما تعبدون | ٢٦ | ك « | ٤٣ |
| | حتى إذا جاءنا قال ياليت بينى وبينك بعد المشرقين | ٣٨ | ك « | ٤٣ |
| | فقال إنى رسول رب العالمين... ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك « | ٤٣ |
| | قال ياقوم أليس لى ملك مصر وهذه الأنهار تجرى من تحتى | ٥١ | ك « | ٤٣ |
| | ولما جاء عيسى بالبينات قال قد جئتكم بالحكمة ... | ٦٣ | ك « | ٤٣ |
| | ونادوا ياماليك ليقض علينا ربك قال إنكم ماكثون | ٧٧ | ك « | ٤٣ |
| | قال الذين كفروا للحق لما جاءهم هذا سحر مبين ... | ٧ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | وقال الذين كفروا للذين آمنوا لو كان خيرا ماسبقونا إليه | ١١ | ك « | ٤٦ |
| | قال رب أوزعنى أن أشكر نعمتك التى أنعمت علىّ | ١٥ | م « | ٤٦ |
| | والذى قال لوالديه أفٍّ لكما أتعدانى أن أخرج ... | ١٧ | ك « | ٤٦ |
| | قال إنما العلم عند الله وأبلغكم ما أرسلت به ... ... | ٢٣ | ك « | ٤٦ |
| | قال فذوقوا العذاب بما كنتم تكفرون ... ... ... | ٣٤ | ك « | ٤٦ |
| | قالوا للذين أوتوا العلم ماذا قال آنفا ... ... ... ... | ١٦ | م محمد | ٤٧ |
| | قل لن تتبعونا كذلكم قال الله من قبل ... ... ... | ١٥ | م الفتح | ٤٨ |
| | فقال الكافرون هذا شىء عجيب ... ... ... ... ... | ٢ | ك قٓ | ٥٠ |
| | وقال قرينه هذا ما لدىّ عتيد ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك « | ٥٠ |
| | قال قرينه ربنا ما أطغيته ولكن كان فى ضلال بعيد | ٢٧ | ك « | ٥٠ |
| | قال لاتختصموا لدىّ وقد قدمت إليكم بالوعيد... ... | ٢٨ | ك « | ٥٠ |
| | إذ دخلوا عليه فقالوا سلاما قال سلام قوم منكرون | ٢٥ | ك الذاريات | ٥١ |
| | فقربه إليهم قال ألا تأكلون ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك « | ٥١ |
| | قالوا كذلك قال ربك إنه هو الحكيم العليم ... ... | ٣٠ | ك « | ٥١ |
| | قال فما خطبكم أيها المرسلون ... ... ... ... ... | ٣١ | ك « | ٥١ |
| | فتولى بركنه وقال ساحر أو مجنون ... ... ... ... | ٣٩ | ك « | ٥١ |
| | كمثل الشيطان إذ قال للإنسان اكفر... ... ... ... | ١٦ | م الحشر | ٥٩ |
| | فلما كفر قال إنى برىء منك إنى أخاف الله رب العالمين | ١٦ | م « | ٥٩ |
| | وإذ قال موسى لقومه يا قوم لم تؤذوننى ... ... ... | ٥ | م الصف | ٦١ |
| | وإذ قال عيسى ابن مريم يا بنى إسرائيل إنى رسول الله إليكم | ٦ | م « | ٦١ |
| | كما قال عيسى ابن مريم للحواريين من أنصارى إلى الله | ١٤ | م « | ٦١ |
| | قال الحواريون نحن أنصار الله ... ... ... ... ... | ١٤ | م « | ٦١ |
| | فلما نبأها به قالت من أنبأك هذا قال نبأنى العليم الخبير | ٣ | م التحريم | ٦٦ |
| | إذا تتلى عليه آياتنا قال أساطير الأولين ... ... ... | ١٥ | ك القلم | ٦٨ |
| | قال أوسطهم ألم أقل لكم لولا تسبحون ... ... ... | ٢٨ | م « | ٦٨ |
| | قال ياقوم إنى لكم نذير مبين... ... ... ... ... | ٢ | ك نوح | ٧١ |
| | قال رب إنى دعوت قومى ليلا ونهارا ... ... ... ... | ٥ | ك « | ٧١ |
| | قال نوح رب إنهم عصونى ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك « | ٧١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَالَ | : وقال نوح رب لاتذر على الأرض من الكافرين ديارا | ٢٦ | ك نوح | ٧١ |
| | فقال إن هذا إلا سحر يؤثر ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك المدثر | ٧٤ |
| | لايتكلمون إلا من أذن له الرحمن وقال صوابا ... ... | ٣٨ | ك النبأ | ٧٨ |
| | فحشر فنادى . فقال أنا ربكم الأعلى ... ... ... ... | ٢٤ | ك النازعات | ٧٩ |
| | إذا تتلى عليه آياتنا قال أساطير الأولين ... ... ... | ١٣ | ك المطففين | ٨٣ |
| | فقال لهم رسول الله ناقة الله وسقياها ... ... ... | ١٣ | ك الشمس | ٩١ |
| | وقال الإنسان مالها . يومئذ تحدث أخبارها ... ... | ٣ | م الزلزلة | ٩٩ |
| قَالَا | : قالا ربنا ظلمنا أنفسنا ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | قالا ربنا إننا نخاف أن يفرط علينا أو أن يطغى ... | ٤٥ | ك طه | ٢٠ |
| | وقالا الحمد لله الذى فضلنا على كثير من عباده المؤمنين | ١٥ | ك النمل | ٢٧ |
| قَالَتْ | : وقالت اليهود ليست النصارى على شىء ... ... ... | ١١٣ | م البقرة | ٢ |
| (٤٣) | وقالت النصارى ليست اليهود على شىء ... ... ... | ١١٣ | م « | ٢ |
| | إذ قالت امرأة عمران رب إنى نذرت لك مافى بطنى | ٣٥ | م آل عمران | ٣ |
| | فلما وضعتها قالت رب إنى وضعتها أنثى ... ... ... | ٣٦ | م « | ٣ |
| | قال يامريم أنى لك هذا قالت هو من عند الله... ... | ٣٧ | م « | ٣ |
| | وإذ قالت الملائكة يامريم إن الله اصطفاك وطهرك | ٤٢ | م « | ٣ |
| | إذ قالت الملائكة يامريم إن الله يبشرك بكلمة منه ... | ٤٥ | م « | ٣ |
| | قالت رب أنى يكون لى ولد ولم يمسسنى بشر ... ... | ٤٧ | م « | ٣ |
| | وقالت طائفة من أهل الكتاب آمنوا بالذى أنزل | | | |
| | على الذين آمنوا وجه النهار ... ... ... ... ... | ٧٢ | م « | ٣ |
| | وقالت اليهود والنصارى نحن أبناء الله وأحباؤه ... | ١٨ | م المائدة | ٥ |
| | وقالت اليهود يد الله مغلولة غلت أيديهم ولعنوا بما قالوا | ٦٤ | م « | ٥ |
| | قالت أخراهم لأولاهم ربنا هؤلاء أضلونا ... ... | ٣٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | وقالت أولاهم لأخراهم فما كان لكم علينا من فضل | ٣٩ | ك « | ٧ |
| | وإذ قالت أمة منهم لم تعظون قوما الله مهلكهم ... | ١٦٤ | م « | ٧ |
| | وقالت اليهود عزير ابن الله ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | م التوبة | ٩ |
| | وقالت النصارى المسيح ابن الله ... ... ... ... ... | ٣٠ | م « | ٩ |
| | قالت ياويلتى أألد وأنا عجوز وهذا بعلى شيخا... ... | ٧٢ | ك هود | ١١ |
| | وغلقت الأبواب وقالت هيت لك ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك يوسف | ١٢ |
| | قالت ما جزاء من أراد بأهلك سوءا إلا أن يسجن ... | ٢٥ | ك « | ١٢ |
| | وآتت كل واحدة منهن سكينا وقالت اخرج عليهن ... | ٣١ | ك « | ١٢ |
| | قالت فذلكن الذى لمتننى فيه ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك « | ١٢ |
| | قالت امرأة العزيز الآن حصحص الحق ... ... ... | ٥١ | ك « | ١٢ |
| | قالت رسلهم أفى الله شك فاطر السموات والأرض | ١٠ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | قالت لهم رسلهم إن نحن إلا بشر مثلكم ... ... ... | ١١ | ك « | ١٤ |
| | قالت إنى أعوذ بالرحمن منك إن كنت تقيا ... ... | ١٨ | ك مريم | ١٩ |
| | قالت أنى يكون لى غلام ولم يمسسنى بشر... ... ... | ٢٠ | ك « | ١٩ |
| | قالت ياليتنى مت قبل هذا وكنت نسيا منسيا ... ... | ٢٣ | ك « | ١٩ |

| اللفظة | الآيــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَالَتْ | : قالت نملة يأيها النمل ادخلوا مساكنكم ... ... ... | ١٨ | ك النمل | ٢٧ |
| | قالت يأيها الملأ إنى ألقى إلىّ كتاب كريم ... ... | ٢٩ | ك « | ٢٧ |
| | قالت يأيها الملأ أفتونى فى أمرى ... ... ... ... | ٣٢ | ك « | ٢٧ |
| | قالت إن الملوك إذا دخلوا قرية أفسدوها ... ... | ٣٤ | ك « | ٢٧ |
| | فلما جاءت قيل أهكذا عرشك قالت كأنه هو ... ... | ٤٢ | ك « | ٢٧ |
| | قالت رب إنى ظلمت نفسى وأسلمت مع سليمان لله رب العالمين ... ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك « | ٢٧ |
| | وقالت امرأة فرعون قرة عين لى ولك ... ... ... | ٩ | ك القصص | ٢٨ |
| | وقالت لأخته قصيه فبصرت به عن جنب وهم لا يشعرون | ١١ | ك « | ٢٨ |
| | فقالت هل أدلكم على أهل بيت يكفلونه لكم ... ... | ١٢ | ك « | ٢٨ |
| | قالت إن أبى يدعوك ليجزيك أجر ما سقيت لنا ... | ٢٥ | ك « | ٢٨ |
| | قالت إحداهما يأبت استأجره ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك « | ٢٨ |
| | وإذ قالت طائفة منهم يأهل يثرب لا مقام لكم ... | ١٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | قالت الأعراب آمنا قل لم تؤمنوا ولكن قولوا أسلمنا | ١٤ | م الحجرات | ٤٩ |
| | فأقبلت امرأته فى صرة فصكت وجهها وقالت عجوز عقيم | ٢٩ | ك الذاريات | ٥١ |
| | فلما نبأها به قالت من أنبأك هذا قال نبأنى العليم الخبير | ٣ | م التحريم | ٦٦ |
| | إذ قالت رب ابن لى عندك بيتا فى الجنة ... ... ... | ١١ | م « | ٦٦ |
| قَالَتَا | : قالتا لا نسقى حتى يصدر الرعاء وأبونا شيخ كبير ... | ٢٣ | ك القصص | ٢٨ |
| (٢) | فقال لها وللأرض ائتيا طوعا أو كرها قالتا أتينا طائعين | ١١ | ك فصلت | ٤١ |
| قَالَهَا | : قد قالها الذين من قبلهم فما أغنى عنهم ما كانوا يكسبون | ٥٠ | ك الزمر | ٣٩ |
| قَالُوا | : وإذا قيل لهم لا تفسدوا فى الأرض قالوا إنما نحن مصلحون ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | م البقرة | ٢ |
| | وإذا قيل لهم آمنوا كما آمن الناس قالوا أنؤمن كما آمن السفهاء ... ... ... ... ... ... | ١٣ | م « | ٢ |
| | وإذا لقوا الذين آمنوا قالوا آمنا ... ... ... ... | ١٤ | م « | ٢ |
| | وإذا خلوا إلى شياطينهم قالوا إنا معكم ... ... ... | ١٤ | م « | ٢ |
| | كلما رزقوا منها من ثمرة رزقا قالوا هذا الذى رزقنا من قبل | ٢٥ | م « | ٢ |
| | قالوا أتجعل فيها من يفسد فيها ويسفك الدماء ... | ٣٠ | م « | ٢ |
| | قالوا سبحانك لا علم لنا إلا ما علمتنا ... ... ... | ٣٢ | م « | ٢ |
| | قالوا أتتخذنا هزوا قال أعوذ بالله أن أكون من الجاهلين | ٦٧ | م « | ٢ |
| | قالوا ادع لنا ربك يبين لنا ما هى ... ... ... ... | ٦٨ | م « | ٢ |
| | قالوا ادع لنا ربك يبين لنا ما لونها ... ... ... ... | ٦٩ | م « | ٢ |
| | قالوا ادع لنا ربك يبين لنا ماهى إن البقر تشابه علينا | ٧٠ | م « | ٢ |
| | قالوا الآن جئت بالحق فذبحوها وما كادوا يفعلون | ٧١ | م « | ٢ |
| | وإذا لقوا الذين آمنوا قالوا آمنا ... ... ... ... | ٧٦ | م « | ٢ |
| | قالوا أتحدثونهم بما فتح الله عليكم ... ... ... ... | ٧٦ | م « | ٢ |
| | وقالوا لن تمسنا النار إلا أياما معدودة ... ... ... | ٨٠ | م « | ٢ |
| | وقالوا قلوبنا غلف بل لعنهم الله بكفرهم ... ... ... | ٨٨ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَالُوا | : وإذا قيل لهم آمنوا بما أنزل الله قالوا نؤمن بما أنزل علينا | ٩١ | م البقرة | ٢ |
| | قالوا سمعنا وعصينا وأشربوا فى قلوبهم العجل بكفرهم | ٩٣ | م « | ٢ |
| | وقالوا لن يدخل الجنة إلا من كان هودا أو نصارى | ١١١ | م « | ٢ |
| | وقالوا اتخذ الله ولدا سبحانه بل له ما فى السموات والأرض | ١١٦ | م « | ٢ |
| | قالوا نعبد إلهك وإله آبائك إبراهيم وإسمعيل وإسحق | ١٣٣ | م « | ٢ |
| | وقالوا كونوا هودا أو نصارى تهتدوا ... ... ... | ١٣٥ | م « | ٢ |
| | الذين إذا أصابتهم مصيبة قالوا إنا لله وإنا إليه راجعون | ١٥٦ | م « | ٢ |
| | قالوا بل نتبع ما ألفينا عليه آباءنا ... ... ... ... | ١٧٠ | م « | ٢ |
| | إذ قالوا لنبىّ لهم ابعث لنا ملكا نقاتل فى سبيل الله | ٢٤٦ | م « | ٢ |
| | قالوا وما لنا ألا نقاتل فى سبيل الله وقد أخرجنا من ديارنا ... ... ... ... ... ... ... | ٢٤٦ | م « | ٢ |
| | قالوا أنى يكون له الملك علينا ونحن أحق بالملك منه | ٢٤٧ | م « | ٢ |
| | قالوا لا طاقة لنا اليوم بجالوت وجنوده ... ... ... | ٢٤٩ | م « | ٢ |
| | قالوا ربنا أفرغ علينا صبرا وثبت أقدامنا ... ... ... | ٢٥٠ | م « | ٢ |
| | ذلك بأنهم قالوا إنما البيع مثل الربا ... ... ... ... | ٢٧٥ | م « | ٢ |
| | وقالوا سمعنا وأطعنا غفرانك ربنا وإليك المصير ... | ٢٨٥ | م « | ٢ |
| | ذلك بأنهم قالوا لن تمسنا النار إلا أياما معدودات | ٢٤ | م آل عمران | ٣ |
| | ذلك بأنهم قالوا ليس علينا فى الأميين سبيل ... ... | ٧٥ | م « | ٣ |
| | قال أأقررتم وأخذتم على ذلكم إصرى قالوا أقررنا ... | ٨١ | م « | ٣ |
| | وإذا لقوكم قالوا آمنا وإذا خلوا عضوا عليكم الأنامل | ١١٩ | م « | ٣ |
| | وما كان قولهم إلا أن قالوا ربنا اغفر لنا ذنوبنا ... | ١٤٧ | م « | ٣ |
| | وقالوا لإخوانهم إذا ضربوا فى الأرض أو كانوا غزّى لو كانوا عندنا ما ماتوا ... ... ... ... ... ... | ١٥٦ | م « | ٣ |
| | قالوا لو نعلم قتالا لاتبعناكم ... ... ... ... ... | ١٦٧ | م « | ٣ |
| | الذين قالوا لإخوانهم وقعدوا لو أطاعونا ما قتلوا ... | ١٦٨ | م « | ٣ |
| | فزادهم إيمانا وقالوا حسبنا الله ونعم الوكيل ... ... | ١٧٣ | م « | ٣ |
| | لقد سمع الله قول الذين قالوا إن الله فقير ونحن أغنياء | ١٨١ | م « | ٣ |
| | سنكتب ما قالوا وقتلهم الأنبياء بغير حق ... ... ... | ١٨١ | م « | ٣ |
| | الذين قالوا إن الله عهد إلينا ألا نؤمن لرسول حتى يأتينا بقربان ... ... ... ... ... ... | ١٨٣ | م « | ٣ |
| | ولو أنهم قالوا سمعنا وأطعنا واسمع وانظرنا لكان خيرا لهم | ٤٦ | م النساء | ٤ |
| | وقالوا ربنا لم كتبت علينا القتال ... ... ... ... ... | ٧٧ | م « | ٤ |
| | إن الذين توفاهم الملائكة ظالمى أنفسهم قالوا فيم كنتم | ٩٧ | م « | ٤ |
| | قالوا كنا مستضعفين فى الأرض ... ... ... ... ... | ٩٧ | م « | ٤ |
| | قالوا ألم تكن أرض الله واسعة فتهاجروا فيها ... ... | ٩٧ | م « | ٤ |
| | فإن كان لكم فتح من الله قالوا ألم نكن معكم ... ... | ١٤١ | م « | ٤ |
| | وإن كان للكافرين نصيب قالوا ألم نستحوذ عليكم... | ١٤١ | م « | ٤ |
| | فقد سألوا موسى أكبر من ذلك فقالوا أرنا الله جهرة | ١٥٣ | م « | ٤ |

| اللفظة | الآيــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **قَالُوا:** | قالوا يا شعيب أصلاتك تأمرك أن نترك ما يعبد آباؤنا | ٨٧ | ك هـود | ١١ |
| | قالوا يا شعيب ما نفقه كثيرا مما تقول ... ... ... | ٩١ | ك « | ١١ |
| | إذ قالوا ليوسف وأخوه أحب إلى أبينا منا ... ... | ٨ | ك يوسـف | ١٢ |
| | قالوا يا أبانا مالك لا تأمنا على يوسف وإنا له لناصحون | ١١ | ك « | ١٢ |
| | قالوا لئن أكله الذئب ونحن عصبة إنا إذا لخاسرون | ١٤ | ك « | ١٢ |
| | قالوا يا أبانا إنا ذهبنا نستبق وتركنا يوسف عند متاعنا | ١٧ | ك « | ١٢ |
| | قالوا أضغاث أحلام وما نحن بتأويل الأحلام بعالمين | ٤٤ | ك « | ١٢ |
| | قالوا سنراود عنه أباه وإنا لفاعلون ... ... ... ... | ٦١ | ك « | ١٢ |
| | فلما رجعوا إلى أبيهم قالوا يا أبانا منع منا الكيل ... | ٦٣ | ك « | ١٢ |
| | قالوا يا أبانا ما نبغى هذه بضاعتنا ردت إلينا ... ... | ٦٥ | ك « | ١٢ |
| | قالوا وأقبلوا عليهم ماذا تفقدون... ... ... ... ... | ٧١ | ك « | ١٢ |
| | قالوا نفقد صواع الملك ولمن جاء به حمل بعير ... ... | ٧٢ | ك « | ١٢ |
| | قالوا تالله لقد علمتم ما جئنا لنفسد فى الأرض ... ... | ٧٣ | ك « | ١٢ |
| | قالوا فما جزاؤه إن كنتم كاذبين... ... ... ... ... | ٧٤ | ك « | ١٢ |
| | قالوا جزاؤه من وجد فى رحله فهو جزاؤه ... ... ... | ٧٥ | ك « | ١٢ |
| | قالوا إن يسرق فقد سرق أخ له من قبل ... ... ... | ٧٧ | ك « | ١٢ |
| | قالوا يأيها العزيز إن له أبا شيخا كبيرا ... ... ... | ٧٨ | ك « | ١٢ |
| | قالوا تالله تفتؤا تذكر يوسف حتى تكون حرضا ... | ٨٥ | ك « | ١٢ |
| | فلما دخلوا عليه قالوا يأيها العزيز مسنا وأهلنا الضر | ٨٨ | ك « | ١٢ |
| | قالوا أئنك لأنت يوسف قال أنا يوسف وهذا أخى | ٩٠ | ك « | ١٢ |
| | قالوا تالله لقد آثرك الله علينا وإن كنا لخاطئين ... | ٩١ | ك « | ١٢ |
| | قالوا تالله إنك لفى ضلالك القديم ... ... ... ... | ٩٥ | ك « | ١٢ |
| | قالوا يا أبانا استغفر لنا ذنوبنا إنا كنا خاطئين ... | ٩٧ | ك « | ١٢ |
| | فردوا أيديهم فى أفواههم وقالوا إنا كفرنا بما أرسلتم به | ٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | قالوا إن أنتم إلا بشر مثلنا ... ... ... ... ... | ١٠ | ك « | ١٤ |
| | قالوا لو هدانا الله لهديناكم ... ... ... ... ... | ٢١ | ك « | ١٤ |
| | وقالوا يأيها الذى نزل عليه الذكر إنك لمجنون... ... | ٦ | ك الحجر | ١٥ |
| | لقالوا إنما سكرت أبصارنا بل نحن قوم مسحورون | ١٥ | ك « | ١٥ |
| | إذ دخلوا عليه فقالوا سلاما قال إنا منكم وجلون ... | ٥٢ | ك « | ١٥ |
| | قالوا لا توجل إنا نبشرك بغلام عليم ... ... ... ... | ٥٣ | ك « | ١٥ |
| | قالوا بشرناك بالحق فلا تكن من القانطين ... ... | ٥٥ | ك « | ١٥ |
| | قالوا إنا أرسلنا إلى قوم مجرمين ... ... ... ... ... | ٥٨ | ك « | ١٥ |
| | قالوا بل جئناك بما كانوا فيه يمترون ... ... ... | ٦٣ | ك « | ١٥ |
| | قالوا أولم ننهك عن العالمين ... ... ... ... ... ... | ٧٠ | ك « | ١٥ |
| | وإذا قيل لهم ماذا أنزل ربكم قالوا أساطير الأولين | ٢٤ | ك النحـل | ١٦ |
| | وقيل للذين اتقوا ماذا أنزل ربكم قالوا خيرا ... ... | ٣٠ | ك « | ١٦ |
| | قالوا ربنا هؤلاء شركاؤنا الذين كنا ندعوا من دونك | ٨٦ | ك « | ١٦ |
| | قالوا إنما أنت مفتر ... ... ... ... ... ... | ١٠١ | ك « | ١٦ |

| اللفظة | الآيــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **قَالُوا:** | وقالوا أئذا كنا عظاما ورفاتا أئنا لمبعوثون خلقا جديدا | ٤٩ | ك الإسـراء | ١٧ |
| | وقالوا لن نؤمن لك حتى تفجر لنا من الأرض ينبوعا | ٩٠ | ك « | ١٧ |
| | وما منع الناس أن يؤمنوا إذ جاءهم الهدى إلا أن قالوا أبعث الله بشرا رسولا... ... ... ... ... | ٩٤ | ك « | ١٧ |
| | وقالوا أئذا كنا عظاما ورفاتا أئنا لمبعوثون خلقا جديدا | ٩٨ | ك « | ١٧ |
| | وينذر الذين قالوا اتخذ الله ولدا ... ... ... ... | ٤ | ك الكهف | ١٨ |
| | فقالوا ربنا آتنا من لدنك رحمة وهيئ لنا من أمرنا رشدا ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك « | ١٨ |
| | فقالوا ربنا رب السموات والأرض... ... ... ... | ١٤ | ك « | ١٨ |
| | قال قائل منهم كم لبثتم قالوا لبثنا يوما أو بعض يوم | ١٩ | ك « | ١٨ |
| | قالوا ربكم أعلم بما لبثتم ... ... ... ... ... | ١٩ | ك « | ١٨ |
| | فقالوا ابنوا عليهم بنيانا ربهم أعلم بهم ... ... ... | ٢١ | ك « | ١٨ |
| | قالوا يا ذا القرنين إن يأجوج ومأجوج مفسدون فى الأرض ... ... ... ... ... ... ... | ٩٤ | م « | ١٨ |
| | فأتت به قومها تحمله قالوا يامريم لقد جئت شيئا فريا | ٢٧ | ك مـريم | ١٩ |
| | فأشارت إليه قالوا كيف نكلم من كان فى المهد صبيا | ٢٩ | ك « | ١٩ |
| | وقالوا اتخذ الرحمن ولدا ... ... ... ... ... | ٨٨ | ك « | ١٩ |
| | قالوا إن هذان لساحران يريدان أن يخرجاكم من أرضكم | ٦٣ | ك طـه | ٢٠ |
| | قالوا ياموسى إما أن تلقى وإما أن نكون أول من ألقى | ٦٥ | ك « | ٢٠ |
| | فألقى السحرة سجدا قالوا آمنا برب هرون وموسى ... | ٧٠ | ك « | ٢٠ |
| | قالوا لن نؤثرك على ما جاءنا من البينات والذى فطرنا | ٧٢ | ك « | ٢٠ |
| | قالوا ما أخلفنا موعدك بملكنا ... ... ... ... ... | ٨٧ | ك « | ٢٠ |
| | فأخرج لهم عجلا جسدا له خوار فقالوا هذا إلهكم ... | ٨٨ | ك « | ٢٠ |
| | قالوا لن نبرح عليه عاكفين حتى يرجع إلينا موسى ... | ٩١ | ك « | ٢٠ |
| | وقالوا لولا يأتينا بآية من ربه ... ... ... ... ... | ١٣٣ | ك « | ٢٠ |
| | ولو أنا أهلكناهم بعذاب من قبله لقالوا ربنا لولا أرسلت إلينا رسولا ... ... ... ... ... ... ... | ١٣٤ | ك « | ٢٠ |
| | بل قالوا أضغاث أحلام بل افتراه بل هو شاعر ... | ٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | قالوا يا ويلنا إنا كنا ظالمين ... ... ... ... ... | ١٤ | ك « | ٢١ |
| | وقالوا اتخذ الرحمن ولدا سبحانه ... ... ... ... | ٢٦ | ك « | ٢١ |
| | قالوا وجدنا آباءنا لها عابدين ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك « | ٢١ |
| | قالوا أجئتنا بالحق أم أنت من اللاعبين ... ... ... | ٥٥ | ك « | ٢١ |
| | قالوا من فعل هذا بآلهتنا إنه لمن الظالمين ... ... ... | ٥٩ | ك « | ٢١ |
| | قالوا سمعنا فتى يذكرهم يقال له إبراهيم ... ... ... | ٦٠ | ك « | ٢١ |
| | قالوا فأتوا به على أعين الناس لعلهم يشهدون ... ... | ٦١ | ك « | ٢١ |
| | قالوا أأنت فعلت هذا بآلهتنا يا إبراهيم ... ... ... | ٦٢ | ك « | ٢١ |
| | فرجعوا إلى أنفسهم فقالوا إنكم أنتم الظالمون ... ... | ٦٤ | ك « | ٢١ |
| | قالوا حرقوه وانصروا آلهتكم إن كنتم فاعلين ... ... | ٦٨ | ك « | ٢١ |

| اللفظة | الآيــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَالُوا: | فقالوا أنؤمن لبشرين مثلنا وقومهما لنا عابدون ... | ٤٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | بل قالوا مثل ما قال الأولون ... ... ... ... ... | ٨١ | ك « | ٢٣ |
| | قالوا أئذا متنا وكنا ترابا وعظاما أئنا لمبعوثون... ... | ٨٢ | ك « | ٢٣ |
| | قالوا ربنا غلبت علينا شقوتنا وكنا قوما ضالين... ... | ١٠٦ | ك « | ٢٣ |
| | قالوا لبثنا يوما أو بعض يوم فسئل العادين ... ... | ١١٢ | ك « | ٢٣ |
| | وقالوا هذا إفك مبين ... ... ... ... ... ... ... | ١٢ | م النـور | ٢٤ |
| | وقالوا أساطير الأولين اكتتبها فهي تملى عليه بكرة وأصيلا | ٥ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| | وقالوا مال هذا الرسول يأكل الطعام ويمشي في الأسواق | ٧ | ك « | ٢٥ |
| | قالوا سبحانك ما كان ينبغي لنا أن نتخذ من دونك من أولياء ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك « | ٢٥ |
| | وإذا قيل لهم اسجدوا للرحمن قالوا وما الرحمن ... | ٦٠ | ك « | ٢٥ |
| | وإذا خاطبهم الجاهلون قالوا سلاما ... ... ... | ٦٣ | ك « | ٢٥ |
| | قالوا أرجه وأخاه وابعث في المدائن حاشرين ... | ٣٦ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| | فلما جاء السحرة قالوا لفرعون أئن لنا لأجرا ... ... | ٤١ | ك « | ٢٦ |
| | وقالوا بعزة فرعون إنا لنحن الغالبون ... ... ... | ٤٤ | ك « | ٢٦ |
| | قالوا آمنا برب العالمين... ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك « | ٢٦ |
| | قالوا لا ضير إنا إلى ربنا منقلبون ... ... ... ... | ٥٠ | ك « | ٢٦ |
| | قالوا نعبد أصناما فنظل لها عاكفين ... ... ... | ٧١ | ك « | ٢٦ |
| | قالوا بل وجدنا آباءنا كذلك يفعلون ... ... ... ... | ٧٤ | ك « | ٢٦ |
| | قالوا وهم فيها يختصمون ... ... ... ... ... ... | ٩٦ | ك « | ٢٦ |
| | قالوا أنؤمن لك واتبعك الأرذلون ... ... ... ... | ١١١ | ك « | ٢٦ |
| | قالوا لئن لم تنته يا نوح لتكونن من المرجومين ... | ١١٦ | ك « | ٢٦ |
| | قالوا سواء علينا أوعظت أم لم تكن من الواعظين ... | ١٣٦ | ك « | ٢٦ |
| | قالوا إنما أنت من المسحرين ... ... ... ... ... | ١٥٣ | ك « | ٢٦ |
| | قالوا لئن لم تنته يالوط لتكونن من المخرجين ... ... | ١٦٧ | ك « | ٢٦ |
| | قالوا إنما أنت من المسحرين ... ... ... ... ... | ١٨٥ | ك « | ٢٦ |
| | فلما جاءتهم آياتنا مبصرة قالوا هذا سحر مبين ... ... | ١٣ | ك النمـل | ٢٧ |
| | قالوا نحن أولوا قوة وأولوا بأس شديد ... ... ... | ٣٣ | ك « | ٢٧ |
| | قالوا اطيرنا بك وبمن معك قال طائركم عند الله ... | ٤٧ | ك « | ٢٧ |
| | قالوا تقاسموا بالله لنبيتنه وأهله ... ... ... ... | ٤٩ | ك « | ٢٧ |
| | فما كان جواب قومه إلا أن قالوا أخرجوا آل لوط من قريتكم ... ... ... ... ... ... ... | ٥٦ | ك « | ٢٧ |
| | فلما جاءهم موسى بآياتنا بينات قالوا ما هذا إلا سحر مفترى | ٣٦ | ك القصص | ٢٨ |
| | فلما جاءهم الحق من عندنا قالوا لولا أوتي مثل ما أوتي موسى | ٤٨ | ك « | ٢٨ |
| | أولم يكفروا بما أوتي موسى من قبل قالوا سحران تظاهرا | ٤٨ | ك « | ٢٨ |
| | وقالوا إنا بكل كافرون ... ... ... ... ... ... | ٤٨ | ك « | ٢٨ |
| | وإذا يتلى عليهم قالوا آمنا به إنه الحق من ربنا ... | ٥٣ | م « | ٢٨ |
| | وإذا سمعوا اللغو أعرضوا عنه وقالوا لنا أعمالنا ... | ٥٥ | م « | ٢٨ |

| اللفظة | الآيــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَالُوا: | وقالوا إن نتبع الهدى معك نتخطف من أرضنا... ... | ٥٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | فما كان جواب قومه إلا أن قالوا اقتلوه أو حرقوه | ٢٤ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | فما كان جواب قومه إلا أن قالوا ائتنا بعذاب الله | ٢٩ | ك « | ٢٩ |
| | قالوا إنا مهلكوا أهل هذه القرية ... ... ... ... | ٣١ | ك « | ٢٩ |
| | قال إن فيها لوطا قالوا نحن أعلم بمن فيها ... ... ... | ٣٢ | ك « | ٢٩ |
| | وقالوا لا تخف ولا تحزن ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك « | ٢٩ |
| | وقالوا لولا أنزل عليه آيات من ربه ... ... ... ... | ٥٠ | ك « | ٢٩ |
| | قالوا بل نتبع ما وجدنا عليه آباءنا... ... ... ... ... | ٢١ | ك لقمان | ٣١ |
| | وقالوا أئذا ضللنا في الأرض أئنا لفي خلق جديد ... | ١٠ | ك السـجدة | ٣٢ |
| | قالوا هذا ما وعدنا الله ورسوله... ... ... ... ... | ٢٢ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وقالوا ربنا إنا أطعنا سادتنا وكبراءنا فأضلونا السبيلا | ٦٧ | م « | ٣٣ |
| | لا تكونوا كالذين آذوا موسى فبرأه الله مما قالوا ... | ٦٩ | م « | ٣٣ |
| | فقالوا ربنا باعد بين أسفارنا وظلموا أنفسهم ... ... | ١٩ | ك سبأ | ٣٤ |
| | حتى إذا فزع عن قلوبهم قالوا ماذا قال ربكم... ... | ٢٣ | ك « | ٣٤ |
| | قالوا الحق وهو العلي الكبير... ... ... ... ... | ٢٣ | ك « | ٣٤ |
| | وقالوا نحن أكثر أموالا وأولادا وما نحن بمعذبين | ٣٥ | ك « | ٣٤ |
| | قالوا سبحانك أنت ولينا من دونهم ... ... ... ... | ٤١ | ك « | ٣٤ |
| | قالوا ما هذا إلا رجل يريد أن يصدكم عما كان يعبد آباؤكم | ٤٣ | ك « | ٣٤ |
| | وقالوا ما هذا إلا إفك مفترى ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك « | ٣٤ |
| | وقالوا آمنا به وأنى لهم التناوش من مكان بعيد... ... | ٥٢ | ك « | ٣٤ |
| | وقالوا الحمد لله الذي أذهب عنا الحزن ... ... ... | ٣٤ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | فعززنا بثالث فقالوا إنا إليكم مرسلون ... ... ... | ١٤ | ك يس | ٣٦ |
| | قالوا ما أنتم إلا بشر مثلنا وما أنزل الرحمن من شيء | ١٥ | ك « | ٣٦ |
| | قالوا ربنا يعلم إنا إليكم لمرسلون ... ... ... ... | ١٦ | ك « | ٣٦ |
| | قالوا إنا تطيرنا بكم لئن لم تنتهوا لنرجمنكم ... ... ... | ١٨ | ك « | ٣٦ |
| | قالوا طائركم معكم أئن ذكرتم بل أنتم قوم مسرفون ... | ١٩ | ك « | ٣٦ |
| | قالوا يا ويلنا من بعثنا من مرقدنا ... ... ... ... | ٥٢ | ك « | ٣٦ |
| | وقالوا إن هذا إلا سحر مبين ... ... ... ... ... | ١٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| | وقالوا يا ويلنا هذا يوم الدين ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك « | ٣٧ |
| | قالوا إنكم كنتم تأتوننا عن اليمين ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٣٧ |
| | قالوا بل لم تكونوا مؤمنين ... ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك « | ٣٧ |
| | قالوا ابنوا له بنيانا فألقوه في الجحيم ... ... ... ... | ٩٧ | ك « | ٣٧ |
| | وقالوا ربنا عجل لنا قطنا قبل يوم الحساب ... ... | ١٦ | ك ص | ٣٨ |
| | قالوا لا تخف خصمان بغى بعضنا على بعض ... ... | ٢٢ | ك « | ٣٨ |
| | قالوا بل أنتم لا مرحبا بكم أنتم قدمتموه لنا ... ... | ٦٠ | ك « | ٣٨ |
| | قالوا ربنا من قدم لنا هذا فزده عذابا ضعفا في النار | ٦١ | ك « | ٣٨ |
| | وقالوا ما لنا لا نرى رجالا كنا نعدهم من الأشرار ... | ٦٢ | ك « | ٣٨ |
| | قالوا بل ولكن حقت كلمة العذاب على الكافرين ... | ٧١ | ك الزمر | ٣٩ |

| اللفظة | الآيــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَالُوا: | وقالوا الحمد لله الذى صدقنا وعده ... ... ... ... | ٧٤ | ك الزمر | ٣٩ |
| | قالوا ربنا أمتنا اثنتين وأحييتنا اثنتين ... ... ... | ١١ | ك غافر | ٤٠ |
| | إلى فرعون وهامان وقارون فقالوا ساحر كذاب ... | ٢٤ | ك « | ٤٠ |
| | فلما جاءهم بالحق من عندنا قالوا اقتلوا أبناء الذين آمنوا معه | ٢٥ | ك « | ٤٠ |
| | قالوا أولم تك تأتيكم رسلكم بالبينات... ... ... ... | ٥٠ | ك « | ٤٠ |
| | قالوا بلى ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٠ | ك « | ٤٠ |
| | قالوا فادعوا وما دعاء الكافرين إلا فى ضلال ... ... | ٥٠ | ك « | ٤٠ |
| | قالوا ضلوا عنا بل لم نكن ندعوا من قبل شيئا... ... | ٧٤ | ك « | ٤٠ |
| | فلما رأوا بأسنا قالوا آمنا بالله وحده ... ... ... ... | ٨٤ | ك « | ٤٠ |
| | وقالوا قلوبنا فى أكنة مما تدعونا إليه ... ... ... | ٥ | ك فصلت | ٤١ |
| | قالوا لو شاء ربنا لأنزل ملائكة فإنا بما أرسلتم به كافرون | ١٤ | ك « | ٤١ |
| | وقالوا من أشد منا قوة... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك « | ٤١ |
| | وقالوا لجلودهم لم شهدتم علينا ... ... ... ... | ٢١ | ك « | ٤١ |
| | قالوا أنطقنا الله الذى أنطق كل شىء ... ... ... | ٢١ | ك « | ٤١ |
| | إن الذين قالوا ربنا الله ثم استقاموا تتنزل عليهم الملائكة | ٣٠ | ك « | ٤١ |
| | ولو جعلناه قرآنا أعجميا لقالوا لولا فصلت آياته ... | ٤٤ | ك « | ٤١ |
| | ويوم يناديهم أين شركائى قالوا آذناك ما منا من شهيد | ٤٧ | ك « | ٤١ |
| | وقالوا لو شاء الرحمن ما عبدناهم... ... ... ... | ٢٠ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | بل قالوا إنا وجدنا آباءنا على أمة... .. ... ... | ٢٢ | ك « | ٤٣ |
| | قالوا إنا بما أرسلتم به كافرون... ... ... ... | ٢٤ | ك « | ٤٣ |
| | ولما جاءهم الحق قالوا هذا سحر وإنا به كافرون ... | ٣٠ | ك « | ٤٣ |
| | وقالوا لولا نزل هذا القرآن على رجل من القريتين عظيم | ٣١ | ك « | ٤٣ |
| | وقالوا يأيه الساحر ادع لنا ربك بما عهد عندك ... | ٤٩ | ك « | ٤٣ |
| | وقالوا ءآلهتنا خير أم هو ما ضربوه لك إلا جدلا ... | ٥٨ | ك « | ٤٣ |
| | ثم تولوا عنه وقالوا معلم مجنون... ... ... ... | ١٤ | ك الدخان | ٤٤ |
| | وقالوا ما هى إلا حياتنا الدنيا نموت ونحيا ... ... | ٢٤ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | ما كان حجتهم إلا أن قالوا ائتوا بآبائنا ... ... ... | ٢٥ | ك « | ٤٥ |
| | إن الذين قالوا ربنا الله ثم استقاموا فلا خوف عليهم | ١٣ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | قالوا أجئتنا لتأفكنا عن آلهتنا ... ... ... ... | ٢٢ | ك « | ٤٦ |
| | فلما رأوه عارضا مستقبل أوديتهم قالوا هذا عارض ممطرنا | ٢٤ | ك « | ٤٦ |
| | فلما حضروه قالوا أنصتوا ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك « | ٤٦ |
| | قالوا يا قومنا إنا سمعنا كتابا أنزل من بعد موسى ... | ٣٠ | ك « | ٤٦ |
| | أليس هذا بالحق قالوا بلى وربنا ... ... ... ... | ٣٤ | ك « | ٤٦ |
| | قالوا للذين أوتوا العلم ماذا قال آنفا... ... ... ... | ١٦ | م محمد | ٤٧ |
| | ذلك بأنهم قالوا للذين كرهوا ما نزل الله سنطيعكم فى بعض الأمر... ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | م « | ٤٧ |
| | إذ دخلوا عليه فقالوا سلاما قال سلام قوم منكرون | ٢٥ | ك الذاريات | ٥١ |
| | فأوجس منهم خيفة قالوا لا تخف ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٥١ |

| اللفظة | الآيــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَالُوا. | قالوا كذلك قال ربك إنه هو الحكيم العليم ... ... | ٣٠ | ك الذاريات | ٥١ |
| | قالوا إنا أرسلنا إلى قوم مجرمين... ... ... ... | ٣٢ | ك « | ٥١ |
| | كذلك ما أتى الذين من قبلهم من رسول إلا قالوا ساحر أو مجنون ... ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك « | ٥١ |
| | قالوا إنا كنا قبل فى أهلنا مشفقين ... ... ... ... | ٢٦ | ك الطور | ٥٢ |
| | كذبت قبلهم قوم نوح فكذبوا عبدنا وقالوا مجنون وازدجر | ٩ | ك القمر | ٥٤ |
| | فقالوا أبشرا منا واحدا نتبعه إنا إذا لفى ضلال وسعر | ٢٤ | ك « | ٥٤ |
| | ينادونهم ألم نكن معكم قالوا بلى... ... ... ... | ١٤ | م الحديد | ٥٧ |
| | والذين يظاهرون من نسائهم ثم يعودون لما قالوا فتحرير رقبة من قبل أن يتماسا ... ... ... ... | ٣ | م المجادلة | ٥٨ |
| | إذ قالوا لقومهم إنا برءاء منكم ومما تعبدون ... ... | ٤ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | فلما جاءهم بالبينات قالوا هذا سحر مبين... ... ... | ٦ | م الصف | ٦١ |
| | إذا جاءك المنافقون قالوا نشهد إنك لرسول الله ... | ١ | م المنافقون | ٦٣ |
| | ذلك بأنه كانت تأتيهم رسلهم بالبينات فقالوا أبشر يهدوننا | ٦ | م التغابن | ٦٤ |
| | قالوا بلى قد جاءنا نذير فكذبنا ... ... ... ... | ٩ | ك الملك | ٦٧ |
| | وقالوا لو كنا نسمع أو نعقل ما كنا فى أصحاب السعير | ١٠ | ك « | ٦٧ |
| | فلما رأوها قالوا إنا لضالون... ... ... ... ... | ٢٦ | م القلم | ٦٨ |
| | قالوا سبحان ربنا إنا كنا ظالمين... ... ... ... | ٢٩ | م « | ٦٨ |
| | قالوا يا ويلنا إنا كنا طاغين... ... ... ... ... | ٣١ | م « | ٦٨ |
| | وقالوا لا تذرن آلهتكم ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك نوح | ٧١ |
| | قل أوحى إلى أنه استمع نفر من الجن فقالوا إنا سمعنا قرآنا عجبا | ١ | ك الجن | ٧٢ |
| | قالوا لم نك من المصلين... ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك المدثر | ٧٤ |
| | قالوا تلك إذا كرة خاسرة ... ... ... ... ... | ١٢ | ك النازعات | ٧٩ |
| | وإذا رأوهم قالوا إن هؤلاء لضالون ... ... ... | ٣٢ | ك المطففين | ٨٣ |
| قُلْتَ: (٦) | أأنت قلت للناس اتخذونى وأمى إلهين من دون الله | ١١٦ | م المائدة | ٥ |
| | ما قلت لهم إلا ما أمرتنى به أن اعبدوا الله ... ... | ١١٧ | م « | ٥ |
| | ولا على الذين إذا ما أتوك لتحملهم قلت لا أجد ما أحملكم عليه تولوا وأعينهم تفيض من الدمع... | ٩٢ | م التوبة | ٩ |
| | ولئن قلت إنكم مبعوثون من بعد الموت ليقولن الذين كفروا إن هذا إلا سحر مبين ... ... ... ... | ٧ | ك هود | ١١ |
| | ولولا إذ دخلت جنتك قلت ما شاء الله ... ... ... | ٣٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | فقلت استغفروا ربكم إنه كان غفارا... ... ... ... | ١٠ | ك نوح | ٧١ |
| قُلْتُمْ: (٩) | وإذ قلتم يا موسى لن نؤمن لك حتى نرى الله جهرة | ٥٥ | م البقرة | ٢ |
| | وإذ قلتم يا موسى لن نصبر على طعام واحد ... ... | ٦١ | م « | ٢ |
| | أو لما أصابتكم مصيبة قد أصبتم مثليها قلتم أنى هذا | ١٦٥ | م آل عمران | ٣ |
| | قل قد جاءكم رسل من قبلى بالبينات وبالذى قلتم ... | ١٨٣ | م « | ٣ |
| | واذكروا نعمة الله عليكم وميثاقه الذى واثقكم به إذ قلتم سمعنا | ٧ | م المائدة | ٥ |
| | وإذا قلتم فاعدلوا ولو كان ذا قربى ... ... ... | ١٥٢ | م الأنعام | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قُلْتُمْ | : ولولا إذ سمعتموه قلتم ما يكون لنا أن نتكلم بهذا ... | ١٦ | م النور | ٢٤ |
| | حتى إذا هلك قلتم لن يبعث الله من بعده رسولا ... | ٣٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | قلتم ما ندرى ما الساعة إن نظن إلا ظنا ... ... ... | ٣٢ | ك الجاثية | ٤٥ |
| قُلْتُهُ | : إن كنت قلته فقد علمته تعلم ما فى نفسى ولا أعلم ما فى نفسك | ١١٦ | م المائدة | ٥ |
| قُلْنَ | : وقلن حاش لله ما هذا بشرا ... ... ... ... ... | ٣١ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | قلن حاش لله ما علمنا عليه من سوء ... ... ... ... | ٥١ | ك « | ١٢ |
| قُلْنَا | : وإذ قلنا للملائكة اسجدوا لآدم فسجدوا ... ... ... | ٣٤ | م البقرة | ٢ |
| (٢٧) | وقلنا يا آدم اسكن أنت وزوجك الجنة ... ... ... | ٣٥ | م « | ٢ |
| | وقلنا اهبطوا بعضكم لبعض عدو ... ... ... ... ... | ٣٦ | م « | ٢ |
| | قلنا اهبطوا منها جميعا ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | م « | ٢ |
| | وإذ قلنا ادخلوا هذه القرية فكلوا منها حيث شئتم | ٥٨ | م « | ٢ |
| | وإذ استسقى موسى لقومه فقلنا اضرب بعصاك الحجر | ٦٠ | م « | ٢ |
| | فقلنا لهم كونوا قردة خاسئين ... ... ... ... ... | ٦٥ | م « | ٢ |
| | فقلنا اضربوه ببعضها كذلك يحيى الله الموتى ... ... | ٧٣ | م « | ٢ |
| | ورفعنا فوقهم الطور بميثاقهم وقلنا لهم ادخلوا الباب سجدا | ١٥٤ | م النساء | ٤ |
| | وقلنا لهم لا تعدوا فى السبت ... ... ... ... ... | ١٥٤ | م « | ٤ |
| | ولقد خلقناكم ثم صورناكم ثم قلنا للملائكة اسجدوا لآدم | ١١ | ك الأعراف | ٧ |
| | فلما عتوا عن ما نهوا عنه قلنا لهم كونوا قردة خاسئين | ١٦٦ | م « | ٧ |
| | لو نشاء لقلنا مثل هذا إن هذا إلا أساطير الأولين ... | ٣١ | ك الأنفال | ٨ |
| | قلنا احمل فيها من كل زوجين اثنين وأهلك ... ... | ٤٠ | ك هود | ١١ |
| | وإذ قلنا لك إن ربك أحاط بالناس ... ... ... | ٦٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وإذ قلنا للملائكة اسجدوا لآدم فسجدوا ... ... ... | ٦١ | ك « | ١٧ |
| | وقلنا من بعده لبنى إسرائيل اسكنوا الأرض ... ... | ١٠٤ | ك « | ١٧ |
| | لن ندعوا من دونه إلها لقد قلنا إذا شططا ... ... | ١٤ | ك الكهف | ١٨ |
| | وإذ قلنا للملائكة اسجدوا لآدم فسجدوا إلا إبليس ... | ٥٠ | ك « | ١٨ |
| | قلنا يا ذا القرنين إما أن تعذب وإما أن تتخذ فيهم حسنا | ٨٦ | م « | ١٨ |
| | قلنا لا تخف إنك أنت الأعلى ... ... ... ... ... | ٦٨ | ك طه | ٢٠ |
| | وإذ قلنا للملائكة اسجدوا لآدم فسجدوا إلا إبليس أبى | ١١٦ | ك « | ٢٠ |
| | فقلنا يا آدم إن هذا عدو لك ولزوجك ... ... ... | ١١٧ | ك « | ٢٠ |
| | قلنا يا نار كونى بردا وسلاما على إبراهيم ... ... ... | ٦٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | فقلنا اذهبا إلى القوم الذين كذبوا بآياتنا ... ... ... | ٣٦ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ونزعنا من كل أمة شهيدا فقلنا هاتوا برهانكم ... ... | ٧٥ | ك القصص | ٢٨ |
| | قد جاءنا نذير فكذبنا وقلنا ما نزل الله من شىء ... | ٩ | ك الملك | ٦٧ |
| أَقُلْ | : ألم أقل لكم إنى أعلم غيب السموات والأرض ... | ٣٣ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | وأقل لكما إن الشيطان لكما عدو مبين ... ... ... | ٢٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | قال ألم أقل لكم إنى أعلم من الله ما لا تعلمون ... ... | ٩٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | قال ألم أقل إنك لن تستطيع معى صبرا ... ... ... | ٧٢ | ك الكهف | ١٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَقُلْ | : قال ألم أقل لك إنك لن تستطيع معى صبرا ... ... | ٧٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | قال أوسطهم ألم أقل لكم لولا تسبحون ... ... ... | ٢٨ | م القلم | ٦٨ |
| أَقُولُ | : قال سبحانك ما يكون لى أن أقول ما ليس لى بحق | ١١٦ | م المائدة | ٥ |
| (٩) | قل لا أقول لكم عندى خزائن الله ولا أعلم الغيب ... | ٥٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | ولا أقول لكم إنى ملك ... ... ... ... ... ... | ٥٠ | ك « | ٦ |
| | حقيق على أن لا أقول على الله إلا الحق ... ... ... | ١٠٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولا أقول لكم عندى خزائن الله ولا أعلم الغيب ... | ٣١ | ك هود | ١١ |
| | ولا أقول إنى ملك ... ... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك « | ١١ |
| | ولا أقول للذين تزدرى أعينكم لن يؤتيهم الله خيرا ... | ٣١ | ك « | ١١ |
| | قال فالحق والحق أقول ... ... ... ... ... ... | ٨٤ | ك ص | ٣٨ |
| | فستذكرون ما أقول لكم وأفوض أمرى إلى الله ... | ٤٤ | ك غافر | ٤٠ |
| تَقُلْ | : فلا تقل لهما أف ولا تنهرهما وقل لهما قولا كريما ... | ٢٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| تَقُولُ | : إذ تقول للمؤمنين ألن يكفيكم أن يمدكم ربكم ... ... | ١٢٤ | م آل عمران | ٣ |
| (١٢) | فإذا برزوا من عندك بيت طائفة منهم غير الذى تقول | ٨١ | م النساء | ٤ |
| | قالوا يا شعيب ما نفقه كثيرا مما تقول ... ... ... | ٩١ | ك هود | ١١ |
| | إذ تمشى أختك فتقول هل أدلكم على من يكفله ... | ٤٠ | ك طه | ٢٠ |
| | إنى خشيت أن تقول فرقت بين بنى إسرائيل ... ... | ٩٤ | ك « | ٢٠ |
| | قال فاذهب فإن لك فى الحياة أن تقول لا مساس | ٩٧ | ك « | ٢٠ |
| | وإذ تقول للذى أنعم الله عليه وأنعمت عليه أمسك | | | |
| | عليك زوجك ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | أن تقول نفس يا حسرتى على ما فرطت فى جنب الله | ٥٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| | أو تقول لو أن الله هدانى لكنت من المتقين ... ... | ٥٧ | ك « | ٣٩ |
| | أو تقول حين ترى العذاب لو أن لى كرة ... ... ... | ٥٨ | ك « | ٣٩ |
| | يوم نقول لجهنم هل امتلأت وتقول هل من مزيد | ٣٠ | ك ق | ٥٠ |
| | وأنا ظننا أن لن تقول الإنس والجن على الله كذبا ... | ٥ | ك الجن | ٧٢ |
| تَقُولَنَّ | : ولا تقولن لشىء إنى فاعل ذلك غدا . إلا أن يشاء الله | ٢٣ | ك الكهف | ١٨ |
| تَقُولُوا | : يا أيها الذين آمنوا لا تقولوا راعنا وقولوا انظرنا ... | ١٠٤ | م البقرة | ٢ |
| (١٦) | ولا تقولوا لمن يقتل فى سبيل الله أموات ... ... | ١٥٤ | م « | ٢ |
| | وأن تقولوا على الله ما لا تعلمون ... ... ... ... | ١٦٩ | م « | ٢ |
| | ولكن لا تواعدوهن سرا إلا أن تقولوا قولا معروفا | ٢٣٥ | م « | ٢ |
| | ولا تقولوا لمن ألقى إليكم السلام لست مؤمنا ... ... | ٩٤ | م النساء | ٤ |
| | يا أهل الكتاب لا تغلوا فى دينكم ولا تقولوا على الله إلا الحق | ١٧١ | م « | ٤ |
| | فآمنوا بالله ورسله ولا تقولوا ثلاثة ... ... ... ... | ١٧١ | م « | ٤ |
| | أن تقولوا ما جاءنا من بشير ولا نذير ... ... ... ... | ١٩ | م المائدة | ٥ |
| | أن تقولوا إنما أنزل الكتاب على طائفتين من قبلنا ... | ١٥٦ | ك الأنعام | ٦ |
| | أو تقولوا لو أنا أنزل علينا الكتاب لكنا أهدى منهم | ١٥٧ | ك « | ٦ |
| | وأن تقولوا على الله ما لا تعلمون ... ... ... ... | ٣٣ | ك الأعراف | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَقُولُوا: | أن تقولوا يوم القيامة إنا كنا عن هذا غافلين ... | ١٧٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | أو تقولوا إنما أشرك آباؤنا من قبل ... ... ... ... | ١٧٣ | ك « | ٧ |
| | ولا تقولوا لما تصف ألسنتكم الكذب هـذا حلال | | | |
| | وهذا حرام لتفتروا على الله الكذب ... ... ... | ١١٦ | ك النحـل | ١٦ |
| | وتقولوا سبحان الذى سخر لنا هذا وما كنا له مقرنين | ١٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | كبر مقتا عند الله أن تقولوا ما لا تفعلون ... ... | ٣ | م الصـف | ٦١ |
| تَقُولُونَ: | قل أتخذتم عند الله عهدا فلن يخلف الله عهده | | | |
| (١١) | أم تقولون على الله ما لا تعلمون... ... ... ... | ٨٠ | م البقـرة | ٢ |
| | أم تقولون إن إبراهيم وإسمعيل وإسحق ويعقوب | | | |
| | والأسباط كانوا هودا أو نصارى ... ... ... | ١٤٠ | م « | ٢ |
| | لا تقربوا الصلاة وأنتم سكارى حتى تعلموا ما تقولون | ٤٣ | م النسـاء | ٤ |
| | اليوم تجزون عذاب الهون بما كنتم تقولون على الله غير الحق | ٩٣ | م الأنعـام | ٦ |
| | قل إن الله لا يأمر بالفحشاء أتقولون على الله ما لا تعلمون | ٢٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | إن عندكم من سلطان بهذا أتقولون على الله ما لا تعلمون | ٦٨ | ك يـونس | ١٠ |
| | قال موسى أتقولون للحق لما جاءكم أسحر هذا ... ... | ٧٧ | ك « | ١٠ |
| | إنكم لتقولون قولا عظيما ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| | إذ تلقونه بألسنتكم وتقولون بأفواهكم ما ليس لكم به علم | ١٥ | م النـور | ٢٤ |
| | فقد كذبوكم بما تقولون فما تستطيعون صرفا ولا نصرا | ١٩ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | يا أيها الذين آمنوا لم تقولون ما لا تفعلون ... ... ... | ٢ | م الصـف | ٦١ |
| تَقُولُ: | ونقول ذوقوا عذاب الحريق ... ... ... ... ... | ١٨١ | م آل عمران | ٣ |
| (١١) | ثم نقول للذين أشركوا أين شركاؤكم الذين كنتم تزعمون | ٢٢ | ك الأنعـام | ٦ |
| | ثم نقول للذين أشركوا مكانكم أنتم وشركاؤكم ... ... | ٢٨ | ك يـونس | ١٠ |
| | إن نقول إلا اعتراك بعض آلهتنا بسوء ... ... ... | ٥٤ | ك هـود | ١١ |
| | فلما آتوه موثقهم قال الله على ما نقول وكيل ... ... | ٦٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | إنما قولنا لشيء إذا أردناه أن نقول له كن فيكون | ٤٠ | ك النحـل | ١٦ |
| | وسنقول له من أمرنا يسرا ... ... ... ... ... | ٨٨ | م الكهف | ١٨ |
| | أيما الأجلين قضيت فلا عدوان علىّ والله على ما نقول وكيل | ٢٨ | ك القصص | ٢٨ |
| | ونقول للذين ظلموا ذوقوا عذاب النار ... ... ... | ٤٢ | ك سـبإ | ٣٤ |
| | يوم نقول لجهنم هل امتلأت وتقول هل من مزيد | ٣٠ | ك قـ | ٥٠ |
| | ويقولون فى أنفسهم لولا يعذبنا الله بما نقول... ... | ٨ | م المجادلة | ٥٨ |
| لَنَقُولَنَّ: | ثم لنقولن لوليه ما شهدنا مهلك أهله ... ... ... | ٤٩ | ك النمـل | ٢٧ |
| يَقُلْ: | ومن يقـل منهم إنى إله من دونه فذلك نجزيه جهنم | ٢٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| يَقُولُ: | ومن النـاس من يقول آمنا بالله وباليـوم الآخر | | | |
| (٦٨) | وما هم بمؤمنين ... ... ... ... ... ... | ٨ | م البقـرة | ٢ |
| | قال إنه يقول إنها بقرة لا فارض ولا بكر عوان بين ذلك | ٦٨ | م « | ٢ |
| | قال إنه يقول إنها بقرة صفراء فاقع لونها ... ... ... | ٦٩ | م « | ٢ |
| | قال إنه يقول إنها بقرة لا ذلول تثير الأرض ... ... | ٧١ | م « | ٢ |
| | وإذا قضى أمرا فإنما يقول له كن فيكون... ... ... | ١١٧ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَقُولُ: | سيقول السفهاء من الناس ما ولاهم عن قبلتهم التى | | | |
| | كانوا عليها ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٢ | م البقـرة | ٢ |
| | فمن الناس من يقول ربنا آتنا فى الدنيا وما له | | | |
| | فى الآخرة من خلاق ... ... ... ... ... ... | ٢٠٠ | م « | ٢ |
| | ومنهم من يقول ربنا آتنا فى الدنيا حسنة وفى الآخرة حسنة | ٢٠١ | م « | ٢ |
| | حتى يقول الرسول والذين آمنوا معه متى نصر الله ... | ٢١٤ | م « | ٢ |
| | إذا قضى أمرا فإنما يقول له كن فيكون ... ... ... | ٤٧ | م آل عمران | ٣ |
| | ثم يقول للناس كونوا عبادا لى من دون الله ... ... | ٧٩ | م « | ٣ |
| | ويقول الذين آمنوا أهؤلاء الذين أقسموا بالله ... | ٥٣ | م المائدة | ٥ |
| | يوم يجمع الله الرسـل فيقول ماذا أجبتم ... ... ... | ١٠٩ | م « | ٥ |
| | يقول الذين كفروا إن هذا إلا أساطير الأولين ... | ٢٥ | ك الأنعـام | ٦ |
| | ويوم يقول كن فيكون ... ... ..... ... ... | ٧٣ | ك « | ٦ |
| | سيقول الذين أشركوا لو شاء الله ما أشركنا ... ... | ١٤٨ | ك « | ٦ |
| | يقول الذين نسوه من قبل قد جاءت رسل ربنا بالحق | ٥٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | إذ يقول المنافقون والذين فى قلوبهم مرض غرّ هؤلاء دينهم | ٤٩ | م الأنفـال | ٨ |
| | إذ يقول لصاحبه لا تحزن إن الله معنا ... ... ... | ٤٠ | م التـوبة | ٩ |
| | ومنهم من يقول ائذن لى ولا تفتنى ... ... ... ... | ٤٩ | م « | ٩ |
| | وإذا ما أنزلت سورة فمنهم من يقول أيكم زادته هذه إيمانا | ١٢٤ | م « | ٩ |
| | ويقول الأشهاد هؤلاء الذين كذبوا على ربهم... ... | ١٨ | ك هـود | ١١ |
| | ويقول الذين كفروا لولا أنزل عليه آية من ربه ... | ٧ | م الرعـد | ١٣ |
| | ويقول الذين كفروا لولا أنزل عليه آية من ربه ... | ٢٧ | م « | ١٣ |
| | ويقول الذين كفروا لست مرسلا ... ... ... ... | ٤٣ | م « | ١٣ |
| | فيقول الذين ظلموا ربنا أخرنا إلى أجل قريب... ... | ٤٤ | ك إبراهـيم | ١٤ |
| | ويقول أين شركائى الذين كنتم تشاقون فيهم ... ... | ٢٧ | ك النحـل | ١٦ |
| | إذ يقول الظالمون إن تتبعون إلا رجلا مسحورا ... | ٤٧ | ك الإسـراء | ١٧ |
| | ويقول يالينى لم أشرك بربى أحدا ... ... ... ... | ٤٢ | ك الكهف | ١٨ |
| | ويوم يقول نادوا شركائى الذين زعمتم ... ... ... | ٥٢ | ك « | ١٨ |
| | إذا قضى أمرا فإنما يقول له كن فيكون ... ... | ٣٥ | ك مـريم | ١٩ |
| | ويقول الإنسان أئذا ما متّ لسوف أخرج حيا ... | ٦٦ | ك « | ١٩ |
| | كلا سنكتب ما يقول ونمد له من العذاب مدّا ... | ٧٩ | ك « | ١٩ |
| | ونرثه ما يقول ويأتينا فردا ... ... ... ... ... | ٨٠ | ك « | ١٩ |
| | إذ يقول أمثلهم طريقة إن لبثتم إلا يوما ... ... | ١٠٤ | ك طـه | ٢٠ |
| | فيقول أأنتم أضللتم عبادى هؤلاء ... ... ... ... | ١٧ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| | يقول يالينى اتخذت مع الرسول سبيلا ... ... ... | ٢٧ | ك « | ٢٥ |
| | ويوم يناديهم فيقول أين شركائى الذين كنتم تزعمون | ٦٢ | ك القصص | ٢٨ |
| | ويوم يناديهم فيقول ماذا أجبتم المرسلين ... ... | ٦٥ | ك « | ٢٨ |
| | ويوم يناديهم فيقول أين شركائى الذين كنتم تزعمون | ٧٤ | ك « | ٢٨ |
| | ومن الناس من يقول آمنا بالله ... ... ... ... | ١٠ | م العنكبوت | ٢٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَقُولُ | : و يقول ذوقوا ما كنتم تعملون... ... ... ... ... | ٥٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | والله يقول الحق وهو يهدى السبيل ... ... ... ... | ٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | و إذ يقـول المنافقون والذين فى قلوبهـم مرض | | | |
| | ما وعدنا الله ورسوله إلا غرورا ... ... ... | ١٢ | م « | ٣٣ |
| | يقول الذين استضعفوا للذين استكبروا لولا أنتم | | | |
| | لكنا مؤمنين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك سبأ | ٣٤ |
| | ثم يقول للملائكة أهؤلاء إياكم كانوا يعبدون... ... | ٤٠ | ك « | ٣٤ |
| | إنما أمره إذا أراد شيئا أن يقول له كن فيكون ... | ٨٢ | ك يس | ٣٦ |
| | يقول أئنك لمن المصدقين ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| | أتقتلون رجلا أن يقول ربى الله وقد جاءكم بالبينات من ربكم | ٢٨ | ك غافر | ٤٠ |
| | فيقول الضعفاء للذين استكبروا إنا كنا لكم تبعا... ... | ٤٧ | ك « | ٤٠ |
| | فإذا قضى أمرا فإنما يقول له كن فيكون... ... ... | ٦٨ | ك « | ٤٠ |
| | فيقول ما هذا إلا أساطير الأولين ... ... ... ... | ١٧ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | و يقول الذين آمنوا لولا نزلت سورة ... ... ... | ٢٠ | م محمد | ٤٧ |
| | سيقول لك المخلفون من الأعراب شغلتنا أموالنا ... | ١١ | م الفتح | ٤٨ |
| | سيقول المخلفون إذا انطلقتم إلى مغانم لتأخذوها ذرونا نتبعكم | ١٥ | م « | ٤٨ |
| | مهطعين إلى الداع يقول الكافرون هذا يوم عسر .. | ٨ | ك القمر | ٥٤ |
| | يوم يقول المنافقون والمنافقات للذين آمنوا انظرونا | | | |
| | نقتبس من نوركم ... ... ... ... ... ... ... | ١٣ | م الحديد | ٥٧ |
| | فيقول رب لولا أخرتنى إلى أجل قريب ... ... ... | ١٠ | م المنافقون | ٦٣ |
| | فأما من أوتى كتابه بيمينه فيقول هاؤم اقرءوا كتابيه ... | ١٩ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | وأما من أوتى كتابه بشماله فيقول يا ليتنى لم أوت كتابيه | ٢٥ | ك « | ٦٩ |
| | وأنه كان يقول سفيهنا على الله شططا ... ... ... | ٤ | ك الجن | ٧٢ |
| | وليقول الذين فى قلوبهم مرض والكافرون ماذا أراد | | | |
| | الله بهذا مثلا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك المدثر | ٧٤ |
| | يقول الإنسان يومئذ أين المفر... ... ... ... ... | ١٠ | ك القيامة | ٧٥ |
| | و يقول الكافر يا ليتنى كنت ترابا ... ... ... ... | ٤٠ | ك النبأ | ٧٨ |
| | فأكرمه ونعمه فيقول ربى أكرمن ... ... ... ... | ١٥ | ك الفجر | ٨٩ |
| | وأما إذا ما ابتلاه فقدر عليه رزقه فيقول ربى أهانن | ١٦ | ك « | ٨٩ |
| | يقول يا ليتنى قدمت لحياتى ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك « | ٨٩ |
| | يقول أهلكت مالا لبدا... ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك البلد | ٩٠ |
| يَقُولَا | : وما يعلمان من أحد حتى يقولا إنما نحن فتنة فلا تكفر | ١٠٢ | م البقرة | ٢ |
| لَيَقُولُنَّ | : ليقولن كأن لم تكن بينكم وبينه مودة يا ليتنى كنت معهم | ٧٣ | م النساء | ٤ |
| (١٥) | ولئن سألتهم ليقولن إنما كنا نخوض ونلعب... ... ... | ٦٥ | م التوبة | ٩ |
| | ليقولن الذين كفروا إن هذا إلا سحر مبين ... ... | ٧ | ك هود | ١١ |
| | ولئن أخرنا عنهم العذاب إلى أمة معدودة ليقولن ما يحبسه | ٨ | ك « | ١١ |
| | ولئن أذقناه نعماء بعد ضراء مسته ليقولن ذهب السيئات عنى | ١٠ | ك « | ١١ |
| | ليقولن يا ويلنا إنا كنا ظالمين ... ... ... ... | ٤٦ | ك الأنبياء | ٢١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| لَيَقُولُنَّ | : ولئن جاء نصر من ربك ليقولن إنا كنا معكم ... | ١٠ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | ولئن سألتهم من خلق السموات والأرض وسخر | | | |
| | الشمس والقمر ليقولن الله ... ... ... ... ... | ٦١ | ك « | ٢٩ |
| | ولئن سألتهم من نزل من السماء ماء فأحيا به الأرض | | | |
| | من بعد موتها ليقولن الله ... ... ... ... ... | ٦٣ | ك « | ٢٩ |
| | ولئن جئتهم بآية ليقولن الذين كفروا إن أنتم إلا مبطلون | ٥٨ | ك الروم | ٣٠ |
| | ولئن سألتهم من خلق السموات والأرض ليقولن الله | ٢٥ | ك لقمان | ٣١ |
| | ولئن سألتهم من خلق السموات والأرض ليقولن الله | ٣٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ولئن أذقناه رحمة منا من بعد ضراء مسته ليقولن هذا لى | ٥٠ | ك فصلت | ٤١ |
| | ولئن سألتهم من خلق السموات والأرض ليقولن | | | |
| | خلقهن العزيز العليم... ... ... ... ... ... | ٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ولئن سألتهم من خلقهم ليقولن الله ... ... ... ... | ٨٧ | ك « | ٤٣ |
| يَقُولُوا | : فليتقوا الله وليقولوا قولا سديدا ... ... ... ... | ٩ | م النساء | ٤ |
| (١٧) | و إن تصبهم حسنة يقولوا هذه من عند الله ... ... | ٧٨ | م « | ٤ |
| | و إن تصبهم سيئة يقولوا هذه من عندك ... ... ... | ٧٨ | م « | ٤ |
| | وكذلك فتنا بعضهم ببعض ليقولوا أهؤلاء من الله | | | |
| | عليهم من بيننا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك الأنعام | ٦ |
| | وكذلك نصرف الآيات وليقولوا درست ... ... ... | ١٠٥ | ك « | ٦ |
| | ألم يؤخذ عليهم ميثاق الكتاب أن لا يقولوا على الله إلا الحق | ١٦٩ | م الأعراف | ٧ |
| | و إن تصبك مصيبة يقولوا قد أخذنا أمرنا من قبل | ٥٠ | م التوبة | ٩ |
| | أن يقولوا لولا أنزل عليه كنز أو جاء معه ملك ... | ١٢ | م هود | ١١ |
| | وقل لعبادى يقولوا التى هى أحسن ... ... ... ... | ٥٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| | الذين أخرجوا من ديارهم بغير حق إلا أن يقولوا ربنا الله | ٤٠ | م الحج | ٢٢ |
| | إذا دعوا إلى الله ورسوله ليحكم بينهم أن يقولوا سمعنا | ٥١ | م النور | ٢٤ |
| | فيقولوا هل نحن منظرون ... ... ... ... ... ... | ٢٠٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فيقولوا ربنا لولا أرسلت إلينا رسولا فنتبع آياتك | ٤٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | أحسب الناس أن يتركوا أن يقولوا آمنا وهم لا يفتنون | ٢ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | و إن يروا كسفا من السماء ساقطا يقولوا سحاب مركوم | ٤٤ | ك الطور | ٥٢ |
| | و إن يروا آية يعرضوا و يقولوا سحر مستمر ... ... | ٢ | ك القمر | ٥٤ |
| | و إن يقولوا تسمع لقولهم كأنهم خشب مسندة ... | ٤ | م المنافقون | ٦٣ |
| يَقُولُونَ | : وأما الذين كفروا فيقولون ماذا أراد الله بهذا مثلا | ٢٦ | م البقرة | ٢ |
| (٩٢) | فويل للذين يكتبون الكتاب بأيديهم ثم يقولون هذا | | | |
| | من عند الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٩ | م « | ٢ |
| | والراسخون فى العلم يقولون آمنا به كل من عند ربنا | ٧ | م آل عمران | ٣ |
| | الذين يقولون ربنا إننا آمنا فاغفر لنا ذنوبنا ... ... | ١٦ | م « | ٣ |
| | و يقولون على الله الكذب وهم يعلمون ... ... ... | ٧٥ | م « | ٣ |
| | و يقولون هو من عند الله وما هو من عند الله | ٧٨ | م « | ٣ |
| | و يقولون على الله الكذب وهم يعلمون ... ... ... | ٧٨ | م « | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَقُولُونَ | يقولون هل لنا من الأمر من شيء ... ... ... | ١٥٤ | م آل عمران | ٣ |
| | يقولون لو كان لنا من الأمر شيء ما قتلنا ههنا ... | ١٥٤ | م « | ٣ |
| | يقولون بأفواههم ما ليس في قلوبهم ... ... ... | ١٦٧ | م « | ٣ |
| | و يقولون سمعنا وعصينا وأسمع غير مسمع ... ... ... | ٤٦ | م النساء | ٤ |
| | و يقولون للذين كفروا هؤلاء أهدى من الذين آمنوا سبيلا | ٥١ | م « | ٤ |
| | الذين يقولون ربنا أخرجنا من هذه القرية الظالم أهلها | ٧٥ | م « | ٤ |
| | و يقولون طاعة ... ... ... ... ... ... ... | ٨١ | م « | ٤ |
| | و يقولون نؤمن ببعض ونكفر ببعض... ... ... ... | ١٥٠ | م « | ٤ |
| | يقولون إن أوتيتم هذا فخذوه و إن لم تؤتوه فاحذروا | ٤١ | م المائدة | ٥ |
| | يسارعون فيهم يقولون نخشى أن تصيبنا دائرة ... ... | ٥٢ | م « | ٥ |
| | و إن لم ينتهوا عما يقولون ليمسنّ الذين كفروا منهم عذاب أليم... ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | م « | ٥ |
| | يقولون ربنا آمنا فاكتبنا مع الشاهدين ... ... ... | ٨٣ | م « | ٥ |
| | قد نعلم إنه ليحزنك الذى يقولون... ... ... ... ... | ٣٣ | ك الأنعام | ٦ |
| | يأخذون عرض هذا الأدنى و يقولون سيغفر لنا ... | ١٦٩ | م الأعراف | ٧ |
| | ومنهم الذين يؤذون النبيّ و يقولون هو أذن ... ... | ٦١ | م التوبة | ٩ |
| | و يقولون هؤلاء شفعاؤنا عند الله ... ... ... ... | ١٨ | ك يونس | ١٠ |
| | و يقولون لولا أنزل عليه آية من ربه... ... ... ... | ٢٠ | ك « | ١٠ |
| | ومن يدبر الأمر فسيقولون الله فقل أفلا تتقون ... | ٣١ | ك « | ١٠ |
| | أم يقولون افتراه قل فأتوا بسورة مثله ... ... ... | ٣٨ | ك « | ١٠ |
| | و يقولون متى هذا الوعد إن كنتم صادقين... ... ... | ٤٨ | ك « | ١٠ |
| | أم يقولون افتراه قل فأتوا بعشر سور مثله... ... ... | ١٣ | ك هود | ١١ |
| | أم يقولون افتراه قل إن افتريته فعليّ إجرامى ... ... | ٣٥ | ك « | ١١ |
| | ولقد نعلم أنك يضيق صدرك بما يقولون ... ... ... | ٩٧ | ك الحجر | ١٥ |
| | الذين تتوفاهم الملائكة طيبين يقولون سلام عليكم ... | ٣٢ | ك النحل | ١٦ |
| | ولقد نعلم أنهم يقولون إنما يعلمه بشر... ... ... ... | ١٠٣ | ك « | ١٦ |
| | قل لو كان معه آلهة كما يقولون إذا لابتغوا إلى ذى العرش سبيلا ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| | سبحانه وتعالى عما يقولون علوا كبيرا... ... ... ... | ٤٣ | ك « | ١٧ |
| | أو خلقا مما يكبر فى صدوركم فسيقولون من يعيدنا ... | ٥١ | ك « | ١٧ |
| | فسينغضون إليك رءوسهم و يقولون متى هو ... ... | ٥١ | ك « | ١٧ |
| | و يقولون سبحان ربنا إن كان وعد ربنا لمفعولا ... | ١٠٨ | ك « | ١٧ |
| | كبرت كلمة تخرج من أفواههم إن يقولون إلا كذبا | ٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | سيقولون ثلاثة رابعهم كلبهم ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك « | ١٨ |
| | و يقولون خمسة سادسهم كلبهم رجما بالغيب ... ... | ٢٢ | ك « | ١٨ |
| | و يقولون سبعة وثامنهم كلبهم ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك « | ١٨ |
| | و يقولون يا ويلتنا ما لهذا الكتاب لا يغادر صغيرة ولا كبيرة إلا أحصاها ... ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك « | ١٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَقُولُونَ | نحن أعلم بما يقولون إذ يقول أمثلهم طريقة إن لبثتم إلا يوما ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٤ | ك طه | ٢٠ |
| | فاصبر على ما يقولون وسبح بحمد ربك ... ... ... ... | ١٣٠ | م « | ٢٠ |
| | و يقولون متى هذا الوعد إن كنتم صادقين... ... ... | ٣٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | أم يقولون به جنة بل جاءهم بالحق ... ... ... ... | ٧٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | سيقولون لله قل أفلا تذكرون ... ... ... ... ... | ٨٥ | ك « | ٢٣ |
| | سيقولون لله قل أفلا تتقون... ... ... ... ... ... | ٨٧ | ك « | ٢٣ |
| | سيقولون لله قل فأنى تسحرون ... ... ... ... ... | ٨٩ | ك « | ٢٣ |
| | يقولون ربنا آمنا فاغفر لنا وارحمنا ... ... ... ... | ١٠٩ | ك « | ٢٣ |
| | أولئك مبرءون مما يقولون ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | م النور | ٢٤ |
| | و يقولون آمنا بالله و بالرسول وأطعنا... ... ... ... | ٤٧ | م « | ٢٤ |
| | لا بشرى يومئذ للمجرمين و يقولون حجرا محجورا ... | ٢٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | والذين يقولون ربنا اصرف عنا عذاب جهنم... ... ... | ٦٥ | ك « | ٢٥ |
| | والذين يقولون ربنا هب لنا من أزواجنا وذرياتنا قرة أعين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٤ | ك « | ٢٥ |
| | وأنهم يقولون ما لا يفعلون ... ... ... ... ... ... | ٢٢٦ | م الشعراء | ٢٦ |
| | و يقولون متى هذا الوعد إن كنتم صادقين... ... ... | ٧١ | ك النمل | ٢٧ |
| | يقولون و يكأنّ الله يبسط الرزق لمن يشاء من عباده | ٨٢ | ك القصص | ٢٨ |
| | أم يقولون افتراه بل هو الحق من ربك ... ... ... | ٣ | ك السجدة | ٣٢ |
| | و يقولون متى هذا الفتح إن كنتم صادقين ... ... | ٢٨ | ك « | ٣٢ |
| | و يستأذن فريق منهم النبيّ يقولون إن بيوتنا عورة | ١٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | يوم تقلب وجوههم فى النار يقولون يا ليتنا أطعنا الله | ٦٦ | م « | ٣٣ |
| | و يقولون متى هذا الوعد إن كنتم صادقين ... ... | ٢٩ | ك سبأ | ٣٤ |
| | و يقولون متى هذا الوعد إن كنتم صادقين ... ... | ٤٨ | ك يس | ٣٦ |
| | و يقولون أئنا لتاركوا آلهتنا لشاعر مجنون ... ... | ٣٦ | ك الصافات | ٣٧ |
| | ألا إنهم من إفكهم ليقولون . ولد الله و إنهم لكاذبون | ١٥١ | ك « | ٣٧ |
| | و إن كانوا ليقولون . لو أن عندنا ذكرا من الأولين | ١٦٧ | ك « | ٣٧ |
| | اصبر على ما يقولون واذكر عبدنا داود ذا الأيد ... | ١٧ | ك ص | ٣٨ |
| | أم يقولون افترى على الله كذبا ... ... ... ... | ٢٤ | م الشورى | ٤٢ |
| | وترى الظالمين لما رأوا العذاب يقولون هل إلى مرد من سبيل ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك « | ٤٢ |
| | إن هؤلاء ليقولون . إن هى إلا موتتنا الأولى ... | ٣٤ | ك الدخان | ٤٤ |
| | أم يقولون افتراه قل إن افتريته فلا تملكون لى من الله شيئا | ٨ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | و إذ لم يهتدوا به فسيقولون هذا إفك قديم ... ... | ١١ | ك « | ٤٦ |
| | يقولون بألسنتهم ما ليس فى قلوبهم ... ... ... ... | ١١ | م الفتح | ٤٨ |
| | فسيقولون بل تحسدوننا بل كانوا لا يفقهون إلا قليلا | ١٥ | م « | ٤٨ |
| | فاصبر على ما يقولون وسبح بحمد ربك ... ... ... | ٣٩ | ك ق | ٥٠ |
| | نحن أعلم بما يقولون وما أنت عليهم بجبار ... ... | ٤٥ | ك « | ٥٠ |

| اللفظة | الآيـة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَقُولُونَ: | أم يقولون شاعر نتربص به ريب المنون ... | ٣٠ | ك الطـور | ٥٢ |
| | أم يقولون تقوّله بل لا يؤمنون ... ... ... ... | ٣٣ | ك « | ٥٢ |
| | أم يقولون نحن جميع منتصر ... ... ... ... | ٤٤ | م القمـر | ٥٤ |
| | وكانوا يقولون أئذا متنا وكنا ترابا وعظاما أئنا لمبعوثون | ٤٧ | ك الواقعـة | ٥٦ |
| | وإنهم ليقولون منكرا من القول وزورا ... ... ... | ٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| | ويقولون فى أنفسهم لولا يعذبنا الله بما نقول ... | ٨ | م « | ٥٨ |
| | يقولون ربنا اغفرلنا ولإخواننا الذين سبقونا بالإيمان | ١٠ | م الحشـر | ٥٩ |
| | ألم تر إلى الذين نافقوا يقولون لإخوانهم الذين كفروا | ١١ | م « | ٥٩ |
| | هم الذين يقولون لا تنفقوا على من عند رسـول الله حتى ينفضّوا ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | م المنافقون | ٦٣ |
| | يقولون لئن رجعنا إلى المدينة ليخرجنّ الأعز منها الأذل | ٨ | م « | ٦٣ |
| | يقولون ربنا أتمم لنا نورنا واغفر لنا ... ... ... | ٨ | م التحـريم | ٦٦ |
| | ويقولون متى هذا الوعد إن كنتم صادقين ... ... | ٢٥ | ك المـلك | ٦٧ |
| | ويقولون إنه لمجنون ... ... ... ... ... ... | ٥١ | ك القـلم | ٦٨ |
| | واصبر على ما يقولون واهجرهم هجرا جميلا ... ... | ١٠ | م المزمـل | ٧٣ |
| | يقولون أئنا لمردودون فى الحافرة ... ... ... ... | ١٠ | ك النازعات | ٧٩ |
| قُـلْ: | قل أتخذتم عند الله عهدا فلن يخلف الله عهده ... | ٨٠ | م البقـرة | ٢ |
| (٣٣٢) | قل فلم تقتلون أنبياء الله من قبل إن كنتم مؤمنين ... | ٩١ | م « | ٢ |
| | قل بئسما يأمركم به إيمانكم إن كنتم مؤمنين... ... ... | ٩٣ | م « | ٢ |
| | قل إن كانت لكم الدار الآخرة عند الله خالصة من دون الناس فتمنوا الموت ... ... ... ... ... | ٩٤ | م « | ٢ |
| | قل من كان عدوا لجبريل فإنه نزله على قلبك ... ... | ٩٧ | م « | ٢ |
| | تلك أمانيهم قل هاتوا برهانكم إن كنتم صادقين ... | ١١١م | « | ٢ |
| | قل إن هدى الله هو الهدى ... ... ... ... ... | ١٢٠م | « | ٢ |
| | قل بل ملة إبراهيم حنيفا وما كان من المشركين ... | ١٣٥م | « | ٢ |
| | قل أتحاجوننا فى الله وهو ربنا وربكم ... ... ... | ١٣٩م | « | ٢ |
| | قل أأنتم أعلم أم الله ... ... ... ... ... ... | ١٤٠م | « | ٢ |
| | قل لله المشرق والمغرب يهدى من يشاء إلى صراط مستقيم | ١٤٢م | « | ٢ |
| | يسئلونك عن الأهلة قل هى مواقيت للناس والحج ... | ١٨٩م | « | ٢ |
| | قل ما أنفقتم من خير فللوالدين والأقربين... ... ... | ٢١٥م | « | ٢ |
| | يسئلونك عن الشهر الحرام قتال فيه قل قتال فيه كبير | ٢١٧م | « | ٢ |
| | يسئلونك عن الخمر والميسر قل فيهما إثم كبير ... ... | ٢١٩م | « | ٢ |
| | ويسئلونك ماذا ينفقون قل العفو ... ... ... ... | ٢١٩م | « | ٢ |
| | ويسئلونك عن اليتامى قل إصلاح لهم خير... ... ... | ٢٢٠م | « | ٢ |
| | ويسئلونك عن المحيض قل هو أذى ... ... ... ... | ٢٢٢م | « | ٢ |
| | قل للذين كفروا ستغلبون وتحشرون إلى جهنم ... ... | ١٢ | م آل عمران | ٣ |
| | قل أؤنبئكم بخير من ذلكم ... ... ... ... ... | ١٥ | م « | ٣ |
| | فإن حاجوك فقل أسلمت وجهى لله ومن اتبعن ... | ٢٠ | م « | ٣ |

| اللفظة | الآيـة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قُـلْ: | وقل للذين أوتوا الكتاب والأميين أأسلمتم ... ... | ٢٠ | م آل عمران | ٣ |
| | قل اللهم مالك الملك تؤتى الملك من تشاء ... ... | ٢٦ | م « | ٣ |
| | قل إن تخفوا ما فى صدوركم أو تبدوه يعلمه الله ... | ٢٩ | م « | ٣ |
| | قل إن كنتم تحبون الله فاتبعونى يحببكم الله ... ... | ٣١ | م « | ٣ |
| | قل أطيعوا الله والرسول ... ... ... ... ... | ٣٢ | م « | ٣ |
| | فمن حاجك فيه من بعد ما جاءك من العلم فقل تعالوا | ٦١ | م « | ٣ |
| | قل يأهل الكتاب تعالوا إلى كلمة سواء بيننا وبينكم | ٦٤ | م « | ٣ |
| | قل إن الهدى هدى الله أن يؤتى أحد مثل ما أوتيتم | ٧٣ | م « | ٣ |
| | قل إن الفضل بيد الله يؤتيه من يشاء ... ... ... | ٧٣ | م « | ٣ |
| | قل آمنا بالله وما أنزل علينا ... ... ... ... ... | ٨٤ | م « | ٣ |
| | قل فأتوا بالتوراة فاتلوها إن كنتم صادقين ... ... | ٩٣ | م « | ٣ |
| | قل صدق الله فاتبعوا ملة إبراهيم حنيفا ... ... ... | ٩٥ | م « | ٣ |
| | قل يأهل الكتاب لم تكفرون بآيات الله ... ... ... | ٩٨ | م « | ٣ |
| | قل يأهل الكتاب لم تصدون عن سبيل الله ... ... | ٩٩ | م « | ٣ |
| | قل موتوا بغيظكم إن الله عليم بذات الصدور ... ... | ١١٩م | « | ٣ |
| | قل إن الأمر كله لله ... ... ... ... ... ... | ١٥٤م | « | ٣ |
| | قل لو كنتم فى بيوتكم لبرز الذين كتب عليهم القتل إلى مضاجعهم... ... ... ... ... ... ... | ١٥٤م | « | ٣ |
| | قل هو من عند أنفسكم إن الله على كل شىء قدير ... | ١٦٥م | « | ٣ |
| | قل فادرءوا عن أنفسكم الموت إن كنتم صادقين ... | ١٦٨م | « | ٣ |
| | قل قد جاءكم رسل من قبلى بالبينات وبالذى قلتم ... | ١٨٣م | « | ٣ |
| | فأعرض عنهم وعظهم وقل لهم فى أنفسهم قولا بليغا | ٦٣ | م النسـاء | ٤ |
| | قل متاع الدنيا قليل والآخرة خير لمن اتقى ... ... ... | ٧٧ | م « | ٤ |
| | وإن تصبهم سيئة يقولوا هذه من عندك قل كل من عند الله | ٧٨ | م « | ٤ |
| | ويستفتونك فى النساء قل الله يفتيكم فيهن... ... ... | ١٢٧م | « | ٤ |
| | يستفتونك قل الله يفتيكم فى الكلالة ... ... ... ... | ١٧٦م | « | ٤ |
| | يسئلونك ماذا أحل لهم قل أحل لكم الطيبات... ... | ٤ | م المائدة | ٥ |
| | قل فمن يملك من الله شيئا إن أراد أن يهلك المسيح | ١٧ | م « | ٥ |
| | قل فلم يعذبكم بذنوبكم بل أنتم بشر ممن خلق ... ... | ١٨ | م « | ٥ |
| | قل يأهل الكتاب هل تنقمون منا إلا أن آمنا بالله | ٥٩ | م « | ٥ |
| | قل هل أنبئكم بشر من ذلك مثوبة عند الله ... ... | ٦٠ | م « | ٥ |
| | قل يأهل الكتاب لستم على شىء حتى تقيموا التوراة والإنجيل ... ... ... ... ... ... ... | ٦٨ | م « | ٥ |
| | قل أتعبدون من دون الله مالا يملك لكم ضرا ولا نفعا | ٧٦ | م « | ٥ |
| | قل يأهل الكتاب لا تغلوا فى دينكم غير الحق ... ... | ٧٧ | م « | ٥ |
| | قل لا يستوى الخبيث والطيب ولو أعجبك كثرة الخبيث | ١٠٠م | « | ٥ |
| | قل سيروا فى الأرض ثم انظروا كيف كان عاقبة المكذبين | ١١ | ك الأنعـام | ٦ |
| | قل لمن ما فى السموات والأرض... ... ... ... ... | ١٢ | ك « | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قُـلْ: | قل لله كتب على نفسه الرحمة ... ... ... ... ... | ١٢ ك | الأنعام | ٦ |
| | قل أغير الله أتخذ وليا فاطر السموات والأرض ... | ١٤ ك | « | ٦ |
| | قل إنى أمرت أن أكون أول من أسلم ... ... ... | ١٤ ك | « | ٦ |
| | قل إنى أخاف إن عصيت ربى عذاب يوم عظيم ... | ١٥ ك | « | ٦ |
| | قل أى شىء أكبر شهادة ... ... ... ... ... | ١٩ ك | « | ٦ |
| | قل الله شهيد بينى وبينكم ... ... ... ... ... | ١٩ ك | « | ٦ |
| | أئنكم لتشهدون أن مع الله آلهة أخرى قل لا أشهد ... | ١٩ ك | « | ٦ |
| | قل إنما هو إله واحد وإننى برىء مما تشركون ... | ١٩ ك | « | ٦ |
| | قل إن الله قادر على أن ينزل آية ولكن أكثرهم لا يعلمون | ٣٧ ك | « | ٦ |
| | قل أرأيتكم إن أتاكم عذاب الله أو أتتكم الساعة ... | ٤٠ ك | « | ٦ |
| | قل أرأيتم إن أخذ الله سمعكم وأبصاركم ... ... ... | ٤٦ ك | « | ٦ |
| | قل أرأيتكم إن أتاكم عذاب الله بغتة أو جهرة ... ... | ٤٧ ك | « | ٦ |
| | قل لا أقول لكم عندى خزائن الله ولا أعلم الغيب ... | ٥٠ ك | « | ٦ |
| | قل هل يستوى الأعمى والبصير أفلا تتفكرون ... ... | ٥٠ ك | « | ٦ |
| | وإذا جاءك الذين يؤمنون بآياتنا فقل سلام عليكم ... | ٥٤ ك | « | ٦ |
| | قل إنى نهيت أن أعبد الذين تدعون من دون الله ... | ٥٦ ك | « | ٦ |
| | قل لا أتبع أهواءكم قد ضللت إذا وما أنا من المهتدين | ٥٦ ك | « | ٦ |
| | قل إنى على بينة من ربى وكذبتم به ... ... ... ... | ٥٧ ك | « | ٦ |
| | قل لو أن عندى ما تستعجلون به لقضى الأمر بينى وبينكم | ٥٨ ك | « | ٦ |
| | قل من ينجيكم من ظلمات البر والبحر ... ... ... ... | ٦٣ ك | « | ٦ |
| | قل الله ينجيكم منها ومن كل كرب ثم أنتم تشركون ... | ٦٤ ك | « | ٦ |
| | قل هو القادر على أن يبعث عليكم عذابا من فوقكم ... | ٦٥ ك | « | ٦ |
| | وكذب به قومك وهو الحق قل لست عليكم بوكيل ... | ٦٦ ك | « | ٦ |
| | قل أندعوا من دون الله ما لا ينفعنا ولا يضرنا ... | ٧١ ك | « | ٦ |
| | قل إن هدى الله هو الهدى ... ... ... ... ... ... | ٧١ ك | « | ٦ |
| | قل لا أسئلكم عليه أجرا إن هو إلا ذكرى للعالمين ... | ٩٠ ك | « | ٦ |
| | قل من أنزل الكتاب الذى جاء به موسى نورا وهدى للناس | ٩١ م | « | ٦ |
| | قل الله ثم ذرهم فى خوضهم يلعبون ... ... ... ... | ٩١ م | « | ٦ |
| | قل إنما الآيات عند الله وما يشعركم أنها إذا جاءت لا يؤمنون | ١٠٩ ك | « | ٦ |
| | قل يا قوم اعملوا على مكانتكم إنى عامل ... ... ... | ١٣٥ ك | « | ٦ |
| | قل آلذكرين حرم أم الأنثيين ... ... ... ... ... | ١٤٣ ك | « | ٦ |
| | قل آلذكرين حرم أم الأنثيين ... ... ... ... ... | ١٤٤ ك | « | ٦ |
| | قل لا أجد فى ما أوحى إلىّ محرما على طاعم يطعمه | ١٤٥ ك | « | ٦ |
| | فإن كذبوك فقل ربكم ذو رحمة واسعة ... ... ... | ١٤٧ ك | « | ٦ |
| | قل هل عندكم من علم فتخرجوه لنا ... ... ... ... | ١٤٨ ك | « | ٦ |
| | قل فلله الحجة البالغة فلو شاء لهداكم أجمعين ... ... | ١٤٩ ك | « | ٦ |
| | قل هلم شهداءكم الذين يشهدون أن الله حرم هذا ... | ١٥٠ ك | « | ٦ |
| | قل تعالوا أتل ما حرم ربكم عليكم ... ... ... ... | ١٥١ م | « | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قُـلْ: | قل انتظروا إنا منتظرون ... ... ... ... ... ... | ١٥٨ ك | الأنعام | ٦ |
| | قل إننى هدانى ربى إلى صراط مستقيم ... ... ... | ١٦١ ك | « | ٦ |
| | قل إن صلاتى ونسكى ومحياى ومماتى لله رب العالمين | ١٦٢ ك | « | ٦ |
| | قل أغير الله أبغى ربا وهو رب كل شىء ... ... ... | ١٦٤ ك | « | ٦ |
| | قل إن الله لا يأمر بالفحشاء ... ... ... ... ... | ٢٨ ك | الأعراف | ٧ |
| | قل أمر ربى بالقسط ... ... ... ... ... ... ... | ٢٩ ك | « | ٧ |
| | قل من حرم زينة الله التى أخرج لعباده والطيبات من الرزق | ٣٢ ك | « | ٧ |
| | قل هى للذين آمنوا فى الحياة الدنيا خالصة يوم القيامة | ٣٢ ك | « | ٧ |
| | قل إنما حرم ربى الفواحش ما ظهر منها وما بطن | ٣٣ ك | « | ٧ |
| | قل يأيها الناس إنى رسول الله إليكم جميعا ... ... ... | ١٥٨ ك | « | ٧ |
| | يسئلونك عن الساعة أيان مرساها قل إنما علمها عند ربى | ١٨٧ ك | « | ٧ |
| | قل إنما علمها عند الله ولكن أكثر الناس لا يعلمون | ١٨٧ ك | « | ٧ |
| | قل لا أملك لنفسى نفعا ولا ضرا إلا ما شاء الله ... | ١٨٨ ك | « | ٧ |
| | قل ادعوا شركاءكم ثم كيدون فلا تنظرون ... ... ... | ١٩٥ ك | « | ٧ |
| | قل إنما أتبع ما يوحى إلىّ من ربى ... ... ... ... | ٢٠٣ ك | « | ٧ |
| | يسئلونك عن الأنفال قل الأنفال لله والرسول ... ... | ١ م | الأنفال | ٨ |
| | قل للذين كفروا إن ينتهوا يغفر لهم ما قد سلف ... ... | ٣٨ م | « | ٨ |
| | يأيها النبىّ قل لمن فى أيديكم من الأسرى ... ... ... | ٧٠ م | « | ٨ |
| | قل إن كان آباؤكم وأبناؤكم وإخوانكم وأزواجكم ... | ٢٤ م | التوبة | ٩ |
| | قل لن يصيبنا إلا ما كتب الله لنا هو مولانا ... ... | ٥١ م | « | ٩ |
| | قل هل تربصون بنا إلا إحدى الحسنيين ... ... ... | ٥٢ م | « | ٩ |
| | قل أنفقوا طوعا أو كرها لن يتقبل منكم ... ... ... | ٥٣ م | « | ٩ |
| | قل أذن خير لكم يؤمن بالله ويؤمن للمؤمنين ... ... | ٦١ م | « | ٩ |
| | قل استهزءوا إن الله مخرج ما تحذرون ... ... ... | ٦٤ م | « | ٩ |
| | قل أبالله وآياته ورسوله كنتم تستهزءون ... ... ... | ٦٥ م | « | ٩ |
| | قل نار جهنم أشد حرا لو كانوا يفقهون ... ... ... | ٨١ م | « | ٩ |
| | فقل لن تخرجوا معى أبدا ولن تقاتلوا معى عدوا ... | ٨٣ م | « | ٩ |
| | قل لا تعتذروا لن نؤمن لكم قد نبأنا الله من أخباركم | ٩٤ م | « | ٩ |
| | وقل اعملوا فسيرى الله عملكم ورسوله والمؤمنون ... | ١٠٥ م | « | ٩ |
| | فإن تولوا فقل حسبى الله لا إله إلا هو عليه توكلت | ١٢٩ ك | « | ٩ |
| | قل ما يكون لى أن أبدله من تلقاء نفسى ... ... ... | ١٥ ك | يونس | ١٠ |
| | قل لو شاء الله ما تلوته عليكم ولا أدراكم به ... ... | ١٦ ك | « | ١٠ |
| | قل أتنبئون الله بما لا يعلم فى السموات ولا فى الأرض | ١٨ ك | « | ١٠ |
| | فقل إنما الغيب لله فانتظروا إنى معكم من المنتظرين | ٢٠ ك | « | ١٠ |
| | قل الله أسرع مكرا إن رسلنا يكتبون ما تمكرون ... | ٢١ ك | « | ١٠ |
| | قل من يرزقكم من السماء والأرض ... ... ... ... | ٣١ ك | « | ١٠ |
| | ومن يدبر الأمر فسيقولون الله فقل أفلا تتقون ... | ٣١ ك | « | ١٠ |
| | قل هل من شركائكم من يبدؤا الخلق ثم يعيده ... ... | ٣٤ ك | « | ١٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قُـلْ: | قل الله يبدؤا الخلق ثم يعيده فأنى تؤفكون ... ... | ٣٤ | ك يـونس | ١٠ |
| | قل هل من شركائكم من يهدى إلى الحق ... ... ... | ٣٥ | ك « | ١٠ |
| | قل الله يهدى للحق ... ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك « | ١٠ |
| | أم يقولون افتراه قل فأتوا بسورة مثله ... ... ... | ٣٨ | ك « | ١٠ |
| | وإن كذبوك فقل لى عملى ولكم عملكم ... ... ... | ٤١ | ك « | ١٠ |
| | قل لا أملك لنفسى ضرا ولا نفعا إلا ما شاء الله | ٤٩ | ك « | ١٠ |
| | قل أرأيتم إن أتاكم عذابه بياتا أو نهارا ... ... ... | ٥٠ | ك « | ١٠ |
| | ويستنبئونك أحق هو قل إى وربى إنه لحق ... ... | ٥٣ | ك « | ١٠ |
| | قل بفضل الله وبرحمته فبذلك فليفرحوا ... ... ... | ٥٨ | ك « | ١٠ |
| | قل أرأيتم ما أنزل الله لكم من رزق فجعلتم منه حراما وحلالا | ٥٩ | ك « | ١٠ |
| | قل آلله أذن لكم أم على الله تفترون ... ... ... | ٥٩ | ك « | ١٠ |
| | قل إن الذين يفترون على الله الكذب لا يفلحون ... | ٦٩ | ك « | ١٠ |
| | قل انظروا ماذا فى السموات والأرض ... ... ... | ١٠١ | ك « | ١٠ |
| | قل فانتظروا إنى معكم من المنتظرين ... ... ... | ١٠٢ | ك « | ١٠ |
| | قل يأيها الناس إن كنتم فى شك من دينى فلا أعبد الذين تعبدون من دون الله ... ... ... ... | ١٠٤ | ك « | ١٠ |
| | قل يأيها الناس قد جاءكم الحق من ربكم ... ... ... | ١٠٨ | ك « | ١٠ |
| | قل فأتوا بعشر سور مثله مفتريات ... ... ... ... | ١٣ | ك هـود | ١١ |
| | قل إن افتريته فعلىّ إجرامى وأنا برىء مما تجرمون | ٣٥ | ك « | ١١ |
| | وقل للذين لا يؤمنون اعملوا على مكانتكم إنا عاملون | ١٢١ | ك « | ١١ |
| | قل هذه سبيلى أدعوا إلى الله ... ... ... ... ... | ١٠٨ | ك يوسـف | ١٢ |
| | قل من رب السموات والأرض ... ... ... ... ... | ١٦ | م الرعـد | ١٣ |
| | قل الله ... ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٦ | م « | ١٣ |
| | قل أفاتخذتم من دونه أولياء ... ... ... ... ... | ١٦ | م « | ١٣ |
| | قل هل يستوى الأعمى والبصير ... ... ... ... ... | ١٦ | م « | ١٣ |
| | قل الله خالق كل شىء وهو الواحد القهار ... ... | ١٦ | م « | ١٣ |
| | قل إن الله يضل من يشاء ويهدى إليه من أناب | ٢٧ | م « | ١٣ |
| | قل هو ربى لا إله إلا هو عليه توكلت وإليه متاب | ٣٠ | م « | ١٣ |
| | وجعلوا لله شركاء قل سموهم ... ... ... ... ... | ٣٣ | م « | ١٣ |
| | قل إنما أمرت أن أعبد الله ولا أشرك به ... ... | ٣٦ | م « | ١٣ |
| | قل كفى بالله شهيدا بينى وبينكم ومن عنده علم الكتاب | ٤٣ | م « | ١٣ |
| | قل تمتعوا فإن مصيركم إلى النار ... ... ... ... | ٣٠ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | قل لعبادى الذين آمنوا يقيموا الصلاة ... ... ... | ٣١ | ك « | ١٤ |
| | وقل إنى أنا النذير المبين ... ... ... ... ... ... | ٨٩ | ك الحجـر | ١٥ |
| | قل نزله روح القدس من ربك بالحق ... ... ... | ١٠٢ | ك النحـل | ١٦ |
| | فلا تقل لهما أفٍّ ولا تنهرهما وقل لهما قولا كريما ... | ٢٣ | ك الإسـراء | ١٧ |
| | وقل رب ارحمهما كما ربيانى صغيرا ... ... ... ... | ٢٤ | ك « | ١٧ |
| | فقل لهم قولا ميسورا ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ١٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قُـلْ: | قل لو كان معه آلهة كما يقولون إذا لابتغوا إلى ذى العرش سبيلا ... ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك الإسـراء | ١٧ |
| | قل كونوا حجارة أو حديدا ... ... ... ... ... ... | ٥٠ | ك « | ١٧ |
| | فسيقولون من يعيدنا قل الذى فطركم أول مرة ... ... | ٥١ | ك « | ١٧ |
| | ويقولون متى هو قل عسى أن يكون قريبا ... ... | ٥١ | ك « | ١٧ |
| | وقل لعبادى يقولوا التى هى أحسن ... ... ... ... | ٥٣ | ك « | ١٧ |
| | قل ادعوا الذين زعمتم من دونه فلا يملكون كشف الضر عنكم ولا تحويلا ... ... ... ... ... ... | ٥٦ | ك « | ١٧ |
| | وقل رب أدخلنى مدخل صدق وأخرجنى مخرج صدق | ٨٠ | م « | ١٧ |
| | وقل جاء الحق وزهق الباطل إن الباطل كان زهوقا | ٨١ | ك « | ١٧ |
| | قل كل يعمل على شاكلته ... ... ... ... ... ... | ٨٤ | ك « | ١٧ |
| | قل الروح من أمر ربى وما أوتيتم من العلم إلا قليلا | ٨٥ | ك « | ١٧ |
| | قل لئن اجتمعت الإنس والجن على أن يأتوا بمثل هذا القرآن لا يأتون بمثله ... ... ... ... ... ... | ٨٨ | ك « | ١٧ |
| | قل سبحان ربى هل كنت إلا بشرا رسولا ... ... | ٩٣ | ك « | ١٧ |
| | قل لو كان فى الأرض ملائكة يمشون مطمئنين لنزلنا عليهم من السماء ملكا رسولا... ... ... ... ... | ٩٥ | ك « | ١٧ |
| | قل كفى بالله شهيدا بينى وبينكم... ... ... ... ... | ٩٦ | ك « | ١٧ |
| | قل لو أنتم تملكون خزائن رحمة ربى إذا لأمسكتم خشية الإنفاق... ... ... ... ... ... ... | ١٠٠ | ك « | ١٧ |
| | قل آمنوا به أو لا تؤمنوا ... ... ... ... ... ... | ١٠٧ | ك « | ١٧ |
| | قل ادعوا الله أو ادعوا الرحمن ... ... ... ... ... | ١١٠ | ك « | ١٧ |
| | وقل الحمد لله الذى لم يتخذ ولدا ولم يكن له شريك فى الملك | ١١١ | ك « | ١٧ |
| | قل ربى أعلم بعدتهم ما يعلمهم إلا قليل ... ... ... | ٢٢ | ك الكهف | ١٨ |
| | وقل عسى أن يهدين ربى لأقرب من هذا رشدا ... | ٢٤ | ك « | ١٨ |
| | قل الله أعلم بما لبثوا ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك « | ١٨ |
| | وقل الحق من ربكم فمن شاء فليؤمن ومن شاء فليكفر | ٢٩ | ك « | ١٨ |
| | ويسئلونك عن ذى القرنين قل سأتلوا عليكم منه ذكرا | ٨٣ | م « | ١٨ |
| | قل هل ننبئكم بالأخسرين أعمالا ... ... ... ... | ١٠٣ | ك « | ١٨ |
| | قل لو كان البحر مدادا لكلمات ربى لنفد البحر ... | ١٠٩ | ك « | ١٨ |
| | قل إنما أنا بشر مثلكم يوحى إلىّ أنما إلهكم إله واحد | ١١٠ | ك « | ١٨ |
| | قل من كان فى الضلالة فليمدد له الرحمن مدا ... ... | ٧٥ | ك مـريم | ١٩ |
| | ويسئلونك عن الجبال فقل ينسفها ربى نسفا ... ... | ١٠٥ | ك طـه | ٢٠ |
| | وقل رب زدنى علما ... ... ... ... ... ... ... | ١١٤ | ك « | ٢٠ |
| | قل كل متربص فتربصوا ... ... ... ... ... ... | ١٣٥ | ك « | ٢٠ |
| | أم اتخذوا من دونه آلهة قل هاتوا برهانكم ... ... | ٢٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | قل من يكلؤكم بالليل والنهار من الرحمن ... ... ... | ٤٢ | ك « | ٢١ |
| | قل إنما أنذركم بالوحى... ... ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك « | ٢١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قُـلْ | : قل إنما يوحى إلىّ أنما إلهكم إله واحد ... ... ... | ١٠٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | فإن تولوا فقل آذنتكم على سواء ... ... ... ... ... | ١٠٩ | ك » | ٢١ |
| | قل يأيها الناس إنما أنا لكم نذير مبين ... ... ... | ٤٩ | م الحـــج | ٢٢ |
| | وإن جادلوك فقل الله أعلم بما تعملون ... ... ... | ٦٨ | م » | ٢٢ |
| | قل أفأنبئكم بشر من ذلكم النار وعدها الله الذين كفروا | ٧٢ | م » | ٢٢ |
| | فقل الحمد لله الذى نجانا من القوم الظالمين... ... ... | ٢٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وقل رب أنزلنى منزلا مباركا وأنت خير المنزلين... ... | ٢٩ | ك » | ٢٣ |
| | قل لمن الأرض ومن فيها إن كنتم تعلمون ... ... ... | ٨٤ | ك » | ٢٣ |
| | سيقولون لله قل أفلا تذكرون ... ... ... ... ... | ٨٥ | ك » | ٢٣ |
| | قل من رب السموات السبع ورب العرش العظيم ... | ٨٦ | ك » | ٢٣ |
| | سيقولون لله قل أفلا تتقون... ... ... ... ... ... | ٨٧ | ك » | ٢٣ |
| | قل من بيده ملكوت كل شىء وهو يجير ولا يجار عليه | ٨٨ | ك » | ٢٣ |
| | سيقولون لله قل فأنى تسحرون ... ... ... ... ... | ٨٩ | ك » | ٢٣ |
| | قل رب إما ترينى ما يوعدون ... ... ... ... ... | ٩٣ | ك » | ٢٣ |
| | وقل رب أعوذ بك من همزات الشياطين ... ... ... | ٩٧ | ك » | ٢٣ |
| | وقل رب اغفر وارحم وأنت خير الراحمين... ... ... | ١١٨ | ك » | ٢٣ |
| | قل للمؤمنين يغضوا من أبصارهم ويحفظوا فروجهم | ٣٠ | م النـــور | ٢٤ |
| | وقل للمؤمنات يغضضن من أبصارهن ويحفظن فروجهن | ٣١ | م » | ٢٤ |
| | قل لا تقسموا طاعة معروفة... ... ... ... ... ... | ٥٣ | م » | ٢٤ |
| | قل أطيعوا الله وأطيعوا الرسول... ... ... ... ... | ٥٤ | م » | ٢٤ |
| | قل أنزله الذى يعلم السر فى السموات والأرض ... | ٦ | ك الفـــرقان | ٢٥ |
| | قل أذلك خير أم جنة الخلد التى وعد المتقون ... ... | ١٥ | ك » | ٢٥ |
| | قل ما أسئلكم عليه من أجر إلا من شاء أن يتخذ إلى ربه سبيلا | ٥٧ | ك » | ٢٥ |
| | قل ما يعبؤا بكم ربى لولا دعاؤكم ... ... ... ... | ٧٧ | ك » | ٢٥ |
| | فإن عصوك فقل إنى برىء مما تعملون. ... ... ... | ٢١٦ | ك الشـــعراء | ٢٦ |
| | قل الحمد لله وسلام على عباده الذين اصطفى ... ... | ٥٩ | ك النمـــل | ٢٧ |
| | أإله مع الله قل هاتوا برهانكم إن كنتم صادقين ... | ٦٤ | ك » | ٢٧ |
| | قل لا يعلم من فى السموات والأرض الغيب إلا الله | ٦٥ | ك » | ٢٧ |
| | قل سيروا فى الأرض فانظروا كيف كان عاقبة المجرمين | ٦٩ | ك » | ٢٧ |
| | قل عسى أن يكون ردف لكم بعض الذى تستعجلون | ٧٢ | ك » | ٢٧ |
| | ومن ضل فقل إنما أنا من المنذرين ... ... ... ... | ٩٢ | ك » | ٢٧ |
| | وقل الحمد لله سيريكم آياته فتعرفونها ... ... ... | ٩٣ | ك » | ٢٧ |
| | قل فأتوا بكتاب من عند الله هو أهدى منهما أتبعه... | ٤٩ | ك القصص | ٢٨ |
| | قل أرأيتم إن جعل الله عليكم الليل سرمدا إلى يوم القيامة | ٧١ | ك » | ٢٨ |
| | قل أرأيتم إن جعل الله عليكم النهار سرمدا إلى يوم القيامة | ٧٢ | ك » | ٢٨ |
| | قل ربى أعلم من جاء بالهدى ومن هو فى ضلال مبين | ٨٥ | م » | ٢٨ |
| | قل سيروا فى الأرض فانظروا كيف بدأ الخلق... ... | ٢٠ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | قل إنما الآيات عند الله وإنما أنا نذير مبين ... ... | ٥٠ | ك » | ٢٩ |
| | قل كفى بالله بينى وبينكم شهيدا ... ... ... ... | ٥٢ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | قل الحمد لله بل أكثرهم لا يعقلون ... ... ... ... | ٦٣ | ك » | ٢٩ |
| | قل سيروا فى الأرض فانظروا كيف كان عاقبة الذين من قبل ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك الـــروم | ٣٠ |
| | قل الحمد لله بل أكثرهم لا يعلمون ... ... ... ... | ٢٥ | ك لقمان | ٣١ |
| | قل يتوفاكم ملك الموت الذى وكل بكم ثم إلى ربكم ترجعون | ١١ | ك الســجدة | ٣٢ |
| | قل يوم الفتح لا ينفع الذين كفروا إيمانهم ... ... | ٢٩ | ك » | ٣٢ |
| | قل لن ينفعكم الفرار إن فررتم من الموت أو القتل ... | ١٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | قل من ذا الذى يعصمكم من الله إن أراد بكم سوءا | ١٧ | م » | ٣٣ |
| | قل لأزواجك إن كنتن تردن الحياة الدنيا وزينتها فتعالين أمتعكن... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م » | ٣٣ |
| | قل لأزواجك وبناتك ونساء المؤمنين يدنين عليهن من جلابيبهن ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٩ | م » | ٣٣ |
| | يسئلك الناس عن الساعة قل إنما علمها عند الله ... | ٦٣ | م » | ٣٣ |
| | قل بلى وربى لتأتينكم عالم الغيب ... ... ... ... ... | ٣ | ك ســبأ | ٣٤ |
| | قل ادعوا الذين زعمتم من دون الله ... ... ... ... | ٢٢ | ك » | ٣٤ |
| | قل من يرزقكم من السموات والأرض ... ... ... ... | ٢٤ | ك » | ٣٤ |
| | قـل الله... ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك » | ٣٤ |
| | قل لا تسئلون عما أجرمنا ولا نسئل عما تعملون ... | ٢٥ | ك » | ٣٤ |
| | قل يجمع بيننا ربنا ثم يفتح بيننا بالحق ... ... ... | ٢٦ | ك » | ٣٤ |
| | قل أرونى الذين ألحقتم به شركاء كلا ... ... ... | ٢٧ | ك » | ٣٤ |
| | قل لكم ميعاد يوم لا تستأخرون عنه ساعة ولا تستقدمون | ٣٠ | ك » | ٣٤ |
| | قل إن ربى يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ... ... ... | ٣٦ | ك » | ٣٤ |
| | قل إن ربى يبسط الرزق لمن يشاء من عباده ويقدر له | ٣٩ | ك » | ٣٤ |
| | قل إنما أعظكم بواحدة ... ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك » | ٣٤ |
| | قل ما سألتكم من أجر فهو لكم ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك » | ٣٤ |
| | قل إن ربى يقذف بالحق علام الغيوب ... ... ... ... | ٤٨ | ك » | ٣٤ |
| | قل جاء الحق وما يبدئ الباطل وما يعيد... ... ... | ٤٩ | ك » | ٣٤ |
| | قل إن ضللت فإنما أضل على نفسى ... ... ... ... | ٥٠ | ك » | ٣٤ |
| | قل أرأيتم شركاءكم الذين تدعون من دون الله... ... | ٤٠ | ك فاطـــر | ٣٥ |
| | قل يحييها الذى أنشأها أول مرة ... ... ... ... ... | ٧٩ | ك يـــس | ٣٦ |
| | قل نعم وأنتم داخرون ... ... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك الصافات | ٣٧ |
| | قل إنما أنا منذر وما من إله إلا الله الواحد القهار | ٦٥ | ك صـــ | ٣٨ |
| | قل هو نبأ عظيم . أنتم عنه معرضون ... ... ... ... | ٦٧ | ك » | ٣٨ |
| | قل ما أسئلكم عليه من أجر وما أنا من المتكلفين ... | ٨٦ | ك » | ٣٨ |
| | قل تمتع بكفرك قليلا إنك من أصحاب النار ... ... | ٨ | ك الـــزمر | ٣٩ |
| | قل هل يستوى الذين يعلمون والذين لا يعلمون... ... | ٩ | ك » | ٣٩ |
| | قل يا عبادِ الذين آمنوا اتقوا ربكم ... ... ... ... | ١٠ | ك » | ٣٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قُـلْ: | قل إنى أمرت أن أعبد الله مخلصا له الدين ... ... | ١١ | ك الـزمر | ٣٩ |
| | قل إنى أخاف إن عصيت ربى عذاب يوم عظيم ... | ١٣ | ك « | ٣٩ |
| | قل الله أعبد مخلصا له دينى ... ... ... ... ... | ١٤ | ك « | ٣٩ |
| | قل إن الخاسرين الذين خسروا أنفسهم وأهليهم ... | ١٥ | ك « | ٣٩ |
| | قل أفرأيتم ما تدعون من دون الله ... ... ... ... | ٣٨ | ك « | ٣٩ |
| | قل حسبى الله عليه يتوكل المتوكلون ... ... ... ... | ٣٨ | ك « | ٣٩ |
| | قل ياقوم اعملوا على مكانتكم إنى عامل ... ... ... | ٣٩ | ك « | ٣٩ |
| | قل أو لو كانوا لا يملكون شيئا ولا يعقلون ... ... | ٤٣ | ك « | ٣٩ |
| | قل لله الشفاعة جميعا له ملك السموات والأرض ... | ٤٤ | ك « | ٣٩ |
| | قل اللهم فاطر السموات والأرض عالم الغيب والشهادة | ٤٦ | ك « | ٣٩ |
| | قل ياعبادى الذين أسرفوا على أنفسهم لاتقنطوا من رحمة الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | م « | ٣٩ |
| | قل أفغير الله تأمرونى أعبد أيها الجاهلون ... ... | ٦٤ | ك « | ٣٩ |
| | قل إنى نهيت أن أعبد الذين تدعون من دون الله ... | ٦٦ | ك غافـر | ٤٠ |
| | قل إنما أنا بشر مثلكم يوحى إلىّ أنما إلهكم إله واحد | ٦ | ك فصلت | ٤١ |
| | قل أئنكم لتكفرون بالذى خلق الأرض فى يومين ... | ٩ | ك « | ٤١ |
| | فإن أعرضوا فقل أنذرتكم صاعقة مثل صاعقة عاد وثمود | ١٣ | ك « | ٤١ |
| | قل هو للذين آمنوا هدى وشفاء ... ... ... ... | ٤٤ | ك « | ٤١ |
| | قل أرأيتم إن كان من عند الله ثم كفرتم به ... ... | ٥٢ | ك « | ٤١ |
| | وقل آمنت بما أنزل الله من كتاب ... ... ... ... | ١٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| | قل لا أسئلكم عليه أجرا إلا المودة فى القربى ... ... | ٢٣ | م « | ٤٢ |
| | قل إن كان للرحمن ولد فأنا أول العابدين ... ... ... | ٨١ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | فاصفح عنهم وقل سلام فسوف يعلمون ... ... ... | ٨٩ | ك « | ٤٣ |
| | قل للذين آمنوا يغفروا للذين لايرجون أيام الله ... | ١٤ | م الجاثية | ٤٥ |
| | قل الله يحييكم ثم يميتكم ثم يجمعكم إلى يوم القيامة ... | ٢٦ | ك « | ٤٥ |
| | قل أرأيتم ما تدعون من دون الله أرونى ماذا خلقوا من الأرض ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | قل إن افتريته فلا تملكون لى من الله شيئا ... ... | ٨ | ك « | ٤٦ |
| | قل ما كنت بدعا من الرسل وما أدرى ما يفعل بى ولا بكم | ٩ | ك « | ٤٦ |
| | قل أرأيتم إن كان من عند الله وكفرتم به ... ... ... | ١٠ | م « | ٤٦ |
| | قل فمن يملك لكم من الله شيئا إن أراد بكم ضرا ... | ١١ | م الفتح | ٤٨ |
| | قل لن تتبعونا كذلكم قال الله من قبل ... ... ... | ١٥ | م « | ٤٨ |
| | قل للمخلفين من الأعراب ستدعون إلى قوم أولى بأس شديد ... ... ... ... ... ... ... | ١٦ | م « | ٤٨ |
| | قالت الأعراب آمنا قل لم تؤمنوا ... ... ... ... | ١٤ | م الحجرات | ٤٩ |
| | قل أتعلمون الله بدينكم ... ... ... ... ... ... | ١٦ | م « | ٤٩ |
| | يمنون عليك أن أسلموا قل لا تمنوا علىّ إسلامكم ... | ١٧ | م « | ٤٩ |
| | قل تربصوا فإنى معكم من المتربصين ... ... ... ... | ٣١ | ك الطـور | ٥٢ |
| | قل إن الأولين والآخرين . لمجموعون إلى ميقات يوم معلوم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك الواقعـة | ٥٦ |
| | قل يأيها الذين هادوا إن زعمتم أنكم أولياء لله من دون الناس فتمنوا الموت ... ... ... ... ... ... | ٦ | م الجمعـة | ٦٢ |
| | قل إن الموت الذى تفرون منه فإنه ملاقيكم ... ... | ٨ | م « | ٦٢ |
| | قل ما عند الله خير من اللهو ومن التجارة ... ... | ١١ | م « | ٦٢ |
| | قل بلى وربى لتبعثن ثم لتنبؤن بما عملتم ... ... ... | ٧ | م التغـابن | ٦٤ |
| | قل هو الذى أنشأكم وجعل لكم السمع والأبصار والأفئدة | ٢٣ | ك المـلك | ٦٧ |
| | قل هو الذى ذرأكم فى الأرض وإليه تحشرون ... | ٢٤ | ك « | ٦٧ |
| | قل إنما العلم عند الله وإنما أنا نذير مبين ... ... | ٢٦ | ك « | ٦٧ |
| | قل أرأيتم إن أهلكنى الله ومن معى أو رحمنا فمن يجير الكافرين من عذاب أليم ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٦٧ |
| | قل هو الرحمن آمنا به وعليه توكلنا ... ... ... ... | ٢٩ | ك « | ٦٧ |
| | قل أرأيتم إن أصبح ماؤكم غورا فمن يأتيكم بماء معين | ٣٠ | ك « | ٦٧ |
| | قل أوحى إلىّ أنه استمع نفر من الجن ... ... ... | ١ | ك الجـن | ٧٢ |
| | قل إنما أدعوا ربى ولا أشرك به أحدا ... ... ... | ٢٠ | ك « | ٧٢ |
| | قل إنى لا أملك لكم ضرا ولا رشدا ... ... ... ... | ٢١ | ك « | ٧٢ |
| | قل إنى لن يجيرنى من الله أحد ولن أجد من دونه ملتحدا | ٢٢ | ك « | ٧٢ |
| | قل إن أدرى أقريب ما توعدون أم يجعل له ربى أمدا | ٢٥ | ك « | ٧٢ |
| | اذهب إلى فرعون إنه طغى . فقل هل لك إلى أن تزكى | ١٨ | ك النازعات | ٧٩ |
| | قل يأيها الكافرون . لا أعبد ما تعبدون ... ... ... | ١ | ك الكافرون | ١٠٩ |
| | قل هو الله أحد . الله الصمد ... ... ... ... ... | ١ | ك الإخلاص | ١١٢ |
| | قل أعوذ برب الفلق . من شر ما خلق ... ... ... | ١ | ك الفـلق | ١١٣ |
| | قل أعوذ برب الناس . ملك الناس . إله الناس . من شر الوسواس الخناس ... ... ... ... ... | ١ | ك النـاس | ١١٤ |
| قُلْنَ: | وقلن قولا معروفا ... ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | م الأحزاب | ٣٣ |
| قُولَا: | فقولا له قولا لينا لعله يتذكر أو يخشى ... ... ... | ٤٤ | ك طـه | ٢٠ |
| (٣) | فأتياه فقولا إنا رسولا ربك فأرسل معنا بنى إسرائيل | ٤٧ | ك « | ٢٠ |
| | فأتيا فرعون فقولا إنا رسول رب العالمين ... ... ... | ١٦ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| قُولُوا: | وادخلوا الباب سجدا وقولوا حطة نغفر لكم خطاياكم | ٥٨ | م البقـرة | ٢ |
| (١٢) | وقولوا للناس حسنا وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة ... | ٨٣ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا لاتقولوا راعنا وقولوا انظرنا واسمعوا | ١٠٤ | م « | ٢ |
| | قولوا آمنا بالله وما أنزل إلينا ... ... ... ... ... | ١٣٦ | م « | ٢ |
| | فإن تولوا فقولوا اشهدوا بأنا مسلمون ... ... ... | ٦٤ | م آل عمران | ٣ |
| | وارزقوهم فيها واكسوهم وقولوا لهم قولا معروفا ... | ٥ | م النسـاء | ٤ |
| | فارزقوهم منه وقولوا لهم قولا معروفا ... ... ... | ٨ | م « | ٤ |
| | وكلوا منها حيث شئتم وقولوا حطة ... ... ... ... | ١٦١ | ك الأعراف | ٧ |
| | ارجعوا إلى أبيكم فقولوا يا أبانا إن ابنك سرق ... ... | ٨١ | ك يوسـف | ١٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قُولُوا : | وقولوا آمنا بالذى أنزل إلينا وأنزل إليكم ... ... ... | ٤٦ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله وقولوا قولا سديدا ... | ٧٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ولكن قولوا أسلمنا ولما يدخل الإيمان فى قلوبكم ... | ١٤ | م الحجرات | ٤٩ |
| قُولِى : | فإما ترين من البشر أحدا فقولى إنى نذرت للرحمن صوما | ٢٦ | ك مريم | ١٩ |
| قِيلَ : | وإذا قيل لهم لا تفسدوا فى الأرض قالوا إنما نحن مصلحون | ١١ | م البقرة | ٢ |
| (٤٩) | وإذا قيل لهم آمنوا كما آمن الناس قالوا أنؤمن كما | | | |
| | آمن السفهاء ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٣ | م » | ٢ |
| | فبدل الذين ظلموا قولا غير الذى قيل لهم ... ... ... | ٥٩ | م » | ٢ |
| | وإذا قيل لهم آمنوا بما أنزل الله قالوا نؤمن بما أنزل علينا | ٩١ | م » | ٢ |
| | وإذا قيل لهم اتبعوا ما أنزل الله قالوا بل نتبع ما ألفينا | | | |
| | عليه آباءنا ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٧٠ | م » | ٢ |
| | وإذا قيل له اتق الله أخذته العزة بالإثم ... ... ... | ٢٠٦ | م » | ٢ |
| | وقيل لهم تعالوا قاتلوا فى سبيل الله أو ادفعوا ... ... | ١٦٧ | م آل عمران | ٣ |
| | وإذا قيل لهم تعالوا إلى ما أنزل الله وإلى الرسول | | | |
| | رأيت المنافقين يصدون عنك صدودا ... ... ... | ٦١ | م النساء | ٤ |
| | ألم تر إلى الذين قيل لهم كفوا أيديكم وأقيموا الصلاة | ٧٧ | م » | ٤ |
| | وإذا قيل لهم تعالوا إلى ما أنزل الله وإلى الرسول قالوا | | | |
| | حسبنا ما وجدنا عليه آباءنا ... ... ... ... ... | ١٠٤ | م المائدة | ٥ |
| | وإذ قيل لهم اسكنوا هذه القرية وكلوا منها حيث شئتم | ١٦١ | ك الأعراف | ٧ |
| | فبدل الذين ظلموا قولا غير الذى قيل لهم ... ... ... | ١٦٢ | ك » | ٧ |
| | مالكم إذا قيل لكم انفروا فى سبيل الله اثاقلتم إلى الأرض | ٣٨ | م التوبة | ٩ |
| | ولكن كره الله انبعاثهم فثبطهم وقيل اقعدوا مع القاعدين | ٤٦ | م » | ٩ |
| | ثم قيل للذين ظلموا ذوقوا عذاب الخلد ... ... ... | ٥٢ | ك يونس | ١٠ |
| | وقيل يا أرض ابلعى ماءك ويا سماء أقلعى ... ... ... | ٤٤ | ك هود | ١١ |
| | واستوت على الجودى وقيل بعدا للقوم الظالمين ... | ٤٤ | ك » | ١١ |
| | قيل يا نوح اهبط بسلام منا وبركات عليك ... ... | ٤٨ | ك » | ١١ |
| | وإذا قيل لهم ماذا أنزل ربكم قالوا أساطير الأولين | ٢٤ | ك النحل | ١٦ |
| | وقيل للذين اتقوا ماذا أنزل ربكم قالوا خيرا ... ... | ٣٠ | ك » | ١٦ |
| | وإن قيل لكم ارجعوا فارجعوا هو أزكى لكم ... ... | ٢٨ | م النور | ٢٤ |
| | وإذا قيل لهم اسجدوا للرحمن قالوا وما الرحمن ... ... | ٦٠ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وقيل للناس هل أنتم مجتمعون ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وقيل لهم أين ما كنتم تعبدون ... ... ... ... ... | ٩٢ | ك » | ٢٦ |
| | فلما جاءت قيل أهكذا عرشك قالت كأنه هو ... ... | ٤٢ | ك النمل | ٢٧ |
| | قيل لها ادخلى الصرح فلما رأته حسبته لجة ... ... ... | ٤٤ | ك » | ٢٧ |
| | وقيل ادعوا شركاءكم فدعوهم فلم يستجيبوا لهم ... ... | ٦٤ | ك القصص | ٢٨ |
| | وإذا قيل لهم اتبعوا ما أنزل الله قالوا بل نتبع ما وجدنا | | | |
| | عليه آباءنا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك لقمان | ٣١ |
| | وقيل لهم ذوقوا عذاب النار الذى كنتم به تكذبون ... | ٢٠ | م السجدة | ٣٢ |
| قِيلَ : | قيل ادخل الجنة قال يا ليت قومى يعلمون ... ... ... | ٢٦ | ك يس | ٣٦ |
| | وإذا قيل لهم اتقوا ما بين أيديكم وما خلفكم لعلكم ترحمون | ٤٥ | م » | ٣٦ |
| | وإذا قيل لهم أنفقوا مما رزقكم الله قال الذين كفروا | | | |
| | للذين آمنوا أنطعم من لو يشاء الله أطعمه ... ... | ٤٧ | ك » | ٣٦ |
| | إنهم كانوا إذا قيل لهم لا إله إلا الله يستكبرون ... ... | ٣٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| | وقيل للظالمين ذوقوا ما كنتم تكسبون ... ... ... ... | ٢٤ | ك الزمر | ٣٩ |
| | قيل ادخلوا أبواب جهنم خالدين فيها ... ... ... ... | ٧٢ | ك » | ٣٩ |
| | وقضى بينهم بالحق وقيل الحمد لله رب العالمين ... ... | ٧٥ | ك » | ٣٩ |
| | ثم قيل لهم أين ما كنتم تشركون ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك غافر | ٤٠ |
| | ما يقال لك إلا ما قد قيل للرسل من قبلك ... ... ... | ٤٣ | ك فصلت | ٤١ |
| | وإذا قيل إن وعد الله حق والساعة لا ريب فيها قلتم | | | |
| | ما ندرى ما الساعة إن نظن إلا ظنا ... ... ... | ٣٢ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | وقيل اليوم ننساكم كما نسيتم لقاء يومكم هذا ... ... | ٣٤ | ك » | ٤٥ |
| | وفى ثمود إذ قيل لهم تمتعوا حتى حين ... ... ... ... | ٤٣ | ك الذاريات | ٥١ |
| | قيل ارجعوا وراءكم فالتمسوا نورا ... ... ... ... | ١٣ | م الحديد | ٥٧ |
| | إذا قيل لكم تفسحوا فى المجالس فافسحوا يفسح الله لكم | ١١ | م المجادلة | ٥٨ |
| | وإذا قيل انشزوا فانشزوا ... ... ... ... ... ... | ١١ | م » | ٥٨ |
| | وإذا قيل لهم تعالوا يستغفر لكم رسول الله لووا رءوسهم | ٥ | م المنافقون | ٦٣ |
| | فلم يغنيا عنهما من الله شيئا وقيل ادخلا النار مع الداخلين | ١٠ | م التحريم | ٦٦ |
| | سيئت وجوه الذين كفروا وقيل هذا الذى كنتم به تدعون | ٢٧ | ك القلم | ٦٧ |
| | كلا إذا بلغت التراقى . وقيل من راق ... ... ... | ٢٧ | ك القيامة | ٧٥ |
| | وإذا قيل لهم اركعوا لا يركعون ... ... ... ... | ٤٨ | م المرسلات | ٧٧ |
| يُقَالُ : | قالوا سمعنا فتى يذكرهم يقال له إبراهيم ... ... ... | ٦٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٣) | ما يقال لك إلا ما قد قيل للرسل من قبلك ... ... ... | ٤٣ | ك فصلت | ٤١ |
| | ثم يقال هذا الذى كنتم به تكذبون ... ... ... ... | ١٧ | ك المطففين | ٨٣ |
| تَقَوَّلَ : | ولو تقول علينا بعض الأقاويل . لأخذنا منه باليمين | ٤٤ | ك الحاقة | ٦٩ |
| تَقَوَّلَهُ : | أم يقولون تقوله بل لا يؤمنون ... ... ... ... | ٣٣ | ك الطور | ٥٢ |
| أَلْقَوْلِ : | قول معروف ومغفرة خير من صدقة يتبعها أذى | ٢٦٣ | م البقرة | ٢ |
| (٥٢) | لقد سمع الله قول الذين قالوا إن الله فقير ونحن أغنياء | ١٨١ | م آل عمران | ٣ |
| | ولا يستخفون من الله وهو معهم إذ يبيتون ما لا يرضى | | | |
| | من القول ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٨ | م النساء | ٤ |
| | لا يحب الله الجهر بالسوء من القول إلا من ظلم ... ... | ١٤٨ | م » | ٤ |
| | يوحى بعضهم إلى بعض زخرف القول غرورا ... ... | ١١٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | واذكر ربك فى نفسك تضرعا وخيفة ودون الجهر | | | |
| | من القول ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | يضاهئون قول الذين كفروا من قبل ... ... ... ... | ٣٠ | م التوبة | ٩ |
| | احمل فيها من كل زوجين اثنين وأهلك إلا من سبق | | | |
| | عليه القول ومن آمن ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك هود | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **ٱلْقَوْلُ** | : سواء منكم من أسرّ القول ومن جهر به ... ... | ١٠ | م الرعـد | ١٣ |
| | أم تنبئونه بما لا يعلم فى الأرض أم بظاهر من القول | ٣٣ | م « | ١٣ |
| | يثبت الله الذين آمنوا بالقول الثابت فى الحياة الدنيا | ٢٧ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | فألقوا إليهم القول إنكم لكاذبون ... ... ... ... | ٨٦ | ك النحـل | ١٦ |
| | لحق عليها القول فدمرناها تدميرا ... ... ... ... | ١٦ | ك الإسـراء | ١٧ |
| | ذلك عيسى ابن مريم قول الحق الذى فيه يمترون ... | ٣٤ | ك مـريم | ١٩ |
| | وإن تجهر بالقول فإنه يعلم السر وأخفى ... ... ... | ٧ | ك طـه | ٢٠ |
| | قال ربى يعلم القول فى السماء والأرض ... ... ... | ٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | لا يسبقونه بالقول وهم بأمره يعملون ... ... ... ... | ٢٧ | ك « | ٢١ |
| | إنه يعلم الجهر من القول ويعلم ما تكتمون ... ... ... | ١١٠ | ك « | ٢١ |
| | وهدوا إلى الطيب من القول وهدوا إلى صراط الحميد | ٢٤ | م الحـج | ٢٢ |
| | فاجتنبوا الرجس من الأوثان واجتنبوا قول الزور ... | ٣٠ | م « | ٢٢ |
| | فاسلك فيها من كلٍّ زوجين اثنين وأهلك إلا من سبق | | | |
| | عليه القول منهم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | أفلم يدبروا القول أم جاءهم ما لم يأت آباءهم الأولين | ٦٨ | ك « | ٢٣ |
| | إنما كان قول المؤمنين إذا دعوا إلى الله ورسوله | | | |
| | ليحكم بينهم أن يقولوا سمعنا وأطعنا ... ... ... | ٥١ | م النـور | ٢٤ |
| | وإذا وقع القول عليهم أخرجنا لهم دابة من الأرض تكلمهم | ٨٢ | ك النمـل | ٢٧ |
| | ووقع القول عليهم بما ظلموا فهم لا ينطقون ... ... | ٨٥ | ك « | ٢٧ |
| | ولقد وصلنا لهم القول لعلهم يتذكرون... ... ... ... | ٥١ | ك القصص | ٢٨ |
| | قال الذين حق عليهم القول ربنا هؤلاء الذين أغوينا | ٦٣ | ك « | ٢٨ |
| | ولكن حق القـول منى لأملأن جهنم من الجنة | | | |
| | والناس أجمعين ... ... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك السـجدة | ٣٢ |
| | إن اتقيتن فلا تخضعن بالقول فيطمع الذى فى قلبه مرض | ٣٢ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ولو ترى إذ الظالمون موقوفون عند ربهم يرجع | | | |
| | بعضهم إلى بعض القول... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك سـبأ | ٣٤ |
| | لقد حق القول على أكثرهم فهم لا يؤمنون ... ... | ٧ | ك يس | ٣٦ |
| | لينذر من كان حيا ويحق القول على الكافرين... ... | ٧٠ | ك « | ٣٦ |
| | فحق علينا قول ربنا إنا لذائقون ... ... ... ... | ٣١ | ك الصافات | ٣٧ |
| | الذين يستمعون القول فيتبعون أحسنه ... ... ... | ١٨ | ك الـزمر | ٣٩ |
| | وحق عليهم القول فى أمم قد خلت من قبلهم من | | | |
| | الجن والإنس ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك فصـلت | ٤١ |
| | أولئك الذين حق عليهم القول فى أمم قد خلت من قبلهم | ١٨ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | طاعة وقول معروف ... ... ... ... ... ... ... | ٢١ | م محمـد | ٤٧ |
| | ولتعرفنهم فى لحن القول ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | م « | ٤٧ |
| | ولا تجهروا له بالقول كجهر بعضكم لبعض ... ... ... | ٢ | م الحجرات | ٤٩ |
| | ما يلفظ من قول إلا لديه رقيب عتيد ... ... ... ... | ١٨ | ك قـ | ٥٠ |
| | ما يبدل القول لدىّ وما أنا بظلام للعبيد ... ... ... | ٢٩ | ك « | ٥٠ |
| **ٱلْقَوْلِ** | : إنكم لفى قول مختلف ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك الذاريات | ٥١ |
| | قد سمع الله قول التى تجادلك فى زوجها ... ... ... | ١ | م المجادلة | ٥٨ |
| | وإنهم ليقولون منكرا من القول وزورا ... ... ... | ٢ | م « | ٥٨ |
| | إلا قول إبراهيم لأبيه لأستغفرن لك ... ... ... ... | ٤ | م الممتحنـة | ٦٠ |
| | إنه لقول رسول كريم ... ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك الحاقـة | ٦٩ |
| | وما هو بقول شاعر قليلا ما تؤمنون ... ... ... ... | ٤١ | ك « | ٦٩ |
| | ولا بقول كاهن قليلا ما تذكرون ... ... ... ... | ٤٢ | ك « | ٦٩ |
| | إن هذا إلا قول البشر ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك المـدثر | ٧٤ |
| | إنه لقول رسول كريم ... ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك التكوير | ٨١ |
| | وما هو بقول شيطان رجيم ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك « | ٨١ |
| | إنه لقول فصل ، وما هو بالهزل ... ... ... ... ... | ١٣ | ك الطـارق | ٨٦ |
| **قَوْلًا** | : فبدّل الذين ظلموا قولا غير الذى قيل لهم... ... ... | ٥٩ | م البقـرة | ٢ |
| (١٩) | ولكن لا تواعدوهنّ سرا إلا أن تقولوا قولا معروفا | ٢٣٥ | م « | ٢ |
| | وارزقوهم فيها واكسوهم وقولوا لهم قولا معروفا ... | ٥ | م النسـاء | ٤ |
| | فارزقوهم منه وقولوا لهم قولا معروفا ... ... ... ... | ٨ | م « | ٤ |
| | فليتقوا الله وليقولوا قولا سديدا... ... ... ... ... | ٩ | م « | ٤ |
| | فأعرض عنهم وعظهم وقل لهم فى أنفسهم قولا بليغا | ٦٣ | م « | ٤ |
| | فبدّل الذين ظلموا منهم قولا غير الذى قيل لهم... ... | ١٦٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | فلا تقل لهما أف ولا تنهرهما وقل لهما قولا كريما ... | ٢٣ | ك الإسـراء | ١٧ |
| | فقل لهم قولا ميسورا ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ١٧ |
| | إنكم لتقولون قولا عظيما ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك « | ١٧ |
| | وجد من دونهما قوما لا يكادون يفقهون قولا... ... | ٩٣ | م الكهف | ١٨ |
| | فقولا له قولا لينا لعله يتذكر أو يخشى ... ... ... | ٤٤ | ك طـه | ٢٠ |
| | أفلا يرون ألّا يرجع إليهم قولا ... ... ... ... ... | ٨٩ | ك « | ٢٠ |
| | يومئذ لا تنفع الشفاعة إلا من أذن له الرحمن ورضى له قولا | ١٠٩ | ك « | ٢٠ |
| | وقلن قولا معروفا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله وقولوا قولا سديدا ... | ٧٠ | م « | ٣٣ |
| | سلام قولا من رب رحيم ... ... ... ... ... ... | ٥٨ | ك يس | ٣٦ |
| | ومن أحسن قولا ممن دعا إلى الله وعمل صالحا ... | ٣٣ | ك فصـلت | ٤١ |
| | إنا سنلقى عليك قولا ثقيلا ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك المزمـل | ٧٣ |
| **قَوْلِكَ** | : وما نحن بتاركى آلهتنا عن قولك وما نحن لك بمؤمنين | ٥٣ | ك هـود | ١١ |
| **قَوْلَكُمْ** | : ذلكم قولكم بأفواهكم والله يقول الحق ... ... | ٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| (٢) | وأسروا قولكم أو اجهروا به إنه عليم بذات الصدور | ١٣ | ك المـلك | ٦٧ |
| **قَوْلُنَا** | : إنما قولنا لشىء إذا أردناه أن نقول له كن فيكون | ٤٠ | ك النحـل | ١٦ |
| **قَوْلُهُ** | : ومن الناس من يعجبك قوله فى الحياة الدنيا ... ... | ٢٠٤ | م البقـرة | ٢ |
| (٢) | قوله الحق وله الملك يوم ينفخ فى الصور ... ... ... | ٧٣ | ك الأنعـام | ٦ |
| **قَوْلِهَا** | : فتبسم ضاحكا من قولها ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك النمـل | ٢٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَوْلِهِمْ: | كذلك قال الذين لا يعلمون مثل قولهم ... ... ... | ١١٣ | م البقـرة | ٢ |
| (١٢) | كذلك قال الذين من قبلهم مثل قولهم ... ... ... | ١١٨ | م « | ٢ |
| | وما كان قولهم إلا أن قالوا ربنا اغفر لنا ذنوبنا ... | ١٤٧ | م آل عمران | ٣ |
| | وقتلهم الأنبياء بغير حق وقولهم قلوبنا غلف ... ... | ١٥٥ | م النسـاء | ٤ |
| | وبكفرهم وقولهم على مريم بهتانا عظيما... ... ... ... | ١٥٦ | م « | ٤ |
| | وقولهم إنا قتلنا المسيح عيسى ابن مريم رسول الله ... | ١٥٧ | م « | ٤ |
| | لولا ينهاهم الربانيون والأحبار عن قولهم الإثم... ... | ٦٣ | م المائدة | ٥ |
| | ذلك قولهم بأفواههم يضاهئون قول الذين كفروا من قبل | ٣٠ | م التـوبة | ٩ |
| | ولا يحزنك قولهم إن العزة لله جميعا ... ... ... ... | ٦٥ | ك يـونس | ١٠ |
| | وإن تعجب فعجب قولهم أئذا كنا ترابا أئنا لفي خلق جديد | ٥ | ك الرعـد | ١٣ |
| | فلا يحزنك قولهم إنا نعلم ما يسرون وما يعلنون ... ... | ٧٦ | ك يس | ٣٦ |
| | وإن يقولوا تسمع لقولهم ... ... ... ... ... ... | ٤ | م المنافقون | ٦٣ |
| قَوْلِي: | وأحلل عقدة من لساني . يفقهوا قولي ... ... ... | ٢٨ | ك طـه | ٢٠ |
| (٢) | إني خشيت أن تقول فرقت بين بني إسرائيل ولم ترقب قولي | ٩٤ | ك « | ٢٠ |
| الْأَقَاوِيلِ: | ولو تقول علينا بعض الأقاويل . لأخذنا منه باليمين | ٤٤ | ك الحاقـة | ٦٩ |
| قِيلًا: | ومن أصدق من الله قيلا ... ... ... ... ... ... | ١٢٢ | م النسـاء | ٤ |
| (٣) | لا يسمعون فيها لغوا ولا تأثيما . إلا قيلا سلاما سلاما | ٢٦ | ك الواقعـة | ٥٦ |
| | إن ناشئة الليل هي أشد وطأ وأقوم قيلا ... ... ... | ٦ | ك المزمـل | ٧٣ |
| قِيلِهِ: | وقيله يا رب إن هؤلاء قوم لا يؤمنون ... ... ... | ٨٨ | ك الزخرف | ٤٣ |
| قَائِلٌ: | قال قائل منهم لا تقتلوا يوسف ... ... ... ... | ١٠ | ك يوسف | ١٢ |
| (٣) | قال قائل منهم كم لبثتم ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | قال قائل منهم إني كان لي قرين ... ... ... ... | ٥١ | ك الصافات | ٣٧ |
| قَائِلُهَا: | كلا إنها كلمة هو قائلها ... ... ... ... ... ... | ١٠٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| قَائِلِينَ: | قد يعلم الله المعوقين منكم والقائلين لإخوانهم هلم إلينا | ١٨ | م الأحزاب | ٣٣ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| قَامَ: | وأنه لما قام عبد الله يدعوه كادوا يكونون عليه لبدا | ١٩ | ك الجـن | ٧٢ |
| قَامُوا: | كلما أضاء لهم مشوا فيه وإذا أظلم عليهم قاموا ... | ٢٠ | م البقـرة | ٢ |
| (٤) | وإذا قاموا إلى الصلاة... ... ... ... ... ... | ١٤٢ | م النسـاء | ٤ |
| | قاموا كسالى ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٢ | م « | ٤ |
| | إذ قاموا فقالوا ربنا رب السموات والأرض... ... | ١٤ | ك الكهف | ١٨ |
| قُمْتُمْ: | إذا قمتم إلى الصلاة فاغسلوا وجوهكم وأيديكم... ... | ٦ | م المائدة | ٥ |
| تَقُمْ: | فلتقم طائفة منهم معك وليأخذوا أسلحتهم... ... ... | ١٠٢ | م النسـاء | ٤ |
| (٣) | ولا تصل على أحد منهم مات أبدا ولا تقم على قبره | ٨٤ | م التـوبة | ٩ |
| | لا تقم فيه أبدا ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٨ | م « | ٩ |
| تَقُومَ: | لمسجد أسس على التقوى من أول يوم أحق أن تقوم فيه | ١٠٨ | م « | ٩ |
| (١١) | وتوكل على العزيز الرحيم . الذي يراك حين تقوم | ٢١٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | قال عفريت من الجن أنا آتيك به قبل أن تقوم من مقامك | ٣٩ | ك النمـل | ٢٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَقُومُ: | ويوم تقوم الساعة يبلس المجرمون ... ... ... ... | ١٢ | ك الـروم | ٣٠ |
| | ويوم تقوم الساعة يومئذ يتفرقون ... ... ... ... | ١٤ | ك « | ٣٠ |
| | ومن آياته أن تقوم السماء والأرض بأمره ... ... | ٢٥ | ك « | ٣٠ |
| | ويوم تقوم الساعة يقسم المجرمون ما لبثوا غير ساعة | ٥٥ | ك « | ٣٠ |
| | ويوم تقوم الساعة أدخلوا آل فرعون أشد العذاب | ٤٦ | ك غافـر | ٤٠ |
| | ويوم تقوم الساعة يومئذ يخسر المبطلون ... ... ... | ٢٧ | ك الجاثيـة | ٤٥ |
| | وسبح بحمد ربك حين تقوم ... ... ... ... ... ... | ٤٨ | ك الطـور | ٥٢ |
| | إن ربك يعلم أنك تقوم أدنى من ثلثي الليل ونصفه وثلثه | ٢٠ | م المزمـل | ٧٣ |
| تَقُومُوا: | وأن تقوموا لليتامى بالقسط ... ... ... ... ... | ١٢٧ | م النسـاء | ٤ |
| (٢) | قل إنما أعظكم بواحدة أن تقوموا لله مثنى وفرادى | ٤٦ | ك سـبأ | ٣٤ |
| يَقُومُ: | لا يقومون إلا كما يقوم الذي يتخبطه الشيطان من المس | ٢٧٥ | م البقـرة | ٢ |
| (٦) | ربنا اغفر لي ولوالدي وللمؤمنين يوم يقوم الحساب... | ٤١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | إنا لننصر رسلنا والذين آمنوا في الحياة الدنيا ويوم | | | |
| | يقوم الأشهاد ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥١ | ك غافـر | ٤٠ |
| | وأنزلنا معهم الكتاب والميزان ليقوم الناس بالقسط | ٢٥ | م الحديد | ٥٧ |
| | يوم يقوم الروح والملائكة صفا ... ... ... ... | ٣٨ | ك النبـأ | ٧٨ |
| | يوم يقوم الناس لرب العالمين ... ... ... ... ... | ٦ | ك المطففين | ٨٣ |
| يَقُومَانِ: | فإن عثر على أنهما استحقا إثما فآخران يقومان مقامهما | ١٠٧ | م المائدة | ٥ |
| يَقُومُونَ: | لا يقومون إلا كما يقوم الذي يتخبطه الشيطان | | | |
| | من المس ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧٥ | م البقـرة | ٢ |
| قُمْ: | يأيها المزمل . قم الليل إلا قليلا... ... ... ... | ٢ | ك المزمـل | ٧٣ |
| (٢) | يأيها المدثر . قم فأنذر... ... ... ... ... ... | ٢ | ك المـدثر | ٧٤ |
| قُومُوا: | وقوموا لله قانتين ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣٨ | م البقـرة | ٢ |
| أَقَامَ: | وأقام الصلاة وآتى الزكاة والموفون بعهدهم إذا عاهدوا | ١٧٧ | م « | ٢ |
| (٢) | وأقام الصلاة وآتى الزكاة ولم يخش إلا الله ... ... | ١٨ | م التـوبة | ٩ |
| أَقَامَهُ: | فوجدا فيها جدارا يريد أن ينقض فأقامه ... ... | ٧٧ | ك الكهف | ١٨ |
| أَقَامُوا: | وأقاموا الصلاة وآتوا الزكاة لهم أجرهم عند ربهم | ٢٧٧ | م البقـرة | ٢ |
| (١٠) | ولو أنهم أقاموا التوراة والإنجيل وما أنزل إليهم من | | | |
| | ربهم لأكلوا من فوقهم ومن تحت أرجلهم ... | ٦٦ | م المائدة | ٥ |
| | والذين يمسكون بالكتاب وأقاموا الصلاة ... ... | ١٧٠ | م الأعراف | ٧ |
| | فإن تابوا وأقاموا الصلاة وآتوا الزكاة فخلوا سبيلهم | ٥ | م التـوبة | ٩ |
| | فإن تابوا وأقاموا الصلاة وآتوا الزكاة فإخوانكم في الدين | ١١ | م « | ٩ |
| | وأقاموا الصلاة وأنفقوا مما رزقناهم ... ... ... ... | ٢٢ | م الرعـد | ١٣ |
| | الذين إن مكناهم في الأرض أقاموا الصلاة ... ... | ٤١ | م الحـج | ٢٢ |
| | إنما تنذر الذين يخشون ربهم بالغيب وأقاموا الصلاة | ١٨ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | إن الذين يتلون كتاب الله وأقاموا الصلاة وأنفقوا | | | |
| | مما رزقناهم سرا وعلانية يرجون تجارة لن تبور... | ٢٩ | ك « | ٣٥ |
| | والذين استجابوا لربهم وأقاموا الصلاة ... ... ... | ٣٨ | ك الشـورى | ٤٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَقَمْتَ | : وإذا كنت فيهم فأقمت لهم الصلاة فلتقم طائفة منهم معك | ١٠٢ | م النساء | ٤ |
| أَقَمْتُمُ | : لئن أقمتم الصلاة وآتيتم الزكاة وآمنتم برسلى ... ... | ١٢ | م المائدة | ٥ |
| تُقِيمُوا | : لستم على شىء حتى تقيموا التوراة والإنجيل ... | ٦٨ | م « | ٥ |
| نُقِيمُ | : فحبطت أعمالهم فلا نقيم لهم يوم القيامة وزنا ... ... | ١٠٥ | ك الكهف | ١٨ |
| يُقِيمَا | : إلا أن يخافا ألا يقيما حدود الله ... ... ... ... | ٢٢٩ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | فإن خفتم ألا يقيما حدود الله فلا جناح عليهما... ... | ٢٢٩ | م « | ٢ |
| | فلا جناح عليهما أن يتراجعا إن ظنا أن يقيما حدود الله | ٢٣٠ | م « | ٢ |
| يُقِيمُوا | : قل لعبادى الذين آمنوا يقيموا الصلاة ... ... | ٣١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| (٣) | ربنا إنى أسكنت من ذريتى بواد غير ذى زرع عند بيتك المحرم ربنا ليقيموا الصلاة ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك « | ١٤ |
| | وما أمروا إلا ليعبدوا الله مخلصين له الدين حنفاء ويقيموا الصلاة ويؤتوا الزكاة ... ... ... ... | ٥ | م البينة | ٩٨ |
| يُقِيمُونَ | : الذين يؤمنون بالغيب ويقيمون الصلاة ... ... | ٣ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | الذين يقيمون الصلاة ويؤتون الزكاة وهم راكعون | ٥٥ | م المائدة | ٥ |
| | الذين يقيمون الصلاة ومما رزقناهم ينفقون ... ... | ٣ | م الأنفال | ٨ |
| | ويقيمون الصلاة ويؤتون الزكاة ويطيعون الله ورسوله | ٧١ | م التوبة | ٩ |
| | الذين يقيمون الصلاة ويؤتون الزكاة ... ... ... | ٣ | ك النمل | ٢٧ |
| | الذين يقيمون الصلاة ويؤتون الزكاة ... ... ... | ٤ | ك لقمان | ٣١ |
| أَقِمْ | : وأن أقم وجهك للدين حنيفا ولا تكونن من المشركين | ١٠٥ | ك يونس | ١٠ |
| (٨) | وأقم الصلاة طرفى النهار وزلفا من الليل ... ... ... | ١١٤ | م هود | ١١ |
| | أقم الصلاة لدلوك الشمس إلى غسق الليل... ... ... | ٧٨ | م الإسراء | ١٧ |
| | إننى أنا الله لا إله إلا أنا فاعبدنى وأقم الصلاة لذكرى | ١٤ | ك طه | ٢٠ |
| | اتل ما أوحى إليك من الكتاب وأقم الصلاة ... .. | ٤٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | فأقم وجهك للدين حنيفا ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك الروم | ٣٠ |
| | فأقم وجهك للدين القيم ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك « | ٣٠ |
| | يا بنىّ أقم الصلاة وأمر بالمعروف وانه عن المنكر... | ١٧ | ك لقمان | ٣١ |
| أَقِمْنَ | : وأقمن الصلاة وآتين الزكاة وأطعن الله ورسوله ... | ٣٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| أَقِيمُوا | : وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة وأركعوا مع الراكعين | ٤٣ | م البقرة | ٢ |
| (١٦) | وقولوا للناس حسنا وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة ... | ٨٣ | م « | ٢ |
| | وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة ... ... ... ... ... | ١١٠ | م « | ٢ |
| | كفوا أيديكم وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة ... ... | ٧٧ | م النساء | ٤ |
| | فإذا اطمأننتم فأقيموا الصلاة ... ... ... ... ... | ١٠٣ | م « | ٤ |
| | وأن أقيموا الصلاة واتقوه وهو الذى إليه تحشرون | ٧٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | وأقيموا وجوهكم عند كل مسجد وادعوه مخلصين له الدين | ٢٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | واجعلوا بيوتكم قبلة وأقيموا الصلاة ... ... ... ... | ٨٧ | ك يونس | ١٠ |
| | فأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة واعتصموا بالله هو مولاكم | ٧٨ | م الحج | ٢٢ |
| | وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة وأطيعوا الرسول... ... | ٥٦ | م النور | ٢٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَقِيمُوا | : منيبين إليه واتقوه وأقيموا الصلاة ولا تكونوا من المشركين ... ... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك الروم | ٣٠ |
| | أن أقيموا الدين ولا تتفرقوا فيه ... ... ... ... | ١٣ | ك الشورى | ٤٢ |
| | وأقيموا الوزن بالقسط ولا تخسروا الميزان ... ... | ٩ | م الرحمن | ٥٥ |
| | فأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة وأطيعوا الله ورسوله ... | ١٣ | م المجادلة | ٥٨ |
| | وأشهدوا ذوى عدل منكم وأقيموا الشهادة لله ... ... | ٢ | م الطلاق | ٦٥ |
| | وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة وأقرضوا الله قرضا حسنا | ٢٠ | م المزمل | ٧٣ |
| اسْتَقَامُوا | : فما استقاموا لكم فاستقيموا لهم إن الله يحب المتقين | ٧ | م التوبة | ٩ |
| (٤) | إن الذين قالوا ربنا الله ثم استقاموا تتنزل عليهم الملائكة | ٣٠ | ك فصلت | ٤١ |
| | إن الذين قالوا ربنا الله ثم استقاموا فلا خوف عليهم | ١٣ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | وألو استقاموا على الطريقة لأسقيناهم ماء غدقا... ... | ١٦ | ك الجن | ٧٢ |
| يَسْتَقِيمَ | : إن هو إلا ذكر للعالمين . لمن شاء منكم أن يستقيم | ٢٨ | ك التكوير | ٨١ |
| اسْتَقِمْ | : فاستقم كما أمرت ومن تاب معك ولا تطغوا ... | ١١٢ | ك هود | ١١ |
| (٢) | فلذلك فادع واستقم كما أمرت ... ... ... ... ... | ١٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| اسْتَقِيمَا | : قال قد أجيبت دعوتكما فاستقيما... ... ... ... | ٨٩ | ك يونس | ١٠ |
| اسْتَقِيمُوا | : فما استقاموا لكم فاستقيموا لهم... ... ... ... | ٧ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | أنما إلهكم إله واحد فاستقيموا إليه واستغفروه ... | ٦ | ك فصلت | ٤١ |
| قَائِمٌ | : فنادته الملائكة وهو قائم يصلى فى المحراب ... ... | ٣٩ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | ذلك من أنباء القرى نقصه عليك منها قائم وحصيد | ١٠٠ | ك هود | ١١ |
| | أفمن هو قائم على كل نفس بما كسبت ... ... ... | ٣٣ | م الرعد | ١٣ |
| قَائِمًا | : شهد الله أنه لا إله إلا هو والملائكة وأولوا العلم | | | |
| (٥) | قائما بالقسط... ... ... ... ... ... ... ... | ١٨ | م آل عمران | ٣ |
| | ومنهم من إن تأمنه بدينار لا يؤده إليك إلا مادمت عليه قائما... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٥ | م « | ٣ |
| | وإذا مس الإنسان الضر دعانا لجنبه أو قاعدا أو قائما | ١٢ | ك يونس | ١٠ |
| | أمّن هو قانت آناء الليل ساجدا وقائما... ... ... | ٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وإذا رأوا تجارة أو لهوا انفضوا إليها وتركوك قائما | ١١ | م الجمعة | ٦٢ |
| قَائِمُونَ | : والذين هم بشهاداتهم قائمون ... ... ... ... | ٣٣ | ك المعارج | ٧٠ |
| قَائِمِينَ | : وطهر بيتى للطائفين والقائمين والركع السجود ... | ٢٦ | م الحج | ٢٢ |
| قَائِمَةٌ | : من أهل الكتاب أمة قائمة يتلون آيات الله ... | ١١٣ | م آل عمران | ٣ |
| (٥) | وامرأته قائمة فضحكت فبشرناها بإسحق... ... ... | ٧١ | ك هود | ١١ |
| | وما أظن الساعة قائمة ... ... ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك الكهف | ١٨ |
| | ليقولن هذا لى وما أظن الساعة قائمة ... ... ... | ٥٠ | ك فصلت | ٤١ |
| | ما قطعتم من لينة أو تركتموها قائمة على أصولها فبإذن الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | م الحشر | ٥٩ |
| قِيَامٌ | : ثم نفخ فيه أخرى فإذا هم قيام ينظرون ... ... | ٦٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| (٢) | فما استطاعوا من قيام وما كانوا منتصرين ... ... | ٤٥ | ك الذاريات | ٥١ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| قِيَامًا: | الذين يذكرون الله قياما وقعودا وعلى جنوبهم ... | ١٩١ م آل عمران | ٣ |
| (٥) | ولا تؤتوا السفهاء أموالكم التى جعل الله لكم قياما | ٥ م النساء | ٤ |
| | فإذا قضيتم الصلاة فاذكروا الله قياما وقعودا | | |
| | وعلى جنوبكم ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٣ م « | ٤ |
| | جعل الله الكعبة البيت الحرام قياما للناس ... ... | ٩٧ م المائدة | ٥ |
| | والذين يبيتون لربهم سجدا وقياما ... ... ... ... | ٦٤ ك الفرقان | ٢٥ |
| قَوَّامُونَ: | الرجال قوامون على النساء ... ... ... ... ... | ٣٤ م النساء | ٤ |
| قَوَّامِينَ: | يأيها الذين آمنوا كونوا قوامين بالقسط شهداء لله | ١٣٥ م « | ٤ |
| (٢) | يأيها الذين آمنوا كونوا قوامين لله شهداء بالقسط ... | ٨ م المائدة | ٥ |
| الْقَيُّومُ: | الله لا إله إلا هو الحى القيوم لا تأخذه سنة ولا نوم | ٢٥٥ م البقرة | ٢ |
| (٣) | الله لا إله إلا هو الحى القيوم . نزل عليك الكتاب بالحق | ٢ م آل عمران | ٣ |
| | وعنت الوجوه للحى القيوم وقد خاب من حمل ظلما | ١١١ ك طه | ٢٠ |
| أَقْوَمُ: | ذلكم أقسط عند الله وأقوم للشهادة وأدنى ألا ترتابوا | ٢٨٢ م البقرة | ٢ |
| (٤) | ولو أنهم قالوا سمعنا وأطعنا وأسمع وانظرنا لكان | | |
| | خيرا لهم وأقوم ... ... ... ... ... ... ... | ٤٦ م النساء | ٤ |
| | إن هذا القرآن يهدى للتى هى أقوم ... ... ... ... | ٩ ك الإسراء | ١٧ |
| | إن ناشئة الليل هى أشد وطأ وأقوم قيلا ... ... ... | ٦ ك المزمل | ٧٣ |
| مَقَامٌ: | واتخذوا من مقام إبراهيم مصلى ... ... ... ... | ١٢٥ م البقرة | ٢ |
| (٨) | فيه آيات بينات مقام إبراهيم ومن دخله كان آمنا... | ٩٧ م آل عمران | ٣ |
| | فأخرجناهم من جنات وعيون . وكنوز ومقام كريم | ٥٨ ك الشعراء | ٢٦ |
| | وما منا إلا له مقام معلوم ... ... ... ... ... | ١٦٤ ك الصافات | ٣٧ |
| | كم تركوا من جنات وعيون . وزروع ومقام كريم | ٢٦ ك الدخان | ٤٤ |
| | إن المتقين فى مقام أمين ... ... ... ... ... | ٥١ ك « | ٤٤ |
| | ولمن خاف مقام ربه جنتان ... ... ... ... ... | ٤٦ م الرحمن | ٥٥ |
| | وأما من خاف مقام ربه ونهى النفس عن الهوى . | | |
| | فإن الجنة هى المأوى ... ... ... ... ... ... | ٤٠ ك النازعات | ٧٩ |
| مَقَامًا: | عسى أن يبعثك ربك مقاما محمودا ... ... ... | ٧٩ م الإسراء | ١٧ |
| (٢) | قال الذين كفروا للذين آمنوا أى الفريقين خير مقاما | ٧٣ ك مريم | ١٩ |
| مَقَامِكَ: | أنا آتيك به قبل أن تقوم من مقامك... ... ... | ٣٩ ك النمل | ٢٧ |
| مَقَامَهُمَا: | فآخران يقومان مقامهما ... ... ... ... ... | ١٠٧ م المائدة | ٥ |
| مَقَامِى: | إن كان كبر عليكم مقامى وتذكيرى بآيات الله | | |
| (٢) | فعلى الله توكلت ... ... ... ... ... ... ... | ٧١ ك يونس | ١٠ |
| | ذلك لمن خاف مقامى وخاف وعيد ... ... ... ... | ١٤ ك إبراهيم | ١٤ |
| مُقَامَ: | وإذ قالت طائفة منهم يأهل يثرب لا مقام لكم فارجعوا | ١٣ م الأحزاب | ٣٣ |
| مُقَامًا: | إنها ساءت مستقرا ومقاما ... ... ... ... ... | ٦٦ ك الفرقان | ٢٥ |
| (٢) | خالدين فيها حسنت مستقرا ومقاما ... ... ... ... | ٧٦ ك « | ٢٥ |
| الْمُقَامَةِ: | الذى أحلنا دار المقامة من فضله لا يمسنا فيها نصب | ٣٥ ك فاطر | ٣٥ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| مُقِيمٌ: | وما هم بخارجين منها ولهم عذاب مقيم ... ... ... | ٣٧ م المائدة | ٥ |
| (٨) | يبشرهم ربهم برحمة منه ورضوان وجنات لهم فيها نعيم مقيم | ٢١ م التوبة | ٩ |
| | هى حسبهم ولعنهم الله ولهم عذاب مقيم ... ... ... | ٦٨ م « | ٩ |
| | فسوف تعلمون من يأتيه عذاب يخزيه ويحل عليه | | |
| | عذاب مقيم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٩ ك هود | ١١ |
| | رب اجعلنى مقيم الصلاة ومن ذريتى ... ... ... | ٤٠ ك إبراهيم | ١٤ |
| | وإنها لبسبيل مقيم... ... ... ... ... ... ... | ٧٦ ك الحجر | ١٥ |
| | من يأتيه عذاب يخزيه ويحل عليه عذاب مقيم ... | ٤٠ ك الزمر | ٣٩ |
| | ألا إن الظالمين فى عذاب مقيم ... ... ... ... | ٤٥ ك الشورى | ٤٢ |
| الْمُقِيمِى: | والصابرين على ما أصابهم والمقيمى الصلاة ... | ٣٥ م الحج | ٢٢ |
| الْمُقِيمِينَ: | لكن الراسخون فى العلم منهم والمؤمنون يؤمنون | | |
| | بما أنزل إليك وما أنزل من قبلك والمقيمين الصلاة | ١٦٢ م النساء | ٤ |
| الْقَيِّمُ: | ذلك الدين القيم فلا تظلموا فيهن أنفسكم ... ... | ٣٦ م التوبة | ٩ |
| (٤) | أمر ألا تعبدوا إلا إياه ذلك الدين القيم ... ... ... | ٤٠ ك يوسف | ١٢ |
| | ذلك الدين القيم ولكن أكثر الناس لا يعلمون ... ... | ٣٠ ك الروم | ٣٠ |
| | فأقم وجهك للدين القيم من قبل أن يأتى يوم لا مرد | | |
| | له من الله... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٣ ك « | ٣٠ |
| قَيِّمًا: | ولم يجعل له عوجا . قيما لينذر بأسا شديدا من لدنه | ٢ ك الكهف | ١٨ |
| قَيِّمَةٌ: | رسول من الله يتلوا صحفا مطهرة . فيها كتب قيمة | ٣ م البينة | ٩٨ |
| (٢) | وذلك دين القيمة ... ... ... ... ... ... ... | ٥ م « | ٩٨ |
| قَوَامًا: | وكان بين ذلك قواما ... ... ... ... ... ... | ٦٧ ك الفرقان | ٢٥ |
| قِيَمًا: | قل إننى هدانى ربى إلى صراط مستقيم دينا قيما ... | ١٦١ ك الأنعام | ٦ |
| إِقَامَ: | وأوحينا إليهم فعل الخيرات وإقام الصلاة وإيتاء الزكاة | ٧٣ ك الأنبياء | ٢١ |
| (٢) | رجال لا تلهيهم تجارة ولا بيع عن ذكر الله وإقام الصلاة | ٣٧ م النور | ٢٤ |
| إِقَامَتِكُمْ: | تستخفونها يوم ظعنكم ويوم إقامتكم ... ... ... | ٨٠ ك النحل | ١٦ |
| تَقْوِيمٍ: | لقد خلقنا الإنسان فى أحسن تقويم ... ... ... | ٤ ك التين | ٩٥ |
| الْمُسْتَقِيمَ: | اهدنا الصراط المستقيم ... ... ... ... ... | ٦ ك الفاتحة | ١ |
| (٣١) | قل لله المشرق والمغرب يهدى من يشاء إلى صراط مستقيم | ١٤٢ م البقرة | ٢ |
| | والله يهدى من يشاء إلى صراط مستقيم ... ... ... | ٢١٣ م « | ٢ |
| | إن الله ربى وربكم فاعبدوه هذا صراط مستقيم ... | ٥١ م آل عمران | ٣ |
| | ومن يعتصم بالله فقد هدى إلى صراط مستقيم... ... | ١٠١ م « | ٣ |
| | ويهديهم إلى صراط مستقيم... ... ... ... ... | ١٦ م المائدة | ٥ |
| | من يشإ الله يضلله ومن يشأ يجعله على صراط مستقيم | ٣٩ ك الأنعام | ٦ |
| | واجتبيناهم وهديناهم إلى صراط مستقيم ... ... ... | ٨٧ ك « | ٦ |
| | قل إننى هدانى ربى إلى صراط مستقيم ... ... ... | ١٦١ ك « | ٦ |
| | قال فبما أغويتنى لأقعدن لهم صراطك المستقيم... ... | ١٦ ك الأعراف | ٧ |
| | ويهدى من يشاء إلى صراط مستقيم... ... ... ... | ٢٥ ك يونس | ١٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **ٱلْمُسْتَقِيمُ** | : ما من دابة إلا هو آخذ بناصيتها إن ربى على | | | |
| | صراط مستقيم... ... ... ... ... ... ... | ٥٦ | ك هـود | ١١ |
| | قال هذا صراط علىّ مستقيم... ... ... ... ... | ٤١ | ك الحجـر | ١٥ |
| | هل يستوى هو ومن يأمر بالعدل وهو على صراط مستقيم | ٧٦ | ك النحـل | ١٦ |
| | شاكرا لأنعمه آجتباه وهداه إلى صراط مستقيم ... | ١٢١ | ك « | ١٦ |
| | وأوفوا الكيل إذا كلتم وزنوا بالقسطاس المستقيم... | ٣٥ | ك الإسـراء | ١٧ |
| | وإن الله ربى وربكم فآعبدوه هذا صراط مستقيم ... | ٣٦ | ك مـريم | ١٩ |
| | وإن الله لهاد الذين آمنوا إلى صراط مستقيم... ... | ٥٤ | م الحـج | ٢٢ |
| | وآدع إلى ربك إنك لعلى هدى مستقيم ... ... ... | ٦٧ | م « | ٢٢ |
| | وإنك لتدعوهم إلى صراط مستقيم ... ... ... ... | ٧٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | والله يهدى من يشاء إلى صراط مستقيم... ... ... | ٤٦ | م النـور | ٢٤ |
| | وزنوا بالقسطاس المستقيم ... ... ... ... ... | ١٨٢ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| | إنك لمن المرسلين : علىّ صراط مستقيم ... ... ... | ٤ | ك يـس | ٣٦ |
| | وأن آعبدونى هذا صراط مستقيم ... ... ... ... | ٦١ | ك « | ٣٦ |
| | وهديناهما الصراط المستقيم... ... ... ... ... | ١١٨ | ك الصافات | ٣٧ |
| | وإنك لتهدى إلى صراط مستقيم... ... ... ... ... | ٥٢ | ك الشورى | ٤٢ |
| | فآستمسك بالذى أوحى إليك إنك على صراط مستقيم | ٤٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وإنه لعلم للساعة فلا تمترن بها وآتبعون هذا صراط مستقيم | ٦١ | ك « | ٤٣ |
| | إن الله هو ربى وربكم فآعبدوه هذا صراط مستقيم | ٦٤ | ك « | ٤٣ |
| | يهدى إلى الحق وإلى طريق مستقيم... ... ... ... | ٣٠ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | أفمن يمشى مكبا على وجهه أهدى أمن يمشى سويا على | | | |
| | صراط مستقيم... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك المـلك | ٦٧ |
| **مُسْتَقِيمًا** | : ولهديناهم صراطا مستقيما ... ... ... ... ... | ٦٨ | م النسـاء | ٤ |
| (٦) | ويهديهم إليه صراطا مستقيما ... ... ... ... ... | ١٧٥ | م « | ٤ |
| | وهـذا صراط ربك مستقيما ... ... ... ... ... | ١٢٦ | ك الأنعـام | ٦ |
| | وأن هذا صراطى مستقيما فآتبعوه ... ... ... ... | ١٥٣ | م « | ٦ |
| | ويتم نعمته عليك ويهديك صراطا مستقيما ... ... | ٢ | م الفتـح | ٤٨ |
| | ولتكون آية للمؤمنين ويهديكم صراطا مستقيما ... ... | ٢٠ | م « | ٤٨ |
| **ٱلْقِيَامَةِ** | : ويوم القيامة يردّون إلى أشدّ العذاب ... ... | ٨٥ | م البقـرة | ٢ |
| (٧٠) | فالله يحكم بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون ... | ١١٣ | م « | ٢ |
| | ولا يكلمهم الله يوم القيامة ولا يزكيهم ولهم عذاب أليم | ١٧٤ | م « | ٢ |
| | والذين آتقوا فوقهم يوم القيامة... ... ... ... | ٢١٢ | م « | ٢ |
| | وجاعل الذين آتبعوك فوق الذين كفروا إلى يوم القيامة | ٥٥ | م آل عمران | ٣ |
| | ولا يكلمهم الله ولا ينظر إليهم يوم القيامة... ... ... | ٧٧ | م « | ٣ |
| | ومن يغلل يأت بما غل يوم القيامة ... ... ... ... | ١٦١ | م « | ٣ |
| | سيطوقون ما بخلوا به يوم القيامة ... ... ... ... | ١٨٠ | م « | ٣ |
| | وإنما توفون أجوركم يوم القيامة ... ... ... ... | ١٨٥ | م « | ٣ |
| | ربنا وآتنا ما وعدتنا على رسلك ولا تخزنا يوم القيامة | ١٩٤ | م « | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **ٱلْقِيَامَةِ** | : الله لا إله إلا هو ليجمعنكم إلى يوم القيامة لا ريب فيه | ٨٧ | م النسـاء | ٤ |
| | فمن يجادل الله عنهم يوم القيامة أم من يكون عليهم وكيلا | ١٠٩ | م « | ٤ |
| | فالله يحكم بينكم يوم القيامة ... ... ... ... ... | ١٤١ | م « | ٤ |
| | ويوم القيامة يكون عليهم شهيدا ... ... ... ... ... | ١٥٩ | م « | ٤ |
| | فأغرينا بينهم العداوة والبغضاء إلى يوم القيامة ... | ١٤ | م المـائدة | ٥ |
| | لو أن لهم ما فى الأرض جميعا ومثله معه ليفتدوا به من | | | |
| | عذاب يوم القيامة ما تقبل منهم ... ... ... ... | ٣٦ | م « | ٥ |
| | وألقينا بينهم العداوة والبغضاء إلى يوم القيامة... ... | ٦٤ | م « | ٥ |
| | ليجمعنكم إلى يوم القيامة لا ريب فيه ... ... ... ... | ١٢ | ك الأنعـام | ٦ |
| | قل هى للذين آمنوا فى الحياة الدنيا خالصة يوم القيامة | ٣٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | وإذ تأذن ربك ليبعثن عليهم إلى يوم القيامة من يسومهم | | | |
| | سوء العذاب ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٦٧ | م « | ٧ |
| | قالوا بلى شهدنا أن تقولوا يوم القيامة إنا كنا عن هذا غافلين | ١٧٢ | ك « | ٧ |
| | وما ظن الذين يفترون على الله الكذب يوم القيامة... | ٦٠ | ك يـونس | ١٠ |
| | إن ربك يقضى بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون | ٩٣ | ك « | ١٠ |
| | وأتبعوا فى هذه الدنيا لعنة ويوم القيامة ... ... ... | ٦٠ | ك هـود | ١١ |
| | يقدم قومه يوم القيامة فأوردهم النار... ... ... ... | ٩٨ | ك « | ١١ |
| | وأتبعوا فى هذه لعنة ويوم القيامة ... ... ... ... | ٩٩ | ك « | ١١ |
| | ليحملوا أوزارهم كاملة يوم القيامة ... ... ... ... | ٢٥ | ك النحـل | ١٦ |
| | ثم يوم القيامة يخزيهم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك « | ١٦ |
| | وليبين لكم يوم القيامة ما كنتم فيه تختلفون ... ... | ٩٢ | ك « | ١٦ |
| | وإن ربك ليحكم بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون | ١٢٤ | ك « | ١٦ |
| | ونخرج له يوم القيامة كتابا يلقاه منشورا ... ... ... | ١٣ | ك الإسـراء | ١٧ |
| | وإن من قرية إلا نحن مهلكوها قبل يوم القيامة ... | ٥٨ | ك « | ١٧ |
| | لئن أخرتن إلى يوم القيامة لأحتنكن ذريته إلا قليلا | ٦٢ | ك « | ١٧ |
| | ونحشرهم يوم القيامة على وجوههم عميا وبكما وصما | ٩٧ | ك « | ١٧ |
| | فلا نقيم لهم يوم القيامة وزنا ... ... ... ... ... | ١٠٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | وكلهم آتيه يوم القيامة فردا ... ... ... ... ... | ٩٥ | ك مـريم | ١٩ |
| | من أعرض عنه فإنه يحمل يوم القيامة وزرا ... ... | ١٠٠ | ك طـه | ٢٠ |
| | خالدين فيه وساء لهم يوم القيامة حملا ... ... ... | ١٠١ | ك « | ٢٠ |
| | ونحشره يوم القيامة أعمى ... ... ... ... ... ... | ١٢٤ | ك « | ٢٠ |
| | ونضع الموازين القسط ليوم القيامة ... ... ... ... | ٤٧ | ك الأنبيـاء | ٢١ |
| | ونذيقه يوم القيامة عذاب الحريق ... ... ... ... | ٩ | م الحـج | ٢٢ |
| | إن الله يفصل بينهم يوم القيامة ... ... ... ... ... | ١٧ | م « | ٢٢ |
| | الله يحكم بينكم يوم القيامة فيما كنتم فيه تختلفون ... | ٦٩ | م « | ٢٢ |
| | ثم إنكم يوم القيامة تبعثون... ... ... ... ... ... | ١٦ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | يضاعف له العذاب يوم القيامة ويخلد فيه مهانا ... | ٦٩ | م الفـرقان | ٢٥ |
| | وجعلناهم أئمة يدعون إلى النار ويوم القيامة لا ينصرون | ٤١ | ك القصص | ٢٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **ٱلْقِيَامَةِ** | وأتبعناهم فى هذه الدنيا لعنة ويوم القيامة هم من المقبوحين ... ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك القصص | ٢٨ |
| | ثم هو يوم القيامة من المحضرين ... ... ... ... ... | ٦١ | ك « | ٢٨ |
| | قل أرأيتم إن جعل الله عليكم الليل سرمدا إلى يوم القيامة من إله غير الله يأتيكم بضياء ... ... ... | ٧١ | ك « | ٢٨ |
| | قل أرأيتم إن جعل الله عليكم النهار سرمدا إلى يوم القيامة من إله غير الله يأتيكم بليل تسكنون فيه ... | ٧٢ | ك « | ٢٨ |
| | وليسئلن يوم القيامة عما كانوا يفترون ... ... ... | ١٣ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ثم يوم القيامة يكفر بعضكم ببعض ويلعن بعضكم بعضا | ٢٥ | ك « | ٢٩ |
| | إن ربك هو يفصل بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون | ٢٥ | ك السجدة | ٣٢ |
| | ويوم القيامة يكفرون بشرككم ... ... ... ... ... | ١٤ | ك فاطر | ٣٥ |
| | قل إن الخاسرين الذين خسروا أنفسهم وأهليهم يوم القيامة | ١٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| | أفمن يتقى بوجهه سوء العذاب يوم القيامة... ... | ٢٤ | ك « | ٣٩ |
| | ثم إنكم يوم القيامة عند ربكم تختصمون ... ... ... | ٣١ | ك « | ٣٩ |
| | لافتدوا به من سوء العذاب يوم القيامة ... ... ... | ٤٧ | ك « | ٣٩ |
| | ويوم القيامة ترى الذين كذبوا على الله وجوههم مسودة | ٦٠ | ك « | ٣٩ |
| | والأرض جميعا قبضته يوم القيامة ... ... ... ... | ٦٧ | ك « | ٣٩ |
| | أفمن يلقى فى النار خير أم من يأتى آمنا يوم القيامة ... | ٤٠ | ك فصلت | ٤١ |
| | إن الخاسرين الذين خسروا أنفسهم وأهليهم يوم القيامة | ٤٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| | إن ربك يقضى بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون | ١٧ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | قل الله يحييكم ثم يميتكم ثم يجمعكم إلى يوم القيامة ... | ٢٦ | ك « | ٤٥ |
| | ومن أضل ممن يدعوا من دون الله من لا يستجيب له إلى يوم القيامة ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | ثم ينبئهم بما عملوا يوم القيامة ... ... ... ... ... | ٧ | م المجادلة | ٥٨ |
| | يوم القيامة يفصل بينكم ... ... ... ... ... ... | ٣ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | أم لكم أيمان علينا بالغة إلى يوم القيامة ... ... ... | ٣٩ | ك القلم | ٦٨ |
| | لا أقسم بيوم القيامة ... ... ... ... ... ... ... | ١ | ك القيامة | ٧٥ |
| | يسئل أيان يوم القيامة ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك « | ٧٥ |
| **ٱلْقَوْمُ** | تشابهت قلوبهم قد بينا الآيات لقوم يوقنون ... | ١١٨ | م البقرة | ٢ |
| (٢٠٦) | والسحاب المسخر بين السماء والأرض لآيات لقوم يعقلون ... ... ... ... ... ... ... | ١٦٤ | م « | ٢ |
| | وتلك حدود الله يبينها لقوم يعلمون ... ... ... ... | ٢٣٠ | م « | ٢ |
| | أفرغ علينا صبرا وثبت أقدامنا وانصرنا على القوم الكافرين | ٢٥٠ | م « | ٢ |
| | والله لا يهدى القوم الظالمين... ... ... ... ... | ٢٥٨ | م « | ٢ |
| | والله لا يهدى القوم الكافرين ... ... ... ... ... | ٢٦٤ | م « | ٢ |
| | أنت مولانا فانصرنا على القوم الكافرين ... ... ... | ٢٨٦ | م « | ٢ |
| | والله لا يهدى القوم الظالمين... ... ... ... ... | ٨٦ | م آل عمران | ٣ |
| | كمثل ريح فيها صر أصابت حرث قوم ظلموا أنفسهم | ١١٧ | م « | ٣ |
| **ٱلْقَوْمُ** | إن يمسسكم قرح فقد مس القوم قرح مثله ... ... | ١٤٠ | م آل عمران | ٣ |
| | وثبت أقدامنا وانصرنا على القوم الكافرين ... ... | ١٤٧ | م « | ٣ |
| | فما لهؤلاء القوم لا يكادون يفقهون حديثا ... ... | ٧٨ | م النساء | ٤ |
| | إلا الذين يصلون إلى قوم بينكم وبينهم ميثاق ... ... | ٩٠ | م « | ٤ |
| | فإن كان من قوم عدو لكم وهو مؤمن فتحرير رقبة مؤمنة | ٩٢ | م « | ٤ |
| | وإن كان من قوم بينكم وبينهم ميثاق فدية مسلمة إلى أهله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩٢ | م « | ٤ |
| | ولا تهنوا فى ابتغاء القوم ... ... ... ... ... ... | ١٠٤ | م « | ٤ |
| | ولا يجرمنكم شنآن قوم أن صدوكم عن المسجد الحرام أن تعتدوا... ... ... ... ... ... ... ... | ٢ | م المائدة | ٥ |
| | ولا يجرمنكم شنآن قوم على ألا تعدلوا ... ... ... | ٨ | م « | ٥ |
| | إذ هم قوم أن يبسطوا إليكم أيديهم ... ... ... ... | ١١ | م « | ٥ |
| | فافرق بيننا وبين القوم الفاسقين ... ... ... ... | ٢٥ | م « | ٥ |
| | فلا تأس على القوم الفاسقين ... ... ... ... ... | ٢٦ | م « | ٥ |
| | سماعون للكذب سماعون لقوم آخرين لم يأتوك... ... | ٤١ | م « | ٥ |
| | ومن أحسن من الله حكما لقوم يوقنون ... ... ... | ٥٠ | م « | ٥ |
| | إن الله لا يهدى القوم الظالمين ... ... ... ... ... | ٥١ | م « | ٥ |
| | فسوف يأتى الله بقوم يحبهم ويحبونه ... ... ... | ٥٤ | م « | ٥ |
| | ذلك بأنهم قوم لا يعقلون ... ... ... ... ... ... | ٥٨ | م « | ٥ |
| | إن الله لا يهدى القوم الكافرين ... ... ... ... ... | ٦٧ | م « | ٥ |
| | فلا تأس على القوم الكافرين ... ... ... ... ... | ٦٨ | م « | ٥ |
| | ولا تتبعوا أهواء قوم قد ضلوا من قبل وأضلوا كثيرا | ٧٧ | م « | ٥ |
| | ونطمع أن يدخلنا ربنا مع القوم الصالحين ... ... | ٨٤ | م « | ٥ |
| | قد سألها قوم من قبلكم ثم أصبحوا بها كافرين... ... | ١٠٢ | م « | ٥ |
| | والله لا يهدى القوم الفاسقين ... ... ... ... ... | ١٠٨ | م « | ٥ |
| | فقطع دابر القوم الذين ظلموا والحمد لله رب العالمين | ٤٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | هل يهلك إلا القوم الظالمون ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك « | ٦ |
| | وإما ينسينك الشيطان فلا تقعد بعد الذكرى مع القوم الظالمين ... ... ... ... ... ... ... | ٦٨ | ك « | ٦ |
| | فلما أفل قال لئن لم يهدنى ربى لأكونن من القوم الضالين | ٧٧ | ك « | ٦ |
| | قد فصلنا الآيات لقوم يعلمون ... ... ... ... ... | ٩٧ | ك « | ٦ |
| | قد فصلنا الآيات لقوم يفقهون ... ... ... ... ... | ٩٨ | ك « | ٦ |
| | إن فى ذلكم لآيات لقوم يؤمنون ... ... ... ... | ٩٩ | ك « | ٦ |
| | ولنبينه لقوم يعلمون ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٥ | ك « | ٦ |
| | قد فصلنا الآيات لقوم يذكرون ... ... ... ... ... | ١٢٦ | ك « | ٦ |
| | كما أنشأكم من ذرية قوم آخرين ... ... ... ... | ١٣٣ | ك « | ٦ |
| | إن الله لا يهدى القوم الظالمين ... ... ... ... ... | ١٤٤ | ك « | ٦ |
| | ولا يرد بأسه عن القوم المجرمين... ... ... ... ... | ١٤٧ | ك « | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ٱلْقَوْمُ: | كذلك نفصل الآيات لقوم يعلمون ... ... ... | ٣٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | قالوا ربنا لا تجعلنا مع القوم الظالمين ... ... ... | ٤٧ | ك « | ٧ |
| | ولقد جئناهم بكتاب فصلناه على علم هدى ورحمة لقوم يؤمنون | ٥٢ | ك « | ٧ |
| | كذلك نصرف الآيات لقوم يشكرون ... ... ... | ٥٨ | ك « | ٧ |
| | واذكروا إذ جعلكم خلفاء من بعد قوم نوح ... ... | ٦٩ | ك « | ٧ |
| | إنكم لتأتون الرجال شهوة من دون النساء بل أنتم قوم مسرفون | ٨١ | ك « | ٧ |
| | فكيف آسى على قوم كافرين... ... ... ... ... | ٩٣ | ك « | ٧ |
| | أفأمنوا مكر الله فلا يأمن مكر الله إلا القوم الخاسرون | ٩٩ | ك « | ٧ |
| | قال الملأ من قوم فرعون إن هذا لساحر عليم ... ... | ١٠٩ | ك « | ٧ |
| | وقال الملأ من قوم فرعون أتذر موسى وقومه ليفسدوا في الأرض ويذرك وآلهتك ... ... ... ... ... | ١٢٧ | ك « | ٧ |
| | وأورثنا القوم الذين كانوا يستضعفون مشارق الأرض ومغاربها... ... ... ... ... ... ... | ١٣٧ | ك « | ٧ |
| | فأتوا على قوم يعكفون على أصنام لهم ... ... ... | ١٣٨ | ك « | ٧ |
| | قال إنكم قوم تجهلون ... ... ... ... ... ... | ١٣٨ | ك « | ٧ |
| | واتخذ قوم موسى من بعده من حليهم عجلا جسدا له خوار | ١٤٨ | ك « | ٧ |
| | قال ابن أم إن القوم استضعفوني وكادوا يقتلونني | ١٥٠ | ك « | ٧ |
| | فلا تشمت بي الأعداء ولا تجعلني مع القوم الظالمين | ١٥٠ | ك « | ٧ |
| | ومن قوم موسى أمة يهدون بالحق وبه يعدلون ... | ١٥٩ | ك « | ٧ |
| | ذلك مثل القوم الذين كذبوا بآياتنا ... ... ... | ١٧٦ | ك « | ٧ |
| | ساء مثلا القوم الذين كذبوا بآياتنا ... ... ... | ١٧٧ | ك « | ٧ |
| | إن أنا إلا نذير وبشير لقوم يؤمنون ... ... ... | ١٨٨ | ك « | ٧ |
| | هذا بصائر من ربكم وهدى ورحمة لقوم يؤمنون ... | ٢٠٣ | ك « | ٧ |
| | ذلك بأن الله لم يك مغيرا نعمة أنعمها على قوم حتى يغيروا ما بأنفسهم ... ... ... ... ... | ٥٣ | م الأنفال | ٨ |
| | وإما تخافن من قوم خيانة فانبذ إليهم على سواء ... | ٥٨ | م « | ٨ |
| | يغلبوا ألفا من الذين كفروا بأنهم قوم لا يفقهون ... | ٦٥ | م « | ٨ |
| | فعليكم النصر إلا على قوم بينكم وبينهم ميثاق ... ... | ٧٢ | م « | ٨ |
| | ذلك بأنهم قوم لا يعلمون ... ... ... ... ... | ٦ | م التوبة | ٩ |
| | ونفصل الآيات لقوم يعلمون ... ... ... ... ... | ١١ | م « | ٩ |
| | وينصركم عليهم ويشف صدور قوم مؤمنين... ... ... | ١٤ | م « | ٩ |
| | لا يستوون عند الله والله لا يهدي القوم الظالمين ... | ١٩ | م « | ٩ |
| | والله لا يهدي القوم الفاسقين ... ... ... ... | ٢٤ | م « | ٩ |
| | زين لهم سوء أعمالهم والله لا يهدي القوم الكافرين | ٣٧ | م « | ٩ |
| | ويحلفون بالله إنهم لمنكم وما هم منكم ولكنهم قوم يفرقون | ٥٦ | م « | ٩ |
| | ألم يأتهم نبأ الذين من قبلهم قوم نوح وعاد وثمود... | ٧٠ | م « | ٩ |
| | وقوم إبراهيم وأصحاب مدين والمؤتفكات... ... ... | ٧٠ | م « | ٩ |
| | والله لا يهدي القوم الفاسقين ... ... ... ... | ٨٠ | م « | ٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ٱلْقَوْمُ: | فإن ترضوا عنهم فإن الله لا يرضى عن القوم الفاسقين | ٩٦ | م التوبة | ٩ |
| | فأنهار به في نار جهنم والله لا يهدي القوم الظالمين ... | ١٠٩ | م « | ٩ |
| | صرف الله قلوبهم بأنهم قوم لا يفقهون ... ... ... | ١٢٧ | م « | ٩ |
| | ما خلق الله ذلك إلا بالحق يفصل الآيات لقوم يعلمون | ٥ | ك يونس | ١٠ |
| | وما خلق الله في السموات والأرض لآيات لقوم يتقون | ٦ | ك « | ١٠ |
| | كذلك نجزي القوم المجرمين... ... ... ... ... | ١٣ | ك « | ١٠ |
| | كذلك نفصل الآيات لقوم يتفكرون... ... ... ... | ٢٤ | ك « | |
| | إن في ذلك لآيات لقوم يسمعون ... ... ... ... | ٦٧ | ك « | ١٠ |
| | فقالوا على الله توكلنا ربنا لا تجعلنا فتنة للقوم الظالمين | ٨٥ | ك « | ١٠ |
| | ونجنا برحمتك من القوم الكافرين ... ... ... ... | ٨٦ | ك « | ١٠ |
| | فلولا كانت قرية آمنت فنفعها إيمانها إلا قوم يونس | ٩٨ | ك « | ١٠ |
| | وما تغني الآيات والنذر عن قوم لا يؤمنون ... ... | ١٠١ | ك « | ١٠ |
| | واستوت على الجودي وقيل بعدا للقوم الظالمين ... | ٤٤ | ك هود | ١١ |
| | ألا إن عادا كفروا ربهم ألا بعدا لعاد قوم هود... | ٦٠ | ك « | ١١ |
| | قالوا لا تخف إنا أرسلنا إلى قوم لوط ... ... ... | ٧٠ | ك « | ١١ |
| | يجادلنا في قوم لوط ... ... ... ... ... ... | ٧٤ | ك « | ١١ |
| | ويا قوم لا يجرمنكم شقاقي أن يصيبكم مثل ما أصاب قوم نوح ... ... ... ... ... ... ... | ٨٩ | ك « | ١١ |
| | أو قوم هود ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨٩ | ك « | ١١ |
| | أو قوم صالح ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨٩ | ك « | ١١ |
| | وما قوم لوط منكم ببعيد... ... ... ... ... ... | ٨٩ | ك « | ١١ |
| | إني تركت ملة قوم لا يؤمنون بالله وهم بالآخرة هم كافرون | ٣٧ | ك يوسف | ١٢ |
| | إنه لا ييأس من روح الله إلا القوم الكافرون ... ... | ٨٧ | ك « | ١٢ |
| | ولا يرد بأسنا عن القوم المجرمين... ... ... ... | ١١٠ | ك « | ١٢ |
| | وتفصيل كل شيء وهدى ورحمة لقوم يؤمنون ... ... | ١١١ | ك « | ١٢ |
| | إن في ذلك لآيات لقوم يتفكرون ... ... ... ... | ٣ | م الرعد | ١٣ |
| | إن في ذلك لآيات لقوم يعقلون... ... ... ... ... | ٤ | م « | ١٣ |
| | إنما أنت منذر ولكل قوم هاد ... ... ... ... ... | ٧ | م « | ١٣ |
| | إن الله لا يغير ما بقوم حتى يغيروا ما بأنفسهم ... ... | ١١ | م « | ١٣ |
| | وإذا أراد الله بقوم سوءا فلا مرد له ... ... ... | ١١ | م « | ١٣ |
| | ألم يأتكم نبأ الذين من قبلكم قوم نوح وعاد وثمود... | ٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | لقالوا إنما سكرت أبصارنا بل نحن قوم مسحورون | ١٥ | ك الحجر | ١٥ |
| | قالوا إنا أرسلنا إلى قوم مجرمين ... ... ... ... | ٥٨ | ك « | ١٥ |
| | قال إنكم قوم منكرون ... ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك « | ١٥ |
| | إن في ذلك لآية لقوم يتفكرون ... ... ... ... | ١١ | ك النحل | ١٦ |
| | والنجوم مسخرات بأمره إن في ذلك لآيات لقوم يعقلون | ١٢ | ك « | ١٦ |
| | إن في ذلك لآية لقوم يذكرون ... ... ... ... | ١٣ | ك « | ١٦ |
| | يتوارى من القوم من سوء ما بشر به ... ... ... | ٥٩ | ك « | ١٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **ٱلْقَوْمُ** | : إلا لتبين لهم الذى اختلفوا فيه وهدى ورحمة | | | |
| | لقوم يؤمنون ... ... ... ... ... ... ... | ٦٤ | ك النحل | ١٦ |
| | فأحيا به الأرض بعد موتها إن فى ذلك لآية لقوم يسمعون | ٦٥ | ك « | ١٦ |
| | تتخذون منه سكرا ورزقا حسنا إن فى ذلك لآية لقوم يعقلون | ٦٧ | ك « | ١٦ |
| | فيه شفاء للناس إن فى ذلك لآية لقوم يتفكرون... ... | ٦٩ | ك « | ١٦ |
| | ما يمسكهن إلا الله إن فى ذلك لآيات لقوم يؤمنون | ٧٩ | ك « | ١٦ |
| | وأن الله لا يهدى القوم الكافرين ... ... ... ... | ١٠٧ | ك « | ١٦ |
| | وجدها تطلع على قوم لم نجعل لهم من دونها سترا ... | ٩٠ | م الكهف | ١٨ |
| | ولكنا حملنا أوزارا من زينة القوم ... ... ... ... | ٨٧ | ك طـه | ٢٠ |
| | إنهم كانوا قوم سوء فاسقين... ... .. ... ... ... | ٧٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ونصرناه من القوم الذين كذبوا بآياتنا ... ... ... | ٧٧ | ك « | ٢١ |
| | إنهم كانوا قوم سوء فأغرقناهم أجمعين ... ... ... | ٧٧ | ك « | ٢١ |
| | إذ نفشت فيه غنم القوم وكنا لحكمهم شاهدين... ... | ٧٨ | ك « | ٢١ |
| | إن فى هذا لبلاغا لقوم عابدين ... ... ... ... ... | ١٠٦ | ك « | ٢١ |
| | وإن يكذبوك فقد كذبت قبلهم قوم نوح وعاد وثمود | ٤٢ | م الحـج | ٢٢ |
| | وقوم إبراهيم ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | م « | ٢٢ |
| | وقوم لوط ... ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | م « | ٢٢ |
| | فقل الحمد لله الذى نجانا من القوم الظالمين ... ... | ٢٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فأخذتهم الصيحة بالحق فجعلناهم غثاء فبعدا للقوم الظالمين | ٤١ | ك « | ٢٣ |
| | وجعلناهم أحاديث فبعدا لقوم لا يؤمنون ... ... ... | ٤٤ | ك « | ٢٣ |
| | رب فلا تجعلنى فى القوم الظالمين ... ... ... ... | ٩٤ | ك « | ٢٣ |
| | إن هذا إلا إفك افتراه وأعانه عليه قوم آخرون ... | ٤ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| | فقلنا اذهبا إلى القوم الذين كذبوا بآياتنا فدمرناهم تدميرا | ٣٦ | ك « | ٢٥ |
| | وقوم نوح لما كذبوا الرسل أغرقناهم ... ... ... | ٣٧ | ك « | ٢٥ |
| | وإذ نادى ربك موسى أن ائت القوم الظالمين ... | ١٠ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| | قوم فرعون ألا يتقون ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك « | ٢٦ |
| | كذبت قوم نوح المرسلين ... ... ... ... ... ... | ١٠٥ | ك « | ٢٦ |
| | كذبت قوم لوط المرسلين ... ... ... ... ... ... | ١٦٠ | ك « | ٢٦ |
| | وتذرون ما خلق لكم ربكم من أزواجكم بل أنتم قوم عادون | ١٦٦ | ك « | ٢٦ |
| | إنها كانت من قوم كافرين ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك النمـل | ٢٧ |
| | قال طائركم عند الله بل أنتم قوم تفتنون ... ... ... | ٤٧ | ك « | ٢٧ |
| | فتلك بيوتهم خاوية بما ظلموا إن فى ذلك لآية لقوم يعلمون | ٥٢ | ك « | ٢٧ |
| | بل أنتم قوم تجهلون ... ... ... ... ... ... ... | ٥٥ | ك « | ٢٧ |
| | أإله مع الله بل هم قوم يعدلون ... ... ... ... ... | ٦٠ | ك « | ٢٧ |
| | إن فى ذلك لآيات لقوم يؤمنون ... ... ... ... ... | ٨٦ | ك « | ٢٧ |
| | نتلوا عليك من نبإ موسى وفرعون بالحق لقوم يؤمنون | ٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | قال رب نجنى من القوم الظالمين ... ... ... ... ... | ٢١ | ك « | ٢٨ |
| | قال لا تخف نجوت من القوم الظالمين ... ... ... ... | ٢٥ | ك « | ٢٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **ٱلْقَوْمُ** | : إن الله لا يهدى القوم الظالمين ... ... ... ... ... | ٥٠ | ك القصص | ٢٨ |
| | إن قارون كان من قوم موسى فبغى عليهم ... ... ... | ٧٦ | ك « | ٢٨ |
| | فأنجاه الله من النار إن فى ذلك لآيات لقوم يؤمنون | ٢٤ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | قال رب انصرنى على القوم المفسدين... ... ... ... | ٣٠ | ك « | ٢٩ |
| | ولقد تركنا منها آية بينة لقوم يعقلون ... ... ... ... | ٣٥ | ك « | ٢٩ |
| | إن فى ذلك لرحمة وذكرى لقوم يؤمنون ... ... ... | ٥١ | ك « | ٢٩ |
| | وجعل بينكم مودة ورحمة إن فى ذلك لآيات لقوم يتفكرون | ٢١ | ك الـروم | ٣٠ |
| | إن فى ذلك لآيات لقوم يسمعون ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك « | ٣٠ |
| | إن فى ذلك لآيات لقوم يعقلون... ... ... ... ... | ٢٤ | ك « | ٣٠ |
| | كذلك نفصل الآيات لقوم يعقلون ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٣٠ |
| | إن فى ذلك لآيات لقوم يؤمنون... ... ... ... ... | ٣٧ | ك « | ٣٠ |
| | قالوا طائركم معكم أئن ذكرتم بل أنتم قوم مسرفون ... | ١٩ | ك يس | ٣٦ |
| | كذبت قبلهم قوم نوح وعاد وفرعون ذو الأوتاد ... | ١٢ | ك ص | ٣٨ |
| | وثمود وقوم لوط وأصحاب الأيكة أولئك الأحزاب | ١٣ | ك « | ٣٨ |
| | إن فى ذلك لآيات لقوم يتفكرون ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك الـزمر | ٣٩ |
| | إن فى ذلك لآيات لقوم يؤمنون ... ... ... ... ... | ٥٢ | م « | ٣٩ |
| | كذبت قبلهم قوم نوح والأحزاب من بعدهم ... ... | ٥ | ك غافـر | ٤٠ |
| | مثل دأب قوم نوح وعاد وثمود والذين من بعدهم... | ٣١ | ك « | ٤٠ |
| | كتاب فصلت آياته قرآنا عربيا لقوم يعلمون ... ... | ٣ | ك فصـلت | ٤١ |
| | ما ضربوه لك إلا جدلا بل هم قوم خصمون ... ... | ٥٨ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وقيله يا رب إن هؤلاء قوم لا يؤمنون ... ... ... | ٨٨ | ك « | ٤٣ |
| | ولقد فتنا قبلهم قوم فرعون وجاءهم رسول كريم ... | ١٧ | ك الدخان | ٤٤ |
| | فدعا ربه أن هؤلاء قوم مجرمون... ... ... ... ... | ٢٢ | ك « | ٤٤ |
| | أهم خير أم قوم تبع والذين من قبلهم أهلكناهم ... | ٣٧ | ك « | ٤٤ |
| | وفى خلقكم وما يبث من دابة آيات لقوم يوقنون ... | ٤ | ك الجاثيـة | ٤٥ |
| | وتصريف الرياح آيات لقوم يعقلون ... ... ... ... | ٥ | ك « | ٤٥ |
| | وما فى الأرض جميعا منه إن فى ذلك لآيات لقوم يتفكرون | ١٣ | ك « | ٤٥ |
| | هذا بصائر للناس وهدى ورحمة لقوم يوقنون... ... | ٢٠ | ك « | ٤٥ |
| | إن الله لا يهدى القوم الظالمين ... ... ... ... ... | ١٠ | م الأحقاف | ٤٦ |
| | فأصبحوا لا يرى إلا مساكنهم كذلك نجزى القوم المجرمين | ٢٥ | ك « | ٤٦ |
| | بلاغ فهل يهلك إلا القوم الفاسقون ... ... ... ... | ٣٥ | م « | ٤٦ |
| | ستدعون إلى قوم أولى بأس شديد تقاتلونهم أو يسلمون | ١٦ | م الفتـح | ٤٨ |
| | يأيها الذين آمنوا لا يسخر قوم ... ... ... ... ... | ١١ | م الحجرات | ٤٩ |
| | من قوم عسى أن يكونوا خيرا منهم... ... ... ... | ١١ | م « | ٤٩ |
| | كذبت قبلهم قوم نوح وأصحاب الرس وثمود ... ... | ١٢ | ك قـ | ٥٠ |
| | وأصحاب الأيكة وقوم تبع كل كذب الرسل فحق وعيد | ١٤ | ك « | ٥٠ |
| | إذ دخلوا عليه فقالوا سلاما قال سلام قوم منكرون | ٢٥ | ك الذاريات | ٥١ |
| | قالوا إنا أرسلنا إلى قوم مجرمين ... ... ... ... | ٣٢ | ك « | ٥١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **ٱلْقَوْمُ** | وقوم نوح من قبل إنهم كانوا قوما فاسقين... ... | ٤٦ | ك الذاريات | ٥١ |
| | أتواصوا به بل هم قوم طاغون ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك « | ٥١ |
| | أم تأمرهم أحلامهم بهذا أم هم قوم طاغون... ... | ٣٢ | ك الطور | ٥٢ |
| | وقوم نوح من قبل إنهم كانوا هم أظلم وأطغى... ... | ٥٢ | ك النجم | ٥٣ |
| | كذبت قبلهم قوم نوح فكذبوا عبدنا وقالوا مجنون وازدجر | ٩ | ك القمر | ٥٤ |
| | كذبت قوم لوط بالنذر... ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك « | ٥٤ |
| | ذلك بأنهم قوم لا يفقهون ... ... ... ... ... | ١٣ | م الحشر | ٥٩ |
| | تحسبهم جميعا وقلوبهم شتى ذلك بأنهم قوم لا يعقلون | ١٤ | م « | ٥٩ |
| | فلما زاغوا أزاغ الله قلوبهم والله لا يهدى القوم الفاسقين | ٥ | م الصف | ٦١ |
| | والله لا يهدى القوم الظالمين ... ... ... ... ... | ٧ | م « | ٦١ |
| | بئس مثل القوم الذين كذبوا بآيات الله ... ... ... | ٥ | م الجمعة | ٦٢ |
| | والله لا يهدى القوم الظالمين ... ... ... ... ... | ٥ | م « | ٦٢ |
| | لن يغفر الله لهم إن الله لا يهدى القوم الفاسقين ... | ٦ | م المنافقون | ٦٣ |
| | ونجنى من فرعون وعمله ونجنى من القوم الظالمين ... | ١١ | م التحريم | ٦٦ |
| | فترى القوم فيها صرعى كأنهم أعجاز نخل خاوية ... | ٧ | ك الحاقة | ٦٩ |
| **قَوْمِ(ى)** | يا قوم إنكم ظلمتم أنفسكم باتخاذكم العجل... ... | ٥٤ | م البقرة | ٢ |
| (٤٧) | يا قوم اذكروا نعمة الله عليكم إذ جعل فيكم أنبياء... | ٢٠ | م المائدة | ٥ |
| | يا قوم ادخلوا الأرض المقدسة التي كتب الله لكم... | ٢١ | م « | ٥ |
| | فلما أفلت قال يا قوم إنى برىء مما تشركون ... ... | ٧٨ | ك الأنعام | ٦ |
| | قل يا قوم اعملوا على مكانتكم إنى عامل ... ... ... | ١٣٥ | ك « | ٦ |
| | فقال يا قوم اعبدوا الله ما لكم من إله غيره ... ... | ٥٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | قال يا قوم ليس بى ضلالة ولكنى رسول من رب العالمين | ٦١ | ك « | ٧ |
| | قال يا قوم اعبدوا الله ما لكم من إله غيره ... ... | ٦٥ | ك « | ٧ |
| | قال يا قوم ليس بى سفاهة ولكنى رسول من رب العالمين | ٦٧ | ك « | ٧ |
| | قال يا قوم اعبدوا الله ما لكم من إله غيره ... ... | ٧٣ | ك « | ٧ |
| | فتولى عنهم وقال يا قوم لقد أبلغتكم رسالة ربى ... ... | ٧٩ | ك « | ٧ |
| | قال يا قوم اعبدوا الله ما لكم من إله غيره ... ... | ٨٥ | ك « | ٧ |
| | فتولى عنهم وقال يا قوم لقد أبلغتكم رسالات ربى ... | ٩٣ | ك « | ٧ |
| | يا قوم إن كان كبر عليكم مقامى وتذكيرى بآيات الله فعلى الله توكلت ... ... ... ... ... ... | ٧١ | ك يونس | ١٠ |
| | وقال موسى يا قوم إن كنتم آمنتم بالله فعليه توكلوا... | ٨٤ | ك « | ١٠ |
| | قال يا قوم أرأيتم إن كنت على بينة من ربى ... ... | ٢٨ | ك هود | ١١ |
| | ويا قوم لا أسئلكم عليه مالا إن أجرى إلا على الله | ٢٩ | ك « | ١١ |
| | ويا قوم من ينصرنى من الله إن طردتهم ... ... ... | ٣٠ | ك « | ١١ |
| | قال يا قوم اعبدوا الله ما لكم من إله غيره ... ... | ٥٠ | ك « | ١١ |
| | يا قوم لا أسئلكم عليه أجرا إن أجرى إلا على الذى فطرنى | ٥١ | ك « | ١١ |
| | ويا قوم استغفروا ربكم ثم توبوا إليه ... ... ... | ٥٢ | ك « | ١١ |
| | قال يا قوم اعبدوا الله ما لكم من إله غيره... ... ... | ٦١ | ك « | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **قَوْمِ(ى)** | قال يا قوم أرأيتم إن كنت على بينة من ربى ... | ٦٣ | ك هود | ١١ |
| | ويا قوم هذه ناقة الله لكم آية فذروها تأكل فى أرض الله | ٦٤ | ك « | ١١ |
| | قال يا قوم هؤلاء بناتى هن أطهر لكم ... ... ... | ٧٨ | ك « | ١١ |
| | قال يا قوم اعبدوا الله ما لكم من إله غيره ... ... ... | ٨٤ | ك « | ١١ |
| | ويا قوم أوفوا المكيال والميزان بالقسط ... ... ... | ٨٥ | ك « | ١١ |
| | قال يا قوم أرأيتم إن كنت على بينة من ربى ... ... | ٨٨ | ك « | ١١ |
| | ويا قوم لا يجرمنكم شقاقى أن يصيبكم مثل ما أصاب قوم نوح ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨٩ | ك « | ١١ |
| | قال يا قوم أرهطى أعز عليكم من الله ... ... ... | ٩٢ | ك « | ١١ |
| | ويا قوم اعملوا على مكانتكم إنى عامل ... ... ... | ٩٣ | ك « | ١١ |
| | قال يا قوم ألم يعدكم ربكم وعدا حسنا ... ... ... | ٨٦ | ك طه | ٢٠ |
| | ولقد قال لهم هرون من قبل يا قوم إنما فتنتم به ... | ٩٠ | ك « | ٢٠ |
| | ولقد أرسلنا نوحا إلى قومه فقال يا قوم اعبدوا الله... | ٢٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | قال يا قوم لم تستعجلون بالسيئة قبل الحسنة ... ... | ٤٦ | ك النمل | ٢٧ |
| | وإلى مدين أخاهم شعيبا فقال يا قوم اعبدوا الله ... | ٣٦ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | قال يا قوم اتبعوا المرسلين ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك يس | ٣٦ |
| | قل يا قوم اعملوا على مكانتكم إنى عامل ... ... ... | ٣٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| | يا قوم لكم الملك اليوم ظاهرين فى الأرض ... ... | ٢٩ | ك غافر | ٤٠ |
| | وقال الذى آمن يا قوم إنى أخاف عليكم مثل يوم الأحزاب | ٣٠ | ك « | ٤٠ |
| | ويا قوم إنى أخاف عليكم يوم التناد ... ... ... ... | ٣٢ | ك « | ٤٠ |
| | وقال الذى آمن يا قوم اتبعون أهدكم سبيل الرشاد ... | ٣٨ | ك « | ٤٠ |
| | يا قوم إنما هذه الحياة الدنيا متاع ... ... ... ... | ٣٩ | ك « | ٤٠ |
| | ويا قوم ما لى أدعوكم إلى النجاة وتدعوننى إلى النار... | ٤١ | ك « | ٤٠ |
| | ونادى فرعون فى قومه قال يا قوم أليس لى ملك مصر | ٥١ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | يا قوم لم تؤذوننى وقد تعلمون أنى رسول الله إليكم ... | ٥ | م الصف | ٦١ |
| | قال يا قوم إنى لكم نذير مبين ... ... ... ... ... | ٢ | ك نوح | ٧١ |
| **قَوْمًا** | كيف يهدى الله قوما كفروا بعد إيمانهم ... ... | ٨٦ | م آل عمران | ٣ |
| (٤٠) | قالوا يا موسى إن فيها قوما جبارين ... ... ... ... | ٢٢ | م المائدة | ٥ |
| | فإن يكفر بها هؤلاء فقد وكلنا بها قوما ليسوا بها بكافرين | ٨٩ | ك الأنعام | ٦ |
| | وأغرقنا الذين كذبوا بآياتنا إنهم كانوا قوما عمين... | ٦٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | آيات مفصلات فاستكبروا وكانوا قوما مجرمين ... | ١٣٣ | ك « | ٧ |
| | لم تعظون قوما الله مهلكهم أو معذبهم عذابا شديدا | ١٦٤ | م « | ٧ |
| | ألا تقاتلون قوما نكثوا أيمانهم وهموا بإخراج الرسول | ١٣ | م التوبة | ٩ |
| | إلا تنفروا يعذبكم عذابا أليما ويستبدل قوما غيركم ... | ٣٩ | م « | ٩ |
| | إنكم كنتم قوما فاسقين ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | م « | ٩ |
| | وما كان الله ليضل قوما بعد إذ هداهم حتى يبين لهم ما يتقون ... ... ... ... ... ... ... | ١١٥ | م « | ٩ |
| | فاستكبروا وكانوا قوما مجرمين ... ... ... ... ... | ٧٥ | ك يونس | ١٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَوْمًا | : إنهم ملاقوا ربهم ولكنى أراكم قوما تجهلون... ... | ٢٩ | ك هـود | ١١ |
| | ويستخلف ربى قوما غيركم ولا تضرونه شيئا ... ... | ٥٧ | ك « | ١١ |
| | يخل لكم وجه أبيكم وتكونوا من بعده قوما صالحين | ٩ | ك يوسف | ١٢ |
| | وجدها تغرب فى عين حمئة ووجد عندها قوما ... ... | ٨٦ | م الكهف | ١٨ |
| | حتى إذا بلغ بين السدين وجد من دونهما قوما... ... | ٩٣ | م « | ١٨ |
| | فإنما يسرناه بلسانك لتبشر به المتقين وتنذر به قوما لدا | ٩٧ | ك مريم | ١٩ |
| | وكم قصمنا من قرية كانت ظالمة وأنشأنا بعدها قوما آخرين | ١١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | فاستكبروا وكانوا قوما عالين ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | قالوا ربنا غلبت علينا شقوتنا وكنا قوما ضالين... ... | ١٠٦ | ك « | ٢٣ |
| | ولكن متعتهم وآباءهم حتى نسوا الذكر وكانوا قوما بورا | ١٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | فى تسع آيات إلى فرعون وقومه إنهم كانوا قوما فاسقين | ١٢ | ك النمل | ٢٧ |
| | إنهم كانوا قوما فاسقين ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك القصص | ٢٨ |
| | لتنذر قوما ما أتاهم من نذير من قبلك لعلهم يتذكرون | ٤٦ | ك « | ٢٨ |
| | لتنذر قوما ما أتاهم من نذير من قبلك لعلهم يهتدون | ٣ | ك السجدة | ٣٢ |
| | لتنذر قوما ما أنذر آباؤهم فهم غافلون... ... ... ... | ٦ | ك يس | ٣٦ |
| | وما كان لنا عليكم من سلطان بل كنتم قوما طاغين ... | ٣٠ | ك الصافات | ٣٧ |
| | أفنضرب عنكم الذكر صفحا أن كنتم قوما مسرفين... | ٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | فاستخف قومه فأطاعوه إنهم كانوا قوما فاسقين ... | ٥٤ | م « | ٤٣ |
| | كذلك وأورثناها قوما آخرين ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك الدخان | ٤٤ |
| | ليجزى قوما بما كانوا يكسبون ... ... ... ... ... | ١٤ | م الجاثية | ٤٥ |
| | أفلم تكن آياتى تتلى عليكم فاستكبرتم وكنتم قوما مجرمين | ٣١ | ك « | ٤٥ |
| | وأبلغكم ما أرسلت به ولكنى أراكم قوما تجهلون... ... | ٢٣ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | وإن تتولوا يستبدل قوما غيركم ثم لا يكونوا أمثالكم | ٣٨ | م محمد | ٤٧ |
| | وزين ذلك فى قلوبكم وظننتم ظن السوء وكنتم قوما بورا | ١٢ | م الفتح | ٤٨ |
| | إن جاءكم فاسق بنبإ فتبينوا أن تصيبوا قوما بجهالة | ٦ | م الحجرات | ٤٩ |
| | وقوم نوح من قبل إنهم كانوا قوما فاسقين ... ... | ٤٦ | ك الذاريات | ٥١ |
| | ألم تر إلى الذين تولوا قوما غضب الله عليهم ... ... | ١٤ | م المجادلة | ٥٨ |
| | لا تجد قوما يؤمنون بالله واليوم الآخر يوادون من حاد الله ورسوله ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | م « | ٥٨ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تتولوا قوما غضب الله عليهم ... | ١٣ | م الممتحنة | ٦٠ |
| قَوْمُكَ | : وكذب به قومك وهو الحق قل لست عليكم بوكيل | ٦٦ | ك الأنعام | ٦ |
| (١١١) | إنى أراك وقومك فى ضلال مبين ... ... ... ... | ٧٤ | ك « | ٦ |
| | فخذها بقوة وأمر قومك يأخذوا بأحسنها ... ... | ١٤٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | وأوحى إلى نوح أنه لن يؤمن من قومك إلا من قد آمن | ٣٦ | ك هود | ١١ |
| | ما كنت تعلمها أنت ولا قومك من قبل هذا ... ... | ٤٩ | ك « | ١١ |
| | أن أخرج قومك من الظلمات إلى النور وذكرهم بأيام الله | ٥ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وما أعجلك عن قومك ياموسى ... ... ... ... ... | ٨٣ | ك طه | ٢٠ |
| | قال فإنا قد فتنا قومك من بعدك وأضلهم السامرى | ٨٥ | ك « | ٢٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَوْمِكَ | : وإنه لذكر لك ولقومك وسوف تسئلون ... ... | ٤٤ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ولما ضرب ابن مريم مثلا إذا قومك منه يصدون... | ٥٧ | ك « | ٤٣ |
| | أن أنذر قومك من قبل أن يأتيهم عذاب أليم ... ... | ١ | ك نوح | ٧١ |
| لِقَوْمِكُمَا | : وأوحينا إلى موسى وأخيه أن تبوءا لقومكما بمصر بيوتا... ... ... ... ... ... ... ... | ٨٧ | ك يونس | ١٠ |
| قَوْمِنَا | : ربنا افتح بيننا وبين قومنا بالحق وأنت خير الفاتحين | ٨٩ | ك الأعراف | ٧ |
| (٤) | هؤلاء قومنا اتخذوا من دونه آلهة ... ... ... ... | ١٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | قالوا يا قومنا إنا سمعنا كتابا أنزل من بعد موسى ... | ٣٠ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | ياقومنا أجيبوا داعى الله وآمنوا به يغفر لكم من ذنوبكم | ٣١ | ك « | ٤٦ |
| قَوْمِهِ | : وإذ قال موسى لقومه ياقوم إنكم ظلمتم أنفسكم ... | ٥٤ | م البقرة | ٢ |
| (٥٦) | وإذ استسقى موسى لقومه فقلنا اضرب بعصاك الحجر | ٦٠ | م « | ٢ |
| | وإذ قال موسى لقومه إن الله يأمركم أن تذبحوا بقرة | ٦٧ | م « | ٢ |
| | وإذ قال موسى لقومه يا قوم اذكروا نعمة الله عليكم | ٢٠ | م المائدة | ٥ |
| | وحاجه قومه قال أتحاجونى فى الله وقد هدان... ... | ٨٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | وتلك حجتنا آتيناها إبراهيم على قومه ... ... ... ... | ٨٣ | ك « | ٦ |
| | لقد أرسلنا نوحا إلى قومه فقال يا قوم اعبدوا الله | ٥٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | قال الملأ من قومه إنا لنراك فى ضلال مبين... ... | ٦٠ | ك « | ٧ |
| | قال الملأ الذين كفروا من قومه إنا لنراك فى سفاهة | ٦٦ | ك « | ٧ |
| | قال الملأ الذين استكبروا من قومه للذين استضعفوا لمن آمن منهم أتعلمون أن صالحا مرسل من ربه | ٧٥ | ك « | ٧ |
| | ولوطا إذ قال لقومه أتأتون الفاحشة ... ... ... | ٨٠ | ك « | ٧ |
| | وما كان جواب قومه إلا أن قالوا أخرجوهم من قريتكم | ٨٢ | ك « | ٧ |
| | قال الملأ الذين استكبروا من قومه لنخرجنك ياشعيب | ٨٨ | ك « | ٧ |
| | وقال الملأ الذين كفروا من قومه لئن اتبعتم شعيبا إنكم إذا لخاسرون ... ... ... ... ... ... | ٩٠ | ك « | ٧ |
| | أتذر موسى وقومه ليفسدوا فى الأرض ... ... ... | ١٢٧ | ك « | ٧ |
| | قال موسى لقومه استعينوا بالله واصبروا ... ... ... | ١٢٨ | ك « | ٧ |
| | ودمرنا ما كان يصنع فرعون وقومه وما كانوا يعرشون | ١٣٧ | ك « | ٧ |
| | ولما رجع موسى إلى قومه غضبان أسفا قال بئسما خلفتمونى من بعدى ... ... ... ... ... ... | ١٥٠ | ك « | ٧ |
| | واختار موسى قومه سبعين رجلا لميقاتنا ... ... ... | ١٥٥ | ك « | ٧ |
| | وأوحينا إلى موسى إذ استسقاه قومه ... ... ... | ١٦٠ | ك « | ٧ |
| | واتل عليهم نبأ نوح إذ قال لقومه ياقوم... ... ... | ٧١ | ك يونس | ١٠ |
| | فما آمن لموسى إلا ذرية من قومه على خوف من فرعون | ٨٣ | ك « | ١٠ |
| | ولقد أرسلنا نوحا إلى قومه إنى لكم نذير مبين .. ... | ٢٥ | ك هود | ١١ |
| | فقال الملأ الذين كفروا من قومه ما نراك إلا بشرا مثلنا | ٢٧ | ك « | ١١ |
| | ويصنع الفلك وكلما مر عليه ملأ من قومه سخروا منه | ٣٨ | ك « | ١١ |
| | وجاءه قومه يهرعون إليه ومن قبل كانوا يعملون السيئات | ٧٨ | ك « | ١١ |
| | يقدم قومه يوم القيامة فأوردهم النار ... ... ... | ٩٨ | ك « | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قَوْمِهِ | : وما أرسلنا من رسول إلا بلسان قومه ليبين لهم ... | ٤ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وإذ قال موسى لقومه اذكروا نعمة الله عليكم ... ... ... | ٦ | ك « | ١٤ |
| | فخرج على قومه من المحراب فأوحى إليهم ... ... ... | ١١ | ك مريم | ١٩ |
| | وأضل فرعون قومه وما هدى ... ... ... ... ... | ٧٩ | ك طه | ٢٠ |
| | فرجع موسى إلى قومه غضبان أسفا ... ... ... ... | ٨٦ | ك « | ٢٠ |
| | إذ قال لأبيه وقومه ما هذه التماثيل التي أنتم لها عاكفون | ٥٢ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ولقد أرسلنا نوحا إلى قومه فقال يا قوم اعبدوا الله | ٢٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فقال الملأ الذين كفروا من قومه ما هذا إلا بشر مثلكم | ٢٤ | ك « | ٢٣ |
| | وقال الملأ من قومه الذين كفروا وكذبوا بلقاء الآخرة | ٣٣ | ك « | ٢٣ |
| | واتل عليهم نبأ إبراهيم . إذ قال لأبيه وقومه ما تعبدون | ٧٠ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | في تسع آيات إلى فرعون وقومه ... ... ... ... ... | ١٢ | ك النمل | ٢٧ |
| | ولوطا إذ قال لقومه أتأتون الفاحشة وأنتم تبصرون | ٥٤ | ك « | ٢٧ |
| | فما كان جواب قومه إلا أن قالوا أخرجوا آل لوط | ٥٦ | ك « | ٢٧ |
| | إذ قال له قومه لا تفرح إن الله لا يحب الفرحين ... | ٧٦ | ك القصص | ٢٨ |
| | فخرج على قومه في زينته ... ... ... ... ... ... | ٧٩ | ك « | ٢٨ |
| | ولقد أرسلنا نوحا إلى قومه فلبث فيهم ألف سنة إلا خمسين عاما ... ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وإبراهيم إذ قال لقومه اعبدوا الله واتقوه ... ... | ١٦ | ك « | ٢٩ |
| | فما كان جواب قومه إلا أن قالوا اقتلوه أو حرقوه | ٢٤ | ك « | ٢٩ |
| | ولوطا إذ قال لقومه إنكم لتأتون الفاحشة ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٢٩ |
| | فما كان جواب قومه إلا أن قالوا ائتنا بعذاب الله | ٢٩ | ك « | ٢٩ |
| | وما أنزلنا على قومه من بعده من جند من السماء وما كنا منزلين | ٢٨ | ك يس | ٣٦ |
| | إذ قال لأبيه وقومه ماذا تعبدون ... ... ... ... | ٨٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| | إذ قال لقومه ألا تتقون ... ... ... ... ... ... | ١٢٤ | ك « | ٣٧ |
| | إذ قال إبراهيم لأبيه وقومه إنني براء مما تعبدون ... | ٢٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ونادى فرعون في قومه قال يا قوم أليس لي ملك مصر | ٥١ | ك « | ٤٣ |
| | فاستخف قومه فأطاعوه إنهم كانوا قوما فاسقين ... | ٥٤ | م « | ٤٣ |
| | واذكر أخا عاد إذ أنذر قومه بالأحقاف ... ... | ٢١ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | وإذ قال موسى لقومه يا قوم لم تؤذونني ... ... ... | ٥ | م الصف | ٦١ |
| | إنا أرسلنا نوحا إلى قومه أن أنذر قومك ... ... ... | ١ | ك نوح | ٧١ |
| قَوْمَهَا | : فأتت به قومها تحمله قالوا يا مريم لقد جئت شيئا فريا | ٢٧ | ك مريم | ١٩ |
| (٢) | وجدتها وقومها يسجدون للشمس من دون الله ... | ٢٤ | ك النمل | ٢٧ |
| قَوْمِهِمْ | : حصرت صدورهم أن يقاتلوكم أو يقاتلوا قومهم | ٩٠ | م النساء | ٤ |
| (٩) | ستجدون آخرين يريدون أن يأمنوكم ويأمنوا قومهم | ٩١ | م « | ٤ |
| | لينفقهوا في الدين ولينذروا قومهم ... ... ... ... | ١٢٢ | م التوبة | ٩ |
| | ثم بعثنا من بعده رسلا إلى قومهم فجاءوهم بالبينات | ٧٤ | ك يونس | ١٠ |
| | وأحلوا قومهم دار البوار ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م إبراهيم | ١٤ |
| | فانظر كيف كان عاقبة مكرهم أنا دمرناهم وقومهم أجمعين | ٥١ | ك النمل | ٢٧ |
| قَوْمِهِمْ | : ولقد أرسلنا من قبلك رسلا إلى قومهم فجاءوهم بالبينات | ٤٧ | ك الروم | ٣٠ |
| | فلما قضى ولوا إلى قومهم منذرين ... ... ... ... | ٢٩ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | إذ قالوا لقومهم إنا برءاء منكم ومما تعبدون من دون الله | ٤ | م الممتحنة | ٦٠ |
| قَوْمُهُمَا | : فقالوا أنؤمن لبشرين مثلنا وقومهما لنا عابدون | ٤٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٢) | ونجيناهما وقومهما من الكرب العظيم ... ... ... | ١١٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| قَوْمِي | : وقال موسى لأخيه هرون اخلفني في قومي وأصلح | ١٤٢ | ك الأعراف | ٧ |
| (٥) | وقال الرسول يا رب إن قومي اتخذوا هذا القرآن مهجورا | ٣٠ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | قال رب إن قومي كذبون ... ... ... ... ... ... | ١١٧ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | قال يا ليت قومي يعلمون . بما غفر لي ربي ... ... | ٢٦ | ك يس | ٣٦ |
| | قال رب إني دعوت قومي ليلا ونهارا ... ... ... | ٥ | ك نوح | ٧١ |

* * *

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| قُوَّةٍ | : خذوا ما آتيناكم بقوة واذكروا ما فيه ... ... ... | ٦٣ | م البقرة | ٢ |
| (٢٨) | خذوا ما آتيناكم بقوة واسمعوا ... ... ... ... ... | ٩٣ | م « | ٢ |
| | ولو يرى الذين ظلموا إذ يرون العذاب أن القوة لله جميعا | ١٦٥ | م « | ٢ |
| | فخذها بقوة وأمر قومك يأخذوا بأحسنها ... ... | ١٤٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | خذوا ما آتيناكم بقوة واذكروا ما فيه لعلكم تتقون ... | ١٧١ | ك « | ٧ |
| | وأعدوا لهم ما استطعتم من قوة ومن رباط الخيل ... | ٦٠ | م الأنفال | ٨ |
| | كانوا أشد منكم قوة وأكثر أموالا وأولادا ... ... | ٦٩ | م التوبة | ٩ |
| | يرسل السماء عليكم مدرارا ويزدكم قوة إلى قوتكم ... | ٥٢ | ك هود | ١١ |
| | قال لو أن لي بكم قوة أو آوي إلى ركن شديد ... | ٨٠ | ك « | ١١ |
| | ولا تكونوا كالتي نقضت غزلها من بعد قوة أنكاثا | ٩٢ | ك النحل | ١٦ |
| | ولولا إذ دخلت جنتك قلت ما شاء الله لا قوة إلا بالله | ٣٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | قال ما مكني فيه ربي خير فأعينوني بقوة ... ... ... | ٩٥ | م « | ١٨ |
| | يا يحيى خذ الكتاب بقوة وآتيناه الحكم صبيا ... ... | ١٢ | ك مريم | ١٩ |
| | قالوا نحن أولوا قوة وأولوا بأس شديد والأمر إليك | ٣٣ | ك النمل | ٢٧ |
| | وآتيناه من الكنوز ما إن مفاتحه لتنوء بالعصبة أولي القوة | ٧٦ | ك القصص | ٢٨ |
| | أو لم يعلم أن الله قد أهلك من قبله من القرون من هو أشد منه قوة ... ... ... ... ... ... | ٧٨ | ك « | ٢٨ |
| | كانوا أشد منهم قوة وأثاروا الأرض وعمروها ... | ٩ | ك الروم | ٣٠ |
| | ثم جعل من بعد ضعف قوة ... ... ... ... ... ... | ٥٤ | ك « | ٣٠ |
| | ثم جعل من بعد قوة ضعفا وشيبة ... ... ... ... | ٥٤ | ك « | ٣٠ |
| | كيف كان عاقبة الذين من قبلهم وكانوا أشد منهم قوة | ٤٤ | ك فاطر | ٣٥ |
| | كانوا هم أشد منهم قوة وآثارا في الأرض ... ... | ٢١ | ك غافر | ٤٠ |
| | كانوا أكثر منهم وأشد قوة وآثارا في الأرض ... | ٨٢ | ك « | ٤٠ |
| | وقالوا من أشد منا قوة ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك فصلت | ٤١ |
| | أو لم يروا أن الله الذي خلقهم هو أشد منهم قوة ... | ١٥ | ك « | ٤١ |
| | وكأين من قرية هي أشد قوة من قريتك التي أخرجتك أهلكناهم ... ... ... ... ... ... ... | ١٣ | م محمد | ٤٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قُوَّةٍ | : إن الله هو الرزاق ذو القوة المتين ... ... ... ... | ٥٨ | ك الذاريات | ٥١ |
| | إنه لقول رسول كريم . ذى قوة عند ذى العرش مكين | ٢٠ | ك التكوير | ٨١ |
| | فما له من قوة ولا ناصر ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك الطارق | ٨٦ |
| قُوَّتِكُمْ | : يرسل السماء عليكم مدرارا ويزدكم قوة إلى قوتكم | ٥٢ | ك هـود | ١١ |
| ٱلْقُوَى | : إن هو إلا وحى يوحى . علمه شديد القوى ... | ٥ | ك النجـم | ٥٣ |
| قَوِىٌّ | : إن الله قوىّ شديد العقاب ... ... ... ... ... | ٥٢ | م الأنفـال | ٨ |
| (١٠) | إن ربك هو القوىّ العزيز ... ... ... ... ... ... | ٦٦ | ك هـود | ١١ |
| | ولينصرنّ الله من ينصره إن الله لقوىّ عزيز ... ... | ٤٠ | م الحـج | ٢٢ |
| | ما قدروا الله حق قدره إن الله لقوىّ عزيز ... ... | ٧٤ | م « | ٢٢ |
| | أنا آتيك به قبل أن تقوم من مقامك وإنى عليه | | | |
| | لقوىّ أمين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك النمـل | ٢٧ |
| | إن خير من ٱستأجرت القوىّ الأمين ... ... ... ... | ٢٦ | ك القصص | ٢٨ |
| قَوِىٌّ | : فكفروا فأخذهم الله إنه قوىّ شديد العقاب... ... | ٢٢ | ك غافـر | ٤٠ |
| | الله لطيف بعباده يرزق من يشاء وهو القوىّ العزيز | ١٩ | ك الشورى | ٤٢ |
| | وليعلم الله من ينصره ورسله بالغيب إن الله قوىّ عزيز | ٢٥ | م الحـديد | ٥٧ |
| | كتب الله لأغلبن أنا ورسلى إن الله قوىّ عزيز ... | ٢١ | م المجادلة | ٥٨ |
| قَوِيًّا | : وكفى الله المؤمنين القتال وكان الله قويا عزيزا ... | ٢٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| لِلْمُقْوِينَ | : نحن جعلناها تذكرة ومتاعا للمقوين ... ... | ٧٣ | ك الواقعـة | ٥٦ |
| قَيَّضْنَا | : وقيضنا لهم قرناء فزينوا لهم ما بين أيديهم وما خلفهم | ٢٥ | ك فصـلت | ٤١ |
| نُقَيِّضْ | : ومن يعش عن ذكر الرحمن نقيض له شيطانا فهو له قرين | ٣٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| قَائِلُونَ | : وكم من قرية أهلكناها فجاءها بأسنا بياتا أو هم قائلون | ٤ | ك الأعراف | ٧ |
| مَقِيلًا | : أصحاب الجنة يومئذ خير مستقرا وأحسن مقيلا | ٢٤ | ك الفـرقان | ٢٥ |

# باب الكاف

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَأْسٍ | : يطاف عليهم بكأس من معين... ... ... ... ... | ٤٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| (٣) | بأكواب وأباريق وكأس من معين... ... ... ... | ١٨ | ك الواقعـة | ٥٦ |
| | إن الأبرار يشربون من كأس كان مزاجها | | | |
| | كافـورا ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | م الإنسـان | ٧٦ |
| كَأْسًا | : يتنازعون فيها كأسا لا لغو فيها ولا تأثيم ... ... | ٢٣ | ك الطـور | ٥٢ |
| (٣) | ويسقون فيها كأسا كان مزاجها زنجبيلا ... ... | ١٧ | م الإنسـان | ٧٦ |
| | إن للتقين مفازا . حدائق وأعنابا . وكواعب أترابا . | | | |
| | وكأسا دهاقا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك النبـأ | ٧٨ |
| كَأَيِّنْ | : وكأين من نبىّ قاتل معه ربيون كثير ... ... ... | ١٤٦ | م آل عمران | ٣ |
| (٧) | وكأين من آية فى السموات والأرض يمرون عليها وهم | | | |
| | عنها معرضون ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٥ | ك يوسـف | ١٢ |
| | فكأين من قرية أهلكناها وهى ظالمة... ... ... ... | ٤٥ | م الحـج | ٢٢ |
| | وكأين من قرية أمليت لها وهى ظالمة ثم أخذتها ... | ٤٨ | م « | ٢٢ |
| | وكأين من دابة لا تحمل رزقها الله يرزقها وإياكم ... | ٦٠ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وكأين من قرية هى أشد قوة من قريتك التى أخرجتك | | | |
| | أهلكناهم فلا ناصر لهم ... ... ... ... ... ... | ١٣ | م محمـد | ٤٧ |
| | وكأين من قرية عتت عن أمر ربها ورسله فحاسبناها | | | |
| | حسابا شديدا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨ | م الطـلاق | ٦٥ |
| كُبِّتَ | : ومن جاء بالسيئة فكبت وجوههم فى النار ... | ٩٠ | ك النمـل | ٢٧ |
| مُكِبًّا | : أفمن يمشى مكبا على وجهه أهدى أمّن يمشى سويا | | | |
| | على صراط مستقيم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك المـلك | ٦٧ |
| يَكْبِتَهُمْ | : ليقطع طرفا من الذين كفروا أو يكبتهم فينقلبوا خائبين | ١٢٧ | م آل عمران | ٣ |
| كُبِتَ | : كبتوا كما كبت الذين من قبلهم ... ... ... ... | ٥ | م المجادلة | ٥٨ |
| كُبِتُوا | : إن الذين يحادون الله ورسوله كبتوا ... ... ... | ٥ | م « | ٥٨ |
| كَبَدٍ | : لقد خلقنا الإنسان فى كبد ... ... ... ... ... | ٤ | ك البـلد | ٩٠ |
| كَبُرَ | : وإن كان كبر عليك إعراضهم فإن استطعت أن | | | |
| (٥) | تبتغى نفقا فى الأرض ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك الأنعـام | ٦ |
| | إن كان كبر عليكم مقامى وتذكيرى بآيات الله فعلى | | | |
| | الله توكلت ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧١ | ك يـونس | ١٠ |
| | كبر مقتا عند الله وعند الذين آمنوا... ... ... ... | ٣٥ | ك غافـر | ٤٠ |
| | كبر على المشركين ما تدعوهم إليه ... ... ... ... | ١٣ | ك الشورى | ٤٢ |
| | كبر مقتا عند الله أن تقولوا ما لا تفعلون ... ... | ٣ | م الصـف | ٦١ |
| كَبُرَتْ | : كبرت كلمة تخرج من أفواههم إن يقولون إلا كذبا | ٥ | ك الكهف | ١٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَكْبُرُ: | قل كونوا حجارة أو حديدا . أو خلقا مما يكبر فى صدوركم | ٥١ | ك الإسراء | ١٧ |
| يَكْبَرُوا: | ولا تأكلوها إسرافا وبدارا أن يكبروا ... ... | ٦ | م النساء | ٤ |
| لِتُكَبِّرُوا: | ولتكملوا العدة ولتكبروا الله على ما هداكم ... | ١٨٥ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | كذلك سخرها لكم لتكبروا الله على ما هداكم ... ... | ٣٧ | م الحج | ٢٢ |
| فَكَبِّرْ: | يأيها المدثر . قم فأنذر . وربك فكبر ... ... | ٣ | ك المدثر | ٧٤ |
| كَبِّرْهُ: | ولم يكن له ولىّ من الذل وكبره تكبيرا ... ... | ١١١ | ك الإسراء | ١٧ |
| أَكْبَرْنَهُ: | فلما رأينه أكبرنه وقطعن أيديهن وقلن حاش لله | ٣١ | ك يوسف | ١٢ |
| تَتَكَبَّرَ: | قال فاهبط منها فما يكون لك أن تتكبر فيها ... ... | ١٣ | ك الأعراف | ٧ |
| يَتَكَبَّرُونَ: | سأصرف عن آياتى الذين يتكبرون فى الأرض | ١٤٦ | « | ٧ |
| اسْتَكْبَرَ: | إلا إبليس أبى واستكبر وكان من الكافرين . | ٣٤ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | واستكبر هو وجنوده فى الأرض بغير الحق ... ... | ٣٩ | ك القصص | ٢٨ |
| | إلا إبليس استكبر وكان من الكافرين ... ... ... | ٧٤ | ك ص | ٣٨ |
| | ثم أدبر واستكبر . فقال إن هذا إلا سحر يؤثر ... | ٢٣ | ك المدثر | ٧٤ |
| اسْتَكْبَرْتَ: | فكذبت بها واستكبرت وكنت من الكافرين | ٥٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| أَسْتَكْبَرْتَ: | أستكبرت أم كنت من العالين ... ... ... | ٧٥ | ك ص | ٣٨ |
| اسْتَكْبَرْتُمْ: | أفكلما جاءكم رسول بما لا تهوى أنفسكم استكبرتم | ٨٧ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | ألم تكن آياتى تتلى عليكم فاستكبرتم وكنتم قوما مجرمين | ٣١ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | وشهد شاهد من بنى إسرائيل على مثله فآمن واستكبرتم | ١٠ | م الأحقاف | ٤٦ |
| اسْتَكْبَرُوا: | وأما الذين استنكفوا واستكبروا فيعذبهم | | | |
| (٢٠) | عذابا أليما ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٧٣ | م النساء | ٤ |
| | والذين كذبوا بآياتنا واستكبروا عنها أولئك أصحاب النار | ٣٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | إن الذين كذبوا بآياتنا واستكبروا عنها لا تفتح لهم | | | |
| | أبواب السماء ... ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | « | ٧ |
| | قال الملأ الذين استكبروا من قومه للذين استضعفوا | | | |
| | لمن آمن منهم أتعلمون أن صالحا مرسل من ربه | ٧٥ | « | ٧ |
| | قال الذين استكبروا إنا بالذى آمنتم به كافرون ... ... | ٧٦ | « | ٧ |
| | قال الملأ الذين استكبروا من قومه لنخرجنك ياشعيب | ٨٨ | « | ٧ |
| | فاستكبروا وكانوا قوما مجرمين ... ... ... ... | ١٣٣ | « | ٧ |
| | إلى فرعون وملئه بآياتنا فاستكبروا ... ... ... | ٧٥ | ك يونس | ١٠ |
| | فقال الضعفاء للذين استكبروا إنا كنا لكم تبعا ... ... | ٢١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | إلى فرعون وملئه فاستكبروا وكانوا قوما عالين ... ... | ٤٦ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | لقد استكبروا فى أنفسهم وعتوا عتوا كبيرا ... ... ... | ٢١ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ولقد جاءهم موسى بالبينات فاستكبروا فى الأرض | ٣٩ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | يقول الذين استضعفوا للذين استكبروا لولا أنتم لكنا | | | |
| | مؤمنين ... ... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك سبأ | ٣٤ |
| | قال الذين استكبروا للذين استضعفوا أنحن صددناكم | ٣٢ | ك « | ٣٤ |
| | وقال الذين استضعفوا للذين استكبروا بل مكر الليل والنهار | ٣٣ | ك « | ٣٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| اسْتَكْبَرُوا: | فيقول الضعفاء للذين استكبروا إنا كنا لكم تبعا | ٤٧ | ك غافر | ٤٠ |
| | قال الذين استكبروا إنا كل فيها إن الله قد حكم بين العباد | ٤٨ | ك « | ٤٠ |
| | فأما عاد فاستكبروا فى الأرض بغير الحق ... ... ... | ١٥ | ك فصلت | ٤١ |
| | فإن استكبروا فالذين عند ربك يسبحون له بالليل والنهار | ٣٨ | ك « | ٤١ |
| | واستغشوا ثيابهم وأصروا واستكبروا استكبارا ... ... | ٧ | ك نوح | ٧١ |
| تَسْتَكْبِرُونَ: | وكنتم عن آياته تستكبرون ... ... ... ... | ٩٣ | م الأنعام | ٦ |
| (٣) | قالوا ما أغنى عنكم جمعكم وما كنتم تستكبرون ... ... | ٤٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | فاليوم تجزون عذاب الهون بما كنتم تستكبرون | | | |
| | فى الأرض بغير الحق ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| يَسْتَكْبِرْ: | ومن يستنكف عن عبادته ويستكبر فسيحشرهم | | | |
| | إليه جميعا ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٧٢ | م النساء | ٤ |
| يَسْتَكْبِرُونَ: | ذلك بأن منهم قسيسين ورهبانا وأنهم | | | |
| (٧) | لا يستكبرون ... ... ... ... ... ... ... | ٨٢ | م المائدة | ٥ |
| | إن الذين عند ربك لا يستكبرون عن عبادته ... ... | ٢٠٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولله يسجد ما فى السموات وما فى الأرض من دابة | | | |
| | والملائكة وهم لا يستكبرون ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك النحل | ١٦ |
| | ومن عنده لا يستكبرون عن عبادته ولا يستحسرون | ١٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | خروا سجدا وسبحوا بحمد ربهم وهم لا يستكبرون ... | ١٥ | ك السجدة | ٣٢ |
| | إنهم كانوا إذا قيل لهم لا إله إلا الله يستكبرون ... | ٣٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| | إن الذين يستكبرون عن عبادتى سيدخلون جهنم داخرين | ٦٠ | ك غافر | ٤٠ |
| تَكْبِيرًا: | ولم يكن له ولىّ من الذل وكبره تكبيرا ... ... | ١١١ | ك الإسراء | ١٧ |
| مُتَكَبِّرٍ: | وقال موسى إنى عذت بربى وربكم من كل متكبر | ٢٧ | ك غافر | ٤٠ |
| (٣) | كذلك يطبع الله على كل قلب متكبر جبار ... ... ... | ٣٥ | ك « | ٤٠ |
| | السلام المؤمن المهيمن العزيز الجبار المتكبر ... ... | ٢٣ | م الحشر | ٥٩ |
| الْمُتَكَبِّرِينَ: | فلبئس مثوى المتكبرين ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك النحل | ١٦ |
| (٤) | أليس فى جهنم مثوى للمتكبرين ... ... ... ... | ٦٠ | ك الزمر | ٣٩ |
| | قيل ادخلوا أبواب جهنم خالدين فيها فبئس مثوى | | | |
| | المتكبرين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٢ | ك « | ٣٩ |
| | ادخلوا أبواب جهنم خالدين فيها فبئس مثوى المتكبرين | ٧٦ | ك غافر | ٤٠ |
| اسْتِكْبَارًا: | استكبارا فى الأرض ومكر السيئ ... ... ... | ٤٣ | ك فاطر | ٣٥ |
| (٢) | واستغشوا ثيابهم وأصروا واستكبروا استكبارا ... | ٧ | ك نوح | ٧١ |
| مُسْتَكْبِرًا: | وإذا تتلى عليه آياتنا ولى مستكبرا كأن لم يسمعها | ٧ | ك لقمان | ٣١ |
| (٢) | يسمع آيات الله تتلى عليه ثم يصر مستكبرا كأن لم يسمعها | ٨ | ك الجاثية | ٤٥ |
| مُسْتَكْبِرُونَ: | قلوبهم منكرة وهم مستكبرون ... ... ... | ٢٢ | ك النحل | ١٦ |
| (٢) | لووا رءوسهم ورأيتهم يصدون وهم مستكبرون ... ... | ٥ | م المنافقون | ٦٣ |
| مُسْتَكْبِرِينَ: | إنه لا يحب المستكبرين ... ... ... ... | ٢٣ | ك النحل | ١٦ |
| (٢) | مستكبرين به سامرا تهجرون ... ... ... ... | ٦٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| كِبْرٌ: | إن فى صدورهم إلا كبر ما هم ببالغيه ... ... ... | ٥٦ | م غافر | ٤٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كِبْرَهُ: | والذى تولى كبره منهم له عذاب عظيم ... ... ... | ١١ | م النـور | ٢٤ |
| الْكِبَرُ: | له فيها من كل الثمرات وأصابه الكبر وله ذرية ضعفاء | ٢٦٦ | م البقـرة | ٢ |
| (٦) | قال رب أنى يكون لى غلام وقد بلغنى الكبر وامرأتى عاقر | ٤٠ | م آل عمران | ٣ |
| | الحمد لله الذى وهب لى على الكبر إسمعيل وإسحق ... | ٣٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | قال أبشرتمونى على أن مسنى الكبر فبم تبشرون ... ... | ٥٤ | ك الحجر | ١٥ |
| | إما يبلغن عندك الكبر أحدهما أو كلاهما فلا تقل لهما أف | ٢٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وكانت امرأتى عاقرا وقد بلغت من الكبر عتيا ... ... | ٨ | ك مريم | ١٩ |
| كَبِيرٌ: | يسئلونك عن الشهر الحرام قتال فيه قل قتال فيه كبير | ٢١٧ | م البقـرة | ٢ |
| (١٩) | يسئلونك عن الخمر والميسر قل فيهما إثم كبير ومنافع للناس | ٢١٩ | م « | ٢ |
| | إلا تفعلوه تكن فتنة فى الأرض وفساد كبير ... ... | ٧٣ | م الأنفال | ٨ |
| | وإن تولوا فإنى أخاف عليكم عذاب يوم كبير ... ... | ٣ | ك هـود | ١١ |
| | أولئك لهم مغفرة وأجر كبير ... ... ... ... ... | ١١ | ك « | ١١ |
| | عالم الغيب والشهادة الكبير المتعال ... ... ... ... | ٩ | م الرعـد | ١٣ |
| | وأن الله هو العلىّ الكبير ... ... ... ... ... | ٦٢ | م الحـج | ٢٢ |
| | قالتا لا نسقى حتى يصدر الرعاء وأبونا شيخ كبير ... | ٢٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | وأن ما يدعون من دونه الباطل وأن الله هو العلىّ الكبير | ٣٠ | ك لقمان | ٣١ |
| | قالوا ماذا قال ربكم قالوا الحق وهو العلىّ الكبير ... | ٢٣ | ك سبأ | ٣٤ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم مغفرة وأجر كبير | ٧ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | ومنهم سابق بالخيرات بإذن الله ذلك هو الفضل الكبير | ٣٢ | ك « | ٣٥ |
| | وإن يشرك به تؤمنوا فالحكم لله العلىّ الكبير ... ... | ١٢ | ك غافـر | ٤٠ |
| | لهم ما يشاءون عند ربهم ذلك هو الفضل الكبير ... | ٢٢ | ك الشـورى | ٤٢ |
| | وكل صغير وكبير مُسْتَطَر... ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك القمـر | ٥٤ |
| | فالذين آمنوا منكم وأنفقوا لهم أجر كبير ... ... ... | ٧ | م الحـديد | ٥٧ |
| | وقلنا ما نزل الله من شىء إن أنتم إلا فى ضلال كبير | ٩ | ك المـلك | ٦٧ |
| | إن الذين يخشون ربهم بالغيب لهم مغفـرة وأجر كبير | ١٢ | ك « | ٦٧ |
| | لهم جنات تجرى من تحتها الأنهار ذلك الفوز الكبير | ١١ | ك البـروج | ٨٥ |
| كَبِيرًا: | ولا تسئموا أن تكتبوه صغيرا أو كبيرا إلى أجله | ٢٨٢ | م البقـرة | ٢ |
| (١٧) | ولا تأكلوا أموالهم إلى أموالكم إنه كان حوبا كبيرا | ٢ | م النسـاء | ٤ |
| | فإن أطعنكم فلا تبغوا عليهن سبيلا إن الله كان عليا كبيرا | ٣٤ | م « | ٤ |
| | قالوا يأيها العزيز إن له أبا شيخا كبيرا فخذ أحدنا مكانه | ٧٨ | ك يـوسف | ١٢ |
| | لتفسدن فى الأرض مرتين ولتعلن علوا كبيرا ... ... | ٤ | ك الإسـراء | ١٧ |
| | ويبشر المؤمنين الذين يعملون الصالحات أن لهم أجرا كبيرا | ٩ | ك « | ١٧ |
| | نحن نرزقهم وإياكم إن قتلهم كان خطئا كبيرا ... ... | ٣١ | ك « | ١٧ |
| | سبحانه وتعالى عما يقولون علوا كبيرا ... ... ... | ٤٣ | ك « | ١٧ |
| | ويخوفهم فما يزيدهم إلا طغيانا كبيرا ... ... ... | ٦٠ | ك « | ١٧ |
| | إلا رحمة من ربك إن فضله كان عليك كبيرا ... ... | ٨٧ | ك « | ١٧ |
| | يجعلهم جذاذا إلا كبيرا لهم لعلهم إليه يرجعون ... | ٥٨ | ك الأنبيـاء | ٢١ |
| كَبِيرًا: | ومن يظلم منكم نذقه عذابا كبيرا ... ... ... ... | ١٩ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| | لقد استكبروا فى أنفسهم وعتو عتوا كبيرا ... ... | ٢١ | ك « | ٢٥ |
| | فلا تطع الكافرين وجاهدهم به جهادا كبيرا ... ... | ٥٢ | ك « | ٢٥ |
| | وبشر المؤمنين بأن لهم من الله فضلا كبيرا ... ... | ٤٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ربنا آتهم ضعفين من العذاب والعنهم لعنا كبيرا ... | ٦٨ | م « | ٣٣ |
| | وإذا رأيت ثمّ رأيت نعيما وملكا كبيرا ... ... ... | ٢٠ | م الإنسـان | ٧٦ |
| لَكَبِيرُكُمُ: | إنه لكبيركم الذى علمكم السحر ... ... ... ... | ٧١ | ك طـه | ٢٠ |
| (٢) | إنه لكبيركم الذى علمكم السحر فلسوف تعلمون ... ... | ٤٩ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| كَبِيرُهُمْ: | قال كبيرهم ألم تعلموا أن أباكم قد أخذ عليكم | | | |
| (٢) | موثقا من الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨٠ | ك يـوسف | ١٢ |
| | قال بل فعله كبيرهم هذا فسئلوهم إن كانوا ينطقون | ٦٣ | ك الأنبيـاء | ٢١ |
| كُبَرَاءَنَا: | وقالوا ربنا إنا أطعنا سادتنا وكبراءنا فأضلونا السبيلا | ٦٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| كَبِيرَةٌ: | وإنها لكبيرة إلا على الخاشعين ... ... ... ... | ٤٥ | م البقـرة | ٢ |
| (٤) | وإن كانت لكبيرة إلا على الذين هدى الله ... ... | ١٤٣ | م « | ٢ |
| | ولا ينفقون نفقة صغيرة ولا كبيرة ولا يقطعون واديا | | | |
| | إلا كتب لهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٢١ | م التـوبة | ٩ |
| | ما لهذا الكتاب لا يغادر صغيرة ولا كبيرة إلا أحصاها | ٤٩ | ك الكهف | ١٨ |
| كَبَائِرَ: | إن تجتنبوا كبائر ما تنهون عنه نكفر عنكم سيئاتكم ... | ٣١ | م النسـاء | ٤ |
| (٣) | والذين يجتنبون كبائر الإثم والفواحش ... ... ... | ٣٧ | ك الشورى | ٤٢ |
| | الذين يجتنبون كبائر الإثم والفواحش إلا اللمم ... ... | ٣٢ | م النجـم | ٥٣ |
| كُبَّارًا: | ومكروا مكرا كبارا ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك نـوح | ٧١ |
| أَكْبَرُ: | وإخراج أهله منه أكبر عند الله ... ... ... ... | ٢١٧ | م البقـرة | ٢ |
| (٣٣) | والفتنة أكبر من القتل ... ... ... ... ... ... | ٢١٧ | م « | ٢ |
| | قل فيهما إثم كبير ومنافع للناس وإثمهما أكبر من نفعهما | ٢١٩ | م « | ٢ |
| | قد بدت البغضاء من أفواههم وما تخفى صدورهم أكبر | ١١٨ | م آل عمران | ٣ |
| | فقد سألوا موسى أكبر من ذلك فقالوا أرنا الله جهرة | ١٥٣ | م النسـاء | ٤ |
| | قل أى شىء أكبر شهادة قل الله شهيد بينى وبينكم | ١٩ | ك الأنعـام | ٦ |
| | فلما رأى الشمس بازغة قال هذا ربى هذا أكبر | ٧٨ | ك « | ٦ |
| | وأذان من الله ورسوله إلى الناس يوم الحج الأكبر | ٣ | م التـوبة | ٩ |
| | ورضوان من الله أكبر ذلك هو الفوز العظيم ... | ٧٢ | م « | ٩ |
| | ولا أصغر من ذلك ولا أكبر إلا فى كتاب مبين ... | ٦١ | ك يـونس | ١٠ |
| | لنبوئنهم فى الدنيا حسنة ولأجر الآخرة أكبر ... ... | ٤١ | ك النحـل | ١٦ |
| | انظر كيف فضلنا بعضهم على بعض وللآخرة أكبر درجات | ٢١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وأكبر تفضيلا... ... ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك « | ١٧ |
| | لا يحزنهم الفزع الأكبر وتتلقاهم الملائكة ... ... | ١٠٣ | ك الأنبيـاء | ٢١ |
| | إن الصلاة تنهى عن الفحشاء والمنكر ولذكر الله أكبر | ٤٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ولنذيقنهم من العذاب الأدنى دون العذاب الأكبر | ٢١ | ك السـجدة | ٣٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَكْبَرُ | ولا أصغر من ذلك ولا أكبر إلا فى كتاب مبين ... | ٣ | ك سبأ | ٣٤ |
| | فأذاقهم الله الخزى فى الحياة الدنيا ولعذاب الآخرة أكبر | ٢٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| | إن الذين كفروا ينادون لمقت الله أكبر من مقتكم أنفسكم | ١٠ | ك غافر | ٤٠ |
| | لخلق السموات والأرض أكبر من خلق الناس ... | ٥٧ | م « | ٤٠ |
| | وما نريهم من آية إلا هى أكبر من أختها ... ... | ٤٨ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | كذلك العذاب ولعذاب الآخرة أكبر لو كانوا يعلمون | ٣٣ | م القلم | ٦٨ |
| | إلا من تولى وكفر . فيعذبه الله العذاب الأكبر ... | ٢٤ | ك الغاشية | ٨٨ |
| أَكَابِرَ | وكذلك جعلنا فى كل قرية أكابر مجرميها ليمكروا فيها | ١٢٣ | ك الأنعام | ٦ |
| ٱلْكُبْرَى | لنريك من آياتنا الكبرى ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك طه | ٢٠ |
| (٦) | يوم نبطش البطشة الكبرى إنا منتقمون ... ... ... | ١٦ | ك الدخان | ٤٤ |
| | لقد رأى من آيات ربه الكبرى ... ... ... ... | ١٨ | ك النجم | ٥٣ |
| | فأراه الآية الكبرى ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك النازعات | ٧٩ |
| | فإذا جاءت الطامة الكبرى ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك « | ٧٩ |
| | ويتجنبها الأشقى . الذى يصلى النار الكبرى ... ... | ١٢ | ك الأعلى | ٨٧ |
| ٱلْكُبَرِ | إنها لإحدى الكبر . نذيرا للبشر... ... ... ... | ٣٥ | ك المدثر | ٧٤ |
| ٱلْكِبْرِيَاءُ | وتكون لكما الكبرياء فى الأرض ... ... ... | ٧٨ | ك يونس | ١٠ |
| (٢) | وله الكبرياء فى السموات والأرض وهو العزيز الحكيم | ٣٧ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| فَكُبْكِبُوا | فكبكبوا فيها هم والغاوون . وجنود إبليس أجمعون | ٩٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| كَتَبَ | فالآن باشروهن وابتغوا ما كتب الله لكم ... ... | ١٨٧ | م البقرة | ٢ |
| (٨) | يا قوم ادخلوا الأرض المقدسة التى كتب الله لكم... | ٢١ | م المائدة | ٥ |
| | كتب على نفسه الرحمة ليجمعنكم إلى يوم القيامة لا ريب فيه | ١٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | فقل سلام عليكم كتب ربكم على نفسه الرحمة ... ... | ٥٤ | ك « | ٦ |
| | قل لن يصيبنا إلا ما كتب الله لنا ... ... ... ... | ٥١ | م التوبة | ٩ |
| | كتب الله لأغلبن أنا ورسلى إن الله قوى عزيز ... | ٢١ | م المجادلة | ٥٨ |
| | أولئك كتب فى قلوبهم الإيمان وأيدهم بروح منه ... | ٢٢ | م « | ٥٨ |
| | ولولا أن كتب الله عليهم الجلاء لعذبهم فى الدنيا ... | ٣ | م الحشر | ٥٩ |
| كَتَبَتْ | فويل لهم مما كتبت أيديهم وويل لهم مما يكسبون | ٧٩ | م البقرة | ٢ |
| كَتَبْتَ | وقالوا ربنا لم كتبت علينا القتال ... ... ... | ٧٧ | م النساء | ٤ |
| كَتَبْنَا | ولو أنا كتبنا عليهم أن اقتلوا أنفسكم أو اخرجوا | | | |
| (٥) | من دياركم ما فعلوه إلا قليل منهم... ... ... ... | ٦٦ | م « | ٤ |
| | من أجل ذلك كتبنا على بنى إسرائيل أنه من قتل نفسا بغير | | | |
| | نفس أو فساد فى الأرض فكأنما قتل الناس جميعا | ٣٢ | م المائدة | ٥ |
| | وكتبنا عليهم فيها أن النفس بالنفس والعين بالعين | ٤٥ | م « | ٥ |
| | وكتبنا له فى الألواح من كل شىء موعظة ... ... | ١٤٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولقد كتبنا فى الزبور من بعد الذكر أن الأرض يرثها | | | |
| | عبادى الصالحون ... ... ... ... ... ... | ١٠٥ | ك الأنبياء | ٢١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَتَبْنَاهَا | ما كتبناها عليهم إلا ابتغاء رضوان الله ... ... | ٢٧ | م الحديد | ٥٧ |
| فَسَأَكْتُبُهَا | فسأكتبها للذين يتقون ويؤتون الزكاة ... | ١٥٦ | ك الأعراف | ٧ |
| تَكْتُبُوهُ | ولا تسئموا أن تكتبوه صغيرا أو كبيرا إلى أجله | ٢٨٢ | م البقرة | ٢ |
| تَكْتُبُوهَا | فليس عليكم جناح ألا تكتبوها ... ... ... | ٢٨٢ | م « | ٢ |
| نَكْتُبُ | سنكتب ما قالوا وقتلهم الأنبياء بغير حق... ... | ١٨١ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | كلا سنكتب ما يقول ونمد له من العذاب مدا ... | ٧٩ | ك مريم | ١٩ |
| | إنا نحن نحيى الموتى ونكتب ما قدموا وآثارهم ... ... | ١٢ | ك يس | ٣٦ |
| يَكْتُبْ | وليكتب بينكم كاتب بالعدل ... ... ... ... ... | ٢٨٢ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | ولا يأب كاتب أن يكتب كما علمه الله ... ... ... | ٢٨٢ | م « | ٢ |
| | فليكتب وليملل الذى عليه الحق وليتق الله ربه ... ... | ٢٨٢ | م « | ٢ |
| | والله يكتب ما يبيتون فأعرض عنهم وتوكل على الله | ٨١ | م النساء | ٤ |
| يَكْتُبُونَ | فويل للذين يكتبون الكتاب بأيديهم ثم يقولون | | | |
| (٥) | هذا من عند الله ... ... ... ... ... ... ... | ٧٩ | م البقرة | ٢ |
| | قل الله أسرع مكرا إن رسلنا يكتبون ما تمكرون ... | ٢١ | ك يونس | ١٠ |
| | بلى ورسلنا لديهم يكتبون ... ... ... ... ... | ٨٠ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | أم عندهم الغيب فهم يكتبون ... ... ... ... ... | ٤١ | ك الطور | ٥٢ |
| | أم عندهم الغيب فهم يكتبون ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك القلم | ٦٨ |
| ٱكْتُبْ | واكتب لنا فى هذه الدنيا حسنة وفى الآخرة | | | |
| | إنا هدنا إليك ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٦ | ك الأعراف | ٧ |
| فَٱكْتُبْنَا | ربنا آمنا بما أنزلت واتبعنا الرسول فاكتبنا مع | | | |
| (٢) | الشاهدين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | م آل عمران | ٣ |
| | يقولون ربنا آمنا فاكتبنا مع الشاهدين ... ... ... | ٨٣ | م المائدة | ٥ |
| فَٱكْتُبُوهُ | إذا تداينتم بدين إلى أجل مسمى فاكتبوه ... | ٢٨٢ | م البقرة | ٢ |
| كُتِبَ | يأيها الذين آمنوا كتب عليكم القصاص فى القتلى | ١٧٨ | م « | ٢ |
| (١٣) | كتب عليكم إذا حضر أحدكم الموت إن ترك خيرا الوصية | | | |
| | للوالدين والأقربين ... ... ... ... ... ... | ١٨٠ | م « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا كتب عليكم الصيام... ... ... ... | ١٨٣ | م « | ٢ |
| | كما كتب على الذين من قبلكم ... ... ... ... ... | ١٨٣ | م « | ٢ |
| | كتب عليكم القتال وهو كره لكم... ... ... ... ... | ٢١٦ | م « | ٢ |
| | قال هل عسيتم إن كتب عليكم القتال ألا تقاتلوا ... | ٢٤٦ | م « | ٢ |
| | فلما كتب عليهم القتال تولوا إلا قليلا منهم ... ... | ٢٤٦ | م « | ٢ |
| | قل لو كنتم فى بيوتكم لبرز الذين كتب عليهم القتل | | | |
| | إلى مضاجعهم... ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٤ | م آل عمران | ٣ |
| | فلما كتب عليهم القتال إذا فريق منهم يخشون الناس | ٧٧ | م النساء | ٤ |
| | فى يتامى النساء اللاتى لا تؤتونهن ما كتب لهن... ... | ١٢٧ | م « | ٤ |
| | ولا ينالون من عدو نيلا إلا كتب لهم به عمل صالح | ١٢٠ | م التوبة | ٩ |
| | ولا يقطعون واديا إلا كتب لهم ... ... ... ... ... | ١٢١ | م « | ٩ |
| | كتب عليه أنه من تولاه فأنه يضله ويهديه إلى عذاب السعير | ٤ | م الحج | ٢٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| سَتُكْتَبُ | : ستكتب شهادتهم ويسئلون ... .. ... ... | ١٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| أَكْتَتَبَهَا | : وقالوا أساطير الأولين اكتتبها... ... ... ... | ٥ | ك الفرقان | ٢٥ |
| فَكَاتِبُوهُمْ | : فكاتبوهم إن علمتم فيهم خيرا... ... ... ... | ٣٣ | م النور | ٢٤ |
| كَاتِبٌ | : وليكتب بينكم كاتب بالعدل ... ... ... ... | ٢٨٢ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | ولا يأب كاتب أن يكتب كما علمه الله ... ... ... | ٢٨٢ | » | ٢ |
| | وأشهدوا إذا تبايعتم ولا يضار كاتب ولا شهيد... ... | ٢٨٢ | » | ٢ |
| كَاتِبًا | : وإن كنتم على سفر ولم تجدوا كاتبا فرهان مقبوضة | ٢٨٣ | » | ٢ |
| كَاتِبُونَ | : فلا كفران لسعيه وإنا له كاتبون ... ... ... | ٩٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| كَاتِبِينَ | : وإن عليكم لحافظين . كراما كاتبين ... ... ... | ١١ | ك الانفطار | ٨٢ |
| الْكِتَابُ | : ذلك الكتاب لا ريب فيه هدى للمتقين ... ... | ٢ | م البقرة | ٢ |
| (٢٣٠) | أتأمرون الناس بالبر وتنسون أنفسكم وأنتم تتلون الكتاب | ٤٤ | » | ٢ |
| | وإذ آتينا موسى الكتاب والفرقان لعلكم تهتدون ... | ٥٣ | » | ٢ |
| | ومنهم أميون لا يعلمون الكتاب إلا أماني ... ... | ٧٨ | » | ٢ |
| | فويل للذين يكتبون الكتاب بأيديهم... ... ... ... | ٧٩ | » | ٢ |
| | أفتؤمنون ببعض الكتاب وتكفرون ببعض ... ... | ٨٥ | » | ٢ |
| | ولقد آتينا موسى الكتاب وقفينا من بعده بالرسل ... | ٨٧ | » | ٢ |
| | ولما جاءهم كتاب من عند الله مصدق لما معهم ... | ٨٩ | » | ٢ |
| | نبذ فريق من الذين أوتوا الكتاب ... ... ... ... | ١٠١ | » | ٢ |
| | كتاب الله وراء ظهورهم ... ... ... ... ... | ١٠١ | » | ٢ |
| | ما يود الذين كفروا من أهل الكتاب ولا المشركين أن ينزل عليكم من خير من ربكم ... ... ... ... | ١٠٥ | » | ٢ |
| | ود كثير من أهل الكتاب لو يردونكم من بعد إيمانكم كفارا | ١٠٩ | » | ٢ |
| | وقالت النصارى ليست اليهود على شيء وهم يتلون الكتاب | ١١٣ | » | ٢ |
| | الذين آتيناهم الكتاب يتلونه حق تلاوته أولئك يؤمنون به | ١٢١ | » | ٢ |
| | يتلوا عليهم آياتك ويعلمهم الكتاب والحكمة ... ... | ١٢٩ | » | ٢ |
| | وإن الذين أوتوا الكتاب ليعلمون أنه الحق من ربهم | ١٤٤ | » | ٢ |
| | ولئن أتيت الذين أوتوا الكتاب بكل آية ما تبعوا قبلتك | ١٤٥ | » | ٢ |
| | الذين آتيناهم الكتاب يعرفونه كما يعرفون أبناءهم ... | ١٤٦ | » | ٢ |
| | ويزكيكم ويعلمكم الكتاب والحكمة ... ... ... ... | ١٥١ | » | ٢ |
| | من بعد ما بيناه للناس في الكتاب... ... ... ... ... | ١٥٩ | » | ٢ |
| | إن الذين يكتمون ما أنزل الله من الكتاب ... ... | ١٧٤ | » | ٢ |
| | ذلك بأن الله نزل الكتاب بالحق ... ... ... ... | ١٧٦ | » | ٢ |
| | وإن الذين اختلفوا في الكتاب لفي شقاق بعيد ... | ١٧٦ | » | ٢ |
| | ولكن البر من آمن بالله واليوم الآخر والملائكة والكتاب | ١٧٧ | » | ٢ |
| | وأنزل معهم الكتاب بالحق ليحكم بين الناس ... ... | ٢١٣ | » | ٢ |
| | وما أنزل عليكم من الكتاب والحكمة يعظكم به... ... | ٢٣١ | » | ٢ |
| | ولا تعزموا عقدة النكاح حتى يبلغ الكتاب أجله ... | ٢٣٥ | » | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الْكِتَابُ | : نزل عليك الكتاب بالحق مصدقا لما بين يديه | ٣ | م آل عمران | ٣ |
| | هو الذي أنزل عليك الكتاب ... ... ... ... ... | ٧ | » | ٣ |
| | منه آيات محكمات هن أم الكتاب ... ... ... ... | ٧ | » | ٣ |
| | وما اختلف الذين أوتوا الكتاب إلا من بعد ما جاءهم العلم بغيا بينهم ... ... ... ... ... ... ... | ١٩ | » | ٣ |
| | وقل للذين أوتوا الكتاب والأميين أأسلمتم ... ... | ٢٠ | » | ٣ |
| | ألم تر إلى الذين أوتوا نصيبا من الكتاب ... ... ... | ٢٣ | » | ٣ |
| | يدعون إلى كتاب الله ليحكم بينهم ... ... ... ... | ٢٣ | » | ٣ |
| | ويعلمه الكتاب والحكمة والتوراة والإنجيل ... ... | ٤٨ | » | ٣ |
| | قل يا أهل الكتاب تعالوا إلى كلمة سواء بيننا وبينكم | ٦٤ | » | ٣ |
| | يا أهل الكتاب لم تحاجون في إبراهيم ... ... ... ... | ٦٥ | » | ٣ |
| | ودت طائفة من أهل الكتاب لو يضلونكم ... ... | ٦٩ | » | ٣ |
| | يا أهل الكتاب لم تكفرون بآيات الله وأنتم تشهدون | ٧٠ | » | ٣ |
| | يا أهل الكتاب لم تلبسون الحق بالباطل ... ... ... | ٧١ | » | ٣ |
| | وقالت طائفة من أهل الكتاب آمنوا بالذي أنزل على الذين آمنوا وجه النهار واكفروا آخره ... | ٧٢ | » | ٣ |
| | ومن أهل الكتاب من إن تأمنه بقنطار يؤده إليك ... | ٧٥ | » | ٣ |
| | وإن منهم لفريقا يلوون ألسنتهم بالكتاب ... ... | ٧٨ | » | ٣ |
| | لتحسبوه من الكتاب ... ... ... ... ... ... ... | ٧٨ | » | ٣ |
| | وما هو من الكتاب ... ... ... ... ... ... ... | ٧٨ | » | ٣ |
| | ما كان لبشر أن يؤتيه الله الكتاب والحكم والنبوة ... | ٧٩ | » | ٣ |
| | كونوا ربانيين بما كنتم تعلمون الكتاب... ... ... | ٧٩ | » | ٣ |
| | وإذ أخذ الله ميثاق النبيين لما آتيتكم من كتاب وحكمة | ٨١ | » | ٣ |
| | قل يا أهل الكتاب لم تكفرون بآيات الله ... ... ... | ٩٨ | » | ٣ |
| | قل يا أهل الكتاب لم تصدون عن سبيل الله ... ... | ٩٩ | » | ٣ |
| | إن تطيعوا فريقا من الذين أوتوا الكتاب يردوكم بعد إيمانكم كافرين ... ... ... ... ... ... | ١٠٠ | » | ٣ |
| | ولو آمن أهل الكتاب لكان خيرا لهم ... ... ... | ١١٠ | » | ٣ |
| | من أهل الكتاب أمة قائمة يتلون آيات الله ... ... | ١١٣ | » | ٣ |
| | تحبونهم ولا يحبونكم وتؤمنون بالكتاب كله ... ... | ١١٩ | » | ٣ |
| | يتلوا عليهم آياته ويزكيهم ويعلمهم الكتاب والحكمة | ١٦٤ | » | ٣ |
| | جاءوا بالبينات والزبر والكتاب المنير... ... ... ... | ١٨٤ | » | ٣ |
| | ولتسمعن من الذين أوتوا الكتاب من قبلكم ومن الذين أشركوا أذى كثيرا ... ... ... ... ... | ١٨٦ | » | ٣ |
| | وإذ أخذ الله ميثاق الذين أوتوا الكتاب لتبيننه للناس | ١٨٧ | » | ٣ |
| | وإن من أهل الكتاب لمن يؤمن بالله وما أنزل إليكم | ١٩٩ | » | ٣ |
| | والمحصنات من النساء إلا ما ملكت أيمانكم كتاب الله عليكم | ٢٤ | م النساء | ٤ |
| | ألم تر إلى الذين أوتوا نصيبا من الكتاب يشترون الضلالة | ٤٤ | م | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الْكِتَابُ | يأيها الذين أوتوا الكتاب آمنوا بما نزلنا ... | ٤٧ | م النساء | ٤ |
| | ألم تر إلى الذين أوتوا نصيبا من الكتاب يؤمنون بالجبت | ٥١ | م » | ٤ |
| | فقد آتينا آل إبراهيم الكتاب والحكمة وآتيناهم ملكا عظيما | ٥٤ | م » | ٤ |
| | إنا أنزلنا إليك الكتاب بالحق لتحكم بين الناس ... | ١٠٥ | م » | ٤ |
| | وأنزل الله عليك الكتاب والحكمة وعلمك مالم تكن تعلم | ١١٣ | م » | ٤ |
| | ليس بأمانيكم ولا أماني أهل الكتاب ... ... ... | ١٢٣ | م » | ٤ |
| | قل الله يفتيكم فيهن وما يتلى عليكم في الكتاب في يتامى النساء | ١٢٧ | م » | ٤ |
| | ولقد وصينا الذين أوتوا الكتاب من قبلكم وإياكم | ١٣١ | م » | ٤ |
| | آمنوا بالله ورسوله والكتاب الذي نزل على رسوله | ١٣٦ | م » | ٤ |
| | والكتاب الذي أنزل من قبل ... ... ... ... ... | ١٣٦ | م » | ٤ |
| | وقد نزل عليكم في الكتاب أن إذا سمعتم آيات الله يكفر بها ويستهزأ بها فلا تقعدوا معهم ... ... | ١٤٠ | م » | ٤ |
| | يسئلك أهل الكتاب إن تنزل عليهم كتابا من السماء ... | ١٥٣ | م » | ٤ |
| | وإن من أهل الكتاب إلا ليؤمنن به قبل موته ... ... | ١٥٩ | م » | ٤ |
| | يأهل الكتاب لا تغلوا في دينكم ولا تقولوا على الله إلا الحق | ١٧١ | م » | ٤ |
| | وطعام الذين أوتوا الكتاب حل لكم ... ... ... | ٥ | م المائدة | ٥ |
| | والمحصنات من الذين أوتوا الكتاب من قبلكم ... | ٥ | م » | ٥ |
| | يأهل الكتاب قد جاءكم رسولنا يبين لكم كثيرا ... | ١٥ | م » | ٥ |
| | مما كنتم تخفون من الكتاب ويعفوا عن كثير ... | ١٥ | م » | ٥ |
| | قد جاءكم من الله نور وكتاب مبين ... ... ... ... | ١٥ | م » | ٥ |
| | يأهل الكتاب قد جاءكم رسولنا يبين لكم على فترة من الرسل | ١٩ | م » | ٥ |
| | والربانيون والأحبار بما استحفظوا من كتاب الله | ٤٤ | م » | ٥ |
| | وأنزلنا إليك الكتاب بالحق ... ... ... ... ... | ٤٨ | م » | ٥ |
| | مصدقا لما بين يديه من الكتاب ومهيمنا عليه ... | ٤٨ | م » | ٥ |
| | الذين اتخذوا دينكم هزوا ولعبا من الذين أوتوا الكتاب | ٥٧ | م » | ٥ |
| | قل يأهل الكتاب هل تنقمون منا إلا أن آمنا بالله | ٥٩ | م » | ٥ |
| | ولو أن أهل الكتاب آمنوا واتقوا لكفرنا عنهم سيئاتهم | ٦٥ | م » | ٥ |
| | قل يأهل الكتاب لستم على شيء حتى تقيموا التوراة والإنجيل ... ... ... ... ... ... ... | ٦٨ | م » | ٥ |
| | قل يأهل الكتاب لا تغلوا في دينكم غير الحق ... ... | ٧٧ | م » | ٥ |
| | وإذ علمتك الكتاب والحكمة والتوراة والإنجيل ... | ١١٠ | م » | ٥ |
| | الذين آتيناهم الكتاب يعرفونه كما يعرفون أبناءهم | ٢٠ | م الأنعام | ٦ |
| | ما فرطنا في الكتاب من شيء ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك » | ٦ |
| | ولا رطب ولا يابس إلا في كتاب مبين ... ... ... | ٥٩ | ك » | ٦ |
| | أولئك الذين آتيناهم الكتاب والحكم والنبوة ... ... | ٨٩ | ك » | ٦ |
| | قل من أنزل الكتاب الذي جاء به موسى نورا وهدى للناس | ٩١ | م » | ٦ |
| | وهذا كتاب أنزلناه مبارك مصدق الذي بين يديه ... | ٩٢ | ك » | ٦ |
| | أفغير الله أبتغي حكما وهو الذي أنزل إليكم الكتاب مفصلا | ١١٤ | م » | ٦ |
| الْكِتَابُ | والذين آتيناهم الكتاب يعلمون أنه منزل من ربك بالحق ... ... ... ... ... ... ... ... | ١١٤ | م الأنعام | ٦ |
| | ثم آتينا موسى الكتاب تماما على الذي أحسن وتفصيلا لكل شيء ... ... ... ... ... ... | ١٥٤ | ك » | ٦ |
| | وهذا كتاب أنزلناه مبارك فاتبعوه ... ... ... ... | ١٥٥ | ك » | ٦ |
| | أن تقولوا إنما أنزل الكتاب على طائفتين من قبلنا | ١٥٦ | ك » | ٦ |
| | أو تقولوا لو أنا أنزل علينا الكتاب لكنا أهدى منهم | ١٥٧ | ك » | ٦ |
| | كتاب أنزل إليك فلا يكن في صدرك حرج منه ... | ٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | أولئك ينالهم نصيبهم من الكتاب ... ... ... ... | ٣٧ | ك » | ٧ |
| | ولقد جئناهم بكتاب فصلناه على علم هدى ورحمة ... | ٥٢ | ك » | ٧ |
| | فخلف من بعدهم خلف ورثوا الكتاب ... ... ... | ١٦٩ | م » | ٧ |
| | ألم يؤخذ عليهم ميثاق الكتاب أن لا يقولوا على الله إلا الحق | ١٦٩ | م » | ٧ |
| | والذين يمسكون بالكتاب وأقاموا الصلاة إنا لا نضيع أجر المصلحين ... ... ... ... ... ... ... | ١٧٠ | م » | ٧ |
| | إن ولي الله الذي نزل الكتاب وهو يتولى الصالحين | ١٩٦ | ك » | ٧ |
| | لولا كتاب من الله سبق لمسكم فيما أخذتم عذاب عظيم | ٦٨ | م الأنفال | ٨ |
| | وأولوا الأرحام بعضهم أولى ببعض في كتاب الله ... | ٧٥ | م » | ٨ |
| | ولا يدينون دين الحق من الذين أوتوا الكتاب ... | ٢٩ | م التوبة | ٩ |
| | إن عدة الشهور عند الله اثنا عشر شهرا في كتاب الله | ٣٦ | م » | ٩ |
| | الر تلك آيات الكتاب الحكيم ... ... ... ... | ١ | ك يونس | ١٠ |
| | ولكن تصديق الذي بين يديه وتفصيل الكتاب ... | ٣٧ | ك » | ١٠ |
| | ولا أصغر من ذلك ولا أكبر إلا في كتاب مبين ... | ٦١ | ك » | ١٠ |
| | فسئل الذين يقرءون الكتاب من قبلك ... ... ... | ٩٤ | م » | ١٠ |
| | الر كتاب أحكمت آياته ثم فصلت من لدن حكيم خبير | ١ | ك هود | ١١ |
| | ويعلم مستقرها ومستودعها كل في كتاب مبين... ... | ٦ | ك » | ١١ |
| | ومن قبله كتاب موسى إماما ورحمة ... ... ... ... | ١٧ | م » | ١١ |
| | ولقد آتينا موسى الكتاب فاختلف فيه ... ... ... | ١١٠ | ك » | ١١ |
| | الر تلك آيات الكتاب المبين ... ... ... ... ... | ١ | ك يوسف | ١٢ |
| | المر تلك آيات الكتاب والذي أنزل إليك من ربك الحق | ١ | م الرعد | ١٣ |
| | والذين آتيناهم الكتاب يفرحون بما أنزل إليك ... | ٣٦ | م » | ١٣ |
| | وما كان لرسول أن يأتي بآية إلا بإذن الله لكل أجل كتاب | ٣٨ | م » | ١٣ |
| | يمحوا الله ما يشاء ويثبت وعنده أم الكتاب ... ... | ٣٩ | م » | ١٣ |
| | قل كفى بالله شهيدا بيني وبينكم ومن عنده علم الكتاب | ٤٣ | م » | ١٣ |
| | الر كتاب أنزلناه إليك لتخرج الناس من الظلمات إلى النور | ١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | الر تلك آيات الكتاب وقرآن مبين... ... ... ... | ١ | ك الحجر | ١٥ |
| | وما أهلكنا من قرية إلا ولها كتاب معلوم ... ... | ٤ | ك » | ١٥ |
| | وما أنزلنا عليك الكتاب إلا لتبين لهم الذي اختلفوا فيه | ٦٤ | ك النحل | ١٦ |
| | ونزلنا عليك الكتاب تبيانا لكل شيء وهدى ورحمة ... | ٨٩ | ك » | ١٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الْكِتَابُ | : حمٓ . تنزيل الكتاب من الله العزيز الحكيم... | ٢ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | آتونى بكتاب من قبل هذا أو أثارة من علم ... ... | ٤ | ك « | ٤٦ |
| | ومن قبله كتاب موسى إماما ورحمة ... ... ... ... | ١٢ | ك « | ٤٦ |
| | وهذا كتاب مصدق لسانا عربيا ... ... ... ... ... | ١٢ | ك « | ٤٦ |
| | قد علمنا ما تنقص الأرض منهم وعندنا كتاب حفيظ | ٤ | ك قٓ | ٥٠ |
| | والطور . وكتاب مسطور ... ... ... ... ... ... | ٢ | ك الطور | ٥٢ |
| | إنه لقرآن كريم . فى كتاب مكنون ... ... ... ... | ٧٨ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | ولا يكونوا كالذين أوتوا الكتاب من قبل ... ... | ١٦ | م الحديد | ٥٧ |
| | ما أصاب من مصيبة فى الأرض ولا فى أنفسكم إلا فى كتاب | ٢٢ | م « | ٥٧ |
| | وأنزلنا معهم الكتاب والميزان ليقوم الناس بالقسط | ٢٥ | م « | ٥٧ |
| | وجعلنا فى ذريتهما النبوة والكتاب ... ... ... ... | ٢٦ | م « | ٥٧ |
| | لئلا يعلم أهل الكتاب ألا يقدرون على شىء من فضل الله | ٢٩ | م « | ٥٧ |
| | هو الذى أخرج الذين كفروا من أهل الكتاب من ديارهم | ٢ | م الحشر | ٥٩ |
| | يقولون لإخوانهم الذين كفروا من أهل الكتاب... | ١١ | م « | ٥٩ |
| | يتلوا عليهم آياته ويزكيهم ويعلمهم الكتاب والحكمة | ٢ | م الجمعة | ٦٢ |
| | أم لكم كتاب فيه تدرسون ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك القلم | ٦٨ |
| | ليستيقن الذين أوتوا الكتاب ويزداد الذين آمنوا إيمانا | ٣١ | ك المدثر | ٧٤ |
| | ولا يرتاب الذين أوتوا الكتاب والمؤمنون ... ... | ٣١ | ك « | ٧٤ |
| | كلا إن كتاب الفجار لفى سجين ... ... ... ... ... | ٧ | ك المطففين | ٨٣ |
| | وما أدراك ما سجين . كتاب مرقوم ... ... ... ... | ٩ | ك « | ٨٣ |
| | كلا إن كتاب الأبرار لفى عليين ... ... ... ... ... | ١٨ | ك « | ٨٣ |
| | وما أدراك ما عليون . كتاب مرقوم ... ... ... ... | ٢٠ | ك « | ٨٣ |
| | لم يكن الذين كفروا من أهل الكتاب والمشركين | | | |
| | منفكين حتى تأتيهم البينة ... ... ... ... ... ... | ١ | م البينة | ٩٨ |
| | وما تفرق الذين أوتوا الكتاب إلا من بعد ما جاءتهم البينة | ٤ | م « | ٩٨ |
| | إن الذين كفروا من أهل الكتاب والمشركين فى نار | | | |
| | جهنم خالدين فيها ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | م « | ٩٨ |
| كِتَاباً | : وما كان لنفس أن تموت إلا بإذن الله كتابا مؤجلا | ١٤٥ | م آل عمران | ٣ |
| (١٢) | إن الصلاة كانت على المؤمنين كتابا موقوتا ... ... | ١٠٣ | م النساء | ٤ |
| | يسئلك أهل الكتاب أن تنزل عليهم كتابا من السماء... | ١٥٣ | م « | ٤ |
| | ولو نزلنا عليك كتابا فى قرطاس فلمسوه بأيديهم لقال | | | |
| | الذين كفروا إن هذا إلا سحر مبين ... ... ... ... | ٧ | ك الأنعام | ٦ |
| | ونخرج له يوم القيامة كتابا يلقاه منشورا ... ... ... | ١٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ولن نؤمن لرقيك حتى تنزل علينا كتابا نقرؤه ... ... | ٩٣ | ك « | ١٧ |
| | لقد أنزلنا إليكم كتابا فيه ذكركم أفلا تعقلون ... ... | ١٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | أم آتيناهم كتابا فهم على بينة منه ... ... ... ... | ٤٠ | ك فاطر | ٣٥ |
| | الله نزل أحسن الحديث كتابا متشابها... ... ... ... | ٢٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| | أم آتيناهم كتابا من قبله فهم به مستمسكون ... ... | ٢١ | ك الزخرف | ٤٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كِتَاباً | : قالوا يا قومنا إنا سمعنا كتابا أنزل من بعد موسى ... | ٣٠ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | وكل شىء أحصيناه كتابا ... ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك النبأ | ٧٨ |
| كِتَابَكَ | : اقرأ كتابك كفى بنفسك اليوم عليك حسيبا ... | ١٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| بِكِتَابِكُمْ | : فأتوا بكتابكم إن كنتم صادقين ... ... ... ... | ١٥٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| كِتَابُنَا | : هذا كتابنا ينطق عليكم بالحق ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك الجاثية | ٤٥ |
| كِتَابَهُ | : فمن أوتى كتابه بيمينه فأولئك يقرءون كتابهم ... ... | ٧١ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٥) | فأما من أوتى كتابه بيمينه فيقول هاؤم اقرءوا كتابيه | ١٩ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | وأما من أوتى كتابه بشماله فيقول ياليتنى لم أوت كتابيه | ٢٥ | ك « | ٦٩ |
| | فأما من أوتى كتابه بيمينه . فسوف يحاسب حسابا يسيرا | ٧ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| | وأما من أوتى كتابه وراء ظهره . فسوف يدعوا ثبورا | ١٠ | ك « | ٨٤ |
| كِتَابِهَا | : كل أمة تدعى إلى كتابها اليوم تجزون ما كنتم تعملون | ٢٨ | ك الجاثية | ٤٥ |
| كِتَابَهُمْ | : فمن أوتى كتابه بيمينه فأولئك يقرءون كتابهم ... ... | ٧١ | ك الإسراء | ١٧ |
| كِتَابِى | : اذهب بكتابى هذا فألقه إليهم ثم تول عنهم ... ... | ٢٨ | ك النمل | ٢٧ |
| كِتَابِيَهْ | : فأما من أوتى كتابه بيمينه فيقول هاؤم اقرءوا كتابيه | ١٩ | ك الحاقة | ٦٩ |
| (٢) | وأما من أوتى كتابه بشماله فيقول ياليتنى لم أوت كتابيه | ٢٥ | ك « | ٦٩ |
| كُتُبٍ | : يوم نطوى السماء كطى السجل للكتب... ... ... | ١٠٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٣) | وما آتيناهم من كتب يدرسونها ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك سبأ | ٣٤ |
| | فيها كتب قيمة ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | م البينة | ٩٨ |
| كُتُبِهِ | : كل آمن بالله وملائكته وكتبه ورسله ... ... ... | ٢٨٥ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | ومن يكفر بالله وملائكته وكتبه ورسله واليوم الآخر | | | |
| | فقد ضل ضلالا بعيدا ... ... ... ... ... ... | ١٣٦ | م النساء | ٤ |
| | وصدقت بكلمات ربها وكتبه وكانت من القانتين ... | ١٢ | م التحريم | ٦٦ |
| مَكْتُوباً | : الذى يجدونه مكتوبا عندهم فى التوراة والإنجيل | ١٥٧ | ك الأعراف | ٧ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَتَمَ | : ومن أظلم ممن كتم شهادة عنده من الله ... ... ... | ١٤٠ | م البقرة | ٢ |
| تَكْتُمُوا | : ولا تلبسوا الحق بالباطل وتكتموا الحق وأنتم تعلمون | ٤٢ | م « | ٢ |
| (٢) | ولا تكتموا الشهادة ومن يكتمها فإنه آثم قلبه ... ... | ٢٨٣ | م « | ٢ |
| تَكْتُمُونَ | : وأعلم ما تبدون وما كنتم تكتمون ... ... ... | ٣٣ | م « | ٢ |
| (٦) | وإذ قتلتم نفسا فادارأتم فيها والله مخرج ما كنتم تكتمون | ٧٢ | م « | ٢ |
| | لم تلبسون الحق بالباطل وتكتمون الحق وأنتم تعلمون | ٧١ | م آل عمران | ٣ |
| | ما على الرسول إلا البلاغ والله يعلم ما تبدون وما تكتمون | ٩٩ | م المائدة | ٥ |
| | إنه يعلم الجهر من القول ويعلم ما تكتمون ... ... ... | ١١٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | والله يعلم ما تبدون وما تكتمون ... ... ... ... | ٢٩ | م النور | ٢٤ |
| تَكْتُمُونَهُ | : لتبيننه للناس ولا تكتمونه ... ... ... ... | ١٨٧ | م آل عمران | ٣ |
| نَكْتُمُ | : لا نشترى به ثمنا ولو كان ذا قربى ولا نكتم شهادة الله | ١٠٦ | م المائدة | ٥ |
| يَكْتُمُ | : وقال رجل مؤمن من آل فرعون يكتم إيمانه ... | ٢٨ | ك غافر | ٤٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَثِيرًا: | رب إنهن أضللن كثيرا من الناس ... ... ... ... | ٣٦ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وأشركه فى أمرى ٠ كى نسبحك كثيرا ... ... ... | ٣٣ | ك طه | ٢٠ |
| | ونذكرك كثيرا ٠ إنك كنت بنا بصيرا ... ... ... | ٣٤ | ك « | ٢٠ |
| | ومساجد يذكر فيها اسم الله كثيرا ... ... ... ... | ٤٠ | م الحج | ٢٢ |
| | لا تدعوا اليوم ثبورا واحدا وادعوا ثبورا كثيرا ... | ١٤ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وعادا وثمودا وأصحاب الرس وقرونا بين ذلك كثيرا | ٣٨ | ك « | ٢٥ |
| | لنحيى به بلدة ميتا ونسقيه مما خلقنا أنعاما وأناسى كثيرا | ٤٩ | ك « | ٢٥ |
| | إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات وذكروا الله كثيرا | ٢٢٧ | م الشعراء | ٢٦ |
| | وإن كثيرا من الناس بلقاء ربهم لكافرون ... ... | ٨ | ك الروم | ٣٠ |
| | لمن كان يرجوا الله واليوم الآخر وذكر الله كثيرا ... | ٢١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | والذاكرين الله كثيرا والذاكرات أعد الله لهم مغفرة | ٣٥ | م « | ٣٣ |
| | يأيها الذين آمنوا اذكروا الله ذكرا كثيرا... ... ... | ٤١ | م « | ٣٣ |
| | ولقد أضل منكم جبلا كثيرا ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك يس | ٣٦ |
| | وإن كثيرا من الخلطاء ليبغى بعضهم على بعض... ... | ٢٤ | ك ص | ٣٨ |
| | ولكن ظننتم أن الله لا يعلم كثيرا مما تعملون ... ... | ٢٢ | ك فصلت | ٤١ |
| | يأيها الذين آمنوا اجتنبوا كثيرا من الظن... ... ... | ١٢ | م الحجرات | ٤٩ |
| | وابتغوا من فضل الله واذكروا الله كثيرا لعلكم تفلحون | ١٠ | م الجمعة | ٦٢ |
| | وقد أضلوا كثيرا ولا تزد الظالمين إلا ضلالا ... ... | ٢٤ | ك نوح | ٧١ |
| كَثِيرَةً: | من ذا الذى يقرض الله قرضا حسنا فيضاعفه له | | | |
| (١١) | أضعافا كثيرة ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٤٥ | م البقرة | ٢ |
| | كم من فئة قليلة غلبت فئة كثيرة بإذن الله ... ... ... | ٢٤٩ | م « | ٢ |
| | تبتغون عرض الحياة الدنيا فعند الله مغانم كثيرة ... | ٩٤ | م النساء | ٤ |
| | لقد نصركم الله فى مواطن كثيرة ويوم حنين ... ... | ٢٥ | م التوبة | ٩ |
| | لكم فيها فواكه كثيرة ومنها تأكلون ... ... ... ... | ١٩ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ولكم فيها منافع كثيرة ومنها تأكلون ... ... ... ... | ٢١ | ك « | ٢٣ |
| | متكئين فيها يدعون فيها بفاكهة كثيرة وشراب... ... | ٥١ | ك ص | ٣٨ |
| | لكم فيها فاكهة كثيرة منها تأكلون ... ... ... ... | ٧٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ومغانم كثيرة يأخذونها وكان الله عزيزا حكيما... ... | ١٩ | م الفتح | ٤٨ |
| | وعدكم الله مغانم كثيرة تأخذونها فعجل لكم هذه ... | ٢٠ | م « | ٤٨ |
| | وفاكهة كثيرة ٠ لا مقطوعة ولا ممنوعة ... ... ... | ٣٢ | ك الواقعة | ٥٦ |
| أَكْثَرُ: | إن الله لذو فضل على الناس ولكن أكثر الناس لا يشكرون | ٢٤٣ | م البقرة | ٢ |
| (٣٣) | فإن كانوا أكثر من ذلك فهم شركاء فى الثلث... ... | ١٢ | م النساء | ٤ |
| | وإن تطع أكثر من فى الأرض يضلوك عن سبيل الله | ١١٦ | ك الأنعام | ٦ |
| | قل إنما علمها عند الله ولكن أكثر الناس لا يعلمون | ١٨٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | كالذين من قبلكم كانوا أشد منكم قوة وأكثر أموالا وأولادا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦٩ | م التوبة | ٩ |
| | إنه الحق من ربك ولكن أكثر الناس لا يؤمنون ... | ١٧ | م هود | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَكْثَرُ: | والله غالب على أمره ولكن أكثر الناس لا يعلمون | ٢١ | ك يوسف | ١٢ |
| | ولكن أكثر الناس لا يشكرون ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك « | ١٢ |
| | ذلك الدين القيم ولكن أكثر الناس لا يعلمون ... ... | ٤٠ | ك « | ١٢ |
| | وإنه لذو علم لما علمناه ولكن أكثر الناس لا يعلمون | ٦٨ | ك « | ١٢ |
| | وما أكثر الناس ولو حرصت بمؤمنين ... ... ... ... | ١٠٣ | ك « | ١٢ |
| | ولكن أكثر الناس لا يؤمنون ... ... ... ... ... | ١ | م الرعد | ١٣ |
| | بلى وعدا عليه حقا ولكن أكثر الناس لا يعلمون ... | ٣٨ | ك النحل | ١٦ |
| | وأمددناكم بأموال وبنين وجعلناكم أكثر نفيرا ... | ٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فأبى أكثر الناس إلا كفورا... ... ... ... ... ... | ٨٩ | ك « | ١٧ |
| | فقال لصاحبه وهو يحاوره أنا أكثر منك مالا ... | ٣٤ | ك الكهف | ١٨ |
| | وكان الإنسان أكثر شىء جدلا ... ... ... ... ... | ٥٤ | ك « | ١٨ |
| | ولقد صرفناه بينهم ليذكروا فأبى أكثر الناس إلا كفورا | ٥٠ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | يقص على بنى إسرائيل أكثر الذى هم فيه يختلفون | ٧٦ | ك النمل | ٢٧ |
| | أو لم يعلم أن الله قد أهلك من قبله من القرون من هو أشد منه قوة وأكثر جمعا ... ... ... ... ... | ٧٨ | ك القصص | ٢٨ |
| | لا يخلف الله وعده ولكن أكثر الناس لا يعلمون ... | ٦ | ك الروم | ٣٠ |
| | وأثاروا الأرض وعمروها أكثر مما عمروها... ... | ٩ | ك « | ٣٠ |
| | ذلك الدين القيم ولكن أكثر الناس لا يعلمون ... | ٣٠ | ك « | ٣٠ |
| | وما أرسلناك إلا كافة للناس بشيرا ونذيرا ولكن أكثر الناس لا يعلمون ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك سبأ | ٣٤ |
| | وقالوا نحن أكثر أموالا وأولادا وما نحن بمعذبين | ٣٥ | ك « | ٣٤ |
| | قل إن ربى يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ولكن أكثر الناس لا يعلمون ... ... ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك « | ٣٤ |
| | ولقد ضل قبلهم أكثر الأولين ... ... ... ... ... | ٧١ | ك الصافات | ٣٧ |
| | لخلق السموات والأرض أكبر من خلق الناس ولكن أكثر الناس لا يعلمون ... ... ... ... ... ... | ٥٧ | م غافر | ٤٠ |
| | إن الساعة لآتية لا ريب فيها ولكن أكثر الناس لا يؤمنون | ٥٩ | ك « | ٤٠ |
| | إن الله لذو فضل على الناس ولكن أكثر الناس لا يشكرون | ٦١ | ك « | ٤٠ |
| | كانوا أكثر منهم وأشد قوة وآثارا فى الأرض ... | ٨٢ | ك « | ٤٠ |
| | ثم يجمعكم إلى يوم القيامة لا ريب فيه ولكن أكثر الناس لا يعلمون ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | ولا أدنى من ذلك ولا أكثر إلا هو معهم أين ما كانوا | ٧ | م المجادلة | ٥٨ |
| أَكْثَرَكُمْ: | وما أنزل إلينا وما أنزل من قبل وأن أكثركم فاسقون | ٥٩ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | لقد جئناكم بالحق ولكن أكثركم للحق كارهون... ... | ٧٨ | ك الزخرف | ٤٣ |
| أَكْثَرَهُمْ: | نبذه فريق منهم بل أكثرهم لا يؤمنون... ... | ١٠٠ | م البقرة | ٢ |
| (٤٥) | منهم المؤمنون وأكثرهم الفاسقون ... ... ... ... | ١١٠ | م آل عمران | ٣ |
| | يفترون على الله الكذب وأكثرهم لا يعقلون ... ... | ١٠٣ | م المائدة | ٥ |
| | قل إن الله قادر على أن ينزل آية ولكن أكثرهم لا يعلمون | ٣٧ | ك الأنعام | ٦ |
| | ما كانوا ليؤمنوا إلا أن يشاء الله ولكن أكثرهم يجهلون | ١١١ | ك « | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَكْثَرُهُمْ | : ولا تجد أكثرهم شاكرين ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | وما وجدنا لأكثرهم من عهد ... ... ... ... ... | ١٠٢ | ك « | ٧ |
| | وإن وجدنا أكثرهم لفاسقين ... ... ... ... ... | ١٠٢ | ك « | ٧ |
| | ألا إنما طائرهم عند الله ولكن أكثرهم لا يعلمون | ١٣١ | ك « | ٧ |
| | إن أولياؤه إلا المتقون ولكن أكثرهم لا يعلمون ... | ٣٤ | م الأنفال | ٨ |
| | يرضونكم بأفواههم وتأبى قلوبهم وأكثرهم فاسقون | ٨ | م التوبة | ٩ |
| | وما يتبع أكثرهم إلا ظنا ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك يونس | ١٠ |
| | ألا إن وعد الله حق ولكن أكثرهم لا يعلمون ... | ٥٥ | ك « | ١٠ |
| | إن الله لذو فضل على الناس ولكن أكثرهم لا يشكرون | ٦٠ | ك « | ١٠ |
| | وما يؤمن أكثرهم بالله إلا وهم مشركون... ... ... | ١٠٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | هل يستوون الحمد لله بل أكثرهم لا يعلمون ... ... | ٧٥ | ك النحل | ١٦ |
| | يعرفون نعمة الله ثم ينكرونها وأكثرهم الكافرون ... | ٨٣ | ك « | ١٦ |
| | قالوا إنما أنت مفتر بل أكثرهم لا يعلمون ... ... | ١٠١ | ك « | ١٦ |
| | بل أكثرهم لا يعلمون الحق فهم معرضون ... ... | ٢٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | أم يقولون به جنة بل جاءهم بالحق وأكثرهم للحق كارهون | ٧٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | أم تحسب أن أكثرهم يسمعون أو يعقلون ... ... | ٤٤ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | إن في ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين ... ... | ٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | إن في ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين ... ... | ٦٧ | ك « | ٢٦ |
| | إن في ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين ... ... | ١٠٣ | ك « | ٢٦ |
| | إن في ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين ... ... | ١٢١ | ك « | ٢٦ |
| | فكذبوه فأهلكناهم إن في ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين | ١٣٩ | ك « | ٢٦ |
| | فأخذهم العذاب إن في ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين | ١٥٨ | ك « | ٢٦ |
| | إن في ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين ... ... | ١٧٤ | ك « | ٢٦ |
| | إن في ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين ... ... | ١٩٠ | ك « | ٢٦ |
| | يلقون السمع وأكثرهم كاذبون ... ... ... ... | ٢٢٣ | ك « | ٢٦ |
| | أإله مع الله بل أكثرهم لا يعلمون ... ... ... ... | ٦١ | ك النمل | ٢٧ |
| | وإن ربك لذو فضل على الناس ولكن أكثرهم لا يشكرون | ٧٣ | ك « | ٢٧ |
| | ولتعلم أن وعد الله حق ولكن أكثرهم لا يعلمون ... | ١٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | رزقا من لدنا ولكن أكثرهم لا يعلمون ... ... ... | ٥٧ | ك « | ٢٨ |
| | قل الحمد لله بل أكثرهم لا يعقلون ... ... ... ... | ٦٣ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | فانظروا كيف كان عاقبة الذين من قبل كان أكثرهم | | | |
| | مشركين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك الروم | ٣٠ |
| | قل الحمد لله بل أكثرهم لا يعلمون ... ... ... ... | ٢٥ | ك لقمان | ٣١ |
| | بل كانوا يعبدون الجن أكثرهم بهم مؤمنون ... ... | ٤١ | ك سبأ | ٣٤ |
| | لقد حق القول على أكثرهم فهم لا يؤمنون ... ... | ٧ | ك يس | ٣٦ |
| | هل يستويان مثلا الحمد لله بل أكثرهم لا يعلمون... | ٢٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| | بل هي فتنة ولكن أكثرهم لا يعلمون... ... ... ... | ٤٩ | ك « | ٣٩ |
| | بشيرا ونذيرا فأعرض أكثرهم فهم لا يسمعون ... | ٤ | ك فصلت | ٤١ |
| أَكْثَرُهُمْ | : ما خلقناهما إلا بالحق ولكن أكثرهم لا يعلمون | ٣٩ | ك الدخان | ٤٤ |
| | إن الذين ينادونك من وراء الحجرات أكثرهم لا يعقلون | ٤ | م الحجرات | ٤٩ |
| | وإن للذين ظلموا عذابا دون ذلك ولكن أكثرهم لا يعلمون | ٤٧ | ك الطور | ٥٢ |
| تَكَاثُرٌ | : وتفاخر بينكم وتكاثر في الأموال والأولاد ... ... | ٢٠ | م الحديد | ٥٧ |
| | (٢) ألهاكم التكاثر . حتى زرتم المقابر ... ... ... ... | ١ | ك التكاثر | ١٠٢ |
| الْكَوْثَرَ | : إنا أعطيناك الكوثر... ... ... ... ... ... | ١ | ك الكوثر | ١٠٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| كَدْحًا | : يأيها الإنسان إنك كادح إلى ربك كدحا فملاقيه | ٦ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| كَادِحٌ | : يأيها الإنسان إنك كادح إلى ربك ... ... ... | ٦ | ك « | ٨٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| انْكَدَرَتْ | : وإذا النجوم انكدرت ... ... ... ... ... | ٢ | ك التكوير | ٨١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| أَكْدَى | : أفرأيت الذي تولى . وأعطى قليلا وأكدى ... | ٣٤ | ك النجم | ٥٣ |
| | ✦✦✦ | | | |
| كَذَبَ | : فمن أظلم ممن كذب على الله وكذب بالصدق إذ جاءه | ٣٢ | ك الزمر | ٣٩ |
| | (٢) ما كذب الفؤاد ما رأى... ... ... ... ... ... | ١١ | ك النجم | ٥٣ |
| فَكَذَبَتْ | : وإن كان قميصه قد من دبر فكذبت وهو من الصادقين | ٢٧ | ك يوسف | ١٢ |
| كَذَبُوا | : انظر كيف كذبوا على أنفسهم... ... ... ... ... | ٢٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | (٤) وقعد الذين كذبوا الله ورسوله ... ... ... ... ... | ٩٠ | م التوبة | ٩ |
| | ويقول الأشهاد هؤلاء الذين كذبوا على ربهم... ... | ١٨ | ك هود | ١١ |
| | ويوم القيامة ترى الذين كذبوا على الله وجوههم مسودة | ٦٠ | ك الزمر | ٣٩ |
| تَكْذِبُونَ | : وما أنزل الرحمن من شيء إن أنتم إلا تكذبون | ١٥ | ك يس | ٣٦ |
| يَكْذِبُونَ | : ولهم عذاب أليم بما كانوا يكذبون... ... ... | ١٠ | م البقرة | ٢ |
| | (٢) بما أخلفوا الله ما وعدوه وبما كانوا يكذبون ... | ٧٧ | م التوبة | ٩ |
| كُذِبُوا | : حتى إذا استيأس الرسل وظنوا أنهم قد كذبوا | | | |
| | جاءهم نصرنا ... ... ... ... ... ... ... ... | ١١٠ | ك يوسف | ١٢ |
| كَذَّبَ | : ومن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو كذب بآياته | ٢١ | ك الأنعام | ٦ |
| | (٢٧) وكذب به قومك وهو الحق قل لست عليكم بوكيل ... | ٦٦ | ك « | ٦ |
| | كذلك كذب الذين من قبلهم حتى ذاقوا بأسنا ... | ١٤٨ | ك « | ٦ |
| | فمن أظلم ممن كذب بآيات الله وصدف عنها ... ... | ١٥٧ | ك « | ٦ |
| | فمن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو كذب بآياته ... | ٣٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | فمن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو كذب بآياته ... | ١٧ | ك يونس | ١٠ |
| | كذلك كذب الذين من قبلهم ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك « | ١٠ |
| | ولقد كذب أصحاب الحجر المرسلين ... ... ... ... | ٨٠ | ك الحجر | ١٥ |
| | وما منعنا أن نرسل بالآيات إلا أن كذب بها الأولون | ٥٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| | إنا قد أوحي إلينا أن العذاب على من كذب وتولى... | ٤٨ | ك طه | ٢٠ |
| | ولقد أريناه آياتنا كلها فكذب وأبى... ... ... ... | ٥٦ | ك « | ٢٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَذَّبَ | : بل كذبوا بالساعة وأعتدنا لمن كذب بالساعة سعيرا | ١١ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| | كذب أصحاب الأيكة المرسلين ... ... ... ... ... | ١٧٦ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| | وإن تكذبوا فقد كذب أمم من قبلكم ... ... ... ... | ١٨ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ومن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو كذب بالحق لما جاءه | ٦٨ | ك « | ٢٩ |
| | وكذب الذين من قبلهم وما بلغوا معشار ما آتيناهم... | ٤٥ | ك سـبأ | ٣٤ |
| | وإن يكذبوك فقد كذب الذين من قبلهم ... ... ... | ٢٥ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | إن كل إلا كذب الرسل فحق عقاب ... ... ... ... | ١٤ | ك ص | ٣٨ |
| | كذب الذين من قبلهم فأتاهم العـذاب من حيث لا يشعرون... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك الـزمر | ٣٩ |
| | فمن أظلم ممن كذب على الله وكذب بالصدق إذ جاءه | ٣٢ | ك « | ٣٩ |
| | كل كذب الرسل فحق وعيد... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك ق | ٥٠ |
| | ولقد كذب الذين من قبلهم فكيف كان نكير... ... | ١٨ | ك المـلك | ٦٧ |
| | فلا صدق ولا صلى . ولكن كذب وتولى ... ... ... | ٣٢ | ك القيـامة | ٧٥ |
| | فأراه الآية الكبرى . فكذب وعصى ... ... ... | ٢١ | ك النازعات | ٧٩ |
| | وأما من بخل واستغنى . وكذب بالحسنى . فسنيسره للعسرى | ٩ | ك الليـل | ٩٢ |
| | لا يصلاها إلا الأشقى . الذى كذب وتولى ... ... | ١٦ | ك « | ٩٢ |
| | أرأيت إن كذب وتولى . ألم يعلم بأن الله يرى ... | ١٣ | ك العـلق | ٩٦ |
| كَذَّبَتْ | : وإن يكذبوك فقد كذبت قبلهم قوم نوح وعاد وثمود | ٤٢ | م الحـج | ٢٢ |
| (١٤) | كذبت قوم نوح المرسلين ... ... ... ... ... ... | ١٠٥ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| | كذبت عاد المرسلين ... ... ... ... ... ... | ١٢٣ | ك « | ٢٦ |
| | كذبت ثمود المرسلين ... ... ... ... ... ... | ١٤١ | ك « | ٢٦ |
| | كذبت قوم لوط المرسلين ... ... ... ... ... ... | ١٦٠ | ك « | ٢٦ |
| | كذبت قبلهم قوم نوح وعاد وفرعون ذو الأوتاد ... | ١٢ | ك ص | ٣٨ |
| | كذبت قبلهم قوم نوح والأحزاب من بعدهم ... ... | ٥ | ك غافـر | ٤٠ |
| | كذبت قبلهم قوم نوح وأصحاب الرس وثمود ... ... | ١٢ | ك ق | ٥٠ |
| | كذبت قبلهم قوم نوح فكذبوا عبدنا وقالوا مجنون وازدجر | ٩ | ك القمـر | ٥٤ |
| | كذبت عاد فكيف كان عذابي ونذر ... ... ... ... | ١٨ | ك « | ٥٤ |
| | كذبت ثمود بالنذر... ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك « | ٥٤ |
| | كذبت قوم لوط بالنذر... ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك « | ٥٤ |
| | كذبت ثمود وعاد بالقارعة ... ... ... ... ... | ٤ | ك الحـاقة | ٦٩ |
| | كذبت ثمود بطغواها ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك الشمس | ٩١ |
| كَذَّبْتَ | : بلى قد جاءتك آياتى فكذبت بها واستكبرت ... | ٥٩ | ك الـزمر | ٣٩ |
| كَذَّبْتُمْ | : استكبرتم ففريقا كذبتم وفريقا تقتلون... ... ... | ٨٧ | م البقـرة | ٢ |
| (٤) | قل إنى على بينة من ربى وكذبتم به ... ... ... ... | ٥٧ | ك الأنعـام | ٦ |
| | فقد كذبتم فسوف يكون لزاما ... ... ... ... ... | ٧٧ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| | حتى إذا جاءوا قال أكذبتم بآياتى ولم تحيطوا بها علما | ٨٤ | ك النمـل | ٢٧ |
| كَذَّبْنَا | : قالوا بلى قد جاءنا نذير فكذبنا وقلنا ما نزل الله من شىء | ٩ | ك المـلك | ٦٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَذَّبُوا | : والذين كفروا وكذبوا بآياتنا أولئك أصحاب النار | ٣٩ | م البقـرة | ٢ |
| (٤٩) | كذبوا بآياتنا فأخذهم الله بذنوبهم ... ... ... ... | ١١ | م آل عمران | ٣ |
| | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا أولئـك أصحاب الجحيم | ١٠ | م المائدة | ٥ |
| | فريقا كذبوا وفريقا يقتلون... ... ... ... ... ... | ٧٠ | م « | ٥ |
| | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا أولئـك أصحاب الجحيم | ٨٦ | م « | ٥ |
| | فقد كذبوا بالحق لما جاءهم ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك الأنعـام | ٦ |
| | قد خسر الذين كذبوا بلقاء الله ... ... ... ... ... | ٣١ | ك « | ٦ |
| | والذين كذبوا بآياتنا صم وبكم فى الظلمات... ... ... | ٣٩ | ك « | ٦ |
| | والذين كذبوا بآياتنا يمسهم العذاب بما كانوا يفسقون | ٤٩ | ك « | ٦ |
| | ولا تتبع أهواء الذين كذبوا بآياتنا ... ... ... ... | ١٥٠ | ك « | ٦ |
| | والذين كذبوا بآياتنا واستكبروا عنها أولئك أصحاب النار | ٣٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | إن الذين كذبوا بآياتنا واستكبروا عنها لا تفتح لهم أبواب السماء ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك « | ٧ |
| | وأغرقنا الذين كذبوا بآياتنا إنهم كانوا قوما عمين... | ٦٤ | ك « | ٧ |
| | وقطعنا دابر الذين كذبوا بآياتنا وما كانوا مؤمنين... | ٧٢ | ك « | ٧ |
| | الذين كذبوا شعيبا كأن لم يغنوا فيها ... ... ... ... | ٩٢ | ك « | ٧ |
| | الذين كذبوا شعيبا كانوا هم الخاسرين ... ... ... | ٩٢ | ك « | ٧ |
| | ولكن كذبوا فأخذناهم بما كانوا يكسبون... ... ... | ٩٦ | ك « | ٧ |
| | فما كانوا ليؤمنوا بما كذبوا من قبل ... ... ... ... | ١٠١ | ك « | ٧ |
| | فانتقمنا منهم فأغرقناهم فى اليم بأنهم كذبوا بآياتنا... | ١٣٦ | ك « | ٧ |
| | ذلك بأنهم كذبوا بآياتنا وكانوا عنها غافلين... ... ... | ١٤٦ | ك « | ٧ |
| | والذين كذبوا بآياتنا ولقاء الآخرة حبطت أعمالهم ... | ١٤٧ | ك « | ٧ |
| | ذلك مثل القوم الذين كذبوا بآياتنا ... ... ... ... | ١٧٦ | ك « | ٧ |
| | ساء مثلا القوم الذين كذبوا بآياتنا وأنفسهم كانوا يظلمون | ١٧٧ | ك « | ٧ |
| | والذين كذبوا بآياتنا سنستدرجهم من حيث لا يعلمون | ١٨٢ | ك « | ٧ |
| | كذبوا بآيات ربهم فأهلكناهم بذنوبهم ... .. ... | ٥٤ | م الأنفـال | ٨ |
| | بل كذبوا بما لم يحيطوا بعلمه ولما يأتهم تأويله ... | ٣٩ | ك يـونس | ١٠ |
| | قد خسر الذين كذبوا بلقاء الله وما كانوا مهتدين ... | ٤٥ | ك « | ١٠ |
| | وأغرقنا الذين كذبوا بآياتنا ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك « | ١٠ |
| | فما كانوا ليؤمنوا بما كذبوا به من قبل... ... ... ... | ٧٤ | ك « | ١٠ |
| | ولا تكونن من الذين كذبوا بآيات الله فتكون من الخاسرين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩٥ | م « | ١٠ |
| | ونصرناه من القوم الذين كذبوا بآياتنا ... ... ... | ٧٧ | ك الأنبيـاء | ٢١ |
| | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا فأولئك لهم عذاب مهين | ٥٧ | م الحـج | ٢٢ |
| | وقال الملأ من قومه الذين كفروا وكذبوا بلقاء الآخرة | ٣٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | بل كذبوا بالساعة وأعتدنا لمن كذب بالساعة سعيرا ... | ١١ | ك الـفرقان | ٢٥ |
| | فقلنا اذهبا إلى القوم الذين كذبوا بآياتنا فدمرناهم تدميرا | ٣٦ | ك « | ٢٥ |
| | وقوم نوح لما كذبوا الرسل أغرقناهم وجعلناهم للناس آية | ٣٧ | ك « | ٢٥ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| كَذَّبُوا: | فقد كذبوا فسيأتيهم أنباء ما كانوا به يستهزءون ... | ك الشعراء | ٢٦ |
| | ثم كان عاقبة الذين أساءوا السوأى أن كذبوا بآيات الله | ك الروم | ٣٠ |
| | وأما الذين كفروا وكذبوا بآياتنا ولقاء الآخرة فأولئك | | |
| | في العذاب محضرون ... ... ... ... ... ... | ك « | ٣٠ |
| | فكذبوا رسلي فكيف كان نكير ... ... ... ... ... | ك سبأ | ٣٤ |
| | الذين كذبوا بالكتاب وبما أرسلنا به رسلنا ... ... | ك غافر | ٤٠ |
| | بل كذبوا بالحق لما جاءهم فهم في أمر مريج... ... | ك ق | ٥٠ |
| | وكذبوا واتبعوا أهواءهم وكل أمر مستقر ... ... | ك القمر | ٥٤ |
| | كذبت قبلهم قوم نوح فكذبوا عبدنا وقالوا مجنون وازدجر | ك « | ٥٤ |
| | كذبوا بآياتنا كلها فأخذناهم أخذ عزيز مقتدر ... | ك « | ٥٤ |
| | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا أولئك أصحاب الجحيم... | م الحديد | ٥٧ |
| | بئس مثل القوم الذين كذبوا بآيات الله ... ... ... | م الجمعة | ٦٢ |
| | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا أولئك أصحاب النار ... | م التغابن | ٦٤ |
| | وكذبوا بآياتنا كذابا ... ... ... ... ... ... | ك النبأ | ٧٨ |
| كَذَّبُوكَ: | فإن كذبوك فقد كذب رسل من قبلك ... ... | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | فإن كذبوك فقل ربكم ذو رحمة واسعة ... ... ... | ك الأنعام | ٦ |
| | وإن كذبوك فقل لي عملي ولكم عملكم ... ... ... | ك يونس | ١٠ |
| كَذَّبُوكُمْ: | فقد كذبوكم بما تقولون فما تستطيعون صرفا ولا نصرا | ك الفرقان | ٢٥ |
| كَذَّبُونِ: | قال رب انصرني بما كذبون . فأوحينا إليه ... | ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٣) | قال رب انصرني بما كذبون . قال عما قليل ليصبحن نادمين | ك « | ٢٣ |
| | قال رب إن قومي كذبون ... ... ... ... ... ... | ك الشعراء | ٢٦ |
| كَذَّبُوهُ: | فكذبوه فأنجيناه والذين معه في الفلك ... ... | ك الأعراف | ٧ |
| (٩) | فكذبوه فنجيناه ومن معه في الفلك... ... ... ... | ك يونس | ١٠ |
| | ولقد جاءهم رسول منهم فكذبوه فأخذهم العذاب... | ك النحل | ١٦ |
| | كلما جاء أمة رسولها كذبوه فأتبعنا بعضهم بعضا ... | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فكذبوه فأهلكناهم إن في ذلك لآية ... ... ... ... | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فكذبوه فأخذهم عذاب يوم الظلة ... ... ... ... | ك « | ٢٦ |
| | فكذبوه فأخذتهم الرجفة فأصبحوا في دارهم جاثمين | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | فكذبوه فإنهم لمحضرون ... ... ... ... ... ... | ك الصافات | ٣٧ |
| | فكذبوه فعقروها فدمدم عليهم ربهم بذنبهم فسواها | ك الشمس | ٩١ |
| كَذَّبُوهُمَا: | فكذبوهما فكانوا من المهلكين ... ... ... | ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٢) | إذ أرسلنا إليهم اثنين فكذبوهما فعززنا بثالث... ... | ك يس | ٣٦ |
| تُكَذِّبَانِ: | والحب ذو العصف والريحان . فبأي آلاء | | |
| (٣١) | ربكما تكذبان ... ... ... ... ... ... ... | م الرحمن | ٥٥ |
| | وخلق الجان من مارج من نار . فبأي آلاء ربكما تكذبان | م « | ٥٥ |
| | رب المشرقين ورب المغربين . فبأي آلاء ربكما تكذبان | م « | ٥٥ |
| | بينهما برزخ لا يبغيان . فبأي آلاء ربكما تكذبان | م « | ٥٥ |
| | يخرج منهما اللؤلؤ والمرجان . فبأي آلاء ربكما تكذبان | م « | ٥٥ |
| تُكَذِّبَانِ: | وله الجوار المنشآت في البحر كالأعلام . فبأي آلاء | | |
| | ربكما تكذبان ... ... ... ... ... ... ... | م الرحمن | ٥٥ |
| | ويبقى وجه ربك ذو الجلال والإكرام . فبأي آلاء | | |
| | ربكما تكذبان ... ... ... ... ... ... ... | م « | ٥٥ |
| | كل يوم هو في شأن . فبأي آلاء ربكما تكذبان | م « | ٥٥ |
| | سنفرغ لكم أيه الثقلان . فبأي آلاء ربكما تكذبان | م « | ٥٥ |
| | لا تنفذون إلا بسلطان . فبأي آلاء ربكما تكذبان | م « | ٥٥ |
| | فلا تنتصران . فبأي آلاء ربكما تكذبان ... ... | م « | ٥٥ |
| | فكانت وردة كالدهان . فبأي آلاء ربكما تكذبان | م « | ٥٥ |
| | فيومئذ لا يسئل عن ذنبه إنس ولا جان . فبأي آلاء | | |
| | ربكما تكذبان ... ... ... ... ... ... ... | م « | ٥٥ |
| | فيؤخذ بالنواصي والأقدام . فبأي آلاء ربكما تكذبان | م « | ٥٥ |
| | يطوفون بينها وبين حميم آن . فبأي آلاء ربكما تكذبان | م « | ٥٥ |
| | ولمن خاف مقام ربه جنتان . فبأي آلاء ربكما تكذبان | م « | ٥٥ |
| | ذواتا أفنان . فبأي آلاء ربكما تكذبان ... ... | م « | ٥٥ |
| | فيهما عينان تجريان . فبأي آلاء ربكما تكذبان .. | م « | ٥٥ |
| | فيهما من كل فاكهة زوجان . فبأي آلاء ربكما تكذبان | م « | ٥٥ |
| | وجنى الجنتين دان . فبأي آلاء ربكما تكذبان ... | م « | ٥٥ |
| | لم يطمثهن إنس قبلهم ولا جان . فبأي آلاء ربكما تكذبان | م « | ٥٥ |
| | كأنهن الياقوت والمرجان . فبأي آلاء ربكما تكذبان | م « | ٥٥ |
| | هل جزاء الإحسان إلا الإحسان . فبأي آلاء | | |
| | ربكما تكذبان ... ... ... ... ... ... ... | م « | ٥٥ |
| | ومن دونهما جنتان . فبأي آلاء ربكما تكذبان ... | م « | ٥٥ |
| | مدهامتان . فبأي آلاء ربكما تكذبان ... ... ... | م « | ٥٥ |
| | فيهما عينان نضاختان . فبأي آلاء ربكما تكذبان ... | م « | ٥٥ |
| | فيهما فاكهة ونخل ورمان . فبأي آلاء ربكما تكذبان | م « | ٥٥ |
| | فيهن خيرات حسان . فبأي آلاء ربكما تكذبان ... | م « | ٥٥ |
| | حور مقصورات في الخيام . فبأي آلاء ربكما تكذبان | م « | ٥٥ |
| | لم يطمثهن إنس قبلهم ولا جان . فبأي آلاء ربكما تكذبان | م « | ٥٥ |
| | متكئين على رفرف خضر وعبقري حسان . فبأي آلاء | | |
| | ربكما تكذبان ... ... ... ... ... ... ... | م « | ٥٥ |
| تُكَذِّبُوا: | وإن تكذبوا فقد كذب أمم من قبلكم... ... ... | ك العنكبوت | ٢٩ |
| تُكَذِّبُونَ: | ألم تكن آياتي تتلى عليكم فكنتم بها تكذبون ... | ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٩) | وقيل لهم ذوقوا عذاب النار الذي كنتم به تكذبون ... | م السجدة | ٣٢ |
| | ونقول للذين ظلموا ذوقوا عذاب النار التي كنتم بها تكذبون | ك سبأ | ٣٤ |
| | هذا يوم الفصل الذي كنتم به تكذبون ... ... ... | ك الصافات | ٣٧ |
| | هذه النار التي كنتم بها تكذبون ... ... ... ... | ك الطور | ٥٢ |
| | وتجعلون رزقكم أنكم تكذبون... ... ... ... ... | م الواقعة | ٥٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تُكَذِّبُونَ: | انطلقوا إلى ما كنتم به تكذبون... ... ... ... | ٢٩ | ك المرسلات | ٧٧ |
| | كلا بل تكذبون بالدين ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك الانفطار | ٨٢ |
| | ثم يقال هذا الذى كنتم به تكذبون ... ... ... ... | ١٧ | ك المطففين | ٨٣ |
| تُكَذِّبُ: | فقالوا يالينا نرد ولا نكذب بآيات ربنا ... ... | ٢٧ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | وكنا نكذب بيوم الدين ... ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك المدثر | ٧٤ |
| يُكَذِّبُ: | ويوم نحشر من كل أمة فوجا ممن يكذب بآياتنا | ٨٣ | ك النمل | ٢٧ |
| (٥) | هذه جهنم التى يكذب بها المجرمون ... ... ... | ٤٣ | م الرحمن | ٥٥ |
| | فذرنى ومن يكذب بهذا الحديث... ... ... ... | ٤٤ | ك القلم | ٦٨ |
| | وما يكذب به إلا كل معتد أثيم ... ... ... ... | ١٢ | ك المطففين | ٨٣ |
| | أرأيت الذى يكذب بالدين . فذلك الذى يدع اليتيم | ١ | ك الماعون | ١٠٧ |
| يُكَذِّبُكَ: | فما يكذبك بعد بالدين... ... ... ... ... ... | ٧ | ك التين | ٩٥ |
| يُكَذِّبُوكَ: | وإن يكذبوك فقد كذبت قبلهم قوم نوح وعاد وثمود | ٤٢ | م الحج | ٢٢ |
| (٣) | وإن يكذبوك فقد كذبت رسل من قبلك ... ... ... | ٤ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وإن يكذبوك فقد كذب الذين من قبلهم ... ... ... | ٢٥ | ك « | ٣٥ |
| يُكَذِّبُونَ: | ويل يومئذ للمكذبين . الذين يكذبون بيوم الدين | ١١ | ك المطففين | ٨٣ |
| (٢) | بل الذين كفروا يكذبون ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| يُكَذِّبُونِ: | قال رب إنى أخاف أن يكذبون ... ... ... | ١٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| (٢) | فأرسله معى ردءا يصدقنى إنى أخاف أن يكذبون ... | ٣٤ | ك القصص | ٢٨ |
| يُكَذِّبُونَكَ: | فإنهم لا يكذبونك ولكن الظالمين بآيات الله يجحدون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك الأنعام | ٦ |
| كُذِّبَ: | فإن كذبوك فقد كذب رسل من قبلك جاءو بالبينات | ١٨٤ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | وكذب موسى فأمليت للكافرين ثم أخذتهم ... ... | ٤٤ | م الحج | ٢٢ |
| كُذِّبَتْ: | ولقد كذبت رسل من قبلك فصبروا على ما كذبوا | ٣٤ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | وإن يكذبوك فقد كذبت رسل من قبلك ... ... ... | ٤ | ك فاطر | ٣٥ |
| كُذِّبُوا: | ولقد كذبت رسل من قبلك فصبروا على ما كذبوا | ٣٤ | ك الأنعام | ٦ |
| الْكَذِبَ: | ويقولون على الله الكذب وهم يعلمون ... ... | ٧٥ | م آل عمران | ٣ |
| (١٧) | وما هو من عند الله ويقولون على الله الكذب وهم يعلمون | ٧٨ | م « | ٣ |
| | فمن افترى على الله الكذب من بعد ذلك فأولئك هم الظالمون | ٩٤ | م « | ٣ |
| | انظر كيف يفترون على الله الكذب وكفى به إثما مبينا | ٥٠ | م النساء | ٤ |
| | ومن الذين هادوا سماعون للكذب سماعون لقوم آخرين | ٤١ | م المائدة | ٥ |
| | سماعون للكذب أكالون للسحت... ... ... ... ... | ٤٢ | م « | ٥ |
| | ولكن الذين كفروا يفترون على الله الكذب ... ... | ١٠٣ | م « | ٥ |
| | وما ظن الذين يفترون على الله الكذب يوم القيامة ... | ٦٠ | ك يونس | ١٠ |
| | قل إن الذين يفترون على الله الكذب لا يفلحون .. | ٦٩ | ك « | ١٠ |
| | وجاءو على قميصه بدم كذب ... ... ... ... ... | ١٨ | ك يوسف | ١٢ |
| | وتصف ألسنتهم الكذب أن لهم الحسنى ... ... ... | ٦٢ | ك النحل | ١٦ |
| | إنما يفترى الكذب الذين لا يؤمنون بآيات الله... ... | ١٠٥ | ك « | ١٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الْكَذِبَ: | ولا تقولوا لما تصف ألسنتكم الكذب هذا حلال وهذا حرام... ... ... ... ... ... ... ... | ١١٦ | ك النحل | ١٦ |
| | لتفتروا على الله الكذب ... ... ... ... ... ... | ١١٦ | ك « | ١٦ |
| | إن الذين يفترون على الله الكذب لا يفلحون ... ... | ١١٦ | ك « | ١٦ |
| | ويحلفون على الكذب وهم يعلمون ... ... ... ... | ١٤ | م المجادلة | ٥٨ |
| | ومن أظلم ممن افترى على الله الكذب وهو يدعى إلى الإسلام ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | م الصف | ٦١ |
| كَذِبًا: | ومن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو كذب بآياته | ٢١ | ك الأنعام | ٦ |
| (١٥) | ومن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو قال أوحى إلىّ | ٩٣ | م « | ٦ |
| | فمن أظلم ممن افترى على الله كذبا ليضل الناس بغير علم | ١٤٤ | ك « | ٦ |
| | فمن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو كذب بآياته ... | ٣٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | قد افترينا على الله كذبا إن عدنا فى ملتكم ... ... ... | ٨٩ | ك « | ٧ |
| | فمن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو كذب بآياته ... | ١٧ | ك يونس | ١٠ |
| | ومن أظلم ممن افترى على الله كذبا أولئك يعرضون على ربهم | ١٨ | ك هود | ١١ |
| | كبرت كلمة تخرج من أفواههم إن يقولون إلا كذبا | ٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | فمن أظلم ممن افترى على الله كذبا ... ... ... ... | ١٥ | ك « | ١٨ |
| | ويلكم لا تفتروا على الله كذبا فيسحتكم بعذاب ... ... | ٦١ | ك طه | ٢٠ |
| | إن هو إلا رجل افترى على الله كذبا ... ... ... ... | ٣٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ومن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو كذب بالحق لما جاءه | ٦٨ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | أفترى على الله كذبا أم به جنة ... ... ... ... ... | ٨ | ك سبأ | ٣٤ |
| | أم يقولون افترى على الله كذبا ... ... ... ... ... | ٢٤ | م الشورى | ٤٢ |
| | وأنا ظننا أن لن تقول الإنس والجن على الله كذبا | ٥ | ك الجن | ٧٢ |
| كَذِبُهُ: | وإن يك كاذبا فعليه كذبه... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك غافر | ٤٠ |
| كَاذِبٌ: | سوف تعلمون من يأتيه عذاب يخزيه ومن هو كاذب | ٩٣ | ك هود | ١١ |
| (٢) | إن الله لا يهدى من هو كاذب كفار ... ... ... | ٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| كَاذِبًا: | وإن يك كاذبا فعليه كذبه ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك غافر | ٤٠ |
| (٢) | فأطلع إلى إله موسى وإنى لأظنه كاذبا ... ... ... | ٣٧ | ك « | ٤٠ |
| كَاذِبُونَ: | ولو ردوا لعادوا لما نهوا عنه وإنهم لكاذبون | ٢٨ | ك الأنعام | ٦ |
| (١٣) | يحلفون بالله ما قالوا ولقد قالوا كلمة الكفر وكفروا بعد إسلامهم | ٧٤ | م التوبة | ٩ |
| | ويحلفون بالله إنهم لمنكم وما هم منكم ولكنهم قوم يفرقون | ٥٦ | م « | ٩ |
| | ويحلفون بالله إن أردنا إلا الحسنى والله يشهد إنهم لكاذبون | ١٠٧ | م « | ٩ |
| | فألقوا إليهم القول إنكم لكاذبون ... ... ... ... | ٨٦ | ك النحل | ١٦ |
| | وأولئك هم الكاذبون ... ... ... ... ... ... | ١٠٥ | ك « | ١٦ |
| | بل أتيناهم بالحق وإنهم لكاذبون ... ... ... ... | ٩٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فإذ لم يأتوا بالشهداء فأولئك عند الله هم الكاذبون | ١٣ | م النور | ٢٤ |
| | يلقون السمع وأكثرهم كاذبون ... ... ... ... ... | ٢٢٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وما هم بحاملين من خطاياهم من شىء إنهم لكاذبون | ١٢ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ألا إنهم من إفكهم ليقولون . ولد الله وإنهم لكاذبون | ١٥٢ | ك الصافات | ٣٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَاذِبُونَ | ويحسبون أنهم على شيء ألا إنهم هم الكاذبون | ١٨ | م المجادلة | ٥٨ |
| | وإن قوتلتم لننصرنكم والله يشهد إنهم لكاذبون ... | ١١ | م الحشر | ٥٩ |
| | والله يشهد إن المنافقين لكاذبون ... ... ... ... | ١ | م المنافقون | ٦٣ |
| كَاذِبِينَ | ثم نبتهل فنجعل لعنة الله على الكاذبين ... ... | ٦١ | م آل عمران | ٣ |
| (١٣) | إنا لنراك فى سفاهة وإنا لنظنك من الكاذبين ... ... | ٦٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | لم أذنت لهم حتى يتبين لك الذين صدقوا وتعلم الكاذبين | ٤٣ | م التوبة | ٩ |
| | وما نرى لكم علينا من فضل بل نظنكم كاذبين ... ... | ٢٧ | ك هود | ١١ |
| | إن كان قميصه قد من قُبُل فصدقت وهو من الكاذبين | ٢٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | قالوا فما جزاؤه إن كنتم كاذبين... ... ... ... ... | ٧٤ | ك » | ١٢ |
| | وليعلم الذين كفروا أنهم كانوا كاذبين ... ... ... | ٣٩ | ك النحل | ١٦ |
| | والخامسة أن لعنة الله عليه إن كان من الكاذبين ... | ٧ | م النور | ٢٤ |
| | أن تشهد أربع شهادات بالله إنه لمن الكاذبين... ... | ٨ | م » | ٢٤ |
| | وما أنت إلا بشر مثلنا وإن نظنك لمن الكاذبين ... | ١٨٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | قال سننظر أصدقت أم كنت من الكاذبين ... ... | ٢٧ | ك النمل | ٢٧ |
| | لعلى أطلع إلى إله موسى وإنى لأظنه من الكاذبين ... | ٣٨ | ك القصص | ٢٨ |
| | فليعلمن الله الذين صدقوا وليعلمن الكاذبين ... ... | ٣ | م العنكبوت | ٢٩ |
| كَاذِبَةٌ | إذا وقعت الواقعة . ليس لوقعتها كاذبة ... ... | ٢ | ك الواقعة | ٥٦ |
| (٢) | كلا لئن لم ينته لنسفعا بالناصية . ناصية كاذبة خاطئة | ١٦ | ك العلق | ٩٦ |
| كَذَّابٌ | وقال الكافرون هذا ساحر كذاب ... ... ... ... | ٤ | ك ص | ٣٨ |
| (٥) | إلى فرعون وهامان وقارون فقالوا ساحر كذاب ... | ٢٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | إن الله لا يهدى من هو مسرف كذاب ... ... ... | ٢٨ | ك » | ٤٠ |
| | أُلقى الذكر عليه من بيننا بل هو كذاب أشر ... ... | ٢٥ | ك القمر | ٥٤ |
| | سيعلمون غدا من الكذاب الأشر ... ... ... ... | ٢٦ | ك » | ٥٤ |
| كِذَّاباً | وكذبوا بآياتنا كذابا ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك النبأ | ٧٨ |
| (٢) | لا يسمعون فيها لغوا ولا كذابا ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك » | ٧٨ |
| مَكْذُوبٍ | ذلك وعد غير مكذوب... ... ... ... ... ... | ٦٥ | ك هود | ١١ |
| تَكْذِيبٍ | بل الذين كفروا فى تكذيب ... ... ... ... ... | ١٩ | ك البروج | ٨٥ |
| الْمُكَذِّبُونَ | ثم إنكم أيها الضالون المكذبون ... ... ... ... | ٥١ | ك الواقعة | ٥٦ |
| الْمُكَذِّبِينَ | فسيروا فى الأرض فانظروا كيف كان عاقبة | | | |
| (٢٠) | المكذبين ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٣٧ | م آل عمران | ٣ |
| | قل سيروا فى الأرض ثم انظروا كيف كان عاقبة | | | |
| | المكذبين ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك الأنعام | ٦ |
| | فسيروا فى الأرض فانظروا كيف كان عاقبة المكذبين | ٣٦ | ك النحل | ١٦ |
| | فانتقمنا منهم فانظر كيف كان عاقبة المكذبين... ... | ٢٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | فويل يومئذ للمكذبين . الذين هم فى خوض يلعبون | ١١ | ك الطور | ٥٢ |
| | وأما إن كان من المكذبين الضالين . فنزل من حميم | ٩٢ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | فلا تطع المكذبين ... ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك القلم | ٦٨ |
| الْمُكَذِّبِينَ | وإنا لنعلم أن منكم مكذبين ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | ذرنى والمكذبين أولى النعمة ومهلهم قليلا ... ... ... | ١١ | م المزمل | ٧٣ |
| | وما أدراك ما يوم الفصل . ويل يومئذ للمكذبين ... | ١٥ | ك المرسلات | ٧٧ |
| | كذلك نفعل بالمجرمين . ويل يومئذ للمكذبين ... ... | ١٩ | ك » | ٧٧ |
| | فقدرنا فنعم القادرون . ويل يومئذ للمكذبين ... ... | ٢٤ | ك » | ٧٧ |
| | وأسقيناكم ماء فراتا . ويل يومئذ للمكذبين ... ... | ٢٨ | ك » | ٧٧ |
| | كأنه جمالة صفر . ويل يومئذ للمكذبين ... ... ... | ٣٤ | ك » | ٧٧ |
| | ولا يؤذن لهم فيعتذرون . ويل يومئذ للمكذبين ... | ٣٧ | ك » | ٧٧ |
| | فإن كان لكم كيد فكيدون . ويل يومئذ للمكذبين ... | ٤٠ | ك » | ٧٧ |
| | إنا كذلك نجزى المحسنين . ويل يومئذ للمكذبين ... | ٤٥ | ك » | ٧٧ |
| | كلوا وتمتعوا قليلا إنكم مجرمون . ويل يومئذ للمكذبين | ٤٧ | ك » | ٧٧ |
| | وإذا قيل لهم اركعوا لا يركعون . ويل يومئذ للمكذبين | ٤٩ | ك » | ٧٧ |
| | ويل يومئذ للمكذبين . الذين يكذبون بيوم الدين ... | ١٠ | ك المطففين | ٨٣ |
| كَرْبٍ | قل الله ينجيكم منها ومن كل كرب ثم أنتم تشركون | ٦٤ | ك الأنعام | ٦ |
| (٤) | فاستجبنا له فنجيناه وأهله من الكرب العظيم ... ... | ٧٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ونجيناه وأهله من الكرب العظيم ... ... ... ... ... | ٧٦ | ك الصافات | ٣٧ |
| | ونجيناهما وقومهما من الكرب العظيم... ... ... ... | ١١٥ | ك » | ٣٧ |
| كَرَّةٌ | وقال الذين اتبعوا لو أن لنا كرة فنتبرأ منهم كما | | | |
| (٥) | تبرءوا منا ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٦٧ | م البقرة | ٢ |
| | ثم رددنا لكم الكرة عليهم وأمددناكم بأموال وبنين | ٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فلو أن لنا كرة فنكون من المؤمنين ... ... ... ... | ١٠٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | لو أن لى كرة فأكون من المحسنين ... ... ... ... | ٥٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| | قالوا تلك إذا كرة خاسرة ... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك النازعات | ٧٩ |
| كَرَّتَيْنِ | ثم ارجع البصر كرتين ينقلب إليك البصر خاسئا | ٤ | ك الملك | ٦٧ |
| كُرْسِيُّهُ | وسع كرسيه السموات والأرض ... ... ... ... | ٢٥٥ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | ولقد فتنا سليمان وألقينا على كرسيه جسدا ثم أناب | ٣٤ | ك ص | ٣٨ |
| كَرَّمْتَ | قال أرأيتك هذا الذى كرمت علىّ ... ... ... | ٦٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| كَرَّمْنَا | ولقد كرمنا بنى آدم وحملناهم فى البر والبحر... ... | ٧٠ | ك » | ١٧ |
| أَكْرَمَنِ | فأكرمه ونعمه فيقول ربى أكرمن ... ... ... | ١٥ | ك الفجر | ٨٩ |
| أَكْرَمَهُ | فأما الإنسان إذا ما ابتلاه ربه فأكرمه ... ... | ١٥ | ك » | ٨٩ |
| تُكْرِمُونَ | كلا بل لا تكرمون اليتيم ... ... ... ... ... | ١٧ | ك » | ٨٩ |
| أَكْرِمِى | وقال الذى اشتراه من مصر لامرأته أكرمى مثواه | ٢١ | ك يوسف | ١٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَرِيمٌ: | لهم درجات عند ربهم ومغفرة ورزق كريم ... ... | ٤ | م الأنفال | ٨ |
| (٢٣) | أولئك هم المؤمنون حقا لهم مغفرة ورزق كريم ... ... | ٧٤ | م » | ٨ |
| | حاش لله ماهذا بشرا إن هذا إلا ملك كريم ... ... | ٣١ | ك يوسف | ١٢ |
| | فالذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم مغفرة ورزق كريم | ٥٠ | م الحج | ٢٢ |
| | فتعالى الله الملك الحق لا إله إلا هو رب العرش الكريم | ١١٦ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | أولئك مبرءون مما يقولون لهم مغفرة ورزق كريم | ٢٦ | م النور | ٢٤ |
| | أو لم يروا إلى الأرض كم أنبتنا فيها من كل زوج كريم | ٧ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فأخرجناهم من جنات وعيون . وكنوز ومقام كريم | ٥٨ | ك » | ٢٦ |
| | قالت يأيها الملأ إني ألقي إلي كتاب كريم ... ... | ٢٩ | ك النمل | ٢٧ |
| | ومن كفر فإن ربي غني كريم ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك » | ٢٧ |
| | وأنزلنا من السماء ماء فأنبتنا فيها من كل زوج كريم ... | ١٠ | ك لقمان | ٣١ |
| | أولئك لهم مغفرة ورزق كريم ... ... ... ... ... | ٤ | ك سبأ | ٣٤ |
| | فبشره بمغفرة وأجر كريم ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك يس | ٣٦ |
| | ولقد فتنا قبلهم قوم فرعون وجاءهم رسول كريم ... | ١٧ | ك الدخان | ٤٤ |
| | كم تركوا من جنات وعيون . وزروع ومقام كريم ... | ٢٦ | ك » | ٤٤ |
| | ذق إنك أنت العزيز الكريم... ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك » | ٤٤ |
| | وظل من يحموم . لا بارد ولا كريم ... ... ... ... | ٤٤ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | إنه لقرآن كريم . في كتاب مكنون ... ... ... ... | ٧٧ | ك » | ٥٦ |
| | فيضاعفه له وله أجر كريم ... ... ... ... ... ... | ١١ | م الحديد | ٥٧ |
| | وأقرضوا الله قرضا حسنا يضاعف لهم ولهم أجر كريم | ١٨ | م » | ٥٧ |
| | إنه لقول رسول كريم . وما هو بقول شاعر ... ... | ٤٠ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | إنه لقول رسول كريم . ذي قوة عند ذي العرش مكين | ١٩ | ك التكوير | ٨١ |
| | يأيها الإنسان ما غرك بربك الكريم ... ... ... ... | ٦ | ك الانفطار | ٨٢ |
| كَرِيمًا: | نكفر عنكم سيئاتكم وندخلكم مدخلا كريما ... ... | ٣١ | م النساء | ٤ |
| (٤) | فلا تقل لهما أف ولا تنهرهما وقل لهما قولا كريما ... | ٢٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| | نؤتها أجرها مرتين وأعتدنا لها رزقا كريما ... ... | ٣١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | تحيتهم يوم يلقونه سلام وأعد لهم أجرا كريما ... ... | ٤٤ | م » | ٣٣ |
| كِرَامٍ: | بأيدي سفرة . كرام بررة ... ... ... ... ... ... | ١٦ | ك عبس | ٨٠ |
| كِرَامًا: | والذين لا يشهدون الزور وإذا مروا باللغو مروا كراما | ٧٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| (٢) | وإن عليكم لحافظين . كراما كاتبين ... ... ... ... | ١١ | ك الانفطار | ٨٢ |
| الْأَكْرَمُ: | اقرأ وربك الأكرم ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك العلق | ٩٦ |
| أَكْرَمَكُمْ: | إن أكرمكم عند الله أتقاكم ... ... ... ... ... | ١٣ | م الحجرات | ٤٩ |
| الْإِكْرَامِ: | ويبقى وجه ربك ذو الجلال والإكرام ... ... ... | ٢٧ | م الرحمن | ٥٥ |
| (٢) | تبارك اسم ربك ذي الجلال والإكرام ... ... ... | ٧٨ | م » | ٥٥ |
| مُكَرَّمَةٍ: | فمن شاء ذكره . في صحف مكرمة . مرفوعة مطهرة | ١٣ | ك عبس | ٨٠ |
| مُكْرِمٍ: | ومن يهن الله فما له من مكرم ... ... ... ... ... | ١٨ | م الحج | ٢٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مُكْرَمُونَ: | وقالوا اتخذ الرحمن ولدا سبحانه بل عباد مكرمون | ٢٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٣) | أولئك لهم رزق معلوم . فواكه وهم مكرمون ... ... | ٤٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| | أولئك في جنات مكرمون ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك المعارج | ٧٠ |
| الْمُكْرَمِينَ: | قال يا ليت قومي يعلمون . بما غفر لي ربي | | | |
| (٢) | وجعلني من المكرمين ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك يس | ٣٦ |
| | هل أتاك حديث ضيف إبراهيم المكرمين... ... ... | ٢٤ | ك الذاريات | ٥١ |
| كَرِهَ: | ليحق الحق ويبطل الباطل ولو كره المجرمون ... ... | ٨ | م الأنفال | ٨ |
| (٨) | ويأبى الله إلا أن يتم نوره ولو كره الكافرون ... ... | ٣٢ | م التوبة | ٩ |
| | ليظهره على الدين كله ولو كره المشركون ... ... ... | ٣٣ | م » | ٩ |
| | ولكن كره الله انبعاثهم فثبطهم ... ... ... ... ... | ٤٦ | م » | ٩ |
| | ويحق الله الحق بكلماته ولو كره المجرمون ... ... ... | ٨٢ | ك يونس | ١٠ |
| | فادعوا الله مخلصين له الدين ولو كره الكافرون ... | ١٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | والله متم نوره ولو كره الكافرون ... ... ... ... ... | ٨ | م الصف | ٦١ |
| | ليظهره على الدين كله ولو كره المشركون ... ... ... | ٩ | م » | ٦١ |
| كَرِهْتُمُوهُ: | أيحب أحدكم أن يأكل لحم أخيه ميتا فكرهتموه | ١٢ | م الحجرات | ٤٩ |
| كَرِهْتُمُوهُنَّ: | فإن كرهتموهن فعسى ان تكرهوا شيئا | | | |
| | ويجعل الله فيه خيرا كثيرا ... ... ... ... ... | ١٩ | م النساء | ٤ |
| كَرِهُوا: | وكرهوا أن يجاهدوا بأموالهم وأنفسهم في سبيل الله | ٨١ | م التوبة | ٩ |
| (٤) | ذلك بأنهم كرهوا ما أنزل الله فأحبط أعمالهم ... ... | ٩ | م محمد | ٤٧ |
| | ذلك بأنهم قالوا للذين كرهوا ما نزل الله سنطيعكم ... | ٢٦ | م » | ٤٧ |
| | ذلك بأنهم اتبعوا ما أسخط الله وكرهوا رضوانه ... | ٢٨ | م » | ٤٧ |
| تَكْرَهُوا: | وعسى أن تكرهوا شيئا وهو خير لكم ... ... ... | ٢١٦ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | فعسى أن تكرهوا شيئا ويجعل الله فيه خيرا كثيرا ... | ١٩ | م النساء | ٤ |
| يَكْرَهُونَ: | ويجعلون لله ما يكرهون وتصف ألسنتهم الكذب | ٦٢ | ك النحل | ١٦ |
| كَرَّهَ: | وكره إليكم الكفر والفسوق والعصيان... ... ... ... | ٧ | م الحجرات | ٤٩ |
| أَكْرَهْتَنَا: | إنا آمنا بربنا ليغفر لنا خطايانا وما أكرهتنا عليه | | | |
| | من السحر... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك طه | ٢٠ |
| تُكْرِهُ: | أفأنت تكره الناس حتى يكونوا مؤمنين ... ... ... | ٩٩ | ك يونس | ١٠ |
| تُكْرِهُوا: | ولا تكرهوا فتياتكم على البغاء إن أردن تحصنا ... | ٣٣ | م النور | ٢٤ |
| يُكْرِههُنَّ: | ومن يكرههن فإن الله من بعد إكراههن غفور رحيم | ٣٣ | م » | ٢٤ |
| أُكْرِهَ: | إلا من أكره وقلبه مطمئن بالإيمان ... ... ... | ١٠٦ | ك النحل | ١٦ |
| كَرْهًا: | وله أسلم من في السموات والأرض طوعا وكرها ... | ٨٣ | م آل عمران | ٣ |
| (٥) | يأيها الذين آمنوا لا يحل لكم أن ترثوا النساء كرها | ١٩ | م النساء | ٤ |
| | قل أنفقوا طوعا أو كرها لن يتقبل منكم ... ... ... | ٥٣ | م التوبة | ٩ |
| | ولله يسجد من في السموات والأرض طوعا وكرها ... | ١٥ | م الرعد | ١٣ |
| | فقال لها وللأرض ائتيا طوعا أو كرها ... ... ... | ١١ | ك فصلت | ٤١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كُرْهٌ: | كتب عليكم القتال وهو كره لكم... ... ... ... ... | ٢١٦م | البقـرة | ٢ |
| كُرْهًا: | ووصينا الإنسان بوالديه إحسانا حملته أمه كرها ... | ١٥ م | الأحقاف | ٤٦ |
| (٢) | ووضعته كرها ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ م | « | ٤٦ |
| كَارِهُونَ: | وإن فريقا من المؤمنين لكارهون... ... ... | ٥ م | الأنفـال | ٨ |
| (٦) | حتى جاء الحق وظهر أمر الله وهم كارهون ... ... | ٤٨ م | التـوبة | ٩ |
| | ولا ينفقون إلا وهم كارهون ... ... ... ... ... | ٥٤ م | « | ٩ |
| | أنلزمكموها وأنتم لها كارهون ... ... ... ... ... | ٢٨ ك | هـود | ١١ |
| | بل جاءهم بالحق وأكثرهم للحق كارهون ... ... ... | ٧٠ ك | المؤمنون | ٢٣ |
| | لقد جئناكم بالحق ولكنّ أكثركم للحق كارهون ... | ٧٨ ك | الزخرف | ٤٣ |
| كَارِهِينَ: | أو لتعودنّ في ملتنا قال أولو كنا كارهين ... | ٨٨ ك | الأعراف | ٧ |
| إِكْرَاهَ: | لا إكراه في الدين قد تبين الرشد من الغيّ ... ... | ٢٥٦م | البقـرة | ٢ |
| إِكْرَاهِهِنَّ: | ومن يكرههنّ فإن الله من بعد إكراههنّ غفور رحيم | ٣٣ م | النـور | ٢٤ |
| مَكْرُوهًا: | كل ذلك كان سيئه عند ربك مكروها ... ... | ٣٨ ك | الإسـراء | ١٧ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَسَبَ: | بل من كسب سيئة وأحاطت به خطيئته فأولئك | | | |
| (٣) | أصحاب النار... ... ... ... ... ... ... ... | ٨١ م | البقـرة | ٢ |
| | كل امرئ بما كسب رهين... ... ... ... ... ... | ٢١ ك | الطـور | ٥٢ |
| | ما أغنى عنه ماله وما كسب... ... ... ... ... ... | ٢ ك | المسـد | ١١١ |
| كَسَبَا: | والسارق والسارقة فاقطعوا أيديهما جزاء بما كسبا | ٣٨ م | المائدة | ٥ |
| كَسَبَتْ: | تلك أمة قد خلت لها ما كسبت ولكم ما كسبتم | ١٣٤م | البقـرة | ٢ |
| (١٦) | تلك أمة قد خلت لها ما كسبت ولكم ما كسبتم... | ١٤١م | « | ٢ |
| | ولكن يؤاخذكم بما كسبت قلوبكم ... ... ... ... | ٢٢٥م | « | ٢ |
| | ثم توفى كل نفس ما كسبت وهم لا يظلمون ... ... | ٢٨١م | « | ٢ |
| | لها ما كسبت وعليها ما اكتسبت ... ... ... ... | ٢٨٦م | « | ٢ |
| | ووفيت كل نفس ما كسبت وهم لا يظلمون ... ... | ٢٥ م | آل عمران | ٣ |
| | ثم توفى كل نفس ما كسبت وهم لا يظلمون... ... | ١٦١م | « | ٣ |
| | وذكر به أن تبسل نفس بما كسبت... ... ... ... | ٧٠ ك | الأنعام | ٦ |
| | لم تكن آمنت من قبل أو كسبت في إيمانها خيرا ... | ١٥٨ك | « | ٦ |
| | أفمن هو قائم على كل نفس بما كسبت ... ... ... | ٣٣ م | الرعـد | ١٣ |
| | ليجزى الله كل نفس ما كسبت ... ... ... ... ... | ٥١ ك | إبراهيم | ١٤ |
| | ظهر الفساد في البرّ والبحر بما كسبت أيدى الناس | ٤١ ك | الـروم | ٣٠ |
| | اليوم تجزى كل نفس بما كسبت لا ظلم اليوم ... | ١٧ ك | غافـر | ٤٠ |
| | وما أصابكم من مصيبة فبما كسبت أيديكم... ... ... | ٣٠ ك | الشـورى | ٤٢ |
| | ولتجزى كل نفس بما كسبت وهم لا يظلمون... ... | ٢٢ ك | الجاثيـة | ٤٥ |
| | كل نفس بما كسبت رهينة ... ... ... ... ... | ٣٨ ك | المـدثر | ٧٤ |
| كَسَبْتُمْ: | تلك أمة قد خلت لها ما كسبت ولكم ما كسبتم | ١٣٤م | البقـرة | ٢ |
| (٣) | تلك أمة قد خلت لها ما كسبت ولكم ما كسبتم... | ١٤١م | « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا أنفقوا من طيبات ما كسبتم... | ٢٦٧م | « | ٢ |
| كَسَبُوا: | أولئك لهم نصيب مما كسبوا والله سريع الحساب | ٢٠٢م | البقـرة | ٢ |
| (١٥) | لا يقدرون على شيء مما كسبوا ... ... ... ... ... | ٢٦٤م | « | ٢ |
| | إنما استزلهم الشيطان ببعض ما كسبوا ... ... ... | ١٥٥م | آل عمران | ٣ |
| | فما لكم في المنافقين فئتين والله أركسهم بما كسبوا | ٨٨ م | النسـاء | ٤ |
| | أولئك الذين أبسلوا بما كسبوا ... ... ... ... ... | ٧٠ ك | الأنعـام | ٦ |
| | والذين كسبوا السيئات جزاء سيئة بمثلها وترهقهم ذلة | ٢٧ ك | يـونس | ١٠ |
| | لا يقدرون مما كسبوا على شيء ذلك هو الضلال البعيد | ١٨ ك | إبراهيم | ١٤ |
| | لو يؤاخذهم بما كسبوا لعجّل لهم العذاب ... ... | ٥٨ ك | الكهف | ١٨ |
| | ولو يؤاخذ الله الناس بما كسبوا ما ترك على ظهرها من دابّة | ٤٥ ك | فاطـر | ٣٥ |
| | وبدا لهم سيئات ما كسبوا وحاق بهم ما كانوا به يستهزئون | ٤٨ ك | الـزمر | ٣٩ |
| | فأصابهم سيئات ما كسبوا ... ... ... ... ... ... | ٥١ ك | « | ٣٩ |
| | والذين ظلموا من هؤلاء سيصيبهم سيئات ما كسبوا | ٥١ ك | « | ٣٩ |
| | ترى الظالمين مشفقين مما كسبوا وهو واقع بهم ... | ٢٢ ك | الشـورى | ٤٢ |
| | أو يوبقهنّ بما كسبوا ويعف عن كثير ... ... ... | ٣٤ ك | « | ٤٢ |
| | ولا يغنى عنهم ما كسبوا شيئا ... ... ... ... ... | ١٠ ك | الجاثيـة | ٤٥ |
| تَكْسِبُ: | ولا تكسب كل نفس إلا عليها ... ... ... ... | ١٦٤ك | الأنعـام | ٦ |
| (٣) | يعلم ما تكسب كل نفس وسيعلم الكفار لمن عقبى الدار | ٤٢ م | الرعـد | ١٣ |
| | وما تدرى نفس ماذا تكسب غدا ... ... ... ... ... | ٣٤ ك | لقمان | ٣١ |
| تَكْسِبُونَ: | يعلم سركم وجهركم ويعلم ما تكسبون ... ... | ٣ ك | الأنعـام | ٦ |
| (٤) | فذوقوا العذاب بما كنتم تكسبون ... ... ... ... | ٣٩ ك | الأعراف | ٧ |
| | ذوقوا عذاب الخلد هل تجزون إلا بما كنتم تكسبون | ٥٢ ك | يـونس | ١٠ |
| | وقيل للظالمين ذوقوا ما كنتم تكسبون ... ... ... | ٢٤ ك | الـزمر | ٣٩ |
| يَكْسِبْ: | ومن يكسب إثما فإنما يكسبه على نفسه ... ... | ١١١م | النسـاء | ٤ |
| (٢) | ومن يكسب خطيئة أو إثما ثم يرم به بريئا فقد احتمل بهتانا | ١١٢م | « | ٤ |
| يَكْسِبْهُ: | ومن يكسب إثما فإنما يكسبه على نفسه ... ... | ١١١م | « | ٤ |
| يَكْسِبُونَ: | فويل لهم مما كتبت أيديهم وويل لهم مما يكسبون | ٧٩ م | البقـرة | ٢ |
| (١٤) | إن الذين يكسبون الإثم سيجزون بما كانوا يقترفون | ١٢٠ك | الأنعـام | ٦ |
| | وكذلك نولّى بعض الظالمين بعضا بما كانوا يكسبون | ١٢٩ك | « | ٦ |
| | ولكن كذبوا فأخذناهم بما كانوا يكسبون ... ... | ٩٦ ك | الأعراف | ٧ |
| | فليضحكوا قليلا وليبكوا كثيرا جزاء بما كانوا يكسبون | ٨٢ م | التـوبة | ٩ |
| | إنهم رجس ومأواهم جهنم جزاء بما كانوا يكسبون | ٩٥ م | « | ٩ |
| | أولئك مأواهم النار بما كانوا يكسبون ... ... ... | ٨ ك | يـونس | ١٠ |
| | فما أغنى عنهم ما كانوا يكسبون ... ... ... ... | ٨٤ ك | الحجـر | ١٥ |
| | وتكلمنا أيديهم وتشهد أرجلهم بما كانوا يكسبون ... | ٦٥ ك | يـس | ٣٦ |
| | قد قالها الذين من قبلهم فما أغنى عنهم ما كانوا يكسبون | ٥٠ ك | الـزمر | ٣٩ |
| | فما أغنى عنهم ما كانوا يكسبون ... ... ... ... | ٨٢ ك | غافـر | ٤٠ |
| | فأخذتهم صاعقة العذاب الهون بما كانوا يكسبون | ١٧ ك | فصلت | ٤١ |
| | ليجزى قوما بما كانوا يكسبون ... ... ... ... ... | ١٤ م | الجاثيـة | ٤٥ |
| | كلا بل ران على قلوبهم ما كانوا يكسبون ... ... | ١٤ ك | المطففين | ٨٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| اكْتَسَبَ | : لكل امرئ منهم ما اكتسب من الإثم ... | ١١ | م النور | ٢٤ |
| اكْتَسَبَتْ | : لها ما كسبت وعليها ما اكتسبت ... ... ... | ٢٨٦ | م البقرة | ٢ |
| اكْتَسَبْنَ | : وللنساء نصيب مما اكتسبن ... ... ... ... | ٣٢ | م النساء | ٤ |
| اكْتَسَبُوا | : للرجال نصيب مما اكتسبوا ... ... ... ... | ٣٢ | م » | ٤ |
| (٢) | والذين يؤذون المؤمنين والمؤمنات بغير ما اكتسبوا فقد احتملوا بهتانا وإثما مبينا ... ... ... ... | ٥٨ | م الأحزاب | ٣٣ |
| كَسَادَهَا | : وأموال اقترفتموها وتجارة تخشون كسادها ... | ٢٤ | م التوبة | ٩ |
| كِسْفًا | : وإن يروا كسفا من السماء ساقطا يقولوا سحاب مركوم | ٤٤ | ك الطور | ٥٢ |
| كِسَفًا | : أو تسقط السماء كما زعمت علينا كسفا ... ... ... | ٩٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٤) | فأسقط علينا كسفا من السماء إن كنت من الصادقين | ١٨٧ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | ويجعله كسفا فترى الودق يخرج من خلاله ... ... | ٤٨ | ك الروم | ٣٠ |
| | إن نشأ نخسف بهم الأرض أو نسقط عليهم كسفا من السماء | ٩ | ك سبأ | ٣٤ |
| كُسَالَى | : وإذا قاموا إلى الصلاة قاموا كسالى يراءون الناس | ١٤٢ | م النساء | ٤ |
| (٢) | ولا يأتون الصلاة إلا وهم كسالى ولا ينفقون إلا وهم كارهون ... ... ... ... ... ... ... | ٥٤ | م التوبة | ٩ |
| فَكَسَوْنَا | : فخلقنا المضغة عظاما فكسونا العظام لحما ... | ١٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| نَكْسُوهَا | : وانظر إلى العظام كيف ننشزها ثم نكسوها لحما | ٢٥٩ | م البقرة | ٢ |
| وَاكْسُوهُمْ | : وارزقوهم فيها واكسوهم وقولوا لهم قولا معروفا | ٥ | م النساء | ٤ |
| كِسْوَتُهُمْ | : من أوسط ما تطعمون أهليكم أو كسوتهم ... | ٨٩ | م المائدة | ٥ |
| كِسْوَتُهُنَّ | : وعلى المولود له رزقهن وكسوتهن بالمعروف ... | ٢٣٣ | م البقرة | ٢ |
| كُشِطَتْ | : وإذا السماء كشطت ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك التكوير | ٨١ |
| كَشَفَ | : ثم إذا كشف الضر عنكم إذا فريق منكم بربهم يشركون | ٥٤ | ك النحل | ١٦ |
| كَشَفْتَ | : لئن كشفت عنا الرجز لنؤمنن لك ... ... ... | ١٣٤ | ك الأعراف | ٧ |
| كَشَفْتَ | : فلما رأته حسبته لجة وكشفت عن ساقيها ... | ٤٤ | ك النمل | ٢٧ |
| كَشَفْنَا | : فلما كشفنا عنهم الرجز إلى أجل هم بالغوه إذا هم ينكثون ... ... ... ... ... ... ... | ١٣٥ | ك الأعراف | ٧ |
| (٧) | فلما كشفنا عنه ضره مر كأن لم يدعنا إلى ضر مسه | ١٢ | ك يونس | ١٠ |
| | لما آمنوا كشفنا عنهم عذاب الخزي في الحياة الدنيا | ٩٨ | ك » | ١٠ |
| | فاستجبنا له فكشفنا ما به من ضر ... ... ... ... | ٨٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ولو رحمناهم وكشفنا ما بهم من ضر لجوا في طغيانهم يعمهون | ٧٥ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فلما كشفنا عنهم العذاب إذا هم ينكثون... ... ... | ٥٠ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | لقد كنت في غفلة من هذا فكشفنا عنك غطاءك ... | ٢٢ | ك ق | ٥٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَكْشِفُ | : بل إياه تدعون فيكشف ما تدعون إليه إن شاء | ٤١ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | أمن يجيب المضطر إذا دعاه ويكشف السوء ... ... | ٦٢ | ك النمل | ٢٧ |
| اكْشِفْ | : ربنا اكشف عنا العذاب إنا مؤمنون ... ... | ١٢ | ك الدخان | ٤٤ |
| يُكْشَفُ | : يوم يكشف عن ساق ويدعون إلى السجود | ٤٢ | ك القلم | ٦٨ |
| كَاشِفُوا | : إنا كاشفوا العذاب قليلا إنكم عائدون ... ... | ١٥ | ك الدخان | ٤٤ |
| كَشْفَ | : فلا يملكون كشف الضر عنكم ولا تحويلا ... | ٥٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| كَاشِفَ | : وإن يمسسك الله بضر فلا كاشف له إلا هو | ١٧ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | وإن يمسسك الله بضر فلا كاشف له إلا هو ... ... | ١٠٧ | ك يونس | ١٠ |
| كَاشِفَةٌ | : أزفت الآزفة . ليس لها من دون الله كاشفة | ٥٨ | ك النجم | ٥٣ |
| كَاشِفَاتُ | : إن أرادني الله بضر هل هن كاشفات ضره | ٣٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| الْكَاظِمِينَ | : الذين ينفقون في السراء والضراء والكاظمين | | | |
| (٢) | الغيظ والعافين عن الناس ... ... ... ... ... | ١٣٤ | م آل عمران | ٣ |
| | وأنذرهم يوم الآزفة إذ القلوب لدى الحناجر كاظمين | ١٨ | ك غافر | ٤ |
| كَظِيمٌ | : وابيضت عيناه من الحزن فهو كظيم ... ... ... | ٨٤ | ك يوسف | ١٢ |
| (٣) | وإذا بشر أحدهم بالأنثى ظل وجهه مسودا وهو كظيم | ٥٨ | ك النحل | ١٦ |
| | ظل وجهه مسودا وهو كظيم ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الزخرف | ٤٣ |
| مَكْظُومٌ | : ولا تكن كصاحب الحوت إذ نادى وهو مكظوم | ٤٨ | م القلم | ٦٨ |
| الْكَعْبَيْنِ | : وامسحوا برءوسكم وأرجلكم إلى الكعبين ... | ٦ | م المائدة | ٥ |
| الْكَعْبَةِ | : يحكم به ذوا عدل منكم هديا بالغ الكعبة ... ... | ٩٥ | م » | ٥ |
| (٢) | جعل الله الكعبة البيت الحرام قياما للناس ... ... | ٩٧ | م » | ٥ |
| كَوَاعِبَ | : إن للمتقين مفازا . حدائق وأعنابا . وكواعب أترابا | ٣٣ | ك النبأ | ٧٨ |
| كُفُوًا | : لم يلد ولم يولد . ولم يكن له كفوا أحد ... ... | ٤ | ك الإخلاص | ١١٢ |
| كِفَاتًا | : ألم نجعل الأرض كفاتا . أحياء وأمواتا ... ... | ٢٥ | ك المرسلات | ٧٧ |
| كَفَرَ | : وما كفر سليمان ولكن الشياطين كفروا ... ... ... | ١٠٢ | م البقرة | ٢ |
| (١٩) | قال ومن كفر فأمتعه قليلا ثم أضطره إلى عذاب النار | ١٢٦ | م » | ٢ |
| | ولكن اختلفوا فمنهم من آمن ومنهم من كفر ... ... | ٢٥٣ | م » | ٢ |
| | فبهت الذي كفر والله لا يهدي القوم الظالمين ... ... | ٢٥٨ | م » | ٢ |
| | ومن كفر فإن الله غني عن العالمين ... ... ... ... | ٩٧ | م آل عمران | ٣ |
| | فمن كفر بعد ذلك منكم فقد ضل سواء السبيل ... ... | ١٢ | م المائدة | ٥ |
| | لقد كفر الذين قالوا إن الله هو المسيح ابن مريم | ١٧ | » | ٥ |
| | لقد كفر الذين قالوا إن الله هو المسيح ابن مريم | ٧٢ | م » | ٥ |
| | لقد كفر الذين قالوا إن الله ثالث ثلاثة ... ... ... | ٧٣ | م » | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَفَرَ: | من كفر بالله من بعد إيمانه إلا من أكره وقلبه مطمئن بالإيمان ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٦ | ك النحل | ١٦ |
| | أفرأيت الذى كفر بآياتنا وقال لأوتين مالا وولدا | ٧٧ | ك مريم | ١٩ |
| | ومن كفر بعد ذلك فأولئك هم الفاسقون ... ... ... | ٥٥ | م النور | ٢٤ |
| | ومن شكر فإنما يشكر لنفسه ومن كفر فإن ربى غنى كريم | ٤٠ | ك النمل | ٢٧ |
| | من كفر فعليه كفره ومن عمل صالحا فلأنفسهم يمهدون | ٤٤ | ك الروم | ٣٠ |
| | ومن يشكر فإنما يشكر لنفسه ومن كفر فإن الله غنى حميد | ١٢ | ك لقمان | ٣١ |
| | ومن كفر فلا يحزنك كفره ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك « | ٣١ |
| | هو الذى جعلكم خلائف فى الأرض فمن كفر فعليه كفره | ٣٩ | ك فاطر | ٣٥ |
| | فلما كفر قال إنى برىء منك ... ... ... ... ... | ١٦ | م الحشر | ٥٩ |
| | لست عليهم بمصيطر . إلا من تولى وكفر ... ... ... | ٢٣ | ك الغاشية | ٨٨ |
| كَفَرْتُ: | إنى كفرت بما أشركتمونِ من قبل ... ... ... | ٢٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| كَفَرْتَ: | أكفرت بالذى خلقك من تراب ثم من نطفة | ٣٧ | ك الكهف | ١٨ |
| كَفَرَتْ: | فكفرت بأنعم الله فأذاقها الله لباس الجوع ... | ١١٢ | ك النحل | ١٦ |
| (٢) | فآمنت طائفة من بنى إسرائيل وكفرت طائفة ... ... | ١٤ | م الصف | ٦١ |
| كَفَرْتُمْ: | فأما الذين اسودت وجوههم أكفرتم بعد إيمانكم | ١٠٦ | م آل عمران | ٣ |
| (٨) | لا تعتذروا قد كفرتم بعد إيمانكم ... ... ... ... | ٦٦ | م التوبة | ٩ |
| | ولئن كفرتم إن عذابى لشديد ... ... ... ... ... | ٧ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | فيرسل عليكم قاصفا من الريح فيغرقكم بما كفرتم ... | ٦٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ذلكم بأنه إذا دعى الله وحده كفرتم... ... ... ... | ١٢ | ك غافر | ٤٠ |
| | قل أرأيتم إن كان من عند الله ثم كفرتم به ... ... | ٥٢ | ك فصلت | ٤١ |
| | قل أرأيتم إن كان من عند الله وكفرتم به ... ... | ١٠ | م الأحقاف | ٤٦ |
| | فكيف تتقون إن كفرتم يوما يجعل الولدان شيبا ... | ١٧ | ك المزمل | ٧٣ |
| كَفَرْنَا: | وقالوا إنا كفرنا بما أرسلتم به ... ... ... ... | ٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| (٣) | قالوا آمنا بالله وحده وكفرنا بما كنا به مشركين ... | ٨٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | كفرنا بكم وبدا بيننا وبينكم العداوة والبغضاء أبدا | ٤ | م الممتحنة | ٦٠ |
| كَفَرُوا: | إن الذين كفروا سواء عليهم أأنذرتهم أم لم | | | |
| (١٩٤) | تنذرهم لا يؤمنون .. ... ... ... ... ... ... | ٦ | م البقرة | ٢ |
| | وأما الذين كفروا فيقولون ماذا أراد الله بهذا مثلا | ٢٦ | م « | ٢ |
| | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا أولئك أصحاب النار ... | ٣٩ | م « | ٢ |
| | وكانوا من قبل يستفتحون على الذين كفروا ... ... | ٨٩ | م « | ٢ |
| | فلما جاءهم ما عرفوا كفروا به ... ... ... ... ... | ٨٩ | م « | ٢ |
| | وما كفر سليمان ولكن الشياطين كفروا ... ... ... | ١٠٢ | م « | ٢ |
| | ما يود الذين كفروا من أهل الكتاب ولا المشركين أن ينزل عليكم من خير من ربكم ... ... ... ... | ١٠٥ | م « | ٢ |
| | إن الذين كفروا وماتوا وهم كفار أولئك عليهم لعنة الله | ١٦١ | م « | ٢ |
| | ومثل الذين كفروا كمثل الذى ينعق بما لا يسمع ... | ١٧١ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَفَرُوا: | زين للذين كفروا الحياة الدنيا ويسخرون من الذين آمنوا ... ... ... ... ... ... ... | ٢١٢ | م البقرة | ٢ |
| | والذين كفروا أولياؤهم الطاغوت ... ... ... ... | ٢٥٧ | م « | ٢ |
| | إن الذين كفروا بآيات الله لهم عذاب شديد ... ... | ٤ | م آل عمران | ٣ |
| | إن الذين كفروا لن تغنى عنهم أموالهم ولا أولادهم | ١٠ | م « | ٣ |
| | قل للذين كفروا ستغلبون وتحشرون إلى جهنم... ... | ١٢ | م « | ٣ |
| | إنى متوفيك ورافعك إلى ومطهرك من الذين كفروا | ٥٥ | م « | ٣ |
| | وجاعل الذين اتبعوك فوق الذين كفروا إلى يوم القيامة | ٥٥ | م « | ٣ |
| | فأما الذين كفروا فأعذبهم عذابا شديدا فى الدنيا والآخرة | ٥٦ | م « | ٣ |
| | كيف يهدى الله قوما كفروا بعد إيمانهم ... ... ... | ٨٦ | م « | ٣ |
| | إن الذين كفروا بعد إيمانهم ثم ازدادوا كفرا لن تقبل توبتهم ... ... ... ... ... ... ... | ٩٠ | م « | ٣ |
| | إن الذين كفروا وماتوا وهم كفار فلن يقبل من أحدهم ملء الأرض ذهبا ... ... ... ... ... | ٩١ | م « | ٣ |
| | إن الذين كفروا لن تغنى عنهم أموالهم ولا أولادهم | ١١٦ | م « | ٣ |
| | ليقطع طرفا من الذين كفروا أو يكبتهم فينقلبوا خائبين | ١٢٧ | م « | ٣ |
| | إن تطيعوا الذين كفروا يردوكم على أعقابكم ... ... | ١٤٩ | م « | ٣ |
| | سنلقى فى قلوب الذين كفروا الرعب بما أشركوا بالله | ١٥١ | م « | ٣ |
| | يا أيها الذين آمنوا لا تكونوا كالذين كفروا ... ... | ١٥٦ | م « | ٣ |
| | ولا يحسبن الذين كفروا أنما نملى لهم خير لأنفسهم | ١٧٨ | م « | ٣ |
| | لا يغرنك تقلب الذين كفروا فى البلاد ... ... ... | ١٩٦ | م « | ٣ |
| | يومئذ يود الذين كفروا وعصوا الرسول لو تسوى بهم الأرض ... ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | م النساء | ٤ |
| | ويقولون للذين كفروا هؤلاء أهدى من الذين آمنوا سبيلا | ٥١ | م « | ٤ |
| | إن الذين كفروا بآياتنا سوف نصليهم نارا ... ... | ٥٦ | م « | ٤ |
| | والذين كفروا يقاتلون فى سبيل الطاغوت ... ... | ٧٦ | م « | ٤ |
| | عسى الله أن يكف بأس الذين كفروا ... ... ... | ٨٤ | م « | ٤ |
| | ودوا لو تكفرون كما كفروا فتكونون سواء ... ... | ٨٩ | م « | ٤ |
| | إن خفتم أن يفتنكم الذين كفروا ... ... ... ... | ١٠١ | م « | ٤ |
| | ود الذين كفروا لو تغفلون عن أسلحتكم ... ... ... | ١٠٢ | م « | ٤ |
| | إن الذين آمنوا ثم كفروا ... ... ... ... ... ... | ١٣٧ | م « | ٤ |
| | ثم آمنوا ثم كفروا ثم ازدادوا كفرا لم يكن الله ليغفر لهم | ١٣٧ | م « | ٤ |
| | إن الذين كفروا وصدوا عن سبيل الله قد ضلوا ضلالا بعيدا | ١٦٧ | م « | ٤ |
| | إن الذين كفروا وظلموا لم يكن الله ليغفر لهم ... ... | ١٦٨ | م « | ٤ |
| | اليوم يئس الذين كفروا من دينكم فلا تخشوهم واخشونِ | ٣ | م المائدة | ٥ |
| | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا أولئك أصحاب الجحيم | ١٠ | م « | ٥ |
| | إن الذين كفروا لو أن لهم ما فى الأرض جميعا ومثله معه | ٣٦ | م « | ٥ |
| | ليمسن الذين كفروا منهم عذاب أليم ... ... ... ... | ٧٣ | م « | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَفَرُوا: | لعن الذين كفروا من بنى إسرائيل على لسان داود | ٧٨-م | المائدة | ٥ |
| | ترى كثيرا منهم يتولون الذين كفروا ... ... ... | ٨٠ م | « | ٥ |
| | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا أولئك أصحاب الجحيم | ٨٦ م | « | ٥ |
| | ولكن الذين كفروا يفترون على الله الكذب ... ... | ١٠٣م | « | ٥ |
| | فقال الذين كفروا منهم إن هذا إلا سحر مبين ... | ١١م | « | ٥ |
| | ثم الذين كفروا بربهم يعدلون ... ... ... ... ... | ١ | ك الأنعام | ٦ |
| | لقال الذين كفروا إن هذا إلا سحر مبين ... ... | ٧ | ك « | ٦ |
| | يقول الذين كفروا إن هذا إلا أساطير الأولين ... | ٢٥ | ك « | ٦ |
| | قال الملأ الذين كفروا من قومه إنا لنراك فى سفاهة | ٦٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | وقال الملأ الذين كفروا من قومه لئن اتبعتم شعيبا إنكم إذا لخاسرون ... ... ... ... ... ... | ٩٠ | ك « | ٧ |
| | سألقى فى قلوب الذين كفروا الرعب فاضربوا فوق الأعناق | ١٢ م | الأنفال | ٨ |
| | إذا لقيتم الذين كفروا زحفا فلا تولوهم الأدبار ... | ١٥ م | « | ٨ |
| | وإذ يمكر بك الذين كفروا ليثبتوك أو يقتلوك... ... | ٣٠ | ك « | ٨ |
| | إن الذين كفروا ينفقون أموالهم ليصدوا عن سبيل الله | ٣٦ | ك « | ٨ |
| | والذين كفروا إلى جهنم يحشرون ... ... ... ... | ٣٦ | ك « | ٨ |
| | قل للذين كفروا إن ينتهوا يغفر لهم ما قد سلف ... | ٣٨ م | « | ٨ |
| | ولو ترى إذ يتوفى الذين كفروا الملائكة... ... ... | ٥٠ م | « | ٨ |
| | كفروا بآيات الله فأخذهم الله بذنوبهم ... ... ... | ٥٢ م | « | ٨ |
| | إن شر الدواب عند الله الذين كفروا فهم لا يؤمنون | ٥٥ م | « | ٨ |
| | ولا يحسبن الذين كفروا سبقوا إنهم لا يعجزون ... | ٥٩ م | « | ٨ |
| | وإن يكن منكم مائة يغلبوا ألفا من الذين كفروا ... | ٦٥ م | « | ٨ |
| | والذين كفروا بعضهم أولياء بعض ... ... ... ... | ٧٣ م | « | ٨ |
| | وبشر الذين كفروا بعذاب أليم ... ... ... ... ... | ٣ م | التوبة | ٩ |
| | وأنزل جنودا لم تروها وعذب الذين كفروا ... ... | ٢٦ م | « | ٩ |
| | يضاهئون قول الذين كفروا من قبل ... ... ... ... | ٣٠ م | « | ٩ |
| | إنما النسىء زيادة فى الكفر يضل به الذين كفروا ... | ٣٧ م | « | ٩ |
| | إلا تنصروه فقد نصره الله إذ أخرجه الذين كفروا | ٤٠ م | « | ٩ |
| | وجعل كلمة الذين كفروا السفلى... ... ... ... ... | ٤٠ م | « | ٩ |
| | وما منعهم أن تقبل منهم نفقاتهم إلا أنهم كفروا بالله | ٥٤ م | « | ٩ |
| | ولقد قالوا كلمة الكفر وكفروا بعد إسلامهم ... ... | ٧٤ م | « | ٩ |
| | ذلك بأنهم كفروا بالله ورسوله ... ... ... ... ... | ٨٠ م | « | ٩ |
| | إنهم كفروا بالله ورسوله وماتوا وهم فاسقون ... ... | ٨٤ م | « | ٩ |
| | سيصيب الذين كفروا منهم عذاب أليم ... ... ... | ٩٠ م | « | ٩ |
| | والذين كفروا لهم شراب من حميم وعذاب أليم ... | ٤ | ك يونس | ١٠ |
| | ليقولن الذين كفروا إن هذا إلا سحر مبين ... ... | ٧ | ك هود | ١١ |
| | فقال الملأ الذين كفروا من قومه ما نراك إلا بشرا مثلنا | ٢٧ | ك « | ١١ |
| | ألا إن عادا كفروا ربهم ألا بعدا لعاد قوم هود ... | ٦٠ | ك « | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَفَرُوا: | ألا إن ثمودا كفروا ربهم ألا بعدا لثمود.... | ٦٨ | ك هود | ١١ |
| | أولئك الذين كفروا بربهم وأولئك الأغلال فى أعناقهم | ٥ | م الرعد | ١٣ |
| | ويقول الذين كفروا لولا أنزل عليه آية من ربه ... | ٧ | م « | ١٣ |
| | ويقول الذين كفروا لولا أنزل عليه آية من ربه ... | ٢٧ | « | ١٣ |
| | ولا يزال الذين كفروا تصيبهم بما صنعوا قارعة ... | ٣١ | م « | ١٣ |
| | فأمليت للذين كفروا ثم أخذتهم فكيف كان عقاب | ٣٢ | م « | ١٣ |
| | بل زين للذين كفروا مكرهم وصدوا عن السبيل ... | ٣٣ | م « | ١٣ |
| | ويقول الذين كفروا لست مرسلا ... ... ... ... | ٤٣ | م « | ١٣ |
| | وقال الذين كفروا لرسلهم لنخرجنكم من أرضنا ... | ١٣ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | مثل الذين كفروا بربهم أعمالهم كرماد اشتدت به الريح | ١٨ | ك « | ١٤ |
| | ربما يود الذين كفروا لو كانوا مسلمين... ... ... | ٢ | ك الحجر | ١٥ |
| | وليعلم الذين كفروا أنهم كانوا كاذبين ... ... ... | ٣٩ | ك النحل | ١٦ |
| | ثم لا يؤذن للذين كفروا ولا هم يستعتبون ... ... | ٨٤ | ك « | ١٦ |
| | الذين كفروا وصدوا عن سبيل الله زدناهم عذابا ... | ٨٨ | ك « | ١٦ |
| | ذلك جزاؤهم بأنهم كفروا بآياتنا... ... ... ... | ٩٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ويجادل الذين كفروا بالباطل ليدحضوا به الحق ... | ٥٦ | ك الكهف | ١٨ |
| | أفحسب الذين كفروا أن يتخذوا عبادى من دونى أولياء | ١٠٢ | ك « | ١٨ |
| | أولئك الذين كفروا بآيات ربهم ولقائه ... ... ... | ١٠٥ | ك « | ١٨ |
| | ذلك جزاؤهم جهنم بما كفروا واتخذوا آياتى ورسلى هزوا | ١٠٦ | ك « | ١٨ |
| | فويل للذين كفروا من مشهد يوم عظيم ... ... ... | ٣٧ | ك مريم | ١٩ |
| | قال الذين كفروا للذين آمنوا أى الفريقين خير مقاما | ٧٣ | ك « | ١٩ |
| | أولم ير الذين كفروا أن السموات والأرض كانتا رتقا | ٣٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وإذا رآك الذين كفروا إن يتخذونك إلا هزوا ... | ٣٦ | ك « | ٢١ |
| | لو يعلم الذين كفروا حين لا يكفون عن وجوههم النار | ٣٩ | ك « | ٢١ |
| | فإذا هى شاخصة أبصار الذين كفروا ... ... ... | ٩٧ | ك « | ٢١ |
| | فالذين كفروا قطعت لهم ثياب من نار ... ... ... | ١٩ | م الحج | ٢٢ |
| | إن الذين كفروا ويصدون عن سبيل الله والمسجد الحرام | ٢٥ | م « | ٢٢ |
| | ولا يزال الذين كفروا فى مرية منه حتى تأتيهم الساعة بغتة | ٥٥ | م « | ٢٢ |
| | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا فأولئك لهم عذاب مهين | ٥٧ | م « | ٢٢ |
| | تعرف فى وجوه الذين كفروا المنكر ... ... ... | ٧٢ | م « | ٢٢ |
| | النار وعدها الله الذين كفروا وبئس المصير ... ... | ٧٢ | م « | ٢٢ |
| | فقال الملأ الذين كفروا من قومه ما هذا إلا بشر مثلكم | ٢٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وقال الملأ من قومه الذين كفروا وكذبوا بلقاء الآخرة | ٣٣ | ك « | ٢٣ |
| | والذين كفروا أعمالهم كسراب بقيعة ... ... ... | ٣٩ | م النور | ٢٤ |
| | لا تحسبن الذين كفروا معجزين فى الأرض ... ... | ٥٧ | م « | ٢٤ |
| | وقال الذين كفروا إن هذا إلا إفك افتراه ... ... | ٤ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وقال الذين كفروا لولا نزل عليه القرآن جملة واحدة | ٣٢ | ك « | ٢٥ |
| | وقال الذين كفروا أئذا كنا ترابا وآباؤنا أئنا لمخرجون | ٦٧ | ك النمل | ٢٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَفَرُوا | : وقال الذين كفروا للذين آمنوا اتبعوا سبيلنا ... | ١٢ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | والذين كفروا بآيات الله ولقائه أولئك يئسوا من رحمتى | ٢٣ | ك « | ٢٩ |
| | والذين آمنوا بالباطل وكفروا بالله أولئك هم الخاسرون | ٥٢ | ك « | ٢٩ |
| | وأما الذين كفروا وكذبوا بآياتنا ولقاء الآخرة فأولئك | | | |
| | فى العذاب محضرون ... ... ... ... ... ... | ١٦ | ك الروم | ٣٠ |
| | ولئن جئتهم بآية ليقولن الذين كفروا إن أنتم إلا مبطلون | ٥٨ | ك « | ٣٠ |
| | قل يوم الفتح لا ينفع الذين كفروا إيمانهم ولا هم ينظرون | ٢٩ | ك السجدة | ٣٢ |
| | ورد الله الذين كفروا بغيظهم لم ينالوا خيرا ... ... | ٢٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وقال الذين كفروا لا تأتينا الساعة ... ... ... ... | ٣ | ك سبأ | ٣٤ |
| | وقال الذين كفروا هل ندلكم على رجل ينبئكم إذا | | | |
| | مزقتم كل ممزق إنكم لفى خلق جديد ... ... ... | ٧ | ك « | ٣٤ |
| | ذلك جزيناهم بما كفروا وهل نجازى إلا الكفور | ١٧ | ك « | ٣٤ |
| | وقال الذين كفروا لن نؤمن بهذا القرآن ولا بالذى بين يديه | ٣١ | ك « | ٣٤ |
| | وجعلنا الأغلال فى أعناق الذين كفروا ... ... ... | ٣٣ | ك « | ٣٤ |
| | وقال الذين كفروا للحق لما جاءهم إن هذا إلا سحر مبين | ٤٣ | ك « | ٣٤ |
| | وقد كفروا به من قبل ويقذفون بالغيب من مكان بعيد | ٥٣ | ك « | ٣٤ |
| | الذين كفروا لهم عذاب شديد ... ... ... ... ... | ٧ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ثم أخذت الذين كفروا فكيف كان نكير ... ... ... | ٢٦ | ك « | ٣٥ |
| | والذين كفروا لهم نار جهنم لا يقضى عليهم فيموتوا | ٣٦ | ك « | ٣٥ |
| | قال الذين كفروا للذين آمنوا أنطعم من لو يشاء الله أطعمه | ٤٧ | ك يس | ٣٦ |
| | فكفروا به فسوف يعلمون ... ... ... ... ... ... | ١٧٠ | ك الصافات | ٣٧ |
| | بل الذين كفروا فى عزة وشقاق ... ... ... ... | ٢ | ك ص | ٣٨ |
| | ذلك ظن الذين كفروا ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك « | ٣٨ |
| | فويل للذين كفروا من النار ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك « | ٣٨ |
| | والذين كفروا بآيات الله أولئك هم الخاسرون ... | ٦٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وسيق الذين كفروا إلى جهنم زمرا ... ... ... ... | ٧١ | ك « | ٣٩ |
| | ما يجادل فى آيات الله إلا الذين كفروا ... ... ... | ٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | وكذلك حقت كلمة ربك على الذين كفروا ... ... | ٦ | ك « | ٤٠ |
| | إن الذين كفروا ينادون لمقت الله أكبر من مقتكم أنفسكم | ١٠ | ك « | ٤٠ |
| | ذلك بأنهم كانت تأتيهم رسلهم بالبينات فكفروا | | | |
| | فأخذهم الله ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك « | ٤٠ |
| | وقال الذين كفروا لا تسمعوا لهذا القرآن والغوا فيه | ٢٦ | ك فصلت | ٤١ |
| | فلنذيقن الذين كفروا عذابا شديدا ... ... ... ... | ٢٧ | ك « | ٤١ |
| | وقال الذين كفروا ربنا أرنا اللذين أضلانا من الجن والإنس | ٢٩ | ك « | ٤١ |
| | إن الذين كفروا بالذكر لما جاءهم وإنه لكتاب عزيز | ٤١ | ك « | ٤١ |
| | فلنبئن الذين كفروا بما عملوا ولنذيقنهم من عذاب غليظ | ٥٠ | ك « | ٤١ |
| | والذين كفروا بآيات ربهم لهم عذاب من رجز أليم | ١١ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | وأما الذين كفروا أفلم تكن آياتى تتلى عليكم ... ... | ٣١ | ك « | ٤٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَفَرُوا | : والذين كفروا عما أنذروا معرضون ... ... ... | ٣ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | قال الذين كفروا للحق لما جاءهم هذا سحر مبين ... | ٧ | ك « | ٤٦ |
| | وقال الذين كفروا للذين آمنوا لو كان خيرا ما سبقونا إليه | ١١ | ك « | ٤٦ |
| | ويوم يعرض الذين كفروا على النار أذهبتم طيباتكم | | | |
| | فى حياتكم الدنيا ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك « | ٤٦ |
| | ويوم يعرض الذين كفروا على النار أليس هذا بالحق | ٣٤ | ك « | ٤٦ |
| | الذين كفروا وصدوا عن سبيل الله أضل أعمالهم ... | ١ | م محمد | ٤٧ |
| | ذلك بأن الذين كفروا اتبعوا الباطل ... ... ... | ٣ | م « | ٤٧ |
| | فإذا لقيتم الذين كفروا فضرب الرقاب ... ... ... | ٤ | م « | ٤٧ |
| | والذين كفروا فتعسا لهم وأضل أعمالهم ... ... ... | ٨ | م « | ٤٧ |
| | والذين كفروا يتمتعون ويأكلون كما تأكل الأنعام | ١٢ | م « | ٤٧ |
| | إن الذين كفروا وصدوا عن سبيل الله وشاقوا الرسول | | | |
| | من بعد ما تبين لهم الهدى لن يضروا الله شيئا ... | ٣٢ | م « | ٤٧ |
| | إن الذين كفروا وصدوا عن سبيل الله ثم ماتوا | | | |
| | وهم كفار فلن يغفر الله لهم ... ... ... ... ... | ٣٤ | م « | ٤٧ |
| | ولو قاتلكم الذين كفروا لولوا الأدبار ... ... ... | ٢٢ | م الفتح | ٤٨ |
| | هم الذين كفروا وصدوكم عن المسجد الحرام ... ... | ٢٥ | م « | ٤٨ |
| | لو تزيلوا لعذبنا الذين كفروا منهم عذابا أليما ... ... | ٢٥ | م « | ٤٨ |
| | إذ جعل الذين كفروا فى قلوبهم الحمية حمية الجاهلية | ٢٦ | م « | ٤٨ |
| | فويل للذين كفروا من يومهم الذى يوعدون ... ... | ٦٠ | ك الذاريات | ٥١ |
| | أم يريدون كيدا فالذين كفروا هم المكيدون ... ... | ٤٢ | ك الطور | ٥٢ |
| | فاليوم لا يؤخذ منكم فدية ولا من الذين كفروا ... | ١٥ | م الحديد | ٥٧ |
| | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا أولئك أصحاب الجحيم | ١٩ | م « | ٥٧ |
| | هو الذى أخرج الذين كفروا من أهل الكتاب من | | | |
| | ديارهم لأول الحشر ... ... ... ... ... ... | ٢ | م الحشر | ٥٩ |
| | أم تر إلى الذين نافقوا يقولون لإخوانهم الذين كفروا | ١١ | م « | ٥٩ |
| | تلقون إليهم بالمودة وقد كفروا بما جاءكم من الحق | ١ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | ربنا لا تجعلنا فتنة للذين كفروا واغفر لنا ربنا ... | ٥ | م « | ٦٠ |
| | ذلك بأنهم آمنوا ثم كفروا فطبع على قلوبهم فهم لا يفقهون | ٣ | م المنافقون | ٦٣ |
| | ألم يأتكم نبأ الذين كفروا من قبل فذاقوا وبال أمرهم | ٥ | م التغابن | ٦٤ |
| | فقالوا أبشر يهدوننا فكفروا وتولوا ... ... ... ... | ٦ | م « | ٦٤ |
| | زعم الذين كفروا أن لن يبعثوا ... ... ... ... ... | ٧ | م « | ٦٤ |
| | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا أولئك أصحاب النار | ١٠ | م « | ٦٤ |
| | يأيها الذين كفروا لا تعتذروا اليوم ... ... ... ... | ٧ | م التحريم | ٦٦ |
| | ضرب الله مثلا للذين كفروا امرأة نوح وامرأة لوط | ١٠ | م « | ٦٦ |
| | وللذين كفروا بربهم عذاب جهنم وبئس المصير ... | ٦ | ك الملك | ٦٧ |
| | فلما رأوه زلفة سيئت وجوه الذين كفروا ... ... | ٢٧ | ك « | ٦٧ |
| | وإن يكاد الذين كفروا ليزلقونك بأبصارهم ... ... | ٥١ | ك القلم | ٦٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَفَرُوا: | فمال الذين كفروا قبلك مهطعين... ... ... ... | ٣٦ | ك المعارج | ٧٠ |
| | وما جعلنا عدتهم إلا فتنة للذين كفروا ... ... ... | ٣١ | ك المدثر | ٧٤ |
| | بل الذين كفروا يكذبون ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| | بل الذين كفروا فى تكذيب ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك البروج | ٨٥ |
| | والذين كفروا بآياتنا هم أصحاب المشئمة ... ... | ١٩ | ك البلد | ٩٠ |
| | لم يكن الذين كفروا من أهل الكتاب والمشركين منفكين | ١ | م البينة | ٩٨ |
| | إن الذين كفروا من أهل الكتاب والمشركين فى نار جهنم | ٦ | م « | ٩٨ |
| أَكْفُرُ: | قال هـذا من فضل ربى ليبلونى أأشكر أم أكفر | ٤٠ | ك النمل | ٢٧ |
| (٢) | تدعوننى لأكفر بالله وأشرك به ماليس لى به علم ... | ٤٢ | ك غافر | ٤٠ |
| تَكْفُرْ: | وما يعلمان من أحد حتى يقولا إنما نحن فتنة فلا تكفر | ١٠٢ | م البقرة | ٢ |
| تَكْفُرُوا: | وإن تكفروا فإن لله ما فى السموات وما فى الأرض | ١٣١ | م النساء | ٤ |
| (٤) | وإن تكفروا فإن لله ما فى السموات والأرض ... | ١٧٠ | م « | ٤ |
| | وقال موسى إن تكفروا أنتم ومن فى الأرض جميعا فإن الله | | | |
| | لغنى حميد ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | إن تكفروا فإن الله غنى عنكم ... ... ... ... ... | ٧ | ك الزمر | ٣٩ |
| تَكْفُرُونَ: | كيف تكفرون بالله وكنتم أمواتا فأحياكم ... | ٢٨ | م البقرة | ٢ |
| (١٤) | أفتؤمنون ببعض الكتاب وتكفرون ببعض .. ... | ٨٥ | م « | ٢ |
| | يأهل الكتاب لم تكفرون بآيات الله وأنتم تشهدون ... | ٧٠ | م آل عمران | ٣ |
| | لم تكفرون بآيات الله والله شهيد على ما تعملون ... | ٩٨ | م « | ٣ |
| | وكيف تكفرون وأنتم تتلى عليكم آيات الله وفيكم رسوله | ١٠١ | م « | ٣ |
| | أكفرتم بعد إيمانكم فذوقوا العذاب بما كنتم تكفرون | ١٠٦ | م « | ٣ |
| | ودوا لو تكفرون كما كفروا فتكونون سواء ... ... | ٨٩ | م النساء | ٤ |
| | قالوا بلى وربنا قال فذوقوا العذاب بما كنتم تكفرون | ٣٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | فذوقوا العذاب بما كنتم تكفرون ... ... ... ... | ٣٥ | ك الأنفال | ٨ |
| | آصلوها اليوم بما كنتم تكفرون ... ... ... ... ... | ٦٤ | ك يس | ٣٦ |
| | إذ تدعون إلى الإيمان فتكفرون ... ... ... ... | ١٠ | ك غافر | ٤٠ |
| | قل أئنكم لتكفرون بالذى خلق الأرض فى يومين ... | ٩ | ك فصلت | ٤١ |
| | قالوا بلى وربنا قال فذوقوا العذاب بما كنتم تكفرون | ٣٤ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | ويبسطوا إليكم أيديهم وألسنتهم بالسوء وودوا لو تكفرون | ٢ | م الممتحنة | ٦٠ |
| تَكْفُرُونِ: | فاذكرونى أذكركم واشكروا لى ولا تكفرون ... | ١٥٢ | م البقرة | ٢ |
| نَكْفُرُ: | ويقولون نؤمن ببعض ونكفر ببعض ... ... ... | ١٥٠ | م النساء | ٤ |
| (٢) | إذ تأمروننا أن نكفر بالله ونجعل له أندادا ... ... | ٣٣ | ك سبإ | ٣٤ |
| يَكْفُرُ: | وما يكفر بها إلا الفاسقون ... ... ... ... ... | ٩٩ | م البقرة | ٢ |
| (١٢) | ومن يكفر به فأولئك هم الخاسرون ... ... ... ... | ١٢١ | م « | ٢ |
| | فمن يكفر بالطاغوت ويؤمن بالله فقد استمسك | | | |
| | بالعروة الوثقى ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥٦ | م « | ٢ |
| | ومن يكفر بآيات الله فإن الله سريع الحساب ... ... | ١٩ | م آل عمران | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَكْفُرْ: | ومن يكفر بالله وملائكته وكتبه ورسله واليوم الآخر | | | |
| | فقد ضل ضلالا بعيدا ... ... ... ... ... ... | ١٣٦ | م النساء | ٤ |
| | ومن يكفر بالإيمان فقد حبط عمله ... ... ... ... | ٥ | م المائدة | ٥ |
| | فمن يكفر بعد منكم فإنى أعذبه عذابا لا أعذبه أحدا من العالمين | ١١٥ | م « | ٥ |
| | فإن يكفر بها هؤلاء فقد وكلنا بها قوما ليسوا بها بكافرين | ٨٩ | ك الأنعام | ٦ |
| | ومن يكفر به من الأحزاب فالنار موعده ... ... ... | ١٧ | م هود | ١١ |
| | فمن شاء فليؤمن ومن شاء فليكفر ... ... ... ... | ٢٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | ثم يوم القيامة يكفر بعضكم ببعض ويلعن بعضكم بعضا | ٢٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | لجعلنا لمن يكفر بالرحمن لبيوتهم سقفا من فضة ... ... | ٣٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| يَكْفُرُوا: | بئسما اشتروا به أنفسهم أن يكفروا بما أنزل الله | ٩٠ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | يريدون أن يتحاكموا إلى الطاغوت وقد أمروا أن يكفروا به | ٦٠ | م النساء | ٤ |
| | ليكفروا بما آتيناهم فتمتعوا فسوف تعلمون ... ... | ٥٥ | ك النحل | ١٦ |
| | أولم يكفروا بما أوتى موسى من قبل ... ... ... | ٤٨ | ك القصص | ٢٨ |
| | ليكفروا بما آتيناهم وليتمتعوا فسوف يعلمون ... | ٦٦ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ليكفروا بما آتيناهم فتمتعوا فسوف تعلمون ... ... | ٣٤ | ك الروم | ٣٠ |
| يَكْفُرُونَ: | ذلك بأنهم كانوا يكفرون بآيات الله ... ... | ٦١ | م البقرة | ٢ |
| (١٤) | قالوا نؤمن بما أنزل علينا ويكفرون بما وراءه | ٩١ | م « | ٢ |
| | إن الذين يكفرون بآيات الله ويقتلون النبيين بغير حق | ٢١ | م آل عمران | ٣ |
| | ذلك بأنهم كانوا يكفرون بآيات الله ... ... ... | ١١٢ | م « | ٣ |
| | إن الذين يكفرون بالله ورسله ويريدون أن يفرقوا | | | |
| | بين الله ورسله ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٠ | م النساء | ٤ |
| | لهم شراب من حميم وعذاب أليم بما كانوا يكفرون | ٧٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | لهم شراب من حميم وعذاب أليم بما كانوا يكفرون | ٤ | ك يونس | ١٠ |
| | ثم نذيقهم العذاب الشديد بما كانوا يكفرون ... | ٧٠ | ك « | ١٠ |
| | لتتلوا عليهم الذى أوحينا إليك وهم يكفرون بالرحمن | ٣٠ | م الرعد | ١٣ |
| | أفبالباطل يؤمنون وبنعمة الله هم يكفرون ... ... | ٧٢ | ك النحل | ١٦ |
| | كلا سيكفرون بعبادتهم ويكونون عليهم ضدا ... ... | ٨٢ | ك مريم | ١٩ |
| | أفبالباطل يؤمنون وبنعمة الله يكفرون ... ... ... | ٦٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ولئن أرسلنا ريحا فرأوه مصفرا لظلوا من بعده يكفرون | ٥١ | ك الروم | ٣٠ |
| | ويوم القيامة يكفرون بشرككم ولا ينبئك مثل خبير | ١٤ | ك فاطر | ٣٥ |
| أَكْفُرْ: | كمثل الشيطان إذ قال للإنسان اكفر ... ... ... | ١٦ | م الحشر | ٥٩ |
| آكْفُرُوا: | آمنوا بالذى أنزل على الذين آمنوا وجه النهار | | | |
| | واكفروا آخره ... ... ... ... ... ... ... | ٧٢ | م آل عمران | ٣ |
| كُفِرَ: | تجرى بأعيننا جزاء لمن كان كفر .. ... ... ... | ١٤ | ك القمر | ٥٤ |
| يُكْفَرُ: | إذا سمعتم آيات الله يكفر بها ويستهزأ بها فلا | | | |
| | تقعدوا معهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٠ | م النساء | ٤ |
| يُكْفَرُوهُ: | وما يفعلوا من خير فلن يكفروه والله عليم بالمتقين | ١١٥ | م آل عمران | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَفَّرَ: | كفر عنهم سيئاتهم وأصلح بالهم ... ... ... ... | ٢ | م محمد | ٤٧ |
| كَفَّرْنَا: | لكفرنا عنهم سيئاتهم ولأدخلناهم جنات النعيم | ٦٥ | م المائدة | ٥ |
| لَأُكَفِّرَنَّ: | لأكفرن عنهم سيئاتهم ولأدخلنهم جنات تجرى | | | |
| (٢) | من تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... | ١٩٥ | م آل عمران | ٣ |
| | لأكفرن عنكم سيئاتكم ولأدخلنكم جنات تجرى من | | | |
| | تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... ... | ١٢ | م المائدة | ٥ |
| نُكَفِّرْ: | إن تجتنبوا كبائر ما تنهون عنه نكفر عنكم سيئاتكم | ٣١ | م النساء | ٤ |
| لَنُكَفِّرَنَّ: | والذين آمنوا وعملوا الصالحات لنكفرن عنهم | | | |
| | سيئاتهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | م العنكبوت | ٢٩ |
| يُكَفِّرُ: | ويكفر عنكم من سيئاتكم والله بما تعملون خبير ... | ٢٧١ | م البقرة | ٢ |
| (٧) | إن تتقوا الله يجعل لكم فرقانا ويكفر عنكم سيئاتكم | ٢٩ | م الأنفال | ٨ |
| | ليكفر الله عنهم أسوأ الذى عملوا ويجزيهم أجرهم | ٣٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ويكفر عنهم سيئاتهم وكان ذلك عند الله فوزا عظيما | ٥ | م الفتح | ٤٨ |
| | ومن يؤمن بالله ويعمل صالحا يكفر عنه سيئاته ... | ٩ | م التغابن | ٦٤ |
| | ومن يتق الله يكفر عنه سيئاته ويعظم له أجرا ... ... | ٥ | م الطلاق | ٦٥ |
| | عسى ربكم أن يكفر عنكم سيئاتكم ويدخلكم جنات | ٨ | م التحريم | ٦٦ |
| كَفِّرْ: | ربنا فاغفر لنا ذنوبنا وكفر عنا سيئاتنا وتوفنا مع الأبرار | ١٩٣ | م آل عمران | ٣ |
| أَكْفَرَهُ: | قتل الإنسان ما أكفره ... ... ... ... ... | ١٧ | ك عبس | ٨٠ |
| الْكُفْرُ: | ومن يتبدل الكفر بالإيمان فقد ضل سواء السبيل | ١٠٨ | م البقرة | ٢ |
| (١٧) | وصد عن سبيل الله وكفر به والمسجد الحرام ... ... | ٢١٧ | م « | ٢ |
| | فلما أحس عيسى منهم الكفر قال من أنصارى إلى الله | ٥٢ | م آل عمران | ٣ |
| | أيأمركم بالكفر بعد إذ أنتم مسلمون ... ... ... ... | ٨٠ | م « | ٣ |
| | هم للكفر يومئذ أقرب منهم للإيمان ... ... ... ... | ١٦٧ | م « | ٣ |
| | ولا يحزنك الذين يسارعون فى الكفر ... ... ... ... | ١٧٦ | م « | ٣ |
| | إن الذين اشتروا الكفر بالإيمان لن يضروا الله شيئا | ١٧٧ | م « | ٣ |
| | يأيها الرسول لا يحزنك الذين يسارعون فى الكفر ... | ٤١ | م المائدة | ٥ |
| | وقد دخلوا بالكفر وهم قد خرجوا به ... ... ... ... | ٦١ | م « | ٥ |
| | فقاتلوا أئمة الكفر إنهم لا أيمان لهم لعلهم ينتهون ... | ١٢ | م التوبة | ٩ |
| | ما كان للمشركين أن يعمروا مساجد الله شاهدين على | | | |
| | أنفسهم بالكفر ... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | م « | ٩ |
| | لا تتخذوا آباءكم وإخوانكم أولياء إن استحبوا الكفر | | | |
| | على الإيمان ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | م « | ٩ |
| | إنما النسىء زيادة فى الكفر يضل به الذين كفروا | ٣٧ | م « | ٩ |
| | يحلفون بالله ما قالوا ولقد قالوا كلمة الكفر ... ... | ٧٤ | م « | ٩ |
| | ولكن من شرح بالكفر صدرا فعليهم غضب من الله | ١٠٦ | ك النحل | ١٦ |
| | إن تكفروا فإن الله غنى عنكم ولا يرضى لعباده الكفر | ٧ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وكره إليكم الكفر والفسوق والعصيان ... ... ... | ٧ | م الحجرات | ٤٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كُفْرًا: | إن الذين كفروا بعد إيمانهم ثم ازدادوا كفرا لن | | | |
| (٨) | تقبل توبتهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩٠ | م آل عمران | ٣ |
| | ثم كفروا ثم ازدادوا كفرا لم يكن الله ليغفر لهم ... | ١٣٧ | م النساء | ٤ |
| | وليزيدن كثيرا منهم ما أنزل إليك من ربك طغيانا وكفرا | ٦٤ | م المائدة | ٥ |
| | وليزيدن كثيرا منهم ما أنزل إليك من ربك طغيانا وكفرا | ٦٨ | م « | ٥ |
| | الأعراب أشد كفرا ونفاقا ... ... ... ... ... ... | ٩٧ | م التوبة | ٩ |
| | والذين اتخذوا مسجدا ضرارا وكفرا ... ... ... | ١٠٧ | م « | ٩ |
| | ألم تر إلى الذين بدلوا نعمة الله كفرا ... ... ... | ٢٨ | م إبراهيم | ١٤ |
| | فخشينا أن يرهقهما طغيانا وكفرا ... ... ... ... | ٨٠ | ك الكهف | ١٨ |
| بِكُفْرِكَ: | قل تمتع بكفرك قليلا إنك من أصحاب النار ... | ٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| كُفْرُهُ: | من كفر فعليه كفره ومن عمل صالحا فلأنفسهم يمهدون | ٤٤ | ك الروم | ٣٠ |
| (٣) | ومن كفر فلا يحزنك كفره ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك لقمان | ٣١ |
| | فمن كفر فعليه كفره ... ... ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك فاطر | ٣٥ |
| كُفْرِهِمْ: | بل لعنهم الله بكفرهم فقليلا ما يؤمنون ... ... | ٨٨ | م البقرة | ٢ |
| (٨) | قالوا سمعنا وعصينا وأشربوا فى قلوبهم العجل بكفرهم | ٩٣ | م « | ٢ |
| | ولكن لعنهم الله بكفرهم فلا يؤمنون إلا قليلا ... ... | ٤٦ | م النساء | ٤ |
| | فبما نقضهم ميثاقهم وكفرهم بآيات الله ... ... ... | ١٥٥ | م « | ٤ |
| | بل طبع الله عليها بكفرهم فلا يؤمنون إلا قليلا... ... | ١٥٥ | م « | ٤ |
| | وبكفرهم وقولهم على مريم بهتانا عظيما... ... ... | ١٥٦ | م « | ٤ |
| | ولا يزيد الكافرين كفرهم عند ربهم إلا مقتا... ... | ٣٩ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ولا يزيد الكافرين كفرهم إلا خسارا ... ... ... | ٣٩ | ك « | ٣٥ |
| كَافِرٌ: | وآمنوا بما أنزلت مصدقا لما معكم ولا تكونوا أول كافر به | ٤١ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | ومن يرتدد منكم عن دينه فيمت وهو كافر فأولئك | | | |
| | حبطت أعمالهم... ... ... ... ... ... ... ... | ٢١٧ | م « | ٢ |
| | وكان الكافر على ربه ظهيرا ... ... ... ... ... | ٥٥ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | هو الذى خلقكم فمنكم كافر ومنكم مؤمن ... ... ... | ٢ | م التغابن | ٦٤ |
| | ويقول الكافر يا ليتنى كنت ترابا... ... ... ... ... | ٤٠ | ك النبأ | ٧٨ |
| الْكَافِرُونَ: | والكافرون هم الظالمون ... ... ... ... ... | ٢٥٤ | م البقرة | ٢ |
| (٣٦) | أولئك هم الكافرون حقا ... ... ... ... ... ... | ١٥١ | م النساء | ٤ |
| | ومن لم يحكم بما أنزل الله فأولئك هم الكافرون... ... | ٤٤ | م المائدة | ٥ |
| | وهم بالآخرة كافرون... ... ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | قال الذين استكبروا إنا بالذى آمنتم به كافرون... ... | ٧٦ | ك « | ٧ |
| | ويأبى الله إلا أن يتم نوره ولو كره الكافرون ... ... | ٣٢ | م التوبة | ٩ |
| | وتزهق أنفسهم وهم كافرون ... ... ... ... ... | ٥٥ | م « | ٩ |
| | وتزهق أنفسهم وهم كافرون ... ... ... ... ... | ٨٥ | م « | ٩ |
| | فزادتهم رجسا إلى رجسهم وماتوا وهم كافرون ... | ١٢٥ | م « | ٩ |
| | قال الكافرون إن هذا لساحر مبين ... ... ... ... | ٢ | ك يونس | ١٠ |
| | وهم بالآخرة هم كافرون ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك هود | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الْكَافِرُونَ | : وهم بالآخرة هم كافرون ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك يوسف | ١٢ |
| | إنه لا ييأس من روح الله إلا القوم الكافرون ... | ٨٧ | ك « | ١٢ |
| | يعرفون نعمة الله ثم ينكرونها وأكثرهم الكافرون ... | ٨٣ | ك النحل | ١٦ |
| | أهذا الذى يذكر آلهتكم وهم بذكر الرحمن هم كافرون | ٣٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | فإنما حسابه عند ربه إنه لا يفلح الكافرون ... ... | ١١٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | قالوا سحران تظاهرا وقالوا إنا بكل كافرون ... ... | ٤٨ | ك القصص | ٢٨ |
| | لولا أن من الله علينا لخسف بنا ويكأنه لا يفلح الكافرون | ٨٢ | ك « | ٢٨ |
| | وما يجحد بآياتنا إلا الكافرون ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وإن كثيرا من الناس بلقاء ربهم لكافرون ... ... | ٨ | ك الروم | ٣٠ |
| | بل هم بلقاء ربهم كافرون ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك السجدة | ٣٢ |
| | إلا قال مترفوها إنا بما أرسلتم به كافرون ... ... ... | ٣٤ | ك سبإ | ٣٤ |
| | وقال الكافرون هذا ساحر كذاب ... ... ... ... | ٤ | ك ص | ٣٨ |
| | فادعوا الله مخلصين له الدين ولو كره الكافرون ... | ١٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | سنة الله التى قد خلت فى عباده وخسر هنالك الكافرون | ٨٥ | ك « | ٤٠ |
| | الذين لا يؤتون الزكاة وهم بالآخرة هم كافرون... ... | ٧ | ك فصلت | ٤١ |
| | قالوا لو شاء ربنا لأنزل ملائكة فإنا بما أرسلتم به كافرون | ١٤ | ك « | ٤١ |
| | والكافرون لهم عذاب شديد ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك الشورى | ٤٢ |
| | قالوا إنا بما أرسلتم به كافرون ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ولما جاءهم الحق قالوا هذا سحر وإنا به كافرون ... | ٣٠ | ك « | ٤٣ |
| | فقال الكافرون هذا شىء عجيب ... ... ... ... ... | ٢ | ك ق | ٥٠ |
| | مهطعين إلى الداع يقول الكافرون هذا يوم عسر ... | ٨ | ك القمر | ٥٤ |
| | والله متم نوره ولو كره الكافرون ... ... ... ... ... | ٨ | م الصف | ٦١ |
| | إن الكافرون إلا فى غرور ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك الملك | ٦٧ |
| | وليقول الذين فى قلوبهم مرض والكافرون ماذا أراد الله بهذا مثلا ... ... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك المدثر | ٧٤ |
| | قل يأيها الكافرون . لا أعبد ما تعبدون ... ... ... | ١ | ك الكافرون | ١٠٩ |
| الْكَافِرِينَ | : والله محيط بالكافرين ... ... ... ... ... ... | ١٩ | م البقرة | ٢ |
| (٩٣) | فاتقوا النار التى وقودها الناس والحجارة أعدت للكافرين | ٢٤ | م « | ٢ |
| | فسجدوا إلا إبليس أبى واستكبر وكان من الكافرين | ٣٤ | م « | ٢ |
| | فلما جاءهم ما عرفوا كفروا به فلعنة الله على الكافرين | ٨٩ | م « | ٢ |
| | فباءو بغضب على غضب وللكافرين عذاب مهين ... | ٩٠ | م « | ٢ |
| | فإن الله عدو للكافرين... ... ... ... ... ... ... | ٩٨ | م « | ٢ |
| | وقولوا انظرنا واسمعوا وللكافرين عذاب أليم... ... | ١٠٤ | م « | ٢ |
| | فإن قاتلوكم فاقتلوهم كذلك جزاء الكافرين ... ... | ١٩١ | م « | ٢ |
| | أفرغ علينا صبرا وثبت أقدامنا وانصرنا على القوم الكافرين | ٢٥٠ | م « | ٢ |
| | لا يقدرون على شىء مما كسبوا والله لا يهدى القوم الكافرين | ٢٦٤ | م « | ٢ |
| | أنت مولانا فانصرنا على القوم الكافرين ... ... ... | ٢٨٦ | م « | ٢ |
| | لا يتخذ المؤمنون الكافرين أولياء من دون المؤمنين... | ٢٨ | م آل عمران | ٣ |
| الْكَافِرِينَ | : فإن تولوا فإن الله لا يحب الكافرين ... ... ... | ٣٢ | م آل عمران | ٣ |
| | يردوكم بعد إيمانكم كافرين... ... ... ... ... ... | ١٠٠ | م « | ٣ |
| | واتقوا النار التى أعدت للكافرين ... ... ... ... | ١٣١ | م « | ٣ |
| | وليمحص الله الذين آمنوا ويمحق الكافرين ... ... | ١٤١ | م « | ٣ |
| | وثبت أقدامنا وانصرنا على القوم الكافرين ... ... | ١٤٧ | م « | ٣ |
| | وأعتدنا للكافرين عذابا مهينا ... ... ... ... ... | ٣٧ | م النساء | ٤ |
| | إن الكافرين كانوا لكم عدوا مبينا ... ... ... ... | ١٠١ | م « | ٤ |
| | وخذوا حذركم إن الله أعد للكافرين عذابا مهينا ... | ١٠٢ | م « | ٤ |
| | الذين يتخذون الكافرين أولياء من دون المؤمنين ... | ١٣٩ | م « | ٤ |
| | إن الله جامع المنافقين والكافرين فى جهنم جميعا ... | ١٤٠ | م « | ٤ |
| | وإن كان للكافرين نصيب قالوا ألم نستحوذ عليكم ... | ١٤١ | م « | ٤ |
| | ولن يجعل الله للكافرين على المؤمنين سبيلا ... ... | ١٤١ | م « | ٤ |
| | لا تتخذوا الكافرين أولياء من دون المؤمنين ... ... | ١٤٤ | م « | ٤ |
| | أولئك هم الكافرون حقا وأعتدنا للكافرين عذابا مهينا | ١٥١ | م « | ٤ |
| | وأعتدنا للكافرين منهم عذابا أليما ... ... ... ... | ١٦١ | م « | ٤ |
| | أذلة على المؤمنين أعزة على الكافرين ... ... ... | ٥٤ | م المائدة | ٥ |
| | والله يعصمك من الناس إن الله لا يهدى القوم الكافرين | ٦٧ | م « | ٥ |
| | فلا تأس على القوم الكافرين ... ... ... ... ... | ٦٨ | م « | ٥ |
| | قد سألها قوم من قبلكم ثم أصبحوا بها كافرين ... | ١٠٢ | م « | ٥ |
| | فإن يكفر بها هؤلاء فقد وكلنا بها قوما ليسوا بها بكافرين | ٨٩ | ك الأنعام | ٦ |
| | كذلك زين للكافرين ما كانوا يعملون ... ... ... | ١٢٢ | ك « | ٦ |
| | وشهدوا على أنفسهم أنهم كانوا كافرين ... ... ... | ١٣٠ | ك « | ٦ |
| | قالوا ضلوا عنا وشهدوا على أنفسهم أنهم كانوا كافرين | ٣٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | قالوا إن الله حرمهما على الكافرين ... ... ... ... | ٥٠ | ك « | ٧ |
| | ونصحت لكم فكيف آسى على قوم كافرين ... ... | ٩٣ | ك « | ٧ |
| | كذلك يطبع الله على قلوب الكافرين... ... ... ... | ١٠١ | ك « | ٧ |
| | ويريد الله أن يحق الحق بكلماته ويقطع دابر الكافرين | ٧ | م الأنفال | ٨ |
| | ذلكم فذوقوه وأن للكافرين عذاب النار... ... ... | ١٤ | م « | ٨ |
| | ذلكم وأن الله موهن كيد الكافرين ... ... ... ... | ١٨ | م « | ٨ |
| | واعلموا أنكم غير معجزى الله وأن الله مخزى الكافرين | ٢ | م التوبة | ٩ |
| | وعذب الذين كفروا وذلك جزاء الكافرين ... ... | ٢٦ | م « | ٩ |
| | زين لهم سوء أعمالهم والله لا يهدى القوم الكافرين | ٣٧ | م « | ٩ |
| | ألا فى الفتنة سقطوا وإن جهنم لمحيطة بالكافرين ... | ٤٩ | م « | ٩ |
| | ونجنا برحمتك من القوم الكافرين... ... ... ... | ٨٦ | ك يونس | ١٠ |
| | يابنى اركب معنا ولا تكن مع الكافرين ... ... ... | ٤٢ | ك هود | ١١ |
| | وما دعاء الكافرين إلا فى ضلال ... ... ... ... | ١٤ | م الرعد | ١٣ |
| | تلك عقبى الذين اتقوا وعقبى الكافرين النار... ... | ٣٥ | م « | ١٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الْكَافِرِينَ: | وويل للكافرين من عذاب شديد ... ... | ٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | قال الذين أوتوا العلم إن الخزى اليوم والسوء على الكافرين | ٢٧ | ك النحل | ١٦ |
| | وأن الله لا يهدى القوم الكافرين ... ... ... ... | ١٠٧ | ك « | ١٦ |
| | وجعلنا جهنم للكافرين حصيرا ... ... ... ... ... | ٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وعرضنا جهنم يومئذ للكافرين عرضا ... ... ... | ١٠٠ | م الكهف | ١٨ |
| | إنا أعتدنا جهنم للكافرين نزلا ... ... ... ... ... | ١٠٢ | ك « | ١٨ |
| | ألم تر أنا أرسلنا الشياطين على الكافرين تؤزهم أزا | ٨٣ | ك مريم | ١٩ |
| | فأمليت للكافرين ثم أخذتهم فكيف كان نكير ... | ٤٤ | م الحج | ٢٢ |
| | الملك يومئذ الحق للرحمن وكان يوما على الكافرين عسيرا | ٢٦ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | فلا تطع الكافرين وجاهدهم به جهادا كبيرا ... ... | ٥٢ | ك « | ٢٥ |
| | وفعلت فعلتك التى فعلت وأنت من الكافرين ... ... | ١٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | إنها كانت من قوم كافرين ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك النمل | ٢٧ |
| | فلا تكونن ظهيرا للكافرين ... ... ... ... ... ... | ٨٦ | ك القصص | ٢٨ |
| | يستعجلونك بالعذاب وإن جهنم لمحيطة بالكافرين ... | ٥٤ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | أليس فى جهنم مثوى للكافرين ... ... ... ... ... | ٦٨ | ك « | ٢٩ |
| | ولم يكن لهم من شركائهم شفعاء وكانوا بشركائهم كافرين | ١٣ | ك الروم | ٣٠ |
| | إنه لا يحب الكافرين ... ... ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك « | ٣٠ |
| | يأيها النبى اتق الله ولا تطع الكافرين والمنافقين ... | ١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ليسئل الصادقين عن صدقهم وأعد للكافرين عذابا أليما | ٨ | م « | ٣٣ |
| | ولا تطع الكافرين والمنافقين ودع أذاهم... ... ... | ٤٨ | م « | ٣٣ |
| | إن الله لعن الكافرين وأعد لهم سعيرا ... ... ... | ٦٤ | م « | ٣٣ |
| | ولا يزيد الكافرين كفرهم عند ربهم إلا مقتا ... | ٣٩ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ولا يزيد الكافرين كفرهم إلا خسارا ... ... ... | ٣٩ | ك « | ٣٥ |
| | لينذر من كان حيا ويحق القول على الكافرين ... | ٧٠ | ك يس | ٣٦ |
| | إلا إبليس استكبر وكان من الكافرين ... ... ... | ٧٤ | ك ص | ٣٨ |
| | أليس فى جهنم مثوى للكافرين ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك الزمر | ٣٩ |
| | فكذبت بها واستكبرت وكنت من الكافرين ... ... | ٥٩ | ك « | ٣٩ |
| | قالوا بلى ولكن حقت كلمة العذاب على الكافرين ... | ٧١ | ك « | ٣٩ |
| | واستحبوا العمى وما كيد الكافرين إلا فى ضلال ... | ٢٥ | ك غافر | ٤٠ |
| | قالوا فادعوا وما دعاء الكافرين إلا فى ضلال ... | ٥٠ | ك « | ٤٠ |
| | كذلك يضل الله الكافرين ... ... ... ... ... ... | ٧٤ | ك « | ٤٠ |
| | وإذا حشر الناس كانوا لهم أعداء وكانوا بعبادتهم كافرين | ٦ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | دمر الله عليهم وللكافرين أمثالها ... ... ... ... | ١٠ | م محمد | ٤٧ |
| | ذلك بأن الله مولى الذين آمنوا وأن الكافرين لا مولى لهم | ١١ | م « | ٤٧ |
| | ومن لم يؤمن بالله ورسوله فإنا أعتدنا للكافرين سعيرا | ١٣ | م الفتح | ٤٨ |
| | وتلك حدود الله وللكافرين عذاب أليم ... ... ... | ٤ | م المجادلة | ٥٨ |
| | ولقد أنزلنا آيات بينات وللكافرين عذاب مهين ... | ٥ | م « | ٥٨ |
| | فمن يجير الكافرين من عذاب أليم ... ... ... | ٢٨ | ك الملك | ٦٧ |
| | وإنه لحسرة على الكافرين ... ... ... ... ... ... | ٥٠ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | سأل سائل بعذاب واقع . للكافرين ليس له دافع | ٢ | ك المعارج | ٧٠ |
| | وقال نوح رب لا تذر على الأرض من الكافرين ديارا | ٢٦ | ك نوح | ٧١ |
| | فذلك يومئذ يوم عسير . على الكافرين غير يسير ... | ١٠ | ك المدثر | ٧٤ |
| | إنا أعتدنا للكافرين سلاسلا وأغلالا وسعيرا ... | ٤ | م الإنسان | ٧٦ |
| | فمهل الكافرين أمهلهم رويدا ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الطارق | ٨٦ |
| الْكَفَرَةُ: | أولئك هم الكفرة الفجرة ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك عبس | ٨٠ |
| الْكُفَّارُ: | إن الذين كفروا وماتوا وهم كفار أولئك | | | |
| (١٩) | عليهم لعنة الله ... ... ... ... ... ... ... | ١٦١ | م البقرة | ٢ |
| | إن الذين كفروا وماتوا وهم كفار فلن يقبل من | | | |
| | أحدهم ملء الأرض ذهبا ولو افتدى به ... ... | ٩١ | م آل عمران | ٣ |
| | ولا الذين يموتون وهم كفار أولئك أعتدنا لهم | | | |
| | عذابا أليما ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٨ | م النساء | ٤ |
| | لا تتخذوا الذين اتخذوا دينكم هزوا ولعبا من الذين | | | |
| | أوتوا الكتاب من قبلكم والكفار أولياء ... ... | ٥٧ | م المائدة | ٥ |
| | وعد الله المنافقين والمنافقات والكفار نار جهنم ... | ٦٨ | م التوبة | ٩ |
| | يأيها النبى جاهد الكفار والمنافقين واغلظ عليهم ... | ٧٣ | م « | ٩ |
| | ولا يطئون موطئا يغيظ الكفار ولا ينالون من عدو | | | |
| | نيلا إلا كتب لهم به عمل صالح ... ... ... ... | ١٢٠ | م « | ٩ |
| | يأيها الذين آمنوا قاتلوا الذين يلونكم من الكفار ... | ١٢٣ | م « | ٩ |
| | وسيعلم الكفار لمن عقبى الدار ... ... ... ... ... | ٤٢ | م الرعد | ١٣ |
| | إن الذين كفروا وصدوا عن سبيل الله ثم ماتوا وهم كفار | | | |
| | فلن يغفر الله لهم ... ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | م محمد | ٤٧ |
| | محمد رسول الله والذين معه أشداء على الكفار ... ... | ٢٩ | م الفتح | ٤٨ |
| | فاستوى على سوقه يعجب الزراع ليغيظ بهم الكفار | ٢٩ | م « | ٤٨ |
| | كمثل غيث أعجب الكفار نباته ثم يهيج فتراه مصفرا... | ٢٠ | م الحديد | ٥٧ |
| | فإن علمتموهن مؤمنات فلا ترجعوهن إلى الكفار ... | ١٠ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | وإن فاتكم شىء من أزواجكم إلى الكفار فعاقبتم ... | ١١ | م « | ٦٠ |
| | قد يئسوا من الآخرة كما يئس الكفار من أصحاب القبور | ١٣ | م « | ٦٠ |
| | يأيها النبى جاهد الكفار والمنافقين واغلظ عليهم ... | ٩ | م التحريم | ٦٦ |
| | فاليوم الذين آمنوا من الكفار يضحكون ... ... ... | ٣٤ | ك المطففين | ٨٣ |
| | هل ثوب الكفار ما كانوا يفعلون ... ... ... ... | ٣٦ | ك « | ٨٣ |
| كُفَّارًا: | ود كثير من أهل الكتاب لو يردونكم من بعد | | | |
| | إيمانكم كفارا ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٩ | م البقرة | ٢ |
| أَكُفَّارُكُمْ: | أكفاركم خير من أولئكم أم لكم براءة فى الزبر | ٤٣ | ك القمر | ٥٤ |
| كَافِرَةٌ: | فئة تقاتل فى سبيل الله وأخرى كافرة ... ... ... | ١٣ | م آل عمران | ٣ |
| الْكَوَافِرِ: | ولا تمسكوا بعصم الكوافر وسئلوا ما أنفقتم ... | ١٠ | م الممتحنة | ٦٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كُفُورًا: | فأبى أكثر الناس إلا كفورا ... ... ... ... | ٨٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٣) | وجعل لهم أجلا لاريب فيه فأبى الظالمون إلا كفورا | ٩٩ | ك « | ١٧ |
| | ولقد صرفناه بينهم ليذكروا فأبى أكثر الناس إلا كفورا | ٥٠ | ك الفرقان | ٢٥ |
| كَفُورٌ: | إنه ليئوس كفور ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك هود | ١١ |
| (٨) | إن الله لا يحب كل خوان كفور ... ... ... ... | ٣٨ | م الحج | ٢٢ |
| | وهو الذى أحياكم ثم يميتكم ثم يحييكم إن الإنسان لكفور | ٦٦ | م « | ٢٢ |
| | وما يجحد بآياتنا إلا كل ختار كفور ... ... ... ... | ٣٢ | ك لقمان | ٣١ |
| | ذلك جزيناهم بما كفروا وهل نجازى إلا الكفور ... | ١٧ | ك سبإ | ٣٤ |
| | ولا يخفف عنهم من عذابها كذلك نجزى كل كفور | ٣٦ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وإن تصبهم سيئة بما قدمت أيديهم فإن الإنسان كفور | ٤٨ | ك الشورى | ٤٢ |
| | وجعلوا له من عباده جزءا إن الإنسان لكفور مبين | ١٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| كَفُورًا: | وكان الشيطان لربه كفورا ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٤) | فلما نجاكم إلى البر أعرضتم وكان الإنسان كفورا ... | ٦٧ | ك « | ١٧ |
| | إنا هديناه السبيل إما شاكرا وإما كفورا ... ... | ٣ | م الإنسان | ٧٦ |
| | فاصبر لحكم ربك ولا تطع منهم آثما أو كفورا ... | ٢٤ | م « | ٧٦ |
| كَفَّارٍ: | يمحق الله الربا ويربى الصدقات والله لا يحب كل كفار أثيم | ٢٧٦ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | وإن تعدوا نعمة الله لا تحصوها إن الإنسان لظلوم كفار | ٣٤ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | إن الله لا يهدى من هو كاذب كفار ... ... ... | ٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ألقيا فى جهنم كل كفار عنيد ... ... ... ... | ٢٤ | ك ق | ٥٠ |
| كَفَّارًا: | إنك إن تذرهم يضلوا عبادك ولا يلدوا إلا فاجرا كفارا | ٢٧ | ك نوح | ٧١ |
| كَفَّارَةٌ: | والجروح قصاص فمن تصدق به فهو كفارة له ... | ٤٥ | م المائدة | ٥ |
| (٣) | ذلك كفارة أيمانكم إذا حلفتم ... ... ... ... | ٨٩ | م « | ٥ |
| | أو كفارة طعام مساكين أو عدل ذلك صياما ... ... | ٩٥ | م « | ٥ |
| كَفَّارَتُهُ: | فكفارته إطعام عشرة مساكين ... ... ... ... | ٨٩ | م « | ٥ |
| كُفْرَانَ: | فمن يعمل من الصالحات وهو مؤمن فلا كفران لسعيه | ٩٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| كَافُورًا: | إن الأبرار يشربون من كأس كان مزاجها كافورا | ٥ | م الإنسان | ٧٦ |
| كَفَّ: | إذ هم قوم أن يبسطوا إليكم أيديهم فكف أيديهم عنكم | ١١ | م المائدة | ٥ |
| (٣) | فعجل لكم هذه وكف أيدى الناس عنكم ... ... ... | ٢٠ | م الفتح | ٤٨ |
| | وهو الذى كف أيديهم عنكم وأيديكم عنهم ببطن مكة | ٢٤ | م « | ٤٨ |
| كَفَفْتُ: | وإذ كففت بنى إسرائيل عنك إذ جئتهم بالبينات | ١١٠ | م المائدة | ٥ |
| يَكُفَّ: | عسى الله أن يكف بأس الذين كفروا ... ... | ٨٤ | م النساء | ٤ |
| يَكُفُّوا: | فإن لم يعتزلوكم ويلقوا إليكم السلم ويكفوا أيديهم فخذوهم | ٩١ | م « | ٤ |
| يَكُفُّونَ: | لو يعلم الذين كفروا حين لا يكفون عن وجوههم النار | ٣٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| كُفُّوا: | ألم تر إلى الذين قيل لهم كفوا أيديكم وأقيموا الصلاة | ٧٧ | م النساء | ٤ |
| كَفَّيْهِ: | لا يستجيبون لهم بشىء إلا كباسط كفيه إلى الماء | ١٤ | م الرعد | ١٣ |
| (٢) | وأحيط بثمره فأصبح يقلب كفيه على ما أنفق فيها ... | ٤٢ | ك الكهف | ١٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَافَّةً: | يأيها الذين آمنوا ادخلوا فى السلم كافة ... ... | ٢٠٨ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | وقاتلوا المشركين كافة ... ... ... ... ... ... | ٣٦ | م التوبة | ٩ |
| | كما يقاتلونكم كافة ... ... ... ... ... ... | ٣٦ | م « | ٩ |
| | وما كان المؤمنون لينفروا كافة ... ... ... ... | ١٢٢ | م « | ٩ |
| | وما أرسلناك إلا كافة للناس بشيرا ونذيرا ... ... | ٢٨ | ك سبإ | ٣٤ |
| يَكْفُلُ: | وما كنت لديهم إذ يلقون أقلامهم أيهم يكفل مريم | ٤٤ | م آل عمران | ٣ |
| يَكْفُلُهُ: | إذ تمشى أختك فتقول هل أدلكم على من يكفله | ٤٠ | ك طه | ٢٠ |
| يَكْفُلُونَهُ: | فقالت هل أدلكم على أهل بيت يكفلونه لكم | ١٢ | ك القصص | ٢٨ |
| كَفَّلَهَا: | وأنبتها نباتا حسنا وكفلها زكريا... ... ... ... | ٣٧ | م آل عمران | ٣ |
| أَكْفِلْنِيهَا: | فقال أكفلنيها وعزنى فى الخطاب... ... ... | ٢٣ | ك ص | ٣٨ |
| كِفْلٌ: | ومن يشفع شفاعة سيئة يكن له كفل منها ... ... | ٨٥ | م النساء | ٤ |
| الْكِفْلِ: | وإسمعيل وإدريس وذا الكفل كل من الصابرين | ٨٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٢) | واذكر إسمعيل واليسع وذا الكفل وكل من الأخيار | ٤٨ | ك ص | ٣٨ |
| كِفْلَيْنِ: | اتقوا الله وآمنوا برسوله يؤتكم كفلين من رحمته | ٢٨ | م الحديد | ٥٧ |
| كَفِيلًا: | وقد جعلتم الله عليكم كفيلا ... ... ... ... | ٩١ | ك النحل | ١٦ |
| كَفَى: | فإذا دفعتم إليهم أموالهم فأشهدوا عليهم وكفى بالله حسيبا | ٦ | م النساء | ٤ |
| (٢٧) | والله أعلم بأعدائكم وكفى بالله وليا ... ... ... | ٤٥ | م « | ٤ |
| | وكفى بالله نصيرا ... ... ... ... ... ... | ٤٥ | م « | ٤ |
| | انظر كيف يفترون على الله الكذب وكفى به إثما مبينا | ٥٠ | م « | ٤ |
| | فمنهم من آمن به ومنهم من صد عنه وكفى بجهنم سعيرا | ٥٥ | م « | ٤ |
| | ذلك الفضل من الله وكفى بالله عليما ... ... ... | ٧٠ | م « | ٤ |
| | وأرسلناك للناس رسولا وكفى بالله شهيدا ... ... | ٧٩ | م « | ٤ |
| | فأعرض عنهم وتوكل على الله وكفى بالله وكيلا ... | ٨١ | م « | ٤ |
| | ولله ما فى السموات وما فى الأرض وكفى بالله وكيلا | ١٣٢ | م « | ٤ |
| | أنزله بعلمه والملائكة يشهدون وكفى بالله شهيدا ... | ١٦٦ | م « | ٤ |
| | له ما فى السموات وما فى الأرض وكفى بالله وكيلا | ١٧١ | م « | ٤ |
| | فكفى بالله شهيدا بيننا وبينكم إن كنا عن عبادتكم لغافلين | ٢٩ | ك يونس | ١٠ |
| | قل كفى بالله شهيدا بينى وبينكم ومن عنده علم الكتاب | ٤٣ | م الرعد | ١٣ |
| | اقرأ كتابك كفى بنفسك اليوم عليك حسيبا ... ... | ١٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وكفى بربك بذنوب عباده خبيرا بصيرا ... ... ... | ١٧ | ك « | ١٧ |
| | إن عبادى ليس لك عليهم سلطان وكفى بربك وكيلا | ٦٥ | ك « | ١٧ |
| | قل كفى بالله شهيدا بينى وبينكم إنه كان بعباده خبيرا بصيرا | ٩٦ | ك « | ١٧ |
| | وإن كان مثقال حبة من خردل أتينا بها وكفى بنا حاسبين | ٤٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وكفى بربك هاديا ونصيرا ... ... ... ... ... | ٣١ | ك الفرقان | ٢٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَفَى | وكفى به بذنوب عباده خبيرا ... ... ... ... ... | ٥٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | قل كفى بالله بيني و بينكم شهيدا ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وتوكل على الله وكفى بالله وكيلا ... ... ... ... ... | ٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وكفى الله المؤمنين القتال وكان الله قويا عزيزا ... | ٢٥ | م » | ٣٣ |
| | ولا يخشون أحداً إلا الله وكفى بالله حسيبا ... ... | ٣٩ | م » | ٣٣ |
| | ودع أذاهم وتوكل على الله وكفى بالله وكيلا ... ... | ٤٨ | م » | ٣٣ |
| | كفى به شهيدا بيني و بينكم وهو الغفور الرحيم ... ... | ٨ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | ليظهره على الدين كله وكفى بالله شهيدا ... ... ... | ٢٨ | م الفتح | ٤٨ |
| كَفَيْنَاكَ | إنا كفيناك المستهزئين ... ... ... ... ... ... | ٩٥ | ك الحجر | ١٥ |
| يَكْفِ | أولم يكف بربك أنه على كل شيء شهيد ... ... | ٥٣ | ك فصلت | ٤١ |
| يَكْفِهِمْ | أولم يكفهم أنا أنزلنا عليك الكتاب يتلى عليهم | ٥١ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| يَكْفِيَكُمْ | ألن يكفيكم أن يمدكم ربكم بثلاثة آلاف من الملائكة ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٢٤ | م آل عمران | ٣ |
| فَسَيَكْفِيكَهُمُ | فسيكفيكهم الله وهو السميع العليم ... ... | ١٣٧ | م البقرة | ٢ |
| بِكَافٍ | أليس الله بكاف عبده ... ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| ✦✦✦ | | | | |
| يَكْلَؤُكُمْ | قل من يكلؤكم بالليل والنهار من الرحمن ... ... | ٤٢ | ك الأنبياء | ٢١ |
| ✦✦✦ | | | | |
| الْكَلْبِ | فمثله كمثل الكلب إن تحمل عليه يلهث أو تتركه يلهث | ١٧٦ | ك الأعراف | ٧ |
| كَلْبُهُمْ | وكلبهم باسط ذراعيه بالوصيد ... ... ... ... ... | ١٨ | ك الكهف | ١٨ |
| (٤) | سيقولون ثلاثة رابعهم كلبهم ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك » | ١٨ |
| | ويقولون خمسة سادسهم كلبهم ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك » | ١٨ |
| | ويقولون سبعة وثامنهم كلبهم ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك » | ١٨ |
| مُكَلِّبِينَ | وما علمتم من الجوارح مكلبين تعلمونهن مما علمكم الله | ٤ | م المائدة | ٥ |
| ✦✦✦ | | | | |
| كَالِحُونَ | تلفح وجوههم النار وهم فيها كالحون ... | ١٠٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| ✦✦✦ | | | | |
| نُكَلِّفُ | لا نكلف نفسا إلا وسعها ... ... ... ... ... | ١٥٢ | م الأنعام | ٦ |
| (٣) | والذين آمنوا وعملوا الصالحات لا نكلف نفسا إلا وسعها ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولا نكلف نفسا إلا وسعها ولدينا كتاب ينطق بالحق | ٦٢ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| يُكَلِّفُ | لا يكلف الله نفسا إلا وسعها ... ... ... ... ... | ٢٨٦ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | لا يكلف الله نفسا إلا ما آتاها ... ... ... ... ... | ٧ | م الطلاق | ٦٥ |
| تُكَلَّفُ | لا تكلف نفس إلا وسعها ... ... ... ... ... | ٢٣٣ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | فقاتل في سبيل الله لا تكلف إلا نفسك ... ... ... | ٨٤ | م النساء | ٤ |
| الْمُتَكَلِّفِينَ | قل ما أسئلكم عليه من أجر وما أنا من المتكلفين | ٨٦ | ك ص | ٣٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ✦✦✦ | | | | |
| كَلٌّ | أحدهما أبكم لا يقدر على شيء وهو كل على مولاه | ٧٦ | ك النحل | ١٦ |
| كُلٌّ | إن الله على كل شيء قدير ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | م البقرة | ٢ |
| (٣٢٥) | فسواهن سبع سموات وهو بكل شيء عليم ... ... ... | ٢٩ | م » | ٢ |
| | قد علم كل أناس مشربهم ... ... ... ... ... ... | ٦٠ | م » | ٢ |
| | ألم تعلم أن الله على كل شيء قدير ... ... ... ... | ١٠٦ | م » | ٢ |
| | فاعفوا واصفحوا حتى يأتي الله بأمره إن الله على كل شيء قدير ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٩ | م » | ٢ |
| | بل له ما في السموات والأرض كل له قانتون ... ... | ١١٦ | م » | ٢ |
| | ولئن أتيت الذين أوتوا الكتاب بكل آية ما تبعوا قبلتك | ١٤٥ | م » | ٢ |
| | ولكل وجهة هو موليها ... ... ... ... ... ... | ١٤٨ | م » | ٢ |
| | أين ما تكونوا يأت بكم الله جميعا إن الله على كل شيء قدير | ١٤٨ | م » | ٢ |
| | فأحيا به الأرض بعد موتها وبث فيها من كل دابة ... | ١٦٤ | م » | ٢ |
| | واتقوا الله واعلموا أن الله بكل شيء عليم ... ... | ٢٣١ | م » | ٢ |
| | فلما تبين له قال أعلم أن الله على كل شيء قدير ... | ٢٥٩ | م » | ٢ |
| | ثم اجعل على كل جبل منهن جزءا ثم ادعهن يأتينك سعيا | ٢٦٠ | م » | ٢ |
| | كمثل حبة أنبتت سبع سنابل في كل سنبلة مائة حبة ... | ٢٦١ | م » | ٢ |
| | له فيها من كل الثمرات وأصابه الكبر وله ذرية ضعفاء | ٢٦٦ | م » | ٢ |
| | يمحق الله الربا ويربي الصدقات والله لا يحب كل كفار أثيم | ٢٧٦ | م » | ٢ |
| | ثم توفى كل نفس ما كسبت وهم لا يظلمون ... ... | ٢٨١ | م » | ٢ |
| | واتقوا الله ويعلمكم الله والله بكل شيء عليم ... ... | ٢٨٢ | م » | ٢ |
| | فيغفر لمن يشاء ويعذب من يشاء والله على كل شيء قدير | ٢٨٤ | م » | ٢ |
| | كل آمن بالله وملائكته وكتبه ورسله ... ... ... | ٢٨٥ | م » | ٢ |
| | والراسخون في العلم يقولون آمنا به كل من عند ربنا | ٧ | م آل عمران | ٣ |
| | ووفيت كل نفس ما كسبت وهم لا يظلمون ... ... | ٢٥ | م » | ٣ |
| | بيدك الخير إنك على كل شيء قدير ... ... ... ... | ٢٦ | م » | ٣ |
| | ويعلم ما في السموات وما في الأرض والله على كل شيء قدير | ٢٩ | م » | ٣ |
| | يوم تجد كل نفس ما عملت من خير محضرا ... ... | ٣٠ | م » | ٣ |
| | كل الطعام كان حلا لبني إسرائيل إلا ما حرم إسرائيل على نفسه ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩٣ | م » | ٣ |
| | ثم توفى كل نفس ما كسبت وهم لا يظلمون ... ... | ١٦١ | م » | ٣ |
| | قل هو من عند أنفسكم إن الله على كل شيء قدير ... | ١٦٥ | م » | ٣ |
| | كل نفس ذائقة الموت وإنما توفون أجوركم يوم القيامة | ١٨٥ | م » | ٣ |
| | ولله ملك السموات والأرض والله على كل شيء قدير | ١٨٩ | م » | ٣ |
| | ولأبويه لكل واحد منهما السدس مما ترك إن كان له ولد | ١١ | م النساء | ٤ |
| | وإن كان رجل يورث كلالة أو امرأة وله أخ أو أخت فلكل واحد منهما السدس ... ... ... ... ... | ١٢ | م » | ٤ |
| | وسئلوا الله من فضله إن الله كان بكل شيء عليما ... | ٣٢ | م » | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كُلٌّ | : ولكل جعلنا موالى مما ترك الوالدان والأقربون ... | ٣٣ م | النساء | ٤ |
| | إن الله كان على كل شيء شهيدا ... ... ... ... ... | ٣٣ م | « | ٤ |
| | فكيف إذا جئنا من كل أمة بشهيد ... ... ... ... | ٤١ م | « | ٤ |
| | قل كل من عند الله فالمؤلاء القوم لا يكادون يفقهون حديثا | ٧٨ م | « | ٤ |
| | وكان الله على كل شيء مقيتا... ... ... ... ... | ٨٥ م | « | ٤ |
| | إن الله كان على كل شيء حسيبا... ... ... ... ... | ٨٦ م | « | ٤ |
| | وكان الله بكل شيء محيطا ... ... ... ... ... ... | ١٢٦م | « | ٤ |
| | فلا تميلوا كل الميل فتذروها كالمعلقة ... ... ... ... | ١٢٩م | « | ٤ |
| | يبين الله لكم أن تضلوا والله بكل شيء عليم ... ... | ١٧٦م | « | ٤ |
| | يخلق ما يشاء والله على كل شيء قدير ... ... ... ... | ١٧ م | المائدة | ٥ |
| | فقد جاءكم بشير ونذير والله على كل شيء قدير... ... | ١٩ م | « | ٥ |
| | يعذب من يشاء ويغفر لمن يشاء والله على كل شيء قدير | ٤٠ م | « | ٥ |
| | لكل جعلنا منكم شرعة ومنهاجا ... ... ... ... ... | ٤٨ م | « | ٥ |
| | وأن الله بكل شيء عليم ... ... ... ... ... ... ... | ٩٧ م | « | ٥ |
| | فلما توفيتنى كنت أنت الرقيب عليهم وأنت على كل شيء شهيد | ١١٧م | « | ٥ |
| | لله ملك السموات والأرض وما فيهن وهو على كل شيء قدير | ١٢٠م | « | ٥ |
| | وإن يمسسك بخير فهو على كل شيء قدير ... ... ... | ١٧ ك | الأنعام | ٦ |
| | وإن يروا كل آية لا يؤمنوا بها ... ... ... ... ... | ٢٥ ك | « | ٦ |
| | فلما نسوا ما ذكروا به فتحنا عليهم أبواب كل شيء ... | ٤٤ ك | « | ٦ |
| | قل الله ينجيكم منها ومن كل كرب ثم أنتم تشركون ... | ٦٤ ك | « | ٦ |
| | لكل نبإ مستقر وسوف تعلمون ... ... ... ... ... | ٦٧ ك | « | ٦ |
| | وإن تعدل كل عدل لا يؤخذ منها... ... ... ... ... | ٧٠ ك | « | ٦ |
| | وسع ربى كل شيء علما أفلا تتذكرون... ... ... ... | ٨٠ ك | « | ٦ |
| | وزكريا ويحيى وعيسى وإلياس كل من الصالحين ... | ٨٥ ك | « | ٦ |
| | وهو الذى أنزل من السماء ماء فأخرجنا به نبات كل شيء | ٩٩ ك | « | ٦ |
| | أنى يكون له ولد ولم تكن له صاحبة وخلق كل شيء | ١٠١ك | « | ٦ |
| | وهو بكل شيء عليم ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠١ك | « | ٦ |
| | لا إله إلا هو خالق كل شيء فاعبدوه... ... ... ... | ١٠٢ك | « | ٦ |
| | وهو على كل شيء وكيل ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٢ك | « | ٦ |
| | كذلك زينا لكل أمة عملهم ثم إلى ربهم مرجعهم... | ١٠٨ك | « | ٦ |
| | وحشرنا عليهم كل شيء قُبلا ما كانوا ليؤمنوا إلا أن يشاء الله | ١١١ك | « | ٦ |
| | وكذلك جعلنا لكل نبى عدوا شياطين الإنس والجن | ١١٢ك | « | ٦ |
| | وكذلك جعلنا فى كل قرية أكابر مجرميها ليمكروا فيها | ١٢٣ك | « | ٦ |
| | ولكل درجات مما عملوا وما ربك بغافل عما يعملون | ١٣٢ك | « | ٦ |
| | وعلى الذين هادوا حرمنا كل ذى ظفر ... ... ... ... | ١٤٦ك | « | ٦ |
| | ثم آتينا موسى الكتاب تماما على الذى أحسن وتفصيلا لكل شيء... ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٤ك | « | ٦ |
| | قل أغير الله أبغى ربا وهو رب كل شيء ... ... ... | ١٦٤ك | « | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كُلٌّ | : ولا تكسب كل نفس إلا عليها ... ... ... ... ... | ١٦٤ك | الأنعام | ٦ |
| | وأقيموا وجوهكم عند كل مسجد وادعوه مخلصين له الدين | ٢٩ ك | الأعراف | ٧ |
| | يا بنى آدم خذوا زينتكم عند كل مسجد ... ... ... | ٣١ ك | « | ٧ |
| | ولكل أمة أجل فإذا جاء أجلهم لا يستأخرون ساعة | ٣٤ ك | « | ٧ |
| | قال لكل ضعف ولكن لا تعلمون ... ... ... ... ... | ٣٨ ك | « | ٧ |
| | فأنزلنا به الماء فأخرجنا به من كل الثمرات ... ... | ٥٧ ك | « | ٧ |
| | ولا تقعدوا بكل صراط توعدون... ... ... ... ... | ٨٦ ك | « | ٧ |
| | وسع ربنا كل شيء علما ... ... ... ... ... ... ... | ٨٩ ك | « | ٧ |
| | وأرسل فى المدائن حاشرين . يأتوك بكل ساحر عليم | ١١٢ك | « | ٧ |
| | وكتبنا له فى الألواح من كل شيء ... ... ... ... | ١٤٥ك | « | ٧ |
| | موعظة وتفصيلا لكل شيء... ... ... ... ... ... | ١٤٥ك | « | ٧ |
| | وإن يروا كل آية لا يؤمنوا بها ... ... ... ... ... | ١٤٦ك | « | ٧ |
| | قال عذابى أصيب به من أشاء ورحمتى وسعت كل شيء | ١٥٦ك | « | ٧ |
| | قد علم كل أناس مشربهم ... ... ... ... ... ... | ١٦٠ك | « | ٧ |
| | فاضربوا فوق الأعناق واضربوا منهم كل بنان ... | ١٢ م | الأنفال | ٨ |
| | يوم التقى الجمعان والله على كل شيء قدير... ... ... | ٤١ م | « | ٨ |
| | وأغرقنا آل فرعون وكل كانوا ظالمين ... ... ... | ٥٤ م | « | ٨ |
| | ثم ينقضون عهدهم فى كل مرة وهم لا يتقون ... ... | ٥٦ م | « | ٨ |
| | إن الله بكل شيء عليم ... ... ... ... ... ... ... | ٧٥ م | « | ٨ |
| | وخذوهم واحصروهم واقعدوا لهم كل مرصد ... ... | ٥ م | التوبة | ٩ |
| | ويستبدل قوما غيركم ولا تضروه شيئا والله على كل شيء قدير | ٣٩ م | « | ٩ |
| | حتى يبين لهم ما يتقون إن الله بكل شيء عليم ... ... | ١١٥م | « | ٩ |
| | فلولا نفر من كل فرقة منهم طائفة ليتفقهوا فى الدين | ١٢٢م | « | ٩ |
| | أو لا يرون أنهم يفتنون فى كل عام مرة أو مرتين | ١٢٦م | « | ٩ |
| | جاءتها ريح عاصف وجاءهم الموج من كل مكان ... | ٢٢ ك | يونس | ١٠ |
| | هنالك تبلوا كل نفس ما أسلفت... ... ... ... ... | ٣٠ ك | « | ١٠ |
| | ولكل أمة رسول فإذا جاء رسولهم قضى بينهم بالقسط | ٤٧ ك | « | ١٠ |
| | لكل أمة أجل إذا جاء أجلهم فلا يستأخرون ساعة | ٤٩ ك | « | ١٠ |
| | ولو أن لكل نفس ظلمت ما فى الأرض لافتدت به | ٥٤ ك | « | ١٠ |
| | وقال فرعون ائتونى بكل ساحر عليم ... ... ... ... | ٧٩ ك | « | ١٠ |
| | ولو جاءتهم كل آية حتى يروا العذاب الأليم ... ... | ٩٧ ك | « | ١٠ |
| | ويؤت كل ذى فضل فضله... ... ... ... ... ... | ٣ ك | هود | ١١ |
| | إلى الله مرجعكم وهو على كل شيء قدير ... ... ... | ٤ ك | « | ١١ |
| | ويعلم مستقرها ومستودعها كل فى كتاب مبين ... ... | ٦ ك | « | ١١ |
| | إنما أنت نذير والله على كل شيء وكيل ... ... ... | ١٢ م | « | ١١ |
| | قلنا احمل فيها من كل زوجين اثنين وأهلك ... ... | ٤٠ ك | « | ١١ |
| | إن ربى على كل شيء حفيظ ... ... ... ... ... | ٥٧ ك | « | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كُلٌّ: | الزانيـة والزانى فاجلدوا كل واحد منهما مائة جلدة | ٢ | م النـور | ٢٤ |
| | لكل امرئ منهم ما اكتسب من الإثم ... ... ... | ١١ | م » | ٢٤ |
| | ويضرب الله الأمثال للناس والله بكل شىء عليم ... | ٣٥ | م » | ٢٤ |
| | كلٌّ قد علم صلاته وتسبيحه ... ... ... ... ... | ٤١ | م » | ٢٤ |
| | والله خلق كل دابة من ماء ... ... ... ... ... | ٤٥ | م » | ٢٤ |
| | يخلق الله ما يشاء إن الله على كل شىء قدير ... ... | ٤٥ | م » | ٢٤ |
| | ويوم يرجعون إليه فينبئهم بما عملوا والله بكل شىء عليم | ٦٤ | م » | ٢٤ |
| | وخلق كل شىء فقدره تقديرا ... ... ... ... ... | ٢ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| | وكذلك جعلنا لكل نبىّ عدوّا من المجرمين... ... ... | ٣١ | ك » | ٢٥ |
| | ولو شئنا لبعثنا فى كل قرية نذيرا ... ... ... ... | ٥١ | ك » | ٢٥ |
| | أو لم يروا إلى الأرض كم أنبتنا فيها من كل زوج كريم | ٧ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| | وابعث فى المدائن حاشرين . يأتوك بكل سحار عليم | ٣٧ | ك » | ٢٦ |
| | فانفلق فكان كل فرق كالطود العظيم ... ... ... ... | ٦٣ | ك » | ٢٦ |
| | أتبنون بكل ريع آية تعبثون... ... ... ... ... | ١٢٨ | ك » | ٢٦ |
| | هل أنبئكم على من تنزل الشياطين . تنزل على كل أفاك أثيم | ٢٢٢ | ك » | ٢٦ |
| | ألم تر أنهم فى كل واد يهيمون ... ... ... ... | ٢٢٥ | م » | ٢٦ |
| | وقال يأيها الناس علمنا منطق الطير وأوتينا من كل شىء | ١٦ | ك النمـل | ٢٧ |
| | إنى وجدت امرأة تملكهم وأوتيت من كل شىء ... | ٢٣ | ك » | ٢٧ |
| | ويوم نحشر من كل أمة فوجا ممن يكذب بآياتنا ... | ٨٣ | ك » | ٢٧ |
| | وكل أتوه داخرين ... ... ... ... ... ... ... | ٨٧ | ك » | ٢٧ |
| | صنع الله الذى أتقن كل شىء ... ... ... ... ... | ٨٨ | ك » | ٢٧ |
| | إنما أمرت أن أعبد رب هذه البلدة الذى حرمها وله كل شىء | ٩١ | ك » | ٢٧ |
| | قالوا سحران تظاهرا وقالوا إنا بكل كافرون ... ... | ٤٨ | ك القصص | ٢٨ |
| | أو لم نمكن لهم حرما آمنا يجبى إليه ثمرات كل شىء ... | ٥٧ | ك » | ٢٨ |
| | ونزعنا من كل أمة شهيدا فقلنا هاتوا برهانكم ... ... | ٧٥ | ك » | ٢٨ |
| | لا إله إلا هو كل شىء هالك إلا وجهه ... ... ... | ٨٨ | ك » | ٢٨ |
| | ثم الله ينشئ النشأة الآخرة إن الله على كل شىء قدير | ٢٠ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | كل نفس ذائقة الموت ثم إلينا ترجعون ... ... ... | ٥٧ | ك » | ٢٩ |
| | إن الله بكل شىء عليم ... ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك » | ٢٩ |
| | وله من فى السموات والأرض كل له قانتون ... ... | ٢٦ | ك الـروم | ٣٠ |
| | كل حزب بما لديهم فرحون ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك » | ٣٠ |
| | إن ذلك لمحيى الموتى وهو على كل شىء قدير... ... ... | ٥٠ | ك » | ٣٠ |
| | ولقد ضربنا للناس فى هذا القرآن من كل مثل... ... | ٥٨ | ك » | ٣٠ |
| | وألقى فى الأرض رواسى أن تميد بكم وبث فيها من كل دابة | ١٠ | ك لقمان | ٣١ |
| | وأنزلنا من السماء ماء فأنبتنا فيها من كل زوج كريم | ١٠ | ك » | ٣١ |
| | إن الله لا يحب كل مختال فخور ... ... ... ... | ١٨ | ك » | ٣١ |
| | وسخر الشمس والقمر كل يجرى إلى أجل مسمى ... | ٢٩ | م » | ٣١ |
| كُلٌّ: | إن فى ذلك لآيات لكل صبار شكور ... ... ... | ٣١ | ك لقمان | ٣١ |
| | وما يجحد بآياتنا إلا كل ختار كفور ... ... ... | ٣٢ | ك » | ٣١ |
| | الذى أحسن كل شىء خلقه وبدأ خلق الإنسان من طين | ٧ | ك السـجدة | ٣٢ |
| | ولو شئنا لآتينا كل نفس هداها ... ... ... ... | ١٣ | ك » | ٣٢ |
| | وكان الله على كل شىء قديرا... ... ... ... ... | ٢٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ولكن رسول الله وخاتم النبيين وكان الله بكل شىء عليما | ٤٠ | م » | ٣٣ |
| | وكان الله على كل شىء رقيبا ... ... ... ... ... | ٥٢ | م » | ٣٣ |
| | إن تبدوا شيئا أو تخفوه فإن الله كان بكل شىء عليما | ٥٤ | م » | ٣٣ |
| | واتقين الله إن الله كان على كل شىء شهيدا ... ... | ٥٥ | م » | ٣٣ |
| | هل ندلكم على رجل ينبئكم إذا مزقتم كل ممزق ... ... | ٧ | ك سـبإ | ٣٤ |
| | إن فى ذلك لآية لكل عبد منيب ... ... ... ... | ٩ | ك » | ٣٤ |
| | فجعلناهم أحاديث ومزقناهم كل ممزق ... ... ... ... | ١٩ | ك » | ٣٤ |
| | إن فى ذلك لآيات لكل صبار شكور... ... ... ... | ١٩ | ك » | ٣٤ |
| | وربك على كل شىء حفيظ ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك » | ٣٤ |
| | إن أجرى إلا على الله وهو على كل شىء شهيد ... ... | ٤٧ | ك » | ٣٤ |
| | يزيد فى الخلق ما يشاء إن الله على كل شىء قدير ... | ١ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | ومن كل تأكلون لحما طريا وتستخرجون حلية تلبسونها | ١٢ | ك » | ٣٥ |
| | وسخر الشمس والقمر كل يجرى لأجل مسمى ... ... | ١٣ | ك » | ٣٥ |
| | ولا يخفف عنهم من عذابها كذلك نجزى كل كفور | ٣٦ | ك » | ٣٥ |
| | وكل شىء أحصيناه فى إمام مبين ... ... ... ... | ١٢ | ك يس | ٣٦ |
| | وإن كل لما جميع لدينا محضرون ... ... ... ... | ٣٢ | ك » | ٣٦ |
| | ولا الليل سابق النهار وكل فى فلك يسبحون ... ... | ٤٠ | ك » | ٣٦ |
| | قل يحييها الذى أنشأها أول مرة وهو بكل خلق عليم | ٧٩ | ك » | ٣٦ |
| | فسبحان الذى بيده ملكوت كل شىء وإليه ترجعون | ٨٣ | ك » | ٣٦ |
| | وحفظا من كل شيطان مارد... ... ... ... ... ... | ٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| | لا يسمّعون إلى الملإ الأعلى ويقذفون من كل جانب | ٨ | ك » | ٣٧ |
| | إن كل إلا كذب الرسل فحق عقاب ... ... ... ... | ١٤ | ك ص | ٣٨ |
| | والطير محشورة كل له أواب... ... ... ... ... | ١٩ | ك » | ٣٨ |
| | والشياطين كل بناء وغواص... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك » | ٣٨ |
| | واذكر إسمعيل واليسع وذا الكفل وكل من الأخيار | ٤٨ | ك » | ٣٨ |
| | وسخر الشمس والقمر كل يجرى لأجل مسمى ... ... | ٥ | ك زمر | ٣٩ |
| | ولقد ضربنا للناس فى هذا القرآن من كل مثل... ... | ٢٧ | ك » | ٣٩ |
| | الله خالق كل شىء ... ... ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك » | ٣٩ |
| | وهو على كل شىء وكيل ... ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك » | ٣٩ |
| | ووفيت كل نفس ما عملت وهو أعلم بما يفعلون ... | ٧٠ | ك | ٣٩ |
| | وهمّت كل أمة برسولهم ليأخذوه ... ... ... ... | ٥ | ك غافـر | ٤٠ |
| | ربنا وسعت كل شىء رحمة وعلما... ... ... ... | ٧ | ك » | ٤٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كُلُّ | : اليوم تجزى كل نفس بما كسبت لا ظلم اليوم ... ... | ١٧ | ك غافـــر | ٤٠ |
| | إنى عذت بربى وربكم من كل متكبر لا يؤمن بيوم الحساب | ٢٧ | ك « | ٤٠ |
| | كذلك يطبع الله على كل قلب متكبر جبار... ... ... | ٣٥ | ك « | ٤٠ |
| | قال الذين استكبروا إنا كل فيها إن الله قد حكم بين العباد | ٤٨ | ك « | ٤٠ |
| | ذلكم الله ربكم خالق كل شىء لا إله إلا هو ... ... | ٦٢ | ك « | ٤٠ |
| | فقضاهن سبع سموات فى يومين وأوحى فى كل سماء أمرها | ١٢ | ك فصـلت | ٤١ |
| | قالوا أنطقنا الله الذى أنطق كل شىء ... ... ... | ٢١ | ك « | ٤١ |
| | إن الذى أحياها لمحيى الموتى إنه على كل شىء قدير... | ٣٩ | ك « | ٤١ |
| | أو لم يكف بربك أنه على كل شىء شهيد ... ... ... | ٥٣ | ك « | ٤١ |
| | ألا إنهم فى مرية من لقاء ربهم ألا إنه بكل شىء محيط | ٥٤ | ك « | ٤١ |
| | فالله هو الولى وهو يحيى الموتى وهو على كل شىء قدير | ٩ | ك الشـورى | ٤٢ |
| | يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر إنه بكل شىء عليم ... | ١٢ | ك « | ٤٢ |
| | إن فى ذلك لآيات لكل صبار شكور ... ... ... | ٣٣ | ك « | ٤٢ |
| | وإن كل ذلك لما متاع الحياة الدنيا... ... ... ... | ٣٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | فيها يفرق كل أمر حكيم ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك الدخان | ٤٤ |
| | يدعون فيها بكل فاكهة آمنين ... ... ... ... ... | ٥٥ | ك « | ٤٤ |
| | ويل لكل أفاك أثيم ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك الجاثيـة | ٤٥ |
| | ولتجزى كل نفس بما كسبت وهم لا يظلمون ... ... | ٢٢ | ك « | ٤٥ |
| | وترى كل أمة جاثية ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٤٥ |
| | كل أمة تدعى إلى كتابها اليوم تجزون ما كنتم تعملون | ٢٨ | ك « | ٤٥ |
| | ولكل درجات مما عملوا وليوفيهم أعمالهم وهم لا يظلمون | ١٩ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | تدمر كل شىء بأمر ربها فأصبحوا لا يرى إلا مساكنهم | ٢٥ | ك « | ٤٦ |
| | بلى إنه على كل شىء قدير... ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك « | ٤٦ |
| | ولهم فيها من كل الثمرات ومغفرة من ربهم ... ... | ١٥ | م محمـد | ٤٧ |
| | وكان الله على كل شىء قديرا... ... ... ... ... | ٢١ | م الفتـح | ٤٨ |
| | وكانوا أحق بها وأهلها وكان الله بكل شىء عليما ... | ٢٦ | م « | ٤٨ |
| | والله يعلم ما فى السموات وما فى الأرض والله بكل شىء عليم | ١٦ | م الحجرات | ٤٩ |
| | وأنبتنا فيها من كل زوج بهيج... ... ... ... ... | ٧ | ك قـ | ٥٠ |
| | تبصرة وذكرى لكل عبد منيب ... ... ... ... ... | ٨ | ك « | ٥٠ |
| | وأصحاب الأيكة وقوم تبع كل كذب الرسل فحق وعيد | ١٤ | ك « | ٥٠ |
| | وجاءت كل نفس معها سائق وشهيد ... ... ... ... | ٢١ | ك « | ٥٠ |
| | ألقيا فى جهنم كل كفار عنيد... ... ... ... ... | ٢٤ | ك « | ٥٠ |
| | هذا ما توعدون لكل أواب حفيظ ... ... ... ... | ٣٢ | ك « | ٥٠ |
| | ومن كل شىء خلقنا زوجين لعلكم تذكرون... ... ... | ٤٩ | ك الذاريات | ٥١ |
| | وما ألتناهم من عملهم من شىء كل امرئ بما كسب رهين | ٢١ | ك الطـور | ٥٢ |
| | وكذبوا واتبعوا أهواءهم وكل أمر مستقر... ... ... | ٣ | ك القمـر | ٥٤ |
| | ونبئهم أن الماء قسمة بينهم كل شرب محتضر... ... | ٢٨ | ك « | ٥٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كُلُّ | : إنا كل شىء خلقناه بقدر... ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك القمـر | ٥٤ |
| | وكل شىء فعلوه فى الزبر... ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك « | ٥٤ |
| | وكل صغير وكبير مستطر ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك « | ٥٤ |
| | كل من عليها فان ، ويبقى وجه ربك ذو الجلال والإكرام | ٢٦ | م الرحمـن | ٥٥ |
| | يسئله من فى السموات والأرض كل يوم هو فى شأن | ٢٩ | م « | ٥٥ |
| | فيهما من كل فاكهة زوجان... ... ... ... ... ... | ٥٢ | م « | ٥٥ |
| | يحيى ويميت وهو على كل شىء قدير... ... ... ... | ٢ | م الحـديد | ٥٧ |
| | هو الأول والآخر والظاهر والباطن وهو بكل شىء عليم | ٣ | م « | ٥٧ |
| | والله لا يحب كل مختال فخـور ... ... ... ... ... | ٢٣ | م « | ٥٧ |
| | أحصاه الله ونسوه والله على كل شىء شهيد ... ... | ٦ | م المجـادلة | ٥٨ |
| | ثم ينبئهم بما عملوا يوم القيامة إن الله بكل شىء عليم | ٧ | م « | ٥٨ |
| | ولكن الله يسلط رسله على من يشاء والله على كل شىء قدير | ٦ | م الحشـر | ٥٩ |
| | يحسبون كل صيحة عليهم هم العدو فاحذرهم ... ... | ٤ | م المنافقون | ٦٣ |
| | له الملك وله الحمد وهو على كل شىء قدير... ... ... | ١ | م التغـابن | ٦٤ |
| | ومن يؤمن بالله يهد قلبه والله بكل شىء عليم ... ... | ١١ | م « | ٦٤ |
| | إن الله بالغ أمره قد جعل الله لكل شىء قدرا ... | ٣ | م الطـلاق | ٦٥ |
| | لتعلموا أن الله على كل شىء قدير... ... ... ... | ١٢ | م « | ٦٥ |
| | وأن الله قد أحاط بكل شىء علما ... ... ... ... | ١٢ | م « | ٦٥ |
| | ربنا أتمم لنا نورنا واغفر لنا إنك على كل شىء قدير | ٨ | م التحـريم | ٦٦ |
| | تبارك الذى بيده الملك وهو على كل شىء قدير... ... | ١ | ك المـلك | ٦٧ |
| | ما يمسكهن إلا الرحمن إنه بكل شىء بصير... ... ... | ١٩ | ك « | ٦٧ |
| | ولا تطع كل حلاف مهين ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك القـلم | ٦٨ |
| | أيطمع كل امرئ منهم أن يدخل جنة نعيم ... ... | ٣٨ | ك المعـارج | ٧٠ |
| | وأحاط بما لديهم وأحصى كل شىء عددا ... ... | ٢٨ | ك الجـن | ٧٢ |
| | كل نفس بما كسبت رهينة ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك المـدثر | ٧٤ |
| | بل يريد كل امرئ منهم أن يؤتى صحفا منشرة ... | ٥٢ | ك « | ٧٤ |
| | وكل شىء أحصيناه كتابا ... ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك النـبأ | ٧٨ |
| | لكل امرئ منهم يومئذ شأن يغنيه ... ... ... ... | ٣٧ | ك عبـس | ٨٠ |
| | وما يكذب به إلا كل معتد أثيم ... ... ... ... ... | ١٢ | ك المطففين | ٨٣ |
| | الذى له ملك السموات والأرض والله على كل شىء شهيد | ٩ | ك البروج | ٨٥ |
| | إن كل نفس لما عليها حافظ ... ... ... ... ... | ٤ | ك الطـارق | ٨٦ |
| | تنزل الملائكة والروح فيها بإذن ربهم من كل أمر ... | ٤ | ك القـدر | ٩٧ |
| | ويل لكل همزة لمزة ... ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الهمـزة | ١٠٤ |
| كَلَّا | : وكلا وعد الله الحسنى... ... ... ... ... ... | ٩٥ | م النسـاء | ٤ |
| | (١٥) وإن يتفرقا يغن الله كلا من سعته ... ... ... | ١٣٠ | م « | ٤ |
| | ووهبنا له إسحق ويعقوب كلا هدينا... ... ... ... | ٨٤ | ك الأنعـام | ٦ |
| | وإسمعيل واليسع ويونس ولوطا وكلا فضلنا على العالمين | ٨٦ | ك « | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كُلًّا | : وعلى الأعراف رجال يعرفون كلا بسيماهم ... ... | ٤٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | وإن كلا لمّا ليوفينهم ربك أعمالهم ... ... ... ... | ١١١ | ك هـود | ١١ |
| | وكلا نقص عليك من أنباء الرسل ما نثبت به فؤادك | ١٢٠ | ك « | ١١ |
| | كلا نُمِدّ هؤلاء وهؤلاء من عطاء ربك ... ... ... | ٢٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وهبنا له إسحق ويعقوب وكلا جعلنا نبيا ... ... ... | ٤٩ | ك مريم | ١٩ |
| | ووهبنا له إسحق ويعقوب نافلة وكلا جعلنا صالحين | ٧٢ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ففهمناها سليمان وكلا آتينا حكما وعلما... ... ... ... | ٧٩ | ك « | ٢١ |
| | وكلا ضربنا له الأمثال ... ... ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وكلا تبرنا تتبيرا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك « | ٢٥ |
| | فكلا أخذنا بذنبه فمنهم من أرسلنا عليه حاصبا ... | ٤٠ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وكلا وعد الله الحسنى ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | م الحديد | ٥٧ |
| كُلُّهُ | : هأنتم أولاء تحبونهم ولا يحبونكم وتؤمنون بالكتاب كله | ١١٩ | م آل عمران | ٣ |
| (٧) | قل إن الأمر كله لله ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٤ | م « | ٣ |
| | وقاتلوهم حتى لا تكون فتنة ويكون الدين كله لله ... | ٣٩ | م الأنفال | ٨ |
| | هو الذى أرسل رسوله بالهدى ودين الحق ليظهره على الدين كله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | م التوبة | ٩ |
| | ولله غيب السموات والأرض وإليه يرجع الأمر كله | ١٢٣ | ك هـود | ١١ |
| | هو الذى أرسل رسوله بالهدى ودين الحق ليظهره على الدين كله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م الفتح | ٤٨ |
| | هو الذى أرسل رسوله بالهدى ودين الحق ليظهره على الدين كله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | م الصف | ٦١ |
| كُلَّهَا | : وعلم آدم الأسماء كلها ثم عرضهم على الملائكة ... | ٣١ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | ولقد أريناه آياتنا كلها فكذب وأبى... ... ... ... | ٥٦ | ك طه | ٢٠ |
| | سبحان الذى خلق الأزواج كلها... ... ... ... ... | ٣٦ | ك يس | ٣٦ |
| | والذى خلق الأزواج كلها... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | كذبوا بآياتنا كلها فأخذناهم أخذ عزيز مقتدر ... | ٤٢ | ك القمر | ٥٤ |
| كُلُّهُمْ | : ولو شاء ربك لآمن من فى الأرض كلهم جميعا ... | ٩٩ | ك يونس | ١٠ |
| (٤) | فسجد الملائكة كلهم أجمعون ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك الحجر | ١٥ |
| | وكلهم آتيه يوم القيامة فردا ... ... ... ... ... | ٩٥ | ك مريم | ١٩ |
| | فسجد الملائكة كلهم أجمعون ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك ص | ٣٨ |
| كُلُّهُنَّ | : ولا يحزنّ ويرضين بما آتيتهن كلهن... ... ... | ٥١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| كُلَّمَا | : يكاد البرق يخطف أبصارهم كلما أضاء لهم مشوا فيه | ٢٠ | م البقرة | ٢ |
| (١٥) | كلما رزقوا منها من ثمرة رزقا قالوا هذا الذى رزقنا من قبل ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | م « | ٢ |
| | أفكلما جاءكم رسول بما لا تهوى أنفسكم استكبرتم | ٨٧ | م « | ٢ |
| | أوكلما عاهدوا عهدا نبذه فريق منهم ... ... ... | ١٠٠ | م « | ٢ |
| | كلما دخل عليها زكريا المحراب وجد عندها رزقا | ٣٧ | م آل عمران | ٣ |
| | كلما نضجت جلودهم بدلناهم جلودا غيرها ... ... | ٥٦ | م النساء | ٤ |
| كُلَّمَا | : كلما أوقدوا نارا للحرب أطفأها الله ... ... ... | ٦٤ | م المائدة | ٥ |
| | كلما جاءهم رسول بما لا تهوى أنفسهم فريقا كذبوا | ٧٠ | م « | ٥ |
| | كلما دخلت أمة لعنت أختها ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | ويصنع الفلك وكلما مرّ عليه ملأ من قومه سخروا منه | ٣٨ | ك هود | ١١ |
| | مأواهم جهنم كلما خبت زدناهم سعيرا ... ... ... | ٩٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| | كلما أرادوا أن يخرجوا منها من غم أعيدوا فيها ... | ٢٢ | م الحج | ٢٢ |
| | كلما أرادوا أن يخرجوا منها أعيدوا فيها ... ... | ٢٠ | م السجدة | ٣٢ |
| | كلما ألقى فيها فوج سألهم خزنتها ألم يأتكم نذير ... | ٨ | ك الملك | ٦٧ |
| | وإنى كلما دعوتهم لتغفر لهم جعلوا أصابعهم فى آذانهم | ٧ | ك نوح | ٧١ |
| كُلَّ مَا | : كل ما ردّوا إلى الفتنة أركسوا فيها ... ... ... | ٩١ | م النساء | ٤ |
| (٢) | كل ما جاء أمة رسولها كذبوه ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| كَلَالَةً | : وإن كان رجل يورث كلالة أو امرأة وله أخ أو أخت فلكل واحد منهما السدس ... ... | ١٢ | م النساء | ٤ |
| | يستفتونك قل الله يفتيكم فى الكلالة ... ... ... | ١٧٦ | م « | ٤ |
| كَلَّا | : كلا سنكتب ما يقول ونمد له من العذاب مدا ... ... | ٧٩ | ك مريم | ١٩ |
| (٣٣) | كلا سيكفرون بعبادتهم ويكونون عليهم ضدا ... | ٨٢ | ك « | ١٩ |
| | كلا إنها كلمة هو قائلها ومن ورائهم برزخ إلى يوم يبعثون | ١٠٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | قال كلا فاذهبا بآياتنا إنا معكم مستمعون ... ... | ١٥ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | قال كلا إن معى ربى سيهدين ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك « | ٢٦ |
| | قل أرونى الذين ألحقتم به شركاء كلا ... ... ... | ٢٧ | ك سبأ | ٣٤ |
| | كلا إنها لظى . نزاعة للشوى ... ... ... ... ... | ١٥ | ك المعارج | ٧٠ |
| | كلا إنا خلقناهم مما يعلمون ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك « | ٧٠ |
| | كلا إنه كان لآياتنا عنيدا ... ... ... ... ... ... | ١٦ | ك المدثر | ٧٤ |
| | كلا والقمر . والليل إذ أدبر . والصبح إذا أسفر . إنها لإحدى الكبر... ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك « | ٧٤ |
| | كلا بل لا يخافون الآخرة ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك « | ٧٤ |
| | كلا إنه تذكرة . فمن شاء ذكره ... ... ... ... | ٥٤ | ك « | ٧٤ |
| | كلا لا وزر . إلى ربك يومئذ المستقر... ... ... | ١١ | ك القيامة | ٧٥ |
| | كلا بل تحبون العاجلة . وتذرون الآخرة ... ... | ٢٠ | ك « | ٧٥ |
| | كلا إذا بلغت التراقى . وقيل من راق ... ... ... | ٢٦ | ك « | ٧٥ |
| | كلا سيعلمون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك النبأ | ٧٨ |
| | ثم كلا سيعلمون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك « | ٧٨ |
| | كلا إنها تذكرة . فمن شاء ذكره . فى صحف مكرمة | ١١ | ك عبس | ٨٠ |
| | كلا لما يقض ما أمره ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك « | ٨٠ |
| | كلا بل تكذبون بالدين ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك الانفطار | ٨٢ |
| | كلا إن كتاب الفجار لفى سجين ... ... ... ... | ٧ | ك المطففين | ٨٣ |
| | كلا بل ران على قلوبهم ما كانوا يكسبون ... ... | ١٤ | ك « | ٨٣ |
| | كلا إنهم عن ربهم يومئذ لمحجوبون ... ... ... | ١٥ | ك « | ٨٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَلَّا | : كلا إن كتاب الأبرار لفى عليين ... ... ... ... ... | ١٨ | ك المطففين | ٨٣ |
| | كلا بل لا تكرمون اليتيم ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الفجر | ٨٩ |
| | كلا إذا دكت الأرض دكا دكا ... ... ... ... ... | ٢١ | ك « | ٨٩ |
| | كلا إن الإنسان ليطغى . أن رآه استغنى ... ... | ٦ | ك العلق | ٩٦ |
| | كلا لئن لم ينته لنسفعا بالناصية ... ... ... ... | ١٥ | ك « | ٩٦ |
| | كلا لا تطعه واسجد واقترب ... ... ... ... ... | ١٩ | ك « | ٩٦ |
| | كلا سوف تعلمون ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك التكاثر | ١٠٢ |
| | ثم كلا سوف تعلمون ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك « | ١٠٢ |
| | كلا لو تعلمون علم اليقين . لترون الجحيم ... ... | ٥ | ك « | ١٠٢ |
| | كلا لينبذن فى الحطمة ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك الهمزة | ١٠٤ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَلَّمَ | : منهم من كلم الله ورفع بعضهم درجات ... ... ... | ٢٥٣ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | وكلم الله موسى تكليما ... ... ... ... ... ... | ١٦٤ | م النساء | ٤ |
| كَلَّمَهُ | : ولما جاء موسى لميقاتنا وكلمه ربه قال رب أرنى أنظر إليك | ١٤٣ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | فلما كلمه قال إنك اليوم لدينا مكين أمين ... ... ... | ٥٤ | ك يوسف | ١٢ |
| كَلَّمَهُمُ | : ولو أننا نزلنا إليهم الملائكة وكلمهم الموتى وحشرنا | | | |
| | عليهم كل شىء قبلا ما كانوا ليؤمنوا ... ... ... | ١١١ | ك الأنعام | ٦ |
| أُكَلِّمَ | : إنى نذرت للرحمن صوما فلن أكلم اليوم إنسيا ... | ٢٦ | ك مريم | ١٩ |
| تُكَلِّمَ | : قال آيتك ألا تكلم الناس ثلاثة أيام إلا رمزا ... | ٤١ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | إذ أيدتك بروح القدس تكلم الناس فى المهد وكهلا | ١١٠ | م المائدة | ٥ |
| | قال آيتك ألا تكلم الناس ثلاث ليال سويا ... ... | ١٠ | ك مريم | ١٩ |
| تُكَلِّمُنَا | : اليوم نختم على أفواههم وتكلمنا أيديهم ... ... | ٦٥ | ك يس | ٣٦ |
| تُكَلِّمُهُمْ | : وإذا وقع القول عليهم أخرجنا لهم دابة من | | | |
| | الأرض تكلمهم ... ... ... ... ... ... ... | ٨٢ | ك النمل | ٢٧ |
| تُكَلَّمُونِ | : قال اخسئوا فيها ولا تكلمون ... ... ... ... | ١٠٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| نُكَلِّمُ | : قالوا كيف نكلم من كان فى المهد صبيا ... ... ... | ٢٩ | ك مريم | ١٩ |
| يُكَلِّمُ | : ويكلم الناس فى المهد وكهلا ومن الصالحين ... | ٤٦ | م آل عمران | ٣ |
| يُكَلِّمُنَا | : وقال الذين لا يعلمون لولا يكلمنا الله أو تأتينا آية | ١١٨ | م البقرة | ٢ |
| يُكَلِّمَهُ | : وما كان لبشر أن يكلمه الله إلا وحيا أو من وراء حجاب | ٥١ | ك الشورى | ٤٢ |
| يُكَلِّمُهُمُ | : ولا يكلمهم الله يوم القيامة ولا يزكيهم ولهم عذاب أليم | ١٧٤ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | ولا يكلمهم الله ولا ينظر إليهم يوم القيامة ولا يزكيهم | ٧٧ | م آل عمران | ٣ |
| | ألم يروا أنه لا يكلمهم ولا يهديهم سبيلا ... ... ... | ١٤٨ | ك الأعراف | ٧ |
| كُلِّمَ | : ولو أن قرآنا سيرت به الجبال أو قطعت به الأرض | | | |
| | أو كلم به الموتى ... ... ... ... ... ... ... | ٣١ | م الرعد | ١٣ |
| تُكَلِّمُ | : يوم يأت لا تكلم نفس إلا بإذنه ... ... ... ... | ١٠٥ | ك هود | ١١ |
| تَتَكَلَّمَ | : ولولا إذ سمعتموه قلتم ما يكون لنا أن نتكلم بهذا ... | ١٦ | م النور | ٢٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَتَكَلَّمُ | : أم أنزلنا عليهم سلطانا فهو يتكلم بما كانوا به يشركون | ٣٥ | ك الروم | ٣٠ |
| يَتَكَلَّمُونَ | : لا يتكلمون إلا من أذن له الرحمن وقال صوابا | ٣٨ | ك النبأ | ٧٨ |
| كَلَامَ | : وقد كان فريق منهم يسمعون كلام الله ثم يحرفونه | ٧٥ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | وإن أحد من المشركين استجارك فأجره حتى يسمع | | | |
| | كلام الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | م التوبة | ٩ |
| | يريدون أن يبدلوا كلام الله ... ... ... ... ... | ١٥ | م الفتح | ٤٨ |
| بِكَلَامِى | : إنى اصطفيتك على الناس برسالاتى وبكلامى ... | ١٤٤ | ك الأعراف | ٧ |
| كَلِمَةٍ | : أن الله يبشرك بيحيى مصدقا بكلمة من الله ... ... | ٣٩ | م آل عمران | ٣ |
| (٢٦) | إن الله يبشرك بكلمة منه اسمه المسيح عيسى ابن مريم | ٤٥ | م « | ٣ |
| | قل يا أهل الكتاب تعالوا إلى كلمة سواء بيننا وبينكم | ٦٤ | م « | ٣ |
| | وتمت كلمة ربك صدقا وعدلا ... ... ... ... ... | ١١٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | وتمت كلمة ربك الحسنى على بنى إسرائيل بما صبروا | ١٣٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | وأيده بجنود لم تروها وجعل كلمة الذين كفروا السفلى | ٤٠ | م التوبة | ٩ |
| | وكلمة الله هى العليا ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | م « | ٩ |
| | يحلفون بالله ما قالوا ولقد قالوا كلمة الكفر ... ... | ٧٤ | م « | ٩ |
| | ولولا كلمة سبقت من ربك لقضى بينهم فيما فيه يختلفون | ١٩ | ك يونس | ١٠ |
| | كذلك حقت كلمة ربك على الذين فسقوا أنهم | | | |
| | لا يؤمنون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك « | ١٠ |
| | إن الذين حقت عليهم كلمة ربك لا يؤمنون ... ... | ٩٦ | م « | ١٠ |
| | ولولا كلمة سبقت من ربك لقضى بينهم ... ... ... | ١١٠ | ك هود | ١١ |
| | وتمت كلمة ربك لأملأن جهنم من الجنة والناس أجمعين | ١١٩ | ك « | ١١ |
| | ألم تر كيف ضرب الله مثلا كلمة طيبة كشجرة طيبة | ٢٤ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | ومثل كلمة خبيثة كشجرة خبيثة اجتثت من فوق الأرض | ٢٦ | ك « | ١٤ |
| | كبرت كلمة تخرج من أفواههم إن يقولون إلا كذبا | ٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | ولولا كلمة سبقت من ربك لكان لزاما ... ... ... | ١٢٩ | ك طه | ٢٠ |
| | كلا إنها كلمة هو قائلها ومن ورائهم برزخ إلى | | | |
| | يوم يبعثون ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | أفمن حق عليه كلمة العذاب أفأنت تنقذ من فى النار | ١٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| | قالوا بلى ولكن حقت كلمة العذاب على الكافرين | ٧١ | ك « | ٣٩ |
| | وكذلك حقت كلمة ربك على الذين كفروا ... ... | ٦ | ك غافر | ٤٠ |
| | ولولا كلمة سبقت من ربك لقضى بينهم ... ... ... | ٤٥ | ك فصلت | ٤١ |
| | ولولا كلمة سبقت من ربك إلى أجل مسمى لقضى بينهم | ١٤ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ولولا كلمة الفصل لقضى بينهم ... ... ... ... | ٢١ | ك « | ٤٢ |
| | وجعلها كلمة باقية فى عقبه لعلهم يرجعون ... ... ... | ٢٨ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وألزمهم كلمة التقوى وكانوا أحق بها وأهلها ... ... | ٢٦ | م الفتح | ٤٨ |
| كَلِمَتُنَا | : ولقد سبقت كلمتنا لعبادنا المرسلين ... ... ... | ١٧١ | ك الصافات | ٣٧ |
| كَلِمَتُهُ | : إنما المسيح عيسى ابن مريم رسول الله وكلمته ... | ١٧١ | م النساء | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| كَلِمَاتٌ: فتلقى آدم من ربه كلمات ... ... ... ... ... | ٣٧ | م البقـرة | ٢ |
| (٨) وإذ ابتلى إبراهيم ربه بكلمات فأتمهن ... ... ... | ١٢٤ | م « | ٢ |
| وأوذوا حتى أتاهم نصرنا ولا مبدل لكلمات الله ... | ٣٤ | ك الأنعـام | ٦ |
| لا تبديل لكلمات الله ... ... ... ... ... ... | ٦٤ | ك يـونس | ١٠ |
| قل لو كان البحر مدادا لكلمات ربى لنفد البحر ... | ١٠٩ | ك الكهف | ١٨ |
| قبل أن تنفد كلمات ربى ولو جئنا بمثله مددا ... ... | ١٠٩ | ك « | ١٨ |
| والبحر يمده من بعده سبعة أبحر ما نفدت كلمات الله | ٢٧ | م لقمان | ٣١ |
| وصدقت بكلمات ربها وكتبه وكانت من القانتين ... | ١٢ | م التحـريم | ٦٦ |
| كَلِمَاتِهِ: وتمت كلمة ربك صدقا وعدلا لا مبدل لكلماته | ١١٥ | ك الأنعـام | ٦ |
| (٦) فآمنوا بالله ورسوله النبي الأمي الذي يؤمن بالله وكلماته | ١٥٨ | ك الأعراف | ٧ |
| ويريد الله أن يحق الحق بكلماته ويقطع دابر الكافرين | ٧ | م الأنفـال | ٨ |
| ويحق الله الحق بكلماته ولو كره المجرمون ... ... ... | ٨٢ | ك يـونس | ١٠ |
| واتل ما أوحى إليك من كتاب ربك لا مبدل لكلماته | ٢٧ | ك الكهف | ١٨ |
| ويمح الله الباطل ويحق الحق بكلماته... ... ... ... | ٢٤ | م الشورى | ٤٢ |
| الْكَلِمَ: من الذين هادوا يحرفون الكلم عن مواضعه... ... | ٤٦ | م النسـاء | ٤ |
| (٤) يحرفون الكلم عن مواضعه ونسوا حظا مما ذكروا به | ١٣ | م المائدة | ٥ |
| يحرفون الكلم من بعد مواضعه ... ... ... ... ... | ٤١ | م « | ٥ |
| إليه يصعد الكلم الطيب والعمل الصالح يرفعه ... ... | ١٠ | ك فاطـر | ٣٥ |
| تَكْلِيمًا: وكلم الله موسى تكليما ... ... ... ... ... | ١٦٤ | م النسـاء | ٤ |
| ✦✦✦ | | | |
| كِلْتَا: كلتا الجنتين آتت أكلها ولم تظلم منه شيئا ... ... | ٣٣ | ك الكهف | ١٨ |
| كِلَاهُمَا: إما يبلغن عندك الكبر أحدهما أو كلاهما فلا تقل لهما أف | ٢٣ | ك الإسـراء | ١٧ |
| ✦✦✦ | | | |
| أَكْمَلْتُ: اليوم أكملت لكم دينكم وأتممت عليكم نعمتى ... | ٣ | م المائدة | ٥ |
| لِتُكْمِلُوا: ولتكملوا العدة ولتكبروا الله على ما هداكم ... | ١٨٥ | م البقـرة | ٢ |
| كَامِلَيْنِ: والوالدات يرضعن أولادهن حولين كاملين ... | ٢٣٣ | م « | ٢ |
| كَامِلَةٌ: تلك عشرة كاملة ... ... ... ... ... ... | ١٩٦ | م « | ٢ |
| (٢) ليحملوا أوزارهم كاملة يوم القيامة ... ... ... ... | ٢٥ | ك النحـل | ١٦ |
| ✦✦✦ | | | |
| الْأَكْمَامِ: فيها فاكهة والنخل ذات الأكمام ... ... ... | ١١ | م الرحمـن | ٥٥ |
| أَكْمَامِهَا: وما تخرج من ثمرات من أكمامها وما تحمل من أنثى ولا تضع إلا بعلمه ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك فصـلت | ٤١ |
| ✦✦✦ | | | |
| الْأَكْمَهَ: وأبرئ الأكمه والأبرص وأحيي الموتى بإذن الله | ٤٩ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) وتبرئ الأكمه والأبرص بإذنى... ... ... ... ... | ١١٠ | م المائدة | ٥ |
| ✦✦✦ | | | |
| لَكَنُودٌ: إن الإنسان لربه لكنود... ... ... ... ... | ٦ | ك العاديات | ١٠٠ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| ✦✦✦ | | | |
| كَنَزْتُمْ: هذا ما كنزتم لأنفسكم ... ... ... ... ... | ٣٥ | م التـوبة | ٩ |
| تَكْنِزُونَ: فذوقوا ما كنتم تكنزون ... ... ... ... ... | ٣٥ | م « | ٩ |
| يَكْنِزُونَ: والذين يكنزون الذهب والفضة ولا ينفقونها في سبيل الله فبشرهم بعذاب أليم... ... ... ... | ٣٤ | م « | ٩ |
| كَنْزٌ: لولا أنزل عليه كنز أو جاء معه ملك... ... ... ... | ١٢ | م هـود | ١١ |
| (٣) وأما الجدار فكان لغلامين يتيمين في المدينة وكان تحته كنز لهما | ٨٢ | ك الكهف | ١٨ |
| أو يلقى إليه كنز أو تكون له جنة يأكل منها ... ... | ٨ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| كَنْزَهُمَا: فأراد ربك أن يبلغا أشدهما ويستخرجا كنزهما | ٨٢ | ك الكهف | ١٨ |
| كُنُوزٍ: فأخرجناهم من جنات وعيون . وكنوز ومقام كريم | ٥٨ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| (٢) وآتيناه من الكنوز ما إن مفاتحه لتنوء بالعصبة أولى القوة | ٧٦ | ك القصص | ٢٨ |
| ✦✦✦ | | | |
| الْكُنَّسِ: فلا أقسم بالخنس . الجوار الكنس ... ... ... | ١٦ | ك التكوير | ٨١ |
| ✦✦✦ | | | |
| أَكْنَنْتُمْ: ولا جناح عليكم فيما عرضتم به من خطبة النساء أو أكننتم في أنفسكم ... ... ... ... ... ... | ٢٣٥ | م البقـرة | ٢ |
| تُكِنُّ: وإن ربك ليعلم ما تكن صدورهم وما يعلنون ... | ٧٤ | ك النمـل | ٢٧ |
| (٢) وربك يعلم ما تكن صدورهم وما يعلنون ... ... ... | ٦٩ | ك القصص | ٢٨ |
| أَكْنَانًا: وجعل لكم من الجبال أكنانا ... ... ... ... | ٨١ | ك النحـل | ١٦ |
| أَكِنَّةً: وجعلنا على قلوبهم أكنة أن يفقهوه وفي آذانهم وقرا | ٢٥ | ك الأنعـام | ٦ |
| (٤) وجعلنا على قلوبهم أكنة أن يفقهوه وفي آذانهم وقرا | ٤٦ | ك الإسـراء | ١٧ |
| إنا جعلنا على قلوبهم أكنة أن يفقهوه وفي آذانهم وقرا | ٥٧ | ك الكهف | ١٨ |
| وقالوا قلوبنا في أكنة مما تدعونا إليه وفي آذاننا وقر | ٥ | ك فصـلت | ٤١ |
| مَكْنُونٌ: وعندهم قاصرات الطرف عين . كأنهن بيض مكنون | ٤٩ | ك الصافات | ٣٧ |
| (٤) ويطوف عليهم غلمان لهم كأنهم لؤلؤ مكنون ... ... | ٢٤ | ك الطـور | ٥٢ |
| وحور عين . كأمثال اللؤلؤ المكنون ... ... ... ... | ٢٣ | ك الواقعـة | ٥٦ |
| إنه لقرآن كريم . في كتاب مكنون ... ... ... ... | ٧٨ | ك « | ٥٦ |
| ✦✦✦ | | | |
| الْكَهْفِ: أم حسبت أن أصحاب الكهف والرقيم كانوا من آياتنا عجبا ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك الكهف | ١٨ |
| (٤) إذ أوى الفتية إلى الكهف فقالوا ربنا آتنا من لدنك رحمة | ٢٠ | ك « | ١٨ |
| فضربنا على آذانهم في الكهف سنين عددا ... ... | ١١ | ك « | ١٨ |
| فأووا إلى الكهف ينشر لكم ربكم من رحمته ... ... | ١٦ | ك « | ١٨ |
| كَهْفِهِمْ: وترى الشمس إذا طلعت تزاور عن كهفهم ... | ١٧ | ك « | ١٨ |
| (٢) ولبثوا في كهفهم ثلاث مائة سنين وازدادوا تسعا | ٢٥ | ك « | ١٨ |
| ✦✦✦ | | | |
| كَهْلًا: ويكلم الناس في المهد وكهلا ومن الصالحين... ... | ٤٦ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) إذ أيدتك بروح القدس تكلم الناس في المهد وكهلا | ١١٠ | م المائدة | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| كَاهِنٍ | : فذكر فما أنت بنعمة ربك بكاهن ولا مجنون ... | ٢٩ | ك الطور | ٥٢ |
| (٢) | ولا بقول كاهن قليلا ما تذكرون ... ... ... ... | ٤٢ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| كٓهٰيٰعٓصٓ | : كهيعص . ذكر رحمة ربك عبده زكريا ... | ١ | ك مريم | ١٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| أَكْوَابٍ | : يطاف عليهم بصحاف من ذهب وأكواب ... | ٧١ | ك الزخرف | ٤٣ |
| (٤) | يطوف عليهم ولدان مخلدون . بأكواب وأباريق ... | ١٨ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | ويطاف عليهم بآنية من فضة وأكواب كانت قواريرا | ١٥ | م الإنسان | ٧٦ |
| | فيها سرر مرفوعة . وأكواب موضوعة ... ... ... | ١٤ | ك الغاشية | ٨٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| كَادَ | : من بعد ما كاد يزيغ قلوب فريق منهم ... ... ... | ١١٧ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | إن كاد ليضلنا عن آلهتنا لولا أن صبرنا عليها ... ... | ٤٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| كَادَتْ | : إن كادت لتبدى به لولا أن ربطنا على قلبها ... | ١٠ | ك القصص | ٢٨ |
| كَادُوا | : قالوا الآن جئت بالحق فذبحوها وما كادوا يفعلون | ٧١ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | قال ابن أم إن القوم استضعفونى وكادوا يقتلوننى ... | ١٥٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | وإن كادوا ليفتنونك عن الذى أوحينا إليك ... ... | ٧٣ | م الإسراء | ١٧ |
| | وإن كادوا ليستفزونك من الأرض ليخرجوك منها | ٧٦ | م » | ١٧ |
| | وأنه لما قام عبد الله يدعوه كادوا يكونون عليه لبدا | ١٩ | ك الجن | ٧٢ |
| كِدْتَّ | : ولولا أن ثبتناك لقد كدت تركن إليهم شيئا قليلا | ٧٤ | م الإسراء | ١٧ |
| (٢) | قال تالله إن كدت لتردين ... ... ... ... ... | ٥٦ | ك الصافات | ٣٧ |
| أَكَادُ | : إن الساعة آتية أكاد أخفيها ... ... ... ... | ١٥ | ك طه | ٢٠ |
| تَكَادُ | : تكاد السموات يتفطرن منه وتنشق الأرض... ... | ٩٠ | ك مريم | ١٩ |
| (٣) | تكاد السموات يتفطرن من فوقهن ... ... ... ... | ٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| | تكاد تميز من الغيظ ... ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك الملك | ٦٧ |
| يَكَادُ | : يكاد البرق يخطف أبصارهم ... ... ... ... ... | ٢٠ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | يخرجه ولا يكاد يسيغه ويأتيه الموت من كل مكان... | ١٧ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | يكاد زيتها يضيء ولو لم تمسسه نار ... ... ... ... | ٣٥ | م النور | ٢٤ |
| | يكاد سنا برقه يذهب بالأبصار ... ... ... ... ... | ٤٣ | م » | ٢٤ |
| | أم أنا خير من هذا الذى هو مهين ولا يكاد يبين ... | ٥٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وإن يكاد الذين كفروا ليزلقونك بأبصارهم لما سمعوا الذكر ... ... ... ... ... ... | ٥١ | ك القلم | ٦٨ |
| يَكَادُونَ | : فما لهؤلاء القوم لا يكادون يفقهون حديثا ... | ٧٨ | م النساء | ٤ |
| (٣) | وجد من دونهما قوما لا يكادون يفقهون قولا ... | ٩٣ | م الكهف | ١٨ |
| | يكادون يسطون بالذين يتلون عليهم آياتنا ... ... | ٧٢ | م الحج | ٢٢ |
| يَكَدْ | : ظلمات بعضها فوق بعض إذا أخرج يده لم يكد يراها | ٤٠ | م النور | ٢٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| يُكَوِّرُ | : خلق السموات والأرض بالحق يكور الليل على النهار | ٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| (٢) | ويكور النهار على الليل ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك » | ٣٩ |
| كُوِّرَتْ | : إذا الشمس كورت ... ... ... ... ... ... | ١ | ك التكوير | ٨١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| كَوْكَبٌ | : كأنها كوكب درى يوقد من شجرة مباركة ... | ٣٥ | م النور | ٢٤ |
| كَوْكَبًا | : فلما جن عليه الليل رأى كوكبا ... ... ... ... | ٧٦ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | إذ قال يوسف لأبيه يا أبت إنى رأيت أحد عشر كوكبا | ٤ | ك يوسف | ١٢ |
| الْكَوَاكِبُ | : إنا زينا السماء الدنيا بزينة الكواكب ... | ٦ | ك الصافات | ٣٧ |
| (٢) | إذا السماء انفطرت . وإذا الكواكب انتثرت ... | ٢ | ك الانفطار | ٨٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| كَانَ | : فسجدوا إلا إبليس أبى واستكبر وكان من الكافرين | ٣٤ | م البقرة | ٢ |
| (٤٢٢) | وقد كان فريق منهم يسمعون كلام الله ثم يحرفونه | ٧٥ | م » | ٢ |
| | قل من كان عدوا لجبريل فإنه نزله على قلبك ... ... | ٩٧ | م » | ٢ |
| | من كان عدوا لله وملائكته ورسله وجبريل وميكال فإن الله عدو للكافرين ... ... ... ... ... ... | ٩٨ | م » | ٢ |
| | وقالوا لن يدخل الجنة إلا من كان هودا أو نصارى | ١١١ | م » | ٢ |
| | أولئك ما كان لهم أن يدخلوها إلا خائفين ... ... | ١١٤ | م » | ٢ |
| | قل بل ملة إبراهيم حنيفا وما كان من المشركين ... | ١٣٥ | م » | ٢ |
| | وما كان الله ليضيع إيمانكم إن الله بالناس لرءوف رحيم | ١٤٣ | م » | ٢ |
| | أولو كان آباؤهم لا يعقلون شيئا ولا يهتدون ... ... | ١٧٠ | م » | ٢ |
| | فمن كان منكم مريضا أو على سفر فعدة من أيام أخر | ١٨٤ | م » | ٢ |
| | ومن كان مريضا أو على سفر فعدة من أيام أخر ... | ١٨٥ | م » | ٢ |
| | فمن كان منكم مريضا أو به أذى من رأسه ففدية من صيام | ١٩٦ | م » | ٢ |
| | كان الناس أمة واحدة فبعث الله النبيين مبشرين ومنذرين | ٢١٣ | م » | ٢ |
| | ذلك يوعظ به من كان منكم يؤمن بالله واليوم الآخر | ٢٣٢ | م » | ٢ |
| | وإن كان ذو عسرة فنظرة إلى ميسرة ... ... ... ... | ٢٨٠ | م » | ٢ |
| | فإن كان الذى عليه الحق سفيها أو ضعيفا أو لا يستطيع أن يمل هو فليملل وليه بالعدل ... ... ... ... | ٢٨٢ | م » | ٢ |
| | قد كان لكم آية فى فئتين التقتا ... ... ... ... ... | ١٣ | م آل عمران | ٣ |
| | ما كان إبراهيم يهوديا ولا نصرانيا ... ... ... ... | ٦٧ | م » | ٣ |
| | ولكن كان حنيفا مسلما... ... ... ... ... ... ... | ٦٧ | م » | ٣ |
| | وما كان من المشركين ... ... ... ... ... ... ... | ٦٧ | م » | ٣ |
| | ما كان لبشر أن يؤتيه الله الكتاب والحكم والنبوة ثم يقول للناس كونوا عبادا لى من دون الله ... | ٧٩ | م » | ٣ |
| | كل الطعام كان حلا لبنى إسرائيل إلا ما حرم إسرائيل على نفسه ... ... ... ... ... ... ... | ٩٣ | م » | ٣ |
| | فاتبعوا ملة إبراهيم حنيفا وما كان من المشركين ... | ٩٥ | م » | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَانَ: | فيه آيات بينات مقام إبراهيم ومن دخله كان آمنا | ٩٧ م | آل عمران | ٣ |
| | ولو آمن أهل الكتاب لكان خيرا لهم ... ... ... ... | ١١٠ م | » | ٣ |
| | فسيروا في الأرض فانظروا كيف كان عاقبة المكذبين | ١٣٧ م | » | ٣ |
| | وما كان لنفس أن تموت إلا بإذن الله كتابا مؤجلا | ١٤٥ م | » | ٣ |
| | وما كان قولهم إلا أن قالوا ربنا اغفر لنا ذنوبنا ... | ١٤٧ م | » | ٣ |
| | يقولون لو كان لنا من الأمر شيء ما قتلنا ههنا ... | ١٥٤ م | » | ٣ |
| | وما كان لنبي أن يغل ومن يغلل يأت بما غل يوم القيامة | ١٦١ م | » | ٣ |
| | ما كان الله ليذر المؤمنين على ما أنتم عليه ... ... ... | ١٧٩ م | » | ٣ |
| | وما كان الله ليطلعكم على الغيب ... ... ... ... ... | ١٧٩ م | » | ٣ |
| | إن الله كان عليكم رقيبا ... ... ... ... ... ... ... | ١ م | النساء | ٤ |
| | ولا تأكلوا أموالهم إلى أموالكم إنه كان حوبا كبيرا | ٢ م | » | ٤ |
| | ومن كان غنيا فليستعفف ... ... ... ... ... ... | ٦ م | » | ٤ |
| | ومن كان فقيرا فليأكل بالمعروف ... ... ... ... | ٦ م | » | ٤ |
| | ولأبويه لكل واحد منهما السدس مما ترك إن كان له ولد | ١١ م | » | ٤ |
| | فإن كان له أخوة فلأمه السدس ... ... ... ... | ١١ م | » | ٤ |
| | فريضة من الله إن الله كان عليما حكيما ... ... ... | ١١ م | » | ٤ |
| | فإن كان لهن ولد فلكم الربع مما تركن... ... ... ... | ١٢ م | » | ٤ |
| | فإن كان لكم ولد فلهن الثمن مما تركتم ... ... ... | ١٢ م | » | ٤ |
| | وإن كان رجل يورث كلالة أو امرأة وله أخ أو أخت فلكل واحد منهما السدس ... ... ... | ١٢ م | » | ٤ |
| | فإن تابا وأصلحا فأعرضوا عنهما إن الله كان توابا رحيما | ١٦ م | » | ٤ |
| | فأولئك يتوب الله عليهم وكان الله عليما حكيما ... ... | ١٧ م | » | ٤ |
| | إنه كان فاحشة ومقتا وساء سبيلا ... ... ... ... | ٢٢ م | » | ٤ |
| | وأن تجمعوا بين الأختين إلا ما قد سلف إن الله كان غفورا رحيما ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣ م | » | ٤ |
| | ولا جناح عليكم فيما تراضيتم به من بعد الفريضة إن الله كان عليما حكيما... ... ... ... ... ... ... | ٢٤ م | » | ٤ |
| | ولا تقتلوا أنفسكم إن الله كان بكم رحيما ... ... ... | ٢٩ م | » | ٤ |
| | وكان ذلك على الله يسيرا ... ... ... ... ... ... | ٣٠ م | » | ٤ |
| | وسئلوا الله من فضله إن الله كان بكل شيء عليما ... | ٣٢ م | » | ٤ |
| | فآتوهم نصيبهم إن الله كان على كل شيء شهيدا ... | ٣٣ م | » | ٤ |
| | إن الله كان عليا كبيرا ... ... ... ... ... ... ... | ٣٤ م | » | ٤ |
| | إن يريدا إصلاحا يوفق الله بينهما إن الله كان عليما خبيرا | ٣٥ م | » | ٤ |
| | إن الله لا يحب من كان مختالا فخورا... ... ... ... | ٣٦ م | » | ٤ |
| | وأنفقوا مما رزقهم الله وكان الله بهم عليما ... ... | ٣٩ م | » | ٤ |
| | فامسحوا بوجوهكم وأيديكم إن الله كان عفوا غفورا | ٤٣ م | » | ٤ |
| | ولو أنهم قالوا سمعنا وأطعنا واسمع وانظرنا لكان خيرا لهم | ٤٦ م | » | ٤ |
| | أو نلعنهم كما لعنا أصحاب السبت وكان أمر الله مفعولا | ٤٧ م | » | ٤ |
| كَانَ: | ليذوقوا العذاب إن الله كان عزيزا حكيما ... ... | ٥٦ م | النساء | ٤ |
| | إن الله نعما يعظكم به إن الله كان سميعا بصيرا ... ... | ٥٨ م | » | ٤ |
| | ولو أنهم فعلوا ما يوعظون به لكان خيرا لهم وأشد تثبيتا | ٦٦ م | » | ٤ |
| | فقاتلوا أولياء الشيطان إن كيد الشيطان كان ضعيفا | ٧٦ م | » | ٤ |
| | ولو كان من عند غير الله لوجدوا فيه اختلافا كثيرا | ٨٢ م | » | ٤ |
| | وكان الله على كل شيء مقيتا... ... ... ... ... ... | ٨٥ م | » | ٤ |
| | إن الله كان على كل شيء حسيبا ... ... ... ... ... | ٨٦ م | » | ٤ |
| | وما كان لمؤمن أن يقتل مؤمنا إلا خطأ ... ... ... | ٩٢ م | » | ٤ |
| | فإن كان من قوم عدو لكم وهو مؤمن فتحرير رقبة مؤمنة | ٩٢ م | » | ٤ |
| | وإن كان من قوم بينكم وبينهم ميثاق فدية مسلمة إلى أهله | ٩٢ م | » | ٤ |
| | فمن لم يجد فصيام شهرين متتابعين توبة من الله وكان الله عليما حكيما ... ... ... ... ... ... ... | ٩٢ م | » | ٤ |
| | فتبينوا إن الله كان بما تعملون خبيرا ... ... ... ... | ٩٤ م | » | ٤ |
| | درجات منه ومغفرة ورحمة وكان الله غفورا رحيما... | ٩٦ م | » | ٤ |
| | فأولئك عسى الله أن يعفو عنهم وكان الله عفوا غفورا | ٩٩ م | » | ٤ |
| | فقد وقع أجره على الله وكان الله غفورا رحيما ... ... | ١٠٠ م | » | ٤ |
| | ولا جناح عليكم إن كان بكم أذى من مطر أو كنتم مرضى أن تضعوا أسلحتكم ... ... ... ... ... | ١٠٢ م | » | ٤ |
| | وترجون من الله ما لا يرجون وكان الله عليما حكيما... | ١٠٤ م | » | ٤ |
| | واستغفر الله إن الله كان غفورا رحيما ... ... ... | ١٠٦ م | » | ٤ |
| | إن الله لا يحب من كان خوانا أثيما ... ... ... ... | ١٠٧ م | » | ٤ |
| | وكان الله بما يعملون محيطا ... ... ... ... ... ... | ١٠٨ م | » | ٤ |
| | ومن يكسب إثما فإنما يكسبه على نفسه وكان الله عليما حكيما ... ... ... ... ... ... ... ... | ١١١ م | » | ٤ |
| | وعلمك ما لم تكن تعلم وكان فضل الله عليك عظيما ... | ١١٣ م | » | ٤ |
| | وكان الله بكل شيء محيطا ... ... ... ... ... ... | ١٢٦ م | » | ٤ |
| | وما تفعلوا من خير فإن الله كان به عليما ... ... ... | ١٢٧ م | » | ٤ |
| | وإن تحسنوا وتتقوا فإن الله كان بما تعملون خبيرا | ١٢٨ م | » | ٤ |
| | وإن تصلحوا وتتقوا فإن الله كان غفورا رحيما ... | ١٢٩ م | » | ٤ |
| | وإن يتفرقا يغن الله كلا من سعته وكان الله واسعا حكيما | ١٣٠ م | » | ٤ |
| | فإن لله ما في السموات وما في الأرض وكان الله غنيا حميدا | ١٣١ م | » | ٤ |
| | وكان الله على ذلك قديرا ... ... ... ... ... ... | ١٣٣ م | » | ٤ |
| | من كان يريد ثواب الدنيا فعند الله ثواب الدنيا والآخرة | ١٣٤ م | » | ٤ |
| | وكان الله سميعا بصيرا ... ... ... ... ... ... | ١٣٤ م | » | ٤ |
| | وإن تلووا أو تعرضوا فإن الله كان بما تعملون خبيرا | ١٣٥ م | » | ٤ |
| | فإن كان لكم فتح من الله قالوا ألم نكن معكم ... ... | ١٤١ م | » | ٤ |
| | وإن كان للكافرين نصيب قالوا ألم نستحوذ عليكم... | ١٤١ م | » | ٤ |
| | ما يفعل الله بعذابكم إن شكرتم وآمنتم وكان الله شاكرا عليما | ١٤٧ م | » | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَانَ | لا يحب الله الجهر بالسوء من القول إلا من ظلم وكان الله سميعا عليما ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٨م | النساء | ٤ |
| | إن تبدوا خيرا أو تخفوه أو تعفوا عن سوء فإن الله كان عفوا قديرا ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٩م | » | ٤ |
| | أولئك سوف يؤتيهم أجورهم وكان الله غفورا رحيما | ١٥٢م | » | ٤ |
| | بل رفعه الله إليه وكان الله عزيزا حكيما ... ... ... | ١٥٨م | » | ٤ |
| | لئلا يكون للناس على الله حجة بعد الرسل وكان الله عزيزا حكيما ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٦٥م | » | ٤ |
| | إلا طريق جهنم خالدين فيها أبدا وكان ذلك على الله يسيرا | ١٦٩م | » | ٤ |
| | فإن لله ما في السموات والأرض وكان الله عليما حكيما | ١٧٠م | » | ٤ |
| | أو لو كان آباؤهم لا يعلمون شيئا ولا يهتدون ... ... | ١٠٤م | المائدة | ٥ |
| | فيقسمان بالله إن ارتبتم لا نشتري به ثمنا ولو كان ذا قربى | ١٠٦م | » | ٥ |
| | قل سيروا في الأرض ثم انظروا كيف كان عاقبة المكذبين | ١١ ك | الأنعام | ٦ |
| | وإن كان كبر عليك إعراضهم فإن استطعت أن تبتغي نفقا | ٣٥ ك | » | ٦ |
| | أو من كان ميتا فأحييناه وجعلنا له نورا يمشي به في الناس كمن مثله في الظلمات ليس بخارج منها ... ... | ١٢٢ك | » | ٦ |
| | فما كان لشركائهم فلا يصل إلى الله ... ... ... ... | ١٣٦ك | » | ٦ |
| | وما كان لله فهو يصل إلى شركائهم ... ... ... ... | ١٣٦ك | » | ٦ |
| | وإذا قلتم فاعدلوا ولو كان ذا قربى ... ... ... ... | ١٥٢م | » | ٦ |
| | ملة إبراهيم حنيفا وما كان من المشركين ... ... ... | ١٦١ك | » | ٦ |
| | فما كان دعواهم إذ جاءهم بأسنا إلا أن قالوا إنا كنا ظالمين | ٥ ك | الأعراف | ٧ |
| | فما كان لكم علينا من فضل فذوقوا العذاب بما كنتم تكسبون... ... ... ... ... ... ... | ٣٩ ك | » | ٧ |
| | قالوا أجئتنا لنعبد الله وحده ونذر ما كان يعبد آباؤنا | ٧٠ ك | » | ٧ |
| | وما كان جواب قومه إلا أن قالوا أخرجوهم من قريتكم | ٨٢ ك | » | ٧ |
| | وأمطرنا عليهم مطرا فانظر كيف كان عاقبة المجرمين | ٨٤ ك | » | ٧ |
| | وانظروا كيف كان عاقبة المفسدين ... ... ... ... | ٨٦ ك | » | ٧ |
| | وإن كان طائفة منكم آمنوا بالذي أرسلت به ... ... | ٨٧ ك | » | ٧ |
| | فظلموا بها فانظر كيف كان عاقبة المفسدين ... ... | ١٠٣ك | » | ٧ |
| | ودمرنا ما كان يصنع فرعون وقومه وما كانوا يعرشون | ١٣٧ك | » | ٧ |
| | فانسلخ منها فأتبعه الشيطان فكان من الغاوين ... ... | ١٧٥ك | » | ٧ |
| | إن كان هذا هو الحق من عندك فأمطر علينا حجارة من السماء | ٣٢ ك | الأنفال | ٨ |
| | وما كان الله ليعذبهم وأنت فيهم ... ... ... ... ... | ٣٣ ك | » | ٨ |
| | وما كان الله معذبهم وهم يستغفرون ... ... ... ... | ٣٣ ك | » | ٨ |
| | وما كان صلاتهم عند البيت إلا مكاء وتصدية ... ... | ٣٥ ك | » | ٨ |
| | ولكن ليقضي الله أمرا كان مفعولا ... ... ... ... | ٤٢ م | » | ٨ |
| | ويقللكم في أعينهم ليقضي الله أمرا كان مفعولا ... | ٤٤ م | » | ٨ |
| | ما كان لنبي أن يكون له أسرى حتى يثخن في الأرض | ٦٧ م | » | ٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَانَ | ما كان للمشركين أن يعمروا مساجد الله شاهدين على أنفسهم بالكفر... ... ... ... ... ... ... ... | ١٧ م | التوبة | ٩ |
| | قل إن كان آباؤكم وأبناؤكم وإخوانكم وأزواجكم ... | ٢٤ م | » | ٩ |
| | لو كان عرضا قريبا وسفرا قاصدا لاتبعوك ... ... | ٤٢ م | » | ٩ |
| | فما كان الله ليظلمهم ولكن كانوا أنفسهم يظلمون | ٧٠ م | » | ٩ |
| | ما كان للنبي والذين آمنوا أن يستغفروا للمشركين ... | ١١٣م | » | ٩ |
| | وما كان استغفار إبراهيم لأبيه إلا عن موعدة ... ... | ١١٤م | » | ٩ |
| | وما كان الله ليضل قوما بعد إذ هداهم ... ... ... | ١١٥م | » | ٩ |
| | ما كان لأهل المدينة ومن حولهم من الأعراب أن يتخلفوا عن رسول الله ... ... ... ... ... ... | ١٢٠م | » | ٩ |
| | وما كان المؤمنون لينفروا كافة ... ... ... ... ... | ١٢٢م | » | ٩ |
| | أكان للناس عجبا أن أوحينا إلى رجل منهم ... ... | ٢ ك | يونس | ١٠ |
| | وما كان الناس إلا أمة واحدة فاختلفوا ... ... ... | ١٩ ك | » | ١٠ |
| | وما كان هذا القرآن أن يفترى من دون الله ... ... | ٣٧ ك | » | ١٠ |
| | كذلك كذب الذين من قبلهم فانظر كيف كان عاقبة الظالمين | ٣٩ ك | » | ١٠ |
| | إن كان كبر عليكم مقامي وتذكيري بآيات الله فعلى الله توكلت ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧١ ك | » | ١٠ |
| | فانظر كيف كان عاقبة المنذرين ... ... ... ... ... | ٧٣ ك | » | ١٠ |
| | وما كان لنفس أن تؤمن إلا بإذن الله ... ... ... | ١٠٠ك | » | ١٠ |
| | وكان عرشه على الماء ... ... ... ... ... ... ... | ٧ ك | هود | ١١ |
| | من كان يريد الحياة الدنيا وزينتها نوف إليهم أعمالهم فيها | ١٥ ك | » | ١١ |
| | أفمن كان على بينة من ربه ويتلوه شاهد منه ... ... | ١٧ م | » | ١١ |
| | وما كان لهم من دون الله من أولياء ... ... ... ... | ٢٠ ك | » | ١١ |
| | ولا ينفعكم نصحي إن أردت أن أنصح لكم إن كان الله يريد أن يغويكم ... ... ... ... ... ... | ٣٤ ك | » | ١١ |
| | ونادى نوح ابنه وكان في معزل يا بني اركب معنا ... | ٤٢ ك | » | ١١ |
| | وحال بينهما الموج فكان من المغرقين... ... ... ... | ٤٣ ك | » | ١١ |
| | فلولا كان من القرون من قبلكم أولوا بقية... ... ... | ١١٦ك | » | ١١ |
| | وما كان ربك ليهلك القرى بظلم وأهلها مصلحون ... | ١١٧ك | » | ١١ |
| | لقد كان في يوسف وإخوته آيات للسائلين ... ... | ٧ م | يوسف | ١٢ |
| | إن كان قميصه قد من قبل فصدقت وهو من الكاذبين | ٢٦ ك | » | ١٢ |
| | وإن كان قميصه قد من دبر فكذبت وهو من الصادقين | ٢٧ ك | » | ١٢ |
| | ما كان لنا أن نشرك بالله من شيء ... ... ... ... | ٣٨ ك | » | ١٢ |
| | ما كان يغني عنهم من الله من شيء ... ... ... ... | ٦٨ ك | » | ١٢ |
| | ما كان ليأخذ أخاه في دين الملك إلا أن يشاء الله ... | ٧٦ ك | » | ١٢ |
| | أفلم يسيروا في الأرض فينظروا كيف كان عاقبة الذين من قبلهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٩ك | » | ١٢ |
| | لقد كان في قصصهم عبرة لأولي الألباب ... ... | ١١١ك | » | ١٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَانَ: | ما كان حديثا يفترى ولكن تصديق الذى بين يديه | ١١١ | ك يوسف | ١٢ |
| | فأمليت للذين كفروا ثم أخذتهم فكيف كان عقاب ... | ٣٢ | م الرعـــد | ١٣ |
| | وما كان لرسول أن يأتى بآية إلا بإذن الله ... ... | ٣٨ | م « | ١٣ |
| | تريدون أن تصدونا عما كان يعبد آباؤنا ... ... ... | ١٠ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وما كان لنا أن نأتيكم بسلطان إلا بإذن الله ... ... | ١١ | ك « | ١٤ |
| | وما كان لى عليكم من سلطان إلا أن دعوتكم فاستجبتم لى | ٢٢ | ك « | ١٤ |
| | وإن كان مكرهم لتزول منه الجبال ... ... ... ... | ٤٦ | ك « | ١٤ |
| | وإن كان أصحاب الأيكة لظالمين ... ... ... ... | ٧٨ | ك الحجر | ١٥ |
| | فسيروا فى الأرض فانظروا كيف كان عاقبة المكذبين | ٣٦ | ك النحل | ١٦ |
| | إن إبراهيم كان أمة قانتا لله حنيفا ... ... ... ... | ١٢٠ | ك « | ١٦ |
| | أن اتبع ملة إبراهيم حنيفا وما كان من المشركين ... | ١٢٣ | ك « | ١٦ |
| | ذرية من حملنا مع نوح إنه كان عبدا شكورا ... ... | ٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فجاسوا خلال الديار وكان وعدا مفعولا ... ... ... | ٥ | ك « | ١٧ |
| | ويدع الإنسان بالشر دعاءه بالخير وكان الإنسان عجولا | ١١ | ك « | ١٧ |
| | من كان يريد العاجلة عجلنا له فيها ما نشاء لمن نريد | ١٨ | ك « | ١٧ |
| | فأولئك كان سعيهم مشكورا ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك « | ١٧ |
| | وما كان عطاء ربك محظورا... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك « | ١٧ |
| | إن تكونوا صالحين فإنه كان للأوابين غفورا... ... | ٢٥ | ك « | ١٧ |
| | وكان الشيطان لربه كفورا ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك « | ١٧ |
| | إن ربك يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر إنه كان بعباده | | | |
| | خبيرا بصيرا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك « | ١٧ |
| | نحن نرزقهم وإياكم إن قتلهم كان خطأ كبيرا ... ... | ٣١ | ك « | ١٧ |
| | ولا تقربوا الزنى إنه كان فاحشة وساء سبيلا ... ... | ٣٢ | م « | ١٧ |
| | فلا يسرف فى القتل إنه كان منصورا ... ... ... ... | ٣٣ | م « | ١٧ |
| | وأوفوا بالعهد إن العهد كان مسئولا ... ... ... ... | ٣٤ | ك « | ١٧ |
| | إن السمع والبصر والفؤاد كل أولئك كان عنه مسئولا | ٣٦ | ك « | ١٧ |
| | كل ذلك كان سيئه عند ربك مكروها ... ... ... ... | ٣٨ | ك « | ١٧ |
| | قل لو كان معه آلهة كما يقولون إذا لابتغوا إلى | | | |
| | ذى العرش سبيلا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك « | ١٧ |
| | ولكن لا تفقهون تسبيحهم إنه كان حليما غفورا ... | ٤٤ | ك « | ١٧ |
| | إن الشيطان كان للإنسان عدوا مبينا ... ... ... ... | ٥٣ | ك « | ١٧ |
| | ويخافون عذابه إن عذاب ربك كان محذورا ... | ٥٧ | م « | ١٧ |
| | كان ذلك فى الكتاب مسطورا ... ... ... ... ... | ٥٨ | ك « | ١٧ |
| | لتبتغوا من فضله إنه كان بكم رحيما ... ... ... ... | ٦٦ | ك « | ١٧ |
| | فلما نجاكم إلى البر أعرضتم وكان الإنسان كفورا ... | ٦٧ | ك « | ١٧ |
| | ومن كان فى هذه أعمى فهو فى الآخرة أعمى وأضل سبيلا | ٧٢ | ك « | ١٧ |
| | وقرآن الفجر إن قرآن الفجر كان مشهودا ... .. | ٧٨ | م « | ١٧ |
| | وقل جاء الحق وزهق الباطل إن الباطل كان زهوقا | ٨١ | ك « | ١٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَانَ: | وإذا مسه الشر كان يئوسا ... ... ... ... ... ... | ٨٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| | إلا رحمة من ربك إن فضله كان عليك كبيرا ... ... | ٨٧ | ك « | ١٧ |
| | لا يأتون بمثله ولو كان بعضهم لبعض ظهيرا ... ... | ٨٨ | ك « | ١٧ |
| | قل لو كان فى الأرض ملائكة يمشون مطمئنين لنزلنا | | | |
| | عليهم من السماء ملكا رسولا ... ... ... ... ... | ٩٥ | ك « | ١٧ |
| | قل كفى بالله شهيدا بينى وبينكم إنه كان بعباده | | | |
| | خبيرا بصيرا ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩٦ | ك « | ١٧ |
| | إذا لأمسكتم خشية الإنفاق وكان الإنسان قتورا ... | ١٠٠ | ك « | ١٧ |
| | ويقولون سبحان ربنا إن كان وعد ربنا لمفعولا ... | ١٠٨ | ك « | ١٧ |
| | ولا تطع من أغفلنا قلبه عن ذكرنا واتبع هواه وكان | | | |
| | أمره فرطا ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م الكهف | ١٨ |
| | وكان له ثمر فقال لصاحبه وهو يحاوره أنا أكثر منك مالا | ٣٤ | ك « | ١٨ |
| | ولم تكن له فئة ينصرونه من دون الله وما كان منتصرا | ٤٣ | ك « | ١٨ |
| | فأصبح هشيما تذروه الرياح وكان الله على كل شىء مقتدرا | ٤٥ | ك « | ١٨ |
| | فسجدوا إلا إبليس كان من الجن ففسق عن أمر ربه | ٥٠ | ك « | ١٨ |
| | وكان الإنسان أكثر شىء جدلا ... ... ... ... ... | ٥٤ | ك « | ١٨ |
| | وكان وراءهم ملك يأخذ كل سفينة غصبا ... ... | ٧٩ | ك « | ١٨ |
| | وأما الغلام فكان أبواه مؤمنين فخشينا أن يرهقهما | ٨٠ | ك « | ١٨ |
| | وأما الجدار فكان لغلامين يتيمين فى المدينة ... ... | ٨٢ | ك « | ١٨ |
| | وكان تحته كنز لهما ... ... ... ... ... ... ... | ٨٢ | ك « | ١٨ |
| | وكان أبوهما صالحا ... ... ... ... ... ... ... | ٨٢ | ك « | ١٨ |
| | فإذا جاء وعد ربى جعله دكاء وكان وعد ربى حقا | ٩٨ | م « | ١٨ |
| | قل لو كان البحر مدادا لكلمات ربى لنفد البحر ... | ١٠٩ | ك « | ١٨ |
| | فمن كان يرجوا لقاء ربه فليعمل عملا صالحا ... ... | ١١٠ | ك « | ١٨ |
| | وحنانا من لدنا وزكاة وكان تقيا ... ... ... ... | ١٣ | ك مريم | ١٩ |
| | ولنجعله آية للناس ورحمة منا وكان أمرا مقضيا ... | ٢١ | ك « | ١٩ |
| | يا أخت هرون ما كان أبوك امرأ سوء وما كانت | | | |
| | أمك بغيا ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ١٩ |
| | فأشارت إليه قالوا كيف نكلم من كان فى المهد صبيا | ٢٩ | ك « | ١٩ |
| | ما كان لله أن يتخذ من ولد ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك « | ١٩ |
| | واذكر فى الكتاب إبراهيم إنه كان صديقا نبيا... ... | ٤١ | ك « | ١٩ |
| | يا أبت لا تعبد الشيطان إن الشيطان كان للرحمن عصيا | ٤٤ | ك « | ١٩ |
| | قال سلام عليك سأستغفر لك ربى إنه كان بى حفيا | ٤٧ | ك « | ١٩ |
| | واذكر فى الكتاب موسى إنه كان مخلصا ... ... ... | ٥١ | ك « | ١٩ |
| | وكان رسولا نبيا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥١ | ك « | ١٩ |
| | واذكر فى الكتاب إسمعيل إنه كان صادق الوعد ... | ٥٤ | ك « | ١٩ |
| | وكان رسولا نبيا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٤ | ك « | ١٩ |
| | وكان يأمر أهله بالصلاة والزكاة ... ... ... ... | ٥٥ | ك « | ١٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَانَ | : كان ذلك فى الكتاب مسطورا ... ... ... ... ... | ٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وكان الله بما تعملون بصيرا ... ... ... ... ... ... | ٩ | م » | ٣٣ |
| | وكان عهد الله مسئولا ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | م » | ٣٣ |
| | أولئك لم يؤمنوا فأحبط الله أعمالهم وكان ذلك على الله يسيرا ... ... ... ... ... ... ... | ١٩ | م » | ٣٣ |
| | لقد كان لكم فى رسول الله أسوة حسنة ... ... ... | ٢١ | م » | ٣٣ |
| | لمن كان يرجوا الله واليوم الآخر وذكر الله كثيرا ... | ٢١ | م » | ٣٣ |
| | أو يتوب عليهم إن الله كان غفورا رحيما ... ... ... | ٢٤ | م » | ٣٣ |
| | وكفى الله المؤمنين القتال وكان الله قويا عزيزا ... | ٢٥ | م » | ٣٣ |
| | وأرضا لم تطئوها وكان الله على كل شىء قديرا ... ... | ٢٧ | م » | ٣٣ |
| | يضاعف لها العذاب ضعفين وكان ذلك على الله يسيرا | ٣٠ | م » | ٣٣ |
| | إن الله كان لطيفا خبيرا ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | م » | ٣٣ |
| | وما كان لمؤمن ولا مؤمنة إذا قضى الله ورسوله أمرا أن يكون لهم الخيرة من أمرهم ... ... ... ... | ٣٦ | م » | ٣٣ |
| | إذا قضوا منهن وطرا وكان أمر الله مفعولا ... ... | ٣٧ | م » | ٣٣ |
| | ما كان على النبى من حرج فيما فرض الله له ... ... ... | ٣٨ | م » | ٣٣ |
| | سنة الله فى الذين خلوا من قبل وكان أمر الله قدرا مقدورا | ٣٨ | م » | ٣٣ |
| | ما كان محمد أبا أحد من رجالكم ... ... ... ... ... | ٤٠ | م » | ٣٣ |
| | ولكن رسول الله وخاتم النبيين وكان الله بكل شىء عليما | ٤٠ | م » | ٣٣ |
| | وكان بالمؤمنين رحيما ... ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | م » | ٣٣ |
| | لكيلا يكون عليك حرج وكان الله غفورا رحيما ... | ٥٠ | م » | ٣٣ |
| | والله يعلم ما فى قلوبكم وكان الله عليما حليما ... ... ... | ٥١ | م » | ٣٣ |
| | وكان الله على كل شىء رقيبا ... ... ... ... ... | ٥٢ | م » | ٣٣ |
| | إن ذلكم كان يؤذى النبى فيستحى منكم ... ... ... | ٥٣ | م » | ٣٣ |
| | وما كان لكم أن تؤذوا رسول الله ... ... ... ... | ٥٣ | م » | ٣٣ |
| | إن ذلكم كان عند الله عظيما ... ... ... ... ... | ٥٣ | م » | ٣٣ |
| | إن تبدوا شيئا أو تخفوه فإن الله كان بكل شىء عليما | ٥٤ | م » | ٣٣ |
| | واتقين الله إن الله كان على كل شىء شهيدا ... ... | ٥٥ | م » | ٣٣ |
| | ذلك أدنى أن يعرفن فلا يؤذين وكان الله غفورا رحيما | ٥٩ | م » | ٣٣ |
| | فبرأه الله مما قالوا وكان عند الله وجيها ... ... ... | ٦٩ | م » | ٣٣ |
| | وحملها الإنسان إنه كان ظلوما جهولا ... ... ... | ٧٢ | م » | ٣٣ |
| | ويتوب الله على المؤمنين والمؤمنات وكان الله غفورا رحيما | ٧٣ | م » | ٣٣ |
| | لقد كان لسبإ فى مسكنهم آية ... ... ... ... ... | ١٥ | ك سبإ | ٣٤ |
| | وما كان له عليهم من سلطان إلا لنعلم من يؤمن بالآخرة | ٢١ | ك » | ٣٤ |
| | ما هذا إلا رجل يريد أن يصدكم عما كان يعبد آباؤكم | ٤٣ | ك » | ٣٤ |
| | فكذبوا رسلى فكيف كان نكير ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك » | ٣٤ |
| | من كان يريد العزة فلله العزة جميعا ... ... ... ... | ١٠ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وإن تدع مثقلة إلى حملها لا يحمل منه شىء ولو كان ذا قربى | ١٨ | ك » | ٣٥ |
| | ثم أخذت الذين كفروا فكيف كان نكير ... ... ... | ٢٦ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ولئن زالتا إن أمسكهما من أحد من بعده إنه كان حليما غفورا | ٤١ | ك » | ٣٥ |
| | فينظروا كيف كان عاقبة الذين من قبلهم ... ... ... | ٤٤ | ك » | ٣٥ |
| | وما كان الله ليعجزه من شىء فى السموات ولا فى الأرض | ٤٤ | ك » | ٣٥ |
| | إنه كان عليما قديرا ... ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك » | ٣٥ |
| | فإذا جاء أجلهم فإن الله كان بعباده بصيرا ... ... | ٤٥ | ك » | ٣٥ |
| | لينذر من كان حيا ويحق القول على الكافرين ... ... | ٧٠ | ك يس | ٣٦ |
| | وما كان لنا عليكم من سلطان بل كنتم قوما طاغين ... | ٣٠ | ك الصافات | ٣٧ |
| | قال قائل منهم إنى كان لى قرين ... ... ... ... | ٥١ | ك » | ٣٧ |
| | فانظر كيف كان عاقبة المنذرين ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك » | ٣٧ |
| | فساهم فكان من المدحضين ... ... ... ... ... ... | ١٤١ | ك » | ٣٧ |
| | فلولا أنه كان من المسبحين . للبث فى بطنه إلى يوم يبعثون | ١٤٣ | ك » | ٣٧ |
| | ما كان لى من علم بالملإ الأعلى إذ يختصمون ... ... | ٦٩ | ك ص | ٣٨ |
| | إلا إبليس استكبر وكان من الكافرين ... ... ... ... | ٧٤ | ك » | ٣٨ |
| | ثم إذا خوله نعمة منه نسى ما كان يدعوا إليه من قبل | ٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| | فأخذتهم فكيف كان عقاب ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك غافر | ٤٠ |
| | فينظروا كيف كان عاقبة الذين كانوا من قبلهم ... | ٢١ | ك » | ٤٠ |
| | فأخذهم الله بذنوبهم وما كان لهم من الله من واق | ٢١ | ك » | ٤٠ |
| | وما كان لرسول أن يأتى بآية إلا بإذن الله ... ... | ٧٨ | ك » | ٤٠ |
| | فينظروا كيف كان عاقبة الذين من قبلهم ... ... ... | ٨٢ | ك » | ٤٠ |
| | قل أرأيتم إن كان من عند الله ثم كفرتم به ... ... | ٥٢ | ك فصلت | ٤١ |
| | من كان يريد حرث الآخرة نزد له فى حرثه ... ... ... | ٢٠ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ومن كان يريد حرث الدنيا نؤته منها ... ... ... ... | ٢٠ | ك » | ٤٢ |
| | وما كان لهم من أولياء ينصرونهم من دون الله ... | ٤٦ | ك » | ٤٢ |
| | وما كان لبشر أن يكلمه الله إلا وحيا أو من وراء حجاب | ٥١ | ك » | ٤٢ |
| | فانتقمنا منهم فانظر كيف كان عاقبة المكذبين ... ... | ٢٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | أفأنت تسمع الصم أو تهدى العمى ومن كان فى ضلال مبين | ٤٠ | ك » | ٤٣ |
| | قل إن كان للرحمن ولد فأنا أول العابدين ... ... ... | ٨١ | ك » | ٤٣ |
| | من فرعون إنه كان عاليا من المسرفين ... ... ... ... | ٣١ | ك الدخان | ٤٤ |
| | ما كان حجتهم إلا أن قالوا ائتوا بآبائنا إن كنتم صادقين | ٢٥ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | قل أرأيتم إن كان من عند الله وكفرتم به ... ... ... | ١٠ | م الأحقاف | ٤٦ |
| | وقال الذين كفروا للذين آمنوا لو كان خيرا ما سبقونا إليه | ١١ | ك » | ٤٦ |
| | فينظروا كيف كان عاقبة الذين من قبلهم ... ... ... | ١٠ | م محمد | ٤٧ |
| | أفمن كان على بينة من ربه كمن زين له سوء عمله ... | ١٤ | م » | ٤٧ |
| | فإذا عزم الأمر فلو صدقوا الله لكان خيرا لهم | ٢١ | م » | ٤٧ |
| | ولله جنود السموات والأرض وكان الله عليما حكيما | ٤ | م الفتح | ٤٨ |
| | ويكفر عنهم سيئاتهم وكان ذلك عند الله فوزا عظيما | ٥ | م » | ٤٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَانَ | : ولله جنود السموات والأرض وكان الله عزيزا حكيما | ٧ | م الفتح | ٤٨ |
| | بل كان الله بما تعملون خبيرا ... ... ... ... ... | ١١ | م « | ٤٨ |
| | يغفر لمن يشاء ويعذب من يشاء وكان الله غفورا رحيما | ١٤ | م « | ٤٨ |
| | ومغانم كثيرة يأخذونها وكان الله عزيزا حكيما... ... | ١٩ | م « | ٤٨ |
| | قد أحاط الله بها وكان الله على كل شيء قديرا... ... | ٢١ | م « | ٤٨ |
| | من بعد أن أظفركم عليهم وكان الله بما تعملون بصيرا | ٢٤ | م « | ٤٨ |
| | وكانوا أحق بها وأهلها وكان الله بكل شيء عليما ... | ٢٦ | م « | ٤٨ |
| | ولو أنهم صبروا حتى تخرج إليهم لكان خيرا لهم ... | ٥ | م الحجرات | ٤٩ |
| | قال قرينه ربنا ما أطغيته ولكن كان في ضلال بعيد | ٢٧ | ك قٓ | ٥٠ |
| | إن في ذلك لذكرى لمن كان له قلب أو ألقى السمع وهو شهيد | ٣٧ | ك « | ٥٠ |
| | فأخرجنا من كان فيها من المؤمنين ... ... ... ... | ٣٥ | ك الذاريات | ٥١ |
| | ثم دنا فتدلى . فكان قاب قوسين أو أدنى... ... ... | ٩ | ك النجم | ٥٣ |
| | تجرى بأعيننا جزاء لمن كان كفر ... ... ... ... ... | ١٤ | ك القمر | ٥٤ |
| | ولقد تركناها آية فهل من مدكر . فكيف كان عذابي ونذر | ١٦ | ك « | ٥٤ |
| | كذبت عاد فكيف كان عذابي ونذر ... ... ... ... | ١٨ | ك « | ٥٤ |
| | كأنهم أعجاز نخل منقعر . فكيف كان عذابي ونذر | ٢١ | ك « | ٥٤ |
| | فنادوا صاحبهم فتعاطى فعقر . فكيف كان عذابي ونذر | ٣٠ | ك « | ٥٤ |
| | فأما إن كان من المقربين . فروح وريحان وجنة نعيم | ٨٨ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | وأما إن كان من أصحاب اليمين . فسلام لك من أصحاب اليمين ... ... ... ... ... ... ... | ٩٠ | ك « | ٥٦ |
| | وأما إن كان من المكذبين الضالين . فنزل من حميم | ٩٢ | ك « | ٥٦ |
| | ويؤثرون على أنفسهم ولو كان بهم خصاصة... ... | ٩ | م الحشر | ٥٩ |
| | فكان عاقبتهما أنهما في النار خالدين فيها ... ... ... | ١٧ | م « | ٥٩ |
| | لقد كان لكم فيهم أسوة حسنة ... ... ... ... ... | ٦ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | لمن كان يرجوا الله واليوم الآخر... ... ... ... ... | ٦ | م « | ٦٠ |
| | ذلكم يوعظ به من كان يؤمن بالله واليوم الآخر ... | ٢ | م الطلاق | ٦٥ |
| | فذاقت وبال أمرها وكان عاقبة أمرها خسرا... ... | ٩ | م « | ٦٥ |
| | ولقد كذب الذين من قبلهم فكيف كان نكير... ... | ١٨ | ك الملك | ٦٧ |
| | عتل بعد ذلك زنيم . أن كان ذا مال وبنين ... ... | ١٤ | ك القلم | ٦٨ |
| | إنه كان لا يؤمن بالله العظيم ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | في يوم كان مقداره خمسين ألف سنة ... ... ... | ٤ | ك المعارج | ٧٠ |
| | فقلت استغفروا ربكم إنه كان غفارا ... ... ... ... | ١٠ | ك نوح | ٧١ |
| | وأنه كان يقول سفيهنا على الله شططا... ... ... ... | ٤ | ك الجن | ٧٢ |
| | وأنه كان رجال من الإنس يعوذون برجال من الجن | ٦ | ك « | ٧٢ |
| | السماء منفطر به كان وعده مفعولا ... ... ... ... | ١٨ | ك المزمل | ٧٣ |
| | كلا إنه كان لآياتنا عنيدا ... ... ... ... ... ... | ١٦ | ك المدثر | ٧٤ |
| | ثم كان علقة فخلق فسوى ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك القيامة | ٧٥ |
| | إن الأبرار يشربون من كأس كان مزاجها كافورا... | ٥ | م الإنسان | ٧٦ |
| كَانَ | : يوفون بالنذر ويخافون يوما كان شره مستطيرا ... | ٧ | م الإنسان | ٧٦ |
| | ويسقون فيها كأسا كان مزاجها زنجبيلا... ... ... | ١٧ | م « | ٧٦ |
| | إن هذا كان لكم جزاء... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | م « | ٧٦ |
| | وكان سعيكم مشكورا ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | م « | ٧٦ |
| | وما تشاءون إلا أن يشاء الله إن الله كان عليما حكيما | ٣٠ | م « | ٧٦ |
| | فإن كان لكم كيد فكيدون ... ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك المرسلات | ٧٧ |
| | إن يوم الفصل كان ميقاتا ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك النبأ | ٧٨ |
| | إنه كان في أهله مسرورا ... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| | بلى إن ربه كان به بصيرا ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك « | ٨٤ |
| | ثم كان من الذين آمنوا وتواصوا بالصبر وتواصوا بالمرحمة | ١٧ | ك البلد | ٩٠ |
| | أرأيت إن كان على الهدى ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك العلق | ٩٦ |
| | فسبح بحمد ربك واستغفره إنه كان توابا ... ... ... | ٣ | م النصر | ١١٠ |
| كَانَا | : فأزلهما الشيطان عنها فأخرجهما مما كانا فيه ... ... | ٣٦ | م البقرة | ٢ |
| | (٢) قد خلت من قبله الرسل وأمه صديقة كانا يأكلان الطعام | ٧٥ | م المائدة | ٥ |
| كَانَتْ | : قل إن كانت لكم الدار الآخرة عند الله خالصة من دون الناس فتمنوا الموت ... ... ... ... ... | ٩٤ | م البقرة | ٢ |
| | (٣٧) وإن كانت لكبيرة إلا على الذين هدى الله ... ... | ١٤٣ | م « | ٢ |
| | وإن كانت واحدة فلها النصف ... ... ... ... ... | ١١ | م النساء | ٤ |
| | إن الصلاة كانت على المؤمنين كتابا موقوتا ... ... | ١٠٣ | م « | ٤ |
| | فأنجيناه وأهله إلا امرأته كانت من الغابرين ... ... | ٨٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | ويضع عنهم إصرهم والأغلال التي كانت عليهم... ... | ١٥٧ | ك « | ٧ |
| | وسئلهم عن القرية التي كانت حاضرة البحر ... ... | ١٦٣ | م « | ٧ |
| | فلولا كانت قرية آمنت فنفعها إيمانها إلا قوم يونس | ٩٨ | ك يونس | ١٠ |
| | وضرب الله مثلا قرية كانت آمنة مطمئنة... ... ... | ١١٢ | ك النحل | ١٦ |
| | أما السفينة فكانت لمساكين يعملون في البحر... ... | ٧٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | الذين كانت أعينهم في غطاء عن ذكرى ... ... ... | ١٠١ | م « | ١٨ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات كانت لهم جنات الفردوس نزلا... ... ... ... ... ... ... | ١٠٧ | ك « | ١٨ |
| | وإني خفت الموالي من ورائي وكانت امرأتي عاقرا | ٥ | ك مريم | ١٩ |
| | قال رب أنى يكون لي غلام وكانت امرأتي عاقرا ... | ٨ | ك « | ١٩ |
| | يا أخت هرون ما كان أبوك امرأ سوء وما كانت أمك بغيا | ٢٨ | ك « | ١٩ |
| | وكم قصمنا من قرية كانت ظالمة وأنشأنا بعدها قوما آخرين | ١١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ونجيناه من القرية التي كانت تعمل الخبائث ... ... | ٧٤ | ك « | ٢١ |
| | قد كانت آياتي تتلى عليكم فكنتم على أعقابكم تنكصون | ٦٦ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | كانت لهم جزاء ومصيرا ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وصدها ما كانت تعبد من دون الله ... ... ... ... | ٤٣ | ك النمل | ٢٧ |
| | إنها كانت من قوم كافرين ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك « | ٢٧ |
| | لننجينه وأهله إلا امرأته كانت من الغابرين ... ... | ٣٢ | ك العنكبوت | ٢٩ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَانَتْ | : إنا منجوك وأهلك إلا امرأتك كانت من الغابرين | ٣٣ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | إن كانت إلا صيحة واحدة فإذا هم خامدون ... ... | ٢٩ | ك يس | ٣٦ |
| | إن كانت إلا صيحة واحدة فإذا هم جميع لدينا محضرون | ٥٣ | ك « | ٣٦ |
| | ذلك بأنه كانت تأتيهم رسلهم بالبينات فكفروا ... | ٢٢ | ك غافر | ٤٠ |
| | فإذا انشقت السماء فكانت وردة كالدهان ... ... | ٣٧ | م الرحمن | ٥٥ |
| | وبست الجبال بسا . فكانت هباء منبثا ... ... ... | ٦ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | قد كانت لكم أسوة حسنة في إبراهيم والذين معه ... | ٤ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | ذلك بأنه كانت تأتيهم رسلهم بالبينات ... ... ... | ٦ | م التغابن | ٦٤ |
| | وصدقت بكلمات ربها وكتبه وكانت من القانتين ... | ١٢ | م التحريم | ٦٦ |
| | يا ليتها كانت القاضية ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | يوم ترجف الأرض والجبال وكانت الجبال كثيبا مهيلا | ١٤ | ك المزمل | ٧٣ |
| | ويطاف عليهم بآنية من فضة وأكواب كانت قواريرا | ١٥ | م الإنسان | ٧٦ |
| | وفتحت السماء فكانت أبوابا ... ... ... ... ... | ١٩ | ك النبأ | ٧٨ |
| | وسيرت الجبال فكانت سرابا ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك « | ٧٨ |
| | إن جهنم كانت مرصادا ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك « | ٧٨ |
| كَانَتَا | : فإن كانتا اثنتين فلهما الثلثان مما ترك ... ... ... | ١٧٦ | م النساء | ٤ |
| (٣) | أو لم ير الذين كفروا أن السموات والأرض كانتا رتقا ففتقناهما ... ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | كانتا تحت عبدين من عبادنا صالحين فخانتاهما ... | ١٠ | م التحريم | ٦٦ |
| كَانُوا | : ولهم عذاب أليم بما كانوا يكذبون ... ... ... ... | ١٠ | م البقرة | ٢ |
| (٢٦٧) | فما ربحت تجارتهم وما كانوا مهتدين... ... ... ... | ١٦ | م « | ٢ |
| | وما ظلمونا ولكن كانوا أنفسهم يظلمون ... ... ... | ٥٧ | م « | ٢ |
| | فأنزلنا على الذين ظلموا رجزا من السماء بما كانوا يفسقون | ٥٩ | م « | ٢ |
| | ذلك بأنهم كانوا يكفرون بآيات الله... ... ... ... | ٦١ | م « | ٢ |
| | ذلك بما عصوا وكانوا يعتدون ... ... ... ... ... | ٦١ | م « | ٢ |
| | وكانوا من قبل يستفتحون على الذين كفروا ... ... | ٨٩ | م « | ٢ |
| | ولبئس ما شروا به أنفسهم لو كانوا يعلمون ... ... | ١٠٢ | م « | ٢ |
| | لمثوبة من عند الله خير لو كانوا يعلمون ... ... ... | ١٠٣ | م « | ٢ |
| | فالله يحكم بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون ... | ١١٣ | م « | ٢ |
| | لها ما كسبت ولكم ما كسبتم ولا تسئلون عما كانوا يعملون | ١٣٤ | م « | ٢ |
| | أم تقولون إن إبراهيم وإسمعيل وإسحق ويعقوب والأسباط كانوا هودا أو نصارى ... ... ... | ١٤٠ | م « | ٢ |
| | لها ما كسبت ولكم ما كسبتم ولا تسئلون عما كانوا يعملون | ١٤١ | م « | ٢ |
| | سيقول السفهاء من الناس ما ولاهم عن قبلتهم التي كانوا عليها | ١٤٢ | م « | ٢ |
| | وغرهم في دينهم ما كانوا يفترون ... ... ... ... | ٢٤ | م آل عمران | ٣ |
| | ذلك بأنهم كانوا يكفرون بآيات الله... ... ... ... | ١١٢ | م « | ٣ |
| | ذلك بما عصوا وكانوا يعتدون ... ... ... ... ... | ١١٢ | م « | ٣ |
| | وقالوا لإخوانهم إذا ضربوا في الأرض أو كانوا غزى | ١٥٦ | م « | ٣ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَانُوا | : لو كانوا عندنا ما ماتوا وما قتلوا ... ... ... ... | ١٥٦ | م آل عمران | ٣ |
| | وإن كانوا من قبل لفي ضلال مبين... ... ... ... ... | ١٦٤ | م « | ٣ |
| | فإن كانوا أكثر من ذلك فهم شركاء في الثلث ... ... | ١٢ | م النساء | ٤ |
| | إن الكافرين كانوا لكم عدوا مبينا ... ... ... ... | ١٠١ | م « | ٤ |
| | وإن كانوا إخوة رجالا ونساء فللذكر مثل حظ الأنثيين | ١٧٦ | م « | ٤ |
| | وسوف ينبئهم الله بما كانوا يصنعون... ... ... ... | ١٤ | م المائدة | ٥ |
| | بما استحفظوا من كتاب الله وكانوا عليه شهداء ... | ٤٤ | م « | ٥ |
| | وهم قد خرجوا به والله أعلم بما كانوا يكتمون ... | ٦١ | م « | ٥ |
| | لبئس ما كانوا يعملون ... ... ... ... ... ... ... | ٦٢ | م « | ٥ |
| | لبئس ما كانوا يصنعون... ... ... ... ... ... ... | ٦٣ | م « | ٥ |
| | ذلك بما عصوا وكانوا يعتدون ... ... ... ... ... | ٧٨ | م « | ٥ |
| | كانوا لا يتناهون عن منكر فعلوه ... ... ... ... ... | ٧٩ | م « | ٥ |
| | لبئس ما كانوا يفعلون ... ... ... ... ... ... ... | ٧٩ | م « | ٥ |
| | ولو كانوا يؤمنون بالله والنبي وما أنزل إليه ما اتخذوهم أولياء... ... ... ... ... ... ... | ٨١ | م « | ٥ |
| | وما تأتيهم من آية من آيات ربهم إلا كانوا عنها معرضين | ٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | فسوف يأتيهم أنباء ما كانوا به يستهزئون ... ... ... | ٥ | ك « | ٦ |
| | فحاق بالذين سخروا منهم ما كانوا به يستهزئون ... ... | ١٠ | ك « | ٦ |
| | انظر كيف كذبوا على أنفسهم وضل عنهم ما كانوا يفترون | ٢٤ | ك « | ٦ |
| | بل بدا لهم ما كانوا يخفون من قبل ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٦ |
| | ولكن قست قلوبهم وزين لهم الشيطان ما كانوا يعملون | ٤٣ | ك « | ٦ |
| | والذين كذبوا بآياتنا يمسهم العذاب بما كانوا يفسقون | ٤٩ | ك « | ٦ |
| | لهم شراب من حميم وعذاب أليم بما كانوا يكفرون... | ٧٠ | ك « | ٦ |
| | ولو أشركوا لحبط عنهم ما كانوا يعملون ... ... ... | ٨٨ | ك « | ٦ |
| | ثم إلى ربهم مرجعهم فينبئهم بما كانوا يعملون ... | ١٠٨ | ك « | ٦ |
| | ما كانوا ليؤمنوا إلا أن يشاء الله ... ... ... ... | ١١١ | ك « | ٦ |
| | إن الذين يكسبون الإثم سيجزون بما كانوا يقترفون | ١٢٠ | ك « | ٦ |
| | كذلك زين للكافرين ما كانوا يعملون ... ... ... | ١٢٢ | ك « | ٦ |
| | سيصيب الذين أجرموا صغار عند الله وعذاب شديد بما كانوا يمكرون ... ... ... ... ... ... ... | ١٢٤ | ك « | ٦ |
| | لهم دار السلام عند ربهم وهو وليهم بما كانوا يعملون | ١٢٧ | ك « | ٦ |
| | وكذلك نولي بعض الظالمين بعضا بما كانوا يكسبون | ١٢٩ | ك « | ٦ |
| | وشهدوا على أنفسهم أنهم كانوا كافرين ... ... ... | ١٣٠ | ك « | ٦ |
| | سيجزيهم بما كانوا يفترون... ... ... ... ... ... | ١٣٨ | ك « | ٦ |
| | قد ضلوا وما كانوا مهتدين ... ... ... ... ... ... | ١٤٠ | ك « | ٦ |
| | سنجزي الذين يصدفون عن آياتنا سوء العذاب بما كانوا يصدفون ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٧ | ك « | ٦ |
| | إن الذين فرقوا دينهم وكانوا شيعا لست منهم في شيء | ١٥٩ | ك « | ٦ |

| اللفظة | الآيــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَانُوا: | إنما أمرهم إلى الله ثم ينبئهم بما كانوا يفعلون | ١٥٩ | ك الأنعام | ٦ |
| | فأولئك الذين خسروا أنفسهم بما كانوا بآياتنا يظلمون | ٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | قالوا ضلوا عنا وشهدوا على أنفسهم أنهم كانوا كافرين | ٣٧ | ك « | ٧ |
| | فاليوم ننساهم كما نسوا لقاء يومهم هـذا وما كانوا بآياتنا يجحدون | ٥١ | ك « | ٧ |
| | قد خسروا أنفسهم وضل عنهم ما كانوا يفترون | ٥٣ | ك « | ٧ |
| | وأغرقنا الذين كذبوا بآياتنا إنهم كانوا قوما عمين | ٦٤ | ك « | ٧ |
| | وقطعنا دابر الذين كذبوا بآياتنا وما كانوا مؤمنين | ٧٢ | ك « | ٧ |
| | الذين كذبوا شعيبا كانوا هم الخاسرين | ٩٢ | ك « | ٧ |
| | ولكن كذبوا فأخذناهم بما كانوا يكسبون | ٩٦ | ك « | ٧ |
| | فما كانوا ليؤمنوا بما كذبوا من قبل | ١٠١ | ك « | ٧ |
| | فوقع الحق وبطل ما كانوا يعملون | ١١٨ | ك « | ٧ |
| | فاستكبروا وكانوا قوما مجرمين | ١٣٣ | ك « | ٧ |
| | فأغرقناهم في اليم بأنهم كذبوا بآياتنا وكانوا عنها غافلين | ١٣٦ | ك « | ٧ |
| | وأورثنا القوم الذين كانوا يستضعفون مشارق الأرض ومغاربها التي باركنا فيها | ١٣٧ | ك « | ٧ |
| | ودمرنا ما كان يصنع فرعون وقومه وما كانوا يعرشون | ١٣٧ | ك « | ٧ |
| | إن هؤلاء متبر ما هم فيه وباطل ما كانوا يعملون | ١٣٩ | ك « | ٧ |
| | ذلك بأنهم كذبوا بآياتنا وكانوا عنها غافلين | ١٤٦ | ك « | ٧ |
| | هل يجزون إلا ما كانوا يعملون | ١٤٧ | ك « | ٧ |
| | اتخذوه وكانوا ظالمين | ١٤٨ | ك « | ٧ |
| | وما ظلمونا ولكن كانوا أنفسهم يظلمون | ١٦٠ | ك « | ٧ |
| | فأرسلنا عليهم رجزا من السماء بما كانوا يظلمون | ١٦٢ | ك « | ٧ |
| | كذلك نبلوهم بما كانوا يفسقون | ١٦٣ | م « | ٧ |
| | وأخذنا الذين ظلموا بعذاب بئيس بما كانوا يفسقون | ١٦٥ | م « | ٧ |
| | ساء مثلا القوم الذين كذبوا بآياتنا وأنفسهم كانوا يظلمون | ١٧٧ | ك « | ٧ |
| | وذروا الذين يلحدون في أسمائه سيجزون ما كانوا يعملون | ١٨٠ | ك « | ٧ |
| | وهم يصدون عن المسجد الحرام وما كانوا أولياءه | ٣٤ | ك الأنفال | ٨ |
| | فأهلكناهم بذنوبهم وأغرقنا آل فرعون وكل كانوا ظالمين | ٥٤ | م « | ٨ |
| | إنهم ساء ما كانوا يعملون | ٩ | م التوبة | ٩ |
| | والله ورسوله أحق أن يرضوه إن كانوا مؤمنين | ٦٢ | م « | ٩ |
| | إن نعف عن طائفة منكم نعذب طائفة بأنهم كانوا مجرمين | ٦٦ | م « | ٩ |
| | كالذين من قبلكم كانوا أشد منكم قوة | ٦٩ | م « | ٩ |
| | فما كان الله ليظلمهم ولكن كانوا أنفسهم يظلمون | ٧٠ | م « | ٩ |
| | إلى يوم يلقونه بما أخلفوا الله ما وعدوه وبما كانوا يكذبون | ٧٧ | م « | ٩ |
| | قل نار جهنم أشد حرا لو كانوا يفقهون | ٨١ | م « | ٩ |
| | فليضحكوا قليلا وليبكوا كثيرا جزاء بما كانوا يكسبون | ٨٢ | م « | |

| اللفظة | الآيــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَانُوا: | ومأواهم جهنم جزاء بما كانوا يكسبون | ٩٥ | م التوبة | ٩ |
| | ما كان للنبي والذين آمنوا أن يستغفروا للمشركين ولو كانوا أولي قربى | ١١٣ | م « | ٩ |
| | ليجزيهم الله أحسن ما كانوا يعملون | ١٢١ | م « | ٩ |
| | لهم شراب من حميم وعذاب أليم بما كانوا يكفرون | ٤ | ك يونس | ١٠ |
| | أولئك مأواهم النار بما كانوا يكسبون | ٨ | ك « | ١٠ |
| | كذلك زين للمسرفين ما كانوا يعملون | ١٢ | ك « | ١٠ |
| | وجاءتهم رسلهم بالبينات وما كانوا ليؤمنوا | ١٣ | ك « | ١٠ |
| | وردوا إلى الله مولاهم الحق وضل عنهم ما كانوا يفترون | ٣٠ | ك « | ١٠ |
| | أفأنت تسمع الصم ولو كانوا لا يعقلون | ٤٢ | ك « | ١٠ |
| | أفأنت تهدي العمي ولو كانوا لا يبصرون | ٤٣ | ك « | ١٠ |
| | قد خسر الذين كذبوا بلقاء الله وما كانوا مهتدين | ٤٥ | ك « | ١٠ |
| | الذين آمنوا وكانوا يتقون | ٦٣ | ك « | ١٠ |
| | ثم نذيقهم العذاب الشديد بما كانوا يكفرون | ٧٠ | ك « | ١٠ |
| | فجاءوهم بالبينات فما كانوا ليؤمنوا بما كذبوا به من قبل | ٧٤ | ك « | ١٠ |
| | فاستكبروا وكانوا قوما مجرمين | ٧٥ | ك « | ١٠ |
| | إن ربك يقضي بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون | ٩٣ | ك « | ١٠ |
| | ليس مصروفا عنهم وحاق بهم ما كانوا به يستهزئون | ٨ | ك هود | ١١ |
| | وحبط ما صنعوا فيها وباطل ما كانوا يعملون | ١٦ | ك « | ١١ |
| | ما كانوا يستطيعون السمع | ٢٠ | ك « | ١١ |
| | وما كانوا يبصرون | ٢٠ | ك « | ١١ |
| | أولئك الذين خسروا أنفسهم وضل عنهم ما كانوا يفترون | ٢١ | ك « | ١١ |
| | فلا تبتئس بما كانوا يفعلون | ٣٦ | ك « | ١١ |
| | ومن قبل كانوا يعملون السيئات | ٧٨ | ك « | ١١ |
| | واتبع الذين ظلموا ما أترفوا فيه وكانوا مجرمين | ١١٦ | ك « | ١١ |
| | وشروه بثمن بخس دراهم معدودة وكانوا فيه من الزاهدين | ٢٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | ولأجر الآخرة خير للذين آمنوا وكانوا يتقون | ٥٧ | ك « | ١٢ |
| | قال إني أنا أخوك فلا تبتئس بما كانوا يعملون | ٦٩ | ك « | ١٢ |
| | ربما يود الذين كفروا لو كانوا مسلمين | ٢ | ك الحجر | ١٥ |
| | ما ننزل الملائكة إلا بالحق وما كانوا إذا منظرين | ٨ | ك « | ١٥ |
| | وما يأتيهم من رسول إلا كانوا به يستهزئون | ١١ | ك « | ١٥ |
| | قالوا بل جئناك بما كانوا فيه يمترون | ٦٣ | ك « | ١٥ |
| | وآتيناهم آياتنا فكانوا عنها معرضين | ٨١ | ك « | ١٥ |
| | وكانوا ينحتون من الجبال بيوتا آمنين | ٨٢ | ك « | ١٥ |
| | فما أغنى عنهم ما كانوا يكسبون | ٨٤ | ك « | ١٥ |
| | فوربك لنسألنهم أجمعين عما كانوا يعملون | ٩٣ | ك « | ١٥ |
| | وما ظلمهم الله ولكن كانوا أنفسهم يظلمون | ٣٣ | ك النحل | ١٦ |
| | فأصابهم سيئات ما عملوا وحاق بهم ما كانوا به يستهزءون | ٣٤ | ك « | ١٦ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كانوا | وليعلم الذين كفروا أنهم كانوا كاذبين ... ... ... | ٣٩ | ك النحل | ١٦ |
| | ولأجر الآخرة أكبر لو كانوا يعلمون ... ... ... ... | ٤١ | ك « | ١٦ |
| | وألقوا إلى الله يومئذ السلم وضل عنهم ما كانوا يفترون | ٨٧ | ك « | ١٦ |
| | زدناهم عذابا فوق العذاب بما كانوا يفسدون ... | ٨٨ | ك « | ١٦ |
| | ولنجزين الذين صبروا أجرهم بأحسن ما كانوا يعملون | ٩٦ | ك « | ١٦ |
| | ولنجزينهم أجرهم بأحسن ما كانوا يعملون ... ... | ٩٧ | ك « | ١٦ |
| | فأذاقها الله لباس الجوع والخوف بما كانوا يصنعون | ١١٢ | ك « | ١٦ |
| | وما ظلمناهم ولكن كانوا أنفسهم يظلمون... ... ... | ١١٨ | ك « | ١٦ |
| | وإن ربك ليحكم بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون | ١٢٤ | ك « | ١٦ |
| | إن المبذرين كانوا إخوان الشياطين ... ... ... ... | ٢٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| | أم حسبت أن أصحاب الكهف والرقيم كانوا من آياتنا عجبا | ٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | وكانوا لا يستطيعون سمعا ... ... ... ... ... | ١٠١ | م « | ١٨ |
| | وما جعلناهم جسدا لا يأكلون الطعام وما كانوا خالدين | ٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | فحاق بالذين سخروا منهم ما كانوا به يستهزءون ... ... | ٤١ | ك « | ٢١ |
| | قال بل فعله كبيرهم هذا فسئلوهم إن كانوا ينطقون ... | ٦٣ | ك « | ٢١ |
| | وكانوا لنا عابدين ... ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك « | ٢١ |
| | إنهم كانوا قوم سوء فاسقين... ... ... ... ... ... | ٧٤ | ك « | ٢١ |
| | إنهم كانوا قوم سوء فأغرقناهم أجمعين ... ... ... | ٧٧ | ك « | ٢١ |
| | إنهم كانوا يسارعون فى الخيرات ... ... ... ... | ٩٠ | ك « | ٢١ |
| | ويدعوننا رغبا ورهبا وكانوا لنا خاشعين ... ... ... | ٩٠ | ك « | ٢١ |
| | إلى فرعون وملائه فاستكبروا وكانوا قوما عالين ... | ٤٦ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فكذبوهما فكانوا من المهلكين ... ... ... ... ... | ٤٨ | ك « | ٢٣ |
| | يوم تشهد عليهم ألسنتهم وأيديهم وأرجلهم بما كانوا يعملون ... ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | م النور | ٢٤ |
| | وإذا كانوا معه على أمر جامع لم يذهبوا حتى يستأذنوه | ٦٢ | م « | ٢٤ |
| | ولكن متعتهم وآباءهم حتى نسوا الذكر وكانوا قوما بورا | ١٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | أفلم يكونوا يرونها بل كانوا لا يرجون نشورا ... ... | ٤٠ | ك « | ٢٥ |
| | وما يأتيهم من ذكر من الرحمن محدث إلا كانوا عنه معرضين ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فقد كذبوا فسيأتيهم أنباء ما كانوا به يستهزءون ... | ٦ | ك « | ٢٦ |
| | لعلنا نتبع السحرة إن كانوا هم الغالبين ... ... ... | ٤٠ | ك « | ٢٦ |
| | قال وما علمى بما كانوا يعملون ... ... ... ... ... | ١١٢ | ك « | ٢٦ |
| | ولو نزلناه على بعض الأعجمين . فقرأه عليهم ما كانوا به مؤمنين ... ... ... ... ... ... ... | ١٩٩ | ك « | ٢٦ |
| | ثم جاءهم ما كانوا يوعدون ... ... ... ... ... ... | ٢٠٦ | ك « | ٢٦ |
| | ما أغنى عنهم ما كانوا يمتعون ... ... ... ... ... | ٢٠٧ | ك « | ٢٦ |
| | فى تسع آيات إلى فرعون وقومه إنهم كانوا قوما فاسقين | ١٢ | ك النمل | ٢٧ |
| | وأنجينا الذين آمنوا وكانوا يتقون ... ... ... ... | ٥٣ | ك « | ٢٧ |
| كانوا | أن الناس كانوا بآياتنا لا يوقنون ... ... ... ... | ٨٢ | ك النمل | ٢٧ |
| | ونرى فرعون وهامان وجنودهما منهم ما كانوا يحذرون | ٦ | ك القصص | ٢٨ |
| | إن فرعون وهامان وجنودهما كانوا خاطئين ... ... | ٨ | ك « | ٢٨ |
| | إنهم كانوا قوما فاسقين... ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك « | ٢٨ |
| | تبرأنا إليك ما كانوا إيانا يعبدون ... ... ... ... | ٦٣ | ك « | ٢٨ |
| | ورأوا العذاب لو أنهم كانوا يهتدون... ... ... ... | ٦٤ | ك « | ٢٨ |
| | فعلموا أن الحق لله وضل عنهم ما كانوا يفترون... ... | ٧٥ | ك « | ٢٨ |
| | فلا يجزى الذين عملوا السيئات إلا ما كانوا يعملون | ٨٤ | ك « | ٢٨ |
| | ولنجزينهم أحسن الذى كانوا يعملون ... ... ... | ٧ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | وليسئلن يوم القيامة عما كانوا يفترون ... ... ... | ١٣ | ك « | ٢٩ |
| | إنا مهلكوا أهل هذه القرية إن أهلها كانوا ظالمين | ٣١ | ك « | ٢٩ |
| | إنا منزلون على أهل هذه القرية رجزا من السماء بما كانوا يفسقون ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك « | ٢٩ |
| | فصدهم عن السبيل وكانوا مستبصرين ... ... ... | ٣٨ | ك « | ٢٩ |
| | فاستكبروا فى الأرض وما كانوا سابقين... ... ... | ٣٩ | ك « | ٢٩ |
| | وما كان الله ليظلمهم ولكن كانوا أنفسهم يظلمون | ٤٠ | ك « | ٢٩ |
| | وإن أوهن البيوت لبيت العنكبوت لو كانوا يعلمون | ٤١ | ك « | ٢٩ |
| | وإن الدار الآخرة لهى الحيوان لو كانوا يعلمون | ٦٤ | ك « | ٢٩ |
| | كانوا أشد منهم قوة وأثاروا الأرض وعمروها | ٩ | ك الروم | ٣٠ |
| | فما كان الله ليظلمهم ولكن كانوا أنفسهم يظلمون | ٩ | ك « | ٣٠ |
| | أن كذبوا بآيات الله وكانوا بها يستهزءون ... ... | ١٠ | ك « | ٣٠ |
| | ولم يكن لهم من شركائهم شفعاء وكانوا بشركائهم كافرين | ١٣ | ك « | ٣٠ |
| | من الذين فرقوا دينهم وكانوا شيعا ... ... ... ... | ٣٢ | ك « | ٣٠ |
| | أم أنزلنا عليهم سلطانا فهو يتكلم بما كانوا به يشركون | ٣٥ | ك « | ٣٠ |
| | وإن كانوا من قبل أن ينزل عليهم من قبله لمبلسين | ٤٩ | ك « | ٣٠ |
| | يقسم المجرمون ما لبثوا غير ساعة كذلك كانوا يؤفكون | ٥٥ | ك « | ٣٠ |
| | فلا تعلم نفس ما أخفى لهم من قرة أعين جزاء بما كانوا يعملون | ١٧ | م السجدة | ٣٢ |
| | فلهم جنات المأوى نزلا بما كانوا يعملون... ... | ١٩ | م « | ٣٢ |
| | وكانوا بآياتنا يوقنون ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك « | ٣٢ |
| | إن ربك هو يفصل بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون | ٢٥ | ك « | ٣٢ |
| | ولقد كانوا عاهدوا الله من قبل لا يولون الأدبار | ١٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ولو كانوا فيكم ما قاتلوا إلا قليلا ... ... ... ... | ٢٠ | م « | ٣٣ |
| | أن لو كانوا يعلمون الغيب ما لبثوا فى العذاب المهين | ١٤ | ك سبإ | ٣٤ |
| | هل يجزون إلا ما كانوا يعملون... ... ... ... ... | ٣٣ | ك « | ٣٤ |
| | ثم يقول للملائكة أهؤلاء إياكم كانوا يعبدون... ... | ٤٠ | ك « | ٣٤ |
| | بل كانوا يعبدون الجن أكثرهم بهم مؤمنون ... ... | ٤١ | ك « | ٣٤ |
| | إنهم كانوا فى شك مريب ... ... ... ... ... ... | ٥٤ | ك « | ٣٤ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَانُوا: | كيف كان عاقبة الذين من قبلهم وكانوا أشد منهم قوة | ٤٤ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وما تأتيهم من آية من آيات ربهم إلا كانوا عنها معرضين | ٤٦ | ك يس | ٣٦ |
| | احشروا الذين ظلموا وأزواجهم وما كانوا يعبدون | ٢٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| | إنهم كانوا إذا قيل لهم لا إله إلا الله يستكبرون | ٣٥ | ك « | ٣٧ |
| | ونصرناهم فكانوا هم الغالبين... ... ... ... ... | ١١٦ | ك « | ٣٧ |
| | وإن كانوا ليقولون . لو أن عندنا ذكرا من الأولين | ١٦٧ | ك « | ٣٧ |
| | ولعذاب الآخرة أكبر لو كانوا يعلمون... ... ... ... | ٢٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ويجزيهم أجرهم بأحسن الذى كانوا يعملون... ... | ٣٥ | ك « | ٣٩ |
| | قل أو لو كانوا لا يملكون شيئا ولا يعقلون ... ... | ٤٣ | ك « | ٣٩ |
| | أنت تحكم بين عبادك فيما كانوا فيه يختلفون ... ... | ٤٦ | ك « | ٣٩ |
| | وحاق بهم ما كانوا به يستهزءون ... ... ... ... | ٤٨ | ك « | ٣٩ |
| | قد قالها الذين من قبلهم فما أغنى عنهم ما كانوا يكسبون | ٥٠ | ك « | ٣٩ |
| | فينظروا كيف كان عاقبة الذين كانوا من قبلهم | ٢١ | ك غافر | ٤٠ |
| | كانوا هم أشد منهم قوة وآثارا فى الأرض ... ... | ٢١ | ك « | ٤٠ |
| | كذلك يؤفك الذين كانوا بآيات الله يجحدون ... | ٦٣ | ك « | ٤٠ |
| | كانوا أكثر منهم وأشد قوة وآثارا فى الأرض ... | ٨٢ | ك « | ٤٠ |
| | فما أغنى عنهم ما كانوا يكسبون... ... ... ... | ٨٢ | ك « | ٤٠ |
| | وحاق بهم ما كانوا به يستهزءون... ... ... ... | ٨٣ | ك « | ٤٠ |
| | هو أشد منهم قوة وكانوا بآياتنا يجحدون ... ... | ١٥ | ك فصلت | ٤١ |
| | فأخذتهم صاعقة العذاب الهون بما كانوا يكسبون... | ١٧ | ك « | ٤١ |
| | ونجينا الذين آمنوا وكانوا يتقون ... ... ... ... | ١٨ | ك « | ٤١ |
| | شهد عليهم سمعهم وأبصارهم وجلودهم بما كانوا يعملون | ٢٠ | ك « | ٤١ |
| | قد خلت من قبلهم من الجن والإنس إنهم كانوا خاسرين | ٢٥ | ك « | ٤١ |
| | ولنجزينهم أسوأ الذى كانوا يعملون ... ... ... | ٢٧ | ك « | ٤١ |
| | لهم فيها دار الخلد جزاء بما كانوا بآياتنا يجحدون ... | ٢٨ | ك « | ٤١ |
| | وضل عنهم ما كانوا يدعون من قبل وظنوا ما لهم من محيص | ٤٨ | ك « | ٤١ |
| | وما يأتيهم من نبى إلا كانوا به يستهزءون ... ... ... | ٧ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | فاستخف قومه فأطاعوه إنهم كانوا قوما فاسقين ... | ٥٤ | م « | ٤٣ |
| | الذين آمنوا بآياتنا وكانوا مسلمين ... ... ... ... | ٦٩ | ك « | ٤٣ |
| | وما ظلمناهم ولكن كانوا هم الظالمين ... ... ... ... | ٧٦ | ك « | ٤٣ |
| | ونعمة كانوا فيها فاكهين ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك الدخان | ٤٤ |
| | فما بكت عليهم السماء والأرض وما كانوا منظرين | ٢٩ | ك « | ٤٤ |
| | أهلكناهم إنهم كانوا مجرمين... ... ... ... ... | ٣٧ | ك « | ٤٤ |
| | ليجزى قوما بما كانوا يكسبون ... ... ... ... ... | ١٤ | م الجاثية | ٤٥ |
| | إن ربك يقضى بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون | ١٧ | ك « | ٤٥ |
| | وبدا لهم سيئات ما عملوا وحاق بهم ما كانوا به يستهزءون | ٣٣ | ك « | ٤٥ |
| | وإذا حشر الناس كانوا لهم أعداء ... ... ... ... | ٦ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| كَانُوا: | وكانوا بعبادتهم كافرين ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | أولئك أصحاب الجنة خالدين فيها جزاء بما كانوا يعملون | ١٤ | ك « | ٤٦ |
| | وعد الصدق الذى كانوا يوعدون... ... ... ... ... | ١٦ | ك « | ٤٦ |
| | قد خلت من قبلهم من الجن والإنس إنهم كانوا خاسرين ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك « | ٤٦ |
| | فما أغنى عنهم سمعهم ولا أبصارهم ولا أفئدتهم من شىء إذ كانوا يجحدون بآيات الله ... ... ... | ٢٦ | ك « | ٤٦ |
| | وحاق بهم ما كانوا به يستهزءون ... ... ... ... | ٢٦ | ك « | ٤٦ |
| | وذلك إفكهم وما كانوا يفترون... ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٤٦ |
| | فسيقولون بل تحسدوننا بل كانوا لا يفقهون إلا قليلا | ١٥ | م الفتح | ٤٨ |
| | وألزمهم كلمة التقوى وكانوا أحق بها وأهلها ... ... | ٢٦ | م « | ٤٨ |
| | إنهم كانوا قبل ذلك محسنين ... ... ... ... ... | ١٦ | ك الذاريات | ٥١ |
| | كانوا قليلا من الليل ما يهجعون... ... ... ... ... | ١٧ | ك « | ٥١ |
| | فما استطاعوا من قيام وما كانوا منتصرين... ... ... | ٤٥ | ك « | ٥١ |
| | وقوم نوح من قبل إنهم كانوا قوما فاسقين ... ... | ٤٦ | ك « | ٥١ |
| | فليأتوا بحديث مثله إن كانوا صادقين ... ... ... | ٣٤ | ك الطور | ٥٢ |
| | وقوم نوح من قبل إنهم كانوا هم أظلم وأطغى ... ... | ٥٢ | ك النجم | ٥٣ |
| | إنا أرسلنا عليهم صيحة واحدة فكانوا كهشيم المحتظر | ٣١ | ك القمر | ٥٤ |
| | جزاء بما كانوا يعملون ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | إنهم كانوا قبل ذلك مترفين... ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك « | ٥٦ |
| | وكانوا يصرون على الحنث العظيم ... ... ... ... | ٤٦ | ك « | ٥٦ |
| | وكانوا يقولون أئذا متنا وكنا ترابا وعظاما أئنا لمبعوثون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك « | ٥٦ |
| | ولا أدنى من ذلك ولا أكثر إلا هو معهم أين ما كانوا | ٧ | م المجادلة | ٥٨ |
| | أعد الله لهم عذابا شديدا إنهم ساء ما كانوا يعملون | ١٥ | م « | ٥٨ |
| | لا تجد قوما يؤمنون بالله واليوم الآخر يوادون من حاد الله ورسوله ولو كانوا آباءهم أو أبناءهم... | ٢٢ | م « | ٥٨ |
| | وإن كانوا من قبل لفى ضلال مبين ... ... ... ... | ٢ | م الجمعة | ٦٢ |
| | صدوا عن سبيل الله إنهم ساء ما كانوا يعملون ... | ٢ | م المنافقون | ٦٣ |
| | ولعذاب الآخرة أكبر لو كانوا يعلمون... ... ... | ٣٣ | م القلم | ٦٨ |
| | أم لهم شركاء فليأتوا بشركائهم إن كانوا صادقين ... | ٤١ | ك « | ٦٨ |
| | وقد كانوا يدعون إلى السجود وهم سالمون ... ... | ٤٣ | ك « | ٦٨ |
| | ذلك اليوم الذى كانوا يوعدون ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك المعارج | ٧٠ |
| | وأما القاسطون فكانوا لجهنم حطبا ... ... ... ... | ١٥ | ك الجن | ٧٢ |
| | إنهم كانوا لا يرجون حسابا ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك النبأ | ٧٨ |
| | كلا بل ران على قلوبهم ما كانوا يكسبون ... ... | ١٤ | ك المطففين | ٨٣ |
| | إن الذين أجرموا كانوا من الذين آمنوا يضحكون | ٢٩ | ك « | ٨٣ |
| | هل ثوب الكفار ما كانوا يفعلون ... ... ... ... | ٣٦ | ك « | ٨٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كُنْتُ (٥٧) | وما جعلنا القبلة التي كنت عليها إلا لنعلم من يتبع الرسول ممن ينقلب على عقبيه ... ... ... ... | ١٤٣ | م البقـرة | ٢ |
| | وما كنت لديهم إذ يلقون أقلامهم أيهم يكفل مريم | ٤٤ | م آل عمران | ٣ |
| | وما كنت لديهم إذ يختصمون ... ... ... ... ... | ٤٤ | م « | ٣ |
| | ولو كنت فظا غليظ القلب لانفضوا من حولك ... | ١٥٩ | م « | ٣ |
| | ياليتني كنت معهم فأفوز فوزا عظيما ... ... ... ... | ٧٣ | م النسـاء | ٤ |
| | وإذا كنت فيهم فأقمت لهم الصلاة فلتقم طائفة منهم معك | ١٠٢ | م « | ٤ |
| | إن كنت قلته فقد علمته ... ... ... ... ... ... | ١١٦ | م المائدة | ٥ |
| | وكنت عليهم شهيدا مادمت فيهم ... ... ... ... ... | ١١٧ | م « | ٥ |
| | فلما توفيتني كنت أنت الرقيب عليهم ... ... ... ... | ١١٧ | م « | ٥ |
| | فأتنا بما تعدنا إن كنت من الصادقين ... ... ... | ٧٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | وقالوا يا صالح ائتنا بما تعدنا إن كنت من المرسلين | ٧٧ | ك « | ٧ |
| | قال إن كنت جئت بآية فأت بها... ... ... ... ... | ١٠٦ | ك « | ٧ |
| | إن كنت من الصادقين ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٦ | ك « | ٧ |
| | ولو كنت أعلم الغيب لاستكثرت من الخير... ... ... | ١٨٨ | ك « | ٧ |
| | آلآن وقد عصيت قبل وكنت من المفسدين ... ... | ٩١ | ك يـونس | ١٠ |
| | فإن كنت في شك مما أنزلنا إليك فسئل الذين يقرءون الكتاب من قبلك ... ... ... ... ... ... | ٩٤ | م « | ١٠ |
| | قال ياقوم أرأيتم إن كنت على بينة من ربي ... ... | ٢٨ | ك هـود | ١١ |
| | فأتنا بما تعدنا إن كنت من الصادقين ... ... ... | ٣٢ | ك « | ١١ |
| | ما كنت تعلمها أنت ولا قومك من قبل هذا ... ... | ٤٩ | ك « | ١١ |
| | قالوا ياصالح قد كنت فينا مرجوا قبل هذا ... ... | ٦٢ | ك « | ١١ |
| | قال يا قوم أرأيتم إن كنت على بينة من ربي ... ... | ٦٣ | ك « | ١١ |
| | قال ياقوم أرأيتم إن كنت على بينة من ربي ... ... | ٨٨ | ك « | ١١ |
| | وإن كنت من قبله لمن الغافلين ... ... ... ... ... | ٣ | م يـوسف | ١٢ |
| | واستغفري لذنبك إنك كنت من الخاطئين ... ... | ٢٩ | ك « | ١٢ |
| | وما كنت لديهم إذ أجمعوا أمرهم وهم يمكرون... ... | ١٠٢ | ك « | ١٢ |
| | لو ما تأتينا بالملائكة إن كنت من الصادقين ... ... | ٧ | ك الحجـر | ١٥ |
| | قل سبحان ربي هل كنت إلا بشرا رسولا... ... ... | ٩٣ | ك الإسـراء | ١٧ |
| | وما كنت متخذ المضلين عضدا ... ... ... ... ... | ٥١ | ك الكهف | ١٨ |
| | قالت إني أعوذ بالرحمن منك إن كنت تقيا ... ... | ١٨ | ك مـريم | ١٩ |
| | قالت ياليتني مت قبل هذا وكنت نسيا منسيا ... ... | ٢٣ | ك « | ١٩ |
| | وجعلني مباركا أين ما كنت... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك « | ١٩ |
| | إنك كنت بنا بصيرا ... ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك طـه | ٢٠ |
| | قال رب لم حشرتني أعمى وقد كنت بصيرا ... ... | ١٢٥ | ك « | ٢٠ |
| | لا إله إلا أنت سبحانك إني كنت من الظالمين... ... | ٨٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | قال فأت به إن كنت من الصادقين ... ... ... ... | ٣١ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| | ما أنت إلا بشر مثلنا فأت بآية إن كنت من الصادقين | ١٥٤ | ك « | ٢٦ |
| | فأسقط علينا كسفا من السماء إن كنت من الصادقين | ١٨٧ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| | قال سننظر أصدقت أم كنت من الكاذبين ... ... | ٢٧ | ك النمـل | ٢٧ |
| | ما كنت قاطعة أمرا حتى تشهدون ... ... ... ... | ٣٢ | ك « | ٢٧ |
| | وما كنت بجانب الغربي إذ قضينا إلى موسى الأمر | ٤٤ | ك القصص | ٢٨ |
| | وما كنت من الشاهدين ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك « | ٢٨ |
| | وما كنت ثاويا في أهل مدين تتلوا عليهم آياتنا ... | ٤٥ | ك « | ٢٨ |
| | وما كنت بجانب الطور إذ نادينا ولكن رحمة من ربك | ٤٦ | ك « | ٢٨ |
| | وما كنت ترجوا أن يلقى إليك الكتاب إلا رحمة من ربك | ٨٦ | ك « | ٢٨ |
| | آتنا بعذاب الله إن كنت من الصادقين ... ... ... | ٢٩ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وما كنت تتلوا من قبله من كتاب ولا تخطه بيمينك ... | ٤٨ | ك « | ٢٩ |
| | ولولا نعمة ربي لكنت من المحضرين... ... ... ... | ٥٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| | أستكبرت أم كنت من العالين ... ... ... ... ... | ٧٥ | ك ص | ٣٨ |
| | أن تقول نفس ياحسرتى على ما فرطت في جنب الله وإن كنت لمن الساخرين ... ... ... ... ... | ٥٦ | ك الـزمر | ٣٩ |
| | أو تقول لو أن الله هداني لكنت من المتقين ... ... | ٥٧ | ك « | ٣٩ |
| | فكذبت بها واستكبرت وكنت من الكافرين ... ... | ٥٩ | ك « | ٣٩ |
| | ما كنت تدري ما الكتاب ولا الإيمان ... ... ... | ٥٢ | ك الشـورى | ٤٢ |
| | قل ما كنت بدعا من الرسل وما أدري ما يفعل بي ولا بكم | ٩ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | فأتنا بما تعدنا إن كنت من الصادقين ... ... ... | ٢٢ | ك « | ٤٦ |
| | وجاءت سكرة الموت بالحق ذلك ما كنت منه تحيد | ١٩ | ك ق | ٥٠ |
| | لقد كنت في غفلة من هذا فكشفنا عنك غطاءك | ٢٢ | ك « | ٥٠ |
| | ويقول الكافر ياليتني كنت ترابا... ... ... ... ... | ٤٠ | ك النبأ | ٧٨ |
| كُنْتُمْ (١٩٩) | وإن كنتم في ريب مما نزلنا على عبدنا فأتوا بسورة من مثله | ٢٣ | م البقـرة | ٢ |
| | وادعوا شهداءكم من دون الله إن كنتم صادقين ... | ٢٣ | م « | ٢ |
| | كيف تكفرون بالله وكنتم أمواتا فأحياكم... ... ... | ٢٨ | م « | ٢ |
| | فقال أنبئوني بأسماء هؤلاء إن كنتم صادقين ... ... | ٣١ | م « | ٢ |
| | وأعلم ما تبدون وما كنتم تكتمون... ... ... ... ... | ٣٣ | م « | ٢ |
| | فلولا فضل الله عليكم ورحمته لكنتم من الخاسرين | ٦٤ | م « | ٢ |
| | والله مخرج ما كنتم تكتمون... ... ... ... ... ... | ٧٢ | م « | ٢ |
| | قل فلم تقتلون أنبياء الله من قبل إن كنتم مؤمنين | ٩١ | م « | ٢ |
| | قل بئسما يأمركم به إيمانكم إن كنتم مؤمنين ... ... | ٩٣ | م « | ٢ |
| | فتمنوا الموت إن كنتم صادقين ... ... ... ... ... | ٩٤ | م « | ٢ |
| | قل هاتوا برهانكم إن كنتم صادقين ... ... ... ... | ١١١ | م « | ٢ |
| | أم كنتم شهداء إذ حضر يعقوب الموت ... ... ... | ١٣٣ | م « | ٢ |
| | وحيث ما كنتم فولوا وجوهكم شطره... ... ... ... | ١٤٤ | م « | ٢ |
| | وحيث ما كنتم فولوا وجوهكم شطره... ... ... ... | ١٥٠ | م « | ٢ |
| | واشكروا لله إن كنتم إياه تعبدون ... ... ... ... | ١٧٢ | م « | ٢ |
| | وأن تصوموا خير لكم إن كنتم تعلمون ... ... ... | ١٨٤ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كُنتُمْ: | علم الله أنكم كنتم تختانون أنفسكم فتاب عليكم ... | ١٨٧ م | البقـرة | ٢ |
| | وأذكروه كما هداكم وإن كنتم من قبل لمن الضالين ... | ١٩٨ م | « | ٢ |
| | إن فى ذلك لآية لكم إن كنتم مؤمنين ... ... ... | ٢٤٨ م | « | ٢ |
| | اتقوا الله وذروا مابقى من الربا إن كنتم مؤمنين ... | ٢٧٨ م | « | ٢ |
| | وأن تصدقوا خير لكم إن كنتم تعلمون ... ... ... | ٢٨٠ م | « | ٢ |
| | وإن كنتم على سفر ولم تجدوا كاتبا فرهان مبسوضـة | ٢٨٣ م | « | ٢ |
| | قل إن كنتم تحبون الله فاتبعونى يحببكم الله ... ... | ٣١ م | آل عمران | ٣ |
| | إن فى ذلك لآية لكم إن كنتم مؤمنين... ... ... ... | ٤٩ م | « | ٣ |
| | ثم إلىّ مرجعكم فأحكم بينكم فيما كنتم فيه تختلفون ... | ٥٥ م | « | ٣ |
| | ولكن كونوا ربانيين بما كنتم تعلمون الكتاب... ... | ٧٩ م | « | ٣ |
| | وبما كنتم تدرسون... ... ... ... ... ... ... | ٧٩ م | « | ٣ |
| | قل فأتوا بالتوراة فاتلوها إن كنتم صادقين ... ... | ٩٣ م | « | ٣ |
| | واذكروا نعمة الله عليكم إذ كنتم أعداء فألف بين قلوبكم | ١٠٣ م | « | ٣ |
| | وكنتم على شفا حفرة من النار فأنقذكم منها... ... ... | ١٠٣ م | « | ٣ |
| | فذوقوا العذاب بما كنتم تكفرون ... ... ... ... | ١٠٦ م | « | ٣ |
| | كنتم خير أمة أخرجت للناس ... ... ... ... ... | ١١٠ م | « | ٣ |
| | قد بينا لكم الآيات إن كنتم تعقلون ... ... ... ... | ١١٨ م | « | ٣ |
| | ولا تهنوا ولا تحزنوا وأنتم الأعلون إن كنتم مؤمنين | ١٣٩ م | « | ٣ |
| | ولقـد كنتم تمنون الموت من قبل أن تلقوه ... ... | ١٤٣ م | « | ٣ |
| | قل لو كنتم فى بيوتكم لبرز الذين كتب عليهـم القتل | | | |
| | إلى مضاجعهم... ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٤ م | « | ٣ |
| | قل فادرءوا عن أنفسكم الموت إن كنتم صادقين ... | ١٦٨ م | « | ٣ |
| | فلا تخافوهم وخافون إن كنتم مؤمنين ... ... ... | ١٧٥ م | « | ٣ |
| | فلم قتلتموهم إن كنتم صادقين ... ... ... ... ... | ١٨٣ م | « | ٣ |
| | وإن كنتم مرضى أو على سـفر أو جاء أحد منـكم | | | |
| | من الغائط... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٣ م | النسـاء | ٤ |
| | فردوه إلى الله والرسول إن كنتم تؤمنون بالله واليوم | | | |
| | الآخـر ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٩ م | « | ٤ |
| | أينما تكونوا يدرككم الموت ولو كنتم فى بروج مشيدة | ٧٨ م | « | ٤ |
| | كذلك كنتم من قبل فمنّ الله عليكم فتبينوا... ... ... | ٩٤ م | « | ٤ |
| | إن الذين توفاهم الملائكة ظالمى أنفسهم قالوا فيم كنتم | ٩٧ م | « | ٤ |
| | ولا جناح عليكم إن كان بكم أذى من مطـر أو كنتم | | | |
| | مرضى أن تضعوا أسلحتكم ... ... ... ... ... | ١٠٢ م | « | ٤ |
| | وإن كنتم جنبا فاطهروا ... ... ... ... ... ... | ٦ م | المائدة | ٥ |
| | وإن كنتم مرضى أو على سفر أو جاء أحد منكم | | | |
| | من الغائط... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦ م | « | ٥ |
| | قـد جاءكم رسولنا يبين لكم كثيرا مما كنتم تخفون | | | |
| | من الكتاب ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ م | « | ٥ |
| كُنتُمْ: | وعلى الله فتوكلوا إن كنتم مؤمنين ... ... ... ... | ٢٣ م | المائدة | ٥ |
| | إلى الله مرجعكم جميعا فينبئكم بما كنتم فيه تختلفون... | ٤٨ م | « | ٥ |
| | واتقوا الله إن كنتم مؤمنين... ... ... ... ... ... | ٥٧ م | « | ٥ |
| | إلى الله مرجعكم جميعا فينبئكم بما كنتم تعملون ... | ١٠٥ م | « | ٥ |
| | قال اتقوا الله إن كنتم مؤمنين ... ... ... ... ... | ١١٢ م | « | ٥ |
| | ثم نقول للذين أشركوا أين شركاؤكم الذين كنتم تزعمون | ٢٢ ك | الأنعام | ٦ |
| | قال فذوقوا العذاب بما كنتم تكفرون ... ... ... | ٣٠ ك | « | ٦ |
| | أغير الله تدعون إن كنتم صادقين ... ... ... ... | ٤٠ ك | « | ٦ |
| | ثم إليه مرجعكم ثم ينبئكم بما كنتم تعملون... ... ... | ٦٠ ك | « | ٦ |
| | فأى الفريقين أحق بالأمن إن كنتم تعلمون ... ... | ٨١ ك | « | ٦ |
| | اليـوم تجزون عذاب الهون بما كنتم تقولون على | | | |
| | الله غير الحق ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩٣ م | « | ٦ |
| | وكنتم عن آياته تستكبرون ... ... ... ... ... ... | ٩٣ م | « | ٦ |
| | لقد تقطع بينكم وضل عنكم ما كنتم تزعمون .. ... | ٩٤ ك | « | ٦ |
| | فكلوا مما ذكر اسم الله عليه إن كنتم بآياته مؤمنـين | ١١٨ ك | « | ٦ |
| | نبئونى بعلم إن كنتم صادقين ... ... ... ... ... | ١٤٣ ك | « | ٦ |
| | أم كنتم شهداء إذ وصاكم الله بهذا ... ... ... ... | ١٤٤ ك | « | ٦ |
| | ثم إلى ربكم مرجعكم فينبئكم بما كنتم فيه تختلفون... | ١٦٤ ك | « | ٦ |
| | قالوا أين ما كنتم تدعون من دون الله ... ... ... | ٣٧ ك | الأعراف | ٧ |
| | فذوقوا العذاب بما كنتم تكسبون ... ... ... ... | ٣٩ ك | « | ٧ |
| | ونودوا أن تلكم الجنة أورثتموها بما كنتم تعملون... | ٤٣ ك | « | ٧ |
| | قالوا ما أغنى عنكم جمعكم وما كنتم تستكبرون ... ... | ٤٨ ك | « | ٧ |
| | ذلكم خير لكم إن كنتم مؤمنين ... ... ... ... ... | ٨٥ ك | « | ٧ |
| | واذكروا إذ كنتم قليلا فكثركم ... ... ... ... ... | ٨٦ ك | « | ٧ |
| | فادعوهم فليستجيبوا لكم إن كنتم صادقين... ... ... | ١٩٤ ك | « | ٧ |
| | وأطيعوا الله ورسوله إن كنتم مؤمنين... ... ... ... | ١ م | الأنفـال | ٨ |
| | فذوقوا العذاب بما كنتم تكفرون ... ... ... ... | ٣٥ ك | « | ٨ |
| | إن كنتم آمنتم بالله وما أنزلنا على عبـدنا يوم الفرقان | ٤١ م | « | ٨ |
| | فالله أحق أن تخشوه إن كنتم مؤمنين ... ... ... | ١٣ م | التـوبة | ٩ |
| | هذا ما كنزتم لأنفسكم فذوقوا ما كنتم تكنزون ... | ٣٥ م | « | ٩ |
| | ذلكم خير لكم إن كنتم تعلمون ... ... ... ... ... | ٤١ م | « | ٩ |
| | لن يتقبل منكم إنكم كنتم قوما فاسقين ... ... ... | ٥٣ م | « | ٩ |
| | قل أبالله وآياته ورسوله كنتم تستهزءون ... ... ... | ٦٥ م | « | ٩ |
| | ثم تردون إلى عالم الغيب والشهادة فينبئكم بما كنتم تعملون | ٩٤ م | « | ٩ |
| | وستردون إلى عالم الغيب والشهادة فينبئكم بما كنتم تعملون | ١٠٥ م | « | ٩ |
| | حتى إذا كنتم فى الفلك وجرين بهم بريح طيبة ... | ٢٢ ك | يـونس | ١٠ |
| | ثم إلينا مرجعكم فننبئكم بما كنتم تعملون ... ... | ٢٣ ك | « | ١٠ |
| | فزيلنا بينهم وقال شركاؤهم ما كنتم إيانا تعبدون... | ٢٨ ك | « | ١٠ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| كُنتُمْ | وادعوا من استطعتم من دون الله إن كنتم صادقين ... | ك يونس | ١٠ |
| | ويقولون متى هذا الوعد إن كنتم صادقين ... ... | ك « | ١٠ |
| | أثم إذا ما وقع آمنتم به آلآن وقد كنتم به تستعجلون | ك « | ١٠ |
| | ذوقوا عذاب الخلد هل تجزون إلا بما كنتم تكسبون | ك « | ١٠ |
| | وقال موسى يا قوم إن كنتم آمنتم بالله ... ... ... | ك « | ١٠ |
| | فعليه توكلوا إن كنتم مسلمين ... ... ... ... | ك « | ١٠ |
| | إن كنتم فى شك من دينى فلا أعبد الذين تعبدون من دون الله ... ... ... ... ... ... | ك « | ١٠ |
| | وادعوا من استطعتم من دون الله إن كنتم صادقين | ك هود | ١١ |
| | بقية الله خير لكم إن كنتم مؤمنين ... ... ... | ك « | ١١ |
| | وألقوه فى غيابة الجب يلتقطه بعض السيارة إن كنتم فاعلين | ك يوسف | ١٢ |
| | يأيها الملأ أفتونى فى رؤياى إن كنتم للرؤيا تعبرون | ك « | ١٢ |
| | قالوا فما جزاؤه إن كنتم كاذبين ... ... ... ... | ك « | ١٢ |
| | قال هؤلاء بناتى إن كنتم فاعلين ... ... ... ... | ك الحجر | ١٥ |
| | ويقول أين شركائى الذين كنتم تشاقون فيهم ... ... | ك النحل | ١٦ |
| | بلى إن الله عليم بما كنتم تعملون ... ... ... ... | ك « | ١٦ |
| | سلام عليكم ادخلوا الجنة بما كنتم تعملون ... ... | ك « | ١٦ |
| | فسئلوا أهل الذكر إن كنتم لا تعلمون ... ... ... | ك « | ١٦ |
| | تالله لتسئلن عما كنتم تفترون ... ... ... ... | ك « | ١٦ |
| | وليبين لكم يوم القيامة ما كنتم فيه تختلفون ... ... | ك « | ١٦ |
| | ولتسئلن عما كنتم تعملون ... ... ... ... ... | ك « | ١٦ |
| | إنما عند الله هو خير لكم إن كنتم تعلمون ... ... ... | ك « | ١٦ |
| | واشكروا نعمة الله إن كنتم إياه تعبدون ... ... ... | ك « | ١٦ |
| | فسئلوا أهل الذكر إن كنتم لا تعلمون ... ... ... | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ويقولون متى هذا الوعد إن كنتم صادقين ... ... | ك « | ٢١ |
| | قال لقد كنتم أنتم وآباؤكم فى ضلال مبين ... ... ... | ك « | ٢١ |
| | قالوا حرقوه وانصروا آلهتكم إن كنتم فاعلين ... ... | ك « | ٢١ |
| | وتتلقاهم الملائكة هذا يومكم الذى كنتم توعدون ... | ك « | ٢١ |
| | إن كنتم فى ريب من البعث فإنا خلقناكم من تراب .. | م الحج | ٢٢ |
| | الله يحكم بينكم يوم القيامة فيما كنتم فيه تختلفون ... | م « | ٢٢ |
| | أيعدكم أنكم إذا متم وكنتم ترابا وعظاما أنكم مخرجون | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | قد كانت آياتى تتلى عليكم فكنتم على أعقابكم تنكصون | ك « | ٢٣ |
| | قل لمن الأرض ومن فيها إن كنتم تعلمون ... ... ... | ك « | ٢٣ |
| | وهو يجير ولا يجار عليه إن كنتم تعلمون ... ... ... | ك « | ٢٣ |
| | ألم تكن آياتى تتلى عليكم فكنتم بها تكذبون ... ... | ك « | ٢٣ |
| | وكنتم منهم تضحكون ... ... ... ... ... ... | ك « | ٢٣ |
| | قال إن لبثتم إلا قليلا لو أنكم كنتم تعلمون ... ... | ك « | ٢٣ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| كُنتُمْ | ولا تأخذكم بهما رأفة فى دين الله إن كنتم تؤمنون بالله واليوم الآخر ... ... ... ... ... ... | م النور | ٢٤ |
| | يعظكم الله أن تعودوا لمثله أبدا إن كنتم مؤمنين ... | م « | ٢٤ |
| | قال رب السموات والأرض وما بينهما إن كنتم موقنين | ك الشعراء | ٢٦ |
| | قال رب المشرق والمغرب وما بينهما إن كنتم تعقلون | ك « | ٢٦ |
| | قال أفرأيتم ما كنتم تعبدون ... ... ..... ... ... | ك « | ٢٦ |
| | وقيل لهم أين ما كنتم تعبدون ... ... ... ... ... | ك « | ٢٦ |
| | أإله مع الله قل هاتوا برهانكم إن كنتم صادقين ... | ك النمل | ٢٧ |
| | ويقولون متى هذا الوعد إن كنتم صادقين ... ... | ك « | ٢٧ |
| | أكذبتم بآياتى ولم تحيطوا بها علما أما ذا كنتم تعملون | ك « | ٢٧ |
| | فكبت وجوههم فى النار هل تجزون إلا ما كنتم تعملون | ك « | ٢٧ |
| | قل فأتوا بكتاب من عند الله هو أهدى منهما أتبعه إن كنتم صادقين ... ... ... ... ... ... | ك القصص | ٢٨ |
| | ويوم يناديهم فيقول أين شركائى الذين كنتم تزعمون | ك « | ٢٨ |
| | ويوم يناديهم فيقول أين شركائى الذين كنتم تزعمون | ك « | ٢٨ |
| | إلىّ مرجعكم فأنبئكم بما كنتم تعملون... ... ... ... | م العنكبوت | ٢٩ |
| | ذلكم خير لكم إن كنتم تعلمون ... ... ... ... ... | ك « | ٢٩ |
| | ويقول ذوقوا ما كنتم تعملون ... ... ... ... ... | ك « | ٢٩ |
| | فهذا يوم البعث ولكنكم كنتم لا تعلمون ... ... ... | ك الروم | ٣٠ |
| | ثم إلىّ مرجعكم فأنبئكم بما كنتم تعملون ... ... ... | ك لقمان | ٣١ |
| | وذوقوا عذاب الخلد بما كنتم تعملون ... ... ... | ك السجدة | ٣٢ |
| | وقيل لهم ذوقوا عذاب النار الذى كنتم به تكذبون | م « | ٣٢ |
| | ويقولون متى هذا الفتح إن كنتم صادقين ... ... | ك « | ٣٢ |
| | ويقولون متى هذا الوعد إن كنتم صادقين ... ... | ك سبأ | ٣٤ |
| | أنحن صددناكم عن الهدى بعد إذ جاءكم بل كنتم مجرمين | ك « | ٣٤ |
| | ونقول للذين ظلموا ذوقوا عذاب النار التى كنتم بها تكذبون | ك « | ٣٤ |
| | ويقولون متى هذا الوعد إن كنتم صادقين ... ... | ك يس | ٣٦ |
| | فاليوم لا تظلم نفس شيئا ولا تجزون إلا ما كنتم تعملون | ك « | ٣٦ |
| | هذه جهنم التى كنتم توعدون ... ... ... ... ... | ك « | ٣٦ |
| | اصلوها اليوم بما كنتم تكفرون... ... ... ... ... | ك « | ٣٦ |
| | هذا يوم الفصل الذى كنتم به تكذبون ... ... ... | ك الصافات | ٣٧ |
| | قالوا إنكم كنتم تأتوننا عن اليمين ... ... ... ... | ك « | ٣٧ |
| | وما كان لنا عليكم من سلطان بل كنتم قوما طاغين | ك « | ٣٧ |
| | وما تجزون إلا ما كنتم تعملون ... ... ... ... ... | ك « | ٣٧ |
| | فأتوا بكتابكم إن كنتم صادقين ... ... ... ... ... | ك « | ٣٧ |
| | ثم إلى ربكم مرجعكم فينبئكم بما كنتم تعملون... ... | ك الزمر | ٣٩ |
| | وقيل للظالمين ذوقوا ما كنتم تكسبون... ... ... ... | ك « | ٣٩ |
| | ثم قيل لهم أين ما كنتم تشركون . من دون الله ... | ك غافر | ٤٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كُنتُمْ: | ذلكم بما كنتم تفرحون فى الأرض بغير الحق... ... | ٧٥ | ك غافـر | ٤٠ |
| | وبما كنتم تمرحون ... ... ... ... ... ... ... | ٧٥ | ك « | ٤٠ |
| | وما كنتم تستترون أن يشهد عليكم سمعكم ولا أبصاركم... | ٢٢ | ك فصلت | ٤١ |
| | ألا تخافوا ولا تحزنوا وأبشروا بالجنة التى كنتم توعدون | ٣٠ | ك « | ٤١ |
| | واسجدوا لله الذى خلقهن إن كنتم إياه تعبدون ... | ٣٧ | ك « | ٤١ |
| | أفنضرب عنكم الذكر صفحا أن كنتم قوما مسرفين ... | ٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وتلك الجنة التى أورثتموها بما كنتم تعملون ... ... | ٧٢ | ك « | ٤٣ |
| | رب السموات والأرض وما بينهما إن كنتم موقنين... | ٧ | ك الدخان | ٤٤ |
| | فأتوا بآبائنا إن كنتم صادقين ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك « | ٤٤ |
| | إن هذا ما كنتم به تمترون ... ... ... ... ... ... | ٥٠ | ك « | ٤٤ |
| | ما كان حجتهم إلا أن قالوا ائتوا بآبائنا إن كنتم صادقين | ٢٥ | ك الجاثيـة | ٤٥ |
| | كل أمة تدعى إلى كتابها اليوم تجزون ما كنتم تعملون | ٢٨ | ك « | ٤٥ |
| | إنا كنا نستنسخ ما كنتم تعملون ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك « | ٤٥ |
| | أفلم تكن آياتى تتلى عليكم فاستكبرتم وكنتم قوما مجرمين | ٣١ | ك « | ٤٥ |
| | ائتونى بكتاب من قبل هذا أو أثارة من علم إن كنتم صادقين | ٤ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | فاليوم تجزون عذاب الهون بما كنتم تستكبرون | | | |
| | فى الأرض بغير الحق ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك « | ٤٦ |
| | وبما كنتم تفسقون ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك « | ٤٦ |
| | قالوا بلى وربنا قال فذوقوا العذاب بما كنتم تكفرون | ٣٤ | ك « | ٤٦ |
| | وظننتم ظن السوء وكنتم قوما بورا... ... ... ... | ١٢ | م الفتـح | ٤٨ |
| | بل الله يمن عليكم أن هداكم للإيمان إن كنتم صادقين | ١٧ | م الحجرات | ٤٩ |
| | ذوقوا فتنتكم هذا الذى كنتم به تستعجلون ... ... ... | ١٤ | ك الذاريات | ٥١ |
| | هذه النار التى كنتم بها تكذبون ... ... ... ... ... | ١٤ | ك الطـور | ٥٢ |
| | إنما تجزون ما كنتم تعملون ... ... ... ... ... ... | ١٦ | ك « | ٥٢ |
| | كلوا واشربوا هنيئا بما كنتم تعملون ... ... ... ... | ١٩ | ك « | ٥٢ |
| | وكنتم أزواجا ثلاثة . فأصحاب الميمنة ما أصحاب الميمنة | ٧ | ك الواقعـة | ٥٦ |
| | فلولا إن كنتم غير مدينين ... ... ... ... ... ... | ٨٦ | ك « | ٥٦ |
| | ترجعونها إن كنتم صادقين ... ... ... ... ... ... | ٨٧ | ك « | ٥٦ |
| | وهو معكم أينما كنتم والله بما تعملون بصير... ... ... | ٤ | م الحـديد | ٥٧ |
| | وقد أخذ ميثاقكم إن كنتم مؤمنين... ... ... ... ... | ٨ | م « | ٥٧ |
| | إن كنتم خرجتم جهادا فى سبيلى وابتغاء مرضاتى ... | ١ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | ذلكم خير لكم إن كنتم تعلمون ... ... ... ... ... | ١١ | م الصف | ٦١ |
| | فتمنوا الموت إن كنتم صادقين ... ... ... ... ... | ٦ | م الجمعـة | ٦٢ |
| | ثم تردون إلى عالم الغيب والشهادة فينبئكم بما كنتم تعملون | ٨ | م « | ٦٢ |
| | ذلكم خير لكم إن كنتم تعلمون ... ... ... ... ... | ٩ | م « | ٦٢ |
| | إنما تجزون ما كنتم تعملون ... ... ... ... ... ... | ٧ | م التحريم | ٦٦ |
| | ويقولون متى هذا الوعد إن كنتم صادقين ... ... ... | ٢٥ | ك المـلك | ٦٧ |
| | وقيل هذا الذى كنتم به تدعون ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك « | ٦٧ |
| | أن أغدوا على حرثكم إن كنتم صارمين ... ... ... | ٢٢ | م القـلم | ٦٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كُنتُمْ: | إن أجل الله إذا جاء لا يؤخر لو كنتم تعلمون... ... | ٤ | ك نـوح | ٧١ |
| | انطلقوا إلى ما كنتم به تكذبون ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك المرسلات | ٧٧ |
| | كلوا واشربوا هنيئا بما كنتم تعملون ... ... ... ... | ٤٣ | ك « | ٧٧ |
| | ثم يقال هذا الذى كنتم به تكذبون ... ... ... ... | ١٧ | ك المطففين | ٨٣ |
| كُنتُنَّ: | إن كنتن تردن الحياة الدنيا وزينتها فتعالين أمتعكن | ٢٨ | م الأحزاب | ٣٣ |
| (٢) | وإن كنتن تردن الله ورسوله والدار الآخرة فإن الله | | | |
| | أعد للمحسنات منكن أجرا عظيما ... ... ... ... | ٢٩ | م « | ٣٣ |
| كُنَّ: | ولا يحل لهن أن يكتمن ما خلق الله فى أرحامهن إن | | | |
| (٣) | كن يؤمن بالله واليوم الآخر ... ... ... ... ... | ٢٢٨ | م البقـرة | ٢ |
| | فإن كن نساء فوق اثنتين فلهن ثلثا ما ترك ... ... | ١١ | م النسـاء | ٤ |
| | وإن كن أولات حمل فأنفقوا عليهن حتى يضعن حملهن | ٦ | م الطـلاق | ٦٥ |
| كُنَّا: | قالوا فيم كنتم قالوا كنا مستضعفين فى الأرض ... ... | ٩٧ | م النسـاء | ٤ |
| (٨٢) | ثم لم تكن فتنتهم إلا أن قالوا والله ربنا ما كنا مشركين | ٢٣ | م الأنعـام | ٦ |
| | أن تقولوا إنما أنزل الكتاب على طائفتين من قبلنا | | | |
| | وإن كنا عن دراستهم لغافلين ... ... ... ... ... | ١٥٦ | ك « | ٦ |
| | أو تقولوا لو أنا أنزل علينا الكتاب لكنا أهدى منهم | ١٥٧ | ك « | ٦ |
| | فما كان دعواهم إذ جاءهم بأسنا إلا أن قالوا إنا كنا ظالمين | ٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | فلنقصن عليهم بعلم وما كنا غائبين... ... ... ... ... | ٧ | ك « | ٧ |
| | وما كنا لنهتدى لولا أن هدانا الله... ... ... ... ... | ٤٣ | ك « | ٧ |
| | أو نرد فنعمل غير الذى كنا نعمل ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك « | ٧ |
| | أو لتعودن فى ملتنا قال أولو كنا كارهين... ... ... ... | ٨٨ | ك « | ٧ |
| | وجاء السحرة فرعون قالوا إن لنا لأجرا إن كنا نحن الغالبين | ١١٣ | ك « | ٧ |
| | قالوا بلى شهدنا أن تقولوا يوم القيامة إنا كنا عن هذا غافلين | ١٧٢ | ك « | ٧ |
| | أو تقولوا إنما أشرك آباؤنا من قبل وكنا ذرية من بعدهم | ١٧٣ | ك « | ٧ |
| | ولئن سألتهم ليقولن إنما كنا نخوض ونلعب ... ... | ٦٥ | م التـوبة | ٩ |
| | فكفى بالله شهيدا بيننا وبينكم إن كنا عن عبادتكم لغافلين | ٢٩ | ك يـونس | ١٠ |
| | ولا تعملون من عمل إلا كنا عليكم شهودا إذ تفيضون فيه | ٦١ | ك « | ١٠ |
| | وما أنت بمؤمن لنا ولو كنا صادقين ... ... ... ... | ١٧ | ك يـوسف | ١٢ |
| | قالوا تالله لقد علمتم ما جئنا لنفسد فى الأرض وما كنا سارقين | ٧٣ | ك « | ١٢ |
| | وما شهدنا إلا بما علمنا وما كنا للغيب حافظين... ... | ٨١ | ك « | ١٢ |
| | وسئل القرية التى كنا فيها والعير التى أقبلنا فيها... ... | ٨٢ | ك « | ١٢ |
| | قالوا تالله لقد آثرك الله علينا وإن كنا لخاطئين ... | ٩١ | ك « | ١٢ |
| | قالوا يا أبانا استغفر لنا ذنوبنا إنا كنا خاطئين... ... | ٩٧ | ك « | ١٢ |
| | وإن تعجب فعجب قولهم أئذا كنا ترابا أئنا لفى خلق جديد | ٥ | م الرعـد | ١٣ |
| | فقال الضعفاء للذين استكبروا إنا كنا لكم تبعا ... ... | ٢١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | فألقوا السلم ما كنا نعمل من سوء... ... ... ... ... | ٢٨ | ك النحـل | ١٦ |
| | هؤلاء شركاؤنا الذين كنا ندعوا من دونك... ... ... | ٨٦ | ك « | ١٦ |
| | وما كنا معذبين حتى نبعث رسولا... ... ... ... ... | ١٥ | ك الإسـراء | ١٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كُنَّا: | وقالوا أئذا كنا عظاما ورفاتا أئنا لمبعوثون خلقا جديدا | ٤٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وقالوا أئذا كنا عظاما ورفاتا أئنا لمبعوثون خلقا جديدا | ٩٨ | ك « | ١٧ |
| | قال ذلك ما كنا نبغ فارتدا على آثارهما قصصا ... ... | ٦٤ | ك الكهف | ١٨ |
| | قالوا يا ويلنا إنا كنا ظالمين... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | لو أردنا أن نتخذ لهوا لاتخذناه من لدنا إن كنا فاعلين | ١٧ | ك « | ٢١ |
| | ولئن مستهم نفحة من عذاب ربك ليقولن يا ويلنا إنا كنا ظالمين ... ... ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك « | ٢١ |
| | ولقد آتينا إبراهيم رشده من قبل وكنا به عالمين... ... | ٥١ | ك « | ٢١ |
| | إذ نفشت فيه غنم القوم وكنا لحكمهم شاهدين... ... | ٧٨ | ك « | ٢١ |
| | وسخرنا مع داود الجبال يسبحن والطير وكنا فاعلين ... | ٧٩ | ك « | ٢١ |
| | وكنا بكل شيء عالمين ... ... ... ... ... ... ... | ٨١ | ك « | ٢١ |
| | وكنا لهم حافظين... ... ... ... ... ... ... ... | ٨٢ | ك « | ٢١ |
| | يا ويلنا قد كنا في غفلة من هذا ... ... ... ... | ٩٧ | ك « | ٢١ |
| | بل كنا ظالمين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩٧ | ك « | ٢١ |
| | كما بدأنا أول خلق نعيده وعدا علينا إنا كنا فاعلين ... | ١٠٤ | ك « | ٢١ |
| | ولقد خلقنا فوقكم سبع طرائق وما كنا عن الخلق غافلين | ١٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | إن في ذلك لآيات وإن كنا لمبتلين ... ... ... ... | ٣٠ | ك « | ٢٣ |
| | قالوا أئذا متنا وكنا ترابا وعظاما أئنا لمبعوثون ... | ٨٢ | ك « | ٢٣ |
| | قالوا ربنا غلبت علينا شقوتنا وكنا قوما ضالين... ... | ١٠٦ | ك « | ٢٣ |
| | قالوا لفرعون أئن لنا لأجرا إن كنا نحن الغالبين ... | ٤١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | إنا نطمع أن يغفر لنا ربنا خطايانا أن كنا أول المؤمنين | ٥١ | ك « | ٢٦ |
| | تالله إن كنا لفي ضلال مبين ... ... ... ... ... | ٩٧ | ك « | ٢٦ |
| | وما أهلكنا من قرية إلا لها منذرون . ذكرى وما كنا ظالمين | ٢٠٩ | ك « | ٢٦ |
| | وأوتينا العلم من قبلها وكنا مسلمين ... ... ... ... | ٤٢ | ك النمل | ٢٧ |
| | وقال الذين كفروا أئذا كنا ترابا وآباؤنا أئنا لمخرجون | ٦٧ | ك « | ٢٧ |
| | ولكنا كنا مرسلين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك القصص | ٢٨ |
| | إنه الحق من ربنا إنا كنا من قبله مسلمين ... ... ... | ٥٣ | م « | ٢٨ |
| | وكنا نحن الوارثين ... ... ... ... ... ... ... | ٥٨ | ك « | ٢٨ |
| | وما كنا مهلكي القرى إلا وأهلها ظالمون ... ... ... | ٥٩ | ك « | ٢٨ |
| | ولئن جاء نصر من ربك ليقولن إنا كنا معكم ... ... | ١٠ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | لولا أنتم لكنا مؤمنين ... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك سبأ | ٣٤ |
| | ربنا أخرجنا نعمل صالحا غير الذي كنا نعمل ... ... | ٣٧ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وما أنزلنا على قومه من بعده من جند من السماء وما كنا منزلين | ٢٨ | ك يس | ٣٦ |
| | أئذا متنا وكنا ترابا وعظاما أئنا لمبعوثون ... ... ... | ١٦ | ك الصافات | ٣٧ |
| | فأغويناكم إنا كنا غاوين ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك « | ٣٧ |
| | أئذا متنا وكنا ترابا وعظاما أئنا لمدينون ... ... ... | ٥٣ | ك « | ٣٧ |
| | لو أن عندنا ذكرا من الأولين . لكنا عباد الله المخلصين | ١٦٩ | ك « | ٣٧ |
| كُنَّا: | وقالوا ما لنا لا نرى رجالا كنا نعدهم من الأشرار | ٦٢ | ك ص | ٣٨ |
| | إنا كنا لكم تبعا فهل أنتم مغنون عنا نصيبا من النار | ٤٧ | ك غافر | ٤٠ |
| | فلما رأوا بأسنا قالوا آمنا بالله وحده وكفرنا بما كنا به مشركين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨٤ | ك « | ٤٠ |
| | وتقولوا سبحان الذي سخر لنا هذا وما كنا له مقرنين | ١٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | إنا أنزلناه في ليلة مباركة إنا كنا منذرين ... ... ... | ٣ | ك الدخان | ٤٤ |
| | أمرا من عندنا إنا كنا مرسلين ... ... ... ... ... | ٥ | ك « | ٤٤ |
| | هذا كتابنا ينطق عليكم بالحق إنا كنا نستنسخ ما كنتم تعملون | ٢٩ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | أئذا متنا وكنا ترابا ذلك رجع بعيد ... ... ... ... | ٣ | ك ق | ٥٠ |
| | قالوا إنا كنا قبل في أهلنا مشفقين ... ... ... ... | ٢٦ | ك الطور | ٥٢ |
| | إنا كنا من قبل ندعوه إنه هو البر الرحيم ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٥٢ |
| | وكانوا يقولون أئذا متنا وكنا ترابا وعظاما أئنا لمبعوثون | ٤٧ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | وقالوا لو كنا نسمع أو نعقل ... ... ... ... ... | ١٠ | ك الملك | ٦٧ |
| | ما كنا في أصحاب السعير... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك « | ٦٧ |
| | قالوا سبحان ربنا إنا كنا ظالمين ... ... ... ... ... | ٢٩ | م القلم | ٦٨ |
| | قالوا يا ويلنا إنا كنا طاغين ... ... ... ... ... | ٣١ | م « | ٦٨ |
| | وأنا كنا نقعد منها مقاعد للسمع ... ... ... ... ... | ٩ | ك الجن | ٧٢ |
| | وأنا منا الصالحون ومنا دون ذلك كنا طرائق قددا | ١١ | ك « | ٧٢ |
| | وكنا نخوض مع الخائضين ... ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك المدثر | ٧٤ |
| | وكنا نكذب بيوم الدين ... ... ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك « | ٧٤ |
| | أئذا كنا عظاما نخرة . قالوا تلك إذا كرة خاسرة ... | ١١ | ك النازعات | ٧٩ |
| أَكُ: | قالت أنى يكون لي غلام ولم يمسسني بشر ولم أك بغيا | ٢٠ | ك مريم | ١٩ |
| أَكُنْ: | قال قد أنعم الله علي إذ لم أكن معهم شهيدا... ... | ٧٢ | م النساء | ٤ |
| (٦) | وإلا تغفر لي وترحمني أكن من الخاسرين... ... ... | ٤٧ | ك هود | ١١ |
| | وإلا تصرف عني كيدهن أصب إليهن وأكن من الجاهلين | ٣٣ | ك يوسف | ١٢ |
| | قال لم أكن لأسجد لبشر خلقته من صلصال من حمإ مسنون | ٣٣ | ك الحجر | ١٥ |
| | واشتعل الرأس شيبا ولم أكن بدعائك رب شقيا ... | ٤ | ك مريم | ١٩ |
| | رب لولا أخرتني إلى أجل قريب فأصدق وأكن من الصالحين | ١٠ | م المنافقون | ٦٣ |
| أَكُونَ: | قال أعوذ بالله أن أكون من الجاهلين... ... ... | ٦٧ | م البقرة | ٢ |
| (١٠) | قال يا ويلتى أعجزت أن أكون مثل هذا الغراب ... | ٣١ | م المائدة | ٥ |
| | قل إني أمرت أن أكون أول من أسلم ... ... ... | ١٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | إن أجري إلا على الله وأمرت أن أكون من المسلمين | ٧٢ | ك يونس | ١٠ |
| | وأمرت أن أكون من المؤمنين ... ... ... ... ... | ١٠٤ | ك « | ١٠ |
| | وأدعوا ربي عسى ألا أكون بدعاء ربي شقيا ... ... | ٤٨ | ك مريم | ١٩ |
| | وله كل شيء وأمرت أن أكون من المسلمين ... ... | ٩١ | ك النمل | ٢٧ |
| | قال رب بما أنعمت علي فلن أكون ظهيرا للمجرمين | ١٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | وأمرت لأن أكون أول المسلمين ... ... ... ... | ١٢ | ك الزمر | ٣٩ |
| | لو أن لي كرة فأكون من المحسنين ... ... ... ... | ٥٨ | ك « | ٣٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| لَأَكُونَنَّ | : قال لئن لم يهدنى ربى لأكونن من القوم الضالين | ٧٧ | ك الأنعام | ٦ |
| تَكُ | : وإن تك حسنة يضاعفها ويؤت من لدنه أجرا عظيما | ٤٠ | م النساء | ٤ |
| (٧) | فلا تك فى مرية منه إنه الحق من ربك ... ... ... | ١٧ | م هود | ١١ |
| | فلا تك فى مرية مما يعبد هؤلاء ... ... ... ... | ١٠٩ | ك « | ١١ |
| | ولا تحزن عليهم ولا تك فى ضيق مما يمكرون ... ... | ١٢٧ | م النحل | ١٦ |
| | هو علىّ هين وقد خلقتك من قبل ولم تك شيئا... ... | ٩ | ك مريم | ١٩ |
| | يا بنىّ إنها إن تك مثقال حبة من خردل فتكن فى صخرة | | | |
| | أو فى السموات أو فى الأرض يأت بها الله ... | ١٦ | ك لقمان | ٣١ |
| | قالوا أو لم تك تأتيكم رسلكم بالبينات... ... ... ... | ٥٠ | ك غافر | ٤٠ |
| تَكُنْ | : الحق من ربك فلا تكن من الممترين... ... ... ... | ٦٠ | م آل عمران | ٣ |
| (٢١) | ولتكن منكم أمة يدعون إلى الخير ويأمرون بالمعروف | ١٠٤ | م « | ٣ |
| | كأن لم تكن بينكم وبينه مودة ... ... ... ... ... | ٧٣ | م النساء | ٤ |
| | قالوا ألم تكن أرض الله واسعة فتهاجروا فيها ... ... | ٩٧ | م « | ٤ |
| | ولا تكن للخائنين خصيما ... ... ... ... ... ... | ١٠٥ | م « | ٤ |
| | وأنزل الله عليك الكتاب والحكمة وعلمك ما لم تكن تعلم | ١١٣ | م « | ٤ |
| | ثم لم تكن فتنتهم إلا أن قالوا والله ربنا ما كنا مشركين | ٢٣ | م الأنعام | ٦ |
| | أنى يكون له ولد ولم تكن له صاحبة وخلق كل شىء | ١٠١ | ك « | ٦ |
| | يوم يأتى بعض آيات ربك لا ينفع نفسا إيمانها لم | | | |
| | تكن آمنت من قبل... ... ... ... ... ... ... | ١٥٨ | ك « | ٦ |
| | ودون الجهر من القول بالغدو والآصال ولا تكن من الغافلين | ٢٠٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | إلا تفعلوه تكن فتنة فى الأرض وفساد كبير ... ... | ٧٣ | م الأنفال | ٨ |
| | يا بنىّ اركب معنا ولا تكن مع الكافرين ... ... ... | ٤٢ | ك هود | ١١ |
| | قالوا بشرناك بالحق فلا تكن من القانطين... ... ... | ٥٥ | ك الحجر | ١٥ |
| | ولم تكن له فئة ينصرونه من دون الله وما كان منتصرا | ٤٣ | ك الكهف | ١٨ |
| | ألم تكن آياتى تتلى عليكم فكنتم بها تكذبون... ... ... | ١٠٥ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | قالوا سواء علينا أوعظت أم لم تكن من الواعظين | ١٣٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | ولا تحزن عليهم ولا تكن فى ضيق مما يمكرون... ... | ٧٠ | ك النمل | ٢٧ |
| | فتكن فى صخرة أو فى السموات أو فى الأرض يأت بها الله | ١٦ | ك لقمان | ٣١ |
| | ولقد آتينا موسى الكتاب فلا تكن فى مرية من لقائه | ٢٣ | ك السجدة | ٣٢ |
| | ألم تكن آياتى تتلى عليكم فاستكبرتم وكنتم قوما مجرمين | ٣١ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | ولا تكن كصاحب الحوت إذ نادى وهو مكظوم | ٤٨ | م القلم | ٦٨ |
| تَكُونُ | : وقاتلوهم حتى لا تكون فتنة ويكون الدين لله ... | ١٩٣ | م البقرة | ٢ |
| (٣٩) | أيود أحدكم أن تكون له جنة من نخيل وأعناب ... | ٢٦٦ | م « | ٢ |
| | إلا أن تكون تجارة حاضرة تديرونها بينكم... ... ... | ٢٨٢ | م « | ٢ |
| | إلا أن تكون تجارة عن تراض منكم ... ... ... ... | ٢٩ | م النساء | ٤ |
| | إنى أريد أن تبوء بإثمى وإثمك فتكون من أصحاب النار | ٢٩ | م المائدة | ٥ |
| | وحسبوا ألا تكون فتنة فعموا وصموا... ... ... ... | ٧١ | م « | ٥ |
| | فتنفخ فيها فتكون طيرا بإذنى... ... ... ... ... | ١١٠ | م « | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَكُونُ | : ربنا أنزل علينا مائدة من السماء تكون لنا عيدا | | | |
| | لأولنا وآخرنا ... ... ... ... ... ... ... ... | ١١٤ | م المائدة | ٥ |
| | وما من حسابك عليهم من شىء فتطردهم فتكون | | | |
| | من الظالمين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | فسوف تعلمون من تكون له عاقبة الدار إنه لا يفلح الظالمون | ١٣٥ | ك « | ٦ |
| | وتودون أن غير ذات الشوكة تكون لكم ... ... ... | ٧ | م الأنفال | ٨ |
| | فسينفقونها ثم تكون عليهم حسرة ثم يغلبون ... ... | ٣٦ | ك « | ٨ |
| | وقاتلوهم حتى لا تكون فتنة ويكون الدين كله لله ... | ٣٩ | م « | ٨ |
| | وما تكون فى شأن وما تتلوا منه من قرآن ولا تعملون | | | |
| | من عمل إلا كنا عليكم شهودا إذ تفيضون فيه ... | ٦١ | ك يونس | ١٠ |
| | قالوا أجئتنا لتلفتنا عما وجدنا عليه آباءنا وتكون لكما | | | |
| | الكبرياء فى الأرض ... ... ... ... ... ... ... | ٧٨ | ك « | ١٠ |
| | فاليوم ننجيك ببدنك لتكون لمن خلفك آية... ... ... | ٩٢ | ك « | ١٠ |
| | ولا تكونن من الذين كذبوا بآيات الله فتكون من الخاسرين | ٩٥ | م « | ١٠ |
| | إنى أعظك أن تكون من الجاهلين ... ... ... ... | ٤٦ | ك هود | ١١ |
| | قالوا تالله تفتؤا تذكر يوسف حتى تكون حرضا ... | ٨٥ | ك يوسف | ١٢ |
| | أو تكون من الهالكين ... ... ... ... ... ... ... | ٨٥ | ك « | ١٢ |
| | قال يا إبليس مالك ألا تكون مع الساجدين ... ... | ٣٢ | ك الحجر | ١٥ |
| | تتخذون أيمانكم دخلا بينكم أن تكون أمة هى أربى | | | |
| | من أمة ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩٢ | ك النحل | ١٦ |
| | أو تكون لك جنة من نخيل وعنب ... ... ... ... | ٩١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فتكون للشيطان وليا ... ... ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك مريم | ١٩ |
| | أفلم يسيروا فى الأرض فتكون لهم قلوب يعقلون بها | ٤٦ | م الحج | ٢٢ |
| | أو يلقى إليه كنز أو تكون له جنة يأكل منها ... ... | ٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | أرأيت من اتخذ إلهه هواه أفأنت تكون عليه وكيلا | ٤٣ | ك « | ٢٥ |
| | نزل به الروح الأمين . على قلبك لتكون من المنذرين | ١٩٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فلا تدع مع الله إلها آخر فتكون من المعذبين ... ... | ٢١٣ | ك « | ٢٦ |
| | ننظر أتهتدى أم تكون من الذين لا يهتدون ... ... | ٤١ | ك النمل | ٢٧ |
| | إن كادت لتبدى به لولا أن ربطنا على قلبها لتكون | | | |
| | من المؤمنين ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك القصص | ٢٨ |
| | إن تريد إلا أن تكون جبارا فى الأرض ... ... ... | ١٩ | ك « | ٢٨ |
| | وما تريد أن تكون من المصلحين ... ... ... ... | ١٩ | ك « | ٢٨ |
| | ربى أعلم بمن جاء بالهدى من عنده ومن تكون له | | | |
| | عاقبة الدار ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك « | ٢٨ |
| | وما يدريك لعل الساعة تكون قريبا ... ... ... ... | ٦٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ولتكون آية للمؤمنين ويهديكم صراطا مستقيما ... ... | ٢٠ | م الفتح | ٤٨ |
| | يوم تكون السماء كالمهل ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك المعارج | ٧٠ |
| | وتكون الجبال كالعهن ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك « | ٧٠ |
| | وتكون الجبال كالعهن المنفوش... ... ... ... ... | ٥ | ك القارعة | ١٠١ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَكُونَا | ولا تقربا هذه الشجرة فتكونا من الظالمين ... | البقـرة | م | ٢ |
| (٤) | ولا تقربا هذه الشجرة فتكونا من الظالمين ... ... | الأعراف | ك | ٧ |
| | ما نهاكما ربكما عن هذه الشجرة إلا أن تكونا ملكين | » | ك | ٧ |
| | أو تكونا من الخالدين ... ... ... ... ... ... | » | ك | ٧ |
| تَكُونَنَّ | الحق من ربك فلا تكونن من الممترين ... ... | البقـرة | م | ٢ |
| (١٢) | ولا تكونن من المشركين ... ... ... ... ... | الأنعـام | ك | ٦ |
| | ولو شاء الله لجمعهم على الهدى فلا تكونن من الجاهلين | » | ك | ٦ |
| | فلا تكونن من الممترين ... ... ... ... ... ... | » | ك | ٦ |
| | لقد جاءك الحق من ربك فلا تكونن من الممترين ... | يـونس | م | ١٠ |
| | ولا تكونن من الذين كذبوا بآيات الله فتكون من الخاسرين | » | م | ١٠ |
| | وأن أقم وجهك للدين حنيفا ولا تكونن من المشركين | » | ك | ١٠ |
| | قالوا لئن لم تنته يا نوح لتكونن من المرجومين ... ... | الشعراء | ك | ٢٦ |
| | قالوا لئن لم تنته يا لوط لتكونن من المخرجين ... ... | » | ك | ٢٦ |
| | فلا تكونن ظهيرا للكافرين ... ... ... ... ... ... | القصص | ك | ٢٨ |
| | وادع إلى ربك ولا تكونن من المشركين ... ... ... | » | ك | ٢٨ |
| | لئن أشركت ليحبطن عملك ولتكونن من الخاسرين | الزمر | ك | ٣٩ |
| تَكُونُوا | ولا تكونوا أول كافر به ... ... ... ... ... | البقـرة | م | ٢ |
| (٢٥) | وكذلك جعلناكم أمة وسطا لتكونوا شهداء على الناس | » | م | ٢ |
| | أين ما تكونوا يأت بكم الله جميعا ... ... ... ... | » | م | ٢ |
| | ويعلمكم الكتاب والحكمة ويعلمكم ما لم تكونوا تعلمون | » | م | ٢ |
| | فإذا أمنتم فاذكروا الله كما علمكم ما لم تكونوا تعلمون | » | م | ٢ |
| | ولا تكونوا كالذين تفرقوا واختلفوا من بعد ما جاءهم البينات ... ... ... ... ... ... ... ... | آل عمران | م | ٣ |
| | يا أيها الذين آمنوا لا تكونوا كالذين كفروا ... ... | » | م | ٣ |
| | فإن لم تكونوا دخلتم بهن فلا جناح عليكم ... ... ... | النسـاء | م | ٤ |
| | أينما تكونوا يدرككم الموت ولو كنتم في بروج مشيدة | » | م | ٤ |
| | إن تكونوا تألمون فإنهم يألمون كما تألمون ... ... | » | م | ٤ |
| | ولا تكونوا كالذين قالوا سمعنا وهم لا يسمعون ... | الأنفـال | م | ٨ |
| | ولا تكونوا كالذين خرجوا من ديارهم بطرا ورئاء الناس | » | م | ٨ |
| | يخل لكم وجه أبيكم وتكونوا من بعده قوما صالحين ... | يوسـف | ك | ١٢ |
| | أولم تكونوا أقسمتم من قبل ما لكم من زوال ... ... | إبراهيم | ك | ١٤ |
| | وتحمل أثقالكم إلى بلد لم تكونوا بالغيه إلا بشق الأنفس | النحـل | ك | ١٦ |
| | ولا تكونوا كالتي نقضت غزلها من بعد قوة أنكاثا | » | ك | ١٦ |
| | إن تكونوا صالحين فإنه كان للأوابين غفورا ... ... | الإسراء | ك | ١٧ |
| | ليكون الرسول شهيدا عليكم وتكونوا شهداء على الناس | الحـج | م | ٢٢ |
| | أوفوا الكيل ولا تكونوا من المخسرين ... ... ... | الشعراء | ك | ٢٦ |
| | منيبين إليه واتقوه وأقيموا الصلاة ولا تكونوا من المشركين | الروم | ك | ٣٠ |
| تَكُونُوا | يا أيها الذين آمنوا لا تكونوا كالذين آذوا موسى | الأحزاب | م | ٣٣ |
| | ولقد أضل منكم جبلا كثيرا أفلم تكونوا تعقلون ... | يـس | ك | ٣٦ |
| | قالوا بل لم تكونوا مؤمنين ... ... ... ... ... ... | الصافات | ك | ٣٧ |
| | ثم يخرجكم طفلا ثم لتبلغوا أشدكم ثم لتكونوا شيوخا | غافـر | ك | ٤٠ |
| | ولا تكونوا كالذين نسوا الله فأنساهم أنفسهم ... | الحشـر | م | ٥٩ |
| تَكُونُونَ | ودوا لو تكفرون كما كفروا فتكونون سواء ... | النسـاء | م | ٤ |
| نَكُ | قالوا لم نك من المصلين ... ... ... ... ... ... | المدثر | ك | ٧٤ |
| (٢) | ولم نك نطعم المسكين ... ... ... ... ... ... | » | ك | ٧٤ |
| نَكُنْ | فإن كان لكم فتح من الله قالوا ألم نكن معكم ... | النسـاء | م | ٤ |
| (٤) | أستأذنك أولوا الطول منهم وقالوا ذرنا نكن مع القاعدين | التـوبة | م | ٩ |
| | قالوا ضلوا عنا بل لم نكن ندعوا من قبل شيئا ... | غافـر | ك | ٤٠ |
| | ينادونهم ألم نكن معكم ... ... ... ... ... ... | الحديد | م | ٥٧ |
| نَكُونَ | ونعلم أن قد صدقتنا ونكون عليها من الشاهدين | المائدة | م | ٥ |
| (٦) | يا ليتنا نرد ولا نكذب بآيات ربنا ونكون من المؤمنين | الأنعـام | ك | ٦ |
| | قالوا يا موسى إما أن تلقي وإما أن نكون نحن الملقين | الأعراف | ك | ٧ |
| | قالوا يا موسى إما أن تلقي وإما أن نكون أول من ألقى | طـه | ك | ٢٠ |
| | فلو أن لنا كرة فنكون من المؤمنين ... ... ... ... | الشعراء | ك | ٢٦ |
| | لولا أرسلت إلينا رسولا فنتبع آياتك ونكون من المؤمنين | القصص | ك | ٢٨ |
| لَنَكُونَنَّ | لئن أنجانا من هذه لنكونن من الشاكرين... ... | الأنعـام | ك | ٦ |
| (٦) | وإن لم تغفر لنا وترحمنا لنكونن من الخاسرين... ... | الأعراف | ك | ٧ |
| | لئن لم يرحمنا ربنا ويغفر لنا لنكونن من الخاسرين | » | ك | ٧ |
| | لئن آتيتنا صالحا لنكونن من الشاكرين ... ... ... | » | ك | ٧ |
| | لئن آتانا من فضله لنصدقن ولنكونن من الصالحين | التـوبة | م | ٩ |
| | لئن أنجيتنا من هذه لنكونن من الشاكرين... ... ... | يـونس | ك | ١٠ |
| يَكُ | ذلك بأن الله لم يك مغيرا نعمة أنعمها على قوم حتى | | | |
| (٨) | يغيروا ما بأنفسهم ... ... ... ... ... ... ... | الأنفـال | م | ٨ |
| | فإن يتوبوا يك خيرا لهم ... ... ... ... ... ... | التـوبة | م | ٩ |
| | إن إبراهيم كان أمة قانتا لله حنيفا ولم يك من المشركين | النحـل | ك | ١٦ |
| | أولا يذكر الإنسان أنا خلقناه من قبل ولم يك شيئا | مـريم | ك | ١٩ |
| | وإن يك كاذبا فعليه كذبه ... ... ... ... ... ... | غافـر | ك | ٤٠ |
| | وإن يك صادقا يصبكم بعض الذي يعدكم ... ... | » | ك | ٤٠ |
| | فلم يك ينفعهم إيمانهم لما رأوا بأسنا ... ... ... | » | ك | ٤٠ |
| | ألم يك نطفة من منى يمنى ... ... ... ... ... ... | القيامـة | ك | ٧٥ |
| يَكُنْ | ذلك لمن لم يكن أهله حاضري المسجد الحرام ... | البقـرة | م | ٢ |
| (٣١) | فإن لم يكن له ولد وورثه أبواه فلأمه الثلث ... ... | النسـاء | م | ٤ |
| | ولكم نصف ما ترك أزواجكم إن لم يكن لهن ولد | » | م | ٤ |
| | ولهن الربع مما تركتم إن لم يكن لكم ولد ... ... | » | م | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَكُنْ: | ومن يكن الشيطان له قرينا فساء قرينا ... ... ... | ٣٨ | م النساء | ٤ |
| | من يشفع شفاعة حسنة يكن له نصيب منها ... | ٨٥ | م » | ٤ |
| | ومن يشفع شفاعة سيئة يكن له كفل منها ... ... | ٨٥ | م » | ٤ |
| | إن يكن غنيا أو فقيرا فالله أولى بهما ... ... ... | ١٣٥ | م » | ٤ |
| | لم يكن الله ليغفر لهم ولا ليهديهم سبيلا ... ... ... | ١٣٧ | م » | ٤ |
| | إن الذين كفروا وظلموا لم يكن الله ليغفر لهم ... ... | ١٦٨ | م » | ٤ |
| | وهو يرثها إن لم يكن لها ولد... ... ... ... ... | ١٧٦ | م » | ٤ |
| | ذلك أن لم يكن ربك مهلك القرى بظلم وأهلها غافلون | ١٣١ | ك الأنعام | ٦ |
| | وإن يكن ميتة فهم فيه شركاء ... ... ... ... ... | ١٣٩ | ك » | ٦ |
| | كتاب أنزل إليك فلا يكن في صدرك حرج منه ... | ٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | فسجدوا إلا إبليس لم يكن من الساجدين... ... ... | ١١ | ك » | ٧ |
| | إن يكن منكم عشرون صابرون يغلبوا مائتين... ... | ٦٥ | م الأنفال | ٨ |
| | وإن يكن منكم مائة يغلبوا ألفا من الذين كفروا ... | ٦٥ | م » | ٨ |
| | فإن يكن منكم مائة صابرة يغلبوا مائتين ... ... ... | ٦٦ | م » | ٨ |
| | وإن يكن منكم ألف يغلبوا ألفين بإذن الله ... ... | ٦٦ | م » | ٨ |
| | فأجمعوا أمركم وشركاءكم ثم لا يكن أمركم عليكم غمة | ٧١ | ك يونس | ١٠ |
| | وقل الحمد لله الذي لم يتخذ ولدا ولم يكن له شريك في الملك | ١١١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ولم يكن له ولي من الذل وكبره تكبيرا ... ... ... | ١١١ | ك » | ١٧ |
| | وبرا بوالديه ولم يكن جبارا عصيا ... ... ... ... | ١٤ | ك مريم | ١٩ |
| | والذين يرمون أزواجهم ولم يكن لهم شهداء إلا أنفسهم | ٦ | م النور | ٢٤ |
| | وإن يكن لهم الحق يأتوا إليه مذعنين ... ... ... | ٤٩ | م » | ٢٤ |
| | ولم يتخذ ولدا ولم يكن له شريك في الملك ... ... | ٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | أو لم يكن لهم آية أن يعلمه علماء بني إسرائيل... ... | ١٩٧ | م الشعراء | ٢٦ |
| | ولم يكن لهم من شركائهم شفعاء وكانوا بشركائهم كافرين | ١٣ | ك الروم | ٣٠ |
| | هل أتى على الإنسان حين من الدهر لم يكن شيئا مذكورا | ١ | م الإنسان | ٧٦ |
| | لم يكن الذين كفروا من أهل الكتاب والمشركين منفكين حتى تأتيهم البينة ... ... ... ... ... | ١ | م البينة | ٩٨ |
| | لم يلد ولم يولد . ولم يكن له كفوا أحد ... ... ... | ٤ | ك الإخلاص | ١١٢ |
| يَكُنَّ: | ولا نساء من نساء عسى أن يكن خيرا منهن ... | ١١ | م الحجرات | ٤٩ |
| يَكُونُ: | وإذا قضى أمرا فإنما يقول له كن فيكون ... | ١١٧ | م البقرة | ٢ |
| (٥٣) | لتكونوا شهداء على الناس ويكون الرسول عليكم شهيدا | ١٤٣ | م » | ٢ |
| | فولوا وجوهكم شطره لئلا يكون للناس عليكم حجة ... | ١٥٠ | م » | ٢ |
| | وقاتلوهم حتى لا تكون فتنة ويكون الدين لله ... | ١٩٣ | م » | ٢ |
| | قالوا أنى يكون له الملك علينا ونحن أحق بالملك منه | ٢٤٧ | م » | ٢ |
| | قال رب أنى يكون لي غلام وقد بلغني الكبر ... ... | ٤٠ | م آل عمران | ٣ |
| | قالت رب أنى يكون لي ولد ولم يمسسني بشر ... ... | ٤٧ | م » | ٣ |
| | إذا قضى أمرا فإنما يقول له كن فيكون ... ... ... | ٤٧ | م » | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَكُونُ: | فأنفخ فيه فيكون طيرا بإذن الله ... ... ... ... | ٤٩ | م آل عمران | ٣ |
| | خلقه من تراب ثم قال له كن فيكون ... ... ... ... | ٥٩ | م » | ٣ |
| | فمن يجادل الله عنهم يوم القيامة أم من يكون عليهم وكيلا | ١٠٩ | م النساء | ٤ |
| | ويوم القيامة يكون عليهم شهيدا... ... ... ... ... | ١٥٩ | م » | ٤ |
| | لئلا يكون للناس على الله حجة بعد الرسل ... ... | ١٦٥ | م » | ٤ |
| | إنما الله إله واحد سبحانه أن يكون له ولد ... ... | ١٧١ | م » | ٤ |
| | لن يستنكف المسيح أن يكون عبدا لله ... ... ... | ١٧٢ | م » | ٤ |
| | قال سبحانك ما يكون لي أن أقول ما ليس لي بحق | ١١٦ | م المائدة | ٥ |
| | ويوم يقول كن فيكون ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك الأنعام | ٦ |
| | وليكون من الموقنين... ... ... ... ... ... ... | ٧٥ | ك » | ٦ |
| | أنى يكون له ولد ولم تكن له صاحبة وخلق كل شيء | ١٠١ | ك » | ٦ |
| | قل لا أجد فيما أوحي إلي محرما على طاعم يطعمه إلا أن يكون ميتة أو دما مسفوحا أو لحم خنزير | ١٤٥ | ك » | ٦ |
| | قال فاهبط منها فما يكون لك أن تتكبر فيها ..... | ١٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | وما يكون لنا أن نعود فيها إلا أن يشاء الله ربنا ... | ٨٩ | ك » | ٧ |
| | وأن عسى أن يكون قد اقترب أجلهم ... ... ... | ١٨٥ | ك » | ٧ |
| | وقاتلوهم حتى لا تكون فتنة ويكون الدين كله لله ... | ٣٩ | م الأنفال | ٨ |
| | ما كان لنبي أن يكون له أسرى حتى يثخن في الأرض | ٦٧ | م » | ٨ |
| | كيف يكون للمشركين عهد عند الله وعند رسوله ... | ٧ | م التوبة | ٩ |
| | قل ما يكون لي أن أبدله من تلقاء نفسي ... ... ... | ١٥ | ك يونس | ١٠ |
| | إلا إبليس أبى أن يكون مع الساجدين ... ... ... | ٣١ | ك الحجر | ١٥ |
| | إنما قولنا لشيء إذا أردناه أن نقول له كن فيكون ... | ٤٠ | ك النحل | ١٦ |
| | ويقولون متى هو قل عسى أن يكون قريبا ... ... | ٥١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | أو يكون لك بيت من زخرف أو ترقى في السماء... ... | ٩٣ | ك » | ١٧ |
| | قال رب أنى يكون لي غلام وكانت امرأتي عاقرا ... | ٨ | ك مريم | ١٩ |
| | قالت أنى يكون لي غلام ولم يمسسني بشر ... ... ... | ٢٠ | ك » | ١٩ |
| | إذا قضى أمرا فإنما يقول له كن فيكون ... ... ... | ٣٥ | ك » | ١٩ |
| | ليكون الرسول شهيدا عليكم وتكونوا شهداء على الناس | ٧٨ | م الحج | ٢٢ |
| | ولولا إذ سمعتموه قلتم ما يكون لنا أن نتكلم بهذا ... | ١٦ | م النور | ٢٤ |
| | تبارك الذي نزل الفرقان على عبده ليكون للعالمين نذيرا | ١ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | لولا أنزل إليه ملك فيكون معه نذيرا ... ... ... ... | ٧ | ك » | ٢٥ |
| | فقد كذبتم فسوف يكون لزاما ... ... ... ... ... | ٧٧ | ك » | ٢٥ |
| | قل عسى أن يكون ردف لكم بعض الذي تستعجلون | ٧٢ | ك النمل | ٢٧ |
| | فالتقطه آل فرعون ليكون لهم عدوا وحزنا ... ... ... | ٨ | ك القصص | ٢٨ |
| | عسى أن يكون من المفلحين... ... ... ... ... ... | ٦٧ | ك » | ٢٨ |
| | وما كان لمؤمن ولا مؤمنة إذا قضى الله ورسوله أمرا أن يكون لهم الخيرة من أمرهم ... ... ... ... | ٣٦ | م الأحزاب | ٣٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَكُونُ | : زوجناكها لكي لا يكون على المؤمنين حرج في أزواج أدعيائهم إذا قضوا منهن وطرا ... ... ... ... | ٣٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | قد علمنا ما فرضنا عليهم في أزواجهم وما ملكت أيمانهم لكيلا يكون عليك حرج ... ... ... ... ... | ٥٠ | م « | ٣٣ |
| | انما أمره إذا أراد شيئا أن يقول له كن فيكون ... | ٨٢ | ك يس | ٣٦ |
| | فإذا قضى أمرا فإنما يقول له كن فيكون... ... ... | ٦٨ | ك غافر | ٤٠ |
| | ولولا أن يكون الناس أمة واحدة لجعلنا لمن يكفر بالرحمن لبيوتهم سقفا من فضة ... ... ... ... | ٣٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ثم يهيج فتراه مصفرا ثم يكون حطاما ... ... ... ... | ٢٠ | م الحديد | ٥٧ |
| | ما يكون من نجوى ثلاثة إلا هو رابعهم ... ... ... | ٧ | م المجادلة | ٥٨ |
| | كي لا يكون دولة بين الأغنياء منكم ... ... ... ... | ٧ | م الحشر | ٥٩ |
| | علم أن سيكون منكم مرضى وآخرون يضربون في الأرض | ٢٠ | م المزمل | ٧٣ |
| | يوم يكون الناس كالفراش المبثوث ... ... ... ... | ٤ | ك القارعة | ١٠١ |
| لِيَكُونَا | : ولئن لم يفعل ما آمره ليسجنن وليكونا من الصاغرين | ٣٢ | ك يوسف | ١٢ |
| يَكُونَا | : فإن لم يكونا رجلين فرجل وامرأتان ... ... ... | ٢٨٢ م | البقرة | ٢ |
| (٢) | تجري من تحتهما أفلا تبصرون أفلا تسمعون أم تحسبون أن أكثرهم يسمعون أو يعقلون إن هم إلا كالأنعام بل هم أضل سبيلا | | | |
| | تجعلهما تحت أقدامنا ليكونا من الأسفلين ... ... | ٢٩ | ك فصلت | ٤١ |
| لِيَكُونَنَّ | : لئن جاءهم نذير ليكونن أهدى من إحدى الأمم | ٤٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| يَكُونُوا | : فإذا سجدوا فليكونوا من ورائكم ... ... ... ... | ١٠٢ م | النساء | ٤ |
| (١٦) | فعسى أولئك أن يكونوا من المهتدين... ... ... ... | ١٨ | م التوبة | ٩ |
| | رضوا بأن يكونوا مع الخوالف وطبع على قلوبهم ... | ٨٧ | م « | ٩ |
| | رضوا بأن يكونوا مع الخوالف وطبع الله على قلوبهم | ٩٣ | م « | ٩ |
| | أفأنت تكره الناس حتى يكونوا مؤمنين ... ... ... | ٩٩ | ك يونس | ١٠ |
| | أولئك لم يكونوا معجزين في الأرض... ... ... ... | ٢٠ | ك هود | ١١ |
| | واتخذوا من دون الله آلهة ليكونوا لهم عزا ..... | ٨١ | ك مريم | ١٩ |
| | إن يكونوا فقراء يغنهم الله من فضله... ... ... ... | ٣٢ | م النور | ٢٤ |
| | أفلم يكونوا يرونها بل كانوا لا يرجون نشورا ... ... | ٤٠ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | لعلك باخع نفسك ألا يكونوا مؤمنين ... ... ... | ٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | إنما يدعوا حزبه ليكونوا من أصحاب السعير ... ... | ٦ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وبدا لهم من الله ما لم يكونوا يحتسبون ... ... ... | ٤٧ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وإن تتولوا يستبدل قوما غيركم ثم لا يكونوا أمثالكم | ٣٨ | م محمد | ٤٧ |
| | لا يسخر قوم من قوم عسى أن يكونوا خيرا منهم ... | ١١ | م الحجرات | ٤٩ |
| | ولا يكونوا كالذين أوتوا الكتاب من قبل ... ... ... | ١٦ | م الحديد | ٥٧ |
| | إن يثقفوكم يكونوا لكم أعداء ويبسطوا إليكم أيديهم | ٢ | م الممتحنة | ٦٠ |
| يَكُونُونَ | : كلا سيكفرون بعبادتهم ويكونون عليهم ضدا | ٨٢ | ك مريم | ١٩ |
| (٢) | وأنه لما قام عبد الله يدعوه كادوا يكونون عليه لبدا | ١٩ | ك الجن | ٧٢ |
| كُنْ | : وإذا قضى أمرا فإنما يقول له كن فيكون ... ... | ١١٧ م | البقرة | ٢ |
| (١١) | إذا قضى أمرا فإنما يقول له كن فيكون ... ... ... | ٤٧ | م آل عمران | ٣ |
| | خلقه من تراب ثم قال له كن فيكون ... ... ... ... | ٥٩ | م « | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كُنْ | : ويوم يقول كن فيكون ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك الأنعام | ٦ |
| | فخذ ما آتيتك وكن من الشاكرين ... ... ... ... | ١٤٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | فسبح بحمد ربك وكن من الساجدين ... ... ... | ٩٨ | ك الحجر | ١٥ |
| | إنما قولنا لشيء إذا أردناه أن نقول له كن فيكون | ٤٠ | ك النحل | ١٦ |
| | سبحانه إذا قضى أمرا فإنما يقول له كن فيكون... | ٣٥ | ك مريم | ١٩ |
| | إنما أمره إذا أراد شيئا أن يقول له كن فيكون | ٨٢ | ك يس | ٣٦ |
| | بل الله فاعبد وكن من الشاكرين ... ... ... ... | ٦٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| | فإذا قضى أمرا فإنما يقول له كن فيكون... ... ... | ٦٨ | ك غافر | ٤٠ |
| كُونُوا | : فقلنا لهم كونوا قردة خاسئين ... ... ... ... | ٦٥ | م البقرة | ٢ |
| (١٠) | وقالوا كونوا هودا أو نصارى تهتدوا ... ... ... | ١٣٥ م | « | ٢ |
| | ثم يقول للناس كونوا عبادا لي من دون الله ... ... | ٧٩ | م آل عمران | ٣ |
| | ولكن كونوا ربانيين بما كنتم تعلمون الكتاب... ... | ٧٩ | م « | ٣ |
| | يأيها الذين آمنوا كونوا قوامين بالقسط شهداء لله | ١٣٥ م | النساء | ٤ |
| | يأيها الذين آمنوا كونوا قوامين لله شهداء بالقسط | ٨ | م المائدة | ٥ |
| | فلما عتوا عن ما نهوا عنه قلنا لهم كونوا قردة خاسئين | ١٦٦ م | الأعراف | ٧ |
| | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله وكونوا مع الصادقين | ١١٩ م | التوبة | ٩ |
| | قل كونوا حجارة أو حديدا ... ... ... ... ... | ٥٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| | يأيها الذين آمنوا كونوا أنصار الله ... ... ... ... | ١٤ | م الصف | ٦١ |
| كُونِي | : قلنا يانار كوني بردا وسلاما على إبراهيم ... ... | ٦٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| مَكَانَ | : وإن أردتم استبدال زوج مكان زوج وآتيتم | | | |
| (١٤) | إحداهن قنطارا فلا تأخذوا منه شيئا ... ... | ٢٠ | م النساء | ٤ |
| | ثم بدلنا مكان السيئة الحسنة حتى عفوا ... ... ... | ٩٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | جاءتها ريح عاصف وجاءهم الموج من كل مكان ... | ٢٢ | ك يونس | ١٠ |
| | ويأتيه الموت من كل مكان وما هو بميت ... ... | ١٧ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وإذا بدلنا آية مكان آية والله أعلم بما ينزل قالوا إنما أنت مفتر ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠١ | ك النحل | ١٦ |
| | كانت آمنة مطمئنة يأتيها رزقها رغدا من كل مكان | ١١٢ | ك « | ١٦ |
| | وإذ بوأنا لإبراهيم مكان البيت أن لا تشرك بي شيئا | ٢٦ | م الحج | ٢٢ |
| | أو تهوي به الريح في مكان سحيق ... ... ... ... | ٣١ | م « | ٢٢ |
| | إذا رأتهم من مكان بعيد سمعوا لها تغيظا وزفيرا | ١٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ولو ترى إذ فزعوا فلا فوت وأخذوا من مكان قريب | ٥١ | ك سبإ | ٣٤ |
| | وقالوا آمنا به وأنى لهم التناوش من مكان بعيد ... | ٥٢ | ك « | ٣٤ |
| | وقد كفروا به من قبل ويقذفون بالغيب من مكان بعيد | ٥٣ | ك « | ٣٤ |
| | أولئك ينادون من مكان بعيد ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك فصلت | ٤١ |
| | واستمع يوم ينادي المناد من مكان قريب ... ... ... | ٤١ | ك ق | ٥٠ |
| مَكَانًا | : أولئك شر مكانا وأضل عن سواء السبيل ... ... | ٦٠ | م المائدة | ٥ |
| (٩) | قال أنتم شر مكانا والله أعلم بما تصفون ... ... ... | ٧٧ | ك يوسف | ١٢ |
| | واذكر في الكتاب مريم إذ انتبذت من أهلها مكانا شرقيا | ١٦ | ك مريم | ١٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مَكَانًا: | فحملته فانتبذت به مكانا قصيا ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك مريم | ١٩ |
| | ورفعناه مكانا عليا ... ... ... ... ... ... ... | ٥٧ | ك « | ١٩ |
| | فسيعلمون من هو شر مكانا وأضعف جندا ... ... | ٧٥ | ك « | ١٩ |
| | لا نخلفه نحن ولا أنت مكانا سوى ... ... ... ... | ٥٨ | ك طـه | ٢٠ |
| | وإذا ألقوا منها مكانا ضيقا مقرنين دعوا هنالك ثبورا | ١٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | أولئك شر مكانا وأضل سبيلا ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك « | ٢٥ |
| مَكَانَتِكُمْ: | ثم نقول للذين أشركوا مكانكم أنتم وشركاؤكم | ٢٨ | ك يونس | ١٠ |
| مَكَانَهُ: | ولكن انظر إلى الجبل فإن استقر مكانه فسوف تراني | ١٤٣ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | قالوا يأيها العزيز إن له أبا شيخا كبيرا فخذ أحدنا مكانه | ٧٨ | ك يوسف | ١٢ |
| | وأصبح الذين تمنوا مكانه بالأمس يقولون ... ... | ٨٢ | ك القصص | ٢٨ |
| مَكَانَتِكُمْ: | قل ياقوم اعملوا على مكانتكم إني عامل ... ... | ١٣٥ | ك الأنعام | ٦ |
| (٤) | ويا قوم اعملوا على مكانتكم إني عامل ... ... ... | ٩٣ | ك هود | ١١ |
| | وقل للذين لا يؤمنون اعملوا على مكانتكم إنا عاملون | ١٢١ | ك « | ١١ |
| | قل ياقوم اعملوا على مكانتكم إني عامل فسوف تعلمون | ٣٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| مَكَانَتِهِمْ: | ولو نشاء لمسخناهم على مكانتهم... ... ... ... | ٦٧ | ك يس | ٣٦ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| فَتُكْوَى: | يوم يحمى عليها في نار جهنم فتكوى بها جباههم | ٣٥ | م التوبة | ٩ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| كَيْ: | وأشركه في أمري . كي نسبحك كثيرا ... ... ... | ٣٣ | ك طـه | ٢٠ |
| (٣) | فرجعناك إلى أمك كي تقر عينها ولا تحزن ... ... | ٤٠ | ك « | ٢٠ |
| | فرددناه إلى أمه كي تقر عينها ولا تحزن ... ... ... | ١٣ | ك القصص | ٢٨ |
| كَيْلَا، كَيْ لَا: | فأثابكم غما بغم لكيلا تحزنوا على ما فاتكم | ١٥٣ | م آل عمران | ٣ |
| (٧) | ومنكم من يرد إلى أرذل العمر لكي لا يعلم بعد علم شيئا | ٧٠ | ك النحل | ١٦ |
| | ومنكم من يرد إلى أرذل العمر لكيلا يعلم من بعد علم شيئا | ٥ | م الحج | ٢٢ |
| | زوجناكها لكي لا يكون على المؤمنين حرج في أزواج | | | |
| | أدعيائهم إذا قضوا منهن وطرا ... ... ... ... | ٣٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | قد علمنا ما فرضنا عليهم في أزواجهم وما ملكت | | | |
| | أيمانهم لكيلا يكون عليك حرج... ... ... ... | ٥٠ | م « | ٣٣ |
| | لكيلا تأسوا على ما فاتكم ولا تفرحوا بما آتاكم ... | ٢٣ | م الحديد | ٥٧ |
| | كي لا يكون دولة بين الأغنياء منكم ... ... ... ... | ٧ | م الحشر | ٥٩ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| كِدْنَا: | كذلك كدنا ليوسف ... ... ... ... ... ... ... | ٧٦ | ك يوسف | ١٢ |
| أَكِيدُ: | إنهم يكيدون كيدا . وأكيد كيدا ... ... ... ... | ١٦ | ك الطارق | ٨٦ |
| لَأَكِيدَنَّ: | وتالله لأكيدن أصنامكم بعد أن تولوا مدبرين | ٥٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| فَيَكِيدُوا: | لا تقصص رؤياك على إخوتك فيكيدوا لك كيدا | ٥ | ك يوسف | ١٢ |
| يَكِيدُونَ: | إنهم يكيدون كيدا... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك الطارق | ٨٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كِيدُونِ: | قل ادعوا شركاءكم ثم كيدون فلا تنظرون ... ... | ١٩٥ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | فإن كان لكم كيد فكيدون ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك المرسلات | ٧٧ |
| كِيدُونِي: | من دونه فكيدوني جميعا ثم لا تنظرون ... ... | ٥٥ | ك هود | ١١ |
| كَيْدٍ: | فقاتلوا أولياء الشيطان إن كيد الشيطان كان ضعيفا | ٧٦ | م النساء | ٤ |
| (٧) | ذلكم وأن الله موهن كيد الكافرين ... ... ... | ١٨ | م الأنفال | ٨ |
| | ذلك ليعلم أني لم أخنه بالغيب وأن الله لا يهدي كيد الخائنين | ٥٢ | ك يوسف | ١٢ |
| | إنما صنعوا كيد ساحر ولا يفلح الساحر حيث أتى ... | ٦٩ | ك طـه | ٢٠ |
| | وما كيد الكافرين إلا في ضلال ... ... ... ... | ٢٥ | ك غافر | ٤٠ |
| | وما كيد فرعون إلا في تباب ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك « | ٤٠ |
| | فإن كان لكم كيد فكيدون ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك المرسلات | ٧٧ |
| كَيْدًا: | لا تقصص رؤياك على إخوتك فيكيدوا لك كيدا | ٥ | ك يوسف | ١٢ |
| (٦) | وأرادوا به كيدا فجعلناهم الأخسرين ... ... ... | ٧٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | فأرادوا به كيدا فجعلناهم الأسفلين ... ... ... ... | ٩٨ | ك الصافات | ٣٧ |
| | أم يريدون كيدا فالذين كفروا هم المكيدون ... ... | ٤٢ | ك الطور | ٥٢ |
| | إنهم يكيدون كيدا ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك الطارق | ٨٦ |
| | وأكيد كيدا ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٦ | ك « | ٨٦ |
| كَيْدَكُمْ: | فأجمعوا كيدكم ثم ائتوا صفا ... ... ... ... ... | ٦٤ | ك طـه | ٢٠ |
| كَيْدَكُنَّ: | فلما رأى قميصه قد من دبر قال إنه من كيدكن | ٢٨ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | إن كيدكن عظيم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ١٢ |
| كَيْدَهُ: | فتولى فرعون فجمع كيده ثم أتى ... ... ... ... | ٦٠ | ك طـه | ٢٠ |
| (٢) | ثم ليقطع فلينظر هل يذهبن كيده ما يغيظ ... ... ... | ١٥ | م الحج | ٢٢ |
| كَيْدُهُمْ: | وإن تصبروا وتتقوا لا يضركم كيدهم شيئا ... | ١٢٠ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | يوم لا يغني عنهم كيدهم شيئا ولا هم ينصرون ... | ٤٦ | ك الطور | ٥٢ |
| | ألم يجعل كيدهم في تضليل... ... ... ... ... ... | ٢ | ك الفيل | ١٠٥ |
| كَيْدَهُنَّ: | وإلا تصرف عني كيدهن أصب إليهن ... ... | ٣٣ | ك يوسف | ١٢ |
| (٣) | فاستجاب له ربه فصرف عنه كيدهن ... ... ... | ٣٤ | ك « | ١٢ |
| | ما بال النسوة اللاتي قطعن أيديهن إن ربي بكيدهن عليم | ٥٠ | ك « | ١٢ |
| كَيْدِي: | وأملي لهم إن كيدي متين . أولم يتفكروا... ... | ١٨٣ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | وأملي لهم إن كيدي متين . أم تسئلهم أجرا ... ... | ٤٥ | ك القلم | ٦٨ |
| الْمَكِيدُونَ: | أم يريدون كيدا فالذين كفروا هم المكيدون | ٤٢ | ك الطور | ٥٢ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| كَيْفَ: | كيف تكفرون بالله وكنتم أمواتا فأحياكم ... | ٢٨ | م البقرة | ٢ |
| (٨٣) | وانظر إلى العظام كيف ننشزها ثم نكسوها لحما ... | ٢٥٩ | م « | ٢ |
| | وإذ قال إبراهيم رب أرني كيف تحيي الموتى ... ... | ٢٦٠ | م « | ٢ |
| | هو الذي يصوركم في الأرحام كيف يشاء ... ... ... | ٦ | م آل عمران | ٣ |
| | فكيف إذا جمعناهم ليوم لا ريب فيه ... ... ... ... | ٢٥ | م « | ٣ |
| | كيف يهدي الله قوما كفروا بعد إيمانهم... ... ... | ٨٦ | م « | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَيْفَ | : وكيف تكفرون وأنتم تتلى عليكم آيات الله وفيكم رسوله | ١٠١ | م آل عمران | ٣ |
| | فسيروا فى الأرض فانظروا كيف كان عاقبة المكذبين | ١٣٧ | م » | ٣ |
| | وكيف تأخذونه وقد أفضى بعضكم إلى بعض ... ... | ٢١ | م النساء | ٤ |
| | فكيف إذا جئنا من كل أمة بشهيد ... ... ... | ٤١ | م » | ٤ |
| | انظر كيف يفترون على الله الكذب وكفى به إثما مبينا | ٥٠ | م » | ٤ |
| | فكيف إذا أصابتهم مصيبة بما قدمت أيديهم ... ... | ٦٢ | م » | ٤ |
| | يبحث فى الأرض ليريه كيف يوارى سوأة أخيه ... | ٣١ | م المائدة | ٥ |
| | وكيف يحكمونك وعندهم التوراة فيها حكم الله ... | ٤٣ | م » | ٥ |
| | بل يداه مبسوطتان ينفق كيف يشاء ... ... ... ... | ٦٤ | م » | ٥ |
| | انظر كيف نبين لهم الآيات ثم انظر أنى يؤفكون ... | ٧٥ | م » | ٥ |
| | قل سيروا فى الأرض ثم انظروا كيف كان عاقبة المكذبين | ١١ | ك الأنعام | ٦ |
| | انظر كيف كذبوا على أنفسهم وضل عنهم ما كانوا يفترون | ٢٤ | ك » | ٦ |
| | انظر كيف نصرف الآيات ثم هم يصدفون ... ... | ٤٦ | ك » | ٦ |
| | انظر كيف نصرف الآيات لعلهم يفقهون ... ... | ٦٥ | ك » | ٦ |
| | وكيف أخاف ما أشركتم ولا تخافون أنكم أشركتم بالله | ٨١ | ك » | ٦ |
| | وأمطرنا عليهم مطرا فانظر كيف كان عاقبة المجرمين | ٨٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | وانظروا كيف كان عاقبة المفسدين ... ... ... ... | ٨٦ | ك » | ٧ |
| | فكيف آسى على قوم كافرين ... ... ... ... ... | ٩٣ | ك » | ٧ |
| | فظلموا بها فانظر كيف كان عاقبة المفسدين ... ... | ١٠٣ | ك » | ٧ |
| | ويستخلفكم فى الأرض فينظر كيف تعملون ... ... | ١٢٩ | ك » | ٧ |
| | كيف يكون للمشركين عهد عند الله وعند رسوله ... | ٧ | م التوبة | ٩ |
| | كيف وإن يظهروا عليكم لا يرقبوا فيكم إلا ولا ذمة | ٨ | م » | ٩ |
| | ثم جعلناكم خلائف فى الأرض من بعدهم لننظر كيف تعملون ... ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك يونس | ١٠ |
| | أمن لا يهدى إلا أن يهدى فما لكم كيف تحكمون | ٣٥ | ك » | ١٠ |
| | فانظر كيف كان عاقبة الظالمين ... ... ... ... | ٣٩ | ك » | ١٠ |
| | وأغرقنا الذين كذبوا بآياتنا فانظر كيف كان عاقبة المنذرين | ٧٣ | ك » | ١٠ |
| | أفلم يسيروا فى الأرض فينظروا كيف كان عاقبة الذين من قبلهم ... ... ... ... ... ... | ١٠٩ | ك يوسف | ١٢ |
| | فأمليت للذين كفروا ثم أخذتهم فكيف كان عقاب | ٣٢ | م الرعد | ١٣ |
| | ألم تر كيف ضرب الله مثلا كلمة طيبة كشجرة طيبة | ٢٤ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وتبين لكم كيف فعلنا بهم وضربنا لكم الأمثال ... | ٤٥ | ك » | ١٤ |
| | فسيروا فى الأرض فانظروا كيف كان عاقبة المكذبين | ٣٦ | ك النحل | ١٦ |
| | انظر كيف فضلنا بعضهم على بعض ... ... ... | ٢١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | انظر كيف ضربوا لك الأمثال فضلوا فلا يستطيعون سبيلا | ٤٨ | ك » | ١٧ |
| | وكيف تصبر على ما لم تحط به خبرا ... ... ... | ٦٨ | ك الكهف | ١٨ |
| | فأشارت إليه قالوا كيف نكلم من كان فى المهد صبيا | ٢٩ | ك مريم | ١٩ |
| | فأمليت للكافرين ثم أخذتهم فكيف كان نكير ... | ٤٤ | م الحج | ٢٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَيْفَ | : انظر كيف ضربوا لك الأمثال فضلوا ... ... ... | ٩ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ألم تر إلى ربك كيف مد الظل ولو شاء لجعله ساكنا | ٤٥ | ك » | ٢٥ |
| | فانظر كيف كان عاقبة المفسدين ... ... ... ... | ١٤ | ك النمل | ٢٧ |
| | فانظر كيف كان عاقبة مكرهم أنا دمرناهم وقومهم أجمعين | ٥١ | ك » | ٢٧ |
| | قل سيروا فى الأرض فانظروا كيف كان عاقبة المجرمين | ٦٩ | ك » | ٢٧ |
| | فنبذناهم فى اليم فانظر كيف كان عاقبة الظالمين ... | ٤٠ | ك القصص | ٢٨ |
| | أولم يروا كيف يبدئ الله الخلق ثم يعيده ... ... | ١٩ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | قل سيروا فى الأرض فانظروا كيف بدأ الخلق ... | ٢٠ | ك » | ٢٩ |
| | أولم يسيروا فى الأرض فينظروا كيف كان عاقبة الذين من قبلهم ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك الروم | ٣٠ |
| | فانظروا كيف كان عاقبة الذين من قبل ... ... ... | ٤٢ | ك » | ٣٠ |
| | الله الذى يرسل الرياح فتثير سحابا فيبسطه فى السماء كيف يشاء | ٤٨ | ك » | ٣٠ |
| | فانظر إلى آثار رحمة الله كيف يحيى الأرض بعد موتها | ٥٠ | ك » | ٣٠ |
| | وما بلغوا معشار ما آتيناهم فكذبوا رسلى فكيف كان نكير | ٤٥ | ك سبأ | ٣٤ |
| | ثم أخذت الذين كفروا فكيف كان نكير ... ... | ٢٦ | ك فاطر | ٣٥ |
| | أولم يسيروا فى الأرض فينظروا كيف كان عاقبة الذين من قبلهم وكانوا أشد منهم قوة ... ... ... ... | ٤٤ | ك » | ٣٥ |
| | ولقد أرسلنا فيهم منذرين . فانظر كيف كان عاقبة المنذرين | ٧٣ | ك الصافات | ٣٧ |
| | ما لكم كيف تحكمون . أفلا تذكرون ... ... ... ... | ١٥٤ | ك » | ٣٧ |
| | فأخذتهم فكيف كان عقاب ... ... ... ... ... | ٥ | ك غافر | ٤٠ |
| | أولم يسيروا فى الأرض فينظروا كيف كان عاقبة الذين كانوا من قبلهم ... ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك » | ٤٠ |
| | أفلم يسيروا فى الأرض فينظروا كيف كان عاقبة الذين من قبلهم كانوا أكثر منهم وأشد قوة ... ... ... | ٨٢ | ك » | ٤٠ |
| | فانتقمنا منهم فانظر كيف كان عاقبة المكذبين ... ... | ٢٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | أفلم يسيروا فى الأرض فينظروا كيف كان عاقبة الذين من قبلهم دمر الله عليهم ... ... ... ... ... | ١٠ | م محمد | ٤٧ |
| | فكيف إذا توفتهم الملائكة يضربون وجوههم وأدبارهم | ٢٧ | م » | ٤٧ |
| | أفلم ينظروا إلى السماء فوقهم كيف بنيناها وزيناها ... | ٦ | ك ق | ٥٠ |
| | ولقد تركناها آية فهل من مدكر . فكيف كان عذابى ونذر | ١٦ | ك القمر | ٥٤ |
| | كذبت عاد فكيف كان عذابى ونذر ... ... ... ... | ١٨ | ك » | ٥٤ |
| | كأنهم أعجاز نخل منقعر . فكيف كان عذابى ونذر | ٢١ | ك » | ٥٤ |
| | فنادوا صاحبهم فتعاطى فعقر . فكيف كان عذابى ونذر | ٣٠ | ك » | ٥٤ |
| | فستعلمون كيف نذير ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الملك | ٦٧ |
| | ولقد كذب الذين من قبلهم فكيف كان نكير ... ... | ١٨ | ك » | ٦٧ |
| | أفنجعل المسلمين كالمجرمين . ما لكم كيف تحكمون | ٣٦ | ل القلم | ٦٨ |
| | ألم تروا كيف خلق الله سبع سموات طباقا ... ... | ١٥ | ك نوح | ٧١ |
| | فكيف تتقون إن كفرتم يوما يجعل الولدان شيبا ... | ١٧ | ك المزمل | ٧٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| كَيْفَ: | إنه فكر وقدر . فقتل كيف قدر ... ... ... ... | ١٩ | ك المدثر | ٧٤ |
| | ثم قتل كيف قدر ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك « | ٧٤ |
| | أفلا ينظرون إلى الإبل كيف خلقت ... ... ... ... | ١٧ | ك الغاشية | ٨٨ |
| | وإلى السماء كيف رفعت... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك « | ٨٨ |
| | وإلى الجبال كيف نصبت ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك « | ٨٨ |
| | وإلى الأرض كيف سطحت ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك « | ٨٨ |
| | ألم تر كيف فعل ربك بعاد... ... ... ... ... ... | ٦ | ك الفجر | ٨٩ |
| | ألم تر كيف فعل ربك بأصحاب الفيل ... ... ... | ١ | ك الفيل | ١٠٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| كَالُوهُمْ: | وإذا كالوهم أو وزنوهم يخسرون ... ... ... | ٣ | ك المطففين | ٨٣ |
| كِلْتُمْ: | وأوفوا الكيل إذا كلتم وزنوا بالقسطاس المستقيم | ٣٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| اكْتَالُوا: | الذين إذا اكتالوا على الناس يستوفون ... ... | ٢ | ك المطففين | ٨٣ |
| نَكْتَلْ: | فأرسل معنا أخانا نكتل وإنا له لحافظون ... | ٦٣ | ك يوسف | ١٢ |
| الْكَيْلَ: | وأوفوا الكيل والميزان بالقسط ... ... ... ... | ١٥٢ | م الأنعام | ٦ |
| (١٠) | فأوفوا الكيل والميزان ولا تبخسوا الناس أشياءهم ... | ٨٥ | ك الأعراف | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الْكَيْلُ: | ألا ترون أني أوفي الكيل وأنا خير المنزلين ... | ٥٩ | ك يوسف | ١٢ |
| | فإن لم تأتوني به فلا كيل لكم عندي ولا تقربون... | ٦٠ | ك « | ١٢ |
| | فلما رجعوا إلى أبيهم قالوا يا أبانا منع منا الكيل | ٦٣ | ك « | ١٢ |
| | ونمير أهلنا ونحفظ أخانا ونزداد كيل بعير ... ... | ٦٥ | ك « | ١٢ |
| | ذلك كيل يسير ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦٥ | ك « | ١٢ |
| | فأوف لنا الكيل وتصدق علينا ... ... ... ... | ٨٨ | ك « | ١٢ |
| | وأوفوا الكيل إذا كلتم وزنوا بالقسطاس المستقيم ... | ٣٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| | أوفوا الكيل ولا تكونوا من المخسرين ... ... ... | ١٨١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| الْمِكْيَالَ: | ولا تنقصوا المكيال والميزان ... ... ... ... | ٨٤ | ك هود | ١١ |
| (٢) | ويا قوم أوفوا المكيال والميزان بالقسط ... ... | ٨٥ | ك « | ١١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| اسْتَكَانُوا: | فما وهنوا لما أصابهم في سبيل الله وما ضعفوا | | | |
| (٢) | وما استكانوا ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٦ | م آل عمران | ٣ |
| | ولقد أخذناهم بالعذاب فما استكانوا لربهم | | | |
| | وما يتضرعون ... ... ... ... ... ... ... | ٧٦ | ك المؤمنون | ٢٣ |

# باب اللام

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| اللُّؤْلُؤُ: | ويطوف عليهم غلمان لهم كأنهم لؤلؤ مكنون ... | ٢٤ | ك الطور | ٥٢ |
| (٣) | يخرج منهما اللؤلؤ والمرجان ... ... ... ... | ٢٢ | م الرحمن | ٥٥ |
| | وحور عين . كأمثال اللؤلؤ المكنون... ... ... ... | ٢٣ | ك الواقعة | ٥٦ |
| لُؤْلُؤًا: | يحلون فيها من أساور من ذهب ولؤلؤا... ... ... | ٢٣ | م الحج | ٢٢ |
| (٣) | يحلون فيها من أساور من ذهب ولؤلؤا... ... ... | ٣٣ | ك فاطر | ٣٥ |
| | إذا رأيتهم حسبتهم لؤلؤا منثورا... ... ... ... | ١٩ | م الإنسان | ٧٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| الْأَلْبَابِ: | ولكم في القصاص حياة يا أولي الألباب لعلكم تتقون | ١٧٩ | م البقرة | ٢ |
| (١٦) | وتزودوا فإن خير الزاد التقوى واتقون يا أولي الألباب | ١٩٧ | م « | ٢ |
| | وما يذكر إلا أولوا الألباب... ... ... ... ... | ٢٦٩ | م « | ٢ |
| | يقولون آمنا به كل من عند ربنا وما يذكر إلا أولوا الألباب | ٧ | م آل عمران | ٣ |
| | إن في خلق السموات والأرض واختلاف الليل والنهار | | | |
| | لآيات لأولي الألباب ... ... ... ... ... ... | ١٩٠ | م « | ٣ |
| | فاتقوا الله يا أولي الألباب لعلكم تفلحون ... ... | ١٠٠ | م المائدة | ٥ |
| | لقد كان في قصصهم عبرة لأولي الألباب ... ... ... | ١١١ | ك يوسف | ١٢ |
| | إنما يتذكر أولوا الألباب ... ... ... ... ... | ١٩ | م الرعد | ١٣ |
| | وليعلموا أنما هو إله واحد وليذكر أولوا الألباب ... | ٥٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| الْأَلْبَابِ: | ليدبروا آياته وليتذكر أولوا الألباب ... ... | ٢٩ | ك ص | ٣٨ |
| | ومثلهم معهم رحمة منا وذكرى لأولي الألباب... ... | ٤٣ | ك « | ٣٨ |
| | إنما يتذكر أولوا الألباب... ... ... ... ... | ٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| | أولئك الذين هداهم الله وأولئك هم أولوا الألباب | ١٨ | ك « | ٣٩ |
| | إن في ذلك لذكرى لأولي الألباب ... ... ... ... | ٢١ | ك « | ٣٩ |
| | هدى وذكرى لأولي الألباب ... ... ... ... ... | ٥٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | فاتقوا الله يا أولي الألباب الذين آمنوا ... ... ... | ١٠ | م الطلاق | ٦٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| لَبِثَ: | قالوا سلاما قال سلام فما لبث أن جاء بعجل حنيذ | ٦٩ | ك هود | ١١ |
| (٤) | فأنساه الشيطان ذكر ربه فلبث في السجن بضع سنين | ٤٢ | ك يوسف | ١٢ |
| | فلبث فيهم ألف سنة إلا خمسين عاما ... ... ... | ١٤ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | فلولا أنه كان من المسبحين . للبث في بطنه إلى يوم يبعثون | ١٤٤ | ك الصافات | ٣٧ |
| لَبِثْتُ: | فأماته الله مائة عام ثم بعثه قال كم لبثت... ... ... | ٢٥٩ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | قال لبثت يوما أو بعض يوم... ... ... ... ... | ٢٥٩ | م « | ٢ |
| | قال بل لبثت مائة عام فانظر إلى طعامك وشرابك لم يتسنه | ٢٥٩ | م « | ٢ |
| | فقد لبثت فيكم عمرا من قبله أفلا تعقلون ... ... ... | ١٦ | ك يونس | ١٠ |
| | فلبثت سنين في أهل مدين ثم جئت على قدر يا موسى | ٤٠ | ك طه | ٢٠ |
| | قال ألم نربك فينا وليدا ولبثت فينا من عمرك سنين | ١٨ | ك الشعراء | ٢٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| لَبِثْتُمْ | : يوم يدعوكم فتستجيبون بحمده وتظنون إن لبثتم إلا قليلا | ٥٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٨) | قال قائل منهم كم لبثتم قالوا لبثنا يوما أو بعض يوم | ١٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | قالوا ربكم أعلم بما لبثتم ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك « | ١٨ |
| | يتخافتون بينهم إن لبثتم إلا عشرا ... ... ... ... ... | ١٠٣ | ك طه | ٢٠ |
| | إذ يقول أمثلهم طريقة إن لبثتم إلا يوما... ... ... | ١٠٤ | ك « | ٢٠ |
| | قال كم لبثتم فى الأرض عدد سنين ... ... ... ... | ١١٢ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | قال إن لبثتم إلا قليلا لو أنكم كنتم تعلمون... ... ... | ١١٤ | ك « | ٢٣ |
| | لقد لبثتم فى كتاب الله إلى يوم البعث... ... ... ... | ٥٦ | ك الروم | ٣٠ |
| لَبِثْنَا | : قال قائل منهم كم لبثتم قالوا لبثنا يوما أو بعض يوم | ١٩ | ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | قالوا لبثنا يوما أو بعض يوم فسئل العادين ... ... | ١١٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| لَبِثُوا | : ثم بعثناهم لنعلم أى الحزبين أحصى لما لبثوا أمدا | ١٢ | ك الكهف | ١٨ |
| (٥) | ولبثوا فى كهفهم ثلاث مائة سنين وازدادوا تسعا | ٢٥ | ك « | ١٨ |
| | قل الله أعلم بما لبثوا له غيب السموات والأرض | ٢٦ | ك « | ١٨ |
| | ويوم تقوم الساعة يقسم المجرمون ما لبثوا غير ساعة | ٥٥ | ك الروم | ٣٠ |
| | أن لو كانوا يعلمون الغيب ما لبثوا فى العذاب المهين | ١٤ | ك سبإ | ٣٤ |
| يَلْبَثُوا | : ويوم يحشرهم كأن لم يلبثوا إلا ساعة من النهار | | | |
| (٣) | يتعارفون بينهم... ... ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك يونس | ١٠ |
| | كأنهم يوم يرون ما يوعدون لم يلبثوا إلا ساعة من نهار | ٣٥ | م الأحقاف | ٤٦ |
| | كأنهم يوم يرونها لم يلبثوا إلا عشية أو ضحاها ... | ٤٦ | ك النازعات | ٧٩ |
| يَلْبَثُونَ | : وإذا لا يلبثون خلافك إلا قليلا... ... ... ... | ٧٦ | م الإسراء | ١٧ |
| لَابِثِينَ | : للطاغين مآبا . لابثين فيها أحقابا ... ... ... | ٢٣ | ك النبإ | ٧٨ |
| تَلَبَّثُوا | : ثم سئلوا الفتنة لآتوها وما تلبثوا بها إلا يسيرا ... | ١٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| لُبَدًا | : يقول أهلكت مالا لبدا ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك البلد | ٩٠ |
| لِبَدًا | : وأنه لما قام عبد الله يدعوه كادوا يكونون عليه لبدا | ١٩ | ك الجن | ٧٢ |
| لَبَسْنَا | : ولو جعلناه ملكا لجعلناه رجلا وللبسنا عليه ما يلبسون | ٩ | ك الأنعام | ٦ |
| تَلْبِسُوا | : ولا تلبسوا الحق بالباطل وتكتموا الحق وأنتم تعلمون | ٤٢ | م البقرة | ٢ |
| تَلْبِسُونَ | : لم تلبسون الحق بالباطل وتكتمون الحق وأنتم تعلمون ... ... ... ... ... ... ... | ٧١ | م آل عمران | ٣ |
| تَلْبَسُونَهَا | : لتأكلوا منه لحما طريا وتستخرجوا منه حلية تلبسونها | ١٤ | ك النحل | ١٦ |
| (٢) | ومن كل تأكلون لحما طريا وتستخرجون حلية تلبسونها | ١٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| يَلْبِسَكُمْ | : أو يلبسكم شيعا ويذيق بعضكم بأس بعض... ... | ٦٥ | ك الأنعام | ٦ |
| يَلْبِسُوا | : الذين آمنوا ولم يلبسوا إيمانهم بظلم أولئك لهم الأمن | ٨٢ | ك « | ٦ |
| (٢) | ليردوهم وليلبسوا عليهم دينهم ولو شاء الله ما فعلوه ... | ١٣٧ | ك « | ٦ |
| يَلْبِسُونَ | : ولو جعلناه ملكا لجعلناه رجلا وللبسنا عليه ما يلبسون | ٩ | ك « | ٦ |
| يَلْبَسُونَ | : ويلبسون ثيابا خضرا من سندس ... ... ... | ٣١ | ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | يلبسون من سندس وإستبرق متقابلين ... ... ... | ٥٣ | ك الدخان | ٤٤ |
| لَبْسٍ | : أفعيينا بالخلق الأول بل هم فى لبس من خلق جديد | ١٥ | ك ق | ٥٠ |
| لِبَاسٌ | : أحل لكم ليلة الصيام الرفث إلى نسائكم هن لباس لكم | ١٨٧ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | وأنتم لباس لهن ... ... ... ... ... ... ... | ١٨٧ | م « | ٢ |
| | ولباس التقوى ذلك خير ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | فأذاقها الله لباس الجوع والخوف بما كانوا يصنعون | ١١٢ | ك النحل | ١٦ |
| لِبَاسًا | : يا بنى آدم قد أنزلنا عليكم لباسا يوارى سوءاتكم وريشا | ٢٦ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | وهو الذى جعل لكم الليل لباسا والنوم سباتا... ... | ٤٧ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وجعلنا الليل لباسا . وجعلنا النهار معاشا ... ... ... | ١٠ | ك النبإ | ٧٨ |
| لِبَاسُهُمْ | : ولباسهم فيها حرير ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | م الحج | ٢٢ |
| (٢) | يحلون فيها من أساور من ذهب ولؤلؤا ولباسهم فيها حرير | ٣٣ | ك فاطر | ٣٥ |
| لِبَاسَهُمَا | : ينزع عنهما لباسهما ليريهما سوءاتهما ... ... ... | ٢٧ | ك الأعراف | ٧ |
| لَبُوسٍ | : وعلمناه صنعة لبوس لكم لتحصنكم من بأسكم ... | ٨٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| لَبَنٍ | : فيها أنهار من ماء غير آسن وأنهار من لبن لم يتغير طعمه | ١٥ | م محمد | ٤٧ |
| لَبَنًا | : نسقيكم مما فى بطونه من بين فرث ودم لبنا خالصا ... | ٦٦ | ك النحل | ١٦ |
| مَلْجَأٍ | : لو يجدون ملجأ أو مغارات أو مدخلا لولوا إليه | ٥٧ | م التوبة | ٩ |
| (٣) | وظنوا أن لا ملجأ من الله إلا إليه ... ... ... ... | ١١٨ | م « | ٩ |
| | ما لكم من ملجأ يومئذ وما لكم من نكير ... ... ... | ٤٧ | ك الشورى | ٤٢ |
| لَجُّوا | : ولو رحمناهم وكشفنا ما بهم من ضر لجوا فى طغيانهم يعمهون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٥ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | أمن هذا الذى يرزقكم إن أمسك رزقه بل لجوا فى عتو ونفور | ٢١ | ك الملك | ٦٧ |
| لُجَّةٍ | : قيل لها ادخلى الصرح فلما رأته حسبته لجة... ... ... | ٤٤ | ك النمل | ٢٧ |
| لُجِّيٍّ | : أو كظلمات فى بحر لجى يغشاه موج من فوقه موج | ٤٠ | م النور | ٢٤ |
| يُلْحِدُونَ | : فادعوه بها وذروا الذين يلحدون فى أسمائه... | ١٨٠ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | لسان الذى يلحدون إليه أعجمى وهذا لسان عربى مبين | ١٠٣ | ك النحل | ١٦ |
| | إن الذين يلحدون فى آياتنا لا يخفون علينا ... ... | ٤٠ | ك فصلت | ٤١ |
| بِإِلْحَادٍ | : ومن يرد فيه بإلحاد بظلم نذقه من عذاب أليم | ٢٥ | م الحج | ٢٢ |
| مُلْتَحَدًا | : لا مبدل لكلماته ولن تجد من دونه ملتحدا... ... | ٢٧ | ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | قل إنى لن يجيرنى من الله أحد ولن أجد من دونه ملتحدا | ٢٢ | ك الجن | ٧٢ |
| إِلْحَافًا | : تعرفهم بسيماهم لا يسئلون الناس إلحافا ... ... ... | ٢٧٣ | م البقرة | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| يَلْحَقُوا | : ويستبشرون بالذين لم يلحقوا بهم من خلفهم ... | ١٧٠ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | وآخرين منهم لما يلحقوا بهم وهو العزيز الحكيم ... | ٣ | م الجمعة | ٦٢ |
| أَلْحَقْتُمْ | : قل أروني الذين ألحقتم به شركاء كلا ... ... | ٢٧ | ك سبأ | ٣٤ |
| أَلْحَقْنَا | : والذين آمنوا واتبعتهم ذريتهم بإيمان ألحقنا بهم ذريتهم ... ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك الطور | ٥٢ |
| أَلْحِقْنِي | : توفني مسلما وألحقني بالصالحين ... ... ... ... | ١٠١ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | رب هب لي حكما وألحقني بالصالحين ... ... ... ... | ٨٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| لَحْمٌ | : إنما حرم عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما أهل به لغير الله | ١٧٣ | م البقرة | ٢ |
| (٧) | حرمت عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما أهل لغير الله به | ٣ | م المائدة | ٥ |
| | إلا أن يكون ميتة أو دما مسفوحا أو لحم خنزير فإنه رجس | ١٤٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | إنما حرم عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما أهل لغير الله به | ١١٥ | ك النحل | ١٦ |
| | أيحب أحدكم أن يأكل لحم أخيه ميتا فكرهتموه ... | ١٢ | م الحجرات | ٤٩ |
| | وأمددناهم بفاكهة ولحم مما يشتهون ... ... ... | ٢٢ | ك الطور | ٥٢ |
| | وفاكهة مما يتخيرون . ولحم طير مما يشتهون ... | ٢١ | ك الواقعة | ٥٦ |
| لَحْمًا | : وانظر إلى العظام كيف ننشزها ثم نكسوها لحما ... | ٢٥٩ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | وهو الذي سخر البحر لتأكلوا منه لحما طريا ... ... | ١٤ | ك النحل | ١٦ |
| | خلقنا المضغة عظاما فكسونا العظام لحما... ... ... | ١٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ومن كل تأكلون لحما طريا وتستخرجون حلية تلبسونها | ١٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| لُحُومُهَا | : لن ينال الله لحومها ولا دماؤها ولكن يناله التقوى منكم | ٣٧ | م الحج | ٢٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| لَحْنِ | : فلعرفتهم بسيماهم ولتعرفنهم في لحن القول ... ... ... | ٣٠ | م محمد | ٤٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| بِلِحْيَتِي | : قال يا ابن أم لا تأخذ بلحيتي ولا برأسي ... ... | ٩٤ | ك طه | ٢٠ |
| | ✦✦✦ | | | |
| أَلَدُّ | : ويشهد الله على ما في قلبه وهو ألد الخصام ... ... | ٢٠٤ | م البقرة | ٢ |
| لُدًّا | : فإنما يسرناه بلسانك لتبشر به المتقين وتنذر به قوما لدا | ٩٧ | ك مريم | ١٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| لَدُنْ | : كتاب أحكمت آياته ثم فصلت من لدن حكيم خبير | ١ | ك هود | ١١ |
| (٢) | وإنك لتلقى القرآن من لدن حكيم عليم ... ... ... | ٦ | ك النمل | ٢٧ |
| لَدُنْكَ | : وربنا لا تزغ قلوبنا بعد إذ هديتنا وهب لنا من لدنك رحمة | ٨ | م آل عمران | ٣ |
| (٧) | قال رب هب لي من لدنك ذرية طيبة إنك سميع الدعاء | ٣٨ | م « | ٣ |
| | وأجعل لنا من لدنك وليا ... ... ... ... ... ... | ٧٥ | م النساء | ٤ |
| | وأجعل لنا من لدنك نصيرا ... ... ... ... ... ... | ٧٥ | م « | ٤ |
| | وأجعل لي من لدنك سلطانا نصيرا ... ... ... ... | ٨٠ | م الإسراء | ١٧ |
| | وهب لنا من لدنك رحمة وهيئ لنا من أمرنا رشدا | ١٠ | ك الكهف | ١٨ |
| | وكانت امرأتي عاقرا فهب لي من لدنك وليا ... ... | ٥ | ك مريم | ١٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| لَدُنَّا | : وإذا لآتيناهم من لدنا أجرا عظيما ... ... ... ... | ٦٧ | م النساء | ٤ |
| (٦) | آتيناه رحمة من عندنا وعلمناه من لدنا علما ... ... | ٦٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | وحنانا من لدنا وزكاة وكان تقيا... ... ... ... ... | ١٣ | ك مريم | ١٩ |
| | وقد آتيناك من لدنا ذكرا ... ... ... ... ... ... | ٩٩ | ك طه | ٢٠ |
| | لو أردنا أن نتخذ لهوا لاتخذناه من لدنا إن كنا فاعلين | ١٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | أولم نمكن لهم حرما آمنا يجبى إليه ثمرات كل شيء رزقا من لدنا | ٥٧ | ك القصص | ٢٨ |
| لَدُنْهُ | : وإن تك حسنة يضاعفها ويؤت من لدنه أجرا عظيما | ٤٠ | م النساء | ٤ |
| (٢) | فيما لينذر بأسا شديدا من لدنه ويبشر المؤمنين ... ... | ٢ | ك الكهف | ١٨ |
| لَدُنِّي | : قد بلغت من لدني عذرا ... ... ... ... ... ... | ٧٦ | ك « | ١٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| لَدَى | : وقدت قميصه من دبر وألفيا سيدها لدى الباب ... | ٢٥ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | وأنذرهم يوم الآزفة إذ القلوب لدى الحناجر كاظمين | ١٨ | ك غافر | ٤٠ |
| لَدَيْنَا | : فلما كلمه قال إنك اليوم لدينا مكين أمين... ... ... | ٥٤ | ك يوسف | ١٢ |
| (٧) | ولا نكلف نفسا إلا وسعها ولدينا كتاب ينطق بالحق | ٦٢ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وإن كل لما جميع لدينا محضرون ... ... ... ... | ٣٢ | ك يس | ٣٦ |
| | إن كانت إلا صيحة واحدة فإذا هم جميع لدينا محضرون | ٥٣ | ك « | ٣٦ |
| | وإنه في أم الكتاب لدينا لعلي حكيم ... ... ... | ٤ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | لهم ما يشاءون فيها ولدينا مزيد ... ... ... ... | ٣٥ | ك ق | ٥٠ |
| | إن لدينا أنكالا وجحيما ... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك المزمل | ٧٣ |
| لَدَيْهِ | : كذلك وقد أحطنا بما لديه خبرا ... ... ... ... | ٩١ | م الكهف | ١٨ |
| (٢) | ما يلفظ من قول إلا لديه رقيب عتيد ... ... ... | ١٨ | ك ق | ٥٠ |
| لَدَيْهِمْ | : وما كنت لديهم إذ يلقون أقلامهم أيهم يكفل مريم | ٤٤ | م آل عمران | ٣ |
| (٧) | وما كنت لديهم إذ يختصمون ... ... ... ... ... | ٤٤ | م « | ٣ |
| | وما كنت لديهم إذ أجمعوا أمرهم وهم يمكرون ... | ١٠٢ | ك يوسف | ١٢ |
| | فتقطعوا أمرهم بينهم زبرا كل حزب بما لديهم فرحون | ٥٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | كل حزب بما لديهم فرحون ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك الروم | ٣٠ |
| | بلى ورسلنا لديهم يكتبون ... ... ... ... ... | ٨٠ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وأحاط بما لديهم وأحصى كل شيء عددا ... ... | ٢٨ | ك الجن | ٧٢ |
| لَدَيَّ | : يا موسى لا تخف إني لا يخاف لدي المرسلون ... | ١٠ | ك النمل | ٢٧ |
| (٤) | وقال قرينه هذا ما لدي عتيد ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك ق | ٥٠ |
| | قال لا تختصموا لدي وقد قدمت إليكم بالوعيد ... | ٢٨ | ك « | ٥٠ |
| | ما يبدل القول لدي وما أنا بظلام للعبيد ... ... ... | ٢٩ | ك « | ٥٠ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تَلَذُّ | : وفيها ما تشتهيه الأنفس وتلذ الأعين وأنتم فيها خالدون | ٧١ | ك الزخرف | ٤٣ |
| لَذَّةٍ | : يطاف عليهم بكأس من معين . بيضاء لذة للشاربين | ٤٦ | ك الصافات | ٣٧ |
| (٢) | وأنهار من خمر لذة للشاربين... ... ... ... ... | ١٥ | م محمد | ٤٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| لَازِبٍ | : إنا خلقناهم من طين لازب ... ... ... ... ... | ١١ | ك الصافات | ٣٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| أَلْزَمْنَاهُ: | وكل إنسان ألزمناه طائره في عنقه ... ... ... | ١٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| وَأَلْزَمَهُمْ: | وألزمهم كلمة التقوى وكانوا أحق بها وأهلها | ٢٦ | م الفتح | ٤٨ |
| أَنُلْزِمُكُمُوهَا: | أنلزمكموها وأنتم لها كارهون ... ... ... | ٢٨ | ك هود | ١١ |
| لِزَامًا: | ولولا كلمة سبقت من ربك لكان لزاما وأجل مسمى | ١٢٩ | ك طه | ٢٠ |
| (٢) | فقد كذبتم فسوف يكون لزاما ... ... ... ... | ٧٧ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| لِسَانٍ: | لعن الذين كفروا من بني إسرائيل على لسان داود | | | |
| (٧) | وعيسى ابن مريم ... ... ... ... ... ... | ٧٨ | م المائدة | ٥ |
| | وما أرسلنا من رسول إلا بلسان قومه ليبين لهم ... | ٤ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | لسان الذي يلحدون إليه أعجمي ... ... ... ... | ١٠٣ | ك النحل | ١٦ |
| | وهذا لسان عربي مبين ... ... ... ... ... | ١٠٣ | ك « | ١٦ |
| | ووهبنا لهم من رحمتنا وجعلنا لهم لسان صدق عليا ... | ٥٠ | ك مريم | ١٩ |
| | واجعل لي لسان صدق في الآخرين ... ... ... | ٨٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | لتكون من المنذرين . بلسان عربي مبين ... ... ... | ١٩٥ | ك « | ٢٦ |
| لِسَانًا: | هو أفصح مني لسانا فأرسله معي ردءا يصدقني ... | ٣٤ | ك القصص | ٢٨ |
| (٣) | وهذا كتاب مصدق لسانا عربيا لينذر الذين ظلموا ... | ١٢ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | ألم نجعل له عينين . ولسانا وشفتين ... ... ... | ٩ | ك البلد | ٩٠ |
| لِسَانِكَ: | فإنما يسرناه بلسانك لتبشر به المتقين وتنذر به | | | |
| (٣) | قوما لدا ... ... ... ... ... ... ... | ٩٧ | ك مريم | ١٩ |
| | فإنما يسرناه بلسانك لعلهم يتذكرون ... ... ... | ٥٨ | ك الدخان | ٤٤ |
| | لا تحرك به لسانك لتعجل به ... ... ... ... | ١٦ | ك القيامة | ٧٥ |
| لِسَانِي: | واحلل عقدة من لساني ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك طه | ٢٠ |
| (٢) | ويضيق صدري ولا ينطلق لساني ... ... ... | ١٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| أَلْسِنَةَ: | فإذا ذهب الخوف سلقوكم بألسنة حداد ... ... | ١٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| أَلْسِنَتُكُمُ: | ولا تقولوا لما تصف ألسنتكم الكذب هذا حلال | | | |
| (٣) | وهذا حرام لتفتروا على الله الكذب ... ... ... | ١١٦ | ك النحل | ١٦ |
| | إذ تلقونه بألسنتكم وتقولون بأفواهكم ما ليس لكم به علم | ١٥ | م النور | ٢٤ |
| | ومن آياته خلق السموات والأرض واختلاف | | | |
| | ألسنتكم وألوانكم ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك الروم | ٣٠ |
| أَلْسِنَتِهِمْ: | وإن منهم لفريقا يلوون ألسنتهم بالكتاب ... | ٧٨ | م آل عمران | ٣ |
| (٦) | وأصم غير مسمع وراعنا ليا بألسنتهم ... ... ... | ٤٦ | م النساء | ٤ |
| | وتصف ألسنتهم الكذب أن لهم الحسنى ... ... ... | ٦٢ | ك النحل | ١٦ |
| | يوم تشهد عليهم ألسنتهم وأيديهم وأرجلهم بما كانوا | | | |
| | يعملون ... ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | م النور | ٢٤ |
| | يقولون بألسنتهم ما ليس في قلوبهم ... ... ... | ١١ | م الفتح | ٤٨ |
| | ويبسطوا إليكم أيديهم وألسنتهم بالسوء ... ... ... | ٢ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | ✦✦✦ | | | |
| وَلْيَتَلَطَّفْ: | فلينظر أيها أزكى طعاما فليأتكم برزق منه | | | |
| | وليتلطف ... ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك الكهف | ١٨ |
| اللَّطِيفُ: | وهو يدرك الأبصار وهو اللطيف الخبير ... ... | ١٠٣ | ك الأنعام | ٦ |
| (٦) | إن ربي لطيف لما يشاء إنه هو العليم الحكيم ... ... | ١٠٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | فتصبح الأرض مخضرة إن الله لطيف خبير ... ... | ٦٣ | م الحج | ٢٢ |
| | فتكن في صخرة أو في السموات أو في الأرض يأت بها | | | |
| | الله إن الله لطيف خبير ... ... ... ... ... | ١٦ | ك لقمان | ٣١ |
| | الله لطيف بعباده يرزق من يشاء وهو القوي العزيز | ١٩ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ألا يعلم من خلق وهو اللطيف الخبير ... ... ... | ١٤ | ك الملك | ٦٧ |
| لَطِيفًا: | إن الله كان لطيفا خبيرا ... ... ... ... ... | ٣٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تَلَظَّى: | فأنذرتكم نارا تلظى ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك الليل | ٩٢ |
| لَظَى: | كلا إنها لظى . نزاعة للشوى ... ... ... ... | ١٥ | ك المعارج | ٧٠ |
| | ✦✦✦ | | | |
| نَلْعَبُ: | ولئن سألتهم ليقولن إنما كنا نخوض ونلعب ... ... | ٦٥ | م التوبة | ٩ |
| يَلْعَبْ: | أرسله معنا غدا يرتع ويلعب وإنا له لحافظون ... | ١٢ | ك يوسف | ١٢ |
| يَلْعَبُوا: | فذرهم يخوضوا ويلعبوا حتى يلاقوا يومهم الذي | | | |
| (٢) | يوعدون ... ... ... ... ... ... ... | ٨٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | فذرهم يخوضوا ويلعبوا حتى يلاقوا يومهم الذي يوعدون | ٤٢ | ك المعارج | ٧٠ |
| يَلْعَبُونَ: | قل الله ثم ذرهم في خوضهم يلعبون ... ... ... | ٩١ | م الأنعام | ٦ |
| (٥) | أو أمن أهل القرى أن يأتيهم بأسنا ضحى وهم يلعبون | ٩٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | ما يأتيهم من ذكر من ربهم محدث إلا استمعوه وهم يلعبون | ٢ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | بل هم في شك يلعبون ... ... ... ... ... | ٩ | ك الدخان | ٤٤ |
| | فويل يومئذ للمكذبين . الذين هم في خوض يلعبون | ١٢ | ك الطور | ٥٢ |
| لَعِبٌ: | وما الحياة الدنيا إلا لعب ولهو ... ... ... | ٣٢ | ك الأنعام | ٦ |
| (٤) | وما هذه الحياة الدنيا إلا لهو ولعب ... ... ... | ٦٤ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | إنما الحياة الدنيا لعب ولهو ... ... ... ... | ٣٦ | م محمد | ٤٧ |
| | اعلموا أنما الحياة الدنيا لعب ولهو وزينة ... ... | ٢٠ | م الحديد | ٥٧ |
| لَعِبًا: | لا تتخذوا الذين اتخذوا دينكم هزوا ولعبا من الذين | | | |
| (٤) | أوتوا الكتاب من قبلكم والكفار أولياء ... ... | ٥٧ | م المائدة | ٥ |
| | وإذا ناديتم إلى الصلاة اتخذوها هزوا ولعبا ... ... | ٥٨ | م « | ٥ |
| | وذر الذين اتخذوا دينهم لعبا ولهوا وغرتهم الحياة الدنيا | ٧٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | الذين اتخذوا دينهم لهوا ولعبا وغرتهم الحياة الدنيا | ٥١ | ك الأعراف | ٧ |
| لَاعِبِينَ: | وما خلقنا السماء والأرض وما بينهما لاعبين ... | ١٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٣) | قالوا أجئتنا بالحق أم أنت من اللاعبين ... ... ... | ٥٥ | ك « | ٢١ |
| | وما خلقنا السموات والأرض وما بينهما لاعبين ... | ٣٨ | ك الدخان | ٤٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| لَعَلَّ | : وما يدريك لعل الساعة تكون قريبا... ... ... ... | ٦٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| (٣) | وما يدريك لعل الساعة قريب ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الشورى | ٤٢ |
| | لا تدرى لعل الله يحدث بعد ذلك أمرا ... ... ... | ١ | م الطلاق | ٦٥ |
| لَعَلَّكَ | : فلعلك تارك بعض ما يوحى إليك وضائق به صدرك | ١٢ | م هود | ١١ |
| (٤) | فلعلك باخع نفسك على آثارهم إن لم يؤمنوا بهذا الحديث أسفا ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك الكهف | ١٨ |
| | ومن آناء الليل فسبح وأطراف النهار لعلك ترضى | ١٣٠ | م طه | ٢٠ |
| | لعلك باخع نفسك ألا يكونوا مؤمنين ... ... ... | ٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| لَعَلَّكُمْ | : اعبدوا ربكم الذى خلقكم والذين من قبلكم لعلكم تتقون | ٢١ | م البقرة | ٢ |
| (٦٨) | ثم عفونا عنكم من بعد ذلك لعلكم تشكرون ... ... | ٥٢ | م « | ٢ |
| | وإذ آتينا موسى الكتاب والفرقان لعلكم تهتدون ... | ٥٣ | م « | ٢ |
| | ثم بعثناكم من بعد موتكم لعلكم تشكرون ... ... ... | ٥٦ | م « | ٢ |
| | خذوا ما آتيناكم بقوة واذكروا ما فيه لعلكم تتقون | ٦٣ | م « | ٢ |
| | كذلك يحيى الله الموتى ويريكم آياته لعلكم تعقلون ... | ٧٣ | م « | ٢ |
| | ولأتم نعمتى عليكم ولعلكم تهتدون... ... ... ... ... | ١٥٠ | م « | ٢ |
| | ولكم فى القصاص حياة يا أولى الألباب لعلكم تتقون | ١٧٩ | م « | ٢ |
| | كتب عليكم الصيام كما كتب على الذين من قبلكم لعلكم تتقون ... ... ... ... ... ... ... | ١٨٣ | م « | ٢ |
| | ولتكبروا الله على ما هداكم ولعلكم تشكرون ... ... | ١٨٥ | م « | ٢ |
| | وأتوا البيوت من أبوابها واتقوا الله لعلكم تفلحون | ١٨٩ | م « | ٢ |
| | كذلك يبين الله لكم الآيات لعلكم تتفكرون ... ... | ٢١٩ | م « | ٢ |
| | كذلك يبين الله لكم آياته لعلكم تعقلون ... ... ... | ٢٤٢ | م « | ٢ |
| | كذلك يبين الله لكم الآيات لعلكم تتفكرون ... ... | ٢٦٦ | م « | ٢ |
| | كذلك يبين الله لكم آياته لعلكم تهتدون ... ... ... | ١٠٣ | م آل عمران | ٣ |
| | ولقد نصركم الله ببدر وأنتم أذلة فاتقوا الله لعلكم تشكرون | ١٢٣ | م « | ٣ |
| | لا تأكلوا الربا أضعافا مضاعفة واتقوا الله لعلكم تفلحون | ١٣٠ | م « | ٣ |
| | وأطيعوا الله والرسول لعلكم ترحمون ... ... ... ... | ١٣٢ | م « | ٣ |
| | اصبروا وصابروا ورابطوا واتقوا الله لعلكم تفلحون | ٢٠٠ | م « | ٣ |
| | ولكن يريد ليطهركم وليتم نعمته عليكم لعلكم تشكرون | ٦ | م المائدة | ٥ |
| | وابتغوا إليه الوسيلة وجاهدوا فى سبيله لعلكم تفلحون | ٣٥ | م « | ٥ |
| | كذلك يبين الله لكم آياته لعلكم تشكرون ... ... ... | ٨٩ | م « | ٥ |
| | رجس من عمل الشيطان فاجتنبوه لعلكم تفلحون ... | ٩٠ | م « | ٥ |
| | فاتقوا الله يا أولى الألباب لعلكم تفلحون ... ... | ١٠٠ | م « | ٥ |
| | ذلكم وصاكم به لعلكم تعقلون ... ... ... ... ... | ١٥١ | م الأنعام | ٦ |
| | وبعهد الله أوفوا ذلكم وصاكم به لعلكم تذكرون ... | ١٥٢ | م « | ٦ |
| | ذلكم وصاكم به لعلكم تتقون ... ... ... ... ... | ١٥٣ | م « | ٦ |
| | وهذا كتاب أنزلناه مبارك فاتبعوه واتقوا لعلكم ترحمون | ١٥٥ | ك « | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| لَعَلَّكُمْ | : كذلك نخرج الموتى لعلكم تذكرون ... ... ... ... | ٥٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | لينذركم ولتتقوا ولعلكم ترحمون ... ... ... ... ... | ٦٣ | ك « | ٧ |
| | فاذكروا آلاء الله لعلكم تفلحون ... ... ... ... ... | ٦٩ | ك « | ٧ |
| | النبى الأمى الذى يؤمن بالله وكلماته واتبعوه لعلكم تهتدون | ١٥٨ | ك « | ٧ |
| | خذوا ما آتيناكم بقوة واذكروا ما فيه لعلكم تتقون | ١٧١ | ك « | ٧ |
| | وإذا قرئ القرآن فاستمعوا له وأنصتوا لعلكم ترحمون | ٢٠٤ | ك « | ٧ |
| | وأيدكم بنصره ورزقكم من الطيبات لعلكم تشكرون ... | ٢٦ | م الأنفال | ٨ |
| | فاثبتوا واذكروا الله كثيرا لعلكم تفلحون... ... ... | ٤٥ | م « | ٨ |
| | إنا أنزلناه قرآنا عربيا لعلكم تعقلون ... ... ... ... | ٢ | م يوسف | ١٢ |
| | يدبر الأمر يفصل الآيات لعلكم بلقاء ربكم توقنون | ٢ | م الرعد | ١٣ |
| | وترى الفلك مواخر فيه ولتبتغوا من فضله ولعلكم تشكرون | ١٤ | ك النحل | ١٦ |
| | وألقى فى الأرض رواسى أن تميد بكم وأنهارا وسبلا لعلكم تهتدون ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك « | ١٦ |
| | وجعل لكم السمع والأبصار والأفئدة لعلكم تشكرون | ٧٨ | ك « | ١٦ |
| | كذلك يتم نعمته عليكم لعلكم تسلمون ... ... ... ... | ٨١ | ك « | ١٦ |
| | وينهى عن الفحشاء والمنكر والبغى يعظكم لعلكم تذكرون | ٩٠ | ك « | ١٦ |
| | لا تركضوا وارجعوا إلى ما أترفتم فيه ومساكنكم لعلكم تسئلون | ١٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | كذلك سخرناها لكم لعلكم تشكرون ... ... ... ... | ٣٦ | م الحج | ٢٢ |
| | واعبدوا ربكم وافعلوا الخير لعلكم تفلحون ... ... | ٧٧ | م « | ٢٢ |
| | وأنزلنا فيها آيات بينات لعلكم تذكرون ... ... ... | ١ | م النور | ٢٤ |
| | ذلكم خير لكم لعلكم تذكرون ... ... ... ... ... | ٢٧ | م « | ٢٤ |
| | وتوبوا إلى الله جميعا أيه المؤمنون لعلكم تفلحون | ٣١ | م « | ٢٤ |
| | وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة وأطيعوا الرسول لعلكم ترحمون | ٥٦ | م « | ٢٤ |
| | كذلك يبين الله لكم الآيات لعلكم تعقلون ... ... | ٦١ | م « | ٢٤ |
| | وتتخذون مصانع لعلكم تخلدون ... ... ... ... ... | ١٢٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | سآتيكم منها بخبر أو آتيكم بشهاب قبس لعلكم تصطلون | ٧ | ك النمل | ٢٧ |
| | لولا تستغفرون الله لعلكم ترحمون ... ... ... ... | ٤٦ | ك « | ٢٧ |
| | لعلى آتيكم منها بخبر أو جذوة من النار لعلكم تصطلون | ٢٩ | ك القصص | ٢٨ |
| | لتسكنوا فيه ولتبتغوا من فضله ولعلكم تشكرون... ... | ٧٣ | ك « | ٢٨ |
| | ولتجرى الفلك بأمره ولتبتغوا من فضله ولعلكم تشكرون | ٤٦ | ك الروم | ٣٠ |
| | وترى الفلك فيه مواخر لتبتغوا من فضله ولعلكم تشكرون | ١٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وإذا قيل لهم اتقوا ما بين أيديكم وما خلفكم لعلكم ترحمون | ٤٥ | م يس | ٣٦ |
| | ولتبلغوا أجلا مسمى ولعلكم تعقلون ... ... ... ... | ٦٧ | ك غافر | ٤٠ |
| | لا تسمعوا لهذا القرآن والغوا فيه لعلكم تغلبون ... | ٢٦ | ك فصلت | ٤١ |
| | إنا جعلناه قرآنا عربيا لعلكم تعقلون ... ... ... ... | ٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وجعل لكم فيها سبلا لعلكم تهتدون ... ... ... ... | ١٠ | ك « | ٤٣ |
| | لتجرى الفلك فيه بأمره ولتبتغوا من فضله ولعلكم تشكرون | ١٢ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | فأصلحوا بين أخويكم واتقوا الله لعلكم ترحمون ... | ١٠ | م الحجرات | ٤٩ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| لَعَلَّكُمْ | ومن كل شيء خلقنا زوجين لعلكم تذكرون ... ... | ك الذاريات | ٤٩ ٥١ |
| | قد بينا لكم الآيات لعلكم تعقلون ... ... ... ... | م الحديد | ١٧ ٥٧ |
| | وابتغوا من فضل الله واذكروا الله كثيرا لعلكم تفلحون | م الجمعة | ١٠ ٦٢ |
| لَعَلَّنَا | لعلنا نتبع السحرة إن كانوا هم الغالبين ... ... ... | ك الشعراء | ٤٠ ٢٦ |
| لَعَلَّهُ | فقولا له قولا لينا لعله يتذكر أو يخشى ... ... ... | ك طه | ٤٤ ٢٠ |
| (٣) | وإن أدرى لعله فتنة لكم ومتاع إلى حين ... ... ... | ك الأنبياء | ١١١ ٢١ |
| | وما يدريك لعله يزكى ... ... ... ... ... ... | ك عبس | ٣ ٨٠ |
| لَعَلَّهُمْ | فليستجيبوا لى وليؤمنوا بى لعلهم يرشدون ... ... | م البقرة | ١٨٦ ٢ |
| (٤٤) | كذلك يبين الله آياته للناس لعلهم يتقون ... ... | م | ١٨٧ ٢ |
| | ويبين آياته للناس لعلهم يتذكرون ... ... ... ... | م | ٢٢١ ٢ |
| | واكفروا آخره لعلهم يرجعون ... ... ... ... ... | م آل عمران | ٧٢ ٣ |
| | فأخذناهم بالبأساء والضراء لعلهم يتضرعون ... ... | ك الأنعام | ٤٢ ٦ |
| | ليس لهم من دونه ولى ولا شفيع لعلهم يتقون ... ... | ك | ٥١ ٦ |
| | انظر كيف نصرف الآيات لعلهم يفقهون ... ... | ك | ٦٥ ٦ |
| | ولكن ذكرى لعلهم يتقون ... ... ... ... ... ... | ك | ٦٩ ٦ |
| | وهدى ورحمة لعلهم بلقاء ربهم يؤمنون ... ... | ك | ١٥٤ ٦ |
| | ذلك من آيات الله لعلهم يذكرون ... ... ... ... | ك الأعراف | ٢٦ ٧ |
| | إلا أخذنا أهلها بالبأساء والضراء لعلهم يضرعون ... | ك | ٩٤ ٧ |
| | ولقد أخذنا آل فرعون بالسنين ونقص من الثمرات لعلهم يذكرون ... ... ... ... ... ... | ك | ١٣٠ ٧ |
| | قالوا معذرة إلى ربكم ولعلهم يتقون ... ... ... | م | ١٦٤ ٧ |
| | وبلوناهم بالحسنات والسيئات لعلهم يرجعون ... ... | م | ١٦٨ ٧ |
| | وكذلك نفصل الآيات ولعلهم يرجعون ... ... ... | ك | ١٧٤ ٧ |
| | فاقصص القصص لعلهم يتفكرون ... ... ... ... ... | ك | ١٧٦ ٧ |
| | فإما تثقفنهم فى الحرب فشرد بهم من خلفهم لعلهم يذكرون | م الأنفال | ٥٧ ٨ |
| | فقاتلوا أئمة الكفر إنهم لا أيمان لهم لعلهم ينتهون | م التوبة | ١٢ ٩ |
| | ولينذروا قومهم إذا رجعوا إليهم لعلهم يحذرون ... | م | ١٢٢ ٩ |
| | وأخذنا بالبأساء لعل أرجع إلى الناس لعلهم يضرعون ... | ك يوسف | ٤٦ ١٢ |
| | وقال لفتيانه اجعلوا بضاعتهم فى رحالهم لعلهم يعرفونها | ك | ٦٢ ١٢ |
| | إذا انقلبوا إلى أهلهم لعلهم يرجعون ... ... ... ... | ك | ٦٢ ١٢ |
| | ويضرب الله الأمثال للناس لعلهم يتذكرون ... ... | ك إبراهيم | ٢٥ ١٤ |
| | وأرزقهم من الثمرات لعلهم يشكرون ... ... ... ... | ك | ٣٧ ١٤ |
| | لتبين للناس ما نزل إليهم ولعلهم يتفكرون ... ... ... | ك النحل | ٤٤ ١٦ |
| | وصرفنا فيه من الوعيد لعلهم يتقون ... ... ... ... | ك طه | ١١٣ ٢٠ |
| | وجعلنا فيها فجاجا سبلا لعلهم يهتدون ... ... ... ... | ك الأنبياء | ٣١ ٢١ |
| | فجعلهم جذاذا إلا كبيرا لهم لعلهم إليه يرجعون ... ... | ك | ٥٨ ٢١ |
| | قالوا فأتوا به على أعين الناس لعلهم يشهدون ... ... | ك | ٦١ ٢١ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| لَعَلَّهُمْ | ولقد آتينا موسى الكتاب لعلهم يهتدون ... ... ... | ك المؤمنون | ٤٩ ٢٣ |
| | بصائر للناس وهدى ورحمة لعلهم يتذكرون ... ... ... | ك القصص | ٤٣ ٢٨ |
| | لتنذر قوما ما أتاهم من نذير من قبلك لعلهم يتذكرون | ك | ٤٦ ٢٨ |
| | ولقد وصلنا لهم القول لعلهم يتذكرون ... ... ... ... | ك | ٥١ ٢٨ |
| | ليذيقهم بعض الذى عملوا لعلهم يرجعون ... ... ... | ك الروم | ٤١ ٣٠ |
| | لتنذر قوما ما أتاهم من نذير من قبلك لعلهم يهتدون | ك السجدة | ٣ ٣٢ |
| | ولنذيقنهم من العذاب الأدنى دون العذاب الأكبر لعلهم يرجعون ... ... ... ... ... ... ... ... | ك | ٢١ ٣٢ |
| | واتخذوا من دون الله آلهة لعلهم ينصرون ... ... | ك يس | ٧٤ ٣٦ |
| | ولقد ضربنا للناس فى هذا القرآن من كل مثل لعلهم يتذكرون | ك الزمر | ٢٧ ٣٩ |
| | قرآنا عربيا غير ذى عوج لعلهم يتقون ... ... ... | ك | ٢٨ ٣٩ |
| | وجعلها كلمة باقية فى عقبه لعلهم يرجعون ... ... ... | ك الزخرف | ٢٨ ٤٣ |
| | وأخذناهم بالعذاب لعلهم يرجعون ... ... ... ... | ك | ٤٨ ٤٣ |
| | فإنما يسرناه بلسانك لعلهم يتذكرون ... ... ... ... | ك الدخان | ٥٨ ٤٤ |
| | وصرفنا الآيات لعلهم يرجعون ... ... ... ... ... | ك الأحقاف | ٢٧ ٤٦ |
| | وتلك الأمثال نضربها للناس لعلهم يتفكرون ... ... | م الحشر | ٢١ ٥٩ |
| لَعَلِّى | لعلى أرجع إلى الناس لعلهم يعلمون ... ... ... ... | ك يوسف | ٤٦ ١٢ |
| (٦) | إنى آنست نارا لعلى آتيكم منها بقبس ... ... ... | ك طه | ١٠ ٢٠ |
| | لعلى أعمل صالحا فيما تركت ... ... ... ... ... | ك المؤمنون | ١٠٠ ٢٣ |
| | إنى آنست نارا لعلى آتيكم منها بخبر أو جذوة من النار | ك القصص | ٢٩ ٢٨ |
| | فاجعل لى صرحا لعلى أطلع إلى إله موسى ... ... ... | ك | ٣٨ ٢٨ |
| | وقال فرعون يا هامان ابن لى صرحا لعلى أبلغ الأسباب | ك غافر | ٣٦ ٤٠ |

* * *

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| لَعَنَ | إن الله لعن الكافرين وأعد لهم سعيرا ... ... ... | م الأحزاب | ٦٤ ٣٣ |
| لَعَنَتْ | كلما دخلت أمة لعنت أختها ... ... ... ... ... | ك الأعراف | ٣٨ ٧ |
| لَعَنَّا | فنردها على أدبارها أو نلعنهم كما لعنا أصحاب السبت | م النساء | ٤٧ ٤ |
| لَعَنَّاهُمْ | فبما نقضهم ميثاقهم لعناهم وجعلنا قلوبهم قاسية ... | م المائدة | ١٣ ٥ |
| لَعَنَهُ | وغضب الله عليه ولعنه وأعد له عذابا عظيما ... ... | م النساء | ٩٣ ٤ |
| (٣) | لعنه الله وقال لأتخذن من عبادك نصيبا مفروضا ... | م | ١١٨ ٤ |
| | من لعنه الله وغضب عليه وجعل منهم القردة والخنازير | م المائدة | ٦٠ ٥ |
| لَعَنَهُمْ | وقالوا قلوبنا غلف بل لعنهم الله بكفرهم ... ... | م البقرة | ٨٨ ٢ |
| (٧) | ولكن لعنهم الله بكفرهم فلا يؤمنون إلا قليلا ... ... | م النساء | ٤٦ ٤ |
| | أولئك الذين لعنهم الله ومن يلعن الله فلن تجد له نصيرا | م | ٥٢ ٤ |
| | هى حسبهم ولعنهم الله ولهم عذاب مقيم ... ... ... | م التوبة | ٦٨ ٩ |
| | إن الذين يؤذون الله ورسوله لعنهم الله فى الدنيا والآخرة | م الأحزاب | ٥٧ ٣٣ |
| | أولئك الذين لعنهم الله فأصمهم وأعمى أبصارهم ... | م محمد | ٢٣ ٤٧ |
| | وغضب الله عليهم ولعنهم وأعد لهم جهنم وساءت مصيرا | م الفتح | ٦ ٤٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| نَلْعَنَهُمْ | : فنردها على أدبارها أو نلعنهم كما لعنا أصحاب السبت | ٤٧ | م النساء | ٤ |
| يَلْعَنُ | : أولئك الذين لعنهم الله ومن يلعن الله فلن تجد له نصيرا | ٥٢ | م « | ٤ |
| | (٢) ثم يوم القيامة يكفر بعضكم ببعض ويلعن بعضكم بعضا | ٢٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| يَلْعَنُهُمُ | : إن الذين يكتمون ما أنزلنا من البينات والهدى من | | | |
| | (٢) بعد ما بيناه للناس فى الكتاب أولئك يلعنهم الله | ١٥٩ | م البقرة | ٢ |
| | ويلعنهم اللاعنون ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٩ | م « | ٢ |
| أَلْعَنْهُمْ | : ربنا آتهم ضعفين من العذاب والعنهم لعنا كبيرا | ٦٨ | م الأحزاب | ٣٣ |
| لُعِنَ | : لعن الذين كفروا من بنى إسرائيل على لسان داود | | | |
| | وعيسى ابن مريم ... ... ... ... ... ... ... | ٧٨ | م المائدة | ٥ |
| لُعِنُوا | : وقالت اليهود يد الله مغلولة غلت أيديهم ولعنوا بما قالوا | ٦٤ | م « | ٥ |
| | (٢) إن الذين يرمون المحصنات الغافلات المؤمنات لعنوا | | | |
| | فى الدنيا والآخرة ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | م النور | ٢٤ |
| لَعْنًا | : ربنا آتهم ضعفين من العذاب والعنهم لعنا كبيرا | ٦٨ | م الأحزاب | ٣٣ |
| لَعْنَةُ | : فلما جاءهم ما عرفوا كفروا به فلعنة الله على الكافرين | ٨٩ | م البقرة | ٢ |
| | (١٣) إن الذين كفروا وماتوا وهم كفار أولئك عليهم | | | |
| | لعنة الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٦١ | م « | ٢ |
| | ثم نبتهل فنجعل لعنة الله على الكاذبين ... ... ... | ٦١ | م آل عمران | ٣ |
| | أولئك جزاؤهم أن عليهم لعنة الله والملائكة والناس أجمعين | ٨٧ | م « | ٣ |
| | فأذن مؤذن بينهم أن لعنة الله على الظالمين ... ... | ٤٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | ألا لعنة الله على الظالمين ... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك هود | ١١ |
| | وأتبعوا فى هذه الدنيا لعنة ويوم القيامة ... ... ... | ٦٠ | ك « | ١١ |
| | وأتبعوا فى هذه لعنة ويوم القيامة ... ... ... ... | ٩٩ | ك « | ١١ |
| | ويفسدون فى الأرض أولئك لهم اللعنة ولهم سوء الدار | ٢٥ | م الرعد | ١٣ |
| | وإن عليك اللعنة إلى يوم الدين ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك الحجر | ١٥ |
| | والخامسة أن لعنة الله عليه إن كان من الكاذبين ... | ٧ | م النور | ٢٤ |
| | وأتبعناهم فى هذه الدنيا لعنة ويوم القيامة هم من | | | |
| | المقبوحين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك القصص | ٢٨ |
| | يوم لا ينفع الظالمين معذرتهم ولهم اللعنة ولهم سوء الدار | ٥٢ | ك غافر | ٤٠ |
| لَعْنَتِى | : وإن عليك لعنتى إلى يوم الدين ... ... ... ... | ٧٨ | ك ص | ٣٨ |
| اللَّاعِنُونَ | : أولئك يلعنهم الله ويلعنهم اللاعنون ... ... | ١٥٩ | م البقرة | ٢ |
| مَلْعُونِينَ | : ملعونين أينما ثقفوا أخذوا وقتلوا تقتيلا... ... | ٦١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| الْمَلْعُونَةَ | : وما جعلنا الرؤيا التى أريناك إلا فتنة للناس | | | |
| | والشجرة الملعونة فى القرآن ... ... ... ... ... | ٦٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| لُغُوبٌ | : لا يمسنا فيها نصب ولا يمسنا فيها لغوب... ... ... | ٣٥ | ك فاطر | ٣٥ |
| | (٢) ولقد خلقنا السموات والأرض وما بينهما فى ستة أيام | | | |
| | وما مسنا من لغوب ... ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | م ق | ٥٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ألْغَوْا | : وقال الذين كفروا لا تسمعوا لهذا القرآن والغوا فيه | ٢٦ | ك فصلت | ٤١ |
| اللَّغْوِ | : لا يؤاخذكم الله باللغو فى أيمانكم ... ... ... ... | ٢٢٥ | م البقرة | ٢ |
| | (٦) لا يؤاخذكم الله باللغو فى أيمانكم ... ... ... ... | ٨٩ | م المائدة | ٥ |
| | والذين هم عن اللغو معرضون ... ... ... ... ... | ٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | والذين لا يشهدون الزور وإذا مروا باللغو مروا كراما | ٧٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وإذا سمعوا اللغو أعرضوا عنه ... ... ... ... ... | ٥٥ | م القصص | ٢٨ |
| | يتنازعون فيها كأسا لا لغو فيها ولا تأثيم ... ... ... | ٢٣ | ك الطور | ٥٢ |
| لَغْوًا | : لا يسمعون فيها لغوا إلا سلاما ولهم رزقهم فيها بكرة وعشيا | ٦٢ | ك مريم | ١٩ |
| | (٣) لا يسمعون فيها لغوا ولا تأثيما . إلا قيلا سلاما سلاما | ٢٥ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | لا يسمعون فيها لغوا ولا كذابا ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك النبأ | ٧٨ |
| لَاغِيَةً | : فى جنة عالية . لا تسمع فيها لاغية ... ... ... ... | ١١ | ك الغاشية | ٨٨ |
| لَتَلْفِتَنَا | : قالوا أجئتنا لتلفتنا عما وجدنا عليه آباءنا ... ... | ٧٨ | ك يونس | ١٠ |
| يَلْتَفِتْ | : فأسر بأهلك بقطع من الليل ولا يلتفت منكم أحد | ٨١ | ك هود | ١١ |
| | (٢) واتبع أدبارهم ولا يلتفت منكم أحد وامضوا حيث تؤمرون | ٦٥ | ك الحجر | ١٥ |
| تَلْفَحُ | : فى جهنم خالدون . تلفح وجوههم النار وهم فيها كالحون | ١٠٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| يَلْفِظُ | : ما يلفظ من قول إلا لديه رقيب عتيد ... ... ... | ١٨ | ك ق | ٥٠ |
| الْتَفَّتِ | : والتفت الساق بالساق . إلى ربك يومئذ المساق | ٢٩ | ك القيامة | ٧٥ |
| أَلْفَافًا | : لنخرج به حبا ونباتا . وجنات ألفافا ... ... ... | ١٦ | ك النبأ | ٧٨ |
| لَفِيفًا | : فإذا جاء وعد الآخرة جئنا بكم لفيفا... ... ... ... | ١٠٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| أَلْفَوْا | : إنهم ألفوا آباءهم ضالين ... ... ... ... ... ... | ٦٩ | ك الصافات | ٣٧ |
| أَلْفَيَا | : واستبقا الباب وقدت قميصه من دبر وألفيا سيدها | | | |
| | لدى الباب... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك يوسف | ١٢ |
| أَلْفَيْنَا | : قالوا بل نتبع ما ألفينا عليه آباءنا ... ... ... ... | ١٧٠ | م البقرة | ٢ |
| بِالْأَلْقَابِ | : ولا تلمزوا أنفسكم ولا تنابزوا بالألقاب ... | ١١ | م الحجرات | ٤٩ |
| لَوَاقِحَ | : وأرسلنا الرياح لواقح فأنزلنا من السماء ماء فأسقيناكموه | ٢٢ | ك الحجر | ١٥ |
| فَالْتَقَطَهُ | : فالتقطه آل فرعون ليكون لهم عدوا وحزنا ... | ٨ | ك القصص | ٢٨ |
| يَلْتَقِطْهُ | : وألقوه فى غيابة الجب يلتقطه بعض السيارة ... | ١٠ | ك يوسف | ١٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **الْمَلَائِكَةُ** | : وما جعلنا أصحاب النار إلا ملائكة ... ... | ٣١ | ك المدثر | ٧٤ |
| | يوم يقوم الروح والملائكة صفا ... ... ... ... | ٣٨ | ك النبأ | ٧٨ |
| | تنزل الملائكة والروح فيها بإذن ربهم من كل أمر | ٤ | ك القدر | ٩٧ |
| **مَلَائِكَتِهِ** | : من كان عدوا لله وملائكته ورسله وجبريل | | | |
| (٥) | وميكال فإن الله عدو للكافرين ... ... ... ... | ٩٨ | م البقرة | ٢ |
| | كل آمن بالله وملائكته وكتبه ورسله ... ... ... | ٢٨٥ | م « | ٢ |
| | ومن يكفر بالله وملائكته وكتبه ورسله واليوم الآخر | | | |
| | فقد ضل ضلالا بعيدا ... ... ... ... ... | ١٣٦ | م النساء | ٤ |
| | هو الذي يصلي عليكم وملائكته ليخرجكم من الظلمات | | | |
| | إلى النور ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | إن الله وملائكته يصلون على النبي ... ... ... ... | ٥٦ | م « | ٣٣ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **يُمِلَّ** | : فإن كان الذي عليه الحق سفيها أو ضعيفا أو لا يستطيع | | | |
| | أن يمل هو فليملل وليه بالعدل ... ... ... ... | ٢٨٢ | م البقرة | ٢ |
| **لْيُمْلِلْ** | : فليكتب وليملل الذي عليه الحق ... ... ... ... | ٢٨٢ | م « | ٢ |
| (٢) | فليملل وليه بالعدل ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨٢ | م « | ٢ |
| **مِلَّةَ** | : ومن يرغب عن ملة إبراهيم إلا من سفه نفسه ... | ١٣٠ | م « | ٢ |
| (١٠) | قل بل ملة إبراهيم حنيفا ... ... ... ... ... | ١٣٥ | م « | ٢ |
| | قل صدق الله فاتبعوا ملة إبراهيم حنيفا ... ... ... | ٩٥ | م آل عمران | ٣ |
| | ومن أحسن دينا ممن أسلم وجهه لله وهو محسن واتبع | | | |
| | ملة إبراهيم حنيفا ... ... ... ... ... ... | ١٢٥ | م النساء | ٤ |
| | قل إنني هداني ربي إلى صراط مستقيم دينا قيما ملة | | | |
| | إبراهيم حنيفا ... ... ... ... ... ... ... | ١٦١ | ك الأنعام | ٦ |
| | إني تركت ملة قوم لا يؤمنون بالله وهم بالآخرة هم كافرون | ٣٧ | ك يوسف | ١٢ |
| | واتبعت ملة آبائي إبراهيم وإسحق ويعقوب ... ... | ٣٨ | ك « | ١٢ |
| | ثم أوحينا إليك أن اتبع ملة إبراهيم حنيفا ... ... | ١٢٣ | ك النحل | ١٩ |
| | ملة أبيكم إبراهيم هو سماكم المسلمين من قبل ... ... | ٧٨ | م الحج | ٢٢ |
| | ما سمعنا بهذا في الملة الآخرة إن هذا إلا اختلاق ... | ٧ | ك ص | ٣٨ |
| **مِلَّتِكُمْ** | : قد افترينا على الله كذبا إن عدنا في ملتكم ... ... | ٨٩ | ك الأعراف | ٧ |
| **مِلَّتِنَا** | : لنخرجنك ياشعيب والذين آمنوا معك من قريتنا | | | |
| (٢) | أو لتعودن في ملتنا ... ... ... ... ... ... | ٨٨ | ك « | ٧ |
| | لنخرجنكم من أرضنا أو لتعودن في ملتنا ... ... ... | ١٣ | ك إبراهيم | ١٤ |
| **مِلَّتَهُمْ** | : ولن ترضى عنك اليهود ولا النصارى حتى تتبع ملتهم | ١٢٠ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | إنهم إن يظهروا عليكم يرجموكم أو يعيدوكم في ملتهم... | ٢٠ | ك الكهف | ١٨ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **أُمْلِي** | : وأملي لهم إن كيدي متين ... ... ... ... ... | ١٨٣ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | وأملي لهم إن كيدي متين ... ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك القلم | ٦٨ |
| **نُمْلِي** | : ولا يحسبن الذين كفروا أنما نملي لهم خير لأنفسهم ... | ١٧٨ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | إنما نملي لهم ليزدادوا إثما ولهم عذاب مهين ... ... | ١٧٨ | م « | ٣ |
| **نُمْلِي** | : أكتتبها فهي تملى عليه بكرة وأصيلا ... ... ... ... | ٥ | ك الفرقان | ٢٥ |
| **مَلِيًّا** | : لئن لم تنته لأرجمنك واهجرني مليا ... ... ... ... | ٤٦ | ك مريم | ١٩ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **مَنَعَ** | : ومن أظلم ممن منع مساجد الله أن يذكر فيها اسمه ... | ١١٤ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | وما منع الناس أن يؤمنوا إذ جاءهم الهدى إلا أن قالوا | | | |
| | أبعث الله بشرا رسولا ... ... ... ... ... ... | ٩٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وما منع الناس أن يؤمنوا إذ جاءهم الهدى ويستغفروا | | | |
| | ربهم إلا أن تأتيهم سنة الأولين... ... ... ... | ٥٥ | ك الكهف | ١٨ |
| **مَنَعَكَ** | : قال ما منعك ألا تسجد إذ أمرتك ... ... ... | ١٢ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | قال يا هرون ما منعك إذ رأيتهم ضلوا . ألا تتبعن | ٩٢ | ك طه | ٢٠ |
| | قال يا إبليس ما منعك أن تسجد لما خلقت بيدي ... | ٧٥ | ك ص | ٣٨ |
| **مَنَعَنَا** | : وما منعنا أن نرسل بالآيات إلا أن كذب بها الأولون | ٥٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| **مَنَعَهُمْ** | : وما منعهم أن تقبل منهم نفقاتهم إلا أنهم كفروا | | | |
| | بالله وبرسوله ... ... ... ... ... ... ... | ٥٤ | م التوبة | ٩ |
| **تَمْنَعُهُمْ** | : أم لهم آلهة تمنعهم من دوننا... ... ... ... ... | ٤٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| **نَمْنَعْكُمْ** | : قالوا ألم نستحوذ عليكم ونمنعكم من المؤمنين... ... | ١٤١ | م النساء | ٤ |
| **يَمْنَعُونَ** | : الذين هم يراءون . ويمنعون الماعون ... ... | ٧ | م الماعون | ١٠٧ |
| **مُنِعَ** | : فلما رجعوا إلى أبيهم قالوا يا أبانا منع منا الكيل | ٦٣ | ك يوسف | ١٢ |
| **مَانِعَتُهُمْ** | : وظنوا أنهم مانعتهم حصونهم من الله ... ... | ٢ | م الحشر | ٥٩ |
| **مَنُوعًا** | : وإذا مسه الخير منوعا ... ... ... ... ... | ٢١ | ك المعارج | ٧٠ |
| **مَنَّاعٍ** | : ألقيا في جهنم كل كفار عنيد . مناع للخير معتد مريب | ٢٥ | ك ق | ٥٠ |
| (٢) | هماز مشاء بنميم . مناع للخير معتد أثيم ... ... ... | ١٢ | ك القلم | ٦٨ |
| **مَمْنُوعَةٍ** | : وفاكهة كثيرة . لا مقطوعة ولا ممنوعة ... ... | ٣٣ | ك الواقعة | ٥٦ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **مَنَّ** | : لقد من الله على المؤمنين إذ بعث فيهم رسولا من أنفسهم | ١٦٤ | م آل عمران | ٣ |
| (٦) | كذلك كنتم من قبل فمن الله عليكم فتبينوا... ... ... | ٩٤ | م النساء | ٤ |
| | أهؤلاء من الله عليهم من بيننا ... ... ... ... | ٥٣ | ك الأنعام | ٦ |
| | قال أنا يوسف وهذا أخي قد من الله علينا ... ... | ٩٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | لولا أن من الله علينا لخسف بنا ... ... ... ... | ٨٢ | ك القصص | ٢٨ |
| | فمن الله علينا ووقانا عذاب السموم ... ... ... ... | ٢٧ | ك الطور | ٥٢ |
| **مَنَنَّا** | : ولقد منا عليك مرة أخرى... ... ... ... ... | ٣٧ | ك طه | ٢٠ |
| (٢) | ولقد منا على موسى وهرون ... ... ... ... ... | ١١٤ | ك الصافات | ٣٧ |

| القنطة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَمْنُنْ | : ولا تمنن تستكثر ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك المدثر | ٧٤ |
| تَمُنُّهَا | : وتلك نعمة تمنها علىّ أن عبدت بنى إسرائيل... ... | ٢٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| تَمُنُّوا | : يمنون عليك أن أسلموا قل لا تمنوا علىّ إسلامكم | ١٧ | م الحجرات | ٤٩ |
| نَمُنَّ | : ونريد أن نمن على الذين استضعفوا فى الأرض ... | ٥ | ك القصص | ٢٨ |
| يَمُنُّ | : ولكن الله يمن على من يشاء من عباده ... ... ... | ١١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| (٢) | بل الله يمن عليكم أن هداكم للإيمان إن كنتم صادقين | ١٧ | م الحجرات | ٤٩ |
| يَمُنُّونَ | : يمنون عليك أن أسلموا قل لا تمنوا علىّ إسلامكم | ١٧ | م « | ٤٩ |
| فَامْنُنْ | : هذا عطاؤنا فامنن أو أمسك بغير حساب ... ... | ٣٩ | ك ص | ٣٨ |
| الْمَنَّ | : وظللنا عليكم الغمام وأنزلنا عليكم المن والسلوى ... ... | ٥٧ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | يأيها الذين آمنوا لا تبطلوا صدقاتكم بالمن والأذى | ٢٦٤م | « | ٢ |
| | وظللنا عليهم الغمام وأنزلنا عليهم المن والسلوى ... ... | ١٦٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | وواعدناكم جانب الطور الأيمن ونزلنا عليكم المن | | | |
| | والسلوى ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨٠ | ك طه | ٢٠ |
| مَنًّا | : الذين ينفقون أموالهم فى سبيل الله ثم لا يتبعون ما أنفقوا | | | |
| (٢) | منا ولا أذى لهم أجرهم عند ربهم ... ... ... | ٢٦٢م | البقرة | ٢ |
| | حتى إذا أثخنتموهم فشدوا الوثاق فإما منا بعد وإما فداء | ٤ | م محمد | ٤٧ |
| مَمْنُونٍ | : إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم أجر غير ممنون | ٨ | ك فصلت | ٤١ |
| (٤) | وإن لك لأجرا غير ممنون ... ... ... ... ... | ٣ | ك القلم | ٦٨ |
| | إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم أجر غير ممنون | ٢٥ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| | إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات فلهم أجر غير ممنون | ٦ | ك التين | ٩٥ |
| الْمَنُونِ | : أم يقولون شاعر نتربص به ريب المنون ... ... | ٣٠ | ك الطور | ٥٢ |

✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| وَلَآمُرَنَّهُمْ | : ولأضلنهم ولأمنينهم ولآمرنهم فليبتكن آذان | | | |
| | الأنعام ... ... ... ... ... ... ... ... | ١١٩م | النساء | ٤ |
| يُمَنِّيهِمْ | : يعدهم ويمنيهم وما يعدهم الشيطان إلا غرورا ... | ١٢٠م | « | ٤ |
| تُمْنُونَ | : أفرأيتم ما تمنون . أأنتم تخلقونه أم نحن الخالقون | ٥٨ | ك الواقعة | ٥٦ |
| تُمْنَى | : وأنه خلق الزوجين الذكر والأنثى . من نطفة إذا تمنى | ٤٦ | ك النجم | ٥٣ |
| يُمْنَى | : ألم يك نطفة من منىّ يمنى ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك القيامة | ٧٥ |
| تَمَنَّى | : وما أرسلنا من قبلك من رسول ولا نبى إلا إذا تمنى ألقى | | | |
| (٢) | الشيطان فى أمنيته ... ... ... ... ... ... | ٥٢ | م الحج | ٢٢ |
| | أم للإنسان ما تمنى . فلله الآخرة والأولى ... ... ... | ٢٤ | ك النجم | ٥٣ |
| تَمَنَّوْا | : وأصبح الذين تمنوا مكانه بالأمس يقولون ويكأن الله | | | |
| | يبسط الرزق لمن يشاء من عباده ويقدر ... ... | ٨٢ | ك القصص | ٢٨ |
| تَمَنَّوْنَ | : ولقد كنتم تمنون الموت من قبل أن تلقوه ... ... | ١٤٣م | آل عمران | ٣ |
| تَتَمَنَّوْا | : ولا تتمنوا ما فضل الله به بعضكم على بعض ... ... | ٣٢ | م النساء | ٤ |
| يَتَمَنَّوْنَهُ | : ولا يتمنونه أبدا بما قدمت أيديهم والله عليم بالظالمين | ٧ | م الجمعة | ٦٢ |

| القنطة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَتَمَنَّوْهُ | : ولن يتمنوه أبدا بما قدمت أيديهم والله عليم بالظالمين | ٩٥ | م البقرة | ٢ |
| فَتَمَنَّوُا | : قل إن كانت لكم الدار الآخرة عند الله خالصة من | | | |
| (٢) | دون الناس فتمنوا الموت إن كنتم صادقين ... | ٩٤ | م « | ٢ |
| | إن زعمتم أنكم أولياء لله من دون الناس فتمنوا الموت | ٦ | م الجمعة | ٦٢ |
| أُمْنِيَّتِهِ | : إلا إذا تمنى ألقى الشيطان فى أمنيته ... ... ... | ٥٢ | م الحج | ٢٢ |
| أَمَانِيُّ | : ومنهم أميون لا يعلمون الكتاب إلا أمانى ... ... | ٧٨ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | ليس بأمانيكم ولا أمانى أهل الكتاب... ... ... ... | ١٢٣م | النساء | ٤ |
| | ولكنكم فتنتم أنفسكم وتربصتم وارتبتم وغرتكم الأمانىّ | ١٤ | م الحديد | ٥٧ |
| أَمَانِيُّكُمْ | : ليس بأمانيكم ولا أمانى أهل الكتاب ... ... | ١٢٣م | النساء | ٤ |
| أَمَانِيُّهُمْ | : وقالوا لن يدخل الجنة إلا من كان هودا | | | |
| | أو نصارى تلك أمانيهم ... ... ... ... ... ... | ١١١م | البقرة | ٢ |
| مَنِيٌّ | : ألم يك نطفة من منى يمنى ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك القيامة | ٧٥ |
| مَنَاةَ | : أفرأيتم اللات والعزى . ومناة الثالثة الأخرى... ... | ٢٠ | ك النجم | ٥٣ |

✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| يَمْهَدُونَ | : من كفر فعليه كفره ومن عمل صالحا فلأنفسهم | | | |
| | يمهدون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك الروم | ٣٠ |
| مَهَّدْتُ | : ومهدت له تمهيدا ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك المدثر | ٧٤ |
| الْمَاهِدُونَ | : والأرض فرشناها فنعم الماهدون ... ... | ٤٨ | ك الذاريات | ٥١ |
| تَمْهِيدًا | : ومهدت له تمهيدا ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك المدثر | ٧٤ |
| الْمَهْدِ | : ويكلم الناس فى المهد وكهلا ومن الصالحين... ... | ٤٦ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | إذ أيدتك بروح القدس تكلم الناس فى المهد وكهلا | ١١٠م | المائدة | ٥ |
| | فأشارت إليه قالوا كيف نكلم من كان فى المهد صبيا | ٢٩ | ك مريم | ١٩ |
| مَهْدًا | : الذى جعل لكم الأرض مهدا وسلك لكم فيها سبلا | ٥٣ | ك طه | ٢٠ |
| (٢) | الذى جعل لكم الأرض مهدا وجعل لكم فيها سبلا | ١٠ | ك الزخرف | ٤٣ |
| الْمِهَادُ | : حسبه جهنم ولبئس المهاد ... ... ... ... | ٢٠٦م | البقرة | ٢ |
| (٦) | قل للذين كفروا ستغلبون وتحشرون إلى جهنم وبئس المهاد | ١٢ | م آل عمران | ٣ |
| | متاع قليل ثم مأواهم جهنم وبئس المهاد ... ... ... | ١٩٧م | « | ٣ |
| | لهم من جهنم مهاد ومن فوقهم غواش ... ... ... | ٤١ | ك الأعراف | ٧ |
| | أولئك لهم سوء الحساب ومأواهم جهنم وبئس المهاد | ١٨ | م الرعد | ١٣ |
| | هذا وإن للطاغين لشر مآب . جهنم يصلونها فبئس المهاد | ٥٦ | ك ص | ٣٨ |
| مِهَادًا | : ألم نجعل الأرض مهادا ... ... ... ... ... | ٦ | ك النبأ | ٧٨ |

✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| فَمَهِّلِ | : فمهل الكافرين أمهلهم رويدا... ... ... ... ... | ١٧ | ك الطارق | ٨٦ |
| مَهِّلْهُمْ | : وذرنى والمكذبين أولى النعمة ومهلهم قليلا ... ... | ١١ | م المزمل | ٧٣ |
| أَمْهِلْهُمْ | : فمهل الكافرين أمهلهم رويدا ... ... ... ... | ١٧ | ك الطارق | ٨٦ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| كَالْمُهْلِ | : وإن يستغيثوا يغاثوا بماء كالمهل يشوى الوجوه | الكهف | ٢٩ ك ١٨ |
| (٣) | إن شجرة الزقوم . طعام الأثيم . كالمهل يغلى فى البطون | الدخان | ٤٥ ك ٤٤ |
| | يوم تكون السماء كالمهل ... ... ... ... ... ... | المعارج | ٨ ك ٧٠ |
| | ✦✦✦ | | |
| مَهْمَا | : وقالوا مهما تأتنا به من آية لتسحرنا بها فما نحن لك بمؤمنين | الأعراف | ١٣٢ ك ٧ |
| | ✦✦✦ | | |
| مَهِينٍ | : ثم جعل نسله من سلالة من ماء مهين ... ... ... | السجدة | ٨ ك ٣٢ |
| (٤) | أم أنا خير من هذا الذى هو مهين ولا يكاد يبين | الزخرف | ٥٢ ك ٤٣ |
| | ولا تطع كل حلاف مهين ... ... ... ... ... ... | القلم | ١٠ ك ٦٨ |
| | ألم نخلقكم من ماء مهين ... ... ... ... ... ... | المرسلات | ٢٠ ك ٧٧ |
| | ✦✦✦ | | |
| مَاتَ | : أفإن مات أو قتل انقلبتم على أعقابكم ... ... ... | آل عمران | ١٤٤ م ٣ |
| (٢) | ولا تصل على أحد منهم مات أبدا ولا تقم على قبره | التوبة | ٨٤ م ٩ |
| مَاتُوا | : إن الذين كفروا وماتوا وهم كفار أولئك عليهم لعنة الله | البقرة | ١٦١ م ٢ |
| (٧) | إن الذين كفروا وماتوا وهم كفار فلن يقبل من | | |
| | أحدهم ملء الأرض ذهبا ولو افتدى به ... ... | آل عمران | ٩١ م ٣ |
| | لو كانوا عندنا ما ماتوا وما قتلوا... ... ... ... | » | ١٥٦ م ٣ |
| | إنهم كفروا بالله ورسوله وماتوا وهم فاسقون ... | التوبة | ٨٤ م ٩ |
| | فزادتهم رجسا إلى رجسهم وماتوا وهم كافرون ... | » | ١٢٥ م ٩ |
| | والذين هاجروا فى سبيل الله ثم قتلوا أو ماتوا | | |
| | ليرزقنهم الله رزقا حسنا ... ... ... ... ... | الحج | ٥٨ م ٢٢ |
| | إن الذين كفروا وصدوا عن سبيل الله ثم ماتوا | | |
| | وهم كفار فلن يغفر الله لهم... ... ... ... ... | محمد | ٣٤ م ٤٧ |
| مِتُّ | : قالت يا ليتنى مت قبل هذا وكنت نسيا منسيا ... | مريم | ٢٣ ك ١٩ |
| (٣) | ويقول الإنسان أئذا ما مت لسوف أخرج حيا | » | ٦٦ ك ١٩ |
| | وما جعلنا لبشر من قبلك الخلد أفإن مت فهم الخالدون | الأنبياء | ٣٤ ك ٢١ |
| مُتُّمْ | : ولئن قتلتم فى سبيل الله أو متم لمغفرة من الله ورحمة | | |
| (٢) | خير مما يجمعون ... ... ... ... ... ... | آل عمران | ١٥٧ م ٣ |
| | ولئن متم أو قتلتم لإلى الله تحشرون ... ... ... | » | ١٥٨ م ٣ |
| مِتُّمْ | : أيعدكم أنكم إذا متم وكنتم ترابا وعظاما أنكم مخرجون | المؤمنون | ٣٥ ك ٢٣ |
| مِتْنَا | : قالوا أئذا متنا وكنا ترابا وعظاما أئنا لمبعوثون ... | » | ٨٢ ك ٢٣ |
| (٥) | أئذا متنا وكنا ترابا وعظاما أئنا لمبعوثون ... ... | الصافات | ١٦ ك ٣٧ |
| | أئذا متنا وكنا ترابا وعظاما أئنا لمدينون... ... ... | » | ٥٣ ك ٣٧ |
| | أئذا متنا وكنا ترابا ذلك رجع بعيد ... ... ... ... | قٓ | ٣ ك ٥٠ |
| | وكانوا يقولون أئذا متنا وكنا ترابا وعظاما أئنا لمبعوثون | الواقعة | ٤٧ ك ٥٦ |
| أَمُوتُ | : والسلام على يوم ولدت ويوم أموت ويوم أبعث حيا | مريم | ٣٣ ك ١٩ |
| تَمُتْ | : الله يتوفى الأنفس حين موتها والتى لم تمت فى منامها | الزمر | ٤٢ ك ٣٩ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| تَمُوتُ | : وما كان لنفس أن تموت إلا بإذن الله كتابا مؤجلا | آل عمران | ١٤٥ م ٣ |
| (٢) | وما تدرى نفس بأى أرض تموت ... ... ... ... | لقمان | ٣٤ ك ٣١ |
| تَمُوتُنَّ | : فلا تموتن إلا وأنتم مسلمون ... ... ... ... | البقرة | ١٣٢ م ٢ |
| (٢) | اتقوا الله حق تقاته ولا تموتن إلا وأنتم مسلمون ... | آل عمران | ١٠٢ م ٣ |
| تَمُوتُونَ | : قال فيها تحيون وفيها تموتون ومنها تخرجون ... | الأعراف | ٢٥ ك ٧ |
| تَمُوتُ | : إن هى إلا حياتنا الدنيا نموت ونحيا وما نحن بمبعوثين | المؤمنون | ٣٧ ك ٢٣ |
| (٢) | وقالوا ما هى إلا حياتنا الدنيا نموت ونحيا ... ... | الجاثية | ٢٤ ك ٤٥ |
| قِيمَتْ | : ومن يرتدد منكم عن دينه فيمت وهو كافر فأولئك | | |
| | حبطت أعمالهم... ... ... ... ... ... ... ... | البقرة | ٢١٧ م ٢ |
| يَمُوتُ | : وأقسموا بالله جهد أيمانهم لا يبعث الله من يموت | النحل | ٣٨ ك ١٦ |
| (٥) | وسلام عليه يوم ولد ويوم يموت ويوم يبعث حيا | مريم | ١٥ ك ١٩ |
| | إنه من يأت ربه مجرما فإن له جهنم لا يموت فيها ولا يحيى | طه | ٧٤ ك ٢٠ |
| | وتوكل على الحى الذى لا يموت وسبح بحمده ... ... | الفرقان | ٥٨ ك ٢٥ |
| | الذى يصلى النار الكبرى . ثم لا يموت فيها ولا يحيى | الأعلى | ١٣ ك ٨٧ |
| يَمُوتُوا | : لا يقضى عليهم فيموتوا ولا يخفف عنهم من عذابها | فاطر | ٣٦ ك ٣٥ |
| يَمُوتُونَ | : ولا الذين يموتون وهم كفار أولئك أعتدنا لهم | | |
| | عذابا أليما ... ... ... ... ... ... ... ... | النساء | ١٨ م ٤ |
| أَمَاتَ | : وأنه هو أضحك وأبكى . وأنه هو أمات وأحيا | النجم | ٤٤ ك ٥٣ |
| أَمَاتَهُ | : فأماته الله مائة عام ثم بعثه ... ... ... ... ... | البقرة | ٢٥٩ م ٢ |
| (٢) | ثم أماته فأقبره . ثم إذا شاء أنشره ... ... ... ... | عبس | ٢١ ك ٨٠ |
| أَمَتَّنَا | : قالوا ربنا أمتنا اثنتين وأحييتنا اثنتين ... ... ... | غافر | ١١ ك ٤٠ |
| أُمِيتُ | : ربى الذى يحيى ويميت قال أنا أحيى وأميت | البقرة | ٢٥٨ م ٢ |
| نُمِيتُ | : وإنا لنحن نحيى ونميت ونحن الوارثون... ... ... | الحجر | ٢٣ ك ١٥ |
| (٢) | إنا نحن نحيى ونميت وإلينا المصير... ... ... ... | قٓ | ٤٣ ك ٥٠ |
| يُمِيتُ | : إذ قال إبراهيم ربى الذى يحيى ويميت ... ... | البقرة | ٢٥٨ م ٢ |
| (٩) | والله يحيى ويميت والله بما تعملون بصير ... ... ... | آل عمران | ١٥٦ م ٣ |
| | الذى له ملك السموات والأرض لا إله إلا هو يحيى ويميت | الأعراف | ١٥٨ ك ٧ |
| | إن الله له ملك السموات والأرض يحيى ويميت ... | التوبة | ١١٦ م ٩ |
| | هو يحيى ويميت وإليه ترجعون ... ... ... ... ... | يونس | ٥٦ ك ١٠ |
| | وهو الذى يحيى ويميت وله اختلاف الليل والنهار | المؤمنون | ٨٠ ك ٢٣ |
| | هو الذى يحيى ويميت فإذا قضى أمرا فإنما يقول | | |
| | له كن فيكون ... ... ... ... ... ... ... ... | غافر | ٦٨ ك ٤٠ |
| | لا إله إلا هو يحيى ويميت ربكم ورب آبائكم الأولين | الدخان | ٨ ك ٤٤ |
| | له ملك السموات والأرض يحيى ويميت ... ... ... | الحديد | ٢ م ٥٧ |
| يُمِيتُكُمْ | : كيف تكفرون بالله وكنتم أمواتا فأحياكم ثم يميتكم | | |
| (٤) | ثم يحييكم ... ... ... ... ... ... ... ... | البقرة | ٢٨ م ٢ |
| | وهو الذى أحياكم ثم يميتكم ثم يحييكم... ... ... | الحج | ٦٦ م ٢٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **المَوْتَى** | : ولو أننا نزلنا إليهم الملائكة وكلمهم الموتى وحشرنا عليهم كل شيء قبلا ما كانوا ليؤمنوا إلا أن يشاء الله | ١١١ | ك الأنعام | ٦ |
| | كذلك نخرج الموتى لعلكم تذكرون ... ... ... ... | ٥٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولو أن قرآنا سيرت به الجبال أو قطعت به الأرض أو كلم به الموتى ... ... ... ... ... ... | ٣١ | م الرعد | ١٣ |
| | ذلك بأن الله هو الحق وأنه يحيي الموتى ... ... ... | ٦ | م الحج | ٢٢ |
| | إنك لا تسمع الموتى ولا تسمع الصم الدعاء ... ... | ٨٠ | ك النمل | ٢٧ |
| | إن ذلك لمحيي الموتى وهو على كل شيء قدير ... ... | ٥٠ | ك الروم | ٣٠ |
| | فإنك لا تسمع الموتى ولا تسمع الصم الدعاء ... ... | ٥٢ | ك « | ٣٠ |
| | إنا نحن نحيي الموتى ونكتب ما قدموا وآثارهم ... ... | ١٢ | ك يس | ٣٦ |
| | إن الذي أحياها لمحيي الموتى إنه على كل شيء قدير | ٣٩ | ك فصلت | ٤١ |
| | فالله هو الولي وهو يحيي الموتى وهو على كل شيء قدير | ٩ | ك الشورى | ٤٢ |
| | أولم يروا أن الله الذي خلق السموات والأرض ولم يعي بخلقهن بقادر على أن يحيي الموتى ... ... | ٣٣ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | أليس ذلك بقادر على أن يحيي الموتى ... ... ... | ٤٠ | ك القيامة | ١٥ |
| **مَيْتًا** | : أومن كان ميتا فأحييناه وجعلنا له نورا يمشي به في الناس | ١٢٢ | ك الأنعام | ٦ |
| (٥) | لنحيي به بلدة ميتا ونسقيه مما خلقنا أنعاما وأناسي كثيرا | ٤٩ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | والذي نزل من السماء ماء بقدر فأنشرنا به بلدة ميتا | ١١ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | أيحب أحدكم أن يأكل لحم أخيه ميتا فكرهتموه | ١٢ | م الحجرات | ٤٩ |
| | وأحيينا به بلدة ميتا ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك ق | ٥٠ |
| **المَيْتَةُ** | : إنما حرم عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير ... ... | ١٧٣ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | حرمت عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما أهل لغير الله به | ٣ | م المائدة | ٥ |
| | وإن يكن ميتة فهم فيه شركاء ... ... ... ... ... | ١٣٩ | ك الأنعام | ٦ |
| | إلا أن يكون ميتة أو دما مسفوحا أو لحم خنزير ... | ١٤٥ | ك « | ٦ |
| | إنما حرم عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما أهل لغير الله به | ١١٥ | ك النحل | ١٦ |
| | وآية لهم الأرض الميتة أحييناها وأخرجنا منها حبا | ٣٣ | ك يس | ٣٦ |
| **المَيِّتُ** | : وتخرج الحي من الميت ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | م آل عمران | ٣ |
| (١٢) | وتخرج الميت من الحي ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | م « | ٣ |
| | إن الله فالق الحب والنوى يخرج الحي من الميت ... | ٩٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | ويخرج الميت من الحي ذلكم الله ... ... ... ... | ٩٥ | ك « | ٦ |
| | حتى إذا أقلت سحابا ثقالا سقناه لبلد ميت ... ... | ٥٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | أمن يملك السمع والأبصار ومن يخرج الحي من الميت | ٣١ | ك يونس | ١٠ |
| | ويخرج الميت من الحي ومن يدبر الأمر فسيقولون الله | ٣١ | ك « | ١٠ |
| | ويأتيه الموت من كل مكان وما هو بميت ... ... ... | ١٧ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | يخرج الحي من الميت ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك الروم | ٣٠ |
| | ويخرج الميت من الحي ويحيي الأرض بعد موتها ... | ١٩ | ك « | ٣٠ |
| | فسقناه إلى بلد ميت فأحيينا به الأرض بعد موتها ... | ٩ | ك فاطر | ٣٥ |
| | إنك ميت وإنهم ميتون ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك الزمر | ٣٩ |
| **مَيِّتُونَ** | : ثم إنكم بعد ذلك لميتون ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٢) | إنك ميت وإنهم ميتون ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك الزمر | ٣٩ |
| **مَيِّتِينَ** | : أفما نحن بميتين . إلا موتتنا الأولى وما نحن بمعذبين | ٥٨ | ك الصافات | ٣٧ |
| **المَمَاتِ** | : إذا لأذقناك ضعف الحياة وضعف الممات ... | ٧٥ | م الإسراء | ١٧ |
| **مَمَاتُهُمْ** | : أن نجعلهم كالذين آمنوا وعملوا الصالحات سواء محياهم ومماتهم ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك الجاثية | ٤٥ |
| **مَمَاتِي** | : قل إن صلاتي ونسكي ومحياي ومماتي لله رب العالمين | ١٦٢ | ك الأنعام | ٦ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **يَمُوجُ** | : وتركنا بعضهم يومئذ يموج في بعض ... ... ... | ٩٩ | م الكهف | ١٨ |
| **المَوْجُ** | : جاءتها ريح عاصف وجاءهم الموج من كل مكان | ٢٢ | ك يونس | ١٠ |
| (٦) | وهي تجري بهم في موج كالجبال ... ... ... ... | ٤٢ | ك هود | ١١ |
| | وحال بينهما الموج فكان من المغرقين ... ... ... | ٤٣ | ك « | ١١ |
| | أو كظلمات في بحر لجي يغشاه موج ... ... ... | ٤٠ | م النور | ٢٤ |
| | من فوقه موج من فوقه سحاب ... ... ... ... ... | ٤٠ | م « | ٢٤ |
| | وإذا غشيهم موج كالظلل دعوا الله مخلصين له الدين | ٣٢ | ك لقمان | ٣١ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **تَمُورُ** | : يوم تمور السماء مورا ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك الطور | ٥٢ |
| (٢) | أأمنتم من في السماء أن يخسف بكم الأرض فإذا هي تمور | ١٦ | ك الملك | ٦٧ |
| **مَوْرًا** | : يوم تمور السماء مورا ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك الطور | ٥٢ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **مُوسَى** | : وإذ واعدنا موسى أربعين ليلة ... ... ... ... | ٥١ | م البقرة | ٢ |
| (١٣٦) | وإذ آتينا موسى الكتاب والفرقان لعلكم تهتدون | ٥٣ | م « | ٢ |
| | وإذ قال موسى لقومه يا قوم إنكم ظلمتم أنفسكم | ٥٤ | م « | ٢ |
| | وإذ قلتم يا موسى لن نؤمن لك حتى نرى الله جهرة | ٥٥ | م « | ٢ |
| | وإذ استسقى موسى لقومه فقلنا اضرب بعصاك الحجر | ٦٠ | م « | ٢ |
| | وإذ قلتم يا موسى لن نصبر على طعام واحد ... ... | ٦١ | م « | ٢ |
| | وإذ قال موسى لقومه إن الله يأمركم أن تذبحوا بقرة | ٦٧ | م « | ٢ |
| | ولقد آتينا موسى الكتاب وقفينا من بعده بالرسل | ٨٧ | م « | ٢ |
| | ولقد جاءكم موسى بالبينات ثم اتخذتم العجل من بعده | ٩٢ | م « | ٢ |
| | أم تريدون أن تسئلوا رسولكم كما سئل موسى من قبل | ١٠٨ | م « | ٢ |
| | وما أوتي موسى وعيسى وما أوتي النبيون من ربهم | ١٣٦ | م « | ٢ |
| | ألم تر إلى الملإ من بني إسرائيل من بعد موسى ... ... | ٢٤٦ | م « | ٢ |
| | فيه سكينة من ربكم وبقية مما ترك آل موسى ... | ٢٤٨ | م « | ٢ |
| | وما أوتي موسى وعيسى والنبيون من ربهم ... ... | ٨٤ | م آل عمران | ٣ |
| | فقد سألوا موسى أكبر من ذلك فقالوا أرنا الله جهرة | ١٥٣ | م النساء | ٤ |
| | فعفونا عن ذلك وآتينا موسى سلطانا مبينا ... ... | ١٥٣ | م « | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مُوسَى: | وكلم الله موسى تكليما ... ... ... ... ... ... | ١٦٤ | م النساء | ٤ |
| | وإذ قال موسى لقومه ياقوم اذكروا نعمة الله عليكم | ٢٠ | م المائدة | ٥ |
| | قالوا يا موسى إن فيها قوما جبارين ... ... ... ... | ٢٢ | م « | ٥ |
| | قالوا ياموسى إنا لن ندخلها أبدا ماداموا فيها... ... | ٢٤ | م « | ٥ |
| | ومن ذريته داود وسليمان وأيوب ويوسف وموسى وهرون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | قل من أنزل الكتاب الذى جاء به موسى نورا وهدى للناس | ٩١ | م « | ٦ |
| | ثم آتينا موسى الكتاب تماما على الذى أحسن ... ... | ١٥٤ | م « | ٦ |
| | ثم بعثنا من بعدهم موسى بآياتنا إلى فرعون وملائه ... | ١٠٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | وقال موسى يافرعون إنى رسول من رب العالمين ... | ١٠٤ | ك « | ٧ |
| | قالوا ياموسى إما أن تلقى وإما أن نكون نحن الملقين | ١١٥ | ك « | ٧ |
| | وأوحينا إلى موسى أن ألق عصاك ... ... ... ... | ١١٧ | ك « | ٧ |
| | قالوا آمنا برب العالمين . رب موسى وهرون ... ... | ١٢٢ | ك « | ٧ |
| | أتذر موسى وقومه ليفسدوا فى الأرض ... ... ... | ١٢٧ | ك « | ٧ |
| | قال موسى لقومه استعينوا بالله واصبروا ... ... ... | ١٢٨ | ك « | ٧ |
| | وإن تصبهم سيئة يطيروا بموسى ومن معه ... ... | ١٣١ | ك « | ٧ |
| | قالوا ياموسى ادع لنا ربك بما عهد عندك ... ... | ١٣٤ | ك « | ٧ |
| | قالوا يا موسى اجعل لنا إلها كما لهم آلهة ... ... ... | ١٣٨ | ك « | ٧ |
| | وواعدنا موسى ثلاثين ليلة وأتممناها بعشر ... ... | ١٤٢ | ك « | ٧ |
| | وقال موسى لأخيه هرون اخلفنى فى قومى وأصلح... | ١٤٢ | ك « | ٧ |
| | ولما جاء موسى لميقاتنا وكلمه ربه قال رب أرنى أنظر إليك | ١٤٣ | ك « | ٧ |
| | فلما تجلى ربه للجبل جعله دكا وخر موسى صعقا... ... | ١٤٣ | ك « | ٧ |
| | قال ياموسى إنى اصطفيتك على الناس برسالاتى ... | ١٤٤ | ك « | ٧ |
| | واتخذ قوم موسى من بعده من حليهم عجلا جسدا له خوار | ١٤٨ | ك « | ٧ |
| | ولما رجع موسى إلى قومه غضبان أسفا قال بئسما خلفتمونى من بعدى ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٠ | ك « | ٧ |
| | ولما سكت عن موسى الغضب أخذ الألواح ... ... | ١٥٤ | ك « | ٧ |
| | واختار موسى قومه سبعين رجلا لميقاتنا ... ... ... | ١٥٥ | ك « | ٧ |
| | ومن قوم موسى أمة يهدون بالحق وبه يعدلون... ... | ١٥٩ | ك « | ٧ |
| | وأوحينا إلى موسى إذ استسقاه قومه أن اضرب بعصاك الحجر ... ... ... ... ... ... ... | ١٦٠ | ك « | ٧ |
| | ثم بعثنا من بعدهم موسى وهرون إلى فرعون وملائه | ٧٥ | ك يونس | ١٠ |
| | قال موسى أتقولون للحق لما جاءكم أسحر هذا... ... | ٧٧ | ك « | ١٠ |
| | فلما جاء السحرة قال لهم موسى ألقوا ما أنتم ملقون | ٨٠ | ك « | ١٠ |
| | فلما ألقوا قال موسى ما جئتم به السحر إن الله سيبطله | ٨١ | ك « | ١٠ |
| | فما آمن لموسى إلا ذرية من قومه على خوف من فرعون | ٨٣ | ك « | ١٠ |
| | وقال موسى يا قوم إن كنتم آمنتم بالله فعليه توكلوا | ٨٤ | ك « | ١٠ |
| | وأوحينا إلى موسى وأخيه أن تبوآ لقومكما بمصر بيوتا | ٨٧ | ك « | ١٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مُوسَى: | وقال موسى ربنا إنك آتيت فرعون وملأه زينة وأموالا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨٨ | ك يونس | ١٠ |
| | ويتلوه شاهد منه ومن قبله كتاب موسى إماما ورحمة | ١٧ | م هود | ١١ |
| | ولقد أرسلنا موسى بآياتنا وسلطان مبين ... ... ... | ٩٦ | ك « | ١١ |
| | ولقد آتينا موسى الكتاب فاختلف فيه ... ... ... | ١١٠ | ك « | ١١ |
| | ولقد أرسلنا موسى بآياتنا أن أخرج قومك من الظلمات إلى النور وذكرهم بأيام الله... ... ... ... ... | ٥ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وإذ قال موسى لقومه اذكروا نعمة الله عليكم... ... | ٦ | ك « | ١٤ |
| | وقال موسى إن تكفروا أنتم ومن فى الأرض جميعا فإن الله لغنى حميد ... ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك « | ١٤ |
| | وآتينا موسى الكتاب وجعلناه هدى لبنى إسرائيل ... | ٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ولقد آتينا موسى تسع آيات بينات ... ... ... ... | ١٠١ | ك « | ١٧ |
| | فقال له فرعون إنى لأظنك يا موسى مسحورا ... ... | ١٠١ | ك « | ١٧ |
| | وإذ قال موسى لفتاه لا أبرح حتى أبلغ مجمع البحرين | ٦٠ | ك الكهف | ١٨ |
| | قال له موسى هل أتبعك على أن تعلمن مما علمت رشدا | ٦٦ | ك « | ١٨ |
| | واذكر فى الكتاب موسى إنه كان مخلصا وكان رسولا نبيا | ٥١ | ك مريم | ١٩ |
| | وهل أتاك حديث موسى . إذ رأى نارا... ... ... | ٩ | ك طه | ٢٠ |
| | فلما أتاها نودى ياموسى . إنى أنا ربك فاخلع نعليك | ١١ | ك « | ٢٠ |
| | وما تلك بيمينك يا موسى ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك « | ٢٠ |
| | قال ألقها يا موسى . فألقاها فإذا هى حية تسعى ... | ١٩ | ك « | ٢٠ |
| | قال قد أوتيت سؤلك يا موسى ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك « | ٢٠ |
| | فلبثت سنين فى أهل مدين ثم جئت على قدر يا موسى | ٤٠ | ك « | ٢٠ |
| | قال فمن ربكما يا موسى ... ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك « | ٢٠ |
| | قال أجئتنا لتخرجنا من أرضنا بسحرك ياموسى ... | ٥٧ | ك « | ٢٠ |
| | قال لهم موسى ويلكم لا تفتروا على الله كذبا ... ... | ٦١ | ك « | ٢٠ |
| | قالوا ياموسى إما أن تلقى وإما أن نكون أول من ألقى | ٦٥ | ك « | ٢٠ |
| | فأوجس فى نفسه خيفة موسى ... ... ... ... ... | ٦٧ | ك « | ٢٠ |
| | فألقى السحرة سجدا قالوا آمنا برب هرون وموسى ... | ٧٠ | ك « | ٢٠ |
| | ولقد أوحينا إلى موسى أن أسر بعبادى ... ... ... | ٧٧ | ك « | ٢٠ |
| | وما أعجلك عن قومك يا موسى ... ... ... ... ... | ٨٣ | ك « | ٢٠ |
| | فرجع موسى إلى قومه غضبان أسفا ... ... ... ... | ٨٦ | ك « | ٢٠ |
| | فقالوا هذا إلهكم وإله موسى فنسى ... ... ... ... | ٨٨ | ك « | ٢٠ |
| | قالوا لن نبرح عليه عاكفين حتى يرجع إلينا موسى ... | ٩١ | ك « | ٢٠ |
| | ولقد آتينا موسى وهرون الفرقان وضياء وذكرا للمتقين | ٤٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وأصحاب مدين وكذب موسى فأمليت للكافرين ثم أخذتهم | ٤٤ | م الحج | ٢٢ |
| | ثم أرسلنا موسى وأخاه هرون بآياتنا وسلطان مبين | ٤٥ | ن المؤمنون | ٢٣ |
| | ولقد آتينا موسى الكتاب لعلهم يهتدون ... ... ... | ٤٩ | ن « | ٢٣ |
| | ولقد آتينا موسى الكتاب وجعلنا معه أخاه هرون وزيرا | ٣٥ | ك الفرقان | ٢٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مُوسَى: | وإذ نادى ربك موسى أن ائت القوم الظالمين ... | ١٠ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | قال لهم موسى ألقوا ما أنتم ملقون ... ... ... ... | ٤٣ | ك » | ٢٦ |
| | فألقى موسى عصاه فإذا هى تلقف ما يأفكون ... ... | ٤٥ | ك » | ٢٦ |
| | قالوا آمنا برب العالمين . رب موسى وهرون ... ... | ٤٨ | ك » | ٢٦ |
| | وأوحينا إلى موسى أن أسر بعبادى إنكم متبعون ... | ٥٢ | ك » | ٢٦ |
| | فلما تراءا الجمعان قال أصحاب موسى إنا لمدركون ... | ٦١ | ك » | ٢٦ |
| | فأوحينا إلى موسى أن اضرب بعصاك البحر ... ... | ٦٣ | ك » | ٢٦ |
| | وأنجينا موسى ومن معه أجمعين ... ... ... ... ... | ٦٥ | ك » | ٢٦ |
| | إذ قال موسى لأهله إنى آنست نارا ... ... ... ... | ٧ | ك النمل | ٢٧ |
| | يا موسى إنه أنا الله العزيز الحكيم ... ... ... ... | ٩ | ك » | ٢٧ |
| | يا موسى لا تخف إنى لا يخاف لدىّ المرسلون ... ... | ١٠ | ك » | ٢٧ |
| | نتلوا عليك من نبإ موسى وفرعون بالحق لقوم يؤمنون | ٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | وأوحينا إلى أم موسى أن أرضعيه ... ... ... ... | ٧ | ك » | ٢٨ |
| | وأصبح فؤاد أم موسى فارغا... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك » | ٢٨ |
| | فوكزه موسى فقضى عليه ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك » | ٢٨ |
| | قال له موسى إنك لغوىّ مبين ... ... ... ... ... | ١٨ | ك » | ٢٨ |
| | قال يا موسى أتريد أن تقتلنى كما قتلت نفسا بالأمس | ١٩ | ك » | ٢٨ |
| | قال يا موسى إن الملأ يأتمرون بك ليقتلوك ... ... | ٢٠ | ك » | ٢٨ |
| | فلما قضى موسى الأجل وسار بأهله آنس من جانب الطور نارا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك » | ٢٨ |
| | أن يا موسى إنى أنا الله رب العالمين ... ... ... ... | ٣٠ | ك » | ٢٨ |
| | يا موسى أقبل ولا تخف إنك من الآمنين... ... ... | ٣١ | ك » | ٢٨ |
| | فلما جاءهم موسى بآياتنا بينات قالوا ما هذا إلا سحر مفترى | ٣٦ | ك » | ٢٨ |
| | وقال موسى ربى أعلم بمن جاء بالهدى من عنده... ... | ٣٧ | ك » | ٢٨ |
| | فأجعل لى صرحا لعلى أطلع إلى إله موسى... ... ... | ٣٨ | ك » | ٢٨ |
| | ولقد آتينا موسى الكتاب من بعد ما أهلكنا القرون الأولى | ٤٣ | ك » | ٢٨ |
| | وما كنت بجانب الغربى إذ قضينا إلى موسى الأمر | ٤٤ | ك » | ٢٨ |
| | فلما جاءهم الحق من عندنا قالوا لولا أوتى مثل ما أوتى موسى | ٤٨ | ك » | ٢٨ |
| | أو لم يكفروا بما أوتى موسى من قبل ... ... ... | ٤٨ | ك » | ٢٨ |
| | إن قارون كان من قوم موسى فبغى عليهم ... ... | ٧٦ | ك » | ٢٨ |
| | ولقد جاءهم موسى بالبينات فاستكبروا فى الأرض ... | ٣٩ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ولقد آتينا موسى الكتاب فلا تكن فى مرية من لقائه | ٢٣ | ك السجدة | ٣٢ |
| | وإذ أخذنا من النبيين ميثاقهم ومنك ومن نوح وإبراهيم وموسى ... ... ... ... ... ... | ٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تكونوا كالذين آذوا موسى ... | ٦٩ | م » | ٣٣ |
| | ولقد منا على موسى وهرون... ... ... ... ... ... | ١١٤ | ك الصافات | ٣٧ |
| | وتركنا عليهما فى الآخرين . سلام على موسى وهرون | ١٢٠ | ك » | ٣٧ |
| | ولقد أرسلنا موسى بآياتنا وسلطان مبين ... ... ... | ٢٣ | ك غافر | ٤٠ |
| | وقال فرعون ذرونى أقتل موسى وليدع ربه ... | ٢٦ | ك غافر | ٤٠ |
| | وقال موسى إنى عذت بربى وربكم من كل متكبر | ٢٧ | ك » | ٤٠ |
| | أسباب السموات فأطلع إلى إله موسى ... ... ... | ٣٧ | ك » | ٤٠ |
| | ولقد آتينا موسى الهدى وأورثنا بنى إسرائيل الكتاب | ٥٣ | ك » | ٤٠ |
| | ولقد آتينا موسى الكتاب فاختلف فيه ... ... ... | ٤٥ | ك فصلت | ٤١ |
| | وما وصينا به إبراهيم وموسى وعيسى ... ... ... ... | ١٣ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ولقد أرسلنا موسى بآياتنا إلى فرعون وملائه ... ... | ٤٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ومن قبله كتاب موسى إماما ورحمة ... ... ... ... | ١٢ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | قالوا يا قومنا إنا سمعنا كتابا أنزل من بعد موسى ... | ٣٠ | ك » | ٤٦ |
| | وفى موسى إذ أرسلناه إلى فرعون بسلطان مبين... ... | ٣٨ | ك الذاريات | ٥١ |
| | أم لم ينبأ بما فى صحف موسى ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك النجم | ٥٣ |
| | وإذ قال موسى لقومه يا قوم لم تؤذوننى ... ... ... | ٥ | م الصف | ٦١ |
| | هل أتاك حديث موسى . إذ ناداه ربه بالواد المقدس طوى | ١٥ | ك النازعات | ٧٩ |
| | إن هذا لفى الصحف الأولى . صحف إبراهيم وموسى | ١٩ | ك الأعلى | ٨٧ |
| | ✣ | | | |
| المَالُ: | وآتى المال على حبه ذوى القربى واليتامى والمساكين | ١٧٧م | البقرة | ٢ |
| (١١) | ونحن أحق بالملك منه ولم يؤت سعة من المال ... | ٢٤٧م | » | ٢ |
| | ولا تقربوا مال اليتيم إلا بالتى هى أحسن حتى يبلغ أشده | ١٥٢م | الأنعام | ٦ |
| | ولا تقربوا مال اليتيم إلا بالتى هى أحسن حتى يبلغ أشده | ٣٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| | المال والبنون زينة الحياة الدنيا... ... ... ... ... | ٤٦ | ك الكهف | ١٨ |
| | أيحسبون أنما نمدهم به من مال وبنين . نسارع لهم فى الخيرات | ٥٥ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وآتوهم من مال الله الذى آتاكم... ... ... ... ... | ٣٣ | م النور | ٢٤ |
| | يوم لا ينفع مال ولا بنون . إلا من أتى الله بقلب سليم | ٨٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فلما جاء سليمان قال أتمدونن بمال ... ... ... ... | ٣٦ | ك النمل | ٢٧ |
| | عتل بعد ذلك زنيم . أن كان ذا مال وبنين ... ... | ١٤ | ك القلم | ٦٨ |
| | وتحبون المال حبا جما... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك الفجر | ٨٩ |
| مَالًا: | ويا قوم لا أسألكم عليه مالا إن أجرى إلا على الله | ٢٩ | ك هود | ١١ |
| (٧) | فقال لصاحبه وهو يحاوره أنا أكثر منك مالا وأعز نفرا | ٣٤ | ك الكهف | ١٨ |
| | إن ترن أنا أقل منك مالا وولدا . فعسى ربى أن يؤتين خيرا من جنتك ... ... ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك » | ١٨ |
| | أفرأيت الذى كفر بآياتنا وقال لأوتين مالا وولدا ... | ٧٧ | ك مريم | ١٩ |
| | ذرنى ومن خلقت وحيدا . وجعلت له مالا ممدودا... | ١٢ | ك المدثر | ٧٤ |
| | يقول أهلكت مالا لبدا... ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك البلد | ٩٠ |
| | ويل لكل همزة لمزة . الذى جمع مالا وعدده ... ... | ٢ | ك الهمزة | ١٠٤ |
| مَالَهُ: | لا تبطلوا صدقاتكم بالمن والأذى كالذى ينفق ماله رئاء الناس | ٢٦٤م | البقرة | ٢ |
| (٦) | رب إنهم عصونى واتبعوا من لم يزده ماله وولده إلا خسارا | ٢١ | ك نوح | ٧١ |
| | وما يغنى عنه ماله إذا تردى ... ... ... ... ... | ١١ | ك الليل | ٩٢ |
| | وسيجنبها الأتقى . الذى يؤتى ماله يتزكى ... ... ... | ١٨ | ك » | ٩٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مَالَهُ: | يحسب أن ماله أخلده ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك الهمزة | ١٠٤ |
| | ما أغنى عنه ماله وما كسب ... ... ... ... ... ... | ٢ | ك المسد | ١١١ |
| مَالِيَهْ: | ما أغنى عنى ماليه ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك الحاقة | ٦٩ |
| الأَمْوَالِ: | ولنبلونكم بشىء من الخوف والجوع ونقص من الأموال | ١٥٥ م | البقرة | ٢ |
| (١١) | لتأكلوا فريقا من أموال الناس بالإثم وأنتم تعلمون | ١٨٨ م | « | ٢ |
| | إن الذين يأكلون أموال اليتامى ظلما إنما يأكلون | | | |
| | فى بطونهم نارا... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ م | النساء | ٤ |
| | وأخذهم الربا وقد نهوا عنه وأكلهم أموال الناس | | | |
| | بالباطل ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٦١ م | « | ٤ |
| | وأموال اقترفتموها وتجارة تخشون كسادها ... ... | ٢٤ م | التوبة | ٩ |
| | إن كثيرا من الأحبار والرهبان ليأكلون أموال | | | |
| | الناس بالباطل... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٤ م | « | ٩ |
| | وأمددناكم بأموال وبنين وجعلناكم أكثر نفيرا ... | ٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وشاركهم فى الأموال والأولاد وعدهم ... ... ... | ٦٤ | ك « | ١٧ |
| | وما آتيتم من ربا ليربوا فى أموال الناس فلا يربوا عند الله | ٣٩ | ك الروم | ٣٠ |
| | اعلموا أنما الحياة الدنيا لعب ولهو وزينة وتفاخر بينكم | | | |
| | وتكاثر فى الأموال والأولاد ... ... ... ... | ٢٠ م | الحديد | ٥٧ |
| | ويمددكم بأموال وبنين ويجعل لكم جنات ... ... | ١٢ | ك نوح | ٧١ |
| أَمْوَالًا: | كانوا أشد منكم قوة وأكثر أموالا وأولادا ... | ٦٩ م | التوبة | ٩ |
| (٣) | إنك آتيت فرعون وملأه زينة وأموالا فى الحياة الدنيا | ٨٨ | ك يونس | ١٠ |
| | وقالوا نحن أكثر أموالا وأولادا وما نحن بمعذبين | ٣٥ | ك سبأ | ٣٤ |
| أَمْوَالَكُمْ: | ولا تأكلوا أموالكم بينكم بالباطل ... ... ... | ١٨٨ م | البقرة | ٢ |
| (١٤) | وإن تبتم فلكم رءوس أموالكم لا تظلمون ولا تظلمون | ٢٧٩ م | « | ٢ |
| | لتبلون فى أموالكم وأنفسكم... ... ... ... ... | ١٨٦ م | آل عمران | ٣ |
| | ولا تأكلوا أموالهم إلى أموالكم إنه كان حوبا كبيرا | ٢ م | النساء | ٤ |
| | ولا تؤتوا السفهاء أموالكم التى جعل الله لكم قياما | ٥ م | « | ٤ |
| | أن تبتغوا بأموالكم محصنين غير مسافحين ... ... ... | ٢٤ م | « | ٤ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تأكلوا أموالكم بينكم بالباطل ... | ٢٩ م | « | ٤ |
| | واعلموا أنما أموالكم وأولادكم فتنة وأن الله عنده أجر عظيم | ٢٨ م | الأنفال | ٨ |
| | انفروا خفافا وثقالا وجاهدوا بأموالكم وأنفسكم ... | ٤١ م | التوبة | ٩ |
| | وما أموالكم ولا أولادكم بالتى تقربكم عندنا زلفى ... | ٣٧ ك | سبأ | ٣٤ |
| | وإن تؤمنوا وتتقوا يؤتكم أجوركم ولا يسئلكم أموالكم | ٣٦ م | محمد | ٤٧ |
| | وتجاهدون فى سبيل الله بأموالكم وأنفسكم .. ... ... | ١١ م | الصف | ٦١ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تلهكم أموالكم ولا أولادكم عن ذكر الله | ٩ م | المنافقون | ٦٣ |
| | إنما أموالكم وأولادكم فتنة والله عنده أجر عظيم... ... | ١٥ م | التغابن | ٦٤ |
| أَمْوَالُنَا: | أصلاتك تأمرك أن نترك ما يعبد آباؤنا أو أن نفعل | | | |
| (٢) | فى أموالنا ما نشاء ... ... ... ... ... ... ... | ٨٧ ك | هود | ١١ |
| | شغلتنا أموالنا وأهلونا فاستغفر لنا ... ... ... ... | ١١ م | الفتح | ٤٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَمْوَالَهُمْ: | مثل الذين ينفقون أموالهم فى سبيل الله كمثل | | | |
| (٣١) | حبة أنبتت سبع سنابل ... ... ... ... ... ... | ٢٦١ م | البقرة | ٢ |
| | الذين ينفقون أموالهم فى سبيل الله ثم لا يتبعون | | | |
| | ما أنفقوا منا ولا أذى لهم أجرهم عند ربهم ... | ٢٦١ م | « | ٢ |
| | ومثل الذين ينفقون أموالهم ابتغاء مرضاة الله وتثبيتا | | | |
| | من أنفسهم كمثل جنة بربوة ... ... ... ... | ٢٦٥ م | « | ٢ |
| | الذين ينفقون أموالهم بالليل والنهار سرا وعلانية فلهم | | | |
| | أجرهم عند ربهم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧٤ م | « | ٢ |
| | إن الذين كفروا لن تغنى عنهم أموالهم ولا أولادهم | | | |
| | من الله شيئا ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ م | آل عمران | ٣ |
| | إن الذين كفروا لن تغنى عنهم أموالهم ولا أولادهم | | | |
| | من الله شيئا ... ... ... ... ... ... ... ... | ١١٦ م | « | ٣ |
| | وآتوا اليتامى أموالهم ولا تتبدلوا الخبيث بالطيب ... | ٢ م | النساء | ٤ |
| | ولا تأكلوا أموالهم إلى أموالكم إنه كان حوبا كبيرا | ٢ م | « | ٤ |
| | فإن آنستم منهم رشدا فادفعوا إليهم أموالهم ... ... | ٦ م | « | ٤ |
| | فإذا دفعتم إليهم أموالهم فأشهدوا عليهم ... ... ... | ٦ م | « | ٤ |
| | بما فضل الله بعضهم على بعض وبما أنفقوا من أموالهم | ٣٤ م | « | ٤ |
| | والذين ينفقون أموالهم رئاء الناس ولا يؤمنون بالله | ٣٨ م | « | ٤ |
| | لا يستوى القاعدون من المؤمنين غير أولى الضرر | | | |
| | والمجاهدون فى سبيل الله بأموالهم وأنفسهم ... | ٩٥ م | « | ٤ |
| | فضل الله المجاهدين بأموالهم وأنفسهم على القاعدين درجة | ٩٥ م | « | ٤ |
| | إن الذين كفروا ينفقون أموالهم ليصدوا عن سبيل الله | ٣٦ ك | الأنفال | ٨ |
| | إن الذين آمنوا وهاجروا وجاهدوا بأموالهم وأنفسهم | ٧٢ م | « | ٨ |
| | الذين آمنوا وهاجروا وجاهدوا فى سبيل الله بأموالهم | ٢٠ م | التوبة | ٩ |
| | لا يستئذنك الذين يؤمنون بالله واليوم الآخر أن | | | |
| | يجاهدوا بأموالهم وأنفسهم ... ... ... ... ... | ٤٤ م | « | ٩ |
| | فلا تعجبك أموالهم ولا أولادهم... ... ... ... ... | ٥٥ م | « | ٩ |
| | وكرهوا أن يجاهدوا بأموالهم وأنفسهم فى سبيل الله | ٨١ م | « | ٩ |
| | ولا تعجبك أموالهم وأولادهم ... ... ... ... ... | ٨٥ م | « | ٩ |
| | لكن الرسول والذين آمنوا معه جاهدوا بأموالهم وأنفسهم | ٨٨ م | « | ٩ |
| | خذ من أموالهم صدقة تطهرهم وتزكيهم بها ... ... | ١٠٣ م | « | ٩ |
| | إن الله اشترى من المؤمنين أنفسهم وأموالهم بأن لهم الجنة | ١١١ م | « | ٩ |
| | ربنا اطمس على أموالهم واشدد على قلوبهم ... ... | ٨٨ ك | يونس | ١٠ |
| | وأورثكم أرضهم وديارهم وأموالهم وأرضا لم تطئوها | ٢٧ م | الأحزاب | ٣٣ |
| | ثم لم يرتابوا وجاهدوا بأموالهم وأنفسهم فى سبيل الله | ١٥ م | الحجرات | ٤٩ |
| | وفى أموالهم حق للسائل والمحروم ... ... ... ... | ١٩ ك | الذاريات | ٥١ |
| | لن تغنى عنهم أموالهم ولا أولادهم من الله شيئا ... | ١٧ م | المجادلة | ٥٨ |
| | الذين أخرجوا من ديارهم وأموالهم يبتغون فضلا من الله | ٨ م | الحشر | ٥٩ |
| | والذين فى أموالهم حق معلوم . للسائل والمحروم ... | ٢٤ ك | المعارج | ٧٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ماءٌ: | وأنزل من السماء ماء فأخرج به من الثمرات رزقا لكم | ٢٢ | م البقـرة | ٢ |
| (٥٩) | وإن منها لما يشقق فيخرج منـه الماء ... ... ... | ٧٤ | م « | ٢ |
| | وما أنزل الله من السماء من ماء فأحيا به الأرض بعد موتها ... ... ... ... ... ... ... | ١٦٤ | م « | ٢ |
| | فلم تجدوا ماء فتيمموا صعيدا طيبا... ... ... ... | ٤٣ | م النسـاء | ٤ |
| | فلم تجدوا ماء فتيمموا صعيدا طيبا... ... ... ... | ٦ | م المائدة | ٥ |
| | وهو الذى أنزل من السماء ماء فأخرجنا به نبات كل شىء | ٩٩ | ك الأنعـام | ٦ |
| | أن أفيضوا علينا من الماء أو مما رزقكم الله ... ... | ٥٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | سقناه لبلد ميت فأنزلنا به الماء ... ... ... ... | ٥٧ | ك « | ٧ |
| | وينزل عليكم من السماء ماء ليطهركم به ... ... ... | ١١ | م الأنفـال | ٨ |
| | إنما مثل الحياة الدنيا كماء أنزلناه من السماء ... ... | ٢٤ | ك يـونس | ١٠ |
| | وكان عرشـه على الماء ليبلوكم أيكم أحسن عمـلا | ٧ | ك هـود | ١١ |
| | قال سآوى إلى جبل يعصمنى من الماء ... ... ... | ٤٣ | ك « | ١١ |
| | وغيض الماء وقضى الأمر واستوت على الجودى... | ٤٤ | ك « | ١١ |
| | ونخيل صنوان وغير صنوان يسقى بماء واحد ... ... | ٤ | م الرعـد | ١٣ |
| | إلا كباسط كفيه إلى الماء ليبلغ فاه وما هو ببالغه... | ١٤ | م « | ١٣ |
| | أنزل من السماء ماء فسالت أودية بقدرها ... ... ... | ١٧ | م « | ١٣ |
| | من ورائه جهنم ويسقى من ماء صديد... ... ... ... | ١٦ | ك إبراهـيم | ١٤ |
| | وأنزل من السماء ماء فأخرج به من الثمـرات رزقا لكم | ٣٢ | ك « | ١٤ |
| | وأرسلنا الرياح لواقح فأنزلنا من السماء ماء... ... ... | ٢٢ | ك الحجـر | ١٥ |
| | هو الذى أنزل من السماء ماء لكم منه شراب ومنه شجر | ١٠ | ك النـحل | ١٦ |
| | والله أنزل من السماء ماء فأحيـا به الأرض بعد موتها | ٦٥ | ك « | ١٦ |
| | وإن يستغيثوا يغاثوا بماء كالمهل يشوى الوجوه ... | ٢٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | واضرب لهم مثل الحياة الدنيا كماء أنزلناه من السماء | ٤٥ | ك « | ١٨ |
| | وأنزل من السماء ماء فأخرجنا به أزواجا من نبات شتى | ٥٣ | ك طـه | ٢٠ |
| | وجعلنا من الماء كل شىء حى ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك الأنبيـاء | ٢١ |
| | وترى الأرض هامدة فإذا أنزلنا عليها الماء اهتزت وربت | ٥ | م الحـج | ٢٢ |
| | ألم تر أن الله أنزل من السماء ماء فتصبح الأرض مخضرة | ٦٣ | م « | ٢٢ |
| | وأنزلنا من السماء ماء بقدر فأسكناه فى الأرض ... | ١٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | والذين كفروا أعمالهم كسراب بقيعة يحسبه الظمآن ماء | ٣٩ | م النـور | ٢٤ |
| | والله خلق كل دابة من ماء ... ... ... ... ... | ٤٥ | م « | ٢٤ |
| | وأنزلنا من السماء ماء طهورا ... ... ... ... ... | ٤٨ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| | وهـو الذى خلق من الماء بشرا فجعله نسبا وصهرا | ٥٤ | ك « | ٢٥ |
| | أمن خلق السموات والأرض وأنزل لكم من السماء ماء | ٦٠ | ك النمـل | ٢٧ |
| | ولما ورد ماء مدين وجد عليه أمة من الناس يسقون | ٢٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | ولئن سألتهم من نزل من السماء ماء فأحيا به الأرض من بعد موتها ليقولن الله ... ... ... ... ... | ٦٣ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| ماءٌ: | وينزل من السماء ماء فيحيى به الأرض بعد موتها | ٢٤ | ك الـروم | ٣٠ |
| | وأنزلنا من السماء ماء فأنبتنا فيها من كل زوج كريم | ١٠ | ك لقـمان | ٣١ |
| | ثم جعل نسله من سلالة من ماء مهين ... ... ... | ٨ | ك السـجدة | ٣٢ |
| | أولم يروا أنا نسوق الماء إلى الأرض الجرز ... ... | ٢٧ | ك « | ٣٢ |
| | ألم تر أن الله أنزل من السماء ماء فأخرجنا به ثمرات مختلفا ألوانها... ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | ألم تر أن الله أنزل من السماء ماء فسلكه ينابيع فى الأرض | ٢١ | ك الـزمر | ٣٩ |
| | فإذا أنزلنا عليها الماء اهتزت وربت ... ... ... | ٣٩ | ك فصـلت | ٤١ |
| | والذى نزل من السماء ماء بقدر فأنشرنا به بلدة ميتا | ١١ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | فيها أنهار من ماء غير آسن وأنهار من لبن لم يتغير طعمه | ١٥ | م محمـد | ٤٧ |
| | كمن هو خالد فى النار وسقوا ماء حميما فقطع أمعاءهم | ١٥ | م « | ٤٧ |
| | ونزلنا من السماء ماء مباركا فأنبتنا به جنات وحب الحصيد | ٩ | ك قـ | ٥٠ |
| | ففتحنا أبواب السماء بماء منهمر ... ... ... ... | ١١ | ك القمـر | ٥٤ |
| | وفجرنا الأرض عيونا فالتقى الماء على أمر قد قدر... | ١٢ | ك « | ٥٤ |
| | ونبئهم أن الماء قسمة بينهم كل شرب محتضر ... ... | ٢٨ | ك « | ٥٤ |
| | وظل ممدود . وماء مسكوب ... ... ... ... ... | ٣١ | ك الواقعـة | ٥٦ |
| | أفرأيتم الماء الذى تشربون ... ... ... ... ... | ٦٨ | ك « | ٥٦ |
| | قل أرأيتم إن أصبح ماؤكم غورا فمن يأتيكم بماء معين | ٣٠ | ك المـلك | ٦٧ |
| | إنا لما طغا الماء حملناكم فى الجارية ... ... ... | ١١ | ك الحـاقة | ٦٩ |
| | وألو استقاموا على الطريقـة لأسقيناهم ماء غدقا | ١٦ | ك الجـن | ٧٢ |
| | ألم نخلقكم من ماء مهين... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك المرسلات | ٧٧ |
| | وجعلنا فيها رواسى شامخات وأسقيناكم ماء فراتا | ٢٧ | ك « | ٧٧ |
| | وأنزلنا من المعصرات ماء ثجاجا ... ... ... ... | ١٤ | ك النبـأ | ٧٨ |
| | فلينظر الإنسان إلى طعامه . أنا صببنا الماء صبا | ٢٥ | ك عبس | ٨٠ |
| | فلينظر الإنسان مم خلق . خلق من ماء دافق ... ... | ٦ | ك الطـارق | ٨٦ |
| مَاءَكِ: | وقيل يا أرض ابلعى ماءك ويا سماء أقلعى ... ... | ٤٤ | ك هـود | ١١ |
| مَاءَهَا: | أخرج منها ماءها ومرعاها... ... ... ... ... | ٣١ | ك النازعات | ٧٩ |
| مَاؤُكُمْ: | قل أرأيتم إن أصبح ماؤكم غورا فمن يأتيكم بماء معين | ٣٠ | ك المـلك | ٦٧ |
| مَاؤُهَا: | أو يصبح ماؤها غورا فلن تستطيع له طلبا ... ... | ٤١ | ك الكهف | ١٨ |
| تَمِيدَ: | وألقى فى الأرض رواسى أن تميد بكم وأنهارا وسبلا | ١٥ | ك النحـل | ١٦ |
| (٣) | وجعلنا فى الأرض رواسى أن تميد بهم وجعلنا فيها فجاجا | ٣١ | ك الأنبيـاء | ٢١ |
| | وألقى فى الأرض رواسى أن تميد بكم وبث فيها من كل دابة | ١٠ | ك لقـمان | ٣١ |
| مَائِدَةً: | هل يستطيع ربك أن ينزل علينا مائدة من السماء ... | ١١٢ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | قال عيسى ابن مريم اللهم ربنا أنزل علينا مائدة من السماء | ١١٤ | م « | ٥ |
| نَمِيرُ: | هذه بضاعتنا ردت إلينا ونمير أهلنا ونحفظ أخانا | ٦٥ | ك يـوسف | ١٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| يَمِيزَ | : ما كان الله ليذر المؤمنين على ما أنتم عليه حتى يميز | | | |
| (٢) | الخبيث من الطيب ... ... ... ... ... ... ... | ١٧٩ | م آل عمران | ٣ |
| | ليميز الله الخبيث من الطيب ويجعل الخبيث بعضه على بعض | ٣٧ | م الأنفال | ٨ |
| تَمَيَّزُ | : تكاد تميز من الغيظ ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك الملك | ٦٧ |
| امْتَازُوا | : وامتازوا اليوم أيها المجرمون ... ... ... ... | ٥٩ | ك يس | ٣٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تَمِيلُوا | : ويريد الذين يتبعون الشهوات أن تميلوا ميلا عظيما | ٢٧ | م النساء | ٤ |
| (٣) | | | | |
| تَمِيلُوا | : فلا تميلوا كل الميل فتذروها كالمعلقة ... ... ... | ١٢٩ | م النساء | ٤ |
| فَيَمِيلُونَ | : ودّ الذين كفروا لو تغفلون عن أسلحتكم وأمتعتكم | | | |
| | فيميلون عليكم ميلة واحدة ... ... ... ... ... | ١٠٢ | م « | ٤ |
| الْمَيْلِ | : فلا تميلوا كل الميل فتذروها كالمعلقة ... ... ... | ١٢٩ | م « | ٤ |
| مَيْلًا | : ويريد الذين يتبعون الشهوات أن تميلوا ميلا | | | |
| | عظيما ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | م « | ٤ |
| مَيْلَةً | : ودّ الذين كفروا لو تغفلون عن أسلحتكم وأمتعتكم | | | |
| | فيميلون عليكم ميلة واحدة ... ... ... ... ... | ١٠٢ | م « | ٤ |

# باب النون

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| نٓ | : نٓ والقلم وما يسطرون . ما أنت بنعمة ربك بمجنون | ١ | ك القلم | ٦٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| نَأَى | : وإذا أنعمنا على الإنسان أعرض ونأى بجانبه ... | ٨٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٢) | وإذا أنعمنا على الإنسان أعرض ونأى بجانبه ... | ٥١ | ك فصلت | ٤١ |
| يَنْأَوْنَ | : وهم ينهون عنه وينأون عنه ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك الأنعام | ٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| نَبَّأَتْ | : فلما نبأت به وأظهره الله عليه عرف بعضه | | | |
| | وأعرض عن بعض... ... ... ... ... ... ... | ٣ | م التحريم | ٦٦ |
| نَبَّأَتْكُمَا | : قال لا يأتيكما طعام ترزقانه إلا نبأتكما بتأويله ... | ٣٧ | ك يوسف | ١٢ |
| نَبَّأَنَا | : قل لا تعتذروا لن نؤمن لكم قد نبأنا الله من أخباركم | ٩٤ | م التوبة | ٩ |
| نَبَّأَنِي | : قالت من أنبأك هذا قال نبأني العليم الخبير ... ... | ٣ | م التحريم | ٦٦ |
| نَبَّأَهَا | : فلما نبأها به قالت من أنبأك هذا ... ... ... ... | ٣ | م « | ٦٦ |
| سَأُنَبِّئُكَ | : سأنبئك بتأويل ما لم تستطع عليه صبرا ... ... | ٧٨ | ك الكهف | ١٨ |
| أُنَبِّئُكُمْ | : قل أؤنبئكم بخير من ذلكم... ... ... ... ... | ١٥ | م آل عمران | ٣ |
| (٨) | وأنبئكم بما تأكلون وما تدخرون في بيوتكم ... ... | ٤٩ | م « | ٣ |
| | قل هل أنبئكم بشر من ذلك مثوبة عند الله ... ... | ٦٠ | م المائدة | ٥ |
| | وقال الذي نجا منهما وادكر بعد أمة أنا أنبئكم بتأويله | ٤٥ | ك يوسف | ١٢ |
| | قل أفأنبئكم بشر من ذلكم النار وعدها الله الذين كفروا | ٧٢ | م الحج | ٢٢ |
| | هل أنبئكم على من تنزل الشياطين ... ... ... ... | ٢٢١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | إليّ مرجعكم فأنبئكم بما كنتم تعملون ... ... ... | ٨ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | ثم إليّ مرجعكم فأنبئكم بما كنتم تعملون... ... ... | ١٥ | ك لقمان | ٣١ |
| لَتُنَبِّئَنَّهُمْ | : وأوحينا إليه لتنبئنهم بأمرهم هذا وهم لا يشعرون | ١٥ | ك يوسف | ١٢ |
| تُنَبِّئُهُمْ | : يحذر المنافقون أن تنزل عليهم سورة تنبئهم بما في قلوبهم | ٦٤ | م التوبة | ٩ |
| أَتُنَبِّئُونَ | : قل أتنبئون الله بما لا يعلم في السموات ولا في الأرض | ١٨ | ك يونس | ١٠ |
| تُنَبِّئُونَهُ | : أم تنبئونه بما لا يعلم في الأرض أم بظاهر من القول | ٣٣ | م الرعد | ١٣ |
| فَنُنَبِّئُكُمْ | : ثم إلينا مرجعكم فننبئكم بما كنتم تعملون... ... | ٢٣ | ك يونس | ١٠ |
| (٢) | قل هل ننبئكم بالأخسرين أعمالا ... ... ... ... | ١٠٣ | ك الكهف | ١٨ |
| فَلَنُنَبِّئَنَّ | : فلننبئن الذين كفروا بما عملوا ... ... ... ... | ٥٠ | ك فصلت | ٤١ |
| فَنُنَبِّئُهُمْ | : إلينا مرجعهم فننبئهم بما عملوا ... ... ... ... | ٢٣ | ك لقمان | ٣١ |
| يُنَبِّئُكَ | : ولا ينبئك مثل خبير... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك فاطر | ٣٥ |
| يُنَبِّئُكُمْ | : إلى الله مرجعكم جميعا فينبئكم بما كنتم فيه تختلفون | ٤٨ | م المائدة | ٥ |
| (٩) | إلى الله مرجعكم جميعا فينبئكم بما كنتم تعملون ... | ١٠٥ | م « | ٥ |
| | ثم إليه مرجعكم ثم ينبئكم بما كنتم تعملون ... ... | ٦٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | ثم إلى ربكم مرجعكم فينبئكم بما كنتم فيه تختلفون ... | ١٦٤ | ك « | ٦ |
| | ثم تردون إلى عالم الغيب والشهادة فينبئكم بما كنتم تعملون | ٩٤ | م التوبة | ٩ |
| | وستردون إلى عالم الغيب والشهادة فينبئكم بما كنتم تعملون | ١٠٥ | م « | ٩ |
| | هل ندلكم على رجل ينبئكم إذا مزقتم كل ممزق | ٧ | ك سبأ | ٣٤ |
| | ثم إلى ربكم مرجعكم فينبئكم بما كنتم تعملون... ... | ٧ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ثم تردون إلى عالم الغيب والشهادة فينبئكم بما كنتم تعملون | ٨ | م الجمعة | ٦٢ |
| يُنَبِّئُهُمْ | : وسوف ينبئهم الله بما كانوا يصنعون... ... ... | ١٤ | م المائدة | ٥ |
| (٦) | ثم إلى ربهم مرجعهم فينبئهم بما كانوا يعملون ... | ١٠٨ | ك الأنعام | ٦ |
| | إنما أمرهم إلى الله ثم ينبئهم بما كانوا يفعلون ... | ١٥٩ | ك « | ٦ |
| | قد يعلم ما أنتم عليه ويوم يرجعون إليه فينبئهم بما عملوا | ٦٤ | م النور | ٢٤ |
| | يوم يبعثهم الله جميعا فينبئهم بما عملوا ... ... ... | ٦ | م المجادلة | ٥٨ |
| | ثم ينبئهم بما عملوا يوم القيامة إن الله بكل شيء عليم | ٧ | م « | ٥٨ |
| نَبِّئْ | : نبئ عبادي أني أنا الغفور الرحيم ... ... ... ... | ٤٩ | ك الحجر | ١٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| نَبِّئْنَا | إني أراني أحمل فوق رأسي خبزا تأكل الطير منه نبئنا بتأويله ... ... ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك يوسف | ١٢ |
| نَبِّئْهُمْ | ونبئهم عن ضيف إبراهيم ... ... ... ... ... ... | ٥١ | ك الحجر | ١٥ |
| (٢) | ونبئهم أن الماء قسمة بينهم كل شرب محتضر ... ... | ٢٨ | ك القمر | ٥٤ |
| نَبِّئُونِي | نبئوني بعلم إن كنتم صادقين ... ... ... ... ... | ١٤٣ | ك الأنعام | ٦ |
| لَتُنَبَّؤُنَّ | قل بلى وربي لتبعثن ثم لتنبؤن بما عملتم ... ... | ٧ | م التغابن | ٦٤ |
| يُنَبَّأُ | أم لم ينبأ بما في صحف موسى ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك النجم | ٥٣ |
| يُنَبَّؤُا | ينبؤا الإنسان يومئذ بما قدم وأخر ... ... ... ... | ١٣ | ك القيامة | ٧٥ |
| أَنْبَأَكَ | فلما نبأها به قالت من أنبأك هذا ... ... ... ... | ٣ | م التحريم | ٦٦ |
| أَنْبَأَهُمْ | فلما أنبأهم بأسمائهم قال ألم أقل لكم إني أعلم غيب السموات والأرض ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | م البقرة | ٢ |
| أَنْبِئْهُمْ | قال يا آدم أنبئهم بأسمائهم ... ... ... ... ... | ٣٣ | م « | ٢ |
| أَنْبِئُونِي | فقال أنبئوني بأسماء هؤلاء إن كنتم صادقين | ٣١ | م « | ٢ |
| يَسْتَنْبِئُونَكَ | ويستنبئونك أحق هو قل إي وربي إنه لحق | ٥٣ | ك يونس | ١٠ |
| نَبَأَ | واتل عليهم نبأ آبني آدم بالحق إذ قربا قربانا ... ... | ٢٧ | م المائدة | ٥ |
| (١٥) | ولقد جاءك من نبإ المرسلين ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | لكل نبإ مستقر وسوف تعلمون ... ... ... ... ... | ٦٧ | ك « | ٦ |
| | واتل عليهم نبأ الذي آتيناه آياتنا فانسلخ منها ... ... | ١٧٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | ألم يأتهم نبأ الذين من قبلهم قوم نوح وعاد وثمود | ٧٠ | م التوبة | ٩ |
| | واتل عليهم نبأ نوح إذ قال لقومه يا قوم إن كان كبر عليكم مقامي وتذكيري بآيات الله فعلى الله توكلت | ٧١ | ك يونس | ١٠ |
| | ألم يأتكم نبأ الذين من قبلكم قوم نوح وعاد وثمود | ٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | واتل عليهم نبأ إبراهيم . إذ قال لأبيه وقومه ما تعبدون | ٦٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فقال أحطت بما لم تحط به وجئتك من سبإ بنبإ يقين | ٢٢ | ك النمل | ٢٧ |
| | نتلو عليك من نبإ موسى وفرعون بالحق لقوم يؤمنون | ٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | وهل أتاك نبأ الخصم إذ تسوروا المحراب ... ... ... | ٢١ | ك ص | ٣٨ |
| | قل هو نبأ عظيم . أنتم عنه معرضون ... ... ... ... | ٦٧ | ك « | ٣٨ |
| | إن جاءكم فاسق بنبإ فتبينوا أن تصيبوا قوما بجهالة | ٦ | م الحجرات | ٤٩ |
| | ألم يأتكم نبأ الذين كفروا من قبل فذاقوا وبال أمرهم | ٥ | م التغابن | ٦٤ |
| | عم يتساءلون . عن النبإ العظيم ... ... ... ... ... | ٢ | ك النبإ | ٧٨ |
| نَبَأَهُ | ولتعلمن نبأه بعد حين ... ... ... ... ... ... ... | ٨٨ | ك ص | ٣٨ |
| نَبَأَهُمْ | نحن نقص عليك نبأهم بالحق ... ... ... ... ... | ١٣ | ك الكهف | ١٨ |
| أَنْبَاءِ | ذلك من أنباء الغيب نوحيه إليك ... ... ... ... | ٤٤ | م آل عمران | ٣ |
| (١٠) | فسوف يأتيهم أنباء ما كانوا به يستهزئون ... ... ... | ٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | تلك من أنباء الغيب نوحيها إليك ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك هود | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَنْبَاءِ | ذلك من أنباء القرى نقصه عليك منها قائم وحصيد | ١٠٠ | ك هود | ١١ |
| | وكلا نقص عليك من أنباء الرسل ما نثبت به فؤادك | ١٢٠ | ك « | ١١ |
| | ذلك من أنباء الغيب نوحيه إليك ... ... ... ... | ١٠٢ | ك يوسف | ١٢ |
| | كذلك نقص عليك من أنباء ما قد سبق ... ... ... | ٩٩ | ك طه | ٢٠ |
| | فقد كذبوا فسيأتيهم أنباء ما كانوا به يستهزءون ... ... | ٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فعميت عليهم الأنباء يومئذ فهم لا يتساءلون ... ... | ٦٦ | ك القصص | ٢٨ |
| | ولقد جاءهم من الأنباء ما فيه مزدجر ... ... ... ... | ٤ | ك القمر | ٥٤ |
| أَنْبَائِكُمْ | وإن يأت الأحزاب يودوا لو أنهم بادون في الأعراب يسئلون عن أنبائكم ... ... ... | ٢٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| أَنْبَائِهَا | تلك القرى نقص عليك من أنبائها ... ... ... ... | ١٠١ | ك الأعراف | ٧ |
| النَّبِيُّ | إذ قالوا لنبي لهم ابعث لنا ملكا نقاتل في سبيل الله | ٢٤٦ | م البقرة | ٢ |
| (٤٣) | إن أولى الناس بإبراهيم الذين اتبعوه وهذا النبي | ٦٨ | م آل عمران | ٣ |
| | وكأين من نبي قاتل معه ربيون كثير فما وهنوا لما أصابهم | ١٤٦ | م « | ٣ |
| | وما كان لنبي أن يغل ... ... ... ... ... ... ... | ١٦١ | م « | ٣ |
| | ولو كانوا يؤمنون بالله والنبي وما أنزل إليه ما اتخذوهم أولياء ... ... ... ... ... ... | ٨١ | م المائدة | ٥ |
| | وكذلك جعلنا لكل نبي عدوا شياطين الإنس والجن | ١١٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | وما أرسلنا في قرية من نبي إلا أخذنا أهلها بالبأساء والضراء | ٩٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | الذين يتبعون الرسول النبي الأمي الذي يجدونه مكتوبا عندهم في التوراة والإنجيل ... ... ... | ١٥٧ | ك « | ٧ |
| | فآمنوا بالله ورسوله النبي الأمي الذي يؤمن بالله وكلماته | ١٥٨ | ك « | ٧ |
| | يا أيها النبي حسبك الله ومن اتبعك من المؤمنين | ٦٤ | م الأنفال | ٨ |
| | يا أيها النبي حرض المؤمنين على القتال ... ... ... ... | ٦٥ | م « | ٨ |
| | ما كان لنبي أن يكون له أسرى حتى يثخن في الأرض | ٦٧ | م « | ٨ |
| | يا أيها النبي قل لمن في أيديكم من الأسرى إن يعلم الله في قلوبكم خيرا يؤتكم خيرا مما أخذ منكم ... ... | ٧٠ | م « | ٨ |
| | ومنهم الذين يؤذون النبي ويقولون هو أذن ... ... | ٦١ | م التوبة | ٩ |
| | يا أيها النبي جاهد الكفار والمنافقين واغلظ عليهم ... | ٧٣ | م « | ٩ |
| | ما كان للنبي والذين آمنوا أن يستغفروا للمشركين ... | ١١٣ | م « | ٩ |
| | لقد تاب الله على النبي والمهاجرين والأنصار ... ... | ١١٧ | م « | ٩ |
| | وما أرسلنا من قبلك من رسول ولا نبي إلا إذا تمنى ألقى الشيطان في أمنيته ... ... ... ... ... ... | ٥٢ | م الحج | ٢٢ |
| | وكذلك جعلنا لكل نبي عدوا من المجرمين ... ... | ٣١ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | يا أيها النبي اتق الله ولا تطع الكافرين والمنافقين ... | ١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | النبي أولى بالمؤمنين من أنفسهم ... ... ... ... ... | ٦ | م « | ٣٣ |
| | ويستأذن فريق منهم النبي يقولون إن بيوتنا عورة | ١٣ | م « | ٣٣ |
| | يا أيها النبي قل لأزواجك إن كنتن تردن الحياة الدنيا وزينتها فتعالين أمتعكن وأسرحكن ... ... ... | ٢٨ | م « | ٣٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| النَّبِيُّ | يا نساء النبي من يأت منكن بفاحشة مبينة يضاعف لها العذاب ضعفين ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | يا نساء النبي لستن كأحد من النساء ... ... ... ... | ٣٢ | م « | ٣٣ |
| | ما كان على النبي من حرج فيما فرض الله له ... ... ... | ٣٨ | م « | ٣٣ |
| | يأيها النبي إنا أرسلناك شاهدا ومبشرا ونذيرا ... ... | ٤٥ | م « | ٣٣ |
| | يأيها النبي إنا أحللنا لك أزواجك اللاتي آتيت أجورهن | ٥٠ | م « | ٣٣ |
| | وامرأة مؤمنة إن وهبت نفسها للنبي ... ... ... ... | ٥٠ | م « | ٣٣ |
| | إن أراد النبي أن يستنكحها خالصة لك من دون المؤمنين | ٥٠ | م « | ٣٣ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تدخلوا بيوت النبي إلا أن يؤذن لكم ... ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | م « | ٣٣ |
| | إن ذلكم كان يؤذي النبي فيستحيي منكم ... ... ... | ٥٣ | م « | ٣٣ |
| | إن الله وملائكته يصلون على النبي ... ... ... ... | ٥٦ | م « | ٣٣ |
| | يأيها النبي قل لأزواجك وبناتك ونساء المؤمنين يدنين عليهن من جلابيبهن ... ... ... ... ... | ٥٩ | م « | ٣٣ |
| | وكم أرسلنا من نبي في الأولين ... ... ... ... ... | ٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وما يأتيهم من نبي إلا كانوا به يستهزءون ... ... ... | ٧ | ك « | ٤٣ |
| | يأيها الذين آمنوا لا ترفعوا أصواتكم فوق صوت النبي | ٢ | م الحجرات | ٤٩ |
| | يأيها النبي إذا جاءك المؤمنات يبايعنك .. ... ... | ١٢ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | يأيها النبي إذا طلقتم النساء فطلقوهن لعدتهن ... ... | ١ | م الطلاق | ٦٥ |
| | يأيها النبي لم تحرم ما أحل الله لك ... ... ... ... | ١ | م التحريم | ٦٦ |
| | وإذ أسر النبي إلى بعض أزواجه حديثا ... ... ... | ٣ | م « | ٦٦ |
| | يوم لا يخزي الله النبي والذين آمنوا معه ... ... ... | ٨ | م « | ٦٦ |
| | يأيها النبي جاهد الكفار والمنافقين واغلظ عليهم ... | ٩ | م « | ٦٦ |
| نَبِيًّا (٩) | أن الله يبشرك بيحيى مصدقا بكلمة من الله وسيدا وحصورا ونبيا ... ... ... ... ... ... ... | ٣٩ | م آل عمران | ٣ |
| | قال إني عبد الله آتاني الكتاب وجعلني نبيا ... ... | ٣٠ | ك مريم | ١٩ |
| | واذكر في الكتاب إبراهيم إنه كان صديقا نبيا ... | ٤١ | ك « | ١٩ |
| | وهبنا له إسحق ويعقوب وكلا جعلنا نبيا ... ... ... | ٤٩ | ك « | ١٩ |
| | واذكر في الكتاب موسى إنه كان مخلصا وكان رسولا نبيا | ٥١ | ك « | ١٩ |
| | ووهبنا له من رحمتنا أخاه هرون نبيا ... ... ... | ٥٣ | ك « | ١٩ |
| | إنه كان صادق الوعد وكان رسولا نبيا ... ... ... | ٥٤ | ك « | ١٩ |
| | واذكر في الكتاب إدريس إنه كان صديقا نبيا ... | ٥٦ | ك « | ١٩ |
| | وبشرناه بإسحق نبيا من الصالحين ... ... ... ... | ١١٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| نَبِيُّهُمْ | وقال لهم نبيهم إن الله قد بعث لكم طالوت ملكا... | ٢٤٧ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | وقال لهم نبيهم إن آية ملكه أن يأتيكم التابوت ... | ٢٤٨ | م « | ٢ |
| النَّبِيُّونَ | وما أوتي النبيون من ربهم لا نفرق بين أحد منهم | ١٣٦ | م « | ٢ |
| (٣) | وما أوتي موسى وعيسى والنبيون من ربهم... ... ... | ٨٤ | م آل عمران | ٣ |
| | يحكم بها النبيون الذين أسلموا للذين هادوا ... ... | ٤٤ | م المائدة | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| النَّبِيِّينَ (١٣) | ذلك بأنهم كانوا يكفرون بآيات الله ويقتلون النبيين بغير الحق ... ... ... ... ... ... ... | ٦١ | م البقرة | ٢ |
| | ولكن البر من آمن بالله واليوم الآخر والملائكة والكتاب والنبيين ... ... ... ... ... ... | ١٧٧ | م « | ٢ |
| | كان الناس أمة واحدة فبعث الله النبيين مبشرين ومنذرين | ٢١٣ | م « | ٢ |
| | إن الذين يكفرون بآيات الله ويقتلون النبيين بغير حق | ٢١ | م آل عمران | ٣ |
| | ولا يأمركم أن تتخذوا الملائكة والنبيين أربابا... ... | ٨٠ | م « | ٣ |
| | وإذ أخذ الله ميثاق النبيين لما آتيتكم من كتاب وحكمة | ٨١ | م « | ٣ |
| | فأولئك مع الذين أنعم الله عليهم من النبيين والصديقين | ٦٩ | م النساء | ٤ |
| | إنا أوحينا إليك كما أوحينا إلى نوح والنبيين من بعده | ١٦٣ | م « | ٤ |
| | ولقد فضلنا بعض النبيين على بعض وآتينا داود زبورا | ٥٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| | أولئك الذين أنعم الله عليهم من النبيين من ذرية آدم | ٥٨ | م مريم | ١٩ |
| | وإذ أخذنا من النبيين ميثاقهم ومنك ومن نوح ... | ٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ولكن رسول الله وخاتم النبيين ... ... ... ... ... | ٤٠ | م « | ٣٣ |
| | ووضع الكتاب وجيء بالنبيين والشهداء ... ... ... | ٦٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| الأَنْبِيَاءَ (٥) | قل فلم تقتلون أنبياء الله من قبل إن كنتم مؤمنين | ٩١ | م البقرة | ٢ |
| | كانوا يكفرون بآيات الله ويقتلون الأنبياء بغير حق | ١١٢ | م آل عمران | ٣ |
| | سنكتب ما قالوا وقتلهم الأنبياء بغير حق ... ... ... | ١٨١ | م « | ٣ |
| | فبما نقضهم ميثاقهم وكفرهم بآيات الله وقتلهم الأنبياء بغير حق ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٥ | م النساء | ٤ |
| | اذكروا نعمة الله عليكم إذ جعل فيكم أنبياء وجعلكم ملوكا | ٢٠ | م المائدة | ٥ |
| النُّبُوَّةَ (٥) | ما كان لبشر أن يؤتيه الله الكتاب والحكم والنبوة ثم يقول للناس كونوا عبادا لي من دون الله ... | ٧٩ | م آل عمران | ٣ |
| | أولئك الذين آتيناهم الكتاب والحكم والنبوة ... ... | ٨٩ | ك الأنعام | ٦ |
| | ووهبنا له إسحق ويعقوب وجعلنا في ذريته النبوة والكتاب | ٢٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ولقد آتينا بني إسرائيل الكتاب والحكم والنبوة | ١٦ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | وجعلنا في ذريتهما النبوة والكتاب ... ... ... ... | ٢٦ | م الحديد | ٥٧ |
| تَنْبُتُ | وشجرة تخرج من طور سيناء تنبت بالدهن وصبغ للآكلين | ٢٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| أَنْبَتَتْ | كمثل حبة أنبتت سبع سنابل... ... ... ... ... | ٢٦١ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | اهتزت وربت وأنبتت من كل زوج بهيج... ... ... | ٥ | م الحج | ٢٢ |
| أَنْبَتَكُمْ | والله أنبتكم من الأرض نباتا ... ... ... ... ... | ١٧ | ك نوح | ٧١ |
| أَنْبَتْنَا | وألقينا فيها رواسي وأنبتنا فيها من كل شيء موزون | ١٩ | ك الحجر | ١٥ |
| (٨) | أولم يروا إلى الأرض كم أنبتنا فيها من كل زوج كريم | ٧ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وأنزل لكم من السماء ماء فأنبتنا به حدائق ذات بهجة | ٦٠ | ك النمل | ٢٧ |
| | وأنزلنا من السماء ماء فأنبتنا فيها من كل زوج كريم | ١٠ | ك لقمان | ٣١ |
| | وأنبتنا عليه شجرة من يقطين ... ... ... ... ... | ١٤٦ | ك الصافات | ٣٧ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| أَنْبَتْنَا | وألقينا فيها رواسى وأنبتنا فيها من كل زوج بهيج... | ق | ٥٠ |
| | ونزلنا من السماء ماء مباركا فأنبتنا به جنات وحب الحصيد | ق | ٥٠ |
| | ثم شققنا الأرض شقا . فأنبتنا فيها حبا . وعنبا وقضبا | عبس | ٨٠ |
| أَنْبَتَهَا | فتقبلها ربها بقبول حسن وأنبتها نباتا حسنا ... ... | آل عمران | ٣ |
| تُنْبِتُ | فادع لنا ربك يخرج لنا مما تنبت الأرض من بقلها | البقرة | ٢ |
| (٢) | سبحان الذى خلق الأزواج كلها مما تنبت الأرض | يس | ٣٦ |
| تُنْبِتُوا | فأنبتنا به حدائق ذات بهجة ما كان لكم أن تنبتوا شجرها | النمل | ٢٧ |
| يُنْبِتُ | ينبت لكم به الزرع والزيتون والنخيل والأعناب | النحل | ١٦ |
| نَبَاتُ | وهو الذى أنزل من السماء ماء فأخرجنا به نبات كل شىء | الأنعام | ٦ |
| (٤) | إنما مثل الحياة الدنيا كماء أنزلناه من السماء فاختلط به | | |
| | نبات الأرض ... ... ... ... ... ... ... ... | يونس | ١٠ |
| | واضرب لهم مثل الحياة الدنيا كماء أنزلناه من السماء | | |
| | فاختلط به نبات الأرض ... ... ... ... ... | الكهف | ١٨ |
| | وأنزل من السماء ماء فأخرجنا به أزواجا من نبات شتى | طه | ٢٠ |
| نَبَاتًا | فتقبلها ربها بقبول حسن وأنبتها نباتا حسنا ... ... | آل عمران | ٣ |
| (٣) | والله أنبتكم من الأرض نباتا ... ... ... ... ... | نوح | ٧١ |
| | وأنزلنا من المعصرات ماء ثجاجا . لنخرج به حبا ونباتا | النبأ | ٧٨ |
| نَبَاتُهُ | والبلد الطيب يخرج نباته بإذن ربه ... ... ... ... | الأعراف | ٧ |
| (٢) | كمثل غيث أعجب الكفار نباته ... ... ... ... ... | الحديد | ٥٧ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| نَبَذَ | نبذ فريق من الذين أوتوا الكتاب كتاب الله وراء ظهورهم | البقرة | ٢ |
| فَنَبَذْتُهَا | فقبضت قبضة من أثر الرسول فنبذتها ... ... ... | طه | ٢٠ |
| فَنَبَذْنَاهُ | فنبذناه بالعراء وهو سقيم... ... ... ... ... | الصافات | ٣٧ |
| فَنَبَذْنَاهُمْ | فأخذناه وجنوده فنبذناهم فى اليم ... ... ... | القصص | ٢٨ |
| (٢) | فأخذناه وجنوده فنبذناهم فى اليم وهو مليم ... ... | الذاريات | ٥١ |
| نَبَذَهُ | أو كلما عاهدوا عهدا نبذه فريق منهم ... ... ... | البقرة | ٢ |
| فَنَبَذُوهُ | فنبذوه وراء ظهورهم واشتروا به ثمنا قليلا... ... | آل عمران | ٣ |
| فَانْبِذْ | وإما تخافن من قوم خيانة فانبذ إليهم على سواء | الأنفال | ٨ |
| لَنُبِذَ | لولا أن تداركه نعمة من ربه لنبذ بالعراء وهو مذموم | القلم | ٦٨ |
| لَيُنْبَذَنَّ | كلا لينبذن فى الحطمة ... ... ... ... ... ... | الهمزة | ١٠٤ |
| انْتَبَذَتْ | واذكر فى الكتاب مريم إذ انتبذت من أهلها | | |
| (٢) | مكانا شرقيا ... ... ... ... ... ... ... ... | مريم | ١٩ |
| | لحملته فانتبذت به مكانا قصيا ... ... ... ... ... | | ١٩ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| تَنَابَزُوا | ولا تلمزوا أنفسكم ولا تنابزوا بالألقاب ... ... | الحجرات | ٤٩ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| يَسْتَنْبِطُونَهُ | ولو ردوه إلى الرسول وإلى أولى الأمر منهم | | |
| | لعلمه الذين يستنبطونه منهم ... ... ... ... ... | النساء | ٨٣ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| يَنْبُوعًا | وقالوا لن نؤمن لك حتى تفجر لنا من الأرض ينبوعا | الإسراء | ١٧ |
| يَنَابِيعَ | ألم تر أن الله أنزل من السماء ماء فسلكه ينابيع | | |
| | فى الأرض ... ... ... ... ... ... ... ... | الزمر | ٣٩ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| نَتَقْنَا | وإذ نتقنا الجبل فوقهم كأنه ظلة ... ... ... ... | الأعراف | ٧ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| انْتَثَرَتْ | إذا السماء انفطرت . وإذا الكواكب انتثرت | الانفطار | ٨٢ |
| مَنْثُورًا | وقدمنا إلى ما عملوا من عمل فجعلناه هباء منثورا | الفرقان | ٢٥ |
| (٢) | إذا رأيتهم حسبتهم لؤلؤا منثورا ... ... ... ... | الإنسان | ٧٦ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| النَّجْدَيْنِ | وهديناه النجدين ... ... ... ... ... ... ... | البلد | ٩٠ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| نَجَسٌ | إنما المشركون نجس فلا يقربوا المسجد الحرام بعد | | |
| | عامهم هذا ... ... ... ... ... ... ... ... | التوبة | ٩ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| الإِنْجِيلَ | وأنزل التوراة والإنجيل . من قبل هدى للناس | آل عمران | ٣ |
| (١٢) | ويعلمه الكتاب والحكمة والتوراة والإنجيل ... ... | » | ٣ |
| | وما أنزلت التوراة والإنجيل إلا من بعده ... ... | » | ٣ |
| | وآتيناه الإنجيل فيه هدى ونور ... ... ... ... | المائدة | ٥ |
| | وليحكم أهل الإنجيل بما أنزل الله فيه ... ... ... | » | ٥ |
| | ولو أنهم أقاموا التوراة والإنجيل وما أنزل إليهم من | | |
| | ربهم لأكلوا من فوقهم ومن تحت أرجلهم ... | » | ٥ |
| | لستم على شىء حتى تقيموا التوراة والإنجيل ... ... | » | ٥ |
| | وإذ علمتك الكتاب والحكمة والتوراة والإنجيل ... | » | ٥ |
| | الذين يتبعون الرسول النبى الأمى الذى يجدونه | | |
| | مكتوبا عندهم فى التوراة والإنجيل ... ... ... | الأعراف | ٧ |
| | وعدا عليه حقا فى التوراة والإنجيل والقرآن ... ... | التوبة | ٩ |
| | ومثلهم فى الإنجيل كزرع أخرج شطأه فآزره فاستغلظ | الفتح | ٤٨ |
| | وقفينا بعيسى ابن مريم وآتيناه الإنجيل ... ... ... | الحديد | ٥٧ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| النَّجْمِ | وعلامات وبالنجم هم يهتدون... ... ... ... ... | النحل | ١٦ |
| (٤) | والنجم إذا هوى . ما ضل صاحبكم وما غوى ... ... | النجم | ٥٣ |
| | والنجم والشجر يسجدان... ... ... ... ... ... | الرحمن | ٥٥ |
| | وما أدراك ما الطارق . النجم الثاقب... ... ... ... | الطارق | ٨٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| النُّجُومِ | : وهو الذى جعل لكم النجوم لتهتدوا بها فى ظلمات | | | |
| (٩) | البر والبحر ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩٧ | ك الأنعام | ٦ |
| | والشمس والقمر والنجوم مسخرات بأمره ... ... | ٥٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | والنجوم مسخرات بأمره ... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك النحل | ١٦ |
| | والشمس والقمر والنجوم والجبال والشجر والدواب | | | |
| | وكثير من الناس ... ... ... ... ... ... ... | ١٨ | م الحج | ٢٢ |
| | فنظر نظرة فى النجوم . فقال إنى سقيم... ... ... ... | ٨٨ | ك الصافات | ٣٧ |
| | ومن الليل فسبحه وإدبار النجوم... ... ... ... ... | ٤٩ | ك الطور | ٥٢ |
| | فلا أقسم بمواقع النجوم... ... ... ... ... ... | ٧٥ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | فإذا النجوم طمست . وإذا السماء فرجت ... ... | ٨ | ك المرسلات | ٧٧ |
| | وإذا النجوم انكدرت . وإذا الجبال سيرت ... | ٣ | ك التكوير | ٨١ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| نَجَا | : وقال الذى نجا منهما وادكر بعد أمة أنا أنبئكم بتأويله | ٤٥ | ك يوسف | ١٢ |
| نَجَوْتَ | : قال لا تخف نجوت من القوم الظالمين... ... ... | ٢٥ | ك القصص | ٢٨ |
| نَجَّاكُمْ | : فلما نجاكم إلى البر أعرضتم وكان الإنسان كفورا | ٦٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| نَجَّانَا | : قد افترينا على الله كذبا إن عدنا فى ملتكم بعد إذ نجانا الله منها | ٨٩ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | فقل الحمد لله الذى نجانا من القوم الظالمين ... ... | ٢٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| نَجَّاهُمْ | : فلما نجاهم إلى البر إذا هم يشركون ... ... ... ... | ٦٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| (٢) | دعوا الله مخلصين له الدين فلما نجاهم إلى البر فمنهم مقتصد | ٣٢ | ك لقمان | ٣١ |
| نَجَّيْنَا | : ولما جاء أمرنا نجينا هودا والذين آمنوا معه ... | ٥٨ | ك هود | ١١ |
| (٥) | فلما جاء أمرنا نجينا صالحا والذين آمنوا معه ... ... | ٦٦ | ك « | ١١ |
| | ولما جاء أمرنا نجينا شعيبا والذين آمنوا معه ... ... | ٩٤ | ك « | ١١ |
| | ونجينا الذين آمنوا وكانوا يتقون... ... ... ... ... | ١٨ | ك فصلت | ٤١ |
| | ولقد نجينا بنى إسرائيل من العذاب المهين ... ... | ٣٠ | ك الدخان | ٤٤ |
| نَجَّيْنَاكَ | : وقتلت نفسا فنجيناك من الغم وفتناك فتونا ... ... | ٤٠ | ك طه | ٢٠ |
| نَجَّيْنَاكُمْ | : وإذ نجيناكم من آل فرعون يسومونكم سوء العذاب | ٤٩ | م البقرة | ٢ |
| نَجَّيْنَاهُ | : فكذبوه فنجيناه ومن معه فى الفلك... ... ... ... | ٧٣ | ك يونس | ١٠ |
| (٨) | ونجيناه ولوطا إلى الأرض التى باركنا فيها للعالمين ... | ٧١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ونجيناه من القرية التى كانت تعمل الخبائث ... ... | ٧٤ | ك « | ٢١ |
| | فاستجبنا له فنجيناه وأهله من الكرب العظيم ... ... | ٧٦ | ك « | ٢١ |
| | فاستجبنا له ونجيناه من الغم وكذلك ننجى المؤمنين ... | ٨٨ | ك « | ٢١ |
| | فنجيناه وأهله أجمعين ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | ونجيناه وأهله من الكرب العظيم... ... ... ... .. | ٧٦ | ك الصافات | ٣٧ |
| | وإن لوطا لمن المرسلين . إذ نجيناه وأهله أجمعين | ١٣٤ | ك « | ٣٧ |
| نَجَّيْنَاهُمْ | : ونجيناهم من عذاب غليظ ... ... ... ... ... | ٥٨ | ك هود | ١١ |
| (٢) | إنا أرسلنا عليهم حاصبا إلا آل لوط نجيناهم بسحر | ٣٤ | ك القمر | ٥٤ |
| نَجَّيْنَاهُمَا | : ونجيناهما وقومهما من الكرب العظيم ... ... | ١١٥ | ك الصافات | ٣٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| نُنَجِّى | : ثم ننجى رسلنا والذين آمنوا ... ... ... ... ... | ١٠٣ | ك يونس | ١٠ |
| (٢) | ثم ننجى الذين اتقوا ونذر الظالمين فيها جثيا ... ... | ٧٢ | ك مريم | ١٩ |
| نُنَجِّيكَ | : فاليوم ننجيك ببدنك لتكون لمن خلفك آية... ... | ٩٢ | ك يونس | ١٠ |
| لَنُنَجِّيَنَّهُ | : لننجينه وأهله إلا امرأته كانت من الغابرين ... | ٣٢ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| يُنَجِّى | : وينجى الله الذين اتقوا بمفازتهم لا يمسهم السوء | ٦١ | ك الزمر | ٣٩ |
| يُنَجِّيكُمْ | : قل من ينجيكم من ظلمات البر والبحر تدعونه تضرعا وخفية | ٦٣ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | قل الله ينجيكم منها ومن كل كرب ثم أنتم تشركون ... | ٦٤ | ك « | ٦ |
| نَجِّنَا | : ونجنا برحمتك من القوم الكافرين ... ... ... ... | ٨٦ | ك يونس | ١٠ |
| نَجِّنِى | : فافتح بينى وبينهم فتحا ونجنى ومن معى من المؤمنين | ١١٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| (٥) | رب نجنى وأهلى مما يعملون ... ... ... ... ... | ١٦٩ | ك « | ٢٦ |
| | فخرج منها خائفا يترقب قال رب نجنى من القوم الظالمين | ٢١ | ك القصص | ٢٨ |
| | رب ابن لى عندك بيتا فى الجنة ونجنى من فرعون وعمله | ١١ | م التحريم | ٦٦ |
| | ونجنى من القوم الظالمين... ... ... ... ... ... | ١١ | م « | ٦٦ |
| نُجِّىَ | : جاءهم نصرنا فنجى من نشاء ولا يرد بأسنا عن القوم المجرمين | ١١٠ | ك يوسف | ١٢ |
| أَنْجَانَا | : لئن أنجانا من هذه لنكونن من الشاكرين ... ... | ٦٣ | ك الأنعام | ٦ |
| أَنْجَاكُمْ | : اذكروا نعمة الله عليكم إذ أنجاكم من آل فرعون | ٦ | ك إبراهيم | ١٤ |
| فَأَنْجَاهُ | : فما كان جواب قومه إلا أن قالوا اقتلوه أو حرقوه | | | |
| | فأنجاه الله من النار ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| أَنْجَاهُمْ | : فلما أنجاهم إذا هم يبغون فى الأرض بغير الحق | ٢٣ | ك يونس | ١٠ |
| أَنْجَيْتَنَا | : لئن أنجيتنا من هذه لنكونن من الشاكرين ... | ٢٢ | ك « | ١٠ |
| أَنْجَيْنَا | : فلما نسوا ما ذكروا به أنجينا الذين ينهون عن السوء | ١٦٥ | م الأعراف | ٧ |
| (٤) | فلولا كان من القرون من قبلكم أولوا بقية ينهون | | | |
| | عن الفساد فى الأرض إلا قليلا ممن أنجينا منهم | ١١٦ | ك هود | ١١ |
| | وأنجينا موسى ومن معه أجمعين ... ... ... ... ... | ٦٥ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وأنجينا الذين آمنوا وكانوا يتقون ... ... ... ... | ٥٣ | ك النمل | ٢٧ |
| أَنْجَيْنَاكُمْ | : وإذ فرقنا بكم البحر فأنجيناكم وأغرقنا آل فرعون | ٥٠ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | وإذ أنجيناكم من آل فرعون يسومونكم سوء العذاب | ١٤١ | ك الأعراف | ٧ |
| | يا بنى إسرائيل قد أنجيناكم من عدوكم ... ... ... | ٨٠ | ك طه | ٢٠ |
| أَنْجَيْنَاهُ | : فكذبوه فأنجيناه والذين معه فى الفلك ... ... | ٦٤ | ك الأعراف | ٧ |
| (٦) | فأنجيناه والذين معه برحمة منا ... ... ... ... ... | ٧٢ | ك « | ٧ |
| | فأنجيناه وأهله إلا امرأته كانت من الغابرين ... ... | ٨٣ | ك « | ٧ |
| | فأنجيناه ومن معه فى الفلك المشحون ... ... ... | ١١٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فأنجيناه وأهله إلا امرأته قدرناها من الغابرين ... | ٥٧ | ك النمل | ٢٧ |
| | فأنجيناه وأصحاب السفينة وجعلناها آية للعالمين ... | ١٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| أَنْجَيْنَاهُمْ | : ثم صدقناهم الوعد فأنجيناهم ومن نشاء... ... | ٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| تُنْجِيكُمْ | : هل أدلكم على تجارة تنجيكم من عذاب أليم... ... | ١٠ | م الصف | ٦١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| نُنْجِ | : ثم ننجي رسلنا والذين آمنوا كذلك حقا علينا ننج المؤمنين | ١٠٣ | ك يونس | ١٠ |
| نُنْجِي | : فاستجبنا له ونجيناه من الغم وكذلك ننجي المؤمنين | ٨٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| يُنْجِيهِ | : ومن في الأرض جميعا ثم ينجيه ... ... ... ... ... | ١٤ | ك المعارج | ٧٠ |
| نَاجَيْتُمُ | : إذا ناجيتم الرسول فقدموا بين يدي نجواكم صدقة | ١٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| تَنَاجَيْتُمْ | : يأيها الذين آمنوا إذا تناجيتم... .. ... ... | ٩ | م « | ٥٨ |
| تَتَنَاجَوْا | : فلا تتناجوا بالإثم والعدوان ومعصية الرسول | ٩ | م « | ٥٨ |
| يَتَنَاجَوْنَ | : ويتناجون بالإثم والعدوان ومعصية الرسول | ٨ | م « | ٥٨ |
| تَنَاجَوْا | : وتناجوا بالبر والتقوى واتقوا الله الذي إليه تحشرون | ٩ | م « | ٥٨ |
| نَاجٍ | : وقال للذي ظن أنه ناج منهما اذكرني عند ربك... | ٤٢ | ك يوسف | ١٢ |
| النَّجَاةِ | : ويا قوم ما لي أدعوكم إلى النجاة وتدعونني إلى النار | ٤١ | ك غافر | ٤٠ |
| نَجِيًّا | : فلما استيئسوا منه خلصوا نجيا... ... ... ... ... | ٨٠ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | وناديناه من جانب الطور الأيمن وقربناه نجيا ... | ٥٢ | ك مريم | ١٩ |
| النَّجْوَى | : نحن أعلم بما يستمعون به إذ يستمعون إليك | | | |
| (٦) | وإذ هم نجوى... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فتنازعوا أمرهم بينهم وأسروا النجوى ... ... ... | ٦٢ | ك طه | ٢٠ |
| | وأسروا النجوى الذين ظلموا هل هذا إلا بشر مثلكم | ٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ما يكون من نجوى ثلاثة إلا هو رابعهم... ... ... | ٧ | م المجادلة | ٥٨ |
| | ألم تر إلى الذين نهوا عن النجوى ثم يعودون لما نهوا عنه | ٨ | م « | ٥٨ |
| | إنما النجوى من الشيطان ليحزن الذين آمنوا ... | ١٠ | م « | ٥٨ |
| نَجْوَاكُمْ | : إذا ناجيتم الرسول فقدموا بين يدي نجواكم صدقة | ١٢ | م « | ٥٨ |
| (٢) | أأشفقتم أن تقدموا بين يدي نجواكم صدقات... ... | ١٣ | م « | ٥٨ |
| نَجْوَاهُمْ | : لا خير في كثير من نجواهم إلا من أمر بصدقة | | | |
| (٣) | أو معروف أو إصلاح بين الناس... ... ... ... | ١١٤ | م النساء | ٤ |
| | ألم يعلموا أن الله يعلم سرهم ونجواهم وأن الله علام الغيوب | ٧٨ | م التوبة | ٩ |
| | أم يحسبون أنا لا نسمع سرهم ونجواهم ... ... ... | ٨٠ | ك الزخرف | ٤٣ |
| مُنَجُّوكَ | : إنا منجوك وأهلك إلا امرأتك كانت من الغابرين | ٣٣ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| مُنَجُّوهُمْ | : إلا آل لوط إنا لمنجوهم أجمعين ... ... ... | ٥٩ | ك الحجر | ١٥ |
| نَجْوَهُ | : فمنهم من قضى نحبه ومنهم من ينتظر... ... ... ... | ٢٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| تَنْحِتُونَ | : تتخذون من سهولها قصورا وتنحتون الجبال بيوتا | ٧٤ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | وتنحتون من الجبال بيوتا فارهين... ... ... ... | ١٤٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | قال أتعبدون ما تنحتون... ... ... ... ... ... | ٩٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| يَنْحِتُونَ | : وكانوا ينحتون من الجبال بيوتا آمنين ... ... | ٨٢ | ك الحجر | ١٥ |
| أَنْحَرْ | : إنا أعطيناك الكوثر . فصل لربك وانحر... ... ... | ٢ | ك الكوثر | ١٠٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| نَحْسٍ | : إنا أرسلنا عليهم ريحا صرصرا في يوم نحس مستمر | ١٩ | ك القمر | ٥٤ |
| نَحِسَاتٍ | : فأرسلنا عليهم ريحا صرصرا في أيام نحسات ... | ١٦ | ك فصلت | ٤١ |
| نُحَاسٌ | : يرسل عليكما شواظ من نار ونحاس فلا تنتصران | ٣٥ | م الرحمن | ٥٥ |
| النَّحْلِ | : وأوحى ربك إلى النحل أن اتخذي من الجبال بيوتا | ٦٨ | ك النحل | ١٦ |
| نِحْلَةً | : وآتوا النساء صدقاتهن نحلة ... ... ... ... ... | ٤ | م النساء | ٤ |
| نَخِرَةً | : يقولون أئنا لمردودون في الحافرة . أئذا كنا عظاما نخرة | ١١ | ك النازعات | ٧٩ |
| النَّخْلِ | : ومن النخل من طلعها قنوان دانية ... ... ... | ٩٩ | ك الأنعام | ٦ |
| (١٠) | وهو الذي أنشأ جنات معروشات وغير معروشات | | | |
| | والنخل والزرع مختلفا أكله... ... ... ... ... | ١٤١ | م « | ٦ |
| | جعلنا لأحدهما جنتين من أعناب وحففناهما بنخل | ٣٢ | ك الكهف | ١٨ |
| | ولأصلبنكم في جذوع النخل ... ... ... ... ... | ٧١ | ك طه | ٢٠ |
| | وزروع ونخل طلعها هضيم ... ... ... ... ... | ١٤٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | والنخل باسقات لها طلع نضيد ... ... ... ... ... | ١٠ | ك ق | ٥٠ |
| | تنزع الناس كأنهم أعجاز نخل منقعر ... ... ... ... | ٢٠ | ك القمر | ٥٤ |
| | فيها فاكهة والنخل ذات الأكمام... ... ... ... ... | ١١ | م الرحمن | ٥٥ |
| | فيهما فاكهة ونخل ورمان ... ... ... ... ... ... | ٦٨ | م « | ٥٥ |
| | فترى القوم فيها صرعى كأنهم أعجاز نخل خاوية ... | ٧ | ك الحاقة | ٦٩ |
| نَخْلًا | : فأنبتنا فيها حبا . وعنبا وقضبا . وزيتونا ونخلا ... | ٢٩ | ك عبس | ٨٠ |
| النَّخْلَةِ | : فأجاءها المخاض إلى جذع النخلة ... ... ... ... | ٢٣ | ك مريم | ١٩ |
| (٢) | وهزي إليك بجذع النخلة تساقط عليك رطبا جنيا ... | ٢٥ | ك « | ١٩ |
| نَخِيلٍ | : أيود أحدكم أن تكون له جنة من نخيل وأعناب ... | ٢٦٦ | م البقرة | ٢ |
| (٧) | ونخيل صنوان وغير صنوان يسقى بماء واحد ... ... | ٤ | م الرعد | ١٣ |
| | ينبت لكم به الزرع والزيتون والنخيل والأعناب ... | ١١ | ك النحل | ١٦ |
| | ومن ثمرات النخيل والأعناب تتخذون منه سكرا ورزقا حسنا | ٦٧ | ك « | ١٦ |
| | أو تكون لك جنة من نخيل وعنب ... ... ... ... | ٩١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فأنشأنا لكم به جنات من نخيل وأعناب ... ... ... | ١٩ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وجعلنا فيها جنات من نخيل وأعناب وفجرنا فيها من العيون | ٣٤ | ك يس | ٣٦ |
| أَنْدَادًا | : فلا تجعلوا لله أندادا وأنتم تعلمون ... ... ... | ٢٢ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | ومن الناس من يتخذ من دون الله أندادا يحبونهم كحب الله | ١٦٥ | م « | ٢ |
| | وجعلوا لله أندادا ليضلوا عن سبيله ... ... ... ... | ٣٠ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | إذ تأمروننا أن نكفر بالله ونجعل له أندادا ... ... | ٣٣ | ك سبأ | ٣٤ |
| | وجعل لله أندادا ليضل عن سبيله ... ... ... ... | ٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| | قل أئنكم لتكفرون بالذي خلق الأرض في يومين وتجعلون له أندادا... ... ... ... ... ... | ٩ | ك فصلت | ٤١ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | |
| نَادِمِينَ | : أعجزت أن أكون مثل هذا الغراب فأوارى سوءة | | |
| (٥) | أخى فأصبح من النادمين ... ... ... ... ... | ٥ م المائدة | ٣١ |
| | فيصبحوا على ما أسروا فى أنفسهم نادمين... ... ... | ٥ م « | ٥٢ |
| | قال عما قليل ليصبحن نادمين ... ... ... ... ... | ٢٣ ك المؤمنون | ٤٠ |
| | فعقروها فأصبحوا نادمين ... ... ... ... ... ... | ٢٦ ك الشعراء | ١٥٧ |
| | أن تصيبوا قوما بجهالة فتصبحوا على ما فعلتم نادمين | ٤٩ م الحجرات | ٦ |
| النَّدَامَةَ | : وأسروا الندامة لما رأوا العذاب وقضى بينهم بالقسط | ١٠ ك يونس | ٥٤ |
| (٢) | وأسروا الندامة لما رأوا العذاب وجعلنا الأغلال | | |
| | فى أعناق الذين كفروا ... ... ... ... ... ... | ٣٤ ك سبأ | ٣٣ |
| | ✦✦✦ | | |
| نَادَى | : ونادى أصحاب الجنة أصحاب النار أن قد وجدنا | | |
| (١٥) | ما وعدنا ربنا حقا ... ... ... ... ... ... ... | ٧ ك الأعراف | ٤٤ |
| | ونادى أصحاب الأعراف رجالا يعرفونهم بسيماهم | ٧ ك « | ٤٨ |
| | ونادى أصحاب النار أصحاب الجنة أن أفيضوا علينا | | |
| | من الماء أو مما رزقكم الله... ... ... ... ... | ٧ ك « | ٥٠ |
| | ونادى نوح ابنه وكان فى معزل يا بنى اركب معنا ... | ١١ ك هود | ٤٢ |
| | ونادى نوح ربه فقال رب إن ابنى من أهلى ... ... | ١١ ك « | ٤٥ |
| | ذكر رحمة ربك عبده زكريا . إذ نادى ربه نداء خفيا | ١٩ ك مريم | ٣ |
| | ونوحا إذ نادى من قبل فاستجبنا له فنجيناه وأهله | ٢١ ك الأنبياء | ٧٦ |
| | وأيوب إذ نادى ربه أنى مسنى الضر وأنت أرحم الراحمين | ٢١ ك « | ٨٣ |
| | فنادى فى الظلمات أن لا إله إلا أنت سبحانك... ... | ٢١ ك « | ٨٧ |
| | وزكريا إذ نادى ربه رب لا تذرنى فردا وأنت خير | | |
| | الوارثين ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢١ ك « | ٨٩ |
| | وإذ نادى ربك موسى أن ائت القوم الظالمين ... | ٢٦ ك الشعراء | ١٠ |
| | واذكر عبدنا أيوب إذ نادى ربه ... ... ... ... | ٣٨ ك ص | ٤١ |
| | ونادى فرعون فى قومه قال يا قوم أليس لى ملك مصر | ٤٣ ك الزخرف | ٥١ |
| | ولا تكن كصاحب الحوت إذ نادى وهو مكظوم ... | ٦٨ م القلم | ٤٨ |
| | فحشر فنادى . فقال أنا ربكم الأعلى... ... ... ... | ٧٩ ك النازعات | ٢٣ |
| نَادَانَا | : ولقد نادانا نوح فلنعم المجيبون ... ... ... ... | ٣٧ ك الصافات | ٧٥ |
| نَادَاهُ | : هل أتاك حديث موسى . إذ ناداه ربه بالواد | | |
| | المقدس طوى ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٩ ك النازعات | ١٦ |
| نَادَاهَا | : فناداها من تحتها ألا تحزنى قد جعل ربك تحتك سريا | ١٩ ك مريم | ٢٤ |
| نَادَاهُمَا | : وناداهما ربهما ألم أنهكما عن تلكما الشجرة ... | ٧ ك الأعراف | ٢٢ |
| فَنَادَتْهُ | : فنادته الملائكة وهو قائم يصلى فى المحراب ... ... | ٣ م آل عمران | ٣٩ |
| نَادَوْا | : ونادوا أصحاب الجنة أن سلام عليكم ... ... ... | ٧ ك الأعراف | ٤٦ |
| (٤) | كم أهلكنا من قبلهم من قرن فنادوا ولات حين مناص | ٣٨ ك ص | ٣ |
| | ونادوا يا مالك ليقض علينا ربك قال إنكم ماكثون | ٤٣ ك الزخرف | ٧٧ |
| | فنادوا صاحبهم فتعاطى فعقر ... ... ... ... ... | ٥٤ ك القمر | ٢٩ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| نَادَيْتُمْ | : وإذا ناديتم إلى الصلاة اتخذوها هزوا ولعبا ... | ٥ م المائدة | ٥٨ |
| نَادَيْنَا | : وما كنت بجانب الطور إذ نادينا ولكن رحمة من ربك | ٢٨ ك القصص | ٤٦ |
| نَادَيْنَاهُ | : وناديناه من جانب الطور الأيمن وقربناه نجيا | ١٩ ك مريم | ٥٢ |
| (٢) | وناديناه أن يا إبراهيم . قد صدقت الرؤيا ... ... | ٣٧ ك الصافات | ١٠٤ |
| يُنَادُونَكَ | : إن الذين ينادونك من وراء الحجرات أكثرهم | | |
| | لا يعقلون ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٩ م الحجرات | ٤ |
| يُنَادُونَهُمْ | : ينادونهم ألم نكن معكم قالوا بلى ... ... ... | ٥٧ م الحديد | ١٤ |
| يُنَادِ(ى) | : واستمع يوم ينادِ المناد من مكان قريب ... ... | ٥٠ ك ق | ٤١ |
| يُنَادِى | : ربنا إننا سمعنا مناديا ينادى للإيمان أن آمنوا | | |
| | بربكم فآمنا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣ م آل عمران | ١٩٣ |
| يُنَادِيهِمْ | : ويوم يناديهم فيقول أين شركائى الذين كنتم تزعمون | ٢٨ ك القصص | ٦٢ |
| (٤) | ويوم يناديهم فيقول ماذا أجبتم المرسلين... ... ... | ٢٨ ك « | ٦٥ |
| | ويوم يناديهم فيقول أين شركائى الذين كنتم تزعمون | ٢٨ ك « | ٧٤ |
| | ويوم يناديهم أين شركائى قالوا آذناك ما منا من شهيد | ٤١ ك فصلت | ٤٧ |
| نَادُوا | : ويوم يقول نادوا شركائى الذين زعمتم ... ... ... | ١٨ ك الكهف | ٥٢ |
| نُودُوا | : ونودوا أن تلكم الجنة أورثتموها بما كنتم تعملون | ٧ ك الأعراف | ٤٣ |
| نُودِىَ | : فلما أتاها نودى يا موسى ... ... ... ... ... ... | ٢٠ ك طه | ١١ |
| (٤) | فلما جاءها نودى أن بورك من فى النار ومن حولها | ٢٧ ك النمل | ٨ |
| | فلما أتاها نودى من شاطئ الواد الأيمن فى البقعة المباركة | ٢٨ ك القصص | ٣٠ |
| | إذا نودى للصلاة من يوم الجمعة فاسعوا إلى ذكر الله | ٦٢ م الجمعة | ٩ |
| يُنَادَوْنَ | : ينادون لمقت الله أكبر من مقتكم أنفسكم ... | ٤٠ ك غافر | ١٠ |
| (٢) | أولئك ينادون من مكان بعيد ... ... ... ... ... | ٤١ ك فصلت | ٤٤ |
| فَتَنَادَوْا | : فتنادوا مصبحين . أن اغدوا على حرثكم إن كنتم | | |
| | صارمين ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦٨ م القلم | ٢١ |
| نَادِيَكُمُ | : وتأتون فى ناديكم المنكر ... ... ... ... ... | ٢٩ ك العنكبوت | ٢٩ |
| نَادِيَهُ | : فليدع ناديه . سندع الزبانية ... ... ... ... | ٩٦ ك العلق | ١٧ |
| نِدَاءً | : ومثل الذين كفروا كمثل الذى ينعق بما لا يسمع إلا | | |
| (٢) | دعاء ونداء... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢ م البقرة | ١٧١ |
| | ذكر رحمة ربك عبده زكريا . إذ نادى ربه نداء خفيا | ١٩ ك مريم | ٣ |
| نَدِيًّا | : أى الفريقين خير مقاما وأحسن نديا ... ... ... | ١٩ ك « | ٧٣ |
| الْمُنَادِ(ى) | : واستمع يوم ينادِ المناد من مكان قريب ... | ٥٠ ك ق | ٤١ |
| مُنَادِيًا | : ربنا إننا سمعنا مناديا ينادى للإيمان ... ... ... | ٣ م آل عمران | ١٩٣ |
| التَّنَادِ(ى) | : ويا قوم إنى أخاف عليكم يوم التناد ... ... | ٤٠ ك غافر | ٣٢ |
| | ✦✦✦ | | |
| نَذَرْتُ | : رب إنى نذرت لك ما فى بطنى محررا ... ... ... | ٣ م آل عمران | ٣٥ |
| (٢) | فقولى إنى نذرت للرحمن صوما فلن أكلم اليوم إنسيا | ١٩ ك مريم | ٢٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| نَذَرْتُمْ | : وما أنفقتم من نفقة أو نذرتم من نذر فان الله يعلمه | ٢٧٠ | م البقـرة | ٢ |
| أَنْذَرَ | : وأذكر أخا عاد إذ أنذر قومه بالأحقـاف ... ... | ٢١ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| أَنْذَرْتُكُمْ | : فإن أعرضوا فقل أنذرتكم صاعقة مثل صاعقة | | | |
| (٢) | عاد وثمود ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك فصلت | ٤١ |
| | فأنذرتكم نارا تلظى ... ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك الليـل | ٩٢ |
| أَنْذَرْتَهُمْ | : سواء عليهم أأنذرتهم أم لم تنذرهم لا يؤمنون ... | ٦ | م البقـرة | ٢ |
| (٢) | وسواء عليهم أأنذرتهم أم لم تنذرهم لا يؤمنون ... | ١٠ | ك يس | ٣٦ |
| أَنْذَرْنَاكُمْ | : إنا أنذرناكم عذابا قريبا يوم ينظر المرء ما قدمت يداه | ٤٠ | ك النبـأ | ٧٨ |
| أَنْذَرَهُمْ | : ولقد أنذرهم بطشتنا فتماروا بالنـذر ... ... ... | ٣٦ | ك القمـر | ٥٤ |
| أُنْذِرَكُمْ | : وأوحى إلىّ هذا القرآن لأنذركم به ومن بلغ ... | ١٩ | ك الأنعـام | ٦ |
| (٢) | قل إنما أنذركم بالوحى ولا يسمع الصم الدعاء إذا ما ينذرون | ٤٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| تُنْذِرُ | : وهذا كتاب أنزلناه مبارك مصدق الذى بين يديه | | | |
| (١٠) | ولتنذر أم القرى ومن حولها ... ... ... ... | ٩٢ | ك الأنعـام | ٦ |
| | كتاب أنزل إليك فلا يكن فى صدرك حرج منه لتنذر به | ٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | فإنما يسرناه بلسانك لتبشر به المتقين وتنذر به قوما لدا | ٩٧ | ك مـريم | ١٩ |
| | ولكن رحمة من ربك لتنذر قوما ما أتاهم من نذير من قبلك | ٤٦ | ك القصص | ٢٨ |
| | بل هو الحق من ربك لتنذر قوما ما أتاهم من نذير من قبلك | ٣ | ك السـجدة | ٣٢ |
| | إنما تنذر الذين يخشون ربهم بالغيب وأقاموا الصلاة | ١٨ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | لتنذر قوما ما أنذر آباؤهم فهم غافلون ... ... ... | ٦ | ك يس | ٣٦ |
| | إنما تنذر من اتبع الذكر وخشى الرحمن بالغيب ... | ١١ | ك « | ٣٦ |
| | وكذلك أوحينا إليك قرآنا عربيا لتنذر أم القرى ومن حولها | ٧ | ك الشورى | ٤٢ |
| | وتنذر يوم الجمع لا ريب فيه ... ... ... ... | ٧ | ك « | ٤٢ |
| تُنْذِرْهُمْ | : سواء عليهم أأنذرتهم أم لم تنذرهم لا يؤمنون ... | ٦ | م البقـرة | ٢ |
| (٢) | وسواء عليهم أأنذرتهم أم لم تنذرهم لا يؤمنون ... ... | ١٠ | ك يس | ٣٦ |
| يُنْذِرَ | : قيما لينذر بأسا شديدا من لدنه ويبشر المؤمنين ... ... | ٢ | ك الكهف | ١٨ |
| (٥) | وينذر الذين قالوا اتخذ الله ولدا ... ... ... | ٤ | ك « | ١٨ |
| | لينذر من كان حيا ويحق القول على الكافرين ... ... | ٧٠ | ك يس | ٣٦ |
| | يلقى الروح من أمره على من يشاء من عباده لينذر يوم التلاق | ١٥ | ك غافـر | ٤٠ |
| | وهـذا كتاب مصدق لسانا عربيا لينذر الذين ظلموا | ١٢ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| لِيُنْذِرَكُمْ | : أو عجبتم أن جاءكم ذكر من ربكم على رجل منكم لينذركم | ٦٣ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | أو عجبتم أن جاءكم ذكر من ربكم على رجل منكم لينذركم | ٦٩ | ك « | ٧ |
| لِيُنْذِرُوا | : فلولا نفـر من كل فرقة منهم طائفـة ليتفقهوا | | | |
| | فى الدين ولينذروا قومهم إذا رجعوا إليهم ... | ١٢٢ | م التـوبة | ٩ |
| يُنْذِرُونَكُمْ | : يقصون عليكم آياتى وينذرونكم لقاء يومكم هذا | ١٣٠ | ك الأنعـام | ٦ |
| (٢) | يتلون عليكم آيات ربكم وينذرونكم لقاء يومكم هذا | ٧١ | ك الزمـر | ٣٩ |
| أَنْذِرْ | : وأنذر به الذين يخافون أن يحشروا إلى ربهم ... ... | ٥١ | ك الأنعـام | ٦ |
| (٦) | أكان للناس عجبا أن أوحينا إلى رجل منهم أن أنذر الناس | ٢ | ك يـونس | ١٠ |
| أَنْذِرْ | : وأنذر الناس يوم يأتيهم العذاب ... ... ... ... | ٤٤ | ك إبراهـيم | ١٤ |
| | وأنذر عشيرتك الأقربين ... ... ... ... ... ... | ٢١٤ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| | أن أنذر قومك من قبل أن يأتيهم عذاب أليم ... ... | ١ | ك نـوح | ٧١ |
| | يأيها المدثر . قم فأنذر ... ... ... ... ... ... | ٢ | ك المـدثر | ٧٤ |
| أَنْذِرْهُمْ | : وأنذرهم يوم الحسرة إذ قضى الأمر ... ... ... | ٣٩ | ك مـريم | ١٩ |
| (٢) | وأنذرهم يوم الآزفة إذ القلوب لدى الحناجر كاظمين | ١٨ | ك غافـر | ٤٠ |
| أَنْذِرُوا | : أن أنذروا أنه لا إله إلا أنا فاتقون ... ... ... | ٢ | ك النحـل | ١٦ |
| أُنْذِرَ | : لتنذر قوما ما أنذر آباؤهم فهم غافلون ... ... ... | ٦ | ك يس | ٣٦ |
| أُنْذِرُوا | : واتخذوا آياتى وما أنذروا هزوا ... ... ... ... | ٥٦ | ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | والذين كفروا عما أنذروا معرضون ... ... ... ... | ٣ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| لِيُنْذَرُوا | : هذا بلاغ للناس ولينذروا به ... ... ... ... | ٥٢ | ك إبراهـيم | ١٤ |
| يُنْذَرُونَ | : ولا يسمع الصم الدعاء إذا ما ينذرون ... ... | ٤٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| النَّذْرِ | : وما أنفقتم من نفقة أو نذرتم من نذر فإن الله يعلمه | ٢٧٠ | م البقـرة | ٢ |
| (٢) | يوفون بالنذر ويخافون يوما كان شره مستطيرا ... | ٧ | م الإنسان | ٧٦ |
| نُذْرًا | : فالملقيات ذكرا . عذرا أو نذرا ... ... ... ... | ٦ | ك المرسلات | ٧٧ |
| نُذُورَهُمْ | : ثم ليقضوا تفثهم وليوفوا نذورهم ... ... ... | ٢٩ | م الحـج | ٢٢ |
| نَذِيرٌ | : قد جاءكم رسولنا يبين لكم على فترة من الرسـل أن | | | |
| (٣١) | تقولوا ما جاءنا من بشـير ولا نذير ... ... ... | ١٩ | م المائدة | ٥ |
| | فقد جاءكم بشير ونذير ... ... ... ... ... ... | ١٩ | م « | ٥ |
| | أو لم يتفكروا ما بصاحبهم من جنة إن هو إلا نذير مبين | ١٨٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | إن أنا إلا نذير وبشير لقوم يؤمنون ... ... ... | ١٨٨ | ك « | ٧ |
| | ألا تعبدوا إلا الله إننى لكم منه نذير وبشير ... ... | ٢ | ك هـود | ١١ |
| | إنما أنت نذير والله على كل شىء وكيل ... ... ... | ١٢ | م « | ١١ |
| | ولقد أرسلنا نوحا إلى قومه إنى لكم نذير مبين ... ... | ٢٥ | ك « | ١١ |
| | واخفض جناحك للمؤمنين . وقل إنى أنا النذير المبين | ٨٩ | ك الحجـر | ١٥ |
| | قل يأيها الناس إنما أنا لكم نذير مبين ... ... ... | ٤٩ | م الحـج | ٢٢ |
| | وما أنا بطارد المؤمنين . إن أنا إلا نذير مبين ... ... | ١١٥ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| | لتنذر قوما ما أتاهم من نذير من قبلك لعلهم يتذكرون | ٤٦ | ك القصص | ٢٨ |
| | قل إنما الآيات عند الله وإنما أنا نذير مبين ... ... | ٥٠ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | لتنذر قوما ما أتاهم من نذير من قبلك لعلهم يهتدون | ٣ | ك السـجدة | ٣٢ |
| | وما أرسلنا فى قرية من نذير إلا قال مترفوها إنما بما | | | |
| | أرسلتم به كافرون ... ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك سـبأ | ٣٤ |
| | وما أرسلنا إليهم قبلك من نذير ... ... ... ... | ٤٤ | ك « | ٣٤ |
| | إن هو إلا نذير لكم بين يدى عذاب شـديد ... ... | ٤٦ | ك « | ٣٤ |
| | وما أنت بمسمع من فى القبور . إن أنت إلا نذير ... | ٢٣ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | وإن من أمة إلا خلا فيها نذير ... ... ... ... | ٢٤ | ك « | ٣٥ |
| | أو لم نعمركم ما يتذكر فيه من تذكر وجاءكم النذير ... | ٣٧ | ك « | ٣٥ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| نَذِيرٌ: | لئن جاءهم نذير ليكونن أهدى من إحدى الأمم ... | ٤٢ ك فاطـر | ٣٥ |
| | فلما جاءهم نذير ما زادهم إلا نفورا ... ... ... ... | ٤٢ ك « | ٣٥ |
| | إن يوحى إلىّ إلا أنما أنا نذير مبين ... ... ... ... | ٧٠ ك ص | ٣٨ |
| | وكذلك ما أرسلنا من قبلك فى قرية من نذير ... ... | ٢٣ ك الزخرف | ٤٣ |
| | إن أتبع إلا ما يوحى إلىّ وما أنا إلا نذير مبين ... | ٩ ك الأحقاف | ٤٦ |
| | ففروا إلى الله إنى لكم منه نذير مبين ... ... ... ... | ٥٠ ك الذاريات | ٥١ |
| | ولا تجعلوا مع الله إلها آخر إنى لكم منه نذير مبين ... | ٥١ ك « | ٥١ |
| | هذا نذير من النذر الأولى ... ... ... ... ... ... | ٥٦ ك النجـم | ٥٣ |
| | كلما ألقى فيها فوج سألهم خزنتها ألم يأتكم نذير ... ... | ٨ ك المـلك | ٦٧ |
| | قالوا بلى قد جاءنا نذير فكذبنا ... ... ... ... ... | ٩ ك « | ٦٧ |
| | قل إنما العلم عند الله وإنما أنا نذير مبين ... ... ... | ٢٦ ك « | ٦٧ |
| | قال يا قـوم إنى لكم نذير مبين ... ... ... ... ... | ٢ ك نـوح | ٧١ |
| نَذِيرِ(ى): | فستعلمون كيف نذير... ... ... ... ... ... ... | ١٧ ك المـلك | ٦٧ |
| نَذِيرًا: | إنا أرسلناك بالحق بشيرا ونذيرا ... ... ... ... ... | ١١٩م البقـرة | ٢ |
| (١٢) | وبالحق أنزلناه وبالحق نزل وما أرسلناك إلا مبشرا ونذيرا | ١٠٥ك الإسـراء | ١٧ |
| | تبارك الذى نزل الفرقان على عبده ليكون للعالمين نذيرا | ١ ك الفـرقان | ٢٥ |
| | لولا أنزل إليه ملك فيكون معه نذيرا ... ... ... ... | ٧ ك « | ٢٥ |
| | ولو شئنا لبعثنا فى كل قرية نذيرا ... ... ... ... ... | ٥١ ك « | ٢٥ |
| | وما أرسلناك إلا مبشرا ونذيرا ... ... ... ... ... | ٥٦ ك « | ٢٥ |
| | يأيها النبى إنا أرسلناك شاهدا ومبشرا ونذيرا ... ... | ٤٥ م الأحزاب | ٣٣ |
| | وما أرسلناك إلا كافة للناس بشيرا ونذيرا ... ... ... | ٢٨ ك سـبأ | ٣٤ |
| | إنا أرسلناك بالحق بشيرا ونذيرا ... ... ... ... ... | ٢٤ ك فاطـر | ٣٥ |
| | بشيرا ونذيرا فأعرض أكثرهم فهم لا يسمعون... ... | ٤ ك فصـلت | ٤١ |
| | إنا أرسلناك شاهدا ومبشرا ونذيرا ... ... ... ... | ٨ م الفـتح | ٤٨ |
| | إنها لإحدى الكبر . نذيرا للبشر... ... ... ... ... | ٣٦ ك المـدثر | ٧٤ |
| النُّذُرُ: | وما تغنى الآيات والنذر عن قوم لا يؤمنون ... ... | ١٠١ك يـونس | ١٠ |
| (٨) | واذكر أخا عاد إذ أنذر قومه بالأحقاف وقد خلت | | |
| | النذر من بين يديه ومن خلفه... ... ... ... ... | ٢١ ك الأحقاف | ٤٦ |
| | هذا نذير من النذر الأولى... ... ... ... ... ... | ٥٦ ك النجـم | ٥٣ |
| | حكمة بالغة فما تغن النذر ... ... ... ... ... ... | ٥ ك القمـر | ٥٤ |
| | كذبت ثمود بالنذر ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣ ك « | ٥٤ |
| | كذبت قوم لوط بالنذر... ... ... ... ... ... ... | ٣٣ ك « | ٥٤ |
| | ولقد أنذرهم بطشتنا فتماروا بالنذر ... ... ... ... | ٣٦ ك « | ٥٤ |
| | ولقد جاء آل فرعون النذر ... ... ... ... ... ... | ٤١ ك « | ٥٤ |
| نُذُرِ(ى): | ولقد تركناها آية فهل من مدكر . فكيف كان | | |
| (٦) | عذابى ونذر ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٦ ك « | ٥٤ |
| | كذبت عاد فكيف كان عذابى ونذر... ... ... ... | ١٨ ك « | ٥٤ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| نُذُرِ(ى): | تنزع الناس كأنهم أعجاز نخل منقعر . فكيف | | |
| | كان عذابى ونذر ... ... ... ... ... ... ... | ٢١ ك القمـر | ٥٤ |
| | فنادوا صاحبهم فتعاطى فعقر . فكيف كان عذابى ونذر | ٣٠ ك « | ٥٤ |
| | ولقد راودوه عن ضيفه فطمسنا أعينهم فذوقوا عذابى ونذر | ٣٧ ك « | ٥٤ |
| | ولقد صبحهم بكرة عذاب مستقر . فذوقوا عذابى ونذر | ٣٩ ك « | ٥٤ |
| مُنْذِرٌ: | إنما أنت منذر ولكل قوم هاد ... ... ... ... ... | ٧ م الرعـد | ١٣ |
| (٥) | وعجبوا أن جاءهم منذر منهم ... ... ... ... ... | ٤ ك ص | ٣٨ |
| | قل إنما أنا منذر وما من إله إلا الله الواحد القهار | ٦٥ ك « | ٣٨ |
| | بل عجبوا أن جاءهم منذر منهم ... ... ... ... ... | ٢ ك ق | ٥٠ |
| | إنما أنت منذر من يخشاها ... ... ... ... ... ... | ٤٥ ك النازعات | ٧٩ |
| مُنْذَرُونَ: | وما أهلكنا من قرية إلا لها منذرون ... ... | ٢٠٨ك الشـعراء | ٢٦ |
| مُنْذِرِينَ: | فبعث الله النبيين مبشرين ومنذرين ... ... ... | ٢١٣م البقـرة | ٢ |
| (٩) | رسلا مبشرين ومنذرين ... ... ... ... ... ... | ١٦٥م النسـاء | ٤ |
| | وما نرسل المرسلين إلا مبشرين ومنذرين ... ... | ٤٨ ك الأنعـام | ٦ |
| | وما نرسل المرسلين إلا مبشرين ومنذرين ... ... | ٥٦ ك الكهف | ١٨ |
| | نزل به الروح الأمين . على قلبك لتكون من المنذرين | ١٩٤ك الشـعراء | ٢٦ |
| | ومن ضل فقل إنما أنا من المنذرين ... ... ... | ٩٢ ك النمـل | ٢٧ |
| | ولقد أرسلنا فيهم منذرين ... ... ... ... ... ... | ٧٢ ك الصافات | ٣٧ |
| | إنا أنزلناه فى ليلة مباركة إنا كنا منذرين ... ... ... | ٣ ك الدخان | ٤٤ |
| | فلما قضى ولوا إلى قومهم منذرين ... ... ... ... | ٢٩ ك الأحقاف | ٤٦ |
| مُنْذَرِينَ: | فانظر كيف كان عاقبة المنذرين ... ... ... ... | ٧٣ ك يـونس | ١٠ |
| (٥) | وأمطرنا عليهم مطرا فساء مطر المنذرين ... ... ... | ١٧٣ك الشـعراء | ٢٦ |
| | وأمطرنا عليهم مطرا فساء مطر المنذرين ... ... ... | ٥٨ ك النمـل | ٢٧ |
| | فانظر كيف كان عاقبة المنذرين ... ... ... ... ... | ٧٣ ك الصافات | ٣٧ |
| | فإذا نزل بساحتهم فساء صباح المنذرين... ... ... | ١٧٧ك « | ٣٧ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| نَزَعَ: | ونزع يده فإذا هى بيضاء للناظرين... ... ... ... | ١٠٨ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | ونزع يده فإذا هى بيضاء للناظرين... ... ... ... | ٣٣ ك الشـعراء | ٢٦ |
| نَزَعْنَا: | ونزعنا ما فى صدورهم من غل تجرى من تحتهم الأنهار | ٤٣ ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | ونزعنا ما فى صدورهم من غل إخوانا على سرر متقابلين | ٤٧ ك الحجـر | ١٥ |
| | ونزعنا من كل أمة شهيدا فقلنا هاتوا برهانكم ... | ٧٥ ك القصص | ٢٨ |
| نَزَعْنَاهَا: | ولئن أذقنا الإنسان منا رحمة ثم نزعناها منه إنه | | |
| | ليئوس كفور... ... ... ... ... ... ... ... | ٩ ك هـود | ١١ |
| تَنْزِعُ: | تؤتى الملك من تشاء وتنزع الملك ممن تشاء... ... | ٢٦ م آل عمران | ٣ |
| (٢) | تنزع الناس كأنهم أعجاز نخل منقعر ... ... ... | ٢٠ ك القمـر | ٥٤ |
| لَنَنْزِعَنَّ: | ثم لننزعن من كل شيعة أيهم أشد على الرحمن عتيا | ٦٩ ك مـريم | ١٩ |
| يَنْزِعُ: | ينزع عنهما لباسهما ليريهما سوآتهما ... ... ... | ٢٧ ك الأعراف | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يُنَازِعُنَّكَ: | فلا ينازعنك فى الأمر وادع إلى ربك ... ... | ٦٧ | م الحج | ٢٢ |
| تَنَازَعْتُمْ: | حتى إذا فشلتم وتنازعتم فى الأمر وعصيتم من | | | |
| (٣) | بعد ما أراكم ما تحبون... ... ... ... ... ... | ١٥٢ | م آل عمران | ٣ |
| | فإن تنازعتم فى شىء فردّوه إلى الله والرسول ... ... | ٥٩ | م النساء | ٤ |
| | ولو أراكهم كثيرا لفشلتم ولتنازعتم فى الأمر ... | ٤٣ | م الأنفال | ٨ |
| تَنَازَعُوا: | فتنازعوا أمرهم بينهم وأسرّوا النجوى ... ... | ٦٢ | ك طه | ٢٠ |
| (ت) تَنَازَعُوا: | وأطيعوا الله ورسوله ولا تنازعوا فتفشلوا | ٤٦ | م الأنفال | ٨ |
| يَتَنَازَعُونَ: | وأن الساعة لاريب فيها إذ يتنازعون بينهم أمرهم | ٢١ | ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | يتنازعون فيها كأسا لا لغو فيها ولا تأثيم... ... ... | ٢٣ | ك الطور | ٥٢ |
| النَّازِعَاتِ: | والنازعات غرقا . والناشطات نشطا ... ... | ١ | ك النازعات | ٧٩ |
| نَزَّاعَةً: | كلا إنها لظى . نزاعة للشوى ... ... ... ... | ١٦ | ك المعارج | ٧٠ |
| | ✦✦✦ | | | |
| نَزَغَ: | وجاء بكم من البدو من بعد أن نزغ الشيطان بينى | | | |
| | وبين إخوتى ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٠ | ك يوسف | ١٢ |
| يَنْزَغُ: | إن الشيطان ينزغ بينهم ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| يَنْزَغَنَّكَ: | وإما ينزغنك من الشيطان نزغ فاستعذ بالله ... | ٢٠٠ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | وإما ينزغنك من الشيطان نزغ فاستعذ بالله ... ... | ٣٦ | ك فصلت | ٤١ |
| نَزْغٌ: | وإما ينزغنك من الشيطان نزغ فاستعذ بالله إنه سميع عليم | ٢٠٠ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | وإما ينزغنك من الشيطان نزغ فاستعذ بالله ... ... | ٣٦ | ك فصلت | ٤١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| يُنْزَفُونَ: | لا فيها غول ولا هم عنها ينزفون ... ... ... ... | ٤٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| (٢) | لا يصدّعون عنها ولا ينزفون ... ... ... ... ... | ١٩ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| نَزَلَ: | وبالحق أنزلناه وبالحق نزل ... ... ... ... ... | ١٠٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٤) | نزل به الروح الأمين . على قلبك لتكون من المنذرين | ١٩٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فإذا نزل بساحتهم فساء صباح المنذرين ... ... ... | ١٧٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| | ألم يأن للذين آمنوا أن تخشع قلوبهم لذكر الله | | | |
| | وما نزل من الحق ... ... ... ... ... ... ... | ١٦ | م الحديد | ٥٧ |
| يَنْزِلُ: | يعلم ما يلج فى الأرض وما يخرج منها وما ينزل | | | |
| (٢) | من السماء وما يعرج فيها ... ... ... ... ... ... | ٢ | ك سبأ | ٣٤ |
| | يعلم ما يلج فى الأرض وما يخرج منها وما ينزل من السماء | | | |
| | وما يعرج فيها... ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | م الحديد | ٥٧ |
| نَزَّلَ: | ذلك بأن الله نزل الكتاب بالحق ... ... ... ... | ١٧٦ | م البقرة | ٢ |
| (١٢) | نزل عليك الكتاب بالحق مصدقا لما بين يديه... ... | ٣ | م آل عمران | ٣ |
| | آمنوا بالله ورسوله والكتاب الذى نزل على رسوله | ١٣٦ | م النساء | ٤ |
| | وقد نزل عليكم فى الكتاب أن إذا سمعتم آيات الله | | | |
| | يكفر بها ويستهزأ بها فلا تقعدوا معهم ... ... | ١٤٠ | « | ٤ |
| | سميتموها أنتم وآباؤكم ما نزل الله بها من سلطان ... | ٧١ | ك الأعراف | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| نَزَّلَ: | إن وليّىَ الله الذى نزل الكتاب وهو يتولى الصالحين | ١٩٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | تبارك الذى نزل الفرقان على عبده ليكون للعالمين نذيرا | ١ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ولئن سألتهم من نزل من السماء ماء فأحيا به الأرض | | | |
| | من بعد موتها ليقولن الله ... ... ... ... ... | ٦٣ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | الله نزل أحسن الحديث كتابا متشابها مثانى ... ... | ٢٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| | والذى نزل من السماء ماء بقدر فأنشرنا به بلدة ميتا | ١١ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ذلك بأنهم قالوا للذين كرهوا ما نزل الله سنطيعكم | | | |
| | فى بعض الأمر ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | م محمد | ٤٧ |
| | فكذبنا وقلنا ما نزل الله من شىء ... ... ... ... | ٩ | ك الملك | ٦٧ |
| نَزَّلْنَا: | وإن كنتم فى ريب مما نزلنا على عبدنا فأتوا | | | |
| (١٠) | بسورة من مثله... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | م البقرة | ٢ |
| | آمنوا بما نزلنا مصدقا لما معكم من قبل أن نطمس وجوها | ٤٧ | م النساء | ٤ |
| | ولو نزلنا عليك كتابا فى قرطاس فلمسوه بأيديهم لقال | | | |
| | الذين كفروا إن هذا إلا سحر مبين ... ... ... | ٧ | ك الأنعام | ٦ |
| | ولو أننا نزلنا إليهم الملائكة وكلمهم الموتى وحشرنا | | | |
| | عليهم كل شىء قبلا ما كانوا ليؤمنوا إلا أن يشاء الله | ١١١ | ك « | ٦ |
| | إنا نحن نزلنا الذكر وإنا له لحافظون ... ... ... | ٩ | ك الحجر | ١٥ |
| | ونزلنا عليك الكتاب تبيانا لكل شىء وهدى ورحمة | ٨٩ | ك النحل | ١٦ |
| | لنزلنا عليهم من السماء ملكا رسولا... ... ... ... | ٩٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وواعدناكم جانب الطور الأيمن ونزلنا عليكم المن والسلوى | ٨٠ | ك طه | ٢٠ |
| | ونزلنا من السماء ماء مباركا فأنبتنا به جنات وحب الحصيد | ٩ | ك ق | ٥٠ |
| | إنا نحن نزلنا عليك القرآن تنزيلا... ... ... ... | ٢٣ | م الإنسان | ٧٦ |
| نَزَّلْنَاهُ: | وقرآنا فرقناه لتقرأه على الناس على مكث ونزلناه تنزيلا | ١٠٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٢) | ولو نزلناه على بعض الأعجمين . فقرأه عليهم ما كانوا | | | |
| | به مؤمنين... ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٩٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| نَزَّلَهُ: | قل من كان عدوا لجبريل فإنه نزله على قلبك بإذن الله | ٩٧ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | قل نزله روح القدس من ربك بالحق ليثبت الذين آمنوا | ١٠٢ | ك النحل | ١٦ |
| تُنَزِّلَ: | يسئلك أهل الكتاب أن تنزل عليهم كتابا من السماء | ١٥٣ | م النساء | ٤ |
| (٢) | ولن نؤمن لرقيك حتى تنزل علينا كتابا نقرؤه ... ... | ٩٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| نُنَزِّلُ: | ما نتنزل الملائكة إلا بالحق وما كانوا إذا منظرين | ٨ | ك الحجر | ١٥ |
| (٣) | وننزل من القرآن ما هو شفاء ورحمة للمؤمنين ... ... | ٨٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| | إن نشأ ننزل عليهم من السماء آية فظلت أعناقهم لها خاضعين | ٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| نُنَزِّلُهُ: | وإن من شىء إلا عندنا خزائنه وما ننزله إلا بقدر معلوم | ٢١ | ك الحجر | ١٥ |
| يُنَزِّلُ: | بغيا أن ينزل الله من فضله على من يشاء من عباده | ٩٠ | م البقرة | ٢ |
| (١٧) | سنلقى فى قلوب الذين كفروا الرعب بما أشركوا بالله | | | |
| | ما لم ينزل به سلطانا ... ... ... ... ... ... | ١٥١ | م آل عمران | ٣ |
| | هل يستطيع ربك أن ينزل علينا مائدة من السماء ... | ١١٢ | م المائدة | ٥ |
| | قل إن الله قادر على أن ينزل آية ولكن أكثرهم لا يعلمون | ٣٧ | ك الأنعام | ٦ |
| | ولا تخافون أنكم أشركتم بالله ما لم ينزل به عليكم سلطانا | ٨١ | ك « | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| وَيُنَزِّلُ: | وأن تشركوا بالله ما لم ينزل به سلطانا ... ... ... | ٣٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | و ينزل عليكم من السماء ماء ليطهركم به ... ... ... | ١١ | م الأنفال | ٨ |
| | ينزل الملائكة بالروح من أمره على من يشاء من عباده | ٢ | ك النحل | ١٦ |
| | و إذا بدلنا آية مكان آية والله أعلم بما ينزل قالوا إنما أنت مفتر ... ... ... ... ... ... | ١٠١ | ك « | ١٦ |
| | و يعبدون من دون الله مالم ينزل به سلطانا ... ... | ٧١ | م الحج | ٢٢ |
| | و ينزل من السماء من جبال فيها من برد ... ... ... | ٤٣ | م النور | ٢٤ |
| | وينزل من السماء ماء فيحيي به الأرض بعد موتها ... | ٢٤ | ك الروم | ٣٠ |
| | إنّ الله عنده علم الساعة و ينزل الغيث ويعلم ما في الأرحام | ٣٤ | ك لقمان | ٣١ |
| | هو الذي يريكم آياته و ينزل لكم من السماء رزقا ... | ١٣ | ك غافر | ٤٠ |
| | ولو بسط الله الرزق لعباده لبغوا في الأرض ولكن ينزل بقدر مايشاء ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | م الشورى | ٤٢ |
| | وهو الذي ينزل الغيث من بعد ما قنطوا وينشر رحمته | ٢٨ | ك « | ٤٢ |
| | هو الذي ينزل على عبده آيات بينات ... ... ... | ٩ | م الحديد | ٥٧ |
| نُزِّلَ: | وقالوا لولا نزل عليه آية من ربه ... ... ... ... | ٣٧ | ك الأنعام | ٦ |
| (٧) | وقالوا يأيها الذي نزل عليه الذكر إنك لمجنون ... | ٦ | ك الحجر | ١٥ |
| | وأنزلنا إليك الذكر لتبين للناس ما نزل إليهم ... ... | ٤٤ | ك النحل | ١٦ |
| | و يوم تشقق السماء بالغمام ونزل الملائكة تنزيلا ... | ٢٥ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وقال الذين كفروا لولا نزل عليه القرآن جملة واحدة | ٣٢ | ك « | ٢٥ |
| | وقالوا لولا نزل هذا القرآن على رجل من القريتين عظيم | ٣١ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وآمنوا بما نزل على محمد وهو الحق من ربهم كفر عنهم سيئاتهم | ٢ | م محمد | ٤٧ |
| نُزِّلَتْ: | و يقول الذين آمنوا لولا نزلت سورة... ... ... | ٢٠ | م « | ٤٧ |
| تُنَزِّلَ: | إلا ما حرم إسرائيل على نفسه من قبل أن تنزل التوراة | ٩٣ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | يحذر المنافقون أن تنزل عليهم سورة تنبئهم بما في قلوبهم | ٦٤ | م التوبة | ٩ |
| يُنَزِّلُ: | ما يود الذين كفروا من أهل الكتاب ولا المشركين | | | |
| (٣) | أن ينزل عليكم من خير من ربكم... ... ... ... | ١٠٥ | م البقرة | ٢ |
| | و إن تسألوا عنها حين ينزل القرآن تبد لكم عفا الله عنها | ١٠١ | م المائدة | ٥ |
| | و إن كانوا من قبل أن ينزل عليهم من قبله لمبلسين | ٤٩ | ك الروم | ٣٠ |
| أَنْزَلَ: | وأنزل من السماء ماء فأخرج به من الثمرات رزقا لكم | ٢٢ | م البقرة | ٢ |
| (٦٣) | بئسما اشتروا به أنفسهم أن يكفروا بما أنزل الله ... | ٩٠ | م « | ٢ |
| | و إذا قيل لهم آمنوا بما أنزل الله قالوا نؤمن بما أنزل علينا | ٩١ | م « | ٢ |
| | وما أنزل الله من السماء من ماء فأحيا به الأرض بعد موتها | ١٦٤ | م « | ٢ |
| | و إذا قيل لهم اتبعوا ما أنزل الله قالوا بل نتبع ما ألفينا عليه آباءنا... ... ... ... ... ... | ١٧٠ | م « | ٢ |
| | إن الذين يكتمون ما أنزل الله من الكتاب ويشترون به ثمنا قليلا أولئك ما يأكلون في بطونهم إلا النار | ١٧٤ | م « | ٢ |
| | وأنزل معهم الكتاب بالحق ليحكم بين الناس فيما اختلفوا فيه | ٢١٣ | م « | ٢ |
| | واذكروا نعمة الله عليكم وما أنزل عليكم من الكتاب والحكمة | ٢٣١ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَنْزَلَ: | وأنزل التوراة والإنجيل ... ... ... ... ... ... | ٣ | م آل عمران | ٣ |
| | من قبل هدى للناس وأنزل الفرقان... ... ... ... | ٤ | م « | ٣ |
| | هو الذي أنزل عليك الكتاب منه آيات محكمات ... | ٧ | م « | ٣ |
| | ثم أنزل عليكم من بعد الغم أمنة نعاسا ... ... ... | ١٥٤ | م « | ٣ |
| | و إذا قيل لهم تعالوا إلى ما أنزل الله و إلى الرسول رأيت المنافقين يصدون عنك صدودا ... ... | ٦١ | م النساء | ٤ |
| | وأنزل الله عليك الكتاب والحكمة وعلمك مالم تكن تعلم | ١١٣ | م « | ٤ |
| | آمنوا بالله ورسوله والكتاب الذي نزل على رسوله والكتاب الذي أنزل من قبل ... ... ... ... | ١٣٦ | م « | ٤ |
| | لكن الله يشهد بما أنزل إليك... ... ... ... ... | ١٦٦ | م « | ٤ |
| | ومن لم يحكم بما أنزل الله فأولئك هم الكافرون ... | ٤٤ | م المائدة | ٥ |
| | ومن لم يحكم بما أنزل الله فأولئك هم الظالمون ... | ٤٥ | م « | ٥ |
| | وليحكم أهل الإنجيل بما أنزل الله فيه ... ... ... | ٤٧ | م « | ٥ |
| | ومن لم يحكم بما أنزل الله فأولئك هم الفاسقون ... | ٤٧ | م « | ٥ |
| | فاحكم بينهم بما أنزل الله ولا تتبع أهواءهم... ... | ٤٨ | م « | ٥ |
| | وأن احكم بينهم بما أنزل الله ولا تتبع أهواءهم... | ٤٩ | م « | ٥ |
| | واحذرهم أن يفتنوك عن بعض ما أنزل الله إليك ... | ٤٩ | م « | ٥ |
| | و إذا قيل لهم تعالوا إلى ما أنزل الله و إلى الرسول قالوا حسبنا ما وجدنا عليه آباءنا... ... ... ... | ١٠٤ | م « | ٥ |
| | وما قدروا الله حق قدره إذ قالوا ما أنزل الله على بشر من شيء | ٩١ | م الأنعام | ٦ |
| | قل من أنزل الكتاب الذي جاء به موسى نورا وهدى للناس | ٩١ | م « | ٦ |
| | ومن قال سأنزل مثل ما أنزل الله ... ... ... ... | ٩٣ | م « | ٦ |
| | وهو الذي أنزل من السماء ماء فأخرجنا به نبات كل شيء | ٩٩ | ك « | ٦ |
| | أفغير الله أبتغي حكما وهو الذي أنزل إليكم الكتاب مفصلا | ١١٤ | م « | ٦ |
| | ثم أنزل الله سكينته على رسوله وعلى المؤمنين... ... | ٢٦ | م التوبة | ٩ |
| | وأنزل جنودا لم تروها ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | م « | ٩ |
| | فأنزل الله سكينته عليه وأيده بجنود لم تروها ... ... | ٤٠ | م « | ٩ |
| | الأعراب أشد كفرا ونفاقا وأجدر ألا يعلموا حدود ما أنزل الله على رسوله ... ... ... ... ... ... | ٩٧ | م « | ٩ |
| | قل أرأيتم ما أنزل الله لكم من رزق فجعلتم منه حراما وحلالا | ٥٩ | ك يونس | ١٠ |
| | سميتموها أنتم وآباؤكم ما أنزل الله بها من سلطان ... | ٤٠ | ك يوسف | ١٢ |
| | أنزل من السماء ماء فسالت أودية بقدرها... ... ... | ١٧ | م الرعد | ١٣ |
| | وأنزل من السماء ماء فأخرج به من الثمرات رزقا لكم | ٣٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | هو الذي أنزل من السماء ماء لكم منه شراب ومنه شجر | ١٠ | ك النحل | ١٦ |
| | و إذا قيل لهم ماذا أنزل ربكم قالوا أساطير الأولين | ٢٤ | ك « | ١٦ |
| | وقيل للذين اتقوا ماذا أنزل ربكم قالوا خيرا ... ... | ٣٠ | ك « | ١٦ |
| | والله أنزل من السماء ماء فأحيا به الأرض بعد موتها | ٦٥ | ك « | ١٦ |
| | قال لقد علمت ما أنزل هؤلاء إلا رب السموات والأرض | ١٠٢ | ك الإسراء | ١٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَنْزَلَ: | الحمد لله الذى أنزل على عبده الكتاب ولم يجعل له عوجا | ١ | ك الكهف | ١٨ |
| | وأنزل من السماء ماء فأخرجنا به أزواجا من نبات شتى | ٥٣ | ك طـه | ٢٠ |
| | ألم تر أن الله أنزل من السماء ماء فتصبح الأرض مخضرة | ٦٣ | م الحـج | ٢٢ |
| | ولو شاء الله لأنزل ملائكة ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | أمن خلق السموات والأرض وأنزل لكم من السماء ماء | ٦٠ | ك النمـل | ٢٧ |
| | وإذا قيل لهم اتبعوا ما أنزل الله قالوا بل نتبع ما وجدنا | | | |
| | عليه آباءنا ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك لقمان | ٣١ |
| | وأنزل الذين ظاهروهم من أهل الكتاب من صياصيهم | ٢٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ألم تر أن الله أنزل من السماء ماء فأخرجنا به ثمرات | ٢٧ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | قالوا ما أنتم إلا بشر مثلنا وما أنزل الرحمن من شىء | ١٥ | ك يس | ٣٦ |
| | وأنزل لكم من الأنعام ثمانية أزواج ... ... ... ... | ٦ | ك الـزمر | ٣٩ |
| | ألم تر أن الله أنزل من السماء ماء فسلكه ينابيع فى الأرض | ٢١ | ك « | ٣٩ |
| | قالوا لو شاء ربنا لأنزل ملائكة فإنا بما أرسلتم به كافرون | ١٤ | ك فصـلت | ٤١ |
| | وقل آمنت بما أنزل الله من كتاب ... ... ... ... | ١٥ | ك الشـورى | ٤٢ |
| | الله الذى أنزل الكتاب بالحق والميزان ... ... ... | ١٧ | ك « | ٤٢ |
| | وما أنزل الله من السماء من رزق فأحيا به الأرض بعد موتها | ٥ | ك الجاثيـة | ٤٥ |
| | ذلك بأنهم كرهوا ما أنزل الله فأحبط أعمالهم ... ... | ٩ | م محمـد | ٤٧ |
| | هو الذى أنزل السكينة فى قلوب المؤمنين ... ... ... | ٤ | م الفتـح | ٤٨ |
| | فأنزل السكينة عليهم وأثابهم فتحا قريبا ... ... ... | ١٨ | م « | ٤٨ |
| | فأنزل الله سكينته على رسوله وعلى المؤمنين ... ... | ٢٦ | م « | ٤٨ |
| | سميتموها أنتم وآباؤكم ما أنزل الله بها من سلطان ... | ٢٣ | ك النجـم | ٥٣ |
| | قد أنزل الله إليكم ذكرا ... ... ... ... ... ... | ١٠ | م الطـلاق | ٦٥ |
| أُنْزِلَتْ: | وآمنوا بما أنزلت مصدقا لما معكم ... ... ... | ٤١ | م البقـرة | ٢ |
| (٣) | ربنا آمنا بما أنزلت واتبعنا الرسول فاكتبنا مع الشاهدين | ٥٣ | م آل عمران | ٣ |
| | فقال رب إنى لما أنزلت إلىّ من خير فقير ... ... | ٢٤ | ك القصص | ٢٨ |
| أَأَنْزَلْتُمُوهُ: | أأنتم أنزلتموه من المزن أم نحن المنزلون ... ... | ٦٩ | ك الواقعـة | ٥٦ |
| أَنْزَلْنَا: | وظللنا عليكم الغمام وأنزلنا عليكم المنّ والسلوى ... ... | ٥٧ | م البقـرة | ٢ |
| (٤٠) | فأنزلنا على الذين ظلموا رجزا من السماء بما كانوا يفسقون | ٥٩ | م « | ٢ |
| | ولقد أنزلنا إليك آيات بينات ... ... ... ... ... | ٩٩ | م « | ٢ |
| | إن الذين يكتمون ما أنزلنا من البينات والهدى من | | | |
| | بعد ما بيناه للناس فى الكتاب أولئك يلعنهم الله | ١٥٩ | م « | ٢ |
| | إنا أنزلنا إليك الكتاب بالحق لتحكم بين الناس بما | | | |
| | أراك الله ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٥ | م النسـاء | ٤ |
| | يا أيها الناس قد جاءكم برهان من ربكم وأنزلنا إليكم نورا مبينا | ١٧٤ | م « | ٤ |
| | إنا أنزلنا التوراة فيها هدى ونور ... ... ... ... ... | ٤٤ | م المـائدة | ٥ |
| | وأنزلنا إليك الكتاب بالحق مصدقا لما بين يديه من الكتاب | ٤٨ | م « | ٥ |
| | ولو أننا ملكا لقضى الأمر ثم لا ينظرون ... ... ... | ٨ | ك الأنعـام | ٦ |
| | يا بنى آدم قد أنزلنا عليكم لباسا يوارى سوآتكم وريشا | ٢٦ | ك الأعراف | ٧ |
| أَنْزَلْنَا: | حتى إذا أقلت سحابا ثقالا سقناه لبلد ميت فأنزلنا به الماء | ٥٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | وظللنا عليهم الغمام وأنزلنا عليهم المن والسلوى ... ... | ١٦٠ | ك « | ٧ |
| | إن كنتم آمنتم بالله وما أنزلنا على عبدنا يوم الفرقان | ٤١ | م الأنفـال | ٨ |
| | فإن كنت فى شك مما أنزلنا إليك فسئل الذين يقرءون | | | |
| | الكتاب من قبلك لقد جاءك الحق من ربك ... | ٩٤ | م يـونس | ١٠ |
| | وأرسلنا الرياح لواقح فأنزلنا من السماء ماء ... ... ... | ٢٢ | ك الحجـر | ١٥ |
| | كما أنزلنا على المقتسمين . الذين جعلوا القرآن عضين | ٩٠ | ك « | ١٥ |
| | وأنزلنا إليك الذكر لتبين للناس ما نزل إليهم ... ... | ٤٤ | ك النحـل | ١٦ |
| | وما أنزلنا عليك الكتاب إلا لتبين لهم الذى اختلفوا فيه | ٦٤ | ك « | ١٦ |
| | ما أنزلنا عليك القرآن لتشقى ... ... ... ... ... | ٢ | ك طـه | ٢٠ |
| | لقد أنزلنا إليكم كتابا فيه ذكركم أفلا تعقلون ... ... | ١٠ | ك الأنبيـاء | ٢١ |
| | وترى الأرض هامدة فإذا أنزلنا عليها الماء اهتزت وربت | ٥ | م الحـج | ٢٢ |
| | وأنزلنا من السماء ماء بقدر فأسكناه فى الأرض ... ... | ١٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | سورة أنزلناها وفرضناها ... ... ... ... ... ... | ١ | م النـور | ٢٤ |
| | ولقد أنزلنا إليكم آيات مبينات ... ... ... ... ... | ٣٤ | م « | ٢٤ |
| | لقد أنزلنا آيات مبينات ... ... ... ... ... ... | ٤٦ | م « | ٢٤ |
| | وأنزلنا من السماء ماء طهورا ... ... ... ... ... | ٤٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وكذلك أنزلنا إليك الكتاب ... ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | أو لم يكفهم أنا أنزلنا عليك الكتاب يتلى عليهم... ... | ٥١ | ك « | ٢٩ |
| | أم أنزلنا عليهم سلطانا فهو يتكلم بما كانوا به يشركون | ٣٥ | ك الـروم | ٣٠ |
| | وأنزلنا من السماء ماء فأنبتنا فيها من كل زوج كريم ... | ١٠ | ك لقمان | ٣١ |
| | وما أنزلنا على قومه من بعده من جند من السماء وما كنا منزلين | ٢٨ | ك يس | ٣٦ |
| | إنا أنزلنا إليك الكتاب بالحق فاعبد الله مخلصا له الدين | ٢ | ك الـزمر | ٣٩ |
| | إنا أنزلنا عليك الكتاب للناس بالحق فمن اهتدى فلنفسه | ٤١ | ك « | ٣٩ |
| | فإذا أنزلنا عليها الماء اهتزت وربت ... ... ... ... | ٣٩ | ك فصـلت | ٤١ |
| | وأنزلنا معهم الكتاب والميزان ليقوم الناس بالقسط | ٢٥ | م الحـديد | ٥٧ |
| | وأنزلنا الحديد فيه بأس شديد ... ... ... ... ... | ٢٥ | م « | ٥٧ |
| | وقد أنزلنا آيات بينات وللكافرين عذاب مهين ... | ٥ | م المجـادلة | ٥٨ |
| | لو أنزلنا هذا القرآن على جبل لرأيته خاشعا ... ... | ٢١ | م الحشـر | ٥٩ |
| | فآمنوا بالله ورسوله والنور الذى أنزلنا ... ... ... | ٨ | م التغـابن | ٦٤ |
| | وأنزلنا من المعصرات ماء ثجاجا ... ... ... ... ... | ١٤ | ك النبـأ | ٧٨ |
| أَنْزَلْنَاهُ: | وهذا كتاب أنزلناه مبارك مصدق الذى بين يديه | ٩٢ | ك الأنعـام | ٦ |
| (١٤) | وهذا كتاب أنزلناه مبارك فاتبعوه واتقوا ... ... ... | ١٥٥ | ك « | ٦ |
| | إنما مثل الحياة الدنيا كماء أنزلناه من السماء ... ... | ٢٤ | ك يـونس | ١٠ |
| | إنا أنزلناه قرآنا عربيا لعلكم تعقلون ... ... ... ... | ٢ | م يوسـف | ١٢ |
| | وكذلك أنزلناه حكما عربيا ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | م الرعـد | ١٣ |
| | الر كتاب أنزلناه إليك لتخرج الناس من الظلمات إلى النور | ١ | ك إبراهيـم | ١٤ |
| | وبالحق أنزلناه وبالحق نزل ... ... ... ... ... ... | ١٠٥ | ك الإسـراء | ١٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَنْزَلْنَاهُ: | واضرب لهم مثل الحياة الدنيا كماء أنزلناه من السماء | ٤٥ | ك الكهف | ١٨ |
| | وكذلك أنزلناه قرآنا عربيا وصرفنا فيه من الوعيد ... | ١١٣ | ك طـه | ٢٠ |
| | وهذا ذكر مبارك أنزلناه ... ... ... ... ... ... | ٥٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وكذلك أنزلناه آيات بينات وأن الله يهدى من يريد | ١٦ | م الحـج | ٢٢ |
| | كتاب أنزلناه إليك مبارك ليدبروا آياته ... ... ... | ٢٩ | ك ص | ٣٨ |
| | إنا أنزلناه فى ليلة مباركة إنا كنا منذرين ... ... ... | ٣ | ك الدخان | ٤٤ |
| | إنا أنزلناه فى ليلة القدر ... ... ... ... ... ... | ١ | ك القـدر | ٩٧ |
| أَنْزَلْنَاهَا: | سورة أنزلناها وفرضناها وأنزلنا فيها آيات بينات | ١ | م النـور | ٢٤ |
| أَنْزَلَهُ: | لكن الله يشهد بما أنزل إليك أنزله بعلمه... ... ... | ١٦٦ | م النسـاء | ٤ |
| (٣) | قل أنزله الذى يعلم السر فى السموات والأرض ... | ٦ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| | ذلك أمر الله أنزله إليكم ... ... ... ... ... ... | ٥ | م الطـلاق | ٦٥ |
| سَأُنْزِلُ: | ومن قال سأنزل مثل ما أنزل الله ... ... ... ... | ٩٣ | م الأنعـام | ٦ |
| أَنْزِلْ: | ربنا أنزل علينا مائدة من السماء تكون لنا عيدا ... | ١١٤ | م المائدة | ٥ |
| أَنْزِلْنِي: | وقل رب أنزلنى منزلا مباركا وأنت خير المنزلين... | ٢٩ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| أُنْزِلَ: | والذين يؤمنون بما أنزل إليك ... ... ... ... ... | ٤ | م البقـرة | ٢ |
| (٤٩) | وما أنزل من قبلك وبالآخرة هم يوقنون ... ... ... | ٤ | م » | ٢ |
| | وإذا قيل لهم آمنوا بما أنزل الله قالوا نؤمن بما أنزل علينا | ٩١ | م » | ٢ |
| | يعلمون الناس السحر وما أنزل على الملكين ببابل ... | ١٠٢ | م » | ٢ |
| | قولوا آمنا بالله وما أنزل إلينا ... ... ... ... ... | ١٣٦ | م » | ٢ |
| | وما أنزل إلى إبراهيم وإسمعيل وإسحق ويعقوب ... | ١٣٦ | م » | ٢ |
| | شهر رمضان الذى أنزل فيه القرآن هـدى للناس ... | ١٨٥ | م » | ٢ |
| | آمن الرسول بما أنزل إليه من ربه والمؤمنون ... ... | ٢٨٥ | م » | ٢ |
| | آمنوا بالذى أنزل على الذين آمنوا وجه النهار واكفروا آخره | ٧٢ | م آل عمران | ٣ |
| | قل آمنا بالله وما أنزل علينا ... ... ... ... ... | ٨٤ | م » | ٣ |
| | وما أنزل على إبراهيم وإسمعيل وإسحق ويعقوب والأسباط | ٨٤ | م » | ٣ |
| | وإن من أهل الكتاب لمن يؤمن بالله وما أنزل إليكم | ١٩٩ | م » | ٣ |
| | وما أنزل إليهم خاشعين لله ... ... ... ... ... | ١٩٩ | م » | ٣ |
| | ألم تر إلى الذين يزعمون أنهم آمنوا بما أنزل إليك ... | ٦٠ | م النسـاء | ٤ |
| | وما أنزل من قبلك يريدون أن يتحاكموا إلى الطاغوت | ٦٠ | م » | ٤ |
| | لكن الراسخون فى العلم منهم والمؤمنون يؤمنون بما أنزل إليك | ١٦٢ | م » | ٤ |
| | وما أنزل من قبلك ... ... ... ... ... ... ... | ١٦٢ | م » | ٤ |
| | هل تنقمون منا إلا أن آمنا بالله وما أنزل إلينا ... | ٥٩ | م المائدة | ٥ |
| | وما أنزل من قبل وأن أكثركم فاسقون ... ... ... | ٥٩ | م » | ٥ |
| | وليزيدن كثيرا منهم ما أنزل إليك من ربك طغيانا وكفرا | ٦٤ | م » | ٥ |
| | ولو أنهم أقاموا التوراة والإنجيل وما أنزل إليهم من ربهم لأكلوا من فوقهم ومن تحت أرجلهم ... | ٦٦ | م » | ٥ |
| | يأيها الرسول بلغ ما أنزل إليك من ربك ... ... ... | ٦٧ | م » | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أُنْزِلَ: | لستم على شىء حتى تقيموا التوراة والإنجيل وما أنزل إليكم من ربكم ... ... ... ... ... ... ... | ٦٨ | م المائدة | ٥ |
| | وليزيدن كثيرا منهم ما أنزل إليك من ربك طغيانا وكفرا | ٦٨ | م » | ٥ |
| | ولو كانوا يؤمنون بالله والنبى وما أنزل إليه ما اتخذوهم أولياء | ٨١ | م » | ٥ |
| | وإذا سمعوا ما أنزل إلى الرسول ترى أعينهم تفيض من الدمع مما عرفوا من الحق ... ... ... ... | ٨٣ | م » | ٥ |
| | وقالوا لولا أنزل عليه ملك ... ... ... ... ... | ٨ | ك الأنعـام | ٦ |
| | أن تقولوا إنما أنزل الكتاب على طائفتين من قبلنا | ١٥٦ | ك » | ٦ |
| | أو تقولوا لو أنا أنزل علينا الكتاب لكنا أهدى منهم | ١٥٧ | ك » | ٦ |
| | كتاب أنزل إليك فلا يكن فى صدرك حرج منه ... | ٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | اتبعوا ما أنزل إليكم من ربكم ولا تتبعوا من دونه أولياء | ٣ | ك » | ٧ |
| | فالذين آمنوا به وعزروه ونصروه واتبعوا النور الذى أنزل معه أولئك هم المفلحون ... ... ... ... | ١٥٧ | ك » | ٧ |
| | ويقولون لولا أنزل عليه آية من ربه ... ... ... ... | ٢٠ | ك يـونس | ١٠ |
| | وضائق به صدرك أن يقولوا لولا أنزل عليه كنز ... | ١٢ | م هـود | ١١ |
| | فإلم يستجيبوا لكم فاعلموا أنما أنزل بعلم الله ... ... | ١٤ | ك » | ١١ |
| | والذى أنزل إليك من ربك الحق ... ... ... ... | ١ | م الرعـد | ١٣ |
| | ويقول الذين كفروا لولا أنزل عليه آية من ربه ... | ٧ | م » | ١٣ |
| | أفمن يعلم أنما أنزل إليك من ربك الحق كمن هو أعمى | ١٩ | م » | ١٣ |
| | ويقول الذين كفروا لولا أنزل عليه آية من ربه ... | ٢٧ | م » | ١٣ |
| | والذين آتيناهم الكتاب يفرحون بما أنزل إليك ... | ٣٦ | م » | ١٣ |
| | لولا أنزل إليه ملك فيكون معه نذيرا ... ... ... ... | ٧ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| | وقال الذين لا يرجون لقاءنا لولا أنزل علينا الملائكة | ٢١ | ك » | ٢٥ |
| | وقولوا آمنا بالذى أنزل إلينا ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وأنزل إليكم وإلهنا وإلهكم واحد ... ... ... ... | ٤٦ | ك » | ٢٩ |
| | وقالوا لولا أنزل عليه آيات من ربه ... ... ... ... | ٥٠ | ك » | ٢٩ |
| | ويرى الذين أوتوا العلم الذى أنزل إليك من ربك هو الحق | ٦ | م سـبأ | ٣٤ |
| | أءنزل عليه الذكر من بيننا بل هم فى شك من ذكرى | ٨ | ك ص | ٣٨ |
| | واتبعوا أحسن ما أنزل إليكم من ربكم ... ... ... | ٥٥ | ك الـزمر | ٣٩ |
| | قالوا يا قومنا إنا سمعنا كتابا أنزل من بعد موسى ... | ٣٠ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| أُنْزِلَتْ: | وما أنزلت التوراة والإنجيل إلا من بعده... ... | ٦٥ | م آل عمران | ٣ |
| (٦) | وإذا أنزلت سورة أن آمنوا بالله وجاهدوا مع رسوله استئذنك أولوا الطول منهم ... ... ... ... | ٨٦ | م التـوبة | ٩ |
| | وإذا ما أنزلت سورة فمنهم من يقول أيكم زادته هذه إيمانا | ١٢٤ | م » | ٩ |
| | وإذا ما أنزلت سورة نظر بعضهم إلى بعض ... ... | ١٢٧ | م » | ٩ |
| | ولا يصدنك عن آيات الله بعد إذ أنزلت إليك ... | ٨٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | فإذا أنزلت سورة محكمة وذكر فيها القتال رأيت الذين فى قلوبهم مرض ينظرون إليك ... ... ... ... | ٢٠ | م محمـد | ٤٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَنَزَّلَتْ | : وما تنزلت به الشياطين . وما ينبغى لهم وما يستطيعون | ٢١٠ | ك الشعراء | ٢٦ |
| تَتَنَزَّلُ | : إن الذين قالوا ربنا الله ثم استقاموا تتنزل عليهم الملائكة ألا تخافوا ولا تحزنوا ... ... ... ... | ٣٠ | ك فصلت | ٤١ |
| (ت) تَنَزَّلُ | : هل أنبئكم على من تنزل الشياطين ... ... | ٢٢١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| (٣) | تنزل على كل أفاك أثيم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢٢ | « | ٢٦ |
| | تنزل الملائكة والروح فيها بإذن ربهم من كل أمر | ٤ | ك القدر | ٩٧ |
| نَتَنَزَّلُ | : وما نتنزل إلا بأمر ربك... ... ... ... ... ... | ٦٤ | ك مريم | ١٩ |
| يَتَنَزَّلُ | : الذى خلق سبع سموات ومن الأرض مثلهن يتنزل الأمر بينهن ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٢ | م الطلاق | ٦٥ |
| نُزُلٌ | : وأما إن كان من المكذبين الضالين . فنزل من حميم | ٩٣ | ك الواقعة | ٥٦ |
| نُزُلًا | : تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها نزلا من عند الله | ١٩٨ | م آل عمران | ٣ |
| (٦) | إنا أعتدنا جهنم للكافرين نزلا ... ... ... ... ... | ١٠٢ | ك الكهف | ١٨ |
| | كانت لهم جنات الفردوس نزلا خالدين فيها ... ... | ١٠٧ | « | ١٨ |
| | فلهم جنات المأوى نزلا بما كانوا يعملون ... ... | ١٩ | م السجدة | ٣٢ |
| | أذلك خير نزلا أم شجرة الزقوم ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| | ولكم فيها ما تدعون . نزلا من غفور رحيم ... ... | ٣٢ | ك فصلت | ٤١ |
| نُزُلُهُمْ | : هذا نزلهم يوم الدين... ... ... ... ... ... ... | ٥٦ | ك الواقعة | ٥٦ |
| نَزْلَةً | : ولقد رآه نزلة أخرى ... ... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك النجم | ٥٣ |
| تَنْزِيلُ | : وإنه لتنزيل رب العالمين... ... ... ... ... ... | ١٩٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| (١١) | تنزيل الكتاب لا ريب فيه من رب العالمين ... ... | ٢ | ك السجدة | ٣٢ |
| | تنزيل العزيز الرحيم ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك يس | ٣٦ |
| | تنزيل الكتاب من الله العزيز الحكيم ... ... ... | ١ | ك الزمر | ٣٩ |
| | تنزيل الكتاب من الله العزيز العليم ... ... ... ... | ٢ | ك غافر | ٤٠ |
| | تنزيل من الرحمن الرحيم ... ... ... ... ... ... | ٢ | ك فصلت | ٤١ |
| | تنزيل من حكيم حميد ... ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك « | ٤١ |
| | تنزيل الكتاب من الله العزيز الحكيم ... ... ... | ٢ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | تنزيل الكتاب من الله العزيز الحكيم ... ... ... | ٢ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | تنزيل من رب العالمين ... ... ... ... ... ... ... | ٨٠ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | تنزيل من رب العالمين ... ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك الحاقة | ٦٩ |
| تَنْزِيلًا | : وقرآنا فرقناه لتقرأه على الناس على مكث ونزلناه تنزيلا | ١٠٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٤) | تنزيلا ممن خلق الأرض والسموات العلى... ... ... | ٤ | ك طه | ٢٠ |
| | ويوم تشقق السماء بالغمام ونزل الملائكة تنزيلا ... | ٢٥ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | إنا نحن نزلنا عليك القرآن تنزيلا... ... ... ... | ٢٣ | م الإنسان | ٧٦ |
| مَنَازِلَ | : هو الذى جعل الشمس ضياء والقمر نورا وقدره منازل | ٥ | ك يونس | ١٠ |
| (٢) | والقمر قدرناه منازل حتى عاد كالعرجون القديم ... | ٣٩ | ك يس | ٣٦ |
| مُنَزِّلُهَا | : قال الله إنى منزلها عليكم ... ... ... ... ... | ١١٥ | م المائدة | ٥ |
| مُنَزَّلٌ | : والذين آتيناهم الكتاب يعلمون أنه منزل من ربك بالحق | ١١٤ | م الأنعام | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مُنْزِلُونَ | : إنا منزلون على أهل هذه القرية رجزا من السماء | ٣٤ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| (٢) | أأنتم أنزلتموه من المزن أم نحن المنزلون ... ... ... | ٦٩ | ك الواقعة | ٥٦ |
| الْمُنْزِلِينَ | : ألا ترون أنى أوفى الكيل وأنا خير المنزلين ... | ٥٩ | ك يوسف | ١٢ |
| (٣) | وقل رب أنزلنى منزلا مباركا وأنت خير المنزلين... ... | ٢٩ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وما أنزلنا على قومه من بعده من جند من السماء وما كنا منزلين | ٢٨ | ك يس | ٣٦ |
| مُنْزَلًا | : وقل رب أنزلنى منزلا مباركا وأنت خير المنزلين ... | ٢٩ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| مُنْزَلِينَ | : ألن يكفيكم أن يمدكم ربكم بثلاثة آلاف من الملائكة منزلين... ... ... ... ... ... ... ... | ١٢٤ | م آل عمران | ٣ |
| النَّسِيءُ | : إنما النسىء زيادة فى الكفر يضل به الذين كفروا | ٣٧ | م التوبة | ٩ |
| مِنْسَأَتَهُ | : ما دلهم على موته إلا دابة الأرض تأكل منسأته | ١٤ | ك سبا | ٣٤ |
| نَسَبًا | : وهو الذى خلق من الماء بشرا فجعله نسبا وصهرا... | ٥٤ | ك الفرقان | ٢٥ |
| (٢) | وجعلوا بينه وبين الجنة نسبا... ... ... ... ... ... | ١٥٨ | ك الصافات | ٣٧ |
| أَنْسَابَ | : فإذا نفخ فى الصور فلا أنساب بينهم يومئذ ... | ١٠١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| نَنْسَخْ | : ما ننسخ من آية أو ننسها نأت بخير منها أو مثلها ... | ١٠٦ | م البقرة | ٢ |
| فَيَنْسَخُ | : فينسخ الله ما يلقى الشيطان ثم يحكم الله آياته ... | ٥٢ | م الحج | ٢٢ |
| نَسْتَنْسِخُ | : إنا كنا نستنسخ ما كنتم تعملون ... ... ... ... | ٢٩ | ك الجاثية | ٤٥ |
| نُسْخَتِهَا | : وفى نسختها هدى ورحمة للذين هم لربهم يرهبون | ١٥٤ | ك الأعراف | ٧ |
| نَسْرًا | : ولا تذرن ودا ولا سواعا ولا يغوث ويعوق ونسرا | ٢٣ | ك نوح | ٧١ |
| لَنَنْسِفَنَّهُ | : لنحرقنه ثم لننسفنه فى اليم نسفا ... ... ... ... | ٩٧ | ك طه | ٢٠ |
| يَنْسِفُهَا | : ويسئلونك عن الجبال فقل ينسفها ربى نسفا... | ١٠٥ | « | ٢٠ |
| نُسِفَتْ | : وإذا الجبال نسفت . وإذا الرسل أقتت ... | ١٠ | ك المرسلات | ٧٧ |
| نَسْفًا | : لنحرقنه ثم لننسفنه فى اليم نسفا ... ... ... ... | ٩٧ | ك طه | ٢٠ |
| (٢) | ويسئلونك عن الجبال فقل ينسفها ربى نسفا ... ... | ١٠٥ | « | ٢٠ |
| نَاسِكُوهُ | : لكل أمة جعلنا منسكا هم ناسكوه ... ... ... | ٦٧ | م الحج | ٢٢ |
| نُسُكٍ | : ففدية من صيام أو صدقة أو نسك... ... ... ... | ١٩٦ | م البقرة | ٢ |
| نُسُكِى | : قل إن صلاتى ونسكى ومحياى ومماتى لله رب العالمين | ١٦٢ | ك الأنعام | ٦ |
| مَنْسَكًا | : ولكل أمة جعلنا منسكا ليذكروا اسم الله على ما رزقهم | ٣٤ | م الحج | ٢٢ |
| | لكل أمة جعلنا منسكا هم ناسكوه ... ... ... ... | ٦٧ | م « | ٢٢ |
| مَنَاسِكَكُمْ | : فإذا قضيتم مناسككم فاذكروا الله ... ... ... | ٢٠٠ | م البقرة | ٢ |
| مَنَاسِكَنَا | : وأرنا مناسكنا وتب علينا إنك أنت التواب الرحيم | ١٢٨ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| يَنْسِلُونَ | : وهم من كل حدب ينسلون ... ... ... ... ... | ٩٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٢) | ونفخ في الصور فإذاهم من الأجداث إلى ربهم ينسلون | ٥١ | ك يس | ٣٦ |
| النَّسْلَ | : وإذا تولى سعى في الأرض ليفسد فيها ويهلك الحرث والنسل ... ... ... ... ... ... | ٢٠٥ | م البقرة | ٢ |
| نَسْلَهُ | : ثم جعل نسله من سلالة من ماء مهين ... ... ... | ٨ | ك السجدة | ٣٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| نِسْوَةٌ | : وقال نسوة في المدينة آمرأة العزيز تراود فتاها عن نفسه | ٣٠ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | آرجع إلى ربك فسئله ما بال النسوة اللاتي قطعن أيديهن | ٥٠ | ك « | ١٢ |
| النِّسَاءَ | : قل هو أذى فآعتزلوا النساء في المحيض... ... ... | ٢٢٢ | م البقرة | ٢ |
| (٣٨) | وإذا طلقتم النساء فبلغن أجلهن فأمسكوهن بمعروف | ٢٣١ | م « | ٢ |
| | وإذا طلقتم النساء فبلغن أجلهن فلا تعضلوهن ... | ٢٣٢ | م « | ٢ |
| | ولا جناح عليكم فيما عرضتم به من خطبة النساء... ... | ٢٣٥ | م « | ٢ |
| | لا جناح عليكم إن طلقتم النساء ما لم تمسوهن ... ... | ٢٣٦ | م « | ٢ |
| | زين للناس حب الشهوات من النساء والبنين ... ... | ١٤ | م آل عمران | ٣ |
| | إن الله آصطفاك وطهرك وآصطفاك على نساء العالمين | ٤٢ | م « | ٣ |
| | وخلق منها زوجها وبث منهما رجالا كثيرا ونساء ... | ١ | م النساء | ٤ |
| | وإن خفتم ألا تقسطوا في اليتامى فآنكحوا ما طاب لكم من النساء... ... ... ... ... ... ... | ٣ | م « | ٤ |
| | وآتوا النساء صدقاتهن نحلة ... ... ... ... ... | ٤ | م « | ٤ |
| | وللنساء نصيب مما ترك الوالدان والأقربون ... ... | ٧ | م « | ٤ |
| | فإن كن نساء فوق آثنتين فلهن ثلثا ما ترك ... ... ... | ١١ | م « | ٤ |
| | يأيها الذين آمنوا لا يحل لكم أن ترثوا النساء كرها | ١٩ | م « | ٤ |
| | ولا تنكحوا ما نكح آباؤكم من النساء إلا ما قد سلف | ٢٢ | م « | ٤ |
| | والمحصنات من النساء إلا ما ملكت أيمانكم ... ... | ٢٤ | م « | ٤ |
| | للرجال نصيب مما آكتسبوا وللنساء نصيب مما آكتسبن | ٣٢ | م « | ٤ |
| | الرجال قوامون على النساء بما فضل الله بعضهم على بعض | ٣٤ | م « | ٤ |
| | أو لامستم النساء فلم تجدوا ماء فتيمموا صعيدا طيبا | ٤٣ | م « | ٤ |
| | وما لكم لا تقاتلون في سبيل الله والمستضعفين من الرجال والنساء ... ... ... ... ... ... | ٧٥ | م « | ٤ |
| | إلا المستضعفين من الرجال والنساء والولدان ... ... | ٩٨ | م « | ٤ |
| | ويستفتونك في النساء قل الله يفتيكم فيهن ... ... ... | ١٢٧ | م « | ٤ |
| | وما يتلى عليكم في الكتاب في يتامى النساء ... ... ... | ١٢٧ | م « | ٤ |
| | ولن تستطيعوا أن تعدلوا بين النساء ولو حرصتم... ... | ١٢٩ | م « | ٤ |
| | وإن كانوا إخوة رجالا ونساء فللذكر مثل حظ الأنثيين | ١٧٦ | م « | ٤ |
| | أو لامستم النساء فلم تجدوا ماء فتيمموا صعيدا طيبا | ٦ | م المائدة | ٥ |
| | إنكم لتأتون الرجال شهوة من دون النساء ... ... ... | ٨١ | ك الأعراف | ٧ |
| | أو الطفل الذين لم يظهروا على عورات النساء... ... | ٣١ | م النور | ٢٤ |
| النِّسَاءُ | : والقواعد من النساء اللاتي لا يرجون نكاحا... ... | ٦٠ | م النور | ٢٤ |
| | أئنكم لتأتون الرجال شهوة من دون النساء ... ... | ٥٥ | ك النمل | ٢٧ |
| | يانساء النبي من يأت منكن بفاحشة مبينة يضاعف لها العذاب ضعفين ... ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | يا نساء النبي ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | م « | ٣٣ |
| | لستن كأحد من النساء ... ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | م « | ٣٣ |
| | لا يحل لك النساء من بعد ولا أن تبدل بهن من أزواج | ٥٢ | م « | ٣٣ |
| | يأيها النبي قل لأزواجك وبناتك ونساء المؤمنين يدنين عليهن من جلابيبهن... ... ... ... ... ... ... | ٥٩ | م « | ٣٣ |
| | ولولا رجال مؤمنون ونساء مؤمنات لم تعلموهم أن تطئوهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | م الفتح | ٤٨ |
| | لا يسخر قوم من قوم عسى أن يكونوا خيرا منهم ولا نساء ... ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | م الحجرات | ٤٩ |
| | من نساء عسى أن يكن خيرا منهن... ... ... ... ... | ١١ | م « | ٤٩ |
| | إذا طلقتم النساء فطلقوهن لعدتهن وأحصوا العدة | ١ | م الطلاق | ٦٥ |
| نِسَاءَكُمْ | : يذبحون أبناءكم ويستحيون نساءكم ... ... ... | ٤٩ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | فقل تعالوا ندع أبناءنا وأبناءكم ونساءنا ونساءكم ... | ٦١ | م آل عمران | ٣ |
| | يقتلون أبناءكم ويستحيون نساءكم... ... ... ... ... | ١٤١ | ك الأعراف | ٧ |
| | يسومونكم سوء العذاب ويذبحون أبناءكم ويستحيون نساءكم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك إبراهيم | ١٤ |
| نِسَاءَنَا | : فقل تعالوا ندع أبناءنا وأبناءكم ونساءنا ونساءكم... | ٦١ | م آل عمران | ٣ |
| نِسَاءَهُمْ | : قال سنقتل أبناءهم ونستحيي نساءهم ... ... ... | ١٢٧ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | يستضعف طائفة منهم يذبح أبناءهم ويستحيي نساءهم | ٤ | ك القصص | ٢٨ |
| | قالوا آقتلوا أبناء الذين آمنوا معه وآستحيوا نساءهم | ٢٥ | ك غافر | ٤٠ |
| نِسَاؤُكُمْ | : نساؤكم حرث لكم فأتوا حرثكم أنى شئتم ... ... | ٢٢٣ | م البقرة | ٢ |
| نِسَائِكُمْ | : أحل لكم ليلة الصيام الرفث إلى نسائكم ... ... | ١٨٧ | م « | ٢ |
| (٥) | واللاتي يأتين الفاحشة من نسائكم فآستشهدوا عليهن أربعة منكم... ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | م النساء | ٤ |
| | وأخواتكم من الرضاعة وأمهات نسائكم ... ... ... | ٢٣ | م « | ٤ |
| | وربائبكم اللاتي في حجوركم من نسائكم اللاتي دخلتم بهن | ٢٣ | م « | ٤ |
| | واللائي يئسن من المحيض من نسائكم إن آرتبتم فعدتهن ثلاثة أشهر... ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | م الطلاق | ٦٥ |
| نِسَائِهِمْ | : للذين يؤلون من نسائهم تربص أربعة أشهر ... | ٢٢٦ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | الذين يظاهرون منكم من نسائهم ما هن أمهاتهم ... | ٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| | والذين يظاهرون من نسائهم ثم يعودون لما قالوا فتحرير رقبة من قبل أن يتماسا ... ... ... ... | ٣ | م « | ٥٨ |
| نِسَائِهِنَّ | : أو بني إخوانهن أو بني أخواتهن أو نسائهن ... | ٣١ | م النور | ٢٤ |
| (٢) | ولا آباء أخواتهن ولا نسائهن ولا ما ملكت أيمانهن | ٥٥ | م الأحزاب | ٣٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| نَسِيَ: | ومن أظلم ممن ذكر بآيات ربه فأعرض عنها ونسى | | | |
| (٥) | ما قدمت يداه ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٧ | ك الكهف | ١٨ |
| | فقالوا هذا إلهكم وإله موسى فنسى ... ... ... ... | ٨٨ | ك طـــه | ٢٠ |
| | ولقد عهدنا إلى آدم من قبل فنسى ولم نجد له عزما ... | ١١٥ | ك « | ٢٠ |
| | وضرب لنا مثلا ونسى خلقه ... ... ... ... ... ... | ٧٨ | ك يس | ٣٦ |
| | ثم إذا خوله نعمة منه نسى ما كان يدعوا إليه من قبل | ٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| نَسُوا: | يحرفون الكلم عن مواضعه ونسوا حظا مما ذكروا به | ١٣ | م المائدة | ٥ |
| (٩) | أخذنا ميثاقهم فنسوا حظا مما ذكروا به... ... ... | ١٤ | م « | ٥ |
| | فلما نسوا ما ذكروا به فتحنا عليهم أبواب كل شيء... | ٤٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | فاليوم ننساهم كما نسوا لقاء يومهم هذا ... ... ... | ٥١ | ك الأعراف | ٧ |
| | فلما نسوا ما ذكروا به أنجينا الذين ينهون عن السوء... | ١٦٥ | م « | ٧ |
| | نسوا الله فنسيهم إن المنافقين هم الفاسقون ... ... | ٦٧ | م التوبة | ٩ |
| | ولكن متعتهم وآباءهم حتى نسوا الذكر وكانوا قوما بورا | ١٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | لهم عذاب شديد بما نسوا يوم الحساب ... ... ... | ٢٦ | ك ص | ٣٨ |
| | ولا تكونوا كالذين نسوا الله فأنساهم أنفسهم... ... | ١٩ | م الحشر | ٥٩ |
| نَسُوهُ: | يقول الذين نسوه من قبل قد جاءت رسل ربنا بالحق | ٥٣ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | أحصاه الله ونسوه والله على كل شيء شهيد ... ... | ٦ | م المجادلة | ٥٨ |
| نَسِيَا: | فلما بلغا مجمع بينهما نسيا حوتهما... ... ... ... | ٦١ | ك الكهف | ١٨ |
| نَسِيتُ: | واذكر ربك إذا نسيت ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك « | ١٨ |
| (٣) | قال أرأيت إذ أوينا إلى الصخرة فإني نسيت الحوت | ٦٣ | ك « | ١٨ |
| | قال لا تؤاخذني بما نسيت ولا ترهقني من أمري عسرا | ٧٣ | ك « | ١٨ |
| نَسِيتُمْ: | فذوقوا بما نسيتم لقاء يومكم هذا ... ... ... ... | ١٤ | ك السجدة | ٣٢ |
| (٢) | وقيل اليوم ننساكم كما نسيتم لقاء يومكم هـذا ... ... | ٣٤ | ك الجاثية | ٤٥ |
| فَنَسِيتَهَا: | قال كذلك أتتك آياتنا فنسيتها ... ... ... ... | ١٢٦ | ك طـــه | ٢٠ |
| نَسِينَا: | ربنا لا تؤاخذنا إن نسينا أو أخطأنا ... ... ... | ٢٨٦ | م البقرة | ٢ |
| نَسِينَاكُمْ: | فذوقوا بما نسيتم لقاء يومكم هذا إنا نسيناكم ... | ١٤ | ك السجدة | ٣٢ |
| فَنَسِيَهُمْ: | نسوا الله فنسيهم إن المنافقين هم الفاسقون ... | ٦٧ | م التوبة | ٩ |
| تَنْسَ: | ولا تنس نصيبك من الدنيا ... ... ... ... ... | ٧٧ | ك القصص | ٢٨ |
| تَنْسَى: | سنقرئك فلا تنسى ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك الأعلى | ٨٧ |
| تَنْسَوُا: | ولا تنسوا الفضل بينكم إن الله بما تعملون بصير... | ٢٣٧ | م البقرة | ٢ |
| تَنْسَوْنَ: | أتأمرون الناس بالبر وتنسون أنفسكم ... ... | ٤٤ | م « | ٢ |
| (٢) | فيكشف ما تدعون إليه إن شاء وتنسون ما تشركون | ٤١ | ك الأنعام | ٦ |
| نَنْسَاكُمْ: | وقيل اليوم ننساكم كما نسيتم لقاء يومكم هذا ... | ٣٤ | ك الجاثية | ٤٥ |
| نَنْسَاهُمْ: | فاليوم ننساهم كما نسوا لقاء يومهم هذا ... ... | ٥١ | ك الأعراف | ٧ |
| يَنْسَى: | قال علمها عند ربي في كتاب لا يضل ربي ولا ينسى | ٥٢ | ك طـــه | ٢٠ |
| تُنْسَى: | قال كذلك أتتك آياتنا فنسيتها وكذلك اليوم تنسى | ١٢٦ | ك طـــه | ٢٠ |
| أَنْسَوْكُمْ: | فاتخذتموهم سخريا حتى أنسوكم ذكري ... ... | ١١٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| أَنْسَانِيهُ: | وما أنسانيه إلا الشيطان أن أذكره ... ... ... | ٦٣ | ك الكهف | ١٨ |
| فَأَنْسَاهُ: | فأنساه الشيطان ذكر ربه فلبث في السجن بضع سنين | ٤٢ | ك يوسف | ١٢ |
| أَنْسَاهُمْ: | استحوذ عليهم الشيطان فأنساهم ذكر الله ... ... | ١٩ | م المجادلة | ٥٨ |
| (٢) | ولا تكونوا كالذين نسوا الله فأنساهم أنفسهم ... ... | ١٩ | م الحشر | ٥٩ |
| نُنْسِهَا: | ما ننسخ من آية أو ننسها نأت بخير منها أو مثلها | ١٠٦ | م البقرة | ٢ |
| يُنْسِيَنَّكَ: | وإما ينسينك الشيطان فلا تقعد بعد الذكرى مع القوم الظالمين ... ... ... ... ... ... ... | ٦٨ | ك الأنعام | ٦ |
| نَسْيًا: | قالت ياليتني مت قبل هذا وكنت نسيا منسيا ... ... | ٢٣ | ك مريم | ١٩ |
| نَسِيًّا: | وما كان ربك نسيا ... ... ... ... ... ... ... | ٦٤ | ك « | ١٩ |
| مَنْسِيًّا: | قالت ياليتني مت قبل هذا وكنت نسيا منسيا ... | ٢٣ | ك « | ١٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| يُنَشَّأُ: | أو من ينشؤا في الحلية وهو في الخصام غير مبين ... | ١٨ | ك الزخرف | ٤٣ |
| أَنْشَأَ: | وهو الذي أنشأ جنات معروشات وغير معروشات... | ١٤١ | م الأنعام | ٦ |
| (٢) | وهو الذي أنشأ لكم السمع والأبصار والأفئدة ... | ٧٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| أَنْشَأْتُمْ: | أأنتم أنشأتم شجرتها أم نحن المنشئون ... ... ... | ٧٢ | ك الواقعة | ٥٦ |
| أَنْشَأَكُمْ: | وهو الذي أنشأكم من نفس واحدة فمستقر ومستودع | ٩٨ | ك الأنعام | ٦ |
| (٥) | كما أنشأكم من ذرية قوم آخرين ... ... ... ... | ١٣٣ | ك « | ٦ |
| | هو أنشأكم من الأرض واستعمركم فيها ... ... ... | ٦١ | ك هود | ١١ |
| | هو أعلم بكم إذ أنشأكم من الأرض ... ... ... ... | ٣٢ | م النجم | ٥٣ |
| | قل هو الذي أنشأكم وجعل لكم السمع والأبصار والأفئدة | ٢٣ | ك الملك | ٦٧ |
| أَنْشَأْنَا: | فأهلكناهم بذنوبهم وأنشأنا من بعدهم قرنا آخرين | ٦ | ك الأنعام | ٦ |
| (٦) | وكم قصمنا من قرية كانت ظالمة وأنشأنا بعدها قوما آخرين | ١١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | فأنشأنا لكم به جنات من نخيل وأعناب ... ... ... | ١٩ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ثم أنشأنا من بعدهم قرنا آخرين ... ... ... ... | ٣١ | ك « | ٢٣ |
| | ثم أنشأنا من بعدهم قرونا آخرين ... ... ... ... | ٤٢ | ك « | ٢٣ |
| | ونكنا أنشأنا قرونا فتطاول عليهم العمر ... ... ... | ٤٥ | ك القصص | ٢٨ |
| أَنْشَأْنَاهُ: | ثم أنشأناه خلقا آخر فتبارك الله أحسن الخالقين | ١٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| أَنْشَأْنَاهُنَّ: | إنا أنشأناهن إنشاء . فجعلناهن أبكارا ... ... | ٣٥ | ك الواقعة | ٥٦ |
| أَنْشَأَهَا: | قل يحييها الذي أنشأها أول مرة ... ... ... ... | ٧٩ | ك يس | ٣٦ |
| نُنْشِئَكُمْ: | على أن نبدل أمثالكم وننشئكم فيما لا تعلمون ... | ٦١ | ك الواقعة | ٥٦ |
| يُنْشِئُ: | هو الذي يريكم البرق خوفا وطمعا وينشئ السحاب | | | |
| (٢) | الثقال ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٢ | م الرعد | ١٣ |
| | ثم الله ينشئ النشأة الآخرة ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك العنكبوت | ٢٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| نَاشِئَةَ | : إن ناشئة الليل هى أشد وطأ وأقوم قيلا ... ... | ٦ | ك المزمل | ٧٣ |
| النَّشْأَةَ | : ثم الله ينشئ النشأة الآخرة ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| (٣) | وأن عليه النشأة الأخرى ... ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك النجم | ٥٣ |
| | ولقد علمتم النشأة الأولى فلولا تذكرون ... ... ... | ٦٢ | ك الواقعة | ٥٦ |
| إِنْشَاءً | : إنا أنشأناهن إنشاء . فجعلناهن أبكارا ... ... ... | ٣٥ | ك « | ٥٦ |
| الْمُنْشِئُونَ | : أأنتم أنشأتم شجرتها أم نحن المنشئون ... ... | ٧٢ | ك « | ٥٦ |
| الْمُنْشَآتُ | : وله الجوار المنشآت فى البحر كالأعلام ... ... | ٢٤ | م الرحمن | ٥٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| يَنْشُرْ | : فأووا إلى الكهف ينشر لكم ربكم من رحمته ... ... | ١٦ | ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | وهو الذى ينزل الغيث من بعد ما قنطوا وينشر رحمته | ٢٨ | ك الشورى | ٤٢ |
| نُشِرَتْ | : وإذا الصحف نشرت ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك التكوير | ٨١ |
| أَنْشَرْنَا | : والذى نزل من السماء ماء بقدر فأنشرنا به بلدة ميتا | ١١ | ك الزخرف | ٤٣ |
| أَنْشَرَهُ | : ثم أماته فأقبره . ثم إذا شاء أنشره ... ... ... | ٢٢ | ك عبس | ٨٠ |
| يُنْشِرُونَ | : أم اتخذوا آلهة من الأرض هم ينشرون ... | ٢١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| تَنْتَشِرُونَ | : ومن آياته أن خلقكم من تراب ثم إذا أنتم | | | |
| | بشر تنتشرون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك الروم | ٣٠ |
| فَانْتَشِرُوا | : ولكن إذا دعيتم فادخلوا فإذا طعمتم فانتشروا | ٥٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| (٢) | فإذا قضيت الصلاة فانتشروا فى الأرض ... ... ... | ١٠ | م الجمعة | ٦٢ |
| نَشْرًا | : فالعاصفات عصفا . والناشرات نشرا ... ... ... | ٣ | ك المرسلات | ٧٧ |
| النَّاشِرَاتِ | : فالعاصفات عصفا . والناشرات نشرا ... ... | ٣ | ك « | ٧٧ |
| النُّشُورُ | : فأحيينا به الأرض بعد موتها كذلك النشور ... | ٩ | ك فاطر | ٣٥ |
| (٢) | فامشوا فى مناكبها وكلوا من رزقه وإليه النشور ... | ١٥ | ك الملك | ٦٧ |
| نُشُورًا | : ولا يملكون موتا ولا حياة ولا نشورا ... ... | ٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| (٣) | أفلم يكونوا يرونها بل كانوا لا يرجون نشورا ... ... | ٤٠ | ك « | ٢٥ |
| | وجعل النهار نشورا ... ... ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك « | ٢٥ |
| مَنْشُورٍ | : والطور . وكتاب مسطور . فى رق منشور ... ... | ٣ | ك الطور | ٥١ |
| مَنْشُورًا | : ونخرج له يوم القيامة كتابا يلقاه منشورا ... | ١٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| مُنَشَّرَةً | : بل يريد كل امرئ منهم أن يؤتى صحفا منشرة | ٥٢ | ك المدثر | ٧٤ |
| بِمُنْشَرِينَ | : إن هى إلا موتتنا الأولى وما نحن بمنشرين | ٣٥ | ك الدخان | ٤٤ |
| مُنْتَشِرٌ | : يخرجون من الأجداث كأنهم جراد منتشر ... ... | ٧ | ك القمر | ٥٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| انْشُزُوا | : فانشزوا يفسح الله لكم وإذا قيل انشزوا ... | ١١ | م المجادلة | ٥٨ |
| (٢) | فانشزوا يرفع الله الذين آمنوا منكم والذين أوتوا | | | |
| | العلم درجات ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | م « | ٥٨ |
| نُنْشِزُهَا | : وانظر إلى العظام كيف ننشزها ثم نكسوها لحما | ٢٥٩ | م البقرة | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| نُشُوزًا | : وإن امرأة خافت من بعلها نشوزا أو إعراضا | | | |
| | فلا جناح عليهما أن يصلحا بينهما صلحا ... ... | ١٢٨ | م النساء | ٤ |
| نُشُوزَهُنَّ | : واللاتى تخافون نشوزهن فعظوهن واهجروهن | | | |
| | فى المضاجع واضربوهن ... ... ... ... ... | ٣٤ | م « | ٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| نَشْطًا | : والنازعات غرقا . والناشطات نشطا ... ... ... | ٢ | ك النازعات | ٧٩ |
| النَّاشِطَاتِ | : والنازعات غرقا . والناشطات نشطا ... ... | ٢ | ك « | ١٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| فَانْصَبْ | : فإذا فرغت فانصب . وإلى ربك فارغب ... | ٧ | ك الشرح | ٩٤ |
| نُصِبَتْ | : أفلا ينظرون إلى الإبل كيف خلقت . وإلى | | | |
| | السماء كيف رفعت . وإلى الجبال كيف نصبت ... | ١٩ | ك الغاشية | ٨٨ |
| نُصْبٍ | : إذ نادى ربه أنى مسنى الشيطان بنصب وعذاب | ٤١ | ك ص | ٣٨ |
| نَصَبٌ | : ذلك بأنهم لا يصيبهم ظمأ ولا نصب ولا مخمصة | | | |
| (٣) | فى سبيل الله ... ... ... ... ... ... ... | ١٢٠ | م التوبة | ٩ |
| | لا يمسهم فيها نصب وما هم منها بمخرجين ... ... ... | ٤٨ | ك الحجر | ١٥ |
| | لا يمسنا فيها نصب ولا يمسنا فيها لغوب ... ... ... | ٣٥ | ك فاطر | ٣٥ |
| نَصَبًا | : آتنا غداءنا لقد لقينا من سفرنا هذا نصبا ... ... | ٦٢ | ك الكهف | ١٨ |
| النُّصُبِ | : وما أكل السبع إلا ما ذكيتم وما ذبح على النصب | ٣ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | كأنهم إلى نصب يوفضون ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك المعارج | ٧٠ |
| الْأَنْصَابُ | : إنما الخمر والميسر والأنصاب والأزلام رجس | ٩٠ | م المائدة | ٥ |
| نَصِيبٌ | : أولئك لهم نصيب مما كسبوا والله سريع الحساب | ٢٠٢ | م البقرة | ٢ |
| (٩) | للرجال نصيب مما ترك الوالدان والأقربون ... ... | ٧ | م النساء | ٤ |
| | وللنساء نصيب مما ترك الوالدان والأقربون ... ... | ٧ | م « | ٤ |
| | للرجال نصيب مما اكتسبوا ... ... ... ... ... | ٣٢ | م « | ٤ |
| | وللنساء نصيب مما اكتسبن ... ... ... ... ... | ٣٢ | م « | ٤ |
| | أم لهم نصيب من الملك فإذا لا يؤتون الناس نقيرا | ٥٣ | م « | ٤ |
| | من يشفع شفاعة حسنة يكن له نصيب منها ... ... | ٨٥ | م « | ٤ |
| | وإن كان للكافرين نصيب قالوا ألم نستحوذ عليكم | ١٤١ | م « | ٤ |
| | وما له فى الآخرة من نصيب ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك الشورى | ٤٢ |
| نَصِيبًا | : ألم تر إلى الذين أوتوا نصيبا من الكتاب يدعون | | | |
| (٨) | إلى كتاب الله ليحكم بينهم ... ... ... ... ... | ٢٣ | م آل عمران | ٣ |
| | مما قل منه أو كثر نصيبا مفروضا ... ... ... ... | ٧ | م النساء | ٤ |
| | ألم تر إلى الذين أوتوا نصيبا من الكتاب يشترون الضلالة | ٤٤ | م « | ٤ |
| | ألم تر إلى الذين أوتوا نصيبا من الكتاب يؤمنون | | | |
| | بالجبت والطاغوت ... ... ... ... ... ... | ٥١ | م « | ٤ |
| | وقال لأتخذن من عبادك نصيبا مفروضا ... ... ... | ١١٨ | م « | ٤ |
| | وجعلوا لله مما ذرأ من الحرث والأنعام نصيبا ... | ١٣٦ | ك الأنعام | ٦ |
| | ويجعلون لما لا يعلمون نصيبا مما رزقناهم ... ... | ٥٦ | ك النحل | ١٦ |
| | فهل أنتم مغنون عنا نصيبا من النار ... ... ... ... | ٤٧ | ك غافر | ٤٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| نَصِيبَكَ | : ولا تنس نصيبك من الدنيا ... ... ... ... | ٧٧ | ك القصص | ٢٨ |
| نَصِيبَهُمْ | : والذين عقدت أيمانكم فآتوهم نصيبهم ... ... | ٣٣ | م النساء | ٤ |
| (٣) | أولئك ينالهم نصيبهم من الكتاب ... ... ... ... | ٣٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | وإنا لموفوهم نصيبهم غير منقوص ... ... ... ... | ١٠٩ | ك هود | ١١ |
| نَاصِبَةٌ | : وجوه يومئذ خاشعة . عاملة ناصبة ... ... ... | ٣ | ك الغاشية | ٨٨ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| أَنْصِتُوا | : وإذا قرئ القرآن فاستمعوا له وأنصتوا لعلكم ترحمون | ٢٠٤ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | فلما حضروه قالوا أنصتوا فلما قضى ولوا إلى قومهم منذرين | ٢٩ | ك الأحقاف | ٤٦ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| نَصَحْتُ | : وقال يا قوم لقد أبلغتكم رسالة ربي ونصحت لكم | ٧٩ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | فتولى عنهم وقال يا قوم لقد أبلغتكم رسالات ربي ونصحت لكم | ٩٣ | ك « | ٧ |
| نَصَحُوا | : ولا على الذين لا يجدون ما ينفقون حرج إذا نصحوا لله ورسوله ... ... ... ... ... ... ... | ٩١ | م التوبة | ٩ |
| أَنْصَحُ | : أبلغكم رسالات ربي وأنصح لكم ... ... ... ... | ٦٢ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | ولا ينفعكم نصحي إن أردت أن أنصح لكم ... ... | ٣٤ | ك هود | ١١ |
| نُصْحِي | : ولا ينفعكم نصحي ... ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك « | ١١ |
| نَاصِحٌ | : أبلغكم رسالات ربي وأنا لكم ناصح أمين ... ... | ٦٨ | ك الأعراف | ٧ |
| نَاصِحُونَ | : قالوا يا أبانا ما لك لا تأمنا على يوسف وإنا له لناصحون | ١١ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | فقالت هل أدلكم على أهل بيت يكفلونه لكم وهم له ناصحون | ١٢ | ك القصص | ٢٨ |
| النَّاصِحِينَ | : وقاسمهما إني لكما لمن الناصحين ... ... ... | ٢١ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | ونصحت لكم ولكن لا تحبون الناصحين ... ... ... | ٧٩ | ك « | ٧ |
| | إن الملأ يأتمرون بك ليقتلوك فاخرج إني لك من الناصحين | ٢٠ | ك القصص | ٢٨ |
| نَصُوحًا | : يا أيها الذين آمنوا توبوا إلى الله توبة نصوحا | ٨ | م التحريم | ٦٦ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| نَصَرَكُمُ | : ولقد نصركم الله ببدر وأنتم أذلة ... ... ... ... | ١٢٣ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | لقد نصركم الله في مواطن كثيرة ويوم حنين... ... | ٢٥ | م التوبة | ٩ |
| نَصَرْنَاهُ | : ونصرناه من القوم الذين كذبوا بآياتنا ... ... | ٧٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| نَصَرْنَاهُمْ | : ونصرناهم فكانوا هم الغالبين ... ... ... ... | ١١٦ | ك الصافات | ٣٧ |
| نَصَرَهُ | : إلا تنصروه فقد نصره الله ... ... ... ... ... | ٤٠ | م التوبة | ٩ |
| نَصَرَهُمُ | : فلولا نصرهم الذين اتخذوا من دون الله قربانا آلهة | ٢٨ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| نَصَرُوا | : والذين آووا ونصروا أولئك بعضهم أولياء بعض | ٧٢ | م الأنفال | ٨ |
| (٢) | والذين آووا ونصروا أولئك هم المؤمنون حقا... ... | ٧٤ | م « | ٨ |
| نَصَرُوهُ | : فالذين آمنوا به وعزروه ونصروه واتبعوا النور الذي أنزل معه أولئك هم المفلحون ... ... ... | ١٥٧ | ك الأعراف | ٧ |
| نَصَرُوهُمْ | : ولئن نصروهم ليولن الأدبار ثم لا ينصرون ... | ١٢ | م الحشر | ٥٩ |
| لَتَنْصُرُنَّهُ | : ثم جاءكم رسول مصدق لما معكم لتؤمنن به ولتنصرنه | ٨١ | م آل عمران | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَنْصُرُوا | : يا أيها الذين آمنوا إن تنصروا الله ينصركم ويثبت أقدامكم | ٧ | م محمد | ٤٧ |
| تَنْصُرُوهُ | : إلا تنصروه فقد نصره الله إذ أخرجه الذين كفروا | ٤٠ | م التوبة | ٩ |
| لَنَنْصُرُ | : إنا لننصر رسلنا والذين آمنوا في الحياة الدنيا ... | ٥١ | ك غافر | ٤٠ |
| لَنَنْصُرَنَّكُمْ | : وإن قوتلتم لننصرنكم والله يشهد إنهم لكاذبون | ١١ | م الحشر | ٥٩ |
| يَنْصُرُ | : ينصر الله ينصر من يشاء وهو العزيز الرحيم... ... | ٥ | ك الروم | ٣٠ |
| يَنْصُرَكَ | : وينصرك الله نصرا عزيزا ... ... ... ... ... | ٣ | م الفتح | ٤٨ |
| يَنْصُرْكُمُ | : إن ينصركم الله فلا غالب لكم ... ... ... ... | ١٦٠ | م آل عمران | ٣ |
| (٥) | وإن يخذلكم فمن ذا الذي ينصركم من بعده ... ... | ١٦٠ | م « | ٣ |
| | قاتلوهم يعذبهم الله بأيديكم ويخزهم وينصركم عليهم | ١٤ | م التوبة | ٩ |
| | يا أيها الذين آمنوا إن تنصروا الله ينصركم ويثبت أقدامكم | ٧ | م محمد | ٤٧ |
| | أمن هذا الذي هو جند لكم ينصركم من دون الرحمن | ٢٠ | ك الملك | ٦٧ |
| لَيَنْصُرَنَّ | : ولينصرن الله من ينصره إن الله لقوي عزيز... | ٤٠ | م الحج | ٢٢ |
| يَنْصُرُنَا | : فمن ينصرنا من بأس الله إن جاءنا ... ... ... | ٢٩ | ك غافر | ٤٠ |
| لَيَنْصُرَنَّهُ | : ذلك ومن عاقب بمثل ما عوقب به ثم بغي عليه لينصرنه الله ... ... ... ... ... ... ... | ٦٠ | م الحج | ٢٢ |
| يَنْصُرُنِي | : ويا قوم من ينصرني من الله إن طردتهم... ... | ٣٠ | ك هود | ١١ |
| (٢) | فمن ينصرني من الله إن عصيته ... ... ... ... | ٦٣ | ك « | ١١ |
| يَنْصُرَهُ | : من كان يظن أن لن ينصره الله في الدنيا والآخرة | | | |
| (٣) | فليمدد بسبب إلى السماء ... ... ... ... ... | ١٥ | م الحج | ٢٢ |
| | ولينصرن الله من ينصره إن الله لقوي عزيز... ... | ٤٠ | م « | ٢٢ |
| | وليعلم الله من ينصره ورسله بالغيب ... ... ... | ٢٥ | م الحديد | ٥٧ |
| يَنْصُرُونَ | : ولا يستطيعون لهم نصرا ولا أنفسهم ينصرون | ١٩٢ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | لا يستطيعون نصركم ولا أنفسهم ينصرون ... ... | ١٩٧ | ك « | ٧ |
| | وينصرون الله ورسوله أولئك هم الصادقون ... ... | ٨ | م الحشر | ٥٩ |
| يَنْصُرُونَكُمْ | : هل ينصرونكم أو ينتصرون ... ... ... ... | ٩٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| يَنْصُرُونَهُ | : ولم تكن له فئة ينصرونه من دون الله... ... | ٤٣ | ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | فما كان له من فئة ينصرونه من دون الله وما كان من المنتصرين | ٨١ | ك القصص | ٢٨ |
| يَنْصُرُونَهُمْ | : وما كان لهم من أولياء ينصرونهم من دون الله | ٤٦ | ك الشورى | ٤٢ |
| (٢) | لئن أخرجوا لا يخرجون معهم ولئن قوتلوا لا ينصرونهم | ١٢ | م الحشر | ٥٩ |
| آنْصُرْنَا | : وثبت أقدامنا وانصرنا على القوم الكافرين ... | ٢٥٠ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | أنت مولانا فانصرنا على القوم الكافرين ... ... ... | ٢٨٦ | م « | ٢ |
| | وثبت أقدامنا وانصرنا على القوم الكافرين ... ... | ١٤٧ | م آل عمران | ٣ |
| آنْصُرْنِي | : قال رب انصرني بما كذبون ... ... ... ... | ٢٦ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٣) | قال رب انصرني بما كذبون ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك « | ٢٣ |
| | قال رب انصرني على القوم المفسدين ... ... ... ... | ٣٠ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| آنْصُرُوا | : قالوا حرقوه وانصروا آلهتكم إن كنتم فاعلين ... | ٦٨ | ك الأنبياء | ٢١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تُنْصَرُونَ | : وما لكم من دون الله من أولياء ثم لا تنصرون | ١١٣ | ك هـود | ١١ |
| (٣) | لا تجأروا اليوم إنكم منا لا تنصرون ... ... ... ... | ٦٥ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وأسلموا له من قبل أن يأتيكم العذاب ثم لا تنصرون | ٥٤ | ك الزمر | ٣٩ |
| يُنْصَرُونَ | : ولا يؤخذ منها عدل ولا هم ينصرون ... ... | ٤٨ | م البقـرة | ٢ |
| (١١) | فلا يخفف عنهم العذاب ولا هم ينصرون ... ... ... | ٨٦ | م « | ٢ |
| | ولا يقبل منها عدل ولا تنفعها شفاعة ولا هم ينصرون | ١٢٣ | م « | ٢ |
| | وإن يقاتلوكم يولوكم الأدبار ثم لا ينصرون ... ... | ١١١ | م آل عمران | ٣ |
| | لو يعلم الذين كفروا حين لا يكفون عن وجوههم النار | | | |
| | ولا عن ظهورهم ولا هم ينصرون ... ... ... ... | ٣٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وجعلناهم أئمة يدعون إلى النار ويوم القيامة لا ينصرون | ٤١ | ك القصص | ٢٨ |
| | واتخذوا من دون الله آلهة لعلهم ينصرون ... ... ... | ٧٤ | ك يس | ٣٦ |
| | ولعذاب الآخرة أخزى وهم لا ينصرون ... ... ... | ١٦ | ك فصلت | ٤١ |
| | يوم لا يغني مولى عن مولى شيئا ولا هم ينصرون ... | ٤١ | ك الدخان | ٤٤ |
| | يوم لا يغني عنهم كيدهم شيئا ولا هم ينصرون ... ... | ٤٦ | ك الطـور | ٥٢ |
| | ولئن نصروهم ليولن الأدبار ثم لا ينصرون ... ... ... | ١٢ | م الحشـر | ٥٩ |
| (ت) تَنَاصَرُونَ | : ما لكم لا تناصرون ... ... ... ... | ٢٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| انْتَصَرَ | : ولمن انتصر بعد ظلمه فأولئك ما عليهم من سبيل | ٤١ | ك الشـورى | ٤٢ |
| (٢) | ولو شاء الله لانتصر منهم ولكن ليبلوا بعضكم ببعض | ٤ | م محمـد | ٤٧ |
| انْتَصَرُوا | : وذكروا الله كثيرا وانتصروا من بعد ما ظلموا | ٢٢٧ | م الشـعراء | ٢٦ |
| تَنْتَصِرَانِ | : يرسل عليكما شواظ من نار ونحاس فلا تنتصران | ٣٥ | م الرحمـن | ٥٥ |
| يَنْتَصِرُونَ | : هل ينصرونكم أو ينتصرون ... ... ... ... | ٩٣ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| (٢) | والذين إذا أصابهم البغي هم ينتصرون ... ... ... | ٣٩ | ك الشـورى | ٤٢ |
| فَانْتَصِرْ | : فدعا ربه أني مغلوب فانتصر ... ... ... ... | ١٠ | ك القمـر | ٥٤ |
| اسْتَنْصَرَهُ | : فإذا الذي استنصره بالأمس يستصرخه ... ... | ١٨ | ك القصص | ٢٨ |
| اسْتَنْصَرُوكُمْ | : وإن استنصروكم في الدين فعليكم النصر ... | ٧٢ | م الأنفـال | ٨ |
| النَّصْرُ | : حتى يقول الرسول والذين آمنوا معه متى نصر الله | ٢١٤ | م البقـرة | ٢ |
| (١١) | ألا إن نصر الله قريب... ... ... ... ... ... | ٢١٤ | م « | ٢ |
| | وما النصر إلا من عند الله العزيز الحكيم ... ... ... | ١٢٦ | م آل عمران | ٣ |
| | وما النصر إلا من عند الله إن الله عزيز حكيم ... | ١٠ | م الأنفـال | ٨ |
| | وإن استنصروكم في الدين فعليكم النصر ... ... ... | ٧٢ | م « | ٨ |
| | لا يستطيعون نصر أنفسهم ولا هم منا يصحبون ... | ٤٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ولئن جاء نصر من ربك ليقولن إنا كنا معكم ... ... | ١٠ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | ينصر الله ينصر من يشاء وهو العزيز الحكيم ... ... | ٥ | ك الـروم | ٣٠ |
| | وكان حقا علينا نصر المؤمنين ... ... ... ... | ٤٧ | ك « | ٣٠ |
| | وأخرى تحبونها نصر من الله وفتح قريب ... ... ... | ١٣ | م الصـف | ٦١ |
| | إذا جاء نصر الله والفتح ... ... ... ... ... | ١ | م النصـر | ١١٠ |
| نَصْرًا | : ولا يستطيعون لهم نصرا ولا أنفسهم ينصرون ... | ١٩٢ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | فقد كذبوكم بما تقولون فما تستطيعون صرفا ولا نصرا | ١٩ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وينصرك الله نصرا عزيزا ... ... ... ... ... | ٣ | م الفتـح | ٤٨ |
| نَصْرَكُمْ | : لا يستطيعون نصركم ولا أنفسهم ينصرون ... ... | ١٩٧ | ك الأعراف | ٧ |
| نَصْرُنَا | : فصبروا على ما كذبوا وأوذوا حتى أتاهم نصرنا ... | ٣٤ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | حتى إذا استيأس الرسل وظنوا أنهم قد كذبوا جاءهم نصرنا | ١١٠ | ك يوسف | ١٢ |
| بِنَصْرِهِ | : والله يؤيد بنصره من يشاء ... ... ... ... ... | ١٣ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | تخافون أن يتخطفكم الناس فآواكم وأيدكم بنصره ... | ٢٦ | م الأنفـال | ٨ |
| | هو الذي أيدك بنصره وبالمؤمنين ... ... ... ... | ٦٢ | م « | ٨ |
| نَصْرِهِمْ | : وإن الله على نصرهم لقدير ... ... ... ... ... | ٣٩ | م الحـج | ٢٢ |
| (٢) | لا يستطيعون نصرهم وهم لهم جند محضرون ... ... | ٧٥ | ك يس | ٣٦ |
| نَاصِرٍ | : أهلكناهم فلا ناصر لهم ... ... ... ... ... | ١٣ | م محمـد | ٤٧ |
| (٢) | فما له من قوة ولا ناصر ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك الطـارق | ٨٦ |
| نَاصِرًا | : فسيعلمون من أضعف ناصرا وأقل عددا ... ... | ٢٤ | ك الجـن | ٧٢ |
| نَاصِرِينَ | : وما لهم من ناصرين ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | م آل عمران | ٣ |
| (٨) | فأعذبهم عذابا شديدا في الدنيا والآخرة وما لهم من ناصرين | ٥٦ | م « | ٣ |
| | أولئك لهم عذاب أليم وما لهم من ناصرين... ... ... | ٩١ | م « | ٣ |
| | بل الله مولاكم وهو خير الناصرين ... ... ... ... | ١٥٠ | م « | ٣ |
| | فإن الله لا يهدي من يضل وما لهم من ناصرين ... | ٣٧ | ك النحـل | ١٦ |
| | ومأواكم النار وما لكم من ناصرين ... ... ... ... | ٢٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | فمن يهدي من أضل الله وما لهم من ناصرين ... ... | ٢٩ | ك الـروم | ٣٠ |
| | ومأواكم النار وما لكم من ناصرين ... ... ... ... | ٣٤ | ك الجاثيـة | ٤٥ |
| أَنْصَارٍ | : وما للظالمين من أنصار ... ... ... ... ... | ٢٧٠ | م البقـرة | ٢ |
| (٨) | قال الحواريون نحن أنصار الله ... ... ... ... ... | ٥٢ | م آل عمران | ٣ |
| | ربنا إنك من تدخل النار فقد أخزيته وما للظالمين من أنصار | ١٩٢ | م « | ٣ |
| | فقد حرم الله عليه الجنة ومأواه النار وما للظالمين من أنصار | ٧٢ | م المـائدة | ٥ |
| | والسابقون الأولون من المهاجرين والأنصار ... ... | ١٠٠ | م التـوبة | ٩ |
| | لقد تاب الله على النبي والمهاجرين والأنصار ... ... | ١١٧ | م « | ٩ |
| | يأيها الذين آمنوا كونوا أنصار الله ... ... ... ... | ١٤ | م الصـف | ٦١ |
| | قال الحواريون نحن أنصار الله ... ... ... ... ... | ١٤ | م « | ٦١ |
| أَنْصَارًا | : فأدخلوا نارا فلم يجدوا لهم من دون الله أنصارا | ٢٥ | ك نـوح | ٧١ |
| أَنْصَارِي | : فلما أحس عيسى منهم الكفر قال من أنصاري إلى الله | ٥٢ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | كما قال عيسى ابن مريم للحواريين من أنصاري إلى الله | ١٤ | م الصـف | ٦١ |
| نَصِيرٍ | : وما لكم من دون الله من ولي ولا نصير ... ... | ١٠٧ | م البقـرة | ٢ |
| (١١) | مالك من الله من ولي ولا نصير... ... ... ... ... | ١٢٠ | م « | ٢ |
| | وإن تولوا فاعلموا أن الله مولاكم نعم المولى ونعم النصير | ٤٠ | م الأنفـال | ٨ |
| | وما لهم في الأرض من ولي ولا نصير ... ... ... ... | ٧٤ | م التـوبة | ٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| نَصِيرٍ | : وما لكم من دون الله من ولى ولا نصير ... ... | ١١٦ | م التـوبة | ٩ |
| | وما ليس لهم به علم وما للظالمين من نصير ... ... ... | ٧١ | م الحـج | ٢٢ |
| | واعتصموا بالله هو مولاكم فنعم المولى ونعم النصـير | ٧٨ | م « | ٢٢ |
| | وما لكم من دون الله من ولى ولا نصير ... ... ... | ٢٢ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وجاءكم النـذير فذوقوا فما للظالمين من نصير ... ... | ٣٧ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | والظالمون ما لهم من ولى ولا نصير ... ... ... ... | ٨ | ك الشـورى | ٤٢ |
| | وما لكم من دون الله من ولى ولا نصير ... ... ... | ٣١ | ك « | ٤٢ |
| نَصِيرًا | : والله أعلم بأعدائكم وكفى بالله وليا وكفى بالله نصيرا | ٤٥ | م النسـاء | ٤ |
| (١٣) | أولئك الذين لعنهم الله ومن يلعن الله فلن تجد له نصيرا | ٥٢ | م « | ٤ |
| | واجعل لنا من لدنك وليا واجعل لنا من لدنك نصيرا | ٧٥ | م « | ٤ |
| | واقتلوهم حيث وجدتموهم ولا تتخذوا منهم وليا ولا نصيرا | ٨٩ | م « | ٤ |
| | ولا يجد له من دون الله وليا ولا نصيرا ... ... ... | ١٢٣ | م « | ٤ |
| | إن المنافقين فى الدرك الأسفل من النار ولن تجد لهم نصيرا | ١٤٥ | م « | ٤ |
| | ولا يجدون لهم من دون الله وليا ولا نصيرا ... ... | ١٧٣ | م « | ٤ |
| | ثم لا تجد لك علينا نصيرا ... ... ... ... ... ... | ٧٥ | م الإسراء | ١٧ |
| | وأخرجنى مخرج صدق واجعل لى من لدنك سلطانا نصيرا | ٨٠ | م « | ١٧ |
| | وكفى بربك هاديا ونصيرا ... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| | ولا يجدون لهم من دون الله وليا ولا نصيرا ... ... | ١٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | خالدين فيها أبدا لا يجدون وليا ولا نصيرا ... ... ... | ٦٥ | م « | ٣٣ |
| | ثم لا يجدون وليا ولا نصيرا ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | م الفتـح | ٤٨ |
| مَنْصُورًا | : فلا يسرف فى القتل إنه كان منصورا ... ... | ٣٣ | م الإسراء | ١٧ |
| الْمَنْصُورُونَ | : إنهم لهم المنصورون ... ... ... ... ... ... | ١٧٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| مُنْتَصِرٌ | : أم يقولون نحن جميع منتصر ... ... ... ... ... | ٤٤ | م القمـر | ٥٤ |
| مُنْتَصِرًا | : ولم تكن له فئة ينصرونه من دون الله وما كان منتصرا | ٤٣ | ك الكهف | ١٨ |
| مُنْتَصِرِينَ | : وما كان من المنتصرين ... ... ... ... ... | ٨١ | ك القصص | ٢٨ |
| (٢) | فما استطاعوا من قيام وما كانوا منتصرين ... ... | ٤٥ | ك الذاريات | ٥١ |
| نَصْرَانِيًّا | : ما كان إبراهيم يهوديا ولا نصرانيا ولكن كان حنيفا مسلما ... ... ... ... ... ... ... | ٦٧ | م آل عمران | ٣ |
| النَّصَارَى | : إن الذين آمنوا والذين هادوا والنصارى | | | |
| (١٤) | والصابئين ... ... ... ... ... ... ... | ٦٢ | م البقـرة | ٢ |
| | وقالوا لن يدخل الجنة إلا من كان هودا أو نصارى | ١١١ | م « | ٢ |
| | وقالت اليهود ليست النصارى على شىء ... ... ... | ١١٣ | م « | ٢ |
| | وقالت النصارى ليست اليهود على شىء ... ... ... | ١١٣ | م « | ٢ |
| | ولن ترضى عنك اليهود ولا النصارى حتى تتبع ملتهم | ١٢٠ | م « | ٢ |
| | وقالوا كونوا هودا أو نصارى تهتدوا ... ... ... | ١٣٥ | م « | ٢ |
| | أم تقولون إن إبراهيم وإسمعيل وإسحق ويعقوب والأسباط كانوا هودا أو نصارى ... ... ... | ١٤٠ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| النَّصَارَى | : ومن الذين قالوا إنا نصارى أخذنا ميثاقهم ... | ١٤ | م المائدة | ٥ |
| | وقالت اليهود والنصارى نحن أبناء الله وأحباؤه ... | ١٨ | م « | ٥ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تتخذوا اليهود والنصارى أولياء | ٥١ | م « | ٥ |
| | إن الذين آمنوا والذين هادوا والصابئون والنصارى | ٦٩ | م « | ٥ |
| | ولتجدن أقربهم مودة للذين آمنوا الذين قالوا إنا نصارى | ٨٢ | م « | ٥ |
| | وقالت النصارى المسيح ابن الله ... ... ... ... ... | ٣٠ | م التـوبة | ٩ |
| | إن الذين آمنوا والذين هادوا والصابئين والنصارى | ١٧ | م الحـج | ٢٢ |
| نِصْفُ | : وإن طلقتموهن من قبل أن تمسوهن وقد فرضتم | | | |
| (٥) | لهن فريضة فنصف ما فرضتم ... ... ... ... | ٢٣٧ | م البقـرة | ٢ |
| | وإن كانت واحدة فلها النصف ... ... ... ... ... | ١١ | م النسـاء | ٤ |
| | ولكم نصف ما ترك أزواجكم إن لم يكن لهن ولد ... | ١٢ | م « | ٤ |
| | فإذا أحصن فإن أتين بفاحشة فعليهن نصف ما على المحصنات من العذاب ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | م « | ٤ |
| | إن امرؤا هلك ليس له ولد وله أخت فلها نصف ما ترك | ١٧٦ | م « | ٤ |
| نِصْفَهُ | : قم الليل إلا قليلا . نصفه أو انقص منه قليلا ... | ٣ | ك المـزمل | ٧٣ |
| (٢) | إن ربك يعلم أنك تقوم أدنى من ثلثى الليل ونصفه وثلثه | ٢٠ | م « | ٧٣ |
| النَّاصِيَةِ | : كلا لئن لم ينته لنسفعا بالناصية ... ... ... ... | ١٥ | ك العـلق | ٩٦ |
| (٢) | ناصية كاذبة خاطئة ... ... ... ... ... ... ... | ١٦ | ك « | ٩٦ |
| نَاصِيَتِهَا | : ما من دابة إلا هو آخذ بناصيتها ... ... ... ... | ٥٦ | ك هـود | ١١ |
| النَّوَاصِي | : يعرف المجرمون بسيماهم فيؤخذ بالنواصى والأقدام ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤١ | م الرحمـن | ٥٥ |
| نَضِجَتْ | : كلما نضجت جلودهم بدلناهم جلودا غيرها ... | ٥٦ | م النسـاء | ٤ |
| نَضَّاخَتَانِ | : فيهما عينان نضاختان ... ... ... ... ... ... | ٦٦ | م الرحمن | ٥٥ |
| نَضِيدٌ | : والنخل باسقات لها طلع نضيد ... ... ... ... | ١٠ | ك قـ | ٥٠ |
| مَنْضُودٍ | : وأمطرنا عليها حجارة من سجيل منضود ... ... | ٨٢ | ك هـود | ١١ |
| (٢) | فى سدر مخضود . وطلح منضود ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك الواقعـة | ٥٦ |
| نَضْرَةً | : فوقاهم الله شر ذلك اليوم ولقاهم نضرة وسرورا | ١١ | م الإنسـان | ٧٦ |
| (٢) | تعرف فى وجوههم نضرة النعيم ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك المطففين | ٨٣ |
| نَاضِرَةٌ | : وجوه يومئذ ناضرة . إلى ربها ناظرة ... ... | ٢٢ | ك القيامة | ٧٥ |
| النَّطِيحَةُ | : والمنخنقة والموقوذة والمتردية والنطيحة ... ... | ٣ | م المائدة | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| نُطْفَةٍ | : خلق الإنسان من نطفة فإذا هو خصيم مبين ... ... | ٤ | ك النحـل | ١٦ |
| (١٢) | أكفرت بالذى خلقك من تراب ثم من نطفة ثم سواك رجلا | ٣٧ | ك الكهف | ١٨ |
| | فإنا خلقناكم من تراب ثم من نطفـة ثم من علقة ... | ٥ | م الحـج | ٢٢ |
| | ثم جعلناه نطفة فى قرار مكين ... ... ... ... ... | ١٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ثم خلقنا النطفة علقة فخلقنا العلقة مضغة ... ... ... | ١٤ | ك « | ٢٣ |
| | والله خلقكم من تراب ثم من نطفة ثم جعلكم أزواجا | ١١ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | أو لم ير الإنسان أنا خلقناه من نطفة فإذا هو خصيم مبين | ٧٧ | ك يس | ٣٦ |
| | هو الذى خلقكم من تراب ثم من نطفة ثم من علقـة | ٦٧ | ك غافـر | ٤٠ |
| | وأنه خلق الزوجين الذكر والأنثى . من نطفة إذا تمنى | ٤٦ | ك النجـم | ٥٣ |
| | ألم يك نطفة من منى يمنى ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك القيـامة | ٧٥ |
| | إنا خلقنا الإنسان من نطفة أمشاج نبتليه ... ... ... | ٢ | م الإنسان | ٧٦ |
| | من نطفة خلقه فقدره ... ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك عبـس | ٨٠ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تَنْطِقُونَ | : فقال ألا تأكلون . مالكم لا تنطقون ... ... | ٩٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| (٢) | فورب السماء والأرض إنه لحق مثل ما أنكم تنطقون | ٢٣ | ك الذاريات | ٥١ |
| يَنْطِقُ | : ولدينا كتاب ينطق بالحق وهم لا يظلمون ... ... | ٦٢ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٣) | هذا كتابنا ينطق عليكم بالحق ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | ما ضل صاحبكم وما غوى . وما ينطق عن الهوى ... | ٣ | ك النجـم | ٥٣ |
| يَنْطِقُونَ | : قال بل فعله كبيرهم هذا فاسئلوهم إن كانوا ينطقون | ٦٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٤) | ثم نكسوا على رءوسهم لقد ما علمت ما هؤلاء ينطقون | ٦٥ | ك « | ٢١ |
| | ووقع القول عليهم بما ظلموا فهم لا ينطقون ... ... | ٨٥ | ك النمـل | ٢٧ |
| | هذا يوم لا ينطقون . ولا يؤذن لهم فيعتذرون ... | ٣٥ | ك المرسلات | ٧٧ |
| أَنْطَقَ | : قالوا أنطقنا الله الذى أنطق كل شىء ... ... ... | ٢١ | ك فصلت | ٤١ |
| أَنْطَقَنَا | : وقالوا لجلودهم لم شهدتم علينا قالوا أنطقنا الله | ٢١ | ك « | ٤١ |
| مَنْطِقَ | : وقال يأيها الناس علمنا منطق الطير وأوتينا من كل شىء | ١٦ | ك النمـل | ٢٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| نَظَرَ | : وإذا ما أنزلت سورة نظر بعضهم إلى بعض ... ... | ١٢٧ | م التـوبة | ٩ |
| (٣) | فنظر نظرة فى النجوم . فقال إنى سقيم ... ... ... | ٨٨ | ك الصافات | ٣٧ |
| | ثم نظر . ثم عبس وبسر . ثم أدبر واستكبر ... ... | ٢١ | ك المـدثر | ٧٤ |
| أَنْظُرْ | : ولما جاء موسى لميقاتنا وكلمه ربه قال رب أرنى أنظر إليك | ١٤٣ | ك الأعراف | ٧ |
| تَنْظُرْ | : يأيها الذين آمنوا اتقوا الله ولتنظر نفس ما قدمت لغد | ١٨ | م الحشـر | ٥٩ |
| تَنْظُرُونَ | : فأنجيناكم وأغرقنا آل فرعون وأنتم تنظرون ... | ٥٠ | م البقـرة | ٢ |
| (٤) | فأخذتكم الصاعقة وأنتم تنظرون... ... ... ... ... | ٥٥ | م « | ٢ |
| | فقد رأيتموه وأنتم تنظرون ... ... ... ... ... ... | ١٤٣ | م آل عمران | ٣ |
| | فلولا إذا بلغت الحلقوم . وأنتم حينئذ تنظرون ... | ٨٤ | ك الواقعـة | ٥٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| لِنَنْظُرَ | : ثم جعلناكم خلائف فى الأرض من بعـدهم لننظر | | | |
| (٣) | كيف تعملون ... ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك يـونس | ١٠ |
| | قال سننظر أصدقت أم كنت من الكاذبين ... ... | ٢٧ | ك النمـل | ٢٧ |
| | ننظر أتهتدى أم تكون من الذين لا يهتدون ... ... | ٤١ | ك « | ٢٧ |
| يَنْظُرُ | : ولا يكلمهم الله ولا ينظر إليهم يوم القيامة ... ... | ٧٧ | م آل عمران | ٣ |
| (٩) | ويستخلفكم فى الأرض فينظر كيف تعملون ... ... | ١٢٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | ومنهم من ينظر إليك ... ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك يـونس | ١٠ |
| | فلينظر أيها أزكى طعاما فليأتكم برزق منه ... ... ... | ١٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | ثم ليقطع فلينظر هل يذهبن كيده ما يغيظ ... ... | ١٥ | م الحـج | ٢٢ |
| | وما ينظر هؤلاء إلا صيحة واحدة ما لها من فواق | ١٥ | ك ص | ٣٨ |
| | يوم ينظر المرء ما قدمت يداه... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك النبـأ | ٧٨ |
| | فلينظر الإنسان إلى طعامه . أنا صببنا الماء صبا ... | ٢٤ | ك عبـس | ٨٠ |
| | فلينظر الإنسان مم خلق . خلق من ماء دافق ... ... | ٥ | ك الطـارق | ٨٦ |
| يَنْظُرُوا | : أو لم ينظـروا فى ملكوت السموات والأرض | ١٨٥ | ك الأعراف | ٧ |
| (٨) | أفلم يسيروا فى الأرض فينظروا كيف كان عاقبة الذين | | | |
| | من قبلهم ولدار الآخرة خير للذين اتقوا ... ... | ١٠٩ | ك يوسـف | ١٢ |
| | أو لم يسيروا فى الأرض فينظروا كيف كان عاقبة الذين | | | |
| | من قبلهم كانوا أشد منهم قوة ... ... ... ... | ٩ | ك الـروم | ٣٠ |
| | أو لم يسيروا فى الأرض فينظروا كيف كان عاقبة الذين | | | |
| | من قبلهم وكانوا أشد منهم قوة ... ... ... ... | ٤٤ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | أو لم يسيروا فى الأرض فينظروا كيف كان عاقبة الذين | | | |
| | كانوا من قبلهم كانوا هم أشد منهم قوة ... ... | ٢١ | ك غافـر | ٤٠ |
| | أفلم يسيروا فى الأرض فينظروا كيف كان عاقبة الذين | | | |
| | من قبلهم كانوا أكثر منهم ... ... ... ... ... | ٨٢ | ك « | ٤٠ |
| | أفلم يسيروا فى الأرض فينظروا كيف كان عاقبة الذين | | | |
| | من قبلهم دمر الله عليهم ... ... ... ... ... | ١٠ | م محمـد | ٤٧ |
| | أفلم ينظـروا إلى السماء فوقهم كيف بنيناها وزينـاها | ٦ | ك قٓ | ٥٠ |
| يَنْظُرُونَ | : هل ينظرون إلا أن يأتيهم الله فى ظلل من الغمام | ٢١٠ | م البقـرة | ٢ |
| (١٩) | هل ينظرون إلا أن تأتيهـم الملائكة أو يأتى ربك | ١٥٨ | ك الأنعام | ٦ |
| | هل ينظرون إلا تأويله ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | وتراهم ينظرون إليك وهم لا يبصرون... ... ... ... | ١٩٨ | ك « | ٧ |
| | كأنما يساقون إلى الموت وهم ينظرون ... ... ... | ٦ | م الأنفـال | ٨ |
| | هل ينظرون إلا أن تأتيهم الملائكة أو يأتى أمر ربك | ٣٣ | ك النحـل | ١٦ |
| | فإذا جاء الخوف رأيتهم ينظرون إليـك تدور أعينهم | ١٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | فهل ينظرون إلا سنة الأولين ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | ما ينظرون إلا صيحة واحدة تأخذهم وهم يخصمون | ٤٩ | ك يس | ٣٦ |
| | فإنما هى زجرة واحدة فإذا هم ينظرون ... ... ... | ١٩ | ك الصافات | ٣٧ |
| | ثم نفخ فيه أخرى فإذا هم قيام ينظرون ... ... ... | ٦٨ | ك الـزمر | ٣٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَنْظُرُونَ: | ينظرون من طرف خفيّ ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| | هل ينظرون إلا الساعة أن تأتيهم بغتة وهم لايشعرون | ٦٦ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | فهل ينظرون إلا الساعة أن تأتيهم بغتة ... ... ... | ١٨ | م محمد | ٤٧ |
| | رأيت الذين فى قلوبهم مرض ينظرون إليك ... ... | ٢٠ | م « | ٤٧ |
| | فعتوا عن أمر ربهم فأخذتهم الصاعقة وهم ينظرون | ٤٤ | ك الذاريات | ٥١ |
| | إن الأبرار لفى نعيم . على الأرائك ينظرون ... ... | ٢٣ | ك المطففين | ٨٣ |
| | من الكفار يضحكون . على الأرائك ينظرون ... ... | ٣٥ | ك « | ٨٣ |
| | أفلا ينظرون إلى الإبل كيف خلقت ... ... ... ... | ١٧ | ك الغاشية | ٨٨ |
| أَنْظُرْ: | فانظر إلى طعامك وشرابك لم يتسنّه ... ... ... ... | ٢٥٩ | م البقرة | ٢ |
| (٢٦) | وانظر إلى حمارك ولنجعلك آية للناس ... ... ... ... | ٢٥٩ | م « | ٢ |
| | وانظر إلى العظام كيف ننشزها ثم نكسوها لحما... ... | ٢٥٩ | م « | ٢ |
| | انظر كيف يفترون على الله الكذب ... ... ... ... | ٥٠ | م النساء | ٤ |
| | انظر كيف نبين لهم الآيات ... ... ... ... ... ... | ٧٥ | م المائدة | ٥ |
| | ثم انظر أنى يؤفكون ... ... ... ... ... ... ... | ٧٥ | م « | ٥ |
| | انظر كيف كذبوا على أنفسهم وضل عنهم ما كانوا يفترون | ٢٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | انظر كيف نصرف الآيات ثم هم يصدفون ... ... | ٤٦ | ك « | ٦ |
| | انظر كيف نصرف الآيات لعلهم يفقهون ... ... | ٦٥ | ك « | ٦ |
| | وأمطرنا عليهم مطرا فانظر كيف كان عاقبة المجرمين | ٨٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | فظلموا بها فانظر كيف كان عاقبة المفسدين ... ... | ١٠٣ | ك « | ٧ |
| | ولكن انظر إلى الجبل فإن استقر مكانه فسوف ترانى | ١٤٣ | ك « | ٧ |
| | كذلك كذب الذين من قبلهم فانظر كيف كان عاقبة الظالمين | ٣٩ | ك يونس | ١٠ |
| | وأغرقنا الذين كذبوا بآياتنا فانظر كيف كان عاقبة المنذرين ... ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك « | ١٠ |
| | انظر كيف فضلنا بعضهم على بعض ... ... ... ... | ٢١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | انظر كيف ضربوا لك الأمثال فضلوا فلا يستطيعون سبيلا | ٤٨ | ك « | ١٧ |
| | وانظر إلى إلهك الذى ظلت عليه عاكفا ... ... ... | ٩٧ | ك طه | ٢٠ |
| | انظر كيف ضربوا لك الأمثال فضلوا فلا يستطيعون سبيلا | ٩ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | فانظر كيف كان عاقبة المفسدين ... ... ... ... ... | ١٤ | ك النمل | ٢٧ |
| | فألقه إليهم ثم تولّ عنهم فانظر ماذا يرجعون ... ... | ٢٨ | ك « | ٢٧ |
| | فانظر كيف كان عاقبة مكرهم أنا دمرناهم وقومهم أجمعين | ٥١ | ك « | ٢٧ |
| | فنبذناهم فى اليم فانظر كيف كان عاقبة الظالمين ... ... | ٤٠ | ك القصص | ٢٨ |
| | فانظر إلى آثار رحمة الله كيف يحيى الأرض بعد موتها | ٥٠ | ك الروم | ٣٠ |
| | ولقد أرسلنا فيهم منذرين . فانظر كيف كان عاقبة المنذرين ... ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك الصافات | ٣٧ |
| | يا بنىّ إنى أرى فى المنام أنى أذبحك فانظر ماذا ترى | ١٠٢ | ك « | ٣٧ |
| | فانتقمنا منهم فانظر كيف كان عاقبة المكذبين ... ... | ٢٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| أَنْظُرْنَا: | لا تقولوا راعنا وقولوا انظرنا واسمعوا ... ... | ١٠٤ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | ولو أنهم قالوا سمعنا وأطعنا واسمع وانظرنا لكان خيرا لهم | ٤٦ | م النساء | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَنْظُرُوا: | فسيروا فى الأرض فانظروا كيف كان عاقبة المكذبين | ١٣٧ | م آل عمران | ٣ |
| (٩) | قل سيروا فى الأرض ثم انظروا كيف كان عاقبة المكذبين | ١١ | ك الأنعام | ٦ |
| | انظروا إلى ثمره إذا أثمر وينعه ... ... ... ... ... | ٩٩ | ك « | ٦ |
| | وانظروا كيف كان عاقبة المفسدين ... ... ... ... | ٨٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | قل انظروا ماذا فى السموات والأرض ... ... ... ... | ١٠١ | ك يونس | ١٠ |
| | فسيروا فى الأرض فانظروا كيف كان عاقبة المكذبين | ٣٦ | ك النحل | ١٦ |
| | قل سيروا فى الأرض فانظروا كيف كان عاقبة المجرمين | ٦٩ | ك النمل | ٢٧ |
| | قل سيروا فى الأرض فانظروا كيف بدأ الخلق ... | ٢٠ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | قل سيروا فى الأرض فانظروا كيف كان عاقبة الذين من قبل | ٤٢ | ك الروم | ٣٠ |
| أَنْظُرُونَا: | انظرونا نقتبس من نوركم ... ... ... ... ... | ١٣ | م الحديد | ٥٧ |
| فَأَنْظُرِى: | والأمر إليك فانظرى ماذا تأمرين... ... ... | ٣٣ | ك النمل | ٢٧ |
| تُنْظَرُونِ: | قل ادعوا شركاءكم ثم كيدونِ فلا تنظرونِ ... | ١٩٥ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | ثم لا يكن أمركم عليكم غمة ثم اقضوا إلىّ ولا تنظرونِ | ٧١ | ك يونس | ١٠ |
| | من دونه فكيدونى جميعا ثم لا تنظرونِ... ... ... ... | ٥٥ | ك هود | ١١ |
| أَنْظِرْنِى: | قال أنظرنى إلى يوم يبعثون... ... ... ... ... | ١٤ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | قال رب فأنظرنى إلى يوم يبعثون... ... ... ... ... | ٣٦ | ك الحجر | ١٥ |
| | قال رب فأنظرنى إلى يوم يبعثون ... ... ... ... | ٧٩ | ك ص | ٣٨ |
| يُنْظَرُونَ: | خالدين فيها لا يخفف عنهم العذاب ولاهم ينظرون | ١٦٢ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | خالدين فيها لا يخفف عنهم العذاب ولا هم ينظرون | ٨٨ | م آل عمران | ٣ |
| | ولو أنزلنا ملكا لقضى الأمر ثم لا ينظرون... ... ... | ٨ | ك الأنعام | ٦ |
| | فلا يخفف عنهم ولا هم ينظرون... ... ... ... ... | ٨٥ | ك النحل | ١٦ |
| | بل تأتيهم بغتة فتبهتهم فلا يستطيعون ردها ولاهم ينظرون | ٤٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | قل يوم الفتح لا ينفع الذين كفروا إيمانهم ولاهم ينظرون | ٢٩ | ك السجدة | ٣٢ |
| نَظَرَ: | ينظرون إليك نظر المغشىّ عليه من الموت... ... ... | ٢٠ | م محمد | ٤٧ |
| يَنْتَظِرُ: | فمنهم من قضى نحبه ومنهم من ينتظر... ... ... ... | ٢٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| يَنْتَظِرُونَ: | فهل ينتظرون إلا مثل أيام الذين خلوا من قبلهم | ١٠٢ | ك يونس | ١٠ |
| أَنْتَظِرْ: | فأعرض عنهم وانتظر إنهم منتظرون ... ... ... | ٣٠ | ك السجدة | ٣٢ |
| أَنْتَظِرُوا: | قل انتظروا إنا منتظرون ... ... ... ... ... | ١٥٨ | ك الأنعام | ٦ |
| (٥) | فانتظروا إنى معكم من المنتظرين ... ... ... ... | ٧١ | ك الأعراف | ٧ |
| | فقل إنما الغيب لله فانتظروا إنى معكم من المنتظرين... | ٢٠ | ك يونس | ١٠ |
| | قل فانتظروا إنى معكم من المنتظرين ... ... ... ... | ١٠٢ | ك « | ١٠ |
| | وانتظروا إنا منتظرون ... ... ... ... ... ... | ١٢٢ | ك هود | ١١ |
| النَّاظِرِينَ: | إنها بقرة صفراء فاقع لونها تسر الناظرين ... | ٦٩ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | ونزع يده فإذا هى بيضاء للناظرين ... ... ... ... | ١٠٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولقد جعلنا فى السماء بروجا وزيناها للناظرين... ... | ١٦ | ك الحجر | ١٥ |
| | ونزع يده فإذا هى بيضاء للناظرين ... ... ... ... | ٣٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | إلا أن يؤذن لكم إلى طعام غير ناظرين إناه ... ... | ٥٣ | م الأحزاب | ٣٣ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| نَاظِرَةٌ | : وإنى مرسلة إليهم بهدية فناظرة بم يرجع المرسلون | ٣٥ ك النمل | ٢٧ |
| (٢) | وجوه يومئذ ناضرة . إلى ربها ناظرة... ... ... ... | ٢٣ ك القيامة | ٧٥ |
| نَظْرَةً | : فنظر نظرة فى النجوم . فقال إنى سقيم ... ... ... | ٨٨ ك الصافات | ٣٧ |
| نَظِرَةٌ | : وإن كان ذو عسرة فنظرة إلى ميسرة ... ... ... | ٢٨٠ م البقرة | ٢ |
| مُنْظَرُونَ | : فيقولوا هل نحن منظرون ... ... ... ... ... | ٢٠٣ ك الشعراء | ٢٦ |
| الْمُنْظَرِينَ | : قال أنظرنى إلى يوم يبعثون . قال إنك من المنظرين | ١٥ ك الأعراف | ٧ |
| (٥) | ما ننزل الملائكة إلا بالحق وما كانوا إذا منظرين | ٨ ك الحجر | ١٥ |
| | قال رب فأنظرنى إلى يوم يبعثون . قال فإنك من المنظرين | ٣٧ ك « | ١٥ |
| | قال رب فأنظرنى إلى يوم يبعثون . قال فإنك من المنظرين | ٨٠ ك ص | ٣٨ |
| | فما بكت عليهم السماء والأرض وما كانوا منظرين ... | ٢٩ ك الدخان | ٤٤ |
| مُنْتَظِرُونَ | : قل انتظروا إنا منتظرون ... ... ... ... ... | ١٥٨ ك الأنعام | ٦ |
| (٣) | اعملوا على مكانتكم إنا عاملون . وانتظروا إنا منتظرون | ١٢٢ ك هود | ١١ |
| | فأعرض عنهم وانتظر إنهم منتظرون ... ... ... ... | ٣٠ ك السجدة | ٣٢ |
| الْمُنْتَظِرِينَ | : فانتظروا إنى معكم من المنتظرين... ... ... | ٧١ ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | فقل إنما الغيب لله فانتظروا إنى معكم من المنتظرين | ٢٠ ك يونس | ١٠ |
| | قل فانتظروا إنى معكم من المنتظرين ... ... ... ... | ١٠٢ ك « | ١٠ |
| نَعْجَةً | : إن هذا أخى له تسع وتسعون نعجة... ... ... ... | ٢٣ ك ص | ٣٨ |
| (٢) | ولى نعجة واحدة فقال أكفلنيها وعزنى فى الخطاب | ٢٣ ك « | ٣٨ |
| نَعْجَتِكَ | : قال لقد ظلمك بسؤال نعجتك ... ... ... ... | ٢٤ ك « | ٣٨ |
| نِعَاجِهِ | : إلى نعاجه وإن كثيرا من الخلطاء ليبغى بعضهم على بعض | ٢٤ ك « | ٣٨ |
| النُّعَاسَ | : إذ يغشيكم النعاس أمنة منه وينزل عليكم من السماء ماء | ١١ م الأنفال | ٨ |
| نُعَاسًا | : ثم أنزل عليكم من بعد الغم أمنة نعاسا يغشى طائفة منكم | ١٥٤ م آل عمران | ٣ |
| يَنْعِقُ | : ومثل الذين كفروا كمثل الذى ينعق بما لا يسمع إلا دعاء ونداء ... ... ... ... ... ... ... | ١٧١ م البقرة | ٢ |
| نَعْلَيْكَ | : إنى أنا ربك فاخلع نعليك إنك بالواد المقدس طوى | ١٢ ك طه | ٢٠ |
| نَعَّمَهُ | : فأما الإنسان إذا ما ابتلاه ربه فأكرمه ونعمه فيقول ربى أكرمن ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ ك الفجر | ٨٩ |
| أَنْعَمَ | : ومن يطع الله والرسول فأولئك مع الذين أنعم الله عليهم | ٦٩ م النساء | ٤ |
| (٥) | قال قد أنعم الله علىّ إذ لم أكن معهم شهيدا ... ... | ٧٢ م « | ٤ |
| | قال رجلان من الذين يخافون أنعم الله عليهما ادخلوا عليهم الباب ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣ م المائدة | ٥ |
| | أولئك الذين أنعم الله عليهم من النبيين من ذرية آدم | ٥٨ م مريم | ١٩ |
| | وإذ تقول للذى أنعم الله عليه وأنعمت عليه أمسك عليك زوجك واتق الله ... ... ... ... ... ... | ٣٧ م الأحزاب | ٣٣ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| أَنْعَمْتَ | : صراط الذين أنعمت عليهم... ... ... ... ... | ٧ ك الفاتحة | ١ |
| (٨) | اذكروا نعمتى التى أنعمت عليكم وأوفوا بعهدى... ... | ٤٠ م البقرة | ٢ |
| | اذكروا نعمتى التى أنعمت عليكم وأنى فضلتكم على العالمين | ٤٧ م « | ٢ |
| | يا بنى إسرائيل اذكروا نعمتى التى أنعمت عليكم... ... | ١٢٢ م « | ٢ |
| | وقال رب أوزعنى أن أشكر نعمتك التى أنعمت علىّ... | ١٩ ك النمل | ٢٧ |
| | قال رب بما أنعمت علىّ فلن أكون ظهيرا للمجرمين ... | ١٧ ك القصص | ٢٨ |
| | وإذ تقول للذى أنعم الله عليه وأنعمت عليه أمسك عليك زوجك ... ... ... ... ... ... ... | ٣٧ م الأحزاب | ٣٣ |
| | قال رب أوزعنى أن أشكر نعمتك التى أنعمت علىّ... | ١٥ م الأحقاف | ٤٦ |
| أَنْعَمْنَا | : وإذا أنعمنا على الإنسان أعرض ونأى بجانبه... | ٨٣ ك الإسراء | ١٧ |
| (٣) | وإذا أنعمنا على الإنسان أعرض ونأى بجانبه... ... | ٥١ ك فصلت | ٤١ |
| | إن هو إلا عبد أنعمنا عليه وجعلناه مثلا لبنى إسرائيل | ٥٩ ك الزخرف | ٤٣ |
| أَنْعَمَهَا | : ذلك بأن الله لم يك مغيرا نعمة أنعمها على قوم حتى يغيروا ما بأنفسهم ... ... ... ... ... ... | ٥٣ م الأنفال | ٨ |
| نَاعِمَةٌ | : وجوه يومئذ ناعمة . لسعيها راضية... ... ... ... | ٨ ك الغاشية | ٨٨ |
| نَعْمَةٍ | : وزروع ومقام كريم . ونعمة كانوا فيها فاكهين ... | ٢٧ ك الدخان | ٤٤ |
| (٢) | وذرنى والمكذبين أولى النعمة ومهلهم قليلا ... ... | ١١ م المزمل | ٧٣ |
| نِعْمَةَ | : ومن يبدل نعمة الله من بعد ما جاءته فإن الله شديد العقاب | ٢١١ م البقرة | ٢ |
| (٣٤) | واذكروا نعمة الله عليكم وما أنزل عليكم من الكتاب | ٢٣١ م « | ٢ |
| | واذكروا نعمة الله عليكم إذ كنتم أعداء فألف بين قلوبكم | ١٠٣ م آل عمران | ٣ |
| | يستبشرون بنعمة من الله وفضل ... ... ... ... ... | ١٧١ م « | ٣ |
| | فانقلبوا بنعمة من الله وفضل لم يمسسهم سوء ... ... | ١٧٤ م « | ٣ |
| | واذكروا نعمة الله عليكم وميثاقه الذى واثقكم به ... | ٧ م المائدة | ٥ |
| | اذكروا نعمة الله عليكم إذ هم قوم أن يبسطوا إليكم أيديهم فكف أيديهم عنكم ... ... ... ... ... | ١١ م « | ٥ |
| | وإذ قال موسى لقومه يا قوم اذكروا نعمة الله عليكم | ٢٠ م « | ٥ |
| | ذلك بأن الله لم يك مغيرا نعمة أنعمها على قوم حتى يغيروا ما بأنفسهم ... ... ... ... ... ... | ٥٣ م الأنفال | ٨ |
| | وإذ قال موسى لقومه اذكروا نعمة الله عليكم ... ... | ٦ ك إبراهيم | ١٤ |
| | ألم تر إلى الذين بدلوا نعمة الله كفرا ... ... ... | ٢٨ م « | ١٤ |
| | وآتاكم من كل ما سألتموه وإن تعدوا نعمة الله لا تحصوها | ٣٤ ك « | ١٤ |
| | وإن تعدوا نعمة الله لا تحصوها إن الله لغفور رحيم | ١٨ ك النحل | ١٦ |
| | وما بكم من نعمة فمن الله ثم إذا مسكم الضر فإليه تجأرون | ٥٣ ك « | ١٦ |
| | أفبنعمة الله يجحدون ... ... ... ... ... ... | ٧١ ك « | ١٦ |
| | أفبالباطل يؤمنون وبنعمة الله هم يكفرون ... ... | ٧٢ ك « | ١٦ |
| | يعرفون نعمة الله ثم ينكرونها وأكثرهم الكافرون ... | ٨٣ ك « | ١٦ |
| | واشكروا نعمة الله إن كنتم إياه تعبدون ... ... ... | ١١٤ ك « | ١٦ |
| | وتلك نعمة تمنها علىّ أن عبدت بنى إسرائيل ... ... | ٢٢ ك الشعراء | ٢٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| نِعْمَةٌ: | أفبالباطل يؤمنون وبنعمة الله يكفرون... ... ... | ٦٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ألم تر أن الفلك تجرى فى البحر بنعمة الله ليريكم من آياته | ٣١ | ك لقمان | ٣١ |
| | اذكروا نعمة الله عليكم إذ جاءتكم جنود فأرسلنا عليهم | | | |
| | ريحا وجنودا لم تروها ... ... ... ... ... | ٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | يأيها الناس اذكروا نعمة الله عليكم هل من خالق غير الله | ٣ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ولولا نعمة ربى لكنت من المحضرين ... ... ... | ٥٧ | ك الصافات | ٣٧ |
| | ثم إذا خوله نعمة منه نسى ما كان يدعوا إليه من قبل | ٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ثم إذا خولناه نعمة منا قال إنما أوتيته على علم... ... | ٤٩ | ك « | ٣٩ |
| | لتستووا على ظهوره ثم تذكروا نعمة ربكم إذا استويتم عليه | ١٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | فضلا من الله ونعمة والله عليم حكيم ... ... ... ... | ٨ | م الحجرات | ٤٩ |
| | فذكر فما أنت بنعمة ربك بكاهن ولا مجنون ... ... | ٢٩ | ك الطور | ٥٢ |
| | نعمة من عندنا كذلك نجزى من شكر ... ... ... ... | ٣٥ | ك القمر | ٥٤ |
| | ن والقلم وما يسطرون . ما أنت بنعمة ربك بمجنون | ٢ | ك القلم | ٦٨ |
| | لولا أن تداركه نعمة من ربه لنبذ بالعراء وهو مذموم | ٤٩ | م « | ٦٨ |
| | وما لأحد عنده من نعمة تجزى ... ... ... ... ... | ١٩ | ك الليل | ٩٢ |
| | وأما بنعمة ربك فحدث ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك الضحى | ٩٣ |
| نِعْمَتَكَ: | وقال رب أوزعنى أن أشكر نعمتك التى أنعمت علىّ | ١٩ | ك النمل | ٢٧ |
| (٢) | قال رب أوزعنى أن أشكر نعمتك التى أنعمت علىّ | ١٥ | م الأحقاف | ٤٦ |
| نِعْمَتِهِ: | فألف بين قلوبكم فأصبحتم بنعمته إخوانا ... ... | ١٠٣ | م آل عمران | ٣ |
| (٥) | ولكن يريد ليطهركم وليتم نعمته عليكم لعلكم تشكرون | ٦ | م المائدة | ٥ |
| | ويتم نعمته عليك وعلى آل يعقوب ... ... ... ... | ٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | كذلك يتم نعمته عليكم لعلكم تسلمون ... ... ... | ٨١ | ك النحل | ١٦ |
| | ليغفر لك الله ما تقدم من ذنبك وما تأخر ويتم نعمته عليك | ٢ | م الفتح | ٤٨ |
| نِعْمَتِىَ: | اذكروا نعمتى التى أنعمت عليكم وأوفوا بعهدى | ٤٠ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | اذكروا نعمتى التى أنعمت عليكم وأنى فضلتكم على العالمين | ٤٧ | م « | ٢ |
| | اذكروا نعمتى التى أنعمت عليكم وأنى فضلتكم على العالمين | ١٢٢ | م « | ٢ |
| | فلا تخشوهم واخشونى ولأتم نعمتى عليكم ولعلكم تهتدون | ١٥٠ | م « | ٢ |
| | اليوم أكملت لكم دينكم وأتممت عليكم نعمتى ... ... | ٣ | م المائدة | ٥ |
| | يا عيسى ابن مريم اذكر نعمتى عليك وعلى والدتك | ١١٠ | م « | ٥ |
| نَعْمَاءَ: | ولئن أذقناه نعماء بعد ضراء مسته ليقولن ذهب | | | |
| | السيئات عنى ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك هود | ١١ |
| نِعَمَهُ: | وأسبغ عليكم نعمه ظاهرة وباطنة ... ... ... ... | ٢٠ | ك لقمان | ٣١ |
| أَنْعُمِ: | فكفرت بأنعم الله فأذاقها الله لباس الجوع والخوف | ١١٢ | ك النحل | ١٦ |
| لِأَنْعُمِهِ: | ولم يك من المشركين . شاكرا لأنعمه اجتباه وهداه | ١٢١ | ك « | ١٦ |
| النَّعِيمِ: | لكفرنا عنهم سيئاتهم ولأدخلناهم جنات النعيم ... | ٦٥ | م المائدة | ٥ |
| (١٦) | لهم فيها نعيم مقيم ... ... ... ... ... ... ... | ٢١ | م التوبة | ٩ |
| | تجرى من تحتهم الأنهار فى جنات النعيم ... ... ... | ٩ | ك يونس | ١٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| النَّعِيمِ: | فالذين آمنوا وعملوا الصالحات فى جنات النعيم ... | ٥٦ | م الحج | ٢٢ |
| | واجعلنى من ورثة جنة النعيم ... ... ... ... ... | ٨٥ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم جنات النعيم | ٨ | ك لقمان | ٣١ |
| | فواكه وهم مكرمون . فى جنات النعيم ... ... ... | ٤٣ | ك الصافات | ٣٧ |
| | إن المتقين فى جنات ونعيم ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الطور | ٥٢ |
| | أولئك المقربون . فى جنات النعيم ... ... ... ... | ١٢ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | فأما إن كان من المقربين . فروح وريحان وجنة نعيم | ٨٩ | ك « | ٥٦ |
| | إن للمتقين عند ربهم جنات النعيم ... ... ... ... | ٣٤ | ك القلم | ٦٨ |
| | أيطمع كل امرئ منهم أن يدخل جنة نعيم ... ... | ٣٨ | ك المعارج | ٧٠ |
| | إن الأبرار لفى نعيم . وإن الفجار لفى جحيم ... ... | ١٣ | ك الانفطار | ٨٢ |
| | إن الأبرار لفى نعيم . على الأرائك ينظرون ... ... | ٢٢ | ك المطففين | ٨٣ |
| | تعرف فى وجوههم نضرة النعيم ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك « | ٨٣ |
| | ثم لتسئلن يومئذ عن النعيم ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك التكاثر | ١٠٢ |
| نَعِيمًا: | وإذا رأيت ثَمَّ رأيت نعيما وملكا كبيرا ... ... ... | ٢٠ | م الإنسان | ٧٦ |
| النَّعَمِ: | ومن قتله منكم متعمدا فجزاء مثل ما قتل من النعم ... | ٩٥ | م المائدة | ٥ |
| الْأَنْعَامُ: | والقناطير المقنطرة من الذهب والفضة والخيل | | | |
| (٢٦) | المسومة والأنعام ... ... ... ... ... ... ... | ١٤ | م آل عمران | ٣ |
| | ولآمرنهم فليبتكن آذان الأنعام ... ... ... ... ... | ١١٩ | م النساء | ٤ |
| | أحلت لكم بهيمة الأنعام إلا ما يتلى عليكم غير محلى الصيد | ١ | م المائدة | ٥ |
| | وجعلوا لله مما ذرأ من الحرث والأنعام نصيبا ... ... | ١٣٦ | ك الأنعام | ٦ |
| | وقالوا هذه أنعام وحرث حجر لا يطعمها إلا من نشاء بزعمهم | ١٣٨ | ك « | ٦ |
| | وأنعام حرمت ظهورها ... ... ... ... ... ... ... | ١٣٨ | ك « | ٦ |
| | وأنعام لا يذكرون اسم الله عليها افتراء عليه ... ... | ١٣٨ | ك « | ٦ |
| | وقالوا ما فى بطون هذه الأنعام خالصة لذكورنا ... | ١٣٩ | ك « | ٦ |
| | ومن الأنعام حمولة وفرشا ... ... ... ... ... ... | ١٤٢ | ك « | ٦ |
| | أولئك كالأنعام بل هم أضل أولئك هم الغافلون ... | ١٧٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | فاختلط به نبات الأرض مما يأكل الناس والأنعام | ٢٤ | ك يونس | ١٠ |
| | والأنعام خلقها لكم فيها دفء ومنافع ومنها تأكلون | ٥ | ك النحل | ١٦ |
| | وإن لكم فى الأنعام لعبرة ... ... ... ... ... ... | ٦٦ | ك « | ١٦ |
| | وجعل لكم من جلود الأنعام بيوتا تستخفونها يوم ظعنكم | ٨٠ | ك « | ١٦ |
| | ويذكروا اسم الله فى أيام معلومات على ما رزقهم | | | |
| | من بهيمة الأنعام ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م الحج | ٢٢ |
| | وأحلت لكم الأنعام إلا ما يتلى عليكم ... ... ... ... | ٣٠ | م « | ٢٢ |
| | ولكل أمة جعلنا منسكا ليذكروا اسم الله على ما رزقهم | | | |
| | من بهيمة الأنعام ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | م « | ٢٢ |
| | وإن لكم فى الأنعام لعبرة نسقيكم مما فى بطونها ... | ٢١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | إن هم إلا كالأنعام بل هم أضل سبيلا ... ... ... | ٤٤ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | واتقوا الذى أمدكم بما تعلمون . أمدكم بأنعام وبنين | ١٣٣ | ك الشعراء | ٢٦ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| الأَنْعَامَ: | ومن الناس والدواب والأنعام مختلف ألوانه كذلك | ك فاطر | ٢٨ |
| | وأنزل لكم من الأنعام ثمانية أزواج ... ... ... ... | ك الزمر | ٦ |
| | الله الذى جعل لكم الأنعام لتركبوا منها ومنها تأكلون | ك غافر | ٧٩ |
| | جعل لكم من أنفسكم أزواجا ومن الأنعام أزواجا | ك الشورى | ١١ |
| | وجعل لكم من الفلك والأنعام ما تركبون ... ... | ك الزخرف | ١٢ |
| | والذين كفروا يتمتعون ويأكلون كما تأكل الأنعام | م محمد | ١٢ |
| أَنْعَامًا: | لنحيي به بلدة ميتا ونسقيه مما خلقنا أنعاما وأناسى كثيرة | ك الفرقان | ٤٩ |
| (٢) | أولم يروا أنا خلقنا لهم مما عملت أيدينا أنعاما فهم لها مالكون ... ... ... ... ... ... ... | يس | ٧١ |
| أَنْعَامِكُمْ: | كلوا وارعوا أنعامكم إن فى ذلك لآيات لأولى النهى | ك طه | ٥٤ |
| (٣) | أخرج منها ماءها ومرعاها . والجبال أرساها . متاعا لكم ولأنعامكم ... ... ... ... ... ... ... | ك النازعات | ٣٣ |
| | وفاكهة وأبا . متاعا لكم ولأنعامكم ... ... ... ... | ك عبس | ٣٢ |
| أَنْعَامُهُمْ: | فنخرج به زرعا تأكل منه أنعامهم وأنفسهم ... | ك السجدة | ٢٧ |
| نِعْمَ: | ونعم أجر العاملين ... ... ... ... ... ... ... | م آل عمران | ١٣٦ |
| (١٦) | فزادهم إيمانا وقالوا حسبنا الله ونعم الوكيل ... ... | م « | ١٧٣ |
| | وإن تولوا فاعلموا أن الله مولاكم نعم المولى ... ... | م الأنفال | ٤٠ |
| | ونعم النصير ... ... ... ... ... ... ... ... | م « | ٤٠ |
| | سلام عليكم بما صبرتم فنعم عقبى الدار... ... ... ... | م الرعد | ٢٤ |
| | ولدار الآخرة خير ولنعم دار المتقين ... ... ... ... | ك النحل | ٣٠ |
| | نعم الثواب وحسنت مرتفقا ... ... ... ... ... | ك الكهف | ٣١ |
| | واعتصموا بالله هو مولاكم فنعم المولى ... ... ... | م الحج | ٧٨ |
| | ونعم النصير ... ... ... ... ... ... ... ... | م « | ٧٨ |
| | تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها نعم أجر العاملين | ك العنكبوت | ٥٨ |
| | ولقد نادانا نوح فلنعم المجيبون ... ... ... ... ... | ك الصافات | ٧٥ |
| | ووهبنا لداود سليمان نعم العبد إنه أواب ... ... ... | ك ص | ٣٠ |
| | إنا وجدناه صابرا نعم العبد إنه أواب ... ... ... ... | ك « | ٤٤ |
| | نتبوأ من الجنة حيث نشاء فنعم أجر العاملين ... ... | ك الزمر | ٧٤ |
| | والأرض فرشناها فنعم الماهدون ... ... ... ... | ك الذاريات | ٤٨ |
| | فقدرنا فنعم القادرون ... ... ... ... ... ... ... | ك المرسلات | ٢٣ |
| نِعِمَّا: | إن تبدوا الصدقات فنعما هى ... ... ... ... ... | م البقرة | ٢٧١ |
| (٢) | إن الله نعما يعظكم به إن الله كان سميعا بصيرا ... ... | م النساء | ٥٨ |
| نَعَمْ: | فهل وجدتم ما وعد ربكم حقا قالوا نعم ... ... ... | ك الأعراف | ٤٤ |
| (٤) | قال نعم وإنكم لمن المقربين ... ... ... ... ... ... | ك « | ١١٤ |
| | قال نعم وإنكم إذا لمن المقربين ... ... ... ... ... | ك الشعراء | ٤٢ |
| | قل نعم وأنتم داخرون ... ... ... ... ... ... ... | ك الصافات | ١٨ |
| فَسَيُنْغِضُونَ: | فسينغضون إليك رءوسهم ويقولون متى هو | ك الإسراء | ٥١ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| النَّفَّاثَاتِ: | ومن شر النفاثات فى العقد ... ... ... ... ... | ك الفلق | ٤ |
| نَفْحَةٌ: | ولئن مستهم نفحة من عذاب ربك ليقولن يا ويلنا إنا كنا ظالمين ... ... ... ... ... ... ... ... | ك الأنبياء | ٤٦ |
| نَفَخَ: | ثم سواه ونفخ فيه من روحه ... ... ... ... ... | ك السجدة | ٩ |
| نَفَخْتُ: | فإذا سويته ونفخت فيه من روحى فقعوا له ساجدين | ك الحجر | ٢٩ |
| (٢) | فإذا سويته ونفخت فيه من روحى فقعوا له ساجدين | ك ص | ٧٢ |
| نَفَخْنَا: | والتى أحصنت فرجها فنفخنا فيها من روحنا ... | ك الأنبياء | ٩١ |
| (٢) | ومريم ابنة عمران التى أحصنت فرجها فنفخنا فيه من روحنا ... ... ... ... ... ... ... ... | م التحريم | ١٢ |
| فَأَنْفُخُ: | فأنفخ فيه فيكون طيرا بإذن الله ... ... ... ... | م آل عمران | ٤٩ |
| فَتَنْفُخُ: | فتنفخ فيها فتكون طيرا بإذنى... ... ... ... ... | م المائدة | ١١٠ |
| أَنْفُخُوا: | حتى إذا ساوى بين الصدفين قال انفخوا... ... | م الكهف | ٩٦ |
| نُفِخَ: | ونفخ فى الصور فجمعناهم جمعا ... ... ... ... ... | م « | ٩٩ |
| (٧) | فإذا نفخ فى الصور فلا أنساب بينهم يومئذ ولا يتساءلون | ك المؤمنون | ١٠١ |
| | ونفخ فى الصور فإذا هم من الأجداث إلى ربهم ينسلون | يس | ٥١ |
| | ونفخ فى الصور فصعق من فى السموات ومن فى الأرض إلا من شاء الله ... ... ... ... ... ... | ك الزمر | ٦٨ |
| | ثم نفخ فيه أخرى فإذاهم قيام ينظرون ... ... ... | ك « | ٦٨ |
| | ونفخ فى الصور ذلك يوم الوعيد ... ... ... ... ... | ك ق | ٢٠ |
| | فإذا نفخ فى الصور نفخة واحدة ... ... ... ... ... | ك الحاقة | ١٣ |
| يُنْفَخُ: | قوله الحق وله الملك يوم ينفخ فى الصور ... ... | ك الأنعام | ٧٣ |
| (٤) | يوم ينفخ فى الصور ونحشر المجرمين يومئذ زرقا... ... | ك طه | ١٠٢ |
| | ويوم ينفخ فى الصور ففزع من السموات ومن فى الأرض | ك النمل | ٨٧ |
| | يوم ينفخ فى الصور فتأتون أفواجا ... ... ... ... | ك النبأ | ١٨ |
| نَفْخَةٌ: | فإذا نفخ فى الصور نفخة واحدة ... ... ... ... | ك الحاقة | ١٣ |
| نَفِدَ: | قل لو كان البحر مدادا لكلمات ربى لنفد البحر قبل أن تنفد كلمات ربى ... ... ... ... ... | ك الكهف | ١٠٩ |
| نَفِدَتْ: | ولو أنما فى الأرض من شجرة أقلام والبحر يمده من بعده سبعة أبحر ما نفدت كلمات الله ... ... ... | م لقمان | ٢٧ |
| تَنْفَدَ: | لنفد البحر قبل أن تنفد كلمات ربى... ... ... ... | ك الكهف | ١٠٩ |
| يَنْفَدُ: | ما عندكم ينفد وما عند الله باق ... ... ... ... ... | ك النحل | ٩٦ |
| نَفَادِ: | إن هذا لرزقنا ما له من نفاد ... ... ... ... ... | ك ص | ٥٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| تَنْفُذُوا: | إن استطعتم أن تنفذوا من أقطار السموات والأرض فانفذوا ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | م الرحمن | ٥٥ |
| تَنْفُذُونَ: | لا تنفذون إلا بسلطان ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | م « | ٥٥ |
| فَانْفُذُوا: | فانفذوا لا تنفذون إلا بسلطان ... ... ... ... | ٣٣ | م « | ٥٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| نَفَرَ: | فلولا نفر من كل فرقة منهم طائفة ليتفقهوا فى الدين | ١٢٢ | م التوبة | ٩ |
| تَنْفِرُوا: | إلا تنفروا يعذبكم عذابا أليما ... ... ... ... | ٣٩ | م « | ٩ |
| (٢) | وقالوا لا تنفروا فى الحر قل نار جهنم أشد حرا ... ... | ٨١ | م « | ٩ |
| يَنْفِرُوا: | وما كان المؤمنون لينفروا كافة ... ... ... ... | ١٢٢ | م « | ٩ |
| انْفِرُوا: | يا أيها الذين آمنوا خذوا حذركم فانفروا ثبات | ٧١ | م النساء | ٤ |
| (٤) | أو انفروا جميعا ... ... ... ... ... ... ... | ٧١ | م « | ٤ |
| | مالكم إذا قيل لكم انفروا فى سبيل الله اثاقلتم إلى الأرض | ٣٨ | م التوبة | ٩ |
| | انفروا خفافا وثقالا وجاهدوا بأموالكم وأنفسكم ... | ٤١ | م « | ٩ |
| نَفَرٌ: | قل أوحى إلىّ أنه استمع نفر من الجن فقالوا إنا سمعنا قرآنا عجبا ... ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الجن | ٧٢ |
| نَفَرًا: | فقال لصاحبه وهو يحاوره أنا أكثر منك مالا وأعز نفرا | ٣٤ | ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | وإذ صرفنا إليك نفرا من الجن يستمعون القرآن ... | ٢٩ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| نُفُورٍ: | بل لجوا فى عتو ونفور ... ... ... ... ... | ٢١ | ك الملك | ٦٧ |
| نُفُورًا: | ولقد صرفنا فى هذا القرآن ليذكروا وما يزيدهم إلا نفورا | ٤١ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٤) | وإذا ذكرت ربك فى القرآن وحده ولوا على أدبارهم نفورا | ٤٦ | ك « | ١٧ |
| | قالوا وما الرحمن أنسجد لما تأمرنا وزادهم نفورا | ٦٠ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | فلما جاءهم نذير ما زادهم إلا نفورا ... ... ... | ٤٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| نَفِيرًا: | وأمددناكم بأموال وبنين وجعلناكم أكثر نفيرا ... | ٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| مُسْتَنْفِرَةٌ: | كأنهم حمر مستنفرة . فرت من قسورة ... ... | ٥٠ | ك المدثر | ٧٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تَنَفَّسَ: | والصبح إذا تنفس . إنه لقول رسول كريم ... ... | ١٨ | ك التكوير | ٨١ |
| فَلْيَتَنَافَسِ: | ختامه مسك وفى ذلك فليتنافس المتنافسون | ٢٦ | ك المطففين | ٨٣ |
| الْمُتَنَافِسُونَ: | وفى ذلك فليتنافس المتنافسون ... ... ... | ٢٦ | ك « | ٨٣ |
| نَفْسٍ: | واتقوا يوما لا تجزى نفس ... ... ... ... ... | ٤٨ | م البقرة | ٢ |
| (٦١) | عن نفس شيئا ولا يقبل منها شفاعة ... ... ... | ٤٨ | م « | ٢ |
| | واتقوا يوما لا تجزى نفس ... ... ... ... ... | ١٢٣ | م « | ٢ |
| | من نفس شيئا ولا يقبل منها عدل ... ... ... ... | ١٢٣ | م « | ٢ |
| | لا تكلف نفس إلا وسعها ... ... ... ... ... | ٢٣٣ | م « | ٢ |
| | ثم توفى كل نفس ما كسبت وهم لا يظلمون ... ... | ٢٨١ | م « | ٢ |
| | ووفيت كل نفس ما كسبت وهم لا يظلمون ... ... | ٢٥ | م آل عمران | ٣ |
| | يوم تجد كل نفس ما عملت من خير محضرا ... ... | ٣٠ | م « | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| نَفْسٍ: | وما كان لنفس أن تموت إلا بإذن الله كتابا مؤجلا | ١٤٥ | م آل عمران | ٣ |
| | ثم توفى كل نفس ما كسبت وهم لا يظلمون ... ... | ١٦١ | م « | ٣ |
| | كل نفس ذائقة الموت وإنما توفون أجوركم يوم القيامة | ١٨٥ | م « | ٣ |
| | يأيها الناس اتقوا ربكم الذى خلقكم من نفس واحدة | ١ | م النساء | ٤ |
| | أنه من قتل نفسا بغير نفس أو فساد فى الأرض فكأنما قتل الناس جميعا ... ... ... ... ... | ٣٢ | م المائدة | ٥ |
| | وكتبنا عليهم فيها أن النفس ... ... ... ... ... | ٤٥ | م « | ٥ |
| | بالنفس والعين بالعين والأنف بالأنف والأذن بالأذن | ٤٥ | م « | ٥ |
| | وذكر به أن تبسل نفس بما كسبت ... ... ... ... | ٧٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | وهو الذى أنشأكم من نفس واحدة فمستقر ومستودع | ٩٨ | ك « | ٦ |
| | ولا تقتلوا النفس التى حرم الله إلا بالحق ... ... ... | ١٥١ | م « | ٦ |
| | ولا تكسب كل نفس إلا عليها ... ... ... ... ... | ١٦٤ | ك « | ٦ |
| | هو الذى خلقكم من نفس واحدة وجعل منها زوجها | ١٨٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | هنالك تبلو كل نفس ما أسلفت ... ... ... ... | ٣٠ | ك يونس | ١٠ |
| | ولو أن لكل نفس ظلمت ما فى الأرض لافتدت به | ٥٤ | ك « | ١٠ |
| | وما كان لنفس أن تؤمن إلا بإذن الله ... ... ... | ١٠٠ | ك « | ١٠ |
| | يوم يأت لا تكلم نفس إلا بإذنه ... ... ... ... | ١٠٥ | ك هود | ١١ |
| | وما أبرئ نفسى إن النفس لأمارة بالسوء إلا ما رحم ربى | ٥٣ | ك يوسف | ١٢ |
| | إلا حاجة فى نفس يعقوب قضاها ... ... ... ... | ٦٨ | ك « | ١٢ |
| | أفمن هو قائم على كل نفس بما كسبت ... ... ... | ٣٣ | م الرعد | ١٣ |
| | يعلم ما تكسب كل نفس وسيعلم الكفار لمن عقبى الدار | ٤٢ | م « | ١٣ |
| | ليجزى الله كل نفس ما كسبت إن الله سريع الحساب | ٥١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | يوم تأتى كل نفس تجادل عن نفسها ... ... ... ... | ١١١ | ك النحل | ١٦ |
| | وتوفى كل نفس ما عملت وهم لا يظلمون ... ... ... | ١١١ | ك « | ١٦ |
| | ولا تقتلوا النفس التى حرم الله إلا بالحق ... ... ... | ٣٣ | م الإسراء | ١٧ |
| | قال أقتلت نفسا زكية بغير نفس لقد جئت شيئا نكرا | ٧٤ | ك الكهف | ١٨ |
| | إن الساعة آتية أكاد أخفيها لتجزى كل نفس بما تسعى | ١٥ | ك طه | ٢٠ |
| | كل نفس ذائقة الموت ونبلوكم بالشر والخير فتنة ... | ٣٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ونضع الموازين القسط ليوم القيامة فلا تظلم نفس شيئا | ٤٧ | ك « | ٢١ |
| | ولا يقتلون النفس التى حرم الله إلا بالحق ولا يزنون | ٦٨ | م الفرقان | ٢٥ |
| | كل نفس ذائقة الموت ثم إلينا ترجعون ... ... ... | ٥٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ما خلقكم ولا بعثكم إلا كنفس واحدة ... ... ... | ٢٨ | م لقمان | ٣١ |
| | وما تدرى نفس ماذا تكسب غدا ... ... ... ... | ٣٤ | ك « | ٣١ |
| | وما تدرى نفس بأى أرض تموت ... ... ... ... | ٣٤ | ك « | ٣١ |
| | ولو شئنا لآتينا كل نفس هداها ... ... ... ... | ١٣ | ك السجدة | ٣٢ |
| | فلا تعلم نفس ما أخفى لهم من قرة أعين ... ... ... | ١٧ | م « | ٣٢ |
| | فاليوم لا تظلم نفس شيئا ولا تجزون إلا ما كنتم تعملون | ٥٤ | ك يس | ٣٦ |
| | خلقكم من نفس واحدة ثم جعل منها زوجها ... ... | ٦ | ك الزمر | ٣٩ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| نَفْسٍ: | أن تقول نفس ياحسرتى على مافرطت فى جنب الله | ك الزمر | ٥٦ ٣٩ |
| | ووفيت كل نفس ما عملت وهو أعلم بما يفعلون ... | ك « | ٧٠ ٣٩ |
| | اليوم تجزى كل نفس بما كسبت لا ظلم اليوم ... ... | ك غافر | ١٧ ٤٠ |
| | ولتجزى كل نفس بما كسبت وهم لا يظلمون ... ... | ك الجاثية | ٢٢ ٤٥ |
| | وجاءت كل نفس معها سائق وشهيد ... ... ... ... | ك ق | ٢١ ٥٠ |
| | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله ولتنظر نفس ماقدمت لغد | م الحشر | ١٨ ٥٩ |
| | كل نفس بما كسبت رهينة ... ... ... ... ... | ك المدثر | ٣٨ ٧٤ |
| | ولا أقسم بالنفس اللوامة ... ... ... ... ... | ك القيامة | ٢ ٧٥ |
| | وأما من خاف مقام ربه ونهى النفس عن الهوى . فإن الجنة هى المأوى ... ... ... ... ... | ك النازعات | ٤٠ ٧٩ |
| | وإذا الجنة أزلفت . علمت نفس ما أحضرت ... | ك التكوير | ١٤ ٨١ |
| | وإذا القبور بعثرت . علمت نفس ما قدمت وأخرت | ك الانفطار | ٥ ٨٢ |
| | يوم لا تملك نفس ... ... ... ... ... ... | ك « | ١٩ ٨٢ |
| | لنفس شيئا والأمر يومئذ لله ... ... ... ... | ك « | ١٩ ٨٢ |
| | إن كل نفس لما عليها حافظ ... ... ... ... | ك الطارق | ٤ ٨٦ |
| | يأيتها النفس المطمئنة . ارجعى إلى ربك راضية مرضية | ك الفجر | ٢٧ ٨٩ |
| | ونفس وما سواها . فألهمها فجورها وتقواها ... ... | ك الشمس | ٧ ٩١ |
| نَفْسًا: | وإذ قتلتم نفسا فادارأتم فيها والله مخرج ما كنتم تكتمون | م البقرة | ٧٢ ٢ |
| (١٤) | لا يكلف الله نفسا إلا وسعها ... ... ... ... | م « | ٢٨٦ ٢ |
| | فإن طبن لكم عن شىء منه نفسا فكلوه هنيئا مريئا ... | م النساء | ٤ ٤ |
| | من أجل ذلك كتبنا على بنى إسرائيل أنه من قتل نفسا بغير نفس أو فساد فى الأرض فكأنما قتل الناس جميعا | م المائدة | ٣٢ ٥ |
| | لا نكلف نفسا إلا وسعها ... ... ... ... ... | م الأنعام | ١٥٢ ٦ |
| | يوم يأتى بعض آيات ربك لا ينفع نفسا إيمانها لم تكن آمنت من قبل ... ... ... ... ... | ك « | ١٥٨ ٦ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات لا نكلف نفسا إلا وسعها | ك الأعراف | ٤٢ ٧ |
| | قال أقتلت نفسا زكية بغير نفس لقد جئت شيئا نكرا | ك الكهف | ٧٤ ١٨ |
| | وقتلت نفسا فنجيناك من الغم وفتناك فتونا... ... ... | ك طه | ٤٠ ٢٠ |
| | ولا نكلف نفسا إلا وسعها ولدينا كتاب ينطق بالحق | ك المؤمنون | ٦٢ ٢٣ |
| | قال يا موسى أتريد أن تقتلنى كما قتلت نفسا بالأمس | ك القصص | ١٩ ٢٨ |
| | قال رب إنى قتلت منهم نفسا فأخاف أن يقتلون ... | ك « | ٣٣ ٢٨ |
| | ولن يؤخر الله نفسا إذا جاء أجلها ... ... ... ... | م المنافقون | ١١ ٦٣ |
| | لا يكلف الله نفسا إلا ما آتاها ... ... ... ... | م الطلاق | ٧ ٦٥ |
| نَفْسُكَ: | وما أصابك من سيئة فمن نفسك ... ... ... ... | م النساء | ٧٩ ٤ |
| (١٠) | فقاتل فى سبيل الله لا تكلف إلا نفسك ... ... ... | م « | ٨٤ ٤ |
| | تعلم ما فى نفسى ولا أعلم ما فى نفسك ... ... ... | م المائدة | ١١٦ ٥ |
| | واذكر ربك فى نفسك تضرعا وخيفة ... ... ... | ك الأعراف | ٢٠٥ ٧ |
| | اقرأ كتابك كفى بنفسك اليوم عليك حسيبا ... ... | ك الإسراء | ١٤ ١٧ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| نَفْسَكَ: | فلعلك باخع نفسك على آثارهم إن لم يؤمنوا بهذا الحديث أسفا ... ... ... ... ... ... ... | ك الكهف | ٦ ١٨ |
| | واصبر نفسك مع الذين يدعون ربهم بالغداة والعشى | م « | ٢٨ ١٨ |
| | لعلك باخع نفسك ألا يكونوا مؤمنين ... ... ... | ك الشعراء | ٣ ٢٦ |
| | وتخفى فى نفسك ما الله مبديه ... ... ... ... | م الأحزاب | ٣٧ ٣٣ |
| | فلا تذهب نفسك عليهم حسرات ... ... ... ... | ك فاطر | ٨ ٣٥ |
| نَفْسُهُ: | ومن يرغب عن ملة إبراهيم إلا من سفه نفسه ... | م البقرة | ١٣٠ ٢ |
| (٤٠) | ومن الناس من يشرى نفسه ابتغاء مرضاة الله ... | م « | ٢٠٧ ٢ |
| | ومن يفعل ذلك فقد ظلم نفسه ... ... ... ... | م « | ٢٣١ ٢ |
| | ويحذركم الله نفسه وإلى الله المصير ... ... ... | م آل عمران | ٢٨ ٣ |
| | ويحذركم الله نفسه والله رءوف بالعباد ... ... ... | م « | ٣٠ ٣ |
| | كل الطعام كان حلا لبنى إسرائيل إلا ماحرم إسرائيل على نفسه ... ... ... ... ... ... ... | م « | ٩٣ ٣ |
| | ومن يعمل سوءا أو يظلم نفسه ثم يستغفر الله يجد الله غفورا رحيما ... ... ... ... ... ... | م النساء | ١١٠ ٤ |
| | ومن يكسب إثما فإنما يكسبه على نفسه ... ... ... | م « | ١١١ ٤ |
| | فطوعت له نفسه قتل أخيه فقتله فأصبح من الخاسرين | م المائدة | ٣٠ ٥ |
| | قل لله كتب على نفسه الرحمة ... ... ... ... | ك الأنعام | ١٢ ٦ |
| | فقل سلام عليكم كتب ربكم على نفسه الرحمة ... ... | ك « | ٥٤ ٦ |
| | قد جاءكم بصائر من ربكم فمن أبصر فلنفسه ومن عمى فعليها | ك « | ١٠٤ ٦ |
| | ولا يرغبوا بأنفسهم عن نفسه ... ... ... ... | م التوبة | ١٢٠ ٩ |
| | فمن اهتدى فإنما يهتدى لنفسه ومن ضل فإنما يضل عليها | ك يونس | ١٠٨ ١٠ |
| | وراودته التى هو فى بيتها عن نفسه وغلقت الأبواب | ك يوسف | ٢٣ ١٢ |
| | وقال نسوة فى المدينة امرأة العزيز تراود فتاها عن نفسه | ك « | ٣٠ ١٢ |
| | ولقد راودته عن نفسه فاستعصم ... ... ... ... | ك « | ٣٢ ١٢ |
| | قال ما خطبكن إذ راودتن يوسف عن نفسه ... ... | ك « | ٥١ ١٢ |
| | الآن حصحص الحق أنا راودته عن نفسه ... ... | ك « | ٥١ ١٢ |
| | وأسرها يوسف فى نفسه ولم يبدها لهم ... ... ... | ك « | ٧٧ ١٢ |
| | من اهتدى فإنما يهتدى لنفسه ومن ضل فإنما يضل عليها | ك الإسراء | ١٥ ١٧ |
| | ودخل جنته وهو ظالم لنفسه... ... ... ... ... | ك الكهف | ٣٥ ١٨ |
| | فأوجس فى نفسه خيفة موسى ... ... ... ... ... | ك طه | ٦٧ ٢٠ |
| | ومن شكر فإنما يشكر لنفسه ومن كفر فإن ربى غنى كريم | ك النمل | ٤٠ ٢٧ |
| | فمن اهتدى فإنما يهتدى لنفسه ... ... ... ... | ك « | ٩٢ ٢٧ |
| | ومن جاهد فإنما يجاهد لنفسه إن الله لغنى عن العالمين | م العنكبوت | ٦ ٢٩ |
| | ومن يشكر فإنما يشكر لنفسه ومن كفر فإن الله غنى حميد | ك لقمان | ١٢ ٣١ |
| | ومن تزكى فإنما يتزكى لنفسه وإلى الله المصير ... | ك فاطر | ١٨ ٣٥ |
| | فمنهم ظالم لنفسه ومنهم مقتصد ومنهم سابق بالخيرات | ك « | ٣٢ ٣٥ |
| | ومن ذريتهما محسن وظالم لنفسه مبين... ... ... | ك الصافات | ١١٣ ٣٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| نَفْسِهِ | : فمن اهتدى فلنفسه ومن ضل فإنما يضل عليها ... ... | ٤١ | ك الزمر | ٣٩ |
| | من عمل صالحا فلنفسه ومن أساء فعليها ... ... ... | ٤٦ | ك فصلت | ٤١ |
| | من عمل صالحا فلنفسه ومن أساء فعليها ثم إلى ربكم ترجعون | ١٥ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | ومن يبخل فإنما يبخل عن نفسه والله الغنيّ وأنتم الفقراء | ٣٨ | م محمد | ٤٧ |
| | فمن نكث فإنما ينكث على نفسه ... ... ... ... | ١٠ | م الفتح | ٤٨ |
| | ولقد خلقنا الإنسان ونعلم ما توسوس به نفسه ... | ١٦ | ك قٓ | ٥٠ |
| | ومن يوق شح نفسه فأولئك هم المفلحون ... ... ... | ٩ | م الحشر | ٥٩ |
| | ومن يوق شح نفسه فأولئك هم المفلحون ... ... ... | ١٦ | م التغابن | ٦٤ |
| | ومن يتعد حدود الله فقد ظلم نفسه ... ... ... ... | ١ | م الطلاق | ٦٥ |
| | بل الإنسان على نفسه بصيرة... ... ... ... ... | ١٤ | ك القيامة | ٧٥ |
| نَفْسَهَا | : يوم تأتى كل نفس تجادل عن نفسها ... ... ... | ١١١ | ك النحل | ١٦ |
| (٢) | وامرأة مؤمنة إن وهبت نفسها للنبيّ ... ... ... ... | ٥٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| نَفْسِي | : قال رب إنى لا أملك إلا نفسى وأخى ... ... ... | ٢٥ | م المائدة | ٥ |
| (١٣) | تعلم ما فى نفسى ولا أعلم ما فى نفسك إنك أنت علام الغيوب | ١١٦ | م « | ٥ |
| | قل لا أملك لنفسى نفعا ولا ضرا إلا ما شاء الله ... | ١٨٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | قل ما يكون لى أن أبدله من تلقاء نفسى ... ... ... | ١٥ | ك يونس | ١٠ |
| | قل لا أملك لنفسى ضرا ولا نفعا إلا ما شاء الله ... | ٤٩ | ك « | ١٠ |
| | قال هى راودتنى عن نفسى ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | وما أبرئ نفسى إن النفس لأمارة بالسوء إلا ما رحم ربى | ٥٣ | ك « | ١٢ |
| | وقال الملك ائتونى به أستخلصه لنفسى ... ... ... | ٥٤ | ك « | ١٢ |
| | ثم جئت على قدر يا موسى . واصطنعتك لنفسى ... | ٤١ | ك طه | ٢٠ |
| | وكذلك سوّلت لى نفسى... ... ... ... ... ... | ٩٦ | ك « | ٢٠ |
| | قالت رب إنى ظلمت نفسى ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك النمل | ٢٧ |
| | قال رب إنى ظلمت نفسى فاغفر لى فغفر له ... ... | ١٦ | ك القصص | ٢٨ |
| | قل إن ضللت فإنما أضل على نفسى ... ... ... ... | ٥٠ | ك سبإ | ٣٤ |
| النُّفُوسُ | : وإذا النفوس زوّجت... ... ... ... ... ... | ٧ | ك التكوير | ٨١ |
| نُفُوسِكُمْ | : ربكم أعلم بما فى نفوسكم ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| الأَنْفُسِ | : ولنبلونكم بشىء من الخوف والجوع ونقص من | | | |
| (٦) | الأموال والأنفس والثمرات ... ... ... ... | ١٥٥ | م البقرة | ٢ |
| | وأحضرت الأنفس الشح ... ... ... ... ... ... | ١٢٨ | م النساء | ٤ |
| | وتحمل أثقالكم إلى بلد لم تكونوا بالغيه إلا بشق الأنفس | ٧ | ك النحل | ١٦ |
| | الله يتوفى الأنفس حين موتها والتى لم تمت فى منامها | ٤٢ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وفيها ما تشتهيه الأنفس وتلذ الأعين وأنتم فيها خالدون | ٧١ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | إن يتبعون إلا الظن وما تهوى الأنفس ... ... ... | ٢٣ | ك النجم | ٥٣ |
| أَنْفُسَكُمْ | : أتأمرون الناس بالبرّ وتنسون أنفسكم... ... ... | ٤٤ | م البقرة | ٢ |
| (٤٩) | يا قوم إنكم ظلمتم أنفسكم باتخاذكم العجل ... ... | ٥٤ | م « | ٢ |
| | فتوبوا إلى بارئكم فاقتلوا أنفسكم ... ... ... ... | ٥٤ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَنْفُسَكُمْ | : وإذ أخذنا ميثاقكم لا تسفكون دماءكم ولا تخرجون | | | |
| | أنفسكم من دياركم ... ... ... ... ... ... ... | ٨٤ | م البقرة | ٢ |
| | ثم أنتم هؤلاء تقتلون أنفسكم ... ... ... ... ... | ٨٥ | م « | ٢ |
| | أفكلما جاءكم رسول بما لا تهوى أنفسكم استكبرتم ... | ٨٧ | م « | ٢ |
| | وما تقدموا لأنفسكم من خير تجدوه عند الله ... ... | ١١٠ | م « | ٢ |
| | علم الله أنكم كنتم تختانون أنفسكم فتاب عليكم... ... | ١٨٧ | م « | ٢ |
| | نساؤكم حرث لكم فأتوا حرثكم أنى شئتم وقدموا لأنفسكم | ٢٢٣ | م « | ٢ |
| | ولا جناح عليكم فيما عرضتم به من خطبة النساء | | | |
| | أو أكننتم فى أنفسكم ... ... ... ... ... ... | ٢٣٥ | م « | ٢ |
| | واعلموا أن الله يعلم ما فى أنفسكم فاحذروه ... ... | ٢٣٥ | م « | ٢ |
| | وما تنفقوا من خير فلأنفسكم ... ... ... ... ... | ٢٧٢ | م « | ٢ |
| | وإن تبدوا ما فى أنفسكم أو تخفوه يحاسبكم به الله ... | ٢٨٤ | م « | ٢ |
| | فقل تعالوا ندع أبناءنا وأبناءكم ونساءنا ونساءكم | | | |
| | وأنفسنا وأنفسكم ... ... ... ... ... ... ... | ٦١ | م آل عمران | ٣ |
| | قل هو من عند أنفسكم إن الله على كل شىء قدير ... | ١٦٥ | م « | ٣ |
| | قل فادرءوا عن أنفسكم الموت إن كنتم صادقين ... | ١٦٨ | م « | ٣ |
| | لتبلونّ فى أموالكم وأنفسكم ... ... ... ... ... | ١٨٦ | م « | ٣ |
| | ولا تقتلوا أنفسكم إن الله كان بكم رحيما ... ... ... | ٢٩ | م النساء | ٤ |
| | ولو أنا كتبنا عليهم أن اقتلوا أنفسكم أو اخرجوا من | | | |
| | دياركم ما فعلوه إلا قليل منهم ... ... ... ... | ٦٦ | م « | ٤ |
| | كونوا قوامين بالقسط شهداء لله ولو على أنفسكم ... | ١٣٥ | م « | ٤ |
| | عليكم أنفسكم لا يضركم من ضل إذا اهتديتم ... ... | ١٠٥ | م المائدة | ٥ |
| | أخرجوا أنفسكم اليوم تجزون عذاب الهون ... ... | ٩٣ | م الأنعام | ٦ |
| | هذا ما كنزتم لأنفسكم فذوقوا ما كنتم تكنزون ... | ٣٥ | م التوبة | ٩ |
| | منها أربعة حرم ذلك الدين القيم فلا تظلموا فيهن أنفسكم | ٣٦ | م « | ٩ |
| | انفروا خفافا وثقالا وجاهدوا بأموالكم وأنفسكم | | | |
| | فى سبيل الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤١ | م « | ٩ |
| | لقد جاءكم رسول من أنفسكم عزيز عليه ما عنتّم ... ... | ١٢٨ | ك « | ٩ |
| | يأيها الناس إنما بغيكم على أنفسكم متاع الحياة الدنيا | ٢٣ | ك يونس | ١٠ |
| | قال بل سوّلت لكم أنفسكم أمرا فصبر جميل والله المستعان | ١٨ | ك يوسف | ١٢ |
| | قال بل سوّلت لكم أنفسكم أمرا فصبر جميل ... ... | ٨٣ | ك « | ١٢ |
| | فلا تلومونى ولوموا أنفسكم ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | والله جعل لكم من أنفسكم أزواجا ... ... ... ... | ٧٢ | ك النحل | ١٦ |
| | إن أحسنتم أحسنتم لأنفسكم وإن أسأتم فلها ... ... | ٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ولا على أنفسكم أن تأكلوا من بيوتكم أو بيوت آبائكم | ٦١ | م النور | ٢٤ |
| | فإذا دخلتم بيوتا فسلموا على أنفسكم تحية من عند الله | ٦١ | م « | ٢٤ |
| | ومن آياته أن خلق لكم من أنفسكم أزواجا لتسكنوا إليها | ٢١ | ك الروم | ٣٠ |
| | ضرب لكم مثلا من أنفسكم ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٣٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَنفُسِكُمْ | فأنتم فيه سواء تخافونهم كخيفتكم أنفسكم ... ... | ٢٨ | ك الروم | ٣٠ |
| | إن الذين كفروا ينادون لمقت الله أكبر من مقتكم أنفسكم | ١٠ | ك غافر | ٤٠ |
| | ولكم فيها ما تشتهى أنفسكم ولكم فيها ما تدعون ... | ٣١ | ك فصلت | ٤١ |
| | جعل لكم من أنفسكم أزواجا ومن الأنعام أزواجا | ١١ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ولا تلمزوا أنفسكم ولا تنابزوا بالألقاب ... ... ... | ١١ | م الحجرات | ٤٩ |
| | وفى الأرض آيات للموقنين . وفى أنفسكم أفلا تبصرون | ٢١ | ك الذاريات | ٥١ |
| | فلا تزكوا أنفسكم هو أعلم بمن اتقى ... ... ... ... | ٣٢ | م النجم | ٥٣ |
| | ينادونهم ألم نكن معكم قالوا بلى ولكنكم فتنتم أنفسكم | ١٤ | م الحديد | ٥٧ |
| | ما أصاب من مصيبة فى الأرض ولا فى أنفسكم | | | |
| | إلا فى كتاب من قبل أن نبرأها ... ... ... ... | ٢٢ | م « | ٥٧ |
| | وتجاهدون فى سبيل الله بأموالكم وأنفسكم ... ... | ١١ | م الصف | ٦١ |
| | واسمعوا وأطيعوا وأنفقوا خيرا لأنفسكم ... ... ... | ١٦ | م التغابن | ٦٤ |
| | قوا أنفسكم وأهليكم نارا وقودها الناس والحجارة ... | ٦ | م التحريم | ٦٦ |
| | وما تقدموا لأنفسكم من خير تجدوه عند الله هو خيرا | ٢٠ | م المزمل | ٧٣ |
| أَنفُسَنَا | فقل تعالوا ندع أبناءنا وأبناءكم ونساءنا ونساءكم | | | |
| (٣) | وأنفسنا وأنفسكم ... ... ... ... ... ... | ٦١ | م آل عمران | ٣ |
| | قالوا شهدنا على أنفسنا وغرتهم الحياة الدنيا ... ... | ١٣٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | قالا ربنا ظلمنا أنفسنا وإن لم تغفر لنا وترحمنا | | | |
| | لنكونن من الخاسرين ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك الأعراف | ٧ |
| أَنفُسَهُمْ | يخادعون الله والذين آمنوا وما يخدعون إلا أنفسهم | ٩ | م البقرة | ٢ |
| (٩١) | وما ظلمونا ولكن كانوا أنفسهم يظلمون ... ... ... | ٥٧ | م « | ٢ |
| | بئسما اشتروا به أنفسهم ... ... ... ... ... ... | ٩٠ | م « | ٢ |
| | ولبئس ما شروا به أنفسهم لو كانوا يعلمون ... ... | ١٠٢ | م « | ٢ |
| | لو يردونكم من بعد إيمانكم كفارا حسدا من عند أنفسهم | ١٠٩ | م « | ٢ |
| | ومثل الذين ينفقون أموالهم ابتغاء مرضاة الله وتثبيتا | | | |
| | من أنفسهم كمثل جنة بربوة... ... ... ... ... | ٢٦٥ | م « | ٢ |
| | وما يضلون إلا أنفسهم وما يشعرون ... ... ... ... | ٦٩ | م آل عمران | ٣ |
| | كمثل ريح فيها صر أصابت حرث قوم ظلموا أنفسهم فأهلكته | ١١٧ | م « | ٣ |
| | وما ظلمهم الله ولكن أنفسهم يظلمون ... ... ... | ١١٧ | م « | ٣ |
| | والذين إذا فعلوا فاحشة أو ظلموا أنفسهم ذكروا الله | ١٣٥ | م « | ٣ |
| | وطائفة قد أهمتهم أنفسهم يظنون بالله غير الحق ... | ١٥٤ | م « | ٣ |
| | يخفون فى أنفسهم ما لا يبدون لك ... ... ... ... | ١٥٤ | م « | ٣ |
| | لقد من الله على المؤمنين إذ بعث فيهم رسولا من أنفسهم | ١٦٤ | م « | ٣ |
| | ولا يحسبن الذين كفروا أنما نملى لهم خير لأنفسهم | ١٧٨ | م « | ٣ |
| | ألم تر إلى الذين يزكون أنفسهم بل الله يزكى من يشاء | ٤٩ | م النساء | ٤ |
| | فأعرض عنهم وعظهم وقل لهم فى أنفسهم قولا بليغا | ٦٣ | م « | ٤ |
| | ولو أنهم إذ ظلموا أنفسهم جاءوك فاستغفروا الله | | | |
| | واستغفر لهم الرسول لوجدوا الله توابا رحيما ... | ٦٤ | م « | ٤ |
| أَنفُسِهِمْ | ثم لا يجدوا فى أنفسهم حرجا مما قضيت ويسلموا تسليما | ٦٥ | م النساء | ٤ |
| | لا يستوى القاعدون من المؤمنين غير أولى الضرر | | | |
| | والمجاهدون فى سبيل الله بأموالهم وأنفسهم ... | ٩٥ | م « | ٤ |
| | فضل الله المجاهدين بأموالهم وأنفسهم على القاعدين درجة | ٩٥ | م « | ٤ |
| | إن الذين توفاهم الملائكة ظالمى أنفسهم قالوا فيم كنتم | ٩٧ | م « | ٤ |
| | ولا تجادل عن الذين يختانون أنفسهم ... ... ... | ١٠٧ | م « | ٤ |
| | لهمت طائفة منهم أن يضلوك وما يضلون إلا أنفسهم | ١١٣ | م « | ٤ |
| | فيصبحوا على ما أسروا فى أنفسهم نادمين ... ... | ٥٢ | م المائدة | ٥ |
| | كلما جاءهم رسول بما لا تهوى أنفسهم فريقا كذبوا | | | |
| | وفريقا يقتلون... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٠ | م « | ٥ |
| | لبئس ما قدمت لهم أنفسهم أن سخط الله عليهم... ... | ٨٠ | م « | ٥ |
| | الذين خسروا أنفسهم فهم لا يؤمنون ..... ... | ١٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | الذين خسروا أنفسهم فهم لا يؤمنون ..... ... | ٢٠ | م « | ٦ |
| | انظر كيف كذبوا على أنفسهم وضل عنهم ما كانوا يفترون | ٢٤ | ك « | ٦ |
| | وإن يهلكون إلا أنفسهم وما يشعرون ... ... ... | ٢٦ | ك « | ٦ |
| | وما يمكرون إلا بأنفسهم وما يشعرون ... ... ... | ١٢٣ | ك « | ٦ |
| | وشهدوا على أنفسهم أنهم كانوا كافرين ... ... ... | ١٣٠ | ك « | ٦ |
| | ومن خفت موازينه فأولئك الذين خسروا أنفسهم | ٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | قالوا ضلوا عنا وشهدوا على أنفسهم أنهم كانوا كافرين | ٣٧ | ك « | ٧ |
| | قد خسروا أنفسهم وضل عنهم ما كانوا يفترون ... | ٥٣ | ك « | ٧ |
| | وما ظلمونا ولكن كانوا أنفسهم يظلمون ... ... ... | ١٦٠ | ك « | ٧ |
| | وأشهدهم على أنفسهم ألست بربكم قالوا بلى ... ... | ١٧٢ | ك « | ٧ |
| | ساء مثلا القوم الذين كذبوا بآياتنا وأنفسهم كانوا يظلمون | ١٧٧ | ك « | ٧ |
| | ولا يستطيعون لهم نصرا ولا أنفسهم ينصرون ... ... | ١٩٢ | ك « | ٧ |
| | لا يستطيعون نصركم ولا أنفسهم ينصرون ... ... ... | ١٩٧ | ك « | ٧ |
| | ذلك بأن الله لم يك مغيرا نعمة أنعمها على قوم حتى | | | |
| | يغيروا ما بأنفسهم ... ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | م الأنفال | ٨ |
| | إن الذين آمنوا وهاجروا وجاهدوا بأموالهم وأنفسهم | | | |
| | فى سبيل الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٢ | م « | ٨ |
| | ما كان للمشركين أن يعمروا مساجد الله شاهدين على | | | |
| | أنفسهم بالكفر ... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | م التوبة | ٩ |
| | الذين آمنوا وهاجروا وجاهدوا فى سبيل الله بأموالهم | | | |
| | وأنفسهم أعظم درجة عند الله ... ... ... ... | ٢٠ | م « | ٩ |
| | وسيحلفون بالله لو استطعنا لخرجنا معكم يهلكون أنفسهم | ٤٢ | م « | ٩ |
| | لا يستأذنك الذين يؤمنون بالله واليوم الآخر أن يجاهدوا | | | |
| | بأموالهم وأنفسهم والله عليم بالمتقين ... ... ... | ٤٤ | م « | ٩ |
| | إنما يريد الله ليعذبهم بها فى الحياة الدنيا وتزهق أنفسهم | ٥٥ | م « | ٩ |
| | فما كان الله ليظلمهم ولكن كانوا أنفسهم يظلمون ... | ٧٠ | م « | ٩ |
| | وكرهوا أن يجاهدوا بأموالهم وأنفسهم فى سبيل الله | ٨١ | م « | ٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَنفُسِهِمْ | : إنما يريد الله أن يعذبهم بها في الدنيا وتزهق أنفسهم | ٨٥ | م التوبة | ٩ |
| | لكن الرسول والذين آمنوا معه جاهدوا بأموالهم وأنفسهم | ٨٨ | م « | ٩ |
| | إن الله اشترى من المؤمنين أنفسهم وأموالهم ... ... | ١١١ | م « | ٩ |
| | وضاقت عليهم أنفسهم وظنوا أن لا ملجأ من الله إلا إليه | ١١٨ | م « | ٩ |
| | أن يتخلفوا عن رسول الله ولا يرغبوا بأنفسهم عن نفسه | ١٢٠ | م « | ٩ |
| | إن الله لا يظلم الناس شيئا ولكن الناس أنفسهم يظلمون | ٤٤ | ك يونس | ١٠ |
| | أولئك الذين خسروا أنفسهم وضل عنهم ما كانوا يفترون | ٢١ | ك هود | ١١ |
| | الله أعلم بما في أنفسهم ... ... ... ... ... | ٣١ | ك « | ١١ |
| | وما ظلمناهم ولكن ظلموا أنفسهم ... ... ... ... | ١٠١ | ك « | ١١ |
| | إن الله لا يغير ما بقوم حتى يغيروا ما بأنفسهم ... | ١١ | م الرعد | ١٣ |
| | قل أفاتخذتم من دونه أولياء لا يملكون لأنفسهم | | | |
| | نفعا ولا ضرا ... ... ... ... ... ... ... | ١٦ | م « | ١٣ |
| | وسكنتم في مساكن الذين ظلموا أنفسهم ... ... ... | ٤٥ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | الذين تتوفاهم الملائكة ظالمي أنفسهم ... ... ... | ٢٨ | ك النحل | ١٦ |
| | وما ظلمهم الله ولكن كانوا أنفسهم يظلمون ... ... | ٣٣ | ك « | ١٦ |
| | ويوم نبعث في كل أمة شهيدا عليهم من أنفسهم ... | ٨٩ | ك « | ١٦ |
| | وما ظلمناهم ولكن كانوا أنفسهم يظلمون... ... ... | ١١٨ | ك « | ١٦ |
| | ما أشهدتهم خلق السموات والأرض ولا خلق أنفسهم | ٥١ | ك الكهف | ١٨ |
| | أم لهم آلهة تمنعهم من دوننا لا يستطيعون نصر أنفسهم | ٤٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | فرجعوا إلى أنفسهم فقالوا إنكم أنتم الظالمون ... ... | ٦٤ | ك « | ٢١ |
| | لا يسمعون حسيسها وهم في ما اشتهت أنفسهم خالدون | ١٠٢ | ك « | ٢١ |
| | ومن خفت موازينه فأولئك الذين خسروا أنفسهم | ١٠٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | والذين يرمون أزواجهم ولم يكن لهم شهداء إلا | | | |
| | أنفسهم فشهادة أحدهم أربع شهادات بالله إنه | | | |
| | لمن الصادقين ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | م النور | ٢٤ |
| | لولا إذ سمعتموه ظن المؤمنون والمؤمنات بأنفسهم خيرا | ١٢ | م « | ٢٤ |
| | ولا يملكون لأنفسهم ضرا ولا نفعا ... ... ... ... | ٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | لقد استكبروا في أنفسهم وعتوا عتوا كبيرا ... ... | ٢١ | ك « | ٢٥ |
| | وجحدوا بها واستيقنتها أنفسهم ظلما وعلوا ... ... | ١٤ | ك النمل | ٢٧ |
| | وما كان الله ليظلمهم ولكن كانوا أنفسهم يظلمون... | ٤٠ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | أو لم يتفكروا في أنفسهم ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك الروم | ٣٠ |
| | فما كان الله ليظلمهم ولكن كانوا أنفسهم يظلمون... | ٩ | ك « | ٣٠ |
| | من كفر فعليه كفره ومن عمل صالحا فلأنفسهم يمهدون | ٤٤ | ك « | ٣٠ |
| | فنخرج به زرعا تأكل منه أنعامهم وأنفسهم ... ... | ٢٧ | ك السجدة | ٣٢ |
| | النبي أولى بالمؤمنين من أنفسهم وأزواجه أمهاتهم... | ٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | فقالوا ربنا باعد بين أسفارنا وظلموا أنفسهم ... ... | ١٩ | ك سبأ | ٣٤ |
| | سبحان الذي خلق الأزواج كلها مما تنبت الأرض | | | |
| | ومن أنفسهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك يس | ٣٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَنفُسِهِمْ | : قل إن الخاسرين الذين خسروا أنفسهم وأهليهم | | | |
| | يوم القيامة ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| | قل يا عبادي الذين أسرفوا على أنفسهم لا تقنطوا | | | |
| | من رحمة الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | م « | ٣٩ |
| | سنريهم آياتنا في الآفاق وفي أنفسهم ... ... ... | ٥٣ | ك فصلت | ٤١ |
| | إن الخاسرين الذين خسروا أنفسهم وأهليهم يوم القيامة | ٤٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ثم لم يرتابوا وجاهدوا بأموالهم وأنفسهم في سبيل الله | ١٥ | م الحجرات | ٤٩ |
| | ويقولون في أنفسهم لولا يعذبنا الله بما نقول ... | ٨ | م المجادلة | ٥٨ |
| | ويؤثرون على أنفسهم ولو كان بهم خصاصة ... ... | ٩ | م الحشر | ٥٩ |
| | ولا تكونوا كالذين نسوا الله فأنساهم أنفسهم... ... | ١٩ | م « | ٥٩ |
| أَنفُسِهِنَّ | : والمطلقات يتربصن بأنفسهن ثلاثة قروء... ... | ٢٢٨ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | يتربصن بأنفسهن أربعة أشهر وعشرا ... ... ... | ٢٣٤ | م « | ٢ |
| | فإذا بلغن أجلهن فلا جناح عليكم فيما فعلن في أنفسهن | | | |
| | بالمعروف ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣٤ | م « | ٢ |
| | فإن خرجن فلا جناح عليكم في ما فعلن في أنفسهن من معروف | ٢٤٠ | م « | ٢ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| نَفَشَتْ | : وداود وسليمان إذ يحكمان في الحرث إذ نفشت | | | |
| | فيه غنم القوم ... ... ... ... ... ... ... | ٧٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| الْمَنفُوشِ | : وتكون الجبال كالعهن المنفوش ... ... ... | ٥ | ك القارعة | ١٠١ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| نَفَعَتِ | : فذكر إن نفعت الذكرى ... ... ... ... ... | ٩ | ك الأعلى | ٨٧ |
| نَفْعُهَا | : فلولا كانت قرية آمنت فنفعها إيمانها إلا قوم يونس | ٩٨ | ك يونس | ١٠ |
| تَنفَعُ | : يومئذ لا تنفع الشفاعة إلا من أذن له الرحمن ورضي له قولا | ١٠٩ | ك طه | ٢٠ |
| (٣) | ولا تنفع الشفاعة عنده إلا لمن أذن له ... ... ... | ٢٣ | ك سبأ | ٣٤ |
| | وذكر فإن الذكرى تنفع المؤمنين... ... ... ... | ٥٥ | ك الذاريات | ٥١ |
| تَنفَعَكُمْ | : لن تنفعكم أرحامكم ولا أولادكم... ... ... | ٣ | م الممتحنة | ٦٠ |
| فَتَنفَعَهُ | : وما يدريك لعله يزكى . أو يذكر فتنفعه الذكرى | ٤ | ك عبس | ٨٠ |
| تَنفَعُهَا | : ولا يقبل منها عدل ولا تنفعها شفاعة ولا هم ينصرون | ١٢٣ | م البقرة | ٢ |
| تَنفَعُهُمْ | : فما تنفعهم شفاعة الشافعين ... ... ... ... | ٤٨ | ك المدثر | ٧٤ |
| يَنفَعُ | : والفلك التي تجري في البحر بما ينفع الناس ... ... | ١٦٤ | م البقرة | ٢ |
| (٨) | قال الله هذا يوم ينفع الصادقين صدقهم ... ... ... | ١١٩ | م المائدة | ٥ |
| | يوم يأتي بعض آيات ربك لا ينفع نفسا إيمانها | | | |
| | لم تكن آمنت من قبل ... ... ... ... ... ... | ١٥٨ | ك الأنعام | ٦ |
| | وأما ما ينفع الناس فيمكث في الأرض ... ... ... | ١٧ | م الرعد | ١٣ |
| | ولا تخزني يوم يبعثون . يوم لا ينفع مال ولا بنون | ٨٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فيومئذ لا ينفع الذين ظلموا معذرتهم ولا هم يستعتبون | ٥٧ | ك الروم | ٣٠ |
| | قل يوم الفتح لا ينفع الذين كفروا إيمانهم ولا هم ينظرون | ٢٩ | ك السجدة | ٣٢ |
| | يوم لا ينفع الظالمين معذرتهم ولهم اللعنة ولهم سوء الدار | ٥٢ | ك غافر | ٤٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَنْفَعُكَ | : ولا تدع من دون الله ما لا ينفعك ولا يضرك | ١٠٦ | ك يونس | ١٠ |
| يَنْفَعُكُمْ | : ولا ينفعكم نصحى إن أردت أن أنصح لكم ... | ٣٤ | ك هود | ١١ |
| (٤) | قال أتعبدون من دون الله ما لا ينفعكم شيئا ولا يضركم | ٦٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | قل لن ينفعكم الفرار إن فررتم من الموت أو القتل ... | ١٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ولن ينفعكم اليوم إذ ظلمتم أنكم فى العذاب مشتركون | ٣٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| يَنْفَعُنَا | : قل أندعوا من دون الله ما لا ينفعنا ولا يضرنا ... | ٧١ | ك الأنعام | ٦ |
| (٣) | أكرمى مثواه عسى أن ينفعنا أو نتخذه ولدا ... ... | ٢١ | ك يوسف | ١٢ |
| | لا تقتلوه عسى أن ينفعنا أو نتخذه ولدا ... ... ... | ٩ | ك القصص | ٢٨ |
| يَنْفَعُهُ | : يدعوا من دون الله ما لا يضره وما لا ينفعه ... | ١٢ | م الحج | ٢٢ |
| يَنْفَعُهُمْ | : ويتعلمون ما يضرهم ولا ينفعهم... ... ... ... | ١٠٢ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | ويعبدون من دون الله ما لا يضرهم ولا ينفعهم ... | ١٨ | ك يونس | ١٠ |
| | ويعبدون من دون الله ما لا ينفعهم ولا يضرهم ... | ٥٥ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | فلم يك ينفعهم إيمانهم لما رأوا بأسنا ... ... ... | ٨٥ | ك غافر | ٤٠ |
| يَنْفَعُونَكُمْ | : قال هل يسمعونكم إذ تدعون . أو ينفعونكم أو يضرون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| نَفْعًا | : آباؤكم وأبناؤكم لا تدرون أيهم أقرب لكم نفعا ... | ١١ | م النساء | ٤ |
| (٩) | قل أتعبدون من دون الله ما لا يملك لكم ضرا ولا نفعا | ٧٦ | م المائدة | ٥ |
| | قل لا أملك لنفسى نفعا ولا ضرا إلا ما شاء الله ... | ١٨٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | قل لا أملك لنفسى ضرا ولا نفعا إلا ما شاء الله ... | ٤٩ | ك يونس | ١٠ |
| | قل أفاتخذتم من دونه أولياء لا يملكون لأنفسهم نفعا ولا ضرا ... ... ... ... ... ... ... | ١٦ | م الرعد | ١٣ |
| | أفلا يرون ألا يرجع إليهم قولا ولا يملك لهم ضرا ولا نفعا ... ... ... ... ... ... ... | ٨٩ | ك طه | ٢٠ |
| | ولا يملكون لأنفسهم ضرا ولا نفعا ... ... ... ... | ٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | فاليوم لا يملك بعضكم لبعض نفعا ولا ضرا ... ... | ٤٢ | ك سبأ | ٣٤ |
| | قل فمن يملك لكم من الله شيئا إن أراد بكم ضرا أو أراد بكم نفعا ... ... ... ... ... | ١١ | م الفتح | ٤٨ |
| نَفْعِهِ | : يدعوا لمن ضره أقرب من نفعه لبئس المولى ولبئس العشير | ١٣ | م الحج | ٢٢ |
| نَفْعِهِمَا | : وإثمهما أكبر من نفعهما ... ... ... ... ... | ٢١٩ | م البقرة | ٢ |
| مَنَافِعُ | : قل فيهما إثم كبير ومنافع للناس ... ... ... ... | ٢١٩ | « | ٢ |
| (٨) | والأنعام خلقها لكم فيها دفء ومنافع ومنها تأكلون | ٥ | ك النحل | ١٦ |
| | ليشهدوا منافع لهم ويذكروا اسم الله فى أيام معلومات | ٢٨ | م الحج | ٢٢ |
| | لكم فيها منافع إلى أجل مسمى ثم محلها إلى البيت العتيق | ٣٣ | م « | ٢٢ |
| | ولكم فيها منافع كثيرة ومنها تأكلون ... ... ... ... | ٢١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ولهم فيها منافع ومشارب أفلا يشكرون ... ... ... | ٧٣ | ك يس | ٣٦ |
| | ولكم فيها منافع ولتبلغوا عليها حاجة فى صدوركم ... | ٨٠ | ك غافر | ٤٠ |
| | وأنزلنا الحديد فيه بأس شديد ومنافع للناس ... ... | ٢٥ | م الحديد | ٥٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| أَنْفَقَ | : فأصبح يقلب كفيه على ما أنفق فيها ... ... ... | ٤٢ | ك الكهف | ١٨ |
| (٣) | لا يستوى منكم من أنفق من قبل الفتح وقاتل... ... | ١٠ | م الحديد | ٥٧ |
| أَنْفَقْتَ | : لو أنفقت ما فى الأرض جميعا ما ألفت بين قلوبهم | ٦٣ | م الأنفال | ٨ |
| أَنْفَقْتُمْ | : قل ما أنفقتم من خير فللوالدين والأقربين واليتامى | ٢١٥ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | وما أنفقتم من نفقة أو نذرتم من نذر فإن الله يعلمه | ٢٧٠ | م « | ٢ |
| | وما أنفقتم من شىء فهو يخلفه وهو خير الرازقين ... | ٣٩ | ك سبأ | ٣٤ |
| | ولا تمسكوا بعصم الكوافر وسئلوا ما أنفقتم ... ... | ١٠ | م الممتحنة | ٦٠ |
| أَنْفَقُوا | : الذين ينفقون أموالهم فى سبيل الله ثم لا يتبعون | | | |
| (١١) | ما أنفقوا منا ولا أذى لهم أجرهم عند ربهم ... | ٢٦٢ | م البقرة | ٢ |
| | بما فضل الله بعضهم على بعض وبما أنفقوا من أموالهم | ٣٤ | م النساء | ٤ |
| | وماذا عليهم لو آمنوا بالله واليوم الآخر وأنفقوا مما رزقهم الله ... ... ... ... ... ... ... | ٣٩ | م « | ٤ |
| | وأنفقوا مما رزقناهم سرا وعلانية ... ... ... ... | ٢٢ | م الرعد | ١٣ |
| | والذين إذا أنفقوا لم يسرفوا ولم يقتروا ... ... ... | ٦٧ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وأنفقوا مما رزقناهم سرا وعلانية يرجون تجارة لن تبور | ٢٩ | ك فاطر | ٣٥ |
| | فالذين آمنوا منكم وأنفقوا لهم أجر كبير ... ... ... | ٧ | م الحديد | ٥٧ |
| | أولئك أعظم درجة من الذين أنفقوا من بعد وقاتلوا | ١٠ | م « | ٥٧ |
| | لا هن حل لهم ولا هم يحلون لهن وآتوهم ما أنفقوا | ١٠ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | وسئلوا ما أنفقتم وليسئلوا ما أنفقوا ... ... ... ... | ١٠ | م « | ٦٠ |
| | فآتوا الذين ذهبت أزواجهم مثل ما أنفقوا... ... | ١١ | م « | ٦٠ |
| تُنْفِقُوا | : وما تنفقوا من خير فلأنفسكم... ... ... ... ... | ٢٧٢ | م البقرة | ٢ |
| (٩) | وما تنفقوا من خير يوف إليكم وأنتم لا تظلمون ... | ٢٧٢ | م « | ٢ |
| | وما تنفقوا من خير فإن الله به عليم ... ... ... ... | ٢٧٣ | م « | ٢ |
| | لن تنالوا البر حتى تنفقوا مما تحبون .. ... ... ... | ٩٢ | م آل عمران | ٣ |
| | وما تنفقوا من شىء فإن الله به عليم ... ... ... ... | ٩٢ | م « | ٣ |
| | وما تنفقوا من شىء فى سبيل الله يوف إليكم ... ... | ٦٠ | م الأنفال | ٨ |
| | هأنتم هؤلاء تدعون لتنفقوا فى سبيل الله ... ... ... | ٣٨ | م محمد | ٤٧ |
| | وما لكم ألا تنفقوا فى سبيل الله... ... ... ... ... | ١٠ | م الحديد | ٥٧ |
| | هم الذين يقولون لا تنفقوا على من عند رسول الله حتى ينفضوا ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | م المنافقون | ٦٣ |
| تُنْفِقُونَ | : ولا تيمموا الخبيث منه تنفقون ... ... ... ... | ٢٦٧ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | وما تنفقون إلا ابتغاء وجه الله... ... ... ... ... | ٢٧٢ | م « | ٢ |
| يُنْفِقُ | : لا تبطلوا صدقاتكم بالمن والأذى كالذى ينفق ماله | | | |
| (٧) | رئاء الناس... ... ... ... ... .. ... ... | ٢٦٤ | م « | ٢ |
| | بل يداه مبسوطتان ينفق كيف يشاء... ... ... ... | ٦٤ | م المائدة | ٥ |
| | ومن الأعراب من يتخذ ما ينفق مغرما ... ... ... | ٩٨ | م التوبة | ٩ |
| | ويتخذ ما ينفق قربات عند الله ... ... ... ... ... | ٩٩ | م « | ٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يُنْفِقُ: | ومن رزقناه منا رزقا حسنا فهو ينفق منه سرا وجهرا | ٧٥ | ك النحل | ١٦ |
| | لينفق ذو سعة من سعته ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | م الطلاق | ٦٥ |
| | ومن قدر عليه رزقه فلينفق مما آتاه الله ... ... ... | ٧ | م « | ٦٥ |
| يُنْفِقُوا: | قل لعبادى الذين آمنوا يقيموا الصلاة وينفقوا | | | |
| | مما رزقناهم سرا وعلانية ... ... ... ... ... | ٣١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| يُنْفِقُونَ: | الذين يؤمنون بالغيب ويقيمون الصلاة ومما | | | |
| (٣٠) | رزقناهم ينفقون ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | م البقرة | ٢ |
| | يسئلونك ماذا ينفقون ... ... ... ... ... ... ... | ٢١٥م | « | ٢ |
| | ويسئلونك ماذا ينفقون قل العفو ... ... ... ... | ٢١٩م | « | ٢ |
| | مثل الذين ينفقون أموالهم فى سبيل الله كمثل حبة | | | |
| | أنبتت سبع سنابل ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦١م | « | ٢ |
| | الذين ينفقون أموالهم فى سبيل الله ثم لا يتبعون | | | |
| | ما أنفقوا منا ولا أذى لهم أجرهم عند ربهم ... | ٢٦٢م | « | ٢ |
| | ومثل الذين ينفقون أموالهم ابتغاء مرضاة الله ... | ٢٦٥م | « | ٢ |
| | الذين ينفقون أموالهم بالليل والنهار سرا وعلانية | ٢٧٤م | « | ٢ |
| | مثل ما ينفقون فى هذه الحياة الدنيا كمثل ريح ... | ١١٧م | آل عمران | ٣ |
| | الذين ينفقون فى السراء والضراء والكاظمين الغيظ | ١٣٤م | « | ٣ |
| | والذين ينفقون أموالهم رئاء الناس ولا يؤمنون بالله | | | |
| | ولا باليوم الآخر ... ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | م النساء | ٤ |
| | الذين يقيمون الصلاة ومما رزقناهم ينفقون ... ... | ٣ | م الأنفال | ٨ |
| | إن الذين كفروا ينفقون أموالهم ليصدوا عن سبيل الله | ٣٦ | ك « | ٨ |
| | ولا ينفقون إلا وهم كارهون ... ... ... ... ... | ٥٤ | م التوبة | ٩ |
| | ولا على الذين لا يجدون ما ينفقون حرج إذا نصحوا | | | |
| | لله ورسوله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩١ | م « | ٩ |
| | تولوا وأعينهم تفيض من الدمع حزنا ألا يجدوا ما ينفقون | ٩٢ | م « | ٩ |
| | ولا ينفقون نفقة صغيرة ولا كبيرة ولا يقطعون واديا | | | |
| | إلا كتب لهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٢١م | « | ٩ |
| | والمقيمى الصلاة ومما رزقناهم ينفقون ... ... ... | ٣٥ | م الحج | ٢٢ |
| | ويدرءون بالحسنة السيئة ومما رزقناهم ينفقون... ... | ٥٤ | م القصص | ٢٨ |
| | يدعون ربهم خوفا وطمعا ومما رزقناهم ينفقون ... | ١٦ | م السجدة | ٣٢ |
| | وأمرهم شورى بينهم ومما رزقناهم ينفقون ... ... | ٣٨ | ك الشورى | ٤٢ |
| يُنْفِقُونَهَا: | فسينفقونها ثم تكون عليهم حسرة ثم يغلبون | ٣٦ | ك الأنفال | ٨ |
| (٢) | والذين يكنزون الذهب والفضة ولا ينفقونها فى سبيل الله | | | |
| | فبشرهم بعذاب أليم... ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | م التوبة | ٩ |
| أَنْفِقُوا: | وأنفقوا فى سبيل الله ولا تلقوا بأيديكم إلى التهلكة | ١٩٥م | البقرة | ٢ |
| (٩) | يأيها الذين آمنوا أنفقوا مما رزقناكم ... ... ... | ٢٥٤م | « | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا أنفقوا من طيبات ما كسبتم ... | ٢٦٧م | « | ٢ |
| | قل أنفقوا طوعا أو كرها لن يتقبل منكم ... ... ... | ٥٣ | م التوبة | ٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَنْفِقُوا: | وإذا قيل لهم أنفقوا مما رزقكم الله قال الذين كفروا | | | |
| | للذين آمنوا أنطعم من لو يشاء الله أطعمه... ... | ٤٧ | ك يس | ٣٦ |
| | آمنوا بالله ورسوله وأنفقوا مما جعلكم مستخلفين فيه | ٧ | م الحديد | ٥٧ |
| | وأنفقوا مما رزقناكم من قبل أن يأتى أحدكم الموت | ١٠ | م المنافقون | ٦٣ |
| | واسمعوا وأطيعوا وأنفقوا خيرا لأنفسكم ... ... ... | ١٦ | م التغابن | ٦٤ |
| | وإن كن أولات حمل فأنفقوا عليهن حتى يضعن حملهن | ٦ | م الطلاق | ٦٥ |
| نَفَقَةً: | وما أنفقتم من نفقة أو نذرتم من نذر فإن الله يعلمه | ٢٧٠م | البقرة | ٢ |
| (٢) | ولا ينفقون نفقة صغيرة ولا كبيرة ولا يقطعون واديا | | | |
| | إلا كتب لهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٢١م | التوبة | ٩ |
| نَفَقَاتُهُمْ: | وما منعهم أن تقبل نفقاتهم إلا أنهم كفروا بالله | ٥٤ | م « | ٩ |
| الإِنْفَاقِ: | قل لو أنتم تملكون خزائن رحمة ربى إذا لأمسكتم | | | |
| | خشية الإنفاق... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| الْمُنْفِقِينَ: | الصابرين والصادقين والقانتين والمنفقين | | | |
| | والمستغفرين بالأسحار ... ... ... ... ... ... | ١٧ | م آل عمران | ٣ |
| نَافَقُوا: | ولعلم الذين نافقوا وقيل لهم تعالوا قاتلوا فى سبيل | | | |
| (٢) | الله أو ادفعوا ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٦٧م | « | ٣ |
| | ألم تر إلى الذين نافقوا يقولون لإخوانهم الذين كفروا | ١١ | م الحشر | ٥٩ |
| النِّفَاقِ: | ومن أهل المدينة مردوا على النفاق لا تعلمهم | ١٠١م | التوبة | ٩ |
| نِفَاقًا: | فأعقبهم نفاقا فى قلوبهم إلى يوم يلقونه... ... ... | ٧٧ | م « | ٩ |
| (٢) | الأعراب أشد كفرا ونفاقا... ... ... ... ... ... | ٩٧ | م « | ٩ |
| الْمُنَافِقَاتُ: | المنافقون والمنافقات بعضهم من بعض ... | ٦٧ | م « | ٩ |
| (٥) | وعد الله المنافقين والمنافقات والكفار نار جهنم ... | ٦٨ | م « | ٩ |
| | ليعذب الله المنافقين والمنافقات والمشركين والمشركات | ٧٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ويعذب المنافقين والمنافقات والمشركين والمشركات | ٦ | م الفتح | ٤٨ |
| | يوم يقول المنافقون والمنافقات للذين آمنوا انظرونا | ١٣ | م الحديد | ٥٧ |
| الْمُنَافِقُونَ: | إذ يقول المنافقون والذين فى قلوبهم مرض | | | |
| (٨) | غر هؤلاء دينهم ... ... ... ... ... ... ... | ٤٩ | م الأنفال | ٨ |
| | يحذر المنافقون أن تنزل عليهم سورة تنبئهم بما فى قلوبهم | ٦٤ | م التوبة | ٩ |
| | المنافقون والمنافقات بعضهم من بعض ... ... ... | ٦٧ | م « | ٩ |
| | وممن حولكم من الأعراب منافقون ومن أهل المدينة | ١٠١م | « | ٩ |
| | وإذ يقول المنافقون والذين فى قلوبهم مرض ما وعدنا | | | |
| | الله ورسوله إلا غرورا... ... ... ... ... ... | ١٢ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | لئن لم ينته المنافقون والذين فى قلوبهم مرض... ... | ٦٠ | م « | ٣٣ |
| | يوم يقول المنافقون والمنافقات للذين آمنوا انظرونا | ١٣ | م الحديد | ٥٧ |
| | إذا جاءك المنافقون قالوا نشهد إنك لرسول الله ... | ١ | م المنافقون | ٦٣ |
| الْمُنَافِقِينَ: | رأيت المنافقين يصدون عنك صدودا... ... | ٦١ | م النساء | ٤ |
| (١٩) | فما لكم فى المنافقين فئتين والله أركسهم بما كسبوا | ٨٨ | م « | ٤ |
| | بشر المنافقين بأن لهم عذابا أليما ... ... ... ... | ١٣٨م | « | ٤ |
| | إن الله جامع المنافقين والكافرين فى جهنم جميعا ... | ١٤٠م | « | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **المُنَافِقِينَ** | : إن المنافقين يخادعون الله وهو خادعهم ... | ١٤٢ | م النساء | ٤ |
| | إن المنافقين فى الدرك الأسفل من النار ... ... ... | ١٤٥ | م « | ٤ |
| | نسوا الله فنسيهم إن المنافقين هم الفاسقون ... ... | ٦٧ | م التوبة | ٩ |
| | وعد الله المنافقين والمنافقات والكفار نار جهنم ... | ٦٨ | م « | ٩ |
| | يأيها النبى جاهد الكفار والمنافقين وأغلظ عليهم ... | ٧٣ | م « | ٩ |
| | وليعلمن الله الذين آمنوا وليعلمن المنافقين... ... ... | ١١ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | يأيها النبى اتق الله ولا تطع الكافرين والمنافقين ... | ١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ويعذب المنافقين إن شاء أو يتوب عليهم... ... ... | ٢٤ | م « | ٣٣ |
| | ولا تطع الكافرين والمنافقين ودع أذاهم وتوكل على الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٨ | م « | ٣٣ |
| | ليعذب الله المنافقين والمنافقات والمشركين والمشركات | ٧٣ | م « | ٣٣ |
| | ويعذب المنافقين والمنافقات والمشركين والمشركات | ٦ | م الفتح | ٤٨ |
| | والله يشهد إن المنافقين لكاذبون... ... ... ... ... | ١ | م المنافقون | ٦٣ |
| | ولله خزائن السموات والأرض ولكن المنافقين لا يفقهون | ٧ | م « | ٦٣ |
| | ولله العزة ولرسوله وللمؤمنين ولكن المنافقين لا يعلمون | ٨ | م « | ٦٣ |
| | يأيها النبى جاهد الكفار والمنافقين وأغلظ عليهم ... | ٩ | م التحريم | ٦٦ |
| **نَفَقًا** | : فإن استطعت أن تبتغى نفقا فى الأرض أو سلما فى السماء فتأتيهم بآية... ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك الأنعام | ٦ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **الأَنْفَالُ** | : يسئلونك عن الأنفال ... ... ... ... ... ... | ١ | م الأنفال | ٨ |
| (٢) | قل الأنفال لله والرسول ... ... ... ... ... ... | ١ | م « | ٨ |
| **نَافِلَةً** | : ومن الليل فتهجد به نافلة لك ... ... ... ... ... | ٧٩ | م الإسراء | ١٧ |
| (٢) | ووهبنا له إسحق ويعقوب نافلة وكلا جعلنا صالحين | ٧٢ | ك الأنبياء | ٢١ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **يُنْفَوْا** | : أو تقطع أيديهم وأرجلهم من خلاف أو ينفوا من الأرض ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | م المائدة | ٥ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **نَقَّبُوا** | : فنقبوا فى البلاد هل من محيص... ... ... ... ... | ٣٦ | ك ق | ٥٠ |
| **نَقْبًا** | : فما استطاعوا أن يظهروه وما استطاعوا له نقبا... ... | ٩٧ | م الكهف | ١٨ |
| **نَقِيبًا** | : ولقد أخذ الله ميثاق بنى إسرائيل وبعثنا منهم اثنى عشر نقيبا ... ... ... ... ... ... ... | ١٢ | م المائدة | ٥ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **فَأَنْقَذَكُمْ** | : وكنتم على شفا حفرة من النار فأنقذكم منها ... | ١٠٣ | م آل عمران | ٣ |
| **تُنْقِذُ** | : أفمن حق عليه كلمة العذاب أفأنت تنقذ من فى النار | ١٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| **يُنْقِذُونِ** | : لا تغن عنى شفاعتهم شيئا ولا هم ينقذون ... | ٢٣ | ك يس | ٣٦ |
| **يُنْقِذُونَ** | : وإن نشأ نغرقهم فلا صريخ لهم ولا هم ينقذون | ٤٣ | ك « | ٣٦ |
| **يَسْتَنْقِذُوهُ** | : وإن يسلبهم الذباب شيئا لا يستنقذوه منه ... | ٧٣ | م الحج | ٢٢ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **نُقِرَ** | : فإذا نقر فى الناقور . فذلك يومئذ يوم عسير ... ... | ٨ | ك المدثر | ٧٤ |
| **نَقِيرًا** | : أم لهم نصيب من الملك فإذا لا يؤتون الناس نقيرا | ٥٣ | م النساء | ٤ |
| (٢) | فأولئك يدخلون الجنة ولا يظلمون نقيرا ... ... ... | ١٢٤ | م « | ٤ |
| **النَّاقُورِ** | : فإذا نقر فى الناقور . فذلك يومئذ يوم عسير ... | ٨ | ك المدثر | ٧٤ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **تَنْقُصُ** | : قد علمنا ما تنقص الأرض منهم وعندنا كتاب حفيظ | ٤ | ك ق | ٥٠ |
| **تَنْقُصُوا** | : ولا تنقصوا المكيال والميزان إنى أراكم بخير ... | ٨٤ | ك هود | ١١ |
| **نَنْقُصُهَا** | : أولم يروا أنا نأتى الأرض ننقصها من أطرافها | ٤١ | م الرعد | ١٣ |
| (٢) | أفلا يرون أنا نأتى الأرض ننقصها من أطرافها ... | ٤٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| **يَنْقُصُوكُمْ** | : إلا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا | ٤ | م التوبة | ٩ |
| **يُنْقَصُ** | : وما يعمر من معمر ولا ينقص من عمره إلا فى كتاب | ١١ | ك فاطر | ٣٥ |
| **انْقُصْ** | : قم الليل إلا قليلا . نصفه أو انقص منه قليلا ... | ٣ | ك المزمل | ٧٣ |
| **نَقْصٍ** | : ولنبلونكم بشىء من الخوف والجوع ونقص من الأموال والأنفس والثمرات ... ... ... ... | ١٥٥ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | ولقد أخذنا آل فرعون بالسنين ونقص من الثمرات لعلهم يذكرون ... ... ... ... ... ... ... | ١٣٠ | ك الأعراف | ٧ |
| **مَنْقُوصٍ** | : وإنا لموفوهم نصيبهم غير منقوص ... ... ... | ١٠٩ | ك هود | ١١ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **نَقَضَتْ** | : ولا تكونوا كالتى نقضت غزلها من بعد قوة أنكاثا | ٩٢ | ك النحل | ١٦ |
| **تَنْقُضُوا** | : ولا تنقضوا الأيمان بعد توكيدها ... ... ... | ٩١ | ك « | ١٦ |
| **يَنْقُضُونَ** | : الذين ينقضون عهد الله من بعد ميثاقه ... ... | ٢٧ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | الذين عاهدت منهم ثم ينقضون عهدهم فى كل مرة | ٥٦ | م الأنفال | ٨ |
| | الذين يوفون بعهد الله ولا ينقضون الميثاق ... ... | ٢٠ | م الرعد | ١٣ |
| | والذين ينقضون عهد الله من بعد ميثاقه ... ... ... | ٢٥ | م « | ١٣ |
| **أَنْقَضَ** | : ووضعنا عنك وزرك . الذى أنقض ظهرك ... | ٣ | ك الشرح | ٩٤ |
| **نَقْضِهِمْ** | : فبما نقضهم ميثاقهم وكفرهم بآيات الله ... ... | ١٥٥ | م النساء | ٤ |
| (٢) | فبما نقضهم ميثاقهم لعناهم وجعلنا قلوبهم قاسية ... | ١٣ | م المائدة | ٥ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **نَقْعًا** | : فالمغيرات صبحا . فأثرن به نقعا ... ... ... ... | ٤ | ك العاديات | ١٠٠ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **نَقَمُوا** | : وما نقموا إلا أن أغناهم الله ورسوله من فضله | ٧٤ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | وما نقموا منهم إلا أن يؤمنوا بالله العزيز الحميد ... | ٨ | ك البروج | ٨٥ |
| **تَنْقِمُ** | : وما تنقم منا إلا أن آمنا بآيات ربنا لما جاءتنا ... | ١٢٦ | ك الأعراف | ٧ |
| **تَنْقِمُونَ** | : قل يأهل الكتاب هل تنقمون منا إلا أن آمنا بالله... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٩ | م المائدة | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَنْتَقَمْنَا | : فانتقمنا منهم فأغرقناهم فى اليم ... ... ... ... | ١٣٦ | ك الأعراف | ٧ |
| (٥) | فانتقمنا منهم وإنهما لبإمام مبين ... ... ... ... | ٧٩ | ك الحجر | ١٥ |
| | فانتقمنا من الذين أجرموا وكان حقا علينا نصر المؤمنين | ٤٧ | ك الروم | ٣٠ |
| | فانتقمنا منهم فانظر كيف كان عاقبة المكذبين ... ... | ٢٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | فلما آسفونا انتقمنا منهم فأغرقناهم أجمعين ... ... | ٥٥ | ك « | ٤٣ |
| يَنْتَقِمُ | : ومن عاد فينتقم الله منه والله عزيز ذو انتقام ... | ٩٥ | م المائدة | ٥ |
| أَنْتِقَامٍ | : لهم عذاب شديد والله عزيز ذو انتقام ... ... | ٤ | م آل عمران | ٣ |
| (٤) | ومن عاد فينتقم الله منه والله عزيز ذو انتقام ... ... | ٩٥ | م المائدة | ٥ |
| | فلا تحسبن الله مخلف وعده رسله إن الله عزيز ذو انتقام | ٤٧ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | ومن يهد الله فما له من مضل أليس الله بعزيز ذى انتقام | ٣٧ | ك الزمر | ٣٩ |
| مُنْتَقِمُونَ | : إنا من المجرمين منتقمون ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك السجدة | ٣٢ |
| (٣) | فإما نذهبن بك فإنا منهم منتقمون ... ... ... ... | ٤١ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | يوم نبطش البطشة الكبرى إنا منتقمون ... ... ... | ١٦ | ك الدخان | ٤٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| لَنَاكِبُونَ | : وإن الذين لا يؤمنون بالآخرة عن الصراط لناكبون | ٧٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| مَنَاكِبِهَا | : هو الذى جعل لكم الأرض ذلولا فامشوا فى مناكبها | ١٥ | ك الملك | ٦٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| نَكَثَ | : فمن نكث فإنما ينكث على نفسه ... ... ... ... | ١٠ | م الفتح | ٤٨ |
| نَكَثُوا | : وإن نكثوا أيمانهم من بعد عهدهم وطعنوا | | | |
| (٢) | فى دينكم فقاتلوا أئمة الكفر ... ... ... ... | ١٢ | م التوبة | ٩ |
| | ألا تقاتلون قوما نكثوا أيمانهم وهموا بإخراج الرسول | ١٣ | م « | ٩ |
| يَنْكُثُ | : فمن نكث فإنما ينكث على نفسه ... ... ... ... | ١٠ | م الفتح | ٤٨ |
| يَنْكُثُونَ | : فلما كشفنا عنهم الرجز إلى أجل هم بالغوه إذا | | | |
| (٢) | هم ينكثون ... ... ... ... ... ... ... | ١٣٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | فلما كشفنا عنهم العذاب إذا هم ينكثون ... ... ... | ٥٠ | ك الزخرف | ٤٣ |
| أَنْكَاثًا | : ولا تكونوا كالتى نقضت غزلها من بعد قوة أنكاثا | ٩٢ | ك النحل | ١٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| نَكَحَ | : ولا تنكحوا ما نكح آباؤكم من النساء إلا ما قد سلف | ٢٢ | م النساء | ٤ |
| نَكَحْتُمْ | : إذا نكحتم المؤمنات ثم طلقتموهن من قبل أن | | | |
| | تمسوهن فما لكم عليهن من عدة ... ... ... ... | ٤٩ | م الأحزاب | ٣٣ |
| تَنْكِحَ | : فإن طلقها فلا تحل له من بعد حتى تنكح زوجا غيره | ٢٣٠ | م البقرة | ٢ |
| تَنْكِحُوا | : ولا تنكحوا المشركات حتى يؤمن ... ... ... | ٢٢١ | م « | ٢ |
| (٣) | ولا تنكحوا ما نكح آباؤكم من النساء إلا ما قد سلف | ٢٢ | م النساء | ٤ |
| | وما كان لكم أن تؤذوا رسول الله ولا أن تنكحوا | | | |
| | أزواجه من بعده أبدا ... ... ... ... ... ... | ٥٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| تَنْكِحُوهُنَّ | : فى يتامى النساء اللاتى لا تؤتونهن ما كتب | | | |
| (٢) | لهن وترغبون أن تنكحوهن ... ... ... ... ... | ١٢٧ | م النساء | ٤ |
| | ولا جناح عليكم أن تنكحوهن إذا آتيتموهن أجورهن | ١٠ | م الممتحنة | ٦٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَنْكِحَ | : ومن لم يستطع منكم طولا أن ينكح المحصنات | | | |
| (٢) | المؤمنات فمن ما ملكت أيمانكم ... ... ... ... | ٢٥ | م النساء | ٤ |
| | الزانى لا ينكح إلا زانية أو مشركة ... ... ... ... | ٣ | م النور | ٢٤ |
| يَنْكِحْنَ | : فلا تعضلوهن أن ينكحن أزواجهن إذا تراضوا | | | |
| | بينهم بالمعروف ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣٢ | م البقرة | ٢ |
| يَنْكِحُهَا | : والزانية لا ينكحها إلا زان أو مشرك ... ... | ٣ | م النور | ٢٤ |
| فَانْكِحُوا | : فانكحوا ما طاب لكم من النساء مثنى وثلاث ورباع | ٣ | م النساء | ٤ |
| فَانْكِحُوهُنَّ | : فانكحوهن بإذن أهلهن وآتوهن أجورهن | | | |
| | بالمعروف محصنات غير مسافحات ... ... ... | ٢٥ | م « | ٤ |
| أُنْكِحَكَ | : قال إنى أريد أن أنكحك إحدى ابنتى هاتين | ٢٧ | ك القصص | ٢٨ |
| تُنْكِحُوا | : ولا تنكحوا المشركين حتى يؤمنوا ... ... ... | ٢٢١ | م البقرة | ٢ |
| أَنْكِحُوا | : وأنكحوا الأيامى منكم والصالحين من عبادكم وإمائكم | ٣٢ | م النور | ٢٤ |
| يَسْتَنْكِحَهَا | : وامرأة مؤمنة إن وهبت نفسها للنبى إن أراد | | | |
| | النبى أن يستنكحها خالصة لك من دون المؤمنين | ٥٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| النِّكَاحِ | : ولا تعزموا عقدة النكاح حتى يبلغ الكتاب أجله | ٢٣٥ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | إلا أن يعفون أو يعفوا الذى بيده عقدة النكاح | ٢٣٧ | م « | ٢ |
| | وابتلوا اليتامى حتى إذا بلغوا النكاح ... ... ... | ٦ | م النساء | ٤ |
| نِكَاحًا | : وليستعفف الذين لا يجدون نكاحا حتى يغنيهم الله | | | |
| (٢) | من فضله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | م النور | ٢٤ |
| | والقواعد من النساء اللاتى لا يرجون نكاحا فليس | | | |
| | عليهن جناح أن يضعن ثيابهن غير متبرجات بزينة | ٦٠ | م « | ٢٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| نَكِدًا | : والذى خبث لا يخرج إلا نكدا ... ... ... ... | ٥٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| نَكِرَهُمْ | : فلما رأى أيديهم لا تصل إليه نكرهم وأوجس منهم خيفة | ٧٠ | ك هود | ١١ |
| نَكِّرُوا | : قال نكروا لها عرشها ... ... ... ... ... ... | ٤١ | ك النمل | ٢٧ |
| تُنْكِرُونَ | : ويريكم آياته فأى آيات الله تنكرون ... ... | ٨١ | ك غافر | ٤٠ |
| يُنْكِرُ | : ومن الأحزاب من ينكر بعضه ... ... ... ... | ٣٦ | م الرعد | ١٣ |
| يُنْكِرُونَهَا | : يعرفون نعمة الله ثم ينكرونها وأكثرهم الكافرون | ٨٣ | ك النحل | ١٦ |
| نُكْرًا | : قال أقتلت نفسا زكية بغير نفس لقد جئت شيئا نكرا | ٧٤ | ك الكهف | ١٨ |
| (٣) | قال أما من ظلم فسوف نعذبه ثم يرد إلى ربه فيعذبه عذابا نكرا | ٨٧ | م « | ١٨ |
| | فحاسبناها حسابا شديدا وعذبناها عذابا نكرا ... ... | ٨ | م الطلاق | ٦٥ |
| نُكُرٍ | : فتول عنهم يوم يدع الداع إلى شىء نكر ... ... | ٦ | ك القمر | ٥٤ |
| نَكِيرٍ | : ما لكم من ملجإ يومئذ وما لكم من نكير ... ... | ٤٧ | الشورى | ٤٢ |
| نَكِيرِ(ى) | : فأمليت للكافرين ثم أخذتهم فكيف كان نكير | ٤٤ | م الحج | ٢٢ |
| (٤) | وما بلغوا معشار ما آتيناهم فكذبوا رسلى فكيف كان نكير | ٤٥ | ك سبإ | ٣٤ |
| | ثم أخذت الذين كفروا فكيف كان نكير ... ... ... | ٢٦ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ولقد كذب الذين من قبلهم فكيف كان نكير ... ... | ١٨ | ك الملك | ٦٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَنْكَرَ: | وآغضض من صوتك إن أنكر الأصوات لصوت الحمير | ١٩ | ك لقمان | ٣١ |
| مُنْكِرُونَ: | وجاء إخوة يوسف فدخلوا عليه فعرفهم وهم له منكرون | ٥٨ | ك يوسف | ١٢ |
| (٣) | وهذا ذكر مبارك أنزلناه أفأنتم له منكرون ... ... | ٥٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | أم لم يعرفوا رسولهم فهم له منكرون ... ... ... ... | ٦٩ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| مُنْكِرَةٌ: | فالذين لا يؤمنون بالآخرة قلوبهم منكرة وهم مستكبرون | ٢٢ | ك النحل | ١٦ |
| الْمُنْكَرِ: | ولتكن منكم أمة يدعون إلى الخير و يأمرون | | | |
| (١٥) | بالمعروف و ينهون عن المنكر ... ... ... ... ... | ١٠٤ | م آل عمران | ٣ |
| | تأمرون بالمعروف وتنهون عن المنكر وتؤمنون بالله | ١١٠ | م « | ٣ |
| | و يأمرون بالمعروف و ينهون عن المنكر ... ... ... | ١١٤ | م « | ٣ |
| | كانوا لا يتناهون عن منكر فعلوه لبئس ما كانوا يفعلون | ٧٩ | م المائدة | ٥ |
| | يأمرهم بالمعروف و ينهاهم عن المنكر و يحل لهم الطيبات | ١٥٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | يأمرون بالمنكر و ينهون عن المعروف و يقبضون أيديهم | ٦٧ | م التوبة | ٩ |
| | يأمرون بالمعروف و ينهون عن المنكر و يقيمون الصلاة | ٧١ | م « | ٩ |
| | الآمرون بالمعروف والناهون عن المنكر ... ... ... | ١١٢ | م « | ٩ |
| | و ينهى عن الفحشاء والمنكر والبغى ... ... ... ... | ٩٠ | ك النحل | ١٦ |
| | أقاموا الصلاة وآتوا الزكاة وأمروا بالمعروف ونهوا | | | |
| | عن المنكر ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤١ | م الحج | ٢٢ |
| | تعرف فى وجوه الذين كفروا المنكر ... ... ... ... | ٧٢ | م « | ٢٢ |
| | ومن يتبع خطوات الشيطان فإنه يأمر بالفحشاء والمنكر | ٢١ | م النور | ٢٤ |
| | أئنكم لتأتون الرجال وتقطعون السبيل وتأتون فى ناديكم المنكر | ٢٩ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | إن الصلاة تنهى عن الفحشاء والمنكر ... ... ... ... | ٤٥ | ك « | ٢٩ |
| | يا بنىّ أقم الصلاة وأمر بالمعروف وآنه عن المنكر ... | ١٧ | ك لقمان | ٣١ |
| مُنْكَرًا: | وإنهم ليقولون منكرا من القول وزورا ... ... ... | ٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| مُنْكَرُونَ: | فلما جاء آل لوط المرسلون. قال إنكم قوم منكرون | ٦٢ | ك الحجر | ١٥ |
| (٢) | إذ دخلوا عليه فقالوا سلاما قال سلام قوم منكرون | ٢٥ | ك الذاريات | ٥١ |
| نُكِسُوا: | ثم نكسوا على رءوسهم لقد علمت ما هؤلاء ينطقون | ٦٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| نُنَكِّسْهُ: | ومن نعمره ننكسه فى الخلق أفلا يعقلون ... ... | ٦٨ | ك يس | ٣٦ |
| نَاكِسُوا: | ولو ترى إذ المجرمون ناكسوا رءوسهم عند ربهم | ١٢ | ك السجدة | ٣٢ |
| نَكَصَ: | فلما تراءت الفئتان نكص على عقبيه وقال إنى برىء منكم | ٤٨ | م الأنفال | ٨ |
| تَنْكِصُونَ: | فكنتم على أعقابكم تنكصون ... ... ... ... | ٦٦ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| اسْتَنْكَفُوا: | وأما الذين استنكفوا واستكبروا فيعذبهم | | | |
| | عذابا أليما ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٧٣ | م النساء | ٤ |
| يَسْتَنْكِفَ: | لن يستنكف المسيح أن يكون عبدا لله ... | ١٧٢ | م « | ٤ |
| (٢) | ومن يستنكف عن عبادته ويستكبر فسيحشرهم إليه جميعا | ١٧٢ | م « | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَنْكَالًا: | إن لدينا أنكالا وجحيما ... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك المزمل | ٧٣ |
| نَكَالَ: | فأخذه الله نكال الآخرة والأولى ... ... ... ... | ٢٥ | ك النازعات | ٧٩ |
| نَكَالًا: | فجعلناها نكالا لما بين يديها وما خلفها وموعظة للمتقين | ٦٦ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | فاقطعوا أيديهما جزاء بما كسبا نكالا من الله ... ... | ٣٨ | م المائدة | ٥ |
| تَنْكِيلًا: | والله أشد بأسا وأشد تنكيلا ... ... ... ... ... | ٨٤ | م النساء | ٤ |
| نَمَارِقُ: | وأكواب موضوعة . ونمارق مصفوفة ... ... | ١٥ | ك الغاشية | ٨٨ |
| النَّمْلِ: | حتى إذا أتوا على واد النمل ... ... ... ... ... | ١٨ | ك النمل | ٢٧ |
| (٢) | قالت نملة يا أيها النمل ادخلوا مساكنكم ... ... ... | ١٨ | ك « | ٢٧ |
| نَمْلَةٌ: | حتى إذا أتوا على واد النمل قالت نملة ... ... ... | ١٨ | ك « | ٢٧ |
| الْأَنَامِلَ: | وإذا خلوا عضوا عليكم الأنامل من الغيظ ... | ١١٩ | م آل عمران | ٣ |
| بَنِيمٍ: | ولا تطع كل حلاف مهين . هماز مشاء بنميم ... ... | ١١ | ك القلم | ٦٨ |
| مِنْهَاجًا: | لكل جعلنا منكم شرعة ومنهاجا ... ... ... ... | ٤٨ | م المائدة | ٥ |
| تَنْهَرْ: | فأما اليتيم فلا تقهر . وأما السائل فلا تنهر ... ... | ١٠ | ك الضحى | ٩٣ |
| تَنْهَرْهُمَا: | فلا تقل لهما أف ولا تنهرهما وقل لهما قولا كريما | ٢٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| نَهَرٍ: | فلما فصل طالوت بالجنود قال إن الله مبتليكم بنهر ... | ٢٤٩ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | إن المتقين فى جنات ونهر . فى مقعد صدق عند مليك مقتدر | ٥٤ | ك القمر | ٥٤ |
| نَهَرًا: | وفجرنا خلالهما نهرا ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك الكهف | ١٨ |
| الْأَنْهَارُ: | وبشر الذين آمنوا وعملوا الصالحات أن لهم جنات | | | |
| (٤٧) | تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | م البقرة | ٢ |
| | وإن من الحجارة لما يتفجر منه الأنهار ... ... ... | ٧٤ | م « | ٢ |
| | أيود أحدكم أن تكون له جنة من نخيل وأعناب تجرى | | | |
| | من تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦٦ | م « | ٢ |
| | للذين اتقوا عند ربهم جنات تجرى من تحتها الأنهار | ١٥ | م آل عمران | ٣ |
| | أولئك جزاؤهم مغفرة من ربهم وجنات تجرى من تحتها الأنهار | ١٣٦ | م « | ٣ |
| | ولأدخلنهم جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... | ١٩٥ | م « | ٣ |
| | لكن الذين اتقوا ربهم لهم جنات تجرى من تحتها الأنهار | ١٩٨ | م « | ٣ |
| | ومن يطع الله ورسوله يدخله جنات تجرى من تحتها الأنهار | ١٣ | م النساء | ٤ |
| | سندخلهم جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... | ٥٧ | م « | ٤ |
| | سندخلهم جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... | ١٢٢ | م « | ٤ |
| | ولأدخلنكم جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... | ١٢ | م المائدة | ٥ |
| | فأثابهم الله بما قالوا جنات تجرى من تحتها الأنهار | ٨٥ | م « | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **الأَنْهَارُ:** | لهم جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها أبدا | ١١٩ | م المائدة | ٥ |
| | وجعلنا الأنهار تجرى من تحتهم فأهلكناهم بذنوبهم | ٦ | ك الأنعام | ٦ |
| | ونزعنا ما فى صدورهم من غل تجرى من تحتهم الأنهار | ٤٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | وعد الله المؤمنين والمؤمنات جنات تجرى من تحتها الأنهار | ٧٢ | م التوبة | ٩ |
| | أعد الله لهم جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها | ٨٩ | م « | ٩ |
| | وأعد لهم جنات تجرى تحتها الأنهار خالدين فيها أبدا | ١٠٠ | م « | ٩ |
| | تجرى من تحتهم الأنهار فى جنات النعيم ... ... ... | ٩ | ك يونس | ١٠ |
| | مثل الجنة التى وعد المتقون تجرى من تحتها الأنهار | ٣٥ | م الرعد | ١٣ |
| | وأدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وسخر لكم الفلك لتجرى فى البحر بأمره وسخر لكم الأنهار | ٣٢ | ك « | ١٤ |
| | جنات عدن يدخلونها تجرى من تحتها الأنهار ... ... | ٣١ | ك النحل | ١٦ |
| | أو تكون لك جنة من نخيل وعنب فتفجر الأنهار خلالها تفجيرا | ٩١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | أولئك لهم جنات عدن تجرى من تحتهم الأنهار ... ... | ٣١ | ك الكهف | ١٨ |
| | جنات عدن تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها ... | ٧٦ | ك طه | ٢٠ |
| | إن الله يدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... | ١٤ | م الحج | ٢٢ |
| | إن الله يدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | م « | ٢٢ |
| | إن شاء جعل لك خيرا من ذلك جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | لنبوئنهم من الجنة غرفا تجرى من تحتها الأنهار ... | ٥٨ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | لهم غرف من فوقها غرف مبنية تجرى من تحتها الأنهار | ٢٠ | ك الزمر | ٣٩ |
| | قال يا قوم أليس لى ملك مصر وهذه الأنهار تجرى من تحتى | ٥١ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | إن الله يدخل الذين آمنوا وعملوا الصالحات جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... | ١٢ | م محمد | ٤٧ |
| | مثل الجنة التى وعد المتقون فيها أنهار من ماء غير آسن | ١٥ | م « | ٤٧ |
| | وأنهار من لبن لم يتغير طعمه ... ... ... ... ... | ١٥ | م « | ٤٧ |
| | وأنهار من خمر لذة للشاربين ... ... ... ... ... | ١٥ | م « | ٤٧ |
| | وأنهار من عسل مصفى ... ... ... ... ... ... | ١٥ | م « | ٤٧ |
| | ليدخل المؤمنين والمؤمنات جنات تجرى من تحتها الأنهار | ٥ | م الفتح | ٤٨ |
| | ومن يطع الله ورسوله يدخله جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | م « | ٤٨ |
| | بشراكم اليوم جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها | ١٢ | م الحديد | ٥٧ |
| | ويدخلهم جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها | ٢٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| | يغفر لكم ذنوبكم ويدخلكم جنات تجرى من تحتها الأنهار | ١٢ | م الصف | ٦١ |
| | يكفر عنه سيئاته ويدخله جنات تجرى من تحتها الأنهار | ٩ | م التغابن | ٦٤ |
| | ومن يؤمن بالله ويعمل صالحا يدخله جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | م الطلاق | ٦٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **الأَنْهَارُ:** | عسى ربكم أن يكفر عنكم سيئاتكم ويدخلكم جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... | ٨ | م التحريم | ٦٦ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم جنات تجرى من تحتها الأنهار ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك البروج | ٨٥ |
| | جزاؤهم عند ربهم جنات عدن تجرى من تحتها الأنهار | ٨ | م البينة | ٩٨ |
| **أَنْهَارًا:** | وهو الذى مد الأرض وجعل فيها رواسى وأنهارا | ٣ | م الرعد | ١٣ |
| (٤) | وألقى فى الأرض رواسى أن تميد بكم وأنهارا وسبلا | ١٥ | ك النحل | ١٦ |
| | أمن جعل الأرض قرارا وجعل خلالها أنهارا ... ... | ٦١ | ك النمل | ٢٧ |
| | ويجعل لكم جنات ويجعل لكم أنهارا ... ... ... | ١٢ | ك نوح | ٧١ |
| **النَّهَارِ:** | إن فى خلق السموات والأرض واختلاف الليل والنهار | ١٦٤ | م البقرة | ٢ |
| (٥٤) | الذين ينفقون أموالهم بالليل والنهار سرا وعلانية | ٢٧٤ | م « | ٢ |
| | تولج الليل فى النهار ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | م آل عمران | ٣ |
| | وتولج النهار فى الليل ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | م « | ٣ |
| | آمنوا بالذى أنزل على الذين آمنوا وجه النهار ... | ٧٢ | م « | ٣ |
| | إن فى خلق السموات والأرض واختلاف الليل والنهار لآيات لأولى الألباب ... ... ... ... | ١٩٠ | م « | ٣ |
| | وله ما سكن فى الليل والنهار وهو السميع العليم ... ... | ١٣ | ك الأنعام | ٦ |
| | وهو الذى يتوفاكم بالليل ويعلم ما جرحتم بالنهار ... | ٦٠ | ك « | ٦ |
| | ثم استوى على العرش يغشى الليل النهار يطلبه حثيثا | ٥٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | إن فى اختلاف الليل والنهار وما خلق الله فى السموات والأرض لآيات لقوم يتقون ... ... ... ... | ٦ | ك يونس | ١٠ |
| | ويوم يحشرهم كأن لم يلبثوا إلا ساعة من النهار يتعارفون بينهم ... ... ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك « | ١٠ |
| | هو الذى جعل لكم الليل لتسكنوا فيه والنهار مبصرا | ٦٧ | ك « | ١٠ |
| | وأقم الصلاة طرفى النهار وزلفا من الليل ... ... ... | ١١٤ | م هود | ١١ |
| | ومن كل الثمرات جعل فيها زوجين اثنين يغشى الليل النهار | ٣ | م الرعد | ١٣ |
| | سواء منكم من أسر القول ومن جهر به ومن هو مستخف بالليل وسارب بالنهار ... ... ... ... | ١٠ | م « | ١٣ |
| | وسخر لكم الشمس والقمر دائبين وسخر لكم الليل والنهار | ٣٣ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | وسخر لكم الليل والنهار والشمس والقمر ... ... ... | ١٢ | ك النحل | ١٦ |
| | وجعلنا الليل والنهار آيتين ... ... ... ... ... | ١٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فمحونا آية الليل وجعلنا آية النهار مبصرة ... ... ... | ١٢ | ك « | ١٧ |
| | ومن آناء الليل فسبح وأطراف النهار لعلك ترضى | ١٣٠ | م طه | ٢٠ |
| | يسبحون الليل والنهار لا يفترون ... ... ... ... | ٢٠ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وهو الذى خلق الليل والنهار والشمس والقمر ... ... | ٣٣ | ك « | ٢١ |
| | قل من يكلؤكم بالليل والنهار من الرحمن ... ... ... | ٤٢ | ك « | ٢١ |
| | ذلك بأن الله يولج الليل فى النهار ... ... ... ... | ٦١ | م الحج | ٢٢ |
| | ويولج النهار فى الليل وأن الله سميع بصير ... ... | ٦١ | م « | ٢٢ |
| | وهو الذى يحيى ويميت وله اختلاف الليل والنهار | ٨٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| النَّهَارُ: | يقلب الله الليل والنهار إن في ذلك لعبرة لأولي الأبصار | ٤٤ | م النـور | ٢٤ |
| | وهو الذي جعل لكم الليل لباسا والنوم سباتا وجعل النهار نشورا ... ... ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| | وهو الذي جعل الليل والنهار خلفة لمن أراد أن يذكر أو أراد شكورا ... ... ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك « | ٢٥ |
| | ألم يروا أنا جعلنا الليل ليسكنوا فيه والنهار مبصرا ... | ٨٦ | ك النمـل | ٢٧ |
| | قل أرأيتم إن جعل الله عليكم النهار سرمدا إلى يوم القيامة | ٧٢ | ك القصص | ٢٨ |
| | ومن رحمته جعل لكم الليل والنهار لتسكنوا فيه ولتبتغوا من فضله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | ك « | ٢٨ |
| | ومن آياته منامكم بالليل والنهار وابتغاؤكم من فضله ... | ٢٣ | ك الـروم | ٣٠ |
| | ألم تر أن الله يولج الليل في النهار ... ... ... ... | ٢٩ | م لقمان | ٣١ |
| | ويولج النهار في الليل وسخر الشمس والقمر ... ... | ٢٩ | م « | ٣١ |
| | وقال الذين استضعفوا للذين استكبروا بل مكر الليل والنهار | ٣٣ | ك سبإ | ٣٤ |
| | يولج الليل في النهار... ... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | ويولج النهار في الليل وسخر الشمس والقمر ... ... | ١٣ | ك « | ٣٥ |
| | وآية لهم الليل نسلخ منه النهار فإذا هم مظلمون ... | ٣٧ | ك يس | ٣٦ |
| | لا الشمس ينبغي لها أن تدرك القمر ولا الليل سابق النهار | ٤٠ | ك « | ٣٦ |
| | خلق السموات والأرض بالحق يكور الليل على النهار | ٥ | ك الزمـر | ٣٩ |
| | ويكور النهار على الليل وسخر الشمس والقمر ... ... | ٥ | ك « | ٣٩ |
| | الله الذي جعل لكم الليل لتسكنوا فيه والنهار مبصرا | ٦١ | ك غافـر | ٤٠ |
| | ومن آياته الليل والنهار والشمس والقمر... ... ... | ٣٧ | ك فصلت | ٤١ |
| | فإن استكبروا فالذين عند ربك يسبحون له بالليل والنهار | ٣٨ | ك « | ٤١ |
| | واختلاف الليل والنهار وما أنزل الله من السماء من رزق | ٥ | ك الجاثيـة | ٤٥ |
| | كأنهم يوم يرون ما يوعدون لم يلبثوا إلا ساعة من نهار | ٣٥ | م الأحقاف | ٤٦ |
| | يولج الليل في النهار... ... ... ... ... ... ... | ٦ | م الحـديد | ٥٧ |
| | ويولج النهار في الليل وهو عليم بذات الصدور ... | ٦ | م « | ٥٧ |
| | إن لك في النهار سبحا طويلا ... ... ... ... ... | ٧ | ك المـزمل | ٧٣ |
| | والله يقدر الليل والنهار علم أن لن تحصوه فتاب عليكم | ٢٠ | م « | ٧٣ |
| | وجعلنا النهار معاشا... ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك النبـإ | ٧٨ |
| | والشمس وضحاها . والقمر إذا تلاها . والنهار إذا جلاها | ٣ | ك الشمس | ٩١ |
| | والليل إذا يغشى . والنهار إذا تجلى... ... ... ... | ٢ | ك الليـل | ٩٢ |
| نَهَارًا: | أتاها أمرنا ليلا أو نهارا فجعلناها حصيدا ... ... | ٢٤ | ك يـونس | ١٠ |
| (٣) | قل أرأيتم إن أتاكم عذابه بياتا أو نهارا... ... ... | ٥٠ | ك « | ١٠ |
| | قال رب إني دعوت قومي ليلا ونهارا ... . . . ... | ٥ | ك نـوح | ٧١ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| نَهَى: | وأما من خاف مقام ربه ونهى النفس عن الهوى | ٤٠ | ك النازعات | ٧٩ |
| نَهَاكُمْ: | وما آتاكم الرسول فخذوه وما نهاكم عنه فانتهوا ... | ٧ | م الحشـر | ٥٩ |
| نَهَاكُمَا: | وقال ما نهاكما ربكما عن هذه الشجرة إلا تكونا ملكين | ٢٠ | ك الأعراف | ٧ |
| نَهَوْا: | أقاموا الصلاة وآتوا الزكاة وأمروا بالمعروف ونهوا عن المنكر ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤١ | م الحـج | ٢٢ |
| أَنْهَاكُمْ: | وما أريد أن أخالفكم إلى ما أنهاكم عنه ... ... | ٨٨ | ك هـود | ١١ |
| أَنْهَكُمَا: | وناداهما ربهما ألم أنهكما عن تلكما الشجرة... ... | ٢٢ | ك الأعراف | ٧ |
| تَنْهَى: | إن الصلاة تنهى عن الفحشاء والمنكر... ... ... | ٤٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| أَتَنْهَانَا: | أتنهانا أن نعبد ما يعبد آباؤنا ... ... ... ... ... | ٦٢ | ك هـود | ١١ |
| تَنْهَوْنَ: | تأمرون بالمعروف وتنهون عن المنكر... ... ... | ١١٠ | م آل عمران | ٣ |
| تَنْهَكَ: | قالوا أولم ننهك عن العالمين ... ... ... ... ... | ٧٠ | ك الحجـر | ١٥ |
| يَنْهَى: | وينهى عن الفحشاء والمنكر والبغي ... ... ... | ٩٠ | ك النحـل | ١٦ |
| (٢) | أرأيت الذي ينهى . عبدا إذا صلى ... ... ... | ٩ | ك العـلق | ٩٦ |
| يَنْهَاكُمُ: | لا ينهاكم الله عن الذين لم يقاتلوكم في الدين | ٨ | م الممتحنـة | ٦٠ |
| (٢) | إنما ينهاكم الله عن الذين قاتلوكم في الدين ... ... | ٩ | م « | ٦٠ |
| يَنْهَاهُمُ: | لولا ينهاهم الربانيون والأحبار عن قولهم الإثم | ٦٣ | م المـائدة | ٥ |
| (٢) | يأمرهم بالمعروف وينهاهم عن المنكر ويحل لهم الطيبات | ١٥٧ | ك الأعراف | ٧ |
| يَنْهَوْنَ: (٧) | ولتكن منكم أمة يدعون إلى الخير ويأمرون بالمعروف وينهون عن المنكر ... ... ... ... | ١٠٤ | م آل عمران | ٣ |
| | يؤمنون بالله واليوم الآخر ويأمرون بالمعروف وينهون عن المنكر... ... ... ... ... ... | ١١٤ | م « | ٣ |
| | وهم ينهون عنه وينأون عنه ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك الأنعـام | ٦ |
| | أنجينا الذين ينهون عن السوء وأخذنا الذين ظلموا | ١٦٥ | م الأعراف | ٧ |
| | يأمرون بالمنكر وينهون عن المعروف ويقبضون أيديهم | ٦٧ | م التـوبة | ٩ |
| | يأمرون بالمعروف وينهون عن المنكر ويقيمون الصلاة | ٧١ | م « | ٩ |
| | فلولا كان من القرون من قبلكم أولوا بقية ينهون عن الفساد في الأرض ... ... ... ... ... ... | ١١٦ | ك هـود | ١١ |
| وَأْنْهَ: | يا بني أقم الصلاة وأمر بالمعروف وانه عن المنكر | ١٧ | ك لقمان | ٣١ |
| نُهُوا: | وأخذهم الربا وقد نهوا عنه وأكلهم أموال الناس بالباطل | ١٦١ | م النسـاء | ٤ |
| (٥) | ولو ردوا لعادوا لما نهوا عنه وإنهم لكاذبون ... | ٢٨ | ك الأنعـام | ٦ |
| | فلما عتوا عن ما نهوا عنه قلنا لهم كونوا قردة خاسئين | ١٦٦ | م الأعراف | ٧ |
| | ألم تر إلى الذين نهوا عن النجوى ... ... ... ... | ٨ | م المجـادلة | ٥٨ |
| | ثم يعودون لما نهوا عنه ويتناجون بالإثم والعدوان | ٨ | م « | ٥٨ |
| نُهِيتُ: | قل إني نهيت أن أعبد الذين تدعون من دون الله | ٥٦ | ك الأنعـام | ٦ |
| (٢) | قل إني نهيت أن أعبد الذين تدعون من دون الله لما جاءني البينات من ربي ... ... ... ... ... | ٦٦ | ك غافـر | ٤٠ |
| تُنْهَوْنَ: | إن تجتنبوا كبائر ما تنهون عنه نكفر عنكم سيئاتكم | ٣١ | م النسـاء | ٤ |
| يَتَنَاهَوْنَ: | كانوا لا يتناهون عن منكر فعلوه ... ... ... | ٧٩ | م المـائدة | ٥ |
| فَانْتَهَى: | فمن جاءه موعظة من ربه فانتهى فله ما سلف ... | ٢٧٥ | م البقـرة | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَنْتَهُوا: | فإن انتهوا فإن الله غفور رحيم ... ... ... ... | ١٩٢ | م البقـرة | ٢ |
| (٣) | فإن انتهوا فلا عدوان إلا على الظالمين... ... ... ... | ١٩٣ | م « | ٢ |
| | فإن انتهوا فإن الله بما يعملون بصير ... ... ... ... | ٣٩ | م الأنفـال | ٨ |
| تَنْتَهِ: | أراغب أنت عن آلهتي يا إبراهيم لئن لم تنته لأرجمنك | ٤٦ | ك مريم | ١٩ |
| (٣) | قالوا لئن لم تنته يا نوح لتكونن من المرجومين... ... | ١٦ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| | قالوا لئن لم تنته يا لوط لتكونن من المخرجين ... ... | ١٦٧ | ك « | ٢٦ |
| تَنْتَهُوا: | إن تستفتحوا فقد جاءكم الفتح وإن تنتهوا فهو خير لكم | ١٩ | م الأنفـال | ٨ |
| (٢) | لئن لم تنتهوا لنرجمنكم وليمسنكم منا عذاب أليم ... ... | ١٨ | ك يس | ٣٦ |
| يَنْتَهِ: | لئن لم ينته المنافقون والذين في قلوبهم مرض | | | |
| (٢) | والمرجفون في المدينة لنغرينك بهم ... ... ... | ٦٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | كلا لئن لم ينته لنسفعا بالناصية ... ... ... ... | ١٥ | ك العلق | ٩٦ |
| يَنْتَهُوا: | وإن لم ينتهوا عما يقولون ليمسن الذين كفروا منهم | | | |
| (٢) | عذاب أليم ... ... ... ... ... ... ... | ٧٣ | م المائدة | ٥ |
| | قل للذين كفروا إن ينتهوا يغفر لهم ما قد سلف ... | ٣٨ | م الأنفـال | ٨ |
| يَنْتَهُونَ: | فقاتلوا أئمة الكفر إنهم لا أيمان لهم لعلهم ينتهون | ١٢ | م التـوبة | ٩ |
| أَنْتَهُوا: | ولا تقولوا ثلاثة انتهوا خيرا لكم إنما الله إله واحد | ١٧١ | م النسـاء | ٤ |
| (٢) | وما آتاكم الرسول فخذوه وما نهاكم عنه فانتهوا ... | ٧ | م الحشـر | ٥٩ |
| النَّاهُونَ: | الآمرون بالمعروف والناهون عن المنكر والحافظون | | | |
| | لحدود الله ... ... ... ... ... ... ... | ١١٢ | م التـوبة | ٩ |
| النُّهَى: | كلوا وارعوا أنعامكم إن في ذلك لآيات لأولي النهى | ٥٤ | ك طـه | ٢٠ |
| (٢) | إن في ذلك لآيات لأولي النهى ... ... ... ... ... | ١٢٨ | ك « | ٢٠ |
| الْمُنْتَهَى: | ولقد رآه نزلة أخرى ، عند سدرة المنتهى ... | ١٤ | ك النجـم | ٥٣ |
| (٢) | وأن إلى ربك المنتهى ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك « | ٥٣ |
| مُنْتَهَاهَا: | فيم أنت من ذكراها ، إلى ربك منتهاها ... ... | ٤٤ | ك النازعات | ٧٩ |
| مُنْتَهُونَ: | ويصدكم عن ذكر الله وعن الصلاة فهل أنتم منتهون | ٩١ | م المائدة | ٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| لَتَنُوءُ: | وآتيناه من الكنوز ما إن مفاتحه لتنوء بالعصبة أولي القوة | ٧٦ | ك القصص | ٢٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| أَنَابَ: | قل إن الله يضل من يشاء ويهدي إليه من أناب | ٢٧ | م الرعـد | ١٣ |
| (٤) | واتبع سبيل من أناب إليّ ... ... ... ... ... | ١٥ | ك لقمان | ٣١ |
| | وظن داود أنما فتناه فاستغفر ربه وخر راكعا وأناب | ٢٤ | ك ص | ٣٨ |
| | ولقد فتنا سليمان وألقينا على كرسيه جسدا ثم أناب ... | ٣٤ | ك « | ٣٨ |
| أَنَابُوا: | والذين اجتنبوا الطاغوت أن يعبدوها وأنابوا إلى | | | |
| | الله لهم البشرى... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الزمـر | ٣٩ |
| أَنَبْنَا: | ربنا عليك توكلنا وإليك أنبنا وإليك المصير ... | ٤ | م الممتحنـة | ٦٠ |
| أُنِيبُ: | وما توفيقي إلا بالله عليه توكلت وإليه أنيب ... | ٨٨ | ك هـود | ١١ |
| (٢) | ذلكم الله ربي عليه توكلت وإليه أنيب... ... ... | ١٠ | ك الشورى | ٤٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يُنِيبُ: | وينزل لكم من السماء رزقا وما يتذكر إلا من ينيب | ١٣ | ك غافـر | ٤٠ |
| (٢) | الله يجتبي إليه من يشاء ويهدي إليه من ينيب ... ... | ١٣ | ك الشورى | ٤٢ |
| أَنِيبُوا: | وأنيبوا إلى ربكم وأسلموا له من قبل أن يأتيكم العذاب | ٥٤ | م الـزمر | ٣٩ |
| مُنِيبٌ: | إن إبراهيم لحليم أواه منيب ... ... ... ... ... | ٧٥ | ك هـود | ١١ |
| (٤) | إن في ذلك لآية لكل عبد منيب ... ... ... ... | ٩ | ك سبأ | ٣٤ |
| | تبصرة وذكرى لكل عبد منيب ... ... ... ... ... | ٨ | ك ق | ٥٠ |
| | من خشي الرحمن بالغيب وجاء بقلب منيب ... ... | ٣٣ | ك « | ٥٠ |
| مُنِيبًا: | وإذا مس الإنسان ضر دعا ربه منيبا إليه ... ... | ٨ | ك الـزمر | ٣٩ |
| مُنِيبِينَ: | منيبين إليه واتقوه وأقيموا الصلاة ... ... ... | ٣١ | ك الـروم | ٣٠ |
| (٢) | وإذا مس الناس ضر دعوا ربهم منيبين إليه ... ... | ٣٣ | ك « | ٣٠ |
| | ✦✦✦ | | | |
| نُوحٍ: | إنا أوحينا إليك كما أوحينا إلى نوح والنبيين من بعده | ١٦٣ | م النسـاء | ٤ |
| (٣٣) | واذكروا إذ جعلكم خلفاء من بعد قوم نوح ... ... | ٦٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | ألم يأتهم نبأ الذين من قبلهم قوم نوح وعاد وثمود ... | ٧٠ | م التـوبة | ٩ |
| | واتل عليهم نبأ نوح... ... ... ... ... ... ... | ٧١ | ك يـونس | ١٠ |
| | قالوا يا نوح قد جادلتنا فأكثرت جدالنا فأتنا بما تعدنا | ٣٢ | ك هـود | ١١ |
| | وأوحي إلى نوح أنه لن يؤمن من قومك إلا من قد آمن | ٣٦ | ك « | ١١ |
| | ونادى نوح ابنه وكان في معزل يا بني اركب معنا ... | ٤٢ | ك « | ١١ |
| | ونادى نوح ربه فقال رب إن ابني من أهلي ... ... | ٤٥ | ك « | ١١ |
| | قال يا نوح إنه ليس من أهلك إنه عمل غير صالح | ٤٦ | ك « | ١١ |
| | قيل يا نوح اهبط بسلام منا وبركات عليك ... ... | ٤٨ | ك « | ١١ |
| | ويا قوم لا يجرمنكم شقاقي أن يصيبكم مثل ما أصاب | | | |
| | قوم نوح أو قوم هود ... ... ... ... ... ... | ٨٩ | ك « | ١١ |
| | ألم يأتكم نبأ الذين من قبلكم قوم نوح وعاد وثمود | ٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | ذرية من حملنا مع نوح إنه كان عبدا شكورا ... ... | ٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وكم أهلكنا من القرون من بعد نوح ... ... ... ... | ١٧ | ك « | ١٧ |
| | أولئك الذين أنعم الله عليهم من النبيين من ذرية آدم | | | |
| | وممن حملنا مع نوح ... ... ... ... ... ... | ٥٨ | م مريم | ١٩ |
| | وإن يكذبوك فقد كذبت قبلهم قوم نوح وعاد وثمود | ٤٢ | م الحج | ٢٢ |
| | وقوم نوح لما كذبوا الرسل أغرقناهم وجعلناهم للناس آية | ٣٧ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | كذبت قوم نوح المرسلين ... ... ... ... ... | ١٠٥ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | إذ قال لهم أخوهم نوح ألا تتقون ... ... ... ... | ١٠٦ | ك « | ٢٦ |
| | قالوا لئن لم تنته يا نوح لتكونن من المرجومين... ... | ١١٦ | ك « | ٢٦ |
| | وإذ أخذنا من النبيين ميثاقهم ومنك ومن نوح ... | ٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ولقد نادانا نوح فلنعم المجيبون ... ... ... ... | ٧٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| | سلام على نوح في العالمين ... ... ... ... ... | ٧٩ | ك « | ٣٧ |
| | كذبت قبلهم قوم نوح وعاد وفرعون ذو الأوتاد ... | ١٢ | ك ص | ٣٨ |
| | كذبت قبلهم قوم نوح والأحزاب من بعدهم ... ... | ٥ | ك غافـر | ٤٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| نُوحٌ: | مثل دأب قوم نوح وعاد وثمود والذين من بعدهم... | ٣١ | ك غافر | ٤٠ |
| | كذبت قبلهم قوم نوح وأصحاب الرس وثمود ... ... | ١٢ | ك قٓ | ٥٠ |
| | وقوم نوح من قبل إنهم كانوا قوما فاسقين ... ... | ٤٦ | ك الذاريات | ٥١ |
| | وقوم نوح من قبل إنهم كانوا هم أظلم وأطغى... ... | ٥٢ | ك النجم | ٥٣ |
| | كذبت قبلهم قوم نوح فكذبوا عبدنا وقالوا مجنون وازدجر | ٩ | ك القمر | ٥٤ |
| | ضرب الله مثلا للذين كفروا امرأة نوح وامرأة لوط | ١٠ | م التحريم | ٦٦ |
| | قال نوح رب إنهم عصوني ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك نوح | ٧١ |
| | وقال نوح رب لا تذر على الأرض من الكافرين ديارا | ٢٦ | ك » | ٧١ |
| نُوحًا: (١٠) | إن الله اصطفى آدم ونوحا وآل إبراهيم وآل عمران على العالمين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | م آل عمران | ٣ |
| | ووهبنا له إسحق ويعقوب كلا هدينا ونوحا هدينا من قبل | ٨٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | لقد أرسلنا نوحا إلى قومه فقال يا قوم اعبدوا الله | ٥٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولقد أرسلنا نوحا إلى قومه إني لكم نذير مبين ... ... | ٢٥ | ك هود | ١١ |
| | ونوحا إذ نادى من قبل فاستجبنا له... ... ... .. | ٧٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ولقد أرسلنا نوحا إلى قومه فقال يا قوم اعبدوا الله | ٢٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ولقد أرسلنا نوحا إلى قومه فلبث فيهم ألف سنة إلا خمسين عاما... ... ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | شرع لكم من الدين ما وصى به نوحا والذي أوحينا إليك | ١٣ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ولقد أرسلنا نوحا وإبراهيم ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | م الحديد | ٥٧ |
| | إنا أرسلنا نوحا إلى قومه ... ... ... ... ... ... | ١ | ك نوح | ٧١ |

+ + +

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| النَّارُ: | فاتقوا النار التي وقودها الناس والحجارة ... ... ... | ٢٤ | م البقرة | ٢ |
| (١٢٦) | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا أولئك أصحاب النار ... | ٣٩ | م » | ٢ |
| | وقالوا لن تمسنا النار إلا أياما معدودة ... ... ... | ٨٠ | م » | ٢ |
| | بلى من كسب سيئة وأحاطت به خطيئته فأولئك أصحاب النار | ٨١ | م » | ٢ |
| | قال ومن كفر فأمتعه قليلا ثم أضطره إلى عذاب النار | ١٢٦ | م » | ٢ |
| | وما هم بخارجين من النار ... ... ... ... ... ... | ١٦٧ | م » | ٢ |
| | أولئك ما يأكلون في بطونهم إلا النار... ... ... ... | ١٧٤ | م » | ٢ |
| | فما أصبرهم على النار... ... ... ... ... ... ... | ١٧٥ | م » | ٢ |
| | ومنهم من يقول ربنا آتنا في الدنيا حسنة وفي الآخرة حسنة وقنا عذاب النار ... ... ... ... ... ... | ٢٠١ | م » | ٢ |
| | وأولئك أصحاب النار هم فيها خالدون ... ... ... | ٢١٧ | م » | ٢ |
| | أولئك يدعون إلى النار والله يدعوا إلى الجنة والمغفرة بإذنه | ٢٢١ | م » | ٢ |
| | يخرجونهم من النور إلى الظلمات أولئك أصحاب النار | ٢٥٧ | م » | ٢ |
| | فأصابها إعصار فيه نار فاحترقت ... ... ... ... ... | ٢٦٦ | م » | ٢ |
| | ومن عاد فأولئك أصحاب النار هم فيها خالدون... ... | ٢٧٥ | م » | ٢ |
| | وأولئك هم وقود النار ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | م آل عمران | ٣ |
| | الذين يقولون ربنا إننا آمنا فاغفر لنا ذنوبنا وقنا عذاب النار | ١٦ | م » | ٣ |
| النَّارِ: | ذلك بأنهم قالوا لن تمسنا النار إلا أياما معدودات | ٢٤ | م آل عمران | ٣ |
| | وكنتم على شفا حفرة من النار فأنقذكم منها... ... ... | ١٠٣ | م » | ٣ |
| | وأولئك أصحاب النار هم فيها خالدون ... ... ... | ١١٦ | م » | ٣ |
| | واتقوا النار التي أعدت للكافرين ... ... ... ... | ١٣١ | م » | ٣ |
| | ومأواهم النار وبئس مثوى الظالمين ... ... ... ... | ١٥١ | م » | ٣ |
| | الذين قالوا إن الله عهد إلينا ألا نؤمن لرسول حتى يأتينا بقربان تأكله النار ... ... ... ... ... | ١٨٣ | م » | ٣ |
| | فمن زحزح عن النار وأدخل الجنة فقد فاز ... ... ... | ١٨٥ | م » | ٣ |
| | ربنا ما خلقت هذا باطلا سبحانك فقنا عذاب النار | ١٩١ | م » | ٣ |
| | ربنا إنك من تدخل النار فقد أخزيته ... ... ... | ١٩٢ | م » | ٣ |
| | إن المنافقين في الدرك الأسفل من النار ... ... ... | ١٤٥ | م النساء | ٤ |
| | إني أريد أن تبوأ بإثمي وإثمك فتكون من أصحاب النار | ٢٩ | م المائدة | ٥ |
| | يريدون أن يخرجوا من النار وما هم بخارجين منها | ٣٧ | م » | ٥ |
| | إنه من يشرك بالله فقد حرم الله عليه الجنة ومأواه النار | ٧٢ | م » | ٥ |
| | ولو ترى إذ وقفوا على النار فقالوا يا ليتنا ن... ... | ٢٧ | ك الأنعام | ٦ |
| | قال النار مثواكم خالدين فيها إلا ما شاء الله ... ... | ١٢٨ | ك » | ٦ |
| | قال أنا خير منه خلقتني من نار وخلقته من طين ... | ١٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | والذين كذبوا بآياتنا واستكبروا عنها أولئك أصحاب النار | ٣٦ | ك » | ٧ |
| | قال ادخلوا في أمم قد خلت من قبلكم من الجن والإنس في النار ... ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك » | ٧ |
| | ربنا هؤلاء أضلونا فآتهم عذابا ضعفا من النار ... | ٣٨ | ك » | ٧ |
| | ونادى أصحاب الجنة أصحاب النار أن قد وجدنا ما وعدنا ربنا حقا ... ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك » | ٧ |
| | وإذا صرفت أبصارهم تلقاء أصحاب النار قالوا ربنا لا تجعلنا مع القوم الظالمين ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك » | ٧ |
| | ونادى أصحاب النار أصحاب الجنة أن أفيضوا علينا من الماء أو مما رزقكم الله ... ... ... ... ... | ٥٠ | ك » | ٧ |
| | ذلكم فذوقوه وأن للكافرين عذاب النار ... ... | ١٤ | م الأنفال | ٨ |
| | أولئك حبطت أعمالهم وفي النار هم خالدون... ... | ١٧ | م التوبة | ٩ |
| | يوم يحمى عليها في نار جهنم فتكوى بها جباههم... ... | ٣٥ | م » | ٩ |
| | فأن له نار جهنم خالدا فيها... ... ... ... ... ... | ٦٣ | م » | ٩ |
| | وعد الله المنافقين والمنافقات والكفار نار جهنم... | ٦٨ | م » | ٩ |
| | وقالوا لا تنفروا في الحر قل نار جهنم أشد حرا ... | ٨١ | م » | ٩ |
| | أم من أسس بنيانه على شفا جرف هار فانهار به في نار جهنم | ١٠٩ | م » | ٩ |
| | أولئك مأواهم النار بما كانوا يكسبون ... ... ... | ٨ | ك يونس | ١٠ |
| | أولئك أصحاب النار هم فيها خالدون... ... ... ... | ٢٧ | ك » | ١٠ |
| | أولئك الذين ليس لهم في الآخرة إلا النار ... ... | ١٦ | ك هود | ١١ |
| | ومن يكفر به من الأحزاب فالنار موعده... ... ... | ١٧ | م » | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| النَّارُ: | يقدم قومه يوم القيامة فأوردهم النار ... ... ... ... | ٩٨ | ك هـود | ١١ |
| | فأما الذين شـقوا ففى النـار لهم فيها زفير وشهيق ... | ١٠٦ | ك « | ١١ |
| | ولا تركنوا إلى الذين ظلموا فتمسكم النار ... ... ... | ١١٣ | ك « | ١١ |
| | وأولئك أصحاب النار هم فيها خالدون... ... ... ... | ٥ | م الرعـد | ١٣ |
| | ومما يوقدون عليه فى النار ابتغاء حلية... ... ... ... | ١٧ | م « | ١٣ |
| | تلك عقبى الذين اتقـوا وعقبى الكافرين النـار ... | ٣٥ | م « | ١٣ |
| | قل تمتعوا فإن مصيركم إلى النار ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك إبراهـيم | ١٤ |
| | سرابيلهم من قطران وتغشى وجوههم النـار... ... | ٥٠ | ك « | ١٤ |
| | والجـانّ خلقناه من قبل من نار السموم ... ... ... | ٢٧ | ك الحجـر | ١٥ |
| | لاجرم أن لهم النـار وأنهم مفرطون ... ... ... ... | ٦٢ | ك النحـل | ١٦ |
| | ورأى المجرمون النار فظنوا أنهم مواقعوها ... ... | ٥٣ | ك الكهف | ١٨ |
| | لعلى آتيكم منها بقبس أو أجد على النـار هدى ... ... | ١٠ | ك طـه | ٢٠ |
| | لو يعلم الذين كفروا حين لا يكفون عن وجوههم النار | ٣٩ | ك الأنبيـاء | ٢١ |
| | قلنا يا نار كونى بردا وسلاما على إبراهيم ... ... ... | ٦٩ | ك « | ٢١ |
| | فالذين كفروا قطعت لهم ثياب من نار ... ... ... ... | ١٩ | م الحـج | ٢٢ |
| | قل أفأنبئكم بشر من ذلكم النار وعدها الله الذين كفروا | ٧٢ | م « | ٢٢ |
| | تلفح وجوههم النار وهم فيها كالحون... ... ... ... | ١٠٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | يكاد زيتها يضئ ولو لم تمسسه نار ... ... ... ... | ٣٥ | م النـور | ٢٤ |
| | لاتحسبن الذين كفروا معجزين فى الأرض ومأواهم النار | ٥٧ | م « | ٢٤ |
| | فلما جاءها نودى أن بورك من فى النار ومن حولها... | ٨ | ك النمـل | ٢٧ |
| | ومن جاء بالسيئة فكبت وجوههم فى النار... ... ... | ٩٠ | ك « | ٢٧ |
| | لعلى آتيكم منها بخبر أو جذوة من النار لعلكم تصطلون | ٢٩ | ك القصص | ٢٨ |
| | وجعلناهم أئمة يدعون إلى النار ويوم القيامة لاينصرون | ٤١ | ك « | ٢٨ |
| | فأنجاه الله من النار ... ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ويلعن بعضكم بعضا ومأواكم النار ... ... ... ... | ٢٥ | ك « | ٢٩ |
| | وأما الذين فسقوا فأواهم النار... ... ... ... ... | ٢٠ | م السـجدة | ٣٢ |
| | وقيل لهم ذوقوا عذاب النار الذى كنتم به تكذبون... | ٢٠ | م « | ٣٢ |
| | يوم تقلب وجوههم فى النار يقولون ياليتنا أطعنا الله | ٦٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ونقول للذين ظلموا ذوقوا عذاب النار التى كنتم بها تكذبون | ٤٢ | ك سـبأ | ٣٤ |
| | والذين كفروا لهم نار جهنم لا يقضى عليهـم فيموتوا | ٣٦ | ك فاطـر | ٣٥ |
| | فويل للذين كفروا من النار... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك ص | ٣٨ |
| | هذا فوج مقتحم معكم لا مرحبا بهم إنهم صالوا النار | ٥٩ | ك « | ٣٨ |
| | قالوا ربنا من قدم لنا هذا فزده عذابا ضعفا فى النـار | ٦١ | ك « | ٣٨ |
| | إن ذلك لحق تخاصم أهل النار... ... ... ... ... | ٦٤ | ك « | ٣٨ |
| | قال أنا خير منه خلقتنى من نار وخلقته من طين ... | ٧٦ | ك « | ٣٨ |
| | قل تمتع بكفرك قليلا إنك من أصحاب النار... ... | ٨ | ك الـزمر | ٣٩ |
| | لهم من فوقهم ظلل من النار ومن تحتهم ظلل ... ... | ١٦ | ك « | ٣٩ |
| | أفمن حق عليـه كلمة العذاب أفأنت تنقذ من فى النار | ١٩ | ك « | ٣٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| النَّارُ: | وكذلك حقت كلمة ربك على الذين كفروا أنهـم أصحاب النار ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك غافـر | ٤٠ |
| | ويا قوم ما لى أدعوكم إلى النجاة وتدعوننى إلى النار | ٤١ | ك « | ٤٠ |
| | وأن مردنا إلى الله وأن المسرفين هم أصحاب النار ... | ٤٣ | ك « | ٤٠ |
| | النار يعرضون عليها غدوا وعشيا ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك « | ٤٠ |
| | وإذ يتحاجون فى النار فيقول الضعفاء للذين استكبروا | ٤٧ | ك « | ٤٠ |
| | إنا كنا لكم تبعا فهل أنتم مغنون عنا نصيبا من النار ... | ٤٧ | ك « | ٤٠ |
| | وقال الذين فى النار لخزنة جهنم ادعوا ربكم يخفف عنا | ٤٩ | ك « | ٤٠ |
| | فى الحميم ثم فى النار يسجرون... ... ... ... ... | ٧٢ | ك « | ٤٠ |
| | ويوم يحشر أعداء الله إلى النار فهم يوزعون ... ... | ١٩ | ك فصـلت | ٤١ |
| | فإن يصبروا فالنار مثوى لهم... ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك « | ٤١ |
| | ذلك جزاء أعداء الله النار لهم فيها دار الخلد ... ... | ٢٨ | ك « | ٤١ |
| | أفمن يلقى فى النار خير أم من يأتى آمنا يوم القيامة ... | ٤٠ | ك « | ٤١ |
| | وقيل اليوم ننساكم كما نسيتم لقاء يومكم هذا ومأواكم النار | ٣٤ | ك الجاثيـة | ٤٥ |
| | ويوم يعرض الذين كفروا على النار أذهبتم طيباتكم فى حياتكم الدنيا ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | ويوم يعرض الذين كفروا على النار أليس هذا بالحق | ٣٤ | ك « | ٤٦ |
| | ويأكلون كما تأكل الأنعام والنار مثوى لهم... ... | ١٢ | م محمـد | ٤٧ |
| | كمن هو خالد فى النار وسقوا ماء حميما فقطع أمعاءهم | ١٥ | م « | ٤٧ |
| | يسئلون أيان يوم الدين . يوم هم على النار يفتنون | ١٣ | ك الذاريات | ٥١ |
| | يوم يدعون إلى نار جهنم دعا ... ... ... ... ... | ١٣ | ك الطـور | ٥٢ |
| | هذه النار التى كنتم بها تكذبون ... ... ... ... ... | ١٤ | ك « | ٥٢ |
| | يوم يسحبون فى النار على وجوههم ذوقوا مس سقر | ٤٨ | ك القمـر | ٥٤ |
| | وخلق الجانّ من مارج من نار... ... ... ... ... ... | ١٥ | م الرحمـن | ٥٥ |
| | يرسل عليكما شواظ من نار ونحاس فلا تنتصران ... | ٣٥ | م « | ٥٥ |
| | أفرأيتم النار التى تورون . أأنتم أنشأتم شجرتها ... | ٧١ | ك الواقعـة | ٥٦ |
| | مأواكم النار هى مولاكم ... ... ... ... ... ... | ١٥ | م الحـديد | ٥٧ |
| | أولئك أصحاب النار هم فيها خالدون ... ... ... ... | ١٧ | م المجادلة | ٥٨ |
| | ولهم فى الآخرة عذاب النار... ... ... ... ... ... | ٣ | م الحشـر | ٥٩ |
| | فكان عاقبتهما أنهما فى النار خالدين فيها ... ... ... | ١٧ | م « | ٥٩ |
| | لا يستوى أصحاب النار وأصحاب الجنة ... ... ... | ٢٠ | م « | ٥٩ |
| | أولئك أصحاب النار خالدين فيها ... ... ... ... ... | ١٠ | م التغـابن | ٦٤ |
| | فلم يغنيا عنهما من الله شيئا وقيل ادخلا النار مع الداخلين | ١٠ | م التحـريم | ٦٦ |
| | ومن يعص الله ورسوله فإن له نار جهنم خالدين فيها أبدا | ٢٣ | ك الجـن | ٧٢ |
| | وما جعلنا أصحاب النار إلا ملائكة ... ... ... ... | ٣١ | ك المـدثر | ٧٤ |
| | قتل أصحاب الأخدود . النار ذات الوقود ... ... | ٥ | ك البروج | ٨٥ |
| | ويجنبها الأشقى . الذى يصلى النار الكبرى ... ... | ١٢ | ك الأعـلى | ٨٧ |
| | هم أصحاب المشئمة . عليهم نار مؤصدة ... ... ... | ٢٠ | ك البـلد | ٩٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| النَّارُ: | إن الذين كفروا من أهل الكتاب والمشركين فى نار | | | |
| | جهنم خالدين فيها ... .. ... ... ... ... ... | ٦ | م البينة | ٩٨ |
| | فأمه هاوية . وما أدراك ماهيه . نار حامية ... ... | ١١ | ك القارعة | ١٠١ |
| | وما أدراك ما الحطمة . نار الله الموقدة ... ... ... | ٦ | ك الهمزة | ١٠٤ |
| نَارًا: | مثلهم كمثل الذى استوقد نارا ... ... ... ... ... | ١٧ | م البقرة | ٢ |
| (١٩) | إن الذين يأكلون أموال اليتامى ظلما إنما يأكلون | | | |
| | فى بطونهم نارا... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | م النساء | ٤ |
| | ومن يعص الله ورسوله ويتعد حدوده يدخله نارا | | | |
| | خالدا فيها... ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٤ | م « | ٤ |
| | ومن يفعل ذلك عدوانا وظلما فسوف نصليه نارا ... | ٣٠ | م « | ٤ |
| | إن الذين كفروا بآياتنا سوف نصليهم نارا ... ... | ٥٦ | م « | ٤ |
| | كلما أوقدوا نارا للحرب أطفأها الله ... ... ... ... | ٦٤ | م المائدة | ٥ |
| | إنا أعتدنا للكافرين نارا أحاط بهم سرادقها ... ... | ٢٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | حتى إذا جعله نارا قال آتونى أفرغ عليه قطرا... ... | ٩٦ | م « | ١٨ |
| | إذ رأى نارا ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك طه | ٢٠ |
| | فقال لأهله امكثوا إنى آنست نارا ... ... ... ... | ١٠ | ك « | ٢٠ |
| | إذ قال موسى لأهله إنى آنست نارا ... ... ... ... | ٧ | ك النمل | ٢٧ |
| | آنس من جانب الطور نارا ... ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك القصص | ٢٨ |
| | قال لأهله امكثوا إنى آنست نارا ... ... ... ... | ٢٩ | ك « | ٢٨ |
| | الذى جعل لكم من الشجر الأخضر نارا ... ... ... | ٨٠ | ك يس | ٣٦ |
| | يأيها الذين آمنوا قوا أنفسكم وأهليكم نارا... ... ... | ٦ | م التحريم | ٦٦ |
| | مما خطيئاتهم أغرقوا فأدخلوا نارا ... ... ... ... | ٢٥ | ك نوح | ٧١ |
| | وجوه يومئذ خاشعة . عاملة ناصبة . تصلى نارا حامية | ٤ | ك الغاشية | ٨٨ |
| | فأنذرتكم نارا تلظى . لا يصلاها إلا الأشقى ... ... | ١٤ | ك الليل | ٩٢ |
| | سيصلى نارا ذات لهب ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك المسد | ١١١ |
| النُّورِ: | الله ولى الذين آمنوا يخرجهم من الظلمات إلى النور | ٢٥٧ | م البقرة | ٢ |
| (٢٤) | والذين كفروا أولياؤهم الطاغوت يخرجونهم من النور | | | |
| | إلى الظلمات ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥٧ | م « | ٢ |
| | قد جاءكم من الله نور وكتاب مبين ... ... ... ... | ١٥ | م المائدة | ٥ |
| | ويخرجهم من الظلمات إلى النور بإذنه ... ... ... | ١٦ | م « | ٥ |
| | إنا أنزلنا التوراة فيها هدى ونور ... ... ... ... | ٤٤ | م « | ٥ |
| | وآتيناه الإنجيل فيه هدى ونور ... ... ... ... ... | ٤٦ | م « | ٥ |
| | الحمد لله الذى خلق السموات والأرض وجعل | | | |
| | الظلمات والنور ... ... ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الأنعام | ٦ |
| | فالذين آمنوا به وعزروه ونصروه واتبعوا النور الذى | | | |
| | أنزل معه أولئك هم المفلحون ... ... ... ... | ١٥٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | يريدون أن يطفئوا نور الله بأفواههم ... ... ... | ٣٢ | م التوبة | ٩ |
| | قل هل يستوى الأعمى والبصير أم هل تستوى | | | |
| | الظلمات والنور... ... ... ... ... ... ... ... | ١٦ | م الرعد | ١٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| النُّورِ: | الر كتاب أنزلناه إليك لتخرج الناس من الظلمات | | | |
| | إلى النور ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | أن أخرج قومك من الظلمات إلى النور ... ... ... | ٥ | ك « | ١٤ |
| | الله نور السموات والأرض... ... ... ... ... ... | ٣٥ | م النور | ٢٤ |
| | يكاد زيتها يضىء ولو لم تمسسه نار نور ... ... ... | ٣٥ | م « | ٢٤ |
| | على نور يهدى الله لنوره من يشاء ... ... ... ... | ٣٥ | م « | ٢٤ |
| | ومن لم يجعل الله له نورا فما له من نور ... ... ... | ٤٠ | م « | ٢٤ |
| | هو الذى يصلى عليكم وملائكته ليخرجكم من الظلمات | | | |
| | إلى النور ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وما يستوى الأعمى والبصير . ولا الظلمات ولا النور | ٢٠ | ك فاطر | ٣٥ |
| | أفمن شرح الله صدره للإسلام فهو على نور من ربه | ٢٢ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وأشرقت الأرض بنور ربها ووضع الكتاب ... ... | ٦٩ | ك « | ٣٩ |
| | هو الذى ينزل على عبده آيات بينات ليخرجكم من | | | |
| | الظلمات إلى النور ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | م الحديد | ٥٧ |
| | يريدون ليطفئوا نور الله بأفواههم والله متم نوره | ٨ | م الصف | ٦١ |
| | فآمنوا بالله ورسوله والنور الذى أنزلنا ... ... ... | ٨ | م التغابن | ٦٤ |
| | ليخرج الذين آمنوا وعملوا الصالحات من الظلمات | | | |
| | إلى النور ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | م الطلاق | ٦٥ |
| نُورًا: | يأيها الناس قد جاءكم برهان من ربكم وأنزلنا إليكم نورا مبينا | ١٧٤ | م النساء | ٤ |
| (٩) | قل من أنزل الكتاب الذى جاء به موسى نورا وهدى للناس | ٩١ | م الأنعام | ٦ |
| | أومن كان ميتا فأحييناه وجعلنا له نورا يمشى به فى الناس | ١٢٢ | ك « | ٦ |
| | هو الذى جعل الشمس ضياء والقمر نورا ... ... ... | ٥ | ك يونس | ١٠ |
| | ومن لم يجعل الله له نورا فما له من نور... ... ... | ٤٠ | م النور | ٢٤ |
| | ما كنت تدرى ما الكتاب ولا الإيمان ولكن جعلناه نورا | ٥٢ | ك الشورى | ٤٢ |
| | قيل ارجعوا وراءكم فالتمسوا نورا... ... ... ... | ١٣ | م الحديد | ٥٧ |
| | يؤتكم كفلين من رحمته ويجعل لكم نورا تمشون به | ٢٨ | م « | ٥٧ |
| | وجعل القمر فيهن نورا وجعل الشمس سراجا... ... | ١٦ | ك نوح | ٧١ |
| نُورِكُمْ: | انظرونا نقتبس من نوركم قيل ارجعوا وراءكم ... | ١٣ | م الحديد | ٥٧ |
| نُورَنَا: | يقولون ربنا اتمم لنا نورنا واغفر لنا ... ... ... | ٨ | م التحريم | ٦٦ |
| نُورِهِ: | ويأبى الله إلا أن يتم نوره ولو كره الكافرون ... ... | ٣٢ | م التوبة | ٩ |
| (٤) | مثل نوره كمشكاة فيها مصباح ... ... ... ... ... | ٣٥ | م النور | ٢٤ |
| | يهدى الله لنوره من يشاء ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | م « | ٢٤ |
| | والله متم نوره ولو كره الكافرون ... ... ... ... | ٨ | م الصف | ٦١ |
| نُورِهِمْ: | فلما أضاءت ما حوله ذهب الله بنورهم... ... ... | ١٧ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | يوم ترى المؤمنين والمؤمنات يسعى نورهم بين أيديهم | ١٢ | م الحديد | ٥٧ |
| | والشهداء عند ربهم لهم أجرهم ونورهم... ... ... | ١٩ | م « | ٥٧ |
| | نورهم يسعى بين أيديهم وبأيمانهم ... ... ... ... | ٨ | م التحريم | ٦٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **المُنِير**: جاءو بالبينات والزبر والكتاب المنير ... ... ... | ١٨٤ م | آل عمران | ٣ | |
| (٤) ومن الناس من يجادل فى الله بغير علم ولا هدى ولا كتاب منير | ٨ م | الحج | ٢٢ | |
| ومن الناس من يجادل فى الله بغير علم ولا هدى ولا كتاب منير | ٢٠ ك | لقمان | ٣١ | |
| جاءتهم رسلهم بالبينات وبالزبر وبالكتاب المنير | ٢٥ ك | فاطر | ٣٥ | |
| **مُنِيرًا**: وجعل فيها سراجا وقمرا منيرا ... ... ... ... | ٦١ ك | الفرقان | ٢٥ | |
| (٣) وداعيا إلى الله بإذنه وسراجا منيرا ... ... ... ... | ٤٦ م | الأحزاب | ٣٣ | |
| ✦✦✦ | | | | |
| **النَّاسُ**: ومن الناس من يقول آمنا بالله وباليوم الآخر | | | | |
| (٢٤٠) وما هم بمؤمنين... ... ... ... ... ... ... | ٨ م | البقرة | ٢ | |
| وإذا قيل لهم آمنوا كما آمن الناس قالوا أنؤمن كما | | | | |
| آمن السفهاء ... ... ... ... ... ... ... | ١٣ م | » | ٢ | |
| يأيها الناس اعبدوا ربكم الذى خلقكم... ... ... ... | ٢١ م | » | ٢ | |
| فإن لم تفعلوا ولن تفعلوا فاتقوا النار التى وقودها | | | | |
| الناس والحجارة... ... ... ... ... ... ... | ٢٤ م | » | ٢ | |
| أتأمرون الناس بالبر وتنسون أنفسكم وأنتم تتلون الكتاب | ٤٤ م | » | ٢ | |
| وقولوا للناس حسنا وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة... | ٨٣ م | » | ٢ | |
| قل إن كانت لكم الدار الآخرة عند الله خالصة من دون | | | | |
| الناس فتمنوا الموت ... ... ... ... ... ... | ٩٤ م | » | ٢ | |
| ولتجدنهم أحرص الناس على حياة ومن الذين أشركوا | ٩٦ م | » | ٢ | |
| ولكن الشياطين كفروا يعلمون الناس السحر ... ... | ١٠٢ م | » | ٢ | |
| قال إنى جاعلك للناس إماما... ... ... ... ... | ١٢٤ م | » | ٢ | |
| وإذ جعلنا البيت مثابة للناس وأمنا ... ... ... | ١٢٥ م | » | ٢ | |
| سيقول السفهاء من الناس ما ولاهم عن قبلتهم التى كانوا عليها | ١٤٢ م | » | ٢ | |
| وكذلك جعلناكم أمة وسطا لتكونوا شهداء على الناس | ١٤٣ م | » | ٢ | |
| وما كان الله ليضيع إيمانكم إن الله بالناس لرءوف رحيم | ١٤٣ م | » | ٢ | |
| فولوا وجوهكم شطره لئلا يكون للناس عليكم حجة ... | ١٥٠ م | » | ٢ | |
| إن الذين يكتمون ما أنزلنا من البينات والهدى من بعد | | | | |
| ما بيناه للناس فى الكتاب أولئك يلعنهم الله ... | ١٥٩ م | » | ٢ | |
| أولئك عليهم لعنة الله والملائكة والناس أجمعين ... | ١٦١ م | » | ٢ | |
| والفلك التى تجرى فى البحر بما ينفع الناس ... ... | ١٦٤ م | » | ٢ | |
| ومن الناس من يتخذ من دون الله أندادا... ... ... | ١٦٥ م | » | ٢ | |
| يأيها الناس كلوا مما فى الأرض حلالا طيبا ... ... | ١٦٨ م | » | ٢ | |
| شهر رمضان الذى أنزل فيه القرآن هدى للناس ... | ١٨٥ م | » | ٢ | |
| كذلك يبين الله آياته للناس لعلهم يتقون ... ... ... | ١٨٧ م | » | ٢ | |
| لتأكلوا فريقا من أموال الناس بالإثم وأنتم تعلمون | ١٨٨ م | » | ٢ | |
| يسئلونك عن الأهلة قل هى مواقيت للناس والحج ... | ١٨٩ م | » | ٢ | |
| ثم أفيضوا من حيث أفاض الناس واستغفروا الله ... | ١٩٩ م | » | ٢ | |
| فمن الناس من يقول ربنا آتنا فى الدنيا وما له | | | | |
| فى الآخرة من خلاق ... ... ... ... ... ... | ٢٠٠ م | » | ٢ | |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **النَّاسُ**: ومن الناس من يعجبك قوله فى الحياة الدنيا ... | ٢٠٤ م | البقرة | ٢ | |
| ومن الناس من يشرى نفسه ابتغاء مرضاة الله ... | ٢٠٧ م | » | ٢ | |
| كان الناس أمة واحدة فبعث الله النبيين مبشرين ومنذرين | ٢١٣ م | » | ٢ | |
| وأنزل معهم الكتاب بالحق ليحكم بين الناس ... ... | ٢١٣ م | » | ٢ | |
| قل فيهما إثم كبير ومنافع للناس ... ... ... ... ... | ٢١٩ م | » | ٢ | |
| ويبين آياته للناس لعلهم يتذكرون ... ... ... ... | ٢٢١ م | » | ٢ | |
| ولا تجعلوا الله عرضة لأيمانكم أن تبروا وتتقوا وتصلحوا | | | | |
| بين الناس... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢٤ م | » | ٢ | |
| إن الله لذو فضل على الناس... ... ... ... ... ... | ٢٤٣ م | » | ٢ | |
| ولكن أكثر الناس لا يشكرون ... ... ... ... ... | ٢٤٣ م | » | ٢ | |
| ولولا دفع الله الناس بعضهم ببعض لفسدت الأرض | ٢٥١ م | » | ٢ | |
| وانظر إلى حمارك ولنجعلك آية للناس ... ... ... | ٢٥٩ م | » | ٢ | |
| لا تبطلوا صدقاتكم بالمن والأذى كالذى ينفق ماله | | | | |
| رئاء الناس ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٦٤ م | » | ٢ | |
| تعرفهم بسيماهم لا يسألون الناس إلحافا ... ... ... | ٢٧٣ م | » | ٢ | |
| وأنزل التوراة والإنجيل . من قبل هدى للناس ... | ٤ م | آل عمران | ٣ | |
| ربنا إنك جامع الناس ليوم لا ريب فيه ... ... ... | ٩ م | » | ٣ | |
| زين للناس حب الشهوات من النساء والبنين ... ... | ١٤ م | » | ٣ | |
| ويقتلون الذين يأمرون بالقسط من الناس... ... | ٢١ م | » | ٣ | |
| قال آيتك ألا تكلم الناس ثلاثة أيام إلا رمزا... ... | ٤١ م | » | ٣ | |
| ويكلم الناس فى المهد وكهلا ومن الصالحين ... ... | ٤٦ م | » | ٣ | |
| إن أولى الناس بإبراهيم للذين اتبعوه وهذا النبى ... | ٦٨ م | » | ٣ | |
| ثم يقول للناس كونوا عبادا لى من دون الله ... ... | ٧٩ م | » | ٣ | |
| أولئك جزاؤهم أن عليهم لعنة الله والملائكة والناس أجمعين | ٨٧ م | » | ٣ | |
| إن أول بيت وضع للناس للذى ببكة مباركا وهدى للعالمين | ٩٦ م | » | ٣ | |
| ولله على الناس حج البيت من استطاع إليه سبيلا ... | ٩٧ م | » | ٣ | |
| كنتم خير أمة أخرجت للناس ... ... ... ... ... | ١١٠ م | » | ٣ | |
| ضربت عليهم الذلة أين ما ثقفوا إلا بحبل من الله | | | | |
| وحبل من الناس ... ... ... ... ... ... ... | ١١٢ م | » | ٣ | |
| الذين ينفقون فى السراء والضراء والكاظمين الغيظ | | | | |
| والعافين عن الناس... ... ... ... ... ... ... | ١٣٤ م | » | ٣ | |
| هذا بيان للناس وهدى وموعظة للمتقين ... ... ... | ١٣٨ م | » | ٣ | |
| وتلك الأيام نداولها بين الناس ... ... ... ... ... | ١٤٠ م | » | ٣ | |
| الذين قال لهم الناس ... ... ... ... ... ... ... | ١٧٣ م | » | ٣ | |
| إن الناس قد جمعوا لكم فاخشوهم ... ... ... ... | ١٧٣ م | » | ٣ | |
| وإذ أخذ الله ميثاق الذين أوتوا الكتاب لتبيننه للناس | ١٨٧ م | » | ٣ | |
| يأيها الناس اتقوا ربكم الذى خلقكم من نفس واحدة | ١ م | النساء | ٤ | |
| الذين يبخلون ويأمرون الناس بالبخل ويكتمون ما آتاهم | | | | |
| الله من فضله ... ... ... ... ... ... ... | ٣٧ م | » | ٤ | |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| النَّاسُ | : والذين ينفقون أموالهم رئاء الناس ولا يؤمنون بالله ولا باليوم الآخر ... ... ... ... ... ... | ٣٨ م | النساء | ٤ |
| | أم لهم نصيب من الملك فإذا لا يؤتون الناس نقيرا... | ٥٣ م | » | ٤ |
| | أم يحسدون الناس على ما آتاهم الله من فضله... ... | ٥٤ م | » | ٤ |
| | وإذا حكمتم بين الناس أن تحكموا بالعدل... ... ... | ٥٨ م | » | ٤ |
| | فلما كتب عليهم القتال إذا فريق منهم يخشون الناس | ٧٧ م | » | ٤ |
| | وأرسلناك للناس رسولا وكفى بالله شهيدا ... ... | ٧٩ م | » | ٤ |
| | إنا أنزلنا إليك الكتاب بالحق لتحكم بين الناس بما أراك الله | ١٠٥ م | » | ٤ |
| | يستخفون من الناس ولا يستخفون من الله ... ... | ١٠٨ م | » | ٤ |
| | لا خير في كثير من نجواهم إلا من أمر بصدقة أو معروف أو إصلاح بين الناس ... ... ... ... ... ... | ١١٤ م | » | ٤ |
| | إن يشأ يذهبكم أيها الناس ويأت بآخرين ... ... | ١٣٣ م | » | ٤ |
| | وإذا قاموا إلى الصلاة قاموا كسالى يراءون الناس | ١٤٢ م | » | ٤ |
| | وأخذهم الربا وقد نهوا عنه وأكلهم أموال الناس بالباطل | ١٦١ م | » | ٤ |
| | لئلا يكون للناس على الله حجة بعد الرسل ... ... | ١٦٥ م | » | ٤ |
| | يأيها الناس قد جاءكم الرسول بالحق من ربكم... ... | ١٧٠ م | » | ٤ |
| | يأيها الناس قد جاءكم برهان من ربكم ... ... ... | ١٧٤ م | » | ٤ |
| | من قتل نفسا بغير نفس أو فساد في الأرض فكأنما قتل الناس جميعا ... ... ... ... ... ... | ٣٢ م | المائدة | ٥ |
| | ومن أحياها فكأنما أحيا الناس جميعا ... ... ... | ٣٢ م | » | ٥ |
| | فلا تخشوا الناس واخشون ولا تشتروا بآياتي ثمنا قليلا | ٤٤ م | » | ٥ |
| | وإن كثيرا من الناس لفاسقون... ... ... ... ... | ٤٩ م | » | ٥ |
| | وإن لم تفعل فما بلغت رسالته والله يعصمك من الناس | ٦٧ م | » | ٥ |
| | لتجدن أشد الناس عداوة للذين آمنوا اليهود... ... | ٨٢ م | » | ٥ |
| | جعل الله الكعبة البيت الحرام قياما للناس ... ... | ٩٧ م | » | ٥ |
| | إذ أيدتك بروح القدس تكلم الناس في المهد وكهلا | ١١٠ م | » | ٥ |
| | أأنت قلت للناس اتخذوني وأمي إلهين من دون الله | ١١٦ م | » | ٥ |
| | قل من أنزل الكتاب الذي جاء به موسى نورا وهدى للناس | ٩١ م | الأنعام | ٦ |
| | أو من كان ميتا فأحييناه وجعلنا له نورا يمشي به في الناس | ١٢٢ ك | » | ٦ |
| | فمن أظلم ممن افترى على الله كذبا ليضل الناس بغير علم | ١٤٤ ك | » | ٦ |
| | فأوفوا الكيل والميزان ولا تبخسوا الناس أشياءهم ... | ٨٥ ك | الأعراف | ٧ |
| | قال ألقوا فلما ألقوا سحروا أعين الناس واسترهبوهم | ١١٦ ك | » | ٧ |
| | قال يا موسى إني اصطفيتك على الناس برسالاتي وبكلامي | ١٤٤ ك | » | ٧ |
| | قل يأيها الناس إني رسول الله إليكم جميعا ... ... | ١٥٨ ك | » | ٧ |
| | قل إنما علمها عند الله ولكن أكثر الناس لا يعلمون | ١٨٧ ك | » | ٧ |
| | تخافون إن يتخطفكم الناس فآواكم وأيدكم بنصره ... | ٢٦ م | الأنفال | ٨ |
| | ولا تكونوا كالذين خرجوا من ديارهم بطرا ورئاء الناس | ٤٧ م | » | ٨ |
| | وقال لا غالب لكم اليوم من الناس وإني جار لكم ... | ٤٨ م | » | ٨ |
| النَّاسُ | : وأذان من الله ورسوله إلى الناس يوم الحج الأكبر | ٣ م | التوبة | ٩ |
| | إن كثيرا من الأحبار والرهبان ليأكلون أموال الناس بالباطل ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٤ م | » | ٩ |
| | أكان للناس عجبا أن أوحينا إلى رجل منهم... ... | ٢ ك | يونس | ١٠ |
| | أن أنذر الناس وبشر الذين آمنوا أن لهم قدم صدق عند ربهم | ٢ ك | | ١٠ |
| | ولو يعجل الله للناس الشر استعجالهم بالخير لقضي إليهم أجلهم | ١١ ك | » | ١٠ |
| | وما كان الناس إلا أمة واحدة فاختلفوا... ... ... | ١٩ ك | » | ١٠ |
| | وإذا أذقنا الناس رحمة من بعد ضراء مستهم إذا لهم مكر في آياتنا ... ... ... ... ... ... ... | ٢١ ك | » | ١٠ |
| | يأيها الناس إنما بغيكم على أنفسكم ... ... ... ... | ٢٣ ك | » | ١٠ |
| | فاختلط به نبات الأرض مما يأكل الناس والأنعام | ٢٤ ك | » | ١٠ |
| | إن الله لا يظلم الناس شيئا... ... ... ... ... ... | ٤٤ ك | » | ١٠ |
| | ولكن الناس أنفسهم يظلمون ... ... ... ... ... | ٤٤ ك | » | ١٠ |
| | يأيها الناس قد جاءتكم موعظة من ربكم وشفاء لما في الصدور | ٥٧ ك | » | ١٠ |
| | إن الله لذو فضل على الناس ولكن أكثرهم لا يشكرون | ٦٠ ك | » | ١٠ |
| | وإن كثيرا من الناس عن آياتنا لغافلون... ... ... | ٩٢ ك | » | ١٠ |
| | أفأنت تكره الناس حتى يكونوا مؤمنين ... ... ... | ٩٩ ك | » | ١٠ |
| | قل يأيها الناس إن كنتم في شك من ديني فلا أعبد الذين تعبدون من دون الله ... ... ... ... ... ... | ١٠٤ ك | » | ١٠ |
| | قل يأيها الناس قد جاءكم الحق من ربكم... ... ... | ١٠٨ ك | » | ١٠ |
| | إنه الحق من ربك ولكن أكثر الناس لا يؤمنون ... | ١٧ م | هود | ١١ |
| | ولا تبخسوا الناس أشياءهم ولا تعثوا في الأرض مفسدين | ٨٥ ك | » | ١١ |
| | ذلك يوم مجموع له الناس وذلك يوم مشهود... | ١٠٣ ك | » | ١١ |
| | ولو شاء ربك لجعل الناس أمة واحدة ... ... ... | ١١٨ ك | » | ١١ |
| | وتمت كلمة ربك لأملأن جهنم من الجنة والناس أجمعين | ١١٩ ك | » | ١١ |
| | والله غالب على أمره ولكن أكثر الناس لا يعلمون | ٢١ ك | يوسف | ١٢ |
| | ذلك من فضل الله علينا وعلى الناس... ... ... ... | ٣٨ ك | » | ١٢ |
| | ولكن أكثر الناس لا يشكرون ... ... ... ... ... | ٣٨ ك | » | ١٢ |
| | ذلك الدين القيم ولكن أكثر الناس لا يعلمون ... | ٤٠ ك | » | ١٢ |
| | لعلي أرجع إلى الناس لعلهم يعلمون... ... ... ... | ٤٦ ك | » | ١٢ |
| | ثم يأتي من بعد ذلك عام فيه يغاث الناس وفيه يعصرون | ٤٩ ك | » | ١٢ |
| | وإنه لذو علم لما علمناه ولكن أكثر الناس لا يعلمون | ٦٨ ك | » | ١٢ |
| | وما أكثر الناس ولو حرصت بمؤمنين... ... ... ... | ١٠٣ ك | » | ١٢ |
| | ولكن أكثر الناس لا يؤمنون ... ... ... ... ... | ١ م | الرعد | ١٣ |
| | وإن ربك لذو مغفرة للناس على ظلمهم ... ... ... | ٦ م | » | ١٣ |
| | وأما ما ينفع الناس فيمكث في الأرض ... ... ... | ١٧ م | » | ١٣ |
| | أفلم ييأس الذين آمنوا أن لو يشاء الله لهدى الناس جميعا | ٣١ م | » | ١٣ |
| | الر كتاب أنزلناه إليك لتخرج الناس من الظلمات إلى النور | ١ ك | إبراهيم | ١٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| النَّاسُ: | ويضرب الله الأمثال للناس لعلهم يتذكرون ... | ٢٥ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | رب إنهن أضللن كثيرا من النـاس ... ... ... ... | ٣٦ | ك « | ١٤ |
| | فاجعل أفئدة من الناس تهوى إليهم وارزقهم من الثمرات | ٣٧ | ك « | ١٤ |
| | وأنذر الناس يوم يأتيهم العذاب... ... ... ... ... | ٤٤ | ك « | ١٤ |
| | هذا بلاغ للناس ولينذروا به... ... ... ... ... ... | ٥٢ | ك « | ١٤ |
| | بلى وعدا عليه حقا ولكن أكثر الناس لا يعلمون ... | ٣٨ | ك النحـل | ١٦ |
| | وأنزلنا إليك الذكر لتبين للناس ما نزل إليهم ... ... | ٤٤ | ك « | ١٦ |
| | ولو يؤاخذ الله الناس بظلمهم ما ترك عليها من دابة | ٦١ | ك « | ١٦ |
| | يخرج من بطونها شراب مختلف ألوانه فيه شفاء للناس | ٦٩ | ك « | ١٦ |
| | وإذ قلنا لك إن ربك أحاط بالناس... ... ... ... | ٦٠ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وما جعلنا الرؤيا التي أريناك إلا فتنة للناس ... ... | ٦٠ | ك « | ١٧ |
| | ولقد صرفنا للناس في هذا القرآن من كل مثل... ... | ٨٩ | ك « | ١٧ |
| | فأبى أكثر النـاس إلا كفورا ... ... ... ... ... | ٨٩ | ك « | ١٧ |
| | وما منع النـاس أن يؤمنوا إذ جاءهم الهدى إلا أن | | | |
| | قالوا أبعث الله بشرا رسولا... ... ... ... ... ... | ٩٤ | ك « | ١٧ |
| | وقرآنا فرقناه لتقرأه على الناس على مكث ونزلناه تنزيلا | ١٠٦ | ك « | ١٧ |
| | ولقد صرفنا في هذا القرآن للناس من كل مثل ... ... | ٥٤ | ك الكهف | ١٨ |
| | وما منع الناس أن يؤمنوا إذ جاءهم الهدى ويستغفروا | | | |
| | ربهم إلا أن تأتيهم سنة الأولين ... ... ... ... | ٥٥ | ك « | ١٨ |
| | قال آيتك ألا تكلم الناس ثلاث ليال سويا ... ... | ١٠ | ك مريم | ١٩ |
| | ولنجعله آية للناس ورحمة منا وكان أمرا مقضيا ... | ٢١ | ك « | ١٩ |
| | قال موعدكم يوم الزينة وأن يحشر الناس ضحى ... | ٥٩ | ك طـه | ٢٠ |
| | اقترب للناس حسابهم وهم في غفلة معرضون ... ... | ١ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | قالوا فأتوا به على أعين الناس لعلهم يشهدون... ... | ٦١ | ك « | ٢١ |
| | يأيها الناس اتقوا ربكم إن زلزلة الساعة شيء عظيم | ١ | م الحـج | ٢٢ |
| | وترى الناس سكارى وما هم بسكارى ولكن عذاب الله شديد | ٢ | م « | ٢٢ |
| | ومن الناس من يجادل في الله بغير علم ويتبع كل شيطان مريد | ٣ | م « | ٢٢ |
| | يأيها الناس إن كنتم في ريب من البعث فإنا خلقناكم | | | |
| | من تراب ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | م « | ٢٢ |
| | ومن الناس من يجادل في الله بغير علم ولا هدى ولا كتاب منير | ٨ | م « | ٢٢ |
| | ومن الناس من يعبد الله على حرف ... ... ... ... | ١١ | م « | ٢٢ |
| | وكثير من الناس وكثير حق عليه العذاب ... ... ... | ١٨ | م « | ٢٢ |
| | والمسجد الحرام الذي جعلناه للناس سواء العاكف | | | |
| | فيه والبـاد ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | م « | ٢٢ |
| | وأذن في الناس بالحج يأتوك رجالا وعلى كل ضامر | ٢٧ | م « | ٢٢ |
| | ولولا دفع الله الناس بعضهم ببعض لهدمت صوامع وبيع | ٤٠ | م « | ٢٢ |
| | قل يأيها الناس إنما أنا لكم نذير مبين ... ... ... | ٤٩ | م « | ٢٢ |
| | إن الله بالناس لرءوف رحيم... ... ... ... ... ... | ٦٥ | م « | ٢٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| النَّاسُ: | يأيها النـاس ضرب مثل فاستمعوا له ... ... ... ... | ٧٣ | م الحـج | ٢٢ |
| | الله يصطفي من الملائكة رسلا ومن النـاس ... ... | ٧٥ | م « | ٢٢ |
| | ليكون الرسول شهيدا عليكم وتكونوا شهداء على الناس | ٧٨ | م « | ٢٢ |
| | ويضرب الله الأمثال للناس والله بكل شيء عليم ... | ٣٥ | م النـور | ٢٤ |
| | وقوم نوح لما كذبوا الرسـل أغرقناهم وجعلناهم | | | |
| | للناس آية... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ولقد صرفناه بينهم ليذكروا فأبى أكثر الناس إلا كفورا | ٥٠ | ك « | ٢٥ |
| | وقيل للناس هل أنتم مجتمعون ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| | ولا تبخسوا الناس أشياءهم ولا تعثوا في الأرض مفسدين | ١٨٣ | ك « | ٢٦ |
| | وورث سليمان داود وقال يأيها الناس علمنا منطق الطير | ١٦ | ك النمـل | ٢٧ |
| | أخرجنا لهم دابة من الأرض تكلمهم أن الناس كانوا | | | |
| | بآياتنا لا يوقنون ... ... ... ... ... ... ... | ٨٢ | ك « | ٢٧ |
| | ولما ورد ماء مدين وجد عليه أمة من النـاس يسقون | ٢٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | بصائر للناس وهدى ورحمة لعلهم يتذكرون ... ... | ٤٣ | ك « | ٢٨ |
| | أحسب الناس أن يتركوا أن يقولوا آمنا وهم لا يفتنون | ٢ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ومن الناس من يقول آمنا بالله ... ... ... ... ... | ١٠ | م « | ٢٩ |
| | فإذا أوذي في الله جعل فتنة الناس كعذاب الله ... | ١٠ | م « | ٢٩ |
| | وتلك الأمثال نضربها للناس وما يعقلها إلا العالمون | ٤٣ | ك « | ٢٩ |
| | أو لم يروا أنا جعلنا حرما آمنا ويتخطف الناس من حولهم | ٦٧ | ك « | ٢٩ |
| | لا يخلف الله وعده ولكن أكثر النـاس لا يعلمون | ٦ | ك الـروم | ٣٠ |
| | وإن كثيرا من الناس بلقاء ربهم لكافرون ... ... | ٨ | ك « | ٣٠ |
| | فأقم وجهك للدين حنيفا فطرة الله التي فطر الناس عليها | ٣٠ | ك « | ٣٠ |
| | ذلك الدين القيم ولكن أكثر النـاس لا يعلمون ... | ٣٠ | ك « | ٣٠ |
| | وإذا مس الناس ضر دعوا ربهم منيبين إليه ... ... | ٣٣ | ك « | ٣٠ |
| | وإذا أذقنا الناس رحمة فرحوا بها ... ... ... ... | ٣٦ | ك « | ٣٠ |
| | وما آتيتم من ربا ليربوا في أموال الناس فلا يربوا | | | |
| | عند الله ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك « | ٣٠ |
| | ظهر الفساد في البر والبحر بما كسبت أيدي الناس ... | ٤١ | ك « | ٣٠ |
| | ولقد ضربنا للناس في هـذا القرآن من كل مثل ... | ٥٨ | ك « | ٣٠ |
| | ومن النـاس من يشتري لهو الحديث ليضل عن سبيل | | | |
| | الله بغير علم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك لقمان | ٣١ |
| | ولا تصعر خدك للناس ولا تمش في الأرض مرحا ... | ١٨ | ك « | ٣١ |
| | ومن الناس من يجادل في الله بغير علم ولا هدى ولا كتاب منير | ٢٠ | ك « | ٣١ |
| | يأيها الناس اتقوا ربكم واخشوا يوما لا يجزي والد | | | |
| | عن ولده ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | ك « | ٣١ |
| | لأملأن جهنم من الجنة والناس أجمعين... ... ... | ١٣ | ك السجدة | ٣٢ |
| | وتخشى الناس والله أحق أن تخشاه ... ... ... ... | ٣٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | يسئلك الناس عن الساعة قل إنما علمها عند الله ... | ٦٣ | م « | ٣٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| النَّاسُ | وما أرسلناك إلا كافة للناس بشيرا ونذيرا ... ... | ٢٨ | ك سبأ | ٣٤ |
| | ولكن أكثر الناس لا يعلمون ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٣٤ |
| | قل إن ربي يبسط الرزق لمن يشاء و يقدر ولكن أكثر الناس لا يعلمون ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك « | ٣٤ |
| | ما يفتح الله للناس من رحمة فلا ممسك لها ... ... | ٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| | يأيها الناس اذكروا نعمة الله عليكم ... ... ... ... | ٣ | ك « | ٣٥ |
| | يأيها الناس إن وعد الله حق فلا تغرنكم الحياة الدنيا | ٥ | ك « | ٣٥ |
| | يأيها الناس أنتم الفقراء إلى الله والله هو الغنيّ الحميد | ١٥ | ك « | ٣٥ |
| | ومن الناس والدوابّ والأنعام مختلف ألوانه كذلك | ٢٨ | ك « | ٣٥ |
| | ولو يؤاخذ الله الناس بما كسبوا ما ترك على ظهرها من دابّة ... ... ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك « | ٣٥ |
| | يا داود إنا جعلناك خليفة في الأرض فاحكم بين الناس بالحق ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك ص | ٣٨ |
| | ولقد ضربنا للناس في هذا القرآن من كل مثل... ... | ٢٧ | ك الزمر | ٣٩ |
| | إنا أنزلنا عليك الكتاب للناس بالحق ... ... ... ... | ٤١ | ك « | ٣٩ |
| | لخلق السموات والأرض أكبر من خلق الناس ... | ٥٧ | م غافر | ٤٠ |
| | ولكن أكثر الناس لا يعلمون ... ... ... ... ... | ٥٧ | م « | ٤٠ |
| | إن الساعة لآتية لاريب فيها ولكن أكثر الناس لا يؤمنون | ٥٩ | ك « | ٤٠ |
| | إن الله لذو فضل على الناس... ... ... ... ... | ٦١ | ك « | ٤٠ |
| | ولكن أكثر الناس لا يشكرون ... ... ... ... ... | ٦١ | ك « | ٤٠ |
| | إنما السبيل على الذين يظلمون الناس ... ... ... | ٤٢ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ولولا أن يكون الناس أمة واحدة لجعلنا لمن يكفر بالرحمن لبيوتهم سقفا من فضة ومعارج عليها يظهرون ... | ٣٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | فارتقب يوم تأتي السماء بدخان مبين . يغشى الناس | ١١ | ك الدخان | ٤٤ |
| | هذا بصائر للناس وهدى ورحمة لقوم يوقنون ... ... | ٢٠ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | ثم يجمعكم إلى يوم القيامة لا ريب فيه ولكن أكثر الناس لا يعلمون ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك « | ٤٥ |
| | وإذا حشر الناس كانوا لهم أعداء وكانوا بعبادتهم كافرين... ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | كذلك يضرب الله للناس أمثالهم ... ... ... ... | ٣ | م محمد | ٤٧ |
| | فعجّل لكم هذه وكف أيدي الناس عنكم ... ... ... | ٢٠ | م الفتح | ٤٨ |
| | يأيها الناس إنا خلقناكم من ذكر وأنثى ... ... ... | ١٣ | م الحجرات | ٤٩ |
| | تنزع الناس كأنهم أعجاز نخل منقعر ... ... ... ... | ٢٠ | ك القمر | ٥٤ |
| | الذين يبخلون و يأمرون الناس بالبخل ... ... ... | ٢٤ | م الحديد | ٥٧ |
| | وأنزلنا معهم الكتاب والميزان ليقوم الناس بالقسط | ٢٥ | م « | ٥٧ |
| | وأنزلنا الحديد فيه بأس شديد ومنافع للناس ... ... | ٢٥ | م « | ٥٧ |
| | وتلك الأمثال نضربها للناس لعلهم يتفكرون ... ... | ٢١ | م الحشر | ٥٩ |
| | إن زعمتم أنكم أولياء لله من دون الناس فتمنوا الموت | ٦ | م الجمعة | ٦٢ |
| | قوا أنفسكم وأهليكم نارا وقودها الناس والحجارة ... | ٦ | م التحريم | ٦٦ |
| | يوم يقوم الناس لربّ العالمين ... ... ... .. ... | ٦ | ك « | ٨٣ |
| | يومئذ يصدر الناس أشتاتا ليروا أعمالهم ... ... ... | ٦ | م الزلزلة | ٩٩ |
| | يوم يكون الناس كالفراش المبثوث ... ... ... ... | ٤ | ك القارعة | ١٠١ |
| | ورأيت الناس يدخلون في دين الله أفواجا ... ... | ٢ | م النصر | ١١٠ |
| | قل أعوذ برب الناس ... ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الناس | ١١٤ |
| | ملك الناس ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢ | ك « | ١١٤ |
| | إله الناس . من شر الوسواس الخناس ... ... .. | ٣ | ك « | ١١٤ |
| | الذي يوسوس في صدور الناس ... ... ... ... ... | ٥ | ك « | ١١٤ |
| | من الجنة والناس... ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك « | ١١٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| التَّنَاوُشُ | وقالوا آمنا به وأنى لهم التناوش من مكان بعيد | ٥٢ | ك سبأ | ٣٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| مَنَاصٍ | كم أهلكنا من قبلهم من قرن فنادوا ولات حين مناص | ٣ | ك ص | ٣٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| النَّاقَةُ | هذه ناقة الله لكم آية فذروها تأكل في أرض الله | ٧٣ | ك الأعراف | ٧ |
| (٧) | فعقروا الناقة وعتوا عن أمر ربهم ... ... ... ... | ٧٧ | ك « | ٧ |
| | و ياقوم هذه ناقة الله لكم آية فذروها تأكل في أرض الله | ٦٤ | ك هود | ١١ |
| | وآتينا ثمود الناقة مبصرة فظلموا بها ... ... ... ... | ٥٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| | هذه ناقة لها شرب ولكم شرب يوم معلوم... ... ... | ١٥٥ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | إنا مرسلوا الناقة فتنة لهم فارتقبهم واصطبر ... ... | ٢٧ | ك القمر | ٥٤ |
| | فقال لهم رسول الله ناقة الله وسقياها ... ... ... | ١٣ | ك الشمس | ٩١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| النَّوْمُ | الله لا إله إلا هو الحي القيوم لا تأخذه سنة ولا نوم | ٢٥٥ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | وهو الذي جعل لكم الليل لباسا والنوم سباتا ... ... | ٤٧ | ك الفرقان | ٢٥ |
| نَوْمَكُمْ | وجعلنا نومكم سباتا ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك النبأ | ٧٨ |
| نَائِمُونَ | أفأمن أهل القرى أن يأتيهم بأسنا بياتا وهم نائمون | ٩٧ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | فطاف عليها طائف من ربك وهم نائمون ... ... ... | ١٩ | م القلم | ٦٨ |
| المَنَامِ | يا بنيّ إني أرى في المنام أني أذبحك فانظر ماذا ترى | ١٠٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| مَنَامِكَ | إذ يريكهم الله في منامك قليلا ... ... ... ... | ٤٣ | م الأنفال | ٨ |
| مَنَامُكُمْ | ومن آياته منامكم بالليل والنهار وابتغاؤكم من فضله | ٢٣ | ك الروم | ٣٠ |
| مَنَامِهَا | الله يتوفى الأنفس حين موتها والتي لم تمت في منامها | ٤٢ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| النُّونِ | وذا النون إذ ذهب مغاضبا فظن أن لن نقدر عليه | ٨٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| النَّوَى | إن الله فالق الحب والنوى ... ... ... ... ... | ٩٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | ويل للمطففين . الذين إذا اكتالوا على الناس يستوفون | ٢ | ك المطففين | ٨٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| تَنَالُهُ | : ليبلونكم الله بشيء من الصيد تناله أيديكم ورماحكم ... ... ... ... ... ... | ٩٤ | م المائدة | ٥ |
| تَنَالُوا | : لن تنالوا البر حتى تنفقوا مما تحبون ... ... ... | ٩٢ | م آل عمران | ٣ |
| يَنَالُ | : قال ومن ذريتي قال لا ينال عهدي الظالمين ... ... | ١٢٤ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | لن ينال الله لحومها ولا دماؤها ... ... ... ... ... | ٣٧ | م الحج | ٢٢ |
| يَنَالُهُ | : ولكن يناله التقوى منكم ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | م « | ٢٢ |
| يَنَالُهُمْ | : أولئك ينالهم نصيبهم من الكتاب ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | أهؤلاء الذين أقسمتم لا ينالهم الله برحمة ... ... ... | ٤٩ | ك « | ٧ |
| | إن الذين اتخذوا العجل سينالهم غضب من ربهم ... | ١٥٢ | ك « | ٧ |
| يَنَالُوا | : وكفروا بعد إسلامهم وهموا بما لم ينالوا ... ... | ٧٤ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | وردّ الله الذين كفروا بغيظهم لم ينالوا خيرا ... ... | ٢٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| يَنَالُونَ | : ولا يطئون موطئا يغيظ الكفار ولا ينالون من عدو | ١٢٠ | م التوبة | ٩ |
| نَيْلًا | : نيلا إلا كتب لهم به عمل صالح ... ... ... ... ... | ١٢٠ | م « | ٩ |

# باب الهاء

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| هَا | : ها أنتم هؤلاء حاججتم فيما لكم به علم ... ... ... ... | ٦٦ | م آل عمران | ٣ |
| (٤) | ها أنتم أولاء تحبونهم ولا يحبونكم وتؤمنون بالكتاب كله | ١١٩ | م « | ٣ |
| | ها أنتم هؤلاء جادلتم عنهم في الحياة الدنيا ... ... | ١٠٩ | م النساء | ٤ |
| | ها أنتم هؤلاء تدعون لتنفقوا في سبيل الله فمنكم من يبخل | ٣٨ | م محمد | ٤٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| هَاؤُمُ | : فأما من أوتي كتابه بيمينه فيقول هاؤم اقرءوا كتابيه | ١٩ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| هَاتُوا | : تلك أمانيهم قل هاتوا برهانكم إن كنتم صادقين ... | ١١١ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | أم اتخذوا من دونه آلهة قل هاتوا برهانكم ... ... | ٢٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | أإله مع الله قل هاتوا برهانكم إن كنتم صادقين ... | ٦٤ | ك النمل | ٢٧ |
| | ونزعنا من كل أمة شهيدا فقلنا هاتوا برهانكم ... ... | ٧٥ | ك القصص | ٢٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| هَاتَيْنِ | : قال إني أريد أن أنكحك إحدى ابنتيّ هاتين... ... | ٢٧ | ك « | ٢٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| هَذَانِ | : قالوا إنْ هذان لساحران... ... ... ... ... ... | ٦٣ | ك طه | ٢٠ |
| (٢) | هذان خصمان اختصموا في ربهم ... ... ... ... ... | ١٩ | م الحج | ٢٢ |
| هَكَذَا | : فلما جاءت قيل أهكذا عرشك قالت كأنه هو ... ... | ٤٢ | ك النمل | ٢٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| هَهُنَا | : يقولون لو كان لنا من الأمر شيء ما قتلنا ههنا ... | ١٥٤ | م آل عمران | ٣ |
| (٤) | فاذهب أنت وربك فقاتلا إنا ههنا قاعدون ... ... | ٢٤ | م المائدة | ٥ |
| | أتتركون في ما ههنا آمنين ... ... ... ... ... ... | ١٤٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فليس له اليوم ههنا حميم... ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| يَهْبِطُ | : وإن منها لما يهبط من خشية الله ... ... ... ... | ٧٤ | م البقرة | ٢ |
| اهْبِطْ | : قال فاهبط منها فما يكون لك أن تتكبر فيها ... ... | ١٣ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | قيل يا نوح اهبط بسلام منا وبركات عليك ... ... | ٤٨ | ك هود | ١١ |
| اهْبِطَا | : قال اهبطا منها جميعا بعضكم لبعض عدو ... ... | ١٢٣ | ك طه | ٢٠ |
| اهْبِطُوا | : وقلنا اهبطوا بعضكم لبعض عدو ... ... ... ... | ٣٦ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | قلنا اهبطوا منها جميعا ... ... ... ... ... ... | ٣٨ | م « | ٢ |
| | اهبطوا مصرا فإن لكم ما سألتم ... ... ... ... ... | ٦١ | م « | ٢ |
| | قال اهبطوا بعضكم لبعض عدو ولكم في الأرض مستقر ومتاع إلى حين... ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| هَبَاءً | : وقدمنا إلى ما عملوا من عمل فجعلناه هباء منثورا ... | ٢٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| (٢) | وبست الجبال بسا . فكانت هباء منبثا ... ... ... | ٦ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| فَتَهَجَّدْ | : ومن الليل فتهجد به نافلة لك... ... ... ... ... | ٧٩ | م الإسراء | ١٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تَهْجُرُونَ | : مستكبرين به سامرا تهجرون ... ... ... ... ... | ٦٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| فَاهْجُرْ | : وربك فكبر . وثيابك فطهر . والرجز فاهجر ... | ٥ | ك المدثر | ٧٤ |
| وَاهْجُرْنِي | : لئن لم تنته لأرجمنك واهجرني مليا ... ... ... | ٤٦ | ك مريم | ١٩ |
| وَاهْجُرْهُمْ | : واصبر على ما يقولون واهجرهم هجرا جميلا... ... | ١٠ | م المزمل | ٧٣ |
| وَاهْجُرُوهُنَّ | : واللاتي تخافون نشوزهن فعظوهن واهجروهن في المضاجع واضربوهن... ... ... ... ... ... | ٣٤ | م النساء | ٤ |
| هَاجَرَ | : والذين تبوءوا الدار والإيمان من قبلهم يحبون من هاجر إليهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | م الحشر | ٥٩ |
| هَاجَرْنَ | : وبنات خالك وبنات خالاتك اللاتي هاجرن معك | ٥٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| هَاجَرُوا | : إن الذين آمنوا والذين هاجروا وجاهدوا في سبيل | | | |
| (٩) | الله أولئك يرجون رحمة الله ... ... ... ... | ٢١٨ | م البقرة | ٢ |
| | فالذين هاجروا وأخرجوا من ديارهم وأوذوا في سبيل وقاتلوا وقتلوا لأكفرن عنهم سيئاتهم... ... ... | ١٩٥ | م آل عمران | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| هَاجَرُوا | : إن الذين آمنوا وهاجروا وجاهـدوا بأموالهم وأنفسهم فى سبيل الله ... ... ... ... ... ... | ٧٢ | م الأنفال | ٨ |
| | والذين آمنوا وهاجروا وجاهدوا فى سبيل الله والذين آووا | ٧٤ | م « | ٨ |
| | والذين آمنوا من بعد وهاجروا وجاهدوا معكم فأولئك منكم | ٧٥ | م « | ٨ |
| | الذين آمنـوا وهاجروا وجاهـدوا فى سبيـل الله بأموالهم وأنفسهم أعظم درجة عند الله ... ... | ٢٠ | م التـوبة | ٩ |
| | والذين هاجروا فى الله من بعـد ماظلموا لنبوئنهم فى الدنيا حسنة... ... ... ... ... ... ... | ٤١ | ك النـحل | ١٦ |
| | ثم إن ربك للذين هاجروا من بعد ما فتنوا ثم جاهدوا وصبروا | ١١٠ | ك « | ١٦ |
| | والذين هاجروا فى سبيل الله ثم قتلوا أو ماتوا ليرزقنهم الله رزقا حسنا ... ... ... ... ... ... ... | ٥٨ | م الحـج | ٢٢ |
| تُهَاجِرُوا | : قالوا ألم تكن أرض الله واسعة فتهاجروا فيها ... | ٩٧ | م النسـاء | ٤ |
| يُهَاجِرْ | : ومن يهاجر فى سبيل الله يجد فى الأرض مراغما كثيرا وسعة | ١٠٠ | م « | ٤ |
| يُهَاجِرُوا | : فلا تتخذوا منهم أولياء حتى يهاجروا فى سبيل الله | ٨٩ | م « | ٤ |
| (٣) | والذين آمنوا ولم يهاجروا ما لكم من ولايتهم من شىء | ٧٢ | م الأنفـال | ٨ |
| | حتى يهاجروا وإن استنصروكم فى الدين فعليكم النصر | ٧٢ | م « | ٨ |
| هَجْرًا | : واصبر على ما يقولون واهجرهم هجرا جميلا... ... ... | ١٠ | م المـزمل | ٧٣ |
| مَهْجُورًا | : يارب إن قومى اتخذوا هذا القرآن مهجورا ... | ٣٠ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| مُهَاجِرٌ | : فآمن له لوط وقال إنى مهاجر إلى ربى إنه هو العزيز الحكيم | ٢٦ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| مُهَاجِرًا | : ومن يخرج من بيته مهاجرا إلى الله ورسوله ثم يدركه الموت | ١٠٠ | م النسـاء | ٤ |
| مُهَاجِرَاتٍ | : إذا جاءكم المؤمنات مهاجرات فامتحنوهن ... | ١٠ | م الممتحنـة | ٦٠ |
| الْمُهَاجِرِينَ | : والسابقون الأولون من المهاجرين والأنصار | | | |
| (٥) | والذين اتبعوهم بإحسان رضى الله عنهم ... ... | ١٠٠ | م التـوبة | ٩ |
| | لقد تاب الله على النبى والمهاجرين والأنصار الذين اتبعوه فى ساعة العسرة ... ... ... ... ... ... | ١١٧ | م « | ٩ |
| | ولا يأتل أولوا الفضـل منكم والسعة أن يؤتوا أولى القربى والمساكين والمهاجرين فى سبيل الله ... | ٢٢ | م النـور | ٢٤ |
| | وأولوا الأرحام بعضهـم أولى ببعض فى كتاب الله من المؤمنين والمهاجرين... ... ... ... ... ... | ٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | للفقراء المهاجرين الذين أخرجوا من ديارهم وأموالهم | ٨ | م الحشـر | ٥٩ |
| ✦✦✦ | | | | |
| يَهْجَعُونَ | : كانوا قليلا من الليل مايهجعون... ... ... ... | ١٧ | ك الذاريات | ٥١ |
| ✦✦✦ | | | | |
| هَدًّا | : تكاد السموات يتفطرن منـه وتنشق الأرض وتخر الجبال هدا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩٠ | ك مـريم | ١٩ |
| ✦✦✦ | | | | |
| لَهُدِّمَتْ | : ولولا دفع الله الناس بعضهم ببعض لهـدمت صوامع وبيع ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | م الحـج | ٢٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ✦✦✦ | | | | |
| الْهُدْهُدَ | : وتفقد الطير فقال مالى لا أرى الهدهد أم كان من الغـائبين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك النمـل | ٢٧ |
| ✦✦✦ | | | | |
| هُدًى | : وإن كانت لكبيرة إلا على الذين هدى الله ... ... | ١٤٣ | م البقـرة | ٢ |
| (١١) | فهدى الله الذين آمنوا لما اختلفوا فيه من الحق بإذنه | ٢١٣ | م « | ٢ |
| | أولئك الذين هدى الله فبهداهم اقتده... ... ... ... | ٩٠ | ك الأنعـام | ٦ |
| | فريقا هدى وفريقا حق عليهم الضلالة ... ... ... | ٣٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | أفلم ييأس الذين آمنوا أن لو يشاء الله لهدى الناس جميعا | ٣١ | م الرعـد | ١٣ |
| | فمنهم من هدى الله ومنهم من حقت عليه الضلالة ... | ٣٦ | ك النـحل | ١٦ |
| | قال ربنا الذى أعطى كل شىء خلقه ثم هدى ... ... | ٥٠ | ك طـه | ٢٠ |
| | وأضل فرعون قومه وما هدى ... ... ... ... ... | ٧٩ | ك « | ٢٠ |
| | ثم اجتباه ربه فتاب عليه وهدى ... ... ... ... ... | ١٢٢ | ك « | ٢٠ |
| | سبح اسم ربك الأعلى . الذى خلق فسوى . والذى قدر فهدى | ٣ | ك الأعـلى | ٨٧ |
| | ألم يجدك يتيما فآوى . ووجدك ضالا فهدى ... ... | ٧ | ك الضـحى | ٩٣ |
| هُدَاكُمْ | : ولتكملوا العدة ولتكبروا الله على ما هداكم ولعلكم | | | |
| (٦) | تشكرون ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٨٥ | م البقـرة | ٢ |
| | واذكروه كما هداكم وإن كنتم من قبـله لمن الضالين | ١٩٨ | م « | ٢ |
| | قل فلله الحجة البالغة فلو شاء لهداكم أجمعين ... ... | ١٤٩ | ك الأنعـام | ٦ |
| | وعلى الله قصد السبيل ومنها جائر ولو شاء لهداكم أجمعين | ٩ | ك النـحل | ١٦ |
| | كذلك سخرها لكم لتكبروا الله على ما هداكم ... ... | ٣٧ | م الحـج | ٢٢ |
| | بل الله يمن عليكم أن هداكم للإيمان إن كنتم صادقين | ١٧ | م الحجرات | ٤٩ |
| هَدَانِ | : وحاجه قومه قال أتحاجونى فى الله وقد هـدانِ | ٨٠ | ك الأنعـام | ٦ |
| هَدَانَا | : ونرد على أعقابنا بعد إذ هدانا الله... ... ... ... | ٧١ | ك « | ٦ |
| (٥) | وقالوا الحمد لله الذى هدانا لهذا... ... ... ... ... | ٤٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | وما كنا لنهتدى لولا أن هدانا الله ... ... ... ... | ٤٣ | ك « | ٧ |
| | وما لنا ألا نتوكل على الله وقد هدانا سبلنا... ... ... | ١٢ | ك إبراهـيم | ١٤ |
| | قالوا لو هدانا الله لهديناكم... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك « | ١٤ |
| هَدَانِى | : قل إننى هـدانى ربى إلى صراط مستقيم دينا قيما | ١٦١ | ك الأنعـام | ٦ |
| (٢) | أو تقول لو أن الله هدانى لكنت من المتقين ... ... | ٥٧ | ك الـزمر | ٣٩ |
| هَدَاهُ | : شاكرا لأنعمه اجتباه وهداه إلى صراط مستقيم ... | ١٢١ | ك النـحل | ١٦ |
| هَدَاهُمُ | : وما كان الله ليضل قوما بعد إذ هداهم حتى يبين لهم | | | |
| (٢) | ما يتقون ... ... ... ... ... ... ... ... | ١١٥ | م التـوبة | ٩ |
| | أولئك الذين هداهم الله وأولئك هم أولوا الألباب | ١٨ | ك الـزمر | ٣٩ |
| هَدَيْتَنَا | : ربنا لا تزغ قلوبنا بعد إذ هديتنا... ... ... ... | ٨ | م آل عمران | ٣ |
| هَدَيْنَا | : ووهبنا له إسحق ويعقوب كلا هدينا ... ... ... | ٨٤ | ك الأنعـام | ٦ |
| (٣) | ونوحا هدينا من قبل ومن ذريته داود وسليمان... ... | ٨٤ | ك « | ٦ |
| | ومن ذرية إبراهـيم وإسرائيل وممن هدينا واجتبينا | ٥٨ | م مـريم | ١٩ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| هَدَيْنَاكُمْ: | قالوا لو هدانا الله لهديناكم ... ... ... ... | ٢١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| هَدَيْنَاهُ: | إنا هديناه السبيل إما شاكرا وإما كفورا... ... | ٣ | م الإنسان | ٧٦ |
| (٢) | ألم نجعل له عينين . ولسانا وشفتين . وهديناه النجدين | ١٠ | ك البلد | ٩٠ |
| هَدَيْنَاهُمْ: | ولهديناهم صراطا مستقيما ... ... ... ... | ٦٨ | م النساء | ٤ |
| (٣) | واجتبيناهم وهديناهم إلى صراط مستقيم ... ... ... | ٨٧ | ك الأنعام | ٦ |
| | وأما ثمود فهديناهم فاستحبوا العمى على الهدى ... | ١٧ | ك فصلت | ٤١ |
| هَدَيْنَاهُمَا: | وهديناهما الصراط المستقيم ... ... ... ... | ١١٨ | ك الصافات | ٣٧ |
| أَهْدِكَ: | فاتبعني أهدك صراطا سويا ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك مريم | ١٩ |
| أَهْدِكُمْ: | وقال الذي آمن يا قوم اتبعون أهدكم سبيل الرشاد | ٣٨ | ك غافر | ٤٠ |
| وَأَهْدِيَكَ: | وأهديك إلى ربك فتخشى... ... ... ... ... | ١٩ | ك النازعات | ٧٩ |
| أَهْدِيكُمْ: | وما أهديكم إلا سبيل الرشاد ... ... ... ... | ٢٩ | ك غافر | ٤٠ |
| تَهْدُوا: | أتريدون أن تهدوا من أضل الله ... ... ... ... | ٨٨ | م النساء | ٤ |
| تَهْدِي: | إن هي إلا فتنتك تضل بها من تشاء وتهدي من تشاء | ١٥٥ | ك الأعراف | ٧ |
| (٥) | أفأنت تهدي العمي ولو كانوا لا يبصرون... ... ... | ٤٣ | ك يونس | ١٠ |
| | إنك لا تهدي من أحببت ولكن الله يهدي من يشاء | ٥٦ | ك القصص | ٢٨ |
| | وإنك لتهدي إلى صراط مستقيم... ... ... ... | ٥٢ | ك الشورى | ٤٢ |
| | أفأنت تسمع الصم أو تهدي العمي ومن كان في ضلال مبين | ٤٠ | ك الزخرف | ٤٣ |
| تَهْدِي: | ولكن جعلناه نورا نهدي به من نشاء من عبادنا ... | ٥٢ | ك الشورى | ٤٢ |
| لَنَهْدِيَنَّهُمْ: | والذين جاهدوا فينا لنهدينهم سبلنا ... ... . | ٦٩ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| يَهْدِ: | أولم يهد للذين يرثون الأرض من بعد أهلها أن لو نشاء | | | |
| (٨) | أصبناهم بذنوبهم ... ... ... ... ... ... | ١٠٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | من يهد الله فهو المهتدي ومن يضلل فأولئك هم الخاسرون | ١٧٨ | ك » | ٧ |
| | ومن يهد الله فهو المهتدي... ... ... ... ... | ٩٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| | من يهد الله فهو المهتدي ومن يضلل فلن تجد له وليا مرشدا | ١٧ | ك الكهف | ١٨ |
| | أفلم يهد لهم كم أهلكنا قبلهم من القرون يمشون | | | |
| | في مساكنهم ... ... ... ... ... ... ... | ١٢٨ | ك طه | ٢٠ |
| | أولم يهد لهم كم أهلكنا من قبلهم من القرون ... ... | ٢٦ | ك السجدة | ٣٢ |
| | ومن يهد الله فما له من مضل أليس الله بعزيز ذي انتقام | ٣٧ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ما أصاب من مصيبة إلا بإذن الله ومن يؤمن بالله | | | |
| | يهد قلبه ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | م التغابن | ٦٤ |
| يَهْدِنِي: | فلما أفل قال لئن لم يهدني ربي لأكونن من القوم الضالين | ٧٧ | ك الأنعام | ٦ |
| يَهْدُونَ: | ومن قوم موسى أمة يهدون بالحق وبه يعدلون... | ١٥٩ | ك الأعراف | ٧ |
| (٤) | ومن خلقنا أمة يهدون بالحق وبه يعدلون... ... ... | ١٨١ | ك » | ٧ |
| | وجعلناهم أئمة يهدون بأمرنا وأوحينا إليهم فعل الخيرات | ٧٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وجعلنا منهم أئمة يهدون بأمرنا لما صبروا ... ... | ٢٤ | ك السجدة | ٣٢ |
| يَهْدُونَنَا: | فقالوا أبشر يهدوننا فكفروا وتولوا ... ... ... | ٦ | م التغابن | ٦٤ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَهْدِي: | يضل به كثيرا ويهدي به كثيرا وما يضل به إلا الفاسقين | ٢٦ | م البقرة | ٢ |
| (٥١) | قل لله المشرق والمغرب يهدي من يشاء إلى صراط مستقيم | ١٤٢ | م » | ٢ |
| | والله يهدي من يشاء إلى صراط مستقيم ... ... ... | ٢١٣ | م » | ٢ |
| | فبهت الذي كفر والله لا يهدي القوم الظالمين... ... | ٢٥٨ | م » | ٢ |
| | والله لا يهدي القوم الكافرين ... ... ... ... ... | ٢٦٤ | م » | ٢ |
| | ليس عليك هداهم ولكن الله يهدي من يشاء ... ... | ٢٧٢ | م » | ٢ |
| | كيف يهدي الله قوما كفروا بعد إيمانهم ... ... ... | ٨٦ | م آل عمران | ٣ |
| | وجاءهم البينات والله لا يهدي القوم الظالمين ... ... | ٨٦ | م » | ٣ |
| | يهدي به الله من اتبع رضوانه سبل السلام... ... ... | ١٦ | م المائدة | ٥ |
| | ومن يتولهم منكم فإنه منهم إن الله لا يهدي القوم الظالمين | ٥١ | م » | ٥ |
| | والله يعصمك من الناس إن الله لا يهدي القوم الكافرين | ٦٧ | م » | ٥ |
| | واتقوا الله واسمعوا والله لا يهدي القوم الفاسقين ... | ١٠٨ | م » | ٥ |
| | ذلك هدى الله يهدي به من يشاء من عباده ... ... | ٨٨ | ك الأنعام | ٦ |
| | إن الله لا يهدي القوم الظالمين ... ... ... ... ... | ١٤٤ | ك » | ٦ |
| | لا يستوون عند الله والله لا يهدي القوم الظالمين ... | ١٩ | م التوبة | ٩ |
| | فتربصوا حتى يأتي الله بأمره والله لا يهدي القوم الفاسقين | ٢٤ | م » | ٩ |
| | زين لهم سوء أعمالهم والله لا يهدي القوم الكافرين | ٣٧ | م » | ٩ |
| | ذلك بأنهم كفروا بالله ورسوله والله لا يهدي القوم | | | |
| | الفاسقين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨٠ | م » | ٩ |
| | فانهار به في نار جهنم والله لا يهدي القوم الظالمين ... | ١٠٩ | م » | ٩ |
| | ويهدي من يشاء إلى صراط مستقيم ... ... ... ... | ٢٥ | ك يونس | ١٠ |
| | قل هل من شركائكم من يهدي إلى الحق ... ... ... | ٣٥ | ك » | ١٠ |
| | قل الله يهدي للحق ... ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك » | ١٠ |
| | أفمن يهدي إلى الحق أحق أن يتبع ... ... ... ... | ٣٥ | ك » | ١٠ |
| | ذلك ليعلم أني لم أخنه بالغيب وأن الله لا يهدي كيد الخائنين | ٥٢ | ك يوسف | ١٢ |
| | قل إن الله يضل من يشاء ويهدي إليه من أناب ... | ٢٧ | م الرعد | ١٣ |
| | فيضل الله من يشاء ويهدي من يشاء وهو العزيز الحكيم | ٤ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | إن تحرص على هداهم فإن الله لا يهدي من يضل ... | ٣٧ | ك النحل | ١٦ |
| | ولكن يضل من يشاء ويهدي من يشاء ... ... ... | ٩٣ | ك » | ١٦ |
| | ذلك بأنهم استحبوا الحياة الدنيا على الآخرة وأن الله | | | |
| | لا يهدي القوم الكافرين... ... ... ... ... ... | ١٠٧ | ك » | ١٦ |
| | إن هذا القرآن يهدي للتي هي أقوم ... ... ... ... | ٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وكذلك أنزلناه آيات بينات وأن الله يهدي من يريد | ١٦ | م الحج | ٢٢ |
| | نور على نور يهدي الله لنوره من يشاء... ... ... ... | ٣٥ | م النور | ٢٤ |
| | والله يهدي من يشاء إلى صراط مستقيم ... ... ... | ٤٦ | م » | ٢٤ |
| | ومن أضل ممن اتبع هواه بغير هدى من الله إن الله | | | |
| | لا يهدي القوم الظالمين ... ... ... ... ... ... | ٥٠ | ك القصص | ٢٨ |
| | إنك لا تهدي من أحببت ولكن الله يهدي من يشاء | ٥٦ | ك » | ٢٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَهْدِي | : فمن يهدى من أضل الله وما لهم من ناصرين... ... | ٢٩ | ك الروم | ٣٠ |
| | والله يقول الحق وهو يهدى السبيل ... ... ... ... | ٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ويرى الذين أوتوا العلم الذى أنزل إليك من ربك هو الحق ويهدى إلى صراط العزيز الحميد ... ... | ٦ | م سبا | ٣٤ |
| | فإن الله يضل من يشاء ويهدى من يشاء... ... ... | ٨ | ك فاطر | ٣٥ |
| | إن الله لا يهدى من هو كاذب كفار... ... ... ... | ٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ذلك هدى الله يهدى به من يشاء... ... ... ... ... | ٢٣ | ك « | ٣٩ |
| | إن الله لا يهدى من هو مسرف كذاب ... ... ... | ٢٨ | ك غافر | ٤٠ |
| | الله يجتبى إليه من يشاء ويهدى إليه من ينيب... ... | ١٣ | ك الشورى | ٤٢ |
| | فآمن واستكبرتم إن الله لا يهدى القوم الظالمين... ... | ١٠ | م الأحقاف | ٤٦ |
| | إنا سمعنا كتابا أنزل من بعد موسى مصدقا لما بين يديه يهدى إلى الحق... ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك « | ٤٦ |
| | فلما زاغوا أزاغ الله قلوبهم والله لا يهدى القوم الفاسقين | ٥ | م الصف | ٦١ |
| | وهو يدعى إلى الاسلام والله لا يهدى القوم الظالمين | ٧ | م « | ٦١ |
| | بئس مثل القوم الذين كذبوا بآيات الله والله لا يهدى القوم الظالمين ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | م الجمعة | ٦٢ |
| | لن يغفر الله لهم إن الله لا يهدى القوم الفاسقين ... | ٦ | م المنافقون | ٦٣ |
| | إنا سمعنا قرآنا عجبا . يهدى إلى الرشد فآمنا به ... ... | ٢ | ك الجن | ٧٢ |
| | كذلك يضل الله من يشاء ويهدى من يشاء ... ... | ٣١ | ك المدثر | ٧٤ |
| يَهِدِّي | : أفمن يهدى إلى الحق أحق أن يتبع أمن لا يهدى إلا أن يهدى ... ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك يونس | ١٠ |
| يَهْدِيَكَ | : ويتم نعمته عليك ويهديك صراطا مستقيما ... ... | ٢ | م الفتح | ٤٨ |
| يَهْدِيَكُمْ | : يريد الله ليبين لكم ويهديكم سنن الذين من قبلكم | ٢٦ | م النساء | ٤ |
| (٣) | أمن يهديكم فى ظلمات البر والبحر ومن يرسل الرياح | ٦٣ | ك النمل | ٢٧ |
| | ولتكون آية للمؤمنين ويهديكم صراطا مستقيما ... ... | ٢٠ | م الفتح | ٤٨ |
| يَهْدِيَنِ | : وقل عسى أن يهدين ربى لأقرب من هذا رشدا ... | ٢٤ | ك الكهف | ١٨ |
| يَهْدِينِ | : قال كلا إن معى ربى سيهدين... ... ... ... ... | ٦٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| (٤) | الذى خلقنى فهو يهدين ... ... ... ... ... ... | ٧٨ | ك « | ٢٦ |
| | وقال إنى ذاهب إلى ربى سيهدين... ... ... ... ... | ٩٩ | ك الصافات | ٣٧ |
| | إلا الذى فطرنى فإنه سيهدين ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك الزخرف | ٤٣ |
| يَهْدِيَنِي | : قال عسى ربى أن يهدينى سواء السبيل ... ... ... | ٢٢ | ك القصص | ٢٨ |
| يَهْدِهِ | : فمن يرد الله أن يهديه يشرح صدره للإسلام ... ... | ١٢٥ | ك الأنعام | ٦ |
| (٣) | كتب عليه أنه من تولاه فأنه يضله ويهديه إلى عذاب السعير | ٤ | م الحج | ٢٢ |
| | فمن يهديه من بعد الله أفلا تذكرون ... ... ... | ٢٣ | ك الجاثية | ٤٥ |
| يَهْدِيَهُمْ | : لم يكن الله ليغفر لهم ولا ليهديهم سبيلا... ... ... | ١٣٧ | م النساء | ٤ |
| (٢) | لم يكن الله ليغفر لهم ولا ليهديهم طريقا ... ... ... | ١٦٨ | م « | ٤ |
| يَهْدِيهِمْ | : ويهديهم إليه صراطا مستقيما ... ... ... ... | ١٧٥ | م « | ٤ |
| (٦) | ويهديهم إلى صراط مستقيم ... ... ... ... ... | ١٦ | م المائدة | ٥ |
| يَهْدِيهِمْ | : ألم يروا أنه لا يكلمهم ولا يهديهم سبيلا ... ... | ١٤٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات يهديهم ربهم بإيمانهم | ٩ | ك يونس | ١٠٠ |
| | إن الذين لا يؤمنون بآيات الله لا يهديهم الله ولهم عذاب أليم ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك النحل | ١٦ |
| | سيهديهم ويصلح بالهم ... ... ... ... ... ... | ٥ | م محمد | ٤٧ |
| اهْدِنَا | : اهدنا الصراط المستقيم ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك الفاتحة | ١ |
| (٢) | فاحكم بيننا بالحق ولا تشطط واهدنا إلى سواء الصراط | ٢٢ | ك ص | ٣٨ |
| فَاهْدُوهُمْ | : فاهدوهم إلى صراط الجحيم ... ... ... ... | ٢٣ | ك الصافات | ٣٧ |
| هُدُوا | : وهدوا إلى الطيب من القول ... ... ... ... ... | ٢٤ | م الحج | ٢٢ |
| (٢) | وهدوا إلى صراط الحميد ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | م « | ٢٢ |
| هُدَى | : ومن يعتصم بالله فقد هدى إلى صراط مستقيم | ١٠١ | م آل عمران | ٣ |
| يُهْدَى | : أفمن يهدى إلى الحق أحق أن يتبع أمن لا يهدى إلا أن يهدى ... ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك يونس | ١٠ |
| اهْتَدَى | : قد جاءكم الحق من ربكم فمن اهتدى فإنما يهتدى لنفسه | ١٠٨ | ك « | ١٠ |
| (٧) | من اهتدى فإنما يهتدى لنفسه ومن ضل فإنما يضل عليها | ١٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وإنى لغفار لمن تاب وآمن وعمل صالحا ثم اهتدى ... | ٨٢ | ك طه | ٢٠ |
| | فستعلمون من أصحاب الصراط السوى ومن اهتدى | ١٣٥ | ك « | ٢٠ |
| | فمن اهتدى فإنما يهتدى لنفسه ... ... ... ... | ٩٢ | ك النمل | ٢٧ |
| | إنا أنزلنا عليك الكتاب للناس بالحق فمن اهتدى فلنفسه | ٤١ | ك الزمر | ٣٩ |
| | إن ربك هو أعلم بمن ضل عن سبيله وهو أعلم بمن اهتدى | ٣٠ | ك النجم | ٥٣ |
| اهْتَدَوْا | : فإن آمنوا بمثل ما آمنتم به فقد اهتدوا ... ... | ١٣٧ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | فإن أسلموا فقد اهتدوا وإن تولوا فإنما عليك البلاغ | ٢٠ | م آل عمران | ٣ |
| | ويزيد الله الذين اهتدوا هدى ... ... ... ... ... | ٧٦ | ك مريم | ١٩ |
| | والذين اهتدوا زادهم هدى وآتاهم تقواهم ... ... | ١٧ | م محمد | ٤٧ |
| اهْتَدَيْتُ | : وإن اهتديت فبما يوحى إلىّ ربى ... ... ... | ٥٠ | ك سبا | ٣٤ |
| اهْتَدَيْتُمْ | : عليكم أنفسكم لا يضركم من ضل إذا اهتديتم ... | ١٠٥ | م المائدة | ٥ |
| تَهْتَدُوا | : وقالوا كونوا هودا أو نصارى تهتدوا ... ... ... | ١٣٥ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | وهو الذى جعل لكم النجوم لتهتدوا بها فى ظلمات البر والبحر... ... ... ... ... ... ... | ٩٧ | ك الأنعام | ٦ |
| | وإن تطيعوه تهتدوا وما على الرسول إلا البلاغ المبين | ٥٤ | م النور | ٢٤ |
| تَهْتَدُونَ | : وإذ آتينا موسى الكتاب والفرقان لعلكم تهتدون | ٥٣ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | فلا تخشوهم واخشونى ولأتم نعمتى عليكم ولعلكم تهتدون | ١٥٠ | م « | ٢ |
| | كذلك يبين الله لكم آياته لعلكم تهتدون ... ... ... | ١٠٣ | م آل عمران | ٣ |
| | وأتبعوه لعلكم تهتدون ... ... ... ... ... ... | ١٥٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | وألقى فى الأرض رواسى أن تميد بكم وأنهارا وسبلا لعلكم تهتدون ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك النحل | ١٦ |
| | وجعل لكم فيها سبلا لعلكم تهتدون ... ... ... ... | ١٠ | ك الزخرف | ٤٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الْهُدَى | : وآتينا موسى الكتاب وجعلناه هدى لبنى إسرائيل | ٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وما منع الناس أن يؤمنوا إذ جاءهم الهدى إلا أن قالوا أبعث الله بشرا رسولا ... ... ... ... ... | ٩٤ | ك « | ١٧ |
| | إنهم فتية آمنوا بربهم وزدناهم هدى ... ... ... ... | ١٣ | ك الكهف | ١٨ |
| | وما منع الناس أن يؤمنوا إذ جاءهم الهدى ويستغفروا ربهم إلا أن تأتيهم سنة الأولين ... ... ... | ٥٥ | ك « | ١٨ |
| | وإن تدعهم إلى الهدى فلن يهتدوا إذا أبدا ... ... | ٥٧ | ك « | ١٨ |
| | ويزيد الله الذين اهتدوا هدى ... ... ... ... ... | ٧٦ | ك مريم | ١٩ |
| | لعلى آتيكم منها بقبس أو أجد على النار هدى ... ... | ١٠ | ك طه | ٢٠ |
| | قد جئناك بآية من ربك والسلام على من اتبع الهدى | ٤٧ | ك « | ٢٠ |
| | فإما يأتينكم منى هدى فمن اتبع هداى فلا يضل ولا يشقى | ١٢٣ | ك « | ٢٠ |
| | ومن الناس من يجادل فى الله بغير علم ولا هدى ولا كتاب منير | ٨ | م الحج | ٢٢ |
| | وادع إلى ربك إنك لعلى هدى مستقيم ... ... ... | ٦٧ | م « | ٢٢ |
| | تلك آيات القرآن وكتاب مبين . هدى وبشرى للمؤمنين | ٢ | ك النمل | ٢٧ |
| | وإنه لهدى ورحمة للمؤمنين ... ... ... ... ... | ٧٧ | ك « | ٢٧ |
| | وقال موسى ربى أعلم بمن جاء بالهدى من عنده ... | ٣٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | بصائر للناس وهدى ورحمة لعلهم يتذكرون ... ... | ٤٣ | ك « | ٢٨ |
| | ومن أضل ممن اتبع هواه بغير هدى من الله ... ... | ٥٠ | ك « | ٢٨ |
| | وقالوا إن نتبع الهدى معك نتخطف من أرضنا... ... | ٥٧ | ك « | ٢٨ |
| | قل ربى أعلم من جاء بالهدى ومن هو فى ضلال مبين | ٨٥ | م « | ٢٨ |
| | تلك آيات الكتاب الحكيم هدى ورحمة للمحسنين | ٣ | ك لقمان | ٣١ |
| | أولئك على هدى من ربهم وأولئك هم المفلحون ... | ٥ | ك « | ٣١ |
| | ومن الناس من يجادل فى الله بغير علم ولا هدى ولا كتاب منير ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك « | ٣١ |
| | وجعلناه هدى لبنى إسرائيل ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك السجدة | ٣٢ |
| | وإنا أو إياكم لعلى هدى أو فى ضلال مبين ... ... | ٢٤ | ك سبأ | ٣٤ |
| | أنحن صددناكم عن الهدى بعد إذ جاءكم ... ... ... | ٣٢ | ك « | ٣٤ |
| | ذلك هدى الله يهدى به من يشاء ... ... ... ... | ٢٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ولقد آتينا موسى الهدى وأورثنا بنى إسرائيل الكتاب | ٥٣ | ك غافر | ٤٠ |
| | وأورثناها بنى إسرائيل الكتاب . هدى وذكرى لأولى الألباب... ... ... ... ... ... ... | ٥٤ | ك « | ٤٠ |
| | وأما ثمود فهديناهم فاستحبوا العمى على الهدى ... | ١٧ | ك فصلت | ٤١ |
| | قل هو للذين آمنوا هدى وشفاء ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك « | ٤١ |
| | هذا هدى والذين كفروا بآيات ربهم لهم عذاب من رجز أليم | ١١ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | هذا بصائر للناس وهدى ورحمة لقوم يوقنون ... ... | ٢٠ | ك « | ٤٥ |
| | والذين اهتدوا زادهم هدى وآتاهم تقواهم ... ... | ١٧ | م محمد | ٤٧ |
| | إن الذين ارتدوا على أدبارهم من بعد ما تبين لهم الهدى الشيطان سول لهم وأملى لهم ... ... ... ... ... | ٢٥ | م « | ٤٧ |
| | وشاقوا الرسول من بعد ما تبين لهم الهدى لن يضروا الله شيئا | ٣٢ | م « | ٤٧ |
| الْهُدَى | : هو الذى أرسل رسوله بالهدى ودين الحق ليظهره على الدين كله ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م الفتح | ٤٨ |
| | ولقد جاءهم من ربهم الهدى... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك النجم | ٥٣ |
| | هو الذى أرسل رسوله بالهدى ودين الحق ليظهره على الدين كله ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | م الصف | ٦١ |
| | وأنا لما سمعنا الهدى آمنا به... ... ... ... ... | ١٣ | ك الجن | ٧٢ |
| | إن علينا للهدى . وإن لنا للآخرة والأولى ... ... | ١٢ | ك الليل | ٩٢ |
| | أرأيت إن كان على الهدى . أو أمر بالتقوى... ... | ١١ | ك العلق | ٩٦ |
| هُدَاهَا | : ولو شئنا لآتينا كل نفس هداها ... ... ... ... | ١٣ | ك السجدة | ٣٢ |
| هُدَاهُمْ | : ليس عليك هداهم ولكن الله يهدى من يشاء ... | ٢٧٢ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | أولئك الذين هدى الله فبهداهم اقتده ... ... ... | ٩٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | إن تحرص على هداهم فإن الله لا يهدى من يضل ... | ٣٧ | ك النحل | ١٦ |
| هُدَايَ | : فمن تبع هداى فلا خوف عليهم ولاهم يحزنون ... | ٣٨ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | فمن اتبع هداى فلا يضل ولا يشقى ... ... ... ... | ١٢٣ | ك طه | ٢٠ |
| أَهْدَى | : هؤلاء أهدى من الذين آمنوا سبيلا ... ... ... | ٥١ | م النساء | ٤ |
| (٧) | أو تقولوا لو أنا أنزل علينا الكتاب لكنا أهدى منهم | ١٥٧ | ك الأنعام | ٦ |
| | قل كل يعمل على شاكلته فربكم أعلم بمن هو أهدى سبيلا | ٨٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| | قل فأتوا بكتاب من عند الله هو أهدى منهما أتبعه | ٤٩ | ك القصص | ٢٨ |
| | لئن جاءهم نذير ليكونن أهدى من إحدى الأمم ... | ٤٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| | قال أولو جئتكم بأهدى مما وجدتم عليه آباءكم ... ... | ٢٤ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | أفمن يمشى مكبا على وجهه أهدى أمن يمشى سويا على صراط مستقيم ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك الملك | ٦٧ |
| مُهْتَدٍ | : فمنهم مهتد وكثير منهم فاسقون ... ... ... ... | ٢٦ | م الحديد | ٥٧ |
| مُهْتَدُونَ | : إن البقر تشابه علينا وإنا إن شاء الله لمهتدون | ٧٠ | م البقرة | ٢ |
| (٨) | أولئك عليهم صلوات من ربهم ورحمة وأولئك هم المهتدون | ١٥٧ | م « | ٢ |
| | أولئك لهم الأمن وهم مهتدون ... ... ... ... ... | ٨٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | ويحسبون أنهم مهتدون ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | اتبعوا من لا يسئلكم أجرا وهم مهتدون ... ... ... | ٢١ | ك يس | ٣٦ |
| | بل قالوا إنا وجدنا آباءنا على أمة وإنا على آثارهم مهتدون | ٢٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وإنهم ليصدونهم عن السبيل ويحسبون أنهم مهتدون | ٣٧ | ك « | ٤٣ |
| | وقالوا يا أيه الساحر ادع لنا ربك بما عهد عندك إننا لمهتدون | ٤٩ | ك « | ٤٣ |
| الْمُهْتَدِ | : ومن يهد الله فهو المهتد ... ... ... ... ... | ٩٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٢) | من يهد الله فهو المهتد ومن يضلل فلن تجد له وليا مرشدا | ١٧ | ك الكهف | ١٨ |
| الْمُهْتَدِي | : من يهد الله فهو المهتدى ... ... ... ... ... | ١٧٨ | ك الأعراف | ٧ |
| الْمُهْتَدِينَ | : فما ربحت تجارتهم وما كانوا مهتدين ... ... | ١٦ | م البقرة | ٢ |
| (٩) | قل لا أتبع أهواءكم قد ضللت إذا وما أنا من المهتدين | ٥٦ | ك الأنعام | ٦ |
| | إن ربك هو أعلم من يضل عن سبيله وهو أعلم بالمهتدين | ١١٧ | ك « | ٦ |
| | قد ضلوا وما كانوا مهتدين ... ... ... ... ... | ١٤٠ | ك « | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **المُهْتَدِينَ** : ولم يخش إلا الله فعسى أولئك أن يكونوا من المهتدين | ١٨ | م | التوبة | ٩ |
| قد خسر الذين كذبوا بلقاء الله وما كانوا مهتدين ... | ٤٥ | ك | يونس | ١٠ |
| إن ربك هو أعلم بمن ضل عن سبيله وهو أعلم بالمهتدين | ١٢٥ | ك | النحل | ١٦ |
| ولكن الله يهدى من يشاء وهو أعلم بالمهتدين ... ... | ٥٦ | ك | القصص | ٢٨ |
| إن ربك هو أعلم بمن ضل عن سبيله وهو أعلم بالمهتدين | ٧ | ك | القلم | ٦٨ |
| **الهَدْيُ** : فإن أحصرتم فما استيسر من الهدى... ... ... | ١٩٦ | م | البقرة | ٢ |
| (٦) ولا تحلقوا رءوسكم حتى يبلغ الهدى محله ... ... ... | ١٩٦ | م | » | ٢ |
| فإذا أمنتم فمن تمتع بالعمرة إلى الحج فما استيسر من الهدى | ١٩٦ | م | » | ٢ |
| لا تحلوا شعائر الله ولا الشهر الحرام ولا الهدى ... | ٢ | م | المائدة | ٥ |
| جعل الله الكعبة البيت الحرام قياما للناس والشهر الحرام والهدى والقلائد ... ... ... ... ... ... | ٩٧ | م | » | ٥ |
| هم الذين كفروا وصدوكم عن المسجد الحرام والهدى معكوفا | ٢٥ | م | الفتح | ٤٨ |
| **هَدْيًا** : يحكم به ذوا عدل منكم هديا بالغ الكعبة... ... ... | ٩٥ | م | المائدة | ٥ |
| **بِهَدِيَّةٍ** : وإنى مرسلة إليهم بهدية فناظرة بم يرجع المرسلون | ٣٥ | ك | النمل | ٢٧ |
| **بِهَدِيَّتِكُمْ** : فما آتانى الله خير مما آتاكم بل أنتم بهديتكم تفرحون | ٣٦ | ك | » | ٢٧ |
| **هَرَبًا** : وأنا ظننا أن لن نعجز الله فى الأرض ولن نعجزه هربا | ١٢ | ك | الجن | ٧٢ |
| **هَارُوتَ** : وما أنزل على الملكين ببابل هاروت وماروت | ١٠٢ | م | البقرة | ٢ |
| **فِرْعَوْنَ** : وجاءه قومه يهرعون إليه ... ... ... ... | ٧٨ | ك | هود | ١١ |
| (٢) إنهم ألفوا آباءهم ضالين . فهم على آثارهم يهرعون... | ٧٠ | ك | الصافات | ٣٧ |
| **هَرُونُ** : وبقية مما ترك آل موسى وآل هرون تحمله الملائكة | ٢٤٨ | م | البقرة | ٢ |
| (٢٠) وعيسى وأيوب ويونس وهرون وسليمان ... ... ... | ١٦٣ | م | النساء | ٤ |
| ومن ذريته داود وسليمان وأيوب ويوسف وموسى وهرون ... ... ... ... ... ... | ٨٤ | ك | الأنعام | ٦ |
| قالوا آمنا برب العالمين . رب موسى وهرون ... ... | ١٢٢ | ك | الأعراف | ٧ |
| وقال موسى لأخيه هرون اخلفنى فى قومى وأصلح ... | ١٤٢ | ك | » | ٧ |
| ثم بعثنا من بعدهم موسى وهرون إلى فرعون وملائه | ٧٥ | ك | يونس | ١٠ |
| يا أخت هرون ما كان أبوك امرأ سوء ... ... ... | ٢٨ | ك | مريم | ١٩ |
| ووهبنا له من رحمتنا أخاه هرون نبيا ... ... ... | ٥٣ | ك | » | ١٩ |
| واجعل لى وزيرا من أهلى . هرون أخى ... ... | ٣٠ | ك | طه | ٢٠ |
| فألقى السحرة سجدا قالوا آمنا برب هرون وموسى ... | ٧٠ | ك | » | ٢٠ |
| ولقد قال لهم هرون من قبل يا قوم إنما فتنتم به ... | ٩٠ | ك | » | ٢٠ |
| قال يا هرون ما منعك إذ رأيتهم ضلوا . ألا تتبعن... | ٩٢ | ك | » | ٢٠ |
| ولقد آتينا موسى وهرون الفرقان وضياء وذكرا للمتقين | ٤٨ | ك | الأنبياء | ٢١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **هَرُونَ** : ثم أرسلنا موسى وأخاه هرون بآياتنا وسلطان مبين | ٤٥ | ك | المؤمنون | ٢٣ |
| ولقد آتينا موسى الكتاب وجعلنا معه أخاه هرون وزيرا | ٣٥ | ك | الفرقان | ٢٥ |
| ويضيق صدرى ولا ينطلق لسانى فأرسل إلى هرون | ١٣ | ك | الشعراء | ٢٦ |
| قالوا آمنا برب العالمين . رب موسى وهرون ... ... | ٤٨ | ك | » | ٢٦ |
| وأخى هرون هو أفصح منى لسانا فأرسله معى ردءا يصدقنى... ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك | القصص | ٢٨ |
| ولقد منا على موسى وهرون ... ... ... ... ... | ١١٤ | ك | الصافات | ٣٧ |
| سلام على موسى وهرون ... ... ... ... ... ... | ١٢٠ | ك | » | ٣٧ |
| **تَسْتَهْزِءُونَ** : قل أبالله وآياته ورسوله كنتم تستهزءون ... | ٦٥ | م | التوبة | ٩ |
| **يَسْتَهْزِئُ** : الله يستهزئ بهم ويمدهم فى طغيانهم يعمهون... | ١٥ | م | البقرة | ٢ |
| **يَسْتَهْزِءُونَ** : فسوف يأتيهم أنباء ما كانوا به يستهزءون... | ٥ | ك | الأنعام | ٦ |
| (١٤) فحاق بالذين سخروا منهم ما كانوا به يستهزءون... ... | ١٠ | ك | » | ٦ |
| وحاق بهم ما كانوا به يستهزءون ... ... ... ... ... | ٨ | ك | هود | ١١ |
| وما يأتيهم من رسول إلا كانوا به يستهزءون ... ... | ١١ | ك | الحجر | ١٥ |
| وحاق بهم ما كانوا به يستهزءون ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك | النحل | ١٦ |
| فحاق بالذين سخروا منهم ما كانوا به يستهزءون ... ... | ٤١ | ك | الأنبياء | ٢١ |
| فقد كذبوا فسيأتيهم أنباء ما كانوا به يستهزءون ... | ٦ | ك | الشعراء | ٢٦ |
| أن كذبوا بآيات الله وكانوا بها يستهزءون... ... ... | ١٠ | ك | الروم | ٣٠ |
| يا حسرة على العباد ما يأتيهم من رسول إلا كانوا به يستهزءون ... ... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك | يس | ٣٦ |
| وبدا لهم سيئات ما كسبوا وحاق بهم ما كانوا به يستهزءون ... ... ... ... ... ... ... | ٤٨ | ك | الزمر | ٣٩ |
| فرحوا بما عندهم من العلم وحاق بهم ما كانوا به يستهزءون ... ... ... ... ... ... ... | ٨٣ | ك | غافر | ٤٠ |
| وما يأتيهم من نبى إلا كانوا به يستهزءون ... ... ... | ٧ | ك | الزخرف | ٤٣ |
| وبدا لهم سيئات ما عملوا وحاق بهم ما كانوا به يستهزءون | ٣٣ | ك | الجاثية | ٤٥ |
| وحاق بهم ما كانوا به يستهزءون ... ... ... ... | ٢٦ | ك | الأحقاف | ٤٦ |
| **اسْتَهْزِءُوا** : قل استهزءوا إن الله مخرج ما تحذرون... .. | ٦٤ | م | التوبة | ٩ |
| **اسْتُهْزِئَ** : ولقد استهزئ برسل من قبلك فحاق بالذين سخروا (٣) منهم ما كانوا به يستهزءون ... ... ... ... | ١٠ | ك | الأنعام | ٦ |
| ولقد استهزئ برسل من قبلك فأمليت للذين كفروا | ٣٢ | م | الرعد | ١٣ |
| ولقد استهزئ برسل من قبلك فحاق بالذين سخروا منهم ما كانوا به يستهزءون ... ... ... ... ... | ٤١ | ك | الأنبياء | ٢١ |
| **يُسْتَهْزَأُ** : إذا سمعتم آيات الله يكفر بها ويستهزأ بها فلا تقعدوا معهم | ١٤٠ | ك | النساء | ٤ |
| **مُسْتَهْزِءُونَ** : قالوا إنا معكم إنما نحن مستهزءون... ... ... | ١٤ | م | البقرة | ٢ |
| **المُسْتَهْزِئِينَ** : إنا كفيناك المستهزءين ... ... ... ... | ٩٥ | ك | الحجر | ١٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| هُزُوًا: | قالوا أتتخذنا هزوا قال أعوذ بالله أن أكون من الجاهلين | ٦٧ | م البقرة | ٢ |
| (١١) | ولا تتخذوا آيات الله هزوا... ... ... ... ... ... | ٢٣١ | م » | ٢ |
| | لا تتخذوا الذين اتخذوا دينكم هزوا ولعبا من الذين أوتوا الكتاب من قبلكم والكفار أولياء... ... | ٥٧ | م المائدة | ٥ |
| | وإذا ناديتم إلى الصلاة اتخذوها هزوا ولعبا ... ... | ٥٨ | م » | ٥ |
| | واتخذوا آياتي وما أنذروا هزوا... ... ... ... ... | ٥٦ | ك الكهف | ١٨ |
| | ذلك جزاؤهم جهنم بما كفروا واتخذوا آياتي ورسلي هزوا | ١٠٦ | ك » | ١٨ |
| | وإذا رآك الذين كفروا إن يتخذونك إلا هزوا ... | ٣٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وإذا رأوك إن يتخذونك إلا هزوا ... ... ... ... | ٤١ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ليضل عن سبيل الله بغير علم ويتخذها هزوا ... ... | ٦ | ك لقمان | ٣١ |
| | وإذا علم من آياتنا شيئا اتخذها هزوا أولئك لهم عذاب مهين | ٩ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | ذلكم بأنكم اتخذتم آيات الله هزوا وغرتكم الحياة الدنيا | ٣٥ | ك » | ٤٥ |
| هُزِّي: | وهزي إليك بجذع النخلة تساقط عليك رطبا جنيا | ٢٥ | ك مريم | ١٩ |
| اهْتَزَّتْ: | فإذا أنزلنا عليها الماء اهتزت وربت ... ... ... | ٥ | م الحج | ٢٢ |
| (٢) | فإذا أنزلنا عليها الماء اهتزت وربت ... ... ... ... | ٣٩ | ك فصلت | ٤١ |
| تَهْتَزُّ: | وألق عصاك فلما رآها تهتز كأنها جان ولى مدبرا ولم يعقب | ١٠ | ك النمل | ٢٧ |
| (٢) | وأن ألق عصاك فلما رآها تهتز كأنها جان ولى مدبرا | ٣١ | ك القصص | ٢٨ |
| بِالْهَزْلِ: | إنه لقول فصل . وما هو بالهزل ... ... ... ... | ١٤ | ك الطارق | ٨٦ |
| هَزَمُوهُمْ: | فهزموهم بإذن الله وقتل داود جالوت ... | ٢٥١ | م البقرة | ٢ |
| سَيُهْزَمُ: | سيهزم الجمع ويولون الدبر ... ... ... ... ... | ٤٥ | م القمر | ٥٤ |
| مَهْزُومٌ: | جند ما هنالك مهزوم من الأحزاب ... ... ... | ١١ | ك ص | ٣٨ |
| أَهُشُّ: | قال هي عصاي أتوكأ عليها وأهش بها على غنمي ... | ١٨ | ك طه | ٢٠ |
| كَهَشِيمِ: | إنا أرسلنا عليهم صيحة واحدة فكانوا كهشيم المحتظر | ٣١ | ك القمر | ٥٤ |
| هَشِيمًا: | فاختلط به نبات الأرض فأصبح هشيما تذروه الرياح | ٤٥ | ك الكهف | ١٨ |
| هَضْمًا: | فلا يخاف ظلما ولا هضما ... ... ... ... ... | ١١٢ | ك طه | ٢٠ |
| هَضِيمٌ: | في جنات وعيون . وزروع ونخل طلعها هضيم ... | ١٤٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| مُهْطِعِينَ: | مهطعين مقنعي رءوسهم لا يرتد إليهم طرفهم | ٤٣ | ك إبراهيم | ١٤ |
| (٣) | مهطعين إلى الداع يقول الكافرون هذا يوم عسر ... | ٨ | ك القمر | ٥٤ |
| | فمال الذين كفروا قبلك مهطعين ... ... ... ... | ٣٦ | ك المعارج | ٧٠ |
| هَلُوعًا: | إن الإنسان خلق هلوعا . إذا مسه الشر جزوعا ... | ١٩ | ك » | ٧٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| هَلَكَ: | إن امرؤ هلك ليس له ولد وله أخت فلها نصف ما ترك | ١٧٦ | م النساء | ٤ |
| (٤) | ليهلك من هلك عن بينة ويحيى من حي عن بينة ... | ٤٢ | م الأنفال | ٨ |
| | حتى إذا هلك قلتم لن يبعث الله من بعده رسولا ... | ٣٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | هلك عني سلطانيه ... ... ... ... ... ... ... | ٢٩ | ك الحاقة | ٦٩ |
| لِيَهْلِكَ: | ليهلك من هلك عن بينة ويحيى من حي عن بينة | ٤٢ | م الأنفال | ٨ |
| أَهْلَكَ: | أولم يعلم أن الله قد أهلك من قبله من القرون من | | | |
| (٢) | هو أشد منه قوة ... ... ... ... ... ... ... | ٧٨ | ك القصص | ٢٨ |
| | وأنه أهلك عادا الأولى... ... ... ... ... ... | ٥٠ | ك النجم | ٥٣ |
| أَهْلَكْتُ: | يقول أهلكت مالا لبدا ... ... ... ... ... | ٦ | ك البلد | ٩٠ |
| أَهْلَكْتَهُ: | أصابت حرث قوم ظلموا أنفسهم فأهلكته ... | ١١٧ | م آل عمران | ٣ |
| أَهْلَكْتَهُمْ: | قال رب لو شئت أهلكتهم من قبل وإياي | ١٥٥ | ك الأعراف | ٧ |
| أَهْلَكْنَا: | ألم يروا كم أهلكنا من قبلهم من قرن مكناهم | | | |
| (١٨) | في الأرض ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك الأنعام | ٦ |
| | ولقد أهلكنا القرون من قبلكم لما ظلموا ... ... ... | ١٣ | ك يونس | ١٠ |
| | وما أهلكنا من قرية إلا ولها كتاب معلوم ... ... | ٤ | ك الحجر | ١٥ |
| | وكم أهلكنا من القرون من بعد نوح ... ... ... ... | ١٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وكم أهلكنا قبلهم من قرن هم أحسن أثاثا ورئيا ... | ٧٤ | ك مريم | ١٩ |
| | وكم أهلكنا قبلهم من قرن هل تحس منهم من أحد... | ٩٨ | ك » | ١٩ |
| | أفلم يهد لهم كم أهلكنا قبلهم من القرون ... ... ... | ١٢٨ | ك طه | ٢٠ |
| | ثم صدقناهم الوعد فأنجيناهم ومن نشاء وأهلكنا المسرفين | ٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وما أهلكنا من قرية إلا لها منذرون ... ... ... | ٢٠٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | ولقد آتينا موسى الكتاب من بعد ما أهلكنا القرون الأولى بصائر للناس ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | وكم أهلكنا من قرية بطرت معيشتها ... ... ... ... | ٥٨ | ك » | ٢٨ |
| | أولم يهد لهم كم أهلكنا من قبلهم من القرون ... ... | ٢٦ | ك السجدة | ٣٢ |
| | ألم يروا كم أهلكنا قبلهم من القرون أنهم إليهم لا يرجعون | ٣١ | ك يس | ٣٦ |
| | كم أهلكنا من قبلهم من قرن فنادوا ولات حين مناص | ٣ | ك ص | ٣٨ |
| | فأهلكنا أشد منهم بطشا ومضى مثل الأولين ... ... | ٨ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ولقد أهلكنا ما حولكم من القرى وصرفنا الآيات | ٢٧ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | وكم أهلكنا قبلهم من قرن هم أشد منهم بطشا ... ... | ٣٦ | ك ق | ٥٠ |
| | ولقد أهلكنا أشياعكم فهل من مدكر... ... ... | ٥١ | ك القمر | ٥٤ |
| أَهْلَكْنَاهَا: | وكم من قرية أهلكناها... ... ... ... ... | ٤ | ك الأعراف | ٧ |
| (٤) | ما آمنت قبلهم من قرية أهلكناها أفهم يؤمنون ... | ٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وحرام على قرية أهلكناها أنهم لا يرجعون ... ... | ٩٥ | ك » | ٢١ |
| | فكأين من قرية أهلكناها وهي ظالمة فهي خاوية على عروشها ... ... ... ... ... ... | ٤٥ | م الحج | ٢٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَهْلَكْنَاهُمْ | : فأهلكناهم بذنوبهم وأنشأنا من بعدهم قرنا آخرين | ٦ | ك الأنعام | ٦ |
| (٧) | كذبوا بآيات ربهم فأهلكناهم بذنوبهم وأغرقنا آل فرعون | ٥٤ | م الأنفال | ٨ |
| | وتلك القرى أهلكناهم لما ظلموا وجعلنا لمهلكهم موعدا | ٥٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | ولو أنا أهلكناهم بعذاب من قبله لقالوا ربنا لولا أرسلت | | | |
| | إلينا رسولا ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٣٤ | ك طـه | ٢٠ |
| | فكذبوه فأهلكناهم إن فى ذلك لآية ... ... ... ... | ١٣٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | أهلكناهم إنهم كانوا مجرمين ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك الدخان | ٤٤ |
| | أهلكناهم فلا ناصر لهم ... ... ... ... ... ... | ١٣ | م محمد | ٤٧ |
| أَهْلَكَنِيَ | : قل أرأيتم إن أهلكنى الله ومن معى أو رحمنا | | | |
| | فمن يجير الكافرين من عذاب أليم ... ... ... | ٢٨ | ك الملك | ٦٧ |
| تُهْلِكُنَا | : أتهلكنا بما فعل السفهاء منا إن هى إلا فتنتك ... | ١٥٥ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | أفتهلكنا بما فعل المبطلون ... ... ... ... ... | ١٧٣ | ك « | ٧ |
| نُهْلِكَ | : وإذا أردنا أن نهلك قرية أمرنا مترفيها ففسقوا فيها | ١٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٢) | ألم نهلك الأولين . ثم نتبعهم الآخرين ... ... ... | ١٦ | ك المرسلات | ٧٧ |
| لَنُهْلِكَنَّ | : فأوحى إليهم ربهم لنهلكن الظالمين... ... ... | ١٣ | ك إبراهيم | ١٤ |
| يُهْلِكَ | : وإذا تولى سعى فى الأرض ليفسد فيها ويهلك | | | |
| (٤) | الحرث والنسل ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠٥ | م البقرة | ٢ |
| | قل فمن يملك من الله شيئا إن أراد أن يهلك المسيح | | | |
| | ابن مريم وأمه... ... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | م المائدة | ٥ |
| | قال عسى ربكم أن يهلك عدوكم ويستخلفكم فى الأرض | ١٢٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | وما كان ربك ليهلك القرى بظلم وأهلها مصلحون ... | ١١٧ | ك هود | ١١ |
| يُهْلِكُنَا | : نموت ونحيا وما يهلكنا إلا الدهر ... ... ... | ٢٤ | ك الجاثية | ٤٥ |
| يُهْلِكُونَ | : وإن يهلكون إلا أنفسهم وما يشعرون ... ... | ٢٦ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | ويحلفون بالله لو استطعنا لخرجنا معكم يهلكون أنفسهم | ٤٢ | م التوبة | ٩ |
| أُهْلِكُوا | : فأما ثمود فأهلكوا بالطاغية ... ... ... ... | ٥ | ك الحاقة | ٦٩ |
| (٢) | وأما عاد فأهلكوا بريح صرصر عاتية... ... ... ... | ٦ | ك « | ٦٩ |
| يُهْلَكُ | : هل يهلك إلا القوم الظالمون ... ... ... ... | ٤٧ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | بلاغ فهل يهلك إلا القوم الفاسقون ... ... ... | ٣٥ | م الأحقاف | ٤٦ |
| هَالِكٌ | : لا إله إلا هو كل شىء هالك إلا وجهه ... ... | ٨٨ | ك القصص | ٢٨ |
| الْهَالِكِينَ | : قالوا تالله تفتؤ تذكر يوسف حتى تكون حرضا | | | |
| | أو تكون من الهالكين... ... ... ... ... ... | ٨٥ | ك يوسف | ١٢ |
| مُهْلِكَ | : ذلك أن لم يكن ربك مهلك القرى بظلم وأهلها غافلون | ١٣١ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | وما كان ربك مهلك القرى حتى يبعث فى أمها رسولا | ٥٩ | ك القصص | ٢٨ |
| مُهْلِكُهُمْ | : لم تعظون قوما الله مهلكهم أو معذبهم عذابا شديدا | ١٦٤ | م الأعراف | ٧ |
| مُهْلِكُوا | : قالوا إنا مهلكوا أهل هذه القرية ... ... ... | ٣١ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| مُهْلِكُوهَا | : وإن من قرية إلا نحن مهلكوها قبل يوم القيامة | ٥٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| مُهْلِكِي | : وما كنا مهلكى القرى إلا وأهلها ظالمون... ... | ٥٩ | ك القصص | ٢٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الْمُهْلَكِينَ | : فكذبوهما فكانوا من المهلكين ... ... ... | ٤٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| مَهْلِكَ | : ثم لنقولن لوليه ما شهدنا مهلك أهله وإنا لصادقون | ٤٩ | ك النمل | ٢٧ |
| لِمَهْلِكِهِمْ | : وجعلنا لمهلكهم موعدا ... ... ... ... ... | ٥٩ | ك الكهف | ١٨ |
| التَّهْلُكَةِ | : وأنفقوا فى سبيل الله ولا تلقوا بأيديكم إلى التهلكة | ١٩٥ | م البقرة | ٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| أُهِلَّ | : إنما حرم عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما أهل به | | | |
| (٤) | لغير الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٧٣ | م « | ٢ |
| | حرمت عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما أهل لغير الله به | ٣ | ك المائدة | ٥ |
| | إلا أن يكون ميتة أو دما مسفوحا أو لحم خنزير فإنه | | | |
| | رجس أو فسقا أهل لغير الله به ... ... ... ... | ١٤٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | إنما حرم عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما أهل لغير الله به | ١١٥ | ك النحل | ١٦ |
| الْأَهِلَّةِ | : يسئلونك عن الأهلة قل هى مواقيت للناس والحج | ١٨٩ | م البقرة | ٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| هَلُمَّ | : قل هلم شهداءكم الذين يشهدون أن الله حرم هذا ... | ١٥٠ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | قد يعلم الله المعوقين منكم والقائلين لإخوانهم هلم إلينا | ١٨ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ✦✦✦ | | | |
| هَامِدَةً | : وترى الأرض هامدة فإذا أنزلنا عليها الماء | | | |
| | اهتزت وربت ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | م الحج | ٢٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| مُنْهَمِرٍ | : ففتحنا أبواب السماء بماء منهمر ... ... ... ... | ١١ | ك القمر | ٥٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| هُمَزَةٍ | : ويل لكل همزة لمزة ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الهمزة | ١٠٤ |
| هَمَّازٍ | : ولا تطع كل حلاف مهين . هماز مشاء بنميم ... ... | ١١ | ك القلم | ٦٨ |
| هَمَزَاتِ | : وقل رب أعوذ بك من همزات الشياطين ... ... | ٩٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ✦✦✦ | | | |
| هَمْسًا | : وخشعت الأصوات للرحمن فلا تسمع إلا همسا ... | ١٠٨ | ك طـه | ٢٠ |
| | ✦✦✦ | | | |
| هَمَّ | : إذ هم قوم أن يبسطوا إليكم أيديهم فكف أيديهم عنكم | ١١ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | ولقد همت به وهم بها لولا أن رأى برهان ربه... ... | ٢٤ | ك يوسف | ١٢ |
| هَمَّتْ | : إذ همت طائفتان منكم أن تفشلا والله وليهما ... | ١٢٢ | م آل عمران | ٣ |
| (٤) | ولولا فضل الله عليك ورحمته لهمت طائفة منهم | | | |
| | أن يضلوك ... ... ... ... ... ... ... ... | ١١٣ | م النساء | ٤ |
| | ولقد همت به وهم بها لولا أن رأى برهان ربه... ... | ٢٤ | ك يوسف | ١٢ |
| | وهمت كل أمة برسولهم ليأخذوه ... ... ... ... | ٥ | ك غافر | ٤٠ |
| هَمُّوا | : ألا تقاتلون قوما نكثوا أيمانهم وهموا بإخراج الرسول | ١٣ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | وكفروا بعد إسلامهم وهموا بما لم ينالوا ... ... | ٧٤ | م « | ٩ |
| أَهَمَّتْهُمْ | : وطائفة قد أهمتهم أنفسهم يظنون بالله غير الحق | ١٥٤ | م آل عمران | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| هَامَانَ | : ونرى فرعون وهامان وجنودهما منهم ما كانوا يحذرون | ٦ | ك القصص | ٢٨ |
| (٦) | إن فرعون وهامان وجنودهما كانوا خاطئين ... ... | ٨ | ك « | ٢٨ |
| | فأوقد لى يا هامان على الطين فاجعل لى صرحا ... ... | ٣٨ | ك « | ٢٨ |
| | وقارون وفرعون وهامان ولقد جاءهم موسى بالبينات | ٣٩ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ولقد أرسلنا موسى بآياتنا وسلطان مبين . إلى فرعون وهامان وقارون فقالوا ساحر كذاب ... ... ... | ٢٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | وقال فرعون يا هامان ابن لى صرحا لعلى أبلغ الأسباب | ٣٦ | ك « | ٤٠ |
| | ✦✦✦ | | | |
| الْمُهَيْمِنُ | : الملك القدوس السلام المؤمن المهيمن ... ... | ٢٣ | م الحشر | ٥٩ |
| مُهَيْمِنًا | : وأنزلنا إليك الكتاب بالحق مصدقا لما بين يديه من الكتاب ومهيمنا عليه ... ... ... ... | ٤٨ | م المائدة | ٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| هُنَالِكَ | : هنالك دعا زكريا ربه ... ... ... ... ... | ٣٨ | م آل عمران | ٣ |
| (٩) | فغلبوا هنالك وانقلبوا صاغرين ... ... ... ... | ١١٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | هنالك تبلو كل نفس ما أسلفت... ... ... ... | ٣٠ | ك يونس | ١٠ |
| | هنالك الولاية لله الحق هو خير ثوابا وخير عقبا ... | ٤٤ | ك الكهف | ١٨ |
| | وإذا ألقوا منها مكانا ضيقا مقرنين دعوا هنالك ثبورا | ١٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | هنالك ابتلى المؤمنون وزلزلوا زلزالا شديدا ... ... | ١١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | جند ما هنالك مهزوم من الأحزاب ... ... ... ... | ١١ | ك ص | ٣٨ |
| | فإذا جاء أمر الله قضى بالحق وخسر هنالك المبطلون | ٧٨ | ك غافر | ٤٠ |
| | سنة الله التى قد خلت فى عباده وخسر هنالك الكافرون | ٨٥ | ك « | ٤٠ |
| | ✦✦✦ | | | |
| هَنِيئًا | : فإن طبن لكم عن شىء منه نفسا فكلوه هنيئا مريئا | ٤ | م النساء | ٤ |
| (٤) | كلوا واشربوا هنيئا بما كنتم تعملون... ... ... ... | ١٩ | ك الطور | ٥٢ |
| | كلوا واشربوا هنيئا بما أسلفتم فى الأيام الخالية ... | ٢٤ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | كلوا واشربوا هنيئا بما كنتم تعملون... ... ... ... | ٤٣ | ك المرسلات | ٧٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| هَادُوا | : إن الذين آمنوا والذين هادوا والنصارى والصابئين | ٦٢ | م البقرة | ٢ |
| (١٠) | من الذين هادوا يحرفون الكلم عن مواضعه ... ... | ٤٦ | م النساء | ٤ |
| | فبظلم من الذين هادوا حرمنا عليهم طيبات أحلت لهم | ١٦٠ | م « | ٤ |
| | ومن الذين هادوا سماعون للكذب ... ... ... ... | ٤١ | م المائدة | ٥ |
| | يحكم بها النبيون الذين أسلموا للذين هادوا ... ... | ٤٤ | م « | ٥ |
| | إن الذين آمنوا والذين هادوا والصابئون والنصارى | ٦٩ | م « | ٥ |
| | وعلى الذين هادوا حرمنا كل ذى ظفر... ... ... ... | ١٤٦ | ك الأنعام | ٦ |
| | وعلى الذين هادوا حرمنا ما قصصنا عليك من قبل ... | ١١٨ | ك النحل | ١٦ |
| | إن الذين آمنوا والذين هادوا والصابئين والنصارى ... | ١٧ | م الحج | ٢٢ |
| | قل يا أيها الذين هادوا إن زعمتم أنكم أولياء لله من دون الناس فتمنوا الموت ... ... ... ... | ٦ | م الجمعة | ٦٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| هُدْنَا | : واكتب لنا فى هذه الدنيا حسنة وفى الآخرة إنا هدنا إليك | ١٥٦ | ك الأعراف | ٧ |
| هُودٌ | : قالوا يا هود ما جئتنا ببينة ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك هود | ١١ |
| (٤) | ألا إن عادا كفروا ربهم ألا بعدا لعاد قوم هود ... | ٦٠ | ك « | ١١ |
| | ويا قوم لا يجرمنكم شقاقى أن يصيبكم مثل ما أصاب قوم نوح أو قوم هود أو قوم صالح ... ... ... | ٨٩ | ك « | ١١ |
| | إذ قال لهم أخوهم هود ألا تتقون ... ... ... ... | ١٢٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| هُودًا | : وقالوا لن يدخل الجنة إلا من كان هودا أو نصارى | ١١١ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | وقالوا كونوا هودا أو نصارى تهتدوا ... ... ... | ١٣٥ | م « | ٢ |
| | أم تقولون إن إبراهيم وإسمعيل وإسحق ويعقوب والأسباط كانوا هودا أو نصارى ... ... ... | ١٤٠ | م « | ٢ |
| | وإلى عاد أخاهم هودا قال يا قوم اعبدوا الله ... | ٦٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | وإلى عاد أخاهم هودا قال يا قوم اعبدوا الله ... | ٥٠ | ك هود | ١١ |
| | ولما جاء أمرنا نجينا هودا والذين آمنوا معه برحمة منا | ٥٨ | ك « | ١١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| فَانْهَارَ | : أم من أسس بنيانه على شفا جرف هار فانهار به فى نار جهنم ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٩ | م التوبة | ٩ |
| هَارٍ | : أم من أسس بنيانه على شفا جرف هار ... ... ... | ١٠٩ | م « | ٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| أَهَانَنِ | : وأما إذا ما ابتلاه فقدر عليه رزقه فيقول ربى أهانن | ١٦ | ك الفجر | ٨٩ |
| يُهِنِ | : ومن يهن الله فما له من مكرم إن الله يفعل ما يشاء | ١٨ | م الحج | ٢٢ |
| هَوْنًا | : وعباد الرحمن الذين يمشون على الأرض هونا ... ... | ٦٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| الْهُونِ | : اليوم تجزون عذاب الهون ... ... ... ... ... | ٩٣ | م الأنعام | ٦ |
| (٤) | أيمسكه على هون أم يدسه فى التراب ... ... ... ... | ٥٩ | ك النحل | ١٦ |
| | فأخذتهم صاعقة العذاب الهون بما كانوا يكسبون ... | ١٧ | ك فصلت | ٤١ |
| | فاليوم تجزون عذاب الهون بما كنتم تستكبرون فى الأرض | ٢٠ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| هَيِّنٌ | : قال ربك هو على هين وقد خلقتك من قبل ولم تك شيئا | ٩ | ك مريم | ١٩ |
| (٢) | قال كذلك قال ربك هو على هين ... ... ... ... | ٢١ | ك « | ١٩ |
| هَيِّنًا | : وتحسبونه هينا وهو عند الله عظيم ... ... ... ... | ١٥ | م النور | ٢٤ |
| أَهْوَنُ | : وهو الذى يبدؤا الخلق ثم يعيده وهو أهون عليه | ٢٧ | ك الروم | ٣٠ |
| مُهِينٌ | : فباءو بغضب على غضب وللكافرين عذاب مهين... | ٩٠ | م البقرة | ٢ |
| (١٠) | إنما نملى لهم ليزدادوا إثما ولهم عذاب مهين... ... | ١٧٨ | م آل عمران | ٣ |
| | ومن يعص الله ورسوله ويتعد حدوده يدخله نارا خالدا فيها وله عذاب مهين ... ... ... ... ... | ١٤ | م النساء | ٤ |
| | والذين كفروا وكذبوا بآياتنا فأولئك لهم عذاب مهين | ٥٧ | م الحج | ٢٢ |
| | ويتخذها هزوا أولئك لهم عذاب مهين ... ... ... | ٦ | ك لقمان | ٣١ |
| | أن لو كانوا يعلمون الغيب ما لبثوا فى العذاب المهين | ١٤ | ك سبأ | ٣٤ |
| | ولقد نجينا بنى إسرائيل من العذاب المهين... ... ... | ٣٠ | ك الدخان | ٤٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مُهِينٌ | : وإذا علم من آياتنا شيئا اتخذها هزوا أولئك لهم عذاب مهين ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك الجاثيـة | ٤٥ |
| | وقد أنزلنا آيات بينات وللكافرين عذاب مهين ... | ٥ | م المجادلة | ٥٨ |
| | اتخذوا أيمانهم جنة فصدوا عن سبيل الله فلهم عذاب مهين | ١٦ | م « | ٥٨ |
| مُهِينًا | : وأعددنا للكافرين عذابا مهينا ... ... ... ... ... | ٣٧ | م النساء | ٤ |
| (٤) | وخذوا حذركم إن الله أعد للكافرين عذابا مهينا ... | ١٠٢ | م « | ٤ |
| | أولئك هم الكافرون حقا وأعتدنا للكافرين عذابا مهينا | ١٥١ | م « | ٤ |
| | لعنهم الله فى الدنيا والآخرة وأعد لهم عذابا مهينا ... | ٥٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| مُهَانًا | : يضاعف له العذاب يوم القيامة ويخلد فيه مهانا... | ٦٩ | م الفرقان | ٢٥ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| هَوَى | : ومن يحلل عليه غضبى فقد هوى ... ... ... ... | ٨١ | ك طـه | ٢٠ |
| (٢) | والنجم إذا هوى . ما ضل صاحبكم وما غوى ... ... | ١ | ك النجـم | ٥٣ |
| تَهْوَى | : أفكلما جاءكم رسول بما لا تهوى أنفسكم استكبرتم | ٨٧ | م البقـرة | ٢ |
| (٣) | كلما جاءهم رسول بما لا تهوى أنفسهم فريقا كذبوا وفريقا يقتلون... ... ... ... ... ... ... | ٧٠ | م المائدة | ٥ |
| | إن يتبعون إلا الظن وما تهوى الأنفس ... ... ... | ٢٣ | ك النجـم | ٥٣ |
| تَهْوِى | : فاجعل أفئدة من الناس تهوى إليهم وارزقهم من الثمرات | ٣٧ | ك إبراهيم | ١٤ |
| (٤) | فتخطفه الطير أو تهوى به الريح فى مكان سحيق ... | ٣١ | م الحـج | ٢٢ |
| أَهْوَى | : والمؤتفكة أهوى . فغشاها ما غشى ... ... ... | ٥٣ | ك النجـم | ٥٣ |
| اسْتَهْوَتْهُ | : كالذى استهوته الشياطين فى الأرض حيران... | ٧١ | ك الأنعام | ٦ |
| الْهَوَى | : فلا تتبعوا الهوى أن تعدلوا ... ... ... ... | ١٣٥ | م النساء | ٤ |
| (٤) | فاحكم بين الناس بالحق ولا تتبع الهوى فيضلك عن سبيل الله | ٢٦ | ك ص | ٣٨ |
| | وما ينطق عن الهوى . إن هو إلا وحى يوحى ... | ٣ | ك النجـم | ٥٣ |
| | وأما من خاف مقام ربه ونهى النفس عن الهوى . فإن الجنة هى المأوى ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك النازعات | ٧٩ |
| هَوَاهُ | : ولو شئنا لرفعناه بها ولكنه أخلد إلى الأرض واتبع هواه | ١٧٦ | ك الأعراف | ٧ |
| (٦) | ولا تطع من أغفلنا قلبه عن ذكرنا واتبع هواه ... | ٢٨ | م الكهف | ١٨ |
| | فلا يصدنك عنها من لا يؤمن بها واتبع هواه فتردى | ١٦ | ك طـه | ٢٠ |
| | أرأيت من اتخذ إلهه هواه أفأنت تكون عليه وكيلا | ٤٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ومن أضل ممن اتبع هواه بغير هدى من الله ... ... | ٥٠ | ك القصص | ٢٨ |
| | أفرأيت من اتخذ إلهه هواه وأضله الله على علم... ... | ٢٣ | ك الجاثيـة | ٤٥ |
| أَهْوَاءَ | : ولا تتبعوا أهواء قوم قد ضلوا من قبل وأضلوا كثيرا | ٧٧ | م المائدة | ٥ |
| (٣) | ولا تتبع أهواء الذين كذبوا بآياتنا ... ... ... ... | ١٥٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | فاتبعها ولا تتبع أهواء الذين لا يعلمون ... ... ... | ١٨ | ك الجاثيـة | ٤٥ |
| أَهْوَاءَكُمْ | : قل لا أتبع أهواءكم قد ضللت إذا وما أنا من المهتدين | ٥٦ | ك الأنعام | ٦ |
| أَهْوَاءَهُمْ (١٢) | : ولئن اتبعت أهواءهم بعد الذى جاءك من العلم ما لك من الله من ولى ولا نصير .. ... ... ... | ١٢٠ | م البقـرة | ٢ |
| أَهْوَاءَهُمْ | : ولئن اتبعت أهواءهم من بعد ما جاءك من العلم إنك إذا لمن الظالمين ... ... ... ... ... ... | ١٤٥ | م البقـرة | ٢ |
| | ولا تتبع أهواءهم عما جاءك من الحق... ... ... ... | ٤٨ | م المائدة | ٥ |
| | وأن احكم بينهم بما أنزل الله ولا تتبع أهواءهم ... | ٤٩ | م « | ٥ |
| | ولئن اتبعت أهواءهم بعد ما جاءك من العلم ما لك من الله من ولى ولا واق ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | م الرعـد | ١٣ |
| | ولو اتبع الحق أهواءهم لفسدت السموات والأرض ومن فيهن ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فإن لم يستجيبوا لك فاعلم أنما يتبعون أهواءهم... ... | ٥٠ | ك القصص | ٢٨ |
| | بل اتبع الذين ظلموا أهواءهم بغير علم... ... ... ... | ٢٩ | ك الـروم | ٣٠ |
| | فلذلك فادع واستقم كما أمرت ولا تتبع أهواءهم ... | ١٥ | ك الشورى | ٤٢ |
| | أفمن كان على بينة من ربه كمن زين له سوء عمله واتبعوا أهواءهم ... ... ... ... ... ... | ١٤ | م محمـد | ٤٧ |
| | أولئك الذين طبع الله على قلوبهم واتبعوا أهواءهم | ١٦ | م « | ٤٧ |
| | وكذبوا واتبعوا أهواءهم وكل أمر مستقر... ... ... | ٣ | ك القمـر | ٥٤ |
| بِأَهْوَائِهِمْ | : وإن كثيرا ليضلون بأهوائهم بغير علم ... ... | ١١٩ | ك الأنعام | ٦ |
| هَوَاءٌ | : لا يرتد إليهم طرفهم وأفئدتهم هواء ... ... ... | ٤٣ | ك إبراهيم | ١٤ |
| هَاوِيَةٌ | : وأما من خفت موازينه . فأمه هاوية ... ... | ٩ | ك القارعة | ١٠١ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يُهَيِّئْ | : ينشر لكم ربكم من رحمته ويهيئ لكم من أمركم مرفقا | ١٦ | ك الكهف | ١٨ |
| هَيِّئْ | : ربنا آتنا من لدنك رحمة وهيئ لنا من أمرنا رشدا | ١٠ | ك « | ١٨ |
| كَهَيْئَةِ | : أنى أخلق لكم من الطين كهيئة الطير فأنفخ فيه | ٤٩ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | وإذ تخلق من الطين كهيئة الطير بإذنى ... ... ... | ١١٠ | م المائدة | ٥ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| هَيْتَ | : وغلقت الأبواب وقالت هيت لك... ... ... ... | ٢٣ | ك يوسف | ١٢ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَهِيجُ | : ثم يهيج فتراه مصفرا ثم يجعله حطاما ... ... ... | ٢١ | ك الزمر | ٣٩ |
| (٢) | ثم يهيج فتراه مصفرا ثم يكون حطاما... ... ... ... | ٢٠ | م الحديد | ٥٧ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مَهِيلًا | : يوم ترجف الأرض والجبال وكانت الجبال كثيبا مهيلا | ١٤ | ك المزمل | ٧٣ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَهِيمُونَ | : ألم تر أنهم فى كل واد يهيمون ... ... ... ... | ٢٢٥ | م الشعراء | ٢٦ |
| الْهِيمِ | : فشاربون عليه من الحميم . فشاربون شرب الهيم ... | ٥٥ | ك الواقعة | ٥٦ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| هِيَهْ | : وأما من خفت موازينه . فأمه هاوية . وما أدراك ما هيه | ١٠ | ك القارعة | ١٠١ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| هَيْهَاتَ | : هيهات ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٢) | هيهات لما توعدون ... ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك « | ٢٣ |

# باب الواو

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **الْمَوْءُودَةُ** | : وإذا الموءودة سئلت . بأى ذنب قتلت ... | ٨ | ك التكوير | ٨١ |
| **مَوْئِلًا** | : بل لهم موعد لن يجدوا من دونه موئلا ... ... ... | ٥٨ | ك الكهف | ١٨ |
| **وَأَوْبَارِهَا** | : ومن أصوافها وأوبارها وأشعارها أثاثا ... ... | ٨٠ | ك النحل | ١٦ |
| **يُوبِقْهُنَّ** | : أو يوبقهن بما كسبوا ويعف عن كثير ... | ٣٤ | ك الشورى | ٤٢ |
| **مَوْبِقًا** | : فدعوهم فلم يستجيبوا لهم وجعلنا بينهم موبقا ... | ٥٢ | ك الكهف | ١٨ |
| **وَابِلٌ** | : فتله كمثل صفوان عليه تراب فأصابه وابل فتركه صلدا | ٢٦٤م | البقرة | ٢ |
| (٣) | كمثل جنة بربوة أصابها وابل فآتت أكلها ضعفين ... | ٢٦٥م | » | ٢ |
| | فإن لم يصبها وابل فطل والله بما تعملون بصير ... | ٢٦٥م | » | ٢ |
| **وَبَالَ** | : أو عدل ذلك صياما ليذوق وبال أمره ... ... .. | ٩٥ | م المائدة | ٥ |
| (٤) | ذاقوا وبال أمرهم ولهم عذاب أليم ... ... ... | ١٥ | م الحشر | ٥٩ |
| | ألم يأتكم نبأ الذين كفروا من قبل فذاقوا وبال أمرهم | ٥ | م التغابن | ٦٤ |
| | فذاقت وبال أمرها وكان عاقبة أمرها خسرا ... ... | ٩ | م الطلاق | ٦٥ |
| **وَبِيلًا** | : فعصى فرعون الرسول فأخذناه أخذا وبيلا ... ... | ١٦ | ك المزمل | ٧٣ |
| **الْأَوْتَادِ** | : كذبت قبلهم قوم نوح وعاد وفرعون ذو الأوتاد | ١٢ | ك ص | ٣٨ |
| (٢) | وفرعون ذى الأوتاد . الذين طغوا فى البلاد ... ... | ١٠ | ك الفجر | ٨٩ |
| **أَوْتَادًا** | : ألم نجعل الأرض مهادا . والجبال أوتادا ... ... | ٧ | ك النبأ | ٧٨ |
| **يَتِرَكُمْ** | : والله معكم ولن يتركم أعمالكم ... ... ... ... | ٣٥ | م محمد | ٤٧ |
| **تَتْرَا** | : ثم أرسلنا رسلنا تترا كل ما جاء أمة رسولها كذبوه ... | ٤٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| **وَالْوَتْرِ** | : والفجر . وليال عشر . والشفع والوتر ... ... ... | ٣ | ك الفجر | ٨٩ |
| **الْوَتِينَ** | : لأخذنا منه باليمين . ثم لقطعنا منه الوتين ... ... | ٤٦ | ك الحاقة | ٦٩ |
| **وَاثَقَكُمْ** | : واذكروا نعمة الله عليكم وميثاقه الذى واثقكم به | ٧ | م المائدة | ٥ |
| **يُوثِقُ** | : فيومئذ لا يعذب عذابه أحد . ولا يوثق وثاقه أحد | ٢٦ | ك الفجر | ٨٩ |
| **الْوَثَاقَ** | : حتى إذا أثخنتموهم فشدوا الوثاق ... ... ... | ٤ | م محمد | ٤٧ |
| **وَثَاقَهُ** | : فيومئذ لا يعذب عذابه أحد . ولا يوثق وثاقه أحد | ٢٦ | ك الفجر | ٨٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **الْوُثْقَى** | : فمن يكفر بالطاغوت ويؤمن بالله فقد استمسك | | | |
| (٢) | بالعروة الوثقى ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥٦م | البقرة | ٢ |
| | ومن يسلم وجهه إلى الله وهو محسن فقد استمسك | | | |
| | بالعروة الوثقى ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك لقمان | ٣١ |
| **مَوْثِقًا** | : قال لن أرسله معكم حتى تؤتون موثقا من الله | ٦٦ | ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | قال كبيرهم ألم تعلموا أن أباكم قد أخذ عليكم موثقا | | | |
| | من الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨٠ | ك » | ١٢ |
| **مَوْثِقَهُمْ** | : فلما آتوه موثقهم قال الله على ما نقول وكيل ... | ٦٦ | ك » | ١٢ |
| **مِيثَاقَ** | : وإذ أخذنا ميثاق بنى إسرائيل لا تعبدون إلا الله | ٨٣ | م البقرة | ٢ |
| (١٠) | وإذ أخذ الله ميثاق النبيين لما آتيتكم من كتاب وحكمة | ٨١ | م آل عمران | ٣ |
| | وإذ أخذ الله ميثاق الذين أوتوا الكتاب لتبيننه للناس | ١٨٧م | » | ٣ |
| | إلا الذين يصلون إلى قوم بينكم وبينهم ميثاق ... ... | ٩٠ | م النساء | ٤ |
| | وإن كان من قوم بينكم وبينهم ميثاق فدية مسلمة إلى أهله | ٩٢ | م » | ٤ |
| | ولقد أخذ الله ميثاق بنى إسرائيل وبعثنا منهم | | | |
| | اثنى عشر نقيبا ... ... ... ... ... ... ... | ١٢ | م المائدة | ٥ |
| | لقد أخذنا ميثاق بنى إسرائيل وأرسلنا إليهم رسلا | ٧٠ | م » | ٥ |
| | ألم يؤخذ عليهم ميثاق الكتاب أن لا يقولوا على الله | | | |
| | إلا الحق ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٦٩م | الأعراف | ٧ |
| | فعليكم النصر إلا على قوم بينكم وبينهم ميثاق ... ... | ٧٢ | م الأنفال | ٨ |
| | الذين يوفون بعهد الله ولا ينقضون الميثاق ... ... | ٢٠ | م الرعد | ١٣ |
| **مِيثَاقًا** | : وأخذن منكم ميثاقا غليظا ... ... ... ... ... | ٢١ | م النساء | ٤ |
| (٣) | وقلنا لهم لا تعدوا فى السبت وأخذنا منهم ميثاقا غليظا | ١٥٤م | » | ٤ |
| | وأخذنا منهم ميثاقا غليظا ... ... ... ... ... | ٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| **مِيثَاقَكُمْ** | : وإذ أخذنا ميثاقكم ورفعنا فوقكم الطور ... ... | ٦٣ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | وإذ أخذنا ميثاقكم لا تسفكون دماءكم ... ... ... | ٨٤ | م » | ٢ |
| | وإذ أخذنا ميثاقكم ورفعنا فوقكم الطور ... ... ... | ٩٣ | م » | ٢ |
| | وقد أخذ ميثاقكم إن كنتم مؤمنين ... ... ... ... | ٨ | م الحديد | ٥٧ |
| **مِيثَاقَهُ** | : الذين ينقضون عهد الله من بعد ميثاقه ... ... | ٢٧ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | واذكروا نعمة الله عليكم وميثاقه الذى واثقكم به ... | ٧ | م المائدة | ٥ |
| | والذين ينقضون عهد الله من بعد ميثاقه ... .. ... | ٢٥ | م الرعد | ١٣ |
| **مِيثَاقِهِمْ** | : ورفعنا فوقهم الطور بميثاقهم ... ... ... ... | ١٥٤م | النساء | ٤ |
| (٥) | فبما نقضهم ميثاقهم وكفرهم بآيات الله ... ... ... | ١٥٥م | » | ٤ |
| | فبما نقضهم ميثاقهم لعناهم وجعلنا قلوبهم قاسية ... | ١٣ | م المائدة | ٥ |
| | ومن الذين قالوا إنا نصارى أخذنا ميثاقهم ... ... | ١٤ | م » | ٥ |
| | وإذ أخذنا من النبيين ميثاقهم ومنك ومن نوح ... | ٧ | م الأحزاب | ٣٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| الْأَوْثَانِ: | فاجتنبوا الرجس من الأوثان واجتنبوا قول الزور | ٣٠ | م الحج | ٢٢ |
| أَوْثَانًا: | إنما تعبدون من دون الله أوثانا وتخلقون إفكا | ١٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| (٢) | وقال إنما اتخذتم من دون الله أوثانا مودة بينكم في الحياة الدنيا ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك « | ٢٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| وَجَبَتْ: | فإذا وجبت جنوبها فكلوا منها ... ... ... | ٣٦ | م الحج | ٢٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| وَجَدَ: | كلما دخل عليها زكريا المحراب وجد عندها رزقا | ٣٧ | م آل عمران | ٣ |
| (٧) | وجدها تغرب في عين حمئة ووجد عندها قوما ... ... | ٨٦ | م الكهف | ١٨ |
| | وجد من دونهما قوما لا يكادون يفقهون قولا ... | ٩٣ | م « | ١٨ |
| | حتى إذا جاءه لم يجده شيئا ووجد الله عنده فوفاه حسابه | ٣٩ | م النور | ٢٤ |
| | فوجد فيها رجلين يقتتلان هذا من شيعته وهذا من عدوه | ١٥ | ك القصص | ٢٨ |
| | ولما ورد ماء مدين وجد عليه أمة من الناس يسقون | ٢٣ | ك « | ٢٨ |
| | ووجد من دونهم امرأتين تذودان ... ... ... ... | ٢٣ | ك « | ٢٨ |
| فَوَجَدَا: | فوجدا عبدا من عبادنا آتيناه رحمة من عندنا | ٦٥ | ك الكهف | ١٨ |
| (٢) | فوجدا فيها جدارا يريد أن ينقض فأقامه ... ... ... | ٧٧ | ك « | ١٨ |
| وَجَدْتُ: | إني وجدت امرأة تملكهم وأوتيت من كل شيء | ٢٣ | ك النمل | ٢٧ |
| وَجَدْتُمْ: | فهل وجدتم ما وعد ربكم حقا ... ... ... ... | ٤٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | قال أولو جئتكم بأهدى مما وجدتم عليه آباءكم ... ... | ٢٤ | ك الزخرف | ٤٣ |
| وَجَدْتُمُوهُمْ: | فإن تولوا فخذوهم واقتلوهم حيث وجدتموهم | ٨٩ | م النساء | ٤ |
| (٢) | فإذا انسلخ الأشهر الحرم فاقتلوا المشركين حيث وجدتموهم | ٥ | م التوبة | ٩ |
| وَجَدْتُهَا: | وجدتها وقومها يسجدون للشمس من دون الله | ٢٤ | ك النمل | ٢٧ |
| وَوَجَدَكَ: | ووجدك ضالا فهدى ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك الضحى | ٩٣ |
| (٢) | ووجدك عائلا فأغنى ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك « | ٩٣ |
| وَجَدْنَا: | قالوا حسبنا ما وجدنا عليه آباءنا ... ... ... ... | ١٠٤ | م المائدة | ٥ |
| (١٣) | وإذا فعلوا فاحشة قالوا وجدنا عليها آباءنا والله أمرنا بها | ٢٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | ونادى أصحاب الجنة أصحاب النار أن قد وجدنا ما وعدنا ربنا حقا ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك « | ٧ |
| | وما وجدنا لأكثرهم من عهد ... ... ... ... ... | ١٠٢ | ك « | ٧ |
| | وإن وجدنا أكثرهم لفاسقين ... ... ... ... ... | ١٠٢ | ك « | ٧ |
| | قالوا أجئتنا لتلفتنا عما وجدنا عليه آباءنا ... ... ... | ٧٨ | ك يونس | ١٠ |
| | قال معاذ الله أن نأخذ إلا من وجدنا متاعنا عنده | ٧٩ | ك يوسف | ١٢ |
| | قالوا وجدنا آباءنا لها عابدين ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | قالوا بل وجدنا آباءنا كذلك يفعلون ... ... ... ... | ٧٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | قالوا إنا وجدنا آباءنا ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك لقمان | ٣١ |
| | بل قالوا إنا وجدنا آباءنا على أمة وإنا على آثارهم مهتدون | ٢٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | إنا وجدنا آباءنا على أمة وإنا على آثارهم مقتدون | ٢٣ | ك « | ٤٣ |
| | فما وجدنا فيها غير بيت من المسلمين ... ... ... ... | ٣٦ | ك الذاريات | ٥١ |
| وَجَدْنَاهُ: | إنا وجدناه صابرا نعم العبد إنه أواب ... ... ... | ٤٤ | ك ص | ٣٨ |
| وَجَدْنَاهَا: | وأنا لمسنا السماء فوجدناها ملئت حرسا شديدا وشهبا | ٨ | ك الجن | ٧٢ |
| وَجَدَهَا: | حتى إذا بلغ مغرب الشمس وجدها تغرب في عين حمئة | ٨٦ | م الكهف | ١٨ |
| (٢) | وجدها تطلع على قوم لم نجعل لهم من دونها سترا ... | ٩٠ | م « | ١٨ |
| وَجَدُوا: | ولو أنهم إذ ظلموا أنفسهم جاءوك فاستغفروا الله | | | |
| (٤) | واستغفر لهم الرسول لوجدوا الله توابا رحيما ... | ٦٤ | م النساء | ٤ |
| | ولو كان من عند غير الله لوجدوا فيه اختلافا كثيرا | ٨٢ | م « | ٤ |
| | ولما فتحوا متاعهم وجدوا بضاعتهم ردت إليهم ... | ٦٥ | ك يوسف | ١٢ |
| | ووجدوا ما عملوا حاضرا ولا يظلم ربك أحدا ... ... | ٤٩ | ك الكهف | ١٨ |
| أَجِدُ: | قل لا أجد في ما أوحي إلي محرما على طاعم يطعمه | | | |
| (٥) | إلا أن يكون ميتة أو دما مسفوحا ... ... ... | ١٤٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | ولا على الذين إذا ما أتوك لتحملهم قلت لا أجد ما أحملكم عليه ... ... ... ... ... ... ... | ٩٢ | م التوبة | ٩ |
| | ولما فصلت العير قال أبوهم إني لأجد ريح يوسف ... | ٩٤ | ك يوسف | ١٢ |
| | لعلي آتيكم منها بقبس أو أجد على النار هدى ... ... | ١٠ | ك طه | ٢٠ |
| | قل إني لن يجيرني من الله أحد ولن أجد من دونه ملتحدا | ٢٢ | ك الجن | ٧٢ |
| لَأَجِدَنَّ: | ولئن رددت إلى ربي لأجدن خيرا منها منقلبا ... | ٣٦ | ك الكهف | ١٨ |
| تَجِدُ: | يوم تجد كل نفس ما عملت من خير محضرا ... ... | ٣٠ | م آل عمران | ٣ |
| (١٧) | أولئك الذين لعنهم الله ومن يلعن الله فلن تجد له نصيرا | ٥٢ | م النساء | ٤ |
| | ومن يضلل الله فلن تجد له سبيلا ... ... ... ... | ٨٨ | م « | ٤ |
| | ومن يضلل الله فلن تجد له سبيلا ... ... ... ... | ١٤٣ | م « | ٤ |
| | إن المنافقين في الدرك الأسفل من النار ولن تجد لهم نصيرا | ١٤٥ | م « | ٤ |
| | ولا تجد أكثرهم شاكرين ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | ثم لا تجد لك علينا نصيرا ... ... ... ... ... ... | ٧٥ | م الإسراء | ١٧ |
| | سنة من قد أرسلنا قبلك من رسلنا ولا تجد لسنتنا تحويلا | ٧٧ | م « | ١٧ |
| | ثم لا تجد لك به علينا وكيلا ... ... ... ... ... ... | ٨٦ | ك « | ١٧ |
| | ومن يهد الله فهو المهتد ومن يضلل فلن تجد لهم أولياء من دونه ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩٧ | ك « | ١٧ |
| | ومن يضلل فلن تجد له وليا مرشدا ... ... ... ... | ١٧ | ك الكهف | ١٨ |
| | ولن تجد من دونه ملتحدا ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك « | ١٨ |
| | سنة الله في الذين خلوا من قبل ولن تجد لسنة الله تبديلا | ٦٢ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | فهل ينظرون إلا سنة الأولين فلن تجد لسنة الله تبديلا | ٤٣ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ولن تجد لسنة الله تحويلا ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك « | ٣٥ |
| | سنة الله التي قد خلت من قبل ولن تجد لسنة الله تبديلا | ٢٣ | م الفتح | ٤٨ |
| | لا تجد قوما يؤمنون بالله واليوم الآخر يوادون من حاد الله ورسوله ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| لَتَجِدَنَّ: | لتجدن أشد الناس عداوة للذين آمنوا اليهود | | | |
| (٢) | والذين أشركوا ... ... ... ... ... ... | ٨٢ | م المائدة | ٥ |
| | ولتجدن أقربهم مودة للذين آمنوا الذين قالوا إنا نصارى | ٨٢ | م « | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| لَتَجِدَنَّهُمْ | : ولتجدنهم أحرص الناس على حياة ... ... ... | ٩٦ | م البقـرة | ٢ |
| سَتَجِدُنِي | : قال ستجدني إن شاء الله صابرا ولا أعصي لك أمرا | ٦٩ | ك الكهف | ١٨ |
| (٣) | وما أريد أن أشق عليك ستجدني إن شاء الله من الصالحين | ٢٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | قال يأبت افعل ما تؤمر ستجدني إن شاء الله من الصابرين | ١٠٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| تَجِدُوا | : وإن كنتم على سفر ولم تجدوا كاتبا فرهان مقبوضة | ٢٨٣ | م البقـرة | ٢ |
| (٧) | أو لامستم النساء فلم تجدوا ماء فتيمموا صعيدا طيبا | ٤٣ | م النسـاء | ٤ |
| | أو لامستم النساء فلم تجدوا ماء فتيمموا صعيدا طيبا | ٦ | م المائدة | ٥ |
| | ثم لا تجدوا لكم وكيلا ... ... ... ... ... ... | ٦٨ | ك الإسـراء | ١٧ |
| | فيغرقكم بما كفرتم ثم لا تجدوا لكم علينا به تبيعا ... | ٦٩ | ك « | ١٧ |
| | فإن لم تجدوا فيها أحدا فلا تدخلوها حتى يؤذن لكم | ٢٨ | م النـور | ٢٤ |
| | ذلكم خير لكم وأطهر فإن لم تجدوا فإن الله غفور رحيم | ١٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| سَتَجِدُونَ | : ستجدون آخرين يريدون أن يأمنوكم ... ... | ٩١ | م النسـاء | ٤ |
| تَجِدُوهُ | : وما تقدموا لأنفسكم من خير تجدوه عند الله ... | ١١٠ | م البـقرة | ٢ |
| (٢) | وما تقدموا لأنفسكم من خير تجدوه عند الله هو خيرا | ٢٠ | م المـزمل | ٧٣ |
| تَجِدْ | : ولقد عهدنا إلى آدم من قبل فنسي ولم نجد له عزما | ١١٥ | ك طـه | ٢٠ |
| يَجِدْ | : فمن لم يجد فصيام ثلاثة أيام في الحج وسبعة إذا رجعتم | ١٩٦ | م البقـرة | ٢ |
| (٨) | فمن لم يجد فصيام شهرين متتابعين توبة من الله ... | ٩٢ | م النسـاء | ٤ |
| | ومن يهاجر في سبيل الله يجد في الأرض مراغما كثيرا وسعة | ١٠٠ | م « | ٤ |
| | ومن يعمل سوءا أو يظلم نفسه ثم يستغفر الله يجد الله غفورا رحيما ... ... ... ... ... ... ... | ١١٠ | م « | ٤ |
| | من يعمل سوءا يجز به ولا يجد له من دون الله وليا ولا نصيرا | ١٢٣ | م « | ٤ |
| | فمن لم يجد فصيام ثلاثة أيام ذلك كفارة أيمانكم إذا حلفتم | ٨٩ | م المائدة | ٥ |
| | فمن لم يجد فصيام شهرين متتابعين من قبل أن يتماسا | ٤ | م المجادلة | ٥٨ |
| | فمن يستمع الآن يجد له شهابا رصدا ... ... ... ... | ٩ | ك الجن | ٧٢ |
| يَجِدْكَ | : ألم يجدك يتيما فآوى ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك الضحى | ٩٣ |
| يَجِدْهُ | : حتى إذا جاءه لم يجده شيئا ووجد الله عنده فوفاه حسابه | ٣٩ | م النـور | ٢٤ |
| يَجِدُوا | : ثم لا يجدوا في أنفسهم حرجا مما قضيت ويسلموا تسليما | ٦٥ | م النسـاء | ٤ |
| (٦) | تولوا وأعينهم تفيض من الدمع حزنا ألا يجدوا ما ينفقون | ٩٢ | م التـوبة | ٩ |
| | قاتلوا الذين يلونكم من الكفار وليجدوا فيكم غلظة ... | ١٢٣ | م « | ٩ |
| | فظنوا أنهم مواقعوها ولم يجدوا عنها مصرفا ... ... | ٥٣ | ك الكهف | ١٨ |
| | بل لهم موعد لن يجدوا من دونه موئلا ... ... ... | ٥٨ | ك « | ١٨ |
| | أغرقوا فأدخلوا نارا فلم يجدوا لهم من دون الله أنصارا | ٢٥ | ك نـوح | ٧١ |
| يَجِدُونَ | : أولئك مأواهم جهنم ولا يجدون عنها محيصا ... | ١٢١ | م النسـاء | ٤ |
| (١٠) | فيعذبهم عذابا أليما ولا يجدون لهم من دون الله وليا ولا نصيرا | ١٧٣ | م « | ٤ |
| | لو يجدون ملجأ أو مغارات أو مدخلا لولوا إليه | ٥٧ | م التـوبة | ٩ |
| | والذين لا يجدون إلا جهدهم فيسخرون منهم سخر الله منهم | ٧٩ | م « | ٩ |
| | ولا على الذين لا يجدون ما ينفقون حرج إذا نصحوا لله ورسوله ... ... ... ... ... ... | ٩١ | م « | ٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَجِدُونَ | : وليستعفف الذين لا يجدون نكاحا حتى يغنيهم الله من فضله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٣ | م النـور | ٢٤ |
| | ولا يجدون لهم من دون الله وليا ولا نصيرا ... ... | ١٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | خالدين فيها أبدا لا يجدون وليا ولا نصيرا ... ... | ٦٠ | م « | ٣٣ |
| | ثم لا يجدون وليا ولا نصيرا ... ... ... ... ... | ٢٢ | م الفتـح | ٤٨ |
| | ولا يجدون في صدورهم حاجة مما أوتوا ... ... ... | ٩ | م الحشـر | ٥٩ |
| يَجِدُونَهُ | : الذين يتبعون الرسول النبي الأمي الذي يجدونه مكتوبا عندهم في التوراة والإنجيل ... ... ... | ١٥٧ | ك الأعراف | ٧ |
| وُجِدَ | : قالوا جزاؤه من وجد في رحله فهو جزاؤه... ... ... | ٧٥ | ك يوسف | ١٢ |
| وُجْدِكُمْ | : أسكنوهن من حيث سكنتم من وجدكم ولا تضاروهن | ٦ | م الطـلاق | ٦٥ |
| أَوْجَسَ | : فلما رأى أيديهم لا تصل إليه نكرهم وأوجس منهم خيفة... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٠ | ك هـود | ١١ |
| (٣) | فأوجس في نفسه خيفة موسى ... ... ... ... ... | ٦٧ | ك طـه | ٢٠ |
| | فأوجس منهم خيفة قالوا لا تخف وبشروه بغلام عليم | ٢٨ | ك الذاريات | ٥١ |
| أَوْجَفْتُمْ | : وما أفاء الله على رسوله منهم فما أوجفتم عليه من خيل ولا ركاب ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | م الحشـر | ٥٩ |
| وَاجِفَةٌ | : قلوب يومئذ واجفة . أبصارها خاشعة... ... | ٨ | ك النازعات | ٧٩ |
| وَجِلَتْ | : إنما المؤمنون الذين إذا ذكر الله وجلت قلوبهم | ٢ | م الأنفـال | ٨ |
| (٢) | الذين إذا ذكر الله وجلت قلوبهم والصابرين على ما أصابهم | ٣٥ | م الحـج | ٢٢ |
| تَوْجَلْ | : قالوا لا توجل إنا نبشرك بغلام عليم ... ... ... | ٥٣ | ك الحجـر | ١٥ |
| وَجِلُونَ | : إذ دخلوا عليه فقالوا سلاما قال إنا منكم وجلون | ٥٢ | ك « | ١٥ |
| وَجِلَةٌ | : والذين يؤتون ما آتوا وقلوبهم وجلة أنهم إلى ربهم راجعون... ... ... ... ... ... ... ... | ٦٠ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| وَجَّهْتُ | : إني وجهت وجهي للذي فطر السموات والأرض حنيفا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٩ | ك الأنعـام | ٦ |
| يُوَجِّهْهُ | : وهو كل على مولاه أينما يوجهه لا يأت بخير ... | ٧٦ | ك النحـل | ١٦ |
| تَوَجَّهَ | : ولما توجه تلقاء مدين قال عسى ربي أن يهديني سواء السبيل ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك القصص | ٢٨ |
| وَجْهُ | : ولله المشرق والمغرب فأينما تولوا فثم وجه الله ... | ١١٥ | م البقـرة | ٢ |
| (١١) | وما تنفقون إلا ابتغاء وجه الله ... ... ... ... | ٢٧٢ | م « | ٢ |
| | آمنوا بالذي أنزل على الذين آمنوا وجه النهار واكفروا آخره | ٧٢ | م آل عمران | ٣ |
| | اقتلوا يوسف أو اطرحوه أرضا يخل لكم وجه أبيكم | ٩ | ك يوسـف | ١٢ |
| | اذهبوا بقميصي هذا فألقوه على وجه أبي يأت بصيرا | ٩٣ | ك « | ١٢ |
| | والذين صبروا ابتغاء وجه ربهم وأقاموا الصلاة ... | ٢٢ | م الرعـد | ١٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| وَجْهَ | : ذلك خير للذين يريدون وجه الله ... ... ... ... | ٣٨ | ك الروم | ٣٠ |
| | وما آتيتم من زكاة تريدون وجه الله فأولئك هم المضعفون | ٣٩ | ك « | ٣٠ |
| | ويبقى وجه ربك ذو الجلال والإكرام ... ... ... | ٢٧ | م الرحمن | ٥٥ |
| | إنما نطعمكم لوجه الله لا نريد منكم جزاء ولا شكورا | ٩ | م الإنسان | ٧٦ |
| | وما لأحد عنده من نعمة تجزى . إلا ابتغاء وجه ربه الأعلى | ٢٠ | ك الليل | ٩٢ |
| وَجْهَكَ | : قد نرى تقلب وجهك في السماء فلنولينك قبلة ترضاها | ١٤٤ | م البقرة | ٢ |
| (٧) | فول وجهك شطر المسجد الحرام... ... ... ... ... | ١٤٤ | م « | ٢ |
| | ومن حيث خرجت فول وجهك شطر المسجد الحرام | ١٤٩ | م « | ٢ |
| | ومن حيث خرجت فول وجهك شطر المسجد الحرام | ١٥٠ | م « | ٢ |
| | وأن أقم وجهك للدين حنيفا ولا تكونن من المشركين | ١٠٥ | ك يونس | ١٠ |
| | فأقم وجهك للدين حنيفا... ... ... ... ... ... | ٣٠ | ك الروم | ٣٠ |
| | فأقم وجهك للدين القيم ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك « | ٣٠ |
| وَجْهِهِ | : بلى من أسلم وجهه لله وهو محسن فله أجره عند ربه | ١١٢ | م البقرة | ٢ |
| (١٢) | ومن أحسن دينا ممن أسلم وجهه لله وهو محسن ... | ١٢٥ | م النساء | ٤ |
| | ولا تطرد الذين يدعون ربهم بالغداة والعشي يريدون وجهه | ٥٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | فلما أن جاء البشير ألقاه على وجهه فارتد بصيرا ... | ٩٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | وإذا بشر أحدهم بالأنثى ظل وجهه مسودا وهو كظيم | ٥٨ | ك النحل | ١٦ |
| | واصبر نفسك مع الذين يدعون ربهم بالغداة والعشي | | | |
| | يريدون وجهه ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م الكهف | ١٨ |
| | وإن أصابته فتنة انقلب على وجهه خسر الدنيا والآخرة | ١١ | م الحج | ٢٢ |
| | لا إله إلا هو كل شيء هالك إلا وجهه ... ... ... | ٨٨ | ك القصص | ٢٨ |
| | ومن يسلم وجهه إلى الله وهو محسن فقد استمسك | | | |
| | بالعروة الوثقى ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك لقمان | ٣١ |
| | أفمن يتقي بوجهه سوء العذاب يوم القيامة... ... ... | ٢٤ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وإذا بشر أحدهم بما ضرب للرحمن مثلا ظل وجهه | | | |
| | مسودا وهو كظيم... ... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | أفمن يمشي مكبا على وجهه أهدى أمن يمشي سويا | | | |
| | على صراط مستقيم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | ك الملك | ٦٧ |
| وَجْهَهَا | : ذلك أدنى أن يأتوا بالشهادة على وجهها ... ... | ١٠٨ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | فأقبلت امرأته في صرة فصكت وجهها وقالت عجوز عقيم | ٢٩ | ك الذاريات | ٥١ |
| وَجْهِيَ | : فإن حاجوك فقل أسلمت وجهي لله ومن اتبعن | ٢٠ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | إني وجهت وجهي للذي فطر السموات والأرض حنيفا | ٧٩ | ك الأنعام | ٦ |
| وُجُوهٌ | : يوم تبيض وجوه ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٦ | م آل عمران | ٣ |
| (١٢) | وتسود وجوه ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٦ | م « | ٣ |
| | وإن يستغيثوا يغاثوا بماء كالمهل يشوي الوجوه | ٢٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | وعنت الوجوه للحي القيوم وقد خاب من حمل ظلما | ١١١ | ك طه | ٢٠ |
| | تعرف في وجوه الذين كفروا المنكر ... ... ... ... | ٧٢ | م الحج | ٢٢ |
| | فلما رأوه زلفة سيئت وجوه الذين كفروا... ... ... | ٢٧ | ك الملك | ٦٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| وُجُوهٌ | : وجوه يومئذ ناضرة . إلى ربها ناظرة ... ... ... | ٢٢ | ك القيامة | ٧٥ |
| | ووجوه يومئذ باسرة . تظن أن يفعل بها فاقرة | ٢٤ | ك « | ٧٥ |
| | وجوه يومئذ مسفرة . ضاحكة مستبشرة ... ... ... | ٣٨ | ك عبس | ٨٠ |
| | ووجوه يومئذ عليها غبرة . ترهقها قترة ... ... ... | ٤٠ | ك « | ٨٠ |
| | وجوه يومئذ خاشعة . عاملة ناصبة ... ... ... ... | ٢ | ك الغاشية | ٨٨ |
| | وجوه يومئذ ناعمة . لسعيها راضية ... ... ... ... | ٨ | ك « | ٨٨ |
| وُجُوهًا | : آمنوا بما نزلنا مصدقا لما معكم من قبل أن | | | |
| | نطمس وجوها فنردها على أدبارها ... ... ... ... | ٤٧ | م النساء | ٤ |
| وُجُوهَكُمْ | : وحيث ما كنتم فولوا وجوهكم شطره ... ... ... | ١٤٤ | م البقرة | ٢ |
| (٨) | وحيث ما كنتم فولوا وجوهكم شطره ... ... ... ... | ١٥٠ | م « | ٢ |
| | ليس البر أن تولوا وجوهكم قبل المشرق والمغرب | ١٧٧ | م « | ٢ |
| | فتيمموا صعيدا طيبا فامسحوا بوجوهكم وأيديكم ... | ٤٣ | م النساء | ٤ |
| | إذا قمتم إلى الصلاة فاغسلوا وجوهكم وأيديكم إلى المرافق | ٦ | م المائدة | ٥ |
| | فتيمموا صعيدا طيبا فامسحوا بوجوهكم وأيديكم منه | ٦ | م « | ٥ |
| | وأقيموا وجوهكم عند كل مسجد... ... ... ... ... | ٢٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | فإذا جاء وعد الآخرة ليسوءوا وجوهكم وليدخلوا المسجد | ٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| وُجُوهُهُمْ | : فأما الذين اسودت وجوههم أكفرتم بعد إيمانكم | ١٠٦ | م آل عمران | ٣ |
| (١٧) | وأما الذين ابيضت وجوههم ففي رحمة الله هم فيها خالدون | ١٠٧ | م « | ٣ |
| | ولو ترى إذ يتوفى الذين كفروا الملائكة يضربون | | | |
| | وجوههم وأدبارهم ... ... ... ... ... ... ... | ٥٠ | م الأنفال | ٨ |
| | ولا يرهق وجوههم قتر ولا ذلة ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك يونس | ١٠ |
| | كأنما أغشيت وجوههم قطعا من الليل مظلما... ... | ٢٧ | ك « | ١٠ |
| | سرابيلهم من قطران وتغشى وجوههم النار ... ... | ٥٠ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | ونحشرهم يوم القيامة على وجوههم عميا وبكما وصما | ٩٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| | لو يعلم الذين كفروا حين لا يكفون عن وجوههم النار | ٣٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | تلفح وجوههم النار وهم فيها كالحون... ... ... ... | ١٠٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | الذين يحشرون على وجوههم إلى جهنم أولئك شر مكانا | ٣٤ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ومن جاء بالسيئة فكبت وجوههم في النار... ... ... | ٩٠ | ك النمل | ٢٧ |
| | يوم تقلب وجوههم في النار يقولون يا ليتنا أطعنا الله | | | |
| | وأطعنا الرسولا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ويوم القيامة ترى الذين كذبوا على الله وجوههم مسودة | ٦٠ | ك الزمر | ٣٩ |
| | فكيف إذا توفتهم الملائكة يضربون وجوههم وأدبارهم | ٢٧ | م محمد | ٤٧ |
| | سيماهم في وجوههم من أثر السجود ... ... ... ... | ٢٩ | م الفتح | ٤٨ |
| | يوم يسحبون في النار على وجوههم ذوقوا مس سقر | ٤٨ | ك القمر | ٥٤ |
| | تعرف في وجوههم نضرة النعيم ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك المطففين | ٨٣ |
| وِجْهَةٌ | : ولكل وجهة هو موليها فاستبقوا الخيرات ... ... | ١٤٨ | م البقرة | ٢ |
| وَجِيهًا | : اسمه المسيح عيسى ابن مريم وجيها في الدنيا والآخرة | ٤٥ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | فبرأه الله مما قالوا وكان عند الله وجيها... ... ... | ٦٩ | م الأحزاب | ٣٣ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| | * * * | | |
| وَحْدَهُ: | قالوا أجئتنا لنعبد الله وحده ونذر ما كان يعبد آباؤنا | ك الأعراف | ٧٠ |
| (٦) | وإذا ذكرت ربك فى القرآن وحده ولوا على أدبارهم نفورا | ك الإسراء | ٤٦ |
| | وإذا ذكر الله وحده اشمأزت قلوب الذين لا يؤمنون بالآخرة ... ... ... ... ... ... | ك الزمر | ٤٥ |
| | ذلكم بأنه إذا دعى الله وحده كفرتم ... ... ... | ك غافر | ١٢ |
| | فلما رأوا بأسنا قالوا آمنا بالله وحده... ... ... ... | ك « | ٨٤ |
| | وبدا بيننا وبينكم العداوة والبغضاء أبدا حتى تؤمنوا بالله وحده ... ... ... ... ... ... ... | م الممتحنة | ٤ |
| وَاحِدٌ: | وإذ قلتم يا موسى لن نصبر على طعام واحد ... ... | م البقرة | ٦١ |
| (٢٥) | وإلهكم إله واحد لا إله إلا هو الرحمن الرحيم... ... | م « | ١٦٣ |
| | ولأبويه لكل واحد منهما السدس مما ترك إن كان له ولد | م النساء | ١١ |
| | وله أخ أو أخت فلكل واحد منهما السدس ... ... | م « | ١٢ |
| | ولا تقولوا ثلاثة انتهوا خيرا لكم إنما الله إله واحد | م « | ١٧١ |
| | لقد كفر الذين قالوا إن الله ثالث ثلاثة وما من إله إلا إله واحد ... ... ... ... ... ... ... | م المائدة | ٧٣ |
| | قل إنما هو إله واحد وإننى برىء مما تشركون ... ... | ك الأنعام | ١٩ |
| | أأرباب متفرقون خير أم الله الواحد القهار... ... | ك يوسف | ٣٩ |
| | لا تدخلوا من باب واحد وادخلوا من أبواب متفرقة | ك « | ٦٧ |
| | يسقى بماء واحد ونفضل بعضها على بعض فى الأكل | م الرعد | ٤ |
| | قل الله خالق كل شىء وهو الواحد القهار... ... ... | م « | ١٦ |
| | وبرزوا لله الواحد القهار ... ... ... ... ... ... | ك إبراهيم | ٤٨ |
| | هذا بلاغ للناس ولينذروا به وليعلموا أنما هو إله واحد | ك « | ٥٢ |
| | إلهكم إله واحد فالذين لا يؤمنون بالآخرة قلوبهم منكرة | ك النحل | ٢٢ |
| | وقال الله لا تتخذوا إلهين اثنين إنما هو إله واحد... | ك « | ٥١ |
| | قل إنما أنا بشر مثلكم يوحى إلىّ أنما إلهكم إله واحد | ك الكهف | ١١٠ |
| | قل إنما يوحى إلىّ أنما إلهكم إله واحد فهل أنتم مسلمون | ك الأنبياء | ١٠٨ |
| | فإلهكم إله واحد فله أسلموا... ... ... ... ... ... | م الحج | ٣٤ |
| | الزانية والزانى فاجلدوا كل واحد منهما مائة جلدة... | م النور | ٢ |
| | وإلهنا وإلهكم واحد ونحن له مسلمون ... ... ... | ك العنكبوت | ٤٦ |
| | إن إلهكم لواحد. رب السموات والأرض وما بينهما | ك الصافات | ٤ |
| | قل إنما أنا منذر وما من إله إلا الله الواحد القهار | ك ص | ٦٥ |
| | سبحانه هو الله الواحد القهار ... ... ... ... ... | ك الزمر | ٤ |
| | لمن الملك اليوم لله الواحد القهار... ... ... ... ... | ك غافر | ١٦ |
| | قل إنما أنا بشر مثلكم يوحى إلىّ أنما إلهكم إله واحد | ك فصلت | ٦ |
| وَاحِدًا: | قالوا نعبد إلهك وإله آبائك إبراهيم وإسمعيل وإسحق إلها واحدا... ... ... ... ... ... ... | م البقرة | ١٣٣ |
| (٥) | وما أمروا إلا ليعبدوا إلها واحدا لا إله إلا هو ... | م التوبة | ٣١ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| وَاحِدًا: | لا تدعوا اليوم ثبورا واحدا وادعوا ثبورا كثيرا | ك الفرقان | ١٤ |
| | أجعل الآلهة إلها واحدا إن هذا لشىء عجاب ... | ك ص | ٥ |
| | فقالوا أبشرا منا واحدا نتبعه إنا إذا لفى ضلال وسعر | ك القمر | ٢٤ |
| وَاحِدَةٌ: | كان الناس أمة واحدة ... ... ... ... ... | ك البقرة | ٢١٣ |
| (٣١) | يأيها الناس اتقوا ربكم الذى خلقكم من نفس واحدة | م النساء | ١ |
| | فإن خفتم ألا تعدلوا فواحدة أو ما ملكت أيمانكم | م « | ٣ |
| | وإن كانت واحدة فلها النصف ... ... ... ... ... | م « | ١١ |
| | ودّ الذين كفروا لو تغفلون عن أسلحتكم وأمتعتكم فيميلون عليكم ميلة واحدة ... ... ... ... ... | م « | ١٠٢ |
| | ولو شاء الله لجعلكم أمة واحدة ولكن ليبلوكم فى ما آتاكم | م المائدة | ٤٨ |
| | وهو الذى أنشأكم من نفس واحدة فمستقر ومستودع | ك الأنعام | ٩٨ |
| | هو الذى خلقكم من نفس واحدة وجعل منها زوجها ليسكن إليها ... ... ... ... ... ... ... | ك الأعراف | ١٨٩ |
| | وما كان الناس إلا أمة واحدة فاختلفوا ... ... ... | ك يونس | ١٩ |
| | ولو شاء ربك لجعل الناس أمة واحدة ولا يزالون مختلفين | ك هود | ١١٨ |
| | وأعتدت لهن متكأ وآتت كل واحدة منهن سكينا... | ك يوسف | ٣١ |
| | ولو شاء الله لجعلكم أمة واحدة .. ... ... ... ... | ك النحل | ٩٣ |
| | إن هذه أمتكم أمة واحدة وأنا ربكم فاعبدون ... ... | ك الأنبياء | ٩٢ |
| | وإن هذه أمتكم أمة واحدة وأنا ربكم فاتقون ... | ك المؤمنون | ٥٢ |
| | وقال الذين كفروا لولا نزل عليه القرآن جملة واحدة | ك الفرقان | ٣٢ |
| | ما خلقكم ولا بعثكم إلا كنفس واحدة إن الله سميع بصير | م لقمان | ٢٨ |
| | قل إنما أعظكم بواحدة أن تقوموا لله مثنى وفرادى | ك سبإ | ٤٦ |
| | إن كانت إلا صيحة واحدة فإذا هم خامدون ... ... | ك يس | ٢٩ |
| | ما ينظرون إلا صيحة واحدة تأخذهم وهم يخصمون | ك « | ٤٩ |
| | إن كانت إلا صيحة واحدة فإذا هم جميع لدينا محضرون | ك « | ٥٣ |
| | فإنما هى زجرة واحدة فإذا هم ينظرون ... ... ... | ك الصافات | ١٩ |
| | وما ينظر هؤلاء إلا صيحة واحدة ما لها من فواق | ك ص | ١٥ |
| | إن هذا أخى له تسع وتسعون نعجة ولى نعجة واحدة | ك « | ٢٣ |
| | خلقكم من نفس واحدة ثم جعل منها زوجها ... ... | ك الزمر | ٦ |
| | ولو شاء الله لجعلهم أمة واحدة ... ... ... ... ... | ك الشورى | ٨ |
| | ولولا أن يكون الناس أمة واحدة لجعلنا لمن يكفر بالرحمن لبيوتهم سقفا من فضة ومعارج ... ... ... ... | ك الزخرف | ٣٣ |
| | إنا أرسلنا عليهم صيحة واحدة فكانوا كهشيم المحتظر | ك القمر | ٣١ |
| | وما أمرنا إلا واحدة كلمح بالبصر ... ... ... ... | ك « | ٥٠ |
| | فإذا نفخ فى الصور نفخة واحدة ... ... ... ... ... | ك الحاقة | ١٣ |
| | وحملت الأرض والجبال فدكتا دكة واحدة . فيومئذ وقعت الواقعة ... ... ... ... ... ... ... | ك « | ١٤ |
| | فإنما هى زجرة واحدة . فإذا هم بالساهرة ... ... | ك النازعات | ١٣ |
| وَحِيدًا: | ذرنى ومن خلقت وحيدا... ... ... ... ... ... | ك المدثر | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | * * * | | | |
| الْوُحُوشُ | : وإذا الوحوش حشرت ... ... ... ... ... | ٥ | ك التكوير | ٨١ |
| | * * * | | | |
| أَوْحَى | : فأوحى إليهم ربهم لنهلكن الظالمين ... ... ... ... | ١٣ | ك إبراهيم | ١٤ |
| (٨) | وأوحى ربك إلى النحل إن اتخذى من الجبال بيوتا | ٦٨ | ك النحل | ١٦ |
| | ذلك مما أوحى إليك ربك من الحكمة ... ... ... | ٣٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فأوحى إليهم أن سبحوا بكرة وعشيا ... ... ... ... | ١١ | ك مريم | ١٩ |
| | فقضاهن سبع سموات فى يومين وأوحى فى كل سماء أمرها | ١٢ | ك فصلت | ٤١ |
| | فكان قاب قوسين أو أدنى . فأوحى إلى عبده ... | ١٠ | ك النجم | ٥٣ |
| | ما أوحى . ما كذب الفؤاد ما رأى ... ... ... ... | ١٠ | ك « | ٥٣ |
| | يومئذ تحدث أخبارها . بأن ربك أوحى لها ... ... | ٥ | م الزلزلة | ٩٩ |
| أَوْحَيْتُ | : وإذ أوحيت إلى الحواريين أن آمنوا بى وبرسولى | ١١١ | م المائدة | ٥ |
| أَوْحَيْنَا | : إنا أوحينا إليك ... ... ... ... ... ... | ١٦٣ | م النساء | ٤ |
| (٢٤) | كما أوحينا إلى نوح والنبيين من بعده ... ... ... ... | ١٦٣ | م « | ٤ |
| | وأوحينا إلى إبراهيم وإسمعيل وإسحق ويعقوب والأسباط | ١٦٣ | م « | ٤ |
| | وأوحينا إلى موسى أن ألق عصاك فإذا هى تلقف ما يأفكون | ١١٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | وأوحينا إلى موسى إذ استسقاه قومه أن اضرب بعصاك الحجر | ١٦٠ | ك « | ٧ |
| | أكان للناس عجبا أن أوحينا إلى رجل منهم أن أنذر الناس | ٢ | ك يونس | ١٠ |
| | وأوحينا إلى موسى وأخيه أن تبوءا لقومكما بمصر بيوتا | ٨٧ | ك « | ١٠ |
| | نحن نقص عليك أحسن القصص بما أوحينا إليك | | | |
| | هذا القرآن ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | م يوسف | ١٢ |
| | وأوحينا إليه لتنبئنهم بأمرهم هذا وهم لا يشعرون ... | ١٥ | ك « | ١٢ |
| | كذلك أرسلناك فى أمة قد خلت من قبلها أمم لتتلو عليهم | | | |
| | الذى أوحينا إليك وهم يكفرون بالرحمن ... ... | ٣٠ | م الرعد | ١٣ |
| | ثم أوحينا إليك أن اتبع ملة إبراهيم حنيفا ... ... | ١٢٣ | ك النحل | ١٦ |
| | وإن كادوا ليفتنونك عن الذى أوحينا إليك لتفترى علينا غيره | ٧٣ | م الإسراء | ١٧ |
| | ولئن شئنا لنذهبن بالذى أوحينا إليك ... ... ... | ٨٦ | ك « | ١٧ |
| | ولقد منا عليك مرة أخرى . إذ أوحينا إلى أمك ما يوحى | ٣٨ | ك طه | ٢٠ |
| | ولقد أوحينا إلى موسى أن أسر بعبادى ... ... ... | ٧٧ | ك « | ٢٠ |
| | وجعلناهم أئمة يهدون بأمرنا وأوحينا إليهم فعل الخيرات | ٧٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | فأوحينا إليه أن اصنع الفلك بأعيننا ووحينا ... ... | ٢٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وأوحينا إلى موسى أن أسر بعبادى إنكم متبعون ... | ٥٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فأوحينا إلى موسى أن اضرب بعصاك البحر ... ... | ٦٣ | ك « | ٢٦ |
| | وأوحينا إلى أم موسى أن أرضعيه ... ... ... ... | ٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | والذى أوحينا إليك من الكتاب هو الحق مصدقا لما بين يديه | ٣١ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وكذلك أوحينا إليك قرآنا عربيا لتنذر أم القرى ومن حولها | ٧ | ك الشورى | ٤٢ |
| | شرع لكم من الدين ما وصى به نوحا والذى أوحينا إليك | ١٣ | ك « | ٤٢ |
| | وكذلك أوحينا إليك روحا من أمرنا ... ... ... ... | ٥٢ | ك « | ٤٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| نُوحِى | : وما أرسلنا من قبلك إلا رجالا نوحى إليهم من أهل القرى | ١٠٩ | ك يوسف | ١٢ |
| (٤) | وما أرسلنا من قبلك إلا رجالا نوحى إليهم فسئلوا أهل الذكر | ٤٣ | ك النحل | ١٦ |
| | وما أرسلنا قبلك إلا رجالا نوحى إليهم فسئلوا أهل الذكر | ٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وما أرسلنا من قبلك من رسول إلا نوحى إليه أنه لا إله | | | |
| | إلا أنا فاعبدون ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك « | ٢١ |
| نُوحِيهِ | : ذلك من أنباء الغيب نوحيه إليك ... ... ... ... | ٤٤ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | ذلك من أنباء الغيب نوحيه إليك وما كنت لديهم | ١٠٢ | ك يوسف | ١٢ |
| نُوحِيهَا | : تلك من أنباء الغيب نوحيها إليك ... ... ... ... | ٤٩ | ك هود | ١١ |
| لَيُوحُونَ | : وإن الشياطين ليوحون إلى أوليائهم ليجادلوكم | ١٢١ | ك الأنعام | ٦ |
| يُوحِى | : يوحى بعضهم إلى بعض زخرف القول غرورا ... | ١١٢ | ك « | ٦ |
| (٤) | إذ يوحى ربك إلى الملائكة أنى معكم ... ... ... | ١٢ | م الأنفال | ٨ |
| | وإن اهتديت فبما يوحى إلىّ ربى ... ... ... ... | ٥٠ | ك سبأ | ٣٤ |
| | كذلك يوحى إليك وإلى الذين من قبلك الله العزيز الحكيم | ٣ | ك الشورى | ٤٢ |
| فَيُوحِىَ | : أو يرسل رسولا فيوحى بإذنه ما يشاء إنه علىّ حكيم | ٥١ | ك « | ٤٢ |
| أُوحِىَ | : وأوحى إلىّ هذا القرآن لأنذركم به ومن بلغ ... ... | ١٩ | ك الأنعام | ٦ |
| (١١) | ومن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو قال أوحى إلىّ | | | |
| | ولم يوح إليه شىء ... ... ... ... ... ... ... | ٩٣ | م « | ٦ |
| | اتبع ما أوحى إليك من ربك لا إله إلا هو ... ... | ١٠٦ | ك « | ٦ |
| | قل لا أجد فيما أوحى إلىّ محرما على طاعم يطعمه | | | |
| | إلا أن يكون ميتة أو دما مسفوحا أو لحم خنزير | ١٤٥ | ك « | ٦ |
| | وأوحى إلى نوح أنه لن يؤمن من قومك إلا من قد آمن | ٣٦ | ك هود | ١١ |
| | واتل ما أوحى إليك من كتاب ربك ... ... ... ... | ٢٧ | ك الكهف | ١٨ |
| | إنا قد أوحى إلينا أن العذاب على من كذب وتولى ... | ٤٨ | ك طه | ٢٠ |
| | اتل ما أوحى إليك من الكتاب وأقم الصلاة ... ... | ٤٥ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ولقد أوحى إليك وإلى الذين من قبلك ... ... ... | ٦٥ | ك الزمر | ٣٩ |
| | فاستمسك بالذى أوحى إليك إنك على صراط مستقيم | ٤٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | قل أوحى إلىّ أنه استمع نفر من الجن فقالوا إنا سمعنا قرآنا عجبا | ١ | ك الجن | ٧٢ |
| يُوحَ | : ومن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو قال أوحى إلىّ | | | |
| | ولم يوح إليه شىء ومن قال سأنزل مثل ما أنزل الله | ٩٣ | م الأنعام | ٦ |
| يُوحَى | : إن أتبع إلا ما يوحى إلىّ قل هل يستوى الأعمى والبصير | ٥٠ | ك « | ٦ |
| (١٤) | قل إنما أتبع ما يوحى إلىّ من ربى ... ... ... ... | ٢٠٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | إن أتبع إلا ما يوحى إلىّ ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك يونس | ١٠ |
| | واتبع ما يوحى إليك واصبر حتى يحكم الله وهو خير الحاكمين | ١٠٩ | ك « | ١٠ |
| | فلعلك تارك بعض ما يوحى إليك وضائق به صدرك | ١٢ | م هود | ١١ |
| | قل إنما أنا بشر مثلكم يوحى إلىّ أنما إلهكم إله واحد | ١١٠ | ك الكهف | ١٨ |
| | وأنا اخترتك فاستمع لما يوحى ... ... ... ... ... | ١٣ | ك طه | ٢٠ |
| | إذ أوحينا إلى أمك ما يوحى ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك « | ٢٠ |
| | قل إنما يوحى إلىّ أنما إلهكم إله واحد فهل أنتم مسلمون | ١٠٨ | ك الأنبياء | ٢١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يُوحَى: | واتبع ما يوحى إليك من ربك إن الله كان بما تعملون خبيرا ... ... ... ... ... ... | ٢ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | إن يوحى إلىّ إلا أنما أنا نذير مبين ... ... ... ... | ٧٠ | ك ص | ٣٨ |
| | قل إنما أنا بشر مثلكم يوحى إلىّ أنما إلهكم إله واحد | ٦ | ك فصلت | ٤١ |
| | إن أتبع إلا ما يوحى إلىّ وما أنا إلا نذير مبين ... | ٩ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | إن هو إلا وحى يوحى ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك النجم | ٥٣ |
| وَحْيٌ: | قل إنما أنذركم بالوحى ولا يسمع الصم الدعاء إذا ما ينذرون | ٤٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| (٢) | إن هو إلا وحى يوحى ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك النجم | ٥٣ |
| وَحْيًا: | وما كان لبشر أن يكلمه الله إلا وحيا أو من وراء حجاب | ٥١ | ك الشورى | ٤٢ |
| وَحْيِنَا: | واصنع الفلك بأعيننا ووحينا ولا تخاطبنى فى الذين ظلموا | ٣٧ | ك هود | ١١ |
| (٢) | فأوحينا إليه أن اصنع الفلك بأعيننا ووحينا ... ... | ٢٧ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| وَحْيُهُ: | ولا تعجل بالقرآن من قبل أن يقضى إليك وحيه | ١١٤ | ك طه | ٢٠ |
| وَدَّ: | ود كثير من أهل الكتاب لو يردونكم من بعد إيمانكم كفارا | ١٠٩ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | ود الذين كفروا لو تغفلون عن أسلحتكم وأمتعتكم... | ١٠٢ | م النساء | ٤ |
| وَدَّتْ: | ودت طائفة من أهل الكتاب لو يضلونكم ... ... | ٦٩ | م آل عمران | ٣ |
| وَدُّوا: | لا تتخذوا بطانة من دونكم لا يألونكم خبالا ودوا ما عنتم | ١١٨ | م « | ٣ |
| (٤) | ودوا لو تكفرون كما كفروا فتكونون سواء ... ... | ٨٩ | ك النساء | ٤ |
| | ويبسطوا إليكم أيديهم وألسنتهم بالسوء وودوا لو تكفرون ... ... ... ... ... ... | ٢ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | فلا تطع المكذبين . ودوا لو تدهن فيدهنون ... ... | ٩ | ك القلم | ٦٨ |
| تَوَدُّ: | وما عملت من سوء تود لو أن بينها وبينه أمدا بعيدا | ٣٠ | م آل عمران | ٣ |
| تَوَدُّونَ: | وتودون أن غير ذات الشوكة تكون لكم ... ... | ٧ | م الأنفال | ٨ |
| يَوَدُّ: | يود أحدهم لو يعمر ألف سنة ... ... ... ... | ٩٦ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | ما يود الذين كفروا من أهل الكتاب ولا المشركين أن ينزل عليكم من خير من ربكم ... ... ... ... | ١٠٥ | م « | ٢ |
| | أيود أحدكم أن تكون له جنة من نخيل وأعناب ... | ٢٦٦ | م « | ٢ |
| | يومئذ يود الذين كفروا وعصوا الرسول لو تسوى بهم الأرض ... ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | م النساء | ٤ |
| | ربما يود الذين كفروا لو كانوا مسلمين ... ... ... | ٢ | ك الحجر | ١٥ |
| | يود المجرم لو يفتدى من عذاب يومئذ ببنيه . . . ... | ١١ | ك المعارج | ٧٠ |
| يَوَدُّوا: | وإن يأت الأحزاب يودوا لو أنهم بادون فى الأعراب | ٢٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| يُوَادُّونَ: | لا تجد قوما يؤمنون بالله واليوم الآخر يوادون من حاد الله ورسوله ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| وُدًّا: | إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات سيجعل لهم الرحمن ودا | ٩٦ | ك مريم | ١٩ |
| وَدُودٌ: | واستغفروا ربكم ثم توبوا إليه إن ربى رحيم ودود | ٩٠ | ك هود | ١١ |
| (٢) | إنه هو يبدئ ويعيد . وهو الغفور الودود... ... ... | ١٤ | ك البروج | ٨٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مَوَدَّةً: | ليقولن كأن لم تكن بينكم وبينه مودة يا ليتنى كنت معهم | ٧٣ | م النساء | ٤ |
| (٨) | ولتجدن أقربهم مودة للذين آمنوا الذين قالوا إنا نصارى | ٨٢ | م المائدة | ٥ |
| | وقال إنما اتخذتم من دون الله أوثانا مودة بينكم فى الحياة الدنيا ... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وجعل بينكم مودة ورحمة ... ... ... ... ... | ٢١ | ك الروم | ٣٠ |
| | قل لا أسئلكم عليه أجرا إلا المودة فى القربى ... ... | ٢٣ | م الشورى | ٤٢ |
| | لا تتخذوا عدوى وعدوكم أولياء تلقون إليهم بالمودة ... | ١ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | تسرون إليهم بالمودة وأنا أعلم بما أخفيتم وما أعلنتم | ١ | م « | ٦٠ |
| | عسى الله أن يجعل بينكم وبين الذين عاديتم منهم مودة | ٧ | م « | ٦٠ |
| وُدًّا: | وقالوا لا تذرن آلهتكم ولا تذرن ودا ولا سواعا ... | ٢٣ | ك نوح | ٧١ |
| دَعْ: | ولا تطع الكافرين والمنافقين ودع أذاهم وتوكل على الله | ٤٨ | م الأحزاب | ٣٣ |
| وَدَّعَكَ: | والضحى . والليل إذا سجى . ما ودعك ربك وما قلى | ٣ | ك الضحى | ٩٣ |
| مُسْتَوْدَعٌ: | وهو الذى أنشأكم من نفس واحدة فمستقر ومستودع ... ... ... ... ... ... ... | ٩٨ | ك الأنعام | ٦ |
| مُسْتَوْدَعَهَا: | ويعلم مستقرها ومستودعها كل فى كتاب مبين | ٦ | ك هود | ١١ |
| الْوَدْقَ: | ثم يجعله ركاما فترى الودق يخرج من خلاله ... | ٤٣ | م النور | ٢٤ |
| (٢) | ويجعله كسفا فترى الودق يخرج من خلاله ... ... | ٤٨ | م الروم | ٣٠ |
| دِيَةٌ: | ومن قتل مؤمنا خطأ فتحرير رقبة مؤمنة ودية مسلمة إلى أهله | ٩٢ | م النساء | ٤ |
| (٢) | وإن كان من قوم بينكم وبينهم ميثاق فدية مسلمة إلى أهله | ٩٢ | م « | ٤ |
| وَادٍ: | ربنا إنى أسكنت من ذريتى بواد غير ذى زرع ... | ٣٧ | ك إبراهيم | ١٤ |
| (٧) | إنى أنا ربك فاخلع نعليك إنك بالواد المقدس طوى | ١٢ | ك طه | ٢٠ |
| | والشعراء يتبعهم الغاوون . ألم تر أنهم فى كل واد يهيمون | ٢٢٥ | م الشعراء | ٢٦ |
| | حتى إذا أتوا على واد النمل قالت نملة يا أيها النمل ادخلوا مساكنكم ... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك النمل | ٢٧ |
| | فلما أتاها نودى من شاطئ الواد الأيمن فى البقعة المباركة | ٣٠ | ك القصص | ٢٨ |
| | هل أتاك حديث موسى . إذ ناداه ربه بالواد المقدس طوى | ١٦ | ك النازعات | ٧٩ |
| | وثمود الذين جابوا الصخر بالواد... ... ... ... | ٩ | ك الفجر | ٨٩ |
| وَادِيًا: | ولا ينفقون واديا إلا كتب لهم ... ... ... ... | ١٢١ | م التوبة | ٩ |
| أَوْدِيَةٌ: | أنزل من السماء ماء فسالت أودية بقدرها ... ... | ١٧ | م الرعد | ١٣ |
| أَوْدِيَتِهِمْ: | فلما رأوه عارضا مستقبل أوديتهم قالوا هذا عارض ممطرنا ... ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| تَذَرُ: | أتذر موسى وقومه ليفسدوا فى الأرض ... ... ... | ١٢٧ | ك الأعراف | ٧ |
| (٤) | ما تذر من شىء أتت عليه إلا جعلته كالرميم ... ... | ٤٢ | ك الذاريات | ٥١ |
| | وقال نوح رب لا تذر على الأرض من الكافرين ديارا | ٢٦ | ك نوح | ٧١ |
| | وما أدراك ما سقر . لا تبقى ولا تذر ... ... ... | ٢٨ | ك المدثر | ٧٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَذَرُنَّ: | وقالوا لا تذرن آلهتكم ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك نـوح | ٧١ |
| (٢) | ولا تذرن ودًا ولا سواعا ولا يغوث ويعوق ونسرا | ٢٣ | ك « | ٧١ |
| تَذَرْنِي: | لا تذرني فردا وأنت خير الوارثين... ... ... ... | ٨٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| تَذَرُوهُمْ: | إنك إن تذرهم يضلوا عبادك ولا يلدوا إلا فاجرا كفارا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك نـوح | ٧١ |
| تَذَرُونَ: | وتذرون ما خلق لكم ربكم من أزواجكم... ... | ١٦٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| (٣) | أتدعون بعلا وتذرون أحسن الخالقين ... ... ... | ١٢٥ | ك الصافات | ٣٧ |
| | كلا بل تحبون العاجلة . وتذرون الآخرة ... ... | ٢١ | ك القيامة | ٧٥ |
| فَتَذَرُوهَا: | فلا تميلوا كل الميل فتذروها كالمعلقة ... ... | ١٢٩ | م النساء | ٤ |
| نَذَرُ: | قالوا أجئتنا لنعبد الله وحده ونذر ما كان يعبد آباؤنا | ٧٠ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | فنذر الذين لا يرجون لقاءنا في طغيانهم يعمهون ... | ١١ | ك يونس | ١٠ |
| | ثم نجي الذين آتقوا ونذر الظالمين فيها جثيا ... ... | ٧٢ | ك مريم | ١٩ |
| وَنَذَرُهُمْ: | ونذرهم في طغيانهم يعمهون... ... ... ... ... | ١١٠ | ك الأنعام | ٦ |
| لِيَذَرَ: | ما كان الله ليذر المؤمنين على ما أنتم عليه حتى يميز الخبيث من الطيب ... ... ... ... ... ... ... | ١٧٩ | م آل عمران | ٣ |
| وَيَذَرَكَ: | وقال الملأ من قوم فرعون أتذر موسى وقومه ليفسدوا في الأرض ويذرك وآلهتك... ... ... | ١٢٧ | ك الأعراف | ٧ |
| فَيَذَرُهَا: | فقل ينسفها ربي نسفا . فيذرها قاعا صفصفا ... | ١٠٦ | ك طـه | ٢٠ |
| وَيَذَرُهُمْ: | ويذرهم في طغيانهم يعمهون ... ... ... ... | ١٨٦ | ك الأعراف | ٧ |
| يَذَرُونَ: | والذين يتوفون منكم ويذرون أزواجا يتربصن | | | |
| (٣) | بأنفسهن أربعة أشهر وعشرا... ... ... ... ... | ٢٣٤ | م البقرة | ٢ |
| | والذين يتوفون منكم ويذرون أزواجا وصية لأزواجهم متاعا إلى الحول غير إخراج ... ... ... ... ... | ٢٤٠ | م « | ٢ |
| | إن هؤلاء يحبون العاجلة ويذرون وراءهم يوما ثقيلا | ٢٧ | م الإنسان | ٧٦ |
| وَذَرِ: | وذر الذين آتخذوا دينهم لعبا ولهوا وغرتهم الحياة الدنيا | ٧٠ | ك الأنعام | ٦ |
| ذَرْنَا: | آستأذنك أولوا الطول منهم وقالوا ذرنا نكن مع القاعدين | ٨٦ | م التوبة | ٩ |
| ذَرْنِي: | فذرني ومن يكذب بهذا الحديث ... ... ... ... | ٤٤ | ك القلم | ٦٨ |
| (٣) | وذرني والمكذبين أولي النعمة ومهلهم قليلا... ... ... | ١١ | م المزمل | ٧٣ |
| | ذرني ومن خلقت وحيدا ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك المدثر | ٧٤ |
| ذَرْهُمْ: | قل الله ثم ذرهم في خوضهم يلعبون... ... ... ... | ٩١ | م الأنعام | ٦ |
| (٨) | ولو شاء ربك ما فعلوه فذرهم وما يفترون ... ... ... | ١١٢ | ك « | ٦ |
| | ولو شاء الله ما فعلوه فذرهم وما يفترون ... ... ... | ١٣٧ | ك « | ٦ |
| | ذرهم يأكلوا ويتمتعوا ويلههم الأمل فسوف يعلمون | ٣ | ك الحجر | ١٥ |
| | كل حزب بما لديهم فرحون . فذرهم في غمرتهم حتى حين | ٥٤ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فذرهم يخوضوا ويلعبوا حتى يلاقوا يومهم الذي يوعدون | ٨٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | فذرهم حتى يلاقوا يومهم الذي فيه يصعقون... ... | ٤٥ | ك الطور | ٥٢ |
| | فذرهم يخوضوا ويلعبوا حتى يلاقوا يومهم الذي يوعدون | ٤٢ | ك المعارج | ٧٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| ذَرُوا: | آتقوا الله وذروا ما بقي من الربا إن كنتم مؤمنين | ٢٧٨ | م البقرة | ٢ |
| (٤) | وذروا ظاهر الإثم وباطنه ... ... ... ... ... ... | ١٢٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | ولله الأسماء الحسنى فآدعوه بها وذروا الذين يلحدون في أسمائه سيجزون ما كانوا يعملون ... ... ... | ١٨٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | فآسعوا إلى ذكر الله وذروا البيع ... ... ... ... | ٩ | م الجمعة | ٦٢ |
| ذَرُونَا: | سيقول المخلفون إذا آنطلقتم إلى مغانم لتأخذوها ذرونا نتبعكم ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | م الفتح | ٤٨ |
| ذَرُونِي: | وقال فرعون ذروني أقتل موسى وليدع ربه ... | ٢٦ | ك غافر | ٤٠ |
| ذَرُوهُ: | قال تزرعون سبع سنين دأبا فما حصدتم فذروه في سنبله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٧ | ك يوسف | ١٢ |
| ذَرُوهَا: | هذه ناقة الله لكم آية فذروها تأكل في أرض الله | ٧٣ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | ويا قوم هذه ناقة الله لكم آية فذروها تأكل في أرض الله | ٦٤ | ك هود | ١١ |

* * *

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| وَرِثَ: | وورث سليمان داود وقال يا أيها الناس علمنا منطق الطير | ١٦ | ك النمل | ٢٧ |
| وَرِثَهُ: | فإن لم يكن له ولد وورثه أبواه فلأمه الثلث ... | ١١ | م النساء | ٤ |
| وَرِثُوا: | فخلف من بعدهم خلف ورثوا الكتاب ... ... ... | ١٦٩ | م الأعراف | ٧ |
| تَرِثُوا: | يأيها الذين آمنوا لا يحل لكم أن ترثوا النساء كرها | ١٩ | م النساء | ٤ |
| نَرِثُ: | إنا نحن نرث الأرض ومن عليها وإلينا يرجعون ... | ٤٠ | ك مريم | ١٩ |
| نَرِثُهُ: | ونرثه ما يقول ويأتينا فردا ... ... ... ... | ٨٠ | ك « | ١٩ |
| يَرِثُ: | يرثني ويرث من آل يعقوب وآجعله رب رضيا ... | ٦ | ك « | ١٩ |
| يَرِثُنِي: | فهب لي من لدنك وليا . يرثني ويرث من آل يعقوب | ٦ | ك « | ١٩ |
| يَرِثُهَا: | وهو يرثها إن لم يكن لها ولد ... ... ... ... | ١٧٦ | م النساء | ٤ |
| (٢) | أن الأرض يرثها عبادي الصالحون ... ... ... ... | ١٠٥ | ك الأنبياء | ٢١ |
| يَرِثُونَ: | أو لم يهد للذين يرثون الأرض من بعد أهلها أن لو | | | |
| (٢) | نشاء أصبناهم بذنوبهم ... ... ... ... ... ... | ١٠٠ | ك الأعراف | ٧ |
| | الذين يرثون الفردوس هم فيها خالدون ... ... ... | ١١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| أَوْرَثَكُمْ: | وأورثكم أرضهم وديارهم وأموالهم وأرضا لم تطئوها | ٢٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| أَوْرَثْنَا: | وأورثنا القوم الذين كانوا يستضعفون مشارق | | | |
| (٤) | الأرض ومغاربها التي باركنا فيها ... ... ... ... | ١٣٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | ثم أورثنا الكتاب الذين آصطفينا من عبادنا ... ... | ٣٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وقالوا الحمد لله الذي صدقنا وعده وأورثنا الأرض | ٧٤ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ولقد آتينا موسى الهدى وأورثنا بني إسرائيل الكتاب | ٥٣ | ك غافر | ٤٠ |
| أَوْرَثْنَاهَا: | كذلك وأورثناها بني إسرائيل ... ... ... ... | ٥٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| (٢) | كذلك وأورثناها قوما آخرين ... ... ... ... | ٢٨ | ك الدخان | ٤٤ |
| نُورِثُ: | تلك الجنة التي نورث من عبادنا من كان تقيا ... | ٦٣ | ك مريم | ١٩ |
| يُورِثُهَا: | إن الأرض لله يورثها من يشاء من عباده ... ... | ١٢٨ | ك الأعراف | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| أُورِثْتُمُوهَا | ونودوا أن تلكم الجنة أورثتموها بما كنتم | | |
| (٢) | تعملون ... ... ... ... ... ... ... | ك الأعراف | ٤٣ |
| | وتلك الجنة التى أورثتموها بما كنتم تعملون... ... ... | ك الزخرف | ٧٢ ٤٣ |
| أُورِثُوا | وإن الذين أورثوا الكتاب من بعدهم لفى شك | | |
| | منه مريب... ... ... ... ... ... ... ... | ك الشورى | ١٤ ٤٢ |
| يُورَثُ | وإن كان رجل يورث كلالة أو امرأة وله أخ | | |
| | أو أخت فلكل واحد منهما السدس... ... ... | م النساء | ١٢ ٤ |
| الْوَارِثِ | لا تضار والدة بولدها ولا مولود له بولده وعلى | | |
| | الوارث مثل ذلك ... ... ... ... ... ... | م البقرة | ٢٣٣ ٢ |
| الْوَارِثُونَ | وإنا لنحن نحيي ونميت ونحن الوارثون... ... | ك الحجر | ٢٣ ١٥ |
| (٢) | والذين هم على صلواتهم يحافظون . أولئك هم الوارثون | ك المؤمنون | ١٠ ٢٣ |
| الْوَارِثِينَ | رب لا تذرنى فردا وأنت خير الوارثين ... ... | ك الأنبياء | ٨٩ ٢١ |
| (٣) | ونجعلهم أئمة ونجعلهم الوارثين ... ... ... ... | ك القصص | ٥ ٢٨ |
| | وكنا نحن الوارثين ... ... ... ... ... ... | ك « | ٥٨ ٢٨ |
| وَرَثَةِ | واجعلنى من ورثة جنة النعيم ... ... ... ... | ك الشعراء | ٨٥ ٢٦ |
| التُّرَاثَ | وتأكلون التراث أكلا لما ... ... ... ... ... | ك الفجر | ١٩ ٨٩ |
| مِيرَاثُ | ولله ميراث السموات والأرض والله بما تعملون خبير | م آل عمران | ١٨٠ ٣ |
| (٢) | وما لكم ألا تنفقوا فى سبيل الله ولله ميراث السموات | | |
| | والأرض ... ... ... ... ... ... ... ... | م الحديد | ١٠ ٥٧ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| وَرَدَ | ولما ورد ماء مدين وجد عليه أمة من الناس يسقون | ك القصص | ٢٣ ٢٨ |
| وَرَدُوهَا | لو كان هؤلاء آلهة ما وردوها وكل فيها خالدون | ك الأنبياء | ٩٩ ٢١ |
| فَأَوْرَدَهُمُ | يقدم قومه يوم القيامة فأوردهم النار ... ... | ك هود | ٩٨ ١١ |
| الْوِرْدُ | وبئس الورد المورود ... ... ... ... ... ... | ك « | ٩٨ ١١ |
| وِرْدًا | ونسوق المجرمين إلى جهنم وردا... ... ... ... | ك مريم | ٨٦ ١٩ |
| وَارِدُهَا | وإن منكم إلا واردها كان على ربك حتما مقضيا | م « | ٧١ ١٩ |
| وَارِدَهُمْ | وجاءت سيارة فأرسلوا واردهم فأدلى دلوه ... | ك يوسف | ١٩ ١٢ |
| وَارِدُونَ | حصب جهنم أنتم لها واردون... ... ... ... | ك الأنبياء | ٩٨ ٢١ |
| الْمَوْرُودُ | وبئس الورد المورود ... ... ... ... ... ... | ك هود | ٩٨ ١١ |
| وَرْدَةً | فإذا انشقت السماء فكانت وردة كالدهان ... ... | م الرحمن | ٣٧ ٥٥ |
| الْوَرِيدِ | ونحن أقرب إليه من حبل الوريد... ... ... ... | ك ق | ١٦ ٥٠ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| وَرَقِ | بدت لهما سوءاتهما وطفقا يخصفان عليهما من ورق الجنة | ك الأعراف | ٢٢ ٧ |
| (٢) | وطفقا يخصفان عليهما من ورق الجنة ... ... ... | ك طه | ١٢١ ٢٠ |
| وَرَقَةٍ | وما تسقط من ورقة إلا يعلمها ... ... ... ... | ك الأنعام | ٥٩ ٦ |
| بِوَرِقِكُمْ | فابعثوا أحدكم بورقكم هذه إلى المدينة... ... ... | ك الكهف | ١٩ ١٨ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| فَأُوَارِيَ | قال يا ويلتى أعجزت أن أكون مثل هذا الغراب | | |
| | فأوارى سوءة أخى... ... ... ... ... ... ... | م المائدة | ٣١ ٥ |
| يُوَارِي | فبعث الله غرابا يبحث فى الأرض ليريه كيف يوارى | | |
| (٢) | سوءة أخيه ... ... ... ... ... ... ... ... | م « | ٣١ ٥ |
| | يا بنى آدم قد أنزلنا عليكم لباسا يوارى سوءاتكم وريشا | ك الأعراف | ٢٦ ٧ |
| وُورِيَ | فوسوس لهما الشيطان ليبدى لهما ما ووارى عنهما | | |
| | من سوءاتهما ... ... ... ... ... ... ... ... | ك « | ٢٠ ٧ |
| تَوَارَتْ | فقال إنى أحببت حب الخير عن ذكر ربى حتى | | |
| | توارت بالحجاب ... ... ... ... ... ... ... | ك ص | ٣٢ ٣٨ |
| يَتَوَارَى | يتوارى من القوم من سوء ما بشر به ... ... | ك النحل | ٥٩ ١٦ |
| تُورُونَ | أفرأيتم النار التى تورون . أأنتم أنشأتم شجرتها | ك الواقعة | ٧١ ٥٦ |
| فَالْمُورِيَاتِ | والعاديات ضبحا . فالموريات قدحا ... | ك العاديات | ٢ ١٠٠ |
| وَرَاءَ | نبذ فريق من الذين أوتوا الكتاب كتاب الله وراء | | |
| (١٢) | ظهورهم كأنهم لا يعلمون ... ... ... ... ... | م البقرة | ١٠١ ٢ |
| | فنبذوه وراء ظهورهم واشتروا به ثمنا قليلا ... ... | م آل عمران | ١٨٧ ٣ |
| | وأحل لكم ما وراء ذلكم أن تبتغوا بأموالكم محصنين | | |
| | غير مسافحين ... ... ... ... ... ... ... | م النساء | ٢٤ ٤ |
| | وتركتم ما خولناكم وراء ظهوركم ... ... ... ... | ك الأنعام | ٩٤ ٦ |
| | فبشرناها بإسحق ومن وراء إسحق يعقوب ... ... | ك هود | ٧١ ١١ |
| | فمن ابتغى وراء ذلك فأولئك هم العادون ... ... ... | ك المؤمنون | ٧ ٢٣ |
| | وإذا سألتموهن متاعا فسئلوهن من وراء حجاب ... | م الأحزاب | ٥٣ ٣٣ |
| | وما كان لبشر أن يكلمه الله إلا وحيا أو من وراء حجاب | ك الشورى | ٥١ ٤٢ |
| | إن الذين ينادونك من وراء الحجرات أكثرهم لا يعقلون | م الحجرات | ٤ ٤٩ |
| | لا يقاتلونكم جميعا إلا فى قرى محصنة أو من وراء جدر | م الحشر | ١٤ ٥٩ |
| | فمن ابتغى وراء ذلك فأولئك هم العادون ... ... ... | ك المعارج | ٣١ ٧٠ |
| | وأما من أوتى كتابه وراء ظهره . فسوف يدعوا ثبورا | ك الانشقاق | ١٠ ٨٤ |
| وَرَاءَكُمْ | أرهطى أعز عليكم من الله واتخذتموه وراءكم ظهريا | ك هود | ٩٢ ١١ |
| (٢) | قيل ارجعوا وراءكم فالتمسوا نورا ... ... ... ... | م الحديد | ١٣ ٥٧ |
| وَرَائِكُمْ | فإذا سجدوا فليكونوا من ورائكم ... ... ... | م النساء | ١٠٢ ٤ |
| وَرَاءَهُ | قالوا نؤمن بما أنزل علينا ويكفرون بما وراءه ... | م البقرة | ٩١ ٢ |
| وَرَاءَهُمْ | وكان وراءهم ملك يأخذ كل سفينة غصبا ... | ك الكهف | ٧٩ ١٨ |
| (٢) | إن هؤلاء يحبون العاجلة ويذرون وراءهم يوما ثقيلا | م الإنسان | ٢٧ ٧٦ |
| وَرَائِهِ | من ورائه جهنم ويسقى من ماء صديد ... ... ... | ك إبراهيم | ١٦ ١٤ |
| (٢) | ومن ورائه عذاب غليظ ... ... ... ... ... | ك « | ١٧ ١٤ |
| وَرَائِهِمْ | ومن ورائهم برزخ إلى يوم يبعثون ... ... ... | ك المؤمنون | ١٠٠ ٢٣ |
| (٣) | من ورائهم جهنم ولا يغنى عنهم ما كسبوا شيئا ... | ك الجاثية | ١٠ ٤٥ |
| | بل الذين كفروا فى تكذيب . والله من ورائهم محيط | ك البروج | ٢٠ ٨٥ |
| وَرَائِي | وإنى خفت الموالى من ورائى وكانت امرأتى عاقرا | ك مريم | ٥ ١٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| تَزِرُ: | ولا تزر وازرة وزر أخرى ... ... ... ... ... ... | ١٦٤ | ك الأنعام | ٦ |
| (٥) | ومن ضل فإنما يضل عليها ولا تزر وازرة وزر أخرى | ١٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ولا تزر وازرة وزر أخرى وإن تدع مثقلة إلى حملها | | | |
| | لا يحمل منه شيء ولو كان ذا قربى ... ... ... | ١٨ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وإن تشكروا يرضه لكم ولا تزر وازرة وزر أخرى | ٧ | ك الزمر | ٣٩ |
| | أم لم ينبأ بما في صحف موسى . وإبراهيم الذي وفى . | | | |
| | ألا تزر وازرة وزر أخرى ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك النجم | ٥٣ |
| يَزِرُونَ: | وهم يحملون أوزارهم على ظهورهم ألا ساء ما يزرون | ٣١ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | ألا ساء ما يزرون ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك النحل | ١٦ |
| وِزْرَ: | ولا تكسب كل نفس إلا عليها ولا تزر وازرة وزر أخرى | ١٦٤ | ك الأنعام | ٦ |
| (٥) | ومن ضل فإنما يضل عليها ولا تزر وازرة وزر أخرى | ١٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ولا تزر وازرة وزر أخرى ... ... ... ... ... | ١٨ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وإن تشكروا يرضه لكم ولا تزر وازرة وزر أخرى ... | ٧ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وإبراهيم الذي وفى . ألا تزر وازرة وزر أخرى ... | ٣٨ | ك النجم | ٥٣ |
| وِزْرًا: | من أعرض عنه فإنه يحمل يوم القيامة وزرا ... | ١٠٠ | ك طه | ٢٠ |
| وِزْرَكَ: | ووضعنا عنك وزرك . الذي أنقض ظهرك ... | ٢ | ك الشرح | ٩٤ |
| أَوْزَارِ: | ليحملوا أوزارهم كاملة يوم القيامة ومن أوزار | | | |
| | الذين يضلونهم بغير علم ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك النحل | ١٦ |
| أَوْزَارًا: | ولكنا حملنا أوزارا من زينة القوم فقذفناها ... ... | ٨٧ | ك طه | ٢٠ |
| أَوْزَارَهَا: | فإما منا بعد وإما فداء حتى تضع الحرب أوزارها | ٤ | م محمد | ٤٧ |
| أَوْزَارَهُمْ: | وهم يحملون أوزارهم على ظهورهم ... ... ... | ٣١ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | ليحملوا أوزارهم كاملة يوم القيامة ... ... ... | ٢٥ | ك النحل | ١٦ |
| وَازِرَةٌ: | ولا تكسب كل نفس إلا عليها ولا تزر وازرة | | | |
| (٥) | وزر أخرى ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٦٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | ومن ضل فإنما يضل عليها ولا تزر وازرة وزر أخرى | ١٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ولا تزر وازرة وزر أخرى ... ... ... ... ... | ١٨ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وإن تشكروا يرضه لكم ولا تزر وازرة وزر أخرى ... | ٧ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ألا تزر وازرة وزر أخرى ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك النجم | ٥٣ |
| وَزَرَ: | كلا لا وزر . إلى ربك يومئذ المستقر ... ... ... | ١١ | ك القيامة | ٧٥ |
| وَزِيرًا: | واجعل لي وزيرا من أهلي . هرون أخي . أشدد به أزري | ٢٩ | ك طه | ٢٠ |
| (٢) | ولقد آتينا موسى الكتاب وجعلنا معه أخاه هرون وزيرا | ٣٥ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| أَوْزِعْنِي: | فتبسم ضاحكا من قولها وقال رب أوزعني أن | | | |
| (٢) | أشكر نعمتك التي أنعمت علي ... ... ... ... | ١٩ | ك النمل | ٢٧ |
| | حتى إذا بلغ أشده وبلغ أربعين سنة قال رب أوزعني | | | |
| | أن أشكر نعمتك التي أنعمت علي ... ... ... ... | ١٥ | م الأحقاف | ٤٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يُوزَعُونَ: | وحشر لسليمان جنوده من الجن والإنس والطير | | | |
| (٣) | فهم يوزعون ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك النمل | ٢٧ |
| | ويوم نحشر من كل أمة فوجا ممن يكذب بآياتنا | | | |
| | فهم يوزعون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨٣ | ك « | ٢٧ |
| | ويوم يحشر أعداء الله إلى النار فهم يوزعون ... ... | ١٩ | ك فصلت | ٤١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| وَزَنُوهُمْ: | وإذا كالوهم أو وزنوهم يخسرون ... ... ... | ٣ | ك المطففين | ٨٣ |
| وَزِنُوا: | وأوفوا الكيل إذا كلتم وزنوا بالقسطاس المستقيم | ٣٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٢) | وزنوا بالقسطاس المستقيم ... ... ... ... ... | ١٨٢ | ك الشعراء | ٢٦ |
| الْوَزْنُ: | والوزن يومئذ الحق ... ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | وأقيموا الوزن بالقسط ولا تخسروا الميزان ... ... | ٩ | م الرحمن | ٥٥ |
| وَزْنًا: | فحبطت أعمالهم فلا نقيم لهم يوم القيامة وزنا ... ... | ١٠٥ | ك الكهف | ١٨ |
| مَوْزُونٍ: | وألقينا فيها رواسي وأنبتنا فيها من كل شيء موزون | ١٩ | ك الحجر | ١٥ |
| الْمِيزَانَ: | وأوفوا الكيل والميزان بالقسط .. ... ... ... | ١٥٢ | م الأنعام | ٦ |
| (٩) | فأوفوا الكيل والميزان ولا تبخسوا الناس أشياءهم ... | ٨٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولا تنقصوا المكيال والميزان إني أراكم بخير ... ... | ٨٤ | ك هود | ١١ |
| | ويا قوم أوفوا المكيال والميزان بالقسط ... ... ... | ٨٥ | ك « | ١١ |
| | الله الذي أنزل الكتاب بالحق والميزان... ... ... ... | ١٧ | ك الشورى | ٤٢ |
| | والسماء رفعها ووضع الميزان ... ... ... ... ... | ٧ | م الرحمن | ٥٥ |
| | ألا تطغوا في الميزان ... ... ... ... ... ... | ٨ | م « | ٥٥ |
| | وأقيموا الوزن بالقسط ولا تخسروا الميزان ... ... | ٩ | م « | ٥٥ |
| | وأنزلنا معهم الكتاب والميزان ليقوم الناس بالقسط | ٢٥ | م الحديد | ٥٧ |
| الْمَوَازِينَ: | ونضع الموازين القسط ليوم القيامة ... ... ... | ٤٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| مَوَازِينُهُ: | فمن ثقلت موازينه فأولئك هم المفلحون... ... | ٨ | ك الأعراف | ٧ |
| (٦) | ومن خفت موازينه فأولئك الذين خسروا أنفسهم | ٩ | ك « | ٧ |
| | فمن ثقلت موازينه فأولئك هم المفلحون ... ... ... | ١٠٢ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ومن خفت موازينه فأولئك الذين خسروا أنفسهم | ١٠٣ | ك « | ٢٣ |
| | فأما من ثقلت موازينه . فهو في عيشة راضية... ... | ٦ | ك القارعة | ١٠١ |
| | وأما من خفت موازينه . فأمه هاوية ... ... ... | ٨ | ك « | ١٠١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| وَسَطْنَ: | فأثرن به نقعا . فوسطن به جمعا ... ... ... | ٥ | ك العاديات | ١٠٠ |
| وَسَطًا: | وكذلك جعلناكم أمة وسطا لتكونوا شهداء على الناس | ١٤٣ | م البقرة | ٢ |
| أَوْسَطِ: | فكفارته إطعام عشرة مساكين من أوسط | | | |
| | ما تطعمون أهليكم أو كسوتهم أو تحرير رقبة ... | ٨٩ | م المائدة | ٥ |
| أَوْسَطُهُمْ: | قال أوسطهم ألم أقل لكم لولا تسبحون... ... | ٢٨ | م القلم | ٦٨ |
| الْوُسْطَى: | حافظوا على الصلوات والصلاة الوسطى .. ... | ٢٣٨ | م البقرة | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| وَسِعَ | : وسع كرسيه السموات والأرض ... ... ... ... | ٢٥٥م | البقـرة | ٢ |
| (٤) | وسع ربي كل شيء علما أفلا تتذكرون ... ... ... | ٨٠ | ك الأنعام | ٦ |
| | وسع ربنا كل شيء علما على الله توكلنا ... ... ... | ٨٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | إنما إلهكم الله الذي لا إله إلا هو وسع كل شيء علما | ٩٨ | ك طـه | ٢٠ |
| وَسِعَتْ | : قال عذابي أصيب به من أشاء ورحمتي وسعت كل شيء | ١٥٦ | ك الأعراف | ٧ |
| وَسِعْتَ | : ربنا وسعت كل شيء رحمة وعلما فاغفر للذين تابوا | ٧ | ك غافـر | ٤٠ |
| وُسْعَهَا | : لا تكلف نفس إلا وسعها ... ... ... ... | ٢٣٣م | البقـرة | ٢ |
| (٥) | لا يكلف الله نفسا إلا وسعها ... ... ... ... | ٢٨٦م | « | ٢ |
| | وأوفوا الكيل والميزان بالقسط لا نكلف نفسا إلا وسعها | ١٥٢م | الأنعام | ٦ |
| | والذين آمنوا وعملوا الصالحات لا نكلف نفسا إلا وسعها | ٤٢ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولا نكلف نفسا إلا وسعها ولدينا كتاب ينطق بالحق | ٦٢ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| وَاسِعٌ | : فأينما تولوا فثم وجه الله إن الله واسع عليم ... | ١١٥م | البقـرة | ٢ |
| (٨) | والله يؤتي ملكه من يشاء والله واسع عليم... ... ... | ٢٤٧م | « | ٢ |
| | والله يضاعف لمن يشاء والله واسع عليم ... ... ... | ٢٦١م | « | ٢ |
| | والله يعدكم مغفرة منه وفضلا والله واسع عليم ... ... | ٢٦٨م | « | ٢ |
| | قل إن الفضل بيد الله يؤتيه من يشاء والله واسع عليم | ٧٣ | م آل عمران | ٣ |
| | ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء والله واسع عليم... ... | ٥٤ | م المائدة | ٥ |
| | إن يكونوا فقراء يغنهم الله من فضله والله واسع عليم | ٣٢ | م النـور | ٢٤ |
| | إن ربك واسع المغفرة هو أعلم بكم إذ أنشأكم من الأرض | ٣٢ | م النجم | ٥٣ |
| وَاسِعًا | : وإن يتفرقا يغن الله كلا من سعته وكان الله واسعا حكيما | ١٣٠م | النسـاء | ٤ |
| وَاسِعَةٌ | : قالوا ألم تكن أرض الله واسعة فتهاجروا فيها ... | ٩٧م | « | ٤ |
| (٤) | فإن كذبوك فقل ربكم ذو رحمة واسعة ... ... ... | ١٤٧ | ك الأنعام | ٦ |
| | يا عبادي الذين آمنوا إن أرضي واسعة فإياي فاعبدون | ٥٦ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | للذين أحسنوا في هذه الدنيا حسنة وأرض الله واسعة | ١٠ | ك الزمر | ٣٩ |
| سَعَةٍ | : ونحن أحق بالملك منه ولم يؤت سعة من المال | ٢٤٧م | البقـرة | ٢ |
| (٤) | ومن يهاجر في سبيل الله يجد في الأرض مراغما كثيرا وسعة | ١٠٠م | النسـاء | ٤ |
| | ولا يأتل أولوا الفضل منكم والسعة أن يؤتوا أولي القربى | ٢٢م | النـور | ٢٤ |
| | لينفق ذو سعة من سعته... ... ... ... ... ... | ٧م | الطـلاق | ٦٥ |
| سَعَتِهِ | : وإن يتفرقا يغن الله كلا من سعته ... ... ... | ١٣٠م | النسـاء | ٤ |
| (٢) | لينفق ذو سعة من سعته... ... ... ... ... ... | ٧م | الطـلاق | ٦٥ |
| الْمُوسِعِ | : ومتعوهن على الموسع قدره وعلى المقتر قدره | ٢٣٦م | البقـرة | ٢ |
| لَمُوسِعُونَ | : والسماء بنيناها بأيد وإنا لموسعون... ... ... | ٤٧ | ك الذاريات | ٥١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| وَسَقَ | : والليل وما وسق ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| اتَّسَقَ | : والقمر إذا اتسق . لتركبن طبقا عن طبق ... ... | ١٨ | ك « | ٨٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| الْوَسِيلَةَ | : يا أيها الذين آمنوا اتقوا الله وابتغوا إليه الوسيلة | ٣٥م | المائدة | ٥ |
| (٢) | أولئك الذين يدعون يبتغون إلى ربهم الوسيلة... ... | ٥٧م | الإسـراء | ١٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| سَنَسِمُهُ | : سنسمه على الخرطوم ... ... ... ... ... | ١٦ | ك القـلم | ٦٨ |
| لِلْمُتَوَسِّمِينَ | : إن في ذلك لآيات للمتوسمين ... ... ... ... | ٧٥ | ك الحجـر | ١٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| سِنَةٌ | : الله لا إله إلا هو الحي القيوم لا تأخذه سنة ولا نوم | ٢٥٥م | البقـرة | ٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| وَسْوَسَ | : فوسوس لهما الشيطان ليبدي لهما ما ووري عنهما | ٢٠ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | فوسوس إليه الشيطان قال يا آدم هل أدلك على شجرة الخلد | ١٢٠ | ك طـه | ٢٠ |
| تُوَسْوِسُ | : ولقد خلقنا الإنسان ونعلم ما توسوس به نفسه | ١٦ | ك قـ | ٥٠ |
| يُوَسْوِسُ | : الذي يوسوس في صدور الناس . من الجنة والناس | ٥ | ك النـاس | ١١٤ |
| الْوَسْوَاسِ | : قل أعوذ برب الناس . ملك الناس . إله الناس . | | | |
| | من شر الوسواس الخناس ... ... ... ... ... | ٤ | ك « | ١١٤ |
| | ✦✦✦ | | | |
| شِيَةَ | : تثير الأرض ولا تسقي الحرث مسلمة لا شية فيها... ... | ٧١م | البقـرة | ٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| وَاصِبٌ | : ويقذفون من كل جانب . دحورا ولهم عذاب واصب | ٩ | ك الصافات | ٣٧ |
| وَاصِبًا | : وله ما في السموات والأرض وله الدين واصبا ... | ٥٢ | ك النحل | ١٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| مُؤْصَدَةٌ | : هم أصحاب المشئمة . عليهم نار مؤصدة ... | ٢٠ | ك البلد | ٩٠ |
| (٢) | إنها عليهم مؤصدة . في عمد ممددة ... ... ... ... | ٨ | ك الهمزة | ١٠٤ |
| بِالْوَصِيدِ | : وكلبهم باسط ذراعيه بالوصيد ... ... ... ... | ١٨ | ك الكهف | ١٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تَصِفُ | : وتصف ألسنتهم الكذب أن لهم الحسنى ... ... | ٦٢ | ك النحل | ١٦ |
| (٢) | ولا تقولوا لما تصف ألسنتكم الكذب هذا حلال وهذا حرام | ١١٦ | ك « | ١٦ |
| تَصِفُونَ | : فصبر جميل والله المستعان على ما تصفون... ... | ١٨ | ك يوسف | ١٢ |
| (٤) | قال أنتم شر مكانا والله أعلم بما تصفون ... ... ... | ٧٧ | ك « | ١٢ |
| | ولكم الويل مما تصفون ... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | قال رب احكم بالحق وربنا الرحمن المستعان على ما تصفون | ١١٢ | ك « | ٢١ |
| يَصِفُونَ | : سبحانه وتعالى عما يصفون... ... ... ... ... | ١٠٠ | ك الأنعام | ٦ |
| (٧) | فسبحان الله رب العرش عما يصفون ... ... ... ... | ٢٢ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ولعلا بعضهم على بعض سبحان الله عما يصفون ... | ٩١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ادفع بالتي هي أحسن السيئة نحن أعلم بما يصفون | ٩٦ | ك « | ٢٣ |
| | ولقد علمت الجنة إنهم لمحضرون . سبحان الله عما يصفون | ١٥٩ | ك الصافات | ٣٧ |
| | سبحان ربك رب العزة عما يصفون ... ... ... ... | ١٨٠ | ك « | ٣٧ |
| | سبحان رب السموات والأرض رب العرش عما يصفون | ٨٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| وَصْفَهُمْ | : سيجزيهم وصفهم إنه حكيم عليم ... ... ... | ١٣٩ | ك الأنعام | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| تَصِلُ | فلما رأى أيديهم لا تصل إليه نكرهم وأوجس منهم خيفة ... ... ... ... ... ... ... | ٧٠ | ك هـود | ١١ |
| يَصِلُ | فما كان لشركائهم فلا يصل إلى الله ... ... ... | ١٣٦ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | وما كان لله فهو يصل إلى شركائهم ... ... ... ... | ١٣٦ | ك « | ٦ |
| يَصِلُوا | قالوا يالوط إنا رسل ربك لن يصلوا إليك ... ... | ٨١ | ك هـود | ١١ |
| يَصِلُونَ | إلا الذين يصلون إلى قوم بينكم وبينهم ميثاق ... | ٩٠ | م النساء | ٤ |
| (٣) | والذين يصلون ما أمر الله به أن يوصل ويخشون ربهم | ٢١ | م الرعد | ١٣ |
| | ونجعل لكما سلطانا فلا يصلون إليكما ... ... ... | ٣٥ | ك القصص | ٢٨ |
| وَصَّلْنَا | ولقد وصلنا لهم القول لعلهم يتذكرون ... ... ... | ٥١ | ك « | ٢٨ |
| يُوصَلَ | ويقطعون ما أمر الله به أن يوصل ويفسدون | | | |
| (٣) | في الأرض أولئك هم الخاسرون ... ... ... ... | ٢٧ | م البقرة | ٢ |
| | والذين يصلون ما أمر الله به أن يوصل ويخشون ربهم | | | |
| | ويخافون سوء الحساب ... ... ... ... ... ... | ٢١ | م الرعد | ١٣ |
| | ويقطعون ما أمر الله به أن يوصل ويفسدون | | | |
| | في الأرض أولئك لهم اللعنة ولهم سوء الدار | ٢٥ | م « | ١٣ |
| وَصِيلَةٍ | ما جعل الله من بحيرة ولا سائبة ولا وصيلة ولا حام | ١٠٣ | م المائدة | ٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| وَصَّى | ووصى بها إبراهيم بنيه ويعقوب ... ... ... ... | ١٣٢ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | شرع لكم من الدين ما وصى به نوحا والذي أوحينا إليك | ١٣ | ك الشورى | ٤٢ |
| وَصَّاكُمْ | أم كنتم شهداء إذ وصاكم الله بهذا ... ... ... | ١٤٤ | ك الأنعام | ٦ |
| (٤) | ذلكم وصاكم به لعلكم تعقلون ... ... ... ... | ١٥١ | م « | ٦ |
| | ذلكم وصاكم به لعلكم تذكرون ... ... ... ... | ١٥٢ | م « | ٦ |
| | ذلكم وصاكم به لعلكم تتقون ... ... ... ... | ١٥٣ | م « | ٦ |
| وَصَّيْنَا | ولقد وصينا الذين أوتوا الكتاب من قبلكم | | | |
| (٥) | وإياكم أن اتقوا الله ... ... ... ... ... ... | ١٣١ | م النساء | ٤ |
| | ووصينا الإنسان بوالديه حسنا ... ... ... ... | ٨ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | ووصينا الإنسان بوالديه حملته أمه وهنا على وهن ... | ١٤ | ك لقمان | ٣١ |
| | وما وصينا به إبراهيم وموسى وعيسى أن أقيموا الدين | ١٣ | ك الشورى | ٤٢ |
| | ووصينا الإنسان بوالديه إحسانا ... ... ... ... | ١٥ | م الأحقاف | ٤٦ |
| وَأَوْصَانِي | وأوصاني بالصلاة والزكاة ما دمت حيا ... | ٣١ | ك مريم | ١٩ |
| تُوصُونَ | فلهن الثمن مما تركتم من بعد وصية توصون بها أو دين | ١٢ | م النساء | ٤ |
| يُوصِي | فلأمه السدس من بعد وصية يوصي بها أو دين | ١١ | م « | ٤ |
| يُوصِيكُمُ | يوصيكم الله في أولادكم للذكر مثل حظ الأنثيين | ١١ | م « | ٤ |
| يُوصِينَ | فلكم الربع مما تركن من بعد وصية يوصين بها أو دين | ١٢ | م « | ٤ |
| يُوصَى | فهم شركاء في الثلث من بعد وصية يوصى بها أو دين | ١٢ | م « | ٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَوَاصَوْا | أتواصوا به بل هم قوم طاغون ... ... ... ... | ٥٣ | ك الذاريات | ٥١ |
| (٥) | ثم كان من الذين آمنوا وتواصوا بالصبر ... ... ... | ١٧ | ك البلد | ٩٠ |
| | وتواصوا بالمرحمة ... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك « | ٩٠ |
| | إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات وتواصوا بالحق | ٣ | ك العصر | ١٠٣ |
| | وتواصوا بالصبر ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك « | ١٠٣ |
| مُوصٍ | فمن خاف من موص جنفا أو إثما فأصلح بينهم فلا إثم عليه | ١٨٢ | م البقرة | ٢ |
| وَصِيَّةً | كتب عليكم إذا حضر أحدكم الموت إن ترك خيرا | | | |
| (٨) | الوصية للوالدين والأقربين ... ... ... ... ... | ١٨٠ | م « | ٢ |
| | والذين يتوفون منكم ويذرون أزواجا وصية لأزواجهم | ٢٤٠ | م « | ٢ |
| | فلأمه السدس من بعد وصية يوصى بها أو دين ... | ١١ | م النساء | ٤ |
| | فلكم الربع مما تركن من بعد وصية يوصين بها أو دين | ١٢ | م « | ٤ |
| | فلهن الثمن مما تركتم من بعد وصية توصون بها أو دين | ١٢ | م « | ٤ |
| | فهم شركاء في الثلث من بعد وصية يوصى بها أو دين غير مضار | ١٢ | م « | ٤ |
| | وصية من الله والله عليم حليم ... ... ... ... | ١٢ | م « | ٤ |
| | شهادة بينكم إذا حضر أحدكم الموت حين الوصية اثنان | | | |
| | ذوا عدل منكم ... ... ... ... ... ... ... | ١٠٦ | م المائدة | ٥ |
| تَوْصِيَةً | فلا يستطيعون توصية ولا إلى أهلهم يرجعون ... | ٥٠ | ك يس | ٣٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| وَضَعَ | والسماء رفعها ووضع الميزان ... ... ... ... | ٧ | م الرحمن | ٥٥ |
| وَضَعَتْ | قالت رب إني وضعتها أنثى والله أعلم بما وضعت | ٣٦ | م آل عمران | ٣ |
| وَضَعَتْهُ | حملته أمه كرها ووضعته كرها ... ... ... ... | ١٥ | م الأحقاف | ٤٦ |
| وَضَعَتْهَا | فلما وضعتها ... ... ... ... ... ... ... | ٣٦ | م آل عمران | ٣ |
| وَضَعْتُهَا | قالت رب إني وضعتها أنثى ... ... ... ... ... | ٣٦ | م « | ٣ |
| وَضَعْنَا | ألم نشرح لك صدرك ووضعنا عنك وزرك ... | ٢ | ك الشرح | ٩٤ |
| وَضَعَهَا | والأرض وضعها للأنام ... ... ... ... ... ... | ١٠ | م الرحمن | ٥٥ |
| تَضَعُ | وتضع كل ذات حمل حملها ... ... ... ... ... | ٢ | م الحج | ٢٢ |
| (٤) | وما تحمل من أنثى ولا تضع إلا بعلمه ... ... ... | ١١ | ك فاطر | ٣٥ |
| | وما تحمل من أنثى ولا تضع إلا بعلمه ... ... ... | ٤٧ | ك فصلت | ٤١ |
| | فإما منا بعد وإما فداء حتى تضع الحرب أوزارها ... | ٤ | م محمد | ٤٧ |
| تَضَعُوا | ولا جناح عليكم إن كان بكم أذى من مطر أو كنتم | | | |
| | مرضى أن تضعوا أسلحتكم ... ... ... ... ... | ١٠٢ | م النساء | ٤ |
| تَضَعُونَ | من قبل صلاة الفجر وحين تضعون ثيابكم من الظهيرة | ٥٨ | م النور | ٢٤ |
| نَضَعُ | ونضع الموازين القسط ليوم القيامة ... ... ... | ٤٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| يَضَعُ | ويضع عنهم إصرهم والأغلال التي كانت عليهم ... | ١٥٧ | ك الأعراف | ٧ |
| يَضَعْنَ | فليس عليهن جناح أن يضعن ثيابهن غير متبرجات بزينة | ٦٠ | م النور | ٢٤ |
| (٣) | وأولات الأحمال أجلهن أن يضعن حملهن ... ... | ٤ | م الطلاق | ٦٥ |
| | وإن كن أولات حمل فأنفقوا عليهن حتى يضعن حملهن | ٦ | م « | ٦٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| وُضِعَ | : إن أول بيت وضع للناس للذى ببكة مباركا ... ... | ٩٦ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | ووضع الكتاب فترى المجرمين مشفقين مما فيه ... ... | ٤٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | ووضع الكتاب وجىء بالنبيين والشهداء ... ... ... | ٦٩ | ك الزمر | ٣٩ |
| لَأَوْضَعُوا | : ولأوضعوا خلالكم يبغونكم الفتنة ... ... ... | ٤٧ | م التوبة | ٩ |
| مَوَاضِعِهِ | : من الذين هادوا يحرفون الكلم عن مواضعه ... | ٤٦ | م النساء | ٤ |
| (٣) | يحرفون الكلم عن مواضعه ونسوا حظا مما ذكروا به | ١٣ | م المائدة | ٥ |
| | مما عون لقوم آخرين لم يأتوك يحرفون الكلم من بعد مواضعه | ٤١ | م « | ٥ |
| مَوْضُوعَةٌ | : فيها سرر مرفوعة . وأكواب موضوعة ... ... | ١٤ | ك الغاشية | ٨٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| مَوْضُونَةٍ | : ثلة من الأولين . وقليل من الآخرين . على سرر موضونة ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تَطَئُوهَا | : وأورثكم أرضهم وديارهم وأموالهم وأرضا لم تطئوها | ٢٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| تَطَئُوهُمْ | : ولولا رجال مؤمنون ونساء مؤمنات لم تعلموهم أن تطئوهم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | م الفتح | ٤٨ |
| يَطَئُونَ | : ولا يطئون موطئا يغيظ الكفار ولا ينالون من عدو نيلا إلا كتب لهم به عمل صالح ... ... ... | ١٢٠ | م التوبة | ٩ |
| لِيُوَاطِئُوا | : يحلونه عاما ويحرمونه عاما ليواطئوا عدة ما حرم الله | ٣٧ | م « | ٩ |
| وَطْئًا | : إن ناشئة الليل هى أشد وطئا وأقوم قيلا ... ... | ٦ | ك المزمل | ٧٣ |
| موطِئًا | : ولا يطئون موطئا يغيظ الكفار ولا ينالون من عدو نيلا إلا كتب لهم به عمل صالح ... ... ... ... | ١٢٠ | م التوبة | ٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| وَطَرًا | : فلما قضى زيد منها وطرا زوجناكها ... ... ... | ٣٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| (٢) | لكى لا يكون على المؤمنين حرج فى أزواج أدعيائهم إذا قضوا منهن وطرا ... ... ... ... ... ... | ٣٧ | م « | ٣٣ |
| | ✦✦✦ | | | |
| مَوَاطِنَ | : لقد نصركم الله فى مواطن كثيرة ... ... ... ... | ٢٥ | م التوبة | ٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| وَعَدَ | : وكلا وعد الله الحسنى ... ... ... ... ... ... | ٩٥ | م النساء | ٤ |
| (١٠) | وعد الله الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم مغفرة وأجر عظيم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | م المائدة | ٥ |
| | فهل وجدتم ما وعد ربكم حقا ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | وعد الله المنافقين والمنافقات والكفار نار جهنم ... | ٦٨ | م التوبة | ٩ |
| | وعد الله المؤمنين والمؤمنات جنات تجرى من تحتها الأنهار | ٧٢ | م « | ٩ |
| | جنات عدن التى وعد الرحمن عباده بالغيب ... ... | ٦١ | ك مريم | ١٩ |
| | وعد الله الذين آمنوا منكم وعملوا الصالحات ليستخلفنهم فى الأرض... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٥ | م النور | ٢٤ |
| | هذا ما وعد الرحمن وصدق المرسلون ... ... ... | ٥٢ | ك يس | ٣٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| وَعَدَ | : وعد الله الذين آمنوا وعملوا الصالحات منهم مغفرة وأجرا عظيما ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٩ | م الفتح | ٤٨ |
| | وكلا وعد الله الحسنى والله بما تعملون خبير ... ... | ١٠ | م الحديد | ٥٧ |
| وَعَدَتُّكُمْ | : إن الله وعدكم وعد الحق ووعدتكم فأخلفتكم ... | ٢٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| وَعَدْتَنَا | : ربنا وآتنا ما وعدتنا على رسلك ولا تخزنا يوم القيامة | ١٩٤ | م آل عمران | ٣ |
| وَعَدْتَهُمْ | : ربنا وأدخلهم جنات عدن التى وعدتهم ... ... | ٨ | ك غافر | ٤٠ |
| وَعَدَكُمْ | : وقال الشيطان لما قضى الأمر إن الله وعدكم وعد الحق | ٢٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| (٢) | وعدكم الله مغانم كثيرة تأخذونها فعجل لكم هذه ... | ٢٠ | م الفتح | ٤٨ |
| وَعَدَنَا | : ونادى أصحاب الجنة أصحاب النار أن قد وجدنا | | | |
| (٣) | ما وعدنا ربنا حقا ... ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | وإذ يقول المنافقون والذين فى قلوبهم مرض ما وعدنا الله ورسوله إلا غرورا... ... ... ... | ١٢ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | قالوا هذا ما وعدنا الله ورسوله ... ... ... ... | ٢٢ | م « | ٣٣ |
| وَعَدْنَاهُ | : أفمن وعدناه وعدا حسنا فهو لاقيه كمن متعناه متاع الحياة الدنيا ... ... ... ... ... ... ... | ٦١ | ك القصص | ٢٨ |
| وَعَدْنَاهُمْ | : أو نرينك الذى وعدناهم فإنا عليهم مقتدرون | ٤٢ | ك الزخرف | ٤٣ |
| وَعَدَهَا | : وما كان استغفار إبراهيم لأبيه إلا عن موعدة وعدها إياه | ١١٤ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | النار وعدها الله الذين كفروا وبئس المصير ... ... | ٧٢ | م الحج | ٢٢ |
| وَعَدُوهُ | : فأعقبهم نفاقا فى قلوبهم إلى يوم يلقونه بما أخلفوا الله ما وعدوه ... ... ... ... ... ... ... | ٧٧ | م التوبة | ٩ |
| أَتَعِدَانِنِي | : والذى قال لوالديه أف لكما أتعدانى أن أخرج | ١٧ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| تَعِدُنَا | : فأتنا بما تعدنا إن كنت من الصادقين ... ... ... | ٧٠ | ك الأعراف | ٧ |
| (٤) | وقالوا يا صالح ائتنا بما تعدنا إن كنت من المرسلين | ٧٧ | ك « | ٧ |
| | فأكثرت جدالنا فأتنا بما تعدنا إن كنت من الصادقين | ٣٢ | ك هود | ١١ |
| | فأتنا بما تعدنا إن كنت من الصادقين ... ... ... | ٢٢ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| نَعِدُهُمْ | : وإما نرينك بعض الذى نعدهم أو نتوفينك | | | |
| (٤) | فإلينا مرجعهم... ... ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك يونس | ١٠ |
| | وإن ما نرينك بعض الذى نعدهم أو نتوفينك فإنما عليك البلاغ ... ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | م الرعد | ١٣ |
| | وإنا على أن نريك ما نعدهم لقادرون ... ... ... | ٩٥ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | فإما نرينك بعض الذى نعدهم أو نتوفينك فإلينا يرجعون | ٧٧ | ك غافر | ٤٠ |
| يَعِدُ | : بل إن يعد الظالمون بعضهم بعضا إلا غرورا ... | ٤٠ | ك فاطر | ٣٥ |
| يَعِدُكُمُ | : الشيطان يعدكم الفقر ويأمركم بالفحشاء ... ... | ٢٦٨ | م البقرة | ٢ |
| (٦) | والله يعدكم مغفرة منه وفضلا والله واسع عليم ... ... | ٢٦٨ | م « | ٢ |
| | وإذ يعدكم الله إحدى الطائفتين أنها لكم ... ... ... | ٧ | م الأنفال | ٨ |
| | قال يا قوم ألم يعدكم ربكم وعدا حسنا ... ... ... | ٨٦ | ك طه | ٢٠ |
| | أيعدكم أنكم إذا متم وكنتم ترابا وعظاما أنكم مخرجون | ٣٥ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وإن يك صادقا يصبكم بعض الذى يعدكم... ... ... | ٢٨ | ك غافر | ٤٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَعِدُهُمْ | : يعدهم ويمنيهم ... ... ... ... ... ... ... | ١٢٠ | م النساء | ٤ |
| (٣) | وما يعدهم الشيطان إلا غرورا ... ... ... ... ... | ١٢٠ | م « | ٤ |
| | وعدهم وما يعدهم الشيطان إلا غرورا ... ... ... | ٦٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| عِدْهُمْ | : وشاركهم فى الأموال والأولاد وعدهم ... ... | ٦٤ | ك « | ١٧ |
| تُوعَدُونَ | : ولا تقعدوا بكل صراط توعدون ... ... ... | ٨٦ | ك الأعراف | ٧ |
| وُعِدَ | : مثل الجنة التى وعد المتقون تجرى من تحتها الأنهار | ٣٥ | م الرعد | ١٣ |
| (٣) | قل أذلك خير أم جنة الخلد التى وعد المتقون ... ... | ١٥ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | مثل الجنة التى وعد المتقون فيها أنهار من ماء غير آسن | ١٥ | م محمد | ٤٧ |
| وُعِدْنَا | : لقد وعدنا نحن وآباؤنا هذا من قبل ... ... ... | ٨٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| (٢) | لقد وعدنا هذا نحن وآباؤنا من قبل ... ... ... | ٦٨ | ك النمل | ٢٧ |
| تُوعَدُونَ | : إن ما توعدون لآت وما أنتم بمعجزين ... ... | ١٣٤ | ك الأنعام | ٦ |
| (١٢) | وتتلقاهم الملائكة هذا يومكم الذى كنتم توعدون | ١٠٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | وإن أدرى أقريب أم بعيد ما توعدون ... ... ... | ١٠٩ | ك « | ٢١ |
| | هيهات هيهات لما توعدون ... ... ... ... ... | ٣٦ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | هذه جهنم التى كنتم توعدون ... ... ... ... ... | ٦٣ | ك يس | ٣٦ |
| | هذا ما توعدون ليوم الحساب ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك ص | ٣٨ |
| | ألا تخافوا ولا تحزنوا وأبشروا بالجنة التى كنتم توعدون | ٣٠ | ك فصلت | ٤١ |
| | هذا ما توعدون لكل أواب حفيظ ... ... ... ... | ٣٢ | ك ق | ٥٠ |
| | إنما توعدون لصادق ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك الذاريات | ٥١ |
| | وفى السماء رزقكم وما توعدون ... ... ... ... | ٢٢ | ك « | ٥١ |
| | قل إن أدرى أقريب ما توعدون أم يجعل له ربى أمدا | ٢٥ | ك الجن | ٧٢ |
| | إنما توعدون لواقع ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك المرسلات | ٧٧ |
| يُوعَدُونَ | : حتى إذا رأوا ما يوعدون إما العذاب وإما الساعة | ٧٥ | ك مريم | ١٩ |
| (١٠) | قل رب إما ترينى ما يوعدون ... ... ... ... ... | ٩٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ثم جاءهم ما كانوا يوعدون ... ... ... ... ... | ٢٠٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فذرهم يخوضوا ويلعبوا حتى يلاقوا يومهم الذى يوعدون | ٨٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | وعد الصدق الذى كانوا يوعدون ... ... ... ... | ١٦ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | كأنهم يوم يرون ما يوعدون لم يلبثوا إلا ساعة من نهار | ٣٥ | م « | ٤٦ |
| | فويل للذين كفروا من يومهم الذى يوعدون ... ... | ٦٠ | ك الذاريات | ٥١ |
| | فذرهم يخوضوا ويلعبوا حتى يلاقوا يومهم الذى يوعدون | ٤٢ | ك المعارج | ٧٠ |
| | ترهقهم ذلة ذلك اليوم الذى كانوا يوعدون ... ... | ٤٤ | ك « | ٧٠ |
| | حتى إذا رأوا ما يوعدون فسيعلمون من أضعف ناصرا | ٢٤ | ك الجن | ٧٢ |
| وَاعَدْنَا | : وإذ واعدنا موسى أربعين ليلة ثم اتخذتم العجل | | | |
| (٢) | من بعده ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥١ | م البقرة | ٢ |
| | وواعدنا موسى ثلاثين ليلة وأتممناها بعشر ... ... | ١٤٢ | ك الأعراف | ٧ |
| وَاعَدْنَاكُمْ | : قد أنجيناكم من عدوكم وواعدناكم جانب | | | |
| | الطور الأيمن ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨٠ | ك طه | ٢٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تُوَاعِدُوهُنَّ | : ولكن لا تواعدوهن سرا إلا أن تقولوا | | | |
| | قولا معروفا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣٥ | م البقرة | ٢ |
| تَوَاعَدْتُمْ | : ولو تواعدتم لاختلفتم فى الميعاد... ... ... ... | ٤٢ | م الأنفال | ٨ |
| وَعْدَ | : وعد الله حقا ومن أصدق من الله قيلا ... ... ... | ١٢٢ | م النساء | ٤ |
| (٣٤) | إليه مرجعكم جميعا وعد الله حقا ... ... ... ... | ٤ | ك يونس | ١٠ |
| | ويقولون متى هذا الوعد إن كنتم صادقين ... ... | ٤٨ | ك « | ١٠ |
| | ألا إن وعد الله حق ولكن أكثرهم لا يعلمون ... | ٥٥ | ك « | ١٠ |
| | فقال تمتعوا فى داركم ثلاثة أيام ذلك وعد غير مكذوب | ٦٥ | ك هود | ١١ |
| | أو تحل قريبا من دارهم حتى يأتى وعد الله ... ... | ٣١ | م الرعد | ١٣ |
| | وقال الشيطان لما قضى الأمر إن الله وعدكم وعد الحق | ٢٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | فإذا جاء وعد أولاهما بعثنا عليكم عبادا لنا أولى بأس شديد | ٥ | ك الإسراء | ١٧ |
| | فإذا جاء وعد الآخرة ليسوءوا وجوهكم وليدخلوا المسجد | ٧ | ك « | ١٧ |
| | أسكنوا الأرض فإذا جاء وعد الآخرة جئنا بكم لفيفا | ١٠٤ | ك « | ١٧ |
| | ويقولون سبحان ربنا إن كان وعد ربنا لمفعولا ... | ١٠٨ | ك « | ١٧ |
| | وكذلك أعثرنا عليهم ليعلموا أن وعد الله حق ... ... | ٢١ | ك الكهف | ١٨ |
| | قال هذا رحمة من ربى فإذا جاء وعد ربى جعله دكاء | ٩٨ | م « | ١٨ |
| | وكان وعد ربى حقا ... ... ... ... ... ... ... | ٩٨ | م « | ١٨ |
| | إنه كان صادق الوعد وكان رسولا نبيا ... ... ... | ٥٤ | ك مريم | ١٩ |
| | ثم صدقناهم الوعد فأنجيناهم ومن نشاء وأهلكنا المسرفين | ٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ويقولون متى هذا الوعد إن كنتم صادقين... ... ... | ٣٨ | ك « | ٢١ |
| | واقترب الوعد الحق فإذا هى شاخصة أبصار الذين كفروا | ٩٧ | ك « | ٢١ |
| | ويقولون متى هذا الوعد إن كنتم صادقين ... ... | ٧١ | ك النمل | ٢٧ |
| | فرددناه إلى أمه كى تقر عينها ولا تحزن ولتعلم أن | | | |
| | وعد الله حق ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | وعد الله لا يخلف الله وعده ولكن أكثر الناس لا يعلمون | ٦ | ك الروم | ٣٠ |
| | فاصبر إن وعد الله حق ولا يستخفنك الذين لا يوقنون | ٦٠ | ك « | ٣٠ |
| | خالدين فيها وعد الله حقا وهو العزيز الحكيم ... ... | ٩ | ك لقمان | ٣١ |
| | إن وعد الله حق فلا تغرنكم الحياة الدنيا ... ... ... | ٣٣ | ك « | ٣١ |
| | ويقولون متى هذا الوعد إن كنتم صادقين... ... ... | ٢٩ | ك سبأ | ٣٤ |
| | يأيها الناس إن وعد الله حق فلا تغرنكم الحياة الدنيا | ٥ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ويقولون متى هذا الوعد إن كنتم صادقين ... ... | ٤٨ | ك يس | ٣٦ |
| | تجرى من تحتها الأنهار وعد الله لا يخلف الله الميعاد | ٢٠ | ك الزمر | ٣٩ |
| | فاصبر إن وعد الله حق واستغفر لذنبك ... ... ... | ٥٥ | ك غافر | ٤٠ |
| | فاصبر إن وعد الله حق ... ... ... ... ... ... | ٧٧ | ك « | ٤٠ |
| | وإذا قيل إن وعد الله حق والساعة لا ريب فيها | | | |
| | قلتم ما ندرى ما الساعة ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | ونتجاوز عن سيئاتهم فى أصحاب الجنة وعد الصدق ... | ١٦ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | وهما يستغيثان الله ويلك آمن إن وعد الله حق ... | ١٧ | ك « | ٤٦ |
| | ويقولون متى هذا الوعد إن كنتم صادقين ... ... | ٢٥ | ك الملك | ٦٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| وَعْدًا | : وعدا عليه حقا فى التوراة والإنجيل والقرآن... ... | ١١١ | م التـوبة | ٩ |
| (٧) | بل وعدا عليه حقا ولكن أكثر الناس لا يعلمون ... | ٣٨ | ك النحـل | ١٦ |
| | فخاسوا خلال الديار وكان وعدا مفعولا ... ... ... | ٥ | ك الإسـراء | ١٧ |
| | قال يا قوم ألم يعدكم ربكم وعدا حسنا ... ... ... | ٨٦ | ك طـه | ٢٠ |
| | كما بدأنا أول خلق نعيده وعدا علينا إنا كنا فاعلين ... | ١٠٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | لهم فيها ما يشاءون خالدين كان على ربك وعدا مسئولا | ١٦ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| | أفمن وعدناه وعدا حسنا فهو لاقيه كمن متعناه متاع الحياة الدنيا ... ... ... ... ... ... ... | ٦١ | ك القصص | ٢٨ |
| وَعْدَكَ | : فقال رب إن ابنى من أهلى وإن وعدك الحق ... | ٤٥ | ك هـود | ١١ |
| وَعْدَهُ | : ولقد صدقكم الله وعده إذ تحسونهم بإذنه ... ... | ١٥٢ | م آل عمران | ٣ |
| (٧) | فلا تحسبن الله مخلف وعده رسله... ... ... ... | ٤٧ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | إنه كان وعده مأتيا... ... ... ... ... ... ... | ٦١ | ك مريم | ١٩ |
| | ويستعجلونك بالعذاب ولن يخلف الله وعده ... ... | ٤٧ | م الحج | ٢٢ |
| | وعد الله لا يخلف الله وعده ولكن أكثر الناس لا يعلمون | ٦ | ك الروم | ٣٠ |
| | وقالوا الحمد لله الذى صدقنا وعده وأورثنا الأرض... | ٧٤ | ك الزمر | ٣٩ |
| | السماء منفطر به كان وعده مفعولا ... ... ... ... | ١٨ | ك المزمل | ٧٣ |
| الْوَعِيدِ | : وكذلك أنزلناه قرآنا عربيا وصرفنا فيه من الوعيد | ١١٣ | ك طـه | ٢٠ |
| (٣) | ونفخ فى الصور ذلك يوم الوعيد ... ... ... ... | ٢٠ | ك قـ | ٥٠ |
| | قال لا تختصموا لدىّ وقد قدمت إليكم بالوعيد... ... | ٢٨ | ك « | ٥٠ |
| وَعِيدِ(ى) | : ذلك لمن خاف مقامى وخاف وعيد ... ... | ١٤ | ك إبراهيم | ١٤ |
| (٣) | كل كذب الرسل فحق وعيد ... ... ... ... ... | ١٤ | ك قـ | ٥٠ |
| | وما أنت عليهم بجبار فذكر بالقرآن من يخاف وعيد... | ٤٥ | ك « | ٥٠ |
| مَوْعِدٌ | : بل لهم موعد لن يجدوا من دونه موئلا ... ... ... | ٥٨ | ك الكهف | ١٨ |
| مَوْعِدًا | : بل زعمتم ألن نجعل لكم موعدا ... ... ... ... | ٤٨ | ك « | ١٨ |
| (٤) | وتلك القرى أهلكناهم لما ظلموا وجعلنا لمهلكهم موعدا | ٥٩ | ك « | ١٨ |
| | فاجعل بيننا وبينك موعدا لا نخلفه نحن ولا أنت ... | ٥٨ | ك طـه | ٢٠ |
| | وإن لك موعدا لن تخلفه ... ... ... ... ... | ٩٧ | ك « | ٢٠ |
| مَوْعِدَكَ | : قالوا ما أخلفنا موعدك بملكنا ... ... ... ... | ٨٧ | ك « | ٢٠ |
| مَوْعِدُكُمْ | : قال موعدكم يوم الزينة وأن يحشر الناس ضحى | ٥٩ | ك « | ٢٠ |
| مَوْعِدُهُ | : ومن يكفر به من الأحزاب فالنار موعده ... ... | ١٧ | م هـود | ١١ |
| مَوْعِدَهُمْ | : إن موعدهم الصبح أليس الصبح بقريب... ... | ٨١ | ك « | ١١ |
| (٣) | وإن جهنم لموعدهم أجمعين... ... ... ... ... | ٤٣ | ك الحجـر | ١٥ |
| | بل الساعة موعدهم والساعة أدهى وأمر ... ... ... | ٤٦ | م القمـر | ٥٤ |
| مَوْعِدِى | : أم أردتم أن يحل عليكم غضب من ربكم فأخلفتم موعدى ... ... ... ... ... ... ... | ٨٦ | ك طـه | ٢٠ |
| مَوْعِدَةٍ | : وما كان استغفار إبراهيم لأبيه إلا عن موعدة وعدها إياه ... ... ... ... ... ... | ١١٤ | م التـوبة | ٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الْمَوْعُودِ | : والسماء ذات البروج . واليوم الموعود ... ... | ٢ | ك البروج | ٨٥ |
| الْمِيعَادَ | : ربنا إنك جامع الناس ليوم لا ريب فيه إن الله | | | |
| (٦) | لا يخلف الميعاد ... ... ... ... ... ... | ٩ | م آل عمران | ٣ |
| | ولا تخزنا يوم القيامة إنك لا تخلف الميعاد ... ... | ١٩٤ | م « | ٣ |
| | ولو تواعدتم لاختلفتم فى الميعاد ... ... ... ... | ٤٢ | م الأنفال | ٨ |
| | إن الله لا يخلف الميعاد... ... ... ... ... ... | ٣١ | م الرعـد | ١٣ |
| | قل لكم ميعاد يوم لا تستأخرون عنه ساعة ولا تستقدمون | ٣٠ | ك سبأ | ٣٤ |
| | وعد الله لا يخلف الله الميعاد ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| أَوَعَظْتَ | : قالوا سواء علينا أوعظت أم لم تكن من الواعظين | ١٣٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| أَعِظُكَ | : إنى أعظك أن تكون من الجاهلين... ... ... ... | ٤٦ | ك هـود | ١١ |
| أَعِظُكُمْ | : قل إنما أعظكم بواحدة أن تقوموا لله مثنى وفرادى | ٤٦ | ك سبأ | ٣٤ |
| تَعِظُونَ | : لم تعظون قوما الله مهلكهم أو معذبهم عذابا شديدا | ١٦٤ | م الأعراف | ٧ |
| يَعِظُكُمْ | : واذكروا نعمة الله عليكم وما أنزل عليكم من الكتاب | | | |
| (٤) | والحكمة يعظكم به ... ... ... ... ... ... | ٢٣١ | م البقـرة | ٢ |
| | إن الله نعما يعظكم به إن الله كان سميعا بصيرا... ... | ٥٨ | م النسـاء | ٤ |
| | وينهى عن الفحشاء والمنكر والبغى يعظكم لعلكم تذكرون | ٩٠ | ك النحـل | ١٦ |
| | يعظكم الله أن تعودوا لمثله أبدا إن كنتم مؤمنين ... | ١٧ | م النـور | ٢٤ |
| يَعِظُهُ | : وإذ قال لقمان لابنه وهو يعظه يا بنىّ لا تشرك بالله | ١٣ | ك لقمان | ٣١ |
| عِظْهُمْ | : فأعرض عنهم وعظهم ... ... ... ... ... | ٦٣ | م النسـاء | ٤ |
| فَعِظُوهُنَّ | : واللاتى تخافون نشوزهنّ فعظوهنّ واهجروهنّ | ٣٤ | م « | ٤ |
| تُوعَظُونَ | : فتحرير رقبة من قبل أن يتماسا ذلكم توعظون به | ٣ | م المجادلة | ٥٨ |
| يُوعَظُ | : ذلك يوعظ به من كان منكم يؤمن بالله واليوم الآخر | ٢٣٢ | م البقـرة | ٢ |
| (٢) | ذلكم يوعظ به من كان يؤمن بالله واليوم الآخر ... | ٢ | م الطـلاق | ٦٥ |
| يُوعَظُونَ | : ولو أنهم فعلوا ما يوعظون به لكان خيرا لهم | ٦٦ | م النسـاء | ٤ |
| الْوَاعِظِينَ | : قالوا سواء علينا أوعظت أم لم تكن من الواعظين | ١٣٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| مَوْعِظَةً | : فجعلناها نكالا لما بين يديها وما خلفها وموعظة للتقين | ٦٦ | م البقـرة | ٢ |
| (٩) | فمن جاءه موعظة من ربه فانتهى فله ما سلف ... ... | ٢٧٥ | م « | ٢ |
| | هذا بيان للناس وهدى وموعظة للتقين ... ... ... | ١٣٨ | م آل عمران | ٣ |
| | ومصدقا لما بين يديه من التوراة وهدى وموعظة للتقين | ٤٦ | م المائدة | ٥ |
| | وكتبنا له فى الألواح من كل شىء موعظة ... ... | ١٤٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | يا أيها الناس قد جاءتكم موعظة من ربكم وشفاء لما فى الصدور | ٥٧ | ك يونس | ١٠ |
| | وجاءك فى هذه الحق وموعظة وذكرى للمؤمنين ... ... | ١٢٠ | ك هـود | ١١ |
| | ادع إلى سبيل ربك بالحكمة والموعظة الحسنة... ... | ١٢٥ | ك النحـل | ١٦ |
| | لقد أنزلنا إليكم آيات مبينات ومثلا من الذين خلوا من قبلكم وموعظة للتقين ... ... ... ... ... | ٣٤ | م النـور | ٢٤ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| | * * * | | |
| تَعِيَهَا | لنجعلها لكم تذكرة وتعيها أذن واعية ... ... ... | ١٢ ك الحاقة | ٦٩ |
| فَأَوْعَى | تدعوا من أدبر وتولى . وجمع فأوعى ... ... | ١٨ ك المعارج | ٧٠ |
| يُوعُونَ | بل الذين كفروا يكذبون . والله أعلم بما يوعون | ٢٣ ك الانشقاق | ٨٤ |
| وَاعِيَةٌ | لنجعلها لكم تذكرة وتعيها أذن واعية ... ... ... | ١٢ ك الحاقة | ٦٩ |
| وِعَاءِ | فبدأ بأوعيتهم قبل وعاء أخيه ... ... ... ... ... | ٧٦ ك يوسف | ١٢ |
| (٢) | ثم استخرجها من وعاء أخيه ... ... ... ... ... | ٧٦ ك « | ١٢ |
| بِأَوْعِيَتِهِمْ | فبدأ بأوعيتهم قبل وعاء أخيه... ... ... ... ... | ٧٦ ك « | ١٢ |
| | * * * | | |
| وَفْدًا | يوم نحشر المتقين إلى الرحمن وفدا .. ... ... ... | ٨٥ ك مريم | ١٩ |
| | * * * | | |
| مَوْفُورًا | فمن تبعك منهم فإن جهنم جزاؤكم جزاء موفورا ... | ٦٣ ك الإسراء | ١٧ |
| | * * * | | |
| يُوفِضُونَ | كأنهم إلى نصب يوفضون ... ... ... ... | ٤٣ ك المعارج | ٧٠ |
| | * * * | | |
| يُوَفِّقِ | إن يريدا إصلاحا يوفق الله بينهما... ... ... ... | ٣٥ م النساء | ٤ |
| وِفَاقًا | إلا حسابا وعذابا . جزاء وفاقا ... ... ... ... | ٢٦ ك النبأ | ٧٨ |
| تَوْفِيقًا | ثم جاءوك يحلفون بالله إن أردنا إلا إحسانا وتوفيقا | ٦٢ م النساء | ٤ |
| تَوْفِيقِ | إن أريد إلا الإصلاح ما استطعت وما توفيقي إلا بالله | ٨٨ ك هود | ١١ |
| | * * * | | |
| وَفَّى | أم لم ينبأ بما في صحف موسى . وإبراهيم الذي وفى | ٣٧ ك النجم | ٥٣ |
| فَوَفَّاهُ | حتى إذا جاءه لم يجده شيئا ووجد الله عنده فوفاه حسابه | ٣٩ م النور | ٢٤ |
| نُوَفِّ | من كان يريد الحياة الدنيا وزينتها نوف إليهم أعمالهم فيها | ١٥ ك هود | ١١ |
| لَيُوَفِّيَنَّهُمْ | وإن كلا لما ليوفينهم ربك أعمالهم ... ... ... | ١١١ ك « | ١١ |
| يُوَفِّيهِمْ | وأما الذين آمنوا وعملوا الصالحات فيوفيهم أجورهم | ٥٧ م آل عمران | ٣ |
| (٥) | فأما الذين آمنوا وعملوا الصالحات فيوفيهم أجورهم | ١٧٣ م النساء | ٤ |
| | يومئذ يوفيهم الله دينهم الحق ... ... ... ... | ٢٥ م النور | ٢٤ |
| | ليوفيهم أجورهم ويزيدهم من فضله ... ... ... ... | ٣٠ ك فاطر | ٣٥ |
| | ولكل درجات مما عملوا وليوفيهم أعمالهم وهم لا يظلمون | ١٩ ك الأحقاف | ٤٦ |
| وُفِّيَتْ | فكيف إذا جمعناهم ليوم لا ريب فيه ووفيت كل | | |
| (٢) | نفس ما كسبت وهم لا يظلمون ... ... ... ... | ٢٥ م آل عمران | ٣ |
| | ووفيت كل نفس ما عملت وهو أعلم بما يفعلون ... | ٧٠ ك الزمر | ٣٩ |
| تُوَفَّى | ثم توفى كل نفس ما كسبت وهم لا يظلمون ... ... | ٢٨١ م البقرة | ٢ |
| (٣) | ثم توفى كل نفس ما كسبت وهم لا يظلمون ... ... | ١٦١ م آل عمران | ٣ |
| | يوم تأتي كل نفس تجادل عن نفسها وتوفى كل نفس ما عملت | ١١١ ك النحل | ١٦ |
| تُوَفَّوْنَ | وإنما توفون أجوركم يوم القيامة ... ... ... | ١٨٥ م آل عمران | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|
| يُوَفَّ | وما تنفقوا من خير يوف إليكم وأنتم لا تظلمون ... | ٢٧٢ م البقرة | ٢ |
| (٢) | وما تنفقوا من شيء في سبيل الله يوف إليكم ... ... | ٦٠ م الأنفال | ٨ |
| يُوَفَّى | إنما يوفى الصابرون أجرهم بغير حساب ... ... ... | ١٠ ك الزمر | ٣٩ |
| أَوْفَى | بلى من أوفى بعهده واتقى فإن الله يحب المتقين ... | ٧٦ م آل عمران | ٣ |
| (٢) | ومن أوفى بما عاهد عليه الله فسيؤتيه أجرا عظيما ... | ١٠ م الفتح | ٤٨ |
| أَوْفِ | وأوفوا بعهدي أوف بعهدكم وإياي فارهبون ... | ٤٠ م البقرة | ٢ |
| أُوفِي | ألا ترون أني أوفي الكيل وأنا خير المنزلين ... ... | ٥٩ ك يوسف | ١٢ |
| وَلْيُوفُوا | وليوفوا نذورهم وليطوفوا بالبيت العتيق ... ... | ٢٩ م الحج | ٢٢ |
| يُوفُونَ | الذين يوفون بعهد الله ولا ينقضون الميثاق... ... | ٢٠ م الرعد | ١٣ |
| (٢) | يوفون بالنذر ويخافون يوما كان شره مستطيرا... ... | ٧ م الإنسان | ٧٦ |
| فَأَوْفِ | رجئنا ببضاعة مزجاة فأوف لنا الكيل وتصدق علينا | ٨٨ ك يوسف | ١٢ |
| أَوْفُوا | وأوفوا بعهدي أوف بعهدكم وإياي فارهبون | ٤٠ م البقرة | ٢ |
| (١٠) | يأيها الذين آمنوا أوفوا بالعقود ... ... ... ... | ١ م المائدة | ٥ |
| | وأوفوا الكيل والميزان بالقسط ... ... ... ... | ١٥٢ م الأنعام | ٦ |
| | وإذا قلتم فاعدلوا ولو كان ذا قربى وبعهد الله أوفوا | ١٥٢ م « | ٦ |
| | فأوفوا الكيل والميزان ولا تبخسوا الناس أشياءهم | ٨٥ ك الأعراف | ٧ |
| | ويا قوم أوفوا المكيال والميزان بالقسط ... ... | ٨٥ ك هود | ١١ |
| | وأوفوا بعهد الله إذا عاهدتم ... ... ... ... | ٩١ ك النحل | ١٦ |
| | وأوفوا بالعهد إن العهد كان مسئولا ... ... ... | ٣٤ ك الإسراء | ١٧ |
| | وأوفوا الكيل إذا كلتم وزنوا بالقسطاس المستقيم | ٣٥ ك « | ١٧ |
| | أوفوا الكيل ولا تكونوا من المخسرين ... ... ... | ١٨١ ك الشعراء | ٢٦ |
| تَوَفَّاهُمُ | إن الذين توفاهم الملائكة ظالمي أنفسهم قالوا فيم كنتم | ٩٧ م النساء | ٤ |
| تَوَفَّتْهُ | حتى إذا جاء أحدكم الموت توفته رسلنا وهم لا يفرطون | ٦١ ك الأنعام | ٦ |
| تَوَفَّتْهُمُ | فكيف إذا توفتهم الملائكة يضربون وجوههم | | |
| | وأدبارهم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧ م محمد | ٤٧ |
| تَوَفَّيْتَنِي | فلما توفيتني كنت أنت الرقيب عليهم ... ... ... | ١١٧ م المائدة | ٥ |
| تَتَوَفَّاهُمُ | الذين تتوفاهم الملائكة ظالمي أنفسهم ... ... | ٢٨ ك النحل | ١٦ |
| (٢) | الذين تتوفاهم الملائكة طيبين يقولون سلام عليكم... | ٣٢ ك « | ١٦ |
| نَتَوَفَّيَنَّكَ | وإما نرينك بعض الذي نعدهم أو نتوفينك | | |
| (٣) | فإلينا مرجعهم... ... ... ... ... ... ... | ٤٦ ك يونس | ١٠ |
| | وإن ما نرينك بعض الذي نعدهم أو نتوفينك فإنما | | |
| | عليك البلاغ وعلينا الحساب... ... ... ... ... | ٤٠ م الرعد | ١٣ |
| | فإما نرينك بعض الذي نعدهم أو نتوفينك فإلينا يرجعون | ٧٧ ك غافر | ٤٠ |
| يَتَوَفَّى | ولو ترى إذ يتوفى الذين كفروا الملائكة يضربون | | |
| (٢) | وجوههم وأدبارهم وذوقوا عذاب الحريق ... | ٥٠ م الأنفال | ٨ |
| | الله يتوفى الأنفس حين موتها والتي لم تمت في منامها | ٤٢ ك الزمر | ٣٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَتَوَفَّاكُمْ | : وهو الذى يتوفاكم بالليل ويعلم ما جرحتم بالنهار | ٦٠ | ك الأنعام | ٦ |
| (٤) | ولكن أعبد الله الذى يتوفاكم ... ... ... ... ... | ١٠٤ | ك يونس | ١٠ |
| | والله خلقكم ثم يتوفاكم ومنكم من يرد إلى أرذل العمر | ٧٠ | ك النحل | ١٦ |
| | قل يتوفاكم ملك الموت الذى وكل بكم ... ... ... | ١١ | ك السجدة | ٣٢ |
| يَتَوَفَّاهُنَّ | : فأمسكوهن فى البيوت حتى يتوفاهن الموت... | ١٥ | م النساء | ٤ |
| يَتَوَفَّوْنَهُمْ | : حتى إذا جاءتهم رسلنا يتوفونهم قالوا أين ما كنتم تدعون من دون الله ... ... ... ... | ٣٧ | ك الأعراف | ٧ |
| تَوَفَّنَا | : ربنا فاغفرلنا ذنوبنا وكفرعنا سيئاتنا وتوفنا مع الأبرار | ١٩٣ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | ربنا أفرغ علينا صبرا وتوفنا مسلمين... ... ... ... | ١٢٦ | ك الأعراف | ٧ |
| تَوَفَّنِي | : توفنى مسلما وألحقنى بالصالحين ... ... ... ... | ١٠١ | ك يوسف | ١٢ |
| يُتَوَفَّى | : ومنكم من يتوفى ومنكم من يرد إلى أرذل العمر | ٥ | م الحج | ٢٢ |
| (٢) | ومنكم من يتوفى من قبل ولتبلغوا أجلا مسمى ولعلكم تعقلون | ٦٧ | ك غافر | ٤٠ |
| يُتَوَفَّوْنَ | : والذين يتوفون منكم ويذرون أزواجا يتربصن | | | |
| (٢) | بأنفسهن أربعة أشهر وعشرا... ... ... ... ... | ٢٣٤ | م البقرة | ٢ |
| | والذين يتوفون منكم ويذرون أزواجا وصية لأزواجهم | ٢٤٠ | م « | ٢ |
| يَسْتَوْفُونَ | : الذين إذا اكتالوا على الناس يستوفون... ... | ٢ | ك المطففين | ٨٣ |
| أَوْفَى | : ومن أوفى بعهده من الله ... ... ... ... ... | ١١١ | م التوبة | ٩ |
| الْأَوْفَى | : وأن سعيه سوف يرى : ثم يجزاه الجزاء الأوفى | ٤١ | ك النجم | ٥٣ |
| الْمُوفُونَ | : والموفون بعهدهم إذا عاهدوا ... ... ... ... | ١٧٧ | م البقرة | ٢ |
| لَمُوَفُّوهُمْ | : وإنا لموفوهم نصيبهم غير منقوص... ... ... ... | ١٠٩ | ك هود | ١١ |
| مُتَوَفِّيكَ | : إذ قال الله ياعيسى إنى متوفيك ورافعك إلىّ | ٥٥ | م آل عمران | ٣ |
| وَقَبَ | : من شر ما خلق . ومن شر غاسق إذا وقب... ... | ٣ | ك الفلق | ١١٣ |
| أُقِّتَتْ | : وإذا الرسل أقتت . لأى يوم أجلت . ليوم الفصل | ١١ | ك المرسلات | ٧٧ |
| الْوَقْتِ | : قال فإنك من المنظرين . إلى يوم الوقت المعلوم | ٣٨ | ك الحجر | ١٥ |
| (٢) | قال فإنك من المنظرين . إلى يوم الوقت المعلوم | ٨١ | ك ص | ٣٨ |
| لِوَقْتِهَا | : قل إنما علمها عند ربى لا يجلّيها لوقتها إلا هو | ١٨٧ | ك الأعراف | ٧ |
| مِيقَاتُ | : وأتممناها بعشر فتم ميقات ربه أربعين ليلة... ... | ١٤٢ | ك « | ٧ |
| (٣) | يجمع السحرة لميقات يوم معلوم... ... ... ... ... | ٣٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | لمجموعون إلى ميقات يوم معلوم... ... ... ... ... | ٥٠ | ك الواقعة | ٥٦ |
| مِيقَاتًا | : إن يوم الفصل كان ميقاتا ... ... ... ... ... | ١٧ | ك النبأ | ٧٨ |
| لِمِيقَاتِنَا | : ولما جاء موسى لميقاتنا وكلمه ربه قال رب أرنى | | | |
| (٢) | أنظر إليك... ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | واختار موسى قومه سبعين رجلا لميقاتنا ... ... ... | ١٥٥ | ك « | ٧ |
| مِيقَاتُهُمْ | : إن يوم الفصل ميقاتهم أجمعين... ... ... ... | ٤٠ | ك الدخان | ٤٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مَوَاقِيتُ | : يسئلونك عن الأهلة قل هى مواقيت للناس والحج | ١٨٩ | م البقرة | ٢ |
| مَوْقُوتًا | : إن الصلاة كانت على المؤمنين كتابا موقوتا... ... | ١٠٣ | م النساء | ٤ |
| أَوْقَدُوا | : كلما أوقدوا نارا للحرب أطفأها الله ... ... ... | ٦٤ | م المائدة | ٥ |
| تُوقِدُونَ | : الذى جعل لكم من الشجر الأخضر نارا فإذا أنتم منه توقدون ... ... ... ... ... ... | ٨٠ | ك يس | ٣٦ |
| يُوقِدُونَ | : ومما يوقدون عليه فى النار ابتغاء حلية ... ... | ١٧ | م الرعد | ١٣ |
| فَأَوْقِدْ | : فأوقد لى ياهامان على الطين فاجعل لى صرحا ... | ٣٨ | ك القصص | ٢٨ |
| يُوقَدُ | : كأنها كوكب درىّ يوقد من شجرة مباركة... ... ... | ٣٥ | م النور | ٢٤ |
| اسْتَوْقَدَ | : مثلهم كمثل الذى استوقد نارا ... ... ... ... | ١٧ | م البقرة | ٢ |
| وَقُودُ | : وأولئك هم وقود النار... ... ... ... ... ... | ١٠ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | قتل أصحاب الأخدود . النار ذات الوقود ... ... | ٥ | ك البروج | ٨٥ |
| وَقُودُهَا | : فاتقوا النار التى وقودها الناس والحجارة ... ... | ٢٤ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | قوا أنفسكم وأهليكم نارا وقودها الناس والحجارة ... | ٦ | م التحريم | ٦٦ |
| الْمُوقَدَةُ | : وما أدراك ما الحطمة . نار الله الموقدة ... ... | ٦ | ك الهمزة | ١٠٤ |
| الْمَوْقُوذَةُ | : حرمت عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما أهل لغير الله به والمنخنقة والموقوذة ... ... ... ... | ٣ | م المائدة | ٥ |
| وَتُوَقِّرُوهُ | : وتعزروه وتوقروه وتسبحوه بكرة وأصيلا ... ... | ٩ | م الفتح | ٤٨ |
| وَقَارًا | : ما لكم لا ترجون لله وقارا . وقد خلقكم أطوارا | ١٣ | ك نوح | ٧١ |
| وَقْرٌ | : وقالوا قلوبنا فى أكنة مما تدعونا إليه وفى آذاننا وقر | ٥ | ك فصلت | ٤١ |
| (٢) | والذين لا يؤمنون فى آذانهم وقر وهو عليهم عمى ... | ٤٤ | ك « | ٤١ |
| وَقْرًا | : وجعلنا على قلوبهم أكنة أن يفقهوه وفى آذانهم وقرا | ٢٥ | ك الأنعام | ٦ |
| (٤) | وجعلنا على قلوبهم أكنة أن يفقهوه وفى آذانهم وقرا | ٤٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| | إنا جعلنا على قلوبهم أكنة أن يفقهوه وفى آذانهم وقرا | ٥٧ | ك الكهف | ١٨ |
| | ولّى مستكبرا كأن لم يسمعها كأن فى أذنيه وقرا... ... | ٧ | ك لقمان | ٣١ |
| وِقْرًا | : والذاريات ذروا . فالحاملات وقرا ... ... ... | ٢ | ك الذاريات | ٥١ |
| وَقَعَ | : ومن يخرج من بيته مهاجرا إلى الله ورسوله ثم يدركه | | | |
| (٧) | الموت فقد وقع أجره على الله... ... ... ... ... | ١٠٠ | م النساء | ٤ |
| | قال قد وقع عليكم من ربكم رجس وغضب ... ... ... | ٧١ | ك الأعراف | ٧ |
| | فوقع الحق وبطل ما كانوا يعملون ... ... ... ... | ١١٨ | ك « | ٧ |
| | ولما وقع عليهم الرجز قالوا يا موسى ادع لنا ربك بما عهد عندك | ١٣٤ | ك « | ٧ |
| | أثم إذا ما وقع آمنتم به آلآن وقد كنتم به تستعجلون | ٥١ | ك يونس | ١٠ |
| | وإذا وقع القول عليهم أخرجنا لهم دابة من الأرض تكلمهم | ٨٢ | ك النمل | ٢٧ |
| | ووقع القول عليهم بما ظلموا فهم لا ينطقون... ... ... | ٨٥ | ك « | ٢٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| وَقَعَتِ | : إذا وقعت الواقعة . ليس لوقعتها كاذبة ... ... ... | ١ | ك الواقعة | ٥٦ |
| (٢) | فيومئذ وقعت الواقعة ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك الحاقة | ٦٩ |
| تَقَعَ | : ويمسك السماء أن تقع على الأرض إلا بإذنه ... ... | ٦٥ | م الحج | ٢٢ |
| فَقَعُوا | : فإذا سويته ونفخت فيه من روحى فقعوا له ساجدين | ٢٩ | ك الحجر | ١٥ |
| (٢) | فإذا سويته ونفخت فيه من روحى فقعوا له ساجدين | ٧٢ | ك ص | ٣٨ |
| يُوقِعَ | : إنما يريد الشيطان أن يوقع بينكم العداوة والبغضاء | | | |
| | فى الخمر والميسر ... ... ... ... ... ... ... | ٩١ | م المائدة | ٥ |
| وَاقِعٌ | : وإذ نتقنا الجبل فوقهم كأنه ظلة وظنوا أنه واقع بهم | ١٧١ | ك الأعراف | ٧ |
| (٦) | ترى الظالمين مشفقين مما كسبوا وهو واقع بهم ... | ٢٢ | ك الشورى | ٤٢ |
| | إنما توعدون لصادق . وإن الدين لواقع ... ... | ٦ | ك الذاريات | ٥١ |
| | إن عذاب ربك لواقع ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك الطور | ٥٢ |
| | سأل سائل بعذاب واقع . للكافرين ليس له دافع | ١ | ك المعارج | ٧٠ |
| | إنما توعدون لواقع ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك المرسلات | ٧٧ |
| الْوَاقِعَةُ | : إذا وقعت الواقعة . ليس لوقعتها كاذبة ... ... | ١ | ك الواقعة | ٥٦ |
| (٢) | فيومئذ وقعت الواقعة ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك الحاقة | ٦٩ |
| لِوَقْعَتِهَا | : ليس لوقعتها كاذبة . خافضة رافعة ... ... ... | ٢ | ك الواقعة | ٥٦ |
| بِمَوَاقِعِ | : فلا أقسم بمواقع النجوم . وإنه لقسم لو تعلمون عظيم | ٧٥ | ك « | ٥٦ |
| مُوَاقِعُوهَا | : ورأى المجرمون النار فظنوا أنهم مواقعوها | ٥٣ | ك الكهف | ١٨ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| قِفُوهُمْ | : وقفوهم إنهم مسئولون ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك الصافات | ٣٧ |
| وُقِفُوا | : ولو ترى إذ وقفوا على النار فقالوا يا ليتنا نرد | ٢٧ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | ولو ترى إذ وقفوا على ربهم قال أليس هذا بالحق | ٣٠ | ك « | ٦ |
| مَوْقُوفُونَ | : ولو ترى إذ الظالمون موقوفون عند ربهم | ٣١ | ك سبأ | ٣٤ |

✦✦✦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| وَقَانَا | : فمن الله علينا ووقانا عذاب السموم ... ... ... | ٢٧ | ك الطور | ٥٢ |
| وَقَاهُ | : فوقاه الله سيئات ما مكروا وحاق بآل فرعون سوء العذاب | ٤٥ | ك غافر | ٤٠ |
| وَقَاهُمْ | : لا يذوقون فيها الموت إلا الموتة الأولى ووقاهم | | | |
| (٣) | عذاب الجحيم ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٦ | ك الدخان | ٤٤ |
| | فاكهين بما آتاهم ربهم ووقاهم ربهم عذاب الجحيم | ١٨ | ك الطور | ٥٢ |
| | فوقاهم الله شر ذلك اليوم ولقاهم نضرة وسرورا ... | ١١ | م الإنسان | ٧٦ |
| تَقِ | : ومن تق السيئات يومئذ فقد رحمته ... ... ... ... | ٩ | ك غافر | ٤٠ |
| تَقِيكُمُ | : وجعل لكم سرابيل تقيكم الحر ... ... ... ... ... | ٨١ | ك النحل | ١٦ |
| (٢) | وسرابيل تقيكم بأسكم ... ... ... ... ... ... ... | ٨١ | ك « | ١٦ |
| قِنَا | : ربنا آتنا فى الدنيا حسنة وفى الآخرة حسنة وقنا عذاب النار | ٢٠١ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | الذين يقولون ربنا إننا آمنا فاغفر لنا ذنوبنا وقنا | | | |
| | عذاب النار ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٦ | م آل عمران | ٣ |
| | ربنا ما خلقت هذا باطلا سبحانك فقنا عذاب النار | ١٩١ | م « | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| قِهِمُ | : فاغفر للذين تابوا واتبعوا سبيلك وقهم عذاب الجحيم | ٧ | ك غافر | ٤٠ |
| (٢) | وقهم السيئات ومن تق السيئات يومئذ فقد رحمته ... | ٩ | ك « | ٤٠ |
| قُوا | : يأيها الذين آمنوا قوا أنفسكم وأهليكم نارا ... ... ... | ٦ | م التحريم | ٦٦ |
| يُوقَ | : ومن يوق شح نفسه فأولئك هم المفلحون ... ... ... | ٩ | م الحشر | ٥٩ |
| (٢) | ومن يوق شح نفسه فأولئك هم المفلحون ... ... ... | ١٦ | م التغابن | ٦٤ |
| اتَّقَى | : وليس البر بأن تأتوا البيوت من ظهورها ولكن البر | | | |
| (٧) | من اتقى ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٨٩ | م البقرة | ٢ |
| | فمن تعجل فى يومين فلا إثم عليه ومن تأخر فلا إثم عليه | | | |
| | لمن اتقى ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٠٣ | م « | ٢ |
| | بلى من أوفى بعهده واتقى فإن الله يحب المتقين ... | ٧٦ | م آل عمران | ٣ |
| | قل متاع الدنيا قليل والآخرة خير لمن اتقى ولا تظلمون | | | |
| | فتيلا ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٧ | م النساء | ٤ |
| | فمن اتقى وأصلح فلا خوف عليهم ولا هم يحزنون ... | ٣٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | فلا تزكوا أنفسكم هو أعلم بمن اتقى ... ... ... ... | ٣٢ | م النجم | ٥٣ |
| | فأما من أعطى واتقى . وصدق بالحسنى . فسنيسره لليسرى | ٥ | ك الليل | ٩٢ |
| اتَّقَوْا | : ولو أنهم آمنوا واتقوا لمثوبة من عند الله خير ... | ١٠٣ | م البقرة | ٢ |
| (١٩) | والذين اتقوا فوقهم يوم القيامة ... ... ... ... | ٢١٢ | م « | ٢ |
| | للذين اتقوا عند ربهم جنات تجرى من تحتها الأنهار | ١٥ | م آل عمران | ٣ |
| | للذين أحسنوا منهم واتقوا أجر عظيم... ... ... ... | ١٧٢ | م « | ٣ |
| | لكن الذين اتقوا ربهم لهم جنات تجرى من تحتها الأنهار | ١٩٨ | م « | ٣ |
| | ولو أن أهل الكتاب آمنوا واتقوا لكفرنا عنهم سيئاتهم | ٦٥ | م المائدة | ٥ |
| | ليس على الذين آمنوا وعملوا الصالحات جناح فيما | | | |
| | طعموا إذا ما اتقوا وآمنوا وعملوا الصالحات... | ٩٣ | م « | ٥ |
| | ثم اتقوا وآمنوا ... ... ... ... ... ... ... | ٩٣ | م « | ٥ |
| | ثم اتقوا وأحسنوا والله يحب المحسنين ... ... ... | ٩٣ | م « | ٥ |
| | ولو أن أهل القرى آمنوا واتقوا لفتحنا عليهم بركات | | | |
| | من السماء والأرض... ... ... ... ... ... ... | ٩٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | إن الذين اتقوا إذا مسهم طائف من الشيطان تذكروا | ٢٠١ | ك « | ٧ |
| | ولدار الآخرة خير للذين اتقوا أفلا تعقلون ... ... | ١٠٩ | ك يوسف | ١٢ |
| | تلك عقبى الذين اتقوا وعقبى الكافرين النار... ... | ٣٥ | م الرعد | ١٣ |
| | وقيل للذين اتقوا ماذا أنزل ربكم قالوا خيرا ... ... | ٣٠ | ك النحل | ١٦ |
| | إن الله مع الذين اتقوا والذين هم محسنون ... ... | ١٢٨ | م « | ١٦ |
| | ثم ننجى الذين اتقوا ونذر الظالمين فيها جثيا ... ... | ٧٢ | ك مريم | ١٩ |
| | لكن الذين اتقوا ربهم لهم غرف من فوقها غرف | ٢٠ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وينجى الله الذين اتقوا بمفازتهم لا يمسهم السوء... | ٦١ | ك « | ٣٩ |
| | وسيق الذين اتقوا ربهم إلى الجنة زمرا ... ... ... | ٧٣ | ك « | ٣٩ |
| اتَّقَيْتُنَّ | : إن اتقيتن فلا تخضعن بالقول فيطمع الذى | | | |
| | فى قلبه مرض ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | م الأحزاب | ٣٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَتَّقُوا: | ولا تجعلوا الله عرضـة لأيمانكم أن تبروا وتتقوا | ٢٢٤ | م البقـرة | ٢ |
| (١١) | ومن يفعل ذلك فليس من الله فى شىء إلا أن تتقوا منهم تقاة ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م آل عمران | ٣ |
| | وإن تصبروا وتتقوا لا يضركم كيدهم شيئا ... ... | ١٢٠ | م « | ٣ |
| | بلى إن تصبروا وتتقوا ويأتوكم من فورهم هذا يمددكم ربكم بخمسة آلاف من الملائكة مسومين ... ... ... | ١٢٥ | م « | ٣ |
| | وإن تؤمنوا وتتقوا فلكم أجر عظيم ... ... ... ... | ١٧٩ | م « | ٣ |
| | وإن تصبروا وتتقوا فإن ذلك من عزم الأمور ... | ١٨٦ | م « | ٣ |
| | وإن تحسنوا وتتقوا فإن الله كان بما تعملون خبيرا | ١٢٨ | م النسـاء | ٤ |
| | وإن تصلحوا وتتقوا فإن الله كان غفورا رحيما ... | ١٢٩ | م « | ٤ |
| | أو عجبتم أن جاءكم ذكر من ربكم على رجل منكم لينذركم ولتتقـوا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | يأيها الذين آمنوا إن تتقوا الله يجعل لكم فرقانا ... | ٢٩ | م الأنفـال | ٨ |
| | وإن تؤمنوا وتتقوا يؤتكم أجوركم ولا يسئلكم أموالكم | ٣٦ | م محمـد | ٤٧ |
| تَتَّقُونَ: | يأيها الناس اعبدوا ربكم الذى خلقكم والذين من | | | |
| (١٩) | قبلكم لعلكم تتقون ... ... ... ... ... ... ... | ٢١ | م البقـرة | ٢ |
| | خذوا ما آتيناكم بقوة واذكروا ما فيه لعلكم تتقون | ٦٣ | م « | ٢ |
| | ولكم فى القصاص حياة يا أولى الألباب لعلكم تتقون | ١٧٩ | م « | ٢ |
| | كتب عليكم الصيام كما كتب على الذين من قبلكم لعلكم تتقون ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٨٣ | م « | ٢ |
| | ذلكم وصاكم به لعلكم تتقون... ... ... ... ... ... | ١٥٣ | م الأنعـام | ٦ |
| | قال يا قوم اعبدوا الله ما لكم من إله غيره أفلا تتقون | ٦٥ | ك الأعراف | ٧ |
| | خذوا ما آتيناكم بقوة واذكروا ما فيه لعلكم تتقون | ١٧١ | ك « | ٧ |
| | ومن يدبر الأمر فسيقولون الله فقل أفلا تتقون ... | ٣١ | ك يـونس | ١٠ |
| | وله الدين واصبا أفغير الله تتقون ... ... ... ... | ٥٢ | ك النحل | ١٦ |
| | فقال يا قوم اعبدوا الله مالكم من إله غيره أفلا تتقون | ٢٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | أن اعبدوا الله ما لكم من إله غيره أفلا تتقون ... | ٣٢ | ك « | ٢٣ |
| | سيقولون لله قل أفلا تتقون ... ... ... ... ... ... | ٨٧ | ك « | ٢٣ |
| | إذ قال لهم أخوهم نوح ألا تتقون ... ... ... ... | ١٠٦ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | إذ قال لهم أخوهم هود ألا تتقون ... ... ... ... | ١٢٤ | ك « | ٢٦ |
| | إذ قال لهم أخوهم صالح ألا تتقون ... ... ... ... | ١٤٢ | ك « | ٢٦ |
| | إذ قال لهم أخوهم لوط ألا تتقون ... ... ... ... | ١٦١ | ك « | ٢٦ |
| | إذ قال لهم شعيب ألا تتقون ... ... ... ... ... | ١٧٧ | ك « | ٢٦ |
| | وإن إلياس لمن المرسلين . إذ قال لقومه ألا تتقون | ١٢٤ | ك الصافات | ٣٧ |
| | فكيف تتقون إن كفرتم يوما يجعل الولدان شيبا ... | ١٧ | ك المزمـل | ٧٣ |
| يَتَّقِ: | وليملل الذى عليه الحق وليتق الله ربه ولا يبخس منه شيئا | ٢٨٢ | م البقـرة | ٢ |
| (٦) | فليؤد الذى اؤتمن أمانته وليتق الله ربه ... ... ... | ٢٨٣ | م « | ٢ |
| | إنه من يتق ويصبر فإن الله لا يضيع أجر المحسنين ... | ٩٠ | ك يوسـف | ١٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَتَّقِ: | ومن يتق الله يجعل له مخرجا ... ... ... ... ... | ٢ | م الطـلاق | ٦٥ |
| | ومن يتق الله يجعل له من أمره يسرا ... ... ... | ٤ | م « | ٦٥ |
| | ومن يتق الله يكفر عنه سيئاته ويعظم له أجرا... ... | ٥ | م « | ٦٥ |
| يَتَّقْهِ: | ومن يطع الله ورسوله ويخش الله ويتقه فأولئك هم الفائزون ... ... ... ... ... ... ... | ٥٢ | م النـور | ٢٤ |
| فَلْيَتَّقُوا: | فليتقوا الله وليقولوا قولا سديدا ... ... ... | ٩ | م النسـاء | ٤ |
| يَتَّقُونَ: | كذلك يبين الله آياته للناس لعلهم يتقون... ... | ١٨٧ | م البقـرة | ٢ |
| (١٨) | وللدار الآخرة خير للذين يتقون أفلا تعقلون ... ... | ٣٢ | ك الأنعـام | ٦ |
| | ليس لهم من دونه ولى ولا شفيع لعلهم يتقون... ... | ٥١ | ك « | ٦ |
| | وما على الذين يتقون من حسابهم من شىء... ... | ٦٩ | ك « | ٦ |
| | ولكن ذكرى لعلهم يتقون... ... ... ... ... ... | ٦٩ | ك « | ٦ |
| | فسأكتبها للذين يتقون ويؤتون الزكاة ... ... ... | ١٥٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | قالوا معذرة إلى ربكم ولعلهم يتقون ... ... ... | ١٦٤ | م « | ٧ |
| | والدار الآخرة خير للذين يتقون أفلا تعقلون... ... | ١٦٩ | م « | ٧ |
| | الذين عاهدت منهم ثم ينقضون عهدهم فى كل مرة وهم لا يتقون ... ... ... ... ... ... ... | ٥٦ | م الأنفـال | ٨ |
| | وما كان الله ليضل قوما بعد إذ هداهم حتى يبين لهم ما يتقون | ١١٥ | م التـوبة | ٩ |
| | إن فى اختلاف الليل والنهار وما خلق الله فى السموات والأرض لآيات لقوم يتقون ... ... ... ... | ٦ | ك يـونس | ١٠ |
| | الذين آمنوا وكانوا يتقون ... ... ... ... ... | ٦٣ | ك « | ١٠ |
| | ولأجر الآخرة خير للذين آمنوا وكانوا يتقون ... ... | ٥٧ | ك يوسـف | ١٢ |
| | وصرفنا فيه من الوعيد لعلهم يتقون ... ... ... ... | ١١٣ | ك طـه | ٢٠ |
| | أن ائت القوم الظالمين . قوم فرعون ألا يتقون ... | ١١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وأنجينا الذين آمنوا وكانوا يتقون ... ... ... ... | ٥٣ | ك النمـل | ٢٧ |
| | قرآنا عربيا غير ذى عوج لعلهم يتقون ... ... ... | ٢٨ | ك الزمـر | ٣٩ |
| | ونجينا الذين آمنوا وكانوا يتقون ... ... ... ... | ١٨ | ك فصلت | ٤١ |
| يَتَّقِى: | أفمن يتقى بوجهه سوء العذاب يوم القيامة ... ... | ٢٤ | ك الزمـر | ٣٩ |
| اتَّقِ: | وإذا قيل له اتق الله أخذته العزة بالإثم فحسبه جهنم | ٢٠٦ | م البقـرة | ٢ |
| (٣) | يأيها النبى اتق الله ولا تطع الكافرين والمنافقين | ١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | أمسك عليك زوجك واتق الله ... ... ... ... ... | ٣٧ | م « | ٣٣ |
| اتَّقُوا: | فاتقوا النار التى وقودها الناس والحجارة ... ... | ٢٤ | م البقـرة | ٢ |
| (٦٩) | واتقوا يوما لا تجزى نفس عن نفس شيئا ... ... ... | ٤٨ | م « | ٢ |
| | واتقوا يوما لا تجزى نفس عن نفس شيئا ... ... ... | ١٢٣ | م « | ٢ |
| | وأتوا البيوت من أبوابها واتقوا الله لعلكم تفلحون | ١٨٩ | م « | ٢ |
| | واتقوا الله واعلموا أن الله مع المتقين ... ... ... | ١٩٤ | م « | ٢ |
| | واتقوا الله واعلموا أن الله شديد العقاب ... ... ... | ١٩٦ | م « | ٢ |
| | واتقوا الله واعلموا أنكم إليه تحشرون ... ... ... | ٢٠٣ | م « | ٢ |
| | واتقوا الله واعلموا أنكم ملاقوه وبشر المؤمنين... | ٢٢٣ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآية | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أتقوا: | وأتقوا الله واعلموا أن الله بكل شيء عليم ... ... | ٢٣١ | م البقرة | ٢ |
| | وأتقوا الله واعلموا أن الله بما تعملون بصير ... | ٢٣٣ | م » | ٢ |
| | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله وذروا ما بقي من الربا | ٢٧٨ | م » | ٢ |
| | وأتقوا يوما ترجعون فيه إلى الله ... ... ... ... | ٢٨١ | م » | ٢ |
| | وأتقوا الله ويعلمكم الله والله بكل شيء عليم ... ... | ٢٨٢ | م » | ٢ |
| | وجئتكم بآية من ربكم فاتقوا الله وأطيعون ... ... | ٥٠ | م آل عمران | ٣ |
| | اتقوا الله حق تقاته ولا تموتن إلا وأنتم مسلمون ... | ١٠٢ | م » | ٣ |
| | ولقد نصركم الله ببدر وأنتم أذلة فاتقوا الله لعلكم تشكرون | ١٢٣ | م » | ٣ |
| | لا تأكلوا الربا أضعافا مضاعفة واتقوا الله لعلكم تفلحون | ١٣٠ | م » | ٣ |
| | واتقوا النار التي أعدت للكافرين ... ... ... ... | ١٣١ | م » | ٣ |
| | اصبروا وصابروا ورابطوا واتقوا الله لعلكم تفلحون | ٢٠٠ | م » | ٣ |
| | يأيها الناس اتقوا ربكم الذي خلقكم من نفس واحدة | ١ | م النساء | ٤ |
| | واتقوا الله الذي تساءلون به والأرحام ... ... ... | ١ | م » | ٤ |
| | ولقد وصينا الذين أوتوا الكتاب من قبلكم وإياكم إن اتقوا الله ... ... ... ... ... ... ... | ١٣١ | م » | ٤ |
| | ولا تعاونوا على الإثم والعدوان واتقوا الله ... ... | ٢ | م المائدة | ٥ |
| | واتقوا الله إن الله سريع الحساب ... ... ... ... | ٤ | م » | ٥ |
| | واتقوا الله إن الله عليم بذات الصدور ... ... ... | ٧ | م » | ٥ |
| | واتقوا الله إن الله خبير بما تعملون ... ... ... ... | ٨ | م » | ٥ |
| | واتقوا الله وعلى الله فليتوكل المؤمنون ... ... ... | ١١ | م » | ٥ |
| | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله وابتغوا إليه الوسيلة ... | ٣٥ | م » | ٥ |
| | واتقوا الله إن كنتم مؤمنين ... ... ... ... ... ... | ٥٧ | م » | ٥ |
| | واتقوا الله الذي أنتم به مؤمنون ... ... ... ... ... | ٨٨ | م » | ٥ |
| | واتقوا الله الذي إليه تحشرون ... ... ... ... ... | ٩٦ | م » | ٥ |
| | فاتقوا الله يا أولي الألباب لعلكم تفلحون ... ... | ١٠٠ | م » | ٥ |
| | واتقوا الله واسمعوا والله لا يهدي القوم الفاسقين | ١٠٨ | م » | ٥ |
| | قال اتقوا الله إن كنتم مؤمنين ... ... ... ... ... | ١١٢ | م » | ٥ |
| | وهذا كتاب أنزلناه مبارك فاتبعوه واتقوا لعلكم ترحمون | ١٥٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | فاتقوا الله وأصلحوا ذات بينكم وأطيعوا الله ورسوله | ١ | م الأنفال | ٨ |
| | واتقوا فتنة لا تصيبن الذين ظلموا منكم خاصة ... ... | ٢٥ | م » | ٨ |
| | فكلوا مما غنمتم حلالا طيبا واتقوا الله إن الله غفور رحيم | ٦٩ | م » | ٨ |
| | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله وكونوا مع الصادقين ... | ١١٩ | م التوبة | ٩ |
| | فاتقوا الله ولا تخزون في ضيفي أليس منكم رجل رشيد | ٧٨ | ك هود | ١١ |
| | قال إن هؤلاء ضيفي فلا تفضحون. واتقوا الله ولا تخزون | ٦٩ | ك الحجر | ١٥ |
| | يأيها الناس اتقوا ربكم إن زلزلة الساعة شيء عظيم | ١ | م الحج | ٢٢ |
| | إني لكم رسول أمين. فاتقوا الله وأطيعون ... ... | ١٠٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | إن أجري إلا على رب العالمين. فاتقوا الله وأطيعون | ١١٠ | ك » | ٢٦ |
| | إني لكم رسول أمين. فاتقوا الله وأطيعون ... ... | ١٢٦ | ك » | ٢٦ |
| | وإذا بطشتم بطشتم جبارين. فاتقوا الله وأطيعون | ١٣١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | واتقوا الذي أمدكم بما تعلمون ... ... ... ... ... | ١٣٢ | ك » | ٢٦ |
| | إني لكم رسول أمين. فاتقوا الله وأطيعون ... ... | ١٤٤ | ك » | ٢٦ |
| | فاتقوا الله وأطيعون. ولا تطيعوا أمر المسرفين ... | ١٥٠ | ك » | ٢٦ |
| | إني لكم رسول أمين. فاتقوا الله وأطيعون ... ... | ١٦٣ | ك » | ٢٦ |
| | إني لكم رسول أمين. فاتقوا الله وأطيعون ... ... | ١٧٩ | ك » | ٢٦ |
| | واتقوا الذي خلقكم والجبلة الأولين ... ... ... | ٨٤ | ك » | ٢٦ |
| | يأيها الناس اتقوا ربكم واخشوا يوما لا يجزي والد عن ولده | ٣٣ | ك لقمان | ٣١ |
| | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله وقولوا قولا سديدا ... | ٧٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وإذا قيل لهم اتقوا ما بين أيديكم وما خلفكم لعلكم ترحمون | ٤٥ | م يس | ٣٦ |
| | قل يا عباد الذين آمنوا اتقوا ربكم ... ... ... ... | ١٠ | ك الزمر | ٣٩ |
| | ولأبين لكم بعض الذي تختلفون فيه فاتقوا الله وأطيعون | ٦٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تقدموا بين يدي الله ورسوله واتقوا الله ... ... ... ... ... ... ... | ١ | م الحجرات | ٤٩ |
| | إنما المؤمنون إخوة فأصلحوا بين أخويكم واتقوا الله | ١٠ | م » | ٤٩ |
| | واتقوا الله إن الله تواب رحيم ... ... ... ... ... | ١٢ | م » | ٤٩ |
| | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله وآمنوا برسوله ... ... | ٢٨ | م الحديد | ٥٧ |
| | وتناجوا بالبر والتقوى واتقوا الله الذي إليه تحشرون | ٩ | م المجادلة | ٥٨ |
| | وما آتاكم الرسول فخذوه وما نهاكم عنه فانتهوا واتقوا الله | ٧ | م الحشر | ٥٩ |
| | يأيها الذين آمنوا اتقوا الله ولتنظر نفس ما قدمت لغد | ١٨ | م » | ٥٩ |
| | واتقوا الله إن الله خبير بما تعملون ... ... ... ... | ١٨ | م » | ٥٩ |
| | فآتوا الذين ذهبت أزواجهم مثل ما أنفقوا واتقوا الله | ١١ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | فاتقوا الله ما استطعتم واسمعوا وأطيعوا ... ... ... | ١٦ | م التغابن | ٦٤ |
| | فطلقوهن لعدتهن وأحصوا العدة واتقوا الله ربكم | ١ | م الطلاق | ٦٥ |
| | فاتقوا الله يا أولي الألباب الذين آمنوا ... ... ... | ١٠ | م » | ٦٥ |
| أتقون: | ولا تشتروا بآياتي ثمنا قليلا وإياي فاتقون ... ... | ٤١ | م البقرة | ٢ |
| (٥) | وتزودوا فإن خير الزاد التقوى واتقون يا أولي الألباب | ١٩٧ | م » | ٢ |
| | أن أنذروا أنه لا إله إلا أنا فاتقون ... ... ... ... | ٢ | ك النحل | ١٦ |
| | وإن هذه أمتكم أمة واحدة وأنا ربكم فاتقون ... | ٥٢ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ذلك يخوف الله به عباده يا عباد فاتقون ... ... ... | ١٦ | ك الزمر | ٣٩ |
| أتقوه: | وأن أقيموا الصلاة واتقوه وهو الذي إليه تحشرون | ٧٢ | ك الأنعام | ٦ |
| (٤) | وإبراهيم إذ قال لقومه اعبدوا الله واتقوه ... ... | ١٦ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | منيبين إليه واتقوه وأقيموا الصلاة ولا تكونوا من المشركين | ٣١ | ك الروم | ٣٠ |
| | أن اعبدوا الله واتقوه وأطيعون ... ... ... ... | ٣ | ك نوح | ٧١ |
| أتقين: | واتقين الله إن الله كان على كل شيء شهيدا ... ... | ٥٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| الأتقى: | وسيجنبها الأتقى. الذي يؤتي ماله يتزكى ... ... | ١٧ | ك الليل | ٩٢ |
| أتقاكم: | إن أكرمكم عند الله أتقاكم إن الله عليم خبير ... | ١٣ | م الحجرات | ٤٩ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| وَاقٍ | : ولعذاب الآخرة أشق وما لهم من الله من واق ... ... | ٣٤ | م الرعـد | ١٣ |
| (٣) | مالك من الله من ولىّ ولا واق ... ... ... ... ... | ٣٧ | م « | ١٣ |
| | فأخذهم الله بذنوبهم وما كان لهم من الله من واق | ٢١ | ك غافـر | ٤٠ |
| تَقِيًّا | : وحنانا من لدنا وزكاة وكان تقيا ... ... ... ... | ١٣ | ك مـريم | ١٩ |
| (٣) | قالت إنى أعوذ بالرحمن منك إن كنت تقيا ... ... | ١٨ | ك « | ١٩ |
| | تلك الجنة التى نورث من عبادنا من كان تقيا ... ... | ٦٣ | ك « | ١٩ |
| تُقَاةً | : ومن يفعل ذلك فليس من الله فى شىء إلا أن تتقوا | | | |
| | منهم تقاة ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م آل عمران | ٣ |
| تُقَاتِهِ | : يأيها الذين آمنوا اتقوا الله حق تقاته ... ... ... | ١٠٢ | م « | ٣ |
| التَّقْوَى | : وتزودوا فإن خير الزاد التقوى ... ... ... ... | ١٩٧ | م البقـرة | ٢ |
| (١٥) | وأن تعفوا أقرب للتقوى ... ... ... ... ... ... | ٢٣٧ | م « | ٢ |
| | وتعاونوا على البر والتقوى ولا تعاونوا على الإثم والعدوان | ٢ | م المائدة | ٥ |
| | اعدلوا هو أقرب للتقوى واتقوا الله... ... ... ... | ٨ | م « | ٥ |
| | ولباس التقوى ذلك خير ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | لمسجد أسّس على التقوى من أول يوم أحق أن تقوم فيه | ١٠٨ | م التـوبة | ٩ |
| | أفمن أسّس بنيانه على تقوى من الله ورضوان خير ... | ١٠٩ | م « | ٩ |
| | لا نسئلك رزقا نحن نرزقك والعاقبة للتقوى ... ... | ١٣٢ | ك طـه | ٢٠ |
| | ذلك ومن يعظم شعائر الله فإنها من تقوى القلوب ... | ٣٢ | م الحـج | ٢٢ |
| | لن ينال الله لحومها ولا دماؤها ولكن يناله التقوى منكم | ٣٧ | م « | ٢٢ |
| | وألزمهم كلمة التقوى وكانوا أحق بها وأهلها ... ... | ٢٦ | م الفتـح | ٤٨ |
| | أولئك الذين امتحن الله قلوبهم للتقوى ... ... ... | ٣ | م الحجرات | ٤٩ |
| | وتناجوا بالبر والتقوى واتقوا الله الذى إليه تحشرون | ٩ | م المجادلة | ٥٨ |
| | وما يذكرون إلا أن يشاء الله هو أهل التقوى وأهل المغفرة | ٥٦ | ك المـدثر | ٧٤ |
| | أرأيت إن كان على الهدى . أو أمر بالتقوى ... ... | ١٢ | ك العـلق | ٩٦ |
| تَقْوَاهَا | : ونفس وما سواها . فألهمها فجورها وتقواها ... | ٨ | ك الشمس | ٩١ |
| تَقْوَاهُمْ | : والذين اهتدوا زادهم هدى وآتاهم تقواهم ... | ١٧ | م محمـد | ٤٧ |
| الْمُتَّقُونَ | : أولئك الذين صدقوا وأولئك هم المتقون... ... | ١٧٧ | م البقـرة | ٢ |
| (٦) | إن أولياؤه إلا المتقون ولكن أكثرهم لا يعلمون ... | ٣٤ | ك الأنفـال | ٨ |
| | مثل الجنة التى وعد المتقون تجرى من تحتها الأنهار... | ٣٥ | م الرعـد | ١٣ |
| | قل أذلك خير أم جنة الخلد التى وعد المتقون ... ... | ١٥ | ك الفـرقان | ٢٥ |
| | والذى جاء بالصدق وصدّق به أولئك هم المتقون ... | ٣٣ | ك الزمـر | ٣٩ |
| | مثل الجنة التى وعد المتقون فيها أنهار من ماء غير آسن | ١٥ | م محمـد | ٤٧ |
| الْمُتَّقِينَ | : الـمـ . ذلك الكتاب لا ريب فيه هدى للتقين | ٢ | م البقـرة | ٢ |
| (٤٣) | فجعلناها نكالا لما بين يديها وما خلفها وموعظة للتقين | ٦٦ | م « | ٢ |
| | إن ترك خيرا الوصية للوالدين والأقربين بالمعروف | | | |
| | حقا على المتقين... ... ... ... ... ... ... ... | ١٨٠ | م « | ٢ |
| | واتقوا الله واعلموا أن الله مع المتقين ... ... ... | ١٩٤ | م « | ٢ |
| | وللمطلقات متاع بالمعروف حقا على المتقين... ... ... | ٢٤١ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الْمُتَّقِينَ | : بلى من أوفى بعهده واتقى فإن الله يحب المتقين | ٧٦ | م آل عمران | ٣ |
| | وما يفعلوا من خير فلن يكفروه والله عليم بالمتقين ... | ١١٥ | م « | ٣ |
| | وجنة عرضها السموات والأرض أعدت للتقين ... | ١٣٣ | م « | ٣ |
| | هـذا بيان للناس وهدى وموعظة للتقين ... ... ... | ١٠٨ | م « | ٣ |
| | قال لأقتلنك قال إنما يتقبل الله من المتقين ... ... | ٢٧ | م المائدة | ٥ |
| | ومصدقا لما بين يديه من التوراة وهدى وموعظة للتقين | ٤٦ | م « | ٥ |
| | إن الأرض لله يورثها من يشاء من عباده والعاقبة للتقين | ١٢٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | فأتموا إليهم عهدهم إلى مدتهم إن الله يحب المتقين... | ٤ | م التـوبة | ٩ |
| | فما استقاموا لكم فاستقيموا لهم إن الله يحب المتقين | ٧ | م « | ٩ |
| | واعلموا أن الله مع المتقين ... ... ... ... ... ... | ٣٦ | م « | ٩ |
| | أن يجاهدوا بأموالهم وأنفسهم والله عليم بالمتقين ... | ٤٤ | م « | ٩ |
| | وليجدوا فيكم غلظة واعلموا أن الله مع المتقين ... ... | ١٢٣ | م « | ٩ |
| | فاصبر إن العاقبة للتقين ... ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك هـود | ١١ |
| | إن المتقين فى جنات وعيون... ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك الحجـر | ١٥ |
| | ولدار الآخرة خير ولنعم دار المتقين ... ... ... ... | ٣٠ | ك النحـل | ١٦ |
| | لهم فيها ما يشاءون كذلك يجزى الله المتقين ... ... | ٣١ | ك « | ١٦ |
| | يوم نحشر المتقين إلى الرحمن وفدا ... ... ... ... | ٨٥ | ك مـريم | ١٩ |
| | فإنما يسرناه بلسانك لتبشر به المتقين وتنذر به قوما لدا | ٩٧ | ك « | ١٩ |
| | ولقد آتينا موسى وهرون الفرقان وضياء وذكرا للتقين | ٤٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ومثلا من الذين خلوا من قبلكم وموعظة للتقين... ... | ٣٤ | م النـور | ٢٤ |
| | هب لنا من أزواجنا وذرياتنا قرة أعين واجعلنا للتقين إماما | ٧٤ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وأزلفت الجنة للتقين ... ... ... ... ... ... ... | ٩٠ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | تجعلها للذين لا يريدون علوا فى الأرض ولا فسادا | | | |
| | والعاقبة للتقين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٨٣ | ك القصص | ٢٨ |
| | أم نجعل المتقين كالفجار ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك صـ | ٣٨ |
| | هذا ذكر وإن للتقين لحسن مآب... ... ... ... ... | ٤٩ | ك « | ٣٨ |
| | أو تقول لو أن الله هدانى لكنت من المتقين ... ... | ٥٧ | ك الزمر | ٣٩ |
| | والآخرة عند ربك للتقين ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | الأخلاء يومئذ بعضهم لبعض عدو إلا المتقين ... ... | ٦٧ | ك « | ٤٣ |
| | إن المتقين فى مقام أمين . فى جنات وعيون ... ... | ٥١ | ك الدخان | ٤٤ |
| | وإن الظالمين بعضهم أولياء بعض والله ولىّ المتقين... | ١٩ | ك الجاثيـة | ٤٥ |
| | وأزلفت الجنة للتقين غير بعيد ... ... ... ... ... | ٣١ | ك قـ | ٥٠ |
| | إن المتقين فى جنات وعيون . آخذين ما آتاهم ربهم | ١٥ | ك الذاريات | ٥١ |
| | إن المتقين فى جنات ونعيم . فاكهين بما آتاهم ربهم | ١٧ | ك الطـور | ٥٢ |
| | إن المتقين فى جنات ونهر . فى مقعد صدق عند مليك مقتدر | ٥٤ | ك القمـر | ٥٤ |
| | إن للتقين عند ربهم جنات النعيم... ... ... ... ... | ٣٤ | ك القـلم | ٦٨ |
| | وإنه لتذكرة للتقين ... ... ... ... ... ... ... | ٤٨ | ك الحـاقة | ٦٩ |
| | إن المتقين فى ظلال وعيون . وفواكه مما يشتهون ... | ٤١ | ك المرسلات | ٧٧ |
| | إن للتقين مفازا . حدائق وأعنابا ... ... ... ... | ٣١ | ك النبـأ | ٧٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| أَتَوَكَّأُ: | قال هي عصاي أتوكأ عليها وأهش بها على غنمي... | ١٨ | ك طـه | ٢٠ |
| يَتَّكِئُونَ: | ولبيوتهم أبوابا وسررا عليها يتكئون ... ... | ٣٤ | ك الزخرف | ٤٣ |
| مُتَّكِئُونَ: | هم وأزواجهم في ظلال على الأرائك متكئون | ٥٦ | ك يس | ٣٦ |
| مُتَّكِئِينَ: | متكئين فيها على الأرائك ... ... ... ... | ٣١ | ك الكهف | ١٨ |
| (٧) | متكئين فيها يدعون فيها بفاكهة كثيرة وشراب ... | ٥١ | ك ص | ٣٨ |
| | متكئين على سرر مصفوفة وزوجناهم بحور عين... ... | ٢٠ | ك الطور | ٥٢ |
| | متكئين على فرش بطائنها من إستبرق ... ... ... | ٥٤ | م الرحمن | ٥٥ |
| | متكئين على رفرف خضر وعبقري حسان... ... ... | ٧٦ | م « | ٥٥ |
| | على سرر موضونة . متكئين عليها متقابلين ... ... ... | ١٦ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | متكئين فيها على الأرائك لا يرون فيها شمسا ولا زمهريرا | ١٣ | م الإنسان | ٧٦ |
| مُتَّكَأً: | فلما سمعت بمكرهن أرسلت إليهن وأعتدت لهن متكأ | ٣١ | ك يوسف | ١٢ |
| | ✦✦✦ | | | |
| تَوْكِيدِهَا: | ولا تنقضوا الأيمان بعد توكيدها ... ... ... | ٩١ | ك النحل | ١٦ |
| | ✦✦✦ | | | |
| فَوَكَزَهُ: | فوكزه موسى فقضى عليه ... ... ... ... ... | ١٥ | ك القصص | ٢٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| وَكَّلْنَا: | فإن يكفر بها هؤلاء فقد وكلنا بها قوما ليسوا بها بكافرين | ٨٩ | ك الأنعام | ٦ |
| وُكِّلَ: | قل يتوفاكم ملك الموت الذي وكل بكم ثم إلى ربكم ترجعون | ١١ | ك السجدة | ٣٢ |
| تَوَكَّلْتُ: | فإن تولوا فقل حسبي الله لا إله إلا هو عليه توكلت | ١٢٩ | ك التوبة | ٩ |
| (٧) | فعلى الله توكلت فأجمعوا أمركم وشركاءكم ... ... ... | ٧١ | ك يونس | ١٠ |
| | إني توكلت على الله ربي وربكم ... ... ... ... | ٥٦ | ك هود | ١١ |
| | وما توفيقي إلا بالله عليه توكلت وإليه أنيب... ... | ٨٨ | ك « | ١١ |
| | إن الحكم إلا لله عليه توكلت وعليه فليتوكل المتوكلون | ٦٧ | ك يوسف | ١٢ |
| | قل هو ربي لا إله إلا هو عليه توكلت وإليه متاب... | ٣٠ | م الرعد | ١٣ |
| | ذلكم الله ربي عليه توكلت وإليه أنيب ... ... ... | ١٠ | ك الشورى | ٤٢ |
| تَوَكَّلْنَا: | وسع ربنا كل شيء علما على الله توكلنا ... ... | ٨٩ | ك الأعراف | ٧ |
| (٤) | فقالوا على الله توكلنا ربنا لا تجعلنا فتنة للقوم الظالمين | ٨٥ | ك يونس | ١٠ |
| | ربنا عليك توكلنا وإليك أنبنا وإليك المصير ... ... | ٤ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | قل هو الرحمن آمنا به وعليه توكلنا ... ... ... | ٢٩ | ك الملك | ٦٧ |
| نَتَوَكَّلَ: | وما لنا ألا نتوكل على الله وقد هدانا سبلنا... ... | ١٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| يَتَوَكَّلِ: | والله وليهما وعلى الله فليتوكل المؤمنون ... ... | ١٢٢ | م آل عمران | ٣ |
| (١٢) | وإن يخذلكم فمن ذا الذي ينصركم من بعده وعلى الله فليتوكل المؤمنون ... ... ... ... ... | ١٦٠ | م « | ٣ |
| | واتقوا الله وعلى الله فليتوكل المؤمنون ... ... ... | ١١ | م المائدة | ٥ |
| | ومن يتوكل على الله فإن الله عزيز حكيم ... ... ... | ٤٩ | م الأنفال | ٨ |
| | وعلى الله فليتوكل المؤمنون ... ... ... ... ... | ٥١ | م التوبة | ٩ |
| يَتَوَكَّلُ: | إن الحكم إلا لله عليه توكلت وعليه فليتوكل المتوكلون ... ... ... ... ... ... ... | ٦٧ | ك يوسف | ١٢ |
| | وما كان لنا أن نأتيكم بسلطان إلا بإذن الله وعلى الله فليتوكل المؤمنون ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | ولنصبرن على ما آذيتمونا وعلى الله فليتوكل المتوكلون | ١٢ | ك « | ١٤ |
| | قل حسبي الله عليه يتوكل المتوكلون ... ... ... ... | ٣٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وليس بضارهم شيئا إلا بإذن الله وعلى الله فليتوكل المؤمنون ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | م المجادلة | ٥٨ |
| | الله لا إله إلا هو وعلى الله فليتوكل المؤمنون ... ... | ١٣ | م التغابن | ٦٤ |
| | ومن يتوكل على الله فهو حسبه ... ... ... ... ... | ٣ | م الطلاق | ٦٥ |
| يَتَوَكَّلُونَ: | وإذا تليت عليهم آياته زادتهم إيمانا وعلى ربهم يتوكلون... ... ... ... ... ... ... | ٢ | م الأنفال | ٨ |
| (٥) | الذين صبروا وعلى ربهم يتوكلون ... ... ... ... | ٤٢ | ك النحل | ١٦ |
| | إنه ليس له سلطان على الذين آمنوا وعلى ربهم يتوكلون | ٩٩ | ك « | ١٦ |
| | نعم أجر العاملين . الذين صبروا وعلى ربهم يتوكلون | ٥٩ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وما عند الله خير وأبقى للذين آمنوا وعلى ربهم يتوكلون | ٣٦ | ك الشورى | ٤٢ |
| تَوَكَّلْ: | فإذا عزمت فتوكل على الله إن الله يحب المتوكلين | ١٥٩ | م آل عمران | ٣ |
| (٩) | فأعرض عنهم وتوكل على الله وكفى بالله وكيلا ... | ٨١ | م النساء | ٤ |
| | وإن جنحوا للسلم فاجنح لها وتوكل على الله ... ... | ٦١ | م الأنفال | ٨ |
| | وإليه يرجع الأمر كله فاعبده وتوكل عليه ... ... ... | ١٢٣ | ك هود | ١١ |
| | وتوكل على الحي الذي لا يموت وسبح بحمده... ... | ٥٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وتوكل على العزيز الرحيم ... ... ... ... ... | ٢١٧ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فتوكل على الله إنك على الحق المبين ... ... ... ... | ٧٩ | ك النمل | ٢٧ |
| | وتوكل على الله وكفى بالله وكيلا... ... ... ... | ٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ولا تطع الكافرين والمنافقين ودع أذاهم وتوكل على الله | ٤٨ | م « | ٣٣ |
| تَوَكَّلُوا: | وعلى الله فتوكلوا إن كنتم مؤمنين ... ... ... | ٢٣ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | إن كنتم آمنتم بالله فعليه توكلوا إن كنتم مسلمين ... | ٨٤ | ك يونس | ١٠ |
| وَكِيلٌ: | فزادهم إيمانا وقالوا حسبنا الله ونعم الوكيل ... | ١٧٣ | م آل عمران | ٣ |
| (١١) | وكذب به قومك وهو الحق قل لست عليكم بوكيل ... | ٦٦ | ك الأنعام | ٦ |
| | خالق كل شيء فاعبدوه وهو على كل شيء وكيل ... | ١٠٢ | ك « | ٦ |
| | وما جعلناك عليهم حفيظا وما أنت عليهم بوكيل ... | ١٠٧ | ك « | ٦ |
| | ومن ضل فإنما يضل عليها وما أنا عليكم بوكيل ... ... | ١٠٨ | ك يونس | ١٠ |
| | إنما أنت نذير والله على كل شيء وكيل ... ... ... | ١٢ | م هود | ١١ |
| | فلما آتوه موثقهم قال الله على ما نقول وكيل ... ... | ٦٦ | ك يوسف | ١٢ |
| | أيما الأجلين قضيت فلا عدوان علي والله على ما نقول وكيل | ٢٨ | ك القصص | ٢٨ |
| | ومن ضل فإنما يضل عليها وما أنت عليهم بوكيل ... | ٤١ | ك الزمر | ٣٩ |
| | الله خالق كل شيء وهو على كل شيء وكيل ... ... | ٦٢ | ك « | ٣٩ |
| | الله حفيظ عليهم وما أنت عليهم بوكيل ... ... ... | ٦ | ك الشورى | ٤٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| وَكِيلًا: | فأعرض عنهم وتوكل على الله وكفى بالله وكيلا | ٨١ | م النساء | ٤ |
| (١٣) | فمن يجادل الله عنهم يوم القيامة أم من يكون عليهم وكيلا | ١٠٩ | م « | ٤ |
| | ولله ما فى السموات وما فى الأرض وكفى بالله وكيلا | ١٣٢ | م « | ٤ |
| | له ما فى السموات وما فى الأرض وكفى بالله وكيلا | ١٧١ | م « | ٤ |
| | وجعلناه هدى لبنى إسرائيل ألا تتخذوا من دونى وكيلا | ٢ | ك الإسراء | ١٧ |
| | إن يشأ يرحمكم أو إن يشأ يعذبكم وما أرسلناك عليهم وكيلا | ٥٤ | ك « | ١٧ |
| | إن عبادى ليس لك عليهم سلطان وكفى بربك وكيلا | ٦٥ | ك « | ١٧ |
| | أو يرسل عليكم حاصبا ثم لا تجدوا لكم وكيلا ... ... | ٦٨ | ك « | ١٧ |
| | ثم لا تجد لك به علينا وكيلا ... ... ... ... ... ... | ٨٦ | ك « | ١٧ |
| | أرأيت من اتخذ إلهه هواه أفأنت تكون عليه وكيلا | ٤٣ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وتوكل على الله وكفى بالله وكيلا... ... ... ... ... | ٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ودع أذاهم وتوكل على الله وكفى بالله وكيلا ... ... | ٤٨ | م « | ٣٣ |
| | رب المشرق والمغرب لا إله إلا هو فاتخذه وكيلا ... | ٩ | ك المزمل | ٧٣ |
| الْمُتَوَكِّلُونَ: | عليه توكلت وعليه فليتوكل المتوكلون ... ... | ٦٧ | ك يوسف | ١٢ |
| (٣) | ولنصبرن على ما آذيتمونا وعلى الله فليتوكل المتوكلون | ١٢ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | قل حسبى الله عليه يتوكل المتوكلون ... ... ... ... | ٣٨ | ك الزمر | ٣٩ |
| الْمُتَوَكِّلِينَ: | فإذا عزمت فتوكل على الله إن الله يحب المتوكلين | ١٥٩ | م آل عمران | ٣ |

***

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَلِجُ: | ولا يدخلون الجنة حتى يلج الجمل فى سم الخياط ... | ٤٠ | ك الأعراف | ٧ |
| (٣) | يعلم ما يلج فى الأرض وما يخرج منها ... ... ... | ٢ | ك سبأ | ٣٤ |
| | يعلم ما يلج فى الأرض وما يخرج منها ... ... ... | ٤ | م الحديد | ٥٧ |
| تُولِجُ: | توليج الليل فى النهار ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | وتوليج النهار فى الليل ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | م « | ٣ |
| يُولِجُ: | ذلك بأن الله يولج الليل فى النهار ... ... ... ... | ٦١ | م الحج | ٢٢ |
| (٨) | ويولج النهار فى الليل وأن الله سميع بصير ... ... | ٦١ | م « | ٢٢ |
| | ألم تر أن الله يولج الليل فى النهار ... ... ... ... | ٢٩ | م لقمان | ٣١ |
| | ويولج النهار فى الليل وسخر الشمس والقمر ... ... | ٢٩ | م « | ٣١ |
| | يولج الليل فى النهار ... ... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك فاطر | ٣٥ |
| | ويولج النهار فى الليل وسخر الشمس والقمر ... ... | ١٣ | ك « | ٣٥ |
| | يولج الليل فى النهار ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | م الحديد | ٥٧ |
| | ويولج النهار فى الليل وهو عليم بذات الصدور... ... | ٦ | م « | ٥٧ |
| وَلِيجَةً: | ولم يتخذوا من دون الله ولا رسوله ولا المؤمنين وليجة | ١٦ | م التوبة | ٩ |

***

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| وَلَدَ: | ألا إنهم من إفكهم ليقولون . ولد الله وإنهم لكاذبون | ١٥٢ | ك الصافات | ٣٧ |
| (٢) | لا أقسم بهذا البلد . وأنت حل بهذا البلد . ووالد وما ولد | ٣ | ك البلد | ٩٠ |
| وَلَدْنَهُمْ: | إن أمهاتهم إلا اللائى ولدنهم ... ... ... ... | ٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| ءَأَلِدُ: | قالت يا ويلتى أألد وأنا عجوز وهذا بعلى شيخا... ... | ٧٢ | ك هود | ١١ |
| يَلِدْ: | قل هو الله أحد . الله الصمد . لم يلد ولم يولد ... | ٣ | ك الإخلاص | ١١٢ |
| يَلِدُوا: | إنك إن تذرهم يضلوا عبادك ولا يلدوا إلا فاجرا كفارا | ٢٧ | ك نوح | ٧١ |
| وُلِدَ: | وسلام عليه يوم ولد ويوم يموت ويوم يبعث حيا | ١٥ | ك مريم | ١٩ |
| وُلِدْتُ: | والسلام علىّ يوم ولدت ويوم أموت ويوم أبعث حيا | ٣٣ | ك « | ١٩ |
| يُولَدْ: | قل هو الله أحد . الله الصمد . لم يلد ولم يولد ... | ٣ | ك الإخلاص | ١١٢ |
| وَلَدٌ: | قالت رب أنى يكون لى ولد ولم يمسسنى بشر ... ... | ٤٧ | م آل عمران | ٣ |
| (١٤) | ولأبويه لكل واحد منهما السدس مما ترك إن كان له ولد | ١١ | م النساء | ٤ |
| | فإن لم يكن له ولد وورثه أبواه فلأمه الثلث ... ... | ١١ | م « | ٤ |
| | ولكم نصف ما ترك أزواجكم إن لم يكن لهن ولد ... | ١٢ | م « | ٤ |
| | فإن كان لهن ولد فلكم الربع مما تركن ... ... ... | ١٢ | م « | ٤ |
| | ولهن الربع مما تركتم إن لم يكن لكم ولد... ... ... | ١٢ | م « | ٤ |
| | فإن كان لكم ولد فلهن الثمن مما تركتم ... ... ... | ١٢ | م « | ٤ |
| | إنما الله إله واحد سبحانه أن يكون له ولد ... ... | ١٧١ | م « | ٤ |
| | إن امرؤ هلك ليس له ولد وله أخت فلها نصف ما ترك | ١٧٦ | م « | ٤ |
| | وهو يرثها إن لم يكن لها ولد .. ... ... ... ... | ١٧٦ | م « | ٤ |
| | أنى يكون له ولد ولم تكن له صاحبة وخلق كل شىء | ١٠١ | ك الأنعام | ٦ |
| | ما كان لله أن يتخذ من ولد سبحانه ... ... ... ... | ٣٥ | ك مريم | ١٩ |
| | ما اتخذ الله من ولد وما كان معه من إله ... ... ... | ٩١ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | قل إن كان للرحمن ولد فأنا أول العابدين ... ... ... | ٨١ | ك الزخرف | ٤٣ |
| وَلَدًا: | وقالوا اتخذ الله ولدا سبحانه ... ... ... ... ... | ١١٦ | م البقرة | ٢ |
| (١٥) | قالوا اتخذ الله ولدا سبحانه هو الغنى ... ... ... ... | ٦٨ | ك يونس | ١٠ |
| | أكرى مثواه عسى أن ينفعنا أو نتخذه ولدا ... ... | ٢١ | ك يوسف | ١٢ |
| | وقل الحمد لله الذى لم يتخذ ولدا ولم يكن له شريك فى الملك | ١١١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وينذر الذين قالوا اتخذ الله ولدا ... ... ... ... | ٤ | ك الكهف | ١٨ |
| | إن ترن أنا أقل منك مالا وولدا . فعسى ربى أن | | | |
| | يؤتين خيرا من جنتك ... ... ... ... ... ... | ٣٩ | ك « | ١٨ |
| | أفرأيت الذى كفر بآياتنا وقال لأوتين مالا وولدا | ٧٧ | ك مريم | ١٩ |
| | وقالوا اتخذ الرحمن ولدا . لقد جئتم شيئا إدًّا ... ... | ٨٨ | ك « | ١٩ |
| | وتخر الجبال هدا . أن دعوا للرحمن ولدا... ... ... | ٩١ | ك « | ١٩ |
| | وما ينبغى للرحمن أن يتخذ ولدا ... ... ... ... | ٩٢ | ك « | ١٩ |
| | وقالوا اتخذ الرحمن ولدا سبحانه بل عباد مكرمون | ٢٦ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | الذى له ملك السموات والأرض ولم يتخذ ولدا... ... | ٢ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | لاتقتلوه عسى أن ينفعنا أو نتخذه ولدا وهم لا يشعرون | ٩ | ك القصص | ٢٨ |
| | لو أراد الله أن يتخذ ولدا لاصطفى مما يخلق ما يشاء سبحانه | ٤ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وأنه تعالى جد ربنا ما اتخذ صاحبة ولا ولدا ... ... | ٣ | ك الجن | ٧٢ |
| وَلَدِهِ: | لا تضار والدة بولدها ولا مولود له بولده... ... ... | ٢٣٣ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | واخشوا يوما لا يجزى والد عن ولده... ... ... ... | ٣٣ | ك لقمان | ٣١ |
| | واتبعوا من لم يزده ماله وولده إلا خسارا ... ... | ٢١ | ك نوح | ٧١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| وَلَدِهَا | : لا تضار والدة بولدها ولا مولود له بولده ... ... | ٢٣٣ | م البقـرة | ٢ |
| الْأَوْلَادِ | : وشاركهم فى الأموال والأولاد وعدهم ... ... | ٦٤ | ك الإسـراء | ١٧ |
| (٢) | وتفاخر بينكم وتكاثر فى الأموال والأولاد ... ... | ٢٠ | م الحـديد | ٥٧ |
| أَوْلَادًا | : كانوا أشد منكم قوة وأكثر أموالا وأولادا | ٦٩ | م التـوبة | ٩ |
| (٢) | وقالوا نحن أكثر أموالا وأولادا وما نحن بمعذبين | ٣٥ | ك سـبإ | ٣٤ |
| أَوْلَادَكُمْ | : وإن أردتم أن تسترضعوا أولادكم فلا جناح عليكم | | | |
| (١٠) | إذا سلمتم ما آتيتم بالمعروف ... ... ... ... | ٢٣٣ | م البقـرة | ٢ |
| | يوصيكم الله فى أولادكم للذكر مثل حظ الأنثيين | ١١ | م النسـاء | ٤ |
| | ولا تقتلوا أولادكم من إملاق نحن نرزقكم وإياهم | ١٥١ | م الأنعـام | ٦ |
| | واعلموا أنما أموالكم وأولادكم فتنة وأن الله عنده أجر عظيم | ٢٨ | م الأنفـال | ٨ |
| | ولا تقتلوا أولادكم خشية إملاق نحن نرزقهم وإياكم | ٣١ | ك الإسـراء | ١٧ |
| | وما أموالكم ولا أولادكم بالتى تقربكم عندنا زلفى ... | ٣٧ | ك سـبإ | ٣٤ |
| | لن تنفعكم أرحامكم ولا أولادكم يوم القيامة يفصل بينكم | ٣ | م الممتحنـة | ٦٠ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تلهكم أموالكم ولا أولادكم عن ذكر الله | ٩ | م المنافقون | ٦٣ |
| | إن من أزواجكم وأولادكم عدوا لكم فاحذروهم ... | ١٤ | م التغـابن | ٦٤ |
| | إنما أموالكم وأولادكم فتنة والله عنده أجر عظيم ... | ١٥ | م « | ٦٤ |
| أَوْلَادُهُمْ | : لن تغنى عنهم أموالهم ولا أولادهم من الله شيئا | ١٠ | م آل عمران | ٣ |
| (٧) | لن تغنى عنهم أموالهم ولا أولادهم من الله شيئا ... | ١١٦ | م « | ٣ |
| | وكذلك زين لكثير من المشركين قتل أولادهم شركاؤهم | ١٣٧ | ك الأنعـام | ٦ |
| | قد خسر الذين قتلوا أولادهم سفها بغير علم ... ... | ١٤٠ | ك « | ٦ |
| | فلا تعجبك أموالهم ولا أولادهم... ... ... ... | ٥٥ | م التـوبة | ٩ |
| | ولا تعجبك أموالهم وأولادهم ... ... ... ... | ٨٥ | م « | ٩ |
| | لن تغنى عنهم أموالهم ولا أولادهم من الله شيئا ... | ١٧ | م المجـادلة | ٥٨ |
| أَوْلَادَهُنَّ | : والوالدات يرضعن أولادهن حولين كاملين | ٢٣٣ | م البقـرة | ٢ |
| (٢) | على أن لا يشركن بالله شيئا ولا يسرقن ولا يزنين | | | |
| | ولا يقتلن أولادهن ... ... ... ... ... | ١٢ | م الممتحنـة | ٦٠ |
| وَالِدٌ | : اتقوا ربكم واخشوا يوما لا يجزى والد عن ولده | ٣٣ | ك لقمـان | ٣١ |
| (٢) | لا أقسم بهذا البلد . وأنت حل بهذا البلد . ووالد وما ولد | ٣ | ك البـلد | ٩٠ |
| وَالِدِهِ | : ولا مولود هو جاز عن والده شيئا ... ... ... | ٣٣ | ك لقمـان | ٣١ |
| الْوَالِدَانِ | : للرجال نصيب مما ترك الوالدان والأقربون ... | ٧ | م النسـاء | ٤ |
| (٣) | وللنساء نصيب مما ترك الوالدان والأقربون ... ... | ٧ | م « | ٤ |
| | ولكل جعلنا موالى مما ترك الوالدان والأقربون ... | ٣٣ | م « | ٤ |
| الْوَالِدَيْنِ | : لا تعبدون إلا الله وبالوالدين إحسانا ... ... | ٨٣ | م البقـرة | ٢ |
| (٧) | إن ترك خيرا الوصية للوالدين والأقربين بالمعروف | ١٨٠ | م « | ٢ |
| | قل ما أنفقتم من خير فللوالدين والأقربين واليتامى | ٢١٥ | م « | ٢ |
| | واعبدوا الله ولا تشركوا به شيئا وبالوالدين إحسانا | ٣٦ | م النسـاء | ٤ |
| | كونوا قوامين بالقسط شهداء لله ولو على أنفسكم | | | |
| | أو الوالدين والأقربين ... ... ... ... ... | ١٣٥ | م « | ٤ |
| الْوَالِدَيْنِ | : قل تعالوا أتل ما حرم ربكم عليكم ألا تشركوا به | | | |
| | شيئا وبالوالدين إحسانا... ... ... ... ... | ١٥١ | م الأنعـام | ٦ |
| | وقضى ربك ألا تعبدوا إلا إياه وبالوالدين إحسانا | ٢٣ | ك الإسـراء | ١٧ |
| وَالِدَيْكَ | : أن اشكر لى ولوالديك إلىّ المصير ... ... ... | ١٤ | ك لقمـان | ٣١ |
| وَالِدَيْهِ | : وبرا بوالديه ولم يكن جبارا عصيا... ... ... ... | ١٤ | ك مـريم | ١٩ |
| (٥) | ووصينا الإنسان بوالديه حسنا ... ... ... ... ... | ٨ | م العنكبوت | ٢٩ |
| | ووصينا الإنسان بوالديه حملته أمه وهنا على وهن ... | ١٤ | ك لقمـان | ٣١ |
| | ووصينا الإنسان بوالديه إحسانا ... ... ... ... | ١٥ | م الأحقاف | ٤٦ |
| | والذى قال لوالديه أف لكما أتعدانى أن أخرج ... | ١٧ | ك « | ٤٦ |
| وَالِدَىَّ | : ربنا اغفر لى ولوالدى وللمؤمنين يوم يقوم الحساب | ٤١ | ك إبراهـيم | ١٤ |
| (٤) | رب أوزعنى أن أشكر نعمتك التى أنعمت علىّ | | | |
| | وعلى والدى ... ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك النمـل | ٢٧ |
| | رب أوزعنى أن أشكر نعمتك التى أنعمت علىّ | | | |
| | وعلى والدى ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | م الأحقاف | ٤٦ |
| | رب اغفر لى ولوالدى ولمن دخل بيتى مؤمنا ... ... | ٢٨ | ك نـوح | ٧١ |
| وَالِدَةٌ | : لا تضار والدة بولدها ولا مولود له بولده ... ... | ٢٣٣ | م البقـرة | ٢ |
| وَالِدَتِكَ | : اذكر نعمتى عليك وعلى والدتك ... ... ... ... | ١١٠ | م المائدة | ٥ |
| وَالِدَتِى | : وبرا بوالدتى ولم يجعلنى جبارا شقيا ... ... ... | ٣٢ | ك مـريم | ١٩ |
| الْوَالِدَاتُ | : والوالدات يرضعن أولادهن حولين كاملين | ٢٣٣ | م البقـرة | ٢ |
| وَلِيدًا | : قال ألم نربك فينا وليدا ولبثت فينا من عمرك سنين | ١٨ | ك الشـعراء | ٢٦ |
| الْوِلْدَانِ | : وما لكم لا تقاتلون فى سبيل الله والمستضعفين من | | | |
| (٦) | الرجال والنساء والولدان ... ... ... ... ... | ٧٥ | م النسـاء | ٤ |
| | إلا المستضعفين من الرجال والنساء والولدان ... ... | ٩٨ | م « | ٤ |
| | والمستضعفين من الولدان وأن تقوموا لليتامى بالقسط | ١٢٧ | م « | ٤ |
| | يطوف عليهم ولدان مخلدون... ... ... ... ... | ١٧ | ك الواقعـة | ٥٦ |
| | فكيف تتقون إن كفرتم يوما يجعل الولدان شيبا ... | ١٧ | م المزمـل | ٧٣ |
| | ويطوف عليهم ولدان مخلدون ... ... ... ... ... | ١٩ | م الإنسـان | ٧٦ |
| مَوْلُودٌ | : وعلى المولود له رزقهن وكسوتهن بالمعروف... ... | ٢٣٣ | م البقـرة | ٢ |
| (٣) | لا تضار والدة بولدها ولا مولود له بولده... ... ... | ٢٣٣ | م « | ٢ |
| | ولا مولود هو جاز عن والده شيئا ... ... ... ... | ٣٣ | ك لقمـان | ٣١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| يَلُونَكُمْ | : يأيها الذين آمنوا قاتلوا الذين يلونكم من الكفار | ١٢٣ | م التـوبة | ٩ |
| وَلَّى | : فلما رآها تهتز كأنها جانّ ولّى مدبرا ولم يعقب ... ... | ١٠ | ك النمـل | ٢٧ |
| (٣) | فلما رآها تهتز كأنها جان ولى مدبرا ولم يعقب... ... | ٣١ | ك القصص | ٢٨ |
| | وإذا تتلى عليه آياتنا ولى مستكبرا كأن لم يسمعها ... | ٧ | ك لقـمان | ٣١ |
| وَلَّاهُمْ | : سيقول السفهاء من الناس ما ولاهم عن قبلتهم | | | |
| | التى كانوا عليها... ... ... ... ... ... ... | ١٤٢ | م البقـرة | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| وَلَّوْا : | لو يجدون ملجأ أو مغارات أو مدخلا لولوا إليه ... | ٥٧ | م التوبة | ٦ |
| (٦) | وإذا ذكرت ربك فى القرآن وحده ولوا على أدبارهم نفورا | ٤٦ | ك الإسراء | ١٧ |
| | إنك لا تسمع الموتى ولا تسمع الصم الدعاء إذا ولوا مدبرين | ٨٠ | ك النمل | ٢٧ |
| | فإنك لا تسمع الموتى ولا تسمع الصم الدعاء إذا ولوا مدبرين | ٥٢ | ك الروم | ٣٠ |
| | فلما قضى ولوا إلى قومهم منذرين ... ... ... ... | ٢٩ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | ولو قاتلكم الذين كفروا لولوا الأدبار ... ... ... | ٢٢ | م الفتح | ٤٨ |
| لَوَلَّيْتَ : | لو اطلعت عليهم لوليت منهم فرارا ولملئت منهم رعبا | ١٨ | ك الكهف | ١٨ |
| وَلَّيْتُمْ : | وضاقت عليكم الأرض بما رحبت ثم وليتم مدبرين | ٢٥ | م التوبة | ٩ |
| تُوَلُّوا : | ولله المشرق والمغرب فأينما تولوا فثم وجه الله ... | ١١٥ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | ليس البر أن تولوا وجوهكم قبل المشرق والمغرب | ١٧٧ | م « | ٢ |
| | وتالله لأكيدن أصنامكم بعد أن تولوا مدبرين ... | ٥٧ | ك الأنبياء | ٢١ |
| تُوَلُّونَ : | يوم تولون مدبرين مالكم من الله من عاصم... | ٣٣ | ك غافر | ٤٠ |
| تُوَلُّوهُمُ : | إذا لقيتم الذين كفروا زحفا فلا تولوهم الأدبار | ١٥ | م الأنفال | ٨ |
| نُوَلِّهِ : | نوله ما تولى ونصله جهنم وساءت مصيرا... ... ... | ١١٥ | م النساء | ٤ |
| نُوَلِّ : | وكذلك نولى بعض الظالمين بعضا بما كانوا يكسبون | ١٢٩ | ك الأنعام | ٦ |
| فَلَنُوَلِّيَنَّكَ : | قد نرى تقلب وجهك فى السماء فلنولينك قبلة ترضاها ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٤ | م البقرة | ٢ |
| لَيُوَلُّنَّ : | ولئن نصروهم ليولن الأدبار ثم لا ينصرون... ... | ١٢ | م الحشر | ٥٩ |
| يُوَلِّهِمْ : | ومن يولهم يومئذ دبره إلا متحرفا لقتال أو متحيزا إلى فئة | ١٦ | م الأنفال | ٨ |
| يُوَلُّوكُمُ : | لن يضروكم إلا أذى وإن يقاتلوكم يولوكم الأدبار | ١١١ | م آل عمران | ٣ |
| يُوَلُّونَ : | ولقد كانوا عاهدوا الله من قبل لا يولون الأدبار | ١٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| (٢) | سيهزم الجمع ويولون الدبر... ... ... ... ... | ٤٥ | م القمر | ٥٤ |
| فَوَلِّ : | فول وجهك شطر المسجد الحرام ... ... ... ... | ١٤٤ | ك البقرة | ٢ |
| (٣) | ومن حيث خرجت فول وجهك شطر المسجد الحرام | ١٤٩ | م « | ٢ |
| | ومن حيث خرجت فول وجهك شطر المسجد الحرام | ١٥٠ | م « | ٢ |
| فَوَلُّوا : | وحيث ما كنتم فولوا وجوهكم شطره ... ... ... | ١٤٤ | م « | ٢ |
| (٢) | وحيث ما كنتم فولوا وجوهكم شطره... ... ... ... | ١٥٠ | م « | ٢ |
| تَوَلَّى : | وإذا تولى سعى فى الأرض ليفسد فيها ويهلك الحرث | ٢٠٥ | م « | ٢ |
| (٢٠) | فمن تولى بعد ذلك فأولئك هم الفاسقون ... ... | ٨٢ | م آل عمران | ٣ |
| | ومن تولى فما أرسلناك عليهم حفيظا ... ... ... | ٨٠ | م النساء | ٤ |
| | ويتبع غير سبيل المؤمنين نوله ما تولى ونصله جهنم | ١١٥ | م « | ٤ |
| | فتولى عنهم وقال يا قوم لقد أبلغتكم رسالة ربى ونصحت لكم | ٧٩ | ك الأعراف | ٧ |
| | فتولى عنهم وقال يا قوم لقد أبلغتكم رسالات ربى | ٩٣ | ك « | ٧ |
| | وتولى عنهم وقال يا أسفى على يوسف ... ... ... | ٨٤ | ك يوسف | ١٢ |
| | إنا قد أوحى إلينا أن العذاب على من كذب وتولى | ٤٨ | ك طه | ٢٠ |
| | فتولى فرعون فجمع كيده ثم أتى ... ... ... ... | ٦٠ | ك « | ٢٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَوَلَّى : | والذى تولى كبره منهم له عذاب عظيم ... ... ... | ١١ | ك النور | ٢٤ |
| | فسق لها ثم تولى إلى الظل ... ... ... ... ... | ٢٤ | ك القصص | ٢٨ |
| | فتولى بركنه وقال ساحر أو مجنون... ... ... ... | ٣٩ | ك الذاريات | ٥١ |
| | فأعرض عن من تولى عن ذكرنا ولم يرد إلا الحياة الدنيا | ٢٩ | ك النجم | ٥٣ |
| | أفرأيت الذى تولى . وأعطى قليلا وأكدى ... ... | ٣٣ | ك « | ٥٣ |
| | كلا إنها لظى . نزاعة للشوى . تدعوا من أدبر وتولى | ١٧ | ك المعارج | ٧٠ |
| | فلا صدق ولا صلى . ولكن كذب وتولى ..... | ٣٢ | ك القيامة | ٧٥ |
| | عبس وتولى . أن جاءه الأعمى... ... ... ... ... | ١ | ك عبس | ٨٠ |
| | لست عليهم بمسيطر . إلا من تولى وكفر ... ... | ٢٣ | ك الغاشية | ٨٨ |
| | لا يصلاها إلا الأشقى . الذى كذب وتولى ... ... | ١٦ | ك الليل | ٩٢ |
| | أرأيت إن كذب وتولى . ألم يعلم بأن الله يرى ... | ١٣ | ك العلق | ٩٦ |
| تَوَلَّاهُ : | كتب عليه أنه من تولاه فأنه يضله ويهديه ... | ٤ | م الحج | ٢٢ |
| تَوَلَّوْا : | وإن تولوا فإنما هم فى شقاق فسيكفيكهم الله | ١٣٧ | م البقرة | ٢ |
| (٢٠) | فلما كتب عليهم القتال تولوا إلا قليلا منهم ... ... | ٢٤٦ | م « | ٢ |
| | فإن أسلموا فقد اهتدوا وإن تولوا فإنما عليك البلاغ | ٢٠ | م آل عمران | ٣ |
| | قل أطيعوا الله والرسول فإن تولوا فإن الله لا يحب الكافرين | ٣٢ | م « | ٣ |
| | فإن تولوا فإن الله عليم بالمفسدين ... ... ... ... | ٦٣ | م « | ٣ |
| | فإن تولوا فقولوا اشهدوا بأنا مسلمون ... ... ... ... | ٦٤ | م « | ٣ |
| | إن الذين تولوا منكم يوم التقى الجمعان إنما استزلهم الشيطان | ١٥٥ | م « | ٣ |
| | فإن تولوا فخذوهم واقتلوهم حيث وجدتموهم ... ... | ٨٩ | م النساء | ٤ |
| | فإن تولوا فاعلم أنما يريد الله أن يصيبهم ببعض ذنوبهم | ٤٩ | م المائدة | ٥ |
| | ولو أسمعهم لتولوا وهم معرضون ... ... ... ... | ٢٣ | م الأنفال | ٨ |
| | وإن تولوا فاعلموا أن الله مولاكم نعم المولى ونعم النصير | ٤٠ | م « | ٨ |
| | فلما آتاهم من فضله بخلوا به وتولوا وهم معرضون ... | ٧٦ | م التوبة | ٩ |
| | تولوا وأعينهم تفيض من الدمع حزنا ألا يجدوا ما ينفقون | ٩٢ | م « | ٩ |
| | فإن تولوا فقل حسبى الله لا إله إلا هو عليه توكلت | ١٢٩ | ك « | ٩ |
| | فإن تولوا فإنما عليك البلاغ المبين ... ... ... ... | ٨٢ | ك النحل | ١٦ |
| | فإن تولوا فقل آذنتكم على سواء ... ... ... ... | ١٠٩ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | فنظر نظرة فى النجوم . فقال إنى سقيم . فتولوا عنه مدبرين | ٩٠ | ك الصافات | ٣٧ |
| | ثم تولوا عنه وقالوا معلم مجنون ... ... ... ... | ١٤ | ك الدخان | ٤٤ |
| | ألم تر إلى الذين تولوا قوما غضب الله عليهم ما هم منكم | ١٤ | م المجادلة | ٥٨ |
| | فقالوا أبشر يهدوننا فكفروا وتولوا واستغنى الله ... | ٦ | م التغابن | ٦٤ |
| تَوَلَّيْتُمْ : | ثم توليتم من بعد ذلك ... ... ... ... ... ... | ٦٤ | م البقرة | ٢ |
| (٨) | ثم توليتم إلا قليلا منكم وأنتم معرضون ... ... ... | ٨٣ | م « | ٢ |
| | فإن توليتم فاعلموا أنما على رسولنا البلاغ المبين ... | ٩٢ | م المائدة | ٥ |
| | وإن توليتم فاعلموا أنكم غير معجزى الله ... ... ... | ٣ | م التوبة | ٩ |
| | فإن توليتم فما سألتكم من أجر إن أجرى إلا على الله ... | ٧٢ | ك يونس | ١٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَوَلَّيْتُمْ | : فهل عسيتم إن توليتم أن تفسدوا فى الأرض ... | ٢٢ | م محمد | ٤٧ |
| | وإن تتولوا كما توليتم من قبل يعذبكم عذابا أليما ... | ١٦ | م الفتح | ٤٨ |
| | فإن توليتم فإنما على رسولنا البلاغ المبين ... ... ... | ١٢ | ك التغابن | ٦٤ |
| تَتَوَلَّوْا | : ويزدكم قوة إلى قوتكم ولا تتولوا مجرمين ... ... | ٥٢ | ك هود | ١١ |
| (٤) | وإن تتولوا يستبدل قوما غيركم ثم لا يكونوا أمثالكم | ٣٨ | م محمد | ٤٧ |
| | وإن تتولوا كما توليتم من قبل يعذبكم عذابا أليما ... | ١٦ | م الفتح | ٤٨ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تتولوا قوما غضب الله عليهم ... | ١٣ | م الممتحنة | ٦٠ |
| (ت) تَوَلَّوْا | : فإن تولوا فإن الله لا يحب الكافرين ... ... | ٣٢ | م آل عمران | ٣ |
| (٥) | أطيعوا الله ورسوله ولا تولوا عنه وأنتم تسمعون ... | ٢٠ | م الأنفال | ٨ |
| | وإن تولوا فإنى أخاف عليكم عذاب يوم كبير ... ... | ٣ | ك هود | ١١ |
| | فإن تولوا فقد أبلغتكم ما أرسلت به إليكم ... ... ... | ٥٧ | ك « | ١١ |
| | فإن تولوا فإنما عليه ما حمل وعليكم ما حملتم... ... ... | ٥٤ | م النور | ٢٤ |
| (ت) تَوَلَّوْهُمْ | : إنما ينهاكم الله عن الذين قاتلوكم فى الدين وأخرجوكم من دياركم وظاهروا على إخراجكم أن تولوهم ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | م الممتحنة | ٦٠ |
| يَتَوَلَّ | : ومن يتول الله ورسوله والذين آمنوا فإن حزب الله هم الغالبون ... ... ... ... ... ... ... | ٥٦ | م المائدة | ٥ |
| | ومن يتول يعذبه عذابا أليما ... ... ... ... ... ... | ١٧ | م الفتح | ٤٨ |
| | ومن يتول فإن الله هو الغنى الحميد ... ... ... ... | ٢٤ | م الحديد | ٥٧ |
| | ومن يتول فإن الله هو الغنى الحميد ... ... ... ... | ٦ | م الممتحنة | ٦٠ |
| يَتَوَلَّ | : ثم يتول فريق منهم وهم معرضون... ... ... ... | ٢٣ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | إن وليىَ الله الذى نزل الكتاب وهو يتولى الصالحين | ١٩٦ | ك الأعراف | ٧ |
| | ثم يتول فريق منهم من بعد ذلك ... ... ... ... ... | ٤٧ | م النور | ٢٤ |
| يَتَوَلَّهُمْ | : بعضهم أولياء بعض ومن يتولهم منكم فإنه منهم ... | ٥١ | م المائدة | ٥ |
| (٣) | ومن يتولهم منكم فأولئك هم الظالمون ... ... ... ... | ٢٣ | م التوبة | ٩ |
| | ومن يتولهم فأولئك هم الظالمون ... ... ... ... ... | ٩ | م الممتحنة | ٦٠ |
| يَتَوَلَّوْا | : يقولوا قد أخذنا أمرنا من قبل ويتولوا وهم فرحون | ٥٠ | م التوبة | ٩ |
| (٢) | وإن يتولوا يعذبهم الله عذابا أليما فى الدنيا والآخرة | ٧٤ | م « | ٩ |
| يَتَوَلَّوْنَ | : ثم يتولون من بعد ذلك وما أولئك بالمؤمنين ... | ٤٣ | م المائدة | ٥ |
| (٢) | ترى كثيرا منهم يتولون الذين كفروا ... ... ... ... | ٨٠ | م « | ٥ |
| يَتَوَلَّوْنَهُ | : إنما سلطانه على الذين يتولونه والذين هم به مشركون | ١٠٠ | ك النحل | ١٦ |
| تَوَلَّ | : فألقه إليهم ثم تول عنهم فانظر ماذا يرجعون ... ... | ٢٨ | ك النمل | ٢٧ |
| (٥) | فتول عنهم حتى حين . وأبصرهم فسوف يبصرون ... | ١٧٤ | ك الصافات | ٣٧ |
| | وتول عنهم حتى حين . وأبصر فسوف يبصرون ... | ١٧٨ | ك « | ٣٧ |
| | فتول عنهم فما أنت بملوم ... ... ... ... ... ... | ٥٤ | ك الذاريات | ٥١ |
| | فتول عنهم يوم يدع الداع إلى شىء نكر ... ... ... | ٦ | ك القمر | ٥٤ |
| وَالٍ | : وإذا أراد الله بقوم سوءا فلا مرد له وما لهم من دونه من وال ... ... ... ... ... ... ... | ١١ | م الرعد | ١٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| مُوَلِّيهَا | : ولكل وجهة هو موليها ... ... ... ... ... ... | ١٤٨ | م البقرة | ٢ |
| وَلِىٍّ | : وما لكم من دون الله من ولى ولا نصير ... ... ... | ١٠٧ | م « | ٢ |
| (٢٠) | مالك من الله من ولى ولا نصير ... ... ... ... ... | ١٢٠ | م « | ٢ |
| | الله ولى الذين آمنوا يخرجهم من الظلمات إلى النور | ٢٥٧ | م « | ٢ |
| | والله ولى المؤمنين ... ... ... ... ... ... ... | ٦٨ | م آل عمران | ٣ |
| | ليس لهم من دونه ولى ولا شفيع لعلهم يتقون ... ... | ٥١ | ك الأنعام | ٦ |
| | أن تبسل نفس بما كسبت ليس لها من دون الله ولى ولا شفيع ... ... ... ... ... ... ... | ٧٠ | ك « | ٦ |
| | وما لهم فى الأرض من ولى ولا نصير ... ... ... ... | ٧٤ | م التوبة | ٩ |
| | يحيى ويميت وما لكم من دون الله من ولى ولا نصير | ١١٦ | م « | ٩ |
| | مالك من الله من ولى ولا واق ... ... ... ... ... | ٣٧ | م الرعد | ١٣ |
| | ولم يكن له شريك فى الملك ولم يكن له ولى من الذل | ١١١ | ك الإسراء | ١٧ |
| | مالهم من دونه من ولى ولا يشرك فى حكمه أحدا ... | ٢٦ | ك الكهف | ١٨ |
| | وما لكم من دون الله من ولى ولا نصير ... ... ... | ٢٢ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ما لكم من دونه من ولى ولا شفيع أفلا تتذكرون ... | ٤ | ك السجدة | ٣٢ |
| | فإذا الذى بينك وبينه عداوة كأنه ولى حميم ... ... | ٣٤ | ك فصلت | ٤١ |
| | والظالمون ما لهم من ولى ولا نصير ... ... ... ... | ٨ | ك الشورى | ٤٢ |
| | أم اتخذوا من دونه أولياء فالله هو الولى ... ... ... | ٩ | ك « | ٤٢ |
| | وينشر رحمته وهو الولى الحميد ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك « | ٤٢ |
| | وما لكم من دون الله من ولى ولا نصير ... ... ... | ٣١ | ك « | ٤٢ |
| | ومن يضلل الله فما له من ولى من بعده ... ... ... | ٤٤ | ك « | ٤٢ |
| | وإن الظالمين بعضهم أولياء بعض والله ولى المتقين | ١٩ | ك الجاثية | ٤٥ |
| وَلِيًّا | : والله أعلم بأعدائكم وكفى بالله وليا وكفى بالله نصيرا | ٤٥ | م النساء | ٤ |
| (١٣) | واجعل لنا من لدنك وليا واجعل لنا من لدنك نصيرا | ٧٥ | م « | ٤ |
| | واقتلوهم حيث وجدتموهم ولا تتخذوا منهم وليا ولا نصيرا | ٨٩ | م « | ٤ |
| | ومن يتخذ الشيطان وليا من دون الله فقد خسر خسرانا مبينا | ١١٩ | م « | ٤ |
| | من يعمل سوءا يجز به ولا يجد له من دون الله وليا ولا نصيرا | ١٢٣ | م « | ٤ |
| | فيعذبهم عذابا أليما ولا يجدون لهم من دون الله وليا ولا نصيرا | ١٧٣ | م « | ٤ |
| | قل أغير الله أتخذ وليا فاطر السموات والأرض | ١٤ | ك الأنعام | ٦ |
| | ومن يضلل فلن تجد له وليا مرشدا ... ... ... ... | ١٧ | ك الكهف | ١٨ |
| | فهب لى من لدنك وليا . يرثنى ويرث من آل يعقوب | ٥ | ك مريم | ١٩ |
| | يا أبت إنى أخاف أن يمسك عذاب من الرحمن فتكون للشيطان وليا ... ... ... ... ... ... | ٤٥ | ك « | ١٩ |
| | ولا يجدون لهم من دون الله وليا ولا نصيرا ... ... | ١٧ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | خالدين فيها أبدا لا يجدون وليا ولا نصيرا... ... ... | ٦٥ | م « | ٣٣ |
| | ولو قاتلكم الذين كفروا لولوا الأدبار ثم لا يجدون وليا ولا نصيرا ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | م الفتح | ٤٨ |
| وَلِيُّكُمُ | : إنما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا ... ... ... | ٥٥ | م المائدة | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| وَلِيُّنَا: | أنت ولينا فاغفر لنا وارحمنا وأنت خير الغافرين ... | ١٥٥ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | قالوا سبحانك أنت ولينا من دونهم بل كانوا يعبدون الجن | ٤١ | ك سبإ | ٣٤ |
| وَلِيُّهُ: | أو لا يستطيع أن يمل هو فليملل وليه بالعدل... ... | ٢٨٢ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | ومن قتل مظلوما فقد جعلنا لوليه سلطانا فلا يسرف في القتل | ٣٣ | م الإسراء | ١٧ |
| | لنبيتنه وأهله ثم لنقولن لوليه ما شهدنا مهلك أهله ... | ٤٩ | ك النمل | ٢٧ |
| وَلِيُّهُمْ: | لهم دار السلام عند ربهم وهو وليهم بما كانوا يعملون | ١٢٧ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | فزين لهم الشيطان أعمالهم فهو وليهم اليوم ولهم عذاب أليم | ٦٣ | ك النحل | ١٦ |
| وَلِيُّهُمَا: | إذ همت طائفتان منكم أن تفشلا والله وليهما | ١٢٢ | م آل عمران | ٣ |
| وَلِيِّيَ: | إن ولي الله الذي نزل الكتاب وهو يتولى الصالحين | ١٩٦ | ك الأعراف | ٧ |
| (٢) | فاطر السموات والأرض أنت ولي في الدنيا والآخرة | ١٠١ | ك يوسف | ١٢ |
| أَوْلِيَاءُ: | لا يتخذ المؤمنون الكافرين أولياء من دون المؤمنين | ٢٨ | م آل عمران | ٣ |
| (٣٤) | فقاتلوا أولياء الشيطان إن كيد الشيطان كان ضعيفا | ٧٦ | م النساء | ٤ |
| | فلا تتخذوا منهم أولياء حتى يهاجروا في سبيل الله ... | ٨٩ | م « | ٤ |
| | الذين يتخذون الكافرين أولياء من دون المؤمنين | | | |
| | أيبتغون عندهم العزة فإن العزة لله جميعا ... ... | ١٣٩ | م « | ٤ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تتخذوا الكافرين أولياء من دون المؤمنين | ١٤٤ | م « | ٤ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تتخذوا اليهود والنصارى أولياء | ٥١ | م المائدة | ٥ |
| | بعضهم أولياء بعض ومن يتولهم منكم فإنه منهم... ... | ٥١ | م « | ٥ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تتخذوا الذين اتخذوا دينكم هزوا ولعبا | | | |
| | من الذين أوتوا الكتاب من قبلكم والكفار أولياء | ٥٧ | م « | ٥ |
| | ولو كانوا يؤمنون بالله والنبي وما أنزل إليه ما اتخذوهم أولياء | ٨١ | م « | ٥ |
| | اتبعوا ما أنزل إليكم من ربكم ولا تتبعوا من دونه أولياء | ٣ | ك الأعراف | ٧ |
| | إنا جعلنا الشياطين أولياء للذين لا يؤمنون ... ... | ٢٧ | ك « | ٧ |
| | إنهم اتخذوا الشياطين أولياء من دون الله ... ... | ٣٠ | ك « | ٧ |
| | والذين آووا ونصروا أولئك بعضهم أولياء بعض ... | ٧٢ | م الأنفال | ٨ |
| | والذين كفروا بعضهم أولياء بعض ... ... ... ... | ٧٣ | م « | ٨ |
| | لا تتخذوا آباءكم وإخوانكم أولياء إن استحبوا | | | |
| | الكفر على الإيمان ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | م التوبة | ٩ |
| | والمؤمنون والمؤمنات بعضهم أولياء بعض... ... ... | ٧١ | م « | ٩ |
| | ألا إن أولياء الله لا خوف عليهم ولا هم يحزنون ... | ٦٢ | ك يونس | ١٠ |
| | وما كان لهم من دون الله من أولياء ... ... ... | ٢٠ | ك هود | ١١ |
| | وما لكم من دون الله من أولياء ثم لا تنصرون ... | ١١٣ | ك « | ١١ |
| | قل أفاتخذتم من دونه أولياء لا يملكون لأنفسهم | | | |
| | نفعا ولا ضرا ... ... ... ... ... ... ... | ١٦ | م الرعد | ١٣ |
| | ومن يضلل فلن تجد لهم أولياء من دونه ... ... | ٩٧ | ك الإسراء | ١٧ |
| | أفتتخذونه وذريته أولياء من دوني وهم لكم عدو ... | ٥٠ | ك الكهف | ١٨ |
| | أفحسب الذين كفروا أن يتخذوا عبادي من دوني أولياء | ١٠٢ | ك « | ١٨ |
| | قالوا سبحانك ما كان ينبغي لنا أن نتخذ من دونك من أولياء | ١٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| أَوْلِيَاءَ: | مثل الذين اتخذوا من دون الله أولياء كمثل العنكبوت | ٤١ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | والذين اتخذوا من دونه أولياء ما نعبدهم إلا ليقربونا | | | |
| | إلى الله زلفى ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| | والذين اتخذوا من دونه أولياء الله حفيظ عليهم ... | | ك الشورى | ٤٢ |
| | أم اتخذوا من دونه أولياء فالله هو الولي ... ... | ٩ | ك « | ٤٢ |
| | وما كان لهم من أولياء ينصرونهم من دون الله ... | ٤٦ | ك « | ٤٢ |
| | ولا يغني عنهم ما كسبوا شيئا ولا ما اتخذوا من دون | | | |
| | الله أولياء ... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | وإن الظالمين بعضهم أولياء بعض والله ولي المتقين | ١٩ | ك « | ٤٥ |
| | ومن لا يجب داعي الله فليس بمعجز في الأرض وليس | | | |
| | له من دونه أولياء ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تتخذوا عدوي وعدوكم أولياء | ١ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | إن زعمتم أنكم أولياء لله من دون الناس فتمنوا الموت | ٦ | م الجمعة | ٦٢ |
| أَوْلِيَاءَهُ: | إنما ذلكم الشيطان يخوف أولياءه ... ... ... | ١٧٥ | م آل عمران | ٣ |
| (٢) | وهم يصدون عن المسجد الحرام وما كانوا أولياءه | ٣٤ | ك الأنفال | ٨ |
| أَوْلِيَاؤُكُمْ: | نحن أولياؤكم في الحياة الدنيا وفي الآخرة ... | ٣١ | ك فصلت | ٤١ |
| أَوْلِيَاؤُهُ: | إن أولياؤه إلا المتقون ولكن أكثرهم لا يعلمون | ٣٤ | ك الأنفال | ٨ |
| أَوْلِيَاؤُهُمُ: | والذين كفروا أولياؤهم الطاغوت ... ... ... | ٢٥٧ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | وقال أولياؤهم من الإنس ربنا استمتع بعضنا ببعض | ١٢٨ | ك الأنعام | ٦ |
| أَوْلِيَائِكُمْ: | إلا أن تفعلوا إلى أوليائكم معروفا ... ... | ٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| أَوْلِيَائِهِمْ: | وإن الشياطين ليوحون إلى أوليائهم ليجادلوكم | ١٢١ | ك الأنعام | ٦ |
| الْوَلَايَةُ: | هنالك الولاية لله الحق هو خير ثوابا وخير عقبا | ٤٤ | ك الكهف | ١٨ |
| وَلَايَتِهِمْ: | والذين آمنوا ولم يهاجروا ما لكم من ولايتهم | | | |
| | من شيء حتى يهاجروا... ... ... ... ... ... | ٧٢ | م الأنفال | ٨ |
| أَوْلَى: | إن أولى الناس بإبراهيم للذين اتبعوه وهذا النبي | | | |
| (١١) | والذين آمنوا ... ... ... ... ... ... ... | ٦٨ | م آل عمران | ٣ |
| | إن يكن غنيا أو فقيرا فالله أولى بهما ... ... ... | ١٣٥ | م النساء | ٤ |
| | وأولوا الأرحام بعضهم أولى ببعض في كتاب الله ... | ٧٥ | م الأنفال | ٨ |
| | ثم لنحن أعلم بالذين هم أولى بها صليا ... ... ... | ٧٠ | ك مريم | ١٩ |
| | النبي أولى بالمؤمنين من أنفسهم وأزواجه أمهاتهم | ٦ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وأولوا الأرحام بعضهم أولى ببعض في كتاب الله | | | |
| | من المؤمنين والمهاجرين ... ... ... ... ... | ٦ | م « | ٣٣ |
| | فأولى لهم . طاعة وقول معروف ... ... ... ... | ٢٠ | م محمد | ٤٧ |
| | أولى لك ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك القيامة | ٧٥ |
| | فأولى ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٤ | ك « | ٧٥ |
| | ثم أولى لك ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك « | ٧٥ |
| | فأولى ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك « | ٧٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **الأَوْلَيَانِ** | فآخران يقومان مقامهما من الذين استحق عليهم الأوليان ... ... ... ... ... ... | ١٠٧ | م المائدة | ٥ |
| **المَوْلَى** | وإن تولوا فاعلموا أن الله مولاكم نعم المولى ونعم النصير | ٤٠ | م الأنفال | ٨ |
| (٧) | يدعوا لمن ضره أقرب من نفعه لبئس المولى ولبئس العشير | ١٣ | م الحج | ٢٢ |
| | واعتصموا بالله هو مولاكم فنعم المولى ونعم النصير | ٧٨ | م » | ٢٢ |
| | يوم لا يغني مولى ... ... ... ... ... ... ... | ٤١ | ك الدخان | ٤٤ |
| | عن مولى شيئا ولا هم ينصرون ... ... ... ... ... | ٤١ | ك » | ٤٤ |
| | ذلك بأن الله مولى الذين آمنوا ... ... ... ... | ١١ | م محمد | ٤٧ |
| | وأن الكافرين لا مولى لهم ... ... ... ... ... ... | ١١ | م » | ٤٧ |
| **مَوْلَاكُمْ** | بل الله مولاكم وهو خير الناصرين ... ... | ١٥٠ | م آل عمران | ٣ |
| (٥) | وإن تولوا فاعلموا أن الله مولاكم نعم المولى ونعم النصير | ٤٠ | م الأنفال | ٨ |
| | واعتصموا بالله هو مولاكم فنعم المولى ونعم النصير | ٧٨ | م الحج | ٢٢ |
| | مأواكم النار هي مولاكم وبئس المصير ... ... ... | ١٥ | م الحديد | ٥٧ |
| | والله مولاكم وهو العليم الحكيم ... ... ... ... | ٢ | م التحريم | ٦٦ |
| **مَوْلَانَا** | واعف عنا واغفر لنا وارحمنا أنت مولانا ... ... | ٢٨٦ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | قل لن يصيبنا إلا ما كتب الله لنا هو مولانا ... ... | ٥١ | م التوبة | ٩ |
| **مَوْلَاهُ** | أحدهما أبكم لا يقدر على شيء وهو كل على مولاه | ٧٦ | ك النحل | ١٦ |
| (٢) | فإن الله هو مولاه وجبريل وصالح المؤمنين ... ... | ٤ | م التحريم | ٦٦ |
| **مَوْلَاهُمُ** | ثم ردوا إلى الله مولاهم الحق ... ... ... ... | ٦٢ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) | وردوا إلى الله مولاهم الحق وضل عنهم ما كانوا يفترون | ٣٠ | ك يونس | ١٠ |
| **مَوَالِيَ** | ولكل جعلنا موالي مما ترك الوالدان والأقربون | ٣٣ | م النساء | ٤ |
| (٢) | وإني خفت الموالي من ورائي وكانت امرأتي عاقرا | ٥ | ك مريم | ١٩ |
| **مَوَالِيكُمْ** | فإن لم تعلموا آباءهم فإخوانكم في الدين ومواليكم | ٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **تَنِيَا** | اذهب أنت وأخوك بآياتي ولا تنيا في ذكري ... ... | ٤٢ | ك طه | ٢٠ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **وَهَبَ** | الحمد لله الذي وهب لي على الكبر إسمعيل وإسحق | ٣٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| (٢) | فوهب لي ربي حكما وجعلني من المرسلين ... ... ... | ٢١ | ك الشعراء | ٢٦ |
| **وَهَبَتْ** | وامرأة مؤمنة إن وهبت نفسها للنبي ... ... ... | ٥٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| **وَهَبْنَا** | ووهبنا له إسحق ويعقوب كلا هدينا ... ... ... | ٨٤ | ك الأنعام | ٦ |
| (٩) | فلما اعتزلهم وما يعبدون من دون الله وهبنا له إسحق ويعقوب ... ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك مريم | ١٩ |
| | ووهبنا لهم من رحمتنا وجعلنا لهم لسان صدق عليا ... | ٥٠ | ك » | ١٩ |
| | ووهبنا له من رحمتنا أخاه هرون نبيا ... ... ... | ٥٣ | ك » | ١٩ |
| | ووهبنا له إسحق ويعقوب نافلة وكلا جعلنا صالحين | ٧٢ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | فاستجبنا له ووهبنا له يحيى وأصلحنا له زوجه ... ... | ٩٠ | ك » | ٢١ |
| | ووهبنا له إسحق ويعقوب وجعلنا في ذريته النبوة والكتاب | ٢٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ووهبنا لداود سليمان نعم العبد إنه أواب ... ... ... | ٣٠ | ك ص | ٣٨ |
| | ووهبنا له أهله ومثلهم معهم رحمة منا ... ... ... | ٤٣ | ك » | ٣٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **لِأَهَبَ** | قال إنما أنا رسول ربك لأهب لك غلاما زكيا | ١٩ | ك مريم | ١٩ |
| **يَهَبُ** | يخلق ما يشاء يهب لمن يشاء إناثا ... ... ... ... | ٤٩ | ك الشورى | ٤٢ |
| (٢) | ويهب لمن يشاء الذكور ... ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك » | ٤٢ |
| **هَبْ** | ربنا لا تزغ قلوبنا بعد إذ هديتنا وهب لنا من لدنك رحمة | ٨ | م آل عمران | ٣ |
| (٧) | هنالك دعا زكريا ربه قال رب هب لي من لدنك ذرية طيبة | ٣٨ | م » | ٣ |
| | فهب لي من لدنك وليا . يرثني ويرث من آل يعقوب | ٥ | ك مريم | ١٩ |
| | والذين يقولون ربنا هب لنا من أزواجنا وذرياتنا قرة أعين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٤ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | رب هب لي حكما وألحقني بالصالحين ... ... ... | ٨٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وقال إني ذاهب إلى ربي سيهدين . رب هب لي من الصالحين | ١٠٠ | ك الصافات | ٣٧ |
| | قال رب اغفر لي وهب لي ملكا لا ينبغي لأحد من بعدي | ٣٥ | ك ص | ٣٨ |
| **الوَهَّابُ** | وهب لنا من لدنك رحمة إنك أنت الوهاب ... | ٨ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | أم عندهم خزائن رحمة ربك العزيز الوهاب ... ... | ٩ | ك ص | ٣٨ |
| | وهب لي ملكا لا ينبغي لأحد من بعدي إنك أنت الوهاب | ٣٥ | ك » | ٣٨ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **وَهَّاجًا** | وبنينا فوقكم سبعا شدادا . وجعلنا سراجا وهاجا | ١٣ | ك النبأ | ٧٨ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **وَهَنَ** | قال رب إني وهن العظم مني واشتعل الرأس شيبا ... | ٤ | ك مريم | ١٩ |
| **وَهَنُوا** | فما وهنوا لما أصابهم في سبيل الله ... ... ... | ١٤٦ | م آل عمران | ٣ |
| **تَهِنُوا** | ولا تهنوا ولا تحزنوا وأنتم الأعلون إن كنتم مؤمنين | ١٣٩ | م » | ٣ |
| (٣) | ولا تهنوا في ابتغاء القوم إن تكونوا تألمون فإنهم يألمون | ١٠٤ | م النساء | ٤ |
| | فلا تهنوا وتدعوا إلى السلم وأنتم الأعلون ... ... ... | ٣٥ | م محمد | ٤٧ |
| **وَهْنٍ** | ووصينا الإنسان بوالديه حملته أمه وهنا على وهن | ١٤ | ك لقمان | ٣١ |
| **وَهْنًا** | ووصينا الإنسان بوالديه حملته أمه وهنا ... ... ... | ١٤ | ك » | ٣١ |
| **أَوْهَنَ** | وإن أوهن البيوت لبيت العنكبوت ... ... ... | ٤١ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| **مُوهِنُ** | ذلكم وأن الله موهن كيد الكافرين ... ... ... | ١٨ | م الأنفال | ٨ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **وَاهِيَةٌ** | وانشقت السماء فهي يومئذ واهية ... ... ... ... | ١٦ | ك الحاقة | ٦٩ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **وَيْكَأَنَّ** | ويكأن الله يبسط الرزق لمن يشاء من عباده ويقدر | ٨٢ | ك القصص | ٢٨ |
| **وَيْكَأَنَّهُ** | ويكأنه لا يفلح الكافرون ... ... ... ... ... | ٨٢ | ك » | ٢٨ |
| ✦✦✦ | | | | |
| **وَيْلٌ** | فويل للذين يكتبون الكتاب بأيديهم ثم يقولون هذا | | | |
| (٢٧) | من عند الله ... ... ... ... ... ... ... ... | ٧٩ | م البقرة | ٢ |
| | فويل لهم مما كتبت أيديهم ... ... ... ... ... | ٧٩ | م » | ٢ |
| | وويل لهم مما يكسبون ... ... ... ... ... ... | ٧٩ | م » | ٢ |
| | وويل للكافرين من عذاب شديد ... ... ... ... | ٢ | ك إبراهيم | ١٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| وَيْلٌ | : فويل للذين كفروا من مشهد يوم عظيم ... ... ... | ٣٧ | ك مريم | ١٩ |
| | ولكم الويل مما تصفون ... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | ذلك ظن الذين كفروا فويل للذين كفروا من النار | ٢٧ | ك ص | ٣٨ |
| | فويل للقاسية قلوبهم من ذكر الله ... ... ... ... | ٢٢ | ك الزمر | ٣٩ |
| | فاستقيموا إليه واستغفروه وويل للمشركين ... ... | ٦ | ك فصلت | ٤١ |
| | فويل للذين ظلموا من عذاب يوم أليم ... ... ... | ٦٥ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | ويل لكل أفاك أثيم ... ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | فويل للذين كفروا من يومهم الذى يوعدون... ... | ٦٠ | ك الذاريات | ٥١ |
| | فويل يومئذ للمكذبين ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك الطور | ٥٢ |
| | وما أدراك ما يوم الفصل . ويل يومئذ للمكذبين ... | ١٥ | ك المرسلات | ٧٧ |
| | كذلك نفعل بالمجرمين . ويل يومئذ للمكذبين ... ... | ١٩ | ك « | ٧٧ |
| | فقدرنا فنعم القادرون . ويل يومئذ للمكذبين ... ... | ٢٤ | ك « | ٧٧ |
| | وأسقيناكم ماء فراتا . ويل يومئذ للمكذبين ... ... | ٢٨ | ك « | ٧٧ |
| | كأنه جمالة صفر . ويل يومئذ للمكذبين ... ... ... | ٣٤ | ك « | ٧٧ |
| | ولا يؤذن لهم فيعتذرون . ويل يومئذ للمكذبين ... | ٣٧ | ك « | ٧٧ |
| | فإن كان لكم كيد فكيدون . ويل يومئذ للمكذبين ... | ٤٠ | ك « | ٧٧ |
| | إنا كذلك نجزى المحسنين . ويل يومئذ للمكذبين ... | ٤٥ | ك « | ٧٧ |
| | كلوا وتمتعوا قليلا إنكم مجرمون . ويل يومئذ للمكذبين | ٤٧ | ك « | ٧٧ |
| | وإذا قيل لهم اركعوا لا يركعون . ويل يومئذ للمكذبين | ٤٩ | ك « | ٧٧ |
| وَيْلَ | : ويل للمطففين . الذين إذا اكتالوا على الناس يستوفون | ١ | ك المطففين | ٨٣ |
| | وما أدراك ما سجين . كتاب مرقوم . ويل يومئذ للمكذبين | ١٠ | ك « | ٨٣ |
| | ويل لكل همزة لمزة ... ... ... ... ... ... ... | ١ | ك الهمزة | ١٠٤ |
| | فويل للمصلين . الذين هم عن صلاتهم ساهون... ... | ٤ | م الماعون | ١٠٧ |
| وَيْلَتَى | : قال ياويلتى أعجزت أن أكون مثل هذا الغراب | ٣١ | م المائدة | ٥ |
| | (٣) قالت ياويلتى أألد وأنا عجوز وهذا بعلى شيخا ..؟ ... | ٧٢ | ك هود | ١١ |
| | ياويلتى ليتنى لم أتخذ فلانا خليلا ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| وَيْلَتَنَا | : ويقولون ياويلتنا مالِ هذا الكتاب لا يغادر صغيرة | | | |
| | ولا كبيرة إلا أحصاها ... ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك الكهف | ١٨ |
| وَيْلَكَ | : وهما يستغيثان الله ويلك آمن إن وعد الله حق | ١٧ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| وَيْلَكُمْ | : ويلكم لا تفتروا على الله كذبا فيسحتكم بعذاب | ٦١ | ك طه | ٢٠ |
| | (٢) وقال الذين أوتوا العلم ويلكم ثواب الله خير لمن آمن | ٨٠ | ك القصص | ٢٨ |
| وَيْلَنَا | : قالوا ياويلنا إنا كنا ظالمين ... ... ... ... ... | ١٤ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | (٦) ولئن مستهم نفحة من عذاب ربك ليقولن ياويلنا | | | |
| | إنا كنا ظالمين ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك « | ٢١ |
| | ياويلنا قد كنا فى غفلة من هذا بل كنا ظالمين ... ... | ٩٧ | ك « | ٢١ |
| | قالوا ياويلنا من بعثنا من مرقدنا ، هذا ما وعد الرحمن | ٥٢ | ك يس | ٣٦ |
| | وقالوا يا ويلنا هذا يوم الدين ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك الصافات | ٣٧ |
| | قالوا ياويلنا إنا كنا طاغين ... ... ... ... ... ... | ٣١ | م القلم | ٦٨ |

# باب الياء

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَئِسَ | : اليوم يئس الذين كفروا من دينكم فلا تخشوهم | | | |
| | (٢) واخشون ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | م المائدة | ٥ |
| | قد يئسوا من الآخرة كما يئس الكفار من أصحاب القبور | ١٣ | م الممتحنة | ٦٠ |
| يَئِسْنَ | : واللائى يئسن من المحيض من نسائكم إن ارتبتم | | | |
| | فعدتهن ثلاثة أشهر ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | م الطلاق | ٦٥ |
| يَئِسُوا | : أولئك يئسوا من رحمتى ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | (٢) لا تتولوا قوما غضب الله عليهم قد يئسوا من الآخرة | ١٣ | م الممتحنة | ٦٠ |
| تَايْئَسُوا | : ولا تيأسوا من روح الله ... ... ... ... ... | ٨٧ | ك يوسف | ١٢ |
| يَايْئَسُ | : إنه لا ييأس من روح الله إلا القوم الكافرون | ٨٧ | ك « | ١٢ |
| | (٢) أفلم ييأس الذين آمنوا أن لو يشاء الله لهدى الناس جميعا | ٣١ | م الرعد | ١٣ |
| آسْتَيْئَسَ | : حتى إذا آستيأس الرسل وظنوا أنهم قد كذبوا | | | |
| | جاءهم نصرنا ... ... ... ... ... ... ... ... | ١١٠ | ك يوسف | ١٢ |
| آسْتَيْئَسُوا | : فلما آستيأسوا منه خلصوا نجيا ... ... ... | ٨٠ | ك « | ١٢ |
| يَئُوسٌ | : ولئن أذقنا الإنسان منا رحمة ثم نزعناها منه إنه | | | |
| | (٢) ليئوس كفور ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك هود | ١١ |
| | لا يئوس الإنسان من دعاء الخير وإن مسه الشر | | | |
| | فيئوس قنوط ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٩ | ك فصلت | ٤١ |
| يَئُوسًا | : وإذا مسه الشر كان يئوسا ... ... ... ... ... | ٨٣ | ك الإسراء | ١٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| يَبَسًا | : أن أسر بعبادى فاضرب لهم طريقا فى البحر يبسا... | ٧٧ | ك طه | ٢٠ |
| يَابِسٍ | : ولا حبة فى ظلمات الأرض ولا رطب ولا يابس | | | |
| | إلا فى كتاب مبين ... ... ... ... ... ... ... | ٥٩ | ك الأنعام | ٦ |
| يَابِسَاتٍ | : إنى أرى سبع بقرات سمان يأكلهن سبع عجاف | | | |
| | (٢) وسبع سنبلات خضر وأخر يابسات ... ... ... | ٤٣ | ك يوسف | ١٢ |
| | أفتنا فى سبع بقرات سمان يأكلهن سبع عجاف وسبع | | | |
| | سنبلات خضر وأخر يابسات ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك « | ١٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| **الْيَتِيمَ**: | ولا تقربوا مال اليتيم إلا بالتى هى أحسن حتى يبلغ أشده | ١٥٢ | م الأنعام | ٦ |
| (٥) | ولا تقربوا مال اليتيم إلا بالتى هى أحسن حتى يبلغ أشده | ٣٤ | ك الإسراء | ١٧ |
| | كلا بل لا تكرمون اليتيم . ولا تحاضون على طعام المسكين | ١٧ | ك الفجر | ٨٩ |
| | فأما اليتيم فلا تقهر... ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك الضحى | ٩٣ |
| | أرأيت الذى يكذب بالدين . فذلك الذى يدع اليتيم | ٢ | م الماعون | ١٠٧ |
| **يَتِيمًا**: | ويطعمون الطعام على حبه مسكينا ويتيما وأسيرا ... | ٨ | م الإنسان | ٧٦ |
| (٣) | أو إطعام فى يوم ذى مسغبة . يتيما ذا مقربة ... | ١٥ | ك البلد | ٩٠ |
| | ألم يجدك يتيما فآوى ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك الضحى | ٩٣ |
| **يَتِيمَيْنِ**: | وأما الجدار فكان لغلامين يتيمين فى المدينة | ٨٢ | ك الكهف | ١٨ |
| **الْيَتَامَى**: | لا تعبدون إلا الله وبالوالدين إحسانا وذى | | | |
| (١٤) | القربى واليتامى ... ... ... ... ... ... | ٨٣ | م البقرة | ٢ |
| | وآتى المال على حبه ذوى القربى واليتامى والمساكين | ١٧٧م | « | ٢ |
| | قل ما أنفقتم من خير فللوالدين والأقربين واليتامى | | | |
| | والمساكين ... ... ... ... ... ... ... | ٢١٥م | « | ٢ |
| | ويسئلونك عن اليتامى قل إصلاح لهم خير... ... ... | ٢٢٠م | « | ٢ |
| | وآتوا اليتامى أموالهم ولا تتبدلوا الخبيث بالطيب | ٢ | م النساء | ٤ |
| | وإن خفتم ألا تقسطوا فى اليتامى فانكحوا ما طاب | | | |
| | لكم من النساء ... ... ... ... ... ... ... | ٣ | م « | ٤ |
| | وابتلوا اليتامى حتى إذا بلغوا النكاح ... ... ... | ٦ | م « | ٤ |
| | وإذا حضر القسمة أولوا القربى واليتامى والمساكين | | | |
| | فارزقوهم منه ... ... ... ... ... ... ... | ٨ | م « | ٤ |
| | إن الذين يأكلون أموال اليتامى ظلما إنما يأكلون | | | |
| | فى بطونهم نارا... ... ... ... ... ... ... | ١٠ | م « | ٤ |
| | وبالوالدين إحسانا وبذى القربى واليتامى والمساكين | ٣٦ | م « | ٤ |
| | قل الله يفتيكم فيهن وما يتلى عليكم فى الكتاب فى يتامى | | | |
| | النساء اللاتى لا تؤتونهن ما كتب لهن... ... ... | ١٢٧م | « | ٤ |
| | والمستضعفين من الولدان وأن تقوموا لليتامى بالقسط | ١٢٧م | « | ٤ |
| | فأن لله خمسه وللرسول ولذى القربى واليتامى ... ... | ٤١ | م الأنفال | ٨ |
| | فلله وللرسول ولذى القربى واليتامى والمساكين ... | ٧ | م الحشر | ٥٩ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **يَثْرِبَ**: | وإذ قالت طائفة منهم يا أهل يثرب لا مقام | | | |
| | لكم فارجعوا ... ... ... ... ... ... ... | ١٣ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **يَأْجُوجُ**: | قالوا يا ذا القرنين إن يأجوج ومأجوج مفسدون | | | |
| (٢) | فى الأرض... ... ... ... ... ... ... ... | ٩٤ | م الكهف | ١٨ |
| | حتى إذا فتحت يأجوج ومأجوج وهم من كل | | | |
| | حدب ينسلون ... ... ... ... ... ... ... | ٩٦ | ك الأنبياء | ٢١ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| **يَدُ**: | قل إن الفضل بيد الله يؤتيه من يشاء والله واسع عليم | ٧٣ | م آل عمران | ٣ |
| (٥) | وقالت اليهود يد الله مغلولة غلت أيديهم ولعنوا بما قالوا | ٦٤ | م المائدة | ٥ |
| | حتى يعطوا الجزية عن يد وهم صاغرون ... ... ... | ٢٩ | م التوبة | ٩ |
| | إن الذين يبايعونك إنما يبايعون الله يد الله فوق أيديهم | ١٠ | م الفتح | ٤٨ |
| | وأن الفضل بيد الله يؤتيه من يشاء والله ذو الفضل العظيم | ٢٩ | م الحديد | ٥٧ |
| **يَدَكَ**: | بيدك الخير إنك على كل شىء قدير ... ... ... ... | ٢٦ | م آل عمران | ٣ |
| (٧) | لئن بسطت إلىّ يدك لتقتلنى ما أنا بباسط يدى | | | |
| | إليك لأقتلك ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م المائدة | ٥ |
| | ولا تجعل يدك مغلولة إلى عنقك ولا تبسطها كل البسط | ٢٩ | ك الإسراء | ١٧ |
| | وأضمم يدك إلى جناحك تخرج بيضاء من غير سوء | ٢٢ | ك طه | ٢٠ |
| | وأدخل يدك فى جيبك تخرج بيضاء من غير سوء ... | ١٢ | ك النمل | ٢٧ |
| | أسلك يدك فى جيبك تخرج بيضاء من غير سوء ... | ٣٢ | ك القصص | ٢٨ |
| | وخذ بيدك ضغثا فاضرب به ولا تحنث ... ... ... | ٤٤ | ك ص | ٣٨ |
| **يَدِهِ**: | إلا أن يعفون أو يعفوا الذى بيده عقدة النكاح | ٢٣٧م | البقرة | ٢ |
| (٨) | ومن لم يطعمه فإنه منى إلا من اغترف غرفة بيده ... | ٢٤٩م | « | ٢ |
| | ونزع يده فإذا هى بيضاء للناظرين ... ... ... ... | ١٠٨ | ك الأعراف | ٧ |
| | قل من بيده ملكوت كل شىء وهو يجير ولا يجار عليه | ٨٨ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | ظلمات بعضها فوق بعض إذا أخرج يده لم يكد يراها | ٤٠ | م النور | ٢٤ |
| | ونزع يده فإذا هى بيضاء للناظرين ... ... ... ... | ٣٣ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | فسبحان الذى بيده ملكوت كل شىء وإليه ترجعون | ٨٣ | ك يس | ٣٦ |
| | تبارك الذى بيده الملك وهو على كل شىء قدير ... ... | ١ | ك الملك | ٦٧ |
| **يَدَىَ**: | لئن بسطت إلىّ يدك لتقتلنى ما أنا بباسط يدى | | | |
| | إليك لأقتلك ... ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | م المائدة | ٥ |
| **يَدَا**: | تبت يدا أبى لهب وتب ... ... ... ... ... ... | ١ | ك المسد | ١١١ |
| **يَدَاكَ**: | ذلك بما قدمت يداك وأن الله ليس بظلام للعبيد | ١٠ | م الحج | ٢٢ |
| **يَدَاهُ**: | بل يداه مبسوطتان ينفق كيف يشاء... ... ... ... | ٦٤ | م المائدة | ٥ |
| (٣) | ومن أظلم ممن ذكر بآيات ربه فأعرض عنها ونسى | | | |
| | ما قدمت يداه ... ... ... ... ... ... ... | ٥٧ | ك الكهف | ١٨ |
| | إنا أنذرناكم عذابا قريبا يوم ينظر المرء ما قدمت يداه | ٤٠ | ك النبأ | ٧٨ |
| **يَدَىْ**: | وهو الذى يرسل الرياح بشرا بين يدى رحمته... ... | ٥٧ | ك الأعراف | ٧ |
| (٧) | وهو الذى أرسل الرياح بشرا بين يدى رحمته ... | ٤٨ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ومن يرسل الرياح بشرا بين يدى رحمته ... ... ... | ٦٣ | ك النمل | ٢٧ |
| | إن هو إلا نذير لكم بين يدى عذاب شديد ... ... | ٤٦ | ك سبأ | ٣٤ |
| | يأيها الذين آمنوا لا تقدموا بين يدى الله ورسوله | ١ | م الحجرات | ٤٩ |
| | إذا ناجيتم الرسول فقدموا بين يدى نجواكم صدقة | ١٢ | م المجادلة | ٥٨ |
| | أأشفقتم أن تقدموا بين يدى نجواكم صدقات ... | ١٣ | م « | ٥٨ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَدَيْهِ : | فإنه نزله على قلبك بإذن الله مصدقا لما بين يديه | ٩٧ | م البقـرة | ٢ |
| (١٧) | نزل عليك الكتاب بالحق مصدقا لما بين يديه ... | ٣ | م آل عمران | ٣ |
| | وقفينا على آثارهم بعيسى ابن مريم مصدقا لما بين يديه | ٤٦ | م المائدة | ٥ |
| | وآتيناه الإنجيل فيه هدى ونور ومصدقا لما بين يديه | ٤٦ | م « | ٥ |
| | وأنزلنا إليك الكتاب بالحق مصدقا لما بين يديه من الكتاب | ٤٨ | م « | ٥ |
| | وهذا كتاب أنزلناه مبارك مصدق الذى بين يديه ... | ٩٢ | ك الأنعام | ٦ |
| | وما كان هذا القرآن أن يفترى من دون الله ولكن | | | |
| | تصديق الذى بين يديه... ... ... ... ... ... | ٣٧ | ك يونس | ١٠ |
| | ما كان حديثا يفترى ولكن تصديق الذى بين يديه | ١١١ | ك يوسف | ١٢ |
| | له معقبات من بين يديه ومن خلفه يحفظونه من أمر الله | ١١ | م الرعد | ١٣ |
| | ويوم يعض الظالم على يديه يقول يا ليتنى اتخذت مع | | | |
| | الرسول سبيلا... ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ومن الجن من يعمل بين يديه بإذن ربه ... ... ... | ١٢ | ك سبأ | ٣٤ |
| | وقال الذين كفروا لن نؤمن بهذا القرآن ولا بالذى بين يديه | ٣١ | ك « | ٣٤ |
| | والذى أوحينا إليك من الكتاب هو الحق مصدقا لما | | | |
| | بين يديه ... ... ... ... ... ... ... ... | ٣١ | ك فاطر | ٣٥ |
| | لا يأتيه الباطل من بين يديه ولا من خلفه ... ... | ٤٢ | ك فصلت | ٤١ |
| | واذكر أخا عاد إذ أنذر قومه بالأحقاف وقد خلت | | | |
| | النذر من بين يديه ... ... ... ... ... ... | ٢١ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | إنا سمعنا كتابا أنزل من بعد موسى مصدقا لما بين يديه | ٣٠ | ك « | ٤٦ |
| | فإنه يسلك من بين يديه ومن خلفه رصدا... ... ... | ٢٧ | ك الجن | ٧٢ |
| يَدَيْهَا : | فجعلناها نكالا لما بين يديها وما خلفها وموعظة للمتقين | ٦٦ | م البقـرة | ٢ |
| يَدَىَّ : | ومصدقا لما بين يدى من التوراة ... ... ... ... | ٥٠ | م آل عمران | ٣ |
| (٣) | قال يا إبليس ما منعك أن تسجد لما خلقت بيدى | ٧٥ | ك ص | ٣٨ |
| | إنى رسول الله إليكم مصدقا لما بين يدى من التوراة | ٦ | م الصف | ٦١ |
| أَيْدٍ : | ألهم أرجل يمشون بها أم لهم أيد يبطشون بها ... | ١٩٥ | ك الأعراف | ٧ |
| أَيْدِى : | ظهر الفساد فى البر والبحر بما كسبت أيدى الناس | ٤١ | ك الروم | ٣٠ |
| (٥) | واذكر عبادنا إبراهيم وإسحق ويعقوب أولى الأيدى | ٤٥ | ك ص | ٣٨ |
| | فعجل لكم هذه وكف أيدى الناس عنكم... ... ... | ٢٠ | م الفتح | ٤٨ |
| | يخربون بيوتهم بأيديهم وأيدى المؤمنين ... ... ... | ٢ | م الحشر | ٥٩ |
| | فى صحف مكرمة . مرفوعة مطهرة . بأيدى سفرة... | ١٥ | ك عبس | ٨٠ |
| أَيْدِيكُمْ : | وأنفقوا فى سبيل الله ولا تلقوا بأيديكم إلى التهلكة | ١٩٥ | م البقـرة | ٢ |
| (١٦) | ذلك بما قدمت أيديكم ... ... ... ... ... | ١٨٢ | م آل عمران | ٣ |
| | فتيمموا صعيدا طيبا فامسحوا بوجوهكم وأيديكم... | ٤٣ | م النساء | ٤ |
| | ألم تر إلى الذين قيل لهم كفوا أيديكم وأقيموا الصلاة | ٧٧ | م « | ٤ |
| | إذا قمتم إلى الصلاة فاغسلوا وجوهكم وأيديكم إلى المرافق | ٦ | م المائدة | ٥ |
| | فتيمموا صعيدا طيبا فامسحوا بوجوهكم وأيديكم منه | ٦ | م « | ٥ |
| | يا أيها الذين آمنوا ليبلونكم الله بشىء من الصيد تناله أيديكم | ٩٤ | م « | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَيْدِيكُمْ : | لأقطعن أيديكم وأرجلكم من خلاف ... ... | ١٢٤ | ك الأعراف | ٧ |
| | ذلك بما قدمت أيديكم ... ... ... ... ... | ٥١ | م الأنفال | ٨ |
| | قل لمن فى أيديكم من الأسرى إن يعلم الله فى قلوبكم | | | |
| | خيرا يؤتكم خيرا مما أخذ منكم ... ... ... ... | | م « | ٨ |
| | قاتلوهم يعذبهم الله بأيديكم ... ... ... ... ... | ١٤ | م التوبة | ٩ |
| | فلأقطعن أيديكم وأرجلكم من خلاف ... ... ... | ٧١ | ك طه | ٢٠ |
| | لأقطعن أيديكم وأرجلكم من خلاف... ... ... ... | ٤٩ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | وإذا قيل لهم اتقوا ما بين أيديكم وما خلفكم... ... | ٤٥ | م يس | ٣٦ |
| | وما أصابكم من مصيبة فبما كسبت أيديكم ... ... ... | ٣٠ | ك الشورى | ٤٢ |
| | وهو الذى كف أيديهم عنكم وأيديكم عنهم ... ... | ٢٤ | م الفتح | ٤٨ |
| أَيْدِينَا : | ونحن نتربص بكم أن يصيبكم الله بعذاب من عنده | | | |
| (٣) | أو بأيدينا ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥٢ | م التوبة | ٩ |
| | وما نتنزل إلا بأمر ربك له ما بين أيدينا وما خلفنا | ٦٤ | ك مريم | ١٩ |
| | أو لم يروا أنا خلقنا لهم مما عملت أيدينا أنعاما ... | ٧١ | ك يس | ٣٦ |
| أَيْدِيهِمْ : | فويل للذين يكتبون الكتاب بأيديهم ثم يقولون | | | |
| (٣٧) | هذا من عند الله ... ... ... ... ... ... ... | ٧٩ | م البقـرة | ٢ |
| | فويل لهم مما كتبت أيديهم وويل لهم مما يكسبون ... | ٧٩ | م « | ٢ |
| | ولن يتمنوه أبدا بما قدمت أيديهم والله عليم بالظالمين | ٩٥ | م « | ٢ |
| | يعلم ما بين أيديهم وما خلفهم ... ... ... ... ... | ٢٥٥ | م « | ٢ |
| | فكيف إذا أصابتهم مصيبة بما قدمت أيديهم ... ... | ٦٢ | م النساء | ٤ |
| | فإن لم يعتزلوكم ويلقوا إليكم السلم ويكفوا أيديهم فخذوهم | ٩١ | م « | ٤ |
| | إذ هم قوم أن يبسطوا إليكم أيديهم ... ... ... ... | ١١ | م المائدة | ٥ |
| | فكف أيديهم عنكم... ... ... ... ... ... ... | ١١ | م « | ٥ |
| | أن يقتلوا أو يصلبوا أو تقطع أيديهم وأرجلهم من خلاف | ٣٣ | م « | ٥ |
| | وقالت اليهود يد الله مغلولة غلت أيديهم ولعنوا بما قالوا | ٦٤ | م « | ٥ |
| | ولو نزلنا عليك كتابا فى قرطاس فلمسوه بأيديهم لقال | | | |
| | الذين كفروا إن هذا إلا سحر مبين ... ... ... | ٧ | ك الأنعام | ٦ |
| | ولو ترى إذ الظالمون فى غمرات الموت والملائكة | | | |
| | باسطوا أيديهم ... ... ... ... ... ... ... | ٩٣ | م « | ٦ |
| | ثم لآتينهم من بين أيديهم ومن خلفهم... ... ... ... | ١٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | ولما سقط فى أيديهم ورأوا أنهم قد ضلوا قالوا لئن | | | |
| | لم يرحمنا ربنا ويغفر لنا لنكونن من الخاسرين... | ١٤٩ | ك « | ٧ |
| | يأمرون بالمنكر وينهون عن المعروف ويقبضون أيديهم | ٦٧ | م التوبة | ٩ |
| | فلما رأى أيديهم لا تصل إليه نكرهم وأوجس منهم خيفة | ٧٠ | ك هود | ١١ |
| | جاءتهم رسلهم بالبينات فردوا أيديهم فى أفواههم... | ٩ | ك إبراهيم | ١٤ |
| | يعلم ما بين أيديهم وما خلفهم ولا يحيطون به علما | ١١٠ | ك طه | ٢٠ |
| | يعلم ما بين أيديهم وما خلفهم ولا يشفعون إلا لمن ارتضى | ٢٨ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | يعلم ما بين أيديهم وما خلفهم وإلى الله ترجع الأمور | ٧٦ | م الحج | ٢٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| أَيْدِيهِمْ: | يوم تشهد عليهم ألسنتهم وأيديهم وأرجلهم بما كانوا يعملون ... ... ... ... ... ... ... | ٢٤ | م النور | ٢٤ |
| | ولولا أن تصيبهم مصيبة بما قدمت أيديهم ... ... | ٤٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | وإن تصبهم سيئة بما قدمت أيديهم إذا هم يقنطون | ٣٦ | ك الروم | ٣٠ |
| | أفلم يروا إلى ما بين أيديهم وما خلفهم من السماء والأرض | ٩ | ك سبإ | ٣٤ |
| | وجعلنا من بين أيديهم سدا ومن خلفهم سدا ... ... | ٩ | ك يس | ٣٦ |
| | ليأكلوا من ثمره وما عملته أيديهم أفلا يشكرون ... | ٣٥ | ك « | ٣٦ |
| | اليوم نختم على أفواههم وتكلمنا أيديهم ... ... ... | ٦٥ | ك « | ٣٦ |
| | إذ جاءتهم الرسل من بين أيديهم ومن خلفهم | ١٤ | ك فصلت | ٤١ |
| | وقيضنا لهم قرناء فزينوا لهم ما بين أيديهم وما خلفهم | ٢٥ | ك « | ٤١ |
| | وإن تصبهم سيئة بما قدمت أيديهم فإن الإنسان كفور | ٤٨ | ك الشورى | ٤٢ |
| | إنما يبايعون الله يد الله فوق أيديهم ... ... ... | ١٠ | م الفتح | ٤٨ |
| | وهو الذي كف أيديهم عنكم وأيديكم عنهم ببطن مكة | ٢٤ | م « | ٤٨ |
| | يوم ترى المؤمنين والمؤمنات يسعى نورهم بين أيديهم | ١٢ | م الحديد | ٥٧ |
| | يخربون بيوتهم بأيديهم وأيدي المؤمنين ... ... ... | ٢ | م الحشر | ٥٩ |
| | إن يثقفوكم يكونوا لكم أعداء ويبسطوا إليكم أيديهم | ٢ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | ولا يمنونه أبدا بما قدمت أيديهم والله عليم بالظالمين | ٧ | م الجمعة | ٦٢ |
| | نورهم يسعى بين أيديهم وبأيمانهم ... ... ... ... | ٨ | م التحريم | ٦٦ |
| أَيْدِيَهُمَا: | والسارق والسارقة فاقطعوا أيديهما جزاء بما كسبا | ٣٨ | م المائدة | ٥ |
| أَيْدِيَهُنَّ: | فلما رأينه أكبرنه وقطعن أيديهن وقلن حاش لله | ٣١ | ك يوسف | ١٢ |
| (٣) | رجع إلى ربك فسئله ما بال النسوة اللاتي قطعن أيديهن | ٥٠ | ك « | ١٢ |
| | ولا يأتين ببهتان يفترينه بين أيديهن وأرجلهن ... | ١٢ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | * * * | | | |
| يس: | يس . والقرآن الحكيم . إنك لمن المرسلين | ١ | ك يس | ٣٦ |
| | * * * | | | |
| يَسَّرْنَا: | ولقد يسرنا القرآن للذكر فهل من مذكر . كذبت عاد | ١٧ | ك القمر | ٥٤ |
| (٤) | ولقد يسرنا القرآن للذكر فهل من مذكر . كذبت ثمود بالنذر | ٢٢ | ك « | ٥٤ |
| | ولقد يسرنا القرآن للذكر فهل من مذكر . كذبت قوم لوط بالنذر ... ... ... ... ... ... ... | ٣٢ | ك « | ٥٤ |
| | ولقد يسرنا القرآن للذكر فهل من مذكر . ولقد جاء آل فرعون النذر ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك « | ٥٤ |
| يَسَّرْنَاهُ: | فإنما يسرناه بلسانك لتبشر به المتقين وتنذر به قوما لدا | ٩٧ | ك مريم | ١٩ |
| (٢) | فإنما يسرناه بلسانك لعلهم يتذكرون ... ... ... ... | ٥٨ | ك الدخان | ٤٤ |
| يُسْرُهُ: | من نطفة خلقه فقدره . ثم السبيل يسره ... ... ... | ٢٠ | ك عبس | ٨٠ |
| نُيَسِّرُكَ: | ونيسرك لليسرى . فذكر إن نفعت الذكرى ... | ٨ | ك الأعلى | ٨٧ |
| فَسَنُيَسِّرُهُ: | فأما من أعطى واتقى . وصدق بالحسنى . | | | |
| (٢) | فسنيسره لليسرى ... ... ... ... ... ... | ٧ | ك الليل | ٩٢ |
| | وأما من بخل واستغنى . وكذب بالحسنى . فسنيسره للعسرى | ١٠ | ك « | ٩٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَسِّرْ: | قال رب اشرح لي صدري . ويسر لي أمري ... ... | ٢٦ | ك طه | ٢٠ |
| تَيَسَّرَ: | علم أن لن تحصوه فتاب عليكم فاقرءوا ما تيسر من القرآن | ٢٠ | م المزمل | ٧٣ |
| (٢) | وآخرون يقاتلون في سبيل الله فاقرءوا ما تيسر منه ... | ٢٠ | م « | ٧٣ |
| اسْتَيْسَرَ: | فإن أحصرتم فما استيسر من الهدي ... ... ... | ١٩٦ | م البقرة | ٢ |
| (٢) | فمن تمتع بالعمرة إلى الحج فما استيسر من الهدي ... | ١٩٦ | م « | ٢ |
| الْيُسْرَ: | يريد الله بكم اليسر ولا يريد بكم العسر ... ... ... | ١٨٥ | م « | ٢ |
| يُسْرًا: | وسنقول له من أمرنا يسرا ... ... ... ... ... ... | ٨٨ | م الكهف | ١٨ |
| (٦) | والذاريات ذروا . فالحاملات وقرا . فالجاريات يسرا | ٣ | ك الذاريات | ٥١ |
| | ومن يتق الله يجعل له من أمره يسرا ... ... ... | ٤ | م الطلاق | ٦٥ |
| | سيجعل الله بعد عسر يسرا ... ... ... ... ... | ٧ | م « | ٦٥ |
| | فإن مع العسر يسرا ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك الشرح | ٩٤ |
| | إن مع العسر يسرا ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك « | ٩٤ |
| يَسِيرٌ: | ونمير أهلنا ونحفظ أخانا ونزداد كيل بعير ذلك كيل يسير | ٦٥ | ك يوسف | ١٢ |
| (٨) | إن ذلك في كتاب إن ذلك على الله يسير ... ... ... | ٧٠ | م الحج | ٢٢ |
| | أولم يروا كيف يبدئ الله الخلق ثم يعيده إن ذلك على الله يسير ... ... ... ... ... ... ... | ١٩ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ولا ينقص من عمره إلا في كتاب إن ذلك على الله يسير | ١١ | ك فاطر | ٣٥ |
| | يوم تشقق الأرض عنهم سراعا ذلك حشر علينا يسير ... | ٤٤ | ك ق | ٥٠ |
| | إلا في كتاب من قبل أن نبرأها إن ذلك على الله يسير | ٢٢ | م الحديد | ٥٧ |
| | قل بلى وربي لتبعثن ثم لتنبؤن بما عملتم وذلك على الله يسير | ٧ | م التغابن | ٦٤ |
| | فذلك يومئذ يوم عسير . على الكافرين غير يسير ... | ١٠ | ك المدثر | ٧٤ |
| يَسِيرًا: | فسوف نصليه نارا وكان ذلك على الله يسيرا ... ... | ٣٠ | م النساء | ٤ |
| (٧) | إلا طريق جهنم خالدين فيها أبدا وكان ذلك على الله يسيرا ... ... ... ... ... ... ... | ١٦٩ | م « | ٤ |
| | ثم قبضناه إلينا قبضا يسيرا ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | وما تلبثوا بها إلا يسيرا ... ... ... ... ... ... | ١٤ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | أولئك لم يؤمنوا فأحبط الله أعمالهم وكان ذلك على الله يسيرا | ١٩ | م « | ٣٣ |
| | يضاعف لها العذاب ضعفين وكان ذلك على الله يسيرا | ٣٠ | م « | ٣٣ |
| | فأما من أوتي كتابه بيمينه . فسوف يحاسب حسابا يسيرا | ٨ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| لِلْيُسْرَى: | ونيسرك لليسرى . فذكر إن نفعت الذكرى ... | ٨ | ك الأعلى | ٨٧ |
| (٢) | فأما من أعطى واتقى . وصدق بالحسنى . فسنيسره لليسرى | ٧ | ك الليل | ٩٢ |
| مَيْسُورًا: | فقل لهم قولا ميسورا ... ... ... ... ... ... | ٢٨ | ك الإسراء | ١٧ |
| مَيْسَرَةٍ: | وإن كان ذو عسرة فنظرة إلى ميسرة ... ... ... | ٢٨٠ | م البقرة | ٢ |
| الْمَيْسِرِ: | يسئلونك عن الخمر والميسر قل فيهما إثم كبير ... ... | ٢١٩ | م « | ٢ |
| (٣) | إنما الخمر والميسر والأنصاب والأزلام رجس ... ... | ٩٠ | م المائدة | ٥ |
| | إنما يريد الشيطان أن يوقع بينكم العداوة والبغضاء في الخمر والميسر ويصدكم عن ذكر الله ... ... | ٩١ | م « | ٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| | ✦✦✦ | | | |
| **اليَسَع** : وإسمعيل واليسع ويونس ولوطا وكلا فضلنا على العالمين | | ٨٦ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢) وأذكر إسمعيل واليسع وذا الكفل وكل من الأخيار | | ٤٨ | ك ص | ٣٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **يُوسُف** : ومن ذريته داود وسليمان وأيوب ويوسف ... | | ٨٤ | ك الأنعام | ٦ |
| (٢٧) إذ قال يوسف لأبيه ياأبت إنى رأيت أحد عشر كوكبا | | ٤ | ك يوسف | ١٢ |
| لقد كان فى يوسف وإخوته آيات للسائلين ... ... | | ٧ | م « | ١٢ |
| إذ قالوا ليوسف وأخوه أحب إلى أبينا منا ... ... | | ٨ | ك « | ١٢ |
| اقتلوا يوسف أو اطرحوه أرضا يخل لكم وجه أبيكم | | ٩ | ك « | ١٢ |
| قال قائل منهم لا تقتلوا يوسف وألقوه فى غيابة الجب | | ١٠ | ك « | ١٢ |
| قالوا ياأبانا مالك لا تأمنا على يوسف وإنا له لناصحون | | ١١ | ك « | ١٢ |
| قالوا ياأبانا إنا ذهبنا نستبق وتركنا يوسف عند متاعنا | | ١٧ | ك « | ١٢ |
| وكذلك مكنا ليوسف فى الأرض ولنعلمه من تأويل الأحاديث... ... ... ... ... ... ... ... | | ٢١ | ك « | ١٢ |
| يوسف أعرض عن هذا واستغفرى لذنبك ... ... | | ٢٩ | ك « | ١٢ |
| يوسف أيها الصديق أفتنا فى سبع بقرات سمان ... | | ٤٦ | ك « | ١٢ |
| قال ما خطبكن إذ راودتن يوسف عن نفسه ... ... | | ٥١ | ك « | ١٢ ● |
| وكذلك مكنا ليوسف فى الأرض يتبوأ منها حيث يشاء | | ٥٦ | ك « | ١٢ |
| وجاء إخوة يوسف فدخلوا عليه فعرفهم وهم له منكرون | | ٥٨ | ك « | ١٢ |
| ولما دخلوا على يوسف آوى إليه أخاه ... ... ... | | ٦٩ | ك « | ١٢ |
| كذلك كدنا ليوسف ما كان ليأخذ أخاه فى دين الملك إلا أن يشاء الله ... ... ... ... ... ... | | ٧٦ | ك « | ١٢ |
| فأسرها يوسف فى نفسه ولم يبدها لهم... ... ... ... | | ٧٧ | ك « | ١٢ |
| قد أخذ عليكم موثقا من الله ومن قبل ما فرطتم فى يوسف | | ٨٠ | ك « | ١٢ |
| وتولى عنهم وقال ياأسفى على يوسف ... ... ... | | ٨٤ | ك « | ١٢ |
| قالوا تالله تفتؤا تذكر يوسف حتى تكون حرضا ... | | ٨٥ | ك « | ١٢ |
| يا بنى اذهبوا فتحسسوا من يوسف وأخيه ... ... | | ٨٧ | ك « | ١٢ |
| قال هل علمتم ما فعلتم بيوسف وأخيه إذ أنتم جاهلون | | ٨٩ | ك « | ١٢ |
| قالوا أئنك لأنت يوسف ... ... ... ... ... | | ٩٠ | ك « | ١٢ |
| قال أنا يوسف وهذا أخى قد منّ الله علينا ... ... | | ٩٠ | ك « | ١٢ |
| ولما فصلت العير قال أبوهم إنى لأجد ريح يوسف | | ٩٤ | ك « | ١٢ |
| فلما دخلوا على يوسف آوى إليه أبويه ... ... ... | | ٩٩ | ك « | ١٢ |
| ولقد جاءكم يوسف من قبل بالبينات ... ... ... | | ٣٤ | ك غافر | ٤٠ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **يَعْقُوبُ** : ووصى بها إبراهيم بنيه ويعقوب ... ... ... | | ١٣٢ | م البقرة | ٢ |
| (١٦) أم كنتم شهداء إذ حضر يعقوب الموت ... ... ... | | ١٣٣ | م « | ٢ |
| قولوا آمنا بالله وما أنزل إلينا وما أنزل إلى إبراهيم وإسمعيل وإسحق ويعقوب... ... ... ... | | ١٣٦ | م « | ٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **يَعْقُوبُ** : أم تقولون إن إبراهيم وإسمعيل وإسحق ويعقوب والأسباط كانوا هودا أو نصارى ... ... ... | | ١٤٠ | م البقرة | ٢ |
| قل آمنا بالله وما أنزل علينا وما أنزل على إبراهيم وإسمعيل وإسحق ويعقوب والأسباط ... ... | | ٨٤ | م آل عمران | ٣ |
| وأوحينا إلى إبراهيم وإسمعيل وإسحق ويعقوب والأسباط | | ١٦٣ | م النساء | ٤ |
| ووهبنا له إسحق ويعقوب كلا هدينا ... ... ... | | ٨٤ | ك الأنعام | ٦ |
| فبشرناها بإسحق ومن وراء إسحق يعقوب... ... ... | | ٧١ | ك هود | ١١ |
| ويتم نعمته عليك وعلى آل يعقوب ... ... ... ... | | ٦ | ك يوسف | ١٢ |
| واتبعت ملة آبائى إبراهيم وإسحق ويعقوب ... ... | | ٣٨ | ك « | ١٢ |
| إلا حاجة فى نفس يعقوب قضاها ... ... ... ... | | ٦٨ | ك « | ١٢ |
| يرثنى ويرث من آل يعقوب واجعله رب رضيا ... | | ٦ | ك مريم | ١٩ |
| فلما اعتزلهم وما يعبدون من دون الله وهبنا له إسحق ويعقوب | | ٤٩ | ك « | ١٩ |
| ووهبنا له إسحق ويعقوب نافلة وكلا جعلنا صالحين | | ٧٢ | ك الأنبياء | ٢١ |
| ووهبنا له إسحق ويعقوب وجعلنا فى ذريته النبوة والكتاب | | ٢٧ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| واذكر عبادنا إبراهيم وإسحق ويعقوب ... ... ... | | ٤٥ | ك ص | ٣٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **يَعُوقَ** : ولا تذرنّ ودا ولا سواعا ولا يغوث ويعوق ونسرا | | ٢٣ | ك نوح | ٧١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **يَغُوثَ** : ولا تذرنّ ودا ولا سواعا ولا يغوث ويعوق ونسرا | | ٢٣ | ك نوح | ٧١ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **الْيَاقُوتُ** : كأنهن الياقوت والمرجان... ... ... ... | | ٥٨ | م الرحمن | ٥٥ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **يَقْطِينٍ** : فنبذناه بالعراء وهو سقيم. وأنبتنا عليه شجرة من يقطين | | ١٤٦ | ك الصافات | ٣٧ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **أَيْقَاظًا** : وتحسبهم أيقاظا وهم رقود ... ... ... ... | | ١٨ | ك الكهف | ١٨ |
| | ✦✦✦ | | | |
| **تُوقِنُونَ** : يدبر الأمر يفصل الآيات لعلكم بلقاء ربكم توقنون | | ٢ | م الرعد | ١٣ |
| **يُوقِنُونَ** : وبالآخرة هم يوقنون ... ... ... ... | | ٤ | م البقرة | ٢ |
| (١١) تشابهت قلوبهم قد بينا الآيات لقوم يوقنون... ... | | ١١٨ | م « | ٢ |
| ومن أحسن من الله حكما لقوم يوقنون ... ... ... | | ٥٠ | م المائدة | ٥ |
| ويؤتون الزكاة وهم بالآخرة هم يوقنون ... ... ... | | ٣ | ك النمل | ٢٧ |
| أن الناس كانوا بآياتنا لا يوقنون ... ... ... ... | | ٨٢ | ك « | ٢٧ |
| فاصبر إن وعد الله حق ولا يستخفنك الذين لا يوقنون | | ٦٠ | ك الروم | ٣٠ |
| الذين يقيمون الصلاة ويؤتون الزكاة وهم بالآخرة هم يوقنون... ... ... ... ... ... ... | | ٤ | ك لقمان | ٣١ |
| وجعلنا منهم أئمة يهدون بأمرنا لما صبروا وكانوا بآياتنا يوقنون ... ... ... ... ... ... | | ٢٤ | ك السجدة | ٣٢ |
| وفى خلقكم وما يبث من دابة آيات لقوم يوقنون ... | | ٤ | ك الجاثية | ٤٥ |
| هذا بصائر للناس وهدى ورحمة لقوم يوقنون ... ... | | ٢٠ | ك « | ٤٥ |
| أم خلقوا السموات والأرض بل لا يوقنون ... ... | | ٣٦ | ك الطور | ٥٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| وَاسْتَيْقَنَتْهَا | وجحدوا بها واستيقنتها أنفسهم ظلما وعلوا | ١٤ | ك النمل | ٢٧ |
| لِيَسْتَيْقِنَ | ليستيقن الذين أوتوا الكتاب ... ... ... ... | ٣١ | ك المدثر | ٧٤ |
| الْيَقِينُ | واعبد ربك حتى يأتيك اليقين ... ... ... ... | ٩٩ | ك الحجر | ١٥ |
| (٧) | أحطت بما لم تحط به وجئتك من سبإ بنبإ يقين ... | ٢٢ | ك النمل | ٢٧ |
| | إن هذا لهو حق اليقين ... ... ... ... ... | ٩٥ | ل الواقعة | ٥٦ |
| | وإنه لحق اليقين ... ... ... ... ... ... | ٥١ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | وكنا نكذب بيوم الدين . حتى أتانا اليقين ... ... | ٤٧ | ك المدثر | ٧٤ |
| | كلا لو تعلمون علم اليقين . لترون الجحيم ... ... ... | ٥ | ك التكاثر | ١٠٢ |
| | ثم لترونها عين اليقين ... ... ... ... ... | ٧ | ك « | ١٠٢ |
| يَقِينًا | ما لهم به من علم إلا اتباع الظن وما قتلوه يقينا ... | ١٥٧ | م النساء | ٤ |
| مُوقِنُونَ | ربنا أبصرنا وسمعنا فارجعنا نعمل صالحا إنا موقنون | ١٢ | ك السجدة | ٣٢ |
| مُوقِنِينَ | وكذلك نرى إبراهيم ملكوت السموات والأرض | | | |
| (٤) | وليكون من الموقنين ... ... ... ... ... | ٧٥ | ك الأنعام | ٦ |
| | قال رب السموات والأرض وما بينهما إن كنتم موقنين | ٢٤ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | رب السموات والأرض وما بينهما إن كنتم موقنين | ٧ | ك الدخان | ٤٤ |
| | وفي الأرض آيات للموقنين ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك الذاريات | ٥١ |
| مُسْتَيْقِنِينَ | إن نظن إلا ظنا وما نحن بمستيقنين ... ... | ٣٢ | ك الجاثية | ٤٥ |

✦✦✦

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| تَيَمَّمُوا | ولا تيمموا الخبيث منه تنفقون ... ... ... ... | ٢٦٧ | م البقرة | ٢ |
| (٣) | أو لامستم النساء فلم تجدوا ماء فتيمموا صعيدا طيبا | ٤٣ | م النساء | ٤ |
| | أو لامستم النساء فلم تجدوا ماء فتيمموا صعيدا طيبا | ٦ | م المائدة | ٥ |
| الْيَمِّ | فانتقمنا منهم فأغرقناهم في اليم بأنهم كذبوا بآياتنا | ١٣٦ | ك الأعراف | ٧ |
| (٨) | أن اقذفيه في التابوت فاقذفيه في اليم ... ... ... | ٣٩ | ك طه | ٢٠ |
| | فليلقه اليم بالساحل يأخذه عدو لي وعدو له ... ... | ٣٩ | ك « | ٢٠ |
| | فأتبعهم فرعون بجنوده فغشيهم من اليم ما غشيهم ... | ٧٨ | ك « | ٢٠ |
| | لنحرقنه ثم لننسفنه في اليم نسفا ... ... ... ... | ٩٧ | ك « | ٢٠ |
| | فإذا خفت عليه فألقيه في اليم ولا تخافي ولا تحزني ... | ٧ | ك القصص | ٢٨ |
| | فأخذناه وجنوده فنبذناهم في اليم ... ... ... ... | ٤٠ | ك « | ٢٨ |
| | فأخذناه وجنوده فنبذناهم في اليم وهو مليم ... ... ... | ٤٠ | ك الذاريات | ٥١ |
| الْيَمِينِ | يتفيؤا ظلاله عن اليمين والشمائل سجدا لله وهم داخرون | ٤٨ | ك النحل | ١٦ |
| (١٥) | وترى الشمس إذا طلعت تزاور عن كهفهم ذات اليمين | ١٧ | ك الكهف | ١٨ |
| | وتحسبهم أيقاظا وهم رقود ونقلبهم ذات اليمين وذات الشمال | ١٨ | ك « | ١٨ |
| | لقد كان لسبإ في مسكنهم آية جنتان عن يمين وشمال | ١٥ | ك سبإ | ٣٤ |
| | قالوا إنكم كنتم تأتوننا عن اليمين ... ... ... ... | ٢٨ | ك الصافات | ٣٧ |
| | فراغ عليهم ضربا باليمين ... ... ... ... ... | ٩٣ | ك « | ٣٧ |
| | إذ يتلقى المتلقيان عن اليمين وعن الشمال قعيد ... ... | ١٧ | ك ق | ٥٠ |
| | وأصحاب اليمين ... ... ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك الواقعة | ٥٦ |
| اليَمِينِ | ما أصحاب اليمين . في سدر مخضود ... ... ... | ٢٧ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | لأصحاب اليمين . ثلة من الأولين . وثلة من الآخرين | ٣٨ | ك « | ٥٦ |
| | وأما إن كان من أصحاب اليمين ... ... ... ... | ٩٠ | ك « | ٥٦ |
| | فسلام لك من أصحاب اليمين ... ... ... ... | ٩١ | ك « | ٥٦ |
| | ولو تقول علينا بعض الأقاويل . لأخذنا منه باليمين | ٤٥ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | عن اليمين وعن الشمال عزين ... ... ... ... | ٣٧ | ك المعارج | ٧٠ |
| | كل نفس بما كسبت رهينة . إلا أصحاب اليمين ... | ٣٩ | ك المدثر | ٧٤ |
| بِيَمِينِكَ | وما تلك بيمينك يا موسى . قال هي عصاي ... ... | ١٧ | ك طه | ٢٠ |
| (٥) | وألق ما في يمينك تلقف ما صنعوا ... ... ... | ٦٩ | ك « | ٢٠ |
| | وما كنت تتلو من قبله من كتاب ولا تخطه بيمينك | ٤٨ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | وما ملكت يمينك مما أفاء الله عليك ... ... ... | ٥٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | ولا أن تبدل بهن من أزواج ولو أعجبك حسنهن إلا ما ملكت يمينك ... ... ... ... ... | ٥٢ | م « | ٣٣ |
| بِيَمِينِهِ | فمن أوتي كتابه بيمينه فأولئك يقرءون كتابهم ... | ٧١ | ك الإسراء | ١٧ |
| (٤) | والسموات مطويات بيمينه سبحانه وتعالى عما يشركون | ٦٧ | ك الزمر | ٣٩ |
| | فأما من أوتي كتابه بيمينه فيقول هاؤم اقرءوا كتابيه ... | ١٩ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | فأما من أوتي كتابه بيمينه . فسوف يحاسب حسابا يسيرا | ٧ | ك الانشقاق | ٨٤ |
| الأَيْمَانُ | ولكن يؤاخذكم بما عقدتم الأيمان ... ... ... | ٨٩ | م المائدة | ٥ |
| (٥) | أو يخافوا أن ترد أيمان بعد أيمانهم ... ... ... | ١٠٨ | م « | ٥ |
| | فقاتلوا أئمة الكفر إنهم لا أيمان لهم لعلهم ينتهون ... | ١٢ | م التوبة | ٩ |
| | ولا تنقضوا الأيمان بعد توكيدها ... ... ... | ٩١ | ك النحل | ١٦ |
| | أم لكم أيمان علينا بالغة إلى يوم القيامة إن لكم لما تحكمون | ٣٩ | ك القلم | ٦٨ |
| أَيْمَانِكُمْ | ولا تجعلوا الله عرضة لأيمانكم أن تبروا وتتقوا | ٢٢٤ | م البقرة | ٢ |
| (١٦) | لا يؤاخذكم الله باللغو في أيمانكم ... ... ... | ٢٢٥ | م « | ٢ |
| | فإن خفتم ألا تعدلوا فواحدة أو ما ملكت أيمانكم | ٣ | م النساء | ٤ |
| | والمحصنات من النساء إلا ما ملكت أيمانكم ... ... | ٢٤ | م « | ٤ |
| | فمن ما ملكت أيمانكم من فتياتكم المؤمنات ... ... | ٢٥ | م « | ٤ |
| | والذين عقدت أيمانكم فآتوهم نصيبهم ... ... ... | ٣٣ | م « | ٤ |
| | والصاحب بالجنب وابن السبيل وما ملكت أيمانكم | ٣٦ | م « | ٤ |
| | لا يؤاخذكم الله باللغو في أيمانكم ... ... ... | ٨٩ | م المائدة | ٥ |
| | فمن لم يجد فصيام ثلاثة أيام ذلك كفارة أيمانكم إذا حلفتم | ٨٩ | م « | ٥ |
| | واحفظوا أيمانكم كذلك يبين الله لكم آياته ... ... | ٨٩ | م « | ٥ |
| | تتخذون أيمانكم دخلا بينكم أن تكون أمة هي أربى من أمة | ٩٢ | ك النحل | ١٦ |
| | ولا تتخذوا أيمانكم دخلا بينكم فتزل قدم بعد ثبوتها | ٩٤ | ك « | ١٦ |
| | والذين يبتغون الكتاب مما ملكت أيمانكم فكاتبوهم | ٣٣ | م النور | ٢٤ |
| | يا أيها الذين آمنوا ليستأذنكم الذين ملكت أيمانكم | ٥٨ | م « | ٢٤ |
| | هل لكم من ما ملكت أيمانكم من شركاء فيما رزقناكم | ٢٨ | ك الروم | ٣٠ |
| | قد فرض الله لكم تحلة أيمانكم والله مولاكم ... ... | ٢ | م التحريم | ٦٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **أَيْمَانِهِمْ** | : إن الذين يشترون بعهد الله وأيمانهم ثمنا قليلا | | | |
| (١٨) | أولئك لا خلاق لهم فى الآخرة ... ... ... ... | ٧٧ | م آل عمران | ٣ |
| | أهؤلاء الذين أقسموا بالله جهد أيمانهم إنهم لمعكم | ٥٣ | م المائدة | ٥ |
| | أو يخافوا أن ترد أيمان بعد أيمانهم ... ... ... | ١٠٨ | م « | ٥ |
| | وأقسموا بالله جهد أيمانهم لئن جاءتهم آية ليؤمنن بها | ١٠٩ | ك الأنعام | ٦ |
| | ثم لآتينهم من بين أيديهم ومن خلفهم وعن أيمانهم | | | |
| | وعن شمائلهم... ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك الأعراف | ٧ |
| | وإن نكثوا أيمانهم من بعد عهدهم وطعنوا فى دينكم | | | |
| | فقاتلوا أئمة الكفر ... ... ... ... ... ... | ١٢ | م التوبة | ٩ |
| | ألا تقاتلون قوما نكثوا أيمانهم وهموا بإخراج الرسول | ١٣ | م « | ٩ |
| | وأقسموا بالله جهد أيمانهم لا يبعث الله من يموت | ٣٨ | ك النحل | ١٦ |
| | فما الذين فضلوا برادى رزقهم على ما ملكت أيمانهم | ٧١ | ك « | ١٦ |
| | إلا على أزواجهم أو ما ملكت أيمانهم فإنهم غير ملومين | ٦ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | وأقسموا بالله جهد أيمانهم لئن أمرتهم ليخرجن... | ٥٣ | م النور | ٢٤ |
| | قد علمنا ما فرضنا عليهم فى أزواجهم وما ملكت أيمانهم | ٥٠ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | وأقسموا بالله جهد أيمانهم لئن جاءهم نذير ليكونن | | | |
| | أهدى من إحدى الأمم ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك فاطر | ٣٥ |
| | يسعى نورهم بين أيديهم وبأيمانهم ... ... ... | ١٢ | م الحديد | ٥٧ |
| | اتخذوا أيمانهم جنة فصدوا عن سبيل الله.... ... | ١٦ | م المجادلة | ٥٨ |
| | اتخذوا أيمانهم جنة فصدوا عن سبيل الله ... ... | ٢ | م المنافقون | ٦٣ |
| | نورهم يسعى بين أيديهم وبأيمانهم ... ... ... | ٨ | م التحريم | ٦٦ |
| | إلا على أزواجهم أو ما ملكت أيمانهم فإنهم غير ملومين | ٣٠ | ك المعارج | ٧٠ |
| **أَيْمَانُهُنَّ** | : أو ما ملكت أيمانهن أو التابعين غير أولى | | | |
| (٢) | الإربة من الرجال... ... ... ... ... ... | ٣١ | م النور | ٢٤ |
| | ولا أبناء أخواتهن ولا نسائهن ولا ما ملكت أيمانهن | ٥٥ | م الأحزاب | ٣٣ |
| **الْأَيْمَنِ** | : وناديناه من جانب الطور الأيمن وقربناه نجيا | ٥٢ | ك مريم | ١٩ |
| (٣) | قد أنجيناكم من عدوكم وواعدناكم جانب الطور الأيمن | ٨٠ | ك طه | ٢٠ |
| | فلما أتاها نودى من شاطىء الواد الأيمن فى البقعة المباركة | ٣٠ | ك القصص | ٢٨ |
| **الْمَيْمَنَةِ** | : فأصحاب الميمنة ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك الواقعة | ٥٦ |
| (٣) | ما أصحاب الميمنة ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك « | ٥٦ |
| | أولئك أصحاب الميمنة ... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك البلد | ٩٠ |
| **يُونُسَ** | : وعيسى وأيوب ويونس وهرون وسليمان ... ... | ١٦٣ | م النساء | ٤ |
| (٤) | وإسمعيل واليسع ويونس ولوطا وكلا فضلنا على العالمين | ٨٦ | ك الأنعام | ٦ |
| | فلولا كانت قرية آمنت فنفعها إيمانها إلا قوم يونس | ٩٨ | ك يونس | ١ |
| | وإن يونس لمن المرسلين ... ... ... ... ... | ١٣٩ | ك الصافات | ٣٧ |
| **يَنْعِهِ** | : أنظروا إلى ثمره إذا أثمر وينعه... ... ... ... | ٩٩ | ك الأنعام | ٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **الْيَهُودُ** | : وقالت اليهود ليست النصارى على شىء ... ... | ١١٣ | م البقرة | ٢ |
| (٨) | وقالت النصارى ليست اليهود على شىء وهم يتلون الكتاب | ١١٣ | م « | ٢ |
| | ولن ترضى عنك اليهود ولا النصارى حتى تتبع ملتهم | ١٢٠ | م « | ٢ |
| | وقالت اليهود والنصارى نحن أبناء الله وأحباؤه | ١٨ | م المائدة | ٥ |
| | يا أيها الذين آمنوا لا تتخذوا اليهود والنصارى أولياء | ٥١ | م « | ٥ |
| | وقالت اليهود يد الله مغلولة غلت أيديهم ولعنوا بما قالوا | ٦٤ | م « | ٥ |
| | لتجدن أشد الناس عداوة للذين آمنوا اليهود والذين أشركوا | ٨٢ | م « | ٥ |
| | وقالت اليهود عزير ابن الله وقالت النصارى المسيح ابن الله | ٣٠ | م التوبة | ٩ |
| **يَهُودِيًّا** | : ما كان إبراهيم يهوديا ولا نصرانيا ولكن كان | | | |
| | حنيفا مسلما ... ... ... ... ... ... ... | ٦٧ | م آل عمران | ٣ |
| **الْيَوْمِ** | : الحمد لله رب العالمين . الرحمن الرحيم . مالك يوم الدين | ٤ | ك الفاتحة | ١ |
| (٣٤٨) | ومن الناس من يقول آمنا بالله وباليوم الآخر وما هم | | | |
| | بمؤمنين ... ... ... ... ... ... ... | ٨ | م البقرة | ٢ |
| | من آمن بالله واليوم الآخر وعمل صالحا فلهم أجرهم | | | |
| | عند ربهم ... ... ... ... ... ... ... | ٦٢ | م « | ٢ |
| | ويوم القيامة يردون إلى أشد العذاب ... ... ... | ٨٥ | م « | ٢ |
| | فالله يحكم بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون ... | ١١٣ | م « | ٢ |
| | وارزق أهله من الثمرات من آمن منهم بالله واليوم الآخر | ١٢٦ | م « | ٢ |
| | ولا يكلمهم الله يوم القيامة ولا يزكيهم ولهم عذاب أليم | ١٧٤ | م « | ٢ |
| | ولكن البر من آمن بالله واليوم الآخر والملائكة والكتاب | ١٧٧ | م « | ٢ |
| | ويسخرون من الذين آمنوا والذين اتقوا فوقهم | | | |
| | يوم القيامة ... ... ... ... ... ... ... | ٢١٢ | م « | ٢ |
| | ولا يحل لهن أن يكتمن ما خلق الله فى أرحامهن | | | |
| | إن كن يؤمن بالله واليوم الآخر ... ... ... ... | ٢٢٨ | م « | ٢ |
| | ذلك يوعظ به من كان منكم يؤمن بالله واليوم الآخر | ٢٣٢ | م « | ٢ |
| | قالوا لا طاقة لنا اليوم بجالوت وجنوده ... ... ... | ٢٤٩ | م « | ٢ |
| | أنفقوا مما رزقناكم من قبل أن يأتى يوم لا بيع فيه ولا خلة | ٢٥٤ | م « | ٢ |
| | قال كم لبثت قال لبثت يوما أو بعض يوم... ... ... | ٢٥٩ | م « | ٢ |
| | كالذى ينفق ماله رئاء الناس ولا يؤمن بالله واليوم الآخر | ٢٦٤ | م « | ٢ |
| | ربنا إنك جامع الناس ليوم لا ريب فيه ... ... ... | ٩ | م آل عمران | ٣ |
| | فكيف إذا جمعناهم ليوم لا ريب فيه... ... ... ... | ٢٥ | م « | ٣ |
| | يوم تجد كل نفس ما عملت من خير محضرا ... ... | ٣٠ | م « | ٣ |
| | وجاعل الذين اتبعوك فوق الذين كفروا إلى يوم القيامة | ٥٥ | م « | ٣ |
| | ولا يكلمهم الله ولا ينظر إليهم يوم القيامة ... ... | ٧٧ | م « | ٣ |
| | يوم تبيض وجوه وتسود وجوه ... ... ... ... ... | ١٠٦ | م « | ٣ |
| | يؤمنون بالله واليوم الآخر ويأمرون بالمعروف وينهون | | | |
| | عن المنكر ... ... ... ... ... ... ... ... | ١١٤ | م « | ٣ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| اليَوْمُ | : إن الذين تولوا منكم يوم التقى الجمعان إنما استزلهم الشيطان ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٥٥ م | آل عمران | ٣ |
| | وما كان لنبي أن يغل ومن يغلل يأت بما غل يوم القيامة | ١٦١ م | » | ٣ |
| | وما أصابكم يوم التقى الجمعان فبإذن الله وليعلم المؤمنين | ١٦٦ م | » | ٣ |
| | سيطوقون ما بخلوا به يوم القيامة ... ... ... ... | ١٨٠ م | » | ٣ |
| | كل نفس ذائقة الموت وإنما توفون أجوركم يوم القيامة | ١٨٥ م | » | ٣ |
| | ربنا وآتنا ما وعدتنا على رسلك ولا تخزنا يوم القيامة | ١٩٤ م | » | ٣ |
| | والذين ينفقون أموالهم رئاء الناس ولا يؤمنون بالله ولا باليوم الآخر ... ... ... ... ... ... ... | ٣٨ م | النساء | ٤ |
| | وماذا عليهم لو آمنوا بالله واليوم الآخر ... ... ... | ٣٩ م | » | ٤ |
| | فردوه إلى الله والرسول إن كنتم تؤمنون بالله واليوم الآخر | ٥٩ م | » | ٤ |
| | الله لا إله إلا هو ليجمعنكم إلى يوم القيامة لا ريب فيه | ٨٧ م | » | ٤ |
| | فمن يجادل الله عنهم يوم القيامة أم من يكون عليهم وكيلا | ١٠٩ م | » | ٤ |
| | ومن يكفر بالله وملائكته وكتبه ورسله واليوم الآخر فقد ضل ضلالا بعيدا ... ... ... ... ... ... | ١٣٦ م | » | ٤ |
| | فالله يحكم بينكم يوم القيامة ... ... ... ... ... | ١٤١ م | » | ٤ |
| | ويوم القيامة يكون عليهم شهيدا ... ... ... ... ... | ١٥٩ م | » | ٤ |
| | والمؤمنون بالله واليوم الآخر أولئك سنؤتيهم أجرا عظيما | ١٦٢ م | » | ٤ |
| | اليوم يئس الذين كفروا من دينكم فلا تخشوهم واخشون | ٣ م | المائدة | ٥ |
| | اليوم أكملت لكم دينكم وأتممت عليكم نعمتي ... ... | ٣ م | » | ٥ |
| | اليوم أحل لكم الطيبات... ... ... ... ... ... | ٥ م | » | ٥ |
| | فأغرينا بينهم العداوة والبغضاء إلى يوم القيامة... ... | ١٤ م | » | ٥ |
| | ليفتدوا به من عذاب يوم القيامة ما تقبل منهم ... | ٣٦ م | » | ٥ |
| | وألقينا بينهم العداوة والبغضاء إلى يوم القيامة... ... | ٦٤ م | » | ٥ |
| | من آمن بالله واليوم الآخر وعمل صالحا فلا خوف عليهم | ٦٩ م | » | ٥ |
| | يوم يجمع الله الرسل فيقول ماذا أجبتم ... ... ... | ١٠٩ م | » | ٥ |
| | قال الله هذا يوم ينفع الصادقين صدقهم... ... ... | ١١٩ م | » | ٥ |
| | ليجمعنكم إلى يوم القيامة لا ريب فيه ... ... ... | ١٢ ك | الأنعام | ٦ |
| | قل إني أخاف إن عصيت ربي عذاب يوم عظيم ... | ١٥ ك | » | ٦ |
| | ويوم نحشرهم جميعا ثم نقول للذين أشركوا أين شركاؤكم | ٢٢ ك | » | ٦ |
| | ويوم يقول كن فيكون ... ... ... ... ... ... | ٧٣ ك | » | ٦ |
| | قوله الحق وله الملك يوم ينفخ في الصور ... ... ... | ٧٣ ك | » | ٦ |
| | اليوم تجزون عذاب الهون ... ... ... ... ... | ٩٣ م | » | ٦ |
| | ويوم يحشرهم جميعا يا معشر الجن قد استكثرتم من الإنس | ١٢٨ ك | » | ٦ |
| | كلوا من ثمره إذا أثمر وآتوا حقه يوم حصاده..... | ١٤١ م | » | ٦ |
| | يوم يأتي بعض آيات ربك لا ينفع نفسا إيمانها لم تكن آمنت من قبل ... ... ... ... ... ... | ١٥٨ ك | » | ٦ |
| | قال أنظرني إلى يوم يبعثون ... ... ... ... ... | ١٤ ك | الأعراف | ٧ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| اليَوْمُ | : قل هي للذين آمنوا في الحياة الدنيا خالصة يوم القيامة | ٣٢ ك | الأعراف | ٧ |
| | فاليوم ننساهم كما نسوا لقاء يومهم هذا ... ... ... | ٥١ ك | » | ٧ |
| | يوم يأتي تأويله يقول الذين نسوه من قبل قد جاءت رسل ربنا بالحق ... ... ... ... ... ... | ٥٣ ك | » | ٧ |
| | إذ تأتيهم حيتانهم يوم سبتهم شرعا ... ... ... ... | ١٦٣ م | » | ٧ |
| | ويوم لا يسبتون لا تأتيهم ... ... ... ... ... | ١٦٣ م | » | ٧ |
| | وإذ تأذن ربك ليبعثن عليهم إلى يوم القيامة من يسومهم سوء العذاب ... ... ... ... ... ... | ١٦٧ م | » | ٧ |
| | شهدنا أن تقولوا يوم القيامة إنا كنا عن هذا غافلين | ١٧٢ ك | » | ٧ |
| | إن كنتم آمنتم بالله وما أنزلنا على عبدنا يوم الفرقان | ٤١ م | الأنفال | ٨ |
| | يوم التقى الجمعان والله على كل شيء قدير ... ... ... | ٤١ م | » | ٨ |
| | وقال لا غالب لكم اليوم من الناس وإني جار لكم ... | ٤٨ م | » | ٨ |
| | وأذان من الله ورسوله إلى الناس يوم الحج الأكبر | ٣ م | التوبة | ٩ |
| | إنما يعمر مساجد الله من آمن بالله واليوم الآخر... | ١٨ م | » | ٩ |
| | أجعلتم سقاية الحاج وعمارة المسجد الحرام كمن آمن بالله واليوم الآخر ... ... ... ... ... ... | ١٩ م | » | ٩ |
| | لقد نصركم الله في مواطن كثيرة ويوم حنين ... ... | ٢٥ م | » | ٩ |
| | قاتلوا الذين لا يؤمنون بالله ولا باليوم الآخر... ... | ٢٩ م | » | ٩ |
| | يوم يحمى عليها في نار جهنم فتكوى بها جباههم وجنوبهم | ٣٥ م | » | ٩ |
| | إن عدة الشهور عند الله اثنا عشر شهرا في كتاب الله يوم خلق السموات والأرض ... ... ... ... | ٣٦ م | » | ٩ |
| | لا يستئذنك الذين يؤمنون بالله واليوم الآخر أن يجاهدوا | ٤٤ م | » | ٩ |
| | إنما يستئذنك الذين لا يؤمنون بالله واليوم الآخر... | ٤٥ م | » | ٩ |
| | فأعقبهم نفاقا في قلوبهم إلى يوم يلقونه ... ... ... | ٧٧ م | » | ٩ |
| | ومن الأعراب من يؤمن بالله واليوم الآخر ... ... | ٩٩ م | » | ٩ |
| | لمسجد أسس على التقوى من أول يوم أحق أن تقوم فيه | ١٠٨ م | » | ٩ |
| | إني أخاف إن عصيت ربي عذاب يوم عظيم ... ... | ١٥ ك | يونس | ١٠ |
| | ويوم نحشرهم جميعا ثم نقول للذين أشركوا مكانكم... | ٢٨ ك | » | ١٠ |
| | ويوم يحشرهم كأن لم يلبثوا إلا ساعة من النهار ... | ٤٥ ك | » | ١٠ |
| | وما ظن الذين يفترون على الله الكذب يوم القيامة | ٦٠ ك | » | ١٠ |
| | فاليوم ننجيك ببدنك لتكون لمن خلفك آية... ... ... | ٩٢ ك | » | ١٠ |
| | إن ربك يقضي بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون | ٩٣ ك | » | ١٠ |
| | وإن تولوا فإني أخاف عليكم عذاب يوم كبير ... ... | ٣ ك | هود | ١١ |
| | ألا يوم يأتيهم ليس مصروفا عنهم ... ... ... ... | ٨ ك | » | ١١ |
| | أن لا تعبدوا إلا الله إني أخاف عليكم عذاب يوم أليم | ٢٦ ك | » | ١١ |
| | قال لا عاصم اليوم من أمر الله إلا من رحم ... ... | ٤٣ ك | » | ١١ |
| | وأتبعوا في هذه الدنيا لعنة ويوم القيامة ... ... ... | ٦٠ ك | » | ١١ |
| | سيء بهم وضاق بهم ذرعا وقال هذا يوم عصيب ... | ٧٧ ك | » | ١١ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| الْيَوْمُ | : إنى أراكم بخير وإنى أخاف عليكم عذاب يوم محيط | ك هـود | ٨٤ | ١١ |
| | يقدم قومه يوم القيامة فأوردهم النار ... ... ... | ك » | ٩٨ | ١١ |
| | وأتبعوا فى هذه لعنة ويوم القيامة ... ... ... ... | ك » | ٩٩ | ١١ |
| | ذلك يوم مجموع له الناس ... ... ... ... ... | ك » | ١٠٣ | ١١ |
| | وذلك يوم مشهود ... ... ... ... ... ... ... | ك » | ١٠٣ | ١١ |
| | يوم يأتِ لا تكلم نفس إلا بإذنه ... ... ... ... | ك » | ١٠٥ | ١١ |
| | فلما كلمه قال إنك اليوم لدينا مكين أمين ... ... ... | ك يوسف | ٥٤ | ١٢ |
| | قال لا تثريب عليكم اليوم ... ... ... ... ... | ك » | ٩٢ | ١٢ |
| | أعمالهم كرماد اشتدت به الريح فى يوم عاصف ... | ك إبراهيم | ١٨ | ١٤ |
| | من قبل أن يأتى يوم لا بيع فيه ولا خلال ... ... | ك » | ٣١ | ١٤ |
| | ربنا اغفر لى ولوالدىَّ وللمؤمنين يوم يقوم الحساب | ك » | ٤١ | ١٤ |
| | إنما يؤخرهم ليوم تشخص فيه الأبصار ... ... ... | ك » | ٤٢ | ١٤ |
| | وأنذر الناس يوم يأتيهم العذاب ... ... ... ... | ك » | ٤٤ | ١٤ |
| | يوم تبدل الأرض غير الأرض والسموات ... ... | ك » | ٤٨ | ١٤ |
| | وإن عليك اللعنة إلى يوم الدين ... ... ... ... | ك الحجر | ٣٥ | ١٥ |
| | قال رب فأنظرنى إلى يوم يبعثون ... ... ... ... | ك » | ٣٦ | ١٥ |
| | قال فإنك من المنظرين ٠ إلى يوم الوقت المعلوم ... | ك » | ٣٨ | ١٥ |
| | ليحملوا أوزارهم كاملة يوم القيامة ... ... ... ... | ك النحل | ٢٥ | ١٦ |
| | ثم يوم القيامة يخزيهم ... ... ... ... ... ... | ك » | ٢٧ | ١٦ |
| | قال الذين أوتوا العلم إن الخزى اليوم والسوء على الكافرين | ك » | ٢٧ | ١٦ |
| | فزين لهم الشيطان أعمالهم فهو وليهم اليوم ولهم عذاب أليم | ك » | ٦٣ | ١٦ |
| | وجعل لكم من جلود الأنعام بيوتا تستخفونها يوم ظعنكم | ك » | ٨٠ | ١٦ |
| | ويوم إقامتكم ... ... ... ... .. ... ... ... | ك » | ٨٠ | ١٦ |
| | ويوم نبعث من كل أمة شهيدا ثم لا يؤذن للذين كفروا | ك » | ٨٤ | ١٦ |
| | ويوم نبعث فى كل أمة شهيدا عليهم من أنفسهم ... | ك » | ٨٩ | ١٦ |
| | وليبينن لكم يوم القيامة ما كنتم فيه تختلفون ... ... | ك » | ٩٢ | ١٦ |
| | يوم تأتى كل نفس تجادل عن نفسها وتوفى كل نفس ما عملت | ك » | ١١١ | ١٦ |
| | وإن ربك ليحكم بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون | ك » | ١٢٤ | ١٦ |
| | ونخرج له يوم القيامة كتابا يلقاه منشورا ... ... ... | ك الإسراء | ١٣ | ١٧ |
| | اقرأ كتابك كفى بنفسك اليوم عليك حسيبا ... ... | ك » | ١٤ | ١٧ |
| | يوم يدعوكم فتستجيبون بحمده وتظنون إن لبثتم إلا قليلا | ك » | ٥٢ | ١٧ |
| | وإن من قرية إلا نحن مهلكوها قبل يوم القيامة | ك » | ٥٨ | ١٧ |
| | لئن أخرتِ إلى يوم القيامة لأحتنكنَّ ذريته إلا قليلا | ك » | ٦٢ | ١٧ |
| | يوم ندعوا كل أناس بإمامهم ... ... ... ... ... | ك » | ٧١ | ١٧ |
| | ونحشرهم يوم القيامة على وجوههم عميا وبكما وصما | ك » | ٩٧ | ١٧ |
| | قال قائل منهم كم لبثتم قالوا لبثنا يوما أو بعض يوم | ك الكهف | ١٩ | ١٨ |
| | ويوم نسيِّر الجبال وترى الأرض بارزة ... ... ... | ك » | ٤٧ | ١٨ |
| | ويوم يقول نادوا شركائى الذين زعمتم فدعوهم ... | ك » | ٥٢ | ١٨ |
| | فبعلت أعمالهم فلا نقيم لهم يوم القيامة وزنا ... ... | ك الكهف | ١٠٥ | ١٨ |
| | وسلام عليه يوم وُلد ... ... ... ... ... ... ... | ك مريم | ١٥ | ١٩ |
| | ويوم يموت ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ك » | ١٥ | ١٩ |
| | ويوم يبعث حيا ... ... ... ... ... ... ... ... | ك » | ١٥ | ١٩ |
| | إنى نذرت للرحمن صوما فلن أكلم اليوم إنسيا ... ... | ك » | ٢٦ | ١٩ |
| | والسلام علىّ يوم وُلدت ... ... ... ... ... ... | ك » | ٣٣ | ١٩ |
| | ويوم أموت ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ك » | ٣٣ | ١٩ |
| | ويوم أبعث حيا ... ... ... ... ... ... ... ... | ك » | ٣٣ | ١٩ |
| | فويل للذين كفروا من مشهد يوم عظيم ... ... ... | ك » | ٣٧ | ١٩ |
| | أسمع بهم وأبصر يوم يأتوننا ... ... ... ... ... | ك » | ٣٨ | ١٩ |
| | لكن الظالمون اليوم فى ضلال مبين ... ... ... ... | ك » | ٣٨ | ١٩ |
| | وأنذرهم يوم الحسرة إذ قضى الأمر ... ... ... ... | ك » | ٣٩ | ١٩ |
| | يوم نحشر المتقين إلى الرحمن وفدا ... ... ... ... | ك » | ٨٥ | ١٩ |
| | وكلهم آتيه يوم القيامة فردا ... ... ... ... ... | ك » | ٩٥ | ١٩ |
| | قال موعدكم يوم الزينة وأن يحشر الناس ضحى ... ... | ك طه | ٥٩ | ٢٠ |
| | فأجمعوا كيدكم ثم ائتوا صفا وقد أفلح اليوم من استعلى | ك » | ٦٤ | ٢٠ |
| | من أعرض عنه فإنه يحمل يوم القيامة وزرا ... ... | ك » | ١٠٠ | ٢٠ |
| | خالدين فيه وساء لهم يوم القيامة حملا ... ... ... | ك » | ١٠١ | ٢٠ |
| | يوم ينفخ فى الصور ونحشر المجرمين يومئذ زرقا ... | ك » | ١٠٢ | ٢٠ |
| | فإن له معيشة ضنكا ونحشره يوم القيامة أعمى ... ... | ك » | ١٢٤ | ٢٠ |
| | قال كذلك أتتك آياتنا فنسيتها وكذلك اليوم تنسى | ك » | ١٢٦ | ٢٠ |
| | ونضع الموازين القسط ليوم القيامة فلا تظلم نفس شيئا | ك الأنبياء | ٤٧ | ٢١ |
| | يوم نطوى السماء كطىِّ السجل للكتب ... ... ... | ك » | ١٠٤ | ٢١ |
| | يوم ترونها تذهل كل مرضعة عما أرضعت ... ... ... | م الحج | ٢ | ٢٢ |
| | له فى الدنيا خزى ونذيقه يوم القيامة عذاب الحريق | م » | ٩ | ٢٢ |
| | إن الله يفصل بينهم يوم القيامة ... ... ... ... | م » | ١٧ | ٢٢ |
| | حتى تأتيهم الساعة بغتة أو يأتيهم عذاب يوم عقيم | م » | ٥٥ | ٢٢ |
| | الله يحكم بينكم يوم القيامة فيما كنتم فيه تختلفون ... | م » | ٦٩ | ٢٢ |
| | ثم إنكم يوم القيامة تبعثون ... ... ... ... ... | ك المؤمنون | ١٦ | ٢٣ |
| | لا تجأروا اليوم إنكم منا لا تنصرون ... ... ... ... | ك » | ٦٥ | ٢٣ |
| | ومن ورائهم برزخ إلى يوم يبعثون ... ... ... ... | ك » | ١٠٠ | ٢٣ |
| | إنى جزيتهم اليوم بما صبروا أنهم هم الفائزون ... | ك » | ١١١ | ٢٣ |
| | قالوا لبثنا يوما أو بعض يوم فسئل العادين ... ... | ك » | ١١٣ | ٢٣ |
| | ولا تأخذكم بهما رأفة فى دين الله إن كنتم تؤمنون بالله واليوم الآخر ... ... ... ... ... ... | م النور | ٢ | ٢٤ |
| | يوم تشهد عليهم ألسنتهم وأيديهم وأرجلهم بما كانوا يعملون ... ... ... ... ... ... | م » | ٢٤ | ٢٤ |
| | قد يعلم ما أنتم عليه ويوم يرجعون إليه فينبئهم بما عملوا | م » | ٦٤ | ٢٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| اليَوْمُ | : لاتدعوا اليوم ثبورا واحدا وادعوا ثبورا كثيرا ... | ١٤ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | ويوم يحشرهم وما يعبدون من دون الله ... ... ... | ١٧ | ك « | ٢٥ |
| | يوم يرون الملائكة لا بشرى يومئذ للمجرمين ... ... | ٢٢ | ك « | ٢٥ |
| | ويوم تشقق السماء بالغمام ونزل الملائكة تنزيلا ... | ٢٥ | ك « | ٢٥ |
| | ويوم يعض الظالم على يديه ... ... ... ... ... | ٢٧ | ك « | ٢٥ |
| | يضاعف له العذاب يوم القيامة ويخلد فيه مهانا ... | ٦٩ | م « | ٢٥ |
| | لجمع السحرة لميقات يوم معلوم ... ... ... ... | ٣٨ | ك الشعراء | ٢٦ |
| | والذى أطمع أن يغفر لى خطيئتى يوم الدين ... ... | ٨٢ | ك « | ٢٦ |
| | ولا تخزنى يوم يبعثون ... ... ... ... ... ... | ٨٧ | ك « | ٢٦ |
| | يوم لا ينفع مال ولا بنون ... ... ... ... ... | ٨٨ | ك « | ٢٦ |
| | إنى أخاف عليكم عذاب يوم عظيم ... ... ... ... | ١٣٥ | ك « | ٢٦ |
| | قال هذه ناقة لها شرب ولكم شرب يوم معلوم... ... | ١٥٥ | ك « | ٢٦ |
| | ولا تمسوها بسوء فيأخذكم عذاب يوم عظيم... ... | ١٥٦ | ك « | ٢٦ |
| | فكذبوه فأخذهم عذاب يوم الظلة ... ... ... ... | ١٨٩ | ك « | ٢٦ |
| | إنه كان عذاب يوم عظيم ... ... ... ... ... | ١٨٩ | ك « | ٢٦ |
| | ويوم نحشر من كل أمة فوجا ممن يكذب بآياتنا ... | ٨٣ | ك النمل | ٢٧ |
| | ويوم ينفخ فى الصور ففزع من فى السموات ومن فى الأرض | ٨٧ | ك « | ٢٧ |
| | وجعلناهم أئمة يدعون إلى النار ويوم القيامة لا ينصرون | ٤١ | ك القصص | ٢٨ |
| | ويوم القيامة هم من المقبوحين ... ... ... ... | ٤٢ | ك « | ٢٨ |
| | كمن متعناه متاع الحياة الدنيا ثم هو يوم القيامة | | | |
| | من المحضرين ... ... ... ... ... ... ... | ٦١ | ك « | ٢٨ |
| | ويوم يناديهم فيقول أين شركائى الذين كنتم تزعمون | ٦٢ | ك « | ٢٨ |
| | ويوم يناديهم فيقول ماذا أجبتم المرسلين ... ... | ٦٥ | ك « | ٢٨ |
| | قل أرأيتم إن جعل الله عليكم الليل سرمدا إلى يوم القيامة | ٧١ | ك « | ٢٨ |
| | قل أرأيتم إن جعل الله عليكم النهار سرمدا إلى يوم القيامة | ٧٢ | ك « | ٢٨ |
| | ويوم يناديهم فيقول أين شركائى الذين كنتم تزعمون | ٧٤ | ك « | ٢٨ |
| | وليسئلن يوم القيامة عما كانوا يفترون ... ... ... | ١٣ | ك العنكبوت | ٢٩ |
| | ثم يوم القيامة يكفر بعضكم ببعض ... ... ... ... | ٢٥ | ك « | ٢٩ |
| | فقال ياقوم اعبدوا الله وارجوا اليوم الآخر ... ... | ٣٦ | ك « | ٢٩ |
| | يوم يغشاهم العذاب من فوقهم ومن تحت أرجلهم | ٥٥ | ك « | ٢٩ |
| | ويوم تقوم الساعة يبلس المجرمون ... ... ... ... | ١٢ | ك الروم | ٣٠ |
| | ويوم تقوم الساعة يومئذ يتفرقون ... ... ... ... | ١٤ | ك « | ٣٠ |
| | فأقم وجهك للدين القيم من قبل أن يأتى يوم | | | |
| | لامرد له من الله ... ... ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك « | ٣٠ |
| | ويوم تقوم الساعة يقسم المجرمون ما لبثوا غير ساعة | ٥٥ | ك « | ٣٠ |
| | لقد لبثتم فى كتاب الله إلى يوم البعث ... ... ... | ٥٦ | ك « | ٣٠ |
| | فهذا يوم البعث ولكنكم كنتم لا تعلمون ... ... ... | ٥٦ | ك « | ٣٠ |
| | ثم يعرج إليه فى يوم كان مقداره ألف سنة مما تعدون | ٥ | ك السجدة | ٣٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| اليَوْمُ | : إن ربك هو يفصل بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون | ٢٥ | ك السجدة | ٣٢ |
| | قل يوم الفتح لا ينفع الذين كفروا إيمانهم ولاهم ينظرون | ٢٩ | ك « | ٣٢ |
| | لقد كان لكم فى رسول الله أسوة حسنة لمن كان | | | |
| | يرجوا الله واليوم الآخر ... ... ... ... ... ... | ٢١ | م الأحزاب | ٣٣ |
| | تحيتهم يوم يلقونه سلام وأعد لهم أجرا كريما... ... ... | ٤٤ | م « | ٣٣ |
| | يوم تقلب وجوههم فى النار يقولون يا ليتنا أطعنا الله | | | |
| | وأطعنا الرسولا ... ... ... ... ... ... ... | ٦٦ | م « | ٣٣ |
| | قل لكم ميعاد يوم لا تستأخرون عنه ساعة ولا تستقدمون | ٣٠ | ك سبأ | ٣٤ |
| | ويوم يحشرهم جميعا ثم يقول للملائكة أهؤلاء إياكم | | | |
| | كانوا يعبدون... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك « | ٣٤ |
| | فاليوم لا يملك بعضكم لبعض نفعا ولاضرا... ... ... | ٤٢ | ك « | ٣٤ |
| | ويوم القيامة يكفرون بشرككم ولا ينبئك مثل خبير | ١٤ | ك فاطر | ٣٥ |
| | فاليوم لا تظلم نفس شيئا ولا تجزون إلا ما كنتم تعملون | ٥٤ | ك يس | ٣٦ |
| | إن أصحاب الجنة اليوم فى شغل فاكهون... ... ... | ٥٥ | ك « | ٣٦ |
| | وامتازوا اليوم أيها المجرمون ... ... ... ... ... | ٥٩ | ك « | ٣٦ |
| | اصلوها اليوم بما كنتم تكفرون ... ... ... ... ... | ٦٤ | ك « | ٣٦ |
| | اليوم نختم على أفواههم وتكلمنا أيديهم ... ... ... | ٦٥ | ك « | ٣٦ |
| | وقالوا يا ويلنا هذا يوم الدين ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك الصافات | ٣٧ |
| | هذا يوم الفصل الذى كنتم به تكذبون ... ... ... | ٢١ | ك « | ٣٧ |
| | مالكم لا تناصرون . بل هم اليوم مستسلمون ... ... | ٢٦ | ك « | ٣٧ |
| | فلولا أنه كان من المسبحين . للبث فى بطنه إلى يوم | | | |
| | يبعثون ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٤٤ | ك « | ٣٧ |
| | وقالوا ربنا عجل لنا قطنا قبل يوم الحساب ... ... | ١٦ | ك ص | ٣٨ |
| | لهم عذاب شديد بما نسوا يوم الحساب ... ... ... | ٢٦ | ك « | ٣٨ |
| | هذا ما توعدون ليوم الحساب ... ... ... ... ... | ٥٣ | ك « | ٣٨ |
| | إن عليك لعنتى إلى يوم الدين ... ... ... ... ... | ٧٨ | ك « | ٣٨ |
| | قال رب فأنظرنى إلى يوم يبعثون... ... ... ... ... | ٧٩ | ك « | ٣٨ |
| | قال فإنك من المنظرين . إلى يوم الوقت المعلوم ... | ٨١ | ك « | ٣٨ |
| | قل إنى أخاف إن عصيت ربى عذاب يوم عظيم ... | ١٣ | ك الزمر | ٣٩ |
| | قل إن الخاسرين الذين خسروا أنفسهم وأهليهم | | | |
| | يوم القيامة ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٥ | ك « | ٣٩ |
| | أفمن يتقى بوجهه سوء العذاب يوم القيامة... ... ... | ٢٤ | ك « | ٣٩ |
| | ثم إنكم يوم القيامة عند ربكم تختصمون ... ... ... | ٣١ | ك « | ٣٩ |
| | لافتدوا به من سوء العذاب يوم القيامة ... ... ... | ٤٧ | ك « | ٣٩ |
| | ويوم القيامة ترى الذين كذبوا على الله وجوههم | | | |
| | مسودة ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٦٠ | ك « | ٣٩ |
| | والأرض جميعا قبضته يوم القيامة... ... ... ... ... | ٦٧ | ك « | ٣٩ |
| | يلقى الروح من أمره على من يشاء من عباده لينذر يوم التلاق | ١٥ | ك غافر | ٤٠ |
| | يوم هم بارزون لا يخفى على الله منهم شىء... ... ... | ١٦ | ك « | ٤٠ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **اليَوْمُ** | لمن الملك اليوم لله الواحد القهار ... ... ... ... | ١٦ | ك غافر | ٤٠ |
| | اليوم تجزى كل نفس بما كسبت ... ... ... ... | ١٧ | ك » | ٤٠ |
| | لا ظلم اليوم إن الله سريع الحساب ... ... ... ... | ١٧ | ك » | ٤٠ |
| | وأنذرهم يوم الآزفة إذ القلوب لدى الحناجر كاظمين | ١٨ | ك » | ٤٠ |
| | إنى عذت بربى وربكم من كل متكبر لا يؤمن بيوم الحساب | ٢٧ | ك » | ٤٠ |
| | ياقوم لكم الملك اليوم ظاهرين فى الأرض ... ... | ٢٩ | ك » | ٤٠ |
| | وقال الذى آمن ياقوم إنى أخاف عليكم مثل يوم الأحزاب | ٣٠ | ك » | ٤٠ |
| | و ياقوم إنى أخاف عليكم يوم التناد ... ... ... ... | ٣٢ | ك » | ٤٠ |
| | يوم تولون مدبرين ما لكم من الله من عاصم ... ... | ٣٣ | ك » | ٤٠ |
| | و يوم تقوم الساعة أدخلوا آل فرعون أشد العذاب | ٤٦ | ك » | ٤٠ |
| | إنا لننصر رسلنا والذين آمنوا فى الحياة الدنيا و يوم يقوم الأشهاد ... ... ... ... ... ... ... ... | ٥١ | ك » | ٤٠ |
| | يوم لا ينفع الظالمين معذرتهم ولهم اللعنة ولهم سوء الدار | ٥٢ | ك » | ٤٠ |
| | و يوم يحشر أعداء الله إلى النار فهم يوزعون ... ... | ١٩ | ك فصلت | ٤١ |
| | أفمن يلقى فى النار خير أم من يأتى آمنا يوم القيامة ... | ٤٠ | ك » | ٤١ |
| | ويوم يناديهم أين شركائى قالوا آذناك مامنا من شهيد | ٤٧ | ك » | ٤١ |
| | لتنذر أم القرى ومن حولها وتنذر يوم الجمع لاريب فيه | ٧ | ك الشورى | ٤٢ |
| | إن الخاسرين الذين خسروا أنفسهم وأهليهم يوم القيامة | ٤٥ | ك » | ٤٢ |
| | استجيبوا لربكم من قبل أن يأتى يوم لامرد له من الله | ٤٧ | ك » | ٤٢ |
| | ولن ينفعكم اليوم إذ ظلمتم أنكم فى العذاب مشتركون | ٣٩ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | فويل للذين ظلموا من عذاب يوم أليم ... ... ... | ٦٥ | ك » | ٤٣ |
| | يا عبادِ لاخوف عليكم اليوم ولا أنتم تحزنون ... ... | ٦٨ | ك » | ٤٣ |
| | فارتقب يوم تأتى السماء بدخان مبين ... ... ... ... | ١٠ | ك الدخان | ٤٤ |
| | يوم نبطش البطشة الكبرى إنا منتقمون ... ... ... | ١٦ | ك » | ٤٤ |
| | إن يوم الفصل ميقاتهم أجمعين ... ... ... ... ... | ٤٠ | ك » | ٤٤ |
| | يوم لا يغنى مولى عن مولى شيئا ولا هم ينصرون ... | ٤١ | ك » | ٤٤ |
| | إن ربك يقضى بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون | ١٧ | ك الجاثية | ٤٥ |
| | قل الله يحييكم ثم يميتكم ثم يجمعكم إلى يوم القيامة ... | ٢٦ | ك » | ٤٥ |
| | و يوم تقوم الساعة يومئذ يخسر المبطلون ... ... ... | ٢٧ | ك » | ٤٥ |
| | كل أمة تدعى إلى كتابها اليوم تجزون ما كنتم تعملون | ٢٨ | ك » | ٤٥ |
| | وقيل اليوم ننساكم كما نسيتم لقاء يومكم هذا ... ... | ٣٤ | ك » | ٤٥ |
| | فاليوم لا يخرجون منها ولا هم يستعتبون ... ... ... | ٣٥ | ك » | ٤٥ |
| | ومن أضل ممن يدعوا من دون الله من لا يستجيب له إلى يوم القيامة ... ... ... ... ... ... ... | ٥ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | و يوم يعرض الذين كفروا على النار أذهبتم طيباتكم فى حياتكم الدنيا واستمتعتم بها ... ... ... ... | ٢٠ | ك » | ٤٦ |
| | فاليوم تجزون عذاب الهون... ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك » | ٤٦ |
| | ألا تعبدوا إلا الله إنى أخاف عليكم عذاب يوم عظيم | ٢١ | ك » | ٤٦ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| **اليَوْمُ** | و يوم يعرض الذين كفروا على النار أليس هذا بالحق | ٣٤ | ك الأحقاف | ٤٦ |
| | كأنهم يوم يرون ما يوعدون لم يلبثوا إلا ساعة من نهار | ٣٥ | م » | ٤٦ |
| | ونفخ فى الصور ذلك يوم الوعيد ... ... ... ... ... | ٢٠ | ك ق | ٥٠ |
| | فكشفنا عنك غطاءك فبصرك اليوم حديد... ... ... | ١٢ | ك » | ٥٠ |
| | يوم نقول لجهنم هل امتلأت وتقول هل من مزيد | ٣٠ | ك » | ٥٠ |
| | ادخلوها بسلام ذلك يوم الخلود... ... ... ... ... | ٣٤ | ك » | ٥٠ |
| | واستمع يوم ينادِ المنادِ من مكان قريب ... ... ... | ٤١ | ك » | ٥٠ |
| | يوم يسمعون الصيحة بالحق ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك » | ٥٠ |
| | ذلك يوم الخروج ... ... ... ... ... ... ... ... | ٤٢ | ك » | ٥٠ |
| | يوم تشقق الأرض عنهم سراعا ذلك حشر علينا يسير | ٤٤ | ك » | ٥٠ |
| | يسئلون أيان يوم الدين... ... ... ... ... ... ... | ١٢ | ك الذاريات | ٥١ |
| | يوم هم على النار يفتنون ... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك » | ٥١ |
| | يوم تمور السماء مورا ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك الطور | ٥٢ |
| | يوم يدعون إلى نار جهنم دعا ... ... ... ... ... | ١٣ | ك » | ٥٢ |
| | يوم لا يغنى عنهم كيدهم شيئا ولا هم ينصرون ... ... | ٤٦ | ك » | ٥٢ |
| | فتول عنهم يوم يدعُ الداعِ إلى شىء نكر ... ... ... | ٦ | ك القمر | ٥٤ |
| | مهطعين إلى الداعِ يقول الكافرون هذا يوم عسر ... | ٨ | ك » | ٥٤ |
| | إنا أرسلنا عليهم ريحا صرصرا فى يوم نحس مستمر... | ١٩ | ك » | ٥٤ |
| | يوم يسحبون فى النار على وجوههم ذوقوا مس سقر | ٤٨ | ك » | ٥٤ |
| | يسئله من فى السموات والأرض كل يوم هو فى شأن | ٢٩ | م الرحمن | ٥٥ |
| | لمجموعون إلى ميقات يوم معلوم ... ... ... ... | ٥٠ | ك الواقعة | ٥٦ |
| | هذا نزلهم يوم الدين... ... ... ... ... ... ... | ٥٦ | ك » | ٥٦ |
| | يوم ترى المؤمنين والمؤمنات يسعى نورهم بين أيديهم وبأيمانهم ... ... ... ... ... ... ... | ١٢ | م الحديد | ٥٧ |
| | بشراكم اليوم جنات تجرى من تحتها الأنهار خالدين فيها | ١٢ | م » | ٥٧ |
| | يوم يقول المنافقون والمنافقات للذين آمنوا انظرونا | ١٣ | م » | ٥٧ |
| | فاليوم لا يؤخذ منكم فدية ولا من الذين كفروا ... | ١٥ | م » | ٥٧ |
| | يوم يبعثهم الله جميعا فينبئهم بما عملوا ... ... ... | ٦ | م المجادلة | ٥٨ |
| | ثم ينبئهم بما عملوا يوم القيامة ... ... ... ... | ٧ | م » | ٥٨ |
| | يوم يبعثهم الله جميعا فيحلفون له كما يحلفون لكم... | ١٨ | م » | ٥٨ |
| | لا تجد قوما يؤمنون بالله واليوم الآخر يوادون من حادَّ الله ورسوله ... ... ... ... ... ... ... | ٢٢ | م » | ٥٨ |
| | لن تنفعكم أرحامكم ولا أولادكم يوم القيامة يفصل بينكم | ٣ | م الممتحنة | ٦٠ |
| | لقد كان لكم فيهم أسوة حسنة لمن كان يرجوا الله واليوم الآخر ... ... ... ... ... ... ... | ٦ | م » | ٦٠ |
| | إذا نودى للصلاة من يوم الجمعة فاسعوا إلى ذكر الله | ٩ | م الجمعة | ٦٢ |
| | يوم يجمعكم... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | م التغابن | ٦٤ |
| | ليوم الجمع ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | م » | ٦٤ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| اليَوْمُ: | ذلك يوم التغابن ... ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | م التغابن | ٦٤ |
| | ذلكم يوعظ به من كان يؤمن بالله واليوم الآخر ... | ٢ | م الطلاق | ٦٥ |
| | يأيها الذين كفروا لا تعتذروا اليوم... ... ... ... | ٧ | م التحريم | ٦٦ |
| | يوم لا يخزى الله النبي والذين آمنوا معه ... ... | ٨ | م » | ٦٦ |
| | ة اطلقوا وهم يخافون . أن لا يدخلنها اليوم عليكم مسكين | ٢٤ | م القلم | ٦٨ |
| | أم لكم أيمان علينا بالغة إلى يوم القيامة إن لكم لما تحكمون | ٣٩ | ك » | ٦٨ |
| | يوم يكشف عن ساق ويدعون إلى السجود فلا يستطيعون | ٤٢ | ك » | ٦٨ |
| | فليس له اليوم ههنا حميم ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك الحاقة | ٦٩ |
| | تعرج الملائكة والروح إليه في يوم كان مقداره خمسين ألف سنة ... ... ... ... ... ... ... | ٤ | ك المعارج | ٧٠ |
| | يوم تكون السماء كالمهل ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك » | ٧٠ |
| | والذين يصدقون بيوم الدين ... ... ... ... ... ... | ٢٦ | ك » | ٧٠ |
| | يوم يخرجون من الأجداث سراعا ... ... ... ... ... | ٤٣ | ك » | ٧٠ |
| | ذلك اليوم الذي كانوا يوعدون ... ... ... ... ... | ٤٤ | ك » | ٧٠ |
| | يوم ترجف الأرض والجبال وكانت الجبال كثيبا مهيلا | ١٤ | ك المزمل | ٧٣ |
| | فذلك يومئذ يوم عسير ... ... ... ... ... ... ... | ٩ | ك المدثر | ٧٤ |
| | وكنا نكذب بيوم الدين... ... ... ... ... ... ... | ٤٦ | ك » | ٧٤ |
| | لا أقسم بيوم القيامة ... ... ... ... ... ... ... | ١ | ك القيامة | ٧٥ |
| | يسئل أيان يوم القيامة... ... ... ... ... ... ... | ٦ | ك » | ٧٥ |
| | فوقاهم الله شر ذلك اليوم ولقاهم نضرة وسرورا | ١١ | م الإنسان | ٧٦ |
| | وإذا الرسل أقتت . لأي يوم أجلت ... ... ... ... | ١٢ | ك المرسلات | ٧٧ |
| | ليوم الفصل ... ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٣ | ك » | ٧٧ |
| | وما أدراك ما يوم الفصل ... ... ... ... ... ... | ١٤ | ك » | ٧٧ |
| | هذا يوم لا ينطقون ... ... ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك » | ٧٧ |
| | هذا يوم الفصل جمعناكم والأولين ... ... ... ... | ٣٨ | ك » | ٧٧ |
| | إن يوم الفصل كان ميقاتا ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك النبأ | ٧٨ |
| | يوم ينفخ في الصور فتأتون أفواجا... ... ... ... | ١٨ | ك » | ٧٨ |
| | يوم يقوم الروح والملائكة صفا ... ... ... ... ... | ٣٨ | ك » | ٧٨ |
| | ذلك اليوم الحق فمن شاء اتخذ إلى ربه مآبا ... ... | ٣٩ | ك » | ٧٨ |
| | إنا أنذرناكم عذابا قريبا يوم ينظر المرء ما قدمت يداه | ٤٠ | ك » | ٧٨ |
| | يوم ترجف الراجفة . تتبعها الرادفة ... ... ... | ٦ | ك النازعات | ٧٩ |
| | يوم يتذكر الإنسان ما سعى ... ... ... ... ... | ٣٥ | ك » | ٧٩ |
| | كأنهم يوم يرونها لم يلبثوا إلا عشية أو ضحاها ... | ٤٦ | ك » | ٧٩ |
| | فإذا جاءت الصاخة . يوم يفر المرء من أخيه ... | ٣٤ | ك عبس | ٨٠ |
| | وإن الفجار لفي جحيم . يصلونها يوم الدين ... ... | ١٥ | ك الانفطار | ٨٢ |
| | وما أدراك ما يوم الدين ... ... ... ... ... ... | ١٧ | ك » | ٨٢ |
| | ثم ما أدراك ما يوم الدين... ... ... ... ... ... | ١٨ | ك » | ٨٢ |
| | يوم لا تملك نفس لنفس شيئا والأمر يومئذ لله ... | ١٩ | ك » | ٨٢ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| اليَوْمُ: | ألا يظن أولئك أنهم مبعوثون . ليوم عظيم ... | ٥ | ك المطففين | ٨٣ |
| | يوم يقوم الناس لرب العالمين ... ... ... ... ... | ٦ | ك » | ٨٣ |
| | ويل يومئذ للمكذبين . الذين يكذبون بيوم الدين | ١١ | ك » | ٨٣ |
| | فاليوم الذين آمنوا من الكفار يضحكون ... ... | ٣٤ | ك » | ٨٣ |
| | والسماء ذات البروج . واليوم الموعود ... ... ... | ٢ | ك البروج | ٨٥ |
| | إنه على رجعه لقادر . يوم تبلى السرائر ... ... ... | ٩ | ك الطارق | ٨٦ |
| | أو إطعام في يوم ذي مسغبة . يتيما ذا مقربة ... ... | ١٤ | ك البلد | ٩٠ |
| | يوم يكون الناس كالفراش المبثوث ... ... ... ... | ٤ | ك القارعة | ١٠١ |
| يَوْمًا: | واتقوا يوما لا تجزى نفس عن نفس شيئا ... ... | ٤٨ | م البقرة | ٢ |
| (١٦) | واتقوا يوما لا تجزى نفس عن نفس شيئا ولا يقبل منها عدل ... ... ... ... ... ... ... ... | ١٢٣ | م » | ٢ |
| | قال كم لبثت قال لبثت يوما أو بعض يوم ... ... ... | ٢٥٩ | م » | ٢ |
| | واتقوا يوما ترجعون فيه إلى الله... ... ... ... | ٢٨١ | م » | ٢ |
| | قال قائل منهم كم لبثتم قالوا لبثنا يوما أو بعض يوم | ١٩ | ك الكهف | ١٨ |
| | إذ يقول أمثلهم طريقة إن لبثتم إلا يوما ... ... ... | ١٠٤ | ك طه | ٢٠ |
| | وإن يوما عند ربك كألف سنة مما تعدون ... ... | ٤٧ | م الحج | ٢٢ |
| | قالوا لبثنا يوما أو بعض يوم فسئل العادين ... ... | ١١٣ | ك المؤمنون | ٢٣ |
| | يخافون يوما تتقلب فيه القلوب والأبصار... ... ... | ٣٧ | م النور | ٢٤ |
| | وكان يوما على الكافرين عسيرا... ... ... ... ... | ٢٦ | ك الفرقان | ٢٥ |
| | اتقوا ربكم واخشوا يوما لا يجزى والد عن ولده ... | ٣٣ | ك لقمان | ٣١ |
| | ادعوا ربكم يخفف عنا يوما من العذاب ... ... ... | ٤٩ | ك غافر | ٤٠ |
| | فكيف تتقون إن كفرتم يوما يجعل الولدان شيبا... | ١٧ | ك المزمل | ٧٣ |
| | يوفون بالنذر ويخافون يوما كان شره مستطيرا ... | ٧ | م الإنسان | ٧٦ |
| | إنا نخاف من ربنا يوما عبوسا قمطريرا ... ... ... | ١٠ | م » | ٧٦ |
| | إن هؤلاء يحبون العاجلة ويذرون وراءهم يوما ثقيلا | ٢٧ | م » | ٧٦ |
| يَوْمِكُمْ: | ألم يأتكم رسل منكم يقصون عليكم آياتي وينذرونكم لقاء يومكم هذا... ... ... ... ... ... ... | ١٣٠ | ك الأنعام | ٦ |
| (٥) | وتتلقاهم الملائكة هذا يومكم الذي كنتم توعدون ... | ١٠٣ | ك الأنبياء | ٢١ |
| | فذوقوا بما نسيتم لقاء يومكم هذا ... ... ... ... | ١٤ | ك السجدة | ٣٢ |
| | ألم يأتكم رسل منكم يتلون عليكم آيات ربكم وينذرونكم لقاء يومكم هذا ... ... ... ... ... ... ... | ٧١ | ك الزمر | ٣٩ |
| | وقيل اليوم ننساكم كما نسيتم لقاء يومكم هذا ... ... | ٣٤ | ك الجاثية | ٤٥ |
| يَوْمِهِمُ: | فاليوم ننساهم كما نسوا لقاء يومهم هذا ... ... | ٥١ | ك الأعراف | ٧ |
| (٥) | فذرهم يخوضوا ويلعبوا حتى يلاقوا يومهم الذي يوعدون | ٨٣ | ك الزخرف | ٤٣ |
| | فويل للذين كفروا من يومهم الذي يوعدون ... ... | ٦٠ | ك الذاريات | ٥١ |
| | فذرهم حتى يلاقوا يومهم الذي فيه يصعقون ... ... | ٤٥ | ك الطور | ٥٢ |
| | فذرهم يخوضوا ويلعبوا حتى يلاقوا يومهم الذي يوعدون | ٤٢ | ك المعارج | ٧٠ |

| اللفظة | الآيـــة | السورة | رقمها | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يَوْمَيْنِ | : فمن تعجل فى يومين فلا إثم عليه ومن تأخر فلا إثم عليه | البقـرة | ٢٠٣ م | ٢ |
| (٣) | قل أئنكم لتكفرون بالذى خلق الأرض فى يومين ... | فصلت | ٩ ك | ٤١ |
| | فقضاهن سبع سموات فى يومين ... ... ... ... ... | » | ١٢ ك | ٤١ |
| أَيَّامٍ | : فمن كان منكم مريضا أو على سفر فعدة من أيام أخر | البقـرة | ١٨٤ م | ٢ |
| (٢٣) | ومن كان مريضا أو على سفر فعدة من أيام أخر ... | » | ١٨٥ م | ٢ |
| | فمن لم يجد فصيام ثلاثة أيام فى الحج وسبعة إذا رجعتم | » | ١٩٦ م | ٢ |
| | واذكروا الله فى أيام معدودات... ... ... ... ... | » | ٢٠٣ م | ٢ |
| | قال آيتك ألا تكلم الناس ثلاثة أيام إلا رمزا... ... | آل عمران | ٤١ م | ٣ |
| | وتلك الأيام نداولها بين الناس ... ... ... ... ... | » | ١٤٠ م | ٣ |
| | فمن لم يجد فصيام ثلاثة أيام ... ... ... ... ... | المائدة | ٨٩ م | ٥ |
| | إن ربكم الله الذى خلق السموات والأرض فى ستة أيام | الأعراف | ٥٤ ك | ٧ |
| | إن ربكم الله الذى خلق السموات والأرض فى ستة أيام | يونس | ٣ ك | ١٠ |
| | فهل ينتظرون إلا مثل أيام الذين خلوا من قبلهم ... | » | ١٠٢ ك | ١٠ |
| | وهو الذى خلق السموات والأرض فى ستة أيام ... | هود | ٧ ك | ١١ |
| | فعقروها فقال تمتعوا فى داركم ثلاثة أيام... ... ... | » | ٦٥ ك | ١١ |
| | أن أخرج قومك من الظلمات إلى النور وذكرهم بأيام الله | إبراهيم | ٥ ك | ١٤ |
| | ليشهدوا منافع لهم ويذكروا اسم الله فى أيام معلومات | الحج | ٢٨ م | ٢٢ |
| | الذى خلق السموات والأرض وما بينهما فى ستة أيام | الفرقان | ٥٩ ك | ٢٥ |
| | الله الذى خلق السموات والأرض وما بينهما فى ستة أيام | السجدة | ٤ ك | ٣٢ |
| | وقدر فيها أقواتها فى أربعة أيام سواء للسائلين ... | فصلت | ١٠ ك | ٤١ |
| | فأرسلنا عليهم ريحا صرصرا فى أيام نحسات ... ... | » | ١٦ ك | ٤١ |
| | قل للذين آمنوا يغفروا للذين لا يرجون أيام الله ... | الجاثية | ١٤ م | ٤٥ |
| | ولقد خلقنا السموات والأرض وما بينهما فى ستة أيام | ق | ٣٨ م | ٥٠ |
| | هو الذى خلق السموات والأرض فى ستة أيام ... | الحديد | ٤ م | ٥٧ |
| | سخرها عليهم سبع ليال وثمانية أيام حسوما ... ... | الحاقة | ٧ ك | ٦٩ |
| | كلوا واشربوا هنيئا بما أسلفتم فى الأيام الخالية ... | » | ٢٤ ك | ٦٩ |
| أَيَّامًا | : وقالوا لن تمسنا النار إلا أياما معدودة ... ... ... | البقـرة | ٨٠ م | ٢ |
| (٤) | كتب عليكم الصيام كما كتب على الذين من قبلكم | | | |
| | لعلكم تتقون . أياما معدودات ... ... ... ... ... | » | ١٨٤ م | ٢ |
| | ذلك بأنهم قالوا لن تمسنا النار إلا أياما معدودات | آل عمران | ٢٤ م | ٣ |
| | سيروا فيها ليالى وأياما آمنين... ... ... ... ... ... | سبأ | ١٨ ك | ٣٤ |
| يَوْمَئِذٍ | : هم الكفر يومئذ أقرب منهم للإيمان ... ... ... ... | آل عمران | ١٦٧ م | ٣ |
| (٦٨) | يومئذ يود الذين كفروا وعصوا الرسول لو تسوى | | | |
| | بهم الأرض ... ... ... ... ... ... ... ... ... | النساء | ٤٢ م | ٤ |
| | من يصرف عنه يومئذ فقد رحمه وذلك الفوز المبين | الأنعام | ١٦ ك | ٦ |
| | والوزن يومئذ الحق فمن ثقلت موازينه فأولئك | | | |
| | هم المفلحون ... ... ... ... ... ... ... ... ... | الأعراف | ٨ ك | ٧ |
| | ومن يولهم يومئذ دبره إلا متحرفا لقتال أو متحيزا إلى فئة | | | |
| | فقد باء بغضب من الله ... ... ... ... ... ... ... | الأنفال | ١٦ م | ٨ |
| يَوْمَئِذٍ | : وترى المجرمين يومئذ مقرنين فى الأصفاد ... ... ... | إبراهيم | ٤٩ ك | ١٤ |
| | وألقوا إلى الله يومئذ السلم وضل عنهم ما كانوا يفترون | النحل | ٨٧ ك | ١٦ |
| | وتركنا بعضهم يومئذ يموج فى بعض ... ... ... ... ... | الكهف | ٩٩ م | ١٨ |
| | وعرضنا جهنم يومئذ للكافرين عرضا ... ... ... ... | » | ١٠٠ م | ١٨ |
| | يوم ينفخ فى الصور ونحشر المجرمين يومئذ زرقا ... | طه | ١٠٢ ك | ٢٠ |
| | يومئذ يتبعون الداعى لا عوج له ... ... ... ... ... | » | ١٠٨ ك | ٢٠ |
| | يومئذ لا تنفع الشفاعة إلا من أذن له الرحمن ورضى له قولا | » | ١٠٩ ك | ٢٠ |
| | الملك يومئذ لله يحكم بينهم ... ... ... ... ... ... | الحج | ٥٦ م | ٢٢ |
| | فإذا نفخ فى الصور فلا أنساب بينهم يومئذ ولا يتساءلون | المؤمنون | ١٠١ ك | ٢٣ |
| | يومئذ يوفيهم الله دينهم الحق ... ... ... ... ... ... | النور | ٢٥ م | ٢٤ |
| | يوم يرون الملائكة لا بشرى يومئذ للمجرمين ... ... | الفرقان | ٢٢ ك | ٢٥ |
| | أصحاب الجنة يومئذ خير مستقرا وأحسن مقيلا ... | » | ٢٤ ك | ٢٥ |
| | الملك يومئذ الحق للرحمن وكان يوما على الكافرين عسيرا | » | ٢٦ ك | ٢٥ |
| | من جاء بالحسنة فله خير منها وهم من فزع يومئذ آمنون | النمل | ٨٩ ك | ٢٧ |
| | فعميت عليهم الأنباء يومئذ فهم لا يتساءلون ... ... | القصص | ٦٦ ك | ٢٨ |
| | لله الأمر من قبل ومن بعد ويومئذ يفرح المؤمنون | الروم | ٤ ك | ٣٠ |
| | ويوم تقوم الساعة يومئذ يتفرقون ... ... ... ... ... | » | ١٤ ك | ٣٠ |
| | من قبل أن يأتى يوم لا مرد له من الله يومئذ يصدعون | » | ٤٣ ك | ٣٠ |
| | فيومئذ لا ينفع الذين ظلموا معذرتهم ولا هم يستعتبون | » | ٥٧ ك | ٣٠ |
| | فإنهم يومئذ فى العذاب مشتركون ... ... ... ... ... | الصافات | ٣٣ ك | ٣٧ |
| | وقهم السيئات ومن تق السيئات يومئذ فقد رحمته ... | غافر | ٩ ك | ٤٠ |
| | ما لكم من ملجإ يومئذ وما لكم من نكير ... ... ... ... | الشورى | ٤٧ ك | ٤٢ |
| | الأخلاء يومئذ بعضهم لبعض عدو إلا المتقين ... ... | الزخرف | ٦٧ ك | ٤٣ |
| | ويوم تقوم الساعة يومئذ يخسر المبطلون ... ... ... | الجاثية | ٢٧ ك | ٤٥ |
| | وتسير الجبال سيرا . فويل يومئذ للمكذبين ... ... | الطور | ١١ ك | ٥٢ |
| | فيومئذ لا يسئل عن ذنبه إنس ولا جان ... ... ... | الرحمن | ٣٩ م | ٥٥ |
| | فيومئذ وقعت الواقعة ... ... ... ... ... ... ... | الحاقة | ١٥ ك | ٦٩ |
| | وانشقت السماء فهى يومئذ واهية ... ... ... ... ... | » | ١٦ ك | ٦٩ |
| | ويحمل عرش ربك فوقهم يومئذ ثمانية ... ... ... ... | » | ١٧ ك | ٦٩ |
| | يومئذ تعرضون لا تخفى منكم خافية ... ... ... ... | » | ١٨ ك | ٦٩ |
| | فإذا نقر فى الناقور . فذلك يومئذ يوم عسير ... ... | المدثر | ٩ ك | ٧٤ |
| | يقول الإنسان يومئذ أين المفر ... ... ... ... ... ... | القيامة | ١٠ ك | ٧٥ |
| | إلى ربك يومئذ المستقر... ... ... ... ... ... ... | » | ١٢ ك | ٧٥ |
| | ينبؤا الإنسان يومئذ بما قدم وأخر ... ... ... ... ... | » | ١٣ ك | ٧٥ |
| | وجوه يومئذ ناضرة . إلى ربها ناظرة ... ... ... ... | » | ٢٢ ك | ٧٥ |
| | ووجوه يومئذ باسرة . تظن أن يفعل بها فاقرة ... | » | ٢٤ ك | ٧٥ |
| | إلى ربك يومئذ المساق... ... ... ... ... ... ... | » | ٣٠ ك | ٧٥ |

| اللفظة | الآيـــة | رقمها | السورة | رقمها |
|---|---|---|---|---|
| يومئذ | وما أدراك ما يوم الفصل . ويل يومئذ للمكذبين | ١٥ | ك المرسلات | ٧٧ |
| | كذلك نفعل بالمجرمين . ويل يومئذ للمكذبين ... ... | ١٩ | ك « | ٧٧ |
| | فقدرنا فنعم القادرون . ويل يومئذ للمكذبين ... ... | ٢٤ | ك « | ٧٧ |
| | وأسقيناكم ماء فراتا . ويل يومئذ للمكذبين ... ... | ٢٨ | ك « | ٧٧ |
| | كأنه جمالة صفر . ويل يومئذ للمكذبين ... .. ... | ٣٤ | ك « | ٧٧ |
| | ولا يؤذن لهم فيعتذرون . ويل يومئذ للمكذبين ... | ٣٧ | ك « | ٧٧ |
| | فإن كان لكم كيد فكيدون . ويل يومئذ للمكذبين ... | ٤٠ | ك « | ٧٧ |
| | إنا كذلك نجزى المحسنين . ويل يومئذ للمكذبين ... | ٤٥ | ك « | ٧٧ |
| | كلوا وتمتعوا قليلا إنكم مجرمون . ويل يومئذ للمكذبين | ٤٧ | ك « | ٧٧ |
| | وإذا قيل لهم اركعوا لا يركعون . ويل يومئذ للمكذبين | ٤٩ | ك « | ٧٧ |
| | يوم ترجف الراجفة . تتبعها الرادفة . قلوب يومئذ واجفة | ٨ | ك النازعات | ٧٩ |
| | لكل امرئ منهم يومئذ شأن يغنيه ... ... ... ... | ٣٧ | ك عبس | ٨٠ |
| | وجوه يومئذ مسفرة . ضاحكة مستبشرة ... ... ... | ٣٨ | ك « | ٨٠ |
| | ووجوه يومئذ عليها غبرة . ترهقها قترة ... ... ... | ٤٠ | ك « | ٨٠ |
| يومئذ | يوم لا تملك نفس لنفس شيئا والأمر يومئذ لله | ١٩ | ك الانفطار | ٨٢ |
| | كتاب مرقوم . ويل يومئذ للمكذبين... ... ... ... | ١٠ | ك المطففين | ٨٣ |
| | كلا إنهم عن ربهم يومئذ لمحجوبون... ... ... ... | ١٥ | ك « | ٨٣ |
| | وجوه يومئذ خاشعة . عاملة ناصبة ... ... ... ... | ٢ | ك الغاشية | ٨٨ |
| | وجوه يومئذ ناعمة . لسعيها راضية ... ... ... ... | ٨ | ك « | ٨٨ |
| | وجيء يومئذ بجهنم ... ... ... ... ... ... ... | ٢٣ | ك الفجر | ٨٩ |
| | يومئذ يتذكر الإنسان وأنى له الذكرى ... ... ... | ٢٣ | ك « | ٨٩ |
| | فيومئذ لا يعذب عذابه أحد ... ... ... ... ... ... | ٢٥ | ك « | ٨٩ |
| | يومئذ تحدث أخبارها . بأن ربك أوحى لها ... ... | ٤ | م الزلزلة | ٩٩ |
| | يومئذ يصدر الناس أشتاتا ليروا أعمالهم ... ... ... | ٦ | م « | ٩٩ |
| | إن ربهم بهم يومئذ لخبير ... ... ... ... ... ... | ١١ | ك العاديات | ١٠٠ |
| | ثم لتسئلن يومئذ عن النعيم ... ... ... ... ... ... | ٨ | ك التكاثر | ١٠٢ |
| يومئذ | نجينا صالحا والذين آمنوا معه برحمة منا ومن خزى يومئذ | ٦٦ | ك هود | ١١ |
| (٢) | يود المجرم لو يفتدى من عذاب يومئذ بنيه ... ... | ١١ | ك المعارج | ٧٠ |

✦
✦ ✦

يقول محمد فؤاد عبد الباقى ، غفر الله له ، ابن المرحوم عبد الباقى ( بك ) صالح بن المرحوم الحاج صالح محمد : هذا ما وفقنى الله وأعاننى عليه من وضع هذا المعجم الذى دأبت فى ترتيبه وتهذيبه ومراجعته بكل ما فى وسعى وطاقتى و﴿ لا يكلف الله نفسا إلا ما آتاها ﴾ وإنى أسأل الله سبحانه وتعالى أن يجعل عملى هذا ، وجهدى ، خالصا لوجهه الكريم ، أنجو به من نار الجحيم .

وكان الفراغ منه فى منتصف يوم الأحد الحادى عشر من جمادى الآخرة عام ١٣٥٨ ، من هجرة سيدنا محمد رسول الله وخاتم النبيين ، الموافق اليوم السابع من شهر أغسطس عام ١٩٣٨ ، من ميلاد المسيح عليه السلام . وقد تم تبييضه ومراجعته المراجعة النهائية على المصحف الشريف ، قبيل غروب شمس يوم السبت الرابع من ربيع الأول عام ١٣٦٤ ، الموافق ١٧ فبراير عام ١٩٤٥ ؛ والحمد لله أولا وآخرا ، وصلى الله على سيدنا محمد وعلى آله وصحبه وسلم .

✦
✦ ✦

كمل طبع " المعجم المفهرس لألفاظ القرآن الكريم " بمطبعة دار الكتب المصرية
فى يوم الأربعاء ١٣ جمادى الأول ١٣٦٤ ( ٢٥ أبريل سنة ١٩٤٥ ) م

محمد نديم
ملاحظ المطبعة بدار الكتب
المصرية